DESHDOOT

1945 G. K. U.

113448

COMPILED

~~RT 193~~

Stock Verification-2[illegible]

र्षिक मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

र, ४ फरवरी, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 4th February, 19

COMPILED

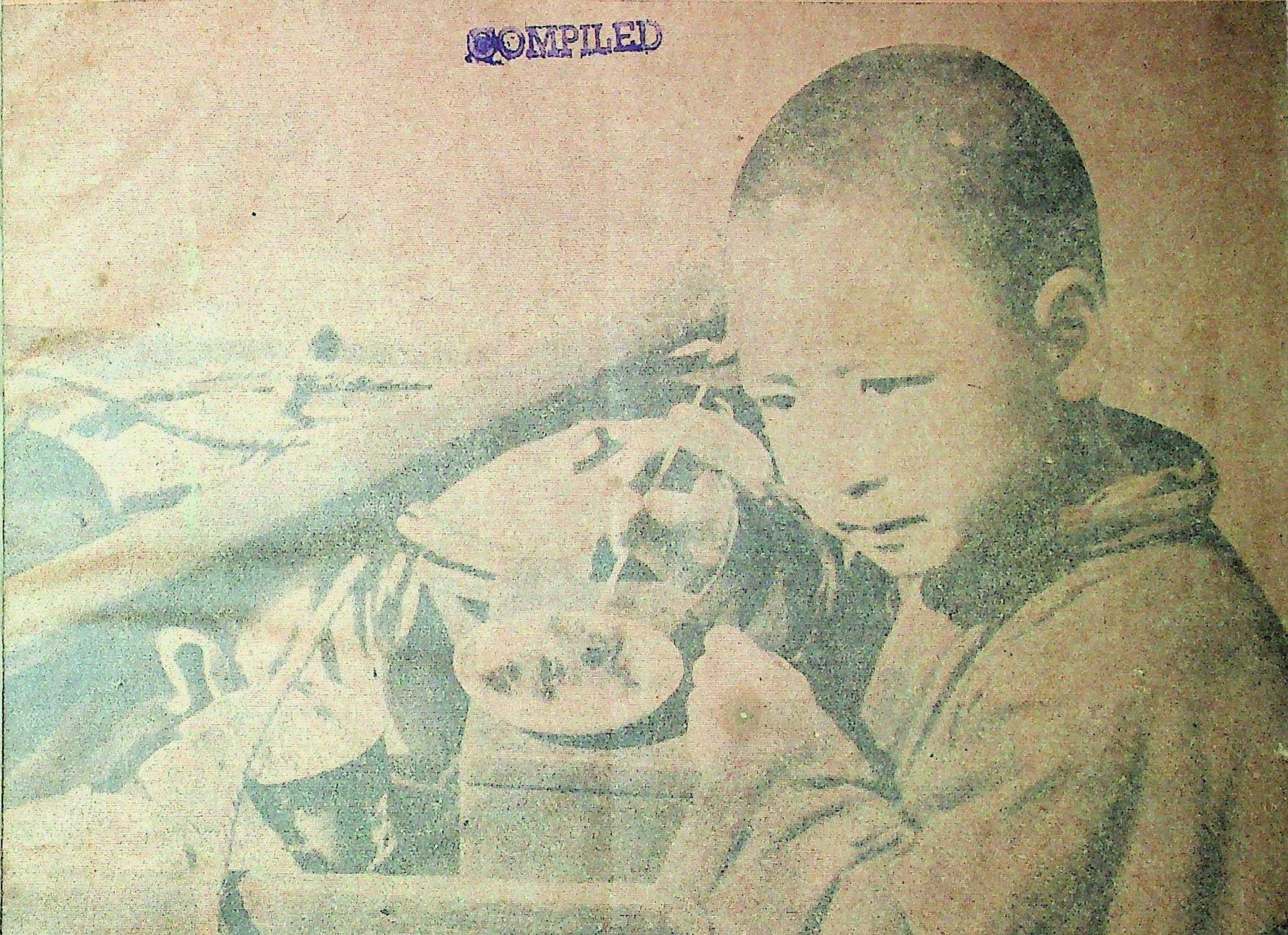

तंत्र चीन का बच्चा बच्चा जापानियों
बर्बरता का प्रबल विरोधी है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

फिलापाइंस की नई लड़ाई किधर?
पान के लिए नया स्थल मार्ग।

आरोंदा
सूरज छाप
१८६९
नीलगिरि तेल
— वापरो —
खाण्डालेकर बंधु. बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सदा पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥≈) डा०ख० अलग, युकलिप पेन, बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

अभ्युदय
हिन्दी का एकमात्र
साप्ताहिक
कहानी पत्र
वार्षिक ७॥)
एक प्रति =)
आज ही ग्राहक बनिए
मैनेजर अभ्युदय
इण्डियन प्रेस, प्रयाग।

केवल गवर्नमेण्ट सिक्यूरिटी जिसमें

४½ फ़ी सदी ब्याज मिलता है,
टैक्स माफ़

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स की क़ीमत १० रुपये है, किन्तु बारह वर्ष में इनका मूल्य १५ रुपये हो जाता है। इस प्रकार इन पर ४½ फ़ी सदी ब्याज मिलता है; अर्थात् यदि आप इस समय १००० रुपये लगायें तो आपको १५०० रुपये वापस मिलेंगे और आपकी पूँजी सब समय सुरक्षित रहेगी।

इन्हें तीन बरस बाद किसी समय भी भुनाया जा सकता है।

आप इन्हें सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों या किसी सेविंग्स ब्यूरो अथवा पोस्ट आफिस से ख़रीद सकते हैं।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स ख़रीदिए

AAA 1243—Hindi

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≥)।

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≥)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपानाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≥)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इस में शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

113448

देशदूत

113448

वर्ष ७ संख्या २३] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ४ फरवरी, १९४५

सप्ताह की सांमयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

श्री भूलाभाई देसाई फिर वायसराय से मिलनेवाले हैं।

मार्शल स्टालिन ने अपने दूसरे निर्देश-पत्र में यह घोषित किया कि बाल्टिक के क्षेत्र में एक नया हमला आरंभ हो गया है और मेमेल पर क़ब्ज़ा कर लिया गया है।

लिथुआनिया को पूर्णतः जर्मनों से मुक्त कर दिया गया है।

यह ज्ञात हुआ है कि रूसी सेनापति मार्शल ज़ुकोव की सेनाएँ जर्मन राजधानी बर्लिन से १०० मील की दूरी पर हैं। योजमान के आगे रूसियों के बढ़ने में तेज़ी आ गई है।

*　　*　　*

कोनिग्सबर्ग के मुफस्सिल में एक एक घर के लिए लड़ाई हो रही है। विशाल रूसी सेनाएँ वहाँ की जर्मन रक्षक सेना को फँसा लेने का प्रयत्न कर रही हैं।

मार्शल ज़ुकोव के मोर्चे पर पोजनेन नगर, जहाँ पर जर्मन अन्तिम घड़ियों में युद्ध करते हैं, अब सोवियट कतारों के पीछे दूर छूट गया और रूसी टैंक शीघ्रतापूर्वक बर्लिन के अधिकाधिक निकट पहुँच रहे हैं। रूसी फौजें जर्मनी के ब्रेंडेनबर्ग प्रान्त की सीमा के पास पहुँच गई हैं। जर्मन राजधानी बर्लिन इसी प्रान्त में स्थित है।

रायटर का विशेष सम्वाददाता लिखता है कि पोजनेन क्षेत्र में सीमा से बर्लिन की निकटतम दूरी लगभग ९५ मील होगी।

पूर्वी मोर्चे के ३ स्थानों पर लाल सेना भयानक युद्ध में संलग्न है। मार्शल ज़ुकोव की सेनाएँ दो लड़ाइयों में निरत हैं—इनमें से एक संग्राम ब्रोम्बर्ग के पश्चिम में हो रहा है, और दूसरा पोजनेन के इर्द-गिर्द। तीसरी लड़ाई मार्शल कोनीव की सेनाएँ लड़ रही हैं—जो कि उत्तरी साइलीसिया में ग्लीविट्ज के द्वीप पर, जहाँ पर जर्मनों की क़िलेबन्दी थी—क़ब्ज़ा कर लेने के उपरान्त ओडर नदी पर पुल खड़ा कर रही है।

मार्शल ज़ुखोव की सेनायें बर्लिन के निकट पहुँच रही हैं।

*　　*　　*

रूसी सेना पूर्वी प्रशा में घुस गई और और विस्टुला के मुहाने पर पहुँच गई। इस कथन का यह अर्थ है कि लाल सेना बाल्टिक तट तक पहुँच गई है और पूर्वी प्रशा को समस्त स्थल सहायता से काट दिया है।

*　　*　　*

जनरल पैटन की तृतीय अमेरिकन सेना ने जर्मन नगर सिज पर क़ब्ज़ा कर लिया, जो लग्जम्बर्ग से साढ़े चौदह मील दक्षिण-पूर्व में हैं। तीन अन्य नगरों पर क़ब्ज़ा किया गया है, जो पट्सकीड डोर्सकीड और रोडर हैं। सिज पर कब्ज़ा होने के बाद तृतीय सेना के सैनिकों ने टैंकों और पैदल सेना द्वारा किया गया एक प्रत्याक्रमण विफल किया।

*　　*　　*

१४वीं मित्र सेना मांडले पर आक्रमण करने के लिए दृढ़तापूर्वक बढ़ रही है और इसके कारण मांडले के लिए ख़तरा बढ़ता जा रहा है और जापानी लोग बर्मा के इस द्वितीय सबसे बड़े नगर की रक्षा के लिए जी-तोड़ प्रयत्न कर रहे हैं।

*　　*　　*

लन्दन के 'डेली मेल' पत्र को स्टाकहोम स्थित सम्वाददाता से यह समाचार मिला है—स्टाकहोम (स्वीडन) के हवाई बन्दर पर मेरी भेंट एक उत्तेजित कूटनीतिज्ञ से हुई जो अभी विमान से जर्मनी की राजधानी बर्लिन से आया है। उसने कहा कि बर्लिन में सभी लोगों को इसका निश्चय हो गया है कि युद्ध का अन्त अब बहुत ही निकट है। उसने कहा कि हिटलर का खेल खत्म हो गया और मैं अपनी सरकार के सामने निम्नलिखित बातें रख रहा हूँ—जर्मन सैनिक जनरल स्टाफ का नियंत्रण सैनिक स्थिति पर से जाता रहा, और वह अपने को युद्ध के परिचालन में जिम्मेदार नहीं समझ रहा है। उसने (स्टाफ) हिटलर को सरकारी तौर पर यह सूचना दे दी है कि समस्त सैनिक विचारों से देखते हुए युद्ध को जारी रखना व्यर्थ है।

*　　*　　*

"स्वेन्सका डगब्लाडेड" पत्र के बर्लिन स्थित संवाददाता ने लिखा है—"कोपलनिशर जीटुंग" नामक जर्मन समाचार पत्र ने लिखा है कि आगामी ८ दिनों में युद्ध का फैसला हो जायगा।

पत्र आगे लिखता है—हमारे पास समय अब बहुत थोड़ा है। हमारे पास न तो युराल ही है, न लम्बे चौड़े विस्तृत मैदान हैं, जहाँ हम तब तक हट कर विश्राम करें जब तक कि शत्रु का साहस समाप्त न हो जाय।

*　　*　　*

सीरिया और लेबनन में भूतपूर्व अँगरेज़ मंत्री मेजर जनरल सर एडवर्ड स्पीयर्स ने "संडे एक्सप्रेस" पत्र में लिखा है—फ़्रांस के प्रधान जनरल डिगाले ने हाल में एक प्रेस कान्फ्रेंस में कहा कि "सीरिया और लेबनन में फ़्रांस का प्रमुख स्थान है जिसे वह बनाये रखेगा।" इसका यह मतलब है कि लेवेन्ट में जब तक फ्रेंचों के दावे सन्तोषजनक रूप से न मान लिए जायँगे तब तक फ़्रांस इँगलैण्ड से समझौते पर विचार न करेगा। इसका दूसरे शब्दों में यह मतलब है कि सीरिया और लेबनन में हम जब तक फ़्रांस को स्वतंत्र हाथ न देंगे तब तक हमारा फ़्रांस से समझौता नहीं हो सकता, पर ये दोनों देश फ़्रांस के दावों को जोरों से नामंज़ूर करते हैं।

*　　*　　*

लन्दन में भारतीय स्वतंत्रता-सम्बन्धी एक सभा में मजदूर सदस्य मि० राइस डेवीज ने घोषित किया कि यदि मि० चर्चिल को अपनी वर्तमान नीति का अनुसरण करने दिया जायगा तो ब्रिटिश साम्राज्य का अंग-भंग होने की संभावना है। मि० राइस डेवीज ने कहा—"मि० चर्चिल ने एक बार कामन्स सभा में कहा था कि वह प्रधान मंत्री इस लिए नहीं हुए हैं कि उन्हें ब्रिटिश साम्राज्य के निराकरण से संबंधित सभा का सभापतित्व करना होगा। पर मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि यदि हम लोग मि० चर्चिल की सलाह मानते चले जावेंगे तो हम एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य का उच्छेद देख लेंगे।"

*　　*　　*

श्रीमती विजयालक्ष्मी भारत के सम्बन्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका के अपने रुख का स्पष्टीकरण करने में असफल होने पर उसकी कड़ी आलोचना की।

श्रीमती पण्डित ने रायटर के प्रतिनिधि से कहा कि अमेरिका में भारत को गहरी निराशा हुई है। निस्सन्देह हम संयुक्त राज्य अमेरिका से आशा करते हैं कि वह भारत के सम्बन्ध में कोई वक्तव्य देगा। प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट की चुप्पी आश्चर्यजनक है।

आपने कहा—'एक बात के लिए अमेरिका को स्पष्ट रूप से कह देना चाहिए कि कांग्रेस पार्टी के लोगों को जेल से फौरन रिहा कर दिया जाय।'

*　　*　　*

जर्मन रेडियो ने यह सूचित किया है कि हिमलर तथा हिटलर के सब से अधिक योग्य सैनिक पूर्वी मोर्चे को भेज दिये गये हैं।

*　　*　　*

युगांडा में मजदूरों की हड़ताल होने के कारण जो गोली चलाई गई उसके कारण १ हिन्दुस्तानी और आठ अफ़्रीकन मजदूर मरे तथा ११ अफ़्रीकन मजदूर तथा कई पुलिसमैन घायल हुए।

*　　*　　*

मि० चर्चिल ने कामन्स सभा में सूचित किया कि अगर जर्मनी ने इँगलैंड के विरुद्ध गैस का प्रयोग किया तो ब्रिटेन उसके बदले जर्मनी में दस गुने परिमाण में गैस का प्रयोग करने में समर्थ होगा।

लार्ड वैवेल वर्तमान संकट को दूर करने के लिए समझौते की वार्ता करेंगे !

*　　*　　*

ईरान के शाह ने अपने वैदेशिक मंत्री द्वारा ब्रिटिश, सोवियट तथा अमेरिकन राजदूतों को सूचित किया है कि वह त्रिनेताओं का स्वागत तेहरान में करने को तैयार हैं।

*　　*　　*

टोकियो रेडियो ने कहा कि दो अन्य अमेरिकन डिवीजन सेना लुजोन में उतरी और अब अमेरिकन सेना यहाँ सात डिवीजन हो गई है।

*　　*　　*

ख़बर है कि लन्दन की पोलिश सरकार ने ब्रिटिश तथा अमेरिकन सरकारों को जो आवेदनपत्र दिया है उसमें यह माँग पेश की है कि युद्ध के बाद पोलैंड में जब तक आम चुनाव न हो तब तक मित्रराष्ट्रों का एक कमीशन क़ायम किया जाय और वह कमीशन पोलैंड का शासन-भार अपने हाथ में ले। आवेदनपत्र में यह भी लिखा है कि रूस और पोलैंड का झगड़ा अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून के अनुसार तय हो।

*　　*　　*

महात्मा गांधी के 'नवजीवन प्रेस' के मैनेजर श्री जीवन जी देसाई ने ५४,५०० रु० के दावे के सम्बन्ध में दीवानी का एक मामला दायर करने की नोटिस दी है। कहा जाता है कि सन् १९४२ में सरकार ने जब 'नवजीवन प्रेस' को ले लिया था तो उस समय ५४,५०० रु० का काग़ज भी जब्त कर लिया था।

मार्शल स्टेलिन ने कहा है कि बाल्टिक क्षेत्र में नया हमला शुरू हो गया है।

सम्पादक का पृष्ठ

बर्लिन पर रूसी खतरा

रूसी सेना का बर्लिन की ओर बढ़ाव बहुत तेजी से हो रहा है। रूस का शीतकालीन आक्रमण शिथिल होने के बजाय अब और जोर पकड़ रहा है। यद्यपि जर्मन सेनायें रूसी सेनाओं की प्रगति का जोरदार विरोध कर रही हैं, परन्तु उन्हें इसमें सफलता नहीं प्राप्त हो रही है। रूसियों की प्रगति को रोकने के लिए जर्मनों ने पश्चिमी मोर्चे पर से भी कुछ डिवीजन हटा लिए हैं, परन्तु इस अतिरिक्त सहायता के होने पर भी वे रूसी सैनिकों की प्रगति रोकने में समर्थ नहीं हो पा रहे हैं। रूसी सेनाओं ने पूर्वी प्रशा के दो तिहाई हिस्से पर कब्जा कर लिया है। कोनिंग्स वर्ग के बाहरी हिस्से में रूसी सेनायें पहुँच गई हैं। पूर्वी प्रशा को रूसी सेनाओं ने प्रायः घेर लिया है। पोलैंड का प्रसिद्ध नगर पोजनान भी घिर गया है। उधर रूसी सेनायें बाल्टिक तट की ओर बढ़ रही हैं, जिससे डेन्जिग के लिए खतरा उपस्थित हो गया है। डेन्जिग जर्मनों का एक महत्त्वपूर्ण नगर और बन्दरगाह है। लिथूआनिया भी जर्मनों के हाथ से मुक्त कर लिया गया है। इससे यह प्रगट है कि रूसी सेनाओं ने शीतकाल के युद्ध में बहुत अधिक सफलता प्राप्त की है; लगभग एक लाख वर्गमील भूमिपर जर्मनों और रूसियों का युद्ध हो रहा है। रूसियों ने अपनी सेना को रसद और युद्ध-सामग्री पहुँचाने का बहुत अच्छा प्रबन्ध कर रखा है, इसका परिणाम यह हुआ है कि रूसी सेनाओं को आगे बढ़ने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं उठानी पड़ रही है। अभी हाल के आये हुए समाचारों में बताया गया है कि पूर्व में जर्मन सेनाओं को बहुत अधिक क्षति पहुँचाई गई है। बहुतसे जर्मन सैनिक दलों का सम्बन्ध मुख्य सेना से काट दिया गया है। जर्मनी के रणसामग्री तैयार करने वाले कारखानों पर रूसियों ने इतनी भीषण बमवर्षा की है कि जर्मनों के लिए रण-सामग्री मिलना कठिन हो रहा है। रूसी सेनायें बर्लिन के बहुत अधिक निकट पहुँच गई हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि यदि उनकी प्रगति बराबर ऐसी ही बनी रही तो बहुत शीघ्र ही बर्लिन पर उनका अधिकार हो जायगा।

मार्शल कोनाय की सेना ने ओडर नदी को पार कर लिया है और अब चीन के मार्ग में रूसी सेनाओं के लिए कोई प्राकृतिक रोक नहीं रह गई है। पूर्वी प्रशा में २,००,००० जर्मन सैनिक पड़े हुए हैं; पूर्वी तथा पश्चिमी दोनों मोर्चों पर जर्मनी को जन और सामग्री की भारी क्षति उठानी पड़ रही है। यह सब देखते हुए अब उसे और अधिक सेना अथवा युद्ध-सामग्री एकत्र करना कठिन हो रहा है। निरन्तर बमवर्षा ने उसके कारखानों को नष्ट कर दिया है जिससे रण-सामग्री के उत्पादन को भी भारी क्षति पहुँची है। अभी हाल में गोयबेल्स ने कहा है कि जर्मनी की भीतरी रक्षा-पंक्ति का संगठन प्रो० स्पियर करेंगे, वे जर्मनी की रक्षा करेंगे। गोयबेल्स के इस कथन से प्रगट है कि जर्मन जनता में हिटलर के प्रति अविश्वास बहुत अधिक घर कर गया है और वे समझते हैं कि अब वह जर्मनी की रक्षा नहीं कर सकता।

समझौते का प्रयत्न

श्री भूलाभाई देसाई और लार्ड वैवेल की बातचीत की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ है। यद्यपि केन्द्र में अस्थाई सरकार की स्थापना के सम्बन्ध में अभी कोई आशाजनक स्थिति नहीं पहुँची है परन्तु समाचारों से प्रगट है कि वायसराय महोदय ने निराशाजनक कोई बात नहीं कही है। वार्ता के प्रारम्भ होने के पहले यह अनुमान किया जाता था कि इस प्रकार के प्रयत्न का कोई अधिक अच्छा परिणाम नहीं निकलेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ब्रिटिश सरकार राजनीतिक संकट को दूर करने तथा भारत के बड़े बड़े राजनीतिक दलों का सहयोग प्राप्त करना चाहती है तो यह उसके लिए अन्तिम अवसर है। यदि इस अवसर से सरकार ने लाभ न उठाया तो इसका अर्थ यही होगा कि ब्रिटिश सरकार युद्ध-काल तक के लिए परिस्थिति में किसी प्रकार का परिवर्तन करने को तैयार नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि देश के सभी राजनीतिक दल वर्तमान स्थिति से ऊब चुके हैं और श्री भूलाभाई देसाई के प्रस्ताव का सभी ने स्वागत किया है। यहाँ पर हम श्री भूलाभाई देसाई, नवाबजादा लियाकतअली खाँ या वायसराय महोदय के विचारों पर विचार नहीं करेंगे, परन्तु यह अवश्य है कि अब तक यह प्रयत्न आशाजनक प्रतीत हो रहा है। जैसा कि वायसराय महोदय ने स्वीकार किया है, सभी दलों के सहयोग से बनी हुई सरकार देश को प्रभावित करने में अधिक सफल हो सकेगी। परन्तु ब्रिटिश सरकार को भय शायद इस बात का है कि जनता की सरकार से उनके युद्ध-प्रयत्नों में किसी प्रकार की बाधा न उत्पन्न हो। यद्यपि सर तेजबहादुर सप्रू ऐसे विधान पंडित ने भी यह कहा है कि ऐसी स्थिति निकाली जा सकती है जिससे जनता की सरकार कार्य कर सके। इन परिस्थितियों को देखते हुए यह प्रगट होता है कि यदि अमेरी तथा चर्चिल सरकार ने किसी प्रकार की बाधा न उत्पन्न की और इस अन्तिम अवसर से लाभ उठाने का प्रयत्न किया तो समझौता सम्भव हो सकता है। परन्तु क्या मिस्टर चर्चिल की सरकारसे ऐसी आशा की जा सकती है? यदि ब्रिटेन संसार के राष्ट्रों के सम्मुख अपना सिर गौरवपूर्वक उठाये रहना चाहता है तो उसके लिए यह आवश्यक है कि वह स्वतन्त्र राष्ट्रों के कामनवेल्थ का निर्माण करे। कांग्रेस का कार्यक्रम स्पष्ट है कि वह किसी प्रकार का सत्याग्रह प्रारंभ करने नहीं जा रही है; उसके नेता जेलों के भीतर बंद हैं। इससे देश की जनता से उसे असंतोष है उसके होते हुए दोनों राष्ट्रों को किसी प्रकार के समझौते पर पहुँचना असम्भव ही है। मिस्टर चर्चिल और अमेरी बराबर भारतीयों की भावनाओं की उपेक्षा करते आये हैं। इससे उनकी कूटनीतिज्ञता की कमी का ही प्रदर्शन होता है और वे भारत के साथ तो अन्याय कर ही रहे हैं, साथ ही अपने देश का भी कोई अधिक हित नहीं कर रहे हैं।

पत्रकारों की आर्थिक दशा में सुधार की आवश्यकता

अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन में श्री ब्रेलवी का भाषण

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन का चतुर्थ पूर्ण अधिवेशन २७ जनवरी दिन में ११-४० पर कलकत्ते के सिनेट हाल में आरम्भ हुआ। श्री सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवी सभापति थे।

समस्त भारत से बहुतेरे डेलीगेट आए थे। अँगरेजी पत्रों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त हिन्दी के प्रमुख पत्र-सम्पादकों में 'आज' के श्री विद्याभास्कर, 'देशदूत' के श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' और 'संसार' के श्री बलदेवदास थे। प्रतिष्ठित दर्शकों में थे—कलकत्ते के मेयर श्री आनन्दीलाल पोद्दार, पूर्वी कमांड के प्रधान जनरल सर रिचर्ड ओकनोर, सरकार के प्रमुख प्रेस सलाहकार सर उषीनाथ सेन, मेजर जनरल एफ० एच० स्किनर, प्रान्तीय प्रेस सलाहकार श्री पी० डी० मार्टिन और बंगाल सरकार के स्पेशल प्रेस सलाहकार श्री बी० जी० राव।

स्वागताध्यक्ष श्री हेमेन्द्र प्रसाद घोष ने अपने भाषण में डेलीगेटों का स्वागत किया।

श्री ब्रेलवी ने अपने भाषण में कहा कि देश की राजनीतिक परिस्थिति ऐसी बदल गई है कि बम्बई के प्रस्ताव में परिवर्तन करना तथा भारत-रक्षा कानून और प्रेस-सम्बन्धी आदेशों में परिवर्तन करना आवश्यक मालूम होता है।

आपने आगे कहा कि हमने गत अधिवेशन (मद्रास) में एक प्रस्ताव पास करके अमेरिकन सम्पादकों के उस प्रस्ताव का समर्थन किया था कि शांति-परिषद् संसार भर में समाचारपत्रों की स्वतंत्रता की गारन्टी करे और उस समय मैंने यह भी कहा था कि शांति परिषद् जब पत्रों और समस्त राष्ट्रों की स्वतंत्रता की गारन्टी करे तो भारत सम्बन्धी गारन्टी केवल कागज पर ही न रहे। हमें कटु अनुभव से यह मालूम हुआ है कि विदेशों में भारत के सम्बन्ध में भ्रम फैलाने के लिए बहुतेरी गलत बातें कही गई हैं। स्वतंत्र राष्ट्रों की अपेक्षा हम लोग भारत में यह अच्छी तरह समझते हैं कि संसार के प्रत्येक भाग में सच्चा लोकतंत्र स्थापित किए बिना राष्ट्रों में शांति नहीं कायम रह सकती।

आपने आगे भारत रक्षा कानून और प्रेस सम्बन्धी सरकारी आदेशों में परिवर्तन करने के सम्बन्ध में कहा कि यह सम्मेलन एक कमेटी नियुक्त करे जो संशोधन करने के सम्बन्ध में आवश्यक बातें बतावे, या हमारी स्थायी समिति ही इस विषय को अपने हाथों में ले। क्या मैं यह आशा करूँ कि केन्द्रीय एसेम्बली के सदस्य और अन्य सार्वजनिक संस्थायें देश और प्रेस के लाभ के लिए इस विषय की ओर ध्यान देंगी और प्रेस इमर्जन्सी ऐक्ट तथा देशी नरेशों की रक्षा वाले ऐक्ट को रद्द कराने के लिए जोर लगायेंगी, और युद्ध-काल के प्रेस-सम्बन्धी अन्य कानूनों में भी संशोधन करायेंगी।

आपने आगे प्रेस-सलाहकार-कमेटी की सलाहों की सरकार द्वारा उपेक्षा किये जाने की ओर संकेत करते हुए कहा कि सरकार और प्रेस में जो समझौता हुआ था उसे दिल्ली के चीफ कमिश्नर ने भंग किया।

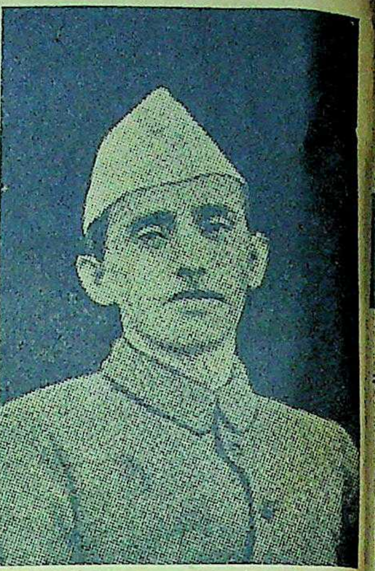

कलकत्ता में होनेवाले अखिल भारतीय सम चार-पत्र-सम्पादक-सम्मेलन के सभापति 'बा क्रानिकल' के सम्पादक श्री एस० ए० ब्रेलवी।

गतवर्ष जनवरी में 'नेशनल काल' औ 'हिन्दुस्तान टाइम्स' पत्रों ने कांग्रेस वर्किं कमेटी की सदस्य श्रीमती सरोजिन नायडू की प्रेस कान्फरेन्स सम्बन्धी ए रिपोर्ट प्रकाशित की थी। उस रिपो में ऐसी कोई बात नहीं थी जो दिल्ल के समझौते या बम्बई के प्रस्ताव विरुद्ध हो और केन्द्रीय प्रेस सलाहका कमेटी ने भी यह कहा था कि उस रिपो के लिए कोई कार्रवाई करने की आव श्यकता नहीं है। पर तो भी उन दोन समाचारपत्रों को यह आज्ञा दी गई वि उनके समाचार सेंसर होने के बाद प्रकाशि हों। सम्मेलन की स्थायी समिति ने उ आज्ञा को वापस लेने के लिए कहा। आज्ञ कुछ समय तक जारी रही, पर बाद में व वापस ले ली गई।

श्री ब्रेलवी ने कहा कि श्रीमती सरो जिनी नायडू पर यह प्रतिबन्ध लगाया ग था कि वे समाचारपत्रों को कोई वक्तव्य दें। भारत-रक्षा कानून का यह न केव भारी दुरुपयोग था बल्कि समाचारपत्रों स्वतन्त्रता में भी हस्तक्षेप किया गया इसके बाद आपने कहा कि मध्य प्रदेश सरकार ने 'नागपुर टाइम्स' पत्र की ज नत जब्त कर ली और उसके तथा 'हि वाद' पत्र के सम्पादकों को, सहकार सम्पादकों और प्रकाशकों पर मुकद चलाने के लिए आज्ञा दी।

आपने कहा कि सन् १९४२ में गां जी की गिरफ़्तारी के बाद बम्बई सरक ने नवजीवन प्रेस पर कब्जा कर लि जहाँ से 'हरिजन' पत्र छपता था, श्र सरकार के आदेशानुसार एक छोटे अफ ने 'हरिजन' की अमूल्य फाइलों त अन्य जरूरी कागज पत्रों को नष्ट दिया। सम्मेलन की स्थायी समि की बैठक गत वर्ष जुलाई में कराची हुई थी, और उसने महात्मा गांधी त बम्बई सरकार के पत्र-व्यवहार को देख हुए फाइलों के नष्ट किए जाने का विरो किया।

गत अक्टूबर में प्रान्तीय प्रेस-सला कार-कमेटी से बिना परामर्श लिए इलाह के जिला मजिस्ट्रेट ने 'लीडर' औ

—शेष पृष्ठ १८ पर देखि

चीन के लिए नया स्थल-मार्ग

लीडो सड़क के निर्माण की मनोरंजक कहानी

लेखक, श्रीयुत दीनबन्धु पाठक

रंगून का पतन हो जाने के बाद बर्मा रोड से चीन को लड़ाई का सामान पहुँचाना असम्भव हो गया था परन्तु मित्रराष्ट्रों ने एक नई सड़क बनाकर चीन का सम्बन्ध भारत से कर दिया। अभी गत सप्ताह इस सड़क के खुलने की घोषणा की गई है। इसका नाम लीडो सड़क है। इस सड़क को बनाने में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और कैसे दुर्गम रास्ता को पार करना पड़ा यह इस लेख में बताया गया है।

चीन की आज़ादी के युद्ध के संचालक जनरल च्यांगकाई शेक

फर्वरी १९४२ में रंगून का पतन होने के बाद चीन को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अपने स्वतन्त्रता-युद्ध को चलाने के लिए उन्हें बर्मारोड से जो सहायता मिली थी वह सहसा बंद हो गई। बर्मा रोड का निर्माण चीन को रण-सामग्री पहुँचाने के लिए हुआ था परन्तु जब यह सड़क जापानियों के अधिकार में चली गई तब इसका उलटा असर हुआ। चीन को रण-सामग्री प्राप्त करने में बड़ी कठिनाई होने लगी, परन्तु चीन ने इससे हिम्मत न हारी। मित्रराष्ट्र उसे रण-सामग्री पहुँचाते रहे, साथ ही इस कार्य को अधिक आसानी से पूरा करने के लिए उन्होंने चीन के लिए नया रास्ता तैयार करने का निश्चय किया। यद्यपि चीन के लिए स्थल-मार्ग बनाना सरल काम नहीं था परन्तु यह काम पूरा कर लिया गया। इतने दिनों के परिश्रम के बाद यह सड़क बनकर तैयार हो गई है। इस सड़क के खुलने की चर्चा बहुत समय से थी। प्रसन्नता की बात है कि गत सप्ताह यह सड़क खुल गई।

इस सड़क का इतिहास बड़ा ही मनोरंजक है। हिमालय की ११,००० फुट ऊँची पर्वत-मालाओं को पार करती हुई यह सड़क पूर्वोत्तर भारत से प्रारम्भ होकर उत्तर में दक्षिण बर्मा चीन की सीमा के किनारे-किनारे बर्मा रोड में लाकर मिला दी गई है। इसका प्रारम्भ आसाम के लीडो कस्बे से होता है इसलिए इसका नाम लीडो-बर्मा सड़क है। लीडो आसाम का अन्तिम रेलवे स्टेशन है। यह सड़क पूर्व और उत्तर-पूर्व की ओर दक्षिण-पूर्व चीन के यूनान प्रान्त की राजधानी कुनमिङ्ग में मिला दी गई है। इस मार्ग को बनाने में एशिया के भयानक पर्वतों और जंगलों को पार करना पड़ा है।

लीडो और कुनमिङ्ग के बीच वायु-मार्ग से ४३५ मील का अन्तर है। परन्तु यह स्थल-मार्ग, दुर्गम स्थानों और गहरी घाटियों को पार करता हुआ बर्मा प्रदेश से होकर बना है और इसकी लम्बाई १,००० मील है।

लगभग तीन वर्ष के कठिन परिश्रम के बाद इस नये मार्ग द्वारा चीन का समुद्र से पहली बार सम्बन्ध स्थापित हो सका है। परन्तु इससे चीन की रसद-समस्या तब तक नहीं हल हो सकती जब तक कि कोई चीनी बन्दरगाह स्थापित नहीं हो जाता।

इस सड़क के निर्माण ने चीनियों को एक और सुविधा प्रदान की है। वह है—तेल की आयात। अभी तक कलकत्ता से लेकर आसाम और उसके ऊपरी भागों तक पाइप-लाइनों-द्वारा तेल पहुँचाया जाता था। लेकिन अब इस सड़क के खुल जाने से वह काम और भी आसान हो गया है।

यह लीडो रोड मित्रों की एकता और दृढ़ता का एक स्मारक है। मि० स्टेलवेल ने सड़क के निर्माण का कार्य प्रारम्भ कराया था। अमेरिकन और चीनी इञ्जीनियरों ने इस सड़क की पैमाइश करके योजना तैयार की थी। ब्रिटिश, भारतीय, अफ्रीकन बरमी चीनी और अमेरिकन सेनाओं ने वर्षा, पर्वत की कठिन शीत, घने जंगलों की बीमारियों और जापानियों के आक्रमणों से, जो कि भारत से लेकर मितकिना तक के मार्ग को आस-पास घेरे हुये थे लड़कर इस मार्ग का निर्माण किया है।

मितकिना का पूर्वी मार्ग ही बर्मा और चीन के यातायात का एक-मात्र साधन था। लेकिन सितम्बर सन् १९३८ में एक मोटर की सड़क खोली गई। इस सड़क के सम्बन्ध में एक अमेरिकन इंजीनियर ने कहा है, "चीनियों ने इस सड़क को पहाड़ों में नाखून से खोद कर बनाया है।"

जापानियों के अधिकार में आने के पहिले रंगून चीन को रसद भेजने का सबसे बड़ा केन्द्र था। इस बन्दरगाह से उत्तर बर्मा को युद्ध-सामग्री भेजी जाती थी। युद्ध-सामग्री रेलवे अथवा अच्छी सड़कों-द्वारा लशियो कस्बे को भेजी जाती थी। यह पूर्वी-मध्य बर्मा का सड़क पर अन्तिम कस्बा था। अन्य सामग्रियाँ इरावदी नदी-द्वारा भामू तक भेजी जाती थी। इसके ऊपर एक सड़क बर्मा रोड से मिला दी गई थी।

मोटर लारियों की एक बहुत बड़ी संख्या चीनी सेनाओं के लिए कुनमिङ्ग तक युद्ध-सामग्रियाँ ले जाती थी। लेकिन जापानियों ने बमवर्षा करके सड़क पर चलनेवाली लारियों के ड्राइवरों को परेशान कर कर दिया। वे लारी ड्राइवर कौली पर्वत-माला की ढालू शिलाओं पर चढ़ा करते थे और सालविन तथा मेकांग जैसी नदियों पर बने हिलते पुलों को पार करते थे। यही नहीं, बल्कि सैकड़ों छोटी-छोटी नदियाँ भी उनके मार्ग में बाधक थीं जिसको चीनी सैनिक पार करके अपने देश को सामान ले जाते थे। परन्तु बाद में यह रास्ता जापानियों के कब्जे में चला गया।

जनरल स्टिलवेल ने चीन पहुँचने पर दिसम्बर १९४२ ई० में सोचा कि बर्मा का युद्ध किस तरह जीता जाय। उन्होंने चीनी सेनाओं को सहायता के लिये मार्ग की खोज की और भारत को बर्मा रोड से मिला देने की योजना बनाई गई। यह कार्य बहुत कठिन था। लेकिन उस बहादुर सेनापति ने पर्वतमालाओं के भीतर एक नवीन सड़क निकाल कर बर्मा रोड में मिला दिया है।

लीडो रोड भारत में लीडो स्थान पर सन् १९४२ के दिसम्बर मास से बनना प्रारम्भ हुई थी। लेकिन सड़क की सफाई का कार्य, इस विगत आक्टोबर में, जब कि स्टिलवेल चीनी सेनाओं के दो डिवीजन आसाम से उत्तरी बर्मा ले गये, तभी प्रारम्भ हुआ।

इन डिवीजनों ने अमेरिकन सेनाओं के जंगल में लड़नेवाले सैनिकों की काफी सहायता की है जो कि ब्रिगेडियर जनरल फ्रैंक मेरिल के सेनापतित्व में लड़ रहे हैं। इन डिवीजनों ने ४८९९ फीट ऊँची पर्वत-मालाओं की हुकांग और मोगांग की निचली घाटियों में बड़ी वीरता से संग्राम किया है। इनके साथ हजारों सड़क बनाने वाले इस सड़क का निर्माण करते थे। छुट्टी के समय में काम करनेवाले मजदूरों ने सड़क के किनारे १०वीं अमेरिकन सेना को वायुयान उतरने के लिये चौरस मैदानों को बनाया। जिन पर सेना की बढ़ती हुई टुकड़ियों को रसद पहुँचाने के लिए वायुयान उतरा करते थे।

जनरल पिक के इंजीनियरों और उसके आदमियों ने इस सड़क का निर्माण किया है। ये इंजीनियर प्रसिद्ध अलास्का-कनाडा रोड को बना चुके थे। सड़क के कुछ भाग तो इतने दुर्गम हैं कि १ मील सड़क बनाने के माने ७,५०,००० टन की चट्टानों का हटाना और उस पर ३०० गज की चौड़ी नाली का निर्माण करना था। यही नहीं, बल्कि उन बनानेवालों ने वर्षा और जाड़े में जापानियों की बमवर्षा के विपरीत भी कार्य को पूरा किया है।

जिस समय स्टिलवेल की सेनायें मोगांग की घाटी में लड़ रही थीं। उस समय ब्रिटेन की भारतीय और कैचिन सेनाओं ने जापानियों को हर्टज घाटी से खदेड़ कर साफ किया। यह घाटी ६० मील पूर्व है। उस समय जापानी फौजें टुकड़ियों में विभक्त थीं, जिनका खदेड़ना आसान नहीं था।

मार्च सन् १९४४ ई० में मित्र सेनाओं ने उत्तर बर्मा में लड़नेवाली जापानी सेनाओं का बर्मा रेलवे से सम्बन्ध-विच्छेद कर दिया था। यह विच्छेद-स्थान मितकिना और मोगाङ्ग के नीचे था। ठीक उसी समय जापानी सेनायें पश्चिमी बर्मा से भारतवर्ष के मनीपुर स्टेट की ओर बढ़ने लगीं। उनका मुख्य उद्देश्य था आसाम-बंगाल रेलवे तथा ब्रह्मपुत्र नदी तक पहुँचना, क्योंकि इन्हीं मार्गों द्वारा लीडो को रसद-सामग्री भेजी जाती थी। अगर वे यहाँ तक पहुँच जाते तो उक्त सड़क का निर्माण-कार्य बिलकुल रुक जाता और चीन को जापानियों के आगे घुटने टेकने पड़ते। लेकिन ब्रिटिश और भारतीय सेनाओं ने महीनों भयंकर युद्ध करके आक्रमणकारी जापानियों को मनीपुर से बाहर भगा दिया।

लीडो सड़क बनानेवाले जनरल स्टिलवेल

धीरे धीरे अमेरिकन और चीनी दस्तों ने १७ मई को मिटकिना के दक्षिणी वायु-युद्ध में प्रबलता प्राप्त की। वायुयानों द्वारा उन्होंने प्रबल आक्रमण किये। मितकिना का युद्ध ४ अगस्त को समाप्त हुआ। ठीक एक महीने बाद चीनी और अमेरिकन सेनाओं ने पश्चिम में ३० मील मोगांग से भी जापानियों को निकाला।

मितकिना के युद्ध ने मित्रों की रसद पहुँचानेवाली चीन को एक दूसरी सड़क भी प्रदान की है। जापानी लड़ाकू वायुयान मितकिना के मैदान में अमेरिकन सामान वाहक विमानों पर हिमालय पर्वत की उत्तरी चोटियों पर भी आक्रमण करते थे। लेकिन अब वे ही वायुयान बिलकुल दक्षिण से कम खतरेवाले मार्ग से जाते हैं।

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगापसाद पाण्डेय, एम० ए०
(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

······ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्यांकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। ······छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी के भावी लेखकों से

श्रेष्ठ लेखक किस प्रकार बना जा सकता है ?

लेखक श्री सुरेशसिंह

> अब कविताओं का युग चला गया। यह गद्य का युग है। दूसरे देशों में मामूली विषयों पर सैकड़ों किताबें निकल रही हैं। हमारे यहाँ वैज्ञानिक विषयों पर कुछ लिखा नहीं गया। यदि हिन्दी के दस-पाँच लेखक ही ऐसे निकल आवें जो हिन्दी में विज्ञान के अछूते विषय पर पुस्तकें लिखें तो हिन्दी का बड़ा कल्याण हो। यह विचार-पूर्ण लेख हिन्दी के लेखकों का ध्यान एक नई दिशा की ओर आकर्षित करता है।

लेखक बनने का प्रलोभन जहाँ दुनिया के बड़े-बड़े प्रलोभनों में से एक है, वहीं लेखक बनने के समान कठिन काम भी संसार में दूसरा नहीं है।

"लेखक बनाये नहीं जाते बल्कि पैदा होते हैं" इस कथन में सत्यता ज़रूर है, लेकिन इसमें निराश होने की कोई बात नहीं है। जिसमें लिखने की सोई हुई शक्ति छिपी होगी उसी में तो लिखने की इच्छा जागेगी? उदाहरण के लिए आप मेरी इस लेखमाला के पढ़ने की इच्छा रखते हैं क्यों? इसलिए तो नहीं कि आप इसमें कहानी या कविता का रस लें, बल्कि इसलिए कि आपकी लिखने की इच्छा कुछ प्रोत्साहन चाहती है, कुछ मार्ग-प्रदर्शन चाहती है—यही क्या यह जाहिर नहीं करता कि आपमें लेखन-कला का अंकुर मौजूद है। अब यदि उसका ठीक से पोषण हुआ तो कोई वजह नहीं कि आप लिखने में कामयाब न हो सकें।

श्री सुरेशसिंह।

मैं अपने को ऐसे लेख लिखने में सर्वथा अयोग्य पाता हूँ जिनमें भावी लेखकों के लिए नियम निर्धारित किये गये हों, लेकिन जब तक हमारे साहित्य के महारथी इस विषय पर कोई अच्छी पुस्तक नहीं लिखते मेरे १०-१५ वर्ष के साहित्यिक जीवन के अनुभव नये लेखकों को कुछ न कुछ सहायक तो होंगे ही, क्योंकि नये लेखकों को किन-किन दिक्क़तों का सामना करना पड़ता है, यह मेरे लिए अभी ताजा ही है।

मनुष्य को लेखक बनने के लिए बहुत साधना करनी पड़ती है। दीन-दुनिया को भूलकर एक पागलपन के आलम में रहना पड़ता है तब कहीं मा सरस्वती की कृपाकोर का एक अंश मिलता है। फिर हिन्दी में लिखने को अपने जीवन का उद्देश्य बनाना तो तपस्या करने से भी कठिन है। लक्ष्मी और सरस्वती का वैमनस्य वैसे सभी साहित्य के लिए लागू न हो, लेकिन हमारी हिन्दी के लिए तो इसमें शुबहा हो ही नहीं सकता। मैंने तो अभी तक हिन्दी के किसी लेखक को ऐसा नहीं देखा जिससे लक्ष्मी न रूठी हो, और जो केवल अपनी लेखनी के बल पर अपनी जीविका चला रहा हो।

इसलिए इस कँटीले मार्ग पर चलने के पहले खूब सोच-समझ लेना चाहिए। यदि आप इस आशा में हैं कि आप हिन्दी के लेखक बनकर शीघ्र ही मालामाल हो जावेंगे तो इस मरीचिका के चक्कर में न पड़ें। अगर आप यह उम्मीद कर रहे हों कि जल्द ही आपका चारों ओर नाम हो जावेगा तो यह भी आपकी भूल है। लेकिन बावजूद हर तरह की नाउम्मेदियों के यदि आपके जी में अपनी भाषा के लिए आदर है, सम्मान है और उसकी उन्नति के लिए जी में कुरबानी की अटल भावना है तो कोई भी भय और बाधा आपका मार्ग नहीं रोक सकती। आपके स्वागत के लिए मेरे लेखों के पृष्ठ पाँवड़े बनने को तैयार हैं—आप ज़रूर लिखें और अपनी भाषा का गौरव बढ़ायें।

एक बात हम लोगों को समझ लेनी चाहिए कि अब कविता का युग समाप्त हो गया है। प्राचीन काल में जब मनुष्यों के पास सारे ज्ञान को लिपिबद्ध करने के साधन की कमी के कारण पद्य का आश्रय लेना पड़ा था—अब बीत गया है। अब तो वह भी समय नहीं रहा जब कवियों की ओजपूर्ण कविताएँ युद्ध के लिए ज़रूरी सामग्री थीं। अब तो कविता शृङ्गार-रस में सारे देश को डुबोकर उसे अनंत की ओर ले जाकर न जाने कौन-सी मूक वेदना सुनाना चाहती है। उसका काम समाप्त हो गया है। अब समय आया है गद्य का। सारे संसार के साहित्य में उलटफेर हो गया है, दूसरे देशों ने ऐसे-ऐसे तेजस्वी लेखक पैदा किये हैं, जिनकी लेखनी ने देश का भाग्य-परिवर्तन कर दिया है, जिनकी क़लम की ताक़त से वहाँ इनक़लाब हो गया है। फिर हमारा देश कैसे सोता रहेगा? उसको भी अपने साहित्य के भंडार को भरना पड़ेगा! प्रत्येक विषय का उत्तम साहित्य यदि हमारे यहाँ शीघ्र नहीं तैयार होता तो विद्या का प्रकाश कैसे फैलेगा और अविद्या-अंधकार में स्वतंत्रता सदैव सपना ही बनी रहती है।

इसके पहले कि हम लिखने के लिए कुछ मोटे-मोटे नियम जानें, हमें एक बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि जैसे पद्य-साहित्यक-निर्माण का समय समाप्त होकर अब गद्य-साहित्य की तरक्क़ी का समय आ गया है, उसी तरह हमारे साहित्य के दृष्टिकोण में और उसकी पृष्ठ-भूमि में भी एक परिवर्तन हो गया है। यही उन्नति का लक्षण है। यदि हम दुनिया के इन्क़लाब की अवहेलना करके अपनी खिचड़ी अलग पकायेंगे तो हमारे साहित्य की उन्नति रुककर हमें कूप-मंडूक ही बना रहने देगी।

पहले हमारे साहित्य की पृष्ठ-भूमि थी हमारा पौराणिक साहित्य—जिसमें रस को शृंगारी और भक्त कवियों ने अपने रुचि के अनुसार पीकर सारे देश को उसी रस में सराबोर कर दिया था। क्या गद्य क्या पद्य सब पर इसी पौराणिक कथा-साहित्य की छाप रही, लेकिन अब दुनिया खसककर बहुत आगे पहुँच गई है। अब हमारे साहित्य की पृष्ठ-भूमि है इतिहास और विज्ञान, इससे अब जो साहित्य इन विषयों से दूर नहीं जावेगा, वही भविष्य में स्थायी साहित्य कहा जावेगा।

दूसरे देशों में मामूली से मामूली विषयों पर आपको सैकड़ों पुस्तकें मिल जावेंगी, लेकिन हमारी हिन्दी में अगर गद्य में कुछ मिलेगा भी तो बस कहानियाँ। कहानियों के मैं ख़िलाफ़ नहीं हूँ, लेकिन ऐसा भी तो न होना चाहिए कि और सब विषय छोड़ दिये जावें, और हम लोग कहानियाँ ही सुनते रह जावें।

हमारे यहाँ वैज्ञानिक विषयों पर कुछ लिखा ही नहीं गया है मौलिक पुस्तकों की कौन कहे, जो अनुवाद हुए हैं वे भी नाममात्र को हैं। इसके कई मुख्य कारण अवश्य हैं, जैसे शासकों की राजनैतिक चाल, विश्वविद्यालयों का हिन्दी को माध्यम न बनाना, नरेशों और धनिकों की हिन्दी के प्रति उदासीनता और आपस की लताहुज—लेकिन सच्चा लेखक तो इन बातों से परे होता है—उसको तो अपनी भाषा की सेवा की लगन रहती है। उसे न तो पुरस्कारों की फ़िक्र रहती है और न ऊँची कुर्सियों की। उसे तो अपने नाम की भी भूख नहीं रहती—वह तो जो कुछ भी अपनी भाषा की सेवा करता है, अपना कर्त्तव्य समझकर। हमारे देश का तो यह आदर्श रहा है कि बड़े-बड़े विद्वानों ने अपना सारा जीवन साहित्य की सेवा में लगा दिया, और आज हम सिवा व्यास के उनका असली नाम तक नहीं जान सके। फिर हम कैसे आशा न करें कि हमारे भावी लेखकों में सेवा, त्याग और कर्त्तव्य की पहचान न होगी।

यदि मेरे इन बीस लेखों से बीस न सही दस, दस भी न सही पाँच लेखक भी ऐसे निकल आवें, जो हिन्दी के पाँच अछूते वैज्ञानिक विषयों पर ही लिखने को अपने जीवन का उद्देश्य बना लें, तो समय आने पर लोग देखेंगे कि उन्होंने अकेले जितना काम किया है, उतना ये बड़ी-बड़ी संस्थाएँ एक मुद्दत में नहीं कर सकीं।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

बार बार होनेवाले ज्वर से मुक्त हो जाइए

नियो द्राक्षारिष्ट

सदियों से भारतीय वैद्यक-शास्त्र ने अंगूर के रस के पौष्टिक तत्त्व का लोहा माना है।

अंगूर के रस, लोहे और तिक्त के वैधानिक रीति से मिश्रण के बाद तो नियो-द्राक्षारिष्ट और भी गुणकारी हो गया है। बार बार होनेवाले ज्वर या सर्दी यह आपको मुक्त कर स्वास्थ्य-लाभ में मदद पहुँचायेगा।

अन्य दवाएँ:—

नियो-च्यवनप्राश— आधुनिक वैधानिक प्रणाली से प्रस्तुत कालसियम और विटामिन-युक्त एक आयुर्वैदिक बलकारक औषधि।

कोलाटोन—एक बढ़िया लीवर टानिक।

नियो-द्राक्षारिष्ट
NEO-DRAKSHARISHTA

बिड़ला लेबोरेटरीज़

मालिक—दि अपर गैंजेज़ सुगर मिल्स लिमिटेड।

हेड आफिस—८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।

यू० पी० तथा दिल्ली के बायलेजिकल एंड फरमास्युटिकल प्रोडक्टस के सोल वितरक गांउसन्स एंड कम्पनी चाँदनी चौक, पोस्ट बक्स नं० ५२ दिल्ली।

फिलिपाइन की नई लड़ाई

जापान के लिये खतरे का कारण क्यों है ?

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

फिलपाइन का युद्ध एक अरसे से चल रहा है। इधर कुछ दिनों से यहाँ के युद्ध ने एक नया रूप धारण किया है। इस लेख के विद्वान् लेखक ने फिलीपाइन द्वीपों का इतिहास बताते हुए इस युद्ध पर विचारपूर्ण प्रकाश डाला है। लेख मनोरंजक और विचारपूर्ण है।

फिलिपाइन नाम के टापू एशिया के पूर्व में खुले प्रशान्त सागर में अवस्थित हैं। चीन के प्रसिद्ध बन्दरगाह हांगकांग से इनकी निकटतम दूरी सात सौ मील से अधिक है। चौदहवीं सदी में पहले पहल स्पेन और पुर्तगाल के व्यापारियों ने इनका पता लगाया था, किन्तु योरप के उन दिनों के धर्म-गुरु पोप की एक व्यवस्था के अनुसार ये द्वीप उस पूर्वी अक्षांश में अवस्थित थे जिस पर स्पेन की विजयपताका फहराती थी। अतः स्पेन के सम्राट् फिलिप के नाम पर इनका नाम फिलिपाइन पड़ गया था। अठारहवीं सदी में एक बार अँगरेज़ों और स्पेनवालों के युद्ध में ये द्वीप अँगरेज़ों के हाथ में भी चले गये थे किन्तु फिर स्पेन वालों को मिल गये। चार सौ मील लम्बे अपने शासन में स्पेनवासियों ने इन द्वीपों में इसाइयत का प्रचार करना मुख्य कार्य समझा था। उसका ही आज परिणाम है कि फिलिपाइन के मध्य भाग की अधिक जनता रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय की अनुयायी है और वहाँ के सब बड़े-बड़े आदमियों के नाम भी इसाइयत वाले हैं। इन द्वीपों के दक्षिणी पार्श्व में अवस्थित मिण्डानाडू भी के बड़े टापू की अधिकांश जनता इस्लाम की उपासक है। ये लोग पड़ोस के जावा, सुमात्रा और मलाया आदि प्रदेशों से यहाँ आकर बसे हैं। उत्तरी द्वीपों तथा मध्यवर्त्ती द्वीपों के पहाड़ी भागों में अब भी अग्निपूजक लोग लाखों की संख्या में पाये जाते हैं, यद्यपि शिक्षित होने के बाद ये लोग भी इसाइयत को अपनाने लगते हैं।

राष्ट्रीयता और भाषा

फिलिपाइन द्वीपसमूह के कुल टापुओं की संख्या सात हज़ार से अधिक है, किन्तु इनमें लुज़न, मिण्डानाडू, लेटे, मिण्डोरो आदि टापू बड़े और मुख्य हैं। इन टापुओं का कुल क्षेत्रफल ११४४०० वर्गमील और आबादी एक करोड़ साठ लाख है। भिन्न-भिन्न द्वीपों में भिन्न-भिन्न भाषायें बोली जाती हैं किन्तु, टागालोग नाम की बोली सर्वत्र बोली और समझी जाती है किन्तु स्पेन के लम्बे शासन में फिलिपाइन की राज-भाषा स्पेनी रही। सन् १८९८ में अमेरिका और स्पेन में जो युद्ध छिड़ा था उसके ही परिणामस्वरूप क्यूबा, फिलिपाइन और अन्य अनेक द्वीप स्पेन के हाथ से निकलकर अमेरिका के कब्ज़े में चले गये थे। अमेरिका ने अपने पड़ोसी क्यूबा को तो उन्हीं दिनों स्वतंत्र मान लिया था, लेकिन फिलिपाइन आज भी उसके मातहत चले जाते हैं। अमरीकी शासन में आने पर फिलिपाइन की राजभाषा स्पेनी से बदलकर अँगरेज़ी हो गई। हाँ, पिछले चालीस साल में वहाँ के शासन-तंत्र में सुव्यवस्था अवश्य हो गई है। प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है और स्थानीय शासन में भी फिलिपिनो लोगों को पूर्ण अधिकार दे दिये गये हैं, किन्तु राजभाषा अब भी अँगरेज़ी ही चली जाती है। फिलिपाइन के लोग प्रतिवर्ष उच्च शिक्षा के लिए हज़ारों की तादाद में अमेरिका में जाते हैं और वहाँ से राष्ट्रीय आजादी की भावना से ओतप्रोत होकर आते हैं। इसका ही परिणाम है कि गत महायुद्ध के बाद से इन टापुओं में राष्ट्रीय स्वतंत्रता का आन्दोलन ज़ोर मारता रहा है। इस अवधि में स्वयं अमेरिका की पार्लमेंट कांग्रेस के सदस्यों ने भी अनेक बार इन टापुओं को आजादी देने का आन्दोलन और प्रस्ताव किये है। लेकिन अमेरिका भी संसार के अन्य राष्ट्रों की भाँति थोड़े-बहुत परिमाण में अपना साम्राज्य बनाये रखने की इच्छा रखता है। वह स्वयं महादेश है अतः उसे अपनी आवश्यकतायें पूरी करने के लिए अधिक साम्राज्य की आवश्यकता नहीं है। फिर भी पिछले पच्चीस वर्ष में फिलिपाइन को स्वराज्य न देना उसकी साम्राज्य-भावना को स्पष्ट कर देता है। हाँ, अमरीकी पार्लमेंट के सदस्यों के आग्रह और फिलिपिनो जनता की कोशिश का यह नतीजा अवश्य हुआ है कि सन् १९३६ के रीडिंग्ज़ मैकडफी ऐक्ट के अनुसार इन टापुओं को स्वतंत्र करने की अवधि जुलाई सन् १९४६ तक सीमित कर दी गई है। इसके बाद अमेरिका का कब्ज़ा फिलिपाइन पर न रहेगा। मध्यवर्ती काल में फिलिपाइन संयुक्त परिवार (कामनवैल्थ) नाम से एक सीमित स्वराज्य सरकार यहाँ कायम की गई है। इस स्वराज्य-सरकार के प्रथम राष्ट्रपति मैनुएल क्वेज़ोन चुने गये थे। इस स्वराज्य-सरकार को मुद्रा, विनिमय, आयात-निर्यात प्रवास और विदेशों से सम्बद्ध मामलों में निर्णय करने का अधिकार नहीं दिया गया है। शेष मामलों में शिक्षा, चिकित्सा, कर, जंगल, व्यापार व बन्दरगाहों आदि के निर्माण में क्वेज़ोन की सरकार पूर्णतया स्वतंत्र है। वह सरकार मुद्रा, विनिमय, आयात, निर्यात आदि के विषयों पर भी अपनी राय दे सकती है, किन्तु अन्तिम निर्णय अमेरिका के हाथ में रहेगा। इस सीमित स्वराज्य की प्राप्ति पर फिलिपाइन की सरकार ने पहला काम यह किया कि प्राथमिक शिक्षा के लिए इन द्वीपों की प्रचलित भाषा टागालोग को माध्यम करार दिया। शिक्षा मंत्री जार्ज बोकोबो अमेरिका में शिक्षा पाये हैं, किन्तु उन्हें अपने देश की संस्कृति, सभ्यता और भाषा से प्रेम है, अतः उन्होंने सन् १९३९ में टागालोग भाषा के माध्यम की यह योजना सारे देश के स्कूलों में प्रचारित कर दी। इस योजना में अँगरेज़ी का निष्कासन नहीं किया गया था, केवल उसके साथ टागालोग को भी शामिल किया गया था। परिणाम यह हुआ कि फिलिपिनो बच्चे अँगरेज़ी को छोड़कर टागालोग को अपनाने लगे। इससे कुछ फिलिपिनो और अधिकांश अमरीकी अफ़सर बहुत नाराज़ हुए। अमेरिका की कांग्रेस में भी इसकी चर्चा हुई, किन्तु शिक्षा-मंत्री बोकोबो अपने आन्दोलन में लगे रहे।

फिलिपाइन द्वीपसमूह

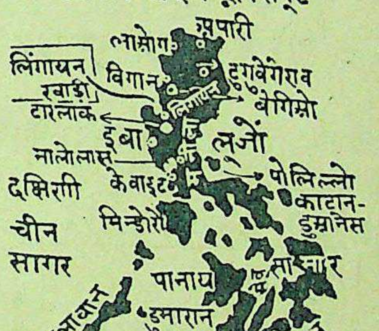

सन् १९४६ की अवधि में अभी डेढ़ वर्ष अवशिष्ट है। इस बीच सन् १९४२ के मध्य भाग से फिलिपाइन नाम के ये टापू अमरीकी शासन से निकलकर जापानी अधिकार में चले गये हैं। प्रशान्त सागर में इस युद्ध के प्रारंभ होने पर अमेरिका के प्रसिद्ध सेनापति जनरल मैकआर्थर फिलिपाइन की राजधानी मनीला में थे। जापानियों के हमले का उन्होंने व उनकी अमरीकी सेना ने सख्त मुक़ाबला किया था, किन्तु यह एकान्त सत्य है कि पूर्वी एशिया के अन्य देशों के समान फिलिपाइन के निवासी भी जापान के इस हमले में अपने देश की आजादी के स्वप्न देखते थे। यह स्वप्न ग़लत थे यह सत्य है, क्योंकि कोई भी देश दूसरे देश को आज़ाद कराने के लिए नहीं अपितु कब्ज़ा करने के लिए उस पर हमला करता है। यही बात जापान के हमले पर भी लागू है, किन्तु हमला करते समय जो नारा जापानी राजनीतिज्ञों ने बुलन्द किया था वह था—एशिया एशियावासियों के लिए है, जापान एशिया को योरप से स्वतंत्रता चाहता है। इस नारे ने फिलिपिनो जनता पर जादू का असर किया और वह स्वतः ही जापान को आत्मसमर्पण कर बैठी। इस पर वहाँ की सरकार व जनरल मैकआर्थर भाग कर आस्ट्रेलिया चले गये और जापान का फिलिपाइन पर पूर्ण अधिकार हो गया। फिलिपाइन में गन्ना, नारियल, चावल व कोयला पर्याप्त मात्रा में होता है। इस युद्ध से पहले अमेरिका यहाँ की चीनी पर ही आश्रित था, अब वह चीनी, चावल व कोयला जापान को भरपूर मात्रा में मिलता है, किन्तु जापान को सर्वाधिक लाभ यह हुआ है कि वह इन

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

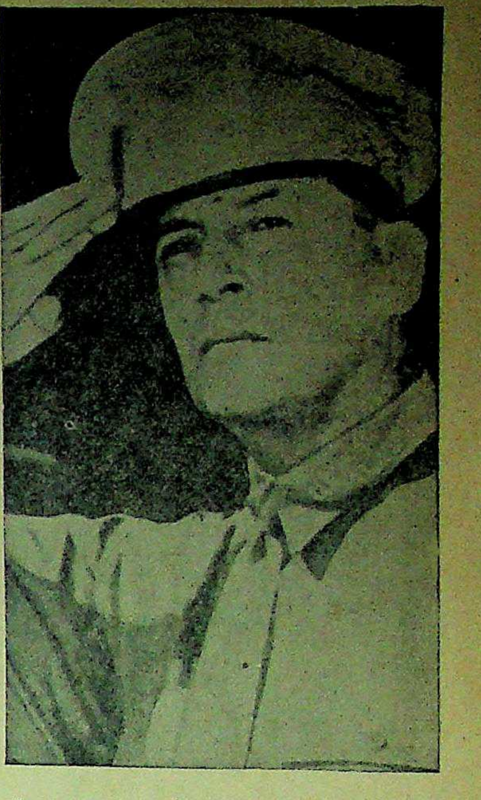
फिलीपाइन्स के युद्ध-क्षेत्र के सेनापति जनरल मैकआर्थर

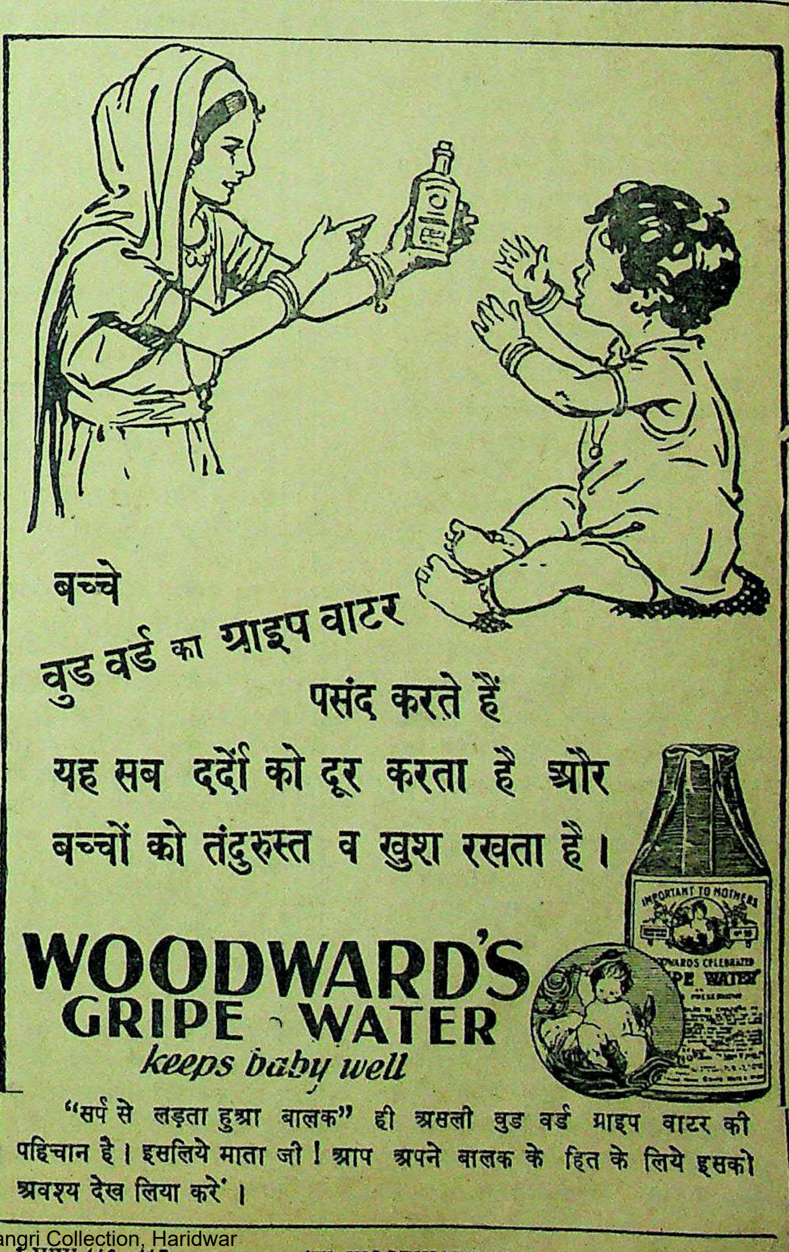

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।
WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well
"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।
I-WW 113—117
W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND.

रणजीत मूवीटोन का 'शाहंशाह बाबर'

क्या बाबर का वास्तविक चरित्र-चित्रण हुआ है ?

लेखक, श्री उमेश जोशी

बंबई की फिल्म कंपनी रणजीत मवीटोन ने इस वर्ष 'बाबर' का महान् जीवन-चरित फिल्म चित्र द्वारा प्रस्तुत किया है। किन्तु दुःख है कि सम्राट् बाबर के जीवन को फिल्म में लाकर निर्देशक महोदय इतिहास की रक्षा नहीं कर पाये। आजकल ऐतिहासिक चित्र बनाना एक तरह का फैशन-सा हो गया है। बाबर फिल्म को देखकर यह ज्ञात होता है कि इसके निर्देशक ने 'बाबर' के जीवन का अध्ययन भली-भाँति नहीं किया।

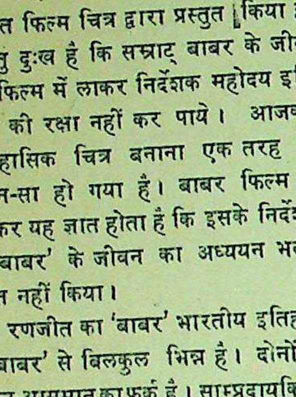

भारतीय रजतपट की प्रसिद्ध अभिनेत्री खुर्शीद।

रणजीत का 'बाबर' भारतीय इतिहास के 'बाबर' से बिलकुल भिन्न है। दोनों में जमीन-आसमान का फ़र्क़ है। साम्प्रदायिकता के ढाँचे पर इतिहास का आवरण डाला गया है। इस चित्र के डायरेक्टर हैं मिस्टर वजाहत मिर्जा। क्या इस्लामी प्रचार के लिए 'सम्राट् बाबर' बादशाह को रजतपट पर लाया गया है? मिर्जा साहब को विशाल दृष्टिकोण से काम लेना चाहिए था। बाबर की जिन्दगी की घटनाओं को इस क़दर तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया है कि रणजीत के "शाहंशाह बाबर" का नया स्वरूप ही निर्मित हो जाता है। बाबर के इस नये स्वरूप को देखकर हमें आश्चर्य होता है। चित्र की कहानी इस प्रकार है:—

बाबर अपनी सेना को इकट्ठी करके हिन्दुस्तान के बादशाह इब्राहीम लोदी पर हमला करता है। इब्राहीम लोदी की इस लड़ाई में हार होती है। बाबर अपने बेटे हुमायूँ को राज्य का उत्तराधिकारी बनाता है। हुमायूँ को वह कठोर शासक बनाना चाहता है। इसलिए उसे वह मुहब्बत की दुनिया से महरूम रखने लगता है। लेकिन हुमायूँ हमीदाबानू के हुस्न की ओर खिचता जाता है और इतना खिचता है कि वह स्वयं बीमार पड़ जाता है। बाबर ईश्वर से दुआ माँगता है अपने बेटे की सेहत के लिए, साथ ही हमीदाबानू को भी हुमायूँ के सामने खड़ी कर देता है, जिसको देखकर हुमायूँ का दिल प्रसन्न हो उठता है। इधर बाबर भी बीमार पड़ जाता है, क्योंकि उसने ख़ुदा से ऐसी ही इच्छा प्रगट की थी। थोड़े दिनों के बाद राज्य की बागडोर हुमायूँ को सौंपकर बाबर इस दुनिया से बिदा हो जाता है।

इस चित्र की कहानी में और इतिहास की वास्तविकता में मेल नहीं खाता। इस फिल्म में यह सिद्ध किया गया है कि बाबर ने हिन्दुस्तान पर जो हमला किया था वह गुलामी से निजात दिलाने के लिए, न कि भारत को सोने की चिड़िया समझकर। दूसरी कमज़ोरी इस चित्र में यह है कि मुहब्बत का दरिया ख़ूब जोरों से बहाया गया है, जिसमें बाबर का महान् व्यक्तित्व बह गया है। सारे चित्र में हमीदाबानू का ही प्रेम नज़र आता है। क्या रणजीत ने इतिहास के जगमगाते हीरे के नाम पर मुहब्बत की दुनिया बसाने का ठेका ले लिया है?

फिल्म के संवाद भी सुन्दर नहीं हैं। गीत अवश्य कुछ आकर्षक हैं। वह इसलिए कि उसके लेखक पं० इन्द्र जी हैं। इस चित्र में पंडित इन्द्रजी के सिर्फ छः गीत हैं, शेष किसी और के हैं। म्यूजिक भी श्रेष्ठ है। म्यूजिक डायरेक्टर का नाम है श्री खेमचन्द्र। कलाकारों में खुर्शीद और सुलोचना चटर्जी दोनों ही का अभिनय अच्छा और देखने लायक है। सुशीलकुमार और शेख-मुख्तार अभिनय में सफल नहीं हुए। चित्र का निर्देशन भी सड़ियल है। "मेक-अप" भी दुरुस्त नहीं। सब मिलाकर चित्र साधारण है।

जब कभी आप कोई अनावश्यक वस्तु ख़रीदते हैं तो यही होता है। अधिकतर वस्तुओं के भाव असाधारण रूप से चढ़े हुए हैं; इसलिए जब कभी आप कोई ऐसी वस्तु ख़रीदते हैं जिसकी आवश्यकता वास्तव में आपको नहीं है तो आप अपना पैसा नष्ट करते हैं। बुद्धिमानी से काम लीजिए। जब तक बहुत ज़रूरी न हो तब तक कोई चीज़ न ख़रीदिए। लड़ाई के दिनों में ख़रीदने से बेजा दाम देने पड़ते हैं।

अगर आप जवाहरात, ज़मीन, मकान, सामग्री या तैयारी माल ख़रीदते हैं, तो आप अपने धन को ख़तरे में डालते हैं। इन चीज़ों के दाम मुक़र्रर ही नहीं हैं। भूल न कीजिए, अब भाव उतार पर हैं, चढ़ाव पर नहीं।

इन मदों में रुपया लगाना सुरक्षित भी है और लाभजनक भी:—

★ बीमा,
★ सहकारिता (कोआपरेटिव) समिति,
★ सेविंग बैंक,
★ पोष्ट आफिस सेविंग बैंक,
★ सरकारी ऋण और
★ नेशनल सेविंग सर्टीफिकेट।

सुरक्षित मदों में रुपया लगाने से गो कि मुनाफा कम मिलता है, मगर पूँजी तो सुरक्षित रहती है—और लड़ाई के दिनों में यह बात सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

रुपया
बचाइए
और
समझदारी से
लगाइए

राष्ट्र के नाम राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे की अपील

AAA 1112—Hindi.

शृंगार

मूल लेखक, श्री गजेन्द्रकुमार मित्र

अनुवादक, श्री निशीथकुमार राय, बी० ए०

> प्रेममोहन जब बाजार से लौटे तो रजनी ने उन्हें ले जाकर दिखाया कि रेणु खिड़की से झाँक रही है। रेणु पति के आने की प्रतीक्षा में सजने लगी, फिर क्या हुआ, यह इस मनोरंजक कहानी में पढ़िये। कहानी बड़ी ही मनोरंजक और भावपूर्ण है।

वसन्त पंचमी के दिन प्रेममोहन जी ने अपने दामाद जयन्त को निमन्त्रण दिया था। उसी के लिए बाज़ार गये थे। खाने-पीने के सामान का बोझ लादकर जब वह घर लौटे तो पसीने से तर हो रहे थे।

"रेणु की माँ, देखो, कोई चीज़ लाने को मैं भूल तो नहीं गया।" वह पत्नी से बोले। रेणु की माँ रजनीदेवी मुस्कुरा रही थीं। उन्हें मुस्कुराते देखकर प्रेममोहन ने चकित होकर पूछा––"क्या बात है.. ?"

"आओ, दिखायें क्या बात है" यह कहकर वह ऊपर चलीं। प्रेममोहन भी बाध्य होकर ऊपर जाने लगे। पत्नी के पीछे-पीछे बरामदे के पार वे कमरे के पास पहुँचे।

उनका मकान आम रास्ते पर न होने पर भी इस कमरे की खिड़की से रास्ते का थोड़ा सा हिस्सा दिखाई पड़ता था। प्रेममोहन को रजनीदेवी ने दिखाया कि उसी कमरे में उनकी नई ब्याही बेटी रेणु खिड़की के छड़ पर सिर रखकर खड़ी है। उसकी उत्सुक आँखों की दृष्टि रास्ते की ओर थी। देर तक छड़ पर सिर रखने के कारण उसके माथे पर छड़ का लाल निशान बन गया था।

पहले प्रेममोहन की समझ में कुछ नहीं आया, परन्तु थोड़ी ही देर में वे समझ गये। उनके होठों पर भी मुस्कुराहट दिखाई पड़ी। प्रसन्न होकर वह पत्नी के साथ नीचे उतर आये।

रजनी नीचे आकर बोली––"आजकल की लड़कियाँ शादी होते ही स्वामी को छोड़कर एक मिनट भी नहीं रह सकतीं।"

प्रेममोहन ने उत्तर दिया––"नहीं, आजकल की लड़कियाँ ही केवल ऐसी नहीं हैं। तुम भी तो कभी उसी खिड़की के पास, उसी तरह मेरे इन्तज़ार में खड़ी रहती थीं––उसका क्या अपराध? जैसी माँ वैसी बेटी!" यह कहकर वह हँस पड़े। रजनी लज्जित होकर रसोईंघर में चली गई। चाय पीकर प्रेममोहन फिर बाज़ार की ओर चले। रेणु की शादी के बाद दामाद का यह पहला आगमन था। वह चाहते थे कि उसके सत्कार में किसी बात की कमी न रहे। अमीर न होने पर भी उनकी आमदनी अच्छी थी। ख़र्च अधिक नहीं था। स्वयं, पत्नी, एक पुत्री एवं एक छोटा-सा लड़का! विधवा बहन भी साथ रहती थी। लेकिन उसके रहने से ख़र्च तो होता ही नहीं था, ऊपर से कुछ बचत ही थी। क्योंकि उसकी स्वतन्त्र आमदनी थी।

प्रेममोहन चले गये। रजनीदेवी घर के कामों में व्यस्त हो गईं। अभी काम बहुत बाकी है। कहीं दामाद आ पड़ा तब!

ननद सीता रसोईंघर में थी। खाना वह अच्छा बनाती थी इसी लिये इसकी ज़िम्मेदारी उसी पर थी।

कामों में व्यस्त रहने पर भी रजनीदेवी अपने मन से उस बात को नहीं भूल सकी थीं। उन्हें याद आ रहा था अपना यौवन! वह भी ठीक रेणु-जैसी उसी कमरे में––उसी खिड़की पर प्रेममोहन के न्तज़ार में खड़ी रहा करती थीं।

केवल यही नहीं, मायके में भी वामी के आने के दिन वह बाहरवाले रामदे में आती-जाती रहती थीं। इसलिए रवालों ने भी उनकी काफ़ी हँसी उड़ाई ी। रेणु का भाग्य अच्छा है कि घर में अधिक आदमी नहीं हैं, नहीं तो आज उसकी दशा.....।

रजनीदेवी मन ही मन हँस पड़ीं। ननद सीता उन्हें हँसते देखकर बोली––"क्यों हँस रही हो भौजी? क्या बात है?"

"जाकर देखो तुम्हारी भतीजी राह की ओर ताककर जयन्त के लिए किस तरह बेचैन है।" हँसती हुई रजनी बोलीं।

थोड़ी देर के लिए सीता का मुँह म्लान हो गया। यही आदत उसकी भी थी। वह आत्मसंवरण करके बोलीं––"क्या कह रही हो––फिर भी यदि भैया के लिए उसी तरह खड़ी न रहती!"

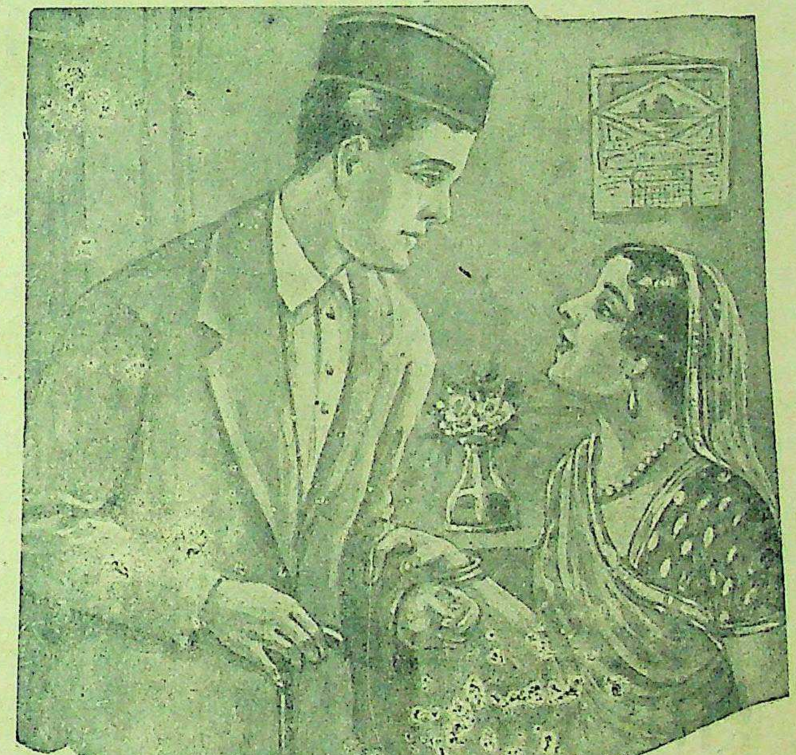

रजनीदेवी ने पति से कहा—आओ दिखायें क्या बात है।

"इसलिए तुम लोग कम परेशान करती थीं मुझे?" इसका उत्तर सीता देने जा रही थीं किन्तु रेणु को आते देखकर चुप हो गईं। शायद शाम को दुबारा स्नान करने जा रही थी वह रसोईंघर के पास खड़ी हो गई और फूफी से पूछा––"क्या बना रही हो फूफी? अच्छी सुगन्ध निकल रही है।" उसके माथे के दाग़ देखकर कुछ हँसकर सीता बोलीं, "तू कहाँ ग़ायब थी रेणु। तेरा दूल्हा आ रहा है, खाने-पीने का इन्तज़ाम तुझे करना चाहिए। हम क्यों करें? आ मेरे साथ तू भी काम में लग जा।"

"हाँ, मैं अभी करूँगी! न्योता तुम लोगों ने दिया है, इन्तज़ाम भी तुम्हें ही करना पड़ेगा।" यह कहकर रेणु गुसलखाने की ओर चली गई।

रजनीदेवी ननद से बोलीं––"तुम भी कैसी हो, उसका जी तो ऊपरवाली खिड़की पर है, ज़रा सजना भी ज़रूरी है इसी लिये नहाने आई है।"

(२)

थोड़ी देर बाद किसी काम के लिए ऊपर जाकर रजनीदेवी ने देखा कि रेणु शृंगार कर रही है किन्तु बालों को किसी प्रकार अपने मन के अनुसार झाड़ नहीं पा रही है। रेणु सुन्दरी नहीं है। माँ के अपूर्व रूप का तनिक भी अंश ईश्वर ने उसे नहीं दिया है। प्रेममोहन की तरह साधारण चेहरा। किन्तु बदसूरत नहीं कहा जा सकता। इसी कारण सजने की उसे बड़ी फ़िक्र रहती है।

रजनीदेवी का प्रतिबिम्ब सामनेवाले आईने में दिखाई दे रहा था। उन्होंने देखा कि अब भी उनमें सौन्दर्य है। अधिक सन्तान न होने के कारण बदन की गठन तनिक भी भद्दी नहीं हुई है। अपनी ओर देखकर पुत्री पर उन्हें दया आ गई। बेचारी, जब ईश्वर ने उसे रूप से वंचित किया है तो सजने की ज़रूरत है ही। वह स्नेहपूर्ण स्वर में बोलीं––"आ, मैं बाल को झाड़कर चुटीला बना दूं।" रेणु बोल उठी, "हाँ तभी तो ठीक होगा, नहीं माँ तुम्हारा पुराना फ़ैशन आजकल नहीं चलता। लोग हँसेंगे। तुम जाओ––मैं ठीक कर लूंगी।"

"रेणु, तो क्या मुझे बुर्क़ा पहनकर रहना चाहिए? अच्छा जो जी चाहे कर––" कह कर वह आहत होकर वहाँ से चली गईं। क्या वह वास्तव में इतनी बुढ़िया हो गई हैं कि उनके फ़ैशन को देखकर लोग हँसेंगे? रेणु क्या सोचती है? आज अठारह वर्ष हुए उनका विवाह हुआ है, उम्र भी उतनी नहीं जान पड़ती। ऐसा लगता है कि मानो हाल ही में उनकी शादी हुई है। उन्हें तब की लड़कियों और आज की लड़कियों में कोई फ़र्क़ नहीं जान पड़ता। आजकल की किशोरी भी उनके ज़माने की किशोरियों की तरह प्रणयलीला करती हैं। कौन-सा भेद हो गया है?

नीचे आते ही सीता ने मज़ाक किया। मगर उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्हें गम्भीर देखकर चकित होकर सीता बोलीं, "क्या बात है भौजी? इतनी गम्भीर क्यों हो?"

"कुछ तो नहीं।"

रजनीदेवी अपने मन से उस घटना की स्मृति को न हटा सकीं। उनके सौन्दर्य की प्रशंसा तो लोग किया ही करते थे, साथ ही उनके शृंगार की भी। विवाह के बाद भी कितनी ही लड़कियों को उन्होंने शृंगार करने का तरीक़ा सिखाया था। शृंगार करने में आजकल की तरह स्नो, पाउडर, क्रीम आदि का प्रयोग वह नहीं करती थीं। किन्तु कोई कभी उनके शृंगार में त्रुटि नहीं निकाल सका था। यह सब अधिक दिन की बात नहीं है, और आज उन्हीं को रेणु ने हँसकर उड़ा दिया। उनकी रुचि की इतनी अवज्ञा!

रेणु के जन्मग्रहण के पश्चात् वह घटना भी रजनीदेवी को याद आ गई। बीमारी से उनका चेहरा ख़राब हो गया था। ठीक उसी समय पत्र मिला, कि लम्बी अवधि के बारह वर्ष बाद उसके ज्येष्ठ ससुर लाहौर से आ रहे हैं, सो भी रजनी को देखने के लिये। ससुर तो घबरा उठे। एक दिन रजनी को उन्होंने स्पष्ट कह दिया,––"बहू, तुम्हारे रूप की प्रशंसा भैया को मैंने न जाने कितने ही पत्रों में लिख भेजा था, अब तुम्हें देखकर वह क्या सोचेंगे, ईश्वर ही जानता है!"

रजनी कोई उत्तर न देकर मन ही मन हँसी थी। इसके बाद जब ज्येष्ठ ससुर आये और रजनी का बुलौवा आया तब उसे देखकर केवल ज्येष्ठ ससुर ही नहीं बल्कि ससुर भी चकित हो गये थे। बाद में बहू से पूछा था––"रजनी, तुम क्या जादू जानती हो?"

आज उसी रजनी के शृंगार को ठुकराने की स्पर्धा रेणु करती है।

उनका ध्यान भंग हो गया एकाएक सीता बोली, "भाभी तुम कपड़े बदलकर साफ़-सुथरी क्यों नहीं हो लेती हो? जयन्त पहली बार ससुराल आ रहा है, हम दोनों को प्रणाम तो करेगा ही। आने में देर भी नहीं है। संध्या हो आई है।"

"तुमने अब तक अपना कपड़ा क्यों नहीं बदला?" वह व्यस्त होकर बोलीं।

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव

इस पुस्तक में लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ।॥) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

"मेरा कपड़ा बदलना कौन बड़ी बात है? इस धोती को छोड़कर एक दूसरी धोती पहन लूँगी।"

थोड़ी देर रुककर वह फिर बोली—"मुझे अभी चटनी और कढ़ी बनाना है। तुम तब तक नहा-धो लो। मैं अभी आ रही हूँ।"

रजनीदेवी ऊपर चली गईं। रेणु का शृंगार समाप्त हो चुका था। वह फिर पासवाले कमरे की खिड़की के पास जाकर खड़ी हुई थी।

रजनीदेवी सीता के कमरे में बैठकर बाल झाड़ने लगीं। आईने में अपना चेहरा प्रतिबिंबित देखकर अचानक उनकी दोनों आँखें जल उठीं। एक बार ज्येष्ठ ससुर को जादू दिखाया था, और अब बिटिया का गर्व चूर्ण कर दूँ क्या? उसकी स्पर्धा का उपयुक्त उत्तर मिल जाये। ठीक न होगा? मगर क्यों? कौन बहुत अधिक उम्र है उनकी? सजना तो प्रत्येक सधवा स्त्री को चाहिए।

वह उत्तेजित हो उठीं। अपने मन को समझाने लगीं। क्या नुक़सान है अगर वह ज़रा साफ़-सुथरा कपड़ा पहनें और बाल को अच्छी तरह सँवारें? यह कोई विशेष शृंगार भी नहीं है। केवल साधारण भाव से ज़रा सज लेंगी—सजना क्या, वेष-भूषा में थोड़ा-सा परिवर्तन। यह साधारण परिवर्तन तो शायद किसी की दृष्टि में भी नहीं पड़ेगा।

माँग काढ़ते समय रजनीदेवी का हाथ काँप उठा।

शृंगार समाप्त करके वह मैली धोती बदल रही थीं कि नीचे जयन्त का स्वर सुनाई पड़ा।

जयन्त इतना शीघ्र आ गया? अभी तो आठ ही बजे हैं। प्रेममोहन भी बाजार से नहीं लौटे कि दामाद का स्वागत करते। सीता नहा रही है इसलिए उन्हीं को पहले निकलना पड़ेगा।

जयन्त के ऊपर आते ही रेणु बरामदे में आई। बरामदे की बत्ती उसने पहले ही जला दी थी। रोशनी के उज्ज्वल प्रकाश में जयन्त पहले उसी को देखे, ऐसी इच्छा शायद उसके दिल में थी।

हुआ भी वैसा ही। चार आँखें एक होते ही दोनों के होठों पर मृदु हँसी का प्रकाश दिखाई पड़ा। वह सौजन्य दिखाकर बोला—?"माँ कहाँ हैं, उन्हें प्रणाम करना है।"

रेणु ने पुकारा—"माँ"।

"आ रही हूँ" देवी आवाज़ में सीता के कमरे से रजनीदेवी बोलीं। एकाएक रजनीदेवी बाहर आ गईं।

उज्ज्वल आलोक उनके चेहरे पर भी आ पड़ा था। उनको देखकर आश्चर्य के मारे जयन्त पत्थर की मूर्ति जैसा स्तब्ध खड़ा रहा। सास को तो कई बार उसने देखा है, मगर क्या वह इतनी सुन्दर हैं? वह उन्हें एकटक ताकता ही रह गया। प्रणाम करने की उसे याद ही भूल गई।

रेणु भी चकित हो गई थी। साधारण शृंगार एवं एक साधारण ढाका की धोती ने रजनीदेवी के चेहरे पर जैसे रूप का इन्द्र-जाल बिछा दिया था। उसे अपनी आँखों को विश्वास नहीं हो रहा था।

रजनीदेवी शृंगार कर रही थीं केवल पुत्री से प्रतिशोध लेने की इच्छा से। दामाद के बारे में उन्होंने विशेष कुछ सोचा ही नहीं था। किन्तु जयन्त को एकटक अपनी ओर ताकते देखकर उन्हें ख़याल आया कि जयन्त क्या सोच रहा होगा? छिः छिः! लज्जा से वह जैसे धरती में गड़ गईं। क्यों व्यर्थ में उन्होंने शृंगार किया? अब वहाँ से हठात् भाग जाना भी सम्भव नहीं था।

रजनीदेवी के सिर झुकाते ही जयन्त होश में आ गया। उनके पाँव पर पाँच रुपये रखकर उसने प्रणाम किया।

"दीर्घजीवी हो बेटा!" कहकर उन्होंने आशीर्वाद दिया। इसके बाद, "तुम लोग कमरे में बैठो—मैं अभी आ रही हूँ।" कह कर वह शीघ्रता से सामने से हट गईं।

वह सीढ़ी पर ही थीं कि जयन्त को कमरे में बैठाकर रेणु वहाँ आई। दबी आवाज में उसने कहा—"छिः छिः माँ, यह क्या किया? इस तरह सजकर दामाद के सामने आईं कैसे? न जाने क्या सोचा होगा उन्होंने? तुम्हें तो लज्जा-संकोच नहीं है लेकिन मैं कैसे मुंह दिखाऊँगी?

रजनीदेवी उत्तर दे सकती थीं—"क्यों, तूने ही तो कहा था कि मेरी रुचि पर लोग हँसेंगे। अब क्यों इतनी जलन? फिर भी अगर तुझ जैसी पाउडर, स्नो, क्रीम आदि इस्तेमाल किये होती—"लेकिन एक शब्द भी वह न बोलीं। विजय का गर्व उनमें नहीं रह गया था और न तो पुत्री से बदला लेने की भावना ही।

नीचे उतरते ही प्रेममोहन से भेंट हो गई। वह पूछ रहे थे, "जयन्त आ गया है क्या?" घंटों से रजनीदेवी को भी उन्होंने देखा नहीं था। उसकी ओर नज़र पड़ते ही वह चौंक उठे। उन्हें चकाचौंध-सी लगी। मगर थोड़ी ही देर में उनके होंठों पर व्यंग की हँसी झलक उठी। बोले, "यह क्या है रजनी! आज के रोज ही क्या इस तरह सजना चाहिए? दामाद कहीं यह न सोच ले कि बहू के बदले सास ही उसे रिझाना चाहती हैं।"

"चुप रहो!" कहकर आँचल को दोनों हाथों से फाड़कर वह बोलीं, "अब ठीक है? जाओ—महरी की धोती ला दो। पहनकर दामाद के सामने निकलूं।" उनका स्वर रुद्ध था। उत्तेजना से वे हाँफ रही थीं। बोलीं—"मैं भूल गई थी कि मैं तुम्हारी नौकरानी हूँ? साफ़ धोती पहनने का अधिकार भी मुझे नहीं है। अच्छा अब ऐसी भूल कभी न होगी।"

सीता रसोईघर से बाहर आई। पूछा, "क्या हुआ है भाभी?"

रजनी उससे लिपटकर रो पड़ी, "मेरी लड़की की शादी हो गई है तो मुझे एक साफ़ धोती पहनने का भी अधिकार नहीं, यह जो जी में आता, कहते हैं।"

कोई असावधानी से बातें करता है...

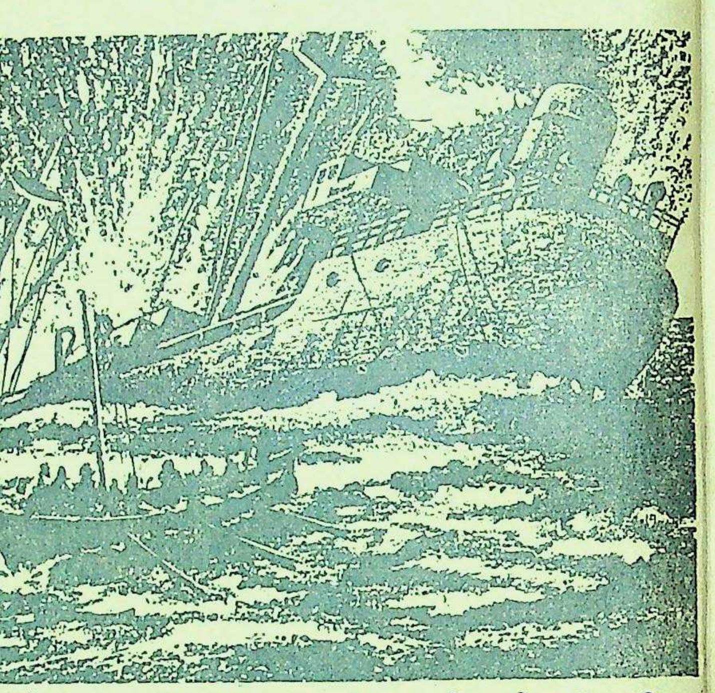

..और हज़ारों हिन्दुस्तानी गावों को किरासिन नहीं मिलता, जब कि लाखों गैलन तेल समुद्र में मिल जाता है

असावधानी से बातें करने से जानें जाती हैं; यही नहीं, जनता के उपयोग के लिए जहाज़ों में आने वाला क़ीमती सामान भी नष्ट हो जाता है जिसके बिना हमारा गुज़ारा नहीं हो सकता। किरासिन तेल सिर्फ़ एक चीज़ है; दुश्मन हमारे जहाज़ों को डुबो दे तो हम ख़ूराक और दवाओं से भी वंचित हो जाते हैं।

इसलिए कि किसी ने असावधानी से बातें कीं

आप जहाँ कहीं हों, इस घोषणा को पढ़ने के बाद सदा याद रखें कि संभव है दुश्मन का कोई जासूस भूल–चूक की बातों पर कान लगाये हो–रेल के डिब्बे में, सभा–सोसाइटी में, होटल में या टेलीफ़ोन पर। आपकी चिठ्ठियाँ भी भटक कर उसके हाथ में पड़ सकती हैं। दुश्मन को विफल मनोरथ बनाने का एक ही उपाय है कि आप सावधानी और समझदारी से काम लें।

यदि आप यह प्रतिज्ञा कर लें कि जहाज़ों या फ़ौजों की हरकत और नई सड़कों, रेलवे लाइनों, हवाई जहाज के अड्डों या जंगी सामान बनाने वाले कारखानों के बारे में मैं कभी बात नहीं करूँगा अथवा कोई संकेत नहीं दूँगा, तो जहाज़ियों की जान बचाने और जनोपयोगी सामान की सुरक्षित पहुँच में आप बड़ी भारी सहायता पहुँचावेंगे।

देखिए कहीं आप तो नहीं चूक रहे

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे द्वारा प्रकाशित

AAA 1341 Hindi

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सब का इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

कोशलगढ़ का कैदी

दिलचस्प जासूसी उपन्यास

[पिछली कहानी—बंगाल में राय-परिवार बड़ा प्रसिद्ध था। इस परिवार में शिवशङ्कर राय तथा गौरीशङ्कर राय दोनों भाइयों ने अच्छी ख्याति पाई थी। एकाएक एक दिन कोशलगढ़ के सरदार धनंजय खत्री, लापता राजकुमार शङ्करसिंह की खोज में उधर आ निकले। गौरीशङ्कर बाबू का चेहरा राजकुमार शङ्करसिंह से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। जब धनंजय खत्री को राजकुमार का पता न चला तब उन्होंने गौरीशङ्कर बाबू को इस बात के लिये राजी किया कि वह अपने को शङ्करसिंह बतायें। धनंजय खत्री गौरीशङ्कर बाबू को घोड़े पर लेकर गुप्त रूप से कोशलगढ़ पहुँच गये। राज्य में प्रसिद्धि हो गई कि लापता राजकुमार शङ्करसिंह वापस आ गये। राजकुमार शंकरसिंह के भाई उदितसिंह ने, जो पास ही झड़वा राज्य में रहता था, शंकरसिंह को कैद करवाया था। वह कोशलगढ़ के वर्तमान मन्त्रियों का विरोधी था। राजमहल में गौरीशङ्कर बाबू ने नकली लापता राजकुमार का अभिनय प्रारम्भ किया और समय पर उनका राजतिलक भी हो गया। गौरीशङ्कर बाबू एक दिन नौका-विहार के लिये गये और एक दुर्घटना से बचकर वह फिर कोशलगढ़ पहुँच गये। वहाँ आपस में मंत्रणा हुई। रनिवास में भी काफ़ी चहल-पहल हुई। महारानी-कस्तूरीबाई और उनकी सहेली चम्पा में भी राजा के सम्बन्ध में बड़ी आकर्षक वार्ता हुई। एक दिन गौरीबाबू वेष बदलकर नगर घूमने निकले और वहाँ उन्हें एक भेद का पता चल गया। एकाएक उन्हें कृष्णा का पत्र मिला। उसने उन्हें एक गुप्त स्थान पर महारानी कस्तूरीबाई से मिलने के लिये बुलाया था। गौरीबाबू गये किंतु ········।

(गताङ्क के आगे)

एकाएक गौरी बाबू ने हाथ बढ़ाकर कस्तूरी बाई का आँचल पकड़ लिया और कहा—कस्तूरी, चलो हम लोग वहीं चलें; परन्तु ऐसा कहते ही वे होश में आ गये। हैं, यह वे कैसा प्रलाप बक रहे हैं। ज़रा चुप रह कर वे फिर बोले—तुम मुझे चाहती हो, यह मैं कृष्णा की चिट्ठी से आज जान गया हूँ। किन्तु एक बात जानने के लिए मेरा हृदय अत्यन्त व्याकुल हो रहा है, कस्तूरी!

कस्तूरी ने प्रश्नपूर्ण दृष्टि से गौरी बाबू की ओर ताका।

गौरी बाबू फिर कहते कहते रुक गये। अब तक वे भूल गये थे कि कृष्णा दरवाज़े पर खड़ी है। जैसे ही उनकी नज़र उस पर पड़ी उन्होंने कस्तूरीबाई का आँचल छोड़ दिया, लेकिन जो प्रश्न उनके मुँह में आकर रुक गया था उसका उत्तर जानने की व्यग्रता ने उन्हें बेचैन कर डाला। वे कृष्णा की ओर घूम कर बोले—कृष्णा, तुम ज़रा बाहर जाओगी? ज़्यादा नहीं सिर्फ़ दो मिनट के लिए।

कृष्णा ने मुँह फेर कर भौंहें चढ़ा लीं और फिर गौरी बाबू की ओर एक बार तेज़ नज़र से देखा। उसके बाद उसने धीमे स्वर से कहा—अच्छा, लेकिन मैं दो मिनट के बाद ही लौट आऊँगी।

कृष्णा पर्दा हटाकर बाहर चली गई।

तब गौरी बाबू कस्तूरीबाई के मुँह के पास अपना मुँह लाकर गम्भीर स्वर से बोले—क्या एक बात का उत्तर दोगी?

दो गम्भीर नेत्र गौरी बाबू के मुख पर आकर स्थिर हो गये। उनमें विस्मय, कौतूहल और अगाध प्रेम भरा हुआ था। गौरी बाबू अब अपने को सँभाल न सके। उन्होंने अपने दोनों हाथों से कस्तूरीबाई के उस हाथ को पकड़ लिया जो उसकी गोद में पड़ा हुआ था। वे एक दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए बोले—कस्तूरी, मैं तुम्हारी आँखों में जो कुछ देख रहा हूँ, उससे मैं अब अपने को सँभाल नहीं सकता। इच्छा होती है कि; तो भी तुम कुछ बोलो। मैं यदि शंकरसिंह न होता; कोशलगढ़ का राजा न होता, तो भी क्या तुम मुझसे प्रेम करतीं?

कस्तूरीबाई का हाथ गौरी बाबू की मुट्ठी में कुछ हिल गया, उसने गर्दन ज़रा टेढ़ी कर ली। उत्तर देने की एक बार उसकी इच्छा हुई, लेकिन उसने न दिया और वह अपने हाथ के कंगन की ओर देखती रही।

गौरी बाबू ने और भी व्याकुलता से कहा—कस्तूरी, मान लो कि मैं कोशलगढ़ का शंकरसिंह नहीं हूँ, मान लो कि मैं एक साधारण विदेशी हूँ, किसी दूर देश से आकर दैवात् तुमसे मेरी भेंट हो गई, तो भी क्या तुम मुझसे प्रेम करोगी?

कस्तूरीबाई गौरी बाबू के मुँह की ओर देखने लगी, उसकी दोनों आँखें कुछ धुँधली मालूम हुईं, उसके होंठ काँपने लगे। उसके बाद उसने धीरे-धीरे रुँधी आवाज़ से कहा,—आप क्या मेरी परीक्षा ले रहे हैं?

नहीं, नहीं, कस्तूरी। परन्तु तुम ज़रा बोलो कि तुम मुझे ही चाहती हो—राज्य-सम्पदा छोड़ देने पर भी तुम्हारा प्रेम कम न होगा?

थोड़ी देर तक कस्तूरी बाई चुप रही, फिर गौरी बाबू की आँखों से आँख मिलाकर धीरे से बोली—यदि आप एक साधारण सिपाही होते, आपका परिचय यहाँ कोई न जानता होता, आप यदि अनजान विदेशी होते, तो भी आप—आप मेरे हैं।

"तुम्हारा?"

"मेरे स्वामी।"

अकस्मात् कस्तूरीबाई की आँखों से दो-चार बूँद आँसू उसके वक्षस्थल पर टपक पड़े।

"कस्तूरी!"—गौरी बाबू का कण्ठ-स्वर थरथर काँपने लगा। वे अपने हाथ से कस्तूरीबाई की ठुड्ढी पकड़ कर उठाने की चेष्टा करते हुए बोले,—तो सुनो—मैं—

ठीक इसी समय दरवाज़े का पर्दा हिला और कृष्णा भीतर आ गई।

थोड़ी ही देर में गौरी बाबू अपनी सारी सच्ची बातों को प्रगट कर देते, यदि कृष्णा न आ गई होती। कृष्णा ने आकर उन्हें वास्तविक दुनिया में पहुँचा दिया। वे अपने हाथों से आँख मलते हुए उठ खड़े हुए।

कृष्णा आकर हँसती हुई बोली—हाँ, अब की बंधन तोड़ना होगा, रात दो पहर बीत गई, घंटा बजे बहुत देर हुई।

गौरी बाबू के गले में मानो कोई चीज़ अटक गई, वे खखारकर गला साफ़ करते हुए बोले—कल सवेरे ही मुझे शक्तिगढ़ जाना है—फिर शायद—

उनकी बात पूरी भी न हुई थी कि, कृष्णा बोल उठी—शक्तिगढ़?

कस्तूरीबाई की आँखों से आँसू अभी बन्द नहीं हुए थे। परन्तु उसने उसी के भीतर से एक क्षण के लिए कृष्णा के मुँह की ओर कौतूहलपूर्ण दृष्टि से देखा।

गौरी बाबू ने कहा—शिकार खेलने के लिए जाता हूँ, कब लौटूँगा कह नहीं सकता—शायद—

कृष्णा ने मुँह दबाकर कहा—शायद वहाँ अनेक आश्चर्यजनक घटनायें घट सकती हैं, जिनकी आपने कल्पना भी की है—कौन जानता है?

गौरी बाबू ने कृष्णा के मुंह की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा,—हो सकता है—अच्छा, तो आज मैं जाता हूँ।

कस्तूरीबाई उठकर खड़ी हो गई। गौरी बाबू ने उसकी ओर सतृष्ण नेत्रों से देखते हुए कहा—कस्तूरी, अब मैं चला, शायद—

कृष्णा आँखें नचाते हुए बोली—शायद शक्तिगढ़ से लौटने के पहले ही फिर भेंट होगी। आज इतनी दीनता से विदाई माँगने की ज़रूरत नहीं।

गौरी बाबू ने केवल एक लम्बी साँस ली।

कृष्णा ने कहा—चलिए, मैं आपको अपनी डोंगी पर आपके घाट तक पहुँचा दूँ।

गौरी बाबू ने सिर हिलाकर कहा—नहीं, मैं तुमको और कष्ट न दूँगा। मैं जिस तरह आया हूँ उसी तरह लौट जाऊँगा।

कस्तूरीबाई का चेहरा खिन्न हो उठा। वह धीमे स्वर से बोली—लेकिन अगर कोई दुर्घटना—

कोई दुर्घटना न होगी, कस्तूरी। मैं अभी मरूँगा नहीं। अगर मरूँगा भी तो शक्तिगढ़ में जाकर, यहाँ नहीं—कह कर गौरी बाबू ने सिर हिलाकर हँस दिया।

कृष्णा बोली—यह क्या बात है! आप मेरी सखी को झूठमूठ का डर क्यों दिखा रहे हैं? चलिए।

"चलो, कृष्णा।"

दरवाज़े के पास पहुँचकर गौरी बाबू ने देखा कि कस्तूरीबाई एकटक उनकी ओर देख रही है। वे दीर्घ निःश्वास दबाते हुए बाहर निकल गये। क्या यही अंतिम भेंट है?

गौरी बाबू ने अँधेरे में घाट के नीचे उतर कर कृष्णा का हाथ दबाया और व्याकुल स्वर से कहा—कृष्णा, शायद हम लोगों की यही अंतिम भेंट है—यदि हमारे जीवन में ऐसी कोई अनहोनी हो जाय जिसकी तुम्हें अभी कल्पना भी नहीं है तो तुम उस हालत में कस्तूरी को न छोड़ना। सदा उसी के पास रहना। तुम्हारे रहने से उसे कुछ सान्त्वना मिलेगी।—कह कर उत्तर की प्रतीक्षा न करते हुए गौरी बाबू पानी में उतर गये।

हाय! यदि मनुष्य अपना भविष्य जानता!

सोलहवाँ परिच्छेद

दूसरे दिन सवेरे ही राजमहल में शक्तिगढ़ जाने की चर्चा फैल गई। चम्पा पहले से कुछ न जानती थी। इस खबर को सुनते ही उसे बहुत दुःख हुआ। यात्रा का सब इन्तज़ाम कर लिया गया है, आज ही जाना है, लेकिन चम्पा को कुछ भी नहीं मालूम। वह मुँह फुलाये हुए राजा के महल की ओर चली।

दरवाज़े पर रुद्ररूप खड़े मिले। उन्हें देखते ही चम्पा ने भौंहें चढ़ाकर कहा,—राजा आज शक्तिगढ़ जा रहे हैं, क्या तुम्हें पहले से नहीं मालूम था?

उपेक्षा से ऊपर की ओर देखते हुए रुद्ररूप ने कहा—था।

"तब मुझसे क्यों नहीं कहा?"

सीने पर हाथ बाँधे हुए रुद्ररूप ने कहा,—मैंने ज़रूरत नहीं समझी।

कुपित नागिन की तरह गर्दन टेढ़ी किये चम्पा ने कहा,—ज़रूरत न समझी? तुम्हें क्या कभी अक्ल न आयेगी? इतने थोड़े समय के अन्दर मैं अपने जाने की तैयारी कैसे कर लूँ?

रुद्ररूप ने आश्चर्य से भौंहें चढ़ाकर कहा,—तुम क्यों तैयार होगी?

चम्पा अधीर होकर बोली,—अक्ल-मंद, राजा के साथ मुझे न जाना होगा?

रुद्ररूप ने कुछ स्तम्भित होकर कहा,—राजा के साथ तुम जाओगी? यह क्या बात?

"रास्ता छोड़ो, मैं तुम्हारे साथ बक-वाद नहीं कर सकती।"

रुद्ररूप राजा के कमरे का दरवाज़ा रोककर खड़े हो गये और बोले,—चम्पा, राजा के साथ तुम्हारा जाना नहीं हो सकता।

चम्पा अवाक् हो गई। फिर कुछ देर तक रुद्ररूप के मुँह की ओर देखती हुई बोली,—इसका मतलब? क्या महाराज ने कोई हुक्म जारी कर दिया है?

"नहीं, परन्तु तुम्हारा जाना नहीं हो सकता।"

"क्यों नहीं हो सकता? बताओ न?"

"राजा जिस काम के लिए जा रहे हैं, उसमें अनेक विपत्तियों की सम्भावना है।"

"विपत्ति की सम्भावना! महाराज तो घूमने जा रहे हैं और यदि विपत्ति की सम्भावना ही है तब तो मुझे अवश्य ही जाना होगा। मेरे न जाने से उनकी सेवा-शुश्रूषा कौन करेगा?"

"चम्पा ज़िद न करो। हम लोग बहुत खतरनाक काम में जा रहे हैं। किसी स्त्री के साथ रहने से सब काम नष्ट हो जायगा, इसलिए तुम्हारा जाना किसी तरह नहीं हो सकता।"

"तुम्हारा हुक्म है, क्या?"

"हाँ, मेरा ही हुक्म है।"

"तुम्हारा हुक्म मैं नहीं मानती। तुम मेरे मालिक नहीं हो"—कहकर चम्पा ने बड़े घमण्ड से रुद्ररूप को हटाकर भीतर जाने का प्रयत्न किया।

"चम्पादेई!"

चम्पा ने चौंककर सिर उठाया। इस तरह का दृढ़ और कठोर शब्द रुद्ररूप के मुँह से उसने कभी नहीं सुना था। दोनों कुछ देर तक एक दूसरे को देखते रहे। उसके बाद धीरे-धीरे चम्पा की आँखें

पेट की सफ़ाई
स्वास्थ्य का प्रारम्भिक
नियम है

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

नीचे की ओर झुक गई। उसके दोनों होंठ हिलने लगे, वह रुँधती हुई आवाज़ से बोली,—तो क्या मैं नहीं जाने पाऊँगी?

रुद्ररूप का स्वर भी कोमल हो गया। उसने कहा,—नहीं, चम्पा, इस बार नहीं। इस बार तुम भली लड़की की तरह घर ही में रहो, हम लोग शीघ्र ही लौट आयेंगे।

चम्पा सिर नीचा किये चुपचाप खड़ी रही। क्षण भर में उसकी हालत बदल गई। मानो उस पर कोई जादू का असर हो गया। इतने दिनों तक चम्पा रुद्ररूप को नकेल पकड़कर नचाती रही; परन्तु आज वशीभूत होकर चम्पा अपने अश्रु-पूर्ण नेत्रों से रुद्ररूप के मुँह की ओर निहारने लगी। घमण्ड, जोश, टेढ़ी बातें सब गायब हो गईं। शायद इतने दिनों के बाद चम्पा ने आज स्त्रीत्व को प्राप्त कर लिया। उसका खुला हुआ आँचल ज़मीन पर लटक रहा था। उसी बेसुध अवस्था में वह वहाँ से लौट गई, जब तक वह दिखाई पड़ रही थी तब तक स्वत्वाधिकारी प्रभु की तरह रुद्ररूप उसकी ओर देखते रहे।

* * *

कोशलगढ़ से जो पुराना रास्ता तीर की तरह सीधे शक्तिगढ़ को गया था किस्ता नदी भी क़रीब-क़रीब उसके पास-पास गई थी। कभी वह कुछ टेढ़ी होकर दूर चली गई थी और फिर घूमकर उसी रास्ते के पास आ गई थी।

दोपहर के समय गौरी बाबू अपने सवारों के साथ उसी रास्ते से जा रहे थे, सब मिलाकर आगे-पीछे पचास सवार थे और बीच में गौरी बाबू, सरदार धनञ्जय तथा रुद्ररूप थे। सवारों की कमर में तलवार और हाथ में भाले चमक रहे थे। रुद्ररूप की कमर में तलवार थी पर हाथ में भाला न था। सरदार धनञ्जय की पेटी में उनकी बड़ी पिस्तौल भी थी। गौरी बाबू प्रायः निरस्त्र थे। उनकी कमर में केवल वही सोने की मूठवाला छुरा था जिसे कोशलगढ़ आते समय उनके भाई शिवशंकर बाबू ने दिया था।

घोड़े धीमी चाल से चल रहे थे। तेज चलने की कोई आवश्यकता न थी। इस चाल से वे लगभग चार घंटे में शक्तिगढ़ पहुँच जायँगे। सेवकों का एक दल तम्बू तथा अन्य आवश्यक चीज़ों को लेकर सवेरे ही चल चुका था। वे रहने के लिए डेरा आदि तैयार कर रखेंगे।

हेमन्त ऋतु में दोपहर का सूर्य वैसा प्रखर नहीं होता, फिर भी रास्ते के किनारे लगे हुए बड़े-बड़े पहाड़ी वृक्ष छाया का काम दे रहे थे। इसके सिवा किस्ता नदी की ठंढी-ठंढी हवा अति ही मधुर जान पड़ती थी। गौरी बाबू इधर कभी न आये थे। इतने दिनों तक वे राजमहल में ही बन्द थे। उस उन्मुक्त प्राकृतिक दृश्य के भीतर से जाते हुए उन्हें उस दिन की बात याद आई जिस दिन वे पहले-पहल स्टेशन पर उतरकर घोड़े की सवारी से कोशलगढ़ आ रहे थे। यह दृश्य ठीक उसी के समान न होते हुए भी उसका कुछ-कुछ स्मरण करा रहा था। रास्ता सीधा था पर समतल न था। वह समुद्र की लहर के समान ऊँचा-नीचा था। बाईं ओर की ज़मीन कँकरीली थी। इधर-उधर दो-चार पहाड़ी झाड़ियाँ दिखलाई पड़ती थीं। दाहिनी ओर सर्प की टेढ़ी चाल के समान किस्ता नदी बह रही थी। सबसे अन्त में इन सब पार्वतीय दृश्यों को घेरे हुए एक पहाड़ी नीली रेखा थी।

घोड़े की पीठ पर बैठे हुए गौरी बाबू को बाहरी सुध भूल गई थी। उस पथरीली ज़मीन पर घोड़े की टाप की आवाज़, जीन की चरमराहट तथा घोड़ों के मुँह की जंजीरों की झंकार मिलकर एक विचित्र सुर उत्पन्न कर रही थी। उसी ताल के साथ मिलकर गौरी बाबू का मन भी किसी अज्ञात देश में प्रयाण कर गया था। उन्हें विशेष चिन्ता की कोई बात न थी, लेकिन एक ज़रा-सी बात उनके मस्तिष्क में एक अद्भुत जाल बुन रही थी।

वे इसी अवस्था में चले जा रहे थे कि सरदार धनञ्जय के कण्ठस्वर को सुनकर उनके स्वप्न का जाल टूट गया। उन्होंने घूमकर देखा कि, रुद्ररूप किसी कारणवश पीछे पड़ गये हैं, केवल धनञ्जय बाबू उनके पास हैं।

धनञ्जय बाबू अपनी भौंहों के ऊपर हथेली की आड़ करके सामने की ओर निगाह दौड़ाकर देखने लगे और धीमे स्वर से मानो अपने ही में कहने लगे,—आज का हमारा यह अभियान दीवान कालीशंकर की बात याद करा रहा है। कैसा आश्चर्य संयोग! कौन जानता था कि डेढ़ सौ वर्ष बाद कोशलगढ़ राज्यरूपी नाट्यशाला में उन्हीं का वंशज प्रधान अभिनेता के रूप में अभिनय करेगा?

गौरी बाबू ने कहा,—सरदार साहब, पहेली छोड़कर अब आपको असली गल्प शुरू से आखीर तक कहनी होगी। आज बहाना करके चुपचाप टालने से न चलेगा। इस समय आपको कोई काम तो है नहीं, अब आप दीवान कालीशंकर की कहानी शुरू कीजिये।

सरदार धनञ्जय ज़रा हँसे और बोले,—कहता हूँ। कहने का मौक़ा यही है। क्योंकि हम लोग जिस काम के लिए चले हैं उसका नतीजा भगवान् ही जानते हैं। शायद अन्त तक—

"अन्त तक आपकी कहानी सुनने के लिए शायद मैं जिन्दा ही न रहूँगा।"

"अथवा कहानी कहने के लिए मैं ही जीता न रहूँगा। सब ही सम्भव है, लेकिन शायद हम दोनों ही जीवित रहेंगे; परन्तु कहानी कही न जा सकेगी। इसलिए इसे अभी कह डालना ठीक है।"

गौरी बाबू ने ज़रा सोचकर कहा—यदि इस बात के मेरे सुनने से किसी का कुछ नुक़सान हो, तो उसे कहने की क्या ज़रूरत?

सरदार धनञ्जय ने गम्भीरतापूर्वक कहा,—आपके पूर्वज कालीशंकर के सम्बन्ध में कुछ रहस्य है, ऐसा संकेत करके मैं आपको यहाँ ले आया। आपको ऐसे काम पर आरूढ़ किया, जिसमें प्राण जाने की भी सम्भावना है, इसलिए आप मुझसे कैफ़ियत माँग सकते हैं। अगर मैं वह कैफ़ियत न दूँ तो आप यही समझेंगे कि मैं आपको धोखा देकर अपना मतलब साध रहा हूँ।

"अच्छा, तो आप कहिये।"

"मैं आपसे जो कहानी कहूँगा, उससे यही प्रमाणित हो जायगा कि अब तक आपने अपने अधिकार के बाहर कोई काम नहीं किया है और अन्त तक यदि—"

"यह बात मैंने कई बार सुनी है, अब कहानी शुरू कीजिये।"

सरदार धनञ्जय ने कहना आरम्भ किया। सवारों के घोड़ों की टाप की आवाज के भीतर से भी धनञ्जय बाबू का अनुच्च स्वर गौरी बाबू के कानों में आने लगा। वे सामने की ओर देखते हुए सुनने लगे।

बात शुरू करने के पहले मैं यह बतला देना आवश्यक समझता हूँ कि यह कहानी मुझे मालूम कैसे हुई। राजवंश का यह गुप्त रहस्य साधारण मनुष्यों के जानने की बात नहीं है। शायद मेरे सिवा कोई इस बात को जानता भी नहीं। केवल दीवान भार्गव जी जानते हैं। लेकिन उन्हें भी मैंने ही बतलाया है।

जाति के वैश्य होते हुए भी मेरे पूर्व पुरुष राजा के अंगरक्षक रहे हैं—यह बात आपने पहले ही मुझसे सुनी है। आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व मेरे ऊपर के पाँचवें पुरुष इस पद पर पहले-पहल नियुक्त हुए थे। उनका नाम था सेठ चन्द्रकान्त। वे किस तरह उस समय के महाराजा धूर्जटीसिंह के कृपापात्र एवं सहचर हो गये थे यह कहना आवश्यक नहीं। यहाँ इतना ही कहना यथेष्ट होगा कि वे धूर्जटीसिंह के दाहिने हाथ हो गये थे। लेकिन राजा के साथ रहने पर भी उनका बनिया स्वभाव छूटा नहीं था।

उस समय बनिया छोड़ किसी दूसरी जाति में पढ़ने-लिखने का रिवाज न था। हिसाब-किताब लिखने के लिए बनिये को लिखना-पढ़ना सीखना ही होता था। चन्द्रकान्त हिसाब तो लिखते ही थे, साथ ही कुछ और भी लिखते थे जो आज दिन अमूल्य समझा जाता है। वह है उस समय के राजदरबार का रोजनामचा अर्थात् राज-परिवार की सभी छोटी-बड़ी बातों और दरबार की कार्यवाही आदि का विवरण उनके दफ़्तर में गुप्तरूप से रखा जाता था। अपने जीवन के अन्तिम पन्द्रह-बीस वर्ष तक उन्होंने नियमपूर्वक इस काम को किया था।

जो कुछ भी हो एक दिन वृद्धावस्था में चन्द्रकान्त का देहावसान हो गया। उनके दफ़्तर के अन्य हिसाब-किताब के साथ वह रोज़नामचा भी सुरक्षित रखा हुआ था। चन्द्रकान्त के बाद मेरे पूर्व-पुरुषों में लिखने-पढ़ने का रिवाज कम हो गया, क्योंकि यह समझा गया कि जब राजा के साथ रहकर अस्त्र चलाना ही है तो पढ़ने-लिखने की क्या आवश्यकता। इसी तरह चार पीढ़ी तक किसी ने चन्द्रकान्त के कागज़ात को खोलकर पढ़ा तक नहीं।

मैंने ही उसको खोला। उस समय मेरी उम्र कम थी; परन्तु कौतूहल अधिक था, अतः मैंने उस रोज़नामचे को पढ़ना आरम्भ किया। पढ़ते-पढ़ते ऐसा मालूम हुआ, मानो कोई उपन्यास पढ़ रहा हूँ। उन्हीं काग़ज़ात में मैंने दीवान कालीशंकर का इतिहास पढ़ा। पन्द्रह वर्ष के इतिहास में दीवान कालीशंकर की जैसी अपूर्व जीवनी थी उससे जान पड़ता था कि चन्द्रकान्त की लिखी हुई कहानी के वे ही प्रधान नायक थे। मैंने उन काग़ज़ात के साथ एक और भी चीज़ पाई थी।

आप जानते हैं कि हाथीदाँत के तख्ते पर चित्र बनाने में कोशलगढ़ बहुत दिनों से प्रख्यात है। इस समय वह चित्रकारी लुप्त हो गई है। लेकिन उस मुग़ल-काल में इस शिल्प का यहाँ बहुत प्रचार था। चन्द्रकान्त के काग़ज़ात के साथ मैंने बहुत से चित्राङ्कित तख्ते भी पाये थे। उन तख्तों के पीछे उन व्यक्तियों के नाम भी लिखे हुए थे जिनके वे चित्र थे। उस समय बड़े-बड़े लोगों के चित्र बनाये जाते थे। राजा धूर्जटीसिंह की भी तस्वीर थी और कालीशंकर की भी।

इसलिए दीवान कालीशंकर का चेहरा मुझे मालूम था और इसी कारण आपके मकान पर उस तैल-चित्र को देखकर मैंने उन्हें पहचान लिया था। उनकी तेज़ आँखों को, तलवार के समान नाक को जो एक बार देख लेगा वह कभी भी न भूलेगा। इतने में मेरी कैफ़ियत खतम हुई। अब कहानी सुनिये। कहानी रोज़नामचे के डेढ़ हज़ार पन्नों में फैली हुई है। जहाँ तक हो सकेगा मैं थोड़े में बतलाऊँगा।

सरदार धनञ्जय ने कुछ देर तक चुप रहकर मन ही मन उस कहानी को सिलसिलेवार सजा लिया। उसके बाद उन्होंने फिर से कहना आरम्भ किया,—रोज़नामचे के दूसरे साल में कालीशंकर का नाम पहले पाया जाता है। उसमें लिखा है कि राजसभा में एक बंगाली लड़का आया। उसने राजा को तरह-तरह की अस्त्रविद्या दिखाकर मोहित कर लिया। उसके बाद देखा कि कालीशंकर राजा के भाइयों के अस्त्र-शिक्षक नियुक्त हुए। राजा की उम्र उस समय थोड़ी थी। कोई पुत्र पैदा नहीं हुआ था।

—क्रमशः

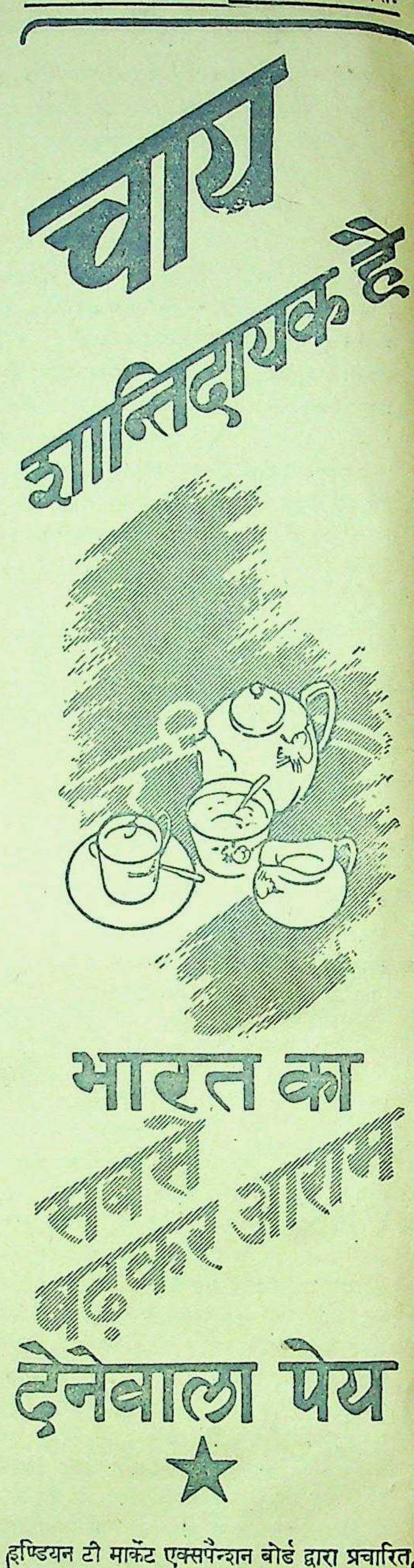

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की
LIPTON'S
JACOOJA
जाकूजा चाय
LTK 80 J

हासपरिहास

भंग की तरंग

सुना जाता है कि हिन्दू-महासभा विदेशों में प्रचार की व्यवस्था करनेवाली है। हिन्दी के कुछ कवियों को वह बुला ले तो प्रचार-कार्य में बड़ी सहायता मिल सकती है। आजकल कुछ कवि खाली भी हैं।

* * *

पटने में 'स्वाधीन' नारियों का एक सम्मेलन हुआ था। सम्मेलन और प्रदर्शनी का सजीव स्वरूप यदि कहीं दिखाई पड़ा तो वहीं। इस प्रगतिशीलता पर कोटि-कोटि बधाई है।

* * *

डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकुर्जी ने कहा है कि भारत का शासन-विधान रूसी शासन-विधान के समान नहीं हो सकता। यहाँ तो कुछ लोगों की राय है कि भारत रूस का पूरबी संस्करण बनाया जाय।

* * *

खबर है कि इन्दौर-राज्य में भीलों से बेगार लेना बंद कर दिया गया। जब बड़े-बड़े राज्य ही ऐसा अनर्थ कर रहे हैं तब छोटे-छोटे ज़मींदार बेचारों की क्या गति होगी? उनका काम कैसे चलेगा?

* * *

राजस्थानी नवजीवन-मंडल ने मारवाड़ी समाज में वैवाहिक प्रथा में सुधार करने का आयोजन किया है। उसमें एक बात यह भी है कि दहेज न लिया जाय। यदि मारवाड़ियों के धनी समाज में दहेज न लिया जायगा तो सनातनधर्म की रक्षा कैसे की जा सकेगी?

* * *

जहाँ मरने पर भोज में दस-दस हज़ार रुपये व्यय किये जाते हैं उसमें कुछ सुधार की आवश्यकता है कि नहीं? इस पर शायद नवजीवन-मंडल ने विचार नहीं किया।

* * *

रूसी प्रोफ़ेसर ओगनेव भारत का स्वास्थ्य जाँचने आये हैं। उन्हें काशी के साँड़ दिखा दिये जायें तो कैसा रहे? जहाँ के पशु इतने मोटे-ताज़े हैं वहाँ के पुरुष और स्त्री क्यों न स्वस्थ होंगे?

* * *

सुना जाता है कि युक्त-प्रांत के जेलों के इन्स्पेक्टर जनरल के पद के लिए कोई उपयुक्त व्यक्ति नहीं मिल रहा है। तो क्या विलायत भी खाली हो गया है? यहाँ तो उपयुक्त व्यक्ति किसी काम के लिए मिलते ही नहीं। कोई नई बात नहीं है।

* * *

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित अब इंग्लैंड की यात्रा करनेवाली हैं।

बलियावाले चाहते हैं कि हमारे नगर में भी एक डिगरी कालेज खुल जाय। हमारी राय है कि उन्हें एक यूनिवर्सिटी खोलने का आयोजन करना चाहिए। बलिया विश्वविद्यालय की अपनी विशेषता ज़रूर रखेगा।

* * *

हमारी प्रान्तीय सरकार भारतीय सरकार की सहायता से मछलियों की पैदावार बढ़ाने वाली है। ऐसा होने पर कहीं सारा बंगाल इसी प्रांत में न चला आये?

* * *

सरकार की ओर से चेष्टा हो रही है कि खूब रुपया बचाओ। हम आशा करते हैं कि युद्ध समाप्त होते-होते भारत-निवासियों के पास भी इतना रुपया हो जायगा कि वह लखपती नहीं तो हज़ारपती हो ही जायँगे।

* * *

सहारनपुर के एक गाँव में ईख के एक टुकड़े के लिये दो आदमियों में मारपीट हो गई जिसके परिणामस्वरूप एक व्यक्ति सीधे सुरधाम को चला गया। भारतवासियों में अब इतनी भावना जाग्रत हो गई है कि अपनी वस्तुओं की रक्षा इस सीमा तक कर सकें। क्योंकि अब तो स्वराज मिलना ही चाहता है।

शायद आपको करेलोंका साग बनानेकी कई विधियां मालूम होंगी। परन्तु निम्न रीतिका भी अनुभव करके अपने कुटुम्बियों को चकित कर छोड़िये। यह अच्छी तरह याद रहे कि इसमें सूखा नारीयल (खोपरा) ही खास वस्तु है—क्योंकि वह अति स्वादिष्ट होता है व आयता किसाकिसाया मिलता है।

यदि दो रत्तल करेले हों तो १[illegible] मसाला (जिसमें हल्दी [illegible], हींग [illegible] व बाकी सब सर्वसाधारण मसालेकी चीज़ें मिलकर [illegible] हिस्सा) [illegible] औंस हरा धनिया, १[illegible] औंस नमक, [illegible] औंस इमली, मीठा तेल व [illegible] औंस सूखा खोपरा लगेगा।

सिलोन का

* * *

अमेरिका के कुछ विद्वानों का कहना है कि एक ऐसा केमरा बना है जिससे अदृश्य वस्तुओं का चित्र लिया जा सकता है। यह केमरा बहुत बिकेगा और आशा है कि कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका के चित्र के बिना न रह जायगा। डर यही है कि दूसरों की प्रेमिकाओं का भी चित्र दूसरों के पास चला जा सकता है।

* * *

लोगों ने खबर छापा कि चौधरी खलीलुज्जमा साहब ने मुस्लिम लीग से इस्तीफ़ा दे दिया। लोगों ने यह नहीं विचार किया कि क्यों इस्तीफ़ा देंगे? राष्ट्रीय हो जायँगे तो बहुत कुछ मिलेगा तो मिनिस्ट्री मिलेगी। लेकिन पाकिस्तान में तो राज मिलेगा।

* * *

समाचार छपा है कि वर्धा में पतंग लड़ाने का भी टूर्नामेंट धूमधाम से हुआ। होना भी ठीक है। स्वदेशी खेल है और हिन्दू-मुसलिम मिलाप का साधन भी है।

* * *

मिस्र की सरकार से अनुरोध किया गया है कि अरबी लिपि को सरल बनाने के लिए उपाय करे। सब से सरल उपाय तो यह है कि अरबी लिपि के स्थान पर नागरी लिपि अपना ली जाय। इससे सरल उपाय भी नहीं हो सकता।

* * *

सरकारी रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, जिसमें लिखा है कि लखनऊ में अपराधों की संख्या घट रही है। गत वर्ष लखनऊ में एक भी डाका नहीं पड़ा। डाका डालने की कोई वस्तु ही नहीं रह गई होगी तो डाका किस पर पड़े?

—अगड़धत्त शर्मा

इ - स्ला - म
की
सच्ची पूजा किसने की ?
यह जानने के लिए पढ़िए।
— इस्लामी —
दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

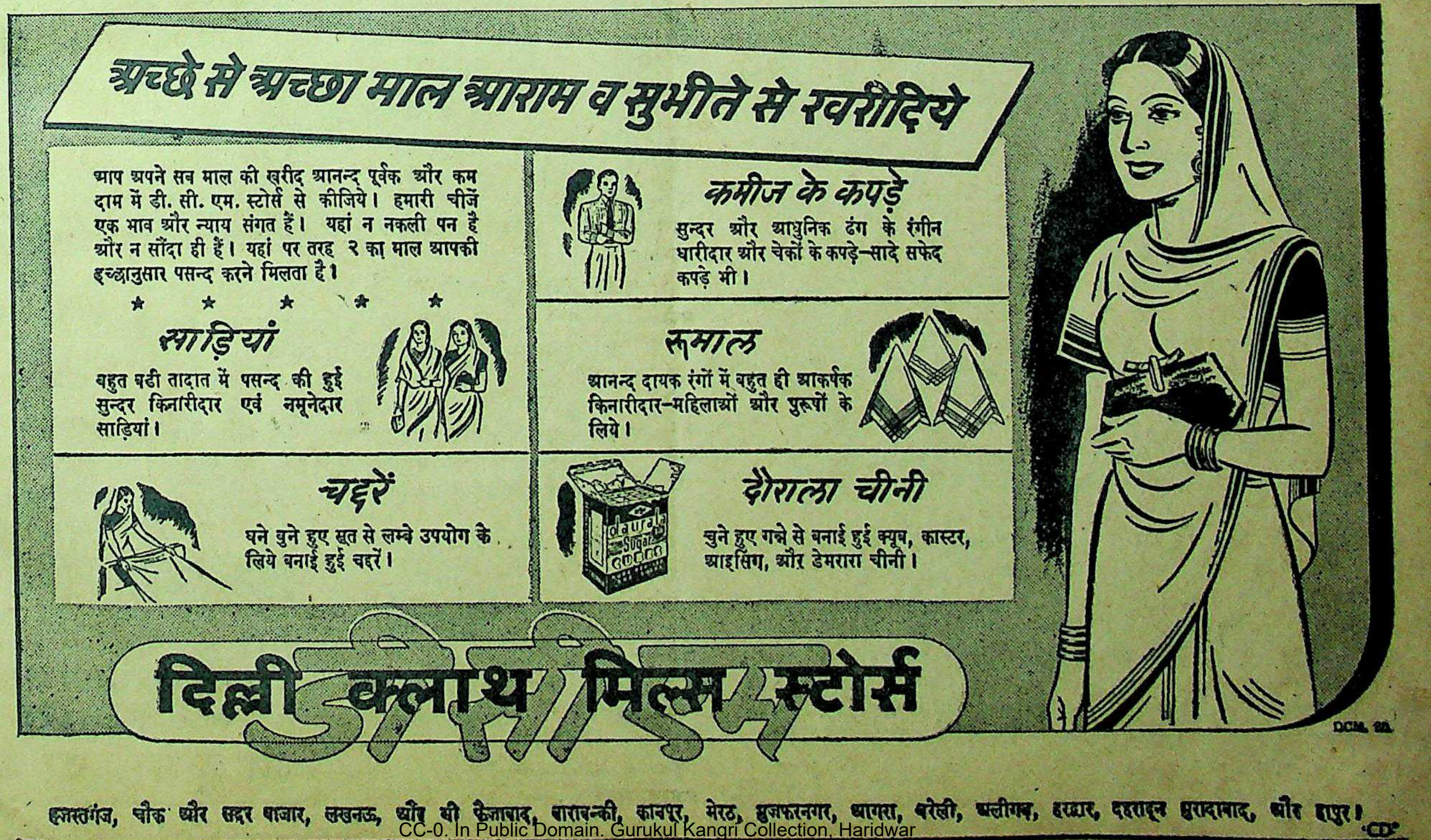

अच्छे से अच्छा माल आराम व सुभीते से खरीदिये

आप अपने सब माल की खरीद आनन्द पूर्वक और कम दाम में डी. सी. एम. स्टोर्स से कीजिये। हमारी चीजें एक भाव और न्याय संगत हैं। यहां न नकली पन है और न सौंदा ही हैं। यहां पर तरह २ का माल आपकी इच्छानुसार पसन्द करने मिलता है।

साड़ियां

बहुत बड़ी तादात में पसन्द की हुई सुन्दर किनारीदार एवं नमूनेदार साड़ियां।

कमीज के कपड़े

सुन्दर और आधुनिक ढंग के रंगीन धारीदार और चेकों के कपड़े—सादे सफेद कपड़े भी।

रूमाल

आनन्द दायक रंगों में बहुत ही आकर्षक किनारीदार—महिलाओं और पुरुषों के लिये।

चद्दरें

घने बुने हुए सूत से लम्बे उपयोग के लिये बनाई हुई चद्दरें।

दौराला चीनी

चुने हुए गन्ने से बनाई हुई क्यूब, कास्टर, आइसिंग, और डेमरारा चीनी।

दिल्ली क्लाथ मिल्स स्टोर्स

हजरतगंज, चौक और सदर बाजार, लखनऊ, और भी फैजाबाद, बाराबन्की, कानपूर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, आगरा, बरेली, अलीगढ़, हरद्वार, देहरादून मुरादाबाद, और हापुर।

DCM. 20.

संवाददाताओं के पत्र

व्रज-साहित्य-मण्डल

हर्ष की बात है कि हिन्दी के साहित्यिक इस ओर सजग हैं। वे स्थान-स्थान पर संगठन करके अपना उचित स्थान ग्रहण करते जा रहे हैं। दिल्ली भी पीछे नहीं है। यहाँ पर हिन्दी के कलाकार और पत्रकार उपस्थित हैं, जिन पर कोई भी साहित्यिक गर्व कर सकता है। उन्हीं सबने मिलकर पिछले नवम्बर में यहाँ हिन्दी-साहित्य-मण्डल का संगठन किया है। उसका मुख्य उद्देश्य साहित्यिक-कर्म को जीवन से सक्रिय रूप में सम्बद्ध करना, साहित्य की विविध प्रवृत्तियों का अध्ययन करना तथा जनता के साहित्यिक और सांस्कृतिक धरातल को ऊँचा उठाने के लिए उपयोगी आयोजन करना है। साथ ही साथ ऐसे साहित्य के प्रकाशन और वितरण का प्रबन्ध भी करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समय-समय पर गोष्ठियाँ की जाती हैं। उनमें स्थानीय तथा बाहर के विद्वान् साहित्य-सेवी आज के ज्वलन्त प्रश्नों पर चर्चा करते हैं।

इसलिए इस मण्डल ने अखिल भारतीय व्रज-साहित्य-मण्डल का अधिवेशन दिल्ली में निमन्त्रित किया है। व्रज-साहित्य-मण्डल का केन्द्र मथुरा है। यह संस्था कई वर्षों से व्रज-भाषा-साहित्य और संस्कृति पर प्रकाश डालने का स्तुत्य कार्य कर रही है। व्रज-भाषा-साहित्य का वर्तमान साहित्य से गहरा सम्बन्ध है। साहित्य, कला, संगीत और संस्कृति सभी पर उसका व्यापक प्रभाव है। वह वर्तमान साहित्य की गतिविधियों और प्रवृत्तियों का मूल स्रोत है। अधिवेशन ३-४ मार्च को हो रहा है। इसमें व्रज-भाषा-साहित्य और संस्कृति पर, जिसने हिन्दू-जैन-बौद्धादि संस्कृतियों पर, नया प्रकाश डाला है, गवेषणापूर्ण निबन्ध पढ़े जायँगे। विवेचन होगा। सर्वश्री मिश्रबन्धु, सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, कविवर अयोध्यासिंह उपाध्याय, डा० धीरेन्द्र वर्मा, रायबहादुर पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी आदि प्रसिद्ध विद्वान् इसमें भाग लेंगे।

इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिए हिन्दी-साहित्य-मण्डल पूरा प्रयत्न कर रहा है। उप-समितियाँ बन गई हैं। स्वागत-समिति का निर्माण हो रहा है। यह जो कुछ भी है, आप सबके सहयोग से हो रहा है। आपकी उदारता, शक्ति के

गाह दौड़ाकर देखने लगे और धीमे वर से मानो अपने ही में कहने लगे,—— ाज का हमारा यह अभियान दीवान ालीशंकर की बात याद करा रहा है। सा आश्चर्य संयोग! कौन जानता था क डेढ़ सौ वर्ष बाद कोशलगढ़ राज्यरूपी ाट्यशाला में उन्हीं का वंशज प्रधान भिनेता के रूप में अभिनय करेगा?

गौरी बाबू ने कहा,——सरदार साहब, हेली छोड़कर अब आपको असली गल्प रू से आखीर तक कहनी होगी। आज हाना करके चुपचाप टालने से न चलेगा। स समय आपको कोई काम तो है नहीं, ब आप दीवान कालीशंकर की कहानी रू कीजिये।

सरदार धनञ्जय ज़रा हँसे और बोले, —कहता हूँ। कहने का मौक़ा यही है। योंकि हम लोग जिस काम के लिए चले उसका नतीजा भगवान् ही जानते हैं। ायद अन्त तक——

की अमर नारी भक्त मीरा की पुण्य तिथि मीरा के पद गायन और भाषणों के साथ सानन्द मनाई गई।

उसी दिन रात्रि को नगर के धनी-मानी व शिक्षित महानुभावों की उपस्थिति में पुस्तकालयभवन के एक ओर सेठ हंसराज लोहिया ने हिन्दी-विद्या-मन्दिर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मातृ-भाषा, मातृ-संस्कृति एवं मातृभूमि-सम्बन्धी सारगर्भित भाषण हुए। —संवाददाता

लखीमपुर (खीरी) में हिन्दी-साहित्य-परिषद् के तत्त्वावधान में संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन इस वर्ष होगा। अधिवेशन के अवसर पर समस्त प्रान्त से गण्यमान्य सज्जनों एवं लब्धप्रतिष्ठ साहित्यिकों के पधारने की आशा है। माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन, श्री सम्पूर्णानन्द जी, रायबहादुर श्रीनारायण चतुर्वेदी, श्री बाबूराव विष्णु पराड़कर, श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी के पधारने की आशा है।

इस अवसर पर एक विराट कवि-

मेलन भी होगा, जिस हो होता था। चन्द्रकान्त हिसाब तो लिखते ही थे, साथ ही कुछ और भी लिखते थे जो आज दिन अमूल्य समझा जाता है। वह है उस समय के राजदरबार का रोजनामचा अर्थात् राज-परिवार की सभी छोटी-बड़ी बातों और दरबार की कार्यवाही आदि का विवरण उनके दफ़्तर में गुप्तरूप से रखा जाता था। अपने जीवन के अन्तिम पन्द्रह-बीस वर्ष तक उन्होंने नियमपूर्वक इस काम को किया था।

जो कुछ भी हो एक दिन वृद्धावस्था में चन्द्रकान्त का देहावसान हो गया। उनके दफ़्तर के अन्य हिसाब-किताब के साथ वह रोजनामचा भी सुरक्षित रखा हुआ था। चन्द्रकान्त के बाद मेरे पूर्व-पुरुषों में लिखने-पढ़ने का रिवाज कम हो गया, क्योंकि यह समझा गया कि जब राजा के साथ रहकर अस्त्र चलाना ही है तो पढ़ने-लिखने की क्या आवश्यकता। इसी तरह चार पीढ़ी तक किसी ने चन्द्रकान्त

काशी की श्री आर्यमहिला हितकारिणी-महापरिषद् की रजतजयन्ती-समिति की बैठक गत २१ जनवरी को बाबू ज्योतिभूषण गुप्त की अध्यक्षता में अजमतगढ़ पैलेस में हुई। निश्चय हुआ कि 'रजतजयन्ती' सप्ताह १५ मार्च से २१ मार्च तक टाउनहाल के मैदान में मनाया जाय। बाबू ज्योतिभूषण गुप्त स्वागताध्यक्ष तथा सेठ बाबूलाल ठनठनिया स्वागत-मन्त्री निर्वाचित हुए।

—प्रचार मन्त्री

* * *

दिल्ली से प्रकाशित होनेवाले उर्दू साप्ताहिक 'प्रकाश' का ४१ वाँ वार्षिक विशेषांक 'शिवरात्रि अंक' ६ फरवरी को प्रकाशित होगा।

अफ्रीका के आर्य सज्जनों ने १६५॥) हमें 'प्रकाश' आधे मूल्य पर १०० संस्थाओं तथा पुस्तकालयों के नाम जारी करने को भेजे हैं। इस अवसर से लाभ उठाने के लिए २॥) मनीआर्डर से भेज देना चाहिए। —मैनेजर 'प्रकाश' दिल्ली

संवाददाता

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर
SSK 106

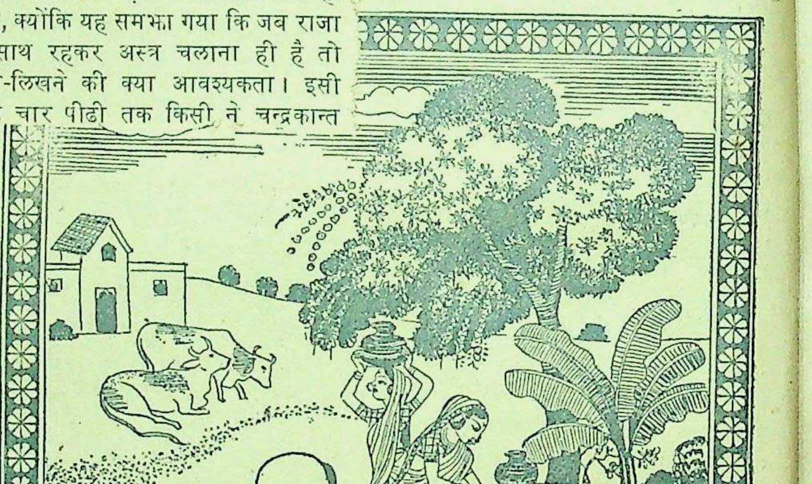

साबुन के आविष्कार के पूर्व लोगों को स्नान के लिए प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग करना पड़ता था। इनमें शिकाकी, जो एक सूखे फल की बुकनी है, का उबटन बहुत प्रचलित था। कुछ लोग आज भी शिकाकी का उबटन लगाते हैं। लेकिन हमाम साबुन के सामने पुराने तरीके तेजी से लुप्त होते जा रहे हैं। इसका कारण यह है कि हमाम साबुन में तेजी से फेन पैदा करनेवाले सुगन्धित साबुनों के आधुनिक गुणों के साथ-साथ प्राचीन तरीकों की सभी अच्छाइयाँ मौजूद हैं।

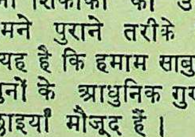

हमाम
A TATA PRODUCT
आपके स्नान. के लिए बड़ा साबुन
टाम्को सेल्स डिपार्टमेन्ट, जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद।

मातृमण्डल

क्या पढ़ -लिखी महिलायें विवाह करें ?

पुरुष की गुलामी हमें न स्वीकार करनी चाहिए

लेखिका, श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल

मेरी एक सहेली हैं; उस दिन जब वे मेरे यहाँ आईं, तब बहुत परेशान-सी थीं। बैठते ही कहने लगीं—बहन, मेरे घरवाले मेरे लिए कोई वर खोज रहे हैं और मैं विवाह नहीं करना चाहती।

मुझे आश्चर्य हुआ। कोई स्त्री भला विवाह क्यों नहीं करना चाहती? स्त्री के लिए कहा जाता है कि उसका स्थान घर है। यदि वह अविवाहित रहे तो भला घर में कैसे रह सकती है? सो मैंने पूछा—क्यों, तुम विवाह क्यों नहीं करना चाहतीं? इस प्रकार अविवाहित रहकर भला कैसे तुम रह सकोगी?

'रह क्यों न सकूँगी? स्त्री पुरुष की दासी केवल इसी लिए बनती है क्योंकि वह अपनी जीविका आप नहीं उपार्जित कर सकती। मैंने अपने को इस योग्य बना लिया है कि मैं अपनी जीविका आप उपार्जित कर लूँ। फिर मुझे विवाह करने की क्या जरूरत?' सहेली ने मेरी ओर देखते हुए उत्तर दिया।

सहेली के इस उत्तर पर मैं बहुत देर तक विचार करती रही। क्या स्त्री के लिए विवाह इसी लिए आवश्यक है कि वह अपनी जीविका का प्रबन्ध आप नहीं कर सकती? मुझे अपनी सहेली की बात कुछ जँची नहीं। नारी पुरुष के बिना अधूरी होती है। स्त्री और पुरुष परस्पर एक सूत्र में संयुक्त होकर एक ऐसी शक्ति बन जाते हैं जो सृष्टि के संचालन के लिए तो आवश्यक होती ही है साथ ही वे एक दूसरे की कमी की पूर्ति करके अपने जीवन को सुखी बना लेते हैं।

परन्तु क्या आज के समाज में स्त्री का स्थान वैसा है जिसकी वह अधिकारिणी है? प्राचीन काल में समाज मातृ-सत्तात्मक था; नारी के इंगित पर सारे समाज का मेरुदण्ड चलता था। पुरुष उस समय स्त्री का एक सहयोगी था, उसका स्वामी नहीं। परन्तु धीरे-धीरे पुरुष ने अपनी स्थिति को मजबूत करना प्रारम्भ किया। उसने स्त्री के हाथों से शक्ति को छीन लिया और स्वयं आप उसका स्वामी बन बैठा। उसके इस अत्याचार का समर्थन करने के लिए ही तो मनु आदि आचार्यों ने बड़े-बड़े ग्रन्थ लिख डाले, जिनमें उन्होंने स्त्री के पृथक् अस्तित्व को नष्ट करके उसे पुरुष की दासी करार दिया है। बिना पुरुष के स्त्री को इस जीवन में तो सफलता प्राप्त होती ही नहीं, साथ ही आगे के जीवन में भी वह नहीं सुखी रह सकती। इस प्रकार हमारे धर्माचार्यों ने स्त्री के लिए पति की दासी बनी रहने के लिए नियम बना दिया। स्त्री पुरुष की यह चालाकी समझ न सकी और आज तक वह पुरुष की दासी बनी हुई है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित अब इंग्लैंड की यात्रा करनेवाली हैं।

परन्तु अब समय बदल गया। आज के युग में विवाह भी एक आर्थिक समस्या बन गया है। पुरुष का कर्तव्य गृहस्थी का ख़र्च चलाना है, परन्तु विवाह करते समय अपनी इस योग्यता की ओर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। उनका उद्देश्य विवाह करने में होता है, घर में एक स्त्री को लाकर रख देना ही वे अपना कर्तव्य समझते हैं। बहुत से उदाहरण तो हमें ऐसे भी देखने को मिल सकते हैं कि पुरुष अपनी पत्नी की आय पर ही जीवन-निर्वाह करते हैं। यही नहीं, बहुत से लोग तो विवाह करते समय ऐसी पत्नी खोजते हैं जो धनोपार्जन कर सके और इस प्रकार उनकी जिम्मेदारी भी अपने ऊपर ले ले। इससे यह प्रकट है कि पुरुष-जाति ने स्त्री को मूर्ख समझ रखा है और अपने सभी उत्तरदायित्व को भूल कर वह अपनी पत्नी से कहीं अधिक की आशा करता है।

अब प्रश्न उठता है कि स्त्री क्या करे? इसमें सन्देह नहीं कि स्त्री पुरुष को अपना स्वामी केवल इसी लिए मानती है है कि बिना पति के वह अपने आप को जीवन-निर्वाह करने के योग्य नहीं समझती। परन्तु बहुत-सी स्त्रियाँ ऐसी हैं जो अपनी जीविका आप उपार्जित कर सकती हैं। ऐसी स्त्रियाँ पुरुष की दासी क्यों बनें? जब वे भी उतना ही काम कर सकती हैं जितना कि पुरुष करता है तब फिर उन्हें उसकी दासी होने की क्या जरूरत? इधर पुरुष यह अनुभव करता है कि बिना उसके स्त्री रह ही नहीं सकती, इसलिए लड़की के पिता को अपनी लड़की के लिए उपयुक्त वर खोजने में एँड़ी-चोटी का पसीना एक कर देना पड़ता है। दहेज में एक मोटी रकम देनी पड़ती है। यह सब क्यों? केवल इसी लिए कि पुरुष-जाति समझती है कि स्त्री कुमारी रह ही नहीं सकती। क्या कभी सुन्दर, सुशील और सुशिक्षित लड़की के लिए लड़केवाले भी लड़की के पिता को दहेज देने को तैयार रहते हैं?

स्त्री को पुरुष की इस मनमानी से बचने का केवल एक ही उपाय है और वह यह कि वह पुरुष की अपेक्षित न बनकर स्वतन्त्र जीवन-निर्वाह करने के उपयुक्त बने। यदि सभी पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ इस प्रकार अपने को पुरुष के चंगुल से मुक्त कर लें तो पुरुषों के दिमाग ठिकाने आ जायँ और तब वे समझें कि स्त्री उनकी दासी नहीं वरन् उनकी स्वामिनी है।

मैं अपनी सहेली की इस राय से सहमत हूँ कि जो स्त्रियाँ अपनी जीविका आप उपार्जित कर सकती हैं उन्हें पुरुष की गुलामी न स्वीकार करनी चाहिए। क्या हमारी अन्य बहनें इस ओर ध्यान देंगी?

[illegible]

क्या आपने कभी मसालेदार करेले खाये है?

शायद आपको करेलोंका साग बनानेकी कई विधियां मालूम होंगी। परन्तु निम्न रीतिका भी अनुभव करके अपने कुटुम्बियों को चकित कर छोड़िये। यह अच्छी तरह याद रहे कि इसमे सूखा नारीयल (खोपरा) ही खास वस्तु है—क्योंकि वह अति स्वादिष्ट होता है व आयता किसाकिसाया मिलता है।

यदि दो रत्तल करेले हों तो १½ मसाला (जिसमें हल्दी ¼, हींग ⅛ व बाकी सब सर्वसाधारण मसालेकी चीज़ें मिलकर ½ हिस्सा) ½ औंस हरा धनिया, १½ औंस नमक, ½ औंस इमली, मीठा तेल व ½ औंस सूखा खोपरा लगेगा।

यह रीती बहुतही सरल है। आजही कर देखिये!

हरएक करेलेको बराबर के चार टुकड़ोंमें ऐसे काटो कि सब टुकड़े एक तरफ़से जुड़े रहें व एक दूसरे से अलग न हों। बीज निकाल दो फ़िर एक औंस नमक सब टुकड़ोंमें लगा दो। अब इन्हे एक कपड़ेमे बांधकर पत्थरके नीचे दबाकर रखदो। आध घंटे बाद उनमेंका पानी निचोड़ दो। अब मसाला, ½ औंस नमक व इमली लेकर उनपर पानी छिड़ककर थोड़ा गरम कीजिये। यह मिश्रित मसाला करेलोंके टुकड़ोंके बीचमें भरकर मीठे तेलमें भूनिये। इसमे ½ औंस हरा धनिया, ½ औंस किसा हुआ खोपरा व तीन औंस पानी डालकर उबलने दीजिये। जब करेले नरम पड़जायें तो समझ लो कि ये पक गये। किसा हुआ नारियल काफ़ी प्रमाणा मे बुरकाइये।

सिलोन का सूखा खोपरा किसा किसाया व सबसे अच्छा होता है।

बम्बई तथा दूसरी जगहों के थोक व्योपारी व खुदरा विक्रेताओं के पते, पूरी जानकारी व नमूनेके लिये भारत स्थित सीलोन के ट्रेड कमिश्नर, हुम स्ट्रीट, बम्बई को लिखिये।
सिलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रकाशित।

आगामी हफ़्ते की प्रतीक्षा कीजिये।

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजियें।

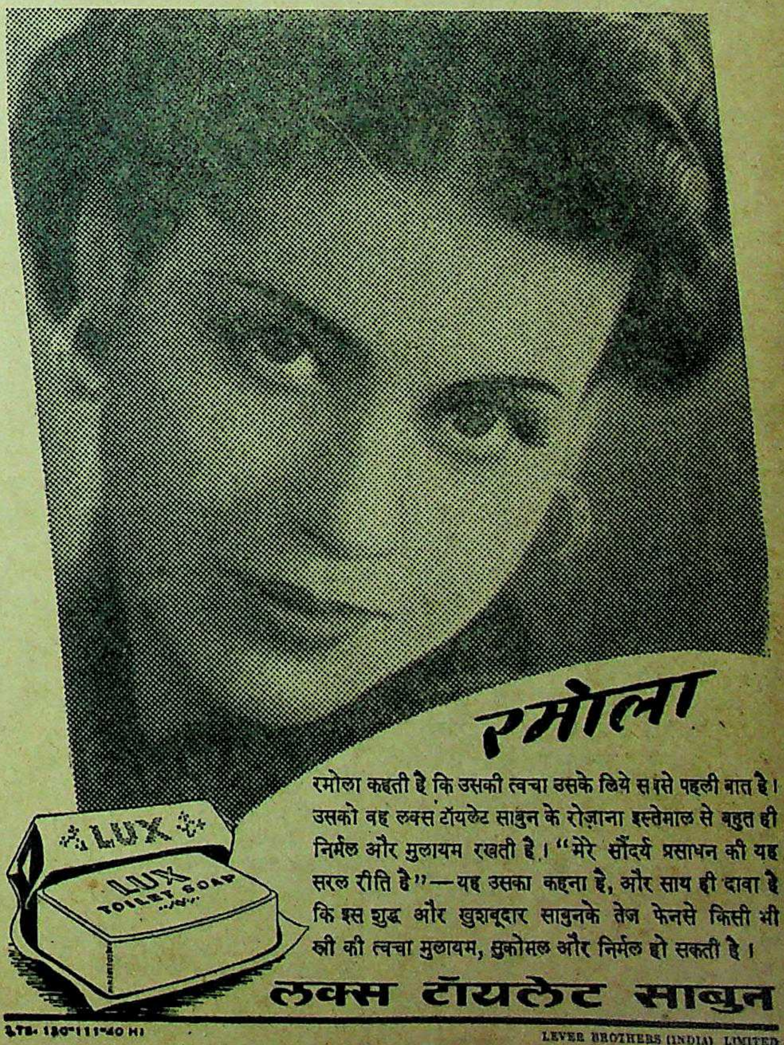

रमोला

रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे पहली बात है। उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल से बहुत ही निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य प्रसाधन की यह सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और साथ ही दावा है कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे किसी भी स्त्री की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो सकती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 130-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

संपादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दी की एक महत्त्वपूर्ण खोज

हमारे साहित्य की अनेकानेक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक हस्तलिखित पुस्तकें इधर-उधर अनधिकारी व्यक्तियों के पास छिपी पड़ी हैं। दुर्भाग्य से कुछ तो ऐसे व्यक्तियों के पास पहुँच गई हैं जो न तो स्वयम् इतना ज्ञान रखते हैं कि उन पर प्रकाश डालकर हिन्दी-साहित्य के इतिहासकारों के लिए सुलभ करते हैं और न किसी साहित्य-प्रेमी को ही उसे दिखाते हैं। फलतः समय के प्रभाव से तथा कीड़ों के खाने की सामग्री बनकर वे ग्रन्थ नित्य-प्रति नष्ट होते जा रहे हैं। आज भी हमारे देहातों में पुराने पंडितों तथा संस्कृत के विद्वानों के बस्तों में हज़ारों ऐसे हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो रहे हैं जिन पर हिन्दी-साहित्य को गौरव हो सकता है। देहातों में ऐसे भी काव्य-प्रेमी दृष्टिगोचर होते हैं जिनके यहाँ एक से एक प्रसिद्ध कवियों की रचनायें भरी हैं जो आज तक न तो प्रकाशित ही हो सकीं और न साहित्य के इतिहास-लेखक ही उन्हें जानते हैं। काव्य-प्रेमियों के पुस्तक-संग्रह से एक प्रतिलिपि की खोज बड़े परिश्रम के पश्चात् की गई है। इस पुस्तक का नाम है 'पारसीक प्रकाश'। इसकी रचना यवन-सम्राट् अकबर ने 'कृष्णदास' नामक विद्वान से करवाई थी।

खड़ी बोली के विकास का इतिहास देते हुए डाक्टर श्यामसुन्दरदास ने अपनी पुस्तक 'हिन्दी-भाषा और साहित्य' के ८४ पृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है—"इस भाषा का इतिहास बड़ा ही रोचक है। यह भाषा मेरठ के चारों ओर के प्रदेश में बोली जाती है और पहले वहीं तक इसके प्रचार की सीमा थी......... पर जब मुसल्मान इस प्रदेश में बस गये ....तब उसी प्रदेश की भाषा खड़ी बोली को अपनाया। यह कार्य एक दिन में नहीं हुआ। अरब, फ़ारस और तुर्किस्तान से आये हुए सिपाहियों को यहाँ वालों से बातचीत करने में पहले बड़ी दिक्क़त होती थी। न ये उनकी अरबी-फ़ारसी समझते थे और न वे इनकी 'हिन्दवी'।.... जहाँ पहले 'शुद्ध' 'अशुद्ध' बोलनेवालों से 'सही' गलत' बोलवाने के लिए शाहजहाँ को 'शुद्धो' सहीह इत्युक्तो ह्यशुद्धो गलतः स्मृतः" का प्रचार करना पड़ा था, वहाँ अब इनकी कृपा से लोगों के मुँह से शुद्ध अशुद्ध न निकलकर 'सही गलत' निकला करता है।"

"शुद्धो सहीह इत्युक्तो ह्यशुद्धो गलतः स्मृतः" के अन्त में एक चिह्न लगा है और पृष्ठ के अन्त में डाक्टर साहब ने नोट लिखा है, "इस 'पारसीका-प्रकाश' कोष के थोड़े से पन्ने मिले हैं; पूरी पोथी नहीं मिली।"

'पारसीक प्रकाश' कोष के निर्माण का लक्ष्य लेखक ने उसके प्रथम पृष्ठ पर इस प्रकार लिखा है, "श्रीगणेशायनमः॥ श्रीसूर्याय नमो विधाय विधिवत्संधाय चेतो रवौ दिव्यानामिव पारसीकवचसां कुर्वे प्रकाशं नवम्। सम्राट् साह जलालदीन्द सदसि प्राज्ञप्रमोदप्रदमवाह्यध्वान्त मिवापहन्तु पठतां पूर्षातरस्थं तमः॥ १॥ यवनानां प्रमोदाय वक्ष्ये जवनमोदिकाम्॥ कलिकालमूलं मत्वा माहेश्वरम् महा॥ २॥ कियताम् पारसीकानां वचसां सग्रहो-मया॥ विधीयते स्वबोधार्थं संस्कृतार्थावबोधनैः॥ ३॥ येऽवगाहितुमिच्छन्ति पारसी वाङ्महार्णवं॥ तेषामर्थे कृष्णदासो निबन्धाति वचः प्लवम्॥ ४॥"

इस उद्धरण से यह सिद्ध है कि 'पारसीक-प्रकाश' की रचना 'जलालद्दीन' उपाधि को धारण करनेवाले सम्राट् अकबर ने करवाया था। इसकी रचना शाहजहाँ की प्रेरणा से नहीं हुई थी। इसी प्रति के ऊपर लिखा है "श्रीमहीमहेन्द्र श्रीमद्कबर साहकारिते—कृष्णदासकृते।" इसी प्रकार पुस्तकप्रायः प्रत्येक प्रकरण के अन्त में "श्रीमदकबरसाहकारिते—कृष्णदास कृते" लिखा हुआ है। इससे यह सिद्ध होता है कि प्रस्तुत पुस्तक की रचना अकबर सम्राट् के आदेश से हुई थी और शाहजहाँ का इससे कोई सम्बन्ध नहीं था।

प्रस्तुत कोष 'शब्दप्रकरण', 'अव्ययप्रकरण', 'कारकप्रकरण', 'समासप्रकरण', 'तद्धितप्रकरण', इत्यादि प्रकरणों में विभाजित है और इसकी पृष्ठ-संख्या ३५ है जिनकी लम्बाई ९.६" तथा चौड़ाई प्रायः ५" है।

पारसीक कोष की यह प्रतिलिपि आज से प्रायः १७८ वर्ष पूर्व संवत् १८२३ में माणिक्य उपाध्याय नामक विद्वान् ने 'स्वपठनार्थम्' किया था जैसा कि पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ से प्रकट होता है—"इति श्रीमहीमहेन्द्र श्री मदकबरसाहकारिते कृष्णदास मिश्र-कृते पारसीक-प्रकाश कृत्प्रकरणं समाप्तम् समाप्तोऽयं ग्रन्थः शुभमस्तु संवत् १८२३—द्वितीय चैत्र शुक्ल तृतीयायाम शनौ समाप्तिः लिखितमिदम् पुस्तकम् मया श्री उपाध्याय माणिक्येन स्वंपठनार्थम् 'यादृशं पुस्तकं दृष्ट तादृशं लिखितिम् मया।"

—त्रिलोकीनारायण दीक्षित,
बी० ए० (आनर्स) एम० ए०

*　　*　　*

कलकत्ते में सरकारी योजना के अनु-गैर-सरकारी संस्थाओं-द्वारा मध्य वृत्ति के लोगों में मुफ़्त कम्बल एवं वस्त्र-वितरण का कार्यक्रम चल रहा है। सरकारी सहायता-प्राप्त "दीफ़ी फूड" संस्था ने जनवरी के प्रथम सप्ताह में २०० भद्र महिलाओं को सिलाई आदि कार्यों में लगाया।

कलकत्ता मुस्लिम लीग के शिशु-सदन को ७५० रुपये प्रतिमास की सहायता दी जाती है। इसके अतिरिक्त वस्त्र और ओषधि भी भेजी गई। अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन के औद्योगिक केन्द्र को १५ हजार आर्थिक सहायता दी गई। उक्त केन्द्र के अन्तर्गत ६ कार्य-गृह संचालित हो रहे हैं जिनमें काम करनेवाली महिलाओं की संख्या करीब ३०० के है।

इसके अतिरिक्त अनेक गैर-सरकारी संस्थाएँ सरकार के साथ सहयोग रखकर सहायता-कार्य कर रही हैं।

बंगाल प्रान्त के भदई फसल के प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात हुआ है कि इस वर्ष की फसल की भूमि का रकबा ८,९३,०२,००० एकड़ रहा, जब गत वर्ष ८७,८३,००० एकड़ था। अगहनी फसल इस वर्ष ८०,८४,००० एकड़ भूमि में रही जब गत वर्ष इसका रकबा ७९,१२,१०० एकड़ था। प्रान्त की विभिन्न भदई फसल की उपज का अनुमान साधारण उपज का ८२ प्रतिशत लगाया गया है जब कि गत वर्ष ९६ प्रतिशत था। इस वर्ष की भदई फसल की उपज अनुमानतः २६,५४३,००० टन है जब कि गत वर्ष ३०,४१,३०० टन था।

बंगाल-सरकार ने कलकत्ते में सर्वसाधारण को चेचक का टीका देने के लिए ७०० टीका लगानेवालों को नियुक्त किया है। कलकत्ता कारपोरेशन के १५२ टीका देनेवाले जो पहले से नियुक्त हैं, इसमें सम्मिलित हैं।

बंगाल-सरकार का ध्यान प्रान्त में पशुओं की अत्यधिक कमी की ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुआ [illegible] मालूम हुआ है कि गत १० वर्षों मे पशु-धन १६ प्रतिशत कम हो गया है। सप्ताह में दो दिन 'मीटलेस डे' मांसरहित दिन की योजना चल रही है। पशुवध पर निम्न आशय का नियन्त्रण भी लगाया गया है। निम्न प्रकार के पशु नहीं मारे जायेंगे।

(१) तीन वर्ष से कम आयु के पशु। (२) तीन वर्ष से १० वर्ष आयु के बैल जो खेती के काम आते हैं या आ सकते हैं। (३) तीन वर्ष से १० वर्ष तक आयु की गायें जो दूध दे सकती हों अथवा बच्चा जनने के अयोग्य न हुई हों। (४) वे गायें जो [illegible] गाभिन हों।

फिलीपाइन की नई लड़ाई

(पेज ७ का शेष)

टापुओं के द्वारा पूर्वी एशिया के अपने नवीन साम्राज्य को क़ायम रख सका है। चीन, हिन्द चीन, मलाया, स्याम, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो और न्यूगिनी के प्रदेशों की कुंजी फिलिपाइन है और जब तक यह प्रदेश जापान के हाथ में है तब तक जापान का साम्राज्य अक्षुण्ण बना रहता है। यही क्यों? स्वयं जापान का प्रवेश-द्वार भी फिलिपाइन है। इन टापुओं और जापान के मध्य में अन्य कोई बड़ा स्थल भाग नहीं है और यदि फिलिपाइन को जापान से छीन लिया जाये तो निश्चय ही उस का शेष साम्राज्य संकटों में पड़ जाता है।

शायद यही सोचकर अमरीकी सेनापति जनरल मैकआर्थर ने फिलिपाइन के पूर्वी छोटे-छोटे टापुओं मरियाना, कैकोलाइन और मार्शल आदि पर कब्ज़ा करके फिलिपाइन पर हमला किया है। आज अमरीकी सेनाएँ फिलिपाइन के लेटे, मिण्डोरो आदि प्रमुख टापुओं पर काबिज़ हैं और अब सर्वाधिक प्रमुख टापू लुज़न पर उतर कर राजधानी मनीला की ओर बढ़ रही हैं। अमरीका की कठपुतली फिलिपिनो सरकार भी वहाँ पहुँच गई है। उसके प्रथम राष्ट्रपति मैनुएल क्वेज़ोन का देहान्त हो गया है और अब ओस्मेना राष्ट्रपति हैं। लक्षण यह है कि निकट भविष्य में राजधानी मनीला पर अमरीकी क़ब्ज़ा हो जायगा और तब फिलिपाइन को समाप्त कर अमेरिका और अँगरेज़ ठेठ चीन के प्रमुख बन्दरगाह हांगकांग व शंघाई को हथियाने की कोशिश करेंगे। यह भी संभव है कि अमरीकी जल सेना फ़ारमोसा को अपनाकर सीधा जापान पर पहुँचने की कोशिश करे, किन्तु वह योजना उसके लिए काफ़ी घातक सिद्ध हो सकती है। तो भी उसका निकट भविष्य में क्रियात्मकरूप में आना संभव है।

जापानी योजना

जापानी राजनीतिज्ञ और सेनापति स्वयं भी अमेरिका की इस योजना को व्यवहार्य समझते हैं। यही कारण है कि उन्होंने पिछले कुछ मास से अपने स्थल मार्ग को सुदृढ़ बनाना शुरू किया है। ठेठ उत्तर में कोरिया से चलकर मंचूरिया, चीन, हिन्द चीन, स्याम व मलाया होकर जावा और सुमात्रा तक जापानी साम्राज्य चला गया है। इसमें केवल सुमात्रा और मलाया के मध्य में थोड़ा-सा समुद्र है जहाँ सिंगापुर का प्रसिद्ध बन्दरगाह है। बाक़ी सब भूमि प्रदेश है और परस्पर संयुक्त है। जापानी इन्जीनियर कोरिया से सिंगापुर तक एक वृहत् राजमार्ग बनाने में लगे हैं, जिसके द्वारा जापानी सेना बिना किसी समुद्री बाधा के एक जगह आ जा सके। स्थल-मार्ग में चीनी बन्दरगाह कैण्टन के उत्तरी प्रदेशों क्वीचौ और क्वाण्टंग में उन्हें कुछ बाधा थी जिसे जापानी सेना ने पिछले तीन मास में युद्ध द्वारा विजय कर लिया है। हाँ, यदि मित्रराष्ट्र ने फिलिपाइन के बाद चीन के भिन्न-भिन्न स्थानों पर फौज उतार दी जैसा कि योरप में फ्रांस, यूनान व इटली में किया था तो जापानी सेना दो भागों में बँट जायेगी। एक चीन और मंचूरिया में और दूसरी स्याम और मलाया में। स्पष्टतः जापानी सेना का यह विभाजन जापान के लिए खतरनाक सिद्ध होगा और एशिया के युद्ध को भी शीघ्र समाप्त करने में सहायक होगा।

लैण्ड ट्रस्ट आफ इण्डिया
के
फिक्स्ड डिपाजिट में
अपनी
धन वृद्धि करें
रेट इस प्रकार के हैं

३ मास के लिये	३½%
६ मास के लिये	४%
९ मास के लिये	४⅓%
१ तथा २ वर्ष	५½%
३ ,, ४ ,,	५¾%
५ ,, ६ ,,	६%
७ ,,	६⅓%
८ ,,	६½%
९ ,,	६¾%
१० ,,	७%

हमारी जमानत ?

- हमने उच्चकोटि की जमीनें लाखों रुपये के मूल्य की कलकत्ता, बनारस तथा आसपास के स्थानों में खरीदी हैं।
- भारतवर्ष के प्रत्येक व्यवसायी नगर में जमीन खरीदने की हमारी स्कीम धीरे धीरे कार्यरूप में परिणत हो रही है।
- कम्पनी के आरम्भकाल से ही हम बराबर डिविडेण्ड देते चले आ रहे हैं।

ब्योरे के लिए मैनेजिंग डाइरेक्टर
लैण्ड ट्रस्ट आफ इण्डिया
लिमिटेड

Phones :
Cal. 1464 & 1465.
Gram :—
Aryoplants

शेयर डीलर्स हाउस
१२, चौरंगी स्क्वायर, कलकत्ता
से पत्र व्यवहार करें।

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

बर्लिन की ओर लालसेना की बढ़ती हुई प्रगति

पश्चिमी मोर्चे की विजय—लीडो सड़क का उद्घाटन

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

इस बार पूर्वी मोर्चे की अस्तव्यस्त जर्मन सेना का साँस लेने के लिए भी अवकाश न दिया जायगा। शस्त्रास्त्र बनाने वाले जर्मन कारखानों पर रूसियों ने इतना कठिन प्रहार किया है जिसके फलस्वरूप उनका पुनः पनपना असम्भव है। मास्को रेडियो पर २६ जनवरी को इस प्रकार का उच्च घोष किया गया है। संसार को उक्त कथन का यूरोप के पूर्वी रणांगण की घटनाओं से प्रत्यक्ष प्रमाण मिल रहा है। मास्को और जर्मन समाचार सूत्रों की सबसे हाल की सूचनाओं से पता चला है कि रूसी मोर्चा अबाध गति से आगे को बढ़ता जाता है, यद्यपि जर्मन ब्रेस्ला ब्रोमबर्ग के पश्चिम और पोजनान के पूर्व में तीन स्थानों पर लाल सेना को रोकने के लिए अंतिम प्रतिरोध कर रहे हैं। 'रेडस्टार' पत्र के अग्रलेख में कहा गया था कि लाल सेना की पहुँच से बर्लिन अब केवल २० किलीमीटर—लगभग १२५ मील रह गया है। अतः नाजी नेताओं का चिंता-सागर में डूबना स्वाभाविक ही है। जर्मन-समाचार-एजेन्सी ने जर्मन डिप्टी प्लेस चीफ का कथन सुनाते हुए कहा कि लाल सेना की प्रगति से भयभीत होकर पूर्वी जर्मनी की सड़कों पर जर्मन शरणार्थियों का ताँता लगा हुआ है। उसने यह भी कहा 'हम जानते हैं कि जर्मनी के लिए नाजुक समय उपस्थित है। यह समय बतायेगा कि लाल संकट के सामने हम दब जायंगे या भारी अग्निपरीक्षा से मुक्त होकर निकलेंगे' मास्को की घोषणा से प्रकट होता है कि पूर्वी मोर्चे पर जर्मनों की सबसे बड़ी पराजय हुई है। जर्मनों की प्रथम रक्षा पंक्ति पर मार्शल जुकोव तथा कोनीव को रोकने की चेष्टा पूर्णतया विफल हो चुकी है। केवल १० दिन के हमले में प्रथम यूक्रेनियन मोर्चे की फौजों ने ६०,००० से अधिक जर्मनों को मौत के घाट उतारा तथा २१,००० को बन्दी बनाया। यही नहीं ५६ वें जर्मन टैंकदल के कमांडर और उनके स्टाफ के प्रधान बन्दी बना लिये गये हैं। इसलिए मास्को रेडियो का यह सूचित करना सार्थक है कि हिमलर साइलेशिया की अगली पंक्ति के पीछे साइलेशिया के गृह-रक्षक सैन्यदल के निरीक्षण के लिए उपस्थित था। क्यों नहीं, साइलीशिया में मार्शल कोनीव ने ओडर नदी को पार कर लिया है। वहाँ की राजधानी पर उनका अधिकार हो चुका है और बड़े-बड़े औद्योगिक नगरों में लाल सेना का धुँआधार सुनाई पड़ रहा है, जिससे क्रूर हिमलर का कलेजा काँप जाना स्वाभाविक है। मार्शल स्टालिन के सबसे ताजे निर्देशपत्रों में कहा गया है कि उत्तरी साइलेशिया की राजधानी ओपेलन तथा ब्रेसलाव के उत्तर के नगरों पर कब्जा कर लिये जाने पर एक छठा रूसी हमला, जिसके फलस्वरूप युद्ध मोर्चे का ६०० मील तक प्रसार हो गया है, आरम्भ होने तथा कैलिस्जन जो कि लीज से ५८ मील पर है, तथा पूर्वी प्रशा में लिक, बियाला और नूयेन डोर्ड नगरों पर कब्जा कर लिये जाने की घोषणा की। ब्रेसलाव के उत्तर में जो एक नगर पर रूसी कब्जा हुआ उसका नाम राविक्ज है, जो बर्लिन से १५२ मील दक्षिण-पश्चिम में है। लोज और टिलसिट का पतन विचाराधीन सप्ताह के आरम्भ ही में घोषित हो चुका था। रायटर के विशेष संवाददाता की सबसे ताजी सूचना यह है कि सोवियट टैंक और स्टार्म फौजें केवल ब्रेसलाव के बहिर्भाग में घुस रही हैं! जर्मन बहुत ही बर्बरता के साथ जी तोड़ लड़ रहे हैं। प्रशा में रूसी मार्शल चेरनिआकोवस्की की फौजें कोनिंग्सबर्ग के रक्षाप्रबन्ध की प्रथम पाँति तक पहुँच गई हैं और जर्मनों के सभी प्रतिरोध के प्रयत्न उन्होंने चूर कर दिये हैं।

पश्चिमी रणक्षेत्र में स्ट्रासबर्ग के उत्तर का मोर्चा छोड़कर मित्र सेनायें सर्वत्र आक्रमणकारी होने की स्थिति में हैं। सबसे हाल के समाचार इस प्रकार हैं—प्रधान मित्र सेनापति जनरल आइसन होवर की विज्ञप्ति में कहा गया है कि मित्र फौजों ने दक्षिणी हालैंड में शत्रु के हलके प्रतिरोध का निवारण करते हुए मोन्टफोर्ट पर कब्जा कर लिया। आइरेंज के दक्षिण-पश्चिम औरवे कस्बे पर भी हमारा कब्जा हो गया। मित्र फौजें ब्रिन्सफील्ड के भी आगे बढ़ गई हैं। दक्षिण में भी शत्रु की कुछ भूमि उनके अधिकार में आ गई है। फील्ड मार्शल मोन्टगोमरी के सदर मुकाम से रायटर का विशेष संवाददाता लिखता है कि मित्र विमानों ने रेलवे लाइनों और 'वी २' के स्थानों पर ऐसी भीषण गोलाबारी की कि सम्पूर्ण पश्चिमी हालैंड का सम्बन्ध जर्मनी से कट गया। उत्तरी हालैंड किसी सी रेलवे लाइनें बेकार हो गई हैं और जर्मन उनकी बड़ी तेजी से मरम्मत करने में लगे हैं। ब्रिटिश द्वितीय सेना की दक्षिण-पूर्वी हालैंड के रोडर नदी के क्षेत्र में अनेक स्थानों में प्रगति हुई है और यहाँ के युद्ध में जर्मनों के ४,००० से अधिक सैनिक हताहत हुए हैं तथा २,००० से अधिक कैद किये गये हैं। प्रथम फ्रेंच सेना, की फौजों ने घुटने भर बर्फ में चलते हुए कोलमार के उत्तरी क्षेत्र में हमला किया, और उन्होंने रूजसबर्ग कोलमार सड़क को काट दिया है। एक ताज़ी रिपोर्ट में कहा गया है कि इस नदी को मित्र फौजों ने कई जगह पार किया, और मित्र फौजें लगभग ५ मील आगे बढ़ी हैं! कोलमार के लिए युद्ध आरम्भ हो गया है। ब्रिटिश फौजों ने जर्मनी के भीतर रोर के पश्चिम लड़ते हुए एपहोवर और स्टेटन पर कब्जा कर लिया। इस बीच में जर्मन आर्डेनेस क्षेत्र में, राइश की सीमा से ५ मील पर अपनी नई सैनिक पाँति बना रहे हैं। तृतीय सेना का जर्मन जोरों के साथ मुकाबला कर रहे हैं। पर क्लेरकर के पश्चिमी किनारे पर तृतीय सेना की कवचधारी फौजों ने कुछ गाँवों से शत्रु को भगा दिया। अमेरिकन फौजें सेंठ विध और अन्य स्थानों की ओर बढ़ी हैं। लाल सेना के भीषण आक्रमण के कारण आर्डेनेंस क्षेत्र से जर्मन सेना हटा रहे हैं अतः इस कार्यवाही को देखकर जनरल आइजन का मार्शल स्टालिन की सामरिक नीति के विषय में जानकारी रखना भी समयानुकूल है। २५ जनवरी को नेशनल ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के संवाददाता ने एक ब्राडकास्ट में कहा है कि जनरल आइजन होवर ने मार्शल स्टालिन से सम्पर्क स्थापित किया है।

इटली में ८ वीं और ५ वीं सेनाओं के मोर्चों पर विचाराधीन सप्ताह में भी मौसम बहुत खराब रहा। फिर भी उनकी पतरौल कार्रवाई जारी रही। सीनियो नदी पर जर्मनों ने पश्चिमी तट पर और मित्र सेनाओं ने पूर्वी तट पर अपनी अपनी मोर्चाबंदी बनानी चाही, किन्तु किसी को भी सफलता न मिली। २३ जनवरी को अकस्मात् एड्रिमांडक तट पर कमचियों के दक्षिण में एक भीषण लड़ाई हो गई।

सुदूर पूर्व में लुजोन प्रांत की राजधानी तारलाक पर अमरीकी सेनाओं ने अधिकार कर लिया जो मनीला से केवल ६५ मील पर स्थित है। अमेरिकनों ने लिंगयान खाड़ी से केंद्रीय मैदानों को पार कर लिया है और इस प्रकार उत्तर लुजोन में शत्रु के जमाव पर घेरा डाल दिया है। इसके अतिरिक्त लियेटे के पश्चिम में पेरसन और पोरो द्वीपों पर उतरकर उन्होंने अपने आरोहण का विस्तार और भी बढ़ा लिया है। 'टाइम्स' के एक संवाददाता का कथन है कि जनरल मैकआर्थर मनीला की दिशा में बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं।

बर्मा में विचाराधीन सप्ताह की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना लीडो रोड का खोला जाना है। चीन को जानेवाले स्थल मार्ग को जापानियों ने ढाई साल से अधिक हुए काट रक्खा था, जिसे प्रथम सेना के चीनी सैनिकों ने साफ कर दिया है। २३ जनवरी को लेफ़्टिनेन्ट जनरल सुलतान ने एक प्रेस कान्फरेंस में कहा कि चीनी सैनिकों ने इस मार्ग को खोलने में बड़ी वीरतापूर्ण लड़ाइयाँ लड़ीं। इस सड़क को खोलने की लड़ाई मार्च, १९४३ में शुरू हुई थी। अतः अब चीन को सैनिक सामग्री भेजना सुलभ हो जायगा। २१ जनवरी को प्रातःकाल मित्र सेनायें रेमरी द्वीप के उत्तर-पश्चिम तट पर उतरीं, जो अकयाब से ८० मील दक्षिण में है। शत्रु ने मित्रों की इस कार्रवाई का कोई प्रतिरोध नहीं किया। मांडले के उत्तर-पूर्व में शत्रु का प्रतिरोध बढ़ गया है किन्तु १४ वीं सेना उसका डटकर मुकाबला कर रही है। टिलिन पर मित्र-सेनाओं का अधिकार हो गया है। मोनीवा के दक्षिण में मित्र प्रगति जारी है और मित्र-सैनिकों ने मांडले के ३२ मील पश्चिम इरावदी के उत्तरी किनारे पर मीनम पर अधिकार कर लिया है। इन जल एवं स्थल कार्यवाहियों के अतिरिक्त सुदूरपूर्व में मित्रों की वायुसेना ने पूर्व सप्ताह की भाँति विचाराधीन सप्ताह में भी जापान के प्रमुख नगरों और शत्रु अधिकृत, फारमोसा, सिंगापुर आदि प्रदेशों पर भीषण गोलाबारी की।

अतः मित्रों की सफलताओं एवं उनकी आरोहण शक्ति को देखकर जापानी प्रधान मन्त्री कोइसो ने वर्तमान महासमर की परिस्थिति को गंभीरतम जताते हुए जापानी जनता को पूर्ण सैनिक भर्ती और केवल युद्ध-सम्बन्धी कार्य करने का आदेश किया है। क्या यह जापान के भयभीत होने का संकेत नहीं है?

"सरस्वती सिरीज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित
उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित
हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि० इलाहाबाद

रक्तहीनता
स्वास्थ्य तथा जीवन का ख़तरा!
※
¶ रक्तवर्द्धन स्नायुविकार ही रक्तहीनता का कारण है।
¶ पुराने मलेरिया, टायफायड, जुकाम तथा कालाज्वर इत्यादि से भी यह पैदा हो जाता है।
लिवरेक्स
LIVEREX
रक्तहीनता की अत्यन्त विश्वसनीय औषधि है। इंजेक्शन, गोली तथा तरल तीनों रूप में सेवन के लिए मिलती है।
इंजेक्शन के लिए—लिवरेक्स
खाने के लिए —लिवरेक्स लिक्विड
लिवरेक्स आइरन-सहित
लिवरेक्स टेबलेट
सेवन करने में सरल तथा शीघ्रतापूर्वक गलनेवाली
सभी औषधि-विक्रेताओं से प्राप्य।
बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

हमारी राजपूताने की चिट्ठी

जेल मुक्त कांग्रेसियों की सभा

['देशदूत' के विशेष प्रतिनिधि-द्वारा]

अजमेर-मारवाड़ा के जेल-मुक्त कांग्रेस कार्य-कर्ताओं की पहली सभा पिछले सप्ताह अजमेर में श्री मुकुटविहारी भार्गव की अध्यक्षता में हुई। शोक प्रस्ताव के बाद महात्मा गांधी और कांग्रेस-कार्य-समिति के प्रति विश्वास प्रकट किया गया और उसी प्रस्ताव में उनसे अनशन का इरादा त्याग देने की प्रार्थना भी की गई। एक अलग प्रस्ताव पास करके रचनात्मक कार्य-क्रम की महत्ता पर जोर दिया गया तथा प्रान्तवासियों से इसके लिए पूरी शक्ति लगाने की अपील की गई। जेल-मुक्त कांग्रेस-कार्यकर्ताओं पर लगी पाबन्दियों की निन्दा की गई और अजमेर-मारवाड़ा कांग्रेसजन-प्रतिनिधि-सभा के संगठन का निश्चय किया गया, जिसके सभापति श्री भार्गव ही चुने गये। वे इससे पहले प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष भी थे।

ऐसा माना जाना चाहिए कि कांग्रेस-कार्यकर्ताओं की यह बैठक स्थानीय सरकार की बदली हुई नीति का परिणाम थी। नये चीफ कमिश्नर के आने के बाद रिहाइयाँ भी और हुई हैं और कई पाबन्दियाँ भी उठी हैं। पर अब भी चार कांग्रेस-जन जेल में हैं और तीन पर कुछ पाबन्दियाँ भी लगी हुई हैं। इनमें से प्रो० गोकुल लाल ऊसाकर पाबन्दी तोड़कर जेल जाने के इरादे में हैं। आप अभी पिछली पाबन्दियाँ तोड़ने के कारण हुई सजा भुगत कर छूटे हैं।

अजमेर शहर के गैर-सरकारी क्षेत्रों में इससे बड़ी नाराजी फैली है कि सरकार ने वर्तमान म्यूनिसिपल्टी की अवधि समाप्त होने के बाद नामजद कमेटी बैठने का फैसला कर लिया है। लड़ाई भर और उसके ६ महीने बाद तक नामजद कमेटी ही से काम चलाने का सरकार इरादा है। कांग्रेस-कार्यकर्ताओं की सभा में इसके विरुद्ध प्रस्ताव भी पास हुआ था तथा दूसरे लोग भी इसे अकारण नागरिक अधिकारों पर आघात मानते हैं।

जयपुर

पिछले सप्ताह यहाँ सर सी० वी० रमण और डा० जीवराज मेहता आये। दोनों ने क्रमशः जयपुर-विश्वविद्यालय और मेडिकल कालेज की स्थापना पर जोर दिया। स्थानीय अथेनियम क्लब की बैठक में सर सी० वी० रमण ने 'रेगिस्तानों' के सम्बन्ध में बड़ा ही विचारोत्तेजक भाषण दिया। आपने कहा कि महायुद्धों-द्वारा मानव हत्या करने की जगह रहने लायक नई जगहों की खोज इन बेकार पड़े रेगिस्तानों में की जानी चाहिए। आपकी भावना है कि रेगिस्तानों में भी आप भी रह सकते हैं। आपने रेगिस्तानी जीवन और उपज की खोज पर बहुत जोर दिया।

मालूम हुआ है कि ओरियंटल कांग्रेस और पी० ई० एन० संगठन की भारतीय शाखा के वार्षिक सम्मेलन इस बार जयपुर में होंगे।

उदयपुर

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने दुबारा राजपूताने का सम्मान करने का निश्चय किया है। उदयपुर में अपना अगला वार्षिक अधिवेशन करने का निश्चय करके सम्मेलन ने सारे प्रान्त को आभारी किया है। उदयपुर की साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रतिभा आज विकास की जिस अवस्था में है उसको ध्यान में रखते हुए आशा की जा सकती है कि यह अधिवेशन बहुत सफल होगा। पिछले साल अधिवेशन जयपुर में हुआ था और इससे पहले एक अधिवेशन भरतपुर में हो चुका है।

पत्रकारों की आर्थिक दशा में सुधार की आवश्यकता

(पेज ४ का शेष)

'अमृत बाजार पत्रिका' पर यह आज्ञा लगा दी कि वे पत्रों में छपने वाले सब समाचारों की जाँच पुलिस के एक सब-इंस्पेक्टर से करायें। इस सम्मेलन और भारत-सरकार में जो समझौता हुआ था उसके अनुसार सम्पादकों ने स्वयं अपना 'सेंसर' होना स्वीकार किया था और दूसरी ओर सरकार ने समाचारों पर सेंसर न लगाने का वादा किया था। पर इलाहाबाद के जिला मजिस्ट्रेट ने जो वैसी आज्ञा दी उससे वह समझौता पूरी तरह भंग किया गया। यह बात कि वह आज्ञा २४ घंटे के भीतर वापस ले ली गई थी, इसके लिए कोई जिम्मेदारी नहीं है कि अन्य अफसर ऐसी मूर्खतापूर्ण आज्ञा भविष्य में न देंगे। भारत सरकार को चाहिए कि वह इसके लिए उचित उपाय करे कि उसके अफसर भविष्य में ऐसा न करें।

वरधा के जिला मजिस्ट्रेट ने स्थानीय तारघर के कर्मचारियों को यह आज्ञा दी कि समाचारपत्रों के लिए आये हुए सब तार पहले उसके (मजिस्ट्रेट) के पास मंजूरी के लिए भेजे जायँ। ऐसे आदेश से भारतीय टेलिग्राफ ऐक्ट का दुरुपयोग किया गया।

गत वर्ष अप्रैल में बम्बई में भीषण धड़ाका होने पर 'बाम्बे सेन्टिनल' पत्र पर प्रतिबन्ध लगाया गया था जिसे प्रेस सलाहकार कमेटी के हस्तक्षेप करने पर वापस लिया गया। लखनऊ के 'नेशनल हेराल्ड' पत्र का प्रकाशन सन् १९४२ में बन्द हो गया था, पर गत वर्ष उसके मालिकों ने उसे पुनः निकालना चाहा, पर सर मेरिस हेलेट की सरकार ने उसके लिए आज्ञा नहीं दी। भारत-रक्षा-कानून के भीतर यह एक बड़ा ही स्वेच्छाचारी कार्य हुआ है। 'नेशनल हेराल्ड' इस सम्मेलन का सदस्य है, और देश की बदली हुई राजनीतिक परिस्थिति में उस पर प्रतिबन्ध लगाना उचित नहीं है।

सम्मेलन की स्थायी समिति-द्वारा विरोध किये जाने पर भी लुई फिशर के लेखों पर से प्रतिबन्ध नहीं हटाया गया।

श्री ब्रेलवी ने आगे पत्रकारों की आर्थिक दशा सुधारने पर जोर दिया। आपने कहा कि सम्मेलन की स्थायी समिति ने अँगरेजी और देशी भाषाओं के पत्रों के पत्रकारों के सम्बन्ध में जो कम से कम वेतन निश्चित किया था उस पर देश भर के पत्रकार-संघों ने बड़ी टीका-टिप्पणी की है, पर मैं पत्रकारों को यह विश्वास दिलाता हूँ कि यह भेद-भाव उड़ जाने से हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। आपने देशी भाषाओं के पत्रकारों की सेवाओं की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि वे अँगरेजी भाषा के पत्रकारों से किसी तरह भी कम नहीं हैं।

दूसरे दिन के अधिवेशन में अखिल भारतीय सम्पादक-सम्मेलन ने निम्न आशय के प्रस्ताव पास किये हैं—

(१) इस सम्मेलन की यह माँग है कि भारत में प्रेस-सम्बन्धी कानून ब्रिटेन और अमेरिका के अनुरूप होने चाहिए, इसलिए प्रेस (इमर्जेन्सी पावर्स) एक्ट और प्रिन्सेज प्रोटेकशन ऐक्ट तुरन्त रद होने चाहिए, और ताजीरात हिन्द, जाब्ता फौजदारी तथा अन्य कानूनों में भी यथोचित संशोधन होने चाहिए।

(२) सम्मेलन अमेरिका के प्रकाशकों की इस माँग का समर्थन करता है कि युद्ध के बाद संधि-पत्रों में ये साफ शर्तें रहें कि समस्त जिम्मेदार पत्र-प्रतिनिधियों की पहुँच खबरों के मूल स्थानों तक रहे, बिना सेन्सर के वे समाचार भेज सकें, यातायात के लिए सुविधायें मिलें, और सबसे एक से मूल्य लिये जायँ।

(३) पेपर कन्ट्रोल आर्डर की धाराओं का उपयोग सरकार जिस तरह करती है उसका यह सम्मेलन विरोध करता है, क्योंकि इससे पत्रों के बढ़ने में बाधा पहुँचती है, कागज की स्थिति सुधरने के कारण सरकार को कन्ट्रोल आर्टर कुछ शिथिल करना चाहिए।

(४) सम्मेलन को इस पर खेद है कि मराठी पत्र 'वार्ता' के सम्पादक कुछ लेख प्रकाशित करने के लिए सन् १९४० की ११ जून से नजरबन्द हैं, और उन्हें अब तक कोई कानूनी सुविधा नहीं दी गई है। इस मामले की ओर बम्बई सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए श्री ब्रेलवी के सभापतित्व में एक कमेटी नियुक्त की गई है।

(५) सम्मेलन को इस पर बहुत चिन्ता है कि श्री देशबन्धु गुप्त, एम० एल० ए० (तेज के), श्री वीरेन्द्र (प्रताप, लाहौर) सन् १९४२ के अगस्त से नजरबन्द हैं और उनका स्वास्थ्य खराब हो गया है। इनके अतिरिक्त श्री माखनलाल सेन, (भारत) श्री मनोरंजन गुह, श्री मणीन्द्रराय, श्री अश्वनीदत्त, श्री खेमेन्द्र सेन, श्री केशव गुहा (हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड और आनन्द बाजार पत्रिका) श्री सुरेन्द्रनाथ चटर्जी, नियोगी, श्री कमलापति त्रिपाठी (काशी), पं० बालकृष्ण शर्मा, श्री जयन्त और श्री मधुसूदन महापात्र को छोड़ दिया जाय, क्योंकि डाक्टरी इलाज से उन्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा है। जिन पत्रकारों को बिना मुकदमा चलाये नजरबन्द रखा गया है, उन्हें तुरन्त छोड़ दिया जाय।

इंडियन प्रेस लि० प्रयाग

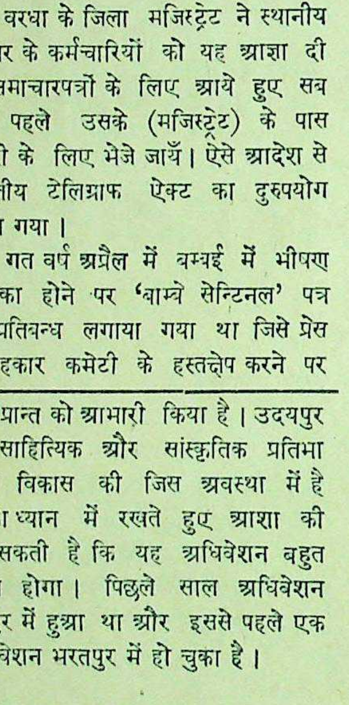

बाबू श्यामसुंदरदास

किसी भी विषय का शास्त्रीय अध्ययन बिना गुरु की सहायता लिये भी किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में गुरु का कार्य-क्षेत्र बढ़ गया है। पहले के गुरु अपने जीवन में सौ, दो सौ, हजार दो हजार विद्यार्थियों को पढ़ा सकते थे। किन्तु आज के गुरु अपनी लिखी हुई पुस्तकों के द्वारा असंख्य विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं।

हिन्दी-साहित्य का शास्त्रीय अध्यायन करनेवाले गुरुओं में डा० **बाबू श्यामसुन्दर दास** का स्थान बहुत ही ऊँचा है। आप हिन्दी के उन इने-गिने विद्वानों में हैं, जिन्होंने हिन्दी-साहित्य की उन्नति और अभिवृद्धि के लिये अपना समस्त जीवन खपा डाला है। आपकी विद्वत्ता और प्रतिभा का लोहा सारा हिन्दी संसार मान चुका है। आपकी लिखी पुस्तकों के लिए सारा हिन्दी-जगत् हमेशा लालायित रहा करता है। नीचे हम उनकी कुछ पुस्तकों के नाम दे रहे हैं जो हिन्दी साहित्य का अध्यायन करनेवाले प्रत्येक विद्यार्थी के लिये आवश्यक हैं।

भाषा-रहस्य	५।-)
रूपक-रहस्य	२॥≡)
साहित्यालोचन	५।-)
भाषा-विज्ञान	४)
मेरी आत्मकहानी	२)

हिन्दी-साहित्य

(हिन्दी भाषा और साहित्य का संशोधित और परिमार्जित संस्करण)
हिन्दी-साहित्य के इतिहास पर एक
मात्र प्रामाणिक और उपलब्ध ग्रन्थ

मूल्य चार रुपये

वैद्यक उपाधियाँ।

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।

भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि

पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी
की
तीन पुस्तकें

झरना — शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनसे उनके भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि बालकों में सद्विचारों को बचपन में ही बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की इन कृतियों को अपनाना चाहिए, और उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
।।।) बारह आने

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

---

५५ वर्ष की उम्र में भी पूर्ण स्वस्थ

क्रुशेन साल्ट को धन्यवाद

बहुत-सी स्त्रियाँ तथा पुरुष अपनी आधी उम्र के बाद शरीर में दर्द का अनुभव करने लगती हैं। जिसका कारण केवल अम्ल हुआ करता है। किन्तु मिस्टर तथा मिसेज पैट्रिक को ऐसा कभी नहीं हुआ। वे प्रायः बीस वर्ष से अच्छे स्वास्थ्य का आनन्द उठा रहे हैं। श्रीमती पैट्रिक लिखती है :—

गत बीस वर्ष से हम हमेशा एक चम्मच क्रुशेन साल्ट चाय में डालकर प्रति दिन सवेरे पीते हैं। छुट्टियों में भी इसे बन्द नहीं करते। मेरा तथा मेरे पति का स्वास्थ्य केवल क्रुशेन साल्ट के कारण इतना अच्छा है जो कि हम दावे के साथ कह सकते हैं। मेरे डाक्टरों का बिल केवल नाममात्र का होता है और यद्यपि मेरे पति की उम्र इस समय ५५ वर्ष की है वे ४५ से अधिक नहीं मालूम पड़ते। उनको साल भर प्रत्येक मौसम में बाहर काम करना पड़ता है फिर भी उनका स्वास्थ्य दर्शनीय है। क्रुशेन साल्ट का इस्तेमाल आरम्भ करने के पूर्व उनकी भुजा में गठिया हो गया था जो कि कई वर्ष हुए अब अच्छा हो गया किन्तु क्रुशेन साल्ट का सेवन हमने बन्द नहीं किया। जितना पैसा हमने क्रुशेन साल्ट पर खर्च किया, वह पूर्ण बुद्धिमानी से खर्च हुआ है—(श्रीमती) एल० सी० पैट्रिक।

क्रुशेन छः प्राकृतिक नमक का संमिश्रण है जो आपके पित्ताशय तथा गुर्दों को ठीक करता है तथा पाचनक्रिया को सचेत और नियमित बनाता है। वे शरीर की भीतरी सफाई रखते हैं तथा रक्त को स्वच्छ रखते हैं।

सभी दूकानों तथा औषध-विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

इम्पायर आफ इण्डिया
लाइफ एश्योरेन्स कम्पनी लि०

स्थापित—१८९७

प्रधान कार्यालय—बम्बई

छियालीसवीं वार्षिक रिपोर्ट की कुछ विशेषतायें	सम्पूर्ण आय	८७,६७,०००) से भी अधिक
	चालू बीमे	१५,०६,८६,०००) " " "
	सम्पत्ति	५,६८,८४,०००) " " "
कम्पनी के आरम्भ काल से अब तक चुकाये गये दावे	...	७,६२,००,०००) से भी अधिक

एजेंसी तथा विवरण के लिये लिखें :—

मेसर्स डी० सी० सेन गुप्ता एण्ड कं०, चीफ़ एजेन्ट्स, यू० पी०

४४, जानसेनगंज, इलाहाबाद
अथवा
१०, नील रोड, लखनऊ।

कीमतों पर कंट्रोल-
सरकार किस प्रकार आपकी सहायता कर रही है

होर्डिंग ऐण्ड प्राफीटियरिंग प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स के अनुसार कंट्रोलर जनरल, सिविल सप्लाइज़ को आपके हितों की रक्षा के लिए बहुत व्यापक अधिकार प्राप्त हैं।

उदाहरण स्वरूप

१–वह किसी दुकानदार को हुक्म दे सकता है कि खरीद-बिक्री का हिसाब रखे और अपने व्यापार के अलावा दूसरे व्यापारों के बारे में भी आवश्यक विवरण पेश करे।

२–किसी दुकानदार को हुक्म दे सकता है कि अपने बही-खाते दिखाये और यह हुक्म भी जारी कर सकता है कि कोई गज़टेड आफिसर दुकान या व्यापार से संबंधित इमारत में दाख़िल होकर तलाशी ले।

३–सन्देह होने पर सामान पर क़ब्ज़ा कर सकता है।

४–आयात किये गये माल के बन्दरगाह पर पहुँचने तक की लागत का सर्टीफिकेट जारी कर सकता है जो हर हालत में निश्चित प्रमाण समझा जाता है।

५–माल के वितरण पर क़ाबू रखने के लिए केवल निर्धारित व्यक्तियों के हाथ माल बेचने का आदेश दे सकता है जिससे माल उन्हीं जगहों पर जाये, जहाँ इसकी बहुत ज़रूरत हो।

६–दुकानदारों को हुक्म दे सकता है कि अपनी दुकानों में कंट्रोल की क़ीमतों की सूची प्रमुख स्थान पर लगायें।

यह आर्डिनेन्स अनाज और उन चीज़ों को छोड़ कर जो समय समय पर इससे ख़ास तौर पर बरी की गई हों, और सब चीज़ों पर लागू होता है।

बहुत सी चीज़ों के अधिकाधिक भाव निश्चित किये जा चुके हैं। तत्संबंधी विज्ञप्तियों की प्रतियाँ मैनेजर आफ पब्लीकेशन्स, सिविल लाइन्स, दिल्ली से मिल सकती हैं।

अगर आपको सन्देह हो कि आपसे अधिक दाम लिये गये हैं, तो बिना संकोच मामले कि रिपोर्ट स्थानीय सिविल सप्लाइज़ आफिसर को या चाहें तो नीचे लिखे हुए डिपार्टमेण्ट के पास भेजिए।

नोट—कुछ हालतों में सबूत का बार मुलज़िम पर होता है। उसे अपने आपको निर्दोष साबित करना पड़ता है। वादी को उसका जुर्म साबित करने की ज़रूरत नहीं।

१५ हज़ार रुपये जुर्माना और क़ैद
मुनाफ़ाख़ोरी के लिए कड़ी सज़ा

कराची, १३ अक्टूबर–एण्टी होर्डिंग ऐण्ड प्राफीटियरिंग आर्डिनेन्स (संग्रह तथा मुनाफ़ाख़ोरी निरोधक क़ानून) के अनुसार कल जनरल स्टोर के कई व्यापारियों को कड़ी सज़ायें दी गईं। एक दुकानदार को ६ः महीने सपरिश्रम कारावास और १५ हज़ार रुपये जुर्माने की सज़ा हुई।

इस तरह की खबरों से पता चलता है कि सरकारी इन्सपेक्टरों के दल-बादल नित्य प्रति अनुचित भावों को घटाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़
ऐण्ड सिविल सप्लाइज़,
नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

बात
समझ लीजिए-अपने
अधिकार
माँगिए

होर्डिङ्ग ऐण्ड प्राफीटियरिङ्ग
एच.पी.पी.ओ.
प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स

AAA 1326 Hindi

यदि वह एल्गिन का है तो अच्छा है

"If its ELGIN its good!"

एल्गिन—टर्किश और हकाबैक तौलियों, ड्रिल्स, झाड़न, धोतियों, साड़ियों और चादरों के वास्ते।

दि एल्गिन मिल्स कं० लिमि०, कानपुर

सोल सेलिंग एजेंट्स—
मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र
पुराना जनरलगंज, कानपुर।

EK-0

स्टाक रखने वाले—
मेसर्स पी० बी० कूपर एण्ड कम्पनी, दि माल, कानपुर।
मेसर्स सी० टेकचन्द एण्ड कम्पनी, हजरतगंज, लखनऊ।
तथा अन्य उच्च श्रेणी की दूकानें।

Stanistreet
Solid
dentifrice

इनको स्टेनिस्ट्रीट सालिड डेन्टी फ्राइस के प्रयोग से स्वच्छ रखिये।

SMITH STANISTREET & CO LTD.
CALCUTTA, BOMBAY, MADRAS, KARACHI, LUCKNOW, AMRITSAR.

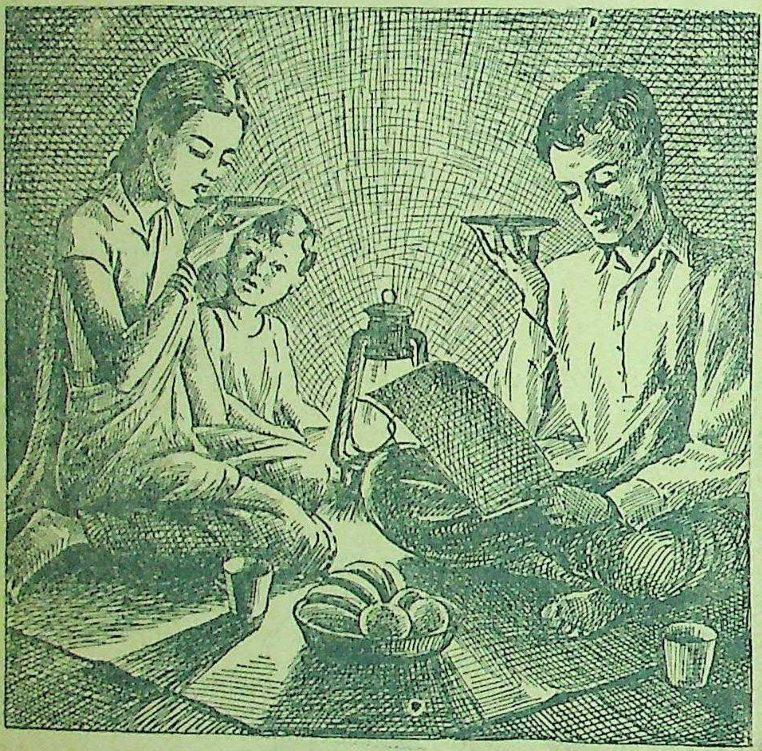

चाय का समय—पश्चिमी भारत में

दक्षिणापथ भारत के पथरीले समस्थल जो कि महाराष्ट्रीय प्रदेश का एक प्रधान भाग है, गुजरात के तटीय शस्य-श्यामल भूमि के ठीक प्रतिकूल है। वहाँ के लोग बड़े उद्योगी होते हैं। कृषिक्षेत्र में लगे हों या शहर में व्यापार करते हों—किसी व्यवसाय में क्यों न हों, वे परिश्रम खूब करते हैं।

गुजराती और महाराष्ट्रीय परिवारों की बहुत-सी रस्म-रिवाजें मिलती-जुलती हैं। उसमें से एक तो सुबह के स्नान के बाद उत्तेजक गरम चाय का पान है। चीनी मिट्टी के पात्र में बनती है और व्यक्तित्व की रुचि के अनुसार वे उसमें दूध और चीनी मिलाकर पीते हैं। विशेषतः ग्रामों में चाय के साथ वे बहुधा फल का सेवन करते हैं, क्योंकि उनके यहाँ प्रथम भोजन प्रायः मध्याह्न के समय में होता है।

समग्र पश्चिमी घाट में ताजी ब्रूक बांड चाय अत्यन्त ही प्रिय है जैसे कि भारत के अन्य भागों में।

ब्रूक बॉंड

'दो पत्ती और एक कली"

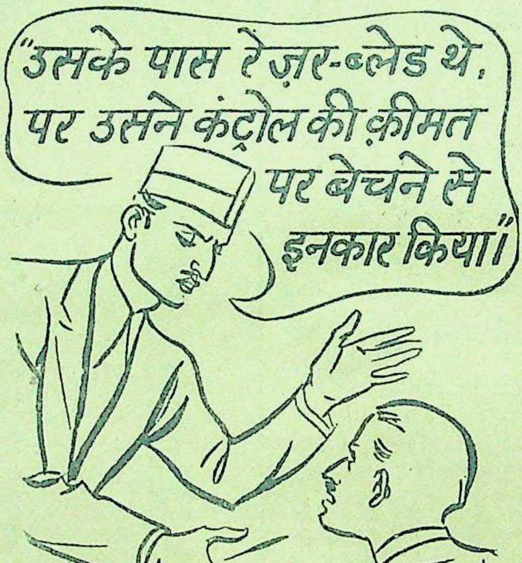
"उसके पास रेज़र-ब्लेड थे, पर उसने कंट्रोल की क़ीमत पर बेचने से इनकार किया।"
"हम तुरत इस मामले की जाँच करेंगे।"

यह
ब्लैक मार्केट
को मिटाने में मदद
कर रहा है

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे द्वारा प्रकाशित

AAA 1384C

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या ≈)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, १८ फरवरी, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th February, 19

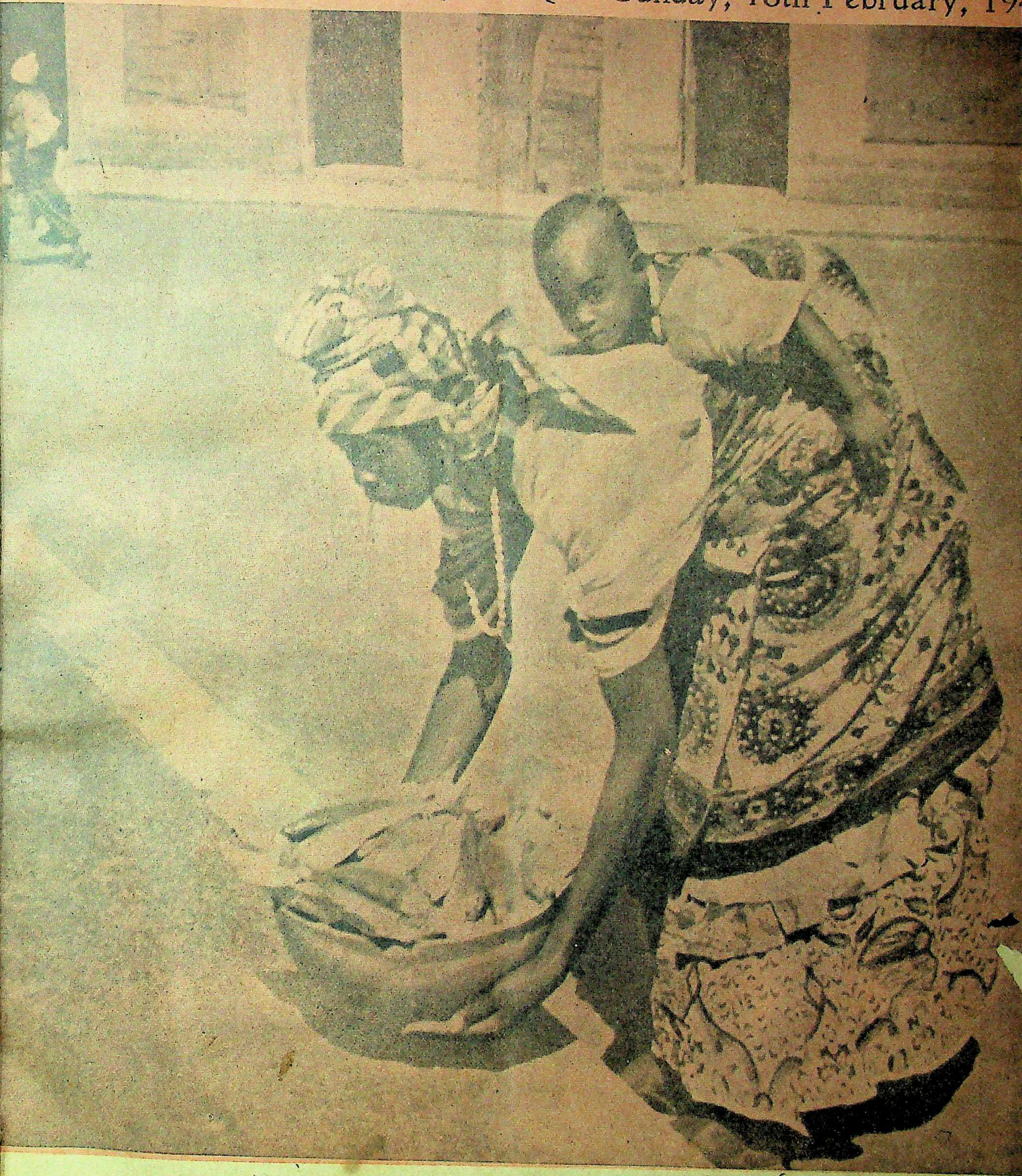

ाकोर बन्दरगाह (पश्चिमी अफ्रीका)
किनारे बच्चे को लिये हुए एक माता।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

जर्मन युद्ध की अंतिम घड़ी आ गई
सोवियट रूस के वीर सेनानी कौन!

फ़िल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजियें।

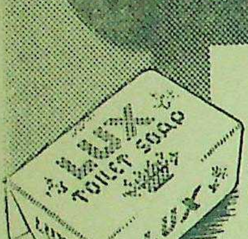

मनोरमा

"मेरी त्वचा प्रफुल्लित और कोमल दिखाई देती है इसके लिये मैं लक्स टॉयलेट साबुन की एहसानमंद हूं"—यह मनोरमा का निवेदन है। दूसरी फिल्म स्टारों की भाँति वह भी इसी साबुन का हमेशा इस्तेमाल करती है। उसके तेज फेन से त्वचा सभी पीड़ाओं से दूर रहती है। उसकी रायमें यह आश्चर्य की बात है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 123-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

खेतों में....

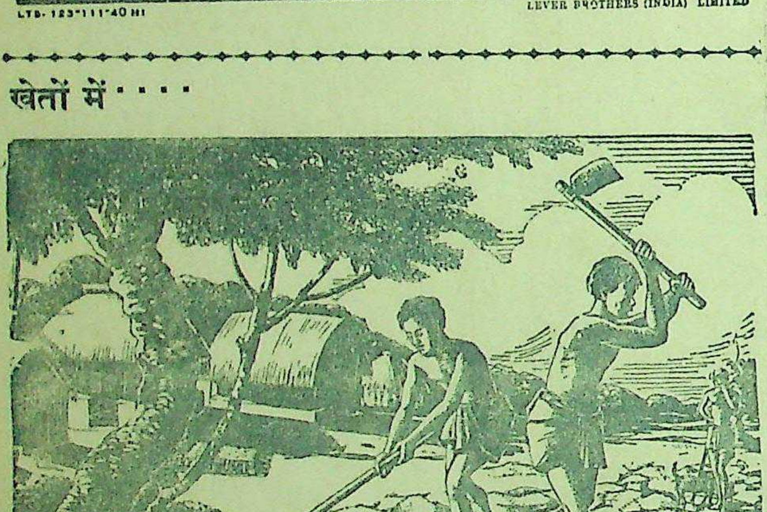

बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आसाम के वितरक।
मेसर्स बाबूलालसिंह ऐंड कं०,
५८, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।
मेसर्स गोपीनाथ पाल ऐंड सन्स
२१०, हरिसन रोड, कलकत्ता।
यू०पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध के डिस्ट्रिब्यूटर्स।
मेसर्स मोहम्मद दीन ऐंड सन्स,
ग्रैन्ड ट्रङ्क रोड, अमृतसर,
बन्दर रोड, कराची।

कुदाल की धार उर्वरा भूमि को बोने योग्य बना देती है।

भारतवर्ष की शांतिमय उन्नति तथा इसके निवासियों का जीवन भावी उपज पर निर्भर करता है।

लोहे-इस्पात के उद्योग-धंधे से कृपकों को आवश्यक औजार प्राप्त होता है।

एग्रिको औजार

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड,
(एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमुरी द्वारा प्रकाशित।

AGRICO TOOLS A I C

विश्वास उत्पन्न करनेवाले आँकड़े

तेईसवीं त्रैवार्षिक वैल्युयेशन रिपोर्ट घोषित करती है

मृत्यु-संख्या के अनुभव में सुधार
और ख़र्च के अनुपात में कमी

३ साल का लाभ कम्पनी के ऋणों पर ३) सैकड़ा ब्याज लगाकर १,५०,८८,०९२ हुआ—

इसके कारण बीमादारों के सुरक्षा-कोष में ५४ लाख रुपये की वृद्धि हुई

बोनस घोषित	आजीवन बीमा पालिशियों पर १२।।) प्रतिहज़ार वार्षिक
	मियादी (एनडाउमेंट) बीमे पर १०) ,, ,,

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ एशोरेन्स कं० लि०
ब्रांच आफिसः—३२ कैनिङ्गरोड, इलाहाबाद।

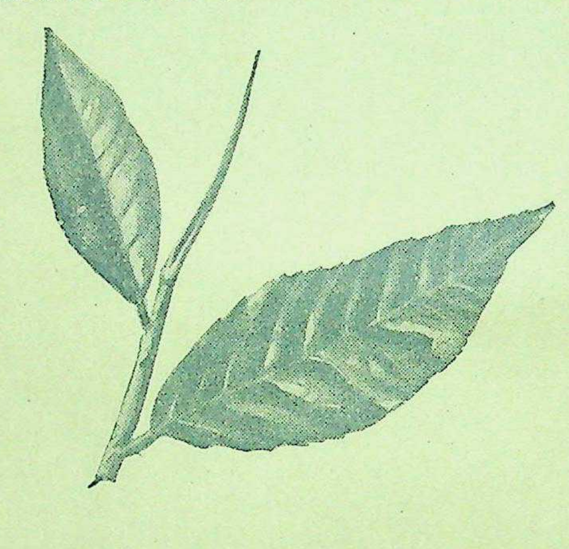

दो पत्ती और एक कली...

उत्तम श्रेणी के चाय के संग्रह के लिए 'दो पत्ती और एक कली' का तोड़ना अत्यन्त आवश्यक है। इस तरीके के अनुसार कोमल और छोटी-छोटी पत्तियों का ही चयन किया जाता है।

अपने विक्रेताओं द्वारा हम प्रत्येक व्यापारियों के पास ब्रूक बांड के ताजे चाय सदा भेजते रहते हैं। परिणाम होता है कि आपके टेबुल पर पहुचने के समय भी इनकी ताज़गी और लज्जत बनी रहती है।

नियमित रूप से हमारे विक्रेता भारत के बड़े-बड़े केन्द्रों में स्थित गुदामों से चाय लेकर वितरण किया करते हैं जहाँ हमेशा फॅक्टरियो से ताजी चाय मँगाकर रखी जाती है।

ताज़गी के साथ लज्जतदार चाय व्यवहार करनेवालों के लिए दार्जिलिंग में तैयार चाय ही सर्वश्रेष्ठ है।

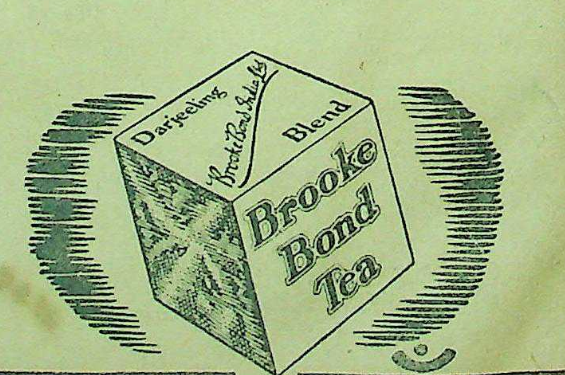

ब्रूक बॉंड

देशदूत

वर्ष ७ संख्या २५] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, १८ फरवरी, १९४५

जर्मन रणक्षेत्र में यह हँसते हुए बहादुर सोवियट छतरी फ़ौज के सिपाही हैं। बहादुरी के काम के लिए इन्हें बिल्ले दिये गये हैं।

पूना में आगा खाँ पैलेस के अन्दर स्वर्गीया कस्तूर बा गान्धी की समाधि पर कांग्रेस-जनों ने बा की प्रथम वर्षी के अवसर पर मालायें चढ़ाईं। प्रान्तीय कस्तूर बा कोष की कमेटी की बैठक आज यहाँ हुई, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में औषधि-सम्बन्धी सहायता पहुँचाने की स्कीम पर विचार किया गया। महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के प्रतिनिधि इस बैठक में उपस्थित थे।

* * *

सेवाग्राम में श्रीमती कस्तूर बा गांधी का प्रथम श्राद्ध-दिवस मनाया गया। प्रार्थनाएँ की गईं और २४ घंटे तक अखंड रूप से चलाकर सूत काता गया।

* * *

युक्तप्रांतीय एसेम्बली के स्पीकर तथा युक्तप्रांतीय कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं की प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, जो गोरखपुर जिला हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सभापतित्व करने के उद्देश्य से गये हुए थे, गोरखपुर से ३४ मील दूर कसिया नामक स्थान पर भारत-रक्षा-कानून की १२९ धारा के अनुसार गिरफ्तार कर लिये गये।

* * *

जर्मन युद्ध में राइन के मार्ग पर सिगफ्रिड पंक्ति के एक प्रमुख किलेबन्दी के ऐतिहासिक स्थान क्लीव के चारों ओर भयानक संग्राम हो रहा है। कठिन पहाड़ी मार्गों और जर्मन प्रतिरोध के कारण मालूम होता है जनरल क्रेरार की प्रगति मुख्य सिगफ्रिड रक्षा-पंक्तियों का भेदन करने के बाद धीमी पड़ गई है। अपने स्थान से ८ मील चलने के बाद ब्रिटिश और कनाडी सेनायें शत्रु की जबरदस्त सेनाओं से युद्ध कर रही है।

* * *

फ्रांसीसी प्रजातंत्र के नेता जनरल डिगाल त्रिनेता सम्मेलन में न बुलाये जाने से नाराज हैं।

जर्मन-रूसी युद्ध के सम्बन्ध में मार्शल स्टालिन ने एक आदेश-पत्र में कहा है कि रूसी सेनाओं-द्वारा अत्यन्त भयानक आक्रमण बढ़ रहा है। रूसियों ने ब्रेस्लाव के उत्तर-पश्चिम में ओडर नदी पार कर ली है। प्रथम यूक्रेनियन मोर्चे के सैनिकों ने ब्रेस्लाव के उत्तर-पश्चिम में ओडर नदी पार कर नदी के पश्चिमी किनारे की किलेबन्दी की हुई रक्षा-पंक्तियों में प्रवेश किया और चार दिनों के आक्रमणात्मक संग्राम में वे ३७ मील आगे बढ़े। इस आक्रमण में रूसियों ने लीगनिज, लुबेन, स्टीनाव, न्यू मार्कट, हेनाव आदि नगरों और यातायात के अन्य केन्द्रों पर कब्जा किया।

* * *

अमरीका के बोस्टन नगर में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने एक संवाददाता से बातें करते हुए कहा कि 'यदि भारत से कुछ वादे किये जायँ और उसकी स्वतंत्रता का आश्वासन दिया जाय तथा १८,००० व्यक्ति जो १९४२ से अभी तक जेलों में पड़े हैं, छोड़ दिये जायँ, तो हम जापान से युद्ध करने में जन, धन की अपनी सारी शक्ति लगा देंगे।

* * *

काले सागर में होने वाले 'तीन बड़ों' के सम्मेलन के सम्बन्ध में सुप्रसिद्ध अमेरिकन पत्रकार मि० डैनटन वाकर का कहना है कि 'मार्शल स्टालिन सम्मेलन के अन्य सदस्यों से यह सौदा कर रहे हैं कि जापान से युद्ध करने के बदले में पश्चिमी यूरोप में रूस को रियायतें प्राप्त हों और प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट का मि० चर्चिल से सौदा यह है कि प्रशान्त में अमेरिकनों का प्रभुत्व हो यदि ब्रिटेन भूमध्य में अपनी प्रभुता चाहता है।'

* * *

संयुक्तप्रान्त के विभिन्न नगरों में पूर्ण राशनिंग जारी करने के सम्बन्ध में प्रान्तीय सरकार की योजना से मालूम होता है १ फरवरी से जौनपुर में पूर्ण राशनिंग शुरू हो गई है। १ मार्च से लखनऊ, आजमगढ़, मऊ और देवरिया में जारी होगी। १६ दिन के बाद गोरखपुर और मिर्जापुर में, और १ अप्रैल से इलाहाबाद, देहरादून और बनारस में जारी होगी। १६ अप्रैल से कानपुर में पूर्ण राशनिंग होगी। बलिया और गाजीपुर के बारे में अभी नहीं मालूम हो सका है।

* * *

मुसलिम लीग की एसेम्बली पार्टी के उप-नेता नवाबजादा लियाकत अली खाँ ने अपने एक वक्तव्य में कहा है—"कुछ संवादपत्रों में जो यह खबर छपी है कि मेरे तथा श्री भूलाभाई देसाई के बीच एक समझौता हो चुका है, उसमें कोई सचाई नहीं है।" समझौता इस प्रकार बताया गया था कि कांग्रेस का प्रतिनिधित्व ४० प्रतिशत रहेगा, लीग का प्रतिनिधित्व भी ४० प्रतिशत रहेगा, और शेष २० प्रतिशत प्रतिनिधित्व दूसरे अल्पमतवालों का रहेगा।

* * *

स्वर्गीय माता कस्तूरबा गांधी की पुण्यवर्षी सारे देश में मनाई गई और श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं।

केन्द्रीय एसेम्बली का बजट अधिवेशन सर अब्दुर्रहमान की अध्यक्षता में आरम्भ हो गया है। श्री ए० सी० दत्त ने भोजन-सदस्य श्री जे० पी० श्रीवास्तव से गरम बहस के बाद एक कार्यस्थगित प्रस्ताव इस विषय पर बहस करने के लिये स्वीकार करवा लिया कि भारत सरकार ने कलकत्ते को भोजन सामग्रियाँ देने का जो वचन दिया था उसे वापस ले लिया। बाद में वह प्रस्ताव वापस ले लिया गया।

* * *

बम्बई के कुछ क्षेत्रों में आगा खाँ के भारत-आगमन को राजनीतिक महत्त्व दिया जा रहा है। आगा खाँ के अनुयायियों में वह अफवाह प्रचलित बताई जाती है कि सरकार कांग्रेस तथा मुसलिम लीग की अवज्ञा करके राजनीतिक अड़ंगे को दूर करने की चेष्टा करेगी। सरकार को इस बात की आशंका बताई जाती है कि कहीं मि० जिन्ना अपनी नकारात्मक नीति को त्याग कर कांग्रेस से समझौता न कर बैठें, इसलिये वह चाहती है कि धनिक वर्ग का सहयोग आगा खाँ को प्राप्त हो जाय।

* * *

जनरल डे गाल ने मित्रराष्ट्रों को चेतावनी दी है कि फ्रांस किसी ऐसी संधि को मानने के लिये अपने को बाध्य न समझेगा जो बिना उसके साथ परामर्श किये तय की जायगी।

* * *

त्रिनेताओं के सम्मेलन के स्थान पर जाने वाला एक विमान मार्ग में नष्ट होकर गिर पड़ा जिसके फलस्वरूप १२ यात्रियों की मृत्यु हो गई। उस विमान में मि० चर्चिल के स्टाफ के कुछ सदस्य भी थे।

* * *

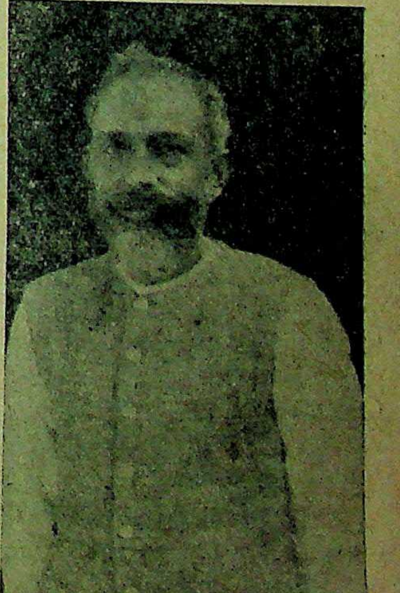

युक्तप्रांतीय असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन गिरफ्तार कर लिये गये हैं

सम्पादक का पृष्ठ

पुण्य वर्षी

स्वर्गीय पूज्य माता कस्तूर बा गांधी की पुण्य वर्षी गत सप्ताह सारे देश में मनाई गई। लोगों ने पूज्य बा के राष्ट्रीय त्याग और बलिदान का स्मरण करके श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं। स्वर्गीय बा हमारे राष्ट्रीय जीवन की उन महान विभूतियों में से एक थीं जिन्होंने राष्ट्र के उत्थान और स्वाधीनता-आन्दोलन में अपने अभूतपूर्व त्याग का परिचय दिया था। महात्मा गांधी के कार्यों में वह सदा सहायक रहीं। वह हमारे देश की नारी समाज के ही लिए नहीं वरन् संसार के नारी समाज के लिए आदर्श थीं। वह कष्ट-सहन तथा साहस की जाग्रत मूर्ति थीं। समस्त जीवन उन्होंने महात्मा जी के साथ राष्ट्र की सेवा में व्यतीत किया और अन्त में आगा खाँ पैलेस में नजरबन्दी की अवस्था में उनका स्वर्गवास हुआ। हम भी माता कस्तूर बा की इस पुण्य वर्षी के अवसर पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनका गौरवमय त्याग और बलिदान राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में नई स्फूर्ति उत्पन्न करता रहेगा, इसमें सन्देह नहीं।

* * *

सरकार की हार क्यों ?

केन्द्रिय असेम्बली का बजट अधिवेशन प्रारम्भ हो गया। इसमें सरकार को दो बार हार खानी पड़ी। पहली हार खानी पड़ी दक्षिणी अफ्रिका के सम्बन्ध में। असेम्बली के पिछले अधिवेशन में भी यही प्रश्न उपस्थित हुआ था और सरकार की ओर से यह आश्वासन दिया गया था कि अफ्रिका में भारतीयों के सम्बन्ध में जो प्रतिबन्ध लगाये गये हैं उस पर भारत रकार की ओर से कड़ी कार्यवाही की येगी। किन्तु भारत सरकार के पास मय कहाँ ? वह प्रश्न अब तक खटाई में पड़ा हुआ है। इसलिये श्री लालचन्द नवलराय ने एक 'काम रोको' प्रस्ताव उपस्थित किया और सरकार से जवाब तलब किया कि अब तक इस सम्बन्ध में कोई कार्यवाही क्यों नहीं हुई है ? उपनिवेश-सदस्य डाक्टर खरे ने सरकारी नीति का समर्थन किया किन्तु अन्त में सरकार को हार खानी पड़ी। दूसरी हार हुई युद्ध-ऋण के एकत्र के सम्बन्ध में। मिस्टर गनी (मुसलिम लीग) ने प्रस्ताव उपस्थित करते हुए कई प्रमाण दिये और यह बतलाया कि युद्ध-ऋण की वसूली में कभी-कभी अनुचित कार्यवाही भी की जाती है। इस सम्बन्ध में विवाद हुआ और अन्त में ४० के विरुद्ध ४७ वोटों से प्रस्ताव पास हो गया।

सरकार की इस प्रकार की हार से क्या समझा जा सकता है ? क्या लार्ड वेवेल की 'राष्ट्रीय सरकार' इस पर विवेक पूर्वक विचार करेगी ? यदि आज वह अपने को 'राष्ट्रीय' करार देती है तो वह राष्ट्रोचित कार्यों के करने में क्यों आना कानी करती है ? फिर जब हम यह देखते हैं कि मुसलिम लीग-दल भी केन्द्रिय असेम्बली में कांग्रेस दल का साथ दे रहा है तब तो यह कहना ही पड़ता है कि भारत सरकार जन-हित के कार्यों की ओर ध्यान नहीं दे रही है। वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्य आश्वासन देन में बड़े निपुण हैं। संभव है वह कुछ करना चाहते भी हो किन्तु उनके पास शक्ति कहाँ ? परिणाम स्वरूप नमक के तालाब में पड़कर उन्हें भी नमकीन बन जाना पड़ा है। क्या हम आशा करें कि 'राष्ट्रीय सरकार' के नाम पर बनी हुई वाइसराय की कार्यकारिणी और उसके 'राष्ट्रीय' सदस्य अपने को अधिक लोकप्रिय और जनहित के कार्यों के अनुकूल बनाने में समर्थ होंगे ?

* * *

श्रद्धेय टंडन जी की गिरफ़ारी

संयुक्तप्रांतीय असेम्बली के स्पीकर माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन गोरखपुर में गिरफ्तार कर लिये गये। माननीय टंडन जी कसिया में होनेवाले जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का सभापतित्व करने के लिये वहाँ गये थे। किन्तु श्रद्धेय टंडन जी क्यों गिरफ़्तार किये गये, यह बात अभी तक रहस्यपूर्ण बनी हुई है। श्रद्धेय टंडन को जेल से छूटे अभी अधिक अर्सा नहीं हुआ है। वह गत अगस्त-आन्दोलन में नजरबन्द किये गये थे और दो वर्ष की लम्बी अवधि जेल में बिताकर लौटे थे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं है। हमें तो आश्चर्य है कि हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन में ऐसी कौन-सी 'विद्रोहपूर्ण' कार्यवाही हुई जिससे अधिकारियों को श्रद्धेय टंडन जी को गिरफ़्तार करना पड़ा ? वास्तव में यह बड़े खेद और परिताप की बात है। यों तो गोरखपुर भारत सचिव मिस्टर अमरी की जन्मभूमि है ही, फिर पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्री रफीअहमद किदवई भी यहीं से नजरबन्द किये गये थे। फिर टंडन जी के वहाँ पहुँचने पर अधिकारियों को अपनी परम्परा की रक्षा तो करनी ही चाहिए। हम अधिकारियों के इस कार्य को अनुचित समझते हैं। प्रांतीय सरकार को श्रद्धेय टंडन जी को तुरन्त छोड़ देना चाहिए।

* * *

कपड़े की कठिनाई

हमारे प्रांत में वस्त्रों की कठिनाई इधर बढ़ती हुई दिखाई दे रही है। लोगों को प्रतिदिन के उपयोग में आगे वाले वस्त्रों के लिये भी भटकना पड़ता है। इसका एक कारण तो यह कहा जाता है कि अहमदाबाद आदि से जितना वस्त्र युक्तप्रांत में आता था उसमें अब कमी कर दी गई है। दूसरे कानपुर की मिलों में जितना कपड़ा बनता है वह भी पूर्णरूप से बाजारों को नहीं प्राप्त होता। इस प्रकार की अड़चनों के कारण वस्त्र-संकट उत्पन्न होने लगा है। वास्तव में बात यह है कि सरकार की वितरण-प्रणाली अधिक दोषपूर्ण है। यदि वितरण प्रणाली दुरुस्त कर ली जाये, वस्त्रों के आयात में अधिक सुविधा प्रदान की जाये और अनावश्यक प्रतिबन्ध उठा दिये जायें तो वस्त्रों की प्राप्ति में कठिनाई नहीं हो सकती। किन्तु यदि वितरण-प्रणाली में सुधार न किया गया और आवश्यकतानुसार भी वस्त्रों का अभाव बना रहा तो वस्त्र-संकट से स्थिति और भी गम्भीर हो सकती है। प्रान्तीय सरकार को वस्त्र-अभाव के भावी संकट का अनुमान करके तुरन्त आवश्यक कार्यवाही करनी चाहिए।

मध्यकालीन हिन्दी का साहित्य

उसकी सामाजिक पृष्ठ-भूमि क्या थी ?

लेखक, श्री रामचन्द्र तिवारी, बी० ए०, एल-एल० बी०

आगामी ३-४ मार्च को दिल्ली में ब्रज-साहित्य-मण्डल का वार्षिक अधियेशन होने जा रहा है। इस अवसर पर अनेक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर चर्चा तथा विचार विमर्ष होगा। श्रीरामचन्द्र तिवारी ने इस लेख में बड़ी गम्भीरता तथा विद्धत्तापूर्वक मध्यकालीन हिन्दी साहित्य पर प्रकाश डाला है। यह भी मण्डल के अधिवेशन के अवसर पर विचार-विनिमय के लिये एक महत्वपूर्ण विषय है।

भारत म संवत् १००० क लगभग वैष्णव साहित्य की भाषा की दृष्टि से दो धारायें समानान्तर प्रवाहित हो रही थीं इनमें से एक धारा संस्कृत भाषा में थी। इसकी दिशा शास्त्रीय थी। समाज के विद्वानों के चिंतन को प्रायः वाणी इसी के द्वारा प्राप्त हुई। प्राचीन वैदिक चिंतन परम्पारा को, जैसे भी हो, इन्हीं विद्वानों ने जीवित रक्खा। इनमें से अधिकांश विद्वान् राजदरबारों और मठों से सम्बद्ध थे और तत्कालीन समाज में सामंत योजना के अंग थे। इन विद्वान् आचार्यों ने वैदिक धर्म की प्रमुख पुस्तकों पर भाष्य और कारिकाओं की रचना की।

इन विद्वानों ने मूल ग्रथों की विभिन्न प्रकार से विवेचना की। उनके मंतव्यों और अर्थों का भिन्न भिन्न प्रकार से प्रतिपादन किया। इन विभिन्न मंतव्यों को जब आचार-व्यवहार का रूप दिया गया तो नाना सम्प्रदायों की सृष्टि आचार भेद से हो गई। प्रत्येक सम्प्रादाय के आचार्य के भाष्य को केन्द्र बनाकर उस सम्प्रदाय द्वारा व्यवहृत प्राकृतों में विशालकाय जन-साहित्य की रचना हुई। उत्तर भारत में जिन आचार्यों का प्रभाव विशेष पड़ा वे हैं रामानुज (११४०, विशिष्टाद्वैत) और वल्लभ (१४७६-१५४४, शुद्धाद्वैत)। तत्कालीन हिन्दी (ब्रजभाषा और अवधी) का जो साहित्य है उसका गुण परिमाण दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाग इन्ही संप्रदायों के कवियों की रचना है। इन संप्रदायों से अप्रभावित साहित्य कुछ दशाओं में महत्त्व पूर्ण होने पर भी परिमाण में अपेक्षाकृत अल्प है।

साहित्य समाज-आत्मा की पिपासा का प्रतिबिम्ब है। काव्य का जो अंश प्रायः नितांत वैयक्तिक समझा जाता है उसमें भी तत्कालीन समाज की भावनायें और आकांक्षायें लक्षित होती हैं। कलाकार समाज के प्रतिनिधि के नाते उन्हें मुखर किये बिना नहीं रह सकता। इस दृष्टि से मुस्लिम प्रभावकाल में हिन्दी-साहित्य कहाँ तक समाज की अंतरात्मा से उद्भूत है ? बारहवीं शताब्दी से पूर्व अल्पतः और उसके पश्चात् विशेषतः बौद्धमत, ब्राह्मण मत (वर्तमान हिन्दूमत) तथा इस्लाम में संघर्ष हो रहा था। बौद्ध और हिन्दूमत का संघर्ष देश में पहले से पर्याप्त तीव्र था। इस संघर्ष में शस्त्र का प्रयोग विशेष नहीं हुआ। शास्त्रीय और आर्थिक आयुधों का ही विशेष उपयोग हुआ। पर जब इस्लाम ने इस धार्मिक संघर्ष में प्रवेश किया तो विशेष धर्म-शिक्षा, सामाजिक गठन के साथ साथ तलवार से भी सज्जित होकर आया। धार्मिक उत्साह, कुशल सैन्य-संचालन और नवीन हथियारों के प्रयोग से वे देश के मानसिक तल पर सुप्त प्रायः रक्षकों पर विजयी हुए। हिन्दू तथा बौद्ध दोनों मतों पर उनका प्रहार हुआ।

बौद्ध-समाज में पुरोहित जैसी कोई संस्था न थी, जो भिक्षु विहारों के नष्ट हो जाने के पश्चात् बौद्ध समाज की धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने एवं उस समाज के व्यक्तित्व को पृथक अक्षुण्ण बनाये रखने का कार्य करती। फलस्वरूप भिक्षु-विहारों का पतन होते ही बौद्ध-समाज निराश्रय-सा हो गया। बौद्ध और मुस्लिम सामाजिक गठन में साम्य (वर्ण-व्यवस्था का अभाव) होने और हिन्दू-समाज समाज के बौद्धों के प्रति असहानुभूति पूर्वक व्यवहार ने उन्हें इस्लाम ग्रहण करने के लिए प्रेरित ही नहीं बाध्य किया। देश में जहाँ जहाँ बौद्धों की अधिक संख्या थी वहीं इस्लाम को सरलता से बहुसंख्यक मत परिवर्त्तन करनेवाले प्राप्त हो गये।

हिन्दू-धर्म का पुरोहित अपने समाज के गठन और उसकी धार्मिक भावनाओं की रक्षा करने में प्रायः समर्थ हुआ। बाहरी आक्रमण के कारण आंतरिक अनुशासन कठोर हुआ और शिथिल वैदिक वर्ण-भित्तियाँ कठोर हो गईं। यह कठोरता प्रायः इतनी अधिक हो गई कि कुछ अवस्थाओं में लाभ के स्थान पर हानि का कारण बनी।

संघर्ष के प्रारम्भिक दिनों में कबीर प्रभृति कुछ सन्तों ने हिन्दू मुस्लिम मतों की आलोचना से एक शुद्ध मध्यम मार्ग की सृष्टि करनी चाही। पर जब युद्ध की भेरी बज रही हो; दो धर्म और सामाजिक गठन परस्पर टक्कर ले रहे हों, तब उनकी वाणी पर ध्यान देने का किसी को विशेष समय न था। फलतः वह स्वर आगे चलकर मंद पड़ गया।

मुस्लिम आक्रमण का प्रमुख रूप धार्मिक था। शस्त्र केवल उपाय-मात्र थे। इस्लाम प्रत्येक को अपने में सम्मिलित हों का निमन्त्रण देता था। जो इस निमन्त्र की अवहेलना या विरोध करते थे उन उचित दण्ड दिया जाता था। हिन्दू-समा पाशविक तल पर विजित था इसलि निमन्त्रण की अवहेलना करने के फलस्वरू उसे दण्डित होना पड़ा। अकबर, जहाँगी और शाहजहाँ के समय के अतिरिक्त उन् सर्वदा जजिया नामक टैक्स अत्यन्त अप मानजनक रीति से मुस्लिम शासकों के देना पड़ा है।

यद्यपि उस समय की सामाजिक स्थि का कोई विस्तृत वर्णन आज प्राप्य नहीं तथापि जो कुछ वाक्य कहीं मिलते हैं उन पता चलता है कि अमुस्लिम हिन्दुओं में ती श्रेणियाँ थीं। प्रथमवर्ग वह था राजाओं और सरदारों के दरबारों सम्बन्धित था। द्वितीयवर्ग को मध्यम श्रेणी का नाम दिया जा सकता था तृतीय वर्ग के व्यक्ति साधु-सन्तों भिखारी जीवन यापन करते थे। मध्य श्रेणी, जिसके सदस्यों की संख्या सब

—शेष पृष्ठ १७ पर देखि

डेन्यूब नदी का भयंकर युद्ध

बर्लिन के पहले वायना का पराभव जरूरी क्यों ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

बर्लिन के पराभव के लिए रूसी सेना अग्रगामी गति से बढ़ रही है, इसे डेन्यूब नदी का युद्ध भी कहा जा सकता है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने जर्मनी की वर्तमान युद्ध-स्थिति पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि बर्लिन के पराभव के साथ ही यदि वायना का पराभव भी हो जाये तो मित्रराष्ट्रों को योरोपीय युद्ध की समाप्ति में अधिक सहायता प्राप्त होगी। लेख विचारणीय तथा ज्ञानवर्धक है।

जर्मनी पर हमला करनेवाली ब्रिटिश फौजों के प्रधान सेनापति फील्ड मार्शल मांट गोमरी।

मार्शल जुकोव की सेनायें जर्मन रीश की राजधानी बर्लिन को घेरने के लिए पोमेरीनीया में स्टेटीन की ओर ब्रेडनबर्ग में फ्राक फोर्ट-आन-ओडर की ओर बढ़ रही हैं। मार्शल जुकोव की सेना के कूच ने सैनिक इतिहास में एक नया रेकर्ड कायम किया है। बीस दिन में ३५० मील। यान्त्रिक सेना का वेग कहाँ तक पहुँच सकता है, यह इसने बता दिया है। नैपोलियन ने घुड़सवार सेना की चाल के वेग का रेकर्ड कायम किया था और अब मास्को के रक्षक मार्शल जुकोव ने एक नया रेकर्ड कायम किया है। मार्शल जुकोव की श्वेत रूसी सेना की चमत्कारिक विद्युत गति, वज्रप्रहार और रण-कौशल ने चकाचौंध उत्पन्न कर दी है और युद्ध के अन्य रणक्षेत्रों से ध्यान हट गया है।

पर इसका यह अर्थ नहीं है कि ४०० मील विस्तृत मोर्चे पर बढ़ रही रूसी लाल सेनाओं में से अन्य छः का कार्यक्रम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इनमें भी जनरल चेरकियानस्की का नाम पूर्वीय प्रशिया की राजधानी कोनिंग्सबर्ग को घेरने के कारण रोजाना सामने आ जाता है। मार्शल रोकोसोवस्की का नाम पोलिश काटिडर और डेंजिग की ओर कूच करने के सिलसिले में आ जाता है, और कोनीव का नाम सिलीशीया की राजधानी ब्रेसलाऊ को घेरने और ओडर नदी-जर्मनी की रक्षा के लिए अन्तिम नदी-बाधा को पार करने के कारण सामने आ जाता है, किन्तु गत १२ जनवरी से; जब से यह नई मुहीम शुरू हुई है, जनरल पैट्रन, मार्शल मैलिनोवस्की और मार्शल तुखवोलिन का नाम अब प्रतिदिन सामने नहीं आता; जैसा कि बुडापेस्ट की लड़ाई के दिनों में आता था। बुडापेस्ट का घेरा तोड़ने का जर्मनों का प्रयत्न निष्फल गया, पर बुडापेस्ट की लड़ाई समाप्त नहीं हुई है और न इन सेनानायकों का कूच रुका है—हाँ प्रगति यद्यपि धीमी हो गई है।

जर्मन बर्लिन को खाली करने और उसको छोड़ने के लिए तैयार हैं। बर्लिन का पतन राजनीतिक दृष्टि से हो, यह अधिक महत्त्वपूर्ण है, पर वायना का पतन सैनिक और सामरिक दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। वायना का पतन हिटलरी सेना की लड़ने की शक्ति का अन्त कर देगा और जर्मनी के भाग्य पर पराजय की मुहर लगा देगा। इसलिए डेन्यूब की लड़ाई और वायना की रक्षा के लिए जर्मनों द्वारा की गई किलेबन्दी को देखना इस समय सामयिक होगा और तब इस बात का अन्दाज लगाया जा सकेगा कि बर्लिन के पतन के बाद जर्मनी कितने दिनों में घुटने टेक देगा और यूरोप की लड़ाई समाप्त होने में और कितने दिन लगेंगे।

पूर्व का नहीं पश्चिम का

राइन नदी जर्मनी की पश्चिमी सीमा की रक्षक है और हमारे देश में गंगा का जो स्थान है, वह जर्मनी में राइन को प्राप्त है। पर डेन्यूब जर्मनी की भाग्यदेवी है जैसे कि भारत के लिए सिन्धु नदी और ब्रह्मपुत्र। 'जोहान स्ट्रास' आदि गीत-लेखकों ने डेन्यूब के गौरव में जो गीत लिखे हैं, उनमें जर्मनों की आकांक्षा पूर्णरूप से व्यक्त होती है। जर्मनी ने जब पूर्व की ओर बढ़ने का संकल्प किया, डेन्यूब ने उसको मार्ग बताया, अतः जर्मन उसको 'डांग नाश डेम ओस्टेन' (पूर्व की ओर कूच) के नाम से पुकारते हैं। भारत के पश्चिम और वायव्य में भारतीयों के विस्तार के लिए सिन्धु नदी ने इसी प्रकार मार्ग दिया है। आज सोवियत सेनाओं की पश्चिम की ओर कूच में यह सहायक हो रही है और डेन्यूब आज जर्मनी के हृदय के लिए खंजर बन रहा है, जैसे सिन्धु नदी सिकन्दर के हमले के समय भारतीय स्वाधीनता के लिए हुआ था।

जर्मन इंजीनियरों ने 'आयरन गेट' की योजना बनाई, डेन्यूब के नौकानयन भाग का विस्तार किया और बाल्कन के अन्दर तक ले गये। इसकी स्मृति और सम्मान में जर्मनों ने वहाँ एक स्मारक बनाया है। जर्मनों के लिए यह व्यापारमार्ग है। डेन्यूब के मार्ग से जर्मन बाल्कन राष्ट्रों की कृषि-जन्य पैदावार अपने सस्ते औद्योगिक माल के बदले सदा प्राप्त करते रहे हैं।

रूसी नियन्त्रण

डेन्यूब १७०० मील का मार्ग समुद्र में गिरने से पहले तय करती है। यह छः देशों में से गुजरती है। उनमें से चार आज रूसी सेनाओं के नियन्त्रण और अनुशासन में हैं। पहली मुहीम रूसी वोल्गा से डेन्यूब डेल्टा पर पहुँच गई, जो कि रूमानिया की राह कालासागर में जाता है। रूमानिया और बल्गेरिया की सीमा डेन्यूब बनाती है और बल्गेरिया भी आज रूसी पंजों के नीचे है। 'आयरन गेट' पर रूसी सेना ने डेन्यूब को पार किया और युगोस्लाव देशभक्तों के साथ मिलकर बेलग्रेड को स्वाधीन किया। बेलग्रेड डेन्यूब नदी के किनारे बसा हुआ है। राजनीतिक-सामरिक कार्रवाई उनको हंगरी के अन्दर और उसकी राजधानी बुडापेस्ट की ओर ले गई। डेन्यूब के तट पर बुडापेस्ट एक सुन्दर शहर है और ब्रैटिसलाव और यहाँ से वायना जाने के मार्ग पर है। मार्शल मैलिनोवस्की की सेनायें बुडापेस्ट से ईशान दिशा में वायना पहुँचने के लिए ब्रैटिसलाव की ओर धीरे धीरे बढ़ रही हैं। रूसी सेनाओं ने यहाँ परम्परागत सामरिक मार्ग का अनुसरण किया है। राइन जर्मनी की सीमा-रक्षक है, पर डेन्यूब आक्रान्त सेना को छाती पर खंजर भोंकने का निमन्त्रण देती है, क्योंकि यह सेना की प्रगति तीव्र करने में सहायक है।

डेन्यूब का उद्गम ब्लैक फारेस्ट से होता है। यूगोस्लेविया के अन्दर डेन्यूब दरी के जंगलों में देशभक्त मार्शल टीटो के सैनिकों ने छिपे रह कर पिछले तीन सालों में जर्मन जहाजरानी को बहुत नुकसान पहुँचाया है। शान्तिकाल में आस्ट्रिया, हंगरी, युगोस्लेविया, बलगेरिया और रूमानिया से कालासागर तक सुन्दर नील डेन्यूब व्यापारिक यातायात का मार्ग है। शान्तिकाल में बजरे डेन्यूब के नीचे ऊपर आते रहते हैं, पर ज्यादातर रूमानिया का तेल और गेहूँ, हंगरी से ताँबा और मकई, बल्गेरिया, युगोस्लेविया और ग्रीस से जस्ता, सीसा, एण्टीमनी और क्रोम लेकर ऊपर ही जाते हैं। क्योंकि इनके बदले में उत्तर और पश्चिम से भेजा जानेवाला सामान रेल-द्वारा आसानी से ले जाया जा सकता है।

जीवन-मार्ग

लड़ाई के आरम्भ में ही जर्मनों ने डेन्यूब पर अपना अधिकार और नियन्त्रण पक्का कर लिया था। सारा यातायात 'केन्द्रीय संगठन' द्वारा गुजरता था; जिसमें जर्मनी के साथी और अनुयायी राष्ट्र भी सम्मिलित थे, मगर जर्मन प्रतिनिधियों का प्रभाव अधिक था। बाल्कन प्रदेश के युद्ध के लिए आवश्यक सारा सामान, विशेषतः रूमानिया का तेल डेन्यूब के मार्ग से जर्मनी पहुँचता था। १९४२ में ८०००००० टन कच्चा माल डेन्यूब के बजरों और अन्य स्टीमरों द्वारा जर्मनी पहुँचा। रूसी सेनायें जब पश्चिम की ओर चलीं, भूमध्य सागर के पार मित्रराष्ट्रों द्वारा खतरा बढ़ा, तब जर्मन हाई कमांड की नजरों में डेन्यूब नदी ही नहीं रही, बल्कि जीवन-मार्ग बन गया। वह जर्मनी के पश्चिम के कल-कारखानों को कच्चा माल मुहैय्या करनेवाली नहीं रही, बल्कि जर्मन सेनाओं को युद्ध-सामग्री मुहैय्या करनेवाली हो गई। जर्मन सेनाओं को लड़ने लायक बनाने के लिए प्रतिदिन १२००० टन रसद-युद्ध-सामग्री भेजना आवश्यक था। रेल से भेजने में बम-वर्षा का खतरा था। दूसरे जर्मन सेनायें पीछे हट रही थीं, अतः रेल-मार्ग खाली रखना आवश्यक था। सेना को संकट-स्थल पर तुरन्त भेजने के खयाल से भी यह आवश्यक था। जर्मन विशेषज्ञों ने हिसाब लगाया कि बजरों में एक टन १२०० और १५००-टन माल ले जाया जा सकता है, जब कि लोको मोटिव से केवल ४०० टन ले जाया जा सकता है। इन सब बातों का हिसाब लगाकर वे इस निर्णय पर पहुँचे कि २४ घंटों में डेन्यूब नदी १०००० टन युद्ध-सामग्री का ट्रान्स-पोर्ट कर सकती है। डेन्यूब इस प्रकार जर्मनी की लड़ाई लड़ने और जर्मन सेना की प्रतिरोध शक्ति बढ़ाने में सहायक हुई।

नाजी डिक्टेटर हर हिटलर जर्मनी को मित्रराष्ट्रों से बचाने की फिक्र में परेशान है।

रक्तरंजित

बुडापेस्ट को जब रूसी सेना पूर्णरूप से हस्तगत कर लेगी, तब युगोस्लाव भी डेन्यूब तट पर स्थित सुन्दर शहर वायना को लेने के लिए उसका साथ देंगे। बुडापेस्ट में डेन्यूब के साथ दारुण स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं। उसको न तो रूसी भूल सकते हैं और न हंगेरियन फासिस्ट भुला सकते हैं। पिछली लड़ाई के बाद हंगेरियन कम्युनिस्टों को मार कर उनकी लाशें डेन्यूब में बहा दी गई थीं। 'होटल ब्रिटानिया' में हंगेरियन प्रतिभाषियों ने अपने सोशलिस्ट और डेमाक्रेट स्वदेश बान्धवों को अमानुषिक रीति से सताया था। डेन्यूब उनके रक्त से रक्तरंजित है।

इससे ऊपर ब्रैटिसलाव (जर्मन इसको प्रेसबर्ग, हंगेरियन इसको पोकसोनी कहते हैं) स्थल बन्दरगाह है। जर्मनों ने इसको बहुत उन्नत कर दिया है। हजारों टन तेल, गेहूँ, शाक-सब्जी और कच्ची धातुओं का यहाँ से यातायात होता है। वायना सदियों से डेन्यूब की रानी रही है। यहाँ डेन्यूब के तट पर तेल के बड़े डिपो हैं। वायना और डेन्यूब हिटलर के आध्यात्मिक घर हैं। यहीं उसने अपनी यहूदी विरोधी और 'पैन-जर्मनिज्म' की योजनायें बनाईं। यहीं उसने आस्ट्रिया और जर्मनी को संयुक्त करने की योजना बनाई, जो कि हिटलर की एकमात्र प्रादेशिक माँग थी।

वायना में हिटलर को डेन्यूब की महती राजनीतिक शक्ति का पहले पहल भान हुआ। अनेक बार यहाँ हुए महान विस्फोटों ने बाल्कन को हिला दिया है और यूरोप को लड़ाई में झोंक दिया है। यूरोप के राजनीतिज्ञों ने अनेक बार बाल्कन राष्ट्रों का एक फेडरेशन बनाने का प्रयत्न किया है, पर वे सदा विफल रहे हैं। बाल्कन राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से एक युनिट है, पर राजनीतिक दृष्टि से हिटलर भी इसमें विफल रहा है। मार्शल स्टालिन और मोलोटोव अब पुनः इसी उद्योग में हैं। क्या वे बाल्कन राष्ट्रों का फेडरेशन बनाने में समर्थ होंगे ?

लिज

वायना के आगे लिज है। यहाँ गोरिंग ने विमान बनाने का बड़ा कारखाना खोल

है और यह एक दूसरा डेन्यूबियन स्थल बन्दरगाह है। जर्मनी के युद्ध-उद्योगों के लिए यह महत्त्वपूर्ण है। यहाँ से थोड़ी दूर पासाऊ में डेन्यूब जर्मनी के अन्दर पहुँचती है। रेजनवर्ग भी एक औद्योगिक केन्द्र है। ब्लैकफारेस्ट प्रदेश में जर्मनी के अनेक युद्ध-कल-कारखाने हैं और यहाँ नाजियों ने भारी मात्रा में शस्त्रास्त्र छिपा रखा है। डेन्यूब के उद्गम स्थान और ब्लैकफारेस्ट से मित्रसेना बहुत दूर नहीं है। यह स्थान सिगफ्रिड दुर्ग पंक्ति के पार बेलफोर्ट गैप के दूसरी ओर है। सैलानियों के लिए यह सुन्दर और मनमोहक स्थान है। दृश्यावली मनोहारी है। पर किसी सेना के लिए यहाँ से गुजरना कठिन है। यह प्रदेश जंगलमय है।

डेन्यूब की लड़ाई

अप्रैल १९४४ से डेन्यूब की लड़ाई जारी है। लोव-सेरनाडटी रेलवे पर रूसी बढ़े। मित्रसेना इटली में उतरी और उनके बम-वर्षकों को यूरोप में बम-वर्षा का अवसर मिला। डेन्यूब निशाना बना। इसका यातायात रोकने की कोशिश की गई। अप्रैल के दूसरे सप्ताह में अनेक विस्फोट हुए और बहुत से बजरों और जहाजो ने जलसमाधि ली। १४ अप्रैल को बुडापेस्ट के पास एक जहाज डूबा। बजरों की पंक्ति में आग लग गई।

स्थिति इतनी संकटापन्न हो गई कि जर्मन हाई कमाण्ड ने डेन्यूब के यातायात का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया। व्यापारिक यातायात बन्द हो गया। फौजी सामग्री का ही यातायात होने लगा।

वायना

जर्मनी की सम्पूर्ण रक्षा और किलेबन्दी के लिए वायना आवश्यक है। वायना पहुँचने में सबसे भारी बाधा डेन्यूब के तट पर स्थित बुडापेस्ट है। बुडापेस्ट आस्ट्रिया की कुंजी है, पर वायना आनेवाली सड़कों का बुडापेस्ट होकर आना जरूरी नहीं है। वायना जाने का अच्छा मार्ग हंगेरियन राजधानी के उत्तर में डेन्यूब के साथ साथ ब्रैटिसलाव और थेबनान का मार्ग है।

हंगरी-आस्ट्रिया की सीमा पर वायना की रक्षा की स्वाभाविक रक्षा-पाँत है और यह उत्तर में मार्श और थ्यया नदियों के साथ साथ, जो कि आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया के बीच १०० किलोमीटर की सीमा बनाती चली जाती है। दक्षिण में आस्ट्रो-हंगेरियन सीमा की ओर एल्प्स की दक्षिणी तलहटी मुख्य बाधा है। ये बाधायें १९वीं सदी की सेना के लिए अवरोधक हो सकती हैं, पर बीसवीं सदी की आधुनिक सेना के लिए नगण्य हैं, यदि इनकी अधुनिक ढंग की मजबूत किलेबन्दी न की गई हो।

नीपर, नीसर, प्रुथ और टीसा जैसी शक्तिशाली और वेगवती नदियों को पार करके आगे बढ़नेवाली सेना का मार्श, लीथा और राब नदियाँ मार्ग नहीं रोक सकती हैं। ये नाले हैं। लीथा पहाड़ी और एल्प्स की तलहटी २००० फीट से ज्यादा ऊँची नहीं है। न्यूसीडलेर झील को अनेक स्थानों से पाँवों से पार किया जा सकता है। हाँ मोटरवाही सेना के लिए जरूर कुछ दिक्कत है। क्योंकि यह झील पीपस (एस्टोनिया) के समान दलदली है। इससे बचने के लिए चक्कर काट कर जाना ज़रूरी है।

आवश्यक है

जर्मनी की रक्षा के लिए वायना आवश्यक है। वायना के पतन का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि यातायात का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केन्द्र, क्योंकि यहाँ से रेलें उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम में जाती हैं; जैसे दिल्ली से जाती है—हाथ से चला गया, बल्कि जर्मन युद्ध मैशीन का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण गोला-बारूद का भण्डार चला गया। रबर के उद्योगों के नष्ट होने के बाद वायना और औद्योगिक त्रिकोण में उद्योगों का विकास किया गया है। जर्मनी का जीवन इन पर निर्भर है। वायना के पतन के बाद दक्षिण आस्ट्रिया से रेलवे सड़क द्वारा कोई सम्बन्ध न रहेगा। स्टीरिया और एरजबर्ग के औद्योगिक जिले, दक्षिणी रेलवे पर बनी भट्ठियों से सम्बन्ध छिन्न-भिन्न हो जायगा। जीस्टर्स डोर्फ के उत्पादक नये तेल-कूप से, जो कि वायना से कुछ ही किलोमीटर दूर उत्तर में हैं—जर्मनी वंचित हो जावेगा। यहाँ से जर्मनी १०,००,००० से १५,००,००० टन तेल और प्राकृतिक गैस पाता है। यह मात्रा तीसरी रीश की नैसर्गिक तेल के सम्पूर्ण स्रोतों का ५० प्रतिशत है। जीस्टर्स डोर्फ मार्श के ठीक पीछे वायना के उत्तर में ४० किलोमीटर दूर बसा हुआ है। अतः नई पूर्वीय रक्षापाँत के बिलकुल नजदीक है। रूमानियन तेल का मिलना बन्द हो जाने से जीस्टर्स डोर्फ का तेल बहुत आवश्यक हो गया है। वायना की रक्षा इसलिए भी आवश्यक है। वायना का पतन होने का अर्थ है जर्मनी के हृदय की गति का-बन्द हो जाना।

वायना का महत्त्व एक और दृष्टि से भी है। ड्रेसडेन और बवेरिया के जंगलों में नाजियों ने गुरिल्ला युद्ध लड़ने की तैयारी कर रखी है। पराजित जर्मनी इन्हीं जंगलों से अन्त तक लड़ने की आशा रखता है। वायना के पतन से यह प्रदेश खुल जायगा और लड़ाई सीधी वहीं पहुँच जायगी, जो कि जर्मनों का अन्तिम रक्षा और आश्रय का स्थान है। इसलिए बर्लिन के पतन से वायना का पतन अधिक महत्त्वपूर्ण है। वायना का पतन राजनीतिक, आर्थिक और सामरिक तीनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है, जर्मनी की लड़ने की शक्ति को पंगु करने वाला है। यही कारण है कि बुडापेस्ट में जर्मन अब तक लड़ रहे हैं और डेन्यूब घाटी आज जर्मनी की भाग्य-देवी बनी हुई है। क्या जर्मनी की भाग्यदेवी तीसरे रीश से विमुख होगी और वायना का पतन होगा? इसका उत्तर मार्शल मैलिनोवस्की, मार्शल तुखवोलिन और जनरल पैट्टन की सेनाओं से मास्को और शेष दुनिया माँग रही है। इनका क्या उत्तर होगा, यह फिर कभी दिया जायेगा।

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

युद्ध...
अन्न...
जलावन...
वस्त्र...
नौकर...

उसकी झंझटें बहुत हैं

बेचारी गृहिणी पर आजकल दया आती है : उसका जीवन चिन्ताओं व झंझटों से भर गया है। अन्न हद से ज्यादा मँहगा—कपड़ों व जलावन की समस्या निपटने में नहीं आती—बच्चों को स्कूल और पति को काम पर भेजना कुस्वप्न-सा हो गया है। परन्तु अभी भी उसकी एक सच्ची सखी बच गई है जो हमेशा उसका साथ देगी। उस सखी का नाम है, चाय। वह कितनी ही थकी मांदी या चिन्ताग्रस्त क्यों न हो. चाय उसके बोझ को हलका कर देगी. दुश्चिन्ताओं का अन्त कर देगी. भविष्य का सामना हँसते हँसते करने के लिये उसे नई आशा. नया बल प्रदान करेगी : चिन्ता छोड़. उसकी विचार-धारा आने वाले सुखद समय की कल्पना में प्रवाहित होने लगेगी।

वक्त पड़ने पर भारतीय चाय का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

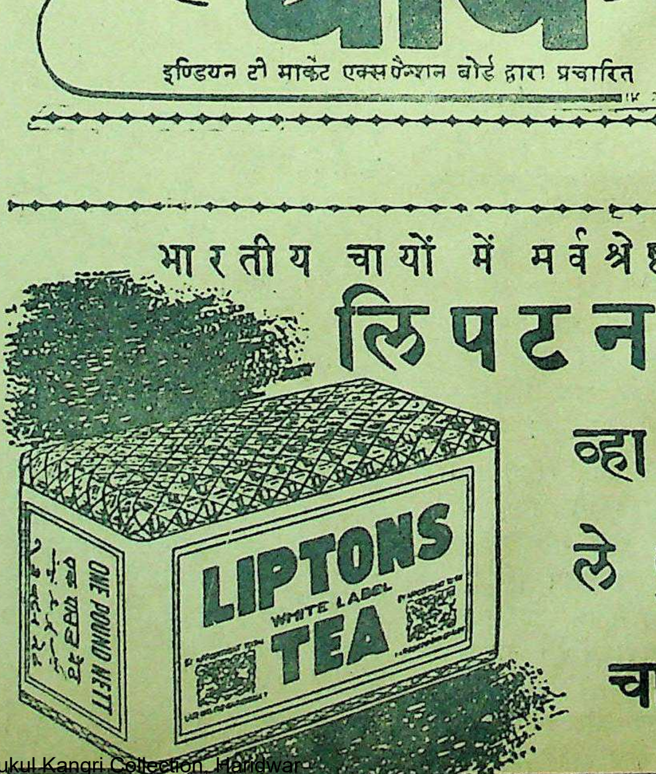

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की
व्हाइट
लेबुल
चाय

LTK 87

सोवियट रूस के वीर सेनानी

युद्ध मोर्चों पर फ़ौजी संगठन का क्या महत्त्व है ?

लेखक, श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल

सोवियट रूस विजयी क्यों होता जा रहा है ? इसका महत्त्वपूर्ण श्रेय प्राप्त है विभिन्न युद्ध मोर्चों पर तैनात सोवियट फ़ौजों के सेनानायकों को। इस लेख में यह बतलाया गया है कि रूस के फौजी सेनापतियों के कौन कौन से हैं उनके कारण रूस आज विजयी हो रहा है और उसका सैनिक संगठन प्रबल सिद्ध होता है।

सोवियट रूस की सेना के प्रधान सेनापति मार्शल बोरोशिलोव।

आज कल युद्ध के समय सेना का महत्त्व बहुत बढ़ गया है और प्रायः सभी राष्ट्रों में सेनापति का पद राष्ट्रनायकों के बराबर माना गया है। ऐसा खयाल हो सकता है कि रूस जैसे निरंकुश शासन के देश में सेना तो सर्वेसर्वा ही होगी। लेकिन वहाँ का सैनिक नेतृत्व पूर्ण रूप से राजनैतिक नेतृत्व के आधीन है। युद्धकालीन सैनिक नेतृत्व में परिवर्तन हुए लेकिन राजनैतिक नेतृत्व उन्हीं चौदहों के हाथ में है जो कम्युनिस्ट पार्टी के पोलिट-ब्यूरो के सदस्य हैं। इन चौदहों के अलावा किसी का महत्त्व इतना नहीं बढ़ा है कि इनमें से किसी का भी वह समकक्ष हो सके। पोलिट-ब्यूरो के सदस्य इस प्रकार हैं—

स्टालिन—जो लड़ाई के पश्चात् सर्वप्रधान सेनानायक तथा सोवियट यूनियन के मार्शल हो गये हैं; वे राष्ट्र के विभिन्न विभागों के प्रधानों की कौंसिल के तथा रक्षा-विभाग और राष्ट्रीय-रक्षा कमेटी के भी अध्यक्ष हैं।

वियाचेस्लास, एम्० मोलोटव—पर-राष्ट्र सचिव तथा राष्ट्रीय रक्षा कमेटी के सदस्य।

क्लिमेन्टी ई वीरोशिलाव—सोवियट यूनियन के मार्शल तथा राष्ट्रीय रक्षा कमेटी के सदस्य।

लाजार, एम्० कागानोविच—रेल विभाग के अध्यक्ष। जब १९४२ में जर्मनों ने रूसी तेल पर धावा बोला तो वे जन-रक्षा के आयोजन में नियुक्त हुए; राष्ट्रीय रक्षा कमेटी के सदस्य।

माइखेल आई कालिनीन—सर्वोच्च सोवियट के सभापति दल के अध्यक्ष। यद्यपि यह पद राष्ट्रपति के समान है, लेकिन सोवियट संस्था में इसका अधिक महत्त्व नहीं है।

आद्रे ए आद्रेयेव—सर्वोच्च सोवियट की एक शाखा (कौंसिल आफ़ दि यूनियनों) के सभापति।

सोवियट सेना के वर्तमान संचालक और सेनापति मार्शल तिमोशिंको।

निकितिन् एस ख्रुशेव—युक्रेन की कम्युनिस्ट पार्टी के पहले सेक्रेटरी।

ए० ए० जदानव—एक हँसमुख, भारी भरकम आदमी जिसने लेनिनग्राड की रक्षा की योजना की; लेनिनग्राड की कम्युनिस्ट पार्टी की शहर कमेटी के सेक्रेटरी।

ऐनेस्टस् आइ मिकोयान—बाहरी तिजारत के अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय रक्षा कमेटी के सदस्य।

पाँच स्थानापन्न सदस्य इस प्रकार हैं—

लाब्रेन्ती पी बेरिया—जार्जिया प्रदेश के, जो आन्तरिक व्यापारों के या दूसरे शब्दों में पुलिस अध्यक्ष हैं। राष्ट्रीय रक्षा कमेटी के भी यह सदस्य हैं।

निकोलाई एम् श्वेरनिक—सर्वोच्च सोवियट की दूसरी शाखा, जातियों की कौंसिल के अध्यक्ष तथा अखिल रूसी ट्रेड यूनियनों की कौंसिल के समापति।

जी एम् मालेंकव—स्टालिन के भूतपूर्व सेक्रेटरी और राष्ट्रीय रक्षा कमेटी के सदस्य।

निकोलाइ ए वोज्नेसेंस्की—राष्ट्र-रक्षा कमेटी में सबसे कम उम्रवालों में से एक; राष्ट्र योजना कमीशन के अध्यक्ष; कहा जाता है कि यह बहुत प्रतिभाशाली हैं।

आलेक्जान्डर एस् शेरवाकॅम—सोवियट सूचना विभाग के डिक्टेटर, मास्को कम्युनिस्टों के नेता और लाल सेना के राजनैतिक विभाग के मुखिया; हाल ही में यह लेफ़्टिनेन्ट-जनरल के पद पर अधिष्ठित किये गये हैं।

यह ध्यान देने की बात है कि इन चौदहों में आठ मिलकर ही राष्ट्र-रक्षा कमेटी बनती है और यही युद्ध के समय सोवियट यूनियन का सञ्चालन करती है; अलावा इसके इनमें से पाँच—स्टेलिन, वोरोशिलव, खुशेव, ज्यादानव, और शेरवाकोम—सेना में उच्च पद पर प्रतिष्ठित हैं।

सेना का अधिनायकत्व राजनैतिक नेतृत्व जैसा अपरिवर्तित नहीं रहा है। लड़ाई के शुरू में सोवियट यूनियन के पाँच मार्शल थे—बोरोशिल, सिमियन कन्स्टान्टिनोविच तिमोशेंको, सिमियन, एम० बुदेनी, बोरिस एम० शापोवनिकॅव तथा ग्रेगरी कुलिक। आरम्भ के महीनों में जब नात्सी तेजी से मास्को की ओर बढ़ रहे थे उस समय उत्तरी सेनादल के अधिनायक थे वोरोशिलव, मध्यदल के तिमोशेंको तथा दक्षिणीदल के बुदनी। ये पुराने बोलशेविक थे, क्रेमलिन के प्यारे थे और अच्छे सिपाही थे। वोरोशिलव और बुदनी को छुट्टी दी गई और रिज़र्व सेना को शिक्षित करने का भार उनको सौंपा गया। तिमोशेंको दक्षिणी मोर्चे पर तैनात किये गये।

अब एक अफसर आया, जो मार्शल नहीं था, नौजवान था लेकिन अनुभवी सिपाही था और जिसका नाम इस लड़ाई के पहले सोवियत यूनियन में शायद ही किसी ने सुना हो। उसका नाम है जॅर्जी कॅन्स्टान्टिनोविचजुकम—उम्र ४८ साल, किसान का लड़का, एक समय जार की सेना में पैदल सिपाही, गृह-युद्ध के समय लाल सेना के घुड़सवार डिवीजन का पहले साधारण फ़ौजी फिर कार्पोरल। आधुनिक युद्ध-कौशल का इससे अधिक जानकार और कोई नहीं था। स्टालिन ने यह बात समझ ली थी। गृह-युद्ध के पश्चात् वह पहले एक रेजिमेन्ट, फिर ब्रिगेड और उसके बाद घुड़सवारों के एक डिवीजन के नायक नियुक्त किये गये। जब बुदनी घुड़सवारों के प्रधान निरीक्षक थे तब वह सहायक निरीक्षक के पद पर नियुक्त थे। पाँच साल तक वह घुड़सवारों के चौथे डिवीजन के अधिनायक थे और १९३८ में वह एक विशेष घुड़सवार दल के, जो कि पोलैंड से लगा हुआ श्वेत रूस के सैनिक क्षेत्र की सीमा पर तैनात था, प्रथम अधिनायक नियुक्त हुए।

* * *

उन्हीं दिनों जापानियों से झगड़ा बढ़ चला। जुकव साइबीरिया भेजे गये और अगस्त १९३९ में उसी के नेतृत्व में सोवियत सेना ने मंचूरिया और बाहरी मंगोलिया की सीमा पर खालकिन-गोल स्थित जापानी छठी सेना को विध्वस्त किया। यह जर्मनी द्वारा पोलैंड आक्रमण के कुछ ही सप्ताह पहले की बात है। जुकव पर और उसकी लड़ाई के तरीके पर दुनिया ने कोई ध्यान नहीं दिया; लेकिन सुदूर-पूर्व में वही पहला अफसर था जिसने टैंकों का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर वैसे ही किया जैसा कि करना चाहिए था। यह एक दिलचस्प बात है कि सुदूर-पूर्व में जुकव ने छठी जापानी सेना को हराया और स्टालिनग्राड में उसी ने जर्मनी की भी—छठी सेना को हराया।

लड़ाई के चौथे महीने जब तिमोशेंको दक्षिणी मोर्चे पर स्थानान्तरित किये गये तो स्टालिन ने मध्य मोर्चा जेनरल जुकव के सुपुर्द किया और मध्य मोर्चे का अर्थ था मास्को। यह नियुक्ति लाल सेना के नेतृत्व में पहला परिवर्तन था। लड़ाई में जुकव को विजय प्राप्त हुई और मास्को बच गया। लेकिन अगली गर्मी (१९४२) में जर्मनी ने दक्षिणी मोर्चे पर धावा किया और तिमोशेंको ने उनका सामना किया। वह भली भाँति लड़ा लेकिन अगस्त में जब कि वह केवल डान नदी तक ही जा सके थे, जुकव ने धावा बोलना शुरू कर दिया। जुकव तिमिशेंको का स्थान ग्रहण करने के लिए बुलाये गये और तिमिशेंको अब उत्तर-पश्चिम के एक संकीर्ण क्षेत्र की रक्षा के लिए भेजे गये। यह लाल सेना के नेतृत्व में दूसरा महत्त्वपूर्ण परिवर्तन था।

बर्लिन पर चढ़ाई करनेवाली सोवियट सेना के प्रधान सेनापति जनरल जुकोव।

इसी समय स्टालिन ने सैनिक मामलों में अधिकाधिक भाग लेना शुरू किया और लाल सेना के नेतृत्व के लिए एक नया संगठन बना। जिसके प्रधान अध्यक्ष स्वयं स्टालिन बने। हेडक्वार्टर ने सैनिक पंक्ति का पुनःसंगठन किया। बड़े मोर्चों को काटकर कई छोटे टुकड़े बने और कर्नल जनरल लिओनिड गोमोरम, कर्नल जनरल कन्स्टान्टिन रोको समस्की और कर्नल जनरल गोलिकम जैसे नौजवान अफसर इनका नेतृत्व करने लगे। इनको परस्पर मिलाने के लिए हेडक्वार्टर ने जुकव और आलेजान्डर वासि लिवरकी को भेजा जिन्होंने पुराने प्रधान सेनापति शापोशनिकोम का स्थान लिया। स्टालिनग्राड से लेकर ३५० मील की दूरी पर खारकोव तक इन नये कमाण्डरों ने विजय प्राप्त किया। इसलिए जुकव युद्ध-कालीन सोवियत यूनियन के प्रथम मार्शल बनाये गये। एक अच्छा नवयुवक-दल जैसे तोपखाने का अध्यक्ष निकोलाई वोरोनम तथा हवाई फौज के अध्यक्ष आलेक्ज़न्डर नोविकम आदि इनके सहायक बने। यहाँ केवल यह ध्यान रखने की बात है कि स्टालिन केवल नाम-मात्र के सेनापति नहीं हैं।

कहा जाता है कि सभी रूसी सिपहसालार एक से हैं; सभी पाँच फुट सात इंच लम्बे हैं, सभी के दोहरे बदन हैं और स्टालिन के अनन्य भक्त हैं, नम्र हैं, सीदे-सादे कभी कभी रूखे लेकिन नियम-पालन में कट्टर। कोई साधारण सिपाही, कप्तान या कर्नल उनको कर्नल कह कर नहीं पुकारता है। बल्कि वह 'होशियार' कहकर खड़ा रहता है, जब मोर्चे का सिपहसालार उसकी ओर नजर डालता है; तब वह सलाम बजाकर 'कामरेड सिपहसालार' को रिपोर्ट करता है, हुक्म लेता है और फिर सलाम कर बाहर चला जाता है। ये सभी अधिकतर किसानों या मजदूरों के लड़के हैं। अधिकतर जार की सेना के ही सिपाही या कार्पो-

[शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

यूक्रेन को जर्मनों से छुड़ानेवाले सोवियट सेनापति मार्शल बुदैनी।

अभिनेता-अभिनेत्रियों की कथायें

अच्छी फिल्मों पर सेंसर-नीति क्यों लागू होती है?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

संसार में अभिनेता और अभिनेत्रियों का जीवन भी बड़ा विचित्र है। वह केवल अपने ही लिये कमाते हैं। यह विचार बिलकुल गलत हैं। संसार को उनकी कला से लाभ है। अभिनय के द्वारा किसी भी देश की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक स्थिति को धक्का नहीं लगता वरन वृद्धि ही होती है। अभिनेताओं को सदैव नये विचारों और भावनाओं का प्रतिनिधित्व करना पड़ता है। संसार के कुछ अभिनेता और अभिनेत्रियों के सम्बन्ध में प्रकाश डालने पर ज्ञात होगा कि उन्हें मानव स्वतन्त्रता की कितनी प्रबल इच्छा रहती है?

ग्रेटा गार्बो—ग्रेटा ग्रार्बो को स्वीडन के स्टाकहोल्म शहर में केवल इने गिने लोग जानते थे। क्या मालूम था कि यही ग्रेटा गार्बो एक दिन संसार की एक प्रसिद्ध अभिनेत्री होगी? किन्तु उसकी विलक्षण बुद्धि ने उसे इस कला में अच्छी सफलता प्रदान की।

ग्रेटा इटली में अपने अभिनय-द्वारा इतनी प्रसिद्ध हो गई कि उसके खेलों में भीड़ का वारापार नहीं था। उसकी 'आई टू बी अलोन' नामक फिल्म पर सेन्सर (रोक) लगाना पड़ा था। एकाएक यह अफवाह संसार में फैली कि ग्रेटा इङ्गलैण्ड के एक ५६ वर्षीय लियोपोल्ड स्टाकोवस्की नामक व्यक्ति से शादी करेगी। कुछ लोग इस बात की पुष्टि के लिये नेपुल्स शहर में पहुँचे, जहाँ वह रहती थी। उसने उन लोगों के प्रश्न करने पर उत्तर दिया—"मनुष्य को शांति में रहने के लिये घवड़ाना एक निर्दयता है।

दूसरा प्रश्न लोगों ने किया—"क्या आप मि० स्टाकोवस्की से शादी करने वाली है। यह सच है?"

उसने दृढ़ता से उत्तर दिया—"कुछ लोग ऐसे हैं जो शादी पसन्द करते हैं और कुछ नहीं। मैंने कोई दूसरा विचार तो अभी बनाया नहीं। पर संसार की सुन्दर वस्तुओं को उनके सत्यानाश के पहले अवश्य देखूँगी।" यद्यपि दिन में नीली पोशाक पहननेवाले स्टाकोवस्की ने भी इस अफवाह को सच कहने से इनकार कर दिया था लेकिन ग्रेटा के विश्वसनीय शब्दों ने प्रकट कर दिया था कि वह स्टाकोवस्की के साथ संसार के सौन्दर्य का उपयोग करेगी।

ग्रेटा ने अपनी एक दूसरी मुलाकात में कहा—संसार में मेरे अधिक मित्र नहीं और न मैं अधिक मित्र बना सकी हूँ।"

इससे अगर लोग यह कहें कि वह प्रेम नहीं पसन्द करती तो भारी भूल है। इसके वाक्य हैं "मेरा जीवन कुत्ते का जीवन है।" कुछ दिन के बाद दोनों नैपुल्स से सिसली चले आये। सिसली में दोनों ने वास्तव में शादी कर ली।

फिल्म-जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री प्रभा।

चार्ली चैपलिन—थोड़े दिन हुए चार्ली ने कहा था—हमको चाहिए कि हम अमेरिकन फिल्म की उन्नति के लिए सेंसर (रोक) का मुकाबिला करें! तमाम बंधन जो फिल्मों पर रोक लगाने के लिए दिखलाई दे रहे है और जिनसे मानवीय कार्यों में बाधा पड़ने की शंका है उनके लिये चित्रपट प्रेमियों को कान में तेल डालकर न बैठना चाहिए। अपने देश की फिल्मों पर रोक किसी तरह नहीं सहन की जा सकती है।

उदाहरण के लिए रूस में सिनेमा का इतिहास इतना बरबाद कर दिया गया है कि उसका वर्णन करना कठिन है। इसेंस्टीन रूस के प्रधान डाइरेक्टरों में थे। किन्तु वह भी अपनी कला का प्रदर्शन नहीं कर सके। वहाँ की रोक इतनी बढ़ गई कि उन्होंने जो फिल्म दो करोड़ रुबेल खर्च करके तैयार की थी बेकार हो गई। इसी प्रकार "थण्डर ओवर मैक्सिको" नामक चित्र का हुआ। उसे अकेले इसेंस्टीन ने ही नहीं सम्पादन किया था बल्कि वह औरों के सहयोग से तैयार की गई थी।

यह सब क्यों? यह रूस की राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं के लिए अगर वहाँ के अधिकारी करें तो बहुत बुरा है। यह घटनायें रूस के युद्ध के प्रारम्भिक समय की है। चित्र तैयार अवश्य हो गया होगा। पर रूसी अधिकारी उसे किस दृष्टि से देख सके होंगे? समझ तो यह पड़ता है कि रूसी अधिकारी चित्रपटों को प्रचार का साधन समझते हैं। कला नहीं।"

* * *

एम० रोम और डी वैसीलीक—इन दोनों अभिनेताओं के 'लेनिन इन अक्टूबर' नामक चित्र पर सेंसर कम नहीं रहा। चित्र में स्टालिन को लेनिन का रक्षक दिखलाया गया था। उसमें स्टालिन के साहस का अच्छा चित्रण था। लेकिन इस पर भी रोक क्यों? चित्र में दिखलाया गया था कि लेनिन फिनलैंड के स्टेशन पर पहुँचता है। उससे स्टेशन पर एक मनुष्य मिलता है और पूछता है—"स्टालिन कहाँ?" वह क्रान्ति का समय था। लेनिन का जिनोवियू और कामनेव पीछा करते हैं और नोवाया नुहिज्म नामक पत्र में लेनिन के नीति की आलोचना होती है। उस पत्र का सम्पादक था मैक्सिम गोर्की जो पीछे से कम्यूनिस्ट हो गया और आज वही क्रेमलिन में समाधिस्थ है। ऐसी दशा में भी रूसी सरकार का ऐसा कड़ा रुख चित्रों के लिए क्यों था?

संसार में इन महान् अभिनेताओं की कृतियों पर भी सेंसर की अपार कृपा रही। किन्तु यह खबरें तो युद्ध प्रारम्भ होने के समय की हैं। इस समय फासिस्ट और कम्युनिस्ट सरकारें कैसा सेंसर किये हैं? सारे देशों को अपनी स्थिति के अनुसार फिल्म बनाना पड़ता है। लेकिन अभिनेता और अभिनेत्रियाँ क्या समय की परख करती हैं?

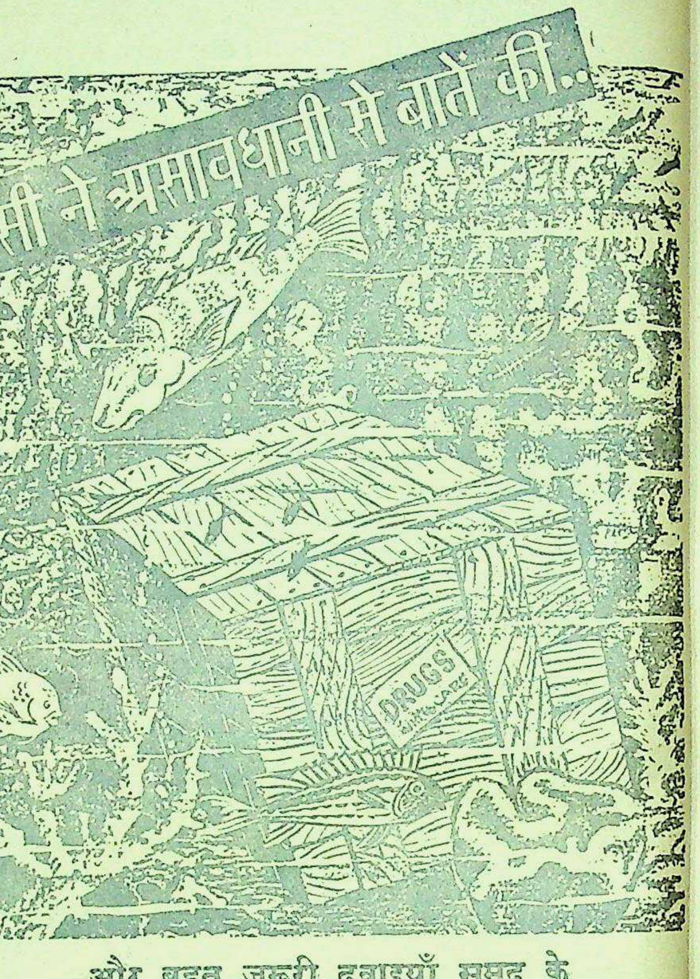
किसी ने असावधानी से बातें कीं..
DRUGS

...और बहुत ज़रूरी दवाइयाँ समुद्र के गर्भ में जा पहुँचीं

कल्पना कीजिए, बंगाल और आसाम में मलेरिया फैल रहा है; हज़ारों आदमी इस घातक रोग के शिकार हो रहे हैं। लोगों की जान बचाने के लिए टनों दवाइयाँ जल्दी से हिन्दुस्तान भेजने का खास प्रबन्ध किया गया है। मगर वह जहाज़ जो इन्हें ला रहा था तारपीडो से डुबो दिया गया। तीस-चालीस बहादुर जहाज़ी डूब गये। मलेरिया ग्रसित क्षेत्र के हज़ारों स्त्री-पुरुषों पर संकट का पहाड़ टूट पड़ा।

किसी ने असावधानी से बातें कीं

किसी ने, संभवतः किसी माननीय नागरिक ने भूले से ऐसी बात कह दी जिसके आधार पर दुश्मन ने एक पनडुब्बी इस जहाज़ को डुबोने के लिए रवाना कर दी। यह सिर्फ़ एक ज़रा सी बात थी जो असावधानी में मुँह से निकल गई और भुला भी दी गई।

इसी तरह विपत्तियाँ आती हैं।

सिर्फ़ कम बोलने का ही नहीं, बल्कि चुप रहने का निश्चय कर लीजिए। दुश्मन को कोई ख़बर न लगने दीजिए। चिट्ठियों और टेलीफोन पर बात करने में विशेष सावधानी से काम लीजिए। दुश्मन हमेशा आँख-कान लगाये रहता है। उसके ख़ुफ़िया ज़रिये रद्दी की टोकरियाँ और टेलीफोनों के तार हैं।

अपने देखे हुए जहाज़ों, हथियार व गोला-बारूद, फ़ौजों की हरकत या फ़ौजी सामान बनाने वाले कारख़ानों के बारे में कुछ लिखने या बोलने में विशेष सावधानी रखिए। जानें बचाने और आम जरूरत के सामान की सुरक्षित पहुँच के लिए एक शब्द भी मुँह से न निकालिए।

देखिए कहीं आप तो नहीं चूक रहे

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे द्वारा प्रकाशित
AAA 1338 Hindi

स्वर्ग और पृथ्वी

लेखक, श्रीयुत धर्मवीर

> पथिक ने कुमारी को देखा, दोनों पृथ्वी पर अपनी मंजिल तय करने लगे। कुमारी के नयनों में प्रेम उमड़ आया। विरह ने दोनों के हृदय में वेदना की कसक उठा दी और संसार में प्रथम बार फूट पड़ी भाषा। पथिक ने बादलों के संगीत के साथ गाना प्रारम्भ किया एक विरह गीत। प्रेम की यह पहली कविता जब अम्बर-पट को चीर कर पहुँची स्वर्ग में तब देवता भी लालायित हो उठे पृथ्वी पर आने को। किन्तु स्वर्ग, स्वर्ग है और पृथ्वी, पृथ्वी। जीवन के शाश्वत सत्य पर निर्मित कल्पना और भावुकता के तारों से झंकृत यह कहानी बड़ी ही मनोरंजक है।

कल्पना ने आश्चर्य में भर कर वातायन के दोनों पट खोल दिये। सामने अनन्त की सीमा को स्पर्श करता हुआ विशाल सागर लहरा रहा था। तट पर बिखरी हुई ऊषा की हल्की गुलाबी आभा से चाँदनी की चञ्चल लहरें टकरा कर लौट रही थीं। प्रशान्त नीरवता में केवल चाँदनी की लहरों का मन्द मर्मर गम्भीर निश्वासें भर रहा था।

फिर यह स्वर कैसा? कल्पना विस्मय से स्तब्ध थी। यह कल्पना का पहला अनुभव था। चाँदनी के सागर के तट पर, स्वर्ग के एक उजाड़ कोने में, हल्के सुनहरे बादलों का एक महल था। शैशव से ही कल्पना उसमें निवास करती थी। पर वह स्वर्ग में रहते हुये भी स्वर्ग से अलग थी; वह एकान्त पर विश्वास करती थी। उसके प्रासाद के चारों ओर का वातावरण इतना रहस्यमय और दुर्भेद्य था कि क्रीड़ारत चञ्चल देवकुमार भी उधर जाने का साहस न करते थे। कल्पना अपने सूनेपन की रानी थी। हल्की नीली आभावाले वातायन पटों को खोलकर वह न जाने कब तक निहारा करती थी, सामने फैले हुए चाँदनी के अनन्त सागर को, उनमें लहराती हुई चञ्चल लहरों को। कभी कभी स्वर्ग के घाटों पर देवियाँ मंगल-कामना से प्रेरित होकर बहा देती थीं कुछ जलदीप जो लहरों पर उठते-गिरते, जलते-बुझते उसके वातायन के सम्मुख से बह जाते थे और उन्हें देखते ही वह भयभीत होकर पट बन्द कर लेती थी। चञ्चल लहरों का मन्द स्वर हल्के हल्के झकोरों के साथ थपकियाँ देता था। जलपक्षियों का मधुर सुकोमल संगीत उसे लोरी सुनाता था और वह पलकें मूँद कर सो जाती थी।

किन्तु आज का यह सहसा गूँज उठनेवाला स्वर विचित्र था। उसने कल्पना किया कि यदि इस सागर का तट ऊषा की हल्की गुलाबी आभा से न निर्मित होकर यदि प्रखर धूप के काँपते हुये पीलेपन से बना होता और चाँदी की रेशमी लहरें कहीं उससे आकर टकरातीं तो जितना करुण क्रन्दन उस वातावरण में छा जाता—कुछ वैसी ही करुणा इस स्वर में भी है। पर इस स्वर का उद्गम कहाँ से है? इस स्वर की लहर लहर जैसे भिगो रही थी कल्पना के मन को एक आर्द्र उदासी से। वह वातायन से टिक कर बैठ गई। उसकी आँखें शून्य गति से ढूँढ़ने लगीं—चाँदनी के अनन्त विस्तार में उस अनन्त रहस्य भरे गायक को। स्वर लहराता रहा। वह उसमें खो गई। धीरे धीरे कुछ चञ्चल आँसू उसके नयनों से झाँकने लगे।

सखियाँ उद्विग्न हो उठीं। 'कुमारी!' उन्होंने व्याकुल होकर पुकारा। कुमारी की तन्द्रा भंग हुई। उसने चौंककर उदासी से पूछा—"यह कैसा स्वर है वेदना?"

वेदना बोली—"जाने भी दो कल्पना! आज क्या तारों के हार न गूँथोगी?" कल्पना बोली—"वेदना! मेरे प्रश्न का उत्तर दो! तारों के हार रोज तो गूँथती हूँ सखी। दुष्ट तारे कुम्हलाते भी तो नहीं। देखो न, असंख्यों हार पड़े हैं—आज जाने क्यों मन होता है कि कोई ऐसा होता जिसके चरणों में इन हारों को समर्पित कर पाती। जाने दो इन हारों को वेदना। यह स्वर कैसा है?"

वेदना ने उत्तर न दिया—

"बोलो वेदना! मेरे मन की उत्सुकता विकल हो रही है। ऐसा स्वर तो पहले कभी नहीं सुना था।"

वेदना ने देखा अन्य सखियों की ओर, और वे एक विचित्र आशंका से भर गईं। वेदना किसी प्रकार प्रयत्न कर बोली—"यह स्वर! यह कुछ नहीं रानी! एक देवकुमार निर्वासित कर दिया गया है स्वर्ग से। वही सम्भवत: गाता हुआ इस ओर आ निकला है।"

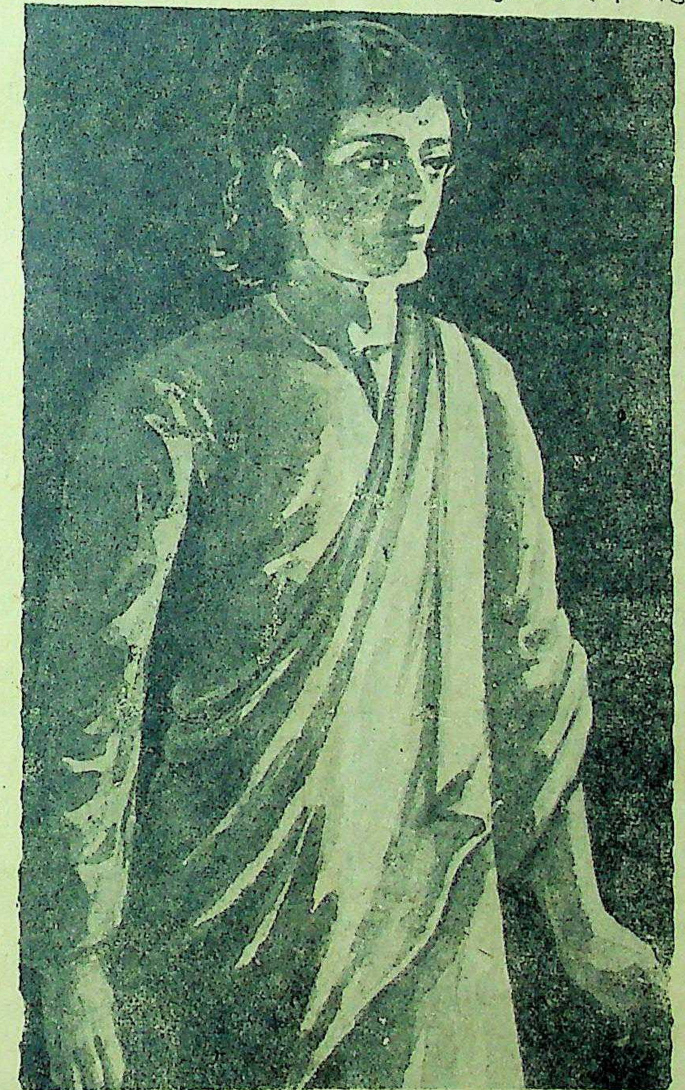

युवक आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से उसे देखकर स्तम्भित हो गया—

"देवकुमार! कल्पना के देश की नीरवता और एकान्त को भंग करने का साहस उसे कैसे हुआ?" कल्पना ने किंचित् रुष्ट होकर पूछा।

"वह ऐसा ही दुस्साहसी है कुमारी! स्वर्ग के निषिद्ध स्थानों में उसने प्रवेश किया, तारों के फूलों में उसने अपना सौरभ भर दिया, अपने गीतों में उसने किरनों के तीर चलाने प्रारम्भ किये। इसी से तो देवराज ने उसे निर्वासन का दंड दे दिया। किन्तु विश्वास करो कुमारी! उसके मस्तक पर चिन्ता की रेखा भी न उभरी। कुछ ठिकाना है इस दुस्साहस का?"

"स्वर्ग के नियमों का उल्लंघन! मेरे एकान्त को सहसा भंग करने का साहस!" कल्पना क्रोध से काँप रही थी। एकाएक झकोरों के साथ गायक का तीव्र स्वर कक्ष में गूँज गया। कल्पना के मन का क्रोध जैसे एकाएक धुल गया हो। परन्तु फिर भी प्रयत्न कर वह तीव्र स्वर में बोली, "बुलाओ इस उद्दण्ड देवकुमार को—"

"देवराज पधारे हैं कुमारी!"

"आने दो।"

"मैंने कहा था प्रेम का आगमन अमंगल से पूर्ण है!" वेदना ने सोचा—देवराज आये। नयनों में रोष था। गति में संयम।

"कल्पना, तुमने एक विद्रोही को आश्रय दिया है।"

"पर उसने निषिद्ध स्थानों में प्रवेश किया है—स्वर्ग का शासन भंग किया है।"

"निषिद्ध स्थान, जैसे?"

"जैसे देवबालाओं के अज्ञान हृदय, मृग शावकों के भोले नयन और तरुणों की चंचल गति।"

कल्पना केवल किंचित् मुस्कुरा दी—"और कल्पना, उसने तुम्हारे वातावरण की नीरवता और एकान्त को भंग किया है—"

"कल्पना इस नवीन परिवर्तन का स्वागत करती है। स्वर्ग के इस विभाजन और अन्याय शासन के विरोध में प्रेम ने समता और स्वतन्त्रता की पुकार दी है और कल्पना उससे सहानुभूति रखती है।"

"क्या मेरा शासन अन्याय है?" देवराज उत्तेजित हो उठे।

"यह कहना मेरी अशिष्टता होगी और न कहना असत्य।" कल्पना शान्ति से बोली—

देवराज खीज गये—"अच्छा तो अभी तो प्रेम को केवल निर्वासन मिला था—कल प्रभात में उसे प्राणदण्ड दिया जायगा। मैं जाता हूँ।"

* * *

कल्पना सिसक रही थी। वेदना रुँधे गले से बोली,—"चुप रहो कुमारी! मैंने कहा था अनजान परदेशी से इतनी ममता बढ़ाना उचित नहीं है कल्पना!"

"वेदना!" कुमारी सिसकियाँ रोककर बोली—"कल्पना करो कि एक पक्षी जो जन्म से निराधार अन्तरिक्ष में उड़ रहा हो और दूर दूर तक केवल शून्य ही उसके परों को सहारा दे रहा हो—गति दे रहा हो और चुपके चुपके उसके परों में थकान भी भर रहा हो—यदि उस पक्षी के थके हुये परों को विश्राम के लिए किसी सुकोमल टहनी का आसरा मिल जाय; और, और दूसरे ही क्षण प्रबल झंझावात झकझोर कर उस टहनी को तोड़ दे तब वह पक्षी क्या करेगा?"

"उसका वश ही क्या है कुमारी! उसके थके हुए पर उड़ने में असमर्थ होंगे। उसी टहनी के साथ साथ मुरझाये हुए फल की भाँति वह पक्षी भी टूट कर गिर जायगा कुमारी!" वेदना ने निराश स्वरों में कहा।

वेदना काँप गई—"नहीं, नहीं, कुमारी, वह योंही आया है, योंही चला जायगा।"

कल्पना बोली—"मैं उसे दण्ड दूँगी जाओ।"

"मैं डरती हूँ कुमारी! उसका प्रवेश अमंगलकारी न सिद्ध हो। उसके स्वरों में इन्द्रजाल की लहरें नाचती हैं—उसके नयनों में जादू की ज्योति चमचमाती है।"

"कल्पना इतनी दुर्बल नहीं है—जाओ।"

⁂ ⁂ ⁂

"तुमने यह दुस्साहस क्यों किया देवकुमार!"

देवकुमार कुछ सोच रहा था।

"मेरे प्रश्न का उत्तर दो, दुस्साहसी युवक!"

"पर तुम्हारा प्रश्न क्या है?" देवकुमार ने चौंककर पूछा।

"इतनी उच्छृंखलता! मैंने अभी तुमसे कुछ पूछा था?" कल्पना क्रोध से काँप गई। "क्षमा करो देवि! मेरा मन

तुम्हारे स्वरों की मिठास में ही डूब गया था। अर्थों की ओर मैंने ध्यान ही न दिया—देवकुमार किंचित् मुस्कुराया—"जिस प्रश्न की ध्वनि इतनी मीठी है, उसका तात्पर्य कितना मादक होगा! फिर से प्रश्न पूछो कुमारी! मन होता है तुम सदा इस प्रकार प्रश्न पूछती जाओ और मैं उसे अनसुनी करता जाऊँ।"

सखियाँ अपने को वश में न रख सकीं। खिलखिलाकर हँस पड़ीं। रानी के मस्तक की रेखायें सुलझ गईं। गालों पर दो गुलाब चुपके से खिल गये। पर वह फिर सम्हल गई।

"यह दुस्साहस और फिर भी यह वाचालता एक देवकुमार को शोभा नहीं देती।" कल्पना के स्वर भी जैसे उखड़ रहे थे।

"देवकुमार! अब मैं देवकुमार नहीं हूँ देवी! मेरी व्यक्तिगत संज्ञा प्रेम है और प्रेम आसन को नहीं सह सकता, चाहे वह स्वर्ग का आसन ही क्यों न हो। देवराज ने अपने अधिकार को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रेम को नियन्त्रण में रखना चाहा और मैंने विद्रोह कर दिया। मुझे निर्वासन का दण्ड मिला। निराश्रित होकर मैं चल पड़ा। सुना था तुमने शैशव से ही अपने को स्वर्ग से दूर रक्खा है। सोचा था, तुम्हारे यहाँ मुझे आश्रय मिलेगा। पर, तुम दण्ड दोगी। अच्छा है, दण्ड ही दो। तुम्हारा दण्ड भी कम सुखद न होगा कुमारी!"

हँस पड़ी कुमारी। कब तक वाह्य कठोरता के आडम्बर में मन के नवीन स्पन्दन को ढाँक रखती—"तो तुम आश्रय की इच्छा से आये हो! कल्पना तुम्हें निराश न करेगी प्रेम! वेदना, इनका प्रबन्ध करो।"

वेदना किसी भावी अमंगल की कल्पना से काँप उठी।

* * *

"वेदना! हाँ ठीक है वेदना।" कल्पना को जैसे कोई नई बात सूझ गई थी—"मेरी टहनी टूट जायगी सखी और मैं—मैं भी उसका साथ दूँगी।"

वेदना कुछ समझ न पाई।

* * *

"प्रेम!"

"हाँ कुमारी!"

"तुम्हें अपना भविष्य मालूम है न!"

"मालूम है रानी!" और प्रेम हँस पड़ा।

"तुम हँस रहे हो प्रेम?" रानी के नयन भर आये।

"तुम रो रही हो, छिः! उधर देखो कुमारी—" प्रेम ने चाँदनी के सागर की ओर संकेत किया। चाँदनी की लहरें महल से टकराकर लौट रही थीं।

"मैं नहीं समझी प्रेम!"

"नहीं समझीं! देखो युग युगों से कितनी लहरें आकर इन महल के पत्थरों से टकराती हैं, पर महल के पत्थर अटल हैं। मुझे भी तुम एक नश्वर लहर समझना कुमारी जो अनन्त के किसी कोने से उमड़ी और टकराकर दूसरे ही क्षण लौट गई। ऐसी नश्वर लहरियों को पत्थर कभी भूल कर भी याद नहीं करते।"

"पत्थर! मैं पत्थरों की बात नहीं कर रही हूँ प्रेम। उधर देखो उसे भी समझने का प्रयत्न करो—"

प्रेम ने देखा। वेदना स्वर्ण-कलश में चाँदनी भरकर महल की ओर लौटी थी। हलकी गुलाबी बालू में उसके नन्हें नन्हें पैरों के चिह्न बनते जाते थे।

"देखा प्रेम! जो एक बार भी इसे कुचलकर चलता है, यह बालू उसके चरण-चिह्नों को अपने हृदय में कितने स्नेह से अंकित कर लेती है कुमार!"

"ठीक है कुमारी। पर देखना, कल तक पवन के झकोरे और चाँदनी की लहरियाँ इसे समतल कर देंगी। यदि किसी पथिक की स्मृति के पद-चिह्न किसी बालू पर अंकित हो गये हैं, तो समय के झकोरे उसे समतल कर ही देंगे। इसमें शोक क्यों करती हो कुमारी!"

"मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ?" कल्पना बोली—

पास के सरोवर के नील जल में कमल खिल रहे थे, तारों के। कुछ भौंरे पराग पान कर रहे थे। रानी ने एक कमल तोड़ा और प्रेम के पास फेंक दिया। भ्रमर उड़ा नहीं, पराग से चिपटा रहा।

"इसका क्या उत्तर है प्रेम!"

"इसका उत्तर! तुम सम्भवतः पूछ रही हो कि कमल के टूटने पर भी भ्रमर उड़ा नहीं। पर रानी, ये तुम्हारे तारों के कमल अमर हैं। यदि ये नश्वर होते और किसी नश्वर क्षण में इन पर छा जाता पीलापन, उड़ जाता इनका पराग, तो भ्रमर भी उड़ कर दूसरे कमल पर जा बैठता। कमल सूखते रहते हैं रानी, भ्रमर सदा आश्रय ढूँढ़ लेते हैं।"

कल्पना निरुत्तर हो गई। प्रेम हँस पड़ा—

"कितनी भोली हो तुम कुमारी! उत्तर देना भी न आया। कहो—'कल्पना का सौन्दर्य वास्तविकता से अधिक स्थायी होता है—कहो—"

"हाँ!" कल्पना को जैसे उत्तर मिल गया—"कल्पना का सौन्दर्य वास्तविकता से अधिक स्थायी होता है कुमार। प्रेम की लहरों के टकराने पर कल्पना के पत्थर टूट जाते हैं,—कल्पना की बालू पर प्रेम के पद-चिह्न अमर होते हैं, प्रेम के कमल सूखने पर कल्पना के भ्रमर उड़ नहीं जाते; वे उसी के साथ टूट जाते हैं। कुमार! कल्पना को प्रेम ने नया जीवन दिया है और कल्पना मृत्यु में भी प्रेम का साथ देगी—"

"मृत्यु? प्रेम ने न शासन में जीवित रहना सीखा है और प्राण देना। कल्पना की शाखाओं पर किरणों की रेशमी डोर में झूलने की अपेक्षा मैं उन्मुक्त आकाश की स्वतन्त्र छाया में, चाँदनी की लहरों के साथ मृत्यु-क्रीड़ा करना अधिक उचित समझता हूँ। इन लहरों को चीरकर सागर के उस पार पहुँचना कितना सुखद होगा। और यदि डूब भी गया, तो यह सन्तोष होगा कि कल्पना रानी के सागर ने ही मुझे आश्रय दिया है और तब उस पार का आनन्द मुझे मँझधार में ही मिल जायगा—किन्तु तुम यहीं रहो रानी। तुम्हारा सुख मेरे साहस की प्रेरणा होगी—"

"तुम मेरे आश्रित हो न! मैं तुम्हारे साथ चलूँगी, तुम्हारी रक्षा में सन्नद्ध होकर। चादनी की लहरें कल्पना रानी का शासन मानती हैं। अपने कोमल स्पर्श से सहारा देकर वे तुम्हें ले चलेंगी उस पार। आओ!"

दोनों सागर की ओर बढ़े—

सागर स्वागत के उल्लास में हिलोरें लेने लगा—कल्पना ने पैर बढ़ाये। सहसा प्रेम ने उसे पीछे खींच लिया और कहा—ठहरो!"........

* * *

नीचे पृथ्वी पर,

साँझ के गुलाबी बादलों में आँख-मिचौनी खेलते हुये विहगदल के रव को अनसुना करते हुये, पेड़ों की काँपती छाया में, चला जा रहा था एक पथिक अपने गेह को। रात घिर आई थी, बादल छा गये थे। एक घने वृक्ष के तले वह रुक गया आश्रय के हेतु।

हरे झुरमुटों के पार, नगर के एक उच्च गृह के वातायन से झाँक रही थी एक बालिका। अँधेरा बढ़ रहा था, बादल छा रहे थे।

पर, उस समय पृथ्वी पर न प्रेम था, न कल्पना।

बालिका के मन में, बन बन भटकनेवाले एक पथिक की याद तो आई पर उसके मन में कोई पीड़ा न कसकी—उस समय पृथ्वी पर प्रेम न था।

पथिक के मन में एक अनजान पीड़ा तो कसक गई, पर उसे कोई याद न आया। उस समय पृथ्वी पर कल्पना न थी।

दोनों मूक थे, दोनों के अभाव घुटते रहे।

* * *

प्रेम ने कल्पना को पीछे खींच लिया। "ठहरो कल्पना! उधर पृथ्वी की ओर तो देखो—" कल्पना ने देखा और दोनों के मन की बेबसी को समझकर काँप गई।

"इतनी लाचारी!" प्रेम बोला "हम दोनों के अभाव से अभागा मानव न समझ पाता है अपने मन की हलचल को, और न व्यक्त कर पाता है उसे शब्दों में। कल्पना! क्या प्रकाश की दो लघु बूँदों के समान चाँदनी के इस अनन्त सागर में हम सदा के लिये घुल जायँ? क्या प्रेम इतना दुर्बल है? क्या कल्पना इतनी शक्तिहीन है? नहीं रानी, आओ! हम तुम दो लघु बूँदे हैं, पर मानव-हृदय का आधार हमें सागर से भी अधिक विस्तार दे देगा—कल्पना, आओ।"

स्वर्ग के देवताओं ने देखा—

ज्योति के दो पैने तीरों की भाँति कल्पना और प्रेम चले पृथ्वी की ओर—नारी के हृदय में समा गया प्रेम और पुरुष के हृदय में समा गई कल्पना। "कल्पना से विलग रहनेवाली वेदना के ताप को तुम न सह पाओगे देवताओ!" और वेदना भी समा गई मनुष्य के हृदय में।

"जहाँ कल्पना है, जहाँ प्रेम है, कोमलता और सरसता भी वहीं रहेगी, स्वर्ग के पत्थरो!" और स्वर्ग के अमर सुनहले बादल रिमझिम कर बरस पड़े पृथ्वी पर।

वातायन से झाँकती हुई बालिका ने देखा, आकाश से झरती हुई बड़ी बड़ी बूँदें। उसका परदेशी पथिक जाने किस उजाड़ पथ पर भीग रहा होगा। क्या जाने पथिक को भी कभी उसकी याद आती है या नहीं। उसके नयनों से प्रेम उमड़कर बादलों से होड़ लेने लगा। टप टप आँसू चू पड़े।

पथिक तरु के नीचे बैठा, अन्धकार में। तरु शिथर पल्लव भीग चुके थे। कुछ बड़ी बड़ी बूँदे पल्लव के झीने पटों को एक एक कर खोलती हुई चू पड़ीं! पथिक की कल्पना के पल्लवों के कोमल आश्रय से जैसे यह बूँदें चू पड़ती हैं—लाचार, वैसे ही उसके नगर में, किसी बालिका की पलकों से चँचल आँसू चू पड़ते होंगे और खो जाते होंगे प्यासी धरती में!

दोनों के हृदयों में वेदना कसक उठी।

और—प्रथम बार संसार में फूट पड़ी भाषा। पथिक ने बादलों के संगीत के साथ साथ गाना प्रारम्भ किया एक विरह गीत। प्रेम की वह पहली कविता जब अम्बर-पटों को चीर कर पहुँची स्वर्ग में तो, कहा जाता है कि देवता भी लालायित हो उठे थे पृथ्वी पर आने को—

किन्तु स्वर्ग, स्वर्ग है—और पृथ्वी, पृथ्वी!!

लैण्ड ट्रस्ट आफ इण्डिया
के
फिक्स्ड डिपाजिट में
अपनी
धन वृद्धि करें
रेट इस प्रकार के हैं,

३ मास के लिये	३½%
६ मास के लिये	४%
९ मास के लिये	४⅓%
१ तथा २ वर्ष	५½%
३ ,, ४ ,,	५¾%
५ ,, ६ ,,	६%
७ ,,	६⅓%
८ ,,	६½%
९ ,,	६¾%
१० ,,	७%

हमारी जमानत?
* हमने उच्चकोटि की जमीनें लाखों रुपये के मूल्य की कलकत्ता, बनारस तथा आसपास के स्थानों में खरीदी हैं।
* भारतवर्ष के प्रत्येक व्यवसायी नगर में जमीन खरीदने की हमारी स्कीम धीरे धीरे कार्यरूप में परिणत हो रही है।
* कम्पनी के आरम्भकाल से ही हम बराबर डिविडेण्ड देते चले आ रहे हैं।
ब्योरे के लिए मैनेजिंग डाइरेक्टर
लैण्ड ट्रस्ट आफ इण्डिया
लिमिटेड
Phones: Cal. 1464 & 1465.
Gram:— Aryoplan
शेयर डीलर्स हाउस
१२, चौरंगी स्क्वायर, कलकत्ता
से पत्र व्यवहार करें।

कोशलगढ़ का कैदी

दिलचस्प जासूसी उपन्यास

[पिछली कहानी—बंगाल में राय-परिवार बड़ा प्रसिद्ध था। इस परिवार में शिवशङ्कर राय तथा गौरीशङ्कर राय दोनों भाइयों ने अच्छी ख्याति पाई थी। एकाएक एक दिन कोशलगढ़ के सरदार धनंजय खत्री, लापता राजकुमार शङ्करसिंह की खोज में उधर आ निकले। गौरीशङ्कर बाबू का चेहरा राजकुमार शङ्करसिंह से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। जब धनंजय खत्री को राजकुमार का पता न चला तब उन्होंने गौरीशङ्कर बाबू को इस बात के लिये राजी किया कि वह अपने को शङ्करसिंह बतायें। धनंजय खत्री गौरीशङ्कर बाबू को घोड़े पर लेकर गुप्त रूप से कोशलगढ़ पहुँच गये। राज्य में प्रसिद्धि हो गई कि लापता राजकुमार शङ्करसिंह वापस आ गये। राजकुमार शंकर सिंह के भाई उदितसिंह ने, जो पास ही झड़वा राज्य में रहता था, शंकरसिंह को कैद करवाया था। वह कोशलगढ़ के वर्तमान मन्त्रियों का विरोधी था। राजमहल में गौरीशङ्कर बाबू ने नकली लापता राजकुमार का अभिनय प्रारम्भ किया और समय पर उनका राजतिलक भी हो गया। गौरीशङ्कर बाबू एक दिन नौका-विहार के लिये गये और एक दुर्घटना से बचकर वह फिर कोशलगढ़ पहुँच गये। वहाँ आपस में मंत्रणा हुई। रनिवास में भी काफ़ी चहल-पहल हुई। महारानी-कस्तूरीबाई और उनकी सहेली चम्पा में भी राजा के सम्बन्ध में बड़ी आकर्षक वार्ता हुई। एक दिन गौरीबाबू वेष बदलकर नगर घूमने निकले और वहाँ उन्हें एक भेद का पता चल गया। गौरी बाबू को यह ज्ञात हो गया कि उदितसिंह ने शंकरसिंह को कैद कर रखा है। वह उनके छुड़ाने का उपाय करने लगे। किन्तु मयूरवाहन अपनी ही घात में था। मिलने पर उसकी वार्ता हुई, पर·········।

अठारहवाँ परिच्छेद

गौरी बाबू ने खेमे में लौटते समय मयूरवाहन की बात सरदार धनञ्जय से कही। सुनते ही उन्होंने कहा—किसी नई शैतानी की साजिश मालूम होती है।

"वह तो है ही, लेकिन अब हम लोगों का कर्त्तव्य क्या है?"

बहुत देर तक सोच-विचार करने के बाद निश्चित हुआ कि, मयूरवाहन के साथ भेंट करना ही उचित होगा। यद्यपि उसका उद्देश्य अभी स्पष्ट जाना नहीं गया, फिर भी ऐसा अनुमान होता है कि, उदितसिंह के साथ उसने विश्वासघात करने की ठानी है। इससे शंकरसिंह के उद्धार का रास्ता सुगम हो सकता है। गौरी बाबू को मयूरवाहन से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने की इच्छा न रहने पर भी अपने मुख्य ध्येय को याद करके उन्होंने अपनी व्यक्तिगत घृणा और द्वेष को दबा लिया।

कर्त्तव्य निश्चय करके धनञ्जय बाबू दूसरे प्रकार के इन्तजाम में लग गये। दो गुप्तचरों को उन्होंने किले के पुल के पास छिपा रखा—जिससे मयूरवाहन अकेला आता है या नहीं, इसकी खबर लग जाय। ऐसा भी हो सकता है कि गौरी बाबू को गायब करके किले में ले जाने का उदितसिंह ने कोई नया षड्यन्त्र रचा हो। उदितसिंह और मयूरवाहन के लिए असाध्य कुछ भी नहीं है।

ग्यारह बजे रात्रि में गुप्तचर ने आकर खबर दी कि, मयूरवाहन अकेला ही आ रहा है। उसी समय गौरी बाबू, सर्दार धनञ्जय तथा रुद्ररूप खेमे से बाहर निकले। रात अँधेरी थी, तारों के समूह की रोशनी से लवलेश मात्र प्रकाश जान पड़ता था।

तीनों आदमी निश्चित स्थान पर पहुँच कर खड़े हो गये। पास ही किस्ता नदी कलरव करती हुई बह रही थी। किले की काली दीवार ने उस अंधकार में मानो आकाश के एक अंश को छिपा रखा था। किले के निचले भाग में केवल एक दीपक की रोशनी दिखलाई पड़ रही थी, शायद वही शंकरसिंह की कैदवाली कोठरी थी।

कुछ देर बाद पैर की आहट सुनाई पड़ी। तीन चार गज की दूरी पर आकर आवाज रुक गई। तत्पश्चात् एकाएक बिजली की टार्च जल उठी और उसकी रोशनी तीनों आदमियों के चेहरों पर पड़ी।

मयूरवाहन बोल उठा—यह क्या! मैं केवल राजा के साथ बातें करना चाहता हूँ।

गौरी बाबू और रुद्ररूप खड़े रहे और सर्दार धनञ्जय मयूरवाहन की ओर बढ़े। उनके दाहिने हाथ की पिस्तौल रोशनी से चमक उठी। वे बोले—ठीक है। लेकिन तुमको जो कहना है, उसे तीनों आदमियों के सामने ही कहना होगा।

अच्छा तो नमस्ते, मैं वापस जा रहा हूँ—कह कर मयूरवाहन घूमा।

सर्दार धनञ्जय ने अपना बाँया हाथ उसके कंधे पर रख कर कहा—इतनी आसानी से वापस नहीं जा सकते, मयूरवाहन!

मयूरवाहन ने भौंहें चढ़ाकर और धनञ्जय बाबू की पिस्तौल की ओर देखकर दाँत पीसते हुए कहा—क्या आप लोग मुझे रोक लेना चाहते हैं?

"फिलहाल तुम जो कुछ कहने आये हो, उसकी समाप्ति होने पर ही मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ।"

आप लोगों के सामने मैं कुछ भी न कहूँगा—कह कर मयूरवाहन अपने हाथ सीने पर बाँधे हुए खड़ा रहा।

"तब तुमको रुकना होगा।"

"अच्छा! किन्तु मुझे रोक कर आप लोगों को क्या लाभ होगा?"

"लाभ कुछ नहीं है, यह धनञ्जय बाबू भी समझ रहे थे। थोड़ा सोच कर वे बोले—तुम राजा के साथ इस मैदान में अकेले बात करना चाहते हो। तुम्हारा कोई बुरा उद्देश्य नहीं है, यह हम लोगों को कैसे मालूम होगा?"

मयूरवाहन ने हँस कर उत्तर दिया—मेरा बुरा उद्देश्य क्या हो सकता है? राजा क्या लड्डू हैं कि मैं टप से मुँह में रख कर हड़प जाऊँगा?

"तुम्हारे पास अस्त्र रह सकता है।"

"तलाशी लेकर देखिये, मेरे पास कोई अस्त्र नहीं है।"

सर्दार धनञ्जय बात पर विश्वास करनेवाले मनुष्य नहीं थे। उन्होंने रुद्ररूप को बुलाया। रुद्ररूप ने आकर मयूरवाहन के कपड़े आदि की तलाशी ली, पर कोई घातक वस्तु नहीं मिली।

मयूरवाहन ने ताना देकर कहा—कहिये, अब तो डर नहीं है न?

सरदार धनञ्जय ने फिर कहा—हम लोगों के सामने न कहोगे?

"नहीं"—मयूरवाहन ने दृढ़ता से सिर हिलाया।

सरदार धनञ्जय ने कहा—ठीक है, लेकिन हम लोग पास ही रहेंगे, याद रखो। यदि किसी तरह की शैतानी करने का प्रयत्न करोगे, तो...कह कर सरदार धनञ्जय ने मुट्ठी खोल कर अपनी पिस्तौल दिखलाई।

मयूरवाहन ठठाकर हँसा और बोला—सरदार जी, आपका मन संदिग्ध है। जवानी में शायद आप क्षण भर के लिए भी अपनी क्षत्राणी को आँख की ओट नहीं होने देते थे। क्षत्राणी भी अवश्य ही आपकी आँख में धूल झोंककर—हा, हा, हा...

हँसता हुआ मयूरवाहन गौरी बाबू की ओर बढ़ा।

* * *

टार्च बुझाकर मयूरवाहन कुछ देर तक गौरी बाबू के साथ धीरे-धीरे टहलता रहा। रुद्ररूप और धनञ्जय बाबू उनसे लगभग बीस हाथ पीछे रहे।

एकाएक निस्तब्धता को भंगकर मयूरवाहन बोला—आपका परिचय हम लोग भलीभाँति जानते हैं।

गौरी बाबू ने रुखाई से कहा—यही कहने के लिए इतनी रात को आये हो, क्या?

मयूरवाहन ने उत्तर न दिया। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद मानो उसने अपने ही में कहना आरम्भ किया—आपके भाग्य को देखकर ईर्ष्या होती है। कहाँ आप थे बंगाल के एक साधारण जमींदार के छोटे भाई, कहाँ हो गये एक स्वाधीन देश के राजा। केवल यही नहीं, साथ ही एक अपूर्व सुन्दरी राजकन्या का प्रेम भी मिला। इसी को कहते हैं कि भगवान् जिसको देना चाहते हैं उसे छप्पर फाड़कर देते हैं। लेकिन पृथ्वी पर सभी अनिश्चित है। असावधान होने पर सिंहासन का सच्चा अधिकारी भी दर दर का भिखारी बन जाता है। सुख, सौभाग्य की यत्नपूर्वक सुरक्षा न करने से यह चिरस्थायी नहीं हो सकता। मुझे यही सोच है कि आप अपने अचानक पाये हुए सौभाग्य को स्थायी रखने के लिए कोई प्रयत्न कर रहे हैं कि नहीं? अथवा आपने क्या यही ठान लिया है कि कुछ कपटी लोगों के हाथ के खिलौने बनकर उनका काम बना दूँ और फिर दुम दबाकर अपने देश को भाग जाऊँ?

मयूरवाहन की व्यंग्यात्मक बातें सुनते-सुनते गौरी बाबू के हृदय में क्रोध की ज्वाला भड़क उठी, किन्तु उन्होंने अपने को सम्हाल लिया और धैर्य को न छोड़ा। उन्होंने मन ही मन विचार किया कि मयूरवाहन कोई प्रस्ताव करना चाहता है और जब तक उसे सुन न लिया जाय तब तक किसी तरह का झगड़ा करना मूर्खता होगी। वे दाँत पीसते हुए बोले—यदि कोई काम की बात हो तो कहो। तुम्हारी बेअदबी सुनने के लिए मुझे समय नहीं है।

मयूरवाहन ने दृढ़तापूर्वक कहा—काम की बात ही कहता हूँ। अब तक मैंने जो कुछ कहा वह भूमिका-मात्र थी।

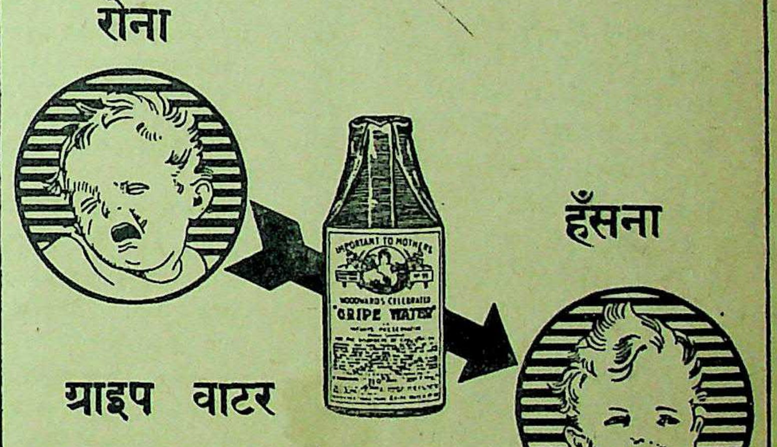

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER
— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—117

W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND.

उसने टार्च जलाकर सामने के रास्ते का कुछ अंश देख लिया और फिर बुझाकर बोला—अब उदितसिंह की और मेरी नहीं बनती। मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ।

मयूरवाहन का प्रस्ताव विस्मित होने लायक नहीं था, परन्तु उसके कहने का ढंग इतना विचित्र और बेढंगा था कि गौरी बाबू चौंक उठे।

मयूरवाहन ने कहा—असली बात को घुमा-फिराकर न कहकर मैं साफ साफ कहना ही अच्छा समझता हूँ। उदितसिंह में अब रस नहीं है, केवल सीठी रह गई है। उस सीठी को चूसने से अब मेरा काम नहीं चलता।

गौरी बाबू धीरे-धीरे बोले—अर्थात् उदितसिंह के साथ विश्वासघात करना चाहते हो?

मयूरवाहन ने हँसते हुए कहा—सचमुच बात तो यही है। आप शायद इस बात का उल्लेख कर मुझे लज्जित करना चाहते हैं, लेकिन अपने किये किसी काम के लिए लज्जित होने की हालत मेरी बहुत दिन पहले ही बीत चुकी है।

गौरी बाबू ने रुखाई से कहा—यही तो देख रहा हूँ। केवल चेहरा छोड़कर तुममें मनुष्य का और कोई लक्षण ही नहीं है। जो भी हो, तुम्हारी चालचलन के सम्बन्ध में मुझे कोई कौतूहल नहीं है। तुम करना क्या चाहते हो?

मयूरवाहन कुछ देर तक न बोला। अँधेरे में उसका मुँह भी दिखलाई न पड़ता था। इसके बाद उसने नम्रता से कहा—पहले ही मैंने कहा कि, मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ। लेकिन यह बात जरूर है कि मेरा उद्देश्य निःस्वार्थ भाव से परोपकार करना ही नहीं है, यह शायद आप समझ ही गये होंगे। मेरा भी यथेष्ट स्वार्थ है। मान लीजिये कि यदि मैं आपकी सहायता करूँ तो क्या बदले में आप मेरी तनिक भी मदद न करेंगे?

"तुम मुझे किस तरह की सहायता देना चाहते हो, पहले यह जानना आवश्यक है।

"यह आप अभी तक नहीं समझे?"

"नहीं।"

"अच्छा, तो मैं स्पष्ट कर देता हूँ। मेरी इच्छा है कि आपको कोशलगढ़ की राजगद्दी पर स्थायी रूप से बैठाऊँ। इसका अनुमान करना आपके लिए कठिन नहीं है।"

"क्या उपाय है?"

"मान लीजिये, यदि असल राजा की अचानक मृत्यु हो जाय। वे जिस अवस्था में हैं वह मरे ही के समान है फिर भी जब तक वे जीते हैं तब तक आप निश्चिन्त नहीं रह सकते। यदि मैं आपकी सहायता करूँ तो आपका रास्ता बिल्कुल साफ़ हो जायगा। आप असल शंकरसिंह नहीं हैं, इस बात का हज़ार कोशिश करने पर भी किसी को प्रमाण न मिलेगा! सिंहासन पर आपका हक़ पक्का हो जायगा। आप समझ गये न?"

गौरी बाबू समझ गये और पहले भी समझते थे। प्रलोभन कम नहीं था। केवल कोशलगढ़ का सिंहासन ही नहीं, साथ में और भी बहुत कुछ। तिस पर भी गौरी बाबू का मन लोभ के बदले घृणा से भर गया। स्वार्थ ही स्वार्थ में प्राणपण से ऐसी खींचातानी! नीचता, षड्यंत्र और नरहत्या का ऐसा बवंडर! उसके आवर्त में पड़कर संसार की सबसे बड़ी लोभ की वस्तु पर भी उनकी अरुचि हो गई। उन्होंने अपने शरीर को एक बार ऐसा झटका दिया मानो अपवित्रता के स्पर्श को छुड़ाने का प्रयत्न किया। इसके बाद वे पहले ही की तरह अवज्ञा के स्वर में बोले—तो अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए राजा की हत्या करने में भी तुम्हें आपत्ति नहीं है, किन्तु तुम्हारा स्वार्थ क्या है, यह तो सुनूँ?

मयूरवाहन ने कहा—यदि मेरा स्वार्थ उतना गुरुतर न होता तो मैं इतना बड़ा सांघातिक काम करने की कल्पना भी न कर सकता। परन्तु ग़रज़ बुरी बला है। मेरी अवस्था कैसी है, यह सुन कर आप समझ जायँगे कि मुझ में छल-कपट का लेशमात्र भी नहीं है। मेरी बातें सच्ची और हृदय से निकल रही हैं। थोड़ी देर ठहर कर मयूरवाहन ने सहज स्वर से कहना आरम्भ किया, मानो वह किसी दूसरे की बात कह रहा हो—मैं एक अच्छे घराने का लड़का हूँ, यह शायद आप जानते हैं। मेरे पास धन-सम्पत्ति पर्याप्त थी, लेकिन मैंने सब उड़ा दिया। गत दो वर्षों से मैं उदितसिंह के ही सिर पर मौज उड़ा रहा था, पर उससे भी अब नहीं चलता। उदितसिंह में भी अब रस नहीं है। इतना ही नहीं, गर्दन नापने की भी बारी आ गई है। आपसे छिपाने में मुझे कोई लाभ नहीं, अब मैं अपनी गर्दन बचाना चाहता हूँ। मैं समझ रहा हूँ कि अन्त में उदितसिंह की साज़िश खुल जायगी परन्तु मैं उसके साथ डूबना नहीं चाहता। उन्हें कोशलगढ़ की गद्दी पर बैठा कर, राजा तो मैं ही होता, लेकिन उस आशा पर पानी फिर गया है। आपने आकर सब उलट-पुलट कर दियां।

अब मेरा प्रस्ताव सुनिये। इसमें हम दोनों का लाभ है। अर्थात् आप कोशलगढ़ के असली राजा होंगे और मैं भी अपने प्राण बचा कर स्वतंत्रता से जीवन के शेष दिन बिताऊँगा।

गौरी बाबू ने कहा—तुम्हारा प्रस्ताव शायद यही है कि, राजा होने की लालच में मैं तुम्हारे जैसे हत्यारे की प्राण-रक्षा की प्रतिज्ञा कर दूँ—क्यों, यही है न?

प्रतिज्ञा! मयूरवाहन ने हँसते हुए धीमे स्वर से कहा,—देखिये, उस पर मेरा भरोसा बहुत कम है। समय आने पर प्रतिज्ञा भूल जाती है। आप भी शायद राजा हो जाने पर अपनी प्रतिज्ञा भूल जायँ। मेरा प्रस्ताव एक दूसरे तरह का है।

"अच्छा! तुम्हारा प्रस्ताव क्या है, सुन तो लूँ?"

—क्रमशः

हॉर्डिङ्ग ऐण्ड प्राफीटियरिङ्ग प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स, १९४३

के बारे में ख़ास ख़ास बातें

यह आर्डिनेन्स (क़ानून) उन वस्तुओं के संग्रह की रोक थाम और उनके बेचने वालों की मुनाफ़ाखोरी के विरुद्ध बनाया गया है जो किसी खास कंट्रोल के अन्दर नहीं आतीं। इस आर्डिनेन्स का नियन्त्रण कंट्रोलर जनरल, सिविल सप्लाइज़, बम्बई के हाथ में है, जिसे इस काम के लिए गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़ ऐण्ड सिविल सप्लाइज़ ने बहुत व्यापक अधिकार दे दिये हैं।

इस महत्त्वपूर्ण क़ानून की बातें समझ लीजिए, जिसका वास्तविक ध्येय आप खरीदारों के हितों की रक्षा करना है।

दुकानदार

१-किसी चीज़ की तैयारी की लागत या बन्दरगाह पर उतरने तक की कुल लागत पर सिर्फ़ उतना दाम बढ़ा सकता है जितना कि लड़ाई के पहिले आम तौर पर तिजारती क़ायदा था। लेकिन उस हालत में जहाँ ऊपर बताई गई कुल लागत पर २० फ़ी सदी से ज़्यादा दाम बढ़ाये जायँ, कंट्रोलर जनरल, सिविल सप्लाइज़ की मंज़ूरी पहिले से ले लेना जरूरी है।

२-दस रुपये से ज़्यादा के सौदे पर दामों की रसीद (कैश मेमो) अवश्य देगा।

३-सौदा बेचने के लिए यह शर्त नहीं लगा सकता कि कुछ और चीज़ें भी साथ ख़रीदी जायँ।

४-एक विशेष मात्रा से ज़्यादा माल नहीं रख सकता।

५-आम तौर पर सौदा बेचने से इनकार नहीं कर सकता।

ख़रीदार पर भी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं

वह धारा ७ में दी हुई वस्तुओं की केवल इतनी मात्रा रख सकता है जितनी कि उसको और उसके घर वालों को तीन महीने के लिए आवश्यक हो। इससे ज़्यादा रखना जुर्म है, जिस पर सज़ा हो सकती है।

इन बातों को अच्छी तरह समझ लीजिए। जो कुछ ख़रीदिए, उस पर बेजा दाम मत दीजिए। नई चीज़ों पर कंट्रोल लगने की खबर रखिए। सरकार बराबर दूसरी चीज़ों की पड़ताल कर रही है।

अगर किसी ख़रीदार को लूटा जाय या उसे सन्देह हो कि इस क़ानून को भंग किया गया है तो वह स्थानीय अधिकारियों को या चाहे तो नीचे लिखे हुए डिपार्टमेण्ट को इसकी सूचना दे सकता है।

इस क़ानून के अनुसार अपराधियों को सरसरी मुक़द्दमे के बाद सज़ा दी जा सकती है और जुर्माना या पाँच साल तक की क़ैद हो सकती है और माल जब्त किया जा सकता है या तीनों सज़ायें साथ दी जा सकती हैं।

नोट-कुछ हालतों में सबूत का बार मुलज़िम पर होता है। उसे अपने आपको निर्दोष साबित करना पड़ता है। वादी को उसका अपराध साबित करने की जरूरत नहीं होती।

६: दुकानदारों का चालान

देहरादून, ८ अक्टूबर। होर्डिङ्ग ऐण्ड प्राफीटियरिङ्ग प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स के नियम भंग करने के अभियोग में देहरादून की ६: बड़ी बड़ी फर्मों के मालिकों का चालान सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में किया गया है। इनके अलावा दस और दुकानदारों को ३५ रुपये से लेकर १००० रुपये तक जुर्माने की सज़ायें दी गई हैं।

माल संग्रह करने और मुनाफ़ाख़ोरी पर दिन प्रति दिन अधिक से अधिक लोगों को सज़ायें मिल रही हैं। सरकारी इन्सपेक्टर और अधिक क्षेत्रों में फैल रहे हैं।

बात समझ लीजिए-अपने अधिकार मांगिए

हॉर्डिङ्ग ऐण्ड प्राफीटियरिङ्ग

एच्.पी.पी.ओ.

प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स

डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़
ऐण्ड सिविल सप्लाइज़,
नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

ARR—1324 Hindi

मातृमण्डल

प्रेम और कर्त्तव्यनिष्ठा से पति को अपना बनाइये

भारतीय पत्नी पति की दासी नहीं बल्कि स्वामिनी है

लेखक, श्रीयुत उमाशंकरसिंह

'देशदूत' के ४ फरवरी के अंक में श्रीमती राजकुमारी अग्रवाल का एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसका शीर्षक है क्या पढ़ी-लिखी महिलाएँ विवाह करें!

अगर यही सवाल आप युवकों से करें तो मैं कहूँगा कि आज की पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह करने को कोई तैयार नहीं, क्योंकि आज की शिक्षा के कारण जो असंतोष लड़कियों को परेशान किये है वही लड़कों को भी तो तंग कर रहा है। आज का पढ़ा-लिखा युवक भी यही सवाल कर रहा है कि "विवाह करना क्या जरूरी है?" जिस प्रकार आज की लड़की चाहती है कि मैं किसी पुरुष की दासता में न पड़ूँ वैसे ही आज का युवक भी चाहता है कि विवाह करके मैं किसी की जिम्मेदारी न वहन करूँ। बल्कि पढ़े लिखे लड़के के सामने तो आज विवाह की समस्या और उलझी हुई सी नजर आ रही है, क्योंकि अगर वह किसी अपढ़ देहाती लड़की से विवाह करता है तो वह उसे अपने उपयुक्त नहीं पाता और अगर पढ़ी-लिखी लड़की से विवाह करने की सोचता है तो उसे अपना दाम्पत्य जीवन अंधकारमय दिखाई देता है।

भारत में नारी-आन्दोलन को आगे बढ़ाने तथा नेतृत्व करनेवाली सुप्रसिद्ध लेखिका श्रीमती रामेश्वरी नेहरू।

आज की पढ़ी-लिखी लड़की साड़ी के आँचल को सर से खिसकाकर, एक हाथ में बटुआ और दूसरे में कुकर-मुत्ता सी छोटी छतरी लिये, होठों को लाल स्याही से रँग कर, चेहरे को पाउडर से सफेद कर, ऊँची एँड़ी के जूते से समाज की छाती पर ठोकर लगाती हुई चलती है। यदि यह पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ विवाह कर लेंगी तो पुरुष कहेगा—"देखो आँचल सर से खिसक गया है ठीक कर लो। होठों को रँगती क्यों हो, अपनी तन्दुरुस्ती ठीक करो होंठ आप ही लाल हो जायँगे।" इसी रोक-थाम के कारण आज को पढ़ी-लिखी लड़की के दिमाग में यह बात आती है कि "ये मुझे क्यों ऐसा कहते हैं? क्या मैं इनकी दासी हूँ, ग़ुलाम हूँ?"

"स्त्री पुरुष की चालाकी समझ न सकी और आज तक पुरुष की दासी बनी हुई है।" पुरुष और स्त्री से चालाकी करे! मैं कहता हूँ कि कौन पुरुष ऐसा है जो कह सके कि उसकी पत्नी अपने को बेवकूफ समझती है। रही दासी बनने की बात, सो मैं कहता हूँ कि नारी न पुरुष की दासी कभी थी और न आज है। इन थोड़ी सी आज की पढ़ी-लिखी देवियों को ही स्त्री-समाज न मानिये—ये हैं ही कितनी! आप उन देहातों में जाकर देखें जहाँ भारत बसता है। हर घर में लगभग पचहत्तर फी सैकड़े आप देखेंगी कि स्त्रियाँ दासी नहीं, घर की स्वामिनी बनी बैठी हैं। एक चमार के घर में चमारिन के हाथ में घर का सब कुछ, अहीर के घर में लेखा-जोखा अहिरिन रखती है। बनिया के घर में कुंजी बीबी की कमर में झूल रही है, बाबू साहब बिना पत्नी की आज्ञा के एक कदम नहीं आगे बढ़ सकते। स्त्रियों ने अपने प्रेम से, अपनी कर्त्तव्य-निष्ठा से पुरुष को अपना दास बना लिया है। लेकिन कहती यही हैं कि मैं तो 'उनकी' 'दासी' हूँ। और अपने को दासी कहनेवाली ही सच पूछिये तो पुरुष की स्वामिनी हैं।

तो ऐसा क्यों हो रहा है कि जो काम देहात की अपढ़ लड़की कर लेती है उसे आज की पढ़ी-लिखी लड़की नहीं कर पा रही है। पुरुष को ग़ुलाम बनाने के बजाय ये पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ स्वयं क्यों दासी बनी जा रही हैं? गाँव की लड़की जब ससुराल में आती है तब पति के प्रति 'माँ का स्नेह' भी लेकर आती है। वह माँ की तरह पति की सेवा करती है और इसी से दासी के कर्म से आरम्भ कर वह स्वामिनी के पद पर पहुँच जाती है। उसका सेवाभाव और प्रेम पुरुष के हृदय में ऐसी जगह आसन जमाता है कि पुरुष पद पद पर उसकी आवश्यकता का अनुभव करता है और उसे स्वामिनी के रूप में स्वीकार करना पड़ता है। विपरीत इसके आज की पढ़ी-लिखी लड़की पति के घर में उसकी स्वामिनी ही बनकर पदार्पण करती है और प्रेम से नहीं बल्कि रोब से, अहंकार से, टीमटाम से पति पर हावी होना चाहती है तो आज का पढ़ा-लिखा पुरुष सहन नहीं कर पाता और परिणाम यह होता है कि उनका दाम्पत्य जीवन असफल हो जाता है।

प्रत्येक प्राणी को स्वावलम्बी होना चाहिए, साथ ही नारी को भी। लेकिन स्त्री "स्वतन्त्र जीवन-निर्वाह करने के उपयुक्त बने"—"पुरुषों का दिमाग ठिकाने करने के लिए"—इस भावना को लेकर नहीं। पुरुषों का दिमाग ठिकाने करनेवाली देवियाँ खुद ही बेठिकाने होते नजर आ रही हैं। अतः 'पिता का दण्ड' लेकर नहीं बल्कि 'माता का स्नेह' लेकर आप पुरुष के सामने आइये वह आप ही आपके चरण चूमेगा। सदा से पुरुष को भारतीय 'नारी' ने इसी भावना से अपनाया है।

क्या आप साहसी हैं?
1531

आप अवश्य हैं! अगर आप न होते, तो बड़े आश्चर्य की बात होती, क्योंकि नवयुवकों को साहसी होना ही चाहिए। किन्तु आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि जिस भारतीय नवयुवक में साहस और जोश होता है, वह आखिर करता क्या है? इसका उत्तर सरल है—वह हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में भरती हो जाता है। इस अच्छी नौकरी में नवयुवकों को अपने साहस एवम् उत्साह के प्रदर्शन का बहुत अच्छा अवसर मिलता है। इसके साथ ही साथ इसमें रहकर वह अपना चरित्र-निर्माण भी कर सकता है। भविष्य में सफलता प्राप्त करने के लिए सरदारी करने की योग्यता, नियम-पालन और कार्य प्रारम्भ करने की क्षमता आवश्यक होती है। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में काम करके अपने आपको युद्धोत्तर कालीन भारत के लिए तैयार कर लीजिए।

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुतसे जवानोंमें ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।

* सरकार ने इस बात की गारंटी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग खाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।

* ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरी से आये हुए जवान सरकारी खर्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।

* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा संबंधी विशेष रियायतें मिलेंगी जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके संबंध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर अपने निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट्स) रिक्रूटिंग आफ़ीसर के पास भेज दीजिए जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में पाइलाट (विमान चालक) की नौकरी के संबंध में पूरा विवरण और प्रार्थना पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम ____________

पता ____________

____

____

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े

को ऐसे जवानों की ज़रूरत है जिनकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सुनने की ताकत ठीक हो और उम्र १७½ और २८ साल के बीच हो; विमान चलाने के परिश्रम को सहन कर सकते हों और अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी अंग्रेज़ी बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए।

आई० ए० यफ०, जी० डी० (पाइलेट्स)
रिक्रूटिंग आफिसर, ५ वे रोड, लखनऊ।

संवाददाताओं के पत्र

कलकत्ता बंगाल सरकार के ग्रामोत्थान-विभाग में ग्राम्य-समितियों के जनोपयोगी कार्य विशेष उल्लेखनीय हैं। ग्राम्य-समितियो की संख्या इस समय २१,६४८ है। साल के अन्त में इनकी बचत कोष में ८४,३२०१ रुपये थे। गाँवों में इन समितियों की संख्या ३०६६ है। सहयोग से इस वर्ष समितियों-द्वारा ३,६३२ मील रास्तों की मरम्मत की गई, ५८७ मील सिंचाई की नहरें खोदी गईं, ५०६६ पुलों एवं अन्तरपथों का निर्माण हुआ। ३३,६४३ जलाशयों की सफाई की गई, ७०,०३६ एकड़ भूमि से जङ्गलात वृक्षों को काटकर भूमि का सुधार किया गया तथा अनेक कृषि फार्म एवं साग-सब्जी की वाटिकाएँ स्थापित की गईं। चिकित्सा के साधनों की व्यवस्था एवं शिक्षा-प्रगति की ओर भी समितियों का विशेष ध्यान रहा है।

समितियों की 'धर्मगोला' योजना विशेष सफल रही। इस वर्ष ३७,११८ स्थापित धर्मगोलों में ५,७८,२५८ मन धान की प्राप्ति हुई जिसका आर्थिक मूल्य इस समय ४४ लाख रुपये के करीब है। प्रत्येक परिवार स्वेच्छा से अपनी प्रतिमन उपज पर १ पाव धान धर्मगोले को भेज देता है। सवाई और ड्योढ़े पर बीज उधार देने का कार्य भी चलता रहा। —संवाददाता

⁂ ⁂ ⁂

कानपुर श्री प्रेम पुस्तकालय हारामऊ पो० पुखरायाँ का सातवाँ वार्षिकोत्सव श्री रामस्वरूप गुप्त एम० ए० के सभापतित्व में तारीख ३ मार्च सन् १९४५ ई० को समारोह से मनाया जायगा। कवि-सम्मेलन भी होगा। समस्यायें हैं, "पुस्तकालय" और "अधिकार"।

श्री सुरेन्द्रकुमारसिंह जी ने अपने स्वर्गीय चाचा श्री प्रसन्नीलाल जी की पुण्य-स्मृति में प्रतिवर्ष २५ रुपये का पुरस्कार सर्वोत्तम लेख पर देने का निश्चय किया है। इस वर्ष आप "ग्रामीण पुस्तकालयों का जनप्रिय स्वरूप" पर लिखे जानेवाले सर्वोत्तम लेख पर देंगे। अस्तु, लेखकों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपना स्वलिखित लेख १८ मार्च सन् १९४५ ई० तक मन्त्री श्री प्रेम पुस्तकालय, हीरामऊ पोस्ट पुखरायाँ, कानपुर के पते पर भेजने की कृपा करें। लेख २०० पंक्ति से अधिक नहीं होना चाहिए और लेख की ४ प्रतियाँ भेजना आवश्यक है। —संवाददाता

⁂ ⁂ ⁂

हरिद्वार—युक्तप्रान्तीय सनातनधर्म-प्रतिनिधि-सभा शाखा का साधारण अधिवेशन वैशाखी के शुभ अवसर पर १२ व १३ अप्रैल १९४५ को होना निश्चित हुआ है। जिसमें आगामी वर्षों के लिए युक्तप्रान्त में सनातनधर्म के प्रचार और संगठन को दृढ़ करने के लिए ठोस प्रोग्राम पर विचार किया जायेगा। प्रतिनिधि-सभा की अन्तरंग सभा व कार्यकारिणी का चुनाव होगा। अतः मेरठ, कुमायूँ, रूहेलखंड, आगरा और झाँसी आदि पाँचों कमिश्नरियों की समस्त सम्मिलित सनातन-धर्म-सभाओं, युवक-सभाओं, महावीरदलों, संकीर्तन-मण्डलों व अन्य सभी सनातनधर्मी संस्थाओं से सानुरोध प्रार्थना है कि वह अपने प्रतिनिधि इस अधिवेशन में भेजकर इसको सफल बनावें। प्रतिनिधियों के नाम और अधिवेशन में पेश होनेवाले प्रस्ताव शीघ्र से शीघ्र सभा के कार्यालय में पहुँच जाने चाहिये। —मन्त्री

⁂ ⁂ ⁂

देहरादून से लौटते हुए होलकर स्टेट इन्दौर के प्राइममिनिस्टर राजा ज्ञाननाथजी हरिद्वार पधारे। आपने श्री श्रवणनाथ ज्ञानमन्दिर और श्री श्रवणनाथ धर्मार्थ औषधालय का निरीक्षण किया और इन संस्थाओं की उपयोगिता और व्यवस्था को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता प्रकट की। आपने कहा कि इन सार्वजनिक संस्थाओं से एक महान् हित हो रहा है। इसके लिए महन्त शान्तानन्दनाथ को जितना धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है। —संवाददाता

उदयपुर महिला-मण्डल का चतुर्थ वार्षिकोत्सव तारीख २१, २२ और २३ फरवरी सन् १९४५ को होना निश्चय हुआ है। श्रीमती हंसा बहन मेहता ने प्रमुख समारोह की अध्यक्षा बनना स्वीकार कर लिया है। इसी अवसर पर "श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग-विद्यालय", छात्रालय और महिला-उद्योगशाला का भी उद्घाटन-समारोह होगा। —संवाददाता

⁂ ⁂ ⁂

टीकमगढ़ ओरछा-नरेश द्वारा स्थापित दो सहस्र रुपये का देव-पुरस्कार इस वर्ष खड़ीबोली की सर्वोत्तम रचना पर दिया जायगा। प्रतियोगिता के लिए दो वर्ष के भीतर, प्रकाशित पुस्तकों की ६ प्रतियाँ प्रधान मन्त्री, श्री वीरेन्द्र-केशव-साहित्य-परिषद्, टीकमगढ़ सी० आई० के पा मार्च ४५ के अन्त तक आ जाना चाहिए —प्रधान मन्

⁂ ⁂ ⁂

प्रयाग के सरयूपारीण ब्राह्मणों एक सभा स्थानीय श्रीसरयूपारीण ब्राह्मण संस्कृत-पाठशाला में पं० रामावतार शर्मा वैद्य के सभापतित्व में हुई जिसमें स्वर्गीय डाक्टर इन्द्रदेवप्रसाद चतुर्वेदी की मृत्यु पर शोक का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया इस सभा ने एक प्रस्ताव पास करके हिन्दू कोड का विरोध किया और इस कोड विरुद्ध व्यापक रूप से आन्दोलन करने लिए एक ज़िला हिन्दू कोड-विरोधी-सम्मेलन करने का निश्चय किया साथ ही उसके आयोजन के लिए एक समिति संगठित की —ठाकुरदत्त मि

यह मुझे तर रखता है !
यह मुझे ताजा रखता है !
यह प्रफुल्लित करता है !
VINOLIA WHITE ROSE SOAP

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फुर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 16-221 HI

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

TEN RUPEES
TEN RUPEES

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

की कहानी उसी की ज़बानी

"
- मैं आपकी बचत को बिल्कुल सुरक्षित रखता हूँ।
- मेरी क़ीमत बारह बरस में दस रुपये से बढ़ कर पन्द्रह रुपये हो जाती है।
- मेरे ब्याज पर इनकम टैक्स नहीं लगता।
- आप आसानी से मुझे सरकार द्वारा नियुक्त किसी एजेण्ट से या किसी सेविंग्स ब्यूरो या पोस्ट आफ़िस से खरीद सकते हैं।
- मेरे बड़े भाइयों को आप ५० रुपये, १०० रुपये, ५०० रुपये या हज़ार रुपये में खरीद सकते हैं और ये सब भी इसी हिसाब से बढ़ते हैं—अर्थात् बारह वर्ष में ५० प्रति शत वृद्धि।
- मैं दस रुपये क़ीमत चुकाने पर आपको मिल सकता हूँ या आप एक रुपये, आठ आने अथवा चार आने के सेविंग्स स्टाम्प खरीद कर मुझे क्रमशः प्राप्त कर सकते हैं।
- तीन साल बाद आप मुझे जब चाहें भुना सकते हैं। आपको आपकी पूँजी वापस मिल जायगी और उसके साथ ब्याज भी जो मैंने आपके लिए कमाया होगा—किन्तु

-आपका सब से अधिक लाभ इसी में है कि मुझे सुरक्षित रखें !"

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों या किसी सेविंग्स ब्यूरो या पोस्ट आफिस से प्राप्त कीजिए।

1235 Hindi

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

जर्मनी को परास्त करने में त्रिराष्ट्रों का निर्णय

बर्लिन की ओर रूसी फौजों का बढ़ाव—सुदूरपूर्व का युद्ध

(विशेष सैनिक सम्वाददाता-द्वारा)

मित्रराष्ट्रों के प्रमुख नेतात्रय चर्चिल, रूजवेल्ट और स्टालिन के मिलन के संबंध में समाचारपत्रों में बहुत दिनों से अनुमान लगाये जा रहे थे। गत सप्ताह कृष्ण सागर के क्षेत्र में वे तीनों अपने अपने राजनीतिक एवं सैनिक सलाहकारों के साथ पहुँच गये और सम्मेलन हुआ। जर्मनी के विरुद्ध निर्णायक प्रहार करने के विषय में उन्होंने अति शीघ्र एकमत होकर घोषणा प्रकाशित कर दी जिससे नाजियों की पूर्ण पराजय निश्चित हो गई है। अब यह निश्चित है कि जर्मनी पर निश्चित समय तथा निश्चित उपायों से पूर्व, पश्चिम तथा दक्षिण से हमले होंगे। मित्रराष्ट्रीय रणयोजनाओं के सफल होने के प्रत्यक्ष प्रमाण युरोपीय रणांगण में मिल रहे हैं, जहाँ पूर्व के विस्तृत क्षेत्र पर रूसी सेनाएँ अबाध गति से बढ़ रही हैं और उनकी नीति यही मालूम होती है कि नाजियों को साँस लेने तक का अवकाश न दिया जाय। पश्चिमी मोर्चे पर जनरल पैटन और फील्ड मार्शल मांटगुमरी की फौजों ने पुनः नये आक्रमण आरम्भ कर दिये हैं। दोनों दिशाओं से जर्मन-भूमि आक्रांत है और फिर मित्रों की वायुवाहिनी एवं लाल वैमानिक सेना-द्वारा निरंतर बम वर्षा नाजियों के सामरिक क्षेत्र और युद्ध-सामग्री उत्पादक केन्द्रों को भयंकर क्षति पहुँचा रही है। अतः अब जर्मनी के सम्मुख दो ही प्रश्न हैं या तो वह आत्म-समर्पण करे या निकट भविष्य में अपना सर्वस्व स्वाहा कर दे।

* * *

सोवियत सेनापतियों ने जर्मनी के समस्त पूर्वी क्षेत्र में अनेक संकट उपस्थित कर दिये हैं। उत्तर में मार्शल रोकोसोवस्की डैंज़िग और सिडीनिया के आस-पास ओडर के दक्षिणी किनारे से नाजियों को भगा रहे हैं। दक्षिण-पश्चिम में मार्शल जुकोव की सेनायें जैस्टो और क्रयूज के बीच से स्टारगार्ड की ओर बढ़ रही हैंऔर स्टेटिन के लिये संकट उपस्थित कर दिया है। इसके नीचे के क्षेत्र में मार्शल जुखोव के दल लैंडस्वर्ग, मैसेरिज़ और श्वेइब्स से बढ़कर क्यूएस्टिन तथा फ्रेंकफर्ट के बीच ओडर तट पर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर रहे हैं। इस स्थान से बर्लिन पर सीधा धावा बोलना उनके लिए संभव होगा। रूसी सेनाओं ने ओडर के किनारे ५० मील के मोर्चे पर पुल के क्षेत्र स्थापित कर लिए हैं। जर्मनी की ओडर पाँति भंग कर दी गई है। मार्शल कोनीव ब्रेसलाउ को घेरने की कोशिश कर रहे हैं, जिसके दक्षिण-पूर्व में ओडर नदी के उस पार ५० मील के क्षेत्र में एक मोर्चा स्थापित कर लिया गया है। बहुत सम्भव है कि रूसी सेनापति ब्रेसलाउ नगर के महत्त्व का ध्यान रखते हुए उसके बाजू से होकर आगे निकल जाने की चेष्टा करने के बजाय, उसकी रक्षा करनेवाली जर्मन फौजों को ध्वस्त करने की चेष्टा करें।

* * *

जर्मनी की सुदृढ़ सीगफ्रीड पंक्ति जिस पर मित्र सेनायें धावा कर रही हैं, कई स्थानों पर विच्छिन्न हो चुकी है। सीगफ्रीड पंक्ति के भीतर एक अत्यंत प्रबल गढ़ सिम्त पर दुबारा कब्जा कर लिया गया है। कनाडी सेना की इस क्षेत्र में सफल प्रगति हो रही है। वोसजेज पर्वतमाला में जर्मनों का संगठित प्रतिरोध समाप्त हो गया है। दक्षिणी अलसास के मैदान में राइन और राइन-रोन नहर के बीच गलियारे के भीतर मित्रसेनाओं का काफी बढ़ाव हुआ और वे न्यूविसेख तक पहुँच गईं। राइन-रोन नहर का पश्चिमी तट शत्रु से बिलकुल साफ कर दिया गया है। राइन-रोन तथा हुविनगे नहरों के संगम पर स्थित इले नेपोलियन के समीप नहर को पार किया गया। कोलमार क्षेत्र में बच रहनेवाली जर्मन फौजों का जर्मनी वापस लौटने का मार्ग रोक दिया गया है।

* * *

फिलिपाइन्स द्वीप-समूह के महत्त्व के विषय में टोकियो रेडियो पर कहा गया था कि 'जापान की विजयपूर्ण युद्ध-नीति की नींव फिलिपाइन्स में रखी गई है। उसका एक इञ्च स्थल भी नहीं छोड़ा जा सकता।' किन्तु जनरल मैकआर्थर ने फिलिपाइन्स को घेर कर उसके कई द्वीपों को ही मुक्त नहीं किया अपितु इस द्वीप-समूह की राजधानी मनीला पर भी अधिकार कर लिया। जनरल मैकआर्थर ने उसके पतन पर घोषित किया कि "मनीला के पतन पर प्रशान्त युद्ध का एक बड़ा दौर समाप्त हो गया और दूसरे में हम प्रवेश कर रहे हैं। एक महीने के भीतर मनीला जैसे महत्त्वपूर्ण नगर पर अधिकार बृहत् अमरीकी शक्ति का द्योतक है। लुजान के ४ सप्ताह के युद्ध में शत्रु की हताहत संख्या ४८,००० पहुँच गई जब कि मित्रों की केवल ७,०६७ ही रही। बटान प्रायद्वीप के अड्डे पर मित्रों का पूर्ण अधिकार हो गया। फिलिपाइन्स के कई नये छोटे टापुओं पर भी अमरीकी सेनायें उतरी हैं। दक्षिणी-पश्चिमी प्रशान्त में आस्ट्रेलियन कैटेलिनों ने माइन बिछाकर एक बड़े जापानी बेड़े को घेर लिया।"

* * *

बर्मा के युद्ध-क्षेत्र में लाशियो से १०५ मील के पत्थर पर स्थित मांग्यु से लेकर दक्षिण में ८० मील के पत्थर तक बर्मा रोड अब साफ है। मध्य बर्मा की लड़ाई ने इरावदी नदी की लड़ाई का रूप धारण कर लिया है। इस अन्तिम प्राकृतिक अवरोध की जापानी सेनायें रक्षा और मांडले का दृढ़तापूर्वक बचाव कर रही हैं। मांडले के पश्चिम में इरावदी नदी के उत्तरी तट पर दबाव पड़ रहा है। जापानियों के लिए पीछे की तरफ से घेर लिए जाने की सम्भावना उत्पन्न हो गई है। अराकान में शत्रु का प्रबल प्रतिरोध होने पर भी मित्र-सेनायें रेमनी नगर की ओर कुछ और भी बढ़ी हैं।

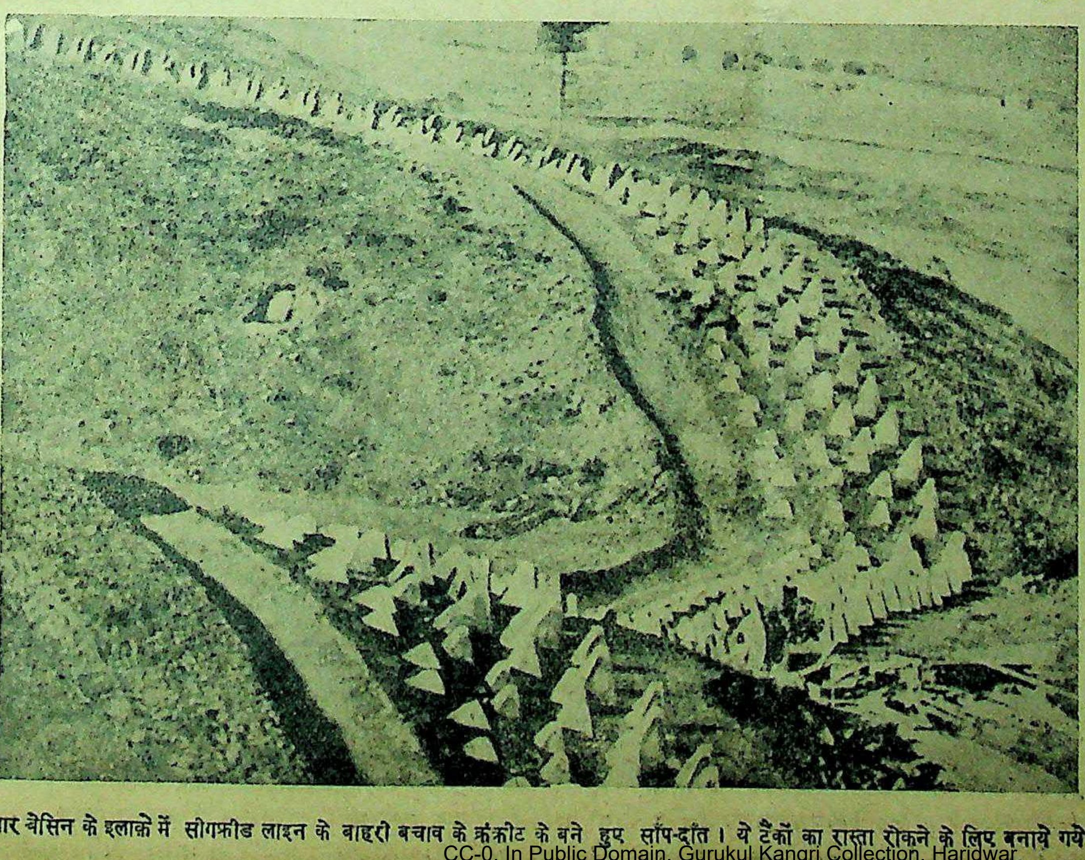

सार बेसिन के इलाके में सीगफ्रीड लाइन के बाहरी बचाव के कंक्रीट के बने हुए साँप-दाँत। ये टैंकों का रास्ता रोकने के लिए बनाये गये हैं।

एक महान व्यक्ति

संसार में व्यक्ति का महत्त्व उसके व्यवहार तथा आचरण पर निर्भर करता है। सद्व्यवहार तथा सदाचार करनेवाले व्यक्ति ढूँढ़ने पर मिल जाते हैं किन्तु दूसरों को सदाचारी तथा सद्व्यवहारशील बनाने वाले व्यक्ति संसार में बहुत ही कम मिलते हैं। वंग साहित्य सम्राट श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ऐसे ही व्यक्तियों में एक है। आपके उपन्यास पाठक को निश्चय ही सदाचारी तथा सद्व्यवहारी बनाते हैं। किन्तु तारीफ यह है कि आप अपने उपन्यासों में कहीं भी उपदेश नहीं दिया करते हैं। मनोरंजक तथा सरल भाषा में वास्तविक जीवन का चित्रण यही आपकी विशेषता है। उनके उपन्यासों के निम्नलिखित अनुवाद उनकी सभी विशेषताएँ लिये हुए हैं।

ब्राह्मण की बेटी	१।-)
बैकुंठ का बिल	॥≡)
छुटकारा	१।-)
लेन-देन	३।-)
मझली दीदी	१)
गृहदाह	३।-)
परिणीता	१।-)
श्रीकान्त (दो भाग)	४)
शुभदा	१॥)

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हमारी राजपूताने की चिट्ठी

क्या प्रजा-मण्डलों में नवजीवन आनेवाला है?

जयपुर, भरतपुर, जोधपुर, उदयपुर, अलवर और अजमेर-मेरवाड़ा किधर?

['देशदूत' के विशेष प्रतिनिधि-द्वारा]

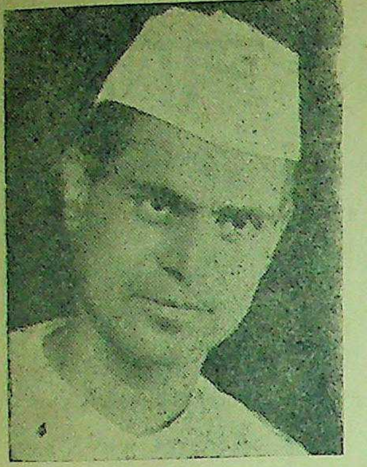

मारवाड़ के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता श्री जयनारायण व्यास आजकल बीमार हैं।

महात्मा गांधी से मिलकर श्री हीरालाल शास्त्री जयपुर लौट आये हैं, लेकिन अपनी बात-चीत के बारे में वे तब तक कुछ बताने को तैयार नहीं हैं जब तक वे दुबारा सेवा-ग्राम जाकर लौट नहीं आते। इस मास के दूसरे सप्ताह में वे फिर जा रहे हैं। मुझे पता चला है कि गांधी जी से शास्त्री जी की बात-चीत बहुत महत्त्वपूर्ण हुई है। पहले दिन एक और दूसरे दिन कोई डेढ़ घन्टे वे एक-दूसरे से बात करते रहे। ग्रामोत्थान और बुनियादी तालीम, जयपुर और राजपूताने की राजनीति, वनस्थली विद्यापीठ और राजस्थानी भाषा का आन्दोलन—इस चर्चा के मुख्य विषय कहे जाते हैं। इस बारे में शास्त्री जी ने सिर्फ इतना कहा—"मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर लौटा हूँ!" उनकी भाव-भंगी से मालूम होता था कि वे आशा से अधिक सफल होकर लौटे हैं। राजपूताने की राजनीति पर अतिशय प्रभाव डाल सकनेवाली इस बात-चीत के बारे में मुझे इस समय और ज्यादा प्रकट नहीं करना चाहिए।

जयपुर

जयपुर में आजकल चारों ओर चुनावों की चर्चा है। जनवरी १९४४ में घोषित नये विधान के अनुसार पहले चुनाव अगले मार्च या अप्रैल महीने में होंगे। कई दल मैदान में दीख पड़ते हैं, लेकिन अन्ततः दो ही रह जायेंगे या बाकी सब इन दोनों में ही मिल जायेंगे या उनका महत्त्व नगण्य हो जायगा। वे दोनो हैं—प्रजा-मंडल और राजपूत सभा। जयपुर शहर के अलावा बाकी सब जगह इन दोनों दलों में अच्छी खासी कशमकश होगी सामन्तवादी और प्रजातन्त्री पक्षों के इस संघर्ष का परिणाम अभी नहीं बताया जा सकता, लेकिन प्रजा-मंडल को काफी सफलता मिलने की पूरी आशा की जा सकती है।

जयपुर शहर में कुछ दूसरे ढंग की कशमकश होगी। प्रजा-मंडल से अलग अलग कारणों से असंतुष्ट दल अपने संयुक्त मोर्चे बनाकर प्रजा-मंडल के उम्मीदवारों का विरोध करेंगे। हाल में प्रजा-मंडल छोड़कर अलग हुए श्री हरिश्चन्द्र शर्मा और पिछले म्यूनिसिपल चुनाव में मंडल के उम्मीदवारों का खुला विरोध करके भी अपने को प्रजा-मंडल का अंग कहनेवाली प्रजा-मंडल प्राग्रेसिव पार्टी ऐसी अवस्था में इस प्रजा-मंडल विरोधी गुट के साथ हो जाये तो आश्चर्य न होगा?

सरकार की ओर से तैयार की गई मत दाताओं की सूची इतनी दोषपूर्ण भी है कि उसमें एक लाख से भी ज़्यादा संशोधन तीन सप्ताह की अवधि में ही आ गये बताये जाते हैं। इतनी बड़ी संख्या से घबड़ा कर कोशिश यह हो रही है कि इनमें से ज्यादा-तर सबूत की कमी के नाम पर नामंजूर कर दिये जायें। इसमें आम लोगों में बड़ी नाराजी है।

पिछले दिनों विश्वविख्यात वैज्ञानिक सर सी० वी० रमन् जयपुर आये थे। उनकी इस संक्षिप्त यात्रा से दो विषयों की ओर लोगों का ध्यान गया है। एक बात भुला दी गई कि विश्वविद्यालय योजना को फिर से नई जान मिली है और ऐसी चर्चा है कि जयपुर में विश्वविद्यालय की नींव जल्दी ही पड़ेगी। दूसरे रेगिस्तानों की महत्ता और उपयोगिता के सम्बन्ध में उनके सुझाव लोगों की चर्चा के विषय हैं।

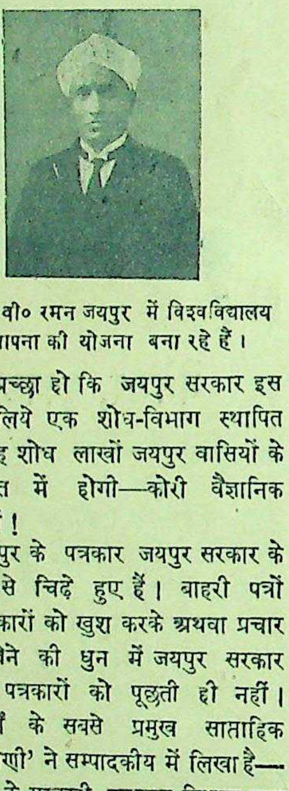

सर सी० वी० रमन जयपुर में विश्वविद्यालय की स्थापना की योजना बना रहे हैं।

क्या ही अच्छा हो कि जयपुर सरकार इस काम के लिये एक शोध-विभाग स्थापित करे। यह शोध लाखों जयपुर वासियों के सीधे हित में होगी—कोरी वैज्ञानिक शोध नहीं!

जयपुर के पत्रकार जयपुर सरकार के व्यवहार से चिढ़े हुए हैं। बाहरी पत्रों और पत्रकारों को खुश करके अथवा प्रचार करवा लेने की धुन में जयपुर सरकार स्थानीय पत्रकारों को पूछती ही नहीं।

यहाँ के सबसे प्रमुख साप्ताहिक 'लोक वाणी' ने सम्पादकीय में लिखा है—"जयपुर के सरकारी प्रकाशन विभाग द्वारा स्थानीय समाचार पत्रों के प्रति बरती जानेवाली उपेक्षा असहनीय है। सिवा अँगरेजी 'न्यूज लैटर' की प्रतियाँ मुफ्त देने के वह जयपुर के अखबारों के लिए क्या करता है?"

भरतपुर

भरतपुर राज्य की धारा सभा—ब्रज जया प्रतिनिधि सभा का शरद्कालीन अधिवेशन जनवरी मास के साथ समाप्त हुआ। अधिवेशन की सारी कार्यवाही पर टीका करते हुए एक राष्ट्रवादी सदस्य ने कहा—'कम से कम काम और ज्यादा से ज्यादा वक्त की बरबादी इस बार की खासियत थी। अफसोस की बात यह रही कि खुद सरकारी मेम्बरों ने जगह जगह अड़चनें डालने की कोशिश कीं।' प्रतिनिधि सभा में सदस्यों का विभाजन इस समय ऐसा है कि प्रजा परिषद् और जमींदार दल में से जिसका सरकारी सदस्य साथ दे दें वही पक्ष बहुमतवाला हो जाता है। सरकारी पक्ष, स्वभावतः जमींदार दल का साथ दिया करता है। इस अधिवेशन के कार्यक्रम में ४ सरकारी बिल, अध्यक्ष द्वारा तैयार किये गये स्टैंडिंग आर्डर्स के अलावा ४२ जन-हित सम्बन्धी प्रस्ताव और ५७ प्रश्न थे। समय था सिर्फ १० दिन का। पहले ५ दिन तो बिलों के लम्बे विवाद में निकल गये और परिणाम भी इनका कोई खास नहीं निकला। २ बिल तो अनियमितता के कारण सरकार ने ३ दिन की बहस के बाद वापस ले लिये। निर्वाचित सदस्यों के दोनों दलों ने कई बार 'वाक आऊट' किये और एक बार जमींदार पार्टी के 'वाक आऊट' को कामयाब बनाने को सरकारी सदस्यों ने भी स्वयं अनुपस्थित होकर कोरम नहीं बनने दिया।

बिना धारा सभा का अभिमत लिए किसान-कर्जा कानून को सारे राज्य में लागू कर देने पर प्रजा परिषद् पार्टी ने 'काम रोको' प्रस्ताव पेश किया जो समय की कमी के कारण बिना मत विभाजन के खत्म हो गया। ४२ प्रस्तावों में से सिर्फ ६ पर विचार हो सका और सवालों का जवाब देते वक्त भी टाल-मटूल की नीति ही दिखाई गई। भरतपुर आर्म्स एक्ट में संशोधन करके बारूदी हथियारों और सामानों की बिक्री को नियन्त्रित किया गया है। इस बारे में प्रजा परिषद् पार्टी के सुझाव बहुमत से मान लिये गये। सबसे ज्यादा विवाद 'हिन्दू महिला अधिकार बिल' पर हुआ, और प्रजापरिषद् पार्टी का सुझाव कि इसे जन-मत जानने के लिए वितरित कर दिया जाय पहले बहुमत से अस्वीकृत हो गया लेकिन तीसरे दिन सरकार ने स्वयं इस सुझाव को मंजूर कर लिया। ऐसा सरकार इतनी बहस के पहले भी कर सकती थी।

जोधपुर

जोधपुर के नेता श्री जयनारायण व्यास इधर काफी दिनों से बीमार हैं और अस्पताल में दाखिल होने को मजबूर हुए हैं। उनकी इस बीमारी की परछाईं शायद वहाँ की राजनीति पर भी पड़ी है, क्योंकि जोधपुर के बारे में इधर उतना सुनाई नहीं देता। पिछले दिनों बड़ौदा हाईकोर्ट के जज श्री सुधालकर विधान-सुधार के लिए सलाह देने आये थे लेकिन अभी तक कोई सुधार सामने नहीं आये हैं। इनमें ६ महीने तक की देर लग सकती है, यह इस बात से मालूम होता है कि जोधपुर की प्रतिनिधि सलाहकार असेम्बली का जीवन ६ महीने के लिए बढ़ा दिया गया है। जोधपुर के राष्ट्रीय साप्ताहिक 'प्रजा सेवक' ने असेम्बली को 'जोधपुर की जिन्दा लाश' कहा है और बताया है कि उसके अधिकांश सदस्यों में उसके प्रति कोई उत्साह और दिलचस्पी नहीं है और प्राप्त सूचनानुसार सेवामंडल पार्टी ने तो उसके अधिवेशनों में उपस्थित तक न होने का निश्चय कर लिया है। राज्य की राजनीतिक संस्था मारवाड़ लोक परिषद् ने असेम्बली के विधान को उपयुक्त न पाकर शुरू से उससे असहयोग कर रखा था, और अब लगता है कि सलाहकार बोर्डों की तरह सलाहकार असेम्बली की [illegible] मर रही है। जोधपुर

अलवर के प्रधान मन्त्री सर सिरेमल वापना

सरकार को इससे सबक लेना चाहिए ि
वास्तविक अधिकारवाली छोटी सभा व
विधान लागू करे। सुधालकर—रिपो
जनता के विचारार्थ प्रकाशित तो शीघ्र
की जानी चाहिए।

उदयपुर

ऐसा लगता है कि मेवाड़ सिवि
सर्विस के दरवाजे गैर-मेवाड़ियों के लि
भी खोल देने के विचार के विरुद्ध हु
आन्दोलन का मेवाड़ सरकार पर अ
पड़ा है। उदयपुर के साप्ताहिक 'नवजीव
के अनुसार अगली परीक्षा पहले की त
केवल मेवाड़ियों के लिए खुली रहेगी
आगे के लिए क्या? सरकार को अपनी नीि
स्पष्ट कर देनी चाहिए। मेवाड़ के हरिज
सेवक संघ ने एक आवेदन सरकार
सामने पेश करके हरिजनों के लिए मानवो
चित सुविधाओं और समुचित नागरि
अधिकारों की मांग की है। इस मांग
भरपूर समर्थन होना चाहिए क्योंकि य
मेवाड़ में हरिजनों की दशा सुधर गई
इसका अच्छा असर सारे प्रान्त पर पड़ेगा

अलवर

अलवर की सरकार ने वहाँ के प्रज
मंडल के मन्त्री को एक साप्ताहिक प
निकालने की इजाजत देने से इन्कार क
दिया है। श्री रामजी लाल अग्रवाल
यह आज्ञा निजी हैसियत से माँगी थी
पर सरकार उनके राजनीतिक सम्बन्धों क
दरगुजर नहीं रह सकी और उसकी ओ
से प्रधान मन्त्री सर भिरेमल बापना न
सोचा होगा कि क्यों नाहक माथा-पच्
मोल ली जाय?

कहा जाता है कि युद्ध-ऋण
वसूली में कुछ ज्यादती हो रही है
अलवर राज्य प्रजामंडल के दफ्तर में इ
बारे में अनेक शिकायतें आई हैं। रा
के प्रधान मन्त्री ने इस बारे में पिछ
दिनों आश्वासन दिया था, लेकिन उ
मामलों में सिर्फ चेतावनी दी जाने से
सुधार नहीं होता दिखाई देता। प्रज
मंडल के अधिकारी शिकायतों की जा
करने स्वयं घटनास्थलों पर गये हैं।

अजमेर-मेरवाड़ा

अजमेर-मेरवाड़ा के चीफ कमिश्न
की ओर से यह सुझाव जन-मत जान
के लिए प्रचारित किया गया है कि
निर्वाचित म्यूनिसिपैल्टियों की मुद्दत ख
होते ही लड़ाई भर के और उसके छ महीने
बाद तक के लिए सदस्यों को सरकार क
ओर से नामजद कर दिया जाय। य
सुझाव किसी को मान्य नहीं है, यह
स्वाभाविक ही है, पर इसका पेश कि
जाना बड़े आश्चर्य की बात है। ऐसा क्यों
लड़ाई कोई वाजिब कारण नहीं है। इ
सुझाव का भरपूर विरोध होना चाहिए

संपादक के नाम चिट्ठियां

यह अवहेलना क्यों ?

(सम्पादक श्री 'देशदूत')

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति तथा कार्य्य-समिति का मैं सदस्य हूँ। गत कार्य-समिति की बैठक की सूचना न जाने किस कारण मुझे नहीं मिली। पत्रों में मैंने कार्य-समिति की कार्य्यवाही पढ़ी। बहुत से आवश्यक प्रश्नों पर विचार और निश्चय हुए। मुझे बड़ा दुःख हुआ कि सम्मेलन-कार्यालय से ऐसी भूल क्यों हुई ? मैंने प्रबन्ध-मन्त्री को पत्र लिखकर सूचना न भेजने का कारण पूछा। आज तक उनका भी कोई उत्तर मुझे नहीं प्राप्त हुआ। माननीय टण्डन जी सम्मेलन के कार्य्यवाहक उप सभापति हैं और श्री मौलिचन्द्र शर्मा प्रधान मन्त्री। इन दो दायित्वपूर्ण सज्जनों के रहते हुए भी सदस्यों के प्रति इस प्रकार की अवहेलना के कार्य क्यों होते हैं ? मेरे पास आनेवाले अन्य लोगों के पत्र तो समय-समय पर मुझे मिलते रहते हैं किन्तु सम्मेलन से भेजा जानेवाला पत्र मुझे न मिले और मैं जो पत्र सम्मेलन के अधिकारियों को लिखूँ वह उन्हें न मिले, वास्तव में यह रहस्यपूर्ण तथा आश्चर्यजनक है। क्या कार्यवाहक सभापति और प्रधान मन्त्री महोदय मुझे परामर्श देने की कृपा करेंगे कि आखिर मेरा क्या कर्तव्य है ? मेरा तो स्पष्ट निवेदन है कि पिछली कार्यसमिति की कुल कार्यवाही रद् समझी जानी चाहिए और अगली कार्यसमिति में उस पर फिर से विचार होना चाहिए, साथ ही भविष्य में समितियों के अधिवेशन की सूचनायें पोस्टल सार्टिफिकेट से भेजने का प्रबन्ध होना चाहिए। मुझे विश्वास है कि श्री टण्डन जी मेरी प्रार्थना पर न्यायरूपेण विचार करेंगे और मेरे सुझाव को स्वीकार करने की कृपा करेंगे।

हाता बेतिया
गोरखपुर

—गौरीशंकर मिश्र

* * *

सेकसरिया पारितोषिक

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से स्त्री लेखिकाओं की सर्वोत्तम रचना पर दिया जानेवाला सेकसरिया पारितोषिक प्रतियोगिता के लिए पुस्तकें स्वीकार किये जाने की अन्तिम तिथि नियमानुसार गत ३१ वैशाख थी। उक्त तिथि तक यथेष्ट संख्या में पुस्तकें नहीं आईं। इसलिए पारितोषिक-समिति ने पुस्तकें स्वीकार किये जाने की तिथि बढ़ाकर १५ मार्च १९४५ कर दिया है। पारितोषिक के लिए केवल जीवित लेखिकाओं की मौलिक रचनाओं पर विचार किया जायगा। निश्चित तिथि से पन्द्रह महीने से अधिक पहले की प्रकाशित रचनाओं पर विचार न किया जायगा। प्रत्येक रचना पारितोषिक के लिए केवल एक बार भेजी जा सकेगी।

हिन्दी-प्रेमी विदुषियों से निवेदन है कि वे अपनी रचना की सात प्रतियाँ १५ मार्च १९४५ तक सम्मेलन-कार्यालय में अवश्य भेज दें। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त रचनाओं पर विचार न किया जा सकेगा। पारितोषिक की नियमावली कार्यालय से मँगाई जा सकेगी।

—श्री रामनाथ 'सुमन' संयोजक

अखिल भारतीय पत्र-प्रतियोगिता

प्रसाद-परिषद् काशी की ओर से इस वर्ष एक अखिल भारतवर्षीय पत्र-प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। यह प्रतियोगिता आगामी २०, २१ २२, २३ अप्रैल को होनेवाले 'प्रसाद-परिषद्' के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर होगी। प्रतियोगिता में आनेवाले पत्रों की शब्द-संख्या १५०० से अधिक न होनी चाहिए। इस सीमा के भीतर प्रतियोगी पत्र और पत्रोत्तर के रूप में एक से अधिक पत्र लिख सकता है। पत्रों की संज्ञा और विषय साहित्यिक होना चाहिए। पत्र प्रतियोगिता के लिए प्रथम पुरस्कार २५), द्वितीय पुरस्कार और तृतीय पुरस्कार १०) का है। साथ ही सर्वप्रथम महिला प्रतियोगिनी को ८) का एक 'महिला-पुरस्कार' भी दिया जायगा। प्रतियोगिता में आनेवाले पत्र १५ मार्च १९४५ या उसके पूर्व श्री भगवती शरणसिंह प्रधान मन्त्री प्रसाद-परिषद् काशी के पते से आ जाने चाहिए। अन्तिम तिथि के बाद आनेवाले पत्रों पर विचार न किया जा सकेगा। पुरस्कृत पत्रों का सर्वाधिकार प्रसाद-परिषद् काशी को प्राप्त होगा।

—भगवती शरणसिंह
प्रधान मन्त्री

* * *

रत्नकुमारी पुरस्कार

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से दिया जानेवाला रत्नकुमारी पुरस्कार हिन्दी के मौलिक नाटक के सम्मानार्थ दिया जाता है। पुस्तकें स्वीकार किये जाने की तिथि बढ़ाकर १५ मार्च १९४५ कर दिया है। पुरस्कार के लिए केवल जीवित लेखकों तथा लेखिकाओं की मौलिक रचनाओं पर विचार किया जायगा।

—श्रीरामनाथ 'सुमन'

सोविट रूस के वीर सेनानी

(पेज ७ का शेष)

रल हैं जिन्होंने क्रान्ति के अवसर पर, लेनिन के शब्दों में 'पैरों से वोट दिया' और अपनी सेना को त्याग निकले।

इन सेनापतियों में एक नाम ने हाल में बहुत प्रसिद्धि पाई है—वह है मालिनोवस्की। वह पिछले महायुद्ध में एक कार्पोरल था तथा मशीनगन का चालक था; उसकी पल्टन फ्रांस में थी एक अमरीकन डिवीजन के साथ। फ्रांस ने जार से मदद माँगी थी और १९१५ में एक छोटी टुकड़ी, जिसमें वह था, साइबेरिया, सिंगापुर, हिन्द महासागर और भूमध्य सागर के रास्ते, फ्रांस पहुँचाई गई।

जब रूसी क्रान्ति की खबर फ्रांस पहुँची तब जार की सेना में खलबली मची। १८ साल की उम्र का मालिनोवस्की क्रान्तिकारियों में जा मिला। गृह-युद्ध के अवसर पर वह एक अफसर हो गया और बाद को काले समुद्र के तट पर ओडेसा भेजा गया। वर्तमान युद्ध के अवसर पर वह एक मेजर जनरल था और सोवियट छठी सेना के सेनापति की हैसियत से उसने फॅन क्लाइस्ट की टैंक सेना को बहुत अरसे तक नीपर नदी के निम्न तट पर रोक रखा। इसके लिए उसको आर्डर अव् लेनिन का तमग़ा मिला।

मध्यकालीन हिन्दी-साहित्य

(पेज ४ का शेष)

अधिक थी, की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। भोजन का ठिकाना न था। केन्द्रीय एवं स्थानीय करों का भार इतना हो जाता था कि कृषक भूमि छोड़-छोड़कर भागते थे। राजकीय आज्ञा थी कि ऐसी दशा में कृषकों को नाना प्रकार के दण्डों-द्वारा भूमि बोने को बाध्य किया जाये। निरन्तर अकालों से उनकी दशा और भी भयंकर हो गई थी। इस प्रकार वह मध्यम श्रेणी जो वर्तमान साहित्य की प्राण है, उस समय प्राणहीन था। उसकी कोई सत्ता न थी। ऐसी अवस्था में हिन्दू-समाज को एक प्रचण्ड धार्मिक आक्रमण से अपनी रक्षा करनी थी। हिन्दुओं-द्वारा धार्मिक प्रत्याक्रमण अंतर और बहिं दोनों कारणों से असम्भव था।

जिस तल पर आक्रमण होता है रक्षात्मक उपाय उसी तल पर प्रयोग करने होते हैं। मुसलमानों ने धार्मिक आक्रमण किया। उससे रक्षा करने के लिये हिन्दुओं का धार्मिक दल [illegible] और समाज का नेता बन गया। उसकी भाषा उसकी मान्यतायें समाज ने स्वीकार की। वे उस काल के प्रतिनिधि बन गये। यह बिलकुल उसी भाँति हुआ जैसे कि कुछ शताब्दियों पश्चात् देश पर जब योरोप का व्यापारिक आक्रमण हुआ तो व्यापारियों की भाषा (खड़ीबोली) को मान्यता प्राप्त हुई और समाज का नेतृत्व धर्म के हाथ से निकलकर व्यापार के हाथ चला गया।

मध्यकालीन युग में यह इन धर्म गुरुओं के शिष्यों की भाषा थी जो सर्वमान्य बनी। इन धर्म गुरुओं का प्रयत्न रक्षात्मक रहा। राम और कृष्ण की शरण जाने का आदेश उन्होंने समाज को दिया। फलस्वरूप दोनों अवतारों के जन्मस्थान हिन्दू जनता की आत्मा के केन्द्र बन गये। वहाँ की स्थानीय भाषा उनकी भाषा बन गई। जिन कवियों ने उन भाषाओं का व्यवहार किया उन्होंने संस्कृत शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग से उसकी भौगोलिक व्यापकता को विस्तार देने की चेष्टा की।

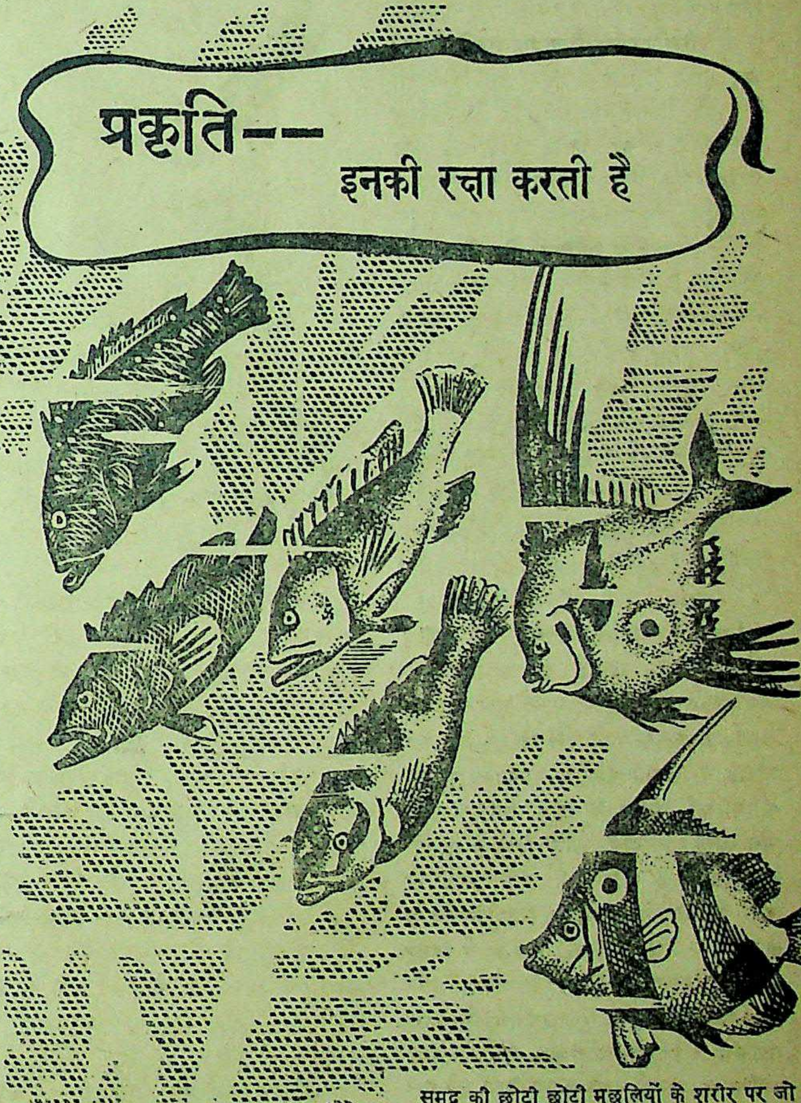

समुद्र की छोटी छोटी मछलियों के शरीर पर जो बड़े बड़े दाग होते हैं और उनके शरीर पर की चित्तियों के असली रंग में जो परिवर्तन हुआ करता है उसके कारण वे शत्रुओं की पकड़ में आने से बच जाती हैं। परन्तु मनुष्य न तो प्रकृति कृपा पर निर्भर रहते हैं और न प्रकृति इतने अद्भुत ढंग से इनकी रक्षा करती है। इस लिए जाड़े की ऋतु में आदमियों के ऊपर जब कभी सर्दी या जुकाम का आक्रमण हो, उनके लिए यह आवश्यक होता है कि वे विवासेट का उपयोग करके उसका सामना करें। इसमें सर्दी के कीड़ों को नष्ट करने की अपूर्व शक्ति होती है।

विवासेट

सर्दी और जुकाम का सामना करता है।

पी० एम० बागची ऐ० कम्पनी, कलकत्ता

13446

गठन का [illegible] साहित्य-सृजन कर्म प्रथम तथा तृतीय वर्ग के व्यक्तियों द्वारा ही सम्भव है। हुआ भी यही। प्रथम वर्ग में उत्पन्न कवियों ने जिस काव्य-साहित्य की रचना की उसमें पर्याप्त अंश ऐसा है जो सहकारी मुसाहिबों के अतिरिक्त और किसी का प्रतिनिधित्व नहीं करता। अधिकांश है जो विलासोत्तेजन और काव्य-व्यवस्था के लिए लिखा गया है। अत्यल्प है जो इस सीमा का उल्लंघन कर जातीय हो सकी है। भूषण तथा लाल का नाम आंशिक रूप से इस विषय में लिया जा सकता है।

समाज की आत्मा को रससिंचित कर जिसने जीवित रक्खा यह ज्ञान उन व्यक्तियों से आया जिन्होंने पार्थिव सर्वस्व त्याग प्रभुसेवा का व्रत लिया था। उन्होंने राम के दरबार में गाया, विनय की और जनता को उस विनय में आश्वासन मिला। उन्होंने कृष्ण के साथ गौवें चराईं, राधिका के साथ कृष्ण-प्रेम में रंगे और समाज उनकी तन्मयता में तन्मय होकर अपनी पीड़ा को भूल गया। भक्ति के कवच ने पीड़ा से उनकी रक्षा की। तूफान का तीव्रतम वेग शांत हो जाने के पश्चात् उसने शीश उठाकर देखा कि उसके किनारे झड़ गये हैं। हृदय पर आघात हुआ है। फेफड़े और पाचनाशय में दुर्बलता आ गई है। पर उसने पाया कि वह जीवित है। स्वास्थ्य-लाभ कर सकता है और पुनः अपना विस्तार कर सकता है।

इस काल के साहित्य में हमें मध्यम श्रेणी की पार्थिव अवस्था का चित्र प्रायः प्राप्य नहीं, जैसे कि अभाव की तीव्रता से वाणी अवरुद्ध हो गई हो। तुलसी का एक प्रसिद्ध कवित्त उस काल की दशा का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में करता है—

खेती न किसान को भिखारी को न भीख बलि
  बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।
जीविकाविहीन लोग सिद्यमान सोचवश
  कहैं एक एकन सों कहाँ जाय का करी।
बेदहुँ पुरान कही लोकहुँ बिलोकियत
  साँकरे सबै के राम रावरे कृपा करी।
दारिद दसासन दबाई दुनी दीनबन्धु,
  दुरित दहन देखि तुलसी हहा करी॥

समाज का सूक्ष्म चित्रण न होने पर भी वह साहित्य तत्कालीन समाज की पीड़ित आत्मा की पुकार है इसमें सन्देह नहीं। उस काल का वैभव और ऐश्वर्य जितना महान है, पीड़ा और अभाव भी उतना ही महान है और उससे भी कहीं अधिक महान है उसमें से उत्पन्न हमारी ब्रज-भाषा और अवधी का काव्य-साहित्य।

प्रायः निष्प्राण जन-समुदाय के मध्य गद्य की ओर विद्वानों का विशेष ध्यान नहीं गया यह स्वाभाविक ही है। गम्भीर दुख का समय गम्भीर संगीत का समय है, इसीलिये तत्कालीन काव्य पूर्णतया संगीतमय है।

हमारे मध्यकालीन साहित्य का जन्म कुतुबमीनार और ताजमहल के साथ हुआ है। पर न कुतुबमीनार का उसमें दम्भ है न ताजमहल की महत्त्वाकांक्षा; न कुतुबमीनार की उसमें कीर्ति-पिपासा है, न ताजमहल की विलास-लिप्सा। उसका जातीय अंग कुतुब और ताज की पार्थिवता से कहीं ऊँचा है। जब कुतुब और ताज केवल चित्रों में देखने को मिलेंगे तब भी काव्य-संगीत-रसिक कृतज्ञ हृदय उसके स्पर्श से आन्दोलित होते रहेंगे।

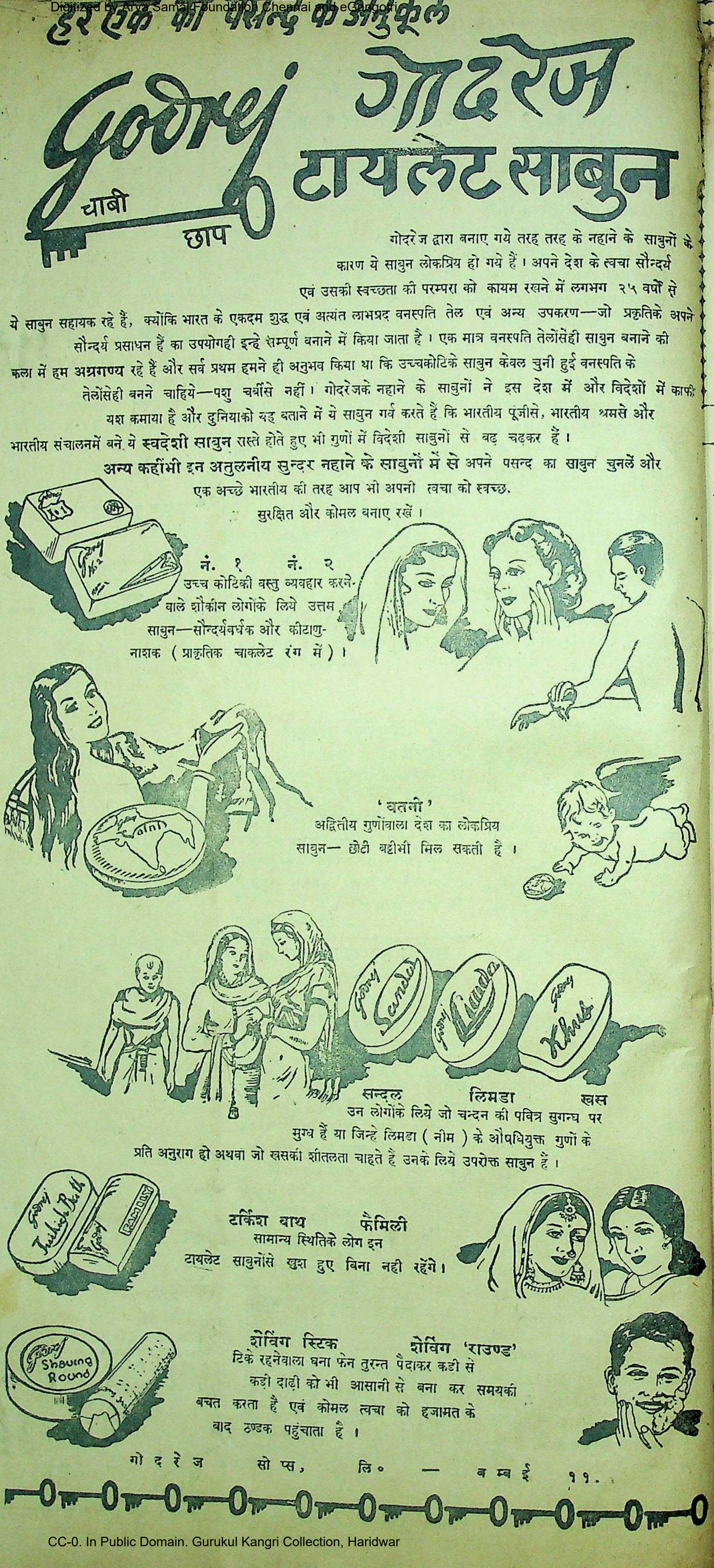

हर एक की पसन्द के अनुकूल

Godrej चाबी छाप

गोदरेज टायलेट साबुन

गोदरेज द्वारा बनाए गये तरह तरह के नहाने के साबुनों के कारण ये साबुन लोकप्रिय हो गये हैं। अपने देश के त्वचा सौन्दर्य एवं उसकी स्वच्छता की परम्परा को कायम रखने में लगभग २५ वर्षों से ये साबुन सहायक रहे हैं, क्योंकि भारत के एकदम शुद्ध एवं अत्यंत लाभप्रद वनस्पति तेल एवं अन्य उपकरण—जो प्रकृतिके अपने सौन्दर्य प्रसाधन हैं का उपयोगही इन्हे सम्पूर्ण बनाने में किया जाता है। एक मात्र वनस्पति तेलोंसेही साबुन बनाने की कला में हम **अग्रगण्य** रहे हैं और सर्व प्रथम हमने ही अनुभव किया था कि उच्चकोटिके साबुन केवल चुनी हुई वनस्पति के तेलोंसेही बनने चाहिये—पशु चर्बीसे नहीं। गोदरेजके नहाने के साबुनों ने इस देश में और विदेशों में काफी यश कमाया है और दुनियाको यह बताने में ये साबुन गर्व करते हैं कि भारतीय पूंजीसे, भारतीय श्रमसे और भारतीय संचालनमें बने ये **स्वदेशी साबुन** सस्ते होते हुए भी गुणों में विदेशी साबुनों से बढ़ चढ़कर हैं।

अन्य कहींभी इन अतुलनीय सुन्दर नहाने के साबुनों में से अपने पसन्द का साबुन चुनलें और एक अच्छे भारतीय की तरह आप भी अपनी त्वचा को स्वच्छ, सुरक्षित और कोमल बनाए रखें।

नं. १ नं. २
उच्च कोटिकी वस्तु व्यवहार करनेवाले शौकीन लोगोंके लिये उत्तम साबुन—सौन्दर्यवर्धक और कीटाणुनाशक (प्राकृतिक चाकलेट रंग में)।

'वतनी'
अद्वितीय गुणोंवाला देश का लोकप्रिय साबुन— छोटी बड़ीभी मिल सकती है।

सन्दल लिमडा खस
उन लोगोंके लिये जो चन्दन की पवित्र सुगन्ध पर मुग्ध हैं या जिन्हे लिमडा (नीम) के औषधियुक्त गुणों के प्रति अनुराग हो अथवा जो खसकी शीतलता चाहते हैं उनके लिये उपरोक्त साबुन हैं।

टर्किश बाथ फैमिली
सामान्य स्थितिके लोग इन टायलेट साबुनोंसे खुश हुए बिना नही रहेंगे।

शेविंग स्टिक शेविंग 'राउण्ड'
टिके रहनेवाला घना फेन तुरन्त पैदाकर कड़ी से कड़ी दाढ़ी को भी आसानी से बना कर समयकी बचत करता है एवं कोमल त्वचा को हजामत के बाद ठण्डक पहुंचाता है।

गोदरेज सोप्स, लि० — बम्बई ११.

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस परिपाक ख़ूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

एलगिन की टर्किश और हकबेक तौलिये, ड्रिल्स झाड़न, धोतियां, साडियां और चद्दरें अद्वितीय है।

"If it's ELGIN it's good!"

यदि यह 'एलगिन' का है तो बढ़िया है।

धी एलगिन मिल्स कम्पनी लिमिटेड, कानपुर

सोल सेलिंग ऐजेण्टस्

मेसर्स रूप नारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर

स्टॉकिस्टस्:—जी. टेकचंद एण्ड कं. लखनौ: पी. बी. कूपर एण्ड कं. कानपुर सैम्युएल फिटच एण्ड कं. कलकत्ता तथा अन्य बड़ी दुकानें.

EK-20

सौंदर्य की परम्परा कायम रख रही है

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी मां ही उन्हें बहुमुल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती मां ने अपनी सुन्द्र बेटी को अपना बढया गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस मां ने अपनी मां से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है। इसलिये उसकी मां की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 39-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

नया स्टाक... एक भाव

डी. सी. एम. स्टोर्स की अलमारियों में पुरानी और न चलने वाली चीजें नहीं रहतीं। मिलों द्वारा निश्चत किये हुए भाव पर वेची जाने वाली चीजों का काफी नया, नया अधिक स्टाक समय समय पर आता रहता है।

* * * * *

साड़ियां

बहुत बड़ी तादात में पसन्द की हुई सुन्दर किनारीदार और तरह तरह की साड़ियां।

सूटिंगस

मनोरम और टिकाऊ, अपने बड़े क्षेत्र की चीजों में आनन्ददायक निराली शान रखनेवाला।

Vinegar
Vinegar

सिर्का

हानिकारक तेजाबों से रहित आप के भोजन और आचार को अधिक अच्छा बना देगा।

Daurala Sugar

फैन्सी चीनी

चुने हुए गन्ने से बनाई हुई क्यूब, कास्टर, आइसिंग, और डेमरारा चीनी।

Golden Syrup

गोल्डन सिरप

जाम (चासनी) से अधिक पौष्टिक और स्वादिष्ट बच्चों को चाहे जितना दें।

दिल्ली क्लाथ मिल्स स्टोर्स

DCM. 18

हज़रतगंज, चौक और सदर बाजार, लखनऊ, और भी फैजाबाद, बाराबन्की, कानपूर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, आगरा, बरेली, अलीगढ़, हरद्वार, दहरादून मुरादाबाद, और हापुर।

'CD'

शुभदा

वंगसाहित्य सम्राट् श्री शरच्चन्द्र का नाम हिन्दी में भी उनकी अमूल्य कृतियों द्वारा विख्यात हो चुका है। यह उन्हीं के एक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें उनके अन्य उपन्यासों की तरह पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ६ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

पुस्तक मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

सारिडन से
२० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये
Saridon

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।

भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

आरोंदा १८६९ नीलगिरि तेल — वापरा —

खाण्डालेकर बंधु, बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | रु० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख० अलग, युकलिप पेन, बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

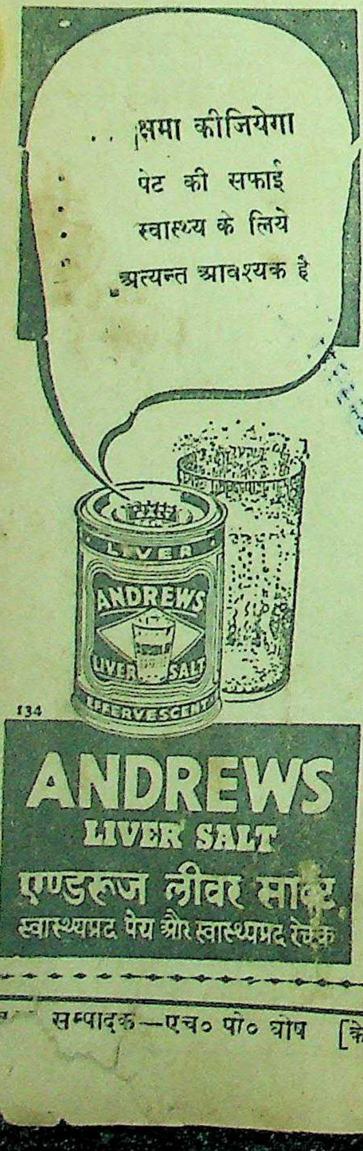
..क्षमा कीजियेगा
पेट की सफाई
स्वास्थ्य के लिये
अत्यन्त आवश्यक है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT
134
ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर सॉल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

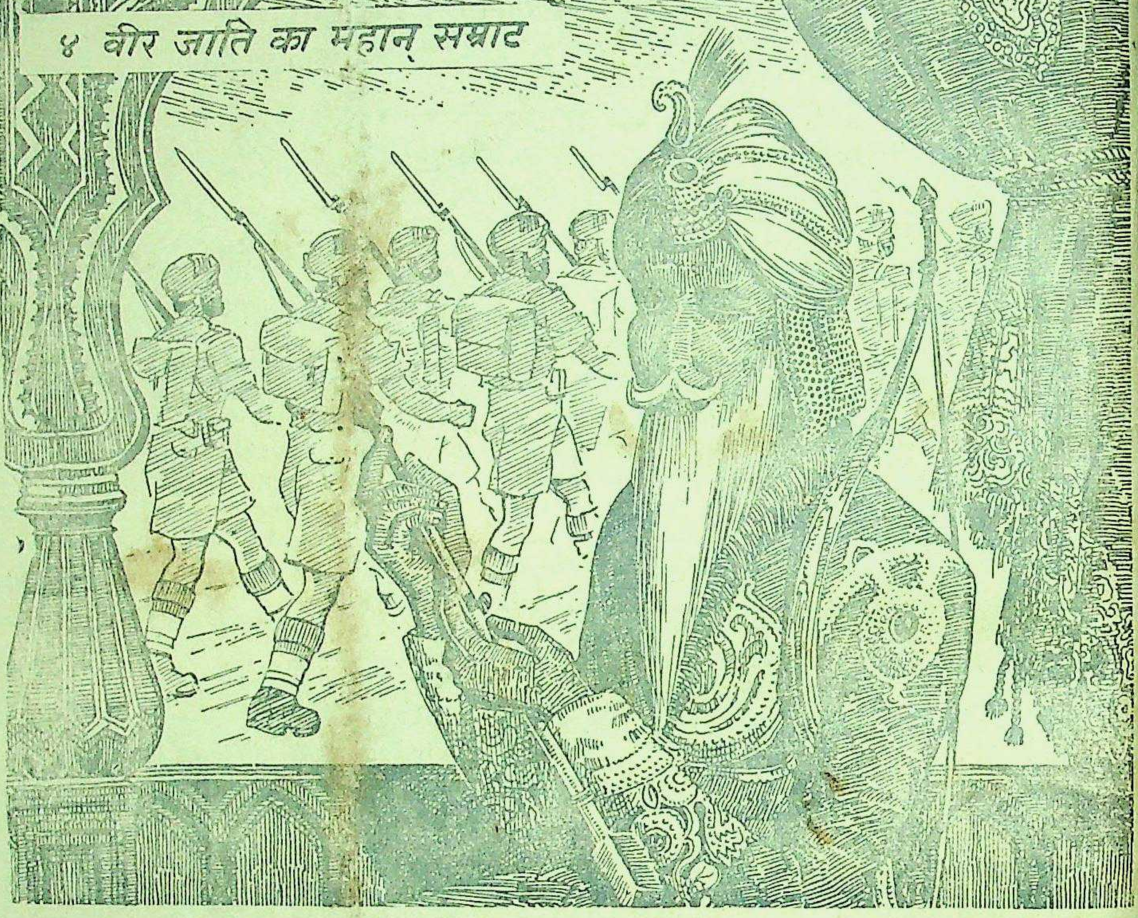
४ वीर जाति का महान् सम्राट

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण स्वस्थ शरीर।

महाराणा रणजीत सिंह, पन्द्रहवीं शताद्धि में, श्री गुरु नानक द्वारा स्थापित वीर सिक्ख जाति के उदीयमान् सम्राट थे। उनके, वीरता और साहस के कार्य आज भी, केवल सिक्खों को ही नहीं अपितु समस्त भारतीयों को उत्तेजना प्रदान करते हैं। रणजीत सिंह स्वयं योद्धा होने के कारण, सिक्खों को जहां बुद्धिमान् देखना चाहते थे। वहां उन्हे हृष्ट पुष्ट भी बनाना चाहते थे।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का सेवन करिये।

हेमो द्राक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फास्फेट्स स्नायुवों को शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पेप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ्य रक्षा के लिए हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

Draksha Malt
Alembic

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड बरोडा

प्र॰ सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

A1. 253.

देशदूत

वार्षिक मूल्य

प्रतिसंख्या =

संख्या २७] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ४ मार्च, १९४५

में पोमेरेनिया और
द करनेवाली
के उद्देश्य
प्रारम्भ

वार, ४ मार्च, १९४

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

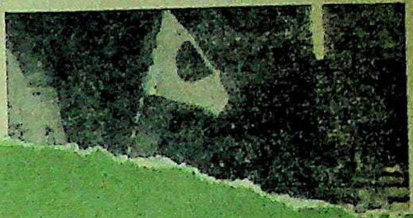

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी

रोपीय वेषभूषा से पूर्ण ओतप्रोत
आधुनिक टर्की की बालिकाओं को देखिये

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

बर्लिन की ओर फील्ड मार्शल जुकाव
देशी राज्यों का सम्मिलित शासन

शुभदा

वंगसाहित्य सम्राट् श्री शरच्चन्द्र का नाम हिन्दी में भी उनकी अमूल्य कृतियों द्वारा विख्यात हो चुका है। यह उन्हीं के एक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें उनके अन्य उपन्यासों की तरह पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है। मूल्य १।।) एक रुपया आठ आने।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ६ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

पुस्तक मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

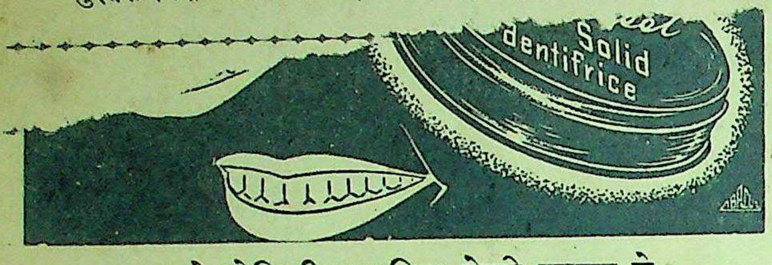

इनको स्टेनिस्ट्रीट सालिड डेन्टी फ्राइस के प्रयोग से स्वच्छ रखिये।

SMITH STANISTREET & CO LTD.
CALCUTTA, BOMBAY, MADRAS, KARACHI, LUCKNOW, AMRITSAR.

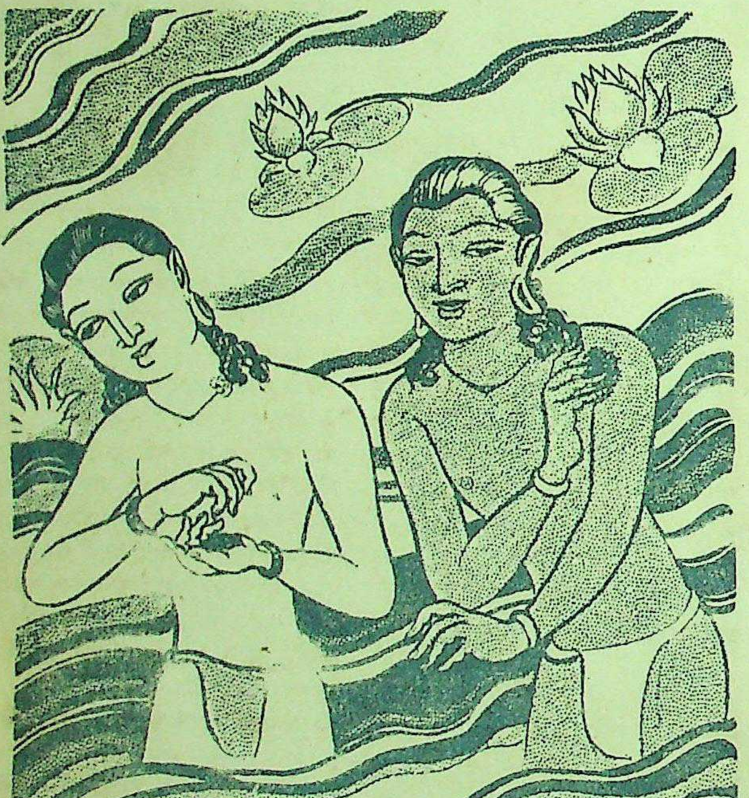

नदी या तालाब में स्नान करते समय दक्षिण भारत के निवासियों के पूर्वज साबुन के स्थान में इरुप्पा की खली का इस्तेमाल करते थे क्योंकि साबुन का तो उन्होंने तब नाम भी नहीं सुना था। लेकिन उनकी सन्तान वास्तव में भाग्यशाली है कि खली के बदले में आज ताजगी पहुँचानेवाला एवं मैल को तुरन्त साफ करनेवाला हमाम साबुन का फेन उनके स्नान के आनन्द में वृद्धि कर रहा है। हमाम साबुन में, जो विशुद्ध वनस्पति तेलों से बनाया जाता है, आधुनिक साबुन के सभी गुणों के साथ-साथ प्राचीन तरीकों के सभी लाभ मौजूद हैं।

हमाम

आप के स्नान के लिए बड़ा साबुन

टाम्को सेल्स डिपो
जवाहर स्कायर इलाहाबाद

सारिडन से
20 मिनट में ही
हर क़िस्म का दर्द

संसार का
सर्वोत्तम

...ई है। बुद्धिमती महिलायें स्व[illegible] [illegible] होता है। यह कार्य युद्ध-प्रयत्नों को वास्तविक सहायता पहुँचाता है। ए० एन० एस० की सफ़ेद वर्दी पहिनने वाली नर्सें घायल सैनिकों की तीमारदारी करती हैं।

आजकल समाज यह चाहता है कि नवयुवतियां घर पर आलस्य से अपना समय बिताने की अपेक्षा किसी अच्छे काम में लग जायँ, इसलिये आपको महिलाओं के उस परोपकारी दल में सम्मिलित हो जाना चाहिये जो अस्पतालों में कष्ट-निवारण के कार्य में हाथ बँटाता है।

ए० एन० एस० (आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस) में आपको नर्स के काम की जो अच्छी ट्रेनिंग मिलेगी वह लड़ाई के बाद शहरी क्षेत्र में बहुत काम आयेगी। यदि आपका ऐसा कार्य-क्रम नहीं है, तो भी चिकित्सा का जो ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह जीवन भर आपकी गृहस्थी के लिए तथा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। इस सुअवसर से लाभ उठाइए!

AAA 1198

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है:— (१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक। (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१३५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ़्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही डयूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

पूरे विवरण के लिए आज ही अपने क्षेत्र की लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट, सेण्ट जान एम्बुलेन्स अथवा डाइरेक्टर जनरल, इण्डियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली को लिखिए

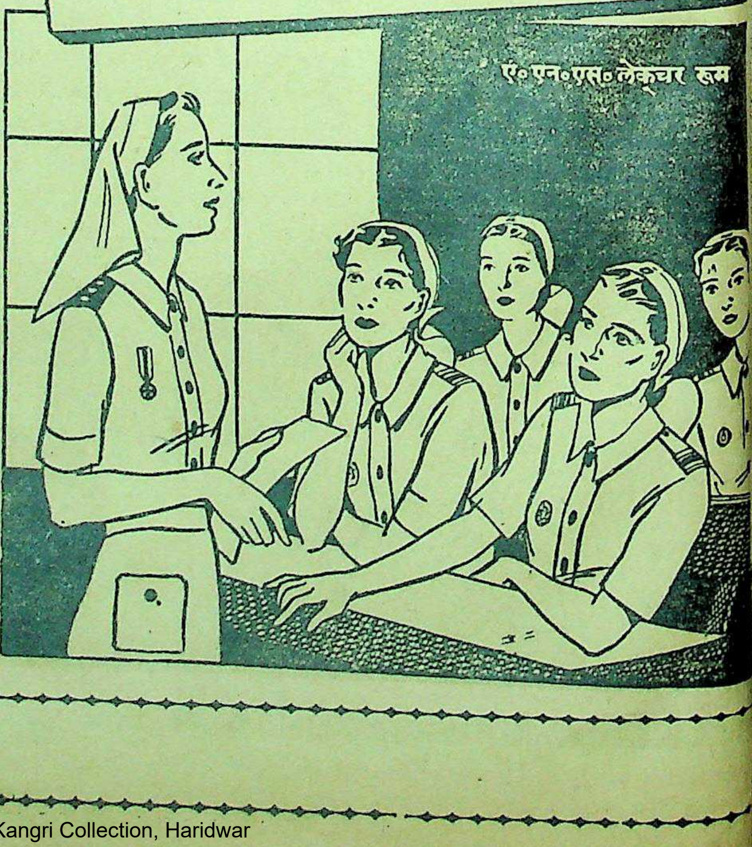
ए० एन० एस० लेक्चर रूम

देशदूत

वर्ष ७ संख्या २७]　　सचित्र हिन्दी साप्ताहिक　　[रविवार, ४ मार्च, १९४५

सप्ताह की सांमयिकं और प्रमुखं घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

जर्मन-रूसी युद्ध में पोमेरेनिया और पोलिश गलियारे में युद्ध करनेवाली जर्मन सेनाओं को फँसा लेने के उद्देश्य से लाल सेना ने एक नया आक्रमण आरम्भ कर दिया है। साइलेशिया में ब्रेसलाउ की लड़ाई अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच रही है। रूसियों का यह आक्रमण डैंजिग और एटिन के प्रायः बीचोबीच के क्षेत्र में हो रहा है। इस हमले के फलस्वरूप रूसी कवचधारी दल और आक्रमणकारी दस्ते न्यूस्टेटिन से २० मील से कम फासले पर रह गये हैं। न्यूस्टेटिन सड़कों और रेलों का एक महत्वपूर्ण चौराहा है।

* * *

विश्वस्त सूत्रों से यह पता चला है कि युक्तप्रान्तीय सरकार को युद्धोत्तर-कालीन पुनर्निर्माण योजना को आर्थिक सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से केन्द्रीय सरकार ५० करोड़ रुपया देगी। युक्त-प्रान्तीय सरकार की योजना १२५ करोड़ रुपये की है और वह प्रत्येक व्यक्ति के पीछे २२ रु० व्यय के आधार पर तैयार की गई है।

* * *

चुंगकिंग का समाचार है कि अमेरिका का अगला कदम खास जापान के खिलाफ उठाया जायगा या चीन की प्रधान भूमि पर आक्रमण के उद्देश्य से। कुछ समय पहले यह अनुमान किया गया था कि फिलिपाइन्स की कार्रवाइयों के बाद चीन के तट पर अमेरिकन फौजें उतरेंगी, पर हाल में टोकियो पर जो हवाई तथा समुद्री हमले हुए हैं उससे यह संदेह उत्पन्न हुआ है कि अमेरिकनों का आगामी लक्ष्यस्थल कहीं खास जापान ही न हो।

* * *

करांची का समाचार है कि स्वर्गीय खाँ बहादुर अल्लाबख्श के भाई खाँ बहादुर मौला बख्श ने खाँ बहादुर खुरो के स्थान पर सिन्ध-मन्त्रिमंडल के छठें मन्त्री की हैसियत से अपने पद की शपथ ली। वह सिंध मंत्रिमंडल में गैर-मुस्लिम लीगी सदस्य की हैसियत से शरीक हुए हैं। स्मरण होगा कि खाँ बहादुर खुरो मि० अल्लाबख्श की हत्या के सम्बन्ध में गिरफ़्तार कर लिये गये थे।

सर तेजबहादुर सप्रू; डा० एम० आर० जयकर और सर जगदीशप्रसाद समझौता कमेटी के सिलसिले में पिछले कुछ दिनों से लाहौर गये थे। प्रेस के प्रतिनिधि के मिलने पर सर तेजबहादुर सप्रू ने कहा कि समझौता कमेटी की ओर से महात्मा गांधी के पास जो प्रश्नावली भेजी गई थी उसके सम्बन्ध में मैं गांधी जी का उत्तर शीघ्र पाने की आशा करता हूँ।

* * *

अखिल भारतीय पत्र-संपादक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री एस० ए० ब्रेलवी, जिन्हें २९ जनवरी को कलकत्ते पहुँचने पर हृदय रोग का दौरा हो गया था, तब से अब तक बीमार पड़े हैं। डा० गिल्डर ने उन्हें पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी है और यह आशा नहीं की जाती कि वे कुछ समय तक अपना कार्य पुनः आरम्भ करने में समर्थ होंगे।

* * *

अमेरिकन युद्ध-विभाग ने घोषित किया है कि भारत के अड्डों से उड़कर भारी किस्म के अमेरिकन हवाई किलों ने दिन के समय सिंगापुर पर हमला किया। बताया गया है कि हमला हवाई किलों के एक भारी दल ने किया, जिसका आमतौर से यह अर्थ लगाया जाता है कि उसमें १५० से अधिक वायुयानों ने भाग लिया।

* * *

नई दिल्ली की खबर है कि गांधी जी के दौरे का प्रोग्राम उत्तर-भारत में रद्द कर दिया गया है, वे अब अप्रैल के प्रथम सप्ताह में बम्बई जायँगे। कस्तूर बा स्मारक कोष के ट्रस्टियों की बैठक मार्च में दिल्ली में होने वाली थी पर अब संशोधित प्रोग्राम के अनुसार ट्रस्टियों की वह बैठक १ से ४ अप्रैल तक बम्बई में होगी और गांधी जी उसमें शरीक होंगे।

सुदूरपूर्व के युद्ध का समाचार है कि एडमिरल निमिज की आज की विज्ञप्ति का कहना है कि इवोजिमा द्वीप में अमेरिकन और जापानी सेनायें भयंकर युद्ध में संलग्न हैं। दिन के समय रण-पंक्ति में कोई हेर-फेर नहीं हुआ है। हवाई मैदान के दक्षिण-पूर्वी छोर पर अमेरिकनों का हमला आरम्भ हुआ है। इस हमले में टैंकों, भारी किस्म के तोपखानों तथा विमानवाहक जहाजों से उड़े हुए वायुयानों की सहायता प्राप्त हो रही है।

* * *

जापानी रेडियो ने सूचित किया कि टर्की के विरुद्ध जापान शीघ्र ही युद्ध की घोषणा करेगा और जापानी वैदेशिक विभाग इस सम्बन्ध में आवश्यक कार्रवाइयाँ कर रहा है।

* * *

म्यूनिक में नाजियों की एक सभा में हिटलर का एक भाषण पढ़कर सुनाया गया। उस भाषण में हिटलर ने कहा है—आज फिर जर्मन जाति के भाग्य का निबटारा हो रहा है। कई नाजी क्रांति ने जर्मन राष्ट्र के ढाँचे को न बदला होता तो आज जर्मन जाति इस प्रकार के संकट का सामना करने योग्य कदापि न होता। जो राक्षसी मैत्री हमारे अस्तित्व को मिटाने की धमकी दे रही है उसका विरोध करने की शक्ति नाजी राज्य के बिना जर्मनी को प्राप्त नहीं हो सकती थी।

* * *

यहूदी बोल्शोविस्टों तथा उनके पूर्वी पिट्ठुओं के खिलाफ आज केवल एक ही बात कारगर हो सकती है—अंधविश्वास-पूर्ण दृढ़ निश्चय और जीवन की रक्षा के लिए ईश्वर-द्वारा प्रदत्त शक्ति के अंतिम अवशेष का प्रयोग। जो इस बात से मतभेद रखते हैं वे निश्चय विनाश को प्राप्त होंगे। बूर्ज डेमाक्रेटिक राष्ट्रों के बावजूद आज विजय हमारी ही रहेगी। नाजी जर्मनी इस युद्ध को अंत तक ले जायगा। कोई भी शक्ति हमें दुर्बल नहीं बना सकेगी।

चीन में प्रधान जापानी सेनापति जनरल हाता।

* * *

न्यूयार्क (हवाई डाक-द्वारा) केलिफोर्निया के एक कारीगर ने ऐसी मोटर का आविष्कार किया है जो हवा के बल से दौड़ती है और उसमें न कोई आवाज होती है और न धुआँ ही निकलता है। हवा पैदा करने के लिए एक छोटी-सी मशीन रहती है। टंकी में जिसमें अन्य मोटरों के अन्दर पेट्रोल रहता है, हवा खूब दबाकर भरी जाती है और वही चलने की शक्ति प्रदान करती है। मोटर का ऊपरी हिस्सा तथा सामने का हिस्सा (डैश-बोर्ड) चमकते हुए एक विशेष प्रकार के शीशे का बना होता है।

जब से आविष्कार करनेवाले ने रेडियो पर अपनी मोटरकार का परिचय दिया है उसके पास प्रतिदिन औसतन ५०० पत्र आ रहे हैं। दबी हुई या ठोस हवा बनाने के लिए 'बूटेन' नामक एक तरल रासायनिक पदार्थ की जरूरत पड़ती है। एक गैलन ६ आने में ही सुलभ है और एक गैलन ६० मील तक के लिए काफी है।

जनरल आइसेन होवर जल और वायुसेनाओं के सेनापतियों से जर्मन-पराजय के सम्बन्ध में परामर्श कर रहे हैं।

इटली में जर्मन प्रधान सेनापति कैसलरिंग (दाहने) अपने एक सहयोगी सेनापति से परामर्श कर रहे हैं।

ब्रिटिश सेनापति जनरल बिल्सन आजकल के युद्ध में निपुण सेनापति समझे जाते हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

याल्टा सम्मेलन में क्या हुआ?

याल्टा में रूजवेल्ट-चर्चिल और स्टेलिन का जो सम्मेलन हो चुका है, उस पर तरह-तरह के अन्दाज लगाये जा रहे हैं। मित्र-राष्ट्रों की आलोचनायें हो रही हैं और तर्कों से तीनों में पहला स्थान स्टेलिन को दिया जा रहा है। स्टेलिन ने इस बार अपनी कूटबुद्धि से दोनों साम्राज्यवादी नेताओं की कूट-बुद्धि पर विजय प्राप्त की है। भविष्य में रूजवेल्ट-चर्चिल और स्टेलिन तीनों की राय अन्तराष्ट्रीय निर्णयों में बराबरी की समझी जायेगी। स्टेलिन ने अमरीका और ब्रिटेन के गुट्ट को तुड़वा दिया है। पोलैंड के संबन्ध में भी रूस की ही विजय हुई है। पौलैंड की भगोड़ सरकार, जो इस वक्त लंदन में विराजमान है, महत्वहीन बना दी गई है। लड़ाई के हरजाने के मामले में भी स्टेलिन की ही प्रधानता रहेगी क्योंकि यह निश्चय हुआ है कि क्षतिपूर्ति कमीशन का प्रधान कार्यालय मास्को में रहे। इसका अर्थ स्पष्ट है कि युद्ध के बाद हरजाने की रकम निश्चित करने तथा उसके बटवारे में भी रूस की प्रधानता होगी। दूसरा स्थान रूजवेल्ट को दिया जाता है क्योंकि उन्होंने यह सोचकर कि कहीं रूस और इँगलैंड मिलकर कुछ घोटाला न कर बैठें तीनों के साथ साथ कार्य करने के सिद्धांत को स्वीकार करा लिया है। यही नहीं रूजवेल्ट की इच्छानुसार सेन्टफ्रांसिस्को (अमरीका) में होनेवाले त्रिराष्ट्र सम्मेलन में चीन को सम्मिलित होने का निमंत्रण स्वीकृत किया गया है। सब से बड़ी बात तो यह है कि 'अटलांटिक चार्टर' को योरोप के अधिकृत देशों की भावी व्यवस्था का आधार मान लिया गया है। तीसरा स्थान चर्चिल को दिया जा रहा है। वास्तव में ब्रिटेन इस बार अपनी कूटनीति में सफल नहीं हुआ। हाँ यदि याल्टा सम्मेलन में मार्शल स्टेलिन गैरहाजिर हो जाते तब संभव था ब्रिटेन अपनी इच्छा की पूर्ति किसी कदर कर ले जाता। इस बार मिस्टर चर्चिल घाटे में रहे। बात ठीक भी है क्योंकि जब तीनों घाघ एकट्ठे हो गए तब ठठेर-ठठेर में अदला-बदली की संभावना कैसे की जा सकती थी?

याल्टा सम्मेलन में और जो भी हुआ हो किन्तु एक बात मार्के की यह हुई है कि जर्मनी के सम्बन्ध में जो समझौता या पारस्परिक निश्चय हुआ है, वह गुप्त रखा गया है। केवल इतना ही प्रगट किया गया है कि जर्मनी को पराजित करना तीनों राष्ट्रों का सम्मिलित उद्देश्य है। जर्मनी के पराजित हो जाने पर उसके संबन्ध की शर्तें प्रकाशित होंगी, अभी नहीं। इसमें जो कुछ भी रहस्य हो किन्तु जान यह पड़ता है कि यह शर्तें इसलिये गुप्त रखी गई हैं कि जिससे उन राष्ट्रों पर कोई प्रभाव न पड़ने पाये जिन्हें जर्मनी से मित्रराष्ट्रों ने मुक्त कर दिया है। जैसे फ्रांस, इटली, ग्रीस, बेल्जियम, पोलैण्ड आदि। यदि जर्मनी की भावी शर्तों को लेकर कोई बखेड़ा खड़ा हुआ तो उसका प्रभाव जर्मन-पराजय पर भी तत्काल किसी हद तक पड़ने की सम्भावना हो सकती है। दूसरा अन्दाज यह भी है कि जर्मनी के सम्बन्ध में अभी कोई वास्तविक निर्णय हुआ ही नहीं। इसीलिए उसे अभी रहस्यपूर्ण बनाये रखना ही अधिक उत्तम समझा गया है। यह भी मित्रराष्ट्रों का एक पैंतरा हो सकता है। यह भी हो सकता है कि कोई रूपरेखा तैयार कर ली गई हो और उस पर कोई अन्तिम निर्णय न हुआ हो और सेन्ट फ्रांसिस्को में इस पर अन्तिम निर्णय किया जाय।

जो कुछ भी हो किन्तु याल्टा सम्मेलन कई दृष्टियों से रहस्यपूर्ण रहा और सम्मेलन में साम्राज्यवाद पर समाजवाद की एक प्रकार से विजय ही रही। इँग्लैंड के सुप्रसिद्ध विचारक जार्ज बर्नर्डशा ने तो इसे 'परियों की कहानी' से सम्बोधित किया है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि इस सम्मेलन में स्टालिन नफे में रहे तथा रूजवेल्ट और चर्चिल घाटे में। वास्तव में बात है भी यही। ब्रिटेन के टोरी-शासक तथा अमरीका के धनकुबेर यह समझते हैं कि उनके समान न किसी में बुद्धि है और न कूटनीति। संसार की जनता के धन पर वह निमन्त्रण रखें और व्यापार पर भी उन्हीं का अनुशासन हो। किन्तु अब युग बदल रहा है। फासिज्म का अन्त तो अवश्यम्भावी है किन्तु साम्राज्यवादी शासन-नीति का चोगा भी अब दुनिया अपने ऊपर से उतार फेंकने के लिए उतावली हो रही है।

* * *

तीसरे दर्जे के यात्री

केन्द्रीय असेम्बली में रेलवे-बजट के अवसर पर होनेवाले विवादों में तीसरे दर्जे के यात्रा करनेवालों के सम्बन्ध का विवाद सार्वजनिक दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण है। यह विषय प्रतिवर्ष रेलवे-बजट के अवसर पर उपस्थित होता है और गरमागरम बहस के बाद समाप्त हो जाता है किन्तु अब तक सरकार की ओर से इस सम्बन्ध में क्या सुधार किया गया, उसका कोई प्रत्यक्ष दर्शन आज तक देखने में नहीं आया है। वास्तव में आये दिन रेलवे जो मुनाफा कमा रही है उसका अधिकांश श्रेय तीसरे दर्जे में यात्रा करनेवाले करोड़ों साधारण जनता को प्राप्त है। रेलों में तीसरे दर्जे की यात्रा कितनी कष्टप्रद तथा दुर्दशा-ग्रस्त है यह किसी से छिपा नहीं है। सरकार की ओर से यह कहा जाता है कि युद्ध के कारण डिब्बों और इञ्जनों की कमी है, और इसी लिए कम से कम यात्रियों को यात्रा करनी चाहिए किन्तु इतना कह देने और प्रचार-कार्य करने से तो लोगों की आवश्यकताओं में कमी नहीं हो जाती? लोग आवश्यकतावश ही यात्रा करते हैं, निर्धन लोगों के पास इतना धन नहीं भरा है कि वह रेलवे के हवाले करते हुए किसी प्रकार के पुण्य का अनुभव करते हों? आज करोड़ों रुपया रेलवे बोर्ड यात्रियों से प्राप्त करके जमा करती और प्रति वर्ष ३२ करोड़ रुपया भारत सरकार को देती है। वास्तविक बात यह है कि सरकार का जैसा जैसा रवैया अन्य सार्वजनिक कामों में है वैसा ही रेलवे के तीसरे दर्जे के यात्रियों के सम्बन्ध में भी है। लाख कहिए किन्तु कोई सुनवाई नहीं। इसलिये कहना पड़ता है कि जब तक राष्ट्र की बागडोर उत्तरदायित्वपूर्ण शासन के सिपुर्द नहीं होती तब तक इसी प्रकार से सार्वजनिक हितों की अवहेलना होती रहेगी।

किसान-मजदूर और प्रजा-राज्य

'गांधीवादी समाजवाद' का क्या नया आदर्श है

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

महात्मा गांधी ने 'मजदूर-किसान और प्रजारा का नवीन सिद्धांत जनता के सामने प्रस्तुत किया है।

हाल में हुई बम्बई की अखिल भारतीय विद्यार्थी कांग्रेस ने भारत के विद्यार्थियों के सम्मुख एक नया मार्ग तथा एक नूतन आदर्श प्रस्तुत किया है। विगत अगस्त आन्दोलन में जिस देशप्रेम की भावना से प्रेरित होकर विद्यार्थियों ने राष्ट्रीयता के युद्ध में भाग लिया था, उसी ने विकसित होकर बम्बई में, राष्ट्रीयता की एक नई नींव खड़ी की है। वर्षों से भारतीय राष्ट्रीयता, गांधीवाद, साम्यवाद, रैडिकलवाद, उदारवाद, अनुदारवाद, पूँजीवाद तथा और भी न जाने कितने वादों के दलदल में फँसकर अपनी क्रियाशीलता खो चुकी थी। पर अगस्त-आंदोलन के पश्चात् गांधी जी की पुष्ट विचार-धारा और समाजवादी सिद्धान्तों का एक अपूर्व सामंजस्य देखने में आया तथा एक नये प्रकार के वाद को, जिसका नाम 'गांधीवादी समाजवाद' कहा जा सकता है, जन्म हुआ। किसान-मजदूर-प्रजा-राज्य इसी गांधीवादी समाजवाद का राजनीतिक आदर्श कहा जा सकता है। इन नये सिद्धान्तों के अनुसार चलने पर जनता के सब वर्गों को सब प्रकार के शोषण से मुक्त होने की आशा की जाती है और इसी उच्च दृष्टिकोण को लेकर भारतीय विद्यार्थियों ने इसे अपना राजनीतिक आदर्श माना है।

आज भारत के किसानों को स्वतन्त्रता तथा अपने पेट भर सकने के लिए पर्याप्त भूमि की सर्वप्रथम आवश्यकता है और यह उचित ही है। जैसा कि गांधी जी ने कहा है कि किसान पृथ्वी का सबसे आवश्यक अंग है। उसका अपनी भूमि पर स्वाभाविक तथा जन्मसिद्ध अधिकार है। पर उसे भूमि पर अधिकार के सिवाय राजनीतिक अधिकार भी मिलना आवश्यकीय है। सोवियट रूस में किसान को स्टालिन की सार्वभौम सत्ता के सम्मुख अपनी समस्त सम्पत्ति रख देनी पड़ी और उसका कारण यही था कि शासन-सत्ता क्रेमलिन की केन्द्रीय सरकार के ही हाथ में रही। इसलिए किसान-मजदूर-प्रजा-राज्य के आदर्श के अनुसार किसानों को सम्पत्ति और शासन-सत्ता दोनों पर उचित अधिकार मिलेगा। जमींदारी प्रथा को पूर्णतया त्यागना होगा।

पर किसानों में नवीन जागृति लाने में केन्द्रीय सरकार का कोई महत्त्वपूर्ण भाग नहीं होगा। सारा देश किसान-कांग्रेस, विद्यार्थी-कांग्रेस और मजदूर-कांग्रेस के द्वारा संगठित, छोटे छोटे वर्गों में विभाजित कर दिया जायगा। प्रत्येक किसान, मजदूर या विद्यार्थी को अपने व्यक्तित्व को यथाशक्ति सचेष्ट, क्रियाशील तथा उद्योगी बनाना पड़ेगा। सामूहिक कार्य करने की योग्यता प्राप्त करने तथा किसान-मजदूर-विद्यार्थी नेतृत्व का शिक्षण देने के लिए प्रत्येक गाँव शिक्षणालय माना जायगा। पर ये समस्त संगठन, प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली के अनुसार अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा उसके अनुशासन के ही माननेवाले होंगे।

आज संसार के सबसे बड़े सामाजिक दोष फासिज्म या पूँजीवाद ही नहीं हैं। साम्राज्यवाद तो और भी पीछे पड़ जाता है। ये तीनों [illegible] विश्व में जोरों से चलते हुये किसान-मजदूर वर्ग के औद्योगि वर्ग-द्वारा शोषण के अंग-मात्र हैं। जब संसार का किसान-मजदूर तथा अन्य श्र जीवी वर्ग, विश्व की पूर्ण जन-संख्या तीन-चौथाई से भी अधिक है, औद्योगि वर्ग की जन-संख्या केवल उन पूँजीपति तक ही सीमित है, जिन्होंने समस्त आवश्य कीय वस्तुओं के बाजार पर अपनी पूँ या शासन सत्ता की शक्ति द्वारा एकाधिक स्थापित कर लिया है। भारत की आजा का आन्दोलन विश्व में होने वाले उस महा संघर्ष का एक अंग-मात्र है, जिसमें संसार का श्रमजीवी तथा गुलाम-औ निवेशिक वर्ग, विश्वव्यापी पूँजीवाद औ साम्राज्यवाद से टक्कर ले रहा है। य युद्ध राजनीतिक-स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लि ही नहीं, अपितु आर्थिक तथा सामाजि बन्धन-मुक्ति के लिए भी है। अन्तर्राष्ट्रीयत और राष्ट्रीयता की इसी कसौटी पर क जाकर किसान-मजदूर-प्रजा-राज्य का ना लगाया गया है।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रख हुए विद्यार्थी-कांग्रेस और किसान-कांग्रेस किसान-मजदूर-प्रजा-राज्य के आदर्श स्वीकार किया है। अखिल-भारतीय विद्या कांग्रेस के सभापति पं० रामसुमेर शुक्ल हाल ही में कलकत्ता में अपने एक भाष में कहा था कि 'किसान-मजदूर-प्रजा-रा प्राप्त करते ही भारत स्वतन्त्रता की चर सीमा पर पहुँच जायेगा।' प्रो० एन जी० रंगा ने भी इसी दृष्टिकोण को ले यह घोषणा की थी कि 'इस आदर्श के प्र कर लेने पर भारत के किसान व मजदू संसार के सब किसानों से अधिक सुखी सकेंगे।'

इसी लिए आज हम सब लोगों चाहिये कि हम यथाशक्ति किसान-मजदू प्रजा-राज्य के सच्चे अर्थ को समझ क पूर्ण रूप से गांधी जी, कांग्रेस-किसान-कां तथा विद्यार्थी-कांग्रेस के ऊपर विश्वास रख अपने कदम बढ़ावें तथा इस प्रकार शी ही राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजि स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायक बनें।

बर्लिन की ओर बढ़नेवाले !

सेनानायक फील्ड मार्शल जुकोव कौन हैं ?

लेखक श्री महावीर अधिकारी

बर्लिन की ओर सोवियट फ़ौजें तेज़ी के साथ बढ़ रही हैं, इसका श्रेय रूसी सेनानायक मार्शल जुकोव को प्राप्त है। इस लेख में श्री अधिकारी जी ने रूसो-जर्मन युद्ध पर विहग दृष्टि डालते हुए मार्शल जुकोव के सैनिक जीवन रूपी रण कौशल पर सुंदर प्रकाश डाला है। लेख रोचक और अत्यन्त सामयिक है।

अपने एक भाषण में जर्मन सेनानायक लेफ़टी जनरल डीटमार ने जर्मनी के पूर्वी मोर्चे पर होनेवाले तुमुल-संग्राम के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए रेडियो पर भाषण दिया था कि जर्मनी के भाग्य का निर्माण करनेवाला युद्ध ओडर नदी के किनारों पर ही होगा ओडर नदी पर स्थित कास्ट्रिन—जहाँ रूसी सेनायें लड़ रही हैं—ठीक बर्लिन के सामने पड़ता है। इस समय समस्त सैनिक-क्षेत्रों में यह अन्दाज लगाया जा रहा है कि रूसी सेनाएँ ही अमरीकन और ब्रिटिश सेनाओं से पहले बर्लिन पहुँचेंगी। रूसी सेनाओं की इस धीर गति और असाधारण सफलता का श्रेय मार्शल ग्रिगरी जुकोव को ही है जो वारसा के निकट विश्चुला से ३०० मील तक जर्मनों को खदेड़कर विजय का सेहरा अपने लिए प्राप्त करने के अति निकट आ गये हैं।

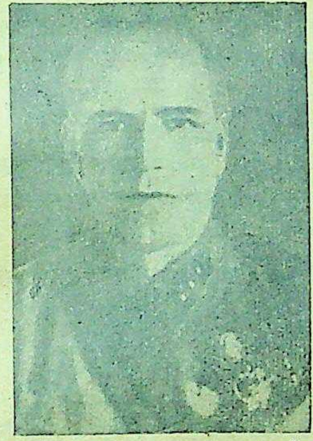

बर्लिन की ओर बढ़नेवाले रूसी सेनापति फील्ड मार्शल जुकोव

यह भी समाचार प्राप्त हुए हैं कि बर्लिन के पूर्व में एक स्थान पर मार्शल जुकोव ने ओडर को पार भी कर लिया है। मार्शल जुकोव वर्तमान-स्थिति के मध्य जिस प्रकार आगे कदम बढ़ाते ही जा रहे हैं उन्हें देखने से हम उनकी सैनिक योग्यता और व्यक्तिगत शौर्य की वास्तविकता को अधिक पहचान सकते हैं। जिस तेजी से रूसी सेनायें आगे बढ़ी हैं और आगे भी आक्रमण करने पर आमादा हैं उससे पता चलता है कि मार्शल जुकोव ने अपनी पृष्ठ भूमि को यातायात सुविधाओं से पूर्णरूप से अत्यल्पकाल में संगठित कर लिया है। तथापि हम यह कहने का साहस नहीं कर सकते कि जर्मनी इतने धीरे से हथियार डाल देगा ? अपनी पितृभूमि पर शत्रु को देखकर भी वह अपनी प्रिय राजधानी को छोड़कर भागेगा नहीं। अभी तो वह समय आना है जब जर्मनी गुरिल्ला युद्ध करेगा, जब बुडापेस्ट से भी भयङ्कर और उग्ररूप में हाथों-हाथ युद्ध होगा, जब गाजर-मूली की तरह दोनों ओर के सैनिक कटकर गिरेंगे और जर्मन-युद्ध-संचालक अमानुषिक साधनों का प्रयोग करने पर उतर आयेंगे किन्तु यह नहीं कि मार्शल जुकोव इन खतरों से अवगत नहीं हैं। ऐसी स्थिति में संसार के सबसे शक्तिशाली और दुर्दान्त शत्रु को हथियार डालने पर बाध्य करनेवाले वीर रूसी सेनानायक के जीवन के विषय में हमें न केवल व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करने की उत्सुकता स्वाभाविक है।

मार्शल जुकोव रूसी सेनानायकों में श्रेष्ठ सेनानायक हैं। उनकी आयु इस समय ४६ वर्ष की है और आज उनकी छाती पर सुतोरोव-फस्ट-क्लास और सोवियत यूनियन के और कितने ही प्रतिष्ठा-सूचक तमगे लगे हुए हैं। मास्को के "प्रवदा" नामक पत्र ने इन्हें टैङ्क-युद्ध और पैराशूटों का असाधारण विशेषज्ञ पुकारा है। १६४० के वसंतकाल में जिन तीन सेनानायकों को जनरल बनाया गया था उनमें जुकोव भी थे।

नाजियों को वह सदैव अविश्वास की दृष्टि से देखते रहे हैं। जिस समय १६३६ में रूस-जर्मन अनाक्रामक-संधि पर हस्ताक्षर हुए थे उस समय भी जुकोव ने इसका विरोध किया था। इनके विरोध की वास्तविकता तब सिद्ध हुई जब दो वर्ष बाद जून १९४१ में जर्मनी ने रूस की पीठ में छुरा भोंक दिया।

रूस के अधिकांश सेनानायक किसानों में से पैदा हुए हैं और उसके लिए ग्रिगरी कोन्सटन-इनोविच—जुकोव इसके अपवाद नहीं हैं। १९१५ में आपने सेना में प्रवेश किया था। आपने प्रथम महायुद्ध में बहुत थोड़ा भाग लिया था। कुछ लोग कहते हैं कि जार की सेना में गदर करनेवालों में भी आप रहे हैं। सन् १९३२ तक आपको असाधारण प्रतिभासम्पन्न सैनिक की दृष्टि से नहीं देखा जाता था। इसके बाद मार्शल शेपेश्नीकोव के साथ रहकर आपने टैंक और पैराशूट युद्ध का ज्ञान प्राप्त किया। १६३८ में मंगोलिया में आपने जापानियों के विरुद्ध युद्ध किया और इसके बाद रूस-फिनिश-युद्ध में आपने अपनी योग्यता का उपयोग किया। इस समय रूसी सेनानायकों ने इनकी प्रतिभा को स्वीकार करना आरम्भ कर दिया था। १६४१ में स्टालिन ने आपको चीफ आफ जनरल-स्टाफ और रक्षा के वाइस कमीसार के स्थान पर नियुक्त कर दिया। यही समय था जब इन्होंने सैन्य-संगठन के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा प्राप्त की है। आपका नारा था कि सेना में कार्य करनेवाले हर सैनिक को फिट होना चाहिए। इन्होंने सैनिकों को ड्रिल-जमनास्टिक और अन्य शारीरिक चुस्ती के व्यायाम कराये। इन्हें युद्ध करने में हार्दिक आह्लाद प्राप्त होता है और संकटापन्न स्थिति में से निकालने के लिए, वह सदैव उत्सुक रहते हैं। १६४१ में जब मास्को के आस-पास खतरा उत्पन्न हो गया था तो मार्शल तिमोशेंकू के स्थान पर आपको ही

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिये।

कम्यूनिस्ट और कम्यूनिस्ट पार्टी

भारतीय राजनीति में उसके महत्त्वपूर्ण कार्य क्यों ?

लेखक, प्रोफ़ेसर प्रकाशचन्द्र गुप्त, एम० ए०

'देशदूत' के पिछले अंक में हमने श्रीनारायणदत्त तिवारी का एक लेख प्रकाशित किया था जिसमें कम्यूनिस्ट तथा कम्यूनिस्टपार्टी की वर्तमान नीति को कांग्रेस तथा राष्ट्रीय हित के लिये घातक बतलाया गया था। किन्तु यह लेख पूर्व लेख के विरोध में है। विद्वान् लेखक ने कम्यूनिस्ट पार्टी की राष्ट्रीयनीति का स्पष्टीकरण किया है और यह भी बतलाया है कि राष्ट्रीयता के मार्ग में कम्यूनिस्टों की नीति हितकर है अहितकर नहीं। पाठकों को वर्तमान राजनीतिक क्षेत्र की दोनों विचारधाराओं के समझने में इस प्रकार के लेखों से विशेष सहायता मिलेगी।

पिछले वर्षों में भारत और समस्त संसार में समाजवाद की शक्ति बढ़ी है, और वह शक्ति निरन्तर बढ़ती ही जायगी। उसकी गति में अवरोध नहीं पड़ सकता, क्योंकि समाजवाद जनता के हितों की रक्षा करता है। संसार के शोषित और पीड़ित, जिनकी संख्या अगणित है, यह समझते हैं।

संसार के एक ही भाग में समाजवाद की स्थापना हुई है। सोवियट भूमि समाजवाद का गढ़ है, उसकी रक्षा समाजवाद की रक्षा है, और उसकी हानि समाजवाद की अवनति। किन्तु समाजवाद के शत्रु सोवियट भूमि की निरन्तर निन्दा करते हैं, और उसकी शक्ति बढ़ती देखकर कुढ़ते हैं। अपने भावों को छिपाकर वे ट्रॉटस्की और एम० ए० राय की प्रशंसा करते हैं।

"विश्व-क्रान्ति" के नारे को स्टालिन ने जब स्थगित करके "एक देश में समाजवाद" का नारा प्रस्तुत किया, तब समाजवाद के शत्रु 'विश्व-क्रान्ति' और ट्रॉटस्की के समर्थक बन गये। 'एक देश में समाजवाद' की शक्ति दृढ़ करके, और युद्ध की अग्नि में आहुति बनने से समाजवादी सोवियट भूमि को बचाने के लिए जब लाल सेना आगे बढ़ी, तब 'विश्व-क्रान्ति' के समर्थक सोवियट भूमि को साम्राज्यवादी कहने लगे। यदि लाल सेना आगे नहीं बढ़ती है, तो स्टालिन राष्ट्रवादी है; यदि लाल सेना आगे बढ़ती है, तो स्टालिन साम्राज्यवादी है। लाल सेना कुछ भी करे, वह अनुचित करती है।

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने साम्राज्यवादी दमन की अग्नि समस्त देश के साथ सही है। कम्यूनिस्ट कार्य-कर्त्ताओं ने अनेक शारीरिक कष्ट उठाकर भारतीय जनता की शक्ति संगठित की है। भारतीय राष्ट्र के मजदूर और किसान-वर्गों को उन्होंने संगठित किया है। यदि अपनी नीति वे ईमानदारी से जनता के सामने रखते हैं, और उसके लिए तर्क और युक्ति देते हैं, तो इसका उत्तर गाली-गलौज से नहीं दिया जा सकता, न अस्पष्ट आरोपों से कि "सुनते हैं, श्री जयप्रकाश नारायण को भी इन्होंने ही पकड़वा दिया।"

अन्त में भारतीय जनता ही इसका निपटारा करेगी कि कम्यूनिस्ट उसके सच्चे हितू और सेवक हैं अथवा नहीं ? हमें देखना है कि आज उनकी नीति क्या है, और वह तर्क-संगत है अथवा नहीं ?

कांग्रेस ने बम्बई के प्रस्ताव में अपनी नीति स्पष्ट की है। वह नीति इस प्रकार है—

हिटलर, मुसोलिनी और जापान मानवता के शत्रु हैं। इस गुट का नाश जरूरी है। हम अपने संपूर्ण बल से इन हिंसक पशुओं के शिकार में योग देंगे, किन्तु भारतीय जनता की शक्ति बिना राष्ट्रीय सरकार बने संगठित नहीं हो सकती। जापान को भारत की सीमाओं से पीछे हटाना जरूरी है, किन्तु भारतीय सरकार ही जनता की पूर्ण शक्ति का प्रयोग कर सकती है।

इस नीति को भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी अक्षरशः स्वीकार करती है। हम रूस, चीन और संसार की जनता की विजय चाहते हैं, इस नारे को कम्यूनिस्ट 'लोक-युद्ध' कहते हैं। हम जर्मनी और जापान की पराजय जरूरी समझते हैं, यही इस नारे के अर्थ हैं।

भारतीय कम्यूनिस्ट राष्ट्रीय सरकार के पक्ष में हैं। वे ब्रिटिश सरकार के कदापि समर्थक नहीं। आज भी कम्यूनिस्ट पार्टी के कार्य-कर्त्ता सरकार के कोप-भाजन बनते हैं, और निरन्तर सरकार उनके मार्ग में रुकावट डालती है। आज कम्यूनिस्ट गैर-कानूनी नहीं है; किन्तु जिस प्रकार कानूनी काल में भी कांग्रेस सरकार की कोप-दृष्टि से नहीं बचती, वही हाल आज कम्यूनिस्ट पार्टी का है। इसका प्रमाण कम्यूनिस्ट बंदियों के अंक देकर दिया जा सकता है।

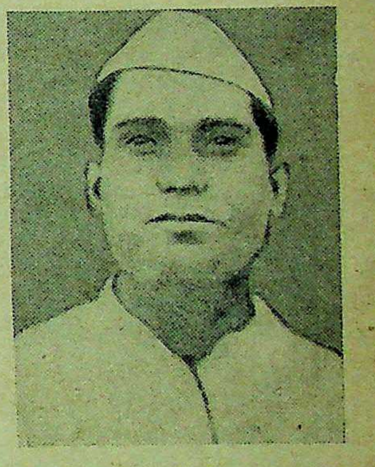

राष्ट्रीय समाजवादी नेता श्री जयप्रकाश नारायण जो इस वक्त आगरा सेन्ट्रल जेल में हैं।

श्री एम० एन० राय का दल ब्रिटिश सरकार की सत्ता स्वीकार करता है, उससे पेंशन पाता है; उसका कृपा-भाजन है। वह युद्ध में पूर्ण सहयोग देता है। किंतु कम्यूनिस्टों का पूर्ण सहयोग राष्ट्रीय सरकार को ही मिल सकता है। तभी वे सेनाओं में भर्ती होंगे। ब्रिटिश सरकार को भारतीय युद्ध-संचालन के योग्य वे नहीं मानते।

राष्ट्रीय सरकार किस प्रकार बने ? कांग्रेस सरकार पर दबाव डालना चाहती थी, किन्तु जापान की सहायता करना उसकी कल्पना में कदापि न था। वल्लभभाई पटेल कहते थे, सप्ताह भर का संक्षिप्त, तीव्र

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए।

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री लीला चिटनिस!

फिल्म और अभिनय कला पर मेरी मनोरंजक इंटरव्यू

लेखक, श्रीयुत उमेश जोशी

[१]

मैं उन दिनों बम्बई में था। भारतीय रंगमंच की लोकप्रिय अभिनेत्री श्रीमती लीला चिटनिस से भेंट करने के लिये मैं उनकी कोठी पर ठीक साढ़े नौ बजे पहुँचा। यही समय मिलने के लिये पहिले ही से निश्चत हो गया था। परिचय मेरा आपसे एक फिल्म-स्टूडियो में हो गया था। सौभाग्य से आप स्टूडियो में ही मिल गईं थी। डायरेक्टर मिस्टर मुकर्जी ने मेरा परिचय लीला चिटनिस से कराया था।

लीला चिटनिस का “ड्राइंग-रूम” “परशियन” स्टायल का सजा हुआ था। जिस वक्त मैं उनकी कोठी पर पहुँचा, उस वक्त वह आराम कुर्सी पर लेटी हुई “रेडियेन्ट-लाइफ” नामक पुस्तक पढ़ रही थीं। ड्राइंग-रूम का दरवाजा खुला हुआ था।

सुप्रसिद्ध और लोकप्रिय फिल्म-अभिनेत्री लीला चिटनिस।

“अच्छा आप आ गये, बैठिये,” आराम कुर्सी की ओर निर्देश करते हुये लीला चिटनिस ने कहा। मैं कुर्सी पर बैठ गया। मैंने देखा—युगल वेणियाँ रंग-बिरंगे फूलों से गुँथी हुई उनके सुन्दर गले का आलिंगन कर रही थीं। चौड़ी लाल किनारी की साड़ी, उनके सौन्दर्य की दिव्य-आभा को बढ़ा रही थी। मुख पर मुस्कराहट की ज्योति छिटक रही थी।

लीला चिटनिस का असली नाम लीला नागरकर है। आप का विवाह मिस्टर चिटनिस से हुआ था, इसलिये आप श्रीमती लीला चिटनिस के नाम से सिनेमा-संसार में विख्यात हुईं। आपने अब तक अनेक फिल्मों में कार्य किया है। आप केवल अभिनेत्री ही नहीं बल्कि कहानी लेखिका, फोटोग्राफी की ज्ञाता, कुशल निर्देशिका एवं “मेक-अप” विशेषज्ञा भी हैं। आजकल आप सिनेमा-संसार में बड़ी लोकप्रिय हैं। आप मध्य-प्रान्त की रहनेवाली हैं। उच्च घराने में आपका जन्म हुआ, आर्थिक स्थिति घर की अच्छी थी, इसलिये आपका रहन-सहन प्रारम्भ से ही अच्छा रहा। हाजिर जवाबी की प्रतिभा आप में अधिक है? आपके लोकप्रिय चित्र हैं—“कंगन” “बंधन” “झूला” “किसी से न कहना” “किरण” इन्हीं फिल्मों ने आपको विशेष लोकप्रिय बनाया है। मैंने आप से कई प्रश्न किये। आपने जो उत्तर दिया वह इस प्रकार है—

प्रश्न—आपने फिल्मी जीवन ही क्यों पसन्द किया? बी० ए० पास करने के बाद आपके लिये तो अनेक क्षेत्रों में जाने की सुविधा थी?

उत्तर—हाई स्कूल से निकल कर कालेज में जब मैं दाखिल हुई, तब तक मुझे स्वप्न में भी आशा न थी कि मैं सिनेमा की दुनिया में प्रवेश करूँगी। सिनेमा की विशेष शौकीन मैं नहीं थी, लेकिन संगीत पर मेरा अवश्य प्रारम्भ से ही ममत्व रहा और यह ममत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया। मैं गाने में इतनी दिलचस्पी लेने लगी कि कालेज के “ब्रेक” में भी एकान्त में जीवन के मधुर स्वप्नों का गीत अलापा करती। उसी समय से मेरी रुचि अभिनय कला की ओर आकृष्ट हुई। मेरे कालेज में ड्रामा हुआ और मेरा अभिनय सर्वश्रेष्ठ साबित किया गया। मेडिल भी मुझे प्राप्त हुआ। यही मेडिल मेरे प्रथम अभिनय की यादगार है। उसी वक्त से मैं समझने लगी कि मेरे हृदय के वातायन से निकले हुये शब्दों के छन्दों में एक मधुर झंकार है। तभी मैंने पूर्ण रूप से समझा कि मैं भी “कलाकार” बन सकती हूँ। बी० ए० में मैं फस्ट आई। इसलिये मेरे पास अनेक क्षेत्रों से “ओफर” आने लगे। लेकिन मैंने फिल्मी जगत् में प्रवेश करने का पूर्ण निश्चय कर लिया था। जिस वक्त मैंने सिनेमा की दुनिया में प्रवेश किया, उस वक्त सिनेमा-संसार में पढ़ी-लिखी अभिनेत्रियाँ नहीं के बराबर थीं। इसलिये मुझे सिनेमा में प्रवेश करने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

प्रश्न—आपके अभिनय की जनता में बड़ी कद्र है। आँखों-द्वारा भावों का प्रदर्शन करने में तो आपको अब तक किसी ने भी पराजय नहीं दी। क्या आप बतला सकती हैं कि अभिनय को किस प्रकार से लोकप्रिय बनाया जाय?

उत्तर—जनता मेरे अभिनय को विशेष पसन्द करती है, उसके लिये मैं उसकी बड़ी कृतज्ञ हूँ। अभिनय को किस प्रकार लोकप्रिय बनाया जाये, इस पर तो “अभिनय-कला” का कोई विशेषज्ञ ही प्रकाश डाल सकता है, मैं भला इस पर कह क्या सकती हूँ? मैं “अभिनय कला” की कोई एक्सपर्ट नहीं। मैं तो सिर्फ “अभिनय कला” की विद्यार्थिनी हूँ।

मैंने कहा—आप [illegible] नारी ही कुछ प्रकाश डालने की कृपा कीजिये। आपकी आवाज फिल्मी-संसार में कीमत रखती है। मैं आपको ही इस विषय पर बोलने का अधिकारी समझता हूँ।

लीला चिटनिस—हाँ तो “अभिनय-कला” को लोकप्रिय बनाने के लिए हृदय के भावों को ठीक ठीक शरीर के भिन्न भिन्न अंगों-द्वारा प्रदर्शित करना चाहिए। जिसकी मुस्कराहट में इतनी ताकत नहीं कि वह जनता के गम पर हर्ष की पालिश कर सके, तो उसका मुस्कराना ही बेकार है। कलाकार को जानना चाहिए कि किस तरह मुस्कराया जाय कि जिससे मानव हृदय प्रभावित हो उठे। मुस्कराना भी एक कला है। “अभिनय-कला” को लोकप्रिय बनाने के लिए कलापूर्ण ढंग से हँसना भी चाहिए। बेढंगा हास्य भी अभिनय की सजीवता को विदा कर देता है। यदि विषाद की दुनिया में कलाकार को प्रवेश करना है, तो उसको बहुत सँभल कर जाना चाहिए। आँखों से आँसू बहा देना ही काफी नहीं है, बल्कि कलाकार के शरीर के प्रत्येक रोम से पीड़ा का दरिया उमड़ता हुआ दृष्टिगोचर हो, तभी अभिनेता का अभिनय सफल कहा जा सकता है। जो कलाकार डगमगाती भावनाओं से अभिनय-कला की सृष्टि करता है, वह अपने अभिनय को कभी लोकप्रिय नहीं बना सकता। मैं अपने अभिनय में सूक्ष्म से सूक्ष्म भावनाओं का खयाल रखती हूँ। मैं जीवन की प्रत्येक वस्तु में कला का सच्चा स्वरूप देखती हूँ। इसलिए मैंने कभी ऐसा अभिनय नहीं किया जो कला के दायरे से अलग हो। अगर डायरेक्टर या निर्देशक मुझे कला से विचलित होने के लिए मजबूर करते हैं, तो ऐसे मौके पर स्वतन्त्र अभियन करके अपनी आत्मा को सन्तोष देना मेरे जीवन का आदर्श है। जिस अभिनय से आत्मा सन्तुष्ट न हुई वह अभिनय कदापि लोकप्रिय नहीं बन सकेगा।

प्रश्न—आपने अपने प्रणय-पुष्प को तलाक के धागे में क्यों गूँथा?

उत्तर—आपके इस प्रश्न ने मेरे जीवन वीणा के तारों को झन्कृत कर दिया। मैं भारतीय नारी को दाम्पत्य-जीवन के सुनहरे धरातल पर कराहता हुआ नहीं देखना चाहती। पुरुष ने नारी की अस्मत का खंडहर बना दिया है। लेकिन आज फिर उसी खंडहर से नारी-जागरण की दिव्य-ज्योति फैल रही है। आज समाज में नारी वर्ग के साथ इन्साफ नहीं किया जा रहा है। पुरुष अपने स्वार्थवश नारी को अपने पैरों के तले रखने की कोशिश कर रहा है। उसके चरित्र पर लांछन लगाया जाता है। इधर कुछ शिक्षित नारियों ने अपने पैरों पर खड़े होने का प्रयत्न किया है, तो पुरुष वर्ग परेशान हो उठा है। पुरुष भगवान् है और नारी उसकी दासी। यही आदर्श आज पुरुषवर्ग की ओर से नारी-समाज पर लादा जा रहा है। इस आदर्श पर तर्क करना ही नर्क में प्रवेश करना है। लानत है ऐसे आदर्श पर। जिस आदर्श से नारी-आकांक्षाओं का बलिदान होता हो उस आदर्श को अपनाना मानो जानते हुए प्रज्ज्वलित अग्नि में कूदना है। आज नारी की आवाज की अकेली कोई कीमत नहीं। उसका अस्तित्व ही पुरुष के अस्तित्व में समा जाता है। उसका अपना अलग कोई अस्तित्व नहीं। पुरुष ने नारी के अस्तित्व को अपने महान् प्रभुत्व से आच्छा रखा है।

मैंने जो जल्दी जल्दी अपने साथी से सम्बन्ध-विच्छेद किया, पुरुषवर्ग चौकन्ने से लगे। वह संशय करने लगे। लेकिन वास्तव यह है कि अभी तक कोई भी मु ऐसा नहीं मिला जो कि मेरी वीणा के मञ्जुल तारों को स्वार्थ लियों से न झन्कृत करता हो।

मेरा तो कहना यही है कि अ वक्त आ गया है जब कि महिला अपना मार्ग स्वयं निर्मित करना दूसरे का मुँह ताकने से काम न फिर ऐसे पुरुषों को क्यों न तलाक जाये? क्यों न उनसे सम्बन्ध किया जाये?

मैंने कहा—“आपको पुरुष बड़ा ही कटु-अनुभव है। आपने पुरुषवर्ग का खींचा है, वह ठीक नहीं, यह अलग बात है लेकिन अपनी कटुता से प्रभावित होकर जाति के दूसरे पहलू का चित्र नहीं नहीं तो आपके उदगारों में इतनी न होती।

लीला चिटनिस—मैंने जो भी आपको पुरुषवर्ग का दिखाया है मानव-हृदय के भिन्न-भिन्न रंगों किया हुआ है। अगर उस चित्र प सावधानी से दृष्टि फेकेंगे, तो आपके का पुरुष का स्वरूप स्पष्ट नजर आ हाँ, यह बात मैं मानती हूँ कि मैंने पु जीवन की जो तसवीर खींची है, कटुता की छाप गहरी हो गई है। व लिए कि मुझे इसका विशेष अनु और इसी अनुभव के आधार पर मैंने के स्वरूप को पेश किया है?

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुर

पेट की सफ़ाई
स्वास्थ्य का प्रारम्भिक
नियम है

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर सा
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रे
LIVER
ANDREW
LIVER S
EFFERVESC

देशी राज्यों में सम्मिलित शासन

व्यक्तिगत से सामूहिक प्रयत्न श्रेयस्कर क्यों है ?

लेखक; श्री मार्कण्डेय वाजपेयी एम० ए० एल-एल० बी०

[रजिस्ट्रार, कामन हाईकोर्ट]

भारत के देशी राज्यों में सम्मिलित शासन का क्या महत्व है ? यह समस्या बड़े राज्यों के सिवा छोटी छोटी रियासतों के लिए तो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। व्यक्तिगत शासन से यदि सामूहिक शासन की नीति स्थापित हो तो वह राजा तथा प्रजा दोनों के लिए अधिक श्रेयस्कर है। विद्वान् लेखक ने इसी महत्त्वपूर्ण विषय पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया कि रियासतों का भविष्य सम्मिलित शासन से अधिक से अधिक उज्ववल बनाया जा सकता है।

भारतीय नरेन्द्र मण्डल के अध्यक्ष नवाब भूपाल।

भविष्य के भारत में देशी राज्यों को सम्मिलित होना ही होगा, यह सर्वथा निश्चित है। बहुत से भारतीय शासक ब्रिटिश-भारत को अछूत समझते हैं और अधिकांश प्रगतिवादी ब्रिटिश-भारतीय राजनीतिक नेतागण देशी राजाओं को अछूत समझते हैं। भारतीय राजनीति में देशी राज्यों की चर्चा होते ही लोग सिर हिलाने लगते हैं; पर अब सिर हिला देने से ही काम न चलेगा। देशी राजाओं को गालियाँ देने की प्रथा भी बहुत प्रचलित है। उनकी बहुत सी बातें हैं भी गालियों के उपयुक्त। पर साथ ही हमें यह भी न भूलना चाहिए कि ब्रिटिश भारत के नेताओं की भी सभी बातें प्रशंसा के उपयुक्त नहीं हैं और अब वह समय आ गया है कि हम गुणानुवाद अथवा अवगुणानुवाद को छोड़कर निष्पक्ष भाव से भावी शासन की समस्याओं पर गंभीरता से विचार करें और देशी राजाओं को समूल नष्ट करने की हवाई उड़ानों को छोड़ कर उन्हें भावी शासन-विधान में उपयुक्त स्थान देने के लिए समतल भूमि पर आवें। आर्थिक दृष्टिकोण से समस्त भारत एक है, व्यावसायिक दृष्टिकोण से अब धीरे धीरे एक होता चला जा रहा है और राजनीतिक दृष्टिकोण से वह एक होगा।

देशी राजाओं की सबसे बड़ी कमज़ोरी उनकी अब तक की प्रथक्करण की नीति रही है। इसमें कुछ हाथ भारत-सरकार के राजनीतिक विभाग का रहा है और कुछ राजाओं की अहमन्यता का। यदि देशी नरेश मिलकर कुछ काम कर सके होते तो ब्रिटिश साम्राज्य को अपनी सत्ता स्थापित करने में कठिनाई हुई होती। शेरों से भरे जंगल में घुसने का साहस सहसा नहीं पड़ता, परन्तु एक शेर को घेर कर सरलता से मारा जा सकता है। यही कारण था कि पहले ब्रिटिश सरकार राजाओं का आपसी मेलजोल भी नापसन्द किया करती थी। परन्तु समय की प्रगति के साथ साथ विचारों में परिवर्तन अनिवार्य होता है। कुछ तो ब्रिटिश सरकार को ही भारतीय राजनीति में देशी राजाओं की आवश्यकता पड़ने लगी और कुछ समय के परिवर्तन ने ही स्वतः परिवर्तन लाना आरम्भ कर दिया। राजाओं की पारस्परिक घनिष्ठता तो सम्भवतः अब भी केन्द्रीय सरकार को बहुत न भाती होगी परन्तु दृष्टिकोण में परिवर्तन अवश्य दृष्टिगोचर होता है और कई स्थलों पर राजाओं में आपसी मेलजोल का कुछ प्रयत्न भी किया जाता हुआ दिखाई देता है। नरेन्द्र-मण्डल स्वयं ही इसका उदाहरण है। केन्द्रीय सरकार की नीति में तो परिवर्तन सरलता से हो सकता है, परन्तु शताब्दियों में भरी गई अहमन्यता इतनी सरलता से परिवर्तित नहीं की जा सकती है। जो बात नीति न होकर स्वभाव का एक अंग बन गई या बना दी गई है उसमें परिवर्तन लाने के लिए प्रयत्न की आवश्यकता होती है।

प्रत्येक देशी राजा अपने को स्वयंभू समझता है, चाहे उसका राज्य कितना ही छोटा क्यों न हो ? देवलोक तक में ब्रह्मा, विष्णु और महेश के लिए प्रथक प्रथक स्थान निर्दिष्ट हैं फिर भला मर्त्यलोक में में इतने स्वयंभुओं में घनिष्टता कहाँ से सरलता से आवे ? परन्तु स्वभाव में शताब्दियों ने चाहे कितनी ही अहमन्यता क्यों न भर दी हो समय सब कुछ मनुष्य से करा लेता है। संघ-शासन की चर्चा जिस समय बड़े जोर शोर से चल रही थी उस समय स्वयं महाराजा बीकानेर के मुँह से निकला था कि इस समय दो ही बातें हो सकती हैं, सम्मिलन अथवा विनाश। स्वर्गीय महाराजा बीकानेर जहाँ और बातों में अद्वितीय थे वहीं अहमन्यता में भी वह अद्वितीय थे। परन्तु साथ ही वह नीतिकुशल और व्यवहारकुशल थे। उनका कथन सर्वथा सत्य था। भावी भारतीय शासन-व्यवस्था में भारतीय नरेशों के लिए वास्तव में सम्मिलन अथवा विनाश के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। हैदराबाद, काश्मीर, ग्वालियर आदि बड़े राजाओं के लिए संघ-शासन की समस्या उतनी कठिन नहीं है। वे अब भी बड़े हैं और तब भी बड़े रहेंगे। स्वयंभू रहेंगे कि न रहेंगे यह और बात है, पर बड़े फिर भी रहेंगे। उनकी शिक्षा तथा उनका अनुभव उन्हें सदैव राजनीति में प्रमुख स्थान दिलाते रहेंगे। यह सत्य है कि उनकी स्वेच्छाचारिता में शासन-सम्बन्धी विषयों में अन्तर आ जायेगा परन्तु साथ ही जहाँ अभी उनकी प्रमुखता का क्षेत्र उनके राज्य की सीमा तक ही परिमित है वहाँ उसके स्थान पर उन्हें अखिल भारत के नेतृत्व का अवसर प्राप्त हो जायेगा और बहुत सी बातों में राजनीतिक विभाग के उचित अनुचित हस्तक्षेप से छुटकारा मिल जायेगा।

कठिनाई छोटे राजाओं की है। किन्हीं बातों में उनकी अहमन्यता बड़े राजाओं से भी अधिक है क्योंकि उनमें से बहुतों को अपने राज्यों के बाहर कोई सम्बन्ध स्थापित करने का अवसर ही अभी तक नहीं मिला है। प्रथक रहने की भावना भी इसी कारण उन्हीं में अधिक है। उनकी सत्ता का लोप भी उन्हें अधिक व्यथित करनेवाला है क्योंकि जहाँ बड़े राजागण अधिकतर शासन मंत्रियों द्वारा किया करते हैं वहाँ छोटे राजागण बहुधा स्वयं शासन-संचालन किया करते हैं। मान मर्यादा का प्रश्न भी इन्हीं के साथ अधिक होगा क्योंकि जहाँ बड़े राजाओं को मान सभी कहीं मिल जाता है वहाँ छोटे राजाओं को बहुधा उचित मान अपने अपने राज्यों में ही मिला करता है। परन्तु जहाँ इनकी यह कमजोरियाँ हैं वहीं इनको एक लाभ यह है कि अपना मान उचित रूप से कराने के लिए इन्हें शिक्षा की सहायता लेनी पड़ती है। इनमें से बहुत से—विशेषतया पूर्वीय राज्यों में—ब्रिटिश अथवा ब्रिटिश भारतीय विश्वविद्यालयों में पढ़े हुए हैं और यदि अपने मानापमान का ध्यान छोड़कर किसी भी क्षेत्र में आ खड़े हों तो उनमें से कई कहीं भी नाम कमायेंगे।

सम्मिलित शासन इन्हीं छोटे राजाओं को सीखना है। सम्मिलित रूप से ये भावी भारतीय शासन-व्यवस्था के अंग बन सकते हैं। पृथक् पृथक्, इनके सम्मुख केवल विनाश है। क्षेत्रफल, जन-संख्या, आय-व्यय सभी बातों में सम्मिलित रूप से एक एक क्षेत्र के देशी राज्य ब्रिटिश भारत के प्रान्तों से कुछ समता कर सकते हैं। पृथक पृथक, उनके अस्तित्व का भी भावी शासन-व्यवस्था में पता न चलेगा। इन छोटे राजाओं में कुछ तो यह बात समझते हैं, विशेषतया वे राजागण जो विश्वविद्यालयों की परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो चुके हैं, पर अभी बहुत से इसे नहीं समझते हैं और यथाशक्ति सम्मिलित शासन-व्यवस्थाओं का विरोध करते हैं। परन्तु, अच्छा लगे चाहे बुरा लगे, इस पाठ को पढ़े बिना इनका परित्राण नहीं है।

भारतीय संघ-शासन की वार्ता से राज्य-समूहों में सम्मिलित शासन-व्यवस्थाओं का सूत्रपात हुआ। मध्य-भारतीय देशी राज्य इसमें अग्रगामी सिद्ध हुए। प्रथम सम्मिलित हाईकोर्ट बुन्देलखण्ड तथा मालवा में स्थापित हुए। उसी समय सम्मिलित न्याय-शासन के अतिरिक्त सम्मिलित पुलिस अधिकारी की भी व्यवस्था की गई। सम्मिलित प्रधान न्यायालय राज्य-समूह के समस्त राज्यों का अन्तिम न्यायालय था। उसके निर्णय अन्तिम निर्णय थे और शासकों से दंडित व्यक्तिगण केवल दया की प्रार्थना करने के अधिकारी थे। पुलिस के प्रधान निरीक्षक का कार्य समूह के राज्यों की पुलिस का निरीक्षण तथा पुलिस-विभागों को उचित अथवा आवश्यक परामर्श देना निश्चित हुआ था। वही पद्धति अन्य राज्य-समूहों ने अपनाई। राजपूताना, पंजाब और अब पूर्वीय राज्य-समूह अपने अपने सम्मिलित प्रधान न्यायालय स्थापित कर रहे हैं। दक्षिण-राज्य-समूह में भी प्रधान न्यायालय होगा। पूर्वीय राज्य-समूह में तो पुलिस-परामर्शदाता के अतिरिक्त जंगल-विभाग-परामर्शदाता तथा कृषि-विभाग

हिजहाइनेस महाराजा श्रीमान् यशवन्त राव होल्कर महारानी इन्दौर के साथ।

परामर्शदाता भी हैं और छोटे समूहों में सम्मिलित इञ्जीनियर, सेशन जज तथा पुलिस सुपरिन्टैंडेन्ट हैं। सफलता की दृष्टि से सम्भवतः सम्मिलित न्याय-शासन का उदाहरण लेना अधिक उपयुक्त होगा। राजा और प्रजा दोनों का सम्बन्ध भी उन्हीं से सबसे अधिक है।

सम्मिलित न्याय-शासन इन राज्य-समूहों में दो प्रकार का है, अथवा होगा। एक तो बड़ा राज्य-समूह, जैसे बुन्देलखंड, मालवा अथवा पूर्वीय देशी राज्य। सम्मिलित प्रधान न्यायालय इस प्रकार के राज्य-समूह के समस्त राज्यों के लिए होगा। दूसरा राज्य-समूह कुछ राज्यों का होगा और ऐसे कई राज्य-समूह बड़े राज्य-समूह के अन्तर्गत होंगे। इन में से प्रत्येक राज्य-समूह के लिए एक सम्मिलित सेशंस जज होगा। इस प्रकार छतरपुर, चरखारी और बिजावर राज्यों का एक छोटा राज्य-समूह बुन्देलखंड में और रायगढ़, शक्ति और सांरगगढ़ का एक छोटा राज्य-समूह पूर्वीय राज्यों में है। इस प्रकार के सम्मिलित शासन से राजा तथा प्रजा दोनों को ही लाभ है। सम्मिलित न्यायाधीश किसी एक राजा द्वारा न तो नियुक्त किए जाते हैं और न पदच्युत। इस दृष्टिकोण से ये न्यायाधीश संभवतः अपने ब्रिटिश-भारतीय सहयोगियों से भी अच्छी स्थिति में हैं और शासन-विभाग तथा न्याय-विभाग का जो पृथक्करण किसी भी अच्छे तथा प्रगतिशील शासन में ऐच्छित है, वह भली प्रकार से इस विधान में घटित होता है। कोई भी राज्य जितने अच्छे न्यायाधीश रख सकता है उससे कहीं अधिक योग्यतावाले तथा अनुभवी न्यायाधीश इस विधान के अनुसार उचित वेतन दे कर नियुक्त किए जा सकते हैं। प्रजा का विश्वास भी इस प्रकार के स्वतंत्र न्यायाधीशों पर कहीं अधिक होगा। ये बातें तो प्रत्यक्ष हैं। पर अभी बहुत लोगों के मन में भ्रमात्मक धारणा यह है कि नरेशों की सत्ता इन प्रधान न्यायालयों तथा सम्मिलित न्यायाधीशों के कारण नष्ट हो जाएगी। उचित रूप से विचार करने से यह धारणा निर्मूल सिद्ध होगी। सैद्धान्तिक रूप से तो राजागणों की सत्ता प्रधान-न्यायालयों द्वारा घटने

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

साहित्य-चर्चा

साहित्यकार-संसद् क्या है ?

साहित्यिकों को पारस्परिक सहयोग और सहायता देनेवाली संस्था

प्रयाग में स्थापित होने वाले साहित्यकार-संसद् के सभापति राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त।

गत पचीस वर्षों से हिन्दी का साहित्य जितना समृद्ध हुआ है साहित्यकार की लौकिक स्थिति उतनी ही अधिक दीन होती गई है। युग की विविधरूपी विषमता को देखते हुए किसी अन्य परिणाम की कल्पना नहीं की जा सकती। साहित्यकार लौकिक दृष्टि से विशेष सतर्क प्राणी नहीं हो पाता और यह स्वभाव उसे साहित्य के जीवनव्यापी कल्याणोन्मुख लक्ष्य से मिलाता है। किन्तु प्रत्येक स्वतन्त्र और विकासशील राष्ट्र अपने चिन्तकों तथा कलाकारों के हितों का सजग प्रहरी रहता है क्योंकि उनकी कृतियाँ युगविशेष में जीवित मानव समष्टि के मानसिक तथा बौद्धिक विकास की सीमायें हैं।

हम परतन्त्र देश के, हीन भावनाओं के भार से आक्रान्त प्राणी हैं इसी से हमें अपने प्रतिभासम्पन्न कलाकार अपवाद जैसे जान पड़ते हैं। उन्हें व्यक्ति के रूप में देखकर उनके सुख-सुविधा का ध्यान रखना हम एक प्रकार से भूल चुके हैं। ऐसे साहित्यकारों की संख्या कम नहीं जिन्होंने जीवन की साधारण सुविधाओं से वंचित रहकर ही अनन्य साधारण साहित्य का सृजन किया। भाषा की दृष्टि से हिन्दी के महत्त्व के साथ साथ उनकी कृतियों का महत्त्व भी बढ़ा किन्तु उसने आज की व्यवसाय-बुद्धि को जितना आकर्षित किया उतना न्याय-बुद्धि को नहीं। परिणामतः पुस्तक-व्यवसाय की बाढ़ में पुस्तकों में संचित ज्ञान के द्रष्टा भी बह गये। उनके साहित्य का मूल्यांकन करने में अथक आलोचकों ने भी कभी आवश्यकता नहीं समझी। आज जो स्थिति इस सीमा तक पहुँच गई है कि यदि कोई विशिष्ट साहित्यकार बिना भोजन, बिना आच्छादन तथा बिना उपचार के खुले आकाश के नीचे जीवन-लीला संवरण कर दे तो हम इसे दुर्घटना ही न मानेंगे। हमें अपने प्रति ग्लानि न होकर साहित्यकार की उस मन्द बुद्धि पर दया आयेगी जिसके कारण वह इस व्यवसायोन्मत्त युग की सुविधाओं से लाभ उठाकर अपने लिये सुख के साधन न जुटा सका। ऐसी अस्वस्थ मानसिक स्थिति सामूहिक रूप से हानिकर है किन्तु इसके उपचार के लिये हमारे पास अवकाश कम और साधन अल्प है।

साहित्यकार अपनी विकलांगता के प्रदर्शन पर जीनेवाला भिक्षुक न होकर जीवन के सुन्दरतम आदर्शों का विधाता है। अपने व्यक्तिगत दुःख तथा अभावों का विज्ञापन कर दूसरों की दया पर जीवन-निर्वाह करना उनके लिए सब प्रकार से अशोभन है।

हमारी साहित्यिक संस्थायें प्रचार के कार्य में इतनी उलझी हैं कि वे इस बढ़ती हुई विषमता तथा अन्याय की रोकथाम करने का अवकाश ही नहीं पातीं। साहित्यकारों की भी ऐसी कोई सहयोग समिति नहीं जो उन्हें एक दूसरे के दुख सुख से परिचित करा सके तथा परस्पर सहयोग और सहायता की सुविधा दे सके।

इसी अभाव की पूर्ति के लिए हिन्दी के विशिष्ट साहित्यकारों ने साहित्यकार-संसद् की स्थापना की है, जो मतभेदों की नींव पर न बनकर लेखकों की उद्देश्यगत एकता के आधार पर बनी है। व्यक्तिगत आस्था, दर्शन, राजनीति आदि की दृष्टि से एक साहित्यकार दूसरे की अनुकृतिमात्र नहीं होता किन्तु सामूहिक कल्याण की दृष्टि से उन सब के जीवन में एकोऽहं बहुस्याम् की भावना ही व्याप्त रहती है। संसद् का आधार साहित्यकारों की अनेक रूपों में व्यक्त कल्याणेषी महान आत्मा और उसका लक्ष्य पारस्परिक सहयोग तथा सहानुभूति को सहज और स्वाभाविक बनाना है। संसद् साहित्यकारों को एक दूसरे के सुख दुख से परिचित कराने के लिये उनकी कठिनाइयों तथा आर्थिक असुविधाओं का अध्ययन करेगी और उनके निराकरण का उपाय सोचेगी।

साहित्यकार-संसद् के कोषाध्यक्ष, हिन्दी के प्रसिद्ध कलाकार रायकृष्णदास।

साहित्यकार-संसद् की प्रधान मंत्रिणी सुप्रसिद्ध कवियित्री श्रीमती महादेवी वर्मा।

वह ऐसी लेखक-सहायक-निधि की स्थापना करेगी जिससे संकट-ग्रस्त लेखकों तथा उनके परिवार को सहायता दी जा सके।

वह प्रकाशकों के निकट लेखकों के हितों की संरक्षक रहेगी तथा उनके साथ किये गये अन्याय का विरोध और उसके प्रतिकार का प्रयत्न करेगी।

प्रकाशन का कार्य भी उसके क्षेत्र के अन्तर्गत है। लेखकों को पर्याप्त पुरस्कार देने के उपरान्त शेष आय सहायक-निधि में सम्मिलित कर दी जायगी जिसका उपयोग आवश्यकतानुसार लेखक कर सकेंगे।

जो साहित्यकार इस समय अस्वस्थ और साहित्य-सृजन में असमर्थ हैं उनके स्वास्थ्य-लाभ करने तक संसद् उन्हें सहयोग और सहायता पहुँचाने का प्रबन्ध करेगी।

परिस्थिति और सुविधा के अनुसार एक ऐसे पुस्तकालय तथा आश्रम की स्थापना भी संसद् के कर्तव्य के अन्तर्गत है जहाँ साहित्यकार शान्तिपूर्वक अध्ययन तथा साहित्य-सृजन की सुविधा पा सकें। विभिन्न साहित्यकारों के जीवन तथा साहित्य सम्बन्धी विचारों से हिन्दी-संसार को परिचित कराने के लिए 'साहित्यकार' नामक पत्र प्रकाशन भी उसके भावी कार्यक्रम रहेगा।

साहित्यकार के आदर्शों की सा रता और सांस्कृतिक चेतना के प्रसार लिये विस्तृत क्षेत्र प्रस्तुत करना भी सं के उद्देश्य के अन्तर्गत है।

५०००) की निधि एकत्र होते संसद् सहायता-कार्य आरम्भ कर दे किन्तु अपनी सम्पूर्ण योजना को कार्या करने के लिए उसे एक लाख की आ श्यकता होगी।

हिन्दी-प्रेमियों का विशाल परि देखते हुए संसद् की आवश्यकता अ नहीं कही जा सकती। ससद् के पदाधिक निम्न सहित्यकार रहेंगे।—

अध्यक्ष—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गु उपाध्यक्ष—श्रीमाखनलाल चतुर्वेदी, प्र मंत्री—श्रीमती महादेवी वर्मा, सहायक-मं श्री हजारीप्रसाद द्विवेदी, कोषाध्यक्ष- श्री राय कृष्णदास।

संसद् के आगामी ६ मास के कार्यक्र को निश्चित करने के लिए श्री मह आनन्द कौसल्यायन, श्री गुलाबरा श्री सियारामशरण गुप्त, श्री इलाचंद्र जोशी श्रीमती महादेवी वर्मा (संयोजक) की ए उपसमिति नियुक्त हुई है। यह उपसमि सहायक निधि, प्रकाशन आदि से सम्ब रखनेवाले प्रश्नों पर अनेक दृष्टियों विचार-विनिमय करके एक निश्चित का क्रम संसद् की आगामी बैठक में उपस्थि करेगी।

इस पुण्यकार्य में सहायता और सह योग देने के इच्छुकों को प्रधान मन्त्री साहित्यकार संसद्, नम्बर १ एलगिन रोड प्रयाग के पते से पत्र-व्यवहार करना चाहिये

★ मक्खियों की पूंजी शहद.

चींटियों की पूंजी दाने

मगर

ये जितना बचायें उतना ही पाती हैं— वह भी अगर कोई छीन न ले!

आपकी पूंजी में १२ वर्ष में ५० प्रति शत वृद्धि हो सकती है, यदि आप

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स ख़रीदें

जो १० रुपये, ५० रुपये, १०० रुपये, ५०० रुपये, और १००० रुपये पर बिकते हैं और तीन साल बाद आप जब चाहें इन्हें भुना कर असल रक़म और ब्याज पा सकते हैं। आप एक रुपये, आठ आने या चार आने के सेविंग्स स्टाम्प ख़रीद कर शहद की मक्खियों की तरह थोड़ा थोड़ा जमा करते जायँ और फिर इन स्टाम्प या टिकटों के बदले नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स ले लें।

आपको सर्टीफिकेट्स और स्टाम्प दोनों सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों या किसी सेविंग्स ब्यूरो अथवा पोस्ट आफिस से मिल सकते हैं।

★ शहद की मक्खियों से बचाने का सबक़ सीखिए। 1237

ससुराल-यात्रा

लेखक, श्री छविनाथ पाण्डेय, बी० ए०, एल-एल० बी०

रईसों के भी बड़े बड़े चोंचले होते हैं। हमारे देश की रईसी तो पुराने जमाने से प्रसिद्ध है। इस सुन्दर कहानी में साहित्यिक पुट देते हुए एक रईसजादे की ससुराल-यात्रा का मनोरंजक वर्णन किया गया है। इस कहानी के लेखक श्री छविनाथ पाण्डेय हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और देशभक्त हैं। जेल से छूटने के बाद आपको बिहार सरकार ने अपने प्रांत से वहिष्कृत कर दिया है और इस वक्त नजरबंद की भाँति मिर्जापुर (चुनार) अपने गाँव में युक्त प्रांतीय सरकार की मेहरबानियों की बाट जोहते हुए जीवन बिता रहे हैं।

रईसों के भी बड़े-बड़े चोंचले होते हैं। इन चोंचलों और नखरों का कहीं अन्त नहीं है। जिस तरह अकबरनामा लिखा गया, शाहनामा लिखा और औरंगजेबनामा लिखा गया उसी तरह यदि काशी के हें हें पण्डित ने रईसों का चोंचलानामा भी लिख डाला होता तो हिन्दी-साहित्य के मणिमाला में यह भी एक करकट मणि की तरह झलकता रहता। इसकी सुषमा निराली होती और हें हें जी को उसी तरह का नफा हो गया होता जिस तरह का नफा आज-कल के व्यापारी ब्लैक मार्केट से कमा रहे हैं। हिन्दी-साहित्य में हें हें जी को वही अमर स्थान प्राप्त होता जो भारत की राष्ट्रीयता के विनाश में श्री एम० एन० राय अथवा श्री जमनादास मेहता को प्राप्त हो रहा है। यह अनोखा ग्रन्थ हिन्दी-साहित्य में खोज करनेवालों को उतना ही उपयोगी सिद्ध होता जितना उपयोगी लहरियासराय से प्रकाशित रजक जयन्ती अभिनन्दन ग्रन्थ। यदि कलम की रगड़ से ही रायसाहब रामलोचनशरण बिहार के महावीरप्रसाद द्विवेदी, गिज्जूभाई, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी वगैरह वगैरह बन सकते हैं और हिन्दी के यशस्वी लेखक बड़ी आन-बान से बेधड़क उनकी स्तुति-गान कर सकते हैं तब भला हें हें जी को इस महत्वपूर्ण काम में किस बात की हिचक पैदा हो सकती थी? इन्हें तो तुरन्त इस उपयोगी और महत्वपूर्ण काम को हाथ में लेकर रायसाहब के उन स्वनामधन्य लेखकों के सिर पर पाँव रखकर दो डग ऊपर उठ जाना चाहिए था। आज इस महान ग्रन्थ-रत्न की भले ही उपेक्षा होती, हें हें जी के इस प्रयास पर लोग भले ही हँसते लेकिन दो पीढ़ी बाद इसकी प्रतिष्ठा रायसाहब के इस महत्काय पोथे से किसी भी तरह कम न होती। इस महान् ग्रन्थ की भूमिका लिखने के लिये भी उन्हें कहीं दूर भटकना न पड़ता। हर तरह के ज्ञान गरिमा को हिटलरी सेना की तरह बिखेरनेवाले "ब्राह्मणो सावधान" के यशस्वी लेखक तो काशी में ही ज्ञान-ज्योति की फुरहरी छोड़ रहे हैं। उनकी प्रज्ञाचक्षु से परे कोई विषय नहीं। इस ग्रन्थ महोदधि में "भालू बन्दर" की कुछ विशेष चर्चा कर देने से ही उनके स्वर्गीय नाना के ऋण से उऋण होने के लिये वे बिना बुलाये ही टपक पड़ते और अपनी ओजस्विनी भाषा के प्रताप को यहाँ प्रगट करने से कभी भी नहीं चूकते क्योंकि बँगला साहित्य के एक कहावत के अनुसार "चण्डी पाठ से लेकर रँगाई" तक के काम में वे निपुण हैं और उनकी लौहलेखनी की गति सदा अबाधित रहती है।

लेकिन यहाँ हें हें जी ऐसे चूके जैसे पोलैंड की समस्या को सुलझाने में चचा चर्चिल, चीन के सैनिक मामलों में प्रेसिडेंट रूजवेल्ट और गांधी-जिन्ना वार्तालाप में मिस्टर जिन्ना। उनके इस चक्र का फल हिन्दी के लेखकों को भुगतना पड़ रहा है। इन चोंचलों की तालिका बनाने में इस समय मुझे उतना ही जोर लगाना पड़ रहा है जितना जोर सरकारी नौकरों को लड़ाई का चन्दा वसूल करने में अथवा राष्ट्रीय युद्ध मोर्चा को जापानियों के विरुद्ध प्रचार करने में लगाना पड़ रहा है। जिस प्रेम, भक्ति और उदारता के साथ हिन्दुस्तान के निवासी युद्ध में चन्दा देते रहते हैं उसी या उससे भी ज्यादा उदारता के साथ मेरा दिमाग मेरी सहायता कर रहा है। सरकारी अफसरों के वक्तव्यों के मुताबिक जिस तरह लोग चन्दे की लिस्ट देखते ही अपने चन्दे की रकम टेंट मे निकालकर सरकारी थैलों में डाल देते हैं उसी तरह कलम की नोक को कागज के ऊपर रखते ही मेरा दिमाग उन्हें उगलने लगता है। इन चोंचलों में से कुछ का उल्लेख यदि यों न करके एक उदाहरण ही यहाँ अवतरण स्वरूप दे दिया जाय तो अप्रासंगिक नहीं होगा।

किसी राजा के एक कन्या थी, जब वह व्याहने योग्य हो गई तो उसके अनुरूप वर ढूँढने के लिये राजा ने नाऊ और ब्राह्मण रवाना किये। उन्होंने देश-देश की खाक छानी। यहाँ तक कि उनके जूते के तल्ले घिस गये लेकिन राजकन्या को एक भी वर पसन्द नहीं आया। एक न एक दोष प्रत्येक में निकल आये।

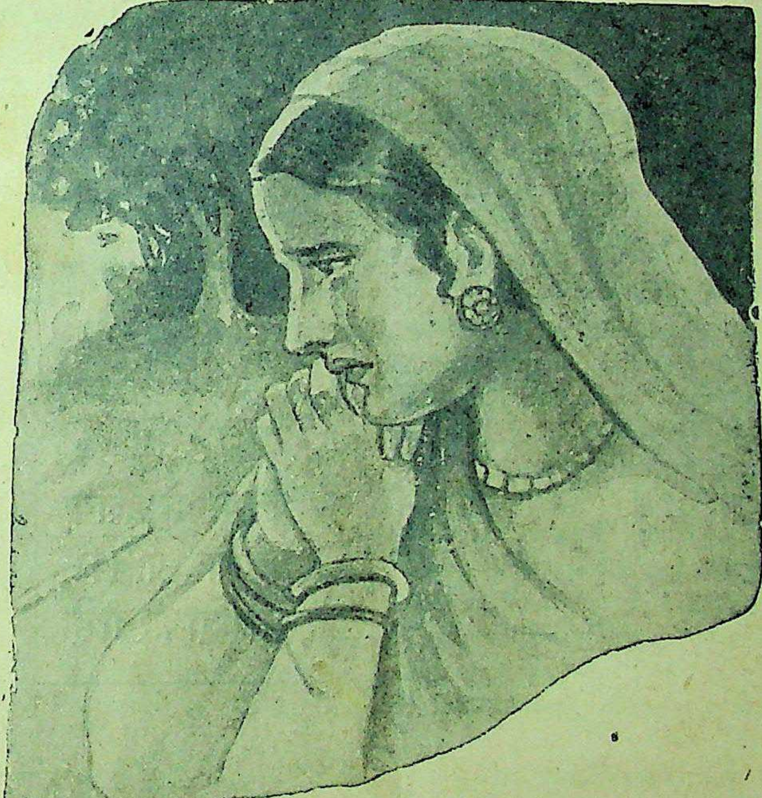
बबुआ जी की साली उन्हें टब में पड़ा देखकर चकित होकर रोने लगी।

उस जमाने में रेलपथ नहीं था। मोटर का तो पता तक नहीं था। नहीं तो ये गरीब सैर का ही मजा उठाते। बैलगाड़ी पर ऊबड़ खाबड रास्ता तै करते करते दोनों के कचूमर ही नहीं निकल आये थे बल्कि प्रत्येक जोड़ ढीले पड़ गये थे। इसलिये दोनों ने सलाह करके एक ऐसा वर ठीक किया जो पैर से लँगड़ा, हाथ से लूला, आँख से अंधा, कान से बहरा और मुँह से तुतलाकर बोलता था। इस वर को ठीक करके वे वापस आये और राजा से बोले—महाराज! अबकी वर तो बहुत अच्छा मिला। सर्वगुण-सम्पन्न है लेकिन उसमें कुछ दोष हैं जिसे हम लोग साफ-साफ प्रगट कर देना चाहते हैं ताकि हम लोग कसूरवार न ठहराये जायें। पहला दोष तो यह है कि कुमार अपने पैर से नहीं चलते। इतना सुनते ही राजदर्बारी चिल्ला उठेः—यह भी कोई दोष में दोष है। राजा के लड़के ठहरे। हर तरह की सवारियाँ घर में मौजूद हैं तब राजा को पैर से चलने का सवाल ही कहाँ उठता है? अपने पैरों से गरीब चला करते हैं। राजा ने कहा कि ये लोग ठीक ही तो कहते हैं। दूसरा दोष यह है कि कुमार अपने हाथ से काम भी नहीं करते। दरबारी बोले, यह भी कुमार के अनुरूप ही है। जिसके घर में इतने दास दासी, नौकर चाकर मौजूद हैं उन्हें अपने हाथ से काम करने की क्या जरूरत? कुमार यदि अपने हाथ से ही काम करने लगे तब नौकर चाकर क्या करेंगे? तीसरा दोष है कुमार अपने कान के सुनते भी नहीं। यह भी उनके अनुरूप ही है। राजाओं के कान तो मंत्री लोग हुआ करते हैं उन्हें खुद सुनने की जरूरत कहाँ रहती है? आगे चलो। कुमार अपनी आँखों देखते भी नहीं। यह भी उचित ही है। राजाओं की आँख तो राजकर्मचारी हैं। राजा लोग सदा राज कर्मचारियों की आँखों से देखा करते हैं। पाँचवाँ दोष क्या है? कुमार साफ साफ बोलते तक नहीं। यह भी उचित ही है। राजनीति भी यही कहती है कि राजाओं को हमेशा द्वय अर्थी बातें कहनी चाहिये। साफ साफ न बोलना राजाओं का उत्तम गुण समझा जाता है।

इससे आगे क्या हुआ यह इस लेख का विषय नहीं। ऊपर के उदाहरण से यही प्रगट करना था कि इसी तरह के नखरे रईसों के हुआ करते हैं। इन चोंचलों में एक चोंचला यह भी है कि ये लोग जल्दी किसी के यहाँ आते जाते नहीं। इनका किसी से मिलना मित्रराष्ट्रों के मिलन से कम जटिल नहीं होता। यदि दैवात कहीं चले भी गये तो खाने-पीने की चर्चा से बहुत दूर रहते हैं और यदि किसी पर बड़ी कृपा की तो बड़े नाज के साथ भोजन सामग्री को मुँह से छुला लेंगे। वह भी इस तरह कि एक कण भी हलक के नीचे नहीं उतरने पावे नहीं तो कहीं पेट में दर्द न हो जाय। इनकी अंतड़ियाँ उस सुकुमारी से कम नाजुक नहीं होतीं जिसने अपनी एक सखी से कहा था:—"ऐ सखि एक दिन गई बजार! एक पैसे का पोश्ता लाई। नौ बेर कूटा, नौ बेर छाँटा, सील्ह पै दीन्हीं पीस; तब उसकी मैं खीर बनायो, सींक से बोर के मुँह में नाई; नौ दिन रही पेट में पीर।" पेट में पीड़ा होने अथवा डिस्पेप्सिया का भय उन्हें सदा बना रहता है।

इसी तरह के एक रईसजादे एक बार अपनी ससुराल पहुँचे। ससुराल तो योंही नखरे की जगह है। नखरे के लिये तो ससुराल बनी ही है। जिसे कहीं भी नखरा नहीं करना पड़ता हो वह ससुराल में नखरा जरूर करेगा। इसी में मर्यादा समझी जाती है। सुना है शिव जी ससुराल में सैकड़ों वर्षों तक हवा पर ही आँख मूँद कर बैठे रह गये और विष्णु भगवान जो लेटते हैं तो अन्न पानी का नाम ही नहीं लेते। शेषनाग के शरीर को छूकर ससुर के जल का जो रस मिलता है उसी में मस्त पड़े रहते हैं। जब पूर्व पुरुषों ने ही ससुराल में ऐसे ऐसे रंग खिलाये तो हम उनकी सन्तान होकर कुछ न करें यह उनके नाम को कलंकित करना होगा। उनके अमल धवल नाम पर स्याही पोतने का हौसला हमारे इस रईसजादे को नहीं था। इसलिये ससुराल पहुँचते ही उन्होंने नाज और नखरे की हाट फैला दी।

उनके पदार्पण करते ही तश्तरियों में मिठाइयाँ जलपान के लिए सजाकर आईं। उन्होंने बड़ी अदा के साथ एक मिठाई में से जरा-सा तोड़कर मुँह में डाल लिया और पानी के गिलास की तरफ हाथ बढ़ाया। लोग आग्रह करते ही रह गये लेकिन उन्होंने फिर उन मिठाइयों को नहीं छुआ। भोजन के वक्त भी करीब करीब यही हालत रही। मुश्किल से दो-चार चावल मुँह में जा सका। दिन तो किसी तरह कटा लेकिन रात को पेट बोल गया 'माई लाट कुकड़ू कूँ।' 'भूखे भजन न होहिं भुवाला।' बिना अन्न की गर्मी के भला कहीं नींद आती है? लगे बिस्तर पर कलैया मारने। जब किसी तरह नहीं सहा गया तब चुपचाप नौकर को जगाया। मुनुआ

नौकर उनका बड़ा मसखरा था। बोला—रात किसी तरह काटिये सरकार, सबेरे बन्दोबस्त कुछ तो होगा ही।

किसी तरह रात कटी। सूर्य की प्रथम किरणों के साथ ही मन में यह आशा जग उठी कि मुनुआ कोई उपाय करेगा। पर मुनुआ को ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी? इधर उधर करते उसने दस बजाये। ससुराल के लोगों से भी उसने कह दिया कि बबुआ जी स्नान करके ही कुछ खाते पीते हैं। इसलिए उस दिन जेलपान भी नहीं आया। गंगा नजदीक थीं इसलिए कोई दस बजे मुनुआ उन्हें लेकर गंगा स्नान के लिए चला। रईसजादे ने समझा कि उसी बहाने मुनुआ उन्हें कुछ खिलाने के प्रपंच में है। लेकिन मुनुआ था छँटा हुआ। गंगा किनारे पहुँचकर मुनुआ से उन्होंने कहा—"भूख से मेरा दम निकला जा रहा है। कुछ खिला नहीं तो लड़खड़ा कर गिर जाऊँगा।"

मुनुआ ने कहा—यह बाजार थोड़े ही है कि खरीद लाऊँगा। देहात में मिल ही क्या सकता है? कहिये तो आपका जलपान यहीं माँग लाऊँ?

रईसजादे—इसमें बड़ी हँसाई होगी। लोग समझेंगे कि दामाद पेटू है! कुछ और उपाय कर!

मुनुआ—यहाँ तो सिर्फ मटर और सत्तू मिल सकता है। कहिये तो खरीद कर ले आऊँ।

"वही कर।"

मुनुआ दो पैसे का सत्तू खरीद लाया। लोटा में घोल कर उन्हें दिया। वे लोटा उठाने ही वाले थे कि सामने से ससुराल का नाई आता दिखाई पड़ा। लाचार हाथ का लोटा उन्होंने जमीन पर रख दिया और ध्यान लगाकर बैठ गये।

नाई ने आकर मुनुआ से कहा—आप लोगों को आये दो घंटे से ज्यादा हो गये। घर पर लोग घबरा रहे हैं।

मुनुआ—बबुआ जी देर तक पूजा करते हैं। तू चल! उनकी पूजा खतम होते ही हम लोग आ जायेंगे।

नाई—हमको हुकुम है कि साथ लेकर आना। इससे मैं यहीं बैठता हूँ।

मुनुआ ने उसे टालने की लाख कोशिश की लेकिन ससुराल का नाई टस से मस नहीं हुआ। बेचारे रईसजादे उस तरह कब तक बैठे रहते? बिना आदत के पल्थी लगाई तो पैर में झुनझुनी चढ़ गई। लाचार उठ खड़े हुए। लोटा में गंगाजल भरने के बहाने मुनुआ ने घोला हुआ सत्तू गंगा जी में डाल दिया और मन ही मन हँसता अपने बबुआ जी को लेकर वापस चला आया।

दूसरा दिन भी उसी तरह बीता।

रात बीतनी कठिन हो गई। उसका छटपटाना देखकर मुनुआ ने कहा—दिन को जलपान के लिए मुझे जो बुँदिया मिली थी उसमें का थोड़ा बचा है। कहिये तो दूँ। लेकिन जूठी है।

रईसजादे—कम्बख्त कहीं का। यहाँ मारे भूख के मेरा दम निकल रहा है और तू जूठ-मीठ का बखेड़ा खड़ा कर रहा है। जो है उसे चुपचाप देता क्यों नहीं है?

मुनुआ ने चार दाना बुँदिया गमछे की खूँट से खोलकर बबुआ जी के हाथ पर रख कर कहा—बस इतना ही तो है। मुँह में डालकर पानी पी लीजिये, पेट में ठंडक आ जायगी। बबुआ दो दिन के भूखे थे भला इस चार दाने बुँदिया से क्या हो सकता था? पेट में बड़वानल धधक रहा था। इस चार दाने ने आग में घी का काम किया। मुनुआ तो चद्दर तान कर सो रहा लेकिन बबुआ जी को नींद कहाँ!

बबुआ जी को मालूम था कि उनके सोने के कमरे के बगल में ही भण्डार है। जब आधी रात से ज्यादा बीत गई और सब लोग सो गये तब वे चुपचाप अपनी चारपाई पर से उठे और धीरे धीरे भण्डार घर का दरवाजा खोलने लगे। किसी तरह दरवाजा खोल कर भीतर घुसे। कमरे में निविड़ अन्धकार का राज्य था। हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता था। टटोलते टटोलते उनका हाथ किसी गोल चीज पर पड़ा। उन्होंने समझा कि मिठाई ही होगी। उन्होंने चट उसे मुँह में डाला। लेकिन बदकिस्मती ऐसी थी कि इसी समय बिल्ली न जाने कहाँ से कूद पड़ी। बबुआ जी हड़बड़ा कर जो भागे तो दरवाजे से टकरा कर गिर पड़े। लोग जाग पड़े और रोशनी लेकर उस तरफ बढ़े। मिठाई के भ्रम में अंडा बबुआ जी ने मुँह में डाल लिया था वह उसी तरह मुँह में पड़ा था। अपनी इज्जत बचाने के लिए उन्होंने उसे निगल जाना चाहा। कम्बख्त अंडा गले में जाकर अटक गया। बबुआ जी का दम घुटने लगा और वे बेहोश हो गये। रोशनी लेकर लोग वहाँ पहुँच गये। देखा तो बबुआ जी जमीन पर बेहोश पड़े हैं। मुँह खुला हुआ है। मुँह से फेचकुर निकल रहा है और गले में अटका हुआ अंडा आधा बाहर और आधा भीतर टुकुर टुकुर ताक रहा है। गले के अन्दर घाँटी के पास अंडे की शक्ल का सफेद सूजन देखकर लोगों के होश उड़ गये। दौड़ धूप होने लगी। गाँव में एक नीम हकीम रहते थे। चटपट वे बुलाये गये। उन्होंने जाँच पड़ताल कर गर्दन हिलाते हुए कहा—सर्दी लग जाने से टाँसिल (घाँटी) में सूजन आ गई है। यदि तुरत चीरा नहीं लगाया तो जान खतरे में है। इतना कहकर वे तो अपने गोंठिल चाकू पर शान चढ़ाने लगे। बबुआ जी को उस वक्त कुछ होश आ गया था। अपनी इस दुर्दशा पर वह छटपटाने लगे। गले में छुरा न लगाने के लिए उन्होंने लाख तरह के इशारों से लोगों को समझाना चाहा लेकिन उनकी कौन सुनता है? चार आदमियों ने उनके हाथ पैर पकड़े और हकीम ने अपने उस भोथरे चाकू को अंडे पर चला ही तो दिया। अंडे के कटते ही उसका पीला हिस्सा बाहर निकल आया।

हकीम साहब चिल्ला पड़े—"बाप रे बाप! कितना बड़ा जख्म था यह। अभी और मवाद इसमें होगा। ओह! चमड़ा तक सड़ कर सफेद हो गया है और कट कटकर निकल रहा है। आप लोग इन्हें मजबूती से पकड़े रहें। घाव को चीर कर साफ कर देना होगा। नहीं तो यदि थोड़ा भी मवाद अन्दर रह गया तो उसका जहर सारे शरीर में फैल जायगा।"

इतना कहकर वे जोर जोर से गला रोपने लगे। बबुआ जी की बुरी हालत थी। हकीम जी ने गले को इतना ज्यादा दबाया कि गले की नसों में सूजन हो आया और कसकर दर्द होने लगा। पर वे कर ही क्या सकते थे? दो घंटे की दुर्दशा के बाद किसी तरह फुरसत हुई। लोगों ने उठाकर उन्हें चारपाई पर लिटा दिया। चलते वक्त हकीम साहब कहते गये कि कल दिन भर कोई भी ठोस पदार्थ भोजन के लिए न दिया जाय। दिन में केवल दो बार दो चम्मच धान के लावा का पानी भर दिया जाय।

उस दिन सबेरे ही बबुआ जी घर वापस जाना चाहते थे। लेकिन रात को जिसे चीरा लगा था उसे सबेरे ही कैसे जाने दिया जाता? उन्होंने यह समझाने की लाख चेष्टा की कि वे मजे में हैं? लेकिन उनकी सुनता कौन है? वे जाने नहीं पाये। सर्दी लग जाने से घाँटी फूलने की बात हकीम जी ने कही थी इससे उस दिन उन्हें गंगा स्नान करने भी नहीं जाने दिया गया कि बिचारे कहीं एक-दो पैसे का सत्तू ही खा लेते। उस दिन अन्न के भी दर्शन नहीं हुए। दिन भर में चार चम्मच धान के लावा का पानी ही नसीब हो सका।

तीन दिन के भूखे बबुआ जी की हालत रात होते-होते एकदम खराब हो गई। इसी समय मुनुआ ने आकर कान में कहा—मैंने आलमारी के ऊपर चार-पाँच बुँदिया के बड़े लड्डू रख दिये हैं। जब सब लोग सो जायँ तो उठकर चुपके से खा लीजिएगा। रईसजादा की जान में जान आई। सोने का बहाना करके चद्दर लपेटकर पड़ रहे पर आँखों में नींद कहाँ? ध्यान तो उस लड्डू पर था। कब मौका मिले और कब उसे पेट के हवाले किया जाय। राम राम करके बारह बजे और लोग सोने गये। बबुआ जी धीरे से उठे और अँधेरे में आलमारी के ऊपर हाथ ले गये। लड्डू तो हाथ लगा नहीं, वह अभागा न जाने किधर सरक गया था। हाथ लगा एक गोल पत्थर जो उसी जगह न जाने कब का रखा था। बबुआ जी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने सोचा इसे खा लें तब दूसरा उठावें। यह सो कर उन्होंने उसे मुँह में डाला और से दाँत गड़ाया। लेकिन पत्थर का म बूत ढेला कहीं दाँत से टूटता है? बबुआ जी ने सोचा कि बुँदिया का लड्डू क हो गया होगा। उन्होंने जोर से मुँह बाकर कसकर उस पर चोट करना चाहा। लेकिन दुर्भाग्य। जो जबड़ा ऊपर चढ़ा वह नी उतरना भूल गया। इसी तरह बबुआ मुँह बाये अपने कमरे में पहुँचे और मुनु को जगाया। मुनुआ ने बहुतेरा गाल औ घेघा दबाया लेकिन कोई उपाय कारगर न हुआ। अन्त में उसने एक उपाय लगाया उसने बबुआ जी से कहा—आप टब उलटे टँग जाइए। ठंढक पाकर जब बैठ जायगा। उन्हें लेकर वह आँगन गया। पनाले पर टब रखा था। उसी उसने बबुआ जी को उलट दिया। इ दम उसे पेशाब लगी। वह चला ग पेशाब करने। संयोग की बात। उन साली को पैखाना लगा। वे पानी ले टब में आईं। रात अँधेरी, टब में इ तरह कोई चीज खड़ी देखकर वे चीख भाग चलीं। ऊपर से झपटा मुनुआ आया दोनों की मुठभेड़ हो गई। इसी हड़ब में बबुआ जी के पैर नीचे आ गये। के लोग जाग पड़े तो देखते हैं कि मुनुआ को उनकी साली कस के पकड़े हु है और बबुआ जी टब में छटपटा रहे हैं लोगों ने उन्हें टब से बाहर निकाला उठाकर अस्पताल ले गये। चीरा लगाकर डाक्टर ने जबड़ा बैठाया और बबुआ जी घर वापस आये।

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन
पचाने के लिये
प्रकृति पाचक-
रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न
कर सकी तो आपके
पाचन के लिये
बेंगल इम्युनिटि
बाइ-डाइस्टेज
प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों
से प्रस्तुत

भोजन को पचान योग्य बनाकर
बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

कोशलगढ़ का कैदी

दिलचस्प जासूसी उपन्यास

[पिछली कहानी—बंगाल में राय-परिवार बड़ा प्रसिद्ध था। इस परिवार में शिवशङ्कर राय तथा गौरीशङ्कर राय दोनों भाइयों ने अच्छी ख्याति पाई थी। एकाएक एक दिन कोशलगढ़ के सरदार धनंजय खत्री, लापता राजकुमार शङ्करसिंह की खोज में उधर आ निकले। गौरीशङ्कर बाबू का चेहरा राजकुमार शङ्करसिंह से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। जब धनंजय खत्री को राजकुमार का पता न चला तब उन्होंने गौरीशङ्कर बाबू को इस बात के लिये राजी किया कि वह अपने को शङ्करसिंह बतायें। धनंजय खत्री गौरीशङ्कर बाबू को घोड़े पर लेकर गुप्त रूप से कोशलगढ़ पहुँच गये। राज्य में प्रसिद्धि हो गई कि लापता राजकुमार शङ्करसिंह वापस आ गये। राजकुमार शंकरसिंह के भाई उदितसिंह ने, जो पास ही झड़वा राज्य में रहता था, शंकरसिंह को कैद करवाया था। वह कोशलगढ़ के वर्तमान मन्त्रियों का विरोधी था। राजमहल में गौरीशङ्कर बाबू ने नकली लापता राजकुमार का अभिनय प्रारम्भ किया और समय पर उनका राजतिलक भी हो गया। गौरीशङ्कर बाबू एक दिन नौका-विहार के लिये गये और एक दुर्घटना से बचकर वह फिर कोशलगढ़ पहुँच गये। वहाँ आपस में मंत्रणा हुई। रनिवास में भी काफ़ी चहल-पहल हुई। महारानी-कस्तूरीबाई और उनकी सहेली चम्पा में भी राजा के सम्बन्ध में बड़ी आकर्षक वार्ता हुई। एक दिन गौरीबाबू वेष बदलकर नगर घूमने निकले और वहाँ उन्हें एक भेद का पता चल गया। गौरी बाबू को यह ज्ञात हो गया कि उदितसिंह ने शंकरसिंह को कैद कर रखा है। वह उनके छुड़ाने का उपाय करने लगे। वह शंकर सिंह से मिलने के लिए उपाय करने लगे………।

(गताङ्क से आगे)

अधिक्रमसिंह ने हाथ जोड़कर निवेदन किया—महाराज, आपकी अनुपस्थिति से मुझे ही दुःख नहीं हो रहा है, बल्कि महारानी भी निराश होंगी। मैंने कृष्णा के मुँह से सुना है कि वे आपकी प्रतीक्षा—कहते कहते अधिक्रमसिंह संकोच से रुक गये। राजा-रानी के प्रेम की बात मधुर होने पर भी प्रकट रूप से आलोचना के योग्य नहीं है। तिस पर भी अधिक्रमसिंह ने जो इशारा किया उसी से गौरी बाबू का चेहरा लाल हो उठा। वे उठकर जँगले के सामने खड़े हो गये। कुछ देर तक वे चिन्तित भाव से बाहर की ओर देखते रहे, तत्पश्चात् घूमकर धीरे-धीरे बोले—सरदार जी, आज आपका निमन्त्रण स्वीकार करना मेरे लिए सम्भव नहीं है। हो सकेगा तो किसी दूसरे दिन—आप शायद नहीं जानते हैं कि मैं कृष्णा का बड़ा ऋणी हूँ। इस समय तो मैं उससे उऋण नहीं हो सकता, लेकिन आशा करता हूँ कि कभी न कभी उससे उऋण होने की कोशिश करूँगा। आप दुःख न कीजिएगा। वर-कन्या को मैं शुद्ध हृदय से आशीर्वाद देता हूँ कि वे सुखी रहें।

निदान अधिक्रमसिंह ने निराश होकर विदा माँग ली। गौरी बाबू फिर जँगले की ओर जाकर खड़े हो गये। कुछ देर तक कोई बातचीत न हुई। इसके बाद घूम कर गौरी बाबू ने देखा कि सरदार धनञ्जय उन्हीं की ओर निहार रहे हैं। उनके चेहरे से कोमलता टपक रही थी। ऐसे लोहे के समान कड़े योद्धा के मुँह पर ऐसा सुन्दर भाव गौरी बाबू ने पहले कभी न देखा था।

धनञ्जय बाबू ने नम्रतापूर्वक कहा—आप निमन्त्रण को अस्वीकार नहीं भी कर सकते थे। अधिक्रमसिंह बहुत दुःखी हो गये हैं।

गौरी बाबू के चेहरे पर एक व्यंग्यात्मक हँसी आ गई। वे बोले—निमन्त्रण स्वीकार करने से आप खुश होते क्या?

“निश्चय।”

“किन्तु झड़वा की कस्तूरीबाई से मेरी जो देखा-देखी होती, क्या उससे भी आप खुश होते, सरदार जी?”

धनञ्जय बाबू कुछ देर तक चुप रहकर दीर्घनिःश्वास लेते हुए बोले—कुछ दिन पहले मैं खुश न होता बल्कि बाधा डालने ही का प्रयत्न करता। किन्तु विचित्र है मनुष्य का मन! आज आपको और कस्तूरीबाई को एक साथ कल्पना करके मन में किसी तरह की अशांति नहीं हो रही है। बल्कि यदि आप न होकर शंकरसिंह होते—अचानक दोनों हाथों को आवेग से फैला कर वे फिर बोले—भगवान् का कैसा अविचार! क्यों, नहीं आप ही शंकरसिंह होकर उत्पन्न हुए?

विधाता के विधान के विरुद्ध सरदार जी के इस विद्रोह ने गौरी बाबू के हृदय की दृढ़ता को तोड़ दिया। उनका मन द्रवीभूत हो गया और उनकी आँखों में आँसू भर आये। धनञ्जय बाबू ने फिर से कहा—क्या हानि होती यदि संसार में आप ही शंकरसिंह होकर आते? मैंने शंकरसिंह के बापदादों का नमक खाया है सही, परन्तु इसलिए उन पर मुझे कोई कृत्रिम श्रद्धा नहीं है, क्योंकि शंकरसिंह आपके तलवे के बराबर भी नहीं हैं। इसलिए जब मैं मन में विचार करता हूँ कि एक दिन आप कौशलगढ़ छोड़ कर चले जायँगे और शंकरसिंह झड़वा की रानी के साथ विवाह करके गद्दी पर बैठेंगे—

इतने ही में उन्हें रोककर गौरी बाबू ने रूखे स्वर से कहा—बस, सरदार जी, जो होने का नहीं है, उस पर विचार करना व्यर्थ है। आइए, अब सलाह की जाय। मैं अपना विचार अब तक आपको बतला न सका।

धनञ्जय बाबू मानो ठोकर खाकर रुक गये और फिर अपनी आँखों को मलते हुए उन्होंने शुष्क स्वर से कहा—कहिए।

* * *

रात के बारह बज जाने के बाद गौरी बाबू, रुद्ररूप और सरदार धनञ्जय छिपकर खेमे के बाहर निकले। खेमा निस्तब्ध था। खेमे के सदर फाटक के बंदूकधारी संतरी ने चुपचाप रास्ता छोड़ दिया।

गत रात्रि में जिस जगह मयूरवाहन किस्ता नदी के जल में कूदा था, उसी जगह ये तीनों आदमी आकर खड़े हो गये। कोई बातचीत न हुई, अँधेरे में गौरी बाबू अपने शरीर से कपड़े उतारने लगे।

बड़े तर्क-वितर्क के बाद कार्यक्रम निश्चित हुआ था। रात्रि के अँधेरे में छिपकर गौरी बाबू तैरते हुए किले के पास जायँगे। वे अच्छे तैराक थे, किस्ता की धारा उन्हें बहाकर नहीं ले जा सकती। किले के पास पहुँचने पर वे प्रह्लाद के बतलाये हुए जँगले के पास जायँगे। रात में साधारणतः जँगले के भीतर दीपक जलता है, इसलिए वहाँ पहुँचना कठिन न होगा। जँगला जल से दो-तीन हाथ ऊपर था। बाहर से कुछ ऊपर उठने पर भीतर का सब दिखलाई पड़ेगा। आवाज होने का भी कोई डर नहीं था, क्योंकि किस्ता का गर्जन दूसरी आवाज को दबा देगा। गौरी बाबू जँगले से भीतर देखेंगे। राजा उसमें कैद हैं कि नहीं या उनके पास कोई पहरेदार है या नहीं, यह सब मालूम हो जायगा। यदि कोई पहरेदार न होगा तो राजा को बुलाकर वे उनसे बातचीत करेंगे। इसके बाद किले के भीतर का सब हाल जानकर राजा को उद्धार करने का आश्वासन देकर वे वापस लौटेंगे।

सरदार धनञ्जय गौरी बाबू को ऐसे खतरनाक काम में अकेले भेजने के लिए पहले राजी न हुए थे, किन्तु उनको क्रुद्ध और अधीर देखकर अनिच्छा होते हुए भी वे सहमत हो गये थे। वे समझ गये थे कि गौरी बाबू के मन की हालत एक ऐसे स्थान तक पहुँच गई है कि उसमें बाधा डालने से वह और भी उत्तेजित हो उठेगी।

रुद्ररूप ने भी इन लोगों की बातचीत में भाग लिया था, लेकिन इस काम के करने के प्रस्ताव पर ‘हाँ’ या ‘नहीं’ कुछ भी न किया था।

गौरी बाबू ने कपड़े-लत्ते उतार दिये। नीचे काले रंग का घुटने तक हाफ पैंट था, शरीर पर और कोई दूसरा कपड़ा न था क्योंकि तैरने के समय जितना कम कपड़ा देह पर हो उतना ही अच्छा है। कोई अस्त्र भी साथ में लेना आवश्यक न समझा गया, लेकिन सरदार धनञ्जय शत्रु के किले के पास उन्हें बिलकुल निरस्त्र भेजने में राजी न हुए। अनजान जगह में जाना है—क्या जाने कैसी बीते, यह किसी को मालूम नहीं—यह विचार कर गौरी बाबू ने अपने बड़े भाई के दिये हुए छुरे को कमर में खोंस लिया। सचमुच यह किसी काम में आवेगा, इसकी किसी ने कल्पना भी न की। भावी आशंका की कल्पना करके उन्होंने उसे साथ ले लिया। विधाता का प्रेषित यह छुरा आज विधाता के ही इशारे से उनका साथी हुआ, यह कौन जान सकता था?

सब तरह से तैयार होकर गौरी बाबू ने अँधेरे में जरा गौर से देखा कि रुद्ररूप भी अपने कपड़े उतारकर केवल एक जाँघिया पहने हुए उन्हीं के समान तैयार खड़ा है। गौरी बाबू ने आश्चर्य से पूछा—यह क्या रुद्ररूप?

रुद्ररूप ने कहा—मैं भी आपके साथ चल रहा हूँ।

कुछ देर तक गौरी बाबू निस्तब्ध रहे। रुद्ररूप ने किंचितमात्र भी अपनी अभिलाषा पहले प्रकट न की थी। वे अल्पभाषी थे, इसी से उनके मन की बात अंत तक नहीं मालूम होती थी। अपने प्रति रुद्ररूप का कितना प्रेम है, यह गौरी बाबू अच्छी तरह जानते थे। लेकिन ऐसी संकटमय यात्रा में बिना कुछ-कहे सुने वे चलने के लिए तैयार हो जायँगे, इसका उन्हें अनुमान भी न था। गौरी बाबू की छाती पर एक भार-सा लदा हुआ था जिसको रुद्ररूप ने एकाएक हलका कर दिया।

तिस पर भी गौरी बाबू ने कहा—मेरे साथ तुम्हारे जाने से क्या लाभ होगा?

रुद्ररूप ने दृढ़ता से उत्तर दिया—महाराज, आप मुझे मना न कीजिए।

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 108

हानि-लाभ मैं कुछ नहीं जानता। मैं आज आपका साथ न छोड़ूँगा।

गौरी बाबू ने रुद्ररूप के पास जाकर उनके कंधे पर हाथ रखते हुए अस्फुट स्वर से कहा—ठीक है, चलो। तुम और मैं जिस काम के लिए बाहर निकलता हूँ वह निष्फल नहीं होगा। लेकिन तुम तैरना अच्छी तरह जानते हो न?

"जानता हूँ, महाराज।"

"अच्छा, तो मेरे साथ आओ।"

किस्ता के दूसरे तट पर अधिक्रमसिंह के बगीचे में उस समय हजारों दीपक जल रहे थे, शहनाई की मीठी आवाज आ रही थी, कृष्णा का आज विवाह है। कस्तूरीबाई भी इसी प्रदीप्त भवन में कहीं होगी, शायद वह इस रात्रि में गौरी बाबू की ही चिन्ता करती होगी—'तोहें ना बिसरूँ दिन राती।'

इधर सामने ही शक्तिगढ़ की काली मूर्त्ति किस्ता के किनारे पर खड़ी है, उसी के एक छोटे से झरोखे में एक मंद दीपक जल रहा है। शायद शंकरसिंह इसी में कैद हैं। और मयूरवाहन? वह कहाँ है? वह क्या सचमुच जीता बच गया है?

धनञ्जय बाबू किनारे पर खड़े रह गये। गौरी बाबू और रुद्ररूप तैरने के लिए जल में उतरे और किले की ओर बिना किसी आवाज के तैरते हुए चले।

बीसवाँ परिच्छेद

लगभग दो मिनट तक बलपूर्वक तैरने के बाद अधिक जल में आने पर गौरी बाबू ने देखा कि हाथ-पाँव चलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। पानी की धार उन्हें उस प्रदीप्त झरोखे की ओर स्वयं खींचे लिये जा रही है। तब दोनों आदमियों ने अपने हाथ-पाँव ढीले कर दिये और धारा में बह चले।

जल में से केवल उस मंद दीपक के और कुछ भी दिखलाई न पड़ता था। तारों की मंद रोशनी के नीचे चारों ओर जल ही जल था। गौरी बाबू और रुद्ररूप जितना ही किले के पास जा रहे थे उतनी ही जल की कल्लोलध्वनि बढ़ती जाती थी। अंत में वे लोग ऐसी जगह पहुँचे जहाँ पत्थर से टक्कर खाकर जल भँवर की तरह घूम कर बड़ी तेजी से बह रहा था। गौरी बाबू ने देखा कि अब वे सीधे झरोखे की ओर नहीं जा रहे हैं। पानी उन्हें दूसरी ओर खींचे लिये जा रहा है। गौरी बाबू ने प्राणपण से तैर कर सीधे रास्ते पर जाने का प्रयत्न किया पर सब व्यर्थ हुआ। उस तेज धार के आगे उनकी एक न चली। निराश होकर उन लोगों ने हाथ-पाँव ढीले कर दिये।

इसी तरह क्रमशः वे लोग किले की छाया में पहुँच गये। यहाँ तारों की रोशनी भी न पहुँचती थी। खूब आँखें गड़ाकर देखने पर भी कहीं आश्रय न मिला। उस झरोखे का दीपक भी बाईं ओर मालूम नहीं कहाँ लुप्त हो गया। किले की चहारदीवारी कहाँ है, यह भी अनुमान करना असम्भव था। गौरी बाबू को भय होने लगा कि कहीं जल का बहाव उन्हें पत्थर से न टकरा दे। उन्होंने धीरे से रुद्ररूप को पुकारा। रुद्ररूप उनसे दो हाथ की दूरी पर जल-प्रवाह से युद्ध कर रहे थे। यह सुनकर उन्होंने भी क्षीण स्वर से उत्तर दिया।

गौरी बाबू ने कहा—होशियार! सामने ही किला है, देखो चोट न लगे।

रुद्ररूप बोले—जी नहीं, आप सावधान रहिएगा।

अँधेरे में गौरी बाबू हँसे। दोनों ही आदमी एक दूसरे को सावधान कर रहे थे, पर किले से टकराने की बचत का उपाय किसी को न सूझा। वे अगाध जल में तिनके के समान थे, उनकी इच्छा-शक्ति कहाँ तक चल सकती थी?

गौरी बाबू ने मन में सोचा कि आज का इस तरह असहाय रूप से जल में तैरते हुए चलना उनके जीवन में एक अद्भुत दैवी घटना है। दैव प्रेरणा से तो वे बहुत दिनों से तिनके के समान बहते हुए चले आ रहे थे पर पत्थर से टकरा कर अब तक उनकी समाप्ति न हुई, यही आश्चर्य है। क्या जाने विधाता आज ही के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हों? लक्ष्यहीन प्रवाह शायद आज ही उन्हें अंतिम सीमा पर पहुँचा देगा। मगर वह सीमा कहाँ है? वैतरणी के इस पार या उस पार?

इसी समय एक विशाल तरंग गौरी बाबू के ऊपर से बहती हुई चली गई। उसी क्षण एक डूबे हुए पत्थर से उनका अंग स्पर्श कर गया। उन्होंने पानी में से सिर निकाल कर देखा कि अब बहाव टेढ़ा-मेढ़ा नहीं है। यहाँ नदी का जल बहुत शांत है। वे एक भँवर में पड़कर घूम गये। इस जगह जल के भीतर के ये पत्थर एक मजबूत दीवार की तरह बन गये थे जिससे नदी का प्रबल वेग कुछ धीमा हो गया था। उस बड़ी लहर ने गौरी बाबू को इस दीवार के पार कर दिया और भँवर में पड़कर वे किले की दीवार के पास पहुँच गये।

यहाँ भी डुबाव भर जल था, किले की चिकनी दीवार के पास कहीं भी ठहरने की जगह न थी, तो भी काई लगी हुई दीवार पर हाथ रख कर गौरी बाबू ने विचार किया कि एक आश्रय तो मिल गया। फिर कुछ देर सुस्ताने के बाद उन्होंने धीमे स्वर से पुकारा—रुद्ररूप, तुम कहाँ हो?

रुद्ररूप ने उत्तर दिया—यहीं दीवार पास के हूँ। आप कहाँ हैं?

मैं भी यहीं हूँ। आओ, बायें हाथ जँगला है, उसी दिशा में चला जाय, दीवार के सहारे आना।

अच्छा।

पृथ्वी की आदिम अवस्था में कीचड़ की शय्या पर पड़े हुए अंधे केचुए के समान दोनों आदमी दीवार के सहारे धीरे धीरे आगे बढ़े। दस-पन्द्रह मिनट इसी तरह बीत गये, लेकिन जँगला दिखलाई न पड़ा। गौरी बाबू को यह सन्देह उत्पन्न हुआ कि, कहीं हम लोग अनजान में जँगले के नीचे से आगे तो नहीं बढ़ आये।

वे लौट कर रुद्ररूप को बुलाना ही चाहते थे कि ठीक सिर के ऊपर एक अत्यन्त परिचित आवाज सुनकर चौंक उठे। उनके कण्ठ से निकलनेवाली आवाज कण्ठ ही में रह गई। उन्होंने गर्दन उठाकर देखा लेकिन कुछ दिखलाई न पड़ा। जँगले का दीपक दूर से दिखलाई पड़ता था, लेकिन उसके नीचे आ जाने पर वह अदृश्य हो गया था। गौरी बाबू ऊपर हाथ बढ़ाकर जँगले की उँचाई का अनुमान करने लगे। उनका हाथ उसके किनारे पर पड़ गया। वह पानी से केवल दो-ढाई हाथ ऊँचा था।

फिर जँगले के भीतर से वही परिचित आवाज निकली—बेईमान, तू अब मुझे मार डाल, मैं जीता रहना नहीं चाहता।

गौरी बाबू अपने गले की आवाज पहचान गये। जरा भी कहीं से फर्क न था। उनका मन भीतर ही भीतर ऐसा घबड़ाने लगा मानो वे स्वयं उस कारागार में बन्द होकर मृत्यु की इच्छा कर रहे हैं।

अब दूसरी आवाज सुनाई पड़ी। वह कसाई की छुरी के समान तेज और निठुर थी। नम्रता का लेशमात्र भी उसमें न था—घबड़ाओ मत, कोई आवश्यकता न थी, इसी से इतने दिनों तक नहीं मारा, तुमसे मुझे कोई प्रेम नहीं है। लेकिन अब देरी नहीं है। आज ही जो कुछ होना है, हो जायगा।

कुछ देर तक सन्नाटा छा गया। इसके बाद शंकरसिंह ने अत्यन्त कातर और विनीत स्वर में कहा—उदित, मेरे ऊपर तुम्हें तनिक भी दया नहीं आती? मुझे छोड़ दो भाई। मुझे राज्य न चाहिए, केवल मुझे छोड़ दो।

अब तो ऐसा नहीं हो सकता। तुम्हारे हितैषी सरदार धनञ्जय ने सब मिट्टी में मिला दिया।

लेकिन मैंने तो तुम्हारा कुछ भी नुकसान नहीं किया। मैं तो तुम्हारे लिए सिंहासन छोड़ दे रहा हूँ।

अब तो तुम्हारा सिंहासन छोड़ना न छोड़ना बराबर है। कोशलगढ़ के राज-सिंहासन पर बैठकर एक बंगाली कुत्ता सरदारी कर रहा है। वह शैतान का बच्चा मारने से भी नहीं मरता। वह यदि मर जाता तो तुम्हें छुट्टी मिल जाती। जो हो आज के काम में यदि सिद्धि हुई तो तुम्हारे विषय में विचार करूँगा। अब सो जाओ।

—क्रमशः

विशेष सूचना

अर्द्धकुम्भ मेला, हरद्वार १९४५

संयुक्तप्रान्तीय सरकार-द्वारा १६-१-४५ को निम्नलिखित विज्ञप्ति नम्बर १४५। III—१३—१९४५ प्रकाशित हुई है :—

"भारत-रक्षा कानून की धारा ८५—ब की उपधारा (१) में दिये गये अधिकारों को काम में लाते हुए, संयुक्तप्रान्त के गवर्नर इस विज्ञप्ति-द्वारा यह निर्देश देते हैं कि जो इस विज्ञप्ति में दी गई सूची के किसी स्टेशन की यात्रा करने का इरादा करें वे रेल से यात्रा न करें, वे १५ मार्च से १३ अप्रैल तक (इसमें दोनों दिन शामिल हैं) किसी भी रेल-द्वारा नहीं ले जाये जा सकेंगे जब तक कि रेल के अधिकारी इस बात के लिए संतुष्ट न हो जायँ कि वह व्यक्ति उस स्थान को हरद्वार के अर्द्धकुम्भ मेले में जाने के उद्देश्य से नहीं बल्कि और किसी काम से जा रहा है या उसके पास मेला के अफसर इन्चार्ज की या किसी और मजिस्ट्रेट की आज्ञा है जिसे जिला मजिस्ट्रेट ने ऐसी आज्ञा देने का अधिकार दे रखा है।"

इस आज्ञा को पूरा करने के लिए रेलवे अधिकारियों-द्वारा यह आदेश जारी किया जा रहा है कि ऐसे किसी व्यक्ति को टिकट नहीं दिया जायगा जो अर्द्धकुम्भ मेला में जाने के इरादे से जा रहा है, या जिसके सम्बन्ध में ऐसा विश्वास किया जा रहा है, और ऐसे यात्रियों को ले जाने की कोई सुविधा न दी जायगी। स्पेशल मेला गाड़ियाँ नहीं चलेंगी।

जिन स्टेशनों के लिए यह आज्ञा लागू है, उनकी सूची नीचे दी जाती है। यह भी स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि यह आज्ञा केवल सभी रेलों से सभी स्टेशनों पर जो कि सूची में हैं, लागू नहीं है बल्कि सूची के किसी स्टेशन से सूची के ही दूसरे स्टेशन को जानेवालों पर भी लागू है।

स्टेशनों की सूची

ई० आई० रेलवे

बलिया खेरी
रुड़की
लक्शर
चन्दोक
बुंदकी
बसीकीरतपुर
एथल
रैयाला
हरावाला
चोडियाला
लंधौरा
रायसी
मुअज्जमपुर नरायन
नगीना
बिजनौर
पथरी
रिखीकेश
देहरादून
इकबालपुर
दौसनी
बलवाली
नजीबाबाद
पुरैनी
सनेह रोड
ज्वालापुर
कंसराव
मंसूरी
मुर्शादपुर
धामपुर
कोटद्वारा
हरद्वार
दोईवाला

एन० डब्लू० रेलवे

मुजफ्फर नगर
नगाल
रोहानाकलाँ
तपरी
देवबंद
सहारनपुर
तलहेरी बुजुर्ग
सरसवा

एस-एस० लाइट रेलवे

शामली
ननौता
हिन्द
रामपुर मन्ह्यारन
थाना भवन टाउन
मनानी
थाना भवन

(आज्ञा-द्वारा)

संपादक के नाम चिट्ठियां

आचार्य द्विवेदीजी की थाती

(श्री संपादक 'देशदूत')

सन् १९२३ के अक्टूबर महीने में आचार्य द्विवेदी जी ने सभा को एक पत्र लिखा था, वह पत्र यहाँ उद्धृत है—

जुही कलाँ, कानपुर
१९-१०-२३

श्रीयुत मन्त्री जी, ना० प्र० सभा, काशी

महाशय,

मेरी पुस्तकों का जो संग्रह यहाँ कानपुर में है, उसे आपने देखा ही है, वह पड़ा पड़ा यहाँ वरबाद हो रहा है। मैं उसे ना० प्र० सभा, काशी को दे डालना चाहता हूँ, उसकी इच्छा हो तो ले ले। शर्तें कोई नहीं, जो शर्तें वह करे वही मंजूर, पुस्तकें यों हीं सटपट हैं, मगर जो कुछ हैं हाजिर हैं, दौलतपुर में भी संग्रह है, वह इतना ही या इससे कुछ अधिक ही होगा, पुराणादि वहीं हैं, उसे भी देने का विचार कुछ समय बाद करूँगा।

स्वर्गीय आचार्य पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी की थाती नागरी-प्रचारिणी-सभा काशी में सुरक्षित है।

मैं कानपुर में शायद ही महीना भर रहूँ, पुस्तकें ग्रहण करना मंजूर हो तो किसी को भेज दीजिए, वह फिहरिस्त बना डाले, एक कापी मुझे दे दे, एक ले जाय, रहे शहर में, काम करने जुही आवे, क्योंकि यहाँ रहने की जगह नहीं, मेरे खपरैल में सिर्फ दो कमरे हैं, एक पुस्तकों के लिए, एक भीतर।

पुस्तकें चीड़ के बकसों में बन्द करके या बंडल बनाकर बोरियों में भरकर जिस तरह सुभीता हो ले जाय।

मेरे यहाँ न रहने के कारण बहुत पुस्तकें बरबाद गईं, कुछ उठ गईं, कुछ की जिल्दें चूहों ने कुतर डालीं, इससे जल्द उठाना चाहिये।

जिस लड़के को मैंने अपनी छोटी भानजी ी है, वह म्योर कालेज के फोर्थ इयर में है, स्कृत भी उसके कोर्स में है, दस-बीस संस्कृत ी पुस्तकें उसके लिए रख लूँगा।

मेरे समय की सरस्वती की १७ वर्ष की स्तलिखित कापियाँ मेरे पास हैं, किसी समय विष्य में वे शायद मूल्यवान समझी जायँ, नको देखने से पता चलेगा कि आजकल के न्दी के अनेक धुरन्धर लेखक किस तरह राह लाये गये थे, वे भी दे डालूँगा, सभा चाहे जिल्द बँधा कर रख छोड़े। कुछ पत्रव्यवहार रखने को दे दूँगा। अपनी कई पुस्तकों की हस्तलिखित कापियाँ दूँगा।

मेरी अनेक पुस्तकों की कापियाँ सभा में जूद होंगी। पर बहुत सी न भी होंगी।

मासिक पुस्तकों की जिल्दें बहुत हैं। अँगरेजी, न्दी, उर्दू, संस्कृत, मराठी, गुजराती, बंगला की भी पुस्तकों का संग्रह है, सब खिचड़ी है, सूची कोई नहीं।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

यह पत्र सभा की प्रबन्ध-समिति में उपस्थित किया गया और सादर स्वीकृत हुआ। इसकी सूचना पाकर आचार्य द्विवेदी ने २ नवम्बर सन् १९२३ को सभा के प्रधान मन्त्री को यह कार्ड लिखा—

जुही कलाँ, कानपुर
२-११-२३

श्रीमन्

मिती १४ कातिक का पत्र १३२९: ३९ मिला, सभा का 'निश्चय' जाना मंजूर है। जहाँ तक हो सके, आदमी जल्द भेजिए। दस ही बारह दिन बाद मैं यहाँ से चला जाना चाहता हूँ, जितनी पुस्तकें उठ सकें उतनी ही सही, ताकि फिर मेरे आने पर उठवा लीजिएगा।

अलमारियों का प्रबन्ध कर रखिए, दौलतपुर की भी पुस्तकें यदि मैंने दीं, तो आठ दस अलमारियाँ कम से कम दरकार होंगी।

पत्र-व्यवहार छाँटना है, दे सकूँगा तो कुछ अभी दे दूँगा, ताकि फिर ये पत्र बन्द रहें। ताले कुञ्जी में रहें, चाभी मन्त्री के पास रहे। उनका उपयोग यदि कभी किया जाय तो मेरे नामशेष हो जाने पर। यह कहीं लिख रखिए, कार्ड की पहुँच लिखिये।

आपका
म० प्र० द्विवेदी

इसके बाद सभा के कर्मचारी ने जुही जाकर पुस्तकें आदि सहेज कर काशी भेजने की व्यवस्था की। द्विवेदी जी की दी हुई वह अमूल्य सामग्री आर्यभाषापुस्तकालय की आठ अलमारियों में सुरक्षित है और जनता के उपयोग में आ रही है। सरस्वती की और अन्य पुस्तकों की प्रेस कापी कलाभवन में सुरक्षित है, उस विषय की रुचि रखनेवाले जो लोग यह सामग्री देखना चाहते हैं उन्हें, सूचना पाकर, यह दिखाई जाती है। सभा के गत अर्द्धशती उत्सव के समय कलाभवन ने "उसने कहा था" शीर्षक कहानी की कापी प्रदर्शन के लिए रक्खी भी थी, भीड़-भाड़ में ऐसी वस्तुओं का निरीक्षण ठीक ठीक नहीं हो सकता। इसके लिए तो अलग समय निर्धारित किया जा सकता है।

द्विवेदी जी के नाम आये हुए पत्रों का जो संग्रह सभा के कार्यालय में है, उसे देखने की जिन्होंने इच्छा की, उनको दिखाया गया है, सर्वश्री प्रेमनारायण टंडन, नयनचंद्र मुखोपाध्याय, उदयशङ्कर भट्ट, केदारनाथ भट्ट और ठाकुर उदयभानुसिंह, (लखनऊ विश्वविद्यालय) आदि ने इसे देखा है।

पुराने दिनों में आचार्य द्विवेदी का सभा से कुछ बातों में मतभेद था, इसका यह अर्थ नहीं कि सभा से उनको किसी प्रकार का द्वेष था, वे जिस सुधार के पक्ष में होते थे उसके लिए प्रयत्न करते थे। ऐसा तो सभी संस्थाओं में थोड़े बहुत परिमाण में होता है। संघर्ष तो जीवन का चिह्न माना जाता है। पार्लमेंट तक में वामपक्ष रहता है।

कुछ लोगों ने यह निराधार खबर उड़ाई है कि सभा में रक्खी हुई चिट्ठियों में से कुछ पत्र नष्ट कर दिए गए हैं, किन्तु निराधार बात का कुछ मूल्य नहीं होता और प्रतिष्ठित व्यक्ति ऐसी बातें कहते भी नहीं हैं, श्री मैथिलीशरण जी के यहाँ और द्विवेदी जी के घर पर जो 'कौटिल्य-कुठार' रक्खा हुआ है, उसे देखने का परिश्रम कितने द्विवेदी-भक्तों ने किया है? सभा में ७३ पृष्ठों का जो द्विवेदी जी का 'वक्तव्य' सुरक्षित है, उसे ही पढ़ने का कष्ट कितने सज्जनों ने किया है। इन दोनों चीजों के रहते सभा पर कुछ महत्त्व के पत्र नष्ट करने का आरोप लगाने में सज्जनता कहाँ तक है, इसका अनुमान समझदार जनता स्वयं कर सकती है।

सभा को यह अयाचित सात्विक दान प्राप्त हुआ है और यह आचार्य द्विवेदी की थाती है जो उनकी आज्ञा के अनुसार सुरक्षित है। कोई भी अधिकारी व्यक्ति पहले से सूचना देकर, स्वीकृति मिलने पर, इसको देखे और अपने दायित्व पर इसका उपयोग करे, सभा को तो इसमें प्रसन्नता ही होगी।

समस्त पत्रों को पढ़ने और उनकी तालिका बनाने के लिए समय और परिश्रम अपेक्षित है। सभा ने इस पत्र-संग्रह को छाँटने के लिए गत जुलाई मास में तीन सज्जनों की एक उपसमिति बनाई थी। उपसमिति ने विचार करके यह सुझाव उपस्थित किया है।

(१) द्विवेदी जी के पत्र-संग्रह की एक तालिका तैयार करके प्रकाशित की जाय, इसमें पत्र की तिथि, पत्र भेजनेवाले का नाम तथा पत्र का संक्षिप्त सार रहे, इसकी केवल २५० प्रतियाँ अभी छापी जायँ।

(२) पत्र-संग्रह में कुछ पत्र एकदम निजी हैं, उनका कोई साहित्यिक महत्त्व नहीं है, पर उनमें द्विवेदी जी का जीवन-चरित्र लिखने के लिये काफी ऐतिहासिक सामग्री मिल सकती है, ऐसी सामग्री अलग से एकत्र कराई जाय।

(३) संग्रह में कुछ साहित्यिकों के भी पत्र हैं, उनका साहित्यिक महत्त्व है। उन्हें अविकल रूप से प्रकाशित किया जाय। यदि पुस्तकाकार तत्काल प्रकाशित न हो सके तो किसी मासिक पत्र में या सभा की मासिक-पत्रिका में प्रकाशित कर दिया जाय।

यथावसर इसकी पूर्ति की जायगी।

—रामनारायण मिश्र
प्रधान मन्त्री
काशी नागरी-प्रचारिणी सभा

* * *

कवि सम्मेलन का पुरस्कार

तारीख २१ जनवरी को मुझे फैजाबाद कवि-सम्मेलन में अपने प्रिय मित्र श्री "जीवन" जी (गोरखपुर) के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इस कवि-सम्मेलन का मेरे मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। कई बातों में मेरे हित यह कवि-सम्मेलन स्मरणीय हो गया है।

शिक्षा-संस्थाओं में कवि-सम्मेलन का मेरे मत में बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। फैजाबाद कालेज के विद्यार्थियों के अपूर्व उत्साह और लगन को देखकर सभी बाहर से आए हुए कवि अत्यन्त प्रसन्न हुए। सभापति थे कथा-वाचस्पति श्री पंडित राधेश्याम जी कथावाचक। पंडित राधेश्याम जी का किसी कवि-सम्मेलन के सभापति के रूप में मुझे कभी पहले दर्शन नहीं मिला था, इसलिए मुझे उनके नाम को सभापति के लिए सुनकर पहले कुछ न जाने कैसा तो लगा, किन्तु वाह रे! पंडित जी की वाणी और वाह रे! उनका भव्य व्यक्तित्व! उनके भाषण और उनकी वाक्-प्रतिभा का शब्दों में वर्णन कठिन है। फैजाबाद में उन्हें लाने का सबसे अधिक आग्रह और उद्योग वहाँ के सिटी मैजिस्ट्रेट खाँ साहब बशीर अहमद ने किया था! अपने भाषण के अन्त में पंडित जी ने कहा था कि श्री बसीर अहमद जी ने उन्हें जो चिट्ठी लिखी थी वह हिन्दी में थी और उस पर हिन्दी में ही श्री बशीर अहमद साहेब के हस्ताक्षर थे! कवि-सम्मेलन के पहले दोपहर में साथ अयोध्या जाते समय हिन्दी और उर्दू की समस्या के सम्बन्ध में उन दोनों सज्जनों में जो बातें हुई थीं, कवि-सम्मेलन के अन्त में अपने भाषण में पंडित जी ने उसका भी वर्णन किया। श्री बशीर अहमद साहेब ने कहा था कि दर असल हिन्दुस्तान की भाषा बोलने की उर्दू और लिखने की हिन्दी है। पंडित जी ने कहा कि हम वादा करते हैं कि अगर हमारे मुसलमान भाई बोलने की उर्दू को हिन्दी अक्षरों में लिखना स्वीकार कर लेंगे तो हम समस्त हिन्दी की संस्थाओं से उनकी बोलने की उर्दू को ही हिन्दी मनवा देंगे और इस प्रकार सदा के लिए हिन्दी-उर्दू का झगड़ा और बिलगाव समाप्त हो जायगा। पंडित जी और खाँ साहेब का यह समझौता निस्संदेह भारत के समस्त हिन्दी व उर्दू के विद्वानों के ध्यान देने की चीज है। वस्तुतः हिन्दी और उर्दू का यह विराट भेद बहुत कुछ दो भिन्न लिपियों के कारण ही है। यदि उर्दूवाले अपनी लिपि को छोड़कर नागरी लिपि ले लें और हिन्दीवाले उनकी बोली जानेवाली उर्दू को ही हिन्दी मानकर अपना लें तो दोनों को लाभ हो!

पंडित राधेश्याम जी की बातों से ज्ञात हुआ कि वह अब वानप्रस्थी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। अब वह उस हिन्दी की निस्वार्थ भाव से जमकर सेवा करना चाहते हैं जिससे उन्होंने अपने जीवन में यश और धन दोनों पर्याप्त पाया है। उनमें वार्धक्य होने पर भी अभी अपार शक्ति और तन्मयता है और यदि हम लोग इसका लाभ उठाना चाहें तो एक वर्ष के लिए हमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का उन्हें सभापति बनाना चाहिए। मैं हिन्दी के विद्वानों और साहित्यकारों से बहुत नम्रता से अपने इस प्रस्ताव पर विचार करने की प्रार्थना करते हैं। अस्तु।

परंतु मेरे साथ एक घटना घट गई! वह घटना मुझे जीवन भर याद रहेगी। दूसरे दिन मैं और श्री जीवन जी बस्ती के लिए रवाना हुए। बस्ती में उसी दिन संध्या को कवि-सम्मेलन में हमें पहुँचना था। फैजाबाद में मेरी कविता की कापी छूट गई। गोरखपुर पहुँचने पर हमने वहाँ पत्र लिखा, किन्तु उत्तर मिला कि वहाँ वह कापी कहीं नहीं मिली! कविताओं की समस्त पूँजी उसी में थी। उसमें कम से कम ६०-६२ कविताएँ थीं जिनमें से जबानी मुझे ४-५ ही याद होंगी। इस प्रकार सन् १९२३ से १९४५ तक की मेरी कविताओं की कमाई जाती रही। १८ जनवरी को वसंत पंचमी के दिन मैंने एक कविता लिखी थी—"मेरा कविता से क्या नाता?" सो सचमुच ही कविता से मेरा नाता टूट गया!

सेंट ऐंड्रू ज कालेज,
गोरखपुर

राजनाथ पांडेय,
एम० ए०

स्वास्थ्य-चर्चा

नमक और क्षयरोग

रोगों को क्यों बचाना चाहिए ?

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

नमक हमारे जीवन के खाद्य पदार्थों में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। स्वस्थ शरीर के लिए नमक का उपयोग लाभदायक है किन्तु अस्वस्थ और रोगी शरीर के लिए यह हानिकारक भी सिद्ध हुआ है। इसलिए रोगियों को इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

मैं अपने सब रोगियों को नमक बिलकुल न खाने या कम खाने की राय दिया करता हूँ। कुछ रोग ऐसे भी हैं जिनमें नमक को बिलकुल छोड़ने से ही रोगमुक्ति मिल सकती है।

गुर्दे के रोग जैसे मूत्रकृच्छ्र, जलन्धर आदि में नमक नितान्त वर्जित है। नमक को दूर करने में गुर्दों को बड़ा श्रम उठाना पड़ता है और जब तक उन्हें विश्राम नहीं मिलता तब तक रोग नहीं जा सकता।

इसी प्रकार चर्म-सम्बन्धी रोग जैसे दाद, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, घाव आदि की अवस्था में नमक छोड़ना जरूरी है। नमक से रोग दूषित हो जाता है और ये रोग नहीं मिट पाते या मिटने में अत्यधिक समय लग जाता है।

नमक का प्रथम आघात स्नायु-मण्डल पर होता है। यह उस पर चिपक कर उसका ह्रास करता रहता है। अतः स्नायु-सम्बन्धी व्याधियों में भी नमक छोड़ना श्रेयस्कर है।

क्षयरोग—क्षयरोगी के लिए नमक साक्षात् कालरूप है। क्षयरोगी को नमकदार भोजन भूलकर भी न देना चाहिये। ज्वर के पूर्णतया टूट जाने तक नमक का परहेज़ रहे। क्षयरोगी को नमक खिलाने से ज्वर रमता है और फेफड़े, आँते तथा हड्डियाँ आदि गलती हैं और शरीर के भीतर होते हुए क्षय को नहीं रोका जा सकता। एक तरफ तो नमक आदि के रूप में कुपथ्य देकर रोगी के शरीर को क्षयीभूत करना और दूसरी ओर उस क्षय की पूर्ति के लिए इन्जेक्शनों तथा दवाओं द्वारा कैल्शियम आदि लवणों को शरीर में प्रविष्ट कराना भारी भूल है। चूँकि शरीर के भीतरी क्षय की सच्ची पूर्त्ति शाक-पात आदि में पाये जानेवाले लवणों ही से होती है, इन्जेक्शनों एवं दवाओं द्वारा पहुँचाये गये कैल्शियम, लोहा आदि, जो गैर वनस्पतिजन्य रसायन होते हैं, लाभ के बदले हानि पहुँचाते हैं। ये क्षय की पूर्त्ति करने में सर्वथा असमर्थ रहते हैं। यद्यपि इनके सेवन एवं उपयोग से कुछ समय तक बाह्यलाभ दिखाई पड़ता है अर्थात् क्षयरोगी कुछ बल का अनुभव करता है, उसका ज्वर का तापक्रम जरा घटता है इत्यादि, तथापि एक दिन अकस्मात् ही रोगी चल बसता है।

रोगावस्था में विशेषतः क्षयरोग में नमक या ऐसे ही किसी अन्य द्रव्य का सेवन बिलकुल न किया जाय। रोगी को फीका या अलोना भोजन खाना चाहिये। यदि बिना नमक की रोटी-शाक न भावे, तो उसे रोगमुक्ति पर्य्यन्त फल या कच्चे दूध पर रहना चाहिये। हाँ, यह बहुत जरूरी है कि वह प्रतिदिन नियमित रूप से कच्चे शाकों का पाव-आधपाव रस अवश्य लेता रहे। मैं प्रायःकर क्षयरोगी को घीया या पेठा का रस पिलाया करता हूँ। हम किसी भी शाक को कद्दूकस पर कसकर और साफ वस्त्र द्वारा मिट्टी के पात्र में निचोड़कर उसके रस को प्रयोग में ला सकते हैं। कद्दूकस के न मिलने पर शाक-पात को कूट कर भी रस निकाला जा सकता है। कच्चे शाक का रस सच्ची दवा है। इससे पाखाना साफ होता है। इसमें नैसर्गिक लवण, खाद्योज आदि रहते हैं। अतः यह शरीर की आवश्यकता एवं क्षय की पूर्ति करता है। निष्प्राण शरीर में प्राण लाता है। जो व्यक्ति कोरा रस नहीं पी सकते, उन्हें छाछ या मट्ठे में मिलाकर रस पीना चाहिये।

हम शाकों को मिट्टी के पात्र में धीमी-धीमी आग पर उबाल कर और फिर निचो कर भी रस तैयार कर सकते हैं। पर इस रस के खाद्योज नष्ट हो जाते हैं और उसके कुछ लवण भी वाष्प के साथ उड़ जाते हैं। उबले शाक का रस कच्चे शाक के समान गुणकारी नहीं होता। अतः हमें यथासम्भव कच्चे शाकों का रस ही पीना चाहिये। शाकों के रस के लिए उबालने के समय उनके वजन से दुगना-तिगुना जल मिलाना चाहिये। जब तक पानी का एक-दो हिस्सा जल न जावे, शाक को उबलने दिया जावे। पकाने के पात्र को ढके रखना जरूरी है। केवल एक शाक का या एक-दो को मिलाकर उनका रस तैयार किया जा सकता है। रस में किसी प्रकार का मसाला न मिलाया जावे। हाँ, विशेष अवस्थाओं में जरा सा गुड़ या बादाम को घिस कर मिलाया जा सकता है। उबले शाक के रस में आटा गुँधवाना भी रस को काम में लाने का एक अच्छा ढंग है।

देशी राज्यों में सम्मिलित शासन

(पेज ७ का शेष)

के स्थान पर बढ़ जाएगी। अभी अधिकांश छोटे राजागणों को मृत्यु दंड का पूर्णाधिकार नहीं है। उसकी स्वीकृति राजनीतिक विभाग से लेनी पड़ती है। बहुत से राजाओं को न्याय-सम्बन्धी पूर्णाधिकार—अर्थात् हाईकोर्ट के अधिकार भी नहीं हैं; बहुत से राज्यों के लिए प्रधान न्यायालय राजनीतिक विभाग है। इस के अतिरिक्त, किसी के भी प्रार्थनापत्र पर राजनीतिक विभाग उचित अनुचित हस्तक्षेप किसी भी मामले में कर सकता है। प्रधान न्यायालय की स्थापना से इस स्थिति में अन्तर हो जाता है। वह न्यायालय अंतिम न्यायालय है। राजा अथवा राजनीतिक विभाग, जिसके पास भी अंतिम निर्णय का अधिकार है, प्रधान न्यायालय को वह अधिकार सौंप देते हैं और, इस प्रकार, राज्यों की खोई हुई सत्ता उन्हें लौट कर मिल जाती है। निर्णयों में किसी प्रकार का उचित अनुचित हस्तक्षेप भी प्रधान न्यायालयों की स्थापना के अनन्तर राजनीतिक विभाग नहीं कर सकता। कोई प्रार्थनापत्र यदि वहाँ तक पहुँचेंगे भी तो रद्दी की टोकरी की शोभा बढ़ाएँगे।

रह गई स्वेच्छाचारिता की बात। उसमें अवश्य राजाओं की हानि मानी जा सकती है। पर प्रथम बात यह है कि यह धारणा सर्वथा मिथ्या है कि सभी राजागण न्याय-शासन में स्वेच्छाचारी हैं अथवा होना चाहते हैं। अधिकांश रूप से आजकल के राजागण न्याय-विभाग में स्वेच्छाचारी होना पसन्द नहीं करते हैं, अन्य विभागों की बात मैं नहीं कहता। यह बात शिक्षित शासकों के लिए तो विशेष रूप से लागू है। दया की देन तो अन्त में उन्हीं की होती है, इसलिए न्याय-शासन में शासकों का हस्तक्षेप यूँ भी अवांछनीय है। इसलिए राजा तथा प्रजा दोनों के ही हित में यही है कि सम्मिलित प्रधान न्यायालय स्थापित हों।

सम्मिलित शासन के अन्य रूपों के लिए भी बहुत कुछ यही सत्य है। यह तो निर्विवाद है कि सम्मिलित रूप से जितने योग्यतापूर्ण राजकर्मचारी नियुक्त किये जा सकते हैं उतने पृथक रूप से नहीं किये जा सकते। यह भी लगभग निर्विवाद है कि सामूहिक प्रयत्न व्यक्तिगत प्रयत्न अधिकांश बातों में श्रेयस्कर होता है। सब से बड़ी बात तो यह है कि सम्मिलित शासन के इन रूपों से शासकवर्ग सह-कारिता तथा सहयोग का वह पाठ पढ़ रहा है जो उसे भावी शासनव्यवस्था में आसन भारतीय जीवन प्रदान करेगा।

"सरस्वती सिरीज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित
उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित
हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहाबा

ताकत और
स्फूर्ति के लिए

वर्तमान काल में, जब कि लोगों को कष्टकर जलवायु में कठिन परिश्र करने की आवश्यकता पड़ती है, तब साधारण खाद्य पदार्थ के साथ-साथ उ और भी बलवर्द्धक पदार्थ का उपयोग करना चाहिए।

नियो-विगोरिन आधुनिक वैज्ञानिक प्रणाली-द्वारा प्रस्तुत एक सफल टॉनि है। शरीर के रस-रक्तादि के साथ यह शीघ्र घुल-मिल जाती है। यह साधार दौर्बल्य, रक्तहीनता एवं बीमारी के बाद की कमजोरी की एक उत्तम दवा है।

अन्य दवाएँ :—
नियो-लैक्स—पुरानी कोष्ठबद्धता के लिए।
राईनोल ओ—सर्दी से भरे नाक, जुकाम और छींक के लिए।
हरमोस्का—औरतों के मासिक-संबंधी बीमारियों के लिए।
कैस्प्रेन—सर-दर्द, दाँत का दर्द, गठिया और वात-शूल-संबंधी दर्द, सर्दी तथा एनफ्लूएंजा के लिए।

स्नायु-शक्ति-हीनता को दूर कर शरीर बल और स्फूर्त्ति का संचार कर देती है।

काम करने के बाद की थका और आलस्य को दूर कर नवीन श और पौरुष को प्राप्त करने के लि नियो-विगोरिन की एक गोली दिन दो बार सेवन करना लाभप्रद है।

बिरला लेबोरेटरीज़ का नाम विश्वसनीयता की गारंटी है।

नियो-विगोरिन

NEO VIGORIN
BIRLA LABORATORIES

बिड़ला लेबोरेटरीज़
मालिक—दि अपर गैंजेज़ सुगर मिल्स लिमिटेड।
हेड आफिस—८, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।
यू० पी० तथा दिल्ली के बायलेजिकल एंड फरमास्युटिकल प्रोडक्टस के
सोल वितरक गांउसन्स एंड कम्पनी चाँदनी चौक, पोस्ट बक्स नं० ५२ दिल्ली।

संवाददाताओं के पत्र

लश्कर (ग्वालियर) में होनेवाले शिक्षा-सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में डा० रमण सी० वसा ने जो भाषण दिया, उसका कुछ अंश इस प्रकार है—

शिक्षा को उसके वास्तविक स्वरूप में स्थापित करने के हेतु इस बात की परम आवश्यकता है कि सर्व-प्रथम हम उसके घोर उपयोगितावादी पहलू का एकदम परित्याग कर दें और उसकी नींव सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से डालें। ऐसी स्थिति में शिक्षित व्यक्ति अपने लिए नहीं समाज के लिए जिएगा। उदर-पोषण के साथ अनेक व्यक्ति शिक्षा को राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति में नियोजित करते हैं, वह भी अधिकांशतः स्वार्थसिद्धि के निमित्त। हमें शिक्षा को इस दलदल से निकालना होगा जिससे स्वार्थमय राजनीतिक शक्ति की प्राप्ति में इसका उपयोग न किया जा सके।

हम अधिकाधिक परिमाण में शिक्षा चाहते हैं और उत्तम शिक्षा चाहते हैं और ऐसी शिक्षा चाहते हैं,' जो साढ़े सात लाख ग्रामों में निवास करनेवाले हमारे भाइयों के उपयुक्त हो। पैसा उनके पास है कहाँ? और यदि वे पैसा दे भी सकें तो भी क्या उन्हें ऐसी उपयुक्त शिक्षा मिल सकेगी जो उनके अबोध शैशव को शक्तिशाली यौवन में विकसित कर दे? तभी उनका अज्ञान विदूरित हो सकेगा, उनके भ्रमजाल का उच्छेद होगा। आर्थिक अभाव और परम्परागत दासता का काला मुँह तभी किया जा सकता है जब शिक्षा-द्वारा जन-साधारण में चेतना का प्रवाह दौड़ा दिया जाय, जिससे वे अपनी शक्तियों को पहचानें। इस प्रकार हमें शिक्षा को सार्वजनिक बनाना है। वह कुछ थोड़े से भाग्यशालियों ही की भोग्या नहीं है, उस पर से उनका एकाधिकार उठ जाना चाहिए। ऐसा होने पर ही उसमें से घोर उपयोगिता और पर-शोषण का विष दूर किया जा सकेगा। —डाक से

* * *

श्रीनगर (काश्मीर) में गत २० फरवरी को शिशु-संसार नामक एक संस्था स्थापित हुई है जिसका उद्देश्य इस प्रकार है:—यह संस्था हिन्दी-प्रचारिणी सभा श्रीनगर के अन्तर्गत होगी। प्रत्येक प्रांत के शिशुओं का संगठन करना इसका मुख्य उद्देश्य है। बच्चों से प्रतियोगिता के लेख इत्यादि लिखवा कर उन्हें पारितोषिक भेजना, संगठन दृढ़ करने के लिये आपस में सिक्के टिकटें आदि भिजवाना, सप्ताह में शिशु-संसार का आयोजन प्रति रविवार को करना, लेख, कवितायें, नाटक प्रधान कार्य्यालय को भेजना तथा वहीं से पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाने का आयोजन करना। जहाँ चार पाँच शिशु-संसार के सदस्य मिलें, वहाँ शिशु-सम्मेलन स्थापित करना। उचित विषयों पर वादविवाद का प्रबन्ध करना। लड़कियाँ भी भाग ले सकेंगी, उनके लिये अलग प्रबन्ध है। प्रत्येक सदस्य का शुल्क आठ आने होगा। अधिक जानकारी के लिये—मन्त्री शिशु-संसार, कालखुड हब्बाकदल श्रीनगर, (कश्मीर) —संवाददाता

* * *

कलकत्ता—में २२ फरवरी के प्रथम पक्ष में १००१ दुग्ध-वितरण केन्द्रों से १७२,३०६ व्यक्तियों को दूध दिया गया, १३३ सहायक कार्य-गृहों में १८५१५ व्यक्तियों को आहार, आश्रय एवं कार्य देकर सहायता पहुँचाई गई। ६७ अनाथालयों में ३,६४६ अनाथों को आश्रय दिया गया। इसी पक्ष में धर्मार्थ सहायता पानेवालों की संख्या ६७,८६३ रही तथा १४,६२८ व्यक्तियों को १० सहायक कार्य-गृहों से मदद पहुँचाई गई।

बङ्गाल-सरकार ने केन्द्रीय सरकार से परामर्श कर जूट बोये जाने की भूमि का रकबा तथा जूट की न्यूनतम एवं अधिकतम दर निश्चित किया है। बङ्गाल में १६४० के आधारमूल जूट बोने की भूमि के ८ आने में जूट फसल बोने का आदेश दिया जा रहा है। न्यूनतम मूल्य १५ रुपये प्रतिमन एवं अधिकतम १७ रुपये प्रतिमन निश्चित किया गया है। केन्द्रीय सरकार न्यूनतम मूल्य में निर्धारित केन्द्र पर उप स्थित किया हुआ जूट खरीदने का विश्वा दिलाया है। —संवाददाता

* * *

हरिद्वार एडवाइजरी बोर्ड ऋषिकेश की १२ मार्च को होनेवाली मीटिंग में पेश होने के लिए श्री महन्त शान्तानन्दनाथ जी ने निम्न प्रस्ताव भेजे हैं—

(१) हरिद्वार यूनियन की जनता और बाहर से आनेवाले यात्रियों के स्वास्थ्य के सुविधार्थ नहर के किनारे मायापुर के पुल से कनखल के पुल तक जो डेढ़-दो मील का स्थान है, उसकी सफाई कराकर एक सुन्दर पार्क बनाया जाय। (२) नीलधारा के साथ मायापुर से लेकर जो बाँध कनखल की ओर बना हुआ है, उसके अधूरे होने के कारण कनखल-निवासियों को हर समय बाढ़ का खतरा बना रहता है, इसलिए उस बाँध को इतना लम्बा बनवाया जाय कि कनखल की आबादी को बाढ़ का खतरा न रहे। —संवाददाता

* * *

लखनऊ में पूज्यपाद श्री १०८ श्री नारायणस्वामी जी का ७० वाँ जन्म-दिवस उत्सव ता: ६ मार्च १६४५ को सायंकाल ७ बजे से, सेवा-धर्मार्थ-औषधालय सदरबाजार में मनाया जायेगा, जिसमें शहर और बाहर के अनेक सन्तों और महिलाओं के पधारने की आशा है!

—डा० लक्ष्मीनारायण गौड़

अलवर में राजस्थान क्षत्रिय-महासभा का १३वाँ वार्षिक अधिवेशन श्रीमान् हिजहाइनेस पन्ना-नरेश की अध्यक्षता में मार्च की ता० २४-२५-२६ को हो रहा है। इस अधिवेशन में राजपूताना, गुजरात, काठियावाड़, बड़ोदा, मध्यभारत, ग्वालियर और वेस्टर्न इण्डिया एजेन्सी के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इस अवसर पर राजस्थानी साहित्य-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन और ग्रामोद्योग-सम्मेलन भी किये जा रहे हैं, जिनमें क्षत्रियेतर विद्वानों तथा कार्यकर्ताओं

मान व्यवहार केवल इसलिए होता था कि रेडियो-अधिकारी इस भाषा को समझते ही नहीं थे और इसके फलस्वरूप इस भाषा में लिखी हुई बातों की कलात्मक परख भी न कर सकते थे। अपने पद के मद के कारण वह इस विषय को किसी जानकार व्यक्ति के हाथ सम्पूर्णतः देना भी नहीं चाहते थे। इस दिशा में मेरे सारे प्रयत्न निष्फल रहे और अब वे विवाद में भी न जीत सके तो उन्होंने मुझे एक "दुराग्रही" की उपाधि से विभूषित कर दिया। उदाहरणार्थ देहली के वर्तमान स्टेशन डाइरेक्टर महोदय ने वनदेवी नामक रेडियो रूपक में ब्राह्मण शब्द का उच्चारण बिरहमन किया। इस विषय में पहले उन्होंने स्वयं ही मेरी राय मांगी थी और बाद में इसलिए उस पर ध्यान नहीं दिया कि नाटक आगा हश्र की भाषा में लिखा हुआ था।

स्टेशन डाइरेक्टर की हैसियत से उन्हें अधिकार था कि वे जो कुछ ऊटपटाँग चाहें ब्राडकास्ट करें और यदि उनके पांडित्य के सामने नहीं तो अधिकार के

कुँ० देवीसिंह (मंडावा) प्रधान मन्त्री—राजस्थान-क्षत्रिय-महासभा-मंडावा-हाउस, नागपुर। —संवाददाता

बेनोला
वनस्पति (घी)
सब प्रकार की मिठाइयाँ तथा अन्य खाद्य-सामग्री पकाने का सर्वोत्तम साधन
पत्र-व्यवहार का पता—
भारत वनस्पति मैनुफैक्चरिंग कं०,
५० निस्वत रोड, मजगाँव, बम्बई १०

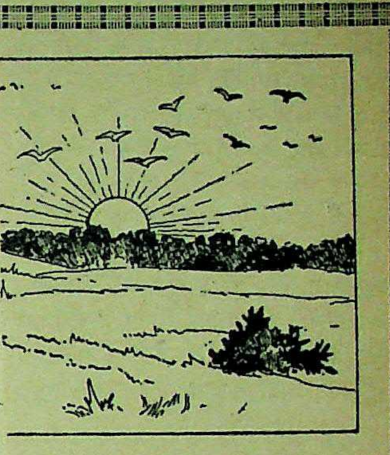

न्त बहार
संगीत की ध्वनि गूँज उठी है। इस
पने श्रान्त और थके हुए मन को प्रसन्न
हृदय को संगीत में प्रस्फुटित करनेवाले
सहायक होंगी। पं० सोहनलाल द्विवेदी
संचार करेगी तो ठा० गोपालशरणसिंह
चित्रपट आपको दिखायेगी। इसी प्रकार
ताएँ सुनाकर आपका हृदय आनन्द और
का २) भैरवी २।।≡)
२) मंजीर १)
।।≡) माधुरी ।।≡)
किंकिणी ।।।)
न प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारत माता

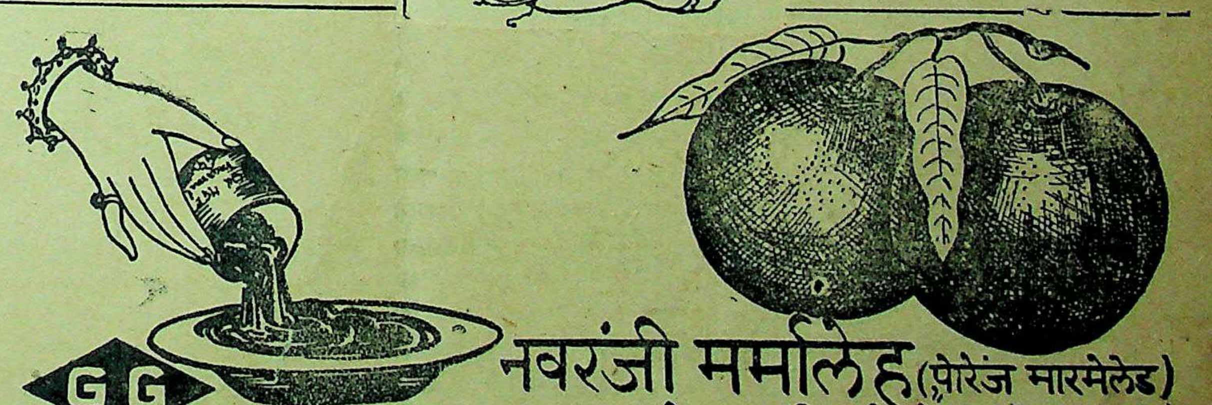

GG BRAND
नवरंजी मर्मालेड (ऑरेंज मारमेलेड)
के इस डिब्बे में
नारंगी के पौष्टिक तत्व बन्द हैं—इसका व्यवहार स्वास्थ्यवर्धक है
जी.जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फ़ैक्टरी प्रागरा
जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी बाजार देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेंशन, कलकत्ता (४) मैसर्स गिरधरलाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मैसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली।

हासपरिहास

कहा गया है कि अब शहरों में पूर्ण राशनिंग होने जा रही है। चलो अच्छा हुआ, अब ठिकाने से भोजन-सामग्री तो प्राप्त होगी। सरकार की यही क्या कम है ?

❋ ❋ ❋

हमारी सरकार बड़ी अच्छी, बड़ी समझदार और दूरन्देश है। क्योंकि हर आदमी के लिए वह गेहूँ ६ छटाँक के बदले ४ छटाँक देने की सोच रही है। अच्छा है, बदहजमी की शिकायत तो दूर हो ही जायगी, और चाहे कुछ भी न हो। लेकिन यह वैद्य और डाक्टर कितने नाम का रोना रोयेंगे ?

* * *

बस्ती की खबर है ५४ वर्ष के एक महापुरुष ने एक ५ वर्ष की लड़की से शादी की है। भारतवर्ष में ऐसे ऐसे वीर भी मौजूद हैं। इन्हें लड़ाई में भर्ती क्यों नहीं कर लिया जाता ?

❋ ❋ ❋

इलाहाबाद विश्व-विद्यालय के होस्टलों के रसोइयों ने लड़कों को आगाह किया है कि वह या तो ४ चपातियाँ खाने के लिए लें या अपनी राशन बढ़वायें। क्यों नहीं जहाँ रसोइये, कहार और महरी कन्ट्रोल के काम में मददगार हैं वहाँ राशनिंग क्यों न सफलता प्राप्त करेगी ?

* * *

करांची में भीषण आग के कारण एक रुई का गोदाम जल गया। जान पड़ता है ब्लेक मार्केटवालों के भी दिन खराब हैं।

❋ ❋ ❋

मुस्लिम मजलिस कलकत्ता के मंत्री महोदय फरमाते हैं कि श्री जिन्ना ने मुसलमानों में अकर्मण्यता, भय और लाचारी का भाव भरा है। क्या खूब, मिस्टर जिन्ना और अकर्मण्यता ? जान पड़ता है मंत्री महोदय जिन्ना साहब की लीडरी से वाकिफ़ नहीं हैं ?

❋ ❋ ❋

सर सुलतान अहमद साहब रेडियो में हिन्दी के प्रति न्याय करने को तैयार नहीं हैं। तैयार कैसे हो सकते हैं, आखिर उर्दू की रक्षा की आवाज लगाने के लिए भी तो कोई प्लेटफार्म चाहिए ?

❋ * ❋

सर सुलतान फरमाते हैं कि रेडियो की भाषा हिन्दुस्तानी रहेगी। जरूर रहे, और खूब रहे, नहीं तो हिन्दी-उर्दू की गठबन्धन कैसे होगी ?

—हैं हैं जी

अनुचित हस्तक्षेप कर सकता है। प्रधान न्यायालय की स्थापना से इस स्थिति में अन्तर हो जाता है। वह न्यायालय अंतिम न्यायालय है। राजा अथवा राजनीतिक विभाग, जिसके पास भी अंतिम निर्णय का अधिकार है, प्रधान न्यायालय को वह अधिकार सौंप देते हैं और, इस प्रकार, राज्यों की खोई हुई सत्ता उन्हें लौट कर मिल जाती है। निर्णयों में किसी प्रकार का उचित अनुचित हस्तक्षेप भी प्रधान न्यायालयों की स्थापना के अनन्तर राजनीतिक विभाग नहीं कर सकता। कोई प्रार्थनापत्र यदि वहाँ तक पहुँचेंगे भी तो रद्दी की टोकरी की शोभा बढ़ाएँगे।

रह गई स्वेच्छाचारिता की बात— उसमें अवश्य राजाओं की हानि मानी जा सकती है। पर प्रथम बात यह है कि यह धारणा सर्वथा मिथ्या है कि सभी राजागण न्याय-शासन में स्वेच्छाचारी हैं अथवा होना चाहते हैं। अधिकांश रूप से आजकल के राजागण न्याय-विभाग में

रस पिलाया करता हूँ। हम किसी भी शाक को कद्दूकस पर कसकर और साफ वस्त्र द्वारा मिट्टी के पात्र में निचोड़कर उसके रस को प्रयोग में ला सकते हैं। कद्दूकस के न मिलने पर शाक-पात को कूट कर भी रस निकाला जा सकता है। कच्चे शाक का रस सच्ची दवा है। इससे पाखाना साफ होता है। इसमें नैसर्गिक लवण, खाद्योज आदि रहते हैं। अतः यह शरीर की आवश्यकता एवं क्षय की पूर्ति करता है। निष्प्राण शरीर में प्राण लाता है। जो व्यक्ति कोरा रस नहीं पी सकते, उन्हें छाछ या मट्ठे में मिलाकर रस पीना चाहिये।

हम शाकों को मिट्टी के पात्र में धीमी धीमी आग पर उबाल कर और फिर निचोड़ कर भी रस तैयार कर सकते हैं। पर इस

जिन्दगी भर पैंशन लीजिए

एन्यूटी सर्टेन बाँड

"स्वदेशी" की अपूर्व योजना

इस योजना में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित हो सकते हैं।
आप भी इस योजना से लाभ उठाइए।
व्याज ४½ प्रतिशत तक मिल जाता है।

स्वदेशी बीमा कम्पनी लि०, आगरा।

कम्यूनिस्ट और कम्यूनिस्ट पार्टी

(पेज ५ का शेष)

संघर्ष। महात्मा गान्धी वाइसराय से मिलना चाहते थे; उनको विश्वास था कि लड़ाई की नौबत न आयेगी। किन्तु नौकरशाही ने नेताओं को पकड़ लिया। जनता की क्रोधाग्नि भड़क उठी। किन्तु नेता ऐसा आन्दोलन न चाहते थे; यह बात महात्मा जी और मौलाना आज़ाद दोनों ही स्पष्ट कर चुके हैं। कांग्रेस कोई कदम ऐसा न उठाती, जिससे साम्राज्यवादी जापान को मदद पहुँचती। यह बात कम्यूनिस्टों ने निडर होकर कही। इससे उनकी लोकप्रियता कम हो सकती है, किन्तु कोई भी ईमानदार दल लोकप्रियता की वेदी पर अपने विश्वासों की बलि नहीं दे सकता।

जनता के स्वाभाविक रोष का ऐसे दलों ने प्रयोग किया, जो खुल्लमखुल्ला जापानी साम्राज्यवाद के पिट्ठू थे और जापानी रेडियो से अपनी नीति घोषित करते थे। यह केवल संसार की जनता के साथ और चीन के साथ ही विश्वासघात न था, किन्तु अपने देश और कांग्रेस की नीति के साथ भी। कांग्रेस के बड़े से बड़े नेता बार-बार कह चुके हैं कि जापानी साम्राज्यवाद से हमारा कोई समझौता नहीं हो सकता।

राष्ट्रीय सरकार बनाने के लिए कांग्रेस और लीग का समझौता जरूरी है। कांग्रेस के नेता लीग से समझौता करने के इच्छुक हैं। लीग को 'साम्प्रदायिक संस्था' आदि कहना भारतीय राजनीति की गुत्थी सुलझाने में मदद नहीं करता। हमारे देश के विशाल मुस्लिम समुदाय की शक्ति लीग के पीछे है। इस असंख्य मुस्लिम जनता की देश-भक्ति पर हमें विश्वास करना ही होगा। कांग्रेस और लीग की संयुक्त शक्ति अपार होगी। इस शक्ति का वेग ब्रिटिश साम्राज्यवाद की हिलती दीवारें बर्दाश्त नहीं कर सकेंगी। उसे राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करनी ही पड़ेगी।

मुस्लिम जनता को आत्म-निर्णय का अधिकार देकर हम उसे विश्वास दिलाते हैं कि स्वाधीन भारत में वह भी स्वाधीन होगी। इस अधिकार से हम अपने देश की पिछड़ी जातियों के मन का संदेह हटाते हैं, उनका विश्वास और उत्साह बढ़ाते हैं। महात्माजी इस अधिकार को सिद्धान्त रूप में स्वीकार कर चुके हैं। जो परस्पर के छोटे भेद हैं, संशय हैं, उन्हें मिटाना शेष है। हमें ऐसा वातावरण बनाना है, जिसमें फिर समझौते की बातचीत शुरू हो। इस वातावरण के लिए महात्मा जी और मि० जिन्ना ने अपने संयुक्त वक्तव्य में अपील की थी। लीग की जो माँग सिद्धान्त के अनुकूल है, वही देश स्वीकार करेगा, अनुचित माँगें नहीं। आत्म-निर्णय की माँग नहीं अस्वीकार की जा सकती, यद्यपि आज भी हिन्दू महासभा इसके विरुद्ध है। किन्तु कांग्रेस का विश्वास जन-सत्ता में रहा है और वह ऐलान कर चुकी है कि किसी भी जाति को वह उसकी इच्छा के विरुद्ध, ज़बरदस्ती भारतीय संघ में न रक्खेगी।

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी ने अपना रक्त-स्वेद बहाकर और लगन से जनता की सेवा करके उसका विश्वास प्राप्त किया है। वही जनता इसका निपटारा करेगी कि कम्यूनिस्ट समाजवाद के सिद्धान्तों का पालन कर रहे हैं और उसकी सेवा के योग्य हैं, अथवा नहीं। जहाँ तक कांग्रेस का सम्बन्ध है, महात्मा गांधी और श्रीमती सरोजिनी नायडू यह स्पष्ट कर चुके हैं कि कांग्रेस के सदस्य बनने से कोई भी कम्यूनिस्टों को नहीं रोक सकता।

अपने को समाजवादी कहनेवाले कुछ

बर्लिन की ओर बढ़नेवाले

(पेज ५ का शेष)

नियुक्त किया गया था। तब जर्मन
नायक वान क्लग की सेनाओं को
बितर करते हुए आपने कहा था,
तक जर्मन सस्ती विजय प्राप्त करते रहे
अब उन्हें किसी शत्रु से पाला पड़ा
अब हम पीछा कर रहे हैं और जर्मन
पाँव रखकर भाग रहे हैं। इसके बाद
ग्रीष्म में पुनः जर्मनों ने वोल्गा
स्टालिनग्राड पर आक्रमण किया तो
ने रथ का पहिया अपने कंधों पर
था। स्टालिनग्राड में शत्रु को पछाड़
उपलक्ष्य में ही फर्स्ट वाइस कमीसार
का पारितोषिक प्रदान किया था। वह
केन्द्रिक कमान आपके ही हाथ में था।

आज भी उसी बहादुरी और दृढ़
साथ मार्शल जुकोव जर्मनी की सीमा
अन्दर युद्ध कर रहे हैं। किन्तु आज
जनता की नैतिकता उतनी पतनोन्मुख
है जितनी १९१८ में थी। अगर
को रूसी सेनायें ले भी लेंगी तो उन्हें
के चने चबाने पड़ेंगे किन्तु मार्शल
अपने दोनों पार्श्वों में मार्शल कोनीव
शेकोसोव्सकी को लेकर अपना
प्रहार करने की बाट देख रहे हैं।
विश्व-युद्ध के इतिहास के इस महान्
का सूत्रपात करने के लिए जुकोव
बधाई के पात्र हैं। कुछ लोग यह
सकते हैं कि जर्मन-कूटनीतिज्ञ केवल
लिए पीछे हटते जा रहे हैं कि मित्रराष्ट्र
अड़चन में पड़ जायें कि जर्मनी को
में किसके सिर सेहरा बँधे ? वास्तव
के किसी अज्ञात स्थान में तीन-बड़ों
(मार्शल स्टालिन, चर्चिल और प्रे
रूजवेल्ट) भेंट भी इसी समस्या को
हो रही है किन्तु इससे यह अन्दाज़
लगाना चाहिए कि जर्मनी केवल कू
के पीछे इतनी भारी पराजय का
करने की गलती कर लेगा। अभी यु
और भी भयंकर रक्तपात देखना है।

ऐसे कुशल और वीर सेनानायक
शरीर के आकार-प्रकार के विषय में
न जाने क्या सोच सकते हैं किन्तु
साधारण कद के व्यक्ति हैं। उनके
और चौड़े जबड़े उनके मुख पर एक पेशे
सैनिक की छाप अंकित करते हैं।
चिबुक पर एक छोटा-सा गोल गढ़ा
है। लोग कहते हैं कि उनके सौभाग्य
चिह्न है। अपने व्यक्तिगत जीवन
गम्भीर रहते हैं। वह समाज में
से रहना पसन्द नहीं करते और
अधिकांश क्षण सैनिक-इतिहास का अ
करने में ही व्यतीत करते हैं। अभी
आपको अपने जीवन में एक कठिन
देनी है और दुनिया उन क्षणों की
कर रही है जब समाचार-समितियाँ
समाचार देंगी कि मार्शल जुकोव ने
पर रूसी झंडा फहरा दिया।

व्यक्ति आज विचित्र विचारों का प्रचार
रहे हैं। वे समाजवादी हैं; किन्तु संसा
एक ही समाजवादी देश की शक्ति
देखकर क्षुब्ध हो उठते हैं। वे हि
और जापान की विजय के समाचा
उत्फुल्ल हो उठते हैं। भारतीय कम्यू
पार्टी से वह द्वेष रखते हैं, और ब्रि
साम्राज्यवाद के स्नेही रॉयिस्ट दल से
नहीं करते। मुस्लिम जनता की
संस्था मुस्लिम लीग से उन्हें घृ
किन्तु हिन्दू महासभा से उन्हें स्ने
राजनीति के अखाड़े में उतरकर वे
पेंच ही सोच रहे हैं, और समाजवा
मूल सिद्धान्तों का होम द्वेष और वै
की अग्नि में कर चुके हैं।

रेडियो की भाषा-नीति

प्रोग्राम-असिस्टेन्ट का त्याग-पत्र

श्री ज्ञानस्वरूप भटनागर, अखिल भारतीय रेडियो में प्रोग्राम असिस्टेन्ट के पद पर कार्य कर चुके हैं। किन्तु आपने रेडियो की वर्तमान हिन्दी-विरोधी नीति से खिन्न होकर त्यागपत्र दे दिया है। आपने लखनऊ रेडियो के स्टेशन डाइरेक्टर के नाम जो त्याग-पत्र भेजा था उसका कुछ अंश इस प्रकार है—

आज जब, भाषा की वे लौहशृङ्खलायें, जिनमें आल इण्डिया रेडियो ने इतनी चतुरता से हमें जकड़ रखा था, हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के रेडियो-विरोधी प्रस्ताव के प्रबल धक्के से झनझना उठी हैं, मैं कुछ पंक्तियों में वह पीड़ा व्यक्त करना चाहता हूँ, जिससे मेरा हृदय; पिछले कई वर्षों से पीड़ित रहा है।

तीन वर्ष से अधिक हुए जब दिसम्बर १९४१ में मैंने मासिक वृत्ति पानेवाले कलाकार की हैसियत से लखनऊ रेडियो की सेवा स्वीकार की थी, तब तत्कालीन स्टेशन डाइरेक्टर महोदय ने कहा था कि मेरा कार्य लखनऊ रेडियो में हिन्दी—'विशेषज्ञ का होगा'। उस समय मैंने उनकी इस बात को हिन्दी-संसार की माँगों के प्रति रेडियो अधिकारियों की सहानुभूति का द्योतक समझा था। अश्चर्य है कि इस स्थिति की विषमता उस समय मेरी समझ में नहीं आई क्योंकि आपको किसी विशेषज्ञ की आवश्यकता प्रायः उसी विषय के लिए पड़ती है जिससे आप सर्वथा अपरिचित हों। अस्तु, रेडियो के कर्मचारी कुछ इस प्रकार चुने गये थे कि वे उत्तर-भारत में हमारी सजीव हिन्दी-भाषा को एक प्रकार से विदेशी विषय मानने लग गये थे। पर यदि मैं यह बात उस समय नहीं समझा था तो मुझे शीघ्र ही इस कठोर सत्य का परिचय तथा—कथित 'हिन्दी-विशेषज्ञ' की हैसियत से आपकी मशीन का एक भाग बनकर मिल गया।

इस पद पर मैंने प्रायः सात महीने काम किया और एक निम्न पद से उच्च पदाधिकारियों का एकाकी विरोध करने के फल का कठोर पाठ हृदयंगम किया! क्योंकि तात्कालीन लखनऊ रेडियो में काम करनेवाले पाँच प्रोग्राम असिस्टेण्टों में चार हिन्दी-भाषा से सर्वथा अपरिचित थे। इस स्थिति के फलस्वरूप हिन्दी, पांडुलिपियों में इसलिए परिवर्तन करना पड़ता था कि उनसे सम्बन्ध रखनेवाला प्रोग्राम असिस्टेण्ट उन्हें समझ सके, और इसलिए और भी विकृत करना पड़ता था कि रेडियो के उन अपढ़ कलाकारों को सुविधा हो, जो उर्दू-लिपि भी कठिनता से पड़ सकते थे। इसके बाद बचे-खुचे हिन्दी शब्दों का उच्चारण भी एक कठिन समस्या बन जाती थी। बहुधा सुन्दर और समुचित शब्दों का परिहार करके अटपटी और असंगत शब्दावली का प्रयोग करना पड़ता था जिससे निरक्षर रेडियो कलाकार को सुविधा हो। यह भाषा-सुधार करने का ढङ्ग ही वह वैज्ञानिक मिश्रण तैयार करनेवाला पाथ था जिसमें दो सजीव भाषाओं, हिन्दी और उर्दू, का बलिदान करके अस्तित्वहीन हिन्दुस्तानी भाषा का निर्माण किया जा रहा था।

कुछ शब्दों का परिवर्तन प्रोग्राम असिस्टेण्ट के लिए साधारण बात थी, और इससे उसकी कार्यकुशलता भी सिद्ध होती थी। परन्तु एक सचेत कलाकार को एक शब्द के हेर-फेर से भी कितना दुःख होता है, यह कुछ ही पंक्तियों में व्यक्त करना कठिन है। वह स्वप्नमग्न पर यत्नशील अपने हृदय में शब्दों को चुनता और आँकता घण्टों केवल इसलिए बैठा रहता है कि अपने हृदय की काल्पनिक मूर्ति एक अनूठी शब्दावली में चित्रित कर दे। उसके हर्ष की कल्पना कीजिए जब वह एक शब्द में ही उस छाया को मूर्तिमान करने में सफल होता है। वह शब्द उसके लिए सजीव होता है, उसमें जीवन का स्पन्दन होता है और वह उसके कानों में झंकृत होता है क्योंकि वही उसके मिर्माण का माध्यम है। वह शब्द उसको उतना ही प्रिय होता है जितना कि एक माली को वह प्रथम कलिका होती है जिसे वह महीनों की मेहनत के बाद प्रभात की प्रथम किरणों के साथ पहले ही पहल देखता है। इससे भी अधिक, एक शब्द-चित्र में सावधानी से सहेजा हुआ शब्द लेखक को उतना ही प्यारा होता है जितना कि किसी माँ को अपना बच्चा, जिसे वह अपने गर्भ में रखती है और फिर झूला-झुलाकर बड़ा करती है। अस्तु उसकी निराशा की कल्पना कीजिए जब कि वह चित्र जिसकी उसने इतनी कठिनता से कल्पना की थी और फिर इतनी मानसिक यातना के बाद शब्दों में चित्रित किया था, केवल इसलिए विकृत कर दिया जाय कि अज्ञानी को उसका ज्ञान हो सके। मैं यह सब सहता रहा, यद्यपि मेरा उत्साह मन्द पड़ गया और मेरी शक्ति क्षीण हो गई। परन्तु मेरा हृदय व्यथा से कातर हो उठा था, यहाँ तक कि मुझे एकाएक भयंकर पीड़ा के दर्शन के साथ ही यह बोध हुआ मैं एक पाप कर रहा हूँ—क्योंकि मैं नाश करने के लिए ही निर्माण करता था।

मैं इस कठोर सत्य से चकित ही था कि जुलाई १९४२ में प्रोग्राम असिस्टेन्ट चुन लिया गया और दिल्ली में नियुक्त हुआ। इस तथाकथित पदोन्नति से मेरी आहत भावनाओं को कुछ शान्ति मिली क्योंकि मैंने सोचा कि अब मुझे किसी सहानुभूतिहीन प्रोग्राम असिस्टेण्ट पर निर्भर रहना पड़ेगा। मैं स्वयं ही ब्राडकास्ट के लिए रूपक और उसके लिए उपयुक्त कलाकार चुन लूँगा। परन्तु दिल्ली में और भी बड़ी निराशा मेरे भाग्य में बदी थी। यहाँ के स्टेशन डाइरेक्टर महोदय अँगरेज़ी के बड़े विद्वान् थे, परन्तु उत्तर-भारत की भाषाओं से सर्वथा अनभिज्ञ थे। अस्तु उन्होंने सभी कुछ डाइरेक्टर आफ प्रोग्राम के हाथ में छोड़ रखा था। मासिक वेतन पानेवाले कलाकार की हैसियत से मुझे यह समझने का बहुत कम अवसर मिला था कि डाइरेक्टर आफ प्रोग्राम विभिन्न विभागों पर कितना कठोर नियन्त्रण कर सकता है और तब मुझे मालूम हुआ कि आल इण्डिया रेडियो की नौकरशाही मुझे सदा ही जकड़े रहेगी चाहे मैं किसी पद पर क्यों न पहुँच जाऊँ। अपने पद के अधिकार और तत्कालीन स्थिति के कारण इन प्रोग्राम डाइरेक्टर महोदय की राय उन विषय पर भी अन्तिम निर्णय होती थी, जिसकी बारहखड़ी से भी यह महोदय अपरिचित थे। श्री चन्द्रकिशोर जैन का लिखा हुआ नाटक '[illegible]' जो सर्वोत्तम मौलिक रेडियो रूपकों में से एक है, पहले-पहल ब्राडकास्ट के लिए अयोग्य सिद्ध हुआ और फिर कई मास बाद केवल इसलिए ब्राडकास्ट किया जा सका क्योंकि उस समय अच्छे नये रेडियो रूपकों की कमी थी। २५) का तुच्छ पारिश्रमिक लेखक को दिया गया, जब कि उर्दू-लिपि में आये हुए उन रूपकों पर भी प्रायः इसके दूने रुपये दिये जाते थे, जो अँगरेजी एकांकी नाटकों का शाब्दिक अनुवाद-मात्र होते थे। हिन्दी-लिपि में आये लेखों के साथ पारिश्रमिक और नीति में सदा ही यह असमान व्यवहार केवल इसलिए होता था कि रेडियो-अधिकारी इस भाषा को समझते ही नहीं थे और इसके फलस्वरूप इस भाषा में लिखी हुई बातों की कलात्मक परख भी न कर सकते थे। अपने पद के मद के कारण वह इस विषय को किसी जानकार व्यक्ति के हाथ सम्पूर्णतः देना भी नहीं चाहते थे। इस दिशा में मेरे सारे प्रयत्न निष्फल रहे और अब वे विवाद में भी न जीत सके तो उन्होंने मुझे एक "दुराग्रही" की उपाधि से विभूषित कर दिया। उदाहरणार्थ देहली के वर्तमान स्टेशन डाइरेक्टर महोदय ने वनदेवी नामक रेडियो रूपक में ब्राह्मण शब्द का उच्चारण बिरहमन किया। इस विषय में पहले उन्होंने स्वयं ही मेरी राय माँगी थी और बाद में इसलिए उस पर ध्यान नहीं दिया कि नाटक आगा हश्र की भाषा में लिखा हुआ था।

स्टेशन डाइरेक्टर की हैसियत से उन्हें अधिकार था कि वे जो कुछ ऊटपटाँग चाहें ब्राडकास्ट करें और यदि उनके पांडित्य के सामने नहीं तो अधिकार के सामने मैं नतमस्तक हो गया। परन्तु आगे चलकर मुझे आश्चर्य हुआ जब कि मुझसे यह कहा गया कि मैं इस नाटक की गणना हिन्दी-नाटकों में करूँ। उस समय मैंने तत्कालीन प्रोग्राम एक्जीक्यूटिव से स्पष्ट राय से कह दिया था कि यद्यपि मैं ब्राडकास्ट नाटकों का भाषा के अनुसार विभाजन उनके आदेशानुसार करने के लिए तैयार हूँ परन्तु व्यक्तिगत रूप से मैं उस भाषा को कदापि हिन्दी नहीं मान सकता जिसमें हमारे पवित्र और पुरातन शब्द "ब्राह्मण" को अकारण ही '(बिरहमन)' विकृत कर दिया जाय। हाँ यदि यही दुराग्रह है तो मेरा प्रण है कि जब तक मैं स्पष्ट अथवा अस्पष्ट ध्वनि उच्चारण कर सकता हूँ तब तक यही दुराग्रह करता रहूँगा। यदि उस भाषा से जिसे मैं अपने पालने में तुतलाया करता था, अनुराग रखना और इस बात की चेष्टा करना कि जब कभी भी उसका प्रयोग हो तो ठीक ठीक हो,—यही दुराग्रह है तो मैं जब तक जीवित हूँ तब तक मैं यही दुराग्रह करता रहूँगा।

अस्तु, मैं अपने प्रोग्राम असिस्टेण्ट के पद से त्यागपत्र देता हूँ और अनुग्रहीत हूँगा यदि ३१ जनवरी को अपनी वर्त्तमान छुट्टी की समाप्ति पर मुझे रेडियो की सेवा से अवकाश दे दिया जाय, जिससे कि मैं आल इण्डिया रेडियो के बाहर अपने पत्रकार बन्धुओं के साथ मिलकर उस भाषा के लिए पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के प्रयत्न कर सकूँ, जिसे बोलने और लिखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त है।

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
GRIPE WATER
INFANTS PRESERVATIVE
FOR THE DISORDERS OF CHILDREN

भारत माता

अपने बच्चों से कहो! कि
बुड वर्ड का ग्राइप वाटर
बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

युक्तप्रांतीय आबकारी शासन-प्रबन्ध की रिपोर्ट

३१ मार्च, १९४४ में समाप्त होनेवाले वर्ष में आबाकारी-सम्बन्धी शासन-प्रबन्ध की वार्षिक रिपोर्ट अभी हाल में युक्त-प्रान्तीय आबकारी-विभाग के कमिश्नर श्री शंकरप्रसाद आई० सी ० एस० ने तैयार की है।

रिपोर्ट की प्रारंभिक भूमिका में कहा गया है—"वर्षा कुल मिलाकर साधारण रही पर वर्ष के अन्त में असाधारण वृष्टि के कारण फसलों को कुछ हानि पहुँची। गल्ले का मूल्य पिछले वर्ष से कुछ अधिक रहा। पर युद्ध-जनित कारणों से श्रमिक वर्ग की क्रयशक्ति में वृद्धि होने से आबाकारी से संबंधित द्रव्यों की खपत अधिक रही और आबकारी-विभाग से होनेवाली आय में अभूतपूर्व वृद्धि रही।"

रिपोर्ट के अनुसार आलोचित वर्ष में १०,१५,०२३ गैलन देशी शराब की खपत हुई जब कि उसके पिछले वर्ष ५,७९,७३७ गैलन की खपत हुई थी। इस हिसाब से देशी शराब की खपत ७५·१ प्रतिशत अधिक हुई। देशी शराब बेचनेवाली दूकानों की संख्या १९३० रही, जो कि पिछले वर्ष १,३७५ थी।

प्रान्त में शराब की भट्ठियों की संख्या १० है। मुरादाबाद और गोंडा में दो और नई भट्ठियाँ खुल गई हैं और शीघ्र ही और भी खुलेंगी, ऐसी आशा की जाती है।

विदेशी शराब में लाइसेंस-सम्बन्धी शुल्क की आय में ४२·९ प्रतिशत वृद्धि हुई। प्रान्त में देशी तथा विदेशी शराब की खपत का कुल परिमाण २,०१,८३० गैलन रहा, जो पिछले वर्ष १,२५,८७९ गैलन था।

गाँजा और भाँग की माँग अधिक होने से उन पर कर बढ़ाया गया, जिससे चरस की कमी की थोड़ी-बहुत पूर्ति हुई। गाँजे की खपत बढ़कर २५,८८६ सेर तक पहुँच गई, जो पिछले वर्ष केवल १४,२५० सेर थी। इस हिसाब से खपत में ८१·८ प्रतिशत की वृद्धि हुई। भंग की खपत बढ़कर १,३८,९२५ सेर तक पहुँच गई, जो पिछले वर्ष १,७०७ सेर थी। अफीम की खपत भी बढ़ गई। पिछले साल ११,५५७ सेर अफीम की खपत हुई थी, इस वर्ष वह बढ़कर १६,९०१ सेर तक पहुँच गई।

आबकारी-विभाग को कुल आय इस वर्ष ३,६८,१४,००० रु० की हुई। पिछले वर्ष की आय २,२६,५८,००० रु० थी। इस हिसाब से आय में ६२·५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

अ० भा० ब्रज साहित्य मंडल

दिल्ली में दूसरा अधिवेशन

हिन्दी-साहित्य-मंडल दिल्ली के जनरल सेक्रेटरी श्री विष्णु प्रभाकर सूचित करते हैं कि अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य-मंडल का दूसरा अधिवेशन हिन्दी-साहित्य-मंडल के प्रबन्ध में ३ और ४ मार्च को होगा। कार्यक्रम के अन्तर्गत ब्रज-साहित्य-परिषद, ब्रज भाषा-कवि-सम्मेलन तथा कवि-दरबार आदि सम्मिलित हैं।

ब्रजभाषा के प्रतिष्ठित विद्वान् राय बहादुर शुकदेवबिहारी मिश्र, सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल, बा० गुलाबराय तथा अन्य अनेक सज्जन सम्मिलित होंगे। रायबहादुर पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी अध्यक्ष निर्वाचित किये गये हैं।

दिल्ली में होनेवाले अ० भा० व्रजभाषा सम्मेलन के सभापति रायबहादुर पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी।

आरोंदा
१८६६ नीलगिरि तेल वापरो
[illegible] बंधु, बम्बई ४.
स्थापना १९२६
जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय
र० नं
१८६
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफा
आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख० अल
युकलिप पेन, बाम तथा दाद का मरहम हम
कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजि

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजियें!

शोभना के रोज़ाना सौंदर्य प्रसाधन की एक बात है—सुबह शाम लक्स टॉयलेट साबुन का तेज़ फेन अपने शरीर में मलना, फिर साफ पानीसे धोना। वह कहती है—"इस सरल नियमित रीतिसे मेरी अंगकांति मृदु, मुलायम और बेदाग रहती है"। हमारी बहुतेरी फिल्म स्टार यही कहती है।

LUX
LUX TOILET SOAP

लक्स टॉयलेट साबुन
LTR. 127-111-40 HI
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

दिल छीन लीजिये
और कैद कर रखिये!

आकर्षक होना स्त्री-मात्र का कर्तव्य है। केवल विशेष अवसरों पर ही नहीं, हर समय। स्त्री-आकर्षण, बनाव श्रृंगार और सुगंधित द्रव्यों के चुनाव पर इतना ज्यादा अवलम्बित है कि आधुनिक कामिनी को ऐसी प्रसाधन सामग्रियों से परिचित रहना पड़ता है जिनके गुण की समानता पर वह निर्भर रह सके। स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन-सामग्रियों की यही विशेषता है। प्रत्येक सामग्री के उपकरण बड़े परिश्रम के बाद स्थिर किये गये हैं, व उनके शुद्ध तथा असली होने की गारण्टी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनकी सामग्रियाँ भारतीय जलवायु के अनुरूप बनती हैं।

युद्धकाल की पैकिंग : जहाँ तक कच्चे माल और बनाने के तरीके का सम्बन्ध है स्टैनिष्ट्रीट का माल दुनियाँ भर के मालों से टक्कर लेता है। कागज नियंत्रण कानून और युद्धकाल की दूसरी पाबन्दियों के कारण हमारे बहुत से द्रव्यों के लेबुल और पैकिंग जैसे चाहियें वैसे नहीं हो पा रहे हैं। इसके लिये हम जनसाधारण से क्षमा प्रार्थना करते हैं

स्टैनिस्ट्रीट
कोल्ड व वैनिशिंग क्रीम टैलकम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक यूडी कोलोन स्टैनैरोमा
लैवेण्डर वाटर हेयर शैम्पु
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐन्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर
SSK

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।
भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

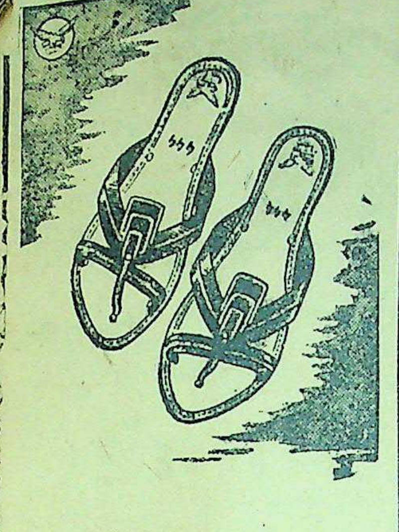

EAGLE Chappals
CAWNPORE

एजेंसियाँ

सिंध
- डी० नेभनदास टांडो अलहयार
- भारत बूट हाउस, हैदराबाद
- पोपुलर जनरल स्टोर हैदराबाद
- बधानी बूट हाउस, जकोबाबाद
- तुलसीदास कलाचन्द ब्रदर्स, शाहदादपुर
- ठाकुरमल कुन्दामल, टांडो, आदम
- प्रभात बूट हाउस, लरखाना
- प्रेम बूट हाउस, कराची
- मीर मुहम्मद बलूच, कराची
- मास्टर चप्पल, कराची
- नेशनल बूट हाउस कराची
- प्रभात बूट हाउस, सक्कर

पंजाब
- सरदार बूट हाउस, अबोहर
- प्रकाश बूट हाउस, अमृतसर
- विक्ट्री बूट हाउस मांटगोमरी
- अजीम बूट हाउस लालमूसा
- मदनलाल दासूराम आरिफ़वाला
- सैगल बूट हाउस, बूरेवाला

मदरास
- कानपुर बूट हाउस बेजवादा
- मार्डन शू मार्ट, गुंटूर
- श्री गनपति बूट हाउस, इलौर

यू० पी०
- सस्ता बूट हाउस शिकोहाबाद
- कृष्णा बूट हाउस, मथुरा
- प्रेम बूट हाउस, बरेली
- सक्सेना ब्रदर्स बरेली
- कपूर ऐंड फ्रेंड्स इलाहाबाद
- चप्पलभंडार, फ़रुखाबाद
- प्रेम बूट हाउस, बदायूँ
- भारती स्टोर्स, हापुड़

बंगाल
- फैंसी शू स्टोर, मेमनसिंह

मध्यप्रान्त
- इस्माइल जी पीरभाई जबलपुर

भारतीय रियासतें
- बर्मा ब्रदर्स बीकानेर
- लाल ब्रदर्स जोधपुर

इम्पायर आफ इण्डिया

लाइफ एश्योरेंस कम्पनी लि०

स्थापित—१८९७

प्रधान कार्यालय—बम्बई

छियालीसवीं वार्षिक रिपोर्ट की कुछ विशेषतायें			
	सम्पूर्ण आय	८७,६७,०००)	से भी अधिक
	चालू बीमे	१५,०६,८६,०००)	” ”
	सम्पत्ति	५,९८,८४,०००)	” ”
कम्पनी के आरम्भ काल से अब तक चुकाये गये दावे		७,९२,००,०००)	भी अधिक

एजेंसी तथा विवरण के लिये लिखे :—

मेसर्स डी० सी० सेन गुप्ता एण्ड कं०, चीफ एजेन्ट्स, यू० पी०

४४, जानसेनगंज, इलाहाबाद
अथवा
१०, नील रोड, लखनऊ।

क़ीमतों पर कंट्रोल—
सरकार किस प्रकार आपकी सहायता कर रही है

होर्डिंग ऐण्ड प्राफीटियरिंग प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स के अनुसार कंट्रोलर जनरल, सिविल सप्लाइज़ को आपके हितों की रक्षा के लिए बहुत व्यापक अधिकार प्राप्त हैं।

उदाहरण स्वरूप

१—यह किसी दुकानदार को हुक्म दे सकता है कि खरीद-बिक्री का हिसाब रखे और अपने व्यापार के अलावा दूसरे व्यापारों के बारे में भी आवश्यक विवरण पेश करे।

२—किसी दुकानदार को हुक्म दे सकता है कि अपने बही-खाते दिखाये और यह हुक्म भी जारी कर सकता है कि कोई गज़टेड आफिसर दुकान या व्यापार से संबंधित इमारत में दाख़िल होकर तलाशी ले।

३—सन्देह होने पर सामान पर क़ब्ज़ा कर सकता है।

४—आयात किये गये माल के बन्दरगाह पर [illegible] तक की लागत का सर्टीफिकेट जारी कर सकता है जो हर हालत में निश्चित प्रमाण समझा जाता है।

५—माल के वितरण पर क़ाबू रखने के लिए केवल निर्धारित व्यक्तियों के हाथ माल बेचने का आदेश दे सकता है जिससे माल उन्हीं जगहों पर जाये, जहाँ इसकी बहुत ज़रूरत हो।

६—दुकानदारों को हुक्म दे सकता है कि अपनी दुकानों में कंट्रोल की क़ीमतों की सूची प्रमुख स्थान पर लगावें।

यह आर्डिनेन्स अनाज और उन चीज़ों को छोड़ कर जो समय समय पर इससे ख़ास तौर पर बरी की गई हों, और सब चीज़ों पर लागू होता है।

बहुत सी चीज़ों के अधिकाधिक भाव निश्चित किये जा चुके हैं। तत्संबंधी विज्ञप्तियों की प्रतियाँ मैनेजर आफ पब्लीकेशन्स, सिविल लाइन्स, दिल्ली से मिल सकती हैं।

अगर आपको सन्देह हो कि आपसे अधिक दाम लिये गये हैं, तो बिना संकोच मामले कि रिपोर्ट स्थानीय सिविल सप्लाइज़ आफिसर को या चाहें तो नीचे लिखे हुए डिपार्टमेण्ट के पास भेजिए।

नोट—कुछ हालतों में सबूत का बार मुलज़िम पर होता है। उसे अपने आपको निर्दोष साबित करना पड़ता है। प्रदी को उसका जुर्म साबित करने की ज़रूरत नहीं।

१५ हज़ार रुपये जुर्माना और क़ैद
मुनाफ़ाख़ोरी के लिए कड़ी सज़ा

कराची, १३ अक्टूबर—एण्टी होर्डिंग ऐण्ड प्राफीटियरिंग आर्डिनेन्स (संग्रह तथा मुनाफ़ाख़ोरी निरोधक क़ानून) के अनुसार कल जनरल स्टोर के कई व्यापारियों को कड़ी सज़ायें दी गईं। एक दुकानदार को ६: महीने सपरिश्रम कारावास और १५ हज़ार रुपये जुर्माने की सज़ा हुई।

इस तरह की खबरों से पता चलता है कि सरकारी इन्सपेक्टरों के दल-बादल नित्य प्रति अनुचित भावों को घटाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

बात
समझ लीजिए—अपने
अधिकार
माँगिए

होर्डिङ्ग ऐण्ड प्राफीटियरिङ्ग

एच्. पी. पी. ओ.

प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स

डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़
ऐण्ड सिविल सप्लाइज़,
नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

AAA 1320 Hindi

"If it's ELGIN it's good!"

'यदि वह एल्गिन का है तो अच्छा है

एल्गिन—टर्किश और हकाबैक तौलियों, ड्रिल्स,
झाड़न, धोतियों, साड़ियों और चादरों के वास्ते।

दि एल्गिन मिल्स कं० लिमि०, कानपुर

सोल सेलिंग एजेंट्स—
मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र
पुराना जनरलगंज, कानपुर।

स्टाक रखनेवाले—
मेसर्स पी० बी० कूपर एण्ड कम्पनी, दि माल, कानपुर।
मेसर्स सी० टेकचन्द एण्ड कम्पनी, हजरतगंज, लखनऊ।
तथा अन्य उच्च श्रेणी की दूकानें।

EK-4

जब प्रकृति
अपना काम नहीं कर पाती

आपको, अपनी ऋतु का समय नियमित करने के लिये ऊपरी सहायता की जरूरत पड़ती है। अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड से यह सहायता आपको मिल सकती है। इसमें स्त्रीरोगों की प्राचीनतम भारतीय औषधि—अशोक—व नवीनतम औषधि विज्ञान द्वारा अनुमोदित औषधियाँ व विटामिन हैं। यह विटामिन और हौरमोन के साथ भी मिलती है। इसलिये यह स्त्रियों के कष्ट निवारण में अति लाभप्रद है। अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड के सेवन से आपका नष्ट स्वास्थ्य व स्फूर्ति थोड़े दिनों में फिर आयेंगे।

अशोका
कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि

आइ. एम. एस. लैबोरेटरी लि:
लैबोरेटरी व कारखाना: अमौसी
(लखनऊ)। हेड आफिस: ५
रौएल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

KIK

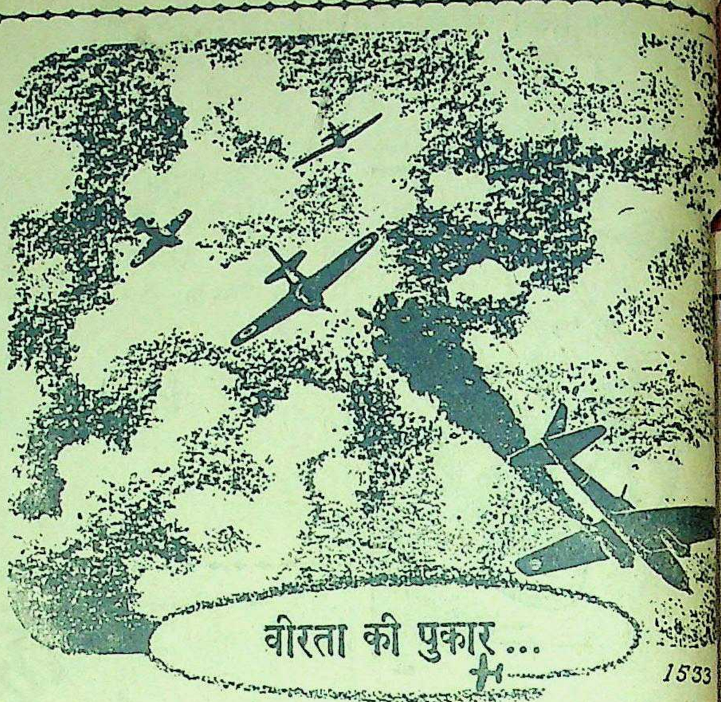

प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में वीरता की पुकार सुनाई देती है। हिन्दुस्तान के
बेड़े में साहस और जोश के प्रदर्शन का सबसे अच्छा अवसर मिलता है। यह सं
उन नवयुवकों को जो उड़ना चाहते हैं संसार के सर्वश्रेष्ठ विमान और अच्छी से अ
ट्रेनिंग प्रदान करता है। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े का पूर्ण शिक्षित विमान-चा
आकाश में तीन सौ मील प्रति घंटे के हिसाब से विमान उड़ाने वाला केवल स
युवक ही नहीं होता, बल्कि उत्तम ट्रेनिंग के कारण उसके अन्दर अन्य अमूल्य
भी होते हैं। इस सेवा के पुरस्कारस्वरूप उसे सरदारी करने की योग्यता, कार्य प्र
करने की क्षमता, साहस, आत्म-नियन्त्रण आदि अच्छे अच्छे गुण प्राप्त होते हैं

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुतसे जवानोंमें ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।

* सरकार ने इस बात की गारंटी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग खाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।

* ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरी से आये हुए जवान सरकारी खर्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।

* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा संबंधी विशेष रियायतें मिलेंगी जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके संबंध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर अ
निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट्
रिक्रूटिंग आफ़ीसर के पास भेज दी
जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े
पाइलाट (विमान चालक) की नौ
के संबंध में पूरा विवरण और प्रा
पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम ________________

पता ________________

____

____

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े
को ऐसे जवानों की ज़रूरत है
तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सु
ताकत ठीक हो और उम्र १७½ औ
साल के बीच हो; विमान चला
परिश्रम को सहन कर सकते हो
अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी
बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए।

आई० ए० यफ०, जी० डी० (पाइलेट्स)
रिक्रूटिंग आफिसर, ५ वे रोड, लखनऊ।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

ार, ११ मार्च, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 11th March, 1945

गिस्तान का महारथी जीव ऊँट जो अपनी उपयोगिता के लिये विख्यात है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

सोवियट रूस की नई पैदल सेना।
क्रीमिया सम्मेलन और अन्तर्राष्ट्रीय शांति

आरोंदा
१८६९
नीलगिरि तेल
— वापरो —
साण्डालेकर बंधु, बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५।।=) डा०ख० अलग, युकलिप पेन, बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

दर्जी छाप
सिलाई का धागा

भविष्य में जब कभी आपको किसी भी किस्म की सुई के लिए तागे की आवश्यकता हो तो दर्जी छाप खरीदिये।

भारतवर्ष में
एकमे थ्रेड कं०, लि०
द्वारा निर्मित
बैंक आफ बड़ौदा बिल्डिङ्ग,
एपोलो स्ट्रीट, बम्बई।

THE ACME THREAD CO. LTD
DURZI CHAAP
ARTICLE

खांसी बाघ की तरह भयंकर है...

सिरोलिन 'रुचि'
सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषोधक है

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभू[illegible] की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य [illegible] अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्[illegible] शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने [illegible] श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीर

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

ये वे चीज़ें हैं जिन पर
कनज़्यूमर गुड्स (कंट्रोल आफ डिस्ट्रीब्यूशन) आर्डर लागू होता है

इस आर्डर के अनुसार माल का आयात करने वाले व्यापारियों के लिए ज़रूरी है कि आम ज़रूरत का जो सामान बाहर से आया हो, उसकी सूचना कंट्रोलर जनरल, सिविल सप्लाइज़ को भेजें और जब तक माल की खपत या वितरण के संबंध में उसके आदेश मिल न जायँ, माल न बेचें (सिवा उस सूरत के कि आदेश २१ दिन के अन्दर अन्दर प्राप्त न हों।) यह आर्डर स्थानीय रूप से तैयार की हुई चीज़ों पर भी लागू होता है। यहाँ इनमें से कुछ चीज़ों की एक सूची दी जाती है :—

१. पेन्सिल
२. स्लेट की पेन्सिल
३. साबुन, क्रीम आदि शृंगारी सामान
४. जूतों और धातुओं की पालिश
५. निबें
६. फाउण्टेन पेन और इनके हिस्से
७. असली और नक़ली रेशम के कच्चे और पक्के धागे
८. असली और नक़ली रेशम के कपड़े
९. हाथ से बुनने का ऊन
१०. ऊनी कपड़े
११. छाते और इनका सामान
१२. तामचीनी के बर्तन
१३. किरासिन तेल के लैम्प
१४. उस्तरे और इनके ब्लेड
१५. छुरी, चाक़ू आदि
१६. टाइपराइटर के रिबन
१७. रेडियो सेट, इनका सामान और रेडियो बल्ब
१८. साइकिलें और इनका सामान
१९. फोटो के फिलम, प्लेट और छापने का कागज़
२०. क्लाक, घड़ियाँ, टाइमपीस और इनके पुर्ज़े
२१. कारतूस
२२. चीनी के बर्तन
२३. चश्मों के फ्रेम

इस सूची में और चीज़ें भी बढ़ाई जा सकती हैं। नई घोषणाओं की ख़बर रखिए। इस आर्डर के कारण क़ीमतों का कंट्रोल अधिक सफल बन गया है, क्योंकि वितरण पर कंट्रोल रखे बिना क़ीमतों का कंट्रोल पूरी तरह कामयाब नहीं हो सकता।

ठीक वितरण से संकट दूर होता है

डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़ ऐण्ड सिविल सप्लाइज़, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

होर्डिङ्ग ऐण्ड प्राफीटियरिङ्ग
एच. पी. पी. ओ.
प्रिवेन्शन आर्डिनेन्स

AAA 1327

क्षमा कीजिएगा
पेट स्वच्छ रखनेवाला
एन्ड्रयूज आपका
शरीर सुव्यवस्थित
रखता है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

133
ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

रूसी
मार्शल
वाल्टिक
फ़ौजें कोल
हैं जो स्टे
है। रोके
जगह पहुँ
मील पर
गया है।

*

जर्मन
दिया है।
के बढ़ाव
गढ़ था।
कि जर्मनी
शीघ्र ही
रेलें असा
पतियों को

*

केन्द्री
के अर्थ-स
४६ के
किया। च
में १५५
अगले
करोड़ ८
लगाया
सम्बन्धी
मिला कर
बैठता है

*

डाक
महसूल
कर बड़ा
दर हर
आना कर
अतिरिक्त
तारों पर
कच्चे तम
प्रति पौंड
अतिरिक्त
दिया गया
की आय
का इनक
अतिरिक्त
दिया गया

रूसी से

देशदूत

वर्ष ७ संख्या २८] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ११ मार्च, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है?

रूसी सेनापतियों मार्शल जुकोव और मार्शल रोकोसोवस्की दोनों की सेनायें वाल्टिक तक पहुँच गई हैं! जुकोव की फौजें कोलबर्ग से क्षेत्र में समुद्रतट पर पहुँची हैं जो स्टेटिन के उत्तर पूर्व ६५ मील पर है। रोकोसोवस्की समुद्रतट के पास ऐसी जगह पहुँचे हैं जो जुकोव की फौजों से ३० मील पर है। उनका कब्जा कोसलिन पर हो गया है।

* * *

जर्मनों ने स्टारगार्ड नगर खाली कर दिया है। यह स्टेटिन की ओर लाल सेना के बढ़ाव में बाधा डालने वाला प्रबल जर्मन गढ़ था। इसके भी लक्षण दिखाई देते हैं कि जर्मनी की राजधानी बर्लिन के लिये भी शीघ्र ही आक्रमण होने वाला है। सोवियट रेलें असाधारण प्रयत्न से दोनों रूसी सेनापतियों को सब सामग्रियाँ पहुँचा रही हैं।

* * *

केन्द्रीय एसेम्बली में भारत सरकार के अर्थ-सदस्य सर जेरेमी रेजमैन ने १९४५-४६ के लिए युद्ध का छठाँ बजट पेश किया। चालू आर्थिक वर्ष के संशोधित बजट में १५५ करोड़ ७७ लाख की आय तथा अगले वर्ष के बजट के तखमीने में १६३ करोड़ ८९ लाख की घटी होने का अनुमान लगाया गया है। १९४४-४५ के सेना सम्बन्धी खर्च का संशोधित तखमीना कुल मिला कर साढ़े चार अरब से भी अधिक बैठता है।

* * *

डाक, पार्सल, तार और टेलीफोन के महसूल बढ़ा दिए गए हैं। तमाखू पर भी कर बढ़ा दिया गया है। डाक पार्सलों की दर हर हालत में प्रति ४० तोले पर ६ आना कर दी गई है। साधारण तारों पर अतिरिक्त कर में एक आने तथा जरूरी तारों पर दो आने की वृद्धि की गई है। कच्चे तमाखू पर कर बढ़ा कर ७॥ रु० प्रति पौंड कर दिया गया है। टेलीफोन का अतिरिक्त कर १।३ से बढ़ा कर १।२ कर दिया गया है। १५ हजार रुपये से अधिक की आय पर तथा अधिक से अधिक दर का इनकम टैक्स देनेवाली आयों पर अतिरिक्त कर प्रति रुपया ३ पाई बढ़ा दिया गथा है।

केन्द्रिय एसेम्बली ने २१ के विरुद्ध २२ वोटों से श्री गोविन्द देशमुख का यह प्रस्ताव स्वीकार किया कि हिन्दुओं के बीच विवाह के सम्बन्ध में हिन्दू कानून के अनुसार कानून सम्बन्धी अयोग्यताएँ दूर करने का उनका बिल निर्वाचित कमेटी के सुपुर्द किया जाय। इस बिल का अभिप्राय यह है कि हिन्दुओं में 'सगोत्र' विवाह और हिन्दुओं की विभिन्न उप-जातियों के बीच विवाह जायज माना जाय।

* * *

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पं० बालकृष्ण शर्मा, जो ३० महीने तक नजरबन्द रक्खे जाने के बाद अपनी भतीजी की बीमारी के कारण २५ फरवरी को बरेली सेन्ट्रल जेल से १४ दिन के पैरोल पर छूटे हैं, बिना किसी शर्त के रिहा कर दिये गये हैं।

* * *

वाशिंगटन की भारत की स्वाधीनता सम्बन्धी राष्ट्रीय कमेटी सानफ्रान्सिस्को में होने वाले संयुक्त राष्ट्रों के आगामी सम्मेलन में गैर सरकारी तौर से प्रतिनिधित्व करने की योजना कर रही है। कमेटी की तरफ से समस्त प्रतिनिधिमण्डलों के अध्यक्षों को स्मृति-पत्र भेजे जा रहे हैं। उस स्मृति-पत्र की एक प्रति संयुक्त रूप से प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, मि० चर्चिल और मार्शल स्टालिन के पास भी भेजी जायगी।

* * *

जब कि वह सम्मेलन होता रहेगा, श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित सानफ्रांसिस्को की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करेंगी। कैलोफोर्निया में प्रकाशित 'वायस आफ इंडिया' नामक पत्र के सम्पादक डाक्टर अनूपसिंह इस बात का प्रयत्न कर रहे हैं कि श्रीमती पण्डित से अनुरोध किया जाय कि मार्ग में रुक कर वह कुछ एक प्रश्नों पर भाषण करें।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने रेडियो पर भाषण करते हुए जोरदार शब्दों में कहा है कि एशिया संयुक्त राष्ट्रों के सभी सिद्धान्तों की कसौटी होगी, परन्तु साम्राज्यों के जारी रखने से विश्वशांति तथा मानवता की प्रगति सदैव खतरे में रहेगी।

* * *

जर्मन रेडियो के राजनैतिक टिप्पणी-कर्त्ता ने कहा है कि इतिहास में हम पर इतना गम्भीर संकट कभी नहीं पड़ा है। हम कभी इस प्रकार एकदम अकेले नहीं रहे हैं। अपनी इतनी अधिक प्रिय भूमि को छोड़ते हुए कितना दुख होता है, इसका शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता।

* * *

जनरल च्यांगकाईशेक ने वैधानिक सरकार की स्थापना की तैयारी करनेवाले कमीशन का उद्घाटन करते हुए चीनी कम्यूनिस्टों के प्रति अपना रुख स्पष्ट किया तथा अपने देशवासियों को वचन दिया कि वैधानिक सरकार की स्थापना के लिये राष्ट्रीय परिषद् १२ नवम्बर को बुलाई जायगी।

* * *

केन्द्रीय एसेम्बली में गंजाम और विजगापट्टम के प्रतिनिधि श्री के० एस० गुप्त (कांग्रेसवादी) जब बजट पर भाषण कर रहे थे तो वे सहसा बेहोश हो गये, और हृद्गति रुक जाने से मर गये। एसेम्बली तत्काल स्थगित हो गई।

* * *

सर स्टेफर्ड क्रिप्स, जो इस समय विमान-उत्पादन मन्त्री हैं, मजदूर दल में सम्मिलित हो गये हैं।

* * *

खबर है कि प्रेसीडेंट रूजवेल्ट बसन्त ऋतु में श्रीमती रूजवेल्ट तथा अपने कर्मचारियों के साथ लन्दन जायेंगे।

* * *

मिस्र के प्रधान मन्त्री मेहरपाशा पार्लामेंट में धुरीराष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने के बाद ही गोली से मार दिये गये। गोली लगते ही तत्काल उनकी मृत्यु हो गई। कहा जाता है कि जिस व्यक्ति ने गोली चलाई वह गरम दल का था। नोक्राशे पाशा को नया प्रधान मन्त्री नियुक्त किया गया है।

* * *

औपनिवेशिक मन्त्री वाइकौंट क्रानबोर्न ने लार्ड्स सभा में यह सूचित किया कि सानफ्रांसिसको में होनेवाले मित्रराष्ट्रीय सम्मेलन के पूर्व जो साम्राज्य सम्मेलन साम्राज्य सम्बन्धी प्रश्नों पर विचार करने के उद्देश्य से हो रहा है, उसमें भाग लेने के लिए भारत को भी निमन्त्रित किया गया है।

* * *

केन्द्रीय एसेम्बली में एक प्रश्न के उत्तर में गृह सदस्य सर फ्रांसिस मूडी ने बताया कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य अपने-अपने प्रान्तों को भेजे जा रहे हैं।

* * *

एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में गृह सदस्य ने कहा कि श्री जयप्रकाश नारायण अपने प्रति पुलिस के बुरे व्यवहार के सम्बन्ध में सरकार पर मामला चलाने की इच्छा रखते हैं और उन्होंने अपने वकील से बातें करने के लिए आवेदन किया है।

* * *

बंगाल प्रान्तीय हिन्दू महासभा सम्मेलन के एक प्रस्ताव में यह माँग पेश की गई है कि बंगाल मंत्रिमंडल भङ्ग कर दिया जाय और गवर्नर से यह आग्रह किया गया है कि वह आम चुनाव करें।

* * *

युक्त प्रान्तीय आबकारी शासन प्रबन्ध की गत वर्ष की रिपोर्ट छपी है, जिसमें यह सूचित किया गया है कि मादक द्रव्यों की खपत अधिक रही और आबकारी विभाग से होनेवाली आय में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

रूसी सेनापति मार्शल कोनीव जिन्होंने सिलीसिया के आक्रमण में जर्मनों को पराजित कर दिया है।

प्रशा में जर्मनी को परास्त करने वाले रूसी सेनापति मार्शल रोकोसोवस्की।

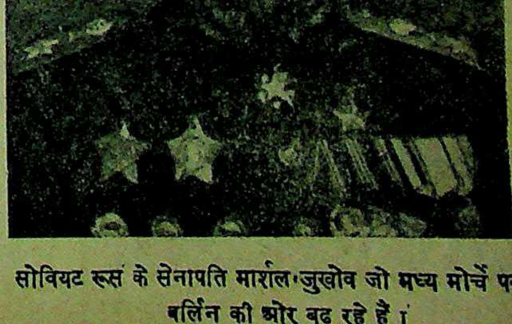

सोवियट रूस के सेनापति मार्शल जुखोव जो मध्य मोर्चे पर बर्लिन की ओर बढ़ रहे हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

नया बजट कैसा है ?

भारत-सरकार के नये वर्ष का नया फौजी बजट अर्थ-सदस्य सर जेरमी रेजमैन ने केन्द्रिय असेम्बली में बड़े गौरव के साथ उपस्थित किया। आपने युद्ध के इस छठे बजट को पिछले वर्ष की बजट की भाँति तौर तरीके से उपस्थित करते हुए तर्कों से उसकी उपयोगिता तथा आवश्यकता पर जिस प्रकार से जोर दिया वह सचमुच उनके ही अनुरूप है। बजट है तो बड़ा लम्बा-चौड़ा और लेखे-जोखे से परिपुष्ट तथा परिपूर्ण, किन्तु युद्ध-ग्रस्त देश की वर्त्तमान परिस्थिति और कठिनाइयों के देखते हुए वह कितना उपयोगी और हितकर है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण उन आँकड़ों से मिलता है जो आय-व्यय तथा अनुमान की दृष्टि से स्वीकृत किये गये हैं। बजट को देख कर और चाहे जो कुछ भी समझ लिया जाय, किन्तु इतना कहने में तो संकोच हो ही नहीं सकता कि यह विशुद्ध फौजी और अंतिम फौजी बजट है, जिसके निर्माण में ब्रिटिश साम्राज्य के हितों की रक्षा तथा उसकी पुष्टि का विशेष ध्यान रखा गया है। देश की आर्थिक स्थिति दृढ़ हो या जनता की वर्तमान स्थिति में किसी तरह का सुधार हो, इसका ध्यान रखकर बजट नहीं तैयार किया गया। बजट का लक्ष्य आय की वृद्धि तथा युद्ध-जन्य कार्यों में विशेष खर्च ही मात्र समझना चाहिए। इसलिये यदि यह बजट निराशापूर्ण और वर्तमान संकटकालीन समय के अनुकूल न समझा जाये तो इसके लिये भी दोषी सरकार ही है।

सरकार की आय में पिछले वर्षों से कमी नहीं है। सन् १९३८-३९ में सरकारी आय ८० करोड़ रुपये थी, किन्तु सन् १९४५-४६ में ५१७६३ करोड़ की आय कूती गई है। सन् १९०४-४५ में ३५३८८ करोड़ और १९४५-४६ में ३५३७४ करोड़ रुपये की आय का अनुमान लगाया गया है। सबसे अधिक व्यय का अनुमान सेना-विभाग पर किया गया है। सन् १९४४-४५ में ४५६६४ करोड़ और १९४५-४६ में ४११८९ करोड़ का अनुमान है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सरकार का व्यय बढ़ता जा रहा है। सबसे अधिक सेना का खर्च है। क्या सैनिक खर्च केवल भारत की रक्षा के निमित्त किया जा रहा है या ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए? इसलिए आवश्यक तो यह था कि यह खर्च ब्रिटेन अपने कोष से चलाता, किन्तु यह खर्च भारतीय कोष से ही किया जा रहा है।

सन् १९४४-४५ में १५५·७७ करोड़ और सन् १९४५-४६ में १६२-८२ करोड़ रुपये का घाटा रहेगा। इस घाटे की पूर्ति के लिए अर्थसदस्य ने पोस्टल पार्सल, तार टेलीफोन पर भी सरचार्ज लगाया है। तम्बाकू पर भी ड्यूटी बढ़ा दी गई है। इस प्रकार नये कर लगा कर घाटे की रकम में कमी की गई है। इन नये करों से १६० लाख रुपये की आमदनी कूती गई है। घाटे की रकम १६३-८२ करोड़ से १५५·२८ करोड़ रह जायगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि जो बजट तैयार हुआ है उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती। सरकार ने बजट की पूर्ति किसी न किसी प्रकार की है। न तो वह युद्धोत्तर निर्माण की ही दृष्टि से ही उपयोगी है और तत्काल भारतीय स्थिति के ही अनुरूप। अर्थसदस्य ने बजट के अन्त में यह भी कहा है कि युद्ध समाप्ति तक धैर्यधारण करना चाहिए किन्तु यदि अभी से इस पर पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दिया जायगा तो युद्ध समाप्ति के बाद तो और भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जो कुछ भी हो बजट तो आ ही गया और उसके अनुसार सरकार अपना कार्य करेगी ही किन्तु वह दूर-दर्शितापूर्ण तथा सन्तोषप्रद भी है इसे स्वीकार करने को हम तैयार नहीं हैं।

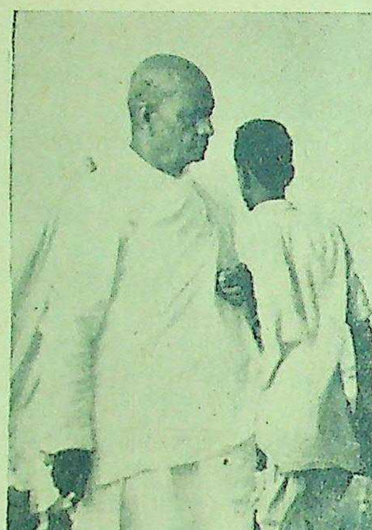

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य सरदार बल्लभ भाई पटेल अहमदनगर से साबरमती जेल में भेजे जा रहे हैं।

(चौथे कालम का शेष)

कोई हिन्दुस्तानी निकाली, न उर्दू को जनता की भाषा बनाया या बताया, न उसे साहित्यिक कार्य के लिए अथवा दर्बार में स्थान दिया। उन्होंने फारसी को राजकीय भाषा बनाया परन्तु जनता की भाषा हिन्दी ही मानी। यहाँ तक कि दरबार के कवि भी फारसी और हिन्दी के ही होते थे। अब आश्चर्य इस बात का है कि हमारी न्यायशीला अँगरेजी सरकार की देखरेख में यह अन्याय कैसे गति पा रहा है? इस रहस्य का उद्घाटन भारतीय सरकार ही कर सकती है। हम लोगों को तो स्पष्ट दिखाई यही देता है कि ९० प्रतिशत हिन्दुओं के अधिकारों का हनन किया जा रहा है। हम इस नीति का कड़े शब्दों में विरोध करते हैं।

लखनऊ
४ मार्च ४५

—'अज्ञात'

हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी

हिन्दुस्तानी के नाम पर यह उर्दू-प्रचार क्यों ?

उर्दू भाषा के पक्षपाती बहुधा यह कहा करते हैं कि उर्दू की उत्पत्ति हिन्दू मुसलमान सभ्यताओं के सम्मिश्रण का प्रतिफल है। वस्तुतः इस कथन में सत्यता का अंशमात्र भी नहीं है। उर्दू की उत्पत्ति राजनीतिक कारणों से मुसलमानी राजदरबार और फौज में हुई थी। हिन्दी भाषा की एक बोली खड़ीबोली में फारसी अरबी के शब्दों के मेल से यह शैली शाहजहाँ के समय में प्रारम्भ हुई और मुसलमान नवाबों, दरबारी मुसलमानों तथा दरबारी हिन्दुओं ने इसे मुग़ल राज्य के पतन के बाद अपनाया और साहित्यिक रूप दिया। इसके बाद अँगरेजों के प्रोत्साहन से यह एक स्वतंत्र भाषा मानी जाने लगी। हिन्दुओं की सभ्यता के प्रकाशन का माध्यम मुसलमान काल में तथा अँगरेजी काल में भी मारवाड़ी, ब्रज, अवधी, मैथिली तथा खड़ी बोली आदि उपभाषाओं से समृद्ध हिन्दी में ही होता रहा है जो संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं की एक उन्नत उत्तराधिकारिणी भाषा है।

हिन्दी के गौरवपूर्ण साहित्य का सम्बन्ध हिन्दू और हिन्दू (जैन, सिख) सभ्यताओं से एक हजार वर्ष से अधिक पुराना है। संस्कृत पाली, अपभ्रंश भाषाओं में सुरक्षित भारतीय संस्कृति का जब से आधुनिक भारतीय भाषाओं में स्पष्टीकरण आरम्भ हुआ है, उसके साथ ही साथ संस्कृत, प्राकृत की शब्दावलि भी आधुनिक भाषाओं में आई है। हिन्दी ही क्यों, उत्तरी भारत की सम्पूर्ण भाषायें, यहाँ तक कि उर्दू का मूल रूप खड़ीबोली हिन्दी भी, संस्कृत से निकली है। इसलिये हिन्दी का संस्कृत की ओर झुकाव स्वाभाविक है।

यद्यपि उर्दू भाषा, हिन्दी की एक उपबोली के रूप में आरम्भ हुई थी परन्तु राजनीतिक परिस्थितियों ने उसे एक स्वतंत्र भाषा का रूप दे दिया और अब वह मुसलमान और मुसलमानी सभ्यता से सम्बद्ध होकर एक साम्प्रदायिक भाषा मान ली गई है। उसमें समय समय पर उच्च कोटि के कवि तथा लेखक भी होते रहे हैं। उर्दू को एक साम्प्रदायिक भाषा मानने में हमें कोई आपत्ति नहीं है। हम तो यह भी चाहते हैं कि हिन्दी की उन्नति के साथ उर्दू की भी उन्नति हो। लेकिन उर्दू को हिन्दी के साथ समान अधिकार नहीं दिया जा सकता। संयुक्तप्रान्त, बिहार, मध्य प्रांत, दिल्ली, राजपूताना तथा मध्यभारत इन प्रान्तों में रहने वाली ९० प्रतिशत जनता की भाषा हिन्दी-नागरी है। उर्दू और फारसी लिपि का सम्बन्ध शहरों में रहनेवाले मुसलमान तथा कचहरियों से सम्बद्ध हिन्दुओं से, वह भी केवल कचहरी के कार्यों से है। इस कथन की प्रामाणिकता में बड़े बड़े भारतीय भाषा विज्ञानवेत्ता, भारतीय भाषाओं के विस्तार की सरवे तथा उक्त प्रान्तों में हिन्दी, उर्दू लेकर परीक्षाओं में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या है। इसलिए हिन्दी की ओर भारतीय सरकार, प्रान्तीय सरकार तथा जनता का ध्यान अधिक होना चाहिये। भारतीय तथा पाश्चात्य किसी भी भाषा विज्ञान-वेत्ता

ने उर्दू भाषा को किसी प्रान्त की मा
भाषा नहीं लिखा है। खेद का विषय
यह है कि हिन्दी की ओर से भारतीय
कार भी उदासीन है और हिन्दी भा
भाषी जनता कुछ सोई हुई है। इस
का सबसे बड़ा प्रमाण अखिल भारत
रेडियो में प्रयुक्त होनेवाली भाषा
जो ९० प्रतिशत उर्दू है और १० प्रति
हिन्दी है।

विदेशियों का दिया हुआ एक
शब्द 'हिन्दुस्तानी' इधर चल पड़ा
हिन्दुस्तानी एकेडमी में इस भाषा के
पर बहुत वादविवाद हो चुका है,
भाग लेने का सौभाग्य मुझे भी हुआ
'हिन्दुस्तानी' का प्रयोग अनिश्चित
से कभी तो हिन्दी उर्दू के बीच की
भाषा के रूप में होता है और
साहित्यिक हिन्दी और साहित्यिक
दोनों को पृथक पृथक भाषा रखते
दोनों भाषाओं के लिए यह शब्द प्र
होता है। पहले अर्थ की हिन्दुस्तानी
केवल खानपान की बातें तथा बच्चों
कहानियाँ कही और लिखी जा सकती
किसी प्रकार के गम्भीर लेख के लि
चाहे वह लेख किसी भी विषय पर
सर्वथा अयोग्य है। न इसमें शब्दावली
और न इसमें कोई साहित्य है। दूसरे अर्थ
हिन्दुस्तानी का प्रयोग लोगों को (
कांग्रेस) मान्य हुआ है। परन्तु जब हि
और उर्दू दो स्वतंत्र भाषायें मान ली
तो फिर उनको एक नाम से सम्बोधित क
की क्या आवश्यकता है? इससे सि
भ्रम और द्वेष फैलने के कोई लाभ
दिखाई देता। इस भ्रम का प्रतिफल यह
रहा है कि हिन्दुस्तानी की उन्नति की
में हिन्दी पर कुठाराघात हो रहा है।
में ऐसे कई प्रान्त हैं जहाँ कई कई भा
लिखी और पढ़ी जाती हैं, जैसे सी० पी
बम्बई, मद्रास आदि। वहाँ
भाषाओं को मिलाकर एक भाषा क्यों न
बनाई जाती है? क्या वहाँ मुसलमान नहीं
रहते? अथवा वहाँ के प्रान्त की विभि
भाषाओं के लिये एक नाम क्यों नहीं
जाता? बम्बई प्रान्त की मराठी और गु
राती भाषा का नाम बम्बई भाषा ह
कभी नहीं सुना; वहाँ दोनों भाषायें अ
स्वतंत्र रूप से विकसित हो रही हैं।
प्रान्तों के लोग सजग हैं और
'बेखबर' हैं।

आल इण्डिया रेडियो के स्टेशनों
ब्राडकास्ट होनेवाली भाषा देश में तो हि
पर घात कर ही रही है, विदेशों में भी
भ्रम पूर्ण धारणा जमा रही है कि उ
भारतवर्ष की साहित्यिक भाषा फा
अरबी शब्द प्रधान है और भारतीय स
मुसलमानी सभ्यता से आक्रान्त है। मैं
तो उर्दू का विरोधी हूँ और न मुसल
सभ्यता का। मैं तो इस बात का विरो
हूँ कि झूठ को सच बनाया जा रहा है
सत्य को दबा कर भ्रम का प्रचार हो
है। मुसलमानी राजत्वकाल में ऐसा हो
तो कदाचित राजशक्ति के शासन के
पर मान्य हो जाता, परन्तु इतिहास सा
है कि पठान और मुगल बादशाहों ने

—शेष दूसरे कालम

याल्टा-सम्मेलन और विश्व-शांति

उन छोटे राष्ट्रों के भाग्य का फैसला कैसे होगा ?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

इस समय अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक क्षेत्र में याल्टा-सम्मेलन के निर्णयों की विशेष चर्चा है। मिस्टर चर्चिल और प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट ने 'याल्टा-समझौते के सम्बन्ध में पार्लामेंट और अमरीकन-कांग्रेस के सम्मुख स्पष्ट कर दी है। किन्तु फिर अभी ऐसी महत्त्वपूर्ण उलझनें मौजूद हैं जिससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि सेन्फ्रांसिस्को में होनेवाली मित्रराष्ट्रों का अगला सम्मेलन क्या विश्व-शांति की वास्तविक स्थापना में सहायक होगा ? इस लेख में इन्हीं सब सुन्दर समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। जो विचारणीय है।

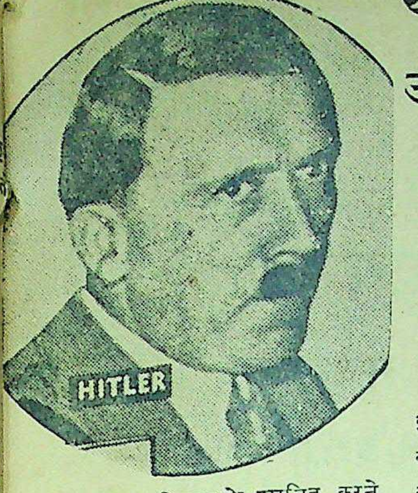

याल्टा-सम्मेलन हिटलर को पराजित करने का एक मत से निश्चय हुआ है।

जापानी सम्राट हेरोहितो के साम्राज्य पर भी हमला करने का निश्चय हुआ है।

संसार के तीन महान् राष्ट्रों ने समझौता करके याल्टा-सम्मेलन का महत्त्व बढ़ा दिया है। इस समय दुनिया के सामने नये-नये प्रश्न उठ रहे हैं। तटस्थ राष्ट्रों के सामने बिलकुल अँधेरा-सा छा गया है। अप्रैल मास में मित्रराष्ट्र अमेरिका के सेन्फ्रान्सिस्को शहर में फिर मिलेंगे। इतनी शीघ्रता क्यों ? क्या युद्ध शीघ्र ही बन्द हो जायगा ? क्या तटस्थ राष्ट्रों को शान्ति-सम्मेलन में स्थान न मिलेगा ? अथवा बिना उनको निमन्त्रित किये हुए ही शान्ति-सम्मेलन को मित्रराष्ट्र सफल बना लेंगे ? इन प्रश्नों के होते हम याल्टा-सम्मेलन के निर्णय को क्रियात्मक रूप देने में एक जटिल उलझन देख रहे हैं।

इस पर विचार करते हुए याल्टा-सम्मेलन के दो लक्ष्य हमारे सामने आते हैं। प्रथम यह कि मित्रराष्ट्रों का तटस्थ अथवा युद्धमुक्त राष्ट्रों के प्रति विचार। दूसरा यह कि स्वतन्त्र राष्ट्रों के आन्तरिक सम्बन्धों में मित्रराष्ट्रों के हस्तक्षेप के उद्देश्य और उसकी वांछनीयता। चाहे वे राष्ट्र नाजी अधिकार में हों अथवा उससे मुक्त किये गये हों। मित्रराष्ट्रों की इन तीन महान् शक्तियों का इन तटस्थ राष्ट्रों और युद्धमुक्त देशों को दो भागों में रखने का उद्देश्य प्रकट होता है। एक तो वे संसार जो "सम्मिलित राष्ट्र" कहलायेंगे और दूसरे जो इसका विरोध करेंगे। प्रथम श्रेणी के तटस्थ राष्ट्रों को पहली मार्च ही से धुरी देशों के विपक्ष में युद्ध घोषित करना चाहिए। इसी आधार पर तुर्की, मिस्र, सीरिया, लेबनान ने जर्मनी-जापान के खिलाफ युद्ध घोषित कर दिया है। परन्तु अब अन्य राष्ट्रों का क्या होगा ? क्या उनके ऊपर कोई खिलाफ कार्रवाई होगी ? ऐसे अयोग्य राष्ट्रों में अर्जेण्टाइना, स्पेन, पुर्तगाल, स्वीडेन, स्विटजरलैण्ड और आयरलैण्ड हैं। इस प्रकार कुछ तटस्थ राष्ट्र युद्ध घोषित करके "सम्मिलित राष्ट्र" में सम्मिलित हो गये हैं। अब उनके प्रतिनिधियों को सेन्फ्रान्सिस्को-सम्मेलन में भाग लेने का अधिकार होगा। परन्तु दूसरे प्रकार के राष्ट्र मित्रों के पक्ष में होने पर भी भाग न लेने पायेंगे ? इस प्रकार उन राष्ट्रों को एक तरह की सभ्यता से परे माना जा सकता है। क्योंकि ऐसे सम्मेलन में जब कि शान्ति का प्रयास किया जायगा, ऐसे राष्ट्रों के न रहने का अर्थ क्या हो सकता है ? क्या उनको मित्रों के विरुद्ध समझा जायगा ?

अब प्रमुख प्रश्न यह है। कि मित्र-राष्ट्रों की इन तीन महान् शक्तियों ने जो इस प्रकार का विभाजन कार्य किया है यह कहाँ तक उचित है ? और इस प्रकार के कार्य से उन्हें कितनी सफलता मिल सकती है ? इस विषय पर यह तो ठीक है कि मित्रों ने तटस्थ राष्ट्रों को ऐसी घोषणा करके जो निमन्त्रण दिया है, उससे तटस्थ राष्ट्रों की मनोवृत्तियों का पता चल जायगा। उससे तटस्थ राष्ट्रों के भाव स्पष्ट हो जायँगे। उनका सम्बन्ध मित्रराष्ट्रों अथवा शत्रुओं के प्रति कैसा होगा ? कौन राष्ट्र मित्रराष्ट्रों को युद्ध-संचालन में सहायता कर सकते हैं ? अथवा कौन अब भी नाजियों के प्रभाव में हैं। इसके अतिरिक्त इन लक्ष्यों को देखकर हम और कही क्या सकते हैं ? परन्तु जब हम दूसरे लक्ष्य की ओर जाते हैं तो हमें अटलाण्टिक घोषणा का एक पर्दायुक्त नाटक स्पष्ट दिखलाई देने लगता है। उस घोषणा के सिद्धान्तों से हमको अपनी

याल्टा-सम्मेलन में संसार के तीन महान राष्ट्रों के नेता स्टेलिन रूजवेल्ट और चर्चिल।

स्वतंत्र सरकार बनाने का अधिकार मिलता है परन्तु यह सिद्धान्त हमारे मिले हुए अधिकारों को साफ हड़प जाता है। वर्सलीज की सन्धि मिस्टर विलसन और लायड ज्ञार्ज के प्रयत्नों का फल था। उसने मध्य यूरुप और पूर्वी यूरुप को विभाजित करके कितने ही नये राष्ट्रों को जन्म दिया था। परन्तु यह लीला बहुत दिन नहीं चल सकी। आखिरकार वे ही बड़े राष्ट्र कायम रह पाये। छोटे राष्ट्र मानचित्र से गायब हो गये। छोटे देशों की स्वतंत्रता के सम्बन्ध में हम कुछ नहीं कहते हैं किन्तु अगर हम उनकी बरबादी की ओर दृष्टि डालते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि पूँजीवादी मनोवृत्ति के आधार पर इन छोटे राष्ट्रों की रचना की गई थी। जब पूँजीवादी राष्ट्रों को युद्ध का सामना करना पड़ा तो ये छोटे-छोटे राष्ट्र स्वयं मानचित्र-से विलीन हो गये। इससे इन तटस्थ राष्ट्रों का भाग्य कहाँ तक उज्ज्वल है। यह याल्टा-सम्मेलन के दूसरे लक्ष्य से हमें बहुत कुछ सन्देह होने लगता है।

जब हम याल्टा-सम्मेलन के उद्देश्यों की ओर दृष्टि डालते हैं तो हमें राष्ट्रों के स्वाधिकारों पर सन्देह होने लगता है। क्योंकि याल्टा-सम्मेलन का दूसरा लक्ष्य जनता और राष्ट्रों की स्वतन्त्रता को मित्रों की दया पर निर्भर है। तुर्की को पहली मार्च तक शत्रु से युद्ध घोषित करना चाहिए। जो राष्ट्र युद्ध घोषित करेंगे वही "सम्मिलित राष्ट्र" में रह सकेंगे। वही सेन्फ्रांसिस्को-सम्मेलन में भाग ले सकेंगे, दूसरे प्रकार के राष्ट्र नहीं। इसका अर्थ स्पष्ट है कि जो राष्ट्र पहली मार्च तक जापान-जर्मनी को शत्रु नहीं घोषित कर सके हैं वे मित्र होते हुए भी शत्रु के रूप में समझे जायँगे। शान्ति-सम्मेलन में उनकी सम्मति का स्थान कुछ न हो सकेगा। वे राष्ट्र क्या वर्सलीज के बाद के राष्ट्रों की दशा में बन जायेंगे ? यदि सब लोग और सारे राष्ट्र एक बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के अखाड़े में होकर युद्ध के सारे साधनों को हटाने में सहयोग न देंगे, तो क्या सोवियट रूस ने, जो इस भयंकर युद्ध में नाजी और फासिस्टों की एकाधिकारी मनोवृत्ति के दबाने को लोहा लिया है वह सफल हो सकेगा ? जब नाजियों और फासिस्टों को हरा दिया जायगा, युद्ध के सारे साधनों को नष्ट कर दिया जायगा। उस समय विश्वसंघ में क्या छोटे-छोटे राष्ट्रों की शान्ति-स्थापना में सहायता न ली जायगी ? क्या मित्रराष्ट्रों की याल्टा-घोषणा किसी विशेष देश की जनता की राजनैतिक संस्थाओं को अपनी सरकार चुनने का अधिकार न देगी ? क्या नाजी और फासिस्टों से सहयोगी राष्ट्रों को शान्ति में स्थान न होगा। यदि यही बात है तो फिर इँग्लैंड-स्थित पोलैंड सरकार को क्यों नहीं मान लिया गया जिसने सर्वप्रथम नाजियों की बर्बरता को रोकने के लिए लाखों नवयुवकों को बलिदान कर दिया है। यही हाल रूमानिया का भी है। क्या रूमानिया की सरकार में जनरल रेडस्क्यू को स्थान न मिलेगा ? जो जनरल ऐण्टीनेस्कू जैसे फासिस्ट नेता से मिलकर सरकार बनाने में सहायता लेना चाहते हैं ? इस पर रूसी समाचारपत्रों ने बहुत कुछ फटकारें बतलाई हैं। क्या सोवियट संघ रूमानिया की इस फासिस्ट सरकारी नीति को पसन्द करेगा ?

अब मिस्टर चर्चिल की प्रतिक्रिया इस सम्बन्ध में क्या होगी ? उनके सहयोगी याल्टा-सम्मेलन पर आक्रमण कर रहे हैं। प्रेसीडेंट रूजवेल्ट भी अपने रिपब्लिकन दलवालों से कैसा व्यवहार करेंगे ? साथ ही डेमोक्रेटिक दल को क्या समझा सकेंगे ? ब्रिटिश के टोरी दल ने येरपीय राष्ट्रों को जर्मनी के विपक्ष खड़ा कर पोलैंड जैसे राष्ट्र का पतन कराया है। यही पोलैंड और नाजी युद्ध येरप ही तक सीमित न रहकर अटलांटिक पार कर अमेरिका तक फैल गया है। अब इस युद्ध ने नवीन खतरों का आह्वान किया है। जब तक मिस्टर चर्चिल और प्रेसीडेंट रूजवेल्ट अपनी भेद-भाव की नीति का परित्याग न कर देंगे। जो पूँजीवाद को अपरिवर्तनीय समझ बैठे हैं। यही नहीं बल्कि मिस्टर चर्चिल का उपनिवेशों पर सर्वदा अधिकारवाली नीति का परित्याग नहीं हो जायगा इन खतरों का सर्वनाश नहीं हो सकता। अमेरिका का प्रजातन्त्रीय धन्यवाद अथवा ब्रिटिश का पूँजीवादी प्रजातन्त्र दोनों आपस में मिल नहीं सकते। दोनों की पद्धतियाँ द्वेष और देशप्रेम, स्वार्थसाधना और अत्याचार पैदा करती हैं। विश्व क्रान्ति की इस वर्तमान अवस्था में वे अपने आन्तरिक विरोध स्थिर नहीं रख सकतीं। उन्हें या तो जर्मनी के नाजीवादी अथवा इटालियन फासिस्टवादी नीति की तरह अपने को बना लेना होगा वरना शुद्ध समाजवादी प्रजातन्त्र में परिवर्तित कर लेना होगा। इस प्रकार दोनों मार्ग बिलकुल साफ हैं। अब दोनों चीजें घपले में नहीं रह सकतीं। अमेरिका और ब्रिटेन को अपने विचार और नीति स्पष्ट करना होगा। इसके अतिरिक्त इसमें सन्देह नहीं, कि रूस उनकी स्पष्ट नीति का फैसला करेगा। अब वर्सलीज की शब्दशैली का स्थान रह

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

नीति रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हिन्दू कोड-बिल और हिन्दू-समाज

क्या हमारे सामाजिक जीवन की उन्नति सम्भव है ?

लेखक, वैद्य श्रीधर शास्त्री

आज भारत में 'हिन्दू-कोड-बिल' को लेकर तहलका मचा हुआ है। कोई समर्थन करता है और कोई विरोध। अपनी अपनी विचार-धारा का संतुलन करने के लिए जन-मत को स्वप्न का संसार दिखाकर आकर्षित किया जा रहा है। संसार के सुप्रसिद्ध विचारक नीत्से का कहना है कि किसी के प्रति अन्ध श्रद्धा मनुष्य की नैतिक-मृत्यु का कारण बन जाती है।

हमारी परिस्थितियाँ भी वर्तमान समय में कुछ इसी तरह की हैं। हमें यूरुप के विकास-वाद के प्रवाह में बहने की अपेक्षा भारतीय प्राचीन पद्धतियों पर भी विचार करना है कि वह कहाँ तक ठीक हैं; जब कि आज का आदर्शवाद जिस तीव्रता के साथ संसार को चकाचौंध करने में समर्थ हुआ था, वह उसी वेग से धराशायी भी हो चुका है, और यह कहा जा रहा है कि "संसार अपने को पुराने ही आदर्शों पर अवलम्बित कर सुख-शान्ति एवं सम्पत्ति की समृद्धि पर स्थायित्व पा सकता है।"

इसीलिए यह स्वीकार करना आवश्यक हो जाता है कि 'हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखं। 'चमकीले पदार्थों' से सत्यता का मुख ढका हुआ है। इन उद्देश्यों के आधार पर यह निश्चय होता है कि प्राचीन-संस्कृति आज के आदर्श-वाद की अपेक्षा कहीं उच्च थी। आज का युग जो कि यूरुप में समृद्धि पा चुका है, भारत के सर पर मढ़ा जा रहा है। सामाजिक व्यवस्थाएँ तो स्वतः निर्धनता के कारण अस्त- व्यस्त हो चुकी हैं। 'हिन्दू-कोड-बिल' पश्चिमी सभ्यता के द्वारा पारिवारिक परम्परा को विध्वंस करके व्यक्ति-वादी स्वरूप दिये जाने के लिए ही कटिबद्ध है।

भारत की पराधीनता भारतवर्ष के लिए अभिशाप है। भारतवर्ष में अज्ञेयवाद प्रमुख रूप धारण करता जा रहा है। कहा यह जाता है कि "समष्टि रूप में समानता का व्यवहार होना चाहिए। स्त्रियाँ, पुरुषों के समान आगे आएँ और समाज में अपना अस्तित्व कायम करें; फिर तो समाज में स्वयमेव चरित्र चित्रण का आदर्श उपस्थित हो जायगा" इन दलीलों से पारिवारिक भारतीय-जीवन का कल्याण नहीं हो सकता। इसका कारण है भारतीय-संस्कृति को विनष्ट कर देना; वेष-भूष तो वैसे ही नष्ट हो चुकी है। अब विदेशी-कानूनों को आदर्श मानकर भारत की सामाजिक संस्कृति को सुधारना भारतीय समाज के लिए कलंक की चीज होगी।

भारतीय-संस्कृति में स्त्रियों का अधिकार आज के साम्यवादी कानूनों की अपेक्षा कहीं विस्तृत है। स्त्री घर की अधिकारिणी होते हुए समाज में मानवता का सच्चा स्वरूप देने का उत्तरदायित्व उसे जाति को ही प्राप्त है। स्त्रियाँ मानव-समाज को उठा सकती हैं, चरित्र-निर्माण का आदर्श भारतीय-नारी को छोड़ कर संसार की दूसरी नारी जाति में आज भी नहीं मिल सकता है। यही कारण है कि 'मातृवत् परदारेषु' दूसरी स्त्री माता के समान है का अधिकांश पालन भारतीय-समाज में ही पाया जाता है, दूसरे देशों में नहीं! पश्चिमी अधिनायकों की प्रेम-कथाएँ आए दिन समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलती हैं। किन्तु भारतीय नेताओं में चरित्र-निर्माण का आदर्श कितना ऊँचा है यह किसी विदेशी से पूछिए।

पश्चिमी सभ्यता ने आश्रमों की मर्यादा नष्ट कर सामाजिक-बन्धनों को अस्त-व्यस्त कर दिया है यह कभी उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता और 'कोड-बिल' के द्वारा तलाक की प्रथा का प्रचलन करना भारत में बची हुई नैतिक-संस्कृति को समूल उखाड़ फेंकने का प्रयास है। आज योरपीय देशों में किस प्रकार छोटी छोटी बातों के लिए पारिवारिक-विच्छेद का नाटक खेला जाता है।

भारत इतना सम्पत्तिशाली नहीं है कि वह व्यक्तिवादी जीवन सफलतापूर्वक बिता सके और न दूसरे देशों की तरह ऐसी कोई व्यवस्था ही है कि इस प्रकार भावी वृद्धितम सन्तानों का पालन-पोषण हो सके जब कि आज देश में तन ढाँकने और पेट भरने का ही प्रश्न उपस्थित है। पोषण-तत्त्वों की बात तो दूर है।

अब जरा उस समय की बात पर विचार कीजिये जिस समय निर्धन भारतीय परिवारों में शैशव का जन्म होता होगा। पति, पत्नी से इसलिए विच्छेद कर सकेगा कि पति के पास इतना साधन नहीं है कि वह स्त्री की प्रसवावस्था में उपचार कर सके, पत्नी के पास भी साधनों का अभाव है कि जिससे वह अपनी स्वयं रक्षा कर सके! ईश्वरीय प्रेरणा से किसी प्रकार जीवन पा जाती है तो उस दशा में वह नारी भी उदर-पोषण के लिए इधर-उधर दरवाजे खटखटाते हुए मिलेगी। शैशव का नियमित पालन-पोषण और उसकी शिक्षा का कुप्रबन्ध भावी भारत के लिए विनाश की सामग्री होगी। कहाँ तो यह नियम कि 'मातृवान् पितृवान् आचार्यवान् भव' माता पिता और आचार्य क्रमशः शैशव अवस्था में शिक्षक होते थे। आज माता-पिता की शिक्षा का लोप-सा हो चुका है। उस समय जब कि माता स्वतंत्र होगी पिता का जीवन एकाकी होगा शैशव का पालन-पोषण और शिक्षा के क्रम का अव्यवस्थित होना अस्वाभाविक न होगा।

माता का उत्तरदायित्व 'कोड-बिल' की स्वीकृति पर इतना बढ़ जाता है कि उसका ठीक प्रकार नियंत्रण रखना कठिन ही नहीं अपितु असम्भव होगा। प्रथम तो स्त्रियाँ इतनी कोमल और सुकुमार होती हैं कि वे श्रमिक कार्यों के करने में पुरुषों पर ही अवलम्बित रह सकेंगी, दूसरे पेट भरने के लिए या तो वह व्यवसायों का समुचित सम्पादन करेंगी या घर के अन्दर बैठकर प्रसवावस्था के कष्टों का अनुभव करेंगी अथवा शिशुओं का पालन-पोषण करके उन्हें उचित शिक्षा-सम्पन्न बनाने का प्रयत्न करेंगी! इनसे पता चलता है कि स्त्री, पुरुषों के लिए समानाधिकार दोषपूर्ण ही नहीं अपितु घातक चीज़ होगी।

स्त्री और पुरुष गृहस्थ रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। दोनों के समान रूप से मिल कर चलने से ही निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचा जा सकता है। किसी एक पहिए के अलग होने पर गृहस्थ रूपी गाड़ी सदा के लिए पथ-भ्रष्ट हो जायगी! पुरुष, व्यवस्था को स्थापित करके द्रव्य उपार्जन का अधिकारी है और नारी उपार्जित द्रव्य का सदुपयोग-गृहस्थी की सद्व्यवस्था हुए पुरुष समाज को आमोद-प्रमोद रखने की अधिकारिणी है। इसी व्य में भारत का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण का कल्याण निहित है।

ईस्ट इन्डियन रेलवे

विशेष सूचना

अर्द्धकुम्भ मेला, हरद्वार १९४५

युक्तप्रान्तीय सरकार ने नम्बर ४१६/३-१३-१९४५, ता० ३०-१-४५ को नि लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है :—

भारत-रक्षा कानून की धारा ८५—बी की उपधारा (१) के अनुसार संयुक्तप्रान्त गवर्नर महोदय ने निम्नलिखित घोषणा की है :—

(अ) कोई भी व्यक्ति, ड्यूटी पर जाते हुए फौजी आदमियों तथा तीन व कम के बच्चों के अतिरिक्त।

(ब) अथवा अलावा उन लोगों के जिनके पास पब्लिक हेल्थ डाइरेक्टर डिप्टी डाइरेक्टर, यू० पी० की लिखित आज्ञा हो।

नीचे लिखी हुई रेलवे स्टेशनों को रेल से यात्रा न कर सकेगा और न कोई रे १५ मार्च से १३ अप्रैल तक (जिसमें ये दोनों दिन भी शामिल हैं) इन्हें यात्रा क देगी जब तक कि

(स) यात्री हैजे की सुई १ नवम्बर १९४४ के बाद न लगवा चुका हो सरकार द्वारा नियुक्त आफिसर का इस बात का प्रमाण-पत्र रखता हो।

(द) अथवा या तो

(१) रेलवे के कर्मचारी इस बात से सन्तुष्ट हो जायँ कि वह व्य अर्द्धकुम्भ मेला हरद्वार में सम्मिलित होने के विचार से यात्रा न कर रहा है, या

(२) यात्री के पास मेला इन्चार्ज की, किसी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अथ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा आज्ञा देने के लिए अधिकृत किये अन्य मजिस्ट्रेट की लिखित आज्ञा हो।

रेलवे स्टेशनों की सूची

ईस्ट इन्डियन रेलवे

बलिया खेरी	दौसनी	मुअज्जमपुर नरायन	पाथरी	केसराव
चोडियाला	लश्कर	नजीबाबाद	ज्वालापुर	डोईवाल
इकबालपुर	रैसी	साने रोड	हरद्वार	हर्रावाल
रुड़की	बलवाली	कोटद्वारा	रायवाला	देहरादू
लंधौरा	चन्दौक	ऐथल	ऋषीकेश	मसूरी

यन० डब्ल्यू० रेलवे

सहारनपुर — सरसवा

(आज्ञा-नुसा

इसी प्रकार की आज्ञा बिहार सरकार-द्वारा भी हैजे के टीके के सम्बन्ध में निका जा रही है।

बेंगाल तथा अन्य प्रान्तों से हरद्वार के मेले में आनेवाले यात्रियों को सूचित कि जाता है कि जब तक उनके पास हैजे के टीके का १ नवम्बर १९४४ के इधर का प्रमा पत्र न होगा तब तक वे लोग मेले में नहीं आने पावेंगे।

इस प्रमाण-पत्र की जाँच मेले के चारों तरफ बनाये हुए नाकों-द्वारा होगी जिनके पास प्रमाण-पत्र न होगा वे मेले में न आ सकेंगे। यात्रियों के लिए यह श्यक है कि मेले की यात्रा करने के पहले वे लोग हैजे का टीका लगवा लें तथा सार्टिफिकेट हासिल कर लें।

टिकट खरीदते समय यह सार्टिफिकेट टिकट बाबू को दिखाना होगा। टि बाबू स्टेशन की मुहर लगाकर सार्टिफिकेट यात्री को वापस कर देंगे।

सोवियट रूस की पैदल सेना

युद्ध-मोर्चों पर लड़ाई कैसे लड़ी जाती है ?

लेखक, श्री भूपेन्द्र सान्याल

सोवियट रूस की पैदल सेना का संसार के सैनिक संगठन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। जर्मनी को पराजित करने में रूसी पैदल सेना ने बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इस लेखक में श्री भूपेन्द्र सान्याल ने रूस की पैदल सैनिक शक्ति और उसकी शिक्षा पर सुंदर प्रकाश डाला है।

सोवियट रूस के हवाई सैनिक बम-वर्षा के लिए युद्ध-भूमि में जाने की तैयारी कर रहे हैं।

सोवियट यूनियन पर हमला की सफलता के लिये जर्मनी को मुख्य भरोसा था उसकी मशीन, मोटरयुक्त डिवीजन उसकी हवाई ताकत इन्हीं दोनों दिशाओं में उनकी वास्तविक श्रेष्ठता थी। इन अत्यधिक गतिशील शक्तियों के विरुद्ध रक्षा तथा प्रत्याक्रमण के लिये रूसियों को भरोसा था अपनी पैदल सेना तथा तोपखाना पर जिन दोनों दिशाओं में उनकी श्रेष्ठता थी। इसलिये असली लड़ाई थी इन दोनों शक्तियों का संघर्ष। जर्मनी को सुविधा थी गतिशीलता की, मशीन प्लेटों की, तथा केन्द्रीभूत अग्नि-शक्ति की। रूसियों को सुविधा थी अपनी भूमि के बनावट की, और ऋतु की इतने विशाल देश में रसद पहुँचाने की कठिनाई थी जब उनको अपने तोपों को एकत्रित करने का समय मिलता था तो रक्षा के अग्नि-शक्ति की और हमले के समय बड़ी तोपों से लगातार गोलाबारी का ही भरोसा था।

जब दोनों ओर से घमासान लड़ाई चल रही थी तो जर्मनी ने अपनी पैदल सेना और तोपखाना को उन्नत करने के लिए जो कुछ वह कर सकती थी किया और रूसियों ने हवाई और मशीन सेना को मजबूत बनाने के लिए भरसक कोशिश की; दोनों को कुछ सफलता मिली लेकिन जर्मन सेना रूसी पैदल की बराबरी नहीं कर सकी और जर्मन असफलता का यही बहुत बड़ा कारण रहा। रूसी सफलता तथा जर्मन असफलता के मूल में है शिक्षा तथा हौसला।

आज तक की लड़ाई में रूसियों ने यह अनुभव किया कि जब कभी अपने क्षेत्र में जर्मन सेना की टैंक तथा हवाई श्रेष्ठता रही उनके पैदल भली भाँति लड़ते रहे। उनकी शिक्षा ही इस प्रकार की थी कि बमबारी और मशीन पंक्तियों से दुश्मन की श्रेणियों में जब एक दरार पड़ जाती थी तो पैदल सेना झट अन्दर प्रवेश कर जाती थी। पोलैंड, नारवे, हालैंड, बेलजियम, फ्रांस और इधर बालकन देशों में वह इसी प्रकार लड़ी; सोवियट युद्ध के पहले दिनों में भी वह इसी प्रकार से लड़ी। लेकिन जब जाड़े में टैंक का अधिकतर इस्तेमाल नहीं हो सकता था और हवाई जहाज मैदानों में जकड़े पड़े रहे, अथवा मोर्चा के किसी हिस्से में उनके टैंकों की श्रेष्ठता जाती रही तो बर्लिन के पैदल सेना का छक्का छूट जाता और वह पीछे मुड़ कर देखने लगती। उसको मालूम होने लगता कि कहीं पर कोई गलती हुई है।

रूसी सैनिक को भी टैंक और हवाई जहाज के पीछे तथा साथ लड़ने की शिक्षा दी गई थी लेकिन वह स्वावलम्बी लड़ाई भी लड़ सकता था। शिक्षा-क्षेत्र में ही उसने जान लिया था कि किसी दिन दुश्मनों के टैंकों के विरुद्ध अकेले लड़ना पड़ सकता है। भारी टैंक विरोधी बम फेंकना भी उसे सिखाया गया। यदि केवल राइफल ही उसके पास होता तो वह चुप पड़ा रहता जब तक टैंक निकल न जाता।

एक जर्मन फौजी अधिक से अधिक यह विश्वास कर सकता था कि सोवियट यूनियन पर आक्रमण करके वह एक बचाव की लड़ाई लड़ रहा है ताकि किसी संशयात्मक भविष्य में उसके अपने देश पर आक्रमण न हो सके, लेकिन रूसी यह जान कर लड़ रहा था कि शत्रु द्वारा सन्धि भंग करके उसके घर और ग्राम को नष्ट करने के लिये, उसके देशवासियों को मिटा देने के लिये उस पर आक्रमण किया गया है। या तो वह लड़े, या पराधीनता स्वीकार करे। उसने लड़ना ही उचित समझा। पहले तो वे अनमने से लड़ते रहे लेकिन जनता के निधन के साथ, और घर-द्वार जलाये जाने के बाद उन्होंने जर्मनी से घृणा करना सीखा और उनके क्रोध की ज्वाला भभक उठी। मास्को, लेनिनग्राड, कीन, ओडेसा, सेवास्तोपोल और स्टालिनग्राड में उन्होंने अपना जौहर दिखाया। अक्सर ही जर्मन सेना की आग्नेय-शक्ति ने समर का फैसला किया और रूसियों को पीछे हटाया। लेकिन रूसी पदातिक ने हमेशा इस हठ और हिम्मत के साथ लड़ाई की कि दुश्मन के छक्के छूट गये। जर्मनों को यह बात समझ में नहीं आती। उनको इस बात से चिढ़ थी कि बेतरह घिर जाने पर भी रूसी आत्मसमर्पण नहीं करता था।

रूसी सैनिक को जर्मन आक्रमणकारी के प्रति घृणा थी। इसी घृणा ने उसको साहस और दृढ़ता प्रदान की। जर्मन सैनिक की तुलना में रूसी सैनिक की बुनियाद ही है शिक्षा, नियमों की पाबन्दी और साज-सरञ्जाम।

पहले यह अन्दाज किया जाता था कि रूस की कुल पैदल सेना ३५० डिवीजन से अधिक नहीं है जिसकी कुल सैनिक संख्या होगी ५० लाख। लेकिन शायद, किसी एक समय, उनकी सेना के २५० डिवीजन के अधिक न थे और जब जर्मनी ने १७० डिवीजन लेकर धावा किया उस समय उनका मुकाबला करने के लिये सम्भव है कि कुल १५० डिवीजन ही रहे हों।

युद्ध की प्रगति के साथ दोनों ओर की सैन्य संख्या बढ़ी। पहले साल के अन्त तक मोर्चे पर जर्मनी के २४० डिवीजन थे। इसमें फिनी, हंगेरियन, रुमानियन और इटालियन सैनिक भी शामिल हैं। उस समय रूसी सैनिक और तोपखाने की तादाद ज्यादा थी। लेकिन रूसियों को मशीन और हवाई जहाज की कमी को पैदल और तोपखाने की हुनर और हिम्मत से पूरा करना पड़ा। यहीं पर रूसी की शिक्षा और उसकी मर्यादा पालन का वास्तविक उपयोग हुआ।

लड़ाई के कुछ साल पहले तक रूसी पैदल डिवीजन में १३,००० सैनिक होते थे। ये तीन इन्फैन्ट्री रेजिमेंट एक तोप-खाना रेजिमेंट और कुछ विशेष पल्टनों में विभाजित होते थे। फिर इनकी तादाद बढ़ाकर १७,२०० कर दी गई। अब इसका संगठन इस प्रकार से हुआ कि इसमें तीन इन्फैन्ट्री रेजिमेंट, दो तोपखाने के रेजिमेंट, एक बटालियन इंजिनों का तथा एक टैंक का, एक देख-भाल का तथा एक सिगनल करनेवालों का और एक हवाई जहाज विरोधी दल, एक टैंक विरोधी दल, कुछ विशेष पलटन और एक हेडक्वार्टर विभाग थे। सुना जाता है कि लड़ाई के दौरान में डिवीजन की बनावट फिर बदल गई। अब इसमें १२,००,०९०,०० और कहीं कहीं केवल ८,००० ही रह गये। कारण यह बताया जाता है कि कुछ तोपखाने हटा कर उनका अलग केन्द्र बनाया गया।

दूसरे देशों की सेना के मुकाबले इन रूसी डिवीजनों में अच्छे निशानाबाजों की भर्ती कहीं अधिक होती है। यह देश भर से चुने जाते हैं; कोई बड़े शहरों में रहनेवाला फैक्टरी का मजदूर है, तो कोई युराल या साइबिरिया का शिकारी। अलग अलग डिवीजनों के निशानाबाजों में प्रतियोगिता होती है कि कौन एक निश्चित तिथि के पहले कितने जर्मन मार सकता है। अखबारों में २५० या ३०० तक दुश्मनों को मौत के घाट उतारनेवाले निशानाबाजों की बात पढ़ने में आती है। लेकिन यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। सभी सेनाओं में यह एक पुरानी तरकीब है कि खाई के ऊपर एक झूठा शिर खड़ा किया जाता है; जब निशानाबाज कोई शिर गिराता है तो कुछ दूरी पर एक और शिर खड़ा कर दिया जाता है। जब इसको भी वह गिरा देता है तो उसकी जगह का अन्दाज लगाकर फौरन बम या बारूद फेंक कर उसका खात्मा कर दिया जाता है। लेकिन निःसन्देह कई हजार जर्मन आधे मील से ज्यादा दूरी पर अवस्थित रूसी निशानाबाजों की गोलियों के शिकार हुए।

इस पैदल सेना को जो सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षा दी गई वह यह है कि हर समय वह हमला करने को तैयार रहे—पीछे

सोवियट रूस की पैदल सेना अपने सेनापति के आदेशानुसार युद्ध-मोर्चों पर युद्ध के लिए तैयारी कर रही है।

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री लीला चिटनिस!

फिल्म और अभिनय कला पर मेरी मनोरंजक इंटरव्यू

लेखक, श्रीयुत उमेश जोशी

[२]

'देशदूत' के पिछले अंक में हमने प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री लीला चिटनिस से इंटरव्यू करके कुछ प्रश्नोत्तर लिखे थे। उन्हीं प्रश्नोत्तरों के सिलसिले में मैंने कुछ प्रश्न और भी पूछे थे। उन्होंने जो उत्तर दिये वह इस प्रकार हैं—

प्रश्न—आप किस तरह के फिल्मों में अभिनय करना पसन्द करती हैं और क्यों?

उत्तर—मेरा यह प्रारम्भ से ही उसूल रहा है कि मैं मानव-जीवन के तह तक पूर्ण-रूप से प्रवेश कर सकूँ जिससे कि मुझे मानवता का वास्तविक चित्र दिखाई पड़े और उसे सही तरीके से अभिनय में प्रदर्शित कर सकूँ। मैंने अबतक मानव-जीवन की विभिन्न भूमिकाओं में अभिनय किया है। किन्तु अभी तक मैं "मानव-स्वभाव" को ठीक रूप में विश्लेषण नहीं कर सकती। इसलिये मेरा निरन्तर यह प्रयास रहता है कि मुझे ऐसे फिल्मों में कार्य करने का अवसर मिले कि जिसमें मुझे मानव-स्वभाव के दृष्टिकोण के चित्रित करने में सफलता प्राप्त हो। किसी फिल्म में अभिनय करने से पूर्व मैं उस फिल्म की कहानी अवश्य देख लेती हूँ। जब मुझे यह मालूम हो जाता है कि मेरे इस फिल्म में अभिनय करने से मानवता के इतिहास में एक नया पृष्ठ जुड़ जायगा, तभी मैं अभिनय करने के लिये राजी होती हूँ। कभी ऐसा भी होता है कि मानव-जीवन के एक ही दृश्य का दुहराव हो जाता है। यह सिर्फ मेरी कमजोरी है। मैं अपने अभिनय की रेखाओं पर जीवन की गहरी छाप डालना पसन्द करती हूँ जिससे वह समय के गर्भ में धूमिल न पड़ पाये। मैं मनुष्य की जिन्दगी का ढाँचा अभिनय के रम्य रंग-मंच पर हृदय की उच्छृङ्खल भावनाओं की टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों से खींचना पसन्द नहीं करती क्योंकि टेढ़ी-मेढ़ी लाइनों से निर्मित चित्र के अन्तरस्थल में मानव-हृदय की विमल अनुभूति का समावेश नहीं हो सकता। फिर ऐसे चित्रों की क्या कीमत?

प्रश्न—सार्वजनिक-जीवन में आप अपना कदम क्यों नहीं बढ़ाना चाहतीं? जनता से सम्पर्क जोड़ना क्या आपको अरुचिकर मालूम होता है?

उत्तर—बात दरअसल यह है कि हमें इतना अवकाश कहाँ मिलता है कि हम जनता के सार्वजनिक जलसों में शामिल हो सकें। हमारा दैनिक कार्य-क्रम निर्धारित तरीकों पर होता है। हमें उन्हीं निर्धारित तरीकों से ही छुट्टी नहीं मिलती। प्रत्येक कलाकार कला की गहराई में जाने के प्रयत्न में लगा रहता है। रात-दिन अपना वह एक कर देता है सिर्फ इसी साधना की सफलता के लिए! फिर भी मैं जनता के कार्य के लिये सदा तैयार रहती हूँ। मैं यही कोशिश करती हूँ कि मेरा जीवन जनता के जीवन में घुल-मिल जाये। तभी उनके मनोभावों का वास्तविक चित्रण किया जा सकता है। मुझे ग्रामीण-जीवन बहुत पसन्द है, क्योंकि मानव-स्वभाव का अध्ययन वहीं पर हो सकता है, लेकिन पसन्द होने पर भी शायद ही मुझे कभी ग्रामीण-जीवन बिताने का अवकाश मिला हो। इसीलिये मैं अपनी कला में यह सबसे बड़ी कमी समझती हूँ।

प्रश्न—आप अपने जीवन की "न भूलनेवाली कोई घटना" सुना सकती हैं?

उत्तर—अगर मेरे जीवन में ऐसी कोई घटना ही न घटी हो तब मैं फिर आपको क्या सुनाऊँ?

मैंने कहा—तात्पर्य यह है कि जरा आप अपने जीवन-ड्रामा का परदा तो उठाइये। तभी तो हम देख सकेंगे कि आपके जीवन के स्टेज पर कोई कहानी अभिनीत हुई है या नहीं?

इस बात को सुनकर लीला चिटनिस खिलखिला कर हँस पड़ी।

लीला चिटनिस—मेरा जीवन-प्रहसन कलात्मक नहीं है। सिर्फ हृदय के रसीले भावों का उफान है जिसने अपना बेढंगा अस्तित्व मेरे जीवन पर अंकित कर दिया है। उसी को मैं आपके सामने रखे दे रही हूँ। मेरी कहानी का शीर्षक है—"भग्न-प्रणय।"

तारीख मुझे ठीक याद नहीं। लेकिन महीना नवम्बर का था। आज से दस साल पूर्व की बात है। मैं अपने कालेज के मित्र मिस्टर जीवन के साथ बम्बई के लिए चल पड़ी, क्योंकि उस वक्त मैं मिस्टर जीवन को "सर्वश्रेष्ठ रोमान्टक हीरो" समझती थी। कालेज की अन्य कुमारियाँ भी उन पर अपने हृदय के अरमानों के प्रस्फुटित प्रसूनों को चढ़ाना चाहती थीं। लेकिन जीवन का झुकाव मेरी ओर होता गया और इतना हुआ कि एक दिन हम दोनों ने प्रेम की दुनियाँ में सजीवता लाने के लिए बम्बई चलने का प्रोग्राम निश्चय कर लिया। बम्बई पहुँचने पर "ताजमहल" होटल में ठहरे।

पूर्णिमा की सुहावनी रात थी। मैं और मिस्टर जीवन दोनों समुद्र किनारे एक बैंच पर बैठे थे। जीवन-पट पर अनुराग की स्निग्ध लहरें अपने अस्तित्व को अंकित करना चाहती थीं। 'गेट आफ इण्डिया' कमलनी-कुल-वल्लभ की दिव्य आभा से देदीप्यपान हो रहा था। उसका चिर-साथी सागर अपनी तरुणाई की मधुर प्रभा को प्रकृति देवी के उज्ज्वल आनन पर उँडेल रहा था। इतनी रमणीक जगह मैंने पहले कभी अपनी जिन्दगी में नहीं देखी थी। बम्बई आने का यह मेरा पहला अवसर था, और वह भी सिर्फ सैर-सपाटे के लिए। इसलिए हृदय में बम्बई की हर चीज के लिए एक विशेष कौतूहल हो रहा था। इतने सुन्दर दृश्य को देखकर कौन ऐसा मनुष्य होगा, जिसके हृदय में मस्ती भरी उमंगें न उत्पन्न होती हों?

"मेरे हृदय की देवी—लीला, मैं तुम्हारे रूप के आवृत में अपने हृदय की अनुभूति को मिश्रित कर देना चाहता हूँ—" जीवन ने मेरी ओर सरकते हुए कहा।

"जीवन आज मैंने समझा कि तुम्हारे हृदय में मेरे लिए कितनी बड़ी जगह है—जीवन, मैं भी इसी फिक्र में रहती हूँ कि मैं अपना जीवन-साथी तुम्हें बनाऊँ। मुझे उम्मीद है कि तुम मेरे जीवन के साथ खिलवाड़ न करोगे। आज हम दोनों अपने पवित्र अरमानों की मनोहर माला एक दूसरे के गले में पहिनायें—क्यों ठीक है न जीवन?"

फिर क्या था? हम दोनों के जीवन-पट पर एक दूसरे के प्रणय का भव्य चित्र अंकित हो गया। बम्बई में हम दोनों आनन्द की वीणा बजाते रहे। करीब पन्द्रह दिन के बाद हम घर वापस लौटे। घर वापस लौटने पर जीवन को एक पत्र मिला, जो कि उसके घर में आया था। उसे शीघ्र बुलाया गया था। वह मेरे पास दो दिन और रहा और इसके बाद अपने घर चला गया।

जीवन के चले जाने के बाद उसका कोई पत्र मुझे नहीं मिला। करीब एक महीना हो गया। मैं बड़ी परेशान थी। एक दिन मैं अपने कमरे में बैठी हुई 'टेनीसन' की कविता पढ़ रही थी कि ठीक उसी समय मिस्टर जीवन ने आकर कहा—"कहिये लीला क्या हो रहा है?" मैंने कहा—"जीवन तुम आगये? पत्र क्यों नहीं डाल दिया?"

"नहीं लीला मैं एक जरूरी काम में लगा रहा। इसीसे मैं तुम्हारे लिये खत न डाल सका!"

"अच्छा कोई बात नहीं, फिर कभी ऐसी गलती न करना।"

दो-तीन दिन के बाद मैं जीवन के होस्टल में गई। जीवन का कमरा खुला हुआ था। लेकिन जीवन उस वक्त वहाँ मौजूद नहीं था। मैं कमरे में अकेली थी। सहसा मेरी नजर जीवन के टेबिल पर दो पत्रों पर पड़ी। मैंने दोनों पत्रों को पढ़ा। एक जीवन का ही लिखा हुआ था और दूसरा उसकी पत्नी का था। उस पत्र को पढ़कर मुझे मालूम हुआ कि जीवन विवाहित है। वह मुझसे शादी की बातें छिपाता रहा। मैं फौरन ही जीवन के कमरे से वापस चली आई। हाँ, आने से पहले मैं एक चिट जीवन की मेज पर रख आई थी। उसमें मैंने लिखा था—"पुरुष नारी को अपनी उँगली पर नचाना चाहता है। मैं ऐसे व्यक्ति से बात करना पसन्द नहीं करती, जो कि नारी सिर्फ आनन्द की वस्तु समझता है। नीचता का बदला एक भारतीय ना पास यही है कि वह ऐसे व्यक्ति को पास तक न फटकने दे।"

सिनेमा संसार की प्रसिद्ध अभिनेत्री चिटनस अपने अभिनय के लिये प्रसिद्ध

बस उस दिन से मेरा जीवन कभी मिलन नहीं हुआ। पुरुष-जाति उच्छृङ्खल भाव का यथार्थ दर्शन हो इस चित्र को मैं कभी जिन्दगी भर न सकूँगी।"

मैंने कहा—आपको रोमान्टिक में भी कोई ठीक-सा पात्र नहीं मिला न आपको जीवन के कलात्मक क्षेत्र में

लीला चिटनिस—हाँ, अब तक भग्न-प्रणय की ही तसवीर देखने मिली है। लेकिन फिर भी मैं अपने सि को पुरुष-जाति की वासना के चिर बलिदान न होने दूँगी। चाहे मुझे प्रेम दुनिया में कितनी ही असफलता मिले?

मैंने कहा—आप आदर्शवाद के जीवन की बाजी लगा रही हैं, इसी आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली है।

बातचीत करने में करीब छः घंटे गये थे। लीला चिटनिस को फोर्ट- जाना था। अतएव हम दोनों फोर्ट- आये। यहीं से मैं लीला चिटनिस से हुआ।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षि

हटते समय भी। इसी प्रकार रूसी बराबर लड़ते रहे। परिस्थिति अनुकूल होते ही और मौका मिलते ही वह हमला कर देते और कभी कभी ऐसे अवसर पर जब साधारण तौर से हमले की कोई सम्भावना नहीं दिखाई देती थी। इससे जीवन हानि तो उनकी बहुत हुई लेकिन उनके शौर्य की ख्याति इतिहास के पन्नों में अंकित रहेगी।

मेशा सबसे ऊ
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम सा
केशों को जमाती
चमकलाती
चिटचिटाहट से परे
व्यवहार में साफ
केश के लिये उपकारी
आजकल
मिल रही
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृ
SSK

नाटक

विवाह

लेखक, श्री बालगोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

उच्च शिक्षा-प्राप्त लड़कों और लड़कियों में विवाह के सम्बन्ध में विविध विचार हैं। कुछ लड़कियाँ विवाह को उत्तम समझती हैं और कुछ पुरुषों की गुलामी। इस सुन्दर एकांकी में लेखक ने दोनों विचार-धाराओं को चित्रित करने का प्रयत्न किया है। कथानक सुन्दर, सामयिक और मनोरंजक है।

पात्र

किरण वर्मा—१८ वर्ष की युवती।
मालती शर्मा—थर्ड ईयर की छात्रा।
सरोजिनी देवी बी० ए०—२४ वर्षीय छात्रा
हेमलता बी० ए०-एम० ए० (फाइनल) की छात्रा।
रानी—सेकेण्ड ईयर की छात्रा।

* * *

स्थान—विमेन्स हॉस्टल का कमरा।
समय—पाँच बजे शाम।

[बाग के बीच में एक विशाल बिल्डिङ्ग। चारों तरफ पेड़। बिल्डिङ्ग के ठीक पच्छिम दिशा में मेन-गेट। मार्ग में एक फव्वारा। चारों तरफ चौतरा, जहाँ कुछ नवयुवतियाँ आपस में बातें कर रही हैं। पेड़ों की छाया में बेञ्च पड़े हैं, उन पर भी लड़कियाँ बैठी हैं। कुछ के हाथों में 'नावेल' हैं, कुछ लड़कियाँ फिल्मी गीत गुनगुना रही हैं कुछ के हाथों में 'एम्ब्रोयडरी' का सेट है, और वे मेज-पोश बुन रही हैं। बाग में चहल-पहल है। दो अल्हड़ युवतियाँ फव्वारे के जल से क्रीड़ा कर रही हैं। हॉस्टल के नीचे के भाग में कॉलेज और ऊपर लड़कियों का हॉस्टल है।]

(पर्दा उठता है।)

किरण अपने कमरे में, पलँग पर लेटी हुई कुछ गुनगुना रही है। वह आज बहुत प्रसन्न है। उसके हाथ में एक फोटो है और दूसरे हाथ में एक पत्र। वह खुशी से फूली नहीं समाती है। कभी वह नाचती है, कभी कमरे में टहलती है, फिर पलँग पर लेट जाती है। आज वह तितली की भाँति चपल हो रही है। वह गाती है—

जीवन—जमुना पार—
मिलेंगे जीवन—जमुना पार!
यहाँ नहीं, तो वहीं मिलेंगे,
जीवन—जमुना पार!

गाना समाप्त होते ही रानी बाहर से द्वार खटखटाती और फिर कमरे में प्रवेश करती हुई कहती है।

रानी—(हलके मुस्कराती हुई) किरण, आज बड़ी खुश दीख रही हो, क्या बात है? मुझे भी कुछ तो बताओ! मैं भी तुम्हारी खुशी में हिस्सा लेना चाहती हूँ। बताओ न किरण, क्या बात है? (रानी उसके शरीर को झकझोरती हुई सटकर बैठ जाती है) कोई खुशी की बात जरूर है, तभी यह खुशी का गाना चल रहा है! (हँसती हुई) जल्दी बोलो, नहीं तो मैं गुदगुदाती हूँ!

किरण—(स्त्री-सुलभ लज्जा से) क्या बताऊँ रानी! (आँखों में आँखें डालती हुई) बात बताने की नहीं है। (मन्द स्वर में) यह बात समझने की है।

किरण उठकर, प्रसन्नता से मेज के पास खड़ी हो जाती है।

किरण—(मुस्कराती हुई) बता दूँ, क्या बात है?

रानी—(मुँह बनाकर) भई, अगर न बताना चाहो तो न बताओ! मैं जबरदस्ती तो कर नहीं सकती!

किरण—(हँसती हुई) अच्छा तो बताये देती हूँ (वह रानी के निकट आ जाती है) उनकी चिट्ठी आई है और फोटो भी......।

रानी—(उत्सुकता से) 'उनकी' किसकी? और किसका फोटो?...मैं कुछ न समझ सकी।

किरण—वाह, यह भी नहीं समझतीं! 'उनकी'...याने...'उनकी'...आँ... आँ...आँ...मेरे होनेवाले...मैं नाम कैसे लूँ...और उन्हीं की फोटो!

रानी—(मुस्कराती हुई किरण के गले से लिपटकर) सच...सच किरण! ला, मैं देखूँ। कहाँ है फोटो? कहाँ छिपाया है तू ने? आज तक यह बात तू ने मुझसे छिपाकर क्यों रक्खी थी?

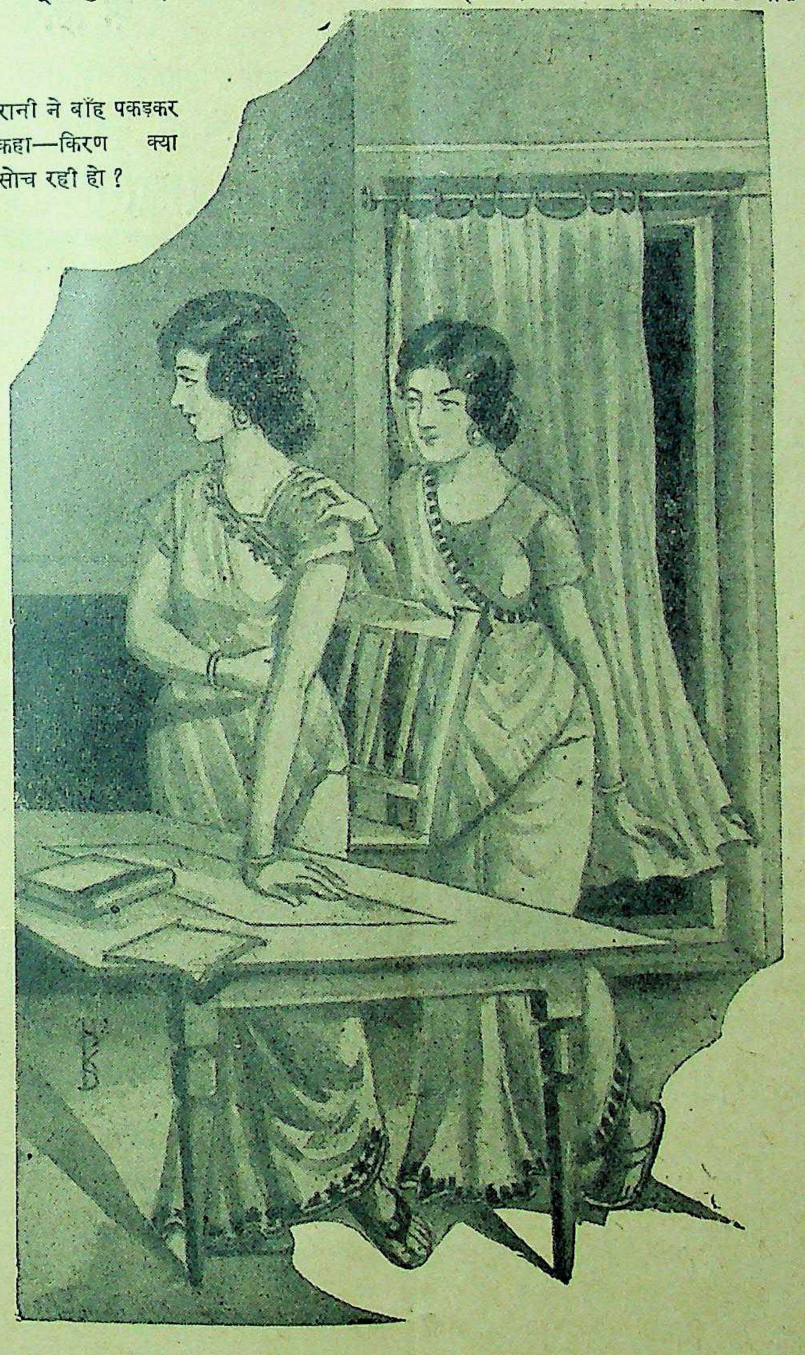

रानी ने बाँह पकड़कर कहा—किरण क्या सोच रही हो?

किरण—(हँसती हुई) दूर से दिखाऊँगी!

रानी—दूर से क्यों, मैं तो करीब से देखूँगी! क्या तू डरती है, कि मैं छीन लूँगी। (रुककर) पगली, वे मेरे थोड़े ही हो जायँगे?

किरण—(मुँह बनाकर) तू ने तो पहले से ही बना रक्खा है, फिर तुझे क्या जरूरत? आज-कल राजेन्द्र कहाँ है? इधर उसकी कोई चिट्ठी आई?

रानी—अच्छा बातें न बनाओ! पहले फोटो दिखलाओ!

किरण—फोटो तो दिखाऊँगी, लेकिन दूर से!

रानी—मैं तो हाथ में लेकर देखूँगी!

किरण—पहले दूर से देख लो, फिर हाथों में लेना!

रानी—अच्छा, यही सही...।

(किरण ब्लाउज के भीतर से 'पासपोर्ट साइज' की फोटो निकालकर दिखलाती है।)

रानी—(विस्मय से) फोटो तो बड़ा सुन्दर है। अब मुझे दो, मैं करीब से देखूँगी!

किरण—आखिर तू मानेगी नहीं, ले, (मुस्कराती हुई फोटो रानी के हाथ में दे देती है।)

रानी—पहले इनका नाम बताओ?

किरण—नाम! मुँह से तो मैं कहूँगी नहीं...(हँसती है) फोटो के पीछे नाम है...पढ़ न लो!

रानी—(पढ़ती है) रमेश! फोटो मुझे पसन्द है। (कुछ रुककर) और कुछ कहूँ?

किरण—और 'कुछ' क्या...?

रानी—यही कि...नाक-नकशा, चेहरा!

किरण—तेरे राजेन्द्र से अच्छा ही है!

रानी—चल हट! हाँ, यह तो बता वे करते क्या हैं?

किरण—रिसर्च केमिस्ट हैं। शादी के बाद अमरीका चले जायँगे, सात महीने के लिए।

रानी—शादी कब है? (कुछ खिन्नता प्रकट करती हुई) आज तक तू ने रमेश के विषय में छिपा क्यों रखा था? आखिर क्यों? तू ने इन्हें देखा है—बातें की हैं?

किरण—हाँ, देखा भी है और बातें भी की हैं। गर्मियों की छुट्टी में जब मैं घर गई थी, तब वे आये थे। मैंने उन्हें देखा था, हँसमुख-सा चेहरा था। चश्मा लगाते हैं। न बहुत दुबले हैं और न मोटे! पहले तो मुझे किसी ने बताया नहीं। दो दिन बाद भाभी ने कहा कि ये तुम्हारे होनेवाले...! आगे तुम समझ सकती हो। (कुछ रुककर) मुझे पसन्द हैं। उनकी बातें मुझे अच्छी लगीं। चाय के समय हम सब साथ बैठते थे। भाभी उनसे खूब हँसी-मजाक करती थीं। (किरण कहती कहती रानी के गले में बाँहें डालकर झूलने लगती है) सच, रानी, उसी दिन से मुझे उनका हर समय ख़याल बना रहता है। उनकी बातें याद आती हैं और उनका चेहरा आँखों में नाच उठता है। (धीरे से) तुझे भी ऐसा होता है क्या?

रानी—(चुप रहती है।)

किरण—अब बोलती क्यों नहीं? क्या राजेन्द्र की याद हो आई? अरे, तू चुप क्यों है?

रानी—(कुछ बदली हुई आवाज में) चुप कहाँ हूँ! मैं सोच रही थी कि...।

किरण—(शीघ्रता से) क्या सोच रही थी?

रानी—(करुण स्वर में) यदि राजेन्द्र मेरा न हो सका तो ...?

किरण—यह कैसे हो सकता है? तेरे पिता जी तो राजेन्द्र को जानते हैं। उसे प्यार भी करते हैं। फिर रुकावट क्यों होगी?

रानी—तू नहीं जानती किरण! पिता जी के विचार बदलते रहते हैं। कल को कोई दूसरा लड़का मिल जायेगा, तो वह उसी की तारीफ करने लगेंगे। और क्या पता कि वह राजेन्द्र के हाथों में मेरा हाथ देंगे या नहीं लेकिन मैं तो राजेन्द्र से ही शादी करूँगी!

किरण—ऐसा ही होगा, शादी तेरी राजेन्द्र से होगी!

रानी—(दृढ़तापूर्वक) भले ही रुकावटें हों लेकिन मैंने तो राजेन्द्र से 'प्रोमेस' किया है और उसे अवश्य पूरा करूँगी! अपनी या उसकी जिन्दगी बरबाद न होने दूँगी किरण!

किरण—मैं तेरी मदद करूँगी। तू चिन्ता न कर!

रानी—हाँ, किरण, पिता जी तुझे बहुत मानते हैं। तेरी बात वह कभी टाल नहीं सकते!

किरण—कितना अच्छा होगा, जब शादी

के बाद मैं 'उन्हें' लेकर, तेरी शादी के लिए सिफारिश करने, तेरे घर आऊँगी ! (रुककर) वह भी तेरी सिफारिश कर देंगे।

(घड़ी में टन् से आवाज होती है)

रानी—ओ, साढ़े पाँच बज गये ! चलूँ नहाने ! आज सिनेमा चलना है। हेमलता भी चलेगी ! तुम भी तैयार हो जाओ ?

किरण—मुझे कुल पन्द्रह मिनट लगेंगे।

रानी—(दरवाजे के पास पहुँचकर) मैं पन्द्रह मिनट में आती हूँ।

[रानी चली जाती है ! दो मिनट बाद मालती किरण के कमरे में आती है। साथ में सरोजिनी बी० ए० भी है। मालती फैशनेबुल युवती है। वह पुरुषों से खुलकर बोलती है और पुरुषों से बराबरी का दावा करती है।

सरोजिनी बी० ए० भी उनमें से है, जिन्हें विवाह से चिढ़ है। वह पुरुषों और विवाह पर कई लेख लिख चुकी है। शादी को वह नारी-जाति की बेड़ियाँ समझती है। एम० ए० के बाद उसका इरादा है कि वह सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण करेगी और विवाह-बहिष्कार जैसा कोई आन्दोलन खड़ा करेगी।]

मालती—किरण ! सुना है तुम्हारा विवाह तय हो गया है ?

किरण—(मुस्कराती हुई) हाँ, हो गया है।

मालती—(चुटकी लेती हुई) कब है शादी की तारीख ?

(मालती और सरोजिनी पलँग पर बैठ जाती हैं।)

किरण—अंतिम मार्च में।

मालती—मुझे 'इन्वाइट' करना न भूलना !

किरण—(हँसती हुई) यह भी भूलने की बात है ! सरोजिनी बहन, तुम चुप क्यों हो ? कुछ कहो...या सुनाओ ! आज पार्टी-आफिस में नहीं गईं ?

सरोजिनी—मुझे तुमसे सहानुभूति है किरण ! तुम्हें आश्चर्य होगा कि 'बधाई' के बजाय मैं तुमसे यह क्या कह रही हूँ ?

किरण—मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझी।

सरोजिनी—यह कोई नई बात नहीं है किरण ! मैं शादी की खबर सुनकर, बधाई नहीं देती बल्कि हमदर्दी जाहिर करती हूँ (रुककर) मुझे तुम से ऐसी उम्मीद नहीं थी। मैं नहीं जानती थी, कि तुम भी और लड़कियों की तरह शादी के लिए पढ़ना चाहती थी, फिर तुम तो जानती हो कि मैं शादी को बुरा समझती हूँ ! शादी—हम औरतों की कमजोरी जाहिर करती है। इसी लिए मैं चुप थी।

किरण—मेरी शादी और पढ़ाई से कोई सम्बन्ध नहीं है। सरोजिनी बहन ! पढ़ाई मैं इसलिए नहीं पढ़ रही हूँ, कि मुझे मर्दों से बदला लेना है या उनके खिलाफ जहाद करना है। मैं शादी कर रही हूँ, इसलिए कि नारी को पुरुष का साथी बनकर जीवन में सब कार्य करना है। स्त्री को पुरुष का आश्रय आवश्यक है। स्त्री का कार्य-क्षेत्र घर-गृहस्थी है, सार्वजनिक क्षेत्र नहीं। नारी का आदर्श मातृत्व में है ! मेरे घर का यही आदर्श रहा है।

सरोजिनी—(चिढ़कर) ठीक है। बच्चा जनो और पुरुष की दासी बनो। मैं तो चाहती थी, कि नारी-जागरण और उसके उत्थान में तुम मेरी सहायता करोगी लेकिन...!

किरण—(सरलता से) सरोजिनी बहन, तुम यहीं भूल कर रही हो। मैं कब नहीं चाहती कि नारी-जाति की उन्नति हो और वह भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता सिद्ध करे। लेकिन इसके लिए पुरुषों का प्रतिद्वन्दी बनने की आवश्यकता नहीं है। हमारी सफलता में पुरुषों को ईर्षा नहीं होगी। वह रुकावटें नहीं डालेंगे। लेकिन, हमें उनकी बराबरी की आशा नहीं करनी चाहिए !

सरोजिनी—(रुष्ट होकर) मैं बहस नहीं करना चाहती, किरण ! मैं अब भी यही कहूँगी, कि तुम विवाह का विचार त्याग दो ! और इस बात की प्रतिज्ञा करो कि पुरुषों की गुलामी न करोगी ! हमें इस दशा में पहुँचाने का दोष पुरुषों को है और मैं इसे सहन नहीं कर सकती।

किरण—मैं भी इस विषय पर बातें नहीं करना चाहती। (रुककर) तुम जा सकती हो, सरोजिनी बहन !

(सरोजिनी उठकर जाने को तैयार हो जाती है। उसका चेहरा लाल हो जाता है और श्वेत बूँदें झलकने लगती हैं।)

सरोजिनी—(मुँह बिचकाकर) मैं तो यहाँ आती भी नहीं। जाती हूँ। मैं जानती हूँ, कि तुम......

(सरोजिनी तुरन्त कमरे के बाहर चली जाती है। रानी और हेमलता अन्दर आती हैं ! किरण का चेहरा खिन्न है। उसकी आँखों में आँसू हैं। वह हाथों से चेहरा ढककर, वहीं कुर्सी पर बैठ जाती है।)

रानी—(आर्द्रतापूर्वक) किरण ..... किरण, यह क्या हुआ ? तुम रो क्यों रही हो ? क्या बात है ? बोलो किरण !......(हेमलता से) हेम, जान पड़ता है सरोजिनी ने कुछ कहा है ! न जाने क्यों वह हम लोगों के पीछे पड़ी रहती है।

हेमलता—जरूर कोई बात है।

रानी—किरण......किरण, क्यों रो रही हो ? (मालती से) क्या बात है मालती ?

मालती—बात यह है कि सरोजिनी ने किरण की शादी पर 'कमेन्ट' किया है। वह कहती है 'शादी करने से इनकार कर दो। तुम्हें जीवन में बहुत कुछ करना है और शादी कर लोगी तो कुछ नहीं कर सकोगी ! पुरुषों की दासी बनना तुम्हें शोभा नहीं देता।' यही बातें हुई हैं ! अभी ही तो वह गई है। उसी समय से किरण रो रही है।

रानी—(क्रुद्ध होकर) उसे क्या पड़ी थी। (किरण से) किरण, तुम तो उसे जानती ही हो, फिर उसकी बातों का क्यों इतना खयाल करती हो ? उठो, कपड़े बदलो। छः बजे हैं। शो का वक्त हुआ चाहता है।

किरण—(भर्राई आवाज में) रानी मैं नहीं जाऊँगी। मेरी तबीअत ठीक नहीं है !......मुझे काम है। मैं सामान ठीक करूँगी ! कल मैं घर चली जाऊँगी ! अब मैं यहाँ नहीं रहना चाहती ! (हाथों से मुँह छिपा वह सिसकियाँ भरती है।)

रानी—यह क्या कह रही हो, किरण ?

किरण—मैं कल यहाँ से चली जाऊँगी रानी ! (रोने लगती है) अब मैं यहाँ नहीं रह सकती। (कुर्सी पर से उठकर पलँग पर जा बैठती है। उसकी आँखों से आँसू टप्-टप् कर गिरते हैं। रानी और हेमलता की आँखें भी गीली हो जाती हैं। मालती चुप खड़ी है)

(धीरे-धीरे परदा गिरता है)

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफास-
फाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL

* खाँसी
* ब्रांकाइटिस
* जुकाम
* निमोनिया
* यक्ष्मा
* पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *

तैल अंश को नियंत्रित रखने
के लिये विशेष गुणकारी है

यदि आपके औषधि विक्रताओं से
न मिले तो कृपया हमें लिखें :—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

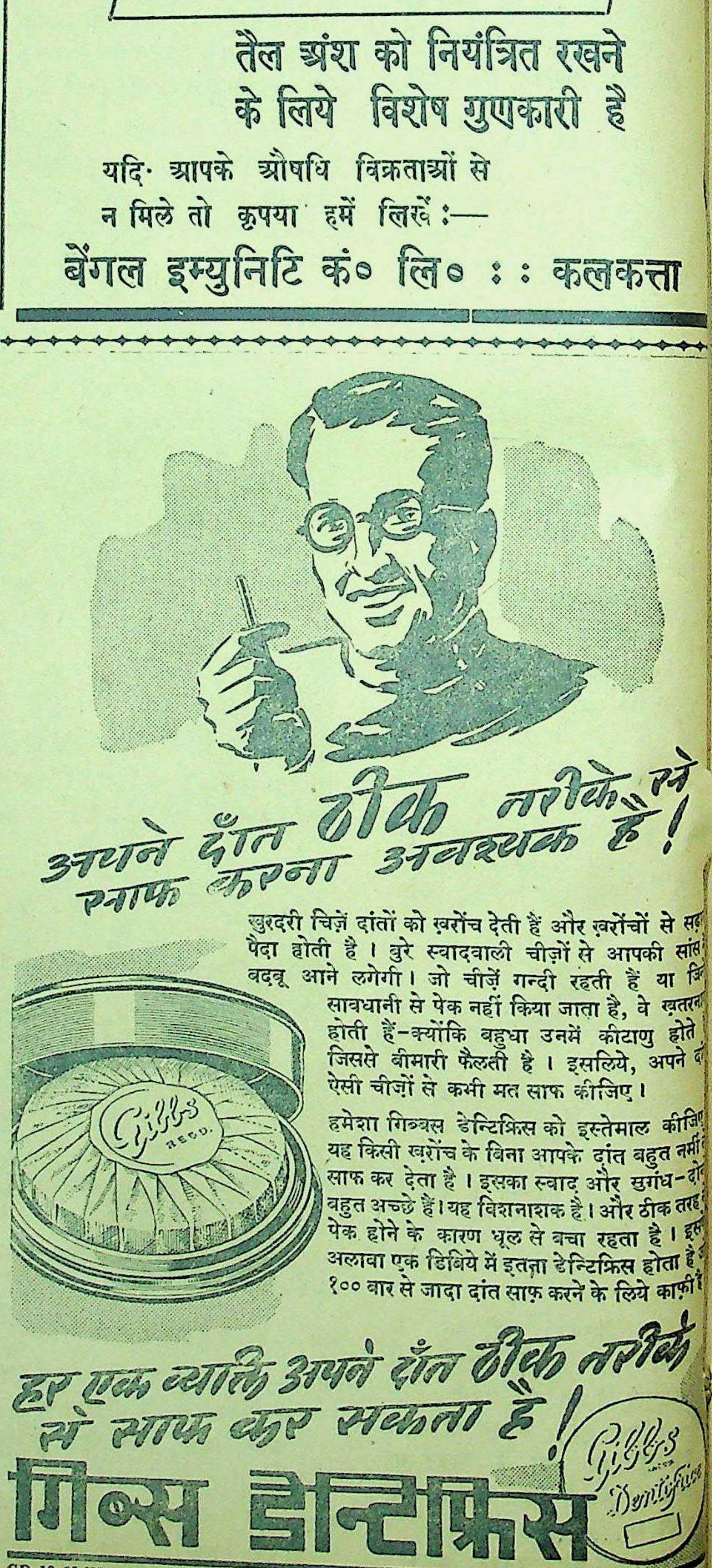

खुरदरी चिज़ें दांतों को ख़रोंच देती हैं और ख़रोंचों से स
पैदा होती है। बुरे स्वादवाली चीज़ों से आपकी सांस
बदबू आने लगेगी। जो चीज़ें गन्दी रहती हैं या
सावधानी से पेक नहीं किया जाता है, वे ख़तरन
होती हैं-क्योंकि बहुधा उनमें कीटाणु होते
जिससे बीमारी फैलती है। इसलिये, अपने दा
ऐसी चीज़ों से कभी मत साफ कीजिए।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजि
यह किसी ख़रोंच के बिना आपके दांत बहुत नर्मी
साफ कर देता है। इसका स्वाद और सुगंध-दो
बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है। और ठीक तरह
पेक होने के कारण धूल से बचा रहता है। इस
अलावा एक डिबिये में इतना डेन्टिफ्रिस होता है
१०० बार से जादा दांत साफ़ करने के लिये काफ़ी

GD. 18-33 HI
D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLA

कोशलगढ़ का कैदी

दिलचस्प जासूसी उपन्यास

[पिछली कहानी—बंगाल में राय-परिवार बड़ा प्रसिद्ध था। इस परिवार में शिवशङ्कर राय तथा गौरीशङ्कर राय दोनों भाइयों ने अच्छी ख्याति पाई थी। एकाएक एक दिन कोशलगढ़ के सरदार धनंजय खत्री, लापता राजकुमार शङ्करसिंह की खोज में उधर आ निकले। गौरीशङ्कर बाबू का चेहरा राजकुमार शङ्करसिंह से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। जब धनंजय खत्री को राजकुमार का पता न चला तब उन्होंने गौरीशङ्कर बाबू को इस बात के लिये राजी किया कि वह अपने को शङ्करसिंह बतायें। धनंजय खत्री गौरीशङ्कर बाबू को घोड़े पर लेकर गुप्त रूप से कोशलगढ़ पहुँच गये। राज्य में प्रसिद्धि हो गई कि लापता राजकुमार शङ्करसिंह वापस आ गये। राजकुमार शंकर-सिंह के भाई उदितसिंह ने, जो पास ही झड़वा राज्य में रहता था, शंकरसिंह को कैद करवाया था। वह कोशलगढ़ के वर्तमान मन्त्रियों का विरोधी था। राजमहल में गौरीशङ्कर बाबू ने नकली लापता राजकुमार का अभिनय प्रारम्भ किया और समय पर उनका राजतिलक भी हो गया। गौरी-शङ्कर बाबू एक दिन नौका-विहार के लिये गये और एक दुर्घटना से बचकर वह फिर कोशलगढ़ पहुँच गये। वहाँ आपस में मंत्रणा हुई। रनिवास-में भी काफ़ी चहल-पहल हुई। महारानी-कस्तूरीबाई और उनकी सहेली चम्पा में भी राजा के सम्बन्ध में बड़ी आकर्षक वार्ता हुई। एक दिन गौरीबाबू वेष बदलकर नगर घूमने निकले और वहाँ उन्हें एक भेद का पता चल गया। गौरी बाबू को यह ज्ञात हो गया कि उदितसिंह ने शंकरसिंह को कैद कर रखा है। वह उनके छुड़ाने का उपाय करने लगे। वह शंकर सिंह से मिलने के लिए उपाय करने लगे"""""""।

(गतांक के आगे)

गौरी बाबू जँगले के किनारे पर अँगुली रखकर धीरे धीरे अपने बाहुओं के बल उठकर भीतर देखने लगे। वह पत्थर खोद-कर बनाई हुई एक गुफा थी। मोमबत्ती की रोशनी से उसमें बहुत कम उजाला था। जँगले के ठीक दूसरी ओर एक लोहे का बन्द दरवाजा था। दीवार से सटा हुआ बेदी के समान एक लम्बा चबूतरा था, शायद वही कैदी के सोने के लिए शय्या का काम देता था। इसी बेदी पर गाल पर हाथ रखे हुए उदितसिंह बैठे थे। उनकी जांघ पर एक नंगी तलवार थी। उनके सामने दया के भिक्षार्थी करुणानेत्र शंकर-सिंह खड़े थे। वे केवल एक हाफपेन्ट पहने थे, ऊपर कुछ न था, बिलकुल कैदी की पोशाक में थे। उनके चेहरे पर मानसिक तथा दैहिक कष्ट की छाप पड़ गई थी, आँखें धँस गई थीं, होंठ काले हो गये थे, बाहु तथा गर्दन पतली हो गई थीं तो भी उनकी अवस्था गौरी बाबू से मिलती-जुलती थी। गौरी बाबू जैसे मुग्ध होकर शंकरसिंह की ओर देख रहे थे।

उदितसिंह भौंहें चढ़ाये कुछ सोच रहे थे कि शंकरसिंह की दीर्घ निःश्वास मिली हँसी सुनकर उन्होंने सिर ऊपर उठाया। शंकरसिंह ने गिरी आवाज से कहा—नींद? नींद तो मुझे हराम हो गई है।

नींद नहीं आती। शराब पीओ—कहते हुए उस गन्दी कोठरी के कोने में अँगुली से इशारा करके उदितसिंह खड़े हो गये। बन्द गुफा में हवा न आने के कारण उनको कुछ कष्ट हो रहा था, इसी से वे जँगले की ओर बढ़े।

गौरी बाबू बिना किसी आवाज के धीरे से जँगला छोड़कर पानी में उतर गये। यह सोचकर कि अब यहाँ रहना आपत्ति से खाली नहीं है। वे टटोलते हुए वापस लौट चले। उनका हाथ रुद्ररूप के शरीर में लगा। उन्होंने उनके कान के पास मुँह ले जाकर कहा—लौट चलो।

जँगले से पचीस गज दूर जाकर वे लोग ठहर गये।

रुद्ररूप ने पूछा—आपने क्या देखा?

गौरी बाबू ने कहा—शंकरसिंह और उदित—उदित पहरा दे रहा है। कुछ देर तक चुप रहकर वे फिर बोले—आज रात में वह कुछ करेगा।

"क्या करेगा?"

"मालूम नहीं। हो सकता है—"

विगत रात्रि की मयूरवाहन की बातें उन्हें याद आ गईं। वे क्या करना चाहते हैं? वे किस ओर से आक्रमण करेंगे? क्या कस्तूरीबाई के विरुद्ध वे कुछ षड्यन्त्र रचेंगे? किन्तु उससे उनका क्या लाभ होगा? उससे कोशलगढ़ का सिंहासन तो मिलेगा नहीं।

किस्ता नदी के दक्षिण तट पर कृष्णा-बाई के विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में बत्तियाँ जुगनू की तरह टिमटिमा रही थीं। किनारे पर अँधेरा था। गौरी बाबू ने विचार किया—अब यहाँ रहकर कोई लाभ नहीं है। शंकरसिंह से बातचीत करने का अवसर न मिलेगा। उदितसिंह स्वयं उन पर पहरा दे रहे हैं। शायद उदितसिंह और मयूर-वाहन बारी बारी से पहरा देते हैं। हो सकता है कि किले के अन्य लोग कैदी का परिचय न जानते हों या जानने पर भी उदितसिंह राजा के पहरे के लिए उनका विश्वास न करते हों। किले में और कौन हैं? दो-चार नौकर चाकर और दो-चार राजद्रोही मित्र होंगे। आश्चर्य! इन्हीं मुट्ठी भर आदमियों को लेकर उदितसिंह एक राज्य की इतनी बड़ी शक्ति को व्यर्थ कर रहे हैं।

इन सब व्यर्थ चिन्ताओं को छोड़कर गौरी बाबू लौटना ही चाहते थे कि अचानक जाँता चलने के समान गड़गड़ शब्द को सुनकर रुक गये। दूसरे ही क्षण मानो कोई शैतान हँसता हो, ऐसी हँसी किले की दीवार से निकलकर उनके कानों में पड़ी। सुनकर गौरी बाबू के अंग-प्रत्यंग कड़े हो गये।

मयूरवाहन की हँसी! तब तो वह मरा नहीं है।

लेकिन हँसी का शब्द आया कहाँ से?

गौरी बाबू ने सतर्कता से इधर-उधर देखकर रुद्ररूप को अपने हाथों से खींच लिया और दोनों किले की दीवार से सट गये। उन्हें दाहिनी ओर पाँच-छः हाथ की दूरी पर किले की दीवार में एक चौकोर उजाला दिखलाई पड़ा।

जाँते की तरह गड़गड़ शब्द करता हुआ उस चौकोर उजाले की चौड़ाई बढ़ने लगी। लगभग आठ फीट ऊँचा और छः फीट चौड़ा एक दरवाजा धीरे-धीरे दीवार में प्रकट हुआ।

गुप्त दरवाजा! इसी रास्ते विगत रात्रि में मयूरवाहन किले में लौट गया था! गौरी बाबू और रुद्ररूप साँस रोककर देखने लगे।

भीतर से कई आदमियों के बातचीत करने की अस्पष्ट आवाज सुनाई पड़ी। वे कोई भारी चीज लेकर आ रहे थे। थोड़ी ही देर में एक छोटी नाव का अगला हिस्सा बाहर निकला।

"धीरे! होशियार!"—यह आवाज मयूरवाहन की थी।

नाव छप से पानी में गिर पड़ी। मयूरवाहन रस्सी पकड़े था। वह नाव को खींचकर दरवाजे के मुँह पर लाया।

स्वरूपदास, तुम मोटे आदमी हो, पहले नाव पर चढ़ो—एक मोटा आदमी सावधानी से नाव पर चढ़ा—डाँड़ पकड़ो।

अब तुम आओ।—एक आदमी और नाव में चढ़ा।

तब रस्सी नाव में फेंकते हुए मयूर-वाहन हलके पाँव कूद कर नौका में सवार हो गया।

नाव चल पड़ी, मयूरवाहन हँसा—वही विजयी है—फिर वैसी ही लापरवाही की हँसी। फिर दरवाजे की ओर घूम कर उसने कहा—दरवाजा खुला रखना और तुम लालटेन लेकर यहीं बैठे रहना, नहीं तो वापस आने पर दरवाजा खोजने से न मिलेगा। कब लौटूँगा, मालूम नहीं, हो सकता है कि रात ही बीत जाय। होशियार रहना।

द्वार के भीतर से उत्तर मिला—जो हुक्म।

मयूरवाहन बोला—डाँड़ चलाओ।

छोटी नाव तीनों सवारों को लिये हुए पलक मारते ही आँख से ओझल हो गई। नौका किस ओर गई, यह जानने के लिए गौरी बाबू ने अपनी आँखों की पूरी शक्ति खर्च कर दी, लेकिन सब निष्फल हुआ। आकाश और जल के बीच घोर अंधकार में नौका अदृश्य हो गई।

पाँच मिनट तक सन्नाटा था। इसके बाद गौरी बाबू ने रुद्ररूप का सिर अपने मुँह के पास लाकर धीरे से कहा—रुद्ररूप, तुम खेमे में लौट जाओ।

रुद्ररूप अकचकाकर बोले—और आप?

"मैं इसी रास्ते किले में जाऊँगा।"

"किन्तु—"

गौरी बाबू ने सँड़सी की तरह अपनी मजबूत अँगुलियों से रुद्ररूप का कंधा पकड़कर कहा—मेरा हुक्म, इनकार न करो—ऐसा मौका फिर न मिलेगा। तुम तम्बू में जाकर सरदार धनञ्जय और बीस सिपाहियों के साथ किले के फाटक पर आना और पुल के पास छिपे रहना। मैं किले के भीतर घुस रहा हूँ और जैसे भी हो सकेगा फाटक खोल दूँगा। समझ गये न?

रुद्ररूप ने आज्ञाकारी सैनिक के समान स्वर से कहा—समझ गया।

इस गुप्तद्वार पर केवल एक आदमी है। वह मुझे रोक नहीं सकता। इसके बाद भीतर की जैसी हालत होगी वैसा करूँगा। उदितसिंह राजा का पहरा दे रहा है, मयूरवाहन नहीं है, किले में कुछ नौकर-चाकर होंगे। मौका यही है। मयूर-वाहन के लौटने के पहले काम पूरा कर लेना होगा। तुम जल्दी जाओ, और देर न करो।

जो आज्ञा—कहकर रुद्ररूप ने तैरना आरम्भ कर दिया।

क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!
हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्य्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन तर व ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VINOLIA
WHITE ROSE SOAP

VWR. 18-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

गौरी बाबू ने रुद्ररूप से कहा—तुम प्रवाह को काट न सकोगे, इसलिए धार में अपने को छोड़ दो। किले की सीमा पार करने पर किनारे उठ सकोगे।

रुद्ररूप चुपचाप चले गये। ऐसे विश्वव्यापी अंधकार में एक साथी था, वह भी गया। गौरी बाबू अकेले रह गये!

उन्होंने छुरे को कमर से निकाल कर हाथ में ले लिया और वे सावधानी से दरवाजे की ओर बढ़े।

गुप्तद्वार जल से एक हाथ की उँचाई पर था। गौरी बाबू ने कोने में से साँप की तरह सिर उठाकर भीतर देखा। सामने ही एक लालटेन जल रह थी, उसके पीछे क्या था वह दिखलाई नहीं पड़ता था। खूब निगाह ठहराकर देखने पर गौरी बाबू को मालूम हुआ कि गुप्तद्वार बिलकुल सुरंग की तरह है—भीतर घोर अंधकार है, शायद सुरंग के अंत में किले के ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी है।

आँखें गड़ाकर गौरी बाबू ने देखा कि लालटेन के पीछे दो-तीन हाथ पर एक आदमी दीवार से सटा हुआ बैठा है। उसका मुँह दिखलाई नहीं पड़ता था। वह गाल पर हाथ रखे किसी सोच में डूबा हुआ था। सुरंग में और कोई नहीं था।

गौरी बाबू ने एक बार आँखें मूँदकर अपने को सँभाल लिया। तत्पश्चात् हाथों और घुटनों के बल जल से बाहर निकलकर वे दरवाजे के मुँह पर खड़े हो गये। उनके शरीर से पानी टपक रहा था।

बैठा हुआ आदमी उन्हें देखकर चीख मारता हुआ खड़ा हो गया। गौरी बाबू भी छुरा तानकर एक छलांग में उसके सामने जा खड़े हुए।

"महाराज!"

गौरी बाबू का तना हुआ छुरा आधे ही रास्ते में रुक गया। क्योंकि आवाज परिचित थी।

गौरी बाबू ने लालटेन के उजाले में उसके भयभीत तथा विस्मित चेहरे को देखा। चेहरा उनके पहचान का था। उसको कहाँ देखा है?

अचानक उन्हें याद हो आया। गौरी बाबू के हाथ से छुरा जमीन पर गिर पड़ा। उन्होंने खुशी के मारे दोनों हाथों से उसे आलिङ्गन करते हुए कहा—प्रह्लाद!

इक्कीसवाँ परिच्छेद

रात समाप्त हो रही थी। कृष्णा का विवाह हो गया था। थकी हुई कस्तूरी बाई ने दोतल्ले पर अपने शयनगृह में जाकर किवाड़ बन्द कर लिये। कमरे में तेल का दीपक जल रहा था। उसके मन्द प्रकाश में उसने चारों ओर देखा। कमरा बहुमूल्य चीजों से सजा हुआ था। बीच में मखमल का गद्दा बिछा हुआ एक पलँग था। कस्तूरीबाई ने लम्बी साँस लेकर मन में सोचा—अब कृष्णा सोने में उसकी साथी न होगी।

उसे थकावट बहुत थी तिस पर भी सोने की इच्छा न होती थी। वह धीरे-धीरे जँगले के पास जाकर खड़ी हो गई। आज कृष्णा के विवाह की प्रत्येक घटना ने उसके हृदय में आन्दोलन मचाया था, जो अभी तक जारी था। हेमन्त ऋतु की रात्रि में जँगले के पास खड़ी रहने से उसका शरीर शीतल हो गया। बगीचे में दूर दूर दो-चार दीपक जल रहे थे। पेड़ों की डालियों से एक अस्फुट प्रभा निकलकर रात्रि को कुछ दीप्तियुक्त कर रही थी। बगीचे के बगल ही में तीव्रवाहिनी किस्ता थी। वह थकती नहीं, सोती नहीं, अधीर आग्रह से अपने मुहाने की ओर बहती चली जा रही थी।

कस्तूरीबाई किस्ता के दूसरे तट पर प्रगाढ़ अंधकार में देखने लगी। उसी जगह किसी तम्बू में वे सोये होंगे! वे यहाँ आये क्यों नहीं? आने से उनके काम की क्या हानि होती?

फिर वह एक दीर्घ निःश्वास लेकर कमरे में टहलने लगी। इसी समय जँगले के नीचे किसी को बातचीत करते सुनकर वह विस्मित हो गई और नीचे की ओर देखने लगी। वहाँ दबे गले से कौन बातचीत कर रहा है?

नीचे अँधेरा था, मालूम होता था कि, वहाँ एक आदमी खड़ा है। उसकी पगड़ी की जरी के ऊपर क्षण-मात्र के लिए दीपक का उजाला पड़ गया।

"रानी जी।"

आवाज बहुत धीमी थी, लेकिन साफ थी—कस्तूरीबाई ने उसे सुन लिया। उसने सिर बढ़ाकर चकित स्वर से कहा—कौन है?

नीचे से उत्तर मिला—मैं रुद्ररूप हूँ।

"रुद्ररूप!" कस्तूरीबाई को स्मरण हो आया। उसने कृष्णा के मुँह से सुना था कि रुद्ररूप महाराज का अंगरक्षक है।

कस्तूरीबाई ने कम्पित स्वर से कहा—क्या चाहते हो?

फिर पहले ही की तरह दबी आवाज आई—रानी जी, महाराज आये हैं, घाट पर खड़े हैं, आपसे एक बार भेंट करना चाहते हैं।

कस्तूरीबाई जँगले से जरा-सा हट गई और दोनों हाथों से अपनी को दबाकर कुछ देर खड़ी रही। मन ही मन विचार किया—वे आये हैं लेकिन रात्रि के इस अंतिम पहर में क्यों वे निर्जन स्थान में भेंट करना चाहते हैं क्या इसी लिए वे विवाहोत्सव में शामिल नहीं हुए? कस्तूरीबाई ने फिर जँगले से सिर बढ़ाया।

फिर वही शब्द सुनाई पड़ा—रानी जी, माफ कीजियेगा। महाराज आ भेंट करके ही चले जायँगे। बहुत ज काम से उन्हें कल ही यहाँ से चला जा है, इसी लिए एक बार......।

कुछ देर तक कोई न बोला। इस बाद—अच्छा, मैं आती हूँ। तुम रहो—कस्तूरीबाई के मुँह से ये श हरसिंगार के फूल के समान झड़ पड़े।

—क्रमश

★ २५३२ ★
हिन्दुस्तानी
★ फ़ौज के ★
बहादुर जवान
V

इस लड़ाई में,
दिसम्बर सन् १९४४ के अन्त तक,
हिन्दुस्तानी फ़ौज के जिन अफसरों और
जवानों को बहादुरी के लिए और अपना
कर्त्तव्य पालन करने के लिए तमग़े दिये गये,
उनकी संख्या २५३२ तक पहुँची है। युद्ध-क्षेत्र
की सरकारी ख़बरों में कई हज़ार बहादुरों की प्रशंसा
की गई और उन्हें वीरता के प्रमाणपत्र दिये गये।
लड़ाई के तमाम मोर्चों पर हिन्दुस्तानी फ़ौजों की
वीरता मित्र-राष्ट्रों के गर्व और शत्रु की निराशा
का कारण रही। इन बहादुर सिपाहियों ने
तमाम दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम
उजला और सिर ऊँचा कर
दिया है।

★ इस लड़ाई में विक्टोरिया क्रास पाने वालों की संख्या के विचार से (जो ब्रिटिश राज्य बहादुरी का सब से बड़ा इनाम है) हिन्दुस्तान दूसरे नम्बर पर रहा। (अर्थात् ब्रिटेन ७४, हिन्दुस्तान १८, आस्ट्रेलिया ११, न्यूज़ीलैण्ड ७, कनाडा ३; दक्षिणी अफ्रीका १, फीजी १)। इनके अलावा जो तमग़े दिये गये, उनमें १४२ डिस्टिंगविश्ड सर्विस आर्डर, २६१ इण्डियन आर्डर आफ मेरिट, ५८० मिलिटरी क्रास, ६५४ इण्डियन डिस्टिंगविश्ड सर्विस मेडल और ५४६ मिलिटरी मेडल शामिल हैं।

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे द्वारा प्रकाशित
AAA 64 Hindi.

मातृमण्डल

यह युग है भारतीय नारी-जागरण का!

राष्ट्रीय उत्थान में शिक्षा और समाज-सुधार का महत्त्व

उदयपुर महिला-मण्डल के वार्षिक उत्सव पर कलकत्ते के प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी श्री बसन्तलाल मुरारका ने सभापति पद से जो ओजपूर्ण भाषण दिया है, वह भारतीय नारी-जागरण के लिए सहायक है। उसका कुछ महत्त्वपूर्ण अंश इस प्रकार है।

घर में भोजन बनाने की तैयारी करती हुई एक हिन्दू स्त्री।

कहा जाता है कि देश का भविष्य यहाँ के नवयुवकों के हाथ में होता है; परन्तु बात ऐसी नहीं है। बाल अवस्था में किसी भी देश का भविष्य उस देश की माताओं के हाथ में होता है। माता की गोद वह पाठशाला है जहाँ नवयुवकों के जीवन का निर्माण होता है और चरित्र का गठन भी होता है। हमारा प्रारम्भिक जीवन माता की गोद में ही बीतता है। उस समय हमारे अन्तःकरण में जो संस्कार डाले जाते हैं वे चिरस्थायी होते हैं। बच्चे का हृदय अत्यन्त कोमल तथा निर्मल होता है। उस पर जैसा भी रंग चढ़ाया जायगा, वह उसी रंग का हो जायगा और वह रंग इतना पक्का होता है कि मरते दम तक उसका असर नहीं जाता। उस समय बच्चा कुम्हार की मिट्टी की भाँति होता है और मा कुम्हार। जिस प्रकार कुम्हार अपनी इच्छानुसार उस मिट्टी से जिस प्रकार की प्रतिमा बनाना चाहता है बना डालता है उसी प्रकार माता भी बच्चे पर अपनी योग्यतानुसार अपना प्रभाव डालती है। यदि बच्चे पर अच्छा संस्कार डाला गया तो बच्चा बड़ा होकर अवश्य ही चमकता है और अपने कुल, समाज तथा राष्ट्र का नाम उज्ज्वल करता है। महात्मा गांधी तथा जार्ज वाशिंगटन आदि महापुरुषों के जीवन में उनकी माताओं का जो हाथ रहा है उसे आप भली-भाँति जानते हैं।

आज से दो हजार वर्ष पहले जब हमारा राष्ट्र सारे संसार का शिक्षा-गुरु था उस समय पुरुष-समाज से हमारा महिला-समाज पीछे नहीं था। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाइयान ने अपनी पुस्तक में तत्कालीन भारत के समाज पर प्रकाश डाला है। वे लिखते हैं कि भारतवर्ष संसार का शिक्षा-केन्द्र था। यहाँ पर चार बड़े बड़े विश्वविद्यालय थे जिनमें दुनिया के कोने कोने के विद्यार्थी आकर शिक्षा ग्रहण करते थे। सब लोग धनवान थे, झूठ बोलना कोई नहीं जानता था। न तो कोई जेलखाना था और न घरों पर ताले ही लगाये जाते थे। जब झूठ या चोरी नहीं, तब जेलखाने या तालों की क्या जरूरत? सोचिए, समाज में वैसा वातावरण क्योंकर सम्भव हो सकता था?

इन सब बातों का श्रेय उस समय की मातृ-जाति को ही था। उन दिनों हमारे देश में ऐसी विदुषियाँ विद्यमान थीं जिनका लोहा बड़े बड़े धुरन्धर विद्वान् भी मानते थे। उन दिनों स्त्रियों को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी। धर्म के मामलों में उनको भी आचार्यों का ही अधिकार प्राप्त था। वे यज्ञादि में आचार्यों के साथ बैठ कर पूरा हाथ बँटाती थीं और उन्हें सब प्रकार की स्वतन्त्रता प्राप्त थी। आप लोगों ने अवश्य पढ़ा होगा कि जिस समय बौद्ध-धर्म के अनुयायी लङ्का में बौद्ध धर्म का प्रचार करने में विफल हो गये तब महाराज अशोक की बहन संघमित्रा ने अपनी सैकड़ों सखियों के साथ लंका में जाकर बौद्ध-धर्म का झण्डा फहराया और धार्मिक विजय प्राप्त की। मण्डन मिश्र की स्त्री, भारती के सम्बन्ध में भी आपको पता ही है। उसने तत्कालीन धुरन्धर विद्वान् शङ्कराचार्य के साथ अपने पति की मध्यस्थता में शास्त्रार्थ कर संसार को दिखा दिया कि नारी-जाति भी विद्वत्ता में काफी योग्यता रखती है। यदि विद्यावती न हुई होती तो कालिदास, कालिदास न हुए होते। लीलावती का नाम आप लोग सुन ही चुके होंगे।

अब यहाँ के स्त्री-समाज पर दृष्टिपात कीजिये। शत्रु से मोरचा लेना तो दूर रहा हम बम के भय से ही अपने स्त्री-समाज को कलकत्ते तथा पूर्व भारत के अन्य शहरों से बाहर भेजने से डरते रहे। उन दिनों मैं जेल में था। मैंने सुना कि हवड़ा स्टेशन पर लोगों की भगदड़ में कई लोग पामाल हुए। यात्राओं के समय हमारा स्त्री-समाज लगेज के समान है। जिस प्रकार हमें सामान की देख-भाल करनी पड़ती है; उसी प्रकार घर की स्त्रियों की भी देख-रेख करनी पड़ती है। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नहीं है? क्या हम इसी योग्यता पर स्वराज्य लेने का दावा करते हैं? क्या हम अपने इस प्रकार के कार्यों से अपने को संसार के अन्य राष्ट्रों की दृष्टि में नीचा नहीं गिराते? ये सब बातें एक सभ्य समाज को शोभा नहीं देतीं।

आज हम नवयुग के द्वार पर खड़े हैं। आज युद्ध अपनी निर्णयात्मक घड़ी में पहुँच चुका है। कुछ ही दिनों में दुनिया के राजनीति में बहुत बड़ा परिवर्तन होनेवाला है। उन सब घटनाओं से भारत अछूता नहीं रह सकेगा। परन्तु जब तक हम अपने को योग्य नहीं बना लेंगे तब तक हमारा स्वराज्य पाना न पाना बराबर ही रहेगा। राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए मातृ-जाति का उत्थान अत्यन्त आवश्यक है। इसके उत्थान के बिना कोई भी राष्ट्र सुसंगठित, सुसंस्कृत तथा सुव्यवस्थित नहीं बन सकता। नारी-जाति की इस दयनीय दशा में सुधार की नितान्त आवश्यकता है। हमें आज उनमें आत्म-विश्वास पैदा करना होगा, आत्म-बल पैदा करना होगा और उन्हें ऊपर उठाकर राष्ट्र को दोनों पहलुओं से मजबूत करना होगा तभी हमारा कल्याण होगा।

गाँव में निवास करनेवाली गृहस्थ बूढ़ी स्त्री जो घर के भीतरी कार्यों की देख-भाल करती है।

यह कितने बड़े दुःख की बात है कि जब घर में लड़की का जन्म होता है तो सारे परिवार में उदासी छा जाती है। मालूम होता है जैसे बहुत बड़ी विपत्ति आ पड़ी है। घर की बूढ़ी स्त्रियाँ यह कहकर चिल्लाने लगती हैं कि हमारे घर पर पत्थर आ गया है। भला, प्राचीन काल में जिस देवी के आविर्भाव से घर में उत्सव आनन्द मनाया जाता था उसका आज इतना बड़ा निरादर! अवश्य ही आज हम इन देवियों के अभिशाप से ही पराधीन हैं। हमें अवश्य पाप का प्रायश्चित्त करना होगा। भला इस स्वार्थपरता का कहीं ठिकाना है कि हम तो जितने चाहें मनमाने विवाह करें और अगर किसी बहन के भाग्य फूट गये तो उसको दर दर ठोकरें खानी पड़ें? हम आज यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि जब तक इन देवियों की अवस्था में सुधार नहीं होगा तब तक हमारा कल्याण नहीं होगा। आज हम लड़कियों की उच्च शिक्षा से घबराते हैं। आश्चर्य और दुःख तो तब होता है जब हम लड़के-लड़कियों के लालन-पालन में भी विषमता देखते हैं।

केवल गवर्नमेण्ट सिक्यूरिटी जिसमें

४ १/६ फ़ी सदी ब्याज मिलता है,
टैक्स माफ़
POST OFFICE NATIONAL SAVINGS CERTIFICATE
NOT TRANSFERABLE
Postmaster

नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेट्स की क़ीमत १० रुपये है, किन्तु बारह वर्ष में इनका मूल्य १५ रुपये हो जाता है। इस प्रकार इन पर ४ १/६ फ़ी सदी ब्याज मिलता है; अर्थात् यदि आप इस समय १००० रुपये लगायें तो आपको १५०० रुपये वापस मिलेंगे और आपकी पूँजी सब समय सुरक्षित रहेगी।

इन्हें तीन बरस बाद किसी समय भी भुनाया जा सकता है।

आप इन्हें सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों या किसी सेविंग्स ब्यूरो अथवा पोस्ट आफिस से ख़रीद सकते हैं।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेट्स ख़रीदिए

AAA 1243—Hindi

गोरखपुर का कवि-सम्मेलन

संयोजक का वक्तव्य

[सेंट ऐंड्रूज कालेज गोरखपुर में हिन्दी-सभा की ओर से हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर राजनाथ पाण्डेय-द्वारा गत ता० १५ और १६ फरवरी ४५ को जिस विराट् अखिल भारतवर्षीय कवि-सम्मेलन का आयोजन हुआ था वह अनेक दृष्टियों से चिरस्मरणीय बन गया है। संयुक्तप्रांत के तथा मध्यप्रांत और बिहार के हिन्दी तथा अँगरेजी पत्रों में भी इस कवि-सम्मेलन की काफी चर्चा हो चुकी है। इसके संबंध में संयोजक प्रोफेसर राजनाथ पाण्डेय ने अपना निम्न वक्तव्य प्रकाशनार्थ हमारे पास भेजा है।—संपादक]

गोरखपुर का कवि-सम्मेलन सहस्त्रों हृदयों में अभी तक गूँज रहा है! कवि-सम्मेलन होने के उपरांत इसकी बड़ी चर्चा हो रही है किन्तु इस होनहार के पूर्व ही से पत्रों में इसकी सूचना तथा कतिपय छेड़-छाड़ होने लगी थी। हमारे कुल अढ़ाई आलोचकों में से एक ने तो अनजान में और डेढ़ ने जान-बूझकर "बिनु जो काज दाहिने बायें" होते रहने की अपनी आदत की मजबूरी से लुक-छिपकर अकारण हमारे आयोजन की सफलता के मार्ग में रोड़े अटकाने का प्रयत्न किया था किन्तु हमारा समस्त परिश्रम और उनकी सारी लुका-छिपी इस महान् कवि-सम्मेलन की अद्भुत सफलता का ही कारण हुई क्योंकि हम उन्हें समय से ही पहचान गये और अधिक यत्नशील तथा उनसे सतर्क रहे जिससे हमें बल ही प्राप्त हुआ। अतः अपने आये हुए कवियों, अतिथियों, सहायकों, दायकों और इष्ट-मित्रों के समान ही हम उनके प्रति भी कृतज्ञ हैं।

इस कवि-सम्मेलन में उत्तरी भारत के विख्यात ६२ कवियों को हमने आमन्त्रित कियां था और उनसे पर्याप्त लिखा-पढ़ी की थी। आये हुए कविगण ही किसी प्रकार अपनी एक-दो सर्वोत्तम रचनायें सुना पाये। पधारे हुए कवियों में श्री पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी, श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिनहा, श्रीयुत बेधड़क जी, श्रीयुत रसराज जी नागर, श्रीयुत ठाकुर शम्भूनाथ-सिंह, श्रीयुत "अश्रु", श्रीयुत लुच्चेश, श्रीयुत नबीबख्श जी 'फलक' (दतिया-राज्य) श्रीयुत चतुरेश जी (दतिया राज्य), श्रीयुत "गोपेश", श्रीयुत "रमई काका", श्रीयुत धर्मवीर भारतीय, श्री कुमारी सावित्री श्रीवास्तव आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

ता० १५ को श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने तथा १६ को श्री पंडित माखनलाल जी चतुर्वेदी ने कवि-सम्मेलन का सभापतित्व ग्रहण किया था। पहले दिन श्रोताओं की संख्या लगभग १७,००० थी और सम्मेलन लगभग ४ घंटे तक हुआ था और दूसरे दिन जनता की संख्या १०,००० थी और कवि-सम्मेलन ६ घण्टे तक चलता रहा। कवियों की कविताओं के चुनाव और उनके पास के क्रम, बैठने के सुप्रबन्ध, अतिथियों के स्वागत-सत्कार, जनता की सुरुचि और सहृदयता अत्यन्त सराहनीय थी।

श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान ने अपने भाषण में कहा था कि ऐसे सफल उच्च-कोटि के दूसरे किसी कवि-सम्मेलन की मुझे स्मृति नहीं है। पण्डित बनारसीदास चतुर्वेदी तथा पण्डित काशीनाथ जी उपाध्याय 'भ्रमर' ने उत्तरी भारत का १९४४-४५ का सर्वोत्कृष्ट कवि-सम्मेलन घोषित किया था और उस समय की लगभग दस हजार की भीड़ के प्रत्येक व्यक्ति की ही नाईं गोरखपुर का हर आदमी अब तक यही कह रहा है कि इस कवि-सम्मेलन के समान गोरखपुर में पहले कभी कोई भी साहित्यिक समारोह हुआ ही नहीं। पर हम तो सिर्फ यही कहना चाहते हैं कि यह एक साहित्यिक यज्ञ था जो अत्यन्त पवित्र लगन और भावना से आरम्भ हुआ और सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस कवि-सम्मेलन की सफलता का सारा श्रेय गोरखपुर की सहृदय और सुसंस्कृत जनता ही को है जिसने अपना पर्याप्त धन और समय देकर तथा अपने सुव्यवहार और सुसंस्कार का परिचय देकर दूर-दूर बाहर से यहाँ आये हुए कवियों की दृष्टि में गोरखपुर का स्थान अत्यन्त प्रतिष्ठित और ऊँचा किया है। हमारे विद्यार्थियों ने दिन-रात एक करके, अपनी तत्परता, अथक परिश्रम तथा आचरण की सभ्यता से सबका मन मोह लिया और बड़े से बड़ा काम तरुणाई किस सुघराई से सुगमतापूर्वक कर सकती है, इसे प्रत्यक्ष कर दिखाया।

कवि-सम्मेलन में व्यय हुआ सारा रुपया जनता से चन्दे के रूप में प्राप्त हुआ है। दस-बारह दिन के समय में ही हमने तथा हमारे विद्यार्थियों ने लगभग २,३००) एकत्रित कर लिये थे। जो कुछ रुपया जहाँ से आता था सब हमारे कुशल कोषाध्यक्ष श्री परमानन्द जी पोद्दार के पास जमा हो जाता था। और सभापति और मंत्री की आज्ञा से ही वह रुपया व्यय करते थे।

उन्होंने हिसाब-किताब का सारा काम बड़ी स्वच्छता से निभाया किन्तु अपने अग्रज श्री आनन्द शंकर जी के कारुणिक निधन के पश्चात् उनसे यह काम न सँभल सका और ५००) नकद सहित सारा हिसाब उन्होंने मंत्री जी को दे दिया। उनके पास कुल २,२६४) इकट्ठा हुए थे। किन्तु उसके पश्चात् भी हमें रुपये मिले और कुछ रुपये उन कवियों के पास से लौट भी आये जो सम्मेलन में नहीं पधार सके थे। साथ ही कुछ रुपये बाद में व्यय भी हुए हैं और अभी कुछ रुपये बिलों के चुकाने हैं। अब तक हमारी सभा को चन्दे के रूप में लगभग २,७००) प्राप्त हो चुके हैं जिनमें से लगभग ५००) हमारे पास बच रहे हैं। बची हुई रकम हिन्दी-सभा का स्थायी कोष बनेगी और बैंक में जमा होगी। अभी हमें कई उदार सज्जनों से लगभग ४००) मिलने की आशा भी है। पिछले साल हमको लगभग १००) हिन्दी सभा के लिए चन्दा मिला था किन्तु यह रकम इतनी कम थी कि हम कोई आयोजन नहीं कर सके थे। वह रकम भी बैंक में जमा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे उदारदायक अपने वादे की शीघ्र पूर्ति कर देंगे और हम हिन्दी-सभा के स्थायी कोष में लगभग १,०००) की पूर्ति कर सकेंगे।

इस कवि-सम्मेलन की स्मृति स्थायी रखने के उद्देश्य से हमने "कवि-सम्मेलन" नाम की एक पुस्तक अपनी हिन्दी-सभा की ओर से प्रकाशित करने का विचार किया है जिसमें कवि-सम्मेलन विषय का विस्तृत विवेचन रहेगा और अपने इस कवि-सम्मेलन में पढ़ी गई कविताओं तथा उन कवियों के फोटो व परिचय के सहित आय-व्यय का विस्तृत हिसाब भी रहेगा। हमें जिन-जिन सज्जनों से कम से कम ५) तक चन्दा मिला है हम इस पुस्तक में सबके नाम छापेंगे और उन सबकी में आय-व्यय का हिसाब पहुँचेगा।

सेन्ट एन्ड्रूज कालेज
गोरखपुर

—राजनाथ पा
अध्यक्ष हिंदी-वि

◆ ◆ ◆

जो स्त्रियां खाली हैं

आजकल उनकी आवश्यकता डबल्यू० ए० सी० (आई) में है—

अर्थात् गृहस्थी अथवा सामाजिक सेवा कार्य में संलग्न नहीं हैं, उनकी आवश्यकता वमेन्स आगज़ीलरी कोर (इंडिया) में आजकल है। केवल उन महिलाओं को जिनकी उम्र १७ और ५० वर्ष के बीच हो तथा जो भलीभाँति अँगरेजी बोल और लिख सकती हों, आवेदन करना चाहिए।

निवास-स्थान की सुविधा

डबल्यू० ए० सी० (आई) की सदस्यायें सुखपूर्ण निवास-स्थानों में रहती हैं, जिनकी देखभाल इसी संस्था की ज़िम्मेदार महिलाओं द्वारा की जाती है।

शांति—काल

शांति स्थापित होने पर हिन्दुस्तान की उन स्त्रियों को, जिन्होंने शत्रु को पराजित करने में भाग लिया है, शान्ति उपभोग करने का बहुत बड़ा अधिकार होगा।

युद्ध के पश्चात्

व्यापार-वाणिज्य तथा उ धंधोंमें, हिन्दुस्तान बड़ी तेज़ी आगे बढ़ रहा है और यह निश्चि है कि शांति स्थापित होने शहरी नौकरियों के लिए अ ट्रेनिंग पाये हुए बहुत कर्मचारियों (स्त्री-पुरुषों) आवश्यकता होगी। डबल्यू० सी० (आई) में नौकरी क हुए बहुत सी स्त्रियां प्रबन्ध-का का बड़ा अच्छा अनुभव प्राप्त लेंगी जो शहरी नौकरी सफलता पाने के लिए बहु आवश्यक होता है।

पूरा विवरण

नौकरी के नियमों आदि के सं में पूरा विवरण बिना किसी बन्धन ए० टी० आर० ओ०/ डबल्यू० ए० (आई) से प्राप्त किया जा सकता जो स्वयं इस संस्था की सदस्या होती डबल्यू० ए० सी० (आई) के बारे में आ जो कुछ भी जानना चाहती हैं, ये महिल आपको प्रसन्नतापूर्वक बतला देंगी।

WAC INDIA

ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० ए० सी० आई० के प
बम्बई–ए० एफ० आई० बिल्डिंग, हास्पिटल लेन, धोबी त
कलकत्ता–मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, २८, थियेटर रो
लखनऊ–मार्फ़त टी० आर० ओ०, ईस्टर्न, हज़रतगंज। पट
मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, इग्ज़ीबीशन रोड। रावलपि
ग्विन टामस रोड। बंगलोर–कैण्टूनमेण्ट, कबन रोड। लाह
२२, डेविस रोड। पूना–स्टाण्टन रोड। मद्रास–३/
माउण्ट रोड। अथवा अपने निकटवर्ती डब्ल्यू० ए०
(आई) प्लेटून कमाण्डर के पास आवेदन कीजिए।

भारतीय महिला सहायक सेना में
भरती हो जाइए

AAA 1594

स्वास्थ्य और व्यायाम

चेचक से कैसे बचा जाये? प्राकृतिक चिकित्सा और उपवास जरूरी क्यों?

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग

चेचक की तमाम किस्मों में से एकीभूत मसूरिका (चेचक) सबसे भयंकर है। इसमें फोड़े-फुन्सियाँ पास-पास सिमटकर पीप की तहें बन जाती हैं। यह रोग छूत से नहीं होता अपितु शरीर के संचित विजातीय द्रव्य से स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। यदि चेचक का प्राकृतिक इलाज किया जाय तो यह जीवन के लिए खतरनाक नहीं है।

साधारण ज्वरों की अपेक्षा चेचक जैसे ज्वर-सम्बन्धी रोगों में सुरक्षार्थ उपवास की अधिक आवश्यकता है। अतः रोगी को रोग के आरम्भ से अन्त तक उपवास करने दिया जाय। हाँ, थोड़ा थोड़ा जल खूब पलाया जाय। ज्वर की अवस्था में दिन में एक-दो बार धड़ पर गीली पट्टियाँ चढ़ाने से रोगी को बड़ी शान्ति मिलती है। यद्यपि ट की सफाई के लिए प्रतिदिन एनीमा का प्रयोग भी जरूरी है। रोगावस्था में कुछ खा लेने से जीवन-शक्ति घट जाती है और वह विजातीय द्रव्य को दूर नहीं कर ाती।

दो वर्ष पुरानी बात है। ग्रीष्मकाल ा। मेरी बहिन के तीन बच्चे एक साथ भयंकर चेचक के शिकार हुए। मेरे आग्रह करने पर भी उन बच्चों की माता ने ाकृतिक उपचार न करने दिया। चूँकि ह पुराने विचारों की थीं किन्तु उन्होंने कम से कम इस बात को स्वीकार कर लिया ा कि चेचक के पूर्णतया चले जाने तक ोगियों को कुछ न खिलाऊँगी। इस प्रकार बच्चों को साधारण हवादार कमरों में रक्खा गया और जल के अलावा कुछ नहीं खिलाया-पिलाया गया। लगभग दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह दिन में बच्चे ठीक हो गये। यद्यपि माता बड़ी जोरदार निकली थी तथापि वे बिना किसी हानि के ठीक हो गये।

तात्पर्य यह है कि भयंकर से भयंकर रोग भी उपवास के बल से दूर किया जा सकता है। दवाओं अथवा अन्य तरीकों से रोग के साथ छेड़-छाड़ करने पर ही जान का खतरा रहता है। अनुभव बतलाता है कि चेचक से पीड़ित रोगियों के सम्पर्क में आने पर भी स्वस्थ बच्चे रोग के आक्रमण से बचे रहते हैं। मेरा बच्चा स्वयं उक्त रोगी बच्चों के साथ खेलता-कूदता तथा रहता था पर वह चेचक से पीड़ित नहीं हुआ। इसका कारण यही है कि उसका खान-पान और रहन-सहन रोगी होनेवाले बच्चों के समान दूषित नहीं था। स्वर्गीय श्री रामदास गौड़ ने अपनी 'स्वास्थ्य-साधन' नामक पुस्तक में लिखा है—"बात यह है कि स्वभाव भी सबके शरीर में समान रीति से काम करता रहता है, और रोग की उग्रता और विषों का उद्गार लगभग एक ही मौसिम में होता है। देश-काल-निमित्त की समानता के कारण रोग का रूप भी समान होना स्वाभाविक है। × × × मेरे भाई को प्लेग हुआ था, उनकी शुश्रूषा में मैंने कोई बात उठा न रखी। वह मर गये। उनकी सेवा में व्यस्त होते हुए भी मेरे सिर में तनिक पीड़ा भी न हुई। शहर में आस-पास एक भी चेचक का मरीज नहीं होता, तो भी चेचक निकलती ही है।"

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि
पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी
की
तीन पुस्तकें
झरना — शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे जें की कवितायें लिखते हैं, जिनसे उनके ावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व कट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि ालकों में सद्विचारों को बचपन में ही ोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की इन ृतियों को अपनाना चाहिए, और उनका ृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
।।।) बारह आने
नेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

धोबी ने फिर नुकसान किया!

—और प्रत्येक वस्तु इतनी महंगी है

जी हां, यदि आपने धोबी को इसी तरह कपड़े फाडने दिये तो वह आपको बरबाद कर डालेगा। जरा सोचिये कि जो कपड़े उसने फाड़े हैं उनको खरीदने के लिये इस महंगी के समय में आपको कितना खर्च आयेगा। अब आपको चाहिये कि धोबी जिस नाशकारक विधि से कपड़े धोता है उस से अपना नुकसान न होने दें, वह रीति केवल नाशकारक ही नहीं अनावश्यक भी है। वस्त्र और दूसरे घरेलू कपड़े सनलाइट के "साबुन-और-बचत" के साधन द्वारा, हानि का जरा भी भय न होते हुए बड़ी सुन्दर रीति से धोये जा सकते हैं। यह ऐसा उत्तम साधन है जिसमें न तो कपड़ों को पटकने की जरूरत पड़ती है न रगड़ने की। सनलाइट की स्वयंक्रियाशील झाग मैले कपड़ों का मैल काट डाल्ती है और उन्हें धोबी के धोये हुए कपडों से अधिक साफ और सफ़ेद बनाती है और फिर कपड़े का एक भी धागा नष्ट नहीं होने पाता। अपने नौकर को निम्न लिखित रीति सिखाइये और अपने घर ही में सनलाइट से कपड़े धो कर उन्हें फटने से और पैसे को बरबाद होने से बचाइये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

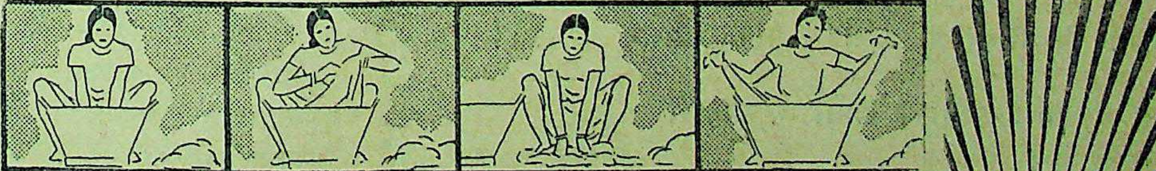

१ कपडों को अच्छी तरह भिगो लीजिये, इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे कपडे पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मल्यिे। ३ कपडों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपडे से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड रखेगी। ४ कपडे को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपडा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन लगाइये।

SUNLIGHT
SOAP
Release Reward!
GUARANTEE
SUNLIGHT SOAP

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 79-809 Hi
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर महिलामण्डल का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन ता० २१, २२, २३ फरवरी को समारोहपूर्वक हो गया। इस अवसर पर कस्तूरबा ट्रेनिंग विद्यालय और छात्रालय का उद्घाटन श्रीमती हंसा मेहता (अध्यक्षा अ० भा० महिला सम्मेलन) ने किया। महिला उद्योगशाला कलकत्ते के प्रसिद्ध कांग्रेस कर्मी और समाज-सेवक श्री वसंतलाल जी मुरारका द्वारा उद्घाटित हुआ। तीनों दिनों विविध कार्य-क्रम हुए जिनमें महिला टूर्नामेंट, प्रौढ़ शिक्षा परिषद्, महिला उद्योगशाला का उद्घाटन समारंभ और श्रीमती हंसा मेहता के सभा नेतृत्व में प्रमुख समारोह उल्लेखनीय है। इस समारोह की सफलता के लिये सर्वश्री शंकरलाल भाई बैंकर, डा० मोहनसिंह मेहता, ठक्कर बापा, लीलावती मुंशी, मृदुला बहन, सरला बहन, अनुसूया बहन, हरिभाऊ उपाध्याय, भागीरथ कानोड़िया, गोकुल भाई, सीताराम सेकसेरिया, मंगत्राम जयपुरिया, हीरालाल जी शास्त्री, मारवाड़ी रिलीफ़ सोसाइटी, मारवाड़ी सम्मेलन आदि महानुभावों के सन्देश प्राप्त हुए थे। अन्तिम दिन बहिनों द्वारा जनार्दन राय नागर लिखित एक एकांकी नाटक अभिनीत किया गया तथा गर्वानृत्य बन्देमातरम् नृत्य आदि हुए। अधिवेशन सुयोग्य नेतृत्व में आशातीत सफल रहा।

—संवाददाता

* * *

सहारनपुर के तेजस्वी पत्रकार और राष्ट्रकर्मी श्री कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' आजकल अस्वस्थ हैं। अभी हाल में एक्सरे और रक्त-परीक्षा से उनके बायें फेफड़े के विकृत होने का पता चला है।

१९३२ में जेल में उन्हें प्लूरिसी हुई थी। १९३४ तक वे घोर बीमार रहे। ४२ के अगस्त-आन्दोलन में उनका रोग फिर उभर आया और विश्राम न करने के कारण वह बढ़ता रहा। इधर उन्हें दो मास से टेम्परेचर है। नींद, भूख की कमी है, कमज़ोरी बढ़ रही है। चिकित्सकों के परामर्शानुसार उन्होंने 'शान्ति' के सम्पादन से अपना नाम वापस ले लिया है।

आज-कल वे पूर्ण विश्राम कर रहे हैं और दिन में चार घंटे मौन रहते हैं। चिकित्सकों को आशा है कि इस उपचार से उन्हें तीन मास में स्वास्थ्य लाभ हो जायेगा।

—सुन्दरश्याम 'मुकुट'

* * *

पटना चौक, श्री गंगा के रेत पर जगत-कल्याणार्थ श्री विष्णुयज्ञ बड़े समारोह के साथ ४ मार्च से ११ मार्च १९४५ तक श्री १०८ करपात्री जी, मौनी बाबा, जनकपूरधाम की अध्यक्षता में होना निश्चित हुआ है तथा उसी अवसर पर अखिल भारतवर्षीय श्री रूपकला हरिनाम यश संकीर्तन सम्मेलन का विशेष अधिवेशन वेदान्ताचार्य श्री १०८ रामपदारथ दासजी महाराज, श्री जानकी घाट, अयोध्या की अध्यक्षता में होगा।

—बालगोविन्द मालवीय,
(राय साहिब)

याल्टा-सम्मेलन और विश्व-युद्ध

(पेज ५ का शेष)

सकेगा। उसकी पुनरावृत्ति की आशा
दूर कर देना होगा। अमेरिकन प्रेसी
और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री को यह
स्मरण रखना चाहिए कि इतिहास
एक समान नहीं रहता उसमें परि
अवश्य होगा। डा० गोबेल्स पाग
होकर कह गया है जिसको संसार कान
कर सुन और पढ़ चुका है। पूर्व (रूस)
वह भयानक भीत हम पर गिरती चली
रही है। जो संसार की व्याख्या ही न
बल्कि वह संसार के एक एक सा
व्यक्ति में बदल देगा। इससे याल्टा-सम्मे
के मानचित्र के ये पहलू संसार की राज
में कैसे परिवर्तन करने जा रहे हैं
हम शीघ्र ही भविष्य में देखेंगे। परन्तु
हमें ब्रिटिश और अमेरिकन मान
संसार की राजनैतिक और आर्थिक दृ
इसी तरह दृष्टिगोचर होते रहेंगे?

स्वस्थ जीवन के संकेत ३

उपेक्षा से भयंकर परिणाम की संभावना।

प्राय: देखा गया है कि हम लोक साधारण खांसी की असावधानी के कारण समय पर चिकित्सा नहीं करते। इस से बहुधा ज्ञान तक से हाथ धोना पड़ता है। इस लिये समय रहते खांसी की उचित चिकित्सा करना अति आवश्यक है। ग्लायकोडिन टर्प वसाका खांसी की अव्यर्थ महौषधि है। सैंकड़ो अनुभवी डाक्टरों ने इस की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। यह रोग के मूल तक पहूँच कर भयानक से भयानक खांसी को भी कुछ ही दिनों में शर्तिया आराम करता है।

स्नायु-सम्बन्धी असाध्य खांसी में डाक्टरों से राय लें।

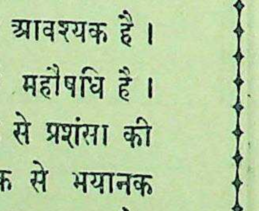

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका
शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्यूटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोडा

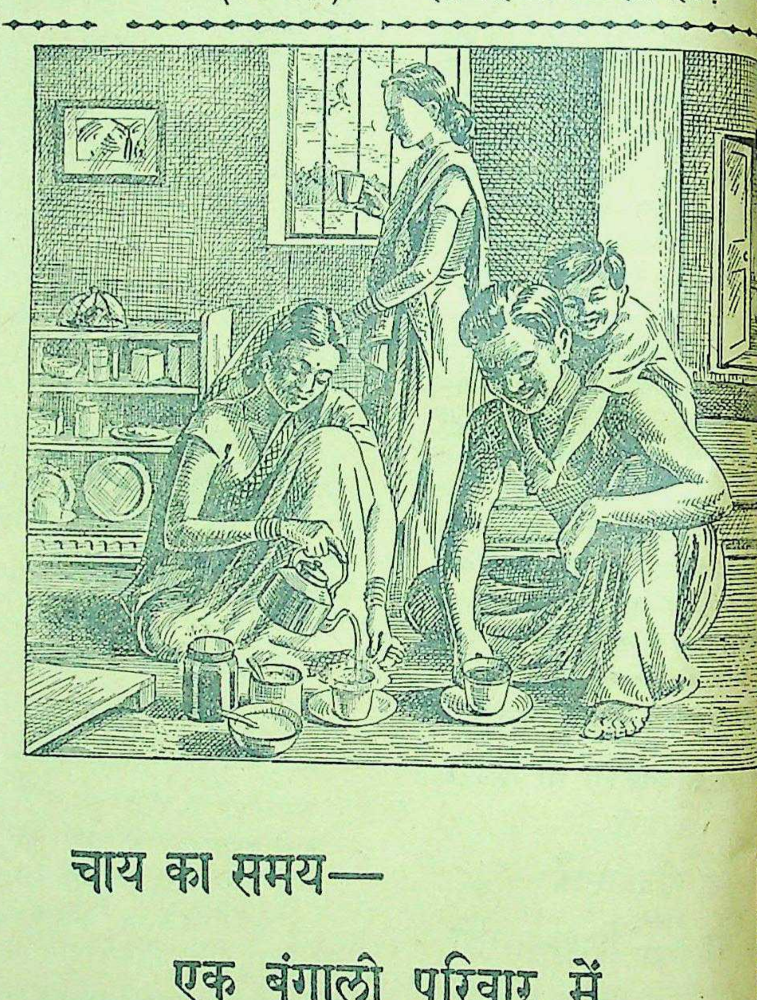

चाय का समय—

एक बंगाली परिवार में

बंगाली परिवारके जीवनमें कवियों और दार्शनिकों द्वारा चित्रित सरलता पाई जानेके साथ ही एक अजीब आकर्षण भी पाया जाता है।

दिनके कड़े परिश्रमके पश्चात् बातचीतके साथ ही चायका पान प्रारम्भ होता है। गृह-स्वामिनी एक साधारण केतली से चाय उड़ेल कर व्यक्तिगत रुचिके अनुसार चीनी और दूध मिलाती है। तश्तरी, प्याली या गिलासमें चाय रख कर, धीरे-धीरे पीते समय वाद-विवाद भी चलता रहता है।

यहां भी, भारतके दूसरे स्थानोंकी तरह ब्रूक बांडके ताजे चायकी जबर्दस्त मांग है।

ब्रूक बॉंड

'दो पत्ती और एक कली'

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

पार्लियामेंट में क्रिमिया-सम्मेलन पर मिस्टर चर्चिल

पश्चिमी, रूसी तथा सुदूरपूर्व के युद्ध-मोर्चे की प्रगति

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

पार्लियामेंट की बैठक में 'क्रीमिया-कान्फ्रेंस' विषयक ३ दिन के वाद-विवाद का आरम्भ करते हुए प्रधान मंत्री चर्चिल ने सरकार की ओर से इस आशय का एक प्रस्ताव उपस्थित किया कि 'यह सभा क्रीमिया-कान्फ्रेंस में तीन महान् शक्तियों द्वारा की गई घोषणा को स्वीकार करती है और विशेष रूप से उनके इस संकल्प का स्वागत करती है कि समान शत्रु की अंतिम पराजय के लिए न केवल युद्ध-काल में उनकी कार्य-क्रिया संयुक्त रहेगी अपितु युद्ध के वाद भी शांति काल में उनकी कार्यधारा एक साथ चलेगी।' श्री चर्चिल ने यह भी कहा कि संसार का संगठन बड़ी शक्तियों की तानाशाही पर नहीं टिक सकता। उन्होंने यह बतलाया कि सेन फ्रांसिस्को में जो मित्रराष्ट्रों की कान्फ्रेंस होनेवाली है उसमें ब्रिटेन के मुख्य प्रतिनिधि श्री ईडेन और श्री एटली होंगे और कहा कि पहले की लीग आफ़ नेशंस के स्थान पर जो संस्था निर्मित होगी वह उसकी अपेक्षा कहीं अधिक सुदृढ़ होगी जिसमें संयुक्त राष्ट्रों द्वारा प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण भाग लिया जायगा।

पश्चिम-यूरोप की ब्रिटिश नीति के संबन्ध में उन्होंने कहा कि हम फ्रांस को बलवान और फ्रेंच सेना को बलवती देखना चाहते हैं। प्रधान मंत्री ने अरब प्रदेश और मध्यपूर्व के विषय में बड़ी आशा व्यक्त करते हुए कहा कि वहाँ की सुरक्षा शांति और उन्नति के लिए अच्छा प्रबन्ध होगा। प्रधान मंत्री चर्चिल ने अन्त में कहा कि मुझे विश्वास है कि "मानवता का ऐसा भाग्योदय हो रहा है जैसा इतिहास में उसने कभी नहीं देखा था। उसके प्रकाश की चमकीली रेखायें प्रस्फुटित हो रही हैं जिनका विस्तार अभूतपूर्व होगा। अतः हम संगठित होकर इस प्रकाश में आगे बढ़ेंगे।" प्रधान मंत्री चर्चिल का प्रस्ताव कामन्स सभा में सर्वसम्मति से पास हो गया।

* * *

प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने भी अमेरिकन कांग्रेस एवं सीनेट के संयुक्त अधिवेशन में याल्टा कांग्रेस-संबन्धी अपनी रिपोर्ट उपस्थित की। उसके सफल निर्णय के बारे में कहा कि 'हमने क्रीमिया-कांफ्रेंस में विश्व शांति के लिए शुभारंभ कर दिया है। इस कान्फ्रेंस के दो ही मुख्य उद्देश थे। पहला यह कि जर्मनी को शीघ्र से शीघ्र मित्रों की न्यूनतम क्षति के साथ हराया जाय और दूसरा यह कि अंतर्राष्ट्रीय सदिच्छा की ऐसी नींव रखी जाय जिसके आधार पर शांति और सुरक्षा का प्रासाद खड़ा हो और जिससे संसार के राष्ट्रों को शांति का विश्वास हो जाय। हम तीनों ने इन प्रश्नों पर खुलकर विचार किया और अंत में सब बातों पर हम एकमत हो गये। यही नहीं कि हमारा केवल शाब्दिक समझौता हुआ हो अपितु हमारे विचारों में भी एकता स्थापित हो गई और हम लोगों ने एक साथ आगे बढ़ने के लिए अपना मार्ग ढूँढ़ लिया। हिटलर आशा करता था कि हम लोग एकमत नहीं होंगे और मित्रों की एकता की सुदृढ़ दीवार कहीं पर खंडित हो जायगी जिससे उसे और उसके दुष्ट अनुगामियों को अपनी जान बचाने का अवकाश मिल जायगा। किन्तु हिटलर की आशा निराशा में परिणत हो गई और आज मित्रराष्ट्र की अपने समान उद्देशों के हेतु इतनी सुदृढ़ एकता स्थापित हो चुकी है जितनी पहले कभी नहीं थी।'

अतः ब्रिटेन के कर्णधार चर्चिल और अमेरिका के उन्नायक प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के उपर्युक्त कथनों से प्रकट है कि जर्मनी और जापान को शीघ्रातिशीघ्र हराने और मानवता के लिये अटल शांति स्थापना की योजनायें बन चुकी हैं और उनके अनुसार कार्यारंभ भी हो चुका है। जर्मनी को पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं से मित्र सेनायें भयंकरता से दाब रही हैं। जेनरल आइज़न होवर हिटलर के विरुद्ध पूरी शक्ति लगा रहे हैं और रूसी फौजें ओडर पार करके बर्लिन को लक्ष्य बनाकर आक्रमण के लिए आरूढ़ हैं। साइलीशिया और रूर दोनों के उत्पादक-केंद्र बुरी तरह विनष्ट हुए हैं। ६,००० ब्रिटिश और अमरीकी विमानों ने पश्चिमी और मध्य जर्मनी पर बमवर्षा की जिसके फलस्वरूप वहाँ के यातायात के सभी साधन ध्वस्त अथवा अस्तव्यस्त हो गये।

* * *

यूरोप के पश्चिमी मोर्चे पर मित्र सेनायें कोलोन से ५ मील दूरी पर पहुँच गई हैं और उन्होंने नगर के पश्चिम की नहर तथा सरेकूट नदी पर पुल कायम कर लिए हैं। हाकवाल्ड और ऊडेम रेलवे के किनारे-किनारे गहरी लड़ाई हुई है और मास के बीच में बहुतेरे गाँवों पर मित्रों का कब्जा हो गया है। प्रियूम के उतरपूर्व मित्र सेनायें १ मील तक आगे बढ़ गई हैं। प्रियूम के दक्षिण-पश्चिम में मित्रों के कवचधारी दस्तों ने प्रियूम नदी पार कर ली और वे जर्मन कतारों के भीतर घुस गईं। म्यूमेनचेन मलैडबाश के औद्योगिक नगर पर अमेरिकन सेना ने कब्जा कर लिया है। यह नगर रेयेत के उत्तर में है जो गोवेल्स का जन्मस्थान है और जहाँ अमेरिकन फौजें प्रवेश कर चुकी हैं। तृतीय अमेरिकन सेना के टैंक ट्रायर के बहिर्भाग में घुस गये हैं। उसने १४ नगरों पर कब्जा कर लिया है तथा ५ नगरों से जर्मनों का सफाया कर दिया है। हालैंड में जनरल एसेन होवर फील्ड मार्शल मांटगोमरी, जनरल ओयर ब्रेडले तथा लेफ्टि० जनरल विलियम सिम्पसन का एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन हुआ, जिसमें सम्भवतः राइन के युद्ध के सम्बन्ध में तथा नदी के पश्चिम में समस्त जर्मनों का संहार कर देने के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण निर्णय हुए।

* * *

रूस की दिशा में पोमेरेनिया और पोलिस गलियारे में युद्ध करनेवाली जर्मन सेनाओं को फँसा लेने के उद्देश्य से लाल सेना ने एक नया आक्रमण आरम्भ कर दिया है। साइलेशिया में ब्रेसलाउ की लड़ाई अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच रही है। रूसियों का यह आक्रमण डेंजिग और एटिन के प्रायः बीचोबीच के क्षेत्र में हो रहा है। इस हमले के फलस्वरूप रूसी कवचधारी दल और आक्रमणकारी दस्ते न्यूस्टेटिन से ३० मील से कम फासले पर रह गये हैं। न्यूस्टेटिन सड़कों और रेलों का एक महत्त्वपूर्ण चौराहा है और सैनिक दृष्टि से इसकी स्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण है। बाल्टिक के बेड़े के जहाजों ने बाल्टिक में १४ हजार टन के दो जर्मन जहाज डुबा दिये।

* * *

सुदूरपूर्व के सबसे हाल के समाचारों से विदित हुआ है कि इवोजिमा पर अमेरिकन आक्रमण के दसवें दिन आधे से अधिक भाग पर अमेरिकनों का कब्जा हो गया है। जापानी प्रतिरोध भयानक बना हुआ है। ४,७८४ जापानी मृतकों की गणना की गई है। अमेरिकनों को ८०० गज तक भूमि प्राप्त हुई। उन्होंने जापानी लड़ाकू वायुयानों के एक अड्डे पर कब्जा कर लिया। मोटोयामा नगर के सामने उनका बढ़ाव जारी रहा। अमेरिकन सेनाएँ एक तीसरे हवाई हड्डे के छोर पर पहुँच गई हैं, जो कि इवोजिमा पर अमेरिकनों का आक्रमण आरम्भ होने के समय निर्माण की अवस्था में था। फिलिपाइन्स में युद्ध सफलतापूर्वक जारी है।

* * *

बरमा रोड पर कई दिनों की भीषण लड़ाई के बाद चीनी प्रथम सेना के सैनिकों ने जापानी प्रतिरोध को भंग कर दिया। जापानी तेजी के साथ दक्षिण की ओर हट गये। उनके ठीक पीछे चीनी सैनिक उस सड़क पर लाशियों की ओर बढ़े। उनके अग्रिम दल पंछ्पत में पहुँच गए हैं जो लाशियों के उत्तर में करीब १६ मील पर है। आकयाब के दक्षिणपूर्व मित्र फौजों का रूयवा से तमानदू की ओर बढ़ाव जारी है।

फोन : कल :—१४६४ तथा १४६५ तार :—"ARYOPLANTS"

आर्य्यन पेपर मिल्स, लिमिटेड

रजिस्टर्ड आफ़िस : १२ चौरंघी, कलकत्ता

कारखाना तथा बगीचा : माहूदा (बी० यन० आर०)

कुछ विशेषतायें

- (१) कम्पनी स्वयम् अपने खेतों में सवाई घास बो रही है। (२) कारखाना कोयले के क्षेत्र तथा नदी के निकट है। (३) कारखाने के एकदम बगल से रेलवे साइडिंग है। इससे उत्पादन के खर्च में बहुत कमी होगी।
- डाइरेक्टर्स, मैनेजिंग एजन्ट, उनके दोस्तों तथा रिश्तेदारों ने दस लाख रुपये का शेयर खरीदा है।
- मैनेजिंग एजन्ट जब तक कम से कम ५ प्रतिशत साधारण हिस्से पर तथा ६ प्रतिशत असाधारण हिस्से पर इनकमटैक्स रहित डेविडेन्ड न दे देंगे तब तक कोई भी पारिश्रमिक न लेंगे।
- असाधारण शेयर लेनेवाले व्यक्ति जिस दिन शेयर की पूरी रकम दे देंगे उसी दिन से इनकम टैक्स रहित ६ प्रतिशत निर्धारित डेविडेन्ड के अधिकारी हो जायँगे।
- सवाई घास, कार्ड बोर्ड, स्ट्रा बोर्ड तथा अन्य पल्प की बिक्री से अच्छे लाभ की आशा है।
- शेयर लेनेवाले ग्राहकों को साधारण किश्तों में शेयर का रुपया देने की सुविधा दी जाती है।
- इङ्गलैण्ड से लाकर आधुनिक रंग ढंग की मशीन लगाने के लिए आवश्यक रुपया पेशगी दे दिया गया है।

बचे हुए साधारण तथा असाधारण हिस्से बेचने के लिए एजन्टों की आवश्यकता है

पूँजी के इस प्रश्न पर केन्द्रीय सरकार की स्वीकृति इस शर्त पर प्राप्त कर ली जा चुकी है कि उतनी पूँजी, जो उस सरकार की दृष्टि में किसी भावी अनिश्चित तिथि तक उचित रूप से बढ़ाई नहीं जा सकती वह ऐसी निर्धारित जमानतों में लगाई जाय और बराबर लगी रहे जो तब तक नहीं मुक्त की जायगी जब तक कि केन्द्रीय सरकार (यदि किसी देशी सरकार के हितों का प्रश्न हो तो सम्राट् के प्रतिनिधि की राय से) इस बात से सन्तुष्ट न हो जाय कि ऐसे उद्देश्यों के लिए तदनुरूप अदायगी का समय आ गया है जो कि नियन्त्रण या रोक के उस समय के प्रचलित नियम के अनुरूप हों, जब कि इस प्रकार की मुक्ति की प्रार्थना की गई हो। यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस स्वीकृति को देने में भारत-सरकार किसी भी आर्थिक योजना की सुदृढ़ता या किसी बयान की सच्चाई या उनके सम्बन्ध में प्रगट किये गये विचारों की ज़िम्मेदारी नहीं लेती।

संपादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दी में रेडियो नाट्य-साहित्य

आल इंडिया रेडियो में इस समय हिन्दी की क्या स्थिति है और इसके लिये कौन उत्तरदायी है, इससे सम्पूर्ण हिन्दी-संसार भली भाँति परिचित हो गया है। परन्तु एक कमी की ओर भी ध्यान देना चाहिये। रेडियो में हिन्दी के भाषण तो कभी कभी हो भी जाते हैं परन्तु हिन्दी के ड्रामे शायद ही कभी होते हों। रेडियो के अधिकारियों के कथनानुसार इसका कारण हिन्दी-लेखकों की रेडियो के लिये ड्रामे न लिखने की अज्ञानता है। हम इससे कदापि सहमत नहीं हो सकते। रेडियो के अधिकारियों की हिन्दी-द्रोही नीति के फलस्वरूप हिन्दी लेखकों की रेडियो के प्रति उदासीनता है। परन्तु इतना तो मानना ही पड़ेगा कि हिन्दी में रेडियो-साहित्य का सर्वथा अभाव है। जब रंगमंच के अभाव में भी रंगमंच पर खेले जाने योग्य नाटक लिखे जा सकते हैं तो रेडियो में हिन्दी की वर्तमान स्थिति के होते हुए भी रेडियो से विस्तारित किये जाने योग्य नाटक तथा नाटिकायें लिखी जा सकती हैं। जिस प्रकार सिनेमा के आने के बाद हिन्दी में सिनेमा-साहित्य का निर्माण हुआ और सिनेमा के लिये ड्रामे, कथनोपकथन इत्यादि लिखे जाने लगे, उसी प्रकार रेडियो-साहित्य, विशेषकर रेडियो-नाटक-नाटिकायें भी साहित्य का एक अंग हो गया है। यह निश्चित है कि समय आने पर रेडियो से ये नाटक-नाटिकायें विस्तारित भी होंगी।

रेडियो नाटकों का अपना अलग टेकनीक है। रेडियो-नाटक केवल श्रव्य काव्य है। इसमें कुल वातावरण केवल शब्द-द्वारा उपस्थित करना पड़ता है। इस वातावरण के उत्पन्न करने में कुछ कृत्रिम साधनों से भी सहायता ली जाती है। उदाहरण के लिए विभिन्न प्रकार की ध्वनियों के रेकार्ड तैयार रहते हैं। कई प्रकार की ध्वनियाँ जैसे घोड़ों की टापों की आवाज, मनुष्य के पैरों की आहट, पानी बरसने की आवाज इत्यादि। लकड़ी के तख्ते, टीन की चादरें आदि उपकरणों से आवश्यकतानुसार उत्पन्न कर बोले हुए शब्द के साथ माइक्रोफोन में मिला दी जाती हैं। सुननेवाले के सामने तो ये चीजें आती ही नहीं इसलिए उसे यथार्थ का भास होता है। रेडियो में आवाज को यन्त्र-द्वारा घटाने-बढ़ाने, पृष्ठ-भूमि में संगीत इत्यादि को मिलाने के भी साधन होते हैं। जिस प्रकार स्टेज के लिए नाटक में लेखक अंकों, दृश्यों इत्यादि की सृष्टि करता है, कई तरीकों से समय का बीतना दिखाता है और विभिन्न प्रकार के संकेत देता है उसी प्रकार रेडियो-नाटक में लेखक को कितनी ही बातों का ध्यान रखना पड़ता है। विभिन्न प्रकार के संकेत देने होते हैं, जैसे कहाँ आवाज घटाई जाये, कहाँ बढ़ाई जाये, कहाँ किस प्रकार संगीत अथवा कोई अन्य ध्वनि मिलाई जाय, इत्यादि। ये संकेत इत्यादि तभी दिये जा सकते हैं और रेडियो-नाटक की विशेषताओं को तभी भली प्रकार सामने लाया जा सकता है जब लेखक को इसका पूरा ज्ञान हो कि रेडियो में नाटक किस प्रकार विस्तारित किया जाता है और रेडियो में नाटक के लिए क्या क्या साधन और उपकरण उपलब्ध हैं। आवश्यकता इस बात की है कि जिन हिन्दी-लेखकों को इसका ज्ञान है वे इस विषय पर लेखों द्वारा प्रकाश डालें और दूसरे लेखकों के लिए मार्ग प्रशस्त करें। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने रेडियो की हिन्दी-द्रोही नीति के विरोध का झंडा उठाया है, इसलिए क्या हम आशा करें कि सम्मेलन ही इस विषय पर एक पुस्तिका लिखवा कर प्रकाशित करा देगा ?

लखनऊ —सूर्यप्रकाश एम० ए०
४ मार्च ४५

गीत

लेखक, श्री पन्नालाल महतो 'हृदय'

चाँदनी रात भाई तुमको, मुझको जलता परवाना यह।
तुमको दो बूँद सनेह और मुझको केवल जल जाना यह।
सागर को सीपी ने बाँधा
मोती ने बाँधा पानी को।
होठों को चुंबन ने बाँधा—
आँखों ने बाँधा ज्ञानी को।
तन-मन को सुखने, साहस को:—
दुख ने बंधन में बाँध लिया,
पर बंधन हार गया कसते
कसते उन्मत्त जवानी को।
तुमको (उस) यौवन की एक रात, मुझको तेरा मुस्काना यह।
चाँदनी रात भाई तुमको, मुझको जलता परवाना यह!

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

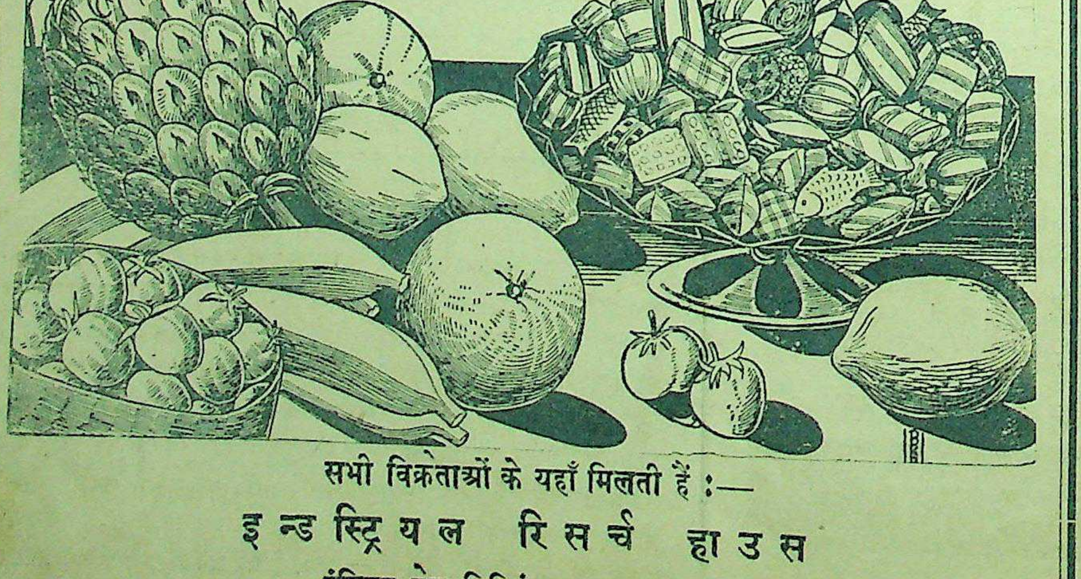

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

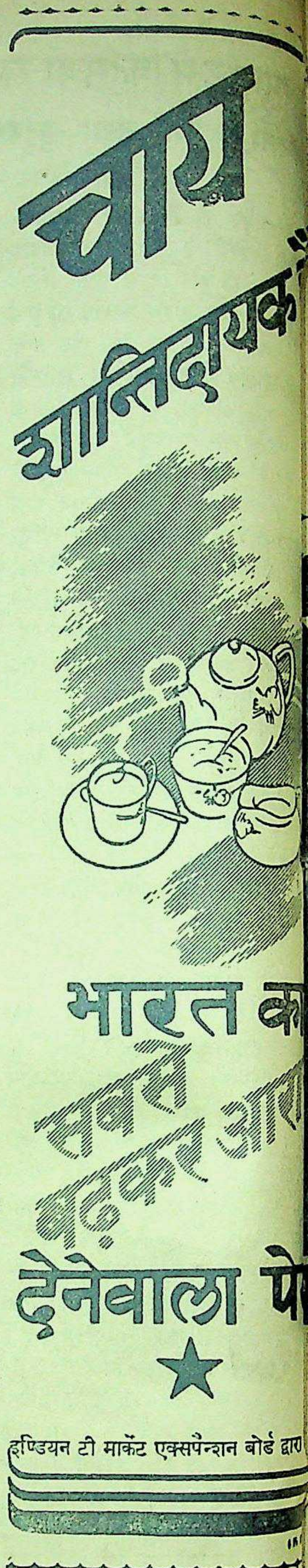

भारतीय चायों में स
लिपटन क

LIPTON
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT

व्हाइट लेबुल

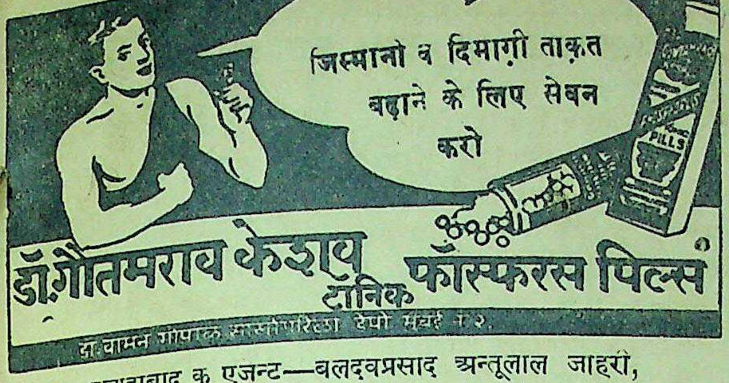
जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
PILLS
डॉ. गौतमराव केशव टानिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद क एजन्ट—बलदवप्रसाद अन्तूलाल जाहरी,
एल० एम० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

कुछ विचार

जिस देश में जो फल मिलते हैं मनुष्य उन्हीं में से अपने पोषण के लिए सब तत्व पा सकता है.... जुष्ट अपने तथा दूसरों के अनुभव तथा बिचारने और पढ़ने से मुझे मालूम होता है कि फल उत्तम खुराक है।

—महात्मा गांधी

JAMS
GG BRAND
GG BRAND
JAMS
जाम
RASPBERRY

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी जी. इंडस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी बाजार ली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मैसर्स गिरधर-ल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मैसर्स गिरधरलाल वकील दर्जी चौक, बरेली।

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है। भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

"सरस्वती सिराज़"

हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इल ाबाद

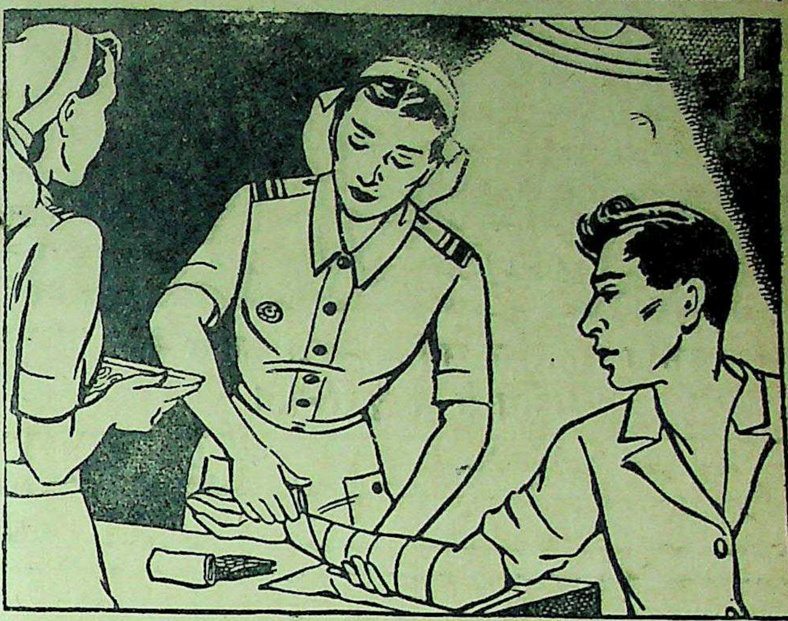

ए. एन. एस. की नर्स मरहम-पट्टी के काम में

कष्ट-निवारण वास्तविक युद्ध-कार्य है — दया का दान दीजिए

युद्ध-काल में महिलाओं के लिए जितने कार्य हैं, उनमें से नर्सिङ्ग (तीमारदारी) का काम सबसे अधिक आदरणीय तथा महत्त्वपूर्ण है। जो महिलायें आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए० एन० एस०) की वर्दी धारण करती हैं वे वास्तव में दया की मूर्ति हैं। अपनी परोपकारी वृत्ति पर उन्हें आत्म-सन्तोष का आनन्द प्राप्त होता है। आपके लिए यह बड़ा ही योग्य कार्य है।

युद्ध के पश्चात् ए० एन० एस० की नौकरी छोड़ते समय आप सम्मानपूर्ण एवम् स्वतंत्र जीवन-वृत्ति के लिए अपने आपको बहुत योग्य पायेंगी, क्योंकि ए० एन० एस० में प्रत्येक दृष्टि से बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी जाती है। इसके अतिरिक्त आप चिकित्सा-कार्य का जो अनुभव प्राप्त करलेंगी वह आपकी गृहस्थी तथा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में आपके बहुत काम आयेगा। अभी भरती हो जाइए!

पूरे विवरण के लिए आज ही अपने क्षेत्र की लेडी सुपरिन्टेण्डेण्ट, सेण्ट जान एम्बुलेन्स अथवा डाइरेक्टर जनरल, इण्डियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली को लिखिए।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है:—(१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक। (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१३५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४२ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती हैं। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही ड्यूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

a·n·s

आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस

महिलाओं के लिए सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

आधुनिक सुपर फोर्ट्रैस वायुयान क्या हैं?

Stanistreet
Solid
dentifrice

इनको स्टेनिस्ट्रीट सालिड डेन्टो फ्राइस के
प्रयोग से स्वच्छ रखिये।

SMITH STANISTREET & CO LTD
CALCUTTA, BOMBAY, MADRAS, KARACHI, LUCKNOW, AMRITSAR.

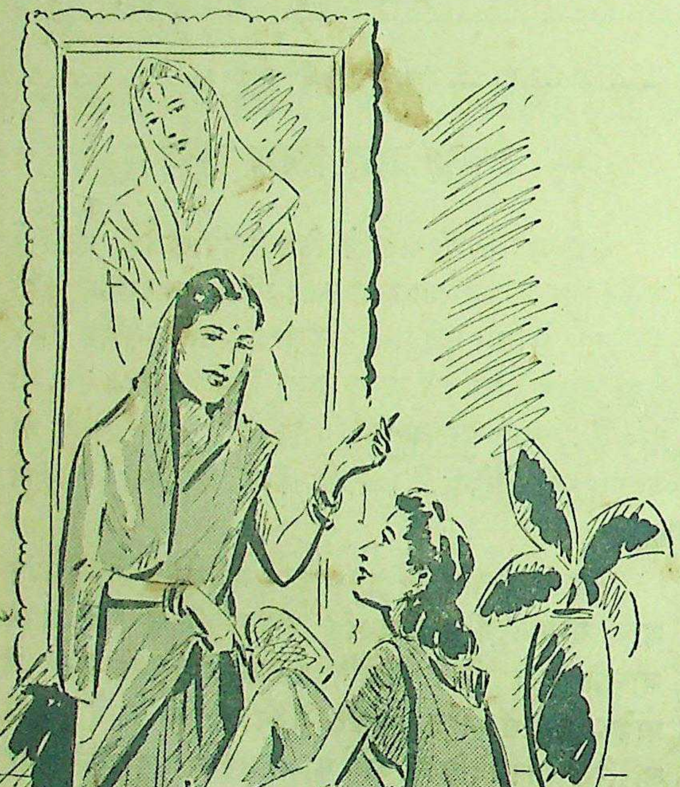

कुटुम्ब में
सौन्दर्य कायम रहे

माताजी कह रही हैं: "मेरी माँ इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसवीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसवीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी माँ के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है जो है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे कई पीढ़ीयों तक कुटुम्ब में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

पिअर्स साबुन
सौन्दर्य का सेवक

TG. 40-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

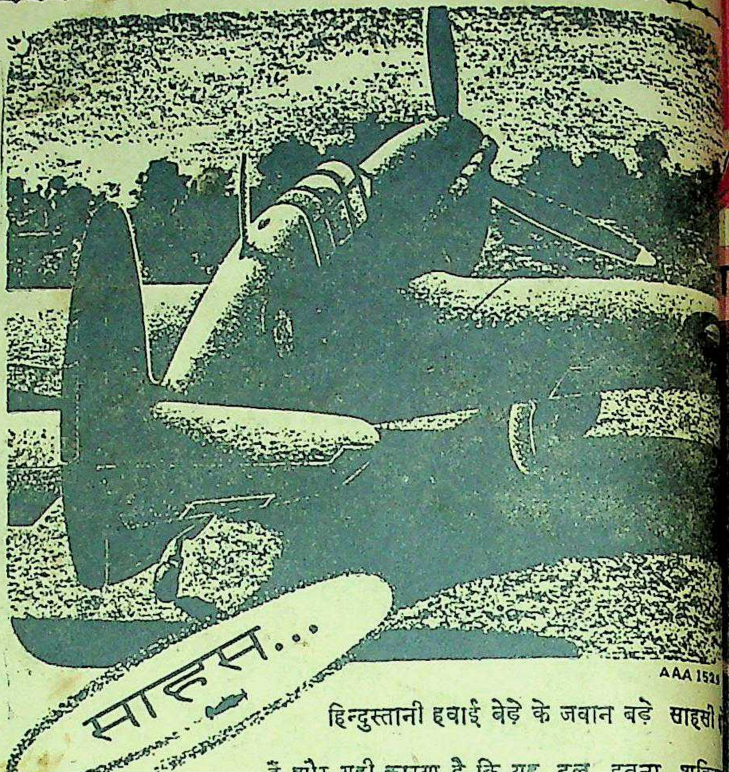

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के जवान बड़े साहसी
हैं और यही कारण है कि यह दल इतना शक्ति
तथा महान बन गया है। इन ऐतिहासिक दिनों में जब कि संसार की सीमाओं
परिवर्तन हो रहा है, विजय उसी देश को प्राप्त होगी जो अपनी हवाई शक्ति के
आकाश पर प्रभुत्व स्थापित कर सकेगा। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़ा अपने मित्रराष्ट्
साथ जापानियों को दिखला रहा है कि साहस तथा उत्तम ट्रेनिंग के कारण
आकाश पर नियन्त्रण कर रहे हैं।

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुतसे जवानोंमें ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।

* सरकार ने इस बात की गारंटी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग खाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।

* ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरी से आये हुए जवान सरकारी खर्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।

* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा संबंधी विशेष रियायतें मिलेंगी जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके संबंध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर अ
निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट्स
रिक्रूटिंग आफ़ीसर के पास भेज दीजि
जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े
पाइलाट (विमान चालक) की नौक
के संबंध में पूरा विवरण और प्रार्थ
पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम ______

पता ______

______

______

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े
को ऐसे जवानों की ज़रूरत है जि
तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सुनने
ताकत ठीक हो और उम्र १७½ और
साल के बीच हो; विमान चलाने
परिश्रम को सहन कर सकते हों
अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी अं
बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए।

आइ० ए० यफ०, जी० डी० (पाइलट्स)
रिक्रूटिंग आफिसर, ५ वे रोड, लखनऊ।

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

र, १८ मार्च, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th March, 1945

लीमार मछलियों का शिकार करते
र बाजार में अच्छे दामों में बेचते हैं ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता [illegible] पत्र
मूल्य [illegible]

केन्द्रीय सरकार का नया युद्ध-बजट कैसा है
आधुनिक सुपर फोर्ट्रेस वायुयान क्या है?

बेनोला

वनस्पति (घी)

सब प्रकार की मिठाइयाँ तथा अन्य खाद्य-सामग्री पकाने का सर्वोत्तम साधन

पत्र-व्यवहार का पता—

भारत वनस्पति मैनुफैक्चरिंग कं०,
५० निस्वत रोड, मजगाँव, बम्बई १०

EAGLE Chappals
CAWNPORE

एजंसियाँ

सिंध
- डी० नेभनदास टांडो अलहयार
- भारत बूट हाउस, हैदराबाद
- पोपुलर जनरल स्टोर हैदराबाद
- बधानी बूट हाउस, जकोबाबाद
- तुलसीदास कलाचन्द ब्रदर्स, शाहदादपुर
- ठाकुरमल कुन्दामल, टांडो, आदम
- प्रभात बूट हाउस, लरखाना
- प्रेम बूट हाउस, कराची
- मीर मुहम्मद बलूच, कराची
- मास्टर चप्पल, कराची
- नेशनल बूट हाउस कराची
- प्रभात बूट हाउस, सक्कर

पंजाब
- सरदार बूट हाउस, अबोहर
- प्रकाश बूट हाउस, अमृतसर
- विक्ट्री बूट हाउस मांटगोमरी
- अजीम बूट हाउस लालमूसा
- मदनलाल दासूराम आरिफ़वाला
- सैगल बूट हाउस, बूरेवाला

मदरास
- कानपुर बूट हाउस बेजवादा
- मार्डन शू मार्ट, गुंटूर
- श्री गनपति बूट हाउस, इलौर

यू० पी०
- सस्ता बूट हाउस शिकोहाबाद
- कृष्णा बूट हाउस, मथुरा
- प्रेम बूट हाउस, बरेली
- सक्सेना ब्रदर्स बरेली
- कपूर ऐंड फ्रेंड्स इलाहाबाद
- चप्पलभंडार, फर्रुखाबाद
- प्रेम बूट हाउस, बदायूँ
- भारती स्टोर्स, हापुड़

बंगाल
- फैंसी शू स्टोर, मेमनसिंह

मध्यप्रान्त
- इस्माइल जी पीरभाई जबलपुर

भारतीय रियासतें
- बर्मा ब्रदर्स बीकानेर
- लाल ब्रदर्स जोधपुर

जिन्दगी भर पेंशन लीजिए

एन्यूटी सर्टेन बाँड

"स्वदेशी" की अपूर्व योजना

इस योजना में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित हो सकते हैं।
आप भी इस योजना से लाभ उठाइए।
व्याज ४½ प्रतिशत तक मिल जाता है।

स्वदेशी बीमा कम्पनी लि०, आगरा।

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की

मधूलिका

मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्य की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्र

★ २५३२ ★
हिन्दुस्तानी
★ फ़ौज के ★
बहादुर जवान

V

इस लड़ाई में,
दिसम्बर सन् १९४४ के अन्त तक,
हिन्दुस्तानी फ़ौज के जिन अफसरों और
जवानों को बहादुरी के लिए और अपना
कर्त्तव्य पालन करने के लिए तमग़े दिये गये,
उनकी संख्या २५३२ तक पहुँची है। युद्ध-क्षेत्र
की सरकारी ख़बरों में कई हज़ार बहादुरों की प्रशंसा
की गई और उन्हें वीरता के प्रमाणपत्र दिये गये।
लड़ाई के तमाम मोर्चों पर हिन्दुस्तानी फ़ौजों की
वीरता मित्र-राष्ट्रों के गर्व और शत्रु की निराशा
का कारण रही। इन बहादुर सिपाहियों ने
तमाम दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम
उजला और सिर ऊँचा कर
दिया है।

★ इस लड़ाई में विक्टोरिया क्रास पाने वालों की संख्या के विचार से (जो ब्रिटिश राज्य बहादुरी का सब से बड़ा इनाम है) हिन्दुस्तान दूसरे नम्बर पर रहा। (अर्थात् ब्रिटेन ७५, हिन्दुस्तान १८, आस्ट्रेलिया ११, न्यूज़ीलैण्ड ७, कनाडा ३; दक्षिणी अफ्रीका १, फीजी १). इनके अलावा जो तमग़े दिये गये, उनमें १४२ डिस्टिंगविश्ड सर्विस आर्डर, २९१ इण्डियन आर्डर आफ मेरिट, ५८० मिलिटरी क्रास, ९५४ इण्डियन डिस्टिंगविश्ड सर्विस मेडल और ५४६ मिलिटरी मेडल शामिल हैं।

रा [illegible] द्ध मोर्चे द्वारा प्रकाशि

AAA 64

देशदूत

वर्ष ७ संख्या २८] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ११ मार्च, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

सनफ्रांसिस्को (अमरीका) में होनेवाले सम्मेलन में चीन के विधाता मार्शल च्यांगकाई शेक भी निमंत्रित किये गये हैं।

केन्द्रीय एसेम्बली ने कांग्रेस दल का एक कटौती का प्रस्ताव, कार्यकारिणी कौंसिल की निन्दा करने और उसकी मद में माँगों को अस्वीकार करने के सम्बन्ध में, ५३ के विरुद्ध ६१ वोटों से पास हुआ। वोटिंग के परिणाम की घोषणा होने के बाद विरोधी दल ने 'इस्तीफा दो' के नारे लगाये।

* * *

सीमा प्रान्तीय एसेम्बली में मुसलिम लीगी मन्त्रिमंडल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव, जो कि डा० खाँ साहब ने पेश किया था, १८ वोटों के विरुद्ध २४ वोटों से पास हो गया। प्रस्ताव पास होने के बाद सरदार औरंगजेब खाँ ने अपने मन्त्रिमंडल का इस्तीफा गवर्नर के सामने पेश कर दिया, पर गवर्नर ने उनसे कहा कि जब तक कोई और प्रबन्ध नहीं होता तब तक आप अपना कार्य बराबर जारी रखें।

* * *

गवर्नर ने सीमा प्रान्त में नया मन्त्रिमंडल बनाये जाने के सम्बन्ध में डा० खाँ साहब को आमन्त्रित किया। डा० खाँ साहब ने इस प्रश्न पर विचार करने के लिए एक या दो दिन का समय माँगा है।

* * *

केन्द्रीय एसेम्बली में प्रान्तों में कार्य क कण्ट्रोल और निरीक्षण के सम्बन्ध में रकारी भोजन-विभाग की निन्दा करने के लए श्री ए० एम० डेम (किसी दल से म्बन्ध नहीं) का एक कटौती का प्रस्ताव ३ के विरुद्ध ५७ वोटों से पास हो गया।

स वर्किंग कमेटी के सदस्य डाक्टर सैयद महमूद न्दू-मुसलिम एकता के लिये प्रयत्नशील हैं।

इसके सिवा वस्त्र और सूत की स्थिति पर बहस करने के लिए नेशनलिस्ट दल का एक कटौती का प्रस्ताव ४३ के विरुद्ध ४८ वोटों से पास हुआ। प्रस्ताव श्री अखिलचन्द्र दत्त ने उपस्थित किया जिसमें यह कहा गया था कि "नागरिक रसद और उद्योग-धंधों" की मद की माँग में १००) घटा दिया जाय।

* * *

जर्मन समाचार एजेन्सी ने बताया है कि रूसी सैन्य दल कोलबर्ग में घुस गये हैं और ओहर दहाने से ३५ मील पूर्व में बाल्टिक के बन्दरगाह को घेर लिया है। जर्मनों को हंगेरियन मोर्चे पर सबसे बड़ी पराजय खानी पड़ी जहाँ कि वे डान्यूब में प्रवेश करने के लिए कितने ही दिनों से प्रयत्न कर रहे थे।

* * *

जर्मन रेडियो ने समाचार दिया कि अमेरिकन सेनाओं ने एक नये स्थान पर राइन नदी को पार किया है, जो कि रेन ब्रिट बैंक के उत्तर और दक्षिण में है। अमेरिकन सैन्य दलों ने रेमान्टीन के नाके के उत्तरी सिरे हानेपू के दक्षिण में राइन को पार करना आरम्भ कर दिया है।

* * *

नई दिल्ली की एक सरकारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि भारत सरकार को लन्दन में होनेवाले सम्मेलन में तथा सान फ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लेने के लिए निमंत्रण मिला है। सपरिषद गवर्नर जनरल ने सर रामस्वामी मुदालियर तथा माननीय सर फीरोज खाँ नून को भारत का प्रतिनिधि चुना है, तथा सम्राट् के प्रतिनिधि के निमन्त्रण पर सर वी० टी० कृष्णनमाचारी तीसरे प्रतिनिधि बनने के लिए तैयार हो गये हैं। माननीय सर रामस्वामी मुदालियर प्रतिनिधि दल के नेता होंगे। चुंगकिंग में भारत के एजेन्ट जनरल माननीय श्री के० पी० एस० मेनन, जो इस समय छुट्टी पर भारत में हैं, प्रतिनिधि दल से सम्बन्धित सेक्रेटेरियट के प्रधान होंगे।

* * *

खबर है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू, पंडित गोविन्दवल्लभ पंत, आचार्य कृपलानी तथा आचार्य नरेन्द्रदेव, मार्च के तीसरे सप्ताह तक युक्तप्रान्त भेज दिये जावेंगे। पंडित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य कृपलानी तथा आचार्य नरेन्द्रदेव नैनी जेल में रखे जावेंगे, और पंडित गोविन्दवल्लभ पंत को लखनऊ भेजा जायगा, जहाँ उनका आपरेशन होगा।

* * *

वायसराय ने पाँच भारतीय वीरों को विक्टोरिया क्रास के पदक दिये हैं, जिनमें से केवल दो जीवित हैं और तीन युद्ध-क्षेत्रों में मारे गये हैं।

पंजाब प्रान्तीय हिन्दू महासभा के अध्यक्ष, दीवान बहादुर राजा नरेन्द्रनाथ का हृदय की धड़कन बन्द हो जाने से देहान्त हो गया। मृत्यु के समय उनकी आयु ८१ वर्ष की थी।

* * *

अकोला में तथा अन्य स्थानों पर रचनात्मक कार्यकर्ताओं पर रोक के सम्बन्ध में वक्तव्य देते हुए महात्मा गांधी ने कहा है कि जिन कांग्रेसमैनों ने सेवाव्रत लिया है, वे फल की चिन्ता किये बिना ही मूक सेवा करें। यही करो या मरो का सच्चा अर्थ है।

* * *

ग्रेट ब्रिटेन की भारतीय संस्थाओं के संघ ने ब्रिटेन में रहनेवाले भारतीयों की ओर से आज मि० चर्चिल, प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, मो० स्टालिन और मार्शल च्यांगकाई-शेक के पास तार भेजकर उनसे यह अनुरोध किया है कि भारत के राजनीतिक कैदी लोग रिहा कर दिये जायँ।

* * *

तार में लिखा है कि 'संघ यह समझता है कि संसार की शान्ति और सुरक्षा के लिए भारत और अन्य समस्त पराधीन लोगों की स्वतन्त्रता आवश्यक है। इसलिए संघ का अनुरोध है कि भारतीय राजनीतिक नेतागण फौरन छोड़ दिये जायँ और प्रतिनिधिक राष्ट्रीय सरकार स्थापित की जाय, ताकि सानफ्रान्सिस्को सम्मेलन में भारतीयों का वास्तविक प्रतिनिधित्व हो सके।'

* * *

जापानी प्रधान मन्त्री ने 'आगामी निर्णयात्मक युद्ध में' 'विजयी होने के लिए' कहा कि 'जापानी राष्ट्र को शत्रु को कुचल डालने के लिए अपने संकल्प को दोहराना होगा।' उन्होंने आगे कहा कि केवल इस प्रकार के सम्पूर्ण प्रयत्नों और बलिदानों के द्वारा हम वर्तमान संकट की घड़ी को पार कर सकते हैं।'

* * *

टोकियो रेडियो के अनुसार १० मार्च को जापान के संपूर्ण जन-बल के संचालन का कानून अमल में लाया जायगा। उस कानून का यह उद्देश्य है कि जापानी राष्ट्र का प्रत्येक सदस्य या तो सशस्त्र सेना में शामिल हो या उत्पादन के क्षेत्र में काम करे। टोकियो के अधिकांश स्कूल बन्द कर दिये गये हैं और छात्रों को लड़ाई के कारखानों में काम करने के लिए भेज दिया गया है।

* * *

जर्मन संवाद एजेन्सी के अनुसार गोबेल्स ने एक लेख में वह लिखा है कि युद्ध चरम सीमा पर पहुँच चुका है और उसका अंत सहसा किसी भी समय हो सकता है।

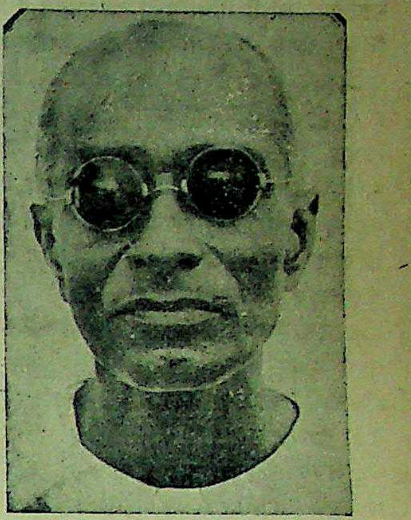

चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य ने सन फ्रांसिस्को सम्मेलन में श्री भूलाभाई देसाई और नवाबजादा लियाकतअली खाँ को भारत का प्रतिनिधित्व करने की राय दी।

अमरीका के सिनसिटाटी, पिट्सबर्ग और पोर्टस्मा उथ नगरों में भारी और व्यापक क्षेत्र में बाढ़ आने से सैकड़ों युद्ध सम्बन्धी कारखाने बन्द हो गये हैं। भारी वर्षा अभी हो रही है और नदियों का पानी प्रत्येक पाँच घंटों में एक फुट के हिसाब से बढ़ रहा है।

* * *

'डेली मेल' के न्यूयार्क-स्थित संवाददाता के कथनानुसार जापान ने कोइसो की वर्तमान सरकार का अंत निकट है और सम्राट् हिरोहिटो के चचेरे भाई तगाशी कुनी से संभवतः एक नया मन्त्रिमंडल स्थापित करने के लिए कहा जायगा।

* * *

भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस की हीरक जयन्ती आगामी दिसम्बर में सारे देश में मनाई जायगी। बम्बई, जहाँ कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ था, शानदार ढंग से हीरक-जयन्ती मनाने का विचार रखता है।

* * *

लन्दन के 'डेली मेल' पत्र के न्यूयार्क स्थित संवाददाता ने श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित को एक खतरा बताया है। उसका कहना है कि वे भारत के सम्बन्ध में अमेरिकनों को अँगरेजों के विरुद्ध भड़का रही हैं और तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने तथा ब्रिटेन को बदनाम करने में संकोच नहीं करतीं।

युक्तप्रांत के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री पण्डित गोविन्दवल्लभ पंत इस समय जेल में अस्वस्थ हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

ये लीगी मंत्रिमण्डल!

भारत के चार प्रांतों में अभी तक मुसलिम लीगी मंत्रिमंडलों का शासन है। किन्तु समय की गति देखिये, लीग अब पराभव के मार्ग की ओर अग्रसर होने लगी है। सीमाप्रांतीय लीगी मंत्रिमंडल के विरुद्ध राष्ट्रकर्मी डाक्टर खान साहब का अविश्वास का प्रस्ताव प्रांतीय असेम्बली में बहुमत से स्वीकृत हो गया। सिंध लीगी मंत्रिमंडल ने स्तीफा दे दिया है। लीग के कुछ अन्य सदस्य मंत्रिमंडल बनाने की दौड़ लगा रहे हैं। स्वर्गीय राष्ट्रकर्मी अलाबख्श के भाई हाजी मौलाबख्श सिंध मंत्रिमंडल के लिये प्रतिक्रियावादी सिद्ध हो रहे हैं। इस प्रकार दो प्रांतों के लीगी मंत्रिमंडलों पर शनि की दशा सवार है और अब जान पड़ता है कि लीग का पाया पूरी तरह उखड़ने में अब किसी तरह का संदेह नहीं है। रह गये पंजाब और बंगाल प्रांत। इन दोनों प्रांतों पर भी सीमाप्रांत और सिंध के मंत्रिमंडलों के पराजय का नैतिक प्रभाव पड़े बिना न रहेगा और भविष्य में इन प्रांतों के मंत्रिमंडलों में भी किसी तरह की उथल-पुथल उत्पन्न हो तो आश्चर्य नहीं है।

इसलिये समझने की बात यह है कि लीग यदि, जहाँ मुसलमानों का बहुमत है, वहीं उखड़ती जा रही है तो जहाँ मुसलमान अल्पसंख्या में हैं, वहाँ वह भविष्य में मंत्रिमण्डल बनाने में—यदि बना तो—कितनी सफल होगी, यह इसका प्रमाण है। यह सब क्यों हो रहा है? मिस्टर जिन्ना का दावा है कि भारत के मुसलमानों के वही प्रधान सरगना हैं और उनकी लीग ही मुसलिम जमात का प्रतिनिधित्व करनेवाली एकमात्र पार्टी है। हम समझते हैं मिस्टर जिन्ना की हठवादिता तथा उनकी प्रति-क्रियावादी नीति का यह कुपरिणाम लीग को भुगतना पड़ रहा है। आखिर मुसलमानों को कब तक अपने भले बुरे का ज्ञान न होगा? वह कब तक साम्प्रदायिकता तथा पाकिस्तान के नारे के नाम पर राष्ट्र के सम्मिलित हितों की उपेक्षा करने के लिए उत्तेजित किये जाते रहेंगे? मिस्टर जिन्ना तथा उनके कुछ धनी-मानी सहयोगी अपने स्वार्थों तथा सरकारी प्रभुता की आड़ में कब तक राष्ट्रीयता तथा साम्प्रदायिक एकता को छिन्न-भिन्न करने की चाल चलते रहेंगे? लीग तथा मिस्टर जिन्ना के राष्ट्र-विरोधी कार्यों की ही प्रतिक्रिया आज दिखाई दे रही है। वह समय नजदीक है जब वास्तव में हिन्दू-मुसलिम एकता की दृष्टि से प्रांतों पर शासन होगा। या तो लीग अपनी वर्तमान नीति बदलेगी या मिस्टर जिन्ना को नेतृत्व से हाथ धोना पड़ेगा।

* * *

भारत के कठपुतली प्रतिनिधि

आगामी अप्रैल में सेनफ्रांसिस्को (अमरीका) में मित्रराष्ट्रों का जो सम्मेलन, युद्ध के बाद संसार में सुव्यवस्था तथा शांति स्थापित करने के उपायों पर विचार करने के लिए, होने जा रहा है उसमें संसार के अनेक राष्ट्रों के प्रतिनिधि निमंत्रित किये जा रहे हैं। मिस्टर चर्चिल, प्रेसिडेंट रूजवेल्ट और मार्शल स्टेलिन तो सम्मेलन के जनक हैं ही, किन्तु चीन के मार्शल च्यांगकाई शेक, साथ ही टर्की और मिस्र तथा अन्य राष्ट्रों के भी प्रतिनिधि इस सम्मेलन में निमंत्रित किये जा रहे हैं, जिन पर मित्रराष्ट्रों—विशेषरूप से ब्रिटेन तथा अमरीका की महान् कृपा है। नाम के लिये भारत का प्रतिनिधित्व भी इस सम्मेलन में होगा।

भारत सरकार ने पिछले सप्ताह एक विज्ञप्ति प्रकाशित की है जिसमें यह कहा गया है कि सर रामस्वामी मुदालियर, सर फिरोजखां नून, सर बी० टी० कृष्णमाचारी और श्री के० पी० एस० मेनन भारत की ओर से सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में प्रतिनिधित्व करेंगे। हमें इन नामों को पढ़कर आश्चर्य इसलिये नहीं हुआ कि सरकार तो यह चाहती ही है कि ऐसे ही कठपुतलों को प्रतिनिधित्व देना चाहिए जिनकी डोर उसके हाथ में हो! भारत पराधीन है, उसका यह सबसे बड़ा प्रमाण है। जिन स्वतंत्र राष्ट्रों के प्रतिनिध वहाँ उपस्थित होंगे वह इन भले आदमियों या कहना चाहिए महापुरुषों को देखकर या तो हँसेंगे या यह अनुभव करेंगे कि जिस महान् देश में महात्मा गांधी या पंडित जवाहरलाल नेहरू ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के व्यक्ति मौजूद हैं, वहाँ ब्रिटेन ने अपना किस प्रकार असीम सिक्का जमा रखा है, कि वह जो भी मनमानी करना चाहे कर सकती है। वास्तविकता को छिपाया नहीं जा सकता। हम इन प्रतिनिधियों के व्यक्तिगत विरोधी नहीं हैं किन्तु इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि यह प्रतिनिधि भारत के वास्तविक प्रतिनिधि नहीं हैं। यह भारत सरकार के वह पुरजे हैं जिनके सहयोग से शासन-मैशीन चलती रहती है। सेनफ्रांसिस्को में क्या होगा और क्या न होगा, वह सफल होगा अथवा असफल, विश्व में वास्तविक शान्ति और सुव्यवस्था के उपायों को वह खोज निकालेगा या नहीं यह तो भविष्य की बात है किन्तु जहाँ तक भारत ऐसे महान राष्ट्र के प्रतिनिधित्व का प्रश्न है उसका हम समर्थन कदापि नहीं कर सकते। चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य ने भी सरकार के इस बेढंगे निर्णय का विरोध किया है। उन्होंने भारत की ओर से श्री भूलाभाई देसाई और नवाबजादा लियाकत अलीखाँ का नाम प्रस्तावित किया है! इसलिये भारत की ओर से इस प्रकार का प्रतिनिधित्व केवल प्रहसन मात्र कहा जा सकता है। इस पर यदि भारत अपना असन्तोष प्रकट करे और अपने सम्बन्ध में होनेवाले किसी भी निर्णय को यदि अमान्य ठहराये तो उपयुक्त ही है।

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव

इस पुस्तक में लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ।||) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

ब्रजभाषा के साहित्य का प्रचार

वर्तमान हिन्दी में ब्रजभाषा-साहित्य को परम्परा के रक्षक कौन हैं?

दिल्ली में होनेवाले ब्रज-साहित्य-मंडल के प्रथम अधिवेशन के सभापति-पद से पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी ने एक महत्त्वपूर्ण भाषण दिया है। आपने अपने भाषण में ब्रजभाषा-साहित्य की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए आधुनिक काल में उसके ह्रास के कारणों पर भी स्पष्ट प्रकाश डाला है। अंत में ब्रजभाषा-साहित्य के प्रचार के महत्व को बतलाते हुए आपने उसके प्रचार और प्रसार की ओर हिन्दी संसार का ध्यान आकर्षित किया है, साथ ही उन हिन्दी सेवियों की प्रशंसा भी की है जो आज भी ब्रजभाषा-साहित्य की सेवा करते हुए पूर्व परम्परा की रक्षा में सहायक बन रहे हैं।

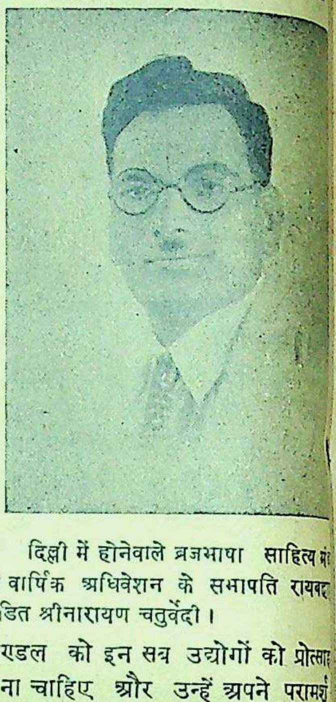

दिल्ली में होनेवाले ब्रजभाषा साहित्य मं… के वार्षिक अधिवेशन के सभापति रायब… पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी।

ब्रजभाषा का प्रचार अवश्य ही अब उतना नहीं है जितना कुछ दिनों पहले था और आधुनिक हिन्दी की शिक्षा में ब्रजभाषा की उपेक्षा होने के कारण हिन्दी के बहुत से आधुनिक विद्वान् भी उससे अपरिचित रहने में कोई हानि नहीं समझते। कुछ लोग तो इच्छा करने पर भी उसे समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। इसके लिए एक ब्रजभाषा-कोष की बड़ी आवश्यकता है। हर्ष का विषय है कि मेरे पूज्य पिता पं० श्री द्वारकाप्रसाद जी चतुर्वेदी ने वृद्ध होने पर भी उसके महत्व और आवश्यकता को समझ ब्रज-कोष के निर्माण का कार्य अपने हाथ में ले लिया है और प्रायः तीन वर्ष से वे निरन्तर उसी कार्य में लगे हैं। इस कोष में एक लाख से भी अधिक शब्द रहेंगे और आकार में यह हिन्दी-शब्द-सागर के लगभग ही होगा। सन्तोष का विषय है कि यह महत्वपूर्ण और महान् कार्य आधे से अधिक हो गया है। उसके तैयार होने पर ब्रजभाषा के अध्ययन की एक बड़ी कठिनाई दूर हो जायगी। आशा है कि उसका संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित किया जायगा जिससे साधारण पाठकों और विद्यार्थियों को भी वह सुलभ हो जाय और वे उससे लाभ उठा सकें।

यदि आप गाँवों में फैले हुए हजारों अध्यापकों का सहयोग प्राप्त कर सकें तो जो काम बहुत अधिक व्यय करने पर होगा और जिसमें बहुत समय लगेगा वह थोड़े ही दिनों में और अपेक्षाकृत थोड़े ही दिनों में हो जायगा। गाँवों में स्थानीय इतिहास और संस्कृति के अज्ञान के कारण सैकड़ों प्राचीन चिह्न नष्ट होते जा रहे हैं। कितनी ही मूल्यवान् पुस्तकें और मूर्त्तियाँ नष्ट कर दी जाती हैं और गाँवों में प्राप्त होनेवाले कितने ही अलभ्य सिक्के गला दिये जाते हैं। आज गाँवों में अध्यापक ही ऐसा शिक्षित व्यक्ति है जो संस्कृति और ज्ञान का केन्द्र हो सकता है। अतएव मेरा सुझाव है कि मण्डल के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अध्यापकों का सहयोग प्राप्त करने के उपायों पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय।

ब्रजभाषा-साहित्य के, जो अब भी प्रान्त के भिन्न भागों में जनप्रिय है, प्रसार और प्रचार के लिए यह आवश्यक है कि हमारे कवियों के सुलभ सम्पादित और प्रामाणिक संस्करण निकाले जायँ। हर्ष का विषय है कि काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा, गंगा-पुस्तकमाला, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद और भारतवासी प्रेस ने इस प्रकार की पुस्तकें निकाली हैं। इसमें पिछली दो संस्थाओं ने तो सुलभ मूल्य की पुस्तकमालाएँ आरम्भ कर दी हैं। ब्रज-साहित्य-मण्डल को इन सब उद्योगों को प्रोत्सा… देना चाहिए और उन्हें अपने परामर्श… अधिक उपयोगी बनाने का उद्योग क… चाहिए। इस प्रकार की पुस्तकों की जित… आवश्यकता है उतनी पुस्तकें अभी न… निकल रही हैं। इसके लिए एक विचार… योजना की आवश्यकता है।

वर्त्तमान ब्रजभाषा-साहित्य

ब्रजभाषा-साहित्य जीवित साहि… और आज भी उसमें नई-नई पुस्तकें नि… रही हैं। ब्रजभाषा-साहित्य को वर्त… काल में सबसे अधिक प्रोत्साहन श्री… ओरछा-नरेश ने देव-पुरस्कार की स्थाप… करके दिया है। इसके लिए समस्त ब्र… भाषा-प्रेमी संसार उनका चिर कृतज्ञ रहेगा… किन्तु खेद का विषय है कि बहुत से… नवयुवक, जिनमें प्रतिभा है और जो ब्र… भाषा में अच्छा लिख सकते हैं, ब्रज… में लिखने से अपने हृदय की दुर्बलता… कारण हिचकते हैं। वे इस भ्रम में हैं… ब्रजभाषा-काव्य को लोग पसन्द नहीं कर… हमें उनके इस भ्रम को दूर करने का उ… सोचना होगा। फिर भी ब्रजभाषा… अनेक लेखक हमारे बीच में वर्तमान… बस्ती के वयोवृद्ध पं० बलराम मिश्र द्वि… जी, जिनके काव्य को सुनकर आ… केशव की याद आ जाती है, ब्रजभाषा… ऊँचे कवि हैं; किन्तु खेद है कि उ… प्रकाशन नहीं हो पाया। देव-पुर… विजेता पं० रामनाथ ज्योतिषी अ… अपनी काव्य-साधना में लगे हैं। बस्ती… पं० रामचरित पाण्डे, एम० एल० ए… एकान्तवास करके ब्रजभाषा की सेवा… रहते हैं। आचार्य सनेही जी चाहे… बोली में ही क्यों न लिखें, ब्रजभा… परम्परा के उत्कृष्ट कवि हैं और मेरे… मित्र पं० जगम्बाप्रसाद मिश्र 'हि…

—शेष पृष्ठ १७ पर देखिये

भारत का नया आर्थिक युद्ध-बजट

सार्वजनिक हित की दृष्टि से यह असन्तोषपूर्ण क्यों है?

लेखक, श्री श्रीनारायणदत्त तिवारी

केन्द्रीय असेम्बली में भारत सरकार के नये वर्ष के युद्ध बजट की हर पहलू से आलोचनायें तथा कटु आलोचनायें हो रही हैं। इस सामयिक लेख में लेखक ने सरकारी बजट, आय-व्यय, नये करों के आँकड़ों तथा अर्थ सदस्य के असीम तर्कों की तीव्र आलोचना की है और यह सिद्ध किया है कि सार्वजनिक दृष्टि से बजट कतई असन्तोषपूर्ण है। सरकार की आर्थिक नीति की जानकारी के साथ ही लेख पठनीय और आकर्षक है।

केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेसपार्टी के नेता श्री भूलाभाई देसाई

भारत सरकार के खाद्य-सदस्य सर जे० पी० श्रीवास्तव।

विश्व-संघर्ष के सर्वव्यापी आतंक के कारण, भारत में भी असाधारण परिस्थितियाँ उत्पन्न होती चली जा रही हैं। आर्थिक समस्या तो दिन-प्रतिदिन विषम रूप धारण ही कर रही है। जीवन की अति आवश्यक वस्तुओं की कमी सारे देश में वस्त्र, अन्न की असाधारण कमी—बाजार में बढ़ती हुई अभूतपूर्व महँगाई तथा ब्लैक मार्केट द्वारा कमाया जानेवाला करोड़ों रुपया, यह सब भारत की दयनीय आर्थिक परिस्थिति की द्योतक हैं। यह दशा, चरमता की किस सीमा तक पहुँचेगी, यह कल्पना कर सकना, असम्भव है। बंगाल, उड़ीसा तथा मलाबार में होनेवाला अभी पिछला अकाल तो आनेवाली घटनाओं की एक प्रस्तावना-मात्र है। खेद इस बात का है कि केन्द्रीय सरकार इस विनाशकारी संकट को दूर करने के लिए प्रयत्नशील नहीं मालूम पड़ती और कन्ट्रोल, राशनिंग तथा सरकारी दूकानों के सरकारी आयोजनों से स्थिति का उतना सुधार नहीं हुआ जितना कि इस समय आवश्यक है।

भारतीय जनता की इस हृदयगत भावना की पुष्टि, अभी हाल ही में केन्द्रीय असेम्बली में, भारत के अर्थ-विभाग के सदस्य श्री जैरमी रेसमैन के युद्ध-कालीन छठवें अर्थ-बजट तथा उसे पेश करते हुए दी जानेवाली उनकी वक्तृता से होती है। पिछले युद्ध-बजटों की तरह इसमें भी असाधारण हानि के लम्बे आँकड़े दिखलाये गये हैं तथा नये टैक्सों की घोषणा की गई है। श्री रेसमैन-द्वारा घोषित आँकड़ों-द्वारा ज्ञात होता है कि पिछले साल के बजट में १५५ करोड़ ७७ लाख रुपये की हानि हुई और नये बजट में १६३ करोड़ ८९ लाख रुपये की हानि की सम्भावना आँकी गई है। तार, टेलीफोन, तम्बाकू तथा पोस्टल पार्सल पर लगाये गये नये टैक्स और 'इनकम' तथा 'इक्सैस्-प्रौफिटस्-टैक्स' आदि सब मिलाकर, सिर्फ आठ करोड़ साठ लाख रुपया एकत्र किया जा सकेगा, ऐसा अनुमान लगाया गया है। इस प्रकार कुल घाटा, टैक्सों से आनेवाले रुपये को घटाकर, १५५ करोड़ उन्तीस लाख रुपया रह जाता है। भारत जैसे गरीब देश के आर्थिक इतिहास में इतने बड़े घाटे का अनुमान अनहोनी घटना है। जब कि भारतीय जनता नाना प्रकार के टैक्सों से अब भी लदी हुई है और केन्द्रीय सरकार की युद्ध की आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है, इतने घाटे का होना और भी अधिक महत्त्व रखता है। आखिर कौन-सा ऐसा कारण है कि केन्द्रीय सरकार को इतना अधिक रुपया खर्च करने की आवश्यकता हो रही है? सन् ४४-४५ के बजट के अनुसार युद्ध के लिए २७६ करोड़ ६१ लाख रुपये व २४ करोड़ ६० लाख रुपये की दो बड़ी किश्तें प्रस्तावित की गई थीं, पर अर्थ-सदस्य के अनुसार यह आंकड़े बढ़कर ३६७ करोड़ २३ लाख व ५९ करोड़ ४१ लाख हो गये। अगर इस प्रकार बजट के पास किये गये आँकड़ों से खर्च किये गये आँकड़े इतने अधिक हो सकते हैं, तो बजट पास करने की ही आवश्यकता क्या रह जाती है? यह मामूली से प्रश्न हैं जो प्रत्येक भारतीय के हृदय में बजट पर पहली दृष्टि डालते ही उठते हैं क्योंकि जिस प्रकार पिछले साल डिफेंस-योजनाओं के सिलसिले में बजट व्यर्थ सिद्ध हुआ, उसी प्रकार इस वर्ष भी होने की सम्भावना है।

प्रश्न यहीं तक सीमितं नहीं हैं। आखिर घाटे का बचा हुआ १५५ करोड़ रुपया कहाँ से आयेगा? क्या इसे ब्रिटिश सरकार अपने खजाने से पूरा करेगी या मित्रराष्ट्र अपने सम्मिलित युद्धोद्योग को देखते हुए इस घाटे की पूर्त्ति करेंगे? पर यह तो एक कल्पना-मात्र है। इँग्लैंड की अगर भारत के प्रति इतनी सदाशयता होती तो वह भारत के स्टर्लिंग-धन को, जो कि इसी ३१ मार्च तक १०३ करोड़ पौंड तक पहुँच जायेगा, चुकाने की ओर पूर्ण ध्यान देता। मित्रराष्ट्रों को अगर भारतीय अर्थ-स्थिति की दयनीय अवस्था का जरा भी ध्यान होता तो वह इतने महत्त्वपूर्ण आर्थिक-संकट को, जो खतरनाक स्थिति धारण करने पर संसार के आर्थिक ढाँचे को अस्त-व्यस्त कर सकने की क्षमता रखता है, केवल इँग्लैंड और भारत के परस्पर की घरेलू बात कह कर अपनी आर्थिक कान्फ्रेंस में, टाल न देते?

तो क्या इस भयंकर घटे की पूर्त्ति भी जनता से या पूँजीपतियों से रुपया उधार लेकर की जायेगी जैसा कि अब तक किया जा चुका है? हाल के आँकडों के अनुसार भारतीय सरकार-द्वारा लिये गये उधार ८३३ करोड़ रुपये की मोटी संख्या तक पहुँच चुका है। सरकार-द्वारा रुपया बटोरने की इस नीति के कारण भी जीवन की अति आवश्यक वस्तुएँ अति महँगी हो चली हैं। पर आश्चर्य है कि अभी तक सरकार जनता की गरीबी को और उसकी आय के अनुसार वस्तुओं को खरीद सकने की असमर्थता को नहीं देख सकी है?

केन्द्रीय सरकार के सामने युद्ध-संबंधी भारत की रक्षा-योजना (डिफेंस) करना ही सबसे प्रमुख अर्थ-नीति नहीं है। उसे तो इस युद्ध की समाप्ति के बाद होनेवाले शान्ति-काल के आर्थिक ढाँचे को भी सुसंगठित करना है। भारत और ब्रिटेन के युद्ध-खर्च का उपयुक्त बँटवारा होना भी आवश्यक है। निकट भविष्य में समस्त वस्तुओं के दर को सावधानी से तथा धीरे-धीरे घटाकर, शान्तिकालीन वातावरण के उपयुक्त बनाना होगा। युद्ध से लौटे हुए लाखों सैनिकों को जीवन-यापन के लिये उचित व्यवसाय या धंधे में लगाना होगा। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों के बीच एक ऐसा व्यवस्थित सहयोग स्थापित करना होगा जिससे कि किसी प्रान्त-विशेष को अपने आर्थिक वातावरण को युद्ध-कालीन से बदलकर शान्तिकालीन बनाने में कोई विशेष दिक्कत न हो। युद्ध के परिणाम-स्वरूप होनेवाले, शान्तिकाल के अवश्यम्भावी और संसार-व्यापी मन्दी के बीच से भारत को सुरक्षित रूप से संगठित रखने की योजना तथा वातावरण को अभी से तैयार करना होगा। श्री रेसमैन का यह कथन कि जनता का एक बड़ा भाग काफी आर्थिक लाभ उठा रहा है, एक विचित्र सी बात है। हाँ इतना जरूर है कि बड़े-बड़े पूँजीपतियों ने असाधारण मात्रा में युद्ध के इस युग में काफी बड़ा नफा उठाया है। किन्तु जनता का बहुमत, सरकार के द्वारा छोड़ी गई कागजी सिक्के की बाढ़ में बहकर तथा चीजों की दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए दामों को देखकर, विक्षुब्ध तथा मूक बन गया। बंगाल के अकाल ने उसे ठुकराकर सचेत किया, वह आर्थिक संकट के भयंकर भूत से लड़ने की चेष्टा करने लगा, पर युद्ध की असाधारण कठिनाइयों तथा केन्द्रीय सरकार की उदासीनता ने उसे पीछे हटने को मजबूर कर दिया। श्री रेसमैन के बजट में ऐसी संभाव्य परिस्थितियों के लिए कोई स्थान नहीं दिखाई देता।

सर जेरमी रेसमैन की शान्तिकालीन योजनाओं पर दिये गये भाषण के अंश स्पष्ट नहीं हैं। वे केवल करों की वृद्धि पर ही जोर देते हुए मालूम देते हैं जो कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों के द्वारा एक साथ ही एकत्रित किये जायेंगे तथा इनसे प्राप्त धन पुनर्निर्माण योजनाओं पर व्यय किया जायेगा। श्री रेसमैन के वक्तव्य में दो बातों पर और भी जोर दिया गया है। वे युद्ध के बाद वस्तुओं के दाम बढ़े रहने के पक्षपाती नहीं हैं। वे बड़े उद्योग-धन्धों को सरकार-द्वारा उपयोग में लाये जाने के पक्षपाती हैं, ताकि सरकार को ऐसे सब साधन प्राप्त हो जायें जिनसे कि वह जनता के साथ भारत का पुनर्निर्माण करने में पूर्ण सहायक हो सकें। अर्थ-मन्त्री की दृष्टि में अभी वह समय आया ही नहीं है कि जब भारत ब्रिटेन से अपने १०३ करोड़ स्टर्लिंग पौण्ड को चुकता कर देने की माँग करे। उनका कहना है कि भारत के 'स्पष्ट स्वार्थ' का बलिदान कदापि नहीं किया जायेगा और भारत के 'अस्पष्ट-स्वार्थों' के ऊपर प्रभुता नहीं प्रदान की जायेगी।

खेद का विषय है कि श्री रेसमैन ने उपर्युक्त घोषणाओं का स्पष्टीकरण नहीं किया। लम्बे-चौड़े आँकड़ों और सरकार-द्वारा भविष्य में उद्योग-धंधों पर एकाधिकार कर लिये जाने की घोषणा तथा नये, जागृत और सम्पन्न भारत को चित्रित करनेवाली 'चर्चिल ध्वनि' से भारतवासियों को सान्त्वना नहीं मिलेगी। पर इसमें श्री रेसमैन की कोई गलती नहीं है। वे तो साम्राज्यवादी तथा टोड़ी परम्परा के एक विशेषज्ञ हैं। भारतवासी उन्हें तथा उनके बड़े परिश्रम से तैयार किये गये बजट को दोषी नहीं ठहरायेंगे, वह तो संसार में चलनेवाले साम्राज्यवादी और पूँजीवादी चक्र को ही कोसेंगे। भारतीय जन-समुदाय ने बहुत-सी लम्बी सुनीं, अटलांटिक चार्टर व चार-स्वतन्की के राग भी सुने, क्रिप्स साहब का ड्रा है देखा, और देखा अपने भाइयों ही नेताओं का जेल में बन्द होना तथा का रूपक। वह श्री रेसमैन की सरकनते उद्योग-धन्धों पर एकाधिकार करता योजनाओं को भी शंका की दृष्टि देखेंगे। जिस प्रकार रूस में साम्यवा तानाशाही ने सरकारी एकाधिकार की ओर जनता का महान् शोषण किया है, उसी प्रकार कहीं भारत में भी न हो, ऐसी आशंका भारतवासियों के हृदय में भी है। आखिर यह भारत के 'स्पष्ट स्वार्थ' व 'अस्पष्ट-स्वार्थ' क्या हैं? भारत के ऋण को चुकाने में इतनी आनाकानी क्यों? यह सब साधारण से सवाल हैं, जिन्हें प्रत्येक भारतवासी पूछ सकता है।

आज विश्व, परिवर्तन के क्रान्तिमय भाग में पदार्पण कर रहा है। प्रत्येक मानव को जकड़कर चूर कर देनेवाली इस अन्तर्राष्ट्रीय कशमकश ने भारतवासियों को भी चेतनापूर्ण कर दिया है। आर्थिक व सामाजिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक विषमताओं के मध्य में पड़कर, मनुष्य के टुकड़े-टुकड़े हो जाने की सम्भावना है—अर्थ का भूत तो उसे खाये ही डाल रहा है। मानसिक, शारीरिक तथा राजनीतिक गुलामी इस सर्वव्यापी ह्रास को और भी अधिक अग्रसर कर रही है। मित्रराष्ट्रों तथा ब्रिटेन को—अन्तर्राष्ट्रीय चित्र की पृष्ठ-भूमि के अनुसार—भारत को उसका उचित स्थान देना होगा तथा भारतीय-युद्ध-बजटों के पीछे प्रवाहित साम्राज्यवादी प्रवृत्तियों को भुलाना होगा। देखना यही है कि ब्रिटेन या मित्रराष्ट्र कहाँ तक इस भारतीय कसौटी पर खरे उतरते हैं?

'सत्यार्थप्रकाश' का संशोधन जरूरी क्यों ?

क्या महात्मा गांधी का सुझाव आर्यसमाजी मान लेंगे ?

लेखक, श्री सत्यदेव विद्यालंकार

सिंध-सरकार ने 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रकाशन पर जो प्रतिबंध लगाये हैं उसकी निंदा करते हुए महात्मा गांधी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के कुछ संशोधन करने की सलाह भी दी है। मध्यप्रांत के नेता श्री घनश्यामसिंह गुप्त ने गांधी जी के सुझावों को स्वीकार भी कर लिया है। इस लेख में लेखक ने इसी संबंध में प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि आर्य-समाज को अपनी वर्तमान प्रचार-कार्य की नीति में परिवर्तन करना चाहिए।

महात्मा गांधी ने सिन्ध-सरकार द्वारा लगाई गई रोक को धार्मिक अधिकारों में हस्तक्षेप बता कर उसकी निन्दा करते हुए सत्यार्थप्रकाश में संशोधन एवं परिवर्तन करने का जो सुझाव हाल ही में पेश किया है, उसको आर्यसमाजियों की शिरोमणि सभा आर्य सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान और उसके द्वारा इस रोक के विरोध के लिए बनाई गई युद्ध-समिति के सर्वाधिकारी माननीय श्रीयुत घनश्यामसिंह जी गुप्त ने स्वीकार करके इस पेचीदी समस्या को बहुत कुछ सरल बना दिया है। महात्मा गांधी सरीखे महापुरुष का अपने लिए समर्थन मिलने पर उन्होंने बहुत सन्तोष प्रकट किया है और यह कहा है कि सत्यार्थप्रकाश में संशोधन या परिवर्तन करने का प्रश्न इस समय के अशान्त वातावरण में हाथ में नहीं लिया जा सकता। उसके लिए शान्त वातावरण की आवश्यकता है और वह सिन्ध सरकार के हुक्म के रद हुए बिना पैदा हो नहीं सकता।

सत्यार्थप्रकाश को जो केवल धार्मिक क मानते हैं, उनके लिए उसमें संशोधन रिवर्तन करना कठिन नहीं होना । लेकिन 'सत्यार्थप्रकाश' का महत्त्व तक और ऐतिहासिक दृष्टि से कहीं है। ऐतिहासिक लेखों को बदलने से का महत्त्व नष्ट हो जाता है, उसी त्यार्थप्रकाश में संशोधन या परिवर्तन से उसका भी ऐतिहासिक महत्त्व नष्ट जायगा। 'सत्यार्थप्रकाश' केवल समाज-सुधार या धर्मसुधार की दृष्टि से नहीं लिखा गया है। देशवासियों में स्वाभिमान और स्वदेशाभिमान की भावना को पैदा कर उनमें स्वराज्य और अखंड सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की आकांक्षा पैदा करना उसका मुख्य उद्देश्य है। स्वामी दयानन्द का जीवन, विचारधारा और कार्यशैली शतप्रतिशत 'स्वदेशी' थी। वे किसी भी अंश में अपने देश को दूसरों की अपेक्षा दीन-हीन मानने के लिए तैयार न थे। देश की पराधीनता उनको सबसे अधिक खलती थी। जब उन्होंने सारी स्थिति का विश्लेषण किया, तब उन्हें पता चला कि सामाजिक रूढ़ियों, धार्मिक अंधविश्वासों और परम्परागत रूढ़ भावनाओं में उलझे हुए लोगों में स्वाभिमान की भावना पैदा नहीं हो सकती और स्वदेशाभिमान का उनमें संचार नहीं हो सकता। जो दिल, दिमाग एवं बुद्धि की पराधीनता में उलझे हुए हैं, वे राजनैतिक स्वाधीनता का मूल्य आँक नहीं सकते। इसीलिए उन्होंने बुद्धिवाद की स्थापना कर सामाजिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता का शंख फूँका और उसके लिए उन्हें जो मार्ग ठीक प्रतीत हुआ, उसका उन्होंने अवलम्बन किया। उनकी इस दृष्टि और विचारधारा को सामने रखते हुए यदि सत्यार्थप्रकाश को देखा और पढ़ा जाय तो उसकी कटुता, कठोरता और तीखापन इतना न अखरे। सत्यार्थप्रकाश से हजारों लोगों को जो राजनैतिक प्रकाश मिला है, उसकी सहसा उपेक्षा नहीं की जा सकती। आज आर्यसमाज का स्वरूप कुछ भी क्यों न हो, लेकिन राजनैतिक आन्दोलन के लिए उसने जिस अनुकूल भूमि को तैयार किया है, उसी में लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी ने राजनैतिक स्वतंत्रता अथवा स्वराज्य की उत्कट आकांक्षा तथा भावना के बीज बखेरे हैं। इस ऐतिहासिक सचाई को भुलाया नहीं जा सकता। इसीलिए इस महान् कार्य के सम्पादन में साधक होनेवाले महान् ऐतिहासिक ग्रन्थ "सत्यार्थप्रकाश" की आज काट-छाँट करना उचित प्रतीत नहीं होता।

यह प्रश्न अवश्य महत्त्वपूर्ण है कि वर्तमान धार्मिक संघर्ष की कटुता को कम कैसे किया जाय? लेकिन इस संघर्ष और कटुता का सारा दोष "सत्यार्थप्रकाश" के माथे मढ़ कर उसी के पोस्टमार्टम करने का आग्रह करना क्या अर्थ रखता है? यदि यह सिलसिला शुरू किया ही गया तो शायद ही किसी सम्प्रदाय का कोई ऐसा ग्रन्थ बच सकेगा जिसका पोस्टमार्टम करना आवश्यक और अनिवार्य न हो जायगा। हम उन लोगों से सहमत नहीं हैं, जो कुरान शरीफ, ग्रन्थसाहब तथा बाइबिल आदि पर अँगुली उठा कर सत्यार्थप्रकाश के विरोध में उठाये गये आन्दोलन का प्रतीकार करने की आशा या दुराशा रखते हैं। ये सब ग्रन्थ भिन्न-भिन्न समयों और भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग देशों और लोगों के लिए लिखे गये हैं। उनको सर्वकालीन और सार्वदेशिक मान कर हर किसी के सिर मढ़ना कोई बुद्धिमानी नहीं है। राम की माता कानी, कुबड़ी और कुरूप होने पर भी उसके लिए पूज्य एवं रूपवती हो सकती है लेकिन उसका यह दुराग्रह चल नहीं सकता कि उसकी माता को दूसरे भी उसी के समान सुन्दर एवं पूज्य मान कर उसका आदर करें। आज का विवेकी पुरुष आँखें मूँद कर किसी के पीछे हो नहीं सकता। इन सब ग्रन्थों के सम्बन्ध में इसी दृष्टि से विचार किया जाना चाहिए।

यह भी न भूलना चाहिए कि हिन्दू मुसलमान के बीच की आज की खाई भेद डालकर शासन करने की जिस सरकारी नीति से पैदा की गई है, उसमें किसी भी रूप में सहायक होना आर्यसमाज के गौरव को नष्ट करनेवाला है। राष्ट्रीय हित एवं गौरव की रक्षा करने में आर्यसमाज को सबसे आगे रहना चाहिए। इसी में उसके और सत्यार्थप्रकाश के गौरव की रक्षा है। यदि वस्तुतः गांधी जी की सम्मति से गुप्त जी सहमत हैं तो उन्हें आर्यसमाज के प्रचार के आज के ढंग को निश्चय ही बदलना चाहिए। आर्यसमाज के नेताओं को साहस और पुरुषार्थ से काम लेकर इस बहती हवा को बदल कर ठीक दिशा में लगाना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश के विरोध के प्रतिकार भी सबसे सरल, सबसे श्रेष्ठ और अधिक सफल होनेवाला यही मार्ग है।

सारिडन से
२० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये
Saridon

३ अद्भुत राजपूत योद्धा

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कार स्वस्थ शरीर। राजपूत सम्राट पृथ्वीराज बातूनी नहीं अपि कर्तव्यपरायण व्यक्ति थे। महाराजा जयसिंह के महल एकाकी घु कर, वह अपनी प्रियतमा संयोगिता को उठा लाये। पृथ्वीराज इस साहसिक कार्य ने इतिहास के पृष्ठों में कभी स्थान न पा होता, यदि उन में असीम साहस और निर्भयता के साथ सा अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिये अत्यन्त शक्ति शाली स्वस्थ शरी न होता।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट क सेवन करिये। हेमो द्राक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभ को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों क शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पैप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ्य रक्षा के लिये -
हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर
अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड बरो

र्च, १९४५
के प्रतिकार
श्रेष्ठ और
ही मार्ग है।
ल कार
नहीं आपि
एकाकी धु
पृथ्वीराज
ान न पा
साथ सा
स्वस्थ शरी
माल्ट क
बच्चे सम
हनायुवों क
टेढ बरो
AL. 25

सुपर फोर्ट्रेस वायुयान क्या हैं ?

१२ हजार पाउंड के ८ बम लेकर उड़नेवाला विमान

लेखक, पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए० (लंदन)

आजकल टोकियो पर 'सुपर फोर्ट्रेस वायुयान' बम वर्षा कर रहे हैं। यह वायुयान क्या है, इनका क्या महत्त्व है ? और वैज्ञानिकों ने इनका आविष्कार क्यों किया ? इनका प्रयोग किस प्रकार किया जाता है, इन सबका वर्णन विद्वान् लेखक ने इस सामयिक, और जानकारी से पूर्ण लेख में किया है।

इस युद्ध में वायुयानों ने जितनी उन्नति की है उतनी उन्नति सेना के और किसी अंग ने नहीं की। लड़ाई ज्यों-ज्यों बढ़ती गई वैज्ञानिकों और वायुयान बनानेवाले इंजीनियरों ने खर्च की परवाह न करके नये नये ढंग के वायुयान बनाने आरम्भ किये जो शत्रु को अधिक से अधिक हानि पहुँचा सकें। बमवर्षकों को धरती पर से चलाई जानेवाली तोपों की मार और लड़ाकू वायुयानों के आक्रमण से भय रहता है। वायुयान-नाशक तोपों की मार कितनी भयंकर हो सकती है और इस युद्ध में कैसी भयंकर रही है इसका अनुमान साथ के चित्र से हो सकता है। इस चत्र में ब्रिटिश तोपों ने जमीन से आस- ान तक गोलों की एक चद्दर-सी तान दी । इस चद्दर में से होकर सही सलामत नकलना वायुयान के लिए असम्भव ही । किन्तु तोपों की यह मार जमीन से छ हजार गज ही ऊपर तक जा सकती । जो वायुयान आठ-दस मील ऊँचाई र उड़ते हैं उन्हें इन तोपों से भय नहीं हता। किन्तु इतनी ऊँचाई पर उड़ना ड़ा कठिन है क्योंकि उस ऊँचाई पर ायु का दबाव इतना कम हो जाता है कि धारण मनुष्य को साँस लेने में कठिनाई ती है और नाड़ियों के फट जाने का र रहता है। इसके सिवाय वहाँ वायुयान ा साधारण इंजिन भी काम नहीं कर कता। साधारण टंकियों में से पेट्रोल क तरह से निकल नहीं सकता। पेट्रोल नलों और वायुयान के पंखों पर बर्फ जाती है जिससे बड़ा भय रहता है। तएव इंजीनियर लोग ऊँचाई पर उड़ने य वायुयान बनाने लगे। उतनी ऊँचाई नाम स्ट्रेटस्फियर या परावायु है। ऐसे वायुयान बन गये हैं जो इस वायु में उड़ सकते हैं। इनमें वायुयान चालक और बममारों के बैठने की बन (कोठरी) ऐसी बनी होती है जिसमें ा का वही दबाव होता है जो पृथ्वी पर ा है और उसका तापमान भी मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त होता है। उसमें ताजी हवा के आने का भी प्रबन्ध होता है। टंकियों को भी इस ढंग से बनाया गया है कि उनको इस ऊँचाई पर कोई क्षति नहीं होती और बर्फ से पंखों को बचाने का भी प्रबन्ध कर दिया गया है। ये वायुयान परावायु में इतनी ऊँचाई पर उड़ते हैं कि धरती पर से दिखलाई नहीं पड़ते और न उनके इंजिनों की आवाज ही नीचे सुनाई पड़ती है। इनमें इतना पेट्रोल भरा जा सकता है कि वे कई हजार मील की यात्रा एक बार टंकी भर के कर आते हैं। लड़ाकू वायुयानों से बचने के लिए उनकी गति बहुत तेज होती है। उनकी यद्यपि ठीक ठीक चाल प्रकाशित नहीं की गई, फिर भी अनुमान किया जाता है कि वे लगभग चार सौ मील प्रतिघंटे की चाल से उड़ते हैं। इस कारण उन्हें लड़ाकू वायुयानों का भय नहीं रह जाता। किन्तु इसके लिए उनमें बड़े शक्तिशाली इंजिन लगाये जाते हैं। हमारी साधारण मोटरकार एक गैलन पेट्रोल में बीस मील चली जाती है किन्तु अनुमान किया जाता है कि इन वायुयानों को एक मील चलने के लिए तीस से पचास गैलन पेट्रोल की आवश्यकता पड़ती है।

परावायु में चलनेवाले वायुयानों में सबसे प्रसिद्ध 'फोर्ट्रेस' नामक वायुयान है। इसको अमरीकन इंजीनियरों ने बनाया था। किन्तु अब अँगरेजी शाही वायुसेना में इसका अच्छा प्रचार है। किन्तु अब इससे भी अधिक बड़े वायुयान बन गये हैं जिन्हें "सुपर फोर्ट्रेस" कहते हैं। ये आकार-चाल और अपनी मार में फोर्ट्रेस से भी बढ़कर हैं। हजारों मील दूर से इन्हीं सुपर फोर्ट्रेस वायुयानों ने टोकियो पर बमवर्षा की थी।

एक फोर्ट्रेस वायुयान को एक बार आक्रमण पर जाने में कितनी तैयारी करनी पड़ती है और उसके लिए कितने आदमियों की आवश्यकता होती है ? सामने फोर्ट्रेस वायुयान खड़ा है। बम चार हजार पाउंड से लेकर बारह हजार पाउंड तक तौल के होते हैं और ऐसे चार से आठ बम तक उस पर एक बार में लादे जा सकते हैं। बम मोटर-द्वारा ठेलों पर वायुयान के पास लाये जाते हैं। बमों के सामने ३२ आदमी दो पंक्तियों में खड़े हैं। इनका काम वायुयान को उड़ान के लिए तैयार करना और उसकी सफाई करना है। उड़ान के पहले वे उसके इंजिन और तोपों से लेकर छोटी से छोटी कील तक को जाँच लेते हैं क्योंकि यदि एक कील भी खराब हुई या ठीक नहीं लगी तो लाखों रुपये के वायुयान के नष्ट हो जाने का डर तो है ही, साथ में वीर सैनिकों के प्राणों का भी भय रहता है। इसलिए प्रत्येक वायुयान के लौटने पर उसकी अच्छी तरह देख-भाल होती है। इस प्रकार इस एक वायुयान को चलाने और उसकी देख-रेख के लिए ५१ व्यक्तियों की आवश्यकता होती है और इस संख्या में बम या पेट्रोल लानेवाले लोग सम्मिलित नहीं हैं।

फों० ४ सुपर फोर्ट्रेस वायुयान।

नीति रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशोंप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

साम्प्रदायिक एकता जरूरी क्यों है ?

राष्ट्रीय युद्ध-मोर्चें की सफलता का रहस्य यही है

लेखक, श्री सरयूप्रसाद पांडेय, विशारद

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चें को संगठित करने के लिये साम्प्रदायिक और सांस्कृतिक एकता आवश्यक है। हिन्दू-मुसलमानों तथा अन्य सम्प्रदायों की एकता ही से स्वाधीनता की प्राप्ति हो सकती है, इस महत्त्वपूर्ण लेख में इसी विषय का सुन्दर प्रतिपादन किया गया है।

हिन्दू-मुस्लिम एकता का प्रश्न भारत की भावी उन्नति के लिए मुख्य सोपान है। विशेषकर हिन्दुस्तान की राजनीतिक उन्नति हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य पर ही निर्भर है। यदि हम स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए आशावादी हैं तो पहले हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए आशावादी होना ही होगा। जो लोग ईमानदारी से ऐसी राजनीतिक एकता की प्राप्ति की आशा को प्रोत्साहन नहीं दे सकते, उन्हें राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की आशा न रखनी चाहिए। जब तक यह कमी एक रोग की भाँति भारतवर्ष में रहेगी, तब तक राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति हमारे लिए कठिन ही है।

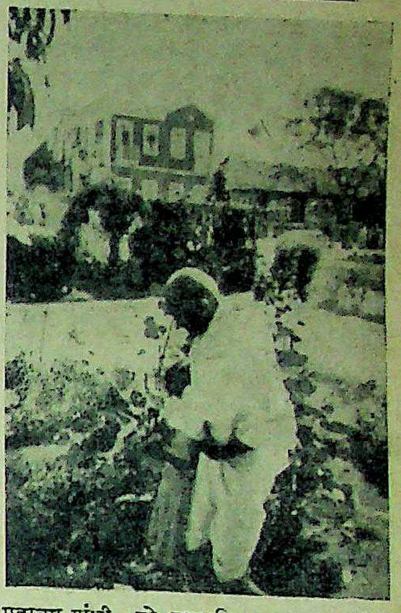

महात्मा गांधी, जो साम्राजिक एकता स्थापित करने के लिये सतत् प्रयत्नशील हैं।

सच पूछा जाय तो हिन्दुओं और मुसलमानों में सांस्कृतिक मतभेद नहीं है। यदि ऐसे अन्तर हैं भी तो वे हिन्दू-मुस्लिम एकता को असम्भव नहीं बना सकते। जो लोग सांस्कृतिक अन्तर को बहुत अधिक समझते हैं उनके लिए अपनी संस्कृति की परिभाषा करना या उसका विस्तारपूर्वक वर्णन करना कठिन और असम्भव हो जाता है। अकसर लोग संस्कृति को स्वीकृति अथवा मान्य सत्य समझते हैं। इसलिए ठीक ठीक यह जानना असम्भव हो जाता है कि हिन्दू संस्कृति तथा मुस्लिम संस्कृति से लोगों का क्या अभिप्राय है ? यदि सभ्यता या संस्कृति का अर्थ शिक्षा अथवा बौद्धिक विकास द्वारा प्राप्त की हुई उन्नति है तो, हम यह कहने के लिए तैयार हैं कि वर्तमान समय में हम हिन्दुस्तानियों का संस्कृति पर कोई दावा नहीं। हिन्दुस्तान की जनता का नब्बे प्रतिशत इस प्रकार के लोगों का है जो अपने भविष्य के विषय में विचार ही नहीं करते।

लोग इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों जनता शुष्क परिश्रम में लगी रहती है। उनको जीवन की साधारण आवश्यकताओं की प्राप्ति के लिए भूखों मरना पड़ता है। उनमें से अधिक संख्या में लोगों को यह पता ही नहीं कि विश्राम किसे कहते हैं। कुछ के लिए जो समय मिलता भी है वह नहीं के बराबर है। उनमें से कुछ जिनके पास थोड़ा समय है उनको यह शिक्षा नहीं दी जाती कि वे उसे अपने जीवन को खुशहाल बनाने में लगायें। दरिद्रता और बेकारी के कारण आत्महत्या की घटनायें साधारण-सी बात हो रही हैं। आबादी के नब्बे प्रतिशत लोग निरक्षर भट्टाचार्य हैं। इन परिस्थितियों में यहाँ की जनता से सम्बन्धित संस्कृति के विषय में विचार करना असम्भव है। जहाँ लोग बौद्धिक पूर्णता की प्राप्ति तथा सांस्कृतिक वृद्धि के लिए कोई उपाय नहीं करते और न समय देते हैं वहाँ उनकी संस्कृति का क्या कोई अस्तित्व हो सकता है ? साधारण ढंग पर वर्तमान काल में भारतीयों की, नाम के योग्य, कोई संस्कृति नहीं है। यदि संस्कृति से अभिप्राय पिछले हिन्दू और मुसलमान महापुरुषों की प्राचीन अथवा ऐतिहासिक संस्कृति से है तो हमें यह जान लेना चाहिए कि वह उन महान् पुरुषों के साथ सदा के लिए बिदा हो गई है।

सांस्कृतिक मतभेद के होते हुए भी राजनैतिक ढाँचे पर साम्प्रदायिक एकता

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिये

रजतपट पर बाणभट्ट की 'कादम्बरी'

शांता आपटे, बनमाला और पहाड़ी सान्याल का अभिनय

लेखक, श्री 'निलम'

'कादम्बरी' फिल्म में पहाड़ी सान्याल ने सुन्दर अभिनय किया है।

संस्कृत गद्य के सर्वश्रेष्ठ लेखक बाणभट्ट ने 'कादम्बरी' की रचना आज से कितनी ही शताब्दियों पूर्व सम्राट हर्ष के समय में की थी। बाणभट्ट की 'कादम्बरी' का महत्त्व साहित्यिक दृष्टि से कितना ऊँचा है यह कहने की आवश्यकता नहीं किन्तु 'कादम्बरी' चलचित्र को देखकर यदि हमें पूर्ण सन्तोष नहीं हुआ तो असन्तोष भी नहीं हुआ। लक्ष्मी प्रोड्क्स ने बड़े साहस से इस चलचित्र को निर्मित किया है। 'कादम्बरी' की कथा कुछ परिवर्तित करके चलचित्र में प्रस्तुत की गई है।

कपिञ्जल तथा पुण्डरीक, दो ब्रह्मचारी आकाश-मार्ग से महादेव की पूजा करने जा रहे थे। कपिञ्जल को अपनी शक्ति पर गर्व था। नीचे गन्धर्व नगर में कादम्बरी तथा महाश्वेता नामक दो गन्धर्व कन्यायें क्रीड़ा कर रही थीं। पुण्डरीक के हाथ के पुष्प नीचे गिर गये। कपिञ्जल को छोड़कर वह गन्धर्व नगर में उतर आया। वहाँ महाश्वेता से उसकी भेंट हुई और प्रथम दृष्टि-प्रेम प्रारम्भ हुआ। उनके प्रेमालाप में विघ्न कपिञ्जल ने आकर उत्पन्न कर दिया। महाश्वेता से क्रोधित होकर उसे शाप देने के लिए वह प्रस्तुत हो गया किन्तु पुण्डरीक के विनय करने पर शान्त हुआ और पुण्डरीक को अपने साथ लेकर वह चला गया। महाश्वेता और पुण्डरीक, दोनों में ही विरहाग्नि प्रज्वलित हो उठी। कादम्बरी के निकट चन्द्रमा ने आकर अपना प्रेमप्रदर्शित किया और सफल भी हुआ किन्तु कादम्बरी को यह ज्ञात न हो पाया कि उसका प्रेमी कौन है? चन्द्रमा कुछ ही क्षण पश्चात् चन्द्रलोक में चला गया। गन्धर्व-कुल देव-कामदेव की पूजा के समय महाश्वेता ने विरहावस्था में होने के कारण वीणा को विरह-स्वर में बजाया, इस पर कादम्बरी को महाश्वेता पर क्रोध आ गया और महाश्वेता के प्रति उसके प्रेम ने परिवर्तन प्राप्त किया।

पुण्डरीक विरहावस्था में मृत्यु-प्राय था; कपिञ्जल को दया आ गई और वह महाश्वेता को लेने गन्धर्वलोक में आया किन्तु वहाँ 'कादम्बरी' से उसका झगड़ा हो गया इस पर उसने कादम्बरी को शाप दे दिया कि वह अपने प्रेमी के प्रेम में तड़पे और उसका प्रेमी विरहाग्नि में भस्म होकर मृत्यु को प्राप्त हो। महाश्वेता ने बड़ी अनुनय-विनय की, इस पर कपिञ्जल ने कहा कि कादम्बरी का प्रेमी मरेगा अवश्य किन्तु फिर जीवित हो जायगा।

महाश्वेता पुण्डरीक को देखने के लिए वहाँ गई किन्तु उसके पहुँचने के पूर्व ही पुण्डरीक की मृत्यु हो गई। महाश्वेता ने सती होने का निश्चय किया किन्तु चिता पर से पुण्डरीक का शरीर चन्द्रमा उठा ले गया। अपने मित्र की स्त्री को सती होने में विघ्न देखकर कपिञ्जल को बड़ा क्रोध आया और वह तप के प्रभाव से चन्द्रलोक में जा पहुँचा। वहाँ चन्द्रमा से उसका झगड़ा हो गया जिसके फलस्वरूप कपिञ्जल ने चन्द्रमा को शाप दिया कि उसे मृत्युलोक प्राप्त हो जिस पर चन्द्रमा ने कपिञ्जल को शाप दिया कि वह भी पृथ्वी पर उसके साथ ही दुख भोगे। कपिञ्जल की क्रोधाग्नि भभक उठी। उसने चन्द्रमा को शाप दिया कि वह उसी समय टूट-टूट कर गिर पड़े। चन्द्रमा उसी क्षण नष्ट हो गया और चारों ओर हाहाकार मच गया।

महाश्वेता बन में एक कुटी बनाकर पुण्डरीक की प्रतिमा स्थापित करके वहाँ प्रेम-योग साधन करने लगी। कादम्बरी ने स्वप्न में चन्द्रमा के नष्ट होने का दृश्य देखा तो वह व्याकुल होकर महल से भाग निकली किन्तु महाश्वेता के समझाने पर वह फिर चली गई।

उज्जयिनी के सम्राट् के यहाँ पुत्ररूप में चन्द्रमा ने जन्म लिया और उसका नाम पड़ा चन्द्रापीड। पुण्डरीक ने मंत्री के यहाँ जन्म लिया और उसका नाम वैशम्पायन पड़ा और कपिञ्जल ने एक अश्व के रूप में सम्राट् के यहाँ स्थान प्राप्त किया। युवावस्था प्राप्त होने पर चन्द्रापीड़ तथा वैशम्पायन अश्व को लेकर देशाटन के लिए निकले। राह में चन्द्रापीड़ तथा वैशम्पायन का साथ छूट गया। वैशम्पायन को खोजता हुआ चन्द्रापीड़ उस स्थान पर जा पहुँचा जहाँ महाश्वेता प्रेम-योग साधन कर रही थी। महाश्वेता के आश्रम में चन्द्रापीड़ को आश्रय मिला और महाश्वेता की कथा भी ज्ञात हुई। कादम्बरी के विषय में भी चन्द्रापीड़ को ज्ञात हुआ और अनजाने में ही उसकी इच्छा कादम्बरी की ओर बढ़ी। महाश्वेता तथा चन्द्रापीड़ दूसरे दिवस गन्धर्व नगर गये वहाँ कादम्बरी तथा चन्द्रापीड़ में प्रेम हो गया। महाश्वेता लौट आई किन्तु रात्रि को अकस्मात वैशम्पायन वहाँ आ निकला और महाश्वेता पर मोहित हो गया। उसकी कुदृष्टि से बचने के हेतु महाश्वेता ने शाप दे दिया जिसके फलस्वरूप वह तोता हो गया। चन्द्रापीड़ वैशम्पायन की खोज में कादम्बरी को छोड़कर निकल पड़ा किन्तु कुछ पता न लगा। महाश्वेता ने जब स्वयं बताया तो चन्द्रापीड़ को विश्वास हो गया कि वैशम्पायन ही तोता हो गया। इस पर चन्द्रापीड़ को अत्यन्त दुःख हुआ और कादम्बरी के मिलने के पूर्व ही वह मर गया। इस प्रकार कपिञ्जल का शाप, कादम्बरी के लिये, पूर्ण हो गया। कादम्बरी को यह ज्ञात हुआ तो वह सती होने को प्रस्तुत हुई किन्तु एक देवी ने प्रकट होकर उसे सती होने को मना किया। अश्व भागा और जल में डूब गया और दूसरे ही क्षण कपिञ्जल का प्रादुर्भाव हुआ किन्तु अपने तप के प्रभाव से वह चन्द्रापीड़ की रक्षा न कर सका। महाश्वेता के आदेशानुसार अपने प्रेम को साक्षी रखते हुए कादम्बरी ने प्रार्थना की जिस पर चन्द्रापीड़ जीवित हो उठा। इस प्रकार तप से प्रेम का महत्त्व अधिक सिद्ध हुआ। इसी समय एक चाण्डाल कन्या एक तोते को लाई जो कि वैशम्पायन था। चन्द्रापीड़ के स्पर्श-मात्र से उसका उद्धार हो गया और दूसरे ही क्षण महाश्वेता तथा कादम्बरी ने देखा कि वैशम्पायन के स्थान पर पुण्डरीक है और चन्द्रापीड़ के स्थान पर चन्द्रमा है। इस प्रकार महाश्वेता ने अपने प्रेम-योग से अपने प्रेमी पुण्डरीक को प्राप्त किया और कादम्बरी ने भी पूर्व प्रेमी चन्द्रमा को प्राप्त किया और ब्रह्मचारी कपिञ्जल, जिसका तप चन्द्रापीड़ के प्राण न ला सका, जिसे कादम्बरी के प्रेम ने प्राप्त किया, ने चारों प्रेमियों को आशीर्वाद दिया। यही फिल्म का कथानक है।

अभिनय की दृष्टि से चित्र उल्लेखनीय है। वनमाला ने सर्वश्रेष्ठ अभिनय, महाश्वेता के रूप में किया है। शान्ता आपटे कादम्बरी के रूप में सफल हैं। पुरुष पात्रों का चुनाव पूर्णतया असफल है। पहाड़ी सान्याल, चन्द्रापीड़ के रूप में असफल हैं और वह एक मिट्टी के पुतले से प्रतीत होते हैं। जीवन कपिञ्जल के रूप में असफल हैं, जिस समय वे क्रोध तथा
रूप प्रकट करते हैं तो जनता को हँसी
जाती है दोनों अभिनेता पूर्णतया अस
हैं। हाँ, पुण्डरीक तथा वैशम्पायन के
में हरीश ने चेष्टा अवश्य की है किन्तु
भी उनका अभिनय सफल नहीं हो पाय

चित्र के गायन कुमारी कमल ने
हैं, कहा जाता है कि वास्तव में 'प्रदीप
यह गायन लिखे हैं जिन्हें इस नाम से प्र
किया गया है। जो कुछ भी हो
सामान्य हैं हिन्दी के साथ लगभग प्र
गाने में न्याय ही हुआ है जिसके लिए
लेखिका की प्रशंसा करते हैं। निर्दे
नन्दलाल यशवन्तलाल भी बधाई के
हैं, जिनके प्रयत्न से इस चित्र को सफ
प्राप्त हुई है।

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री शांता आपटे
कादम्बरी-फिल्म में कादम्बरी का अभिनय
सफलतापूर्वक किया है।

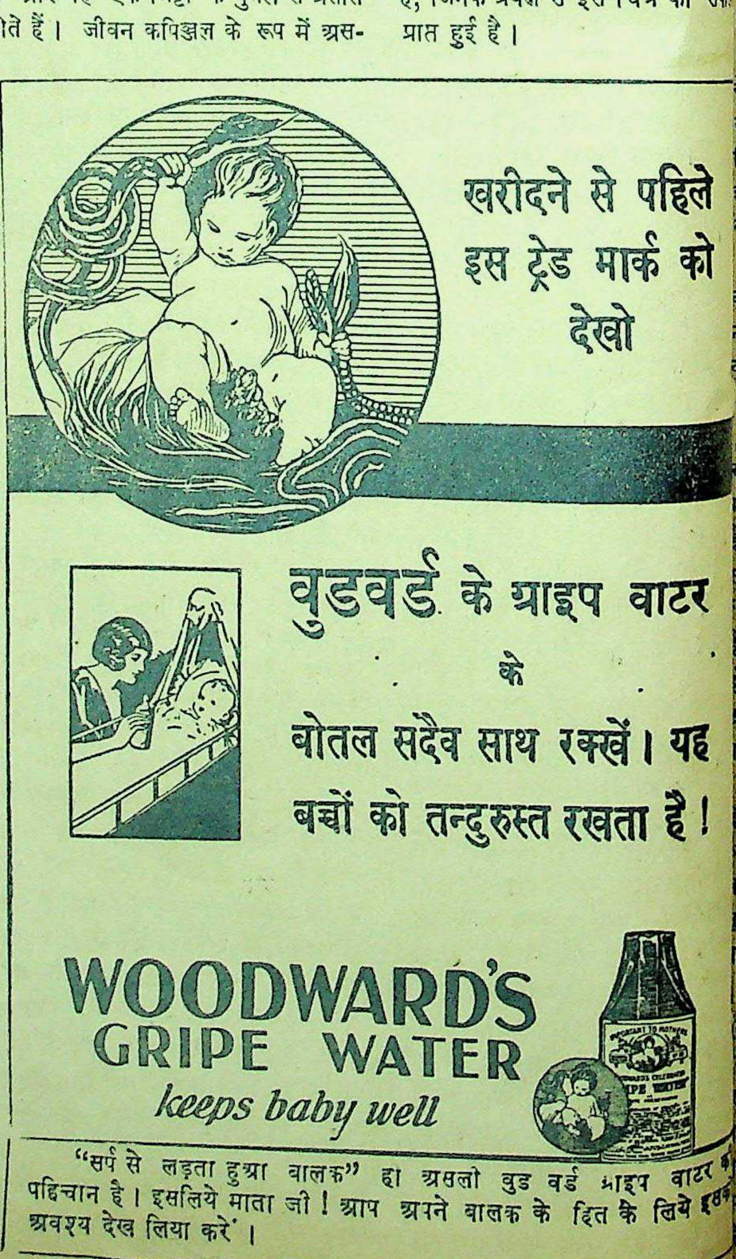

खरीदने से पहिले इस ट्रेड मार्क को देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर के बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" हा असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

I-WW-105—117

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

कातिल कौन है ?

लेखक, श्री निशीथकुमार राय, बी० ए०

हिन्दी में करुण प्रधान, आश्चर्यपूर्ण श्रेष्ठ जासूसी कहानियों का अभाव है। इस सुन्दर कहानी में एक बड़े आदमी की हत्या करने की मानसिक प्रकृति के सुन्दर चरित्र का चित्रण किया गया है। प्रोफेसर नायडू ने किस प्रकार इस गुप्त-हत्या का पता लगाया इसका सजीव और आकर्षक वर्णन इस कहानी में हुआ है, जो पठनीय तथा मनोरंजक है।

"डाक्टर साहब, आप सूरीलाल को बचाइए—मैं जीवन भर आपका गुलाम बना रहूँगा" अश्रुपूर्ण-स्वर में भूपेन्द्रनाथ बोले। उनके एकमात्र पुत्र सूरीलाल को 'प्लुरेसी' की बीमारी हो गई थी। बहुत इलाज करवाने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ। अन्त में चिकित्सकों ने यह राय दी कि आपरेशन करके हृद्यंत्र में जो पानी इकट्ठा हुआ है, उसे निकाल देने से लाभ हो सकता है। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया कि आपरेशन करने में मृत्यु का भय भी है। इसलिए आपरेशन करवाना या न करवाना उनकी इच्छा पर निर्भर है!

भूपेन्द्रनाथ कानपुर के बड़े बैरिस्टरों में से थे। जीवन में अर्थ एवं सम्मान दोनों उन्होंने बहुत प्राप्त किया था। सरकार ने भी सम्मान करके उनके बड़प्पन को स्वीकार कर लिया था। उन्होंने अपने एकमात्र पुत्र सूरीलाल को पढ़ा-लिखाकर बैरिस्टरी पास करवाया था। इरादा था कि हाईकोर्ट में प्रेक्टिस करायेंगे, मगर ईश्वर की कुछ और ही इच्छा थी। जिस साल सूरी विलायत से बैरिस्टर बनकर आया उसी साल उसकी माँ उसे पति के हवाले करके इस संसार से बिदा हो गई। उनकी मृत्यु से भूपेन्द्रनाथ अपने को बड़ा असहाय समझने लगे। लेकिन इस आघात को उन्होंने पुत्र का मुख देखकर सहन कर लिया। उन्होंने सूरी को लेकर एक नया संसार बसाने का प्रयत्न किया। पर विधाता को वह भी मंजूर नहीं था। सूरी को काल रोग ने पकड़ लिया। भूपेन्द्रनाथ की आँखों के सामने जैसे अँधेरा छा गया। पागलों की तरह उन्होंने सभी चिकित्सकों से सूरी का इलाज करवाया। वैद्य, होमियोपैथ, ऐलोपैथ, हकीम, किसी को बाकी न रक्खा। जिसने जो दवा दी वही ही सूरी को पिलाई गई। इस चिकित्सा-संकट से कोई सुफल हो चाहे न हो—सूरी मृत्यु की ओर द्रुत गति से बढ़ता गया।

अब तो भूपेन्द्रनाथ व्याकुल हो उठे। क्या करें, किसके पास जायँ? रात को नींद नहीं और दिन को चैन नहीं। हर वक्त यही फिक्र, क्या करूँ किसके पास जाऊँ।

याद आई पत्नी सुप्रभा की! मरते समय वह कह गई थी, "मैं तो सुख से मर रही हूँ, किसी बात की चिन्ता नहीं है, मगर सूरी को देखना।" आज वही सूरी शायद उन्हें छोड़ चला। मगर क्यों? 'प्लुरेसी' ऐसी कोई सख्त बीमारी तो नहीं जिससे कोई कभी अच्छा ही न होता ो? लोग 'तपेदिक की बीमारी से भी अच्छे हो जाते हैं—'प्लुरेसी' कौन-सी ड़ी बीमारी है?

इसी प्रकार अपने मन को वह सान्त्वना ते थे। शहर के ही नहीं, भारत के सर्वेष्ठ चिकित्सिक नन्दगोपाल नैथानी, रदाप्रसन्न पाइन एवं डाक्टर निजामुल्ला रीलाल की चिकित्सा कर रहे थे। भूपेन्द्राथ रुपया पानी की तरह बहा रहे थे।

अन्त में सूरी नहीं बचा। उसकी त्यु से भूपेन्द्रनाथ पागल हो उठे। न्हें गहरी चोट पहुँची। किन्तु समय सब कुछ सह लिया जाता है। भूपेन्द्रथ को देखकर भी लोगों ने यही चा कि समय का प्रभाव उनके मन को भावित किये है! अब भूपेन्द्रनाथ की तिभा और भी चमक उठी। अब तक उन्होंने केवल दीवानी के मुकदमों में अपने गुणों का परिचय दिया था, किन्तु लोगों को देखकर आश्चर्य हुआ कि पुत्र की मृत्यु के पश्चात् भूपेन्द्रनाथ फौजदारी के मुकदमों के भी सवश्रेष्ठ बैरिस्टर हो गये। कत्ल के मुकदमों में इस प्रकार होशियारी से वह बहस किया करते थे कि जज को मुलजिम को बरी करने में मजबूर होना पड़ता था।

पुलिस के अफसर लोग चिन्तित हो उठे। मानो शहर भर के खूनियों एवं कातिलों की हिम्मत जैसे बढ़ गई। वे आपस में कहा करते थे कि भूपेन्द्रनाथ के रहते हुए भला उन्हें फाँसी पर कौन लटका सकता है?

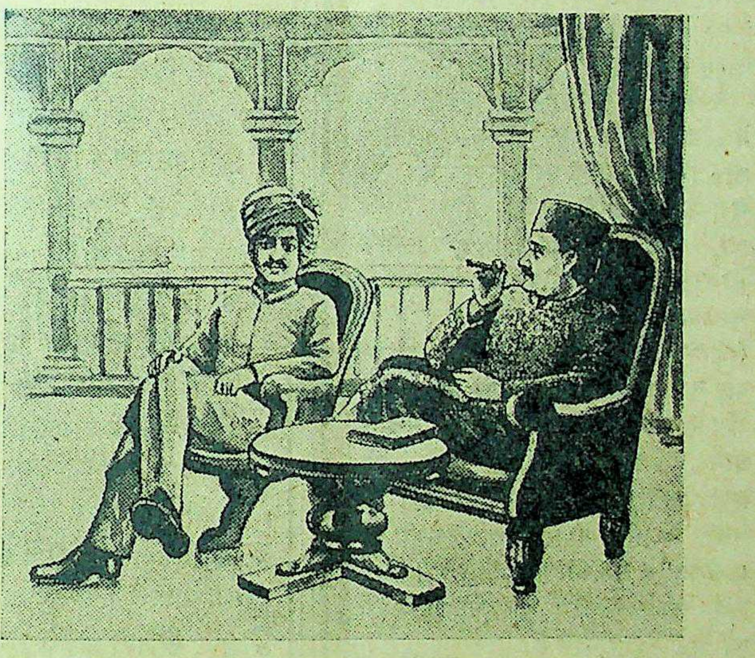

भूपेन्द्रनाथ डाक्टर वरदाप्रसन्न पाइन के घर पर उनसे बातें कर रहे हैं।

अभी थोड़े दिन की ही घटना है। मुकुन्दीलाल शर्राफ अपनी बीबी को मार डालने के अपराध में अभियुक्त बना था! उसके विरुद्ध यह अभियोग था कि उसने अपनी पत्नी सोमावती को रजाई में लपेटकर मिट्टी का तेल छिड़ककर जलाकर मार डाला है। मरने से पहले पुलिस में उसने बयान किया था कि मुकुन्दीलाल ने ही उसे मारा है। इससे भी पहले उसने पति के खिलाफ थाने में 'रिपोर्ट' की थी कि वह उसके प्रति दुर्व्यवहार करते हैं एवं मार डालने की धमकी देते हैं। इसका कारण उसने यह बतलाया था कि वह देखने में बदसूरत है, पति दूसरा विवाह करना चाहते हैं, मगर उसके जीते जी वह दूसरा विवाह करने से सुखी नहीं हो सकेंगे। इसीलिए वह उसे मार डालने पर तुले हुए हैं......

भूपेन्द्रनाथ अपने असाधारण तर्ककौशल एवं बुद्धि से जज साहब के हृदय में सन्देह पैदा [illegible] 'सन्देह की सुविधा' देते हुए जज साहब ने मुकुन्दीलाल को बरी कर दिया।

दूर दूर से लोग भूपेन्द्रनाथ को बुला ले जाते थे। उनका जीवन सरल था। लोग उन्हें आदर्श समझते थे। सभा-समितियों में पहले से ही वह योगदान दिया करते थे, अब और भी अधिक योग देने लगे। दानशीलता में भी वह प्रसिद्ध हो गये। ऐसा कोई स्कूल या कालेज शहर में नहीं रह गया जिसमें 'सूरी स्कालरशिप' या 'सूरी स्वर्णपदक' देने का प्रबन्ध न हो। कोई उनके घर से खाली हाथ कभी नहीं लौटता था।

भूपेन्द्र के एक टाँग में बचपन में ही चोट लगी थी। वह क्रिकेट खेला करते थे। उसी समय से चोट लगने के कारण बायाँ पाँव जरा लचकाकर चलते थे। छड़ी इस्तेमाल करने के कारण लोगों को विशेष कुछ मालूम नहीं होता था। सिगरेट वह नहीं पीते थे। बल्कि 'पाइप' का व्यवहार करते थे। यही उनकी विशेषतायें थीं।

* * *

"डाक्टर निजामुद्दीन नाम के सर्वश्रेष्ठ अस्त्र-चिकित्सक की मृत्यु उनके बैठनेवाले कमरे में हो गई। किसी ने उन्हें चाकू से कत्ल किया है।" उस दिन के संवादपत्रों के प्रथम पृष्ठ में बड़े हर्फों में यह संवाद प्रकाशित हुआ। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट तहकीकात के लिए गये, परन्तु कोई ऐसा सूत्र नहीं मिला जिससे वे मूल अपराधी का पता लगा सकते।

डाक्टर निजामुद्दीन के नौकरों को नजरबन्द करके सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब सीधे नाइडू साहब के पास गये। नाइडू साहब मनोविज्ञान के अध्यापक थे। इसके [illegible] भी कई कत्ल करनेवाले मूल अपराधियों को पकड़ने में उन्होंने ही मदद की थी। अमरीका में अपराधियों को पकड़ने में मनोवैज्ञानिकों की सहायता जरूरी समझी जाती है। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब भी इस उपाय का समर्थन करते थे एवं इसी कारण अपने मित्र प्रोफेसर नाइडू की सहायता इन मामलों में अकसर लिया करते थे।

नाइडू उनके साथ तुरन्त चले आये। सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब प्रोफेसर को लेकर जिस कमरे में डा० निजामुद्दीन पड़े थे, वहीं चले गये। डा० निजामुद्दीन की बड़ी भारी प्रैक्टिस थी। नगर के श्रेष्ठ चिकित्सकों में उनका उच्च स्थान था। लाखों रुपये वह कमाया करते थे। शहर के गोलमाल से दूर रहने के कारण इस निर्ज्जन स्थान में उन्होंने अपना मकान बनवाया था। घर में स्वयं, पत्नी, एक बड़ी बहन के सिवा चौथा कोई नहीं था। दो पुत्र, इकबाल एवं शमशाद दोनों विलायत में थे। एक डाक्टरी पढ़ रहा था और दूसरा इंजीनियरी।

उनकी पत्नी जकिया, उच्च शिक्षिता महिला थीं। विवाह के पहले ही वह 'सिनियर कैम्ब्रिज' का इम्तहान पास कर चुकी थीं। वह पर्दानशीन नहीं थीं। इसी वजह से नाइडू साहब के सामने निकलने में उन्हें संकोच नहीं हुआ। नाइडू ने देखा कि एक चालीस वर्ष की रमणी, चेहरे पर बुद्धि एवं दृढ़ता का स्पष्ट प्रकाश, शान्त गम्भीर चेहरे पर कुछ ऐसा भाव था जिससे उन पर लोगों की श्रद्धा स्वयं होती थी। वह उदास थीं! व्यथित दृष्टि से प्रोफेसर की ओर देखकर वह बोलीं, "प्रोफेसर साहब, आप अगर मेहरबानी करके जल्द से जल्द दो-चार प्रश्नों में जो कुछ जानना चाहते हैं, पूछ लें तो मैं आपकी एहसानमन्द रहूँगी।" उनकी आवाज आँसू से सिक्त थी। प्रोफेसर नाइडू सौजन्यपूर्वक स्निग्ध स्वर में बोले, "मिसेज निजामुद्दीन, मैं आपको अधिक देर तक प्रश्न करके परेशान खुद ही नहीं करना चाहता। सिर्फ दो-चार बातें पूछूँगा। इसके लिए आप एहसानमन्द क्यों रहेंगी?" थोड़ी देर तक चुप रहकर प्रोफेसर फिर बोले, "अच्छा मिसेस निजामुद्दीन, आपके शौहर से किसी की दुश्मनी थी?"

"जी नहीं।"

"उनकी मृत्यु के लिए आपके मन में किसी पर शक है?"

"जी नहीं। वे ऐसे थे कि लोग उन्हें बहुत चाहते थे। कभी किसी को किसी तरह की तकलीफ वह नहीं देते थे।"

"अच्छा उनके मित्रों का नाम बता सकतीं हैं आप?"

"मित्र तो, जो कोई उनके संपर्क में आते थे, वे ही हो जाते थे।"

"मित्र याने घनिष्ठ मित्र!"

"ऐसे तो दो-चार ही थे। मकसूद खाँ, हरिश्चन्द्र दुबे, राजबहादुर मिश्र एवं इमतियाज अली।"

"आश्चर्य, इतने भारी आदमी के घनिष्ठमित्रों में से एक भी विख्यात नहीं है! इनके बारे में तो तहकीकात करना बहुत जरूरी है। प्रोफेसर साहब! आपने अच्छा प्रश्न किया।" यह कहकर सुपरिन्टेन्डेंट साहब ने नोटबुक निकालकर नाम लिख लिया। पता पूछने पर मिसेज नाजिमुद्दीन बोलीं—मैं नहीं जानती हूँ।

इसके बाद सब लोग चले आये। जिस चाकू से उन्हें क़त्ल किया गया था उसके बेंट पर नं० १ लिखा हुआ था। इसका अर्थ तब तक स्पष्ट नहीं हुआ था, जब तक एक क़त्ल और नहीं हुआ। इस बार डा० वरदाप्रसंन्न पाइन की बारी आई। डा० पाइन की मृत्यु से शहर के लोग बड़े स्तंभित हो उठे। संवादपत्रों के सम्पादकों ने लिखा—"खेद है कि फिर हमारे बीच से एक विख्यात चिकित्सक को असमय में ही विदा लेना पड़ा। यह कातिल कौन है? क्या पुलिस के कर्म्मचारी लोग सो रहे हैं? नागरिकों का जीवन विपन्न करके जो निष्ठुर खेल पैशाचिक भाव से खेला जा रहा है इसे तुरन्त बन्द करके अपराधी को फाँसी पर लटकाना अत्यन्त आवश्यक है। आश्चर्य्य है कि कातिल चुन-चुन कर डाक्टरों को कत्ल कर रहे हैं। डा० निजामुद्दीन साहब को जिस चाकू से मारा गया था उसके बेंट पर १ नं० लिखा हुआ था; डा० पाइन को जिस चाकू से मारा गया है उस पर नं० २ लिखा हुआ है, इससे यह प्रतीत होता है कि आगे और भी कत्ल होंगे। और कातिल बड़े इतमिनान के साथ अपना काम किये जा रहा है। सुन रहे हैं प्रोफेसर नाइडू ने मामले को अपने हाथ में ले लिया है। अतः आशा है इस भयानक हत्याकांड की यहीं समाप्ति होगी।"

शहर भर में हलचल मच गई। लोग संध्या से ही घर-द्वार बन्द करके बैठने लगे। चारों ओर भय का संचार हो उठा।

उस दिन प्रो० नाइडू ने मृत व्यक्ति के कमरे से थोड़ी-सी मिट्टी या राख बड़े यत्न के साथ उठाकर एक कागज में मोड़कर पाकेट में रख ली। यह बात और किसी ने नहीं देखी थी।

दरबान से पूछने से पता चला कि मृत्यु के दिन साहब से मिलने के लिए केवल दो ही व्यक्ति आये थे। दोनों सन्देह के बाहर-वाले आदमी थे। प्रथम स्वयं पुलिस के डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल, दूसरे भूपेन्द्रनाथ। आई० जी० साहब अपने पुत्र के इलाज के बारे में किसी विशेष जानकारी के लिए आये थे। घर पर पत्नी के सामने आलोचना करना सम्भव नहीं था इसी वजह से वह स्वयं डाक्टर साहब के घर पधारे थे। दूसरे भूपेन्द्रनाथ को डाक्टर साहब ने अपना 'विल' बनाने के लिए बुलाया था और इन पर सन्देह होने का यथार्थ कारण भी तो नहीं था। क्योंकि खूनी या कातिल मोटर पर सवार होकर खुलमखुल्ला नहीं आते।

* * *

प्रो० नाइडू घर में बैठकर डाक्टर का पोर्टमार्टम रिपोर्ट पढ़ रहे थे। पढ़ते-पढ़ते उनका मुँह उज्ज्वल हो उठा। उसमें लिखा था—मृत व्यक्ति को पहले मादक द्रव्य से बेसुध करके, उसके पश्चात् चाकू मारा गया था। इधर पता लगाकर प्रो० नाइडू को मालूम हुआ था कि डाक्टर निजामुद्दीन सिगरेट के सिवा कोई नशा नहीं करते थे। उनके कमरे से जो राख प्रो० नाइडू ले आये थे वह तीन किस्म की थी। राख-परीक्षा करके उन्हें मालूम हुआ था कि एक तो 'पाइप' के तम्बाकू की थी। मुमकिन है—नहीं, अवश्य भूपेन्द्रनाथ की 'पाइप' की होगी? अन्य दोनों पुड़ियों की राख सिगरेट की थी। उनमें से एक में मादक द्रव्य का चिह्न प्रो० साहब ने ढूँढ निकाला था। अवश्य इस सिगरेट को डाक्टर निजामुद्दीन ने दिया होगा। तीसरा आई० जी० साहब की सिगरेट की राख थी।

बाग में जो पद-चिह्न थे उसकी भी उस दिन प्रो० नाइडू ने अच्छी तरह परीक्षा की थी। वे सीधे पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट के पास गये और उनको लेकर डा० नन्दगोपाल के घर पहुँचे। देखा कि वहाँ भूपेन्द्रनाथ भी थे। भूपेन्द्रनाथ अपने सोने के 'सिगरेट केस' में से सिगरेट निकालकर नन्दगोपाल को दे रहे थे। इन लोगों को देखकर भूपेन्द्रनाथ जरा चौंक उठे। उनके हाथ से सिगरेट गिर पड़ा। झुककर उसे वे उठाने ही जा रहे थे कि प्रो० नाइडू ने सिगरेट को ले लिया और सुपरिन्टेन्डेन्ट को भूपेन्द्र को गिरफ्तार करने के लिए इंगित किया।

नन्दगोपाल इस प्रकार की घटनाओं से विचलित हो उठे थे। उनको सम्बोधन करके प्रो० नाइडू बोले—"सर नन्दगोपाल, यह सिगरेट, जो मेरे हाथ में है, इसे अगर आप पीते और हम न आ पहुँचते तो आज आपकी हालत भी डा० निजामुद्दीन एवं पाइन की तरह होती। आप सिगरेट पीकर बेसुध हो जाते और तभी भूपेन्द्रनाथ, इस छुरे के सहारे आपको कत्ल करते"—यह कहकर उन्होंने भूपेन्द्रनाथ के पाकेट से एक छुरा निकाल कर टेबुल पर रख दिया। उस पर 'नं० ३' लिखा हुआ था।

थोड़ी देर चुप रहने के बाद प्रोफेसर ने फिर कहना शुरू किया—"उस दिन डा० निजामुद्दीन के घर मुझे कई सूत्र मिले थे। उन्हीं सूत्रों के सहारे यह भेद मैं हल कर सका हूँ। वे सूत्र हैं, विषाक्त सिगरेट की राख एवं टुकड़ा। बाद में मेरी धारणा का समर्थन करनेवाला था 'पोर्टमार्टम की रिपोर्ट'। जमीन पर पाँव का दाग। उस पाँव का मालिक एक टाँग पर जरा अधिक जोर देकर चला करता है। हलके पाँव के दाग के पास एक गोल दाग, याने छड़ी थी। जिस छुरे से कत्ल किया गया था, उसके बेंट में से दो-चार 'चाकलेट रंग का फलालेन' के सूत भी मुझे मिले थे। यहाँ याद रखना चाहिए भूपेन्द्रनाथ इसी रंग का 'सूट' पहना करते हैं।

भूपेन्द्र अपने को निर्दोष साबित करने के लिए आई० जी० साहब के मकान के बाहर चले आये थे एवं मोटर पर सवार होने में शायद इच्छापूर्वक देर की थी; तब तक आई० जी० चले गये। आई० जी० के मन में यह सन्देह बिलकुल नहीं हुआ कि भूपेन्द्र घर लौटने के पहले एक बार फिर डा० निजामुद्दीन के पास गये थे। इसका प्रमाण हमें पाँव के दाग देखने से मिलता है। पूछने से भूपेन्द्र ने मुझसे कहा था कि वे आई० जी० साहब के साथ ही साथ घर लौटे थे। उनको इस प्रकार झूठ कहते सुनकर मेरा सन्देह दृढ़ हुआ। फिर डा० निजामुद्दीन के पाकेट से एक पत्र मिलने पर सब सन्देह दूर हो गया। यह कह कर प्रो० साहब ने एक पत्र निकाला। उस पर लिखा था—

माननीय भूपेन्द्रनाथ, आपके कहने के अनुसार 'उइल' करना ही मैं ठीक समझता हूँ। अतः आप अगर मेरे घर आकर इसके बारे......।

यह पत्र डाक्टर निजामुद्दीन ने किसी कारण असमात रखकर टेलीफून में भूपेन्द्रनाथ को जो कहना था उनसे कहा था। मगर पत्र से यह पता लगता है कि भूपेन्द्रनाथ ने ही डाक्टर निजामुद्दीन को उन्हें बुलाने का बहाना बताया था ताकि काम पूरा करने का मौका मिले।

मगर मैंने फिर भी भूपेन्द्र को गिरफ़्तार नहीं किया। क्योंकि मैं तब तक हाथों हाथ उन्हें पकड़ नहीं सका था। मैंने इसके बाद हत्या का कारण अनुसन्धान करना शुरू किया। पता लगा कि मृतक डाक्टर निजामुद्दीन तथा डाक्टर पाइन एवं डाक्टर नन्दगोपाल, सूरीलाल—भूपेन्द्र के बेटे का आपरेशन किया था और थोड़े दिन बाद सूरीलाल मर गया था। उसे मरना था ही। मगर भूपेन्द्र के मन में तभी से गलत धारणा बँध गई कि इन डाक्टरों ने ही सूरी को मार डाला है। वह विद्वान् एवं बुद्धिमान् थे, मगर न किस तरह उनके दिल में यह बात गई थी। धीरे धीरे यह बात वह भूल परन्तु उनके मन में यह बात समाई

मैं जानता था कि इस बार डा० गोपाल की बारी है। इसी लिए मैं सीधे यहाँ आ पहुँचा। इस समय हो गई है। भूपेन्द्रनाथ पूर्णरूप से चुके थे।

"दो अमूल्य जीवन इस तरह बाद हो गया।" प्रो० नाइडू ने दीर्घश्वास त्याग किया।

"आपको धन्यवाद देकर आपके को नीचा नहीं करूँगा प्रोफेसर आपका एहसान मैं कभी नहीं भू आज आपने मेरी प्राणरक्षा की।" नन्दगोपाल ने कहा।

फोन : कल :—१४६४ तथा १४६५ तार :—"ARYOPLANTS"

आर्य्यन पेपर मिल्स, लिमिटे

रजिस्टर्ड आफ़िस : १२ चौरंघी, कलकत्ता

कारखाना तथा बगीचा : माहूदा (बी० यन० आर०)

—कुछ विशेषतायें—

- (१) कम्पनी स्वयम् अपने खेतों में सवाई घास बो रही है। (२) कारखान कोयले के क्षेत्र तथा नदी के निकट है। (३) कारखाने के एकदम बगल रेलवे साइडिंग है। इससे उत्पादन के खर्च में बहुत कमी होगी।
- डाइरेक्टर्स, मैनेजिंग एजेन्ट, उनके दोस्तों तथा रिश्तेदारों ने दस लाख का शेयर खरीदा है।
- मैनेजिंग एजेन्ट जब तक कम से कम ५ प्रतिशत साधारण हिस्से पर त ६ प्रतिशत असाधारण हिस्से पर इनकमटैक्स रहित डेविडेन्ड न दे देंगे तक कोई भी पारिश्रमिक न लेंगे।
- असाधारण शेयर लेनेवाले व्यक्ति जिस दिन शेयर की पूरी रकम दे दें उसी दिन से इनकमटैक्स रहित ६ प्रतिशत निर्धारित डेविडेन्ड के अधिका हो जायँगे।
- सवाई घास, कार्ड बोर्ड, स्ट्रा बोर्ड तथा अन्य पल्प की बिक्री से अच्छे ला की आशा है।
- शेयर लेनेवाले ग्राहकों को साधारण किश्तों में शेयर का रुपया देने की सुवि दी जाती है।
- इँगलैण्ड से लाकर आधुनिक रंग ढंग की मशीन लगाने के लिए आवश्य रुपया पेशगी दे दिया गया है।

बचे हुए साधारण तथा असाधारण हिस्से बेचने के लिए एजेन्टों की आवश्यकता है

पूँजी के इस प्रश्न पर केन्द्रीय सरकार की स्वीकृति इस शर्त पर प्राप्त क ली जा चुकी है कि उतनी पूँजी, जो उस सरकार की दृष्टि में किसी भा अनिश्चित तिथि तक उचित रूप से बढ़ाई नहीं जा सकती वह ऐसी निर्धारि जमानतों में लगाई जाय और बराबर लगी रहे जो तब तक नहीं मुक्त जायगी जब तक कि केन्द्रीय सरकार (यदि किसी देशी सरकार के हि का प्रश्न हो तो सम्राट् के प्रतिनिधि की राय से) इस बात से सन्तुष्ट न हो ज कि ऐसे उद्देश्यों के लिए तदनुरूप अदायगी का समय आ गया है जो नियन्त्रण या रोक के उस समय के प्रचलित नियम के अनुरूप हों, जब इस प्रकार की मुक्ति की प्रार्थना की गई हो। यह अच्छी तरह समझ ले चाहिए कि इस स्वीकृति को देने में भारत-सरकार किसी भी आर्थिक योज की सुदृढ़ता या किसी बयान की सच्चाई या उनके सम्बन्ध में प्रगट कि गये विचारों की जिम्मेदारी नहीं लेती।

I-W 105—117

कोशलगढ़ का कैदी

दिलचस्प जासूसी उपन्यास

[पिछली कहानी—बंगाल में राय-परिवार बड़ा प्रसिद्ध था। इस परिवार में शिवशङ्कर राय तथा गौरीशङ्कर राय दोनों भाइयों ने अच्छी ख्याति पाई थी। एकाएक एक दिन कोशलगढ़ के सरदार धनंजय खत्री, लापता राजकुमार शङ्करसिंह की खोज में उधर आ निकले। गौरीशङ्कर बाबू का चेहरा राजकुमार शङ्करसिंह से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। जब धनंजय खत्री को राजकुमार का पता न चला तब उन्होंने गौरीशङ्कर बाबू को इस बात के लिये राजी किया कि वह अपने को शङ्करसिंह बतायें। धनंजय खत्री गौरीशङ्कर बाबू को घोड़े पर लेकर गुप्त रूप से कोशलगढ़ पहुँच गये। राज्य में प्रसिद्धि हो गई कि लापता राजकुमार शङ्करसिंह वापस आ गये। राजकुमार शंकरसिंह के भाई उदितसिंह ने, जो पास ही झड़वा राज्य में रहता था, शंकरसिंह को कैद करवाया था। वह कोशलगढ़ के वर्तमान मन्त्रियों का विरोधी था। राजमहल में गौरीशङ्कर बाबू ने नकली लापता राजकुमार का अभिनय प्रारम्भ किया और समय पर उनका राजतिलक भी हो गया। गौरीशङ्कर बाबू एक दिन नौका-विहार के लिये गये और एक दुर्घटना से बचकर वह फिर कोशलगढ़ पहुँच गये। वहाँ आपस में मंत्रणा हुई। रनिवास में भी काफ़ी चहल-पहल हुई। महारानी कस्तूरीबाई और उनकी सहेली चम्पा में भी राजा के सम्बन्ध में बड़ी आकर्षक वार्ता हुई। एक दिन गौरी बाबू वेष बदलकर नगर घूमने निकले और वहाँ उन्हें एक भेद का पता चल गया। गौरी बाबू को यह ज्ञात हो गया कि उदितसिंह ने शंकरसिंह को कैद कर रखा है। वह उनके छुड़ाने का उपाय करने लगे। वह शंकरसिंह से गुफ़ा में जाकर मिले और तब………।

(गतांक के आगे)

कमरे के बीच खड़ी होकर उसने एक बार विचार किया कि किसी को साथ ले लूँ। लेकिन कृष्णा को छोड़कर और दूसरा कोई ले जाने योग्य नहीं है। पर कृष्णा को इस समय बुलाना सम्भव नहीं है—किन्तु जरूरत क्या है? वह अकेली ही जायगी।

कस्तूरीबाई ने ओढ़ना ओढ़कर धीरे से दरवाजा खोला। इधर कोई भी न था। उस बड़े महल के ऊपरी भाग में सब लोग आनन्द में मग्न थे। कई एक दासियाँ जो रानी की सेवा में नियुक्त थीं, वे भी रानी के शयनागार में जाने के बाद चली गई थीं। दबे पाँव कस्तूरीबाई नीचे उतरी।

वह आदमी जँगले के नीचे कस्तूरीबाई की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने उन्हें एक बार अच्छी तरह देखकर सिर नीचा करके अभिवादन किया। कस्तूरीबाई उसको देखकर पहचान न सकी, क्योंकि उसने रुद्ररूप को इसके पहले कभी देखा ही न था।

उस आदमी ने अदब के साथ कहा—इस ओर रानी जी, इस ओर...

कम्पित-हृदय कस्तूरीबाई उसका अनुसरण करती हुई घाट की ओर चली।

* * *

रात समाप्त हो रही थी।

गौरी बाबू और प्रह्लाद आमने-सामने बैठे थे। बीच में लालटेन थी। गौरी बाबू निश्चिन्त बैठे थे, किन्तु उनके शरीर को देखने से जान पड़ता था कि, उसमें बिना धुएँ की अग्नि जल रही है। यह किसी भी क्षण बारूद की तरह प्रचंड वेग से चारों ओर आग लगा देगी।

कस्तूरी! ये नरक की कीचड़ के कीड़े कस्तूरीबाई को बलपूर्वक हरण करने के लिए गये हैं! प्रह्लाद के मुँह से पहले ये बातें सुनकर इन लोगों की धृष्टता पर गौरी बाबू कुछ देर तक किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। पहले उनको विश्वास ही नहीं हुआ। लेकिन यह असम्भव भी न था। उदितसिंह मरने-मारने पर उतारू हो गया था। जो अपने बड़े भाई को अन्धकूप में डालकर राजसिंहासन को लेने का प्रयत्न कर सकता है उसके लिए असाध्य कुछ भी नहीं है। कोशलगढ़ की राजगद्दी से निराश होकर अब वह झड़वा पर अधिकार करने का उपाय कर रहा है। वह बलपूर्वक कस्तूरीबाई से विवाह करेगा। हिन्दू का विवाह है। एक बार हो जाने पर छोड़ा नहीं जा सकता। तब झड़वा पर उदितसिंह के दावे को कौन इनकार करेगा? कैसा नीच स्वार्थ! कैसी शैतानी! यह मयूरवाहन की ही साजिश होगी।

प्रह्लाद ने अवरुद्ध कंठ से मौन भंग करते हुए कहा—मयूरवाहन के लौटने में अभी शायद देर है। इसी बीच में राजा को...।

गौरी बाबू ने लाल-लाल आँखें ऊपर की ओर कीं, किन्तु कहा कुछ नहीं। प्रह्लाद ने देखा कि उनके ज्वलन्त नेत्रों की दृष्टि में न तो राजा का स्थान है और न संसार में और किसी का, केवल है तो...।

थोड़ी देर ठहरकर प्रह्लाद ने कहा—उधर किले के सामने आपके सिपाही अब निश्चय पहुँच गये होंगे। अब किले के फाटक को खोलने की चेष्टा न की जाय? दो सन्तरी पहरे पर हैं। मैं उन्हें भुलावा देकर वहाँ से हटा सकता हूँ। आपके आदमियों के किसी प्रकार भीतर आ जाने से...।

"नहीं, वह सब बाद में होगा।"

वहाँ थोड़ी देर तक फिर सन्नाटा छा गया। लालटेन की बत्ती काँप रही थी। रात के अन्तिम पहर की ठंडी वायु ने जोर से बहना आरम्भ किया था।

अचानक प्रह्लाद बिजली लगने के समान चौंककर खड़ा हो गया और उत्तेजित होकर बोला—वे लोग आ रहे हैं, डाँड़ों की आवाज सुनाई पड़ रही है। आप बत्ती की रोशनी से दूर हट जाइए। जैसा तय हुआ है वैसा ही कीजिएगा, ठीक मौके पर मैं आपको इशारा कर दूँगा।

गौरी बाबू भी अकचकाकर उठ खड़े हुए। जमीन पर पड़ा हुआ छुरा उनके पैर में लग गया। वे झट उसको हाथ में उठा कर सुरंग में छिप गये। प्रह्लाद लालटेन लेकर गुप्त द्वार के मुँह पर खड़ा हो गया।

डाँड़ों की छपछप धीमी आवाज और मयूरवाहन की हँसी सुनाई पड़ी। नाव दरवाजे के पास आकर रुक गई।

"प्रह्लाद, रस्सी पकड़ो।"

मयूरवाहन कूदकर प्रह्लाद के पास आकर खड़ा हो गया और नाव की ओर घूमकर बोला—पहले रानी जी को उतारो। होशियार स्वरूपदास, सब लोग पानी में न गिर जाना। धीरे से रानी जी, घबड़ाइए मत, कोई डर नहीं है, हम सब आपके सेवक हैं—कहकर वह फिर हँस पड़ा।

एक नारीमूर्त्ति नाव से उतारी गई। प्रह्लाद और मयूरवाहन ने उसे लाकर सुरंग में एक ओर बैठा दिया। फिर मयूरवाहन ने स्वरूपदास से कहा—अब तुम भी उतर आओ। नाव ऊपर उठानी होगी।

स्वरूपदास ने कातर स्वर से कहा—दोनों डाँड़ें पानी में गिरकर न मालूम कहाँ बह गये?

मयूरवाहन ने हँसकर कहा—जाने दो, अब डाँड़ों की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रह्लाद तुम और मैं अब रानी जी को...

उनकी बातें समाप्त भी न होने पाई थीं कि पहले के राय-मशविरे की परवाह न कर प्रह्लाद के इशारे को पाने की प्रतीक्षा न करके गौरी बाबू अँधेरे में से निकलकर अकस्मात् उन दोनों के बीच में आ पड़े। कस्तूरीबाई के ठीक पास ही प्रह्लाद खड़ा था। गौरी बाबू का धक्का पहले उसी को लगा। प्रह्लाद लड़खड़ाकर मयूरवाहन के ऊपर जा गिर पड़ा। मयूरवाहन ने भी इस धक्के से लालटेन को लुढ़काता हुआ पानी के किनारे तक पहुँच कर किसी तरह अपने को सँभाल लिया। तत्पश्चात् वह क्रुद्ध और विस्मित होकर लौटा। उसका हृदय पत्थर के समान क्रूर हो गया।

दृश्य नाटक का-सा था। फ़र्श पर लालटेन में पीली बत्ती टिमटिमा रही थी। थोड़ी दूर पर प्रह्लाद खड़े होने की चेष्टा करते हुए घुटने टेक कर मयूरवाहन की ओर देख रहा था और उसके पीछे जमीन पर पड़ी हुई उस अचेत स्त्री के दोनों ओर पैर रखकर विशाल दैत्य की तरह गौरी बाबू खड़े थे। उनकी आँखें अग्नि की तरह जल रही थीं और उनके हाथ में एक टेढ़ा छुरा चमक रहा था।

मयूरवाहन की आँखें संकुचित होकर दो प्रकाश की बिन्दुओं में परिणत हो गईं। उसके बाद वह खिलखिलाकर हँस पड़ा और कमर से तलवार निकालकर एकाएक

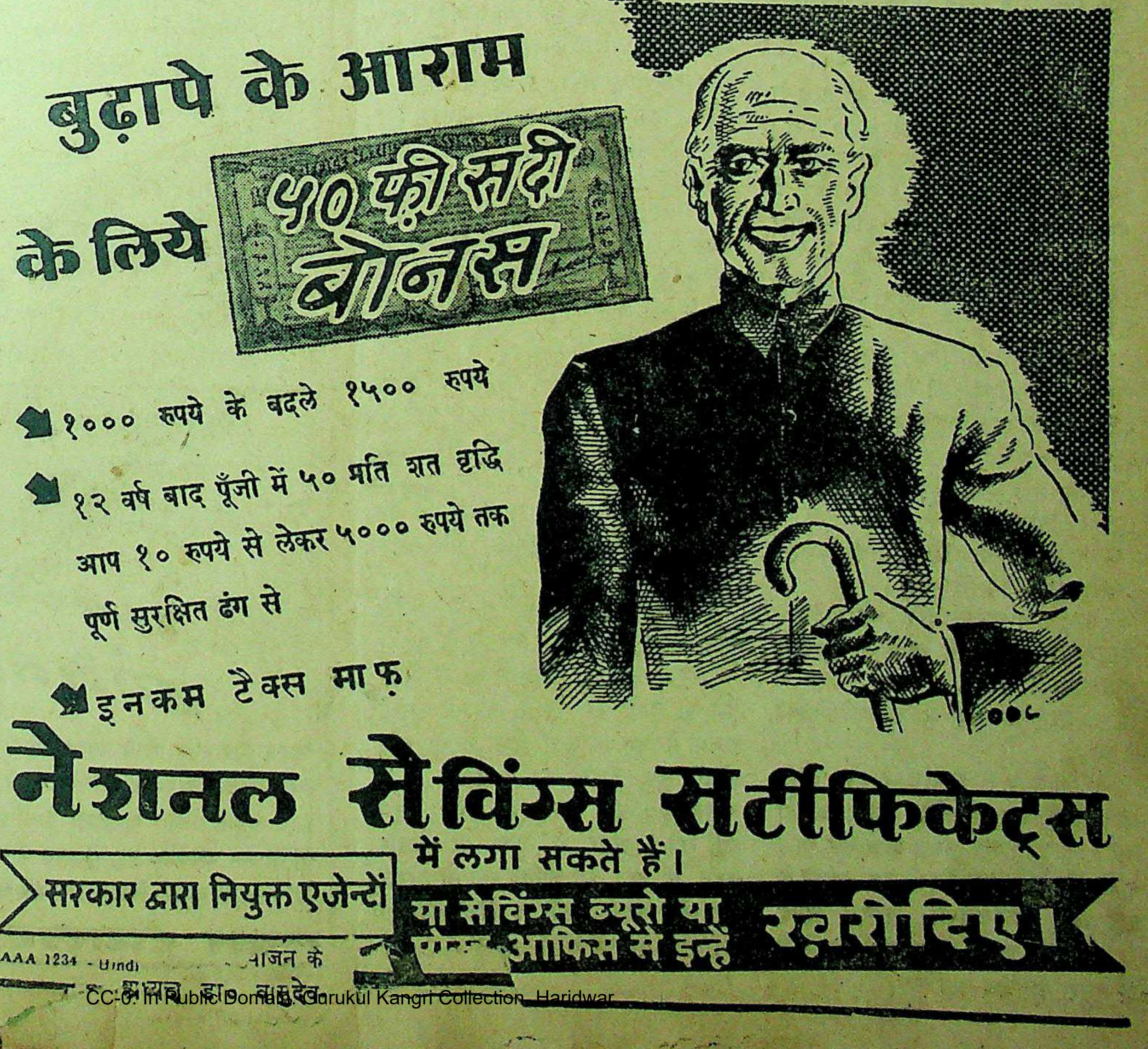
बुढ़ापे के आराम के लिये ५० फ़ी सदी बोनस
१००० रुपये के बदले १५०० रुपये
१२ वर्ष बाद पूँजी में ५० प्रति शत वृद्धि
आप १० रुपये से लेकर ५००० रुपये तक
पूर्ण सुरक्षित ढंग से
इनकम टैक्स माफ़
नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स
में लगा सकते हैं।
सरकार द्वारा नियुक्त एजेन्टों या सेविंग्स ब्यूरो या पोस्ट आफिस से इन्हें ख़रीदिए।
AAA 1234 - Hindi
नाजन के

बोल उठा,—अरे बंगाली नटवा, तू यहाँ तक आ गया ?

मयूरवाहन की पैशाचिक हँसी गुफा में गूँजने लगी। वह नंगी तलवार लिये एक कदम आगे बढ़ आया।

"शेर की माँद में सिर डाल दिया ! हा, हा, हा, एक बंगाली नटवा, आज तुझे कौन बचायेगा ?"

प्रह्लाद डर से काँप रहा था। उसने देखा कि गौरी बाबू के हाथ में केवल छुरा है और कोई दूसरा हथियार नहीं है।

पीछे से स्वरूपदास करुण स्वर से बोल उठा—आपने रस्सी छोड़ क्यों दी, नौका बहती जा रही है।

उसकी बात पर किसी ने ध्यान न दिया। मयूरवाहन गौरी बाबू की ओर एक कदम और बढ़ आया।

प्रह्लाद कूद कर खड़ा हो गया और विकृत स्वर से चिल्ला उठा—महाराज, भाग जाइए।

मयूरवाहन की साँप की तरह आँखें प्रह्लाद की ओर घूम गईं—तूने ही बेईमानी की है, पहले तुझे ही खत्म करता हूँ।

प्रह्लाद मयूरवाहन की तलवार की पहुँच के अंदर नहीं था। मयूरवाहन ने उसकी ओर बढ़ कर तलवार उठाई।

इतने में प्रह्लाद के कान के पास से सनसनाता हुआ कोई शब्द निकल गया, मानो एक प्रकाश की रेखा उसके पीछे से आकर मयूरवाहन की पसली में घुस गई।

मयूरवाहन पत्थर की मूर्त्ति की तरह कुछ देर तक खड़ा रह गया। धीरे धीरे उसका चेहरा पीला पड़ गया। उसके बाद उसके हाथ से नंगी तलवार झनझनाती हुई गिर पड़ी।

परन्तु मयूरवाहन नहीं गिरा, थोड़ा झुककर वह फिर खड़ा हो गया। उसने अपनी छाती में धँसे हुए छुरे का दस्ता पकड़कर उसे खींच निकालने की व्यर्थ चेष्टा की। उसका सिर सामने की ओर झुक गया, दृष्टि म्लान हो गई। लड़खड़ाते हुए गुफा के किनारे तक पहुँच कर, उसने अपने को खड़ा रखने की प्रबल चेष्टा की, परन्तु न रख सका। मतवाले की तरह दो एक बार हिलकर वह पानी में जा गिरा।

प्रह्लाद अब तक पत्थर की मूर्त्ति की तरह चुपचाप खड़ा था। अब होश में आकर उसने आश्चर्य-भरी दृष्टि से गौरी बाबू की ओर देखा। गौरी बाबू वैसे ही खड़े थे, केवल उनके हाथ में छुरा नहीं था।

प्रह्लाद जल के पास जाकर झाँकने लगा। मयूरवाहन की लाश दिखाई न पड़ी—शायद जल में डूब गई थी। नौका भी कहीं बह गई थी। मोटे स्वरूपदास को तैरना नहीं आता था, उसके साथी की भी हालत वैसी ही थी।

"प्रह्लाद, लालटेन उठाओ—रास्ता बताकर मुझे भीतर ले चलो।

प्रह्लाद ने घूमकर देखा, गौरी बाबू ने कस्तूरीबाई को दोनों हाथों से छाती के पास उठा लिया है।

रात्रि समाप्त होने में अधिक विलम्ब न था।

किले के ऊपर के अंश में एक छोटे-से कमरे के अन्दर वे लोग जाकर खड़े हो गये। शायद वह कमरा अस्त्रागार था। चारों ओर की दीवारों पर उस जमाने के अस्त्र-शस्त्र, ढाल-तलवार, बल्लम आदि सजे हुए थे। इसके सिवा उस कमरे में कोई दूसरा असबाब नहीं था।

गौरी बाबू कस्तूरीबाई को उसी प्रकार, अपने हाथ में लिये हुए कमरे के बीच में खड़े थे। दरवाजे के पास लालटेन रखकर प्रह्लाद बाहर ही रहा।

उस लालटेन के अस्पष्ट प्रकाश से दोनों अलग नहीं प्रतीत होते थे। कस्तूरीबाई अपनी दोनों भुजलताओं से गौरी बाबू के गले में लिपटी हुई थी। उसका मुख गौरी बाबू के नग्न वक्षस्थल पर झुक गया था। गौरी बाबू के हाथों ने भी कस्तूरीबाई को ऐसा बाँध रखा था मानो वह बंधन इस जन्म में खुलेगा ही नहीं।

दोनों मौन थे, केवल गौरी बाबू बीच बीच में व्यथित स्वर से बोल रहे थे—कस्तूरी—कस्तूरी—कस्तूरी।

कस्तूरी कुछ बोली नहीं। क्या वह बेहोश थी ? या अपने प्रियतम के स्पर्श के आनन्द में डूब गई थी ?

रानी—गौरी बाबू ने उसके कानों के पास अपना मुख झुकाकर पुकारा।

अब की कस्तूरीबाई की आँखें खुल गईं। उसने रुँधी हुई आवाज से कहा—राजा।

गौरी बाबू ने म्लान हँसी हँसने की चेष्टा करके कहा—मैं राजा नहीं हूँ। तुम्हें तो मैंने सभी बतला दिया है कस्तूरी, मैं मामूली परदेशी हूँ। अब मुझे छोड़ दो। मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करके चला जाऊँ।

कस्तूरीबाई के हाथ शिथिल होकर गौरी बाबू के गले से धीरे-धीरे अलग हो गये। गौरी बाबू ने भी उसे जमीन पर खड़ी कर दिया। वह जरा पीछे हट गई, परन्तु वैसी ही धीरता के साथ बोली—चले जाओगे ?

इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। कस्तूरी, तुम कोशलगढ़ की वाग्दत्ता रानी हो।

"अच्छा, जाओ। मेरे लिए किस्ता तैयार है।"

"नहीं, नहीं, कस्तूरी, मैं मर जाऊँ तो कोई हानि नहीं, परन्तु तुम—"

"मैं कोशलगढ़ की रानी होने के लिए जीती रहूँगी ?"—एक अति क्षीण हँसी की रेखा कस्तूरी के होंठों पर दिखाई पड़ी—"तुम जाओ, जाकर अपना कर्त्तव्य पूरा करो। मैं भी अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह जानती हूँ।"

"कस्तूरी, प्रेम के सामने तुम लोग अपने प्राणों को तुच्छ समझती हो, यह मैं जानता हूँ। परन्तु अपनी इच्छा से मौत के मुँह में क्यों जाती हो ? अगर हम दोनों ही जीवित रहें तो दूर ही से एक-दूसरे को स्मरण कर आनन्द का अनुभव करते रहेंगे। तुम कोशलगढ़ की रानी क्यों न हो जाओ, तुम्हारा प्रेम तो मेरे ऊपर जीवन भर अटूट रहेगा।"

"राजा, अगर तुम न मिले तो मेरे लिए किस्ता के जल के सिवाय और कोई आश्रय नहीं है।"

कस्तूरी की दृढ़ता के सामने, गौरी बाबू की सारी युक्तियाँ निष्फल हो गईं। वे मिथ्या युक्तियों से अपने को ही धोखा देने की चेष्टा कर रहे थे, यह भी उनकी समझ में आ गया। एक गहरी साँस छोड़ते हुए उन्होंने कहा—अच्छा, तो मैं चलता हूँ। रात खतम हो गई है। तुम यहीं रहो। अगर मैं राजा का उद्धार करने के बाद भी जीवित रहा तो तुम्हारे पास लौट आऊँगा और न लौट सका तो उस समय तुम जो चाहो, [illegible]

र टेलीफून में

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बेंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

फ़िल्मस्टारों की तरह त्वचा की रक्षा कीजिये

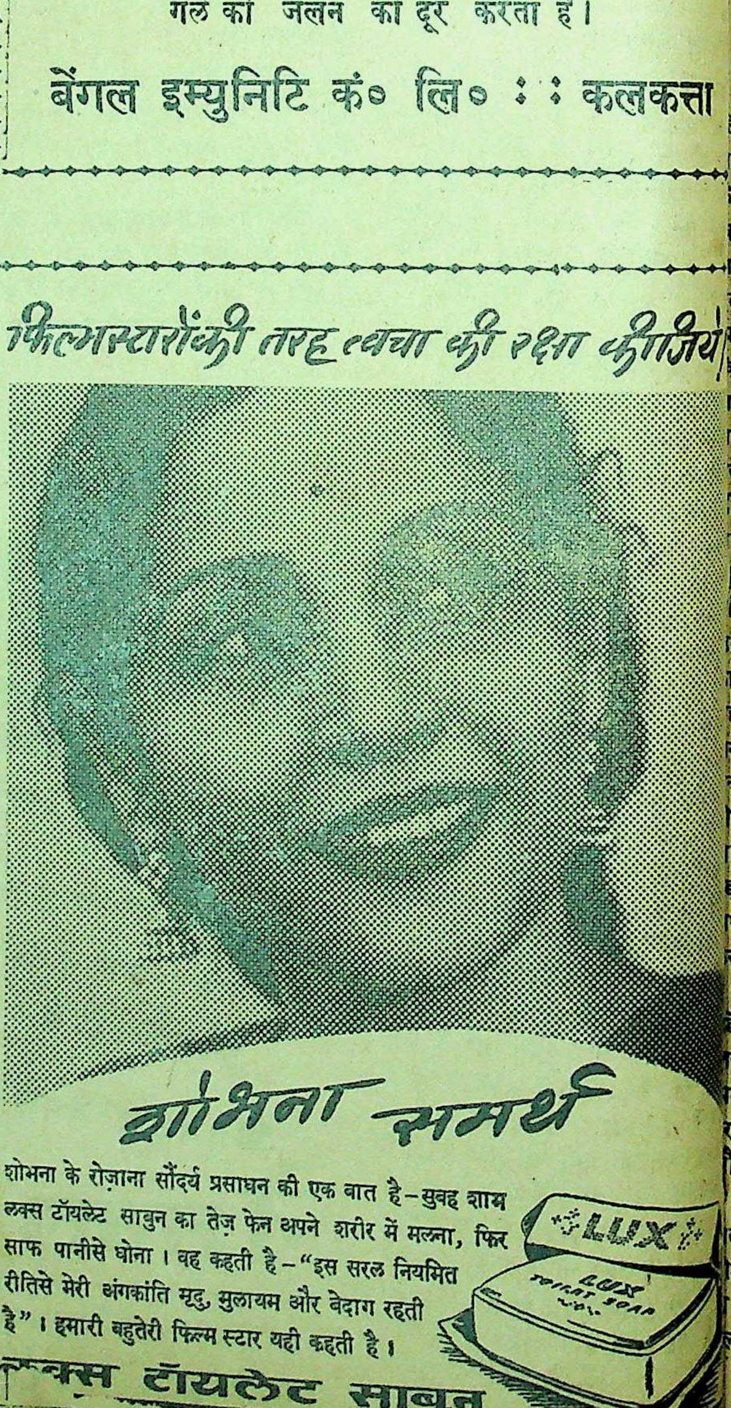

शोभना के रोज़ाना सौंदर्य प्रसाधन की एक बात है—सुबह शाम लक्स टॉयलेट साबुन का तेज़ फेन अपने शरीर में मलना, फिर साफ पानीसे धोना। वह कहती है—"इस सरल नियमित रीतिसे मेरी अंगकांति मृदु, मुलायम और बेदाग रहती है"। हमारी बहुतेरी फिल्म स्टार यही कहती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

संपादक के नाम चिट्ठियां

ारी-प्रचारिणी सभा को धन्यवाद

'देशदूत' के ४ मार्च के अंक में 'काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा' के मन्त्री पं० रामनारायण मिश्र का वक्तव्य पढ़ा—'आचार्य द्विवेदी जी की थाती।' सभा ने द्विवेदी जी के उन कागज-पत्रों के संग्रह को न केवल अपने यहाँ होना ही स्वीकार कर लिया है; बल्कि कुछ सज्जनों को वह दिखा भी चुकी और अब उनके प्रकाशन की भी व्यवस्था कर रही है; इसके लिए उसे धन्यवाद। दिन भर का भूला हुआ ाम को घर पहुँच जाय, तो उसे भूला कहना चाहिए। प्रकाशन यद्यपि पूर्ण होगा; पर अपूर्ण ही सही! कुछ तो ोगा। परन्तु 'सभा' ने इस अपूर्ण प्रकाशन लिए भी कोई समय की अवधि नहीं ी है। न जाने कब हो! फिर भी, आशा है। इसके लिए 'सभा' को फिर न्यवाद। मैं लोकमान्य तिलक का अनुयायी हूँ, जिन्होंने राजनीति के बारे में कहा था—'जो मिले, उसे ले लो और आगे के लिए लड़ते रहो।'

कनखल —किशोरीदास वाजपेयी

मार्च, ४५

* * *

रेडियो और हिन्दी-लेखक

हिन्दी के अधिकारों को कुचलने के लिए और हिन्दी के साहित्यिकों-द्वारा हिष्कार की महत्ता को घटाकर दिखाने लिए रेडियोवालों ने एक नई चाल ली है। हिन्दी के साहित्यिकों से कहा ाता है कि वे अपनी कवितायें, भाषण त्यादि रेकार्ड करा लें और उनको यह ाश्वासन दिया जाता है कि यह भेद कसी पर प्रकट नहीं किया जायेगा। ब वे रेकार्ड बजाये जायेंगे तब लोग मझेंगे कि पुराने रेकार्ड होंगे और इस कार हिन्दी-जगत् में उन साहित्यिकों ी साख भी बनी रहेगी। एक-दो ाहित्यिक इस चाल के शिकार बन भी के हैं। अभी २० फरवरी को जो लखनऊ डियो पर कवियित्री-सम्मेलन हुआ था समें कुमारी शांति टंडन की कविताओं ा भी एक रेकार्ड बजाया गया था। ह रेकार्ड एक दिन पहले तैयार किया या था। इस बात को गुप्त रखने की ब चेष्टाओं के बावजूद यह बात प्रकट गई। बात प्रकट होने पर कुमारी ांति को इसकी सत्यता स्वीकार करनी ी। वे साहित्यिक जो हिन्दी के और पनी आत्मा के प्रति यह विश्वासघात रते हैं उनके लिए मेरे पास शब्द नहीं लेकिन रेडियोवालों के लिए भी यह डे शर्म की बात है। इससे साफ पता गता है कि रेडियोवाले अपने हठ पर ड़े हुए हैं और अपनी हिन्दी-द्रोही नीति र अटल रहने के लिए सरकारी शक्ति ीर साधनों का पूरा दुरुपयोग कर रहे । रेडियोवालों के ज्ञान में जो हिन्दी लकुल तुच्छ है उसी के साहित्यिकों को ड़ने के लिए इस प्रकार के कृत्य किये रहे हैं यह हमने कभी नहीं सोचा था।

लखनऊ —शिवसिंह 'सरोज'

४५ मन्त्री, रेडियो हिन्दी

हितकारिणी सभा

राजस्थान प्रगतिशील लेखक-संघ

राजस्थान प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से हम प्रान्त के साहित्यिक-महारथियों तथा उदीयमान कलाकारों से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें अपनी अपनी रचनात्मक गति-विधियों से परिचित कराते रहें। प्रान्त में प्रतिभायें हैं जो समुचित अवसर तथा साधन जुट जाने पर अवश्य राष्ट्रभाषा के उत्थान में योग दे सकती हैं, पर अब तक सामूहिक संगठन के अभाव में हम व्यक्तिगत उद्योग ही करते रहे हैं। इस प्रकार भी हमारे साहित्यकारों ने प्रशंसनीय कार्य किये हैं। पर यह महसूस कर कि अधिक सन्निकट आकर हम अधिक ठोस कार्य कर सकते हैं। अनुरोध यह है कि समय समय पर आप अप्रकाशित तथा नवीन कलाकृतियों से हमें सूचित करते रहें कि जिससे उनका प्रकाशन करने का प्रयत्न किया जाये तथा यथोचित पुरस्कार देने की व्यवस्था की जाये। श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय की सम्मति से यह योजना बनाई गई है। अतः वे पूर्ण मदद देने का वचन दे चुके हैं। हमें उम्मीद है कि आपका सहयोग लेखक-संघ अवश्य प्राप्त करेगा।

—विष्णु अम्बालाल जोशी

पुरानी मंडी, एम० ए०, पी-एच्० डी०

अजमेर

* * *

नव जीवन संघ

सन् १९२६ ई० में 'मारवाड़ी अग्रवाल-सभा' के दिल्ली अधिवेशन के अवसर पर स्वर्गीय सेठ जमनालाल जी बजाज, श्री घनश्याम दास विड़ला तथा श्री ब्रजलाल वियाणी आदि सज्जनों की प्रेरणा से समाज में प्रगतिशील कार्य करने के लिये 'राजस्थानी नवजीवन संघ' की स्थापना हुई थी। उसके द्वारा समाज - सुधार के कार्यों में बहुत कुछ सफलता भी मिली परन्तु सन् १९३० और इनके आन्दोलन में मंडल के बहुत से सदस्यों के भाग लेने और जेल चले जाने तथा बाद में भी अन्य कार्यों में अधिक भाग लेने के कारण समाज-सुधार का काम कुछ ढीला पड़ गया। समाज-सुधार के कार्यों को फिर से तीव्र गति से चलाने के लिये मैंने गत दीपमालिका के अवसर पर कुछ मित्रों के सामने यह सुझाव रखा था कि संस्था का नाम बदल कर नवजीवन संघ कर दिया जाय और उसके उद्देश में भी परिवर्तन किया जाय। इस सम्बन्ध में बहुत से मित्रों ने अपनी सम्मतियाँ भेजी थीं जिससे गत सितम्बर में संस्था का नाम बदल कर अब 'नवजीवन संघ' कर दिया गया है और उसके उद्देश्यों में भी परिवर्तन हो गया है। श्री सीताराम जी सेकसरिया इस संघ के सभापति निर्वाचित किये गये हैं।

कलकत्ता —बसंतलाल मुरारका

८ मार्च, ४५

* * *

प्रेमी अभिनन्दन-ग्रन्थ का रूप

श्री नाथूराम जी प्रेमी की सेवा में भेंट किये जानेवाले अभिनन्दन-ग्रन्थ को यथाशीघ्र तैयार करने का प्रयत्न बड़ी तत्परता से चल रहा है। ग्रन्थ के आदर्श-रूप की कल्पना करके इस आयोजन के कार्य समिति के [illegible] शरण अग्रवाल ने प्रत्येक विभाग की सामग्री सुझाई है आपका कहना—

'संस्मरण और जीवनी' के लिए पृष्ठ-संख्या नियत कर देनी चाहिए। यह जितने संयत और संक्षिप्त ढंग से लिखी होगी, उतनी ही बढ़िया होगी। 'भारतीय संस्कृति-विभाग' में अन्य लेखों के अतिरिक्त एक लेख 'भारतीय संस्कृति का विदेशों में विस्तार' शीर्षक से रहे तो बहुत अच्छा है। 'जैन-दर्शन-विभाग' में जैन-दर्शन के ऐतिहासिक तिथि-क्रम पर एक लेख बहुत उपयुक्त होगा। 'संस्कृत और प्राकृत-साहित्य-विभाग' में अधिकांश अप्रकाशित या अज्ञात साहित्य का परिचय देना चाहिए।

'हिन्दी-साहित्य' के लिए सौ पृष्ठ और 'हिन्दी-काव्य' के लिए सौ पृष्ठ पर्याप्त समझता हूँ। हिन्दी-साहित्य-विभाग में पुरानी हिन्दी के काल की साहित्यिक कृतियों और धार्मिक प्रवृत्तियों का परिचय विशद् रूप से हो।

'जैन-साहित्य-विभाग' के अन्तर्गत अपभ्रंश साहित्य का भरपूर परिचय देना चाहिए। 'बँगला साहित्य', 'गुजराती साहित्य' और 'मराठी साहित्य' विभागों में प्रत्येक के लिए पचास पृष्ठ का औसत रखिए। इन निबन्धों में साहित्य का प्राचीन काल से अब तक का संक्षिप्त इतिहास और विकास, आधुनिक प्रवृत्तियाँ, साहित्य का काम करनेवाली संस्थाओं का परिचय यदि हो तो हिन्दी के लिए काम की चीज होगी। 'अँगरेजी-साहित्य' तो बहुत बड़ी चीज है। उसको केवल एक दृष्टि से हम इस ग्रन्थ में देखने का प्रयत्न करें, अर्थात् भारतवर्ष की भूमि, उस भूमि पर बसनेवाले जन और उस जन की संस्कृति के सम्बन्ध में जो कार्य अँगरेजी के माध्यम से हुआ है, पच्चीस-तीस पृष्ठों में उसका इस दृष्टि से परिचय कि हिन्दी में वैसा कार्य करने और उसका अनुवाद करने की ओर हमारी जनता का ध्यान आवर्जित हो।

टीकमगढ़, —यशपाल जैन,

ओड़छा बी० ए०, एल-एल० बी०

आरोंदा सूरज छाप १८६९ नीलगिरि तेल वापरो
खाण्डालेकर बंधु, बम्बई ४.
स्थापना १९२६ | गुणकाम, सदा पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५।।=) डा०ख० अलग, युकलिप पेन, बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

कष्टकर अनियमितता

आपके लिये बीती हुई कहानियाँ हो जायगी यदि आप हमारे अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड विथ विटामिन्स या विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन्स का सेवन करें। स्त्री-रोगों की पुरानी औषधि अशोका के साथ आधुनिक विज्ञानसम्मत औषधियाँ तथा विटामिन्स व विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन्स भी मिलाकर यह बनी है। इसलिये महिलाओंके स्वास्थ्य को गिराने वाली कष्टकर अनियमितता के पंजे से निकालने में यह बेजोड़ है।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि

आइ. एम. एस. लैबोरेटरी लि:
लैबोरेटरी व कारखाना: अमौसी (लखनऊ)। हेड आफिस : ५, रौएल एक्सचेञ्ज प्लेस, कलकत्ता

स्वास्थ्य और व्यायाम

नेत्र-विकार क्यों होता है ?

भोजन-सुधार और शरीर-चिकित्सा जरूरी क्यों ?

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग

अल्प दृष्टि में सामने से पीछे तक जहाँ नेत्रान्तः पटल होता है, अक्षि गोल की लम्बाई स्वस्थ नेत्र की लम्बाई की अपेक्षा अधिक बढ़ जाती है और वस्तु की दूरी के अनुसार वह नहीं घट सकती। दीर्घ दृष्टि में यह लम्बाई कम हो जाती है और वह आवश्यकतानुसार नहीं बढ़ सकती।

डा० वेट्स ने कहा है कि इन नेत्र-विकारों का कारण स्नायुओं पर जोर पड़ने से होता है जिससे बाहरी पेशियाँ, जिनके द्वारा स्वस्थ नेत्र दूरी के अनुसार स्वतः ही संविधान पैदा करता है, काम नहीं करतीं। उसने इस जोर को हटाने के लिए विश्राम के कुछ ढंग निकाले हैं। पर इनकी पद्धति नेत्र-विकार को दूर करने में अनेक बार असफल प्रमाणित हुई है। कारण यह है कि डा० वेट्स का रोग का कारण सम्बन्धी ज्ञान वाह्य था। यद्यपि यह सच है कि तमाम दृष्टि-विकारों में तनाव रहता है तथापि यह तनाव स्वयं अन्य आन्तरिक कारणों का परिणाम है। जब तक उन भीतरी कारणों को जानकर दूर न किया जाय, तब तक वह केवल विश्राम से दूर नहीं हो सकता। यह बात एक दृष्टान्त से अच्छी तरह समझ में आ जायगी।

लंदन के मि० हेरीबेन्जामिन अत्यधिक दृष्टि-विकार तथा अन्य शारीरिक रोगों से ग्रस्त थे। पाँच वर्ष की आयु में ही उन्हें चश्मा लगाना पड़ा और समय-समय पर चश्मे की शक्ति को बढ़ाना पड़ता था। सत्रह वर्ष की आयु में उनकी बाईं आँख से नेत्र बहने लगा और उन्हें शफाखाने की शरण लेनी पड़ी। पर वहाँ भी उन्हें कोई लाभ नहीं हुआ अपितु उत्तरोत्तर उनकी दशा खराब होती गई और २८ वर्ष की आयु में वे करीब-करीब अन्धे हो गये। ऐसी निराश दशा में वे तीव्र से तीव्र चिकित्सा कराने को तैयार थे पर डाक्टरों ने अपनी असमर्थता सूचित कर उन्हें कोरा जवाब दे दिया था। इसी समय उनके एक मित्र ने उन्हें डा० वेट्स के ढंग को अपनाने की सलाह दी। इन प्रयोगों से उन्हें थोड़ा-बहुत लाभ तो अवश्य हुआ पर यह उन्नति रुक गई। उन्हें डा० वेट्स के ढंग अपूर्ण जँचे। इसी समय वे एक प्राकृतिक चिकित्सक के सम्पर्क में आये। इस चिकित्सक ने मि० बेन्जामिन को भोजन में सुधार करने अर्थात् मांस, सफ़ेद रोटी तथा अन्य अप्राकृतिक पदार्थ की जगह फल, शाक-पात आदि खाने की सम्मति दी। साथ ही कुछ पानी के उपचार भी बतलाये। इन बातों के करने से उन्हें जादू का-सा लाभ हुआ और एक वर्ष बाद उनके नेत्र इतने स्वस्थ हो गये कि वे बिना चश्मे की सहायता से अच्छी तरह लिख-पढ़ सकते थे। उन्होंने निजी अनुभवों के आधार पर एक पुस्तक भी लिखी है।

कहने का तात्पर्य यह है कि नेत्र विकारों का कारण भी वही है जो अन्य रोगों का। भोजन-सुधार तथा शारीरिक चिकित्सा से हम नेत्र-विकारों को सहज ही दूर कर सकते हैं।

साम्प्रदायिक एकता जरूरी क्यों है ?

(पेज ५ का शेष)

असम्भव नहीं है। विचार-विनिमय के लिए हम थोड़ी देर के लिए यह मान लेते हैं कि हिन्दू और मुसलमान जनता के बीच सांस्कृतिक अन्तर है। लेकिन यह अन्तर राजनीति में जन-साधारण के एक होने में कभी बाधक नहीं होंगे। इसका प्रमाण है कि जब हिन्दू और मुसलमान शासक विदेशी लड़ाई में अँगरेजी साम्राज्यवाद की सहायता करने अथवा हमारी राष्ट्रीय लड़ाई को दबाने के लिए संगठित होते हैं, या जब हिन्दू और मुसलमान मिल-मालिक मजदूर-आन्दोलन को पंगु बनाने के लिए एक सूत्र में बँध जाते हैं तब यह सम्भव नहीं प्रतीत होता कि उनके सांस्कृतिक मतभेद आपस में एकता स्थापित करने में बाधक सिद्ध हों। तब हिन्दू और मुस्लिम जन-समुदाय की राजनैतिक एकता में सांस्कृतिक अन्तर क्यों बाधक होना चाहिए ? लोगों का यह तर्क उपस्थित करना कि सांस्कृतिक अन्तर के कारण साम्प्रदायिक एकता असम्भव है, तर्कहीन है। हमारे सामने टर्की का उदाहरण स्पष्ट है। उसने पाश्चात्य सभ्यता को अंगीकार कर लिया है और उसे उसमें कोई असुविधा अथवा कठिनाई नहीं मालूम पड़ रही है।

भौतिक सम्पन्नता के बिना सांस्कृतिक या आत्मिक उन्नति असम्भव है। भारतवासियों को पहले भौतिक रूप में सफल या सम्पन्न होना आवश्यक है और तब उन्हें पवित्र वस्तु पर ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए। इस्लाम और हिन्दुत्व ये दोनों भारतवासियों को दूसरों से आगे रखनेवाले, तथा विचार और प्रकृति के प्रारम्भिक सिद्धान्तों की खोज करनेवाले विज्ञान हैं। उन्हें उनके सांसारिक कामों में इनसे सहायता मिलती है। हिन्दू-मुसलमान स्वतन्त्रता के द्वारा अपनी शारीरिक और मानसिक शक्ति प्राप्त करके पहले एक योग्य राष्ट्र के नागरिक बने। हर प्रकार के ज्ञान के प्रचार-द्वारा उन्हें अपना शिक्षित तथा सभ्य समाज बनाना चाहिए। यदि उस समय भी वे अपने धर्म की महानता में विश्वास करते रहेंगे तो उन्हें अपने को धार्मिक कार्यों में लगा देना चाहिए। लेकिन इस स्थिति तक पहुँचने के लिए उन्हें पहले स्वतन्त्र मनुष्य बनना चाहिए। हमें विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्ति पानी होगी। हिन्दू और मुसलमान ऐसा करने के योग्य तब होंगे जब वे आपस में एकता रखेंगे। अगर हम राजनीतिक मोर्चा या मंच बनाना चाहते हैं, जो सब सम्प्रदायों के लिए समान है, तो ध्यान रखना चाहिए कि धर्म और राजनीति का सम्मिश्रण न होने पावे। ऐसा संगठित मोर्चा केवल एक सम्प्रदाय के द्वारा नहीं बनाया जा सकता। जिस राष्ट्र में एक से अधिक सम्प्रदाय हों, उस सम्पूर्ण राष्ट्र का संगठन एक साम्प्रदायिक संस्था के द्वारा कैसे हो सकता है ? जिस राष्ट्रीय मोर्चे पर हिन्दू और मुसलमानों से संगठित होने की आशा की जाती है वह साम्प्रदायिकता-विरोधी और धार्मिकता से अलग होगा और बिना इसके हिन्दू मुसलमान किसी का भी कल्याण नहीं है। भौतिक दुनिया की भौतिक जरूरतें की समान हैं, उनमें कोई भेद नहीं।

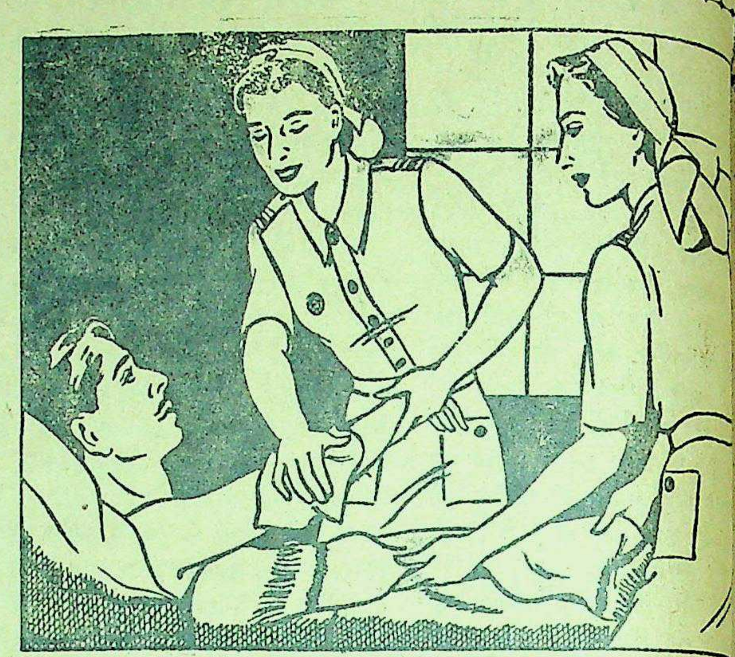

ए० एन० एस० की नर्सें कार्य

क्या आप यह मानती हैं कि
दया नारी का स्वाभाविक गुण है

हिन्दुस्तान के फ़ौजी अस्पतालों में आजकल जो नर्सें रोगियों और घायलों की तीमारदारी कर रहीं हैं उन्हें 'दयामयी' की उपाधि दी जाती है; और यह उचित भी है। आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए० एन० एस०) की सदस्याओं को सर्वश्रेष्ठ एवम् सम्मानपूर्ण कार्य करने का गौरव प्राप्त होता है। इसके द्वारा आप युद्ध-प्रयत्नों में सहायता पहुँचा सकती हैं।

युद्ध के पश्चात् ए० एन० एस० की नौकरी छोड़ने पर आप यदि चाहें तो सीधे शहरी क्षेत्र में जाकर स्वतंत्र रूपसे यह उपयोगी कार्य सँभाल सकती हैं, क्योंकि ए० एन० एस० में आपको बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी जायगी और उच्चकोटि का अनुभव प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त जो डाक्टरी ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह भविष्य में पत्नी, माता एवम् सामाजिक कार्यकर्त्री की हैसियत से आपके बहुत काम आयेगा।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है — (१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१२५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ़्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही डयूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

पूरे विवरण के लिए
आज ही अपने क्षेत्र की लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट, सेण्ट जान एम्बुलेन्स अथवा डाइरेक्टर जनरल, इण्डियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली को लिखिए।

a·n·s
आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस
महिलाओं के लिए
सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

AAA1200

रायटर को सूचित कया गया है कि भारत ी स्वाधीनता-सम्बन्धी ाष्ट्रीय कमेटी सानफ्रांसिस्को ें होनेवाले संयुक्त राष्ट्रों े आगामी सम्मेलन में र-सरकारी तौर से प्रति-धित्व करने की चेष्टा रही है। यह भी ज्ञात हुआ है कि जब सम्मेलन ोता रहेगा तब श्रीमती ाजयलक्ष्मी पंडित सान-ांसिस्को की एक सार्व-निक सभा में भाषण गी।

च एक स्वीडिश पत्र के

श्रीयुत श्रीप्रकाश जी ने मुख्य अधिवेशन का उद्घाटन किया। आपका भाषण बड़ा ओजपूर्ण और दृढ़ शब्दों में हिन्दी जनता विशेषकर लेखकों के लिए एक चेतावनी स्वरूप था। आपने कहा कि आज हिन्दी का लेखक भीरु क्यों है? हिन्दी भाषी जनता अपनी भाषा की प्रतिष्ठा के लिए सरकार से याचना क्यों करती है? हमें आज अपने में आत्मविश्वास होना चाहिए और यह स्मरण रखना चाहिए कि सत्ता कभी गुलामी की भाषा को स्वीकार नहीं करती। हमें अपनी हिन्दी की उन्नति स्वयं अपने आप करनी है और जिस गति से उसकी उन्नति हो रही है उसके सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि हिन्दी की प्रगति अबाध है।

श्री भूलाभाई देसाई ने ३ मार्च की रात्रि में कवि सम्मेलन का उद्घाटन किया। वे हँसते हुए बोलने उठे और बीच बीच में अपनी गुजराती मिश्रित हिन्दी से उन्होंने वह व्यंग्य कौशल दिखलाया कि जनता मुग्ध हो उठी। आपने कहा कि उत्सव के इस विशाल जन-समुदाय को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है। हिन्दी की सेवा करना हिन्दुस्तान की ही सेवा करना है और सचमुच इस रास्ते से हम आजादी के बहुत जल्द निकट पहुँच सकते हैं।

सभापति महोदय पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी ने अपने विद्वतापूर्ण भाषण में ब्रज-साहित्य की परम्परा विशेषत: आज दिन उसकी उपेक्षा और उसकी उपयोगिता पर व्यापक प्रकाश डाला। भाषण बड़ा पांडित्यपूर्ण था।

अधिवेशन में दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव ास हुए। एक में रेडियो की हिन्दीविरोधी ीति का घोर विरोध किया गया और ूसरे में इतिहास समिति की योजना बनाई ई। रेडियो बहिष्कार पर सम्मेलन के धान मन्त्री श्री मौलिचन्द्र शर्मा का भाषण विशेष उल्लेखनीय था। आपने बताया कि डियो विभाग न केवल हिन्दी की ही पेक्षा कर रहा है, वरन उसके द्वारा ास्तव में जो उर्दू जबान है उसकी भी मिट्टी खराब हो रही है। रेडियो कमेटी का उल्लेख करते हुए आपने बताया कि उसमें जो निर्णय हुए थे वे सब सर ुलतान अहमद ने लिखवा लिये पर बाद उन्हें पलट दिया गया। आपने कहा कि डियो का आन्दोलन तब तक बन्द नहीं गा, जब तक कि सरकार हमारी माँगों ो मंजूर नहीं कर लेती।

इस अधिवेशन में भाग लेने के लिए श्रबन्धु रायबहादुर शुकदेवबिहारी मिश्र ी आये हुए थे। उन्हें उनकी हिन्दी ाओं पर ताम्रपत्र एवं श्रीफल ब्रज

आलोचना अथवा सुसम्पादन पर १००) वार्षिक पुरस्कार देना घोषित किया गया। जिसके उचित नियम विस्तृत नियम उचित समय पर प्रकाशित किये जायँगे।

—बरसानेलाल चतुर्वेदी
प्रचार मन्त्री

* * *

लखनऊ में 'शिवाजी के समकालीन महाराष्ट्र सन्त रामदास का दर्शन कार्ल मार्क्स के सिद्धान्तों से अधिक उपयुक्त, प्रभावशाली और भारतीय समस्याओं के हल के लिए था।' अखिल भारतीय हिन्दी प्रचार समिति के प्रधान श्री जयति मिश्र ने स्थानीय रामतीर्थ परिषद् की एक बैठक में 'शिवाजी' रामदास तथा समाजवाद पर बोलते हुए कहा।

आपने कहा कि साम्यवाद भारतीय परम्परा के बिलकुल विरुद्ध था और ईश्वर विरोधी वर्तमान रूस यहाँ के निवासियों के लिए अनुकरणीय नहीं। आपने आगे कहा कि भारत समाजवादी सरकार बनाकर कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकेगा, जो कि आजकल भी रूस में प्रयोगात्मक अवस्था में ही है। वह वहाँ अधिक सफल सिद्ध तो नहीं हुआ पर अपने साथ नई समस्यायें और नये दुःख अवश्य लाया है।

आगे बोलते हुए आपने कहा कि हमें आवश्यकता है एक सफल शासन व्यवस्था की जो भारतीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। शिवाजी का शासन जो अशान्ति में शान्ति लावा आज के लिये वांछनीय था। शिवाजी का जीवन-दर्शन इस्लामियाँ साम्राज्यशाही द्वारा सताये गये हिन्दू समाज को मुक्त करने तथा हिन्दू राज्य कायम करने मे सफल हुआ। आपने भाषण के सारांश में कहा कि विदेशी प्रणाली ग्रहण करने की कोई आवश्यकता नहीं। देश को आज पुरानी और सफल प्रणाली को फिर से अपनाना ही हितकर होगा।

—संवाददाता

* * *

लखनऊ में श्री रामतीर्थ प्रकाशन-गृह के तत्त्वावधान में संयुक्तप्रान्त के सुप्रसिद्ध जनसेवी तथा श्री स्वामी रामतीर्थ जी के शिष्य श्री आर० एस० नारायण स्वामी जी का ७०वाँ जन्मदिवस मनाया गया। विख्यात समदर्शी श्री एस० पी० विश्वामित्रम् ने सभापति-पद से भाषण करते हुए कहा कि स्वामी जी एक साथ संन्यासी, उपदेशक, समाजवादी, प्रबन्धक, व्यापारी, सेवक सब कुछ थे। श्री स्वामी जी रामतीर्थ प्रकाशनगृह, अवध सेवा समिति, भारतीय शिक्षा परिषद् और सिविल इंजीनियरिंगकालेज

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया।
कौन छिपा मेरी साँसों में,
अपनी पीड़ा घोल रहा है।
भाग्य-भवन के बन्द द्वार थे,
कौन विजेता खोल रहा है।
मेरे मन का करुण रुदन प्रिय के अधरों का गान बन गया?
यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया,
उँगली पर दिन गिने जा सकें,
केवल उतना प्यार मिला है।
सब सुख खो देने पर मुझको.

ए०, पी० एच० डी० साहित्य मन्त्री, राजस्थान प्रगतिशील लेखक-संघ पुरानी अजमेर लिखते हैं—

राजस्थान प्रगतिशील लेखक-संघ के द्वारा राजस्थान (मालव) के प्रतिनिधि कहानीकारों का एक कहानी-संग्रह प्रकाशित करने की योजना बनाई गई है। अत: प्रान्त के प्रमुख कहानीकारों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपने जीवन-वृत्त के साथ अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना मेरे पास भेजने की कृपा करें।

* * *

दिल्ली प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन ता० २३,२४,२५ को होगा और उसके साथ राष्ट्रभाषा परिषद् और कवि सम्मेलन होंगे। नाट्य आदि द्वारा मनोरञ्जन का आयोजन भी किया जा रहा है। दिल्ली की स्वागत समिति आतिथ्य का अच्छा प्रबन्ध कर रही है।

—प्रधान मन्त्री

* * *

प्रयाग हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति का अधिवेशन २५ मार्च १९४५ को २ बजे दिन से दिल्ली में दिल्ली प्रान्तीय सम्मेलन के कार्यालय, १८ दीवान हाल में होगा। विचारणीय विषय है—रेडियो-विभाग से बहिष्कार के सम्बन्ध में अब तक के कार्य की सूचना तथा केन्द्रीय सरकार की नई घोषणा और उस पर विचार। नियमावली के उपनियम में संशोधन विषयक प्रस्ताव। श्री नेमीचन्द पुरस्कार तथा मुरारका पारितोषिक की नियमावली के मसौदे।

—मौलिचन्द्र शर्मा

और प्रमुख व्यापारी पंडित उमाशंकर .. य के सुपुत्र पंडित रामनारायण पांडेय एम० ए० (छात्र) के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

* * *

कानपुर हारामऊ पुखराया के श्री प्रेम पुस्तकालय का सातवाँ वार्षिकोत्सव बाबू रामस्वरूप गुप्ता एम० ए० के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। साथ ही पं० कैलाशनाथ जी एम० ए० "प्रियदर्शी" की अध्यक्षता में एक कवि-सम्मेलन भी हुआ।

—सुरेन्द्रकुमारसिंह

स्टैनिस्ट्रीट
(कंसिंट्रेटेड)
चिकेन एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों के इतना
नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 116

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह
पूजा-गीत
क्यों पढ़ना चाहिए?
हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—
'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"
द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।
—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा
अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।
मूल्य २) दो रुपया।
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

स्वास्थ्य और व्यायाम

नेत्र-विकार क्यों होता है ?

भोजन-सुधार और शरीर-चिकित्सा जरूरी क्यों ?

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग

अल्प दृष्टि में सामने से पीछे तक जहाँ नेत्रान्तः पटल होता है, अक्षि गोल की लम्बाई स्वस्थ नेत्र की लम्बाई की अपेक्षा अधिक बढ़ जाती है और वस्तु की दूरी से [illegible]

साम्प्रदायिक एकता जरूरी क्यों है ?

(पेज ५ का शेष)

असम्भव नहीं है। विचार-विनिमय के लिए हम थोड़ी देर के लिए यह मान लेते हैं कि हिन्दू और मुसलमान जनता के बीच सांस्कृतिक अन्तर है। लेकिन यह अन्तर राजनीति में जन-साधारण के एक होने में कभी बाधक नहीं होंगे। इसका प्रमाण है कि जब हिन्दू और मुसलमान शासक विदेशी लड़ाई में अँगरेजी साम्राज्यवाद की सहायता करने अथवा हमारी राष्ट्रीय लड़ाई को दबाने के लिए संगठित होते हैं, या जब हिन्दू और मुसलमान मिल-मालिक मजदूर-आन्दोलन

होने की आशा की जाती है वह साम्प्रदायिकता-विरोधी और धार्मिकता से अलग होगा और बिना इसके हिन्दू मुसलमान

किसी का भी कल्याण नहीं है। भौतिक दुनिया की भौतिक जरूरतें की समान हैं, उनमें कोई भेद नहीं।

सन् १९३७ का वह दृश्य आज भी हमें याद है, जब दिल्ली में 'बज़्मे-सखुन' की ओर से एक मुशायरे और हिन्दी साहित्य-सभा की ओर से एक कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उर्दू मुशायरे में जब दिल्ली की जनता हजारों में पहुँची थी तो हिन्दी कवि-सम्मेलन में श्रोताओं की संख्या २० से अधिक न थी। दिल्ली के लाला और पंजाबी लोग उस समय उर्दू मुशायरों को बहुत पसन्द करते थे। किन्तु आज यह समय आ पहुँचा है कि दिल्ली के लाला साँवलदास जी लोहिए प्रभृति व्यक्तियों के आशीर्वाद तथा प्रयास के फलस्वरूप हिन्दी कवि-सम्मेलनों की ओर भी दिल्ली की जनता का ध्यान आकृष्ट होने लगा है। अगस्त १९४४ में मारवाड़ी प्रगति संघ की ओर से एक विशाल हिन्दी कवि सम्मेलन हुआ था; किन्तु उसमें अधिकांश श्रोता मारवाड़ी थे। इस बार जो कवि-सम्मेलन हुआ, उसमें दिल्ली के लगभग दो हजार नर-नारी उपस्थित थे।

इस कवि-सम्मेलन के आकर्षण का सर्वप्रथम कारण यह था कि भारत के उच्च कोटि के कवि महानुभावों को इसमें आमंत्रित किया गया था। प्रथम दिन कवि-सम्मेलन की सभानेत्री श्रीमती सरस्वती देवी डालमिया, एम० ए०, शास्त्री थीं। आपने ब्रज-साहित्य-मंडल के निमन्त्रण मिलने पर प्रथम बार ब्रजभाषा में कविता की थी। श्रोताओं ने इस कविता को काफी पसन्द किया था।

कवि-सम्मेलन की सबसे बड़ी शान दतिया-निवासी कविवर नबीबख्श 'फलक' थे। आपने प्रथम दिन सम्मेलन के आरम्भ में मंगलाचरण किया और सम्मेलन की समाप्ति भी आपकी ही कविता से हुई। संस्कृत-मिश्रित हिन्दी आपके मुखारविन्द से स्वाभाविक रूप में प्रवाहित हो रही थी। उसमें कृत्रिमता का नाम भी न था। डा० आनन्द दूसरे कवि थे; जिनकी कविता का सिक्का पहले दिन लोगों ने मान लिया। आपकी कविता का शीर्षक 'झाँसी की रानी' था। मथुरा-निवासी श्री रामलला जी 'लला' आपने एक वीररस पूर्ण कविता सुनाई। इस कविता का उच्चारण बस वे ही कर सकते थे। इसकी भाषा कुछ कुछ प्राकृत से मिलती-जुलती थी।

दूसरे दिन का कवि-सम्मेलन हिन्दी के तपस्वी कवि श्री सूर्यकान्त 'निराला' की अध्यक्षता में हुआ। निराला जी दिल्ली में कई बार आ चुके हैं किन्तु इस सम्मेलन का सभापतित्व करके वे दिल्ली की जनता पर अपना स्थायी प्रभाव छोड़ गये हैं। आपने अपनी 'कुकुरमुत्ता' और 'जुही' और 'शिवाजी की तलवार' शीर्षक सुप्रसिद्ध कवितायें सुनाईं। जनता मन्त्र-मुग्ध थी।

दास सक्सेना। [illegible] ने एक वीररस पूर्ण कविता सुनाई। श्री श्यामसुन्दर जी दीक्षित ने 'गांधी जी की भिक्षा' शीर्षक कविता सुनाई। जो बड़ी ही प्रभावशालिनी थी। आगरा के प्रसिद्ध वकील श्री अमृतलाल चतुर्वेदी की कवितायें विशेष रूप से आकर्षक थीं। आपका कंठ बड़ा कोमल है। आपने ब्रजभाषा में बड़ी ही सुन्दर कविता सुनाई।

'बेधड़क' बनारसी दिल्ली में प्रथम बार आये थे। आप दिल्ली की जनता पर अपनी हास्य रस की कविताओं का सिक्का जमा गये हैं। हास्य रस की दूसरी कविता मथुरा के एक युवक श्री रामनारायण अग्रवाल ने भी सुनाई थी।

दूसरे दिन के कवि-सम्मेलन से पूर्व 'अष्टछाप' का भी आयोजन किया गया था। मथुरा के आस-पास 'अष्टछाप' एक मामूली चीज होगी; किन्तु दिल्ली के लिए यह आयोजन एकदम अनोखा था। गोसाईं विट्ठलदास की अध्यक्षता में गिरवरदास ने जो मनोरंजन किया और सूरदास, नन्ददास आदि ने जो संगीत गाये, वे दिल्ली के लिए एकदम नवीन थे। पंजाबी दर्शकों पर तो 'अष्ट छाप' का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। पंजाब में ऐसे प्रदर्शन कहाँ होते हैं? वह तो हीर-राँझे की भूमि ठहरी न!

ब्रज-साहित्य-मंडल के अधिवेशन में करीब ३५ कवि बाहर से आये थे। उनके अलावा करीब १५० व्यक्तियों के खाने-पीने और ठहरने का प्रबन्ध किया गया था। शामियाने व लाउड स्पीकर का प्रबन्ध था। आनेवाले कवियों को मार्ग-व्यय आदि भी दिया गया। इसमें करीब ३५००) खर्च हो गया। श्रीमती डालमिया ने ५००) और श्री साँवलदास लोहिया ने २००) रु० का दान किया।

फादर क्रुशेन से सलाह लीजिये . . . . . .
वे सदा मुस्तैद रहते
क्रुशेन
KRUSCHEN
की स्फूर्ति प्राप्त कीज
फादर क्रुशेन को कोई काम सोचे
उसके करने में देर नहीं लगती। उ
दिमाग और शरीर दोनों पूर्ण रूप से
है। यह क्रुशेन के दैनिक सेवन का
है। फादर क्रुशेन जीवन का पूर्ण आ
उठाते हैं क्योंकि वे सदा प्रसन्न, फु
शक्तिशाली तथा स्वस्थ रहते हैं।
वास्तव में इसका कारण यह है कि
के सेवन से उनका पेट, आमाशय
गुर्दे बिलकुल साफ रहते हैं और ठीक
करते हैं। इससे अजीर्ण तथा अ
भय नहीं रहता और न इनसे होने
बीमारियाँ ही होती हैं। अगर आप
प्रसन्नचित्त नहीं रहते तो आज
क्रुशेन सेवन करना आरम्भ कर दी
बाजार के सभी औषधि-विक्रेताओं
दवाखानों में मिलता है।

यह आपके भोजन को स्वादिष्ट बनाता है।
व प्रकृति से ही अच्छा होता है।
CEYLON DESICCATED COCONUT
आपके लिये सिलोन का सुखाया हुवा नारियल ही अच्छा है।
34
रुचिकर भोजन के लिये पानी के स्थान पर सच्ची रूप में नारियल के दूध का प्रयोग करें। यह भोजन को अधिक पोषक और स्वादिष्ट बना देगा। नारियल का उत्तम दूध प्राप्त करने के लिए 'डेसीकेटेड् कोकोनट' (सूखे नारियल) की आवश्यक मात्रा को कुनकुने पानी में डालिए और दो बार निचोड़िये।

साधारण नारियल से 'डेसीकेटेड् नारियल' श्रेष्ठ है, क्योंकि:—

(१) जो गरियाँ डेसीकेटेड कोकोनट में इस्तेमाल की जाती हैं उनकी ख़ास तौर से खेती होती है और तोड़ने से पहिले उन्हें पूरी तरह पकने दिया जाता है।

(२) कसने के पहले गरियाँ सारे रस और पोषक तत्व को सोख लेती हैं—कोई रस व्यर्थ नहीं जाता।

(३) एक पौंड 'डेसीकेटेड् कोकोनट' में उतने ही ताजे नारियल से अधिक पोषक तत्व होते हैं—क्योंकि सुखाने में सिर्फ़ पानी ही अलग किया जाता है, रस नहीं।

नुस्खों, नमूनों और व्यापारियों के नाम के विवरण के लिये लिखिए।
'सीलोन ट्रेड कमिश्नर फार इंडिया। सीलोन हाउस, न्यू दिल्ली रोड, बम्बई।
—सीलोन कोकोनट बोर्ड से प्रचारित।

रायटर को सूचित केया गया है कि भारत की स्वाधीनता-सम्बन्धी राष्ट्रीय कमेटी सानफ्रांसिस्को में होनेवाले संयुक्त राष्ट्रों के आगामी सम्मेलन में र-सरकारी तौर से प्रतिनिधित्व करने की चेष्टा रही है। यह भी ज्ञात हुआ है कि जब सम्मेलन ोता रहेगा तब श्रीमती जयलक्ष्मी पंडित सानफ्रांसिस्को की एक सार्वजनिक सभा में भाषण करेंगी।

एक स्वीडिश पत्र के अनुसार जर्मनी के परराष्ट्र मन्त्री हरवान रिबनट्राप ने त्रकारों से कहा कि यदि र्मनों को हारना ही ोगा तो वे केवल इँगलैंड ा नीचा दिखाने के लिए टालिन को समस्त जर्मनी र कब्जा कर लेने देंगे।

* * *

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०

पुरस्कृत विषयों का क्रम क्या होगा ?

प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों पर प्रदान कये जाने वाले ५००, के पुरस्कारों के म्बन्ध में एकेडेमी की कार्यकारिणीसमिति निम्नलिखित निर्णय किया है।

१—पुरस्कृत विषयों का क्रम-निम्न कार होगा:—

(क) काव्य तथा नाटक, (ख) उपन्यास था कहानी, (ग) निबन्ध तथा आलोचना,) इतिहास और जीवनचरित, (ङ) नोविज्ञान और आचार शास्त्र, और (च) ज्ञान (जीवन-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, लिक विज्ञान आदि)।

२—सन् १९४५ का पुरस्कार काव्य था नाटक पर और सन् १९४६ का पुरस्कार उपन्यास तथा कहानी पर प्रदान किया जायगा।

हिन्दी-प्रेमियों, विद्वानों, प्रेसों और प्रकाशकों से विवेदन है कि अप्रैल १९४३ से मार्च १९४५ तक की प्रकाशित काव्य तथा नाटक और उपन्यास तथा कहानी विषयक पुस्तकों की सूचना एकेडेमी के दफ्तर में १ अप्रैल सन् १९४५ तक भेजने की कृपा करें, जिससे पुरस्कार समिति के सामने उपस्थित करने के लिए पुस्तकों का प्रथम चुनाव किया जा सके।

—धीरेंद्र वर्मा

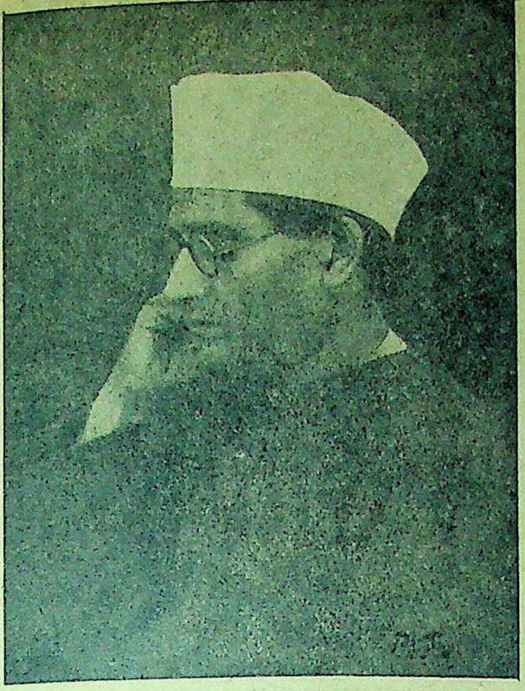

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और राष्ट्रकर्मी पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ३० महीने की नजरबन्दी की लम्बी अवधि के बाद जेल से छूट कर आ गये हैं।

* * *

जयपुर मलसीसर नवयुवक-संघ ने द्वितीय वार्षिकोत्सव श्रीयुत बाबू द्वारकादास जी केडिया के सभापतित्व में मनाना निश्चय किया है। श्री रावतमल ओसवाल स्वागताध्यक्ष व श्री लूनकरण केडिया स्वागत मन्त्री हैं। —संवाददाता

गीत

लेखिका, श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'

यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया।
कौन छिपा मेरी साँसों में,
अपनी पीड़ा घोल रहा है।
भाग्य-भवन के बन्द द्वार थे,
कौन विजेता खोल रहा है।
मेरे मन का करुण रुदन प्रिय के अधरों का गान बन गया ?
यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया,
उँगली पर दिन गिने जा सकें,
केवल उतना प्यार मिला है।
सब सुख खो देने पर मुझको,
आँसू का अधिकार मिला है।
भूल न अपनी जान सकी क्यों प्रिय मेरा पाषाण बन गया ?
यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया ?
जिसके बल पर सब कुछ छोड़ा,
आज मुझे वह छोड़ रहा है।
नहीं किसी का बल मुझको,
वह ममता से मुँह मोड़ रहा है।
आज काल की क्रूर नियति से अपना भी वीरान बन गया।
यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया।
युग युग के निर्मित नियमों से,
आँख मिचौनी खेल रही हूँ।
आज व्यथा के ही बल पर तो,
दुनियाँ के दुख झेल रही हूँ।
फिर कैसे मेरा चिर परिचित मुझ से ही अनजान बन गया ?
यह किसका अभिशाप हमारे जीवन का निर्वाण बन गया।

ब्रजभाषा के साहित्य का प्रचार

(पेज ४ का शेष)

तो 'कवित्त और सवैया के बादशाह' हैं। फर्रुखाबाद के श्री बचनेश जी की गम्भीर और विनोदपूर्ण कविताओं ने किस काव्य-रसिक को आनन्दित नहीं किया ? और हमारे मित्र पं० हरिशंकर जी शर्मा तो ब्रज-भाषा के सर्वस्व ही हैं। डा० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' विश्वविद्यालय में रह कर भी ब्रज-भाषा की पताका ऊँची किये हुए हैं और पूज्य डा० रामप्रसाद त्रिपाठी इतिहास के पंडित होते हुए भी ब्रज-भाषा की काव्य-साधना में आनन्द पाते हैं। पूज्य हरिऔध जी के व्यक्तित्व से ब्रज-भाषा को जो बल मिला है उससे हम परिचित हैं। हमारे युवक कवियों में सर्वप्रथम देव-पुरस्कार-विजेता श्री दुलारेलाल भार्गव, पंडित अमृतलाल चतुर्वेदी, कानपुर के प्रोफेसर सत्यनारायण पाण्डेय, पं० हृदयनारायण पाण्डेय 'हृदयेश', 'कमलेश', 'हरिजू' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। झांसी के माहौर जी और सेवकेन्द्र जी की कविताओं का रसास्वादन करने वाले उनकी प्रतिभा के कायल हैं। दतिया के फलक जी भक्त रसखान की परम्परा पर चल कर ब्रज-भाषा की सेवा कर रहे हैं। गोरखपुर के नवयुवक कवि श्री रामलाल श्रीवास्तव ने ब्रज-भाषा में बड़े उत्कृष्ट काव्य की रचना की है। सीतापुर-निवासी और प्रयाग-प्रवासी 'दैत्यवंश' के कवि श्री हरदयालुसिंह जी की सतत साहित्य-साधना को देख कर ब्रज-भाषा के भविष्य पर सन्देह करने का कारण नहीं रह जाता। मेरे मित्र अनूप जी, जिन्हें इस वर्ष देव-पुरस्कार मिला है, ब्रज-भाषा के उत्कृष्ट कवि हैं। पं० हृषीकेश चतुर्वेदी, नवनीत जी के सुयोग्य पुत्र श्री गोविन्द जी, प्रयाग के सरस जी आदि कितने ही युवक अपने सरल और सुरुचिकाव्य से ब्रज-भाषा साहित्य की अभिवृद्धि कर रहे हैं। कवि बड़ा सचेत प्राणी है। यदि उसको प्रोत्साहन रूपी जल न मिला तो वह कुम्हला जायगा। हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम ब्रज-भाषा के कवियों का समुचित आदर करें और उन्हें प्रोत्साहन दें, जिससे ब्रज-भाषा का आधुनिक भण्डार बढ़ता रहे।

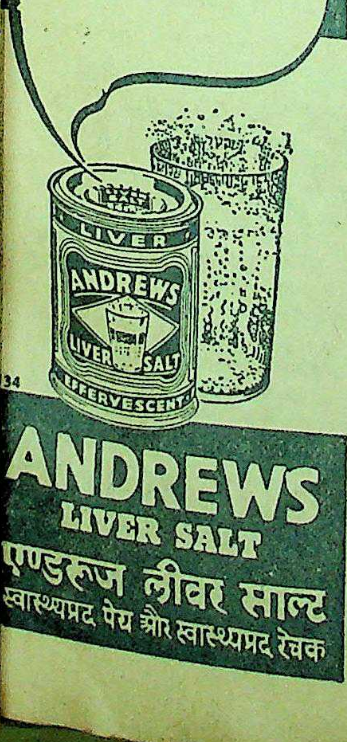

क्षमा कीजियेगा
पेट की सफाई
स्वास्थ्य के लिये
अत्यन्त आवश्यक है

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

शुभदा

वंगसाहित्य सम्राट् श्री शरच्चन्द्र का नाम हिन्दी में भी उनकी अमूल्य कृतियों द्वारा विख्यात हो चुका है। यह उन्हीं के एक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें उनके अन्य उपन्यासों की तरह पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ९ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

पुस्तक मिलने का पता—इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

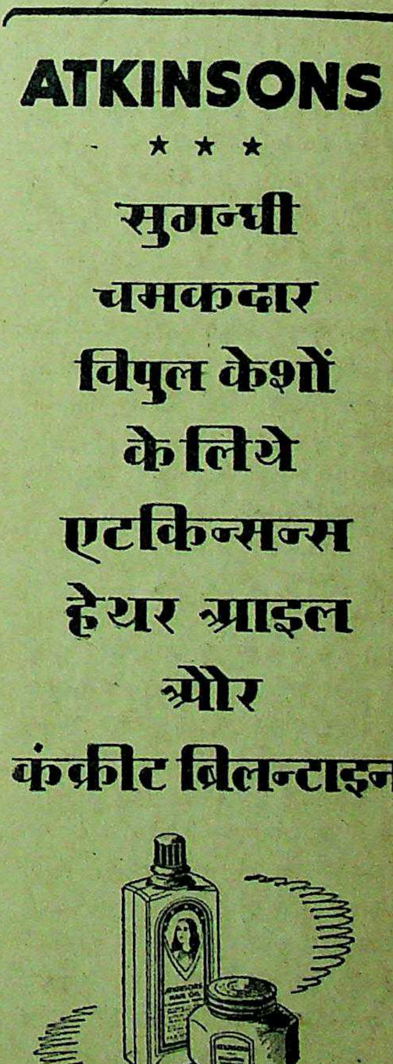

ATKINSONS
★ ★ ★
सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

AHO-1-215 HI
J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

जर्मन-भूमि में राइन का युद्ध प्रारम्भ हो गया

बाल्टिक क्षेत्र की कुशल रणनीति और सुदूर पूर्व की युद्ध-प्रगति

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

जर्मन-भूमि में राइन के किनारे मित्रों का मोर्चा कोलोन से लेकर ओरसे तक फैल गया है। मित्रसेनाओं के प्रबल आक्रमण के फलस्वरूप जर्मनों की मोर्चेबन्दियाँ ताश के पत्तों के ढेर की भाँति ढह रही हैं। इस हमले में अमेरिकनों को वस्तुतः किसी भी जर्मन प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा। राइन के मोर्चे पर आक्रमण शुरू होने के बाद से जर्मनी के मध्य भाग पर किया जानेवाला मित्रों का यह सबसे बड़ा सैनिक प्रहार है। यह युद्ध का अगला और अन्तिम चरण है। तीसरी अमेरिकन सेना के टैंक, जर्मनी में ५५ मील तक घुस जाने के बाद, अब कोलोन से बान जानेवाली सड़क पर बढ़ रहे हैं। एफेल में जर्मन फौजों पर जो फंदा डाला गया है, वह पूरा होनेवाला है। बान के दक्षिण में कोबलेज जानेवाली सड़क पर मित्रसेनायें प्रायः पहुँच गई हैं। संयुक्तराज्य अमेरिका की प्रथम और तृतीय सेनायें एक साथ कोबलेंज पर धावा कर रही हैं। प्रथम अमेरिकन सेना के दस्ते बान की सड़कों पर युद्ध आरम्भ कर चुके हैं। नगर का पतन होने में अधिक विलम्ब नहीं लग सकता। वेसेल के जर्मन मोर्चे पर दो तरफ से मित्रसेनाओं के तोपखाने निरन्तर भीषण प्रहार कर रहे हैं। ब्रिटिश सेनाएँ सामने की तरफ से धावा बोल रही हैं और कनाडी सेनाएँ वहाँ की ऊँची भूमि के लिए आगे बढ़ रही हैं। जर्मन अपने हवाई सैनिकों से काम लेते हुए भीषण प्रतिरोध प्रस्तुत कर रहे हैं।

जनरल एसेनहोवर की विज्ञप्ति में उन ३४ नगरों तथा गाँवों की सूची प्रकाशित की गई है जिन पर मित्रों का कब्जा हो गया है अथवा जिनमें मित्रसेनाओं ने प्रवेश किया है। ५ मार्च को यह कहा गया था कि अगले कुछ घंटों के भीतर पश्चिमी मोर्चे पर मित्र फौजों के हाथ जर्मन-बंदियों की संख्या १० लाख हो जायगी। आक्रमण के दिन से २८ फरवरी तक सरकारी गणना के अनुसार ९,५४,३७० बंदी बनाये जा चुके हैं। इसके बाद प्रतिदिन लगभग ७१० हजार बंदी बनाये गये हैं। राइन पर जर्मन मोर्चा ध्वस्त होने पर जर्मन-बंदियों की संख्या निस्संदेह बहुत अधिक हो गई है। जर्मनी के सरकारी केन्द्रों का कहना है कि "मित्रों के पश्चिमी आक्रमण के फलस्वरूप जर्मनी के भाग्य का वारान्यारा हो रहा है। परिस्थिति चौंका देनेवाली है, वह आशंकापूर्ण तथा भयंकर खतरों से भरी है।" १९४५ के आरंभ में रूसी सेना के आक्रमण के समय जैसी निराशा व्यक्त की गई थी, वैसी ही बहुत गहरी निराशा व्यक्त करते हुए बर्लिन ने कहा है कि यदि जर्मनी मित्रों को पश्चिम में न रोक सके, तो मित्र टैंक उसी प्रकार जर्मनी को गैंदते चले जायँगे जिस प्रकार १९४० में जर्मन फ्रांस में घुसे थे।

* * *

रूसी सेनायें बर्लिन पर अन्तिम प्रहार करने के उद्देश से सुदृढ़ व्यूह-रचना में दत्तचित्त हैं, मार्शल झुकोव की सेनायें एक मास पूर्व कुस्टिन और फ्रैंकफर्त के बीच ओडर नदी पर पहुँच चुकी थीं वहाँ पर जर्मनों को युद्ध में फँसाकर उन्होंने अब स्टेटीन की ओर अपने अन्य सैन्यदलों को बढ़ाया है और बाल्टिक तट से जर्मनों का सफाया करने के लिए उन्होंने काफी प्रगति की है। धुरपूर्व में मार्शल रोकोसोवस्की भी अपनी सेनाओं के साथ कोस्लिन और मैजिग की ओर अधिक जर्मन सेनाओं के फँसाने के लिए बढ़े हैं। सारांश यह कि कोल्बर्ग से लेकर ओडर मुहाने तक ७५ मील लम्बे बाल्टिक तट पर रूसी सेनाओं का अधिकार स्थापित हो गया है। इस प्रकार मार्शल झुकोव ने निर्णायक युद्ध की कुंजी प्राप्त कर ली है। जर्मन सूत्रों का कहना है कि मार्शल झुकोव की भारी तोपें स्टेटिन के बहिर्भागों पर गोलाबारी कर रही हैं और प्रथम श्वेत रूसी सेना ग्रीफेन हेजेन की तरफ अपना विस्तार कर रही है।

मार्शल रोकोसोवस्की की सेना पोमेरानिया के तटवर्ती भाग में घुस गई है, जो कि पूर्वी प्रशा में डेंजिग और कोस्लन के बीच में है। पूर्वी प्रशा में महत्त्वपूर्ण घटना होनेवाली है, क्योंकि तृतीय श्वेत रूसी सेना ने शत्रु के तटवर्ती दक्षिणी किलेबन्दी के सघन ब्राउन्सबर्ग पर हमला कर दिया है। इस प्रकार बाल्टिक का युद्ध सबसे अधिक रणनीति से लड़ा जा रहा है। भारी जर्मन सेनाओं को कई टुकड़ों में विभाजित कर दिया गया है और लाल सेना उसका अलग अलग संहार कर रही है। फँसी हुई जर्मन सेनाओं के किसी भी हिस्से के बच जाने की कोई आशा नहीं रह गई है।

* * *

सुदूरपूर्व में फिलिपाइन के लुजोन द्वीप पर पूर्णरूपेण अधिकृत होने के लिए जेनरल मैकआर्थर पुनः सेनायें संगठित कर रहे हैं। पालवान नामक एक और फिलिपाइन के टापू पर अमरीकी सेना का अधिकार हो गया है जो क्षेत्रफल के हिसाब से वहाँ के पाँचवें नंबर का द्वीप है। इस टापू का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि वह बोर्नियो के उत्तरी सिरे से केवल १०० मील दूर है। लुबांग पर भी मित्रों का कब्जा हो गया है। इयोजिमा में अमरीकी सेनाओं की प्रगति जारी है और जापानी धीरे-धीरे पीछे हट रहे हैं। वहाँ पैराशूटों-द्वारा अमरीकी सेनाओं के लिए रसद पहुँचाना आरम्भ हो गया है। अमरीकी उड़नकिलों के आक्रमण जापान की मुख्य भूमि पर लगातार हमले हो रहे हैं। टोकियो आदि नगरों पर अनेक बार विचाराधीन सप्ताह में सफल बमवर्षा की गई जिससे जापानियों को भारी क्षति उठानी पड़ी।

* * *

बर्मा रण-क्षेत्र की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है—प्रथम चीनी सेना द्वारा लाशियो पर अधिकार तथा १४वीं सेना के १९वीं डिवीजन का मांडले के उत्तरी क्षेत्र में प्रवेश। मध्य बर्मा में १४वीं सेना ने मांडले के २० मील दक्षिण मीकटीला पर अधिकार कर लिया और मांडले रंगून रेलवे को काट दिया। इरावदी मोर्चे पर जापानियों से मित्रसेनाओं को भीषण लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं लेकिन उन्होंने टांग्था और माहलेंग शत्रु से छीन ही लिये। जापानियों के लिए मांडले से भागने का दक्षिणी मार्ग कट जाने और लाशियों पर मित्रों का अधिकार हो के बाद अब उनके बच निकलने के केवल पूर्व में थाइलेंड का ही रा है।

आसाम में कोहिमा-मणीपुर सड़क के एक मार्ग का दृश्य

विशुद्धता की माप

अशुद्ध कच्चे माल से या स्वास्थ्य रक्षा के नियमों की अवहेलना कर, बनाये गये पदार्थों में खास कर के खाद्य-पदार्थ, औषधि और प्रसाधन सामग्रियों में, जो भीषण खतरा छिपा हुआ है उससे रक्षा पाने का जनता को पूर्ण अधिकार है।

बहुत से देशों में खाद्यपदार्थों व औषधियों की विशुद्धता की रक्षा के लिये कानून बने हैं और कड़ाई से उनका पालन किया जाता है। भारत में ऐसा कानून नहीं के बराबर है और, इसीलिये रक्षा नहीं मिलती। बिकने आई व के बनाने वालों पर विश्वास के अलावा जनता के लिये कोई चारा नहीं है।

जनता के प्रति अपने कर्त हमें हमेशा खयाल रहता है हमें यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट की लगी सभी वस्तुएं संसार के भी देश द्वारा निर्द्धारित वि के माप से किसी भी अंश में नहीं हैं चाहे कच्चे माल की मता से देखा जाय चाहे बन तरीके और हालातों से।

स्टैनिस्ट्रीट

ब्रूसिन . केसिन सीमेण्ट . डिस्इन्फेक्टेण्ट्स . कैफीन . कुचिनेटम (एसोबिक) प्रिपरेशन्स . इन्जेक्ट्यूल्स . लार्विसाइड्स लेप्रोसी प्रिपरेशन्स . ल्युकोडर्मा . लिक्विड एक्सट्रैक्ट्स . पर्फ्यूम्स . पर्मानेंट हेयर वेविंग प्रिपरेशन्स . स्टेन्स इन सौल्युशन . स्पिरिचुअस प्रिपरेशन्स . स्ट्रिकनिन . सिरप्स . टैब्लेट्स . टिंचर्स . टौयलेट प्रिपरेशन्स .

के बनाने वाले

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐन्ड कम्पनी लिमिटेड द्वारा प्रचारित

कल बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 115

विश्वास उत्पन्न करनेवाले आँकड़े

तेईसवीं त्रैवार्षिक वैल्युयेशन रिपोर्ट घोषित करती है

मृत्यु-संख्या के अनुभव में सुधार
और ख़र्च के अनुपात में कमी

३ साल का लाभ कम्पनी के ऋणों पर ३) सैकड़ा ब्याज लगाकर १,५०,८८,०९२ हुआ—

इसके कारण बीमादारों के सुरक्षा-कोष में ५४ लाख रुपये की वृद्धि हुई

बोनस घोषित
आजीवन बीमा पालिशियों पर १२॥) प्रतिहज़ार वार्षिक
मियादी (एनडाउमेंट) बीमे पर १०) „ „

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ एशोरेन्स कं० लि०
ब्रांच आफिसः—३२ कैनिङ्गरोड, इलाहाबाद।

ईस्ट इन्डियन रेलवे

विशेष सूचना

अर्द्धकुम्भ मेला, हरद्वार १९४५

युक्तप्रान्तीय सरकार ने नम्बर ४१६/३-१३-१९४५, ता० ३०-१-४५ को निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है :—

भारत-रक्षा कानून की धारा ८५—बी की उपधारा (१) के अनुसार संयुक्तप्रान्त के गवर्नर महोदय ने निम्नलिखित घोषणा की है :—

(अ) कोई भी व्यक्ति, ड्यूटी पर जाते हुए फौजी आदमियों तथा तीन वर्ष से कम के बच्चों के अतिरिक्त।

(ब) अथवा अलावा उन लोगों के जिनके पास पब्लिक हेल्थ डाइरेक्टर या डिप्टी डाइरेक्टर, यू० पी० की लिखित आज्ञा हो।

नीचे लिखी हुई रेलवे स्टेशनों को रेल से यात्रा न कर सकेगा और न कोई रेलवे १५ मार्च से १३ अप्रैल तक (जिसमें ये दोनों दिन भी शामिल हैं) इन्हें यात्रा करने गी जब तक कि

(स) यात्री हैजे की सुई १ नवम्बर १९४४ के बाद न लगवा चुका हो और सरकार द्वारा नियुक्त आफिसर का इस बात का प्रमाण-पत्र रखता हो।

(द) अथवा या तो

(१) रेलवे के कर्मचारी इस बात से सन्तुष्ट हो जायँ कि वह व्यक्ति अर्द्धकुम्भ मेला हरद्वार में सम्मिलित होने के विचार से यात्रा नहीं कर रहा है, या

(२) यात्री के पास मेला इन्चार्ज की, किसी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अथवा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा आज्ञा देने के लिए अधिकृत किये हुए अन्य मजिस्ट्रेट की लिखित आज्ञा हो।

रेलवे स्टेशनों की सूची

ईस्ट इन्डियन रेलवे

लिया खेरी
ाडियाला
कबालपुर
ड़की
धौरा

दौसनी
लश्कर
रैसी
बलवाली
चन्दौक

मुअज्जमपुर नरायन
नजीबाबाद
साने रोड
कोटद्वारा
ऐथल

पाथरी
ज्वालापुर
हरद्वार
रायवाला
ऋषीकेश

केसराव
डोईवाला
हर्रावाला
देहरादून
मसूरी

एन० डब्ल्यू० रेलवे

सहारनपुर — सरसवा

(आज्ञानुसार)

इसी प्रकार की आज्ञा बिहार सरकार-द्वारा भी हैजे के टीके के सम्बन्ध में निकाली ा रही है।

बंगाल तथा अन्य प्रान्तों से हरद्वार के मेले में आनेवाले यात्रियों को सूचित किया ाता है कि जब तक उनके पास हैजे के टीके का १ नवम्बर १९४४ के इधर का प्रमाण-त्र न होगा तब तक वे लोग मेले में नहीं आने पावेंगे।

इस प्रमाण-पत्र की जाँच मेले के चारों तरफ बनाये हुए नाकों-द्वारा होगी और नके पास प्रमाण-पत्र न होगा वे मेले में न आ सकेंगे। यात्रियों के लिए यह आवयक है कि मेले की यात्रा करने के पहले वे लोग हैजे का टीका लगवा लें तथा इसका ार्टिफिकेट हासिल कर लें।

टिकट खरीदते समय यह सार्टिफिकेट टिकट बाबू को दिखाना होगा। टिकट ाबू स्टेशन की मुहर लगाकर सार्टिफिकेट यात्री को वापस कर देंगे।

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।
भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

"सरस्वती सिरीज़"

हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

जो स्त्रियां ख़ाली हैं

आजकल उनकी आवश्यकता डबल्यू० ए० सी० (आई) में है—

अर्थात् गृहस्थी अथवा सामाजिक सेवा कार्य में संलग्न नहीं हैं, उनकी आवश्यकता वमेन्स आगज़ीलरी कोर (इंडिया) में आजकल है। केवल उन महिलाओं को जिनकी उम्र १७ और ५० वर्ष के बीच हो तथा जो भलीभाँति अँगरेजी बोल और लिख सकती हों, आवेदन करना चाहिए।

निवास-स्थान की सुविधा

डबल्यू० ए० सी० (आई) की सदस्यायें सुखपूर्ण निवास-स्थानों में रहती हैं, जिनकी देखभाल इसी संस्था की ज़िम्मेदार महिलाओं द्वारा की जाती है।

शांति—काल

शांति स्थापित होने पर हिन्दुस्तान की उन स्त्रियों को, जिन्होंने शत्रु को पराजित करने में भाग लिया है, शान्ति उपभोग करने का बहुत बड़ा अधिकार होगा।

युद्ध के पश्चात्

व्यापार-वाणिज्य तथा उद्योग धंधोंमें, हिन्दुस्तान बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और यह निश्चित है कि शांति स्थापित होने पर शहरी नौकरियों के लिए अच्छी ट्रेनिंग पाये हुए बहुत से कर्मचारियों (स्त्री-पुरुषों) की आवश्यकता होगी। डबल्यू० ए० सी० (आई) में नौकरी करते हुए बहुत सी स्त्रियां प्रबन्ध-कार्य का बड़ा अच्छा अनुभव प्राप्त कर लेंगी जो शहरी नौकरी में सफलता पाने के लिए बहुत आवश्यक होता है।

पूरा विवरण

नौकरी के नियमों आदि के संबंध में पूरा विवरण बिना किसी बन्धन के, ए० टी० आर० ओ० / डबल्यू० ए० सी० (आई) से प्राप्त किया जा सकता है जो स्वयं इस संस्था की सदस्या होती हैं। डबल्यू० ए० सी० (आई) के बारे में आप जो कुछ भी जानना चाहती हैं, ये महिलायें आपको प्रसन्नतापूर्वक बतला देंगी।

ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० ए० सी० आई० के पते

बम्बई—ए० एफ० आई० बिल्डिंग, हास्पिटल लेन, धोबी तलाव
कलकत्ता—मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, २८, थियेटर रोड।
लखनऊ—मार्फ़त टी० आर० ओ०, ईस्टर्न, हज़रतगंज। पटना—मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, इग्ज़ीबीशन रोड। रावलपिंडी—ग्विन टामस रोड। बंगलोर—कैण्टूनमेण्ट, कबन रोड। लाहौर—२२, डेविस रोड। पूना—स्टाण्टन रोड। मद्रास—३/१८ माउण्ट रोड। अथवा अपने निकटवर्ती डब्ल्यू० ए० सी० (आई) प्लेटून कमाण्डर के पास आवेदन कीजिए।

WAC INDIA

भारतीय महिला सहायक सेना में

भरती हो जाइए

AAA 1594

एलगिन की टर्किश और हकबेक तौलिये, ड्रिल्स झाड़न, धोतियां, साडियां और चद्दरें अद्वितीय है।

"If it's ELGIN it's good!"

यदि यह 'एलगिन' का है तो बढ़िया है।

धी एलगिन मिल्स कम्पनी लिमिटेड, कानपुर
सोल सेलिंग ऐजेण्टस्
मेसर्स रूप नारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर
स्टॉकिस्टस्:—जी. टेकचंद एण्ड कं. लखनौ: पी. बी. कूपर एण्ड कं. कानपुर सैम्युएल फिटज एण्ड कं. कलकत्ता तथा अन्य बड़ी दुकानें.

EK-17.

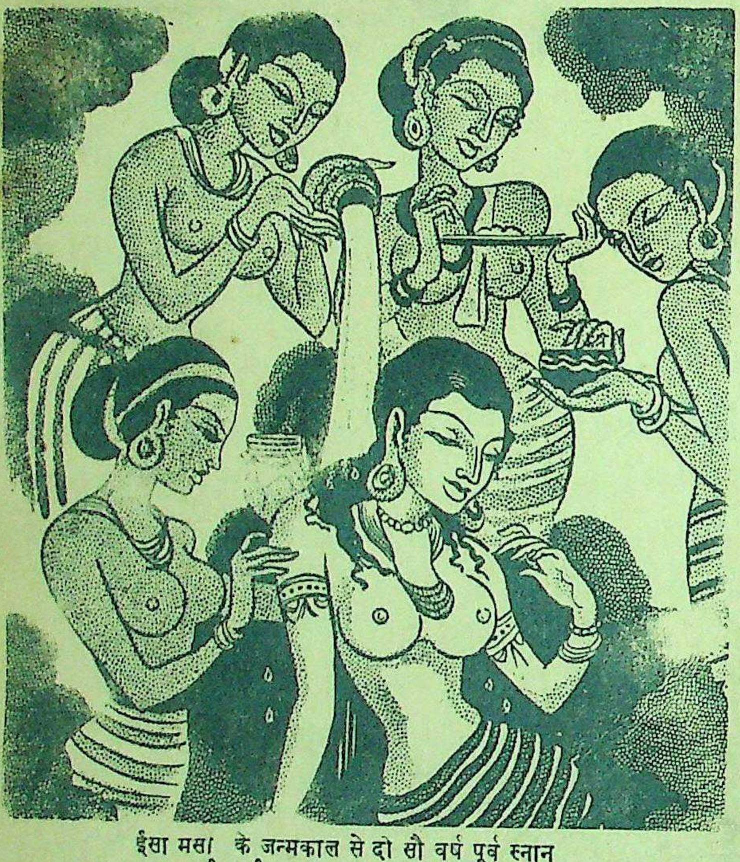

ईसा मसा के जन्मकाल से दो सौ वर्ष पूर्व स्नान एक महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता था, जिसका आनन्द लोग फुरसत के समय उठाते थे। यह राजघराने की रमणी पत्थर के चबूतरे पर शाही ढंग से बैठी है और दासियाँ उसे स्नान करा रही हैं जो पानी में भीगे रीठे के फेन से शरीर की मैल साफ करने का काम लेती है।

आज **हमाम साबुन** द्वारा सभी को अच्छा और अधिक सरल तरीका उपलब्ध है, जिसका सुगन्धित फेन लोम-छिद्रों को अन्दर तक साफ कर ताजगी एवं स्फूर्ति प्रदान करता है।

हमाम

आप के स्नान के लिए बड़ा साबुन

टाम्को सेल्स डिपो
जवाहर स्कायर इलाहाबाद

क्या आप साहसी हैं?

आप अवश्य हैं! अगर आप न होते, तो आश्चर्य की बात होती, क्योंकि नवयुवकों को सा होना ही चाहिए। किन्तु आप यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि जिस भारतीय नवयुव साहस और जोश होता है, वह आखिर करता क्या है? इसका उत्तर सरल है— हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में भरती हो जाता है। इस अच्छी नौकरी में नवयुवको अपने साहस एवम् उत्साह के प्रदर्शन का बहुत अच्छा अवसर मिलता है। साथ ही साथ इसमें रहकर वह अपना चरित्र-निर्माण भी कर सकता है। भविष्य सफलता प्राप्त करने के लिए सरदारी करने की योग्यता, नियम-पालन और प्रारम्भ करने की क्षमता आवश्यक होती है। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में काम अपने आपको युद्धोत्तर कालीन भारत के लिए तैयार कर लीजिए।

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुतसे जवानोंमें ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।

* सरकार ने इस बात की गारंटी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग खाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।

* ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरी से आये हुए जवान सरकारी खर्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।

* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा संबंधी विशेष रियायतें मिलेंगी जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके संबंध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर अपने निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट्स) रिक्रूटिंग आफ़ीसर के पास भेज दीजि जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े पाइलाट (विमान चालक) की नौक के संबंध में पूरा विवरण और प्रार्थना पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम ______________________

पता ______________________

____

____

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े

को ऐसे जवानों की ज़रूरत है जिन तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सुनने ताकत ठीक हो और उम्र १७½ और साल के बीच हो; विमान चलाने परिश्रम को सहन कर सकते हों अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए।

आइ० ए० यफ०, जी० डी० (पाइलट्स)
रिक्रूटिंग आफिसर, ५ वे रोड, लखनऊ।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग [illegible] तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र नि

देशदूत

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

०] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, २५ मार्च, १९४५

...दार
...विरुद्ध

...की सामयिक और प्रमुख घटनायें

...वार, २५ मार्च, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 25th March

...ों में शिकार करनेवाले सारस पक्षी
...सुंदरता से अपना घर बनाते हैं।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

पंजाब प्रांत का युद्ध बजट कैसा है?
मुस्लिम लीग के पा...

एलगिन की टर्किश और हकबेक तौलिये, ड्रिल्स झाड़न, धोतियां, साडियां और चद्दरें अद्वितीय है।

"If it's ELGIN"

पीठी डा०ख० मलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

दर्जी छाप

सिलाई का धागा

आप वही धागा खरीदें जो निसन्देह मजबूत तथा रुचेचिन है।

भारतवर्ष में

एकमे थ्रेड कं०, लि०

द्वारा निर्मित

बैंक आफ बड़ौदा बिल्डिङ्ग,
एपोलो स्ट्रीट, बम्बई।

THE ACME THREAD CO. LTD
DURZI CHAAP
ARTICLE

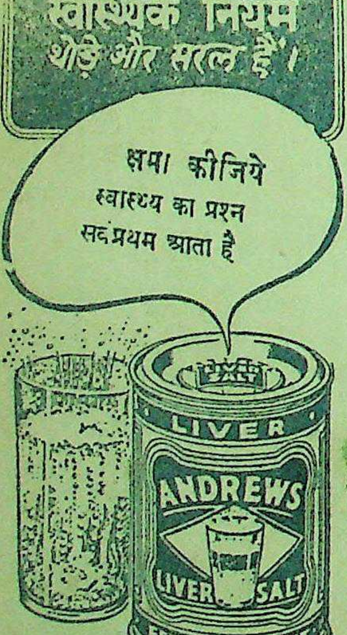
स्वास्थ्यके नियम थोड़े और सरल हैं।
क्षमा कीजिये स्वास्थ्य का प्रश्न सर्वप्रथम आता है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

अन्दरूनी सफाई के लिये
ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्य के लिये

231

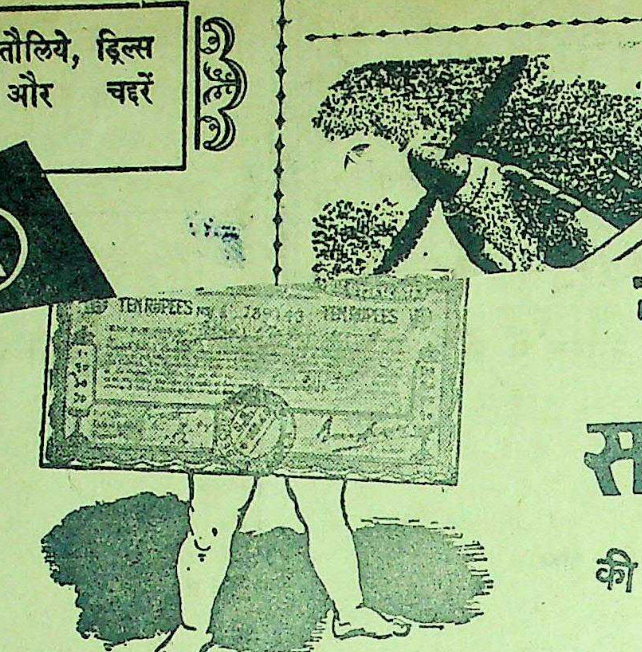
TEN RUPEES
TEN RUPEES

नल सेविंग्स सर्टीफिकेट

की कहानी उसी की ज़बानी

"
- ★ मैं आपकी बचत को बिलकुल सुरक्षित रखता हूँ।
- ★ मेरी क़ीमत बारह बरस में दस रुपये से बढ़ कर पन्द्रह रुपये हो जाती है।
- ★ मेरे व्याज पर इनकम टैक्स नहीं लगता।
- ★ आप आसानी से मुझे सरकार द्वारा नियुक्त किसी एजेण्ट से या किसी सेविंग्स ब्यूरो या पोस्ट आफिस से खरीद सकते हैं।
- ★ मेरे बड़े भाइयों को आप ५० रुपये, १०० रुपये, ५०० रुपये या हज़ार रुपये में खरीद सकते हैं और ये सब भी इसी हिसाब से बढ़ते हैं—अर्थात् बारह वर्ष में ५० प्रति शत वृद्धि।
- ★ मैं दस रुपये क़ीमत चुकाने पर आपको मिल सकता हूँ या आप एक रुपये, आठ आने अथवा चार आने के सेविंग्स स्टाम्प खरीद कर मुझे क्रमशः प्राप्त कर सकते हैं।
- ★ तीन साल बाद आप मुझे जब चाहें भुना सकते हैं। आपको आपकी पूँजी वापस मिल जायगी और उसके साथ व्याज भी जो मैंने आपके लिए कमाया होगा—किन्तु

—आपका सब से अधिक लाभ इसी में है कि मुझे सुरक्षित रखें!"

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों या किसी सेविंग्स ब्यूरो या पोस्ट आफिस से प्राप्त कीजिए।

123 Hind

जिन आहारों को आप खूब पसन्द करते हैं...

उनको शक्तिदायी बनाओ!

DALDA VANASPATI
DALDA COOK BOOK
Price Re.1/-
सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डालडा (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें जानकारी १९० से अधिक आहारोंका बयान किया आपके पास इसकी कापी होनीही Dept. C113 P.O. Box No. 353, के पते पर चार आने के पोस्टेज स्टाम्प भेजिये

क्या आप जानते हैं कि हमारे चंद आहार हमारे लिये फायदेमन्द नहीं? उनसे पेट तो भर जाता है लेकिन जितनी शक्तिका हम हररोज व्यय करते हैं उतनी उनसे वापस नहीं मिलती। इसके बारेमें सोचना आवश्यक है न? हमारा आरोग्य, सुख, कामयाबी,—सभी हमारी शक्तिपर निर्भर हैं। अगर चाहिये उतनी शक्ति हम हमारे भोजन से न पा सकें तो, आज ना सही कल, हमें पछताना होगा। वैसे सभी आहार कुछ ना कुछ शक्ति देतेही हैं। लेकिन हमारे भोजनमेंसे कई ऐसे हैं जिनसे बहुत कम शक्ति पैदा होती है। इन आहारों के साथ ज्यादा शक्तिदायी चीजों का इस्तेमाल करके हम उन्हींसे अधिक शक्ति पा सकते हैं। जीवन सत्त्व-संपूर्ण डालडा इस काममें बहुत मदद करता है। यह बढ़िया चीज कुछ ऐसे "अन्नांश" देती है जो प्रकृति के सबसे ऊंचे दर्जेके शक्तिदायी हैं। सभी आहार डालडा में बनाना फायदेमन्द है—सिर्फ सुरक्षा के लिये।

पोषक-तत्व संपन्न डालडा स्फूर्ति के लिये

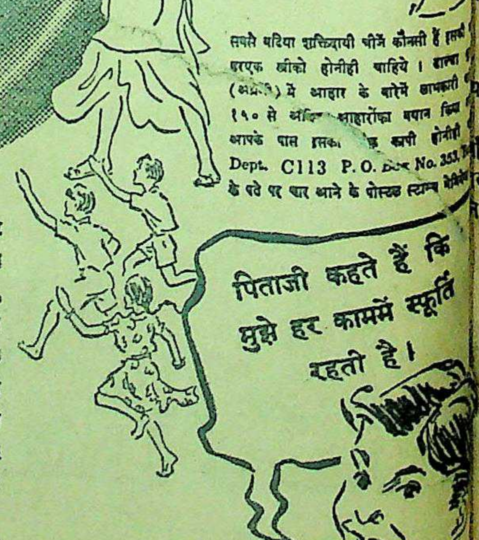
पिताजी कहते हैं कि मुझे हर काममें स्फूर्ति रहती है।

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING

व

सीमाप्रान्त
ौरंगजेब खाँ
विश्वास क
२४ वोटों-द्वारा
कांग्रेस पार्टी
एक नया मंत्रि
आमंत्रित किय
आमंत्रण स्वी
ंत्रिमंडल की
सेम्बली का
। यह भारत
ंडल है जो
स्तीफा देने प

*

सिंध के प्र
हदायतुल्लां ने
रफ से इस्ती
ुसेन तथा ख
स सन्बन्ध में
नया मंत्रिमंड
अपनी त
वर्नर के आ
एक नया
जसमें चार
त्री सम्मिलि

*

युक्तप्रान्त
भा की जो
होनेवाली
जिस्ट्रेट ने
षेधाज्ञा जारी
गित कर दी

*

केन्द्रीय
च बार सरक
टौती के प्रस्त
स्लिम लीग
ल की ओर
तरफ से पेश

*

योरोपीय
इयो पर बत
लटन भीज
र्मन प्रत्याक्रम
अधिक जर्मन
क नष्ट किये

*

सीमाप्रान्त
ापित होते ह
छोड़ दिये
ी अब्दुल गफ़
स एक नि
रिचत कार्यक्र

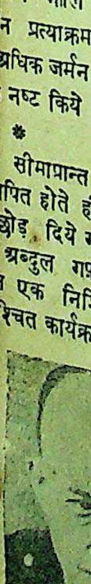

जनरल

देशदूत

वर्ष ७ संख्या ३०] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, २५ मार्च, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

सीमाप्रान्तीय एसेम्बली में सरदार औरंगजेब खाँ के मंत्रि-मंडल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव १८ के विरुद्ध २४ वोटों-द्वारा पास हो गया। गवर्नर ने कांग्रेस पार्टी के नेता डा० खाँ साहब को एक नया मंत्रिमंडल स्थापित करने के लिए आमंत्रित किया। डा० खाँ साहब ने आमंत्रण स्वीकार करके एक कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना कर ली है। एसेम्बली का अधिवेशन शीघ्र होनेवाला है। यह भारत में प्रथम कांग्रेसी मंत्रि-मंडल है जो पिछले कांग्रेस-मंत्रि-मंडल के स्तीफा देने पर पुनः कायम हुआ है।

* * *

सिंध के प्रधान मंत्री सर गुलाम हुसेन हदायदुल्लां ने भी अपने मंत्रिमंडल की रफ से इस्तीफा दे दिया। सर गुलाम सेन तथा खाँ बहादुर मौला बख्श दोनों स सम्बन्ध में गवर्नर से मिले और दोनों नया मंत्रिमंडल स्थापित करने के सम्बन्ध अपनी तत्परता दिखाई। अंत में वर्नर के आमंत्रण से सर गुलाम हुसेन एक नया मंत्रिमंडल स्थापित किया, जसमें चार लीगी मंत्री तथा दो हिन्दू त्री सम्मिलित हैं।

* * *

युक्तप्रान्तीय कांग्रेसजनों की प्रतिनिधि भा की जो बैठक १६ मार्च को बनारस होनेवाली थी उस पर बनारस के जिला जिस्ट्रेट ने भारत रक्षा-कानून के अनुसार षेधाज्ञा जारी कर दी थी इसलिए बैठक गित कर दी गई।

* * *

केन्द्रीय एसेम्बली में पिछले दिनों च बार सरकार की हार हुई। पाँच टौती के प्रस्ताव पास हुए, जिनमें एक स्लिम लीग की तरफ से, एक राष्ट्रीय ल की ओर से और एक यूरोपियन दल तरफ से पेश किये गये थे।

* * *

योरोपीय युद्ध के सम्बन्ध में मास्को-डियो पर बताया गया है कि हंगरी में लटन झील के क्षेत्र में १३ दिन के र्मन प्रत्याक्रमण के दौरान में २०,००० अधिक जर्मन मारे गये तथा उनके ६०० क नष्ट किये गये।

* * *

सीमाप्रान्त में कांग्रेसी मंत्रिमंडल पित होते ही सीमाप्रान्त के गांधी जेल छोड़ दिये गये। जेल के बाहर आकर अब्दुल गफ़्फार खाँ ने कहा—"मेरे स एक निश्चित लक्ष्य के लिए एक श्चित कार्यक्रम है, जिसे सभी जानते हैं। मैं बहुत दिनों से बाहरी दुनिया के संपर्क से रहित हूँ। किसी कार्य को आरम्भ करने के पहले मैं नई परिस्थितियों का अध्ययन कर लेना चाहता हूँ।"

* * *

लाहौर में होनेवाले नेशनल लिबरल फेडरेशन के अधिवेशन में कई प्रस्ताव पास हुए, जिनमें ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया गया कि केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार स्थापित की जाय। भारत में वर्तमान राजनीतिक अड़ंगा पर खेद प्रकट करते हुए भारत-सरकार से कहा गया कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के मेम्बर लोग तथा अन्य कांग्रेसी नेता छोड़ दिये जायँ।

केन्द्रीय एसेम्बली में बम्बई मिल मालिक एसोसियेशन के सर विठ्ठलदास चन्दावरकर ने कपड़े की कमी का कारण यह बताया कि कपड़ा गुप्त रूप से तिब्बत से होकर चीन भेज दिया जाता है जहाँ १० रु० गज कपड़ा मिलता है।

* * *

मिस्टर जिन्ना की अस्वस्थता के कारण उनका वायसराय से मिलना स्थगित हो गया है। इसी कारण से अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का अधिवेशन भी संभवतः स्थगित कर दिया गया है।

भारत-सरकार के टेक्सटाइल कमिश्नर श्री एम० के० वेल्लोडी ने संवाददाताओं के सम्मेलन में कहा कि युद्ध-काल में नागरिकों के लिए सूती कपड़ों के वितरण में वृद्धि होने की संभावना तब तक नहीं है जब तक निर्यात तथा सेना-विभाग की आवश्यकतायें घटें।

* * *

बिहार के पाँच प्रमुख कांग्रेसी सदस्यों पर नजरबन्दी के जो आदेश जारी किये गये थे वे वापस ले लिये गये हैं। इसके पहले श्री अनुग्रहनारायणसिंह ने गवर्नर के सलाहकार मि० रसेल तथा चीफ सेक्रेटरी से भेंट की थी और सरकार द्वारा पूछी गई कुछ बातों का स्पष्टीकरण कर दिया था।

* * *

अखिल भारतीय दलित-संघ श्रेणी के कार्यवाहक सभापति बी० सी० मंडल, एम० एल० ए० ने एक सार्वजनिक सभा में दलित जातियों के लोगों से यह अपील की कि वे डा० अम्बेदकर के उन उपदेशों का अनुसरण न करें जो वे सवर्ण हिन्दुओं के खिलाफ देते रहते हैं, क्योंकि उनसे पारस्परिक घृणा फैलने और यहाँ तक कि घरेलू युद्ध छिड़ने की संभावना है।

प्राण मुझको छोड़ दो !

लेखक, प्रोफेसर राजनाथ पाण्डेय, एम० ए०

मैं झरोखे से चला आया पवन हूँ, प्राण मुझको छोड़ दो !
इस सदन में मैं तुम्हारी ही सगन हूँ, प्राण मुझको छोड़ दो !
हाय मुझको दंड मत दो,
प्राण मुझको छोड़ दो !
है हमारी जाति ही स्वच्छन्दता की, मैं सदा स्वच्छन्द हूँ।
किन्तु वातायन हुए ये बन्द, ऐसा हो रहा मैं मंद हूँ !
हाय मेरे भाग्य की ये नई कड़ियाँ, तुम चिहुँक कर तोड़ दो !
प्राण मुझको छोड़ दो !
है न मेरा संचरण प्रेरित किसी कुविचार की कटु गाँस से,
है तुम्हारी पलक से ज्यों ज्योति त्योंही बरसती नित पुलक मेरी साँस से,
खोल दो तुम निज महा प्रासाद की ये खिड़कियाँ, ये बंद आँखें,
उड़ चलें आकाश को ये प्राण-पंछी खोल कर निज बंद पाँखें,
जा रहा हूँ यदि अगति की ओर मैं तो प्राण ! निज छोह से टुक मोड़ दो !
प्राण मुझको छोड़ दो।

माननीय सर तेजबहादुर सप्रू ने कपड़े के अकाल में वाइसराय से हस्तक्षेप करने की अपील की है और कहा है कि कपड़ा उन्हीं लोगों को मिलना चाहिए जिनके लिये भेजा जाता है।

भारतीय रेलवे प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए यातायात सदस्य सर एडवर्ड बेन्थल ने भारतीय रेलों में सुधार के संबंध में कहा कि निकट भविष्य में इस बात की बहुत संभावना है कि तूफान मेल १८ घंटे में दिल्ली से कलकत्ता पहुँच जायेगी। उसकी औसत चाल ५० मील प्रति घंटा होगी और उसके सभी दर्जों की गाड़ियाँ 'एयर कन्डिशन्ड' होंगी।

* * *

चुंगकिंग की खबर है कि शंघाई में मित्र-सेनाओं के उतरने की आशंका के कारण वहाँ से जापानी और चीनी नागरिकों को हटाया जा रहा है।

* * *

ज्ञात हुआ है कि अहमदनगर फोर्ट के जेल में नजरबन्द कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य सम्भवतः एक या दो दिन के भीतर ही विमान-द्वारा अपने-अपने प्रांतों में भेज दिये जा रहे हैं।

* * *

यह अनुमान किया जाता है कि सद्भावना का वातावरण उत्पन्न करने के उद्देश्य से सिंध सरकार सत्यार्थ प्रकाश के १४ वें समुल्लास पर लगाई गई रोक वापस ले लेने के प्रश्न पर विचार कर रही है।

* * *

एथेन्स में इआम दल के प्रतिनिधियों ने अमेरिकन राजदूत को सूचित किया कि ग्रीक राष्ट्रीय प्रतिरोध आन्दोलन को तमाम ग्रीस में कुचला जा रहा है। यदि वामपक्षीय दल के विरुद्ध कार्रवाइयाँ जारी रहेंगी तो तमाम देश में फिर गड़बड़ी मचने की सम्भावना है।

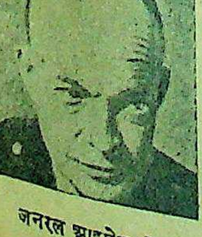

जनरल आइसेन होवर।

सेनापति जनरल अलेक्जंडर

एडमरल डगलस मेकआर्थर

सेनापति जनरल निमिज

लार्ड लुई माउन्ट बेटेन

संसार के विभिन्न युद्ध-मोर्चों पर मित्रराष्ट्रीय फौजी कमांड के यह प्रधान सेनापति हैं जो स्थल, जल और हवाई युद्ध का संचालन कर रहे हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

कपड़े का अकाल क्यों ?

पिछले कुछ महीने से भारत के कई प्रान्तों में कपड़े के अभाव का भयंकर अकाल उपस्थित हो गया है। लोगों को प्रतिदिन के साधारण उपयोग में आनेवाले आवश्यक वस्त्रों के मिलने में अत्यन्त कठिनाई तथा दुर्दशा का सामना करना पड़ रहा है। भारत-सरकार के वाणिज्य सदस्य सर अजीजुल हक ऐसी विषम स्थिति में भी अलग खिचड़ी पकाते जा रहे हैं। उनका कहना है कपड़ा की कमी नहीं है। कपड़े बाजारों में दिये जाते हैं और यदि फिर भी लोगों को नहीं मिलते हैं तो यह वितरण-प्रणाली का दोष है जिसकी जिम्मेदारी प्रान्तीय सरकारों पर है। भारत-सरकार कर ही क्या सकती है? यदि आगे प्रश्न किया जाता है तो भारत-सरकार वैधानिक कठिनाइयों की अड़चन उपस्थित करके अपने हाथ-पाँव ढीले कर देती है। हमारी समझ में यह नहीं आता कि भारत-सरकार तथा प्रान्तीय सरकारें अपनी वैधानिक कठिनाइयों के बीच बेचारी जनता को दुर्दशा की परिस्थिति के बीच क्यों घसीट रही हैं? उनके विधान तथा कानून लोगों के साधारण दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में क्यों बाधक बन रहे हैं? बंगाल का पिछला अन्न-संकट भी कुछ इसी तरह की वैधानिक अड़चनों के बीच भयंकर अकाल का रूप ग्रहण कर चुका है और वैसा ही भविष्य वस्त्रों के आज के अभाव से भी दिखाई दे रहा है। विधान और कानून मनुष्य के ही बनाये हुए हैं, विधाता के नहीं। समय पर उनमें भी परिवर्तन होना अनिवार्य है। वह आवश्यकतानुसार बनाये और संशोधित किये जा सकते हैं। यह ठीक है कि युद्ध परिस्थति के प्रभाव से वस्तुओं का अभाव हो गया है लेकिन यह अभाव अकाल का रूप ग्रहण कर ले या लाखों व्यक्ति सड़कों पर दूकान दूकान तन ढकने के लिये कपड़ों के लिये भटकते फिरें, भारत या प्रांतीय सरकारों के शांति स्थापित रखने वाले कानून और व्यवस्था के लिये यह उपहासास्पद और लज्जाजनक है। हम जानते हैं कि युद्ध-कार्य के लिये भारत सरकार को किसी तरह की अड़चन का सामना नहीं करना पड़ता। आज प्रान्तों की मिलों पर भारत सरकार का प्रभुत्व है। उसी के इशारे पर सब काम हो रहा है। प्रांतीय सरकारें इसमें बाधक नहीं हैं। वैधानिक अड़चन भी किसी तरह की नहीं उत्पन्न होती है। फिर जनता की आवश्यकता के लिये ही तरह तरह की टालमटूल क्यों की जा रही है? लोग पूछते हैं कि कपड़े की यह भीषण स्थिति क्यों उत्पन्न हो रही है? इसका मुख्य कारण यह है कि भारत से वस्त्र बहुत बड़ी संख्या में बाहर भेजा जा रहा है। ब्रिटिश सरकार इस वक्त भारत के बाहर के देशों को अत्यधिक प्रसन्न करने में लगी है। पिछले वर्ष फारस पर जब वह प्रसन्न हुई तो यहाँ से अधिक से अधिक गेहूँ पहुँच गया। इसी प्रकार चीन, पच्छिमी देशों, मध्यपूर्व में इस समय कपड़ा अधिक संख्या में भेजा जा रहा है। इसके सिवा भारतीय मिलों में जो कपड़ा आज दिन तैयार होता है उसका ९० प्रतिशत सरकार फौज के उपयोग के लिये ले लेती है। १० प्रतिशत के बचत के कपड़े में से अधिक गैर फौजी कार्यों में खर्च किया जाता है। इस प्रकार शायद पाँच प्रतिशत वस्त्र जनता के उपयोग के लिये प्राप्त होता है। इसमें संदेह नहीं कि इस युद्ध काल में जिस प्रकार अन्य व्यवसायियों ने मुनाफा कमाया है, उसी प्रकार वस्त्र-विक्रेताओं ने भी। एक तो थोड़ी संख्या में चीज़ बाजार में आती है, दूसरे वस्तुओं के अभाव से दैनिक जीवन की आवश्यकतायें इतनी बढ़ गई हैं कि 'चोर बाजारों' का बोल बाला हो गया। कपड़ा बाजार में आया और दो-एक दिन दर्शन देकर लुप्त हो गया। गुप्त रूप से वह अधिक दामों पर बिकने लगा। जिनके पास पैसे हैं वही उसके खरीदार बने। परिणाम यह हुआ कि मुनाफाखोरों ने अपना उलटा सीधा किया, जनता की परवाह कौन करनेवाला है? ऐसी स्थिति में वस्त्रों का अकाल न पड़े तो क्या हो? सरकार 'चोर बाजार' को मिटाने के लिये खड्गहस्त अवश्य हो गई है किन्तु आज भी वह 'चोर बाजार' को समाप्त करने में सफल नहीं हो सकी है।

आज कल दूकानदारों को कपड़ा बेचने का लाइसेंस दिया गया है। लोगों को कतार में खड़ा कराके कपड़ा दिलवाया जाता है किन्तु हाथी का पेट तिनके से नहीं भरता। सरकार नाटक तो अच्छा रच रही है, देखने में ऐसा लगता है कि वह लोगों को कपड़ा दिलाये बिना नहीं मानेगी, किन्तु बाजार में आज जो कपड़ा खरीदने जाते हैं, उनकी कितनी दुर्दशा हो रही है, इसका प्रत्यक्ष दर्शन करने की आवश्यकता है। आश्चर्य है कि पुलीस, पल्टन तथा नियंत्रण में कार्य करनेवाले लाखों व्यक्ति इस दयनीयता की परिस्थिति से लोगों को नहीं बचा पा रहे हैं। इससे ऐसा जान पड़ता है कि वितरण-प्रणाली इतनी दोषपूर्ण हो गई है, लोगों की विशेष रूप से वस्त्र-विक्रेताओं की नैतिकता इतनी गिर गई है कि इसके दूर होने की फिलहाल कोई आशा नहीं दिखाई दे रही है। तालाब का तालाब गंदा हो गया है। इसलिये अब आवश्यकता इस बात की जान पड़ती है कि अन्न की भाँति वस्त्र राशनिंग भी होनी चाहिए। कम से कम लोग परेशानी, मारपीट और झगड़े लड़ाई से तो बचे रहेंगे! मध्यमवर्ग तो अपने मान-मर्यादा की दृष्टि से नई प्रणाली से कपड़ा खरीदने में असमर्थ है। साधारण लोग अपने काम-धंधे को छोड़कर दो एक दिन समय व्यय करें तो शायद उन्हें भी कपड़ा नसीब हो। दैनिक जीवन का कार्य करते हुए आजकल कपड़ा आसानी से मिल जाना लोहे के चने चबाना है। इसलिये हमें तो यही जान पड़ता है कि वस्त्रों की राशनिंग होनी चाहिए। तभी 'चोर बाजार' का खात्मा भी होगा। जब तक ऐसा नहीं होगा 'चोर बाजार' की इतिश्री नहीं हो सकती और न सरकार ही उसे समाप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकती है। जब से प्रांतों में अन्न की पूर्ण राशनिङ्ग हुई है तब से लोगों को किसी न किसी प्रकार का अन्न मिलने तो लगा है। इसी प्रकार वस्त्र-राशनिङ्ग भी शीघ्र से शीघ्र होनी आवश्यक है, क्योंकि न मिलने से कुछ तो मिलेगा। भविष्य में इसके सिवा दूसरा उपाय नहीं दिखाई दे रहा है।

महात्मा गांधी और 'हिन्दुस्तानी'

हिन्दी-उर्दू के सिवा वह तीसरी भाषा क्यों चाहते हैं

गत मास में वर्धा में होनेवाले हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा के अधिवेशन के अवसर पर महात्मा गांधी ने दो भाषण दिये थे। एक अधिवेशन के प्रारम्भ में और दूसरा अंत में। गांधी जी के प्रामाणिक भाषणों के प्राप्त न होने से हिन्दी-संसार में कुछ वाद-विवाद सा प्रारम्भ हो गया था। इसलिये हम 'हिन्दुस्तानी' से सम्बन्ध रखनेवाले गांधी जी के दोनों प्रामाणिक भाषण नीचे दे रहे हैं। हिन्दी संसार को राष्ट्रभाषा के हित तथा उसके प्रचार और प्रसार की दृष्टि से इस पर विचार-विनिमय करना अधिक उचित होगा। इस सम्बन्ध में यदि हिन्दी प्रेमी अपने पुष्ट विचार प्रगट करेंगे तो हम उन्हें 'देशदूत' में सहर्ष स्थान देंगे।

(१)

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा क्या है, यह मैं आपको बता दूँ। हिन्दुस्तानी प्रचार सभा का मकसद यह है कि ज्यादा से ज्यादा लोग हिन्दी और उर्दू शैलियाँ और नागरी और उर्दू लिपियाँ सीखें। एक दिन था जब उत्तर में रहनेवाले तो एक ही जबान बोलते थे। उन्हीं की औलाद हम हैं। आज हम यह महसूस कर रहे हैं कि हिन्दी और उर्दू एक दूसरे से दूर होती जा रही है। हिन्दीवाले कठिन संस्कृत के और उर्दूवाले कठिन अरबी फारसी के लफ्ज चुन चुनकर इस्तेमाल कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि यह चीज चलनेवाली नहीं है। देहात के लोगों को तो रोटी की पड़ी है। वह जो जबान आज तक बोलते आये हैं, वही आगे भी बोलते रहेंगे।

हिन्दी और उर्दू के जो दो अलग-अलग फिरके पैदा हुए हैं उन्हें रोकने का काम मेरे और जमनालाल जी जैसे लोगों का है। मैं दोनों से कहूँगा कि आपका यह तरीका ठीक नहीं है। आपके इन बड़े-बड़े लफ्जों को देहाती लोग समझेंगे भी नहीं। अगर हम दोनों लिपियों को सीख जायँ तो आखिर में दोनों भाषायें एक हो जाएँगी। लिपियों का सवाल इतना टेढ़ा नहीं है। भले ही हमेशा के लिए दो लिपियाँ रहें, या दोनों को छोड़ कर हरेक प्रान्त अपनी-अपनी लिपि में राष्ट्रभाषा लिखने लगे तो भी कोई हर्ज नहीं। मगर जबान तो एक हो जानी चाहिए। हम आज आलसी बन गये हैं। अँगरेजी का बोझ आज हमारे सिर पर है। लेकिन अँगरेजी भी इतनी मुश्किल नहीं है। छः महीने में हम अँगरेजी सीख सकते हैं, मगर हम तो अँगरेजी में विचार करना और शास्त्र सीखना चाहते हैं, इसलिए वक्त लगता है। अँगरेजी के पीछे जिन्दगी के चौदह उम्दा साल हम बरबाद करते हैं, और इतना करने पर भी पूरी तरह सीख नहीं पाते। आज अगर अँगरेजीदाँ से कहो कि हिन्दुस्तानी में अपनी बातें समझाओ तो वह कहता है कि कैसे समझाऊँ? क्योंकि अँगरेजी में पढ़ाई होने के कारण वह हिन्दुस्तानी में अपने खयालों को जाहिर नहीं कर सकते। फिर वह हिन्दुस्तानी लड़कों को कैसे सिखावेंगे? यह है हमारी दुर्दशा! इसमें से आलस भी पैदा होता है।

तो दो लिपियाँ सीखने में डरना क्या? कोई कहे कि आठ दस दूसरी अच्छी लिपियाँ हैं तो क्यों न सीखें? मैं तो कहता हूँ कि दक्षिण की भी एक दो लिपि सीख लो। जबानें भी वहाँ चार ही हैं! तो आप भड़कें नहीं।

आप हिन्दुस्तान में रहते हैं। हिन्दुस्तानियों की सेवा-खिदमत करना चाहते हैं। तो इसके लिए दो लिपियाँ सीखने की मेहनत से डरना क्या? जबान तो एक ही सीखनी है न? हमारी बदनसी हमें दो लिपियाँ लेनी पड़ती हैं। म तो हिन्द की सब जबानें खुशी लूँ। दिल में शौक हो तो मेहनत क है। आपकी तादाद आज बहुत ही भले ही हो। लेकिन आप तो दो सीख लें। इसका नतीजा कितना ब इसमें मैं नहीं जाना चाहता।

हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा, वर्धा के मंत्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल।

कुछ मुसलमान बड़ी-बड़ी बातें वक्त जिन लफ्जों का इस्तेमाल उन्हें सुन कर मैं घबड़ा उठता हूँ, उनके साथ में काफी बैठता उठ तो ऐसा क्यों हो? मैंने इसका जवा है और उसको आपके सामने रखा

(२)

श्री आनन्द कौसल्यायन जी कहा वह मैं समझा। वह दब-दब हैं। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की उन्होंने यह कहा कि दो लिपियों को हो सके तो निकाल दिया जा आज भी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन उसमें मैं अपने आप नहीं गया जमनालाल जी जिस काम में जाते साथ मुझे भी ले जाते थे। वे मुझे ले गये। वहाँ मैंने नई चीज दी। सब हड़प कर गये। मैंने कहा था कि वह जबान है जिसे हिन्दू मुसलमान बोलते हैं और दोनों लिपियों में लि मेरा वह प्रस्ताव मंजूर हुआ। बाद उसे सम्मेलन के नियमों में दाखिल फिर वह बदल गया, यह दूसरी इसलिये अगर आज मैं उसमें से जाऊँ तो मुझे दुःख न होगा।

हममें से कई ऐसे हैं जो हि उर्दू को मिलाने की कोशिश कोई कहते हैं, 'इसकी क्या आव है?' मैं तो सच्ची डेमोक्रेसी (चाहता हूँ। सिर्फ हाँ-में-हाँ मि डेमोक्रेसी हिपोक्रेसी (ढोंग) बन जा

—शेष पृष्ठ १८ पर

मुस्लिम-लीग का पराभव क्यों?

सीमाप्रांत तथा आसाम में राष्ट्रीयता का प्रारंभ

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

सीमाप्रांत में कांग्रेसी मंत्रिमंडल की स्थापना हो गई, यह प्रांतों के मुसलिम लीगी मंत्रिमंडलों तथा स्वयं लीग तथा मिस्टर जिन्ना के लिये एक चुनौती के समान है। इस लेख में युवक लेखक ने यह सिद्ध किया है कि यदि लीग ने अपनी अवरोधक गति को समाप्त न किया तो राजनीति में मुसलमान उसके नेतृत्व का बहिष्कार करेंगे, देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित होगी और आज की जिच सदा के लिये बन्द हो जायेगी।

पिछले दिनों एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना ने समस्त भारत का ध्यान एकाएक आकर्षित कर लिया है। यह घटना जितनी ही अनहोनी तथा आश्चर्यप्रद थी, उतनी ही महान् परिणामों और भारतव्यापी राजनीतिक उथल-पुथल की परिचायक भी थी। इसके द्वारा, ब्रिटिश सरकार के समस्त बल और आशीर्वाद से प्रेरित होकर, जिस स्वप्न को सत्य करने की आशा श्री जिन्ना और उनकी मुस्लिम-लीग ने की थी, वह धूल-धूसरित हो गई और अनेक कुचक्रों-द्वारा बारम्बार रोके जाने पर भी कांग्रेस ने सीमान्त-प्रदेश के प्रान्त का शासनाधिकार अपने हाथ में ले लिया। डा० खान साहब के प्रधान मंत्रित्व का कार्य-भार सँभालते ही सीमान्त गाँधी तथा अन्य उन्नीस राजबन्दियों की मुक्ति की आज्ञा हो गई। इस प्रकार सीमान्त-प्रदेश में एक बार फिर से राष्ट्रीयता का बोलबाला हुआ!

सीमाप्रांत के गांधी खान अब्दुल गफ्फ़ार खाँ जेल से छूटकर बाहर आ गये हैं।

इस प्रकार यह घटना समस्त देश में एक जबर्दस्त प्रतिक्रिया का कारण बन गई है। सरकारी हलकों पर तो मानो वज्रपात-सा हुआ क्योंकि उन्होंने तो यही समझा था कि कांग्रेस की शक्ति छिन्न-भिन्न हो गई है। लीगवालों का तो और भी बुरा हाल है, क्योंकि एक ओर तो पहले ही पंजाब में श्री खिजर हयात खाँ व काश्मीर में शेख अब्दुल्ला ने लीग के नाकों चने चबवा दिये थे, फिर अभी हाल में सिंध में श्री गुलामहुसैन हिदायतुल्ला और श्री सैयद के आपस के झगड़े तथा संयुक्त-प्रान्त में प्रान्तीय लीगी राष्ट्रपति व मंत्रियों के स्तीफे ने इनकी स्थिति को और भी डाँवाडोल कर दिया था। गांधी जी के लीग से एकता करने के प्रयत्न व श्री जिन्ना के प्रति उनकी दिखलाई गई शालीनता और सदाशयता से (गाँधी-जिन्ना-मिलन के अवसर पर) लीग के पदाधिकारियों के दिमाग ऊँचे चढ़ गये। उन्होंने मुस्लिम जनता की धर्मान्धता, देशद्रोही कम्यूनिस्टों की मदद तथा ब्रिटिश सरकार की अप्रत्यक्ष सहायता द्वारा अपना कार्य-साधन करने की ठानी थी; पर वे पूर्णतया असफल सिद्ध हुए। इनसे नये समाचारों के अनुसार आसाम में मुस्लिम लीगी श्री सादुल्ला खाँ की सरकार व सिंध में श्री गुलाम हुसैन का लीगी मंत्रिमंडल, दोनों ही राष्ट्रीयतावादियों के हाथों पराजय प्राप्त करने ही वाले हैं।

सीमाप्रांत के कांग्रेसी मंत्रिमंडल के प्रधान मंत्री डाक्टर खान साहब।

आखिर मुस्लिमलीग के विस्तृत संगठन का नियमित विध्वंस कैसे हो रहा है, तथा इसका क्या कारण है? क्या मुस्लिम जनता ने श्री जिन्ना के ऊपर विश्वास त्याग दिया और क्या वह 'पाकिस्तानी नारे' की आधारभूत और असम्भव अत्युक्तियों को समझ गई? क्या महात्मा गाँधी व राजा जी द्वारा प्रशंसित श्री जिन्ना को मुस्लिम धनी व मध्यम-वर्ग ने एकमात्र नेता स्वीकार नहीं किया? यह साधारण से सवाल प्रत्येक व्यक्ति के सम्मुख अचानक ही आ जाते हैं, पर शीघ्र ही उसे इनका समुचित उत्तर भी प्राप्त हो जाता है। गांधी-जिन्ना पत्र-व्यवहार की लम्बी फाइल उटाते और उसमें श्री जिन्ना की असीम प्रतिक्रियावादिता और गाँधी जी की सदाशयता पाते हैं। प्रत्येक मुस्लिम इस बात को जानता है कि 'पाकिस्तान' बन जाने पर भारत के तीन टुकड़े हो जायेंगे। सुरक्षा व यातायात के लिए एक असम्भव समस्या उत्पन्न हो जायेगी और वह सदा के लिए गुलाम बना रहेगा। वह आदर्शों की दुनिया को छोड़कर जब वास्तविकता की ओर देखता है तो उसे लीग में श्री जिन्ना और कुछ पूँजीपतियों के व्यक्तिगत स्वार्थों को ही पाता है जो कि महत्वपूर्ण राजनीतिक अधिकार प्राप्त करके शोषण करने को प्रयत्नशील हैं। वह अपने को हिन्दुओं से पृथक् नहीं समझता क्योंकि वह तो स्वयं हिन्दू-रक्त का है क्योंकि या तो आज से तीन पीढ़ी पहले उसके हिन्दू वंशज औरंगजेब-द्वारा जबरदस्ती मुसलमान बना डाले गये होंगे या ऐसे ही किसी अन्य मुस्लिम शासक

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

सेनफ्रान्सिस्को सम्मेलन और भारत

अन्य राष्ट्रों की भाँति भारतीय प्रतिनिधित्व कैसा है?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

मित्रराष्ट्रों का आगामी सम्मेलन सेनफ्रांसिस्को में होगा। उसमें युद्ध के बाद संसार में स्थापित होनेवाली शांति व्यवस्था की योजना के उपायों पर विचार होगा। संसार के राष्ट्रों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में शरीक होंगे। भारत भी सरकारी तौर से प्रतिनिधित्व करेगा। इस लेख में इसी सम्बन्ध में सुन्दर और सामयिक प्रकाश डाला गया है।

युद्ध के बाद शांति और व्यवस्था की योजना के उपायों पर विचार करने के लिए सेनफ्रान्सिस्को में सम्मेलन की तैयारियाँ ही नहीं प्रारम्भ हुईं, बल्कि उसके लिए प्रत्येक राष्ट्रों के प्रतिनिधि मण्डल भी वहाँ रवाना होने लगे हैं। संसार के कोने कोने में इस सम्मेलन के प्रति उत्सुकता प्रकट की जा रही है। सम्मेलन-सम्बन्धी चर्चा के साथ ही भारत के प्रतिधिनित्व की चर्चा भी आजकल हो रही है! पार्लियामेंट में प्रस्ताव पर प्रस्ताव आये कि भारत के लिए ब्रिटिश सरकार क्या कर रही है? किन्तु मिस्टर एमरी भारत मंत्री के पद पर जब तक सुशोभित हैं तब तक भारतीय जनता के अनुकूल कार्य कैसे हो सकता है, इँगलैंड का दकियानूसी दल, आज भी संसार की बदलती हुई स्थिति को बन्द आँखों से देख रहा है। माल्टा-सम्मेलन में ब्रिटेन, अमेरिका और रूस ने मिलकर जैसा चाहा वैसा किया। किन्तु अब सेनफ्रान्सिस्को में जो सम्मेलन होगा उसमें अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित किये जायँगे।

सेनफ्रान्सिस्को-सम्मेलन में शामिल होनेवाले बड़े राष्ट्रों में प्रथम श्रेणी के राष्ट्र चार अथवा पाँच कहे जाते हैं। दूसरी श्रेणी में वह राष्ट्र आते हैं जो मित्रराष्ट्रों के माल्टा-सम्मेलन-द्वारा घोषित शर्तों पर धुरीराष्ट्रों के विरुद्ध अपने को युद्ध-रत घोषित कर दिया है। तीसरे प्रकार के वह राष्ट्र हैं जो अभी तक तटस्थ बने हुए हैं। चौथे प्रकार के राष्ट्र वह हैं जिनको इस युद्ध छेड़ने का दोषी ठहराया गया है। इस प्रकार सेनफ्रान्सिस्को-सम्मेलन में राष्ट्रों का जो प्रतिनिधित्व होगा उसका एक सुन्दर चित्र हमारे सामने आने लगा है।

प्रथम श्रेणी के राष्ट्र अपने को कभी तो चार महान् राष्ट्रों की गणना में रखते हैं और कभी पाँच। इसका भेद कब प्रकट होगा? इसका भेद संभवतः जापान से प्रबल युद्ध प्रारम्भ होने पर ही प्रकट होगा। क्योंकि फ्रांस को संसार की तीनों महान् शक्तियाँ एक ऐसी दृष्टि से देखने लगी हैं जिससे उसकी गणना दूसरी श्रेणी के राष्ट्रों में की जाने की सम्भावना है। चीन का भी कम महत्त्व नहीं है। चीन को आज चार महान् शक्तियों में स्थान दिया जा रहा है। परन्तु शान्ति-व्यवस्था के समय क्या होगा? क्या भारत के सम्बन्ध में जनरल च्यांगकाई शेक, मैडम च्यांग तथा उनकी सरकार मित्रराष्ट्रों को उचित अधिकारों के दिये जाने की सलाह नहीं दे रहे हैं? क्या ब्रिटेन ने उन पर जरा भी ध्यान देने का कष्ट किया है? ध्यान देने की कौन कहे, सेनफ्रान्सिस्को के लिए भी भारतीय प्रतिनिधि-मंडल भेजने का एक स्वांग बनाया गया है। हम भारत के उन सरकारी प्रतिनिधियों से वैसी ही आशा कर सकते हैं जैसा अफ्रीका में वहाँ के भारतीय कमिश्नर और अमेरिका में सर गिरिजाशंकर वाजपेयी कर रहे हैं। हमारे सरकारी प्रतिनिधि भी वही करेंगे जो अन्य सरकारी प्रतिनिधि कर रहे हैं।

अमरीका के प्रेसिडेंट रूजवेल्ट सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन देखने के लिये उत्सुक हैं।

क्या यही प्रतिनिधि अन्य देशों के प्रतिनिधियों की भाँति भारत जैसे गुलाम देश का सच्चा चित्र सेनफ्रान्सिस्को में उपस्थित कर सकेंगे? क्योंकि वहाँ तो प्रथम श्रेणी के राष्ट्रों की ही प्रधानता रहेगी। हमें विश्वास है कि यदि चीन का उस सम्मेलन में कुछ भी हाथ होगा तो वह भारत का सच्चा चित्र प्रकट करने में प्राणपण से प्रयत्न करेगा? भारत का सच्चा प्रतिनिधित्व श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अमेरिका की जनता के सामने किया है। रूस से भारत की घटनायें और उसकी स्वतन्त्रप्रियता छिपी नहीं है। फ्रांस के जनरल डिगाले भारत को भले ही भूल जायँ पर, उस देश की महान् आत्मा रोम्याँ रोलाँ भारत का सच्चा चित्र फ्रांस के सामने ही नहीं संसार के सामने उपस्थित कर चुके हैं। क्या फ्रांस संसार की शान्ति-व्यवस्था स्थापित करने में रोम्या रोलां के मत का समर्थन करेगा! ब्रिटेन भारत-विरोधी प्रचार के लिए अमेरिका आदि देशों में रुपयों की नदी बहा रहा है। ऐसी स्थिति में हम सेनफ्रान्सिस्को में उपस्थित प्रथम श्रेणी के राष्ट्रों में भारतीय समस्या पर क्या निर्णय करेंगे इसका आभास हमें मिल रहा है।

अन्य राष्ट्रों के भी दूसरी और तीसरी प्रकार की श्रेणी में केवल थोड़ा अन्तर है क्योंकि कुछ राष्ट्र शत्रुदल के विरुद्ध युद्ध घोषित कर चुके हैं और कुछ अभी नहीं। यदि वह भी युद्ध घोषित कर दें तो उनकी भी कीमत बढ़ सकती है। किन्तु इन राष्ट्रों की संख्या भी थोड़ी ही है। इनसे हमें क्या आशा! वह अपने को इतना कमजोर कर बैठे हैं कि वे तीन महान् राष्ट्रों के विरुद्ध कुछ कर ही क्या सकते हैं? हाँ आयरलैण्ड जैसे वीर देश से हम यह आशा नहीं कर सकते। यदि वह सम्मेलन में सम्मिलित होगा तो भारत को उससे कुछ आशा है। परन्तु उसकी

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

वैज्ञानिक-चमत्कार

पृथ्वी के अन्दर दौड़नेवाली नई रेलें

प्रतिदिन १० लाख मुसाफिरों का आना-जाना होता है

लन्दन में पृथ्वी के नीचे रेलें चलती हैं। इनकी कुल लम्बाई प्राय: २२० मील है। ये रेलें गत ८० वर्षों में समय-समय पर बनी हैं। अधिकांश रेलें १९०० के बाद बनी हैं। कोई कोई रेलें मार्ग में बीच बीच में पृथ्वी के धरातल पर निकल आती हैं लेकिन मुख्यत: ये रेलें पृथ्वी के अंदर २० फीट से लेकर प्राय: २५० फीट की गहराई तक में बनी हैं। ये रेलें एक भाग से दूसरे भाग तक या उपनगरों तक आने-जाने के लिए बनाई गई हैं।

पृथ्वी के अन्दर सबसे पहली रेल १८६३ में बनाई गई थी। इसके मार्ग को ऊपर से नहर की तरह खोदकर तैयार करके बाद में ऊपर से ढक दिया गया था। इसलिए यह बहुत गहराई पर नहीं बनी थी। प्राय: ६० वर्ष हुए जेम्स ग्रेटहेड नामक एक शहरी इंजीनियर ने सुरंग खोदकर रेल बनाने का प्रस्ताव किया। इसके लिये उसने दो यंत्रों का आविष्कार किया जो सुरंग खोदने के लिए आज भी संसार भर में प्रसिद्ध हैं। सुरंग खोदने के यंत्र का नाम उसी के नाम पर ग्रेटहेड शील्ड रखा गया। उसका दूसरा आविष्कार लोहे का एक ढला हुआ खोल था जो सुरंग में स्थायी आवरण के रूप में काम में लाया जाता है।

पहले तो धरातल पर ही सारे मार्ग को बड़ी सावधानी से पर्यवेक्षण किया जाता है। इस प्रकार यह बिलकुल निश्चित रूप से जान लिया जाता है कि रेलवे के मार्ग का कोई स्थान धरातल की सड़कों, नदियों मकानों तथा अन्य निर्माणों की दृष्टि से किस जगह पर होगा। इसके बाद प्राय: आध-आध मील की दूरी पर धरातल से सीधी खुदाई की जाती है। इसके तल के दोनों ओर सुरंग खोदना प्रारंभ कर दिया जाता है। आने और जानेवाली गाड़ियों के लिए पृथक् पृथक् दो सुरंगें खोदी जाती हैं। खुदाई का कार्य ग्रेटहेड शील्ड की सहायता से किया जाता है। जिस स्थान पर खुदाई की जाती है वहाँ ऊपर की भूमि को रोकने के लिये यह एक प्रकार का चलायमान सहारा होता है। जैसे-जैसे सुरंग आगे बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे ही ग्रेटहेड शील्ड को यन्त्र-द्वारा आगे बढ़ा दिया जाता है। लोहे का ढला हुआ खोल सुरंग में स्थायी अस्तर के रूप में लगा दिया जाता है। इस खोल के छोटे-छोटे हिस्से तैयार किये जाते हैं। सुरंग के अंदर इन्हें एक-दूसरे के साथ मिलाकर बोल्ट से कसते जाते हैं। इस प्रकार सारी सुरंग के भीतर लोहे का अस्तर जम जाता है। सुरंग के भीतर ही स्टेशन बनाये जाते हैं। इनके लिए बहुत चौड़ी सुरंगें खोदनी पड़ती हैं, क्योंकि प्लेटफार्म आदि के लिए जगह बनानी पड़ती है।

सुरंग खोदने के बाद रेलें चालू करने से पहले बहुत-सा कार्य करना पड़ता है। सुरंग के भीतर रेल की पटरियाँ बनानी पड़ती हैं। बिजली, टेलीफोन और सिगनल आदि की व्यवस्था करनी पड़ती है। स्टेशन पर सारा आवश्यक साज-सामान लगाना पड़ता है, पृथ्वी के धरातल पर या कुछ नीचे टिकटघर बनाना पड़ता है और सड़कों से टिकटघर तक सीढ़ियाँ बनानी पड़ती हैं। इसके बाद टिकटघर से रेल तक संबंध जोड़ना पड़ता है। पहले बिजली के लिफ्ट काम में लाये जाते थे। लेकिन अब बिजली द्वारा नीचे-ऊपर जानेवाली सीढ़ियाँ बनाई गई हैं। इन्हें इस्केलेटर कहते हैं और यात्री बड़ी आसानी से रेल तक आ-जा सकते हैं।

यात्रियों की सुविधा के लिए कितनी ही योजनायें काम में लाई जाती हैं। टिकट देने और सिक्कों की रेज़गारी देने की मशीनें होती हैं। प्लेटफार्म पर बिजली के संकेतों-द्वारा प्रत्येक गाड़ी के आने की सूचना दी जाती है। सुरंग में हवा को शुद्ध रखने के लिए बड़े आश्चर्यजनक तरीके से रोशनदानों की व्यवस्था की जाती है। रेलगाड़ियाँ बिजली से चलती हैं जिससे सुरंग में जरा भी धुआँ नहीं होता। इस समय सुरंगों में रेलें प्राय: १० लाख यात्रियों को प्रतिदिन ले जाती हैं।

लन्दन की अधिकांश रेलें भिन्न-भिन्न समय में पृथक् रूप से बनी थीं। ये सारी रेलें एक विशाल संगठन के रूप में हैं। लंदन के नीचे रेलों का एक विस्तृत जाल फैला हुआ है जो बड़ी सफलता के साथ कार्य कर रहा है।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृंखल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

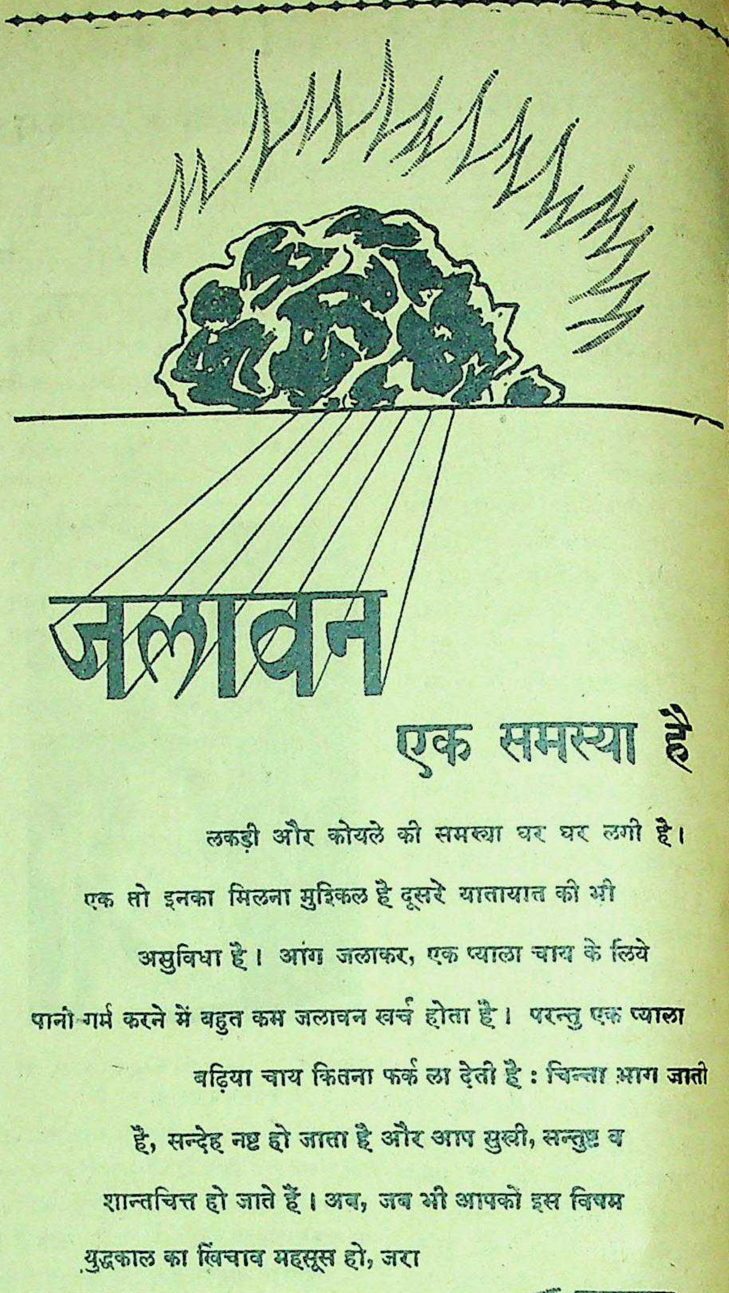

जलावन

एक समस्या है

लकड़ी और कोयले की समस्या घर घर लगी है।

एक तो इनका मिलना मुश्किल है दूसरे यातायात की भी असुविधा है। आग जलाकर, एक प्याला चाय के लिये पानी गर्म करने में बहुत कम जलावन खर्च होता है। परन्तु एक प्याला बढ़िया चाय कितना फर्क ला देती है : चिन्ता भाग जाती है, सन्देह नष्ट हो जाता है और आप सुखी, सन्तुष्ट व शान्तचित्त हो जाते हैं। अब, जब भी आपको इस विषम युद्धकाल का खिंचाव महसूस हो, जरा

एक प्याला चाय पीकर देखिये,

संसार ही बदला हुआ मालूम पड़ेगा।

भारतीय

वक्त पड़ने पर चाय का सहारा लीजिये

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 237

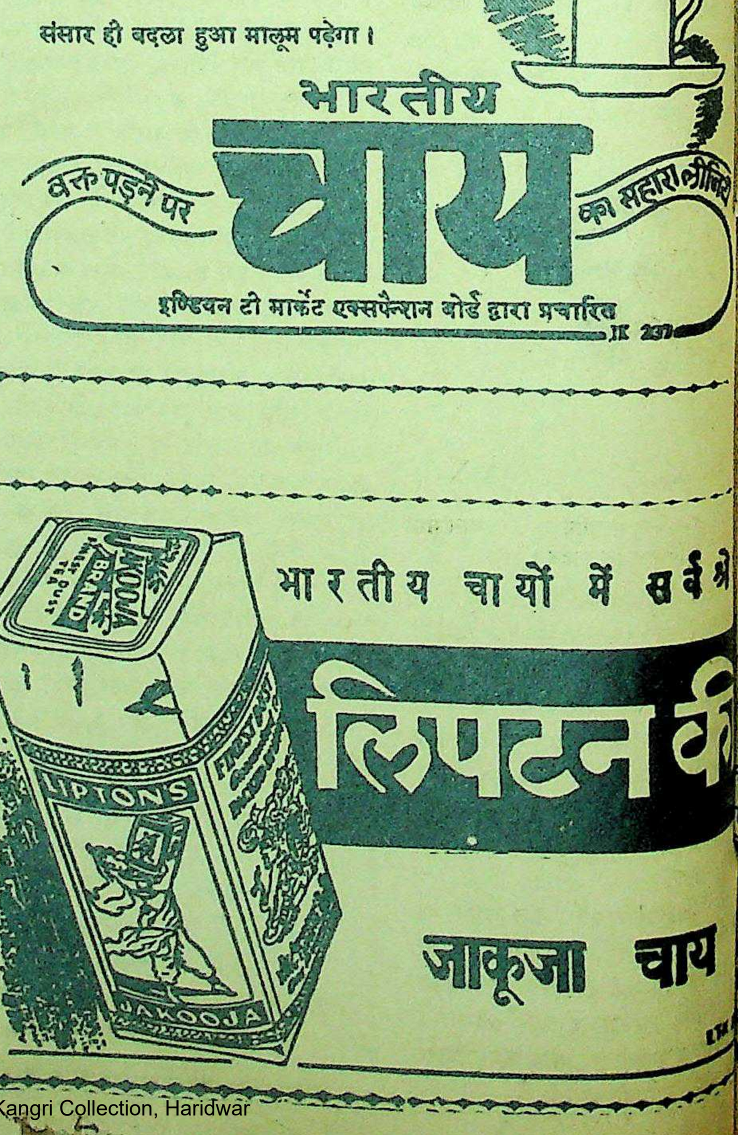

भारतीय चायों में सर्वश्रे

लिपटन की

जाकूजा चाय

पंजाब के नये आर्थिक बजट में—

शिक्षा-प्रसार तथा अन्य सार्वजनिक कामों से अधिक पुलिस का महत्त्व क्यों है ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

पंजाब सरकार ने नये वर्ष का जो आर्थिक बजट स्वीकार किया है, वह अपनी विशेषता रखता है। शिक्षा-प्रसार तथा अन्य सार्वजनिक और उपयोगी कार्यों के लिये जितना धन स्वीकृत हुआ है उससे कहीं अधिक पुलिस-विभाग पर खर्च का बजट स्वीकृत हुआ है। पंजाब सरकार ने ऐसा क्यों किया, इसका कुछ उत्तर अर्थ-मंत्री सर मनोहरलाल ने जिस भाँति बजट के अवसर पर दिया वह लोकप्रियता के अनुकूल नहीं है। प्रसिद्ध विद्वान् ने इस लेख में पंजाब के आर्थिक बजट पर सुन्दर प्रकाश डालते हुए उसे लोक-रुचि के प्रतिकूल बतलाया है।

यूनियनिस्ट पार्टी के प्रमुख स्वर्गीय सिकंदर हयात जिसका पंजाब असेम्बली में बहुमत है।

भारत के प्रान्तों में पंजाब पर लड़ाई का प्रतिकूल असर कम से कम पड़ा है। लड़ाई के कारण पंजाब और सिंध की समृद्धि और उनका वैभव बढ़ा ही है। बंगाल के भीषण अकाल ने भी उनको धनी बनाया है। इन अत्यधिक अनुकूल परिस्थितियों में पंजाब के बजट में बराबर बचत का होना कोई बहुत बड़े विस्मय की बात नहीं है। पंजाब का मन्त्रिमण्डल कुछ व्यक्तियों के हेर-फेर के अलावा अप्रैल १९३७ से एक ही रहा है। शासन की इस स्थिरता ने भी पंजाब को समृद्ध बनाने में मदद दी है। पर यह सब होते हुए भी पंजाब का ध्यान जितना शरीर की ओर है, उतना मन और आत्मा को शुद्ध और सुसंस्कृत बनाने की ओर नहीं है। पंजाब के सुयोग्य अर्थ मंत्री सर मनोहरलाल ने स्वीकार किया है कि शिक्षा में पंजाब भारत की उन्नति देशी रियासतों से भी पीछे है, और साक्षरता ९-१० प्रतिशत से अधिक प्रान्त में नहीं है इसलिये इसकी ओर ध्यान देने की जरूरत है। पर इस ओर बजट में तनिक भी ध्यान नहीं दिया गया है और पुलिस पर खर्चा बढ़ाया गया है। यदि भारत सरकार का बजट फौजी लाट का फौजी बजट है तो पंजाब का पुलिस अधिकारियों का पुलिस बजट है। पंजाब का वैभव और उसकी समृद्धि इन आँकड़ों में से फूटी पड़ती है :—

१९४३-४४ (संशोधित आनुमानिक) (लाख रु० में)

आय	व्यय	बचत
२०·०४	१७·२५	२·७९
(वास्तविक स्थिति)		
२१·२०	१६·८४	४·३६

१९४४-४५ (आनुमानिक) (लाख रु० में)

आय	व्यय	बचत
१९·६४	१५·७८	३·८६
(संशोधित आनुमानिक)		
२२·४९	२१·१०	१·३०

१९४५-४६ (आनुमानिक) (लाख रु० मे)

आय	व्यय	बचत
२१·१७	१९·२५	१·९५

१९४४-४५ में बचत का अनुमान ३·८६ लाख रु० किया गया था, पर अब १·३९ लाख की आशा है। कारण यह है कि ३·१५ लाख स्पेशल फण्ड में लिया या है, अन्यथा बचत ४·५४ लाख रु० ती।

सर मनोहरलाल की नीति पिछले नौ ल से खर्च को बढ़ा कर और आमदनी टा कर दिखाने की रही है। इस विषय वह भारत सरकार के अर्थ-सदस्य को पना आदर्श मानते हैं। नीचे की तालिका यह बात स्पष्ट हो जायगी :—

वर्ष	मूल अनुमान (लाख रु० में)	वास्तविक स्थिति (लाख रु० में)
१९४०-४१	२८ घाटा	९९ बचत
१९४१-४२	४ बचत	१२४ बचत
१९४२-४३	१० घाटा	१३४ बचत
१९४३-४४	५० बचत	२७९ बचत
१९४४-४५	३८६ बचत	४३६ बचत
१९४५-४६	१३९ बचत	?

१९४४-४५ में २·८५ लक्ष रु० अधिक आमदनी होने का कारण निम्न है :—

	लाख रु० में
भारत सरकार से इन्कम-टैक्स में से प्राप्त	१७
मालगुजारी	४५
प्रान्तिक एक्साइज	८६
वन	२६
अन्य कर	१७

व्यय में २·१७ लक्ष रु० वृद्धि हुई है। इसका कारण निम्न है :—

	लाख रु० में
आम शासन-प्रबन्ध	२६
पुलिस	३८
शिक्षा	१५
चिकित्सा	१२
मुल्की काम	५५
अकाल	१२
विविध	२६

१ मई १९४४ से पुलिस के वेतन में वृद्धि की गई और विभाग भी बढ़ाया गया। पुलिस-व्यय में वृद्धि का कारण है कि शाहपुर, कांगड़ा, डेरागाजी में भारी वर्षा पड़ने और बाढ़ आने से १२ लक्ष रु० व्यय बढ़ा।

१९४५-४६ के लिये आय का अनुमान २१·१७ लक्ष रु० किया गया है, जब कि १९४३-४४ में २१·२० लक्ष रु० वस्तुतः आय हुई थी। १९४३-४४ से भी कम आय का अनुमान करने का कारण यह बताया गया है कि भारत सरकार से आयकर में मिलनेवाला भाग अब कम हो जायगा और इसमें २० लक्ष की कमी हो जायगी। आय में कुल कमी १·३२ लक्ष रु० की होगी।

राष्ट्र निर्माण के कार्य विभाग

राष्ट्र निर्माण के कार्यों में व्यय १९३६-३७ की अपेक्षा लगभग दुगुना हो गया है। अर्थमन्त्री ने इसको बड़े गर्व से कहा है। निम्न तालिका प्रमाण में पेश की जा सकती है :—

	लाख रु० में
१९३६-३७	२८७
१९४१-४२	३४२
१९४२-४३	३६२
१९४३-४४	४१५
१९४४-४५	४९९
१९४५-४६	५५९

पंजाब सरकार राष्ट्र निर्माण के विभागों पर अपनी कुल आमदनी के २६ प्रतिशत से कुछ कम खर्च कर रही है। क्या यह गर्व की बात है ?

शिक्षा

शिक्षा के लिए २७ लाख दिये गये हैं। डेरागाजी खाँ में एक नया कालेज खुलेगा। तीन नये गवर्नमेंट हाई स्कूल और कुछ नये वर्नाक्युलर स्कूल खोले जायेंगे। शिक्षण संस्थाओं को ग्रांट देने में दलगत भावना और साम्प्रदायिक भावना से काम लिया गया है। इस्लामिया नार्मन कालेज, लाहौर, जमींदार कालेज गुजरात अंजुमन खादिमन-ए इस्लाम, जलन्धर शहर की ग्रांट बढ़ाई गई है। पंजाब सरकार प्रान्त के युवक आन्दोलन को अपने नियन्त्रण में रखने के लिए उसको आर्थिक चिन्ता से मुक्त कर देना चाहती है।

उद्योग

उद्योग विभाग को १९३६-३७ में १५ लक्ष मिलता था। अब उसको ३५ लक्ष मिलता है। पंजाब में उद्योगों

मुसलिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना को पंजाब में कई बार हार खानी पड़ी है।

के विकास की योजना बनाने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई है। पहले पाँच सालों में पंजाब सरकार ५ करोड़ रु० इनकी उन्नति और विकास पर खर्च करना चाहती है।

मँहगाई का भत्ता

१९४३-४४ में मँहगाई के भत्ते के लिए १·३२ लक्ष दिये गये थे। फिर यह रकम बढ़ाकर १·४४ लक्ष कर दी गई। पर चालू साल में ३ करोड़ रु० इस मद में खर्च हुआ है। २५० रु० तक वेतन पानेवाले सरकारी कर्मचारियों को मँहगाई का भत्ता दिया गया है। वेतन की दर में परिवर्तन करने से अगले साल २ करोड़ व्यय होने की आशा है। पटवारियों को भी भुलाया नहीं गया है। युद्ध-भत्ता, मकान किराया आदि भत्ते मिलाकर वेतन-बिल ३½ करोड़ से अधिक का होगा। पंजाब का शासन कितना मँहगा है, यह इससे स्पष्ट है। प्रान्त की कुल आमदनी का लगभग ७ प्रतिशत वेतन-बिल है! इतना मँहगा शासन क्या इस देश के किसी प्रान्त के लिए गर्व की चीज हो सकती है ?

जलीय-विद्युत

पंजाब सरकार पंजाब के गाँवों तक शीघ्र से शीघ्र बिजली पहुँचाने को उत्सुक है। जलीय-विद्युत योजना उसकी इसी इच्छा का परिणाम है। यह कार्य उसने किसी पूँजीपति को नहीं दिया है, फलतः इसमें निहित पूँजी का सूद भी किसी व्यक्ति की तिजोरी में नहीं जाता, बल्कि प्रान्तिक खजाने में जाता है। पंजाब को जलीय-विद्युत् से साल में ३०·०६ लक्ष आमदनी है। जब कि उसका सूद २९·१६ लक्ष है। लाहौर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी अब पंजाब सरकार ने ले ली है। कई बाँधों से भी जलीय विद्युत् उत्पन्न करने की योजना बनी है इसके पूर्ण होने पर विद्युत् विभाग की आमदनी और बढ़ेगी।

असाधारण आय

राष्ट्र निर्माण के विभागों से प्रान्त को असाधारण आय हुई है और यह पंजाब की एक खास विशेषता है। १९३६-३७ तक इनसे १०·१९ लाख आय हुई थी और अगले तीन सालों में ९१ लाख हुई। १९४० तक यह सब मिलाकर ११ करोड़ हुई थी। १९४१ के बाद से प्रगति इस रीति से हुई :—

	लाख रु० में
१९४१-४२	१·१०
१९४२-४३	२·००
१९४३-४४	५·१३
१९४४-४५ (संशोधित)	६·०५
१९४५-४६ (बजट)	४·७१

पाँच साल में कुल आमदनी १८·९९

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिये

गीत

लेखक, श्री बलवीरसिंह 'रंग'

क्या मेरी राह यहीं तक थी ?
मैं सोचा करता हूँ निशि-दिन,
क्या था, अब और गया क्या बन,
मनचाही-मंजिल पाने की क्या चंचल-चाह यहीं तक थी ?
काँपे गिरि, धरणी, और गगन,
पर हिल न सका मानव का मन,
मेरे दरदीले-गीतों में क्या करुण-कराह यहीं तक थी ?
सुख का अनुभव करना सुख है,
दुख का अनुभव करना दुख है,
मेरी नजरों में जीवन के सुख-दुख की थाह यहीं तक थी ?

ऐतिहासिक फिल्म 'विष-कन्या' कैसा है ?

पृथ्वीराज, सुरेन्द्र, साधना बोस तथा कमला का अभिनय

लेखक, श्री 'नीलम'

'विष-कन्या'। फिल्म रणजीत-द्वारा निर्मित है। इस चित्र में यद्यपि उच्चकोटि के अभिनेताओं का अभिनय है, फिर भी यह जनप्रिय नहीं हो सका। इसका कारण या तो रणजीत के निर्माण का शैथिल्य है अथवा केदार शर्मा का लोकरुचि के विपरीत निर्माण।

चित्र की कथा ऐतिहासिक है। कामरूप के राजा ने गौरस्थान के राजा को पराजित करके वन्दी कर लिया। वन्दी राजा वज्र को मुक्त करने के लिये महामन्त्री विष कन्याओं की शिक्षिका के पास गया और वहाँ से एक विष-कन्या नीलिमा को कामरूप के राजा के वध के लिए तैयार किया। नीलिमा को लेकर वह कामरूप के राजा से मिलने चला, किन्तु रास्ते में भेष बदल कर उसने अपने को रूम का व्यापारी बताया जो कि अपनी पुत्री के साथ राजा को कुछ मोती भेंट करने के प्रयोजन से जा रहा था। कामरूप का राजा स्त्रियों से घृणा करता था, इसलिये उसने अपने राजकवि मधुकर को व्यापारी से भेंट करने के हेतु भेजा।

'विष-कन्या के रूप में अभिनेत्री साधना बोस।

मधुकर अपनी बहन गौतमी सहित विष-कन्या से मिलने गया। परिणाम वही हुआ जो होना था। मधुकर विष-कन्या नीलिमा की ओर आकृष्ट हुआ। मोती कामरूप के राजा के पास लाये गये किन्तु एक व्यापारी ने जान लिया कि यह राजा वज्र के मोती हैं। वह व्यापारी महामन्त्री नीलकंठ तथा नीलिमा से मिलने गया जहाँ विष के प्रभाव से वह मार डाला गया। मधुकर और नीलिमा में प्रेम बढ़ने लगा। एक दिन कामरूप का राजा, विद्यार्थी के वेष में एक उत्सव में गया। वहाँ वह भी, जो कि स्त्रियों से घृणा करता था, नीलिमा के सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया। किन्तु नीलिमा ने उसकी अवहेलना की क्योंकि वह उसे कामरूप का राजा नहीं समझती थी। कामरूप के राजा को भी यह नहीं ज्ञात था कि नीलिमा ही विष-कन्या है। मधुकर तथा कामरूप का राजा, विष-कन्या के दो प्रेमी हो गये। विष-कन्या मधुकर को अपने से दूर रखती थी क्योंकि विष के प्रभाव से वह उसे बचाना चाहती थी। कामरूप के राजा को गौतमी—मधुकर की बहन जानती थी। उसने विद्यार्थी रूप में उसे देखा था और नीलिमा, विष-कन्या को बता दिया था। विष-कन्या को अपना शिकार मिल गया।

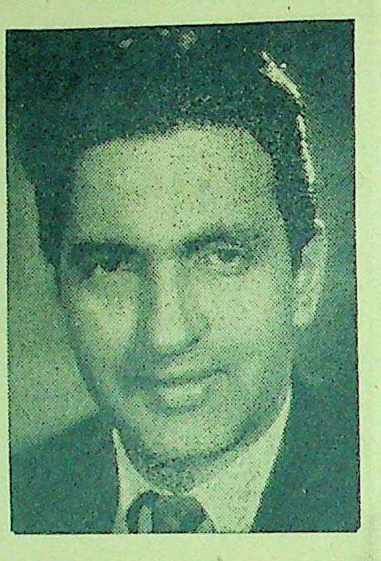
प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता सुरेन्द्र ने 'विष-कन्या' में मधुकर का अभिनय किया है।

कामरूप के राजा ने विष-कन्या को राजमहल में बुलाया और उससे पूछा कि वह मधुकर से प्रेम करती है या नहीं? राजा का अन्त करने के लिए उसने कहा कि वह प्रेम नहीं करती इसी समय मधुकर के आ जाने से यह प्रसंग वहीं समाप्त हो गया।

कामरूप के राजा ने नीलिमा को उद्यान में बुलाया। नीलिमा उसका अन्त करने के लिये तैयार होकर गई, किन्तु वहाँ मधुकर पहले ही आ गया। यहीं यह भेद खुल गया कि नीलिमा ही विष-कन्या है जो कि कामरूप के राजा का अन्त करने आई थी। स्वयं छिपे हुए कामरूप के राजा ने यह सुन लिया। उसने तलवार उठाकर मधुकर को दे दिया। मधुकर और विष-कन्या को उसने देश के बाहर जाने के लिए आज्ञा दे दी, किन्तु विष-कन्या की देशभक्ति की प्रशंसा भी की। मधुकर विष-कन्या को लेकर चला, किन्तु विष-युक्त होने से वह उसके प्रेम की पात्री न बन सकती थी। महामन्त्री वास्तव में नीलिमा का पिता था। उसने अपने प्राण देकर नीलिमा के शरीर का विष निकाल दिया। मधुकर और नीलिमा का मिलन हो गया।

पृथ्वीराज, सुरेन्द्र, साधना बोस का नाम क्रमशः कामरूप के राजा, मधुकर तथा विष-कन्या के रूप-में आता है। पृथ्वीराज का अभिनय सर्वश्रेष्ठ है। यद्यपि अपने पूर्व अभिनयों से वह कुछ गिरे हैं फिर भी चित्र के प्राण हैं। सुरेन्द्र तथा साधना बोस भी ठीक ही हैं जब कि एक दो स्थानों पर साधना बोस ने अत्यन्त सुन्दर अभिनय किया है। श्री केदार शर्मा की पत्नी कमला चटर्जी का अभिनय भी साधारण है। संगीत की दृष्टि से चित्र अच्छा नहीं है। सुरेन्द्र ऐसे गायक का संगीत साधारण है। हाँ, साधना बोस का एक नृत्य सुन्दर है। कमला चटर्जी गायनों के बीच-बीच में टपक पड़ती हैं।

चित्र की भाषा गड़बड़ है अथवा यों कहिये कि हिन्दी तथा उर्दू का बलपूर्वक, असंगत मिश्रण है। किसी किसी स्थान पर अच्छे संवाद बन पड़े हैं, और पृथ्वीराज ऐसे अभिनेता के मुख से वह और भी सुन्दर लगते हैं। चित्र में आधुनिक समस्याओं पर भी कुछ प्रकाश डाला गया है। कामरूप के राजा के रूप में पृथ्वीराज के संवाद देश का विभाजन करने के सिद्धान्त का विरोध करते हैं, तथा भारत के गौरव की प्रशंसा। इस प्रकार आधुनिक समस्याओं पर भी श्री शर्मा ने विचार प्रस्तुत किया है।

अन्त में इतना कहना ही अधिक होगा कि चलचित्र 'विष-कन्या', जनता की दृष्टि से, एक साधारण चित्र है फिर भी फिल्म-प्रेमी उसे देखकर आनन्द उठा सकते हैं।

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्य की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। शब्दों में उर्दू की-सी मादकता श्रेय 'अंचल' को ही है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

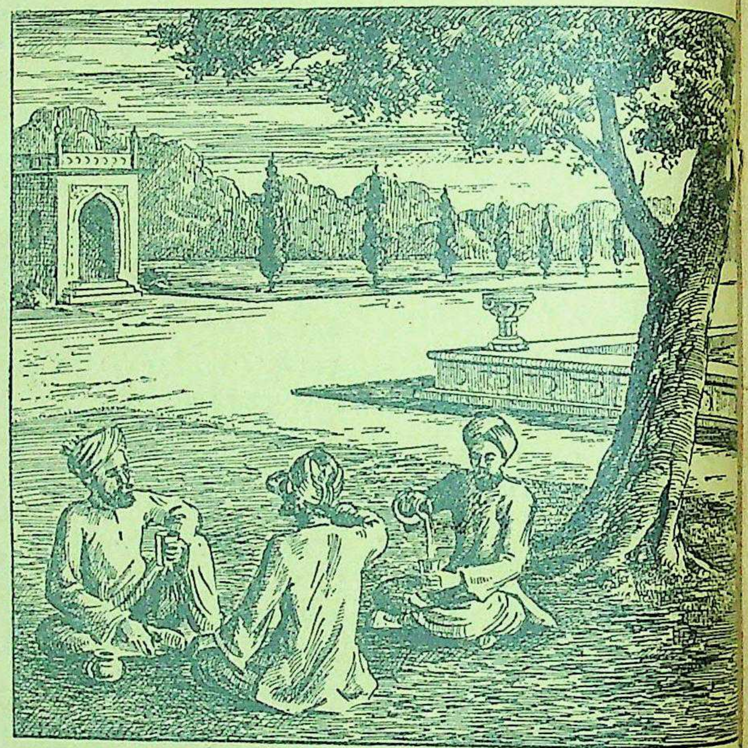

चाय का समय, जहाँ पाँच नदियाँ बहती हैं

ग्रीष्म सन्ध्याओं में पञ्जाबी घर के बाहर और कभी-कभी तो सार्वजनिक बगीचे ही में, दिन भर का ताप भूलते हैं। और चाय, सूर्यास्त के समय उन्हें ठण्ड से बचाती है।

दूध-चीनी से बनी चाय, एक मनोरम लोटे से वहीं ढलती है। प्याला इस बड़े आकार-प्रकार तथा उदारचरित देश में, नन्हा-सा दीखता है। यहाँ का फैशन ही पीतल का पात्र तथा गिलास है।

नर-नारियों का अपूर्व वसन एवं शोभामय बगीचे, दर्शकों को, यह पाँच नदियों का देश इस तरह प्रभावित करता है कि आसानी से भूल नहीं सकते।

यहाँ भी सर्वत्र भारत की तरह ताजी ब्रूक बाण्ड चाय की माँग अत्यन्त अधिक है।

ब्रूक बाँड

"दो पत्ती और एक कली"

उत्सर्ग

लेखक, श्री छविनाथ पाण्डेय, बी० ए०, एल-एल० बी०

देशभक्ति, देशप्रेम और स्वाधीनता के लिए संसार में लाखों युवकों का बलिदान हुआ है, यह नई घटनायें नहीं हैं। भारतीय क्रांतकारी आन्दोलन के सिलसिले में कई नवयुवकों को फाँसियाँ हुई हैं किन्तु सफल आन्दोलन महात्मा गांधी का है जो भारत ऐसे देश के लिए शांतिप्रद, अहिंसात्मक और उपयुक्त है। सुप्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी पंडित छविनाथ पांडेय ने इस सुंदर और देशभक्ति पूर्ण कहानी में युवक अरुण के उत्सर्ग का आकर्षक वर्णन किया है जो पठनीय तथा हृदय पर प्रभाव डालने वाला है।

[१]

अरुण और रेखा का प्रेम स्वाभाविक और नैसर्गिक था। प्रथम साक्षात्कार में ही एक दूसरे पर रीझ गये थे, फिदा हो गये थे। दोनों का प्रथम मिलन भी अनोखे ढंग से हुआ था।

रेखा अपने बाप की एकमात्र सन्तान थी। उसके बाप शहर के नामी गिरामी वकील थे। नरम विचार के आदमी थे। सरकार को खुश रखते हुए जनता की जितनी भी सेवा वे कर सकते थे उससे कभी मुँह नहीं मोड़ते थे। रेखा को अबोध छोड़कर ही उसकी माता परलोक सिधारी। रेखा का लालन-पालन उसके विधुर पिता ने बड़े यत्न से किया था। योग्य पिता की छत्र-छाया में पलकर रेखा आदर्श युवती बन गई थी। माता के अभाव में वही गृहस्वामिनी थी। वकील साहब नरेन्द्रनाथ ने रेखा को कभी सात पर्दे के अन्दर रखकर उसे पर्दे की बीबी नहीं बनाया था। पेशे के काम के अतिरिक्त वे जब कभी घर से बाहर निकलते तो रेखा को बराबर साथ रखते। समवयस्क मित्र लोग जब कभी वकील साहब के बँगले पर इकट्ठा होते और राजनीति की चर्चा छेड़ते तो रेखा सदा अपने पिता के पास बैठकर उनकी बातें सुनती। मौके बे-मौके कभी कुछ बोल भी देती जिसे सुनकर वकील साहब चौंक उठते और लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगते।

अरुण अपने बाप का लाड़ला पुत्र था। उसके पिता योगेन्द्रप्रसाद प्रसिद्ध देशभक्त थे। देशभक्ति के पुरस्कार में ही उनकी इह-लीला समाप्त हुई थी। अरुण का बड़ा भाई मातृ-भूमि के उद्धार के प्रयत्न में देशनिकाला का दण्ड भोग रहा था। अरुण बी० ए० पास कर कानून पढ़ रहा था। लेकिन उसके रंग-ढंग, विचार सभी पिता और भाई के ही अनुरूप थे। उसके विचार उग्र थे। कालेज के वाद-विवादों में जब कभी वह बोलने के लिए उठता, लोग उसकी बातें सुनकर दंग रह जाते। अपने विचारों के लिए उसे कई बार प्रिंसिपल से चेतावनी मिल चुकी थी। एक बार तो वह कालेज से दो महीने के लिए निकाल भी दिया गया था। लेकिन उसके विद्रोहीपन पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। अँगरेजी कहावत के अनुसार वह उसी पुराने पेड़ का बोकला (छिलका) था। शर्मीले और संकोची स्वभाववाले इस युवक को देखकर यह नहीं कह सकते थे कि एक दिन यह विद्रोह का झण्डा लेकर उठ खड़ा होगा और देश के हजार हजार युवक इसके नाम पर पागल होकर अपनी जान हथेली पर लेकर दौड़ पड़ेंगे। मितभाषी इतना था कि उसे देखकर यह कोई नहीं कह सकता था कि इसकी वाणी में वह जादू भरा है जो देश के नवयुवकों को उन्मत्त बना देगा। अरुण सचमुच बालरवि की भाँति मधुर, दर्शनीय, मनोरम साथ ही साथ तेजपूर्ण और प्रभायुक्त था। हृदय में प्रखर ज्वाला लेकर वह उतरा था जिनमें दसों दिशाओं को आलोकित करने की क्षमता थी।

[२]

सावन का महीना, रविवार का दिन ा। सबेरे से ही फूही पड़ने लगी थी। ी बार बादल उमड़-घुमड़कर बरस भी ये थे। फिर भी आकाश-मार्ग पर काले ाले मेघों की पंक्ति पूरब से पच्छिम की ड़ लगा रहे थे। समय बड़ा ही सुहावना था। वकील नरेन्द्रनाथ के मन में आया कि जरा घूम आयें। उन्होंने रेखा से कहा—बिटिया, कपड़े बदल लो टहलने चलेंगे।

जोड़ी बँगले के पोर्टिको में आकर खड़ी हो गई। वकील साहब रेखा को लेकर निकल पड़े। बीच बाजार में पहुँचे ही थे कि चौराहे के उत्तर बहुत बड़ी भीड़ नजर आई। गाड़ी रोककर वकील साहब उतर पड़े और घोड़ों की रास रेखा को थमाते हुए बोले—तुम यहीं बैठी रहो, मैं अभी आता हूँ।

वकील साहब को गये दो मिनिट भी नहीं हुए होंगे कि अचानक किसी चीज को देखकर घोड़े भड़क गये और गाड़ी लेकर भाग चले। बिगड़े घोड़ों को सँभालना रेखा के बूते के बाहर की बात थी। वकील ने यह उपद्रव देखा। वे दौड़ पड़े लेकिन तब तक तो घोड़े नौ-दो ग्यारह हो चुके थे।

लेकिन वकील साहब से पहले एक दूसरे युवक की निगाह इस घटना पर पड़ चुकी थी। संकट की सम्भावना देखकर वह तेजी से गाड़ी की तरफ झपटा और लपककर घोड़े की लगाम थाम ली। जोशीले घोड़े उसे घसीटते हुए आगे बढ़े। युवक की जान स्वयं खतरे में पड़ गई। लेकिन इसकी जरा भी परवा न कर वह घोड़ों से उसी तरह उलझता हुआ आगे बढ़ा और कोई मील भर जाते न जाते घोड़ों को अपने वश में कर लिया। घोड़ों के खड़े होते ही उसने रेखा को आहिस्ते से उतार कर अलग खड़ा किया और पूछा—आपको कहीं चोट तो नहीं लगी?

रेखा—मैं तो गाड़ी में बैठी थी। आपको तो चोट नहीं आई?

युवक—मैं आपके साहस की प्रशंसा करता हूँ कि ऐसे संकट के समय भी आपने धैर्य नहीं छोड़ा और शान्तिपूर्वक गाड़ी में बैठी रहीं।

रेखा—जिसने अपनी जान को खतरे में डालकर इन जोशीले बिगड़े हुए घोड़ों को काबू में लाने का साहस किया उसके सामने मेरी क्या तुलना हो सकती है? मैं नहीं समझती कि पिता जी किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सकेंगे?

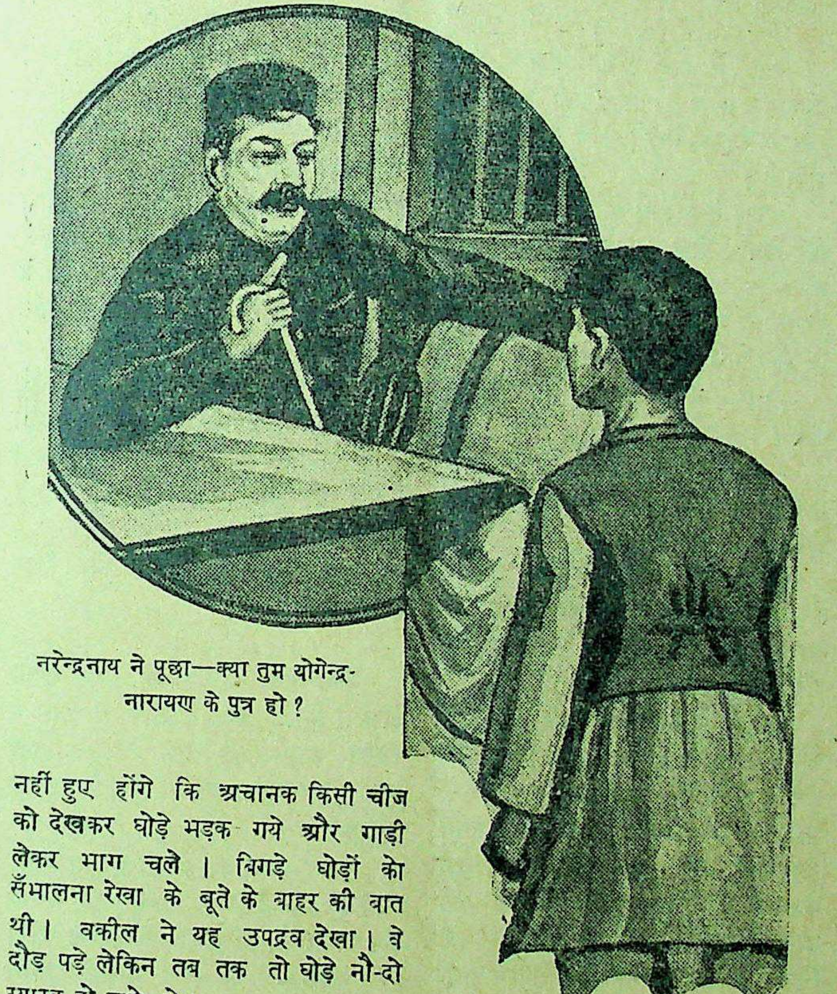
नरेन्द्रनाथ ने पूछा—क्या तुम योगेन्द्रनारायण के पुत्र हो?

युवक—क्या आपके पिता जी आपके साथ थे?

रेखा—हाँ, गाड़ी रोककर वे उतरे और उस भीड़ की तरफ चले गये। इतने ही में यह घटना घटी। यदि आप समय पर न आ गये होते तो आज न जाने मुझ पर क्या बीतती?

इतने में वकील साहब भी आ पहुँचे। रेखा को सही-सलामत देखकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। अपनी आन्तरिक कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्होंने पूछा—आपका नाम क्या है?

युवक—अरुणकुमारसिंह।

नरेन्द्रनाथ—क्या मेरे अभिन्न मित्र प्रसिद्ध देशभक्त योगेन्द्रनारायण के पुत्र और सुविख्यात क्रान्तिकारी कान्तिकुमार के छोटे भाई हो?

अरुण—जी हाँ!

नरेन्द्रनाथ—तब तो अपना ही लड़का खतरे में सहायक हुआ। उन्होंने रेखा की ओर देखकर कहा—मैं और इनके पिता सहपाठी और अभिन्न मित्र थे। दोनों ने साथ ही वकालत पास की। मैंने यह मार्ग पकड़ा और उन्हें भी इसी रास्ते पर चलने के लिए समझाता रहा। लेकिन वे थे तिलक के अनुयायी। मैंने उन्हें बार बार समझाया कि यह गोखलेयुग है। तिलक का रास्ता हम लोगों के लिये उपयुक्त नहीं है। लेकिन तिलक के 'केसरी' और साप्ताहिक 'मराठा' का विष उनके शरीर में इस तरह भीन गया था कि मेरी सारी चेष्टायें विफल हुईं। उन्होंने अपना रास्ता नहीं बदला। उस रास्ते पर चलने का जो फल होता है वही हुआ। मण्डाले जेल में उनका देहावसान हुआ। पिता की मृत्यु का समाचार पाकर कान्ति पागल हो उठा। उसने क्रान्ति का झण्डा खड़ा किया। लेकिन ब्रिटिश कूटनीति के सामने वह ठहर नहीं सका। अन्त में उसे प्राण लेकर भागना पड़ा और वह जापान चला गया।

अरुण भी चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा। वकील साहब ने अरुण की ओर संकेत करके कहा—बेटा! तुम्हारे सिर पर बहुत बड़ा बोझ है। घर में बूढ़ी मा हैं। वंश की मर्यादा की रक्षा का भार एकमात्र तुम्हारे ऊपर है। इन बातों को भूल नहीं जाना। पिता और बड़े भाई का पागलपन तुम पर न सवार हो। आज अचानक तुम से भेंट हो गई। मेरे अभिन्न मित्र के तुम एकमात्र अवशेष चिह्न हो। तुम्हारे प्रति मेरा भी कुछ कर्तव्य है। एक दिन मेरे घर आना। रेखा तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्न होगी। नारी का हृदय है। घबरा-सी गई है। इससे आज वह तुमसे बात भी नहीं कर सकती। मेरे साथ ही चलो। तुम्हें घर पर उतारते चलेंगे। लेकिन कभी कभी आया जरूर करना। तुमसे मुझे बातें भी करनी हैं।

[३]

मासिक 'प्रवीण' के मुख-पृष्ठ पर हेमन्त की कविता को पढ़कर अरुण ने कहा—कैसी भावमयी पंक्तियाँ हैं। हृदय की कोमल भावनाओं की ऐसी सुन्दर अभिव्यक्ति अन्यत्र कहीं नहीं देखी जाती। प्रत्येक पंक्ति विकलता से भरी है। ऐसा मालूम होता है मानो करुणा मूर्त्ति-रूप धारण कर सामने खड़ी हो गई है। पढ़कर हृदय पुलकित हो उठता है।

रेखा अरुण के पास ही बैठी थी। अरुण के ये उद्‌गार उसे पसन्द नहीं आये। उसने मुँह बिचका कर कहा—मुझे तो इनकी यह कविता जरा भी नहीं भाई। हमारे देश का यह सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि यहाँ के लेखकों और कवियों को प्रेम और शृंगार के सिवा दूसरा विषय ही नहीं मिलता। कहानियों की वही हालत, और कविताओं की भी!

अरुण—क्या प्रेम और शृंगार बुरी चीजें हैं?

रेखा—मैं यह कब कहती हूँ। लेकिन प्रत्येक चीज का समय है और समय पर ही वह अच्छा लगता है। कवि और लेखक को समय का ज्ञान होना चाहिये। प्राचीन युग के कवियों ने यही पाप किया।

पराजय की भावना से जब देश सिकुड़ा हुआ था उस समय भी उन्हें देश को चैतन्य कराने की नहीं सूझी। वे लोग वैराग्य और प्रेम का राग अलापते। "संसार मिथ्या है! माया है, भ्रमजाल है" की ऐसी रट उन्होंने लगाई कि सारे देश में उसी की लहर दौड़ गई और विदेशियों को अपना पैर निर्विघ्न पसारने का अवसर मिल गया। किसी के काव्य में वह चीत्कार नहीं सुनाई पड़ा जो विजित जाति में जान फूँक कर उसे चैतन्य कर मातृ-भूमि की रक्षा करने लिए एक बार फिर सन्नद्ध कर देता। परिणाम यह हुआ कि हम पराधीनता की बेड़ी में बुरी तरह जकड़ दिये गये। हमने इसे एक बार भी महसूस नहीं किया क्योंकि हमारे लिये संसार मिथ्या, माया और भ्रमजाल था। सदियों के बाद एक बार देश फिर जाग्रत हुआ है। उसमें चेतना आई है। ऐसे समय में हमारे लेखकों और कवियों को प्रेम का राग अलापना, शोभा नहीं देता। आज तो उन्हें ऐसी तानें सुनाना चाहिये जिससे उथल-पुथल मच जाय। मुर्दों में भी जान आ जाय और सभी मातृ-भूमि की बलिवेदी पर निछावर होने के लिये शान्ति के स्वरूप इस तिरंगे झंडों के नीचे खड़े होकर मस्ती में झूमते हुए गावें—

मातृभूमि उद्धार करेंगे!
सब कुछ इस पर वार चलेंगे!
तन मन सब कुर्बान करेंगे।
कभी न पीछे पाँव धरेंगे!
ले स्वराज विश्राम करेंगे।
इस प्रण पर हम अटल रहेंगे!

अरुण—तब तो तुम यही चाहती हो कि देश का प्रत्येक युवक मातृ-भूमि के उद्धार के लिये अपने को अर्पण कर दे?

रेखा—क्या जिसे देश के लिये लेशमात्र भी प्रेम है, जिसके शरीर में भारतीय रक्त बह रहा है वह इसके सिवा और क्या चाह सकता है? समय की यही पुकार है।

अरुण—तब तो मैं अपने को बहुत बड़ा भाग्यवान समझता हूँ?

रेखा—मैंने तुम्हारा मतलब ठीक-ठीक नहीं समझा।

अरुण—मैं वही करने जा रहा हूँ जो तुम्हें सबसे ज्यादा प्रिय है।

रेखा—अर्थात्!

अरुण—मैंने कालेज से नाम कटा लिया है। देश-सेवा का व्रत लिया है। पूज्य पिता जी तथा बड़े भैया के चरण-चिह्नों का अनुकरण करना चाहता हूँ।

रेखा ने जोश में उन उद्गारों को प्रकट तो कर दिया था लेकिन उसे क्या पता था कि वह प्रकारान्तर से अपने ही चारों ओर जाल का तानाबाना बुन रही है। अरुण की बातें सुनकर वह सहम उठी। उसका चेहरा पीला पड़ गया। अचानक उसके मुँह से निकल पड़ा—नहीं, तुम ऐसा न करो अरुण!

अरुण—क्यों रेखा! मुझे ऐसा क्यों नहीं करना चाहिये? तुमने अभी स्वयं कहा है कि इस समय देश को ऐसे नवयुवकों की आवश्यकता है जो उसके लिये अपना सब कुछ निछावर कर दें। वही तो मैं करने जा रहा हूँ। फिर तुम इस तरह विचलित क्यों हो उठी?

रेखा—क्योंकि मैं तुम्हें प्यार करती हूँ। मेरा ख्याल था तुम्हें उस ओर कदम नहीं बढ़ाना चाहिये।

अरुण—इसीलिये तो मुझे और भी तत्परता से आगे बढ़ने की जरूरत है। मैं अपनी प्रेयसी की आँखों में कायर बनकर नहीं रहना चाहता। आज तुम मोहवश भले ही मुझे रोकना चाहो लेकिन जिस दिन लोगों के बीच मेरी निन्दा होने लगेगी तुम विचलित हो उठोगी।

रेखा—तुम्हारी निन्दा क्यों होगी? क्या तुम्हीं ने देशोद्धार का ठेका ले रखा है? जो लोग सोलह घोड़ों की गाड़ियों पर अपनी सवारी निकलवाते हैं, जनता से अपनी आरती उतरवाते हैं, वे लोग क्यों नहीं आगे बढ़ते?

अरुण—इसकी गवेषणा मेरा काम नहीं रेखा! मैं तो यह जानता हूँ कि मातृ-भूमि के प्रति मेरा कुछ कर्तव्य है। उसके नाते मुझे देश के लिये अपने को उत्सर्ग कर देना है। मैं संकल्प कर चुका हूँ। अपना दल तैयार कर चुका हूँ। तुमसे बिदा माँगने के लिये ही आज आया था। प्रसन्न चित्त से तुम मुझे बिदा देना मन में जरा भी विषाद या शोक न आने देना। तुम वीर रमणी हो। इस समय देश को तुम्हारी ऐसी नारियों की जरूरत है जो मातृ-भूमि के उद्धार के लिये अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु हँसते हँसते माता के चरणों पर चढ़ा दें। यही आशा लेकर मैं आया था और यही आशा लेकर मैं जाना चाहता हूँ।

(४)

कड़ाके के शब्द के साथ जेल के सेल का फाटक खुला। अरुण को लक्ष्य कर जेलर ने कहा—कैदी! तुमसे मिलने कोई आया है?

अरुण ने विस्मय के साथ जेलर की ओर देखा। बोला—मुझसे मिलने? आप मजाक कर रहे हैं! जब मेरी बूढ़ी माँ तक को मिलने नहीं दिया गया तब भला दूसरे को कैसे आने दिया जायगा?

जेलर—मैं तुमसे मजाक नहीं करता कैदी! सामने देखो न?

अरुण ने देखा। काले बुर्के से सारा शरीर ढँका हुआ कोई व्यक्ति फाटक के कोने में सटा खड़ा था।

जेलर—तुम लोगों को दस मिनिट तक एकान्त में बातचीत करने देने का आदेश है। मैं जाता हूँ। दस मिनिट में इन्हें वापस लेने के आऊँगा।

कड़ाके के साथ उसी तरह सेल का फाटक फिर बन्द हो गया। सन्तरी सरककर पीछे चला गया। काला बुर्का चेहरे पर से हटा। रेखा अरुण से लिपट गई। उसने सिसकियाँ भरते हुए कहा—मुझे जो कुछ कहने के लिये कहा गया है सो कह डालती हूँ। क्योंकि इसी शर्त पर मुझे मिलने की आज्ञा मिली है। लेकिन इससे मेरी सहमति नहीं।

अरुण—क्या कहना है तुम्हें?

रेखा—अधिकारीवर्ग तुम्हें मुक्त कर देने के लिये तैयार हैं लेकिन एक शर्त पर!

अरुण—किस शर्त पर?

रेखा—तुम अपने सभी साथियों का नाम बतला दो! तुम्हें गवाह बनकर अदालत में खड़ा होना नहीं होगा। तुम्हारा नाम भी प्रकट नहीं किया जायगा। तुम्हें यहाँ मुक्त भी नहीं किया जायगा। इसी हालत में जहाज से तुम इँगलैण्ड भेज दिये जाओगे। वहीं तुम्हें मुक्त कर दिया जायगा। सरकार की ओर से तुम्हारे खर्च का प्रबन्ध कर दिया जायगा। साल-दो साल वहाँ रहकर तुम वापस आ सकते हो। तुम्हारे ऊपर कोई प्रतिबन्ध नहीं रहेगा।

अरुण—हूँ! विश्वासघात के बदले मुक्तिदान?

रेखा—यह मेरा प्रस्ताव नहीं है। मैं इससे किसी भी तरह सहमत नहीं हूँ। मैं तुम्हारा हजार बार फाँसी पर चढ़ना इससे अच्छा समझती हूँ।

अरुण—शाबाश रेखा! मैं तुमसे यही आशा करता था। अरुण कायर नहीं है, देशद्रोही नहीं है, विश्वासघाती नहीं है। इस क्षणभंगुर शरीर के लिये वह इतना बड़ा पातक नहीं कर सकता। मेरा विश्वास कर जिन्होंने मेरा साथ दिया अपने प्राणों की रक्षा के लिये उन्हें मौत के मुँह में झोंकने का नारकीय कार्य मैं नहीं कर सकता।

रेखा—यही मैं भी कहना चाहती थी। चाहे तुम्हारा जिस तरह हाल किया जाय, भारी यंत्रणायें तुम्हें दी जायँ, सब कुछ हँसते हँसते सह लेना। लेकिन उनका नाम कदापि नहीं बतलाना। मैं धैर्य के साथ तुम्हारा अन्त देख सकूँगी। मेरे लिये कातर न होना।

अरुण—क्या तुम्हें मालूम है कि यह सुझाव किसने पेश किया है?

रेखा चुप रही।

अरुण के बहुत आग्रह करने पर उसने कहा—तुम्हारे मित्र नलिन ने।

अरुण—नलिन ने? तब क्या नलिन?

रेखा—मेरे और तुम्हारे प्रेम-संबन्ध की बातें उन्हें मालूम थीं। मेरी खातिर वे तुम्हारी रक्षा करना चाहते थे। मुझे भी तुम्हारे पास इँगलैंड पहुँचाने की सारी व्यवस्था उन्होंने कर ली थी। मैं तुम्हें समझा कर राजी कर लूँगी, इसी आशा से उन्होंने मुझे यहाँ भेजने की अनुमति खास तौर से प्राप्त की है। मैं अन्तिम बार तुमसे मिलने का प्रलोभन नहीं रोक सकी, इससे राजी हो गई। लेकिन मैं फिर भी कहती हूँ कि इस प्रस्ताव से मेरी सहमति नहीं है। मैं नहीं चाहती कि तुम रत्ती भर भी पीछे हटो।

इसी समय जेलर आया और रेखा को वापस ले गया!

[५]

रेखा चली गई। अरुण फिर अपने विचारों में डूब गया। शाम को जेलर ने आकर कहा—कल सवेरे ६ बजे तुम्हें फाँसी दी जायगी। अपनी अन्तिम इच्छा पूरी कर लो।

अरुण—मन की इच्छा तो मन में ही लिये जा रहा हूँ जेलर साहब। हाँ, आपसे एक विनती है, यदि स्वीकार करें तो कहूँ।

जेलर—मैं सरकारी नौकर अवश्य हूँ। मैं एकदम हृदयहीन नहीं हूँ। यदि मेरे हाथ की बात होती तो मैं आपको मुक्त ही कर देता। आपके समान मनस्वी, देशभक्त विरले ही होते हैं। कहिये आप मुझसे क्या चाहते हैं?

अरुण—मैं किसी अन्तरंग मित्र को दो शब्द लिखना चाहता हूँ। यदि आप उनको मेरा पत्र पहुँच सकें।

जेलर—मेरा विश्वास मानिए और लिखिए?

अरुण कागज-कलम लेकर लिखने बैठ गया:—

"भाई विनोद! अन्तिम वन्दे! दिल की दिल में ही रह गई। तुम्हारी चेतावनी पर कान नहीं दिया। उसका फल हाथ मिला! यदि जेल में आज रेखा भेंट न हुई होती तो अन्त समय नलिन पर सन्देह नहीं करता। मरने जरा भी विषाद नहीं है। हम लोग आग से खेल ही रहे थे, विषाद इसी है कि कुछ कर नहीं सका। सारा ज्यों का त्यों पड़ा रह गया। पर तुम आशा की यही क्षीण रेख लिये प्रयाण रहा हूँ। मेरे समान हजारों गये हजारों जायँगे। हताश न होना। कभी व्यर्थ नहीं जाता। जेल में मैंने सोचा। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मार्ग हमारे देश के लिये अनुकूल नहीं आयलैंड, रूस और भारत में बहुत है। जो लोग आयलैंड या रूस का सामने रखकर काम करना चाहते हैं यहाँ सफलता नहीं मिल सकती। समझ में गाँधी जी का रास्ता ही यहाँ परिस्थितियों के अनुकूल है। बहुत पहले यह बात मेरे मन में आई थी। उस पर विचार-विनियम करने का नहीं मिला और मैं यहाँ आ गया। मेरी कायरता मत समझना। अन्तिम क्या कायर बनूँगा? तुम लोग शान्त से इस पर विचार करना। रेखा का रखना। वह वीर रमणी है। उससे बड़ी आशा है। कल सवेरे ६ बजे नाटक की यवनिका का पतन होगा। बार फिर अन्तिम वन्दे!—तुम्हारा अरुण

क - लं - क

लेखक, राजेश्वरप्रसादसिंह

इस पुस्तक में लेखक की ११ क
नियों का संकलन किया गया है। म
क्षणिक आवेश में आ भयानक भू
बैठता है, इसका मार्मिक चित्रण
किया गया है। ऊपर से साफ और सु
दिखाई देने वाले लोग अन्तरंग में
कलुषित होते हैं, यह भी आपको
ज्ञात हो सकेगा। मूल्य १) एक रुपया
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

Wear
555
EAGLE Chappals
CAWNPORE
जहाँ एजेन्ट नहीं हैं वहाँ एजेन्टी की ज

कोशलगढ़ का कैदी

दिलचस्प जासूसी उपन्यास

[पिछली कहानी—बंगाल में राय-परिवार बड़ा प्रसिद्ध था। इस परिवार में शिवशङ्कर राय तथा गौरीशङ्कर राय दोनों भाइयों ने अच्छी ख्याति पाई थी। एकाएक एक दिन कोशलगढ़ के सरदार धनंजय खत्री, लापता राजकुमार शङ्करसिंह की खोज में उधर आ निकले। गौरीशङ्कर बाबू का चेहरा राजकुमार शङ्करसिंह से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। जब धनंजय खत्री को राजकुमार का पता न चला तब उन्होंने गौरीशङ्कर बाबू को इस बात के लिये राजी किया कि वह अपने को शङ्करसिंह बतायें। धनंजय खत्री गौरीशङ्कर बाबू को घोड़े पर लेकर गुप्त रूप से कोशलगढ़ पहुँच गये। राज्य में प्रसिद्धि हो गई कि लापता राजकुमार शङ्करसिंह वापस आ गये। राजकुमार शंकरसिंह के भाई उदितसिंह ने, जो पास ही झड़वा राज्य में रहता था, शंकरसिंह को कैद करवाया था। वह कोशलगढ़ के वर्तमान मन्त्रियों का विरोधी था। राजमहल में गौरीशङ्कर बाबू ने नकली लापता राजकुमार का अभिनय प्रारम्भ किया और समय पर उनका राजतिलक भी हो गया। गौरीशङ्कर बाबू एक दिन नौका-विहार के लिये गये और एक दुर्घटना से बचकर वह फिर कोशलगढ़ पहुँच गये। वहाँ आपस में मंत्रणा हुई। रनिवास में भी काफ़ी चहल-पहल हुई। महारानी कस्तूरीबाई और उनकी सहेली चम्पा में भी राजा के सम्बन्ध में बड़ी आकर्षक वार्ता हुई। एक दिन गौरी बाबू वेष बदलकर नगर घूमने निकले और वहाँ उन्हें एक भेद का पता चल गया। गौरी बाबू को यह ज्ञात हो गया कि उदितसिंह ने शंकरसिंह को कैद कर रखा है। वह उनके छुड़ाने का उपाय करने लगे। वह शंकरसिंह से गुफ़ा में जाकर मिले और वह फिर अपने राज्य में प्रगट हुए।

(गतांक के आगे)

कस्तूरीबाई ने दोनों हाथ पसार कर गौरी बाबू की ओर ताका। उसके नेत्रों में गम्भीर प्रेम की आभा झलक रही थी। उसमें लज्जा का लेश भी नहीं था और न मन की एक-मात्र कामना को अपने प्रेमी के सामने छिपाने की चेष्टा ही थी। वह जीवन-मृत्यु की संधि-स्थल पर आकर खड़ी हो गई थी। इसलिए लज्जा किससे करती? दुस्सह वेदना का आर्त स्वर गौरी बाबू के कण्ठ तक आकर रुक गया। अत्यन्त आवेग से कस्तूरीबाई को अपने बाहुओं में एक बार लपेटकर वे बाहर निकल गये।

* * *

"प्रह्लाद, मुझे एक हथियार दो।"

प्रह्लाद ने एक तलवार लाकर दी। उसे हाथ में लेकर गौरी बाबू हँस पड़े और बोले—चलो, अब उदितसिंह से भेंट करूँ। बंगाली पर उसे बड़ी चिढ़ है। प्रह्लाद, क्या इस तलवार से कोशलगढ़ के सारे आदमियों की हत्या नहीं की जा सकती? तुम—मैं—उदित—धनञ्जय—रुद्ररूप—शत्रु—मित्र—कोई भी जीवित न रहेगा।

प्रह्लाद भीतर की बातों को कुछ-कुछ समझ गया था। वह चुप रहा। गौरी बाबू ने कहा—मुझे राजा के कैदखाने का रास्ता बताकर ले चलो।

लालटेन हाथ में लिये प्रह्लाद आगे आगे चला। कुछ सीढ़ियों से उतरकर वे एक गोरखधंधे की तरह स्थान में आ गये। सुरंग की तरह एक सँकरी गली सामने दिखाई पड़ी! उसके एक ओर लोहे की छड़ों के कई छोटे-छोटे दरवाजे थे। गौरी बाबू ने समझा कि यह उस किले के कारागार हैं, इन्हीं के झरोखे बाहर से दिखाई पड़ते हैं। वह दोनों लालटेन लेकर उसी गली में घुस गये। थोड़ी दूर जाकर प्रह्लाद एक दरवाजे के सामने खड़ा हो गया। गौरी बाबू को इशारा करके उसने धीरे-धीरे किवाड़ खटखटाया।

भीतर से आवाज आई—कौन है?

"मैं प्रह्लाद हूँ, दरवाजा खोलिए। मयूरवाहन जी लौट आये हैं।"

दरवाजे की जंजीर के खुलने की आवाज होने लगी। गौरी बाबू ने प्रह्लाद के कानों में कहा—तुम जाओ, किले का फाटक खोलने का इन्तजाम करो।

प्रह्लाद लालटेन लेकर, गायब हो गया।

उदितसिंह ने दरवाजा खोलकर देखा, गली में अँधेरा छाया हुआ है। कमरे के भीतर के क्षीण प्रकाश से उदितसिंह का शरीर दरवाजे पर दिखाई पड़ा।

दरवाजे पर खड़े होकर उदितसिंह ने कहा—प्रह्लाद, यह क्या है? बत्ती नहीं लाये हो क्या? मयूरवाहन लौट आया है? रानी को लाया है?

वह दरवाजे के बाहर आकर खड़ा हो गया और बोला—प्रह्लाद, तुम कहाँ हो? रानी को लाया है, मयूरवाहन?—उसके स्वर से लालसा टपक रही थी।

गौरी बाबू गज भर दूर खड़े थे। दाँतों से दाँत दबाकर उन्होंने अपने हाथ की लम्बी तलवार को उदितसिंह की छाती में भोंक दिया। उदितसिंह के कण्ठ से कराहने की आवाज निकली। वह कुछ न बोल सका और वहीं गिर कर ढेर हो गया।

गौरी बाबू उसकी लाश को लाँघ कर कमरे में घुस गये।

शंकरसिंह मलीन शय्या पर उठकर बैठ गये थे। वह धीरे-धीरे खड़े हो गये। मोमबत्ती के अल्प प्रकाश से दोनों एक दूसरे का मुँह देखने लगे। शंकरसिंह का शरीर भी उदित की तरह ही था, सिर्फ तलवार के एक वार की देर थी।

उसके बाद गौरी बाबू ने विकृत हँसी हँसकर कहा—शंकरसिंह, तुम्हें छुड़ाने के लिए मैं आया हूँ।

रात्रि समाप्त हो रही थी। पूर्व के आकाश में उषा का प्रकाश हो रहा था।

कमरे के अन्दर दोनों शंकरसिंह जँगले के भीतर से किस्ता के जल की ओर चुपचाप देख रहे थे। जलस्थल में रात्रि के अंधकार की छाया फीकी होती चली जा रही थी।

पास ही पास दोनों शंकरसिंह खड़े थे—चेहरे और पोशाक में कोई भेद न था। दोनों ही गहरी चिन्ता में डूबे हुए थे।

एक सोच रहा था—समाप्त हो गया है—अब मेरा कोशलगढ़ का अभिनय समाप्त हो गया। अब तक किले का फाटक खुल गया होगा, सरदार धनञ्जय आ ही रहे होंगे। अब विलम्ब नहीं है।

दूसरा भी सोच रहा था—क्या सोच रहा था, वह खुद ही नहीं जानता था। शायद लगातार एक तरह की चिन्ता करने की शक्ति भी उसकी लोप हो गई थी।

बाहर के जँगले के पास अँधेरे में कोई चीज हिल उठी। किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। दोनों की दृष्टि दूर पर निबद्ध थी।

धनञ्जय और रुद्ररूप किले में घुस आये थे। पत्थर के आँगन में उनके जूतों की कड़ी आवाज सुनाई पड़ रही थी। प्रह्लाद के गले का शब्द सुरंग में से आकर कानों में पहुँचा। वह रास्ता बताकर उन्हें ला रहा था।

फिर अँधेरे में जँगले के पास एक छाया-सी मूर्त्ति दिखाई पड़ी। दोनों शंकरसिंह पत्थर की मूर्त्तियों की तरह चुपचाप खड़े थे।

धीमी आहट सुनकर दोनों ने पीछे की ओर देखा।

एक स्त्री-मूर्त्ति उनके पीछे आकर खड़ी हो गई थी। कस्तूरी! दोनों शंकरसिंह वैसे ही उदास भाव से खड़े रहे।

एकाएक उस नारी-मूर्त्ति ने भय से चीख कर उनसे कुछ बोलना चाहा; परन्तु उसके बोलने के पहले ही जँगले के पास के अँधेरे से एक नग्न मूर्त्ति निकल आई। वह मूर्त्ति लड़खड़ा रही थी। उसके शरीर से जल टपक रहा था और उसके हाथ में छुरा था।

छुरा एक शंकरसिंह की छाती में चुभ गया। छुरे का केवल कामदार दस्ता ही बाहर दिखाई पड़ रहा था। यह छुरा कोशलगढ़ के राजवंश को कलंकित करनेवाले के लिए ही रखा हुआ था। अतः आज उसका काम समाप्त हो गया। हत्यारा और आहत दोनों ही एक साथ गिर गये। दूसरे शंकरसिंह वैसे ही निश्चल पत्थर की मूर्त्ति की तरह खड़े थे। मुमुर्षु मयूरवाहन के अंतिम साँस के साथ एक अस्फुट हँसी का शब्द निकल आया।

बेपरवाह, विद्रोही मयूरवाहन अंत में विजयी होकर ही मरा।

धनञ्जय और रुद्ररूप नंगी तलवार हाथ में लिये कमरे में घुस आये।

एक शंकरसिंह कमरे के अन्दर चुपचाप खड़े थे और उनके पास ही एक पीली स्त्री मूर्त्ति धीरे-धीरे अचेत होकर फर्श पर गिर पड़ी।

सरदार धनञ्जय ने तीव्र दृष्टि से सारे दृश्यों को देख लिया। उसके बाद उन्होंने कठोर स्वर से हुक्म दिया—रुद्ररूप, यहाँ किसी को आने मत दो।

बाइसवाँ परिच्छेद

कोशलगढ़ राजमहल की खास बैठक में कोशलगढ़ के राजा शंकरसिंह बैठे पत्र लिख रहे थे। खुले जँगलों के बाहर, प्रातः सूर्य की किरणें चमक रही थीं। इससे कई दिन पहले पानी बरस जाने से आकाश निर्मल था। कहीं मेघ या मलिनता का चिह्न-मात्र भी दिखाई नहीं पड़ता था।

शंकरसिंह पत्र लिख रहे थे सही; परन्तु एकाग्रता के साथ उसे समाप्त करने का उन्हें अवकाश नहीं मिल रहा था। उस कमरे के दरवाजे पर रुद्ररूप पहरा दे रहे थे और महल के फाटक पर सरदार धनञ्जय स्वयं राज-दर्शनार्थी जनता को रोक रहे थे। डाक्टर गंगानाथ का निषेध जान कर भी राजा का दर्शन करने के लिए प्रजा की भीड़ उमड़ रही थी। शक्तिगढ़ में राजा के ऊपर उदितसिंह के आक्रमण और राजा के बाहुबल से उदित और मयूरवाहन की मृत्यु की बात फैल गई थी। उदितसिंह ने राजा को अपने किले में निमन्त्रण देकर बुला लिया था और विश्वासघात करके उन्हें मार डालने की चेष्टा की थी। यह समाचार किसी से छिपा नहीं था। मन्त्री वज्रपाणि भार्गव और सरदार धनञ्जय ने इस दुखद भ्रातृ-विरोध की बात को छिपाने का प्रयत्न किया था; परन्तु उनकी वह चेष्टा व्यर्थ हो गई। सत्य कभी छिपाया नहीं जा सकता, वह प्रकट हो ही पड़ता है। इसलिए गत कई दिनों से राज्य के प्रतिष्ठित व्यक्ति राजा को अभिनन्दित करते जा रहे थे।

उन लोगों के आने-जाने के अवकाश के समय पत्र लिखने का काम चल रहा था—

"जिसके हाथ से चिट्ठी भेज रहा हूँ, उसका नाम प्रह्लादचन्द्र दत्त है। वह बंगाली है; परन्तु उसकी भाषा सुनने से इस विषय में संदेह हो सकता है। भाषा कुछ भी हो, प्रह्लाद है बंगाली ही। गत कई दिनों से मैं सोच रहा था कि अगर प्रह्लाद बंगाली न होता तो? लोगों को कहते सुना है कि बंगालियों के भाई भाई में मेल नहीं है, जहाँ दो बंगाली हैं, वहीं झगड़ा होता है। झूठ बात है। विदेश में बंगाली के लिए बंगाली की तरह मित्र दूसरा नहीं हो सकता। अगर संदेह हो तो प्रह्लाद को याद करना।"

रुद्ररूप ने दरवाजे पर का पर्दा हटाकर बतलाया कि झड़वे के विजयपाल को साथ लेकर सरदार धनञ्जय आ रहे हैं। शंकरसिंह ने असमाप्त पत्र को हटाकर एक ओर रखा।

विजयपाल ने फौजी ढंग से सलाम करके एक चिट्ठी राजा के हाथ में दी। उस चिट्ठी को झड़वे के मन्त्रिमंडल की ओर से वहाँ के दीवान ने लिखा था। उसमें अभिनन्दन और शुभेच्छा प्रकट की गई थी।

पत्र पढ़कर शंकरसिंह ने विजयलाल की ओर दृष्टि उठाई और गम्भीरता के साथ पूछा—रानी कस्तूरीबाई अच्छी तरह हैं न?

"जी हाँ, महाराज।"

महाराज के गम्भीर मुख के एक कोने में जरा-सी हँसी की रेखा दिखाई पड़ी—और कृष्णाबाई? वह अच्छी हैं?

विजयलाल ने सिर्फ सिर झुकाकर सम्मति जाहिर की।

राजा ने धनञ्जय की ओर देखकर कहा—सरदार साहब, मैं सूबेदार विजयलाल को अपना खास अंगरक्षक नियुक्त करना चाहता हूँ। इस विषय में झड़वे के दरबार के साथ जो चिट्ठी-पत्री करनी हो, आज ही की जाय।

"जो आज्ञा, महाराज।"

राजा ने सिर के इशारे से दोनों को बिदा कर दिया और फिर चिट्ठी लिखना आरम्भ किया—

"तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ, भाभी जी, अब जरा भी देर न करना। जितनी भी जल्दी हो सके भाई साहब को साथ लेकर चली आना। तुम लोगों से मिलने के लिये मेरे मन में कैसी उत्सुकता है उसे मैं लिखकर जाहिर नहीं कर सकता। अगर सम्भव होता तो मैं दौड़कर तुम लोगों से जा मिलता; परन्तु इस राज्य को छोड़कर बाहर जाने का कोई उपाय नहीं

है। शायद जीवन भर में भी छुटकारा नहीं पाऊँगा। मैं कोशलगढ़ का राजा नहीं, बंदी हूँ।"

फिर रुद्ररूप का पीला चेहरा क्षण भर के लिए पर्दे के पास दिखलाई पड़ा। उन्होंने कहा—त्रिविक्रमसिंह आ रहे हैं।

कुछ देर तक त्रिविक्रमसिंह के साथ अभिनन्दन का अभिनय चलता रहा। फिर शंकरसिंह ने एकाएक गम्भीर होकर कहा—सिंह जी, मैंने आपकी लड़की चम्पादेई के योग्य वर चुन लिया है।

त्रिविक्रमसिंह ने जरा चौंक कर मामूली धन्यवाद दिया। उसके बाद दो बार खँखार कर वर का परिचय जानना चाहा।

शंकरसिंह ने कहा—बहुत ही अच्छा वर है,—मेरा अंगरक्षक रुद्ररूप। चम्पा भी उसे पसंद करती है।

त्रिविक्रमसिंह भीतर ही भीतर घबड़ा उठे। उनके चेहरे से ही इसका आभास मिल रहा था। वे गले के भीतर ही तरह-तरह के शब्द करने लगे।

शंकरसिंह ने मानो उस पर ख्याल ही नहीं किया, ऐसे ढंग से कहा—मयूरवाहन मर गया है,—उसका कोई वारिस नहीं है। मैंने निश्चय किया है कि मयूरवाहन की जागीर रुद्ररूप को इनाम के रूप में दूँगा।

त्रिविक्रमसिंह के चेहरे पर से घबड़ाहट की छाया हट गई। उन्होंने राजा की प्रशंसा करते हुए कहा कि राजा की इच्छा के विरुद्ध उन्हें कुछ भी कहना नहीं था और न कभी उन्हें कोई इनकार ही हो सकता है। कुछ देर वार्तालाप के बाद त्रिविक्रमसिंह विदा लेकर चले गये।

"राज्य के काम से मुझे बिलकुल फ़ुर्सत नहीं; परन्तु विवाह का सम्बन्ध भी कराना पड़ता है। अभी अभी मैंने एक विवाह की बात पक्की की है। वर-कन्या भी परस्पर प्रेम रखते हैं; परन्तु लड़की के बाप राजी नहीं हो रहे थे। जो हो, बहुत कह सुनकर मैंने उन्हें राजी किया है। दोनों प्रेमियों के मिलन में अब कोई बाधा नहीं है।

"भाभी जी, घर से आते समय मैंने तुमसे कहा था, शायद तुम्हें याद भी होगा कि तुम मेरे लिए जो एक दुलहिन चाहती थीं, उसे मैं अब की लेकर लौटूँगा। एक दुलहिन का यहाँ प्रबन्ध हो गया है। हमारे कुल के लिए वह एकदम अयोग्य न होगी। तुम्हें भी वह शायद पसन्द आयेगी। परन्तु जब तक तुम स्वागत करके उसे न अपनाओगी तब तक कुछ न होगा। भाभी जी, तुम जल्दी से जल्दी यहाँ आ जाओ। तुम लोगों के न आने से मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। उसका नाम कस्तूरी है। क्यों, नाम अच्छा है न? उसे देखने पर तुम्हें वह और भी अच्छी मालूम होगी। वह एक देश की राजकुमारी है। परन्तु पहले से सब भेद न खोलूँगा नहीं तो पत्र में ही कौतूहल मिट गया तो तुम शायद आओगी ही नहीं।"

इत्तला न देकर ही चम्पादेई घर में घुस आई। राजा ने उसकी ओर देखकर पूछा—क्या है, चम्पादेई?

चम्पा राजा के पास खड़ी होकर बोली—आज-कल आप बिना कुछ खाये-पिये ही दरबार में चले क्यों आते हैं?

मैंने कुछ खाया नहीं है? अच्छा, मैं भूल गया था।

"आप भूल जाते हैं; परन्तु मुझे छटपटाना पड़ता है। क्या रुद्ररूप को भी कुछ अक्ल नहीं है, वह याद नहीं करा सकता?"

"अच्छा, सुनो तो चम्पा, तुम्हारे पिता जी आये थे। रुद्ररूप से तुम शादी करना चाहती हो, सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए और सम्मति दे गये हैं।"

चम्पा के चेहरे पर लाली छा गई। वह सिर घुमा कर कुछ कहना चाहती थी परन्तु रुक गई और हाथ हिला कर गौरी बाबू की बात को मानो उसने दूर हटा दिया और कहा—ऐसी फ़ज़ूल बातों के सुनने की मुझे बिलकुल फ़ुर्सत नहीं है। आपके लिए क्या लाऊँगी, बताइए। आँवले का मुरब्बा या एक गिलास गरम शर्बत—

राजा ने पत्र लिखने में मन लगाकर उपेक्षा से कहा—जरूरत नहीं।

चम्पा बोली—अच्छा तो एक कटोरी गरम दूध......।

"दिक न करो, चम्पा। मैं इस समय बहुत जरूरी चिट्ठी लिख रहा हूँ।"

"परन्तु कुछ तो खाना चाहिए। बिलकुल—"

राजा ने गम्भीर स्वर से पुकारा—रुद्ररूप!

रुद्ररूप शंकित होकर कमरे में घुस आये।

चम्पा के ऊपर कठोर दृष्टि डालकर राजा ने रुद्ररूप को हुक्म दिया—तुम चम्पादेई का हाथ पकड़ लो।

रुद्ररूप कुछ देर तक अवाक् रह गये। फाँसी की सजा पाये हुए आदमी की तरह चेहरा करके उन्होंने चम्पा का हाथ थाम लिया।

राजा ने कहा—खूब मजबूती से पकड़ लिया न? अच्छा तो इसे ले जाओ।

क्षीण स्वर से रुद्ररूप ने पूछा—कहाँ ले जाऊँ?

"अपने मकान में।"

"नहीं, नहीं, अभी रहने दो, यह विवाह के बाद होगा, फिलहाल तुम इसे इसके महल में ले जाओ। वहाँ इसे रोक रखना जब तक तुम्हारी बात न माने इसे मत छोड़ना, जाओ।

कड़ा हुक्म देकर राजा ने चिट्ठी लिखने में फिर से मन लगाया। चम्पा और रुद्ररूप दोनों थोड़ी देर चुपचाप खड़े रहे, उसके बाद तिरछी निगाह से दोनों ने एक-दूसरे का देखा। दोनों ही के चेहरे पर हँसी झलकने लगी। राजा ने तब तक चिट्ठी में अपना मन लगा लिया था। पैर दबाते हुए दोनों दरवाजे की ओर चल दिये।

परदे के बाहर जाकर चम्पा ने झटका देकर अपना हाथ छुड़ा लिया। उसके बाद रुद्ररूप की छाती पर एकाएक एक मुक्का जमाकर हँसती हुई भाग गई।

"कोशलगढ़ के महाराजा शंकरसिंह विदेशियों का बहुत आदर करते हैं। तुम लोगों के यहाँ आने पर राजमहल में ही अतिथि-सत्कार का प्रबन्ध किया जायगा। उसके सिवा राज्य के अजायबघर के सुप्रबन्ध के लिए एक विद्वान् व्यक्ति की आवश्यकता है। भाई साहब से अधिक योग्य मनुष्य मिलना कठिन है। बहुत-सी बातें लिखने की हैं, लेकिन कुछ भी लिखते नहीं बनता। तुम लोग कब आओगे? भाई साहब से कहना कि उनका दिया हुआ छुरा किस्ता के जल में डूब गया है। उस छुरे का योग्य अधिकारी उसे छाती में लेकर चला गया है। अफसोस करने की कोई बात नहीं है। एक बात याद रखना कि गौरीशंकर राय नाम का एक बंगाली युवक कोशलगढ़ में घूमने आया था। हाल ही में उसकी मृत्यु हो गई है। आओगी? मेरा प्रणाम। इति।

देवपाद श्रीमान् महाराज शंक

(समाप्त)

हमेशा सबसे ऊपर
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम सामग्री
हमारी बनाई स्टैनक्रीम केशों को जमाती, चमक लाती, चिट-चिटाहट से परे, व्यवहार में साफ़ व केश के लिये उपकारी है
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:, कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

निश्चय उसने
लाइफबॉय की
आदत सीखी है!
LIFEBUOY
SOAP

वह स्कूल जा रहा है। वहाँ से वह अपने साथ क्या लाएगा? नया ज्ञान, नये तरीक़े—और शायद किसी रोग के कीटाणु भी! माँ अपने छोटे बच्चे को सुरक्षित रहने की शिक्षा देकर बाहर भेजती है—सब से अच्छी शिक्षा लाइफ़बॉय साबुन का दैनिक इस्तेमाल है—जो गंदगी के उस ख़तरे से रक्षा करता है जो स्वस्थ्य से स्वस्थ बच्चे को भी रोग लग सकता है।

लाइफबॉय का
व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

L. 78-160 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMIT

मातृमण्डल

भारतीय स्त्रियां में नई चेतना और जागृति

सामाजिक जीवन और निर्माण के प्रति जिम्मेदारी

लेखिका, श्रीमती चन्द्रवती ऋषभसेन जैन

गतमास में अम्बाला (पंजाब) में अखिल भारतीय जैन-महिला-सम्मेलन का अधिवेशन हुआ था। स्वागताध्यक्षा हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी लेखिका श्रीमती चंद्रवती ऋषभ सेन जैन थीं। आपने इस अवसर पर जो जो महत्त्वपूर्ण भाषण दिया उसका मुख्य अंश नीचे दिया जाता है। भारतीय महिलाओं की उन्नति पर प्रकाश डाला गया है।

समाज के कल्याण की धुन की बड़ी जरूरत है, क्योंकि बिना धुन के कोई काम नहीं होता। पर इस धुन में एक खतरा है और उससे हमें शुरू से ही सावधान रहना चाहिए, क्योंकि अभी हम अपनी उस धुन की नींव ही रख रही हैं। अगर नींव ठीक न हो तो मकान कैसे ठीक होगा? स्त्रियों के जो जलसे होते हैं, उनमें स्त्रियों के हित की माँगें की जाती हैं कि स्त्रियों को इस तरह के अधिकार मिलने चाहिएँ। पर हमें यह शुरू में ही समझ लेना चाहिए कि जिसे अधिकार मिलते हैं, उसकी कुछ जिम्मेदारियाँ भी बढ़ जाती हैं। इसलिये हमें अपनी जिम्मेदारियों के लिये तैयार रहना है, अपने को तैयार करना है, यही सबसे पहली बात है।

श्रीमती चन्द्रवती ऋषभ सेन जैन

मेरी बात का यह मतलब आप न समझें कि मैं इस बात के खिलाफ हूँ कि स्त्रियाँ अपने अधिकारों के लिए लड़ें। यह तो हमें करना ही है। आज स्त्रियों की दशा समाज में और घर में पशुओं से भी खराब है। इतिहास गवाह है कि सभ्यता के आरम्भ में घर का आरम्भ माता ने यानी स्त्री ने किया था। पुरुष बाद में आकर परिवार का मेम्बर बना। साफ तौर पर स्त्री ने उसे अपने घर में आश्रय दिया। पर आज हालत यह है कि घर का मालिक पुरुष है और स्त्री उसके रहम पर जीवित है। पुरुष रात-दिन आवारा घूम सकता है, पर स्त्री उसकी आज्ञा के बिना मन्दिर में भी नहीं जा सकती। पुरुष लाखों रुपये लुटा सकता है, पर स्त्री धर्म के कार्यों में भी उसकी आज्ञा के बिना एक पाई नहीं दे सकती। पुरुष अपनी स्त्री के जीवित रहते ही दूसरी स्त्री लाकर उसकी छाती पर बैठा सकता है, पर स्त्री अपनी सहेली के अनाथ बच्चे को भी उसकी आज्ञा के बिना नहीं रख सकती।

यह दशा नरक की निशानी है, स्वर्ग की नहीं। इससे स्त्रियों का ही नहीं, पुरुषों का भी पतन हुआ। हमारे धर्म-शास्त्रों में लिखा है कि अत्याचारी अपने अत्याचार से विरोधी को दबा लेता है, पर उस अत्याचार से उसकी आत्मा का पतन हो जाता है जो उसका नाश कर देता है। हमें यह दशा बदलनी है और अपने परिवार को स्वर्ग बनाना है। इसके लिये यह आवश्यक है कि हम अपना सङ्गठन करें, अपने में ऐसी शक्ति पैदा करें कि हमारे ऊपर अत्याचार करने की कोई कल्पना ही न कर सके। सारे हिन्दू-समाज के लिये एक नया कानून बनने की तैयारी हो रही है। उसकी बहुत सी बातें बहुत अच्छी हैं। उनसे स्त्रियों की दशा काफी मजबूत हो जायेगी। पर खास सवाल तो यह है कि पुरुष स्त्री को एक स्वतन्त्र जीव ही मानने को तैयार नहीं है। वह कहता है, मेरी आँख के इशारे पर नाचो। मैं तुम्हें गुड़ियों की तरह कपड़ों से सजा कर रक्खूँगा और भोजन दूँगा। बस, उसकी उदारता की यहीं तक हद है। दूसरे समाजों में स्त्री की स्वतन्त्रता के, उसकी पूजा के गीत गाये जाते हैं। भले ही वह काग़ज़ी हों, पर हमारे दिगम्बर जैन-समाज में तो यह भी नहीं है। यहाँ के ग्रन्थजीवी तो अभी यही बहस कर रहे हैं कि स्त्री की मुक्ति हो सकती है या नहीं? मुझे तो इस तरह के विवाद पढ़ कर हँसी आती है। जिस नारी का जीवन आरम्भ से अन्त तक उत्सर्ग की साधना से भरा है, वह जननमयी, पालनमयी, पोषण-मयी नारी मुक्ति की अधिकारिणी नहीं, तो मुक्ति फिर केवल कवि की कल्पना है। किसी पश्चिमी देश में कोई सम्प्रदाय ऐसी घोषणा करता, तो शायद उस सम्प्रदाय की स्त्रियाँ सामूहिक रूप से उस धर्म का ही त्याग करने की घोषणा कर बैठतीं। यह सब पुरुष-समाज की दृष्टि में नारी की हीनता के चिह्न हैं। असल में स्त्री के स्वतन्त्र व्यक्तित्व की रक्षा तो केवल साम्यवादी शासन में ही हो सकती है, जैसा कि आज रूस में है। वहाँ स्त्री अपना काम करती है, पुरुष अपना। दोनों को राज्य की ओर से बराबर वृत्ति मिलती है। दोनों अपने भाग्य का भोजन करते हैं और प्रेम से परिवार में रहते हैं। स्वतन्त्रता में ही आपस का सच्चा प्रेम पनप सकता है।

पर क्या हम उस दिन की इन्तजार में बैठी रहें, जब देश में ऐसा शासन आयेगा और खुद कुछ न करें? इस सवाल पर हम हाँ नहीं कर सकतीं, तो मैं कहना चाहती हूँ कि स्त्रियों को अभी से अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा। इसी का नाम तो अपनी जिम्मेदारियों को पहचानना है।

एक बूढ़ा पुरुष अगर विवाह करना चाहता है, तो स्त्रियाँ चुप क्यों रहें? वे अपने बच्चों को लेकर उस लड़की के पिता के घर पर क्यों न जा बैठें और तब तक न उठें, जब तक वह बूढ़ा भाग न जाये। एक पुरुष अपनी पत्नी को रोज पीटता है, उसका अपमान करता है, तो हमारी महिला-सभा की सदस्याएँ बलपूर्वक उसके घर में घुस कर, उस पर लानतों की ऐसी बारिश क्यों न करें कि उसकी अक्ल ठिकाने आ लगे! जो लड़के दहेज के नाम पर आज समाज को नरक बनाये हुए हैं, उनकी मातायें भी तो हैं, बहिनें भी तो हैं! वे क्यों न सत्याग्रह करें कि हम अपने घरों में दहेज की कोई चीज न घुसने देंगी? अजमेर में जो कन्या कमेटी कायम हुई है, वह इसी तरह का एक प्रयत्न है। यह अच्छे लक्षण हैं, पर जरूरत तो घर-घर में इसी भावना के जगाने की है। स्त्री किसी पर अत्याचार नहीं करती, वह दूसरों के दुख में अपने को मिटाकर सुखी होती है, तो वह अपने ऊपर इतने अत्याचार क्यों सहे? और वह अत्याचार सहने से इनकार कर दे, किसकी मजाल है कि इस पर कोई अत्याचार करे?

वैसे तो हम अपने विशाल राष्ट्र के एक अङ्ग ही हैं और सारे समाज के साथ ही हमें आगे बढ़ना है। नई चेतना का अर्थ है—अपने समाज की स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार, समाज के जीवन को खोखला करनेवाली कुरीतियों का निवारण, स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचारों की रोक, स्त्रियों में फैलते पश्चिमी सभ्यता के जहर को रोक कर भारतीय संस्कृति का प्रचार और इस प्रकार एक सबल राष्ट्र का निर्माण!

किंकिणी
लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव
इस पुस्तक में लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

स्वस्थ जीवन के संकेत ?
खांसी गई ... प्राण रक्षा हुई।

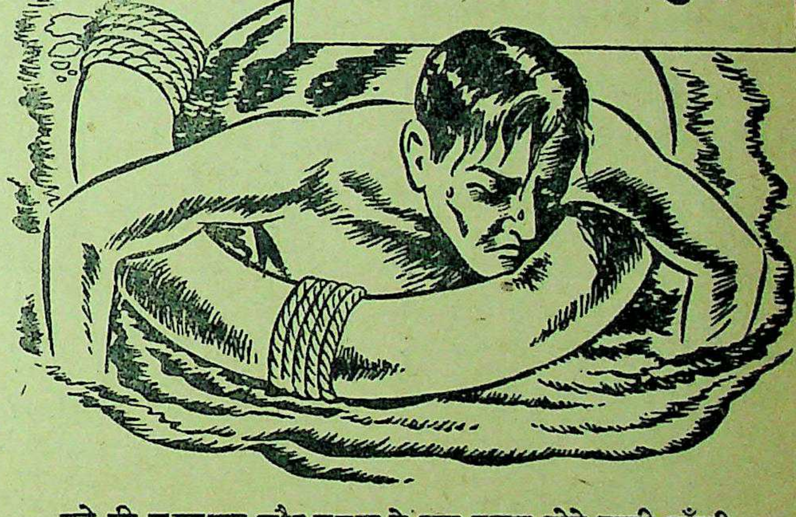

गले की सहलाहट और जुकाम के बाद उत्पन्न होने वाली खाँसी एक साधारण रोग है। परंतु यही खाँसी उपेक्षा की जाने के बाद, फेफड़े की सूजन (ब्रोंकाइटिस) श्वास और राजयक्ष्मा जैसे भयंकर रोगों का कारण होती है। अतःसमय रहते उचित चिकित्सा द्वारा इसका निराकरण प्राणरक्षा का उपाय है।
ग्लाइकोडीन टर्प वसाका डाक्टरों की राय में साधारण (चालू) खाँसी की अमोघ औषधी है। वह खांसी के मूल कारणों को नष्ट करती और उसके स्वास्थ्य दायक परमाणु शान्ति दायक और खाँसी को समूल नष्ट करने वाले हैं।
स्नायु विकार से उत्पन्न हुई किसी प्रकार की खाँसी के लिये अपने डाक्टर की सलाह लीजिये।

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका
शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।
अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर
अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोडा

पंजाब के नये आर्थिक बजट में—

(पेज ७ का शेष)

लाख रु० हुई। ये आँकड़े पंजाब के राजस्व की मजबूती को सूचित करते हैं। इनके बल पर पंजाब बाजार में कर्ज लिये बगैर बड़ी पूँजी के काम शुरू कर सकता है। अकाल के समय पंजाब के राजस्व को कमजोर होने से ये आय-स्रोत बचाते हैं।

स्पेशल फंड

राष्ट्र-निर्माण के कार्य के लिए १९३७-३८ में ५५ लाख से स्पेशल फंड कायम किया गया था। इस निधि में १९४०-४१ में १३ लाख, १९४१-४२ में ३० लाख जमा किया गया। अगले दो सालों में ६० लाख रु० और चालू साल में ४० लाख इस निधि में जमा किया गया। इसमें १९८ लाख रु० जमा हो गया है। इस फंड में से ९० लाख रु० नए परीक्षणों के वास्ते दिया गया है।

किसान स्पेशल फंड में २० लाख से अब २१० लाख रु० जमा हो गया है। देहातों की अवस्था सुधारने के लिए यह निधि कायम की गई। किसानों को अपनी पैदावार का उचित मूल्य दिलाना भी इसका ध्येय है। उनके बालकों को छात्र-वृत्तियाँ भी दी जाती हैं। कहना न होगा कि इस विशेष निधि की स्थापना जहाँ गाँवों और किसानों का सुधार करने के लिए १९४१-४२ में की गई है, वहाँ आगामी चुनाव का ख्याल करके पार्टी के उद्देश्य से भी इसकी स्थापना हुई है।

वन-पुनर्निर्माण पिछले साल १५ लाख से शुरू किया गया था और इसमें अब ३० लाख रु० जमा है। इन विभिन्न निधियों से युद्धोत्तर पुनर्निर्माण योजनाओं के लिए २ करोड़ दिया गया है।

पुलिस

१९२०-२१ में पुलिस का व्यय ९६ लाख था। सोलह साल बाद यह १¼ करोड़ हो गया। १९४०-४१ में यह १·३९ करोड़ था। उसके बाद से खर्च इस तरह बढ़ता गया है :—

सन्	रु०
१९४१-४२	१,५२,१२,२५४
१९४२-४३	१,८९,९६,९८७
१९४४-४४	२,१६,२१,७०५
१९४४-४५	२,७३,००,०००
१९४५-४६ (बजट)	२,८२,००,०००

१९४४-४५ में पुलिस-विभाग का बजट २·३४ करोड़ था पर अब २·७३ करोड़ व्यय होने का अनुमान है। अगले साल के लिये ९ लाख और अधिक व्यय कूता गया है। पुलिस-विभाग का यह बढ़ता व्यय चिन्ता-जनक है। मगर अर्थमन्त्री चिन्तित नहीं हैं। वे यह तो मानते हैं कि उनका प्रान्त अनेक उन्नत रियासतों से शिक्षा की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है और साक्षरता ९-१० प्रतिशत से अधिक नहीं है, पर साक्षरता-प्रसार व शिक्षा-विस्तार की कोई योजना का कार्य-क्रम उन्होंने पेश नहीं किया है। पंजाब मन्त्रि-मंडल इस बात को शायद अनुभव नहीं करता कि शिक्षा-प्रसार से अपराध घटेंगे और पुलिस का खर्च घटेगा। एक चौथाई सदी में पुलिस-व्यय लगभग तीन गुणा हो गया है, पर इसके घटने का कोई लक्षण नहीं दीखता। भारत-सरकार जैसे सेना पर अंधाधुंध खर्च करती है, उसी प्रकार पंजाब-सरकार पुलिस पर खर्च करती है। मन्त्रि-मंडल की शक्ति पुलिस में निहित है, और इसलिए इस पर खर्च बढ़ रहा है। भारतीय राजनीति में पंजाब का महत्त्व-पूर्ण भाग है। इसलिए पंजाब में बढ़ता पुलिस-व्यय यदि अन्य प्रान्तों के अनुकरण का विषय बने, तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

युद्धोत्तर निर्माण

पंजाब को विश्वास है कि अगले पाँच साल में वह युद्धोत्तर निर्माण कार्यों के लिए १०० करोड़ रु० खर्च कर सकेगी।

	करोड़ रु०
सिंचाई व बिजली	४०
सड़क	१२
खेती	५
शिक्षा	१०
स्वास्थ्य-चिकित्सा	१२

सर मनोहरलाल ने विश्वास दिलाया है कि वे प्रान्त से निरक्षता के अभिशाप को दूर करने की पूरी कोशिश करेंगे।

आर्थिक स्थिति दृढ़ और मजबूत होने पर भी राष्ट्र निर्माण के कार्यों पर कृपणता से व्यय करना क्या आश्चर्यजनक नहीं है? युद्धोत्तर योजना में शिक्षा को पहला स्थान नहीं दिया गया है, बल्कि सिंचाई और सड़क को दिया गया है। मनुष्य की ओर ध्यान न दे करके मनुष्य की सुख-सुविधा बढ़ाने की ओर ज्यादा ध्यान दिया गया है। प्रान्तीय स्थायत्त शासन का लाभ मनुष्य को जितना मिलना चाहिए उतना उसको नहीं मिला है। इससे ही प्रगट है कि युनियनिष्ट मन्त्रिमंडल की नीति प्रति-गामी है और यह बजट भी उसके अनुरूप ही है।

मुजफ्फरनगर शामली में महासभा के मन्त्री स्वर्गीय श्री पं० जी वेदालंकार की पुण्य-स्मृति में वेदालंकार संस्कृत कालेज' स्थापित का निश्चय किया है। कालेज में और हिन्दी की उच्च परिक्षाओं के केवल अँगरेजी में बी० ए० तक वैद्यक में आयुर्वेदाचार्य तक तथा सम्पादन, भाषण-कला और टाइप की शिक्षा का प्रबन्ध होगा।—संवाद

* * *

अजमेर में अखिल भारतीय सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन छपे हुए सदस्य प्रतिज्ञा पत्र और मँगाये जा सकते हैं। अधिवेशन छुट्टियों में १५ से २० मई के आस होगा।

—संवाद

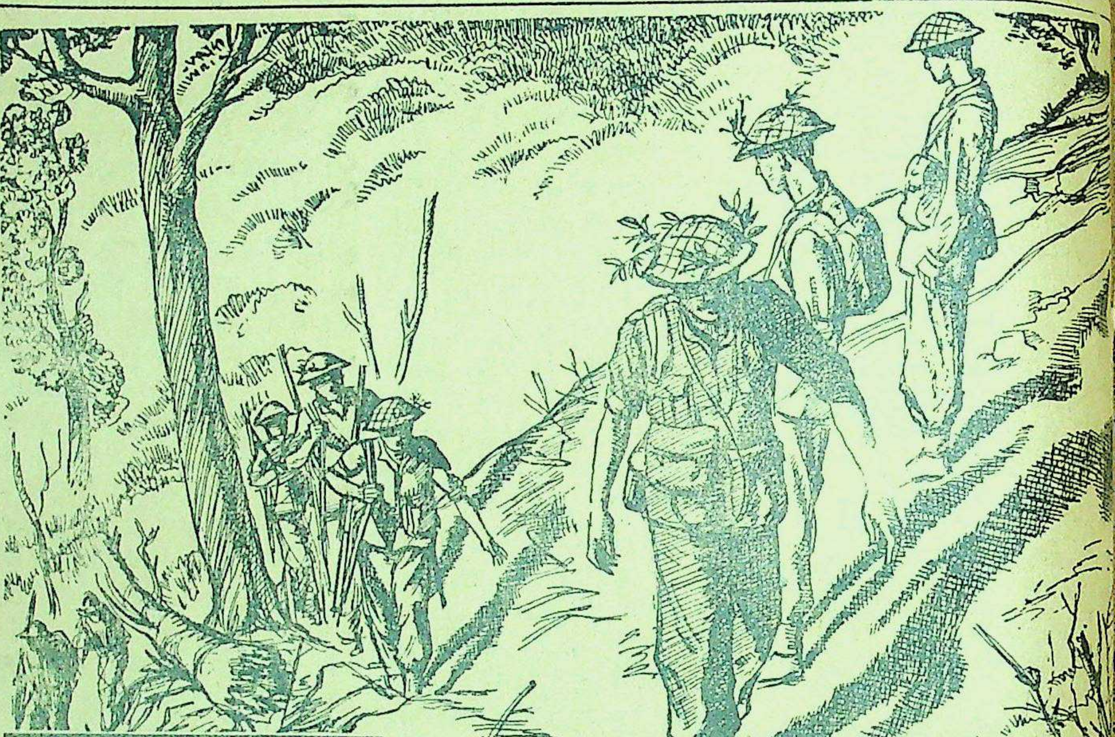

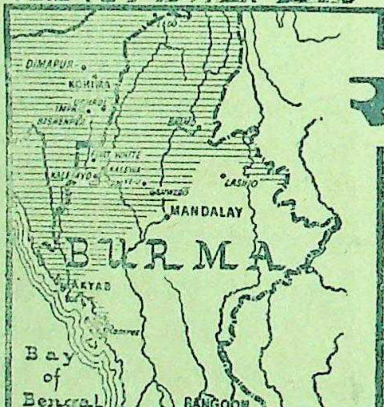

यह युद्ध-मार्ग हिन्दुस्तानी सैनिकों के पराक्रम से उज्ज्वल है। धुंधला भाग उस प्रदेश को दिखा रहा है जो शत्रु के अधिकार से मुक्त किया जा चुका है।

सहनशक्ति की जीत

दीमापुर, कोहिमा, बिशनपुर, उखरूल-ये नाम मई और जून, सन् १९४४ के चिन्तापूर्ण दिनों की याद दिलाते हैं। किन्तु हमारे बहादुर जवानों को धन्यवाद, जिनके सराहनीय पराक्रम ने लड़ाई का नक़शा बदल दिया है। अब इन नामों के स्थान पर समाचारों में और ही नाम नज़र आते हैं। फोर्ट व्हाइट, कालेम्यो, कालेवा, इयु, अकयाब, श्वेबो.... इसका अर्थ क्या है? नक़शा देखिए। बर्मा की ८० हज़ार वर्ग मील से अधिक भूमि अर्थात् देश का लगभग तिहाई भाग दुश्मन के पंजे से छुड़ाया जा चुका है, और अब तक लगभग एक लाख जापानी सैनिक हताहत हुए हैं।

जिन जवानों के बलपर यह विजय प्राप्त हुई, उनमें हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग और प्रान्तके निवासी हैं, उनमें सभी वर्गों और जातियों के लोग सम्मिलित हैं। यह सफलता प्राप्त करने में इन बहादुरों ने कितनी सहनशक्ति प्रदर्शित की और कितना भीषण युद्ध किया, हम केवल अनुमान लगा सकत हैं। अलबत्ता यह हमने अपनी आँखोंसे देख लिया कि उन्होंने हमारी शान्ति एवम् व्यवस्था को सुरक्षित बना दिया है। किन्तु जब तक शत्रु पर पूर्ण विजय प्राप्त न हो जाये, हम अपने देश को जापानी आक्रमणकारियोंसे सुरक्षित नहीं समझ सकते। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

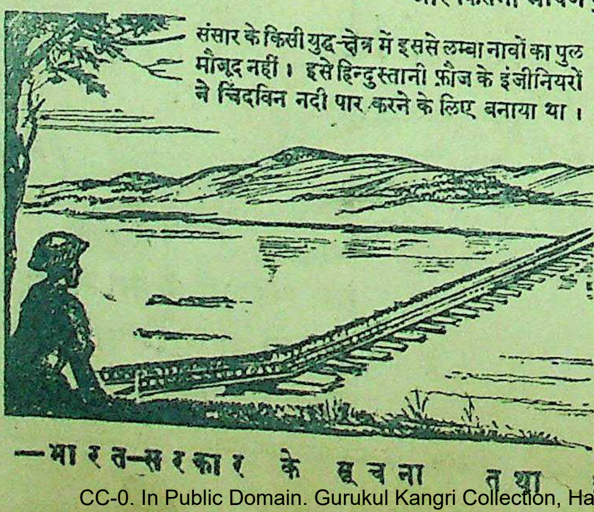

संसार के किसी युद्ध-क्षेत्र में इससे लम्बा नावों का पुल मौजूद नहीं। इसे हिन्दुस्तानी फ़ौज के इंजीनियरों ने चिंदविन नदी पार करने के लिए बनाया था।

बढ़े चलो
जीत निकट है

AAA 101

—भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित—

संपादक के नाम चिट्ठियां

रेडियो का बहिष्कार क्यों ?

(श्री संपादक देशदूत)

यह तो सर्वविदित ही है कि रेडियो की हिन्दी-विरोधी-नीति के विरुद्ध आन्दोलन का नेतृत्व जब से अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने लिया तब से हिन्दी-जगत् में नवीन जागृति की लहर दौड़ पड़ी है। लगभग हिन्दी के सभी लब्ध-प्रतिष्ठ लेखकों, कवियों तथा वक्ताओं ने रेडियो का बहिष्कार किया है जो कि हिन्दी की रक्षा तथा उन्नति के हेतु अनिवार्य ही था।

मैंने भी अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के जयपुर-अधिवेशन में रेडियो-विरोधी प्रस्ताव स्वीकृत होते ही रेडियो को अपना त्यागपत्र भेज दिया था। जैसा कि समाचारपत्रों में प्रकाशित हो चुका है, अभी पिछले दिनों 'देशदूत' में आल इंडिया रेडियो लखनऊ स्टेशन के ३० दिसम्बरवाले कवि-सम्मेलन में अपने सहकारियों से भाग लेने के लिए जो अपील हिन्दी के कुछ कवियों के संयुक्त नाम से निकली थी, उसमें किन्हीं कारणोंवश मेरा नाम नहीं जा सका था किन्तु, इस सम्बन्ध में मैं उन लोगों के साथ थी और मेरा दृढ़ संकल्प उसके अनुकूल आचरण करने का ही था। इसी महत्त्वपूर्ण वस्तुस्थिति को ध्यान में रखते हुए मैं गत २०-२१ फरवरी को बाँदा में होनेवाले कवि-सम्मेलन में नहीं सम्मिलित हुई। मैंने वहाँ का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया था। किन्तु जब समाचारपत्रों से ज्ञात हुआ कि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन-द्वारा प्रस्तावित, सर्वसम्मति से स्वीकृत रेडियो-बहिष्कार के इतने संगठित आन्दोलन को विफल बनाकर रेडियो से अपना हास्यास्पद और ग्लानिप्रद सम्बन्ध स्थापित रखनेवाली श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा' उस कवि सम्मेलन में सम्मिलित हो रही हैं तब मैंने उनका भेजा हुआ मार्ग-व्यय लौटा दिया और उस कवि-सम्मेलन में भाग नहीं लिया।

मेरे इस कथन का अभिप्राय यह है कि जब यह लड़ाई आज करोड़ों हिन्दी भाषा-भाषी जनता के स्वत्वों की लड़ाई का प्रश्न बन चुकी है तब इसके प्रति यदि हम अपने उत्तरदायित्व से अनभिज्ञ रहते हैं तथा इसके संगठित मोर्चे पर अपनी पूरी शक्ति नहीं लगाते हैं तो सम्पूर्ण रूप से सफल न होने का दोष केवल सरकार को ही नहीं दे सकते हैं। यह विषय वर्षों पुराना हो चुका है और जब तक केन्द्रीय शासन और केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य हमारी भाषा-सम्बन्धी समस्या के प्रति उत्तरदायी नहीं होते, हमें एकमत रहते हुए एकस्वर से अपनी विरोधी शक्तियों के सम्मुख अडिग खड़े रहना चाहिए।

अन्त में मेरा निवेदन हिन्दी के उन समस्त कवि-सम्मेलनों के संयोजकों से है कि वे कृपा करके मुझे उन कवि-सम्मेलनों में भाग लेने के लिए कदापि न निमन्त्रित करें जिनमें रेडियो को सहयोग देनेवाले हमारे कवि निमन्त्रित किये गये हों। क्योंकि मैं ऐसे किसी भी कवि-सम्मेलन या कवि-गोष्ठी में भाग न लेने का दृढ़ निश्चय कर चुकी हूँ, जिसमें रेडियोवाले कवि सम्मिलित होंगे।

युग-मंदिर —सुमित्राकुमारी सिनहा
उन्नाव

* * *

हिन्दी-पत्रकार-संघ और रेडियो

आल इण्डिया रेडियो की भाषा-नीति के सम्बन्ध में भारत-सरकार की असन्तोष-जनक घोषणा के पश्चात् हिन्दी-पत्रकारों का कर्तव्य स्पष्ट हो गया है कि वे उन लोगों को हिन्दी-पत्र जगत् से लाभ उठाने से वञ्चित कर दें, जो "पाँचवें दस्ते" के रूप में रेडियो से सहयोग कर हिन्दी का अहित कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में हिन्दी-पत्रकार-सङ्घ के वार्षिक अधिवेशन में हिन्दी-पत्रों और पत्रकारों का मार्ग-निर्देश स्पष्ट कर दिया गया है।

अ० भा० हिन्दी-पत्रकार-सङ्घ की ओर से नियमित रूप से उन हिन्दी लेखकों, कवियों या वक्ताओं की सूची प्रतिपक्ष पत्रों के कार्यालयों को भेजी जाया करेगी, जो कि हिन्दी-पत्र-जगत् से बहिष्कृत होंगे। सभी पत्रों के सम्पादकों और सहकारियों तथा पाठकों से निवेदन है कि वे सङ्घ की रेडियो-बहिष्कार की नीति को प्रबल बनाने में सहयोग दें।

दिल्ली —रामगोपाल विद्यालंकार
१५ मार्च ४५ विष्णुदत मिश्र 'तरंगी'

* * *

हिन्दू कोड-बिल

भारत-सरकार की ओर से हिन्दू-कोड बिल-द्वारा हम पर जो अन्याय किया जाने-वाला है, वह निन्दनीय है। हिन्दू-कोड हमारे शास्त्रों के नितान्त विपरीत है। यह कोड हिन्दुओं के लिए है और लोग अथक परिश्रम कर रहे हैं, किन्तु हिन्दुओं को नहीं मालूम कि हिन्दू-कोड में कौन से नियम हैं तथा वह हमारे लिए कहाँ तक लाभप्रद है ? सारे भारतवर्ष में केवल ३०० प्रतियाँ छापकर प्रचारित की गई हैं जब कि हिन्दुओं की संख्या करोड़ों है।

हिन्दू-कोड में एक ओर दहेज-प्रथा को व्यर्थ कहा जाता है और दूसरी ओर लड़की को बाप के माल में अपने भाइयों के समान अपना हिस्सा लेने के लिए, अधिकार भी दिया जाता है। यह दोनों बातें एक रूप में समान नहीं प्रतीत होती हैं। दूसरे देशों में तलाक की प्रथा अधिक तीव्र थी और अब उन्हीं देशों ने इस प्रथा का कुछ सुधार कर लिया है। जब उनकी दृष्टि में स्वयं यह बुरा है तब भारतवर्ष में तलाक धर्म स्थापित किया जा रहा है। यह किसकी सूझ है ? इसलिए यदि कोड का विरोध हो रहा है तो उचित ही है

लखनऊ —रमाशंकर 'ललित'
१५ मार्च ४५

* * *

गोपाल-पुरस्कार

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन प्रयाग-द्वारा गोपाल-पुरस्कार हिन्दी की किसी खोजपूर्ण मौलिक अद्वैत सिद्धान्त के आधार पर लिखी हुई आचार शास्त्र-रचना के सम्मानार्थ दिया जाता है। इसलिए पुरस्कार समिति ने पुस्तकें स्वीकार किये जाने की तिथि बढ़ा दी है। पुरस्कार के लिए केवल जीवित लेखकों तथा लेखिकाओं की मौलिक रचनाओं पर विचार किया जायगा। निश्चित तिथि से पन्द्रह महीने से अधिक पहले की प्रकाशित रचनाओं पर विचार न किया जायगा। प्रत्येक रचना पारितोषिक के लिए केवल एक बार भेजी जा सकेगी। हिन्दी प्रेमी विद्वानों तथा विदुषियों से निवेदन है कि वे अपनी रचना की सात प्रतियाँ १० अप्रैल १९४५ तक सम्मेलन-कार्यालय में अवश्य भेज दें।

—सत्यदेव शास्त्री,
संयोजक

* * *

रेडियो में भाग न लूँगा

(१)

अपने प्रिय मित्रों के अनुरोध से मैंने यह निश्चय किया है कि भविष्य में जब तक रेडियो की हिन्दी-सम्बन्धी नीति में अभीष्ट परिवर्तन नहीं हो जाता तब तक मैं रेडियो के साथ सहयोग न करूँगा।

प्रयाग रामशंकर शुक्ल (रसाल)
१८ मार्च ४५ एम० ए०, डी० लिट्०

(२)

मैंने लखनऊ रेडियो पर होनेवाले कवि-सम्मेलन में भाग लिया था, किन्तु इसका मुझे खेद है। भविष्य में मैं रेडियो से कोई सम्बन्ध न रखूँगी, जब तक वह अपनी हिन्दी-विरोधी नीति का त्याग नहीं कर देता। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के रेडियो विरोधी प्रस्ताव का मैं अनुमोदन करती हूँ।

प्रयाग —चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा'
१० मार्च ४५

* * *

दरभंगा में अ० भा० श्रीरामचरित-मानस सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन (श्री कामेश्वरी प्रिया पूअर होम) में श्रीमान् राजाबहादुर विश्वेश्वरसिंह जी के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश के प्रमुख कथा-वाचकों एवं विद्वानों की कथा, प्रवचन, कीर्तनादि हुए और श्रीमानस जी एवं श्री तुलसीदास जी का नगर-भ्रमण बड़े समारोह के साथ निकला। —संवाददाता

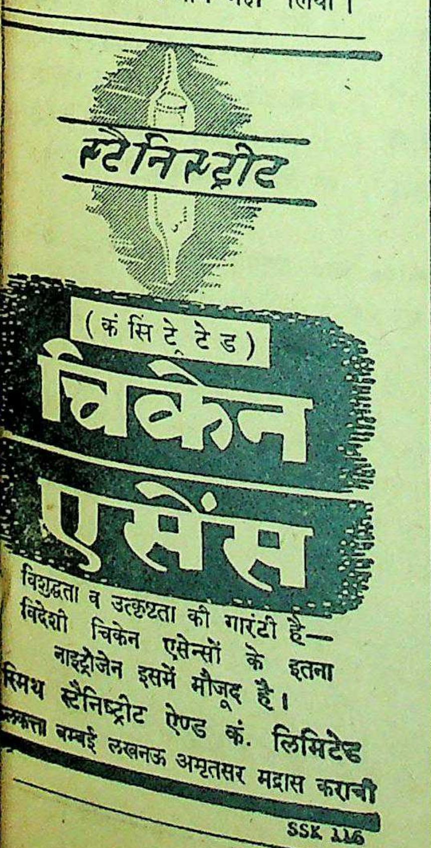
स्टेनिस्ट्रीट
(कंसिंटे्रटेड)
चिकेन एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों के इतना
नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 116

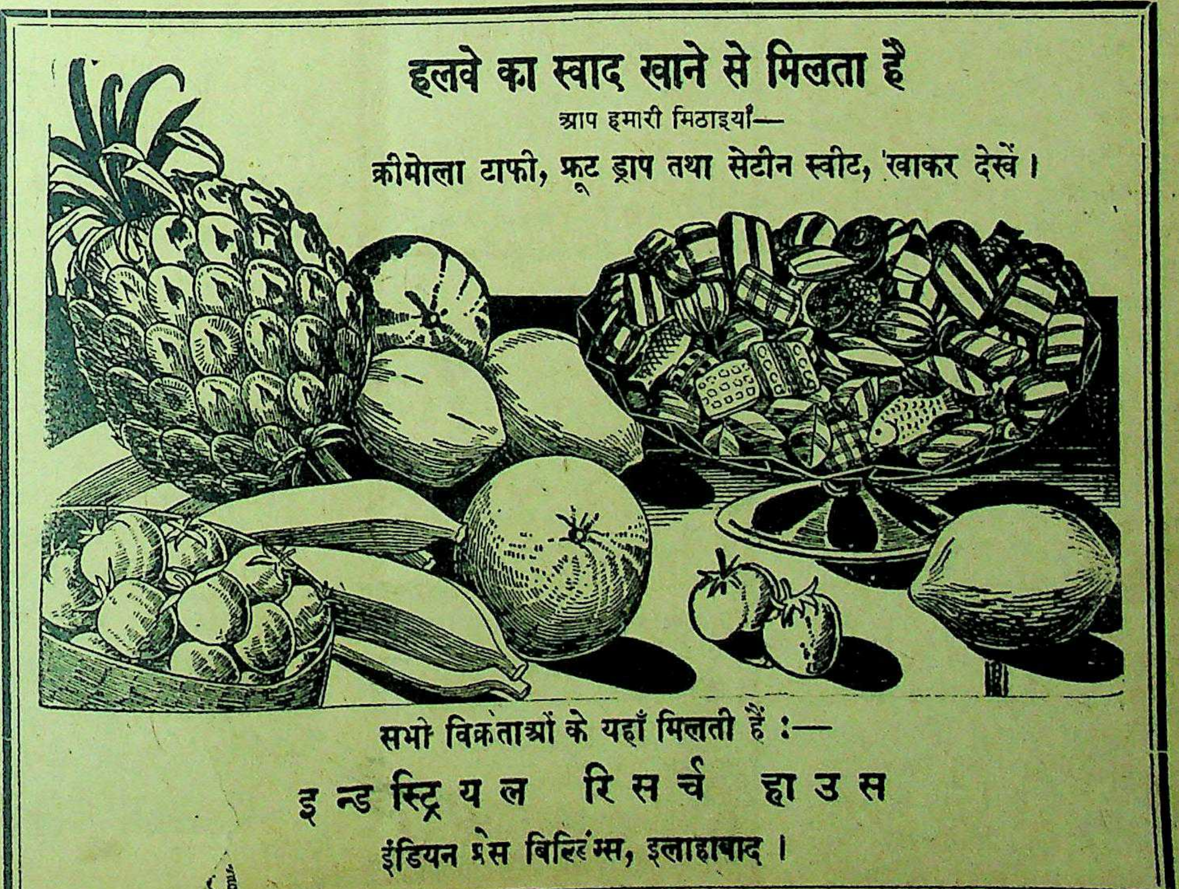
हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

साप्ताहिक युद्ध की डायरी

योरप का पश्चिमी और पूर्वी युद्ध-मोर्चा कैसा है?

प्रशान्त महासागर में जापान पर प्रहार—बर्मा का युद्ध

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

योरप के पश्चिमी युद्ध-मोर्चे पर फील्ड मार्शल मांटगोमरी ने नागरिकों के बीच भाषण करते हुए कहा है कि अन्तिम विजय निस्संदिग्ध है। संदेह केवल इस बात का है कि विजय कब प्राप्त होती है। बेलजियम की भूमि पर एक भी जर्मन सैनिक नहीं रह गया है और शत्रु अब कभी वापस नहीं लौट सकेगा।' जर्मन रेडियो ने यह समाचार दिया कि अमेरिकन सेनाओं नें एक नये स्थान पर राइन नदी को पार किया है, जो कि रेन-ब्रिट-बैक के उत्तर और दक्षिण में है। यह स्थान रेमेजेन पुल के पूर्वी सिरे के दो मील उत्तर और होनेफ के डेढ़ मील दक्षिण में है। होनेफ पर प्रथम अमरीकी सेना का अधिकार हो गया है। अभी तक इस क्षेत्र में जितने भी जर्मन मुख्य भूमि के नगर मित्र सेनाओं ने जीते हैं, उनमें यह सबसे बड़ा नगर है। जनरल हीज की फौजों ने रेमेजेन के निकट राइन नदी पर एक पुल और बना लिया है। मित्र फौजों ने ल्यूडनडार्फ रेल के पुल पर कब्जा करने के बाद ६६ घंटों के भीतर वह पुल बना लिया। जनरल हीज की प्रथम अमरीकी सेना ने फ्रैंकफर्ट-कोलोन की प्रसिद्ध सड़क पर भीषण धावा बोला। जनरल पैटन की तृतीय अमरीकी सेना ने कोबलैंज के दक्षिण-पश्चिम में मोसले नदी को पार किया और काफी लम्बे-चौड़े क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया जिसके फलस्वरूप सारे औद्योगिक क्षेत्र के लिए नया संकट उपस्थित हो गया है। जनरल पैटन की सेना ने राइन का पश्चिमी किनारा बिलकुल साफ कर दिया है और मोसले का उत्तरी किनारा पूरे तौर पर मित्रों के अधिकार में आ गया है। जनरल पैक के फौजी दलों ने सारब्रुकेन के पश्चिम फ्रैंच जर्मन सीमा को तथा सार नदी को पार कर लिया और बहुत से नगरों पर अधिकार किया।

* * *

उत्तर में डैंजिंग से स्टेटिन और दक्षिण में हंगरी और जेकोस्लोवाकिया तथा डेन्यूब तक के समस्त मोर्चों पर भीषण लड़ाइयाँ हुईं। बाल्टिक क्षेत्र में अनुमान किया जाता है कि कोनिग्सबर्ग के तथा ओडर के बीच १३ जर्मन डिवीजन युद्ध में लगा दिये गये हैं। वे पूर्वी प्रशा में अवशिष्ट जर्मन अधिकृत क्षेत्रों तथा डैंजिंग गडीनिया क्षेत्र में केंद्रित हैं। इस समय तो इस क्षेत्र की ही लड़ाई बर्लिन मोर्चे की लड़ाई को तुलना में प्रमुख हो गई है, जहाँ सभी जर्मन राजधानी पर बड़ा हमला करने के पूर्व बल-संग्रह कर रहे हैं। सोवियट विज्ञप्ति में घोषणा की गई है कि तृतीय श्वेत रूसी सेना पूर्वी प्रशा में शत्रु की फौजों के संहार के लिए युद्ध कर रही है। इस क्षेत्र में कोनिग्सबर्ग के दक्षिण-पश्चिम फ्रिनटेन के दोनों किनारों पर लाल सेना ने आक्रमण कर दिया है और बहुत से महत्त्वपूर्ण स्थानों पर उसका अधिकार हुआ है। मार्शल जुकोव की सेनायें कोलबर्ग में घुस चुकी हैं। कुएस्टिन पर अधिकार हो गया। ओडर का निकोण-वारथी और ओडर नदियों के संगम के आस-पास का क्षेत्र भंग कर दिया गया, और जर्मन राजधानी की रक्षा करनेवाली नदी की सम्पूर्ण पाँति गम्भीर खतरे में पड़ गई है। कुएस्टिन जर्मन राजधानी की रक्षा के लिए अन्तिम मजबूत गढ़ था और अब फ्रांकफर्ट आन ओडर पर प्रबल आक्रमण करने के लिए रूसी लाल सेना अपनी बहुसंख्यक फौजों और रण-सामग्रियों को जमा कर रही है। बर्लिन के सामने मार्शल जुकोव के मोर्चे पर तथा ड्रेस्डेन के मार्गों पर मार्शल कोनीव के मोर्चे पर युद्ध की ज्वाला जोर पकड़ रही है। दोनों पक्ष एक-दूसरे की शक्ति का अन्दाजा लगाने के लिए गश्ती टुकड़ियाँ भेज रहे हैं, साथ ही सैन्य-संग्रह तथा रण-सामग्रियों का संग्रह भी कर रहे हैं। जेकोस्लोवाकिया के नगर एवटसेल्यू पर लाल सेना का अधिकार हो गया है। वियना के १०० मील पूर्व डेन्यूब के दोनों किनारों पर भीषण संग्राम छिड़ गया है जहाँ मार्शल तोलबुखिन के सैन्यदल बुडापेस्ट के पश्चिम नाजियों से लोहा ले रहे हैं और डेन्यूब के उत्तर मार्शल मेलिनोवस्की की यन्त्रित सेना भ्रिन्डेन को जानेवाली पर्वतीय सड़क पर बढ़ रही है।

* * *

सुदूरपूर्व में भी जापान की मुख्य भूमि पर अमरीकी ३०० बड़े उड़न-किलोंने टोकियो पर बमवर्षा की जिसके फलस्वरूप राजधानी में आग लग गई यहाँ तक कि शाही महल भी जलने लगा। पुनः ३०० उड़न-किलों ने दक्षिणी जापान के प्रमुख औद्योगिक नगर नगोया पर २,००० टन बम और विस्फोटक गोले गिराये। ओसाका पर बमवर्षा हुई, जिसके कारण वहाँ के पृथ्वी के नीचे बने हुए शस्त्रागार में भीषण धड़ाका हुआ। इओजीमा द्वीप, जो जापान का द्वार कहा जाता है और जिसके बचाने के लिए जापानी प्राणपण से लगे हैं उसके अधिकांश भाग पर अमरीकी सेना का अधिकार हो चुका है। फिलीपाइन के मिंडनाओ द्वीप के जमबोआँगा पर भी उनका अधिकार हो गया।

* * *

बर्मा में मांडले के पतन की शीघ्र आशा की जाती है। इस नगर के आधे से अधिक भाग पर मित्र-सेनाओं का कब्जा हो चुका है। वहाँ एक एक मकान के लिए युद्ध जारी है। २०वें भारतीय डिवीजन के भारतीय सैनिकों ने टानाउंगगेंग के निकट रेलवे लाइन और सड़क काट दी है, जो मांडले से जापानियों के भागने की एक लाइन है। मध्य बर्मा के द्वितीय बड़े नगर सीपाव पर चीनी सैनिकों ने आक्रमण शुरू किया है। प्रथम सैन्यदल के सैनिक लाशियो-मांडले सड़क पर दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ रहे हैं और अन्य सैनिक सीपाव के दक्षिण की तरफ बढ़ रहे हैं। इंडोचीन में जापानियों का फ्रांसीसियों से संग्राम छिड़ गया है जहाँ मित्र विमानों ने सफल बमवर्षा की।

* * *

लार्ड लुई माउंट बैंटन चुंकिंग में मार्शल च्यांगकाई शेक से मिले। दोनों सेनाध्यक्षों ने सुदूरपूर्वी रणक्षेत्र के विषय में विचार-विनिमय किया। लौटते हुए माउंट बैंटन लेफ्टिनेंट सुलतान से भी मिले। मार्शल च्यांगकाई शेक ने लार्ड लुई माउंट बैंटन की सफलता पर देते हुए उन्हें प्रथम श्रेणी की आफ दी क्लाउड और बैनर" की उपाधि से विभूषित किया।

उन स्त्रियों से जो
महत्त्वपूर्ण युद्ध-कार्य में
'नहीं लगी हुई है

डबल्यू॰ ए॰ सी॰ (आई) में भरती होने के लिए निवेदन

यह अपील उन सब स्त्रियों के लिए है जो किसी महत्वपूर्ण युद्ध-कार्य में संलग्न नहीं हैं। भारतीय महिला सहायक सेना (डबल्यू॰ ए॰ सी॰ आई) में नौकरी करने के लिए आजकल कई हजार स्त्रियों की आवश्यकता है। यह काम बहुत ही मनोरंजक है तथा इसमें अच्छा वेतन मिलता है।

निवास-स्थान

डबल्यू॰ ए॰ सी॰ (आई) की सदस्यायें सुखपूर्ण निवास-स्थानों में रहती हैं, जिनकी देखभाल इसी संस्था की ज़िम्मेदार महिलाओं द्वारा की जाती है।

जीत के बाद !

जीत के बाद हिन्दुस्तान की उन स्त्रियों को, जिन्होंने शत्रु को पराजित करने में भाग लिया है, शान्ति उपभोग करने का बहुत बड़ा अधिकार हो

युद्ध के पश्चात् ?

व्यापार-वाणिज्य तथा धंधोंमें, हिन्दुस्तान बड़ी तेज़ी आगे बढ़ रहा है और यह नि है कि शांति स्थापित हो शहरी नौकरियों के लिए ट्रेनिंग पाये हुए बहुत कर्मचारियों (स्त्री-पुरुषों) आवश्यकता होगी। डबल्यू॰ सी॰ (आई) में नौकरी हुए बहुत सी स्त्रियां प्रबन्ध- का बड़ा अच्छा अनुभव प्राप्त लेंगी जो शहरी नौकरी सफलता पाने के लिए आवश्यक होता है।

पूरा विवरण

नौकरी के नियमों आदि के में पूरा विवरण बिना किसी ए॰ टी॰ आर॰ ओ॰/ डबल्यू॰ ए॰ (आई) से प्राप्त किया जा स जो स्वयं इस संस्था की सदस्या हों डबल्यू॰ ए॰ सी॰ (आई) के बारे में जो कुछ भी जानना चाहती हैं, ये म आपको प्रसन्नतापूर्वक बतला देंगी।

WAC INDIA

ए॰ टी॰ आर॰ ओ॰/डबल्यू॰ ए॰ सी॰ आई॰ के बम्बई—ए॰ एफ॰ आई॰ बिल्डिंग, हास्पिटल लेन, धोबी कलकत्ता—मार्फ़त डी॰ टी॰ आर॰ ओ॰, २८, थियेटर लखनऊ—मार्फ़त टी॰आर॰ ओ॰, ईस्टर्न, हज़रतगंज। प मार्फ़त डी॰ टी॰ आर॰ ओ॰, इग्ज़ीबीशन रोड। रावल ग्विन टामस रोड। बंगलोर—कैण्टूनमेण्ट, कबन रोड। ला २२, डेविस रोड। पूना—स्टाएटन रोड। मद्रास— माउण्ट रोड। अथवा अपने निकटवर्ती डब्ल्यू॰ ए॰ (आई) प्लेटून कमाण्डर के पास आवेदन कीजिए।

भारतीय महिला सहायक सेना में
भरती हो जाइए

AAA 158

हमारी राजपूताने की चिट्ठी

देशी राज्य लोक-परिषद् का अधिवेशन कब होगा ?

बीकानेर, बूँदी, जयपुर, भरतपुर में क्या हो रहा है ?

('देशदूत' के विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

बीकानेर से फिर कुछ गरम खबरें आई हैं। अभी हाल में नियुक्त शिक्षा-मन्त्री श्री मदनमोहन वर्मा अपना पद त्याग कर वापस अजमेर चले आये हैं और उन्होंने फिर राजपूताना शिक्षा बोर्ड के सेक्रेटरी का कार्य-भार सँभाल लिया है।

डूंगर कालेज के विद्यार्थियों के नेता श्री दामोदरप्रसाद सिंहल—जो प्रजा परिषद् के नजरबन्द नेता श्री रघुवर दयाल गोयन के सम्बन्धी हैं, और शायद इसी कारण राज्य के कोप के शिकार हुए हैं—को कालेज से शायद रेस्टीकेट कर दिया गया है और उन्हें राज्य से संभवतः निर्वासित भी कर दिया गया है।

ऐसा बताया जाता है कि नये शिक्षा मन्त्री बीकानेर की आम रीति-नीति के अनुकूल अपने को न ढाल सके और मतभेद के कारण इतनी जल्दी चले गये। वैसे आपके पद-त्याग का कारण आपके किसी सम्बन्धी की बीमारी बताया गया है। बीकानेर में इस तरह कम दिन टिकनेवाले मिनिस्टरों की एक परम्परा हो गई है।

श्री सिंहल ने कालेज के प्रिंसिपल के नाम एक खुली चिट्ठी प्रकाशित की है—जिसमें अधिकारियों की निन्दा करते हुए कहा गया है कि बिना कारण बताये इस तरह किसी विद्यार्थी के शिक्षा-क्रम में बाधा डालना सर्वथा अनुचित है।

बूँदी

बहुत दिन बाद बूँदी राज्य समाचार की सीमा में आया है। गत २६ फ़रवरी को गाँव मडावरों में पंचायत हो रही थी—दूर दूर के लोग आये हुए थे। इसमें शामिल होने के लिए आनेवाले ५–६ किसान रास्ते में गिरफ़्तार कर लिये गये और उसी गाँव के एक राजपूत को पंचायत की अर्जियाँ लिखने के 'अपराध' में गिरफ़्तार कर लिया गया। स्वयं दीवान श्रीराबर्टसन ने फौज के साथ एक गाँव की गश्त की। सारे गाँववाले जंगलों में चले गये। राजपूताने के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने मामले में दिलचस्पी ली है और श्री देशपांडे और श्री माणिक्यलाल वर्मा परिस्थिति की जाँच करने की कोशिश में हैं।

उधर बूँदी महाराज सख्त बीमार हैं और महाराजकुमार दूर किसी युद्ध-मोर्चे पर हैं। जनता में बड़ी घबराहट है। किसानों को अकारण उत्तेजित करके बूँदी सरकार ने ठीक नहीं किया ऐसा मालूम देता है।

जयपुर

जयपुर राज्य प्रजामंडल ने नवीन विधान के अन्तर्गत स्थापित होनेवाली धारा-सभा के आगामी चुनावों के लिए प्रचार-कार्य शुरू कर दिया है। प्रधान मंत्री श्री हीरालाल शास्त्री उप-सभापति, श्री लादूराम जोशी और कई अन्य कार्यकर्ता रियासत का दौरा कर रहे हैं। जैसा मैंने पहले लिखा था मंडल का विरोध मुख्यतः राजपूत सभा करेगी। वह भी अपनी तैयारियाँ कर रही है। चुनाव मई के अन्त तक होने वाले हैं—धारा-सभा के उद्घाटन के लिए महाराज की आगामी वर्षगाँठ का अवसर चुना जाय तो आश्चर्य न होगा।

उदयपुर महिला मंडल की मंत्राणी और एक प्रमुख राष्ट्रीय कार्यकर्त्री श्रीमती कमला-कुमारी श्रोत्रिय।

भरतपुर

पिछले दिनों एक-दो सूत्रों से यह खबर उड़ी थी कि भरतपुर के दीवान श्री रामनाथन अपना पद-त्याग करके जाने-वाले हैं,—लेकिन वह समाचार निराधार था। हाल में प्रजा-परिषद् क्षेत्रों में दीवान साहब की नीति के विरुद्ध जो असंतोष बढ़ा है, उसी का प्रतीक उपरोक्त समाचार मालूम देता है।

भरतपुर में एक जीवन बीमा-कम्पनी, एक स्थानीय बैंक, और एक तेल-मिल चालू की गई हैं। इस तरह औद्योगीकरण की प्रचलित दौड़ में भरतपुर ने भी अपने को शामिल कर लिया है।

हरिजन-सेवक-संघ

हरिजन-सेवक-संघ की राजपूताना शाखा का कार्यालय जयपुर से अजमेर चला गया है और श्री हरिभाऊ उपाध्याय की देख-रेख में वहाँ काम शुरू हो गया है।

देशी राज्य लोक-परिषद

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान मंत्री श्री जयनारायण व्यास को बीमारी ने थोड़ी छुट्टी दी है, और पहला अवकाश पाते ही आपने परिषद् के भावी काम के संबन्ध में एक वक्तव्य दिया है। इसमें आप बताते हैं कि परिषद् के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू और मंत्रियों एवं प्रमुख सदस्यों के जेल चले जाने के कारण सारा काम-काज बन्द सा था। फिर भी परिषद् के जेल से बाहर बचे कुछ सदस्यों ने और जेल से छूटने के बाद स्वयं व्यास जी ने आपस में सम्पर्क कायम रखा और कुछ रियासतों के मामले में भी दिलचस्पी ली। अब किसी ऐसे स्थान में परिषद् की स्थायी समिति की बैठक करने का विचार है जहाँ महात्मा गांधी जी उपस्थित हो सकें।

गीत

लेखक, श्री राजेन्द्र

मेरे दीपक बुझ जाना।
रजनी के अञ्चल में जब,
झिल मिल तारें मुरझायें।
इन अलसाई आखों से,
जब आँसू-कण ढल जायें।
तुम भी निज स्नेह जला तब प्रिय ! चुपके से बुझ जाना।
मेरा यह मधुमय सपना
जब धुँधला सा हो जाये
अर्चन के फूल करों से
जब सूख सूख गिर जाये
तुम भी पीड़ा के आँसू निज नयनों में छलकाना।
मारुत के झोंके आकर
ठंडी आहें भर जाते
जीवन की आस-लता में
ये प्रान उलझ रह जाते
मेरे जलते प्रानों से मिल क्षण भर तो मुसकाना।

हिन्दी भवन के लिए

कलकत्ता में सार्वजनिक सभा

कलकत्ता में हिन्दी - साहित्य-गोष्ठी की विशेष बैठक श्री राधाकान्त मालवीय के सभापतित्व में हुई। हिन्दी पत्र-सम्पादकों, लेखकों, कवियों और साहित्य-सेवियों से अपर इंडिया एसोसियेशन का हाल खचा-खच भरा था। प्रधान अतिथि के रूप में सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी और पत्रकार पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी और श्री सत्यदेव विद्यालंकार उपस्थित थे। गोष्ठी की ओर से उनका स्वागत किया गया। श्री मोहन राजबाग के द्वारा 'वन्देमातरम्' गाये जाने के बाद कार्य आरम्भ हुआ। स्व० श्री हरे कृष्ण 'जौहर' के निधन पर शोक-प्रस्ताव पेश करते हुए गोष्ठी के मन्त्री नटवर जी ने उनकी जीवनी पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। श्री भोलानाथ बर्मन ने समर्थन करते हुए जौहर जी के गुणों का वर्णन किया। उपस्थित जनता ने खड़े होकर प्रस्ताव स्वीकृत किया। श्री वसन्तलाल जी मुरारका ने गोष्ठी-भवन में स्व० जौहर जी का तैल-चित्र लगाने का सुझाव पेश किया और श्री मदनलाल मिश्र ने उनकी जीवनी छपाने का व्यय-भार स्वीकार किया। शोक-प्रस्ताव में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और नागरी-प्रचारिणी सभा काशी का ध्यान भी स्वर्गीय आत्मा का स्मारक स्थापित करने के लिए दिलाया गया।

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने सार-गर्भित संक्षिप्त भाषण देते हुए मार्मिक शब्दों में धनी-मानियों से अपील की कि कलकत्ता जैसी महानगरी में एक हिन्दी-भवन स्थापित किया जाये। श्री वसन्तलाल मुरारका के समर्थन और श्री तुलसीराम सरावगी के अनुमोदन पर निश्चय हुआ कि इस कार्य के लिए एक लाख एकत्रित किया जाय। मुरारका जी ने एक हजार का वचन दिया। रा० ब० रामदेव चोखानी ने अपने मार्मिक भाषण में 'भवन' की आवश्यकता पर जोर देते हुए घोषणा की कि मैं २५ हजार रुपये एकत्रित करने का भार स्वीकार करता हूँ। मार्च के अन्त तक इस कार्य को पूरा करा देने के लिए पं० बनारसीदास चतुर्वेदी ने यात्रा स्थगित करने का निश्चय प्रकट किया। श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने साहित्य और भाषा के निर्माण में कलकत्ता का महत्त्वपूर्ण स्थान बताते हुए गोष्ठी के प्रयास की प्रशंसा की। श्री देवदत्त मिश्र ने ओजस्वी शब्दों में पूँजीवादी मनोवृत्ति के दान की निन्दा की। श्री गांगेय नरोत्तम शास्त्री ने साहित्य शब्द की व्याख्या करते हुए हिन्दी-विकास में कलकत्ता का गौरवपूर्ण स्थान बताया। प्रोफेसर रामलोचन शर्मा 'कंटक' ने हृदय-स्पर्शी भाषण देते हुए 'भवन' के लिए २५) नगद और ५) प्रतिमास देने का वचन दिया। अन्त में सभापति के भाषण और धन्यवाद देने के बाद सभा समाप्त हुई।

—संवाददाता

जिसने खाया पसन्द किया
ऐसा
दाल का मसाला
साग, दाल, चटनी, रायता, चाट आदि का स्वाद चौगुना करता है और हाजमें की अचूक दवा।
१ डिब्बा—८ छटाँक, मूल्य केवल १० आना। डाकखर्च अलग।
प्रकाश ब्रदर्स
बाग़ मुजफ्फर खाँ, आगरा।

अलमोनियम के बटन
बहुत बड़ी तादाद में तुरन्त बिक्री के लिए तैयार हैं। पूरा स्टाक खरीदने वाले को पहले अवसर दिया जायगा। निम्नांकित पते पर पत्र-व्यवहार कीजिये।
रायको
१/३ ए, बीडन रो, कलकत्ता।

मुस्लिम-लीग का पराभव क्यों ?

(पेज ५ का शेष)

की धर्मान्धता का शिकार बन बैठे होंगे। फिर जब वह लीग को और उसके पाकिस्तान के नारे को भारतीय स्वतंत्रता के आगे रोड़ा बना हुआ पाता है, तो वह घबड़ा उठता है। ऐसी परिस्थिति में वह लीग को न छोड़े तो क्या करे ?

कांग्रेस की ओर देखने पर उसे अचानक ख्याल हो आता है कि उसके राष्ट्रपति श्री मौलाना अबुलकलाम आजाद एक मुस्लिम ही तो हैं, उनके समान धार्मिक मुस्लिम व कुरान का ज्ञाता मिलना बहुत कठिन है। राजनीतिज्ञ खान अब्दुल गफ्फार खाँ जिन्होंने अपने स्वातन्त्र्य-प्रेम, अहिंसा और सत्य पर उज्ज्वल भक्ति के दूसरे सीमांत गांधी की आज उपाधि प्राप्त की है, भी तो मुस्लिम ही है ? डा० सैयद महमूद, श्री आसफअली, और डा० खानसाहब जैसे गण्यमान्य व प्रभावशाली कांग्रेस-नेता, पञ्जाब प्रान्तीय कांग्रेस के सभापति श्री फ़खारुद्दीन व श्री अब्दुलकय्यूम जैसे सेन्ट्रल असेम्बली के प्रमुख कांग्रेसी नेता, मुसलमान नहीं तो क्या हैं ? उन्हें भी तो मुस्लिम संस्कृति, धर्म तथा आचार-विचारों से श्रद्धा है ?

बहुत से अविवेकी या स्वार्थपूर्ण मनुष्य यह कह सकते हैं कि भारतीय मुसलमान जनता अब भी श्री जिन्ना व मुस्लिम लीग के साथ है (जैसा कि कम्यूनिस्ट कहते हैं) पर घटनाओं की कसौटी में कसते हुए हम उनका यह दावा, गलत सिद्ध होता हुआ पाते हैं। सबसे नये समाचार के अनुसार सिन्ध में सरदार बहादुर मीर हाजी हुसेन बक्स खाँ तालपुर ने मुस्लिम-लीग की मेम्बरी से इस कारण त्यागपत्र दे दिया है क्योंकि उनके बलूची साथियों ने उनसे ऐसा करने को जबरदस्त अनुरोध किया था। यही नहीं, वरन् स्वयं मुस्लिम लीग में उसके प्रमुख मेम्बर अपने इस प्रतिक्रियावाद को अनुभव कर रहे हैं, जैसा कि आसाम में श्री सादुल्ला के मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल के केवल स्पीकर के वोट देने से ही स्थापित रह सकने की घटना द्वारा ज्ञात होता है।

यह सब घटनायें तथा मुस्लिम लीग की घटती हुई शक्ति आनेवाली कोई भी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की परिचायक है। भारतीय जनता, हिन्दू और मुस्लिम सभी, अब काफी समझदार हो चुकी है। विश्व में खेली जानेवाली मानवता की होली ने उसको काफी चौकन्ना कर दिया है। वह अब साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता तथा झूठे 'पाकिस्तानी' या 'लोक-युद्ध' के नारे से बहक जानेवाली भोली-भाली जनता नहीं रह गई है। शताब्दियों के कटु अनुभव ने उसकी आँखें खोल दी हैं। उसे पूज्य महात्मा गांधी, पं० नेहरू, श्री आजाद व अब्दुल गफ्फार खाँ व श्री जयप्रकाशनारायण से विशुद्ध नेता मिल चुके हैं, जिनके पास साम्प्रदायिकता की बू भी नहीं फटकती, और जो अन्तर्राष्ट्रीयता व राष्ट्रीयता दोनों के मूर्त्तिमान स्वरूप हैं तथा हिन्दू-मुस्लिम तथा अन्य धर्मों के सामंजस्य हैं। देश-सेवा ही उनका सबसे बड़ा धर्म है। जनता की परम्परागत भावनाओं के विरुद्ध प्रतिक्रिया करनेवाले वर्गों को चाहिए कि वे मुस्लिम लीग की शक्ति के इस आश्चर्यजनक पतन में अपनी भी इति-श्री समझ लें। अगर उन्हें नवीन भारत तथा संसार में अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखना है तो उन्हें भारतीय जनता की अन्तरात्मा की पुकार व संघर्षों का साथ देना होगा और अगर वे अब भी अपने झूठे नेतृत्व, आदर्शों व नारों की भूल-भुलैये में पड़े चकरा रहे हैं, तो उन्हें मालूम हो जाना चाहिए कि सीमाप्रान्त में प्रजा-राज्य का संस्थापन, उनके विनाश के पूर्व बजाया जानेवाला—जनता की भावनाओं का बिगुल बजा है।

महात्मा गांधी और 'हिन्दुस्तानी'

(पेज ४ का शेष)

इसलिये मैंने कहा कि सिर्फ हाँ-में-हाँ न मिलाइये, अपनी सच्ची राय बताइये।

मैं नहीं चाहता कि हिन्दी मिट जाय या उर्दू नष्ट हो जाय। मैं सिर्फ इतना ही चाहता हूँ कि दोनों मेरा काम कर दें। सत्याग्रह का कानून है कि उसमें एक हाथ की ताली हो सकती है, वह बजती नहीं मगर हर्ज नहीं होता। आप एक हाथ लावेंगे तो दूसरा अपने आप हट जावेगा। हक साहब ने नागपुर में जो बात कही थी उसे उस वक्त मैं न समझ सका 'हिन्दी यानी उर्दू' यह मैंने स्वीकार नहीं किया। उस वक्त उनकी बात मान लेता तो अच्छा होता। दोस्त बनने आये थे, मगर विरोध किया और दुश्मन से बने। लेकिन मेरे दुश्मन तो कोई है ही नहीं, फिर हक साहब भी मेरे दुश्मन बन सकते हैं ? इसी लिये हम आज एक मंच पर खड़े हो गये हैं। नागपुर में भारतीय साहित्य-सम्मेलन किया था, लेकिन वहाँ आरंभ हुआ और वहीं खतम, क्योंकि दोस्त बन बैठे, तो दुश्मन से बन गये। तो इससे क्या फायदा होता ? यह हिन्दुस्तानी नहीं बल्कि भारतीय सम्मेलन था, इसलिये उस वक्त के भाषण में मैंने संस्कृत के शब्द भर दिये थे। आज भी अगर उनके सामने बोलना पड़े तो वही करूँगा।

आनन्द जी कहते हैं कि सब को दो लिपियाँ सीखने में बड़ी मुसीबत उठानी पड़ेगी। मैं कहता हूँ कि उसमें कुछ भी मुसीबत नहीं है और अगर हो तो भी उसे पार तो करना ही होगा। क्योंकि अगर उसे पार किया जाय तो दूसरी उससे भी बड़ी मुसीबतों का मुकाबला हम कैसे कर सकेंगे? मैं हिन्दू-मुसलिम एकता के लिये जीता हूँ। मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तानी के प्रचार से हिन्दू-मुस्लिम एकता होगी। मगर यह लालच मैं इस वक्त न दिलाऊँगा।

मैं कहता हूँ कि हिन्दी और उर्दू दोनों का भला हो। उनकी मार्फत मुझे काम लेना है। हिन्दुस्तानी आज मौजूद है, मगर उसे हम काम में नहीं लाते। यह जमाना हिन्दी का भी है, और उर्दू का भी। वे दो नदियाँ हैं। उनमें से हिन्दुस्तानी की तीसरी नदी प्रकट होने वाली है, इसलिये अगर ये दोनो सूख जावेंगी तो मेरा काम नहीं चल सकता।

देहाती लोग मेरी जबान समझ लेंगे। जिसमें संस्कृत या अरबी फारसी के शब्द ठूँस ठूँस कर भरे हुये हों ऐसी भाषा को वे नहीं समझ सकेंगे। अगर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन कहे कि हम तो संस्कृत-निष्ठ हिन्दी ही चलायेंगे तो यह मेरे लिये मर जाना है। देहाती जबान तो एक ही चीज है। वह दो नहीं हो सकती। बाद में हो तो हो। हिन्दी वाले चाहते हैं कि मैं हिन्दी की ही नौबत बजाता रहूँ, उर्दू का नाम न लूँ। मगर मैं तो अहिंसा को मानने वाला सत्याग्रही हूँ। मैं यह कैसे कर सकता हूँ ? मैं अकेला यह काम नहीं कर सकता। इसमें सब की मदद चाहिये। मैं महात्मा हूँ तो इसका कारण यही है कि मैं अपनी मर्य्यादाओं को समझ कर उससे बाहर नहीं जाता। इसीलिये मौलवी हक साहब आये हैं। मेरे पास पंख नहीं है। बड़े-बड़े बुजुर्गों को इसीलिये बुलाया है कि वे मुझे पङ्ख दे दें। मैं तो उड़ूँगा और कहूँगा, 'देखो काम तो अच्छा हो गया न ?' नहीं तो खाक में पड़ा ही हूँ, खाकसार हो जाऊँगा।'

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में मैं भी एक बड़ा आदमी समझा जाता हूँ। मगर उस हैसियत से नहीं, बल्कि आम तौर पर मैं यह कहना चाहता हूँ कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के खिलाफ कोई काम न होगा। मगर दोनों लिपियाँ सीखने की तकलीफ तो गवारा करनी ही होगी। मैं तो आनन्द जी की मार्फत भी काम कराना चाहता हूँ।

मुझसे कहा गया कि मुस्लिम लड़के तो नागरी लिपि नहीं सीखते, मैंने कहा—तुमने नहीं खोया, उन्होंने खोया। एक लिपि सीख ली तो उससे क्या ? इतनी सी बात से इतना बड़ा हित होता है। यही बात मैंने हसरत मोहानी साहब से भी कही थी। लेकिन उस वक्त वह काम न चला, क्योंकि सत्याग्रह शुरू हो गया। मैं यह नहीं कहता कि आप सब लोग जेल जायँ, मगर मैं गया। दूसरे जो जेलों में पड़े हैं वह भी कोई मूर्खता की बात नहीं है। जवाहर, वल्लभ भाई, मौलाना साहब जेल मे बैठे हैं, वह कोई पागल नहीं हैं। अगर वे खुशामद करके बाहर आ जायगे तो मेरी नजर में मर जायेंगे। अगर वे अन्दर ही मर जायेंगे तो मैं एक भी आँसू नहीं बहाऊँगा। कहूँगा, 'अच्छे मरे !' क्योंकि वहाँ बैठे-बैठे भी वे हिन्द की खिदमत कर रहे हैं।

अगर हिन्दी और उर्दू मिल जाय तो गंगा जमुना से भी बड़ी सरस्वती-हुगली की तरह बन जायगी। हुगली तो गन्दी है। मैं उसका पानी नहीं पीता। मगर यह हुग बन गयी तो वह बड़ी खूबसूरत होगी।

अब रही पैसे की बात। आप में से जो लोग पैसा देना चाहेंगे वे मेरे पास या श्री मन्नारायण जी के पास दे दें। हरेक को अपनी हैसियत के मुताबिक पैसा देना चाहिये। जो लोग पैसा देंगे काम के लि दें, नाम के लिए कोई पैसा न दें।

* * *

सेन्फ्रान्सिस्को सम्मेलन और भारत

(पेज ५ का शेष)

आवाज कहाँ तक सुनी जायगी ? यह सम्मेलन के ऊपर अवलम्बित है।

चौथे प्रकार के राष्ट्रों में केवल जापान ही नहीं है बल्कि जर्मनी भी है। जर्मनी पंगु हो जायेगा, किन्तु पिछले महायुद्ध के बाद भी तो वह पंगु बना दिया गया था! किन्तु क्या हुआ ? एक दूसरे महायुद्ध का प्रारंभ ! जापान एशिया-संघ बनाना चाहता है। ब्रिटेन की साम्राज्यवादी नीति आज भी खतम नहीं हुई। क्या धुरीराष्ट्रों की साम्राज्यवादी नीति से ही दमन किया जायगा ?

यदि मित्रराष्ट्र संसार से साम्राज्यवादी नीति का अन्त न करेंगे तो सम्मेलन सफल नहीं हो सकता, ऐसा हमारा विश्वास है। और भारत के सम्बन्ध में यदि कोई निर्णय हुआ तो वह भारत की वास्तविक इच्छा के अनुकूल न होगा। ब्रिटिश सरकार और उसके चुने हुए भारतीय प्रतिनिधि-मंडल सम्मेलन में चाहे भारत विरोधी नीति अख्तियार करें, किन्तु भारत का सच्चा प्रतिनिधित्व भारतीय नेता तथा जनता के बीच लोकप्रियता प्राप्त राष्ट्रसेवी भारतीय ही हो सकते हैं। इसका अनुभव अमरीका, रूस, फ्रांस ऐसे स्वतन्त्र राष्ट्र ही, नहीं अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधि भी करेंगे, यह निस्संदेह है।

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफासफाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी * ब्रांकाइटिस
* जुकाम * निमोनिया
* यक्ष्मा * पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि विक्रताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें:—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० :: कलकत्ता

ली तो गन्दी है
। मगर यह हुला
सूरत होगी।
त। आप में से
वे मेरे पास
स दे दें। ह
ताविक पैसा दे
दंगे काम के लि
सा न दें।

*

न और भार
रिष)
जायगी ? यह
चत है।
में केवल जाप
भी है। जर्म
पिछले महायुद्ध
दिया गया था
दूसरे महायुद्ध
य बनाना चाह
वादी नीति आ
या धुरीराष्ट्रों
ही दमन कि
से साम्राज्यवादी
गे तो सम्मेल
हमारा विश्वा
न्ध में यदि को
भारत की वास्
होगा। ब्रिटि
ने हुए भारती
में चाहे भार
करें, कि
निधित्व भारती
ीच लोकप्रिय
ही हो सकते
, रूस, फ्रांस
राष्ट्रों के प्र
देह है।

कोल
L

कत्ता

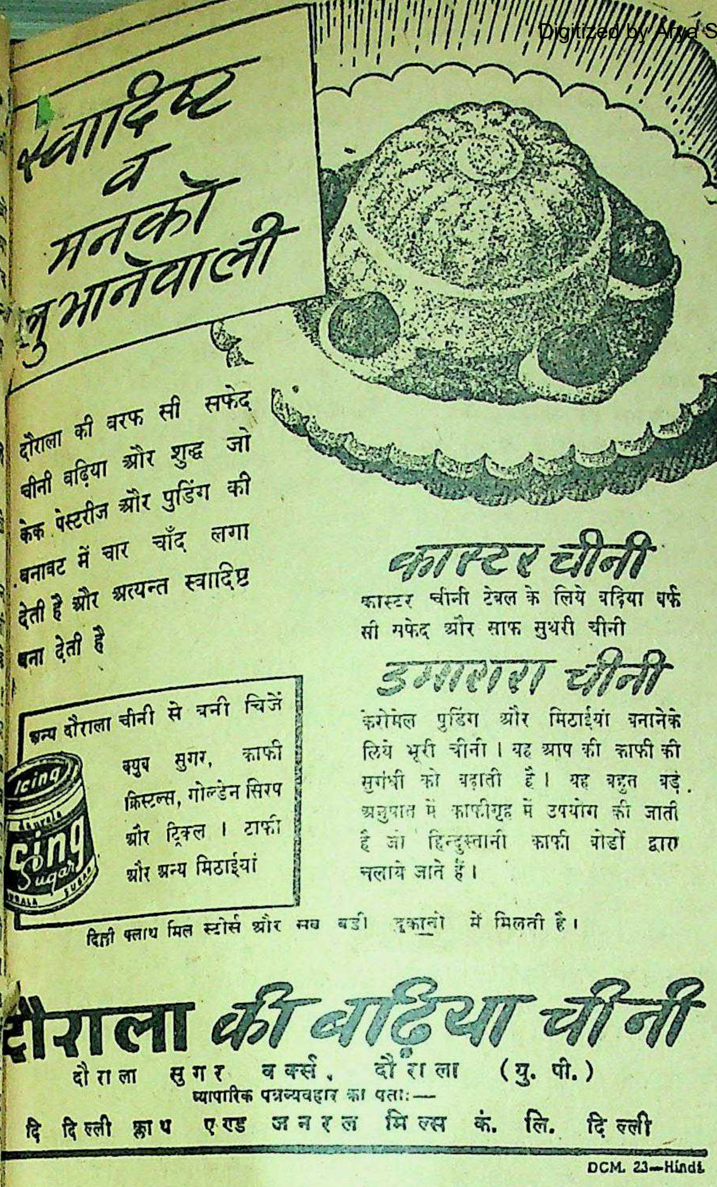

स्वादिष्ट व मनको लुभानेवाली

दौराला की बरफ सी सफेद चीनी बढ़िया और शुद्ध जो केक पेस्टरीज और पुडिंग की बनावट में चार चाँद लगा देती है और अत्यन्त स्वादिष्ट बना देती है

कास्टर चीनी

कास्टर चीनी टेबल के लिये बढ़िया बर्फ सी सफेद और साफ सुथरी चीनी

डमरारा चीनी

केरोमेल पुडिंग और मिठाईयां बनानेके लिये भूरी चीनी। यह आप की काफी की सुगंधी को बढ़ाती है। यह बहुत बड़े अनुपात में काफीगृह में उपयोग की जाती है जो हिन्दुस्तानी काफी बोर्डों द्वारा चलाये जाते हैं।

अन्य दौराला चीनी से बनी चिजें

क्युब सुगर, काफी क्रिस्टल्स, गोल्डेन सिरप और ट्रिकल। टाफी और अन्य मिठाईयां

दिल्ली क्लाथ मिल स्टोर्स और सब बड़ी दुकानों में मिलती है।

दौराला की बढ़िया चीनी

दौराला सुगर वर्क्स, दौराला (यु. पी.)
व्यापारिक पत्रव्यवहार का पता:—
दि दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं. लि. दिल्ली

DCM. 23—Hindi

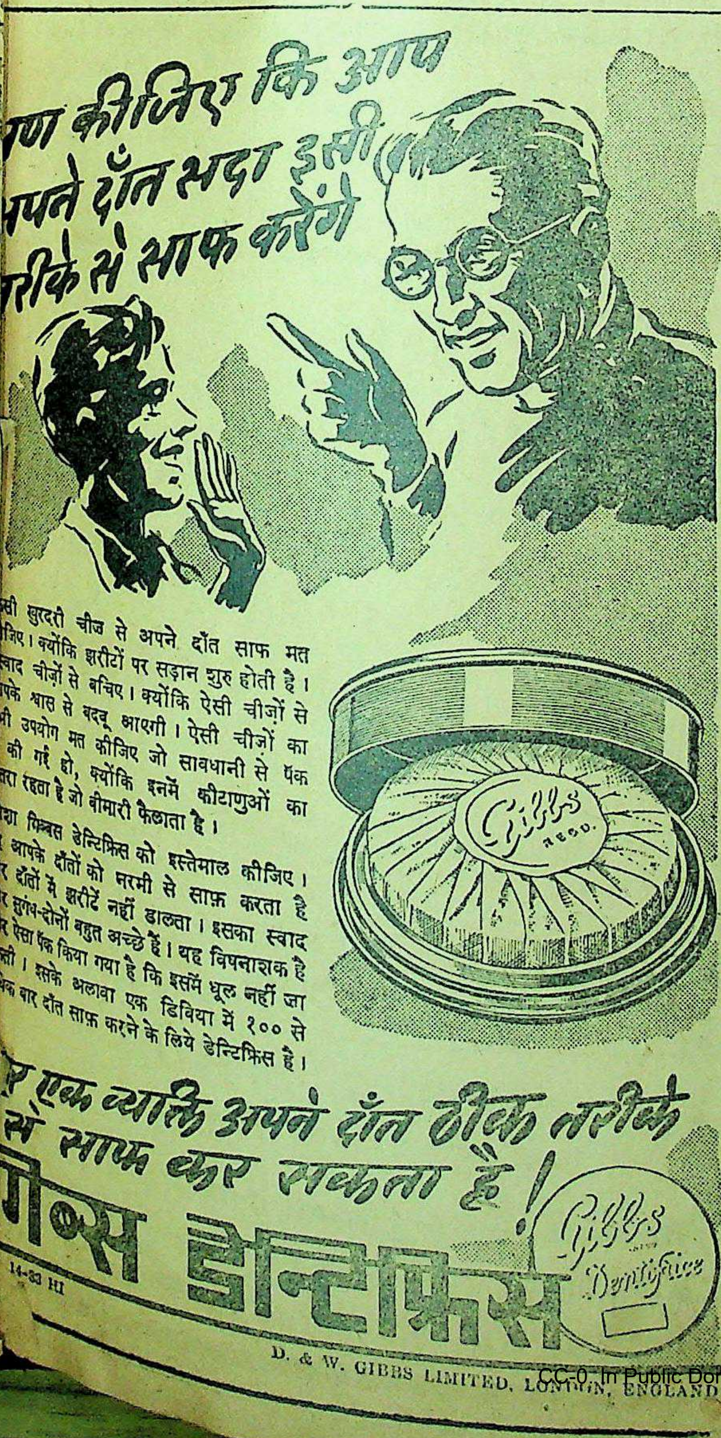

ण कीजिए कि आप अपने दाँत सदा इसी तरीके से साफ करेंगे

सी खुरदरी चीज से अपने दाँत साफ मत जिए। क्योंकि झरीटों पर सड़ान शुरु होती है। स्वाद चीज़ों से बचिए। क्योंकि ऐसी चीज़ों से आपके श्वास से बदबू आएगी। ऐसी चीज़ों का भी उपयोग मत कीजिए जो सावधानी से पैक की गई हो, क्योंकि इनमें कीटाणुओं का खतरा रहता है जो बीमारी फैलाता है।

सदा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह आपके दाँतों को नरमी से साफ़ करता है और दाँतों में झरीटें नहीं डालता। इसका स्वाद और सुगंध-दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विषनाशक है और ऐसा पैक किया गया है कि इसमें धूल नहीं जा सकती। इसके अलावा एक डिबिया में १०० से अधिक बार दाँत साफ़ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

14-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

वैद्यक उपाधियां

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।
भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

"सरस्वती सिरीज़"

हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

❋ मेडिकल लाइसेन्सिएट्स ❋

मानवता के लिए

इस संसारव्यापी महायुद्ध का अन्त अब निकट आ रहा है। जापान को पराजित करने के लिए जो चेष्टायें हो रही हैं उनके फलस्वरूप स्वाभाविक रूप से हमारे बहुत से सैनिक घायल होंगे। इन व्यक्तियों को डाक्टरों की सहायता और सहानुभूति आवश्यक होगी। सैकड़ों फ़ौजी डाक्टर घायल सैनिकों की सहायता करके चिकित्सा सम्बन्धी इतना अच्छा अनुभव प्राप्त कर लेंगे जो शान्तिकाल में मानवता की सेवा के लिए उनके बहुत काम आयेगा। आपको इंडियन आर्मी मेडिकल कोर में अभी भरती हो जाना चाहिए। योग्यता: उम्मीदवारों को फ़ौजी ड्यूटी के योग्य होना चाहिए और साधारणतः उम्र ४५ वर्ष से नीचे होनी चाहिए। उनके पास एल० सी० पी० एस० या एल० एस० एम० एफ० या एल० एम० एफ० या एल० एम० पी० या इसके बराबर योग्यता होनी चाहिए।

सर्विस की शर्तें

"ए" क्लास सर्विस—इसमें जनरल सर्विस होती है और इसके द्वारा डाक्टरों को समुद्र पार अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है। तरक़्क़ी के बहुत अच्छे मौक़े रहते हैं। सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर ४००-रुपए माहवार से तनख़्वाह शुरू होती है और लेफ्टिनेण्ट कर्नल के ओहदे पर १३५० रुपए माहवार तक तरक़्क़ी होती है।

"बी" क्लास सर्विस—इस क्लास में सिर्फ़ हिन्दुस्तान की सीमाओं के अन्दर नौकरी करनी पड़ती है। इस क्लास में ज़्यादा से ज़्यादा कैप्टेन के ओहदे तक तरक़्क़ी होती है। सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर २५० रुपये माहवार से तनख़्वाह शुरू होती है और कैप्टेन के ओहदे पर ५५० रुपये माहवार तक जाती है।

एलाउन्स (दोनों क्लासों के लिए)
स्पेशेलिस्ट की तनख़्वाह—१०० रुपये माहवार तक अतिरिक्त उन अफ़सरों के लिए जिन्हें स्पेशेलिस्ट (विशेषज्ञ) की हैसियत से नियुक्त किया गया हो। चार्ज या कमाण्ड की तनख़्वाह—३० रुपये से २४० रुपये माहवार तक अतिरिक्त उन अफ़सरों के लिए जिन्हें किसी विशेष कार्य पर नियुक्त किया गया हो। वर्दी का एलाउन्स—प्रथम नियुक्ति पर ७३३ रुपये। तनख़्वाह की पेशगी-प्रथम नियुक्ति पर ३०० रु० तक। ग्रेच्यूटी—नौकरी के हर पूरे साल के लिए एक महीने की औसत तनख़्वाह फ़ौज से बर्ख़ास्त होने के समय। अपाहिजी, परिवार, और विधवा के लिए पेन्शनें। नियमानुसार बच्चों के लिए शिक्षा संबंधी भत्ते। सेपरेशन एलाउन्स। सफ़र के भत्ते और छुट्टी की रियायतें हिन्दुस्तानी फ़ौज के दूसरे अफ़सरों की भांति।

प्राविन्शियल मेडिकल डिपार्टमेण्ट के प्रधान (सर्जन जनरल या इन्सपेक्टर जनरल आफ सिविल हास्पिटल्स) या आफिसर्स कमांडिङ्ग, इंडियन मिलिटरी हास्पिटल्स, या डाइरेक्टर आफ मेडिकल सर्विसेज़, जी० एच० क्यू०, नई दिल्ली या डाइरेक्टर जनरल, इंडियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली से पूरा विवरण प्राप्त हो सकता है।

Indian
Army
Medical
Corps

AAA 18

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त
बढ़ाने के लिए सेवन
करो
PILLS
डॉ. गौतमराय केशव
टानिक
फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जोहरी,
एल० एम० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

फोन : कल :—१४६४ तथा १४६५ तार :—"ARYOPLANTS"

आर्य्यन पेपर मिल्स, लिमिटेड

रजिस्टर्ड आफ़िस : १२ चौरंघी, कलकत्ता

कारखाना तथा बगीचा : माहूदा (बी० यन० आर०)

—कुछ विशेषतायें—

* (१) कम्पनी स्वयम् अपने खेतों में सवाई घास बो रही है। (२) कारखाना कोयले के क्षेत्र तथा नदी के निकट है। (३) कारखाने के एकदम बगल से रेलवे साइडिंग है। इससे उत्पादन के खर्च में बहुत कमी होगी।

* डाइरेक्टर्स, मैनेजिंग एजेन्ट, उनके दोस्तों तथा रिश्तेदारों ने दस लाख रुपये का शेयर खरीदा है।

* मैनेजिंग एजेन्ट जब तक कम से कम ५ प्रतिशत साधारण हिस्से पर तथा ६ प्रतिशत असाधारण हिस्से पर इनकमटैक्स रहित डेविडेन्ड न दे देंगे तब तक कोई भी पारिश्रमिक न लेंगे।

* असाधारण शेयर लेनेवाले व्यक्ति जिस दिन शेयर की पूरी रकम दे देंगे उसी दिन से इनकमटैक्स रहित ६ प्रतिशत निर्धारित डेविडेन्ड के अधिकारी हो जायँगे।

* सवाई घास, कार्ड बोर्ड, स्ट्रा बोर्ड तथा अन्य पल्प की बिक्री से अच्छे लाभ की आशा है।

* शेयर लेनेवाले ग्राहकों को साधारण किश्तों में शेयर का रुपया देने की सुविधा दी जाती है।

* इँगलैण्ड से लाकर आधुनिक रंग ढंग की मशीन लगाने के लिए आवश्यक रुपया पेशगी दे दिया गया है।

बचे हुए साधारण तथा असाधारण हिस्से बेचने के लिए एजेन्टों की आवश्यकता है

पूंजी के इस प्रश्न पर केन्द्रीय सरकार की स्वीकृति इस शर्त पर प्राप्त कर ली जा चुकी है कि उतनी पूंजी, जो उस सरकार की दृष्टि में किसी भावी अनिश्चित तिथि तक उचित रूप से बढ़ाई नहीं जा सकती वह ऐसी निर्धारित जमानतों में लगाई जाय और बराबर लगी रहे जो तब तक नहीं मुक्त की जायगी जब तक कि केन्द्रीय सरकार (यदि किसी देशी सरकार के हितों का प्रश्न हो तो सम्राट् के प्रतिनिधि की राय से) इस बात से सन्तुष्ट न हो जाय कि ऐसे उद्देश्यों के लिए तदनुरूप अदायगी का समय आ गया है जो कि नियन्त्रण या रोक के उस समय के प्रचलित नियम के अनुरूप हों, जब कि इस प्रकार की मुक्ति की प्रार्थना की गई हो। यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि इस स्वीकृति को देने में भारत-सरकार किसी भी आर्थिक योजना की सुदृढ़ता या किसी बयान की सच्चाई या उनके सम्बन्ध में प्रगट किये गये विचारों की जिम्मेदारी नहीं लेती।

संसार का सबसे बड़ा संघटन...
1538

महान अखिल भारतीय संघटन अर्थात् हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में सम्मिलित होकर आप शत्रु पर तेज़ी से भीषण प्रहार करेंगे। आपको ऐसे विमानों में बैठकर उड़ने और लड़ने का अवसर मिलेगा जो आकाश में फर्राटे भर कर दुश्मन के दिल को कँपा देते हैं। आप अपने सीने पर दो "पंख" (हवाई बेड़े का निशान) लगायेंगे और ये पंख प्राप्त करने के लिए आपको अपने अन्दर कुछ खूबियां भी पैदा करनी होंगी। यदि आप इस समय उठ खड़े हों, तो आप वह शिक्षा एवम् योग्यता प्राप्त कर सकते हैं, जो अपने व्यक्तित्व को शक्तिशाली बनाने के लिए आवश्यक होती है। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक हिन्दुस्तान के चुने हुए नौजवान होते हैं। इनके दल में सम्मिलित होकर अपने व्यक्तित्व को शक्तिशाली एवम् अपने चरित्र को उच्च बनाइए।

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुतसे जवानोंमें ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।

* सरकार ने इस बात की गारंटी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग खाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।

* ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरी से आये हुए जवान सरकारी खर्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।

* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा संबंधी विशेष रियायतें मिलेंगी जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके संबंध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर अपने निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट्स) रिक्रूटिंग आफ़ीसर के पास भेज दीजिए जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में पाइलाट (विमान चालक) की नौकरी के संबंध में पूरा विवरण और प्रार्थना पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम ______________

पता ______________

____

____

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े

को ऐसे जवानों की ज़रूरत है जिनकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सुनने की ताकत ठीक हो और उम्र १७½ और २८ साल के बीच हो ; विमान चलाने के परिश्रम को सहन कर सकते हों और अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी अंग्रेज़ी बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए।

आइ० ए० यफ०, जी० डी० (पाइलट्स)
रिक्रूटिंग आफिसर, ५ वे रोड, लखनऊ।

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

वार, १ अप्रैल, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 1st April, 1945

प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण शिवसमुद्रम् ([illegible]) का सुप्रसिद्ध झरना यही है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
[illegible] आना

बर्मा में आज लड़ाई कैसी चलरही है?
वाइसराय वेवेल इंगलैंड क्यों गये हैं?

आरोंदा
छाप
१८६९
नीलगिरि तेल
— वापरो —
साण्डलेकर बंधु, बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥-) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

पेट की सफ़ाई
स्वास्थ्य का प्रारम्भिक
नियम है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

ATKINSONS
* * *
सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

AHO-1-215 HI
J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

यह मुझे तर रखती है!
यह मुझे ताजा रखता है
यह प्रफुल्लित करता है!
VINOLIA
WHITE ROSE SOAP

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्य्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फुर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

विनोलिया
व्हाइट रोज साबुन

VWR. 16-221 HI
VINOLIA CO. LIMITED. LONDON, ENGLAND

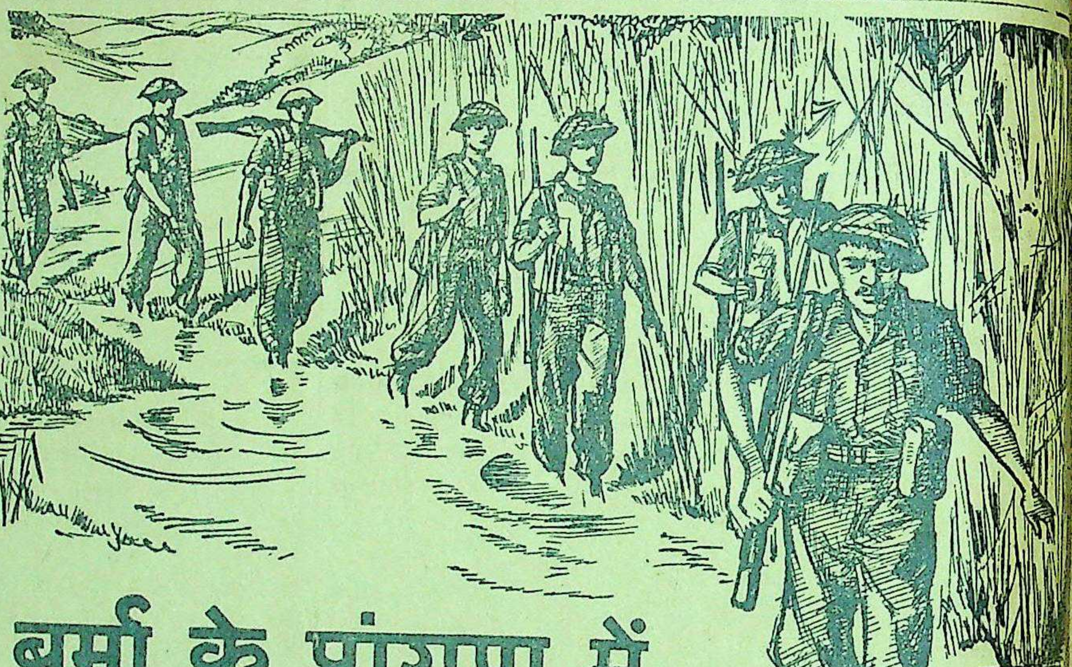

बर्मा के प्रांगण में

सन् १९४४ की गर्मियों में हमारे बहादुर जवान सीमा पर खड़े हुए शत्रु को वीरतापूर्वक रोके रहे। किन्तु जब से अब तक ये जापानियों को धकेलते हुए कहीं आगे बढ़ चुके हैं। हिन्दुस्तानी फ़ौज, संयुक्त राष्ट्रों के अपने साथियों के कन्धे से कन्धा मिला कर, लगातार धावे मारती हुई, जापानी क़िलेबन्दियों को रौंदती चली गई और मध्य तथा पश्चिमी बर्मा में शत्रु को दायें-बायें से घेर कर उसे परास्त कर दिया। हमारे वीर सैनिकों ने ८० हज़ार वर्ग मील से अधिक भूमि अर्थात् देश का लगभग तिहाई भाग शत्रु के अधिकार से मुक्त कर लिया। उसके एक लाख से अधिक सैनिक हताहत हुए, और उसे इरावदी के मैदान में भाग कर शरण लेनी पड़ी।

इस विजय के लिए हमारे सैनिकों को कितना भगीरथ प्रयत्न करना पड़ा, इसका वर्णन समुचित रूप से शब्दों में नहीं हो सकता। हिन्दुस्तान के वीर योद्धा घने पहाड़ी जंगलों और ख़राब मौसम की विपदा का सामना करते हुए, जिनकी कल्पना भी कठिन है, अविचल गति से आगे बढ़ते रहे और अन्त में उन्होंने उस शत्रु को पीछे खदेड़ दिया, जिसका हमारी सीमा के निकट रहना हमारी शान्ति एवम् व्यवस्था के लिए स्थायी संकट का कारण होता। फिर भी जब तक शत्रु पर पूर्ण तथा अन्तिम विजय प्राप्त न हो जाय, हिन्दुस्तान को जापानी आक्रमणकारियों के ख़तरे से पूर्णतया सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

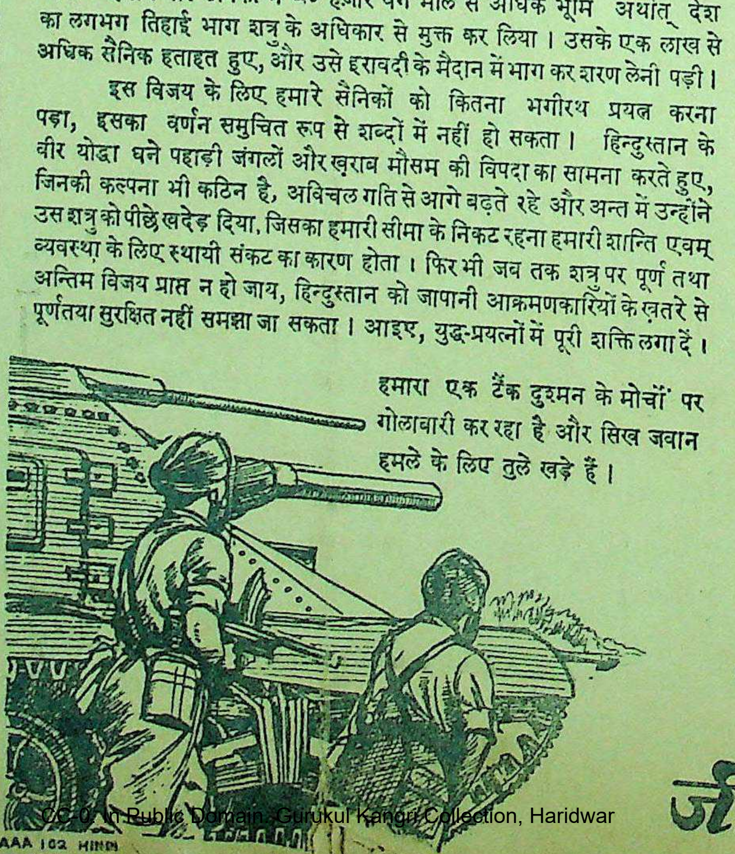

हमारा एक टैंक दुश्मन के मोर्चों पर गोलाबारी कर रहा है और सिख जवान हमले के लिए तुले खड़े हैं।

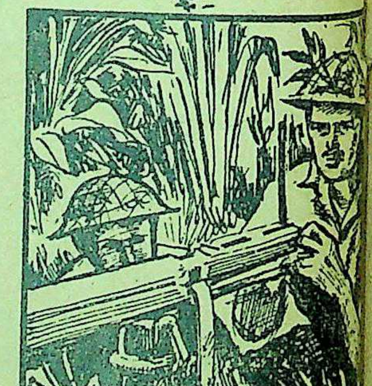

मशीन-गन चलाने वाले जवान दुश्मन की घात में बैठे हैं।

बढ़े चलो

जीत निकट है

AAA 102 HINN

—भारत-सरकार के

देशदूत

वर्ष ७ संख्या ३१]　सचित्र हिन्दी साप्ताहिक　[रविवार, १ अप्रैल, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

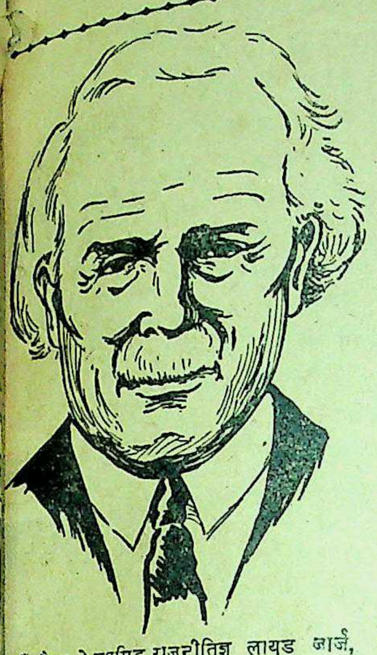

इँगलैण्ड के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ लायड जार्ज, जिनके समय (सन् १९१४) में संसार-व्यापी महायुद्ध हुआ था, इसी सप्ताह में स्वर्गवासी हो गये

लार्ड वैवेल ने भारत से यहाँ पहुँचने पर अपना कार्य शुरू कर देने में कोई विलम्ब नहीं लगाया है। वह आज सवेरे इण्डिया आफिस में पहुँचे और अपने कार्य से निबटना शुरू कर दिया। जानकार हलकों का कहना है कि बहुत मुमकिन है कि अगर वायसराय और ब्रिटिश मंत्रिमंडल सहमत हो गये तो लार्ड वैवेल लन्दन से एक नई नीति की घोषणा करेंगे और वे केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाओं का, जो अब १२ साल पुरानी हो चुकी है, नया आम चुनाव करायेंगे।

* * *

जनरल सिम्पसन की ९वीं अमेरिकन सेना ने राइन के पूर्वी किनारे पर मोर्चा स्थापित कर लिया है। जर्मन न्यूज एजेंसी ने आज कहा कि शक्तिशाली ब्रिटिश सैन्यदलों के जिस बड़े आक्रमण की संभावना थी, वह कल रात को लोअर राइन पर, वेसेल के दोनों ओर, आरम्भ हो गया। तोपों से बड़े जोरों की गोलाबारी आरम्भ की गई और राइन नदी को पार करने का प्रयत्न किया गया। जर्मन तोपों ने भी आक्रमणकारियों पर प्रबल अग्नि-वर्षा की। एक भारी लड़ाई अब शुरू होने ही वाली है।

* * *

शिलांग के गवर्नमेन्ट हाउस में सर मोहम्मद सादुल्ला के नेतृत्व में आसाम के नये मन्त्रिमण्डल के सदस्यों ने जो कि नेशनलिस्ट सम्मिलित दल के सहयोग से बनाया गया है, अपने पद की शपथ ली।

* * *

न्यूयार्क के पत्रों ने श्री घनश्यामदास बिड़ला के उस वक्तव्य को मुख स्थान दिया गया है जो उन्होंने अमेरिका के एसोशियेटेड प्रेस के प्रतिनिधि के मुलाकात करने पर दिया था। उसमें उन्होंने यह घोषित किया कि केवल मात्र तीन बड़े राष्ट्र विश्व-शांति की गारंटी नहीं कर सकते। भारत और चीन ऐसी महत्वपूर्ण ईंटें हैं, जिनकी उपेक्षा विश्व-शांति से सम्बन्धित किसी भी योजना में नहीं की जा सकती।

सिंध में स्थायी मन्त्रिमंडल की स्थापना के उद्देश्य से यह प्रयत्न हो रहा है कि कांग्रेस एसेम्बली पार्टी अन्य पार्टियों के साथ सम्मिलित होकर पद ग्रहण कर ले। कहा जाता है कि सिंध के गाँवों में अराजकता फैल रही है और जान-माल का खतरा बढ़ रहा है। इस कारण प्रांतीय कांग्रेस के अध्यक्ष डा० चोइथराम गिडवानी तथा हिन्दू-सभा के प्रमुख नेता श्री श्यामदास गिडवानी ने महात्मा गांधी के पास एक तार भेजा है कि वह सिंध एसेम्बली के कांग्रेसी सदस्यों को मंत्रि-मंडल में शामिल होने की अनुमति दें।

* * *

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने कांग्रेसी मन्त्रिमंडलों की स्थापना के प्रश्न पर अपना यह मत प्रकट किया है कि वह कांग्रेसी मन्त्रिमंडल की स्थापना के सम्बन्ध में चिन्तित होना घृणित समझते हैं। उन्होंने कहा कि यदि सरकार की ओर से कोई स्पष्ट प्रस्ताव हो तो उस पर विचार किया जायगा।

* * *

पश्चिमी मोर्चे में फील्ड मार्शल केसेलरिंग को जर्मन सेनाओं का कमाडर-इन-चीफ नियुक्त किया गया है।

फ्रांस के उपनिवेश-विभाग के मन्त्री पाल जियाकोवी ने परामर्श-परिषद् में फ्रेंच उपनिवेशों पर बहस के समय फ्रेंच उपनिवेशों को अन्तर्राष्ट्रीय शासन में रखने का विरोध किया है।

* * *

बंगाल के प्रधान मंत्री सर नजीमुद्दीन ने बंगाल एसेम्बली में सूचित किया कि उन्होंने दमदम के जेल के बन्दियों को हाल में यह आशा दिलाई कि बंगाल-सरकार बहुत जल्दी आतंकवादी कैदियों को भी रिहा करने की नीति बरतेगी।

* * *

लाहौर म्यूजियम में जब हिन्दू ला कमेटी बयान ले रही थी, तो १०.००० महिलाओं ने उसके सामने प्रदर्शनात्मक कार्रवाइयाँ कीं। गड़बड़ी मचने के फलस्वरूप कमेटी ने कार्य स्थगित कर दिया।

* * *

कराची के समीप एक भयानक रेलवे दुर्घटना हो गई। एक मालगाड़ी मुसाफिर-गाडी से लड़ गई जिसके फलस्वरूप २५ मरे और २५ घायल बताये जाते हैं।

* * *

सीमाप्रांत के गांधी खाँ अब्दुल गफ्फार खाँ शीघ्र ही बम्बई जाकर गांधी जी से मिलेंगे।

गीत

लेखक, प्रोफेसर राजनाथ पांडेय, एम० ए०

कौन हूँ मैं क्या बताऊँ ?

प्रिय ! मुझे पहिचान लो तुम, कौन सा वह गीत गाऊँ ?
मैं युगों के विरह में किस तरह अब तक गल रहा हूँ।
देखना अपनी दशा हूँ मैं सुलगता जल रहा हूँ !
इस जगत से दूर अतिशय दूर, आहट पा किसी की,
हारता गिरता सँभल उठता अभी तक चल रहा हूँ।
यह हमारा भाग्य ही है
राह जो अपनी न पाऊँ !

दूर रह कर भी बहुत नजदीक जग के आ गया हूँ,
आ गया हूँ विश्व में तो विश्व में फिर छा गया हूँ !
दो दिनों के मेल में अनमेल हो कर भी मिला हूँ,
कुछ नहीं हूँ किन्तु कुछ कुछ तो किसी को भा गया हूँ !
बहुत अनुचित है स्वयं ही
मैं विभव अपना गिनाऊँ,

कह रही थीं बिजलियाँ जब मैं चला था शून्य पथ पर,
ए बटोही टोह ले ले मार्ग है यह बहुत बीहड !
जो गया लौटा नहीं इस पंथ की ऐसी प्रथा है,
अतः सावन का जलद बन छा न नभ में यों उमड़कर !
किन्तु घन बन ही बन गया मैं रोम रोम हुए नयन अब
रहे सागर तो हुआ है अंत वारिद का कहाँ कब ?
बरसता ही रहूँ, शीत बनूँ,
वही जो बरस जाऊँ !

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य आचार्य कृपलानी अहमदनगर के किले से अपने प्रांत में भेज दिये गये।

लन्दन पहुँचने के बाद से लार्ड वैवेल लगातार कार्य-संलग्न बने हुए हैं। उन्होंने भारत मन्त्री मि० एमरी से वार्ता की और समूचे सप्ताहान्त में विश्राम नहीं किया। प्रामाणिक रूप से जानकारी रखनेवाले हल्कों का कथन है कि वह काम करने से 'कभी रुकते ही नहीं।'

* * *

राइन के उस पार हमला करने के ३६ घंटे बाद मित्रों ने जर्मन अधिकृत राइन के पूर्वी तट के एक चौथाई भाग पर कब्जा कर लिया है। राइन के उस पार मित्रों के ४ मोर्चे हैं, जिनकी कुल लंबाई १०० मील होती है। जर्मन अधिकृत राइन नदी की लम्बाई ४३० मील है।

* * *

कौंसिल आफ स्टेट में श्री पी० एन० सप्रू का एक प्रस्ताव बिना मत विभाजन के पास हो गया जिसमें सरकार से सिफारिश की गई है कि वह दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध लगावे और वहाँ से भारतीय हाई कमिश्नर को वापस बुला ले।

* * *

युनाइटेड प्रेस को ज्ञात हुआ है कि महात्मा गाधी ने सिन्ध के प्रधान मंत्री सर गुलामहुसेन हिदायतुल्ला को सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में एक पत्र लिखा है। कहा जाता है उस पत्र में उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश के चौदहवें समुल्लास पर से रोक हटा लेने का अनुरोध किया है।

* * *

श्री एमरी ने इंडिया आफिस में पत्र-प्रतिनिधियों की कान्फरेन्स में कहा कि लार्ड वेवेल के साथ वह भारत के वैधानिक तथा राजनीतिक भविष्य पर वार्ता करेंगे। मि० एमरी ने यह भी कहा कि क्रिप्स प्रस्ताव अभी तक कायम है।

* * *

अमेरिका की इंडिया लीग की एक बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया है, जिसमें वह सुझाव पेश किया गया है कि सानफ्रान्सिस्को-सम्मेलन में भारत से ये तीन प्रतिनिधि चुने जायँ—पंडित जवाहरलाल नेहरू, श्री सी० राजगोपालाचारी और मि० मुहम्मद अली जिन्ना।

सम्पादक का पृष्ठ

प्रान्तीय सम्मेलन

संयुक्त प्रांतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का पाँचवाँ अधिवेशन ३१ मार्च तथा १ अप्रेल को प्रयाग में हो रहा है। प्रयाग विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष तथा हिन्दी-साहित्य के मर्मज्ञ डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी सभापति का आसन ग्रहण करेंगे। हिन्दी के प्राण श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन अधिवेशन का उद्घाटन करेंगे। यह अधिवेशन पहले लखीमपुर (खीरी) में इन्हीं तिथियों में होनेवाला था किन्तु कारणवश वहाँ नहीं हो रहा है, और प्रयाग में करने का निश्चय हुआ। केवल ८ दिनों के बीच में अधिवेशन का समस्त प्रबन्ध करना पड़ा है। फिर भी हिन्दी प्रेमियों तथा साहित्यिकों के सहयोग और सहायता से सम्मेलन सफल होगा, इसमें सन्देह नहीं है।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रश्न आज के युग की एक ज्वलंत समस्या है। राजनैतिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा हिन्दी की समस्या सार्वदेशिक महत्व रखती है। २० वर्ष की अनवरत चेष्टा और श्रम से हिन्दी का प्रचार और प्रसार व्यापक रूप ग्रहण कर चुका है। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का नारा है 'हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि देवनागरी।' यह नारा सारे देश में हिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों में ही नहीं अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों की भी जनता में गूँजने लगा है। संयुक्तप्रांत, मध्यप्रांत, बिहार, मध्यभारत तथा राजपूताने की करोड़ों जनता हिन्दी भाषा भाषी है। बम्बई, मद्रास, पंजाब, बंगाल और आसाम ऐसे अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों में भी राष्ट्रभाषा की दृष्टि से लाखों शिक्षितों तथा साधारण पढ़े-लिखों की भाषा हिन्दी तथा लिपि देवनागरी बन गई है। सैकड़ों हिन्दी प्रचारक इस समय राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार के कार्य में लगे हुए हैं। हिन्दी भाषा की सरलता तथा लिपि की सुबोधता का व्यापक प्रभाव सारे देश में फैला हुआ है। इस सम्बन्ध में समस्त आर्य प्रांतीय भाषाओं ने इसका महत्व स्वीकार किया है। श्री के० एम० मुंशी तथा डाक्टर सुनीति कुमार चटर्जी जैसे अन्य भाषा-भाषी विद्वानों ने भी इसका सार्वदेशिक महत्व स्वीकार किया है। पर यह छिपा नहीं है कि हिन्दी की प्रतिरोधी शक्तियाँ भी वेगपूर्वक संगठित हो रही हैं और इस संगठित आन्दोलन के प्रति सजग और रक्षात्मक रहना हमारा कर्तव्य है। जहाँ तक विदेशी और साम्राज्यवादी ब्रिटिश शासन की नीति का सम्बन्ध है, उसने जनता के बल, शक्ति और संगठन की प्रतीक हिन्दी का और उसकी उभरती हुई भिन्न भिन्न शक्तियों का विरोध ही किया है। किसी भी सरकारी मुहकमे में आज तक हिन्दी को उचित स्थान नहीं मिला है, यद्यपि देश ने सदा एक स्वर से इसकी माँग की है। जिस प्रकार सरकार को जनता की राष्ट्रीय चेतना और जाग्रति तनिक भी सह्य नहीं, उसी प्रकार राष्ट्रीयता की प्रतीक हिन्दी का उत्कर्ष तथा हिन्दी भाषी जनता की जागरूकता भी उसे बरदाश्त नहीं। सरकार द्वारा 'हिन्दुस्तानी' के नाम पर जो भाषा प्रचारित की जा रही है वह उर्दू का ही एक कठिन रूप है और देश की सांस्कृतिक जड़ों से उसका कोई और कहीं मेल नहीं खाता। भारत सरकार की भाषा सम्बन्धी नीति का एक दूसरा पहलू यह भी है कि रेडियो द्वारा उर्दू का पक्षपात करते हुए भी युद्ध सम्बन्धी प्रयत्नों और प्रचारों में उसके सूचना विभाग द्वारा शुद्ध हिन्दी का ही व्यवहार किया जाता है। इसका कारण यह है कि जहाँ सरकार के राजनैतिक स्वार्थ साधन का प्रश्न होता है वहाँ वह जानती है कि बिना शुद्ध हिन्दी के जनता तक उसकी पहुँच नहीं होगी। इस दृष्टि से भारत सरकार के सूचना-विभाग के सदस्य सर सुलतान अहमद की भाषा सम्बन्धी नीति क्या है, इसको भली भाँति समझा जा सकता है!

इसलिए आज हिन्दी जनता और कार्यकर्ताओं के सामने कई महत्वपूर्ण प्रश्न है। सबसे पहले हमें रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति का एक स्वर से और खुले शब्दों में विरोध करना है, क्योंकि भारत सरकार हिन्दी के प्रति अपने पुराने दृष्टिकोण और भेदभाव की नीति पर विचार करने के लिए तैयार नहीं है। दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न राष्ट्रभाषा के निर्माण और उसके सार्वदेशीय प्रचार का है। वर्धा में पिछले दिनों हिन्दुस्तानी प्रचार सभा का जो अधिवेशन हुआ है उसमें 'हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा-पद के लिए सर्वोपरि महत्व दिया गया है। यह देखकर हिन्दी प्रांतीय भाषा भाषी जनता को कम क्षोभ नहीं हुआ कि डाक्टर अब्दुलहक, सुलेमान नदवी, श्री दत्तात्रेय कैफी और डाक्टर ताराचन्द ऐसे उर्दू के विद्वानों को अपना मत प्रकाशित करने का अवसर देते हुए भी हिन्दी के उसी कोटि के विद्वान् और समर्थक श्री सम्पूर्णानन्द, डाक्टर श्यामसुन्दरदास, पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी और श्री बाबूराव विष्णुपराडकर आदि को अपने मत प्रकाशन का अवसर नहीं दिया गया। तीसरा प्रश्न जिसकी ओर बहुत कम लोगों का ध्यान गया है वह है सिनेमा द्वारा उर्दू का प्रचार। सिनेमा क्षेत्रों में जिस भाषा का प्रयोग हो रहा है वह प्रकारान्तर से उर्दू ही है जिसके द्वारा सरकारी-नीति को बल तो मिलता है लेकिन वह भाषा न तो जनता की हिन्दी ही है और न हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा की हिन्दुस्तानी। चौथा प्रश्न हिन्दी के श्रमजीवी साहित्यिकों का है। वह जिस हीन आर्थिक दशा में आज हैं और वर्षों के संघर्ष के बावजूद भी उनकी दशा जिस तरह गिरती जा रही है, उसके सुधार की योजना भी हमें बनानी है और ट्रेड यूनियन के आधार पर हमें एक ऐसा देशव्यापी संगठन करना है जो हिन्दी के श्रमजीवी लेखकों और कवियों के आर्थिक हितों का सामूहिक रूप से संरक्षण कर सके। इसके सिवा अदालतों में हिन्दी प्रचार, दिवंगत साहित्यिकों के स्मारकों की स्थापना, प्राचीन साहित्य की गवेषणा और शोध-सम्बन्धी ऐसे काम भी हैं जिनकी ओर हमें सचेत होकर काम करना है।

हमें आशा है हिन्दी का प्रत्येक प्रेमी और हितैषी सम्मेलन में उपस्थित होकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में सहायक बनेगा। यह कार्य एक व्यक्ति का नहीं प्रत्येक हिन्दी प्रेमी मात्र का है। प्रत्येक के विचारों के आदान प्रदान, परामर्श तथा सहयोग से ही सार्वजनिक कार्य सफल हो हो सकता है।

हिन्दुस्तानी प्रचार और गांधी जी

लेखक, श्री सियारामशरण गुप्त

कविवर सियारामशरण गुप्त वर्धा में होनेवाली हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे। आप अपने अनुभव में कहते हैं कि राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी को मान लेने से हिन्दी की हानि नहीं होगी। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

हिन्दुस्तानी प्रचार-सम्मेलन को लेकर कुछ ऐसी धारणा फैल रही है कि गांधी जी का रुख हिन्दी-विरोधी हो गया है। इस सम्मेलन में उपस्थित होने और उनसे बात करने का सौभाग्य मुझे मिला था। इस आधार पर मैं कह सकता हूँ कि ऐसी बात नहीं है।

गांधी जी युगपुरुष हैं। वे अकेले हिन्दुओं के नहीं हैं। उनके मन में हिन्दू-मुसलमान और सबके लिए एक-सा प्रेम है। देश के दुर्भाग्य से इधर स्थिति ऐसी हो गई है कि मुसलमान बन्धुओं को हिन्दी में साम्प्रदायिकता की गन्ध आती है। इसी से कांग्रेस ने पहले से ही हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया है। अतएव गांधी जी का यह हिन्दुस्तानी प्रचार का कार्य कोई नई बात नहीं है। कांग्रेस के मंच पर पूज्य मालवीय जी महाराज तक हिन्दी नहीं, हिन्दुस्तानी में ही बोलते सुने गये हैं। हिन्दी की अन्यान्य विभूतियों को भी राजनैतिक सभाओं में वैसी ही भाषा बोलते हुए देखा जा चुका है। यह सब होते हुए भी इधर जैसी अपूर्व वृद्धि हिन्दी ने की है, उसे देखकर हम लोगों को, उनको, जिन्होंने हिन्दी के द्वारा देश की सेवा करने का व्रत लिया है, इस सम्बन्ध में भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

यह सोचना कि गांधी जी बलपूर्वक हमारे ऊपर उर्दू लाद रहे हैं, उनका ही नहीं, स्वयं अपनी बुद्धि का भी अपमान होगा। सम्मेलन में मेरे इस प्रश्न का कि हिन्दुस्तानी प्रचार से हिन्दी और उर्दू का विरोध तो नहीं होता, उन्होंने उत्तर दिया था कि ऐसी बात नहीं है। इससे स्पष्ट है कि वे हिन्दी और उर्दू को हानि नहीं पहुँचाना चाहते। यह वे अवश्य चाहते हैं कि देश में एक राष्ट्रभाषा के विकास की अनिवार्य और अविलम्ब आवश्यकता है और इसमें हमें उचित रूप में उनका हाथ बँटाना चाहिए।

डर यह है कि उनके इस कार्य से हिन्दी में अवांच्छित रूप में अरबी और फारसी के शब्दों का प्रवेश होगा। वहाँ के भाषण में गांधी जी ने 'मौन दिवस' के बदले में 'खामोशी का दिन' कहा था। यह मुझे भी खटका था। इसलिए नहीं कि यह शब्द हम हिन्दी में रहने नहीं देना चाहते। वह तो है ही। आपत्ति इसलिए थी कि 'मौन दिवस' जैसे प्रचलित शब्द के बदले में उसका प्रयोग किया गया था। 'मौन दिवस' में पवित्र संकल्प और पुण्यव्रत का जो भाव हमारे हृदय को छूकर अनजान में ही हमें कुछ ऊँचे उठा ले जाता है, उसकी अनुभूति 'खामोशी के दिन' में नहीं हुई। परन्तु बात यह थी कि गां उस सभा में ऐसे शब्द नहीं बोलना थे, जिन्हें उस सभा में उपस्थित कोई न समझता हो, या यह भी कह सक कि समझना न चाहता हो। अभी गांधी जी जैसी हिन्दी लिखते या बोलते हैं, उसे यदि हमने, भाषा-सम्बन्धी त्रुटियों के रहते हुए भी, हिन्दी माना तो हमें इस भाषा को भी हिन्दी मानने आपत्ति न करनी चाहिए, भले ही वे हिन्दुस्तानी कहें। हिन्दी के ब्रज, अव आदि रूपों को हमने सदैव हिन्दी ही मा है और मेरा यह विश्वास रहा है, सूची में आधुनिक बँगला, मराठी औ गुजराती आदि भी किसी अंश तक ली सकती हैं। तब गांधी जी की इस हिन्दुस्तानी को भी हम हिन्दी कह सकते हैं। हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के मंत्री श्रीमन्नारायण जी ने स्पष्ट किया है कि रेडियो हिन्दुस्तानी को हिन्दुस्तानी नहीं कहा सकता। इससे अरबी और फारसी के श के अवांच्छित उपद्रव की आशंका निवारण किया जा चुका है। राष्ट्रभाषा सम्बन्ध में गांधी जी की मान्यता यह है जब वे दक्षिण के प्रान्तों में जायँगे, उनकी भाषा संस्कृतमयी होगी और जब सीमाप्रान्त आदि में होंगे, तब जितनी जानते हैं, उनकी भाषा फारसीमयी होगी यह ऐसी बात है, जिसका विरोध नहीं कि जा सकता।

नागरी और उर्दू-लिपि दोनों ए साथ सीखने में निश्चय असुविधा है परन्तु आगे चलकर जब जनता में इस कठिनाई का अनुभव प्रत्यक्ष होगा, त लोकमत के अनुसार निश्चय में आवश्य सुधार अपने आप हो सकता है। गांधी आज जो कह रहे हैं, वह उनकी आज आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में विशेष चिन्त नहीं करनी चाहिए। हिन्दी-हितैषियों लिए आवश्यकता इस बात की है केवल वाद-विवाद में समय न बिता ठोस रचनात्मक कार्य भी किया जाय हम अभी तक उचित रीति से यह तो नहीं कर सके हैं कि हिन्दी प्रान्तों ग्राम-जनता के हित का ध्यान रख वकीलों की सहायता लेकर कचहरियों सरल हिन्दी का प्रवेश करा दें। हमें होना चाहिए, तो अपनी इसी अकर्म प्रवृत्ति का।

जब मैंने गांधी जी से कहा—"बा मैं हिन्दी का प्रतिनिधि बनकर सेवा उपस्थित हूँ," तब उन्होंने कहा—" क्या मैं हिन्दी का प्रतिनिधि नहीं हूँ! उनकी बात से मुझे आश्वासन मिला मेरा पूरा विश्वास है कि हिन्दी का भवि पूर्णतया उज्ज्वल है। उसे अपना उचि स्थान प्राप्त होगा ही। हाँ, यदि हम स्व अकर्मण्य नहीं हो गये, तो!

चिरगाँव (झाँसी)
अधिक चैत्र शुक्ल १०

लार्ड वेवेल थैले में क्या ले गये हैं?

क्या ब्रिटिश टोरी भारतीय समस्या को सुलझाने के लिए तैयार हैं?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल लंदन गये हैं। वह इस समय लंदन क्यों गये हैं, यह देशी तथा विदेशी राजनैतिक क्षेत्र की चर्चा का एक प्रमुख विषय बन गया है। लेखक ने अनुमान से यह बतलाया है कि लार्ड वेवेल भारतीय जिच के सुलझाने का कोई हल निकालने वहाँ गये हैं। लेख सामयिक तथा सुंदर है।

भारतमंत्री मिस्टर अमरी जिन्होंने लार्ड वेवेल को परामर्श के लिए बुलाया है।

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल जो आजकल लंदन गये हैं।

भारतवर्ष का वर्त्तमान राजनैतिक वातावरण आज क्षुब्ध हो उठा है। सरकार का यह कड़ा रुख उसकी अपरिवर्तनकारी नीति का द्योतक है। परन्तु जान पड़ता है कि परिस्थितियों ने उसे भी झुकने के लिए मजबूर कर दिया है। वाइसराय लार्ड वेवेल का लन्दन-गमन इस सम्य की एक महत्त्वपूर्ण घटना है। लार्ड वेवेल के भारत आते ही भारत का राजनैतिक वायुमण्डल बदलने लगा। देश के प्राण महात्मा गांधी को जेल से छोड़कर लार्ड वेवेल ने जो दूरदर्शिता दिखाई यह उसी का परिणाम है कि आज केन्द्रीय असेम्बली के कांग्रेस दल के नेता श्री भूलाभाई देसाई एक नया मार्ग दिखला सके हैं। यद्यपि गांधी-जिन्ना वार्ता असफल हो गई थी, परन्तु देसाई-लियाकत अली वार्ता ने संभवतः कोई नया रूप धारण कर लिया है। दोनों व्यक्ति नेताओं के सम्पर्क में रहकर वार्ता चला रहे थे। इसके अतिरिक्त वेवेल-देसाई मिलन भी हुआ था। देसाई मिलन के बाद लार्ड वेवेल श्री जिन्ना से मिलना चाहते थे परन्तु उनकी बीमारी ने ऐसा नहीं होने दिया। लाहौर के एक संवाददाता का कहना है कि "लार्ड वेवेल के सामने कांग्रेस-लीग सन्धि का रूप मौजूद है। उनको सम्राट् की सरकार ने भारत के मामलों के सम्बन्ध में वार्ता के लिए बुलाया है। इस समाचार के अनुसार केन्द्र में लीग और कांग्रेस आधी-आधी सीट के आधार पर किसी समझौते पर पहुँच चुकी हैं। प्रान्तों में संयुक्त मंत्रिमंडल बन जायँगे।" क्या वास्तव में इस प्रकार का प्रस्ताव लार्ड वेवेल अपने हैण्डबेग में इँगलैंड के लिए ले गये हैं?

आजकल लोगों के सामने यह प्रश्न है कि क्या लार्ड वेवेल का स्वदेश गमन राजनैतिक अड़ंगों को दूर करने, राजनैतिक बन्दियों की रिहाई में सहायक हो सकेगा? गत सप्ताह हाउस आफ कामन्स के बहस में मिस्टर सोरेन्सन ने भारत मंत्री से भारत के सम्बन्ध में जो प्रश्न किये हैं, उनमें राजनैतिक बंदियों और सेन्फ्रान्सिस्को-सम्मेलन की चर्चा भी आई है। श्री सोरेन्सन के प्रश्न पर श्री एमरी ने उत्तर दिया है कि "भारत के सारे मामलों के उत्तर लार्ड वेवेल के लन्दन आने पर भी दिये जा सकेंगे।"

इस उत्तर का अर्थ है कि 'भारत की विस्तृत रिपोर्ट लार्ड वेवेल-द्वारा पेश होगी।'

विफल पूजा

लेखक, श्री चंद्रप्रकाश वर्मा एम० ए०

अखिल नंदन वन चरण पर चढ़ चुका, माँगता है देवता किस फूल को?
आह, मेरा क्या? अरे! तेरा हुआ सब,
देवता! तू माँग मत नंदन नया अब;
कंज, किसलय, पात, द्रुम, फल, फूल तेरे, क्या करेगा किन्तु लेकर धूल को?
तट अविगलित पर व्यथित जल राशि सारी,
यह समर्पण सृष्टि का आश्चर्य भारी;
हर लहर गिरती चरण पर कूल के, किस लहर की चाह फिर भी कूल को?
ओ जलन! ओ ज्वाल! क्या प्रतिकूल है यह?
भावना की क्या भयंकर भूल है यह?
यह पतंगा दीप क्या तेरा नहीं है? खोजता तू किस शलभ अनुकूल को?

परन्तु जब हम श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की सम्मति वाइसराय की स्वदेश-यात्रा के सम्बन्ध में देखते हैं तो निराशा ही होती है। कुछ राजनीतिज्ञों का विचार है कि जर्मनी लगभग हार चुका है। अब जापान का नम्बर है। ऐसी स्थिति में भारत को मुख्य अड्डा बनाकर मित्रराष्ट्र जापानी अधिकृत देशों पर अधिकार कर सकते हैं। इसी मामले को हल करने के लिए वाइसराय लंदन गये हैं। क्योंकि गर्मियों में जर्मनी पर जोरों के आक्रमण करके शीघ्र ही एक अधिकृत देश बना लिया जायगा और चूँकि जून के बाद पूर्वी देशों में वर्षा आरम्भ हो जाती है इससे अप्रैल और मई में ऐसे कार्यक्रम बना कर पूर्वी देशों पर आक्रमण किया जाय कि वर्मा के जंगली प्रान्त ही नहीं वरन् मैदान के भाग भी अधिकार में आ जायँ जिससे वर्षा की बाढ़ से सुरक्षित रह कर सैनिक आगे की ओर बढ़ते जायँ। साथ ही भारतवर्ष के लिए भारतीय-विधान में कुछ ऐसे संशोधन कर दिये जायँगे, जिससे प्रान्तों और केन्द्र में मंत्रिमंडल बनाकर भारतीयों को जापान के विरुद्ध एक बड़े संग्राम में लगाया जा सके।

इसके सिवा एक तीसरी बात राजनीतिज्ञों के दिमाग में पैदा हो रही है। वह यह कि सेनफ्रान्सिस्को-सम्मेलन के अवसर पर केन्द्रीय सरकार को हार पर हार खानी पड़ी है। इस पर भी सर रामस्वामी मुदालियर और सर फीरोज खाँ नून उस सम्मेलन को सुशोभित करेंगे। जिन दलों से सरकार केन्द्रीय हारी है उनका कोई भी प्रतिनिधि नहीं जा रहा है। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश सरकार सम्मेलन में एकत्रित राष्ट्रों के सम्मुख क्या उत्तर देगी? एक बात और कि लन्दन की सभाओं और कामनवेल्थ-सम्मेलन में सर जफरुल्ला खाँ के भाषणों ने ब्रिटिश अधिकारियों के दिमाग में परिवर्तन कर दिया होगा। उन्होंने यह अनुभव किया होगा कि उनके समर्थक भी आज विरुद्ध आवाज उठा रहे हैं। तीसरे यह कि श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अमेरिका-स्थित लार्ड हेलीफेक्स और सर गिरजाशंकर वाजपेयी के भारत-विरोधी प्रचार-कार्य को अपने वक्तव्यों द्वारा मिट्टी में मिला दिया है। विजयलक्ष्मी की अमेरिका-यात्रा अँगरेजों को खटक रही है। क्या इन सबसे सम्राट् की सरकार के हाथ पाँव ढीले हो रहे हैं? वह सेनफ्रान्सिस्को-सम्मेलन में क्या मुँह दिखावेंगे? यद्यपि ब्रिटिश और अमेरिकन राजनीतिज्ञ एक ही श्रेणी के हैं पर अमेरिका के ही नहीं वरन् संसार के एक प्रजातन्त्र प्रेमी मि० वेण्डेल विल्की तथा प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट के भारत के विशेष प्रतिनिधि श्री विलियम फिलिप के वक्ताओं ने अमेरिकन राजनीतिज्ञों के साथ ही इँग्लैंड के राजनीतिज्ञों में खलबली पैदा कर दी है। ऐसी स्थिति में चर्चिल सरकार रूस जैसे साम्यवादी और अमेरिका, चीन जैसे भारत-प्रेमी राष्ट्रों के सामने क्या उत्तर देगी? संभव है इन परेशानियों में ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के लिए लार्ड वेवेल को बुलाना पड़ा हो! जापानी युद्ध समस्या ही यदि मुख्य उद्देश्य मान लिया जाय तो भी भारत का हृदय टटोला जायगा। बिना उसकी अन्तरात्मा के युद्ध नहीं लड़ा जा सकता यह ठीक है। ऐसी स्थिति में भारतीय जिच का कोई न कोई हल अवश्य ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के सामने लन्दन में आनेवाला है।

श्री एमरी समय समय पर भारतीय नेताओं के जमानत की गारंटी माँगते रहे हैं। उनका उत्तर यही रहा है कि जब तक यह आश्वासन नहीं मिल जाता कि नेताओं के दिल साफ हो गये हैं तब तक राजबन्दियों को छोड़ा नहीं जा सकता। सीमाप्रान्त के कांग्रेसी मंत्रिमंडल ने स्पष्ट हृदय का एक उदाहरण सामने रक्खा है। क्या श्री एमरी ने कांग्रेस-हृदय की परीक्षा इस प्रकार नहीं ली है? वाइसराय लार्ड वेवेल ने इन परिस्थितियों को सम्राट् की सरकार के सामने रखा होगा। इस प्रकार भारत की निम्न परिस्थितियों ने लार्ड वेवेल को स्वदेश-यात्रा करने का अवसर दिया है—

(१) कांग्रेस-लीग एकता।

(२) एसेम्बली में सरकार के विरुद्ध सर्वदलों का मोर्चा।

(३) श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित की अमेरिका यात्रा।

(४) कामन वेल्थ कान्फ्रेन्स।

(५) कांग्रेस का सहयोग की ओर आकर्षण।

(६) सेनफ्रांसिस्को-सम्मेलन।

इसके सिवा देश का वैज्ञानिक मण्डल, व्यापारी वर्ग तथा अन्य यात्री जो विदेशों की यात्रा कर चुके हैं ब्रिटिश सरकार के रुख पर अपना असंतोष प्रकट कर चुके हैं। इनसे आखिर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ किस तरह पिण्ड छुड़ा सकेंगे? आज भारत का क्षुब्ध वायुमण्डल दुनिया को पुकार-पुकार कर ब्रिटिश सरकार की अनुदारता का ढिंढोरा पीट रहा है। परन्तु हम लार्ड वेवेल जैसे सैनिक वाइसराय में पूर्व के कठोर अधिकारियों की अपेक्षा कुछ दूरदर्शिता भी देखते हैं। जिस तरह वह इँग्लैंड से आते समय अपनी हैण्डबेग में कुछ लाये थे। उसी तरह स्वदेश जाते समय अपनी हैण्डबेग में कुछ ले गये हैं? उनसे देश को बहुत बड़ी आशा है।

टेन के युद्ध समिति के प्रधान तथा सेनानायक। बीच में प्रधानमन्त्री मिस्टर चर्चिल दिखाई दे रहे हैं

सोवियट रूस की हवाई सेना

आधुनिक युद्ध के लिए शक्तिशाली संगठन

लेखक, श्री भूपेन्द्र सान्याल

> सोवियट रूस की हवाई सेना का संगठन बड़ा शक्तिशाली है। जर्मनों का रूसी अधिकृत भूमि से प्रतिरोध करने के लिये इसका संगठन और भी दृढ़ता के साथ किया गया। इसका परिणाम हुआ जर्मनी का पराजय और रूस की विजय। इस लेख में लेखक ने रूसी हवाई शक्ति का संक्षिप्त वर्णन किया है।

सन् १९३८ में रूस से लौटने पर लिंडबर्ग ने कहा था कि वहाँ की हवाई सेना एक अज्ञात शक्ति है। अमरीकन और अँगरेजी सेनाओं को रूसी हवाई जहाजों की अन्दरूनी बातों का कोई पता नहीं! यह भी सच है कि अमरीकन और अँगरेजी हवाई जहाजों के विषय में कुछ बातें रूसियों से गुप्त रक्खी गई हैं। लेकिन मास्को-स्थित अखबारनवीसों के जरिये रूसी हवाई सेना के विषय में हमको कुछ जानकारी हो गई है।

युद्ध के आरम्भ से ही रूसियों ने यात्री वायुयानों को अधिक समरोपयोगी बना लिया है। करघनुमा जहाजी हिस्से के बीचोबीच, यात्रियों के सर के ऊपर मशीनगन लगा दिया गया। यह तेज उड़नेवाले और हलके थे, लेकिन इनके इंजन कम ताकतवर थे।

पीछा करनेवाले जहाज विशेष रूप से रूस के लिए उपयुक्त थे, जहाँ मोर्चे पर सख्त जमीनवाले स्थायी उड़न मैदान नहीं थे बल्कि बड़े बड़े चरागाहों से ही ये उड़ान लेते थे। रूसी वायुयानों के अधोगमन यन्त्र अन्य हवाई जहाजों की तरह नहीं हैं। जाड़ों में घंटे दो घंटों के अन्दर ही इनके पहियों की जगह स्की लगा दिया जा सकता है।

सोवियट रूस के हवाई जहाज के उड़ाके सैनिक युद्ध मोर्चे पर जाने की तैयारी में खड़े हैं।

सारे युद्ध में रूस हवाई सेना का सेनानायक एक पतले मुँह वाला नवयुवक था जिसका नाम है अलेक्जेंडर नोवीकम। ७०० रूसी सैनिकों में नोवीकम को भी 'सोवियट यूनियन के वीर' का स्वर्णपदक मिला है। इस युद्ध के प्रारम्भ में उसकी उम्र थी ३६ साल। उस समय वह मेजर जनरल था। पाँच महीने बाद वह लेफ्टिनेंट जनरल बना दिया गया। स्टालिनग्राड के युद्ध का उसने स्वयं संचालन किया और १८ जनवरी १९४३ को वह कर्नल जनरल बना दिया गया। एक महीने पश्चात् वह लाल सेना के हवाई मार्शल के पद पर नियुक्त किया गया।

लड़ाई के पहले दो महीनों में ही सबसे भीषण हवाई युद्ध हुए। इन दिनों जर्मन और रूसी दोनों ही के हजारों जहाज विनष्ट हुए। इसके बाद हवाई युद्ध कुछ ढीला पड़ा, लेकिन जर्मन सेना आगे बढ चली और रूसी मोर्चे के पीछे की कतारों पर जर्मन जहाज बमबारी करते रहे। रूसी हवाई जहाजों को अपना अड्डा पीछे ले जाना पड़ा।

जाड़ों में नकशा बदल गया। मास्को के रास्ते बढ़ती हुई जर्मन सेना को हवाई मदद नहीं मिल सकी। इधर रूसियों ने प्रत्याक्रमण आरम्भ किया। रूसी हवाई जहाजों ने भी जाड़े का साजो सामान चढ़ा लिया। उनमें स्की लग गये; इंजन को गरम रखने का विशेष प्रबन्ध किया गया; तोप और बम में जिससे तेल जमने न पाये इसका बन्दोबस्त किया गया; और मोटर में डालने के पहले तेल और पानी गरम करने का खास औजार लगाया गया। उड़ाकों ने उपयुक्त गरम कपड़े ओढ़ लिये और कुत्तों के बड़े बालों से ढँके हुए भारी बूट चढ़ा लिये। विशेष प्रकार के हलों से उड़न-मैदान का बर्फ हटाया जाने लगा। इधर जर्मन उड़ाकू डेढ़-दो घंटे इंजन गरम करने के बाद ही उड़ने की तैयारी कर सकते थे। नतीजा यह हुआ कि रूसियों को आकाश पर पूरी प्रभुता मिल गई।

थोड़े दिनों में जर्मनों ने फिर भीषण आक्रमण किया। लेकिन रूसी जनरल शेरबाकम के अनुसार जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ उड़ाकू अब निहत हो चुके थे। निहतों में नाम बताया जाता है मेजर हेलमुथ वै जिसने बकिंगघम पैलेस तथा वेस्ट पर बमबारी की थी; जनरल वेलवेर्ग का, जो फ्रैंको की मदद स्पेन भेजा गया था; और कर्नेल मोल्डेर्स का, जो जर्मन हवाई सेना का निरीक्षक था। गर्मियों में स्टालिनग्रा हमले के पहले जर्मन हवाई मुर्मान्स्क और आर्चेंजेल पर जबर बारी की जिसके फलस्वरूप रूस रेजी और अमरीकन मदद आ पहुँच सकी। लुफ्टमाफे ने नये का इस्तेमाल आरम्भ किया। उसके अब ऐसे छतरीदार बम गिराते थे गज पीछे फटते थे, जिससे रूसी जहा से हमला नहीं कर सकते थे।

इसके बाद जाड़ों में भी रूसी जहाजों की श्रेष्ठता उतनी नहीं रही। इन दिनों रूसी उड़ाकों को जो फर्मान गया उससे जर्मन रूसी वायुयानों की तुलनात्मक झलक है। फर्मान इस है:—

"नीचे उतरो जर्मन हवाई जहाज पंखे मोड़ लेते हैं उनका पेट दिखाई लगता है। उसी उन पर नि लगाओ। अपनी जहाँ तक हो, कायम रक्खो। देर तक रहो क्योंकि रूसी जहाजों में तेल रहता है। इर्द-गिर्द घूमते रहो, रूसी जहाजों को सुविधा मिलती है। या २०० गज की दूरी पर से आ करो। सबसे अच्छे निशाने हैं का हिस्सों के ऊपरी और निचले भाग हलका कवच होता है, इंजन, तेल प का औजार, रेडियेटर और तेल टंकी।"

क-लं-क

लेखक, राजेश्वरप्रसादसिंह

इस पुस्तक में लेखक की ११ कहानियों का संकलन किया गया है। मानव क्षणिक आवेश में आ भयानक भूलें कर बैठता है, इसका मार्मिक चित्रण इसमें किया गया है। ऊपर से साफ और सुसंस्कृत दिखाई देने वाले लोग अन्तरंग में कितने कलुषित होते हैं, यह भी आपको इससे ज्ञात हो सकेगा। मूल्य १) एक रुपया।

"पारसी-परिचय"

लेखक, पं० कृपानारायण पाठक, एम० ए०, एल० टी०

इस पुस्तक के सम्बन्ध में माननीय बा० सम्पूर्णानन्द भूतपूर्व शिक्षा मंत्री यू० पी० लिखते हैं कि...'यह पुस्तक उपादेय है। इसकी सहायता से थोड़े में अपने देश में रहनेवाले पारसी भाइयों का परिचय मिल जाता है और आर्य संस्कृति, धर्म्म और इतिहास के कुछ ऐसे अंगों पर प्रकाश पड़ जाता है जिनको हम आज भूल गये हैं।" मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

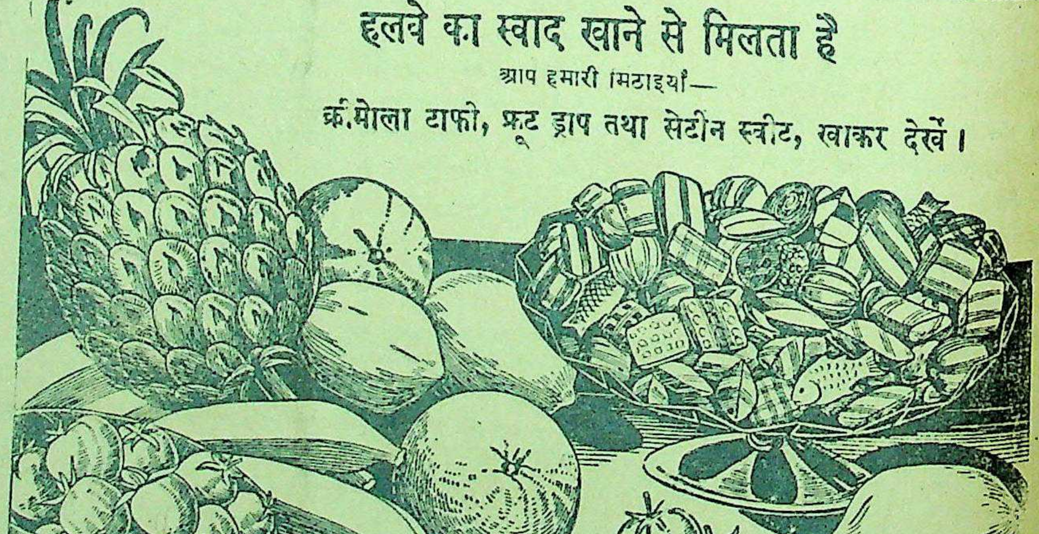

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

रविवार

बम

मित्रराष्ट्र

मित्र
आक्रमण
का द्योतक
प्रकाश
की जानक

पिछले स
जापानी सेन
माण्डले की
मध्य बर्मा
बन बचाक
है। मित्रसेन
उत्तर और
मित्रसेना
के महान्
पहुँच ग
सेना के बच
रंगून रेलवे
कब्जा कर
मित्र-सेना
की आक्रम
मित्रों की
के उत्तर में
करके आगे
महत्त्वपूर्ण
५० मील
माण्डले-रं
वास्ते रास्त
प्रदेश की
२५ मील
वह उस स
अराकान
तटवर्ती रो
रेलवे पर
साथ जल
करेगा।

आका
सर्वथा साफ
विमानों को
नहीं दिया
मार्ग और
बम-वर्षा की
सेना को
पहुँचाते हैं।

अराका
होने में विप
ने इम्फाल
में पैठने की
भारतीय से
और इम्फाल
विमानों-द्वारा
गया। यह
अराकान में
गई थी।
स्टोर, सब
में पहुँचाई
तरह और
आसाम पहुँ
में आँधी
मित्र-विमानों
और जापानी
उनको परेश
विमान बा
करते थे।

बर्मा की आजकल की लड़ाई
मित्रराष्ट्र जापानियों को कहाँ खदेड़ ले गये हैं ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

मित्रराष्ट्रीय फौजों ने बर्मा पर पुनः अधिकार करने के लिये इस वर्ष जिस दृढ़ता से आक्रमण किया और क्रमशः जिस प्रकार की विजय प्राप्ति की, वह उनके सैनिक संगठन का द्योतक है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने बर्मा में होने वाले युद्ध की प्रगति पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जिससे जापानियों के पीछे हटने और मित्रराष्ट्रों की अग्रगामी प्रगति की जानकारी प्राप्त होती है।

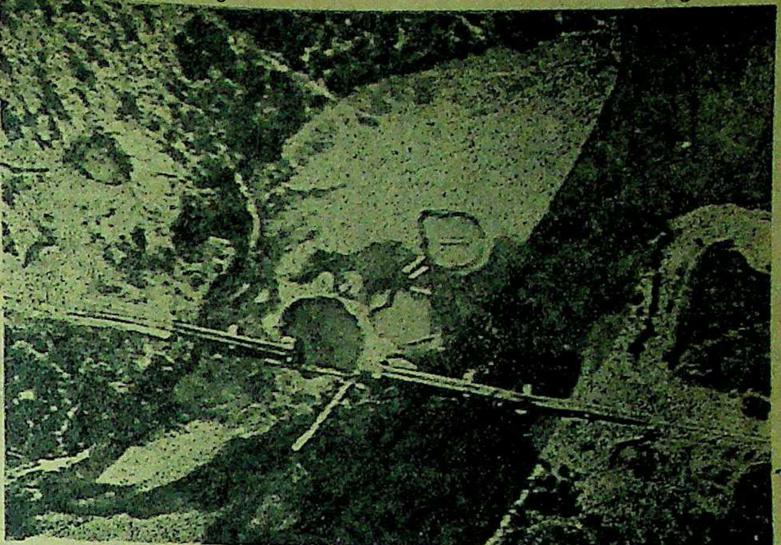

इरावदी का रेल का पुल। यह पुल मांडले और रंगून के बीच में है। मित्रराष्ट्रों के बमवर्षकों ने बमों की मार से इसे बीच से तोड़ दिया

पिछले साल इन दिनों इम्फाल के लिए जापानी सेना लड़ रही थी। आज मित्र-सेना माण्डले की गलियों में लड़ रही है, और मध्य बर्मा के जापानियों के लिए अपनी जान बचाकर भागना भी मुश्किल हो रहा है। मित्रसेना ने इरावदी को माण्डले के उत्तर और दक्षिण में पार कर लिया है। मित्रसेना का एक दस्ता येनान मीयांग के महान् तेल-क्षेत्र प्रदेश के सीकदीयू पहुँच गया है। मध्यबर्मा की जापानी सेना के बचकर निकलने का मार्ग माण्डले-रंगून रेलवे लाइन है। मित्र सेना ने उस पर कब्जा कर लिया है। मिकताला का एरोड्रम मित्र-सेना के हाथ में आ जाने से मित्र-सेना की आक्रमण की शक्ति बहुत बढ़ गई है। मित्रों की यह सामरिक कार्रवाई रंगून के उत्तर में जापानी सेना को बगल से काट करके आगे बढ़ जाने की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। माण्डले के पश्चिम में ५० मील पर इरावदी को पार करने से माण्डले-रंगून रेलवे की ओर पैठने के वास्ते रास्ता साफ हो गया है। येनागयांग प्रदेश की मित्रसेना को दक्षिण की ओर २५ मील केवल आगे बढ़ना है और वह उस सड़क पर पहुँच जायेगी जो कि अराकान योमा के पार टिनपास की राह तटवर्ती रोड से मिलती है। माण्डले-रंगून रेलवे पर स्थल आक्रमण होने के साथ-साथ जल से भी मित्र बेड़ा हमला करेगा।

आकाश जापानी विमानों से प्रायः सर्वथा साफ है। यथासम्भव जापानी विमानों को जमीन से ऊपर उठने ही नहीं दिया जाता। जापान के सप्लाई-मार्ग और पीछे हटने के मार्गों पर बराबर बम-वर्षा की जाती है। दूसरी ओर मित्र-सेना को सप्लाई और कुमुक विमान पहुँचाते हैं।

अराकान के मार्ग से भारत में दाखिल होने में विफलमनोरथ होने पर जापानियों ने इम्फाल और दीमापुर की राह भारत में पैठने की कोशिश की, पर १७ वीं भारतीय सेना टिड्डिम से पीछे हट आई और इम्फाल के मैदानों में पहुँच गई। विमानों-द्वारा सारा डिवीजन वहाँ पहुँच गया। यह डिवीजन एक सप्ताह पहले ही अराकान में कुमुक के तौर पर भेजी गई थी। खच्चर, ट्रान्सपोर्ट, तोपें, और स्टोर, सब चीजें विमानों-द्वारा रणक्षेत्र में पहुँचाई गईं। अप्रैल १९४४ में इसी तरह और एक डिवीजन अराकान से आसाम पहुँचाया गया। बरसात के मौसम में आँधी और मूसलधार वर्षा में भी मित्र-विमानों ने अपना काम जारी रखा और जापानियों का पीछा करते रहे और उनको परेशान करते रहे, जब कि जापानी विमान बाहर आने की हिम्मत भी नहीं करते थे। जापानियों के यातायात के सब साधन कट गये। वे इम्फाल का सब यातायात मार्ग काटने में समर्थ नहीं हुए। इम्फाल और कोहिमा से मित्रसेना ने आक्रमण किया, उस समय जापानी भूखों मर रहे थे। टिड्डिम रोड से मित्र-सेना माण्डले पहुँच गई।

सफलता की कुंजी-सप्लाई

बर्मा में मित्रों की विजय का रहस्य सप्लाई में निहित है। डाकोडा—अमरीकी और ब्रिटिश चालकों-द्वारा चालीस विमान—के अभाव में विंड कमाण्डर फ्रेजर के मतानुसार ब्रिटिश सेना माण्डले से अभी बहुत दूर होती। हवाई सप्लाई ने कठिनतम यातायात की समस्या को हल कर दिया। बर्मा में सड़कें आदिम जमाने की हैं। अच्छी सड़कें दुश्मन के अधिकार में थीं। या मार्ग कतई था ही नहीं। हवाई जहाजों ने लड़ाई जीतने में कितनी मदद की है, इस बात का अन्दाजा इस काम से लगाया जा सकता है कि पिछले बारह मासों में ५०० पुल तोड़ दिए गए, ४,५०० नौकायें तोड़ दी गईं या जलमग्न कर दी गईं। ३०० एंजिन १,००० मोटरगाड़ियाँ बेकार कर दी गईं। जापानी कुमुक सप्लाई बैंगकाक से रंगून और रंगून से रेल-द्वारा माण्डले भेजते थे। इस मार्ग पर विमानों की गोलाबारी जारी रही। बैंगकाक-रंगून मार्ग भी विमानों के निशाने से बचा नहीं। फलतः जापानी सेना सप्लाई और कुमुक न मिलने से निराशा की हालत में लड़ रही है।

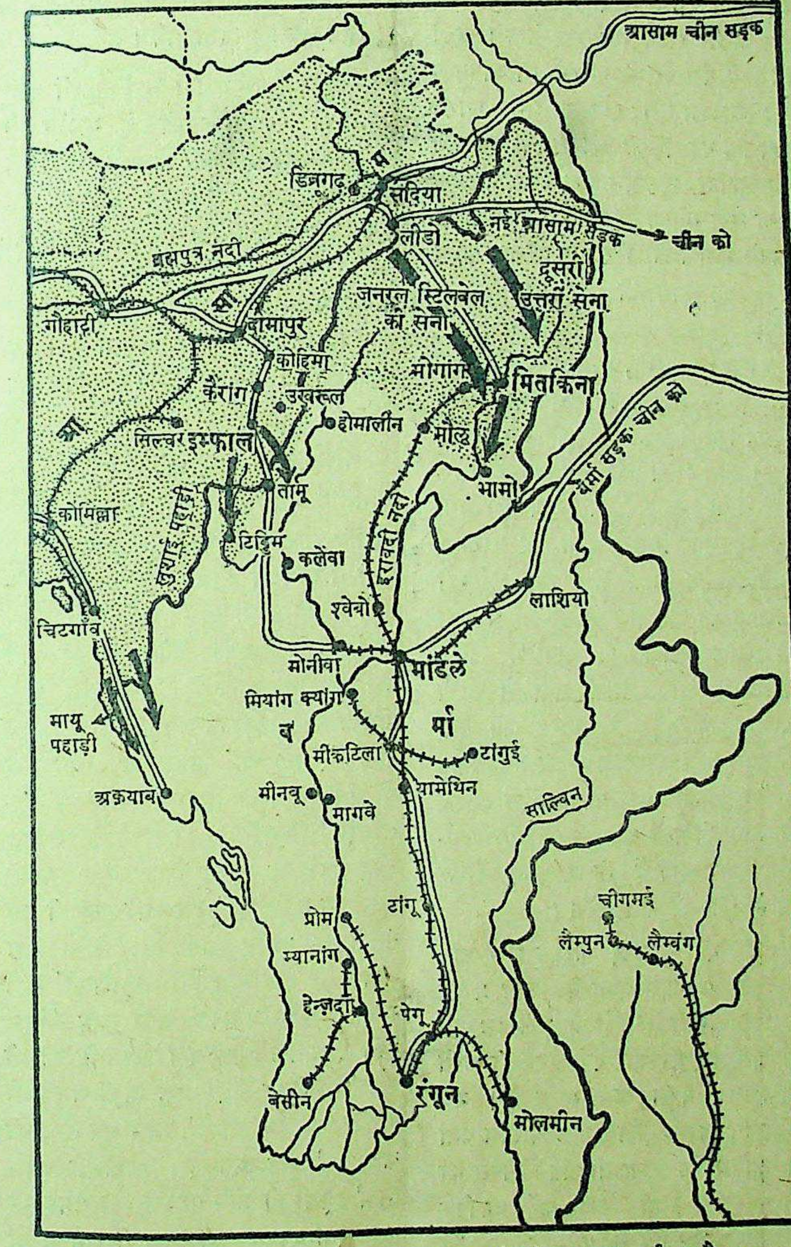

तीन मोर्चे

बर्मा में मोटे तौर पर तीन मोर्चे हैं। अराकान मोर्चे पर मायू प्रायद्वीप जापानियों से साफ हो गया है। पूर्वीय चीन से लेकर पश्चिमी बर्मा तक के जापानी मोर्चे के पश्चिमी प्राचीर अक्याब पर मित्रसेना गत ३ जनवरी को उतरी। जापानियों ने इस हवाई और जहाजी बन्दरगाह को बिना लड़े ही छोड़ दिया। रंगून के उत्तर में जापानियों के पास अक्याब एकमात्र बन्दरगाह था। इसका छीनना उसके लिए एक असह्य हानि थी। अक्याब से दक्षिण की ओर प्रगति बहुत तेज रही।

जापानी अपने सप्लाई-मार्ग के साथ साथ पीछे लौट रहे थे, जो कि प्रोम से शुरू होता है और पश्चिम की ओर समुद्र-तट की तरफ तामुक तक जाता है। इस सड़क की रक्षा के लिए जापानी दृढ़ता से लड़े, पर मिनबिया और मिओहागन पर मित्रसेना का अधिकार हो जाने से जापानियों को दक्षिण की ओर पीछे हटने को बाध्य होना पड़ा और वे अभी तक बराबर पीछे हट रहे हैं।

घिर गये

मित्रसेना मगर सड़क पर पहुँच गईं और उसके पार कांगवा के दक्षिण में अपनी चौकी स्थापित कर ली। मिनबिया और कांगवा के बीच जापानी घिर गये। कांगवा के नैऋत्य में जलमार्ग से मित्रसेना की छापामार सेना और २५वीं भारतीय डिवीजन ने नौ और हवाई सेना की सहायता से उतरकर जापानियों को चकित कर दिया। जापानियों ने नौ दिन घोर संग्राम उस पुल की चौकी को नष्ट करने के लिए किया। एक हजार जापानी मारे गये। उनकी २० तोपें छीनी गईं, पर जापानी लड़ते रहे। मगर उनका घेरा पूरा हो गया। इसके बाद फलतः अराकान में जापानी प्रतिरोध का अन्त हो गया।

मध्य बर्मा

मध्य बर्मा में सबका ध्यान माण्डले की लड़ाई पर केन्द्रित था। यद्यपि १४वीं और १९वीं सेना के कुछ दस्ते इरावदी के पार पहुँचे हुए थे। पहाड़ों से निकल कर इस साल के आरम्भ में मित्र सेना मैदान में आई और उसने येचू ले लिया। येचू के साथ काबो का वाटर वर्क्स ले लिया। यह श्वेबो-मैदान की सिंचाई का नियन्त्रण करता है। इसके साथ मायू नदी को पार किया।

कागजी मुद्रा की बाढ़

जापानी अधिकृत बर्मा में कागजी मुद्रा कैसी बाढ़ आ गई सो इसका अन्दाजा इस बात से लग सकता है कि ८ रु० का ३½ पौं० चावल मिलता था। १९४३ में बंगाल में जब अकाल पड़ा था तब वहाँ जो अधिकतम भाव था उससे यह सात गुना है। तेल के एक टिन का १००० रु०, चोरी किये गये एक गैलन पेट्रोल का ३०० रु०, '४५३ लम्बी चौड़ी चटाई का

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिये

हिन्दी के लेखकों की दुर्दशा क्यों ?

कठिनाइयों से बचने के लिए क्या करना चाहिए ?

लेखक, कुँवर सुरेशसिंह

[३]

हिन्दी के लेखकों की दुर्दशा क्यों ? इसकी जिम्मेदारी केवल प्रकाशकों या लेखकों की रचनाओं से रुपया ही कमानेवालों पर नहीं, वरन् स्वयं लेखकों पर भी है। लेखकों को अपना संगठन इतना दृढ़ बनाना चाहिए साथ ही अपनी रचनाओं को इतनी प्रभावोत्पादक बनाना चाहिए जिससे देश को राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाकिक गुलामी से छुटकारा मिल जाये। लेखकों को दुर्दशा से बचाने का यह भी उत्तम मार्ग है। लेख सुन्दर तथा पठनीय है।

'देशदूत' १५ फरवरी के अंक में हम इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट कर चुके हैं।

मुझसे एक उर्दू-प्रेमी सज्जन एक दिन कहने लगे—"हिन्दी! हिन्दी में क्या है! आपके हिन्दी के लेखकों से ज्यादा तो खोंचेवाले कमा लेते हैं।

यह अप्रिय सत्य कड़ुवा जरूर लगा लेकिन मुझे इसमें सचाई भी कम न दीख पड़ी। हालाँकि उर्दू के लेखक हैदराबाद, रामपुर आदि कुछ देशी नरेशों का आश्रय पाकर आज जरूर खोंचेवालों से ज्यादा हैसियत बना सके हैं लेकिन उससे वंचित हो जाने पर उनकी भी हालत कम शोचनीय नहीं हो जाती क्योंकि मैने पिछले लेख में जो कारण बताये हैं वे सभी प्रान्त के और सभी देशी भाषाओं के लेखकों पर लागू होते हैं।

अभी तक पाठकों के सामने तसवीर का एक ही पहलू रखा गया है—अब दूसरे पहलू से भी परिस्थिति पर गौर करना है। इसके लिए हमें भावुकता को छोड़कर वास्तविकता की ओर आना चाहिए।

हमें यह न भूल जाना चाहिए कि एक प्रकाशक का भी तो अपना कुछ स्वार्थ होता है। वह इतना विशाल प्रेस और इतना बड़ा कारबार इसलिए तो फैला कर नहीं बैठा है कि हिन्दी की सेवा करे और अपने घर की सारी पूँजी हिन्दी के लेखकों को खिला कर अपना टाट उलट कर दिवालिया हो जावे। उसका अपना भी तो एक दृष्टिकोण है। आज हमको उससे यही शिकायत है न कि वह हमारे 'निराला' जैसे प्रतिभाशाली साहित्यिकों की पुस्तकें सौ सौ दो दो सौ रुपयों में खरीद लेता है—वह हमारे लेखकों को बहुत कम रायल्टी देता है—उसने हमारे पंत जैसे कलाकारों की कृतियों के, उनके सीधे स्वभाव के कारण, कई संस्करण बिना उनकी आज्ञा के छाप लिये हैं—वह हमारे लेखकों को प्रोत्साहन क्या करेगा, उनकी किताबों का मोल-तोल करके उनसे सस्ते से सस्ते में उनका कापीराइट ले लेता है। हमारे लेखक पुस्तकें लिख कर प्रकाशकों के चक्कर में मारे-मारे फिरते हैं।

यदि इस सारे फर्द जुर्म को हम सही भी मान लें, तो भी हमें यह न भूल जाना चाहिए कि लेखकों को जितनी प्रिय उनकी रचनायें हैं, प्रकाशक को उतना ही प्रिय उसका पैसा है। हिन्दी के प्रकाशन-युग में अभी वह स्थिति नहीं आई है कि उसके प्रकाशक हिन्दी की पुस्तकें छापकर या हिन्दी की पत्र-पत्रिकायें निकाल कर लखपती हो जावें। जहाँ भी प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ हुआ है, इसकी उसमें किसी न किसी प्रकार की हिन्दी भाषा के प्रति सेवा अथवा प्रेम की प्रेरणा की मौजूदगी अवश्य मिलेगी। यही नहीं, अब भी जो लोग हिन्दी का प्रकाशन कर रहे हैं, उनमें स्वार्थ की भावना भले ही एक सीमा तक पहुँच गई हो या उनको घाटों ने इतना अंधा कर दिया हो कि वे लेखकों का आदर करना भूल गये हों, लेकिन यह तो हमें मानना ही पड़ेगा कि उनमें हमारी भाषा के प्रति कुछ न कुछ प्रेम तो है ही। नहीं तो जो रुपया वे आज हिन्दी की किताबें छापने में लगाये हुए हैं उससे वे कोई भी और दूसरा अधिक मुनाफेवाला कारबार कर सकते हैं।

थोड़ी देर के लिए प्रकाशक की परिस्थिति पर और गौर कीजिए। उसने अपनी पूँजी इस व्यापार में इसलिए तो लगाई नहीं है कि वह डूब जावे। वह तो हर प्रकार से यही उद्योग करेगा कि उसकी पुस्तकें ज्यादा से ज्यादा तादाद में बिकें और उसकी पत्र-पत्रिकाओं की ग्राहक संख्या अधिक से अधिक हो जावे। इसलिए यह मानी हुई बात है कि वह ऐसी ही पुस्तकें लेखकों से खरीदेगा जिनकी पब्लिक में ज्यादा खपत हो और उसका सारा खर्च वगैरह निकाल कर उसे अच्छा मुनाफा हो। इसी बचत से वह थोड़ा लेखक को देकर बाकी अपने पास रख लेगा। इसी सीधे-सादे ढंग पर वह पुस्तकों का व्यवसाय करने निकला है। अब उससे यह आशा करना कि वह हिन्दी के प्रेम के वशीभूत होकर अपना नुकसान करा देगा, फिजूल है। या यही ख्याल करना कि वह आसानी से अपने मुनाफे के हिस्से को कम करके लेखकों की रायल्टी बढ़ा देगा, बेकार-सा है।

इसके लिए तो, जैसा ऊपर बता आया हूँ—हमें अपना संगठन करना चाहिए, जिससे प्रकाशकों की धींगा-धींगी बन्द हो जावे। वे जब यह जान लेंगे कि हमारी भाषा के बड़े बड़े अग्रणी रेडियो की तरह उनका विरोध करने पर कटिबद्ध हो गये हैं और उनके नियन्त्रण में हिन्दी के लेखकों का एक मजबूत संगठन हो गया है तो इन प्रकाशकों के रुख में, उनके व्यवहार में और उनकी शर्तों में काफी परिवर्तन दीख पड़ने लगेगा। जब उन्हें यह मालूम हो जावेगा कि हमारी साहित्यिक संस्थाएँ गुटबाजों का अखाड़ा न बनकर हमारे भावी लेखकों की सहायता और मार्ग-प्रदर्शन करने लगी हैं तो वे मजबूर होकर हमारे लेखकों की बात सुनेंगे।

हमारे यहाँ के कुछ लेखक और कवि ऐसे हैं जो पत्र-पत्रिकाओं से किसी प्रकार का पुरस्कार नहीं लेते। कुछ लेखक ऐसे हैं जो इसलिए पुरस्कार स्वीकार नहीं करते क्योंकि वह बहुत कम रहता है। नये लेखकों को इसके लिए एक नियम बना लेना चाहिए कि वे या तो अपने लेखों को बिना पुरस्कार के ही भेजा करें या फिर उसके लिए स्पष्ट रूप से पत्र-सम्पादकों को लिख दें कि वे बिना पुरस्कार के लेख नहीं भेजेंगे। सम्पादकों के ऊपर इसका भार छोड़ देना ठीक नहीं। रचना का मूल्य दोनों दो नुक्तएनजर से देखते हैं। सम्पादक का व्यावसायिक दृष्टिकोण यह आसानी से नहीं देख पाता कि अमुक रचना में लेखक को अपने हृदय का कितना रक्त देना पड़ा है।

सबसे ज्यादा दिक्कत पड़ती है सचित्र लेखों के मामले में। सम्पादक लोग लेखकों से ही लेख-सम्बन्धी चित्र माँगते हैं—यह ठीक भी है, क्योंकि कौन चित्र लेख के साथ ज्यादा उपयुक्त होगा इसे लेखक ही ज्यादा समझ सकता है। लेकिन इसी के साथ-साथ अकसर यह होता है कि चित्र लेख छप जाने पर भी सम्पादकों के यहाँ ही पड़े रह जाते हैं—और अगर तकाजा करने पर लौटे भी तो ऐसे गन्दे और भद्दे होकर कि उनका लौटना न लौटना बराबर-सा होता है। ऐसी हालत में चित्र भेजते समय लेखकों को इतनी प्रार्थना जरूर कर देनी चाहिए कि उनके चित्रों के ब्लाक बन जाने पर उनको सुरक्षित लौटाल दिया जावे।

चूँकि हमारे यहाँ पत्र-पत्रिकाओं और उनसे भी ज्यादा ग्राहकों के सुझाव से अभी सम्पादक लोग लेखकों को उनके लेखों का इतना मूल्य नहीं दे सकते कि एक मनुष्य केवल लेख लिखकर ही अपना काम चला सके इसलिए उसको कुछ दिनों तक लेख लिखने के बाद पुस्तक लिखने का शौक पैदा होता है और तभी से वह प्रकाशकों की तलाश में भटकना शुरू कर देता है।

कवियों को तो लेखकों से कहीं ज्यादा आसानी रहती है—उन्हें एक तो थोड़ा सोचना और थोड़ा लिखना रहता है और उसी के साथ ही साथ दो-चार-कवि सम्मेलनों में सम्मिलित होकर वे अपनी कविताओं के लिए काफी प्रोपेगैण्डा कर लेते हैं। उन्होंने कविताएँ लिखीं और पत्र-पत्रिकाओं में छपने के बाद जहाँ काफी कविताएँ जमा हुईं कि उनका संग्रह प्रेस में जाने के लिए तैयार हो गया—कवि-सम्मेलनों में कवियों की सुरीली आवाज और लहजे पर लट्टू होकर जनता उनकी रचनाओं को थोड़ा बहुत समझकर ही इन संग्रहों को खरीद लेती है। लेकिन गद्य लेखक के सामने इतनी सहूलियतें नहीं रहतीं। कहानी-लेखक जरूर कुछ मजे में रहते हैं, क्योंकि हमारे यहाँ कहानियों की भी अच्छी से लेकर सस्ती तक काफी संख्या में पत्रिकायें निकल रही हैं जिनमें सब तरह की कहानियाँ खप जाती हैं। थोड़ी-सी कहानियाँ इकट्ठी हो जाने पर उनका संग्रह भी छप जाना ज्यादा मुश्किल नहीं। न उसमें चित्रों का झगड़ा रहता है और न ज्यादा प्रचार की ही अवश्यकता रहती है—एक भड़कीला-सा कवर पेज और किसी कहानी के आकर्षक शीर्षक से पुस्तक का नाम देने पर ऐसे संग्रह आसानी से बिक जाते हैं।

यह तो हुई कवियों और कहानी-लेखकों की बात—लेकिन गद्य-लेखकों के सामने रास्ता इतना साफ-सुथरा नहीं रहता। उन्हें न तो अपने लेखों को जनता को सुनाने का मौका मिलता है और न उसके पाठकों की ही संख्या ज्यादा है। उनके लेखों के संग्रह ज्यादा नहीं बिक सकते इसी लिए प्रकाशक लोग भी उ विद्वत्ता के भले ही कायल हों, ले उनका संग्रह प्रकाशित करने को तैयार नहीं होते।

हमारे यहाँ धार्मिक और राजनै लेखों की फिर भी पत्र-पत्रिकाओं में ख हो जाती है। सामाजिक लेख कम दिख पड़ने लगे हैं, क्योंकि देश में यह राज उलट-फेर का समय है। जनता में नैतिक जाग्रति हो गई। देश इस अन्य आवश्यकताओं को पीछे ढकेल अपनी राजनैतिक गुत्थी सुलझाना चा है ऐसे समय में सामाजिक लेखों का राजनैतिक लेख ले लें तो कोई आश्च नहीं—लेकिन ताज्जुब इस बात का है हमारे यहाँ वैज्ञानिक लेख एकदम लि ही नहीं जाते। साप्ताहिक पत्रों में कभी-क "विज्ञान की करामात" या "अद्भुत आ आदि शीर्षक के नीचे कुछ अधकचरी ऊ पटांग विज्ञान-सम्बन्धी खबरों का संक जरूर रहता है जिनका मुख्य उद्देश्य पाठ का ज्ञानवर्द्धन करने से ज्यादा उनका कु हल बढ़ाना होता है। इन विदेशी प काओं के संचयन के अनुवादों को वैज्ञानि लेख नहीं कहा जा सकता—उसके लिए लेखक को काफी अध्ययन करना पड़ता है उसे एक विषय पर अपने जीवन का एक हिस्सा बिता देना पड़ता है, तब कहीं उस लेखों को प्रामाणिक माना जाता है। हम संपादक ऐसे लेखकों को प्रोत्साहन न देते—उन्हें तो भड़कीले लेख और कहानि और टेढ़ी-मेढ़ी लकीरों में कम्पोज की जा वाली कविताओं की चाह रहती है। ऐ दशा में मैं फिर अपने भावी लेखकों से द प्रार्थना करूँगा कि साहित्योद्यान में आ से पहले अपना मार्ग भली भाँति सोच लें कविता की सुरभित क्यारियों का मार्ग ज साफ-सुथरा है, लेकिन अब हमें अपने न साहित्य के उस कँकरीले मार्ग को तै करना है जो अभी बीहड़-सा पड़ा है— उस पर ऐसे विशाल वृक्ष लगाने हैं हमारी आनेवाली पीढ़ी को सघन छाया सकें। अब जमाना बदल गया है। कवि कानन का थका हुआ मलय-पवन अ आराम करे तो ज्यादा ठीक होगा, क्यों अब हमारे देश के साहित्य को ऐसे प्रभा शाली गद्य-लेखकों की ही जरूरत है जिन तूफान मचा देनेवाली लेखनी से हमारे दे की राजनैतिक तथा सामाजिक गुलामी अन्त हो जावे।

"सरस्वती सिरीज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशि
उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित
हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहा

जिसने खाया पसन्द किया
ऐसा
दाल का मसाला
साग, दाल, चटनी, रायता, चाट
आदि का स्वाद चौगुना करता है
और हाजमे की अचूक दवा है।
१ डिब्बा—८ छटांक। मूल्य केवल
१० आना। डाकखर्च अलग।
प्रकाश ब्रदर्स
बाग मुजफ्फर खाँ, आगरा।

वह कौन थी ?

लेखक, श्री 'संगम'

समाज में विवाह जीवन का एक पवित्र संस्कार माना जाता है, फिर भी मनुष्य उसके प्रति अनेक कर्तव्य को भूल जाता है। जगमोहन बाबू भी अपने कर्तव्य से च्युत हो गये और उनकी मृत्यु के बाद उसका कुपरिणाम भोगना पड़ा बेचारी सुरजी और कवँली को। कहानी हृदयस्पर्शी और रोमांचक है।

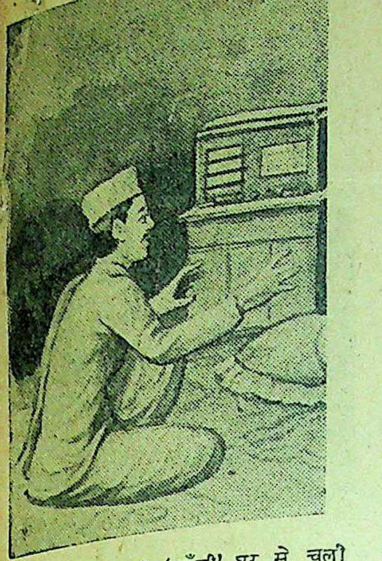

सरकार सुना नहीं 'कवँली' घर से चली गई—आगंतुक ने कहा।

मुकुन्द को एक दिन फिर हमने उत्तेजित कर दिया। यों वह मित्रमंडली में घंटों बुत बना बैठा रहता है और सबके चेहरे को बारी-बारी से इस प्रकार घूरता है मानो अव्वल दर्जे का बेवकूफ हो। लेकिन जरा उसे उकसा दीजिए तब मजा देखिए। अगर मार खाने से बच गये तो कोई अजीब-सा किस्सा सुनने को मिलेगा जिसके सहारे वह अपनी ऊटपटाँग फिलासफी आपके सामने इतने जोरदार ढंग से पेश करेगा कि कुछ देर के लिए तो आप उसका जोर-शोर से समर्थन करने के लिये उतावले हो ही पड़ेंगे।

उसी मुकुन्द से जब मैंने कहा—'यार, उस दिन तो तुमने कहानी शुरू की गोपाल और गोविन्द की और लगे सुनाने उनके बाप के मरने-जीने की बातें। अजी, किस्सा कुछ ऐसा सुनाओ कि हाँ······' बस, वह 'मूड' में आ गया! किसी दूसरे अवसर पर हम उसे घंटों छेड़ते-खिझाते, अनेक उलटी-सीधी बातें सुनाते और सुनते तब सफलता शायद ही मिलती। किन्तु, इस बार, न जाने क्यों, वह चटपट बोला—"तो सुनो·····

गोपाल और गोविन्द दोनों भाई थे—सगे या सौतेले, जो कहो। एक बाप—दो माँ। उनके एक भाई और बहन और थे। तीसरी मा से। चूँकि वह छोटी जाति की थी इसलिए माँ न कहला कर 'सुरजी' कहलाती थी। उसकी लड़की का नाम था कवँली और लड़के का नाम·····छोड़ो भी, उस छोकड़े का नाम याद नहीं।

बाप के मरने के बाद घर के मालिक हुए गोपाल बाबू और युवराज पद मिला गोविन्द बाबू उर्फ बबुआ जी को। ब्याह दोनों के हो गये थे लेकिन अभी सन्तान किसी को नहीं हुई थी। माँ दोनों की जीवित थीं और वह तीसरी माँ भी थी—सुरजी। लेकिन जहाँ गोपाल बाबू और गोविन्द बाबू अपनी पैतृक अट्टालिका में अपनी अपनी अर्धांगिनी और जननी के साथ निवास करते थे वहाँ सुरजी एक फूस की झोंपड़ी में अपने लड़के और कवँली के साथ रहती थी।

गोपाल और गोविन्द के पिता जगमोहन बाबू अपने जीते जी सुरजी पर विशेष कृपा रखते थे। उसके पति को अपने घोड़े का खास साईस नियुक्त किया था। पर भाग्य पर किसी का क्या अधिकार? एक दिन गाँववालों ने सुना कि सुरजी का पति 'दारू' पीकर कुएँ में गिर पड़ा और मर गया। यह सुनकर कितने ही लोगों ने आँखें मटकाईं। खैर, तब से सुरजी मालिक यानी 'सरकार' की रखेलिन बन गई। सोने की तो दो-एक चीजें, लेकिन चाँदी के भारी-भरकम गहनों से उसका शरीर लद गया। अब वह गलियों में इठलाकर चलती थी और आते-जाते लोग राह छोड़कर बगल में दुबक जाते थे। सुना, हवेली की मालकिनें उससे बहुत जलती थीं पर लाचारी का इलाज क्या? 'सरकार' की बात थी—इलाज ही क्या था?

वही सुरजी आज दिन अपने गये दिनों पर रोती रहती। जब तक सरकार रहे उसकी आँखों पर चरबी छाई रही। जमीन पर पैर सीधे नहीं पड़ते थे, दिमाग सातवें आसमान पर था। कभी कोई समझाने की कोशिश करता तो वह तिनककर कहती—'जब सरकार ने अपना देह नाप दिया है तो और क्या माँगू? सब उन्हीं का न है कि किसी दूसरे का?'

वही सुरजी आज रोती, झींकती और अपने भाग्य को कोसती फिरती। सरकार से मुँह खोलकर उसने कभी कुछ नहीं कहा। सोचती थी, 'वह उन्हीं की है, कवँली भी उन्हीं की है—फिर क्या वह कोई प्रबन्ध न कर जायँगे?' लेकिन, कहीं कुछ नहीं हुआ। इधर सरकार ने आँखें मूदीं, उधर सुरजी का भाग्य-सूर्य भी सदा के लिए अस्त हो गया।

. कवँली सोलह साल की हुई। खिले कमल से उसकी उपमा दी जाये तो कोई हर्ज नहीं। इसलिए उसका नाम सार्थक था। वह बहन थी गोपाल बाबू की और गोविन्द 'बबुआ' जी की यह बात सारा गाँव क्या, सारा 'जवार' जानता था। अब भी उसके पास कपड़ों और गहनों की कमी नहीं थी। सरकार की दी हुई साड़ियाँ और कपड़े काम से ज्यादा रखे थे। लेकिन कमी थी उस प्रतिष्ठा की जो कभी उसे प्राप्त थी। कमी थी भविष्य की स्थिरिता की जो उसके हृदय में तूफान उठाया करती थी। आखिर वह अब सयानी हो गई थी, और सब कुछ जान चुकी थी।

सुरजी कवँली के झपटते हुए आनेवाले योवन को देखती। धड़धड़ाती हुई बाढ़ पर उसकी दृष्टि जाती तो उसका कलेजा काँप जाता। 'हाय रे! सरकार रहते तो क्या यह सब सोचने का मौका आता?' कौन जाने? उसे सरकार की याद आने पर बड़ी पीड़ा होती। उन्हीं के लिए उसने सब कुछ छोड़ा—धरम-करम, लोक-परलोक। बड़े लोग कहते हैं, छोटों का धर्म-कर्म, कैसा? वह सब तो इसका अर्थ ही नहीं समझते।' पर सुरजी पश्चात्ताप की अग्नि में जलती और अपना दुखड़ा सबसे तो नहीं—मेरी माँ से आकर कभी कभी रो-गा जाती थी।

एक दिन सुरजी बड़े सबेरे, मुँह अँधेरे ही में मेरे घर आई और मा के पैर पकड़ कर खींचने लगी। उन्हें उठाकर वह अलग ले गई और जोर से रो-रोकर कहने लगी—'दीदी जी, कवँली कहीं भाग गई। हाय राम, अब मैं क्या करूँ दीदी जी? सरकार की इज्जत मैं नहीं रख सकी! कहते-कहते वह माँ के पैर पर लोट गई और धाड़ें मार कर रोने लगी।

कवँली सचमुच चली गई थी! सुरजी बार बार अपनी झोंपड़ी का कोना-कोना टटोलती; गली-गली पुकारती—'कवँली-कवँली! पागल की तरह वह चिल्लाती फिरी और उसके पीछे-पीछे गाँव के लड़कों का एक बड़ा-सा गिरोह तमाशा देखता घूमता रहा। अन्त में वह 'गढ़' पर पहुँच गई। वह एकदम बदहवास और पगली-सी दिखाई दे रही थी। बाल खोले, सिर का पल्ला जमीन में लथाड़ती जब वह बैठके में पहुँची तो उस समय गोपाल बाबू दाढ़ी बनवा रहे थे और गोविन्द बाबू मालिश करा रहे थे। 'बबुआ जी—बबुआ जी! कवँली भाग गई! हाय राम! तुम लोग बैठे देख रहे हो—तुम्हारी इज्जत लुट गई! तुम्हारी बहन कवँली—सरकार की दुलारी बेटी कवँली चली जाये और तुम लोग... हाय...तुम्हारी बहन...'

'चुप रह, दुष्टा!'···गोपाल बाबू जोर से कड़के। बात बर्दाश्त के बाहर हो गई थी। गोविन्द बाबू केवल बड़े भाई की प्रतीक्षा कर रहे थे और गोपाल बाबू नाई के छुरे के नीचे अपना गला दे बैठे थे, नहीं तो······नहीं तो, मालिक की शान में सुरजी ऐसी बातें कह जाये? कहती है—'कँवली—तुम्हारी बहिन निकल गई।'

'ठहर··!'—कहते हुए बबुआ जी स्वयं धोती सँभालते हुए उठे। बस, फिर क्या था। बबुआ जिसे स्वयं मारने उठें उसे तो पहले ही मर जाना चाहिए! बदहवास, विक्षिप्त सुरजी पर बे-भाव की पड़ने लगी। आखिर दोनों सपूत उन्हीं सरकार के 'जाये' थे जो पीटने की कला के मास्टर थे। हंटर की मार और वह भी अनवरत रूप से वह शरीर और मन से टूटी नारी कब तक झेलती? वह अन्त तक यही कहती रही है—'ह··य··रा··म! सरकार··की··बेटी··तुम्हारी··बहन··!'

मार खाने के चौबीस घंटे के भीतर सुरजी की मृत्यु हो गई। बाबुओं ने लाश फुँकवाने में अवश्य तत्परता दिखाई। अब सुरजी और कवँली का नाम मिट गया। बचा वह छोटा छोकड़ा जिसे बाबुओं ने कहीं भैंस चराने को भिजवा दिया।

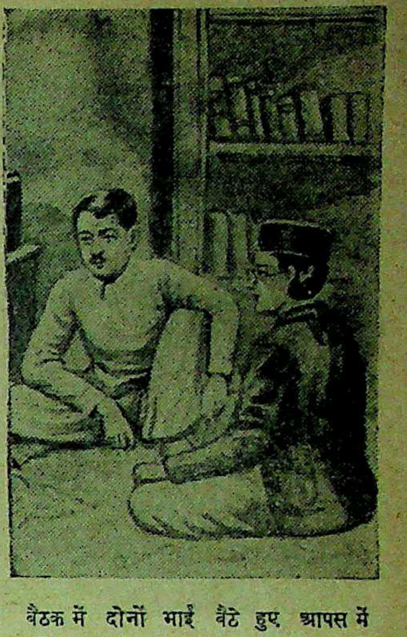

बैठक में दोनों भाई बैठे हुए आपस में परामर्ष कर रहे हैं।

करीब चार साल बाद। एक दिन गाँव में इस संवाद की धूम मच गई कि बबुआ जी ने कहीं से एक 'गायिका' बुलाया है। बुलाया क्या, वह स्वयं उसे लाये हैं। उनके मुसाहिबों का कहना था कि 'छोटे' बबुआ जी ने जब से उसकी प्रशंसा सुनी खाना-पीना छोड़ बैठे। बड़ी मिन्नतें हुईं तो वह आने पर किसी तरह राजी हुई।

इसी प्रकार की चटपटी खबरें दिन भर गाँव में उड़ती रहीं। शाम को बबुआ जी का प्राइवेट जलसा था। बाहर बैठके में लोग जमा हुए। जो बड़े-बूढ़े अपने सिरों की सफेदी पर तरस खा रहे थे वे प्रत्यक्ष रूपेण न पहुँचकर गलियों में चक्कर काटा किये और वे छोकड़े भी जो अभी बालिगों की श्रेणी में नहीं शुमार किये गये थे। सभी उत्सुक थे।

सुन्दरता की वह प्रतिमा बैठके में ठनकर आई और बीच में बैठ गई। सैकड़ों जोड़ी आँखें एक साथ उठीं और उसके लावण्यभरे मुख पर टिक गईं। वह नीचे देखती हुई कुछ गुनगुनाने लगी और अन्त में अलाप लेकर एक गत छेड़ दी। उसकी स्वर-लहरी के उतार-चढ़ाव के साथ एकत्रित समाज डूबने-उतराने लगा। अन्त में जब गाना खतम हुआ तो ऐसा लगा कि जैसे एक सुन्दर स्वप्न देखते-देखते लोगों की नींद एकाएक टूट गई हो।

लोगों की नींद सचमुच टूट गई। मोहान्धकार में डूबे हुए उपस्थित जन-समुदाय ने देखा कि वह गायिका उठ खड़ी हुई। 'वाह-वाह!' का लगातार नारा लगाते हुए मालिक गोपाल बाबू को उसने झुककर सलाम किया और लोगों की ओर घूमकर कहा—'छोटे भैया के अनुरोध को मैं टाल नहीं सकी—आखिर बहन का दिल जो ठहरा? अपना गाँव एक बार फिर से देखने और आप सबके दर्शन की लालसा ने मुझे आपकी सेवा में पहुँचा दिया। मैं हूँ वही तुम्हारी कवँली।'

गोपाल बाबू का 'वाह-वा'··करता हुआ मुँह खुला का खुला ही रह गया। छोटे बबुआ जी की तिरछी चितवन उसके चेहरे पर अटकी की अटकी रह गई। लोगों ने प्रत्यक्ष देखा—वह कवँली ही थी—लालसा की लपटों से घिरी हुई!

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री कुमारी शान्ता आपटे !

अभिनय तथा फिल्मी-जीवन पर एक मनोरंजक इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

'कृष्णगोपाल' फिल्म की राधा कुमारी शान्ता आपटे।

भारतीय-रजतपट की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री कुमारी शान्ता आपटे से मिलने के लिए मैं बहुत दिनों से उत्सुक था। बम्बई में मैं उनसे मिलने गया। उस वक्त वह अपने 'ड्राइंग-रूम' में थीं। आपका 'ड्राइंग-रूम' भी देखने काबिल है। 'ड्राइंग-रूम' की सजावट में एक विशेषता यह थी कि उसमें "वेस्टर्न-आर्ट" का उपयोग थोड़ी मात्रा में था। कोई तसवीर ऐसी नहीं थी, जो कि उच्छृङ्खल-भावना प्रदर्शित करती हो। प्राकृतिक दृश्यों के सुन्दर चित्र टँगे हुए थे, साथ ही महात्मा गांधी और पंडित नेहरू के चित्र भी शोभायमान थे। इन दोनों चित्रों पर फूल-मालायें चढ़ी थीं। इससे यह मालूम पड़ रहा था कि कुमारी शान्ता आपटे की श्रद्धा भारत की इन अमर विभूतियों पर अटूट है। विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की भी तसवीर मेज़ पर रखी हुई थी। इन तसवीरों के अलावा शान्ता आपटे की खुद की तसवीर बड़ी सुन्दर रखी थी। 'ड्राइंग-रूम' का एक दरवाजा "रीडिंग-रूम" की ओर था। दरवाजे पर लिखा हुआ था—"रीडिंग-रूम" कुमारी शान्ता आपटे साहित्य, संगीत एवं कला की बड़ी शौकीन हैं। शौकीन ही नहीं वरन् इन विषयों की मर्मज्ञ हैं। गुरु रवीन्द्र के चित्र के पास ही एक "पम्फलेट" सुन्दर अक्षरों में लिखा हुआ रक्खा था। "पम्फलेट" में आपके (शान्ता आपटे) जीवन का चित्र अंकित हो रहा था! उस जीवन-चित्र का शीर्षक था—"मेरी अभिलाषा।" उसे पढ़कर कुमारी शान्ता आपटे को ठीक ठीक समझने में सहायता मिलती है। उस "पम्फलेट" का मजमून निम्नलिखित था—

"मानव-हृदय अगणित अभिलाषाओं का केन्द्र है और फिर भगवन किसी कलित आकांक्षा से मेरा अन्तस्थल छटपटा उठे, तो इसमें आश्चर्य ही क्या ?"

"वसुन्धरा का सम्पूर्ण वैभव, कुबेर का कोष, विलास का समस्त उपचार, कल्प-कानन, इन सबसे मेरे दग्ध हृदय को शान्ति नहीं मिलती। क्योंकि मैं इन सबको अपनी अमर अभिलाषा के सामने तुच्छ समझती हूँ जो मेरे जीवन-पथ को निर्देश कर रही है। सुनते हैं क्षितिज के उस पार बहुत दूर आनन्द का स्वर्ग है और हर्ष का दरिया बह रहा है। मुक्ति का भव्य मन्दिर है, आवागमन का जहाँ अन्त है। किन्तु मुझे वह भी नहीं चाहिए।" अपनी उस अमर अभिलाषा के सामने—मेरे हृदय की अमर अभिलाषा का चित्र यह है :—

"विश्व के सम्पूर्ण राष्ट्र अपनी सभ्यता एवं संस्कृति का पूर्ण विकास करें। अपने ही स्वतन्त्र वायु-मण्डल में उन्हें किसी दूसरे का मुँह न ताकना पड़े। भारतमाता की गुलामी की बेड़ियाँ भी टूट जायँ। कोई राष्ट्र किसी दूसरे राष्ट्र के अधीन न रहे। बस यही मैं चाहती हूँ "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपिगरीयसी" प्रभु मेरी इस अभिलाषा को स्वप्न की दुनियाँ से निकाल कर क्रियात्मक दुनिया के अमिट चित्र से चित्रित कर दो।"

कुमारी शान्ता आपटे के इस 'जीवन के चित्र' को देखकर मैं सोचने लगा कि अभिनेत्री होते हुए भी देश के प्रति, वरन् समस्त विश्व के प्रति उनमें कितना उच्चभाव है। कितनी उनकी अमर साधना है ! लेकिन जन-साधारण इसको क्या समझें ?

"गेस्ट-रूम" भी आपका दर्शनीय है। अतिथियों के आराम के लिए प्रत्येक वस्तु हर समय तैयार रहती है। उनके विनोद के लिए कई किस्म के वाद्य भी रक्खे हुए हैं ! 'गेस्ट-रूम' में जो चित्र टँगे हुए थे वह भारत की "प्राचीन कला" को प्रदर्शित कर रहे थे। "कला" के विभिन्न रूपों के चित्र इससे पहले मैंने कभी नहीं देखे थे। कुमारी शान्ता आपटे ने इन चित्रों का संकलन इस ढंग से किया है कि वह "गेस्ट-रूम" एक "आर्ट-गेलरी" बन गई है। शायद वह अतिथियों को "भारतीय-कला" से परिचित कराना चाहती है।

* * *

कुमारी शान्ता आपटे अब तक बहुत सी फिल्मों में कार्य कर चुकी हैं। आप भारत की श्रेष्ठ अभिनेत्रियों में से हैं। मेरी आपसे क्या बातचीत हुई, उसे मैं संक्षेप में यहाँ दे रहा हूँ—

प्रश्न—आपने किस दृष्टिकोण को लेकर फिल्मी-जगत में प्रवेश किया ?

उत्तर—जब मैं विद्यार्थी-जीवन में थी, उस वक्त कविता एवं संगीत इन दोनों से मुझे विशेष प्रेम था। मेरे जीवन-पट पर संगीत और कविता ने कल्पना की सुनहरी दुनिया के मनोहर चित्र अंकित कर दिये। विद्यार्थी-जीवन में जो कविता एवं संगीत की भड़कीली दुनिया की बुनियाद पड़ गई थी—अब उसी बुनियाद के प्रत्येक कण में "अभिनय-कला" की स्वच्छ चाँदनी छिटकाने के लिये मैंने फिल्मी-संसार में प्रवेश किया। हृदय की उज्ज्वल भावनाओं को अभिनय के मंच पर प्रदर्शन करने के लिए मुझे प्रारम्भ से ही उत्कण्ठा थी। आज समाज की गति में स्थिरता आ गई है—और जब किसी तत्व में सञ्चालन-शक्ति का अभाव हो जाता है तभी वह सड़ने लगती है। आज हमारा समाज भी आगे की ओर नहीं बढ़ रहा है। वह जहाँ का तहाँ रुका हुआ है ! समाज का आधा हिस्सा नारियों पर अवलम्बित है। और नारियों की ही आज सबसे गिरी हुई हालत है। उन्हीं को "जहालत के गर्त्त" से निकालने के लिए अखबार और व्याख्यान इतने कारगर नहीं हो सकते जितने कि विज्ञान का परिष्कृत रूप सिनेमा। इसीलिए मैंने इसी का आश्रय लिया। मैं चाहती हूँ कि मेरा सन्देश हिन्दुस्तान के कोने-कोने में पहुँच जाय जिससे आज की नारियाँ बन्धनों को तोड़ते हुए आगे बढ़ें। समाज का सम्पूर्ण निर्देशन स्त्रियों पर ही अवलंबित है, और जब निर्देशक ही अज्ञानता के पथ पर चल रहा हो तब वह समाज को कैसे उत्थान-मार्ग की ओर ले जा सकता है? इसलिए स्त्रियों की दशा का सुधारना नितान्त आवश्यक हो जाता है। मैंने समाज-सुधार का ठेका तो नहीं लिया है, लेकिन मैं जिस नारी के भूमिका में अभिनय करती हूँ वह भूमिका नारी-जीवन को विकास मार्ग की ओर बढ़ानेवाली होती है। इन्हीं दृष्टिकोणों को लेकर मैंने फिल्मी दुनिया में दृढ़ विश्वास के साथ प्रवेश किया है।

प्रश्न—आप किस तरह की फिल्में पसन्द करती हैं और क्यों ?

उत्तर—मैं उन फिल्मों में कार्य करना पसन्द करती हूँ जिसको देखकर हृदय की भावनायें संकीर्णता के दायरे को तोड़कर विकास-क्षितिज के प्रशस्त पथ पर बढ़ें। फिल्में हमारे जीवन में प्रकाश-स्तम्भ का कार्य कर रही हैं। जो फिल्में जीवन का "आलोक-स्तम्भ" नहीं बन रही हैं, उनको मैं कतई पसन्द नहीं करती, और न मैं उनमें काम करना अपने आदर्श के अनुकूल समझती हूँ। फिल्मों का मुख्य कार्य मानव के पथ को आलोकित करना है। जो फिल्में जीवन को आदर्श-लक्ष्य की ओर न बढ़ा सकीं, तो फिर उनका निर्मित होना ही बेकार है ! जब इंसान जीवन के संघर्षों की भयंकर मार से चकनाचूर हो जाता है—तो उस वक्त उसकी स्वयं की प्रतिभा "लँगड़ी" हो जाती है। अतएव वह इधर-उधर "संबल" की खोज में भटकता है—जिन्दगी की गलियों की "भूल-भुलैयों" में ऐसे आड़े वक्त पर क्यों न फिल्में हमारे जीवन का पथ-प्रदर्शक बनें ? यह कार्यों की फिल्मों-द्वारा बड़ी आसानी से पूर्ति हो सकती है ? मैंने तो अपना सिद्धान्त ही बना लिया है कि मैं उन्हीं चित्रों में अभिनय करूँगी जो कि भूले हुए इंसान को राह बतलाने में सहायक हों ! इसी सिद्धान्त की रक्षा के लिए मैंने "प्रभात" फिल्म-कम्पनी से अपना सम्बन्ध-विच्छेद किया। मेरे

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री और गायि कुमारी शान्ता आपटे।

सामने ऐसी दौलत की कोई कीमत न जहाँ इन्सानियत भी न हो।

किसी फिल्म में कार्य करने से मैं यह देख लिया करती हूँ कि उस की कहानी का जीवन से कहाँ तक है ? यदि कहानी का जीवन से कोई नहीं है तो मैं ऐसी भूमिका में अभिनय करना पसन्द नहीं करती। मेरा सदा यह विश्वास रहा है कि मानव नवीन चिराग की रोशनी में विकास-मार्ग की अग्रसर नहीं हो सकता, जब तक कर्तव्य उसको आगे की ओर न बढ़ा मैं तो भाग्य को कोई चीज ही समझती—कर्तव्य में ही भाग्य छिपा है। वह लोग कायर हैं जो भाग्य सहारा लेते फिरते हैं। इसलिए मैंने तक किसी भी ऐसी फिल्म में काम किया जो इंसान को "भाग्यवादी" दे। यह मेरा अपना दृष्टिकोण है। मा को कर्तव्य-पथ से च्युत करनेवाले मुझे बिलकुल अच्छे नहीं लगते ? के दीपक को प्रज्वलित करनेवाले चित्र ही इंसान के गम को कम कर सकते ऐसे फिल्म ही मानव के "दुःखवाद" नष्ट करने में बम का काम करेंगे !

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षित)

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये
'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानु की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने श्रेय 'अंचल' को ही है।
—बी
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्वर्गीय बाबू भगवतीशरणसिंह

लेखक, श्री शङ्करदयाल श्रीवास्तव, एम० ए०

रायबहादुर बाबू भगवतीशरणसिंह का पार्थिव शरीर यद्यपि इस संसार में नहीं रहा किन्तु उन्होंने जन-कल्याण के लिए अपने जीवन में जो कुछ किया है, वह उनकी कीर्ति का स्मारक बना रहेगा। वे एक उदारचेता पुरुष थे। भारतीय सभ्यता, संस्कृति के उपासक थे और उनका रहन-सहन तथा वेश-भूषा सब सरल था।

प्रयाग के समीप आनापुर नाम की एक छोटी-सी रियासत है, जिसका शासन एक उच्च प्रतिष्ठित भूमिहार कुल के लोगों के हाथ में रहा है। इस कुल में बाबू देवकीनन्दनसिंह एक प्रसिद्ध शासक हो चुके हैं। प्रयाग ही नहीं, काशी तक में उनकी ख्याति फैली हुई थी। यह उस समय की बात है, जब अँगरेज लोग भारत में अपनी प्रभुता स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे थे। इसी कुल में बाबू भगवतीशरणसिंह का जन्म २१ सितम्बर १८८४ ई० को हुआ था। दुर्भाग्य से वे बाल्यावस्था में ही अपने पिता से वंचित हो गये, अतः उनकी शिक्षा-दीक्षा की ओर विधिवत् ध्यान नहीं दिया गया। फिर भी उन्होंने मकतब, संस्कृतपाठशाला और फिर गवर्नमेंट हाईस्कूल में कुछ शिक्षा प्राप्त की। यद्यपि कालेज की उच्च शिक्षा वे नहीं प्राप्त कर सके किन्तु शिक्षा के प्रति उनका बड़ा अनुराग था, और यह अनुराग जीवन भर बना रहा।

१९०१ ई० में बाबू भगवतीशरणसिंह का पाणिग्रहण-संस्कार गया के राजा बहादुर रामेश्वरप्रसादनारायणसिंह की ज्येष्ठ पुत्री के साथ सम्पन्न हुआ। महाराजा बनारस तथा महाराजा बेतिया भी उनके निकट के सम्बन्धी थे। इलाहाबाद ही नहीं गाजीपुर, बलिया तथा गया जिले में भी उनके पास अच्छी भू-सम्पत्ति थी। इसके अतिरिक्त बनारस में भी ऐतिहासिक महत्त्व का एक विशाल भवन है जो 'देवकीनंदनसिंह की हवेली' के नाम से प्रसिद्ध है। उनका सार्वजनिक जीवन एक प्रकार से बिहार में ही प्रारम्भ हुआ। वे स्थानीय बोर्ड गया के कुछ समय तक चेयरमैन थे। गया जिला बोर्ड में दो बार सरकार की तरफ़ से नामजद हुए थे और दो बार जनता ने उन्हें अपना प्रतिनिधि निर्वाचित करके भेजा। १० वर्ष से भी अधिक समय तक वे बिहार प्रान्तीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के एक सम्मानित सदस्य रहे। स्वयं एक रईस और तालुकेदार होने के नाते उन्होंने जमींदारों के हितों को अग्रसर करने का प्रयत्न किया और उनकी रक्षा के लिए बिल प्रस्तुत किये। जमींदारों का संगठन करने की आवश्यकता भी उन्हें प्रतीत हुई। १९२३ ई० में उन्होंने कतिपय अन्य व्यक्तियों के सहयोग से गया ज़िला जमींदार एसोसियेशन की स्थापना की। जिसके वे स्वयं बहुत दिनों तक सेक्रेटरी बने रहे। आगरा प्रान्तीय जमींदार एसोसियेशन की स्थापना के समय से ही उसके सदस्य रहे और इधर कई वर्षों से इस संस्था के अवैतनिक जनरल सेक्रेटरी भी रहे।

किन्तु जमींदार संस्थाओं से उनका यह घनिष्ठ सम्बन्ध देखकर यह न समझना चाहिए कि वे किसानों के प्रति अनुदार नीति बरतते थे। खेती की उन्नति तथा किसानों की सुविधा के लिए उन्होंने कुयें तथा पोखरे खुदवाये और इस काम में काफी धन खर्च किया। किसानों के स्वास्थ्य और सफाई की ओर भी उन्होंने समुचित ध्यान दिया। १५,००० रु० खर्च करके एक औषधालय स्थापित किया जिसका नाम 'बिशप आनापुर डिस्पेन्सरी' है। आनापुर ही नहीं पास-पड़ोस के ग्रामवासियों के लिए भी इससे बड़ी सुविधा हो गई है। इस औषधालय के आंशिक खर्च के लिए २५०० रु० वार्षिक आय की जायदाद भी उन्होंने वक्फ कर दी। स्त्रियों के लिए भी उन्होंने डाक्टरी सहायता पहुँचाने की व्यवस्था की और अपनी मृत्यु के कुछ ही समय पूर्व एक जनाना अस्पताल खोलने की अपनी योजना कार्यान्वित की। इस अस्पताल की स्थापना से स्त्रियों के लिए बड़ी सुविधा हो गई है।

शिक्षा-प्रचार की ओर भी उन्होंने समुचित ध्यान दिया था। हिन्दू विश्वविद्यालय को उन्होंने लगभग ७००) वार्षिक आय की जायदाद इस उद्देश्य के लिए दी कि विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जायँ। रायबहादुर बाबू भगवतीशरणसिंह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की कोर्ट के एक प्रतिष्ठित सदस्य थे।

उन्हें संस्कृत से भी बड़ा प्रेम था। अपनी रियासत के अन्दर शृंगवेरपुर में उन्होंने गंगा जी के सुरम्य तट पर एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की जिसका नाम अपने चाचा की स्मृति की रक्षा के निमित्त उन्होंने गौरीशंकर स्मारक पाठशाला रक्खा। पाठशाला-भवन के निर्माण में उन्होंने ६२००० रु० खर्च किया। उसके प्रबन्ध के लिए एक ट्रस्ट भी कायम किया और उसके निमित्त ५००० रु० वार्षिक आय की भी व्यवस्था की। इस पाठशाला में संस्कृत की शिक्षा देने के लिए योग्य अध्यापक रक्खे गये हैं। छात्रों को वजीफे भी दिये जाते हैं।

उनके विद्यानुराग का एक बड़ा प्रमाण उनका पुस्तकालय है जिसमें बहुत से उच्चकोटि के ग्रंथ वर्तमान हैं। यदि यह पुस्तकालय सार्वजनिक संस्था बना दी जाय तो वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है और एक उपयुक्त स्मारक भी हो सकता है।

लेडी हैलेट द्वारा अपनी रियासत आनापुर में जनाना अस्पताल का उद्घाटन कराने के कुछ ही समय बाद जब बाबू भगवतीशरणसिंह एक संस्कृत समिति की बैठक में सम्मिलित होने के लिए काशी जा रहे थे तब किसे मालूम था कि उनकी मृत्यु उन्हें विश्वनाथपुरी में ले जा रही है। उनके आकस्मिक निधन से न केवल उनके सगे-संबंधियों और आनापुर-निवासियों में बल्कि उनके मित्रों तथा परिचितों की विशाल मंडली में भी शोक छा गया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करे।

अलमोनियम के बटन

बहुत बड़ी तादाद में तुरन्त बिक्री के लिए तैयार हैं। पूरा स्टाक खरीदने वाले को पहले अवसर दिया जायगा। निम्नांकित पते पर पत्र-व्यवहार कीजिये।

रायको
१/३ ए, बीडन रो, कलकत्ता।

संपादक के नाम चिट्ठियां

'संस्कृत कालेज काशी की परीक्षायें

(श्री सम्पादक 'देशदूत')

भारतवर्ष में प्रान्तीय सरकारों-द्वारा संस्कृत की विभिन्न परीक्षायें होती हैं। किन्तु उन परीक्षाओं में गवर्नमेंट संस्कृत कालेज, काशी की परीक्षायें सर्वमान्य हैं। इसी कारण इन्हें, प्रान्तीय परीक्षायें होते हुए भी, अखिल भारतीय रूप प्राप्त है। इन परीक्षाओं में प्रतिवर्ष लगभग पन्द्रह हजार छात्र सम्मिलित होते हैं।

इस वर्ष इन परीक्षाओं में एक बहुत ही दुःखद घटना घटी है। इस वर्ष व्याकरण विषय के शास्त्री तथा आचार्य परीक्षाओं के अधिकांश प्रश्न-पत्र छात्रों को पूर्व ही से ज्ञात थे। मध्यमा तथा न्यायवेदान्त के शास्त्री-आचार्य परीक्षाओं के भी कुछ प्रश्न-पत्र ज्ञात थे। कुछ प्रश्न-पत्रों की सूचना तो किसी छात्र ने परीक्षा आरम्भ होने के १५ मिनट पूर्व अपने हाथ से लिखकर लिफाफे में बन्द कर संस्कृत कालेज के कई अध्यापकों को दी थी। छात्र के चले जाने के बाद जब अध्यापकों ने लिफाफे खोले, तो उनमें होनेवाली परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र निकले। यह सारी घटना रजिस्ट्रार महोदय को भी ज्ञात हो चुकी थी। परिणाम-स्वरूप व्याकरण शास्त्री तृतीय खंड का प्रथम तथा व्याकरणाचार्य द्वितीय खंड का द्वितीय प्रश्न-पत्र बदल दिया गया, किन्तु केवल काशी-केन्द्र में, लखनऊ आदि के केन्द्रों में नहीं। मेरी समझ में नहीं आया कि दो ही प्रश्न-पत्रों को क्यों बदला गया? सो भी केवल काशी-केन्द्र ही में क्यों? संस्कृत-कालेज की सरकारी परीक्षाओं की इस गड़बड़ी का उत्तरदायित्व किस पर है?

इस सम्बन्ध में मेरी प्रार्थना यह है कि शिक्षा-विभाग के अधिकारी इस घटना की जाँच के लिए परीक्षा-सम्बन्धी कार्यों के विशेषज्ञों की एक समिति नियुक्त करें, और उसकी रिपोर्ट के अनुसार इस घटना से सम्बन्ध रखनेवालों के प्रति उचित कार्यवाही करें।

प्रयाग —गोविन्दराव मराठे
२०-३-४५

* * *

ब्रज-साहित्य और संस्कृति के शोध का विशाल आयोजन

जिस ब्रज-भाषा-साहित्य पर हिन्दी भाषा का प्राचीन गौरव निर्भर है, उसका अल्प भाग ही अभी तक प्रकाश में आ पाया है। अधिकांश भाग अभी तक अनधिकारी व्यक्तियों के बस्तों में बँधा हुआ अथवा कागजों के पुराने ढेर में पड़ा हुआ प्रतिदिन दीमक, झींगुर और चूहों-द्वारा नष्ट हो रहा है। रद्दी कागजों की महँगाई ने मनों अमूल्य हस्त-लिखित ग्रन्थों को रद्दी के मोल बिकवाकर पंसारी और परचूनियों-द्वारा नष्ट करवा डाला। जिस दुर्लभ और अमूल्य साहित्य के प्रकाशित होने पर आज हिन्दी भाषा का सिर गौरव से कहीं अधिक ऊँचा हो जाता, वह हमारी असावधानी से प्रतिदिन नष्ट हो रहा है।

साहित्य-संहार के इस विनाशकारी व्यापार के अबाध गति से प्रतिदिन चलते रहने पर भी ब्रज-मण्डल के अनेक स्थानों में अब भी ब्रज-भाषा-साहित्य का अपार भण्डार भरा पड़ा है, जो अपने पुनरुद्धार की घड़ियाँ गिन रहा है। यदि हम चेष्टापूर्वक इन बिखरे हुए ग्रन्थ-रत्नों को एकत्रित कर सकें तो इनकी चमक-दमक से ब्रजभाषा के साहित्य-कोष की आभा सौ गुनी बढ़ जावेगी। किन्तु यह कार्य तब हो सकता है जब हम ब्रज-मण्डल के ग्राम-ग्राम ही नहीं बल्कि घर-घर में साहित्यिक अन्वेषण और शोध का कार्य आरम्भ कर दें। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा एवं आगरा-नागरी-प्रचारिणी सभा ने इस दिशा में कुछ कार्य किया था, और उसका सन्तोषजनक परिणाम भी हुआ, किन्तु वह उपयोगी कार्य न मालूम क्यों, कुछ दिन ही चलकर रुक गया। वास्तव में यह कार्य ब्रजमंडल की किसी प्रमुख साहित्यिक संस्था के लगातार एवं पूरी संलग्नता से करने का है, और अखिल हिन्दी-जगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि ब्रज-साहित्य एवं संस्कृति की शोध, रक्षा तथा गवेषणा के साथ उसके पुनरुत्थान की चेष्टा करनेवाली एक-मात्र प्रतिनिधि-संस्था 'ब्रज साहित्य-मंडल' ने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया है, और वह पूर्ण शक्ति और संगठन के साथ उसके सम्पादन की व्यवस्था करना चाहता है।

इस कार्य को सफलतापूर्वक चलाने के लिए हमको कतिपय साहित्यानुरागी विद्वान् सज्जनों की आवश्यकता है। जो साहित्यानुरागी सज्जन ब्रज-भाषा-साहित्य के शोध का कार्य करना चाहें, अथवा जो दानवीर सज्जन इस पवित्र कार्य में आर्थिक सहायता देना चाहें वे निम्नलिखित पते से पत्र-व्यवहार करें।

ब्रज-साहित्य-मंडल —प्रभुदयाल मीतल
मथुरा प्रधान मंत्री

* * *

श्री राजनारायण मिश्र स्मारक कोष

अगस्त सन् १९४२ के सिलसिले में संयुक्त-प्रान्त में सबसे पहले खीरी ज़िला के श्री राजनारायण मिश्र को लखनऊ जेल में ९ दिसम्बर सन् ४४ को फाँसी हुई। वह एक होनहार और वीर युवक थे। वह अपने अपूर्व बलिदान तथा अदम्य साहस से अमर हो गये हैं। शहीद राजनारायण का सारा परिवार देश पर कुर्बान हुआ है। उनके दो बड़े भाई आज जेल में हैं और २० वर्ष के लिए अपने बच्चों से अलग हुए हैं। सारे परिवार में स्त्रियों और बच्चों के अतिरिक्त कोई पुरुष नहीं है। हमारे मित्र श्री कुँवर खुशवक्तराय एम० एल० ए० तथा श्रीमती गोदावरी देवी ने 'श्री राजनारायण मिश्र स्मारक कोष' के लिए अपील निकाली थी। हमें खेद और लज्जा है कि अब तक कोष में बहुत कम धन आया है। मैं अपने तमाम देशवासियों से अपील करता हूँ कि वे दिल खोलकर दान दें।

वीर राजनारायण मिश्र की विधवा पत्नी और दो छोटे बच्चों की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध करना है। उनकी भतीजी का जिसके पिता पं० बाबूराम मिश्र २० वर्ष के लिए जेल में बन्द हैं, विवाह करना है। क्या ऐसे वीर के स्मारक के लिए पचीस हज़ार रुपया एकत्र होना कुछ बड़ी बात है? मुझे विश्वास है कि हमारे देशवासी दिल खोलकर दान देंगे। आजादी के दीवाने युवक गाँव-गाँव, नगर-नगर में धन-संग्रह कार्य में जुट जायेंगे।

लखीमपुर—वंशीधर मिश्र एम० एल० ए०
(खीरी) ह्विप, यू० पी० लेजिस्लेटिव कांग्रेस पार्टी

भारत में कुछ विचित्र विवाह-प्रथायें

नये युग में भी कुछ पुराने मनोरंजक रीति-रिवाजों का लेखा

लेखक, श्री वंशीधर मिश्र एम० एल० ए०

भारत में पश्चिमी वातावरण के प्रभाव से सामाजिक रीति-रिवाजों में युगान्तरवादी परिवर्तन हुए हैं फिर भी विवाह सम्बन्धी ऐसे रीति रिवाज आज भी प्रचलित हैं जो अत्यन्त मनोरंजक और विचित्र हैं। मिश्र जी ने जिसका इस मनोरंजक लेख में रोचक वर्णन किया है।

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और राष्ट्रकर्मी पंडित वंशीधर मिश्र एम० एल० ए०।

पंजाब के उच्चवंशीय हिन्दुओं में पति के नववधू के कमरे में जाने पर दरवाजे पर चलनी टँगी मिलती है। वह पत्नी के माता-पिता द्वारा टाँगी जाती है और यह प्रकट करती है कि वधू में चलनी के छिद्रों के बराबर दोष है। पति सदैव अपने पास लोहे का एक अस्त्र दुष्ट आत्माओं को भगाने के लिए रखता है। वह उससे चलनी को काट देता है तथा दूर फेंक देता है और यह प्रकट करता है कि वह नववधू को उसके दोषों के साथ ग्रहण करने को उद्यत है। वह चलनी के छिद्रों के बराबर दोषों की परवाह नहीं करता है।

एक और रस्म प्रचलित है जो उत्तर-भारत के अन्य स्थानों में भी प्रचलित है। विवाह सम्पादन होने के पूर्व वर की माता कुएँ पर जाकर कुआँ में पैर लटका कर बैठ जाती है और वह जाकर माता को मना लाता है। यह रस्म यह प्रकट करती है कि वधू के आने पर घर से माता का शासन जाता रहेगा और माता कुएँ में गिर पड़ने का भाव प्रकट करती है। वर उसको आश्वासन देकर घर वापस लाता है।

कहीं-कहीं हिन्दू पुरुष तीसरा विवाह करना बड़ा अशुभ मानते हैं। यदि उसे तीसरा विवाह करना होता है तो वह वृक्ष के साथ पहले विवाह करता है। इस प्रकार उसकी वह शादी चौथा विवाह समझा जाता है।

एक धनी हिन्दू, जिसके सन्तान नहीं होती है, किसी एक ब्राह्मण का विवाह तुलसी-वृक्ष से करा देता है। वह इस विवाह को धूम-धाम से और व्यय करके कराता है। इस विवाह में सब रस्में पूरी की जाती हैं। तुलसी-वृक्ष को पालकी में बिठाकर और दहेज के साथ बिदाई दी जाती है। वह धनी पुरुष जन्म भर उस ब्राह्मण को अपना दामाद मानता है।

* * *

आदिम-जातियों में विशेष उत्सवों पर युवक और युवती एक साथ रात भर सुबह तक नृत्य करते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि युवक अपनी प्रेयसी युवती का एकाएक हाथ पकड़ कर भाग खड़ा होता है और दो-तीन दिन दोनों गायब रहते हैं। दोनों के माता-पिताओं से कुछ छिपा नहीं होता पर दोनों के भागने की खबर पाकर युवती के माता-पिता युवक के माता-पिता के घर जाते हैं और अपना रोष प्रकट करते हैं। पर बाद को दहेज तय हो जाता है और फिर विवाह हो जाता है।

इन लोगों में एक और विचित्र प्रथा प्रचलित है। वन में अनेक युवतियाँ एकत्र होती हैं। युवक वहाँ जाता है और वह एक युवती को, जिसे वह पहले ही से पसन्द कर चुका होता है, लेकर भाग खड़ा होता है। अन्य युवतियाँ हो-हल्ला मचाती हैं और गाँव में जाकर समाचार देती हैं कि एक बाघ उनमें से एक युवती को उठा ले गया। वह गाँव के युवकों से उसको छुड़ा लाने की अपील करती हैं। युवकगण तुरन्त उसकी खोज में निकल पड़ते हैं और कुछ पता न पाकर वह युवक के पिता के घर पर जाकर शोर-गुल करते हैं और बदले रक्त में माँगते हैं। यह दृश्य नाटक का रूप ले लेता है। माता-पिता कुछ देर बाद अपराधी होना स्वीकार कर लेते हैं और क्षतिपूर्ति का धन देने केलिये राजी हो जाते हैं पर विवाह हो जाने को आज्ञा चाहते हैं। यह स्वीकार कर लिया जाता है, फिर नृत्य, गान और भोजन होता है। युवती का युवक के साथ भागना गुप्त नहीं होता। यह तो विवाह करने की एक प्रकार की रीति है।

* * *

वाल्मीकि लोगों में वधू को लातें मारने की अद्भुत प्रथा है। जब वर के पक्ष के लोग वधू के घर पर आते हैं और बरामदे में बैठ जाते हैं तब वर के गले में पायजामा डालकर उसे अन्दर खींच लिया जाता है। घर के अन्दर वर पर मार पड़ती है और कभी-कभी उसके जूते भी लगाये जाते हैं। वर सहायता के लिए चिल्लाता है और बाहर बराती शोर करते हैं। तब वर को बाहर जाने दिया जाता है। फिर सात भाँवरें पड़ती हैं। वर-वधू के आगे सात बार घूमता है और वधू वर के चारों ओर सात बार घूमती है। फिर वर वधू पर अपना सिर रखता है और वधू वर पर अपना सिर रखती है। वर वधू के पीठ में लात मारता है और फिर अन्य लोग भी लात मारते हैं। वधू शाल या पगड़ी को अपने गले में बाँधती है और यह प्रकट करती है कि वह जन्म भर उसकी वन्दिनी रहेगी। वधू गाती भी है—मैं खटब्बा तुम खेये, मेरे गलो पटका लहेन। (मैं कमाऊँगी और तुम खाना। मेरे गले से पगड़ी हटा लो) फिर वधू पगड़ी खोलती है और बाद को वह पगड़ी वर के शाल में बाँध दी जाती है कि वह दोनों एक हो गये।

* * *

कई जातियों में वर को परेशान करने की प्रथा प्रचलित है। जब वर के पक्ष के लोग वधू के पिता के घर आते हैं, तो सड़क के दोनों ओर युवतियों की पाँति छड़ी लेकर खड़ी होती है। वर घोड़े पर सवार आता है और युवतियाँ उसे छड़ियों से पीटने लगती हैं। इस बात का अवश्य वे ख्याल रखती हैं कि वर के कहीं अधिक चोट न लग जाय। यदि इस मार-पीट के बीच में वर की पगड़ी गिर पड़ती है तो अपशकुन माना जाता है।

विवाह होने के समय वधू-पक्ष की कुछ युवतियाँ वर के पीछे बैठती हैं और वर की पीठ में बराबर मार लगाती हैं या उसकी पीठ में सुइयाँ चुभोती रहती हैं। कुछ युवतियाँ उसके सिर में सूत लपेटती रहती हैं। कोई शरारती युवती लाल वस्त्र में जूता लपेटकर एक कोने में रख देती है और विवाह हो जाने के बाद वर से देवता को प्रणाम करने या धर्म-पुस्तक को चूमने को कहती है। यदि वर ऐसा करता है तो जूता खोल कर उसका खूब मजाक उड़ाया जाता है।

गाँवों में वर और वधू दोनों को नारियल खाने को दिया जाता है। जब वे उसका गुदा खा चुकते हैं तो उनसे एक दूसरे पर छिलका फेंकने को कहा जाता है। यदि वर शर्मीला होता है और छिलका फेंककर वधू के नहीं मारता है तो युवति उसे घेरकर पीटती हैं।

श्री दमयंती खन्ना, युक्तप्रांत की प्रसिद्ध महिला-रत्न हैं।

* * *

ओटो लोगों में सबसे बड़ी लड़की विवाह में मा के दाहिने हाथ की ती और चौथी अँगुलियों के जोड़ों का छे होता है। गाँव का लोहार छेदन-कार्य क है। यदि वधू की माँ जीवित नहीं होती है तो वर की माता को यह यातना भुगतनी हो है। यदि उसकी अँगुलियों का छेदन हो चु होता है तो फिर दुबारा छेदन-क्रिया नहीं जाती है। वधू के बाहुओं पर गूढ़ गु अंकित करने की रीति है, जिससे वह शु हुई मानी जाती है। गुरू के गृह प विवाह के एक सप्ताहपूर्व, मुद्रा अंकित जाती है। गुरु को बुलाकर अपने घर भी मुद्रा अंकित करने की रीति है। गुरू के अतिथ्य को सेवा का भार उठा होता है।

गुरु के पास जो मुद्रा होती है मनोहर और सुन्दर होती है। उस कारू का काम होता है। गुरु उसे एक दो बार गर्म करके वधू की बाहुओं अंकित कर देता है। और इस रस्म के हो जाने पर गुरु वधू को एक नारि भेंट करता है।

हिन्दी साहित्य
बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सब का इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हिन्दी प्रकृति-मंडल

लेखक, डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, डी० लिट्०

हिन्दी भाषा के माध्यम से प्रकृति-मंडलों की स्थापना हमारे देश के लिये अत्यन्त आवश्यक है। सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और प्राकृतिक अध्ययन की सामग्री का संग्रहालय राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इस कमी की पूर्ति के लिये प्रकृति-मंडल की स्थापना हुई है। डाक्टर अग्रवाल ने इस लेख में प्रकृति-मंडलों की स्थापना का महत्त्व बतलाया है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कविवर श्री मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी प्रकृति मंडल के सभापति हैं।

भारतवर्ष विशाल देश है। यहाँ देखने और प्रशंसा करने की अनन्त प्राकृतिक सामग्री चारों ओर बिखरी हुई है। प्रकृति के वरदानों से जैसा यह देश भरपूर है वैसा शायद ही और कोई हो। प्रकृति की समृद्धि ने देशवासियों के जीवन पर भी गहरा प्रभाव डाला है। भारतवासी सच्चे अर्थों में प्रकृति के सखा हैं। प्रकृति के साथ तन्मय होकर ही उन्होंने अपनी सभ्यता का विकास किया है। प्रकृति के प्राणवायु से हमारे साहित्य को भी पोषण मिला है। भारतीय जीवन और साहित्य में खुले आकाश और स्वच्छन्द वायु के लिए सदा से एक अमिट लालसा ओत-प्रोत है। प्रतिवर्ष आनेवाले पर्वों और उत्सवों में तथा ६ ऋतुओं के साथ रूप-परिवर्तन करनेवाले संवत्सर-चक्र में जो घनिष्ट सम्बन्ध है, उसका विचार भारतीय जीवन-शास्त्र के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करता है। ऐसा जान पड़ता है कि मानव के चैतन्य में जागरण का अलख सदा बनाये रखने का सबसे बड़ा मूलमन्त्र जो यहाँ के लोगों के हाथ लगा, वह प्रकृति का सान्निध्य ही था। बर्फ से ढकी हुई महान् पर्वतों की चोटियों पर तीर्थों की कल्पना, वन के भीतर देव-स्थानों का निर्माण, वन्य पशुओं से भरे हुए आश्रमों की कल्पना, पर्वतों के झरने, कुंड, जलाशय और जलधाराओं के लिये प्रेम, फूलों से हँसनेवाली लताओं के साथ एवं मंजरी के भार से झुके हुए वृक्षों के नीचे आमोद-प्रमोद का विधान, इन नाना रूपों में प्रकृति की उपासना करना जीवन का लक्ष्य था।

प्रकृति के उदार प्रांगण में आज भी पहले जैसा ही उल्लास भरा हुआ है। वन-देवी की रमणीयता नित्य है। उसके शृङ्गार की वर्णमाला धरती आकाश के विपुल अन्तराल में आज भी शतशः महाकाव्यों का सँजोआ सजा रही है। अपने नवीन जीवन के लिए हमें प्रकृति से पुनः परिचित होने की आवश्यकता आ पड़ी है। यंत्रयुग की निष्प्राणकारिणी जीवन-पद्धति से आत्म-रक्षा करने का एकमात्र उपाय प्रकृति की शरण में जाना है। प्रकृति परिचय की नूतन परिपाटी को लोकव्यापी बनाने के इस समय अनेक प्रयत्न होने चाहिए।

इस प्रकार के उद्देश्य को लेकर बम्बई में बाम्बे नैचुरल हिस्ट्री सोसायटी अनेक वर्षों से कार्य कर रही है। भारतीय पक्षी और पशुजगत् के अध्ययन के लिए इस संस्था की ओर से अँगरेजी माध्यम से बहुत कार्य हुआ है। परन्तु जब तक भारतीय भाषाओं के द्वारा इस प्रकार का अध्ययन-क्रम जारी न होगा तब तक शत-कोटि भारतीय जन के लिए वह ज्ञान सुलभ न होगा। सौभाग्य से चार वर्ष पहले गुजरात प्रकृति-मंडल अहमदाबाद का संगठन किया गया था, जिसका उद्देश्य गुजरात की पशु-पक्षी-वनस्पति संपत्ति और भूगर्भ-रचना का अध्ययन करना है। इस संस्था के कार्यकर्ता बड़े उद्योगी और लगन के सच्चे हैं। उन्होंने गुजरात के सभी वैज्ञानिकों का सहयोग अपनी मातृभाषा के लिए प्राप्त कर लिया है। मंडल की ओर से अहमदाबाद में एक संग्रहालय स्थापित करने की योजना भी बन चुकी है। मंडल के जन्म के साथ ही "प्रकृति" नामक एक अति सुन्दर त्रैमासिक गुजराती पत्रिका का प्रकाशन भी हो रहा है। इसके द्वारा वनस्पति-शास्त्र, जन्तु-शास्त्र और भूस्तरशास्त्र-सम्बन्धी अनेक उपयोगी लेख प्रकाशित हुए हैं जिनमें अँगरेजी और लैटिन के पारिभाषिक शब्दों के स्थान पर गुजराती पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग विशेष बात है। संस्कृत की सहायता से वैज्ञानिक शब्दावली का निर्माण भारतीय भाषाओं के लिए बहुत सुन्दर है। आशा है इसी क्रम से गुजराती में प्रकृति-सम्बन्धी वैज्ञानिक साहित्य शीघ्र सुलभ हो सकेगा।

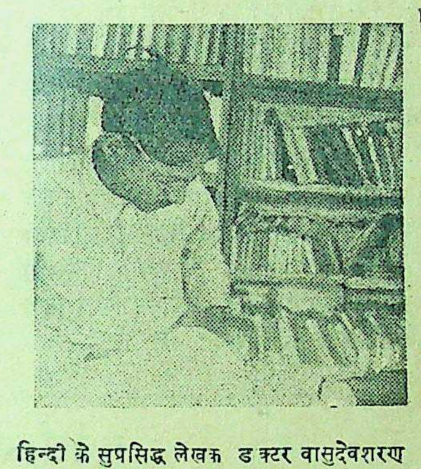

हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक डाक्टर वासुदेवशरण अग्रवाल एम० ए० डी० लिट् मंडल के मन्त्री हैं।

हिन्दी-भाषा के माध्यम से प्राकृतिक अध्ययन और विवेचन का कार्य होना और भी अधिक आवश्यक है। हिन्दी न केवल मध्य देश की साहित्यिक भाषा और जनता की भाषा है, किन्तु राष्ट्रीय ज्ञान वितरण का एकमात्र माध्यम भी हिन्दी ही है। हिन्दी के द्वारा कही हुई बात अधिक से अधिक जन-संख्या के पास तक पहुँचती है। हिन्दी भाषा में प्रकृति के ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन प्रस्तुत करने के लिए रुचि उत्पन्न करने के लिए हिन्दी प्रकृति-मंडल की स्थापना लखनऊ में हुई है। इसके स्थापक और मंत्री श्री कुँवर सुरेशसिंह जी कालाकाँकर हैं, जिन्होंने हिन्दी में इस प्रकार के साहित्य का सूत्रपात भी किया है। सौभाग्य से लखनऊ-विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र-विभाग के अध्यक्ष डाक्टर कर्मनरायण ज' बाहल ने मंडल का सभापति पद स्वीकार कर लिया है। बाहल जी संस्कृत के भी अच्छे विद्वान् और हिन्दी के योग्य लेखक हैं। उनके हिन्दी लेख "विज्ञान" पत्र में प्रकाशित होते रहे हैं। जगत्-प्रसिद्ध वैज्ञानिक श्री डाक्टर बीरबल सहानी भी मंडल के सदस्य बने हैं। प्रकाशन की सुविधा मिलने पर मंडल की अपनी पत्रिका और पुस्तकों का प्रकाशन भी आरम्भ होने की योजना है। आशा है हिन्दी प्रकृति-मंडल के द्वारा भारतीय विशेषतः उत्तर-भारत की प्रकृति-रचना और प्राणिजीवन का व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया जायगा।

भारतवर्ष में लगभग ढाई हजार तरह की चिड़ियाँ होती हैं। कहा जाता है कि उनका पूरा संग्रह केवल ब्रिटिश म्यूजियम में है। जूलाजिकल सर्वे आफ इंडिया में केवल एक पक्षी-विशेषज्ञ श्री डा० रुनवाल हैं। हमारे देश में और प्रत्येक प्रान्त में पक्षी-विशेषज्ञों की संख्या बढ़नी चाहिए। अकेले संयुक्तप्रान्त में ऋतु-ऋतु में विहार करनेवाले पक्षियों की लगभग सात सौ कोटियाँ हैं। उनका नाम धाम के साथ पूरा परिचयात्मक संग्रह अवश्य एक स्थान में होना चाहिए। पुराने समय में पक्षियों के साथ हमें कितनी रुचि थी, इसका कुछ हाल शतपथ ब्राह्मण की एक बात से मालूम होता है। अश्वमेध यज्ञ के समय यजमान राजा का राष्ट्रीय जीवन के विविध अंगों के साथ परिचय कराने के लिए कई दिनों तक व्याख्यान और विचार-विमर्श की एक सभा लगा करती थी जिसे "परिप्लव आख्यान" कहते थे। यज्ञ का अध्वर्यु होता से कहता था कि यजमान के साथ भिन्न-भिन्न प्राणियों का परिचय कराओ (भूतानि आचक्ष्व) और तदनुसार होता राजा के सामने भूतों का वर्णन करता था। (भूतेष्विमं यजमान-मध्यूहति)। इस कार्य के लिए भिन्न-भिन्न शास्त्रों के जाननेवाले विशेषज्ञ विद्वान् 'परिप्लव आख्यान" में भाग लेते थे। सभा के नवें दिन राजा के सामने पक्षियों का परिचय दिया जाता था। पक्षियों का भी एक जगत है। उसकी हित-रक्षा का भार भी तो राजा पर ही है। पक्षि-संसार में गरुड़ सम्राट् है, पक्षी उसकी प्रजायें हैं। दोनों राजा के राज्य में है, दोनों के हितों का उत्तरदायित्व अश्वमेध में दीक्षित राजा के ऊपर आ जाता है। नाना भाँति के पक्षी और पक्षियों के विशेषज्ञ इस सभा में बुलाये जाते थे (वयांसि च वायोविद्यिकाश्चोपसमेता भवन्ति, शतपथ, १३।४।३।१३)। पक्षि-विशेषज्ञ के लिए जिस प्रकार अँगरेजी में "आरनीथालाजिस्ट" (Ornithologist) शब्द है, उसी प्रकार वैदिक भाषा का पुराना शब्द "वायोविद्यिक" है अर्थात् 'वयस' (पक्षी) की विद्या जाननेवाला। व्याकरण-शास्त्र में "वायोविद्यिक" का ही रूपान्तर वायसविद्यिक है जिसका उल्लेख महाभाष्यकार ने पाणिनि सूत्र ४।२।६० के एक वार्तिक के उदाहरण में किया है, जिसके द्वारा विद्याविशेष के अध्ययय करनेवाले या जानने वाले का नामकरण किया जाता था। संस्कृत में पक्षी के लिए 'वि' या वयस शब्द है।

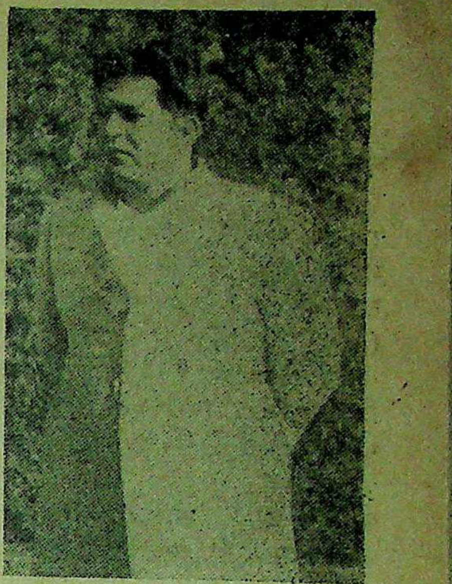

हिन्दी प्रकृति-मंडल के संस्थापक कुँवर सुरेशसिंह कालाकांकर (अवध)

उसी से लैटिन भाषा का Avi (अवि) शब्द है जिसका अर्थ है पक्षी। इसी का बहुवचन Aves संस्कृत 'वयांसि' का पर्याय है। संस्कृत वायस् भी वयस् से ही निकला है। वयस का काक-परिवार (Passers) पक्षिजगत के वैज्ञानिक वर्गीकरण में सर्वप्रथम आता है।

अर्वाचीन भारत के लिए प्राचीन "वायोविद्यिक" आचार्यों के बहुसंख्यक नवावतारों की आवश्यकता है! सुनहली बूँदों से तारकित पंखोंवाले सुन्दर पक्षियों का अथवा गरुड़दुर्धर्ष शक्ति से झपट्टा मारनेवाले आकाशचारी विहंगों का नया परिचय और नया माहात्म्य सुनने की किसे इच्छा न होगी? हमारे देश के जंगल किसी समय सिंह और व्याघ्रों से आबाद थे। दुर्भाग्य से आज भारतीय सिंह का स्वदेश में नामशेष हो गया है। लम्बी आयालों से मंडित मुखाकृतिवाले भारतीय केशरी के साक्षात् दर्शन आज भूतकाल की घटना बन जाना चाहती है। काठियावाड़ के तिकोने भू-प्रदेश के दक्षिणी भाग में करीब सौ मील का एक पहाड़ी जंगल "गीर-जंगल" के नाम से प्रसिद्ध है। केवल उसमें ठेठ बब्बर केसरी के कुछ नमूने जीवित रह गये हैं। कहा जाता है कि उनकी संख्या सौ से ज्यादा न होगी। शोक है कि भारतीय प्रकृति के एक उत्कृष्टमय प्राणी का संहार अनाड़ी मनुष्य ने स्वयं अपने हाथों कर डाला है। हमें सावधान करनेवाले जीते-जागते प्रकृति-मंडलों का जन्म आज पचास वर्ष पिछड़ कर हो रहा है।

नये संस्करण
अभी अभी प्रकाशित हुए हैं
अब हम आपको ये पुस्तकें भेज सकते हैं :—
भैरवी—तीसरा संस्करण—इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनायें, असली आर्ट पेपर में चित्र, बहुत अच्छी छँपाई और रैपर। मू० २॥=)
वासवदत्ता—तीसरा संस्करण—बहुत अच्छे काग़ज़ में स्वच्छ प्रकाशन, चित्र आर्ट पेपर में। मू० २)
कुणाल—तीसरा संस्करण—असाधारण संस्करण—मोनो टाइप में। पुस्तकालयों के लिए। मू० १।)
मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

संवाददाताओं के पत्र

जौनपुर में अखिल भारतीय क्षत्रिय-महासभा का ४५ वाँ वार्षिक अधिवेशन आगामी ३१ मार्च तथा १ और २ अप्रैल सन् ४५ शनिवार, रविवार, सोमवार को श्रीमान् महाराज बहादुर साहब कामाख्या नारायणसिंहजूदेव रामगढ़ पद्मा राज्य (बिहार) के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ होने जा रहा है। क्षत्रिय जाति के लिए यह अवसर किसी पुण्य-पर्व से कम महत्त्व का नहीं है। हम क्षत्रिय महासभा के तत्त्वावधान में एकत्र होकर विचार करेंगे कि देश को तथा जाति को उन्नति के उच्च शिखर पर आसीन करने के लिए क्या करें। देश के प्रत्येक भाग से प्रसिद्ध जातीय नेता, नृपति, विद्वान्, साहित्यकार, जाति-सेवक और उपदेशक पधार रहे हैं।

निवेदक :—

—(कुँवर) श्रीपालसिंह सिङ्गरामऊ स्टेट, लक्ष्मणसिंह कुद्दूपुर, उमाशंकरसिंह वकील, चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड।

* * *

मुजफ्फरपुर (बिहार) सुहृद-संघ के सदस्यों की एक बैठक श्रीयुत केदारनाथ महथा के सभापतित्व में हुई, जिसमें निश्चय हुआ कि अखिल भारतीय रेडियो की भाषा के संबंध में सरकार के हाल के असन्तोषजनक निर्णय पर प्रान्त-व्यापी आन्दोलन किया जाय। पटना-विश्वविद्यालय की मैट्रिकुलेशन कक्षाओं तक संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य कर दी जाय। स्थानीय जी० बी० बी० कालेज की बी० ए० कक्षा में हिन्दी ऑनर्स की पढ़ाई की व्यवस्था करने के लिए संघ के सदस्यों का एक डेपुटेशन पटना-विश्वविद्यालय के वर्तमान वाइस-चान्सलर मिलना चाहिए। सुहृद संघ के संरक्षक लेफ्टिनेंट कर्नल श्री चन्द्रेश्वरप्रसादनारायण सिंह, एम० ए०, एम० एल० ए०, सी० आई० ई० के वाइस-चान्सलर पटना विश्वविद्यालय के पद की नियुक्ति के लिए आगामी २ अप्रैल को संघ के सदस्यों की ओर से मान-पत्र दिया जाय।

—नीतीश्वरप्रसादसिंह

* * *

वैशाली में वैशाली-महोत्सव के अवसर पर १ अप्रैल, १९४५ को एक वृहद् कवि-सम्मेलन करने का आयोजन किया गया है, जिसके स्वागताध्यक्ष श्रीयुत उमाशंकरप्रसाद बी० एस-सी० तथा संयोजक श्रीयुत नीतीश्वरप्रसादसिंह निर्वाचित हुए हैं। कवियों तथा कविता-प्रेमियों से निवेदन है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस सुअवसर पर पधारने की कृपा करें। —संवाददाता

* * *

कालसी अशोक आश्रम से श्री बुद्धिप्रकाश फरासी लिखते हैं कि पत्रों में आश्रम में महात्मा गान्धी जी के आने का समाचार प्रकाशित हुआ था, पर गान्धी जी न आ सकेंगे, क्योंकि आप दिल्ली नहीं आ सकेंगे। महात्मा गान्धी जी के प्राइवेट सेक्रेटरी नरहरी पारीख जी ने लिखा था—"बापू जी ऐसा ही सोच रहे हैं कि अगर दिल्ली जाऊँगा तो जरूर कालसी भी जाऊँगा।"

* * *

अकोला मारवाड़ी सेवा-सदन का तृतीय वार्षिकोत्सव तारीख २४ २५ मार्च, १९४५ को कामर्स कालेज, वर्धा के प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण जी अग्रवाल के सभापतित्व में समारोहपूर्वक समाप्त हो गया। —संवाददाता

* * *

आगरा भारतीय आयुर्वेद विद्यालय की परीक्षाएँ १७ अप्रैल सन् १९४५ ई० से होंगी। ५ से अधिक छात्र होने पर नवीन केन्द्र हो सकेगा। —रजिस्ट्रार

बर्मा की आजकल की लड़ाई

(पेज ७ का शेष)

२५ रु० है जो लड़ाई से पहले ४ आने में मिलती थी। श्वेबो से सेगांग तक बस सीट के लिए १०० रु० किराया देना पड़ता था।

जापानी शासन में अन्न की कठिनाई नहीं हुई। फलतः यहाँ की जनता स्वस्थ और प्रसन्न है। जापानियों ने धान की पैदावार का अपने लिए दस प्रतिशत लिया था। दाम उन्होंने कागजी मुद्रा में उदारता से दिया। धान काटने के लिए मजदूरों को प्रतिदिन मजदूरी १ रु० ८ आना दी जाती थी। लड़ाई से पहले श्वेबो जिला चावल भारत को निर्यात करता था। जनता को पकाने का तेल और वस्त्र नहीं मिलते थे। श्वेबो के प्रत्येक घर में इस समय चर्खा दिखाई देता है। साबुन का भी अभाव है। श्वेबो की आबादी २०,००० है। इसकी समृद्धि और हरियाली का श्रेय सिंचाई की उत्तम प्रणाली को है। वर्षा वैसे साल में ५० इंच से भी कम होती है। १०० साल पहले बर्मा के राजाओं ने सिंचाई की व्यवस्था की थी। मू नदी पर बाँध बाँधकर सिंचाई की व्यवस्था को सुधारा और इस कारण श्वेबो नहर और ये-चू नहर में पानी की कमी नहीं रही। श्वेबो नहर ६० मील लम्बी है। इन नहरों से १००० वर्ग मील की सिंचाई होती है। जापानियों ने यहाँ के लोगों के आन्तरिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं किया।

इरावदी के पार

इरावदी के और उत्तर में नदी के पश्चिमी तीर पर जापानी प्रतिरोध कमजोर करके हवाई सेना की सहायता से काबवंट को विजय किया। इरावदी के पूर्व में माण्डले से ४८ मील ऊपर सिंग्र में पुल-चौकी कायम की। सिंग्र में पुल-चौकी बन जाने से जापानी योजना उलट-पुलट गई। जापानी रक्षा-योजना श्वेली नदी के संगम से दक्षिण में इरावदी के पूर्वीय तट की रक्षा करने की थी, जैसे नाजी योजना राइन और ओडर के पूर्वीय तट की रक्षा करने की है। जापानियों ने सिंग्र में पुल-चौकी न बनने देने का भारी प्रयत्न किया। वे टैंक भी लाये। पर सब व्यर्थ हो गया। दोनों का अब विस्तार हो रहा है और उनके मिल जाने का जापानी सेना पर काल जैसा असर होगा।

पियर पर्वत की लड़ाई

माण्डले की लड़ाई की भयानकता का अन्दाज पियर पर्वत पर हुई लड़ाई से लगाया जा सकता है। पर्ल हिल माण्डले से उत्तर में ५० मील परे इरावदी नदी के तट पर है। कूमियांग की पुल चौकी से दक्षिण में दो मील दूर है। अमरीकी संवाददाता एल्फ्रेड वैग का कहना है कि बर्मा की की सारी लड़ाई पियर पर्वत पर जैसी हुई वैसी भयंकर लड़ाई और कहीं नहीं हुई। यहाँ सेना को बिस्कुट, मुरब्बा और चाय पर रहना पड़ा। जार, राजदूत सिख सब यहाँ थे। तोपची थे, मैशीन-गनर थे, पहाड़ी तोपखाना था और हवाई तोपें थीं। इनके पास अपने पैर अड़ाने की भी जगह नहीं थी। ४० गज चौड़े और ३०० गज लम्बे शिलामय किले में दफनाते थे। पियर पर्वत पर पानी नहीं। अधिकांश राशन विमानों-द्वारा पहुँचाया जाता था। रसोई बनाने का मौका नहीं था। कोई पेड़ नहीं और छाया का नामों-निशान तक नहीं। दिन में चूने के पत्थर अत्यधिक गरम हो जाते हैं और रात को ठण्डे। इतना ही शायद काफी न था। जापानी मोर्चा और बर्मा की गोलाबारी अलम आग प्रज्वलित रखती थी।

पियर पर्वत दोनों के वास्ते आवश्यक था। मित्र-सेना इस पहाड़ी पर से नदी के दोनों ओर जापानियों के विरुद्ध आक्रमण कर सकती है। नदी की इस ओर माण्डले की तरफ बढ़ने के लिए इसको हाथ में रखना जरूरी था। पियर पर्वत के आगे जापानियों ने डाय नष्ट कर दिये थे, और झीलों की माला को एक दूसरे से मिलाकर पुल-चौकी पर मित्र सेना के वास्ते छोटा मोटा समुद्र बना दिया और मित्र-सेना के वास्ते एक बड़ी पानी की बाधा खड़ी कर दी थी। डाइको को मोड़कर जापानियों ने मीलों तक धान के खेतों को जलमग्न कर दिया। उसको पार करने का अर्थ था कि जापानी तोपों के मुँह में से मित्रसेना पहले गुजरे। पानी की बाधा के बाद जापानी तोपों की संकीर्ण पाँत थी जहाँ से वे पियर हिल पर बराबर गोलाबारी कर रहे थे। जापानी पियर हिल को पाने के लिए इस वास्ते उत्सुक थे, जिससे मित्रसेना कूमियांग के पास पार करे और वे अपने तोपखाने की स्थिति सुधार लें, क्योंकि पियर हिल हमारे उतरने के स्थान को छिपा लेता था। भारतीय सेना ने इसलिए अपनी के वास्ते पत्थर की गहरी खाई बना

जापानी यहाँ प्राणपन से लड़े। समय एक पलटन में से केवल ८ बच रहे थे और जापानी कुछ स्थान में भी सफल हुए थे। रात में फ्लैंकि हमला करके प्रभाव से पहले पहले स्थान को वापस लिया। जापानी में हाथियों का भी व्यवहार करते हाथियों पर वे रेलरोड स्लीपर ले थे। मोटरें वे रात में ही चलाते हैं।

उत्तरीय मोर्चा

उत्तरीय बर्मा की लड़ाई अ सेनानायक जनरल डान सुलतान के में लड़ी जा रही है। १९४४ के अन इरावदी के दोनों तटों के साथ साथ से ३६वीं डिवीजन बढ़ी और इरावदी श्वेली नदी से बने त्रिभुज प्रदेश में इलाके तक बढ़ती गई। इससे पूर्व में श्वेली के उत्तर में टोंग्वा पर चीनी रुकी पड़ी थी। अब चीनी सेना मा नामखान से ४ मील दूर थी। श्वेली उसको अलग कर रही थी। चीनी की ओर उन्होंने लोइविम ले लि ब्रिटिश सेना मिटसन तक पहुँच गई चीनी सेना ने मोलो के समीप नदी किया। इससे पूर्व में स्थिति तेजी सुधरी। चीनी सेना ने नामखाम और पूर्व में चीन से आई सेना भी वानटिंग से चल कर गई। इन दोनों ने मिलकर मांगयू अधिकार किया और लेडोरोड को रोड से पूर्ण रूप से मिला दिया। एक दस्ते ने लाशियो से ७४ मील दूर हो एक पथ-बाधा स्थापित की। अब ला भी चीनी सेना के अधिकार में आ है। पर इस ७४ मील की लड़ाई कहानी माण्डले विजय के साथ साथ जानी अधिक उचित होगी।

तुलसी-रत्नावली

सं०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधा मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उप का लाभ सब को बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर कर लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रका किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य सकलित हैं। इस एक पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १।) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

जिन्दगी भर पेंशन लीजिए

एन्यूटी सर्टेन बाँड

"स्वदेशी" की अपूर्व योजना

इस योजना में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित हो सकते हैं।
आप भी इस योजना से लाभ उठाइए।
ब्याज ४½ प्रतिशत तक मिल जाता है।

स्वदेशी बीमा कम्पनी लि०, आगरा।

ने इसलिए अपनी
गहरी खाई
माणपन से लड़े।
से केवल ८
पानी कुछ स्थान
। रात में फ्लेमि
से पहले पहले
तया। जापानी
व्यवहार करते
रोड स्लीपर
ही चलाते हैं।
य मोर्चा
की लड़ाई
ान सुलतान के
१९४४ के अन
ों के साथ साथ
ढ़ी और इरावदी
भुज प्रदेश में
ई। इससे पूर्व में
स्वा पर चीनी
चीनी सेना मार्च
दूर थी। श्वेली
ही थी। चीनी
लोइन्विम ले लि
तक पहुँच गई
के समीप नदी
में स्थिति
ने नामखाम
न से आई
से चल कर
मिलकर मांगयु
र लेडोरोड को
मला दिया। एक
७४ मील दूर हो
त की। अब ला
अधिकार में आ
ील की लड़ाई
य के साथ साथ
होगी।

न करना साधा
के अमूल्य उप
मी को दूर कर
हली' का प्रका
हैं। इस एक
डेढ़ रुपया।
याग।

ए

ड

सकते हैं।

ारा।

संसार में होनेवाले महायुद्ध के विभिन्न युद्ध-मोर्चों के सेनापति यही हैं

जनरल मांटगोमरी।

भूमध्य सागर की नौ-सेना के प्रधान सेनापति कनिंघम।

भारत के प्रधान सेनापति जनरल आकिनलेक।

हवाई सेना के चीफ मार्शल सर ए० टेडर।

फान रुन्स्टेड।

अमरीकन मेजर जनरल डब्लू वेडेल स्मिथ

जनरल आइसन होवर

लेफ्टीनेंट जनरल जे० डेवर्स।

लेफ्टीनेन्ट जनरल जे० एच० गैमेल।

जनरल कैसलरिंग।

अमरीकन वायुसेना के सर टी० मैलोरी।

अंग्रेज जल-सेना के सर बर्ट्रान रेमज़े।

मध्य-पूर्व के जनरल सर बर्नार्ड पेजैट।

भूमध्य सागर के जनरल अलेक्जेंडर।

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

पश्चिमी-युद्ध मोर्चे पर मित्रराष्ट्रों के आक्रमण

स्टेलिन की घोषणा—जापानी प्रधान मन्त्री का भाषण

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

पश्चिमी जर्मनी के ६ सबसे बड़े फौजी कैंपों और मोर्चे के समीपवर्ती १० हवाई अड्डों का १३०० अमरीकी विमानों-द्वारा सफाया किया गया। ये जर्मन कैंप रेमेजेन पुल के ६५ मील दूर एक दायरे में स्थित थे। अतः इस महाविकराल वायु-आक्रमण के फलस्वरूप रूर प्रांत का पश्चिमी जर्मनी से सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। इससे मित्रसेनापतियों का उत्साह और जर्मन सेनाध्यक्षों की चिंता का बढ़ जाना स्वाभाविक ही है। पता चला है कि पश्चिमी मोर्चे पर लड़नेवाली नाजी सेनाओं का नेतृत्व रूस्टेड से छीन लिया गया है और फील्ड मार्शल कैसेलरिंग को इटली से हटाकर प्रधान सेनापति बनाया गया है। जो हो, अमरीकी, ब्रिटिश और अन्य सहयोगी सेनाओं की प्रगति अबाध गति से जारी है।

एक जर्मन वक्ता ने बताया है कि प्रथम कनाडी सेना, द्वितीय ब्रिटिश सेना तथा प्रथम अमेरिकन सेना के अनेक दल डुसेलडार्फ और आर्नहीम के बीच ६० मील के मोर्चे पर राइन के तट पर हमले के लिए तैयार खड़े हैं और किसी भी घंटे मित्रों का पूर्ण वेग से एक नया आक्रमण राइन का युद्धांत करने के लिए हो सकता है। दोनों पक्षों ने अपनी अपनी सेनायें एकत्रित कर ली हैं। जनरल पेटन की तृतीय सेना ने लुडविगशेफेन पर कब्जा कर लिया है, और वह बिसेम्बर्ग से उत्तर की ओर बढ़ती हुई जनरल पैच की सातवीं सेना से केवल ७ मील पर है। इन दोनों सेनाओं का संगम हो जाने पर ५०,००० जर्मन फौजों के घिरने और संहार होने की आशंका है। तृतीय सेना ने पिरमासेंस पर कब्जा कर लिया है, जो कैसरस्लौटर्न के १८ मील दक्षिण में है। २२ मार्च की जनरल आइज़न होवर की विज्ञप्ति में कहा गया है कि मित्र-फौजों ने मोसले के दक्षिण और राइन के पश्चिम जर्मनों पर प्रहार किये। जर्मनों के प्रतिरोध की शक्ति भंग हो गई है। ६ कस्बों पर मित्रों का कब्जा हो गया है। पिरमासेंस और राइन के बीच में शत्रु जोरों से लड़ रहा है।

* * *

मार्शल स्टालिन ने कोलबर्ग पर कब्जा किये जाने की घोषणा की, जो एक समय बाल्टिक में जर्मनों का नौसैनिक अड्डा था और बर्लिन से यह खबर दी गई कि पूर्वी मोर्चे तक समस्त दक्षिणी भाग पर चार रूसी सेनापतियों, कोनोव, पेटोव, मैलिनोवस्की तथा टोलबुखिन की फौजें हमला कर रही हैं। बाल्टिक का एक संग्राम समाप्त हो रहा है। पर लाल सेना के उत्तर बाजू पर एक नया संग्राम शुरू होनेवाला है मार्शल रोकसोवोस्की की फौजें डेंजिग के जर्मन रक्षा-प्रबन्ध पर प्रहार कर रही हैं, और रूसी टैंकदल और छापामार फौजें किलेबन्दी की पाँति के बाहरी हिस्से पर गोले बरसा रही हैं। फँसी हुई जर्मन फौजें बड़े जोरों से लड़ रही हैं और घोर संग्राम हो रहा है। रूसी फौजें पूर्वी प्रशा में फँसी हुई जर्मन फौजों को अपने फौलादी पंजे में अधिकाधिक कस रही हैं। कोनिंग्सबर्ग के दक्षिण-पश्चिम में समुद्रतट पर एक छोटी-सी पट्टी जर्मन फौजों के पास बच रही है जहाँ नरककुंड के तुल्य अग्नि-ज्वाला धधक रही है। मार्शल जुकोव ने स्टैटिन पर विराट् आक्रमण के लिए १० मील से भी कम मोर्चे पर ३ सेनायें जमा कर ली हैं जिनमें १ लाख से अधिक सैनिक तथा १,००० तोपें हैं। मार्शल स्टालिन ने स्टेटिन के घिरे हुए तथा जल रहे नगर से ४ मील पर अल्टडक पर कब्जा किये जाने की घोषणा की है। मार्शल स्टालिन ने एक दूसरी घोषणा में पूर्वी प्रशा की राजधानी कोनिंग्सबर्ग के ३० मील दक्षिण-पश्चिम में ब्रौन्सबर्ग पर कब्जा करने की सूचना दी है। जर्मन समाचार समिति का सैनिक संवाददाता कर्नल अर्नेस्ट वान हैमर लिखता है कि मार्शल कोनीव की फौजों ने लोगाऊ पर एक भारी आक्रमण कर दिया है। यह जर्मन गढ़ ओडर नदी के पश्चिमी तट पर ब्रेसलाउ से उत्तर-पश्चिम की ओर ५५ मील पर स्थित है। ब्रेसलाउ कुछ सप्ताहों से घिरा हुआ है। इस पर लगातार आक्रमण हो रहे हैं। अन्य क्षेत्रों में भीषण लड़ाइयाँ जारी हैं।

* * *

सुदूरपूर्व जापानी प्रधान मंत्री कोइसो ने कहा है कि अमेरिकनों द्वारा इओजीमा पर अधिकार किया जाना संपूर्ण युद्ध-परिस्थिति का अभाग्यसूचक है। निःसंदेह विचाराधीन सप्ताह में अमेरिकनों ने जापान के आस-पास के सागर में जो कार्यवाही की तथा आकाश से जापान की मुख्य भूमि पर जो बमवर्षा की उससे संपूर्ण जापानी जनता एवं अधिकारीवर्ग का त्रस्त हो जाना स्वाभाविक है। वहाँ आतंक इस हद तक बढ़ गया है कि स्कूल-कालेजों को एक वर्ष के लिये बन्द कर देने का आदेश निकाल दिया गया है तथा यह घोषणा कर दी गई है कि वे सब युद्ध-प्रयत्न में संलग्न हो जायँ। अमरीकी उड़न-किलों से वे इतने भयभीत हैं कि तोकियो आदि प्रमुख नगरों के निवासियों से यह कह दिया गया है कि किसी समय भी उनके खाली करने का हुक्म निकाला जा सकता है। मित्रराष्ट्रों के ३०० उड़नकिलों ने २००० अग्निगोले नगोया पर गिराये। टोकियो रेडियो के कथनानुसार अमरीकी नौसेना के जहाजों से उड़े हुए १,४०० बमवर्षकों ने दक्षिणी जापान पर आक्रमण किया जो आठ घंटे तक चालू रहा और जिसके मुख्य लक्ष्य वहाँ के हवाई अड्डे बने। इसके पूर्व कोबे, टोकियो आदि पर भी सफल बमवर्षा की गई। किन्तु सबसे अधिक श्रेय अमरीकी नौसेना को है जिसने शत्रु के घर में घुस कर जापानी नौ-सेना पर प्रहार किया। २० मार्च को एडमिरल निमिज ने घोषणा की कि अमेरिकन बेड़े ने जापान के निकटवर्ती समुद्रों में जापानी बेड़े से युद्ध किया तथा उसे लुंजा बना दिया। उस विज्ञप्ति में बतलाया गया है कि अमेरिकन बेड़ा पिछले दो दिनों से दक्षिण जापान में कोबे तथा कुरे पर हमला करता रहा है। पिछले सोमवार को वह उत्तरपूर्व की ओर बढ़ा, और उसने जापानी बेड़े पर हमले किये। प्रारम्भिक रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि एक या दो जापानी युद्धपोत क्षतिग्रस्त किये गये। दो-तीन जापानी वायुयान-वाहक जहाज, दो हलके वायुयान-वाहक जहाज, दो बड़े बेतुवाहक जहाज, एक भारी गश्ती जहाज, एक हलका गश्ती जहाज, एक पनडुब्बा, चार विध्वंसक जहाज तथा सात माली जहाज भी तोड़े-फोड़े गये। छः जापानी माली जहाज डुबा दिये गये, २०० जापानी विमान आकाश में नष्ट किये गये तथा २७५ विमान जमीन पर नष्ट किये गये। एक अमेरिकन जहाज बुरी तरह नष्ट हुआ तथा अन्य कई जहाज कुछ टूटे-फूटे पर अभी तक कार्य कर रहे हैं।

हाल की एक खबर से पता चला है कि ब्रिटिश विध्वंसक जहाजों ने अंडमान, पिनांग और सुमात्रा के उत्तरी किनारे के आस-पास जापानी जहाजों को घेर कर आक्रमण आरम्भ कर दिया है। फिलिप्पाइंस में जेनरल मैक आर्थर की सेनाओं ने विचाराधीन सप्ताह में अच्छी प्रगति की। पेनाम टापू पर अमरीकी फौजें उतरीं और उन्होंने उसकी राजधानी इलोइलू पर अधिकार कर लिया। लुजोन और मिंडनाओ में भी उन्हें कई सफलतायें मिलीं।

बर्मा क्षेत्र का सबसे उत्साह-वर्द्धक समाचार यह है कि १४ वीं सेना का डफरिन दुर्ग पर अधिकार गया जिससे प्रसिद्ध नगर मांडले का सं भाग मित्रों के पास आ गया। मि फौजों ने मांडले के ६५ मील उत्तर-पू महत्त्वपूर्ण यातायात नगर मोगाक भी कब्जा कर लिया है। मां तथा मोगेक का पतन हो जाने के फ स्वरूप उत्तरी बर्मा रोड पर जापानी रोध लगभग समाप्त हो गया है। अब मुख्य रूप से मांडले के दक्षिण में बर्मा पर होगा। २० वें भारतीय डिवी के सैनिकों ने मांडले से दक्षिण की बढ़ते हुये मीकटिला से १६ मील में पिंडाले नामक गाँव पर कब्जा कर लि है। मीकटिला से उत्तर-पूर्व इंडविन पर कब्जा किया गया। मीकटिला अड्डे कार्रवाई करनेवाले मित्रसैनिकों का बढ़ जारी है। नगर के उत्तर की तरफ जापा स्थानों को पददलित करते हुए उन्हों इरावदी पर के भोंगयान और उसके हवा अड्डे पर कब्जा कर लिया। बर्मा-ची सीमा के पार चीनियों ने कई महत्वपू स्थानों पर अधिकार किया। इस प्र सभी युद्ध-मोर्चों पर मित्र-सेनाओं अबाध गति से सफलता प्राप्त हो रही है।

स्वस्थ जीवन
के संकेत
२
क्या आप को सारी
रात खाँसी आती है?

गले की सहलाहट और जुकाम के बाद होने वाली खाँसी, साधारण खांसी है। शायद आप उसे भयानक न समझकर चिकित्सा और उपचार न करें। शायद सारी रात बैठ कर खांसते रहनेपर भी आप उसकी अवहेलना करें। परंतु इस अवहेलना का परिणाम भयानक है। क्योंकि आप के फेफड़े इतनी कोमल झिल्ली के बने हैं कि वे खाँसी के झटकों को नहीं सह सकते।

ग्लाइकोडीन टर्प वसाका डाक्टरों द्वारा प्रयुक्त और प्रमाणित, खांसी की औषधि है। वह खांसी को तुरंत शान्ति देती और उसके मूल कारणों को नष्ट करती है। उस के शक्ति शाली परमाणुं खांसी को समूल नष्ट करने वाले हैं।

स्नायु विकार से उत्पन्न हुई हर प्रकार की खाँसी के लिये अपने डाक्टर की सलाह लीजिये।

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका

शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोडा

AL. 231

नागौर में आगामी ता० ८, ९, १० अप्रैल को जिला राजनैतिक-सम्मेलन करना पूर्ण रूप से निश्चित किया जा चुका है। इस सम्मेलन में खास तौर से उन समस्याओं पर विचार किया जायगा जो यहाँ की आम जनता से सम्बन्ध रखती हैं। जनता के अभाव-अभियोगों का सही हल निकालने का उपाय सोचा जायगा। परगनों की उनके गाँवों की शिक्षा-व्यवस्था और स्वास्थ-रक्षा, किसानों की स्थिति उनकी लागें और लगान-जागीरदारों का प्रश्न जागीरी जमीन का चालू बन्दोबस्त गृह-उद्योग, स्त्री-शिक्षा, हरिजनोत्थान और प्रधानतः तात्कालिक समस्यायें, मारवाड़ की खाद्य समस्या, कन्ट्रोल की व्यवस्था उसमें आवश्यक सुधार जिससे लोगों को कम से कम दिक्कतें हों, आदि विषयों पर गंभीरता-पूर्वक विचार किया जायगा, जो देश-निर्माण की पहली सीढ़ियाँ हैं।

इस सम्मेलन के अवसर पर विशाल खादी और ग्रामोद्योग-प्रदर्शनी की जायगी जिसकी स्वीकृति भी हमें राजस्थान चरखा-संघ-द्वारा प्राप्त हो चुकी है। इसके द्वारा महात्मा गांधी जी के रचनात्मक कार्यों की जानकारी भली-भाँति जनता को कराई जायगी। राजपूताना रियासती कार्य-कर्ता-संघ के प्रमुख संयोजक श्रीमान् देशपांडे जी की राय से इस अवसर पर तत् सम्बन्धी ई एक महत्त्वपूर्ण बैठकें करने का आयोजन किया है। जिसमें बीकानेर, कोटा, डूँगरपुर आदि रियासतो का समस्याओं पर विचार किया जायगा और उनमें जयपुर, जोधपुर, भरतपुर, कोटा बूँदी, अलवर, सीकर, सिरोही, उदयपुर, कृष्णगढ़, शाहपुरा, करोली, डूँगरपुर आदि के प्रमुख नेतागण भाग लेंगे। मारवाड़-लोकपरिषद् की प्रतिनिधिसभा की बैठकें भी इस अवसर पर होंगी।

—शिवदयाल दुबे, प्रधान मंत्री

पंचम अधिवेशन

संयुक्तप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

प्रयाग

श्रीमान्,

संयुक्तप्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का पंचम अधिवेशन, अधिक चैत्र कृष्ण तृतीया और चतुर्थी, संवत् २००२ तदनुसार ता० ३१ मार्च और १ अप्रैल सन् १९४५, शनिवार तथा रविवार को प्रयाग-संगीत-भवन (साउथ मलाका) में होना निश्चित हुआ है। प्रयाग-विश्वविद्यालय के इतिहास-विभाग के अध्यक्ष डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी सभापति का आसन सुशोभित करेंगे। सम्मेलन का उद्घाटन करना श्रद्धेय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने स्वीकार किया है।

आपसे साग्रह अनुरोध है कि अधिवेशन में सम्मिलित होकर राष्ट्रभाषा हिन्दी के इस पवित्र कार्य में सहयोग प्रदान कीजिए।

समय—१ बजे दोपहर।

निवेदक

शुकदेव चौबे	**ब्रजमोहन व्यास**	**ज्योतिप्रसाद निर्मल**
प्रधान मन्त्री	स्वागताध्यक्ष	प्रधान मन्त्री

इन्दौर के एक सरकारी वक्तव्य में कहा गया है कि हिन्दी के कई पत्रों में यह खबर छपी है कि श्रीमन्त महाराजा होलकर लन्दन और सेनफ्रान्सिस्को में होनेवाले विश्व-सुरक्षा-सम्मेलनों में चेम्बर आफ प्रिन्सेज के प्रतिनिधि नियुक्त किये जाने के लिये उत्सुक थे। यह भी कहा गया है कि श्रीमन्त का यह इरादा था कि वे इन सम्मेलनों में यह घोषित करेंगे कि यदि भारतवर्ष को अन्य आजाद देशों की बराबरी में रख दिया जाय तो वे इन्दौर का शासन छोड़ने के लिये तैयार हैं। इस कथन के आधार में ऐसा प्रकाशित किया गया है कि यह खबर श्रीमन्त के निकट सम्पर्क में रहनेवाले विश्वस्त क्षेत्रों से मिली है।

इस प्रकार के समाचार के कथन में कोई सत्य आधार नहीं है। जबकि श्रीमन्त महाराजा होलकर ब्रिटिश भारत तथा देशी राज्यों को प्रगति देनेवाले प्रत्येक प्रयत्न में तथा सुन्दर विश्व व्यवस्था की रचना में सहानुभूति रखते हैं, उन्हें इस बात का खेद है कि इन समाचारों में प्रगट किये गये आशय का भ्रमात्मक कथन वर्तमान कठिन समय में किया गया जबकि शुभ कामना रखनेवाले समस्त महानुभाव पारस्परिक मेल तथा सहयोग की भावना बढ़ाने की हार्दिक अभिलाषा रखते हैं।

—संवाददाता

* * *

प्रयागनिवासी हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री हरिवंशराय 'बच्चन' की माता श्रीमती सरस्वती देवी का गत सप्ताह स्वर्गवास हो गया। आप वयोवृद्ध थीं। हिन्दी-काव्य में उनकी विशेष रुचि थी। भक्ति-काल के कवियों और हिन्दी के प्रारम्भिक गद्यकारों की कृतियाँ उनकी चिरसंगिनी थीं। श्री बच्चन जी आज हिन्दी के लिए जो कुछ कर सके हैं और कर रहे हैं, उसकी प्रेरणा उनकी माता जी के द्वारा ही प्राप्त हुई थी। अपने पूज्य पति के स्वर्गवास के बाद श्रीमती सरस्वती देवी प्रायः घर में अपना समय भक्ति-साहित्य के पठन-पाठन में व्यतीत करती थीं। उन्होंने घरों में गाये जानेवाले गीतों का एक संग्रह भी तैयार किया है। यह संग्रह 'घर के गीत' के नाम से शीघ्र ही हिन्दी-संसार के सम्मुख आयेगा। बच्चन जी ने अन्तिम क्षणों में उनकी बड़ी सेवा की। माता के स्वर्गवास से बच्चन जी के परिवार को जो दुःख हुआ है, उससे सारे हिन्दी-संसार की पूर्ण सहानुभूति है। ईश्वर मृतात्मा को शान्ति प्रदान करे, यही हमारी कामना है।

* * *

बीकानेर सरदार-शहर साहित्य-समिति का पञ्चम वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल को सुप्रसिद्ध साहित्यकार, श्री रामनाथ "सुमन" के सभापतित्व में समारोहपूर्वक मनाया जायगा। आचार्य गौरीशंकर शास्त्री, राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकार श्री "मुकुल" भी उत्सव में पर पधारेंगे।

—मंत्री

* * *

ब्यावर श्री जैन गुरुकुल शिक्षण-संघ का १७वाँ वार्षिकोत्सव ६, ७, ८ अप्रैल को होगा। बम्बई-निवासी श्रीमान् सेठ जगजीवनभाई गि० अजमेराजी सभापति का स्थान सुशोभित करेंगे। सुविख्यात विद्वान् तथा नेतागण पधार रहे हैं।

—व्यवस्थापक

ब्रज-भाषा

साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और ब्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु ब्रज-भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान् कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — बिहारी-विभव
भूषण भारती — मतिराम-मकरंद
पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

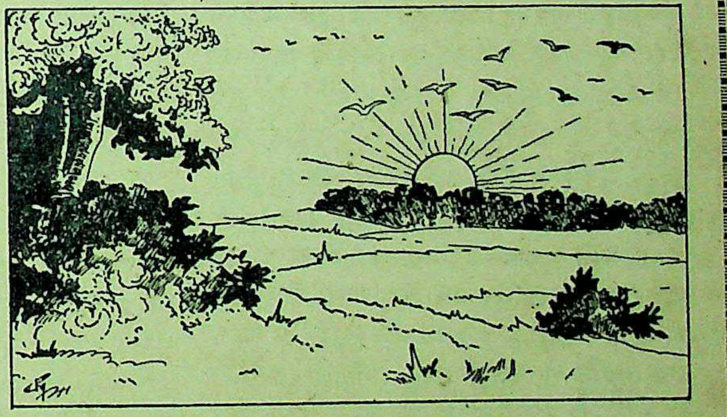

आईऽ वसन्त बहाऽर

इसी लिए उषः काल के समय प्रकृति में संगीत की ध्वनि गूँज उठी है। इस अवसर का लाभ उठाकर क्या आप अपने भ्रान्त और थके हुए मन को प्रसन्न न करना चाहेंगे? अवश्य चाहेंगे। हृदय को संगीत में प्रस्फुटित करनेवाले कवियों की कृतियाँ इस विषय में आपको सहायक होंगी। पं० सोहनलाल द्विवेदी की भैरवी आपके हृदय में जागृति का संचार करेगी तो ठा० गोपालशरणसिंह की माधवी प्रकृति के सौन्दर्य का मूक चित्रपट आपको दिखायेगी। इसी प्रकार मधूलिका सौंदर्य और प्रेम की कविताएँ सुनाकर आपका हृदय आनन्द और प्रसन्नता से भर देगी।

वीणाग्रन्थि	२)	मधूलिका	२)	भैरवी	२।≡)
मधुस्रवा	१।)	माधवी	२)	मंजीर	१)
मानवी	२।-)	कौमुदी	।।≡)	माधुरी	।।≡)
	सुमना	२)	किंकिणी	।।।)	

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारतीय हिन्दी-परिषद्

भारतीय हिन्दी परिषद् का तृतीय वार्षिक अधिवेशन रविवार १८ मार्च १९४५ को प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में हुआ था। इस अवसर पर समारोह में भाग लेने के लिए बहुत से विद्वान् बनारस, आगरा तथा कलकत्ता आदि स्थानों से आये थे। वार्षिक विवरण उपस्थित किया गया। प्रातःकाल ८ बजे कार्य समिति की बैठक हुई। जिसमें अन्य विषयों के साथ यह भी निश्चय किया गया कि "हिन्दी साहित्य का इतिहास" विशिष्ट कालों के विशेषज्ञों से लिखा कर परिषद् के द्वारा प्रकाशित किया जाय। इसके लिए एक समिति बनाई गई जिसमें सदस्य डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० रामकुमार वर्मा और डा० माताप्रसाद गुप्त मनोनीत हुए। कार्यक्रम डा० धीरेन्द्र वर्मा एम० ए० डी० लिट्० अध्यक्ष हिन्दी विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय के सभापतित्व में आरम्भ हुआ। आरम्भ में डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, श्री राय राजेश्वरबली, श्री शालिग्राम वर्मा तथा श्री रामप्रसाद नायक की असामयिक मृत्यु पर एक प्रस्ताव उपस्थित किया गया जिसे उपस्थित व्यक्तियों ने खड़े होकर स्वीकृत किया फिर परिषद् की सफलता के लिए प्राप्त हुए श्री मैथिलीशरण गुप्त, पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, श्री जगन्नाथप्रसाद भानु, रावराजा डा० श्यामबिहारी मिश्र, रायबहादुर पं० शुकदेवबिहारी मिश्र तथा श्री गुलाबराय आदि के सन्देश डा० रामकुमार वर्मा एम० ए० पी० एच० डी० प्रधान मंत्री द्वारा पढ़े गये, उसके बाद वार्षिक विवरण तथा आय-व्यय का लेखा प्रस्तुत किया गया जो स्वीकृत हुआ। वार्षिक विवरण में 'विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के पारिभाषिक शब्दकोष की प्रगति का भी उल्लेख था जिसे परिषद् वैज्ञानिक विषयों की उच्चतम शिक्षा के लिए संग्रहीत करा रहा है। ऐसी आशा की जाती है कि यह पारिभाषिक शब्दकोष आगामी १५ जुलाई तक समाप्त हो जायगा। वार्षिक अनुमानपत्र से ज्ञात होता है कि परिषद् की आर्थिक अवस्था विशेष उत्साहजनक है।

कुछ अवकाश के अनन्तर पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी साहित्याचार्य प्रधान अध्यापक हिन्दी भवन शान्तिनिकेतन का "नाथ सम्प्रदाय और हिन्दी" शीर्षक विषय पर अत्यन्त खोजपूर्ण और सारगर्भित भाषण हुआ। सभापति का आसन पं० केशवप्रसाद मिश्र अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्वविद्यालय ने ग्रहण किया। हजारीप्रसाद जी ने गोरखनाथ का समय ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर १०वीं शताब्दी निश्चय किया। आगे उन्होंने कहा कि गोरखनाथ के समय में ही हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म इस्लाम के सम्पर्क में आकर विशेष रूप से प्रभावित हुए थे। इन सबों ने अपने को बड़े सुन्दर रूप में संगठित कर लिया। द्विवेदी जी ने बड़ी विद्वता के साथ यह स्पष्ट किया कि नाथ पंथ के अध्ययन के बिना हिन्दी कविता की सगुण तथा निर्गुण धारा को समझना असम्भव है। अन्त में विद्वान वक्ता ने मध्ययुग के महापुरुष गोरखनाथ के अध्ययन के लिए विशेष जोर दिया। पं० केशवप्रसाद मिश्र ने सभापति के आसन से द्विवेदी जी को उनके भाषण के लिए विशेष धन्यवाद दिया तथा उनकी कुछ बातों को स्वीकार करते हुए विषय के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को भी स्पष्ट किया। अन्त में पं० देवीप्रसाद शुक्ल तथा डा० रामकुमार वर्मा प्रधानमंत्री ने सभापति तथा विद्वान् वक्ता को धन्यवाद दिया। साढ़े ११ बजे परिषद् की पहली बैठक समाप्त हुई।

संध्या को साढ़े ६ बजे डा० ताराचन्द एम० ए० डी० फिल० की अध्यक्षता में भारतीय हिन्दी परिषद् की दूसरी बैठक प्रारम्भ हुई। विचार विनिमय का विषय "हमारी भाषा की समस्या" था। सभापति के हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण तथा उसी के सम्बन्ध में गांधी जी के विचारों को स्पष्ट किया। उनके अनुसार गांधी जी सबसे अधिक सत्य को चाहते हैं। उसके बाद देश की आजादी को। भाषा के सम्बन्ध में वे हिन्दी और उर्दू दोनों का एकीकरण चाहते हैं और उसे ही वे हिन्दुस्तानी कहते हैं। अपने दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए डा० ताराचन्द ने कहा कि हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी तीनों एक ही जबान हैं। इनकी व्याकरण तथा ध्वनियाँ समान हैं। फर्क सिर्फ शब्द समूह में है। उर्दू वाले फारसी अरबी के असर में हैं और हिन्दी वाले संस्कृत के। अगर ये अरबी, फारसी और संस्कृ निकाल दिये जायँ तो भाषा जायगी। डा० ताराचन्द ने कहा इन भाषाओं के शब्द इस्तेमाल क हैं, परन्तु हमें उन्हें अपने ध्वनि ढाल लेना चाहिए। संसार की भाषाओं यथा अँगरेजी आदि ने ही किया है। हमें अपनी भाषा होना चाहिए और संस्कृत, अरबी, आदि से उसे अधिक महत्त्व देना अपनी भाषा को अधिक सम्पन्न क लिए हमें अरबी तथा फारसी की ध्वनियों को स्वीकार कर लेना चा किन्तु उनके और रूपों के बनाने में भाषा के ही नियमों को मानना चा पारिभाषिक शब्दों के सम्बन्ध में ताराचन्द ने कहा कि हम ऐसे शब्द अपनी भाषा हिन्दुस्तानी ही से बनावें

डा० ताराचन्द ने भाषण बाद पं० केशवप्रसाद मिश्र व सत्यप्रकाश, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, बाबूराम सक्सेना तथा डा० गोरख आदि विद्वानों ने हिन्दी में संस्कृत से परम्पराओं की रक्षा तथा प्रोत्साहन के अपने मन्तव्य प्रकट किये और पं० म्भरनाथ ने साधारण तथा सार्व हिन्दुस्तानी की आवश्यकता समझायी। में डा० ताराचन्द ने अपने दृष्टिको और स्पष्ट किया। सभापति तथा नि सज्जनों को धन्यवाद दिये जाने के भारतीय हिन्दी-परिषद् का अधि समाप्त हुआ। —संवाद

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २।।≡)।

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २।।≡)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ९ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह सबसे अच्छा है। मूल्य ।।।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेजों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृभूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी. निराला। यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ।।≡)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इस में शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

शुभदा

बंगसाहित्य सम्राट् श्री शरच्चन्द्र का नाम हिन्दी में भी उनकी अमूल्य कृतियों द्वारा विख्यात हो चुका है। यह उन्हीं के एक उपन्यास का हिन्दी अनुवाद है। इसमें उनके अन्य उपन्यासों की तरह पारिवारिक जीवन का मार्मिक चित्रण किया गया है। मूल्य १॥) एक रुपया आठ आने।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ६ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इम्पायर आफ इण्डिया

लाइफ एश्योरेन्स कम्पनी लि०

स्थापित—१८९७

प्रधान कार्यालय—बम्बई

छियालीसवीं वार्षिक रिपोर्ट की कुछ विशेषतायें	सम्पूर्ण आय	८७,६७,०००) से भी अधिक
	चालू बीमे	१५,०६,८६,०००) " "
	सम्पत्ति	५,६८,८४,०००) " "
कम्पनी के आरम्भ काल से अब तक चुकाये गये दावे	...	७,६२,००,०००) भी अधिक

एजेंसी तथा विवरण के लिये लिखें :—

मेसर्स डी० सी० सेन गुप्ता एण्ड कं०, चीफ एजेन्ट्स, यू० पी०

४४, जानसेनगंज, इलाहाबाद

अथवा

१०, नील रोड, लखनऊ।

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

भक्त जयदेव—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० एल-एल० बी० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन के भक्त हमारे' का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है। मूल्य १॥)

शनि की दशा—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्रीमती काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' नामक बँगला उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका महोदया ने उपन्यास की नायिका के चरित्र में जिस मधुरता और महिमा का समावेश किया है, वह विश्व के महिला-समाज में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण पद दिलाने के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

धोखा-धड़ी—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह बँगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय के धोखार-टाटि नामक उपन्यास का अनुवाद है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति कृत्रिम सौजन्य, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करनेवालों के मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अकारण ही अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के लिए बाध्य हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय है। मूल्य १॥≡)।

रिक्ता—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री नीहारबाला देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता नारी का ऐसा सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित हुआ है कि पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। ऐसे भाव-पूर्ण उपन्यास आप के पढ़ने में कम आये होंगे। सजिल्द पुस्तक का मूल्य १।-)।

पथ-भ्रान्त पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दरलाल त्रिपाठी और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का उपन्यास-प्रेमियों में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के उपन्यास-पाठकों की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी अनुवाद हमने पहली बार प्रकाशित कराया है। उपन्यास की रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र बाबू का नाम ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≡)।

कृष्णकान्त का विल—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह बंकिम बाबू का एक अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता का जैसा सुन्दर चित्र इस उपन्यास में खींचा गया है वैसा अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय के 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

कपाल-कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ हैं। मूल्य १)।

देवी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय बंकिम बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त तक पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।-)

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≡)।

अज्ञात दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय के 'निरुद्देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक समस्या पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मूल्य १)।

स्वामी—अनुवादक, पंडित रूपनारायण जी पाण्डेय। यह डाक्टर शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के इसी नाम के उपन्यास का हिन्दी-अनुवाद है। स्वामी अपने हृदय की उदारता और क्षमाशीलता के बल पर विपथगामिनी स्त्री को भी किस प्रकार ठीक रास्ते पर लाकर उसे अपनी अनुगामिनी बना सकता है, यही इस उपन्यास का विषय है। इस उपन्यास की एक एक पंक्ति भावपूर्ण है। मूल्य केवल ॥≡)।

पुष्करिणी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री भगवतीप्रसाद जी वाजपेयी की चौदह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में सम्मिलित की गई सभी कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं और इनमें पीड़ित मानवता के चीत्कार और जागरण की कलापूर्ण कथायें लिपिबद्ध की गई हैं। मूल्य केवल २)।

सतमी के बच्चे—लेखक, महापंडित श्री राहुल साकृत्यायन। यह पुस्तक महापंडित श्री राहुल जी की कुछ बहुत ही कलापूर्ण कहानियों का संग्रह है, जिनमें पीड़ित आत्माओं के अन्तस्तल का चित्रण बड़ी ख़ूबी के साथ किया गया है। इसमें ऐसी करुण कहानियाँ हैं, जिन्हें पढ़कर अनायास रुलाई आती है और समाज का नवीन रूप से संगठन करने की अन्तःकरण में प्रेरणा उत्पन्न होती है। मूल्य ॥-)।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास—(प्रथम और द्वितीय भाग) लेखक, वासुदेव उपाध्याय, एम० ए०। इस पुस्तक के दोनों भागों में भारतीय गुप्त सम्राटों के शासन-काल का विस्तृत और प्रामाणिक इतिहास लिखा गया है। संस्कृत और अँगरेज़ी के कितने ही प्रामाणिक और सुप्रसिद्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त इतिहास और पुरातत्त्व से सम्बन्ध रखनेवाली बहुत-सी सरकारी रिपोर्टों, शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों आदि से सामग्रियाँ लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें गुप्त राजाओं के समय की देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक अवस्था आदि पर तो प्रकाश डाला ही गया है साथ ही उस युग की साहित्य तथा कला-सम्बन्धी उन्नति पर भी प्रकाश डाला गया है। मूल्य पहले भाग का ३) तीन रुपये और दूसरे का ५।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद।

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

साधना बोस

"मैने अपनी त्वचाकी निगरानी का काम लक्स टॉयलेट साबुन पर सौंप दिया है"—यह सौंदर्यवती साधना का कहना है। नहानेका यह खुशबूदार साबुन वह हमेशा इस्तेमाल करती है। उसका तेज फेन उसकी त्वचा सुकोमल, मृदु और निष्कलंक रखता है। अपनी त्वचा की निगरानी के लिये बहुत सी फिल्म-स्टार लक्स टॉयलेट साबुन ही पर निर्भर रहती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 119-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। ……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएं हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

ईस्ट इन्डियन रेलवे

विशेष सूचना

अर्द्धकुम्भ मेला, हरद्वार १९४५

युक्तप्रान्तीय सरकार ने नम्बर ४१६/३-१७-१९४५, ता० ३०-१-४५ को निम्न लिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है :—

भारत-रक्षा कानून की धारा ८५—बी की उपधारा (१) के अनुसार संयुक्तप्रान्त गवर्नर महोदय ने निम्नलिखित घोषणा की है :—

(अ) कोई भी व्यक्ति, ड्यूटी पर जाते हुए फौजी आदमियों तथा तीन व कम के बच्चों के अतिरिक्त।

(ब) अथवा अलावा उन लोगों के जिनके पास पब्लिक हेल्थ डाइरेक्टर डिप्टी डाइरेक्टर, यू० पी० की लिखित आज्ञा हो।

नीचे लिखी हुई रेलवे स्टेशनों को रेल से यात्रा न कर सकेगा और न कोई रे १५ मार्च से १३ अप्रैल तक (जिसमें ये दोनों दिन भी शामिल हैं) इन्हें यात्रा क देगी जब तक कि

(स) यात्री हैजे की सुई १ नवम्बर १९४४ के बाद न लगवा चुका हो सरकार द्वारा नियुक्त आफिसर का इस बात का प्रमाण-पत्र रखता हो।

(द) अथवा या तो

(१) रेलवे के कर्मचारी इस बात से सन्तुष्ट हो जायँ कि वह व्य अर्द्धकुम्भ मेला हरद्वार में सम्मिलित होने के विचार से यात्रा न कर रहा है, या

(२) यात्री के पास मेला इन्चार्ज की, किसी डिस्टिक्ट मजिस्ट्रेट अथ डिस्टिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा आज्ञा देने के लिए अधिकृत किये अन्य मजिस्ट्रेट की लिखित आज्ञा हो।

रेलवे स्टेशनों की सूची

ईस्ट इन्डियन रेलवे

बलिया खेरी	दौसनी	मुअज्जमपुर नरायन	पाथरी	केसराव
चोडियाला	लश्कर	नजीबाबाद	ज्वालापुर	डोईवा
इकबालपुर	रैसी	साने रोड	हरद्वार	हर्रावा
रुड़की	बलवाली	कोटद्वारा	रायवाला	देहरादू
लंधौरा	चन्दौक	ऐथल	ऋषीकेश	मसूरी

एन० डब्ल्यू० रेलवे

सहारनपुर — सरसवा

(आज्ञानुस

इसी प्रकार की आज्ञा बिहार सरकार-द्वारा भी हैजे के टीके के सम्बन्ध में निक जा रही है।

बंगाल तथा अन्य प्रान्तों से हरद्वार के मेले में आनेवाले यात्रियों को सूचित कि जाता है कि जब तक उनके पास हैजे के टीके का १ नवम्बर १९४४ के इधर का प्रम पत्र न होगा तब तक वे लोग मेले में नहीं आने पावेंगे।

इस प्रमाण-पत्र की जाँच मेले के चारों तरफ बनाये हुए नाकों-द्वारा होगी जिनके पास प्रमाण-पत्र न होगा वे मेले में न आ सकेंगे। यात्रियों के लिए यह श्यक है कि मेले की यात्रा करने के पहले वे लोग हैजे का टीका लगवा लें तथा इ सार्टिफिकेट हासिल कर लें।

टिकट खरीदते समय यह सार्टिफिकेट टिकट बाबू को दिखाना होगा। टि बाबू स्टेशन की मुहर लगाकर सार्टिफिकेट यात्री को वापस कर देंगे।

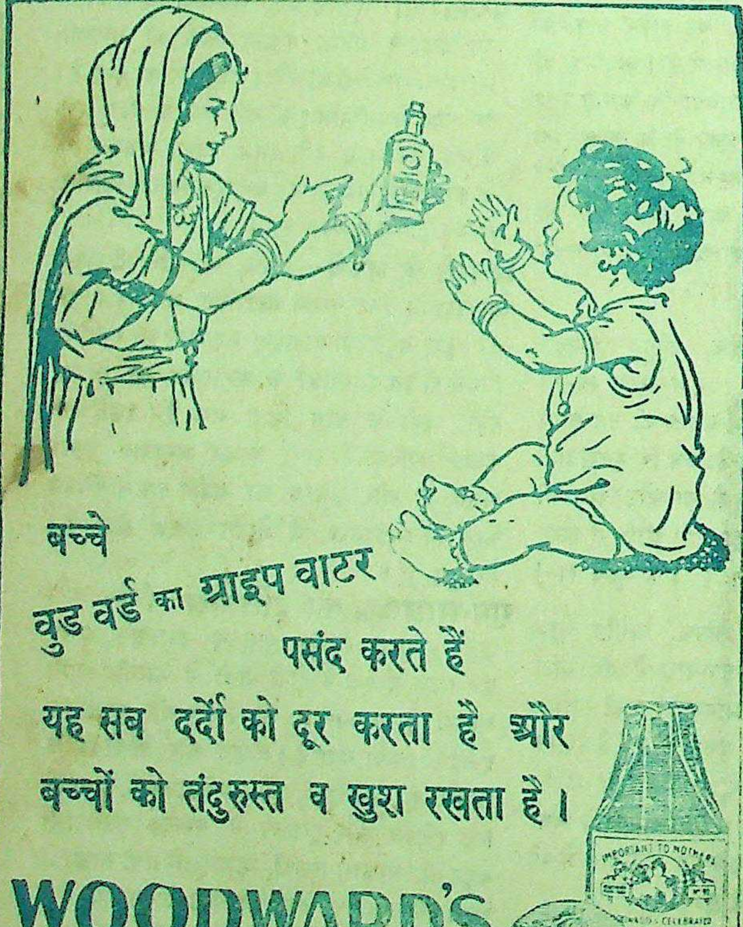

बच्चे वुड वर्ड का ग्राइप वाटर पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

[illegible] सम्पादक—एच० पी० घोष [कि० मित्रा-द्वा [illegible] लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

वार्षिक मूल्य ७।।)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

[illegible] अप्रैल, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 8th April, 1945

चीन मस्तरकला की अद्भुत मूर्तियाँ
तीन शिरोंवाली शिव की त्रिमूर्ति है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

नैपालियन और हिटलर दो विजेता
स्वर्गीय राजनीतिज्ञ लायड जार्ज

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है। भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि

पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी
की
तीन पुस्तकें

झरना — शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिससे उनके भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका खास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि बालकों में सद्विचारों को बचपन में ही बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की इन कृतियों को अपनाना चाहिए, और उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
॥।) बारह आने

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

उसके सारे अंग गठिये से जकड़ उठे थे

न बेचारी चल सकती थी और न सो सकती थी

क्रुशेन के नियमित सेवन से अब वह वेदना-मुक्त हो गई है

वह इतने दिन तक बीमार रही थी वह यह समझती थी कि अब कभी अच्छी ही न होगी। सभी प्रकार की ओषधियों से निराश होकर उसने क्रुशेन सेवन करना आरम्भ कर दिया। केवल १½ मास में काफी परिवर्तन हो गया और आज वह वेदना से एकदम मुक्त है।

"गठिये के कारण मेरे हाथ-पैर फूल गये थे। मैं चल नहीं सकती थी और न मुझे नींद ही आती थी। बहुत रुपया खर्च किया किन्तु कोई स्थायी लाभ नहीं हुआ। पहले तो मैं क्रुशेन साल्ट सेवन करने को तैयार नहीं हुई। अच्छी होने की सभी आशा जाती रही। मैं जिन्दगी से ऊब उठी थी और मृत्यु चाहने लगी थी। दो सप्ताह क्रुशेन साल्ट सेवन करने के बाद मुझे आराम होने लगा। मैंने क्रुशेन साल्ट को जारी रक्खा और केवल ६ हफ्ते में मैं घर का काम करने लगी। तीन बोतल पीने के पश्चात् मुझमें टहलने की शक्ति आ गई। अब मेरा सारा दर्द जाता रहा। सूजन दूर हो गई और अब मैं सचमुच स्वस्थ जान पड़ती हूँ"—श्रीमती यफ० डब्ल्यू०

गठिये का दर्द विशेषतः शरीर में अम्ल के एकत्रित हो जाने से होता है यह साधारण जोड़ और गाँठों पर हुआ करता है। क्रुशेन इस विषैले मल को निकाल देता है तथा इसको दोष-रहित तत्त्वों में परिवर्तित कर देता है इससे शरीर का भीतरी अंग निर्धारित रूप से काम करता है जिससे फिर अम्ल एकत्रित नहीं होने पाता।

क्रुशेन साल्ट बाज़ार में सभी बड़े ओषधि-विक्रेताओं के यहाँ बिकता है।

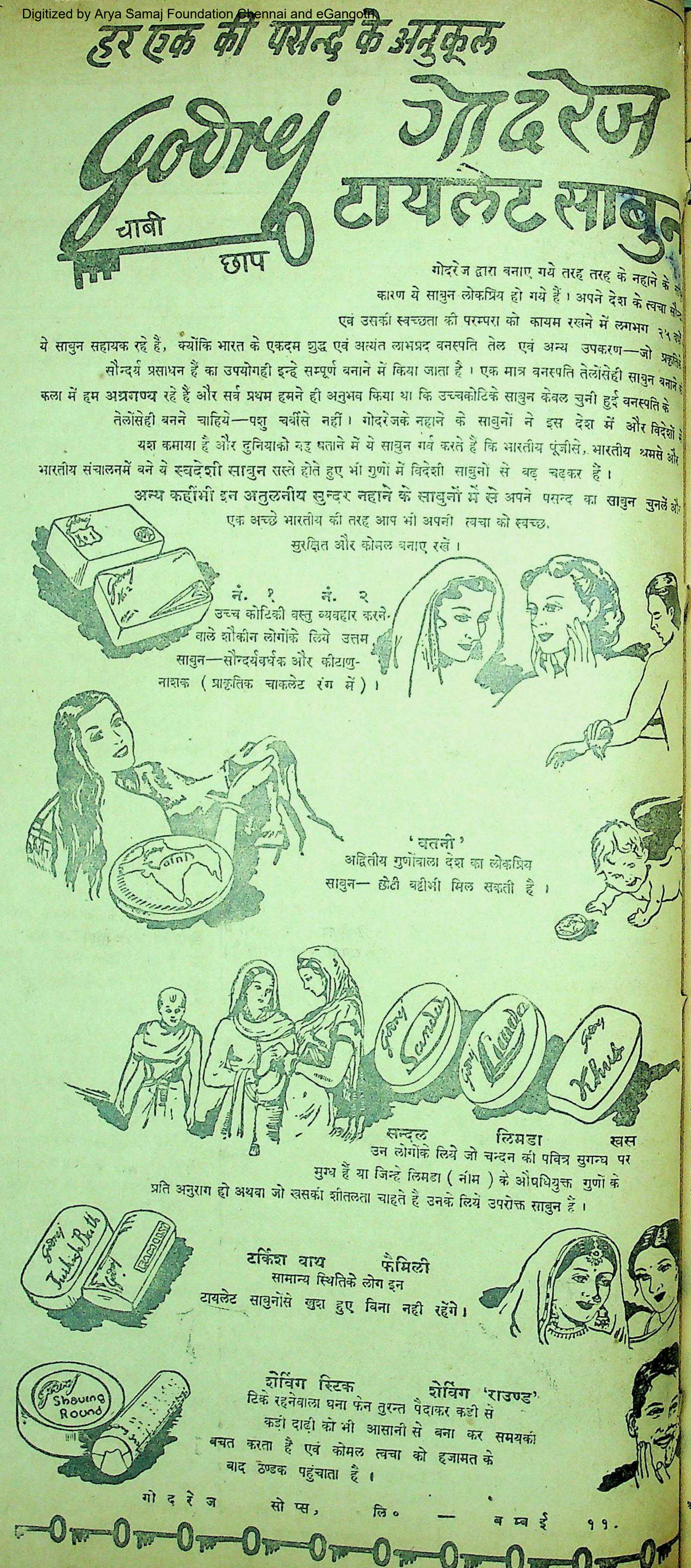

हर एक की पसन्द के अनुकूल

Godrej गोदरेज टायलेट साबुन

चाबी छाप

गोदरेज द्वारा बनाए गये तरह तरह के नहाने के
कारण ये साबुन लोकप्रिय हो गये हैं। अपने देश के त्वचा सौ
एवं उसकी स्वच्छता की परम्परा को कायम रखने में लगभग २५
ये साबुन सहायक रहे हैं, क्योंकि भारत के एकदम शुद्ध एवं अत्यंत लाभप्रद वनस्पति तेल एवं अन्य उपकरण—जो प्रकृ
सौन्दर्य प्रसाधन हैं का उपयोगही इन्हे सम्पूर्ण बनाने में किया जाता है। एक मात्र वनस्पति तेलोंसेही साबुन बनाने
कला में हम **अग्रगण्य** रहे हैं और सर्व प्रथम हमने ही अनुभव किया था कि उच्चकोटिके साबुन केवल चुनी हुई वनस्पति के
तेलोंसेही बनने चाहिये—पशु चर्बीसे नहीं। गोदरेजके नहाने के साबुनों ने इस देश में और विदेशों
यश कमाया है और दुनियाको यह बताने में ये साबुन गर्व करते हैं कि भारतीय पूंजीसे, भारतीय श्रमसे और
भारतीय संचालनमें बने ये **स्वदेशी साबुन** सस्ते होते हुए भी गुणों में विदेशी साबुनों से बढ़ चढ़कर हैं।

अन्य कहींभी इन अतुलनीय सुन्दर नहाने के साबुनों में से अपने पसन्द का साबुन चुनलें औ
एक अच्छे भारतीय की तरह आप भी अपनी त्वचा को स्वच्छ,
सुरक्षित और कोमल बनाए रखें।

नं. १ नं. २
उच्च कोटिकी वस्तु व्यवहार करने-
वाले शौकीन लोगोंके लिये उत्तम
साबुन—सौन्दर्यवर्धक और कीटाणु-
नाशक (प्राकृतिक चाकलेट रंग में)।

'वतनी'
अद्वितीय गुणोंवाला देश का लोकप्रिय
साबुन— छोटी बट्टीभी मिल सकती है।

सन्दल लिमडा खस
उन लोगोंके लिये जो चन्दन की पवित्र सुगन्ध पर
मुग्ध हैं या जिन्हे लिमडा (नीम) के औषधियुक्त गुणों के
प्रति अनुराग हो अथवा जो खसकी शीतलता चाहते हैं उनके लिये उपरोक्त साबुन हैं।

टर्किश बाथ फैमिली
सामान्य स्थितिके लोग इन
टायलेट साबुनोंसे खुश हुए बिना नही रहेंगे।

शेविंग स्टिक शेविंग 'राउण्ड'
टिके रहनेवाला घना फेन तुरन्त पैदाकर कड़ी से
कड़ी दाढ़ी को भी आसानी से बना कर समयकी
बचत करता है एवं कोमल त्वचा को हजामत के
बाद ठण्डक पहुंचाता है।

गोदरेज सोप्स, लि० — बम्बई ११.

देशदूत

वर्ष ७ संख्या ३२] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ८ अप्रैल, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

पंडित जवाहर लाल नेहरू अहमदनगर के किले से बरेली सेन्ट्रल जेल में पहुँचा दिये गये हैं।

प्रशान्त युद्ध मोर्चे के सेनापति ऐडमिरल निमिट्ज की विज्ञप्ति में घोषित किया गया है कि अमेरिकन सेनाओं ने ओकीनावा पर हमला किया, जो रियूक्यू द्वीपों की श्रृङ्खला के अन्तर्गत है। अमेरिकन स्थल तथा नौसैनिक सैन्यदल उतारे गए। यह द्वीप कियूश्यू के दक्षिण-पश्चिम में ३२५ मील पर है। ऐडमिरल निमिट्ज ने कहा है कि यह प्रशान्त के युद्ध में हुई स्थल तथा जल सेनाओं की सबसे बड़ी कार्रवाई है।

* * *

टोकियो रेडियो ने खबर दी है कि मित्र फौजें रियूक्यू द्वीप-पुञ्ज के सबसे पश्चिमी द्वीप कुमे द्वीप पर उतरी हैं, जो ओकीनावा के ५० मील पश्चिम में है। इस हमले में लगभग ६ डिवीजन भाग ले रहे हैं। ३ फौजी और ३ नौसैनिक डिवीजनों के, उनके साथ के अन्य दस्तों के सहित हमले का अर्थ यह है कि इसमें १ लाख से अधिक सैनिक भाग ले रहे हैं।

* * *

इसके लक्षण दिखाई देते हैं कि मध्य पूर्व के लिए संसार की महाशक्तियों में संघर्ष होगा। तीन बड़े राष्ट्र—ब्रिटेन, अमेरिका और सोवियट रूस—ईरान में संघर्ष करने की तैयारियाँ कर रहे हैं। ईरान के तेल के सोतों के लिए अँगरेजों का वहाँ एकाधिपत्य है, और ईरानियों से उनकी इसके लिए नाममात्र की साझीदारी है।

आचार्य नरेन्द्रदेव, अहमदनगर के किले से बरेली सेन्ट्रल जेल में पहुँचा दिये गये हैं।

पश्चिमी युद्ध मोर्चे के मध्यवर्ती क्षेत्र में समस्त जर्मन मोर्चेबन्दी ढह गई है। खबर है कि ९वीं अमेरिकन सेना के हरावल दस्ते प्रथम अमेरिकन सेना से मिल गये हैं। इस प्रकार मित्र सेनाओं ने रूर के औद्योगिक क्षेत्रों के चारों ओर अपना फौलादी घेरा डाल दिया है।

* * *

रूसी युद्ध-मोर्चे पर मार्शल टोलबुखिन के हरावल दस्ते आस्ट्रिया की राजधानी वियना से २० मील से भी कम फासले पर हैं। कहा जाता है कि बर्लिन के सामने मार्शल जुकोव के मोर्चे से लेकर ओडर के उस पार मार्शल कोनीव के मोर्चे तक बड़ी-बड़ी घटनायें घटने ही वाली हैं।

* * *

नई दिल्ली की एक सरकारी विज्ञप्ति में बताया गया है कि सम्राट् ने सर फ्रांसिस वेरनर विली के, सर मारिस हैलेट का आगामी ७ दिसम्बर को कार्यकाल समाप्त होने पर, उनके स्थान पर संयुक्तप्रांत के गवर्नर नियुक्त किये जाने का अनुमोदन किया है।

* * *

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य पं० गोविन्द वल्लभपंत अहमदनगर जेल से बरेली सेन्ट्रल जेल पहुँचाये गये। वहाँ से वह छोड़ दिये गये। पंत जी बीमार हैं। वह दिल्ली में डाक्टर जोशी से अपना इलाज करा रहे हैं।

* * *

महात्मा गांधी बम्बई पहुँच गये हैं। वह कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक कोष की कार्यकारिणी समिति की बैठक में शरीक हुए। देश के कई प्रांतों के नेता उनसे भेंट करने के लिए आ रहे हैं।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू, आचार्य नरेन्द्रदेव अहमद नगर के किले से बरेली सेन्ट्रल जेल भेजे गये हैं। आचार्य कृपलानी करांची भेजे गये हैं। राष्ट्रपति मौलाना आजाद, सरदार पटेल तथा वर्किंग कमेटी के अन्य नजरबन्द शीघ्र ही अपने प्रांतों के जेलों में भेजे जा रहे हैं।

* * *

फ्रेंच औपनिवेशिक मन्त्री पाल गिमाकोबी ने यह घोषित किया है कि हिन्द चीन को युद्ध के बाद राजनीतिक तथा आर्थिक स्वराज्य प्रदान किया जायगा।

* * *

मेरिट्जबर्ग में भारतीयों की एक विराट् सभा में नेटाल की भारतीय कांग्रेस के नेताओं के विरुद्ध एक अविश्वास का प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव में कहा गया है कि भारतीयों के हितों पर कांग्रेसी नेताओं के नेतृत्व का घातक प्रभाव पड़ा है।

चीन से आनेवाली खबरों से पता चलता है कि वहाँ प्रायः दो करोड़ आदमी अकाल से त्रस्त हैं।

* * *

केलिफोर्निया के एक जेल में ८०० गोरे कैदियों ने ४७७ हबशी कैदियों के साथ बैठकर भोजन करने से इनकार कर दिया।

* * *

जर्मन सरकार बर्लिन छोड़कर किसी दूसरे गुप्त स्थान में चली गई है और गेस्टापो का सदर मुकाम स्विस सीमाप्रान्त में चला गया है।

* * *

वेस्ट इंडीज के क्रिकेट के खिलाड़ी डिपरली कांस्टेन्टाइन ने सूचित किया है कि दक्षिण अफ्रीका में गोरों तथा कालों के बीच लड़ाई की आशंका की जा रही है और गोरों को इसके लिए तैयार रहने की चेतावनी दी जा रही है।

* * *

ज्ञात हुआ है कि प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट स्वयं कांग्रेस के डेमाक्रेटिक नेताओं से कहेंगे कि वे सानफ्रांसिस्को सम्मेलन से पूर्व भारतीय प्रवास बिल पास करवाने के लिए जोर दें। कहा जाता है कि भारत के एजेन्ट जनरल सर गिरिजाशंकर बाजपेयी ने राष्ट्र-विभाग के कार्यवाहक मंत्री मि० जोजेफ ग्रू से इस सम्बन्ध में कहा कि बिल पर विचार स्थगित करने के निर्णय से भारत में घातक प्रतिक्रियायें हो सकती हैं।

* * *

खाकसार नेता अल्लामा मशरकी ने लार्ड वैवेल की बिदाई के पूर्व उनके पास ३,००० शब्दों की एक योजना भारत के भावी विधान पर भेजी थी। ई,

* *

को छोड़

सिन्ध की सरकार ने सात ए। कांग्रेस

सियों की रिहाई के लिए अ र को उसका

दिये हैं। वे लोग अगस्त

बन्द थे।

* *तय हो जाता तो

सीमाप्रान्त के प्र ती जो हो रही है।

किया है कि सीमाप्रा जापान से निपट-

तथा गैर-सरकारी लल कर सकता था।

मिटा देने के लिए राजी है वह न होती,

किया जानेवाला कन्धा भिड़ाकर दुश्मन

* दोनों का दुश्मन है।

सप्रू कमेटी नी भारत के लिए दोनों

हरनामसिंह ने साम्राज्यवाद का दुश्मन

किया है जिसमें लो का उपासक है।

मुसलमान केवल न्धन जापान से कैसे

आर्थिक दृष्टि से

बहुत पिछड़े हुए ार दे आगे की सुध

संख्या के हिसाब ा चाहिए कि वह जो

हैं। की उसे सन् ४५ में

महात्मा गांधी अपने दल के साथ बम्बई पहुँच गये हैं।

पंडित मदनमोहन मालवीय ने युक्तप्रान्त के गवर्नर तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभाग के डाइरेक्टर को तार देकर अनुरोध किया है हरद्वार जानेवाले यात्रियों को टीका लगवाने के लिए, बाध्य न किया जाय।

* * *

सिन्ध के प्रधान मन्त्री सर गुलाम हुसेन हिदायतुल्ला ने एसेम्बली में कहा कि कांग्रेस को गैर-कानूनी संस्था घोषित किया था, पर अब सीमाप्रान्त में कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल स्थापित होने से परिस्थिति बदल गई है, इसलिए वह सिन्ध में कांग्रेस पर से रोक हटाने के प्रश्न पर विचार करेंगे।

* * *

मजलिस-ए-इत्तिहाद-ए-मिल्लत के प्रेसीडेंट मि० रहमान अनसारी ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि दिल्ली में कपड़ा-सम्बन्धी परिस्थिति इतनी ग [illegible]

कफन तक के लिए कप

है, और यदि तत्का आजकल बंबई गये हैं

की गई तो दंगा से भारतीय वातावरण में

वाला है।

*

ा था। मुझे मानव-प्राणी से स्नेह है। मैं सभी का हित चाहता हूँ। अहिंसक किसी का दुश्मन नहीं होता। युद्ध का अन्त एक न एक दिन अवश्य होगा। उसके अन्त होने पर जीवनोपयोगी वस्तुएँ पैदा करना युद्ध से अधिक उपयोगी होगी, सन् ४५ में युद्ध का अन्त होकर रहेगा। इससे ब्रिटेन को भारत को आजाद करना ही होगा।

ब्रिटेन यदि भारत को आजाद न करेगा तो वह आजाद होगा ही मगर उसमें तथा भारत में बन्धुत्व का नाता न रहेगा। भारत तथा इँग्लैंड दोनों मिलकर इस कष्ट में संसार का हित करने में अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इससे सन् ४२ का मार्जन सन् ४५ में करके सरकार जो चाहेगी वह कर सकेगी। कांग्रेस के सामने एक ही मार्ग है और वह रचनात्मक कार्य और वैधानिक कार्यक्रम को पूरा करना इसी में विश्व का कल्याण है।

उर्दू लिपि की बलिहारियाँ

क्या हिन्दी की जनता इसे अपना सकती है !

लेखक, प्रोफेसर राजनाथ पांडेय, एम० ए०

उर्दू-लिपि की महत्ता क्या है ? पिछले दिनों उर्दू लिपि में लिखे गये महात्मा गांधी के एक सन्देश की कैसी दुर्दशा की गई, इसका उदाहरण भी दिया गया है। वास्तव में उर्दू एक अवैज्ञानिक लिपि है और प्रायः 'शार्टहैंड' लिपि की नीति है फिर यह राष्ट्र लिपि कैसे हो सकती है, और सार्वजनिक दृष्टि से इसे सीखने की जरूरत ही क्या है। लेख सुन्दर और उर्दू-लिपि की दुरुहता की जानकारी से पूर्ण है।

हिन्दुस्तानी-प्रचार-समिति के जलसे में २७ फरवरी को महात्मा गांधी ने अपना यह फैसला दिया है कि सब लोग नागरी और फारसी (उर्दू) दोनों ही लिपियाँ सीखें। उर्दू या फारसी लिपि सीखने में, जो नागरी लिपि पहले से जानता है उसे तो बहुत ही अधिक, और जिसे शुरू-शुरू में सीखनी है उसे भी नागरी लिपि की अपेक्षा बहुत ज्यादा, दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। साथ ही उर्दू लिपि बहुत खतरनाक लिपि भी है। उदाहरण लीजिए।

२७ फरवरी को हिन्दुस्तानी-प्रचार-समिति के जलसे में महात्मा गांधी ने जब यह जाहिर किया कि सब लोग उर्दू-लिपि भी सीखें तब अंजुमन तरक्किए उर्दू की खास हस्तियों ने महात्मा गांधी का पूरा पूरा उपयोग करने के लिए झटपट वर्धा से बम्बई पहुँच कर अंजुमन तरक्किए उर्दू का वहाँ बड़ा भारी खास जलसा किया और महात्मा जी को खास तौर से उसमें निमंत्रित किया। बम्बई के "पीपुल्स वार" नामक पत्र ने लिखा है कि पिछले कई साल पहले बम्बई में हुए आल इण्डिया मुसलिम लीग के जलसे के बाद से तब तक किसी आयोजन में बम्बई के मुसलिम क्षेत्र में इतनी सरगर्मी नहीं देखी गई थी जितनी की अंजुमन तरक्किए उर्दू के इस अधिवेशन में देखी गई। पर महात्मा गांधी इस जलसे में न जा सके। उन्होंने अपना पैगाम भेजा और उर्दू-लिपि में लिखकर !

उस पैगाम में महात्मा जी ने जो कुछ लिखा था वह इतना निर्मल था कि उसके सम्बन्ध में किसी प्रकार की बदगुमानी किसी माई के लाल के मन में होनी ही नहीं चाहिए थी। मगर बलिहारी उर्दू-लिपि को कि महात्मा गांधी तक को उसकी संगत करके उक्त अधिवेशन में खफीफ होना पड़ा। उनके पैगाम का एक अंश बहुत कुछ इस प्रकार का था—

"मैं तो उर्दू और हिन्दी को अलग अलग नहीं चाहता। मैं तो चाहता हूँ दोनों मील एक हो। और लोग क्या कहते हैं नहीं जानता। अपने तो यही चाहता हूँ।"

परन्तु महात्मा जी ने अभी हाल ही में उर्दू-लिपि सीखनी शुरू की है इसलिए बेचारे शोशों-नुकतों से जो उर्दू-लिपि की जान हैं, शायद पक्की वाकफियत नहीं हासिल कर पाये हैं। दूसरे वृद्धावस्था के भी कारण लकीर खींचने की हाथ की सफाई जो उर्दू लिपि के लिए जरूरी है अब उनसे नहीं बन पा सकती होगी। नतीजा यह हुआ कि उनके पैगाम में यारों ने "भील" को "मैं", "हो" को "को" और "अपने" को "आपसे" पढ़ा और तब यह अंश इस प्रकार का हो गया—

"मैं तो उर्दू और हिन्दी को अलग अलग नहीं चाहता। मैं तो चाहता हूँ दोनों में एक को। और लोग क्या कहते हैं नहीं जानता। आपसे तो यही चाहता हूँ।"

बस फिर क्या था ! लिहो-लिहो मच गया। गांधी जी को मक्कार तक का विशेषण प्राप्त हुआ। उनके विरुद्ध निन्दात्मक प्रस्ताव पास किया गया। उर्दू के पत्रों ने उनको न जाने क्या-क्या लिख डाला। यह तो कहिए कि डाक्टर सैयद महमूद साहब ने फरिश्ते का काम किया कि असलियत का पता लगाकर अंजुमन तरक्किए उर्दूवालों को उनकी इस अकलमन्दी की हरकत पर कसकर डाँटा जिससे वह लोग और उर्दू-जगत् चुप हो गया। महात्मा गांधी की पूरी चिट्ठी छपनी चाहिए किन्तु वह अंजुमन तरक्किए उर्दूवालों की जेब में है और वह लोग झेंपे हुए हैं। वह कैसे उसे छापेंगे ? हमारे हिन्दी के पत्र भी चुप ही हैं नहीं तो वे चाहें तो उन्हें वह पत्र निकालने के लिए मजबूर करके छोड़ें।

जो लोग उर्दू-लिपि से परिचित हैं वह आसानी से समझ सकते हैं कि उर्दू लिखने में जरा-सी चूक से कुछ का कुछ पढ़ा जा सकता है और चूक न होने पर भी कुछ का कुछ पढ़ा जाने की उसमें काफी गुंजाइश रहती है। उर्दू में ही लिखनेवाला लिखे "खुदा" तो पढ़नेवाला "जुदा" पढ़ सकता है, क्योंकि बिन्दियाँ तो प्रायः उर्दू में दी नहीं जातीं। यहाँ "खुदा" से "जुदा" बहुत आसानी से हो सकता है। वास्तव में उर्दू-लिपि एक प्रकार का शार्टहैंड है। लिपि मुसलमानी शासनकाल में शासकों के लिए आपस में निजी और पोशीदा रखी जानेवाली वाइयों के लिए संकेत-लिपि (कोड का काम देती आई है। आज भी उर्दू-लिपि में दर्ज की हुई रपट अच्छा उर्दूदाँ वकील भी ठीक नहीं पढ़ पाता !

वर्धा में हिन्दुस्तानी-प्रचार-समि जलसे में जिस समय महात्मा जी ने लिपि की वकालत की थी उस समय आनन्द जी ने दबी जबान से विरोध हुए कहा था कि उर्दू-लिपि बहुत है। आशा है अपनी ही लिखावट के घटी उक्त घटना से महात्मा जी को विश्वास तो अब जरूर हो गया होगा आनन्द जी ठीक कहते थे।

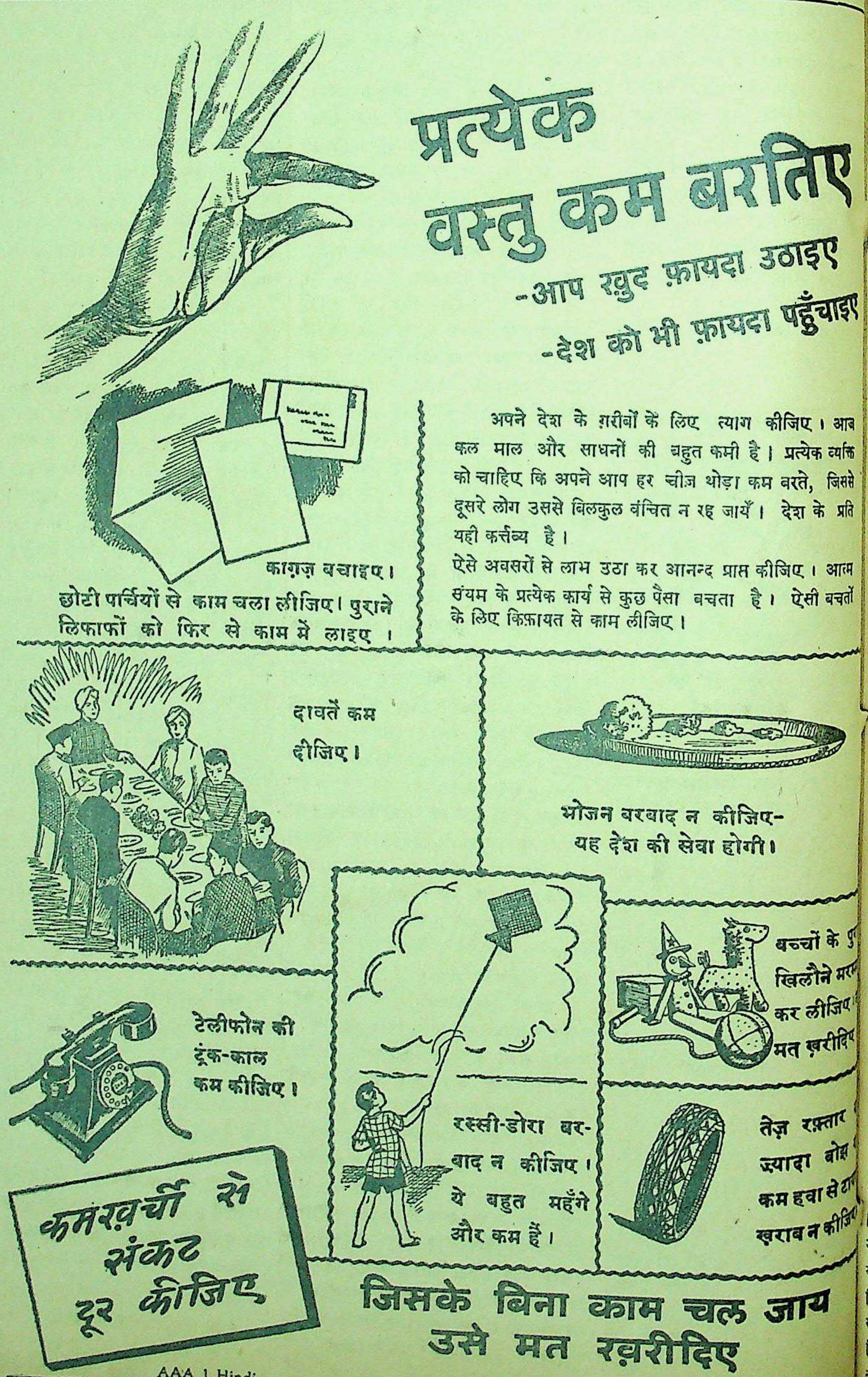

प्रत्येक वस्तु कम बरतिए
-आप खुद फ़ायदा उठाइए
-देश को भी फ़ायदा पहुँचाइए

अपने देश के ग़रीबों के लिए त्याग कीजिए। आज कल माल और साधनों की बहुत कमी है। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अपने आप हर चीज़ थोड़ा कम बरते, जिससे दूसरे लोग उससे बिलकुल वंचित न रह जायँ। देश के प्रति यही कर्त्तव्य है।

ऐसे अवसरों से लाभ उठा कर आनन्द प्राप्त कीजिए। आत्म संयम के प्रत्येक कार्य से कुछ पैसा बचता है। ऐसी बचतों के लिए किफ़ायत से काम लीजिए।

काग़ज़ बचाइए। छोटी पर्चियों से काम चला लीजिए। पुराने लिफाफों को फिर से काम में लाइए।

दावतें कम कीजिए।

भोजन बरबाद न कीजिए- यह देश की सेवा होगी।

टेलीफोन की ट्रंक-काल कम कीजिए।

रस्सी-डोरा बरबाद न कीजिए। ये बहुत महँगे और कम हैं।

बच्चों के खिलौने मरम्मत कर लीजिए मत ख़रीदिए

तेज़ रफ़्तार ज्यादा बोझ कम हवा से खराब न कीजिए

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

AAA 1 Hindi.

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

नैपोलियन और हिटलर

योरप के दो फौजी विजेताओं में क्या अन्तर हैं ?

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

योरप के युद्ध का अब अंत होने जा रहा है। १३० वर्ष पूर्व नैपोलियन अपने पराक्रम से जिस प्रकार विजयी होता गया उसी प्रकार हिटलर भी युद्ध के अर्द्ध चरण तक विजयी होता रहा। किन्तु अंत में नैपोलियन और हिटलर दोनों का पराजय हुआ। इस लेख में विद्वान् लेखक ने नैपोलियन और हिटलर की युद्ध-कला तथा उनकी वीरता का वर्णन किया है और दोनों की तुलना की है। लेख अत्यन्त सुन्दर और रोचक है।

नाजी डिक्टेटर हिटलर का पराजय क्यों हो रहा है ?

पिछले कुछ वर्षों में जर्मनी की जो वीर सेनायें योरप के हर एक देश की राजधानी को रौंदती और तहस-नहस करती हुई मँडराती थीं आज वह सिकुड़ कर अपने देश की राजधानी बरलिन की रक्षा करने के लिये बाधित हुई हैं। सन् १९४२ में योरप के केवल चार देश स्पेन, पुर्तगाल, स्विट्ज़रलैंड, स्वीडन जर्मनी की इस विभीषिका से बच रहे थे। शक्तिशाली रूस का मानमर्दन हो चुका था किन्तु उसकी राजधानी मास्को जर्मनी के कब्जे में न आई थी। विजय के उस मदमति काल में जर्मनी का विधाता हिटलर अपने शत्रु ब्रिटेन की लाचारी पर हँसता था। आज सन् १९४५ में योरप के युद्ध का रुख बिलकुल उलट गया है। विशालकाय रूस की विजय में अपनी सब शक्ति क्षीण कर लेने के कारण हिटलर की वही वीर सेनायें सर्वत्र पराजय का मुँह देखने को बाधित हुई हैं। सन् १९४२ में हिटलर सारे योरप का मालिक था। आज वह सारे योरप से हाथ धो बैठा है।

नैपोलियन

आज सारा योरप हिटलर का विरोधी है। योरप ही नहीं, अमेरिका, अफ्रीका व एशिया के अधिक राष्ट्र भी उसके दुश्मन हैं। हिटलर की ही भाँति नैपोलियन की आँधी भी आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व योरप में आई थी। कार्सिका के एक छोटे गाँव में पैदा हुआ वह कृश युवक किस प्रकार फ्रांस का सम्राट् बना, यह सर्वविदित है। फ्रांस का आधिपत्य पाकर अनेक बार नैपोलियन ने सारे योरप के दाँत खट्टे किये थे। उन दिनों की ज्ञात दुनिया में अमेरिका, अफ्रीका व आस्ट्रेलिया का अभी उदय ही हुआ था। रह जाते हैं प्राचीन दुनिया के योरप, मिस्र और एशिया। बहादुर नैपोलियन योरप को संत्रस्त कर मिस्र में पहुँचा था और वहाँ से आगे बढ़कर एशिया के स्थल मार्ग से सुवर्णभूमि भारत में पहुँचने की चाह रखता था। नैपोलियन मिस्र में विजयी हुआ, किन्तु टिक न सका। यदि वह टिक जाता तो अवश्य ही एशिया को विजय करने में सफल हो जाता। नैपोलियन की उस विजय के बाद संसार का राजनैतिक नकशा आज किस रूप में होता यह कहना कठिन है। नैपोलियन मिस्र में टिक न सका और अँगरेजी बेड़े से मात खाकर फ्रांस को वापस जाने के लिए विवश हुआ। इसके बाद अपने सुरक्षित बन्दरगाह बोलोन में उसने एक विशालकाय जहाजी बेड़े की आयोजना की ताकि वह अपने एकान्तविरोधी ब्रिटेन को फतह कर सके। नैपोलियन की यह समुद्री योजना अनेक वर्ष तक जारी रही, किन्तु अँगरेजी बेड़े की विभीषिका ने उसे इतना पस्तहिम्मत कर दिया था कि वह इस बेड़े को इँग्लिश चैनल में ही न निकाल सका, इँगलैंड पर हमले का तो कहना ही क्या है ? तब निराश नैपोलियन अपनी दस लाख सुसज्जित सेना लेकर रूस पर चढ़ दौड़ा। वह मार्ग में जहाँ गया कामयाब हुआ और अन्त में राजधानी मास्को का भी मालिक बना। किन्तु रूस की यह विजय उसे महँगी पड़ी और वह वहाँ से जब लौटा तब निस्सहाय था। उसकी सेना के चीथड़े उड़ गये थे। एक वर्ष पहले की लम्बी-चौड़ी सुसज्जित सेना अब अर्धनग्न, बुभुक्षित लोगों की एक टुकड़ी रह गई थी। इसकी संरक्षा में जब नैपोलियन राजधानी पेरिस में पहुँचा तो उसके आगे अन्धकार ही अन्धकार था। अन्त में योरप का वह विजेता वाटरलू के मैदान में जर्मन सेनापति ब्लूशर व अँगरेज सेनानी विलिंगटन की सम्मिलित सेना से मात खा गया और सेण्ट हेलेना के निर्जन द्वीप में कैदी की भाँति रहने को विवश हुआ।

हिटलर

नैपोलियन के बाद हिटलर योरप का दूसरा विजेता है। योरप के पिछले सन् १९१४-१८ के युद्ध में जर्मन सेना ने अनेक युद्धों में सफलता प्राप्त की थी किन्तु वह युद्ध तो खाइयों का लम्बा चलनेवाला सीमित युद्ध था। उन दिनों के जर्मन नरेश एक-दो देशों के अतिरिक्त योरप के विजेता न बने थे। नैपोलियन के बाद सारे योरप को अकेले रौंदने का सौभग्य केवल हिटलर को ही प्राप्त है। नैपोलियन की भाँति हिटलर भी पूर्व की अर्थात् एशिया की विजय के लिए मिस्र, सीरिया और यूनान में पहुँचा था। यदि वह स्वेज नहर को हथिया सकता तो संसार का राजनीतिक नकशा कुछ और ही होता। उस हालत में वह अबीसीनिया में लड़ती हुई इटली की फौजों को युद्ध-सामग्री पहुँचा सकता और अदन-द्वारा सुवर्ण भूमि भारत का मालिक बन सकता। किन्तु मिस्र में हिटलर पिछड़ गया और अफ्रीका को खाली करने के लिए विवश हुआ। सन् १९४० में फ्रांस की विजय के बाद हिटलर ने उल्लास-भरे शब्दों में लंदन में चाय पीने की बात कही थी, किन्तु अँगरेजी बेड़े की विभीषिका उसे खा गई और वह इँगलैंड पर हमला करने का साहस न कर सका। यदि वह हिम्मत करता तो स्वयं अँगरेज प्रधान मंत्री चर्चिल के शब्दों में इँगलैंड पर काबिज होता। यथार्थ यह है कि नैपोलियन की भाँति हिटलर भी समुद्र का मालिक न था और अनजाने पानी में डुबकी लगाने को तैयार न था। हिटलर की यह कमजोरी इँगलैंड को फल गई। तब घबराहट व परेशानी में हिटलर रूस पर चढ़ दौड़ा। पिछली शताब्दी के प्रारम्भ में फ्रांस-सम्राट् नैपोलियन रूस पर हमला करने से पहले रूसी जारों के अभिन्न मित्र थे किन्तु विजय के नशे में अपने मित्र पर ही टूट पड़े थे। आज का जर्मन फ्यूहरर हिटलर भी रूसी विधाता स्टालिन का सन् १९३९ से १९४१ तक दिली दोस्त बनता था। यदि वह चाहता तो इस मित्रता को कायम रखकर अन्य दिशाओं में ब्रिटेन को मात दे सकता था, किन्तु विजय के जोश में हिटलर सब कुछ भूल गया और पूर्व की विजय के उन्माद में अपने मित्र से ही लड़ बैठा। परिणाम वही हुआ जो नैपोलियन के जमाने में हुआ था। भेद है केवल अनुपात व समय का। आज हिटलर रूस में सर्वशक्ति क्षीण कर अपने देश में वापस पहुँचा है और योरप में उसके विरोधी भूखे भेड़िये की भाँति उसकी बोटी-बोटी उड़ाने में संलग्न हैं।

हिटलर का वाटरलू

सवाल केवल यह है कि हिटलर का वाटरलू कहाँ होगा ? नैपोलियन की अन्तिम पराजय फ्रांस में न होकर पड़ोसी बेलजियम के प्रसिद्ध मैदान में हुई थी। बेलजियम का छोटे-छोटे टीलों से व्याप्त वह मैदान आज वाटरलू नाम से संसार के इतिहास की कहानियों में शामिल है। पिछले योरपीय युद्ध में कैसर विलियम की सेनायें भी अपने देश में नहीं अपितु पड़ोसी फ्रांस की जमीन में परास्त हुई थीं। देखना यह है कि जर्मनी का विधाता हिटलर क्या जर्मनी में परास्त होता है या पड़ोसी इटली, डेनमार्क व नार्वे में लड़ाई को खींच ले जाता है ? लक्षण यही हैं कि हिटलर के दुश्मन उसे उसके पितृदेश में ही परास्त करेंगे। यदि जर्मनी की फतह के बाद छुटपुटे हमलों के लिए हिटलर पड़ोसी इटली या नार्वे में सरक जाये तो उसका लाभ ही क्या है ? उसका प्यारा जर्मनी तो खत्म हो ही गया। इस दृष्टि से योरप के इन दो विजेताओं में नैपोलियन अधिक ऊँचा है। वाटरलू में वह हारा यह सत्य है किन्तु अन्तिम दम तक उसकी विरोधी सेनायें फ्रांस में नहीं, बेलजियम में थीं। फ्रांस के इतिहास-लेखक नैपोलियन की इस विशेषता का आज भी गर्व से उल्लेख करते हैं। पिछले युद्ध में जर्मन कैसर व उसके सेनापतियों को भी यह फ़क्र हासिल था कि वे हारे किन्तु फ्रांस में, अपने देश में नहीं। स्वयं हिटलर ने सन् १९१८ में फ्रांस की भूमि में हुई जर्मन पराजय का गर्व-भरे शब्दों में उल्लेख किया था। यह गर्व की बात है भी। युद्ध में हार-जीत तो ही होनी है। हार में भी शत्रु के देश को पैरों तले रौंदना एक विशेष गौरव की बात है। नैपोलियन व कैसर को यह सौभाग्य बदा था, किन्तु जर्मन-विधाता हिटलर इस सौभाग्य से वंचित है।

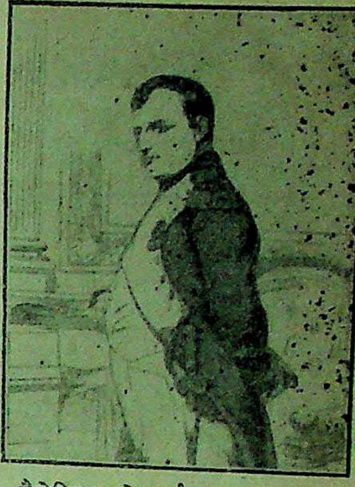

नैपोलियन बोनापार्ट का पराजय भी अन्त में हिटलर की ही भाँति हुआ था।

हिटलर की कमजोरी

एक बात और। विजयी नैपोलियन के जमाने में जर्मनी सशंकित न था। वह अनेक रियासतों का समूह था। नैपोलियन ने इन सब रियासतों को पैरों तले रौंदा। इनमें से सबसे प्रमुख रियासत थी प्रशिया। सन् १८०६ से १८१३ तक इस पर भी नैपोलियन का शासन चला था। इसके बाद इसी प्रशिया के वीर सेनानी ब्लूशर के हाथों नैपोलियन परास्त हुआ। सन् १८१३ से अब तक तीन-चार युद्ध जर्मनी लड़ चुका है। इनमें से १८६५-६६ में आस्ट्रिया से और सन् १८७०-७१ में फ्रांस से वह जीता था। सन् १९१४-१८ के युद्ध में वह हारा। किन्तु किसी भी युद्ध में जर्मनी की सर जमीन पर दुश्मनों की फौज के पैर नहीं पड़े। आज १३२ वर्ष बाद यह पहला अवसर है कि जर्मनी की सर जमीन पर उसके विरोधी सैन्य पहुँचे हैं। नैपोलियन वाटरलू में हारा था किन्तु उसके अपने देश का शत्रुओं ने अंगभंग नहीं किया था। फ्रांस के मातहत देश अवश्य आजाद हुए थे। आज जर्मनी के विरोधी हिटलर को हराकर उसके अंगभंग की भी इच्छा रखते हैं। इस कलंक का टीका भी हिटलर के माथे पर रहेगा। यह सब कुछ होते हुए भी हिटलर का नाम संसार के बड़े बड़े विजेताओं की श्रेणी में लिखा जायेगा और सत्य यह है कि यदि वह दो-एक राजनैतिक भूलें न करता तो यथार्थ में आज संसार का सर्वोत्कृष्ट विजेता कहलाता।

युद्ध की बातें—

बड़ी ही मनोरंजक और आकर्षक होती हैं। वर्तमान युद्ध को अमेरिका के प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने 'विश्वसंग्राम' यह नाम दिया है। आपको यदि इस युद्ध के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी हो तो ये पुस्तकें तुरन्त मँगवाइए।

रणमत्त संसार १-)
जर्मनी का आक्रमण नार्वे पर ॥)
आधुनिक अस्त्र-शस्त्र ॥)
वर्तमान युद्धकला २)
विश्व-संग्राम के दलबल और उनका भविष्य ॥=)

इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग

मातृमण्डल

महिला-समाज की प्रगति में क्या बाधायें हैं ?

सामाजिक रूढ़ियों रीति-रिवाजों का दमन जरूरी क्यों ?

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०

संयुक्त प्रांतीय गर्ल्स स्कूलों की चीफ़ इंस्पेक्ट्रेस मिस विलियम्स।

उन्नति का आकांक्षी, हमारा महिला-समाज, आगे बढ़ता है, किन्तु रूढ़ियाँ उसके मार्ग में सतत बाधायें समुपस्थित करती रहती हैं। प्रत्येक कार्य में बाधाओं का आना स्वाभाविक ही है, परन्तु हमारे देश में महिला-समाज इतना सुषुप्त तथा शक्तिहीन है कि वह अपने मार्ग के रोड़े हटाने में समर्थ नहीं है। रूढ़ियों ने नारीवर्ग को वास्तव में अबला बना रक्खा है। पाश्चात्य देशों में समाज के उत्थान के साथ महिला-समाज ने भी आशातीत उन्नति की। उन देशों में स्त्रियाँ, मनुष्य की वास्तव में अर्द्धांगिनी बनती हैं। मनुष्यवर्ग के साथ साथ वे सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों में हाथ बटाती हैं, परन्तु हमारे परतन्त्र देश में, स्त्रियाँ सम्मानित बन्दी का सा जीवन व्यतात करती हैं। घर की चार दीवालों में, आभूषणों से लदी और अपनी दशा में प्रसन्न नारियों की दशा, जेल में बेड़ी तथा हथकड़ी से जकड़े बन्दियों से किसी भी प्रकार कम नहीं है। श्रीमती पंडित जैसी कुछ विदुषियों को छोड़ कर अन्य देवियों में जाग्रति के कुछ भी चिह्न नहीं दृष्टिगोचर होते हैं। शहरों की स्त्रियों से देहाती नारियों की दशा और भी अधिक शोचनीय है। उन्हें यही नहीं पता कि हमारा देश क्या चाहता है। नेहरू और पन्त जैसे नेता जेल-सेवा क्यों कर रहे हैं और वर्तमान महायुद्ध के समाचार क्या हैं। इन सबके अन्त और मूल में एक महान् कारण है, उनकी अज्ञानता तथा अशिक्षा।

अशिक्षा तथा अज्ञानता के अभिशाप से अभिशप्त हमारे देश की नारियाँ उन्नति के पथ पर अग्रसर होती हैं; परन्तु अवनति के अंधकारमय गर्त्त में लुढ़कती जाती हैं। अशिक्षा के कारण, यों तो, समस्त भारतवर्ष संकट का सामना कर रहा है परन्तु विशेष रूप से इस देश की स्त्रियों को अज्ञानान्धकार से बाहर निकालने के लिए स्त्रियों के लिए शिक्षा की महान् आवश्यकता है।

जो देश जितना ही अधिक शिक्षित होगा, उतनी ही अधिक उसकी उन्नति होगी, इसमें सन्देह नहीं है। उन्नति शिक्षा के बिना दुस्तर और दुःसाध्य होगी। फलतः स्त्रियों के लिए शिक्षा अनिवार्य आवश्यकता है। हमारे पूर्वज स्त्रियों की शिक्षा के बड़े विरोधी थे। उनके अनुसार स्त्रियों के लिए इतनी ही शिक्षा आवश्यक है जितने से वे रामायण का पाठ कर लें; घर का हिसाब लिख लें तथा धोबियों के लिए कपड़े लिख लें। परन्तु समय सदैव परिवर्तनशील है। आज हमारे देश की नारियों के लिए उच्च शिक्षा तथा मनन की आवश्यकता है। बिना उच्च शिक्षा पाये हमारे यहाँ की देवियाँ देश के विधान तथा अन्य आवश्यक राजनैतिक विषयों का अध्ययन किस प्रकार कर सकेंगी ? धार्मिक विषयों के अध्ययन तथा मनन के लिए भी उच्च शिक्षा अपेक्षित है। स्त्रियों की शिक्षा के हेतु ब्रिटिश सरकार भी प्रयत्नशील नहीं दिखाई देती है। जिस देश में चार-पाँच नागरिक प्रतिशत पढ़े-लिखे हैं, वहाँ पठित स्त्रियों की संख्या के विषय में बात करना ही व्यर्थ है। हमारे देशवासी १०० प्रतिशत ग्रामीण हैं। इन ग्रामों में बालकों की शिक्षा के हेतु समुचित प्रबन्ध नहीं है, फिर बेचारी बालिकाओं के लिए क्या कहा जा सकता है। कांग्रेस राज्य के साथ रात्रि-पाठशालाएँ भी विलीन हो गईं। कन्या-पाठशालाओं का, आज भी ८५ प्रतिशत गाँवों में, नाम तक नहीं है। गृहलक्ष्मी सब अलंकारों से विभूषित होते हुए भी, बिना पढ़े-लिखे शोभा को नहीं प्राप्त होती है। अतः हमारे महिला-समाज के लिए सुशिक्षित होना अतीव आवश्यक है। बिना शिक्षा स्त्रियों की उन्नति होना असम्भव है। स्त्रियों के लिए पुस्तकालयों की भी बड़ी आवश्यकता है। उनके पुस्तकालयों में स्त्री-विषयक पुस्तकों के अलावा धर्म, राजनीति, समाजसुधार तथा अन्य उपयोगी विषयों की पुस्तकों का होना उपादेय होगा।

जीवन के इस महान् संघर्ष प्रधान-समय में, जब कि पेट के गड्ढे को भरना दुष्कर हो रहा है, तन को सूत के कुछ तारों से ढकना दुर्लभ हो रहा है और जब विज्ञान-विषयक मानव-ज्ञान, मानवता के इतिहास को क्रूरता तथा निर्दयता से ओत-प्रोत कर रहा है तथा युद्ध की विषम परिस्थितियाँ संसार का मानचित्र (MAP) प्रतिक्षण परिवर्तित कर रही हैं हमारा महिला-समाज पर्दे के कारण और भी पिछड़ा तथा उन्नति-पथ से विलग है। पर्दा की कुप्रथा का इतिहास, भारत में यवनराज्य के इतिहास के साथ प्रारम्भ होता है। पर्दा ने उनके दैनिक जीवन को शुद्ध वायु-रहित, प्रकाशहीन, सीलनयुक्त घरों में ही सीमित कर दिया है। पर्दा की कुप्रथा के दोष नित्यप्रति समाचारपत्र देते रहते हैं, फिर भी उसका प्रभाव नहीं के बराबर दिखाई देता है। वास्तव में, पर्दा दुराचार से स्त्रियों की रक्षा नहीं कर सकता। प्रायः देखा जाता है कि भारत में पर्दा करनेवाली कुछ जातियों में दुराचार विशेष रूप से फैला है। पर्दे से बाहर निकल कर यदि देवियाँ अपने देशवासियों का साथ दें तो राजनैतिक समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। जब अन्य अन्य देशों में स्त्रियाँ वायुयान चालन की प्रतियोगिता में पारितोषिक पा रही हैं, उस युग में हमारे यहाँ की स्त्रियाँ अपन जेठ, ससुर तथा घरवालों से भी पर्दा करके जीवन के दिन भर रही हैं। उन्हें चाहिए कि घर से बाहर निकल कर समाज, देश तथा अपनी गृहस्थी की सेवा करें। पति के साथ धनोपार्जन करके वे अपनी गृहस्थी को और भी सुखद बना सकती हैं। बच्चों की शिक्षा का भी अ अच्छा प्रबन्ध कर सकती हैं।

संयुक्त प्रांत की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय का
श्रीमती उमा नेहरू।

नारीवर्ग की उन्नति में दहेज, इ अन्य अनेक बाधायें हैं परन्तु ये सभी समय दूर हो सकती है जब स्त्री-समाज इच्छा करे। बिना उनकी इच्छा, इ निवारण होना कठिन है। 'महिला-स सुधारक सभा', 'महिला हितैषी इत्यादि नामक अनेक संस्थायें आज भी परन्तु वे क्रियात्मक केवल, चुनाव त रहती हैं। उनकी सजीवता पदाधि के नाम प्रकाशन के पश्चात् नष्ट हो है। कानपुर में भी एक इसी प्रकार विशेष सभा है, जो मंत्राणी जी के सुशोभित करने के अलावा और प्रयोजन की नहीं है। उक्त सभा का केवल चुनाव कर लेना है, समाज स्त्रियों की उन्नति के नाते वह जीवित पर भी मृत है। आशा है कि हमारी लिखी बहनें इस ओर विशेष रूप से देंगी और अपने वर्ग की उन्नति में योग्य सहायता प्रदान करने के लिए उ होंगी।

"सरस्वती सिरीज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशि
उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित
हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहा

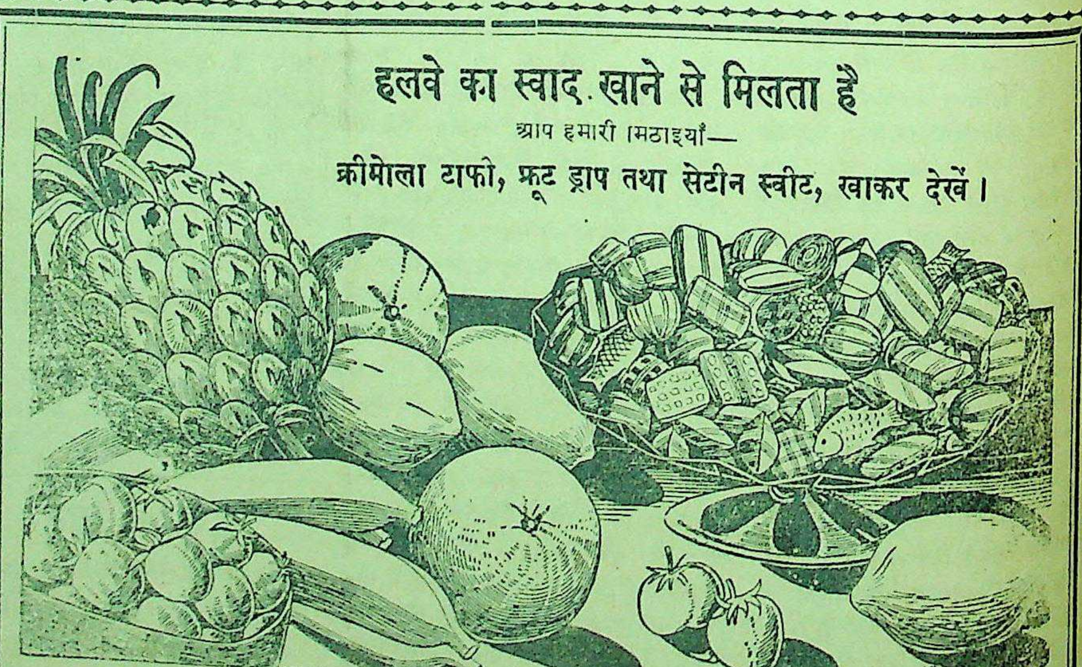

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

कहानी

काले झंडे

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

> हिन्दू पत्नी का सर्वस्व पति ही है। वह उसकी प्रसन्नता के लिये अपने जीवन का अपूर्व त्याग और बलिदान कर सकती है। सरस्वती पति से परित्यक्ता थी, उसने भी अन्त में सहारा लिया, भारत-सरकार-द्वारा मनोनीत राउ-कमेटी को काले झंडे दिखाने का । [illegible] हनलाल नेहरू की कहानी सुंदर और रोचक है।

प्यारेमोहन की सगाई तो उनकी छोटी ही अवस्था में हो गई थी परन्तु विवाह उनके बी० एस-सी० पास करने के बाद हुआ। अपनी हैसियत के अनुसार सरस्वती भी पिता ने बड़ी धूम-धाम की। सरस्वती भी धनी मा-बाप की बेटी थी। मगर हिन्दी के सिवा कुछ पढ़ी नहीं थी और वह भी काम चलाऊ। सूरत-शक्ल, रंग-रूप भी बहुत बुरा नहीं था मगर न मालूम क्यों प्यारेमोहन को वह पसन्द नहीं आई।

प्यारेमोहन मित्रों से कहते कि "बाबू जी ने बेमतलब मे विवाह कर दिया। मैं तो चाहता नहीं था।" जब मित्रों ने इसका मजाक उड़ाया तब वह बोले—"भाई क्या बताऊँ, पिता जी की आज्ञा के सामने इनकार करने की हिम्मत नहीं हुई।"

कालेज खुल चुका था। सरस्वती के घर में प्रवेश करते ही प्यारेमोहन चले गये और गरमी की छुट्टी तक घर न लौटे। पिता जी को लिख भेजा कि मैं अगर फर्स्ट क्लास में पास हो गया तो मुझे 'स्कालरशिप' मिल जायेगा और मैं ऊँची पढ़ाई पढ़ने के लिए विलायत जा सकूँगा।

साल बीतते क्या देर लगती है? स्कालरशिप लेकर प्यारे मोहन विलायत जानेवाले थे। घर भी जाना ही था। सरस्वती भी वहाँ मौजूद थी। वह जितने दिन घर रही, वह सरेशाम अपना कमरा बन्द कर लेते और सबेरे खोलते। सरस्वती भीतर भी न घुस सकती। सब घर वाले समझ गये थे कि इन्होने उसको छोड़ दिया है। घर की चर्चा का यह एक विषय बन गया था।

प्रभावती ने भाई को समझाया कि उनका यह काम ठीक नहीं है। सरस्वती उनकी विवाहिता पत्नी है। उसमें कोई दोष नहीं और न उसने उनका कुछ बिगाड़ा ही है। प्यारेमोहन ने फिर भी साफ जवाब दे दिया कि उनका विवाह उनकी मर्जी से नहीं हुआ और सरस्वती को वह स्वीकार नहीं कर सकते।

कई वर्ष बाद वह जब घर लौटे तब सरस्वती को घर ही में पाया। वह इस आशा से बैठी थी कि शायद वह अपना विचार बदल दें। प्रभावती भी मौजूद थी। हाँ, सरस्वती अपनी फिक्रों से दुबली और काली हो गई थी। बहन ने फिर कोशिश की कि वह पत्नी को ग्रहण कर लें, मगर उन्होंने फिर भी इनकार किया। इस समय तक सब लोग जान गये थे और सरस्वती पति का प्रेम पाने से निराश हो चुकी थी मगर उनके माता-पिता की सेवा में तत्पर रहती। प्रभा ने एक चाल चली। वह बोली—

"भाभी, तुम आज भैया के लौटने के पहले ही उनकी पलँग के नीचे घुस रहना और आधी रात को उन्हें जगाना।"

"अगर वह बिगड़ जायें तो?"

'तो मार थोड़े ही डालेंगे' बाहर ही तो कर देंगे, इससे ज्यादा क्या कर सकते हैं? देखो शायद तरकीब चल जाये। तीन-चार दिन में वे नौकरी पर चले जायेंगे।

इस चाल को सरस्वती ने तो पसन्द किया ही वरन् प्रभा की माँ को भी वह पसन्द आई। मगर इसके सफल होने में तीनों को सन्देह रहा। माता ने कहा, जब पुरुष ज्यादा जिद्दी हो जाता है तो स्त्रियाँ कर ही क्या सकती हैं? हठधर्मी का जवाब ही क्या है?

प्यारेमोहन घूम कर जरा देर से लौटे। पुराने मित्रों से मिलने में देर हो गई। घर पहुँच कर वह भोजन करके कमरे में सो रहे। अँधेरे में उन्हें कुछ खटका मालूम हुआ तो हड़बड़ाकर उठे। सरस्वती चारपाई के नीचे से निकल कर बाहर जा रही थी। उसे उन्हें जगाने का साहस नहीं हुआ। दरवाजे की कुंडी खोलने के खटके से यह जाग गये थे। दरवाजा थोड़ा-सा खुल चुका था कि दौड़ कर इन्होंने चोर को पकड़ कर भीतर खींचा और रोशनी जलाई तो एकदम गरम हो गये। धमा-चौकड़ी का शब्द सुनकर उनकी माँ और प्रभा भी वहाँ आ पहुँची।

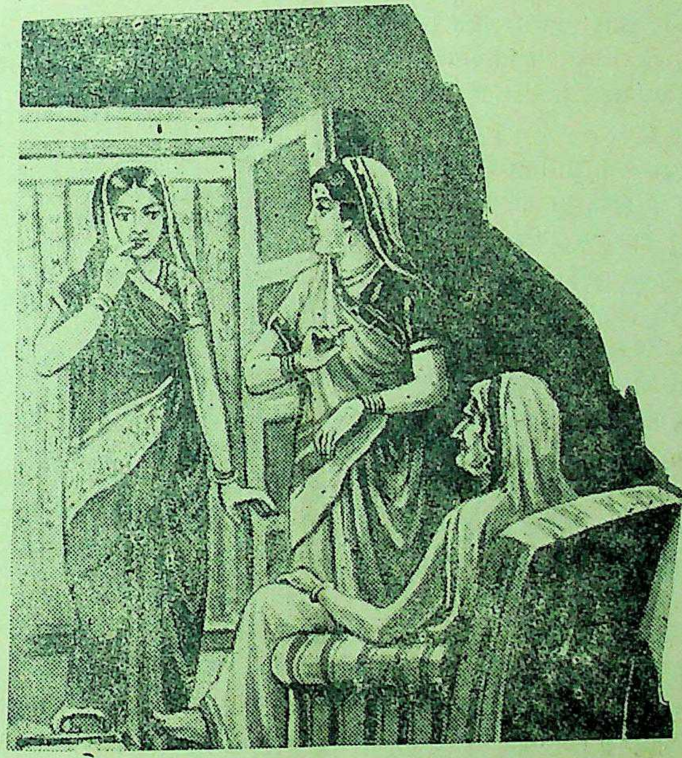

प्यारेमोहन की माँ और उसकी बहन प्रभावती को देखकर दुखी हो जातीं।

"अम्मा मुझे यह हरकत पसन्द नहीं। मैं कह चुका हूँ कि इन्हें पत्नी के रूप में ग्रहण नहीं कर सकता। मैं इस घर में कल से कदम नहीं रखूँगा।" प्यारेमोहन ने बड़बड़ाते हुए कहा।

(२)

कई वर्ष बीत गये। सारा घर उन्हें समझ गया था। घर का खर्चा वह बराबर भेजते मगर कभी घर आते तो दो एक-दिन को और फिर भी वह सरस्वती से बोलते तक नहीं। सरस्वती भी अपना सिर पीट कर रह जाती थी। वह समझ चुकी थी कि उनसे मेल नहीं हो सकता। वह हिन्दू विधवाओं की तरह रहती और उन्हीं का गुण-गान किया करती। इस बीच में प्यारेमोहन के माँ-बाप का देहान्त हो चुका था और घर में विधवा बहन और परित्यक्ता पत्नी ही थीं।

लेजिस्लेटिव असेम्बली में हिन्दू-शास्त्र-सुधार का कानून पेश हुआ, राजनैतिक क्षेत्र में बड़ी हलचल मची थी। कांग्रेसी नेता कैद में थे। मुस्लिम लीग, हिन्दू-सभा में बमचख मची हुई थी। सरकार ने सोचा कि एक सिलेक्ट कमेटी बनाई जाय जो देश भर की यात्रा करके यह जाँच करे कि हिन्दू जनता इन सुधारों को चाहती भी है या नहीं? हिन्दुओं में मतभेद था। कुछ इन सुधारों के पक्ष में थे। वह तलाक और पुनर्विवाह का अधिकार स्त्रियों को देना पसन्द करते थे। दूसरे इसका विरोध करते थे। अलग-अलग जत्था बनाकर बातचीत करते थे। एक कांग्रेसी कह रहे थे कि वह इस सुधार की तरफ हैं मगर यह समय ऐसे झगड़े उठाने का नहीं। स्वाधीनता की लड़ाई में आपस में झगड़ा मचाना भूल है। अलग-अलग आलोचना हो रही थी। हिन्दुओं के कई जत्थे थे। मुसलमानों और अँगरेजों के भी अलग अलग दल थे।

मिस्टर टामस ने कहा—जरूर हिन्दू औरत को ऐसा अधिकार मिलना चाहिए।

मिस्टर डिक बोले—हमें इससे क्या, अधिकार मिले या न मिले, हम क्यों दखल दें।

मिस्टर हैरी बोले—हमें एक फायदा है कि हिन्दुओं में मतभेद जबरदस्त हो जायेगा और कांग्रेसी बहुत से टूट जायेंगे। हमारा पल्ला भारी हो जायेगा।

यह मत बहुत से लोगों को पसन्द आया और सिलेक्ट कमेटी में भेजे जाने का प्रस्ताव स्वीकार हो गया। राउ-कमेटी देश के खर्चे पर भारतवर्ष की यात्रा करने लगी और कितनों ही का ध्यान राजनैतिक क्षेत्र से खिंचने लगा।

हिन्दू-सभा ने जगह-जगह काले झंडे उठाये। यही तरीका अपना विरोध दिखाने का कांग्रेस ही ने तो प्रचलित किया था? अब जहाँ राउ-कमेटी जाती वहीं दो-चार दस आदमी काले झंडे लेकर अवश्य मिलते। कहीं-कहीं तो एक-दो स्त्रियाँ भी दिखाई दे जातीं। जब प्यारेमोहन के शहर में यह कमेटी पहुँची तब काला झंडा हाथ में लेकर सरस्वती भी मौजूद थी। प्रभा से कहे बिना वह हिन्दू-सभा के साथ मिल गई थी। जब वह घर से जा रही थी तो प्रभा ने पूछा—'भाभी कहाँ जाती हो?'

"राउ-कमेटी को काला झंडा दिखाने।"

"तुम्हें यह क्या सूझी जो तुम अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मारती हो?"

"शायद जब वह सुनें कि मैं तलाक का विरोध करती हूँ तो हो सकता है कि कुछ पसीजें और मेरे दिन फिरें।"

मनोरंजक चुटकुले

श्यामूबाबू मिजाज के बड़े सख्त आदमी थे। उन्होंने अपने नौकर को हिदायत दे रखी थी कि 'मेरे मुँह से किसी आज्ञा के निकलते ही, तुरन्त उसका पालन किया करो' श्यामू बाबू के बँगले का नाम 'मधुबन' था। बड़ा सुन्दर था वह बँगला, बिलकुल लकड़ी का बना हुआ।......

एक दिन श्यामू बाबू 'कादम्बरी' सिनेमा देखकर आये और बैठक में बैठकर मस्ती के साथ 'आग लगा दो—आग लगा दो, आज मेरे 'मधुबन' में आग लगा दो' वाले गाने की नकल करने लगे।......

नौकर ने जो पास के ही कमरे में झाड़ू लगा रहा था, उनकी यह गूँजती हुई आवाज सुनी......अरे......मालिक का हुक्म है......उसने सोचा—उफ......कल रात ही तो उसे आज्ञा न मानने पर मारा गया था.........आज वह मार न खायेगा, नहीं खायेगा......।

और उसने फौरन ही दियासलाई और सूखी लकड़ी लेकर श्यामू बाबू के 'मधुबन' (बँगला) में आग लगा दी......बेचारे श्यामू बाबू.....

—ललितमोहन उपाध्याय

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री कुमारी शान्ता आपटे !

अभिनय तथा फिल्मी-जीवन पर एक मनोरंजक इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

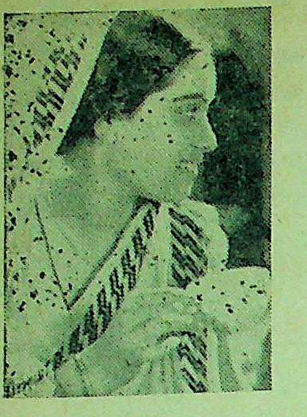

प्रसिद्ध अभिनेत्री कुमारी शांता आपटे।

'देशदूत' के पिछले अंक में कुमारी शान्ता आपटे से भेंट की वार्ता प्रकाशित हुई थी। कुछ प्रश्नोत्तर और भी किये गये जो इस प्रकार हैं—

प्रश्न—फिल्मी-गीत-साहित्य की रूपरेखा क्या होनी चाहिए? क्या आजकल के गीत-साहित्य मानव-जीवन की आकांक्षाओं की पूर्ति करते हैं?

उत्तर—मैं फिल्मों में गीत-साहित्य की रूपरेखा ऐसी चाहती हूँ, जिनमें जन-साधारण के जीवन की अनुभूति हो। चित्रों में ऐसे गाने होने चाहिए जो कि मानव-जीवन की भावनाओं को जागृत कर दें। गाने का एक एक शब्द मानव-हृदय के तह पर बैठता चला जाय। दुनिया में सबसे बड़ी ताकत मैं संगीत (वाद्य, गीत तथा गाने का ढंग) में समझती हूँ। संगीत के सामने पत्थर दिल भी मोम बनकर पिघल जाता है! इसकी शक्ति इतनी प्रबल है कि मानव कठपुतली की तरह इसके सामने नाचने लगता है। आजकल जो फिल्मों में गीत गाये जाते हैं वह मानव-जीवन का चलचित्र चित्रित नहीं कर सकते। गीतों के अन्तराल में राष्ट्रीयता भी होनी चाहिए। हिन्दी के कवियों को इस क्षेत्र में आना चाहिए। वे ही फिल्म के लिए अच्छे गीत लिख सकते हैं। दो-एक हिन्दी के कवि जो कि इस क्षेत्र में आये हैं, उनको पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

फिल्मी-गीत-साहित्य के सिलसिले में एक बात और मैं कहना चाहती हूँ। वह यह कि गलेबाजी करना मैं कतई पसन्द नहीं करती। पक्की चीज के नाम पर घंटों चिल्लाते रहना, और वह भी इस ढंग से कि दर्शक बेचारा उकता कर नींद लेने लगे। जिस प्रकार गीतों का लिखना एक कला है, उसी प्रकार गीतों का गाना भी एक कला है! गीतों की रूपरेखा में गीतों के प्रदर्शन करने की कला भी सम्मिलित है। गानेवाले को यह ध्यान रखना पड़ता है कि गीत के भावों के प्रदर्शन में कोई गड़बड़ी न हो जाय। मेरा अपना निजी गीतों के गाने का तरीका है, उस तरीके को मैं कभी नहीं तोड़ती। मेरा गाने का जो ढंग है—वह फिल्मी-दुनिया में अपने ढंग का अलग है। मैं यह नहीं कह सकती कि यह दर्शक को प्रिय लगता है या नहीं।

प्रश्न—क्या भारतीय नारियों के लिए फिल्मी-संसार में प्रवेश करना उनके आदर्श के अनुकूल है?

उत्तर—क्या नारियों के चरित्र की रक्षा करने के लिए एक रखवाले की जरूरत पड़ेगी? जिन नारियों के चरित्रकी रक्षा के लिए एक "बाडी गार्ड" की आवश्यकता है उनको फिल्मी-दुनिया में कतई नहीं आना चाहिए। जो नारियाँ अपने चरित्र की स्वयं रक्षा करने की क्षमता रखती हैं वही फिल्मी-दुनिया में आकर कामयाब हो सकती हैं। यह तो नारी के व्यक्तित्व के ऊपर निर्भर करता है। यदि हमारा व्यक्तित्व शिथिल हुआ तो हम फिल्मी-दुनिया क्या "धर्म के अखाड़े"—मन्दिरों में भी अपनी रक्षा नहीं कर सकतीं—और यदि हमारे व्यक्तित्व में सबलता हुई, तो हम कहीं भी चली जायें—फिर भी हमारे नाम पर बट्टा नहीं लग सकता।

हमको बेधड़क सिनेमा-संसार में आना चाहिए। साहस को साथ लिये और विलासिता को दूर छोड़ते हुए। मेरे कहने का मतलब यही है कि सिनेमा में प्रवेश करने से पूर्व भारतीय लड़कियों को अबलापन के लबादे को उतार फेंकना होगा। अपने व्यक्तित्व को उज्ज्वल करना होगा। तभी वह सिनेमा-संसार में सफलता के साथ रह सकती हैं।

प्रश्न—क्या अभिनेत्रियों का कर्तव्य राष्ट्र-पथ पर अपने जीवन-स्पंदन को बढ़ाना नहीं है? आज भारतीय अभिनेत्रियाँ राष्ट्रीय वातावरण से अलग-सी क्यों हैं?

उत्तर—भला यह कैसे हो सकता है कि हम राष्ट्रीयता से अलग रहें। राष्ट्रीयता ही हमारे जीवन को उत्थान-पथ पर बढ़ाती है। मेरा अपना आदर्श यह है कि मैं राष्ट्र के लिए सम्पूर्ण जीवन को समर्पण करने के लिए हर वक्त तत्पर रहती हूँ। और यही मैं चाहती हूँ कि सिनेमा-व्यवसाय में काम करनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की जितनी भी घड़ियाँ राष्ट्र के लिए दी जायें मैं उनको जीवन की अमूल्य घड़ियाँ समझती हूँ। अभिनेत्रियाँ नारी-वर्ग से कोई अलहदा नहीं हैं। नारी-जागरण पर ही राष्ट्र का उत्थान निर्भर है। मैं "बापू जी" के उसूलों को पूर्ण रूप से पसन्द करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि अपना जीवन उन्हीं के उसूलों के अनुसार संचालित करूँ। हालाँकि मैंने अपना जीवन बहुत कुछ गांधी जी के रचनात्मक नियमों के अनुसार ही बना लिया है।

प्रश्न—आप हिन्दी की किस प्रकार की कविता पसन्द करती हैं और क्यों? आज हिन्दी-साहित्य जिस मार्ग की ओर जा रहा है, क्या वह उस मार्ग पर चल कर उत्थान के सोपान पर पहुँच सकेगा?

उत्तर—मुझे हिन्दी की वह कवितायें पसन्द हैं जिनमें प्रकृति-चित्रण विशेष है। मैंने इधर हिन्दी की कई कवितायें पढ़ी हैं, जो कि बड़ी अच्छी हैं, लेकिन एक बात मैं चाहती हूँ। वह यह कि कविताओं में शब्दों की दुरूहता न होनी चाहिए। भावों की गम्भीरता अवश्य होनी चाहिए। भाव जितने गहरे होंगे उतनी ही वह कविता प्रभावोत्पादक बनेगी। मैं ऐसी कविता से प्रेम करती हूँ जो कि जीवन का "अग्रदूत" हो। मैं कवि को सामाजिक-जीवन, राष्ट्रीय आकांक्षा, जातीय आदर्श किंवा प्रजा की वेदनाओं का प्रतिनिधि समझती हूँ। आजकल हिन्दी में जिस प्रकार की कवितायें निकल रही हैं, मैं उनको पसन्द करती हूँ—लेकिन उन कविताओं में एक बात की सबसे बड़ी कमी है, वह यह कि पाठक को प्रगति की दौड़ में अपने साथ लिये हुए नहीं जा रही है।

आज हिन्दी-साहित्य की धारा में उफान आया हुआ है। वह किनारों को तोड़-फोड़कर उलटी-सीधी बढ़ रही है। जो भी चीज उफान के सामने आती है वही उस के लपेटे में बही चली जाती है। अभी तक हिन्दी-साहित्य की सीमा नहीं बाँधी गई।

प्रश्न—आपको अपने कौन-से चित्र सर्वश्रेष्ठ मालूम होते हैं और क्यों?

उत्तर—मैं आपके प्रश्न का रुख बदले दे रही हूँ। मुझे अपने कौन से चित्र प्रिय लगते हैं और क्यों? इसी को मैं स्पष्ट करूँगी। मैं अपने चित्रों को सर्वश्रेष्ठता की निगाह से कभी नहीं देखती, किन्तु हाँ अपने कुछ फिल्मों को प्यार अवश्य करती हूँ। मैं अपने चित्रों को क्यों प्यार करती हूँ—शायद आप यह जानना चाहें? इसका जवाब मैं पहले ही दिये देती हूँ! मैं अधिकतर चार चित्रों से विशेष प्रेम करती हूँ। उन चित्रों के नाम ये हैं—"अपना घर", "अमर ज्योति", "दुनिया न माने?", "कादम्बरी" इन चारों चित्रों में जीवन के अलग आदर्श हैं। इन फिल्मों में जीवन की ऐसी समस्यायें हल की गई हैं, जो कि रात दिन समाज के रंग-मंच पर घटित हुआ करती हैं। "अमर ज्योति" चित्र को लीजिए। इसको बने हुए काफी अरसा हो गया, किन्तु फिर भी इसकी ज्योति अमर है! लड़खड़ाती दुनिया के अन्धकारमय मार्ग को अमर ज्योति प्रकाशित करती रहेगी। इस चित्र में प्रेम और कर्तव्य का विश्लेषण और नारी-आदर्श का भी चित्रण किया गया है। भारतीय सभ्यता का लिहाज करते हुए—नारी का आदर्श पति की सेवा करना जरूर है, लेकिन पति के पाशविक अत्याचार के खिलाफ आवाज बुलन्द करना भी नारी-आदर्श में शामिल है।

"अपना घर" में राष्ट्रीय जीवन का दिग्दर्शन है। "अपना घर" आजकल की फिल्मी-दुनिया में अपना निराला अस्तित्व रखता है।

"दुनिया न माने" को और भी ज्यादा मैं पसन्द करती हूँ। इसलिए नहीं कि मैंने उसमें अभिनय किया है, बल्कि इसलिए कि उसमें ऐसे सामाजिक पहलू का दिग्दर्शन किया गया है, जिससे समाज की लाखों लड़कियों की जान बच सके। साठ

के बुड्ढे जो कि सोलह साल की

से शादी करने के लिए उतावले रहते

उनकी तो इस चित्र में खूब खबर ली

है। इस चित्र में सामाजिक व्यवस्था

काफी प्रकाश डाला गया है।

फिल्म जगत की सफल अभिनेत्री वासंती।

"कादम्बरी" यह मेरा हाल का

है। इसको मैं इसलिए चाहती हूँ कि

प्रेम का वास्तविक चित्रण किया गया

उच्छृङ्खल भावनाओं को समेटते हुए

क्या है? इसका स्पष्टीकरण इस

बहुत कुछ हो जाता है। यह चित्र

प्रेम का आदर्श है। बस, इतना ही

कहना है कि इन चारों फिल्मों के

में बाकी चीजें जनता के देखने की

इसीलिए मैं अपने इन चित्रों को

करती हूँ!

बातचीत करते-करते काफी वक्त

गया था। अतः मैं कुमारी जी से

हुआ।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षित)

क - लं - क
लेखक, राजेश्वरप्रसादसिंह
इस पुस्तक में लेखक की ११
नियों का संकलन किया गया है।
क्षणिक आवेश में आ भयानक भूल
बैठता है, इसका मार्मिक चित्रण
किया गया है। ऊपर से साफ और सुन्दर
दिखाई देने वाले लोग अन्तरंग में कि
कलुषित होते हैं, यह भी आपको
ज्ञात हो सकेगा। मूल्य १) एक रुपया
"पारसी-परिचय"
लेखक, पं० कृपानारायण पाठक
एम० ए०, एल० टी०
इस पुस्तक के सम्बन्ध में मान
बा० सम्पूर्णानन्द भूतपूर्व शिक्षा
यू० पी० लिखते है कि..."यह पु
उपादेय है। इसकी सहायता से थोड़े
अपने देश में रहनेवाले पारसी भा
का परिचय मिल जाता है और
संस्कृति, धर्म्म और इतिहास के कुछ
अंशों पर प्रकाश पड़ जाता है जि
हम आज भूल गये हैं।" मूल्य ॥।)
आने।
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

हाय! हाय!! युद्ध बन्द हो रहा है!!!

लेखक, श्री वसंत-मित्र, पूना

अभी पौ फटी थी। मैं हमेशा सवेरे हलने जाता हूँ। उस दिन भी कपड़े पहनकर बाहर निकला। हर दिन कोई बुहारन या ग्वाला ही रास्ते में मिलता, बाकी लगभग सुनसान रहता। इसलिए मैं अपनी मौज में गुनगुना रहा था 'लड़ाई लड़ाई आऽऽयी' और नीचे देखकर चल रहा था।

एकाएक एक भयानक चिल्लाहट सुन पड़ी। मैं चौंककर देखता क्या हूँ कि सामने एक मजदूर, सिर थामे, चिल्ला रहा था 'हाय! हाय!! लड़ाई बन्द हो रही है।' मुझे बड़ा अचरज हुआ। मैं दौड़कर उसके पास पहुँचा। वह चिल्ला रहा था। मैंने उसे डाँटा 'अरे, आदमी के बच्चे! क्या चिल्ला रहा है?" वह चौंककर मेरी ओर निहारने लगा। बोला, कुछ नहीं। मैंने फिर कहा—"क्यों रे, सवेरे सवेरे क्यों ढारें मार रहा है और वह भी यहाँ आम सड़क पर?"

"बाबू जी! अब आप मुझे चाहे तना फटकार सकते हैं। अब हमारा हा ही क्या है? लड़ाई बन्द होती न सुनाई पड़ती तो आपकी क्या मजाल थी..." उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा।

में दूध नहीं मिला सकेंगे। अब तो हमें दूध के ग्राहक ढूँढ़ने पड़ेंगे। अब तक तो हम राजा थे। झख मारकर आप हमारी ठोड़ी पकड़ते थे। मालूम होता है, जर्मनीवाले ग्वालों ने दूध के बदले सफेद पानी ही जर्मन सैनिकों को पिलाया, नहीं तो इतनी जल्दी वह थोड़े ही हारते?"

इतने में पीछे से बड़ा हो-हल्ला सुनाई दिया। कुछ कह रहे थे 'पकड़ो पकड़ो' कोई कह रहे थे 'मारो मारो' मैंने घूम कर देखा 'एक साफ-सुथरे कपड़े और नेकटाई डाटे हुए सज्जन सिर पर पाँव रख कर भाग रहे थे और उनके पीछे लकड़ी सँवारे कई मारवाड़ी और पंसारी दौड़ रहे थे। मेरे पास तक वे सज्जन पहुँचे और चिल्लाने लगे 'बचाओ ब-चा-ओ।' इसके पहले कि मैं कुछ करता उन पर कई डंडे बरस पड़े और वह साहब रास्ते ही में लेट गये। मैं बीच-बचाव करने लगा। "अरे भाई, यह क्या गजब है! तुम जैन मारवाड़ी होकर एक संभ्रांत सज्जन को..."

मेरी बात काटकर कई चिल्लाये "ये संभ्रांत सज्जन! आप इनके कौन होते हैं? तो आपको भी..."

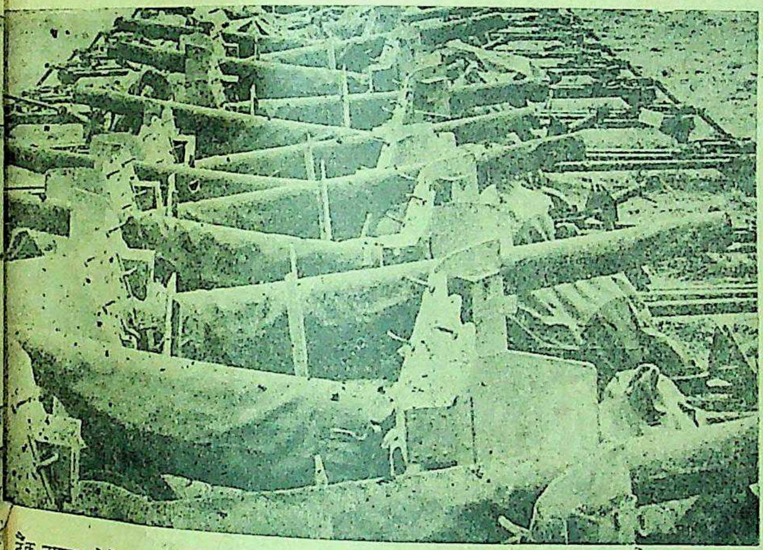

टैंक नाशक तोपों की विशाल पंक्ति। यूरोप पर आक्रमण के लिये विशाल तैयारी का रूप।

"अरे, तुझे किस बेवकूफ ने बताया क लड़ाई बन्द हो गई है? यदि हो ी गई तो तुझे इसमें दुःख क्यों होता?"—मैंने कहा।

"बाबू जी! आप पढ़े-लिखे होकर ी मुझसे ऐसी बात पूछते हैं? हम जदूर हुए तो क्या हुआ? क्या हम खबार नहीं पढ़ते हैं? चर्चिल, साहब ने मारे सिर में पत्थर मारा है। जर्मनी को ीत लिया। लड़ाई बन्द हो रही है। अब मारे भाग में वही लात-घूँसे और गालियाँ दी हैं। लड़ाई चालू रहने पर हम द-माँगी मजदूरी पाते हैं। ताड़ी-शराब का शा करके भी हमें खाना मिल जाता। आप जैसे बाबू कितनी नम्रता से ा आते हैं..."

"बस, बस, क्या बकवास करता है। तुझे..." इतने में सामने से ग्वाला धीरे रे मुँह लटकाये आ रहा था। मैंने कहा, क्यों भाई, आज हाथी की-सी चाल क्यों ल रहे हो?"

"नहीं तो; पर हाँ, अब टाँगों में चल नहीं जो कल था। अब हम पानी

"नहीं, नहीं, मैं इन्हें जानता तक नहीं बाबा।"

"तो ठीक है। आपको मालूम है? यह तो कंट्रोलवाले इन्स्पेक्टर हैं। लड़ाई के दिनों में नाकों दम कर रक्खा था इसने! विजिट के नाम पर ५ सेर इलायची खा गये होंगे। अब लड़ाई बन्द हो रही है न।"

"फिर भी बेचारे को आपने व्यर्थ में पीटा। वह तो बेचारा कानून का पाबन्द था।"

"अजी, छोड़ो भी।" एक पंसारी बोल उठा; "इसने कंट्रोल के नाम पर मुझसे बर्थ-कंट्रोल की एक पुस्तक भी खरिदवाई। मैंने समझा कानून की पुस्तक होगी। पड़ोसिन ने हमारे घर में बताया तो बखेड़ा पैदा हो गया।'

इतने में सामने से पुलिस का जत्था आते दिखाई पड़ा। सब तितर-बितर हो गये। मैं वहीं डटा रहा। मैं समझ गया कि मुझे अवश्य भारत-रक्षा-कानून में पकड़ लेंगे। मैंने मन में कहा, अच्छी रहेगी। मैं भी लीडर बन कर घर लौटूँगा। मैं अकड़ कर खड़ा हो गया। पुलिस के पास आते ही मैं चिल्लाया—"वन्देमातरम्। इन्किलाब जिन्दाबाद।'

मैंने आँखें जोर से मूँद लीं कि अब मुझे जकड़ लेंगे, शायद गोली भी चल जाये। इसलिए मैं जोर से चिल्लाया 'अखंड भारत अमर रहे।'

मुझे पुलिस ने पकड़ कर झकझोरा किन्तु मीठे स्वर में कहा—"बाबू जी, क्यों चिल्ला रहे हो! समय को देखो।"

"हाँ, हाँ, समय को देख रहा हूँ। अब लड़ाई बन्द हो रही है तभी तो नम्रता से मीठी बोली बोल रहे हो।"

किन्तु पुलिस ने मुझे फिर जोर से धक्का दिया और मैं धड़ाम से गिर पड़ा...

मेरी आँखें खुल गईं। मेरी छाती पर अखबार पड़ा था और मेरी १६ साल की पुत्री मुझे जगा रही थी।

मैं चारपाई पर उठ बैठा।

पुत्री ने कहा, "उठिये न। आज राशन लाने का दिन है। शक्कर ले आओगे तब तो चाय बनेगी?"

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सब को बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप **'तुलसी-रत्नावली'** का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १।।) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

ईस्ट इन्डियन रेलवे

विशेष सूचना

अर्द्धकुम्भ मेला, हरद्वार १९४५

युक्तप्रान्तीय सरकार ने नम्बर ४१६/३-१३-१९४५, ता० ३०-१-४५ को निम्नलिखित विज्ञप्ति प्रकाशित की है:—

भारत-रक्षा कानून की धारा ८५—बी की उपधारा (१) के अनुसार संयुक्तप्रान्त के गवर्नर महोदय ने निम्नलिखित घोषणा की है:—

(अ) कोई भी व्यक्ति, ड्यूटी पर जाते हुए फौजी आदमियों तथा तीन वर्ष से कम के बच्चों के अतिरिक्त।

(ब) अथवा अलावा उन लोगों के जिनके पास पब्लिक हेल्थ डाइरेक्टर या डिप्टी डाइरेक्टर, यू० पी० की लिखित आज्ञा हो।

नीचे लिखी हुई रेलवे स्टेशनों को रेल से यात्रा न कर सकेगा और न कोई रेलवे १५ मार्च से १३ अप्रैल तक (जिसमें ये दोनों दिन भी शामिल हैं) इन्हें यात्रा करने देगी जब तक कि

(स) यात्री हैजे की सुई १ नवम्बर १९४४ के बाद न लगवा चुका हो और सरकार द्वारा नियुक्त आफिसर का इस बात का प्रमाण-पत्र रखता हो।

(द) अथवा या तो

(१) रेलवे के कर्मचारी इस बात से सन्तुष्ट हो जायँ कि वह व्यक्ति अर्द्धकुम्भ मेला हरद्वार में सम्मिलित होने के विचार से यात्रा नहीं कर रहा है, या

(२) यात्री के पास मेला इन्चार्ज की, किसी डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट अथवा डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट द्वारा आज्ञा देने के लिए अधिकृत किये हुए अन्य मजिस्ट्रेट की लिखित आज्ञा हो।

रेलवे स्टेशनों की सूची

ईस्ट इन्डियन रेलवे

बलिया खेरी	दौसनी	मुअज्जमपुर नरायन	पाथरी	केसराव
चोडियाला	लश्कर	नजीबाबाद	ज्वालापुर	डोईवाला
इकबालपुर	रुसी	साने रोड	हरद्वार	हर्रावाला
रुड़की	बलवाली	कोटद्वारा	रायवाला	देहरादून
लंधौरा	चन्दौक	ऐथल	ऋषीकेश	मसूरी

एन० डब्ल्यू० रेलवे

सहारनपुर — सरसवा

(आज्ञानुसार)

इसी प्रकार की आज्ञा बिहार सरकार-द्वारा भी हैजे के टीके के सम्बन्ध में निकाली जा रही है।

बंगाल तथा अन्य प्रान्तों से हरद्वार के मेले में आनेवाले यात्रियों को सूचित किया जाता है कि जब तक उनके पास हैजे के टीके का १ नवम्बर १९४४ के इधर का प्रमाण-पत्र न होगा तब तक वे लोग मेले में नहीं आने पावेंगे।

इस प्रमाण-पत्र की जाँच मेले के चारों तरफ बनाये हुए नाकों-द्वारा होगी और जिनके पास प्रमाण-पत्र न होगा वे मेले में न आ सकेंगे। यात्रियों के लिए यह आवश्यक है कि मेले की यात्रा करने के पहले वे लोग हैजे का टीका लगवा लें तथा इसका सार्टिफिकेट हासिल कर लें।

टिकट खरीदते समय यह सार्टिफिकेट टिकट बाबू को दिखाना होगा। टिकट बाबू स्टेशन की मुहर लगाकर सार्टिफिकेट यात्री को वापस कर देंगे।

स्वास्थ्य-व्यायाम

आई गर्मी की ऋतु आई

स्वस्थ रहने के लिए हमें सचेत क्यों रहना चाहिए ?

लेखक, प्रोफेसर अशोक वेदालंकार, फिजिकल इन्सट्रक्टर, जयपुर

मनुष्य के स्वास्थ्य पर ऋतुएँ तुरन्त प्रभाव डालती हैं। स्वास्थ्य-प्राप्ति के लिए शीत ऋतु सर्वोत्तम मानी गई है। क्योंकि वैज्ञानिक दृष्टि से शीत एवं शुष्क जलवायु मानव-शरीर के लिए अनुकूल है। इसके विपरीत आर्द्र जलवायु में भाँति-भाँति के कीटाणु पैदा होकर शारीरिक स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं। शीत ऋतु के शुष्क जलवायु में स्वास्थ्य शीघ्र सुधरता है। इसीलिए ठण्डे और शुष्क प्रदेश के निवासियों का शारीरिक स्वास्थ्य अपेक्षाकृत अच्छा होता है। हमारे देश में ग्रीष्म ऋतु अपनी कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। अब सूर्य की धूप में प्रखरता बढ़ती जा रही है। अब भूख कम लगेगी और प्यास गिलास पर गिलास पानी पीने पर भी शान्त न हो सकेगी। दिन भर आलस्य और पसीना का बोल-बाला रहेगा। रात्रि को नींद का सर्वथा अभाव होगा। दिन को वायु गर्म होकर लू का रूप धारण कर लेगी। दिन अपनी चरम सीमा के कारण और भी भयानक हो जायेंगे।

इस ऋतु की भयंकरता से बचने के लिए धनी लोग पर्वतों के विहारस्थलों का आश्रय लेंगे। परन्तु सर्वसाधारण अपने भाग्य के साथ ग्रीष्म-ऋतु से लड़ने के लिए मैदान में डटेंगे। वर्तमानकाल के अस्त्र-शस्त्र, जो कि ग्रीष्म ऋतु में बचाव के लिए काम में लाये जाते हैं, कहाँ तक लाभप्रद हैं, यह विचारणीय है। सामान्य जनों का बिजली के पंखों और बरफ पर बड़ा विश्वास है। सोडावाटर की बोतल को तो अमोघ समझा जाता है। परन्तु विचार किया जाये तो ग्रीष्म ऋतु की कठोरता के साथ ये सब मिलकर स्वास्थ्य के लिये और भी हानिकारक होते हैं। बिजली के पंखे की वायु निर्जीव है। उसमें वह ताजगी और जीवन-तत्त्व कहाँ जो बहती हुई वायु में होती है? पार्सलों की तरह पैक किये हुए निचले दर्जे के सिनेमाघरों में बिजली के पंखों का प्रयास समुद्र में बूँद के समान है। वायु में ओषजन और कार्बनिकाम्ल की नियत स्वास्थ्य-प्रद मात्रा को उसी अनुपात में रखने का भार वनस्पति जगत् पर है। सामान्य अवस्था में वृक्ष भी प्राणियों की तरह ओषजन को ग्रहण करते हैं और कार्बनिकाम्ल, जो एक विषाक्त गैस है, को छोड़ते हैं। परन्तु सूर्य के प्रकाश में वृक्ष कार्बनिकाम्ल में से कार्बन को अपने अन्दर रखने तथा ओषजन को छोड़ने में समर्थ होते हैं। वृक्षों की यह क्रिया वायु को इस प्रकार अमृतमय बनाती है। क्योंकि ओषजन हमारे रक्त का प्राणस्वरूप है। इसकी अप्राप्ति से हम कुछ ही क्षणों के मेहमान-मात्र हैं। बिजली के पंखे की वायु में यह चमत्कार नहीं पैदा हो सकते। इसलिये ग्रीष्म-कालीन आदर्श दिनचर्या का अवलम्बन करना चाहिए, जिसके द्वारा हम निस्सन्देह सर्दियों ,के प्राप्त स्वास्थ्य को कायम रख सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति बन्द और निश्चल वायु में थोड़ी ही देर रहकर सिरदर्द तथा भारीपन का अनुभव कर सकता है। श्वास-प्रश्वास की क्रिया तेज हो जाती है तथा हृदय की गति धीमी पड़ जाती है। ये दोनों निशानियाँ अस्वास्थ्य की हैं। इसके अतिरिक्त जीवनीशक्ति गन्दी वायु में निरन्तर निवास करने से क्षीण हो जाती है। इस अवस्था में संसार का कोई भी रोग हमें आसानी के साथ अपना शिकार बना सकता है। गन्दी वायु के पुरस्कारों में भूख से मारा जाना भी प्रमुख है। यदि अच्छी भूख न लगेगी और आदत के अनुसार भोजन कर लिया जायेगा तो कब्ज अपनी संहारक फौज के द्वारा हमारे शरीर में आ धमकेगा और यह कब्ज ही अकेला जीवन के सम्पूर्ण आनन्द को अपनी उपस्थिति-मात्र से समाप्त कर सकता है।

अतः ग्रीष्मकाल में अपने स्वास्थ्य को कायम रखने के लिए स्वच्छ वायुसेवन पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए। शीत ऋतु में व्यायाम, सूर्य-स्नान और तैल मालिश आदि शीघ्र स्वास्थ्य-प्राप्ति के सरल साधन हैं। परन्तु ग्रीष्म ऋतु में ये साधन असम्भव हैं। व्यायाम तो करना ही नहीं चाहिये। एक-मात्र प्राणायाम और प्रातः-सायं शुद्ध वायु में भ्रमण ही ठीक है। प्रातःकाल की शुद्ध वायु कितनी जीवनदायिनी होती है, इसे प्रत्येक स्वास्थ्य-प्रेमी अवश्य जानता है। यदि इस भ्रमण के साथ-साथ प्राणायाम अर्थात् गहरे श्वास-प्रश्वास-द्वारा वायु का यथेच्छ सेवन जारी रक्खा जाये तो ग्रीष्म ऋतु हमारे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव नहीं डाल सकती। इसलिए प्रातःकाल भ्रमण, प्राणायाम ग्रीष्म ऋतु का सर्वोत्तम व्यायाम है। इसके अनन्तर दही या दही की लस्सी सेवन करनी चाहिए। दिन के समय भी जब जब प्यास लगे सोडावाटर, बरफ या चाय के स्थान पर दही की लस्सी ही लेनी चाहिए। यह लस्सी पोषक तत्त्वों से युक्त होती हुई रुचिकर एवं प्यास बुझानेवाली भी है।

ग्रीष्म ऋतु में दिन में सोने की एक बड़ी समस्या है। जो व्यक्ति दिन में सर्वथा न सोने की आदत डाल सकें उनके लिए यह आदर्श है। इस अवस्था में ग्रीष्म ऋतु का व्यापक रोग—रात को देर तक नींद न आना—हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। बिस्तर पर जाते ही नींद आ जायेगी चाहे कितनी ही गर्मी क्यों न हो। रात्रि की प्रगाढ़ निद्रा दिन में कार्य करने की शक्ति सञ्चित कर देगी। अतः दिन भर आलस्य तथा काम न करने की इच्छा के शिकार होने से बचे रहेंगे।

सर्वांश में भ्रमण, प्राणायाम, दधि की लस्सी का यथेच्छ सेवन और दिन में न सोने से ग्रीष्म ऋतु में भी हम सुखद स्वास्थ्य का सेवन कर सकते हैं। इसके लिए पर्वतों पर जाने की आवश्यकता नहीं है।

सम्मेलन के पुरस्कार

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन प्रयाग की ओर से प्रतिवर्ष उसके वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर कई पारितोषिक दिये जाते हैं। इस वर्ष निम्न पारितोषिकों के दिये जाने की घोषणा हुई है—

मंगलाप्रसाद पारितोषिक

इस वर्ष १२००) रुपये का "मङ्गलाप्रसाद पारितोषिक" साहित्य के निबन्ध विभाग पर, जिसके अन्तर्गत (निबन्ध, नीति, समालोचना, भाषा-विज्ञान, जीवन-चरित, भ्रमण, वर्णन आदि हैं।) दिया जायगा। प्रत्येक वर्ष एक एक विभाग पर पारितोषिक दिया जाता है। इस वर्ष उपरोक्त विभाग पर पारितोषिक दिये जाने की बारी है। पारितोषिक कि जीवित लेखक व लेखिका को एक से अधिक में न बाँटा जायगा। और लेखिकाएँ समानाधिकार से सम्मिलित हो सकेंगी। रचना की मौ आवश्यकीय है। अनुवाद न चाहिए। केवल प्रकाशित पुस्तकें की जायँगी, हस्तलिखित नहीं। लेखक को एक बार से अधिक कि विभाग की रचनाओं के लिए पारि न दिया जायगा।

पुस्तकों के स्वीकार किये अन्तिम तिथि ३१ वैशाख (सौर) २००२ रक्खी गई है। अतएव लेखकों और लेखिकाओं से कि वे अपनी प्रकाशित रचना की बारह प्रतियाँ ३१ वैशाख (सौर) २००२ के भीतर विचारार्थ कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

श्री राधामोहन गोकुल जी पुर

सम्मेलन के आगामी में २५०) का 'श्री राधामोहन गो पुरस्कार' समाज-सुधार विषय की किसी मौलिक रचना के दिया जायगा। पुरस्कार के लिए पुस्तकें स्वीकार किये जाने की तिथि ३१ वैशाख (सौर) संवत् २ केवल उन्हीं रचनाओं पर वि जायगा जो उक्त तिथि से १५ अधिक पहले की प्रकाशित न

जैन पारितोषिक

इस वर्ष ५००) का जैन पारि ग्रामोद्योग विषय पर हिन्दी की मौलिक रचना के सम्मानार्थ दिया ज पारितोषिक के लिए केवल जीवित की रचनाओं पर विचार किया ज लेखक और लेखिकाएँ समानाधि पारितोषिक के लिए अपनी रचन सकती हैं।

पारितोषिक के लिए विचारार्थ स्वीकार किये जाने की अन्तिम ३१ वैशाख (सौर) संवत् २० समस्त लेखकों और लेखिकाओं से है कि वे अपनी प्रकाशित रचना प्रतियाँ विचारार्थ सम्मेलन का भेजने की कृपा करें। नियत पश्चात् प्राप्त हुई पुस्तकों पर किया जायगा।

मौलिचन्द्र
एम० ए०, एल०-
प्रधान मन्

नारंग पुरस्कार

सम्मेलन की ओर से प्रतिवर्ष का 'नारङ्ग पुरस्कार' पंजाब निवा हिन्दी कवि को "भारतीय संस्कृति पर उसकी रचित उच्च कोटि की के सम्मानार्थ दिया जायगा। का से कम १०० पंक्तियों की अवश्य चाहिए। 'पंजाब-निवासी' शब्द व्यक्ति का बोध होगा जिसका जन्म में हुआ हो और जो साधारण प्रान्त में रहता हो।

पुरस्कार किसी एक ले मिलेगा। एक से अधिक लेखकों न जायगा। लेखिकाएँ भी अपनी पुरस्कार के लिए विचारार्थ भेज पुरस्कार के लिए केवल जीवित अथवा लेखिकाओं की रचना विचार किया जायगा। निश्चित १५ महीने से अधिक पहले की रचनाओं पर विचार न किया पुरस्कार के लिए विचारार्थ पुस्तकें किये जाने की अन्तिम तिथि ३१ (सौर) संवत् २००२ है।

रक्तहीनता

स्वास्थ्य तथा जीवन का ख़तरा !

※

¶ रक्तवर्द्धन स्नायुविकार ही रक्तहीनता का कारण है।

¶ पुराने मलेरिया, टायफायड, जुकाम तथा कालाज्वर इत्यादि से भी यह पैदा हो जाता है।

लिवरेक्स
LIVEREX

रक्तहीनता की अत्यन्त विश्वसनीय औषधि है। इंजेक्शन, गोली तथा तरल तीनों रूप में सेवन के लिए मिलती है।

इजेक्शन के लिए—लिवरेक्स
खाने के लिए —लिवरेक्स लिक्विड
लिवरेक्स आइरन-सहित
लिवरेक्स टेबलेट

सेवन करने में सरल तथा शीघ्रतापूर्वक गलनेवाली

सभी औषधि-विक्रेताओं से प्राप्य।

बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

संपादक के नाम चिट्ठियां

क्या सीता जी श्री रामचन्द्र की बहन थीं ?

दिल्ली में होनेवाले ब्रज-साहित्य-मण्डल में उसके अधिवेशन के अवसर पर रावराजा पंडित शुकदेव विहारी मिश्र ने कहा था कि सीता जी श्री रामचन्द्र की बहिन थीं। मिश्र जी बूढ़े साहित्यिक-खोजक हैं। लखनऊ के आप रहनेवाले हैं। पिछले दिनों पत्रों में मिश्र महोदय के मत का खण्डन किया गया है। मैं भी पचास तो नाँघ ही चुका हूँ, मुझे भी 'रावराजा' के समर्थन में किसी न किसी दृष्टि से कुछ कहना ही चाहिए।

पाश्चात्य रीति की प्रायः भारतीय निन्दा करते हैं क्योंकि वह उन्हें अभारतीय अथवा भारतीय-संस्कृत-विरोधी बनाती है। मेरे विचार में रावराजा महोदय ग्रैजुएट तो हैं ही, उस पर उनके समान एक बूढ़े ब्राह्मण का अशास्त्रीय अथवा ब्राह्मण-स्कार-विरुद्ध "रावराजा" बन जाना और वह भी विदेशी दान-स्वरूप में, ऐसी विशेष परिस्थिति में युगों बाद सती सीता को विशेष रूप में देखना श्रीमान् पं० शुकदेवविहारी जी के लिए असंगत नहीं। सीधे को उलटा वस्तुतः देखना अथवा उलटा देखने का अभिनय करना, ऐसे ही दृश्य बुरा कहने का ढोंग रचना तो विदेशी शासकों को सूझते हैं और ऐसे ही नाटककार तो पदवी शिखा या पदवी-पुछल्ला "पदवी-पदक या पदवी-स्तम्भ" के अधिकारी माने जा सकते हैं। अस्तु मिश्र जी की खोज यथार्थ है।

एक तो लखनऊ का वायु-मंडल उस पर बुढ़ौती का मनचलापन, और उस पर आज का वर्तमान भिन्न-विभिन्न 'राजनैतिक-वायु-झोंकों के अनुसार' "बहन" शब्द न्निकटता का द्योतक है। रावराजा महोदय का उनका उद्देश्य क्या है इसे वह जानें। मैं तो उन्हें "वृद्ध-अनुमति" दूँगा कि श्रीमान् लखनऊ को कृपया छोड़कर या तो जनकपुर में जा बसें या वृन्दावन का स्ता लें। हम सरयूपारी ठहरे। रामचन्द्र हाराज के यहाँ हम लोग कर्त्ता-धर्ता और रोहित थे। अतः रावराजा के जनकपुर वासी हो जाने से हमारा और उनका त्रीय सम्बन्ध तो रुचिकर हो जायेगा।

दूसरे—लखनवी रावराजा के "राम" रे विचार में कोई और होंगे और उन र मुसलमान संस्कृति की गहरी छाप गई होगी और तदनुसार उन्होंने पनी बहन से विवाह कर लिया गा। बूढ़े होने के नाते मुझे भी यह धिकार तो है ही कि मैं रावराजा के सानुनय निवेदन करूँ कि कृपया अपने राम और अपनी सीता" को अब निकाह पढ़वा दीजिए या आपही पढ़ा जिए और उन दोनों की ऐसी "बुर्का-" कीजिए कि उन पर किसी "राम-" की आँखें न लग सकें, नहीं तो वे तो गे ही साथ ही आपको भी इस बुढ़ौती डूबेंगे।

तीसरे—रावराजा का दृष्टिकोण इस स्था में वेदान्तिक संभव है। उस कोण से सारा संसार भाई-बहन-दीखता है। रावराजा महोदय ने "सीताराम" को "भगिनी-भाई-मय" देखकर सारे जग को तद्वत् देख लिया, क्योंकि "सीताराम" में ही तो सारा संसार निहित है। सब जग को "सीताराममय" जानने का तुलसीवचन है। अस्तु "रामसीता" को "भाई-बहन" के रूप में देख लिया और कुल संसार उसी रूप में कसा-कसा दिखलाई देने लगा। अस्तु, मेरे विचार में रावराजा महोदय की तपस्या कदाचित् इस सीमा को पहुँच गई है कि अब उनके दिव्यचक्षु खुलने ही वाले हैं और उनके खुलते ही सृष्टि के प्रत्येक तंत्र की विचित्रतायें उन्हें दीखेंगी, वह उन्हें कलम-बद्ध करेंगे और "कलयुगी तथा नारकीय", जनता विशेषतः अविकसित हिन्दू जनता उन पर हासोपहास की रंग-बिरंगी आतिशबाजियाँ छोड़ेगी। बूढ़ों को धीरज, धर्म 'मित्र अरु नारी' की शरण लेनी चाहिए। मैं अपने राम को उनके मैत्री-धागे में कसने को तैयार हूँ और यह छोटा लेख उसकी भूमिका-प्रमाण है।

चौथे—हिन्दुस्तानी और विशेषतः हिन्दू अपने 'खोजकों' की मान-मर्यादा बढ़ाने में बाधक बनता है। "दासता" को दस्यु "बन कर वह अपने बड़ों" की टागें नीचे ही घसीटता है। मेरी तो स्पष्ट राय है कि रावराजा को अब सीधे लङ्का भागना चाहिए और वहाँ अपने "दिव्य-चक्षु" से रावण के दर्शन कर उसे सूचित कर देना चाहिए कि उसने 'राम' की अर्द्धाङ्गिनी सीता को नहीं राम की बहन सीता को हरा था और कोई अन्याय नहीं किया था। विशेषतः इस कारण कि "श्याम" शब्द नामकरण हमारे षोडशकला के अवतार ने भी तो मानव-शरीरधारी बनकर अपनी भगिनी को विवाह में अपने भावी बहनोई के घर पहुँचा दिया था। इस वृहत् कार्य के लिए रावराजा को परलोक में और कम से कम रावण-लोक में कोई न कोई पदवी अवश्य मिल जायगी। "लोक में पदवी और परलोक में पदवी" यही बुढ़ौती-चातुर्य भी है। अतः इस घोषणा के साथ कि मेरे सीताराम वही पुराने 'मौजूद' सीताराम हैं जिसे हिन्दू-संसार भजता है और अनन्तकाल तक भजता रहेगा मैं रावराजा का समर्थन करता हूँ कि रावराजा के राम-सीता भाई-बहन हो सकते हैं और 'क्यों' के कारणों का निरूपण मैंने यथाशक्ति करने की सुचेष्टा की है। रावराजा जी से मेरी प्रार्थना है कि आप बूढ़े छन्दों में अपने राम-सीता की कथा अवश्य लिख डालिए और शीघ्रता कीजिए वरन् शरीर का क्या ठिकाना है। ईश्वर आलोचकों और खोजकों को सुबुद्धि दे।

हाता बेतिया, —गौरीशङ्कर मिश्र
गोरखपुर

* * *

हिन्दी और हिन्दुस्तानी

"हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा" के अवसर पर महात्मा गांधी द्वारा दिये गये वक्तव्य को २५ मार्च के "देशदूत" में पढ़कर क्षण भर के लिए स्तम्भित रह जाना पड़ा। राष्ट्र-भाषा के रूप में हिन्दी का कोई पृथक् अस्तित्व मानना तो दूर रहा, वह हिन्दी को भी अन्य प्रान्तीय-भाषाओं की कोटि में गिनते हैं। यह हिन्दी का दुर्भाग्य नहीं तो क्या है? महात्मा जी के दृष्टिकोण के इस आकस्मिक परिवर्तन का कोई कारण समझ में नहीं आता। बँगलौर में कर्नाटक-हिन्दी-दीक्षान्त भाषण करते हुए आपने एक बार कहा था—"यदि आपका क्षितिज उत्तर में श्रीनगर तक, दक्षिण में कन्या-कुमारी तक, पश्चिम में कराँची तक और पूर्व में दिब्रूगढ़ तक जाता है—जैसा कि वस्तुतः होना चाहिए—वहाँ तक आपको हिन्दी सीखने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करना है।" हिन्दी की सरलता एवं बोधगम्यता की सराहना करते हुए आपने कहा था—"हिन्दी के अत्यधिक सरल होने का कारण यह है कि सभी भाषायें—यहाँ तक कि चार दक्षिणी भाषायें भी—जो भारतवर्ष में हिन्दुओं-द्वारा बोली जाती हैं, अधिक संख्या में संस्कृत-शब्द रखती हैं……" और आश्चर्य तो तब होता है जब आज हिन्दी को संस्कृत-बहुला बताकर राष्ट्र-भाषा के अनुपयुक्त सिद्ध किया जाता है और राष्ट्र-भाषा की परिभाषा की जाती है—'वह भाषा जो ग्रामीण-हिन्दू-मुसलमानों द्वारा बोली जाती है। हिन्दी-उर्दू की समानता पर आपने २७ जून १९३६ के "हरिजन" में लिखा था—"हिन्दी और उर्दू में कुछ भी अन्तर नहीं है। व्याकरण दोनों का एक ही है……अन्तर केवल लिपि का है। लिपि के प्रश्न को अलग रखते हुए जो कि स्वयमेव ठीक हो जायगा, कोई भी कठिनाई शेष नहीं रह जाती।" अन्यत्र उसी "हरिजन" में लिपि के प्रश्न को लेकर आपने लिखा था—"……यहाँ तक कि जब मैं दक्षिणी अफ्रीका में था, मैं सोचा करता था कि उन सभी भाषाओं को, जो संस्कृत से निकली हैं, देवनागरी लिपि अपनानी चाहिये और मुझे पूर्ण विश्वास है कि द्राविड़ी-भाषायें भी देवनागरी लिपि के द्वारा सरलता से सीखी जा सकती हैं।" उसी लेख के अन्तिम उच्छेदंक में लिखा गया था—"हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने के प्रश्न को लिपि के प्रश्न से मिलाने की कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु मैंने इसकी चर्चा केवल इसी लिये की है कि उन लोगों की कठिनाइयों को बतला सकूँ जो भारत की सम्पूर्ण भाषायें सीखना चाहते हैं।" परन्तु एक दशक से भी अल्पकाल में परिस्थिति क्या इतनी परिवर्तित हो गई है कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा के आसन से वंचित किया जाय और दोनों लिपियों को साथ साथ सीखने पर जोर दिया जाय। महात्मा जी के दृष्टिकोण का यह परिवर्तन क्या हिन्दी-संसार एवं राष्ट्र-भाषा-भाषियों के लिये चिन्ताजनक नहीं है?

१८७ ए, रोशनबाग —विश्वनाथसिंह
प्रयाग

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ||=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

चाय आरामदेह है

भारत का सबसे ज्यादा ताज़गी देनेवाला पेय
★
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित
IK 196

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की

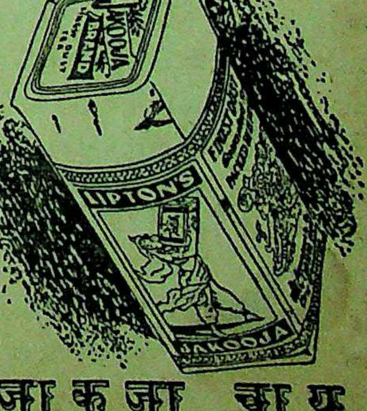

जाकूजा चाय
LK 80

कालसी का महत्त्व

सम्राट् अशोक का शिलालेख

लेखक, श्री बुद्धिप्रकाश फरासी

आज जब महात्मा गांधी जी दुनिया को वर्तमान संक्रान्ति काल में अहिंसा के उच्चतम आदर्श की देन दे रहे हैं तब सम्राट् अशोक का कालसीवाला शिलालेख महत्त्वपूर्ण बन जाता है। दुनिया के इतिहास में शायद अशोक ही ऐसा सम्राट् था जिसने बलवान् की अहिंसा उपस्थित की है। विजयी सम्राट होकर भी स्वयं शस्त्रत्याग का जो आदर्श सम्राट् अशोक ने कलिंग-विजय के पश्चात् उपस्थित किया, वह दुनिया के इतिहास में अपूर्व घटना है।

देहरादून जिले के अन्तर्गत दो तहसीलें हैं। एक देहरा और दूसरी का नाम चकरौता है। चकरौता तहसील का ही दूसरा नाम जौनसार-बावर है। देहरादून प्राकृतिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह वह प्रदेश है कि जिसने यहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य का एक बार रस ले लिया वह बार-बार लालायित रहता है। पहाड़ी जिला होने के अलावा इस जिले के पूर्व में पवित्र नदी गंगा जी के किनारे 'भरत मन्दिर' आदि आदि स्थान देखने के योग्य हैं। दूसरी तरफ कालसी में जहाँ पर सम्राट् अशोक का शिलालेख है, यमुना जी का तट है, जो कि धार्मिक दृष्टि से महत्त्व रखता है। यह ऐतिहासिक बस्ती—कालसी महाभारत के समय की बताई जाती है।

यमुना नदी के तट से ही हरीपुरा (कालसी) नामक बस्ती प्रारम्भ हो जाती है। विद्वानों का कथन है कि यह बस्ती ५,००० वर्ष पुरानी है, क्योंकि शिलालेख को ही आज लगभग २२०० होते हैं। पुल से कुछ दूरी पर एक द्वार मिलता है, जिससे लारियाँ, मोटर सहारनपुर, चकरौता और देहरादून से समयानुसार आती-जाती हैं। पहले यह सड़क शिलालेख के पास को ही जाती थी, ऐसा भी कहा जाता है। इसी सड़क के पास शिलालेख है। इसी गेट से एक सड़क डिस्ट्रिक्टबोर्ड की लखवाड़ को जाती है।

युक्तप्रान्त की सरकार ने मार्च सन् १९१२ ईसवी को शिलालेख के चारों तरफ एक इमारत बनवा दी है। इमारत का द्वार बड़ा और अच्छा बना हुआ है। द्वार के दोनों ओर खिड़कियाँ बनी हुई हैं, जिससे यात्री हर समय देख सकें तथा शिलालेख भी सुरक्षित रह सके। द्वार के पास ही डिस्ट्रिक्टबोर्ड का डाकबँगला बना हुआ है। उसी डाक-बँगले के चपरासी के पास शिलालेख के द्वार की चाबी है।

शिलालेख के दाहिनी तरफ हाथी का चित्र बना हुआ है। जिसके नीचे ब्राह्मी-लिपि में गजतम लिखा हुआ है। इसका अर्थ है बड़ा अथवा पूजनीय हाथी, यहाँ इतना लिखना अत्यन्त आवश्यक है कि बौद्धधर्म में हाथी को पूज्य अथवा मंगलसूचक समझा जाता है। भगवान् बुद्ध जब अपनी माता के गर्भ में आये तब उससे पूर्व उनकी माता को स्वप्न में हाथी दिखलाई दिया। इसलिए बौद्ध लोग हाथी को मंगलसूचक मानते हैं।

इस हाथी का चित्र देखकर किसी भी दर्शक के मन पर प्राचीन कला का उत्कृष्ट आदर्श इस शिलालेख में दिख सकता है। पत्थर चिकना तो नहीं पर पक्का अवश्य है। सभी खुदे हुए अक्षर साफ व कलापूर्ण हैं। ऐसा और लेखों में नहीं बतलाया जाता है।

आज ब्राह्मी-लिपि को जानते बहुत कम लोग हैं। फिर भी जो कोई शिलालेख को देखने आता है, लिपि के सौन्दर्य को देखकर वह मुग्ध हो जाता है। हाथी का चित्र तो अत्यन्त आकर्षक है। शिलालेख के आगे कुछ मूर्तियाँ रखी हुई हैं। मूर्त्तियों को देखने से मालूम होता है कि वे वैष्णवकाल की हैं। शिलालेख में सम्राट् अशोक के उपदेश लिखे हुए हैं। जिनसे सम्राट् ने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों और प्रजाजनों को आदेश दिये हैं। ये आदेश आज भी वैसे उपयोगी हैं जैसे पहले
प्रजाजनों के लिए माता-पिता की
मानो। कर्मचारियों के लिए—
को कष्ट मत दो अगर मेरे पास
शिकायत आई तो तुरन्त अलग
मैं अपनी प्रजा को पुत्र के
समझता हूँ।

शिलालेख के १३ वें
कलिंग-विजय के पश्चात् सम्राट्
त्याग किस प्रकार किया और
व्रत लिया, उसका इतिहास लिखा है

धोबीने जो हानि की है

—ज़रा सोचिये उसे पूरा करने में कितना खर्च आयेगा

आजकल कपड़ों की जो कीमतें हैं उन्हें देखते हुए धोबियों को कपड़े देकर उनका नाश कराना पैसे को पानी में फेंकना है। आपको चाहिये कि कपड़ों को अधिक से अधिक चलाए। आपको कपड़ों के बारे में ध्यान रखना चाहिये। कपड़ा धोने की धोबियों की जो बेढंगी रीति है उसकी अब कोई ज़रूरत नहीं। आप खुद सनलाइट साबुन से मैले से मैले कपड़े को भी सुलभता से साफ़ कर सकते हैं। सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग के बारे में तो आपने ज़रूर सुना होगा, इस झाग में मैल काटने की जो शक्ति है वह बलवान से बलवान धोबी की मोटी से मोटी मोगरी और कड़ी से कड़ी चट्टान से कहीं अधिक है और वह भी इस तरह काम करती है कि मैल काटते समय कपड़े को कोई हानि नहीं पहुंचाती। कपड़े धोने की सरल रीति नीचे दर्ज की जाती है:— इसे पढ़िये और आज ही अपने घर में सनलाइट के "साबुन-और-बचत" रीति से कपड़े धोना शुरू कर दीजिये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

१ कपड़ों को अच्छी तरह भिगो लीजिये इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३ कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड़ रखेगी। ४ कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उस में न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन लगाइये।

B. 66-206 HI

सनलाइट साबुन कप
की बचत करता

LEVER BROTHERS

संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का पंचम अधिवेशन

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि देवनागरी है

माननीय टंडन जी, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, श्री सम्पूर्णानन्द जी और श्री शर्मा के ओजस्वी भाषण

गत ३१ मार्च और १ अप्रैल को संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का पंचम अधिवेशन बड़े समारोह के साथ डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी के सभापतित्व में हो गया। इस अवसर पर माननीय टंडन जी, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, श्री सम्पूर्णानन्द ने बड़े ओजस्वी भाषण दिये और यह स्पष्ट रूप से प्रगट किया कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है और लिपि देव-नागरी है।

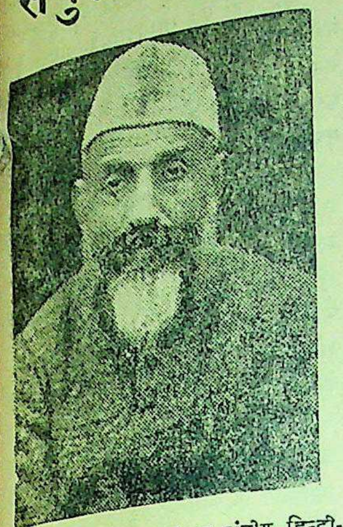

प्रयाग में होनेवाले पंचम संयुक्त प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन का उद्घाटन माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने किया था।

श्रद्धेय टंडन जी का भाषण

राष्ट्रीयता और हिन्दी दो चीजें नहीं, एक ही है। हम कहीं भी उर्दू की बुराई नहीं करते। सम्मेलन की रिपोर्टों में तथा सम्मेलन के किसी भी उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्ति के द्वारा उर्दू की बुराई नहीं की गई है। हिन्दी का काम करनेवाले हम लोग उर्दू के पक्षपातियों पर आक्रमण नहीं करते। जनता की ही माँग हिन्दी की है। हिन्दी पर चारों ओर से अनेक प्रकार के आक्रमण हुए हैं, किन्तु देखा यह जा रहा है कि जनता हिन्दी की ओर दिनों-दिन झुकती जा रही है।

हिन्दी की शक्ति दिनों-दिन बढ़ने का क्या कारण है? जनता की शक्ति जैसे जैसे विकसित होती है—राजनीतिक दृष्टि से भी वैसे ही वैसे जनता की भाषा, जो हिन्दी है उसकी भी शक्ति बढ़ती जाती है। जनता की शक्ति के साथ हिन्दी का विकास देखकर लोग घबराते हैं और हमें उर्दू का विरोध करनेवाला कहते हैं। हम स्पष्ट कह देते हैं कि हम उर्दू का विरोध नहीं करते।

हिन्दी की एक अपनी आन्तरिक शक्ति है। उस आन्तरिक शक्ति पर जहाँ तक शासन का सम्बन्ध रहा है, कठोर से कठोर आघात होते रहे हैं। इस बात के लिए पिछला इतिहास आपके सामने है। मुगलों के जमाने में जनता की भाषा न होते हुए भी फारसी जनता पर लादी गई और उसके बाद उर्दू आई। आज चालीस वर्षों से क्या हो रहा है यह आपसे छिपा नहीं है। सब तरफ उर्दू का ही बोलबाला है। किन्तु यह सब होते हुए भी हिन्दी के पढ़नेवाले दिनों-दिन बढ़ते जा रहे हैं।

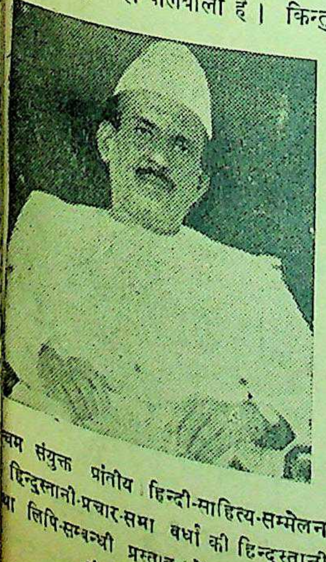

चम संयुक्त प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा वर्धा की हिन्दुस्तानी या लिपि-सम्बन्धी प्रस्ताव के प्रस्तावक बाबू संपूर्णानन्द जी।

राज्य का शासन जिन लोगों के हाथ में होता है, वे अप्राकृतिक रूप से जनता को दबाया करते हैं। यह तो सभी देशों में होता रहा है। किन्तु यहाँ की स्थिति कुछ निराली ही है।

किन्तु अब सामन्तशाही का समय चला गया और जनता के अधिकार बढ़ रहे हैं। उसके साथ ही हिन्दी भी आगे आ रही है। जनता के अधिकारों की वृद्धि ही उसकी आन्तरिक शक्ति है। जनता के अधिकार कम होने पर—जनता के दबने पर फारसी और उर्दू जनता पर लादी गई। किन्तु उसके अधिकार जैसे ही बढ़े, हिन्दी भी जोरों के साथ बढ़ रही है।

हम लोग जो हिन्दी का काम करने के लिए इकट्ठा होते हैं, वे उर्दू का विरोध करने के लिए नहीं, बल्कि जनता को शक्तिशाली बनाने के लिए। जनता के हृदय में शक्ति उत्पन्न करनेवाली भाषा को हम लोगों ने लिया है।

हमारी माँग

हमारी माँग सीधी-सादी है। सर सुलतान अहमद जानते हैं कि हिन्दी की क्या शक्ति है। वास्तव में सर सुलतान अहमद को हिन्दी-उर्दू को मिलाने की कोई इच्छा नहीं है। क्योंकि रेडियो-विभाग से हिन्दी के लोग चुन-चुनकर अलग रखे गये हैं। रेडियो की सूची उठाकर देखें तो हिन्दीवालों के नाम से वहाँ आपको शून्य ही मिलेगा। जो थोड़े-से हिन्दीवाले हैं भी वे रेडियो अधिकारियों की हाँ में हाँ मिलानेवाले हैं। जो हाँ में हाँ मिलानेवाले नहीं थे, वे रेडियो छोड़ कर भाग गये। यदि जिस प्रकार हिन्दी की अवहेलना हो रही है, उर्दू की अवहेलना होती तो मैं निश्चय ही उर्दू का भी पक्ष लेता। कांग्रेसी मंत्रिमंडल के समय हमारा बहुमत होते हुए भी संयुक्त-प्रान्त में जहाँ कहीं दो बच्चों के लिए उर्दू पढ़ाने की व्यवस्था करनी पडी है, हमने की है। किन्तु पंजाब में हिन्दी पढ़नेवालों की संख्या युक्त प्रान्त में उर्दू पढ़नेवालों की संख्या की अपेक्षा अधिक होने पर भी म्युनिसिपैलिटियों में प्रारम्भिक अवस्था में हिन्दी की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है। दर्जा चार तक उर्दू में पढ़ने के बाद हिन्दी में लड़के पढ़ सकते हैं। इसका अर्थ है कि प्रारम्भ से ही लड़कों को उर्दू की ओर मोड़ा जाता है।

मैं हिन्दी के साथ हुआ अन्याय नहीं देख सकता। रेडियो से हिन्दी को बाहर निकाल कर रखने में उन्हें सन्तोष है। मुझे बड़ा ही दुख है कि हिन्दू जो उचित समझते हैं उसे ठुकरा कर थोड़े से मुसलमानों के अधिकारों को देखा जाय। क्या यही राष्ट्रीयता है? ऐसी राष्ट्रीयता को देख कर मेरा हृदय तो दब गया।

हमारे लिए दुख की बात तो यह है कि इस काम में वे पूज्य गांधी जी की दुहाई देते हैं। यह झूठ है। श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने एक वक्तव्य निकाल कर कह दिया है कि रेडियो की भाषा गांधी जी की हिन्दुस्तानी नहीं है। किन्तु सर सुलतान अहमद गांधी जी के हिन्दुस्तानी नाम से लाभ उठाना चाहते हैं। वे अपने को बड़ा चालाक और दूसरों को बड़ा बेवकूफ समझते हैं। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से, जो प्रतिनिधि गये थे, उनके सामने भाषा-सम्बन्धी तीन प्रश्न रखे गये थे। पहले पूछा 'सनीचर' का प्रयोग किया जाय या 'हफ्ता' का? आज तक मेरी समझ में यह नहीं आया है कि 'हफ्ता' भी सनीचर का पर्याय है। दूसरी बात जो उन्होंने पूछी यह थी, 'स्वागत कहो या इस्तकबाल?' और तीसरी बात थी कि 'आर्थिक कहा जाय या इक्तिसाद?'

हिन्दी के बिना रेडियो जी नहीं सकता

हिन्दी-प्रेमी हमारी बात को तौलें। हम ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं कहते। बंगाली भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानते हैं। श्री सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपनी भाषा-विज्ञान की पुस्तक में हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा माना है और कहा है कि हिन्दी ही देश की मुख्य भाषा है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन इसका प्रमाण है। जिनकी भाषा हिन्दी नहीं हो, ऐसे लगभग ६५ हजार व्यक्ति हिन्दी-परीक्षा में हर साल बैठते हैं। क्या उर्दू की भी किसी परीक्षा में इतने लोग बैठते हैं? यह हिन्दी का महत्त्व है। इससे क्या प्रकट होता है? क्या रेडियो को हिन्दी की आवश्यकता नहीं है? यहाँ हिन्दी के लेखक उपस्थित हैं। रेडियो का मोह-जाल फैल रहा है। छोटे-मोटे सभी लेखकों से कहा जा रहा है कि रुपया लीजिए और कविता पढ़िए और लेख पढ़िए। स्वाभिमानी हिन्दी के लेखकों ने रेडियो पर जाना छोड़ दिया। रेडियोवाले, प्रथम, द्वितीय श्रेणी के लेखक न मिले तब तृतीय श्रेणी के लेखकों को ले जाकर कविता-पाठ आदि कराते हैं। मैं चाहता हूँ कि किसी भी श्रेणी के लोग हिन्दी के नाम पर वहाँ जाकर हमारा अपमान न करायें। हिन्दी के बिना रेडियो जी नहीं सकता। रेडियो मर जायगा। किन्तु रेडियो के रुपयों के बिना हिन्दीवाले जी सकते हैं।

हमारे पास रुपया नहीं है। मुझे मालूम हुआ है कि निजाम सरकार उस्मानियाँ यूनिवर्सिटी के लिए ३० लाख सालाना खर्च करती है। उर्दू-प्रसार के लिए ५० हजार सालाना खर्च किया जाता है। फिर भी मैं दावे के साथ कहता हूँ कि हिन्दी की सभाओं में जो जनता इकट्ठा होती है, वह क्या उर्दू की सभाओं में होती है। आप देखेंगे कि रुपयों के बिना किस तरह काम होता है। हिन्दीवालों में लगन है। हिन्दी का काम त्याग से बढ़ा है। सम्मेलन ने यह उचित माँग की है कि उस स्थान से सर सुलतान अहमद को हटा कर दूसरे उचित आदमी को रखे। इतने पर भी सरकार यदि कुछ नहीं करती है तो दूसरा उपाय सोचा जायगा।

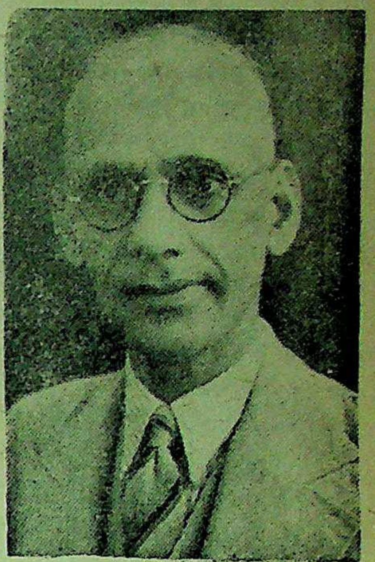

प्रयाग में होनेवाले पंचम संयुक्त प्रांतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के सभापति डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी।

दूसरा प्रश्न, जिस पर मैंने अब तक अपनी राय प्रकट नहीं की है, वह प्रश्न वर्धा में स्थापित हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा के सम्बन्ध में है। इस सम्बन्ध में मैं एक बात अवश्य कह देना चाहता हूँ कि सम्मेलन की नींव राष्ट्रीयता है केवल साहित्यिकता नहीं। सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा और हिन्दी को एक माना। सम्मेलन की पहली ही नियमावली में इसका उल्लेख है। महात्मा गांधी ने भी हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने का सम्मेलन का दृष्टिकोण मान कर ही सम्मेलन का सभापतित्व दो बार स्वीकार किया। आज उनका दृष्टिकोण बदला है। वे हिन्दी-उर्दू दोनों को मिलाना चाहते हैं। राष्ट्रीय होने के लिए हिन्दी और उर्दू प्रत्येक भारतीय को, कांग्रेसवादी को पढ़ना चाहिए। वह प्रत्येक कांग्रेसवादी के लिए

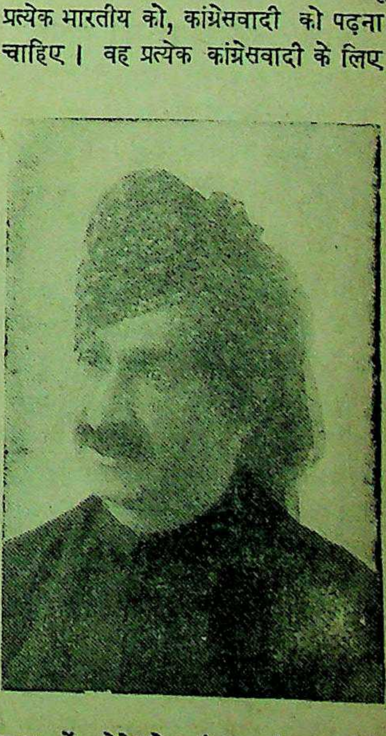

प्रयाग में होनेवाले पंचम संयुक्त प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष राय बहादुर पण्डित ब्रजमोहन व्यास।

हिन्दी और उर्दू पढ़ना आवश्यक मानते हैं।

मैं भी हिन्दी-उर्दू के समन्वय का पुराना पक्षपाती हूँ। प्रान्तीय सम्मेलन के प्रथम संस्करण के आगरा-अधिवेशन के समय इसी दृष्टिकोण से मौ० हसरत मोहानी को वहाँ बुलाया था। मैंने कहा था कि हिन्दी-उर्दू का सुन्दर समन्वय हो सकता है। और यह बात मैंने अपनी ही ओर से नहीं कही, हिन्दी-साहित्य के प्रतिनिधि की हैसियत से कही थी। मैं हिन्दीवालों का हृदय जानता हूँ। उनका हृदय राष्ट्रीय है। राष्ट्रीय प्रश्न हल करने के लिए समन्वय हो सकता है। समन्वय होने के लिए कुछ लेन-देन होना चाहिए।

महात्मा गांधी ने एक बार कहा था कि दो हाथ से ताली बजती है। महात्मा जी के कार्य के प्रति मेरे मन में असीम श्रद्धा है। फिर भी मैं नम्रता के साथ इस बात को कह देना चाहता हूँ कि मैं उनकी बात आँख में पट्टी बाँध कर स्वीकार नहीं करता। मैं हाँ में हाँ नहीं करता हूँ। जिस प्रकार झगड़ा दो से होता है उसी प्रकार प्रेम भी दो के द्वारा ही होता है। बिना दो के उत्पत्ति नहीं होती। जब दोनों एक साथ काम करें तभी समन्वय हो सकता है—तभी काम हो सकता है।

सम्मेलन राष्ट्रीयता का उपासक

मैंने दो प्रश्न आपके सामने रखे। दोनों ही हिन्दुस्तानी के नाम पर हैं। मैं हिन्दुस्तानी का विरोधी नहीं हूँ। किन्तु हिन्दी नाम ही हम क्यों छोड़ दें? वह भी तो मुसलमानों का दिया हुआ है। हिन्दी को हिन्दवी कह लो, हिन्दुस्तानी कह लो। यदि हिन्दुस्तानी नाम ही के लिए सारा झगड़ा है तो मेरा नाम पुरुषोत्तमदास की जगह गुलाम अल्लाह रख दिया जाय। यदि नये भारत का हित होता हो तो मैं हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को उखाड़ दूँगा। साहित्य सम्मेलन राष्ट्रीयता का उपासक है। किन्तु कुछ लोगों को जो बात राष्ट्रीय मालूम होती है, वह मुझे देशद्रोही मालूम होती है। कुछ लोग पाकिस्तान की माँग को भी राष्ट्रीय माँग कहते हैं। यह देशद्रोही की माँग है। चाहे वह किसी के मुख से क्यों न हो। मुझे इन सब बातों का भय नहीं है। मुझे हिन्दी की शक्ति पर विश्वास है।

डाक्टर रामप्रसाद का भाषण

डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण में हिन्दी-साहित्य का संवर्द्धन करने पर जोर दिया। आपने कहा हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाने के झगड़े में हमें यह नहीं भूल जाना चाहिए कि हिन्दी हमारे प्रान्त के भी ८० प्रतिशत लोगों की भाषा है। हिन्दुस्तानी आदि प्रश्न महात्मा गांधी, श्रद्धेय टंडन जी आदि के हाथों में छोड़ देने चाहिए। प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का एकमात्र उद्देश्य नागरी लिपि का प्रचार नहीं, उसका यह भी कार्य है कि वह अपने साहित्य का संवर्द्धन करे। जिस प्रकार बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात आदि में साहित्य का संवर्द्धन हो रहा है उसी प्रकार हमें भी अपने साहित्य का संवर्द्धन करना चाहिए। हमारे साहित्य का संवर्द्धन होने पर हमारी भाषा का भी आदर बढ़ेगा।

आपने कहा कि एक समय हिन्दी का माध्यमिक रूप—ब्रजभाषा सारे उत्तराखंड में प्रचलित था मुगल बादशाहों ने भी अपने राज-दरबार में हिन्दी के कवि रखे थे। सत्रहवीं शताब्दी तक उत्तरी भारत में उर्दू नाम की कोई भाषा प्रचलित नहीं थी। वह मुगल साम्राज्य का पतन हो जाने के बाद पनपी। हिन्दी-उर्दू का झगड़ा फोर्ट विलियम कालिज की स्थापना के बाद से शुरू होता है। इससे भी पहले मुसलमानों में हिन्दी का प्रचार था। यह उस समय के संग्रहों से प्रकट होता है। उस समय के अनेक संग्रह मुसलमानों के हैं।

आपने यह मत प्रकट किया कि यदि कुछ दिन इस उर्दू-हिन्दी के झगड़े को महत्त्व न दिया जाय, तो यह दोनों के लिए अच्छा होगा।

आपने हिन्दी-साहित्य के वेग में कमी पड़ने के दो कारण बताये। एक तो हमारी बहुत-सी शक्ति हिन्दी-उर्दू के झगड़े में व्यर्थ जा रही है। दूसरे हमारा आलोचना-साहित्य कमजोर है। जब तक आलोचना ऊँचे स्तर की न होगी, तब तक हमारे साहित्य का स्वर भी ऊँचा न हो सकेगा। आपने कहा कि दलबन्दी की भावना से आलोचना लिखना बड़ा जघन्य काम है। आलोचना अधिकारी व्यक्तियों को ही लिखनी चाहिए।

आपने अपने भाषण के अन्त में हिन्दी साहित्यिकों का ध्यान हिन्दी में राजनीति, विज्ञान, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, दर्शन आदि गम्भीर विषयों पर साहित्य के अभाव की ओर भी आकर्षित किया। आपने हिन्दी में निबन्धों का अभाव विशेष रीति से खटकनेवाला बताया।

हिन्दी-साहित्य के सवर्द्धन के लिए आपने जनपद सम्मेलनों का समर्थन किया तथा हिन्दी-साहित्यिकों से हिन्दी-साहित्य को आगे बढ़ाने का आग्रह किया।

श्री संपूर्णानन्द का भाषण

जहाँ तक हिन्दी-उर्दू की बात है सम्मेलन की तरह मैं इसे दो भाषा नहीं मानता। ये दो भाषायें नहीं हैं। मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का नाम क्या हो, यह प्रश्न अलग है। हिन्दी नाम हमें प्यारा है। भाषा का स्वरूप निश्चित हो जाय तो मैं हिन्दुस्तानी नाम को भी मानने के लिए तैयार हूँ। हमारे देश में एक बड़ी कठिनाई है। सब प्रश्नों से राजनीति का सम्बन्ध है। राष्ट्रभाषा का प्रश्न भी राजनीति का है। मुसलमानों को रुष्ट न करने की बात हमेशा कही जाती है। हम देश को हानि पहुँचायें और उन्हें सन्तुष्ट करना चाहते हैं। किन्तु चाहे जिस तरह हो उनके पीछे दौड़ना नहीं चाहते। मैं एक बात पूछना चाहता हूँ कि क्या उर्दू को राष्ट्रभाषा कर देने से सब मुसलमान स्वाधीनता-आदोलन में खड़े हो जायँगे? ऐसी बात हो तो हम तैयार हैं। एक तरफ से माँगें आगे बढ़ती जायँ और दूसरी ओर से एक अंगुल भी आगे न बढ़ें। मुसलमानों को खुश करने से भारत की स्वाधीनता में मदद मिलनेवाली है, इस बात का विश्वास भी तो हो।

कहा जाता है कि ग्रामीण जिस भाषा को समझते हों वही राष्ट्रभाषा हो। दिल्ली से लेकर पटने तक के ग्रामीण क्या परस्पर की बोली समझते हैं? नहीं। हिन्दी ही एक ऐसी बोली है जिसे उत्तर-भारत के सभी ग्रामीण समझते हैं। किन्तु ग्रामीण समझता है इन आधार पर कोई भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। राष्ट्रभाषा में केवल बोल-चाल के शब्दों से ही काम नहीं चल सकता। उसमें और भी शब्द लाने होंगे। केवल बोल-चाल की भाषा से हमारे अन्तर्प्रान्तीय व्यवहार नहीं हो सकते। हम किसी के साथ अन्याय नहीं करना चाहते हैं। यह हम अवश्य कह देना चाहते हैं कि संस्कृत के कठिन शब्द भर देने से भाषा मर जायगी। जो विदेशी शब्द हमारी भाषा में आ गये हैं उन्हें हम निकालना भी नहीं चाहते। विदेशी शब्द आगे भी आते रहेंगे। यदि उनका हम बहिष्कार करें तो टैंक वार को 'तालाब की लड़ाई' कह देने की तरह हास्यास्पद होगा। किन्तु इसके साथ यह स्पष्ट है कि जो विदेशी शब्द आयँगे उन्हें हिन्दी व्याकरण के अनुसार चलना पड़ेगा।

अरबी और संस्कृत को एक ही पलड़े पर रखा जा रहा है, यह अनुचित है। यह प्रयत्न किया जा रहा है कि अरबी के साथ संस्कृत के शब्द भी निकाले जायँ।

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी में पाठशाला के लिए 'पढ़ाई वर्ग', शब्द रखा गया है। यह हमें मंजूर नहीं है। जो हमारे शब्द हैं उन्हें निकाला नहीं जा सकता। श्री सियारामशरण का हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के कार्यों के के समर्थनार्थ एक वक्तव्य निकला है जिसमें उन्हें भी मौन दिवस के लिए 'खामोशी का दिन कहने के लिए दुख प्रकट करना पड़ा है।

दो लिपियों की बात अंधेर की और अवैज्ञानिक है। उस जलसे में महात्मा जी का संदेश उर्दू में होने के कारण गलत पढ़ा गया। कभी कभी हम लोग सौजन्य के कारण मुसलमानों के साथ बोलने में उर्दू शब्दों का प्रयोग करते हैं। उसका लाभ उठा कर वे कहते हैं कि यही राष्ट्रभाषा है। उनका ढंग यह है कि लिपि के प्रश्न पर हम जरा भी न हटेंगे, तुम भाषा के प्रश्न पर दबते चले जाओ।

श्री बालकृष्ण शर्मा का भाषण

हमें किसी भी विषय में साम्प्रदायिक दृष्टिकोण नहीं बनाना चाहिए। हिन्दी का प्रश्न हिन्दुओं का प्रश्न नहीं है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने का प्रश्न राष्ट्रीय प्रश्न है, सबका संयुक्त प्रश्न है, हिन्दुओं का प्रश्न है, भारतवर्ष का प्रश्न है और हिन्दू का प्रश्न है। समाचारपत्रों ने जिस रीति से विचार किया है उस प्रश्न को का प्रश्न बना कर साम्प्रदायिक मेरी प्रार्थना है कि इसे साम्प्रदा बनाया जाय। जिस भाषा में संस्कृत का बाहुल्य न हो, वह राष्ट्रभाषा सकती है?

यदि हम हिन्दुस्तानी के रूप में नई भाषा चलाते हैं तो वह मराठी, गुजराती मुसलमानों पर चीज लाद देना होगा। इससे बड़ी पैदा होगी। यह प्रश्न मुसलमानों के भी उतना ही आवश्यक है जितना हि के लिए।

इन सब बातों पर विचार कर आगे बढ़ना चाहिए। जो गड़बड़ उसका उत्तरदायित्व हम पर है। और मुसलमान एक हैं, इसी कारण पाकिस्तान को नहीं मानते। वे हिन्दू और मुसलमानों में कोई अ मिलेगा। मुसलमानों के रूप में १० को अलग करने का भार हम पर है। माताओं और बहनों का पतन होने हम पर है कि वे रास्ता भूल गई। प्रश्न का उत्तर ढूँढना होगा। सा कता के नारे हिन्दी के लिए घातक

राष्ट्रभाषा के प्रश्न के कारण विचार-वैषम्य फैला हुआ है, वह दयनीय अवस्था का द्योतक है। प्रकार हमारे सामने पहले प्रश्न था निवेशक स्वराज्य या पूर्ण स्वराज्य का वर्षों तक इस पर निर्णय नहीं हुआ। प्रकार हिन्द की राष्ट्रभाषा क्या हो अस्वाभाविक प्रश्न है। स्पष्ट है हिन भाषा हिन्दी है।

मुझे आशा है कि भारतीय मुस भी भारतीय वस्तु से प्रेम करना भारतीय मुसलमान माँग करेगा कि भाषा में संस्कृत शब्दों की प्रधानत भारतीय सब भाषाओं में संस्कृत श प्राधान्य है तब आज क्या ऐसी कता है कि उन्हें न लिया जाय। स्तानी कल्चर सोसाइटी में 'कल्चर इटी' क्या है। मैं मानता हूँ कि भावनायें पवित्र हैं। किन्तु वे ही हमें की बातों से दूर ले जाते हैं।

हिन्दी साहित्य
बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणि और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहि का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्र उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही न है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सब का इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

जर्मनी के पराजय की घड़ियाँ

युद्ध मोर्चों पर रूसियों तथा मित्रराष्ट्रों की प्रगति

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

इधर मित्रराष्ट्रों ने एक बड़े पैमाने पर हमला करके राइन नदी के उस पार जो एक विस्तृत मोर्चा स्थापित कर लिया वह जर्मनी की लड़ाई को चरम रूप देने जा रहा है। मित्रसेनाओं ने केवल राइन को पार ही नहीं किया, बल्कि वे उसके पूर्व प्रायः ६० मील की दूरी तक जर्मनी के केन्द्र में घुस गये हैं।

पहली अमेरिकन सेना रेमागेन के नाके के परे बड़ी तेजी से आगे बढ़ी चली जा रही है। जनरल पैटन की तृतीय सेना फ्रांकफर्ट आन-मेन के भीतर घुस चुकी है और इस महत्त्वपूर्ण नगर पर उसने कब्जा कर लिया है। तृतीय सेना फ्रांकफर्ट-बर्लिन सड़क के एकदम निकट पहुँच गई है। पहली तथा तीसरी सेनायें तीन स्थानों पर एक दूसरे से संपर्क स्थापित कर चुकी हैं।

फील्ड मार्शल मांटगोमरी की सेना ंडन तक पहुँच गई है जहाँ से बर्लिन को ीधा रास्ता जाता है। मानहाइम का विशाल औद्योगिक नगर टेलीफोन की बातचीत-द्वारा अमेरिकनों को सौंप दिया गया है। मार्शल केसेलरिंग राइन के उत्तरी मोर्चे पर अपना प्रतिरोध कायम रखने के लिए हालैण्ड से जर्मन सैन्यदलों को बुला रहे हैं।

* * *

रूसियों ने अपने नये व्यापक आक्रमणों के फलस्वरूप स्टेटिन से लेकर वियेना के निकट तक ४०० मील व्यापी विस्तृत मोर्चा कायम कर लिया है। लाल सेना आस्ट्रिया के सीमाप्रान्त पर स्थित कासजेग तक पहुँच गई है और दिन पर दिन वियेना के निकट आती चली जा रही है।

बाल्टिक सागर के महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह गडीनिया पर रूसियों का कब्जा हो गया है, और स्टेटिन को जर्मन सैन्यदल खाली करते चले जा रहे हैं।

उत्तर-पश्चिमी हंगरी में रूसी सैन्यदल एक विस्तृत मोर्चे पर आक्रमण कर रहे हैं। उत्तर साइलेशिया के दक्षिण-पश्चिम में रूसियों के हमले ने जोर पकड़ लिया है।

जर्मनी में ओडर के पश्चिमी किनारे पर स्थित लेबस पर रूसियों का कब्जा हो गया है।

* * *

इटली में पाँचवीं तथा आठवीं सेनाओं के मोर्चों पर इस बीच शांति रही और किसी प्रकार की कार्रवाई नहीं हुई।

* * *

अमेरिकन सैन्यदल रियक्यू द्वीप-समूह के अन्तर्गत ओकोनावा पर उतरें हैं। यह स्थान टोकियो से केवल ३,३५० मील की दूरी पर है। एक विशाल आक्रमणकारी नौसेना के उद्योग से यह महत्त्वपूर्ण कार्रवाई संभव हो सकी है।

केरमा द्वीप पर भी अमेरिकन सैन्यदल उतरे हैं जो खास जापान से ४०० मील की दूरी पर हैं और ओकीनावा से ल १५ मील की दूरी पर। फिलिपाइन्स में सेबूीप पर अमेरिकनों ने उतरना शुरू कर दिया। यह फिलिपाइन्स का नवाँ द्वीप है जिस पर अमेरिकनों ने हमला किया है।

* * *

जापानियों का यह दावा है कि उन्होंने मेकतिला पर आक्रमण करके उस पर फिर से कब्जा कर लिया है। मांडले से ३० मील दक्षिण क्योकसे पर जापानी अत्यन्त दृढ़ता से प्रतिरोध कर रहे हैं। पर मित्र-सैन्यदल शहर के भीतर दो-तीन मील तक घुस गये हैं।

लाशियो-हासियो सड़क से जापानियों का सफाया कर दिया गया है। पहली चीनी सेना तथा ५०वाँ डिवीजन हाशियो से १० मील की दूरी पर एक दूसरे से मिल गये।

पहली चीनी सेना मांगदे से केवल १॥ मील दूर रह गई है। ईरावदी के पूर्वी तट पर पाकोकू से २० मील उत्तर-पूर्व मिंगायन से लेकर म्योथा तक की सड़क से जापानियों का सफाया कर दिया गया है। म्योथा मांडले से ३० मील की दूरी पर है।

* * *

केन्द्रीय एसेम्बली में अर्थ-बिल ५० के विरुद्ध ५८ वोटों से अस्वीकृत हो गया। जब दूसरे दिन उक्त बिल सिफारिशी रूप में पेश किया गया तो वह भी ५० के विरुद्ध ५७ वोटों से अस्वीकृत हो गया। बंगाल एसेम्बली में जब बजट पर वोट लिया गया तो ९७ के विरुद्ध १०६ वोटों से मंत्रि-मंडल की हार हो गई। बंगाल एसेम्बली के स्पीकर मि० नौशेरअली ने कहा कि जब तक एक नये मंत्रि-मंडल की स्थापना न हो जाय तब एक एसेम्बली की कार्रवाई जारी नहीं रखी जा सकती। उन्होंने अनिश्चित काल के लिए एसेम्बली को स्थगित कर दिया। यह आशा की जाती है कि प्रधान मंत्री सर नजीमुद्दीन गवर्नर के आगे अपने मंत्रि-मंडल का इस्तीफा दे देंगे। यह अनुमान किया जाता है कि इस्तीफा स्वीकार करके ९३ धारा के अनुसार प्रान्त का शासन स्वयं अपने हाथों में ले लेंगे। कांग्रेसी पार्लामेंटरी पार्टी के नेता श्री किरणशंकरराव ने अपना यह मत प्रकट किया है कि यदि बंगाल में एक सर्वदलीन मंत्रि-मंडल स्थापित किया जायगा तो कांग्रेस पार्टी उसका समर्थन करेगी।

ज्ञात हुआ है कि उड़ीसा में भी एक सर्वदल मंत्रि-मंडल की स्थापना के उद्देश्य से प्रयत्न चल रहे हैं। युक्तप्रान्त में भी शीघ्र ही मंत्रि-मंडल की पुनःस्थापना की आशा की जा रही है।

* * *

इंडिया एक्सपोर्ट एसोसिएशन ने बंगाल में कपड़े की कमी के तीन कारण बताये हैं—(१) कोयले की कमी, (२) सेना की आवश्यकताओं के लिए प्रतिवर्ष ९० करोड़ गज कपड़ा बनने के कारण मिलों पर दबाव और (३) भारत के बाहर नाजायज तरीकों से कपड़ा भेजा जाना।

विचित्र जगत

हिलता हुआ द्वीप

दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका के तट से कुछ दूर पर एक द्वीप है। जहाँ कोई नहीं रहता। केवल मजदूरों की टोली दिन में उस द्वीप में फास्फेड इत्यादि एकत्र करने जाती है। इस द्वीप में एक भारी कन्दरा भी है जिसके अन्दर पानी की हरहराहट साफ सुनाई देती है। इसी के कारण यह द्वीप हिलता रहता है। लोगों का विश्वास है कि एक दिन यह द्वीप टुकड़े-टुकड़े होकर समुद्र में बैठ जायगा।

* * *

भारी सिक्का

बफेलो में एक स्वेडिश सिक्का प्रदर्शित किया गया है जिसका मूल्य लगभग १७ शिलिंग ४ पेंस के है और वजन २८॥ पौंड है। यह सिक्का १६६० ई० का है। यह ताँबे का है और इस प्रकार बना है कि भुनाने के लिए इसको कई हिस्सों में बाँटा जा सकता है।

* * *

गूँगा बोला

न्यू जरसी में जोसेफ सोल्दी नाम का एक ७ वर्ष का लड़का है जो जन्म से गूँगा और बहरा है। जब उसके घर में आग लगी तो वह सहसा चिल्ला पड़ा—'अम्मा अम्मा घर में आग लग गई है।' वह और उसकी मा किसी प्रकार बचकर बाहर गये पर उसके बाद सोल्दी फिर कुछ न बोल सका।

* * *

भारतीय फिल्माकाश का उज्ज्वल नक्षत्र

डाइरेक्टर सोहराब मोदी

की भारत की नारी जाति को
चित्र-रूप में दी गई भेंट!

सेन्ट्रल स्टूडियो द्वारा प्रस्तुत

परख

माता के त्याग, तपस्या और बलिदान से भरी
हुई मानवजीवन के उच्चतम आदर्श की कहानी।

कलाकार
मेहताब कौशल्या
बलवन्तसिंह याकूब
शाहनबाज सादिक़अली
प्रतिमादेवी लतिका

अवश्य देखिये

विश्वम्भर पैलेस इलाहाबाद

CENTRAL STUDIOS

ब्रज-साहित्य-मंडल

दिल्ली-अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव

दिल्ली में होनेवाले अखिल भारतीय ब्रज-साहित्य-मंडल के वार्षिक अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं—

(१) ब्रज-साहित्य-मंडल का यह अधिवेशन डा० बड़थ्वाल श्री हरेकृष्ण जौहर, श्री घासीराम व्यास, श्री टंडन जी, श्री आर० एम० पंडित, श्री गोकुलचन्द्र दीक्षित, श्री क्षेत्रपाल शर्मा, श्री सुखदेव मालवीय, रा० सा० लल्लोमल जी आदि प्रमुख साहित्यिकों तथा मंडल के हितैषियों के निधन पर शोक प्रकट करता है, तथा भगवान् से प्रार्थना करता है कि वह दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करे।

इसके बाद ज्यौतिषी श्री राधेश्याम द्विवेदी मथुरा ने दूसरा प्रस्ताव उपस्थित किया उसका अनुमोदन श्री मदनमोहन नागर क्युरेटर मथुरा म्यूज़ियम एवं समर्थन श्री लक्ष्मीनारायणाचार्य वकील ने किया।

(२) ब्रज-मंडल अथवा सूरसैन प्रदेश में भारतीय संस्कृति के कितने ही मूल आधारों का स्रोत उपस्थित है। आदि काल से ही इसने हमारे देशवासियों के जीवन को प्रभावित किया है। यह क्षेत्र भक्ति का पुनीत स्थल होने के साथ साहित्य और संस्कृत का भी केन्द्र रहा है। हिन्दू, बौद्ध, न, वैष्णव, शैव, इस्लाम तथा ईसाई धर्म भी यह महत्त्वपूर्ण स्थल रहा है। इस प्रदेश के साहित्य और संस्कृति के सहारे देश का जागरण विकास और संगठन भी अवलंबित है। अतएव ब्रज-साहित्य मंडल का यह अधिवेशन, ब्रज का सांस्कृतिक एवं साहित्यिक-सर्वांगपूर्ण इतिहास तैयार कराने के लिए।

डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल, श्री जयचन्द विद्यालंकार, श्री श्रीनारायण जी चतुर्वेदी, सेठ कन्हैयालाल जी पोद्दार, श्री सत्येन्द्र जी (संयोजक) ! की एक समिति बनाता है।

(३) ब्रज-साहित्य-मंडल का यह अधिवेशन जिसमें विभिन्न भागों से आये हुए हिन्दी के साहित्यिक विद्वान् उपस्थित हैं, अखिल भारतीय रेडियो की भारतीय संस्कृति परम्परा के प्रति अवज्ञा तथा हिन्दी भाषा की उपेक्षा का घोर विरोध करता है, और इस सम्बन्ध में कुछ समय पूर्व निकली हुई सरकारी विज्ञप्ति के प्रति घोर असंतोष प्रकट करता है तथा भारत-सरकार से अनुरोध करता है कि रेडियो-विभाग की अपनी नीति में शीघ्रातिशीघ्र परिवर्तन करे और हिन्दी को प्रमुख स्थान दे।

(४) हिन्दी-साहित्य का बृहद् अंश प्राचीन काल से आज तक ब्रजभाषा के ग्रन्थों का है। अब से कुछ समय पूर्व तक ब्रजभाषा का भारतव्यापी क्षेत्र था। इस दृष्टि से यह अधिवेशन निश्चय करता है कि ब्रज मंडल के प्रधान केन्द्र मथुरा में ब्रजभाषा-साहित्य का एक विशाल संग्रहालय स्थापित हो। यह अधिवेशन मंडल को अधिकार देता है कि वह शीघ्र ही संग्रहालय की स्थापना के लिए एक योजना बनाकर उसे कार्यान्वित करे।

(५) यह सम्मेलन भारत-सरकार के पुरातत्त्व विभाग के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना आवश्यक समझता है कि वह ब्रज-मंडल में अपने खुदाई खोज और रक्षा के कार्य को शीघ्र चालू करे। जिससे ब्रज-साहित्य और संस्कृति पर उचित प्रकाश पड़े और वे स्थान जहाँ से यह सामग्री प्राप्त हो सकती है, नष्ट होने से बच जावें।

—प्रधान मंत्री

राष्ट्रीय सप्ताह

कैसे मनाया जाना चाहिए ?

राष्ट्रीय सप्ताह पर महात्मा गांधी ने एक वक्तव्य दिया है जिसमें उन्होंने कहा है कि बहुत-सी भूलों के बावजूद भारत साम्प्रदायिक एकता, खद्दर की पूर्ण स्थापना तथा स्वराज्य के त्रिविध लक्ष्य के निकट जिस हद तक इस समय पहुँचा हुआ है उस हद तक वह पहले कभी नहीं पहुँचा था।

गांधी जी कहते हैं—"राष्ट्रीय सप्ताह निकट आ रहा है। हमने सन् १९१९ से इस सप्ताह को मनाना आरम्भ किया। देश-भर की ग्रामीण जनता ने अप्रत्याशित रूप से इसमें सहयोग दिया। इसके सात दिन बाद जलियानवाला बाग का हत्याकांड मचा। वह भी अपूर्वकल्पित ही था। तब से हम बराबर इस सप्ताह को मनाते आये हैं, जिसका उद्देश्य त्रिविध लक्ष्य—साम्प्रदायिक एकता, खद्दर की पूर्ण स्थापना तथा स्वराज्य की प्राप्ति है। एक समय ऐसा बोध होने लगा था कि हम उस लक्ष्य के एकदम निकट पहुँच गये हैं। पर आज हम बहुत दूर पड़ गये हैं, ऐसा जान पड़ता है। मैंने जानबूझ कर कहा है कि 'ऐसा जान पड़ता है।' लक्ष्य हम से सदा हटता हुआ मालूम होता है। पर यदि हमने उसके लिये सचाई के साथ काम किया हो तो वास्तव में हम उसके अधिकाधिक निकट पहुँचते चले जाते हैं। अपनी बहुत-सी भूलों के बावजूद इस समय लक्ष्य के निकट जिस हद तक हम पहुँच गये हैं उस हद तक पहले कभी नहीं पहुँचे। यह अच्छा ही है कि हम अपनी भूलों को याद करते रहें और उसके नीचे की सफलता की परवा न करें। केवल इतना ध्यान रखें कि अपनी भूलों से हताश न हों। हमें अपनी उन भूलों से लाभ उठा कर आगे बढ़ने के प्रयास में लगे रहना चाहिये।"

खद्दर के सम्बन्ध में गांधी जी कहते हैं—यह बात ध्यान देने योग्य है कि खद्दर की मान्यता पहले से अधिक व्यापक हो गई है। "यह एक सूर्य की तरह है जिसके चारों ओर दूसरे ग्रामीण धंधे ग्रहों की तरह चक्कर लगाते फिरते हैं। इसके अलावा यह रचनात्मक कार्यक्रम का प्रतिरूप है। खद्दर को इस समय जैसा आदर प्राप्त है वैसा इसके पहले कभी नहीं था। मैं चाहता हूँ कि भारत की स्वतन्त्रता का प्रत्येक प्रेमी राष्ट्रीय सप्ताह के अवसर पर इन बातों को ध्यान में रखे, और पार्ल्यामेन्टरी कार्यक्रम तथा सत्याग्रह के बिना ही स्वतन्त्रता को पहले से अधिक निकट लाने में समर्थ हो।"

डेविड् लायड जार्ज कौन थे ?

(पेज ५ का शेष)

होना ही था। सन् १४ में युद्ध प्रारम्भ होते ही संयुक्त मन्त्रिमण्डल बना और इन्हें अस्त्र-शस्त्र-विभाग का मन्त्री नियुक्त किया गया। इन्होंने सारे देश में युद्ध के औजार बनाने की फैक्टरियों तथा कारखानों का जाल बिछा दिया। इसी बीच ब्रिटिश-सेना-नायक किचनर की मृत्यु हो गई और संयुक्त-मन्त्रिमण्डल में भी एक महत्त्वपूर्ण युद्धनीति पर मतभेद हो गया। रूमानिया में अँगरेजों की भयंकर पराजय हुई। इनके हृदय को बड़ा धक्का पहुँचा। इस समय की युद्ध-समिति इतनी बड़ी थी कि किसी प्रकार का भी निश्चय शीघ्रता के साथ न हो सकता था। इन्होंने तीन-चार आदमियों की एक छोटी समिति बनाने की सम्मति दी। प्रधान मन्त्री एसक्विथ इससे सहमत न हो सके। लोकमत भी उसके विरुद्ध जा रहा था। उन्होंने इस्तीफा दे दिया किन्तु पुनर्निर्वाचन में फिर आ गये। इन्होंने उनके साथ काम करने से इनकार करके पद-त्याग कर दिया। कंजर्वेटिवस भी उनका सहयोग देने को तैयार न थे। अन्त में इनके प्रधानमन्त्रित्व में संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाना ही पड़ा। इन्होंने अपनी इच्छानुसार एक छोटी युद्ध-समिति बनाई जो कि दिन-प्रति-दिन बैठती और युद्ध का सुचारु-संचालन-कार्य्य करती। अन्त ने नवम्बर सन् १८ में इनके अटूट परिश्रम तथा बौद्धिक-चातुर्य्य के परिणामस्वरूप जर्मनी पूर्ण रूप से परास्त हो गया।

युद्ध-समाप्ति के पश्चात् फिर नया चुनाव हुआ। इस बार पुनः आप प्रधान मंत्री हुए, किन्तु धीरे धीरे आपका प्रभाव क्षीण होने लगा। गृह-समस्याओं में आपको बहुमत मिलने में कठिनाई पड़ने लगी। सन् १९१९ की रेलवे की हड़ताल, देश में आर्थिक संकट, सिनफेन नेताओं तथा टर्की आदि की समस्याओं को आप भली भाँति न हल कर सके। सन् २२ में संयुक्त मंत्रिमंडल टूट गया, तभी से आप सक्रिय राजनैतिक क्षेत्र से प्रायः हट गये। आप रूस से मित्रता के सदैव पक्षपाती रहे, और चेम्बरलेन की जर्मनी के प्रति नीति के विरुद्ध थे। इस प्रकार अँगरेजी राजनैतिक आकाश से एक ज्वलन्त तारा ८२ वर्ष का ऐतिहासिक जीवन समाप्त करके सदैव के लिए अस्त हो गया।

* * *

वर्मा जी को पुत्र-वियोग

हिन्दी के सुप्रसिद्ध रहस्यवादी कवि और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के परीक्षा-मन्त्री बाबू रामकुमार वर्मा के एकमात्र नवजात शिशु का देहावसान ३१ मार्च १९४५ को दस बजे दिन में हो गया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

—संवाददाता

'परख' कैसा है

ऐतिहासिक फिल्म का प्र

सुप्रसिद्ध फिल्म डाइरेक्टर सो मोदी का सेन्ट्रल स्टूडियो में बनाया पहला चित्र परख भारत के कि में प्रदर्शित हो रहा है। इस फिल्म विशेषतायें हैं। 'परख' नारी-जीव सच्चा चित्र है, जिसे प्रसिद्ध पं० सुदर्शन जी की कहानी में इ चित्रित किया गया है कि देखने एक बड़ा प्रभाव पड़ता है। पं० सु डायलाग उनके 'सिकन्दर' और वल्लभ' की याद दिलाते हैं।

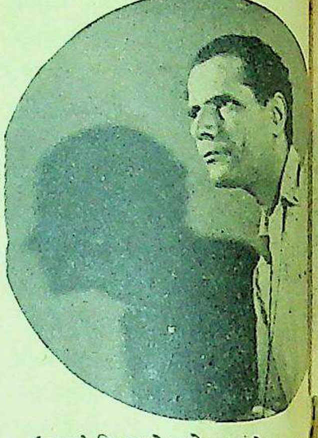

'परख' फिल्म के डारेक्टर सोहराब मो

'परख' डाइरेक्शन सोहराब 'जेलर' 'पुकार', 'सिकन्दर' की से अधिक कीर्ति फैलानेवाला है। इसमें उन्होंने अपने सामाजिक बुद्धि-कौशल का पूरा-पूरा उपयोग साथ ही मेहताब, कौशल्या, वल्ल याकूब, शाहनवाज़, लतिका आदि अभिनय कराया गया है वह उनके अभिनय जीवन के लिए चुनौ हुई है।

'परख' के गाने और इस इस चित्र की विशेषता है। श्री हरनालवी जैसे कवियों ने इ लिखे हैं।

पंजाब के नौजवान शिक्षित खुर्शीद अनवर, और सरस्वती संगीत का परिचालन किया है।

यह चित्र इलाहाबाद में लिए आ गया है और विश्वम्भर प्रदर्शित हो रहा है। इलाहाबाद को इस अवसर से न चूकना चाहि

इ - स्ला -
की
सच्ची पूजा किसने की
यह जानने के लिए पढ़ि
— इस्लामी
दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्र

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया मूल्य १) एक रुपया।
मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

व्रज-भाषा

साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह व्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और व्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु व्रज भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने व्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान् कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — बिहारी-विभव

भूषण-भारती — मतिराम-मकरंद

पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

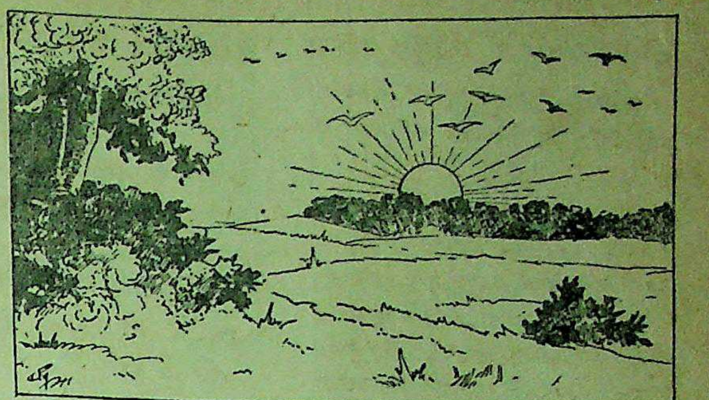

आईऽ वसन्त बहाऽर

इसी लिए उषः काल के समय प्रकृति में संगीत की ध्वनि गूँज उठी है। इस अवसर का लाभ उठाकर क्या आप अपने भ्रान्त और थके हुए मन को प्रसन्न न करना चाहेंगे? अवश्य चाहेंगे। हृदय को संगीत में प्रस्फुटित करनेवाले कवियों की कृतियाँ इस विषय में आपको सहायक होंगी। पं० सोहनलाल द्विवेदी की भैरवी आपके हृदय में जागृति का संचार करेगी तो ठा० गोपालशरणसिंह की माधवी प्रकृति के सौन्दर्य का मूक चित्रपट आपको दिखायेगी। इसी प्रकार मधूलिका सौंदर्य और प्रेम की कविताएँ सुनाकर आपका हृदय आनन्द और प्रसन्नता से भर देगी।

वीणाग्रन्थि	२)	मधूलिका	२)	भैरवी	२॥≡)
मधुस्रवा	१।)	माधवी	२)	मंजीर	१)
मानवी	२।-)	कौमुदी	॥≡)	माधुरी	।≡)
		सुमना	२।	किंकिणी	॥।)

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≡)।

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≡)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉलो की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपानाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥≡)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

जिसने खाया पसन्द किया
ऐसा
दाल का मसाला
साग, दाल, चटनी, रायता, चाट आदि का स्वाद चौगुना करता है और हाज़मे की अचूक दवा है।
१ डिब्बा—८ छटाँक, मूल्य केवल १० आना। डाकखर्च अलग।
प्रकाश ब्रदर्स
बाग़ मुज़फ्फ़र खाँ, आगरा।

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
PILLS

इलाहाबाद क एजन्ट—बलदवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी,
एल० एम० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

आरोंदा
१८६
नीलगिरि
वापरो
साण्डलेकर बंधु. बम्बई
स्थापना १९२६] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय
हैजा, मलेरिया, इन्फ़्लुइंजा, प्लेग, या
आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दजन ५॥=) डा०
युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम
कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल की

दर्ज़ी छाप
सिलाई का धागा
आप वही धागा खरीदें जो निस्सन्देह मजबूत तथा सर्वोत्तम है।
भारतवर्ष में
एकमे थ्रेड कं०, लि०
द्वारा निर्मित
बैंक आफ बड़ौदा बिल्डिङ्ग,
एपोलो स्ट्रीट, बम्बई।

THE ACME THREAD CO. LTD
DURZI CHAAP
ARTICLE
NO. 1000

क्षमा कीजिएगा
पेट स्वच्छ रखनेवाला एन्ड्रयूज आपका शरीर सुव्यवस्थित रखता है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT
133

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

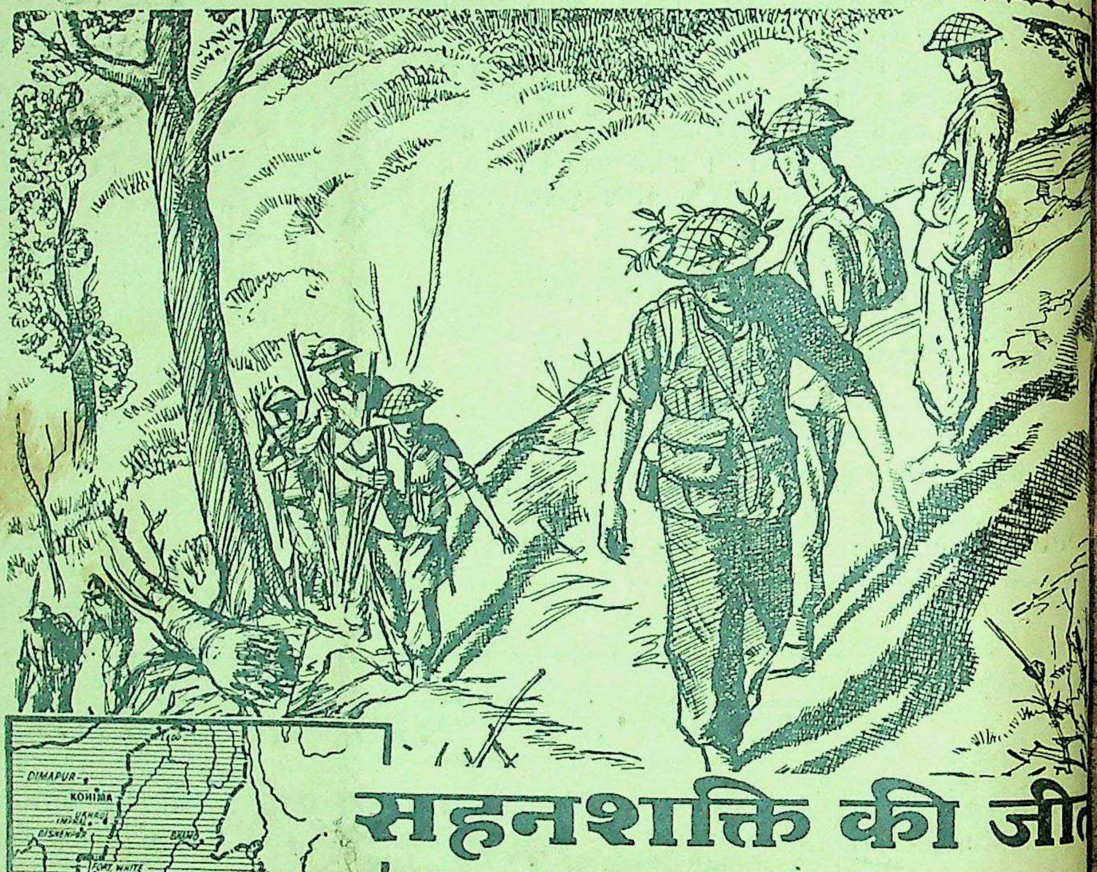

सहनशक्ति की जी

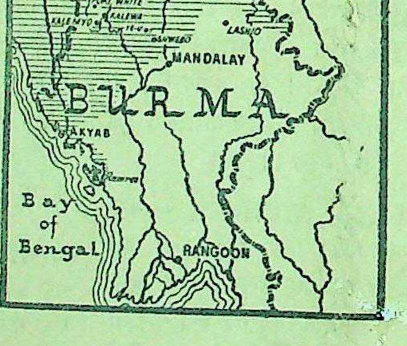
DIMAPUR
KOHIMA
UKHRUL
IMPHAL
BISHENPUR
FORT WHITE
KALEWA
KALEMYO
YEU
SHWEBO
BHAMO
LASHIO
MANDALAY
BURMA
AKYAB
Bay of Bengal
RANGOON

यह युद्ध-मार्ग हिन्दुस्तानी सैनिकों के पराक्रम से उज्ज्वल है। धुंधला भाग उस प्रदेश को दिखा रहा है जो शत्रु के अधिकार से मुक्त किया जा चुका है।

दीमापुर, कोहिमा, बिशनपुर, उखरूल-ये नाम मई और जून, सन् १९४ के चिन्तापूर्ण दिनों की याद दिलाते हैं। किन्तु हमारे बहादुर जवानों धन्यवाद, जिनके सराहनीय पराक्रम ने लड़ाई का नक़शा बदल दिया अब इन नामों के स्थान पर समाचारों में और ही नाम नज़र आते हैं। व्हाइट, कालेम्यो, कालेवा, इयु, अकयाब, श्वेबो.... इसका अर्थ क्या नक़शा देखिए। बर्मा की ८० हज़ार वर्ग मील से अधिक भूमि अर्थ देश का लगभग तिहाई भाग दुश्मन के पंजे से छुड़ाया जा चुका और अब तक लगभग एक लाख जापानी सैनिक हताहत हुए हैं।

जिन जवानों के बलपर यह विजय प्राप्त हुई, उनमें हिन्दुस्तान के प्रत्येक भा और प्रान्तके निवासी हैं, उनमें सभी वर्गों और जातियों के लोग सम्मिलि हैं। यह सफलता प्राप्त करने में इन बहादुरों ने कितनी सहनशक्ति प्रदर्शित और कितना भीषण युद्ध किया, हम केवल अनुमान लगा सकत हैं। अलब यह हमने अपनी आँखोंसे देख लिया कि उन्होंने हमा शान्ति एवम् व्यवस्था को सुरक्षित बना दिया है। कि जब तक शत्रु पर पूर्ण विजय प्राप्त न हो जाये, हम अप देश को जापानी आक्रमणकारियोंसे सुरक्षित नहीं सम सकते। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

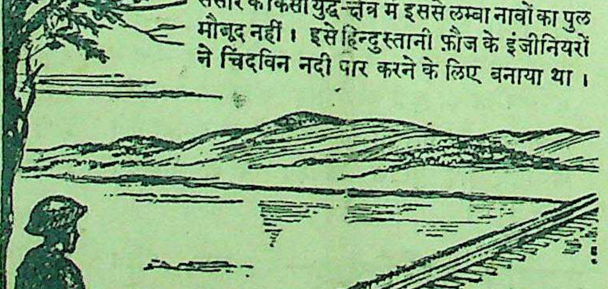

संसार के किसी युद्ध-क्षेत्र में इससे लम्बा नावों का पुल मौजूद नहीं। इसे हिन्दुस्तानी फ़ौज के इंजीनियरों ने चिंदविन नदी पार करने के लिए बनाया था।

बढ़े चलो जीत निकट है

AAA 101

—भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस लिमिटेड, [illegible] में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र [निमल

ार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

र, १५ अप्रैल, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 15th April, 1945

रा की प्राचीन गुफाओं में कैलाश
की कलापूर्ण-श्रेष्ठ कारीगरी।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

नाजियों की भावी रण-योजना क्या है ?
सीमाप्रांत में कांग्रेस मंत्रि-मंडल आ गया।

विश्वास उत्पन्न करनेवाले आँकड़े

तेईसवीं त्रैवार्षिक वैल्युयेशन रिपोर्ट घोषित करती है

मृत्यु-संख्या के अनुभव में सुधार
और ख़र्च के अनुपात में कमी

३ साल का लाभ कम्पनी के ऋणों पर ३) सैकड़ा ब्याज लगाकर १,५०,८८,०९२ हुआ—

इसके कारण बीमादारों के सुरक्षा-कोष में ५४ लाख रुपये की वृद्धि हुई

बोनस घोषित
आजीवन बीमा पालिशियों पर १२॥) प्रतिहज़ार वार्षिक
मियादी (एनडाउमेंट) बीमे पर १०) „ „

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ़ एशोरेन्स कं० लि०
ब्रांच आफिसः—३२ कैनिङ्गरोड, इलाहाबाद।

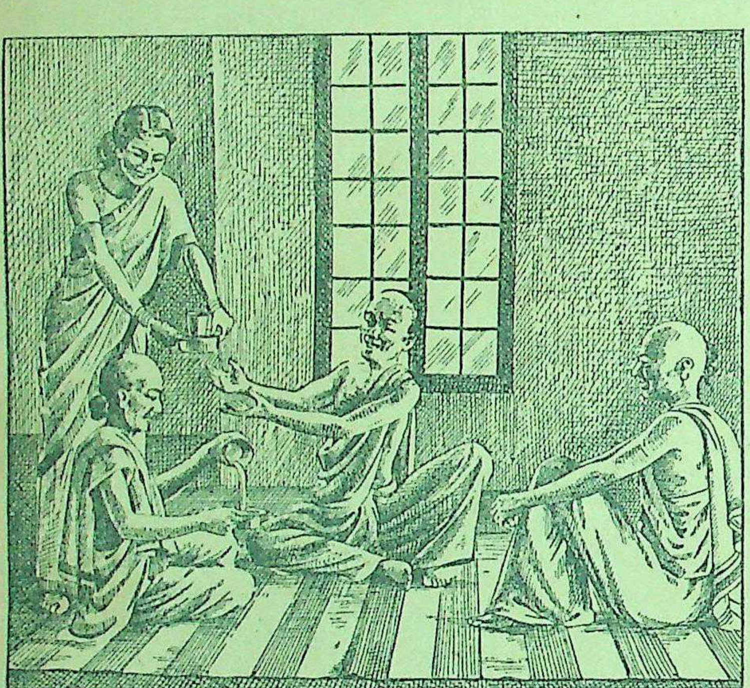

चाय का समय—दक्षिणी भारत में

दक्षिणी एवं पूर्वी हैदराबाद के पुराने परिवारों के परम्परागत हिन्दुस्तानी तरीके के जीवन में कुछ कुछ परिवर्तन होते आ रहे हैं। वे नया तरीका उपयोगी होने पर ही मानते हैं। तदानुसारवश भ्रमण, सार्वलौकिक गमनागमन और जात-पात की अभिन्नता में विश्वास धीरे-धीरे बढ़ रहा है। अब ब्राह्मण भी अब्राह्मण का आतिथ्य-सत्कार अधिक स्वतन्त्रता से करने लगे हैं। उनके यहाँ चाय के साथ यदि कुछ सेवन को न दिया जाय तो विजाति का ज्ञान स्पष्ट हो जाता है।

दक्षिणी भारतवासी दूध चीनी से मिश्रित चाय एक जोड़े पीतल के पात्र में ले, एक दूसरे में उंडेलते हैं—इस तरह ठण्डा हो जाने पर पीते हैं।

उत्तरी भारत के ऐसा, सम्पूर्ण दक्षिण में भी ताजी ब्रूक-बाण्ड चाय को लोग पसंद करते हैं।

ब्रूक बॉंड

'दो पत्ती और एक कली'

सारिडन से

२० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये

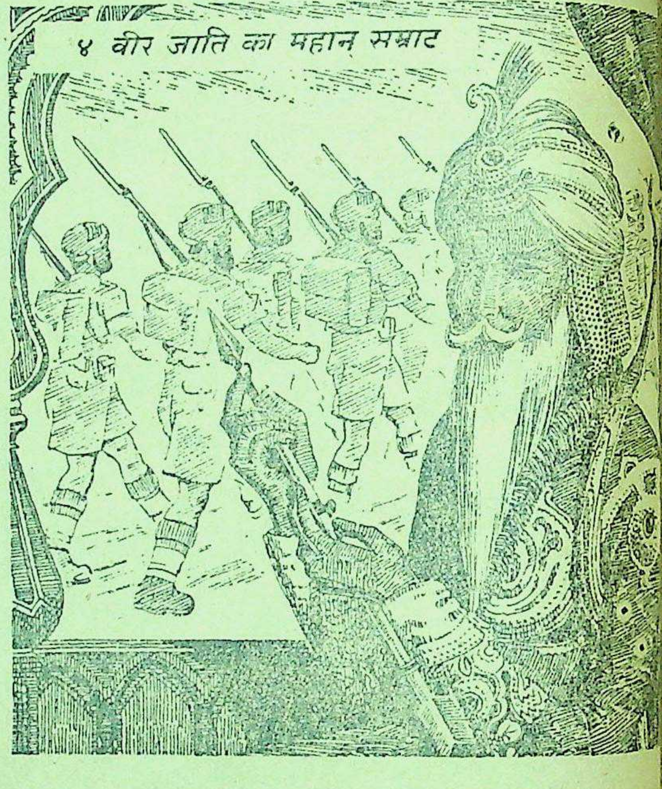

४ वीर जाति का महान सम्राट

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल स्वस्थ शरीर। महाराणा रणजीत सिंह, पन्द्रहवीं शता श्री गुरु नानक द्वारा स्थापित वीर सिक्ख जाति के उ सम्राट थे। उनके, वीरता और साहस के कार्य आज भी, सिक्खों को ही नहीं अपितु समस्त भारतीयों को उत्तेजना करते हैं। रणजित सिंह स्वयं योद्धा होने के कारण, सिक जहां बुद्धिमान् देखना चाहते थे। वहां उन्हे हृष्ट पुष्ट भी चाहते थे।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल सेवन करिये। हेमो द्राक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और ब को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फ़ास्फ़ेट्स स्नायु शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पेप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ्य रक्षा के लिये

हैमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेस्टन रोड, कानपुर
अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड

वर्ष ७ संख्या ३३]

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, १५ अप्रैल, १९४५

पश्चिमी रणक्षेत्र में सोवियट रूस के विजयी सेनापति

जनरली खोवट्रकी मार्शल रोकोसोवस्की जनरल वैग्रामियन मार्शल कोनीव मार्शल जुखोव

भारत मंत्री मि० अमरी जिन्होंने भारतीय समस्या पर विचार करने के लिये लार्ड वेवेल को बुलाया है

योरोप के उत्तरी युद्ध क्षेत्र में हेग से लेकर ब्रेमेन तक फील्ड मार्शल केसलरिंग के २०० मील लम्बे मोर्चे के तीन अलग अलग क्षेत्रों में विभक्त हो जाने का खतरा है। फील्ड मार्शल माण्टगोमरी ने इस युद्ध के सब से महान् आक्रमण में अपने प्रत्येक सैनिक, टैंक और तोप को लगा दिया है, संपूर्ण पश्चिमी मोर्चा गतिशील हो रहा है। युद्ध का शीघ्र अन्त कर देने के उद्देश्य से द्वितीय सेना का पूर्णरूप से किया जानेवाला यह एक शानदार हमला है।

* * *

पं० गोविन्दवल्लभ पन्त, कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य ने अपनी बीमारी के बिस्तरे से पत्र प्रतिनिधियों से बातें करते हुए कहा कि "मैं निष्फलता या निराशावादिता से बिल्कुल दुःखी नहीं हूँ। अपने उद्देश्य और उसकी पूर्ति में मेरा विश्वास अटल है। कांग्रेस की दृढ़ता में मुझे जरा भी सन्देह नहीं है और मुझे निश्चय है कि हम पूर्ण स्वतंत्रता शीघ्र प्राप्त करेंगे, इतना शीघ्र कि जितना आप में से बहुतेरे लोग ख्याल भी न करते होंगे।

* * *

मार्शल स्टालिन ने घोषणा की है कि पूर्वी प्रशा की राजधानी कोनिग्सबर्ग पर मार्शल वेसिलेवस्की की फौजों ने कब्जा कर लिया है, तथा २७ हजार को बन्दी बनाया है, जिनमें वहाँ का जर्मन कमाण्डर भी है। रूसी फौजों ने वियना के मध्य भाग पर कब्जा कर लिया है। रूसी तथा जर्मन समाचारों के अनुसार नगर का पतन होने ही वाला है।

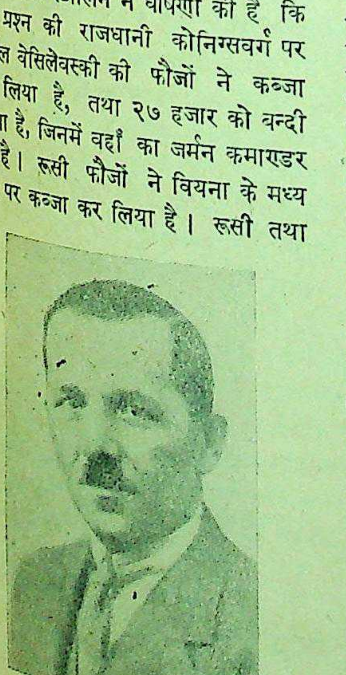

आधुनिक तुर्की के वैदेशिक सचिव सिराजोगलू, जो जर्मनी के विरुद्ध मित्रराष्ट्रों से सहयोग कर रहे हैं

* * *

योरोपीय युद्ध में जर्मन साइलेशिया की राजधानी, जो अब घिर गई है, ब्रेसलाउ के लिए महान् युद्ध छिड़ गया। ब्रेसलाउ, मुख्य मोर्चे से बहुत पीछे छूट गया है और उसका सम्बन्ध चारों तरफ से कट गया है। यह नगर पिछले कई हफ़्तों से हर तरफ से होनेवाले रूसियों के प्रबल हमलों का सामना करता रहा है।

* * *

लाल सेना के सैनिकों ने पूर्वी प्रशा की राजधानी कोनिग्सबर्ग पर प्रहार करना शुरू कर दिया है, जिसे कि रूसियों ने कई हफ्ते से घेर रखा था। बाहर के जर्मन रक्षक सैनिकों द्वारा नगर में प्रवेश करने के बाद कई बाहरी हिस्सों पर रूसियों ने कब्जा कर लिया। इसके अतिरिक्त मुख्य रेलवे स्टेशन और कोनिग्सबर्ग के बन्दरगाह पर भी कब्जा कर लिया गया है। रूसी विमानों की भीषण गोलाबारी से कोनिग्सबर्ग में जोरों की आग लगी हुई है, और सारा नगर धुएँ से भर गया है।

* * *

बम्बई का समाचार है कि भारत में बहुत से पुस्तक प्रकाशक तथा कम से कम एक विदेशी प्रकाशन संस्था कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य डा० राजेन्द्रप्रसाद की रिहाई की इस आशा के साथ उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उनकी दो पुस्तकों के प्रकाशन के सम्बन्ध में, जो कि उन्होंने जेल में लिखी हैं, वे कन्ट्रैक्ट कर सकें।

कांग्रेस वर्किङ्ग-कमेटी के सदस्य डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि सीमाप्रान्त में, कांग्रेसी मंत्रि-मंडल की स्थापना से, कांग्रेस की नीति में कोई परिवर्तन नहीं होगा। सीमाप्रान्त में मंत्रि-मंडल की स्थापना उस प्रांत की विशेष परिस्थितियों के कारण हुई है। उसका यह अर्थ नहीं है कि कांग्रेस की नीति में किसी प्रकार उलट-फेर हो गया है।

* * *

यह ज्ञात हुआ है कि गत जून महीने से ब्रिटेन पर उड़न बमों द्वारा होने वाले हमलों के ८,४३६ आदमी मरे और २५,१०१ आदमी बहुत घायल हुए, जिन्हें अस्पताल पहुँचाना पड़ा।

* * *

एक चीनी वक्ता ने कहा कि जापानी फौजें दक्षिण पश्चिम होनान में शेन्सी की ओर हमला कर रही हैं और उन पर चीनियों ने जो प्रत्याक्रमण किये उसमें ५,००० जापानी मारे गये। १५ जापानी टैंक भी नष्ट हुए।

* * *

दिल्ली के रोटेरी क्लब में श्री सी० राजगोपालाचारी ने 'एक और युद्ध की सम्भावना' पर भाषण दिया। पोलीटेकनीक के प्रिन्सिपल मि० बुडा ने सभापति का स्थान ग्रहण किया। श्री राजगोपालाचारी ने अपना यह मत प्रकट करके श्रोताओं को आश्चर्य में डाल दिया कि अगले ३० वर्ष तक युद्ध छिड़ने की कोई सम्भावना नहीं है।

* * *

निराला के प्रति

लेखक, श्री आरसीप्रसादसिंह

युग के कवि, नमस्कार !
तम का दिग्जाल तोड़
निकल रहा तू किशोर,
सूर्य-सा ललाट पर
प्राची से ग्रीष्म-घोर !
किरणों के झोंकों से आज खुला द्वार-द्वार !
ज्योतिर्मय, नमस्कार !
छन्दों के बन्ध खुले,
गीतों के प्राण धुले !
सातों स्वर मण्डल में
सोतों ही रंग घुले !
वाणी की वीणा का काँप रहा तार-तार !
वाचस्पति, नमस्कार !

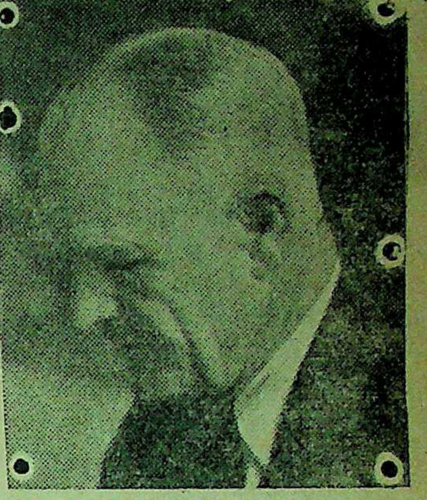

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल जो आजकल लंदन में हैं और भारतीय समस्या सुलझाने में लगे हैं।

सन् १९४५-४६ के ऋण प्रोग्राम के सम्बन्ध में भारत सरकार ने एक सूचना प्रकाशित करके एक नये ऋण की घोषणा की है, जिसे ३ प्रतिशत प्रथम डेवलपमेंट ऋण, १९७०-७५ कहा जायगा। इस ऋण में १६ अप्रैल से धन लिया जायगा और १८ अप्रैल को उसे बन्द कर दिया जायगा। कुल धन ४३ करोड़ रु० तक लिया जायगा।

* * *

अमेरिकन स्थल-सेना के कमांडिंग जनरल जोसेफ स्टिलवेल ने एक फौजी दावत में भाषण करते हुए कहा कि जापानी लोग इस समय उससे अधिक शक्तिशाली हैं जितना कि युद्ध आरम्भ होने के समय थे। यह सच है कि हमने उन्हें पीछे ढकेल दिया है और समुद्र पर उनसे नियंत्रण छीन लिया है, पर इसका अर्थ यह भी है कि उनकी सप्लाई लाइन बहुत छोटी है और हमारी बहुत बड़ी है।

* * *

टोकियो की खबर है कि जापान के नये प्रधान मंत्री ऐडमिरल बैरन सुजूकी ने अपना मंत्रिमंडल बनाने के बाद अपने प्रथम ब्राडकास्ट में जापानी जनता से अपील करते हुए कहा कि 'जिस प्रकार की सैनिक घटनायें घटित हो रही हैं, उनसे कोई आशा नहीं होती। वर्तमान परिस्थिति से बचने का एकमात्र एक रास्ता है और वह है, राष्ट्र की समस्त शक्तियों का लगा देना, ताकि शत्रु को १० करोड़ मनुष्यों की एक संयुक्त सेना का मुकाबिला करना पड़े।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित अमरीका में भारतीय स्वाधीनता का आन्दोलन प्रबल वेग से कर रही हैं

सम्पादक का पृष्ठ

सोवियट रूस और जापान

सोवियट रूस और जापान में अब सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। सन् १९४१ में रूस और जापान में एक संधि इस प्रकार की हुई थी कि दोनों राष्ट्र युद्ध के सम्बन्ध में एक दूसरे के प्रति तटस्थता की नीति ग्रहण किये रहेंगे। पाँच वर्ष तक दोनों ने सन्धि का निर्वाह किया किन्तु अब सन्धि-काल समाप्त हो गया है। रूस-जपान की सन्धि-भंग की यह घटना ऐसी परिस्थिति में घटित हुई है जब कि योरोप का युद्ध समाप्त हो रहा है और प्रशांत महासागर के भयंकर युद्ध का श्रीगणेश होने जा रहा है। तरह तरह के अनुमान लगाये जा रहे हैं कि आखिर जापान के प्रति रूस की भविष्य-नीति क्या होगी? रूस ने योरोप के युद्ध-क्षेत्र में जर्मनी को पराजित करके अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की गति-विधि ही बदल दी है। आज वह मित्रराष्ट्रों में एक विजयी राष्ट्र सिद्ध हो रहा है। इसलिये प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि क्या रूस जापान पर भी आक्रमण करेगा? ब्रिटेन और अमरीका के कन्धे से कन्धा मिलाकर जिस प्रकार रूस ने योरोप में नाजी गढ़ को विदीर्ण करने में सहयोग दिया है, उसी प्रकार क्या सुदूरपूर्व के भावी युद्ध में भी जापान को पराजित करने में सक्रिय भाग लेगा?

इसमें सन्देह नहीं है कि मित्रराष्ट्रों की भावी नीति जापानी प्रभुत्व को प्रशान्त महासागर में समाप्त करने की बन गई है। एक ओर ब्रिटेन और अमरीका ने अपनी संयुक्त सैनिक कार्यवाही जल, स्थल और वायु द्वारा प्रारम्भ कर दी है, दूसरी ओर जापान भी मित्रों के मुकाबले के लिए तैयार हो गया है। पिछले दिनों नया जापानी मंत्रिमंडल निर्माण हुआ है और शासन की बागडोर अपने हाथ में ली है। यद्यपि मित्रों ने पिछले दो वर्ष से जापान के विरुद्ध लगातार युद्ध छेड़ रखा है, और कई अंशों में वह पीछे खिसकता जा रहा है। बर्मा तथा फिलीपाईंस में मित्रों को, जापान को पराजित करने में, जो सफलता मिली है उससे स्पष्ट हो जाता है कि योरोपीय युद्ध की पूर्णाहुति के बाद जब ब्रिटेन और अमरीका इस ओर संयुक्त सैनिक कार्यवाही प्रारंभ करेंगे तब जापान उनके मुकाबले में कितना ठहर सकेगा, यह समझने की बात है। ऐसी दशा में रूस क्या करेगा? मित्रराष्ट्रों में पारस्परिक सहयोग जिस प्रकार अब तक रहा है, उसे देखते हुए यह अनुमान लगाना अनिवार्य है कि रूस हाथ पर हाथ रखे हुए चुप बैठने वाला नहीं है। ब्रिटेन तथा अमरीका का संयुक्त रूप से साथ देना उसकी एक नैतिक जिम्मेदारी भी हो गई है। इसलिए यदि रूस योरोप की भाँति सुदूरपूर्व में भी युद्ध की बागडोर अपने हाथ में ले तो आश्चर्य नहीं।

यदि रूस ने जापान पर चढ़ाई कर दी तो सचमुच जापान के समाप्त होने में अधिक समय नहीं लगेगा। एक ओर उसे प्रशान्त में युद्ध लड़ना पड़ेगा दूसरी ओर उत्तर में रूस से लोहा लेना पड़ेगा। रूस भी अब पहले का रूस नहीं रहा। उसे भी अब लड़ाई का चस्का लग गया है। वह कभी नहीं चाहता कि जापान का प्रभुत्व एशिया पर स्थापित हो जाये, जब कि वह स्वयं एशिया का एक विशाल और शक्तिशाली राष्ट्र माना जाता है। फिर भी हमें फिलहाल यह कहने में हिचक नहीं है कि रूस है बड़ा चालाक। वह जापानी प्रभुत्व को बढ़ने अवश्य नहीं देना चाहता, किन्तु ब्रिटेन और अमरीका को भी वह एशिया का डिक्टेटर बनने देना पसन्द न करेगा। वह स्वयं सर्वोपरि रहना चाहता है। इसलिए यदि वह भविष्य में अपनी चालों से कोई विचित्र परिस्थिति उत्पन्न करे तो आश्चर्य नहीं। फिर भी इतना तो निश्चय है कि रूस जापान का प्रभुत्व कदापि सहन नहीं कर सकता, ऐसी स्थिति में उसे जापान से युद्ध करना अनिवार्य है और यदि वह दिन आया तो मित्रराष्ट्र जिस प्रकार योरोप में नाजियों के विरुद्ध विजयी हो रहे हैं उसी प्रकार एशिया में जापानियों के विरुद्ध सफलता प्राप्त करेंगे। किन्तु अभी हम निश्चय रूप से कुछ नहीं कह सकते। सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन के बाद यह निश्चय रूप से प्रगट होगा कि रूस की भावी नीति क्या होगी? वह वास्तव में कूटनीति से काम लेगा या सचमुच योरोप की भाँति एशिया में भी शत्रु के विनाश में सम्मिलित भाग लेगा? फिर भी रूस-जापान संधि तो भंग हो ही गई है। अब रूस स्वतंत्र है और आवश्यकता पड़ने पर किसी भी समय जापान को युद्ध के लिये ललकार सकता है।

* * *

स्वर्गीय डाक्टर बेनीप्रसाद

यह अत्यन्त दुख की बात है कि प्रयाग विश्वविद्यालय के इतिहास तथा राजनीति के सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर बेनीप्रसाद का एकाएक स्वर्गवास हो गया। इस आकस्मिक दुर्घटना से वास्तव में राजनीति के एक ऐसे विद्वान् का स्थान रिक्त हो गया है जिसकी पूर्ति जल्दी जल्दा असंभव है। डाक्टर साहब से हमारा भी विशेष परिचय था और पिछले अनेक वर्षों से हम उनकी सज्जनता, विद्वत्ता तथा देशभक्तिपूर्ण विचारों के कायल रहे हैं। डाक्टर बेनीप्रसाद जी अपने अध्यवसाय और परिश्रम से ही आज इतने ऊँचे पद पर पहुँचे थे। लगातार अध्ययन करने की वह जागृत मूर्ति थे। विद्यार्थी जीवन में आप राष्ट्रीय कार्यों में विशेष भाग लिया करते थे। स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी के संपर्क में इस ओर आपको विशेष बल प्राप्त हुआ था और तभी से आपने हिन्दी में राजनैतिक विषयों पर लेख लिखने भी प्रारंभ किये थे। डाक्टर बेनीप्रसाद कुछ दिन तक कानपुर में अध्यापन कार्य करते रहे किन्तु बाद को प्रयाग-विश्वविद्यालय में आ गये। थोड़े ही अर्से के बाद आपने लन्दन से डी० एस-सी० की डिग्री प्राप्त की। इस प्रकार आप प्रयाग-विश्वविद्यालय में राजनीति-विभाग के अध्यक्ष बना दिये गये।

डाक्टर बेनीप्रसाद हिन्दी के उच्चकोटि के लेखकों में गिने जाते हैं। 'संक्षिप्त सूरसागर' उनकी साहित्यिक सुरुचि की सुन्दर रचना है। डाक्टर साहब राजनैतिक विधान तथा कानून के पंडित थे। महामान्य डाक्टर सर तेजबहादुर स[illegible] भी आपसे प्रायः वैधानिक सलाहें लिया करते थे। अँगरेजी में आपने कई सुन्दर और श्रेष्ठ पुस्तकों की रचनायें की हैं जिनकी प्रशंसा भारत ही नहीं विदेशों के विद्वानों ने भी मुक्तकंठ से की है। आप प्रायः लोकप्रिय और राष्ट्रीय कार्यों में विशेष भाग लिया करते थे। जबरदस्त, ओजपूर्ण और मौलिक लेखन-शैली के लिए ही नहीं प्रभावशाली और धाराप्रवाह वक्तृता के लिए भी आप प्रसिद्ध थे। पिछले दिनों आप महात्मा गांधी से भी मिलने के लिए वर्धा गये थे और वर्तमान राजनैतिक उलझन [illegible] बंध में वार्ता की थी। ऐसे विद्वान्, विचारक और पंडित के निधन से कौन दुखी नहीं है? हम स्वर्गीय आत्मा की शांति की कामना करते हुए दुखी कुटुम्बियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं।

* * *

राष्ट्रीय सप्ताह

इस समय सारे देश में राष्ट्रीय सप्ताह बड़ी लगन के साथ मनाया जा रहा है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की स्मृति में यह सप्ताह प्रतिवर्ष मनाया जाता है और पिछले २६ वर्ष से मनाया जाता रहा है। महात्मा गांधी के आदेशानुसार केवल रचनात्मक कार्यक्रम पर ही इस सप्ताह में विशेष ध्यान दिया जाता रहा है। चर्खा चलाना, खद्दर की बिक्री, पारस्परिक प्रेम और एकता का प्रचार ही सप्ताह का मुख कार्यक्रम है। इस पर्व का राष्ट्रीय महत्व क्यों है? इसका कारण है हमारी पराधीनता। कांग्रेस तथा उसके नेता स्वाधीनता प्राप्ति की उद्देश्य पूर्ति के लिये वर्षों से महान् संकट सहते आ रहे हैं। समय समय पर सार्वजनिक आन्दोलनों में लाखों व्यक्तियों को त्याग और कष्टसहन करना पड़ा और आज भी करना पड़ रहा है। ब्रिटिश सरकार किसी भी प्रकार राजी नहीं हो रही है और भारतीय माँगों के प्रति उसकी उपेक्षा-नीति पहले की भाँति आज भी बनी हुई है। वह भारत में दोरंगी नीति से शासन कर रही है, किन्तु कोई चारा नहीं क्योंकि हम पराधीन हैं और हममें एकता की कमी है। इसी का फल आज ४० करोड़ भारतीय भुगत रहे हैं। किन्तु महात्मा गांधी के अहिंसा, त्याग और बलिदान के आदर्श ने राष्ट्र में वह जागरण उत्पन्न कर दिया है कि परिणाम अवश्य ही शुभ होगा। उसके वास्तविक लक्षण भी दिखाई देने लगे हैं। वर्षों के संघर्ष के फलस्वरूप सम्भव है अब भारतीय माँगों पर ब्रिटेन के साम्राज्यवादी कुछ विचार करें और स्वराज्य-प्राप्ति की कुछ अंशों में पूर्ति हो तो आश्चर्य नहीं। इसलिए राष्ट्रीय सप्ताह हमारी माँगों के प्रदर्शन का प्रतीक सप्ताह है। इस सप्ताह से यह स्पष्ट हो जाता हैं कि हम सक्रिय हैं। चाहे जितना हमें दबाया जाये या संघर्षों में पिसना पड़े किन्तु हम अपने उच्च ध्येय की प्राप्ति में पीछे हटनेवाले नहीं हैं। महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय सप्ताह के मनाये जाने के सम्बन्ध में जो सलाह दी है, उसका सारे देश में पूर्णरूप से पालन हो रहा है फिर भी यह देखा गया है कि कहीं कहीं नौकरशाही नाराज हो गई है और कुछ प्रतिबंध लगाकर राष्ट्रीय सप्ताह मनाने में रुकावटे उत्पन्न की गई हैं किन्तु इस प्रकार की कार्यवाहियों से अब न राष्ट्रीय भावना का अन्त हो सकता है और न स्वाधीनता प्राप्ति की प्रबल प्रे जनता हृदय रिक्त हो सकता है। इस हम राष्ट्रीय सप्ताह के इस अवसर कर्मियों को बधाई देते हैं जिनकी प्रेरणा और बलिदान से वह दिन दिखाई दे रहा है जब भारत को स्व प्राप्त होगी और संसार के स्वतन्त्र रा बीच उसकी भी एक अलग सत्ता जायेगी।

* * *

मिस्टर जिन्ना का अवकाश

मुसलिम लीग के प्रधान पाकिस्तान के प्रवर्तक मिस्टर जिन्ना ३ महीने के लिये सार्वजनिक का अवकाश ग्रहण करने जा रहे हैं, स यह बड़े आश्चर्य और खेद की बात मिस्टर जिन्ना के अब तक के सक्रिय से राजनैतिक क्षेत्र में काफी चहल बनी हुई थी। उन्हें केवल 'पाकिस्तान सिवा दूसरा कोई उपाय मुसलमानों के उद्धार का नहीं दिखाई देता था। सच तो यह है पिछले कुछ महीने मिस्टर जिन्ना तथा मुसलिम लीग की छीछालेदर हो रही है, उसका भी राजनीतिक महत्त्व है। सारा देश चा है कि आपसी एकता तुरन्त हो और भारतीय अड़ंगे के अन्त कोई न कोई हल निकाला जाये मिस्टर जिन्ना के राजी हुए बिना यह सम्भव हो सकता है? महात्मा गांधी भी बहुत चाहा कि अड़ंगे का अन्त किन्तु मिस्टर जिन्ना ने पीठ पर हाथ धरने दिया। इस प्रकार केवल मिस्टर जि की हठधर्मी ने समूचे राष्ट्र को परेशानी डाल रखा है। किन्तु एक व्यक्ति की डि टरी कितने दिन चल सकती है? सम पलटा खाया। सीमाप्रान्त में पुनः का मंत्रिमंडल की स्थापना हुई। कट्टर जिन्ना साहब के लिये यह असह्य हो अनिवार्य है। इसी प्रकार बंगाल, आ प्रांतों में लीग की फजीहत से कौन अप है? सिन्ध की स्थिति डगमग है। की नई लहर से यह सिद्ध हो गया है निकट भविष्य में लीग का पराजित अनिवार्य है। तब यदि मिस्टर जि अभी से मौन धारण करने की नीति ग्रहण करें तो क्या करें? उनकी कौन है? लार्ड वैवेल पाकिस्तान के पहले से विरोधी हैं। अँगरेज भी इस वक्त उन नहीं सुन रहे हैं। इसलिए परिवर्तन अ श्यम्भावी है। भविष्य में प्रान्तों में दलों के संयुक्त मंत्रिमंडल स्थापित इसके आसार दिखाई दे रहे हैं। स्थिति में मिस्टर जिन्ना की कट्टरता पूछ कैसे हो सकती है? हमारी समझ मिस्टर जिन्ना ने बुद्धिमानी का कार्य कि है, किसी भी शुभ काम में अडंगा डा के बजाय चुप लगा जाना बुद्धिमानी है मिस्टर जिन्ना को भी ३ महीने के लि ईश्वर ने बुद्धि दी यह भारत के लि सौभाग्य की बात है।

वासवदत्ता—तीसरा संस्करण—
अच्छे काग़ज़ में स्वच्छ प्रका
चित्र आर्ट पेपर में। मू० २)
कुणाल—तीसरा संस्करण—असाधार
संस्करण—मोनो टाइप में
पुस्तकालयों के लिए। मू० १)
**मैनेजर (बुकडिपो) इंडियन प्रेस, लिमि
टेड, इलाहाबाद।**

सीमान्त में कांग्रेस-मंत्रिमंडल

वर्तमान राजनैतिक स्थिति की जाँच-पड़ताल

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

सीमा-प्रांत में पुनर्वार कांग्रेस-मंत्रिमंडल की स्थापना हुई है। मुसलिमलीग तथा सरकारी वैधानिक अड़ंगे के पराजय का यह ज्वलन्त प्रमाण है। एक पत्र-प्रतिनिधि ने पिछले दिनों सीमा-प्रांत में भ्रमण करके यह पता लगाया है कि कांग्रेस मंत्रिमण्डल का जन-सेवा के लिये भावी कार्यक्रम क्या है और किन लोकप्रिय उपायों से प्रांत पर शासन करने की नीति उसने ग्रहण की है। लेख सामयिक और रोचक है तथा सीमा प्रांत की कांग्रेसी शासन नीति पर प्रकाश डालनेवाला है।

बम्बई में प्रार्थना के समय महात्मा गांधी तथा सीमा प्रान्तीय गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ।

सन् १९३९ ई० के बाद से भारतवर्ष के सीमाप्रान्त-कांग्रेस के शक्तिशाली संगठन का लोहा माना जाता रहा है। समय पर यहाँ के नेता बलिदानों-द्वारा कांग्रेस की शक्ति बढ़ाते रहे हैं परन्तु कांग्रेस-द्वारा उनको कोई ऐसी सहायता न प्राप्त हो सकी जो प्रयोगात्मक हो। भारत की राजनैतिक स्थिति ज्यों की त्यों बनी रही। ब्रिटिश सरकार ने जो वैधानिक अड़ंगा पैदा कर दिया, वह आज तक दूर नहीं हो सका है। पर इधर महात्मा जी के छूटने के बाद से देश में पुनः नवजीवन की लहर दौड़ गई। कांग्रेस नेताओं में बहुत से छूट रहे हैं। परन्तु सरकार का वैधानिक अड़ंगा ज्यों का त्यों बना हुआ है। उसमें परिवर्तन के लक्षण नहीं दीख पड़ते। सीमाप्रान्त भी उन्हीं वैधानिक अड़ंगेवाले प्रान्तों में से एक था परन्तु वहाँ के गवर्नर ने ऐसा करने से अपने को मुक्त कर लिया है। वहाँ की मुस्लिम लीगी मिनिस्ट्री की हार हो गई और अब पुनः कांग्रेस-मंत्रिमंडल स्थापित हो गया है। इस मंत्रिमंडल को महात्मा जी का आशीर्वाद और सीमान्त गांधी का ही नहीं, वरन् उस प्रान्त की जनता का नैतिक समर्थन प्राप्त है। सन् १९३९ ई० से आज तक इस प्रांत की राजनीति में कैसे कैसे परिवर्तन हुए और उस समय वहाँ की कैसी स्थिति रही, इसका कुछ विवरण जानकारी के लिए विचारणीय है। क्या सीमा प्रान्तीय मंत्रिमंडल को देखकर ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अब भी केन्द्रीय और प्रान्तों में निरंकुश शासन चलाते रहेंगे?

एक संवाददाता का कहना है कि जब उसने प्रान्त में प्रवेश किया तो उसके सामने तीन प्रश्न थे, जिसका निराकरण उसके लिए अत्यन्त आवश्यक था। प्रथम प्रश्न जो सामने था वह यह कि क्या प्रान्त अब भी कांग्रेस-विचार-धाराओं से ओत-प्रोत है? दूसरे यह कि वर्तमान कांग्रेस मंत्रिमंडल बन जाने पर क्या मिस्टर जिन्ना का यह कथन सत्य है कि कांग्रेस मंत्रिमंडल प्रांत के नाम पर कलंक है? तीसरे यह कि सर फ्रांसिस मूड़ी, गृहसदस्य का कांग्रेस मंत्रिमंडल स्थापित होने पर क्या यह कथन सत्य है कि सन् १९४२ ई० में सीमाप्रान्त में कोई भी बाधा नहीं पैदा हुई।

सीमा प्रांतीय कांग्रेस मंत्रिमंडल के प्रधानमंत्री डाक्टर खान साहब।

उपर्युक्त प्रश्नों को लेकर संवाददाता ने वहाँ के प्रमुख व्यक्तियों से भेंट की है जिसका अनुभव उसने एक बड़ी ही सुन्दर भाषा में लिखा है। प्रान्त में वह केवल लीगी सदस्यों से ही नहीं मिला वरन् प्रान्त के गवर्नर, सर जार्ज कनिङ्घम, प्रान्त के लोकप्रिय नेता डा० खान साहिब, कांग्रेस पार्लामेण्टरी पार्टी के मंत्री श्री मेहरचन्द खन्ना, सीमाप्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सभापति श्री खान अली गुलखाँ, मियाँ जफर ख़ाँ, श्री भंजूराम गांधी अर्थ मंत्री और अल्लानेवाज खाँ आदि नेताओं से मिलकर वहाँ की राजनैतिक स्थिति का अच्छा अध्ययन किया है। इसके अतिरिक्त उस प्रान्त के राजनैतिक-प्राण सीमान्त गांधी अब्दुल गफ़्फार खाँ के उस आश्रम को भी देखा जो काबुल नदी की एक सहायक नदी पर लाल कमीज केन्द्र बन गया है। यही आश्रम सीमाप्रान्त के राजनैतिक जीवन का प्रकाश-स्तम्भ है। यह उस प्रान्त का सेवाग्राम है जहाँ से प्रान्त-में सेवकों का दल ट्रेनिङ्ग लेकर स्वतन्त्रा-संग्राम के लिए तैयार होता है।

हिंसा से रक्षा

सन् १९३९ ई० के नवम्बर मास में अखिल भारतीय कांग्रेस के आदेशानुसार इस प्रान्त में भी कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने इस्तीफ़ा दे दिया। २५ मई १९४३ ई० में मुस्लिम लीग ने अपना मंत्रिमंडल बनाया। अब २१ माह बाद वर्तमान कांग्रेस मंत्रिमंडल १६ मार्च १९४५ को पुनः डाक्टर खान साहब ने अपने तीन सहकारियों के साथ बनाया है।

इस प्रान्त की वह स्थिति नहीं जैसा कि गृह-सदस्य ने एसेम्बली में कहा है। यहाँ की दूसरी ही स्थिति है। यहाँ के गवर्नर ने अखिल भारतीय नीति का अनुसरण नहीं किया। कांग्रेस के व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा ९ अगस्त १९४२ में नेताओं की गिरफ़्तारी के बाद भी उस प्रांत में कांग्रेस को गैर-कानूनी नहीं घोषित किया गया। वह भूतपूर्व लार्ड इरविन के प्राइवेट सेक्रेटरी रहे हैं। गांधी-इरविन पैक्ट ने उनकी दूरदर्शिता बढ़ा दी थी। इससे क्रान्तिकारी विषय को छोड़कर ऐसे आन्दोलनों के कारण वह कांग्रेस को गैरकानूनी नहीं घोषित करना चाहते थे। इसी वजह से डाक्टर खान साहब और उनके साथियों को भी उन्होंने गिरफ़्तार नहीं किया। खान अब्दुल गफ़्फार खाँ की गिरफ़्तारी भी एक दुर्घटना थी। परन्तु सामूहिक गिरफ्तारी नहीं हुई। फिर भी ३,००० कांग्रेस-जन सविनय अवज्ञा में गिरफ़्तार किये गये थे। सर जार्ज कनिङ्घम को यह विश्वास था कि कांग्रेस अहिंसावादी संस्था है। इससे उन्होंने अपने ढंग की नीति अख्तियार की और प्रांत को हिंसा से बचाया। इस प्रांत के गवर्नर की इस नीति ने सिद्ध कर दिया कि नेताओं की गिरफ़्तारी ने जनता के पथ-प्रदर्शन का मार्ग रोक दिया। जहाँ हिंसायें हुईं थीं वहाँ जनता की जिम्मेदारी नहीं थी क्योंकि कांग्रेस की अथवा उसके नेताओं की अनुपस्थिति में देश के सर्वमान्य नेताओं की सहानुभूति के लिए जनता शान्तिमय प्रदर्शन कर रही थी। उसे दबाने के लिए सरकार की ओर से हिंसात्मक साधनों का अवलम्बन लिया गया था। परन्तु सीमाप्रांत के गवर्नर की नीति ने इस प्रांत को बाल-बाल बचा लिया और आज तक कांग्रेस उसी दशा में है जैसे वह सन् १९४२ के पहले थी।

लीग का भाग्योदय

कांग्रेस-इस्तीफे के बाद गवर्नर अपने एडवाइजरों के परामर्श से शासन चलाते रहे। परन्तु यह उनको खलता था। वे वैधानिक शासन के प्रयत्न में थे। अतः उन्होंने मुस्लिम लीग को मंत्रिमंडल बनाने के लिए निमंत्रित किया। उस समय मुस्लिम लीगी मंत्रिमंडल बहुमत में था। क्योंकि एसेम्बली के १० कांग्रेस सदस्य जेलों में बन्द थे। परन्तु इस मंत्रिमंडल की रचना ने यह सिद्ध कर दिया कि बुराई को सुधार कर अच्छाई की जा सकती है। प्रान्त के कांग्रेस-जनों ने सोचा कि गवर्नर ने लीग को उनके विरुद्ध साहसी बना दिया है, परन्तु गवर्नर उस प्रांत की खाद्य समस्या को जनता के सहयोग से हल करने के प्रयत्न में थे। इस बात को देखकर विगत शरद में अधिवेशन बुलाने की माँग कांग्रेस में जोर पकड़ने लगी थी। परन्तु उस समय कांग्रेस की आवाज नहीं सुनी जा सकी। शरद अधिवेशन भी न बुलाया जा सका। किसी प्रकार सीमाप्रान्तीय जनता मुस्लिम लीग का शासन देखती रही। उनको तभी मुक्ति का चिह्न दृष्टिगोचर हुआ जिस समय कांग्रेस ने पद-ग्रहण किया। अब उनमें एक नवीनतम भावना का विकास हो गया है। वह कांग्रेस की ओर अपने लिए ध्यान लगाये बैठी है।

दो मंत्रिमंडलों की गाथा

सीमाप्रान्त में कांग्रेस मंत्रि-मंडल के आते ही कांग्रेस की राजनीति में एक उत्साह की लहर दौड़ गई है। पद-ग्रहण की इस नीति का उच्च अधिकारियों में भी स्वागत हो रहा है। इसके दो कारण हैं। (१) कांग्रेस पार्टी जनता का प्रतिनिधित्व करती है। (२) कांग्रेस ही एक ऐसी संस्था है जिसका अनुशासन अच्छे ढंग से चल रहा है। इससे पदग्रहण करके यह संस्था अवश्य जन-सेवा:कार्य में सफल होगी। अपने विगत दो वर्षों के शासनकाल में कांग्रेस मिनिस्ट्री ने आर्थिक और सामाजिक सुधारों में जो सफलता प्राप्त की है, करीब उतने ही दिन के शासनकाल में लीग मिनिस्ट्री निन्दनीय हो चुकी है। अधिकारीवर्ग कांग्रेस के शासनकाल को ऊँची दृष्टियों से देखता है। कांग्रेस मिनिस्ट्री ने जनता में साहस भर दिया था। वह इस लीग मिनिस्टरी में सब गायब हो गया। यह तो साधारण बात है। लीग मिनिस्ट्री का रवैया अपने सम्बन्धियों आदि को नौकरी दिलाने में सर्वथा पक्षपातपूर्ण रहा है, जिसका प्रभाव जनता और कर्मचारियों, दोनों पर पड़ा है। प्रान्त में यह सर्वविदित है कि लीगी शासन बुराइयों से परिपूर्ण था।

पिछली सीमाप्रान्तीय कांग्रेस मंत्रिमंडल के समय अपने एक दौरे में पंडित जवाहरलाल नेहरू खाँन अब्दुल गफ्फार खाँ के साथ दिखाई रहे हैं।

लीग की वसीयत

परन्तु कांग्रेस मंत्रिमंडल को लीग मिनिस्ट्री की जो वसीयत मिली है उसके लिये उसको नये टैक्सों का आश्रय लेना होगा। पहला काम जो मंत्रिमंडल को करना है, वह भविष्य का कार्यक्रम तैयार करना। दूसरी यह बुराइयाँ जो गवर्नरी और लीगी मिनिस्ट्री के शासनकाल में चुनाव-सम्बन्धी पैदा हुई हैं उनको दूर करना। इसके अतिरिक्त एसेम्बली में नवाबजादा अलाहनेवाज खाँ ने एक बिल इस आशय को पेश किया है कि कोई भी एसेम्बली का सदस्य बिना

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिये।

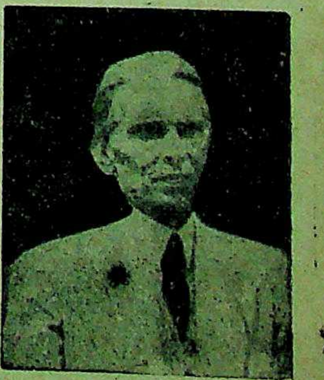

सीमा प्रांतीय पराजित लीगी मंत्रिमंडल के सरगना मिस्टर जिन्ना।

पूज्य बापू जी के नाम खुली चिट्ठी

महात्मा गांधी का आदेश है कि हिन्दी-उर्दू के साथ एक ऐसी भाषा का निर्माण होना जरूरी है जो राष्ट्र भाषा का स्थान ग्रहण करे। उसका नाम है हिन्दुस्तानी। साथ ही उन्होंने हिन्दी-उर्दू लिपियों के सीखने का भी आदेश दिया है। इसी संबन्ध में यह चिट्ठी लिखी गई है और शंका प्रगट की गई है।

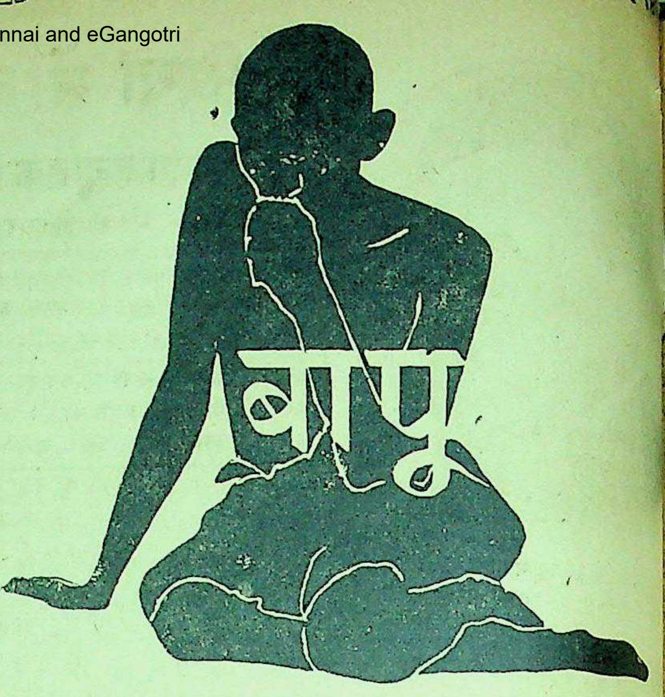

पूज्य बापू जी,

मैंने हिन्दुस्तानी प्रचार कान्फ्रेन्स की सब खबरें ध्यान से पढ़ी हैं। मुझे हिन्दुस्तानी आन्दोलन के इस ढंग से बड़ा दुख और क्षोभ हुआ है। लगभग सम्पूर्ण हिन्दी जगत की भी यही भावना है।

हिन्दुस्तानी से सम्बन्धित आपके दोनों प्रामाणिक भाषण मैंने 'देशदूत' में पढ़ लिये हैं। मुझे खेद है कि आपके विचारों से मेरी तर्क-बुद्धि को किंचित् सन्तोष नहीं हुआ। आपके विचारों में तर्क नहीं, केवल इच्छा की प्रबलता है। अपको अपनी इच्छानुसार सब कुछ करने का अधिकार है परन्तु तर्क की कसौटी पर कसे बिना उसको सार्वजनिक रूप देना राष्ट्र के लिये अहितकर होगा। वर्तमान समय तो इन झगड़ों को उठाने के लिये सर्वथा अनुपयुक्त है।

आपने जिन देहातियों की भाषा की बातें उठाई हैं वे आपके भाषणों की भाषा भी नहीं समझेंगे। अपने निजी काम को छोड़कर उनके लिये किसी भी दूसरी बात को समझना कठिन है। एक सभ्य राष्ट्र का काम उन अपढ़ देहातियों की भाषा से नहीं चल सकता जिन्हें घर से दस बीस मील चलकर ही भाषा की कठिनाई पड़ने लगती है। वे आज तक जो भाषा बोलते आये हैं उसे तब तक बोलेंगे जब तक उनकी वर्तमान दयनीय अवस्था बनी रहेगी। उनको ऊँचा उठाने के लिये उन्नत भाषा और उन्नत साहित्य की आवश्यकता पड़ेगी। आज आप जो हैं वह न होते यदि आपने अँग्रेजी के गौरवपूर्ण साहित्य का या प्राचीन भारतीय साहित्य का अध्ययन न किया होता। ये चीजें देहातियों की बोली में नहीं दी जा सकतीं। आपको हिन्दी-उर्दूवालों से शिकायत है कि कठिन संस्कृत, अरबी-फारसी के शब्द प्रयुक्त करते हैं। यदि वे ऐसा न करें तो क्या करें? गूढ़ विचारों के लिये गूढ़ शब्द चाहिये ही। अँगरेजी में बच्चों की कहानियाँ भी हैं और एमरसन के निबन्ध भी। अँगरेजी में वे पुस्तकें भी हैं जो तीसरे दर्जे में पढ़ाई जाती हैं और वे पुस्तकें भी हैं जो एम० ए० में पढ़ाई जाती हैं और बहुतेरों की समझ में नहीं आतीं। हिन्दी में भी बच्चों की कहानियाँ हैं और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबन्ध भी। चन्द्रकान्ता जैसे ऐयारी के उपन्यास भी हैं, तोता-मैना के किस्से भी हैं और जयशंकरप्रसाद के नाटक और काव्य भी। ज्यों-ज्यों हिन्दी-उदू उन्नत होंगी उनमें नये शब्द आवेंगे ही—हिन्दी संस्कृत के और उर्दू फारसी के—और हिन्दी उर्दू का अन्तर बढ़ेगा ही। ये शब्द अशिक्षितों को या न जाननेवालों को कठिन मालूम पड़ेंगे ही। यह कठिनाई ५० शब्द संस्कृत के और ५० अरबी-फारसी के लेने से थोड़े ही दूर हो जायगी। 'भाषा' की जगह 'जबान' और 'शब्द' की जगह 'लफ्ज' कहने से देहाती आपके भाषणों को थोड़े ही समझ जायँगे? न 'राजनीति' की जगह 'स्यासत' और 'आर्थिक' की जगह 'इक्तिसादी' कहने से उन्हें कुछ आसानी हो जायगी? मुझे तो अपने पुराने प्रचलित शब्दों की जगह या नये शब्द संस्कृत के बजाय अरबी-फारसी के शब्द लेने का कोई कारण नहीं दीख पड़ता।

आप अँगरेजी को हटाने की बात तो कह रहे हैं लेकिन उसकी जगह लेने के लिये उतनी ही उन्नत भाषा चाहिये? यह काम तो आज की कठिन हिन्दी और उर्दू के लिये भी कष्ट-साध्य है, बेचारी देहाती हिन्दुस्तानी की बात ही क्या है? आज भी आपको देश से कोई गूढ़, चुस्त और बड़ी बात कहनी होती है तो आप अँगरेजी की शरण लेते हैं। अँगरेजी का स्थान लेने के लिये हिन्दी अपनी माता संस्कृत से शक्ति ले लेकर बलवती होती जा रही है लेकिन मालूम होता है यह आपको नहीं सुहाता? हिन्दी में आजतक कोई ऐसा कठिन संस्कृत शब्द नहीं आया जो बंगला, गुजराती और मराठी में भी न हो लेकिन आपको केवल हिन्दी के संस्कृत शब्दों से ही शिकायत क्यों मालूम होती है, आप हिन्दी के ही कठिन संस्कृत शब्दों पर भृकुटी क्यों चढाते हैं? आज तक आपको यह कहते नहीं सुना गया कि बँगला, मराठी और गुजराती भी अपने अपने प्रान्तों की जनता के लिये, देहातियों के लिये बेकार हैं और तब तक उनके काम लायक न होंगी जब तक वे अपने ५० प्रतिशत संस्कृत शब्दों को निकाल कर उनकी जगह अरबी-फारसी शब्द न भर लें। हिन्दी भारतवर्ष की स्वाभाविक राष्ट्र-भाषा है लेकिन आपका हिन्दुस्तानी आन्दोलन उसके यह पद प्राप्त करने में बाधक सिद्ध होगा, आप कृपया भली-भाँति विचार करके देखिये।

आप हिन्दी उर्दू को मिलाने के लिये दोनों को अनिवार्य शिक्षा पर जोर देते हैं लेकिन ऐसा होना असंभव है। ऐसा न होने का एक कारण यह भी है कि उन प्रान्तों में जहाँ उर्दूवालों का बहुमत है हिन्दी को वह स्थान नहीं दिया गया है जो हिन्दी प्रान्तों में उर्दू को प्राप्त है। हैदराबाद में स्कूलों तथा उसमानिया विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से उर्दू है जो वहाँ की जनता के लिये उतनी ही कठिन, दुर्गम और विदेशी है जितनी की अँगरेजी। पर आपने फिर भी उसमानिया विश्वविद्यालय को आशीर्वाद दिया है और एक 'देशी-भाषा' को माध्यम बनाने पर अनुकरणीय बतलाया है। पश्तो भी एक देशी-भाषा है लेकिन अगर उसे मद्रास विश्वविद्यालय का माध्यम बना दिया जाय तब आप क्या कहेंगे? हैदराबाद में हिन्दुओं के माँगने पर भी हिन्दी को शिक्षा क्रम में कोई स्थान नहीं दिया गया है जब कि हिन्दू रियासतों में उर्दू को पढने-पढ़ाने की पूरी व्यवस्था है। उल्टे काश्मीर में मुसलमान हिन्दी को कोई स्थान देने के लिये तैयार नहीं हैं। पंजाब में पाँचवें दर्जे तक हिन्दी का पता ही नहीं है, सबको अनिवार्य रूप से उर्दू पढ़ना पड़ता है। पाँचवें दर्जे में पहुँच कर अलबत्ता हिन्दी साहित्य के विषय को लेने की स्वतंत्रता है परन्तु विद्यार्थी उर्दू ही लेते हैं क्योंकि पहिले से जानने के कारण उर्दू ही उनको एक नये विषय हिन्दी से अधिक सरल प्रतीत होती है। शिक्षा का माध्यम उर्दू ही रहता है। यह पद्धति हिन्दी को कोई स्थान न देने के बराबर है। पंजाब की प्रान्तीय भाषा पंजाबी है, उर्दू नहीं है। ऐसी दशा में यदि वहाँ एक बाहरी भाषा उर्दू चलाई जाती है तो हिन्दुओं को हिन्दी पढ़ने, हिन्दी को भी शिक्षा का माध्यम बनाने और अदालती अथवा राजकीय भाषा बनाने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। सिन्ध में लीगी सरकार ने मिडिल परीक्षा के लिये उर्दू अनिवार्य विषय बना दिया है, वहाँ पर न हिन्दी का कोई स्थान है न उसके पढ़ने-पढ़ाने की कोई व्यवस्था। सीमा-प्रान्त में प्रान्तीय भाषा पश्तो के होते हुए भी उर्दू का बोल-बाला है, हिन्दी का कोई स्थान नहीं।

यहाँ तक कि जिन निजी स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जाती है उन पर सरकार की ओर से आये दिन प्रहार होते रहते हैं। इन सब प्रान्तों में हिन्दुओं की माँग को वहाँ का मुसलमान बहुमत ठुकरा देता है, जब कि हिन्दी प्रान्तों में जैसे युक्तप्रान्त, बिहार और मध्यप्रान्त में उर्दू को हिन्दी के समान अधिकार प्राप्त है। आज तक आपने हैदराबाद, पंजाब, सिन्ध, सीमाप्रान्त में हिन्दी को उर्दू की बराबरी स्थान दिखाने के लिए नहीं कोई प्रयत्न किया यह बात हिन्दीवालों को बहुत खटकती है और जब तक इन प्रान्तों में हिन्दी के प्रति अन्याय दूर नहीं किया जावेगा तब तक हिन्दी उर्दू के मेल के लिए उपयुक्त वातावरण नहीं बन सकेगा। इसके पहले कि आप हिन्दी उर्दू दोनों पढ़ने पर जोर दें और कांग्रेस प्रान्तों में अपनी नीति चलायें, आपको उचित है कि आप हैदराबाद, पंजाब, सिन्ध, सीमा-प्रान्त, बम्बई, बंगाल आदि में हिन्दी को वही स्थान दिलाने की कृपा करें जो उर्दू को हिन्दी प्रान्तों में प्राप्त है काँग्रेस की राष्ट्रीयता से उर्दूवालों को अनुचित लाभ उठाने देने के माने होंगे हिन्दी के साथ सरासर अन्याय। हिन्दी उर्दू में मेल तो हो ही नहीं सकेगा क्योंकि दो व्यक्तियों में मेल तभी सम्भव है जब दोनों में मेल करने की भावना हो।

'बुनियादी तालीम' (बेसिक एजूकेशन) में हिन्दी उर्दू दोनों अनिवार्य विषय हैं। यह बच्चों पर व्यर्थ का बोझ तो इसका सब जगह समान रूप से पाल नहीं हो रहा है। युक्तप्रान्त तथा कांग्रेस प्रान्तों में तो इसका पूरा होता है. लेकिन पंजाब इत्यादि में बिलकुल उड़ा दी गई है। यदि पं अधिकांश बालकों के उर्दू लेने के हिन्दी को पढाना जरूरी नहीं सम तो युक्तप्रान्त में अधिकांश बालकों के लेने पर भी उर्दू को रखना और अ रूप से पढाना अनुचित नहीं है तो है? या तो 'बुनियादी तालीम' या तालीम' में सब जगह हिन्दी उर्दू के समान व्यवहार हो या इनमें से जहाँ प्रधानता हो केवल उसी को जाये। क्या आप हिन्दी के प्रति ज्यादती को दूर कराने की अनुकंपा क

राष्ट्र-भाषा के लिए हिन्दी और दोनों लिपियाँ मान्य होने पर अन्य हा और मुश्किलों के अतिरिक्त एक ज हानि जो हिन्दी को पहुँचेगी उसको रामनरेश त्रिपाठी के निम्नलिखित शब्दों व्यक्त किया जा सकता है :—

"देवनागरी लिपि पूर्ण है और उ उर्दू में प्रचलित हर एक शब्द शुद्ध और पढा जा सकता है। पर फारसी अपूर्ण है; उसमें संस्कृत के शब्द लिखे जा सकते हैं; न पढ़े। अतएव को एक किये बिना यदि हम दोनों भाषा को एक करने के मसले पर सहमत हो हैं तो भाषा की दृष्टि से हिन्दी को हानि उठानी पड़ती है। हिन्दी के ही शब्द, जो उर्दू में लिखे नहीं जा हमेशा के लिये हमसे छूट जायेंगे। जै भाग्य, संदिग्ध, आवश्यक, प्रमाण, सा और विद्वान् के स्थान पर हमें मशकूक, जरूरी, सबूत, अदब और लेना पड़ेगा। लेने के हम विरोधी क्योंकि नये शब्दों से हमारा शब्द बढ़ता ही है, घटता नहीं; पर पीढ़ियों से साथ चले आते हुये अपने शब्दों को केवल इसलिये कि वे विदेशी लिपि में लिखे नहीं जा सकते, देने के विरोधी जरूर हैं। संस्कृ प्रचलित शब्दों को छोड़ देने से हम उस साहित्य से भी वंचित हो जा जिसमें उनका लगातार प्रयोग अभी होता आ रहा है। हम कबीर, तुलसी, से ही नहीं, वर्त्तमान काल के सैकड़ों ले और कवियों से हाथ धो बैठेंगे।"

—शेष पृष्ठ १८ पर देखि

नाजियों की भावी रणयोजना

उनके भयंकर युद्ध का अन्तिम गढ़ कहाँ होगा?

लेखक, प्रोफेसर ज्ञानसिंह सोनी, एम० ए०

योरोप में नाजियों का अब अन्त होनेवाला है, फिर भी नाजी अपनी अन्तिम रण योजना को कार्यरूप में परिणत कर रहे हैं। इस लेख में यह बतलाया गया है कि वह भयंकर युद्ध का अन्तिम गढ़ कहाँ बना रहे हैं? लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

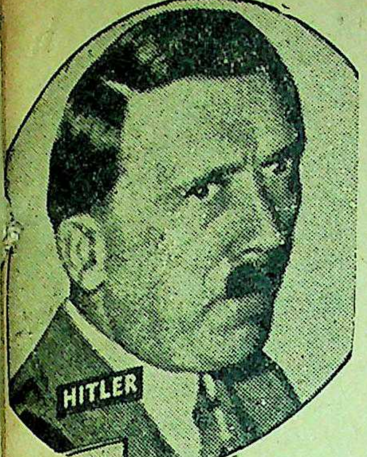

हर हिटलर अन्तिम युद्ध के लिए नई योजना बना रहा है।

योरपीय युद्ध की गति-विधि को देखते हुए आगामी कुछ ही महीनों में अथवा सप्ताहों में, ब्रिटिश-अमेरिकन तथा रूसी सेनाओं ने सम्पूर्ण उत्तरी जर्मनी पर अधिकार कर लिया, तो फिर बचे हुए नाजी नेताओं की रण-योजना क्या होगी? यह तो स्पष्ट है कि उन्होंने कोई योजना बना अवश्य रखी है और अब उसका कुछ कुछ आभास भी मिलने लगा है।

सम्भवतः हिटलर के वासस्थान, बर्खटेस गार्डेन में यह स्वीकार किया जाने लगा है कि बर्लिन और प्रशा का हाथ से निकल जाना भविष्य में निश्चय है। यह भी खबर है कि नाजी सरकार ने अपनी नई राजधानी वेमर में बनाई है। संयोगवश यह वही स्थान है जहाँ से गत महायुद्ध के बाद जर्मनी के लोकतंत्रात्मक शासन की घोषणा की गई थी।

पूर्व तथा पश्चिमी मोरचों की हालत चाहे जैसी हो जाय, किन्तु अनुमान है कि हालैंड, नारवे और चैनल के बन्दरगाहों पर जर्मन आखिरी समय तक कब्जा किये रहने की कोशिश करेंगे। यह निश्चित रूप से मालूम हो गया है कि हालैंड से जर्मनों ने अब तक अपनी सेना बिलकुल नहीं हटाई, इतना अवश्य किया है कि कुछ स्थानों से प्रथम श्रेणी की सेना हटा कर वहाँ द्वितीय श्रेणी के सैनिक रख दिये हैं।

हालैंड, नारवे और चैनल के बन्दरगाह वे आखिरी अड्डे हैं, जिनसे गोताखोरों तथा नये जर्मन (वी) अस्त्रों के द्वारा इँग्लैंड पर अब भी हमला किया जा सकता है। साथ ही यह भी सम्भव है कि जर्मन पश्चिमी हालैंड के हेग, एम्सटर्डम, राटरडम, यूट्रेट आदि नगरों के क्षेत्रों पर भले ही कब्जा बनाये रखें, किन्तु इस प्रदेश का जर्मनी से सम्बन्ध-विच्छेद हो जाने पर शायद ही वे अनिश्चित काल तक ब्रिटेन पर अग्निबाणों के हमले जारी रख सकेंगे।

पिछले दिनों हफ्तों तक, शाही वायुसेना के विमानों ने यह नीति बरती है कि जिन अड्डों से जर्मन अपने विजयास्त्रों का प्रयोग करते हैं, उनको जानेवाले रास्ते बेकार कर दिये जायँ। और जाँच से मालूम हुआ है कि जब जब जर्मन अड्डों के इन रास्तों पर भीषण बमवर्षा की गई, तब तब कुछ दिनों के इँग्लैंड पर होनेवाले इन जर्मन अस्त्रों के हमले कम हो गये। इससे प्रकट होता है कि जर्मनों ने इन अड्डों पर अपने विजयास्त्र अधिक संख्या में जमा नहीं कर रखे हैं।

मालूम होता है कि जर्मन पश्चिमी हालैंड के इन अड्डों को केवल इसलिए आखीर तक अपने कब्जे में रखना चाहते हैं ताकि इँग्लैंड पर विजयास्त्रों के हमले करके उसे परेशान किया जा सके। किन्तु नहीं मालूम कि इन अड्डों की रक्षा करनेवाली जर्मन सेना की दशा उस समय क्या होगी, जब समस्त उत्तरी तथा मध्य जर्मनी पर मित्रों का कब्जा हो जायगा।

इन बातों के अतिरिक्त, आजकल, जर्मनों के दक्षिणी गढ़ की चर्चा अलग जोरों पर है। कुछ लोगों का खयाल है कि जर्मन अपना आखिरी गढ़ बवेरिया, टाइरोल आस्ट्रिया और बोहेमिया नामक चार प्रान्तों की भूमि को बनायेंगे। मुझे जो सूचना मिली है उसके और पश्चिम तथा पूर्व में जनरल पैटन तथा मार्शल तोलबुखिन की सेनाओं के बढ़ाव के आधार पर कहा जा सकता है कि बात ऐसी नहीं है।

मुझे पता चला है कि जर्मन अपना आखिरी गढ़ बवेरिया तथा टाइरोल के पहाड़ी प्रदेश को बनायेंगे। यहाँ की लड़ाई गुरिल्ला ढंग से होगी। यहाँ पर्याप्त मात्रा में खाद्य पदार्थ तथा युद्धास्त्र जमीन के नीचे तहखानों में छिपा कर रख छोड़ गये हैं, जिसमें उनके द्वारा एक छोटी सेना की लड़ाई का काम काफी दिनों तक चलता रह सके। अन्त में नाजी नेताओं तथा हिमलर की नीति यह होगी कि इस आखरी गढ़ में बाकी बची हुई पूरी सेना न ले जाकर केवल वे ही सैनिक ले जाये जायँ, जो नाजी सिद्धान्तों में अंधविश्वास रखते हों और नाजी नेताओं को स्वयं जिन पर पूरा भरोसा हो।

केवल प्रतिरोधात्मक युद्ध

जर्मन सैनिकों का यह दल अपनी ओर से लड़ाई शुरू न करेगा। जहाँ तक हो सकेगा यह दल युद्ध टालने की कोशिश करेगा और उसकी लड़ाई केवल प्रतिरोध के लिए ही होगी। नाजियों को आशा है कि इस प्रकार वे पार्वतीय प्रदेश में जर्मनी के राष्ट्रीय एवं आक्रमणात्मक भाव को जीवित रख सकेंगे और इसके बाद जर्मनों की एक नई पीढ़ी का समय आयेगा, जिसमें एक बार फिर जर्मनों के वीरत्व की भावना जाग उठेगी।

हिटलर का दाहना हाथ फील्ड मार्शल, गोरिंग

क - लं - क

लेखक, राजेश्वरप्रसादसिंह

इस पुस्तक में लेखक की ११ कहानियों का संकलन किया गया है। मानव क्षणिक आवेश में आ भयानक भूलें कर बैठता है, इसका मार्मिक चित्रण इसमें किया गया है। ऊपर से साफ और सुसंस्कृत दिखाई देने वाले लोग अन्तरंग में कितने कलुषित होते हैं, यह भी आपको इससे ज्ञात हो सकेगा। मूल्य १) एक रुपया।

"पारसी-परिचय"

लेखक, पं० कृपानारायण पाठक,
एम० ए०, एल० टी०

इस पुस्तक के सम्बन्ध में माननीय बा० सम्पूर्णानन्द भूतपूर्व शिक्षा-मंत्री यू० पी० लिखते है ......"यह पुस्तक उपादेय है। इसकी सहायता से थोड़े में अपने देश में रहनेवाले पारसी भाइयों का परिचय मिल जाता है और आर्य संस्कृति, धर्म्म और इतिहास के कुछ ऐसे अंशों पर प्रकाश पड़ जाता है जिनको हम आज भूल गये हैं।" मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

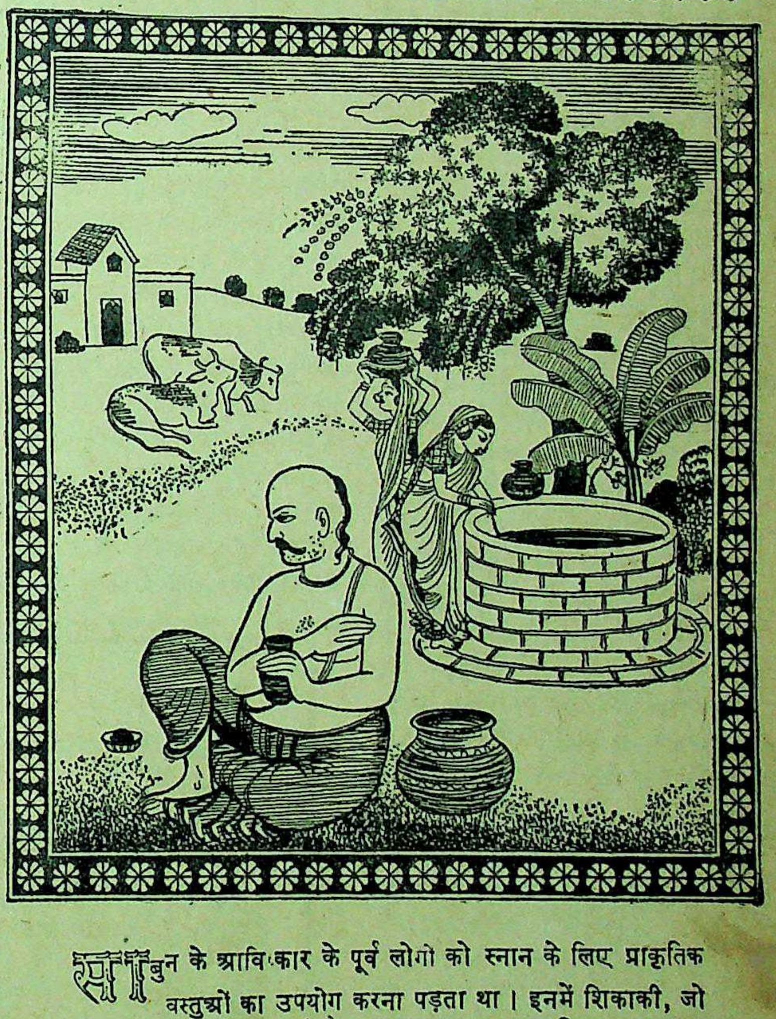

साबुन के आविष्कार के पूर्व लोगों को स्नान के लिए प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग करना पड़ता था। इनमें शिकाकी, जो एक सूखे फल की बुकनी है, का उबटन बहुत प्रचलित था। कुछ लोग आज भी शिकाकी का उबटन लगाते हैं। लेकिन हमाम साबुन के सामने पुराने तरीके तेजी से लुप्त होते जा रहे हैं। इसका कारण यह है कि हमाम साबुन में तेजी से फेन पैदा करनेवाले सुगन्धित साबुनों के आधुनिक गुणों के साथ-साथ प्राचीन तरीकों की सभी अच्छाइयाँ मौजूद हैं।

हमाम

आप के स्नान के लिए बड़ा साबुन

टाम्को सेल्स डिपो
जवाहर स्कायर इलाहाबाद

हिन्दी राष्ट्रभाषा, लिपि देवनागरी

क्या भारत सरकार हिन्दी के साथ न्याय करेगी ?

गत मास में दिल्ली प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन दिल्ली में हुआ। इस अवसर पर सम्मेलन के सभापति, तथा राष्ट्रभाषा सम्मेलन के सभापति तथा स्वागताध्यक्ष ने मार्मिक भाषण दिये। हम यहाँ सभापति तथा राष्ट्रभाषा सम्मेलन के सभापति के भाषणों का सारांश देते हैं।

(१)

माननीय श्रीनारायण मेहता ने दिल्ली-प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन सभापति-पद से कहा है—

राष्ट्रीय भावना जब इस देश में प्रबल होगी, राष्ट्रीयता का महानद जब पूरे वेग से इस देश में प्रवाहित होगा और स्वाधीनता का सूर्य जब इस देश के सारे आकाश में प्रखर ताप से तपेगा, उस समय इस राष्ट्र की आत्मा तुर्की और ईरान के समान विदेशी भावना और विदेशी शब्दों को राष्ट्रभाषा में सहन न करेगी। इसलिए विदेशी भावनाओं और विदेशी शब्दों के बोझीले भार से लदी भाषा इस देश की भाषा नहीं हो सकती। इस देश की वही भाषा राष्ट्रभाषा हो सकती है, जिसका संस्कृत से घनिष्ठ सम्बन्ध हो और जो कि विभिन्न प्रान्तों की प्रान्तीय भाषाओं के परिवार की हो। हिन्दी संस्कृत की सबसे बड़ी पुत्री है। अतः हिन्दी ही इस देश की राष्ट्रभाषा हो सकती है और इसकी अर्द्धाङ्गिणी हिन्दी के सिवाय और कोई भाषा नहीं हो सकती।

इस देश की सरकार ने पिछली जनगणना के समय हिन्दी का नामशेष करने के लिए हिन्दी की सत्ता के अस्तित्व को भी अस्वीकार कर दिया और भाषा के खाने में हिन्दी की जगह हिन्दुस्तानी को ही लिखा और इस सम्बन्ध में हिन्दी संसार के विरोध की सर्वथा उपेक्षा की गई। हिन्दी के प्रति शासकों का विरोध यहीं समाप्त नहीं हो गया। इस देश का ब्राडकास्टिंग-विभाग दिन-रात रेडियो द्वारा जिस भाषा का प्रचार कर रहा है, वह इस देश की जन-भाषा नहीं है और उनकी सबसे बड़ी विभूति अँगरेजी के शब्दों में वह हिन्दुस्तानी भी नहीं है। रेडियो जिस भाषा का व्यवहार कर रहा है, वह इस देश की संस्कृति और सभ्यता की सन्देशवाहिनी भी नहीं है। रेडियो इस देश में अरब और मिस्र की सभ्यता की कलम लगाने की कोशिश कर रहा है और भारतीय संस्कृति और सभ्यता का नाश करने पर तुला हुआ है। इसका एक भारतीय और राष्ट्रवादी के नाते विरोध करना अपना मैं कर्तव्य समझता हूँ। जब तक रेडियो हिन्दी का अधिकार स्वीकार नहीं करता और हिन्दी को उचित स्थान देने को उद्यत नहीं होता, तब तक रेडियो का विरोध हमें जारी रखना चाहिए। हिन्दी किसी का अधिकार नहीं छीनना चाहती, वह किसी भाषा को स्थानच्युत नहीं करना चाहती, वह केवल अपने लिए वही स्थान चाहती है जो उसको इस देश में स्वभावतः प्राप्त है। इससे और अधिक हम कुछ नहीं चाहते। पर मैं यह भी पवित्र वेदी से घोषणा करना चाहता हूँ कि हिन्दी-संसार इससे कम में सन्तुष्ट नहीं होगा।

राष्ट्रभाषा की जटिल समस्या देवनागरी लिपि को राष्ट्रीय लिपि मानने से सरलता से सुलझ सकती है। इस देश की सब लिपियों की वर्णमाला वही है जो नागरी की है। नागरी लिपि का प्रचार हिन्दी महासागर की लहरों के पार भी है। भारतीय सभ्यता प्रशान्त महासागर के पार तीमूर तक पहुँची है। बर्मा, सीलोन, अनाम, स्याम, हिन्द-चीन, जावा, सुमात्रा और बोर्नियो की वर्णमाला भी वही है जो कि नागरी की है। नागरी लिपि भारत से हमारा सम्बद्ध स्थापित करनेवाली है। इसलिए इस देश की नागरी लिपि ही राष्ट्र लिपि हो सकती है।

नागरी ही एक ऐसी लिपि है जिसमें विभिन्न प्रान्तों की भाषाओं के शब्दों को शुद्ध रूप में प्रकट करने की पूर्ण क्षमता है। इस कार्य को और कोई लिपि नहीं कर सकती। इस देश की जनता जिस लिपि-द्वारा साक्षर होगी वही इस देश की राष्ट्र लिपि होगी। इसलिए जनता को साक्षर बनाने में हमें अपनी शक्तियाँ अधिकाधिक लगानी चाहिएँ।

हिन्दी में अन्य कार्य के विभिन्न विषयों के ग्रन्थोंका प्रणयन एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार हमें आरम्भ करना चाहिए। साहित्य का सृजन उस समय तक सम्भव नहीं है जब तक हमारे देश के विश्वविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी नहीं होती। इसलिए शिक्षा का माध्यम हिन्दी को बनाने के लिए हमें अपना प्रयत्न जारी रखना चाहिए। आज की हिन्दी आपके इसी प्रान्त की बोली थी और अब भाषा है। इसलिए इसको समृद्ध और शक्तिशाली बनाने का आप पर बहुत भारी उत्तरदायित्व है। यदि आप हिन्दी के माध्यम द्वारा शिक्षा देनेवाला कोई विश्वविद्यालय भारत की राजधानी में स्थापित कर सकें तो आप हिन्दी की एक महान् सेवा करेंगे।

(२)

दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर होनेवाले राष्ट्र-भाषा सम्मेलन के सभापति पद से राजा गोविन्दलाल पित्ती ने कहा है—

आजकल हिन्दुस्तानी नामक एक नई भाषा के निर्माण का भी प्रश्न उठ रहा है। मैं उस भावना की निन्दा नहीं करता जिससे प्रेरित होकर हिन्दुस्तानी निर्माण का प्रयत्न किया जा रहा है। परन्तु मैं इस बात को भ्रममूलक मानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू को मिलाकर हम हिन्दुस्तानी बना लेंगे। उर्दू हिन्दी का ही एक रूप है जिसमें अरबी, फारसी शब्दों का बाहुल्य है। परन्तु वे शब्द न हिन्दुस्तानी है, न होंगे और हिन्दुस्तानी भाषा में उन्हें स्थान नहीं मिलेगा। केवल वे विदेशी शब्द ही इस देश की भाषा में रह सकते हैं जो सैकड़ों वर्षों के सार्वजनिक प्रयोग से के बन चुके हैं और हिन्दी में समा ग वे स्वयं हिन्दीयुक्त हैं और उनके के लिए भाषा को हिन्दी न कहकर स्तानी कहना व्यर्थ है।

यह भूलना न चाहिए कि हमारी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सम पर अँगरेजी का स्थान ले सके और अन्य भाषा-भाषी भागों के लोगों के सरल और सुलभ हो। बँगला, और गुजराती ही को लीजिए। यदि संज्ञा और क्रियाओं के रूप हिन्दी में दिये जायँ तो इन भाषाओं का कोई ग्रन्थ हिन्दी जाननेवाले के लिए ऐसा है जैसा हिन्दी का। केवल विभक्ति का भेद है। सबका शब्दभंडार एक दक्षिण की भाषाओं का शब्दभंडार देवनागरी और संस्कृत का-सा ही है। उस शब्दभंडार को छोड़कर मंगती के शब्दों से हम सर्वदेश भाषा का निर्माण क्यों करना चाहते

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मूल्य चार रुपये

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

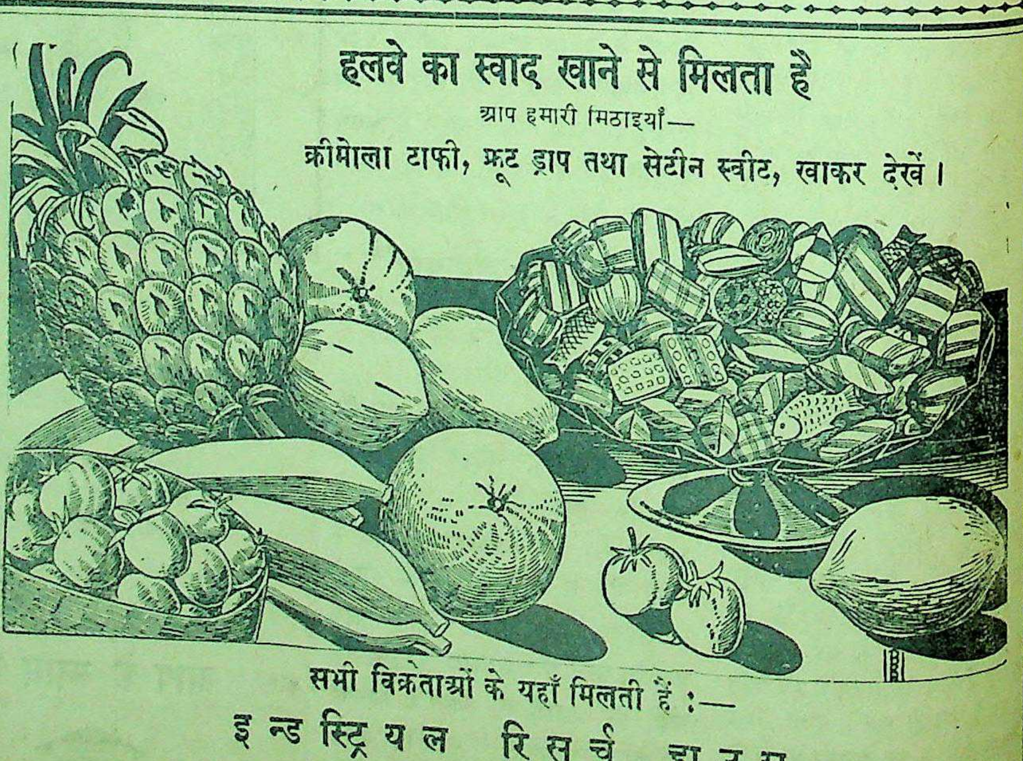

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

देशदूत

मत-परिवर्तन

लेखक, श्री नानकचन्द्र टण्डन, बी॰ एस-सी॰

> मनुष्य-स्वभाव बड़ा विचित्र होता है। कभी कभी सांसारिकता से ऊबकर वह विचित्र प्रकार की कल्पना में और का और निर्णय करने लगता है। अमर भी विवाहित था, गृहस्थ जीवन उसका सुखी था, किन्तु सनक ही तो थी, हिमालय की तरेटी में आसन जमाने की सूझ पड़ी। वह तरेटी में गया अवश्य किन्तु उसे अपनी पत्नी की प्रतिज्ञा के अनुसार बच्चों की देख-भाल के लिए मैदान में आना ही पड़ा। विभा का निधन हो गया। कहानी अत्यन्त रोचक और वास्तविकता से पूर्ण है।

“तो हम अपनी मंजिल पर पहुँच गये?”

“जी, बाबू जी”, पहाड़ी कुली ने एक ठंडी साँस छोड़ते हुए कहा।

“तीन दिन हम लोगों को चलते ही बीते हैं। कैसा बीहड़ रास्ता है, और अब दोनों टट्टू तुम अकेले ही वापस ले जाओगे?”

“हाँ, बाबू जी। मिग्घा अठारह वर्षों से इन दुर्गम पहाड़ियों और बीहड़ जंगलों में व्यर्थ ही नहीं घूमता रहा है। आपको मैं ऐसी जगह लाया हूँ जहाँ आप वर्षों रहिए और खूनी जन्तुओं के सिवा आपके पास कोई न पहुँचे। हिमालय की तरेटी में ऐसे सुरक्षित स्थान कम हैं।”

“पर मिग्घा, तुमने तो कहा था कि यहाँ जान-जोखिम नहीं है।”

“ठीक ही कहा था। इधर भेड़िये नहीं के बराबर हैं, नील गाय और बारहसिंगों से तो आप डरते ही न होंगे। फिर आपके पास बन्दूक है, पिस्तौल है, चार पेटियाँ छुरें हैं, आपको क्या डर?”

“हूँ।”

कमर में खुसा हुआ खंजर निकालकर मिग्घा फिर कहने लगा—“और बाबू जी, हम लोगों के पास तो इस लम्बे छुरे के अलावा और कुछ नहीं रहता, अपनी और अपने आश्रितों—इन टट्टुओं—की रक्षा करने के लिए। फिर भी इन बीहड़ जंगलों में हम निर्भीक विचरते हैं।”

“बस अपने मुँह ज्यादा मियाँ मिट्ठू न बनो। तुम ऐसे ही बीहड़ स्थानों में पले हो। मेरी भाँति यदि सदा रेशमी गद्दों पर सोये होते तो शायद ऐसा न कहते।”

“तो फिर बाबू जी, आप यहाँ फिजूल ही आये। मैं भी किसी गरीब का लड़का नहीं, पर—छोड़िये इन बातों को, तो अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए।”

“मिग्घा, तुम बुरा मान गये। तुम्हें कुली का काम करते देखकर ही मैं ऐसा कह गया था। अभी तुम्हें लौटने की जल्दी ही क्या है? सुनाओ न अपनी कहानी।”

“हा हा हा” मिग्घा ठठाकर हँसा। “सुनाओ न अपनी कहानी, झट कह दिया आपने, और पिछले बहत्तर घंटे आप मुझसे कहते आये हैं—ऊब चुका हूँ मैं दुनिया से। अब मैं अपनी जिन्दगी एकान्त में बिताऊँगा। जहाँ केवल मैं हूँगा और होगा नीला आकाश। क्यों बाबू जी, भूल गई सारी कविता, भूल गया सारा राग, भूल गई सारी रागिनी और अभी तो आपको अकेलेपन का सामना करना ही नहीं पड़ा। समझिए दिलेर मिग्घा आपके साथ रहा तो सारा जहान आपके साथ था।

बाबू जी अर्थात् अमर को मिग्घा का शेखी बघारना न भाया, पर उस समय और कोई चारा ही न था। दुनिया से दूर, बहुत दूर भाग कर रहने की उन्होंने ठानी थी और मिग्घा—दिलेर मिग्घा उन्हें हिमालय की तरेटी के एक बीहड़ जंगल में ले भी आया था। स्थान सुन्दर था। पास ही एक पहाड़ी झरना बह रहा था।

“अच्छा तो बाबू जी, मिग्घा भला आदमी है। मुसीबत में उसने किसी का साथ छोड़ना नहीं सीखा। चन्द घंटे आपके साथ और बिता दूँगा। आइए, हम उस पहाड़ी झरने तक चलें।”

टट्टुओं को पेड़ों से बाँधकर वे झरने के किनारे पहुँचे।

“कितना सुन्दर प्रपात है, कितना मनोरम”, अमर के मुख से हठात् ही निकल पड़ा।

“फिर वही कविता, बाबू जी। एकान्त में रहना है तो भावुकता को भूल जाइये। सारी सुघरता को ताक पर रख दीजिये, और तब आप जान सकेंगे कि सच्चे अर्थ में जिन्दगी किसे कहते हैं?”

“तुम तो स्वयं कवि हो, मिग्घा।”

हा. हा, हा, हा। इस बार मिग्घा इतने जोर से हँसा कि सारा पार्वतीय प्रदेश गूँज उठा।

“मिग्घा कवि, हो हो हो हो। दूसरों को उल्लू बनाना कोई सीखे तो आपसे। मैंने काला अक्षर भैंस बराबर ही सदा जाना, फिर भी छुटपन में लोग कहा करते थे—सच कहता हूँ बाबू जी झूठ नहीं बोलूँगा कि भूमिपति के पुत्र मिग्घा को तो कोई सिद्धि है, वह तो जन्म से कवि है। पर मैंने तो बाबू जी एक खतरे की जिन्दगी बिताने के सिवा और कुछ नहीं सीखा।”

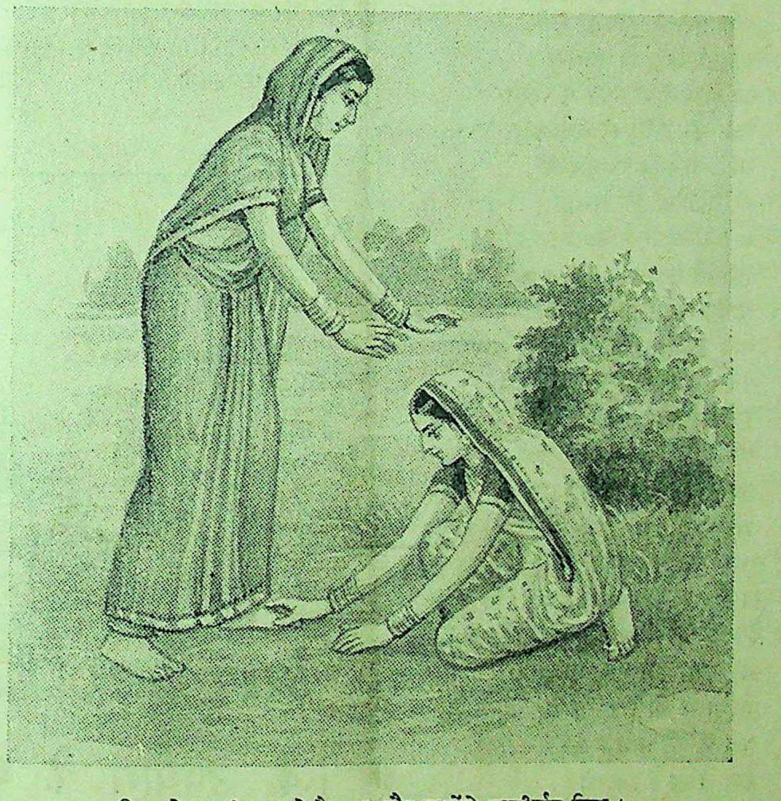

विभा ने अपनी सास के पैर छुए और उन्होंने आशीर्वाद दिया।

“हूँ।”

मिग्घा की जिह्वा चल रही थी, क्रम जारी रखने के लिए उसे हाँ हूँ की भी आवश्यकता नहीं थी।

“हाँ तो बाबू जी, बारह वर्ष की उम्र में ही मैं तरेटी में ढोर चरा लाता था। इसे आप मामूली बात न समझें। आप यदि रेशमी गद्दों से अपनी अमीरी का अन्दाजा लगाते हैं, तो हम पहाड़ी अपने ढोरों से। हमारे पास सौ से कुछ ही कम ढोर थे। खूँख्वार भेड़ियों की बिना परवाह किये एक बारह साल के लड़के का इतने ढोरों की निगरानी करना सहज नहीं।

“जब मैं सोलह वर्ष का हुआ, मेरा विवाह एक बुढ़िया से कर दिया गया। बुढ़िया मैं उसे इसलिए कह रहा हूँ कि वह मुझसे चार-पाँच वर्ष बड़ी थी और उसके तीन बच्चे और दो पति पहले ही से थे।”

“दो पति पहले ही से?” अमर ने चकित होकर पूछा।

“तब तो आप भी खूब हैं बाबू जी। ऐसे बीहड़ प्रांत में रहने आये और यहाँ के कायदे-कानून, रस्म-रिवाज से इतने बेखबर। बात यह है कि इधर के पहाड़ी प्रांतों में लड़कियों की कमी है। एक स्त्री से चार-पाँच पुरुष विवाह करते हैं, और वही घर की स्वामिनी होती है। खेतों और खलिहानों में दिन भर पुरुष बेचारे मेहनत करें और संध्या समय सब अपनी कमाई अपनी स्वामिनी को सौंप दें, तब वह उसे जैसा चाहे खर्च करे।”

“ऐसी बात है?”

“हाँ बाबू जी, और यही बात मुझे बड़ी खली। आपके देश का रिवाज अच्छा है बाबू जी, वहाँ हम मर्दों की कुछ कद्र तो है, यहाँ क्या है? तो बाबू जी उस डोकरिया से मेरा मन न भरा। एक दूसरी छोकरी मुझे मेरे मन लायक मिल रही थी। उसे लेकर मैं इधर भाग आया और कुली का काम करने लगा। एक औरत के कई मर्द यह बड़ा बुरा रिवाज है बाबू जी।”

इतना कह कर मिग्घा इस भाँति गाल पर हाथ रख कर बैठ गया जैसे किसी भारी सोच ने उसे धर दबाया हो। पर वह मिनट भर भी इस प्रकार शांत बैठा न रहा होगा कि वह उछल पड़ा।

“बाबू जी दोपहर हो रही है, और इस स्थान से निकटतम गाँव पचीस मील से कम दूरी पर न होगा। फिर दो टट्टुओं को ले जाना है। तो उठिए बाबू जी!”

झरने के पास से उठ कर वे फिर वहाँ लौटे जहाँ टट्टू बँधे खड़े थे।

“ओह, आप भी कितना सामान लाये हैं, बाबू जी। ऋषि-मुनियों की भाँति जीवन बिताना है तो केवल कमंडल और मृगछाला साथ रखना चाहिए आप तो मच्छरदानी तक बाँध लाये हैं। आप रह चुके अकेले!”

टट्टुओं को खोलकर मिग्घा चलने लगा। मजदूरी वह यात्रा आरम्भ करने के पूर्व ही ले चुका था। दुनिया से ऊबे हुए लोगों से मिग्घा बहुत होशियार रहता था, और फिर ऐसे बिगड़े दिल लोगों से उसका आये दिन काम पड़ा करता था।

अमरसिंह ने भी उसको अधिक रोकना अपनी शान के खिलाफ समझा।

“अच्छा, जाओ पर महीने भर बाद इधर चक्कर लगा लेना, और इस मजूरी के लिए यह लो पेशगी।”

मिग्घा ने मुँह बनाकर नोट की गड्डी ले ली। कदाचित् उसे इस ओर फिर आने का विचार अधिक नहीं रुचा।

* * *

मिग्घा चला गया। अमर अकेला रह गया सामने दो होल्डालों में सामान बँधा पड़ा था, तीन-चार छोटे-मोटे बंडल और पड़े थे। अमर ने सारी जिन्दगी यहीं बिताने का इरादा किया था। चालीस ग्रीष्म तो वह व्यतीत ही कर चुका था, जिन्दगी के जो बीस-पचीस साल बचे होंगे उनको वह शान्तिपूर्वक ही काटना चाहता था।

मार्च का महीना, खास गर्मी-सर्दी न थी। फिर भी अमर कई दिनों से नहाया नहीं था। सबसे पहले उसे नहाने की सूझी। स्नान से एक लाभ और भी तो होता है, मस्तिष्क साफ हो जाता है।

सावधानी से अमर ने एक बंडल खोल डाला। पहले शेविंग का सामान निकाला। तीन दिनों में हजामत काफी बढ़ गई थी, उसका इन्तजाम करना जरूरी था। सेफ्टी-रेजर और दर्जनों ब्लेड के अलावा अमर नाइयोंवाला उस्तरा भी साथ लाया था, उसे सारी जिन्दगी यहीं गुजारनी थी।

पानी की बोतल खाली थी। हजामत के लिए चुल्लू भर पानी की दरकार थी। बोतल भरने अमर को झरने तक जाना था। हजामत का सारा सामान उठाकर वह झरने की ओर चला, नहाने के कपड़े भी साथ ले लिये। सारा सामान खुला पड़ा था, पर यहाँ किसी वस्तु को ताले के भीतर रखने की आवश्यकता न थी।

नहाने में बड़ा आनन्द आया। शहर के नल या फौव्वारे के नीचे नहाने में क्या कभी इतना मजा आ सकता था—अमर ने सोचा। कपड़े पहन कर अमर ने जो टाई उठाई तो फिर हँस कर उसे एक ओर फेंक दिया—भला इस प्रदेश में टाई जैसे फिजूल शृङ्गार की क्या आवश्यकता? यहाँ उसे पग-पग पर समाज की रुचि की परवाह नहीं करनी है, देखना है केवल अपने आराम को, अपनी सुविधा को। उसने

कोट, पैंट पहन लिया था, उतार कर पायजामा पहन लिया । इस समय उसे यही पोशाक अत्यन्त सुखद प्रतीत हुई ।

मौसम सुहावना था, पर कुछ गरम हो चला था । क्यों न अमर कुछ देर विश्राम कर ले, वह थका तो था ही । एक तकिया निकाला और घास पर लेट रहा । लेटते ही नींद आ गई । नींद आई और नींद के साथ मीठे सपने भी—

चौबीस वर्ष का अमर, युवा और नव-विवाहित । पत्नी सुन्दरी और सुघड़ । प्रेम-लीला में हो कट रही थी उसकी जिन्दगी ।

वह गा रहा था—

मेरे अँधेरे घर में आकर,
चादर अपने सर से गिराकर,
दुनिया को जगमगा दिया । रात०
दिल में जाग उठा उजियारा,
मुखड़ा था कुछ ऐसा प्यारा,
चाँद को भी शरमा दिया ।
रात को दिन बना दिया ।

और उसकी पत्नी विभा, वह भी शोख थी । अमर कहीं जाने लगता तो दिलरुबा के तार छेड़कर गाती—

मैं लगी दिल की बुझा लूँ
तो चले जाइएगा,
राज़े दिल अपना सुना लूँ
तो चले जाइएगा ।
सुन के जाने की खबर
होश उड़ गये मेरे,
मैं जरा होश में आ लूँ
तो चले जाइएगा ।

अमर था घूमने का शौकीन, छुट्टियाँ यों ही कम मिलती थीं और हमेशा सारे घर को लेकर विदेश जाना सम्भव ही नहीं था । पर विभा उसे कभी अपनी आँखों की ओट होने न देती । डर लगा रहता उसे—कहीं छिन न जाय प्रीतम उसका ।

तार बजते जाते—

राज़े दिल अपना सुना लूँ
तो चले जाइएगा ।
प्यार कर लूँ रुखे रौशन
की बलायें लूँ मैं
कदम आँखों से लगा लूँ
तो चले जाइएगा ।
दम निकलता है जरा
ठहर के जाना साहब
पहले मैं जान से जा लूँ
तो चले जाइएगा ।
आपके जाने से 'बेदम' की
सुनेगा फिर कौन ?
आपबीती मैं सुना लूँ
तो चले जाइएगा ।

विभा आपबीती सुनाने लगती और अमर बेबस हो जाता ।

पर कभी कभी तो उसे अकेले भी जाना पड़ता । एक बार उसे लौटने में देर हो गई थी—कई दिन लग गये थे—लौटने की खबर भी न दे पाया था । बँगले में घुसा, पत्नी की सूरत सामने नजर न आई । पूछा तो पता चला कि अपने कमरे में हैं, उधर बढ़ा तो धीमा धीमा गाने का स्वर सुनाई पड़ा—स्वर में गान था तो रुदन भी—

चुन कलियाँ और हार बना ले
स्वागत का सामान सजा ले ।
आँख में काली गाल में लाली
सज धज ले और सर को गुँथा ले ।
आते हैं साजन आया है सन्देशा
पच्छिम से हवायें आई हैं, लाई हैं संदेशा

कमरे में प्रवेश किया तो विभा के हाथों में सचमुच एक हार था और आँखों में थे आँसू !

चौंक पड़ी थी विभा । हार अमर के गले में डाल कर चिपट गई थी वह अपने प्रीतम से, और अमर से उसने क्षण भर भी दूर न होने की—सदा निकट रहने की—प्रतिज्ञा कराई थी ।

'विभा, विभा' कहता हुआ अमर चौंककर जाग पड़ा । स्वप्न टूट गया था । विभा इस वन-प्रान्त में कहाँ, वह तो इस संसार में भी नहीं थी । विभा ही दुनिया में होती तो अमर क्यों आज दुनिया से दूर भाग आता ?

तो विभा स्वप्नों में तो आ ही सकती है, सोचता हुआ विकल अमर फिर आँखें मींच कर लेट गया । विधाता को उस पर दया आई, स्वप्न चलने लगा—

दिन भर कचहरी के काम से थक-कर कुछ दोस्तों के साथ वह रेस्तरां चला गया । लौटने में कुछ देर हो गई । घर में प्रवेश करते समय उसने सुना—

रैन भई घर आओ रे,
रैन भई घर आओ ।
सबके साजन घर को आये,
तुम भी साजन आओ
रैन भई घर आओ ।
हो बालमा, रैन भई घर आओ ।
आँख मिचौली खेलें तारे
दूर क्यों हमसे पिया हमारे
नैनन बीच समाओ, हो साजना
रैन भई घर आओ रे
रैन भई घर आओ ।
क्या सुहानी चाँदनी रातें
चाँदनी रातें, हो साजना ।
का से करूँ मैं प्यार की बातें
प्यार की बातें, हो बालमा ।
चाँद सा मुख दिखलाओ,
हो साजना, हो बालमा ।
कब की बैठी हूँ आस लगाये,
तुम तो साजन तबहूँ न आये
आओ अब न तरसाओ रे,
अब न और सताओ रे, हो बालमा
रैन भई घर आओ रे,
रैन भई घर आओ ।
सबके साजन घर को आये
तुम भी साजन आओ ।

अमर भी उस समय मस्त था । थोड़ी-सी शराब भी पी रक्खी थी । विभा के सम्मुख एक आरामकुर्सी पर टाँग फैला-कर बैठ गया । फिर उसने तान छेड़ी—

बन ठन, ठन बन, आयो री,
आयो री गोरी आयो री, आयो री,
कब के बैठे साजन तोरे
राह तकत हैं तिहारी
गोरी राह तकत हैं तिहारी
आओ देओ दर्शन प्यारी
जाऊँ मैं बलिहारी
सुन्दर मुखड़ा जादुई चितवन
अँग अँग में तु समाये
सँभल सँभल कर पाँव उठाना गोरी
कहीं कमरिया बल न खाये
जब से तोसे नैन मिलाये
नैन मिलाये री गोरी
याद तोरी हरदम तड़पाये
आन मिलो इक बार सजनिया
जिया बहुत घबड़ाये ।

और फिर सुखद मिलन ।

स्वप्न अब सोलह वर्ष बाद के दृश्य दिखा रहा था ।

विवाहित जीवन के सोलह वर्ष हँसते-खेलते गुजर गये । इस बीच इनके दो पुत्र हुए, एक पुत्री भी हुई पर वह जीवित न रही । दोनों पुत्र, आयु चौदह और दस वर्ष, बोर्डिङ्ग में रहते थे । दोनों ही पढ़ने में तेज थे और उनके माता-पिता के लिए वे अधिक चिन्ता का विषय न थे ।

तो अकेले ही रहते थे अमर और विभा ।

विभा बीमार पड़ी । बीमारी बढ़ती गई ।

"मैं अब बचूँगी नहीं, प्रियतम ।"

"ऐसा न कहो विभा । तुम शीघ्र ही अच्छी हो जाओगी ।"

"मुझे बहलाइए नहीं । मैं अब अधिक दिन नहीं चलूँगी । मुझमें जीवित रहने की शक्ति ही नहीं रह गई है ।"

अमर चुप रहा । डाक्टर जवाब दे ही चुके थे ।

विभा कहती जा रही थी—"यह अच्छा हुआ कि आपने मेरे दोनों हृदय के टुकड़ों को इस समय बुला लिया । अन्तिम समय मैं उन्हें देख तो पाई । अच्छा, एक वचन दीजिए ।"

"कहो, प्रियतमे, तुम क्या चाहती हो ?"

"पहले आप वचन दीजिए ।"

"वचन देता हूँ ।"

"तो आप अब मेरे बच्चों को बोर्डिंग में न भेजिएगा । मैं इन्हें अधिक समय अपनी छाया में न रख सकी, अब आप इन्हें अपने आश्रय से वंचित न कीजिएगा । नहीं तो फिर मर कर भी मेरा ध्यान बँटा रहेगा । मैं सदा यहीं रहूँगी । बोलिए न, स्वीकार है आपको मेरी विनती ।"

"चिन्ता न करो विभा, मैं तु
बात न टालूँगा ।"

स्वप्न टूट गया ।

और विभा चल बसी । दाह-क्रि
पश्चात् लड़कों ने कहा था कि घर पर
से उनकी पढ़ाई सुचारुरूप से नहीं
पातीं—अमर को उन्हें बोर्डिंग में
ही पड़ा था । एक महीने की
छुट्टी बाकी थी । उसने छुट्टी ली थी,
दुनिया से उसे विरक्ति हो गई थी ।

आँख मलते हुए अमर उठ बै
इस समय सदा के लिए दुनिया से
रहने का निश्चय किये हुए वह हिम
की तरेटी के जंगल में बैठा था ।

पर इस स्वप्न ने उसका चित्त
डोल कर दिया था ।

उसे भूख लग रही थी । उसने
निकाल कर खाया और पानी पिया ।
महीने के लिए सारी खाद्य सामग्री
अपने साथ बाँध लाया था पर इस
इन स्वप्नों ने उसके हृदय में विचित्र
बली पैदा कर दी ।

तो अपनी पत्नी को उसने वचन
था । वह मरकर भी उससे दू
जायगी—यह वह कह गई थी । औ
"मैं इन्हें अधिक समय अपनी छाया
रख सकी, अब आप इन्हें अपने आ
वंचित न कीजिएगा ।"

अमर को अपने पुत्रों में अपनी
की मूर्ति झलकी । वह बेचैन हो उ
दूसरे दिन प्रातःकाल ही वह अपने
लौट जायेगा उसने निश्चय किया ।
का भूला शाम को घर आ जाये तो
भूला नहीं कहाता,' उसने सोचा ।

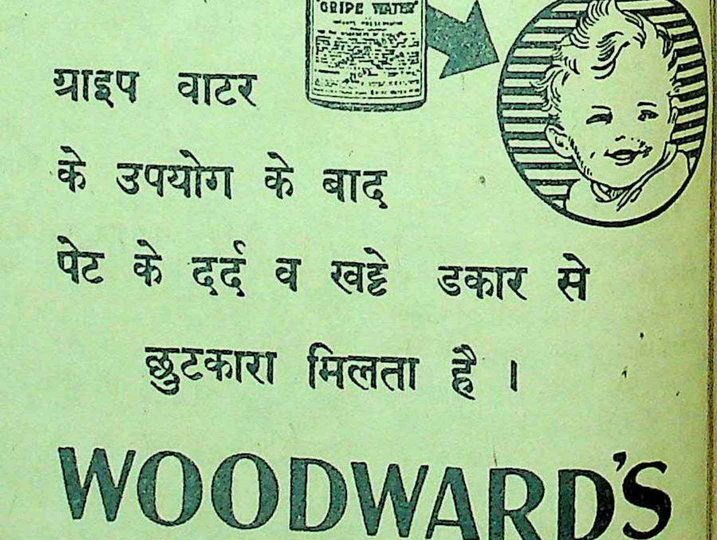

रोना

हँसना

ग्राइप वाटर
के उपयोग के बाद
पेट के दर्द व खट्टे डकार से
छुटकारा मिलता है ।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है । इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें ।

1-WW 116—117

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

सर सुलतान क्यों हटाये जायँ?

उनकी हिन्दी-विरोधी नीति पर एक विहंगम दृष्टि

अ॰ भा॰ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति ने दिल्ली में अपनी बैठक में रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति पर जो प्रस्ताव स्वीकार किया था, वह इस प्रकार है—

भारतीय गवर्नमेन्ट के रेडियो-विभाग में हिन्दी भाषा के विरोध की जो नीति वर्षों से बरती जा रही है, उसकी ओर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने बार-बार गवर्नमेन्ट का ध्यान दिलाया है।

यह अनुभव कर कि रेडियो-विभाग के अधिकारी अपनी पक्षपात-नीति को नहीं छोड़ते और हिन्दी भाषा की बराबर अवहेलना करते हैं, सम्मेलन ने अपने पिछले अधिवेशन में, जो जयपुर में हुआ, यह निश्चय किया कि हिन्दी के लेखक और कवि रेडियो-विभाग के सहयोग उस समय तक त्याग दें जब तक वह अपनी हिन्दी-विरोधी नीति नहीं छोड़ता। इस निश्चय का पालन कर हिन्दी के मान्य लेखकों और कवियों ने रेडियो-विभाग से सहयोग त्याग दिया। सम्मेलन की स्थायी समिति आदर और प्रेम के साथ उनकी सराहना करती है और उनकी दृढ़ता पर उन्हें बधाई देती है।

पिछले दिसम्बर मास में भारतीय गवर्नमेंट की ओर से रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति पर विचार करने के लिए एक कमेटी की नियुक्ति की घोषणा हुई और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के पास पत्र आया कि वह अपने तीन प्रतिनिधि इस कमेटी में भाग लेने के लिए भेजे।

सम्मेलन की कार्यसमिति ने तीन प्रतिनिधि भेजना स्वीकार किया, किन्तु अपने उत्तर में यह स्पष्ट कर दिया कि जो कमेटी बनी है वह हिन्दी-विरोधी सरकारी नीति के चलानेवालों और उसके पोषकों से भरी है, इसलिए सम्मेलन के प्रतिनिधि इसी शर्त पर सम्मिलित होंगे कि यह कमेटी कोई निर्णय मताधिक्य से नहीं करेगी और सम्मेलन के प्रतिनिधि विषयों के विचार में इस दृष्टि से भाग लेंगे कि वह भारतीय गवर्नमेंट को भाषा-सम्बन्धी सब अंगों पर विचार करने और हिन्दी के विषय में न्याय करने में सहायता दें।

इस कमेटी की बैठक दिल्ली में फरवरी के प्रारम्भ में हुई। सम्मेलन की ओर से श्री सम्पूर्णानन्द, श्री आनन्द कौशल्यायन और श्री मौलिचन्द शर्मा ने उसमें भाग लिया और सम्मेलन का दृष्टिकोण उपस्थित किया। सम्मेलन की ओर से, कमेटी की माँग के अनुसार एक लिखित वक्तव्य (मेमोरेंडम) भी कमेटी के मंत्री के पास भेजा गया। (वक्तव्य परिशिष्ट के रूप में इसके साथ दिया जाता है) गवर्नमेंट की बनाई कमेटी की बैठक में विचार-विनिमय हुआ, किन्तु कोई प्रस्ताव स्वीकृति के लिए उपस्थित नहीं हुआ और कमेटी ने किसी प्रकार का निर्णय नहीं किया—उसके सभापति सर सुलतान अहमद ने कमेटी की समाप्ति के समय बताया कि विचार के बाद भारतीय गवर्नमेंट अपनी नीति केन्द्रीय एसेम्बली के बैठने के समय प्रकाशित करेगी।

१४ फरवरी की विज्ञप्ति द्वारा भारतीय गवर्नमेंट ने अपनी नीति प्रकाशित की है। उससे स्पष्ट है कि पुरानी नीति में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है और वही उर्दू भाषा जो हिन्दुस्तानी के नाम से चलाई जा रही थी, चलाने का निश्चय किया गया है। गवर्नमेंट के वक्तव्य के समय से अब तक जिस भाषा में रेडियो के प्रसार का काम हो रहा है उसको देखते हुए इस समिति का दृढ़ मत है कि वह भाषा हिन्दी-संसार को मान्य नहीं हो सकती। वह ज्यों की त्यों अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू है।

सर सुलतान अहमद ने राज्य-परिषद् (कौंसल आफ स्टेट) में हाल में यह कहा है कि जो कमेटी गवर्नमेंट की ओर से रेडियो की भाषा पर विचार करने के लिए नियत हुई थी वह इस परिणाम पर पहुँची कि हिन्दी और उर्दू के पृथक् प्रसार न हों। इस समिति को ऐसे असत्य वक्तव्य को सुनकर आश्चर्य हुआ, क्योंकि कमेटी का कोई निर्णय इस प्रकार का नहीं हुआ था। सम्मेलन के लिखित वक्तव्य में यह स्पष्ट कहा गया था (और इसी पर सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने भी बल दिया था) कि, "हिन्दी की दो शैलियाँ हैं—हिन्दी और उर्दू। यदि समाचार अथवा किसी दूसरे विषय के प्रसार के लिए एक ही शैली का वियोग करना है तो वह ऐसी हिन्दी ही हो सकती है जो न केवल संयुक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, राजपूताना और पंजाब में किन्तु महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा और दूसरे प्रान्तों में भी समझी जा सके। इस हिन्दी में ऐसे फारसी शब्दों का जो साधारण प्रयोग में हैं बहिष्कार नहीं होगा। किन्तु भाषा का आधार देशी शब्द ही हो सकते हैं चाहे अपने बदले हुए रूपों में या अपने मूल साहित्यिक रूपों में। नये शब्दों के बनाने में आधार या तो संस्कृत और प्राकृत हो सकती है, जो देश की आधुनिक साहित्यिक भाषाओं के समान स्रोत हैं या उनसे निकले हुए शब्द हो सकते हैं।"

साथ ही इस बात का अनुभव कर कि उर्दू के पक्षपातियों को इस प्रकार की भाषा मान्य न होगी और वे उर्दू-शैली में भी रेडियो-प्रसार चाहेंगे, सम्मेलन के वक्तव्य (मेमोरेंडम) में यह भी स्पष्ट कर दिया गया था कि उर्दू के लिए अलग प्रसार हो सकता है और इस दशा में यह निर्णय करना होगा कि हिन्दी और उर्दू शैलियों के लिए समय किस अनुपात में दिया जाय।

सम्मेलन की ओर से भेजे गये वक्तव्य का यह समिति पूर्ण समर्थन करती है और अपने इस वक्तव्य का उसको अंग बनाती है।

अब जो निर्णय भारतीय गवर्नमेंट ने प्रकाशित किया है और उसका जिस प्रकार पालन हो रहा है उसमें सम्मेलन के बताये हुए सिद्धान्तों की अवहेलना की गई है और की जा रही है। इसलिए यह समिति समस्त हिन्दी भाषियों की ओर से सर सुलतान अहमद के निर्णय का तीव्र विरोध करती है और समस्त हिन्दी-प्रेमियों, लेखकों और कवियों से अनुरोध करती है कि वे रेडियो का बराबर दृढ़ता से बहिष्कार जारी रखें।

हिन्दी बोलनेवालों की संख्या और हिन्दी-द्वारा शिक्षा पानेवालों की संख्या उर्दू बोलनेवालों और उर्दू-द्वारा शिक्षा पानेवालों की संख्या से कई गुना अधिक है। हिन्दी को रेडियो में स्थान न देना और बल-पूर्वक यत्न करना कि केवल उर्दू-शैली ही चलाई जाय, रेडियो-विभाग का स्पष्ट अत्याचार है। सम्मेलन की माँग यह है कि रेडियो की मुख्य भाषा हिन्दी हो, क्योंकि भारतवर्ष की सबसे अधिक जन-संख्या की वही मानी हुई भाषा है। जिस प्रकार अन्य प्रान्तीय भाषाओं का स्थान है उसी प्रकार जनता के एक विशेष अंश के लिए उर्दू में भी रेडियो-प्रसार हो सकता है। इस नीति को ईमानदारी के साथ चलाने के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी के विद्वान् और लेखक रेडियो-विभाग में ऊपर से नीचे तक दायित्व के पदों पर रखे जायँ और हिन्दी-विद्वानों को रेडियो से अलग रखने की जो नीति इस समय चल रही है, वह दृढ़ता से बदली जाय।

यह समिति भारतीय गवर्नमेंट से अनुरोध करती है कि सर सुलतान अहमद से, जो पक्षपात और अन्याय से हिन्दी का विरोध कर रहे हैं और हिन्दी के विद्वानों और लेखकों का बहिष्कार कर रहे हैं, रेडियो-विभाग का दायित्व ले लिया जाय और किसी ऐसे दूसरे सदस्य को दिया जाय जो हिन्दी के साथ न्याय करे। यह समिति केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा (लेजिस्लेटिव एसेम्बली) तथा राज्य-परिषद् (कौंसिल आफ स्टेट) के सदस्यों से अनुरोध करती है कि हिन्दी भाषा के साथ जो अत्याचार रेडियो-विभाग में हो रहा है उसे दूर करने में सहायक हों।

परिशिष्ट

(१) अखिल भारतीय रेडियो द्वारा जो भाषा उपयोग में लाई जा रही है वह उर्दू है, जिसमें अरबी और फारसी शब्दों का प्राधान्य है, यद्यपि उक्त विभाग उसे हिन्दुस्तानी कहता है।

(२) यह स्पष्ट है कि जिन व्यक्तियों के हाथ में प्रोग्राम बनाने का काम है उनकी अन्य साहित्यिक योग्यतायें कुछ भी हों उनमें से प्रायः सबको शुद्ध हिन्दी का कोई ज्ञान नहीं है, वे हिन्दी के शब्दों का शुद्ध उच्चारण तक नहीं कर सकते, उदाहरणार्थ स्वर्ग का उच्चारण 'सुर्ग' और 'हरिश्चन्द्र' का उच्चारण 'हरिश्चन्दर' किया जाता है।

(३) हिन्दी की दो शैलियाँ हैं—हिन्दी और उर्दू। यदि समाचार अथवा किसी दूसरे विषय के प्रसार के लिए एक ही शैली का प्रयोग करना है तो वह ऐसी हिन्दी ही हो सकती है जो न केवल संयुक्त-प्रान्त, बिहार, मध्यप्रान्त, राजपूताना और पंजाब में किन्तु महाराष्ट्र, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा और दूसरे प्रान्तों में भी समझी जा सके। इस हिन्दी में ऐसे फारसी शब्दों का जो साधारण प्रयोग में है बहिष्कार नहीं होगा, किन्तु भाषा का आधार देशी शब्द ही हो सकते हैं चाहे अपने बदले हुए रूपों में या अपने मूल साहित्यिक रूपों में। नये शब्दों के बनाने में आधार या तो संस्कृत और प्राकृत हो सकती है जो देश की आधुनिक साहित्यिक भाषाओं की समान स्रोत है या उनसे निकले हुए शब्द हो सकते हैं।

भारत-सरकार के सूचना तथा ब्राडकास्टिंग विभाग के सदस्य माननीय सर सुलतान अहमद

(४) यह बात स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि अरबी और फारसी हमारे देश की भाषायें नहीं हैं। उनसे आये हुए शब्द हमारी भाषा में उसी प्रकार व्यवहार में लाये जा सकते हैं, जिस प्रकार अँगरेजी भाषा के शब्द या उनसे बिगड़कर बने हुए शब्द व्यवहार में आते हैं। किन्तु वे ऐसे विदेशी शब्दों की तरह ही व्यवहार में आ सकते हैं, जो हमने अपना लिये हों। हमारे देश में नये शब्द गढ़ने के लिए अरबी व्यवहार में नहीं लाई जा सकती। फारसी आर्य भाषा है, अतः उसका प्रयोग वहीं तक किया जा सकता है जहाँ तक कि उसका स्वरूप संस्कृत व प्राकृत से मिलता-जुलता हो, या उसके निकट आता हो। नये शब्दों के निर्माण के लिए साधारणतः देश विशेषकर उत्तर-भारत के और कभी-कभी अन्य प्रान्तीय भाषाओं के धातुओं और शब्दों को आधार मानना चाहिए। यदि कोई कठिनाई उत्पन्न हो तो मुख्य कसौटी यही हो सकती है कि जो शब्द प्रयोग में आवे वह ऐसा हो जिसे देश भर में अधिक से अधिक लोग समझ सकें।

(५) जो अरबी तथा फारसी के शब्द व्यवहार में आ गये हैं, उनके रूप हिन्दी व्याकरण के नियमों के अनुसार ही बनाये जायँगे—अरबी तथा फारसी व्याकरण के अनुसार नहीं। उदाहरणार्थ 'साहेब' का बहुवचन 'असहाब' नहीं आवश्यकतानुसार 'साहेब' या 'साहेबों' होना चाहिए।

(६) यदि किसी प्रोग्राम के लिए एक ही भाषा को व्यवहार में लाना है तो उपरोक्त सिद्धान्त के अनुसार ही चलना पड़ेगा और भारतीय गवर्नमेंट के रेडियो विभाग द्वारा विचार-विनियम के लिए भेजे गये इस प्रश्न का कि 'हफ्ता' और 'सप्ताह' 'इक्तिसादी' और 'आर्थिक' तथा 'इस्तिकबाल' और 'स्वागत' में से कौन से शब्द चुने जाने चाहिएँ, उत्तर यही है कि वे ही शब्द लिये जायँगे जो देशी हैं।

(७) संक्षेप में, दिल्ली और लखनऊ से प्रस्तावित प्रोग्रामों का आधार बहुत बड़े अनुपात में देशी शब्दनिष्ठ हिन्दी होनी चाहिए। निःसन्देह वे प्रोग्राम मुख्यतः उन हिन्दी-भाषी प्रदेशों के लिए होंगे जो दिल्ली और लखनऊ स्टेशनों-द्वारा सेवित है। परन्तु उनका एक विशेष उपयोग यह भी होगा कि वे बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, उड़ीसा तथा अन्य प्रान्तों में भी अधिकतर समझे जायँगे जहाँ हिन्दी से मिलती-जुलती भाषायें बोली और लिखी जाती हैं। उन लोगों के लिए जो उर्दू चाहते हैं कुछ प्रोग्राम उर्दू में भी दिये जाने चाहिएँ। लाहौर स्टेशन में सब प्रोग्राम हिन्दी और उर्दू में बराबर बाँटे जाने चाहिएँ। पेशावर में उर्दू को प्रधानता दी जा सकती है, यद्यपि वहाँ से हिन्दी के प्रोग्राम भी उन लोगों के लिए प्रसारित किये जाने चाहिएँ जो हिन्दी चाहते हैं।

हमारा रंगमंच

'चल चल रे नौजवान' कैसा फिल्म है ?

नसीम, अशोककुमार और जगदीश सेठी का अभिनय

लेखक, श्री 'नीलम'

फिलिमस्तान के फिल्म 'चल चल रे नौजवान' को देखकर विशेष प्रसन्नता नहीं हुई। बाम्बे टाकीज से अलग होकर भी इस फिल्म के निर्माता बाम्बे टाकीज की अमिट छाप को नहीं मिटा पाये हैं—जहाँ तक कहानी का सम्बन्ध है, वही पूर्व परिचित कहानी। नायक-नायिका का मिलन, कुछ समय के लिए बिछोह फिर मिलन और उसका अन्त।

चित्र का नाम है 'चल चल रे नौजवान' किन्तु इसमें नौजवान आगे न बढ़ कर पीछे ही हटा-सा प्रतीत होता है। केवल दो चार मिनट के लिए देशभक्त बन जाना ही इस फिल्म की प्रगति है। फिल्म में नायक जीवन भर तो गुन्डेशाही करता है और केवल क्षण भर के लिए ही देशभक्ति की पुकार लगाता है—सो भी स्वार्थ से जो कि स्पष्ट है कि वह यह ढोंग रचकर ही नायिका के पिता, जो कि देशभक्त हैं, को प्रसन्न करके नायिका की प्राप्ति चाहता है। स्पष्ट है कि निर्माता की यह नीति चल नहीं पाई क्योंकि चवन्नी वालों और इक्केवालों ने फिल्म को रद्दी घोषित कर दिया है।

'चल चल रे नव जवान' फिल्म के प्रमुख फिल्म-अभिनेता अशोककुमार।

दर्शकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन हो हो चुका है। वे अब साधारण फिल्मों के चक्कर में पड़कर पैसा लुटाना नहीं चाहते। देशभक्ति के नाम पर जो भक्ति इस चित्र में प्रकट की है वह वास्तव में देशभक्ति की आड़ एक प्रयास है।

अभिनय की दृष्टि से यदि यह चित्र देखा जाय तो अशोककुमार और नसीम, विशेष रूप से नसीम का अभिनय पूर्णतया सफल नहीं है। केवल सिर हिलाकर भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रदर्शन करना ही यदि अभिनय है तो हो चुकी अभिनय की उन्नति। उसके लिए फिल्म में अच्छा कहा गया है कि 'वह एक संगमरमर की पुतली है जिसमें प्राण नहीं हैं'। अशोककुमार का भी अभिनय कुछ जमा नहीं है। इस प्रकार नायक और

'चल चल रे नौजवान' फिल्म की प्रमुख फिल्म-अभिनेत्री सुंदरी नसीम।

नायिका दोनों ही अभिनय की दृष्टि से असफल हैं। वी० एच० देसाई भी अपने पूर्व अभिनय से गिर गये हैं, जब कि नवीन याज्ञनिक भी ऊँचे नहीं हैं।

संगीत साधारण है और एक नृत्य-यदि वह नृत्य कहा जा सके—तो निम्न श्रेणी का है। ध्वनि, आलेखन और चित्र लेखन साधारण है। संवाद, भाषा की दृष्टि से नहीं ठीक है, पर प्रभाव उत्पन्न करने के लिए ठीक है।

गायनों के विषय में हमें कुछ कहना है। दो गाने सुन्दर हैं जो कवि 'प्रदीप' के हैं।

'आया तूफान आज' नामक सुन्दर गायन घटनाओं के साथ कितनी सुन्दरता-पूर्वक समन्वित हुआ है यह तो दर्शक ही जान पाये होंगे। गाने के साथ संक्षिप्त में वातावरण उपस्थित कर देने के इस कौशल के लिए 'प्रदीप' तथा निर्देशक दोनों ही प्रशंसा के पात्र हैं। दो रीलों का कार्य एक गाने के साथ कितनी सफलता-पूर्वक समाप्त किया है—देखने योग्य है।

दूसरा गायन राष्ट्रीय गानों से ओत-प्रोत है। 'भारत के नौजवान चलो एक राह पर' भी प्रभाव डालनेवाला है। एक नवीनता यह है कि दो विरोधी भावनाओं को एक में लाने का श्रेय कवि को है। 'हर हर महादेव और अल्ला हो अकबर, के गम्भीर नाद की सफलता से कवि ने जनता पर एक प्रभाव डालने योग्य बना दिया है। जिन दो वाक्यों के नाद से भारत की दो जातियाँ रक्त स्नान करने को प्रस्तुत रहती थीं वही दिल खोलकर गले मिलीं। 'पाकिस्तान' चिल्लानेवाले जिन्ना साहब जरा मुलाहजा फरमायें कि इन दो सम्मलित नादों के साथ हिन्दुओं और मुसलमानों की भावनाएं उनके हृदय में न रुक कर करतल ध्वनि से प्रकट हो जाती हैं। वास्तव में यह 'प्रदीप' की बड़ी सफलता है।

चित्र में नायिका के पिता और माता के प्रथम विच्छेद और अन्त में मिलन के जो दृश्य हैं वे वास्तव में सजीव हैं और यदि ये दृश्य इतने सुन्दर न होते तो कदाचित् 'फिलिमस्तान की लुटिया पूर्णतया डूब जाती।'

चित्र के अधिक भाग में अस्वाभाविकता है। युवकों को एक देवी जी शिक्षा देती हैं—

"मेरे गोरे हैं गाल, उनमें भर दे गुलाल
और मनुष्य का जीवन केवल इसलिए है—
खाए जावो गालियाँ, बजाये जावो तालियाँ
दुनिया है मौज करने के लिए।"

इन्हीं भावनाओं को जनता में इसी रूप में पहुँचा कर 'प्रदीप' ने भी भूल ही की है जिसके लिए हम उन्हें अधिक कहें, क्योंकि यह तो विशेष रूप से नि की इच्छा पर निर्भर रहता है जिसके निर्देशक से कोई आशा न रखनी चाहि

आजकल बहुधा निर्माताओं की मनोवृत्ति हो गई है कि वे रद्दी से रद्दी फि में भी कुछ अच्छे आदर्श रखने की करते हैं—कारण कि जनता के दृष्टि में परिवर्तन हो चुका है। यह चेष्टा फिल्म में भी है।

यदि यह चित्र देखा जाय तो अशोककुमार हैं इसलिए, न नसीम इसलिए। पर देखा जाय मोती, जगदीश और कवि 'प्रदीप' की सफलता प उससे भी बड़ी सफलता के लिए जो इस चित्र में प्रारंभ है। वह है 'चल चल नौजवान'। इसे अवश्य देखना चाहिये

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधा मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य का लाभ सब को बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रका किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एक पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १।) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बेंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज़ प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर
बदहज़मी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

पादक के नाम चिट्ठियां

कवि-सम्मेलन और कवियों की मनोवृत्ति

गत २५ मार्च सन् ४५ के 'देशदूत' में प्रकाशित उन्नाव-निवासिनी श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा का 'रेडियो का बहिष्कार क्यों?' शीर्षक लेख मुझे पढ़ने को मिला। मेरा रेडियो-बहिष्कार से किंचित् भी विरोध नहीं है। मनुष्य को अपने अधिकारों के लिए सदैव लड़ते रहना चाहिए। आज की रेडियो की भाषा-सम्बन्धी नीति बहुमत-द्वारा बोली जानेवाली भाषा के लिए ही अपमानजनक नहीं है किन्तु हमारी राष्ट्रीयता के भी विरुद्ध है। हिन्दी की प्रगति इस प्रकार की रुकावटों से रुक न सकेगी क्योंकि यह वह भाषा है जो उस युग में परिपक्व हुई थी जब इसके विपक्ष में राज्य की समूची सत्ता थी। मुसलमानी युग में इस भाषा का प्राञ्जल और विशुद्ध रूप हमें देखने में मिलता है। जब उस युग में इस भाषा की प्रगति नहीं रुकी, फिर आज मुट्ठी भर लोग उसे क्या रोक सकेंगे? किन्तु आवश्यकता है सामूहिक संगठन की, जिसका बिगुल अखिल भारतवर्षीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने बजाया है और जिसका स्वर प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी के कानों तक पहुँच गया है। 'इस सामूहिक संगठन में प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी का सहयोग अनिवार्य है। किन्तु सुमित्रा जी का इस प्रकार हिन्दी-प्रेमी जनता का ध्यान और सहानुभूति अपनी ओर आकृष्ट करना कि वे बाँदा कवि-सम्मेलन में इसलिए नहीं आईं कि 'रेडियो से अपना हास्यास्पद और ग्लानिप्रद सम्बन्ध स्थापित रखनेवाली श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा सुधा' उस कवि-सम्मेलन में सम्मिलित हो रही हैं', हास्यास्पद है। सुमित्रा जी को बाँदा कवि-सम्मेलन का निमंत्रण उस समय दिया गया था जब समाचारपत्रों में कवियों की नामावली प्रकाशित हो चुकी थी। सुमित्रा जी की स्वीकृति जिस समय मेरे पास आई उन्होंने लिखा था कि वे दो व्यक्तियों के सेकंड क्लास रेलवे किराये व १०१) की भेंट पर सम्मेलन में सम्मिलित हो सकती हैं। इस र उन्हें लिखा गया कि उन्हें केवल १०१) की भेंट ही दी जा सकती है। उस पर उन्होंने अपने आने की अन्तिम स्वीकृति दे दी थी और उन्हें ५०) मनीआर्डर-द्वारा भेज दिया गया था। बाँदा-सम्मेलन २०, २१ फरवरी को था। उन्नाव में सम्मेलन १८, १९ फरवरी को था जिसके संयोजन में ऐसा ज्ञात हुआ था कि सुमित्रा जी का विशेष हाथ था। सम्मेलन १९ को समाप्त हो और सम्मेलन का संयोजक २० को बाँदा आ जावे पर सम्भव नहीं समझा जा सकता था। सुमित्रा जी ने ऐसा कुछ कवियों से कहा भी था जो उन्नाव कवि-सम्मेलन से हमारे यहाँ पधारे थे क्योंकि उन्होंने ट्रेन से उतरते ही हम लोगों को तलाया कि सुमित्रा जी कवि-सम्मेलन में इसलिए नहीं आ सकीं।

जब सुमित्रा जी इस प्रकार पहले ही से कवि-सम्मेलन में आने को तैयार थीं। तब यह रेडियो का पचड़ा लेकर वह क्यों विरोध करने बैठ गईं? यदि उनके न आने का यही कारण था तो वे मुझे लिख देतीं कि वे इसलिए नहीं आ सकतीं। इसलिए मैं तो कहूँगा कि लेखकों और कवियों में साहस वांछनीय है। यदि उनका ऐसा पत्र आता तो मेरे निकट सुमित्रा जी सम्मान की पात्र होतीं और उनके हिम्मत और साहस की मैं प्रशंसा करता। पर इस प्रकार किसी पर लांछन फेंक कर कवि-सम्मेलन पर दोषारोपण करना अनुचित है। बाँदा सौभाग्यशाली है, यहाँ पर हिन्दी के सभी प्रथम श्रेणी के कवि प्रति वर्ष दो बार नहीं तो एक बार अवश्य हम लोगों को अनुगृहीत करते हैं।

बाँदा —राजाराम श्रीवास्तव बी०
३ अप्रैल, ४५ ए०, एल-एल० बी०

* * *

चित्रपट और हिन्दी

चित्रपटों के द्वारा हिन्दी का कितना प्रचार हो सकता है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु इस पर कम ध्यान दिया जा रहा है। रेडियो की ओर तो हिन्दी-संसार का ध्यान गया है परन्तु सूचना और ब्राडकास्टिंग-विभाग के अन्तर्गत हिन्दुस्तानी के नाम से उसी रेडियोवाली ठेठ उर्दू में जो 'इन्फरमेशन फिल्म्स' और 'न्यूज़ फिल्म्स' तैयार होते हैं और प्रत्येक हिन्दी चित्र के पहले सरकार की आज्ञानुसार दिखाये जाते हैं, उनका भी तीव्र विरोध होना चाहिए।

स्वतन्त्र रूप से विभिन्न कम्पनियाँ जो चित्र बनाती हैं उनमें भी हिन्दी की स्थिति संतोषजनक नहीं है। जो फिल्म ठेठ उर्दू में बनते हैं उन्हें जाने दीजिए। जो फिल्म 'हिन्दुस्तानी' बन रहे हैं, इनकी भाषा में अरबी-फारसी शब्दों की भरमार होती जा रही है और उर्दू का गहरा रंग चढ़ता जा रहा है।

इनमें कहीं-कहीं उर्दू शब्दों का प्रयोग बड़ा अखरता है। उदाहरण के लिये 'कादम्बरा' को लीजिए जिसकी आलोचना 'देशदूत' के गत अंक में छपी है। कादम्बरी, महाश्वेता जैसे उच्च पात्रों के मुख से क़सम, बुनियाद, नतीजा, ज़ुल्म, क़सूर, मंज़ूर, ख़्वाब इत्यादि शब्द बहुत भद्दे लगते हैं। आखिर हमारे प्राचीन और प्रचलित शब्द सौगन्ध, नींव, फल, अत्याचार, दोष, स्वीकार, स्वप्न कब काम आयेंगे? यह बात नहीं है कि कहानी-लेखक इन शब्दों को अप्रचलित समझता हो क्योंकि उसने अन्य स्थलों पर इनका प्रयोग किया है। ऐसी अवस्था में इन अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग लेखक की लापरवाही ही कहा जायगा। फिर इन शब्दों का तत्सम रूप में प्रयोग तो सर्वथा अवाञ्छनीय है। लेखक ने 'देवत्व' को अकारण 'देवताई' कर दिया है और उसे कपिञ्जल, कादम्बरी जैसे उच्च और शिक्षित पात्रों से कहलवाया है। हमारी भाषा, हमारी सभ्यता की प्रतीक है। इसलिए चित्रपट के कहानी-लेखकों को उस पर पूरा ध्यान देना चाहिए। चित्रपट के आलोचकों को भी अपनी आलोचनाओं-द्वारा चित्रों में हिन्दी के स्वरूप की रक्षा में योग देना चाहिए।

लखनऊ —सूर्यप्रकाश, एम० ए०

* * *

शिक्षा-विभाग में हिन्दी!

सरकारी विभागों में शिक्षा-विभाग अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वार्षिक विवरणों के देखने से पता चलता है कि आज हमारे शिक्षा-विभाग में हिन्दी पढ़नेवाले विद्यार्थियों की संख्या ७० प्रतिशत से भी अधिक है। परन्तु उर्दू ने इस विभाग में अपना सुरक्षित स्थान बना लिया है। पुस्तकों में प्रयुक्त शब्द अधिकतर उर्दू भाषा के होते हैं। इतिहास का अध्यापक यदि हिन्दुस्तानी में पढ़ाने का प्रयत्न करेगा तो उसमें आधे से अधिक उर्दू के शब्दों का प्रयोग होगा। डिस्ट्रिक्ट तथा म्युनिसिपल बोर्डों-द्वारा संरक्षित प्राइमरी तथा मिडिल स्कूलों में अधिकारी वर्ग से पत्रव्यवहार, प्रार्थना-पत्र इत्यादि उर्दू में ही रहते हैं। हिन्दी स्कूलों के रजिस्टरों में भी हिन्दी की छीछालेदर दिखाई पड़ती है। हिन्दी अक्षरों में उर्दू के शत-प्रतिशत शब्दों का प्रयोग होता है। रजिस्टरों के वर्गों में प्रयुक्त उर्दू के कुछ शब्द उदाहरणस्वरूप यहाँ दिये जाते हैं—

'रजिस्टर हाजिरी,' 'नाम तालिब इल्म, मीज़ान हाजिरी, तारीख तरक्की या दाखिला, तादाद अय्याम हाजिरी, फीस फीस लीविंग सार्टिफिकेट, दीगर वाजिबात, बकाया साबिक, फीस खेल गुजिश्ता माह, बकाया वाजिबुल अदा, तादाद तुलबा, खुलासा हाजिरी तादाद मुन्दर्जा तादाद माफ शुदगान, फीस देहद गान, औसत हाजिरी तारीख व दफ़ाबन्दी, इत्यादि न जाने कितने उर्दू के शब्दों का प्रयोग हिन्दी के नाम पर होता रहता है। 'रजिस्टर दाखिला' में भी इसी प्रकार उर्दू के शब्दों का प्रयोग होता रहता है। दुःख है कि हिन्दी-प्रेमी अध्यापकों ने इस ओर लेश-मात्र भी ध्यान नहीं किया।

वह समय बीत गया जब हिन्दी को दूसरी भाषाओं के शब्दों का विशेष सहारा लेना पड़ता था। हिन्दी की सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से रक्षा करनी ही होगी। क्या हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन शिक्षा-विभाग में हिन्दी की दयनीय रक्षा की ओर ध्यान देगा?

—त्रिलोकीनारायण दीक्षित, बी० ए०
५५ इवेंट हास्टल, (आनर्स) एम० ए०
लखनऊ

* * *

आचार्य द्विवेदी जी की थाती का प्रकाशन

"देशदूत" के १८ मार्च १९४५ के अंक में श्री किशोरीदास वाजपेयी के "नागरी-प्रचारिणी-सभा को धन्यवाद" शीर्षक लेख के द्वारा यह जानकर मुझे आंतरिक प्रसन्नता हुई है कि सभा के वक्तव्य से अंत में वाजपेयी जी को संतोष हो गया, इस सद्भाव के लिए वे मेरे तथा सभा के धन्यवादी ही हैं, वाजपेयी जी ने लिखा है कि (उक्त थाती की सूची के) 'प्रकाशन के लिए भी समय की कोई अवधि नहीं है।' इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन है कि यदि यथेष्ट कागज अभी मिल जाय तो सभा उसे अविलम्ब प्रकाशित कर सकती है। सभा के पास इस समय कागज का नितांत अभाव है। वाजपेयी जी यदि अपने प्रभाव का उपयोग करें कहीं से कागज दिला दें तो सूची के प्रकाशन-कार्य में तुरन्त हाथ लगा दिया जायगा।

काशी —रामनारायण मिश्र
७ अप्रैल, ४५ प्रधान मन्त्री
नागरी-प्रचारिणी-सभा,

किंकिणी
लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव
इस पुस्तक में लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इसे काट कर अपने पास रखिये
बात की बात
में स्वादिष्ट कचौरी
अचानक आये हुये मेहमानों के लिए कोई कठिनाई नहीं।
यदि सीलोन डेसीकेटेड कोकोनट आपके पास है तो अवसर के अनुकूल सामग्री बनाने में आपको कोई कठिनाई नहीं हो सकती। यह बहुत सरल है।
आपको सिर्फ़ इतना चाहिए २ कप डेसीकेटेड कोकोनट। १ कप पिसी शकर, दो अंडों की सफ़ेदी और दो चम्मच आटा।
पिसी हुई शकर के साथ कोकोनट को मिलाइये। अंडों की सफ़ेदी डालिए जो अच्छी कुटी हुई हो—सबको कूटिए। आटा डाल कर ख़ूब मिला लीजिए, तवेपर मक्खन डालिये और उस पर छोटे छोटे टुकड़े डालिए और बादामी रंग होने तक जल्दी २ पकाइये।
बम्बई व अन्य भारत के थोक व्यापारियों और स्टाक रखने वालों के पते और नमूनों सहित पूरी सूचना के लिए लिखिए :—
दी सीलोन ट्रेड कमिश्नर आफ़ इंडिया
सीलोन हाउस - ब्रूस स्ट्रीट - बम्बई
सिलोन का
सूखा खोपरा
किसा किसाया व सबसे अच्छा होता है।
सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रचारित
CBK 12 HI

संवाददाताओं के पत्र

हिन्दी समाचार-पत्र प्रदर्शिनी

अखिल भारतीय हिन्दी-समाचार-पत्र प्रदर्शनी का चौथा प्रदर्शन हैदराबाद स्टेट के ऐतिहासिक नगर गुलबर्गा में चतुर्थ आर्य सम्मेलन के अवसर पर ता० २२, २३,२४ अप्रैल ४५ ई० को किया जायगा। सम्मेलन के अध्यक्ष-पद को दानवीर राजा नारायणलाल जी पीती सुशोभित करेंगे। प्रदर्शनी का उद्घाटन सी० पी० असेम्बली के स्पीकर माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त अध्यक्ष सत्यार्थप्रकाश रक्षा-समिति के द्वारा होगा। यह प्रदर्शनी हिन्दी-संसार के लिए गौरव की चीज है जिसे हम विशाल संग्रहालय कह सकते हैं। इसमें अब तक लगभग २,००० पत्रों के प्रथमांक, विशेषांक तथा अन्तिमांक संग्रहीत हो चुके हैं। सन् १८५३ का मालव अखबार इसका सबसे प्राचीन संग्रहीत पत्र है। इसके अतिरिक्त राय राधाकृष्ण जी, बालमुकुन्द जी गुप्त, सम्पादकाचार्य पं० रुद्रदेव जी शर्मा तथा स्वर्गीय अवन्तविहारी जी माथुर लिखित अप्राप्य तथा दुर्लभ हिन्दी पत्रों के इतिहास भी संग्रहीत हैं। प्रदर्शनी को विशेष समुन्नत बनाने के निमित्त हिन्दी के वर्तमान पत्र-संचालक तथा संपादकगण अपने-अपने पत्रों की प्रतियाँ, विशेषांक आदि जो सामयिक तथा प्रदर्शनी के योग्य हों प्रदर्शनार्थ २० अप्रैल १९४५ ई० तक श्री बंकटलाल जी ओझा, मंत्री हिन्दी-समाचारपत्र प्रदर्शनी, बसारतटारडेड हैदराबाद दक्षिण के पते पर भेजकर अनुग्रही करें।

—बनारसीदास चतुर्वेदी अध्यक्ष

* * *

बंगाल सरकार की सहयोग-समितियों के १९४२ के वार्षिक कार्य-विवरण में बताया गया है कि प्रान्त में सहयोग-समितियों की संख्या ४१२६५ तथा लागत मूल धन २१०४·९० लाख रुपये है। बंगाल सहयोग-समिति-विधान १९१२ को स्थानान्तरित कर १९४० का विधान लागू करने के फलस्वरूप समितियों के कार्यक्रम में विशेष उन्नति हुई है। करघा-व्यवसाय भी उन्नति के लिए बताया गया है कि केन्द्रीय सरकार ने प्रान्त को १०३५२८ रुपये दिये हैं।

* * *

गत दुर्भिक्ष के पीड़ित शिल्पकारों को बंगाल सरकार-द्वारा विशेष सहायता मिलती है। सरकार के उद्योग-विभाग-द्वारा १७ लाख रुपये लागत की सूत की ४ हजार गाँठें फरवरी १९४५ तक बुनकरों एवं धीवरों में वितरित की गई हैं। उद्योग-विभाग निकट भविष्य में एक सूतकल स्थापित करने की योजना तैयार कर रहा है जिसमें सूत की १४०० गाँठें प्रतिमास तैयार की जा सकें। लागत खर्च ९० लाख रुपये अनुमान किया गया है

* * *

बर्मा-युद्ध जनित अनाथ बच्चों की सहायता के लिए केन्द्रीय सरकार एक योजना तैयार कर रही हैं। योजना के अनुसार उन बच्चों की शिक्षा दीक्षा की व्यवस्था होगी तथा अवस्था के अनुसार पूर्ण रूप से अथवा आंशिक रूप से सहायता दी जायगी। बंगाल सरकार ऐसे अनाथ बच्चों की सूची तैयार कर रही है।

—संवाददाता

हैदराबाद स्टेट आर्य सम्मेलन २२, २३, २४ अप्रैल सन् १९४५ ई० गुलबर्गा में राजा नारायणलाल पीती के सभापतित्व में मनाया जायगा। इस सम्मेलन का उद्घाटन माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त स्पीकर सी० पी० असेम्बली तथा अध्यक्ष सत्यार्थ-प्रकाश रक्षा समिति के कर कमलों द्वारा होगा। आर्य सम्मेलन के अन्तर्गत महिला-सम्मेलन-अध्यक्ष श्री मदालसादेवी जी कल्याणी, स्वयंसेवक सम्मेलन-अध्यक्ष, पं० शेषराव जी वकील, नौलंगा, युवक-सम्मेलन-अध्यक्ष, पं० कृष्णदत्त जी बी० ए० हैदराबाद, कवि-सम्मेलन अध्यक्ष, प० आनन्द जी विद्यालङ्कार हैदराबाद। आर्य भाषा-सम्मेलन-अध्यक्ष, पं० बंशीलाल वकील के सभापतित्व में होंगे। इन सम्मेलनों के अतिरिक्त कृषि, शिशु, स्वास्थ्य-प्रदर्शनी का प्रबन्ध किया जा रहा है।

—रामकृष्ण पटेल, श्री नरेन्द्र

* * *

कानपुर (पुखरायाँ) में श्री लक्ष्मी पुस्तकालय का वार्षिकोत्सव १ अप्रैल को श्री शिवकुमारलाल श्रीवास्तव की अध्यक्षता में मनाया गया। कवि-सम्मेलन और मुशायरा श्री रामस्वरूप गुप्त एम० एल० ए० एवं श्री हरगोविन्ददयाल एडवोकेट 'नश्तर' की अध्यक्षता में हुए। प्रियदर्शी, देहाती, नैयर, बेखुद, कमाल साबिर, शैदा और नश्तर की कवितायें बहुत पसंद की गईं। २ अप्रैल को भक्तसूरदास नाटक खेला गया। चौधरी रघुराजसिंह रईस बरीपाल ने पुस्तकालय को १०१) दान दिया।

—जमुनादास सचान

कानपुर निवासी युक्तप्रान्तीय स्लेटिव असेम्बली के मेम्बर हिन्दी के लेखक पंडित श्रीरत्न शुक्ल, एम० एल-एल० बी० की सुपुत्री श्री ल शुक्ल का शुभ विवाह गत मास धौ सिटी कोतवाल पंडित देवीसेवक शु सुपुत्र केप्टेन हरीकान्तकुमार शुक्ल एस-सी० के साथ सानंद सम्पन्न हो

—संवाद

* *

सरदारशहर (बीकानेर) की सा समिति का पंचम वार्षिकोत्सव लब्ध प्र लेखक एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकार रामनाथ 'सुमन' के सभापतित्व में समारोह के साथ मनाया गया। रा दूसरे शहरों से भी अच्छी संख्या में निधि पधारे थे।

—संवाद

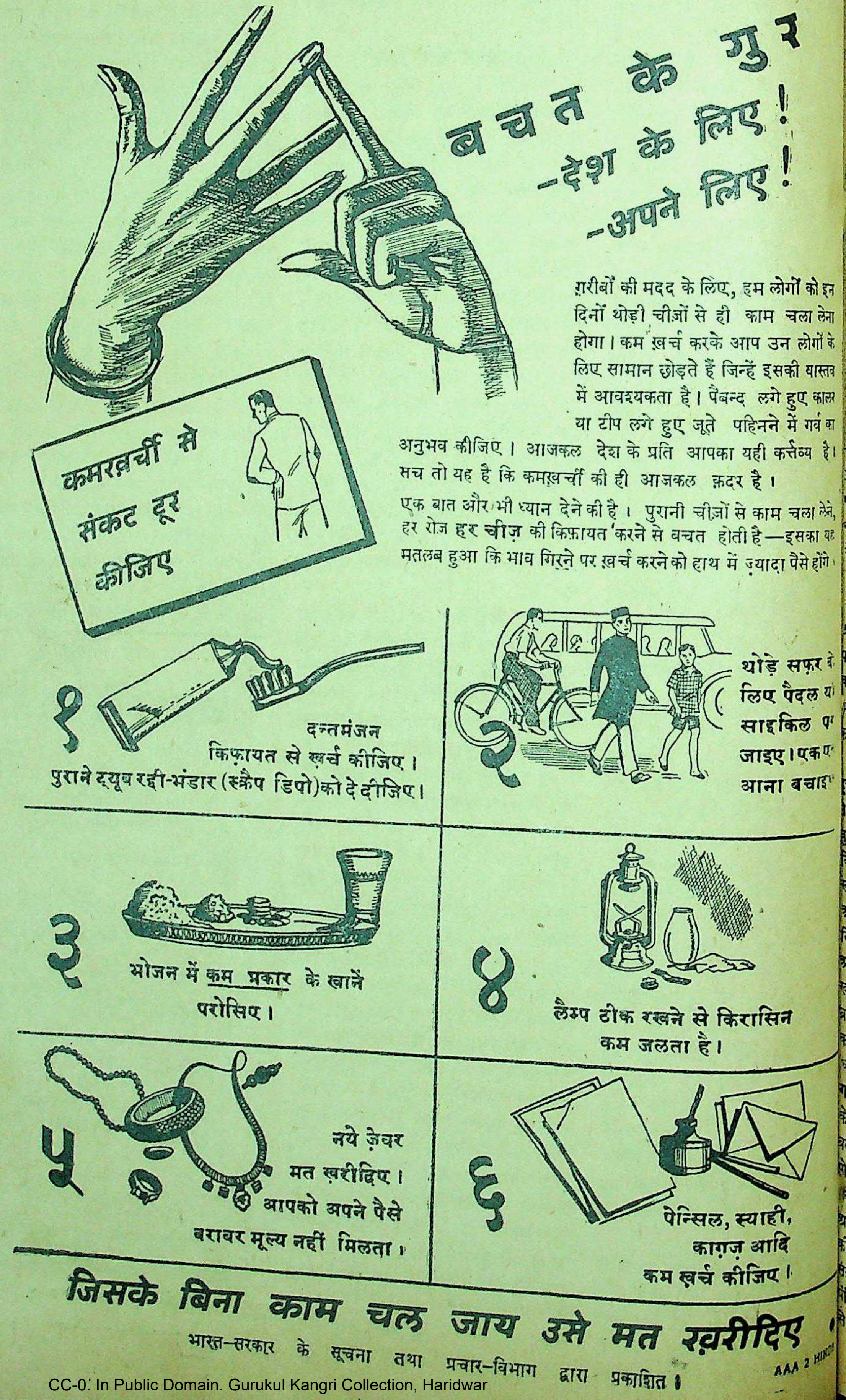

बचत के गुर
-देश के लिए!
-अपने लिए!

कमखर्ची से संकट दूर कीजिए

ग़रीबों की मदद के लिए, हम लोगों को इन दिनों थोड़ी चीज़ों से ही काम चला लेना होगा। कम ख़र्च करके आप उन लोगों के लिए सामान छोड़ते हैं जिन्हें इसकी वास्तव में आवश्यकता है। पैबन्द लगे हुए कालर या टीप लगे हुए जूते पहिनने में गर्व का अनुभव कीजिए। आजकल देश के प्रति आपका यही कर्त्तव्य है। सच तो यह है कि कमख़र्ची की ही आजकल क़दर है।

एक बात और भी ध्यान देने की है। पुरानी चीज़ों से काम चला लेने, हर रोज हर चीज़ की किफ़ायत करने से बचत होती है—इसका यह मतलब हुआ कि भाव गिरने पर ख़र्च करने को हाथ में ज़्यादा पैसे होंगे।

१ दन्तमंजन किफ़ायत से ख़र्च कीजिए। पुराने ट्यूब रद्दी-भंडार (स्क्रैप डिपो) को दे दीजिए।

२ थोड़े सफ़र के लिए पैदल या साइकिल पर जाइए। एक आना बचाइए

३ भोजन में कम प्रकार के खानें परोसिए।

४ लैम्प ठीक रखने से किरासिन कम जलता है।

५ नये ज़ेवर मत ख़रीदिए। आपको अपने पैसे बराबर मूल्य नहीं मिलता।

६ पेन्सिल, स्याही, काग़ज़ आदि कम ख़र्च कीजिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए।

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

AAA 2 HIN

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

योरप में जर्मनों का पराभव निकट आ गया है

प्रशान्त महासागर में युद्ध भयंकर रूप ग्रहण करेगा

(विशेष संवाददाता द्वारा)

पश्चिमी मोर्चे पर फील्ड मार्शल मांटगुमरी और जनरल पैटन के तूफानी सैन्य-दलों की प्रगति को देखते हुए प्रधान सेनापति जनरल आइजन होवर ने ठीक ही कहा कि यह उचित है कि शीघ्र से शीघ्र विजय-दिवस की घोषणा हो जाय अन्यथा हाम्बर्ग, बर्लिन, लीपजिंग, ड्रेस्डेन तथा वियना की बर्बादी का उत्तरदायित्व हिटलर पर रहेगा जिन पर मित्र सेनाओं का अधिकार होना अवश्यंभावी है। पिछले एक पखवारे से प्रतिदिन दो जर्मन डिवीजन की संख्या के हिसाब से जर्मन सैनिकों का संहार हो रहा है। फील्ड मार्शल मांटगुमरी का २१ वाँ सैन्यदल एम्स नदी के किनारे १० से १२ मील तक रफ्तार से आगे बढ़ा है। बृहस्पतिवार को वह जर्मन बन्दरगाह एम्डेन से केवल ५० मील दूर रह गया था। हाल के समाचारों से विदित हुआ है कि उनकी फौजें उत्तर सागर के जर्मन बन्दरगाहों के लिए खतरा पैदा कर रही है। जनरल म्पसी की फौजें मिनडेन के पश्चिमी बहिर्भाग में पहुँच गई हैं और वहाँ जनरल सिम्पसन की ९ वीं सेना मिल गई है। मिनडेन हनोवर के मार्ग पर पड़नेवाला एक मुख्य गढ़ है। उत्तर में मित्र फौजें हनोवर से ३८ मील हैं, तथा दक्षिण में वे नुरेमबर्ग से ३५ मील हैं। मध्यवर्ती क्षेत्र में वे थुरिंगिया के मैदान में, जर्मनी के हृदय-प्रदेश में बढ़ रही हैं। जनरल पैटन के छठे कवचधारी डिवीजन ने म्यलहासेन नगर में प्रवेश किया है, जो गोथा के २१ मील उत्तर पश्चिम में है। उन दक्षिण मोर्चे से उनकी फौजें एक ऐसे स्थान पर पहुँच गई हैं जहाँ से जर्मन राजधानी बर्लिन, १३७ मील पर है। उनकी फौजें जेना के मार्ग पर हमला कर रही हैं, जहाँ नेपोलियन ने भारी विजय प्राप्त कर ली थी। वे लीपजिंग से ७० मील पर हैं, वहाँ अमेरिकन और रूसी फौजों का सम्पर्क होने की सम्भावना है। ऐसी भी सम्भावना पाई जाती है कि लीपजिंग का युद्ध जर्मनी का अन्त कर देगा।

रूसी रणक्षेत्र के समाचारों से विदित आ है कि सम्पूर्ण हंगरी को नाजी चंगुल मुक्त कर दिया गया। अब मार्शल टोलबुखिन की फौजें हंगरी से उत्तरी युगोस्लाविया में घुस गई हैं और मैरिबोर के लिए खतरा बढ़ता जा रहा है जो यूगोस्लाविया, आस्ट्रिया की-सी सीमा के निकट स्थित एक महत्त्वपूर्ण रेलवे जंकशन है। आस्ट्रिया का एक विशाल नगर, ग्राज भी खतरे में है। स्लोवाकिया की राजधानी ब्राटिशलावा पर भी लाल सेना का अधिकार हो चुका है और आस्ट्रिया की राजधानी वियना के लिए संकट उपस्थित हो गया है। मैलीनोवस्की की सेना डैन्यूब नदी के उत्तरी तट के मार्ग से वियना की ओर बढ़ती जा रही है। उसने साइलेशिया तथा पोलैंड के उत्तर में स्थित मोराविया की कीर्ण पट्टी पर भी पोराश्चियन कारीडर पर अधिकार कर लिया है। अतः वसन्त ऋतु की चमकीली धूप में वियना के सामने संग्राम हो रहा है। आक्रमणकारी रणपंक्तियों की दौड़ के कारण उड़नेवाली गर्द से आसमान ढक रहा है। मार्शल टालबुखिन की टैंक सेनाएँ, जो नगर के भीतर घुस जाने के लिए महान् प्रयत्न कर रही हैं, नगर के अत्यन्त निकटवर्ती मार्गों पर जर्मन सेनाओं से भयानक युद्ध कर रही हैं। मास्को से रायटर का विशेष संवाददाता लिखता है कि वियना के प्रवेश-द्वारों पर होनेवाला युद्ध दोनों ओर से अतिरिक्त फौजें लगाई जाने के बाद अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। रूसी मोर्चे के उत्तरी क्षेत्र में मार्शल जुकोव ने लगभग ३० डिवीजन सेना लाकर स्टेटिन पर भीषण आक्रमण आरम्भ कर दिया है। मार्शल कोनीव के सैन्यदल गोर्लिज के समीप निसे नदी पर पश्चिमी मित्र मोर्चे से केवल २०० मील दूर रह गये हैं। इस प्रकार समस्त यूरोपियन रणक्षेत्र में मित्र सेनाएँ नाजियों का अहर्निश संहार करने में संलग्न हैं और निर्णायक विजय के लिए भूमिका बाँध रही हैं।

१ अप्रैल को एडमिरल निमित्ज की विज्ञप्ति में घोषित किया गया कि अमेरिकन सेनाओं ने ओकीनावा पर हमला किया है जो रियूक्यू द्वीपों की शृङ्खला के अन्तर्गत है। एक नई १० वीं सेना के रूप में वहाँ पर अमेरिकन-स्थल तथा नौ-सैनिक सैन्य-दल उतारे गये। यह द्वीप कियूश्यू के दक्खिन पश्चिम में ३३५ मील पर हैं। एडमिरल निमिज ने घोषित किया कि यह प्रशान्त के युद्ध में हुए स्थल तथा जल-सेनाओं की सबसे बड़ी कार्रवाई है। रायटर का अनुमान है कि इस हमले में लगभग ६ डिवीजन भाग ले रहे हैं। जिसका अर्थ है १ लाख से अधिक सैनिक। १० वीं सेना ओकीनावा द्वीप के सभी स्थानों पर निर्धारित समय से कई दिन पहले पहुँच गई है। कुछ स्थानों पर उसे जापानी रक्षकों का चिह्न तक नहीं दिखलाई पड़ा। ओकीनावा पर अमेरिकनों का कब्जा हो जाने पर चीन में रहनेवाली जापानी सेनाओं की जीवन-पाँति कट जायगी। इस द्वीप पर अमेरिकन कब्जे के फलस्वरूप दक्षिण में होनेवाले जापानी यातायात का मार्ग भी कट जायगा और इस युद्ध में पहली बार जापानी यांगटिसी नदी से आगे सिवाय पनडुब्बे के और किसी तरह के यातायात का सिलसिला जारी नहीं रख सकेंगे।

⁂

फिलिप्पाइन में जेनरल मेकआर्थर का तूफानी धावा जारी है। यहाँ से शत्रु का सफाया किया जा रहा है। २७ मार्च को सेबू नगर का पतन हो गया। अमेरिकनों की क्षतियाँ मामूली रहीं। बन्दरगाह का क्षेत्र करीब करीब बिलकुल दुरुस्त हालत में अमेरिकनों के कब्जे में आ गया। अमेरिकनों ने ११ अन्य नगरों को भी शत्रु से आजाद कर लिया। शत्रु को उत्तर की ओर भगाया जा रहा है।

⁂

बर्मा में मिकतिला क्षेत्र के उत्तर-पश्चिम की सड़कों को शत्रु से साफ करने के लिए १४ वीं सेना का बढ़ाव जारी है। जापानी प्रतिरोध-स्थलों पर मित्रों के अनेक सफल आक्रमण हुए। ब्रिटिश और भारतीय फौजें लेटवान से दक्षिण की तरफ तेजी से आगे बढ़ जाने के बाद अब टौंगुप के मजबूत जापानी गढ़ के बाहरी रक्षा-कतारों पर आक्रमण कर रही हैं। ३३ वीं भारतीय डिवीजन के सैन्यदलों की इस आकस्मिक कार्रवाई पर शत्रु भौंचक्का रह गया है। टौंगुप पर, जो कि अराकान से जापानियों के भगाने के मार्ग पर पड़ता है, मित्रों का कब्जा हो जाने पर अराकान से शत्रु का करीब करीब सफाया हो जायगा।

बेनोला

वनस्पति (घी)

सब प्रकार की मिठाइयाँ तथा अन्य खाद्य-सामग्री पकाने का सर्वोत्तम साधन

पत्र-व्यवहार का पता—

भारत वनस्पति मैनुफैक्चरिंग कं०,

५० निस्बत रोड, मजगाँव, बम्बई १०

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है।……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

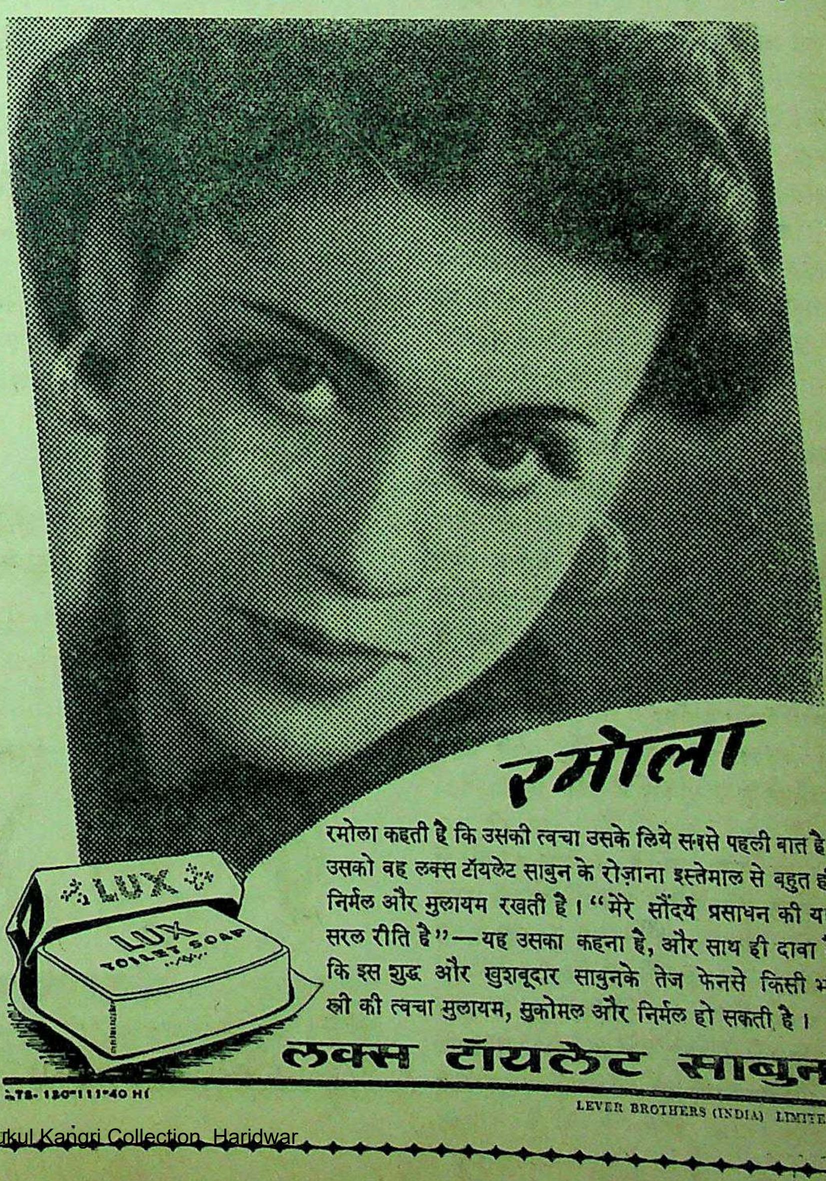

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजियें!

रमोला

रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे पहली बात है। उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल से बहुत ही निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य प्रसाधन की यह सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और साथ ही दावा है कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे किसी भी स्त्री की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो सकती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 130-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

सीमान्त में कांग्रेस-मंत्रिमंडल

(पेज ५ का शेष)

दो वर्ष की लम्बी सजा के एसेम्बली के अधिवेशनों में भाग ले सकता है। बिल बिना मत-विभाजन के ही सर्वसम्मति से पास हो गया। अब उस पर गवर्नर की स्वीकृति शेष है।

जनोपयोगी कार्यों के लिये संग्राम

कांग्रेस मंत्रिमंडल ने प्रान्त में फैली हुई बुराइयों को जिनमें सम्बन्धियों आदि को नौकरी दिलाने की बुराइयाँ हैं, शीघ्र ही दूर करने को कदम बढ़ाया है। प्रान्त का बजट भी बड़ा ही हृदयविदारक देख पड़ता है। प्रान्तीय खर्च १७५ लाख से २८७ लाख हो गया है। इस खर्च को कम करके सरकारी बुराइयों को दूर करना है।

प्रान्त में भोजन, वस्त्र, चीनी, तेल और जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुएँ कर्मचारियों तथा स्वार्थसाधकों के सुख की साधन न रहेंगी। अब वे जनता के लिए भी प्राप्त होंगी। यह युद्ध किस प्रकार लड़ा जायगा? भोजन तथा युद्धोपरान्त कार्यक्रम कमेटियों में परिवर्तन किया जायगा। इसमें स्थानीय लोगों को रक्खा जायगा, जिससे भोजन-सामग्री के वितरण और उसके पहुँचने में सुविधा हो। जनता को हथियारों के लाइसेंस भी मिलने में सुविधा दी जायगी। जेलों में काफी सुधार होगा जो कि मिनिस्ट्री का सबसे बड़ा कार्यक्रम है।

पुरस्कार की आशा

लीग मिनिस्ट्री की हार पर डाक्टर खान साहब और कांग्रेस की पार्लामेण्टरी पार्टी की चारों तरफ प्रशंसा हो रही है। उन्होंने कहा है कि हम तब तक सरकार चलायेंगे जब तक कि सार्वजनिक कार्य करते रहेंगे। वे पार्टी राजनीति को त्यागने के लिए जोर दे रहे हैं। उनका कहना है कि जनहित के कार्यों को मिल कर करना चाहिए। उन्होंने प्रधान मन्त्रित्व ग्रहण करने के बाद घोषणा की है कि "मैं इस प्रान्त के प्रत्येक सरकारी कार्यों का जिम्मेदार हूँ।"

डाक्टर खान के वक्तव्य ने जादू का-सा असर किया है। अब सारे विभाग अनुभव करने लगे हैं कि हमको अपने प्रधान के ढंग पर काम करना होगा। जो मुनाफाखोरी और चोर-बाजार से लाभ उठाते थे, उन्होंने अपने बिस्तर बाँध लिये हैं। इस प्रकार अंत में चोर-बाजार और मुनाफाखोरों का प्रभाव क्षीण होने लगा है और प्रांत में एक नया वायुमंडल पैदा होगया है। डाक्टर साहब बहुत से स्वयंसेवक इस कार्य के लिए प्रान्तों में तैयार किये हैं जो जनता की सेवा में हृदय से तत्पर रहते हैं।

शिक्षकों को संतोष

कांग्रेस मन्त्रिमण्डल के पहले लीग मिनिस्ट्री ने प्रान्त भर में जो स्थिति पैदा की थी उसमें शिक्षकों की दुर्दशा भी एक महान् दुर्घटना है। ६०० शिक्षक प्रान्त में शिक्षा-कार्य में लगे हैं। इस महँगी के समय उनको तनख्वाहें किस रूप में दी जानी चाहिए? इस पर लीग मिनिस्ट्री ने जरा भी ध्यान न दिया। कांग्रेस यहाँ से बाहर रह कर और जनता के कार्यों में रत होकर इन सब स्थितियों का पूर्ण अध्ययन कर चुकी है। उसने पद ग्रहण करते ही उनकी आपत्तियों को दूर करके एक संतोषप्रद वायुमंडल पैदा कर दिया है।

प्रान्तों के उन भागों में जहाँ पीने के लिए पानी की बड़ी दिक्कत है, विशेष कर डेरा इस्माइल खाँ के जिले में ट्यूबवेल-द्वारा जनता के लिए कुएँ खुदवा-कर पानी पहुँचाने का प्रबन्ध हो रहा है।

यह सब क्या है? किसके लिए यह हो रहा है? इन प्रश्नों के उत्तर में हम देखते हैं कि कांग्रेस मंत्रिमंडल का पुनः स्थापित होना जनता का उदय है। कांग्रेस मिनिस्ट्री जनता की है, इसने सार्वजनिक कार्यों को शीघ्र ही अपना लिया है।' सीमाप्रान्त जनसेवा के कार्यों को पूर्ण करनेवाला वैधानिक अड़ंगे के समय का प्रथम प्रान्त है।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है। मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

सी.ए.आई. की मुफ्त सेवा

नंबर १ ग्राम्य सुधारणा

सीमेंट कांक्रिट ग्राम्य सुधार के लिये अमूल्य है जिस की गणना लडाई के बाद के अग्र उद्योगों में होती है। इस आश्चर्यजनक वस्तु में एक विशेष गुण यह है कि खर्च कराये बिना यह ज्यादा वक्त टिक सकती है जो बांधकामों में अधिक सुबिधा देती है। खास कर के यह रास्ता, घर, दवाखाना, बाजार की जमीन, गौशाला, कुंआ, गटर का बांधकाम जहां सफाई की जरुरत है वहाँ अवश्य जरूरी है।

कांक्रिट एसोशिएशन आफ इन्डीया, ७०, क्वीन्सवे, नई देहली, जो ग्राम्य हित कल्याण में दिलचस्प होते हैं उन को मुफ्त सलाह देते हैं।

दि कांक्रिट एसोशी-एशन आफ इन्डिया } दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि. का टेकनीकल आरगेनाइजेशन

CM. 73—Hind

हासपरिहास

भंग की तरंग

रूस ने जापान से पुरानी संधि तोड़ । यह युग ही तोड़-फोड़ का है। संसार बड़े बड़े नगर तोड़ डाले गये, मनुष्यों के सिर मिट्टी के बरतन की तरह टूट रहे हैं तो संधि तो बहुत ही साधारण वस्तु है।

* * *

जनरल स्मट्स लंदन जा रहे थे। उनके विमान पर बिजली गिरी। किंतु स्मट्स साहब उन लोगों में हैं जिन पर बिजली का असर नहीं होता। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोग जो आन्दोलन कर रहे हैं उन्हें समझ लेना चाहिए कि जिस पर बिजली का असर नहीं होता उस र प्रस्तावों का क्या प्रभाव पड़ेगा?

* * *

शिकोहाबाद के श्री 'आनंद' माथुर बताते हैं कि सरकारी आज्ञा हुई है कि पटवारियों को रोमनलिपि पढ़ाई जाय। इसमें हिन्दी की जो हानि होगी सो तो होगी, पटवारियों की और सरकार की बड़ी ने होगी। उर्दूलिपि में लिखने से मौके मौके जैसा चाहे पढ़ लिया जा सकता । उससे पटवारियों को कुछ आमदनी भी हो जाती है और कुछ मुकदमे भी चल जाते हैं। रोमनलिपि में क्या इसकी गुंजाइश है?

कोल्हापुर में एक भिक्षुक की मृत्यु ख के मारे हो गई। लाश देखने पर सके चीथड़ों में से सौ रुपये की रेज़गारी कली। कोल्हापुर की पुलिस अवश्य धाई की पात्र है कि उसने बता दिया कि खमंगों के पास इतने रुपये निकले। ड़ी में तो इतना निकला, घर पर तना होगा पता नहीं।

* * *

बंगाल में लोगों ने गवर्नर से मिलना रंभ कर दिया। कायदे आजम को एक व्य दे देना चाहिए कि अगर लीगी कार बंगाल में नहीं बनी तो मैं ब्रिटिश र्नमेंट से समझ लूँगा।

* * *

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अमे-का में कहा है कि कांग्रेस स्वाधीनता के दों में विश्वास न करेगी। कोई समझ-र आदमी भला वादों पर विश्वास करता हाँ मजनूं की भाँति प्रेमी लोग वादों का एतबार किये जाते हैं चाहे उसके पूरे होने की नौबत जीवन में न आये।

* * *

अल्लामा मशरीकी ने लार्ड वैवेल को तार दिया है कि मैं अगस्त तक ऐसा विधान बना दूँगा जो सबको स्वीकार होगा। संभव है विधान भी बन जाय और ब्रिटेन को भी स्वीकार हो जाय किन्तु—कायदे आज़म को भला कोई विधान स्वीकार हो सकता है? यदि उन्हें न स्वीकार हुआ तो देखें अल्लामा का बेलचा क्या करता है?

* * *

रेडियो के सम्बन्ध में गोस्वामी गणेशदत्त ने दिल्ली में कहा है कि न मैं चैन लूँगा न चैन लेने दूँगा। एक ओर गोस्वामीजी और दूसरी ओर सुलतान जी। इधर साधुओं की सेना उधर शाही सेना। देखें किसकी विजय होती है?

* * *

कहा जाता है कि मुसोलिनी अस्वस्थता का कारण बता कर स्विटजरलैंड जाना चाहते हैं। ब्रिटिश सरकार उन्हें आगरा भेजने की व्यवस्था क्यों नहीं करती? यह स्थान उनके लिए अधिक उपयुक्त होगा।

* * *

कानपुर में कपड़ा-व्यापारियों का सम्मेलन हुआ जिसमें उन्होंने सरकार की कपड़े का वितरण करनेवाली नीति का विरोध किया। यह लोग तो एक बात लेकर उड़ने लगते हैं। यह नहीं समझते कि भारत-सरकार को केवल भारत की ही ओर नहीं देखना है। मिस्र है, ईरान है, ईराक है, सभी को तो वस्त्रों से सुसज्जित करना है?

* * *

एक मुस्लिम नेता ने कहा है कि अब लीग के मरसिया पढ़ने का समय आ गया है। बहुत समझ कर उन्होंने यह कहा है। कायदे आज़म हैं भी शिया उन्हें मरसिया पढ़ने का अभ्यास भी होगा।

* * *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने परीक्षकों को पारिश्रमिक देना बन्द कर दिया। बड़ा अच्छा हुआ। एक निश्चय और कर देना चाहिए कि मन्त्री महोदयों की पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं वह कम हैं। उन लोगों को और पुस्तकें पाठ्यक्रम में रखनी चाहिएँ जिससे इधर की कमी कुछ पूरी हो सके। बड़े परिश्रम से मन्त्री बने हैं।

—अगड़धत्त शर्मा

बेढब-दोहावली

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

मुझको भी तुम मान लो प्रेमी दो ही रोज़,
भारत के प्रतिनिधि बने जैसे सर फीरोज़।

बेढब इस जग में बनोगे तुम तुरत महान,
अगर विलायत का ससुर कर दे कन्यादान।

बहुत रोब हैं झाड़ते काले जंटलमैन,
चोट अधिक बेढब करैं ज्यों कजरारे नैन।

जपो कृष्ण को या जपो साँझ सबेरे राम,
साहब के जप के बिना होगा एक न काम।

करो न कोई काम तुम करो न कुछ व्यापार,
सब कुछ पाओगे करो साहब का दरबार।

स्वर्गीय डाक्टर बेनीप्रसाद

राजनीति के प्रकांड विद्वान् का देहांत

डा० बेनीप्रसाद के स्वर्गारोहण से इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों का एक उत्तम अध्यापक, अध्यापकों का एक अच्छा सहयोगी और देश का एक महान् विद्वान् उठ गया। आपका जन्म सन् १८९५ के फरवरी मास में हुआ, और आरम्भ में आपने गाँव की पाठशाला में शिक्षा पाई थी। इसके बाद आपने इलाहाबाद गवर्नमेन्ट हाईस्कूल, और फिर बाद में म्योर सेन्ट्रल कालेज में शिक्षा पाई। विद्याध्ययन के सम्बन्ध में आपका कार्य बहुत ही अपूर्व रहा। आपको 'रिसर्च' (खोज) का बहुत ज्यादा शौक था। आपको सन् १९१८ में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में इतिहास का अध्यापक नियुक्त किया गया था। सन् १९२३ से २६ तक आपने लन्दन के अर्थशास्त्र के स्कूल में शिक्षा प्राप्त की, और सन् १९२६ में आपको पी० एच० डी० की डिग्री, और डी० एस० सी० की डिग्री सन् २७ में मिली थी।

डा० बेनीप्रसाद यद्यपि राजनीति के प्रोफेसर थे, पर आपको हिन्दी-साहित्य से भी बहुत प्रेम था, और हिन्दी में आपने कुछ पुस्तकें लिखी हैं। आपने अन्य अनेक उपयोगी पुस्तकें लिखी हैं, पर "डेमोक्राटिक प्रासेस" (लोकतन्त्रवादी पद्धति) नामक पुस्तक से आपकी ख्याति विशेष रूप से बढ़ी थी। हाल में आप फेडरेशन (संघ) पर एक पुस्तक लिख रहे थे।

इधर गत दो वर्ष से आप गांधी जी के व्यक्तित्व की ओर अधिक आकृष्ट हुए, और आपने हाल में वरधा की यात्रा से लौटने पर मुझसे कहा था, कि "गांधीवाद पर एक प्रामाणिक पुस्तक लिखने की मेरी उत्कट अभिलाषा है।" डा० बेनीप्रसाद एक सच्चे देशभक्त थे और एक ऐसे महान् सज्जन पुरुष थे कि देश के अधिकांश प्रतिष्ठित व्यक्ति उनका आदर करते थे।

डा० बेनीप्रसाद एक प्रखर प्रतिभाशाली लेखक थे, और मतभेद होने पर भी वे कभी कटुता के साथ कोई बात न लिखते थे। वे अपने तर्क और विवेक से समझाने का प्रयत्न करते थे। वक्ता की हैसियत में वे बहुत प्रभावशाली थे। वे धाराप्रवाह रूप में बोलते और अँगरेजी भाषा पर उनका पूरा अधिकार था। वे अपनी इतमीनान दिखानेवाली दलीलों से विरोधियों को भी प्रभाव में ले आते थे।

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ||=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

एक महान् व्यक्ति

संसार में व्यक्ति का महत्त्व उसके व्यवहार तथा आचरण पर निर्भर करता है। सद्व्यवहार तथा सदाचार करनेवाले व्यक्ति ढूँढ़ने पर मिल जाते हैं किन्तु दूसरों को सदाचारी तथा सद्व्यवहारशील बनाने वाले व्यक्ति संसार में बहुत ही कम मिलते हैं। बंग-साहित्य-सम्राट् श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ऐसे ही व्यक्तियों में एक है। आपके उपन्यास पाठक को निश्चय ही सदाचारी तथा सद्व्यवहारी बनाते हैं। किन्तु तारीफ यह है कि आप अपने उपन्यासों में कहीं भी उपदेश नहीं दिया करते हैं। मनोरंजक तथा सरल भाषा में वास्तविक जीवन का चित्रण ही आपकी विशेषता है। उनके उपन्यासों के निम्नलिखित अनुवाद उनकी सभी विशेषताएँ लिये हुए हैं।

ब्राह्मण की बेटी	१।-)
बैकुंठ का बिल	।।≡)
छुटकारा	१।-)
लेन-देन	३।-)
मझली दीदी	१)
गृहदाह	३।-)
परिणीता	१।-)
श्रीकान्त (दो भाग)	४)
शुभदा	१।।)

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

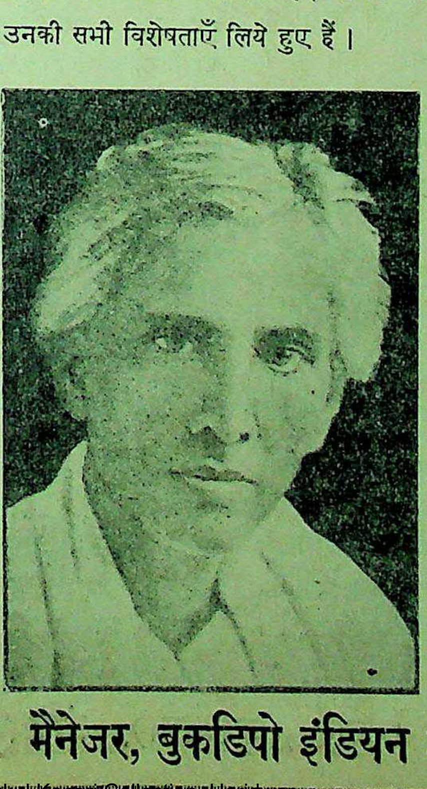

नागौर जिला राजनैतिक सम्मेलन के सभापति-पद से लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने बड़ा मार्मिक भाषण दिया है। भाषण का कुछ अंश इस प्रकार है—नागौर की जनता ग़रीब है। उसे जीवन सुख की सामग्रियाँ प्राप्त नहीं हैं! २६०८ वर्गमील के सारे परगने में जिसमें कस्बे और ३१ गाँव हैं। केवल १४ स्कूल हैं। उनमें एक भी ऐङ्गलो मिडिल स्टैंडार्ड का नहीं। एक डिस्पेंसरी है। सारे जिले में कोई ढंग का वाचनालय या पुस्तकालय नहीं है। आप जिले भर में एक भी लेडी डाक्टर के दर्शन नहीं कर सकते। अभी हाल ही में सरकार ने जिले की १७२००० जनता के लिए एक नर्स या दाई नियुक्त की है; पर उसका निवासस्थान नागौर ही है। अगर करणू (चाडी) में कोई दुर्घटना हो जाय तो आपको नागौर आना पड़ेगा, मोटर या बैलगाड़ी से नहीं बल्कि ऊँट पर बैठकर। इसके लिए आपको ३६ मील का फासला तय करना होगा। मगर यदि आपको फलौदी जाना पड़े वहाँ भी उससे कम फासला तो नहीं तय कर सकते। जिले भर में कहीं भी फर्स्ट एड (प्रारंभिक चिकित्सा) की भी व्यवस्था नहीं है। सुनते हैं, एक बार जिले में कहीं मार-पीट हो गई। एक आदमी को सख्त चोटें आईं। पुलिस की रिपोर्ट थी कि जख्मी आदमी जीवित है; पर उसे जाँच-परताल के बाद नागौर तक लाने में १० घण्टों से कम नहीं लगे। नागौर आते आते वह मर गया। बैलगाड़ी के झटकों ने भी उसके प्राणान्त को निकट लाने में सहायता ही की होगी। जिले में सड़कों का अभाव है। हाँ, दुष्काल के जमाने में कुछ कच्ची व पक्की सड़कें बनी थीं; पर वे जिले के बहुत कम हिस्से में होकर गुजरती हैं।

नागौर म्युनिसिपैल्टी भी तब से छः जातियों की ठेकेदारी की चीज है जब से २८ वर्ष पहले यह स्थापित हुई। ४३ जातियों को तो उसमें अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार ही नहीं है। उनकी आवाज म्युनिसिपैल्टी में कतई नहीं है। जिले के मजिस्ट्रेट ही उसके सभापति होते हैं, टेक्स द्वारा संग्रहीत उसके धन का कुछ हिस्सा आमतौर पर जमा कर लिया जाता है और उसका जनहित के लिए उपयोग नहीं होता। आज वह बड़ी रकम जो टेक्स लगाकर जमा की गई है। राजकोष में जमा है मानो कोई सुधार करने की वहाँ जरूरत ही नहीं है और सब ठीकठाक है। जनता को तब तक आराम से नहीं बैठना चाहिए जब तक कि म्युनिसिपैल्टी का निर्माण वार्ड वार चुनाव के आधार पर न हो और उसका संग्रहीत धन लोक-हित के काम में न लग जाय। भारत की रियासती राजनीति पर विचार प्रकट करते हुए श्री जयनारायण जी व्यास ने कहा कि रियासती सरकारों की जनता की आवाज को दबाने की प्रवृत्ति तथा उनकी जनता के नाम पर बोलने की ढीठता का घोर विरोध होने की आवश्यकता है। हमें ऐलान कर देना चाहिए कि सेनफ्रान्सिसको जो प्रतिनिधि जा रहे हैं उससे रियासतों का कोई सरोकार नहीं है। ब्रिटिश सरकार और रियासती राजाओं के प्रतिनिधियों में से कोई भी रियासती जनता का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता। जनता का प्रतिनिधित्व जनता-द्वारा चुने हुए लोग ही कर सकते हैं।

अन्त में व्यास जी ने यह आशा प्रकट की कि भारतीय गतिरोध शीघ्र ही दूर होगा और रियासतों की वर्तमान स्थिति को बदलने की नीति भी बदली जावेगी।

—सुषेण

* * *

आगरा के प्रसिद्ध साहित्यिक पं० अमृतलाल चतुर्वेदी वकील के प्रयत्न से आगरा के निम्नलिखित व्यक्तियों तथा फर्मों ने "संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन" को निम्नलिखित रकमें 'सूर' स्मारक के लिए दान में दी हैं—श्री रायबहादुर सेठ ताराचन्द, आगरा १०१), श्री नारायणप्रसाद सूरजभान, आगरा १०१), श्री केदारनाथ शुभकरन सेकसरिया, आगरा १०१), श्री रायसाहब छोटेलाल श्यामलाल, आगरा १०१)।

सभी सज्जन धन्यवाद के पात्र हैं।

—प्रधान मंत्री

* * *

कानपुर की श्रीमती पुष्पादेवी मेहरोत्रा ने हिन्दी साहित्य-सम्मेलन को स्त्रियोपयोगी ५०० पुस्तकों की सर्वश्रेष्ठ सूची तैयार करनेवाले सज्जन को पुरस्कार देने के लिए १०१) का दान दिया है। हिन्दी प्रेमी विद्वानों तथा विदुषियों से निवेदन है कि वे हिन्दी की ऐसी पुस्तकों की सूची १५ जून सन् १९४५ तक सम्मेलन-कार्यालय में अवश्य भेज दें। उक्त तिथि के पश्चात् प्राप्त सूची पर विचार न किया जायगा।

—सत्यदेव शास्त्री, प्रचार मंत्री

पूज्य बापू जी के नाम खुली

(पेज ५ का शेष)

हिन्दुस्तानी के पीछे कुछ मुसलमानों को छोड़कर हिन्दू और वाले ही दीवाने हैं। इसकी कोई नहीं दीख पड़ती कि मुसलमान उर्दू ऐसी हिन्दुस्तानी को स्वीकार जिसमें थोड़े से भी संस्कृत के आप यह भी देख लेंगे कि आप स्तानी-प्रचार-सभा की परीक्षाओं में और उर्दू अनवार्य होने पर विद्यार्थी बहुत ही कम बैठेंगे। उर्दू वालों का बहुमत है (जैसे पंजाब कांग्रेस की पहुँच भी नहीं है और जिससे आप उन पर जोर डलवा ऐसी अवस्था में जब तक यह मालूम न हो जाये कि मुसलमान लेखक कहाँ तक हमारे साथ हैं हिन्दी को बिगाड़ना या हिन्दी के विक प्रसार को रोक कर हिन्दुस्तानी या हिन्दुओं के बच्चों पर उर्दू का बोझ लादना कहाँ तक उचित है उससे कहाँ तक आपके उद्देश्य होती है?

लखनऊ —सूर्यप्रकाश,

"सरस्वती सिरीज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्र
उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रका
हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इला

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥=)।

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥=)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ९ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह सबसे अच्छा है। मूल्य ॥।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ॥=)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है। भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

आरोग्य **१८६९ नीलगिरि तेल** — वापरो —
सांडुब्रोदर बंधु. बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला। १ ..। शीशी ८ आना. दजन ५॥=) डा०ख० अलग, युवलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने मे बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि

पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी

की

तीन पुस्तकें

झरना — शिशु-भारती.

बाँसुरी

, पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कवितायें लिखते हैं जिनसे उनके भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका खास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि बालकों में सद्विचारों को बचपन में ही बोना चाहिएं, उन्हें द्विवेदी जी की इन कृतियों को अपनाना चाहिए, और उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ॥।) बारह आने

मैनेजर (बुक डपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

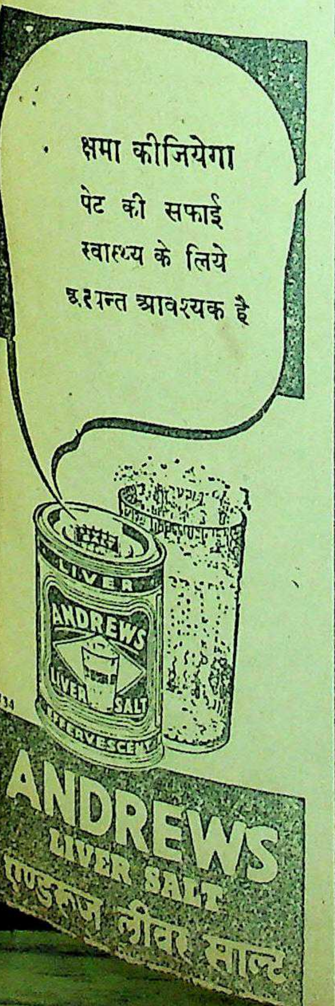
क्षमा कीजियेगा
पेट की सफाई
स्वास्थ्य के लिये
अत्यन्त आवश्यक है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT
ANDREWS
LIVER SALT
एण्ड्रूज़ लीवर साल्ट

यह कितना तर कर देता है!
यह कितना ताजा कर देता है!
यह कितना आनन्ददायक है!
VINOLIA WHITE ROSE SOAP
विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन
VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

आप गर्मीसे परेशान क्यों हैं, जबकि विनोलियासे एक बार ही स्नान कर लेनेपर आप शीतल हो जायेंगे? अपने शरीरको लसलसा क्यों रखते हैं, जबकि मक्खन. जैसे सफेद इस साबुनका फेन आपको ताजा बना और रख सकता है? और आप विनोलियाकी सुगंधको हमेशा आनन्ददायक और प्रफुल्लित करनेवाला पायेंगे। मस्तिष्क और शरीर पर सचमुच टानिककी तरह इसका असर होता है!

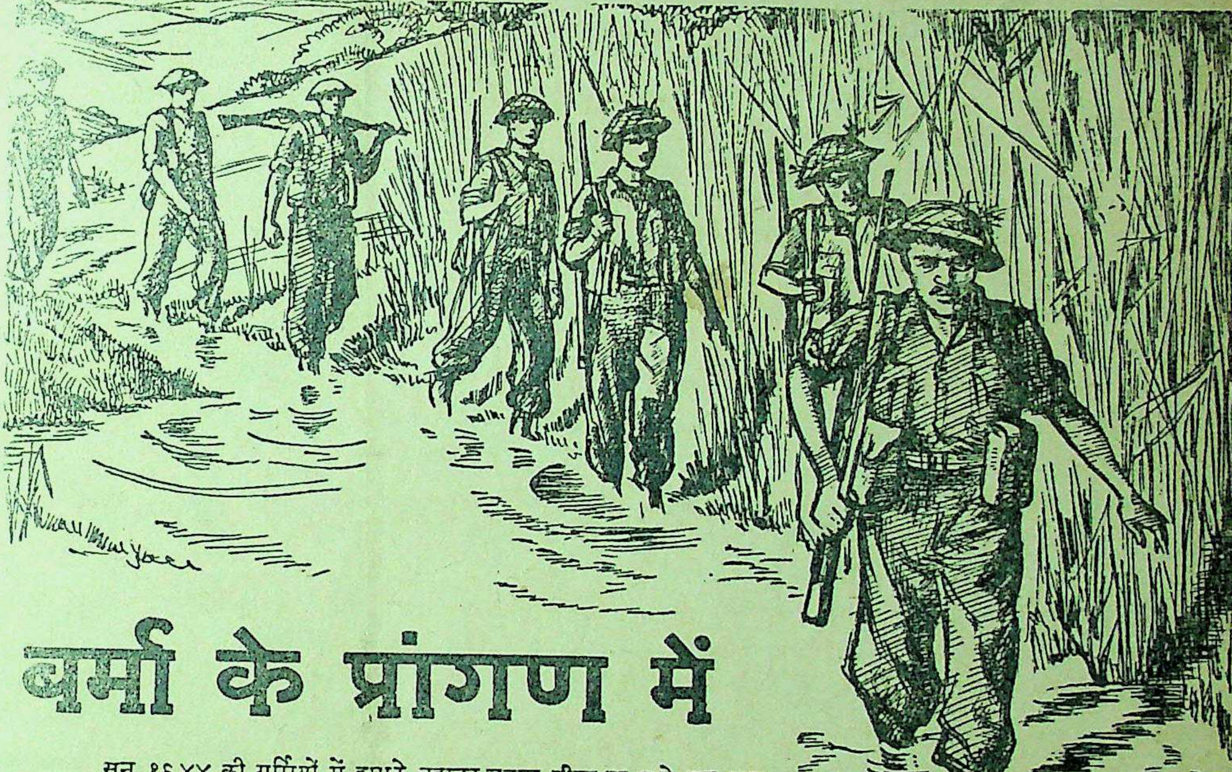

बर्मा के प्रांगण में

सन् १९४४ की गर्मियों में हमारे बहादुर जवान सीमा पर खड़े हुए शत्रु को वीरतापूर्वक रोके रहे। किन्तु जब से अब तक ये जापानियों को धकेलते हुए कहीं आगे बढ़ चुके हैं। हिन्दुस्तानी फ़ौज. संयुक्त राष्ट्रों के अपने साथियों के कन्धे से कन्धा मिला कर, लगातार धावे मारती हुई, जापानी क़िलेबन्दियों को रौंदती चली गई और मध्य तथा पश्चिमी बर्मा में शत्रु को दायें-बायें से घेर कर उसे परास्त कर दिया। हमारे वीर सैनिकों ने ८० हज़ार वर्ग मील से अधिक भूमि अर्थात् देश का लगभग तिहाई भाग शत्रु के अधिकार से मुक्त कर लिया। उसके एक लाख से अधिक सैनिक हताहत हुए, और उसे इरावदी के मैदान में भाग कर शरण लेनी पड़ी।

इस विजय के लिए हमारे सैनिकों को कितना भगीरथ प्रयत्न करना पड़ा, इसका वर्णन समुचित रूप से शब्दों में नहीं हो सकता। हिन्दुस्तान के वीर योद्धा घने पहाड़ी जंगलों और ख़राब मौसम की विपदा का सामना करते हुए, जिनकी कल्पना भी कठिन है, अविचल गति से आगे बढ़ते रहे और अन्त में उन्होंने उस शत्रु को पीछे खदेड़ दिया, जिसका हमारी सीमा के निकट रहना हमारी शान्ति एवम् व्यवस्था के लिए स्थायी संकट का कारण होता। फिर भी जब तक शत्रु पर पूर्ण तथा अन्तिम विजय प्राप्त न हो जाय, हिन्दुस्तान को जापानी आक्रमणकारियों के ख़तरे से पूर्णतया सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

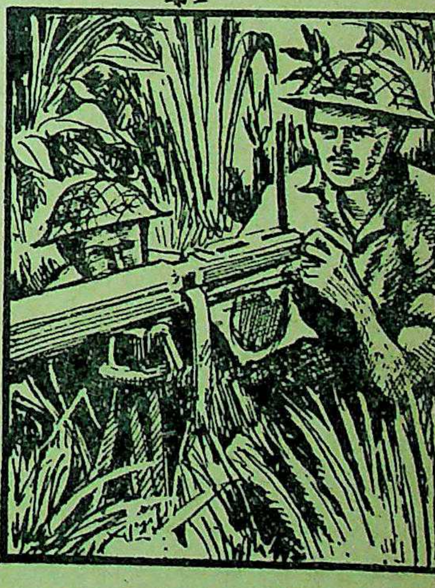

मशीन-गन चलाने वाले जवान दुश्मन की घात में बैठे हैं।

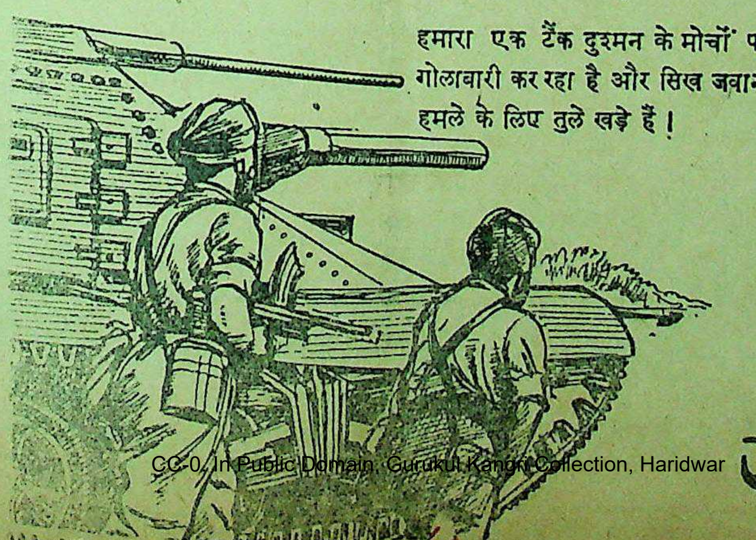

हमारा एक टैंक दुश्मन के मोर्चों पर गोलाबारी कर रहा है और सिख जवान हमले के लिए तुले खड़े हैं।

बढ़े चलो

जीत निकट है

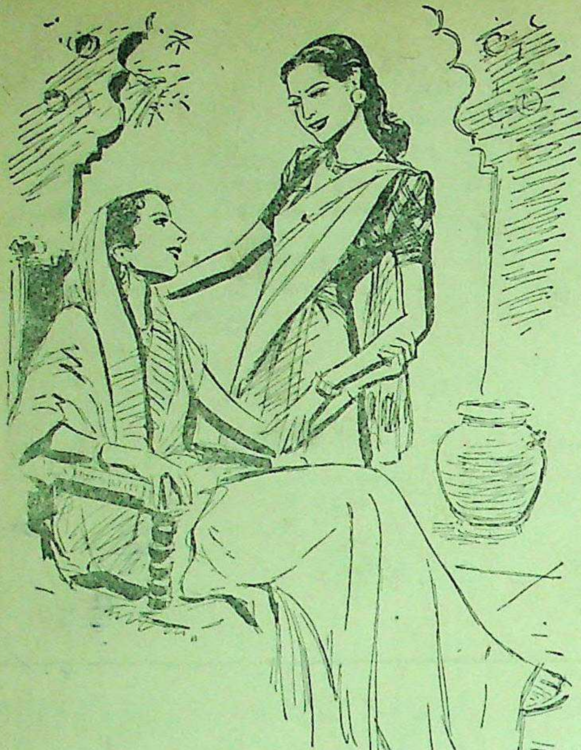

सौंदर्य की दो पीढ़ियाँ

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य में उतनी ही ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है जितनी कि उसकी सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी माँ की सलाह पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी कोमल त्वचा की रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी त्वचा की रक्षा करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी निस्संदेह उसी तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की त्वचा है।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

ह्य दर्द से छुटकारा

र महीने होने वाली इस असह्य दर्द से छुटकारा पाने के लिये आपको हमारे अशोका कौडियल कम्पाउण्ड विथ विटामिन्स (विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन युक्त भी यह मिलता है) जैसे टॉनिक की जरूरत है। स्त्री रोगों की प्राचीनतम औषधि अशोका के साथ आधुनिकतम औषधियों व विटामिन या फिर विटामिन व हौरमोन के संमिश्रण से बना होने के कारण थोड़े समय में समस्त गड़बड़ियों को दूर कर यह ऋतु-शृङ्खला स्वाभाविक कर देता है।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि

आइ. एम. एस. लैबोरेटरी
लैबोरेटरी व कारखाना: अ
(लखनऊ)। हेड आफिस:
रौएल एक्सचेञ्ज प्लेस, कल

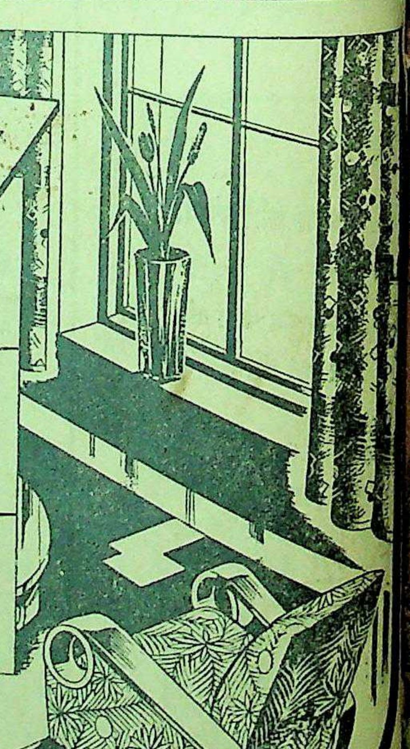

गुण और संतोष की गारन्टी

डी. सी. एम. स्टोरों में बेची जाने वाली चीजें चतुराई पूर्ण तरीकों से बनाई और बाजार में भेजी जाती हैं। इनकी बाजार में मिसाल नहीं है। आप को अपनी खरीद पर पूर्ण संतोष होगा।

* * * * *

टेबल के लिये पटसन का कपड़ा
आप के भोजन और चाय-पार्टी के टेबल की शोभा बढ़ाने के लिये आकर्षक चित्रकारी छपाई किया गया पटसन का कपड़ा।

साड़ियां
बहुत बड़ी तादात में पसन्द की हुई सुन्दर किनारीदार और तरह २ की साड़ियां।

तौलिए
जैसे कि आप चाहते हैं—टर्किश व हनीकोम्ब, सादे या रंगीन, रंगीली किनारें सहित।

मिठाइयाँ
आरोग्य जनक, स्वादिष्ट, और शुद्ध टाफी और मिठाइयां बीसों प्रकार की हैं।

दौराला चीनी
चुने हुए गन्ने से बनाई हुई क्यूब, कास्टर, आइसिंग, और डेमरारा चीनी।

दिल्ली क्लाथ मिल्स स्टोर्स

चौक और सदर बाजार, लखनऊ, और भी फैजाबाद, बाराबन्की, कानपूर, मेरठ, मुजफ्फरनगर, आगरा, बरेली, अलीगढ़, हरद्वार, दहरादून मुरादाबाद, और हापुर।

प्रबन्ध सम्पादक—[illegible] [[illegible] लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

, २२ अप्रैल, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 22th April, 1945

आबू पर्वत पर प्राचीन कारीगरी से पूर्ण एक जैन मंदिर का भीतरी दृश्य।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट कौन थे?
स्वामी दयानंद सरस्वती और हिन्दी।

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सब को बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप **'तुलसी-रत्नावली'** का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १।।) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

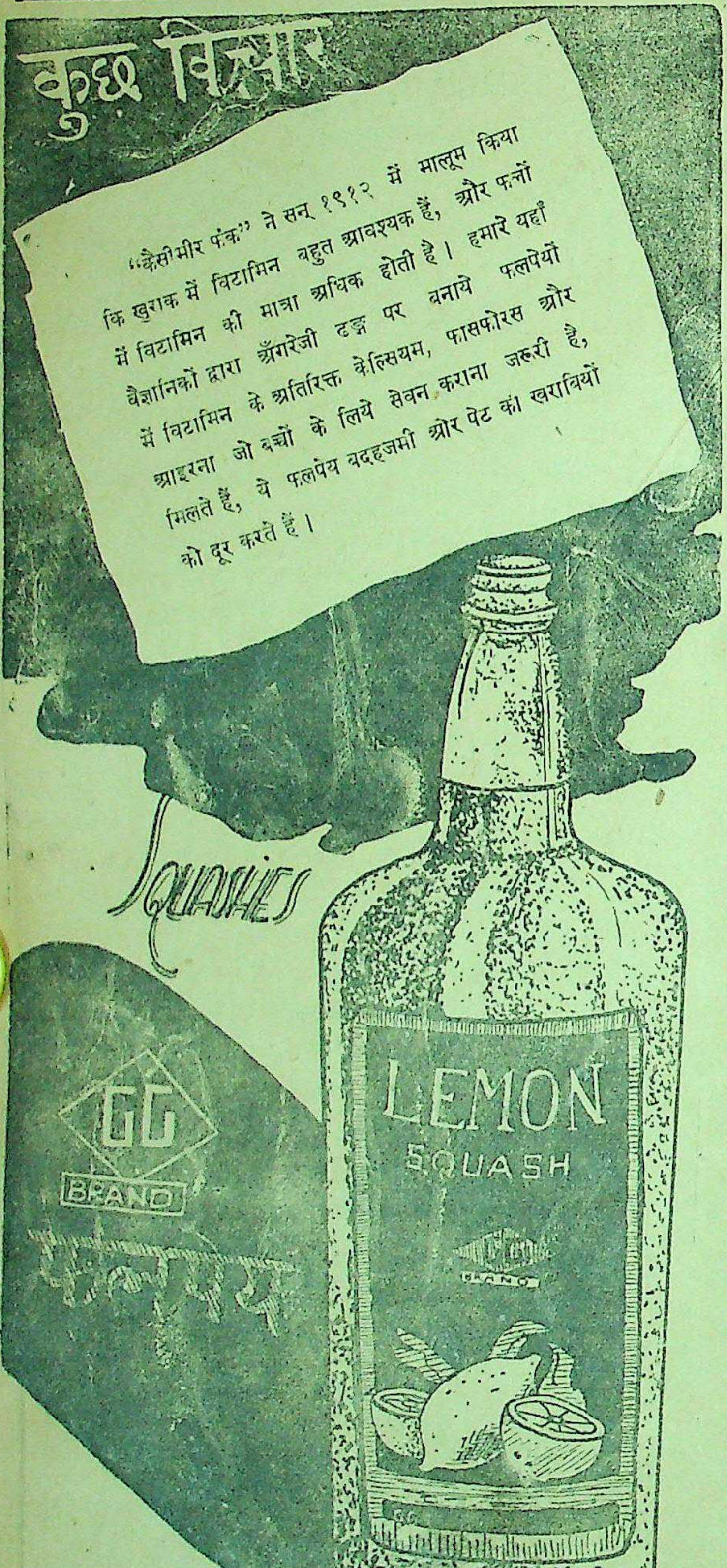

"कैसीमीर फंक" ने सन् १९१२ में मालूम किया कि खुराक में विटामिन बहुत आवश्यक हैं, और फलों में विटामिन की मात्रा अधिक होती है। हमारे यहाँ वैज्ञानिकों द्वारा अँगरेजी ढङ्ग पर बनाये फलपेयों में विटामिन के अतिरिक्त केल्सियम, फासफोरस और आइरना जो बच्चों के लिये सेवन कराना जरूरी है, मिलते हैं, ये फलपेय बदहजमी और पेट की खराबियों को दूर करते हैं।

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इंडस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी बाजार देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मेसर्स गिरधरलाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली।

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ

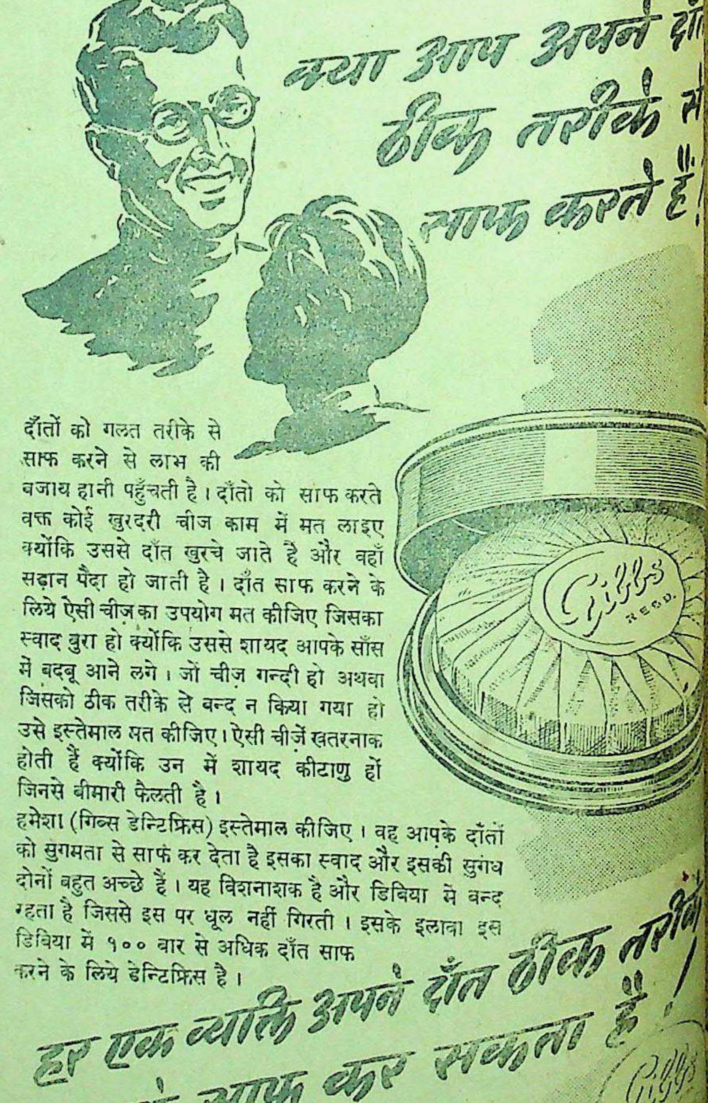
क्या आप अपने दाँ
ठीक तरीके स
साफ करते हैं!
Gibbs REGD.
हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

दाँतों को गलत तरीके से साफ करने से लाभ की बजाय हानी पहुँचती है। दाँतो को साफ करते वक्त कोई खुरदरी चीज काम में मत लाइए क्योंकि उससे दाँत खुरचे जाते है और वहाँ सड़ान पैदा हो जाती है। दाँत साफ करने के लिये ऐसी चीज़ का उपयोग मत कीजिए जिसका स्वाद बुरा हो क्योंकि उससे शायद आपके साँस में बदबू आने लगे। जो चीज़ गन्दी हो अथवा जिसको ठीक तरीके से बन्द न किया गया हो उसे इस्तेमाल मत कीजिए। ऐसी चीज़ें खतरनाक होती हैं क्योंकि उन में शायद कीटाणु हों जिनसे बीमारी फैलती है।

हमेशा (गिब्स डेन्टिफ्रिस) इस्तेमाल कीजिए। वह आपके दाँतों को सुगमता से साफ कर देता है इसका स्वाद और इसकी सुगंध दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है और डिबिया में बन्द रहता है जिससे इस पर धूल नहीं गिरती। इसके इलावा इस डिबिया में १०० बार से अधिक दाँत साफ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GD. 12-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON,

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, २२ अप्रैल, १६४५

वर्ष ७, संख्या ३४]

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

रूस के विधाता स्टेलिन सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में सम्मिलित होने नहीं जा रहे हैं।

बर्लिन का समाचार है कि मार्शल जुकोव ने अपने ओडर के उस पार के मोर्चे से, जो जर्मन राजधानी बर्लिन से केवल ३१ मील दूर है, तोपों की भयंकर अग्नि-वर्षा करने के बाद हमला बोल दिया है। बर्लिन पर लाल सेना का पूरे वेग से हमला किसी भी क्षण हो सकता है।

* * *

पेरिस रेडियो की खबर है कि मित्र पैराशूट सेनायें बर्लिन से १५ मील के फासले पर उतारी गईं और उन्होंने एलबे नदी पार करके पूर्व में बढ़नेवाली जनरल सिम्पसन की सेनाओं से सम्पर्क स्थापित कर लिया। पश्चिमी मोर्चे पर अब कोई भी घटना घट सकती है। ब्रिटिश अमेरिकन तथा रूसी सेनायें जर्मनी को दो भागों में विभक्त कर देने के लिये प्रयत्नशील हैं।

* * *

पश्चिमी फ्रांस के तट पर जिन क्षेत्रों में जर्मन फौजें बच रही हैं, उनका सफाया करने के लिए जल-थल आकाश से एक नया आक्रमण किया गया है। अनुमान किया जाता है कि इन क्षेत्रों में १,००,००० जर्मन फौजें हैं। जर्मन नगर आज घरौंदों की तरह ध्वस्त होते चले जा रहे हैं। दक्षिण में जनरल पैटन ड्रेसडेन से ५० मील की दूरी तक पहुँच गई हैं।

* * *

श्री कै० एम० मुन्शी 'गांधीवाद' को युग की देन समझते हैं।

अमरीका के नये प्रेसीडेंट ट्रूमान ने अपने प्रथम सरकारी वक्तव्य में कहा कि संसार आश्वस्त रहे, हम पूर्व तथा पश्चिम के दोनों मोर्चों पर अपनी सारी शक्ति से युद्ध सफलतापूर्वक तब तक चलायेंगे जब तक वह समाप्त न हो जायगा।

* * *

प्रेसीडेंट ट्रूमान सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में सम्मिलित होने की आशा नहीं करते हैं। क्योंकि उनके पास बहुत कार्य हैं। कहा जाता है कि वह सम्मेलन के लिए तथा शान्ति स्थापित रखने के हेतु विश्व-संघ के संगठन के लिए बड़े उत्साहशील हैं।

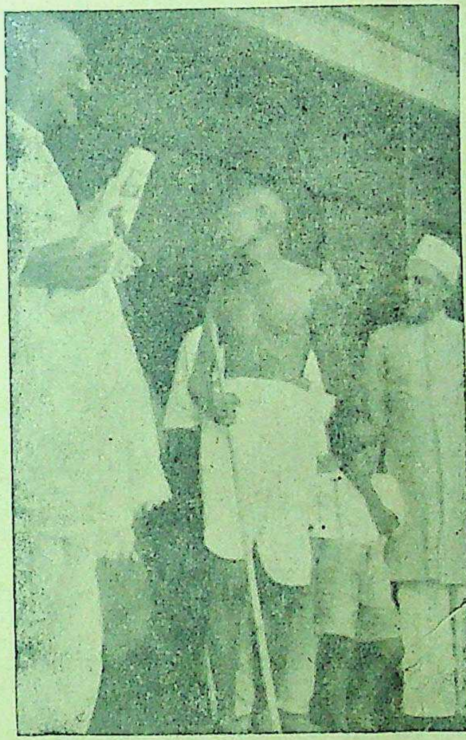

बम्बई में महात्मा गांधी की सीमा प्रांतीय गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ से भेंट।

पेरिस का समाचार है कि टर्की के भूतपूर्व जर्मन राजदूत और कूटनीतिज्ञ वान पेपेन को रूर के मोर्चे पर कैद कर लिया गया है। जर्मन राष्ट्र के इस भूतपूर्व चांसलर को ग्लाइडर सैन्यदलों ने ११ अप्रैल को गिरफ्तार किया।

* * *

श्रीमती सरोजिनी नायडू, श्री भूलाभाई देसाई और अन्य अनेक नेताओं के हस्ताक्षरों से एक अपील आज प्रकाशित हुई है, जिसमें महादेव देसाई-स्मारक-कोष की स्थापना करते हुए २५ लाख रु० की अपील की गई है।

* * *

१२ अप्रैल को प्रेसीडेन्ट रूजवेल्ट की मृत्यु अकस्मात् मस्तिष्क की शिराएं फट जाने से हो गई। उनके स्थान पर उपर प्रपति हेनरी ट्रूमान प्रेसीडेन्ट नियुक्त हुए हैं।

पार्लामेन्ट के मजदूर क्षेत्रों में सप्रू-कमेटी की योजना में विशेष दिलचस्पी ली जा रही है और उसका पक्ष समर्थन किया जा रहा है।

* * *

सानफ्रान्सिस्को सम्मेलन के अवसर पर श्रीमती विजया लक्ष्मी पंडित भारतीय राष्ट्रीय दलों की मुख्य वक्ता रहेंगी। वे इसी सप्ताह केलीफोनिया जा रही हैं और मार्ग में अनेक स्थानों पर भाषण देंगी।

* * *

लार्ड वैवेल राजनीतिक अड़ंगा दूर करने के उद्देश्य से सेना विभाग को छोड़ कर भारत सरकार के सभी विभाग प्रतिनिधि भारतीयों के हाथ मे सौंपने को तैयार हैं। पर कहा जाता है कि मि० एमरी अब भी कोई वास्तविक अधिकार दिये जाने का विरोध कर रहे हैं।

* * *

एसेम्बली के क्षेत्रों में यह अफवाह गरम है कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी के नेता इस महीने के अन्त के पहले ही रिहा कर दिये जाएँगे।

* * *

महात्मा गांधी का उर्दू में लिखा हुआ एक पत्र विहार के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री मि० यूनुस को मिला है जो संयुक्त निर्वाचन प्रणाली तथा अल्पसंख्यकों को अधिक वोट दिये जाने के समर्थन में लिखा गया है।

* * *

यूनाइटेड प्रेस को ज्ञात हुआ है कि सिन्ध में मुसलिम लीग तथा कांग्रेस के बीच वार्ता भंग हो गई है। मुसलिम लीग ने खाँ बहादुर मौलाबख्स को सर्वदल मन्त्रिमण्डल में शामिल करने से इनकार कर दिया है।

* * *

ज्ञात हुआ है कि बंगाल के अधिकारीगण कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुल-कलाम आजाद का तबादला बंगाल में किए जाने पर आपत्ति प्रकट कर रहे हैं। मौलाना आजाद अभी तक अहमदनगर किले में नजरबन्द हैं।

* * *

महामना मालवीय जी ने काशी विश्वविद्यालय में 'विश्वनाथ मंदिर' के लिये जनता से धन की अपील की है।

केन्द्रीय एसेम्बली के सदस्य मि० हुसैन भाई लालजी ने लार्ड वैवेल को एक तार भेजा है जिसमें उन्होंने कहा कि भारत के २ करोड़ शिया मुसलमानों को कोई विधान तब तक स्वीकृत नहीं होगा जब तक उन्हें प्रान्तों में तथा केन्द्र में उनकी जनसंख्या के अनुपात से पर्याप्त अधिकार और पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त न हो। मि० हुसैन भाई लालजी का यह भी कहना है कि शिया मुसलमान मुसलिम लीग को अपनी प्रतिनिधि नहीं मानते।

* *

मध्य प्रान्तीय सरकार ने नागपुर तथा जबलपुर की जेलों से आज और केल २० से अधिक नजरबन्द रिहा किये जिनमें सेठ गोविन्ददास, श्री वामनराव जोशी, नागपुर टाइम्स के मैनजिंग डाइरेक्टर श्री बी० सी० शुक्ल तथा मध्य प्रान्तीय एसेम्बली के कुछ सदस्य हैं।

* * *

खाँ अब्दुल गफ्फार-खाँ ने यहाँ आज शाम को गांधी मैदान में एक विराट सभा में भाषण करते हुए कहा कि मैं वर्तमान परिस्थिति में पद ग्रहण करने का विरोधी हूँ, क्योंकि समस्त शक्ति सरकार के हाथों में है। मैं बिना शक्ति के नहीं बल्कि शक्ति के साथ सरकार चाहता हूँ।

* * *

देश के नेताओं ने स्वर्गीय श्री महादेव देसाई के स्मृति-कोष के लिये अपील की है।

सम्पादक का पृष्ठ

स्वर्गीय रूजवेल्ट

अमरीका के प्रेसिडेंट रूजवेल्ट का स्वर्गवास हो गया। अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में यह घटना हलचल उत्पन्न करनेवाली है। वर्तमान युद्ध में मित्र-राष्ट्रों के एक संयुक्त मोर्चे की स्थापना में प्रेसिडेंट रूजवेल्ट का प्रमुख हाथ रहा है। युद्ध के प्रारम्भिक समय में ऐसा जान पड़ता था कि जर्मनी का आतंक सारे संसार में थोड़े ही समय में व्याप्त हो जायेगा, किन्तु जब से अमरीका ने ब्रिटेन का युद्ध में साथ दिया और सोवियट रूस भी सम्मिलित किया गया, तब से युद्ध-प्रगति का पांसा पलटना प्रारम्भ हुआ। इस कार्य में सबसे प्रबल सहयोग प्रेसिडेंट रूजवेल्ट का रहा है। उन्होंने अपनी राजनीतिक बुद्धिमानी तथा युद्ध-सामग्री तथा सैनिकों के संगठन से ऐसा चमत्कार दिखाया कि आज यह अनुभव किया जा रहा है कि ब्रिटेन का भाग्य प्रबल है, क्योंकि प्रेसिडेंट रूजवेल्ट ऐसे उसे सहायक मिल गये। जर्मनी ही नहीं जापान भी भावी आशंका का अनुभव करने लगा और देखते देखते अब तो वह स्थिति आ गई है कि योरप में ही नहीं सुदूर पूर्व में भी युद्ध का अंतिम निर्णय मित्रराष्ट्रों के ही हाथों द्वारा होगा। युद्ध जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहा था, ऐसे समय में प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने युद्ध में कूदने की घोषणा की थी, किन्तु अब जब कि उसका अंत होने जा रहा है, उनका वियोग वास्तव में खेदजनक ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के लिए एक दुर्भाग्य की बात है।

प्रेसीडेंट रूजवेल्ट अमरीकन जनता में बड़े ही लोकप्रिय थे। इसीलिए प्रेसीडेंट के पद के लिए उन्हीं का नाम बार बार आता रहा। स्वर्गीय वेंडन विल्की और न्यूयार्क के गवर्नर डेवी ऐसे लोकप्रिय अमरीकन नेताओं को चुनाव में उनके मुकाबले हार खानी पड़ी। अमरीका ऐसे प्रजातंत्रात्मक देश में विरोधी दलों के होते हुए भी प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने संसार में शांति स्थापित करने के लिए महायुद्ध की जिम्मेदारी अपने तथा राष्ट्र के कंधों पर ली थी और इसी विचार से उन्होंने सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन का भावी प्रोग्राम बनाया गया था। किन्तु उनके न रहने से यदि इस प्रकार के सामूहिक कार्य में कुछ कठिनाई का अनुभव किया जाय तो अनिवार्य है। फिर भी यह प्रसन्नता की बात है कि नये प्रेसिडेंट ट्रूमैन ने अपनी भावी नीति प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के बताये हुए मार्ग पर चलाने की घोषणा की है। इससे ऐसा जान पड़ता है कि प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के मिशन को सफलता दिलानेवाले अमरीकन दल अभी पूर्णतः संगठित हैं। सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन में उपस्थित की जानेवाली योजनाओं को कार्य रूप में परिणित कराने की अभिलाषा भी अभी जाग्रत है। किन्तु प्रेसिडेंट रूजवेल्ट के स्वर्गवास से संसार में जो स्थान रिक्त हुआ है, उसकी पूर्ति होनी असम्भव है और भावी संसार उनके महान् कार्यों का स्मरण करता रहेगा!

* * *

सेन फ़्रांसिस्को सम्मेलन

युद्ध के बाद संसार में शांति और सुव्यवस्था की स्थापना की योजना और उपायों पर विचार-विनिमय करने के निमित्त संसार के राष्ट्रों का जो सम्मेलन सेन फ्रांसिस्को में होनेवाला था, उसका समय नजदीक आ गया है। स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट की ही प्रेरणा से यह सम्मेलन बुलाया गया है। सम्मेलन की सफलता के लिए वह पूर्ण रूप से प्रयत्नशील थे। किन्तु उनके आकस्मिक स्वर्गवास से परिस्थिति पर थोड़ा बहुत प्रभाव पड़ना अनिवार्य है, फिर भी नये प्रेसिडेंट ट्रूमान के कथनानुसार सम्मेलन की सफलता में पूर्ण विश्वास प्रकट किया है। सबसे बड़ी समस्या इस वक्त यह दिखाई दे रही है कि क्या वास्तव में जिस उद्देश्य से सम्मेलन बुलाया जा रहा है, उसकी पूर्ति पूर्णतः होगी या नहीं? क्या संसार के महान् राष्ट्रों ने एकमत से सम्मेलन में सम्मिलित होने का निश्चय कर लिया है? क्या स्टेलिन, चर्चिल और नये प्रेसिडेंट ट्रूमान सम्मेलन में सम्मिलित होंगे? इसी प्रकार क्या अन्य राष्ट्रों के अधिपति व्यक्तिगत रूप से सम्मेलन में शामिल होंगे? समाचारों से ज्ञात हुआ है कि सोवियट रूस की ओर से उसके वैदेशिक सचिव मिस्टर मोलोटोव और ब्रिटेन की ओर से मिस्टर ईडन सम्मेलन में प्रतिनिधित्व करेंगे। अमरीका के नये प्रेसीडेंट ट्रूमान ने सम्मेलन में सम्मिलित होने से असमर्थता प्रकट की है। तात्पर्य यह है कि भविष्य में संसार पर अपनी प्रभुता की स्थापना के इच्छुक जब इन तीनों राष्ट्रों के प्रधान अधिकारियों को इतना समय नहीं है कि वह सम्मेलन में सम्मिलित हो सकें और परिणामस्वरूप उन्हें अपने प्रतिनिधि भेजने पड़ रहे हैं तब अन्य राष्ट्रों के अधिनायकों अथवा उनके प्रतिनिधियों का सम्मेलन में सम्मिलित होना क्या महत्त्व रखता है?

सम्मेलन सफल होगा या असफल, यह तो बाद की बात है किन्तु साम्राज्यवादी राष्ट्रों की एक दूसरे के प्रति शंकित भावना प्रकट हो रही है। प्रत्येक को अपने स्वार्थों पर विशेष ध्यान है। वह व्यक्तिगत रूप से दूर से सम्मेलन के निर्णय की प्रतिक्रिया देखना चाहते हैं। प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के स्वर्गवास से यह समस्या और भी विचारणीय हो गई है। किन्तु एक बात जो हमें कहनी है वह यह है कि यदि सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन को सफलता प्राप्त होनी है तो यह आवश्यक है कि संसार के पराधीन राष्ट्रों के साथ बलवान राष्ट्रों को न्याय करना पड़ेगा। जब तक सभी राष्ट्र संसार में एक पद और मर्यादा से शांति-स्थापना का प्रयत्न नहीं करते तब तक वास्तविक व्यवस्था की स्थापना असम्भव है। उदाहरण के लिए भारत को लेना चाहिए। उसके सम्बन्ध में भी कोई निश्चित निर्णय होना चाहिए। ब्रिटेन को इस बात के लिए मजबूर किया जाना चाहिए कि वह भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करे। महात्मा गांधी ने इस सम्बन्ध में जो वक्तव्य दिया है उस पर सिद्धांत रूप से विचार होना चाहिए। गांधी जी का कहना है—"शांति की स्थापना के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि भारत को विदेशी प्रभुत्व से पूर्ण छुटकारा मिले, इसलिए नहीं कि वह साम्राज्यवादी प्रभुत्व का एक उत्कट उदाहरण है, बल्कि इसलिये कि वह एक विशाल, प्राचीन तथा सभ्य देश है, जो सन् १९२० से अपने सत्य और अहिंसा के हथियार से स्वाधीनता का युद्ध कर रहा है।" क्या संसार के साम्राज्यवादी इस समस्या की ओर ध्यान देंगे? वास्तव में संसार में शान्ति स्थापना का रहस्य यही है कि बलवानों-द्वारा निर्बलों के शोषण का अंत होना आवश्यक है। सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन में यदि साम्राज्यवादी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने इस आधार पर शांति स्थापना की योजना के उपाय ढूँढ़ निकालेंगे तो सम्मेलन सफल होगा और संसार में ऐसी व्यवस्था स्थापित होगी जिसमें युद्ध और हिंसा का नाम-निशान भी न होगा।

रेडियो आन्दोलन—अगला कदम

लेखक, श्री रविशंकर शुक्ल, बी० ए०, एल-एल० बी०

रेडियो का सबसे अधिक महत्त्व उन लोगों के लिए है जिनके पास रेडियो है। इसलिए रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति के विरुद्ध आन्दोलन में रेडियो लाइसेन्सदारों का सबसे प्रमुख भाग होना चाहिए। रेडियो की वर्त्तमान नीति से सबसे अधिक हानि उन्हीं को है और उसमें परिवर्त्तन होने से सबसे अधिक लाभ भी उन्हीं को होगा। वास्तव में यह सब आन्दोलन उन्हीं के लिए है। इसलिए रेडियो लाइसेन्सदारों को अपना कर्त्तव्य समझ कर अपने हितों की रक्षा के लिए और हिन्दी की मान-रक्षा के लिए रेडियो-विरोधी आन्दोलन से पूर्ण सहयोग करना चाहिए और आवश्यकतानुसार त्याग भी करना चाहिए। उनके सामने निम्नलिखित योजना रखी जाती है—

सब हिन्दी भाषी रेडियो लाइसेन्सदार प्रतिज्ञा करें कि वे रेडियो की हिन्दुस्तानी खबरों, 'हिन्दुस्तानी' समाचार-आलोचनाओं तथा रेडियो-विभाग-द्वारा लिखित अन्य युद्ध-प्रचारात्मक 'हिन्दुस्तानी' रूपकों और भाषणों की (जैसे दिल्ली का 'जंगनामा' बम्बई का 'हिन्दुस्तानी' रेडियो रेकानेसैन्स) को सुनना बिलकुल बन्द कर देंगे और तब तक नहीं सुनेंगे जब तक रेडियो-विभाग अपनी नीति नहीं बदलेगा और जब तक सब प्रकार के प्रोग्राम उचित अनुपात से हिन्दी में अलग से ब्राडकास्ट नहीं किये जायँगे। सब लाइसेन्सदार अपनी इस प्रतिज्ञा की सूचना वाइसराय को निम्नलिखित मजमून का पत्र लिखकर दें—

हिज एक्सेलेन्सी श्रीमान् वाइसराय महोदय और गवर्नर जनरल, नई दिल्ली।

अखिल भारतीय रेडियो प्रान्तों की भाषाओं को छोड़कर 'हिन्दुस्तानी' के नाम से जिस भाषा का प्रयोग करता है उसमें तथा उर्दू में कोई अन्तर नहीं है। वह हमारी भाषा नहीं है। परिणाम-स्वरूप हमें 'हिन्दुस्तानी' समाचार आदि को सुनना बन्द कर देना पड़ा है। हमारी भाषा हिन्दी है, पर बार-बार ध्यान दिलाये जाने पर भी अखिल भारतीय रेडियो के अधिकारियों ने हमारे लिए हिन्दी में समाचार आदि ब्राडकास्ट करने की व्यवस्था नहीं की है। जब तक हिन्दी में समाचार आदि नहीं होंगे तब तक उन्हें नहीं सुन सकेंगे। इसलिए श्रीमान् से प्रार्थना करते हैं कि दि बम्बई, लाहौर, पेशावर आदि के स्टेशनों से हिन्दी भाषी प्रान्तों तथा हि भाषी भारतीयों के लिए समाचार आ सब प्रोग्रामों को हिन्दी में ब्राड कराने की शीघ्र व्यवस्था की जाय।

लाइसेन्स नम्बर — अपना पूरा नाम और पता

इस पत्र की नकल हस्ताक्षर लाइसेन्सदार प्रधान मन्त्री, हिन्दी-सा सम्मेलन, जीरो रोड, इलाहाबाद को भेज दें ताकि सम्मेलन उनकी इस प्र का पूर्ण उपयोग कर सके। जैसे लाइसेन्सदारों के पत्र आते जायँगे वैसे उनके नाम, संख्या इत्यादि का वि सम्मेलन की ओर से समाचार पत्रों में वाया जा सकेगा और यथेष्ट पत्र हो जाने पर उनको लेकर सम्मेलन की से एक डेपुटेशन वाइसराय से सकेगा।

सर सुलतान अहमद या रेडि विभाग के किसी दूसरे अधिकारी कुछ लिख कर भेजने की जरूरत है, क्योंकि हमें उनसे न्याय की कोई आ नहीं है।

हिन्दी के प्रचारकों, कार्यकर्ता प्रचार और साहित्य-संस्थाओं तथा चिन्तकों से भी प्रार्थना है कि वे दिये हुए मजमून के स्मरण-पत्र छपवा और उन पर अपने-अपने रेडियो लाइसे दारों के हस्ताक्षर (लाइसेन्स नम्बर इत् सहित) करायें। इस कार्य में छात्रों छात्राओं से बड़ी सहायता मिल है, क्योंकि अपरिचितों के घरों में जाने पर उतनी रोक-टोक नहीं हो प्रत्येक लाइसेन्सदार के हस्ताक्षर स्मरण-पत्रों पर कराये जायँ। भर पर (एक-एक स्मरण-पत्र पर २० लाइसेन्सदारों से हस्ताक्षर आसानी लिये जा सकते हैं) उनमें से एक स्मर पत्र वाइसराय के पास और उसके का दूसरा प्रधान मन्त्री, हिन्दी सा सम्मेलन के पास भेज दिया जा हस्ताक्षर कराते समय लाइसेन्सदारों वचन ले लिया जाय कि वे 'हिन्दुस समाचार आदि को न सुनने की प्र का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और उनसे अनुरोध किया जाय कि वे व्यक्तिगत से भी स्मरण-पत्र के मजमून के वाइसराय और प्रधान मन्त्री हिन्दी-साहि सम्मेलन को लिख भेजें।

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एक किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

रविवार, २२ अप्रैल. १९४५

स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट

संसार की राजनीति में अमरीका का प्रमुख भाग

अमरीका के प्रेसिडेंट और संसार के सुप्रसिद्ध राजनीतिज्ञ रूजवेल्ट का एकाएक स्वर्गवास हो गया। प्रेसिडेंट अमरीका के ही नहीं, संसार के महान् व्यक्तियों में से एक थे। प्रेसिडेंट रूजवेल्ट ने युद्ध में सम्मिलित हो कर उसका पाँसा ही पलट दिया और आज मित्रराष्ट्र जिस गति से विजयी हो रहे हैं उसका अधिकांश श्रेय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट को प्राप्त है। संसार में अशांति उत्पन्न करने वाले राष्ट्रों के विरुद्ध उन्होंने जो संयुक्त मोर्चा स्थापित किया है उसका परिणाम दिखाई दे रहा है। नये प्रेसिडेंट ट्रूमन ने भी अपने पूर्वाधिकारी का पदानुसरण करने की घोषणा की है। प्रेसिडेंट रूजवेल्ट की राजनीतिज्ञता, चतुराई, बुद्धिमत्ता तथा संसार में शांति स्थापना की प्रवृत्ति तथा उनके कार्य इतिहास के पन्नों में अमर रहेंगे।

अमरीका का राष्ट्रीय गीत

मेरे देश, मेरे देश,
स्वतन्त्रता के मधुमय देश,
करता मैं तेरा गुण गान।
पुरखों ने समाधि है पाई
जहाँ धर्मवीरों के गौरव की गाथा रहती है छाई।
गूँज उठे पर्वत पर्वत से
स्वतंत्रता का मधुर बखान।
जन्मभूमि है मेरे देश;
हे स्वतन्त्र जनता के देश,
प्रिय मुझको है तेरा नाम।
प्रिय तेरी चट्टान मनोहर
तेरे झरने, पर्वत मंदिर।
मेरा हृदय नाच उठता है
जब मैं उनका करूँ बखान।

अमरीका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट का, दिमाग की नस फट जाने से, एकाएक देहांत हो गया। इस समय सारे संसार की आँखें अमरीका की ओर लगी हैं। अमरीका संसार का सबसे अधिक धनी देश है। संसार का तीन चौथाई सोना अमरीका के सरकारी खजाने में बन्द है। अन्न और फलों की यहाँ असीम उपज होती है। वसुन्धरा रत्न-गर्भा है। उसकी कोख में सोना, लोहा, ताँबा, टीन, कोयला और मिट्टी के तेल की अपरिमित राशि दबी है। विज्ञान की सर्वोच्च उन्नति कर लेने के कारण यहाँ के कारखानों में जितनी मोटरें, वायुयान, तोपें, मशीनें और कल-पुर्जे बन सकते हैं उतने और कहीं नहीं। यह समृद्ध और शक्तिशाली राष्ट्र कहाँ तक अँगरेजों की सहायता कर रहा है—यह प्रश्न आज सारा संसार कर रहा है। इसका ठीक ठीक उत्तर केवल एक व्यक्ति दे सकता था और वह था—प्रजासत्तावाद का समर्थक और अमरीका का राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट।

* * *

अमरीका में राष्ट्रपति का चुनाव पाँच साल के लिए होता है। वहाँ यह प्रथा चली आती थी कि कोई भी व्यक्ति दो बार से अधिक उस पद के लिए चुना नहीं जा सकता। किन्तु इस प्रथा को तोड़कर रूजवेल्ट १९४० में तीसरी बार राष्ट्रपति चुने गये।

रूजवेल्ट के दूर के चाचा थियोडोर रूजवेल्ट इस शताब्दी के आरम्भ में अमरीका के राष्ट्रपति थे। उस समय भावी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट को कोई न जानता था। वे वकालत करते थे। उनके पूर्व पुरुष हालैण्ड से आये थे और न्यूयार्क में जहाँ आज गगनचुम्बी भवन बने हुए हैं वहाँ वे खेती किया करते थे। उनके पिता रेल-विभाग में थे। बहुत-सा धन कमाकर वे अपने घर पर शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ने वहीं अपने पिता के पास रहकर वकालत आरम्भ की। उनका विवाह एक बहुत दूर की रिश्तेदार ऐना रूजवेल्ट से १९०५ में हुआ। विवाह में तत्कालीन राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट भी सम्मिलित थे।

अमरीका के प्रेसिडेंट रूजवेल्ट का स्वर्गवास गत सप्ताह हो गया।

फ्रैंकलिन रूजवेल्ट ने सार्वजनिक जीवन में भाग लेना आरम्भ कर दिया और अन्त में १९१९ में वे न्यूयार्क के गवर्नर चुने गये। १९३२ में वे राष्ट्रपति के पद के लिए अपनी पार्टी से तत्कालीन राष्ट्रपति हूवर के विरुद्ध खड़े किये गये। अमरीका में दो राजनैतिक दल हैं—डिमोक्रैट और रिपब्लिकन। रूजवेल्ट को डिमोक्रैटों ने नामजद किया था। वे चुन लिये गये। १९३६ में दूसरी बार वे फिर खड़े किये गये। फिर रिपब्लिकनों की हार हुई। तीसरी बार १९४० में बहुत बड़े विरोध के होते हुए भी और अमरीका की रूढ़ियों के विरुद्ध वे तीसरी बार राष्ट्रपति चुने गये। इसका मुख्य कारण यह था कि योरप में भीषण युद्ध चल रहा था। रूजवेल्ट की नीति से अधिकांश जनता सन्तुष्ट थी। ऐसे संकट के समय में राष्ट्र की नीति और शासन में परिवर्तन करना अमरीकन जनता ने पसन्द नहीं किया।

* * *

रूजवेल्ट यह जान गये हैं कि हिटलरका असल उद्देश्य सारे संसार पर

रहे हैं।

राष्ट्रपति और ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री चर्चिल की आपस में मुलाकात हुई। मुलाकात में दो प्रजासत्तात्मक राष्ट्रों के प्रतिनिधियों ने संसार के भविष्य के बारे में कुछ निश्चय किये और युद्ध के बाद के संसार को कैसे संगठित किया जायगा—इस बात का निर्णय किया। सबसे मुख्य बात यह तै पाई कि नाजी जर्मनी को हराकर उसे ऐसा कर दिया जाय कि वह भविष्य में संसार की शान्ति को भंग न कर पाये। जब तक ब्रिटेन की विजय नहीं होती तब तक जर्मनी और उसके सहयोगियों से संसार को छुटकारा नहीं मिल सकता।

आज-जैसा

था! वह सुख-

और शान्तिमय था। उसके द्वार पर

ई याचक आये और कुछ न पाये, तो

ा मजाल कि बिना कुछ पाये उसके द्वार से लौट जाये। हाँ, कभी ऐसा था उस राधा का जीवन।

लेकिन तभी अपने वर्तमान पर आकर अपनी उस दयनीय और अकल्पनीय स्थिति को पाकर राधा ने अपने मुँह को नीचे गिराकर अधीर और व्याकुल भाव में कहा 'और आज...आज!...

'हाँ, आज तो सभी समाप्त हुआ।

ो लिप-पुत गया। उसने कहा—अरी

ा! जो कुछ तुझे नहीं देखना था और

सामने नहीं आना था, वही तो आया

आज! तुझे वही आज मिला है। जिस

क की निर्मल ज्योति के नीचे तेरा

ग था, वैभव था, उसी के आस-पास

भी खड़ा था—यह भी होता था।

यह भी मिलना था। नियति को

यह भी देना था, राधा!...

यह कहते बरबस ही राधा का स्वर

गया। जिस भूख की व्यथा से उसका

सहारे बैठा देख, उसका [illegible] के पास मुँह ले जाकर बोले—माँ...

किन्तु वह राधा तब भी नहीं बोली। वह तब भी नहीं हिली-डुली। वह स्थिर हुई अपने घुटनों पर जिस प्रकार सिर रखे थी उसी प्रकार गुमसुम बैठी रही।

और वे बच्चे थे। अपनी माँ को पाकर जैसे फिर चेतना से जागकर रोने लगे और अपनी भूख का निवारण करने के लिए राधा के सूखे, दूधहीन स्तनों को चिचोड़ने लगे। वह बार-बार मा को पुकारते थे।

लेकिन तब भी राधा बोली थोड़े ही थी? वह इतने पर भी, उन व्याकुल, उन क्षुधा से पीड़ित बच्चों को देख थोड़े ही सकी थी। लगता था कि तब राधा नहीं थी। वह अपनी उस दुर्बल और भूखी आत्मा के पीछे-पीछे उस देह को छोड़ गई थी और उसका अन्त कर गई थी।

पास के रेडियो में कोई गा रहा था—

कब तक रहेंगे कैद हम, इतना दो बता दे...

लेकिन वह बच्चे थे, जो तब भी अपनी मा की छाती पर मुँह मार रहे थे, वे मारे जा रहे थे, राधा के वे भूखे बच्चे!...

हासपरिहास

भंग की तरंग

पटने में धोबियों के कपड़े लोगों ने लूट लिये क्योंकि वहाँ सभी जगहों की भाँति कपड़े की तंगी है। विहार में साहित्यकार ही नहीं प्रगतिशील भी हैं, जनता भी बड़ी बढ़ी चढ़ी है। सरकार से लड़ते न बन पड़ा तो धोबी से ही सही कुछ होना चाहिए।

* * *

रूस ने पोलैंड के प्रतिनिधियों का अपहरण कर लिया है। देखिये पौलैंड पर कैसी बीतती है। आरंभ अपहरण से है तो अंत भी कहीं हड़प से न हो ?

* * *

लोग कहते हैं कि अवध के रहनेवालों में वीरता की कमी होती है। इस कथन को अभी लखनऊ के एक नवाब साहब ने गलत कर दिखाया। बटेर की लड़ाई में आपने अपने विरोधी के पेट में करौली भोंक दी। नवाब साहब को चाहे जो सजा मिले पर आन-बान-शान तो रह ही गई।

रूजवेल्ट

ऐसे उसे सहायक मिल गये। जर्मनी ही हीं जापान भी भावी आशंका का अनुभव करने लगा और देखते देखते अब तो वह स्थिति आ गई है कि योरप में ही नहीं सुदूर पूर्व में भी युद्ध का अंतिम निर्णय मित्रराष्ट्रों के ही हाथों द्वारा होगा। युद्ध जब अपनी चरम सीमा पर पहुँच रहा था, ऐसे समय में प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने युद्ध में कूदने की घोषणा की थी, किन्तु अब जब कि उसका अंत होने जा रहा है, उनका वियोग वास्तव में खेदजनक ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के लिए एक दुर्भाग्य की बात है।

प्रेसीडेंट रूजवेल्ट अमरीकन जनता में बड़े ही लोकप्रिय थे। इसीलिए सीडेंट के पद के लिए उन्हीं का नाम र बार आता रहा। स्वर्गीय वेंडल विल्की और न्यूयार्क के गवर्नर डेवी ऐसे लोकप्रिय अमरीकन नेताओं को चुनाव में उनके मुकाबले हार खानी पड़ी। अमरीका ऐसे जातंत्रात्मक देश में विरोधी दलों के होते हुए भी प्रेसीडेंट रूजवेल्ट ने संसार में शांति थापित करने के लिए महायुद्ध की जिम्मेदारी अपने तथा राष्ट्र के कंधों पर ली थी और इसी विचार से उन्होंने सेनफ्रांसिस्को

लड़ाई तो लड़ाई, चाहे बटेर की हो या गौरैये की। और लड़ाई कहीं हो लखनऊ में या लंदन—खून ही बहेगा पानी नहीं बहेगा। वाजिदअली शाह का जमाना होता तो नवाब साहब को इस वीरता के लिये जागीर मिलती।

* * *

पता चला है कि इँगलैंड में परीक्षा-नली (टेस्ट-ट्यूब) द्वारा कम से कम तीन बच्चे पैदा हुए हैं। देखिये भारत कितना पिछड़ा है। यहाँ अभी यही नहीं निश्चय हुआ कि तलाक ठीक है या नहीं ? अखिल भारतीय-महिला-सम्मेलन अभी संभवतः जाग्रत नहीं हुआ है क्या ?

* * *

कोयला न मिलने के कारण शोलापुर की सब कपड़े की मिलें बन्द हो गई हैं। जिन्हें धोती पहनने की इच्छा हो वह चल कर रानीगंज और झरिया में कोयला खोदें।

मथुरा जिले में सरकार ने तीस लाख रुपये लगाकर रबड़ की खेती करायी और कुल चार पौंड रबड़ तैयार हुआ। सरकार के कर्मचारियों को पता ही नहीं रहा होगा कि मथुरा जिले में कौन पेड़ लग सकते हैं ? वह लोग यदि प्रिय-प्रवास देख लेते तो सब पेड़ों का नाम जो इस जिले में लग सकते हैं, मालूम हो जाता।

* * *

हरद्वार के अर्धकुंभ के मेले में हिन्दुस्तान बालचर तथा महावीर दल के स्वयंसेवक अँगरेजी में बिल्ला लगा कर घूम रहे हैं। शायद हिन्दी में लिखा होता तो बिल्ला से बिल्ली हो जाता।

* * *

अखबारों में छापा गया है कि काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से हरद्वार में हिन्दी का बड़ा प्रचार हो रहा है। क्या इस प्रचार का असर हिन्दुस्तान बालचर मंडल तथा महावीर दल पर नहीं पड़ा ?

* * *

कुछ लोग इस चेष्टा में हैं कि लन्दन में एक श्मशाम भूमि बनाई जायं जहाँ हिन्दू लोग मरने पर जलाये जायँ। आग देने के लिए डोम भारत से जायँगे कि वहीं [illegible] का कार्य करेंगे ?

संसार के [illegible] लन में सम्मिलित [illegible] लिया है ? क्या स्टेलिन, चर्चिल और प्रेसिडेंट ट्रूमान सम्मेलन में सम्मिलि होंगे ? इसी प्रकार क्या अन्य राष्ट्रों अधिपति व्यक्तिगत रूप से सम्मेलन शामिल होंगे ? समाचारों से ज्ञात हुआ कि सोवियट रूस की ओर से उसके वैदेशि सचिव मिस्टर मोलोटोव और ब्रिटेन ओर से मिस्टर ईडन सम्मेलनमें प्रतिनिधि करेंगे। अमरीका के नये प्रेसीडेंट ट्रूम ने सम्मेलन में सम्मिलित होने से असमर्थ प्रकट की है। तात्पर्य यह है कि भविष्य संसार पर अपनी प्रभुता की स्थापना इच्छुक जब इन तीनों राष्ट्रों के प्रध अधिकारियों को इतना समय नहीं है वह सम्मेलन में सम्मिलित हो सकें औ परिणामस्वरूप उन्हें अपने प्रतिनिधि भेज पड़ रहे हैं तब अन्य राष्ट्रों के अधिनायक अथवा उनके प्रतिनिधियों का सम्मेलन सम्मिलित होना क्या महत्त्व रखता है ?

सम्मेलन सफल होगा या असफल, य तो बाद की बात है किन्तु साम्राज्यवाद राष्ट्रों की एक दूसरे के प्रति शंकित भावन प्रकट हो रही है। प्रत्येक को अपने स्वार्थों पर विशेष ध्यान है। वह व्यक्तिगत रूप दूर से सम्मेलन के निर्णय की प्रतिक्रिय देखना चाहते हैं। प्रेसिडेंट [illegible]

लोग अनुमान लगा रहे हैं कि लार्ड वैवेल क्या ला रहे हैं ? इतना तो निश्चय ही है कि धोती न लाते होंगे क्योंकि वह जानते हैं कि विदेशी धोती अब भारत में बहुधा लोग नहीं पहनते। गेहूँ लाते न होंगे क्यों बोझा अधिक होगा। धान भी नहीं लाते होंगे क्योंकि इँग्लेंड में होता नहीं। रह गई विधान की बात। सो जब सर फीरोज खाँ ने कह ही दिया कि भारत में डोमिनियन स्टेट्स मिल गया, तब विधान कैसा ?

* * *

सपरू समझौता की रिपोर्ट छपी है उससे हिन्दू लोग असन्तुष्ट हैं। हिन्दुओं को प्रसन्न होना चाहिये कि छोटा भाई बड़े भाई के बराबर हो गया। सपरू कमेटी का यह चमत्कार है। एक बराबर चार के। ऐसा गणित कभी पहले सुना नहीं गया।

—अगड़धत्त शर्मा

डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू का स्वराज्य

केन्द्र में तथा प्रांतों में राष्ट्रीय सरकारों की स्थापना

भारत की राष्ट्रीय, जनता की आर्थिक तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के परिवर्तन को देखते हुए सप्रू कमेटी ने एक योजना प्रस्तुत की है जिससे वर्तमान अड़ंगे को हल किया जा सके। योजना की रूप-रेखा इस प्रकार है।

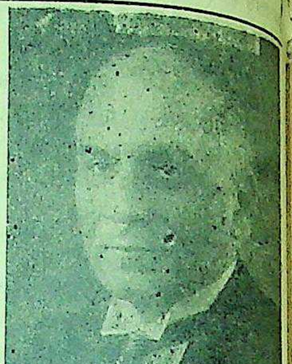

डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू।

"देश की आन्तरिक स्थिति, विशेषकर जनता की आर्थिक स्थिति को देखते हुए तथा अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की द्रुत-गति को देखते हुए और सब अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में तथा कोई शांति सम्मेलन हो तो उसमें भारत को अपने अधिकार के आधार पर तथा अपने प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिनिधित्व होने के विचार से, समिति जोरदार रूप में यह सिफारिश पेश करती है कि तुरन्त ही निम्न रूप से कार्रवाई की जाय:—

(१) सब राजबन्दी तथा नजरबन्द तुरन्त रिहा कर दिये जायँ।

(२) शाही घोषणा द्वारा भारत को एक स्वतन्त्र राज्य घोषित किया जाय और ब्रिटिश राष्ट्र समूह (कामन वेल्थ) के किसी उपनिवेश (डोमीनियन) के समान ही उसे समझा जाय, किसी तरह कम नहीं। भले ही नये विधान के बनाये तथा अमल में आने तक भारत का शासन १९३५ के शासन-कानून के अनुसार हो, जिसके साथ न्यूनतम संशोधन हो—

(३) (अ) उपर्युक्त कानून की ९३ वीं धारा के अनुसार विभिन्न प्रान्तों में जो घोषणायें जारी की गई हैं वे वापस ले ली जायँ और धारा-सभाओं को अपना सामान्य कार्य करने दिया जाय।

(ब) कानून की धाराओं के अनुसार उन प्रान्तों में लोकप्रिय मन्त्रिमण्डलों की पुनः स्थापना हो और वे कार्य करें।

(स) ऐसे मन्त्रिमण्डलों के गठन में प्रधान मन्त्री जो धारा-सभा में बहुमतवाले सबसे बड़े दल का प्रतिनिधित्व करता हो, जहाँ तक सम्भव हो, मन्त्रिमण्डल में धारा-सभा के उन व्यक्तियों को भी शामिल करे जिन्हें कि विश्वास प्राप्त हो।

(४) ब्रिटिश भारत के समस्त प्रान्तों में प्रान्तीय स्वराज्य की पुनः स्थापना के साथ ही, केन्द्र में एक राष्ट्रीय सरकार स्थापित की जाय जो कि वर्तमान कार्यकारिणी (एक्जीक्यूटिव कौंसिल) का स्थान ग्रहण करे। इसके लिए समिति निम्न दो सुझावों को रखती है जिनमें से यदि एक पसन्द न हो, तो दूसरा अपनाया जाय।

पहला सुझाव

(अ) १९३५ के भारत शासन-कानून की ५वीं धारा में इस प्रकार संशोधन किया जाय कि सम्राट् एक घोषणा कर सकें जिससे कि उपर्युक्त धारा की उपधारा (२) के अनुसार सब को चालू करने के लिए देशी राज्यों का प्रवेश अनिवार्य न रहे और उनको बिना ही भारत का संघ बनाया जाय। कानून ६वीं धारा के अनुसार रियासतें जब चाहें संघ में प्रवेश कर सकती हैं।

(ब) १९३५ के भारत शासन-कानून का द्वितीय भाग प्रस्तावित संशोधनों के साथ अमल में लाया जाय और उस भाग में उल्लिखित व्यवस्था के अनुसार संघीय धारा-सभा की दोनों व्यवस्थापिकाओं के चुनाव कराने तथा मन्त्रियों की कौंसिल नियुक्त करने के लिए अविलम्ब कार्रवाई की जाय लेकिन इसके साथ यह शर्त रहे कि ऐसे मन्त्रिमण्डल के गठन में प्रधान मन्त्री जो कि धारा-सभा में सबसे बहुमतवाली पार्टी का प्रतिनिधि हो, तक सम्भव होगा, मन्त्रिमण्डल में लोगों को भी लेगा जिन पर कि धारा के दूसरे महत्त्वपूर्ण दलों का विश्वास है

दूसरा सुझाव

भारत शासन-कानून का ९वाँ जारी रहे और उसमें ऐसे संशोधन निम्न रूप में सपरिषद् गवर्नर जनरल कार्य-प्रणाली तथा विधान परिवर्तन हो

(क) प्रधान सेनापति जिन पर तथा तत्सबन्धी कार्यों का भार वायसराय की कार्यकारिणी के एक्स आ शियो सदस्य रह सकते हैं। उनको छो शेष सारी कार्यकारिणी में से ऐसे भार सदस्य हों जिन पर केन्द्रीय व्यवस्था का विश्वास हो। ३६वीं धारा की ती उपधारा में से एक नियम हटा दिया कि कार्यकारिणी के तीन सदस्य ऐसे जिन्होंने कम से कम १० वर्ष तक में ताज की सेवा की हो।

(ख) स्थायी सर्विसेज (नौकरी) किसी अधिकारी की केन्द्रिय व्यवस्था की किसी सभा का सदस्य नामजद न जाय। दोनों में से प्रत्येक धारा नामजद सदस्य सम्पूर्ण रूप से गैर होंगे और सपरिषद् गवर्नर जनरल नामजद होंगे।

(ग) कानून ९वें शेड्यूल में मामलात, रक्षा, कबीलों के इलाके दूसरी बातों के सम्बन्ध में खर्च की की धारा-सभा के नियंत्रण से बाहर गया है तथा गवर्नर जनरल अपनी नुसार इसको खर्च कर सकता है। में से वह नियम हटा दिया जाय।

(घ) ताज-प्रतिनिधि का राज सलाहकार एक भारतीय हो और दर्जा वायसराय की कार्यकारिणी के के समान होना चाहिये, भले ही वह कारिणी का सदस्य न हो।

(१) केन्द्रीय तथा प्रांतीय व्य पिकाओं के चुनाव कब हों, यह प्रश्न की राष्ट्रीय सरकार तथा प्रान्तों की लो सरकारी इच्छा पर छोड़ दिया जाय।

(२) समिति को विश्वास है कि में राजनैतिक गतिअवरोध को दूर क उद्देश्य से आपने लन्दन-यात्रा की है वह आपके इस कार्य की प्रशंसा करती समिति को विश्वास है कि जो सुझाव पेश किये हैं वे उस समस्या को हल में आपको तथा ब्रिटिश सरकार की यता देंगे जो कि आपके समक्ष हैं। अपना काय कर रही ह।"

वे बच्चे !

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

> जीवन कितना द्वन्द्वपूर्ण है। कितने ही निरीह बच्चों और कुटुम्बों को कोई पूछने वाला भी नहीं। राधा भी अनाथ और भाग्य की मारी थी। उसके पहले के दिन बीत चुके थे। अब उसे लाने का भी ठिकाना नहीं था। उसके दोनों बच्चे भी उसी के भाग्य के भरोसे आँसू बहा रहे थे। यह कहानी तो नहीं, मानव हृदय की मर्मस्पर्शी भावनाओं का एक सुन्दर, वेदनापूर्ण और मर्मस्पर्शी चित्रण है।

—ये मेरे नन्हें मुन्ने बच्चे!...ये मेरे प्राण!...

कई दिन की क्षुधा से पीड़ित और नितान्त दीन बनी राधा ने जाने किस अशांति से, किस अधीर व्याकुलता से भर कर अपने आप कहा था और अपने उन दोनों छोटे बच्चों की ओर देखा था। तभी उसने अपने मुँह को ऊपर उठा उस खुले हुये अन्तरिक्ष की ओर देख, रे अपरिचित, विनीत और आहत स्वर में फिर कहा—'प्रभो, दोष मेरा हो, तो हो, इन बच्चों का क्या! फूल से सुकुमार, अजान से मेरे बच्चे, अब मर नहीं जायँगे क्या! अब यह भूख से तड़प, मेरे सामने ही, मेरे देखते-देखते ही, उठ नहीं जायँगे, क्या...!'

उसने अपने सिर को घुटनों पर रख लिया। उसके बच्चे देर हुई कि रोते हुए ही रोटी माँगते हुए सो गये थे, उनकी ओर से भी आँख फेर कर उसने मुँह को घुटनों पर रख लिया। उसने फिर जाने किस प्रतारणा से जी भर रोना आरम्भ कर दिया!

लेकिन उसी राधा के आस-पास, उसके आगे-पीछे जिस सुन्दर, स्वस्थ और अपने-आप में लीन दुनिया का रूप दिखाई देता था, वह सचमुच ही आनन्द और उत्साह से भरा था। वह न भूखा दिखाई देता था और न किसी व्यथा में लीन अपने और अपने बच्चों की रोटियों के लिए चिन्तित।

देर हुई कि राधा ने अपने उन सोते हुए बच्चों से विलग हो घर छोड़ दिया था। उसने एक बार अपने मित्रों और पड़ोसियों के यहाँ जाकर कुछ पाने का विचार किया। लेकिन यहाँ-वहाँ भी जो कुछ उसे मिलना था, आखिर उसे छोड़कर [illegible] और क्या मिलना था। हाँ, उसे कुछ नहीं मिलना था। निदान जब कई स्थानों पर जाकर भी राधा को कुछ नहीं मिला, तो उसने अपने टूटे और जीर्ण हुए घर के द्वार पर आकर भी अपने में ऐसा विचार नहीं पाया कि वह घर में जाये, वह अपने बच्चों के पास जाये, वह उन्हें सान्त्वना दे, वह उनका सिर सोहलाये और भूख से पीड़ित नन्हें-मुन्ने को दुलार से कह कर समझाये—रोटी अभी आयेगी, मेरे बच्चे, अभी आयेगी!...

'पर रोटी आयेगी, कहाँ से! अब किसके घर से आयेगी! ऐसी सहायता अब कहाँ से मिलेगी!' अपने घर के द्वार पर रुक कर राधा ने आप कहा। जो एक ारगी उसकी आँखों के सामने प्रमाद अन्धकार का जाल बिछ गया, उसी में—सी के झुरमुट में—उसने अपने सिर को पीछे दीवार पर टेक दिया। जैसे सचमुच ी राधा के प्राणों ने बरबस छटपटाना आरम्भ कर दिया। वह अपने न बच्चों के लिए व्याकुल होकर बार-बार ड़प रही थी, वह स्वयं अपने आप में ही, ई दिन की क्षुधा से पीड़ित हुई अशान्त र अशक्त हो गई थी। वह अपनी ा में लीन, उस पल भर में जाने कहाँ कहीं खोती दिखाई देने लगी थी। लगता था कि वह मर नहीं गई, न मरने से पूर्व की जो अवस्था थी, उसमें आ गई थी। वह अपने द्वार पर ार के सहारे बैठी हुई पैर फैलाये थी। जीवन के जिस स्तर पर टिकी थी, उस पर, वह डगमगा और हिल रही थी। उसके अन्दर से जो भूख की ज्वाला फूटकर लपलपा रही थी, उसकी विभीषिका में वह खो गई थी। जाने कब की जल-भुन कर कहाँ की कहाँ तिरोहित हो गई थी। किन्तु वह अकेली तो नहीं थी। वह माँ थी। वह ममता और मोह की साकार प्रतिमा बनी हुई नारी थी और नाम की राधा थी। वह सपाट, ठोस और निर्विकार बनी हुई अपने बच्चों के जीवन से जुड़ी हुई थी। यही उसकी व्यापकता थी और महत्ता थी जो उसे मरते-मरते भी नहीं मरने देती थी। वह भूखी रह कर भी, न उसे अनुभव करती और न देख पाती।

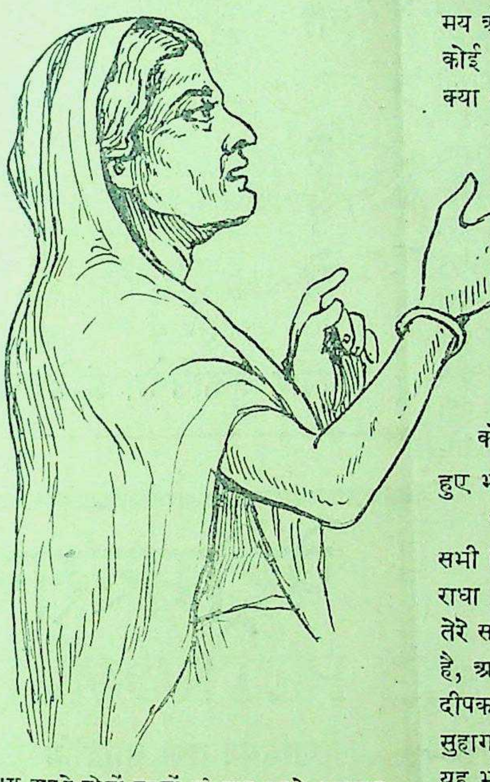
राधा अपने दोनों बच्चों को याद करके व्याकुल हो उठी।

फलस्वरूप कुछ देर बाद, जब राधा को चेत हुआ तो उसने चाहा कि वह घर में जाकर चुपचाप अपने दोनों सोते हुए बच्चों के पास सो जाय। किन्तु तब जैसे राधा में इतना साहस भी नहीं रहा कि वह उठे और घर में चली जाये।

इस प्रकार उस सन्ध्या के अन्धकार में लीन राधा ने अपनी बेबसी, उस दयनीय स्थिति और भाग्य की उस दुर्बल नींव के सहारे टिके-टिके ही आकाश पर निकले हुए दो तारों की ओर देखा। उसी ओर देखते हुए उसने वर्ष भर पूर्व के दिवंगत पति की स्मृतियों को याद किया और उन्हीं में मिलकर अनायास ही, अपने वर्तमान को भूल, क्षण भर के लिए ऐसे सुख का अनुभव किया कि जो अब उसे न मिलता था और न मिलता दीखता था।

राधा के अतीत का वह चित्र, जो अब उससे दूर था—बहुत दूर—अलभ्य और अमोल बन गया था। उसे उन तारों के झुरमुट में जैसे साफ दीखता था कि उसका वह बड़ा-सा आलीशान महल, जैसे पति गया, वह भी चला गया। उसकी वह भव्य लीलाएँ और आमोद मानो एक स्वप्न था, जो आज मिट गया और धुल गया। तब आज-जैसा राधा का जीवन नहीं था! वह सुखमय और शान्तिमय था। उसके द्वार पर कोई याचक आये और कुछ न पाये, तो क्या मजाल कि बिना कुछ पाये उसके द्वार से लौट जाये। हाँ, कभी ऐसा था उस राधा का जीवन।

लेकिन तभी अपने वर्तमान पर आकर अपनी उस दयनीय और अकल्पनीय स्थिति को पाकर राधा ने अपने मुँह को नीचे गिराकर अधीर और व्याकुल हुए भाव में कहा'और आज...आज!...

'हाँ, आज तो सभी समाप्त हुआ। सभी लिप-पुत गया। उसने कहा—अरी राधा! जो कुछ तुझे नहीं देखना था और तेरे सामने नहीं आना था, वही तो आया है, आज! तुझे वही आज मिला है। जिस दीपक की निर्मल ज्योति के नीचे तेरा सुहाग था, वैभव था, उसी के आस-पास यह भी खड़ा था—यह भी होता था। तुझे यह भी मिलना था। नियति को तुझे यह भी देना था, राधा!...

यह कहते बरबस ही राधा का स्वर गिर गया। जिस भूख की व्यथा से उसका अन्तस तड़प उठा था, उस एक क्षण में, वह और उग्र हो गया। इसी से आहत होकर वह चीखकर बोली—अरी राधा! अभागिन कहीं की! आज रोती है, तू!... अपाहिज और दीन हुई तू!...

यह कहने के साथ ही राधा का सिर फिर पीछे दीवार पर गिर गया। राधा को जैसे फिर अचेतना और भूख की यन्त्रणा ने घेर लिया।

उसी वक्त उसके नन्हें-मुन्ने ने चीख कर पुकारा, 'माँ'...

राधा ने अपने अभ्यस्त कानों से जैसे उस मधुर, क्षीण और याचनापूर्ण बच्चों के स्वर को नहीं सुन पाया। नहीं तो सुनते ही, उस राधा में—उस माँ का हृदय लिये हुए राधा में—भला इतना पौरुष कहाँ था कि वह अपने बच्चों की पुकार सुनती और अनसुनी कर देती? वह तो एक क्या, अपने उस राधा जैसे जाने कितने जीवन, उन नन्हें-मुन्नों पर कुर्बान करना जानती थी।

राधा के सामने अतीत की स्मृतियाँ जागृत हो उठीं।

निदान रेंगते और खिसकते हुए बच्चे द्वार पर आये और वहीं माँ को दीवार के सहारे बैठी देख, उसकी छाती के पास मुँह ले जाकर बोले—माँ...

किन्तु वह राधा तब भी नहीं बोली। वह तब भी नहीं हिली-डुली। वह स्थिर हुई अपने घुटनों पर जिस प्रकार सिर रखे थी उसी प्रकार गुमसुम बैठी रही।

और वे बच्चे थे। अपनी माँ को पाकर जैसे फिर चेतना से जागकर रोने लगे और अपनी भूख का निवारण करने के लिए राधा के सूखे, दूधहीन स्तनों को चिचोड़ने लगे। वह बार-बार मा को पुकारते थे।

लेकिन तब भी राधा बोली थोड़े ही थी? वह इतने पर भी, उन ब्याकुल, उन क्षुधा से पीड़ित बच्चों को देख थोड़े ही सकी थी। लगता था कि तब राधा नहीं थी। वह अपनी उस दुर्बल और भूखी आत्मा के पीछे-पीछे उस देह को छोड़ गई थी और उसका अन्त कर गई थी।

पास के रेडियो में कोई गा रहा था—
कब तक रहेंगे कैद हम, इतना दो बता दे...

लेकिन वह बच्चे थे, जो तब भी अपनी मा की छाती पर मुँह मार रहे थे, वे मारे जा रहे थे, राधा के वे भूखे बच्चे!...

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की

मधूलिका

मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

रंगमंच पर महाकवि कालिदास का अभिनय
पहाड़ी सन्याल, बनमाला और स्नेहप्रभा का सुन्दर अभिनय

लेखक, श्री उमेश जोशी

"महाकवि कालिदास" राजलक्ष्मी प्रोडक्शन्स" ने निर्मित किया है। यह चित्र पूर्ण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक है! इस फिल्म का प्रदर्शन अभी उत्तरी भारत के सिनेमा-गृहों में नहीं हुआ है। गुजरात-वालों ने इसे खूब पसन्द किया है। महाकवि कालिदास के विमल जीवन पर इस फिल्म में प्रकाश डाला गया है।

महाकवि कालिदास का अभिनय प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता पहाड़ी सन्याल ने किया है! पहाड़ी सन्याल ने इस बात का पूर्ण प्रयत्न किया है कि कालिदास का उज्ज्वल और दिव्य व्यक्तित्व कहीं "वाह्य-आडम्बर" के बोझ से दब न जाये। जब कि उन्हें अपनी ही धर्मपत्नी द्वारा दुत्कारा गया था। उस वक्त का आपका अभिनय उपेक्षा की ठोकरों से घायल नहीं हुआ, बल्कि और भी, निखर गया है। यही पहाड़ी सन्याल के अभिनय की सबसे बड़ी विशेषता है। निराशा के बवंडर में पहाड़ी सन्याल का व्यक्तित्व डूब नहीं गया, बल्कि ऊपर उठा रहा। जब अपनी भार्या-द्वारा ठुकरा दिया गया, तब वह अपने नसीब के टूटे हुए चिराग की धूमिल रोशनी में अपने जीवन का मार्ग-अनुसन्धान करता है। उसकी जीवन-नैया डगमगाती है—किन्तु विवेक की पवित्र अनुभूति का उसे निर्देशन मिल जाता है! वह दुनिया के "ऊबड़-खाबड़" पथ को पार करता हुआ अन्त में देवी के मन्दिर में आश्रय लेता है। यहीं उसे विद्या का प्रकाश उपलब्ध होता है, और ऐसा प्रकाश जो विश्व के अंधकार को दूर करनेवाला है।

वास्तव में पहाड़ी सन्याल का अभिनय मानव-हृदय को गुदगुदाने की शक्ति रखता है। आपने कला का आदर्श खूब निभाया है। कहीं भी चित्र में कला का स्वरूप विकृत नहीं हुआ है।

गँवारपन का अभिनय भी आपने बड़ी चतुरता के साथ निभाया है। जब तक कि कालिदास ज्ञान के भव्य आलोक के आगार में प्रवृष्ट नहीं हुए थे तब तक वह "कलुआ" के नाम से पुकारे जाते थे। यह नाम उनकी मा ने रक्खा था। कलुआ का अभिनय बेवकूफी की सीमा को भी पार कर गया। जिस डाल पर वह बैठा था उसी डाल को काट रहा था। दुनिया में इससे ज्यादा बेवकूफ और कौन हो सकता है? पंडितों ने ऐसा सोचा, जो उस वक्त ऐसे ही बेवकूफ की तलाश में इधर-उधर फिर रहे थे, आखिर उनको मिल ही गया और उसकी शादी एक ऐसी लड़की के साथ कर दी गई जो कि उस समय विद्वत्ता में सबसे बढ़ी चढ़ी थी। शास्त्रार्थ में पंडितों को हरा चुकी थी, पंडित लोग भी अपनी हार पर चिढ़ गये थे। लेकिन क्या पंडितों की जीत हुई? कदापि नहीं—इस भीषण भूमिका में भी पहाड़ी सन्याल सफल उतरे। उनका अभिनय बेवकूफी के असहनीय बोझ से कुचल नहीं गया बल्कि बहादुर सैनिक की तरह जीवन-पथ में सिर उठाये सफलता का डंका पीटता हुआ चल निकला—यही आपके अभिनय का तथ्य है। यह तथ्य प्रत्येक अभिनेता में नहीं होता! महाकवि कालिदास की जीवन-कहानी बहुत लम्बी है। उनके जीवन-पृष्ठ के वही अंश दिखाये गये हैं जो कि फिल्म से सम्बन्ध रखते हैं!

मानव जीवन का अमर सन्देश देना ही कालिदास का पवित्र लक्ष्य था। इस लक्ष्य की इस फिल्म में पूरी रक्षा की गई है। जब कालिदास का जीवन अज्ञानता के खँडहर से निकल कर ज्ञान के शिला-खण्ड पर उपनीत हो गया तब उन्होंने अपने रम्य काव्य से मानव-समाज के स्तर को ऊँचा करने का प्रयास किया। इस चित्र-पट में कालिदास के विमल जीवन से कला और काव्य दोनों का इतने सुन्दर ढंग से विश्लेषण किया गया है कि देखते ही बनता है!

बनमाला ने कालिदास की धर्मपत्नी के रूप में अत्यन्त आकर्षक अभिनय किया है। आपका अभिनय भी अपनी जगह पर प्रशंसनीय है। "सिकन्दर" के बाद आपका अभिनय इसी चित्र में अच्छा हुआ है। बनमाला का अभिनय मानव के क्लान्त हृदय को हर्ष एवं उल्लास से परिप्लावित कर देता है। स्नेहप्रभा ने भी अपने स्थान में साधारण अभिनय किया है।

चित्र के गीत ठीक नहीं। गीतों की भाषा साहित्यिक नहीं है और न मधु कोई भी गीत ऐसा नहीं जो कि म हृदय पर अपना प्रभाव डाल सके। सीनरियाँ भी साधारण हैं। यदि नि महाशय चाहते तो इस चित्र को और श्रेष्ठ बनाया जा सकता था। चित्र सफलता पहाड़ी सन्याल और बनमा प्रभावशाली व्यक्तित्व पर अवलम्बि "मेक-अप" अच्छा नहीं हुआ है। होता है कि "मेक-अप" करने नौसिखिया है। इन सब भूलों के होते भी चित्र दर्शनीय, प्रशंसनीय तथा त्मक दृष्टि से सफल हुआ है।

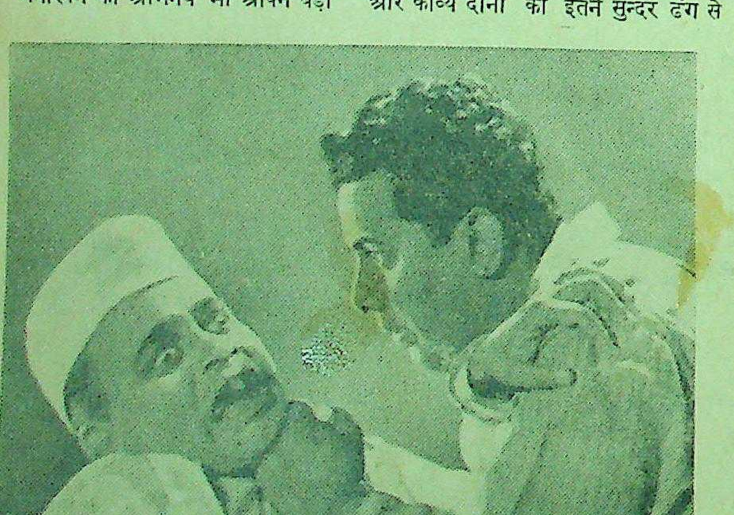
'संगम' फिल्म में मास्टर विनायक क्रोधावेश में दिखाई दे रहे हैं।

हिन्दी साहित्य
बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत
मूल्य चार रुपये
हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।
पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफासफाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी * ब्रांकाइटिस
* जुकाम * निमोनिया
* यक्ष्मा * पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि विक्रताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें :—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू।

श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी।

कुमारी बी० दास गुप्त।

श्री अमृतकौर और श्री गुप्त।

बेगम हामिद अली।

मातृमण्डल

भारतीय स्त्रियाँ और नौकरी-पेशा

घरेलू उद्योग-धंधों का प्रसार और प्रचार आवश्यक क्यों?

लेखक, श्री छविनाथ पांडेय, बी० ए०, एल-एल० बी०

अधिकांश स्त्रियों की आज कितनी दुर्दशा है, वह अपने कौटुम्बिक जीवन को कितनी कठिनाई से बिताती हैं यह किसी से छिपा नहीं है। इसलिये आवश्यक है कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की भाँति जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिये कुछ कार्य करें। इस लेख में पांडेय जी ने स्त्री-पुरुषों को मिलकर गृहस्थी को सुखी बनाने के लिये कुछ सुझाव रखे हैं, जो विचारणीय ही नहीं पठनीय भी हैं।

वर्त्तमान युग में स्त्रियाँ पुरुषों की समता करने तथा उनके बराबर अधिकार पाने के लिए सतत आन्दोलन कर रही हैं और अपने जन्मसिद्ध अधिकार शिक्षा तथा आजादी के लिए लड़ रही हैं। इसका स्वाभाविक परिणाम यह हो रहा है कि वे पुरुषों से अपनी आर्थिक मुक्ति भी चाहने लगी हैं अर्थात् अपने भरण-पोषण के लिए भी वे अब केवल-मात्र पुरुषों पर निर्भर रहना नहीं चाहतीं। पश्चिमी देशों में तो इस आन्दोलन ने व्यापक रूप धारण कर लिया है। हमारा हिन्दुस्तान भी इससे छूता नहीं बचा है। भिन्न-भिन्न पेशों में यों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही । जिनमें विवाहित, अविवाहित सभी तरह की महिलायें पाई जाती हैं। विवाहित हो जाने पर भी यह स्त्रियाँ अपना पेशा छोड़कर उससे विमुख नहीं होना चाहतीं अर्थात् वैवाहिक बन्धन को अब वे बाधा नहीं मानतीं और जिस पेशे के लिए उन्होंने अपने को योग्य बनाया है, उसमें लगी रहना चाहती हैं। यह उचित भी प्रतीत होता है। केवल-मात्र वैवाहिक बन्धन में ध जाने के कारण उन्हें अपने उस अध्य-साय से विरक्त नहीं होना चाहिए जिसके ग्य बनने के लिए उन्होंने सतत यत्न किया है। महिलाओं में जाग्रति उत्पन्न करने के लिए इतना ज्यादा प्रयास करने पर भी हमारे देशवासियों के अधिकांश लोगों के दिलों में अभी तक यही धारणा नी हुई है कि वैवाहिक बन्धन में बँध जाने के बाद स्त्रियों के भाग्य का दरवाजा दा के लिए बन्द हो जाता है और का कार्यक्षेत्र घर की चहारदीवारी के दर ही सीमित हो जाता है। लेकिन इस आजादी और स्वतन्त्रता की जो वह रही है उसके झकोरे में पड़ी हिलायें एक बार बाहर निकलने के बाद, आजादी का मीठा स्वाद एक बार चख लेने बाद, अपनी आर्थिक स्वतन्त्रता को त्याग पुनः उस गढ़ की चहारदीवारी के भीतर सिमट जाने के लिए तैयार नहीं हैं। हमें इस बार अपने ठेठ देहात में भी दो-चार तरह के उदाहरण देखने को मिले और स्त्री-जागरण का यह समुज्ज्वल दृष्टान्त देखकर फूला नहीं समाया। शहरी वाता-वरण से दूर इन देहातों में भी महिलाओं शादी के बाद भी अपनी आर्थिक स्वतन्त्रता कायम रखी और देहात की श्रुतियों की जरा भी परवाह नहीं की।

यदि निरपेक्ष दृष्टि से देखा जाय तो मान युग में आर्थिक दृष्टि से स्त्रियों का तरह परदे से बाहर आकर कमाने की ा करना नितान्त आवश्यक ही नहीं क अनिवार्य हो गया है। युवकों की री जिस तेजी के साथ बढ़ रही है कि हल करने के सरकारी और गैर-सरकारी सारे प्रयत्न व्यर्थ सिद्ध हो रहे हैं। जब तक लड़के स्कूल और कालेजों में शिक्षा पाते रहते हैं तब तक तो उनके लगाव का एक बहाना बना रहता है लेकिन शिक्षा समाप्त कर जब वे घर वापस आते हैं तब उन्हें चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार दिखाई देता है। इस घोर अन्धकार में प्रकाश की कहीं एक किरण भी उन्हें दिखाई नहीं देती। लेकिन स्त्रियों के क्षेत्र की दशा इससे एकदम विपरीत है। शिक्षिता स्त्रियों की संख्या कम होने के कारण और उनकी दिनोंदिन बढ़ती माँग के कारण अभी उस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा नहीं आ सकी है।

पन्द्रह बीस रुपये की एक नौकरी के लिए जहाँ सैकड़ों की संख्या में युवक उम्मीदवार किसी दफ्तर के द्वार की धूल रौंदते दिखाई देते हैं वहाँ स्त्रियों की आवश्यकता के विज्ञापन पर महिला उम्मीदवार सर्वथा मिलती भी नहीं। हो सकता है कि दस साल बाद उस क्षेत्र में भी यही संग्राम मच जाय क्योंकि इधर स्त्री-शिक्षा की ओर लोगों की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। भारत के समान पराधीन देश में पुरुषों के ही कार्यक्षेत्र सीमित हैं, स्त्रियों के कार्यक्षेत्र तो नितान्त सीमित हैं। भविष्य में चाहे जो हो लेकिन इस समय तो अनेक परिवार ऐसे मिलेंगे जहाँ महिलायें ही परिवार के भरण-पोषण का साधन बन रही हैं। यदि वे चहारदीवारी के अन्दर ही बन्द रखी गई होतीं तो सम्भव था कि उस कुटुम्ब के लोग अन्न-वस्त्र के अभाव में न जाने किस दुर्गति को प्राप्त हुए होते?

शिक्षित युवकों में बेकारी की समस्या इतनी भीषण हो उठी है कि अनेक युवकों के हृदय में यह भावना घर करने लगी है कि वर्त्तमान अवस्था में उन्हें अविवाहित रहना ही उचित और श्रेयस्कर है क्योंकि गृहस्थी का बोझ सँभालने का उपयुक्त साधन उन्हें प्राप्त नहीं है। लेकिन इस तरह की भावना और विचार-धारा समाज के लिए कभी भी कल्याणकर नहीं सिद्ध हो सकती। इस तरह के कौमार्यव्रत से समाज का अनेक तरह से अहित होने की आशंका और सम्भावना है। सबसे पहले तो सभी युवक न तो सन्त हैं, न हो सकते हैं और न बने रह सकते हैं। मानव-स्वभाव कितना कमजोर और दुर्बल है, यह छिपी बात नहीं है। इसलिए इस तरह की भावना का अन्तिम परिणाम चरित्रहीनता और आचार-भ्रष्टता ही होगा। देश के चारित्रिक विकास पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा; यह अनुमान करना कठिन नहीं है। साथ ही साथ समाज की प्रगति भी रुक जायगी क्योंकि यदि युवक कौमार्यव्रत धारण करने लगेंगे तब सन्तानोत्पत्ति कहाँ से होगी? इस दुरवस्था के परिहार का एकमात्र उपाय यही है कि स्त्रियाँ इस योग्य बनें कि पति की बेकारी की हालत में वे परिवार के भरण-पोषण का भार ग्रहण कर सकें।

एक बात और! मध्यम श्रेणी के अधिकांश पुरुषों की आमदनी इतनी कम होती है और दैनिक आवश्यकतायें इतनी बढ़ गई हैं कि वे अपनी उस आमदनी से परिवार का भरण-पोषण भी पूरी तरह नहीं कर सकते, विपत्ति और संकटकाल के लिए कुछ बचाकर रखना तो दूर की बात है। इसका परिणाम यह होता है कि संकटकाल—जैसे बीमारी—या अनिवार्य आवश्यकता—जैसे विवाह अथवा श्राद्धादि—आ जाने पर वे घोर विपत्ति में पड़ जाते हैं और उससे उबरने के लिए उन्हें स्त्रियों के जेवर, घर के सामान, जगह-जमीन—जो कुछ भी थोड़ी बहुत रहती है, बेचना पड़ता है। लेकिन यदि उस तरह के परिवार की स्त्रियाँ भी पुरुषों का हाथ बँटाती रहें और थोड़ा बहुत कमाती रहें तो इस समस्या का सहज में समाधान हो सकता है। दोनों की कमाई को मिलाकर परिवार का खर्च भी चल सकता है और आये दिन के लिए थोड़ी रकम बचाई भी जा सकती है। इससे सन्तान की शिक्षा-दीक्षा में भी सहायता मिल सकती है और उन संकटों से उन्हें मुक्ति मिल सकती है जो अर्थाभाव के कारण प्रतिदिन उनके चारों ओर मँडराने लगती हैं।

पश्चिमी देशों में यह आम प्रथा है कि बड़े घरों की स्त्रियाँ भी कुछ न कुछ काम केवल विनोद के लिए करती रहती हैं। जिन घरों में दास-दासियों की भरमार है और स्त्रियों को घर का कोई काम-काज अपने हाथ से नहीं करना पड़ता उन घरों की स्त्रियाँ समय काटने या मन बहलाने के लिए, यदि और कुछ नहीं तो सीने-पिरोने का ही काम करती हैं। बहुत-सी स्त्रियाँ समाज-सेवा के काम में अपना समय लगाती हैं। हमारे देश में भी यत्र-तत्र यह बात देखने में आती है, यद्यपि यह दाल में नमक के बराबर है। हमारे देश में अमीरी का मतलब आलस्य और बेकारी समझा जाता है। यह बात नहीं है कि हमारे देश की स्त्रियों में योग्यता या क्षमता का अभाव है? वे निस्सन्न हैं, सब तरह से योग्य हैं लेकिन हमने उन्हें अयोग्य बना रखा है, इसी में हम अपने समाज का कल्याण देखते हैं। यदि इस तरह की स्त्रियों को योग्य बनाने का यत्न किया जाय तो वे आदर्श महिलायें बन सकती हैं और समाज का उनसे बहुत बड़ा उपकार हो सकता है।

विवाहित स्त्रियों के काम करने तथा उपार्जन करने के चाहे जो भी उद्देश्य हों, अब हमें यह देखना है कि अपने दोहरे कर्तव्य पालन की उनमें क्षमता है या नहीं? ऊपर हमने उनके दोहरे कर्तव्य की चर्चा की है। उनका प्रथम कर्तव्य तो अपने पति, बाल-बच्चों तथा गृहस्थी के प्रति है और उनका

मेशा सबसे ऊपर
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम सामग्री

केशों को जमाती
चमकलाती
चिटचिटाहट से परे
व्यवहार में साफ
केश के लिये उपकारी

आजकल
मिल रही है

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 101

द्वितीय कर्तव्य उस पेशे के प्रति है जिसे उन्होंने ग्रहण किया है। कभी कभी ऐसा भी देखने में आता है कि जिन स्त्रियों को अनेक बाल-बच्चे हो जाते हैं और परिणाम-स्वरूप उनका स्वास्थ्य गिर जाता है वे अपने दो में से एक कर्तव्य का पालन भी पूरी तरह नहीं कर पातीं। गृहस्थी का काम ही उनके ऊपर इस तरह बोझ बनकर सवार रहता है और वह उसमें इस तरह उलझी रहती हैं कि अपने उस कर्तव्य को कभी पूरा नहीं कर पातीं जिसका बोझ घर से बाहर उन्होंने उठाया है। स्कूलों में जो विवाहित स्त्रियाँ शिक्षिका का काम करती हैं उनके बारे में इस तरह की शिकायतें बहुता देखने और सुनने में आती हैं। इस तरह की शिकायतों का होना अचरज की बात नहीं है। मानव-शक्ति की सीमा है। यदि उससे सीमा से बाहर काम लिया जायगा तो उसका टूट जाना अवश्यम्भावी है। खास कर शिक्षा-विभाग में जहाँ आवश्यकता से अधिक परिश्रम करना पड़ता है।

प्रश्न यह उठता है कि क्या इस तरह की स्त्रियों को घर से बाहर कोई काम नहीं करना चाहिए क्योंकि पारिवारिक काम का बोझ उनके ऊपर इतना ज्यादा रहता है कि वे उन दूसरे कामों को ईमानदारी और नेकनीयती के साथ पूरा नहीं कर सकतीं? लेकिन यदि अनुसन्धान किया जाय तो मालूम होगा कि अभी तक हमारे देश में घर की चहारदीवारी को पार कर काम की तलाश में वे ही महिलायें जाती हैं जिन्हें कमाने की अनिवार्य आवश्यकता रहती है और बिना कमाये जिनके परिवार का भरण-पोषण नहीं हो सकता। यदि वे अपने पेशे से मुँह मोड़ लें तो परिवार के लोग भूखों मरने लगें। लेकिन क्या उनके परिवार को अन्न-वस्त्र देते रहने की उदारता दिखला कर काम की निष्पत्ति को नष्ट कर दिया जाय? अथवा यह साधारण नियम बना दिया जाय कि विवाहित स्त्रियों को नौकरी ही न दी जाय? लेकिन इससे तो इस अध्यवसाय की धारा ही उलट जायगी। इसके अलावा किसी जाति-विशेष में तो यहाँ तक देखने में आता है कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ ही अधिक परिश्रमशील होती हैं। नैपाली और खासिया जाति की स्त्रियाँ पुरुषों की अपेक्षा कहीं ज्यादा परिश्रमी होती हैं। इन जातियों के पुरुष अधिकांश आलसी और निकम्मे पाये जाते हैं। सन्थाली, उत्तरी भारत तथा बर्मा की स्त्रियों में भी ये गुण पाये जाते हैं। चीन और जापान की स्त्रियाँ तो अपने पतियों का दाहना हाथ समझी जाती हैं। पुरुषों के सभी तरह के कारबार में स्त्रियों का पूर्ण सहयोग रहता है। गृह-उद्योगों की तो वे एकमात्र स्वामिनी होती हैं। जापान की अत्यधिक उत्पादन-शक्ति की प्राण ये महिलायें ही हैं।

यह तो जाति-विशेष की बात हुई। प्रश्न यह उठता है कि साधारण तथा विवाहित स्त्रियों से पेशे का पूरा काम करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए? सबसे पहले तो हमें उनसे गृहस्थी का काम कम से कम लेना चाहिए। यह भार परिवार के अन्य स्त्रियों अथवा नौकरों को सौंप दिया जाना चाहिए। उनके बाल-बच्चों के सँभालने का बोझ भी उन पर अत्यधिक नहीं रहना चाहिए। सबसे अच्छा तो यह हो कि जिन स्त्रियों को बाल-बच्चों की ज्यादा देख-रेख करनी पड़ती हो उन्हें तब तक बाहर का काम हाथ में नहीं लेना चाहिए जब तक लड़के इस लायक न हो जायँ कि उनकी देख-रेख की जरूरत न पड़े। इसे हम घोर निर्दयता समझते हैं कि बचपन में ही बच्चे अपनी माताओं की देख-रेख से वंचित कर दिये जायँ। किसी जननी के लिए भी इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि वह अपने शिशु की देख-रेख का भार दूसरों को सौंप कर आप कमाने की धुन में चली जाय। इस विषम समस्या का सबसे उत्तम समाधान तो यही हो सकता जो सोवियत रूस ने किया है। अर्थात् देश में प्रचुर मात्रा में धातृ-गृहों की स्थापना की जाय जहाँ उन लड़कों की देख-भाल हो। जिनकी मातायें किसी पेशे में काम कर रही हैं। भारतीय समाज में सबसे बड़ा दोष यह है कि बच्चों की देख-रेख की सारी जिम्मेदारी औरतों पर ही पड़ती है। पुरुष-समाज अपने को इससे मुक्त समझता है। इससे भी कठिनाई बढ़ जाती है। पुरुष दरवाजे पर हाथ पर हाथ रखकर बैठा भले ही रहे लेकिन बच्चों को सँभाल रखना वह अपना कर्तव्य नहीं समझता। जो पुरुष बेकारी में अपना दिन काट रहे हैं यदि वे अपनी कमानेवाली पत्नियों को इस भार से मुक्त कर दें तो भी इस समस्या का बहुत कुछ समाधान हो सकता है। इस विशेष अवस्था में तो उनका यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे अपनी पत्नियों को इस भार से मुक्त कर दें। पति-पत्नी का संबन्ध ही आदान-प्रदान के आधार पर निर्भर है। परिवार का सच्चा सुख भी इसके सम्यक् पालन से ही प्राप्त हो सकता है। यदि पत्नी कमाने योग्य है और पति कमा नहीं सकता तो उसका यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह घर का काम-काज इस तरह सँभाल ले कि पत्नी को उन झंझटों से मुक्ति मिल जाय और वह अपने पेशे का काम योग्यता और निस्पत्ति के साथ पूरा कर सके। ऐसे पतियों को बच्चों की देख रेख और सँभाल के भार से पत्नियों को सर्वथा मुक्त कर देना चाहिए। जहाँ पति और पत्नी दोनों नौकरी पेशे में हों वहाँ बच्चों को बड़ा होते ही होस्टलों और बोर्डिंग हाउसों में भेज देना चाहिए। ऐसे लड़कों के लिए छात्रावास ही उपयुक्त स्थान है।

इसके साथ ही जिन स्त्रियों को नौकरी करनी पड़े उसे थोड़ा निग्रह से भी काम लेना परम आवश्यक है। बहुत अधिक सन्तान का होना दोनों के लिए अहितकर है। पूरी तरह देख-भाल न होने से सन्तान अयोग्य रह जाती है, बार बार सौरी-गृह का सेवन करने से स्त्रियों का स्वास्थ्य चौपट हो जाता है और वे निकम्मी बन जाती हैं। प्रसव के बाद पर्याप्त समय तक स्त्री को विश्राम मिलना चाहिए। बार बार प्रसव-गृह में जाने का फल यह होता है कि उन्हें अपने काम पर से बहुत ज्यादा गैर-हाजिर रहना पड़ेगा। काम का बहुत ज्यादा हर्ज होगा। हमारे देश में जो स्त्रियाँ नौकरी का पेशा ग्रहण करती हैं उनकी आर्थिक दशा ऐसी नहीं रहती कि वे बहुत ज्यादा दिन तक काम पर से गैर-हाजिर रहें। प्रसव के थोड़े ही दिन बाद उन्हें काम पर जाना पड़ता है। फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य गिर जाता है। इसलिए बाल-बच्चोंवाली विवाहित स्त्रियों को हमारे देश में किसी ऐसे पेशे में हाथ नहीं डालना चाहिए जिसमें अधिक समय और श्रम की आवश्यकता हो। ऐसी स्त्रियों के लिए किसी न किसी प्रकार का घरेलू धन्धा ही अधिक उपयुक्त हो सकता है। इससे देश, समाज, जाति और व्यक्ति सभी का कल्याण हो सकता है। जिस प्रति-स्पर्धा और बेकारी की कल्पना हम लोग इस क्षेत्र में भी करते हैं, उसकी संभावना नहीं रह जायगी और बहुत से लुप्तप्राय उद्योग-धन्धे फिर जी उठेंगे। जापान की उन्नति का यही रहस्य है। घर बैठी स्त्रियाँ इतना ज्यादा उत्पादन काम करती हैं कि जापान सस्ते से सस्ते मूल्य में अपना माल बेचता है। हमारे देश के लिए भी यह मार्ग कल्याणकारी होगा। इस नवीन दिशा की ओर कदम उठाना चाहिए।

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। ……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

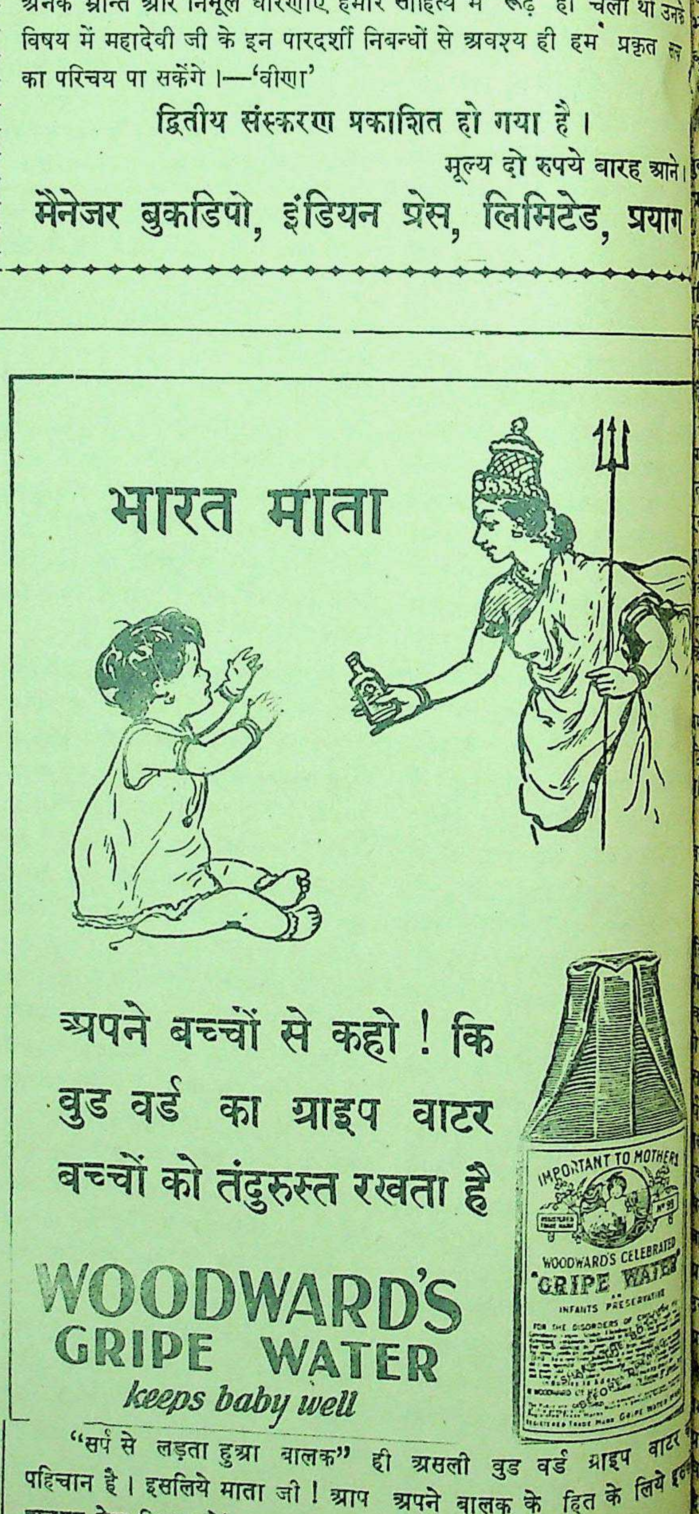

भारत माता

अपने बच्चों से कहो! कि वुड वर्ड का ग्राइप वाटर बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसे अवश्य देख लिया करें।

1-WW 117—117

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLA

की साप्ताहिक डायरी

योरोप के पश्चिमी युद्ध-मोर्चे पर सरगर्मी सोवियट फौजों का बढ़ाव—प्रशांत में युद्ध की प्रगति

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

द्ध में पश्चिमी मोर्चे पर ई महत्त्वपूर्ण नगरों पर मित्रों का अधिकार हुआ जिनमें हैनोवर और श्यनफर्ट मुख हैं। फील्ड मार्शल मांटगोमरी द्वारा हालैंड को जर्मनों से शीघ्र मुक्त करने का कार्य जारी है। उनके अन्य फौजी दल एमडेन की दिशा में एम्स नदी के दोनों तटों पर बढ़े हैं और ब्रेमेन पर गोलाबारी कर रहे हैं। उन्होंने वीमेर नदी को पार कर सीले पर अधिकार कर लिया है। हामबर्ग भी उनका लक्ष्य है। इन नगरों पर मित्र वायुयान निरंतर बम-वर्षा कर रहे हैं और उनमें चारों ओर होली के दृश्य उपस्थित हैं। जेनरल पैटन के एक दल (डिवीजन) ने वीमेर पर अधिकार कर लिया जो एरफर्ट के २० मील पूर्व है। अमरीकी सेनायें चैकोस्लावाकिया से ४० मील से भी कम दूर हैं। तृतीय सेना ने नी नदी पार कर ली है। पश्चिम में मित्र सेनायें बर्लिन तथा बाल्टिक तट की शा में १०० मील के मोर्चे पर बढ़ रही । ९वीं सेना की फौजों तथा मार्शल कोव की फौजों में १०० मील से कुछ ही अधिक फासला है।

रूसी रणांगण में भी लाल सेना उसी कार सफलता प्राप्त कर रही है जिस प्रकार श्चिमी मोर्चे पर जेनरल आइजन होवर की संयुक्त मित्र सेनायें। मार्शल स्टालिन ने षणा की है कि पूर्वी प्रशा की राजधानी निग्सवर्ग पर मार्शल वेसिलेवस्की की फौजों कब्जा कर लिया, तथा २७ हजार जर्मनों बन्दी बनाया, जिनमें वहाँ का जर्मन मांडर भी शामिल है। यह लाल सेना महत्त्वपूर्ण विजय है। उतनी ही त्त्वपूर्ण दूसरी विजय उसने आस्ट्रिया की धानी वियना में प्राप्त की है। वहाँ प्रतिरोध लगभग समाप्त हो चुका वियना के उत्तर में मध्य चेकोस्लाकिया से भी शत्रु भगाया जा रहा है। र-नीसे पांति पर शांति है, पर बर्लिन वक्ता का कहना है कि इस मोर्चे हत्त्वपूर्ण फौजी कार्रवाइयाँ होनेवाली रूसी बर्लिन के मोर्चे पर तथा पश्चिमी शिया में नीस नदी के तट पर बहुत फौजें जमा कर रहे हैं। मार्शल झुकोव टिन और फ्रैंकफर्ट-आन-ओडर के बहुत बड़ा सैनिक संगठन किया है बर्लिन के उत्तर-पूर्व के क्षेत्र में आक्रमण करने को उद्यत हैं।

*

ली से पुनः भीषण युद्ध के समाचार । ८वीं सेना ने फूसिगनेनो, लूगो न्टिगनोला नगर पर कब्जा कर ५वीं सेना ने मासा पर कब्जा कर सेजिया के नौसैनिक अड्डे से दक्षिण-पूर्व में है। इटली में अर्से से चलने वाली लड़ाई का ध्याय आरम्भ हो गया है। ऐसा कि जेनरल मार्क क्लार्क की इटली से जर्मनों को साफ यूगोस्लाविया और आस्ट्रिया सेनाओं से सम्पर्क स्थापित कर बिलकुल तैयार हैं। पूर्व में सेना मुख्य जर्मन रक्षा-पंक्तियों चुकी है। पश्चिम में अमेरिकन फौजें स्पेजिया की ओर बढ़ने को उद्यत जान पड़ती हैं। उधर फ्रांस और इटली की सीमा पर फ्रेंच सैनिक टुकड़ियों की भी सरगर्मी खूब बढ़ी हुई है इससे प्रकट होता है कि दक्षिण और पश्चिम की तरफ से मित्रों का संगठित दोतरफा हमला हो रहा है।

*   *   *

जापान के भाग्याकाश में काली घटायें घिर रही हैं। वहाँ की शासन-सत्ता ढीली पड़ रही है। विगत सप्ताह में प्रधान मंत्री कोइसो ने रूस - जापान - अनाक्रमण संधि भंग होने के बाद अपना पद छोड़ दिया था। उनके स्थान पर ७० वर्षीय एडमिरल सुज़ुकी ने मंत्रीमंडल बनाया है। विगत ७ अप्रैल से जापान के भविष्य पर प्रभाव डालनेवाली कई बड़ी घटनायें घट रही हैं। पहले तो जापानी नौसेना पहली बार ब्रिटिश और अमेरिकन नौसेना का सामना करने के लिये बाहर आई, और उसने अपने ४५,००० टन के युद्ध-पोत 'यामीता' से तथा लगभग ४०० विमानों से हाथ धोया। इस समुद्री लड़ाई के सम्बन्ध में जापानी रिपोर्टों का कहना था कि १०० से अधिक जंगी जहाजों का मित्रों का बेड़ा जिसमें १० बहुत बड़े युद्ध-पोत हैं अभी र्‍यूकू द्वीप और स्वतः जापान के दक्षिणी द्वीप के बीच के समुद्र में मौजूद है। उसी रात को ३०० से अधिक भारी हवाई किलों ने टोकियो पर हमला किया। जमीन पर के अड्डों से जापान पर किया गया यह सबसे बड़ा हमला था। टोकियो के अलावा नागोया पर भी हमला किया गया और मुस्टांग नामक लड़ाकू विमानों ने आइवोजिमा से उनका साथ दिया। उसी दिन मेरियाना द्वीपपुंज के अड्डों से भारी हवाई किलों ने जापान के दक्षिण में कोनीया के क्षेत्र के सैनिक लक्ष्यों पर हमले किए। कानोवा, क्यूशू-द्वीप में, काकेशीया की खाड़ी के पूर्वी भाग पर स्थित हैं। वह नागाशाकी से ११० मील दक्षिण-पूर्व में है। प्रशान्त का अमेरिकन बेड़ा इस समय प्रशांत पर पूर्ण आधिपत्य कायम किए हुए है और नौसेना के हवाई सैनिक प्रशांत के आकाश पर पूर्ण अधिकार जमाये हुए हैं।

ओकीनावा में जापानियों का सफाया किया जा रहा है। चीन में दक्षिणी-पश्चिमी होनान में हुपेह से शैसी पर जिस ८०,००० जापानी सिपाहियों के दल ने आक्रमण किया था उसे परास्त करने का दावा चीनी हाई कमान-द्वारा किया गया। हांगकांग और फारमोसा पर अमरीकी हवाई सेना ने कई बार भारी आक्रमण किया। आस्ट्रेलियन फौजों ने न्युगिनी में कई स्थानों पर शत्रु को मार भगाया।

बर्मा में मांडले और मिटकिना के बीच बहुतेरी जापानी फौजों का संहार कर दिया गया। बची हुई जापानी फौजें मांडले के दक्षिण-पूर्व पहाड़ियों में भाग रही हैं। भारतीय नौसेना के दो जहाज हिन्द महासागर में ७ दिन तक एक पनडुब्बे का पीछा करते रहे। उनमें से एक जहाज ने उसका पता लगा लिया और पनडुब्बा डुबा दिया गया।

अहमदनगर दुर्ग की आत्मपुकार !

लेखक, श्री भरत व्यास

(१)

आह ! मैं बन्दी स्वयं हूँ !
प्राण धारी यदि मैं होता
यों विवशता पर न रोता
खोल देता द्वार अपने
फोड़ देता भित्तियाँ निज
............तोड़ देता सीखचों को
राष्ट्र के बन्दी जनों को
बन्द कर मैं यूँ न रखता
किन्तु जड़ हूँ क्या करूँ !
आह ! मैं बन्दी स्वयं हूँ !
देशद्रोही, पतित पत्थर
मातृ भू का भार हूँ
क्यों "दुर्ग" कह कर लोग मेरा—
व्यंगमय उपहास करते
हाय ! मैं तो विश्व वंदित—
बन्दियों का, क्रूर निन्दित
कटु कलंकित एक कारागार हूँ !
जल रहा हूँ व्यथा से
पर क्या करूँ बन्दी स्वयं हूँ !!

(२)

क्या कहेगा विश्व मुझको ?
क्या कहेगी मातृभूमि ?
जिन कणों से मैं बना था
जिन कणों में मैं पला था
आज उनसे घात करके
स्वयं पर आघात करके
काम आया शत्रुओं के—
जुल्म की जंजीर बनकर
साथियों ही के गले में पड़ गया मैं
कर रहा अपराध कितना
निरपराधों को बनाता हाय ! बन्दी
देखकर जग क्या कहेगा ?
"न्याय" निश्चय ही हँसेगा
नर "जवाहर" से जनों को बन्द रखता
यह कलंक शताब्दियों तक
अमर और अमिट रहेगा
मैं अभागा बन्दीगृह
सामान्य से भी नीच हूँ
क्या करूँ बन्दी स्वयं हूँ !!

(३)

"राष्ट्र माँ से प्रेम करना पाप है"
यह वाक्य मेरे शीश पर अंकित रहेगा
किन्तु इसमें दोष क्या मेरा—
बताओ, मैं निरा "पत्थर"
मुझे क्या होश है !
आज मेरी मौन-जड़ता का—
कुटिल उपयोग करके
स्वार्थ साधा जब किसी ने
तुम बताओ, हाय ! इसमें
सत्य, मेरा दोष है !
प्राणमय मुझको बता दो
मुक्त वाणी ही दिला दो
तो कहूँ मैं उन सभी अन्यायियों से
स्कंध पर मेरे टिका, निज—
स्वार्थ की बन्दूक दागी
और मेरे ही जनों पर
किन्तु जड़ निष्प्राण—
कह सकता नहीं कुछ—
क्या करूँ बन्दी स्वयं हूँ !!

(४)

एक आशा पर खड़ा हूँ
एक ही सन्तोष मुझको
यह कलंक अमिट रहे तो रहे
किन्तु अमर रहेगी उन—
शहीदों की निशानी !
और जब सब प्राणधारी शान्त होंगे
तुच्छ मैं निष्प्राण—
भावी विश्व को कहता रहूँगा
राष्ट्र के बन्दी जनों की—
यह कहानी
"राष्ट्र के इतिहास का पन्ना समझकर"
कभी पूछेंगे कथा जो पथिक राही
बन्द थे क्यों राष्ट्र के सैनिक सिपाही ?
सत्य, मैं उनकी स्वयं दूँगा गवाही
आज तो मैं मौन हूँ
लाचार हूँ, चुपचाप सहता
क्या करूँ बन्दी स्वयं हूँ !!

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।
मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

कांग्रेस और प्रांतीय मंत्रिमंडल

(पेज ७ का शेष)

के बनने में कमी न हो जाये। सरकारी आर्डर से मिलें इस प्रकार भरी पड़ी हैं कि उनको भारतीय जनता के लिये सामान बनाने की आवश्यकता और समय दोनों ही नहीं हैं। पर यदि यह भी मान लिया जाये कि मिल में सामान मिलने लगेगा तो भी रेल की कठिनाइयों की समस्या हल करना इन प्रान्तीय मन्त्रियों के लिये असम्भव होगा। जब बङ्गाल के लिये अकाल के समय में पंजाब से भेजा हुआ गेहूँ एक महीना से अधिक समय में पहुँचा था तब अभी तो सीमा-प्रांत की दशा बङ्गाल की हुई ही नहीं है?

इसके अतिरिक्त प्रश्न यह उठता है कि क्या सीमा-प्रांत का मंत्रिमंडल कांग्रेस मंत्रि मंडल कहा जा सकता है? वैधानिक दृष्टिकोण में किसी भी राजनैतिक संस्था के सदस्यों को अपनी पार्टी अथवा संस्था की नीति का अनुकरण करना आवश्यक होता है। यही नहीं अनुशासन-सम्बन्धी ऐक्य स्थापित करने के लिये आवश्यक है कि सदस्यों के दृष्टिकोण में उन राजनैतिक संस्थाओं का आदर्श ही प्रमुख बनाया जाये! यदि कांग्रेस मंत्रिमंडल को इस पक्ष से देखा जाये तो ऐसी दशा में जब कांग्रेस कार्यकारिणी और पार्लियामेन्टी बोर्ड के सदस्य जेल में बन्द हैं, प्रांतीय कांग्रेस कमेटियाँ पूर्णरूप से प्रतिनिधि असेम्बलियाँ नहीं कही जा सकती हैं और जब हमारे कांग्रेस एम० एल० ए० भी जेलों में बन्द हैं किसी भी प्रांत में कोई भी प्रांतीय मंत्रिमंडल नहीं स्थापित किया जा सकता। जून सन् १९३९ के प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस कार्यकारिणी ने मंत्रिमंडलों के बारे में स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि "प्रांतीय कांग्रेसी मंत्रिमंडल और कांग्रेस कार्यकारिणी दोनों की नीति में सामंजस्य होना अनिवार्य है क्योंकि बिना इस ऐक्य के कांग्रेस के लक्ष्य को हानि पहुँचेगी!" इस प्रस्ताव के प्रकाश में डाक्टर खाँ साहब के मंत्रिमंडल का अस्तित्व कांग्रेस के नीति के विरोध पर ही आधारित है। जहाँ तक कांग्रेस के नीति का सम्बन्ध है, जब तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य और कार्यकारिणी सभापति जेल से बाहर नहीं होते हैं, कांग्रेस की नीति के बारे में निर्णय करनेवाले व्यक्तिगत सदस्य नहीं हो सकते हैं! कांग्रेस एक जनसत्तात्मक संस्था है इसलिये किसी भी प्रांत को इसके व्यापक नियमों की हत्या करके मनमानी करने का अधिकार नहीं। फिर ऐसे समय जब कांग्रेस संस्था इस प्रकार से दयनीय अवस्थाओं से गुजर रही हो।

कहा जाता है कि महात्मा गांधी की अनुमति से प्रांतीय सरकार की स्थापना की गई है। गांधी जी कहाँ तक इससे सहमत हैं यह तो नहीं कहा जा सकता पर आसाम के प्रधान मंत्री श्री बारदोलोई को जो पत्र उन्होंने लिखा है यदि वह उनकी अनुमति कही जा सकती है तो अवश्य डाक्टर साहब को भी इसी प्रकार की अनुमति मिली होगी। पर कुछ भी हो मध्य-प्रांत के अर्थसचिव श्री डी० के० मेहता के शब्दों में "बिना ब्रिटिश सरकार की नीति में विशेष परिवर्तन आये किसी भी प्रांत में मंत्रिमंडल स्थापित करना कांग्रेस को अपमानित करना है" कहने की आवश्यकता नहीं कि कांग्रेस के जनसत्तात्मकता के नियमों के विरुद्ध कांग्रेस मंत्रिमंडल कांग्रेस के नीति का अनुकरण न करके उसके उद्देश्य को अपमानित करता है।

बहुत से लोगों को अँग्रेजी हकूमत की इस नीति के प्रति बड़ी श्रद्धा है। यदि लार्ड वेवेल या अँग्रेजी शासक एक ईमानदार राजनीतिज्ञ के नाते कांग्रेस मंत्रिमंडल स्थापित करना चाहते थे तो सर्वप्रथम उन्हें कांग्रेस संस्था को जायज करना चाहिये था। एक ऐसी पार्टी जो नाजायज बता दी गई है उसी पार्टी द्वारा शासन चलाया रहा हो यह भी एक व्यङ्ग और हास्यप्रद मालूम होता है। उसके बाद नागरिक अधिकारों द्वारा कांग्रेस को अपने नीति-सम्बन्धी विषय पर विचार करने का अवसर देना चाहिये था। अँग्रेजी हकूमत की किसी एक संस्था, को जबर्दस्ती नीचा दिखाने की नीति इस बात पर काफी प्रकाश डालती है कि वह कहाँ तक न्याय कर रही है। बिना इन बातों के डाक्टर खाँ साहब का स्थापित किया हुआ मंत्रिमंडल उनका व्यक्तिगत मंत्रिमंडल कहा जा सकता है। वह कांग्रेस का मंत्रिमंडल केवल कांग्रेस व्यक्तियों के होने से नहीं कहा जा सकता।

खांसी बाघ की तरह भयंकर है...

सिरोलिन 'रोचि'

सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषेधक है

मरम्मत करके काम चला लीजिए--

-कमख़र्ची से पैसा बचता है

सादगी और किफ़ायत से आपके पैसे की बचत होती है। और छोटी छोटी बचतों से हफ़्तों और महीनों में कितनी रक़म जमा हो जाती है!

आजकल कम ख़र्च करना आपका परम कर्त्तव्य है, क्योंकि अगर आप ज़रूरत से ज़्यादा ख़रीदेंगे तो ग़रीबों को माल नहीं मिल सकता। इस परिस्थिति से लाभ उठा कर आप आर्थिक रूप से स्वयं अपना और अपने देश का हित-साधन कर सकते हैं।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

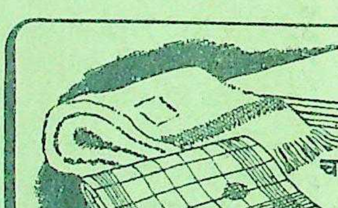

पुराने तौलियों, चादरों और मेज़पोशों की मरम्मत कर लीजिए।
इन्हें ज़्यादा दिन चलाइए।

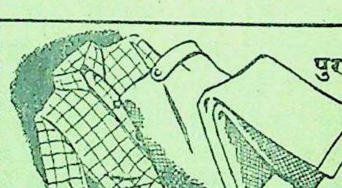

पुरानी क़मीज़ों, पै
जाघियों, धो
वग़ैरह की म
कर लीजिए
जहाँ तक
हो सके नये कपड़े न ख़री

माँ-बाप के पुराने कपड़ों से बच्चों के कपड़े बना लीजिए। देखिए, ये बुरे नहीं लग रहे।

पुराने जूतों में पै
लगवा कर इ
मरम्मत करा ली
इन्हें फेंकिए नहीं

नया छाता मत ख़रीदिए।
पुराने की मरम्मत करा लीजिए।

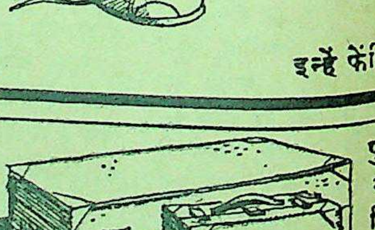

पुराने ट्रं
सूटकेस
बिस्तरबं
आदि की
मरम्मत
करा ली
नये बहुत महँगे

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

मझला दादा—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

वासवदत्ता—तीसरा संस्करण—बहुत अच्छे कागज़ में स्वच्छ प्रकाशन, चित्र आर्ट पेपर में। मू० २)

कुणाल—तीसरा संस्करण—असाधारण संस्करण—मोनो टाइप में। पुस्तकालयों के लिए। मू० १)

रस्वती सिरीज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।
जर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

प्रारोंदा
१८६९
नीलगिरि तेल
वापरा
सावडावेकर बंधु. मुम्बई ४.
स्थापना १९२६
जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय
र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
शीशी ८ आना, दजन ५॥=) डा०ख० अलग.
हमारे क्लिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये

स्टैनिस्ट्रीट
(कंसिंट्रेटेड)
चिकेन एसेंस
शुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों के इतना नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 116

स्वास्थ्यके नियम थोड़े और सरल हैं।
क्षमा कीजिये. स्वास्थ्य का प्रश्न सर्वप्रथम आता है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

अन्दरूनी सफाई के लिये
ANDREWS LIVER SALT
एंड्रूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्य के लिये

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभा विक्रताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं?

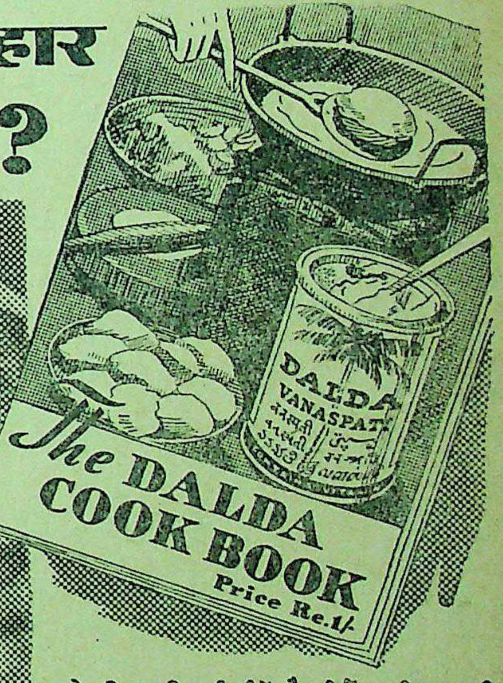

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D113 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमें से तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमें से उतनी ही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते है तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करने से थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हर एक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढ़िया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न डालडा स्फूर्ति के लिये

HVM. 35-175-40 HI
HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

विश्वास उत्पन्न करनेवाले आँकड़े

तेईसवीं त्रैवार्षिक वैल्युयेशन रिपोर्ट घोषित करती है

मृत्यु-संख्या के अनुभव में सुधार

और ख़र्च के अनुपात में कमी

३ साल का लाभ कम्पनी के ऋणों पर ३) सैकड़ा ब्याज लगाकर १,५०,८८,०९२, हुआ—

इसके कारण बीमादारों के सुरक्षा-कोष में ५४ लाख रुपये की वृद्धि हुई

बोनस घोषित
आजीवन बीमा पालिशियों पर १२॥) प्रतिहज़ार वार्षिक
मियादी (एनडाउमेंट) बीमे पर १०) ,, ,,

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ एशोरेन्स कं० लि०

ब्रांच आफिस:— ३२ कैनिङ्गरोड, इलाहाबाद।

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स
PILLS
डॉ. वामन गोपाळ सासोपरिळा डेपो मुंबई नं २.

इलाहाबाद के एजन्ट—बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जोहरा,
एल० एम० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

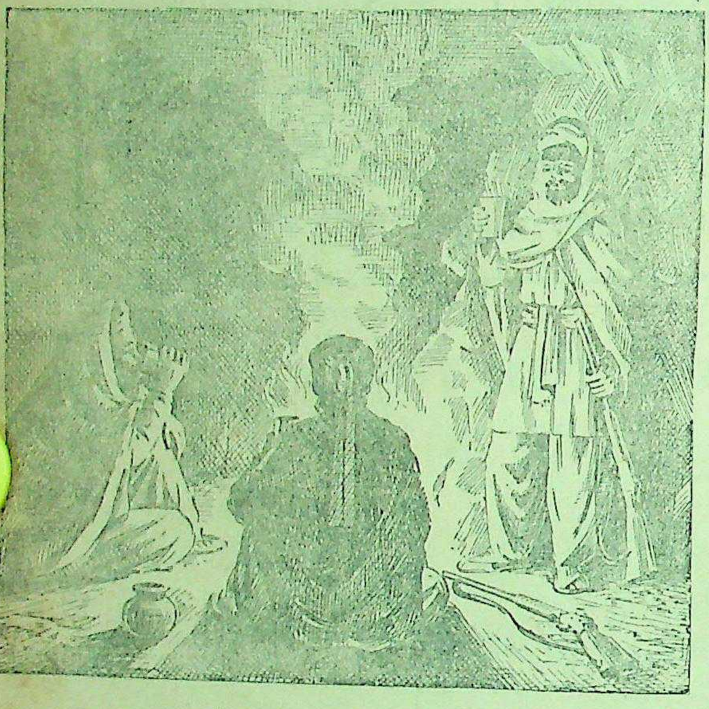

चाय का समय—

उत्तरी - पश्चिम में

सिन्ध नदी के पश्चिम में, उन चट्टानों के मध्य में जीवन की अवस्था, चट्टानों के ऐसे ही दृढ़ है। पठान और बलुची, दोनों ही, सदा खतरे का सामना करने को तैयार रहते हैं। सदा तैयार रहना, उनके दिन के कार्यक्रम या रात्रि जागरण का एक भाग हो गया है।

विशेषत: यात्रा में, बहुधा पड़ाव डालना आवश्यक है—वहाँ पहरेदार आग जलाकर रखवाली भी करते रहते हैं और रात्रि में दक्ष रूप से रखवाली हो इसलिए दूध-चीनी मिलाकर बहुत परिमाण में चाय बनाई जाती है। जिसे वह पीतल के गिलास में चूस चूस कर पीते हैं। चाय ठण्डक को दूर कर, उस एकान्त रात में प्रहरी का एकमात्र मित्रवत् पेय है।

समग्र फ्रान्टियर में ताजी ब्रूक-बॉंड चाय उसी तरह प्रचलित है जैसे अवशेष भारतवर्ष में।

ब्रूक बॉंड

'दो पत्ती और एक कली"

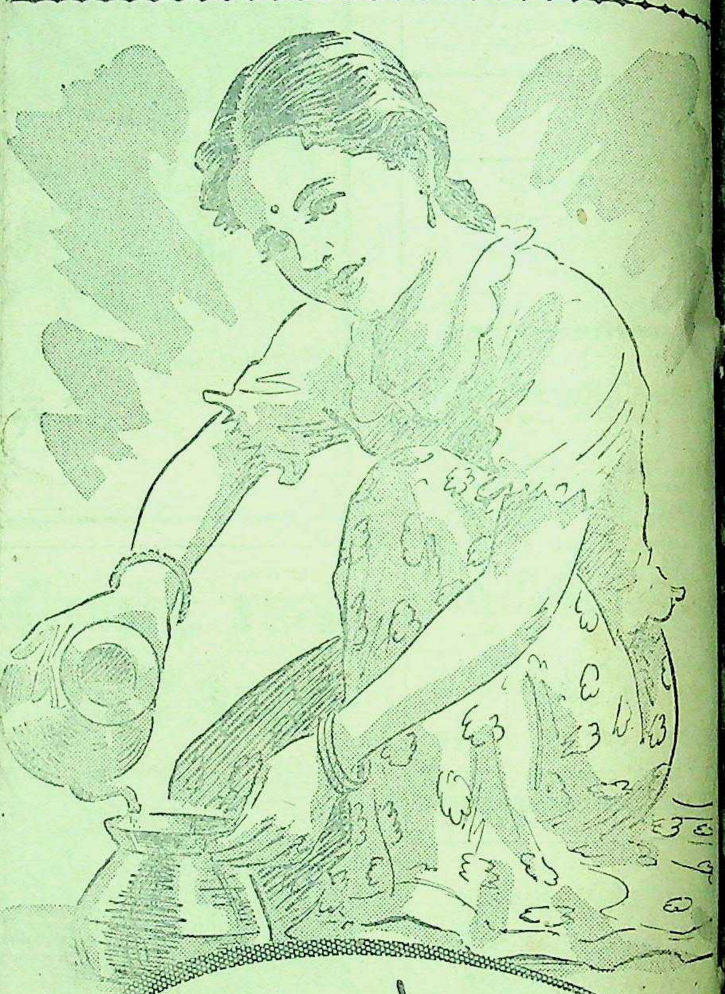

और उसने लाइफबॉय की आदत सीखी हैं!

वह अपनी माँ का हाथ बटाने लगी है और धीरे-धीरे जीवन की कला भी सीख रही है। किन्तु लाइफ़बॉय के रोज़ाना इस्तेमाल का सबक दे कर माँ ने उसकी बड़ी मदद की है। इस तरीके से मैल के ख़त्रों से—जो हर घर में खुशी और तंदुरुस्ती को लगा रहता है—उसे सुरक्षित कर दिया है।

LIFEBUOY
SOAP

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L. 79-169 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [क० मित्रा-द्वारा इ [illegible] लिमिटेड, २४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

वार्षिक मूल्य ७।।)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

वार, २९ अप्रैल, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday. 29th April, 1945

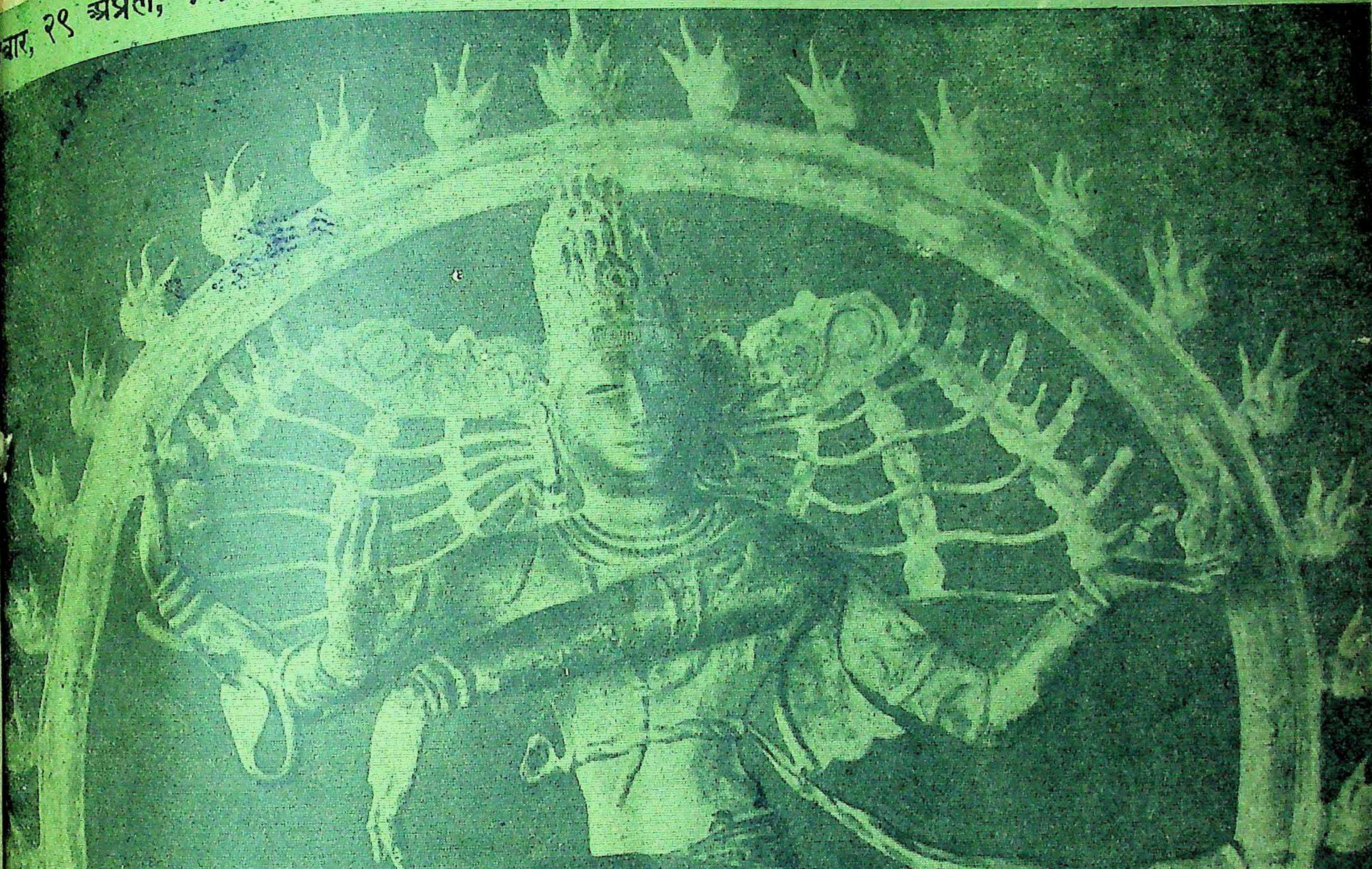

अजन्ता की प्राचीन गुफाओं में शिव-नृत्य का यह चित्र शिलाओं पर अङ्कित है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

अमरीका के नये प्रेसिडेंट ट्रूमन।
मुसलिम लीग से गठबन्धन क्यों है ?

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक ख़ूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है। मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सब को बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एक पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १।।) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

कमीशन

समुद्री बेड़े, फ़ौज और हवाई बेड़े में

हिन्दुस्तानी समुद्री बेड़े, फ़ौज और हवाई बेड़े के लिए अफ़सरों की सख़्त ज़रूरत को देखते हुए हेडक्वार्टर्स में छः स्टाफ़ आफ़िसर (भरती) नियुक्त किये गये हैं जिनके पते नीचे लिखे हैं।

इन अफ़सरों में से प्रत्येक के मातहत समुद्री बेड़े, फ़ौज और हवाई बेड़े के अफ़सरों का एक एक दल रहेगा जो अपने हेडक्वार्टर के आसपास के शहरों का दौरा करेगा।

इन दलों के दो काम होंगे : (१) जनता को इन तीनों फ़ौजी शाखाओं की नौकरियों, इनकी हालत, तनख़ाह वग़ैरह के बारे में परिचित कराना। (२) इन तीनों फ़ौजी शाखाओं के कमीशण्ड अफ़सरों की जगहों के लिए योग्य उम्मीदवारों को चुनना जो छः सर्विस सेलेक्शन बोर्डों के सामने पेश किये जायेंगे जिन्हें अन्तिम चुनाव का अधिकार है।

असाई बिल्डिंग्स, कोलाबा, बंबई।
५, वे रोड, लखनऊ।
११०, सेण्ट जान् पार्क, लाहौर।
१५, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।
असेम्बली रेस्ट हाउस, नागपुर।
कवन रोड, बंगलोर।

अपने स्थानीय अख़बार में सूचना देखिए

इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि ये छः दल प्रान्तीय सेलेक्शन बोर्डों के सहकारी हैं, इनकी जगह पर नहीं बनाये गये हैं। प्रान्तीय सेलेक्शन बोर्डों का काम अब भी चालू है। आप चाहें तो अपनी दरख़ास्त (१) अपने प्रान्तीय सेलेक्शन बोर्ड अथवा (२) अपने निकटवर्ती भरती दफ़्तर के पास भेज सकते हैं अथवा स्टाफ़ आफ़िसर (भरती) के सामने सीधे आवेदन कर सकते हैं जब वे आपके हलक़े में दौरे पर हों।

AAA 87

जवानी
कुछ और है
खूबसूरती
कुछ और

पुराने जमाने के कवि बिखरे सौन्दर्य की बड़ी प्रशंसा करते थे परन्तु आधुनिक महिलायें जानती हैं कि प्रकृति प्रदत्त सौन्दर्य ही यथेष्ट नहीं है, आकर्षण के हेतु वर्ण विन्यास व अंगराग अपरिहार्य हैं। उत्तम प्रसाधन सामग्रियों की विशुद्धता व उत्कृष्टता पर विश्वास किया जा सकता है।

युद्धकाल की पैकिंग . जहां तक कच्चे माल और बनाने के तरीके का सम्बन्ध है स्टैनिस्ट्रीट का माल दुनियां भर के मालों से टक्कर लेता है। कागज नियंत्रण कानून और युद्धकाल की दूसरी पाबन्दियों के कारण हमारे बहुत से द्रव्यों के लेबुल और पैकिंग जैसे चाहियें वैसे नहीं हो पा रहे हैं। इसके लिये हम जनसाधारण से क्षमा प्रार्थना करते हैं

कोल्ड व वैनिशिंग क्रीम
टैलकम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यूडी कोलोन स्टैनैरोमा
लैवेण्डर वाटर
हेयर शैम्पु

स्टैनिस्ट्रीट

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐन्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 113

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

वर्ष ७ संख्या ३५]

[रविवार, २९ अप्रैल, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है?

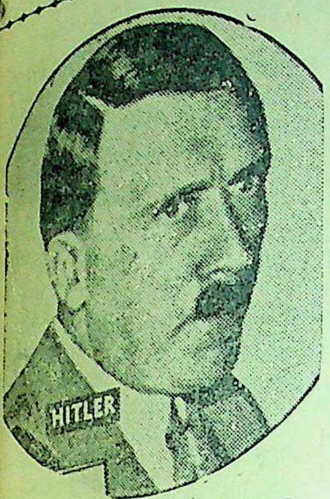

नाजी डिक्टेटर हिटलर ने बर्लिन की रक्षा के लिये कोई उपाय नहीं रखा है।

बर्लिन रूसियों के कब्जे में आ गया है। रूसी अग्रिम सैन्यदल और विशाल टैंकों ने उत्तर से दक्षिण तक जाकर बर्लिन से जर्मनों के भागने का मार्ग बन्द कर दिया। आत्म-समर्पण करने के सफेद झंडे बर्लिन में दिखाये गये। बर्लिन पूर्ण रूप से घेर लिया गया। मार्शल स्टालिन बर्लिन के द्वार पर पहुँच गए और समस्त रूसी सेनाओं की अधिनायकता उन्होंने स्वतः ग्रहण कर ली।

* * *

महाबलेश्वर में महात्मा गांधी आस-पास के श्रमजीवियों के रहन-सहन के बारे में बड़ी दिलचस्पी ले रहे हैं। उन्होंने अपने निकटवर्ती लोगों से और सार्वजनिक कार्यकर्ताओं से पूछा है कि वे पता लगावें कि राशनिङ्ग और मूल्य नियंत्रण की योजना कहाँ तक सफल हो रही है। म्युनिसिपैलिटी की कार्यवाही—सफाई, शिक्षा, पानी का प्रबन्ध आदि के विषय में भी गांधी जी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। गांधी जी प्रसन्न चित्त हैं। उनका स्वास्थ्य सुधर रहा है। वे सुबह और शाम प्रतिदिन एक घंटा टहलते हैं।

* * *

आष्टी और चिमूर के फाँसी की आज्ञा पाये हुए कैदियों की हेबियस कारपस दरख्वास्त पर नागपुर हाईकोर्ट के दो जजों ने एक दूसरे से असहमत होते हुए अलग-अलग फैसले दिए हैं। सर एस० एम० नियोगी ने दरख्वास्त मंजूर कर ली और मि० जस्टिस होमयन ने उसे नामंजूर किया। दरख्वास्त की सुनवाई तीसरे जज द्वारा हो रही है।

* * *

पेशावर में होनेवाले सीमाप्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन की बैठक में सर्व-सम्मति से एक प्रस्ताव पास करके यह माँग की गई कि केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार कायम की जाय जो केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाओं के प्रति जिम्मेदार हो और राष्ट्रीय नेताओं को तत्काल रिहा किया जाय।

* * *

सम्मेलन ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूर्ण विश्वास प्रगट किया और महात्मा जी को यकीन दिलाया कि सीमाप्रान्त की जनता उनके रचनात्मक कार्यक्रम को कार्यान्वित करेगी। प्रस्ताव में घोषित किया गया कि महात्मा गांधी की आवाज समूचे भारत की आवाज है और महात्मा गांधी की राय समूचे देश की राय है।

* * *

जर्मन रेडियो ने यह बताया है कि हिटलर बर्लिन में हैं। रेडियो ने डा० गोबेल्स की अपील सुनाते हुए कहा—"फुहरर ने यह निश्चय किया है कि इस नाजुक समय में वह जर्मन राजधानी में ही रहेंगे। इस बात की घोषणा हम जर्मन जनता से और समस्त संसार से करते हैं।"

* * *

शिकारपुर की चावल की एक मिल में आग लग गई, जिसके फलस्वरूप ३ लाख रुपये का नुकसान होने का अनुमान लगाया जाता है। आग ४ घंटे के बाद काबू में की जा सकी।

* * *

महात्मा गांधी ने बम्बई में प्रार्थना करने के पूर्व प्रार्थना के सम्बन्ध में भाषण करते हुए कहा—यदि आप प्रार्थनाओं में केवल मुझे देखने के लिए शरीक होते हैं तो आप आवें ही नहीं या आप एक दिन के लिए आ सकते हैं। लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ एक-मात्र ईश्वर का भजन करने के लिए प्रार्थना में शरीक हों। परमात्मा कभी किसी को संकट में नहीं डालता।

* * *

महात्मा जी ने हरिजन फण्ड के लिए अपील करते हुए कहा—यदि आप अस्पृश्यता का निवारण करना चाहते हैं तो आपको इस फण्ड में चन्दा देना चाहिए। चाहे यह एक पाई हो या चाहे एक करोड़ रुपया, ईश्वर की कृपा सब पर समान रूप से होगी और उसके दरबार से सभी को एक-सा पुरस्कार मिलेगा।

* * *

जापानी परराष्ट्र मंत्री टोगो ने मंचूरिया, चीन, बर्मा, स्याम, तथा फिलिपाइन्स के राजदूतों के सम्मेलन में भाषण करते हुए कहा कि युद्ध की परिस्थिति बहुत गम्भीर है। हममें निर्णयात्मक विजय प्राप्त करने के लिए आत्म-विश्वास तथा शक्ति, दोनों हैं। वर्तमान परिस्थितियों में जापानी हर मुसीबतों पर विजय पा रहे हैं, और अपनी युद्ध-शक्ति बढ़ाने तथा राष्ट्र की रक्षा-व्यवस्था मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

* * *

सीमाप्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन तीन दिनों की कार्यवाहियों के बाद आज समाप्त हो गया। डा० सैयद महमूद ने कहा कि पाकिस्तान हो या न हो, मुसलमानों के अधिकारों की रक्षा हो चाहे न हो, किन्तु वे भारत को स्वतन्त्र करना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं।

* * *

युक्तप्रान्त के गवर्नर ने भारत रक्षा कानून के अनुसार यह आज्ञा निकाली है कि कोई भी युक्तप्रान्त के किसी भी स्थान से कोई सूती कपड़ा बाहर नहीं ले जायेगा और न भेजेगा। यह आज्ञा किसी मुसाफिर द्वारा २० पौंड तक कपड़े के लिए निजी बिस्तर इत्यादि के हिस्से के तौर पर लागू नहीं रहेगी।

* * *

गीत

लेखिका, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा

राह न रोको!
चली चलूँगी
आह्वानों को नहीं छलूँगी, उमड़ा सिन्धु अथाह न रोको!
निशि अँधियारी,
सिर पर मेरे बोझा भारी, मिले न मंज़िल चाह न रोको!
जो कुछ पाया
जो न सकेगा उसे भुलाया, स्मृति की शेष उछाह न रोको!
तूफ़ानों से,
खेल सकूँ मैं बलिदानों से, गति का प्रखर प्रवाह न रोको!
जिसमें होकर
आगे बढ़ूँ निबलता खोकर, गीतों की मधु-छाँह न रोको!
अंक न भरने,
जय का शंखनाद अब करने, उठी हुई यह बाँह न रोको!
राह न रोको!

बर्लिन पर अधिकार करनेवाले सोवियट फौजों के प्रधान सेनापति जनरल जुकोव।

ब्रिटिश प्रधान की पत्नी श्रीमती चर्चिल ने हाल में मार्शल स्टालिन से भेंट की,

* * *

ड्यूक आफ विंडसर को अपने जीवन से सम्बन्धित किसी एक फिल्म में अभिनय करने के लिए राजी किया जा रहा है।

* * *

जापानी समाचार समिति ने सूचित किया है कि टोकियो पर भारी बम-वर्षा के फलस्वरूप विदेशी दूत राजधानी से हट गये हैं।

* * *

फारस के प्रधान मंत्री नर्तजा बयात के अधीन जो सरकार थी उसने इस्तीफा दे दिया है। नर्तजा बयात के खिलाफ पार्लामेंट में अविश्वास का प्रस्ताव पास किया गया था।

* * *

अमेरिका ने रूस की यह माँग दूसरी बार अस्वीकृत कर दी है कि सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में लुबलिन सरकार को प्रतिनिधित्व प्राप्त हो।

* * *

अनुमान किया जाता है कि शीघ्र ही वाशिंगटन में 'पाँच बड़े' राष्ट्रों के वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन होगा। उस सम्मेलन के फलस्वरूप पोलिश समस्या के हल हो जाने की सम्भावना है।

* * *

विश्व-विख्यात नाटककार जार्ज बर्नार्ड शा ने सानफ्रांसिस्को सम्मेलन पर गांधी जी के इस वक्तव्य का समर्थन किया कि जर्मनी और जापान को नीचा न दिखाया जाय और शान्ति के फलों का उपयोग सभी राष्ट्र समान रूप से करें।

* * *

अमेरिकन राष्ट्रपति ट्रूमान ने कांग्रेस के संयुक्त अधिवेशन में भाषण करते हुए घोषित किया कि जर्मनी और जापान को यह निश्चित रूप से समझ लेना चाहिए कि अमेरिकन लोग आजादी की लड़ाई में तब तक लड़ते रहेंगे जब तक शत्रु के प्रतिरोध का अन्त न हो जायगा।

* * *

कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना आजाद को अहमदनगर फोर्ट से बाँकुरा में भेज दिया गया है।

सम्पादक का पृष्ठ

बर्लिन का पतन

बर्लिन का पतन हो गया। पिछले छः वर्ष से होनेवाले इस महायुद्ध का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से यह सबसे महत्त्वपूर्ण समाचार है। सोवियट रूसी फौजों तथा मित्रराष्ट्रों की फौजों ने सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन के होते होते फैसिस्टों के विरुद्ध जो महान् विजय प्राप्त की है, वह इतिहास के पन्नों में अमिट रहेगा। हिटलर ने जिस बहादुरी से अन्तिम क्षण तक बर्लिन की रक्षा के लिये तत्परता दिखाई है, उसके लिये वह भी बधाई का पात्र है। उसने जर्मन जाति को लड़ाकू राष्ट्र बनाया और अन्तिम समय तक वह अपनी आन पर डटा रहा। हिटलर का संपूर्ण जीवन सैनिक जीवन रहा है, उसने जर्मन जाति में जागरण की आग फूँकी और उसका फौजी संगठन करके संगठित बनाया। जर्मन जाति युद्ध के लिये उत्साहित चाहे न भी रही हो किन्तु हिटलर ने, जिसने संसार में हठ, धुन और महान् योद्धा के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की है, दुनिया को यह दिखा दिया कि महायुद्ध किसे कहते हैं? हम हिटलर के आदर्श तथा उसके द्वारा प्रचारित फैसिस्टवाद के कतई विरोधी हैं किन्तु एक महान् योद्धा के समस्त गुण उसमें वर्तमान हैं। उसी के परिणाम स्वरूप उसने योरोपीय देशों तथा महान् शक्तियों तक से लोहा लिया और देखते देखते ऐसा भयंकर आतंक फैला दिया कि संसार काँप उठा। किन्तु मित्रराष्ट्रों की अपूर्व शक्ति, महान् धैर्य और फौजी संगठन के सामने उसे पराजित होना पड़ा, और अन्त में तो यही होना भी था। सोवियट रूस पर हिलटर ने मास्को विजय के लिए चढ़ाई की और वह नगर में पहुँचते पहुँचते रह गया किन्तु मार्शल स्टेलिन ने ठीक इसी के विपरीत बर्लिन पर विजय-पताका फहरा दी और स्वयं भी वहाँ पहुँच गये। मित्रराष्ट्रों की यह महान् विजय है। बर्लिन के पराभव का व्यापक प्रभाव संसार की कायापलट करने की एक महत्वपूर्ण सूचना है। योरोप से अब फैसिस्ट आतंकवाद की समाप्ति होगी और प्रजातंत्रीय दृष्टि से एक नवीन संसार का निर्माण होगा।

बर्लिन संसार के प्रसिद्ध नगरों में गिना जाता है। हिटलर का यही प्रधान केन्द्र है। नाजी नेताओं तथा लाखों सैनिकों का भी यही केन्द्रस्थल रहा है। बर्लिन के पराभव से जर्मनों को अब पता चलेगा कि हिटलर का आदर्श उनके अनुकूल नहीं था और इसी के परिणाम स्वरूप उन्हें आज संसार के राष्ट्रों के सामने नतमस्तक होना पड़ रहा है। उन्हें यह ज्ञात होगा कि डिक्टेटरशिप तथा एक व्यक्ति के आधिपत्य का कितना दुखद परिणाम हो सकता है, उसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है। बर्लिन का पराभव वास्तव में दुखद तो है ही किन्तु इस घटना से संसार में एक नये युग का प्रारंभ होगा साथ ही शान्ति तथा व्यवस्था की एक नई लहर पैदा होगी!

मिस्टर जिन्ना अब भी.... !

मुस्लिम लीग के प्रेसीडेंट श्री मुहम्मद अली जिन्ना ने भारत सचिव मिस्टर एमरी को एक तार देकर सावधान किया है कि यदि भारत के लिए कोई ऐसा विधान स्वीकृत होगा, जिसमें मुसलमानों से सलाह न ली जायेगी, तो वह भारतीय मुसलमानों के लिए अमान्य होगा। आश्चर्य है कि मिस्टर जिन्ना तीन महीने के लिए एक ओर राजनीतिक क्षेत्र से अवकाश ग्रहण कर रहे हैं और दूसरी ओर वह अपना शिगूफा भी छोड़ते जा रहे हैं। सबसे पहले तो उन्हें भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल से लंदन जाने के कुछ पहले निबट लेना चाहिए था, क्योंकि वह स्वयं पाकिस्तान के विरोधी हैं, इसके बाद उन्हें मिस्टर एमरी को तार देना चाहिए था। अब तो लीग एक प्रकार से पराजित दशा में बदल रही है। सीमाप्रान्त में लीगी मन्त्रिमण्ड के पराभव और कांग्रेस मन्त्रिमण्डल के निर्माण से यह स्पष्ट हो गया है कि जिन प्रान्तों में मुसलमानों का बहुमत है, जब वहाँ लीग का पैर नहीं जम सका तो अन्य प्रान्तों में जहाँ मुसलमान अल्पसंख्या में हैं लीग की नीति के अनुसार शासन-सम्बन्धी किसी भी वैधानिक कार्य में पूछने की क्या आवश्यकता रह जाती है? यदि वह अल्पसंख्यक हैं तो बहुमत प्राप्त दल उनके सत्व की रक्षा करेगा ही। इतना शंकित होने की क्या आवश्यकता है? मिस्टर जिन्ना और उनका दल बहुमत प्राप्त मुसलिम प्रांतों में भले ही पराजित हो जाये, वहाँ के मुसलमान लीग की सफाई कर दें किन्तु बहुमत प्राप्त हिन्दू प्रान्तों में अल्पसंख्यकों के सत्व की रक्षा अवश्य ही होगी। इसलिये यह कार्य तो यों भी होगा ही लार्ड वेवेल तथा मिस्टर अमरी को वह आगाह करने के लिये तार देते या नहीं? हाँ, मिस्टर जिन्ना का हृदय शुद्ध नहीं है, इसीलिये उन्हें शंका है। असल बात तो यह है कि मिस्टर जिन्ना को लार्ड वेवेल से पहले फैसला करना चाहिए, क्योंकि जब अँगरेज स्वयं मुसलमानों के लिये पाकिस्तान का निर्माण नहीं चाहते तो कांग्रेस तथा अन्य राष्ट्रीय मुसलिम दलों पर उनका प्रभाव डालना व्यर्थ सा ही है। जिन लोगों को शासन हस्तान्तरित करना है यह उनकी इच्छा पर निर्भर है। मिस्टर जिन्ना तथा उनके सहयोगियों को तो एक न एक साम्प्रदायिक बखेड़ा खड़ा करते रहने का पुराना रोग है। इसलिये उन्हें ऐसे अवसरो पर कुछ न कुछ कहना अनिवार्य है। किन्तु अब वह समय दूर नहीं है जब साम्प्रदायिक कटुता का अंत होगा और देश में ऐसी शासन व्यवस्था चालू होगी जो यहाँ के निवासियों की संख्या के अनुसार प्रतिनिधित्व से पूर्ण होगी। लीग की इतिश्री होगी और हिन्दू मुसलमान एक्य भाव से भारतीय शासन की बागडोर संभालेंगे।

* * *

सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा श्री शंकरराव देव अहमदनगर फोर्ट जेल से पूना के यरवदा जेल में पहुँचा दिये गये हैं।

अर्नी पाइल का रोमांचक जीवन

युद्ध में उसने अपना जीवन कैसे बिताया था

लेखक, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन बी० ए०, एल-एल० बी० (पत्रका

अर्नी पाइल एक अमरीकन संवाददाता था जो अपने समाचारों के लिए प्रसिद्ध था। अभी हाल में उसकी मृत्यु हो गई। इस लेख में अर्नी पाइल के रोमांचक जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

अर्नी पाइल का देहावसान हो गया है। उसका हाथ, जो युद्ध के मानवीय पहलू के रोमांचकारी वर्णन लिखता था, अब नहीं चलता। अठारह अप्रैल को राइटर ने दुनिया को यह संवाद सुनाया कि अमेरिका का प्रिय युद्ध संवाददाता प्रशान्त सागर में मारा गया। इस संवाद ने कई लोगों को सदमा पहुँचाया होगा जो उसके वर्णनों को चाव के साथ पढ़ते थे। उसकी उम्र करीब अड़तालीस वर्ष की होगी। कुछ साल पहले कोई अनुमान भी नहीं कर सकता था कि अर्नी यूनाइटेड स्टेट्स का सर्वप्रिय व्यक्ति होगा। उसके पाठक उसके दफ्तर में टेलीफोन से पूछते रहते थे कि उसका स्वास्थ्य और हाल-चाल कैसा है? उनकी चिट्ठियाँ बड़ी प्रेमपूर्ण होती थीं जिनमें उसके स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की जाती थी। वह बीमार रहा करता था और उसने काफी कष्ट पाया। एक दिन उसने कहा कि किसी दूसरे आदमी ने होटलों में इतनी अधिक बीमारी नहीं काटी जितनी कि उसने।

हाल में वह अपने काम से थकने लगा था और युद्धक्षेत्रों में जाते हुए डरता था। एक सहकारी संवाददाता से उसने कहा—"इसका ख्याल मुझे उत्पीड़क मालूम देता है। इसकी आदत पड़ने के बजाय मेरी आदत अनुभव और उम्र के साथ घटती ही जा रही है। मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि सबका मुझ पर एक-सा असर पड़ रहा है। अब मुझे अपने ऊपर उड़ते हुए हवाई जहाज से उससे भी ज्यादा डर लगता है जितना कि लंदन के हमलों में या हमारे अफ्रीका के आरम्भिक गोताखोर बमवर्षा से लगता था।"

अर्नी अपना सम्पर्क किसी युद्ध के टुकड़े से कर लेता था और उसके सिपाहियों के साथ कुछ दिन खाता-पीता और हँसता था। फिर वह पीछे लौट आता था और अपने अखबारों के लिए कई स्तम्भों को लिखता चलता था जिनमें वह साधारण सिपाहियों के जीवन की छोटी छोटी घटनाओं का रोमांचकारी वर्णन करता था। उसको जनरलों और कैप्टनों के साथ रहना प्रिय नहीं था और उनके बारे में संवादों को वह सुन्दर नहीं बना पाता था।

एक दिन दफ्तर से उसको एडमिरल डार्लो से मिलने का हुक्म मिला जब और भी कई लड़ाई के संवाददाता उससे मिलनेवाले थे। मुलाकात के वक्त वह बैठा सब सुनता रहा, पर दफ्तर को खबर भेज दी कि 'डार्लो की कहानी' मुझसे नहीं बन सकती। उसके बदले में उसने एक सिपाही का वर्णन लिख भेजा जो पास ही की एक खाई में मरा था। अर्नी का युद्ध जनरलों और मेजरों का युद्ध नहीं था बल्कि उन साधारण सिपाहियों का युद्ध था जिनके पास कहने और सुनाने को बहुत कुछ है पर जिनका कोई सुननेवाला नहीं रहता। सर ऊँचा रखनेवाले युद्ध संवाददाता लोग जो पदाधिकारियों के बीच भटकते सिपाहियों के लिए उनके पास वक्त जॉन स्टीन बैक ने अर्नी पाइल के बारे में लिखा था "दरअसल युद्ध और उनका एक दूसरे से बहुत कम जस्य है। एक युद्ध जो नक्शों, मोर्चों, चालकों का है जो जनरल का युद्ध है और दूसरा युद्ध घर वापस के लिए उत्सुक, थके हुए, हँसोड़ साधारण आदमियों का है। अपने मोजे धोते हैं, खाने के बारे में करते हैं, अरब युवतियों को सीटी बजाते हैं या किसी भी युद्ध नहीं छोड़ते और संसार के कार्यों को करते चलते हैं। रोब और साहस के साथ—यह अर्नी का युद्ध है। वह उसे उतना ही तरह जानता है जितना कोई और दूसरे से ज्यादा अच्छी तरह लिखता है।"

अर्नी की कथायें तीन सौ द बारों में हफ्ते में छः रोज छपती थीं करोड़ों आदमी उन्हें पढ़ते थे। संवाद बिना तड़क भड़क के सरल में लिखे रहते थे। उसके स्तम्भ ऐसे पढ़ते थे कि जैसे किसी मित्र द्वारा हुए दिल से लिखी हुई परि चिट्ठी हो। वह एक कुशल ले था जो छोटी बातों को पकड़ लेता उनको कलात्मक तरीके से प्रथम मानवीय कथा में गूंथ देता था।

अर्नी की शुरू शुरू में उपेक्षा की। पर जब बाद में मुल्क से बार बार उसकी खबरों का आने लगा तब उन्होंने पहचाना कि उनके युद्ध का असली पोषक है ब रोज करोड़ों व्यक्तियों को युद्ध की के घातक निरानन्द से बचाता था वर्णन होता था आदमियों की मौत, की चोट, नारीत्व का अपहरण, टूटना और शहरों के ध्वंस का। बहुत नैपुण्य और समझ के साथ बड़ी अमानुषीय यन्त्रमय युद्ध का पहलू प्रगट किया।

हाल ही में अर्नी को मृत्यु का भास हो गया था और वह सब वह अब कहीं प्रशान्त में मृत पड़ा उसकी मौत का करोड़ों लोग मनावेंगे और उसकी कथायें न लोगों को दुःख होगा। 'टाइम्स' की वाणी सच थी जब उसने लिखा चित मृत्यु के पूर्वाभास से जो उस घेरे रहता है, अर्नी पाइल ज्यादा बाद के बारे में नहीं सोचता। अपने तरीके पर वह एक तरह का राष्ट्रीय है, क्योंकि अगर अर्नी पाइल कल जावे, जैसा बहुत सम्भव है, फिर अरसा गुजर जायेगा जिसके बाद के लोग अर्नी पाइल के युद्ध पावेंगे।

राष्ट्रपति हैरी ट्रूमन कौन हैं?

अमरीका के नये राष्ट्रपति के जीवन पर एक दृष्टि

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

अमरीका के नये राष्ट्रपति हैरी ट्रूमन कौन हैं? उन्होंने एक साधारण कोटि के व्यक्तित्व से किस प्रकार इतना बड़ा व्यक्तित्व प्राप्त किया, उनका जीवन कैसा रहा है और राजनीति में उनका क्या मत है, इन सब का मनोरंजक वर्णन इस सुंदर लेख में किया गया है। लेख जानकारी से पूर्ण और सामयिक है।

तारीख १२ अप्रैल की गोधूली की वेला थी। वाशिंगटन के गवर्नमेंट हाउस में चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। उसी समय मंत्रिमंडल के कमरे में हैरी एस० ट्रूमन ने राष्ट्रपति पद की शपथ ग्रहण की जो संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के ३३वें राष्ट्रपति का पद है। जिस समय ट्रूमन ने राष्ट्रपति-पद की शपथ ली उस समय उपस्थित व्यक्तियों में बहुत थोड़े से लोग थे। जो उपस्थित भी थे वे एक गम्भीर मुख-मुद्रा में थे। हैरी ट्रूमन अमेरिका के सातवें उप-राष्ट्रपति हैं जिन्हें राष्ट्रपति के निधन हो जाने से राष्ट्रपति का पद मिला है। ऐसी घटनायें संयुक्तराष्ट्र के राजनैतिक जीवन में छः बार पहले भी घट चुकी हैं।

सिनेटर ट्रूमन अचानक उप-राष्ट्रपति बने थे। दोनों दलों ने ट्रूमन को अपना वोट दिया। क्योंकि हेनरी-वैलेस से दक्षिणी प्रजातंत्रीय सदस्य कुछ नाराज थे। वैलेस के ऊपर प्रजातंत्र दलवालों की रुष्टता ने ट्रूमन को उप-राष्ट्रपति बना दिया। उप-राष्ट्रपति चुने जाने के पूर्व ट्रूमन को केवल इने-गिने व्यक्ति जानते थे। वोट के समय एक प्रश्न के ऊपर कि क्या वे (ट्रूमन) अपने को उप-राष्ट्रपति के योग्य समझते हैं? उन्हों[illegible] कहा, "ट्रूमन नागरिक हैं और राष्ट्रपति [illegible] सहकारी। वह युद्ध के सम्बन्ध का अच्छा ज्ञान रखते हैं।"

हैरी ट्रूमन का जन्म १८८४ ई० के मई मास में लामार मिसूरी में हुआ था। उनका परिवार पक्का प्रजातंत्रवादी था। इनके पूर्वज स्काच, आयरिश और डच के मिश्रित वंश से हैं। वे अपने परिवार के सम्बन्ध में कहते हैं कि हमारा परिवार बहुत छोटा है। हम लोग बहुत कम ज्ञान रखते हैं। कुछ दिन तक मैं स्वयं पुस्तकें रखने का कार्य करता था। इसके पश्चात् मैं अपने पिता के खेती के फार्म पर चला गया और वहाँ दस वर्ष तक खेती करता रहा।"

ट्रूमन अमेरिकन सैन्यदल कंनसस शहरवालों की सहायता से काउण्टी जज बने। इस पद पर वे दस वर्ष तक कार्य करते रहे। उन्होंने उसके ६० लाख डालर का हिसाब बिलकुल साफ रक्खा। कोई मनुष्य ट्रूमन को उनके हिसाब में कुछ भी दोष नहीं दिखला सकता था।

ट्रूमन सन् १९३४ ई० में संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की सिनेट के सदस्य हो गये। उस समय ट्रूमन महोदय स्टेट कलेक्टरी चाहते थे। परन्तु उनके पहले ही से एक प्रजातंत्रवादी उम्मेदवार हो चुका था। सिनेट में ही उन्हें स्थान मिला। अपनी सिनेट की सदस्यता के प्रथम वर्ष वे रूजवेल्ट के पक्ष में ही वोट करते रहे। १९३९ ई० में ट्रूमन को सिनेट के लिए एक बड़ा राजनैतिक युद्ध करना पड़ा। गवर्नर स्टार्क और अटार्नी मुलीगन दो व्यक्ति भी उस पद के लिए लालायित थे। अन्ततोगत्वा हैरी ट्रूमन सिनेटर निर्वाचित हो गये।

ट्रूमन ने सन् १९४० ई० में सिनेट में जो नवीन कार्य किया वह महत्वपूर्ण नहीं। वे विगत महायुद्ध के एक अनुभवी व्यक्ति हैं। उन्होंने देखा था कि युद्ध के पश्चात् एक भयंकर स्थिति पैदा हो जाती है। दूसरा महायुद्ध भी उनके सामने था। उन्होंने सन् १९१७ की गलतियों को दूर करने का प्रयत्न किया। क्योंकि उस समय अमेरिकन सैनिक ब्रिटिश और फ्रांसीसियों के तेल पर अवलम्बित हो रहे थे। यह सब अमेरिकन उत्पादन का दोष था।

ट्रूमन ने इस बार गत युद्ध की गलतियों की पुनरावृत्ति को रोका है। इस युद्ध की भयंकरता से देश को बचाने के लिए उन्होंने संयुक्तराष्ट्र अमेरिका की ३५,००० मील की परिक्रमा की। इस यात्रा का सारा खर्च उन्होंने स्वयं किया। इससे उनको नये अनुभव प्राप्त हुए। यात्रा में उन्होंने, असंख्य सेना और युद्ध-सामग्री के उत्पादन-क्षेत्रों की जाँच कर अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। जब वे यात्रा से लौटे तो सिनेट में एक वक्तव्य दिया और कहा कि एक ऐसी समिति का निर्माण होना चाहिए जिससे खराबियाँ दूर हों और युद्ध-उत्पादन-सामग्री की वृद्धि हो। दूसरे सिनेटर भी ट्रूमन के इस प्रस्ताव पर राजी हो गये। उन्होंने ट्रूमन को उस कमेटी का चेयरमैन बनाया। सबने उनकी समिति को एक वर्ष के लिए १५,००० डालर दिया। बहुत से सिनेटर जिनमें डिमोक्रेटक तथा रिपब्लिक थे उस कमेटी का काफी सहयोग दिया।

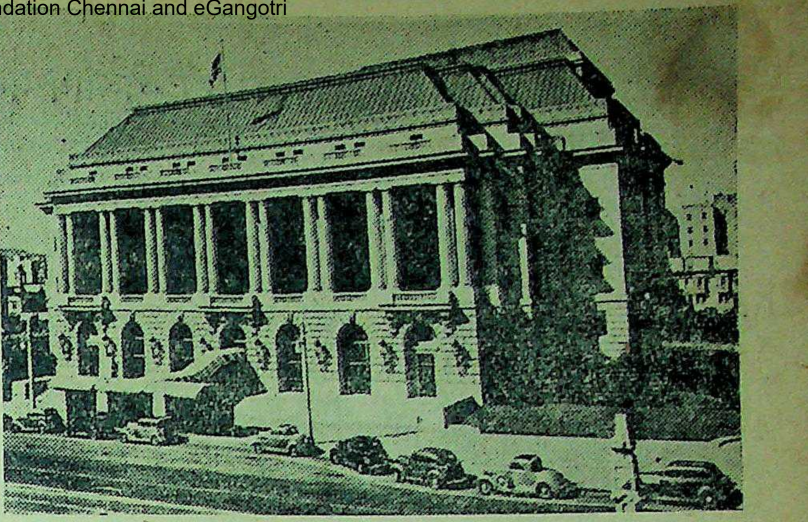

सेनफ्रांसिस्को का वह विशाल भवन जहाँ मित्रराष्ट्रों तथा विश्व के अन्यराष्ट्रों का सम्मेलन हो रहा है।

कमेटी ने युद्ध-सामग्रियों की कमी की जाँच की। वह कौन सी वस्तुएँ थीं जिनकी ओर कमेटी ने अधिक ध्यान दिया? वह चीजें थीं—अलमोनियम, रबड़, सीसा, जस्ता और सोना। यह रिपोर्ट सन् १९४२ के प्रारम्भ में प्रकाशित हुई। कमेटी के निर्णय के अनुसार (ट्रूमन कमेटी) वार प्रोडक्शन बोर्ड (युद्ध उत्पादन बोर्ड) का निर्माण हुआ। जिसके अध्यक्ष डोनाल्ड नेल्सन हुए।

ट्रूमन ने अपनी रिपोर्ट में कोई सनसनी उत्पादक प्रकाशन नहीं किया है इसमें कितने ही झगड़े शान्ति ढंग से निबट गये। परन्तु अगस्त १९४१ के निम्न वाद-विवाद ने उनकी ख्याति बढ़ा दी है:—

सिनेटर वैण्डेनबर्ग ने पूछा, "इस स्थिति का कौन जिम्मेदार है (रक्षात्मक कार्यक्रम के बुरे संचालन का)?"

सिनेटर ट्रूमन, "केवल एक। जहाँ जिम्मेदारी दी जा सकती है।"

सिनेटर वैण्डेनबर्ग, "वह कहाँ है? क्या ह्वाइट हाउस में?"

सिनेटर ट्रूमन, "हाँ, महोदय।"

हैरी ट्रूमन को राष्ट्रपति के चुनाव में कितने ही आक्रमणों का सामना करना पड़ा है। रूजवेल्ट के प्रतिकूल पत्रों ने ट्रूमन को कितनी ही खरी-खोटी सुनाई। न्यूयार्क के डेली न्यूज ने कहा, था कि "रूजवेल्ट को, आफिस में मर जाना चाहिए तब ट्रूमन एक निराश राष्ट्रपति होंगे।" वोटरों ने ट्रूमन को उप-राष्ट्रपति चुना। ट्रूमन सदा से साहसी, आदरणीय और सीधे बढ़नेवाले राजनीतिज्ञ हैं। एक बार उन्होंने कहा था, "राजनीतिज्ञ किसी भी सरकार के लिए एक योग्य व्यक्ति है परन्तु जब उसकी मृत्यु हो जाती है तो लोग उसे एक वक्ता (राजनीतिज्ञ) कहने लगते हैं।" ट्रूमन ने किसी मौलिक या बुद्धिमत्तापूर्ण प्रस्ताव का निर्माण नहीं किया और न किसी नीति पर महत्वपूर्ण वक्तव्य ही दिया। सिनेट में उनकी कोई प्रसिद्ध बहस भी नहीं हुई। परन्तु वे एक छोटे-से कस्बे के आदमी हैं जो अपने कार्यों को शान्तिपूर्वक आगे ले जा सकते हैं।

ट्रूमन अपने व्यक्तिगत जीवन में एक विशेष अभिलाषा रखते हैं। वह है प्यानो बजाना। इस समय उनकी अवस्था ६० वर्ष के साथ चल रही है। ८ मई को वे ६१ वर्ष के पूर्ण हो जायँगे। १९२० ई० में ट्रूमन ने बेस वैलेस से शादी की थी। उनके एक पुत्री है जो शिकागो में पढ़ रही है। उनके भूरे बाल, एक गहरी मुस्कान सर्वदा उनको प्रसन्न रखती है। आँखों में सींग के रिमवाले शीशे का उपयोग करते हैं।

वे शान्तिप्रिय पुरुष हैं। यद्यपि संसार की आँखे उनकी ओर लगी हैं फिर भी वे अपने ढंग से कार्य करने में निपुण हैं।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

हिंदुस्तानी-प्रचार-सम्मेलन और उर्दू समाचार-पत्र

हिन्दुस्तानी' के साथ महात्मा जी की नीयत पर हमला

जब वर्धा में हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा का अधिवेशन हुआ है तब से राष्ट्रभाषा तथा समस्या पर पत्र-पत्रिकाओं में उग्र वाद-विवाद चल पड़ा है। उर्दू के अखबार तो इस सम्बन्ध में इतने असहिष्णु बन बैठे हैं कि वह महात्मा गांधी की नीयत पर भी आक्रमण करने लगे हैं। विभिन्न उर्दू पत्रों में इस विवाद के सम्बन्ध में जो विवरण प्रकाशित हुए हैं, इस लेख में उन्हें एकत्रित कर दिया गया है। इससे हिन्दी तथा उर्दूवालों की मनोवृत्ति पर भी प्रकाश पड़ता है।

महात्मा गांधी ने 'हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा की है।

उर्दू समाचारपत्रों से अधिकांश ने हिन्दुस्तानी-प्रचार-सम्मेलन और उसके निर्णयों का विरोध और पूज्य गांधी जी की नीयत पर सन्देह प्रकट किया है।

दिल्ली के लीगी अखबार 'वहदत' ने लिखा है कि "पुरानी सम्मिलित भाषा से गांधी जी का आशय संस्कृत से है।" और यह भी "गांधी जी ने यह कह कर कि यह बड़े दुःख की बात है कि जो लोग पहले एक थे, आज अलग-अलग हो गये हैं, अपने इस दकियानूसी विचार को प्रकट किया है कि हिन्दू और मुसलमान एक ही जाति हैं।"

इसी तरह बम्बई के अखबार 'खिलाफत' ने जो प्रगतिशील विचारों का कहा जाता है और नेताओं के छुटकारे की भी माँग कर चुका है, भाषा के प्रश्न पर अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं—"पहले तो उर्दू के हितचिन्तकों से उर्दू लिपि छुड़ाने के लिए उसके दोषों और कमियों का प्रोपेगेण्डा किया गया। लेकिन जब यह सफल न हुआ......तो गांधी जी ने यह शोशा छोड़ा है कि हर हिन्दुस्तानी को दोनों लिपियाँ सीख लेनी चाहिएँ।" इस समाचारपत्र ने लिखा है "प्रथम तो देश की नब्बे प्रतिशत जनता निरक्षर है जो दोनों लिपियों में एक भी लिपि नहीं जानती, दूसरे यह कि यदि इस सुझाव के अनुसार कार्य किया गया तो मुसलमान संस्कृत के शब्दों और परिभाषाओं से परिचित हो जायँगे और टण्डन जी और सम्पूर्णानन्द जी पर इनका विरोध समाप्त हो जायगा, जिससे उर्दू की हानि होगी।"

'खिलाफत' का विचार है कि जिस तरह भाषा के बारे में उत्तरी-भारत को आदर्श मान लिया गया है, उसी तरह लिपि के बारे में भी उत्तरी-भारत को ही आदर्श मानना चाहिए। उत्तरी हिन्द के निवासियों में से अधिकांश उर्दू लिपि में ही लिखते हैं। अगर गांधी जी तथा दूसरे हिन्दुओं को नहीं तो जिन सूबों में मुसलमानों की अधिकता है, उनके लिए उर्दू लिखावट रखी जाय और जिनमें हिन्दुओं की अधिकता है उनके लिए देवनागरी, इसके अतिरिक्त सब लोगों को स्वतन्त्र होना चाहिए। वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए जिस भाषा का चाहें, प्रयोग करें।

डा० जाकिर हुसेन वर्धा में होनेवाली हिन्दुस्तानी प्रचार सम्मेलन के सभापति बने थे।

लाहौर के मुस्लिम लीगी अखबार 'नवायेवक्त' ने लिखा है "यह केवल अतिशयोक्ति-मात्र है कि हम ग्रामीण जनता की भाषा का सुधार करने जा रहे हैं। झगड़ा यह भी नहीं हैं कि ग्रामीण जनता कौन-सी भाषा समझती है, बोलती है, करोड़ों ग्रामीणों को इस झगड़े से कोई दिलचस्पी नहीं है। झगड़ा तो उस भाषा का है जो शिक्षा का माध्यम हो सकती है, जो अदालती भाषा हो सकती है, जिसमें अखबार छपते हैं और कितावें छपती हैं।"

दिल्ली के अखबार 'जंग' ने हिन्दुस्तानी की आवश्यकता से इनकार किया है। जिसकी सम्मति में "यदि हिन्दुस्तानी मराठों, गुजरातियों, बंगालियों और मद्रासियों के मेल से बनी तो बस उर्दू और हिन्दी का भगवान् ही मालिक! एक उपयोगी देशी उपज की तरह हर आदमी को इन भाषाओं के व्यापार का अधिकार होगा। लेकिन हम स्पष्ट कहते हैं कि इन लोगों की भाषा सम्मिलित और सामान्य हिन्दुस्तानी नहीं हो सकती। न इन्हें उर्दू का परिचय होगा न हिन्दी का ज्ञान। इन भाषाओं को सामान्य और सम्मिलित भाषा बनाने का एकमात्र उपाय यह है कि जनता इन भाषाओं को अपने इतिहास और अमूल्य सभ्यता का एक न मिटनेवाला चिह्न समझे और उनको ठीक तौर पर अपना बनाए। यह भाव हिन्दुओं के अन्दर हिन्दी के लिए और मुसलमानों के अन्दर उर्दू के लिये पैदा हो सकता है और इन्हीं भाषाओं के द्वारा हम अपने सरल-स्वभाव ग्रामीणों, कृषकों और मजदूरों को पढ़ा सकते हैं।

चंचल

लेखक, श्री आरसीप्रसाद सिंह

मेरा चंचल मन आता है तेरे रोम-रोम को छू-छू!
इन्द्रिय का व्यापार नहीं है;
तन का भी अभिसार नहीं है!
मेरा कोकिल मन करता है तेरे प्राण-प्राण में कू-कू!
सभी चाहते इसे पकड़ना;
इस पर अपना कब्जा करना!
मेरा रसमय मन जाता है तेरे अंग-अंग से चू-चू!

बम्बई के अहरार अखबार 'हलाल' को डर है कि "हिन्दुस्तानी के पर्दे में हिन्दी चलाने की कोशिश की जा रही है।" उदाहरण के तौर पर इसने लिखा है कि बम्बई में कांग्रेस की प्रदर्शिनी की सूचना इस प्रकार दी गई है—"राष्ट्रीय सप्ताह में राष्ट्रीय विकास का प्रदर्शन होगा।"

लखनऊ के शिया अखबार 'सरफराज' का झुकाव लीग की अपेक्षा कांग्रेस की ओर अधिक है, टण्डन जी और सम्पूर्णानन्द जी के रुख को "...और साम्प्रदायिक" कहा है और लिखा है कि देशभक्त मुसलमानों को अपने दृष्टिकोण पर दुबारा दृष्टि डालनी चाहिए। और इस कान्फ्रेंस में भाषा के बारे में अपनी अन्तिम सम्मति घोषित कर देनी चाहिए और कांग्रेस से माँग करनी चाहिए कि वह भाषा के बारे में अपने विद्रोही मेम्बरों को अपने अन्दर से निकाल बाहर करे......।"

'अंजुमन तरक्किये उर्दू' के मुखपत्र 'हमारी जबान' ने जिसके सम्पादक श्री० कैफी हैं और जो मौ० अब्दुल हक का पत्र है, हिन्दुस्तानी प्रचार-सम्मेलन में स्वीकृत दोनों प्रस्तावों का उल्लेख करने के बाद लिखा है:—

"सबसे पहले यह देखना है कि 'हिन्दुस्तानी' का क्या मनशा है? (१) सम्मेलन के प्रश्नों की दृष्टि से और (२) सम्मेलन के बाहर।

(१) सम्मेलन में डा० सैय्यद महमूद ने कहा—"उर्दू और हिन्दी और हिन्दुस्तानी तीन नाम एक ही भाषा के हैं।" मौलाना डा० सैय्यद सुलेमान नदवी का कथन था—"हिन्दुस्तान की भाषा हिन्दुस्तानी है...उर्दू और हिन्दी में अस्सी प्रतिशत शब्द एक ही हैं।"

श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास टंडन 'हिन्दी' राष्ट्रभाषा बनाने की घोषणा करते आ रहे

महात्मा जी ने पहले दिन कहा—डा० ताराचन्द हमें बताते हैं कि आरम्भ में यह भाषा जन-साधारण की भाषा थी और एक थी और इसे हिन्दू और मुसलमान दोनों बोलते थे। यद्यपि आज इसके कई नाम हो गये हैं......श्रीयुत टण्डन के प्रयत्नों का फल था कि कांग्रेस ने कानपुर में हिन्दुस्तानी की यह परिभाषा स्वीकृत की "हिन्दुस्तानी वह भाषा है जिसे उत्तरी हिन्द के गाँव के लोग हिन्दू हों या मुसलमान बोलते हैं और जो नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जाती है।" गांधी ने इस परिभाषा के साथी ही कहा कि राजनीतिक घटनायें ऐसी होती रहीं कांग्रेस इस बारे में कुछ न कर सकी।

इस परिभाषा को गांधी जी की परिभाषा मानना पड़ेगा जो वह मानते अब हमारे सामने हिन्दुस्तानी की परिभाषायें हैं—एक डा० सैय्यद की, दूसरी डा० नदवी की, तीसरी ताराचन्द की और चौथी गांधी जी की। इस अन्तिम-परिभाषा में भारतीय कांग्रेस एक बड़ी राजनीतिक संस्था के पर और बाबू पुरुषोत्तमदास सम्मिलित हैं।

यह स्पष्ट करने की आवश्यकता कि यह चारों परिभाषायें एक दूसरे पृथक् हैं। अब रही यह बात कि, टण्डन जी उर्दू के कड़े विरोधी और के बड़े भारी नेता हैं इसलिये उन्होंने का बन्धन लगा दिया, सो उसका बेकार है। हमारे सामने यह बात कि कांग्रेस और गांधी जी उत्तरी भारत गाँववालों की भाषा को 'हिन्दुस्तानी' हैं। अधिक चर्चा आगे आयेगी 'हिन्दुस्तानी' की परिभाषा के बारे में सुन लीजिये—

(२) फरवरी' ३६ में आल इण्डि रेडियो ने छः आदमियों से छः कराये जिनका शीर्षक था—हिन्दुस्तानी क्या है? डा० ताराचन्द का पहला था—

हिन्दुस्तानी हमारे देश की बोलियों सबसे अधिक बोली और समझी जाती

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिये

डा० ताराचन्द जी जो उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के प्रबल समर्थक हैं।

मुस्लिमलीग से गठबन्धन क्यों?

क्या वह भी कांग्रेस के चरण-चिह्नों पर चल रही है?

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

इस समय भारतीय राजनीति में एक नया अध्याय प्रारम्भ होनेवाला है। महात्मा गांधी मुसलमानों को सदा अपने साथ रखना चाहते हैं। इसीलिये उन्होंने लीग के अध्यक्ष मिस्टर जिन्ना से भी भेंट की थी। किन्तु एक तीसरी शक्ति की कृपा से कुछ परिणाम होता हुआ नहीं दिखाई पड़ा। किन्तु जान यह पड़ता है कि भविष्य में प्रान्तों पर संयुक्त दलों के मन्त्रिमंडलों का शासन होगा। क्योंकि लीग भी स्वयं अपना काम कांग्रेस कार्यपद्धति के अनुसार कर रही है। लेख सामयिक और सुन्दर है और मुसलिमलीग तथा कांग्रेस के गठबन्धन के सम्बन्ध में सुन्दर प्रकाश डाला गया है।

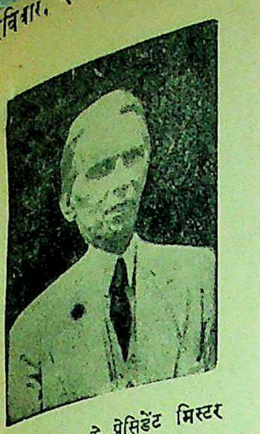

मुसलिम लीग के प्रेसिडेंट मिस्टर मुहम्मदअली जिन्ना।

भारत स्वाधीनता की देहली पर खड़ा है। इसलिए विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ भी भारत के भावी शासन-विधान को गृध्र-दृष्टि से देख रही हैं। जिधर देखिये उधर कांग्रेस और मुस्लिम लीग का नाम लिया जा रहा है। सबको आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास भी हो चला है कि भारत के वैधानिक विकास का भविष्य इन्हीं दो संस्थाओं पर निर्भर है। लीग के प्रतिनिधि नवाबज़ादा लियाकत अली खाँ कांग्रेस के प्रतिनिधि श्री भूलाभाई देसाई से मिल चुके। वायसराय लार्ड वैवल के सामने कांग्रेस और लीग की स्थिति समाप्त हो चुकी है। केन्द्रीय असेम्बली के बजट अधिवेशन में सरकार को एक के बाद एक शिकस्त देकर कांग्रेस और लीग ने दिखा दिया है कि सार्वजनिक हित के मामलों में वे दोनों संस्थाएँ एक हो सकती हैं। आपस में दोनों पार्टियों का चाहे कितना ही मत-भेद क्यों न हो, किन्तु सरकार से टक्कर लेने में दोनों संस्थाएँ एक हो सकती हैं।

विरोध क्यों?

किन्तु कांग्रेस और मुस्लिम लीग के इस गठ-बन्धन का स्थान स्थान पर विरोध किया जा रहा है। आलोचकों का कहना है कि कांग्रेस ने और महात्मा गांधी ने कब्र में पड़ी मुस्लिम लीग को कई बार जीवन-दान दिया और इसका परिणाम यह हुआ कि मुस्लिम लीग सिर चढ़ गई है। वे मुस्लिम लीग को नवाबों, जमींदारों, रईसों, खानबहादुरों और खिताबयाफ्ता लोगों की संस्था समझते हैं। उनका कहना है कि मुस्लिम लीग के सामने कोई राजनैतिक ध्येय नहीं, आदर्श नहीं और मुस्लिम जनता के उत्थान का कोई प्रगतिशील कार्य क्रम नहीं। वे मुस्लिम लीग को एक-दम प्रतिगामी संस्था बताते हैं। वे समझते हैं कि मुस्लिम लीग भारतीय स्वाधीनता की शत्रु है। इसलिए उसके साथ कांग्रेस-जैसी संस्था को गठबन्धन नहीं करनी चाहिए जो स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए कुर्बानियाँ करने में ख्याति प्राप्त कर चुकी है। इस प्रकार इन आलोचनाओं का क्या उत्तर दिया जा सकता है?

लीग का पदाधिकारी कौन?

कहा जाता है कि मुस्लिम लीग सरकारपरस्त लोगों की संस्था है। यह ध्रुव सत्य है, इससे कोई भी व्यक्ति इनकार नहीं कर सकता किन्तु यदि मुस्लिम लीग के विधान को उठा कर देखा जाय तो इसमें में ही संशोधन किया जा चुका है कि कोई भी खिताबयाफ्ता मुसलमान मुस्लिम लीग का पदाधिकारी न हो सकेगा। लीग के विधान और उसकी रचना की दृष्टि से यह संशोधन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। जो संस्था खिताबयाफ्ता व्यक्तियों के पैसे से और सिर्फ उन्हीं के हितों की रक्षा के लिए खड़ी की गई हो, उन्हें उस संस्था का पदाधिकारी न होने का नियम बनाना बहुत बड़ी प्रगति है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अभी तक इस नियम का कठोरता से पालन नहीं किया गया, लेकिन लीग के कर्णधारों ने इस चीज़ को अपना आदर्श जरूर बना लिया है। यूँ तो लीग को कायम हुए कई वर्ष बीत गये मगर कायदे आज़म मि० जिन्ना ने उसका नेतृत्व सन् १९३३ में सम्हाला। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि मुस्लिम लीग अभी राजनैतिक उन्नति की दृष्टि के वैसे ही प्रारंभिक अवस्था में है जैसे कि उदार-दलियों के युग में कांग्रेस थी। कांग्रेस भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में सरकार-परस्त थी, तो मुस्लिम लीग भी सरकार-परस्त है।

पाकिस्तान—ध्येय

कहा जाता है कि मुस्लिम लीग के सामने कोई राजनैतिक ध्येय अथवा आदर्श नहीं। कांग्रेस के सामने पूर्ण स्वाधीनता या स्वराज्य का आदर्श है, किन्तु मुस्लिम लीग के सामने ऐसा कोई आदर्श नहीं। किन्तु ऐसे आलोचकों से भी हम निवेदन करना चाहेंगे कि वे छुआछूत और ऊँच-नीच के भाव को छोड़कर एक बार मुसलमानों की किसी सभा में शामिल हों। तब उन्हें मालूम होगा कि मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के सामने कौन सा राजनैतिक ध्येय रखा है? कांग्रेस ने यदि राष्ट्रवादियों के सामने 'पूर्ण-स्वाधीनता' का ध्येय रखा है तो मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के सामने 'पाकिस्तान' का ध्येय रखा है। हमने देखा है कि पूर्ण-स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये जितना उत्साह और जितना जोश राष्ट्रवादियों में पाया जाता है, उतना ही जोश और उतना ही उत्साह मुसलमानों में पाकिस्तान के लिए पाया जाता है। पूर्ण-स्वराज्य का जो महत्त्व राष्ट्रवादियों के लिये है, ठीक वैसा ही महत्त्व मुसलमानों के लिये पाकिस्तान का है। मुसलमान लोग पाकिस्तान को पूर्ण स्वराज्य के बराबर मानते हैं।

महात्मा गांधी अन्य साथियों के साथ मुसलिम लीग के पाकिस्तानी प्रश्न पर विचार कर रहे हैं।

राजनैतिक चेतना जागृत करने के साधन

मुस्लिम रीति-रिवाज, मुस्लिम रहन-सहन और मुस्लिम विचारधारा से थोड़ा सा भी परिचय रखनेवाला कोई भी व्यक्ति भलीभाँति महसूस कर सकता है कि मुसलमानों में राजनैतिक चेतना कैसे जागृत की जा सकती है? मुसलमानों की सेवा कैसे की जा सकती है, इसे कोई मुसलमान ही अच्छी तरह जान सकता है। कायदेआजम मि० मुहम्मदअली जिन्ना अपनी कौम की नस को पहिचानते हैं। वे पहले कांग्रेस में थे। उन्होंने तिलक महाराज की राजनीति को बखूबी समझा था। बाद में उन्होंने गांधीवाद को भी कांग्रेस में पदार्पण करते देखा। उन्होंने भलीभाँति महसूस किया कि मुस्लिम जाति में इन तरीकों से राजनैतिक चेतना जागृत नहीं हो सकती, जो तरीके उनके कांग्रेसी भाई कर रहे हैं। उन्हें अपनी जाति की मनोदशा का पूर्ण ज्ञान है। उन्हें मालूम है कि एक मुसलमान स्वभाव से भौतिकवादी होता है। आध्यात्मिक साधन और आध्यात्मिक योग एक औसत दर्जे के मुसलमान के बस की चीज नहीं है। वह तो दुनिया का आदमी है और दुनियादारी के तरीके इस्तेमाल करता है। मि० जिन्ना ने देखा कि सत्य और अहिंसा मुसलमानों को अपील नहीं कर सकती। यह दोनों चीजें मुस्लिम स्वभाव के प्रतिकूल हैं। इसलिए कोई ऐसा उपाय किया जाना चाहिए कि इन दोनों के बिना ही मुस्लिम जनता में राजनैतिक चेतना उद्बुद्ध हो जाय। पृथक् चुनाव, अल्पसंख्यकों का प्रश्न और पाकिस्तान मुस्लिम लोगों में राजनैतिक चेतना जागृत करने के साधन-मात्र हैं। बस इससे ज्यादा उनका कोई प्रयोजन नहीं। राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिये ही मि० जिन्ना ने मुसलमानों के सामने 'पाकिस्तान' पेश किया है।

लीग बे-सरकारी नौकरियाँ

अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये मि० जिन्ना को कहाँ तक सफलता मिली है, यह जानने के लिये हमें मुस्लिम लीग के कतिपय कार्यों पर प्रकाश डालना होगा। मुस्लिम लीग अँग्रेजी पढ़े-लिखे मुसलमानों को सरकारी नौकरियाँ दिलाने के लिये पैदा हुई थी। इस सचाई से इनकार नहीं किया जा सकता कि मुस्लिम लीग अपने इस कार्य में काफी सफल हुई। आज जितने भी मुसलमानों को सरकारी नौकरियाँ मिलती हैं, उनमें से ९९ फी सदी के पीछे मुस्लिम लीग का हाथ होता है। यह एक तथ्य है, जिसे अनेक सरकारी हिन्दू अफसर भी स्वीकार करते हैं। सरकारी मुस्लिम कर्मचारी सिर्फ मुस्लिम लीग को ही अपनी प्रतिनिधि संस्था मानते हैं। अपने प्रारम्भिक दिनों में जिस तरह कांग्रेस ने अँग्रेजों के मुकाबिले भारतीयों को सरकारी नौकरियाँ दिलाईं, इसी तरह मुस्लिम लीग भी मुसलमानों को सरकारी नौकरियाँ दिला रही है।

राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुलकलाम आजाद।

देश-चिन्ता का साधन

हमें क्षमा किया जाय यदि हम यह कहें कि एक मुस्लिम लीगी मुसलमान में सरकारी नौकर रहते हुए भी पाकिस्तान के लिये जो जोश होता है, वैसा दूसरी जातियों के सरकारी नौकरों में किसी भी ध्येय के लिये नहीं होता। एक मुसलमान सरकारी कर्मचारी होते हुए भी अपनी कौम के लिये सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। यह ठीक है कि सिर्फ अपनी कौम की चिन्ता होना भी संकीर्णता है; मगर एक व्यक्ति जब व्यक्ति-समूह की चिन्ता करने का अभ्यासी हो जाता है, तो समय आ सकता है कि वह व्यक्ति-समूह से बने देश की भी चिन्ता करनी शुरू कर दे।

मस्जिदों में राजनीति

मुसलिम लीग के ही प्रचार का यह असर है कि आज मुसलमान लोग अपनी मस्जिदों में सिर्फ धर्म और मजहब की ही चर्चा नहीं करते। हमें पंजाब की अनेक मस्जिदों में शुक्रवार के दिन जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। हमने अपनी आँखों देखा है कि जुम्मे की निमाज के बाद मुसलमान लोग मस्जिद में ही अपने राजनैतिक अधिकारों की चर्चा करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। जुम्मे की निमाज के साथ जो 'वाज' हुआ करते हैं, उनमें मुसलमानों के नेता राजनैतिक प्रश्नों पर प्रकाश डाला करते हैं। मस्जिदों में भी राजनीति की चर्चा शुरू करने का श्रेय मि० जिन्ना और उनकी मुस्लिम लीग को ही प्राप्त है।

लीगी खादी

कांग्रेसवाले खादी पहनते हैं। उनकी खादी हाथ की कती और हाथ की बुनी हुई होती है। मुस्लिम लीग को भी स्वदेशी कपड़े से प्यार है। इसलिए उसने भी एक 'लीगी खादी' तैयार की है। इस खादी की विशेषता यह है कि इसका सूत तो मशीन से काता जाता है; मगर

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए।

प्रस्तावित हिन्दू-कोड क्या है ?

विवाह और विवाह-विच्छेद की वर्तमान समस्या

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त बा० काम०, विशारद

श्रीमती सरोजिनी नायडू, सामाजिक क्रांति के पक्षपातिनी हैं।

स्त्री-जाति के लिए यह एक संकट का काल है। स्त्रियाँ अपनी समस्याओं को लेकर चिन्तित हैं; वे प्रवाह-पतित, आत्म-विस्मृत और विच्छिन्न हैं। इस युग की सुविधाओं, नवीन संसार के आकर्षणों और पाश्चात्य सभ्यता के वेग ने मानव को मानव के निकट न लाकर भयंकर प्रतियोगिता का दृश्य उपस्थित कर दिया है। अधिकारों की पुकार चारों ओर सुनाई देती है और बड़े दुख का विषय है कि स्त्री-पुरुष जिनके सहयोग से सभ्यता का जन्म हुआ था, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिद्वन्द्वी हो रहे हैं।

परिवर्तन युग का नियम है और उपर्युक्त कथन से समय-परिवर्तन का कुछ बोध होता है। वस्तुस्थिति यह है कि भारतीयों की सामाजिक व्यवस्था अँगरेजी शासन में पूर्ववत् नहीं रह पाई है। नवीन शिक्षा-पद्धति ने धर्म, संस्कृति, आचार-विचार इत्यादि सब पर आक्रमण किया है। परिणामस्वरूप पाश्चात्य विचारधारा-युक्त सज्जनों-द्वारा उनके उच्छृङ्खल विचार हिन्दू-कोड के रूप में जनता के सम्मुख आनेवाले हैं। अव्यवस्थित हिन्दू कानून को सुव्यवस्थित रूप अवश्य दिया जाना चाहिए, किन्तु हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं एवं उस कानून के वांछनीय अथवा आवश्यक होने पर ध्यान देना होगा।

हिन्दू-कोड कई भागों में विभक्त किया गया है। हिन्दू शब्द की परिभाषा बड़ी व्यापक बना दी गई है। "जाति" में केवल चार वर्णों की गणना की गई है। इन दोनों विषयों को लेकर धर्म-प्रिय आस्तिक हिन्दू अनुमान कर सकते हैं कि यह सब विजातियों के लिए हिन्दुओं की पैतृक सम्पत्ति में अधिकार पाने तथा हिन्दू-समाज में शादी-विवाह करने के लिए किया गया है। "स्त्री-धन" में मौरूसी सम्पत्ति भी सम्मिलित की गई है। हिन्दू-धर्म में पुत्र वही है जो पिण्डदान और जलदान-द्वारा अपने पिता की नरकों से रक्षा कर सके। मृत व्यक्ति की आत्मा का उसकी सम्पत्ति के उत्तराधिकारियों के साथ सम्बन्ध चिरकाल तक बना रहना चाहिए। हिन्दू कानून में पिता की सम्पत्ति में लड़की को भी, अपने भाई की अपेक्षा आधा भाग देकर, मुसलमानी सिद्धान्त का प्रादुर्भाव किया गया है। स्त्री को तो अपने पति के घर की सम्पत्ति में भाग मिलता है और सम्भव है उसे अपने भाइयों का प्रतिद्वन्द्वी बनाया जा रहा है। भविष्य में भाई-बहनों, देवर-भौजाइयों, सास-बहू इत्यादि के मध्य में सम्पत्ति को लेकर झगड़ा होने की कल्पना रोंगटे खड़े कर देती है। लड़कियों को सम्पत्ति क्या मिलेगी, देश के अतुल धन का मुकदमेबाजी में नाश होगा। सम्पत्ति की रक्षार्थ कहीं कुटुम्ब में ही, मुसलमानों की भाँति, चाचा-ताउओं की सन्तान में विवाह-सम्बन्ध न प्रचलित हो जायँ और पवित्र सम्बन्धों को धक्का पहुँचे। दुर्भाग्य की बात है कि सम्पत्ति का लोभ स्त्री-अपहरण में सहायक होगा। प्रान्तीय सरकारों-द्वारा स्वीकृत हो जाने पर यह कानून जमीन पर भी लागू होगा और स्थावर सम्पत्ति के टुकड़े-टुकड़े होकर देश को अभूतपूर्व हानि पहुँचेगी। स्त्रियों को उत्तराधिकार निश्चय मिलें परन्तु क्या वे यह चाहेंगी कि उनके पुत्रों का भाग उनकी पुत्रियों को अर्थात् दामादों को, यदि पिता वसीयत द्वारा पुत्रों को नहीं दे जाता है, मिले।

प्रस्तावित कानून में विवाह के लिए वे सम्बन्ध वर्जित हैं जैसे कि सगे भाइयों की सन्तान, चाचा-भतीजी, मामा-भानजी, भाई-बहन, चाची-भतीजा, मौसी-भानजा, मामी नन्द का पुत्र और वर-वधू में से एक दूसरे के पूर्वज जिनकी हिन्दुओं में कल्पना भी असम्भव है। यदि इनको छोड़कर शेष सम्बन्ध वैध हैं तो सगे भाइयों के पोते-पोतियों में, किसी लड़के का भाई की पोती अथवा दौहित्री, अपने दादा-दादी अथवा नाना-नानी की बहन से और किसी लड़की का उसकी दादी अथवा नानी के भाई से सम्बन्ध हो सकता है। इस प्रकार के सगोत्रों और सपिण्डों में विवाह-सम्बन्ध सम्पूर्ण हिन्दू संस्कृति का विनाश करनेवाले तथा हिन्दू-धर्म के सिद्धान्तों की जड़ काटनेवाले हैं।

हिन्दू विवाह एक धार्मिक संस्कार है और विवाह-द्वारा पति-पत्नी का एक लक्ष्य, एक मार्ग होता है, पत्नी इसी कारण सहधर्मिणी कहलाती है। विवाह के उपरान्त स्त्री-पुरुष सर्वदा के लिए एक धार्मिक बन्धन में बँध जाते हैं। पाश्चात्य सभ्यता, आचार-विचारों और अँगरेजी शिक्षा के कारण कमेटी के सदस्यों ने विवाह के दो भेद कर डाले हैं। पहला विवाह तो हिन्दू पद्धति से होगा और दूसरा केवल रजिस्टरी द्वारा। पहले प्रकार के विवाह के लिए यदि किसी लड़की की उम्र १६ वर्ष से कम है तो उसे अपने अभिभावक की आज्ञा लेनी होगी। किन्तु यदि उसकी अवस्था १६ से अधिक है तो किसी प्रकार की अनुमति आवश्यक नहीं है। स्पष्ट शब्दों में इसका अर्थ हुआ कि सम्भवतः कमेटी के सदस्यों ने सोचा है कि १६ वर्ष के पश्चात् स्त्री की बुद्धि परिपक्व हो जाती है। सत्य या सत्य के निकट यह है कि प्रायः १०० में ७५ स्त्रियों में ६० वर्ष की आयु पर भी बुद्धि नहीं होती और २५ में भी संदिग्ध बुद्धि होती है। यह स्त्रियों को स्वतन्त्रता नहीं स्वच्छन्दता देना कहलायेगा। बन्धनों के रखते हुए वे सिर पर चढ़ी जा रही हैं, ऐसे उपायों से उनकी सोलह आने चढ़ बनेगी। जिसके साथ उनका जी चाहेगा बैठ जायँगी। सम्पत्ति तो उन्हें मिल ही जायगी। शास्त्रीय विवाह में कन्यादान को यथेष्ट महत्त्व न देकर न्याय-विधायकों ने भूल की है।

आजकल की स्त्रियों के लिए "रजिस्टरी द्वारा विवाह" से बढ़कर कौन-सी उत्तम वस्तु हो सकती थी। और उसी का प्रबन्ध हो चला है। २१ वर्ष तक स्त्री-पुरुषों को अपने अभिभावकों की स्वीकृति चाहिए। जात-पाँत का कुछ विचार न रखकर हिन्दुओं में न्याय-संगत सम्बन्ध ३ गवाहों को लेकर रजिस्ट्रार के सम्मुख जाकर घोषणा करने से हो सकेगा। यदि कोई पुरुष किसी घृणित रोग से पीड़ित है, किसी पर-स्त्री को शरण देता है, अपनी स्त्री पर अत्याचार करता है अथवा विधर्मी हो जाता है तो उसकी विवाहिता स्त्री को अपने पति से गुजारा पाने का अधिकार होगा और यह नियम इस कानून के पास होने के पूर्व विवाहों पर भी लागू होगा। आपततः इन प्रस्तावों से असहमत होना कठिन है परन्तु भय उस बात का है कि कहीं बददिमाग स्त्रियाँ पतियों से लड़ने का बहाना न पा जायँ और एक ओर गुजारा पायँ और दूसरी ओर अलग रहकर कुकर्मों में रत हों। पश्चिम में प्रेम-विवाहों अथवा रजिस्टरी द्वारा विवाहों की भरमार है। युवा स्त्री-पुरुषों में विशुद्ध प्रेम की कल्पना कठिन है; उनमें जीवनरस के संचार के साथ स्वाभाविक रूप से शरीर के आकर्षण के कारण वासनामय प्रेम का बाहुल्य होता है। ऐसा प्रेम न कभी टिकाऊ हुआ है और न होगा। विवाह-विच्छेद-पद्धति स्वयमेव हमारे सम्मुख आती है और गन्दे वातावरण के उपस्थित हो जाने के अतिरिक्त कहीं कुछ हाथ नहीं लगता। सुखमय और शान्तिपूर्ण जीवन पाश्चात्य समाज में दर्शन करने को नहीं मिलता और हमारा दुर्भाग्य है कि इस आर्यावर्त में भी शासकों की कृपा से वह दिन दूर नहीं जब कि घर-घर से प्रसन्नता का लोप हो जायगा।

विवाह-विच्छेद जिन स्थितियों में हो सकेगा वे अवश्य ठीक हैं, पर वह न्याय-प्रणाली जिसके अनुसार कार्य किया जायगा प्रमाणों के आधार पर चलती है और वे प्रमाण झूठे गवाहों-द्वारा सरलतापूर्वक दिये जाते हैं। प्रारम्भ से अन्त तक स्त्री को ही जिसके लाभ के लिए कानून बनाया जा रहा है उन सुधारों का मूल्य देना होगा हिन्दू संस्कृति में पली भारतीय नारी अचानक अपने घर से निकलकर न्यायालय का द्वार कदापि नहीं खोज सकेगी। उसे तो अभी अपने मुहल्ले अथवा आस-पास की गलियों का भी ठीक प्रकार से

श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय त
पक्षपातिनी हैं।

परिचय नहीं है। वास्तव में कतिप
मनुष्यों के हाथ में अपनी मनो
पूर्ण करने की कुञ्जी आई जा
श्री जयदयाल गोयन्दका तथा श्री
प्रसाद पोद्दार के शब्दों में "तला
सुविधाओं का दुरुपयोग मनचले
करेंगे और तरह तरह के कारणों
सीधी-सादी पत्नी को तलाक देने
करेंगे, जिसमें उन्हें किसी दूसरी
स्त्री से विवाह करने का अवसर
सके। बेचारी परित्यक्ता स्त्री से
में "कौन विवाह करने को तै
जब तलाक की प्रथा रहेगी तो
पश्चात् दूसरा विवाह सम्भव हो
एक विवाह केवल ढोंग-मात्र रह
रक्त-शुद्धि का ह्रास, सती धर्म
स्त्री-पुरुषों में उच्छृङ्खलता की
समाज में अस्तव्यस्तता, कलह और
की वृद्धि इत्यादि परिणाम अवश्यम्

समस्त हिन्दू-जाति को इस सम
कर्तव्य समझ लेना चाहिए। यदि
ध्येय गलत होगा और सतर्कता
रहेगी तो एकबारगी रसातल
जायगी। विशेषतया स्त्रियों को
पूर्वक कार्य करना है। [illegible]
ऊपर कहा जा चुका है, धाराप्रवाह
गई तो, कहीं की न रहेंगी।

पेट की सफ़ाई
स्वास्थ्य का प्रारम्भिक
नियम है
ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर सा
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद

पूँजी का पारितोषिक

लेखक, श्री भूपेन्द्र सान्याल

पैसे का किस प्रकार उपयोग होता है इसका ज्वलंत उदाहरण भारत के समृद्ध नगरों में देखा जा सकता है। कुछ लोग पैसे की वृद्धि के साथ सत्कर्मरत होते हैं और अधिकांश का जीवन ही उल्टफेर में पड़ जाता है। इस कहानी में पूँजी की प्रवृत्तियों का सुंदर चित्रण किया गया है। सेठ बिहारीलाल और पद्मिनी का चित्रण इस कहानी की विशेषता है।

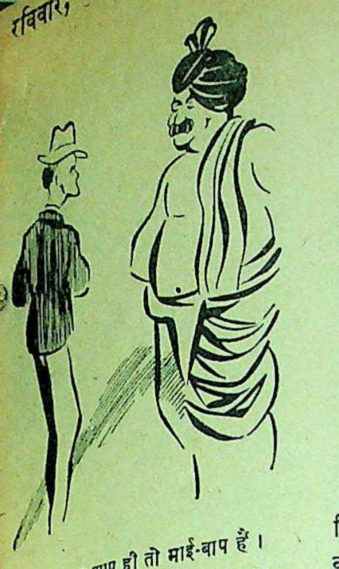

सेठ जी, हुजूर आप ही तो माई-बाप हैं।

बिहारीलाल अपनी गद्दी पर बैठे थे। उनकी पत्नी बीमार थी। वह कुछ चिन्ता-ग्रस्त दिखाई पड़ रहे थे। चिन्ता पत्नी की बीमारी की नहीं थी। चिन्ता यह थी कि कल सरकारी तहकीकात होने को है। बिहारीलाल लखपती थे। नावा नगर में उनके तरह तरह के कारोबार फैले हुए थे। उनके कारखाने से दसियों हजार पानी के थैले लिबिया के युद्धक्षेत्र में भेजे गये थे। लिबिया की मरुभूमि में हिन्दुस्तानी फौजियों ने देखा कि पानी थैला से निकला जा रहा है। उनके एक दूसरे कारखाने से ईरान को कुल्हाड़ियाँ भेजी गई थीं। उन कुल्हाडियों का कोई भी बेंट चौबीस घंटे से अधिक नहीं टिका। कल करमसिंह को इनका क्या उत्तर देंगे इसी उधेड़-बुन में वह परेशान थे। दूसरे दिन वर्दी पहने हुए करमसिंह उनके सामने आ पहुँचे। सेठ बिहारीलाल ने उनकी बहुत आवभगत की, कुशल-मंगल पूछा और फिर यह जानना चाहा कि उनकी लड़की के विवाह का क्या हुआ? करमसिंह ने कहा, "लेकिन, सेठ जी, मैं तो आपसे जवाब तलब करने आया हूँ कि आपने सरकार के हाथ जो कुल्हाड़ी और पानी के थैले बेचे, वह तो पूरी धोखे की टट्टी थी।" सेठ जी ने कहा, "इसमें मेरा क्या कसूर है, यहाँ का कपड़ा मरुभूमि की गर्मी बर्दाश्त नहीं कर सकता और यहाँ की लकड़ी ईरान में खराब हो जाती है।" सरदार करमसिंह ने उत्तर दिया कि, "आपका दिमाग आपके कारखाने के लिए तो बहुत उपजाऊ है लेकिन सरकार के दरबार में इसकी कीमत बदल जायगी।" इसके बाद सेठ जी और सरदार करमसिंह के बीच क्या वार्तालाप हुआ यह तो मालूम नहीं लेकिन यह मालूम हुआ कि सेठ जी को आँच नहीं लगने पाई, करमसिंह की लड़की की शादी थी।

शादी के दिन सज-धजकर सेठ जी करमसिंह के मेहमान हुए। सरदार करमसिंह बहुत प्रसन्न दिखाई देते थे। उत्फुल्ल होकर सेठ जी ने कहा—"सरदार साहब, लक्ष्मी और प्रभुता का गठबन्धन कितना सुन्दर है। इसके बाद हम और आप दोनों को कोई सिंहासन-च्युत नहीं कर सकता।" सरदार साहब ने कहा, "सेठ जी, आप दिवा-स्वप्न देख रहे हैं। प्रभुता कितनी क्षणभंगुर है। आज जो वीर्यहीन है वह कल को वीर्यवान हो सकता है। सहयोग के अभाव से आज जो बलहीन है वह कल को बलवान हो सकता है। मैं तो समय बिता रहा हूँ; जितने दिन बीत जायँ। सेठ जी का उल्लास कुछ कम हो गया।

सेठ जी अब लखपती से करोड़पती हो चले थे लेकिन उनकी चिन्ता का अन्त न था। वह इसी ईर्ष्या की अग्नि में जल रहे थे कि उन्हीं के साथ का व्यापारी लाला करोड़मल की आमदनी अब अरबों में हो रही है। वह सुख की नींद नहीं सो पाते और सदा भाग्य को कोसते रहते हैं। अब सेठ जी ने लाभ-वृद्धि का दूसरा उपाय सोचा। सेठ नगर के लोहे के कारखाने के सब मजदूरों और अफसरों की मजदूरी और तनख्वाहें उन्होंने बढ़ा दीं। सेठ जी की वाहवाही होने लगी। चारों ओर सेठ जी के नाम की धूम मच गई। लेकिन साथ ही अब सब मजदूरों और अफसरों को सेठ जी के बनवाये मकानों को किराये पर लेना पड़ता था, सेठ जी की ही दूकानों से अन्न-वस्त्र लेना पड़ता था और सब तरह से वे सेठ जी के मुखापेक्षी हो गये। सेठ जी ने एक हाथ से जो कुछ दिया उससे कहीं अधिक दूसरे हाथों ले लिया।

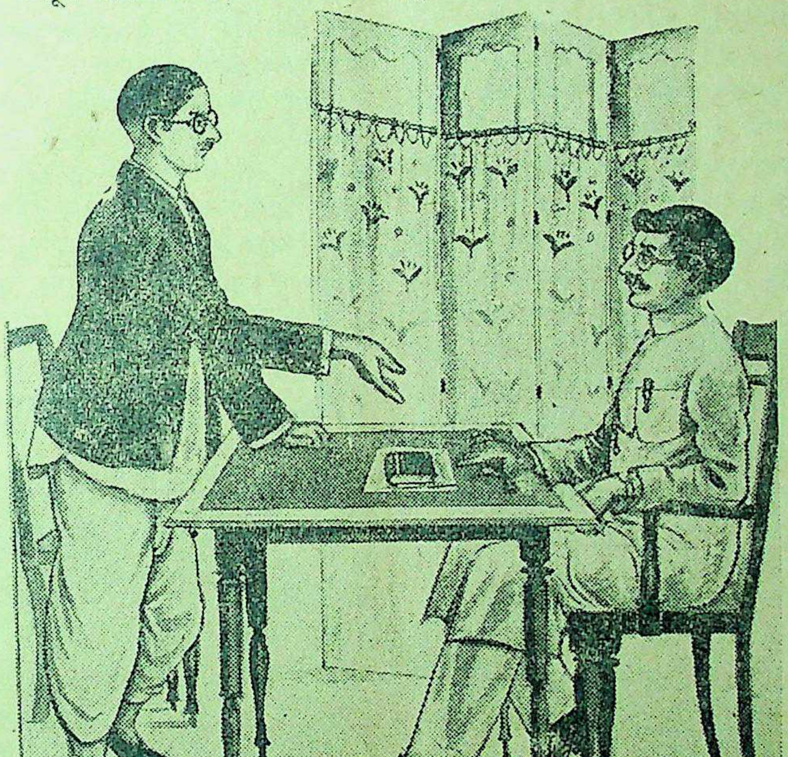

सेठ जी ने कहा—कमलनारायण आजकल मजदूरों में इतनी हलचल क्यों है।

सेठ जी की मिल में हड़ताल की चर्चा चल रही थी। बढ़ते हुए कारोबार में इस प्रकार हानि की सम्भावना से वह विचलित हो उठे। उन्होंने अपने विश्वस्त भृत्य शिवराम को बुलवाया और हड़ताल की बात कही। शिवराम ने आश्वासन दिया कि धर्मावतार की मिल बन्द नहीं हो सकती।

शिवराम की भी एक कहानी है। शिवराम डील-डौल का अच्छा था। नौकरी की तलाश में वह नावा नगर आ पहुँचा। यहाँ आकर उसने देखा कि अच्छे डील-डौलवाले वहाँ बिना मेहनत-मजदूरी के ही काफी कमा लेते हैं। इसका उपाय सीखने में उसको विलम्ब नहीं लगा। चौक की दूकानों की गली में राह चलते एक आदमी को उसने धक्का दे दिया। बेचारा, दुबला-पतला आदमी धक्के खाकर भी चुप रह गया। इधर दुकानदार चौकन्ने हो गये। शिवराम दूसरे ही दिन सबेरे फिर चौक को चला। वहाँ उस जगह जाकर खड़ा हो गया जहाँ कल झगड़ा हो चुका था। सामने की दूकान के मालिक को उसने सलाम किया और रुपया माँगा। दूकानदार ने पूछा, क्यों, रुपया किसलिए चाहिए? शिवराम ने उत्तर दिया—क्यों? कल देखा नहीं? दूकानदार ने चुपचाप एक रुपया उसके हाथ में रख दिया। फिर क्या था; वह दूसरी दूकान पर पहुँचा और कहा कि सामने के दूकानवाले ने तो हमारा रुपया चुका दिया है, अब आप क्या कहते हैं? दूकानदार ने बिना कुछ सवाल-जवाब किये ही दो रुपये उसको दे दिये। अब पहले के संगठित गुण्डा-दल ने देखा कि उनके व्यवसाय में एक नया प्रतिस्पर्द्धी आ जुटा है। पहले तो उसको डराया-धमकाया, फिर साझीदार बनाकर उन्होंने उसको अपने दल में भर्ती कर लिया। सेठ जी इसी दल से अपना भृत्य चुनते थे और इसी सिलसिले में शिवराम उनके यहाँ चौकीदार तैनात किया गया था।

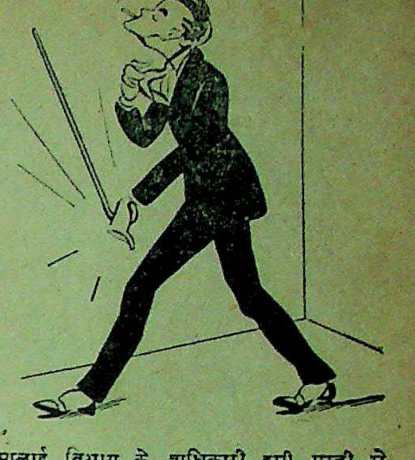

सप्लाई विभाग के अधिकारी इसी मस्ती से चलते हैं?

दूसरे दिन हड़ताल हुई। शिवराम की लाठी ने अपना जौहर दिखाया। मजदूर-संघ के नेता कमलनारायण का उसने सर फोड़ दिया और उसको जमीन पर बिछा दिया। सेठ जी की लड़की, पद्मिनी अपने झरोखे से यह दृश्य देख रही थी। उससे रहा न गया। कमलनारायण को वह अपने कमरे में उठवा ले आई। कोमल हाथों के चार-छः दिन की शुश्रूषा से वह चंगा हो गया। हड़ताल अब भी जारी है। हड़ताल का भार फिर से वहन करने के लिए कमलनारायण उतावला हो रहा है। आज सेठ जी ने मजदूरों को बुलाया है—उनकी शिकायतें सुनने के लिए। मजदूरों के संग कमलनारायण भी सेठ जी के सामने रहेगा।

सेठ बिहारीलाल अपने बैठक में बैठे हुए हैं। सजावट में बैठक अमरावती के तुल्य है। तरह-तरह की विलायती कुर्सियाँ, मेज, फूलदान इत्यादि के साथ एक कोने में गणेश जी की मूर्ति भी रक्खी है। कुर्सी पर बैठे सेठ जी का, इस मूर्ति के साथ बहुत कुछ सादृश्य है? सेठ जी भी लम्बोदर हैं और नाक भी उनकी लम्बी है। एक लम्बी मेज के सामने एक ऊँची कुर्सी लगाये सेठ जी बैठे हैं। उनके पीछे दरवाजे पर पद्मिनी खड़ी है। सेठ जी ने हुक्म दिया—'मजदूरों को बुलाओ।' मजदूरों के साथ कमलनारायण भी उपस्थित हुए। सेठ जी ने कमलनारायण से पूछा, "आप कौन हैं?" कमलनारायण ने उत्तर दिया मैं मजदूर-संघ का सभापति हूँ। सेठ जी ने कहा, "मैं किसी बाहरी आदमी से बात नहीं करना चाहता।" मजदूर इसमें अपना अपमान समझकर चलने को उठ खड़े हुए लेकिन पद्मिनी ने आकर उनको रोक दिया। पद्मिनी ने बहुत आवेग से कहा, "पिता जी, आप क्यों ऐसा कर रहे हैं? इन बेचारों की मजदूरी बढ़ाने में आपको हानि ही क्या है। आपने बाग बनवाये, महल बनवाये, बड़े से बड़े तालाब बनवाये जिनमें, बिना वायु के ही कृत्रिम उपायों से हिलोरें उठती रहती हैं, लेकिन किसके लिए? आपको तो फुरसत भी नहीं कि अपने ही प्रासाद में दो दिन भी विश्राम करें। फिर अपनी सम्पदा बढ़ाने के लिए आप यह झगड़ा क्यों व्यर्थ मोल ले रहे हैं? अपने लड़के के लिए? आप नहीं जानते कि मेरा भाई कितना बड़ा स्वेच्छाचारी है। जब आपको पता चलेगा तब आपके पछताने से भी कुछ न होगा।"

सेठ जी लड़की की बातें धैर्य से सुनते रहे। क्षणिक विचलित भी हुए। लेकिन तुरन्त ही उनका दम्भ दुगुना हो गया। उन्होंने कहा, "पद्मिनी, मैं मजदूर-राज्य नहीं होने दूँगा। तुम यदि इनका साथ देना चाहती हो तो मेरे यहाँ तुम्हारा कोई स्थान नहीं। लेकिन मुँह से ये शब्द निकलने के बाद तुरन्त ही सेठ जी को यह अनुभव हुआ कि वह उत्तेजनावश कुछ कह गये। फौरन अपने को संयत करके उन्होंने बुलाया—"पद्मिनी, मेरे पास आओ।" अभिमान और क्षोभ से पद्मिनी ज्यों की त्यों खड़ी रही। सेठ जी ने कुछ नरम स्वर में कहा, "बेटी, क्या तुम उस व्यक्ति को पिता से अधिक प्यार करती हो, जिसकी योग्यता केवल इतनी ही है कि वह कुछ अनपढ़ लोगों को उत्तेजित कर सकता है?" आहत स्वर में पद्मिनी ने उत्तर दिया, "आपका अनुमान सही नहीं भी हो सकता है। सुविधा और अवसर प्राप्त होने के कारण कोई भाग्यलक्ष्मी का वरपुत्र बन जाता है और उतनी ही योग्यता रखते हुए, समाज-सेवा का व्रती होकर, दूसरा लांछना, अपमान और तिरस्कार का पात्र बन जाता है।"

सेठ जी—"तो पद्मिनी, तुम क्या समझती हो, कि बिना तीक्ष्ण बुद्धि और लगन के मैं यह दौलत कमा सकता था? स्वयं मजदूर इतना परिश्रम नहीं करता है जितना कि मैं करता हूँ। और फिर श्रमिक को कोई परवाह नहीं कि उद्योग में लाभ होता है या हानि; मेरा तो परिश्रम ही व्यर्थ है यदि व्यवसाय में मुझे लाभ न हो।"

पद्मिनी—"सम्भव है, लेकिन आपके तो परिश्रम का उद्देश्य क्या दूसरों को उचित पारिश्रमिक से वंचित करना नहीं है?।" सेठ जी की क्रोधाग्नि एक बार फिर प्रज्वलित हो उठी। लेकिन फिर एक बार अपने क्रोध को मन ही मन शान्त कर उन्होंने संयत स्वर में कहा, "पद्मिनी, तुम कुछ परेशान जान पड़ती हो, जाओ, कुछ देर विश्राम करो।"

पद्मिनी से वार्तालाप के बाद उनका चित्त चञ्चल हो उठा। कहीं भी स्वस्ति का आभास उनको दिखाई नहीं दिया। पत्नी से वह विमुख थे। घर पर उनका चित्त न बैठता था। सेठ जी अब मंसूरी की सैर को चले। सवेरे से शाम तक टेलीफोन पर बाजार भाव सुनते रहने के बाद यह प्रकृति का स्पर्श उनको अच्छा लगा। देहरादून से मुड़ती और चढ़ती हुई सड़कों पर ज्यों ज्यों वह मंसूरी को बढ़ चले त्यों त्यों पहाड़ों के उच्च शिखरों ने उनमें एक स्वच्छन्दता का भाव भर दिया। प्राकृतिक ऐश्वर्य में वह मानव-महिमा की बात सोचने लगे।......लेकिन बिना प्रेम के जीवन व्यर्थ है......।

सावॉय होटल में सेठ जी को सजा हुआ कमरा मिला। विस्तृत भोजनालय में एक सुन्दरी एक मेज के सामने अकेली बैठी थी। सेठ जी उसी के सामने आसीन हो गये। सेठ जी ऐश्वर्यवान थे, महिला विदुषी थी; दोनों का सहज ही परिचय हो गया। परन्तु केवल साहचर्य से उनको तृप्ति न मिली। उन्होंने पाणिग्रहण की प्रार्थना की। विदुषी ने कहा, "सेठ जी, आपका ऐश्वर्य मेरे शरीर को प्राप्त कर सकता है लेकिन मेरा प्रेम आप तक नहीं पहुँच सकता। मैं पुरुष से विवाह कर सकती हूँ; ऐश्वर्य से नहीं।

सेठ जी का हृदय एक व्यथा से आलोड़ित हो उठा। सम्पत्ति सहज प्रेम के रास्ते की एक रोड़ा है। 'मुझे दासी मिल सकती है लेकिन प्रेमिका नहीं।' सेठ जी को उन्माद होने लगा। वह रोगाक्रान्त होकर घर लौटे। रोग-शैय्या पर उनका लड़का आ बैठा। रोगी का मुख आनन्द से उज्ज्वल हो उठा। विनोद ने कुछ मामूली बातें पूछने के बाद अपना मतलब छेड़ा। उसको एक रोल्स रॉयस मोटर की जरूरत है। आज ही चाहिए। सेठ जी का वात्सल्य प्रेम काफूर हो गया। स्वरचित नारकीय जीवन का सारा चित्र उनको व्यंग करने लगा। पत्नी-विमुख, दुहिता विरहिनी, पुत्र स्वार्थान्ध। अतुल सम्पत्ति-राशि का क्या होगा? सेठ जी की प्रवृत्ति अब धर्म-मुखी हो चली। उन्होंने एक मन्दिर और धर्मशाला बनवाया। सादे पोशाक में धर्मशाले का शिलान्यास कर वह घर लौट रहे थे। रास्ते में दो पथिकों का कथोपकथन उनके कान में पड़ा।

"देखा, मूंजी अब खैरात बाँट रहा है।"

एक—दूसरा—"इसमें भी कोई चाल होगी। हमारे पसीने की कमाई पर अब वह नाम कमाना चाहता है।" सेठ जी को हँसी आई; लेकिन वह हँसी रुदन की थी।

सेठ जी मन ही मन सोचने लगे कि फिर क्या धर्म भी प्रवंचना है? तो फिर किधर जाऊँ? उनका क्षणिक वैराग्य दूर हो गया। जीवन-कामना सौ गुनी होकर लौट आई। वह एक विलास का जीवन बिताने के लिए उतावले हो पड़े। अब उनका सारा ध्यान इस पर गया कि विगत-यौवन मुख पर पुनः एक श्री का आभास पड़े। मुख पर पुलटिस, प्रलेप, क्रीम, स्नो और बिजली सभी का प्रयोग चलने लगा। उनके निशा-निमंत्रण में सिनेमा अभिनेत्रियों का अभिसार होने लगा। रात को उनकी अट्टालिका सुरा, नृत्य और गीत से भरपूर रहने लगी। जीवन में एक नया स्रोत बहने लगा। सेठ जी को पुलक की सिहरन होने लगी। एक नई आशा की ज्योति उन्हें दिखाई पड़ी। उस समय उनको क्या पता था कि ये अवसाद के प्रथम चिह्न हैं?

उधर पद्मिनी, घर से विमुख होकर, सोचने लगी कि 'जीवन का उद्देश्य क्या है?' उसकी इच्छा हुई कि पढ़े-लिखे लोगों में एक ऐसी प्रेरणा भर दे कि वे एक स्वार्थान्ध, संकुचित जीवन न बिताकर, मानवोचित जीवन को सर्वथा समृद्ध करें। उसने यह कल्पना की कि सिनेमा के जरिये यह काम अच्छा हो पायेगा। लोग जहाँ प्रमोद के लिए जायँ वहाँ उनको शिक्षा भी मिलेगी। बम्बई में कुछ शिक्षित युवकों ने इसी उद्देश्य से एक सिनेमा-कम्पनी भी खोली थी और पद्मिनी उन्हीं में जा मिली। रूपवती, विदुषी, कलामयी पद्मिनी ने अपना चमत्कार दिखाया। सिनेमा में एक नये युग का प्रवर्तन होने लगा। लेकिन ख्याति से अधिक पद्मिनी को और कोई पुरस्कार न मिला। पिता के घर की शान व सुविधा न थी; जीवन भी निःसंग था। एक दिन कम्पनी का साथी प्रेम उसके कमरे में आ पहुँचा। कुछ इधर-उधर की बात-चीत के बाद प्रेम ने पूछा, "पद्मिनी, तुमको अकेला नहीं मालूम होता?" अनावश्यक ही उत्तेजित होकर पद्मिनी ने उत्तर दिया, "तो क्या तुम समझते हो कि तुम्हारे ही पाणिग्रहण की मैं उपेक्षा कर रही हूँ?" प्रेम को पहले तो इस तीखेपन का कोई कारण न मिला, लेकिन उसने तुरन्त ही कहा, "नहीं, मैं तो दारिद्र्य में पला हूँ, और मेरा अनुभव यह कहता था कि आभिजात्य का कलंक कभी मिट नहीं सकता; व्यर्थ ही तुमने एक मानवता का ओढ़ना ओढ़ रक्खा है।" पद्मिनी निरुत्तर रही।

अब दिनोंदिन उसकी तबीअत उस कम्पनी और उसके साथियों से दूर हटती गई। इधर 'मुम्बई सिनेमाघर' के डायरेक्टर लोग प्रतिदिन ही उसके घर पर चक्कर लगाने लगे। ऊषा कम्पनी ने उनके खेलों को बहुत धक्का पहुँचाया है। वे अब स्वयं पद्मिनी को ही अपनी कम्पनी में लेना चाहते थे। पद्मिनी को उनका संग अच्छा लगने लगा और उसने सहर्ष उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया। मन ही मन अपने को वह समझाने लगी कि मैं तो समाज की और अधिक सेवा करने जा रही हूँ, क्योंकि यह कम्पनी बड़ी है और इसके दर्शक भी बहुत हैं। लेकिन पहाड़ का टुकड़ा जब गिरने लगता है तो दो चार कदम ही पर नहीं रुकता, वह तो धुर नीचे पहुँच कर ही ठहरता है। आदर्श जीवन से च्युत होकर पद्मिनी कहाँ पहुँची?

अब पद्मिनी के सौध में रोशनी की जरूरत न थी। हीरे-जवाहरात से ही उसके कमरे चमकते थे। पद्मिनी के उद्यान में चौकीदारों की आवश्यकता नहीं थी। वहाँ युवक और प्रौढ़ दोनों ही उज्ज्वल आभरण में सदा विराजमान रहते थे।

उसी प्रासाद में, विलास की तलाश में, सेठ बिहारीलाल पहुँचे। कुछ देर ठहरने के बाद, पुकार होने पर, सेठ जी ज्यों ही कमरे की ओर बढ़े, उन्होंने देखा कि एक युवक बिजली का बटन दबाकर, मुँह छिपाये भागा जा रहा है। जल्दी सेठ जी बिना बत्ती जलाये ही कमरे के अन्दर घु
और पलँग पर बैठ क्रीड़ा-कौतुक में
गये। लेकिन बैठते देर न हुई
बिजली की बत्ती जल उठी और एक
पलँग के सामने आकर खड़ा हो
पद्मिनी ने देखा कि पिता पलँग पर
हैं, और भाई सामने खड़ा है।
ग्लानि से वह चीत्कार कर उठी
मूच्छित हो गई। कोलाहल से बाह
इकट्ठी हो गई, लेकिन भीड़ के
प्रवेश करने के पहले ही, पिता और
दो अलग अलग दिशाओं में अ
हो गये।

◆

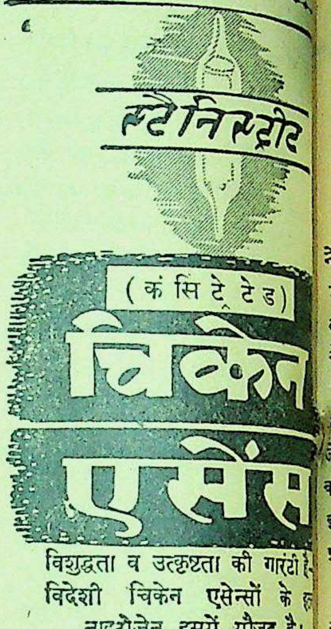
स्टैनिस्ट्रीट
(कंसिटे्टेड)
चिकेन एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है
विदेशी चिकेन एसेन्सों के
नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं. लि
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रा

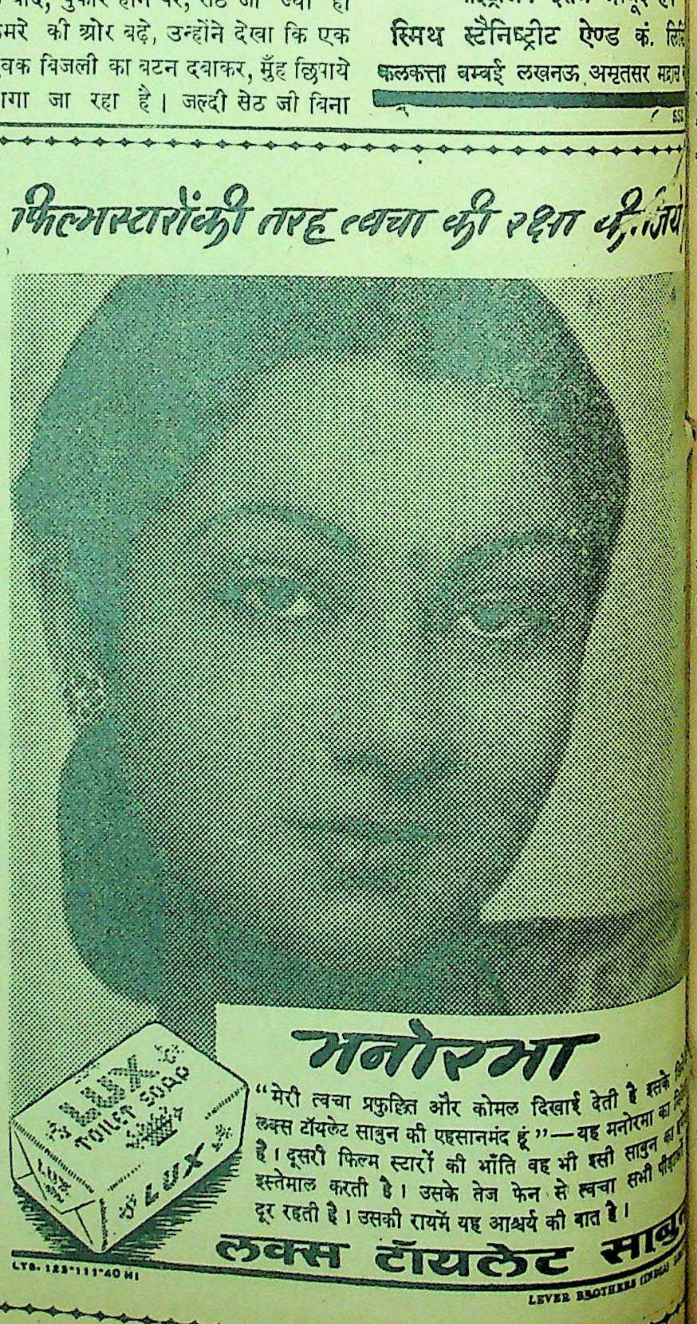
फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये
मनोरमा
"मेरी त्वचा प्रफुल्लित और कोमल दिखाई देती है इसके लिये
लक्स टॉयलेट साबुन की एहसानमंद हूं"—यह मनोरमा का
है। दूसरी फिल्म स्टारों की भाँति वह भी इसी साबुन का
इस्तेमाल करती है। उसके तेज फेन से त्वचा सभी
दूर रहती है। उसकी रायमें यह आश्चर्य की बात है।
लक्स टॉयलेट साबु
LTS. 122-111-40 HI
LEVER BROTHERS (INDIA)

हमारा रंगमंच

अमेरिका की सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ और अभिनेत्री कुमारी जेन-पेवेल के जीवन की एक मनोरञ्जक झाँकी

लेखक, श्री उमेश जोशी

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता मास्टर विनायक क्या सोच रहे हैं ?

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मीनाक्षी क्या कर रही हैं ?

अभी हाल में न्यूयार्क नगर में "इन्टर नेशनल म्यूजिक" कान्फ्रेंस हुई थी। उसमें जेन पेवेल एक चौदह साल की लड़की सर्वश्रेष्ठ घोषित की गई। दुनिया के मशहूर गायक इसमें सम्मिलित हुए थे। संगीत की सबसे ऊँची पदवी "मिलयर" आपको प्रदान की गई। कुमारी जेन-पेवेल का नाम विश्व-विख्यात कलाकारों में हो गया है। इतनी कम उम्र में इतनी उन्नति कर लेना ही आपकी अनूठी प्रतिभा का परिचायक है।

आप चार साल से हालीवुड में कार्य कर रही हैं। आपकी तनख्वाह इस वक्त डेढ़ लाख प्रति माह है। इतनी ऊँची तनख्वाह और वह भी इस अल्प वय में संसार में किसी को नहीं मिल रही है। आपका सर्वश्रेष्ठ फिल्म "सांग आफ दि ओपेन रोड" है जो कि हिन्दुस्तान के शहरों में दिखाया जा रहा है। इस फिल्म में आपका अभिनय इतना अच्छा हुआ है कि स्पेन के डिक्टेटर जनरल फ्रांको ने आपको पाँच करोड़ रुपये का तोहफा भेंट किया है।

"सांग आफ दि ओपेन रोड" की नायिका कुमारी जेन-पेवेल हैं। यदि जेन-पेवेल के अभिनय को उस फिल्म से निकाल दिया जाता है तो फिल्म की सम्पूर्ण सुन्दरता विदा हो जाती है। फिल्म निर्जीव-सा रह जाता है। लन्दन में यह चित्र कई महीने लगातार चलता रहा और वह सिर्फ कुमारी जेन-पेवेल के प्रबल व्यक्तित्व के बल पर ही। इस चित्र में पश्चिमीय संगीत-कला पर प्रकाश डाला गया है। प्राचीन संगीत योरप व अमेरिका का। इस चित्र में चित्रित है कुमारी जेन-पेवेल ने प्राचीन स्वर-लहरियों को अच्छी तरह दरसाया है।

कुमारी जी की मा मियोर थ्योरी अपनी एकमात्र पुत्री को बैरिस्टरी लाइन में भेज रही थीं लेकिन जेन-पेवेल के मामा मिस्टर पी० एस० पियरसन जो हालीवुड में फोटोग्राफर का काम कर रहे हैं, वह एक बार आपके यहाँ आये। जब उन्होंने जेन-पेवेल को देखा तो वह चौकन्ने से रह गये। इतनी खूबसूरत लड़की पहले कभी उन्होंने नहीं देखी थी। मा के कहने पर कई तरह के गाने भी अपने मामा को सुनाये। इन सब गानों को सुनकर उनके मुँह से एकाएक निकल पड़ा कि—"थ्योरी इसे मेरे साथ फिल्मी-संसार में क्यों न भेज दो—उसी के योग्य यह है भी।"

"नहीं भैया मैं तो इसे कानून पढ़ाऊँगी, फिल्मी-दुनिया में जाकर क्या करेगी ?" थ्योरी ने अपने भाई की तरफ ध्यान से देखते हुए कहा।

मिस्टर पियरसन ने कहा—"यह तुम क्या कह रही हो। जो चीज जहाँ के लिए हो और वहाँ वह न भेजी जावे तो उसके पल्ले जिन्दगी भर परेशानी ही होगी। यदि तुम चाहती हो कि जेन अपने जीवन में नाम रोशन करे तो उसे क्यों न सिनेमा-संसार में भेज दिया जावे ? मैं जो यह बात कह रहा हूँ वह जेन के चेहरे को पढ़कर ही कह रहा हूँ क्योंकि चेहरा हृदय की भावनाओं की तालिका है।"

"अच्छा जैसा आप समझें वैसा कीजिए। आपसे बेहतरी राय देनेवाला और कौन मुझे मिलेगा ?" थ्योरी ने हँसते हुए कहा।

इस प्रकार जेन-पेवेल ने सिनेमा-संसार में प्रवेश किया। आपके सम्बन्ध में अमेरिकन-पिक्चर लिखता है—"कुमारी जेन-पेवेल इतनी सुन्दर हैं कि मशाल भी उनके सौन्दर्य-ज्योति से प्रज्वलित हो जाती है। आपका कलात्मक अभिनय जीवन-प्रसून की पँखड़ियों को विकसित कर रहा है। मानव आपके अभिनय को देखकर अपने को आत्म-विस्मृति कर देता है।" "दी वर्ल्ड स्क्रीन" आपके सम्बन्ध में लिखता है—"आपका मुख इतना मनोहर है कि मानो स्वर्ग के देवदूतों की चित्र-छाया हो, जब आपकी चारु नयनों से प्रेम का दरिया निकल कर मुस्कराहट के सागर में मिलता है उस वक्त आपके अभिनय की सीन में स्वर्गीय आभा होती है, जिसको कि देखकर मानव के क्लान्त हृदय पर उल्लास मयूर नृत्य करने लगता है। वास्तव में आपके अभिनय में इतनी सजीवता है कि जो इन्सान जिन्दगी की बाजी दुनिया की हाट में हार चुका है उसको भी विजय-पथ पर पुनः प्रमाण करा सकती है।"

आपको टेनिस खेलने का बेहद शौक है। "सिने टेनिस क्लब" की आप केप्टन हैं। इनडोर गेम में आप "पिंग-पोंग" विशेष पसन्द करती हैं। घूमने का भी आपको शौक है। समुद्र के किनारे घूमना आपको अधिक प्रिय है। पढ़ने-लिखने में भी आपकी दिलचस्पी है। स्कूल व कालेज में तो आप नहीं पढ़ीं। किन्तु प्राइवेट ही आपने अँगरेजी, लेटिन, अमेरिकन भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया है। कहानी लिखने का भी आपको शौक है। आपने अब तक करीब तीन या चार कहानियाँ सिर्फ लिखी हैं। जो कि काफी सुन्दर हैं। आप कहानी की ओर किस प्रकार झुकीं—किस प्लाट ने आपको कहानी लिखने के लिए प्रभावित किया—उसको बड़े आकर्षक ढंग से आपने लिखा है—"बड़े दिन का तोहफा" शीर्षक देकर। उसी को हम यहाँ संक्षेप में दे रहे हैं—

मैं न्यूयार्क शहर में थी—दिन ढल चुका था। पक्षी कलरव करते हुए अपने अपने नीड़ों को प्रस्थान कर रहे थे। मैं घूमने के लिए अकेली ही चल पड़ी क्योंकि बैठे बैठे तबीअत ऊब रही थी। "गिल्डस्टन" पार्क में मैं पहुँची। फूलों के एक कुञ्ज में मैं एक बेंच पर जा बैठी। बेंच के चारों तरफ नाना प्रकार के फूल खिल रहे थे। मैं फूलों की मस्ती भरी जिन्दगी का अवलोकन कर ही रही थी कि इतने में एक युवक ने मेरा ध्यान भंग किया। उसने कहा—"मेरी यहाँ डायरी तो नहीं है—क्योंकि आपसे पूर्व में ही यहाँ बैठा हुआ था, आपको तकलीफ तो होगी जरा मैं देख लूँ, यदि आप बुरा न माने ?"

"यह भी आपने अजब बात कही—मैं बुरा क्यों मानने लगी। आपकी तो डायरी खो गई और फिर मेरे बुरे मानने का आपको क्योंकर ख्याल हुआ ? आपने भी तो शिष्टता की हद कर दी।"

उस युवक ने मेरे प्रश्न को हँसते हुये टाल दिया और अपनी डायरी फूलों में इधर-उधर खोजने लगा। सहसा मेरी नजर बेंच के नीचे जा पड़ी वहीं उसकी डायरी मुझे नजर पड़ गई। चुपचाप उठा लिया। जब उसको डायरी न मिली और मायूस होकर वह जाने लगा। मैंने कहा—"देखिये जनाब यदि आपको डायरी मिल जावे तब आप मुझको क्या दीजिएगा—?"

"आप जो चाहेंगी वही दे दूँगा" युवक ने बड़ी उत्सुकता से मेरी ओर निहारते हुए कहा।

"अच्छा तब तो यह लीजिए और इसके बदले में मेरा इनाम मुझको दीजिए।"

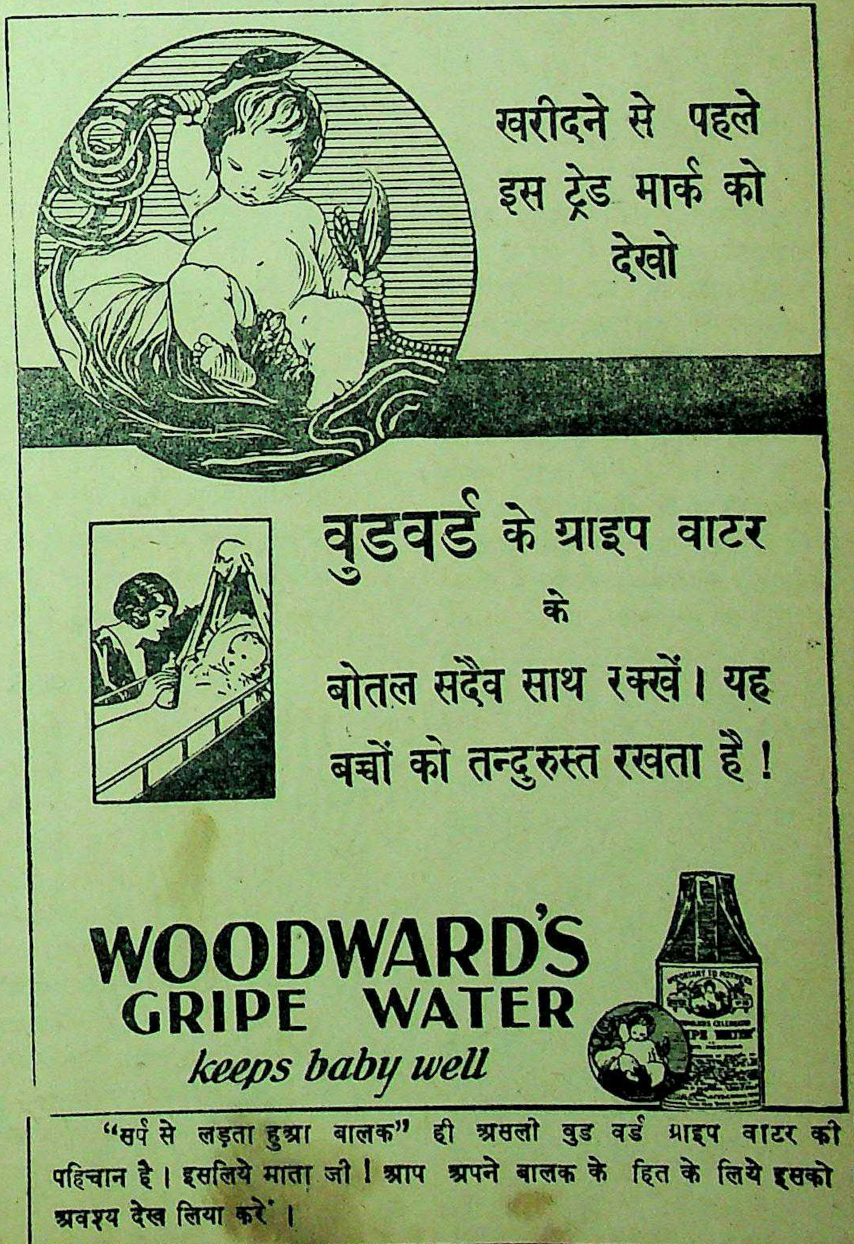

खरीदने से पहले
इस ट्रेड मार्क को
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117
W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

युवक ने हँसते हुए डायरी लेते हुए कहा—इनाम तो आप पहले ही ले चुकीं—मेरा दिल तो कभी का आपके पास इस डायरी की एवज में पहुँच गया लेकिन हाँ धन्यवाद कहना बाकी रह गया वह मैं अब दे रहा हूँ।

"अच्छा तो आप अपने दिल को वापस बुला लीजिए। मुझे ऐसा दिल नहीं चाहिए।"

"मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरा दिल ही आपके पास रहे। इसे आप सँभालकर रख भी सकोगी।

"अच्छा तो आप अपना नाम तो बतलाइए ?"

"जी मुझे जार्ज टेनीसन कहते हैं। यदि आपको एतराज न हो तो आप भी अपना नाम बतला दीजिये।

मेरा नाम जेन-पेवेल है—"यह लीजिए मेरा परिचय-कार्ड।"

उस युवक ने मेरा परिचय-कार्ड ले लिया और उसने अपना भी परिचय कार्ड मुझे दे दिया। उसके परिचय-कार्ड पर लिखा हुआ था—"पोइट जार्ज टेनीसन" मैं चौंक पड़ी। मैंने कहा—"तो आप कविता करते हैं ?" उसने कहा—"जी हाँ कुछ-कुछ लिख लेता हूँ।"

"मुझे भी आप अपनी कविता सुना दीजिए।" उसने कहा बहुत अच्छा। वह कविता कहने ही वाला था कि उसके और भी मिलनेवाले वहाँ आ पहुँचे। उसने उनको देखकर कहा—"अच्छा तो कल सुनाऊँगा।"

मैंने कहा—"कल तो मैं हालीवुड जा रही हूँ।"

"अच्छा तो वहीं भेज दूँगा।"

ज्यादा बात-चीत वह न कर सका क्योंकि उसके मिलनेवाले दोस्त जल्दी चलने की मचा रहे थे!

* * *

बहुत दिन हो गये। मुझे यह घटना हालीवुड की चहल-पहल में याद न रही। ठीक बड़े दिन के दिन जब कि हालीवुड में जलसा हो रहा था, हालीवुड को "सितारों की दुनिया" के नाम से सजाया था, हालीवुड के चारों तरफ रंग-बिरंगे कुमकुम लगाये थे। ये कुमकुम रात का उपहास कर रहे थे। मैं गाना गाकर आराम कुर्सी पर बैठ ही रही थी कि इतने में मेरे नौकर ने एक पत्र मुझे दिया—मैंने उसको खोला—उसमें लिखा था—"बड़े दिन का तोहफा।"

माई स्वीट हार्ट—तुम वास्तव में शरीरधारी ज्ञान हो। मैं व्यर्थ ही किताबों में "ज्ञान" खोज रहा हूँ।

- मेरी प्रिये! तुम हो! इसलिए संसार है! तुम सत्य और सब मिथ्या है! तुम्हारी रूप-रेखा पर दुनिया जीवित है! सब तुम्हीं में लय हो रहा है! तुम देवी हो! चित्रकार भी तुम्हारे "सौन्दर्य" को अपनी तूलिका से चित्रित नहीं कर पाया है! हे! नारी-सौन्दर्य के व्यर्थ टीकाकार कवि तुम्हारी कविता हमारे सामने नारी-सौन्दर्य की एक झलक भी रख नहीं पाती है। मेरी सभी कवितायें तुम्हारे सौन्दर्य-ज्योति के सामने काँपने लग जाती हैं। गिड़गिड़ाने लगती हैं!

हाँ समझ में आया कि तुम स्वयं कविता हो, तुम स्वयं छन्द हो! तुम्हारे शरीर के प्रत्येक अवयव में से छन्दों की लड़ियाँ फूट रही हैं! मेरे हृदय के भावों की सम्बल! तुम कितनी दिव्य हो—कितना मोहक तुम्हारा रूप! ज्योत्स्ना लोक की भाँति मलीन्द्रीय सौन्दर्य है तुम्हारे दो चक्षुयें कितनी मादकता है—कितना अनुराग है! सारा संसार तुम्हारे जादू-भरे नयनों में व्याप्त है!

मेरी आशा, आनन्द, जीवन, सभी कुछ तुम्हीं हो!

बस यही मेरा बड़े दिन का तोहफा है! मुझे उम्मीद है कि तुम मेरे इस तोहफे की कद्र करोगी!

* * *

अपने दोस्त का तोहफा पाकर आज मुझे बहुत खुशी हो रही है। मानो आज मुझे स्वर्ण-निधि प्राप्त हो गई हो। आज अतीत की घटनायें सारी की सारी मेरे सामने क्रीड़ा कर रही हैं! मैं बड़े दिन का तोहफा लिए हुये उसी क्रीड़ा के चित्र को देखने में मग्न हो रही हूँ! यह तोहफा हम दोनों के बीच में प्रेम का पुल है।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्त

इस पुस्तक में लेखक की उत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया है। कविताओं की भाषा इतनी और कल्पना की उड़ान इतनी अच्छी है कि पाठक कुछ क्षण के लिए अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्र

लो धोबी ने एक और हानि की!

—और इधर कपड़े इतने महंगे

इस महंगी के समय में अगर धोबी आपके कपड़े पटक पटक कर उनकी धज्जियां उड़ा दे तो कैसे काम चलेगा, आपको चाहिये कि आप इस तरह साफ करने की विधि का खोज करें जिससे वे कम फटें ताकि हरएक कपड़ा अधिक से अधिक चले। अब समय है कि आप **अपने घर** में सनलाइट की "साबुन–और–बचत" की विधि से कपड़े धोयें। कपड़े धोने की यह सरल विधि धोबियों की बेढंगी विधि से कहीं उत्तम है क्योंकि वह सरल है, कपड़ों को अधिक साफ़ करती है और उनका एक धागा भी नष्ट नहीं करती। सनलाइट की जोरदार और स्वयंक्रियाशील झाग मैले कपड़ों के मैल को पटके या रगड़े बिना ही काट डालती है, इससे कपड़े अत्यंत स्वच्छ दिखाई देते हैं और अधिक समय तक चलते हैं। आज ही अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन–और–बचत" की विधि सिखा दीजिये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन–और–बचत" रीति सिखा

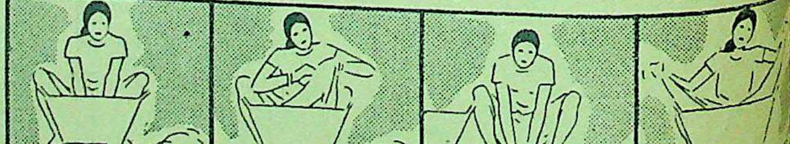

१ कपडों को अच्छी तरह भिगो लीजिये, इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां **अधिक** मलिये। ३ कपडों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की क्रियाशील झाग कपडे से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड रखेगी। ४ कपडे को इस तरह खंगालिये कि नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपडा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन

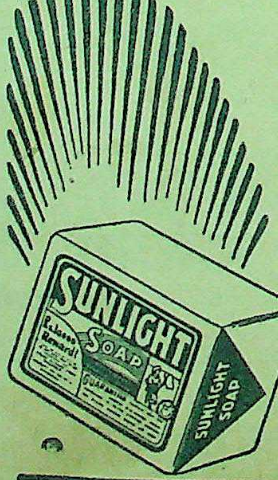

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 69-295 HI

LEVER BROTHERS (INDIA)

संपादक के नाम चिट्ठियां

उदयपुर में अगला सम्मेलन

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ अधिवेशन उदयपुर में हो रहा है, जब सारा देश एक ऐतिहासिक युग से गुजर रहा है। सन् १९४२ और बाद से सारे देश की अस्मिता और चेतना में एक नया मनोमन्थन प्रारम्भ हो गया है। केवल राजनैतिक ही नहीं, आर्थिक ही नहीं, परन्तु सांस्कृतिक समस्यायें भी आज देश के सामने एक नये प्रश्न तथा स्वरूप को धारण कर उठ आई हैं। ऐसी अवस्था में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति के प्रत्येक सदस्य का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की वर्तमान स्थिति तथा गति-विधि पर विचार करें और राष्ट्र के सांस्कृतिक समुत्थान के लिए अपनी इस महान् एवं गौरवसंभूत संस्था को अधिक विस्तृत, दृढ़ तथा व्यवहारिक बनावें।

उदयपुर की स्वागत-समिति का अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन को निमन्त्रित करने की एक कामना यह भी है कि उदयपुर पधार कर हमारा यह सम्मेलन राष्ट्र-भाषा हिन्दी के कार्य के लिए नई मार्ग-दिशा और चेतन्य प्राप्त करे। हमारी केवल स्वागत की ही भावना नहीं है। हम मेवाड़वासी हृदय से चाहते हैं कि आप उदयपुर पधार कर सम्मेलन की वर्तमान सारी स्थिति पर गंभीरतापूर्वक विचार करें और यदि आवश्यक समझें तो उसे युद्धोत्तर भारत के सांस्कृतिक निर्माण के लिए अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा करें।

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सामने हमारी दृष्टि से निम्नलिखित प्रश्न हैं—

सम्मेलन के विधान में देशव्यापी प्रसार की दृष्टि से परिवर्तन होना चाहिए। प्रान्तीय आधार पर सम्मेलन का संगठन करना। अखिल भारतीय हिन्दो-साहित्य-सम्मेलन स्वयं प्रान्तों मे अपनी ओर से संगठन करे, जो सम्मेलन की ओर से उस प्रान्त में कार्य करे।

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन उदयपुर में या उसके पहले एक पंचवर्षीय वा सतवर्षीय कार्य-योजना बनावे तथा तदनुसार उदयपुर के बाद कार्य करे। अपनी योजना को कार्यान्वित करने के लिए अपने व्यय से वह सारा प्रबन्ध करे।

परीक्षाओं का स्तर ऊँचा किया जाय; तथा अब उनमें से प्रचार की सारी दृष्टि निकाल दी जाय। हिन्दी विश्व-विद्यालय के वर्तमान संगठन पर इस दृष्टि से पुनर्विचार किया जाय।

हिन्दी-साहित्यकारों का एक अलग संगठन सम्मेलन के अन्तर्गत किया जाय और यह परिषदों के अतिरिक्त हो। इसका भी वार्षिक अधिवेशन के समय अधिवेशन हो।

अहिन्दी प्रान्तों के राष्ट्र-भाषा हिन्दी के सेवकों एवं अन्य साहित्यकारों का सहयोग साधने के लिए सम्मेलन निश्चित योजना से कार्य करे।

राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रचार-कार्य के लिये समस्त भारतवर्ष के लिए "राष्ट्र-भाषा हिन्दी कार्यकर्ता पंक्ति,' स्थापित की जाय। इस पंक्ति के अन्तर्गत "विशारद" या "साहित्यरत्न" को दो वर्षों के लिए विशेष शिक्षण दया जाय और उनको अहिन्दी प्रान्तों में भेजा जाय।

राष्ट्र-भाषा प्रचार कार्य में अनिवार्यतः 'हिन्दी-साहित्य-अध्ययन केन्द्र स्थापित किये जायँ, जिनसे हिन्दी मनोवृत्ति एवं ज्ञान के साथ ठोसपन भी बढ़ता जाय।

इन सब कामों के लिए एक विपुल धन-राशि एकत्र की जाय।

सम्मेलन हिन्दी के रचनात्मक देश-व्यापी कार्यों को एकदम शृंखलाबद्ध करे तथा उसको संभव सारी सहायता करे।

सम्मेलन अपनी कार्य-कारिणी को इस प्रकार संगठित करे कि उसका प्रत्येक सदस्य उक्त कार्य को मूर्तरूप दे।

सम्मेलन को चाहिए कि प्रत्येक प्रान्त में विद्यापीठ की स्थापना के लिए चेष्टा करे।

राष्ट्र की भाषा, संस्कृति तथा अन्य सम्बन्धित प्रश्नों पर निश्चित मत सम्मेलन प्रतिवर्ष प्रदान करे।

उक्त सुझाव केवल सूचक-मात्र हैं। हम यह नहीं कहते कि उक्त विषय आपके सामने नहीं हैं। हैं; पर हमारा आग्रह तो इतना ही है कि आज उन पर और भी अधिक ध्यान दें। आशा है, आप इस पत्र का कृपा कर उत्तर प्रदान करेंगे। आपके उत्तर को हम "अधिवेशन समाचार" में प्रकाशित करेंगे।

हिन्दी-विद्यापीठ —जनार्दनराय नागर
उदयपुर मन्त्री

* * *

बाल-साहित्य-सम्मेलन क्यों ?

बच्चों के उत्थान के अनेक साधनों में बाल-साहित्य का स्थान सबसे ऊँचा है। बाल्यावस्था में सर्वोत्तम बालकोपयोगी पुस्तकों-द्वारा बच्चों के हृदय पर जो स्थायी प्रभाव डाला जा सकता है, वह अन्य साधनों-द्वारा नहीं। वर्तमान हिन्दी-साहित्य में सुधार की बहुत गुंजाइश है। कुछ प्रकाशक इस समय बाल-ग्रंथ-मालायें निकाल रहे हैं और कुछ बालकोपयोगी पत्र-पत्रिकायें भी निकलती हैं, पर अन्य भारतीय भाषाओं एवं पाश्चात्य भाषाओं के मुकाबले में हिन्दी बाल-साहित्य पिछड़ा हुआ है। बालक ऐसा व्यापक शब्द है जिसमें पन्द्रह-सोलह वर्ष का व्यक्ति और चार वर्ष का बच्चा भी आ जाता है, किन्तु इन दोनों की अवस्थाओं की रुचि में भारी अन्तर है। सोलह वर्ष के बालक के लिए जो ग्रन्थ उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, वे छोटे बच्चों के लिए नहीं। बड़े बालकों के लिए तो कुछ उपयोगी पुस्तकें हैं भी, किन्तु शिशुओं के योग्य पुस्तकों की बहुत कमी है। अवस्था की रुचि-भिन्नता के कारण बाल-साहित्य के वर्गीकरण की बड़ी आवश्यकता है। कुछ प्रकाशकों ने अपनी पुस्तकों को वर्गीकरण करके सुन्दर पथ-प्रदर्शन किया है।

हिन्दी में अभी तक जो बाल-साहित्य बना है वह किसी निर्दिष्ट और शास्त्रीय पद्धति पर नहीं। बाल-साहित्य की रूप-रेखा और भावी प्रगति पर गंभीर विचार करने के लिए बाल-साहित्य के प्रकाशकों, लेखकों, सम्पादकों, मनोविज्ञान-वेत्ताओं, शिक्षा-विशेषज्ञों एवं अनुभवी शिक्षकों के सम्मेलन की बहुत आवश्यकता है। इन सब के विचार-विनिमय से बाल-साहित्य को लाभ होगा।

स्वतन्त्र बाल-साहित्यसम्मेलन-द्वारा हिन्दी बाल-साहित्य के भावी विकास के मूल तत्वों का निर्णय हो सकता है, तथा एक समिति-द्वारा वर्गीकरण की भी समस्या हल की जा सकती है। इन विचारों से मैं बच्चों के हितैषी एवं साहित्य के प्रेमियों के समक्ष एक अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य के सम्मेलन की योजना रखता हूँ।

नीचे कुछ विषयों की सूची देता हूँ जिन पर बाल-साहित्य के लेखक, प्रकाशक अथवा प्रेमियों के गंभीर विचार जनता के समक्ष आना लाभप्रद होगा। (१) बालकों की अवस्था के अनुसार पुस्तक का टाइप, आकार, कहानी, कविता अथवा पाठ की लम्बाई और पृष्ठ-संख्या निर्धारित करना। (२) अवस्था के अनुसार भाषा तथा विषय में परिवर्तन। (३) शिशुगीत, लोरियाँ तथा छोटे बच्चों को निरर्थक एवं मनोविनोद की तुकबन्दियों का संग्रह। (४) अभिनय करने योग्य कवितायें, संवाद, प्रहसन अथवा नाटक का प्रकाशन। (५) जानवरों और परियों की कहानियाँ कैसी हों, तथा भूत, पिशाच, दानवों आदि की कहानियों का क्या स्थान हो, इस पर विचार। (६) देश-प्रेम की कवितायें तथा साहस और पौरुष की कहानियों का प्रकाशन। (७) आधुनिक आविष्कार रेडियो, हवाई जहाज, मोटर आदि वैज्ञानिक साहित्य का प्रकाशन। (८) देश-देशान्तर-सम्बन्धी भौगोलिक साहित्य, विशेषतया, वहाँ के बाल-जीवन साहित्य का प्रकाशन। (९) पौराणिक तथा ऐतिहासिक कहानियों का सरल भाषा में बच्चों के लिए प्रकाशन। (१०) बालकोपयोगी ज्ञान-कोष का निर्माण। (११) स्वास्थ्य, व्यायाम, खेल-कूद-संबन्धी साहित्य का प्रकाशन, (१२) अन्य देशी तथा भारतीय भाषाओं के प्रसिद्ध बालकोपयोगी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद। (१३) मासिक-पत्र और पत्रिकायें तथा उनमें संशोधन पर विचार। (१४) भारत-वर्ष तथा संसार के प्रसिद्ध महापुरुषों की जीवनियों का प्रकाशन। (१५) बाल-मनोविज्ञान तथा बाल-शिक्षा-सम्बन्धी साहित्य का प्रकाशन।

इस विषय में आवश्यक पत्र-व्यवहार निम्नलिखित पते से किया जाय।

—कृष्णविनायक फड़के, एम० ए०
श्रद्धानन्द पार्क, कानपुर

Emanofele
Emanofele

जब वे आक्रमण शुरू करते हैं

ज्योंही बरसात खतम होती है मच्छड़ अपना आक्रमण बहुत तेजी और आक्रोश के साथ आरम्भ करते हैं। उन्हें खूब सफलता भी मिलती है क्योंकि उनकी भनभनाहट प्रायः प्रत्येक घर में सुनाई पड़ती है। इस वर्ष अन्य वर्षों की अपेक्षा मलेरिया का ज्यादा जोर है और इसके लिये अच्छी दवा की एकदम कमी। **एमानोफेल**, जो मलेरिया की अचूक दवा है, प्रत्येक दिन हजारों मलेरिया के रोगियों को अच्छा करता है।

दूकानदार, औषधि विक्रेता तथा स्टाकिस्ट्स पूरी जानकारी के लिये हेड आफिस से पत्र व्यवहार करें।

A PRODUCT OF P. M. BAGCHI & CO., CALCUTTA
I-S.E/E

पी० एम० बागची एंड कं०, कलकत्ता

मुस्लिमलीग से गठबन्धन क्यों ?

(पेज ७ का शेष)

उसे बुना हाथ की खड्डियों में जाता है। लीग के पदाधिकारियों के लिए इस खादी का पहिनना अनिवार्य है। फिर चाहे अभी तक इस पर कठोरता के साथ अमल हुआ हो या नहीं।

लीग और देहात

मुस्लिम लीग मुस्लिम जनता की नहीं; वह तो कुछ धनपतियों और जमींदारों की संस्था है। ठीक है। कांग्रेस भी अपने प्रारम्भिक दिनों में धनपतियों की, बड़े आदमियों की संस्था थी। मुस्लिम लीग आजकल शहरी मुसलमानों की है और उसके तमाम अधिवेशन शहरों में ही किए जाते हैं। कांग्रेस भी अपने प्रारम्भिक काल में शहरियों की संस्था थी और उसके सभी अधिवेशन बड़े बड़े शहरों में ही होते रहे। गाँवों में अधिवेशन करने की कल्पना गांधी जी में पैदा हुई और कांग्रेस समारोह गाँवों में ही होने लगे हैं। समय आ सकता है, जब देहाती मुसलमान भी मुस्लिम लीग के अधिवेशनों को अपने प्रान्तों में निमन्त्रित करना शुरू कर दें और लीग के अधिवेशन देहातों में ही होने लग जायँ।

सहयोग-असहयोग-नीति

कांग्रेस ब्रिटिश सरकार के साथ समय आने पर असहयोग करती है और समय आने पर सहयोग भी करती है। सन् १९३७ में उसने ११ प्रान्तों में अपने मन्त्रिमंडल कायम करके सरकार के साथ सहयोग किया था। किन्तु युद्ध शुरू होने के बाद सन् १९३९ में अपने मन्त्रिमंडलों से त्याग-पत्र दिलाकर कांग्रेस ने असहयोग कर दिया था। सरकार के साथ सहयोग और असहयोग करके कांग्रेस की शक्ति सदैव बढ़ती रही है। ठीक इसी तरह मुस्लिम लीग भी सरकार के साथ सहयोग करती है और असहयोग भी। जब कांग्रेसी मन्त्रिमंडलों ने प्रान्तों में इस्तीफे दे दिए तब मुस्लिमलीग ने ही यह प्रस्ताव किया था कि यदि कांग्रेस पार्टी मन्त्रिमंडल नहीं बनाती तो मुस्लिम लीग अपने मन्त्रिमंडल बनाएगी। परिणाम यह हुआ कि सिन्ध, सीमाप्रांत, आसाम और बंगाल में मुस्लिम लीग मन्त्रिमंडल कायम हो गये। जिन प्रान्तों में दफा ९३ का शासन था, उनके मुकाबिले लीगी मन्त्रिमंडलों द्वारा शासित प्रान्तों की मुस्लिम जनता को राजनैतिक जागृति की दृष्टि से काफी लाभ हुआ। इसी लिए उस प्रान्तों में हुए अनेक उप-चुनाओं में मुस्लिम लीगी उम्मीदवार काफी सफल हुए।

वास्तविक राजनैतिक अनाचार

सहयोग और असहयोग की भावना ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों को अपनी राजनैतिक माँग को जोरदार शब्दों में पेश करने की शक्ति दी है। यदि कांग्रेस की सबसे तीव्र आलोचना यह है कि "ब्रिटिश सरकार वास्तविक अधिकार जनता को सौंपने के लिए तैयार नहीं" तो कायदे-आज़म मि० जिन्ना की लीग के मंच पर से भी कई बार यह घोषित किया जा चुका है कि "ब्रिटिश सरकार पाकिस्तान को अस्वीकृत करके वास्तविक राजनैतिक अधिकार जनता के हवाले करने को तैयार नहीं।"

मुस्लिम शासन के स्वप्न

निरन्तर सहयोग की नीति को अपनाने का ही यह फल है कि भारत के मुस्लिम लीगी मुसलमान भारत को अँगरेजों से छीन कर अपने शासन में लाने के स्वप्न देख रहे हैं। उन्हें रह रहकर यह याद आ रहा है कि अँगरेजों ने मुसलमानों से ही भारत को जीता था और इसलिए अब यदि वे इस देश का शासन-सूत्र किसी को सौंपना चाहते हैं, तो वे मुसलमान हैं। उनका यह दावा अपनी शक्ति पर निर्भर करता है। कांग्रेस की भी आकांक्षा यही है कि समूचे भारत पर अँगरेजों के स्थान पर कांग्रेस का शासन होना चाहिए।

यह लोकप्रियता क्यों ?

निस्सन्देह कांग्रेस की तरह मुस्लिम लीग ने सत्याग्रह नहीं किये, पुलिस के डंडे बर्दाश्त नहीं किये, जेल की, निर्वासन की और कालेपानी की यातनायें नहीं झेलीं। किन्तु कांग्रेस प्रायः भारत में अपनी तीव्र आलोचना को जिस तरह मुस्लिम लीग ने बर्दाश्त किया है, उससे उसने मुस्लिम जनता का दिल हर लिया है। यही वजह है कि आज कांग्रेसी, राष्ट्रवादी, अहरारी, जमीतल-उल-उलेमा के अनुयायी मुसलमान भी इस सोच में पड़ गये हैं कि उन्हें अपनी अपनी पार्टियों में बने रहना चाहिए या उन्हें छोड़कर मुस्लिम लीग में शामिल हो जाना चाहिए। कोई भी राजनैतिक चर्चा जब छिड़ती है, तब देश की दो ही पार्टियों का नाम लिया जाता है, और वे हैं कांग्रेस व मुस्लिम लीग। जब मुस्लिम लीग ने कांग्रेस के समान कुर्बानियाँ नहीं कीं तो फिर उसका नाम कांग्रेस के साथ साथ क्यों लिया जाता है ? कांग्रेस के पूजनीय श्री भूलाभाई देसाई को नवाबजादा लियाकतअली खाँ से मिलने की क्या आवश्यकता है ? भारत के वायसराय को भी भूलाभाई व लियाकतअली से मिलने की क्या जरूरत थी ? और सर तेजबहादुर सप्रू की समझौता-समिति को क्या जरूरत थी कि वह अपनी योजना में हिन्दुओं व मुसलमानों को समान स्थान देती ? इस सबसे यह साबित होता है कि मुस्लिम लीग ने भारत के मुसलमानों की वैसी ही सेवा की है, जैसी कांग्रेस ने भारत की।

लीग की शक्ति बढ़ रही है

पंजाब, सिन्ध, सीमाप्रान्त, आसाम और बंगाल में मुस्लिम लीग की जो दुर्दशा हुई है, उसकी ओर संकेत करके यह बताया जाता है कि मुस्लिम लीग का मुस्लिम जनता पर कोई प्रभाव नहीं। निस्सन्देह यह ठीक है। इसका कारण यह है कि सन् १९३७ के प्रान्तीय चुनावों में मुस्लिम लीग एक नई संस्था थी। केवल १९३६ में ही तो कायदे-आजम ने उसकी बागडोर अपने हाथ में ली थी। एक वर्ष में लीग कांग्रेस जैसी प्रभावशाली न हो सकती थी। किन्तु १९३७ के बाद लीग की जो शक्ति बढ़ी, उसके ज्यादा उदाहरण क्या पेश किये जायँ। आज मुस्लिम लीग के सदस्यों की संख्या करोड़ों तक पहुँच चुकी है, लीग के पास पैसा है, 'डान' जैसा प्रभावशाली दैनिक अखबार है। 'डान' ने इतने स्वल्पकाल में पत्रकार-जगत् में जो ख्याति प्राप्त कर ली है, उसका अन्दाज इसी बात से किया जा सकता है कि अहमदनगर के किले में बैठकर महात्मा गांधी भारत के जो अखबार पढ़ा करते थे उनमें दूसरा या तीसरा नम्बर 'डान' का था। बाहरी निर्वाचन-क्षेत्रों से समय समय पर मुस्लिम प्रान्तों के असेम्बलियों के लिए जो उप-चुनाव होते रहे, उन सबमें प्रायः मुस्लिम लीगी उम्मीदवार चुने जायँ। इससे प्रकट है कि मुस्लिम लीग की ताकत बढ़ रही है और आगामी प्रान्तीय चुनावों में सिर्फ सीमाप्रान्त और कुछ कुछ पंजाब को छोड़कर अन्य सब मुस्लिम प्रान्तों में मुस्लिम लीग के ही जीतने की आशा है।

इस तरह हमने देखा कि मुस्लिम लीग भी कांग्रेस की राह पर चल रही है। कांग्रेस यदि महात्मा गांधी के नेतृत्व में श्रेय मार्ग की पथिक है तो मुस्लिम लीग मि० जिन्ना के नेतृत्व में प्रेम मार्ग की पथिक है। यह दोनों संस्थाएँ अपने मार्गों से स्वराज्य-मन्दिर की ओर हैं। इसलिए यदि दोनों में गठ जाय तो हमें इसका स्वागत चाहिए।

मुफ्त

डायरी फाउन्टेनपेन १९४

अपने वार्षिक उत्सव के
हमने उपरोक्त पुरस्कार मुफ्त
निश्चय किया है। शीघ्र ही लिखें।

इम्पीरियल नोवेल्टी स्टोर्स
के० सी० अमृतसर

इस सिलसिले को यह दिखाने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है कि असावधानी की बातचीत, वह चाहे निर्दोष ही क्यों न हो, शत्रु को लाभ पहुंचा सकती है।

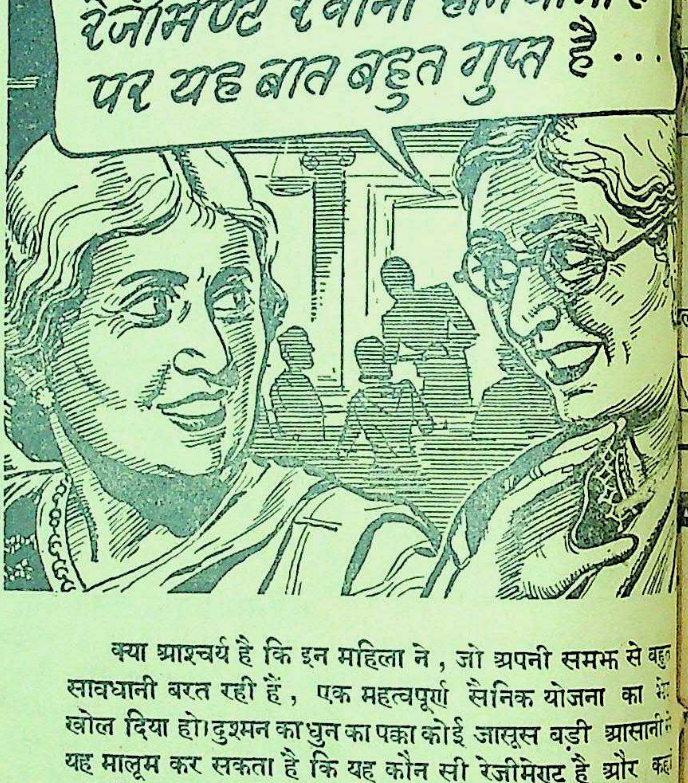
...मेरा बेटा कहता है कि उसकी रेजीमेण्ट रवाना होने वाली है- पर यह बात बहुत गुप्त है...

क्या आश्चर्य है कि इन महिला ने, जो अपनी समझ से बहु सावधानी बरत रही हैं, एक महत्वपूर्ण सैनिक योजना का खोल दिया हो। दुश्मन का धुन का पक्का कोई जासूस बड़ी आसानी यह मालूम कर सकता है कि यह कौन सी रेजीमेण्ट है और कहां जायगी। इस प्रकार हरकत करने वाली दूसरी रेजीमेण्टों का हाल भी वह मालूम कर सकता है। इस तरह की छोटी छोटी बातों को आपस में जोड़ कर, संभव है, वह बर्मा में नई फ़ौज के उतारे जाने अथवा हमारे नये आक्रमण का पता लगा ले। ज़रा सी बात मुंह से निकालने में भी कितना बड़ा ख़तरा रहता है!

यह बात ठीक से समझ लीजिए कि दुश्मन के जासूस छोटे छोटे इशारों को जोड़ कर पूरी बात का पता लगा लेते हैं। किसी रेजीमेण्ट की हरकत, जहाज़ की रवानगी की तारीख, जंगी कारख़ानों में सामान की तैयारी— इस प्रकार की असंबंधित बातें शत्रु के बड़े काम की होती हैं। अपने सैनिकों को सहायता पहुंचाने, उनकी जानों की रक्षा करने तथा शत्रु पर सफलतापूर्वक आकस्मिक आक्रमण करने का केवल एक ही निश्चित उपाय है कि आप जंगी तैयारियों का बिलकुल ज़िक्र न करें—ज़रा सा भी भेद दुश्मन को न मिलने पाये।

बातचीत में सावधानी उचित

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर महिला-मण्डल उदयपुर ने आगामी दस मई से पन्द्रह दिन के लिए चित्तौड़गढ़ के किले पर महिला ट्रेनिंग कैम्प का आयोजन किया है। कैम्प के पाठ्य-क्रम में ग्राम-सेवा, गृह-उद्योग-शिक्षण पद्धतियाँ, गर्ल गाईडिंग, देश की वर्तमान परिस्थिति के साथ साथ आत्मज्ञान इत्यादि उपयोगी शिक्षण-विषय रक्खे गये हैं। शिविर में सम्मिलित होनेवाली महिलाओं को इस ऐतिहासिक गढ़ पर भक्तिमति मीरा, स्वामीभक्त पन्ना धाय और सतीत्व रक्षा के लिए जीवन की जौहर ज्वाला में जीवन विसर्जन करनेवाली पद्मिनी इत्यादि के जीवन से भी प्रेरणा मिलेगी, साथ ही कैम्प में देश की विदुषियों और विद्वानों तथा नेताओं से भी परिचय होगा। कैम्प में अनेक नेताओं के भी आने की आशा है।

सम्मिलित होनेवाली बहनों की योग्यता आठवीं कक्षा तक की होनी चाहिए और कैम्प-व्यय, २५) रुपये होगा। उम्मेदवार बहनों को 'मंत्रिणी महिला-मंडल उदयपुर' के पास आवेदन-पत्र २५) रुपये सहित भेजना चाहिए।

—प्रधान मंत्रिणी

बीकानेर (गंगानगर) महाराजकुमार बीकानेर श्री करणीसिंह जी बहादुर की शुभ वर्षगाँठ के अवसर पर तारीख २९ अप्रैल से ५ मई तक नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय द्वारा एक शिक्षा-सप्ताह मनाने की आयोजना की गई है। प्रतिदिन भिन्न-भिन्न विषयों पर अधिकारी विद्वानों के भाषण होंगे। तारीख ६ मई को खूब धूम-धाम से वार्षिकोत्सव मनाया जायगा। इसके साथ साथ शिक्षा-प्रदर्शिनी की भी आयोजना की गई है जिसमें हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं व शिक्षा, कला और साहित्य-सम्बन्धी अन्य सामग्री का प्रदर्शन किया जायगा।

इस अवसर के लिए निम्नलिखित विद्वानों को सादर निमन्त्रित किया गया है—श्री रामगोपाल जी मेहता, श्री दशरथ शर्मा, एम० ए०, पी० एच० डी०, श्री विद्याधर शास्त्री, एम० ए०, श्री पं० शंकरदत्त सभापति राजपूताना प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन, श्री शंकरदयाल सक्सेना साहित्य-रत्न, श्री० स्वामी केशवानन्द जी महाराज, श्री तेगराम सम्पादक 'दीपक', श्री भगवद्दत्त जी लाहौर और श्री रामकुमार वर्मा परीक्षा-मंत्री हिन्दी-साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

—आचार्य गौरीशंकर शास्त्री

* * *

उन्नाव जिला-हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति ने अपनी विशेष बैठक में प्रस्तावित नियमावली पर विचार तथा संशोधन करने के पश्चात् जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की ओर से एक वाचनालय की स्थापना का निश्चय किया और रेडियो भाषा-नीति के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव स्वीकृत किया—

"जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन उन्नाव रेडियो की हिन्दी विरोधी नीति के प्रति अपना तीव्र असन्तोष और विरोध प्रकट करता है और श्रीमान् वायसराय महोदय का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए प्रार्थना करता है कि रेडियो स्टेशनों की वह भाषा जो हिन्दी भाषी प्रान्तों के लिए और वह भाषा जो भारतीयों को सुनने समझने के लिए बोली जाय, हिन्दी हो।"

—सुमित्राकुमारी सिनहा
प्रधान मंत्राणी

मुफ्त

डायरी कलेण्डर १९४५

के लिए अभी पोस्टकार्ड लिखें।

ल कमर्सियल कं० के० सी० अमृतसर

ATKINSONS

* * *

सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
क्रीम ब्रिलन्टाइन

AHO-1-215 HI
J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

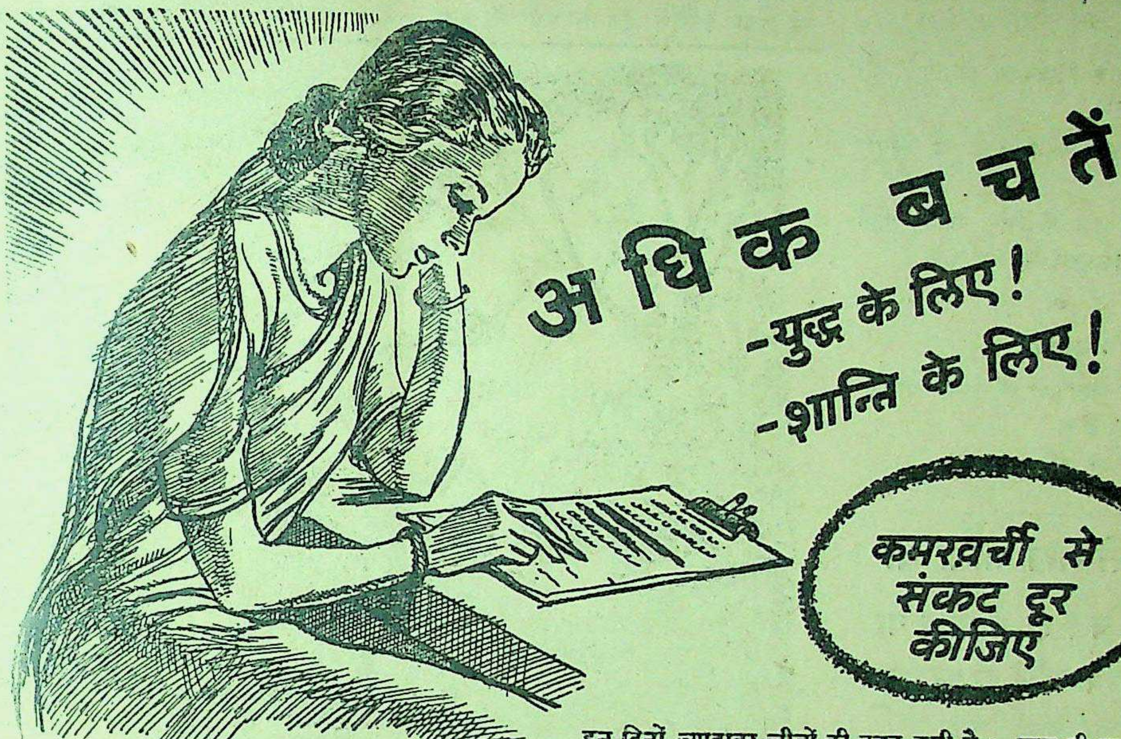
अधिक बचतें
-युद्ध के लिए!
-शान्ति के लिए!
कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

इन दिनों ज़्यादातर चीज़ों की बहुत कमी है। माल की बहुत अधिक खींचतान है। ग़रीबों को उचित भाग तब तक नहीं मिल सकता, जब तक आप अपने ख़र्च में कमी नहीं करते। देश के प्रति आपका यह कर्त्तव्य है कि यथासंभव कम से कम वस्तुओं से काम चला लें।

आर्थिक दृष्टि से भी कमख़र्ची बड़ा अच्छा गुण है। थोड़ी थोड़ी बचत रोज़ करते रहने से महीने में नियमित रूप से कुछ धन-संचय हो जाता है—बचत के इन रुपयों को शान्ति स्थापित होने और भाव गिरने पर ख़र्च करना चाहिए।

साबुन लगाने के बाद इसे सुखा कर धरिए।
इस प्रकार यह अधिक चलता है।

भोजन बनाने में कम आग जलाइए।
ईंधन बचाइए।

अपनी मोटर बंद करके रख दीजिए।
लड़ाई के लिए पेट्रोल की ज़रूरत है।

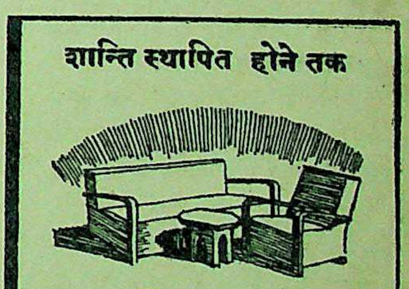
शान्ति स्थापित होने तक
नया फर्नीचर मत ख़रीदिए।

शादी-विवाह में ख़र्च घटाइए।
वस्तुओं के स्थान पर नक़द रक़म देना ज़्यादा अच्छा है।

कम नौकरों से
काम चला लीजिए।

अगर चिट्ठी से काम चल जाय तो
तार न भेजिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित। AAA 4 HINDI

मनोरंजक चुटकुले

ज्योतिषी

एक ज्योतिषी नगर के प्रसिद्ध डाक्टर के पास गया और बोला—डाक्टर साहब, जरा देखिए मेरे पेट में दर्द क्यों होता है ?

डाक्टर ने उस व्यक्ति को गौर से देखा और तब पूछा—'मेरी फ़ीस ५) है। क्या वह तुमसे मिल सकेगी ?'

ज्योतिषी हिचकिचाया और फिर बोला—"अभी तो नहीं कह सकता, परन्तु उस रकम के बदले में तुम्हारा हाथ देखकर कुछ बता सकता हूँ।"

* * *

कला के लिए

'अच्छा तो आपके मित्र के दो लड़कियाँ हैं ?'

'जी हाँ, एक चित्रकला जानती है और दूसरी संगीत।'

'दोनों अपनी अपनी कला में निपुण हैं।'

'हाँ, यदि एक के लिए आप आँखें बन्द कर लें और दूसरे के लिए कान।'

* * *

चुनाव

'आप मेरी लड़कियों में सबसे अधिक किसे पसन्द करते हैं ?'

'जिसकी शादी हो चुकी है।'

कमर-दर्द से मरा जाता था

इससे तो वह चल ही न पाता था

क्रुशन ने इस भयंकर दर्द को दूर कर दिया

"जब आप कोई अच्छी चीज जानें, तो अपने मित्रों को उसके सम्बन्ध में अवश्य बतलायें।" इस आशय को लेकर एक सज्जन अपना अनुभव लिखते हैं ?

"मैं कमर-दर्द से इतना पीड़ित था कि खाट पर से उठना भी दूभर हो गया था। मैंने उसकी दवा की। इससे दर्द में कुछ भी अन्तर न हुआ। मेरे एक मित्र ने बतलाया, क्यों जी ! तुम क्रुशन साल्ट क्यों नहीं सेवन करते ? इसको प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन करने से तुम्हारा कमर-दर्द जाता रहेगा। इस उपदेश से मैं प्रतिदिन इसका सेवन करने लगा। यह मेरा दूसरा बोतल है। अब मैं अपने कार्यों को पुनः अच्छी तरह से कर सकता हूँ। यह आराम मुझे क्रुशन से हुआ है। लोगों को मैं अच्छे ढंग से बतलाऊँगा।" सी० बी०

कमर-दर्द, बतास और गठिया, ये रोग क्रुशन साल्ट से क्यों दूर हो जाते हैं ? यह एक खुला हुआ रहस्य है। यह ६ प्रकार के नमकों से बनाया जाता है। इन नमकों के प्रत्येक अंग अपने ढंग से कार्य करते हैं। जिस जगह एक कार्य नहीं करता वहाँ दूसरा उसको पूर्ण करता है। ये ६ प्रकार के साल्ट क्रुशन से हमारे भीतरी इन्द्रियों के स्वास्थ्य की उत्तेजना में बल देते हैं। उनको कार्य में लगाते, तथा एसिड और जहरों को जो रक्त को दूषित करते हैं उनके प्रभाव को दूर करते हैं।

गठिया के दर्द से जल्द चंगा होने का यह रामबाण है। इससे स्वास्थ्य में शीघ्र ही उन्नति होती है।

यह क्रुशन साल्ट अच्छे रासायनिकों और व्यापारियों की सभी दूकानों पर मिलता है।

हिन्दुस्तानी-प्रचार सम्मेलन और उर्दू समाचार-पत्र

(पेज ६ का शेष)

यह कहना गलत न होगा कि यह हिन्दुस्तान के आधे रहनेवालों की भाषा है। पंजाब, राजपूताना, दिल्ली, आगरा, अवध, बिहार और महाकोशल में तो हिन्दुस्तानी या इससे मिलती-जुलती बोलियाँ बच्चे अपनी माताओं से सीखते हैं। लेकिन इनसे बाहर हर बड़े शहर में इसके बोलनेवाले मिलते हैं। और इसके समझनेवालों की तो गिनती और भी ज्यादा है।

गांधी जी अनुभवी और बहुत ही बुद्धिमान् राजनीतिक नेता हैं। वह सबको हाथ में रखना चाहते हैं। इसलिये डा० ताराचन्द की राय का उन्होंने केवल उल्लेख कर दिया क्योंकि इस सम्बन्ध में उनसे काम लेना है। परन्तु उन्होंने 'हिन्दुस्तानी' की उसी परिभाषा को सामने रखा जो हिन्दी के पक्षपात पूर्ण समर्थक और उर्दू के भारी शत्रु टण्डन जी के प्रस्ताव से नेशनल कांग्रेस ने स्वीकृत की।

आश्चर्य है कि डा० ताराचन्द ने अपना आदर्श कब और किस तरह बदल दिया ? गांधी जी (कांग्रेस और टण्डन जी के साथ) तो कहते हैं कि हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो उत्तरीय भारत के गाँवों में बोली जाती है और डा० साहब इसका सम्बन्ध जोड़ते हैं दिल्ली, आगरा, तथा हिन्दुस्तान के हर बड़े शहर से। जब सिद्धान्त में ही इतना बड़ा भेद है तो फिर इस कमेटी का जो वर्धा में बनाई गई है, क्या अर्थ है और क्या उपयोग ? यह प्रश्न है जो हमें आश्चर्य में डाल रहा है। गांधी जी और कांग्रेस एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं और कांग्रेस के शासनाधि दिनों में भाषा के सम्बन्ध में जो हुये वे भुलाये नहीं जा सकते। लीजिये कि कल फिर शासनाधिकार (में नहीं तो प्रान्तों में ही सही) के हाथ में आ जाय तो टण्डन सम्पूर्णानन्द जी जैसे सज्जनों के में तो शासन की बागडोर 'हिन्दुस्तानी' की परिभाषा तैयार फिर क्या होगा ? उर्दू का क्या उर्दूवालों को इस गम्भीर परिस्थि विचार करना है। व्यक्तिगत तौर गांधी जी के विचारों को बड़ा समझते हैं लेकिन फिर भी हम कांग्रे टण्डन जी एण्ड कम्पनी से पृथक जी की कल्पना नहीं कर सकते।"

उर्दू समाचारपत्रों की यह दि अपनी कहानी आप कह रही है।

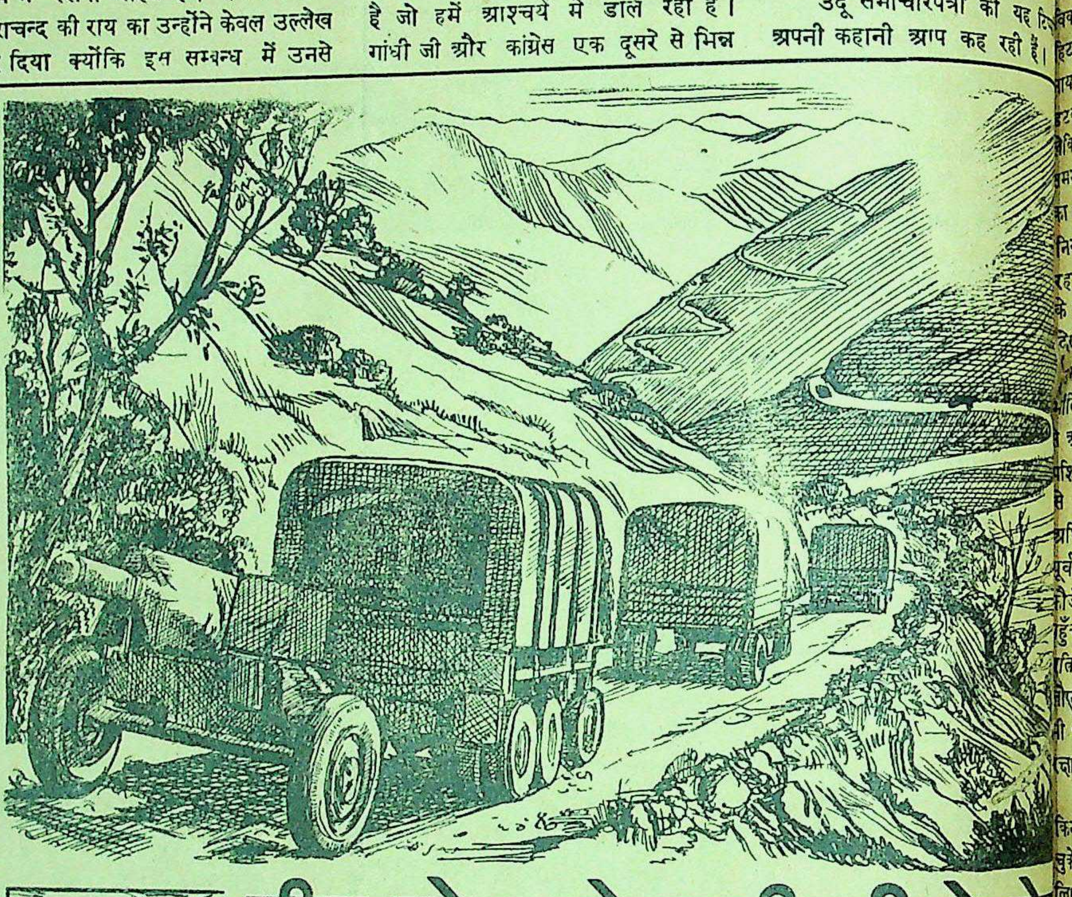

चीन को जाने वाली लीडो रो

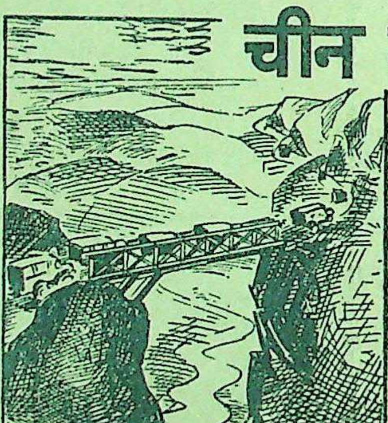

इंजीनियरी-कौशल का एक महान कार्य-खड्ड के ऊपर पुल।

तीन वर्ष तक लगातार संघर्ष करने के बाद आखिर हमने जापानी नाकाबन्द को तोड़ कर चीन तक फिर सड़क निकाल ली है। इस वर्ष के प्रारम्भ में हिन्दुस्तान के इस भूमि-मार्ग से पहिला क़ाफ़िला माल ले कर चीन पहुँचा। लीडो रोड का निर्माण इस युद्ध के सर्वश्रेष्ठ इंजीनियरी कौशलों में से है। लीडो से, जो आसाम का आखिरी रेलवे-स्टेशन है, चीन के कुनमिंग नामक स्थान तक यह सड़क घने जंगलों, ढलवाँ चट्टानों, सकरे पहाड़ी रास्तों और तेज़ बहने वाली नदियों से गुज़रती है। तीन साल पहिले जहाँ कठिन पगडंडियों और बीहड़ रास्तों के सिवा कुछ नहीं था, आज वहाँ १०४४ मील लम्बी सैनिक सड़क बन गई है, जिस पर से दिन रात अनेक प्रकार की भारी गाड़ियाँ चीन के **लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री** ले जा रही हैं।

इस सड़क के खुलने से चीन की वीर सेनाओं में नवीन आशा एवं शक्ति का संचार हो गया है। इससे हमारे शत्रु की हार का दिन और निकट आ गया है।

हम हिन्दुस्तानियों के लिए भी यह घटना कम ऐतिहासिक महत्त्व नहीं रखती, क्योंकि हम जानते हैं कि जब तक जापान को अन्तिम तथा निश्चित रूप से पराजित नहीं किया जाता, हिन्दुस्तान बाहरी आक्रमण से सुरक्षित नहीं हो सकता। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

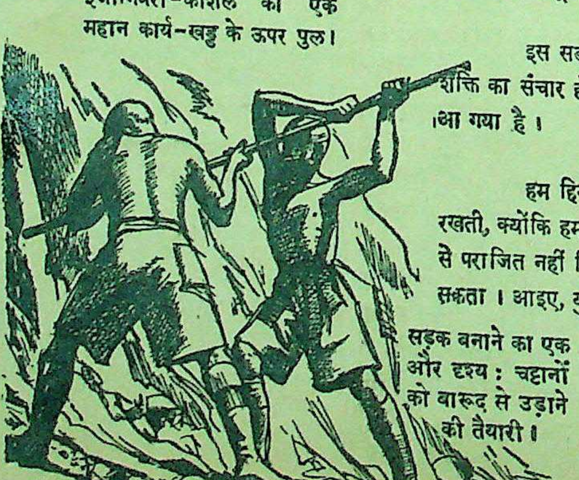

सड़क बनाने का एक और दृश्य : चट्टानों को बारूद से उड़ाने की तैयारी।

बढ़े चलो जीत निकट है

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

बर्लिन पर अन्तिम प्रहार हो चुका है
प्रशान्त और बर्मा में जापान के विरुद्ध भीषण युद्ध

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

नाजी डिक्टेटर हर हिटलर जो आज भी बर्लिन में मौजूद है।

'यूरोप में दीर्घ निशा का अन्त हो रहा और हमारे छः वर्ष के घोर परिश्रम एवं सतत प्रयत्नों के बाद अब अपने देश की विजय का महान् पुरस्कार प्राप्त होनेवाला है।' प्रधान मंत्री चर्चिल ने हाल में एक चुनाव-सम्बन्धी राजनीतिक भाषण में इस प्रकार योरोपीय युद्ध परिस्थिति के विषय में संकेत किया है। इस स्थल की वास्तविकता का साक्षी घटनाचक्र स्वयं है। हिटलर, गोबिल्स, हिमलर आदि नाजी नायकों ने जर्मन जनता तथा सैनिकों से डटकर युद्ध करने की अपील की है। लेकिन मित्रों की प्रगति को देखकर यह समझ में आता है कि या तो नाजी सैनिकों का ओज घट गया है या उनके पास निराशा के अतिरिक्त और कुछ शेष नहीं रह गया है, जिसके कारण अपने नेताओं के शब्दों का उन पर कोई प्रभाव नहीं देखा जाता। रणक्षेत्रों में जिधर देखिए उधर ही बलवती मित्र-सेनायें तूफान की गति बढ़ी आ रही हैं। आज उनका आधे से अधिक जर्मनी पर अधिकार है। अकेले पश्चिमी मोर्चे पर फ्रांस पर उतरने के समय से अब तक उन्होंने २०,००,००० से अधिक शत्रु-सैनिकों को बन्दी बनाया है। पूर्व से लाल सेना और पश्चिम से संयुक्त फौजें उत्तरोत्तर जर्मन राजधानी के समीप पहुँच रही हैं। कई सैन्यदल तो उसके अति निकट आ गये हैं। सेनापति सोकोलोस्की की फौज तो वहाँ से २० मील से भी कम दूर है और बर्लिन की बाहरी रक्षा-पंक्ति को भंग कर रही है।

ओडर और नीसे नदियों के पश्चिमी किनारे पर सुदृढ़ सोवियट मोर्चे कायम हो चुके हैं। बर्लिन और डेस्डेन दोनों ही के लिए संकट उपस्थित है। रूसियों ने सुरक्षा के विचार से बर्लिन मोर्चे के समाचारपत्रों पर जो परदा डाल रखा था उसे १६ अप्रैल को उठाते हुए घोषित किया है कि डेस्डेन की दिशा में मेस्काड, विसवेसर और फोर्स्ट नगरों पर कब्जा कर लिया है और कुयेस्टिन के पश्चिम में ओडर नदी के उस पार मोर्चा कायम कर लिया गया है। अमरीकी प्रथम सेना ने लीपजिग का महत्त्वपूर्ण नगर ले लिया है और मार्शल कोनीव कोटबर्ग की ओर बढ़े आ रहे हैं, अतः उन दोनों के मिल जाने में अधिक देर नहीं लगेगी। इन दोनों के मिल जाने पर जर्मनी के दो टुकड़े हो जायेंगे। तीसरी अमरीकी सेना तो मार्शल कोनीव की फौज के इतने समीप आ गई है जिससे ऐसा अनुमान किया जाता है कि लम्बी मारवाली तोपों का प्रयोग पारस्परिक अहित में घातक होगा। तीसरी सेना चेकोस्लोवाकिया की सीमा में घुस चुकी है और अब देखना यह है कि जेनरल पैटन प्राग अथवा पिल्सेन में से किसे अपना लक्ष्य बनायेंगे! उधर उत्तर में फील्ड मार्शल माण्टगुमरी भी अपने ३ कवचधारी डिवीजन लेकर बर्लिन ही की दिशा में बड़ी तेजी से बढ़े आ रहे हैं। उनका एक दल प्रसिद्ध बन्दरगाह हामबर्ग से केवल दो मील की दूरी पर है। ब्रंस्विक के पूर्व मैग्डेबर्ग को शत्रु ने खाली कर दिया है। उत्तरी हालैंड में शत्रु का विरोध प्रायः समाप्त हो गया है। पश्चिमी हालैंड के बाँध तोड़कर जर्मनों ने उसका कुछ काल के लिए सत्यानाश कर डाला है। कारखानों का प्रदेश रूर तो पूर्णतया नष्ट हो चुका है। पश्चिमी मोर्चे के धुर दक्खिन में फ्रेंच सेनायें प्रगतिशील हैं। अमरीकी सप्तम सेना के ताजे समाचार के अनुसार न्यूरेम्बर्ग में घुस चुकी है। इटली में मार्क क्लार्क और यूगोस्लाविया में मार्शल टीटो भी फ्रेंच सेनाओं का उत्साह बढाने के हेतु विशेष गति-विधि दिखला रहे हैं और शत्रुओं पर नई नई दिशाओं में उनके आक्रमण आरम्भ हो गये हैं। इस प्रकार घटनाचक्र इस बात की सूचना दे रहा है कि अब वह दिन दूर नहीं जब यूरोप की समस्त मित्र-सेनाओं का आपस में सम्पर्क स्थापित हो जायगा और संघटित होकर वे शत्रु का अन्तिम रूप से संहार कर देंगी।

प्रशांत और बर्मा दोनों सुदूरपूर्वी क्षेत्रों में जापान के विरुद्ध युद्ध भीषणता से चालू है। ओकीनावा टापू में जो मुख्य जापान द्वीपसमूह से केवल ३५० मील दूर है, जापानियों के साथ अमेरिकनों के घोर संग्राम होने के समाचार मिले हैं। अमेरिकनों का कई हवाई अड्डों और सैनिक महत्त्व के स्थानों पर अधिकार हो चुका है और हाल ही में श्री नीमिज द्वारा यह घोषित किया गया है कि उसके उत्तरी छोर पर हमारे सैन्यदल कब्जा कर चुके हैं। फिलिप्पाइन में जेनरल मैकआर्थर शत्रु का विधिवत् सफाया कर रहे हैं और एक के बाद दूसरे द्वीप पर कब्जा जमा रहे हैं। टोकियो, क्यूसू आदि मुख्य जापान के क्षेत्रों और शत्रु-अधिकृत अन्य स्थानों पर अमरीकी उड़न किलों ने कई बार विचाराधीन सप्ताह में आक्रमण किये और जापानियों को क्षति पहुँचाई। बर्मा में अराकान क्षेत्र से अब पूरे तौर पर शत्रु का सफाया हो चुका है। सबसे ताजे समाचारों से ज्ञात हुआ है कि बर्मा के तेल के लिए लड़ती हुई १४वीं सेना ने चौक, किंगू और सेल स्थानों पर कब्जा कर लिया है। चौक बर्मा के तेल के क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध है। यह नगर इरावदी के किनारे पर बसा है और गत सप्ताह जीते हुए क्याकपांग से २० मील दूर है।

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

पीतल के बर्तन
दाम और घटा दिये गये

१० फर्वरी, सन् १९४५ से पीतल के बर्तनों के अधिकाधिक दामों में फिर कमी कर दी गई है। पीतल के जो बर्तन बहुत बड़े परिमाण में सरकारी नियन्त्रण में बनाये जाते हैं और प्रायः सभी नगरों में स्वीकृत व्यापारियों द्वारा बेचे जाते हैं, उन पर कंट्रोल की क़ीमत लिखी रहती है। इसको अवश्य देख लीजिए! नये दाम १ रुपया १० आने प्रति पौंड से २ रुपये प्रति पौंड तक हैं। उन मुरादाबादी बर्तनों का अधिकाधिक मूल्य जिनके दोनों ओर मुरादाबादी क़लई हो २ रुपये १२ आने प्रति पौंड है। पीतल के दूसरे बर्तनों का अधिकाधिक मूल्य २ रुपये ५ आने प्रति पौंड रखा गया है। इससे अधिक दाम न दीजिए।

स्वीकृत व्यापारियों की सूची ब्रास यूटेन्सिल्स (कंट्रोल) आर्डर, सन् १९४४ में दी हुई है। यह कंट्रोल-आर्डर मैनेजर आफ पब्लीकेशन्स, सिविल लाइन्स, दिल्ली से मूल्य पर मिल सकता है। अगर कोई स्वीकृत व्यापारी बर्तन पर लिखे हुए मूल्य से अधिक मांगे, तो अपने ज़िला मजिस्ट्रेट या कंट्रोलर जनरल आफ सिविल सप्लाइज़, बंबई से उसकी शिकायत कर दीजिए।

एलुमीनियम के बर्तन
क़ीमतों पर कंट्रोल

१५ मार्च, सन् १९४५ से एलुमीनियम यूटेन्सिल्स (कंट्रोल) आर्डर, सन् १९४५ के अनुसार एलुमीनियम के तमाम बर्तनों की क़ीमतों पर कंट्रोल लगा दिया गया है। विभिन्न प्रकार के बर्तनों के लिए अधिकाधिक मूल्य २ रुपये १४ आने प्रति पौंड से ३ रुपये ८ आने प्रति पौंड तक निश्चित किया गया है; आजकल औसत क़ीमत ३ रुपये प्रति पौंड या ५ पैसे प्रति तोला है, जब कि कंट्रोल से पहले लगभग ५ रुपये ४ आने प्रति पौंड थी। सरकारी नियन्त्रण में बने हुए एलुमीनियम के बर्तन बड़ी तादाद में सब जगह साधारण व्यापारियों द्वारा बेचे जाने के लिए यथाशीघ्र दिये जा रहे हैं। इन बर्तनों पर कंट्रोल की क़ीमत लिखी होगी। इस उद्देश्य से सरकार की ओर से प्रति वर्ष ५ हज़ार टन एलुमीनियम दिया जा रहा है।

बात समझ लीजिए-
अपने अधिकार मांगिए

सरकार द्वारा नियत किये गये दामों से
अधिक मत दीजिए

डिपार्टमेण्ट आफ़ इण्डस्ट्रीज़ एण्ड सिविल सप्लाइज़, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

AAA 190

हास परिहास

भंग की तरंग

मौलाना आजाद को बंगाल में ऐसे स्थान पर लाकर रक्खा गया है जहाँ मलेरिया बहुत होता है। वह संभवतः इस लिये कि स्वराज्य होने पर निजी अनुभव के बल पर मलेरिया निवारण की व्यवस्था राष्ट्रपति कर सकें।

* * *

लखनऊ में हमारे प्रांतीय गर्वनर महोदय ने कहा है कि मैं चाहता हूँ कि सेना में अथ से इति तक भारतीय अफसर रहें। क्या कहा जाय, हुजूर आप लोग तो चाहते हैं किन्तु हमी लोग नहीं चाहते कि हम अफसर रहें। हम में इतनी प्रगाढ़ भक्ति है और भक्ति में दासता का ही भाव रहता है, मालिक का नहीं।

* * *

इटली के पोप ने सब पादड़ियों के पास पत्र लिखा है कि सच्ची शांति के लिये प्रार्थना कीजिये। यूरोप की भूमि श्मशान हो गई है तब भी वहाँ शांति नहीं हुई। तब तो वहाँ महा प्रलय होने पर ही शांति होगी।

मौलाना आज़ाद जब रेल से उतरे तब पुलिस के पहरुओं ने फोटोग्राफ़रों को उनका चित्र नहीं लेने दिया। कैसे लेने देते, युद्धोद्योग में उन चित्रों से कितनी बाधा पड़ती?

* * *

जापान सरकार की ओर से जापानी सेना को आदेश मिला है कि मरने के बाद भी लड़ते रहो। शायद उनका मतलब यह है कि भूत बन कर लड़ो। ऐसी अवस्था में तोप और टैंक की आवश्यकता तो रह न जायगी ओझा लोगों की अवश्यकता पड़ेगी। उस समय सरकार की ओर से ओझों का दल तैयार होगा।

* * *

एक सज्जन ने कहा है कि गरमी की छुट्टियों के दिन में विद्यार्थी लोग महात्मा गांधी का रचनात्मक कार्य करें। वाह वाह! गरमी की छुट्टियाँ बरात के लिये, विवाह करने के लिये, ताश खेलने के लिये होती हैं कि देश-सेवा के लिये।

* * *

मित्रराष्ट्रों ने इतने जर्मन बन्दी बनाये हैं कि यह भी एक समस्या हो गई है कि उन्हें रखा कहाँ जाय। नये रंगरूटों की चाँदमारी के लिये उन्हें लक्ष्य बनाया जाय तो कैसा हो?

महात्मा गांधी ने भूलाभाई देसाई को सलाह दी है कि कौंसिलों के काम से कोई लाभ नहीं है। इतना लाभ तो है ही कि फाउन्टेनपेन सस्ते में मिलेगी और कपड़ों के मिलने की सुविधा हो जायगी।

* * *

सरदार अली कुली खाँ ने सीमाप्रांत के सम्मेलन में भाषण देते समय कहा कि मुसलिम लीग ब्रिटिश सरकार की जादू की छड़ी पर नाचती है। मैं तो समझता हूँ कि नाचती नहीं कलैया खाती है।

* * *

सिन्ध सरकार की ओर से सरकारी खेती की योजना हो रही है। सिन्ध सरकार ने यह बहुत ठीक किया है। वहाँ के मंत्रियों को चाहिये कि हल और हेंगा भी चलाएँ। उनके शासन की योग्यता तो देखी जा रही है।

* * *

सिन्ध में यह झगड़ा चल रहा है कि मंत्रियों की संख्या बढ़ाई जाय कि नहीं। यदि कोई ऐसी व्यवस्था हो कि जितने सिन्ध असेम्बली के सदस्य हैं सब मंत्री भी बन सकें तो सबसे उत्तम होगा। किसी प्रकार के झगड़े की गुंजाइश न रहेगी।

* * *

चर्चिल साहब ने एक भाषण में फरमाया है कि बर्मा के युद्ध के लिये जो ब्रिटिश सेना भारत में है उसे सब तो आराम है स्त्रियों की कमी है। इस समय इंगलैंड तथा फ्रांस में तो बहुत सी फालतू स्त्रियाँ होंगी। चर्चिल साहब क्यों नहीं एक जहाज यहाँ रवाना कर देते?

—अगड़धत्त शर्मा

तुम कहते हो रोया न करो!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

माना तुम हो मेरे प्रेमी
सच्चे, आदर्श, बड़े नेमी
तुम स्वस्थ बनाने को हमको विष से प्रियतम धोया न करो।
तुम बड़े वचन के पक्के हो
तुम नीतियान के चक्के हो
मेरे सुख-दुख का सब बोझा अपने ऊपर ढोया न करो।
क्या तुम्हें खेत हैं और नहीं
यह उग जायेंगे और कहीं
काँटेवाले फूलों को मेरे आँगन में बोया न करो।

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

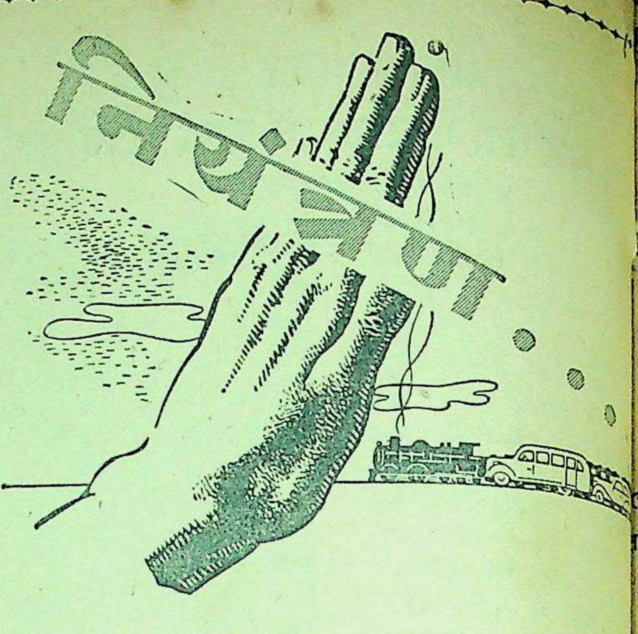

जबसे युद्ध आरम्भ हुआ और ट्रेनों का नियंत्रण हुआ तबसे यात्रा का आनन्द ही नहीं जाता रहा वरन् यात्रा करना अग्निपरीक्षा-सा हो गया है। भाड़े बढ़ गये हैं; धक्का मुक्की, व मारापीटी कर घंटों बाद टिकट मिले भी तो गाड़ी ठसाठस भरी हुई; किसी तरह चढ़े भी तो, रास्ते में खाने की चीजें मिलना मुश्किल; असल में, बहुत ही ज्यादा जरूरत न हो तो यात्रा करना मूर्खता है। लेकिन जिन्हें यात्रा करनी ही है उन्हें हर स्टेशन पर चाय वाले जरूर मिलते हैं—उनकी सूरत में ही राहत छिपी रहती है। गर्मी में ठण्डक और ठण्ढ में गर्मी पहुँचाने वाला यह आनन्ददायक पेय कम पैसे में हमेशा मिल जाता है। जब भी आप उद्विग्न, थके हुए, या श्रान्त हों, ट्रेन में या और किसी जगह, चाय आपको स्फूर्तियुक्त व प्रसन्न बना देगी।

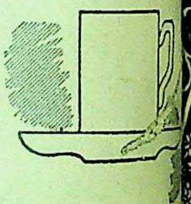

भारतीय
वक्त पड़ने पर चाय का सहारा
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित
IB 239

JAKOOJA
LIPTON'S
JAKOOJA

भारतीय चायों में सर्व
लिपटन
जाकूजा चाय

स्वास्थ्य तथा जीवन का सहारा

रक्तहीनता

¶ रक्तवर्द्धन स्नायुविकार ही रक्तहीनता का कारण है।
¶ पुराने मलेरिया, टायफायड, जुकाम तथा कालाज्वर इत्यादि से भी यह पैदा हो जाता है।

लिवरेक्स
LIVEREX

रक्तहीनता की अत्यन्त विश्वसनीय औषधि है। इंजेक्शन, गोली तथा तरल तीनों रूप में सेवन के लिए मिलती है।

इंजेक्शन के लिए—**लिवरेक्स**
खाने के लिए —**लिवरेक्स लिक्विड**
लिवरेक्स आइरन-सहित
लिवरेक्स टेबलेट

सेवन करने में सरल तथा शीघ्रतापूर्वक गलनेवाली
सभी औषधि-विक्रेताओं से प्राप्य।
बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

पूर्वकाल में प्रातःकालीन सूर्य की रश्मियों के बीच राजघराने की एक रमणी प्रस्तर निर्मित एकान्त ताल के शीतल जल में स्नान कर रही है। उसके शरीर पर मधुर, सुगन्धयुक्त तेल का लेप करने के पूर्व दासी उसे ऊस की बुकनी से प्रस्तुत उबटन लगाती थी क्योंकि इस प्राचीनकाल में साबुन का किसी ने नाम भी नहीं सुना था। आजकल हमाम साबुन की सुविधाएँ और आनन्द सभी को प्राप्त हैं। हमाम साबुन के मुलायम घने फेन में मैल दूर करने एवं ताजगी पहुँचानेवाले जो तत्त्व वर्तमान हैं, उनकी कल्पना स्वप्न में भी उस सुन्दर रमणी ने अपने हरम के उद्यान में नहीं की थी।

हमाम
आप के स्नान के लिए बड़ा साबुन

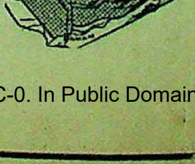

टाम्को सेल्स डिपो
जवाहर स्क्वायर इलाहाबाद।

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

आरोंदा सुख छाप
१८६९ नीलगिरि तेल
— वापरो —
साण्डालेकर बंधु, बम्बई ४.

स्थापना १९०६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला। १ औंस शीशी ८ आना, दजन ५॥-) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

"सदा सम्मान"... जब से यह महायुद्ध प्रारम्भ हुआ, भारतीय विमान-चालकों ने संसार को दिखा दिया है कि अवसर आने पर हिन्दुस्तान हवाबाज़ी में भी किसी से कम नहीं। हमारे योद्धाओं की वीरता तथा सफलता ने शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े का मस्तक ऊँचा कर दिया है, और इससे पता चलता है कि हमारा भविष्य बड़ा शानदार है।

आज, अधिकाधिक साहसी नवयुवकों को आमन्त्रित किया जा रहा है कि वे इस नवीन सैन्य-संघटन में सम्मिलित होकर विमान-चालक बनें। शान्ति स्थापित होने पर उनका ज्ञान स्वयं उनके लिए बहुत लाभजनक सिद्ध होगा। उस समय भी, आज की भांति शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालकों का बड़ा सम्मान होगा। कोई भी भरती-अफ़सर आपको आवेदन करने का नियम बता देंगे।

AAA 80

हमेशा सबसे ऊपर
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम सामग्री
हमारी बनाई स्टैनक्रीम केशों को जमाती, चमक लाती, चिट-चिटाहट से परे, व्यवहार में साफ व केश के लिये उपकारी है
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:, कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर
102

वैद्यक उपाधियाँ
घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।
भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

"सरस्वती सि
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर
उत्कृष्ट पुस्तकों की
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें
हो चुकी है।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०,

एक बड़ी सामाजिक बुराई को किस प्रकार मिटाया जा रहा है

दो वर्ष पहले ब्लैक मार्केट का बुरा हाल था—भाव चढ़े हुए थे और धनी लोगों तक को जीवन की अनेक आवश्यकताओं से वंचित रहना पड़ता था। आख़िर सरकारी कंट्रोल जारी हुए, और जनता में भी भावों को कम कराने के लिए बड़े ज़ोर से जोश उमड़ा। इन उपायों को सफलता मिल रही है। बहुत से मुनाफ़ाख़ोर अब जेल में हैं। बहुतों का माल ज़ब्त किया जा चुका है। भाव गिर रहे हैं।

आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं

किसी चीज़ के लिए बेजा दाम न दीजिए। जो दुकानदार अपनी करतूतों से बाज़ नहीं आते, उनकी रिपोर्ट थाने में कर दीजिए। मिल जुल कर काम कीजिए और मुनाफ़ाख़ोरों के हथकंडों को बेकार बना दीजिए। दूसरे लोगों से भी ऐसा ही करने को कहिए।

AAA 155 HINDI

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

उन स्त्रियों से जो
महत्त्वपूर्ण युद्ध-कार्य
'नहीं लगी हुई

डबल्यू० ए० सी० (आई) में भरती होने के लिए निवेदन

यह अपील उन सब स्त्रियों के लिए है जो किसी महत्त्वपूर्ण युद्ध-कार्य में संलग्न नहीं हैं। भारतीय महिला सहायक सेना (डबल्यू० ए० सी० आई) में नौकरी करने के लिए आजकल कई हजार स्त्रियों की आवश्यकता है। यह काम बहुत ही मनोरंजक है तथा इसमें अच्छा वेतन मिलता है।

निवास-स्थान

डबल्यू० ए० सी० (आई) की सदस्यायें सुखपूर्ण निवास-स्थानों में रहती हैं, जिनकी देखभाल इसी संस्था की ज़िम्मेदार महिलाओं द्वारा की जाती है।

जीत के बाद !

जीत के बाद हिन्दुस्तान की उन स्त्रियों को, जिन्होंने शत्रु को पराजित करने में भाग लिया है, शान्ति उपभोग करने का बहुत बड़ा अधिकार

युद्ध के पश्चात् ?

व्यापार-वाणिज्य धंधोंमें, हिन्दुस्तान आगे बढ़ रहा है और यह है कि शांति स्थापित शहरी नौकरियों के लि ट्रेनिंग पाये हुए कर्मचारियों (स्त्री-पुरु आवश्यकता होगी। ड सी० (आई) में नौक हुए बहुत सी स्त्रियां प्र का बड़ा अच्छा अनु लेंगी जो शहरी सफलता पाने के लि आवश्यक होता है।

पूरा विवरण

नौकरी के नियमों आदि में पूरा विवरण बिना कि ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू (आई) से प्राप्त किया जो स्वयं इस संस्था की सद डबल्यू० ए० सी० (आई) के जो कुछ भी जानना चाहती है आपको प्रसन्नतापूर्वक बतला

ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० ए० सी० आई
बम्बई–ए० एफ० आई० बिल्डिंग, हास्पिटल लेन,
कलकत्ता–मार्फत डी० टी० आर० ओ०, २८,
लखनऊ–मार्फत टी० आर० ओ०, ईस्टर्न, इज़रत
मार्फत डी० टी० आर० ओ०, इग्ज़ीबीशन रोड।
ग्विन टामस रोड। बंगलोर–कैण्टूनमेण्ट, कबन रो
२२, डेविस रोड। पूना–स्टाण्टन रोड।
माउण्ट रोड। अथवा अपने निकटवर्ती ड
(आई) प्लेटून कमाण्डर के पास आवेदन कीजि

भारतीय महिला सहायक सेना
भरती हो जाइए

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

गुरुकुल कांगड़ी

वार, ६ मई, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 6th May, 1945

[illegible] मैत्री और सुंदरी।
[illegible] को पहचानिये।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

जर्मनी की राजधानी बर्लिन का पतन।
सर सप्रू-कमेटी और देशी रियासतें।

विहीन

भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

❀ मेडिकल लाइसेन्सिएट्स ❀

मानवता के लिए

इस संसारव्यापी महायुद्ध का अन्त अब निकट आ रहा है। जापान को पराजित करने के लिए जो चेष्टायें हो रही हैं उनके फलस्वरूप स्वाभाविक रूप से हमारे बहुत से सैनिक घायल होंगे। इन व्यक्तियों को डाक्टरों की सहायता और सहानुभूति आवश्यक होगी। सैकड़ों फ़ौजी डाक्टर घायल सैनिकों की सहायता करके चिकित्सा सम्बन्धी इतना अच्छा अनुभव प्राप्त कर लेंगे जो शान्तिकाल में मानवता की सेवा के लिए उनके बहुत काम आयेगा। आपको इंडियन आर्मी मेडिकल कोर में अभी भरती हो जाना चाहिए। योग्यता: उम्मीदवारों को फ़ौजी ड्यूटी के योग्य होना चाहिए और साधारणतः उम्र ४५ वर्ष से नीचे होनी चाहिए। उनके पास एल० सी० पी० एस० या एल० एस० एम० एफ० या एल० एम० एफ० या एल० एम० पी० या इसके बराबर योग्यता होनी चाहिए।

सर्विस की शर्तें

"ए" क्लास सर्विस—इसमें जनरल सर्विस होती है और इसके द्वारा डाक्टरों को समुद्र पार अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है। तरक़्क़ी के बहुत अच्छे मौक़े रहते हैं। सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर ४००-रुपए माहवार से तनख़्वाह शुरू होती है और लेफ्टिनेण्ट कर्नल के ओहदे पर १३५० रुपए माहवार तक तरक़्क़ी होती है।

"बी" क्लास सर्विस—इस क्लास में सिर्फ़ हिन्दुस्तान की सीमाओं के अन्दर नौकरी करनी पड़ती है। इस क्लास में ज़्यादा से ज़्यादा कैप्टेन के ओहदे तक तरक़्क़ी होती है। सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर २५० रुपये माहवार से तनख़्वाह शुरू होती है और कैप्टेन के ओहदे पर ५५० रुपये माहवार तक जाती है।

एलाउन्स (दोनों क्लासों के लिए)

स्पेशेलिस्ट की तनख़्वाह—१०० रुपये माहवार तक अतिरिक्त उन अफ़सरों के लिए जिन्हें स्पेशेलिस्ट (विशेषज्ञ) की हैसियत से नियुक्त किया गया हो। चार्ज या कमाण्ड की तनख़्वाह—३० रुपये से २४० रुपये माहवार तक अतिरिक्त उन अफ़सरों के लिए जिन्हें किसी विशेष कार्य पर नियुक्त किया गया हो। वर्दी का एलाउन्स—प्रथम नियुक्ति पर ७३३ रुपये। तनख़्वाह की पेशगी-प्रथम नियुक्ति पर ३०० रु० तक। ग्रेच्यूटी—नौकरी के हर पूरे साल के लिए एक महीने की औसत तनख़्वाह फ़ौज से बर्ख़ास्त होने के समय। अपाहिजी, परिवार, और विधवा के लिए पेन्शनें। नियमानुसार बच्चों के लिए शिक्षा संबंधी भत्ते। सेपरेशन एलाउन्स। सफ़र के भत्ते और छुट्टी की रियायतें हिन्दुस्तानी फ़ौज के दूसरे अफ़सरों की भांति।

प्राविन्शियल मेडिकल डिपार्टमेण्ट के प्रधान (सर्जन जनरल या इन्सपेक्टर जनरल आफ सिविल हास्पिटल्स) या आफिसर्स कमांडिङ्ग, इंडियन मिलिटरी हास्पिटल्स, या डाइरेक्टर आफ मेडिकल सर्विसेज़, जी० एच० क्यू०, नई दिल्ली या डाइरेक्टर जनरल, इंडियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली से पूरा विवरण प्राप्त हो सकता है।

Indian Army Medical Corps

AAA 16

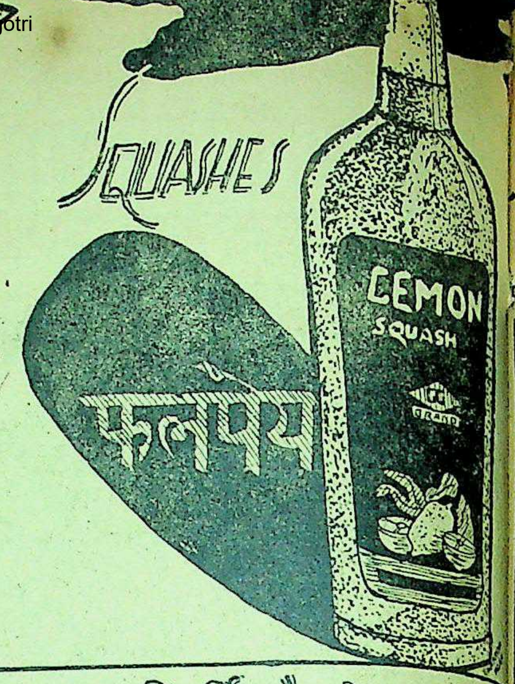

GG BRAND

हर ऋतु में व्यवहार में लाइये

SQUASHES

फलपेय

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इंडस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चान्दनी चौक, देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मेसर्स लाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक,

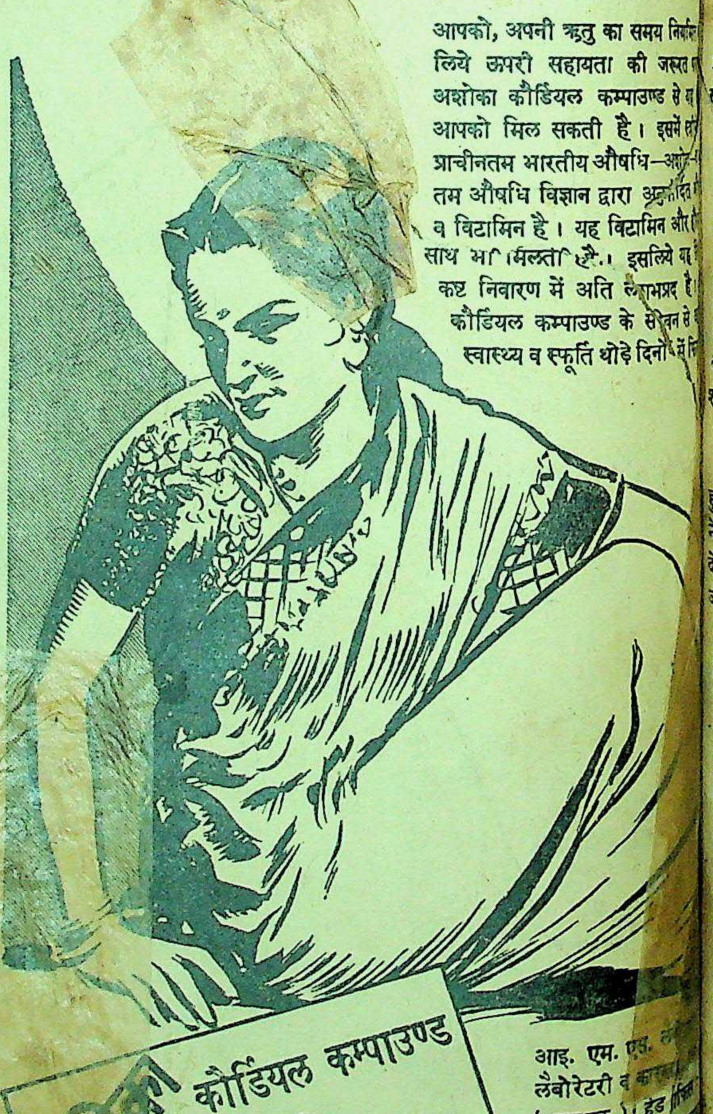

जब प्रकृति अपना काम नहीं करे

आपको, अपनी ऋतु का समय नियमित करने के लिये ऊपरी सहायता की जरूरत हो तो अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड से सहायता आपको मिल सकती है। इसमें प्राचीनतम भारतीय औषधि—अशोक—तथा आधुनिकतम औषधि विज्ञान द्वारा अनुमोदित हौरमोन व विटामिन है। यह विटामिन और हौरमोन के साथ भी मिलती है। इसलिये यह स्त्रियों के कष्ट निवारण में अति लाभप्रद है। कौर्डियल कम्पाउण्ड के सेवन से स्वास्थ्य व स्फूर्ति थोड़े दिनों में मिलती है।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि

आइ. एम. एस.
लैबोरेटरी व कारखाना
(लखनऊ)। हेड ऑफिस
रौएल एक्सचेंज प्लेस,

देशदूत

वर्ष ७ संख्या ३६]
सचित्र साप्ताहिक हिन्दी
[रविवार, ६ मई, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

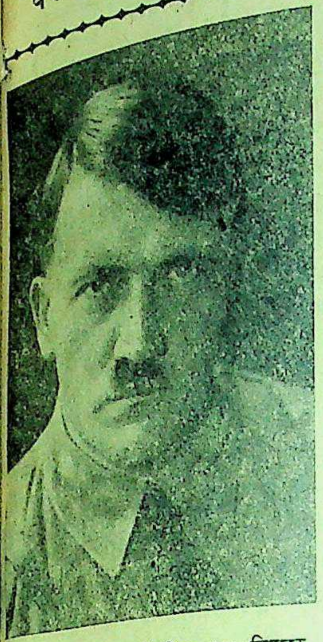
नाजीवाद के प्रवर्तक डिक्टेटर हर हिटलर की मृत्यु हो गई।

फैसिज्म के प्रवर्तक मुसोलिनी को गिरफ्तार करके फाँसी दे दी गई।

सान फ्रांसिसको से अधिकारी रीति से घोषणा की गई है कि संयुक्तराष्ट्र सम्मेलन के सभापतित्व के प्रश्न पर समझौता हो गया है। मो० मोलोटोव ने मि० एडिन द्वारा पेश की गई योजना स्वीकार कर ली है। चार बड़े राष्ट्रों के प्रतिनिधि क्रम से सम्मेलन के बड़े अधिवेशनों का प्रतिनिधित्व करेंगे। मि० स्टेटी न्यूस सम्मेलन की *प्रस्ताव कमेटी* तथा कार्यकारिणी कमेटी का सभापतित्व करेंगे।

* * *

सान फ्रांसिसको में मित्रराष्ट्रों के रक्षा-सम्मेलन के समय यहाँ की भारतीय संस्थाओं की ओर से 'स्वतंत्र भारत' की एक सभा हुई, जिसमें श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने भाषण करते हुए कहा, कि यह सिद्धांत ही गलत है कि तीन, चार या पांच बड़े राष्ट्र मिलकर राजनीतिक उपायों से शांति और सुरक्षा लाद सकते हैं।

* * *

मिलान के रेडियो से यहाँ मालूम हुआ कि मुसोलिनी और अन्य फासिस्ट नेताओं को देशभक्त इटालियनों ने फाँसी दे दी। प्रजातंत्र फासिस्ट दल के सेक्रेटरी जनरल एलसैंड्रो पेवोलिनी, फासिस्ट दल के भूतपूर्व सेक्रेटरी कार्लो स्कोरजा और मुसोलिनी की स्त्री क्लारा पेटेसी भी फाँसी पाये हुओं में है।

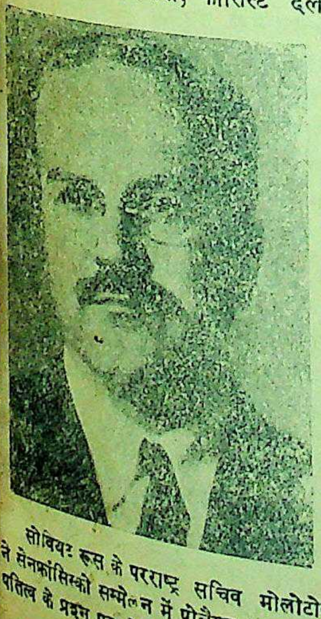
सोवियट रूस के परराष्ट्र सचिव मोलोटोव ने सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में पोलैण्ड तथा सभापतित्व के प्रश्न पर जोरदार भाषण दिया।

* * *

'स्वेन्स्का डैग ब्लेडेट' नामक स्वीडिस पत्र का बर्न स्थित संवाददाता लिखता है कि बर्न में फौजी हलकों से अफवाहें सुनने को मिली हैं जिनकी पुष्टि नहीं हुई है कि दोपहर में हिटलर की मृत्यु हो गई।

* * *

मास्को रेडियो ने आज बताया कि मार्शल गोरिङ्ग अपनी स्त्री, बच्चे और ५० लाख पौंड के हीरे जवाहरात लेकर अज्ञात स्थान को वायुयान-द्वारा भाग गये।

* * *

ब्रिटिश पार्लियामेंट के मजदूर सदस्यों ने श्री विलियम डोबी और मि० डी० एन० प्रिट के नेतृत्व में प्रधान मंत्री श्री चर्चिल को एक पत्र भेजा है, जिसमें लिखा है कि पं० जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुलकलाम आज़ाद और अन्य राजनीतिक कैदियों को तुरन्त रिहा किया जाय, और भारत में सच्ची राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने के लिए केन्द्रीय एसेम्बली का नया चुनाव किया जाय।

स्वर्गीय रूजवेल्ट और मिस्टर चर्चिल सेनफ्रांसिस्को में सम्मेलन बुलाने की वार्ता कर रहे हैं।

* * *

जनरल मार्क क्लार्क ने आज घोषणा की कि इटली में जर्मनी की सैनिक शक्ति लगभग समाप्त हो गई।

* * *

जनरल मार्क क्लार्क ने कहा कि जर्मन अब मित्रसेनाओं का मुकाबला नहीं कर सकते। २५ जर्मन डिवीजन ध्वस्त कर दिये गये हैं तथा बंदियों की संख्या अब १,२०,००० तक पहुँच चुकी है।

* * *

दिल्ली के राजनीतिक हलकों में यह सर्वविदित है कि जनरल आचनलेक वायसराय की कार्यकारिणी कौंसिल में सबसे अधिक उदार विचार रखने वाले अँगरेज सदस्य हैं। वह न केवल भारतीय अड़ंगे के हल किये जाने के पक्ष में हैं बल्कि वे एक भारतीय युद्ध-मंत्री की मातहती में रह कर कार्य करने के लिए भी तैयार हैं।

* * *

आष्टी और चिमूर के कैदियों के मामले में सफाई के वकील ने आज नागपुर हाईकोर्ट के सामने एक दरख्वास्त पेश की कि हेबियस कारपस दरख्वास्त पर जस्टिस सर एम० बी० नियोगी और मि० जस्टिस हेमियन ने जो परस्पर-विरोधी निर्णय दिये हैं, उसकी सुनवाई मि० जस्टिस रैनाल्ड पोलोक द्वारा नहीं होनी चाहिए।

* * *

काँग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद को बाँकुड़ा के बँगले में रखा गया है। उस बँगले को 'बाँकुड़ा स्पेशल जेल' घोषित किया गया है। सिंध के गृह सदस्य ने कहा है कि आचार्य कृपलानी सिंध-सरकार के खास मेहमान हैं और उन्हें सब प्रकार की सुविधाएँ दी जा रही हैं।

* * *

युक्त-प्रान्तीय गवर्नर के सलाहकार सर टैनेन्ट स्लोन ने सूचित किया है कि पं० जवाहरलाल नेहरू तथा आचार्य नरेन्द्र देव केन्द्रीय सरकार की आज्ञा के बिना रिहा नहीं हो सकते। पं० जयप्रकाशनारायण तथा डा० राममनोहर लोहिया के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि उन्हें आगरा जेल में वही सुविधाएँ मिल रही हैं जो दूसरे नजरबन्द कैदियों को दी जाती हैं।

* * *

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने न्यूयार्क में भाषण देते हुए भारत में ब्रिटिश शासन की कड़ी आलोचना की और कहा कि भारत को ब्रिटिश पार्लमेन्ट के कानून के अनुसार युद्ध में भाग लेनेवाला घोषित कर दिया गया, पर वास्तव में वह स्वेच्छा से नहीं लड़ रहा है।

* * *

प्रेसीडेन्ट ट्रूमान ने सानफ्रान्सिस्को सम्मेलन में आये हुए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए कहा—हम लोगों के लिए अब भी इस बात का अवसर है कि दो मार्गों में से एक को चुन लें। पहला मार्ग यह है कि अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता को कायम रखा जाय, और दूसरा यह है कि शांति को कायम रखने के लिए एक विश्व-संगठन की स्थापना की जाय।

* * *

मि० विलियम फिलिप्स अमेरिका के राष्ट्र-मंत्री मि० स्टेटीनिस के विशेष सहायक के पद पर नियुक्त हुए हैं। इस नियुक्ति का यह अर्थ लगाया जाता है कि प्रेसीडेंट ट्रूमान भारतीय प्रश्न के निबटारे को महत्त्व दे रहे हैं। मि० फिलिप्स भारत में प्रेसीडेंट रूजवेल्ट के प्रतिनिधि रह चुके हैं।

* * *

श्री भूलाभाई देसाई सीमा प्रान्त के गवर्नर सर जार्ज कनिंघम से मिले। डा० सैयद महमूद भी बाद में उनसे मिले।

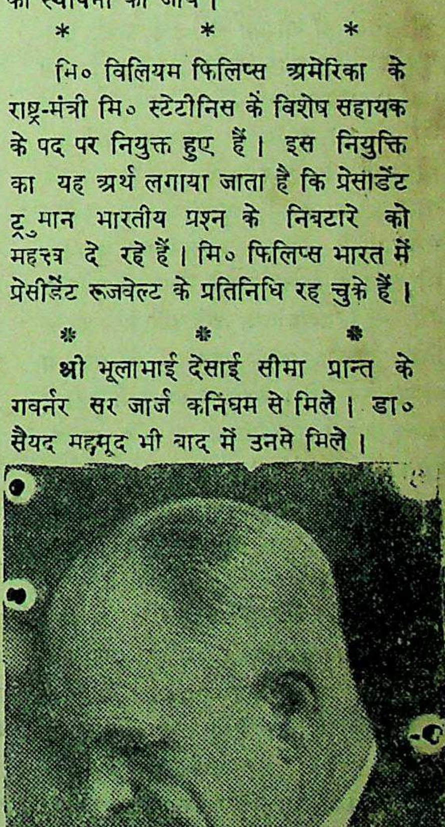
भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल इस समय लंदन में हैं और भारतीय समझौते के लिये ब्रिटिश मंत्रिमंडल से जोड़-तोड़ लगा रहे हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

जर्मनी का पराभव

योरोपीय युद्ध का अंतिम परिणाम स्पष्ट हो गया। जर्मनी का पराभव हो या। सोवियट रूस, अमरीका तथा टेन के झंडे आज बर्लिन पर फहरा हे हैं। नाजियों के प्रसिद्ध डिक्टेटर र हिटलर की मृत्यु हो जाने का समाचार मिला है। नाजी वायुसेना के प्रधान फील्डमार्शल गोरिंग पलायन कर गये। गेस्टापो के प्रधान हिमलर ने मित्रराष्ट्रों से संधि का प्रस्ताव किया है। डाक्टर गोबेल्स का कहीं पता नहीं है। नाजी दल के एक प्रमुख सदस्य हेस पिछले वर्ष से इँगलैण्ड के जेलखाने में बंद हैं। नाजी दल के प्रमुख नेताओं का अंत हो गया और नाजी पार्टी की इतिश्री हो गई। सबसे अधिक रोमांचक समाचार यह है कि फैसिज्म के जन्मदाता, हिटलर के गुरू तथा इटली के भूतपूर्व भाग्य विधाता मुसोलिनी को गिरफ्तार करके फांसी की सजा दे दी गई। इस प्रकार नाजीवाद और फैसिस्टवाद का अंत में पराभव हुआ और जिन शक्तियों के बल पर संसार का व्यापक महायुद्ध प्रारम्भ हुआ, उन्होंने युद्ध-भूमि में घुटने टेक दिये और मित्रराष्ट्रों (रूस, अमरीका तथा ब्रिटेन) के हाथ युद्ध की बाजी लगी।

सच तो यह है कि हिंसात्मक युद्ध का अन्तिम परिणाम ऐसा ही होता है। जिन नाजियों तथा फासिस्टों ने सारे संसार को अपने आतंक से भयभीत कर दिया था और जिनकी उग्र भावनाओं से इस महायुद्ध का सूत्रपात हुआ, सात वर्ष के घोर युद्ध तथा करोड़ों की धन-जन की हानि के बाद समाप्त-सा हो गया। हिटलर तथा मुसोलिनी ने जितनी शीघ्रता से संसार-विजय की आशा की उतनी ही शीघ्रता से उन्हें अपने दल-बल के सहित सदा के लिये समाप्त हो जाना पड़ा। साम्राज्यवादियों के आपसी संघर्ष का ऐसा ही कुपरिणाम होना अनिवार्य है। मित्रराष्ट्रों की विजय अवश्य हुई है। उनके सात वर्ष के लगन, कूटनीति तथा सैन्य संगठन के परिणाम स्वरूप उन्हें पुरस्कार भी अन्त में मिला, इसके लिए हमें प्रसन्नता है किन्तु हिटलर तथा मुसोलिनी भी सदा के लिए अपना नाम इतिहास के पन्नों में अमर कर गये। वह इस संसार में नहीं हैं किन्तु उनकी युद्ध प्रियता, संगठन शक्ति, दृढ़ता, संकल्प तथा अन्त तक अपनी टेक पर दृढ़ रहने की भावना का सदा आदर होता रहेगा। युद्ध का परिणाम विजय-पराजय तो है ही। जो शक्तिशाली है वह विजयी और जो निर्बल है वह पराजित होगा। संसार के तीन महान् राष्ट्र एक ओर और हिटलर तथा उसके गोल के कुछ लोग दूसरी ओर। ऐसी दशा में मित्रराष्ट्र विजयी क्यों न हों? इसीलिये भविष्य में भी यही तीनों राष्ट्र संसार पर शासन करेंगे, नई व्यवस्था स्थापित होगी, क्योंकि शांति ढोंडी सेनफ्रांसिस्को में पिट रही है। इस अवसर पर हमें मित्रराष्ट्रों की इस अभूतपूर्व विजय से तथा नाजियों तथा फैसिस्टों के पराभव से प्रसन्नता है। साथ ही हिटलर तथा मुसोलिनी ऐसे महान् और वीर पुरुषों की मृत्यु से मानवता के नाते दुःख भी है। अब जर्मनी की क्या स्थिति होगी, उसके भाग्य का निर्णय किस आधार पर किया जायगा यह भविष्य की बात है किन्तु इस लड़ाकू राष्ट्र ने संसार के इतिहास में अपना जो स्थान बना लिया है, पराजित होने पर भी, वह बना रहेगा इसमें सन्देह नहीं। जर्मनी पराजय और मित्रराष्ट्रों की विजय से योरोप के भविष्य का निर्माण किस प्रकार होता है, इसके भी देखने और जानने की प्रतीक्षा है।

* * *

विश्व शान्ति सम्मेलन का नाटक

सेनफ्रांसिस्को में विश्व शान्ति के लिए वास्तविक सम्मेलन हो रहा है या एक मनोरंजक और सुन्दर नाटक यह इस समय विचारणीय है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत के बड़े बड़े नट पहुंचकर मंच पर अपने भाषण और संसार की भावी शान्ति व्यवस्था की योजना पर एकमत हो जाने के लिए प्रत्येक राष्ट्रों से अपील कर रहे हैं। सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन का अन्तिम निर्णय क्या होगा, यह तो आगे प्रकट होगा किन्तु अब तक जो कुछ कार्यवाही पढ़ने को मिली है उससे इतना तो साफ है कि इस समय प्रत्येक साम्राज्यवादी राष्ट्र अपने अपने स्वार्थों से घिरा हुआ है और अपनी ही बातें कहने में मस्त है। पहले दिन सभापतित्व के लिए अमरीकन, ब्रिटिश तथा रूसी मंत्रियों में जो झड़प हुई उससे भी यही सिद्ध होता है। प्रत्येक साम्राज्यवादी अपने को संसार में सर्वोपरि समझने की भावना से ओत-प्रोत हैं। प्रत्येक अपनी नेतागिरी चाहता है। अमरीका और ब्रिटेन का इस समय पूर्ण गठबन्धन हो चुका है क्योंकि इन दोनों की रायें प्रायः एक-सी दिखाई दे रही हैं किन्तु सोवियट रूस, जो इस समय मित्रराष्ट्रों का एक प्रधान अंग है, इन दोनों से कई मामलों में अपनी अलग राय रखता है। तात्पर्य यह है कि जब अभी तक यह तीनों राष्ट्र एक मत नहीं हो रहे हैं, और आपसी अन्तर्द्वंद्व चल रहा है तब संसार के उन बेचारे छोटे राष्ट्रों की क्या दशा होगी, यह भी जरा विचार करने की समस्या है। मित्रराष्ट्र विश्व में शांति चाहते अवश्य हैं साथ ही उनके स्वार्थों की पूर्ण रक्षा भी होनी चाहिए। यदि विश्व शांति की योजना की सफलता की यही कुंजी है तो शांति की स्थापना हो चुकी और सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन जिस आशा से बुलाया गया है, यदि वह निराशा में परिणत हो, तो आश्चर्य करने कोई कारण नहीं।

मित्रराष्ट्रों के हृदय में जब स्वयं शांति नहीं है तो वह किस मुँह से संसार में शांति स्थापना का उपदेश दे रहे हैं यह हमारी समझ में नहीं आता। साम्राज्यवादी आज योरोप में युद्ध समाप्त होने की आशा से अन्यराष्ट्रों को शांति का उपदेश दे रहे हैं किन्तु उन्होंने जिन राष्ट्रों पर अधिकार कर रखा है, जो आज उनकी छत्रछाया में पराधीन हैं, उनका निर्णय किस प्रकार होगा? भारत वर्षों से चिल्ला रहा है कि उसे स्वाधीनता मिलनी चाहिए किन्तु ब्रिटेन ध्यान नहीं दे रहा है। अमरीका भी अपने उपनिवेशों को स्वतंत्र करने पर राजी नहीं है फिर यह समता, बराबरी और शांति-व्यवस्था का रूपक कैसा? क्या इसी प्रकार की नीति से संसार में शांति स्थापित होगी? क्या इसी प्रकार की नीति से योरोप के सैकड़ों छोटे राष्ट्रों के प्रति न्याय होगा? क्या इसी नीति के आधार पर एशिया में भी आपसी कलह का विष नहीं व्याप्त होगा? क्या इसी नीति के अनुसार जापान ऐसे साम्राज्यवादी से, जिसे भारतीय अपने देश में कदम नहीं रखने देना चाहते, पराजित करने की तैयारी की जा रही है?

इसलिये इस समय आवश्यक है कि साम्राज्यवादी राष्ट्र यदि संसार में शान्ति व्यवस्था चाहते हैं तो उन्हें अपने स्वार्थों की तत्काल बलि देनी पड़ेगी। उनके सामने संसार का वह दुर्दशाग्रस्त चित्र होना चाहिए जिसको वह पुनर्जीवित कर सकें। सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में कम से कम हमें इसके विपरीत आचरण दिखाई दे रहे हैं। संसार के दकयानूसी इस सम्मेलन में इकट्ठे हुए हैं. जो कभी भी नहीं चाहते कि छोटे राष्ट्र भविष्य में सुख से रहें। इसलिए इन शांति और व्यवस्था के पुजारियों को पहले अपनी बुद्धि दुरुस्त करनी चाहिए और युद्ध के बाद संसार में वास्तविक शान्ति स्थापना के लिए वास्तविक उद्योग करना चाहिए।

अरबी भाषा के देश कौन कौन हैं

नये अरब-साम्राज्य के संगठन की सम्भावना

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

अरबी भाषा के देश कौन कौन हैं? क्या भविष्य में एक नये अरब साम्राज्य के संगठन की सम्भावना है? विद्वान लेखक ने इस सुन्दर लेख में इसी समस्या पर प्रकाश डाला है। साथ ही कुछ कठिनाइयाँ भी बतलाई हैं। लेख पठनीय तथा ज्ञातव्य है।

आज अरबी भाषा के बोलनेवाले उत्तरी अफ्रीका के प्रायः सभी देशों में फैले हुए हैं किन्तु यथार्थ में अरबों का देश वही है जिसमें इस्लाम के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद का जन्म आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व हुआ था। हजरत मुहम्मद संसार के तीस करोड़ मुसलमानों के धर्म-गुरु हैं किन्तु अपने जमाने में वे धर्म के साथ साथ राजनीति के भी बढ़िया खिलाड़ी थे। मक्का व मदीना के रेगिस्तान में रहनेवाले मुट्ठी भर लोगों का एक सूत्र में पिरोना, संगठित करना और उन्हें विश्व में शान्ति स्थापन का सन्देश देना उन्हीं का कार्य था। हजरत मुहम्मद का इस्लाम परलोक की अपेक्षा इहलोक की अधिक शिक्षा देता है क्योंकि वह शिक्षा यथार्थ से सम्बन्ध रखती है। अतः मनुष्य के हृदय में जल्दी स्थान पा जाती है। इस्लाम के अरब व उसके पड़ोसी देशों में अति शीघ्रता से फैलने का एक मुख्य कारण उसकी सरलता व इहलौकिकता भी है। साथ ही हजरत मुहम्मद द्वारा अरबों में पैदा किया हुआ संगठन भी उसके अधिक प्रसार का आधार रहा है।

अरबी प्रभाव

हजरत मुहम्मद द्वारा एक सूत्र में संगठित हो अरब शीघ्र ही अफ्रीका व एशिया के बड़े भाग में फैल गये और एक विशाल साम्राज्य के मालिक बने। अरबों का यह साम्राज्य धर्म व राजनीति दोनों पर आश्रित रहा और जब तक इसकी बागडोर अरबी खलीफाओं (शासकों) के हाथ में रही वह अधिकाधिक उन्नत व वि होता गया। इसके बाद अरबों की आ कमजोरी के कारण जब इस्लामी खिला को तुर्कों ने सँभाल लिया तब अरबों वह साम्राज्य शिथिल हो गया और धर्म नाम पर मध्य एशिया के तुर्क उसके मालि बन गये। तुर्कों के हाथ में इस इस्ला साम्राज्य के जाने के बावजूद उसका वर अरबी ही रहा। यह दृष्टान्त स्प कि हजरत मुहम्मद के बाद से सन् १९ तक मुसलमानों के खलीफा चाहे कि नस्ल के रहे हों वे अपने साम्राज्य से अर संस्कृति, अरबी लिपि व अरबी सभ्यता पृथक् नहीं कर सके। अनेक लोगों राय में तुर्क-साम्राज्य की सबसे बड़ी क जोरी उसका यही अरबीपन था। विचार में कमालपाशा अतातुर्क ने का शासन-सूत्र अपने हाथ में लेने के जो सुधार अपने देश में किये उनकी में यही भाव काम कर रहा था कि तु अब अरबीपन को, अरबी लिपि को अरबी संस्कृति को छोड़ें और अपना दिखलायें। यह विचार-धारा कहाँ त संगत है हम इस झमेले में नहीं पड़ते कि इतना तो स्पष्ट ही है कि कमालपाशा उसके साथियों के आग्रह से तुर्कों अरबीपन को तिलांजलि तो दे दी कि सदियों से इस्लाम के सहवास के का चूँकि उनके पास अपना कुछ था अतः उन्हें पड़ोसी योरप की रोमनलिपि वहाँ की संस्कृति स्वीकार करनी पड़ी।

अफ्रीका के अरब

इस्लाम व अरबीपन के इस सम्मिश्र का शुभ परिणाम यह हुआ कि जो अ किसी जमाने में अरबी रेगिस्तान में आब थे। वे अफ्रीका के मिस्र, लीबि अलजीरिया, ट्यूनिस व मोरक्को के मालिक हैं। अफ्रीका के ये सब दे स्वेज नहर से लेकर ठेठ अटलाण्टिक म सागर तक भूमध्यसागर के साथ साथ फै हुए हैं। इनके काफी बड़े बड़े भाग व रेगिस्तान के ढेर-मात्र हैं फिर भी मि की नील नदी, ट्यूनिस व अलजीरिया पहाड़ काफी बड़ी आबादी को आश्रय दे में समर्थ हैं। यही कारण है कि रेगिस्ता के बावजूद अफ्रीका के इन देशों में करोड़ मनुष्य निवास करते हैं। इनकी पहली बोली व भाषा क्या थी इससे हमें कोई सरोकार नहीं है। पिछले बार तेरह सौ वर्ष के निरन्तर आधिपत्य कारण अब यहाँ के अधिक लोग अरबी भाषा ही बोलते हैं। भाषा के एक हो हुए भी अफ्रीका के ये अरब वंशज ए जाति के नहीं हैं। मोरक्को, अलजीरिया ट्यूनिस के निवासी बरबर जाति के हैं किन्तु अब इस्लाम-धर्म को मानते हैं और अरबी भाषा बोलते हैं। इन सब देशों पर आज फ्रांस का आधिपत्य है यद्यपि मोरक्को का कुछ संकुचित भाग स्पेन के हाथ में भी है। इन बरबर लोगों के

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिये

नाजी डिक्टेटर

आज और कल का बर्लिन कैसा?

संसार का एक वैभवपूर्ण नगर दुर्दशा के घेरे में

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी की राजधानी बर्लिन पर विजय प्राप्त कर ली। बर्लिन की गणना संसार के समृद्ध और वैभवशाली नगरों में प्रमुख है। इस लेख में लेखक ने पहले तथा आज के बर्लिन का सुन्दर वर्णन किया है, जो पठनीय है।

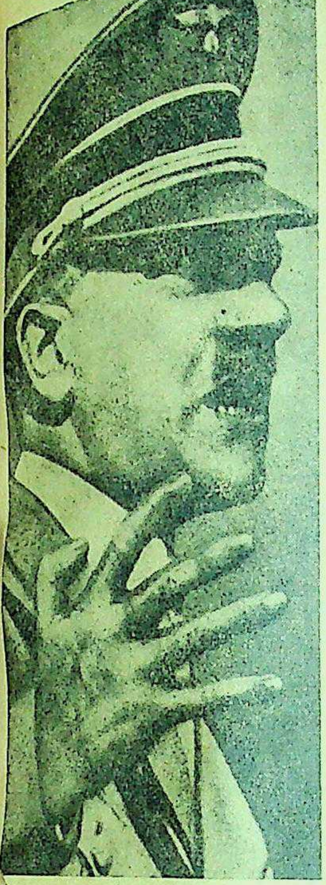

नाजी डिक्टेटर हर हिटलर की मृत्यु हो गई।

जर्मन राजधानी बर्लिन जो, अपनी समृद्धि के लिये संसार-प्रसिद्ध था, आज दुर्दशाग्रस्त दशा में है। एक दिन था जब जर्मन सेनायें संसार के वक्षस्थल पर अपनी प्रभुता का परिचय दे रही थीं। उस समय यही बर्लिन शहर नाजियों के शासन-काल का देदीप्यामान स्थान था और स्वयं हिटलर ने इसका हजारों वर्ष का उत्थान बतलाया था। आयात-निर्यात के लिए बर्लिन कारखानों से परिपूर्ण है। चारों ओर से औद्योगिक केन्द्रों के रेलों के जाल से जुड़ा हुआ है। यह रूर-क्षेत्र के कच्चे माल के तैयार करने का मुख्य व्यापारिक केन्द्र है। बर्लिन जर्मनी के शासकों का ही नहीं वरन् वहीं के शासन का सर्वोच्च दफ्तर है। संसार की अन्य राजधानियाँ जर्मनी के इस बड़े शहर की ओर सर्वदा टकटकी लगाए रखती थीं। आज पतन के समय भी उसकी ओर संसार चकित दृष्टि से देख रहा है।

१८७०-७१ ई० में फ्रांस-प्रशियन युद्ध के पूर्व बर्लिन रद्दी सड़कों और गन्दी नालियों वाला शहर था। उस समय शहर की जन-संख्या भी आज के बर्लिन जैसी नहीं थी। शहर की जन-संख्या केवल ८ लाख थी। सरकार के निर्माण और अन्तर्राष्ट्रीय रेलों की उन्नति ने इस शहर की जन-संख्या और उद्योग-धन्धों को बड़ा प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार १९०५ ई० में इसकी जन-संख्या बढ़ कर बीस लाख तैंतीस हजार नौ सौ हो गई। यह क्रम घटने के बजाय बढ़ता ही रहा। सन् १९३३ ई० में ४,२३४१६ और युद्ध पूर्व सन् १९३९ ई० में ४,३२,२४२ हो गई। संसार में बर्लिन की यह जन-संख्या उसके महत्त्व को बहुत ऊँचा उठा रही थी। उस समय यह शहर संसार के तीन बड़े शहरों को छोड़ कर अपने सामने किसी को भी नहीं गिनता था। लन्दन, न्यूयार्क और टोकियो ही केवल बर्लिन की इस बड़ी जन-संख्या को मात कर रहे थें। इस प्रकार बर्लिन शहर संसार के वैभवशाली शहरों की चतुर्थ श्रेणी में था।

बर्लिन शहर, मध्य यूरोप के मैदान की निचली पहाड़ियों वाले उपजाऊ क्षेत्र में स्थित है। एल्ब और ओडर नदियाँ नहरों-द्वारा बर्लिन से जुड़ी हुई हैं। छोटी छोटी उपत्यकाएँ नदियों-द्वारा उपयोगी बन रही है। यह उर्वर उपत्याकाएँ सड़कों, रेलों-द्वारा बर्लिन शहर से जुड़ी हुई हैं। शहर में जमीन के भीतर बिजली द्वारा रेलें चलती हैं। युद्ध के पूर्व यह शहर यूरोप के सबसे उत्तम शहरों से एक था। उस समय शहर के अन्दर बस और ट्राम गाड़ियाँ सड़कों के बीच दौड़ती थीं। अब जो समाचार प्राप्त हो रहे हैं उनसे प्रकट होता है कि बर्लिन के यातायात की सड़कें तथा नालियाँ और अन्याँ उपयोगी स्थान बम-वर्षा से इतने बरबाद हो गए हैं कि यह सन् १८७० ईसवी से भी गिरी दशा में है। बर्लिन शहर के स्प्री नदी के दोनों किनारों पर बसा है। दक्षिणी भाग में वह एक नहर द्वारा जुड़ी हुई है। शहर का म्युनिसपल क्षेत्रफल ३३८ वर्गमील है जिसमें कितने ही बड़े बड़े कस्बे जुड़े हुये हैं।

शहर का वैभव

बर्लिन शहर का वैभव वहाँ के उद्योग-धन्धे और कल-कारखाने हैं। युद्ध-उद्योग-धन्धों के बहुत से कारखाने में खुले हैं जो कि शहर के पश्चिमी भाग के मध्य स्थित है। इसके अतिरिक्त एलेक्ट्रिक केबिन, मोटर बस, रेल के इंजिन बनाने के बड़े बड़े फर्म और कारखाने हैं। एलेक्ट्रिक के लिए बड़ा कारखाना है। जलाने वाले कोयले शहर के पास के जिले का उत्पादन है। पनडुब्बियों के लिए बैटरी बनाने के बड़े बड़े कारखाने, वायुयानों के निर्माण के लिए कारखाने, रासायनिक फैक्टरियाँ, इञ्जिनियरिंग के काम की सामग्री और जिस्ता गलाने के बड़े बड़े कारखानों से बर्लिन शहर का वैभव बढ़ा चढ़ा रहता है।

शहर के दक्षिणी भाग में, वायुयानों के इंजिन, भूमि पर चलनेवाली गाड़ियों के इंजन, और मशीनरी तथा कलपुर्जें बनाने के कारखाने हैं। यातायात की सामग्रियों के तथा अन्य ओजारों के कलपुर्जे भी इसी क्षेत्र में बनते हैं।

इन साधनों ने बर्लिन को संसार के वैभवशाली शहरों की प्रतिस्पर्धा करनेवाला शहर बना दिया। यूरोप के साम्राज्यवादी बर्लिन के वैभव को देख कर लालायित रहते हैं। पर, यह स्वर्ण-सुअवसर रूस को ही प्राप्त हुआ है।

आज से ८०० वर्ष पहिले बर्लिन केवल एक छोटा सा कस्बा था। इसके पड़ोस में उसी प्रकार का एक और कस्बा था। दो सौ वर्षों बाद ये दोनों कस्बे एक हो गए। उसी समय शहर की औद्योगिक उन्नति आरम्भ हुई। करीब सौ वर्ष के पश्चात् १५३९ ई० में हाहेन गुलेर वंश ने बर्लिन को अपने राज्य की राजधानी बनाया। तब से आज तक बर्लिन किसी न किसी रूप में उस देश की राजधानी बना रहा है।

सन् १५३९ ई० से आज तक के बीच बर्लिन को कितने ही उत्थान-पतन देखने का अवसर आया है। ११३१ ई० में स्वीडन के राजा प्रोटेस्टेण्ट धर्म के रक्षार्थ शहर में प्रवेश किया था। इसके करीब ४४ वर्ष के बाद पुनः स्वीडनवालों ने बर्लिन पर आक्रमण किया था। सौ वर्ष तक बर्लिन में शान्ति बनी रही। परन्तु दो वर्ष पश्चात् आस्ट्रियावासियों ने बर्लिन के वैभव को लूट लिया। इस प्रकार बर्लिन के ऊपर नवीन आपत्ति आई। अधिक दिन न बीतने पाए थे कि सन् १७६० ई० में रूसियों ने भी बर्लिन की बची-खुची सम्पति को लूट कर उसको बिल्कुल तबाह कर दिया। १८० वर्ष में बर्लिन में नैपोलियन की विजयी सेनाओं ने प्रवेश किया। इस तरह बर्लिन सत्तरहवीं शताब्दी से लेकर १९ वीं शताब्दी तक दूसरे देश वालों द्वारा लुटता रहा। सन् १८४१-ई० में बर्लिन धार्मिक द्वन्दों का युद्ध-स्थान बन गया था। परन्तु संसार की उन्नति ने बर्लिन की आँखें खोल दी। इससे २८६१ ई० में बर्लिन म्युनिसिपल क्षेत्र का नव-निर्माण प्रारम्भ हुआ। सम्राट् विलियम प्रथम उस समय शासक था। उसने शहर की उन्नति में कसर नहीं रक्खी। सन् १८७४ में शहर का म्युनिसिपल कार्यक्रम अपने ढंग से चलने लगा। शहर की उन्नति दिन पर दिन बढ़ी। १९१४ ई० में प्रथम विश्व युद्ध बर्लिन के राजमहलों की आशाओं ने प्रारम्भ कर दिया। सन् १९१९ में युद्ध के पश्चात् बर्लिन शहर पारस्परिक राजनैतिक कलह का केन्द्र बना रहा। हिटलर ने १९३२ ई० में बर्लिन में कैदी के रूप में पदार्पण किया। वही सन् १९३३ में बर्लिन सरकार का प्रधान बन गया। १९३९ ई० में पुनः बर्लिन संसार के राष्ट्रों का एक विनाशकारी शत्रु सिद्ध हुआ। तब से आज तक मित्रों की सेनाएँ उसके वैभव को नाश करती रही हैं। अप्रैल सन् १९४५ में पुनः रूसियों का सैन्यदल बर्लिन की सड़कों पर मार्च कर रहा है। बर्लिन का यह कैसा भाग्य-चक्र है।

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए।

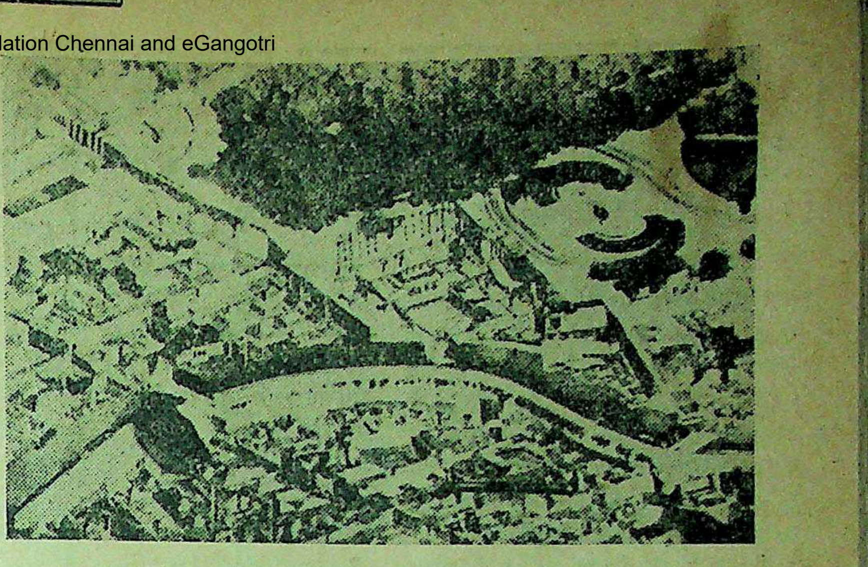

बर्लिन के विहंगम [illegible] जिस पर आजकल मित्रराष्ट्रों का झंडा फहरा रहा है।

बापू!

लेखक, श्री रामलाल, बी० ए०

जानत जो हो तो ऐहौ कलिकाल में यों 'लाल', सगरो जहान मैं महान मोद भरतो।
तारापति पूरन उतारि कै निहारि फेरि, सागर में छीर के नरायन को धरतो।
भागीरथी-नीर भरि उझकि कवन्डल तैं, तकि महीमण्डल मैं चरन पखरतो।
विधि सौं विधान विधि-विधि के बनाइ विधि, नाइ नाइ सीस कौं मनाइ नेति करतो।

पायों बड़े भाग तैं तिहारो दरसन देव, हारयों पदि दरसन दरस न दीनो ईश।
जनम-जनम नर-दासता समेटिबै कों, भरत धरनि पर आयो 'लाल' बिसै बीस।
जीत कै अजीत अमरावती की केलि-कला, जय गीत गावैं हैं अमर कोटि तैंतीस।
भारती बजाइ बीन तीन नैन को रिझाइ, कहति है बैन नैन खोल दीजै जगदीश।

पढ़त विधाता-लिपि भाल पै तिहारे देव हेरि पन कठिन यों नरपन भजिगो,
कढ़त अनूप उपमा तैं परे बैन नीक ठीक सौं मराल को सवारी साज सजिगो।
चढ़त निहारि पद कमल-पराग-पथ रसराज फेरि रथ पथ पर लजिगो,
बढ़त कहत नेति नेति इति इति 'लाल' बीनापानि बीन पै नवीन तार बजिगो।

चूमि चूमि चरन अनूप स्याम नख हेरि कहत है कवि 'लाल' उपमा यों लिखि कै,
हारि हारि संगर में अम्बर सौं मुख झाँपि गहि कै चरन तैसे उझकि उझकि कै।
आभामयी अचज्ञ तिहारी साहिबी पै झूमि घूमि घूमि अरपि मयूखन हू हफि कै,
पूखन पछारिबै को बर पाइ है नमत, सकलंक तारापति दूज को तलफि कै।

सोवियट रूस का तोपखाना

युद्ध-भूमि में उनका उपयोग कैसे होता है ?

लेखक, श्री भूपेन्द्र सान्याल

यह कहना अत्युक्ति न होगा कि तोपखाना ने ही रूस को बचाया है। बिना तोपखाने की सहायता के जर्मन हवाई जहाज, मोटर सेना और टैंकों का मुकाबिला रूसी नहीं कर सकते। खुले मैदान में तो तोपखाना टैंकों का मुकाबिला नहीं कर सकता था, लेकिन जाड़े के समय, जंगलों की लड़ाई में और मोर्चेबन्द जगहों से रूसी तोपखाना ही अधिक कारगर था। स्टालिनग्राड की विजय का यही कारण है। वोलगा नदी के इस पार से रूसी तोपखाना ने जर्मन सेना को रोक रक्खा और जर्मन टैंक नदी पार होकर इस पार न आ सके।

आधुनिक सेनाएँ समतल अग्निवर्षा के लिए तोप का व्यवहार करती हैं लेकिन ऊँची-नीची अग्निवर्षा के लिए हाउइट्ज़र का इस्तेमाल करती हैं। दोनों ब्रीचलोडिंग किस्म के हैं, यानी पुरजा खींच कर उनमें गोला डाला जाता है, लेकिन हाउइट्ज़र से तोप की नली बड़ी होती है। आधुनिक सेनाएँ ट्रेंच मार्टर का भी इस्तेमाल करती हैं जो बजाय गोलों के बम फेंकती हैं। मार्टर का मसाला नली से भरा जाता है और कम दूरी के लिए कारगर होता है। साधारणतया यह हल्की होती हैं और इनका इस्तेमाल सहज है। गोवोरोव के अनुसार जर्मनों ने मार्टर बनवाने पर ज्यादा जोर दिया और हल्की तोप और हाउइट्ज़र को अनावश्यक समझा। थोड़े फासले से काम लेने के लिए तो मार्टर अच्छी थी लेकिन लड़ाई के अवसर पर उन्होंने इस कमी को महसूस किया कि ऐसी हल्की तोपों की भी आवश्यकता है जो और थोड़ी दूर से काम कर सकें। लड़ाई के आरम्भ के तीन महीने बाद उन्होंने सारे यूरप से तीन इंच तोप इकट्ठे किये और उनको रूसी मोर्चे पर भेजा। लेकिन उनकी यह कमी कभी पूरी न हो सकी।

रूसी तोपखाने की शक्ति और समर-कौशल के पीछे जिसके व्यक्तित्व का सबसे अधिक प्रभाव था वह था मार्शल वोरोनोव। वोरोनोव ने जीवन भर तोपखाने में ही काम किया। १८ वर्ष की उम्र में वह एक साधारण सैनिक के रूप में भर्ती हुए और आज वह मार्शल हैं। पिछली लड़ाई के बाद लेनिनग्राड के नये तोपखाने के स्कूल के सबसे पहले के ग्रैजुएटों में से वह एक हैं। ग्रैजुएट होने के बाद उनको जूनियर लेफ़्टिनेंट का कमीशन मिला। फौजियों के साथ कुछ दिन काम करने के बाद वह तोपखाने की उच्च शिक्षा के लिए भेज दिये गये। इसके पश्चात् वह पहले लेनिनग्राड आर्टिलरी स्कूल के अध्यक्ष बनाये गये। इस स्कूल की बुनियाद उसी स्कूल से पड़ी जिसमें पहले वोरोनोव ने शिक्षा प्राप्त की थी। १९३७ में, ३८ साल की उम्र में वोरोनोव लालसेना के तोपखाने के अध्यक्ष बनाये गये। इसके बाद ही रूसी तोपखाने की शक्ति इतनी भीषणता से बढ़ी की जर्मनों को लोहे के चने चबाने पड़ गये।

इसकी भीषणता का अन्दाज एक अमरीकन प्रेस-प्रतिनिधि के दिलचस्प बयान से मिलता है। नेशनल ब्राडकास्टिंग कम्पनी के वारेन अरविन ने दिमाग दौड़ाया कि नववर्ष के दिन मैनरहाइम लाइन पर से एक ब्राडकास्ट हो। उस समय रूसियों और फिनीयों की लड़ाई चल रही थी। उसने फिनी प्रेस-विभाग को इसके बन्दोबस्त के लिए राजी किया। उसने यह युक्ति दी कि फिनी तोपों की आवाज की पृष्ठ-भूमि पर वह बोले। गोला व्यर्थ बरबाद करने का कोई अर्थ न था इसलिए तोप रूसी लाइन की ओर मोड़े गये। उस दिन सारे मोर्चे पर शान्ति थी क्योंकि रूसी हमला नहीं कर रहे थे, और फिनीयों के पास इतनी गोला-बारूद न थी कि वे खुद हमला करते। रूसियों ने सोचा कि फिनीयों को हाल में कुछ मदद मिली होगी और उसकी बुनियाद पर वे हमले की तैयारी कर रहे हैं। फिर तो २० मिनट तक लगातार रूसियों ने इस कदर गोले बरसाये कि अरविन साहब को जंगलों में छिपते ही बना—लाइन के ऊपर उनकी शकल न दिखाई दी।

वोरोनोव के सहयोगी हैं लेफ़्टिनेंट जेनरल विक्टर तिखोनोव। उन्होंने पत्र-प्रतिनिधियों को बताया कि रूसी और जर्मन दोनों बैटरियों में चार तोपें रहती हैं। लेकिन दोनों की बैटरियों के कौशल भिन्न हैं। जर्मन बैटरियाँ एक बहुत बड़े क्षेत्र में अपने गोले फेंकती रहती हैं। लेकिन रूसी बैटरियाँ दुश्मन की बैटरियों को ही निशाना बनाती हैं या ऐसे स्थानों पर गोले फेंकती हैं जैसे फौजों का मजमा, टैंक, या रेलवे स्टेशन आदि। इन तोपों पर हमेशा एक आच्छादन या आवरण डाल दिया जाता है। इनके रास्ते पर घास और पत्तियाँ बिछा दी जाती हैं। इन पर काम करनेवाले या तो ज़मीन के नीचे बनी हुई देख-भाल की जगहों पर रहते हैं या हरे और भूरे लिबास में रहते हैं जिसके कारण वे पृष्ठ-भूमि से हिलमिल जाते हैं। ये तोपें मन भर का गोला मील की दूरी पर फेंकती हैं और एक दूसरी तोप से ३० गज के फास रक्खी जाती है। जरूरत पड़ने पर तोप टैक्टर पर लाद कर एक दूसरी जगह को ले जाई जाती है।

तोपों के अलावा लालसेना एक अस्त्र को व्यवहार करती थी जिसे "काटूशा" या "कोष्टिकोव की" कहते हैं। इसके आविष्कारक कोष्टीकोव से इसका नाम पड़ा। विषय में केवल इतनी ही जानकारी सकी है कि ट्रंक के पीछे एक चबूतरे पर इसको रक्खा जाता है। जब ट्रंक चलता रहता है तो इसको कपड़े से ढँक दिया जाता है। चबूतरे पर ६ नालियों से आग के तेजी से फेंके जाते हैं।

"If it's ELGIN it's good!"

अगर यह एलिगन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टविल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एलिगन।

सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, व अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलों के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतो में ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ग्वाल्ड जनरलगंज, कानपूर

EK 22-HIN

ब्लैक मार्केट को मिटा कर अपना पैसा बचाइए

कंट्रोल के कारण ब्लैक मार्केट के व्यापारियों के काम में रुकावट है। इसी तरह लोगों का यह निश्चय भी कि ज़्यादा दाम नहीं बहुत लाभजनक सिद्ध हुआ है। इन दोनों रुकावटों के कारण ब्लैक के व्यापारी के सामने दो ही रास्ते खुले रहते हैं—या तो वह व्या छोड़ दे (या जेल जाय), और या उचित मुनाफ़े पर माल बेचे। अच्छे काम को जारी रखिए। कपड़ों, पीतल के बर्तनों और जूतों पर छपे रहते हैं। ख़रीदने से पहले इन्हें देख लीजिए। दवाओं और दूसरी सी वस्तुओं के दाम प्रकाशित कर दिये गये हैं, और प्रत्येक दुकानदार लिए क़ीमतों की सूची प्रदर्शित करना आवश्यक है। जो चीज़ ख़रीदिए, लिए रसीद हमेशा लीजिए। अगर क़ीमत बहुत ज़्यादा हो, तो बिना पुलिस में रिपोर्ट कीजिए। समाज के इन शत्रुओं पर दया न कीजिए।

मुनाफ़ाख़ोरों के ख़िलाफ़ जो आन्दोलन चल रहा है
उसमें शामिल होकर आप भावों को गिरा सकते हैं।
ब्लैक मार्केट के मिटने पर आपका पैसा बचेगा

AA 157

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

भारतीय विद्यार्थियों का नया कदम

विद्यार्थी कांग्रेस द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम की ट्रेनिंग

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

अखिल भारतीय विद्यार्थी कांग्रेस-द्वारा आयोजित ९ मई से एक मास तक बंबई में महात्मा गांधी द्वारा बतलाये गये रचनात्मक कार्यक्रम के शिक्षण के लिये शिविर स्थापित होगा। इस लेख में युवक लेखक ने बंबई विद्यार्थी शिक्षण शिविर के महत्त्व का वर्णन करते हुए विद्यार्थी समुदाय का राष्ट्र के इस कार्य के प्रति ध्यान आकर्षित किया है।

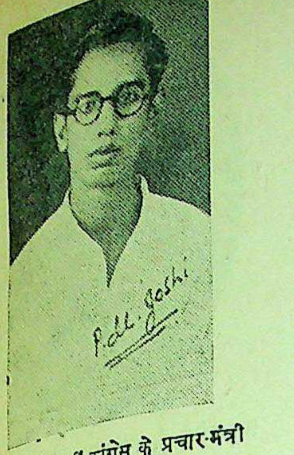

अ० भा० विद्यार्थी कांग्रेस के प्रचार-मंत्री श्री पी० एम० जोशी।

विद्यार्थी ही देश के उज्वल भविष्य की आशा हैं। स्वतन्त्र भारत को उसकी आदर्श व्यवस्था तक पहुँचाने के लिए विद्यार्थियों को ही सबसे अधिक प्रयत्नशील होना पड़ेगा। भारतीय संस्कृति को बीसवीं शताब्दी के नये दृष्टिकोण में पूर्णतया प्रदर्शित कर, एक राष्ट्रीय ढाँचे का निर्माण करना उनका पहला कर्तव्य होगा। भारतीय राष्ट्रीयता को विश्वशान्ति की स्थापना के लिए अन्तर्राष्ट्रीयता और विश्व-बन्धुत्व की भावनाओं को पूर्ण स्वतन्त्रता देनी होगी क्योंकि बिना विश्व-शान्ति के भारतीय वातावरण का भी शान्त रहना असम्भव है।

लेकिन, यंत्रवाद व साम्राज्यवादी पूँजीवाद के द्वारा प्रभावित इस युग में व्यक्ति-विशेष के लिए कोई स्थान नहीं है। व्यक्ति का स्थान तीव्रगामी मशीनों ने और उसकी बुद्धि का स्थान स्वार्थ ने ग्रहण कर लिया है। जीवन-मरण के प्रश्न के भूल-भुलैये में वह एक ऐसी मशीन का पुर्जा-मात्र रह गया है, जिसका ध्येय विनाश करने के लिए ही निर्माण करना है। आज सानफ्रान्सिसको और ब्रैटनहाउस् जैसे कितने ही सम्मेलन बुलाये जा सकते हैं, कितने ही राष्ट्र संघों का ताशों के महलों की तरह निर्माण तथा विनाश किया जा सकता है, पर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति को चिरस्थायी बनाना खेल नहीं है। मानव-शक्ति का विभिन्न स्थानों पर असीमित केन्द्रीयकरण केवल अशान्ति का ही सृजन कर सकता है।

इस केन्द्रीयकरण से मानव-समाज को बहुत सी ठोकरें लगी हैं। पेरिस के पतन से ही फ्रांस की राष्ट्रीयता तिरोभूत हुई। सन् ३३ में न्यूयार्क की वाल-स्ट्रीट के पूँजीपतियों के दिवालिये होने के साथ ही संसार का आर्थिक ढाँचा भी चकनाचूर हो गया। व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत योग्यता को भूल कर एक झूठे प्रकार के संगठन पर विश्वास करने लगे। व्यक्तित्व का यह असाधारण ह्रास ही अशान्ति का मूल कारण है। गांधी जी ने इस बात को प्रथम बार समझा और देश-व्यापी रचनात्मक कार्यक्रम की पूर्णतया नवीन पद्धति को जन्म देकर, भारत और विश्व के समक्ष, स्वार्थ-जन्य वेदनाओं से बचने के लिए एक अचूक रामबाण औषधि तैयार की। भारत के भावी कर्णधारों यानी आज के भारतीय विद्यार्थियों की एकमात्र संस्था, अखिल-भारतीय-विद्यार्थी कांग्रेस ने रचनात्मक कार्यक्रम के इस विश्व-व्यापी महत्त्व को समझ लिया और इसी दृष्टिकोण को सामने रख कर उसने बम्बई में एक नागरिक-शिक्षण-शिविर खोलने का महत्त्वपूर्ण आयोजन किया है।

इस शिविर में भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों से चुने हुए विद्यार्थी आकर रचनात्मक-कार्यक्रम, गांधीवाद और समाजवाद का तुलनात्मक विवेचन, पत्रकार-कला, समाज-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र तथा अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों के बारे में वादविवादों व प्रयोगों-द्वारा शिक्षा ग्रहण करेंगे। इस सम्बन्ध में विद्यार्थी कांग्रेस के सभापति श्री रामसुमेर शुक्ल और मंत्री श्री साक्रेकर और श्री जोशी ने एक विस्तृत योजना तैयार की है। सौभाग्यवश इस योजना में संशोधन आदि करने का अवसर मुझे भी अखिल-भारतीय-विद्यार्थी-कांग्रेस का दफ्तर-मंत्री होने के नाते प्राप्त हुआ और इस बात की पूर्ण आशा है कि यह योजना भारतीय स्वतन्त्रता-प्राप्ति और उसके शासन-यन्त्र-निर्माण में सहायक सिद्ध होगी।

हमारे जीवन को रचनात्मक प्रयोगों और भारतीय ग्राम्य जीवन की अभिव्यक्तियों द्वारा एक नया उत्साह प्रदान करना, आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। अपनी व्यक्तिगत शक्तियों को पूर्णता की पराकाष्ठा तक पहुँचा कर हम अपने अपने स्थानों में एक स्फूर्ति-युक्त वातावरण उपस्थित करने में सफल हो सकेंगे। हमें मानव-समाज के पुराने क्रम के साथ-साथ मानव-हृदय को भी बदलना होगा। हमें जीवन के प्रत्येक पहलू को क्रान्तिकारी दृष्टिकोण से देख कर उसमें कर्तृत्व-शक्ति लानी होगी। अपनी भूली हुई शक्ति को अपने पूर्ण सौन्दर्य में पुनः जागृत करना ही, हमारी विद्यार्थी-कांग्रेस की इस योजना का प्रथम ध्येय है।

इस लेख के लेखक, विद्यार्थी कांग्रेस के कार्यालय-मंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी।

भारत के सात लाख गाँव आज विश्व-संघर्ष के अंधकार व चिरायँध में पड़कर विलुप्त से हो गये हैं। भारतीय शहरों की नकली तड़क-भड़क और उनकी अंधकारपूर्ण गलियों में कराहती हुई मानवता, दृश्य को और भी भयानक बना देती है। नई दिल्ली के वायसराय-भवन व पूँजीपतियों के गगन-चुम्बी महलों से निकलने वाली आज्ञायें भारत को त्रस्त कर देती हैं। अब तो आवश्यकता इस बात की है कि ७ लाख गाँवों में से प्रत्येक ग्राम स्वावलम्बी व्यक्तियों से भरपूर हो और आधुनिक सेवाग्राम के समान बनकर विश्व के लिए आदर्श बने। नैतिकता और व्यक्तित्व के इस सात्विक-बल की उन्नति द्वारा प्रत्येक गाँव स्वतन्त्रता, सभ्यता और शान्ति का दुर्भेद्य दुर्ग सिद्ध हो सकेगा। अकाल, आर्थिक वेदना, अन्न-संकट और वस्त्र-संकट, यह सब विश्व के रंगमंच से सदा के लिये उठ जायेंगे। आगामी अंतर्राष्ट्रीय ढाँचा इसी बुनियाद पर खड़ा किया जा सकता है। गांधीवाद की यही सम्यक् विवेचना है, समाजवाद का यही सन्देश है, किसानों तथा मजदूरों की यही भूली हुई आकांक्षा है। आज हम विद्यार्थी इस महान् आवश्यकता को समझ कर, अपना कदम उठा रहे हैं, जो बम्बई-विद्यार्थी योजना के अन्तर्गत है।

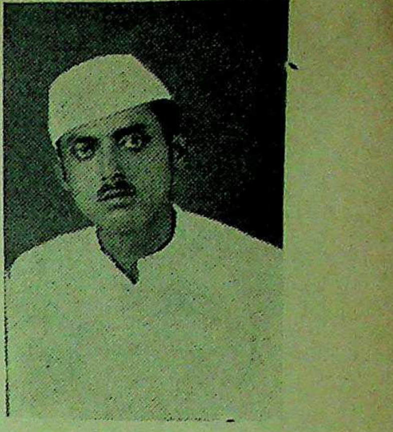

अखिल भारतीय विद्यार्थी कांग्रेस के सभापति श्री रामसुमेर शुक्ल।

भारतीय जनता से हमारा यही कहना है कि वह भी अपने को इस आगामी मानसिक, व्यक्तिगत, सामाजिक व राजनीतिक परिवर्तन के लिये तैयार कर लें।

बापू का बिगुल बज चुका है—अब पथ का पथावलम्बी बनना ही शेष है...।

महादेवी जी के प्रति

लेखक, श्री सोहनलाल द्विवेदी, एम० ए०

आज मातृ-मन्दिर में होती महा आरती,
गूँज रही है वहाँ तुम्हारी महा भारती;
सभी स्वरों में, आज तुम्हारा ही वन्दन स्वर,
मेघमन्द्र बन घेर रहा है अवनी अम्बर!
लिये नयन में अश्रु, हृदय का मधु गंगाजल
चली आज धोने माँ का क्षत-विक्षत हृत्तल!
वीणा वादिनि! बनी राष्ट्र की ध्वजाधारिणी,
जन-जन के जीवन में नवजीवन-प्रसारिणी!
देख मातृ-सेवा के पथ पर पुलकित बढ़ते,
शूलों के शृङ्गों पर, उत्सुक निर्भय चढ़ते;
देवार्चन के फूल मचल अंजलि से मेरी,
चढ़े तुम्हारे पथ पर, जाओ करो न देरी!
जन्म-भूमि की मुक्तिसाधना का कण भर भी,
महाकाव्य से श्रेष्ठ, मुझे लगता सुखकर भी;
फिर, तुम तो हो अमृत छन्द की अमर विधात्री,
दलित जाति के व्यथित त्रणों में जीवन-दात्री!
क्यों न करूँ मैं बहन! तुम्हारा फिर अभिनन्दन?
उच्च भाल पर करूँ न चर्चित कुंकुम चन्दन!
त्याग कल्पना स्वर्ग, बनी मानवसेवा-रत;
आज तुम्हारे इसी रूप पर मैं श्रद्धानत।

पहले के लँगड़े को देखकर उसके मित्र चकित हो उठे

अब वह बाहरी खेलों में भी भाग लेता है

क्रुशेन से उसके पाँव का गठिया जाता रहा

यहाँ एक ऐसे आदमी की कहानी है जो खेल-कूद में भाग लेने की आशा त्याग चुका था। उसने किस प्रकार एक के बाद अन्य दवाओं का सेवन किया और कैसे उसको एक पूर्व रोगी ने चङ्गा होने का रास्ता दिखलाया? जिसको वह स्वयं बतलाता है।

दो वर्ष पूर्व मेरे पांव में दर्द शुरू हुआ जो धीरे-धीरे बढ़ कर बहुत भयङ्कर हो गया। मैंने सारी दवाइयाँ कीं। पर उनका कुछ भी असर न हुआ। बीमारी में एक दिन मैं शाम को बैठा था कि एक रोगी ने मुझे क्रुशन साल्ट के सेवन की राय दी। आज बारह मास हो गये। हालाँ कि जल्दी चङ्गा न हो सका। परन्तु दर्द और सूजन धीरे-धीरे पाँव से ६ माह के भीतर दूर हो गये। मैं जब दूर तक टहलने के लिए जाने लगा तब मेरे मित्र मुझे देखकर दंग रह गए। इस वर्ष मैंने टेनिस भी अच्छी तरह खेला है। वह फिक्र जिससे मैं सदैव परेशान रहता था मेरे दिमाग से बिलकुल गायब हो गई।" सी० डब्ल्यू०।

गठिये का दर्द इसलिए होने लगता है कि गाँठों के जोड़ों में अम्ल अलग अलग इकट्ठे हो जाते हैं, क्रुशन साल्ट ऐसे तत्वों अथवा जरों से सम्बन्धित है जो इस इकट्ठे अम्ल को तितर-बितर कर देता है साथ ही ऐसे जरों की सहायता करता है, जो गुर्दों को अच्छी तरह काम करने में सहायता देते हैं।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे रसायनिक और दूकानों पर मिलता है।

सप्रू कमेटी और देशी राज्य

देश की चौथाई जनता की घोर उपेक्षा क्यों हो?

लेखक, श्री सत्यदेव विद्यालंकार

देशी राज्यों की स्थिति पहले क्या थी और अब क्या है, यह भी इस देश की एक महान् राजनैतिक समस्या है। भारतीय स्वाधीनता का आन्दोलन हो रहा है और देशी राज्य भी उसका लाभ उठायेंगी ही। सप्रू-कमेटी ने भी भारत के लिये कुछ वैधानिक उलटफेर के सुझाव उपस्थित लिये हैं किन्तु देशी राज्यों के लिये कमेटी ने क्या सुझाव रखे हैं, इस लेख में इसी सम्बन्ध में तर्कपूर्वक विचार किया गया है।

मारवाड़ के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता लोकनायक श्री जयनारायण व्यास।

सप्रू-कमेटी के विधाता सर तेजबहादुर

हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में विचार करते हुए देशी राज्यों पर केवल राजाओं की दृष्टि से विचार किया जाता है। उनकी प्रजा की इस प्रकार उपेक्षा कर दी जाती है कि मानो उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है। सप्रू कमेटी ने भी देशी राज्यों के सम्बन्ध में इसी दृष्टि से विचार किया है। उसकी जो सिफारिशें या सुझाव प्रकट किये गये हैं, उनमें राजाओं का उल्लेख तो दो-तीन स्थानों पर किया गया है, किन्तु प्रजा का उल्लेख एक भी स्थान पर नहीं किया गया। देशी राज्यों में भारत की एक चौथाई अर्थात् दस करोड़ के लगभग जनता रहती है। उसको उन देशी नरेशों की कृपा पर छोड़ देना क्या अर्थ रखता है? जिनका शासन-विधान ब्रिटिश भारत के शासन-विधान से कई सदी पिछड़ा हुआ है और जिस पर प्रजा की आवाज का प्रत्यक्ष तो क्या, अप्रत्यक्ष भी कोई असर नहीं पड़ सकता। उनमें से अनेकों में वैधानिक शासन की छाया भी पाई नहीं जाती और वे मध्यकालीन सामंतशाही के खँडहरों के रूप में ही इस देश में चारों ही ओर बिखरे हुए हैं। राजस्थान, राजपूताना अथवा मारवाड़ महाप्रदेश का तो सारा ही इलाका इन राज्यों से छाया हुआ है। इसलिए इस इलाके की प्रजा की तो हिन्दू-समाज में हरिजनों के समान निरंतर उपेक्षा ही की जाती है।

दस करोड़ जनता की किस्मत का प्रश्न इतना महत्त्वपूर्ण है कि सप्रू कमेटी की विस्तृत रिपोर्ट की प्रतीक्षा किये बिना भी उसके लिए आवाज उठाना हमें आवश्यक प्रतीत होता है। इन सिफारिशों में जिस रूप में देशी राज्यों का उल्लेख किया गया है, उससे यह प्रगट है कि भारत के लिए प्रस्तावित यूनियन में शामिल होना या न होना राजाओं की एक-मात्र इच्छा पर वैसे ही छोड़ दिया गया है, जैसे कि संघ-शासन-योजना में छोड़ दिया गया था। प्रजा की इच्छा का इस प्रश्न के निर्णय में कोई स्थान नहीं रखा गया है और तो और, देश के सर्वोपरि अधिकारी 'राष्ट्रपति' के लिए उपस्थित किये गये विकल्पों में राजाओं को जो महत्त्व दिया गया है, वह अवांछनीय ही नहीं, किन्तु आपत्तिजनक भी है और प्रजा के हितों के लिए तो निश्चय ही घातक है। किसी भी राज्य के शासक के इस पद के लिए चुने जाने के लिए 'जनसंख्या' अथवा 'मालगुजारी' की अपेक्षा यदि 'उत्तरदायी शासन' की शर्त अनिवार्य रख ली जाय, तो सम्भव है कि उनमें से किसी का इस पद के लिए चुना जाना इतना अवांछनीय या आपत्तिजनक न रहे। लेकिन, आज की स्थिति में, जब कि प्रातिनिधिक, जनतंत्रात्मक अथवा उत्तरदायी शासन-व्यवस्था का कायम होना तो दूर रहा, प्रजा को लेखन, भाषण एवं संगठन के मौलिक किंवा नैसर्गिक नागरिक अधिकार भी प्राप्त नहीं हैं, राजाओं को इतना अधिक महत्त्व देना नितांत अवांछनीय और घोर आपत्तिजनक है। इससे उनको इतना अधिक प्रश्रय मिलेगा कि वे अपनी वर्तमान एकतंत्र तथा स्वेच्छाचारपूर्ण सत्ता में एक मात्रा का भी परिवर्तन करने को तैयार न होंगे—उसकी उन्हें कुछ भी आवश्यकता अनुभव न होगी—इसके विरोध में देशी राज्यों की दस करोड़ जनता को निश्चय ही अपनी आवाज उठानी चाहिए।

इन सिफारिशों में दो या तीन स्थानों पर देशी राज्यों की चर्चा की गई है। एक जगह कहा गया है 'कि देशी राज्यों के यूनियन में आने का निश्चय करने पर उनके लिए उनसे परामर्श करके उचित व्यवस्था करने का अवसर अवश्य रहेगा।' फिर कहा गया है कि 'देशी राज्यों के लिए समय समय पर यूनियन में सम्मिलित होने का द्वार विधान में खुला रहे। लेकिन, उनके सम्मिलित होने की शर्त अनिवार्य न मानी जाय और उसकी स्थापना अविलम्ब कर दी जाय, भले ही उसमें कोई भी देशी राज्य शामिल न हो। सारांश यह है कि यूनियन में देशी राज्यों का शामिल होना या न होना एकमात्र देश नरेशों की इच्छा पर छोड़ दिया गया है। प्रजा की इच्छा को उसमें कुछ भी महत्त्व नहीं दिया गया। १९३५ के विधान में प्रस्तावित संघ-शासन-योजना में कुछ राजाओं का शामिल होना अनिवार्य रखा गया था। उनके सहमत न होने ही के कारण लार्ड लिनलिथगो अपने शासन-काल में संघ-शासन-योजना को कार्य रूप में परिणत न कर सके थे। इस सम्भावित संकट का प्रतिकार करने के लिए ही सप्रू-कमेटी ने कहा है कि उनका यूनियन में शामिल होना आवश्यक न माना जाय। लेकिन, इस प्रकार भारत की दस करोड़ अर्थात् एक चौथाई आबादी के प्रति जो घोर अन्याय किया गया है, वह कितना भीषण है?

प्रांतों का पुनर्विभाजन और देशी राज्य

इसके सिवा सप्रू कमेटी की सिफारिशों में प्रान्तों के पुनर्विभाजन की आवश्यकता को स्वीकार करते हुए जो शब्द लिखे गये हैं, उनसे यह प्रकट है कि इस कमेटी के सुयोग्य सदस्यों की दृष्टि में प्रान्तों का विभाजन भाषा और संस्कृति के आधार पर होना चाहिए। भाषा और संस्कृति के आधार पर साथ साथ ऐतिहासिक और औद्योगिक पृष्ठभूमि पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। राष्ट्रों के समान प्रान्तों की सीमाओं का विभाजन भी प्रकृति ने अपने हाथों से किया है, इन सीमाओं का सम्बन्ध भूगोल के साथ है, इनको सबसे अधिक स्वाभाविक कहा जा सकता है। एक-सी भौगोलिक परिस्थितियों में रहनेवालों की भाषा, संस्कृति, रहन-सहन एवं आचार-विचार आदि का भी प्रायः एक-सा विकास होता है। इसलिए वे इस दृष्टि से एक शृङ्खला में बँध जाते हैं। इसी प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं की थपेड़ें भी उन्हें समान दुख-सुख, हानि-लाभ, जय-पराजय और हित-अहित के सूत्रों में पिरो कर उन बंधनों में बाँध देती हैं, जिनसे प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय सीमा का निर्माण होता है। भाषा, संस्कृति, साहित्य तथा इतिहास आदि की परम्पराओं का विकास होकर प्रान्त एवं राष्ट्र की वह भावना दृढ़ होती रहती है, जो प्रान्त एवं राष्ट्र के संगठन को बलशाली एवं प्रभावशाली बनाने का काम करती है।

इसके विपरीत अथवा प्रतिकूल परिस्थिति प्रान्त एवं राष्ट्र के संगठन को विशृङ्खल करके उनके निवासियों के विकास में बाधक बन जाती है। इस प्रकार होनेवाली हानि का दुष्परिणाम जितना राजपूताना और मध्यभारत के नाम से बनाये गये प्रान्तों के निवासियों को भोगना पड़ा है, उतना अन्य प्रान्तों के लोगों को नहीं भोगना पड़ा। महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र आदि प्रान्तों के स्वतन्त्र एवं पृथक् अ के न होते हुए भी वहाँ की भाषा, सं साहित्य एवं ऐतिहासिक परम्पराओं के विकास में नहीं हुई है। कारण इन प्रान्तों का राजनैतिक दृष्टि से एवं स्वतन्त्र अस्तित्व न होने प सांस्कृतिक एवं भाषा की दृष्टि से व ही कायम रहा है, जैसा कि बंगाल, आदि का सभी दृष्टियों से कायम है। लिये जहाँ इन प्रान्तों के निवासि बहुमुखी विकास हुआ, वहाँ उन की जनता के विकास का मार्ग भी बना रहा। लेकिन, राजस्थान और भारत की जनता का वैसा विकास एक या डेढ़ सदी में नहीं हो सका। प्रान्तों के स्वतन्त्र एवं पृथक् अस्ति इस बुरी तरह से छिन्न-भिन्न किया ग उसके निवासियों में एक प्रान्त के नि होने के नाते ऐक्य भावना, समष्टि और सामूहिक कर्तव्य-बुद्धि का विक क्या, जन्म भी नहीं हो पाया। इसी से ये प्रान्त अन्य प्रान्तों से सभी दृ पिछड़े हुए हैं। प्रान्तीय सीमाओं का विभाजन हो या न हो, इन प्रान्तों सीमाओं का तो पुनर्विभाजन होना चाहिए, क्योंकि ऐसा हुए बिना इन की जनता की भाषा, संस्कृति, साहित्य इतिहास आदि का विकास न होकर अन्य प्रान्तों की जनता के समान प्र उन्नति नहीं कर सकती। देश के बड़े भाग या महाप्रदेश का पिछड़ा समूचे देश की दृष्टि से भी वांछ नहीं है।

राजस्थान या राजपूताना के ना पुकारे गये प्रान्त की सीमायें कहीं और सतलज को स्पर्श करती थीं, तो और सिन्ध नदी या हिन्द सागर को थीं। भौगोलिक दृष्टि से इस सारे प्रदेश का वास्तविक नाम मरुभूमि "मारवाड़" या ऐसा ही कुछ और होना चाहिए। इस महाप्रदेश के पास के प्रदेश भी इसी में शामिल सकते हैं। इसी से हमें इस महा को 'मारवाड़ महाप्रदेश' कहना युक्ति-युक्त और सार्थक प्रतीत होता पंजाब में सिखों और महाराष्ट्र में मराठों समान राजपूतों ने इस महाप्रदेश में बादशाहों के लिए सुख की नींद हराम कर दिया था। वे निरंतर साम्राज्य के लिये काँटा बने रहे थे। दर्शी अँगरेज राजनीतिज्ञों ने जहाँ और मराठों की शक्ति को सदा के कुंठित कर दिया था, वहाँ उन्होंने पूतों की शक्ति को भी कुंठित करने कुछ उठा न रखा। अन्य अनेक

—शेष पृष्ठ १४ पर दे

विदा

लेखक, श्री चंद्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

कोकिल छोड़ चली नंदन वन।
पल भर पात पात से बोली,
पल भर डाल डाल पर डोली;
पल भर प्यार रहा ऋतुपति से, पल भर रहा समर्पण।
फूल-फूल की आँख सजल है,
अलि दल, कलि दल सकल विकल है;
जहाँ प्रथम पंचम गूँजा था, वहाँ ध्वनित अब क्रंदन।
बिना डाल चूमे, सहलाए,
दूर उड़ी, आँसू न गिराए;
अंतिम क्षण में भी मन पर यह, कैसा कठिन नियंत्रण।

कैदी की एक रात

लेखक, श्री ओंकारनाथ शरद

कैदी की एक रात—जेल की काली कोठरी। कैदी अपने भाग्य को कोस रहा था—अपने पूर्व और वर्तमान को। कलकत्ता की भीषण भुखमरी का वह भी शिकार हुआ था। इसी सिलसिले में उसे जेल में बंद होना पड़ा था। हिन्दी के प्रसिद्ध युवक कथाकार शरद ने कैदी के मनोभावों का इस कहानी में बड़ा मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। कहानी सुंदर और आकर्षक है।

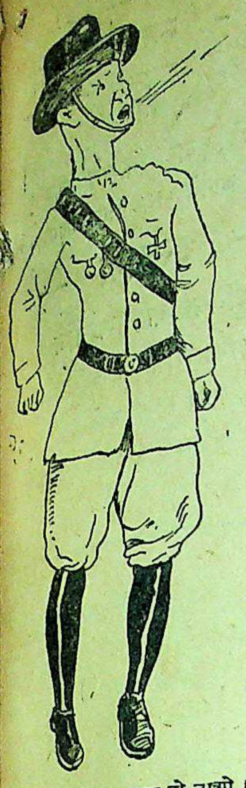

पुलीस—सावधान हो जाओ।

अलीपुर प्रेसीडेंसी जेल! रात का घना अन्धकार! घंटा टन्-टन् करके बजा। सोते हुए कैदी की नींद हड़बड़ा-कर खुली। बन्द आँखें आधी खुल गईं। पर उसे चारों ओर कुछ सुझाई न पड़ा, यह अन्धकार जो था। कुछ न दिखाई पड़ने का एक और कारण था। कानून और न्याय ने उसकी आँखों का प्रकाश बन्द करने के लिए एक काला पर्दा जो डाल दिया था वह आज इस काली निशा में और भी अन्धकारपूर्ण हो उठा था।

उस छोटी काली कोठरी में वह बन्द था। नींद टूटी तो उठना चाहा पर अधउठा उठ कर ही वह रह गया। उसे याद आया। अभी रात को दो ही बजे हैं। उठकर वह करेगा क्या? जेल का नियम भी है कि रात में उठना कानून तोड़ना है। और यह जेल है। जेल-खाना! यहाँ सब कुछ अपराध है। छींक आये तो वह भी कानून के लिए आज्ञा का उल्लंघन हो सकता है। कानून तो यहाँ दर-दर है। उसी कानून ने उसे सताया है। कानून के कठोर पंजों ने उसका गला दबाया है। क्रूर हाथों ने ही उसके पाँव में बेड़ियाँ डाली हैं।

अपनी हथेली उसने अपने चेहरे पर फेरी। चेहरे पर जङ्गल उग आये हैं। बड़े घने जङ्गल। कैदी होने की यह भी एक निशानी है। अतः इसका भी होना अति आवश्यक है। उसे लगा कि कैदीपना अब पूर्ण रूप से विकसित होकर ढिंढोरा पीट रहा है कि वह कैदी है। कारण वह गरीब था—भूखा! गरीब, धनहीन था। कैदखाना उसके लिए आवश्यक था। उसे लगा कि न्याय का वह प्रतीक कारावास भी उसी प्रकार था जिस प्रकार बाहर का विशाल संसार। गरीब के लिए तो सारा संसार ही एक कारावास है। संसार के सामाजिक तथा

पं० ५

राजनैतिक नियन्त्रण उसकी ठोस चहारदीवारी है। उसे वह पार तभी कर सकता है जब वह उनकी अवहेलना करे। उसके पास धन हो।

उस काले अंधकार को उसने हाथों से टटोला। ठोस ईंटों की चूने से पुती यह दीवाल उसे पहचानी सी लगी। छः माह और नौ दिन की यह परिचित कोठरी! उसमें उसने प्रतिदिन एक के हिसाब से एक सौ नवासी निशान बना रक्खे हैं। ताकि उसे दिन गिनने में दिक्कत न हो। यह दीवाल कितनी कठोर है! इनकी ईंटें चूने से थोड़े ही जुड़ी हैं। इनके जोड़ने में शासन ने, मानव पर मानव की प्रभुता ने, गरीबों के रक्त के मिश्रण ने काम दिया है। और ये ही दीवालें आज उन्हीं के लिए कारावास की परिधि हैं जिन्होंने उसे बनाया है, जो उसके निर्माता हैं। यही तो संसार का नियम है। मानव अपना बन्धन अपने आप निर्मित करता है और वही बन्धन जब उसे जकड़ लेता है तब वह छटपटाने लगता है।

यही सोचते-सोचते उसके मस्तिष्क में एक दीपक जल उठा। बहुत से धुँधले चित्र स्पष्ट हो-होकर दिखाई पड़ने लगे। उसे याद आया वह दिन जब कुछ कमाने के विचार से वह कलकत्ते का टिकट कटा कर बम्बई मेल पर सवार हुआ था। गाड़ी में ही उसे एक कलकत्ते के सेठ से भेंट हुई थी। उसे भी किसी आदमी की जरूरत थी। सो उसने इसे पैंतीस रुपये महीने पर अपने यहाँ रख लिया। पर यह पंतीस रुपये, और लड़ाई के यह बीहड़ दिन, ऊपर से विशाल नगरी कलकत्ता! सभी उसे बड़ा कठिन-सा लगा। लेकिन बेकारी से अच्छे ही थे वे पैंतीस रुपये। वह अकेला था ही इसलिए दिन कटने लगे। अकेले में दुःख भी सुख से थोड़ा ही कम मालूम होता है। उसने देखा—अपनी पहली स्थिति को देखते हुए अब उसके पास था ऐश्वर्य, धन, सुख, आराम सभी कुछ!

लेकिन जब भगवान् ने उसे गरीब पैदा ही किया था तो उसे सुख और आराम के दिनों का हकदार बनकर रहना भगवान् को चिढ़ाना था। आखिर दिन आया जिसके लिए वह सदा ही शंकित रहा करता था। बात ऐसी हुई कि उसकी जगह काम करने को सेठ ने एक आदमी पा लिया था जो तीस रुपये माहवारी में ही काम करने को तैयार था।

सब ऐश्वर्य और सुख तथा भले दिनों को अतीत की स्मृति बनाकर उसे सेठ से रिश्ता तोड़ना ही पड़ा। सेठ की कोठी से निकलकर वह आया कलकत्ते के विशाल वक्षस्थल पर नसों के रूप में फैली कुछ नीले और काले रंग की सड़कों पर। बीच में चल रही थीं बड़ी बड़ी बिजली द्वारा संचालित ट्रामगाड़ियाँ, घन्न् से वह देखते ही देखते पार हो जातीं। फिर बसें और धूल के रंग की भीमकाय युद्ध की मोटरें। देखकर एक बार दिल हिल जाता था।

और पटरियों पर! अर्द्धनग्न दरिद्र-नारायणों का परिवार। उस परिवार में बूढ़ों के पेट पचके और बच्चों के निकले। यानी दोनों भूखे। और स्त्रियाँ! सबर के नाम पर अगल-बगलवालों को कातर हो ताकतीं। उसने देखा। कुछ सोचने के पहले ही उसके मस्तिष्क में आया। जब इतने बेचारों ने अपना ठिकाना खो दिया तो हम फिर क्या आशा करें?

हुआ भी वही। आठ दिन तो किसी तरह उसने अपनी बची खुची-सम्पत्ति पर काटा। नवें दिन जब उसने अपने वैभव को स्मरण किया तो सोचा वह एक झोंका था जो आया और चला गया। शैशव के नशे में भोली आँखों ने देखा कि वह सम्पूर्ण ऐश्चर्य-रश्मि किसी घोर कालिमामय रात में बिजली की भाँति क्षण भर चमकी और अस्तित्व खो कर विलीन हो गई। इसके बाद उसने गौर से देखा फुटपाथों पर रेंगनेवाले वे दुबले-पतले मनुष्य एक एक कर इस मतलबी संसार से अपना पीछा छुड़ा पटरियों पर ही लम्बे लेट कर अपनी साँसें रोक देते हैं। उनके परिवारवाले एक क्षण रुककर पीछे देखते। कुछ तो रो देते और कुछ केवल देख-भर लेते। शायद उन्हें रुलाई न आती। कारण रोते-रोते उन्होंने अपने रोने के भण्डार की समाप्ति कर दी थी।

उसे यह सब नवीन नहीं मालूम हुआ। उसने सोचा अभी कुछ दिन बाद उसे भी इसी समाज से नाता जोड़ना होगा। इसी लिए कुछ उसने समझा, कुछ को समझने की कोशिश की और कुछ की अवहेलना कर आगे बढ़ गया।

तभी जमादार ने आकर सींकचे के झँझरीदार दरवाजे पर लोहे की छड़ से एक ठोकर जमाई। झटपट उसने विचारों का दरवाजा बन्द कर दिया और हड़बड़ाकर उठा।

जमादार ने पुकारा—"कैदी नम्बर इकतीस!"

"जी हुजूर!"

जमादार सब ठीक जानकर आगे बढ़ गया। कैदी फिर लेट गया। अब की उसने विचारों की खिड़की खोली। एक दिन आया जब वह परेशान था। संसार के इस कोलाहल से पूर्ण परेशान था, बिलकुल परेशान। न उसका कोई रक्षक था न सहायक। अब उसने संसार को जाना। उसे मालूम हो गया कि उस जैसे अपरिचित का संसार में गुजर नहीं। वह घूमता रहा, दिन-रात घूम-घूमकर चक्कर मारता रहा पर कहीं भी उसके भोजन का बन्दोबस्त न हुआ। असफलता के दलदल में वह अब फँस गया था।

अब कैदी ने एक करवट ली और उसके मुँह से निकला—"हाय, वह कलकत्ता था!" और वह सोचने लगा—आग लगे इस कलकत्ते में ऐसे विशाल नगरी में भी उसकी सुननेवाला कोई न मिला तो और कहाँ मिलेगा? रात होने पर जब शहर को नींद आ जाती तो वह भी किसी दूकान के नीचे पटरी पर लेट रहता। लोक-लज्जा उसने खो दी थी। और लज्जा कैसी? उस प्रकार सोनेवालों की तादाद कोई कम थी क्या? उसके जैसे जाने कितने कंकाल उसके अगल-बगल में होते। कई गाय-बैल भी आकर पास ही बैठ रहते। बीच बीच में लम्बी जीभ निकाले कुत्ते आते और इनमें से किसी किसी को जाने क्या सोचकर सूँघ लेते और फिर आगे बढ़ जाते। उसे यह बुरा न लगता। कल्पना करके वह सोचता—यह तो गरीबों का एक पुरवा बस गया है और ये कुत्ते सिपाही हैं। रखवारी करते हैं।

वह अनजाने ही अट्टहास कर उठा।

और उस दिन! उसे याद आई वह बात जिसके कारण आज उसे यह स्वर्ग देखना पड़ा। जीते जी स्वर्ग! ठीक ही तो

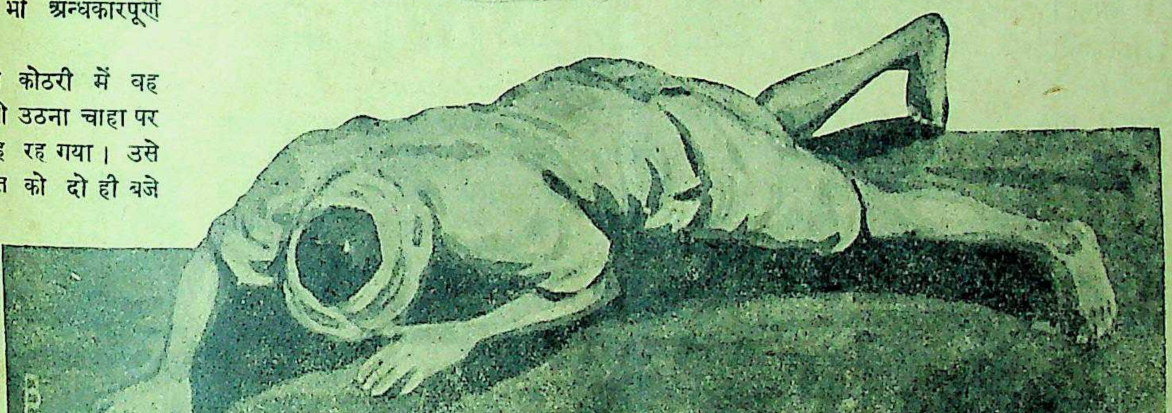

कलकत्ते की भुखमरी का वह भी शिकार हुआ। भूख के मारे वह रास्ते में गिर पड़ा।

है। गरीबों के लिए यह स्वर्ग तो है ही। यहाँ सुबह-शाम आराम से खाना तो मिल जाता है। सो उस दिन वह कई शाम का भूखा था। पटरी पर वह लेटा था। ब्लैक-आउट का जामा पहने बिजली के लट्टू जल तो रहे थे पर धुँधले थे। उसी धूमिल प्रकाश में उसने देखा अगल-बगलवाले साथी भरी नींद में खुर्राटे ले रहे थे। सामने की हवेली में कोई बँगाली परिवार रहता था। उसी से खिड़की खोल कर किसी ने कुछ भात के दाने बाहर फेंके। शायद कोई लड़का था जिसे भूख नहीं थी और बाप के डर के मारे उसने चुराकर अपना हिस्सा खाना फेंका था। वह सोच ही रहा था कि देखा कि पाँच-छः कुत्ते और तीन आदमी नाम के जानवर उस ओर दौड़ पड़े। कुत्तों ने देखा उन्हें यह बड़ा बुरा लगा सो आदमियों पर हमला करने को बढ़े। आदमियों की हिम्मत छूट गई। विवश हो कातर नयनों से उसे उन्हीं कुत्तों के भाग्य पर छोड़ कर लौट पड़े।

उसने देखा और मुँह फेर लिया। तभी पीछेवाले घर से उसे खड्ड-झन्न की आवाज सुन पड़ी। सोचते देर न लगी कि किसी ने खाना खाकर थाली सरकाई होगी।

तो क्या मनुष्य इतनी रात को भी खाता है? खाने की कल्पना करते ही उसकी भूख और बढ़ गई। साथ ही बढ़ी उसकी विचारधारा भी। अनजाने ही उठकर वह दरवाजे के पास आ गया और आहट लेने लगा। जाने उसके दिल में इस समय कैसा लग रहा था।

दरवाजे से होकर कमरे की सभी आहट उसके कान तक आ रही थी। तभी दरवाजे पर एक धक्का लगा कोई बाहर आया। उसका कलेजा धक् से हो गया। तभी उसने सुना—गृहस्वामी ने पूछा—कौन है?

"बिल्ली थी।" यह स्वामिनी का स्वर था।

फिर सन्नाटा। उसने एक आह भरी। यह बिल्ली थी। और मैं मनुष्य हूँ। ईर्ष्या की ज्वाला ने उसे भस्म कर दिया। धीरे से दरवाजा का एक पल्ला खोल उसने प्रवेश किया। चुपचाप कमरे में जाकर उसने बिजली जलाई। खाने को कुछ न मिला। आलमारी पर एक तश्तरी में कुछ रक्खा था। उसने झपटकर उठा लिया। बचा हुआ भात था। भूल गया वह सब कुछ और खाने लगा। युगों के बाद उसे अनाज का दर्शन हुआ था। फिर अपनी भूख मिटाने में वह क्यों बाज आता?

अन्तिम ग्रास वह मुँह में रखने जा ही रहा था कि उसने सुना। चोर! चोर!!

"क्या?" बाहर से किसी ने पुकारा।

"चोर।" एक भयभीत स्त्री दरवाजे पर खड़ी चीख रही थी। पर उसे तो वह ग्रास भी समाप्त करने की पड़ी थी। दूसरे ही क्षण उसने अपने को लोगों से घिरा पाया। अब तक वह खा चुका था।

एक सज्जन को गृहस्वामी जान कर और उन्हें लक्ष्य करके उसने कहा—"पानी!"

उसे याद था खाने के बाद पानी।

"अच्छा मिलता है बदमाश तुझे पानी। पुलिस बुलाओ।" उसे उत्तर मिला।

वह कुछ समझ न पाया कि उसने कौन-सा ऐसा अपराध किया?

उस दिन पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। चार दिन बाद चोर के रूप में रस्सी से बँधा सिटी मजिस्ट्रेट के सामने उसको बयान देना पड़ा। कितने करुणामय तथा हृदयद्रावक शब्दों में उसने सभी सत्य जज के सामने रक्खा।

दया खाकर जज ने उसे केवल दस मास की कैद की सजा दी।

फिर उसने सोचा आज उसे हो गये—छः मास नव दिन।

सिर में उसके खुजलाहट उठी। ऊबकर उसने सिर हिला दिया। बोझ शायद गिर गया। सो वह अट्टहास कर उठा। हँसने का वह वीभत्स स्वर कोठरी की ईंट-ईंट से प्रतिध्वनित होकर गूँज उठा। उसने सोचा—यहाँ उसे कितना आराम है। यह जेल है। सुबह-शाम उसे थाली भर के भात मिलता है।

हाथ फैला कर उसने दीवालों को टटोला। सब ठीक था! यह जेल है। तभी गुमटी पर से जमादार ने पाँच बजाये। उठकर उसने देखा। उजाला तो हो गया है। झटपट उसने अपना कम्बल गोल कर लिया। ताकि 'सेल' खुलते ही वह सीधे पहुँच जाय नहीं तो अगर कोई साला पहले पाखाना चला गया तो उसे लाइन लगाकर दो घंटे आसरा देखना पड़ेगा और जमादार भी नाक में दम कर लेगा।

इ - स्ला - म
की
सच्ची पूजा किसने की?
यह जानने के लिए पढ़िए।
— इस्लामी —
दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

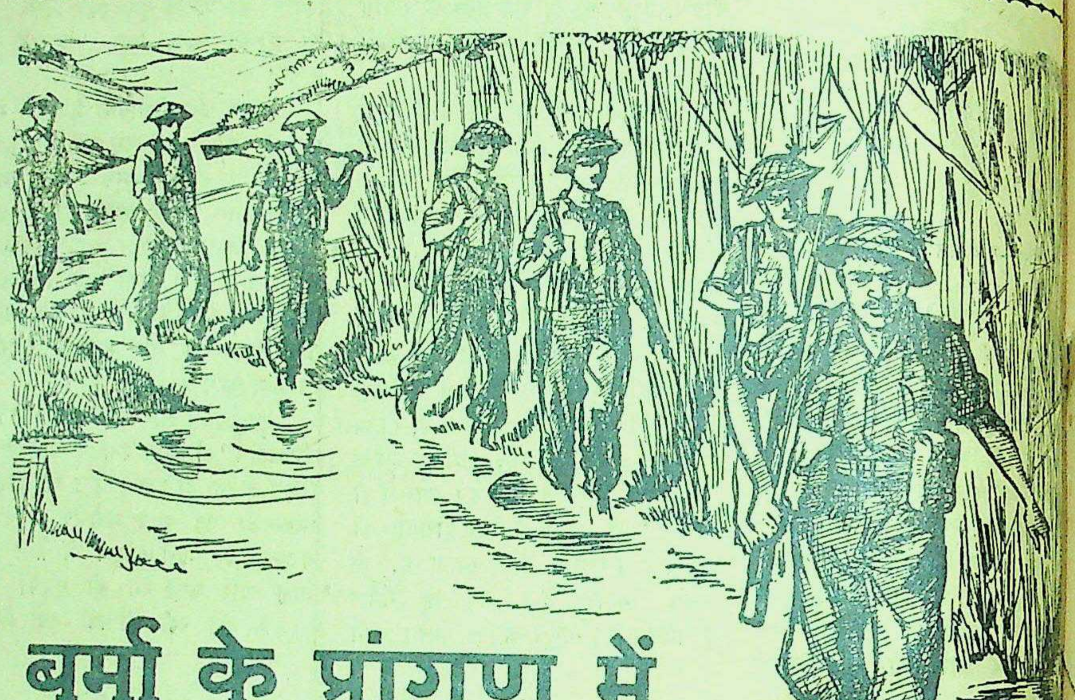

बर्मा के प्रांगण में

सन् १९४४ की गर्मियों में हमारे बहादुर जवान सीमा पर खड़े हुए शत्रु को वीरतापूर्वक रोके रहे। किन्तु जब से अब तक ये जापानियों को धकेलते हुए कहीं आगे बढ़ चुके हैं। हिन्दुस्तानी फ़ौज, संयुक्त राष्ट्रों के अपने साथियों के कन्धे से कन्धा मिला कर, लगातार धावे मारती हुई, जापानी क़िलेबन्दियों को रौंदती चली गई और मध्य तथा पश्चिमी बर्मा में शत्रु को दायें-बायें से घेर कर उसे परास्त कर दिया। हमारे वीर सैनिकों ने ८० हज़ार वर्ग मील से अधिक भूमि अर्थात् देश का लगभग तिहाई भाग शत्रु के अधिकार से मुक्त कर लिया। उसके एक लाख से अधिक सैनिक हताहत हुए, और उसे इरावदी के मैदान में भाग कर शरण लेनी पड़ी।

इस विजय के लिए हमारे सैनिकों को कितना भगीरथ प्रयत्न करना पड़ा, इसका वर्णन समुचित रूप से शब्दों में नहीं हो सकता। हिन्दुस्तान के वीर योद्धा घने पहाड़ी जंगलों और ख़राब मौसम की विपदा का सामना करते हुए, जिनकी कल्पना भी कठिन है, अविचल गति से आगे बढ़ते रहे और अन्त में उन्होंने उस शत्रु को पीछे खदेड़ दिया, जिसका हमारी सीमा के निकट रहना हमारी शान्ति एवम् व्यवस्था के लिए स्थायी संकट का कारण होता। फिर भी जब तक शत्रु पर पूर्ण तथा अन्तिम विजय प्राप्त न हो जाय, हिन्दुस्तान को जापानी आक्रमणकारियों के ख़तरे से पूर्णतया सुरक्षित नहीं समझा जा सकता। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

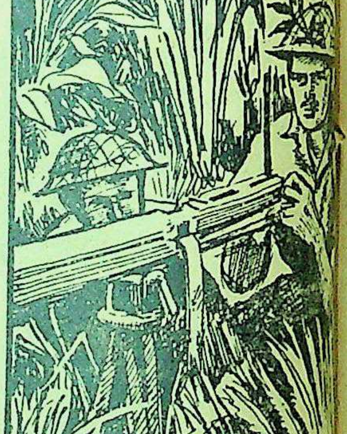

मशीन-गन चलाने वाले जवान दुश्मन की घात में बैठे हैं।

हमारा एक टैंक दुश्मन के मोर्चों पर गोलाबारी कर रहा है और सिख जवान हमले के लिए तुले खड़े हैं।

AAA 102 HINDI

बढ़े चलो

जीत निकट है

—भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

'सम्राट् विक्रमादित्य' फिल्म कैसा होगा ?

प्रसिद्ध निर्देशक श्री विजयभट्ट से एक मनोरंजक इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

विक्रमादित्य का अभिनय करनेवाले पृथ्वीराज

मैंने अपनी बंबई की यात्रा में प्रकाश फिल्म-कम्पनी के सुप्रसिद्ध डायरेक्टर श्रीयुत विजय-भट्ट से भेंट की। उनसे मिलने के लिए मैं "प्रकाश-स्टूडियो" में गया! मेरी श्री विजय भट्ट से विभिन्न विषयों पर, वार्ता हुई। आज यहाँ मैं सिर्फ 'सम्राट् विक्रमादित्य' फिल्म-सम्बन्धी वार्ता का वर्णन करूँगा। आगे किसी दूसरे लेख में संपूर्ण भेंट का विवरण लिखूँगा। उसी समय श्रीयुत विजयभट्ट के प्रभावशाली व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डाला जायगा।

प्रश्न—'रामराज्य' के बाद आप "भगवान् गौतम बुद्ध" बनाने जा रहे थे, लेकिन गौतम बुद्ध को छोड़कर एकाएक सम्राट् विक्रमादित्य के बनाने का आयोजन क्यों कर डाला ?

उत्तर—हाँ, मेरा पहले विचार यही था कि भगवान् गौतम बुद्ध की पवित्र जीवनी फिल्म के रूप में प्रस्तुत करूँ, किन्तु इस चित्र के निर्मित करने में हमारे सामने कुछ कठिनाइयाँ आईं, जिनके हल होने में कुछ समय की जरूरत थी। इसी बीच में बम्बई की "विक्रम-द्वि-सहस्राब्दि कमेटी" ने हमारे सामने सम्राट् विक्रमादित्य के जीवन को फिल्म रूप में प्रस्तुत करने का प्रस्ताव रक्खा। इस प्रस्ताव पर हमने पूर्ण रूप से विचार किया। अन्त में निश्चय किया कि प्रस्ताव को स्वीकार ही किया जाना चाहिए क्योंकि सम्राट् विक्रमादित्य की भारतवर्ष के अमर-विभूतियों में गणना होती है। हजारों वर्ष बीत गये लेकिन उनकी लोक-प्रियता में कोई अंतर नहीं आया। विक्रमादित्य के जीवन को फिल्म में लाने के लिए हमें उनकी लोक-प्रियता और आदर्श ने प्रेरित किया। आज भारत का बच्चा बच्चा उनके नाम से परिचित है। इस महान् उत्तरदायित्व की जिम्मेदारी को लेते हुये हम झिझके जरूर, किन्तु अंत में हमने निश्चय किया कि फिल्म अवश्य बनेगी।

प्रश्न—विक्रमादित्य-सम्बन्धी साहित्य आपको उपलब्ध हुआ या नहीं ? यदि नहीं हुआ तो उसे प्राप्त करने के आप इच्छुक हैं या नहीं ?

उत्तर—विक्रमादित्य-सम्बन्धी साहित्य मुझे "राइल-एशियाटिक सोसाइटी" की लाइब्रेरी से बहुत कुछ मिला है। बम्बई के "प्रिन्स आफ वेल्स म्यूजियम" के अध्यक्ष श्री रणछोड़लाल डॉ० ज्ञानी से भी अमूल्य निधियाँ विक्रमादित्य के जीवन के सम्बन्ध में उपलब्ध हुईं। आपकी सामग्री में ऐतिहासिक तत्वों के आधार पर विक्रमादित्य के जीवन की पृष्ठ-भूमि कलात्मक ढंग से निर्मित की गई है! "रायल एशियाटिक सोसाइटी" की अमूल्य सामग्री में भी बहुत से अभिनव तत्व मिले, जिनके सम्बन्ध में मैंने पहले सोचा भी नहीं था। यह सब सामग्री उपलब्ध होने पर भी मैं और सामग्री प्राप्त करने का इच्छुक हूँ। यदि कोई विद्वान् विक्रमादित्य के जीवन पर कोई नई सम्मति दे सके, तो उसे सहर्ष स्वीकार करूँगा!

प्रश्न—क्या आपने विक्रमादित्य को किंवदन्तियों के साँचे में ढाला है या उनके महान् स्वरूप को ऐतिहासिक तथ्य से निर्मित किया है ?

उत्तर—विक्रमादित्य के जीवन में जितने हम गहरे उतरते गये, उतने ही हम उलझनों में फँसते गये। किन्तु आगे कदम बढ़ा दिया था, फिर पीछे हटना कैसा ? बहुत-से विवादग्रस्त प्रश्न हमारे सामने हैं किन्तु हमने विक्रमादित्य के जीवन की भित्ति को केवल पौराणिक जन-किंवदन्तियों के आधार पर ही निर्मित नहीं किया है। "बेताल-पचीसी" "सिंहासन बत्तीसी" आदि पुस्तकों में कितनी सत्य की मात्रा है कह कहना जरा टेढ़ी खीर है, क्योंकि हमारे सामने कोई ऐसे तर्किक-सिद्धान्त नहीं, जो कि इन पुस्तकों की सचाई प्रमाणित कर सकें। यह भी हम जानते हैं कि ऐसी दन्तकथायें ऐतिहासिक आधार पर ही मुख्यतः गढ़ी जाती हैं, और चूँकि प्रामाणिक ऐतिहासिक ग्रन्थों का अभाव है, इसलिए हमने लाचार होकर अपने मतलब की बात इन दन्तकथाओं से भी ली है। हाँ कथाओं को लेते समय इस बात का पूर्ण ध्यान रक्खा गया है कि जनता के विश्वास की हत्या न हो। इतिहास की भी हमने पूरी रक्षा की है क्योंकि उसकी रक्षा करना तो हमारा प्रिय आदर्श है। उसे हम कैसे भूल सकते हैं ? विक्रमादित्य को हमने पुराणों का केवल "चमत्कारिक पुरुष" नहीं दिखलाया है, और न हमने उनको "विलासी पुरुष" के रूप में चित्रित किया है! विक्रमादित्य के जीवन को हमने कामुकता की गहरी खाई से गिरते हुए बचा लिया है। हालाँकि हमारे सामने कुछ ऐसा भी साहित्य था जिसमें वह "महान् पुरुष" "रसिया पुरुष" पेन्ट किये गये हैं लेकिन ऐसा करना हमारी नीति के विरुद्ध है। हम उनको एक महान् युग-निर्माता व भारतीय हृदय का उज्ज्वल रत्न समझते हैं। हमने उनको कला-प्रेमी, देश-भक्त, निस्वार्थी, साहित्य एवं विज्ञान का प्रेमी चित्रित किया है तथा मालव-प्रजातंत्र का मुख्य प्राण प्रमाणित किया है।

प्रश्न—क्या आप विक्रमादित्य के दरबार के नवरत्नों का अस्तित्व मानते हैं ? आपने फिल्म में इन रत्नों को दिखाया है ? यदि दिखाया है तो किस रूप में ?

उत्तर—हम सब नव-रत्नों को फिल्म में नहीं दिखा सके हैं। नव रत्नों के नाम ये हैं—बेताल, कालिदास, वाराभिहर, क्षपणक, घटखर्पर, शंकु, अमरसिंह, वररुचि और धनवन्तरि। बेताल को अग्न बेताल भी कहते हैं। यह भी एक महान् प्रभावशाली व्यक्तित्व रखता था और विक्रम की सहायता समय समय पर किया करता था। इसके सम्बन्ध में बहुत-सी चमत्कारपूर्ण घटनायें बतलाई जाती हैं, लेकिन कुछ विश्वसनीय घटनाओं को स्थान दिया है। वास्तव में यह पुरुष एक भयंकर आकृति का था, और विक्रम के प्रभाव में आने से पूर्व वह मालव-प्रजातंत्र के नायकों का वध कर चुका था। स्वदेश-प्रेम से इसके हृदय में देशभक्ति कूटकूट कर भरी हुई थी। दुनिया की भलाई के लिये वह अपने जीवन को जोखिम में डाल दिया करता था। किसी भी भयंकर काम से वह पीठ नहीं दिखाता था। यही उसके चरित्र की विशेषता है। ऐसे प्रभावशाली नायक को फिल्म से हम कैसे अलग कर सकते हैं ? कालिदास को भी हमने लिया है क्योंकि इनको छोड़ना ही फिल्म को असफलता के गड्ढे में डालना होता। इस महान् कवि ने अपने काव्य में आश्रयदाता के प्रशंसा के गीत नहीं गाये बल्कि विश्व को शाश्वत एवं अक्षय साहित्य-भण्डार से गौरवान्वित किया है। वह एक विलासी कवि नहीं था, बल्कि नवयुवकों में जोश की लहर प्रज्वलित करनेवाला सच्चा राष्ट्रीय कवि था। चाहे उसकी ऐसी रचनायें न भी मिलें—लेकिन कभी अनुसन्धान करनेवालों को मिलेंगी ही।

कुल नवरत्नों का फिल्म में चित्रण करना असम्भव था इसलिए हमने इन्हीं दोनों को विशेष रूप से लिया है।

प्रश्न—इन प्रश्नों के अलावा जो बात न पूछी गई हो उसे भी क्या आप बतलाने की कृपा करेंगे ?

उत्तर—आपने तो सभी पूछ लिया। अब मेरे पास रह ही क्या गया है ? कुछ विशेषतायें मैं दुहराये देता हूँ, जिससे कि आप उन तत्वों से फिल्म के रूप को ठीक समझ सकें। ईसा से ५७ वर्ष पूर्व विक्रमादित्य पैदा हुआ था। इसी ने महान् विजय के बाद विक्रम संवत् चलाया था, यही राजा मालव याकृत के नाम से पुकारा जाता था। यह राजा महाकाल और हरसिद्ध का उपासक था। पराये दुःखों को अपना दुःख समझना इसका विमल आदर्श था। इसी लिए इसको "पर दुख भंजक" कहा गया है। प्रजा की भलाई-बुराई, दुःख-सुख देखने के लिए वह रात में भेष बदल कर जाया करता था!

प्रश्न—किन किन कलाकारों को इसमें काम दिया गया है ?

उत्तर—इस फिल्म की मुख्य भूमिका में पृथ्वीराज कपूर और रत्नमाला हैं। आर्ट डायरेक्शन मिस्टर कनु देसाई कर रहे हैं और गीत रमेश गुप्त ने लिखे हैं।

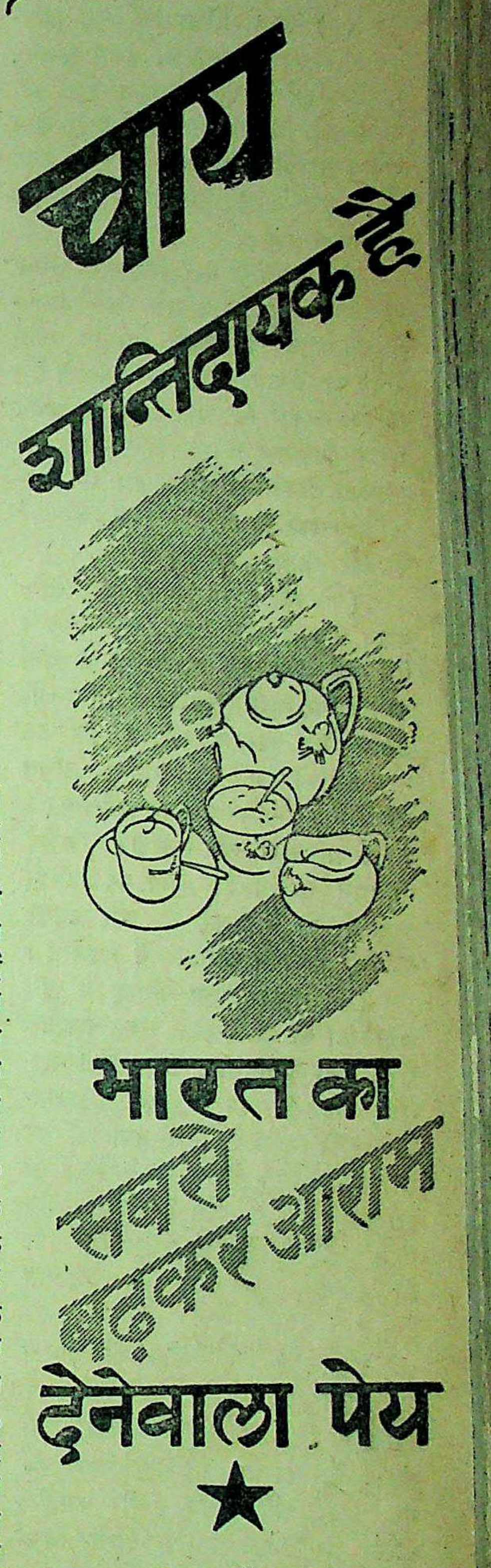
चाय शान्तिदायक है

भारत का सबसे बढ़कर आराम देनेवाला पेय

★

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 19P

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

ह्वाइट लेबुल चाय

LTK 80 V
LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT

संवाददाताओं के पत्र

इन्दौर में होनेवाले राष्ट्रीय महिला-परिषद् के गत २० अप्रैल के खुले अधिवेशन में कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं, उनमें कुछ इस प्रकार हैं—

(१) महिला-परिषद् का यह अधिवेशन राष्ट्रमाता कस्तूरबा, बेगम आजाद, महादेव भाई देसाई, चौथमल जैन, श्री कमलाबाई आगार, देवसुमन एवं अन्य राष्ट्रीय शहीदों के देहावसान पर शोक प्रकट करते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

(२) भारत ही नहीं वरन् सारी दुनिया की शांति और उन्नति के लिए महिला-परिषद् का यह अधिवेशन भारतीय गतिरोध का मिटना आवश्यक समझता है। ब्रिटिश सरकार को चाहिये कि वह अपनी पुरानी अड़ियल साम्राज्यवादी नीति को त्यागकर दुनिया को असली रूप में प्रजातांत्रिक बनाने के लिये हिंदुस्तान को पूर्ण स्वाधीन घोषित कर दे।

(३) महिला-परिषद् का यह अधिवेशन चिमूर और अष्टी तथा भारत के ऐसे ही अन्य सभी राजबन्दियों की फाँसी की सजा पर भारी दुख प्रकट करती है और उसकी यह जोरदार राय है कि इन नौजवानों को फांसी पर चढ़ाना उचित नहीं है। यह सभा यह जोरदार अपील करती है कि अधिकारी और सत्ताधीश, जिनका भी इनसे सम्बन्ध है, फाँसी पर लटकाने के आर्डर को रद्द कर दें और उनकी सजा को आजीवन कारावास में बदल दें।

(४) राष्ट्रीय-महिला परिषद् के इस अधिवेशन को यह देखकर सख्त अफसोस है कि हमारे प्रगतिशील विचारवाले महाराजा साहब के राज्य से कुछ राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं को निर्वासित किया गया है। यह अधिवेशन श्रीमंत और उनकी सरकार का इस ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उम्मीद करता है कि निर्वासन आज्ञाएँ फौरन उठा ली जायँगी।

—संवाददाता

* * *

इन्दौर से २२ अप्रैल को श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय उज्जैन के लिए रवाना हो गईं और वहाँ से उनका इरादा गोहरी जाने का था। श्री चट्टोपाध्याय ता० गत १६ अप्रैल को इन्दौर आईं। स्टेशन पर उनका शानदार स्वागत किया गया और जुलूस निकाला गया। तारीख १६ व २० की शाम को राष्ट्रीय महिला-परिषद् का खुला अधिवेशन हुआ जिसमें परदा, दहेज-प्रथा, स्त्री-शिक्षा, नागरिक स्वाधीनता इत्यादि पर प्रस्ताव पास हुए। श्री कमलादेवी ने सेनफ्रांसिस्को और कांग्रेस तथा देश की वर्तमान परिस्थिति पर भाषण दिये। स्थानीय विद्यार्थी-संघ, प्रजा-मण्डल, महिला-सभा इत्यादि ने भी श्री कमलादेवी को निमंत्रित करके उनका स्वागत किया। श्री कमलादेवी भूतपूर्व महारानी इन्दिरा साहब से भी मिलीं।

—नन्दलाल व्यास

* * *

ग्वालियर के पं० पन्नालाल जी द्विवेदी का जमारोग्य अस्पताल में दो वर्ष की बीमारी के पश्चात् गत १८ अप्रैल को स्वर्गवास हो गया। पुस्तकालय आदि सार्वजनिक संस्थायें उनके सम्मान में बन्द रहीं और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थनायें की गईं। उनके निवास-स्थान दिनारा के इलाके में बाजार बन्द रहा। आप गत ४० वर्ष से अपने क्षेत्र के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन का नेतृत्व करते आ रहे थे और अनेक लोक-संग्रहकारी संस्थाओं के जन्मदाता थे। आप पत्नी, दो पुत्रियाँ तथा सात पुत्र अपने पीछे छोड़ गये हैं, जिनमें ग्वालियर के प्रसिद्ध साहित्यकार पं० हरिहरनिवास द्विवेदी तथा 'लोकजीवन' के सम्पादक शान्तिचन्द्र द्विवेदी उल्लेखनीय हैं। अन्तिम आकांक्षा के अनुसार आपकी अस्थियाँ हिमालय के पास गंगा में तथा शेष भस्म दिनारा में वीर-सरोवर में विसर्जित किया गया।

—संवाददाता

* * *

श्रीनगर (काश्मीर) में अखिल भारतीय शिशु-संसार की दूसरी बैठक में निश्चय हुआ कि आगामी २५ मई को विराट् शिशु-सम्मेलन बुलाया जाये। बालकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रकाण्ड विद्वान् बुलाये जायँगे। तीन पुरस्कार कविताओं पर, तीन कहानियों पर और तीन मौलिक चुटकुलों पर दिये जाने का निश्चय हुआ है। प्रत्येक शिशु से प्रार्थना है कि वह अपनी रचनायें ७ मई तक निम्न पते पर भेज दें। पता—मन्त्री, अ० भा० शिशु-संसार कार्यालय, करलखुद, हला-खुदाल, श्रीनगर (काश्मीर)। इसी पते से पूरा विवरण भी मँगाया जा सकता है।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग में होनेवाले संयुक्तप्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से कानपुर के श्री जगदम्बाप्रसाद मिश्र "हितैषी" को रेडियो भाषा-सुधार के आन्दोलन को संचालित करने का पूर्णाधिकार देकर संयुक्त प्रान्त का डिक्टेटर बनाया था। अतः प्रत्येक जनपद अर्थात् साहित्यिक सज्जनों, संस्थाओं एवं प्रांतीय सम्मेलन के सदस्यों से अनुरोध है कि वह अपने स्थानों में शीघ्रातिशीघ्र कार्य-संचालानार्थ प्रान्त के डिक्टेटर महाशय (जैनकुमार बिल्डिङ्ग, लोहाई कानपुर) से अपना सम्पर्क स्थापित करें जिससे संगठित एवं सुचारु रूप से यह आन्दोलन अधिक तीव्र गति से चलाया जा सके।

—मन्त्री

* * *

प्रयाग पँड़िला महादेव में श्री पां... वेश्वरनाथ के दर्शन-पूजन के निमित्त विभिन्न स्थानों से आये हुए सनातनधर्मियों की एक सभा अधिक चैत्र कृष्ण एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी को हुई, जिसमें हिन्दू-कोड का तीव्र प्रतिवाद किया गया और सरकार से प्रार्थना की गई कि हिन्दू कानून में इस प्रकार के अनीतिमूलक परिवर्तन कदापि न किये जायँ। सभा में पं० सीताराम पाठक व्याकरणाचार्य, पं० केदारनाथ तिवारी, पं० हनुमद्दत्त तिवारी, पं० भगवतीप्रसाद शुक्ल वकील, पं० ठाकुरदत्त मिश्र तथा अन्य कई व्यक्तियों ने भाषण किया।

—ठाकुरदत्त मिश्र

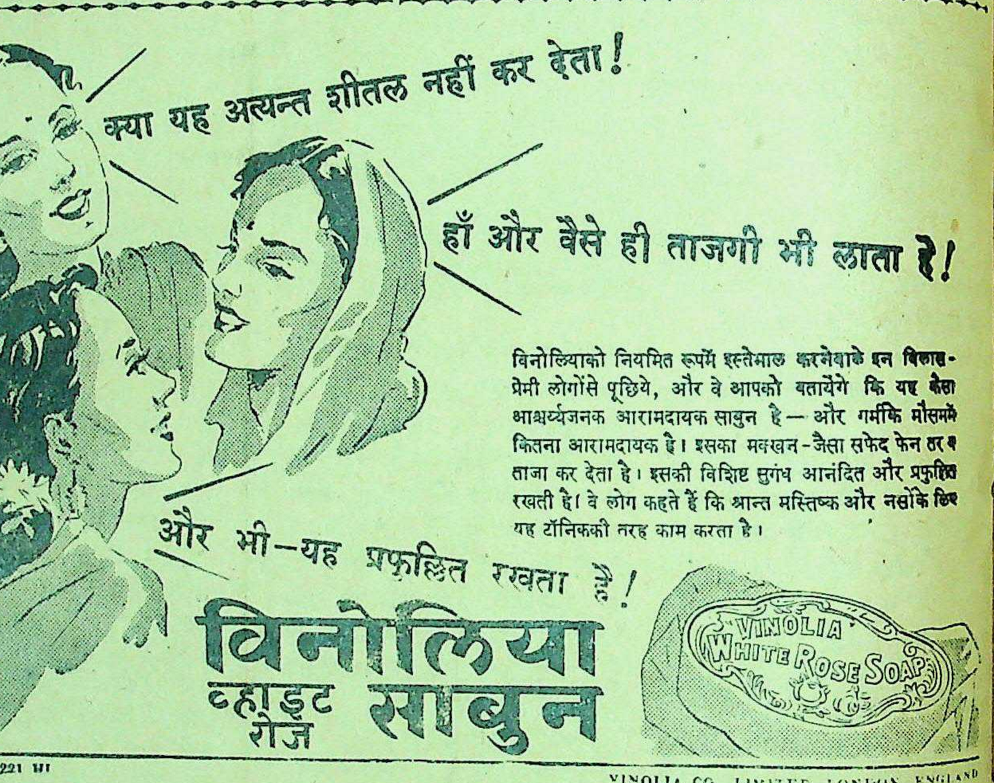

क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!

हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्यजनक आरामदायक साबुन है— और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन तर व ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 18-221 HI

VINOLIA CO. LIMITED LONDON ENGLAND

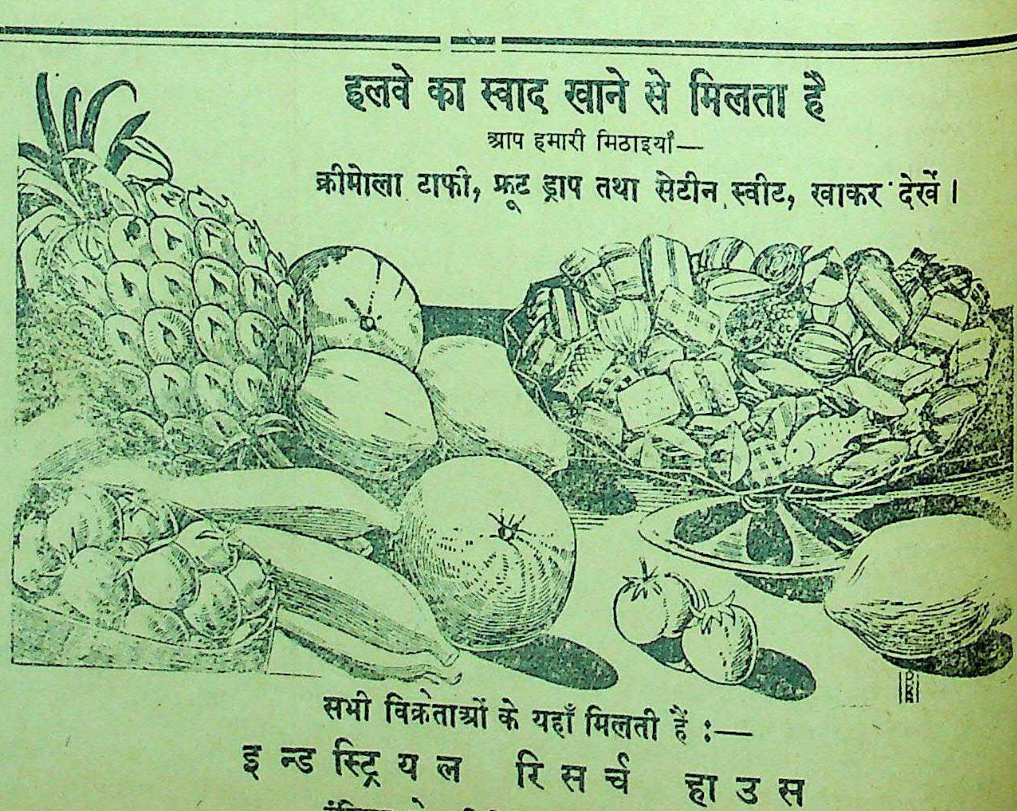

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

सम्पादक के नाम चिट्ठियाँ

बाँदा कवि-सम्मेलन

(श्री सम्पादक 'देशदूत')

गत १५ अप्रैल सन् १९४५ के 'देशदूत' में प्रकाशित बाँदा के श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० ए० एल-एल० बी० का "कवि-सम्मेलन और कवियों की मनोवृत्ति" शीर्षक पत्र मैंने पढ़ा। उन्होंने लिखा है कि उन्नाव में १८ और १९ फरवरी सन् १९४५ को कवि-सम्मेलन हुआ और उसकी संयोजिका श्री सुमित्राकुमारी सिनहा थीं। उन्नाव के कवि-सम्मेलन में मैं भी सम्मिलित था। इस नाते मुझे अधिकार है कि मैं राजाराम जी का भ्रम दूर करके स्थिति को स्पष्ट कर दूँ।

उन्नाव का कवि-सम्मेलन केवल १८ फरवरी ४५ को ही हुआ और उसके संयोजक पं० प्रेमशंकर शुक्ल असिस्टेन्ट टाउन राशनिंग आफिसर थे। सुमित्रा जी के बाँदा कवि-सम्मेलन में भाग न लेने की जो बात है उसकी वास्तविकता मैं जानता हूँ। मैं उस वक्त सुमित्रा जी के निवास-स्थान युग-मन्दिर में ही उपस्थित था और इस सम्बन्ध में जो चर्चा हुई उसे पूरी तरह मैंने सुनी।

उन्नाव कवि-सम्मेलन में जितने कवि आए थे, उनमें से कुछ कवि युग-मन्दिर में ही ठहरे थे जो कि स्वाभाविक था। १८ ता० को डा० आनन्द भी (झाँसी की रानी महाकाव्य के रचयिता) वहीं आए थे। बाँदा के कवि-सम्मेलन के सम्बन्ध में वार्ता हुई। उन्होंने सुमित्राकुमारी से प्रश्न किया कि क्या आप बाँदा कवि-सम्मेलन में भाग ले रही हैं? पत्रों से ज्ञात हुआ है कि उसमें श्रीमती चन्द्रमुखी ओझा 'सुधा' भी सम्मिलित हो रही हैं।"

सुमित्रा जी ने उत्तर में कहा कि यदि ऐसी बात है तो मैं बाँदा कदापि नहीं जाऊँगी। बाँदा की बात तो दूर है, यदि उन्नाव के ही कवि-सम्मेलन में डा० रमाशंकर शुक्ल रसाल जी सम्मिलित हुए, क्योंकि उनको भी हमारे संयोजक महोदय ने आमंत्रित किया है, तो मैं इसमें भी सम्मिलित नहीं होऊँगी। क्योंकि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की सदस्या होने के नाते मेरा कर्त्तव्य है कि रेडियो बहिष्कार-सम्बन्धी आन्दोलन को संगठित तथा दृढ़ बनाने के लिए रेडियो के अतिरिक्त उन कवियों तथा लेखकों का भी बहिष्कार करूँ जो अब भी अपना सहयोग रेडियो को दे रहे हैं।

उन्नाव कवि-सम्मेलन में सम्मिलित होनेवाले तीन कवि—श्री रंग जी एटा, श्री रमई काका लखनऊ, श्री दीक्षित जी, उरई भी सुमित्रा जी के यहाँ थे और वहीं से बाँदा के लिए रवाना हुए। उन्होंने चलते समय सुमित्रा जी से फिर पूछा कि क्या आपने बाँदा-कवि-सम्मेलन में सम्मिलित न होने का दृढ़ निश्चय कर लिया है? फिर भी उन्होंने उत्तर दिया कि बाँदा जैसे साहित्य-प्रेमियों के स्थान पर कवि-सम्मेलन हो और मैं उसमें सम्मिलित न होऊँ इसका मुझे दुःख है, लेकिन जहाँ सिद्धान्त की बात हो वहाँ मैं विवश हूँ। यदि मैं अनजाने वहाँ चली भी जाती तो सुधा जी की उपस्थिति में कविता पाठ करती। यह तो अच्छा हुआ कि यहीं पर पता चल गया।

जहाँ तक मुझे स्मरण है सुमित्रा जी ने यह भी कहा था कि मैंने बाँदावालों को अभी-अभी पत्र भी लिख दिया है।

इसके पश्चात् हम लोग अर्थात् डा० आनन्द जी, सुमंगला कुमारी जी, देवेन्द्र-नाथ शास्त्री जी कानपुर कवि-सम्मेलन से लौटे हुए श्री पराग जी और सुमित्रा जी एक साथ ही सिधौली कवि-सम्मेलन के लिए चले गये। लखनऊ में शिशु जी, निशंक जी, सरोज जी, अरुणेश जी, गिरीश जी, शम्भुनाथसिंह जी आदि कविगण मिल गये और सब लोगों ने २१-२२ फ़रवीर को श्री वंशीधर जी शुक्ल के संयोजकत्व में होनेवाले सिधौली कवि-सम्मेलन में भाग लिया।

आशा है मेरे इस निर्विवाद कथन से श्री राजाराम जी के सम्मुख वस्तु-स्थिति की सत्यता स्पष्ट हो गई होगी।

दतिया, २० अप्रैल —नवीबख्श 'फलक'

* * *

क्या रावल जी सी० आई० डी० हैं?

नागौर (मारवाड़) में हुए जिला राज-नीतिक सम्मेलन के अवसर पर बीकानेर से आये हुए एक पत्रकार श्री तारानाथ जी रावल के साथ वहाँ की स्वागत-समिति का जो अशिष्टतापूर्ण व्यवहार हुआ उसपर मुझे कुछ कहना है। राजस्थान के एक पुराने पत्रकार श्री रावल जी के साथ नागौर में जो बर्ताव किया गया वह सचमुच शिष्टाचार से शून्य था। इस बर्ताव का कारण उनके लिए सी० आई० डी० होने का भ्रम था। पर जब इस अफवाह पर गुप्त रूप से सत्य बात खोजी गई तो मैंने ऐसी कोई बात रावल जी के लिए नहीं पाई। हां इन्हें एक स्वतंत्र विचारों का व्यक्ति अवश्य पाया। मैं समझता हूँ कि इनका विचार-वैषम्य ही संभवतः इन्हें अकारण सी० आई० डी० मान लेने का या इस नाम पर बदनाम करनेवालों का कारण या आधार बना हुआ है।

कुछ भी हो रावल जी के एक पत्रकार होने के कई प्रमाण हैं। कई पत्रों के वे आज भी संवाददाता हैं और कई समाचार-पत्रों से उनका सम्पर्क है और इसी नाम से उन्हें पहिचाना भी जाता रहा है। वैसे सी० आई० डी० और पत्रकार या संवाद-दाता के गुण परस्पर मिलते जुलते होते ही हैं। रावल जी देश-प्रेम के फलस्वरूप सन् २१ में जेल भी हो आये हैं। रावल जी कोई नये व्यक्ति नहीं थे। स्वयं जय-नारायण जी व्यास व कन्हैयालाल जी वैद्य और स्वागत मंत्री आदि उनके पुराने परिचित थे। मैं सार्वजनिक समारोह करने-वालों से निवेदन करूँगा कि वे समारोह में आये हुए व्यक्तियों से सम्मानपूर्ण और शिष्टाचारयुक्त बर्ताव करें।

पत्रकार सम्मेलन —मनिमल जैन, मंत्री
राजपूताना

* * *

गोरक्षा के प्रतिज्ञापत्र

यह मानी हुई बात है कि गोवध के राष्ट्रीय पाप को भारत में कायम रखने में जितना हाथ गो-घातकों का है, उससे कहीं अधिक लगाव, गोरक्षा का दम भरनेवाले खास खास हिन्दुओं का है। किसी भी मेले या पशुओं के बाजार में जाकर देखिये, जहाँ सौ में नब्बे हिन्दू होंगे, जो कसाइयों के हाथों अपने पशु बेंचते हुए मिलेंगे। कसाइयों के दलालों में भी बड़ी संख्या हिन्दुओं की देखी गई है। अब तो ब्राह्मण क्षत्रिय तक इस घृणित पेशे को करने लगे हैं। इस घातक बुराई को दूर करने का सफल तरीका है हिन्दूमात्र को सफल गोरक्षा के लिये प्रतिज्ञाबद्ध करना। इस योजना को देशव्यापी बनाने के लिये संस्था ने अपने व्यय से सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिये गोरक्षा के महत्त्वपूर्ण प्रतिज्ञापत्र बड़ी तादाद में छपाये हैं। जो गो-प्रेमी इन्हें भरना या भराने का काम करना चाहते हैं वे निम्न पते से बिना मूल्य मँगा लेवें।

लखनादौन, —शोभाराम धेनुसेवक
मध्यप्रांत गोरक्षा प्रचार विभाग

* * *

क्या अर्द्धकुम्भी मेले में सभा ने हिन्दी का प्रचार किया?

अखबारों में छपा यह समाचार बिल-कुल फर्जी है कि 'हरिद्वार अर्द्धकुम्भी मेले पर काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने हिन्दी का सफल प्रचार किया।' न सफल, न निष्फल, प्रचार जैसी कोई चीज सभा की ओर से यहाँ नहीं हुई। किसी का एक दिन भी, क्षण भर के लिए भी कोई भाषण आदि नहीं हुआ, न कभी किसी ने कुछ सुना। हाँ, सभा की ओर से कुछ कार्यकर्ता यहाँ आये अवश्य थे। एक शामियाना भी लगा था और रहने के लिए तम्बू आदि भी लगे थे। मेले भर वे सब बराबर रहे भी; पर प्रचार का नाम नहीं। यह पंक्तियाँ प्रत्यक्षदर्शी की हैं। सभा के अन्य सदस्य यदि चाहें तो जाँच कर सकते हैं। पं० नरदेव शास्त्री (म० वि० ज्वालापुर) महन्त शान्तानन्द जी तथा पं० किशोरीदास वाजपेयी आदि किसी भी हिन्दी-प्रेमी से पूछा जा सकता है। पं० नरदेव शास्त्री का कैम्प तो सभावालों के पास ही था।

२५ अप्रैल ४५ —एक हरद्वारी

* * *

उदयपुर सम्मेलन का सभापतित्व

इस वर्ष उदयपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन होने जा रहा है। उदयपुर में होनेवाले अधिवेशन के लिये किसी साहित्यिक को ही सभापति बनाना चाहिये। मैं प्रत्येक पदों के लिये दो दो नाम लिख रहा हूँ, जो मेरी समझ से उचित हैं। विद्वानों के विचारों का मैं सहर्ष स्वागत करूँगा, यदि वे इस संबन्ध में कुछ लिखेंगे।

अधिवेशन सभापति आचार्य पं० केशवप्रसाद जी मिश्र (अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, का० हि० वि०) सभापति साहित्य-परिषद्-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी (शान्तिनिकेतन) प्रो० पंडित विश्वनाथ-प्रसाद मिश्र, एम० ए०। राष्ट्रभाषा परिषद्—डा० ब्रजमोहन (काशी विश्वविद्यालय) डा० सुनीतिकुमार चटुर्ज्या। दर्शन-परिषद् के—डा० भीखनलाल आत्रेय (का० हि० वि०) श्री संपूर्णानन्द।

दुर्गाकुंड, बनारस ठाकुरप्रसाद वर्मा

डायल ट्यूनिङ्ग

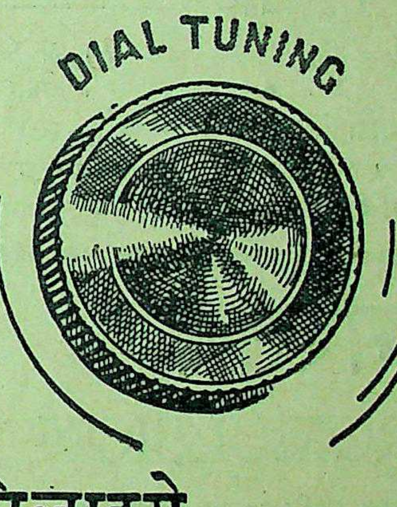

राग मिलाइये

एक बहुत ही सुकुमार और संवेदनशील रेडियो यन्त्र तभी तक सुचारु रूप से कार्य करता है जब तक उसके यन्त्र ठीक ठीक कसे रहते हैं। उसी प्रकार सुकुमार मानुषी पेट ऐसे अंगों को भी ठीक रूप से संचालित रखने के लिये उनके सूक्ष्म तन्तुओं का सामञ्जस्य रखना आवश्यकीय है। शारीरिक व्याधि के प्रथम लक्षण मेदे की अव्यवस्था से ही आरम्भ होते हैं। वह मनुष्य जो स्वस्थ जीवन व्यतीत करना चाहता है उसे अपने पेट की ओर पूर्ण स्वस्थ रखने के लिये ध्यान रखना चाहिये। अगर आपके पेट में कोई अव्यवस्था दृष्टिगोचर हो रही है तो उसे तुरन्त ही 'कैम्फिट' द्वारा जो पेट की सम्पूर्ण व्याधियों की अचूक औषधि है, ठीक कीजिये।

STOMACH REGULATOR

कैम्फिट

पी० एम० बागची एण्ड कं०, कलकत्ता द्वारा निर्मित

इधर उधर की

अंधे चलेंगे, बहरे सुनेंगे

दिल्ली रेडियो तथा टाकी मर्चेन्ट एसोसियेशन के अध्यक्ष एस० सुन्दरा ने अमेरिका की विभिन्न रेडियो की फैक्टरियों का निरीक्षण करने के बाद यहाँ आने पर बताया कि अमेरिका में प्लास्टर तथा बिजली के परीक्षण हो चुके हैं और विज्ञान अब एक नया चमत्कार दिखलानेवाला है। वह समय बहुत शीघ्र आनेवाला है जब कि अन्धे बिना किसी अन्य व्यक्ति की सहायता के चलते-फिरते नजर आयेंगे और बहरे अच्छी प्रकार सुन सकेंगे।

* * *

मछली की तरह लड़की

आगरा के तोता का तालाब मुहल्ले में गत २३ अप्रैल के दिन एक अछूत स्त्री के गर्भ से मछली के आकार की पुत्री उत्पन्न हुई। वह लगभग ३॥ घंटे तक छटपटा कर मर गई।

* * *

बुढ़िया कैसे मरी ?

प्रेमनगर थाना सीसामऊ से एक बुढ़िया के मर जाने की खबर मिली है। किस्सा बड़ा खेदजनक बताया जाता है। कहते हैं बुढ़िया का अपनी बहू से झगड़ा रहता था। इससे वह ऊब गई। जब लड़का और बहू दवा लेने बाहर चले गये तो बुढ़िया ने अपने कपड़ों में मिट्टी का तेल डालकर आग लगा ली। इससे जलकर वह तुरन्त ही मर गई।

* * *

समुद्र का पानी मीठा हो गया

एक स्वीडनवासी ५ वर्ष जापान में रहने के बाद यहाँ पहुँचा है उसने बतलाया कि जापान और फारमूसा के बीच के चीन सागर में अमेरिकन पनडुब्बियों ने चीनी से भरे हुए इतने जापानी जहाज डुबाये हैं कि वहाँ के समुद्र का पानी ही मीठा हो गया है।

सप्रू कमेटी और देशी राज्य

(पेज ८ का शेष)

नीतिज्ञों के समान कर्नल टाड की नियुक्ति भी इसी काम पर की गई थी। उन्होंने राजस्थान का इतिहास इसी दृष्टिकोण से लिखा। इसी दृष्टिकोण से इस महाप्रदेश के स्वतन्त्र अस्तित्व और पृथक् सत्ता को तहस-नहस करने के लिए उसकी इस बुरी तरह से काट-छाँट की गई है कि उसके निवासियों में एक प्रान्त के निवासी होने की कोई भी भावना शेष न रही। पंजाब, नाभा, आन्ध्र तथा अन्य प्रान्तों एवं राज्यों में उसके अनेक हिस्से मिला दिये गये। उसके भीतर दो दर्जन से भी अधिक देशी राज्य कायम करके अजमेर-मारवाड़ा के नाम से चीफ कमिश्नर का अलग एक छोटा-सा सूबा बना दिया गया। इस्तमुरारदारों, माफीदारों और ठिकानों की संख्या तो सैकड़ों तक पहुँच गई है। इस प्रकार छिन्न-भिन्न हुए इस एक महाप्रदेश के भीतर भिन्न भिन्न प्रान्तों की-सी स्थिति पैदा हो गई है।

बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, उदयपुर, भरतपुर, जयपुर, अलवर और कोटा आदि अलग अलग प्रान्त ही बन गये हैं। इन राज्यों की आम जनता का तो कहना ही क्या है, यहाँ के जन आन्दोलनों के संचालक, प्रजा-मंडलों के जननायक और यहाँ से बाहर जाकर अन्य प्रान्तों में बस जानेवाले विचारशील लोगों तक में इस महाप्रदेश के प्रति स्वतन्त्र एवं पृथक् प्रान्त की कोई भावना शेष नहीं रही है। वे भारत की एक ओर अखंड राष्ट्रीयता का दावा करते हुए भी अपने प्रान्त के स्वतन्त्र अस्तित्व, पृथक् सत्ता और अखंड स्वरूप की कभी कल्पना तक नहीं करते। इसी से प्रकट है कि महान् शक्ति-सम्पन्न इस म प्रदेश की उत्कृष्ट राष्ट्रीयता को छिन्न करने में अँगरेज राजनीतिक कितने हुये हैं, सप्रू-कमेटी ने इस ओर ध्यान दिया और देशी राज्यों की गुलामी की त्यों बनी रहेगी।

ए. एन. एस की नर्स मरहम-पट्टी के

कष्ट-निवारण वास्तविक युद्ध-कार्य — दया का दान दीजिए

युद्ध-काल में महिलाओं के लिए जितने कार्य हैं, उनमें से नर्सिङ्ग (तीमारदारी) का काम सबसे अधिक आदरणीय तथा महत्त्वपूर्ण है। जो महिलायें आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए० एन० एस०) की वर्दी धारण करती हैं वे वास्तव में दया की मूर्ति हैं। अपनी परोपकारी वृत्ति पर उन्हें आत्म-सन्तोष का आनन्द प्राप्त होता है। आपके लिए यह बड़ा ही योग्य कार्य है।

युद्ध के पश्चात् ए० एन० एस० की नौकरी छोड़ते समय आप सम्मानपूर्ण एवम् स्वतंत्र जीवन-वृत्ति के लिए अपने आपको बहुत योग्य पायेंगी, क्योंकि ए० एन० एस० में प्रत्येक दृष्टि से बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी जाती है। इसके अतिरिक्त आप चिकित्सा-कार्य का जो अनुभव प्राप्त करलेंगी वह आपकी गृहस्थी तथा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में आपके बहुत काम आयेगा। अभी भरती हो जाइए!

पूरे विवरण के लिए आज ही अपने क्षेत्र की लेडी सुपरिण्टेण्डेण्ट, सेण्ट जान एम्बुलेन्स अथवा डाइरेक्टर जनरल, इण्डियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली को लिखिए।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है:—(१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक। (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१३५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १८ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही ड्यूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

a·n·s

आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस

महिलाओं के लिए सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

पेट्रोमल्सन

PETROMULSION

कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफासफाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण

तथा

पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल

PETROMULSION WITH GUAIACOL

* खाँसी
* ब्रांकाइटिस
* जुकाम
* निमोनिया
* यक्ष्मा
* पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि

तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है

यदि आपके औषधि विक्रताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें:—

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

हास परिहास

भंग की तरङ्ग

एक अँगरेजी अखबार का कहना है कि विंडसर के ड्यूक (हमारे पुराने आठवें एडवर्ड) भारत के वायसराय होकर आने वाले हैं। यदि यह ठीक है तो और चाहे जो हो या न हो, प्रेमियों का समादर बहुत बढ़ जायेगा।

* * *

कहा जाता है कि लार्ड वैवेल की बात मिस्टर अमरी नहीं मान रहे हैं। मानना भी नहीं चाहिए। भारत के लिए दूसरा वायसराय मिल सकता है किन्तु इँगलैंड के लिए दूसरा भारत मिलना असम्भव है। वैवेल की बात मानकर क्या इँगलैंड भारत को खो दे? खूब रही!

* * *

चर्चिल साहब ने पहले ही कहा था कि मैं ब्रिटिश साम्राज्य के विनाश के लिए प्रधान मंत्री नहीं बना हूँ। इससे जान पड़ता है कि वे वचन के पक्के निकले। उनके समय में ब्रिटिश साम्राज्य को और सुदृढ़ बनना ही चाहिये। हम तो कहेंगे कि यह दिखाऊ कौंसलें इत्यादि जो हैं उन्हें भी तोड़ देना चाहिए।

* * *

लोगों ने कहा है कि मुस्लिम लीग में हमारा भरोसा नहीं है। हमारा पृथक् निर्वाचन होना चाहिए। जान पड़ता है पाकिस्तान के बीच में और भी कई छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्य बनेंगे। शियों का, मोमिनों का, अहरारों का, खाकसारों का, अनसारों का, क्योंकि इनका किसी का विश्वास लीग पर नहीं है। आखिर बात क्या हुई?

* * *

जनानी गाड़ी में दो सैनिक भी यात्रा कर रहे थे इसलिए इंदिरा गांधी को जगह नहीं मिली। जैसे स्त्रियाँ मरदानी बन जाती हैं वैसे ही यह सैनिक भी जनाने बन गये होंगे? इसीलिए शायद उन्हें रेलवे कर्मचारियों ने जनाने डिब्बे में यात्रा करने से नहीं रोका?

* * *

सर मुदालियर ने अमेरिका में कहा कि महात्मा गांधी ने जैसे हम लोगों के विरोध में कहा है, वैसे हम भी कह सकते हैं कि महात्मा गांधी तथा कांग्रेस जापानियों की तरफ है। अभी तक तो संदेह ही था, अब ठीक जान पड़ता है कि अमरी साहब के कितने मुख हैं जिनके द्वारा वे बोला करते हैं।

* * *

लखनऊ में महिला-विश्वविद्यालय स्थापित करने की योजना बन रही है। सेठ रामकृष्ण डालमियाँ से इसके लिए एक लाख रुपया मिलने की सम्भावना है। आशा है कि इस विश्व-विद्यालय के वाइस चांसलर सुकवि दुलारेलाल बनाये जायँगे।

* * *

खबर है कि युद्ध के बाद भारत में मोटरकारें बनने लगेंगी। इसकी क्या आवश्यकता है? हमारा तो प्रस्ताव है कि बैलगाड़ियाँ और ठेले भी लन्दन के किसी कारखाने से बनकर आयें तो सुन्दर और बढ़िया होंगे। वहाँ के ऐसे विद्वान् इंजीनियर और कुशल कारीगर भारत में कहाँ मिल सकते हैं?

* * *

पंडित श्यामनारायण पांडेय जो पत्नी-वियोग में कहीं कविता नहीं पढ़ते थे, फिर से विवाह कर लिया है। क्योंकि नया महाकाव्य जो वे लिख रहे हैं उसमें एक पत्नी की आवश्यकता जान पड़ी है।

इँगलिस्तान देखेंगे

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

तमाशा डट के खाने का तो अब मेहमान देखेंगे,
जो खाने के लिये दूकान ही दूकान देखेंगे।
वह बहकाते ही रहते हैं मगर उन पर ही मरता हूँ,
न मुझ सा आप दुनिया में कोई नादान देखेंगे।
न काशी से रहा मतलब, न काबे से गरज अब है,
हरएक के दिल में ख्वाहिश है कि इँगलिस्तान देखेंगे।
फटी-सी एक धोती और गेहूँ पाँच-दस तोले,
मेरे घर आप दो दिन में यही सामान देखेंगे।
उठाकर मुँह से परदा कहते हैं किस शान से मुझसे,
इधर देखो, तुम्हारा आज हम ईमान देखेंगे।
वह करके आपरेशन मेरे दिल का यों लगे कहने,
छिपा रखा है दिल में कौन सा अरमान देखेंगे।
समझ लेंगे हुआ दरशन हमें भगवान का 'बेढब',
अगर सपने में कपड़े का हम आधा थान देखेंगे।

विजयोत्सव में प्रायः भारत के प्रत्येक नगर में कवि-सम्मेलन का आयोजन हो रहा है। यदि इस युद्ध में व्यापारी लोग करोड़पति हो गये तो युद्ध की समाप्ति पर कवि लोग हजारपति तो हो ही जायँगे। सबको अपना अपना बटुआ संभाल रखना चाहिए।

* * *

उदयपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लिए अभी से आन्दोलन हो रहा है। कितना भी आन्दोलन हो, सम्मेलन सम्मेलन ही रहेगा। सम्मेलन के अधिवेशन से मतलब है चुनाव से। चुनाव के समय काशी जंक्शन रहना चाहिए और तो सब होता ही रहता है।

* * *

स्वर्गीय प्रेमचन्द के सुपुत्र श्री अमृतराय का शुभ-विवाह कवियित्री सुभद्राकुमारी चौहान की पुत्री सुधा चौहान से हो गया। अमृत और सुधा का यह सुन्दर मिलन है। —अगड़धत्त शर्मा

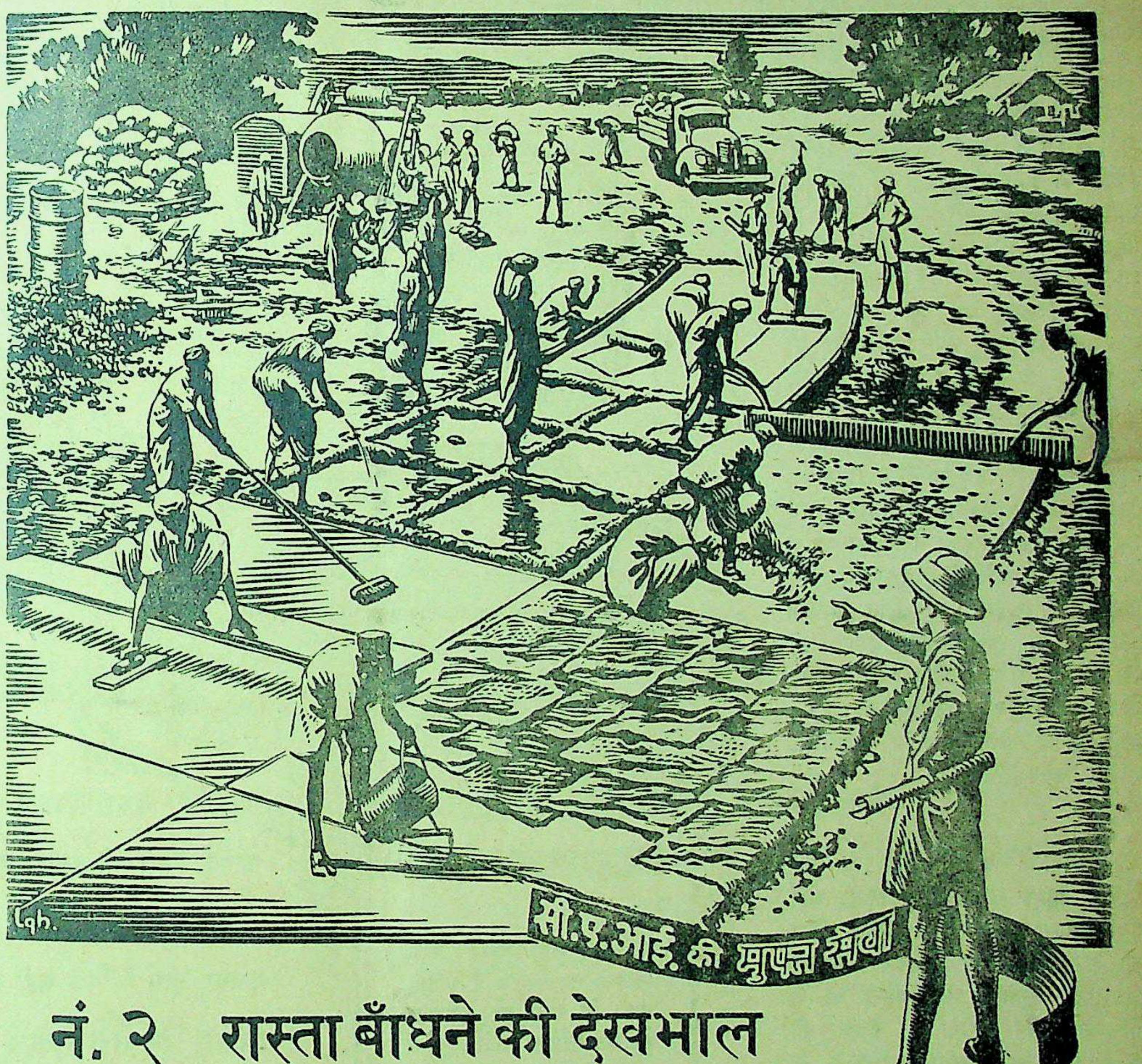

नं. २ रास्ता बाँधने की देखभाल

सन १९२७ में सीमेंट कॉंक्रिट एसोशिएशन का आविष्कार होने से इस ने सीमेंट व कॉंक्रिट का इस्तेमाल करनेवालों की अधिक से अधिक सेवा बजाई है। सत्रह साल की इस की हयाती में इस के एंजिनियरों और सुपरवाइझरों ने मुफ्त की टेकनीकल सलाह दी है और हिन्दुस्तान की सैकडों सड़कों के बांधकामों की देखभाल की है। इस का टेकनीकल स्टाफ़ युद्ध के ऐन मौक़ेपर शहरी और लश्करी अधिकारियों को सेवा देने तैयार है। संभवित है उन की सेवा युद्ध के बाद भी रास्तों के बांधकामों के लिये हो सकेगी।

मुफ्त सेवा के विस्तृत वर्णन के लिये बिलकुल नया आलबम ७०, क्वीन्सवे, नई देहली से मंगाइये जिस में सड़कों के बांधकामों के लिये सूचनायें दी गयी हैं।

सी.एम.आय. हिन्दुस्तानी ए.सी.सी. सिमेन्टस

दि कांक्रिट एसोशीएशन आफ इन्डिया दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि. का टेकनीकल आरगेनाइझेशन

CM. 4—Hindi.

समालोचना

सारस्वत खत्री पाठशाला हाई स्कूल रजत-जयंती विशेषांक। संपादक—श्री रामाज्ञा द्विवेदी "समीर", एम० ए० (आनर्स), मूल्य ॥।), पृष्ठ संख्या ६०।

प्रयाग की खत्री-पाठशाला के २५ वर्ष के जीवन संपूर्ण करने के उपलक्ष्य में यह विशेषांक प्रकाशित हुआ है। इसमें अनेक महानुभावों के चित्र, शुभ सन्देश अँगरेजी तथा हिन्दी में दिये गये हैं और कई सुंदर कवितायें तथा लेख हैं। पाठशाला को शीघ्र ही कालेज बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है जिसके लिए हम "समीर" जी को बधाई देना चाहते हैं। हमने सुना है कि इस संस्था की प्रबन्धकारिणी में परिवर्तन हुआ है और इसमें प्रयाग के रईस लाला मनमोहनदास (बच्चा जी) आ गये हैं। हमें बच्चा जी से बहुत आशायें हैं। युद्ध-समय में ऐसे सुंदर विशेषांक के लिए संपादक तथा संस्था के अन्यान्य अधिकारियों को बधाई है।

—आलोचक

* * *

बम्बई प्रांत में स्टूडेंट्स कांग्रेस के तत्त्वाधान एवं महात्मा गांधी की संरक्षता में अखिल भारतीय शिक्षा शिविर की धूमधाम ८ मई से ६ जून तक होगी। विद्यार्थियों को विभिन्न पार्टियों की राजनैतिक नीति तथा उनके जन्म एवं विकास पर शिक्षा दी जायगी। विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक और बौद्धिक विकास पर व्याख्यान होंगे। व्याख्यान श्री हुमायूँ कबीर, श्री नन्दा, श्री कुमारप्पा, आशादेवी, प्यारेलाल, मसानी, बी० जी० खेर, प्रो० गंगा, पाटिल, सम्पूर्णानन्द, कनू गांधी एवं श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय-द्वारा दिये जायँगे। प्रिन्सिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल गांधीवाद एवं गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम पर भाषण देंगे। निकट के गाँवों में जाकर व्यावहारिक शिक्षा भी दी जायगी। सम्मिलित होनेवाले विद्यार्थियों को उचित फीस देनी होगी और खाने एवं रहने की व्यवस्था केन्द्रीय समिति करेगी। २०० विद्यार्थी और १०० छात्रायें ही सम्मिलित की जायँगी। छात्राओं के लिए विशेष सुविधा है।

—संवाददाता

* * *

आगरा में २५ अप्रैल को इस वर्ष महावीर जयंती उत्सव अपूर्व उत्साह और शान के साथ मनाया गया। उत्सव तीनों जैन सम्प्रदायों ने मिलकर आगरा के प्रसिद्ध जनसेवक श्री महेन्द्र जी के संयोजकत्व में मनाया। संध्या को प्रो० हरप्रसाद जी बागची एडवोकेट के सभापतित्व में सभा हुई। पंडाल जनता से भरा हुआ था और लाउड स्पीकरों का प्रबन्ध था। प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध कवि श्री हरिशंकर जी शर्मा, श्री दिव्य जी, श्री शर्मनलाल जी अग्रवाल एम० ए० ने अपनी ललित रचनायें सुनाईं। श्री पं० विशम्भरनाथ जी भट्ट बी० ए०, एल०-एल० बी० का मधुर गायन हुआ। भगवान् महावीर के जीवन और उनके सिद्धान्त पर सनातनधर्मी—श्री बा० गुलाबराय जी एम० ए० और पं० पन्नालाल जी उपाध्याय, आर्य-समाजी—बा० पूरनचन्द जी एडवोकेट और पं० हरिदत्त जी शास्त्री, मुसलमान—हकीम अब्दुल सत्तार साहब, जैन—अमृतलाल और पं० बलभद्र शास्त्री के भाषण हुए। सबसे सुन्दर और आकर्षक भाषण [illegible] श्री धर्मदेव जी शास्त्री दर्शनकेशरी का हुआ।

—गोवर्धनदास जैन

* * *

बंगाल के विभिन्न जिलों में चेचक के प्रकोप को रोकने के उद्देश्य से बंगाल जन-स्वास्थ्य-विभाग के डायरेक्टर ने ५७४ टीका देनेवालों को नियुक्त किया है। ये स्थान स्थान पर जाकर टीका देने के कार्य में सहायता प्रदान करेंगे।

बंगाल सरकार ने कुछ कलाओं में विशेष योग्यता प्राप्त करने के लिए कुछ विद्यार्थियों को विदेश भेजना निश्चय किया है। चुनाव के लिए एक बोर्ड स्थापित कर लिया गया है।

बंगाल में रुई की फसल का अनुमान लगाते हुए बताया गया है कि १९४४-४५ में १०७०२८ एकड़ भूमि में रुई की फसल बोई गई है। जब कि गत वर्ष ८३,७६८ एकड़ भूमि में थी। उपज का अनुमान ३१,९८५ गाँठ का है जब कि गत वर्ष की उपज २१,५८६ गाँठ थी। —संवाददाता

* * *

प्रयाग बारा में तहसील रचनात्मक कार्यक्रम समिति की प्रथम बैठक गत २७ अप्रैल को लोहगड़ा स्टेशन पर श्री जयनारायण जी के स्थान पर हुई। कमेटी ने श्री रामनेवाज कूडी, श्री रामकुमार डोड़हे-चौखंडी और श्री देवशरण तिवारी लालापुर के स्वर्गवास पर शोक प्रगट किया। कमेटी ने तहसील में रचनात्मक कार्यक्रम को संगठित करने के लिए पाँच मंडलों की स्थापना की। इस अवसर पर तहसील के सभी प्रसिद्ध कार्यकर्ता उपस्थित थे। जिला कांग्रेस प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री शालिगराम जायसवाल कार्यक्रम के संचालन में सहयोग देने के लिए उपस्थित थे।

—संवाददाता

(पेज ५ का शेष)

बर्लिन का गौरव

यहाँ की जन संख्या ४,३ है जो संसार की चौथी श्रेणी इसकी राजनैतिक महत्ता है जर्मन राज्य का सदर मुकाम है। शहर का क्षेत्रफल ४३१ वर्ग मील यहाँ के उद्योगधन्धे, एलेक्ट्रिक ग्रियाँ, मशीनरी (कल-पुर्जे) वैज्ञानिक औजार, इंजन, सामान, कलपुर्जे और रसदें हैं। बीस रेलवे स्टेशन बर्लिन शहर के के कार्य में लगे रहते हैं।

इस बड़े शहर का हिटलर से पतन हो गया है। रूसी सेनायें शहर के अंदर प्रवेश ही नहीं कर बल्कि भीतरी भागों को अपने कर लिया है। बर्लिन के उत्थान-प यह कारुणिक और ओजस्वी इत को चकित कर देता है।

बहुत से बूढ़े लोग जो रोज़गार जारी रखने पर मजबूर होते हैं भयभीत मन से यह कहते सुनाई देते हैं . . .

"मैं इतना बूढ़ा नहीं जितना कि दिखाई पड़ता हूँ।"

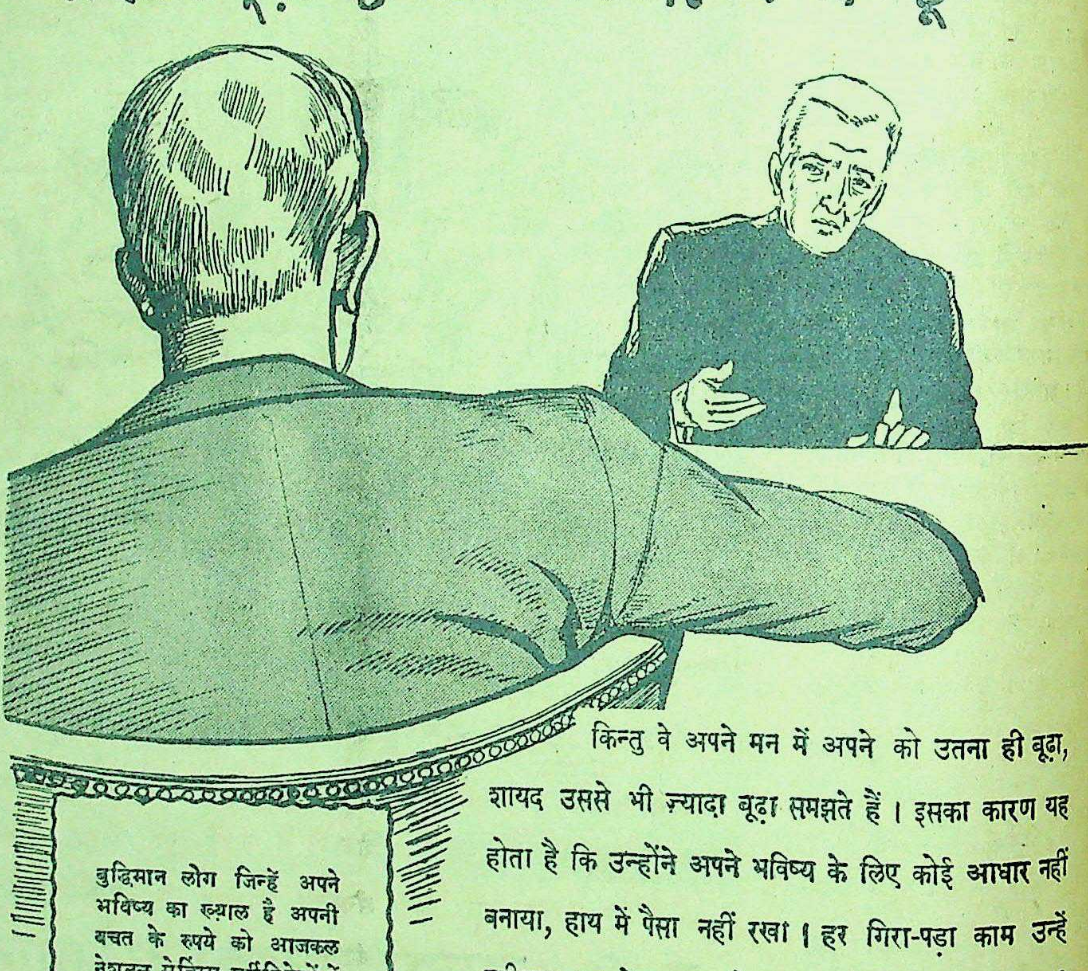

बुद्धिमान लोग जिन्हें अपने भविष्य का ख़्याल है अपनी बचत के रुपये को आजकल नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगा रहे हैं। अपने सुरक्षित भविष्य में उन्हें पूर्ण विश्वास है। आपको भी ऐसा विश्वास प्राप्त हो सकता है।

किन्तु वे अपने मन में अपने को उतना ही बूढ़ा, शायद उससे भी ज़्यादा बूढ़ा समझते हैं। इसका कारण यह होता है कि उन्होंने अपने भविष्य के लिए कोई आधार नहीं बनाया, हाथ में पैसा नहीं रखा। हर गिरा-पड़ा काम उन्हें स्वीकार कर लेना पड़ता है। उनका जीवन बहुत निराशापूर्ण होता है। किन्तु यह ज़रूरी नहीं कि आपको भी ऐसी मुसीबत का सामना करना पड़े। यदि आप अभी योजना बना लें, तो आप वृद्धावस्था में शान्ति एवम् सम्मान के साथ विश्राम कर सकते हैं।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 128 HINDI

की साप्ताहिक डायरी

नाजियों के गढ़ बर्लिन का महान् घेरा क्यों ?

ांत में हलचल-टोकियो पर भयंकर हवाई आक्रमण

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

योरोपीय युद्ध में बर्लिन के घेरे के अतिरिक्त उसके उत्तर में प्रसिद्ध बाल्टिक नगर के बंदर स्थान स्टेटिन पर मार्शल रोकोसोवस्की की सेना ने अधिकार कर लिया और दक्षिण में चैकोस्लोवाकिया के मोरेविया प्रान्त की राजधानी ब्रनो पर मार्शल मैलिनोवस्की की फौज ने कब्जा किया। ब्रनो, महत्त्वपूर्ण औद्योगिक नगर, प्रसिद्ध रेलवे जंकशन और हिटलर का सुरक्षित दुर्ग था। मार्शल कोनीव ने एल्बे नदी को पार कर लिया है तथा ड्रेस्डेन नगर पर घेरा डाल चुके हैं। इस बात में भी कोई संदेह नहीं रह गया है कि उनकी सेना का जेनरल हाज के नेतृत्व में उस प्रथम अमरीकी सेना से सम्पर्क स्थापित हो गया है जिसने विगत सप्ताह में लीपजिग पर अधिकार किया था।

* * *

यूरोप के पश्चिमी मोर्चे की मित्र सेनायें भी विचाराधीन सप्ताह में सभी मोर्चों में उत्तरोत्तर बढ़ती रहीं। फील्ड मार्शल माटगुमरी का २१ वाँ सैन्यदल एम्डेन, ब्रेमेन और हाम्बर्ग में बड़ी भीषणता से युद्ध कर रहा है। ताजे समाचारों से ज्ञात हुआ है कि ब्रेमेन का आधा भाग मित्र-सेनाओं के कब्जे में आ गया है। दो पैदल डिवीजन नगर के मध्य भाग में लड़ रहे हैं और शत्रु का प्रतिरोध समाप्त हो रहा है। फील्ड मार्शल माटगुमरी के अन्य फौजी दस्तों ने एल्बे नदी को हाम्बर्ग के बीच में पार कर लिया जिसके परिणामस्वरूप रस्टाक की दिशा में जर्मन भागेंगे और दूसरा लाभ यह होगा कि मार्शल रोकोसोवस्की की स्टेटिन पर अधिकार करनेवाली सेना से उनकी सेना का संपर्क हो जायगा। ड्रेस्डेन के दक्षिण में प्लाउएन से लेकर टेसफोल तक २०० मील के मोर्चे पर तीसरी और सातवीं अमरीकी सेनायें तथा प्रथम फ्रांसीसी सेना बड़े वेग से बढ़ी हैं और जर्मन रक्षा पंक्ति को शीघ्र ध्वंस करने में लगी हैं। जेनरल पेटन का तृतीय सेना के बायें बाजू के दल डान्यूब और चेकोस्लोवाकिया सीमा के बीच बोहेमिया और मोरेलिया को काटकर डान्यूब के किनारे लिंज तक मार्शल मेलनोवस्की की सेना से मिलने का उद्योग कर रहे हैं। प्रथम फ्रेंच सेना और सातवीं अमरीकी सेनाओं ने उल्म पर अधिकार कर लिया। जर्मन नियन्त्रित नार्वे के रेडियो की सूचनानुसार यह पता चला है कि म्यूनिक जानेवाली रेलवे पर पड़नेवाले आग्सबर्ग नगर के बहिर्भाग में घमासान युद्ध हो रहा है। सुदूर दक्षिण की जर्मन सेनाओं को प्रथम फ्रेंच सेना ने छिन्न-भिन्न कर दिया है।

* * *

इटली में फील्ड मार्शल अलेक्जेंडर के नेतृत्व में जो वृहत् आक्रमण आरम्भ हुआ उसके परिणाम बड़े ही उत्साहवर्द्धक सिद्ध हुए। स्विस रेडियो ने खबर दी है कि इटालियन देशभक्त सेना ने उत्तरी इटली के मिलान के बाद सबसे बड़े औद्योगिक नगर ट्यूरिन को मुक्त कर दिया। जर्मनों ने स्विस सीमा के निकट कोमो नगर और झील दोनों का प्रबन्ध देशभक्तों के हाथों में सौंप दिया है। रोम में रेडियो सुननेवाले लोगों को ऐसे ब्राडकास्ट भी सुनाई पड़ते हैं जिनमें कहा गया है कि मिलान और जेनेवा पर जो जर्मन अधिकृत इटली में है, देशभक्तों का कब्जा हो गया है। जो हो, उत्तरी इटली में मित्र सेनाओं को अभूतपूर्व सफलता मिली है और वह दिन दूर नहीं जब समस्त इटली नाजी-चंगुल से मुक्त हो जायगा।

* * *

जब कि फिलिप्पीन ओकीनावा आदि प्रदेशों में अमरीकी सेना स्थल और जल में होकर विजय लाभ कर रही है उनकी वायुसेना भी सफलतापूर्वक शत्रु देश विशेष रूप से जापान की मुख्य भूमि पर बमवर्षा कर रहा है। हौंशु, शिकोकू और क्युशु पर रविवार से लेकर बुधवार तक भीषण बमप्रहार हुए और जापानियों ने स्वयं उनके द्वारा की गई भारी क्षति को स्वीकार किया है। टोकियो से जापानी समाचार समिति ने बतलाया कि शत्रु के विमानों-द्वारा जो अंधाधुंध बमवर्षा की गई है उससे टोकियो का काफी हिस्सा ध्वस्त हो गया है। ५,१०,००० मकान गिर गये हैं। ऐसे नागरिकों की संख्या जो इससे कष्ट-पीड़ित हुए हैं, २१,००,००० तक पहुँच गई है। विनाश के आँकड़े राजधानी के घरों की संख्या के एक चौथाई हैं। ओकीनावा का तीन चौथाई भाग अमरीकी सेना के कब्जे में आ चुका है शेष के लिए भीषण युद्ध जारी है। वाइस एडमिरल टरनर का कथन है कि शीघ्र ही ओकीनावा जापान पर आक्रमण करने के लिए हमारा महत्त्वपूर्ण अड्डा बन जायगा। उत्तरी जोन और मिंडनाओ द्वीपावलि में भी विधिवत् जापानियों का सफाया किया जा रहा है।

* * *

बर्मा क्षेत्र में ब्रिटिश और भारतीय फौजों ने मिकतिला की सड़क से आगे बढ़ते हुए टौंगू पर कब्जा कर लिया। यह बर्मा का १० वाँ बड़ा नगर है। यह नगर रंगून से लगभग १६० मील पर है। टौंगू के दक्षिण में मित्र सेना जापानियों के भागने के मार्ग काट रही है।

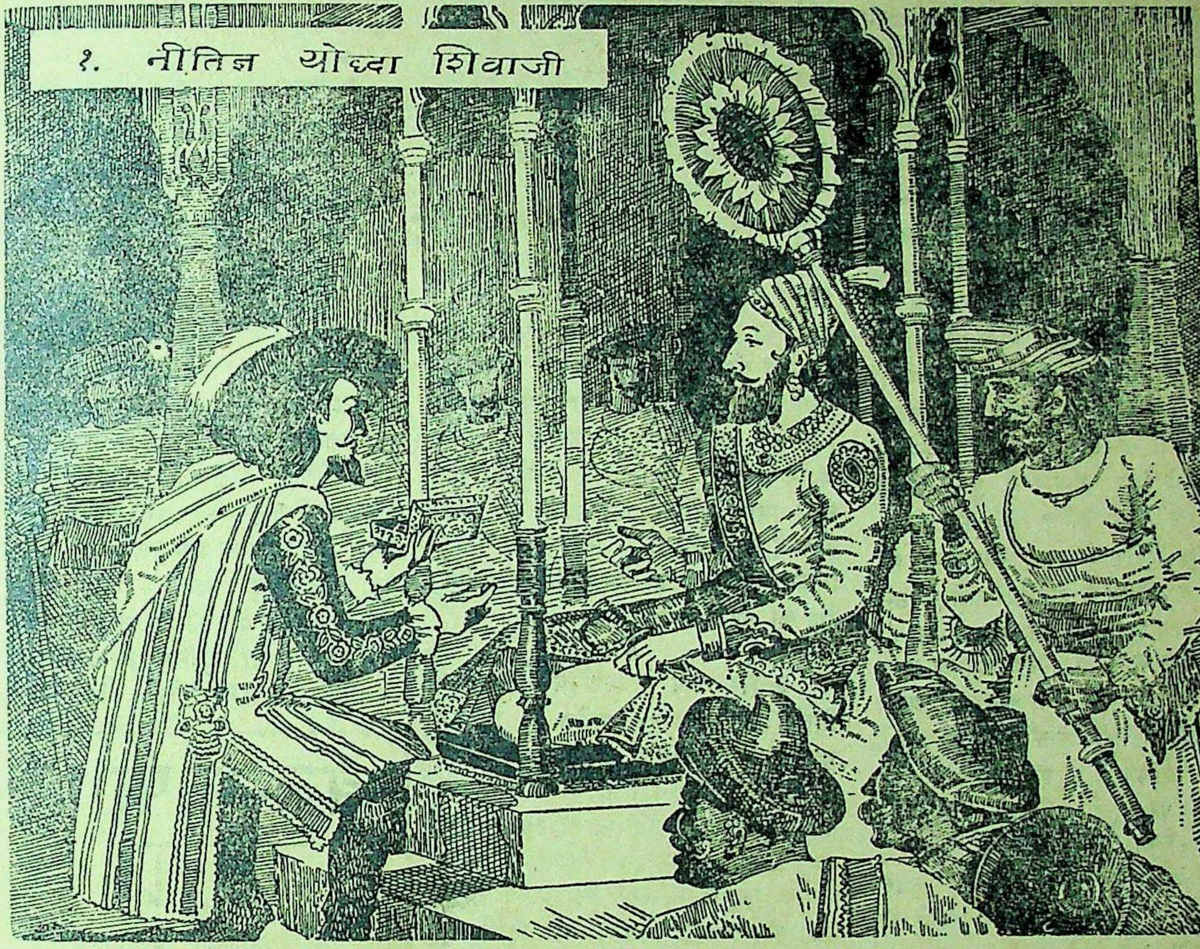

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण स्वस्थ शरीर।

महानता और कीर्ति के लक्ष्य की सिद्धि, कार्य कुशल पुरुषोंने मस्तिष्क और शारीरिक शक्ति के सहयोग से ही की है। शिवाजी ने अपने युद्ध कौशल, असाधारण नेतृत्व शक्ति, शत्रु शक्ति का संतुलन और सैन्य संचालन, साथ ही पूर्ण शारीरिक स्वस्थता द्वारा अनेक युद्धों को जीत कर मराठा साम्राज्य की नींव डाली.

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का सेवन करिये।

हेमो द्राक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों को शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पैप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वस्थ रहिये—आज ही एक बोतल लीजिये.

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मटसन राड. कानपुर

Alembic

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड बरोडा

अरबी भाषा के देश कौन कौन हैं ?

(पेज ४ का शेष)

अतिरिक्त मिस्र व लीबिया के निवासी भी अरबी बोलते हैं किन्तु वे मस्लन ठेठ अरबों से अधिक मेल खाते हैं। इसके साथ ही मिस्र देश ठेठ अरब से सटा होने के कारण बरबर देशों की अपेक्षा उसके साथ रहने का अधिक हिमायती है।

उत्तरी अरब

अफ्रीका के अतिरिक्त एशिया के पश्चिमी भाग में भी अरबी भाषा बोलनेवाला जन-समुदाय काफी बड़ा है। यहाँ सीरिया, लेबोनान, इराक, फिलिस्तीन व जोरडन के इलाके अरबों में आबाद हैं। ये प्रदेश अफ्रीका के अरबी प्रदेशों की अपेक्षा अधिक हरे-भरे और सुखी जीवनवाले हैं। सौभाग्य से पिछले बीस-पचीस वर्ष में वे अपने कन्धे से गुलामी का जूआ उतारने में भी सतर्क रहे हैं। इसका ही यही परिणाम हुआ कि फिलिस्तीन के अतिरिक्त अन्य ये देश अब प्रायः स्वतंत्र हैं। इन प्रदेशों की जनता राष्ट्रीय भावना से पूर्ण ओत-प्रोत है और उसे यह भी सदा चिन्ता रहती है कि किस प्रकार स्वेज नहर के आर-पार के अरबी भाषा के सब देश परस्पर संगठित होकर एक विशाल राष्ट्र का निर्माण करें। इन प्रदेशों में से सीरिया की राजधानी दमिश्क व इराक की राजधानी बगदाद से गये जमाने में बड़ी बड़ी खिलाफतों के दिन भी देखे हैं। फिर वे क्यों न राष्ट्रीयता के इस जमाने में पुनः अरबी संगठन का दृष्य देखें ? आजकल मिस्र, सीरिया व इराक में चल रहा अरबों का आन्दोलन भविष्य में होनेवाले इसी संगठन का मूल-मात्र है।' यदि यह संगठन बना हो एशिया व अफ्रीका में एक विशाल अरब राष्ट्र की संभावना की जानी चाहिए। अरबों के इन प्रदेशों की कुल आबादी अस्सी लाख से अधिक है। इन में रेल व दूसरे यातायात की पूर्ण सुविधायें मौजूद हैं। योरप व एशिया के मार्ग में होने के कारण आकाश मार्ग के लिए ये प्रदेश सबसे अधिक पयुक्त हैं साथ ही इन प्रदेशों की मुख्य विशेषता है यहाँ का तेल। मोसल के तेल के कुएँ अब भी अँगरेजों को इस प्रदेश से नाता नहीं तोड़ने देते अरबों की राष्ट्रीय भावना के आगे अँगरेज अधिक दिन तक इस प्रदेश में टिक सकेंगे यह कौन कह सकता है ?

मूलस्थान

अन्तिम प्रदेश यथार्थ अरब है। इस प्रदेश में ही मुसलमानों के प्रमुख तीर्थ मक्का मदीना स्थित हैं। अरबों का मूलस्थान यह प्रदेश पूर्णतः रेगिस्तानी है यद्यपि इसमें भी जगह जगह शाद्वल (हरे-भरे स्थान) विद्यमान हैं। अरबों के प्राचीन विशाल साम्राज्य का केन्द्र यह प्रदेश आज चार-पाँच भागों में विभक्त है। मक्का, मदीना व मध्य का नज्द प्रदेश जो राजा इब्न सऊद के हाथ में है। इसी आधार पर उसे सौदी अरब कहा जाता है। इसके दक्षिण में यमन का पहाड़ी इलाका है यमन के दक्षिण में अदन का प्रसिद्ध बन्दरगाह है जिसके आस-पास के लम्बे प्रदेश में अँगरेजों की ध्वजा फहराती है। ईरान की खाड़ी पर अवस्थित ओमन व कोवीन यद्यपि कहने को स्वतंत्र प्रदेश हैं किन्तु उन्हें किसी न किसी रूप में अँगरेज सलाहकारों की बात माननी ही पड़ती है। इस प्रदेश के बहराईन व कोवीन में तेल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है और अब अमेरिका सौदी अरब में भी तेल निकालने जा रहा है। अरबों के इस मूल प्रदेश की आबादी एक करोड़ के लगभग है। अरबों का संगठन हो जाने पर यहाँ के मुख्य स्थान मक्का व मदीना प्राचीन गौरव पा सकेंगे यह न मानना चाहिए। भले ही अभी काफी काल तक मुसलमानों के तीर्थस्थान वे बने रहेंगे किन्तु भावी अरब राष्ट्र का गौरव तो काहिरा, दमिश्क, बगदाद व जेरुशलम में सम्मिलित होगा। अरबों के इस नवीन राष्ट्र का क्या रूप होगा यह अभी कौन कह सकता है किन्तु भिन्न भिन्न राजाओं के रहते वह एक राष्ट्र न होकर संघात्मक राष्ट्र का रूप धारण करेगा यह तो निःसन्देह कहा जा सकता है।

नहर स्वेज

अरब राष्ट्र की रीढ़ होगी स्वेज की प्रसिद्ध नहर। इस नहर से आज अँगरेज मालामाल हैं। भविष्य में यह नहर अरबों की सम्पत्ति होनी चाहिए क्योंकि वह उनके देश का एक भाग है। योरप व अमेरिका क्या एशिया के एक राष्ट्र की इस माँग को सहज में मान लेंगे ? यह एक प्रश्न है जिस पर ही अरबों के भावी राष्ट्र का शीशा टूट सकता है। अभी तक तो लक्षण यह है कि फिलिस्तीन को अँगरेज़ व अमेरिका यहूदी बस्ती के नाम पर अरबों को नहीं सौंपना चाहते। यथार्थ में यहूदी बस्ती तो उनका बहाना मात्र है। स्वेज नहर ही उनका प्रधान लक्ष्य है। आगे जाकर अरबों व अँगरेजों के संघर्ष का यह नहर प्रधान आधार बन सकती है। यह ठीक है कि स्वेज नहर मिले या न मिले निकट भविष्य में ही अरबों के एक नवीन राष्ट्र का उदय होनेवाला है।

* * *

इन्दौर राज्य लेजिस्लेटिव कौंसिल का द्वितीय अधिवेशन २६ अप्रैल से प्रारम्भ हुआ। यह अधिवेशन टाउनहाल जहाँ कि हर समय अधिवेशन हुआ करता था, के बजाय महाराजा शिवाजीराव हाई स्कूल के बड़े कमरे में हो रहा है। प्रथम दिवस का सभापतित्व मुन्तजिम-ए-खास बहादुर श्री एम० ए० रसीद साहब ने किया। प्रथम दिन कुछ प्रश्नोत्तर के बाद धारा-सभा ने छः प्रस्ताव पास किये। इस दिन प्रजामंडल पक्ष के २६ सदस्यों में से २४ ने भाग लिया। लिबरल पार्टी के १३ सदस्यों में से ८ सदस्यों ने हिस्सा लिया और दो स्वतंत्र सदस्य उपस्थित थे।

एक प्रस्ताव-द्वारा सरकार से यह प्रार्थना की गई कि सहकारी शिक्षा का विकास हो इसलिए उसके वास्ते जो संस्था, या संस्थायें प्रयास करें उन्हें सरकार यथोचित प्रबन्ध के साथ आर्थिक मदद देने की तजवीज करे। यह प्रस्ताव श्री किबे साहब लिबरल पार्टी के नेता-द्वारा रक्खा गया था। दूसरे प्रस्ताव-द्वारा कौंसिल ने सरकार से प्रार्थना की है कि वह राज्य के कच्चे माल को बनाने के लिए गृह-उद्योग को प्रश्रय दिया जाये। जिसके कारण राज्य की सम्पत्ति बढ़ेगी और राज्य का उत्थान हो। उद्योगिक वृद्धि के सम्बन्ध में बोलते हुए कामर्स मिनिस्टर श्री ढंढा ने कहा कि ६० लाख रुपये की पूँजी से शीघ्र ही वेजीटेबिल घी की मिल खोली जानेवाली है। इसके लिए एक पूँजीपति ने मंजूरी भी दे दी है।

एक और प्रस्ताव-द्वारा धारा-सभा ने सरकार से प्रार्थना की कि कुछ साल पूर्व आर्थिक कठिनाई के कारण जो सालाना [illegible] भाषा को यानी हिन्दी और मराठी को दिया जाता था उसे फिर से देने की तजवीज करे। इस प्रस्ताव पर प्रस्तावक श्री म० वि० किबे ने बोलते हुए कहा कि जब कि सरकार का बजट समृद्ध है फिर भी इस भाषा की मजबूती के लिए रकम फिर से क्यों नहीं दी गई ? इसका जवाब देते हुए एकाउंटेंट जनरल ने कहा कि सरकार ने इस विचार किया है और यह रकम सरकार आगामी बजट में विचार करके मंजूर कर लेगी।

इसी प्रस्ताव पर प्रजामंडल पक्ष के उपनेता श्री मिश्रीलाल जी गंगावल ने कहा कि मराठी और हिन्दी-साहित्य की वृद्धि के लिए जो रुपये दिये जा रहे थे उसे क्या सरकार ने आर्थिक कठिनाई के कारण बन्द कर दिया था या और किसी कारण से ?

सरकार ने इनके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। —संवाददाता

* * *

उदयपुर महिला-मंडल ने स्त्री-शिक्षा प्रचार के लिए सन् ४१ में साक्षरता-आन्दोलन की एक पंचवर्षीय योजना आरंभ की गई थी। विद्यार्थिनियों और अध्यापिकाओं की सहायता से हर गर्मी की छुट्टियों में कम से कम बारह सौ अपढ़ बहिनों को प्रतिवर्ष साक्षर बनाया योजना का यह अन्तिम वर्ष है। २४० स्वयंसेविकाओं ने ५-५ बहनों को साक्षर करने की प्रतिज्ञा की है। इस पुण्य कार्य को शुरूआत साक्षरता-दिवस और पुस्तकालय-दिवस से किया गया। प्रथम दिवस श्रीयुत माणिकलाल जी वर्मा की अध्यक्षता में सार्वजनिक सभा हुई। संयोजिका ने साक्षरता-आन्दोलन का इतिहास बताते हुए नगर के स्त्री-पुरुषों से कार्य में सहयोग देने की अपील की। मंडल के श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय की आचार्या रामाबहन, श्रीयुत गौड़, श्रीयुत शम्भूलाल जी शर्मा के साक्षरता के पर भाषण हुए।

दूसरे दिन की कार्यवाही मेवाड़ कौंसिल के सेक्रेटरी श्री भगव मेहता की अध्यक्षता में सभा हुई। व्यवस्थापक जी ने पुस्तकालय, और गश्ती पुस्तकालय (जिससे की सेवा हो रही है) का वर्णन पश्चात् श्रीयुत कालासिंह जी और राय जी नागर के पुस्तकालय के प्रवचन हुए। दोनों दिन मैजिक से चित्र दिखाये गये। और बहनों हुए।

—संवाददा

* *

उदयपुर महिला-मंडल के गत फरवरी में श्रीमती हंसा मेहता श्री कस्तूर बा गांधी ट्रेनिंग विद्याल उद्घाटन हुआ जिसमें कई छात्र प्रवेश हो गया है। ट्रेनिंग विद्या आचार्या श्री रामबहिन बी० ए०, टी० के कथनानुसार पाँच के लिए अभी रिक्त स्थान है अतः थिनियों को आवेदन पत्र भेजना श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय से ६ मई से इतिहास प्रसिद्ध पर महिलाओं के लिए एक शिक्षा चलेगा जिसमें कम से कम ८वीं की योग्यता रखनेवाली बहिनें के खर्च से सम्मिलित हो सकेंगी।

—मंत्रि

* *

हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकार गांधीवाद के समर्थक तथा सुप्रसिद्ध श्री जैनेन्द्रकुमार जी, जो कि इन्दौर थे, का प्रजामंडल दफ्तर में स्वाग गया। आपने अहिंसा के सिद्धा विवेचन किया।

—संव

ब्रज-भाषा

साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और ब्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु ब्रज-भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान् कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — बिहारी-विभव
भूषण-भारती — मतिराम-मकरंद
पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

"सरस्वती सिराज़"
हिन्दी में विभिन्न विषयों पर प्रकाशित
उत्कृष्ट पुस्तकों की माला
जिसमें अभी तक ७२ पुस्तकें प्रकाशित
हो चुकी हैं।
मैनेजर, इण्डियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

मुफ्त
डायरी फाउन्टेनपेन १९४५
अपने वार्षिक उत्सव के उपलक्ष में
हमने उपरोक्त पुरस्कार मुफ़्त बाँटने का
निश्चय किया है। शीघ्र ही लिखें।
इम्पीरियल नोवेल्टी स्टोर्स
के० सी० अमृतसर

हमेशा सबसे ऊपर
स्टैनक्रीम
केश संवारने की सर्वोत्तम सामग्री
केशों को जमाती
चमक लाती
चिटचिटाहट से परे
व्यवहार में साफ
केश के लिये उपकारी
आजकल
मिल रही है
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर
SSK 101

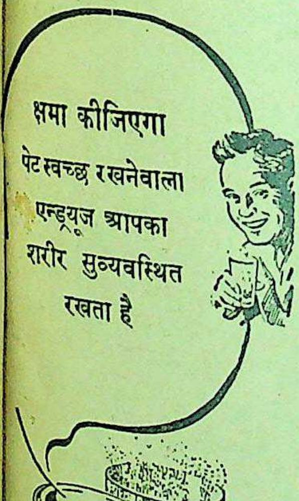
क्षमा कीजिएगा
पेट स्वच्छ रखनेवाला
एन्ड्रयूज आपका
शरीर सुव्यवस्थित
रखता है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त
बढ़ाने के लिए सेवन
करो
डॉ. गौतमराव केशव
टॉनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी,
एल० एम० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

आरोंदा
सूरज छाप
१८६९
नीलगिरि तेल
— वापरो —
लाण्डआकेर बंधु. बम्बई ४.

स्थापना १९२६] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय [र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुइंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥-) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

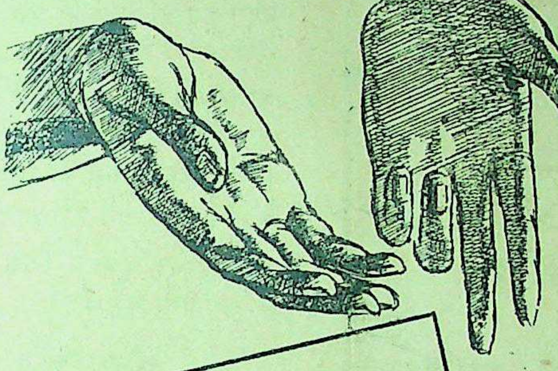

कमख़र्ची से संकट
दूर कीजिए

अपने देश की मदद कीजिए

-इस प्रकार!

आप अपनी हर चीज़ ज़्यादा से ज़्यादा दिन चलाइए। कमख़र्ची केवल आजकल का फ़ैशन ही नहीं है, यह एक प्रकार की देश-सेवा भी है। माल की माँग को कम करने में जब तक **आप** हाथ नहीं बटाते, तब तक हिन्दुस्तान के ग़रीब लोग कष्ट में रहेंगे।

व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से यदि देखा जाय तो नियमित मितव्ययिता का अर्थ होता है छोटी छोटी रक़मों की नियमित बचत। जो रुपये आप अभी **नहीं** ख़र्च करेंगे वे तेज़ी से बढ़ते जायँगे।

बिजली का ख़र्च घटाइए।

१ जब काम में न ला रहे हों तब रोशनी और पंखों को बंद कर दीजिए।

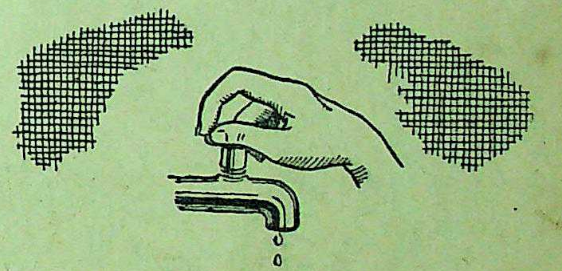

२ पानी के नलों को खुला मत छोड़िए। पानी का ज़्यादा महसूल देने से क्या लाभ?

३ क़ीमती उपहार या तोहफ़े मत दीजिए।

४ घर पर रह कर रुपया बचाइए।

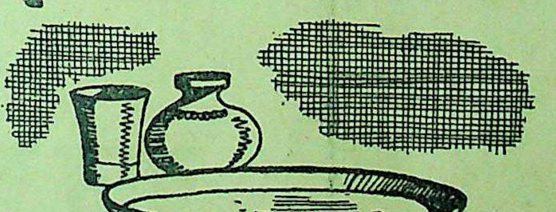

५ चीनी मिट्टी के बर्तनों की जगह धातु के बर्तनों का व्यवहार कीजिए।

६ एक साल तक कोई नया कपड़ा मत ख़रीदिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

—भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित—

AAA 5 HINDI

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 108

अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करना आवश्यक है!

खुरदरी चिज़ें दांतों को ख़रोंच देती हैं और ख़रोंचों से सड़ान पैदा होती है। बुरे स्वादवाली चीज़ों से आपकी सांस में बदबू आने लगेगी। जो चीज़ें गन्दी रहती हैं या जिन्हे सावधानी से पेक नहीं किया जाता है, वे ख़तरनाक होती हैं—क्योंकि बहुधा उनमें कीटाणु होते हैं जिससे बीमारी फैलती है। इसलिये, अपने दांत ऐसी चीज़ों से कभी मत साफ कीजिए।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह किसी ख़रोंच के बिना आपके दांत बहुत नर्मी से साफ कर देता है। इसका स्वाद और सुगंध—दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विषनाशक है। और ठीक तरह से पेक होने के कारण धूल से बचा रहता है। इसके अलावा एक डिबिये में इतना डेन्टिफ्रिस होता है जो १०० बार से जादा दांत साफ़ करने के लिये काफ़ी है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GD. 18-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

वैद्यक उपाधियाँ

घर बैठे प्राप्त कीजिये। हमारे नियम सुगम तथा फीस नाममात्र है।
भारत आयुर्वेदिक कालेज अमृतसर-नं० २

मुफ्त

डायरी कलेण्डर
के लिए अभी पोस्टकार्ड
कैस्टल कमर्सियल कं० के० सी०

पीतल के बर्त

दाम और घटा दिये ग

१० फर्वरी, सन् १९४५
से पीतल के बर्तनों के
अधिकाधिक दामों में फिर कमी कर दी गई है। पीतल के जो
बहुत बड़े परिमाण में सरकारी नियन्त्रण में बनाये जाते हैं और
सभी नगरों में स्वीकृत व्यापारियों द्वारा बेचे जाते हैं, उन पर
की क़ीमत लिखी रहती है। इसको अवश्य देख लीजिए!
१ रुपया १० आने प्रति पौंड से २ रुपये प्रति पौंड तक हैं।
मुरादाबादी बर्तनों का अधिकाधिक मूल्य जिनके दोनों ओर
कलई हो २ रुपये १२ आने प्रति पौंड है। पीतल के दूसरे
अधिकाधिक मूल्य २ रुपये ५ आने प्रति पौंड रखा गया है।
अधिक दाम न दीजिए।

स्वीकृत व्यापारियों की सूची ब्रास यूटेन्सिल्स (
आर्डर, सन् १९४४ में दी हुई है। यह कंट्रोल-आर्डर मैनेजर
पब्लीकेशन्स, सिविल लाइन्स, दिल्ली से मूल्य पर मिल सकता
अगर कोई स्वीकृत व्यापारी बर्तन पर लिखे हुए मूल्य से
मांगे, तो अपने ज़िला मजिस्ट्रेट या कंट्रोलर जनरल आफ
सप्लाइज़, बंबई से उसकी शिकायत कर दीजिए।

एलुमीनियम के बर्तन

क़ीमतों पर कंट्रोल

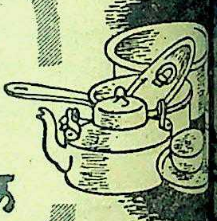

१५ मार्च, सन् १९४५ से एलुमीनियम यूटे
(कंट्रोल) आर्डर, सन् १९४५ के अनुसार एलुमीनियम के
बर्तनों की क़ीमतों पर कंट्रोल लगा दिया गया है। विभिन्न प्रकार
बर्तनों के लिए अधिकाधिक मूल्य २ रुपये १४ आने प्रति पौंड
३ रुपये ८ आने प्रति पौंड तक निश्चित किया गया है;
औसत क़ीमत ३ रुपये प्रति पौंड या ५ पैसे प्रति तोला है,
कंट्रोल से पहले लगभग ५ रुपये ४ आने प्रति पौंड थी।
नियन्त्रण में बने हुए एलुमीनियम के बर्तन बड़ी तादाद में
साधारण व्यापारियों द्वारा बेचे जाने के लिए यथाशीघ्र
रहे हैं। इन बर्तनों पर कंट्रोल की क़ीमत लिखी होगी।
से सरकार की ओर से प्रति वर्ष ५ हज़ार टन एलुमीनियम
जा रहा है।

बात समझ लीजिए

अपने अधिकार मा

सरकार द्वारा नियत किये गये दामों
अधिक मत दीजिए

डिपार्टमेण्ट आफ़ इण्डस्ट्रीज़ एण्ड सिविल सप्लाइज़, नई दिल्ली द्वारा

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन, प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

देशदूत

योरोप विजय अंक

मूल्य ।≡

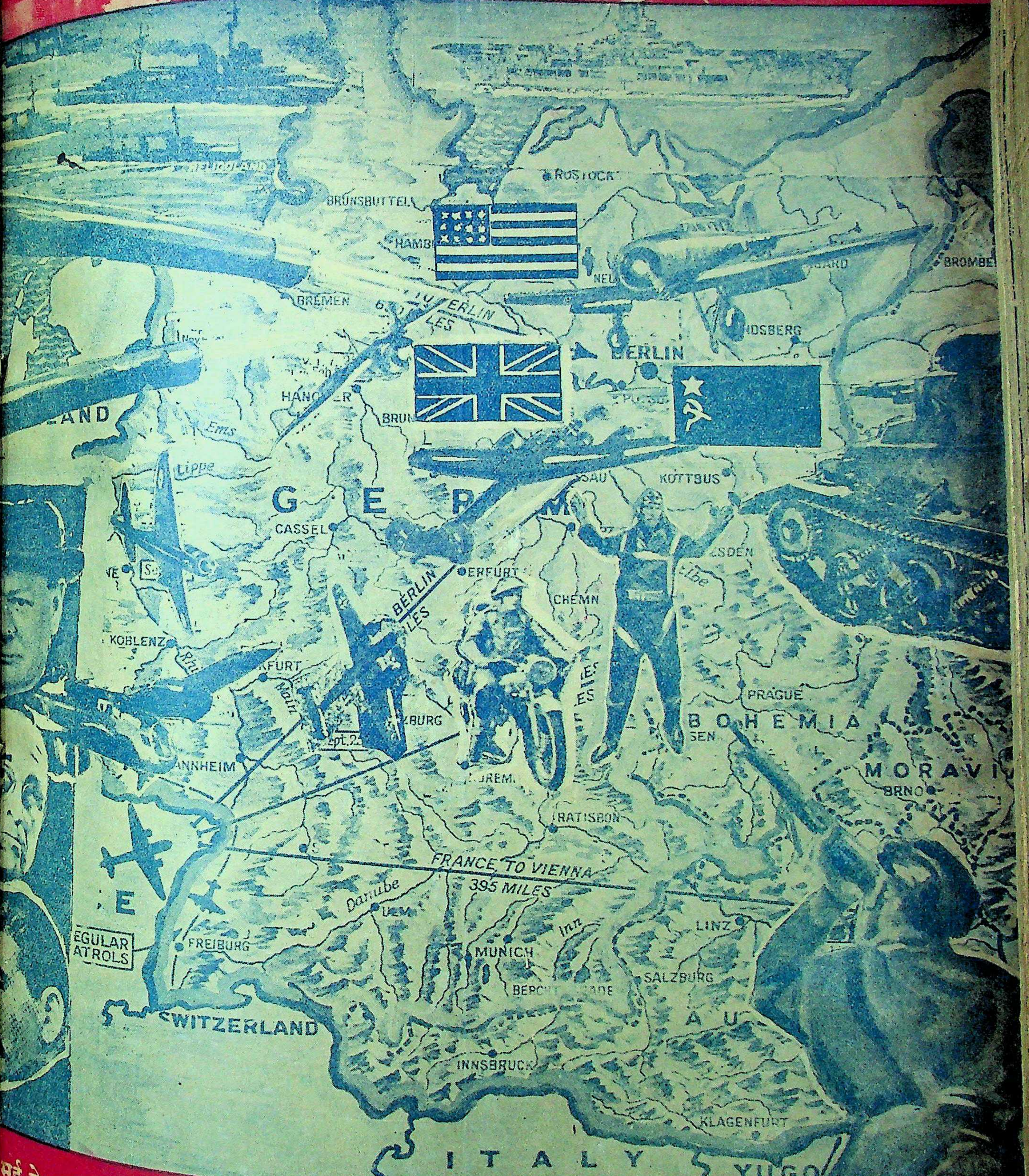
HELIGOLAND
ROSTOCK
BRUNSBUTTEL
HAMB
BREMEN
BERLIN
MILES
NEU
BROMBE
NDSBERG
BERLIN
HANOVER
BRUN
LAND
Ems
Lippe
G E R M
COTTBUS
CASSEL
ERFURT
CHEMN
EDEN
Elbe
KOBLENZ
BERLIN
MILES
KFURT
Main
ZBURG
PRAGUE
BOHEMIA
NNHEIM
NUREM
MORAVI
BRNO
RATISBON
FRANCE TO VIENNA
395 MILES
Danube
ULM
Inn
LINZ
EGULAR
ATROLS
FREIBURG
MUNICH
SALZBURG
BERCHTESGADE
SWITZERLAND
A U
INNSBRUCK
KLAGENFURT
ITALY
YUGO

मई को जर्मनी ने बिना किसी शर्त के आत्म-समर्पण कर दिया है। नये जर्मन सेनाध्यक्ष ने जर्मनी की र से, जनरल आइजन होवर के सदर मुकाम पर, आत्म-समर्पण की आज्ञा पर हस्ताक्षर कर दिया। वियट रूस ने भी घोषित किया है कि जर्मनी ने बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण कर दिया है

स्वादिष्ट व मनको लुभानेवाली

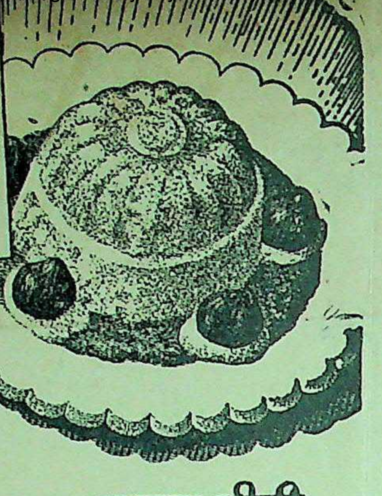

दौराला की बरफ सी सफेद चीनी बढ़िया और शुद्ध जो केक पेस्टरीज और पुडिंग की बनावट में चार चाँद लगा देती है और अत्यन्त स्वादिष्ट बना देती है

कास्टर चीनी

कास्टर चीनी टेबल के लिये बढ़िया बर्फ सी सफेद और साफ सुथरी चीनी

डमारारा चीनी

करोमल पुडिंग और मिठाईयां बनाने के लिये भूरी चीनी। यह आप की काफी की सुगंधी को बढ़ाती है। यह बहुत बड़े अनुपात में काफीगृह में उपयोग की जाती है जो हिन्दुस्तानी काफी बोर्डों द्वारा चलाये जाते हैं।

अन्य दौराला चीनी से बनी चिज़ें

Icing
Daurala
Icing Sugar
DAURALA SUGAR

क्युब सुगर काफी क्रिस्टल्स, गोल्डेन सिरप और ट्रिकल। टाफी और अन्य मिठाइयां

दिल्ली क्लाथ मिल स्टोर्स और सब बड़ी दुकानों में मिलती है।

दौराला की बढ़िया चीनी

दौराला सुगर वर्क्स, दौराला (यु. पी.)
व्यापारिक पत्रव्यवहार का पता:—
दि दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं. लि. दिल्ली

DCM. 23—Hindi.

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व ख़ुश रखता है।

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARDS CELEBRATED
GRIPE WATER

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर का पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 113—117

W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगा के पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा इंडियन प्रेस लिमिटेड प्रया

स्वस्थ जीवन
के संकेत
३

उपेक्षा से भयं
परिणाम की संभावन

प्राय: देखा गया है कि हम लोक साधारण खांसी की अ
बधानी के कारण समय पर चिकित्सा नहीं करते। इस
बहुधा जान तक से हाथ धोना पड़ता है। इस लिये स
रहते खांसी की उचित चिकित्सा करना अति आवश्यक
ग्लायकोडिन टर्प वसाका खांसी की अव्यर्थ महौषधि
सैंकड़ो अनुभवी डाक्टरों ने इस की मुक्त-कंठ से प्रशंसा
है। यह रोग के मूल तक पहूँच कर भयानक से भया
खांसी को भी कुछ ही दिनों में शर्तिया आराम करता

स्नायु-सम्बन्धी असाध्य खांसी में डाक्टरों से राय लें।

ग्लाइकोडिन ट वसा

शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट कर

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड,

देशदूत

वर्ष ७ संख्या ३७]　सचित्र साप्ताहिक हिन्दो　[रविवार, १३ मई, १९४५

योरोप के दूसरे महायुद्ध में मित्रराष्ट्रों की यह एक महान् विजय है

पिछले छः वर्ष से संसार-व्यापी रक्तरंजित महायुद्ध में ब्रिटेन, अमरीका तथा रूस को फासिज्म और नाज़ीवाद के विरुद्ध गत ७ मई १९४५ को अंतिम विजय प्राप्त हुई।

सम्राट् का भाषण

सम्राट् छठे जार्ज ने जर्मनी के आत्म-समर्पण कर देने पर विजय दिवस के अपने ब्राडकास्ट में ब्रिटिश जनता को यह चेतावनी दी कि उसे अभी भी जापानियों से अधिक से अधिक दृढ़ निश्चय और समस्त साधनों को काम में लाते हुए लड़ना है।

जर्मनी पर, जिसने कि समस्त यूरोप को युद्ध में घसीटा, अन्त में विजय प्राप्त हुई है। सुदूर-पूर्व में हमें जापानियों से लड़ना है, जो कि दृढ़ निश्चयी और निर्दयी शत्रु हैं। इसके लिए हम अधिक से अधिक दृढ़ निश्चय और अपने समस्त साधनों से लड़ेंगे। परन्तु इस समय जब कि युद्ध की भयावनी छाया हमारे घर से बहुत दूर चली गई है, हम कम से कम कुछ समय रुककर ईश्वर को धन्यवाद दें और उसके बाद अपना ध्यान समस्त संसार के कार्यों की ओर लगावें।

पहले हमें उन लोगों का स्मरण करना चाहिए, जो अब लौटकर नहीं आएंगे। युद्धमें उनकी दृढ़ता, उनका त्याग और निर्दय शत्रु के मुक़ाबिले में उनकी सहन-शक्ति को नहीं भुलाना है। उन सभी पुरुषों और स्त्रियों का स्मरण हमें प्रार्थनाओं के समय करना है, जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान किया है। हमारे कष्टों का अन्त हो गया है और वे इस विजयोल्लास के समय हमारे साथ नहीं हैं।

प्रेसिडेंट रूजवेल्ट

आपका दृढ़ निश्चय था कि फासिस्ट और नाजीवाद की अंत में पराजय और मित्रराष्ट्रों की अंतिम विजय होगी।

मिस्टर चर्चिल

ब्रिटिश प्रधान-मंत्री मिस्टर चर्चिल ने यूरोप में युद्ध समाप्त होने पर अपने ऐतिहासिक वक्तव्य में कहा कि जर्मन हाई कमांड ने समस्त जर्मन सेनाओं के साथ यूरोप की मित्र-सेनाओं और सोवियट हाई कमांड के सामने आत्म-समर्पण पर हस्ताक्षर कर दिये हैं।

जर्मन-युद्ध समाप्त हो गया और हमने उस पर विजय प्राप्त की। हमारी कृतज्ञता अपने समस्त वीर मित्रराष्ट्रों को है। हम थोड़े समय के लिए खुशियाँ मना लें। मिस्टर चर्चिल ने कहा कि जापान को अभी पराजित करना है और जो हानियाँ हमने ब्रिटेन, अमेरिका और अन्य देशों को पहुँचाई हैं तथा उसकी अथक क्रूरताओं का न्याय होना चाहिए। अब हमें अपनी सारी शक्ति और साधन जापान को पराजित करने में लगाना होगा।

हम लोग न्याय के लिए लड़ रहे हैं। सात वर्ष के लगातार युद्ध से नाजीवाद समाप्त हो गया। भविष्य में योरोप में नई व्यवस्था तथा शांति स्थापना में मित्रराष्ट्रों को सफलता प्राप्त होगी। फिर भी हमें अभी शांत नहीं बैठना है जब तक कि हमारा दूसरा प्रबल शत्रु भी पराजित न कर दिया जाये। इसलिए हमें आज की इस महान् विजय पर गर्व है।

प्रेसिडेंट ट्रूमन

प्रेसीडेंट ट्रूमन ने रेडियो पर भाषण में यूरोप के युद्ध की समाप्ति की घोषणा करते हुए कहा कि हमारी यह शानदार समय है। मेरी कामना यही है कि मि० रूजवेल्ट आज का यह दिन देखने के लिए जीवित होते। जनरल आइसन होवर ने मुझे सूचित किया है कि जर्मनी ने संयुक्त-राष्ट्रों के सामने आत्म-समर्पण कर दिया है। इस समय समस्त यूरोप पर स्वतन्त्रता का झण्डा फहरा रहा है। अन्त में प्रेसिडेंट ट्रूमन ने कहा कि हमारा प्रहार अब जापान पर होगा और वह तब तक जारी रहेगा, जब तक वह बिना शर्त के आत्म-समर्पण न करेगा। यह विजय मित्रराष्ट्रों की एक महान् विजय है।

मार्शल स्टेलिन

मास्को रेडियो ने घोषित किया है कि जर्मनी द्वारा बिना किसी शर्त के आत्म-समर्पण करने की शर्तों पर हस्ताक्षर कर दिया गया है। सभी मोर्चों पर लड़ाई बंद करने की जाब्ता कार्रवाई होने के साथ ही जर्मन राष्ट्र के क़ानूनी अस्तित्व का अंत हो गया है। उसकी सरकार का काम करना खत्म हो गया है। अब आगे उसका स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रह जायेगा। जर्मनी एक पराधीन, विजित तथा अधिकृत देश बन जायेगा। उसकी सरकार, उसके फ़ौजी नेता तथा उसके सभी हथियारबंद सैनिक जो अभी तक स्वतंत्र हैं, क़ानूनन् युद्ध-बंदियों की श्रेणी में आ जायेंगे और उनका निर्णय मित्रराष्ट्र करेंगे।

संसार के तीन महान्

स्टालिन का अर्थ है स्टील--वह जो इस्पात का बना हुआ हो। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्टालिन अपने नाम को सार्थक करता है। उसका व्यक्तित्व इस्पात की तरह दृढ़ और उतना ही लचकदार है।

युद्ध के पूर्व ही स्टालिन ने संसार की एक महान् विभूति का स्थान प्राप्त कर लिया था और अब, युद्ध की अग्नि में तपने के बाद, उसका व्यक्तित्व और भी निखर उठा है। एक शब्द में, स्टालिन कसौटी पर खरा उतरा है—इतना खरा कि जिसकी पहले कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

स्टालिन की आयु इस समय ६५ वर्ष की होगी। गोरी नामक गाँव के बाहरी छोर पर, एक ग़रीब घर में, २१ दिसम्बर १८७९ को स्टालिन का जन्म हुआ था। उसका पिता मोची का काम करता था। कुछ दिनों वह घर पर ही काम करता रहा, इसके बाद जूतों के एक कारख़ाने में उसने नौकरी कर ली। उसकी पत्नी, स्टालिन की मा, बहुत मेहनती थी और दोनों जून पेट भरने के लिए उसे आस-पास के कपड़े धोने पड़ते थे।

स्टालिन के हृदय पर अपने घर और पास-पड़ोस की परिस्थितियों का बहुत प्रभाव पड़ा। दिन-रात मेहनत-मज़दूरी करने के बाद भी दाने-पाना और कपड़े-लत्ते से मोहताज जीवन की गहरी छाप स्टालिन के हृदय पर पड़ी और छुटपन से ही उसके हृदय में विद्रोही भावनाएं घर करने लगा।

ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही स्टालिन के पिता का देहान्त हो गया। उसकी मा चाहती थी कि वह धार्मिक व्यक्ति बने और अपनी इस इच्छा-पूर्ति के लिए मा ने स्टालिन को एक रूढ़िबन्दी धार्मिक स्कूल में भर्ती करा दिया। स्टालिन पर इसका उलटा प्रभाव पड़ा और ईश्वर की सत्ता में विश्वास जमने के स्थान पर उखड़ने लगा—वह नास्तिक हो गया।

स्टालिन की इस नास्तिकता का परिणाम यह हुआ कि बीस वर्ष की आयु में वह धार्मिक स्कूल से निकाल दिया गया। लेकिन इसका स्टालिन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मार्क्सवादी जीवन-दर्शन को उसने पूरी तरह अपना लिया। ग़रीबी का जीवन कैसा होता है, यह वह पहले से ही जानता था। जारशाही के विरुद्ध उसके हृदय में घृणा उत्तरोत्तर तेज़ होती गई और वह दिन जाते देर नहीं लगी जब स्टालिन गुप्त षडयंत्रकारियों के दल में सम्मिलित हो गया।

जारशाही के विरुद्ध कार्य करने में स्टालिन ने अपनी अद्भुत संयोजन तथा प्रचार शक्ति का परिचय दिया और देखते-देखते अखिल रूसी बाल्शेविक आन्दोलन के कर्णधारों में उसने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। ६ बार जार की पुलिस ने अपने जाल में फाँसकर उसे देश से बाहर नज़रबन्द किया और छहों बार वह नज़रबन्दी से भाग निकला। जारशाही का तख़्ता उलटनेवाली क्रान्ति जिस समय हुई थी, उस समय स्टालिन साइबेरिया में नज़रबन्द था।

जारशाही का तख़्ता पलटने के बाद २ मार्च १९१७ में साइबेरिया से छूटकर पेट्रोग्राड में आ गया और आते ही उसने अपना क्रान्तिकारी कार्य शुरू कर दिया। ३ अप्रैल को 'मुहरबंद गाड़ी' में लेनिन भी स्विजरलैंड से--जहाँ कि वह नज़रबंद था--रूस में आ गया और इसके बाद लेनिन के साथ स्टालिन के जीवन का एक नया दौर शुरू हुआ।

अक्टूबर में बाल्शेविकों के हाथ में राज्य की बागडोर आ गई--क्रान्ति को सफल बनाने का कार्य उन्हीं के जिम्मे पड़ा। यह काम अत्यन्त कठिन था और अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में ही उसे पूरा करना था। सबसे बड़ी समस्या थी अन्न की समस्या। प्रतिक्रियावादी यह देख और सोचकर ख़ुश हो रहे थे कि भूख और अकाल के चक्कर में पड़कर बाल्शेविक पार्टी और उसकी सारी क्रान्तिकारी योजनाएँ दम तोड़ती दिखाई पड़ेंगी।

खाद्य-सामग्री की समुचित व्यवस्था करने का काम स्टालिन को सौंपा गया। एक तो यह काम वैसे ही कठिन था, तिस पर रूस में गृह-युद्ध भी छिड़ गया। विदेशी साम्राज्यवादियों के पैसे और अस्त्रों से इस गृह-युद्ध का सूत्रपात हुआ था। अकाल और गृह-युद्ध दोनों का स्टालिन ने लौह दृढ़ता से मुकाबिला किया और क्रान्ति को विफल करनेवाली साम्राज्यवादी चालों पर पानी फेर दिया।

संसार के तीन महान् राष्ट्रों के नायक—मिस्टर चर्चिल, प्रेसिडेंट रूज़वेल्ट और मार्शल स्टेलिन।

गृह-युद्ध में स्टालिन विजयी हुआ और उसके नेतृत्व में रूस के उद्योगीकरण तथा कृषि के समूहीकरण का काम शुरू हुआ। सोवियट व्यवस्था की बारहवीं वर्षगांठ पर भाषण देते हुए स्वयं स्टालिन ने कहा था--"हमारा देश अब लोहे, मोटर और ट्रैक्टर का देश बनता जा रहा है। जिस दिन हम रूस को मोटर पर और अपने किसान को ट्रैक्टर पर स्थापित कर देंगे, उस वक्त कोई भी पूंजीवादी देश, किसी भी दृष्टि में हमारा मुक़ाबला नहीं कर सकेगा।"

(२)

चर्चिल के व्यक्तित्व को एक शब्द में हम तूफ़ानी कह सकते हैं। संघर्षमय जीवन उसे बचपन से ही प्रिय था। प्रारम्भिक शिक्षा के दिनों में चर्चिल को किताबों में सिर खपाना जरा भी अच्छा नहीं लगता था। उसके मास्टरों ने फतवा दे दिया था कि यह नहीं पढ़ सकता।

चर्चिल के मास्टरों का यह फतवा इस अर्थ में ठीक था कि किताबी जीवन बिताने के लिए उसने जन्म नहीं लिया है। युद्ध और संघर्ष चर्चिल की प्रिय वस्तु रहे हैं। संघर्षमय जीवन का प्रलोभन चर्चिल के लिए सब से बड़ा प्रयोजन रहा है। प्रत्येक छोटे-मोटे संघर्ष में--विशेषकर प्रत्येक औपनिवेशिक युद्ध में--चर्चिल अदबदाकर भाग लेता रहा है। कुछ दिनों तक वह भारत के उत्तर पच्छिमी सरहद की पहाड़ियों में सैनिक-जीवन बिताता रहा। इसके बाद यह सेडान में पहुँच गया जहाँ लार्ड किचनर गौर्डन की मृत्यु का प्रतिशोध लेने में जुटे हुए थे। बोअर-युद्ध में पत्र-प्रतिनिधि की हैसियत से चर्चिल ने भाग लिया और पकड़ा गया।

चर्चिल का जीवन बहुमुखी और बहुरंगी रहा है। अपने जीवन में इतने रंग चर्चिल ने बदले हैं कि चर्चिल-विरोधी कुछ लोग गिरगट से उसकी तुलना करते रहे हैं। इस युद्ध के छिड़ने के बाद जब चर्चिल ने सरकार की बागडोर अपने हाथ में ली थी तो कुछ लोगों ने नाक-भौंह सिकोड़कर यह प्रकट करना चाहा था कि कि इस आदमी का क्या ठीक। न जाने किस वक्त कौन रंग बदल बैठे।

यह अनुमान कितना ग़लत सिद्ध हुआ, कहने की आवश्यकता नहीं। चैम्बरलेन की ढुलमुल नीति की ओर लक्ष्य करते हुए सुनिश्चित और सुस्पष्ट शब्दों में कहा था—"दो मार्ग हमारे सामने थे। एक युद्ध का, दूसरा अप्रतिष्ठा तथा आत्मग्लानि का। हमने अप्रतिष्ठा और आत्मग्लानिवाला मार्ग चुना है, यद्यपि इस मार्ग का अन्त भी युद्ध में ही होगा।"

सोवियट रूस से चर्चिल का कितना विरोध था, यह हम सभी जानते हैं। लेकिन जर्मनी ने जब रूस पर आक्रमण किया तो चर्चिल को रूस से हाथ मिलाने में देर नहीं लगी। ढुलमुल नीति का चर्चिल के साथ स्वप्न में भी सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता। तीव्र विरोध—यहाँ तक कि घणा होते हुए भी चर्चिल ने रूस से समझौता किया। पूछने पर चर्चिल ने कहा--"ब्रिटेन की रक्षा के लिए मैं
से भी समझौता करने से नहीं

(३)

फ़्रैंकलिन डिलानो रूज़वेल्ट
उनकी दृढ़ इच्छा-शक्ति का परि
जीवन की ड्योढ़ी पर पाँव रखते
पक्षाघात के शिकार हुए और
पाँव बेकार हो गये। रूज़वेल्ट
पावों की ओर संकेत करते हुए
लोग उपेक्षा की हँसी हँसा
लेकिन ऐसा करते समय विपक्षी
थे कि पक्षाघात ने रूज़वेल्ट
पर ही प्रहार किया है, उनकी इच्छा
पर नहीं।

१९३२ में पहली बार
रूज़वेल्ट का नाम जनवादी पार्टी
से पेश किया गया। चुनाव-आन्दो
जिस सरगर्मी से रूज़वेल्ट ने भाग
उसे देखकर कोई यह नहीं कह
कि वे लुञ्ज हैं या कुछ कर नहीं

रूज़वेल्ट की सबसे बड़ी विशे
उनकी हँसी और स्वभाव की
उनका मुख अद्भुत चमक से चमक
था। जो भी आप से मिलता
होकर रह जाता था और इसकी
तक नहीं कर सकता था कि
जैसा आदमी भी बीमार हो

रूज़वेल्ट का जन्म ३०
१८८२ को हाइड पार्क (न्यूयार्क
था। उनकी
नाम डिलानो
पिता का रूज़वे
था। इसी लिए
पूरा नाम
डिलानो रूज़वे
रूज़वेल्ट के
पास खेती-कि
काफ़ी धन हो
योरप की या
का उन्हें ब
था। अपने
रूज़वेल्ट को
साथ ले
इस प्रकार
ही रूज़वेल्ट को
पीय देशों के
को निकट
समझने का
अवसर मिला।

अमरीका
राष्ट्रपति
दूर के रिश्ते में
कुछ लगते
बहुधा घर
करते थे। छोटे
वेल्ट की सू
उन्हें बहुत
किया था। जब वह अमरीका
पति बने तो छोटे रूज़वेल्ट ने हँस
उनसे कहा था--"यदि मैं कभी
का राष्ट्रपति बना तो आपसे
करूँगा।"

इसके उत्तर में पूर्व राष्ट्रपति
ने भी हँसकर उत्तर दिया--"
तुम राष्ट्रपति बनोगे, या तो
रसातल में चला जायगा या
बिलकुल एक नई दुनिया हो
हँसी में कही गई यह बात,
आवश्यकता नहीं, सत्य की
कितनी खरी उतरी है।

युग और साहित्य
युगद्रष्टा तथा उनमे प्रमा
सम्भावनाओं की समन्वयपूर्ण
माध्यम से उपस्थित करनेवाली
का संकलन।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इला

पश्चिमी मोर्चे के प्रमुख सेनापति

'ब्रिटिश सेनापति फील्ड मार्शल मांटगुमरी'

ब्रिटेन के सेनापतियों में एक प्रधान सेनापति जनरल गोर्ट ।

सेना की अपेक्षा उसका नेतृत्व ही अच्छा होता है। लाखों मनुष्यों के भाग्य का तथा इतिहास का निर्माण तो उन्हीं के द्वारा होता है जो नेतृत्व करते हैं। यहाँ पर अमरीकन सेनापतियों के चरित्र दिये ये हैं जिनसे उनकी शिक्षा, अनुभव, जन्म-भूमि आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ेगा।

हमें भिन्न-भिन्न स्वभाव के अमरीकन सेनापति मिलते हैं। अमरीका में आनुवंशिक 'अधिकारी वर्ग' नाम की कोई वस्तु नहीं है। अमरीकन सेनापति साधारण जीवन में तो एक अप्रसिद्ध व्यक्ति होता है परन्तु लड़ाई के जीवन में वह एक गूढ़ आदमी बन जाता है। इनमें से कतिपय सेनापति सेना के अधिकारियों के पुत्र हैं जिनमें से कुछ सेना की पुरानी परम्परा में पले हैं। पर बहुत से नहीं पले हैं। उदाहरण के लिए यहाँ दो का उल्लेख किया जाता है जैसे सेनापति आइसेन होवर एक किसान का लड़का था, और सेनापति पेतां एक धनी का लड़का था। उनकी बौद्धिक शक्ति और स्वभाव विभिन्न होने पर भी उनमें सेवा-भाव, कार्यशक्ति, निश्चय, नेतृत्व, आत्म-विश्वास और किसी काम को पूरा करने की सामर्थ्य वर्त्तमान हैं।

मोर्चे पर नियुक्त सेनापतियों के साथ ही साथ हमें स्टाफ सेनापतियों का भी विचार करना होगा। लाखों युवकों को सैनिक बनाना स्टाफ का कार्य है जो बड़ी सुन्दरता से किया जाता है। इन लाखों आदमियों ने और अधिकारियों ने शासन, तैयारी, निर्यात तथा ट्रेनिंग आदि का कार्य किया है। सोंबरवी जो 'आर्मी सर्विस फोर्स' का प्रधान है, एक व्यापारी संघटन का मुख्य अधिकारी है। इस संघटन के आगे एक बड़ा औद्योगिक संघ भी तुच्छ है। बड़े-बड़े व्यापारी अधिकारियों, इंजीनियरों और औद्योगिक शासकों में जो गुण होते हैं उन्हीं की अपेक्षा आधुनिक जनरल स्टाफ से की जाती है। अमरीका की सेना-प्रणाली ने आश्चर्यजनक शक्तियों को जन्म दिया है।

मित्र-राष्ट्रीय सैनिकों के प्रधान सेनापति जनरल आइसेन होवर ।

जनरल ज़ीरो ।

सम्भवतः यह सच है कि निर्यात और सप्लाई की अच्छी प्रणाली तथा सेनापतियों की रणनीति-निपुणता के कारण ही ट्यूनीशिया में यश मिल सका है। तथा योरोपीय सेनाओं के आक्रमण हो सके हैं।

सेनापति ड्वाईट डेविड आइसेनहोवर

यद्यपि सेनापति डेविड को हेडक्वार्टर में रहना पड़ा फिर भी वह एक मोर्चे पर लड़नेवाला सेनापति था। मोर्चे पर जाने के लिए उसने कभी-कभी दो सौ मील तक की यात्रा की है।

आइसेन होवर अमरीका के अच्छे सेनापतियों में गिना जाता है। वह टैंक-लड़ाई का तथा जल, स्थल और हवाई लड़ाई का विशेषज्ञ माना जाता है। रण-नीति कुशल होते हुए भी वह इतिहास का अच्छा ज्ञाता है। साधारणतः वह नम्र है पर अवसर आने पर वह निष्ठुर हो जाता है जैसा कि १९४१ में देखा गया है। उसके पेशे में ही उसका अधिक महत्त्व है। चार साल पहले वह अमरीकन सेना में एक कोलोनल था लेकिन अब श्रेष्ठ सेनापति हो गया है। अन्य अधिकारियों की अपेक्षा उसने अधिक तेजी से उन्नति की है। उसने दो कठिन विभागों का संचालन किया है—ट्यूनीशिया पर चढ़ाई और योरप पर आक्रमण।

उसके पूर्वज १९३० में अमरीका आये। उसका पिता जो धार्मिक था, कनसस की रियासत में इंजीनियर तथा किसान था। उसके एक मित्र एवरोथ होस्लिप ने उसे सेना में भर्ती होने के लिए प्रथमतः प्रोत्साहित किया। १९११ में वह 'वेस्ट पाइंट मिलिटरी एकेडेमी' में भर्ती हुआ। उसके शिक्षकों का ध्यान उसकी योग्यता ने आकृष्ट कर लिया। वह बहुत ही गुण—जैसे सख्त काम करने की शक्ति, विशेषकर सैनिक इतिहास से प्रेम आदि अपने घर से ही लाया था।

१९१५ में वेस्ट पाइंट से ग्रेजुएट होने के [illegible] उसने यान्त्रिक युद्धकला का अध्ययन किया। पिछले युद्ध में उसने टैंक सेनाओं को ओवरसीज ट्यूरी के लिए अच्छी ट्रेनिंग दी। वह १९२२ में इन्फ़ेंट्री टैंक स्कूल से, १९२६ में कमांड एण्ड जनरल स्टाफ स्कूल से तथा १९२८ में आर्मीवार कालेज से भी ग्रेजुएट हुआ। यहाँ पर उसने ऐसा सम्मान प्राप्त किया कि बाद में प्रतिस्पर्धा की प्रथा हटा दी गई।

वाशिंगटन में उसने सैनिक एअर पावर के मध्यवर्ती नियंत्रण की योजनाएँ तैयार कीं। १९३५ में वह एक आर्थर के साथ फिलीपाइन्स आया और वहाँ पर उसने जापान के विरुद्ध लड़ाई की।

फिलीपाइन्स में उसे एक द्वीप से दूसरे द्वीप को उड़कर जाना पड़ता था। इसलिए उसने इस विषय का अच्छा अध्ययन किया और सैंतालीस साल की उम्र में उसे विमानचालक का अधिकारपत्र मिल गया।

जापानियों द्वारा पर्लहार्बर पर हमला करने के पाँच दिन बाद युद्ध-विभाग ने उसे वाशिंगटन में बुलाया। वहाँ उसने छः महीने तक लगातार काम किया।

जनरल मार्शल ने उससे अचानक एक दिन पूछा "तुम तो हमारी सेनाओं का नियंत्रण करने के लिए इँगलैंड जा रहे हो, बताओ तुम कब जा सकते हो?" उसने

जनरल वेगा ।

उत्तर दिया 'कल सुबह' १९४२ में उसने ब्रिटिश और अमरीका की सेनाओं का संचालन किया और फलस्वरूप ट्यूनीशिया का पतन कर डाला। इँगलैंड ने उसका सम्मान किया।

दूसरे मोर्चे की योजना इसी ने सुझाई थी, इसी लिए उसका इस पद के लिए निर्वाचन किया गया। बड़े-बड़े अधिकारियों को उसकी योजनायें योग्य प्रतीत हुईं। कारण यह था कि उसने यांत्रिक युद्ध-कला का अध्ययन किया था।

१९४३ में रूजवेल्ट ने उसे सुप्रीम कमाण्डर घोषित किया। उसका व्यवहार मित्रतापूर्ण तथा खुले दिल का होता है जिससे वह जनता का विश्वास संपादन करता है।

उसे एक लड़का है जो १९४४ में ग्रेजुएट हो गया है।

सेनापति ओमर एन् ब्रडले

ब्रडले ने ट्यूनीशिया में अमरीका की विजयी सेनाओं का नेतृत्व किया था। उसे एक श्रेष्ठ पदक भी प्राप्त हुआ था। उसके विषय में यह कहा जाता है कि वह स्थिर निश्चय, योग्य निर्णय, श्रेष्ठ रणनीति नैपुण्य, राजभक्ति, हिम्मत तथा वैयक्तिक ज़िम्मेदारी धारण करने की इच्छा का मनुष्य था। नाज़ियों के साथ युद्ध होने जा रहा था तभी उसने अफ्रीकन कमाण्ड लिया। वह युद्धकला का सर्वोत्तम ज्ञाता, रणनीति-निपुण तथा पैदल सैनिकों का विशेषज्ञ माना जाता है।

ब्रडले का कहना था कि पलटन को लड़ाई का भार सँभालना चाहिए। उसमें दुश्मन का नाश करने की शक्ति होनी चाहिए।

ट्यूनीशिया की आखिरी लड़ाई में ब्रडले के कारण ही विशेष प्राणहानि नहीं हुई। अपनी युद्धनीतियों के अनुसार वह काम करनेवालों को ही श्रेय देता है। एक बार उसने कहा था कि, हमारी सेना ने प्रतिकूलता का सामना किया तथा विजय को भी प्राप्त किया है। हमारे अधिकारी और सिपाही दोनों दुश्मन तथा उसकी चालों को जानते हैं। दोस्तों की विजय प्राप्त करने में हमारे सिपाहियों ने हिम्मत, व्यावहारिक नीति तथा श्रद्धा के साथ बहुत काम किया है।

युद्धभूमि में वह आर्मी ट्रक में ही रहना चाहता है। इस ट्रक में एक बिस्तर तथा नक़शा होता है जिसका अध्ययन वह आक्रमण के समय रात-रात भर अकेले ही किया करता है।

१८९३ में वह मोबरली में पैदा हुआ। अमरीका की मिलिटरी एकेडेमी से वह पिछले युद्ध के समय ग्रेजुएट हुआ। दो बार उसने मिलिटरी एकेडेमी में तथा तीन साल तक हावैन द्वीपों में नौकरी की।

उसके एक सहपाठी ने इस बात पर बड़ा गर्व किया है कि ब्रडले ऐसी जगह पर है। पैदल सेना के विशेषज्ञ ब्रडले ने अपना व्यवसाय निरन्तर क़ायम रक्खा युद्धभूमि में वह स्वयं शत्रुओं की जाँच करता था, अच्छी योजनाएँ बनाता था। तथा शत्रुओं को भली-भाँति समझकर उन्हें मार भगाने की चालें चलता था।

सेनापति मार्क क्लार्क

अमरीका का छोटी उम्रवाला सेनापति। इसने इटली में पाँचवीं सेना का नेतृत्व किया। इस सेना ने जर्मनों को भगाया, रोम और नेपॅल को स्वतन्त्र किया तथा हिन्दुस्तानी, ब्रिटिश और पोलिश सेनाओं को प्रोत्साहित किया।

क्लार्क सेनापति की तरह देख पड़ता है। उसकी मुख्य विशेषता यह है कि वेलिंगटन तथा वाशिंगटन की भाँति उसका नाम बड़ा है।

वह फ्रंट लाइन-सेनापति माना जाता है क्योंकि वह लड़ाई के प्रत्यक्ष दृश्य के पास रहना चाहता है। खतरे की जगहों में रहने की उसे आदत है। एक बार उसने अपना हेडक्वार्टर नेपॅल के होटल में स्थापन किया जहाँ बाद में बारूद पाये गये। एक बार वह एक बोट पर जा रहा था। जब अमरीकन जंगी जहाज़ को उसके बोट का परिचय चिह्न नहीं दिखाई पड़ा तब उस पर गोली चलाई गई। अधिकारी मर गया पर क्लार्क बच गया।

इसी प्रकार एक बार वह दोस्तों की फ़ौजें उतरने के पहले उत्तरी अफ़्रीका में गुप्त रूप से गया था। वहाँ पर उसने फ्रेंच अधिकारियों से परामर्श किया जिससे मित्रराष्ट्रों की फ़ौजें आसानी से उतर सकीं, यहाँ उसने अपने पैजामे खो दिये क्योंकि बोट उलट दी गई थी। एक बार वह आलजीर को गया। चालीस जर्मन हवाई जहाज आये पर क्लार्क गोली से बच गया।

एक सभा के लिए वह नेपॅल में गया। वहाँ के निवासियों ने दो छोटे हवाई जहाज देखे। वह तुरन्त उतरा और होटल में चला गया। बाद में वह बाहर आया। हवाई जहाज में बैठा और उड़ गया। उसको इटली के अधिकारियों से परामर्श करना था और चूँकि सड़कों पर बड़ी भीड़ थी इसलिए उसने हवाई जहाज़ का उपयोग किया।

अमरीका की मिलिटरी एकेडेमी का वह विद्यार्थी है। उसके विचारों में मौलिकता है। वह योजना तैयार करने में बड़ा कुशल है।

वह अपने पिता की तरह पैदल सेना में भर्ती हुआ। दूसरा लेफ्टिनेंट होने के बाद वह फ्रांस गया जहाँ घायल हुआ। सन्धि होने के पहले उसने फिर से काम आरम्भ किया।

अमरीका में वह स्टेट नेशनल गार्ड का प्रधान हुआ। बाद में उसने नौकरी छोड़ दी। उसके पिता ने उसको सिपाही रहने को बाध्य किया।

१९३७ में ग्रेजुएट होने के बाद उसने पैसिफिक किनारे पर अच्छा काम किया। १९४० में जार्ज मार्शल ने उसको वाशिंगटन में जनरल हेडक्वार्टर स्टाफ पर काम करने के लिए बुलाया।

जेनरल आइसेन होवर

पहले ही वर्ष उसने साठ हजार
यात्रा वायुयान से की।

इँगलैंड में जब वह भेजा
वहाँ उसने चर्चिल का तथा अन्य
विश्वास प्राप्त किया। उत्तरी
फौजें उतारने के सम्बन्ध में
होवर की जो योजनायें थीं
कार्यान्वित करना ही उसका
था। चर्चिल के मत में जनता
कार्य को हमेशा बड़े आदर से
आइसेनहोवर ने पदक देते
था कि उसने नेतृत्व, योग्य
गुणों का सुन्दर प्रदर्शन किया है।

सेनापति जार्ज एस० पेताँ

वह लम्बा और साँप
फुर्तीला है। उसका रंग कुछ लाल
नीली। वर्जीनिया के एक धनी—
शिकार करनेवाले व्यक्ति के यहाँ
जन्म हुआ। ग्यारह साल की उम्र
पोलो अच्छी तरह खेलता था
के मांस के प्रेम ने उसने घुड़
पेशे का निर्वाचन किया।

पूर्ण कैवलरी आफ़िसर होने
उसने अपने को एक अच्छा
खड्गधारी तथा सैनिक कलाओं में
बनाया।

एक बार उसने ओवरसीज
लुटेरों को बड़ी बहादुरी से पकड़ा
तथा उसके आदमियों ने उन
घेर लिया। बाद में वह उस खाई के

(शेष पृष्ठ ३२ पर देखिये)

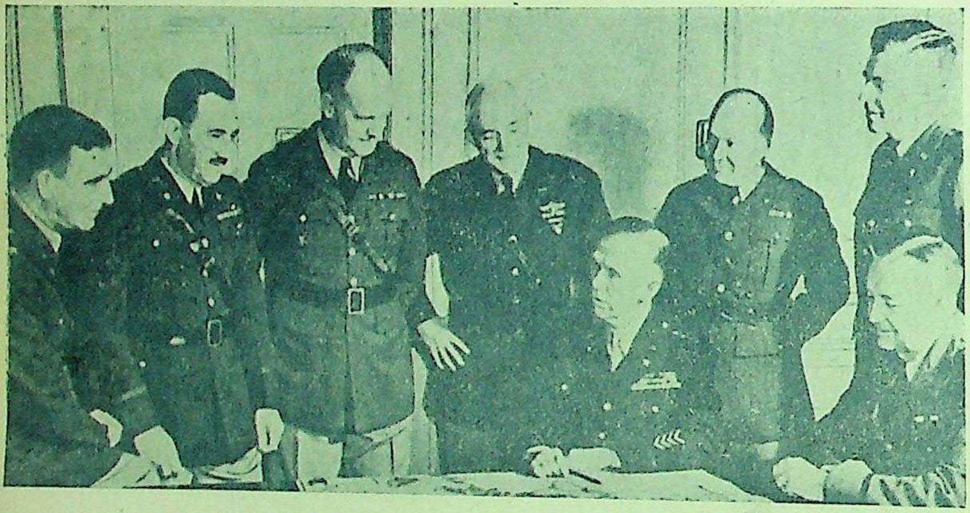
संयुक्त-राष्ट्र अमरीका की सेना के प्रधान सेनापति जेनरल जी० सी० मार्शल अपने अन्य सहकारियों के साथ।

◆

If it's ELGIN it's good!

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साडियाँ, जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपडे, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए

सरकारी कपडा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामो में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, अधिकांश मालगाडी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमे पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों मे ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

EK 23

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपूर

डिस्टिंग्युश्ड सर्विस आर्डर
(सामने का दृश्य)

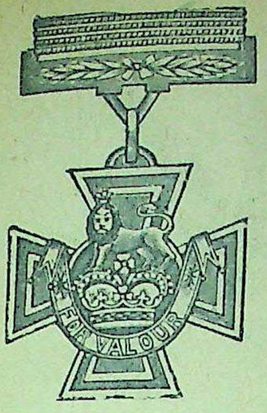

विक्टोरिया क्रास

डिस्टिंग्युश्ड सर्विस आर्डर
(पीछे का दृश्य)

डिस्टिंग्युश्ड सर्विस मेडल

मिलिटरी मेडल

विजय दिलानेवाली रणनीति की रूपरेखा

मित्रराष्ट्रों के युद्धप्रयत्नों में ब्रिटेन का स्थान

लेखक, मेजर जनरल आर० एच० एलेन

इस दूसरे विश्वयुद्ध में ब्रिटेन ने जिस रणनीति का अनुसरण किया है वह परीक्षा की सूक्ष्म से सूक्ष्म कसौटी पर पूरी उतर रही है।

इस रणनीति पर हमें दो भागों में विचार करना चाहिए। प्रधान रणनीति, जिसमें निश्चय किया जाता है कि शक्ति से काम किस क्षेत्र में लिया जाय और दूसरी गौण रणनीति, जिसमें निर्णय किया जाता है कि निर्धारित क्षेत्र में शक्ति का प्रयोग किस प्रकार किया जाय। रणनीति के इन दोनों ही क्षेत्रों में दावा किया जा सकता है कि आरंभ के घातक काल के उपरान्त ब्रिटेन ने अपनी युद्ध-शक्ति का अधिक से अधिक लाभपूर्ण ढंग से उपयोग किया।

डिस्टिंग्युश्ड सर्विस क्रास

आरम्भ का घातक काल

इसमें कोई संदेह नहीं कि आरंभ में ब्रिटेन को बड़े घातक काल में से गुज़रना पड़ा। बजाय इसके कि वह पहले समुद्री शक्ति-द्वारा रक्षित अपनी नियमित लघु सेना का विस्तार करे, शस्त्रास्त्र-द्वारा उसकी शक्ति बढ़ावे और फिर अधिक से अधिक लाभपूर्ण ढंग पर संसार के जिस भाग में उचित समझे उसका उपयोग करे, ब्रिटेन यूरोप में कुछ विशेष दायित्व अपने ऊपर ले चुका था। इसी लिए फ़्रांसीसी सेना की सहायता के लिए उसे यूरोप में सैनिक तथा सामग्री भेजनी पड़ी। इस नीति का १९४० की ग्रीष्म ऋतु में फ़्रांसीसी सेना की पूर्ण पराजय के कारण दिवाला निकल गया। ब्रिटेन अपनी छोटी सी सेना को डंकर्क से वापस हटा सका, किन्तु सेना के सब साज-सामान से उसे हाथ धोना पड़ा।

THE GEORGE MEDAL
ज्यार्ज मेडल

परन्तु इससे आगे ब्रिटेन जर्मनी को अपनी इच्छा उस पर लादने और निर्णयात्मक युद्ध लड़ने के स्थल का चुनाव करने से रोकता रहा।

जून १९४० में ब्रिटेन सीमित मात्रा में युद्ध-सामग्री तैयार कर रहा था। इस थोड़ी सी युद्ध-सामग्री को ब्रिटेन की रक्षा के लिए संग्रहीत रखने और जर्मनी के आक्रमण की निष्क्रियतापूर्वक प्रतीक्षा करने के स्थान पर ब्रिटेन ने एक दूसरा ही साहसपूर्ण निश्चय किया। उसने देश की रक्षा का भार नौसेना और वायुसेना के कंधों पर डाल दिया। और सब उपलब्ध बख़्तरबंद सामग्री को स्वेज नहर की रक्षा के लिए इटालियनों का सामना करने के लिए मिस्र भेज दिया।

दूरदर्शितापूर्ण निश्चय

रणनीति की दृष्टि से यह बड़ा ही दूरदर्शितापूर्ण निश्चय था। प्रधान रणनीति के क्षेत्र में शत्रु से यूरोप में टक्कर लेने का निश्चय किया गया और जहाँ तक गौण रणनीति का सम्बन्ध था फील्ड-मार्शल लार्ड वेवेल ने अपनी सेना का उपयोग कुछ बहुत ही उत्तम कार्रवाइयों में किया। इटालियनों की एक बहुत बड़ी सेना पश्चिम से मिस्र की ओर बढ़ी चली आ रही थी और उधर पूर्व में लार्ड वेवेल के पीछे लगभग उतनी ही विशाल सेना अबीसीनिया में थी।

परन्तु लार्ड वेवेल ओखली और मूसल के बीच कुचल दिये जाने के लिए चुपचाप न बैठे रहे। अपनी सेना के एक छोटे भाग को सूडान और मिस्र में छोड़कर शेष सेना के साथ उन्होंने इटालियनों से लोहा लेने के लिए पश्चिम की ओर कूच कर दिया। इटालियन सेना की विभिन्न टुकड़ियों की दोषपूर्ण नियुक्ति देखकर उन्होंने तुरन्त आक्रमण किया और एक एक करके उन सबको ठिकाने लगा दिया।

मिलिटरी क्रास

इटालियन सेना का विनाश

कुछ सप्ताहों ही में सम्पूर्ण इटालियन सेना का लीबिया में विनाश हो गया। इसके उपरान्त वे अबीसीनिया की ओर मुड़े और लगभग उतनी ही आश्चर्यपूर्ण विजयें प्राप्त करने के लिए कूच कर दिया।

ये १९४१ की वसन्त ऋतु के दिन थे। यूनान की लघु सेना का दमन करने में इटली को असमर्थ देखकर जर्मनी और उसके पिछलगुवे बलगारिया की सेनाएँ

स्टिंग्युश्ड फ्लाइंग मेडल

FOR
CONSPICUOUS
GALLANTRY
कान्स्पिक्युश्ड गैलैण्टी मेडल

डिस्टिंग्युश्ड फ्लाइंग क्रास

एयर फ़ोर्स मेडल

उसकी सहायता के लिए आ गई थीं। ब्रिटेन यूनान की सहायता का आश्वासन दे चुका था इसलिए जर्मन सेना से मुक़ाबला करने के लिए उसने वेवेल की सेना का बहुत बड़ा भाग भेज दिया। तत्कालीन अवस्था में जितनी सेना भेजी जा सकती थी वह यूनान की रक्षा के लिए पर्याप्त न थी, किन्तु ब्रिटेन ने संसार को दिखा दिया कि जीवन-मरण की घड़ी के समय भी वह अपने वचन से विमुख नहीं होगा।

यद्यपि रणचातुर्य की दृष्टि से ब्रिटेन को असफलता मिली थी फिर भी सैनिक दृष्टि से उसका यह कार्य महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

हिटलर ने १९४० के जाड़े में ही अगले वसन्त में रूस पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया था। इस विश्वासघातपूर्ण कार्य के लिए कौन सी तारीख निर्धारित की गई थी यह निश्चयपूर्वक कोई भी बता नहीं सकता फिर भी आक्रमण संभवतः मई के पूर्वार्द्ध में होनेवाला था। परन्तु हम जानते हैं कि उसने जून के अंतिम दिनों तक यह आक्रमण नहीं किया। बाल्कन तथा क्रीट के संघर्षों के कारण जो देर हो गई थी उससे बचने के लिए हिटलर नवम्बर में बड़े से बड़ा त्याग करने को तैयार हो सकता था।

समुद्री मार्गों पर प्रभुत्व

अगले १८ महीने ब्रिटेन को समुद्री मार्गों पर प्रभुत्व स्थापित करने में लग गये, क्योंकि ऐसा किये बिना वह अपनी शक्ति पूरी तरह लगाने में किसी भांति समर्थ न हो पाता। समुद्री मार्गों की रक्षा के ही विचार से भूमध्यसागर के अफ़्रीकी तट पर अधिकार किया गया। साथ ही ब्रिटेन के जंगी बेड़े में छोटे जहाज़ों की वृद्धि पनडुब्बियों के खतरे से बचे रहने के उद्देश्य से की गई।

जंगी जहाजों की इस वृद्धि के साथ ही साथ जर्मन युद्ध-उद्योगों के विनाश के लिए भारी बमवर्षकों के उत्पादन में वृद्धि होनी आवश्यक थी।

ब्रिटेन ने अपने युद्ध-साधनों का बँटवारा इस खूबी से किया कि मई १९४३ तक तीनों उद्देश्यों की सिद्धि हो गई और साथ ही वह कुछ युद्ध-सामग्री रूस को भेजने में समर्थ रहा।

अमरीका का युद्ध में प्रवेश

१९४१ के अन्त में अमरीका के युद्ध में कूद पड़ने से मित्रराष्ट्रों को असाधारण सहायता प्राप्त हो गई। यद्यपि अमरीका ने सुदूरपूर्व में जापान के विरुद्ध युद्ध को चलाने में मुख्य भार वहन किया है फिर भी यूरोपीय युद्ध में उसने साधारण रूप से ब्रिटेन की रणनीति को स्वीकार कर लिया है। इस प्रकार १९४२ और १९४३ में निश्चित नीति का सफल प्रयोग किया गया। उत्तरी अफ़्रीका से धुरी सेनाओं का सफाया कर दिया गया और पनडुब्बियों की कार्रवाई के बावजूद समुद्री मार्गों पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया गया। उधर दूसरी तरफ़ शाही वायुसेना के बमवर्षक बेड़े का विस्तार होता गया और युद्ध जर्मनी के भीतर तक पहुँच गया।

भूमि पर रोमेल की सेना की अग्रगति रोक कर अल अलामीन में उसकी कमर तोड़ दी गई। इसके उपरान्त ब्रिटिश सेना

—शेष पृष्ठ २८ पर देखिये

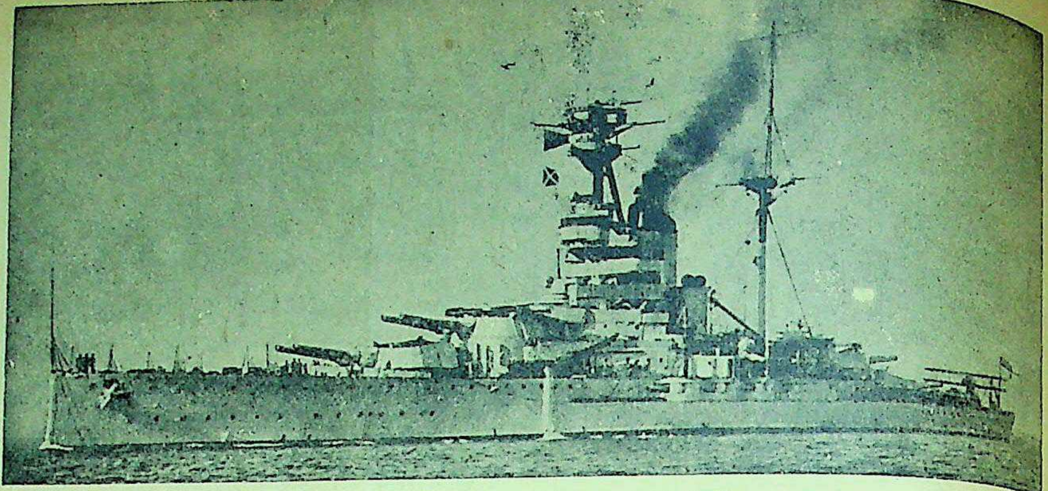

अंग्रेजी लड़ाकू जहाज—रिज़ोल्यूशन।

अमरीका का एक वायुयान वाहक जहाज।

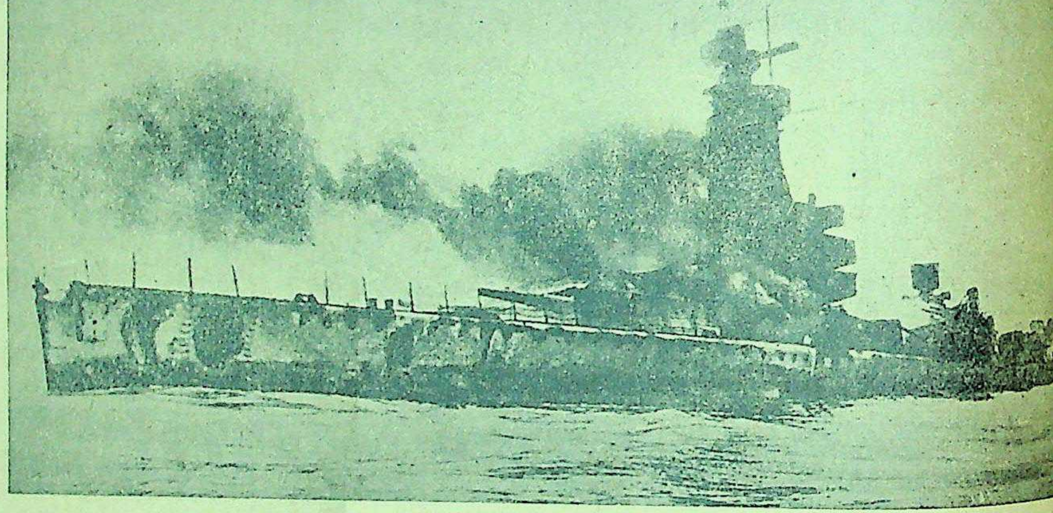

जर्मन जहाज़ ग्राफ़स्पी, जल रहा है।

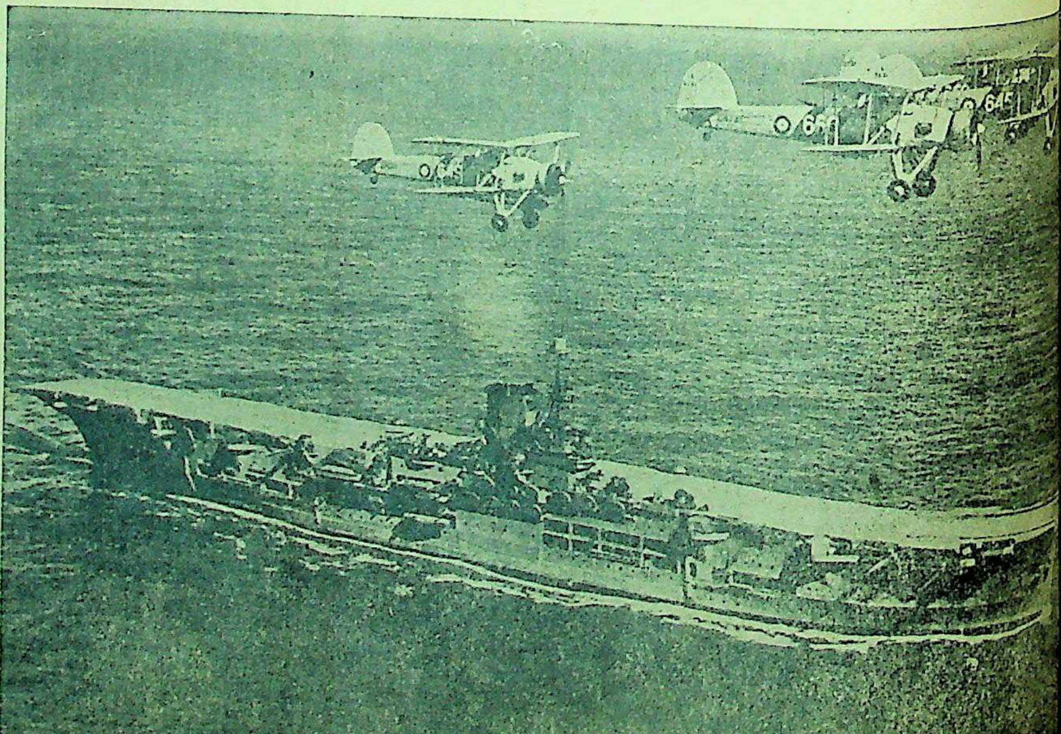

वायुयान वाहक।

आज यह विजय कैसे प्राप्त हुई?

ारत में शस्त्रोत्पादन के विस्तार की अपूर्व कहानी

प्रायः छः लम्बे और कठिन वर्षों के ाद योरोपीय युद्ध में अब अन्तिम विजय का समय आया है और इस दीर्घकाल में भारत की शस्त्रास्त्र तैयार करनेवाली फ़ैक्टरियाँ तथा असैनिक कारखाने, अधिक से अधिक सामग्री उत्पन्न करने की दौड़ में बढ़कर इतने विशाल हो गये हैं, कि युद्धोत्पादन के कार्य में उनकी तुलना मित्र देशों के बड़े-बड़े कारखानों से की जा सकती है।

भारत के युद्धास्त्र उत्पन्न करनेवाले कारखानों ने प्रायः वह प्रत्येक वस्तु तैयार की है, जो हाथ राइफल, तोप अथवा खाई की बन्दूक से शत्रु पर फेंकी जाती, आकाश में उसके सिर पर गिराई जाती, जहाज़ से जल-गर्भ में स्थित उसके पनडुब्बों पर चलाई जाती अथवा उसके टैंक नष्ट करने के लिए स्थल-मार्ग में मिट्टी के नीचे छाई जाती है। इन कारखानों ने मशीन-नें, आधुनिक तोपें, बम, सुरंगें और समुद्री गोले सब कुछ तैयार किये हैं। तोपों के गोले, टैंकनाशिनी सुरंगें, अनेक प्रकार के विस्फोटक पदार्थ, विविध प्रकार के गोले, तोपवाहक गाड़ियाँ, धूम्रोत्पादक यन्त्र आदि सामग्रियाँ भी इन कारखानों में तैयार की गई हैं। असैनिक कारखाने विभिन्न अस्त्रों के विविध भाग, जिन्हें संयुक्त करके वे अस्त्र बनाते हैं, प्रस्तुत करने में व्यस्त रहे हैं। इसके अतिरिक्त, अनेक प्रकार के सहायक धन्धों का भी संगठन एवं विस्तार किया गया, जो हज़ारों टन, फौलाद, पीतल, तथा अस्त्र बनाने के काम में आनेवाली अन्य धातुएँ तैयार करते रहे। अनेक प्रकार के रंग, वार्निशें, उन्हें पैक करने के डिब्बे तथा अस्त्रों के लिए कई तरह के विस्फोटक बनाते रहे। भारत के युद्धास्त्रोत्पादन की कहानी, उद्योगों के चतुर्दिक विकास एवं संगठन की वह पेचीदी कहानी है, जिसमें हमारी औद्योगिक प्रणालियों की त्रुटियों के समाधान और यन्त्रों, व्यक्तियों ा कच्चे माल की प्राप्ति से सम्बन्ध नेवाली कठिनाइयों के निराकरण के थ हमारे अनवरत उद्योग का समन्वय ने को मिलेगा।

द्धकाल में अभूतपूर्व उत्पादन

युद्धकाल में भारत का शस्त्रास्त्रोत्पादन ा, तिगुना, चौगुना और कई चीज़ों २० से ५० गुना तक बढ़ गया। उदाहरण लिए कुछ ही दिन पहले एकत्रित किये कड़े नीचे दिये जाते हैं।

वस्तुएँ
युद्ध-काल का उत्पादन,
युद्ध से पहले उत्पादन
की तुलना में
फलें
नें
लगभग ११ गुना
हथियारों की गोलियाँ २० गुना
और गाड़ियाँ ४ गुना
और खाई की तोपों के गोले २० गुना
ोले, सुरंगें, बम, औज़ार तथा ३५ गुना
अग्नि
न करनेवाले विस्फोटक पदार्थ,
में पहले जिनका उत्पादन यहाँ
होता था। ५० गुना

शस्त्रास्त्रों में जो अन्य अधिक आवश्यक वस्तुएँ तैयार की गईं, वे ये हैं—६ पौंड के गोले फेंकनेवाली तोपों की गाड़ियाँ, हल्की मशीनगनें खड़ी करने के तिपदे, विमान-वेधी तोपों के अड्डे, दूरवीक्षण यंत्र, ढाल-मापक यंत्र तथा सैनिक चश्मे।

युद्धकाल से पहले

युद्धकाल से पहले भारत में शस्त्रास्त्र के कुछ ही कारखाने थे, जो विशेष प्रकार की चीज़ें तैयार किया करते थे। सेना के काम की भी वे बहुत-सी चीज़ें तैयार किया करते थे। किन्तु युद्ध के ढंग में परिवर्तन होने से आवश्यक प्रतीत हुआ कि उनके उत्पादन में भी परिवर्तन किया जाय।

वास्तव में भारत के युद्धास्त्र उद्योग का व्यापक विस्तार फ़्रांस के पतन के बाद से आरम्भ हुआ, जब ब्रिटिश राष्ट्रसमूह के देश अपने निर्दय एवं पूर्णतः शस्त्र-सज्जित शत्रु का सामना करने के लिए बिल्कुल अकेले थे। उस स्थिति में भारत ब्रिटेन पर अधिक अवलम्बित नहीं रह सकता था, क्योंकि, ब्रिटिश कल-कारखानों पर जर्मन विमानों की अनवरत बमवर्षा आरम्भ थी और अत्यधिक आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति के लिए ब्रिटेन को स्वयं राष्ट्रसमूह के अन्य देशों से सहायता लेने को बाध्य होना पड़ा था। साथ ही, युद्धारम्भ के प्रथम कुछ वर्षों में समुद्री यातायात की कठिनाइयाँ तथा जापानियों के भारत की सीमा तक पहुँच जाने के कारण भी यहाँ शस्त्रोत्पादन अधिक बढ़ाने की योजना बनानी पड़ी थी।

लड़ाई छिड़ने से कुछ ही दिन पूर्व, चैटफील्ड योजना कार्यान्वित करना आरम्भ हुआ था। वह योजना, जिसके अनुसार देश में शस्त्रास्त्र तैयार करनेवाले सभी कारखानों के विस्तार तथा उनमें हर प्रकार के आधुनिक अस्त्र उत्पन्न करने की मशीनें लगाने का निश्चय किया गया था, अब पूरी शक्ति से चालू है। इस योजना में यह व्यवस्था भी की गई थी कि अत्यधिक विस्फोटक पदार्थों के उत्पादन के लिए एक बड़ा कारखाना बनाया जाय, जिसमें तूलीन बनाने की भी मशीन रहे और साथ ही, बिना धुएँ की बारूद बनाने के कारखाने का विस्तार किया जाय। चैटफील्ड योजना के कार्यान्वित होने के बाद अन्य कई योजनायें बनाई गईं। इनमें सर्वाधिक महत्त्व की योजना यह थी कि भारत में छोटे हथियारों, पिस्तौल, रिवालवर आदि की गोलियों के उत्पादन में, १ करोड़ २० लाख गोलियों की मासिक वृद्धि हो। बिना धुएँ की बारूद के कारखानों और फौलाद तथा अन्य धातुएँ तैयार करने के कारखाने को बढ़ाने तथा गोला-बारूद की फ़ैक्टरियों के विस्तार की भी योजनाएँ निश्चित की गईं।

राजर प्रतिनिधिमंडल

युद्ध छिड़ने के कुछ ही दिन बाद प्रतीत हुआ कि चैटफील्ड योजना के अनुसार

गोलों के खोल तैयार किये जा रहे हैं।

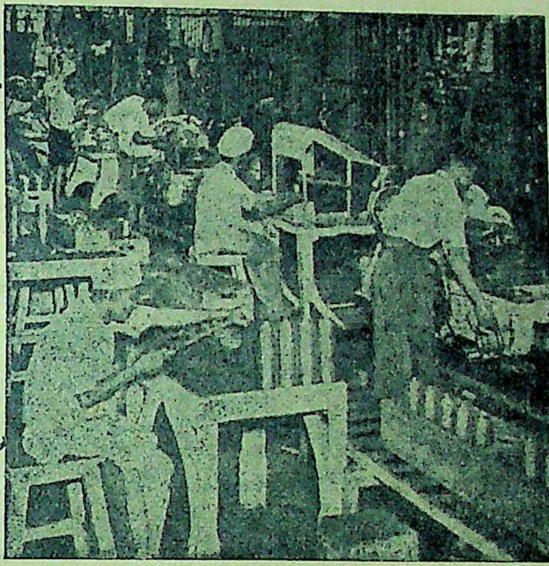
एक कारखाने में गोलों की बनती हुई पेटियों का एक दृश्य।

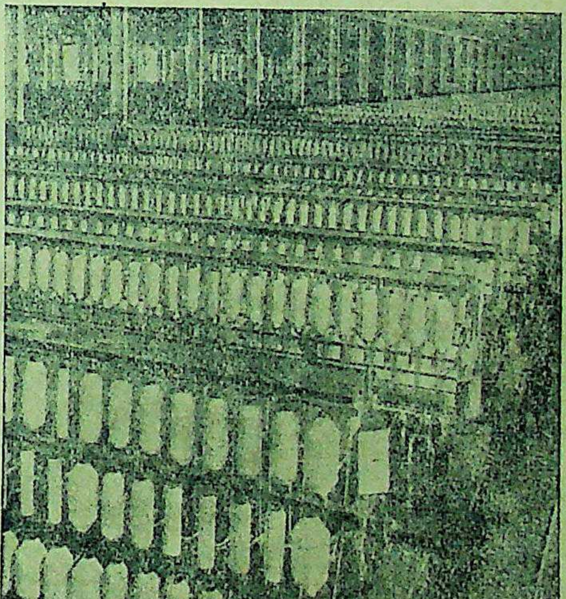
कताई के कारखाने का एक दृश्य।

टीन के कारखाने में एक कारीगर मशीन में काम कर रहा है।

युद्धकाल * में * भारत * ने * शस्त्रोत्पादन * में * बहुत * मदद * दिया

भारत में जितने शस्त्रास्त्र तैयार करने का निश्चय किया गया है, उसे उससे कहीं अधिक शस्त्रास्त्र तैयार करने की आवश्यकता है। सन् १९४० में ब्रिटिश सप्लाई विभाग का प्रतिनिधिमंडल, सर अलेक्ज़ेंडर राजर की अध्यक्षता में यह निरीक्षण करने के लिए आया कि भारत के शस्त्रास्त्र-उत्पादन में कितना अधिक विस्तार किया जा सकता है। ब्रिटिश सरकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रतिनिधि-मंडल ने यह व्यवस्था स्वीकार कर ली; जो भारत के अधिकारियों ने, मंडल के विशेषज्ञों के परामर्श से, भारत में विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन के लिए बनाई और जिसके अन्तर्गत तोपों तथा छोटे हथियारों के लिए मिश्रित फौलाद, संगीनें, हल्की मशीनगनें, गोले, तोपवाहक गाड़ियाँ, बिना धुएँ की बारूद कारडाइट तूलीन, बेंजोल आदि तैयार करने के लिए २१ योजनाएँ निर्धारित की गईं।

जापान के युद्ध में उतरने पर नव-संस्थापन-योजना के अनुसार शस्त्रास्त्र तैयार करने के पाँच नये कारखाने खोलने तथा पूर्वी देश-समूह के दो कारखानों का विस्तार करने का निश्चय हुआ। शस्त्रास्त्रोत्पादन का विस्तार करने और उसे अक्षुण्ण रखने के लिए अन्य अनेक योजनाएँ भी बनाई गईं।

निर्जन भूमि में नये कारखाने

युद्धारम्भ के समय शस्त्रोत्पादन के जितने कारख़ाने थे, आज उनकी संख्या तिगुनी है। जहाँ पहले निर्जन भूमि थी, वहाँ अब ये कारख़ाने चालू हैं और नव-शिल्पियों की एक सेना उनमें काम कर रही है। तूलीन, एमिटोन तथा अनेक प्रकार के तेजाब तैयार करने के लिए बड़े कारख़ाने चालू हैं। शोरे का तेजाब बनाने, गन्धक के तेजाब को गाढ़ा करने तथा कारडाइट (बिना धुएँ की बारूद) बनाने के लिए भी फैक्टरियाँ हैं। इस प्रकार भारत विस्फोटक द्रव्यों के उत्पादन में स्वावलम्बन के मार्ग पर काफ़ी आगे बढ़ा है। कई अति विस्फोटक द्रव्य, इस समय भारत में तैयार किये जा रहे हैं।

इंजीनियरिंग

इंजीनियरिंग की दिशा में भी पर्याप्त उन्नति हुई है। मिश्रित फौलाद तैयार करने और फौलाद तथा अन्य धातुओं की चादरें बनाने के कारख़ाने खोले गये हैं। हल्की मशीनगनें, टैंक-वेधी विशेष प्रकार के गोले, तथा उनके लिए फौलाद तैयार करने के कारख़ाने चालू हैं। शस्त्रास्त्रोत्पादन के उद्योग में यह विस्तार करने के लिए भारी परिमाण में औजार तथा मशीनें मँगानी पड़ी थीं।

भारतीय छात्रों का उद्योग

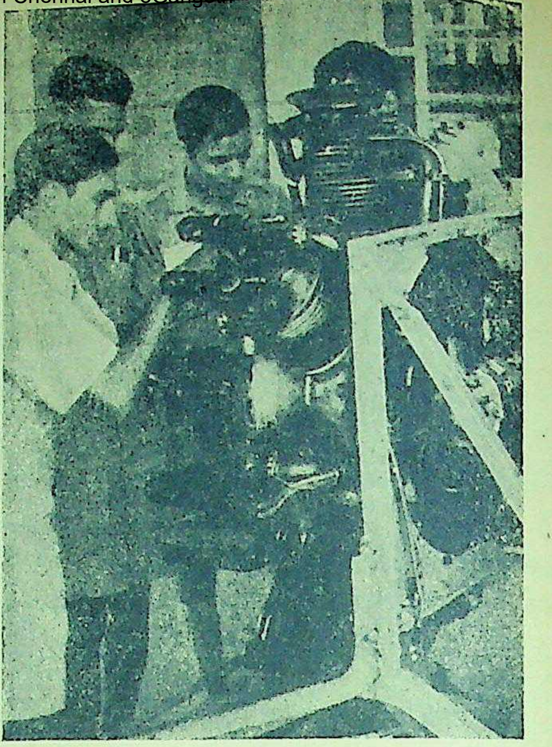

वायुवान के इंजन का निरीक्षण करते हुए कुछ भारतीय छात्र।

नई इमारतें और मजदूर

इन नव-निर्मित कारख़ानों को चालू करने के लिए बिजली, पानी, सफाई आदि की व्यवस्था के लिए भी योजनाएँ निश्चित और कार्यान्वित करनी पड़ीं। नई सड़कें और नये रेल-मार्ग बनाये गये। कारख़ानों में काम करनेवाले लोगों के लिए वासस्थानों की व्यवस्था करनी पड़ी। एक स्थान में तो १३ हज़ार कर्मचारियों तथा १२ हज़ार श्रमिकों और उनके परिवारों के रहने की व्यवस्था की गई।

उत्पादन-कार्य में कितना अधिक विस्तार हुआ है, उसका अनुमान इसी बात से किया जा सकता है कि शस्त्रास्त्र तैयार करने के कारख़ानों में १९३९ में जहाँ कुल १५ हज़ार मज़दूर काम करते थे, वहाँ १९४४ में १ लाख मज़दूर काम करने लगे। इनमें उन कर्मचारियों तथा मज़दूरों की संख्या सम्मिलित नहीं है, जो रेलवे वर्कशापों तथा अन्य व्यापारिक श्रमशालाओं में शस्त्रास्त्रों के विभिन्न भाग अलग से तैयार करते रहे हैं। इन कारख़ानों का काम सँभालने के लिए प्रायः ५० हजार शिल्पी, मैनेजर, सुपरवाइज़र, कारीगर आदि को विशेष शिक्षा दी गई थी।

शस्त्रास्त्रों के छोटे-मोटे पुर्ज़े तैयार करने के काम में रेलवे वर्कशापों तथा व्यापारिक श्रमशालाओं ने बड़ी सहायता की। शस्त्रास्त्रों के प्रायः ४३७ भाग इनमें बनाये जाने लगे। गोलों और हथगोलों के ख़ाली खोल, पलीते, सुरंगें, संगीनें, पीपे के पुल बनाने का कुछ सामान तथा अन्य बहुत-सी चीज़ें इन्हीं वर्कशापों में तैयार होती रही हैं। युद्धारम्भ के समय लगभग ६०० वर्कशापें ये काम करती थीं, किन्तु अब उनकी संख्या १,५०० है। शस्त्रास्त्रोत्पादन के कार्य में इस प्रकार इन वर्कशापों से बड़ी सहायता मिली है।

गोलों और कारतूसों की तैयारी में काम आनेवाली अनेक चीज़ें बनाकर जूट की मिलों तक ने सहायता की है। इन कारख़ानों में गोलों के भीतर पेंदी में रखने के लिए जूट की प्लेटें तथा मुँह के जूट के मोटे काग लाखों तैयार किये गये। ढलाई के काम और बख़्तरबन्द गाड़ियों के बनाने का भी काम हुआ। में ये चीज़ें क़रीब २ लाख में तैयार की जाती रही हैं। महीनों में पुर्ज़ों और शस्त्रास्त्रों का यह उत्पादन २,४०० से हो गया था।

गोला-बारूद बनाने के कारख़ाने में गोलों के केस की जाँच की जा रही है।

लम्बा होड़

१६ दिनों में आपकी लम्बाई १ से २ इंच बढ़ सकती है।

[illegible]

टाल्सपाडन की गोलियाँ इंग्लैंड [illegible]

[illegible]

के साथ अनेकों प्रमाणपत्र स्वयं पहुँच रहे हैं।

इंग्लैंड में प्रसि

टाल्सपाड

ग्लैंड फ़ूड टेबलेट्स

डिस्ट्रीब्यूटर्स

दि ब्रिटिश ट्रेडिंग कम्पनी (डिपार्ट [illegible]

लाइसेंस प्राप्त औषधि-विक्रेता व [illegible]

[illegible] बिल्डिंग, [illegible]

१२०, हॉर्नबी रोड, बम्बई।

हवाई शक्ति के बिना सफलता असम्भव थी

जर्मनी की बधिया बैठ गई। संसार की महानतम सैनिक शक्ति की रीढ़ टूट गई। विश्व के स्वतंत्र राष्ट्रों ने सैनिक और सैनिक साज-सामान और शस्त्रास्त्रों का एक महाविशाल जमघट तैयार करके के संयुक्त भीषणतम प्रहार-द्वारा जर्मनी को कुचल कर रख दिया।

भविष्य में कोई भी इतिहासकार निश्चित रूप से यह नहीं कह सकेगा कि जर्मनी के पतन में सबसे अधिक सहायता किससे प्राप्त हुई। लेकिन युद्ध में भाग लेनेवाले कई अंग इस समय सम्मान के योग्य मालूम पड़ते हैं। यदि युद्ध पर सामूहिक दृष्टि से विचार किया जाय तो ब्रिटेन, रूस और अमेरिका की जल, स्थल और हवाई शाखाओं में सम्भवतः ब्रिटेन की शाही हवाई सेना को यह सम्मान दिया जा सकता है।

यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यदि शाही हवाई सेना न होती तो विजय की प्राप्ति असम्भव थी। १९४० की ग्रीष्मऋतु में शाही हवाई सेना ने नाजियों की उस समय की अजेय हवाई शक्ति से मोर्चा लिया और उसे पराजित करके नाजियों की चढ़ाई से ब्रिटेन की रक्षा की। यदि ब्रिटेन पर शत्रुओं का कब्जा हो जाता तो स्वतंत्र यूरोप का अन्तिम आधार भी हाथ से निकल जाता। उस लंबे और विषम काल में, जब ब्रिटेन को उस केन्द्रीय हवाई अड्डे के रूप में तैयार किया जा रहा था जहाँ से यूरोप की मुक्ति प्रारम्भ हुई और प्राप्त हुई, शाही हवाई सेना ने ही ब्रिटेन को मोर्चे पर जमाये रखा था।

शाही वायुसेना ही उन आक्रमणों की स्रोत थी जिनके द्वारा नाजी हवाई शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया गया और युद्ध को जारी रखने के साज-सामान को तैयार करने की नाजियों की शक्ति नष्ट कर दी गई। अन्त में ब्रिटेन और अमेरिका के वायुयानों ने हजारों की संख्या में उड़कर जर्मनी के उद्योग-धन्धों को धूल में मिला दिया और उसकी युद्ध-क्षमता को कुचल दिया। ये वायुयान दिन में और रात में ब्रिटेन के अड्डों से ही उड़कर जाते थे। यदि युद्ध के पहले वर्ष में ही ये अड्डे शत्रु के हाथ में पड़ जाते तो जर्मनी पर ये अन्तिम भीषण प्रहार किसी भी प्रकार न किये जा पाते।

इन तथ्यों से स्पष्ट सिद्ध है कि यदि शाही हवाई सेना न होती तो विजय नहीं हो सकती थी।

१९३९ की ग्रीष्मऋतु के अन्त में जब ब्रिटेन को अपने इतिहास के भीषणतम युद्ध में कूदना पड़ा उस समय से अब तक की हवाई सेना की प्रगति पर जरा विचार कीजिए।

पहले ८ मास की सुस्ती के बाद उसने नार्वेजियन युद्ध में महत्त्वपूर्ण भाग लिया। मास बाद शाही हवाई सेना के दस्तों ने अपनी सारी शक्ति लगाकर नौसेना की सहायता की, जिसके कारण ही वह डंकर्क में चमत्कारपूर्ण सफलता प्राप्त कर सकी। इस में बड़ी भारी क्षति उठाने के बाद शाही हवाई सेना काफी शक्तिशाली और ब्रिटेन की लड़ाई में विजय प्राप्त करने की उसमें क्षमता थी। यह युद्ध की एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विजय थी। इस युद्ध में नाजी हवाई सेना को इतनी भीषण क्षति उठानी पड़ी थी (८४ दिन में २,३७५ अर्थात् औसतन् प्रतिदिन २८ वायुयान नष्ट हुए) कि इसके बाद नाजी अपनी स्थिति कभी न सुधार सके। उस लड़ाई में शाही हवाई सेना के ७३३ वायुयान नष्ट हुए और ३७५ चालक मारे गये। हानि का अनुपात ३:१ रहा।

लड़ाकू दस्तों की जो प्रशंसा की गई वह उचित थी। लेकिन बम-वर्षक वायुयानों के दस्तों ने ब्रिटेन पर चढ़ाई करने के लिए तैयार शत्रु की नौकाओं के विशाल जमघट के बन्दरगाहों पर आक्रमण करके जो कार्य किया उसे भी भुलाया नहीं जा सकता। लड़ाकू वायुयान रात्रि में ब्रिटेन के आकाश में शत्रु के वायुयानों से लड़ते थे। शीघ्र ही वे यूरोप पर भी उड़ने लगे जिससे शत्रु की परेशानी बहुत बढ़ गई।

इस सारे समय में शाही हवाई सेना अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में भी लगी रही। इनमें जहाजी दलों की रक्षा के लिए साथ उड़ना तथा शत्रु की पनडुब्बियों का शिकार करना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। १९४२ में जर्मनी की पनडुब्बियों

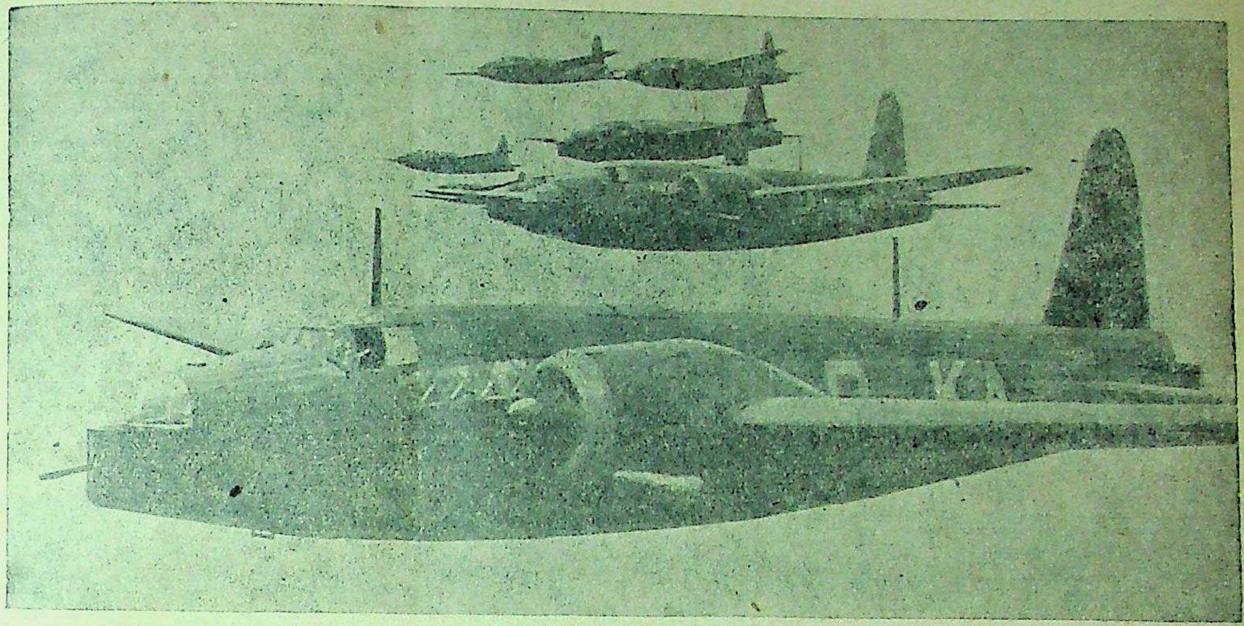
रायल एयर फ़ोर्स के बम-वर्षक वायुयान।

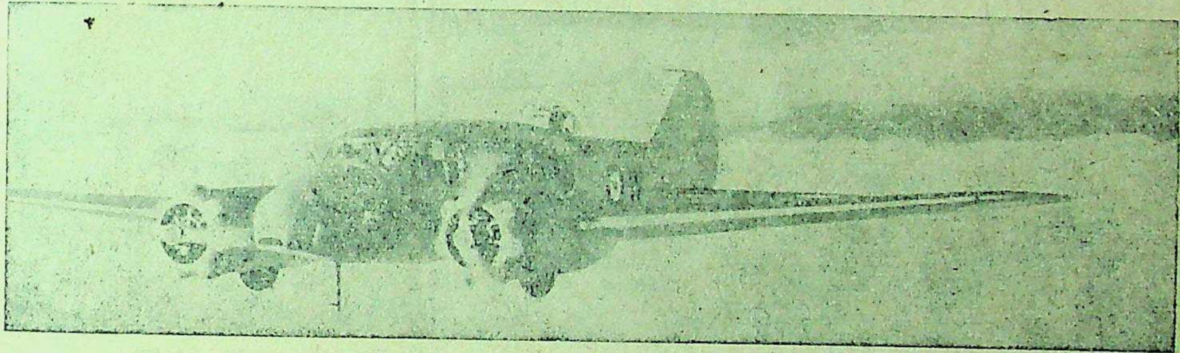
समुद्री-तट की देख-भाल का 'अवारो एंसन' नामक वायुयान।

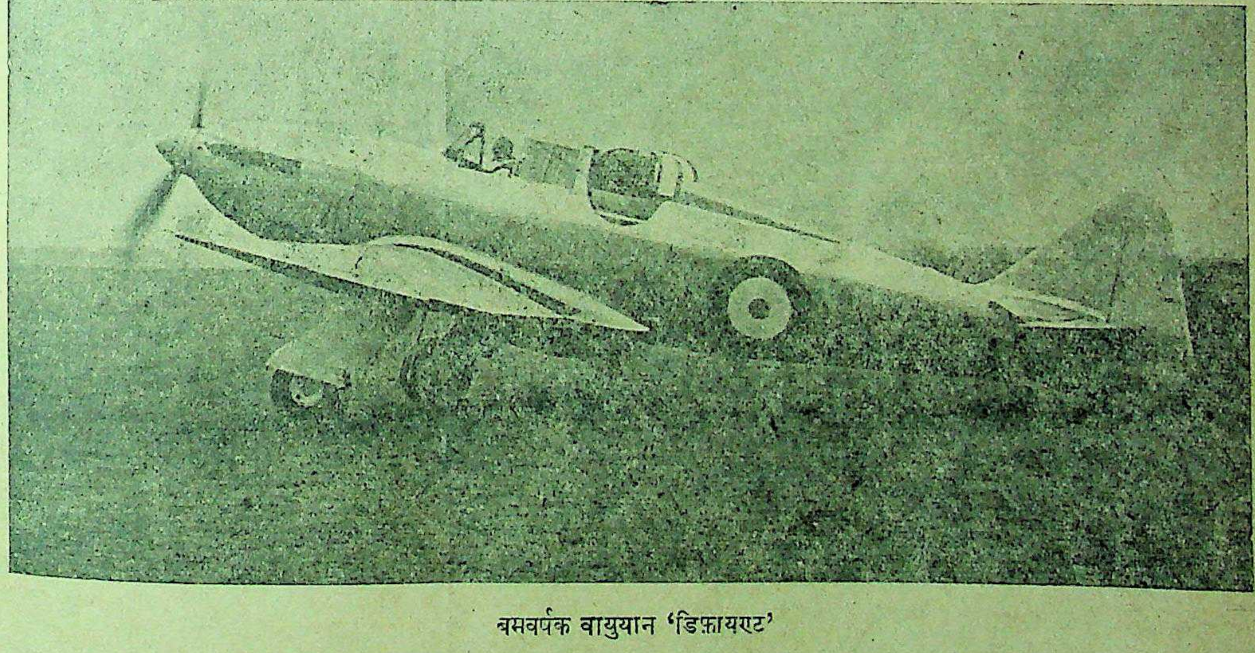
बमवर्षक वायुयान 'डिफ़ायण्ट'

हैंडले-पेज हैम्पडन नामक बम-वर्षक जिसकी चाल २६५ मील प्रतिघंटा है।

'लाइटनिंग' अर्थात् 'गाज' नामक लड़ाकू वायुयानों की पंक्ति।

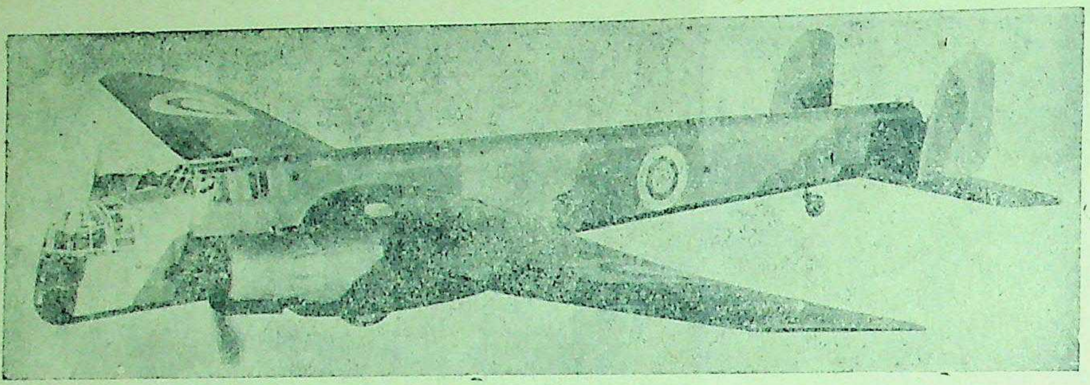

'आर्मस्ट्राग-हिटवर्थ ह्विटले' नामक अत्यंत लोकप्रिय बमवर्षक

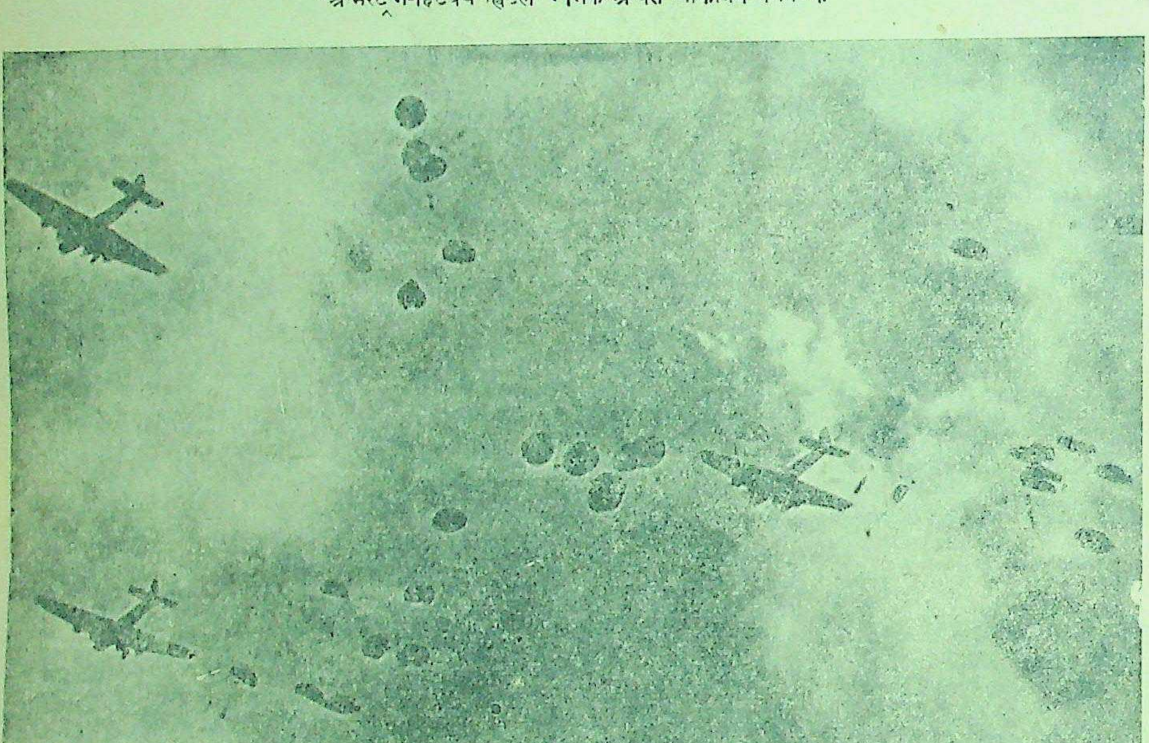

एक साथ बहुत से छतरी-सैनिक वायुयानों से गिराये जा रहे हैं।

के कारण अटलांटिक के आर-पार सामग्री के यातायात में बड़ी बाधा हो गई थी। प्रतिदिन प्रायः एक वर्गमील के क्षेत्र में तटवर्ती दस्तों की गति-विधि जारी रहती ३ वर्षों के काल में शाही हवाई वायुयान ३,५०० जहाजी दलों के संरक्षण के लिए उड़े और उन्होंने के १,६२८ वायुयानों से मोर्चा १९४४ की ग्रीष्मऋतु तक शाही के सहयोग से शाही हवाई सेना ने डुब्बियों के खतरे को इतना शक्तिहीन दिया था, जिसकी अत्यन्त आशावान भी उस समय कल्पना नहीं कर था जब यह खतरा अपने पूरे जोर पर व्यापारिक जहाजों की अपेक्षा पन अधिक संख्या में डुबाई जाती रही। ब्रिटेन की लड़ाई की तरह ही की लड़ाई भी निर्णायक सिद्ध हुई। सारी लड़ाई के काल में शाही हवाई के तटवर्ती कमांड ने प्रतिवर्ष ३, वायुयानों ने उड़ानें कीं।

हवाई यातायात संगठन

मार्च १९४३ में यातायात स्थापित किया गया। इस कमांड का कार्य सैनिकों को वायुयान-द्वारा तक पहुँचाना था। इसके अतिरिक्त क्षेत्र के अगले मोर्चे तक सैनिकों आवश्यक साज-सामान तथा रसद भी वायुयान-द्वारा भेजी जाती थी। कमांड ने नये चालकों को शिक्षि का कार्य जोरों से जारी रखा और कमांड ने वायुयानों तथा उनके कर्म के लिए आवश्यक साज-सामान की बड़ी तत्परता के साथ व्यवस्था इस प्रकार शाही हवाई सेना की शाखा ने बड़ी तत्परता से कार्य

१९४४ के वसंत में शाही हवाई तथा अमरीकी हवाई सेना ने फ्रां हालैंड में शत्रु के यातायात-केन्द्रों पर बम-वर्षा करना प्रारम्भ कर दिया। ही नकली तेल बनाने तथा तेल साफ के जर्मन-केन्द्रों पर भीषण बम-वर्षा की गई। तेल के बिना जर्मनी ल सकता था और उसकी तेल-सम्बन्धी बम-वर्षा द्वारा बिलकुल कमजोर गई।

नारमंडी दिवस के बाद

६ जून को नारमंडी-दिवस शत्रु की तटवर्ती तोपों को बमवर्षा भीषण क्षति पहुँचाई गई। रेडियो नष्ट कर दिये गये। जब आक्र सेनाएँ तट पर उतरीं तो जर्मनी के रेडियो-केन्द्र उसकी सूचना न दे ब्रेस्ट से बेलजियम तक के सारे केन्द्र बेकार पड़े थ। मित्र-सेना उतरने के क्षेत्र में बड़ी-बड़ी तोपों अड्डे बमों से ध्वस्त कर दि थे। हवाई आक्रमणों के कारण की सारी यातायात व्यवस्था अ हो गई थी। जर्मनों ने मोर्चा प्रत्याक्रमण करने का प्रयत्न किया उन्हें सिर पर पैर रखकर पीछे पड़ा। मित्र-राष्ट्रों ने अपनी सारी शक्ति जर्मनी के विरुद्ध लगा दी। हवाई सेना जो विश्व-विजय का भरती थी, दम टूट गया। उसके दस्ते बुरी तरह नष्ट हो गये थे और सारे संगठन में अव्यवस्था फै परिणाम यह हुआ कि वह भाग जर्मन सेनाओं के संरक्षण की व्य कर सकी। प्रारम्भ में शाही हवाई वायुयानों की संख्या की दृष्टि से हवाई सेना से बहुत पीछे थी। समय भी कुशलता की दृष्टि से से मोर्चा लेती रही। जब कुशलता उसकी संख्या भी बढ़ गई तो उस विजय प्राप्त की जो संसार के इतिहास में अद्वितीय कही जा सक

पश्चिमी युद्ध-मोर्चे की विजय में भारतीयों का भाग

अफ्रीका में युद्ध की सफलतायें क्यों हुईं ?

अफ्रीका के युद्ध में जर्मन सेनापति रोमेल

हिटलरी यूरोप पर विजय पाने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक था कि उत्तरी अफ़्रीका में नाज़ी प्रभाव को मिटाया जाय। इसी स्थान से सर्वप्रथम वह गड़बड़ी आरम्भ हुई जो बाद में जर्मन लोगों का सर्वनाश सिद्ध हुई। १९४० में नील नदी की तलहटी में मित्रों की एक वीर सेना इकट्ठी हुई जिसको प्रथम तो नाज़ियों के संसार-विजय के स्वप्न को रोकना तथा बाद में उस सेना को नष्ट करना था।

इस सेना में जर्मनी तथा इटली के प्रयत्नों को रोकने के लिए भारत, अमरीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ़्रीका, न्यूज़ीलैंड तथा अन्य देशों के लोग सम्मिलित हुए।

१९४० में दोनों की प्रसिद्धि बढ़ी जब कि इटली गीदड़ों ने फ़्रांस की सेनाओं पर आक्रमण कर दिया और फ़्रांस की सेनाएँ मित्रों की सहायता से वंचित रह गईं। मार्शल ग्रेजियानी की लीबिया की ३,००,००० सेना तथा एक अन्य पूर्वी अफ़्रीका की २,५०,००० सेना के विरुद्ध फील्ड मार्शल (तब जनरल) वेवेल की अधीनता में मित्रों की एक छोटी सी सेना पश्चिमी रेगिस्तानों की ओर बढ़ी और इटली की सेना पर टूट पड़ी। लगभग एक घंटे तथा पच्चीस मिनट में चौथी भारतीय सेना ने रात्रि के घटाटोप में इटली के कैंप निबीवा को सहस्रों वन्दियों, वन्दूकों, लारियों तथा अन्य बहुत सामान सहित अपने अधिकार में कर लिया।

इसके वाद दिसम्बर १९४० में सिदी-बरानी में फिर से इटालियनों का नाश हुआ जिसमें इटली के २०,००० जन मृत्यु को प्राप्त हुए तथा इटली राज्य का अंतिम निर्णय हो गया। वेवेल के आदमी तब सोलम, वर्डिया, तोब्रुक, उर्ना तथा बेंगाज़ी में फैल गये।

दूसरी ओर नवम्बर १९४० में सूडान की सीमा पर २५०,००० जन भारतीयों की पाँचवीं वीर सेना से युद्ध कर रहे थे। नये वर्ष के आरम्भ में ही इटली की सेनाओं को चौथी तथा पाँचवीं बार गलावाट्, गेडरफ, बुटाना पुल तथा एरिट्रिया आदि स्थानों से खदेड़ दिया गया।

बारेंटू तथा टेक्लेसन की विजय ने मित्रों के लिए केरन की महत्त्वपूर्ण जीत का रास्ता खोल दिया और इटालियन सेनाओं को करारी हार दी। इस स्थान पर जहाँ संसार में सब से अधिक कठिन पर्वत श्रेणियाँ हैं, भारत की मुट्ठी भर सेनाओं ने पर्वतों की ऊँची तथा ऊबड़-खावड़ चोटियों पर चढ़ कर इटली की सेनाओं को सफ़ेद झंडे लहराने पर मजबूर कर दिया।

अस्मारा तथा मसावा भी पाँचवीं सेना के अधिकार में आ गये और अंत में मई में अंबा अलागी पर एबीसीनिया के वाइसराय को आत्मसमर्पण करना पड़ा तथा मित्रों की बड़ी गौरवपूर्ण विजय हुई।

१९४१ के जून मास में चौथी तथा पाँचवीं सेना फिर से पीछे की ओर पश्चिमी रेगिस्तानों में रोमेल की सेना से मुठभेड़ करने को गई। वे दिन बड़े निराशा के थे परन्तु साम्राज्य सेना की अपूर्व वीरता के कारण निराशा आशा में बदल गई। जनरल आकिंलेक के सेनापतित्व में हमारी सेना ने एक-एक गज भूमि के लिए जर्मनों से घोर युद्ध किया। लेकिन हमारी सेनाओं को धीरे-धीरे पीछे की ओर मर्सा मटरूह की ओर भागना पड़ा और हमारा कई मास का कठिन प्रयत्न व्यर्थ होता जान पड़ा। बेंगाजी का रास्ता बिलकुल बंद हो गया तथा तोब्रुक शत्रु के हाथ में चला गया। काहिरा में भी मुसोलिनी की विजय का अन्देशा हो गया।

विक्टोरिया क्रास पानेवाले लेफ्टिनेंट प्रेमेन्द्रसिंह भगत

जून १९४२ में अल-अलामीन में लड़ाई का रुख बदल गया। पाँचवें भारतीय डिवीजन ने रुवीसात की पहाड़ी पर प्रत्याक्रमण किया और कम से कम उसमें दो हज़ार शत्रु सैनिकों को क़ैद किया। इसके बाद ही वह भारत जाने के लिए इराक़ रवाना हुआ। उसकी जगह पर अफ़्रीका में लड़ने के लिए चौथा भारतीय डिवीजन भेजा गया। इस चौथे डिवीजन ने जर्मनों का पीछा कर उन्हें अफ़्रीका से भगा देने में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

२३ अक्टूबर १९४२ को अल-अलामीन में हमने आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। कुछ दिन बाद चौथे भारतीय डिवीजन की पाँचवीं ब्रिगेड ने हमारी सैकड़ों तोपों के गरजते हुए, शत्रु की रक्षा-पंक्तियों में प्रवेश किया और हमारी बख्तरबन्द गाड़ियों के जाने के लिए रास्ता बना दिया। इस प्रकार हमारी सेना की प्रगति प्रारम्भ हुई। वह तब तक न रुकी जब तक वह अफ़्रीका की दूसरी ओर न पहुँच गई। जर्मनों की इस पराजय का श्रेय जनरल मांटगोमरी को है। वे कुछ ही समय पहले जनरल आकिंलेक के पद पर नियुक्त किये गये थे। बाद को उन्होंने यूरोप में जर्मनों पर भी प्रचंड प्रहार किये।

अफ्रीका में ब्रिटिश सेना के प्रधान सेनापति जनरल वेवेल

रोमेल की प्रबल सेना मिस्र से खदेड़ दी गई। फिर वह सिरेनाइका से भी निकाल दी गई और ट्रिपोलीटानिया की ओर भगाई गई। सन् १९४२ समाप्त हुआ। सन् १९४३ का जनवरी और फरवरी मास भी बीत गया पर जर्मनों का पीछे हटना जारी ही था। अन्ततः उन्होंने मोर्चे पंक्ति पर डट कर युद्ध करने का निश्चय किया। पर आठवीं सेना के प्रहार से वह पंक्ति भी भंग हो गई तथा वे और पश्चिम की ओर हटने लगे। आठवीं सेना में चौथा भारतीय डिवीजन भी था।

वादी अकारित के क्षेत्र में चौथे भारतीय डिवीजन ने घोर युद्ध किया। इसमें दूसरे राइफल दल के सैनिक सूबेदार लालबहादुर थापा ने विक्टोरिया क्रास प्राप्त किया। जर्मनों का पीछा जारी रहा।

मित्रराष्ट्रों के सैनिक स्फाक्स से आगे बढ़ गये। अप्रैल के मध्य में सूसे पर उनका अधिकार हो गया और अफ़्रीका में शत्रु की अन्तिम पराजय का सूत्रपात हुआ। ग्रासी में जर्मन और एक बार लड़ने के

विक्टोरिया-क्रास प्राप्त सूबेदार रिछपालराम

विक्टोरिया-क्रास प्राप्त सूबेदार लालबहादुर थापा

विक्टोरिया-क्रास प्राप्त जमादार गजे घाले

लिए मुड़े। चौथे भारतीय डिवीजन ने वहाँ प्रचंड पराक्रम दिखाया। छठे राजपूताना राइफल दल के सैनिक गार्सी को सर्वदा याद रखेंगे क्योंकि यहीं कम्पनी के हवलदार मेजर छोलूराम ने महान् साहस दिखाकर विक्टोरिया क्रास प्राप्त किया।

हमारे आक्रमण की प्रगति हो रही थी। आठवीं सेना पहली ब्रिटिश सेना से जा मिली और दोनों ने मिलकर मई के मध्य में ट्यूनिस के दरवाज़े खोल दिये। इस अन्तिम कार्रवाई में चौथे भारतीय डिवीजन ने महत्त्वपूर्ण कार्य किया। वह पहली ब्रिटिश सेना के रणक्षेत्र में शत्रु पर आकस्मिक आक्रमण करने के लिए एकाएक भेज दिया गया। जनरल फान आर्निम इसी भारतीय डिवीजन को आत्मसमर्पण करने के लिए विवश हुए। वह रोमेल के स्थान पर अफ़्रीका में धुरीराष्ट्रों का प्रधान सेनापति नियुक्त किया गया था। उसका आत्मसमर्पण अफ़्रीका के युद्ध का उपयुक्त शिखर सा था।

इन भारतीय सैनिकों ने हज़ारों मील की यात्रा की थी। वे वह आक्रमण करने में सहायक हुए थे जिसका अन्तिम लक्ष्य जर्मनी था। उन्होंने साहस के कितने ही कार्य किये थे। उनमें से चार सैनिकों को विक्टोरियाक्रास दिया गया। इनमें से जिन सैनिकों का ऊपर उल्लेख नहीं किया गया है उनमें बम्बई की सफरमैना के दूसरे लेफ्टि० (अब मेजर) प्रेमेन्द्रसिंह भगत हैं और छठे राजपूताना राइफल दल के सूबेदार रिछपालराम थे। प्रेमेन्द्रसिंह को फरवरी १९४१ में अबीसीनिया में साहस प्रकट करने के लिए विक्टोरिया क्रास दिया गया। रिछपालराम को उनकी मृत्यु के बाद विक्टोरिया क्रास दिया गया और इसलिए दिया गया कि उन्होंने उपर्युक्त मास में ही केरेन में अटल धैर्य दिखलाया।

इस प्रकार भारत के इन योद्धाओं ने वह काम किया जो करने के लिए उन्होंने प्रस्थान किया था। यह काम था अफ़्रीका महाद्वीप को नाजियों के कुसम्पर्क से मुक्त करना। उन्होंने और भी काम किया। उन्होंने अपने देश की परम्परागत वीरगाथाओं की वृद्धि की। उन्होंने दुनिया की दृष्टि में स्वदेश की प्रतिष्ठा बढ़ाई। उनका उपयुक्त सम्मान करने के लिए भारत के लोगों को पूर्व में शत्रु का विनाश कर मित्रराष्ट्रों के सैनिकों का पश्चिम में किया गया कार्य पूरा करने का प्रयत्न अपनी सारी शक्ति से, करना चाहिए।

पुष्करिणी
पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी
मूल्य २) दो रुपये
"हिन्दी संसार में जिन कलाकारों ने सुन्दर कलात्मक कहानियाँ दी हैं, उनमें वाजपेयी जी का भी स्थान है और इस तथ्य से कौन इनकार करेगा कि उनकी कितनी ही कहानियाँ काफ़ी ऊँचे धरातल की हैं।" —'विश्वमित्र'
प्रकाशक
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

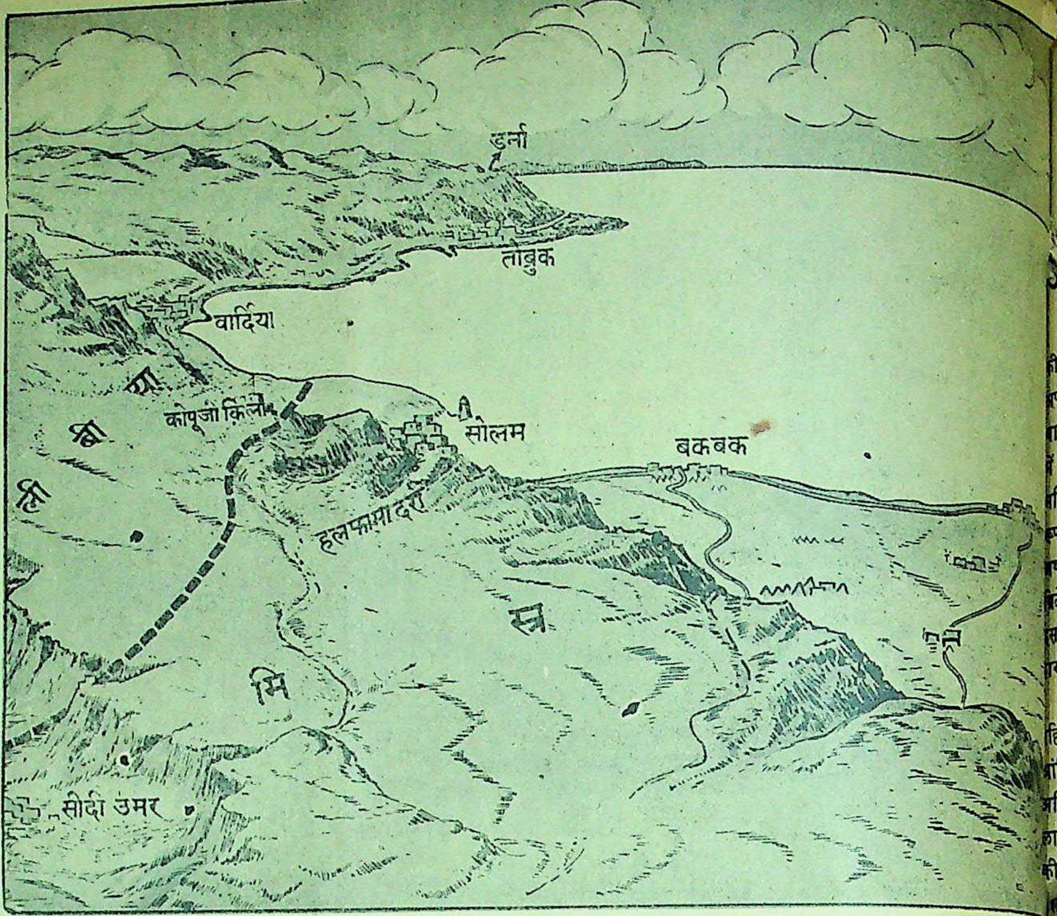

लिबिया के युद्ध-क्षेत्र का मानचित्र।

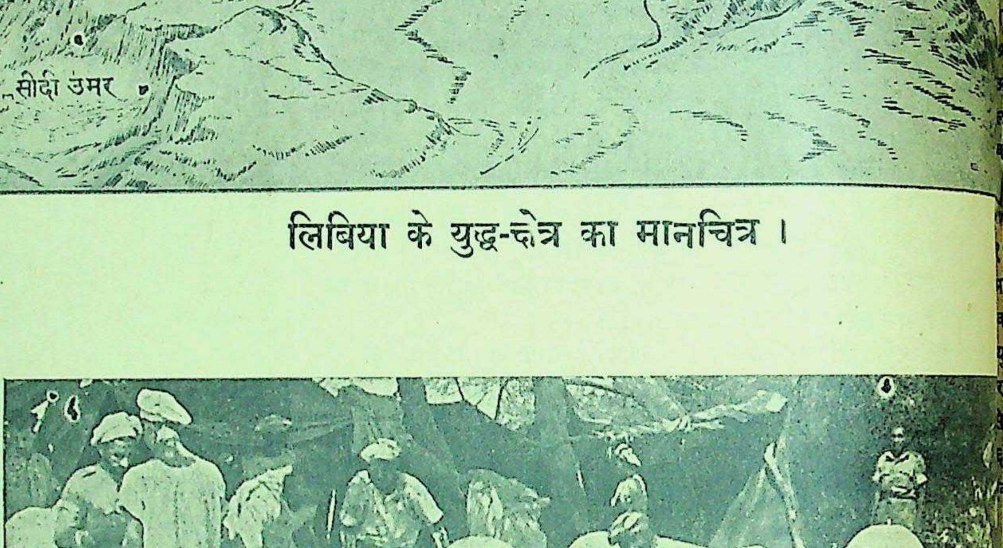

हिन्दुस्तानी सेना के लिए भोजन बनाया जा रहा है।

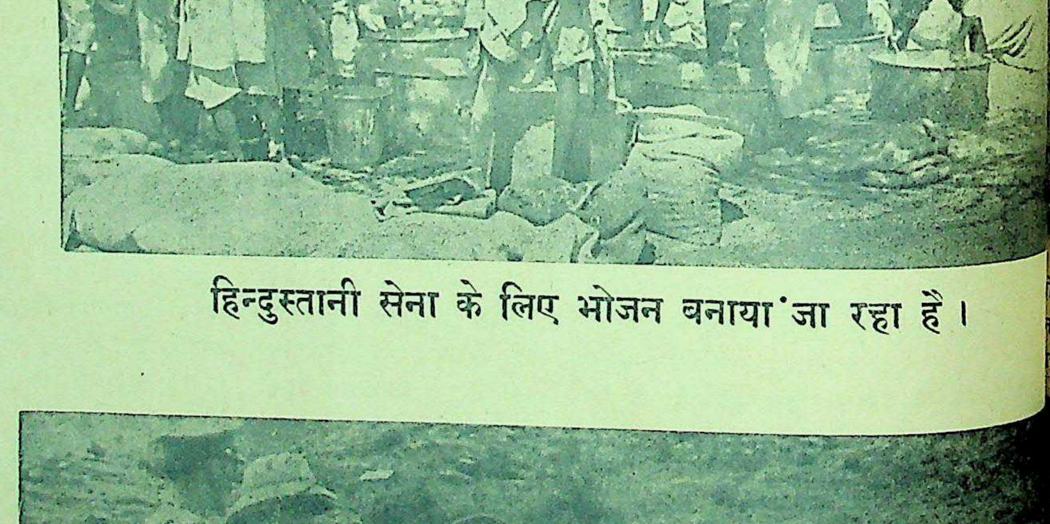

पूर्वी अफ़्रीका में जनरल वेवेल युद्ध का निरीक्षण कर रहे हैं।

युद्ध-विजय में महिलाओं ने क्या किया ?

उन्होंने जनशक्ति की समस्या कैसे हल कर दी ?

अपनी १ करोड़ ७० लाख महिलाओं की सहायता के बिना ब्रिटेन कभी भी अपने युद्ध-प्रयत्न में सफल नहीं हो सकता था। युद्ध सम्बन्धी विभिन्न सेवा-कार्यों में और कारखानों में सर्वत्र ही ब्रिटिश महिलाओं ने पुरुषों के समान ही प्रमुख रूप से उनसे कन्धे से कन्धा मिलाकर ...यक परिश्रम के साथ कार्य किया है। ब्रिटेन के श्रम मंत्री के शब्दों में उन्होंने इस युद्ध-प्रयत्न में अपार शक्ति और योग्यता-द्वारा सहयोग प्रदान किया है।

इन महिलाओं में से ७० लाख महिलाओं ने पूरे समय, १० लाख ने आंशिक रूप से और १० लाख से भी अधिक ने अवैतनिक रूप से कार्य किया। लाखों स्त्रियों ने युद्ध-श्रमिकों और आश्रितों की देख-भाल की और बहुत सी स्त्रियों ने ... के काम-काज और बच्चों की देख-...ल से समय बचाकर काम किया। १९४३ में ब्रिटेन की प्रायः प्रत्येक सुलभ महिला, जिसकी अवस्था १८ से ५० वर्ष के भीतर थी अपनी शक्ति के अनुसार युद्ध-प्रयत्न में अधिक से अधिक भाग ले रही थी। बूढ़ी स्त्रियों में भी ५५ वर्ष से अधिक अवस्था की सात में से एक और ६० वर्ष से अधिक अवस्था की दस में से एक स्त्री कारखाने में काम करती थी।

इन बातों से गृह-व्यवस्था में—गृहस्थ-जीवन में अन्तर नहीं पड़ा। जिन माताओं के बच्चे १४ साल से कम की अवस्था के थे उन्हें युद्ध के कामों में नहीं लगाया गया। फिर भी ७,५०,००० स्त्रियों ने पूरे समय तक या आंशिक रूप ... काम करने के लिए स्वेच्छा से अपना नाम दिया। अपने बचे हुए समय में ही उन्होंने बच्चों की और घर की देख-भाल ... व्यवस्था भी की।

अंगरेज़ महिलाओं ने युद्ध-प्रयत्न में ... भाग लिया है वह विश्वविदित है। ...ना में भरती होकर उन्होंने शत्रु के हवाई आक्रमणों का सामना करने के लिए विमान-वेधी तोपों के चलाने के स्थानों, सर्चलाइट-स्थलों और गुब्बारे के स्थानों में काम किया। हवाई आक्रमणों के बाद विशेष सहायता प्रदान करके उन्होंने असंख्य प्राणियों की प्राणरक्षा की। शत्रु के जहाजों, वायुयानों और उड़नबमों की गति-विधि का उन्होंने पता लगाया। अटलांटिक, ब्रिटेन और लंदन के युद्धों में उन्होंने अपने प्राणों की बाजी लगा दी और उनमें से बहुतों ने अपनी आहुति भी दे दी।

जर्मन-अधिकृत स्थानों में मित्रसेना के उतरने से पूर्व महीनों तैयारी की जाती थी और सामग्री तैयार करके भेजने में स्त्रियों का प्रमुख हाथ होता था। उन्होंने वायुयानों, जहाजों, तोपों आदि के बनाने में भाग लिया। उनके लिए यह नया काम था परन्तु दिन-रात जब भी काम सौंपा गया उन्होंने लगन के साथ उसे किया। उन्हें सप्ताह में ६० घंटे काम करना पड़ता था।

गोला-बारूद तैयार करने के काम में तो प्रति क्षण उनके सामने मृत्यु खड़ी रहती थी। गरम कपड़े पहने, मुँह पर नकाब लगाये वे अपना काम बड़ी सतर्कता से करती थीं और कई बार ज़रा सी चूक से वे विस्फोट में उड़ भी गईं। वायुयान के गोदामों से अड्डे तक को ले जाने का काम स्त्रियाँ ही करती थीं। उनमें वायरलेस और हथियार नहीं होते थे अतः शत्रु के आक्रमण करने पर उन्हें कोई सहायता नहीं मिलती थी। बहुत सी स्त्रियों ने इस काम में प्राण दिये पर उन महिला-उड़ाकों का स्थान लेनेवालों की कभी-कमी नहीं हुई।

ब्रिटेन की खाद्य-समस्या को हल करने में उन्होंने बहुत काम किया। कठोर शारीरिक परिश्रम करके उन्होंने परती भूमि में खेती की। जंगलों में लकड़ी काटने और चीरने में भी उन्होंने भाग लिया।

रेडक्रास की एक नर्स युद्ध-क्षेत्र में सैनिकों को चाय पिलाने का उपक्रम कर रही है।

युद्ध-भूमि में रेडक्रास का दफ्तर जहाँ से सैनिकों के सेवा-कार्य का प्रबन्ध होता है।

AAA 159 HINDI

ये हैं इनकी चालें-
इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

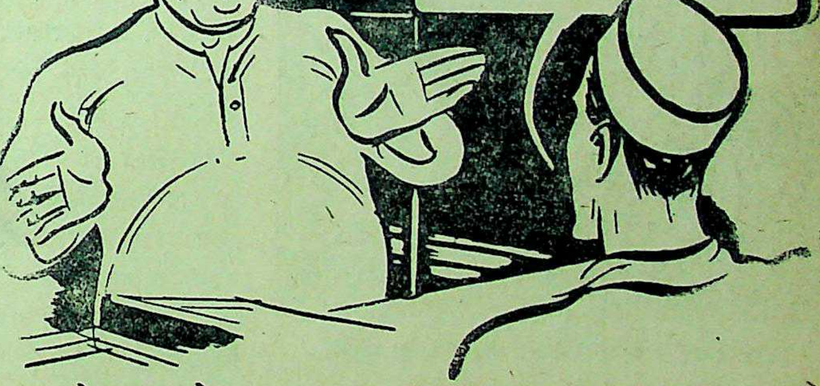
"हमारे पास माल नहीं रहा।"
"ग़लत कहते हो। मैं तुम्हारी रिपोर्ट पुलिस में करूँगा।"

बहुत से मुनाफ़ाख़ोर, अगर आप उन्हें ज़्यादा दाम देने को न कहें, यह बहाना कर देते हैं कि माल ख़त्म हो चुका है। इनकी रिपोर्ट फ़ौरन कीजिए। इनकी दुकान वग़ैरह की तलाशी ली जायगी।

ब्लैक मार्केट से
हरगिज़ न ख़रीदिए
इस तरह ब्लैक मार्केट
ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग द्वारा प्रकाशित

युद्ध-क्षेत्र में सैनिकों की सेवा शुश्रूषा करनेवाली महिला सेविकायें।

रेलों में केवल चार प्रकार के काम छोड़कर उन्होंने सारे काम किये। बसों का प्रबन्ध तो पूर्णतया उन्होंने अपने ही सिर ले लिया। उन्होंने ड्राइवर और कंडक्टर का काम भी किया। शत्रु की बमवर्षा उनके कार्य में बाधा न बन सकी।

सेना में काम करनेवाली नर्सों और नागरिक नर्सों के रूप में भी उन्होंने बहुत बड़ी सेवा की है। सेना में काम करने वाली बहुत सी नर्सें अब भी जापानियों की बन्दिनी हैं। बमवर्षा के समय नागरिक नर्सों ने जनता की जो परिचर्या की वह अद्वितीय है। इनके अतिरिक्त सैकड़ों ऐसे कार्य हैं जिनमें उन्होंने भाग लिया है और इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया है।

अब ब्रिटेन की महिलाएँ भविष्य की ओर देख रही हैं। यूरोप में शत्रु को पराजित करके वे अब जापान से लोहा लेने के लिए कटिबद्ध हैं। उन्हें इस कार्य की कठिनाई का अनुमान न हो ऐसी बात नहीं है। अब तक उन्होंने जो कार्य किया है उससे अधिक कठिन कार्य उन्हें अभी करने हैं। फिर भी वे अपना काम पूरा करने के लिए दृढ़-संकल्प हैं। अपने पुरुषों को संसार के दूसरे भाग में भेजकर अकेलापन और कठिनाई का जीवन बिताने के लिए वे तैयार हैं। वे जानती हैं कि यह काम उन्हें करना ही है और इसके बाद ही संसार में वास्तविक शान्ति की स्थापना होगी। अब वे १९३९ के सितम्बर मास की स्त्रियाँ नहीं रह गईं।

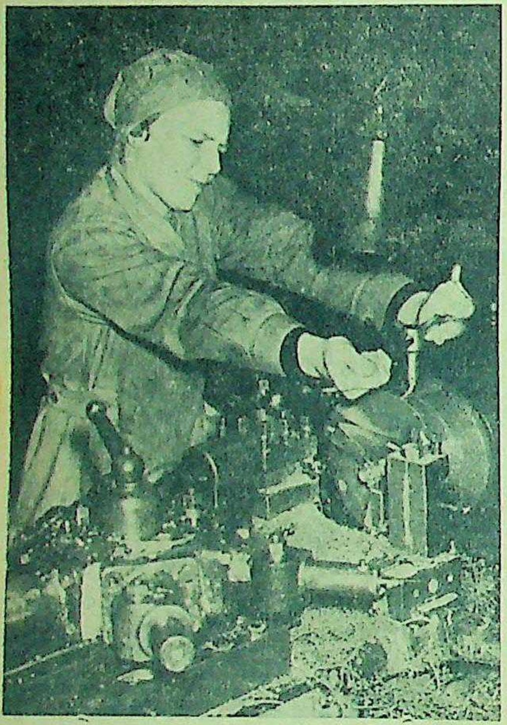

ब्रिटेन के एक कारखाने में काम करनेवाली अँग्रेज महिला।

१९३९ में बात और थी, उनका कार्य-क्षेत्र अपने पति-पुत्रों, घर और कपड़ों, भावी पतियों, पुस्तकों, थियेटरों और छुट्टियों तक सीमित था। इसके बाद युद्ध आरम्भ हुआ। मोटरें और अन्य मूल्यवान् विलास की वस्तुएँ बिक गईं क्योंकि रहन-सहन का व्यय बहुत बढ़ गया था। भरती, निकासी और बमवर्षा से घर का जीवन नष्ट हो गया। पहले तो स्त्रियों ने पैसे के लिए काम करना आरम्भ किया फिर हिटलर की जड़ें खोदन के लिए वे काम करने लगीं और उसके बाद बमवर्षा से अपनी रक्षा के लिए वे उत्साह से कार्य में प्रवृत्त हुईं।

ब्रिटेन की महिलाओं के पास खेल-तमाशे के लिए समय नहीं रह गया था। वे अपने कपड़ों को मरम्मत करके पहनने लगीं। उनका ध्यान युद्ध पर गये हुए अपने पतियों में या छोटे बच्चों पर जा लगा जिन्हें बमवर्षा से बचाना था। बमवर्षा से पीड़ित लोगों की दशा उन्होंने देखी उन्होंने उनको भी देखा जिन्होंने अपने पतियों, प्रेमियों और बच्चों को खो दिया था और उनको आराम दिया। उनका ध्यान औरों की ओर बँट गया, उनमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न हुई। यह भावना अब कभी भी नष्ट न होगी, यह स्थायी हो गई है।

आज अँगरेज़ महिलाएँ शान्ति की ओर उत्सुकता से देख रही हैं। पर वह शान्ति पहली शान्ति से भिन्न होगी। उस शान्तिकाल में वे अपना पूरा भाग लेंगी। गृहस्थ-जीवन में लौटकर वे अपने पतियों, पारिवारिक जनों और पड़ोसियों के प्रति अधिक उत्तरदायित्व का अनुभव करेंगी। अब उन्हें इस बात का पहले की अपेक्षा कहीं अधिक बोध हो गया है कि वे अपने घर की आत्मा हैं, उन्हें सत्य, न्याय और सहनशीलता का व्यवहार करना चाहिए। उन्हें यह ज्ञात हो गया है कि इसके लिए उन्हें अपनी बुद्धि से काम लेना होगा। उन्हें सामयिक घटनाओं से संपर्क रखना चाहिए और उन प्रश्नों का उन्हें ज्ञान होना चाहिए जिनका बहुत अधिक प्रभाव उनके अपने और बच्चों के जीवन पर पड़ता है।

वे गृहचर्या, शिक्षा, स्थानीय सरकार, औद्योगिक पुनःनिर्माण और बच्चों की परिचर्या आदि का अधिक पूर्ण ज्ञान लेकर नागरिक जीवन में प्रवेश करेंगी।

वास्तविक और स्थायी शान्ति के लिए काम करने को ब्रिटेन की १ करोड़ ७० लाख स्त्रियाँ आज उसी प्रकार बद्ध हैं जिस प्रकार वे युद्ध में भा के लिए प्रस्तुत थीं। अपने काम पूरी लगन से लगी हुई हैं अतः उन्हें अवश्य मिलेगी।

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

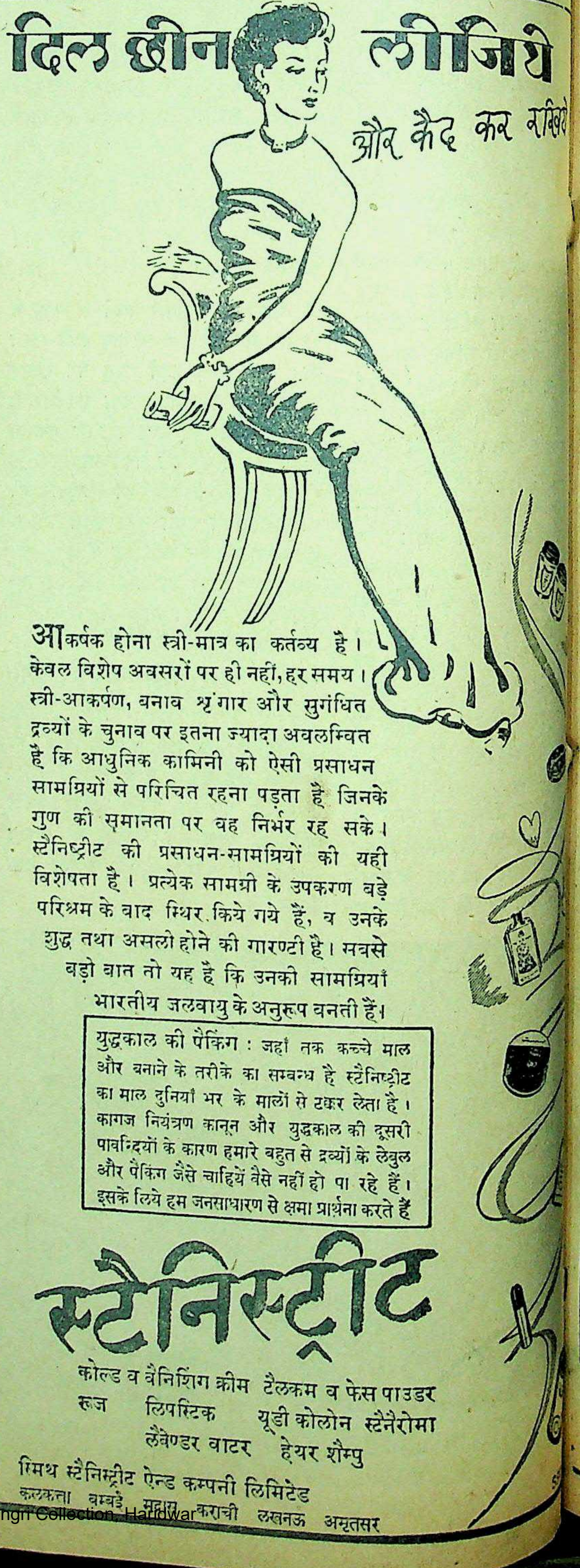

दिल छीन लीजिये
और कैद कर रखिये

आकर्षक होना स्त्री-मात्र का कर्तव्य है। केवल विशेष अवसरों पर ही नहीं, हर समय। स्त्री-आकर्षण, बनाव श्रृंगार और सुगंधित द्रव्यों के चुनाव पर इतना ज्यादा अवलम्बित है कि आधुनिक कामिनी को ऐसी प्रसाधन सामग्रियों से परिचित रहना पड़ता है जिनके गुण की समानता पर वह निर्भर रह सके। स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन-सामग्रियों की यही विशेषता है। प्रत्येक सामग्री के उपकरण बड़े परिश्रम के बाद स्थिर किये गये हैं, व उनके शुद्ध तथा असली होने की गारण्टी है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि उनकी सामग्रियाँ भारतीय जलवायु के अनुरूप बनती हैं।

युद्धकाल की पैकिंग : जहाँ तक कच्चे माल और बनाने के तरीके का सम्बन्ध है स्टैनिष्ट्रीट का माल दुनियाँ भर के मालों से टक्कर लेता है। कागज नियंत्रण कानून और युद्धकाल की दूसरी पाबन्दियों के कारण हमारे बहुत से द्रव्यों के लेबुल और पैकिंग जैसे चाहियें वैसे नहीं हो पा रहे हैं। इसके लिये हम जनसाधारण से क्षमा प्रार्थना करते हैं

स्टैनिस्ट्रीट

कोल्ड व वैनिशिंग क्रीम टैलकम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक यूडी कोलोन स्टैनैरोमा
लैवेण्डर वाटर हेयर शैम्पु

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐन्ड कम्पनी लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

महायुद्ध
की
चित्रावली

चर्चिल और रूजवेल्ट की योजना सफल हुई

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री मिस्टर चर्चिल काहिरा में युद्धक्षेत्रों का निरीक्षण करते हुए मित्रराष्ट्रीय फौजों की सलामी ले रहे हैं ।

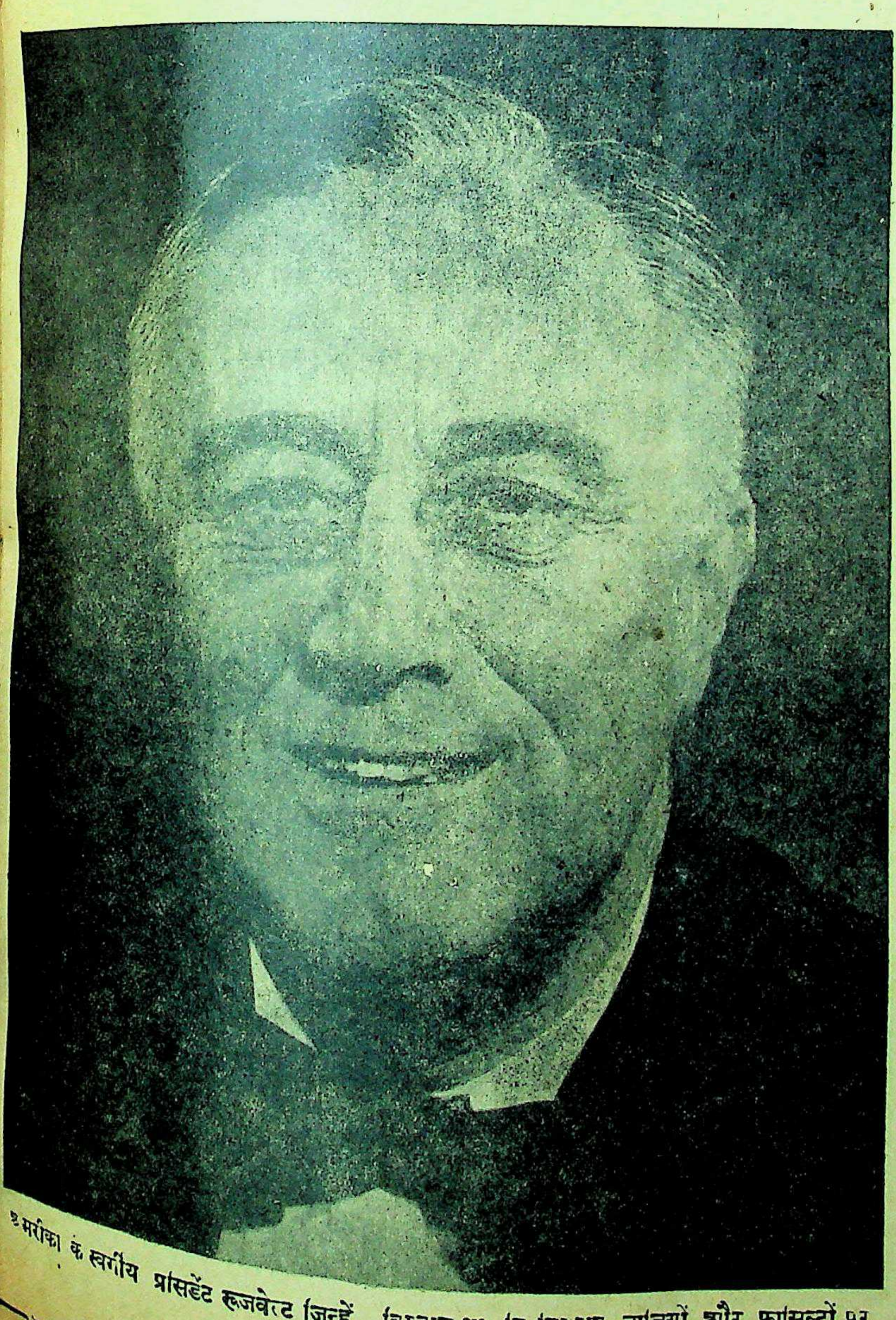

अमरीका के स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट जिन्हें विश्वास था कि मित्रराष्ट्र नाजियों और फासिस्टों पर शीघ्र विजय प्राप्त करेंगे ।

जर्मनी का डिक्टेटर एडोल्फ हिटलर ।

फासिस्ट इटली का तानाशाह मुसोलिनी ।

बंदी नाजी सेनापति फील्डमार्शल रुन्स्टेड ।

फा. ८

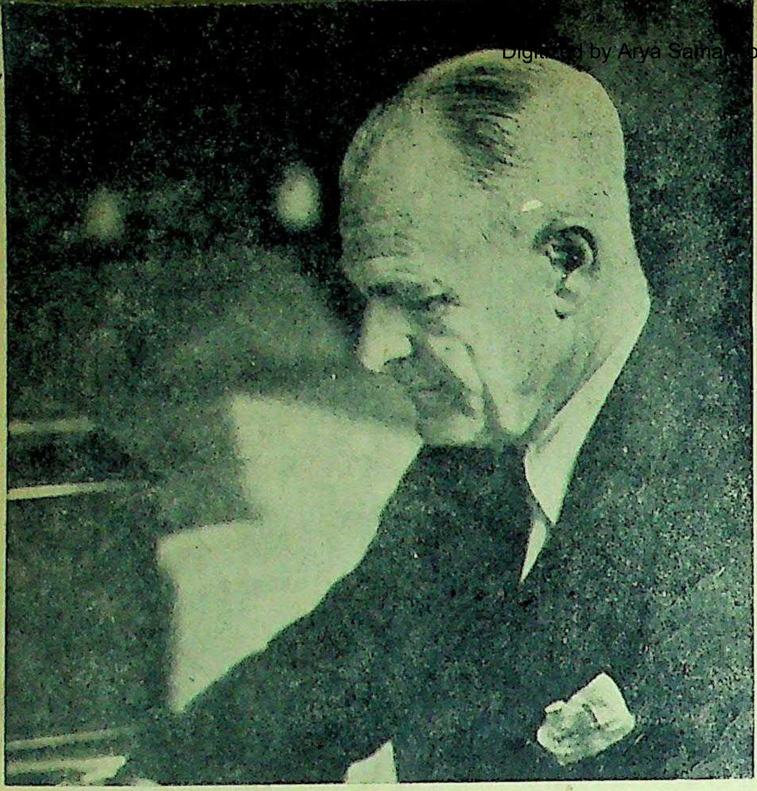

भारत के वर्तमान वाइसराय लार्ड वेवेल जिन्होंने अफ्रीक़ा के युद्ध में मित्र फौज़ों का संचालन किया था।

महायुद्ध प्रारम्भ होने पर भारत के अनेक शिक्षित युवक वायुयान चालक के दल में सम्मिलित होकर युद्ध मोर्चों पर गये और बड़ी वीरता से फैसिस्ट नाज़ी फौज़ों का मुक़ाबला किया। इस चित्र में एक भारतीय और एक अंग्रे वायुयान चालक में साथ साथ युद्ध क्षेत्र की ओर जाने के लिए तैयार बैठे हैं।

भारत के प्रधान सेनापति जनरल आचिनलेक।

भारत में फौजों के संगठन और संचालन का उत्तरदायित्व प्रधान सेनापति पर है।

काला समुद्र के किनारे याल्टा का प्रसिद्ध नगर जहाँ संसार के तीन महान् ब्रिटेन, अमरीका और रूस—का सम्मेलन हुआ था।

स्वतन्त्र चीन के रक्षक जनरल च्यांगकाइशेक।

मनीला के रहनेवाले पहाड़ियों से निकल कर जापानियों के विरुद्ध युद्ध में भर्ती होने के लिए शपथ ले

त्रराष्ट्रों के प्रधान सेनापति जनरल आइसेन होवर।

ब्रिटिश प्रधान सेनापति फील्ड मार्शल मान्टगोमरी।

योरोप के पश्चिमी युद्ध मोर्चे पर इन दोनों मित्रराष्ट्रीय सेनापतियों ने नाज़ीवाद की पराजय में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

प्रशांतसागर के प्रधान सेनापति मैकआर्थर।

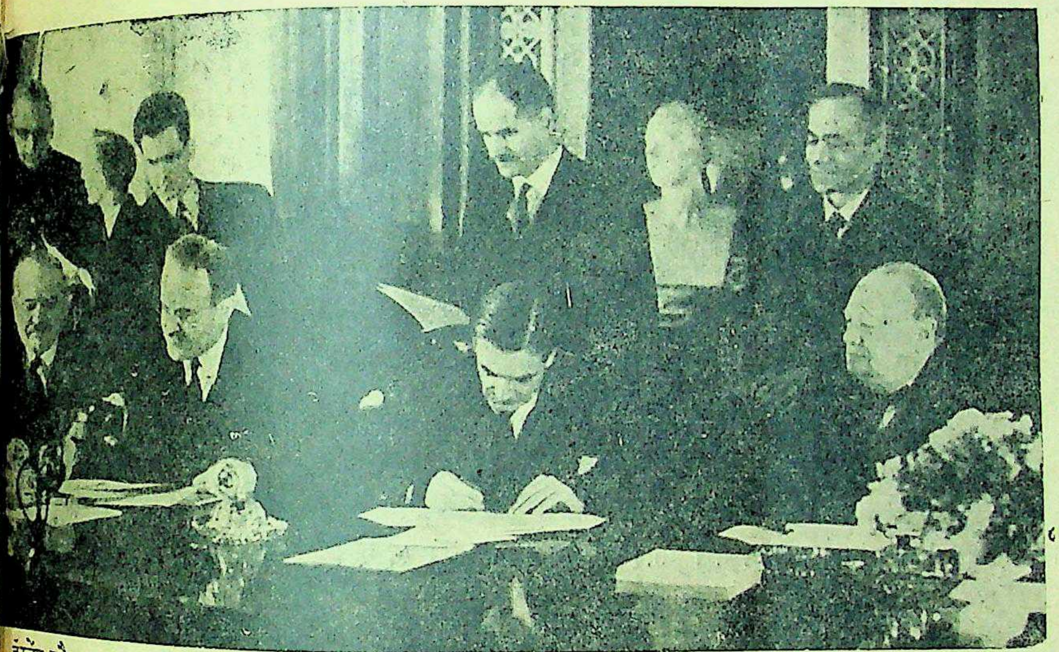

इंग्लैंड और रूस की सन्धि पर हस्ताक्षर किये जा रहे हैं। बैठे हुए—लंदन-स्थित रूसी राजदूत माइस्की, रूस के परराष्ट्र सचिव मोलोटोव, इँग्लैंड के परराष्ट्र सचिव एंथनी और प्रधानमंत्री श्री चर्चिल।

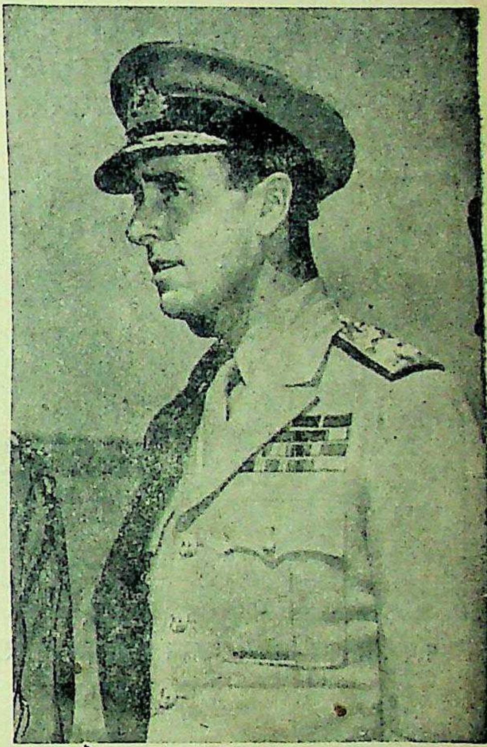

एशिया युद्ध हाईकमांड के प्रधान सेनापति लार्ड लुइ माउंटबेटेन।

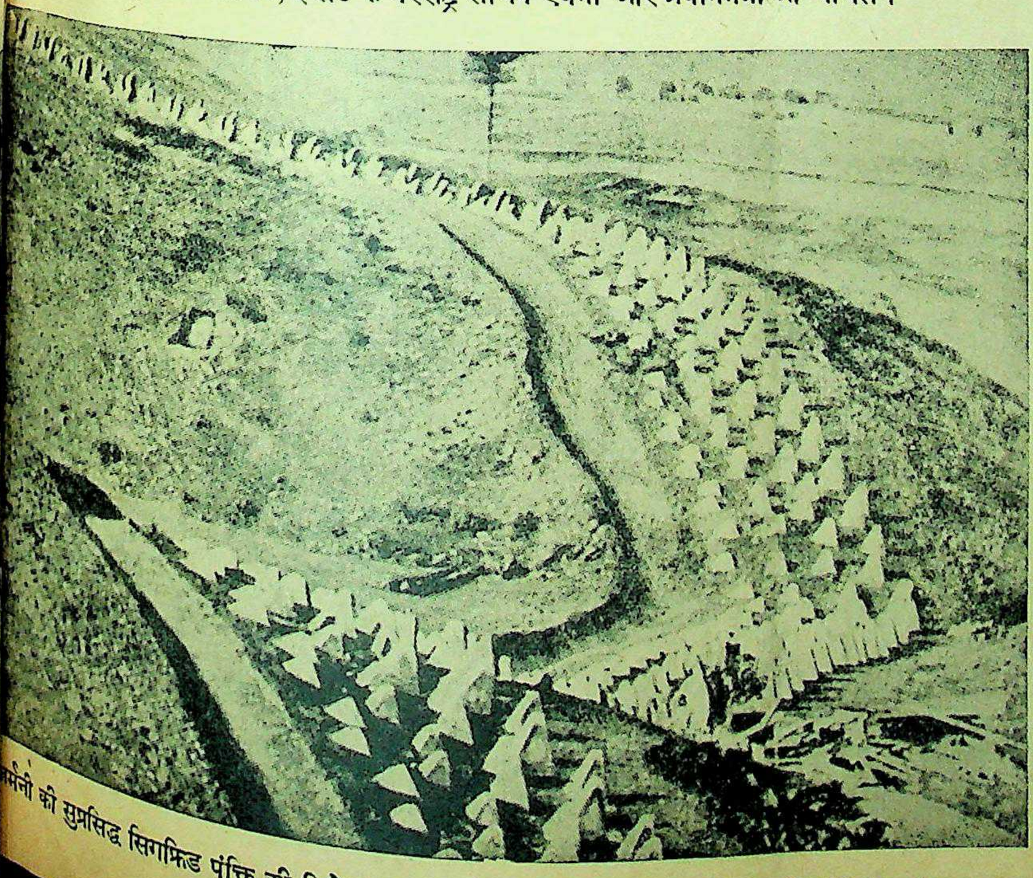

र्मनी की सुप्रसिद्ध सिगफ्रिड पंक्ति की किलेबन्दी जिसे तोड़कर मित्र राष्ट्रीय फौजों ने जर्मनी में प्रवेश किया था।

स्वतंत्र चीन की रक्षिका मैडम च्यांग काइ शेक।

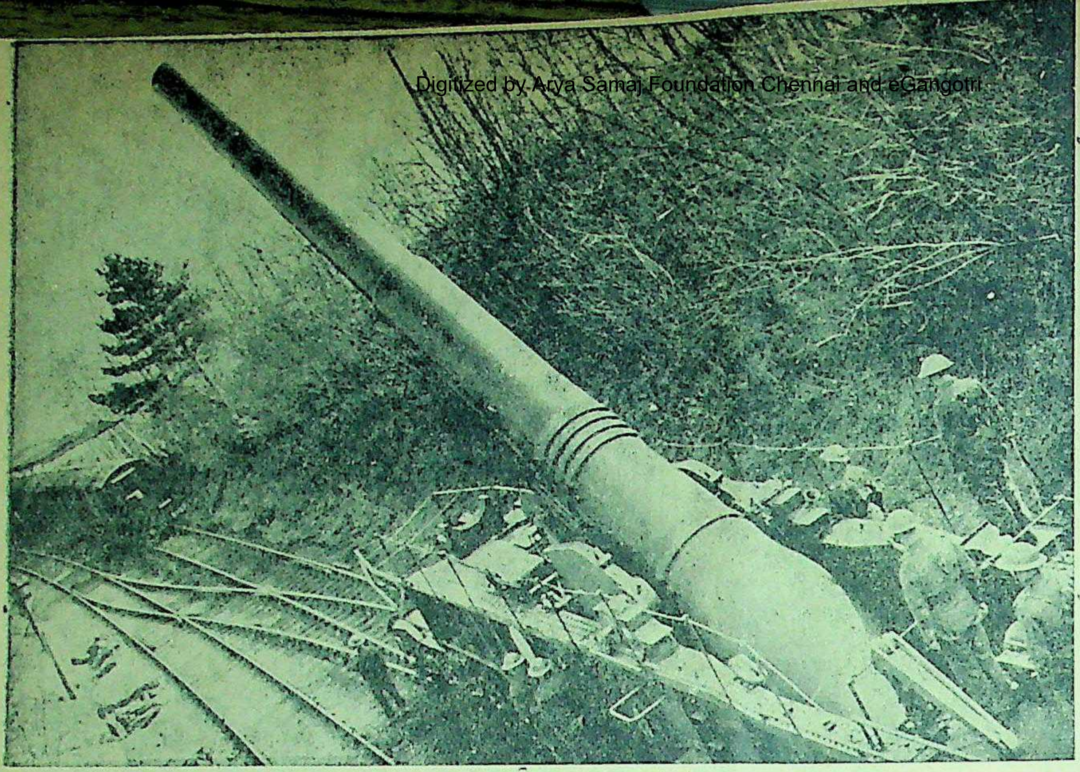

महायुद्ध के छिड़ जाने पर संसार के युद्धग्रस्त राष्ट्रों के वैज्ञानिकों और अन्वेषकों ने कितने ही नये नये अस्त्र-शस्त्रों का आविष्कार किया है। ब्रिटेन के वैज्ञानिक भी अमरीका तथा रूसी वैज्ञानिकों से किसी तरह पीछे नहीं रहे। यह चित्र भी एक लम्बी मारवाली तोप का है। ब्रिटेन ने इस विचित्र तोप का निर्माण पिछले वर्ष किया है। इसका उपयोग युद्धक्षेत्र में पूर्णरूप से किया गया है और दुश्मन की फौजों को भयंकर हानियाँ उठानी पड़ी है। आजकल संसार में यह सबसे बड़ी और कीमती तोप समझी जाती है।

पश्चिमी युद्धक्षेत्र के प्रधान सेनापति जनरल आइसनहॉवर, फील्ड मार्शल मांटगुमरी आदि के साथ सलाह कर रहे हैं।

लाल रूस के डिक्टेटर, मार्शल

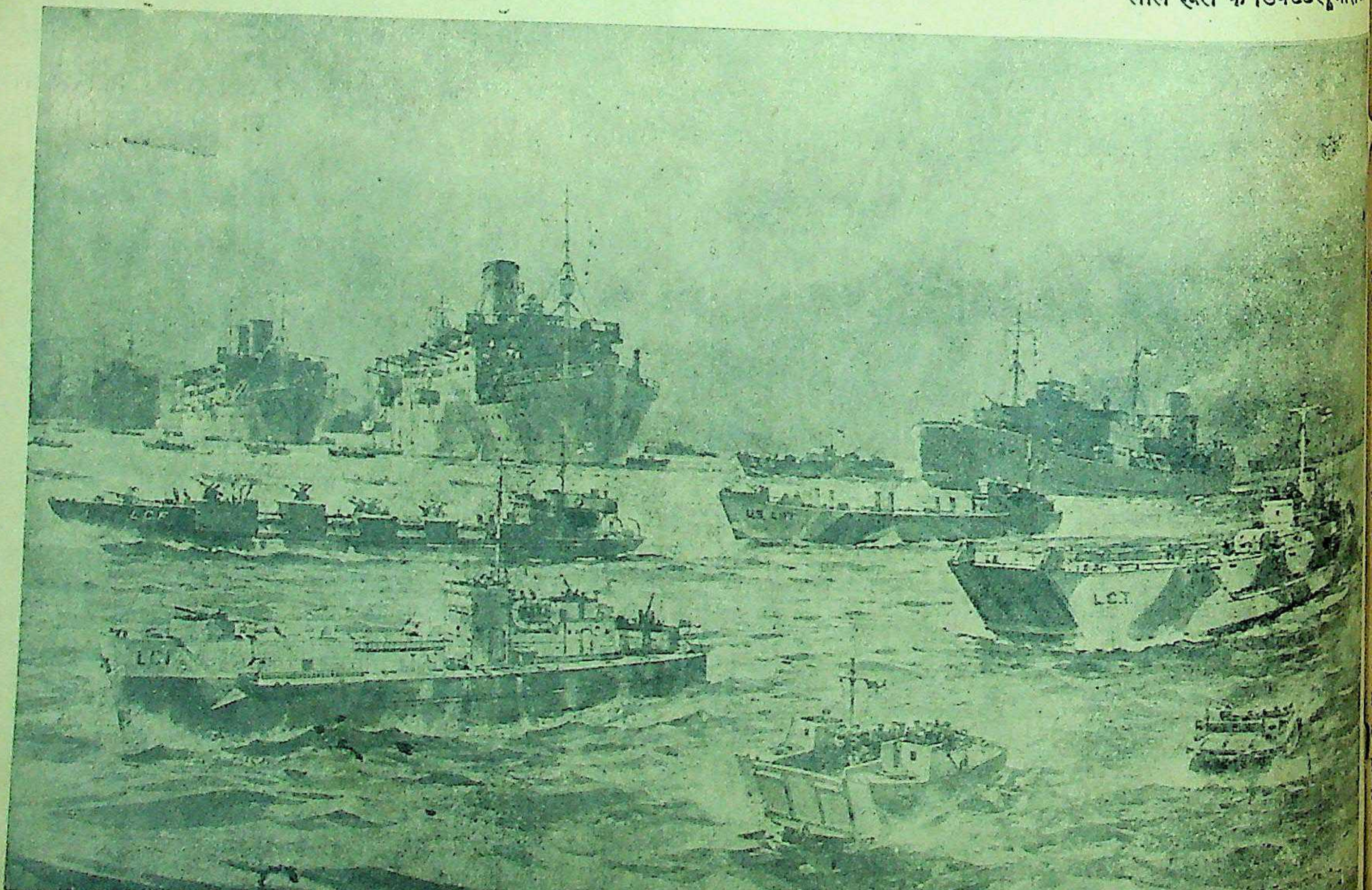

मित्रराष्ट्रों का विशाल समुद्री बेड़ा योरोप पर संगठित आक्रमण करने जा रहा है।

हिन्दू महासभा के सभ

देश के सभी रा
ात को स्वीकार कर
ाषा—राष्ट्रभाषा—
सामाजिक नहीं, राष्ट्री
जी ने हिन्दी के रा
उपस्थित करते हुए
का प्रश्न केवल
न्दी के द्वारा ही
कता है। हमारे
इस पर एतराज
राष्ट्रभाषा का स्थान
कुछ कल्पित हिन्दु
वासी बँगला को
स्वप्न देख चुके हैं
बात पर विचार
खित विभिन्न मतों
है। क्योंकि यह तो
काम है। मैं मान
सभी मत अपनी अप
और उसके अनुयायि
मानना चाहिए।

इस बात को
व्यक्ति स्वीकार करेगा
हम सिद्धान्त रूप में
व्यावहारिकता में भी
जाना चाहिए। हम
राजनैतिक दृष्टिकोण
प्रश्न है। कांग्रेस,
लीग। इनके अतिरि
हैं। जहाँ तक मैं
किसी पक्ष या उ
नहीं की है कि देश
है। किन्तु देखा
हमारे देश की ल
संस्थाएँ हिन्दी, उर्दू
धार स्वयं को रा
महापुरुष अपना स
अधिकांश कार्य अँग
है। चाहे यह सब
या अनजान में।
स्पष्ट है कि यह हमा
मनस्तत्त्व है।
की प्रभुता की जो
उन्मुक्त होने का
हमारा ध्यान नहीं
बात यह है कि जब
इस बौद्धिक गुलामी
नहीं लेते तब तक
तोड़ना हमारे वश

किसी भी सम
देखकर दुःख होगा
से देश के प्रथम श्रे

राष्ट्रभाषा के साथ अनाचार क्यों ?

क्या हम अब भी अपनी बौद्धिक गुलामो से मुक्त न होंगे ?

लेखक, श्री गङ्गाधर इंदूरकर 'साहित्यरत्न'

हम राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार का सतत् उद्योग करते आ रहे हैं किन्तु दैनिक जीवन में हम अँग्रेजी का बहिष्कार नहीं कर सके हैं। राष्ट्रभाषा के साथ यह घोर अन्याय तथा हमारी बौद्धिक गुलामी का जीवित चिन्ह है। इस लेख में योग्य लेखक ने इसी समस्या की ओर देश के लोगों का ध्यान आकर्षित किया है।

हिन्दू महासभा के सभापति वीर सावरकर।

देश के सभी राष्ट्रीय नेताओं ने इस ात को स्वीकार कर लिया है कि राष्ट्र की ाषा—राष्ट्रभाषा—का प्रश्न साहित्यिक या ामाजिक नहीं, राष्ट्रीय है। श्रद्धेय टंडन जी ने हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने का दावा उपस्थित करते हुए यह कहा है कि हिन्दी का प्रश्न केवल राजनैतिक है, क्योंकि िन्दी के द्वारा ही हिन्द का प्रश्न हल हो कता है। हमारे देश के कुछ भाइयों को इस पर एतराज है। कुछ लोग उर्दू को राष्ट्रभाषा का स्थान देना चाहते हैं और कुछ कल्पित हिन्दुस्तानी को। कुछ वंगवासी बँगला को भी राष्ट्रभाषा बनाने का स्वप्न देख चुके हैं। इस लेख में हमें इस बात पर विचार नहीं करना है कि उल्लिखित विभिन्न मतों में से कौन-सा मत ठीक है। क्योंकि यह तो प्रमुख राजनीतिज्ञों का काम है। मैं मान लेता हूँ कि उल्लिखित सभी मत अपनी अपनी जगह पर ठीक हैं और उसके अनुयायियों को उसे अवश्य मानना चाहिए।

इस बात को कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति स्वीकार करेगा कि जिस विचार को हम सिद्धान्त रूप में स्वीकार करते हैं उसे व्यावहारिकता में भी अवश्य परिणत किया जाना चाहिए। हमारे देश में विभिन्न राजनैतिक दृष्टिकोण रखनेवाले तीन प्रमुख प्रश्न हैं। कांग्रेस, हिन्दूसभा तथा मुस्लिम लीग। इनके अतिरिक्त कई उपपक्ष भी हैं। जहाँ तक मैं जानता हूँ देश के किसी पक्ष या उपपक्ष ने यह घोषणा नहीं की है कि देश की भाषा अँगरेजी है। किन्तु देखा यह जा रहा है कि हमारे देश की लगभग सभी राजनैतिक संस्थाएँ हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी के कर्णधार स्वयं को राष्ट्रीय कहनेवाले अनेक महापुरुष अपना सब नहीं तो कम से कम अधिकांश कार्य अँगरेजी में ही किया करते हैं। चाहे यह सब उनकी जान में होता हो या अनजान में। किन्तु होता अवश्य है। स्पष्ट है कि यह हमारी बौद्धिक गुलामी का प्रबल द्योतक है। हमारे मन पर अँगरेजी की प्रभुता की जो छाप पड़ी हुई है उससे उन्मुक्त होने का प्रयत्न करने की ओर, हमारा ध्यान नहीं गया है। किन्तु सच बात यह है कि जब तक हम अपने मन को इस बौद्धिक गुलामो की जंजीर से छुड़ा नहीं लेते तब तक परतंत्रता की शृङ्खलायें तोड़ना हमारे वश की बात नहीं है।

किसी भी समझदार व्यक्ति को यह देखकर दुःख होगा कि इस बौद्धिक गुलामो से देश के प्रथम श्रेणी के नेता भी मुक्त नहीं हैं। संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा कहनेवाले तथा हिन्दू-राज्य का डंका पीटनेवाले वीर सावरकर अपने वक्तव्य सम्भवतः शीघ्र प्रचारित होने के दृष्टिकोण से, ए० पी० आई० को अँगरेजी में देते हैं। इसी प्रकार पाकिस्तान का झंडा उठाकर उर्दू को ही राष्ट्रभाषा माननेवाले कायदे आजम श्री जिन्ना शायद ठिकाने से उर्दू बोलना भी नहीं जानते, सदा अँगरेजी में ही बोलते हैं। आश्चर्य तो तब होता है कि अपने को सबसे अधिक राष्ट्रीय कहनेवाले कांग्रेसी नेता अँगरेजी बोलने-लिखने में अपना गौरव समझते हैं और लिखते-पढ़ते हैं। वह हिन्दुस्तानी में नहीं लिखते यह मैं अभी नहीं कह सकता। क्योंकि हिन्दुस्तानी का कोई स्वरूप उनके सामने नहीं है। अवश्य ही यह बात राष्ट्रीय गौरव के लिये होती कि हमारे देश के नेता अपनी वास्तविक राय के अनुसार जिसे वे राष्ट्रभाषा मानते हैं उसी में बोला और लिखा करते। यदि श्री सावरकर केवल संस्कृत-निष्ठ हिन्दी में बोलें, कायदे आजम अपनी नीति के अनुसार उर्दू के सिवा किसी दूसरी भाषा का शब्द भी उच्चारण न करें, हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा माननेवाले कांग्रेसी जिसे वे हिन्दुस्तानी मानते हैं, उसी में बोलने का प्रण कर लें तो मैं समझता हूँ कि हम सब लोग राष्ट्रीयता के अधिक समीप आ जायँगे। राष्ट्रभाषा हिन्दी हो, उर्दू हो, हिन्दुस्तानी हो या हिन्दुस्तानी का रूप कैसा हो ये सब हमारे घर के झगड़े हैं। इन्हें हमें अपने घर में ही सुलझाना होगा। हमारे आपस के झगड़ों का लाभ लगभग सौ वर्षों से अँगरेजी उठा रही है। अब भी वह लाभ उसे उठाने देना हमारी राष्ट्रीयता के साथ अन्याय होगा, पाप होगा।

प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्रीय वृत्ति के लोग भी ऐसी गलती क्यों करते हैं? मेरी समझ से इसके अनेक कारण हैं। यह युग प्रचार का है। प्रत्येक व्यक्ति वह चाहे कितनी ही राष्ट्रीय भावनाओं से भरा हुआ हो, पहले यह चाहता है कि उसका प्रचार हो। इस समय अँगरेजी संसार की प्रमुख भाषा है ही। लोग यह चाहते हैं कि उनकी चीजें सबसे पहले अँगरेजी में छपें। सम्भवतः लोगों के दिल में यह बात, चाहे अनजान में ही क्यों न हो, बैठ गई है कि अँगरेजी में जो चीज नहीं छपती उसका प्रचार नहीं होता। वास्तव में यदि देखा जाय तो हमारे देश में कितने लोग अँगरेजी जानते हैं? देश में पढ़े-लिखे लोगों की संख्या कम है। किन्तु उसमें भी हिन्दी या देशी भाषायें जाननेवाले लोग अँगरेजी जाननेवालों से अधिक होंगे। मैं समझता हूँ कि राष्ट्रीय आन्दोलन मजबूत करने के लिए हमें कुछ हठी तथा कट्टर बनने की आवश्यकता है। हमारे देश के सभी पक्ष और उपपक्ष विभिन्न विचारों में मतभेद होते हुए भी इस बात पर अवश्य एकमत हैं कि अँगरेजी देश की भाषा नहीं है। इसलिए देश के सभी पक्षों और उपपक्षों को यह निश्चय कर लेना चाहिए कि वे अपनी संस्था की कार्रवाही अँगरेजी में नहीं करेंगे।

मैं देश के सभी लोगों से राष्ट्रीय नेताओं से उनकी राष्ट्रीयता के नाम पर कहना चाहता हूँ कि यदि वे देश को वास्तव में स्वाधीन बनाना चाहते हैं तो उन्हें स्वयं अपनी बौद्धिक गुलामी की जंजीर तोड़ कर फेंक देनी पड़ेगी। साफ शब्दों में विदेशी कपड़ों की तरह विदेशी भाषा अँगरेजी का

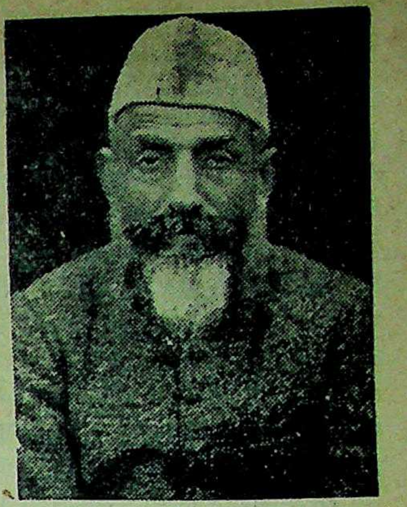

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण श्रद्धेय टंडन जी।

बहिष्कार करना पड़ेगा। हम उर्दू में लिखें, उर्दू में बोलें, हिन्दुस्तानी में लिखें बोलें, हिन्दी का उपयोग करें। मराठी, बँगला, गुजराती का व्यवहार करें। तेलगू, तामिल, मलयालम् को भी स्वीकार करें किन्तु अँगरेजी के बहिष्कार का आन्दोलन हमें चलाना होगा। मुझे विश्वास है कि सबके द्वारा स्वीकृत किन्तु उपेक्षित इस प्रश्न को अब उपेक्षा की दृष्टि से न देखा जा सकेगा।

नदी या तालाब में स्नान करते समय दक्षिण भारत के निवासियों के पूर्वज साबुन के स्थान में इरुप्या की खली का इस्तेमाल करते थे क्योंकि साबुन का तो उन्होंने तब नाम भी नहीं सुना था। लेकिन उनकी सन्तान वास्तव में भाग्यशाली है कि खली के बदले में आज ताजगी पहुँचानेवाला एवं मैल को तुरन्त साफ करनेवाला हमाम साबुन का फेन उनके स्नान के आनन्द में वृद्धि कर रहा है। हमाम साबुन में, जो विशुद्ध वनस्पति तेलों से बनाया जाता है, आधुनिक साबुन के सभी गुणों के साथ-साथ प्राचीन तरीकों के सभी लाभ मौजूद हैं।

हमाम

आप के स्नान के लिए बड़ा साबुन

A TATA PRODUCT

टाम्को सेल्स डिपो
जवाहर स्कायर इलाहाबाद

संवाददाताओं के पत्र

बीकानेर (गंगानगर) में गत २९ अप्रैल को प्रथम शिक्षा-सप्ताह का उद्घाटन "मीरा" 'पादक श्रीयुत दीपक जी ने किया। प्रोफेसर श्रीयुत कन्हैयालाल गोस्वामी एम० ए० डूंगर कालेज बीकानेर सभापति थे। शिक्षा-सप्ताह महाराज कुमार श्री करणीसिंह जी बहादुर की वर्षगाँठ के उपलक्ष में नवयुवक पुस्तकालय में मनाया गया। स्वतन्त्र कविता में श्रीयुत चन्द्रदेव शर्म्मा ने अपनी कविताओं से श्रोतागण को मुग्ध किया। श्रीयुत जीवनदत्त और श्री जगदीश ने अपनी कविता सुनाई। श्रीयुत मानसिंह भार्गव डूंगर कालेज बीकानेर तथा श्री कैलाशनारायण भार्गव शार्दूल हाईस्कूल ने भी अपनी अपनी कवितायें सुनाईं।

दूसरे दिन 'मीरा' संपादक "दीपक" जी के सभापतित्व में लोक-शिक्षण की आवश्यकता और स्त्री-समाज की महत्ता पर प्रस्ताव एवं भाषण हुए। श्रीरामस्वरूप गुप्ता, एम० ए० हेडमास्टर ने अपना प्रभावपूर्ण "शिक्षा में किन किन विषयों को प्रमुख स्थान दिया जाये" पर भाषण दिया। श्री कैलाशनारायण भार्गव ने अपनी मधुर कविता सुनाई। श्रीयुत जीवनदत्त ने भी कविता सुनाई। श्रीयुत कानसिंह भार्गव ने "आधुनिक शिक्षा की विवेचना" पर भाषण दिया। दोनों प्रस्तावों पर आचार्य गौरीशंकर ने प्रभावशाली भाषण दिया। श्रीयुत केदार जी, एम० ए० डूंगर कालेज बीकानेर ने भी भाषण दिया। —मन्त्री

* * *

छतरपुर रियासत के लोकप्रिय नेता श्री राधेलाल भट्ट का गत ११ अप्रैल को देहान्त हो गया। श्री भट्ट जी ब्रजभाषा तथा हिन्दी के अनन्य प्रेमी थे। बाहर से आनेवाले तथा रियासत के कवि आप से सदा सम्मान पाते थे। जहाँ आपने रियासत के ऊँचे ऊँचे पदों पर काम करते हुए उसे जन-प्रिय, उन्नत तथा अधिकारियों की दृष्टि में समृद्ध किया वहाँ साधारण जनता से हेल-मेल बढ़ाकर उनकी शिकायतों को यथासंभव दूर करने का भी प्रयत्न किया। इधर उनकी बीमारी में दूर-दूर गाँवों, नगरों से जनता देखने आती थी। स्वयं महाराज की ओर से भी सब प्रकार की सुविधा उन्हें प्रदान की गई। कहा जाता है उन्होंने अपने जीवन में कभी रिश्वत नहीं ली, कभी किसी को व्यर्थ ही तंग नहीं किया। ऐसे लोकप्रिय एवं देशप्रिय नेता की मृत्यु से सारा नगर दुखी है। वे अपने पीछे एक पुत्र, विधवा पत्नी तथा दो भाइयों एवं वृद्ध पिता को छोड़ गये हैं। —संवाददाता

* * *

बंगाल सरकार ने संक्रामक रोग निरोधक विधान के अन्तर्गत प्राप्त अधिकारों के आधार पर कलकत्ते में हैजे के प्रकोप को रोकने के लिए कुछ अस्थायी आदेश प्रचारित किया है। आदेश के अन्दर सड़ी-गली चीजों के बेचने पर प्रतिबन्ध तथा खाद्य पदार्थों को खुले रखकर बेचने की मनाही की गई है। हर सम्भव तरीकों से रोग के प्रकोप को दबाने की चेष्टा की जा रही है।

बंगाल सरकार की एक विज्ञप्ति में बताया गया है कि सरकारी कर्मचारियों की पहली जनवरी १९४५ से १० प्रतिशत की जगह १७½ प्रतिशत महँगाई-भत्ता दिया जायगा।

कलकत्ते में प्रकाश प्रतिबन्ध आदेश उठा लिया गया है। मकानों के सामने जो दीवालें खड़ी की गई थीं उन्हें भी गिरा देने की स्वतन्त्रता दी गई है। मानसून के पहले रक्षात्मक खाइयाँ भर देने का प्रबन्ध किया जा रहा है। हवाई हमले की सूचना तथा रक्षा-योजना आदि का प्रबन्ध अभी पूर्ववत जारी रहेगा। —संवाददाता

* * *

उदयपुर टैगोर सोसाइटी ने स्वर्गीय महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के जन्म-दिवस के उपलक्ष में ८ मई से १५ मई १९४५ तक 'जन्म-दिवस सप्ताह' बड़े समारोह से मनाना निश्चय किया है। इसी पर अखिल भारतीय पत्र-पत्रिकाओं एक विशाल तथा सुंदर प्रदर्शिनी भी उदयपुर के प्रधान मंत्री दीवान सर टी० विजयराघवाचार्य ने प्रद का उद्घाटन करना स्वीकार किया उदयपुर शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर एल० एल० जोशी एम० ए०, एल० बी० प्रदर्शिनी के संयोजक हैं। —संवाददा

* * *

कलकत्ता से निकलनेवाला साप्ता विश्वबन्धु अपने वार्षिक मूल्य ७) के ४) में ही दिया जायेगा। १००० की लिस्ट पूरी हो जाने पर यह रि नहीं मिलेगी। मैनेजर, साप्ता 'विश्वबन्धु' १९१८।१, कार्नवालिस कलकत्ता। —संवाद

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है। —वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

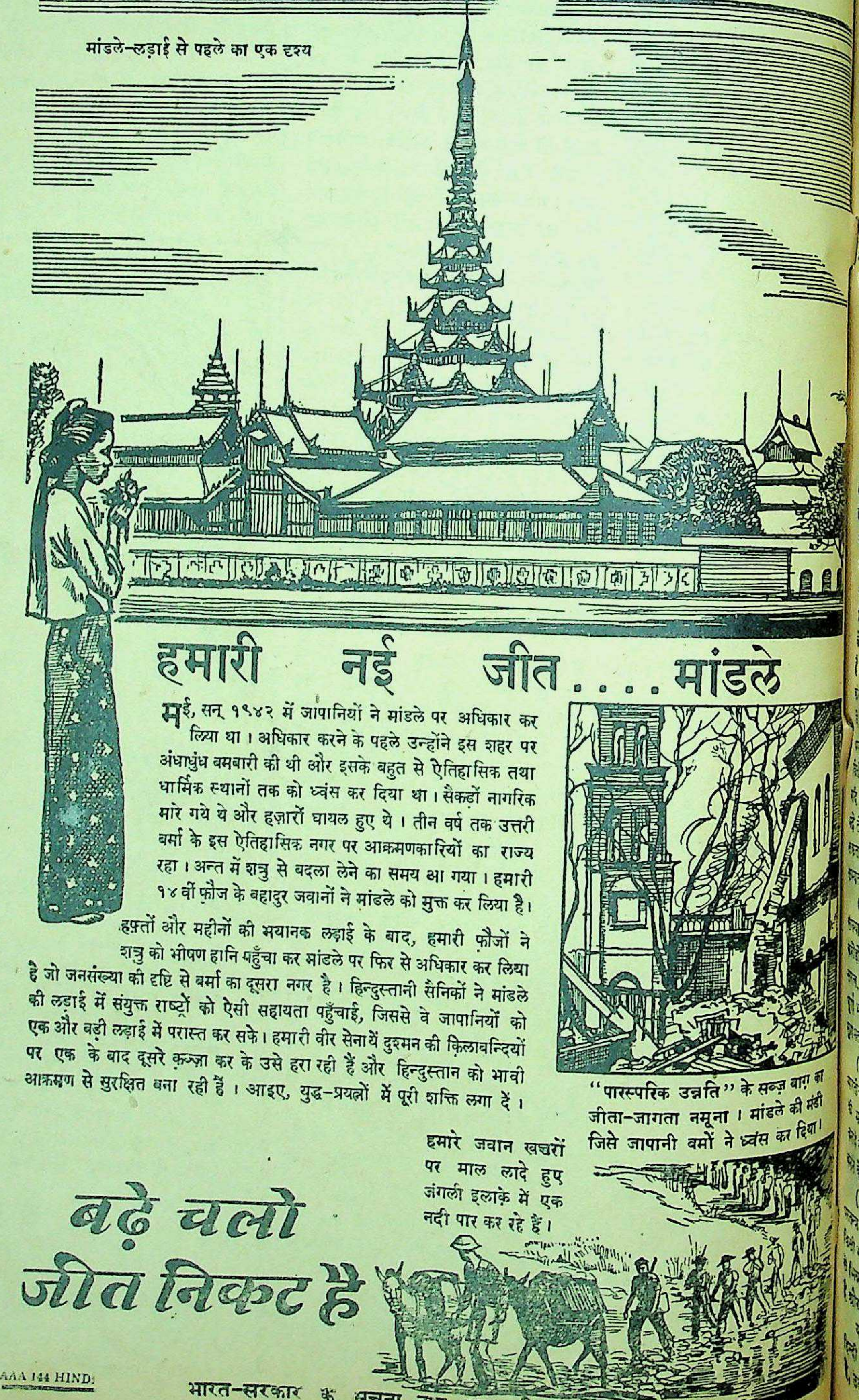

मांडले-लड़ाई से पहले का एक दृश्य

हमारी नई जीत....मांडले

मई, सन् १९४२ में जापानियों ने मांडले पर अधिकार कर लिया था। अधिकार करने के पहले उन्होंने इस शहर पर अंधाधुंध बमबारी की थी और इसके बहुत से ऐतिहासिक तथा धार्मिक स्थानों तक को ध्वंस कर दिया था। सैकड़ों नागरिक मारे गये थे और हज़ारों घायल हुए थे। तीन वर्ष तक उत्तरी बर्मा के इस ऐतिहासिक नगर पर आक्रमणकारियों का राज्य रहा। अन्त में शत्रु से बदला लेने का समय आ गया। हमारी १४वीं फ़ौज के बहादुर जवानों ने मांडले को मुक्त कर लिया है।

हफ़्तों और महीनों की भयानक लड़ाई के बाद, हमारी फ़ौजों ने शत्रु को भीषण हानि पहुँचा कर मांडले पर फिर से अधिकार कर लिया है जो जनसंख्या की दृष्टि से बर्मा का दूसरा नगर है। हिन्दुस्तानी सैनिकों ने मांडले की लड़ाई में संयुक्त राष्ट्रों को ऐसी सहायता पहुँचाई, जिससे वे जापानियों को एक और बड़ी लड़ाई में परास्त कर सके। हमारी वीर सेनायें दुश्मन की क़िलाबन्दियों पर एक के बाद दूसरे क़ब्ज़ा कर के उसे हरा रही हैं और हिन्दुस्तान को भावी आक्रमण से सुरक्षित बना रही हैं। आइए, युद्ध-प्रयत्नों में पूरी शक्ति लगा दें।

"पारस्परिक उन्नति" के सब्ज़ बाग़ का जीता-जागता नमूना। मांडले की मंडी जिसे जापानी बमों ने ध्वंस कर दिया।

हमारे जवान खच्चरों पर माल लादे हुए जंगली इलाक़े में एक नदी पार कर रहे हैं।

AAA 144 HIND:

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

हिन्दी ही राष्ट्र भाषा क्यों है?

हिन्दी की विरोधी प्रवृत्तियों का जोरदार प्रतिकार होना चाहिए

लेखिका, कुमारी शांताकुमारी (जम्मू)

पिछले दिनों काश्मीर में हिन्दी सम्मेलन का एक महत्त्वपूर्ण अधिवेशन हुआ था। कुमारी शांता कुमारी ने सभानेत्री का पद ग्रहण किया था। आपने इस लेख में यह प्रगट किया है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा क्यों है? साथ ही यह भी बतलाया है कि उसकी विरोधी प्रवृत्तियों का जोरदार विरोध होता रहना चाहिए।

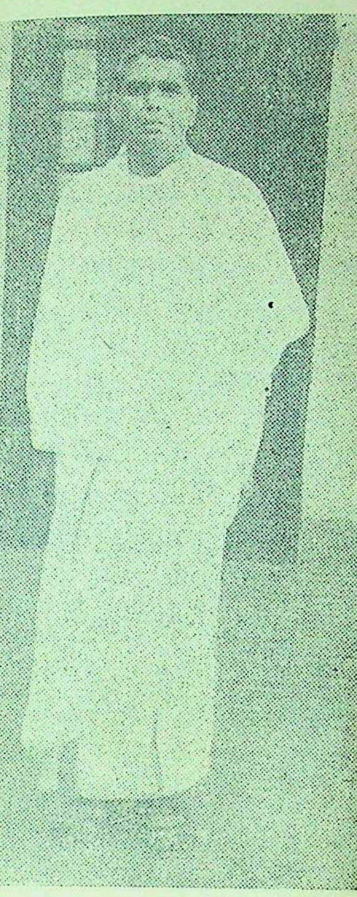

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति गोस्वामी गणेशदत्त।

आप यह प्रश्न कर सकते हैं कि हिन्दी और उर्दू की प्रतियोगता में हिन्दी ही क्यों राष्ट्र-भाषा बनने के योग्य है? उसका पहला कारण यह है कि उर्दू विदेशी और हिन्दी स्वदेशी है। आप लोग कह सकते हैं कि उर्दू भारत में ही पैदा हुई फिर विदेशी कैसे? मैं कहूँगी कि जिस प्रकार उन मिलों और कारखानों को अपनाना देश के लिए घातक है जिनकी पूँजी विदेश में लगी है, उसी प्रकार उन भाषाओं को अपनाना देश-द्रोह है जिनका आधार विदेशी है। हिन्दी का आधार भारतीय और उर्दू का आधार अभारतीय, हिन्दी हमें शुद्ध हिन्दोस्तानी बनाती है ईरानी नहीं, उर्दू के अपनाने में हमारी शक्तियाँ विदेशी भावों के उत्थान में लगेंगी। प्रत्येक देश की एक भाषा की अपनी एक पृथक् सभ्यता होती है और जहाँ कहीं भी वह भाषा जाती है अपनी सभ्यता भी साथ ही ले जाती है। यह कौन नहीं जानता कि उर्दू के प्रचार ने भारतवर्ष में विदेशी सभ्यता के लिए कितना स्थान पैदा कर दिया है। उर्दू के लेखकों और कवियों को ही देखिए वे भारत की पवित्र भूमि में पैदा होकर भी गङ्गा और यमुना के बजाय [illegible] के स्वप्न देखते हैं, भारत में रहते हुए भी उन्हें कमल और चमेली के स्थान पर नर्गिस के फूल खिलते दिखाई देते हैं और इन फूलों पर भ्रमरों के स्थान बुलबुल चहचहाती नजर आती है। उनकी कविताओं में वास्तविकता का आभास भी नहीं होता, क्योंकि स्वयं तो वे मोटर या घोड़े पर यात्रा करते हैं पर अपनी कविताओं में ऊँट से कम किसी चीज पर नहीं ठहरेंगे। इस प्रकार कोई भी विदेशी इनकी कविताओं को देखे तो वह स्वप्न में भी विश्वास नहीं कर सकता कि उनकी आँखें हिन्दुस्तान की [illegible] में डूबे हुए गीतों को पढ़ रही हैं।

(२) दूसरा—उर्दू समझनेवालों की संख्या कम है और हिन्दी समझनेवाले अधिक हैं। हिन्दी उर्दू की अपेक्षा अधिक सरल, अधिक वैज्ञानिक तथा अधिक परिष्कृत भाषा है और इसे सर्वसाधारण जनता [illegible] से समझ सकती है।

(३) भारत से बाहर जहाँ-जहाँ भी भारतीय लोग रहते हैं, उनकी बोल-चाल की भाषा हिन्दी ही है। उनसे सम्बन्ध बनाये रखने के लिए हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा बनने के योग्य है।

(४) उर्दू इस देश की तीन सौ वर्षीय गुलामी की एक महान् यादगार है और किसी भी दृष्टि से इसकी हैसियत अँगरेजी से भिन्न नहीं। इसका न शब्दकोष भारतीय है और न लिपि ही।

ये बातें स्वयं सिद्ध कर रही हैं कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्र-भाषा हो सकती है, उर्दू या अँगरेजी नहीं। क्योंकि हम इन्हें उसी समय राष्ट्र-भाषा बना सकते हैं जब कि इस उद्देश्य के लिए हमारे अपने में कोई भाषा उपस्थित न हो।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी आज उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रही है, परन्तु उसके साथ ही आज चारों ओर से इस पर किये जा रहे प्रहारों को देखकर ऐसा मालूम होता है कि भारत में हिन्दी के विरुद्ध एक ऐसा देश-व्यापी षड्यन्त्र बन चुका है, जो हर प्रकार से राष्ट्र-भाषा हिन्दी को नष्ट कर डालना चाहता है, इसकी शाखाएँ विभिन्न रूपों में प्रकट होकर हिन्दी को मिटाने के लिए जो नये नये साधन प्रयोग में ला रही हैं वे आप से छिपे नहीं। रेडियो-विभाग की नीति हिन्दी-विरोधी नीति आपके सामने है, पंजाब के डाक-विभाग की नीति आपसे छिपी नहीं, पंजाब सीमाप्रान्त, सिन्ध, बंगाल, हैदराबाद, भूपाल आदि की सरकारें साम्प्रदायिकता के वशीभूत होकर जो कुठाराघात कर रही हैं, उससे भी आप लोग अपरिचित नहीं। आज मुसलमानों की ओर से प्रबल रूप से यह कहा जाता है कि भारत के ८ करोड़ मुसलमानों की भाषा उर्दू है और वे उर्दू बोलते हैं। मैं इन साम्प्रदायिकता के दीवानों से पूछती हूँ कि बंगाल, गुजरात, यू० पी०, सी० पी०, पंजाब, सिन्ध, काश्मीर, हैदराबाद आदि के मुसलमान कौन-सी भाषा बोलते हैं, किस भाषा-द्वारा वे सर्वसाधारण से सम्पर्क रखते हैं और क्या उनका कार्यव्यवहार वहाँ की प्रांतीय भाषाओं-द्वारा नहीं होता?

हिन्दी केवल हिन्दुओं की ही बपौती नहीं। यह तो दोनों के सम्मिलित प्रयत्नों से फूली-फली है। हिन्दी देवी की यदि एक भुजा हिन्दू हैं, तो दूसरी मुसलमान। मुसलमानों ने अपनी प्रतिभा के जो चमत्कार हिन्दी में दिखाये हैं उनके लिए आज भी हिन्दी-साहित्य अपने को गौरवान्वित समझता है। मुस्लिम काल में जायसी, रहीम, रसखान, मीर, खुसरो, ताज, वाहिद, शेख रंगरेजिन, अकबर शाह, मुबारक आदि लगभग ३६० मुस्लिम लेखक ऐसे हुए हैं जिन्होंने हिन्दी को अपनाकर और अपनी अमूल्य कृतियों से उसके भंडार को भरा। परन्तु आज यह इस देश का दुर्भाग्य है कि हमारे मुसलमान भाई अँगरेजी चाल के चक्कर में आकर उसी भाषा और साहित्य को नष्ट करने पर तुले हुए हैं जिसे उनके पूर्वजों ने बुद्धिबल से उन्नत किया।

भारत के गौरांग शासक यह भली प्रकार जानते हैं कि किसी देश की भाषा और सभ्यता के रहते हुए उसे बहुत समय के लिए गुलाम बनाये रखना असम्भव है। प्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ लार्ड मेकाले के शब्द आज भी हमारे कानों में गूँज रहे हैं कि किसी भी देश अथवा राष्ट्र और किसी भी जाति को नष्ट करने के लिए तोपों-तलवारों की आवश्यकता नहीं, यदि उस देश की भाषा तथा सभ्यता और संस्कृति को नष्ट कर दिया जाये तो वह देश अपने आप नष्ट हो जायेगा। आज अँगरेजी के प्रचार ने आधे से अधिक भारत को योरप बना डाला है और भारतीय भाषा हिन्दी की उन्नति को देख आज भारत सरकार का दिल दहलने लगा है। वह इसकी उन्नति के रास्ते में रोड़े अटकाने के लिए कभी मुस्लिम लीग की पीठ थपथपाती है, कभी डाक-विभाग-द्वारा इसको मृतप्राय बनाना चाहती है और कभी रेडियो-द्वारा इसके स्वरूप को बिगाड़ने पर तुली है। इस पर भी हमारे अपने लोगों की हिन्दी के प्रति उदासीनता, हमारी लापरवाही हिन्दी के भविष्य के लिए और भी भयानक सिद्ध हो रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि समस्त हिन्दी-प्रेमी संगठित होकर एक सामूहिक मोर्चा तैयार करें और सब आपत्तियों का सामना करते हुए अपने कर्त्तव्य पर डटे रहें, अर्थात् हिन्दी प्रचार तथा प्रसार के लिए पूर्ण शक्ति से काम लें तो आशा हो सकती है कि हिन्दी विरोधी मैदान छोड़ जायें, वरना जिस तेजी से राष्ट्र-भाषा-हिन्दी पर आक्रमण कर रहे हैं, जिस कूट-नीति का वे प्रयोग कर रहे हैं तथा जिन साधनों से वे काम ले रहे हैं यदि वे सफल हो जायें तो मैं समझती हूँ कि राष्ट्र-भाषा का जीवन खतरे से खाली नहीं।

सौंदर्य की परम्परा कायम रख रही है

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी माँ ही उन्हें बहुमुल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती माँ ने अपनी सुन्द्र बेटी को अपना बढ़या गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस माँ ने अपनी माँ से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है। इसलिये उसकी माँ की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

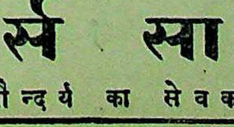

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 39-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

साहित्य-चर्चा

'वैदिक कहानियाँ'—लेखक, पण्डित बलदेव उपाध्याय, एम० ए० साहित्याचार्य, प्रोफेसर, संस्कृत-पाली-विभाग, हिन्दू-विश्वविद्यालय काशी; शारदा मन्दिर काशी; पृ० १७०, मूल्य १॥।)

भारतीय धर्म, संस्कृति तथा सभ्यता का मूल स्रोत वेदों से प्रवाहित होता है यह कथन अनेक अर्थ में सार्थक है। भारत में ही सर्वप्रथम कहानियों का उदय हुआ और यहीं से वे संसार में चारों ओर फैलीं। सर्वसाधारण को यह पता न होगा कि वेद में भी कहानियाँ हैं और ये कहानियाँ संसार की समस्त कहानियों मे प्राचीनतम हैं। इस पुस्तक के विद्वान् लेखक ने वेद की इन्हीं कहानियों को नये ढंग से आधुनिक कथाप्रणाली के अनुसार रोचक भाषा में लिखा है।

इस ग्रन्थ में ११ कहानियाँ हैं। ये समस्त प्राचीन भारत की संस्कृत के भव्य रूप को पाठकों के सामने प्रस्तुत करती हैं। उपाध्याय जी ने वेद में इधर-उधर बिखरे हुए वृत्तों को ग्रहण कर अपनी रोचक शैली से उनमें जान फूँक दी है। इन कहानियों के अध्ययन-मात्र से उस सुदूरकाल का चित्र हमारे नेत्रों के सामने चमक उठता है। कहानियाँ नितान्त स्फूर्तिदायक हैं। अपाला आत्रेयी, महर्षि वृश जान, सोमगिकारव, उषस्त चाक्रायण-आदि पात्र सजीव रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हो उठते हैं।

वैदिक कहानियों को नई शैली से प्रस्तुत करने का यह प्रथम अत्युत्तम प्रयास हिन्दी ही में नहीं, प्रत्युत अन्य भाषाओं में यह प्रयास अभी तक नहीं किया गया है। हिन्दी में जो एक-दो पुस्तकें इधर निकली हैं उनमें मूल कथाओं को छिन्न-भिन्न कर इतना विकृत कर दिया गया है कि उनमें वैदिकता का स्पर्श भी नहीं रहा, प्राचीन संस्कृति के सच्चे रूप के प्रदर्शन की तो बात ही दूसरी है। मूल की रक्षा करने तथा उसके सौन्दर्य को ठीक ठीक प्रदर्शित करने में यह पुस्तक अपने विषय की एक निराली चीज है। 'अन्नदेव' शीर्षक कहानी वर्तमान काल के लिए विशेष महत्त्व रखती है। 'तेजस्विता' भारतीय ललना के आदर्श चरित्र का चित्रण है। 'साधना' कवि की कला का चरम निदर्शन है। 'संगति' सुख की मृग-मरीचिका को दिखलानेवाली एक उदात्त कहानी है।

ग्रन्थकार ने ग्रन्थ के आरम्भ में भारतीय कहानियों के उदय तथा अभ्युदय की कथा बड़े ही अच्छे ढंग से लिखी है। इस ग्रन्थ की कहानियों का भी इतिहास—पुराणों में उनका परिवर्तन आदि—का वर्णन किया है। इस प्रकार यह ग्रन्थ केवल साधारण पाठकों के मनोरञ्जन की ही चीज नहीं है, प्रत्युत विद्वानों के लिए भी अध्ययन की विशिष्ट सामग्री प्रस्तुत करता है। लेखन की शैली रोचक तथा सुन्दर है। हमें पूर्ण विश्वास है कि हिन्दी जनता इस ग्रन्थ का आदर करेगी। ग्रन्थ को पढ़कर तृप्ति नहीं होती। अन्य कहानियों के लिए चित्त लालायित रहता है। लेखक इसी प्रकार की अन्य कहानियाँ प्रस्तुत करें—उनसे यही कहना है।

—कृष्णदेव उपाध्याय एम० ए०
साहित्य-रत्न

मनोरञ्जक चुटकुले

राशनिंग पर मनोरंजन

कपड़े के व्यापारी ने एक मजदूर से कहा—अपना राशन-कार्ड लाकर हमारी दूकान के ग्राहक बन जाओ।

मजदूर—एक धोती का दाम औसतन क्या होगा?

व्यापारी—तुम तो अपने आदमी हो। एक जोड़े धोती के लिए क्या मोल भाव? पाँच रुपये की धोती दे देना।

मजदूर बोल उठा—पाँच रुपये अधिक थोड़े ही हैं। क्या एक जोड़े के लिए कंट्रोल भाव दस रुपया रक्खा गया है?

व्यापारी—"तब तो तुम पहन चुके धोती।"

मजदूर—मैं धोती पहन चुका और आप हथकड़ी।

* * *

एक हिन्दुस्तानी साहब हैट-पतलून पहने कपड़े के एक व्यापारी की दूकान पर पहुँचा। उसने व्यापारी से कहा—वेल साहु जी, कोटिङ्ग के कपड़े दिखलाओ।

दूकानदार पढ़ा लिखा नहीं था। बोला—बैल तुम और तुम्हारा सारा खानदान। मारे यहाँ कोटङ्ग-बटिङ्ग नहीं। कुछ नहीं है, चलो खसको।

साहब (नम्रता से)—वैल साहु जी तुम नाराज हो गया।

व्यापारी—जरा मुझे बैल बैल न बनाइये! आप आप दया कीजिए।

* * *

एक सज्जन अपने मित्र से कह थे—"! सुना है बर्मा का बहुत अँगरेजी फौजों ने ले लिया है।

मित्र—तब तो भोजन-वस्त्र आस से मिलने लगेगा।

सज्जन—इस समय क्या तकलीफ

मित्र ने कहा—तकलीफ क्यों नहीं शरणार्थियों और दफ्तरियों के आगे लोगों का कहाँ कम ठिकाना लगता है।

'तब बर्मा के लोगों के आगे स्तानियों को कौन पूछेगा? जो मिलता भी है वह सुना है बाहर भी लगा है।" सज्जन ने कहा।

"ठीक कहते हो भाई! हिन्दुस्तानी गुलाम हैं ही बर्मा के लोगों को खुश करना है। इससे उन्हें सारी मिलेंगी। अच्छा है संसार में किसी सुख मिले।" मित्र ने कहा।

बहुत से लोगों को व्यापार करने का अच्छा मौका मिलने पर हाथ मल कर य कहना पड़ता है

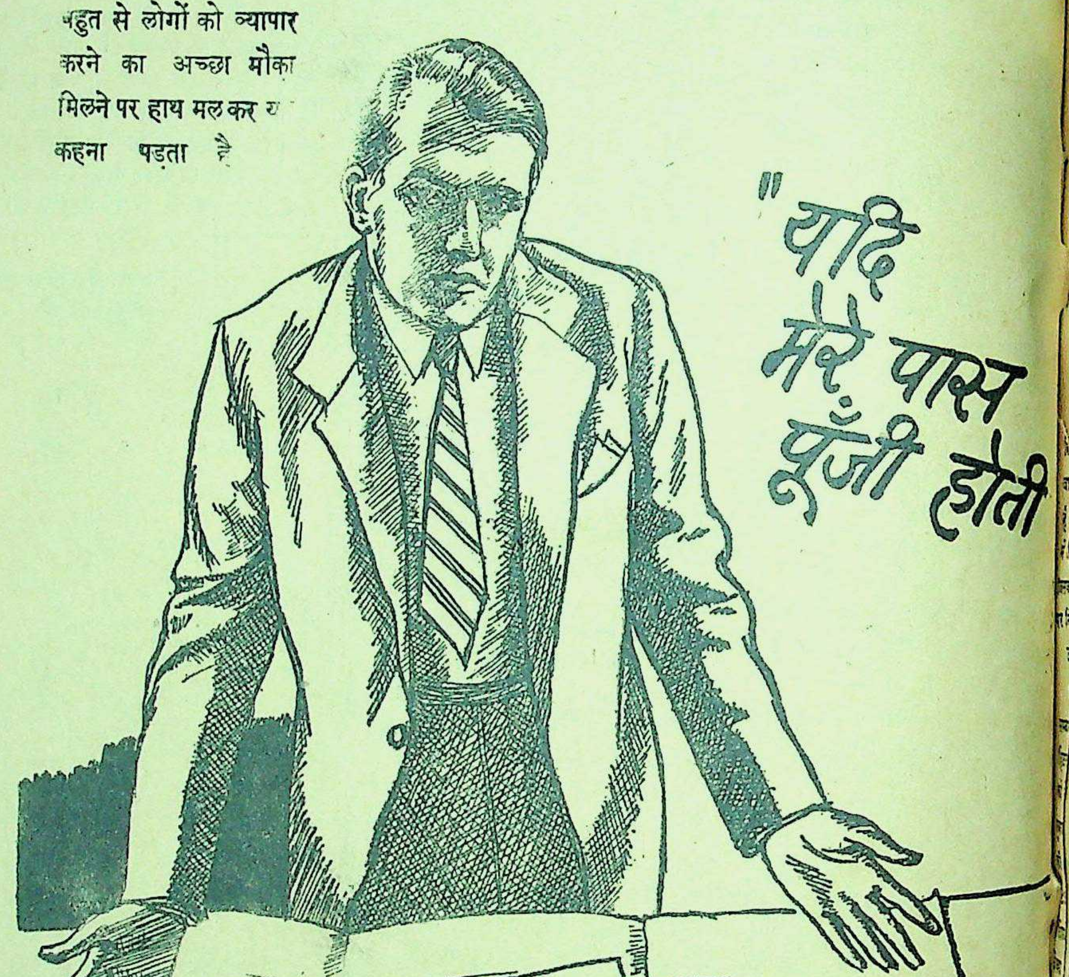
"यदि मेरे पास पूँजी होती

जब पूँजी के अभाव में अनुभव और योग्यता व्यर्थ हो जाती है—जब किसी व्यक्ति को केवल इसलिए नौकरी करनी पड़ती है कि व्यापार के लिए पास में पैसा नहीं—तो उसे जीवन का सब से कटु अनुभव होता है। किन्तु जो लोग बुद्धिमान है और जिन्होंने भविष्य के लिए रुपया बचाया है, उन्हें ऐसी परिस्थिति का सामना कम करना पड़ता है। उनकी बुद्धि तथा अनुभव से मिल कर उनके हाथ का पैसा सोने पर सुहागे का काम करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४ १/६ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़!
★ जमा हुये व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

क्या आज से बारह वर्ष बाद आपकी भी आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि ऐसे अवसरों से लाभ उठा सकें? बेशक हो सकती है, यदि आप अपनी बचत की रकम को नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगाने का आज ही निश्चय कर लें, जो सुरक्षित हैं और साथ ही जिनमें बहुत अच्छा व्याज भी मिलता है। अभी बुद्धिमानी से काम लीजिए और अपने भविष्य को सुरक्षित इए।

AAA 129 HIN

फ़ील्ड मार्शल मांटगुमरी कौन हैं?

अफ़्रीका और पश्चिमी मोर्चे के प्रसिद्ध सेनापति

फ़ील्ड मार्शल मांटगुमरी अपने जेब में योजना और मस्तिष्क में विजय की लेकर लिए जिस दिन नारमंडी में उतरे उस दिन से दो बार युद्ध-क्षेत्र में उनसे मिल चुका हूं।

साधारण व्यक्ति महान् जनरल के हेडक्वार्टर के सम्बन्ध में यही कल्पना कर सकता है कि किसी लड़ाई के समय वहां बड़ी हलचल दिखाई देगी—अफ़सर आते-जाते होंगे, संवाद-वाहक मोटर, साइकिलों पर आते-जाते होंगे और क्लर्क, सैनिक तथा संवाददाताओं की भीड़ लगी होगी।

हलचलें अन्य सेनापतियों के में दिखाई दे सकती हैं, किन्तु के सदर मुकाम में नहीं। के विचार से प्रधान सेनापति कार्य सोचना है और वह सोचने उपयुक्त समय और वातावरण आवश्यक समझते हैं।

मांटगुमरी फुटकर बातों में माथा-करके अपने समय और शक्ति का करना नहीं चाहते और न वे यही चाहते हैं कि उन्हें कोई भी घेर ले। -फिरे केवल चुने हुए और निजी अफ़सर रहते हैं। विभिन्न सैनिक विभागों के बड़े-बड़े अफ़सर अन्यत्र रहते हैं।

योजना बनाने का कार्य

परन्तु साथ ही हमें इस परिणाम पर भी न पहुँचना चाहिए कि मांटगुमरी अपने मित्रों से घिरे हुए तम्बू में आनन्द से बैठे रहते हैं। नहीं, ऐसा नहीं होता। वे और उनके सहयोगी वैज्ञानिक ढंग पर लड़ाई की योजना बनाते रहते हैं। योजना की रूपरेखा प्रधान सेनापति बनाते हैं और विस्तार की बातों को जनरल तथा कर्मचारी तय करते हैं।

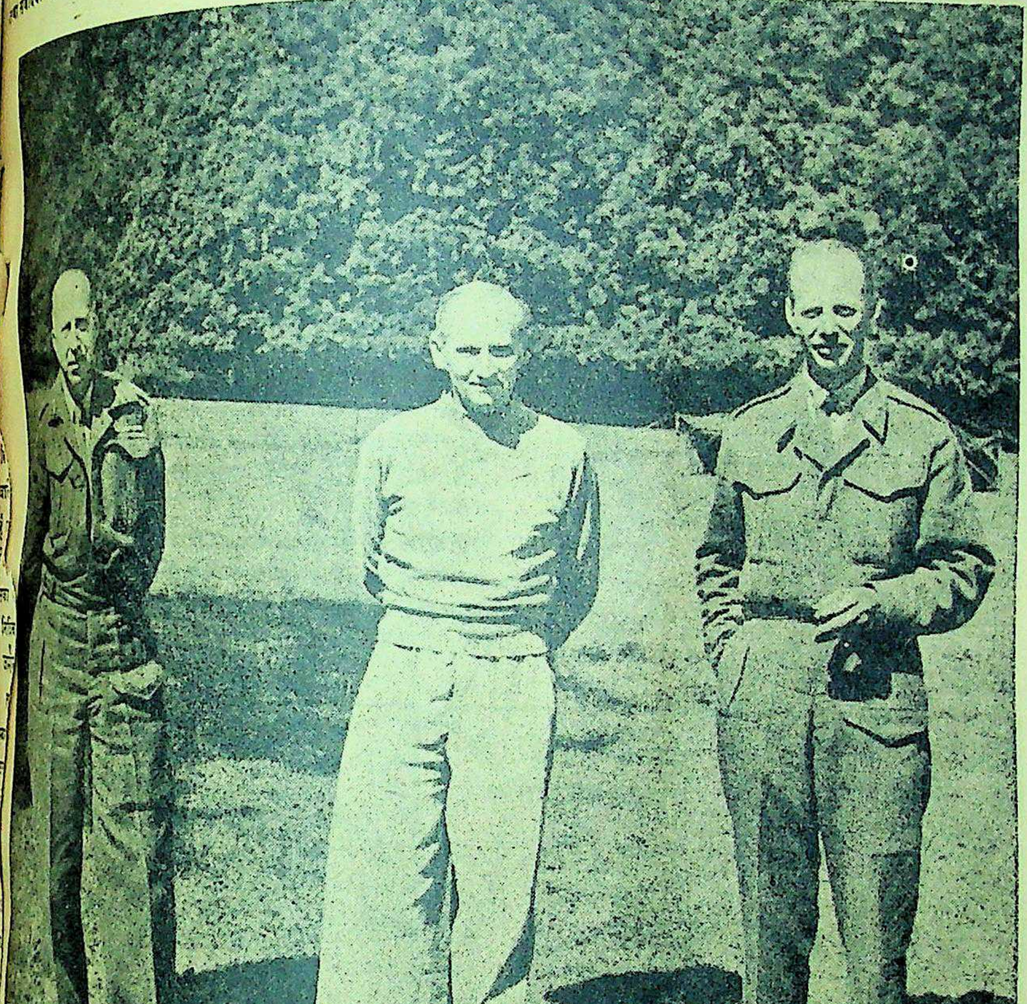

जनरल क्रेरार
(कनाडियन पहली फ़ौज के कमांडर)

फ़ील्ड मार्शल मांटगुमरी

जनरल डेम्पसी
(ब्रिटिश दूसरी फ़ौज के कमांडर)

मांटगुमरी ने सहयोगियों को अपने सिद्धान्तों से भली-भांति परिचित करा दिया है। किसी योजना को कार्यान्वित करते समय वे उन सिद्धान्तों के ही अनुसार कार्य करते हैं। मैंने स्वयं इन सिद्धान्तों को देखा है।

एक और मजे की बात है। महान् उत्तरदायित्व वहन करते हुए भी उन्हें स्वयं पत्र लिखकर भेजने का समय मिल जाता है। एक बार मुझे स्वयं उन्हीं के हाथ का लिखा नारमंडी आने का निमंत्रण मिला, जिसमें यह भी लिखा हुआ था कि उन्होंने मेरे आराम के लिए क्या-क्या प्रबन्ध कर रखा है।

हमें यह भी न अनुभव करना चाहिए कि फ़ील्डमार्शल मांटगुमरी योजना बनाकर अलग हो जाते हैं। उनके महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व से साधारण सैनिक को प्रेरणा और नेतृत्व की प्राप्ति होती है।

युद्धक्षेत्र में भाषण

जिस दिन म्यूज मोर्चे की लड़ाई आरम्भ हुई थी उसी दिन प्रातःकाल फ़ील्डमार्शल मांटगुमरी ने लंदन के सात सम्पादकों को वार्ता के लिए बुलाया था। बाहर टैंक गरजते हुए बढ़ रहे थे और भीतर एक बार रुके बिना मांटगुमरी भाषण दे रहे थे। उस समय प्रकट होता था कि उनका मस्तिष्क कितना स्पष्ट है और उनकी अभिव्यंजना-शक्ति कितनी पूर्ण है। उस दिन उन्होंने नारमंडी में सेना उतरने के समय से उस वक्त तक का पूर्ण विवरण उपस्थित किया, जर्मन सेनापतियों तथा अपनी रणनीति को समझाया और टैंक निर्माण इत्यादि अनेकों बातों पर प्रकाश डाला। उस दिन उन्होंने जो भाषण दिया था उस पर मंत्रिमंडल का कोई भी मंत्री अभिमान कर सकता था। परन्तु हमें स्मरण रखना चाहिए कि फ़ील्डमार्शल एक सैनिक थे और उनके नेतृत्व में एक महान् लड़ाई आरम्भ ही हुई थी।

मांटगुमरी के विरक्त तथा अनुशासनप्रिय व्यक्तित्व के सम्बन्ध में इतनी बातें लिखी गई हैं कि बहुतों को उनके सम्बन्ध में भ्रम हो सकता है। वे शराब अथवा सिगरेट नहीं पीते और धार्मिक पुस्तकों से उद्धरण देने के आदी हैं। परन्तु उन्हें अनावश्यक रूप से गम्भीर नहीं कहा जा सकता। निस्सन्देह उनमें अध्यात्मवाद का गुण है, किन्तु विनोद-प्रियता में भी वे किसी से कम नहीं हैं।

संकटपूर्ण स्थिति में मजाक

उनके एक सहयोगी ने मुझसे कहा था कि मांटगुमरी रैंडस्ट के आक्रमण के समय जितने प्रसन्न दिखाई देते थे उतने पहले कभी नहीं दिखाई दिये थे। बड़ी संकटपूर्ण परिस्थिति के समय भी वे मजाक करने से नहीं चूक रहे थे। प्रातःकाल कलेवा के समय वे बोले—"बड़ी परेशानी है। इस बार हम डंकर्क भी नहीं पहुँच सकते, क्योंकि वहां जर्मन पहले ही से मौजूद हैं।" फ़ील्ड मार्शल मांटगुमरी का सर्वोत्तम रूप संकट के ही समय देखने में आता है।

वे स्वयं शराब नहीं पीते, किन्तु उनके साथ बैठा हुआ कोई व्यक्ति निस्संकोच रूप से इस पेय का उपयोग कर सकता है। स्वयं सिगरेट पीने की आदत न होते हुए भी वे अन्य लोगों को सिगरेट देकर उनका सम्मान करते हैं।

वे काफ़ी पढ़ते हैं और रात को साढ़े ९ बजे सोने जाते हैं। बातचीत के समय वे अधैर्य का परिचय नहीं देते और दूसरे की बात बड़े ध्यान से सुनते हैं।

ब्रिटेन और यूरोप के भविष्य के सम्बन्ध में उनके स्थिर विचार हैं। परन्तु उनके राजनीति में भाग लेने की सम्भावना नहीं है, जैसा कि कुछ लोगों का ख़याल है। उनके लार्ड सभा में जाने की सम्भावना ही अधिक है।

◆ ◆ ◆

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर

No 712
EVEREADY
3 CELL
EXTRA
LONG LIFE
BATTERY

नं ७१२
एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५-०
ज्यादा मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.,
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

संपादक के नाम चिट्ठियां

भारत की स्वतंत्रता क्यों ?

मैंने 'देशदूत' में सन् ४२ में लिखा था कि इस युद्ध में विजय मित्रराष्ट्रों की होगी। कारण जिधर रूस है उधर विजय है। साम्राज्यवाद तथा पूँजीवाद का जनाजा निकल चुका है केवल दफनाना बाकी है। रूस साम्यवाद का उपासक है। अमेरिका जनतंत्र-प्रणाली का पोषक है इसी से मित्र-राष्ट्रों का पासा पलटा है। ईश्वर ने इन जबानी जमा-खर्च करनेवालों को समय दिया है कि विश्व का कल्याण वास्तविक रीति से होना चाहिए। इसके विपरीत कार्य से तीसरे महाभारत होने का अंदाजा लगाया जा रहा है। क्योंकि रूस से न अमेरिका से गठबन्धन हो सकता है और न ब्रिटेन से। अभी यह प्रश्न कुछ दिनों के लिए ज्यों का त्यों रह सकता है किन्तु आगे चलकर तीसरा महाभारत होगा यह साफ दिखलाई देता है।

महात्मा जी ने जो अहिंसा का संदेश सेन फ्रांसिस्को कांन्फ्रेंस में भेजा है उसका असर न अमेरिका पर पड़ा और न रूस ही पर। ब्रिटेन पर भला क्यों पड़ने लगा। अमेरिका पूँजीपति देश है और उसे व्यापार के लिए बाजार की जरूरत है इससे उसका हित रूस से नहीं ब्रिटेन से संबन्धित है। ब्रिटेन साम्राज्यवाद का उपासक है। इससे उसका हित रूस से नहीं अमेरिका से सम्बन्धित है। रूस साम्यवादी है इससे उसका हित अपने विचारों के प्रतिपादन में है यह होते हुए भी ब्रिटेन-द्वारा हस्तान्तरित किये हुए मुल्कों के आजाद करने का दबाव वह नहीं डाल सकता है। किन्तु इस युद्ध के निर्णय से नाजियों का दमन तो हुआ ही, साथ ही योरोप का बँटवारा भी तीनों की राय से होगा। जर्मनी को नेस्तनाबूद करने की सभा की है। हमारी राय में यही तीसरे महाभारत का बीजारोपण होगा। महात्मा जी की अहिंसा व्यक्तियों के लिए है राष्ट्रों के लिए नहीं। अहिंसा के उपासक प्रह्लाद अकेले ही थे।

अब प्रश्न उठता है भारत की आजादी का। उसके लिए समय है, ऐसा लक्षण से मालूम होता है। भारत की दशा तभी सुधर सकती है जब जनता की सरकार हो क्योंकि आपस में कुछ भी मतभेद हो आजादी के लिए सभी एकमत हैं। इससे इन कठिनाइयों को हल करना ही पड़ेगा। तलवार से हुकूमत चिरस्थायी नहीं रह सकती है। जापान से लड़ना ब्रिटेन के लिये आवश्यक है। उसका अड्डा भारत बनेगा। इससे भारत को आजाद करना ही पड़ेगा, इसमें शक नहीं है। अगर ब्रिटेन भारत को आजाद न करेगा तो यह उसका दुर्भाग्य ही समझना चाहिए।

मैंने लिखा था महाभारत में पांडवों की विजय होने पर भी युधिष्ठिर ने अपने को घोर निराशा में पाया था। उस समय कृष्ण ने ही उन्हें उपदेश-द्वारा शान्ति प्रदान कर राज्य का उत्तराधिकारी बनाया था। वैसे ब्रिटेन को चाहिए वह महात्मा जी के उपदेश से भारत को आजाद करके शान्ति लाभ करे नहीं तो राज्य रहते हुए भी अशान्ति का ही रसास्वादन करना पड़ेगा। भारत स्वयं ही उस दिन आ हो जायगा जिस दिन वह चाहेगा। जन कहते अधिक और स्वतः करते हैं यह कमजोरी जिस दिन उनकी जायगी उसी दिन कल्याण होगा। कमजोरी दूर होगी अब जमाना आ है जब लोग कहने पर नहीं करने विश्वास करेंगे। कांग्रेस जन इस न समझेंगे तो उनका भी अन्त करी अहिसा अजर-अमर है। इससे कार्यरूप में परिणित करनेवाले ही भागी होंगे। चाहे वह कांग्रेस जन मामूली जनता, विजय उसी की होगी मनसा, वाचा, कर्मणा से अहिसा का सक होगा। इन सब बातों को देखते भारत की आजादी करीब मालूम होती

जबलपुर
५ मई, ४५

—रामभरोस मा

मुफ्त
डायरी कलेण्डर १९४५
के लिए अभी पोस्टकार्ड लिखें।
क्रिस्टल कमर्सियल कं० के० सी० अमृतसर

स्टैनिस्ट्रीट
(कंसिंटेटेड)
चिकेन एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—विदेशी चिकेन एसेन्सों के इतना नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 116

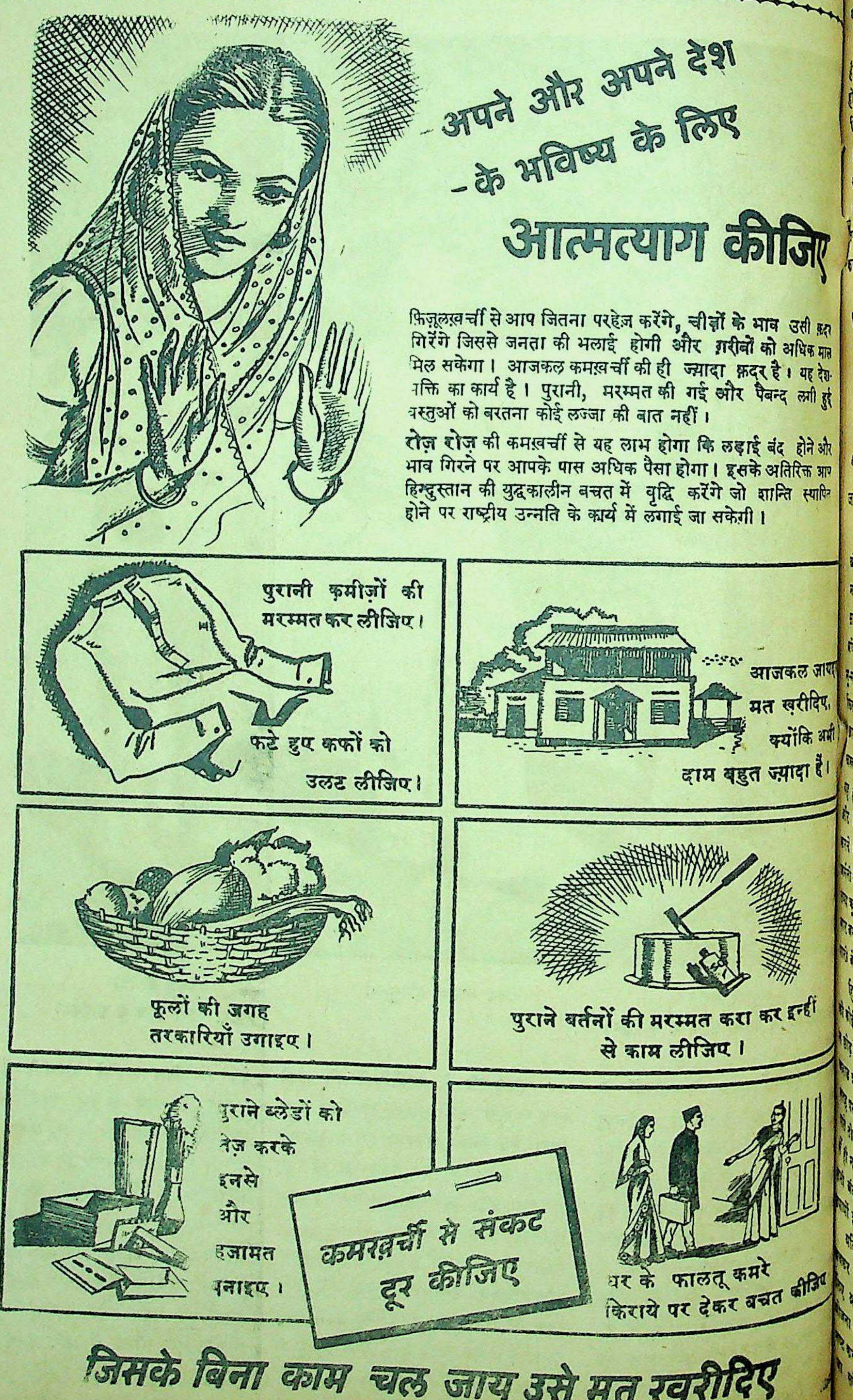

अपने और अपने देश के भविष्य के लिए
आत्मत्याग कीजिए

फ़िज़ूलख़र्ची से आप जितना परहेज़ करेंगे, चीज़ों के भाव उसी क़दर गिरेंगे जिससे जनता की भलाई होगी और ग़रीबों को अधिक माल मिल सकेगा। आजकल कमख़र्ची की ही ज़्यादा क़द्र है। यह देशभक्ति का कार्य है। पुरानी, मरम्मत की गई और पैबन्द लगी हुई वस्तुओं को बरतना कोई लज्जा की बात नहीं।

रोज़ रोज़ की कमख़र्ची से यह लाभ होगा कि लड़ाई बंद होने और भाव गिरने पर आपके पास अधिक पैसा होगा। इसके अतिरिक्त आप हिन्दुस्तान की युद्धकालीन बचत में वृद्धि करेंगे जो शान्ति स्थापित होने पर राष्ट्रीय उन्नति के कार्य में लगाई जा सकेगी।

पुरानी क़मीज़ों की मरम्मत कर लीजिए। फटे हुए कफ़ों को उलट लीजिए।

आजकल जायदाद मत ख़रीदिए, क्योंकि अभी दाम बहुत ज़्यादा हैं।

फूलों की जगह तरकारियाँ उगाइए।

पुराने बर्तनों की मरम्मत करा कर इन्हीं से काम लीजिए।

पुराने ब्लेडों को तेज़ करके इनसे और हजामत बनाइए।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

घर के फालतू कमरे किराये पर देकर बचत कीजिए

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

ब्रिटेन के नौसैनिक इतिहास में महानतम अध्याय

ब्रिटेन के दीर्घकालीन तथा गौरवमय नौसैनिक इतिहास का महानतम अध्याय इस युद्ध ही में लिखा गया है। यह अध्याय सम्पूर्ण संसार के सबसे घमासान नौ-सैनिक युद्धों की कहानी है। यह संघर्ष ऐसे समय हुआ था, जब निराशा के बीच असाधारण अदम्य उत्साह का परिचय दिया गया था और जब रक्षा के अवसर अधिक न दिखाई देने पर भी असीम साहस प्रकट किया गया था।

इस तथ्य से कौन इनकार कर सकता है कि यदि ब्रिटिश नौसेना विजयी न हुई होती तो यूरोप की राजधानियों में आज हिटलर का बोलबाला होता। इसमें संदेह नहीं कि हिटलर ने जापानी सेना से सम्बन्ध स्थापित कर लिया होता। इस बात से कौन मुकर सकता है कि वह अब तक नई दुनिया के द्वार पर तीक्ष्ण प्रहार कर रहा होता।

यदि ब्रिटेन में हिटलर ने पैर जमा लिए होते तो मित्रराष्ट्रों को महाद्वीप में कार्रवाई करने का आधार न मिल पाता। यदि ब्रिटेन मित्रराष्ट्रों के हाथ से निकल जाता तो अमरीकी और कनाडियन सेनाओं की शक्ति बढ़ने से पूर्व ही नाजी सेना अमरीका पर आक्रमण कर देते।

जर्मनी की आशा

फ्रांस के युद्ध से तटस्थ हो जाने से और इटली के उसमें प्रवेश करने के कारण जर्मनों ने ब्रिटिश जंगी बेड़े के भू-मध्य सागर से पलायन कर जाने की आशा लगा रखी थी। यदि ब्रिटिश जहाजों को भूमध्य सागर से निकाल दिया जाता तो उन्हें मध्य तथा सुदूर पूर्व से सम्पर्क स्थापित करने के लिए गुडहोप अन्तरीप का चक्कर लगाना पड़ता। इसका परिणाम यह होता कि ब्रिटिश जहाज अमरीका और ब्रिटेन के मध्यवर्ती मार्ग की रक्षा करने में असमर्थ हो जाते। उस अवस्था में जर्मनों के थोड़े से किन्तु शक्तिशाली जलपोत क्रूजर, जहाज, पनडुब्बियों और दूर-मार बममारों से सहयोग करके हमारे व्यापारिक बेड़े का सर्वनाश कर देते।

हिटलर का कहना था कि जर्मनों को [illegible] बात अवसर मिलने की आशा पर [illegible] देनी चाहिए। यदि हमारे व्यापारिक जहाज शत्रु की पनडुब्बियों, बम-मारों तथा सतह पर चलनेवाले जंगी जहाजों से बच भी जाते तो उन्हें ब्रिटेन के निकटवर्ती समुद्रों में ही नष्ट कर दिया जाता। ब्रिटेन के बंदरगाहों तथा नदियों में नये-नये तरीकों द्वारा सुरंगें डाल दी गई थीं। यदि ब्रिटिश जहाज इतने पर भी आगे बढ़ते तो उनके सर्वनाश के लिए आकाश से बम-वर्षा की जाने की योजना बनाई गई थी ताकि बंदरगाहों पर [illegible] उन्हें आगे के लिए बेकार किया जा सके। जर्मनी की इस दूरदर्शितापूर्ण योजना को हमारे नौसैनिक तथा व्यापारिक बेड़ों के वैज्ञानिक उपायों तथा दृढ़तापूर्ण संकल्प और साहस-द्वारा ही निष्फल किया जा सका।

जर्मन जहाज डूबे

पहले जर्मनी ने अपना जेबी युद्धपोत ग्राफस्पी खोया। इसके उपरान्त विस्मार्क उत्तरी अटलांटिक में डूबा। तब जर्मन एडमिरलों को ज्ञात हुआ कि व्यापारिक जहाजों को डुबाने के प्रयत्नों में उनकी आशा से कहीं अधिक ख़तरा है।

ब्रिटेन ने युद्ध में अकेले रह जाने पर ऐसी ही वीरता की घटनाओं से ही मित्रराष्ट्रों की विजय का शिलारोपण किया था। जर्मन जहाज अपने किनारों की ओर हटते ही गये—यहाँ तक कि अंत में समुद्रों से जर्मन जहाजों का बिलकुल लोप हो गया। जर्मनी ने हमारे व्यापारिक जहाजों पर आक्रमण करना त्याग दिया। उसकी पनडुब्बियाँ अधिकाधिक संख्या में डूबने लगीं।

इतिहास साक्षी है कि अमरीकी युद्ध सामग्री की प्राप्ति से युद्ध का पाँसा पलटा था, किन्तु साथ ही इतिहासकार यह लिखना भी नहीं भूल सकते कि यदि ब्रिटेन का समुद्री मार्गों पर नियंत्रण न रहता तो अमरीकी युद्ध-सामग्री अमरीकी बंदरगाहों पर ही पड़ी रहती। यदि जहाज तेल न ले जाते तो हमारे वायुयान, टैंक और वाहक गाड़ियाँ एक क्षण भी काम न कर पातीं।

ब्रिटेन की इस युद्ध में जो नौसैनिक हानि हुई है उससे इस ऐतिहासिक तथ्य की ही पुष्टि होती है कि जहाजों के रूप में मूल्य चुकाने से ही विजय प्राप्ति हो सकती है। लाखों वीर नाविकों के अतिरिक्त ब्रिटेन ६०० जंगी जहाजों को भी समुद्र की भेंट चढ़ा चुका है।

१९४४ के प्रारंभ तक ब्रिटेन केवल शत्रु की पनडुब्बियों पर ही प्रभुत्व न प्राप्त कर चुका था, केवल जर्मन व्यापारिक जहाजों को ही समुद्र से भगा न चुका था और जर्मनी का शेष संसार से सम्बन्ध ही न काट चुका था, बल्कि सेना उतारने के ५० विभिन्न प्रकार की नौकाएँ भी तैयार कर चुका था। इनमें से अधिकांश नौकाएँ ब्रिटेन के कारख़ानों में ही बनी थीं।

जब शेष संसार जर्मनी पर वार करने के लिए तैयारी कर रहा था तब ब्रिटेन ने शान्तिप्रिय राष्ट्रों के लाभार्थ समुद्री मार्गों को खुला रखा था। इतना ही नहीं वह स्वयं भी मित्रराष्ट्रों के अन्य साथियों के साथ जर्मनी पर और जापान पर भी आक्रमण करने के लिए तैयार हो रहा था।

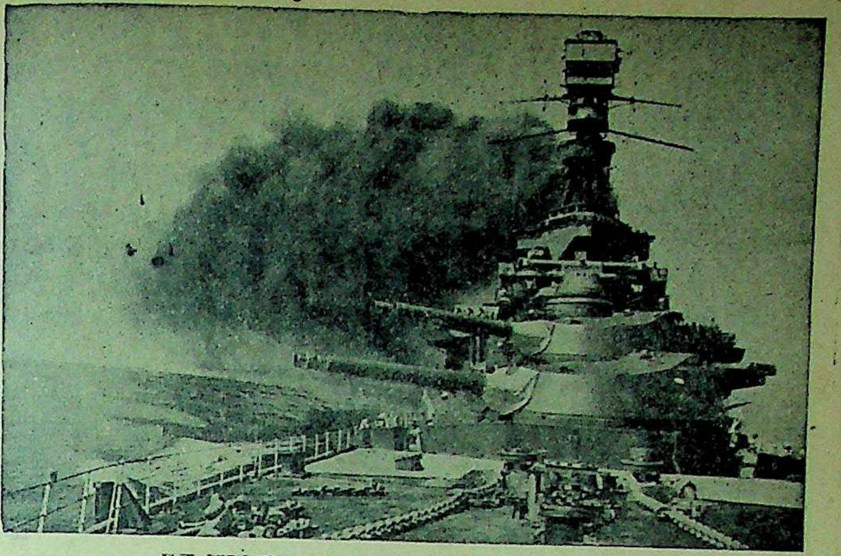

एक अंगरेजी लड़ाकू जहाज अपनी बड़ी तोपें दाग रहा है।

पनडुब्बी ने शत्रु के जहाज के मध्य में टारपीडो मारा।

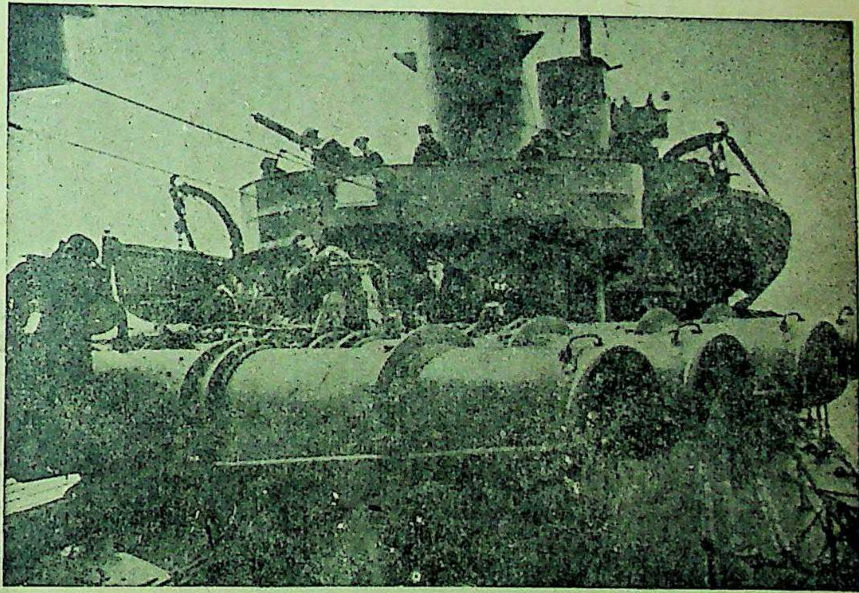

विध्वंसक के टारपीडो के नल।

जापानी सेना का सबसे बड़ा रणपोत।

[पेज ६ का शेष]

बढ़ती हुई लीबिया और फिर ट्रिपोली में पहुँच गई। हमारी सेनाएँ यहीं थीं कि अल्जीरिया में नई सेना उतारे जाने से शत्रु भौचक्का रह गया। अन्त में ट्यूनिस की लड़ाई के बाद शत्रु पूरी तरह पराजित कर दिया गया। यह स्मरण रखना चाहिए कि यहाँ जिस सेना को पराजित किया गया था वह विशुद्ध जर्मन सेना ही थी।

अब ब्रिटेन का जलमार्गों पर पूरा अधिकार था। उसकी सेना उतारनेवाली नौकाओं का बेड़ा भी लगातार बढ़ता जा रहा था।

तब इटली को प्रथम आक्रमण के लिए चुना गया। हमारी सेनाएँ पहले सिसली में उतरीं और फिर मुख्य देश में प्रवेश कर गईं। इसका परिणाम मुसोलिनी का पतन और धुरी राष्ट्रों के बीच से इटली के हट जाने के रूप में देखने में आया। रणनीति की इस सफल चाल के परिणामस्वरूप जर्मन सेना की जिम्मेदारियाँ बढ गईं और हिटलर को इटली में १२५ डिवीजन और तथा बाल्कन और यूनान में इटालियनों का स्थान लेने के लिए २० डिवीजन जर्मन सेना भेजनी पड़ी।

रणनीति का अंतिम आघात

अब रणनीति के अंतिम आघात—नारमंडी तथा बाद में दक्षिणी फ्रांस के विशाल आक्रमण पर आते हैं। युद्ध के इस क्षेत्र को चुनने में ब्रिटिश रणनीति की प्रधानता थी। जर्मन मोर्चों को भंग करके भीतर प्रवेश करने की कार्रवाई में भी नेतृत्व मांटगुमरी ही ने ग्रहण किया था। कहा जा सकता है कि अमरीकियों के विशाल युद्ध-प्रयत्नों को ब्रिटिश योजना पर लागू किया गया था।

इस प्रकार प्रकट है कि आक्रमण के क्षेत्र का चुनाव करने और युद्ध का संचालन करने में ब्रिटेन ने जो भाग लिया है उस पर वह अभिमान कर सकता है। क्योंकि मोर्चे के घमासान युद्ध का भार भी अँगरेज़ों ने ही उठाया और कहा जा सकता है कि इस संघर्ष के ही कारण आगे की सफल कार्रवाइयों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

बाद में ५ दिन के भीतर, सीन से एंटवर्प तक २५० मील की विजय-यात्रा करके अँगरेज़ों ने दिखा दिया कि वे भी अपने रूसी मित्रों की तरह तूफ़ानी प्रगति कर सकते हैं।

ब्रिटेन दावा कर सकता है कि उसने अपने अधिकांश अवसरों तथा हवाई साधनों से पूरा-पूरा लाभ उठाया है। फ्रांस के पतन के उपरान्त अकेला रह जाने पर भी ब्रिटेन भयभीत नहीं हुआ और अपने ऊपर होनेवाले आक्रमण की प्रतीक्षा में चुपचाप नहीं बैठा रहा, बल्कि अपने द्वारा चुने हुए क्षेत्र उत्तरी अफ़्रीका में कब्ज़ा करने के लिए कटिबद्ध हो गया। इसके बाद उसने शक्ति संचित करने की ओर ध्यान दिया—पहले समुद्र पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित किया, पनडुब्बी संकट पर विजय प्राप्त की, जर्मन युद्ध-सामग्री को उस उत्तम स्थान पर नष्ट करने के बमवर्षकों का भारी बेड़ा तैयार किया और एक ऐसी स्थल सेना के लिए साज-सामान तैयार किया, जिससे जर्मनों को पराजित करना था।

इस बीच में ब्रिटेन रूस को निरन्तर सहायता पहुँचा रहा था। १ अक्टूबर १९४१ और ३१ मार्च १९४४ के मध्य में ब्रिटेन ने रूस को ८,००,००,००० पौंड के कच्चे माल तथा अन्य सामान के अतिरिक्त ५,००० टैंक और ७,००० वायुयान दिये। साथ ही इस सामान को पहुँचाने के लिए उसने असाधारण साहस का भी परिचय दिया।

रूस के प्रति सम्मान

ब्रिटेन स्वीकार करता है कि ३ वर्ष तक रूस ने अकेले ही स्थलयुद्ध का भार वहन किया। इतना भयानक प्रयत्न करने के बाद स्टालिनग्राड में पाँसा पलट सकनेवाले राष्ट्र के आगे वह अपना मस्तक सम्मान से झुकाता है। वह इससे पहले उसके भार को कम करना चाहता था, किन्तु जिस समय बतावेगा कि ब्रिटेन का अनुमान गलत न था और तभी प्रकट होगा कि उसने शीघ्रातिशीघ्र ही अपनी सम्पूर्ण शक्ति से काम लिया था।

यदि ब्रिटेन समय से पहले आक्रमण कर देता तो वह घातक सिद्ध हो सकता था। परन्तु जब आक्रमण सम्भव समझा गया तो ब्रिटेन ने एड़ी-चोटी का पसीना एक करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

तुलना अरुचिकर हुआ करती है। इसलिए मेरे विचार में किसी राष्ट्र को यह दावा नहीं करना चाहिए कि उन्हों धुरी राष्ट्रों को ठिकाने लगाने में अधिक भाग लिया है; बल्कि दावा यही होना चाहिए कि छोटे-बड़े सब मि राष्ट्रों ने समान उद्देश्य की सिद्धि के अधिक से अधिक प्रयत्न किया है।

मुफ़्त
डायरी फाउन्टेनपेन १९४५
अपने वार्षिक उत्सव के उपलक्ष में हमने उपरोक्त पुरस्कार मुफ़्त बाँटने का निश्चय किया है। शीघ्र ही लिखें।
इम्पीरियल नॉवेल्टी स्टोर्स
के० सी० अमृतसर

आरोंदा १८६९ नीलगिरि तेल
— वापरो —
खाण्डालेकर बंधू, बम्बई ४.
स्थापना १९०६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥०) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

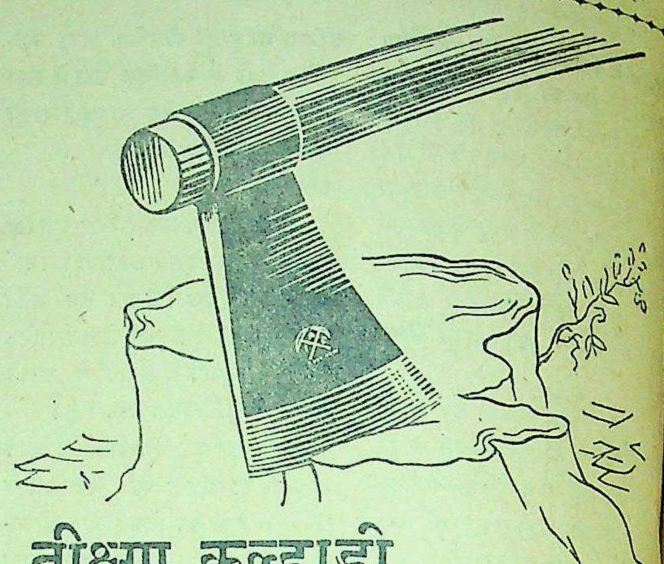

तीक्ष्ण कुल्हाड़ी . . .
राष्ट्रीय समृद्धि का उद्गम, हमारे जङ्गलों की लकड़ी, भारतवर्ष के बढ़ते हुए उद्यम-धंधे में विभिन्न रूप से व्यवहृत होती है। लोहे स्पात के लिए, उद्यम-धंधे द्वारा प्राप्त नाना हथियारों में चमकदार, तीक्ष्ण कुल्हाड़ी जैसे जैसे लकड़ी में चुभती है, राष्ट्र की प्रगति के लिए सहायक होती है।
A I C TRADE MARK
AGRICO TOOLS
एग्रिको औज़ार
बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आसाम के वितरक।
मेसर्स बाबूलालसिंह ऐंड कं०, ५८, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।
मेसर्स गोपीनाथ पाल ऐंड सन्स २१०, हरिसन रोड, कलकत्ता।
यू० पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध के डिस्ट्रिब्यूटर्स।
मेसर्स मोहम्मद दीन ऐंड सन्स, ग्रैन्ड ट्रङ्क रोड, अमृतसर, बन्दर रोड, कराची।
टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड, (एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमुरी द्वारा प्रकाशित।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

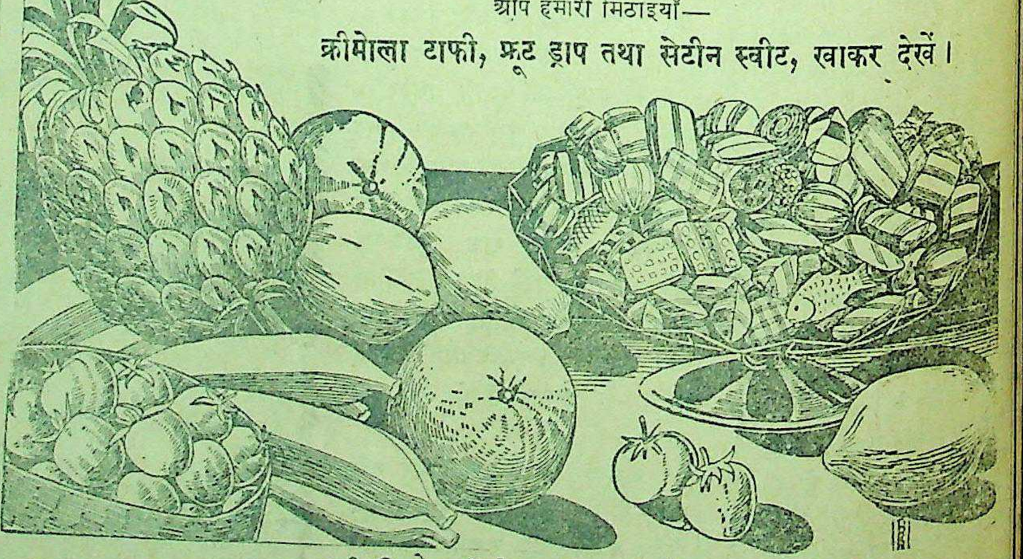

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

ना चाहिए कि उसी
ठकाने लगाने में
है; बल्कि दावा
कि छोटे-बड़े सब
द्देश्य की सिद्धि के
यत्न किया है।

द्यम-धंधे द्वारा
सें चमकदार,
जैसे लकड़ी
राष्ट्र की प्रगति
क होती है।

न, उड़ीसा और
वितरक।
सिंह ऐंड कं०,
ट्रीट, कलकत्ता।
पाल ऐंड सन्स
रोड, कलकत्ता।
, उत्तरी पश्चिमी
रिा और सिन्ध
ब्यूटर्स।
टीन ऐंड सन्स,
ड, अमृतसर,
, कराची।

है,
त।

खें।

निक दृष्टि से भारत की स्थिति महत्त्व की रही है और इसी मित्रराष्ट्रों के युद्ध-प्रयत्नों में इतना भाग लेता रहा है।

भारत बर्मा को स्वाधीन करने का ही नहीं है बल्कि वह उन अमरीकी ब्रिटिश सेनाओं को रसद पहुँचाने आधार भी रहा है, जो जापान पर से आक्रमण करना चाहती है। ही नहीं, उसके फारस की खाड़ी की ओर स्थित होने के कारण वह रूस को महत्त्वपूर्ण युद्ध-सामग्री में भी हाथ बँटा सका है।

भारत ने भारतीय महासागर में नियन्त्रण क़ायम रखने में, परिणामस्वरूप जापान जर्मनी से स्थापित करने में असमर्थ रहा, और आस्ट्रेलिया का हाथ बँटाया।

भारतीय सेना की शक्ति

युद्ध से पूर्व भारतीय सेना की शक्ति, थी। आज सेना में २०,००, ००० सैनिक हैं जो सबके सब स्वेच्छापूर्वक भरती हुए हैं। रंगरूट देश के प्रत्येक भाग आते हैं और भरती का औसत ५०,००० मासिक तक पहुँच चुका है। सम्राट् तथा वाइसराय के कमीशन अफ़सरों की भरती में भी इसी अनुपात से वृद्धि हुई है। युद्ध से पूर्व मिलिटरी एकेडेमी में २०० के शिक्षण की व्यवस्था थी, में ६०० अफ़सरों के शिक्षण व्यवस्था में परिणत कर दिया गया। आरम्भ होने के समय ४०० भारतीय थे, किन्तु अब सम्राट् के कमीशन भारतीय कमीशनवाले अफ़सरों की बढ़कर १६,००० हो गई है। सम्राट् कमीशनवाले प्रति छः अफ़सरों के एक भारतीय है।

युद्ध आरम्भ होने के समय से जल, और वायुसेना में भारतीय अफ़सरों क्रम से इस प्रकार हो गया भारतीय नौ-सेना ४५ प्रतिशत, स्थल-सेना ४७·३ प्रतिशत और भारतीय वायुसेना १०० प्रतिशत।

सेना का मशीनीकरण

युद्ध से पूर्व भारतीय सेना आन्तरिक तथा सीमान्त की रक्षा के उद्देश्य से संगठित की गई थी। योग्य सेना की शक्ति ही थी। इसलिए एक सेना के मशीनीकरण के करने के प्रयत्न किये गये

भारतीय सशस्त्र सेनाएँ

मित्रराष्ट्रों के लिए उन्होंने क्या काम किये ?

और दूसरी तरफ़ भारतीय सैनिकों को नये उपकरणों से काम लेने की शिक्षा देने का प्रबन्ध भी किया गया। देश भर में कितने ही सैन्य शिक्षण विद्यालय स्थापित किये गये। रंगरूटों को आधनिक युद्ध साधनों की ट्रेनिंग देने से पूर्व साधारण शिक्षा भी दी गई।

भारतीय सेना में मशीनीकरण १९३७ में ही आरम्भ कर दिया गया था। यह कार्य इतनी तेज़ी से हुआ था कि मार्च १९४१ में अन्तिम घुड़सवार रेज़ीमेंट का मशीनीकरण हो गया। इस यंत्रीकृत सेना को भारतीय बख्तरबन्द सैन्यदल कहा जाने लगा। बख्तरबन्द गाड़ी रेज़िमेंटों तथा टैंक रेज़िमेंटों की संख्या तथा शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य कितने ही ट्रेनिंग केन्द्र स्थापित किये गये।

यह कार्य इतनी तेजी से हुआ कि १९४३-४४ में भारतीय बख्तरबन्द तथा टैंक-दल आधुनिकतम युद्ध साधनों से सुसज्जित होकर बर्मा के युद्ध में भाग लेने लगे। यही वे सैन्यदल थे, जिन्होंने जापानियों को इम्फाल के मैदानों से भगाया था।

युद्ध के कारण भारतीय तोपखाने में भी अभूतपूर्ण उन्नति तथा विस्तार हुआ है। अब भारतीय तोपदलों में विभिन्न कक्षाओं के दस्ते काम करते हैं और कुछ अँगरेज़ अफ़सरों तथा शिक्षकों के अतिरिक्त सभी व्यक्ति भारतीय जवान हैं। वर्तमान युद्ध में हमारे ये भारतीय तोपची उत्तरी अफ़्रीका, बर्मा, सिसली, और इटली में शत्रु के छक्के छुटा चुके हैं।

विद्युत् तथा मशीनी इंजीनियर दल

भारतीय सेना में सबसे बाद में स्थापित विद्युत् तथा मशीनी इंजीनियर दल है, जिसकी स्थापना १ मई १९४३ को की गई थी। इसकी वर्तमान शक्ति युद्ध से पूर्व की अपेक्षा २,५०० प्रतिशत अधिक है। इसमें १,८०० अफ़सर तथा ८०,०० के लगभग सैनिक हैं। इसके तत्त्वावधान में लगभग २०,००० विभिन्न कक्षाओं के शिल्पकार काम करते हैं। इस दल का मुख्य कार्य, टैंक, गाड़ियाँ, वायरलेस सेट, छोटे हथियार, सर्चलाइट इत्यादि युद्ध-उपकरणों की मरम्मत करना तथा उन्हें काम करते रहने की अवस्था में रखना है।

भारतीय वायुयान चालक

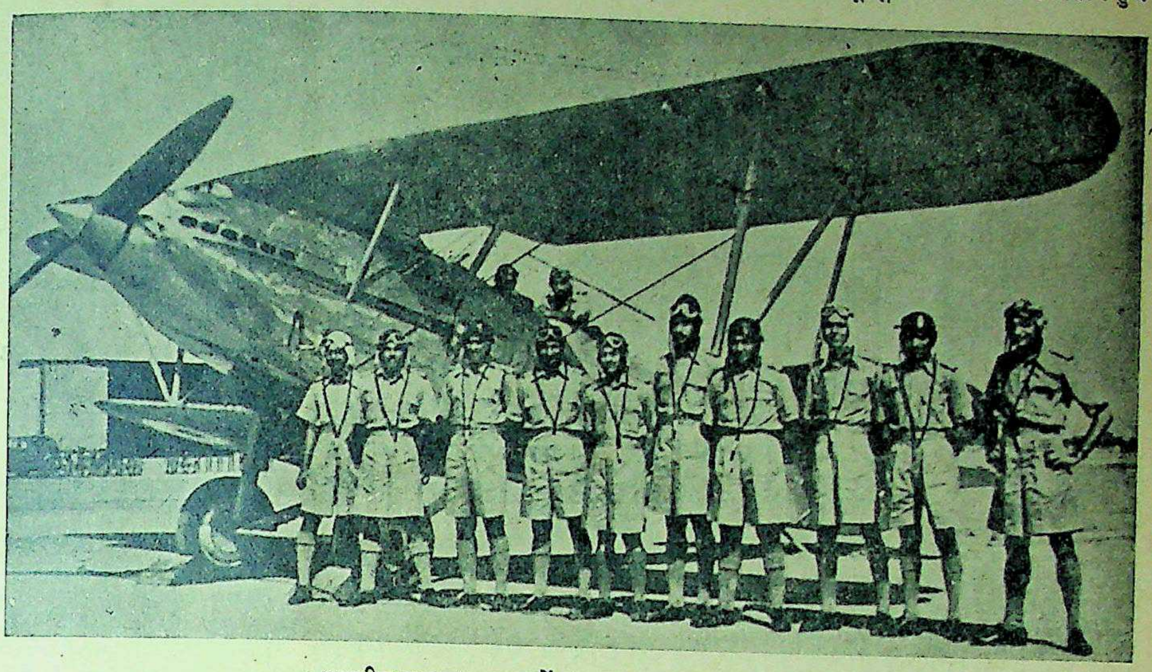

भारतीय वायुयान-चालकों का एक समूह।

तेल युद्ध के काम आता है

अपादान के तेल साफ़ करने के कारखाने की देख-भाल करने के लिए भारतीय सैनिकों का प्रवेश।

ये ही जलसेना-नायक हैं

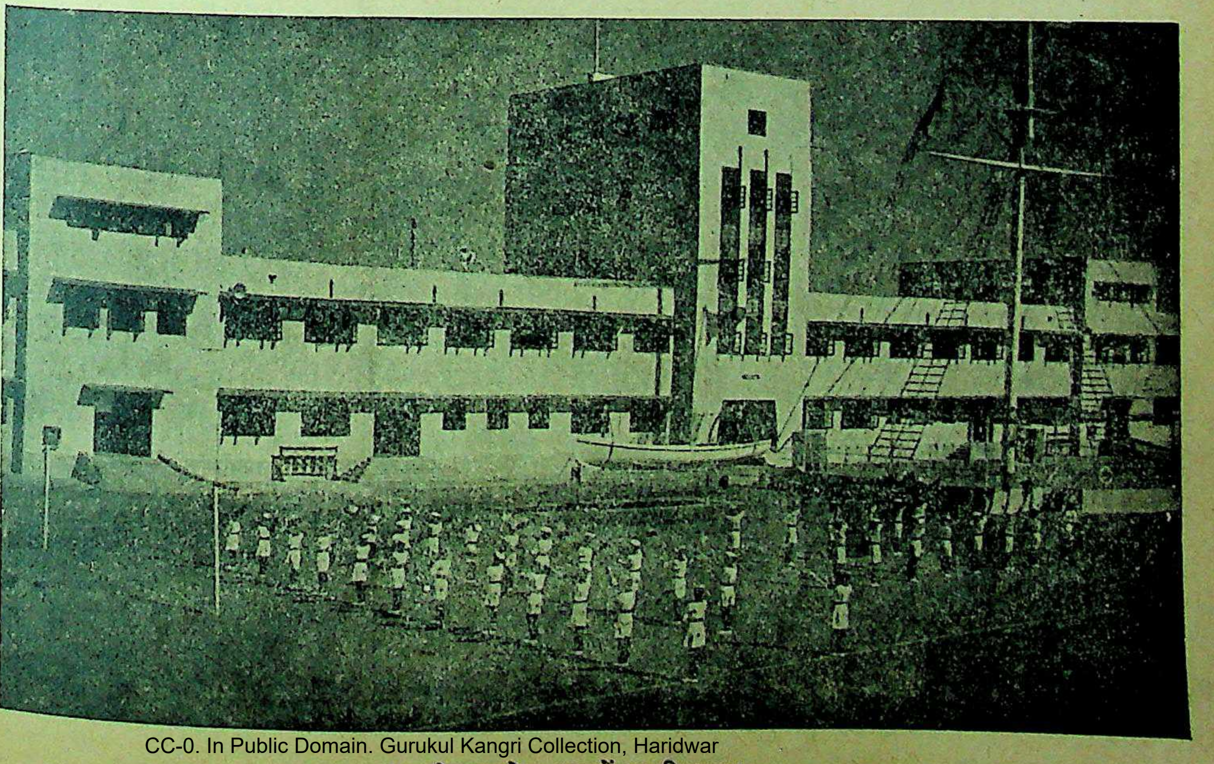

भारतीय जलसेना-नायकों का शिक्षण।

यह दल अफ़्रीका, इटली और दक्षिण-पूर्वी एशिया के युद्ध में भाग ले चुका है और ले रहा है। बर्मा युद्धक्षेत्र की कठिन परिस्थिति में इस दल ने आश्चर्यजनक कार्य-दक्षता का परिचय दिया है।

युद्ध छिड़ने पर भारतीय सिगनलर दल में भी विस्तार करने की आवश्यकता प्रतीत हुई। सिगनलर को आधुनिक वाइरलेस सेट, टेलीग्राफ़ तथा टेलीफ़ोन की पेचीदी प्रणालियों में दक्ष होना पड़ता है। अब सिगनलरों की संख्या ५०,००० के लगभग है।

भारतीय छतरी सेना

गुरखों ने छतरी सैनिकों की ट्रेनिंग प्राप्त करने में विशेष दक्षता दिखाई है। उनके बटालियन भी संगठित कर दिये गये हैं। हमारे इन भारतीय छतरी सैनिकों ने ही छः दिन तक इम्फाल के मैदान में जापानियों को घुसने से रोक रखा था।

भारत-बर्मा सीमा के युद्ध-क्षेत्र तक रसद पहुँचाने के उद्देश्य से पशु यातायात दस्ते संगठित गिये गये। भारतीय सेना विभाग ने सैनिक यातायात के लिए ६०,००० पशु खरीदे। पशुओं में वृद्धि करने के उद्देश्य से घोड़ों और खच्चरों को उत्पन्न करने की व्यवस्था की गई।

भारतीय सेना डाक्टरी दल

भारत में चालू विभिन्न डाक्टरी सार्वसों को मिलाकर १९४३ में भारतीय सेना डाक्टरी दल की स्थापना की गई और १९४३ के मध्य तक युद्धक्षेत्र में काम करनेवाले ३०० से अधिक डाक्टरी दस्ते संगठित किये गये। डाक्टरी दस्ते भारतीय सेना के साथ सर्वत्र ही गये हैं और उनमें योग्य कर्मचारी रखे गये हैं। डाक्टरों के साथ काम करने के लिए सैन्य नर्सिंग सर्विस स्थापित की गई है। १९४४ में आसाम-स्थित सैनिकों में मलेरिया से रोगी होनेवाले लोगों की संख्या आधी ही रह गई है।

भारत भर में इंडियन आर्मी आर्डिनेंस कोर के डिपो स्थापित हैं और उनके द्वारा सेना को प्रतिमहीने लगभग २,००,००० टन माल प्राप्त होता है। इनमें ३,००,००० प्रकार की वस्तुएँ होती हैं, जब कि युद्ध से पूर्व उनकी वस्तुओं के प्रकार केवल ४०,००० ही थे।

इंडियन जनरल सर्विस कोर में १३ विभिन्न भाषाएँ तथा सैकड़ों बोलियाँ बोलनेवाले लगभग ५५,००० लड़ाकू तथा ग़ैर लड़ाकू व्यक्ति हैं—जो सभी युद्धक्षेत्रों में २,००० से अधिक दस्तों की सेवा कर रहे हैं।

स्त्री-सहायक दल (भारत) में १०,००० स्त्रियाँ हैं, जिनमें से १,००० से अधिक अफ़सरों के पदों पर हैं। इस दल का उद्देश्य सैनिकों तथा विशेष कारीगरों को अधिक संकटपूर्ण कार्यों में भाग लेने के लिए मुक्त करना है। ये स्त्रियाँ स्विच बोर्ड आपरेटर, वायरलेस. आपरेटर. क्लर्क, कम्पाउंडर, इत्यादि के कार्य कर रही हैं। इस दल की एक शाखा शाही नौसेना के साथ कार्य कर रही है।

भारतीय सेना के लगभग ४,३०,००० व्यक्ति विदेश में कार्य कर रहे हैं। वे पूर्वी अफ़्रीका, सूडान, इरीट्रिया, अबीसीनिया, पश्चिमी मरुभूमि, ट्यूनीशिया, इटली, सीरिया, ईरान, इराक, मलाया, पूर्वी द्वीपसमूह, बर्मा और हांगकांग में लड़ चुके हैं। एक पशु यातायात दल ने फ़्रांस के युद्ध में भी भाग लिया था।

भारतीय सैनिक जहाँ भी लड़े हैं उन्होंने असाधारण वीरता का परिचय दिया है। अप्रैल १९४५ तक २१ विक्टोरिया क्रास, १ जार्ज क्रास, १४२ डिस्टिंग्विश सर्विस आर्डर, ३ इंडियन आर्डर आफ़ मेरिट भारतीय सेना के अफ़सरों तथा सैनिकों ने प्राप्त किये। २१ विक्टोरिया-क्रासों में ३ अँगरेज़ों ने और शेष भारतीयों ने प्राप्त किये। भारतीय सेना ने ५६२ मिलिटरी क्रास, ९४१ इंडियन डिस्टिंग्विश सर्विस पदक, २ डिस्टिंग्विश कंडक्ट पदक, १ जार्ज पदक, और ५१८ मिलिटरी पदक भी प्राप्त किये। सहस्रों व्यक्तियों की वीरता का सैनिक विवरण में उल्लेख है और सहस्रों व्यक्तियों को वीरता के प्रमाण-पत्र प्राप्त हैं। इस युद्ध में विक्टोरिया क्रास पानेवालों में भारत का स्थान दूसरा है। दिसम्बर १९४४ तक साम्राज्य में विक्टोरिया क्रास इस क्रम से प्राप्त हुए—ब्रिटेन ७५, भारत १८, आस्ट्रेलिया ११, न्यूज़ीलैंड ७, कनाडा ३, दक्षिण अफ़्रीका १, फ़िजी १।

चौथा भारतीय डिवीजन

इस युद्ध में चौथे भारतीय डिवीजन को अनूठी सफलता प्राप्त हुई है। वह १९४० में फील्ड मार्शल वैवेल की लघुसेना का एक अंग था। उसने अबीसीनिया के युद्ध में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। फिर वह मिस्र की सीमा की रक्षा के लिए रोमेल के विरुद्ध लड़ा, जनरल आकिनलेक के १९४१ वाले आक्रमण में आगे बढ़ा और जब अलअगीला से रोमेल ने प्रत्याक्रमण किया तो चौथा भारतीय डिवीजन बेंगाजी की रक्षा करता रहा। उसने पीछे हटते समय शत्रु की बहुसंख्यक सेना से कितने ही स्थलों पर लोहा लिया। अलअलामीन में उसने रूवीसात पहाड़ी पर हमला कि

रोमेल को मेरेथ पंक्ति तक

प्रमुख रूप से भाग लिया और

१९४२ को हल्फाया दर्रे में हो

बढ़ गया। इस समय ईरान और

जो नवीं और दसवीं सेनाएँ

भारतीय सैनिक उनके प्रमुख

आठवाँ भारतीय डिवीज़

आठवीं सेना के आक्रमण में अग्र

उसने जर्मनों के शीतकालीन मो

किया था। चौदहवीं सेना, जिसमें

संख्या भारतीय सैनिकों की है,

शत्रु से प्रत्येक सम्भव स्थान

रही है।

शाही भारतीय नौसेना

शाही भारतीय नौसेना युद्ध

अपेक्षा २० गुनी बड़ी है। युद्ध

समय उसमें १,२०० अफसर त

थे, जिनकी संख्या १९४४ के

बढ़कर ३०,००० तक पहुँच

१९४३-४४ में भारतीय

जहाज़ों ने अपने कार्यों के

१७,५०,००० मील तय कि

जहाज़ों का मुख्य कार्य समुद्रतट

लगाना तथा व्यापारिक जहाज़ों

करना। दो बड़े नौसैनिक अड्डे

और बम्बई के शाही नौसैनिक

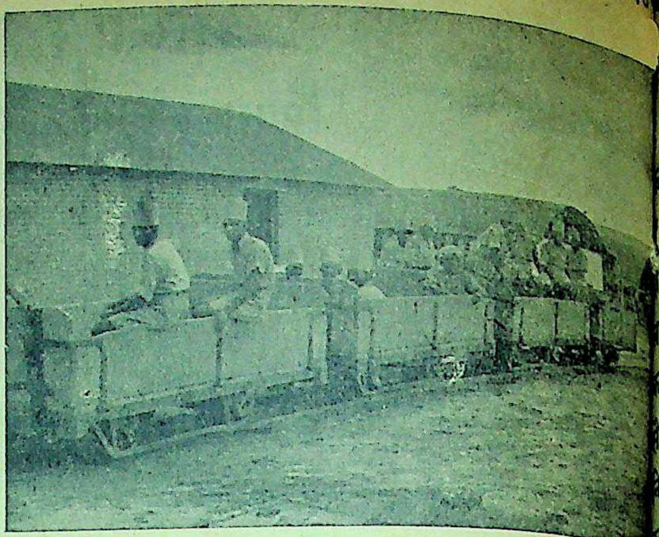

मदरासी सफ़र मैना एरिट्रिया में।

भारत का बना हुआ है

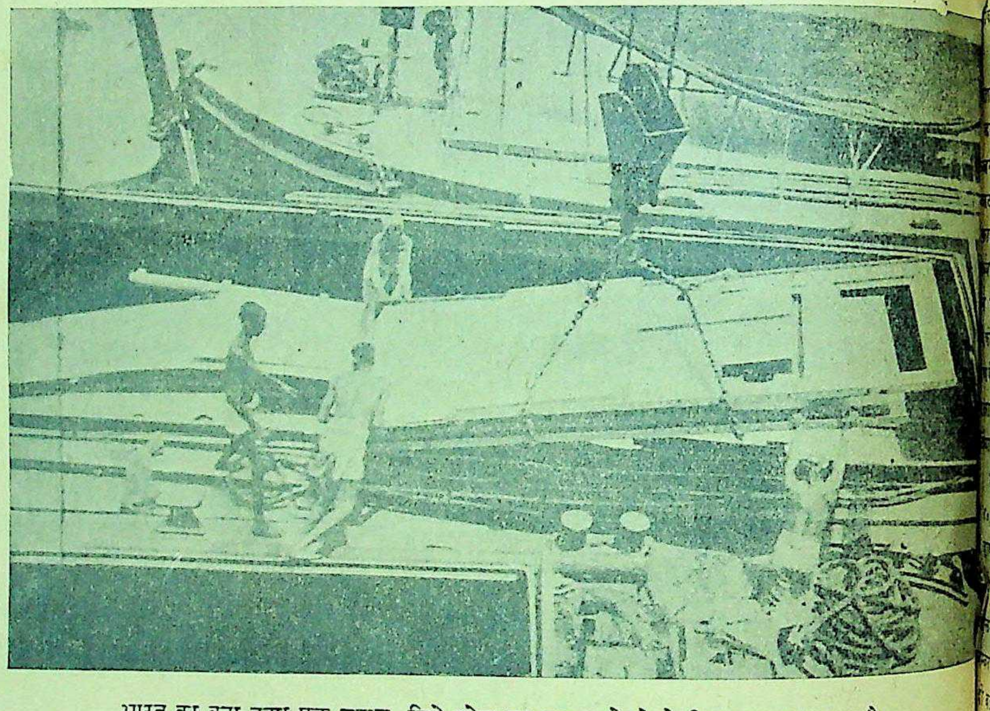

भारत का बना हुआ एक जहाज़, जिसे खोल कर अन्यत्र भेजने के लिए, लादा जा रहा है

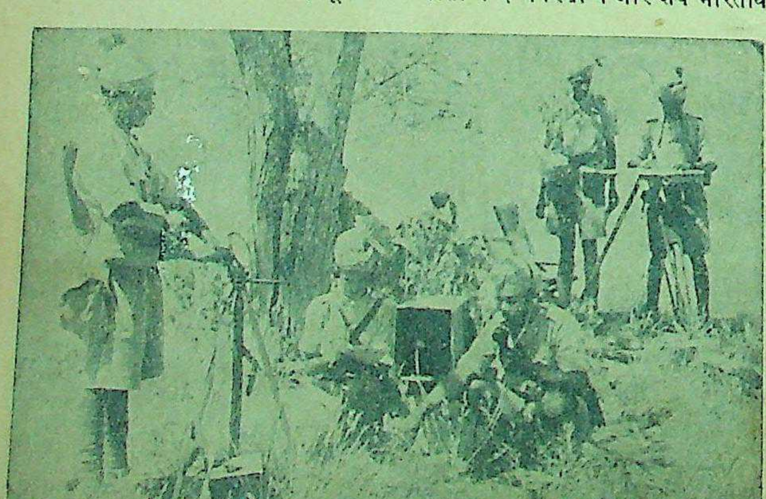

भारतीय सिगनलर दल मोर्चे पर एक टेलिफोन से बातें कर रहा है।

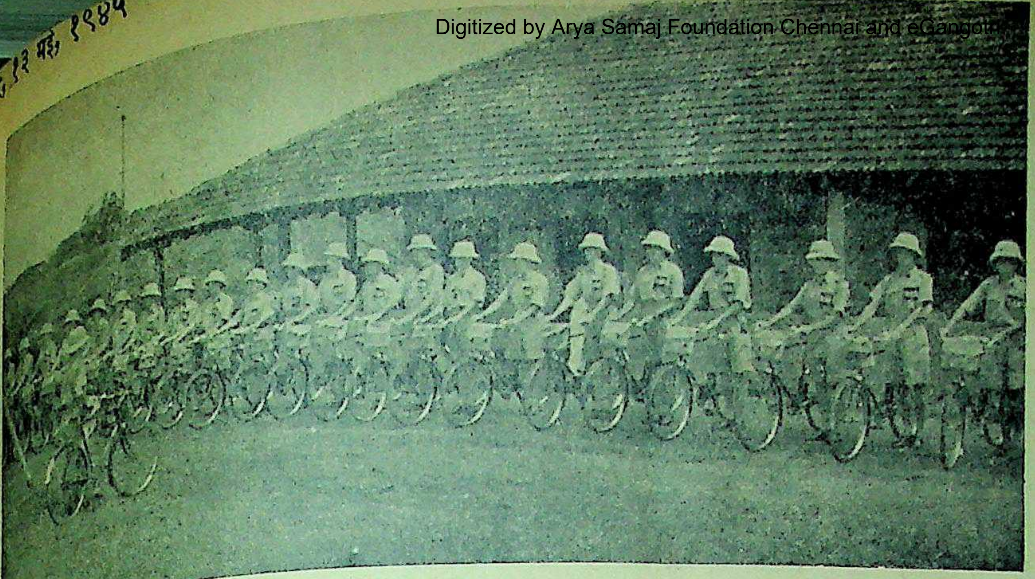

भारत में साईकिल-सवार-सेना का शिक्षण।

को प्रोत्साहन देने के लिए एक योजना के अनुसार कार्य हो रहा है।

भारतीय वायुसेना के वायुयानों ने तटों तथा व्यापारिक जहाज़ों की रक्षा में हाथ बँटाया है। भारतीय जंगी वायुयानों ने बर्मा में स्थल सेनाओं को प्रगति करने में भारी सहायता प्रदान की है। भारतीय वायुसेना आधुनिक साज-सामान से सुसज्जित है और उसमें प्रायः सभी भारतीय हैं।

देशी राज्यों की सहायता

देशी नरेशों ने लगभग ३,७५,००० रंगरूट प्रदान किये हैं। पटियाला जैसी बड़ी रियासतों ने ३३,००० तक रंगरूट दिये हैं। रियासतों की ६३ टुकड़ियाँ अपनी सीमाओं के बाहर कार्य कर रही हैं। इसके अतिरिक्त भारतीय सेनाओं की ३८ ऐसी टुकड़ियाँ भी कार्य कर रही हैं, जिनकी भरती रियासतों से हुई है। अलवर, बीकानेर, फ़रीदकोट, ग्वालियर, हैदराबाद, इन्दौर, जयपुर, जिंद, जोधपुर, कपूर्थला, काश्मीर, मालेरकोटला, नाभा, पटियाला, रीवाँ और त्रिपुरा की सेनाएँ ब्रिटिश भारत में विशिष्ट कार्य कर रही हैं अथवा भारतीय सेना के साथ ट्रेनिंग प्राप्त कर रही हैं। काश्मीर पर्वती बैटरी, पहली पटियाला इन्फैंट्री, जिंद इन्फैंट्री, जोधपुर सरदार इन्फैंट्री, जयपुर के दो बटालियन, त्रिपुरा राइफल्स और टेहरी गढ़वाल तथा मालेरकोटला के सफरमैना विभिन्न युद्धक्षेत्रों में कार्य कर चुके हैं। गुरखा दस्तों में भरती होनेवाले व्यक्तियों के अतिरिक्त नेपाल ने अपने ८,००० सैनिकों को मित्रराष्ट्रों की सहायता के लिए प्रदान किया है। कितनी ही रियासतों ने कारीगर तथा सड़क और हवाई स्टेशन बनाने के लिए मज़दूर दिये हैं। प्रत्येक रियासत ने अपने व्यावसायिक विभाग की सेवाएँ युद्ध-विभाग के लिए प्रदान कर दी हैं। हैदराबाद में एक शस्त्रास्त्र का कारखाना खुल गया है। मैसूर प्रतिवर्ष २४,००० टन इस्पात तैयार करता है। उसने एक वायुयान का कारखाना भी खोल रखा है। हैदराबाद, बड़ौदा, काश्मीर, जोधपुर, जिंद, और नवानगर ने सहस्रों कम्बल, लाखों गज ऊनी कपड़ा, मोजे-बनियान इत्यादि की सहायता दी है। ग्वालियर ने अपनी एक मिल सरकार को विशेष कपड़ा तैयार करने के लिए दे दी है कितने ही रासायनिक पदार्थ रियासतों से आते हैं। रबड़, ट्रावनकोर, बड़ौदा और मैसूर से प्राप्त होता है।

१९४१-४२ में भारत में युद्धकार्य के लिए कुल ३,९६,००० टन इमारती लकड़ी उपलब्ध हुई थी, जिसमें से २,१५,००० टन रियासतों ने प्रदान की थी।

देशी राज्यों ने युद्धकार्य में भारत-सरकार के साथ पूरी तरह से सहयोग किया है। व्यवसाय, वाणिज्य अर्थ-व्यवस्था तथा जन-शक्ति के सम्बन्ध में रियासतों का सहयोग विशेष महत्त्वपूर्ण रहा है।

देशी राज्यों के नरेशों तथा जनता ने युद्ध-ऋण में कुल ३७,५०,००,००० रुपया लगाये हैं। रियासतों से कुल ६,५०,००,००० रु० की सहायता भी प्राप्त हुई है। वाइसराय के युद्ध-कोष में आधी रक़म रियासतों से ही प्राप्त हुई है। हैदराबाद रियासत ने एक जहाज़ तथा शाही वायुसेना के तीन स्क्वाड्रनों के लिए धन दिया है। बड़ौदा तथा मैसूर ने भी दो स्क्वाड्रनों के लिए धन दिया है।

भारतीय युद्ध-बन्दी

इस समय जर्मनों के अधिकार में ४९,९४ भारतीय युद्धबन्दी हैं। जापानियों के पास ४२,३७४ भारतीय युद्धबन्दी ऐसे हैं, जिनकी पुष्टि हो चुकी है और विश्वास किया जाता है कि उनके पास २२,०३६ अन्य ऐसे युद्धबन्दी भी हैं जिनकी पुष्टि नहीं हुई है।

इस समय भारत में शत्रु के २९,४९९ युद्धबन्दी हैं, जिनमें से केवल ६ जर्मन हैं। भारत में बर्मा से ४,००,००० और मलाया से ५०,०० शरणार्थी आये हैं। दिसम्बर १९४१ में बर्मा में १०,००,००० भारतीय थे और ८,००,००० मलाया में थे।

सैनिकों के लिये सुख-सुविधा

सैनिकों की सुख-सुविधा की देख-रेख के लिए एक सुख-सुविधा शाखा खोल दी गई है। भारतीय सैनिकों के मनोरंजन की व्यवस्था करने के लिए अप्रैल १९४४ में फ़ौजी दिलखुश सभा की स्थापना की गई थी। भारतीय सैनिकों के मनोविनोद के लिए खेलकूद. पुस्तकों, विश्रामगृहों, वायरलेस सेटों, सिनेमाओं और तैरने के हौज़ों का प्रबन्ध किया है। इस सब पर २४ लाख रुपये खर्च हो चुके हैं।

सैनिकों के परिवारों की देखरेख के लिए भारतीय सेना द्वारा फ़ौजी सेवादारनी योजना जारी की गई है। फ़ौजी सेवादारनियाँ विदेश गये सैनिकों की माताओं तथा पत्नियों से मिलकर उनकी शिकायतें सुनती हैं।

सैनिकों के लिये कार्य-क्रम

भारतीय सेना के उन सैनिकों के लाभार्थ, जो पुस्तकें अथवा समाचारपत्र पढ़ने में असमर्थ हैं, रेडियो से विशेष कार्यक्रम ब्राडकास्ट किये जाते हैं। अखिल भारतीय रेडियो के दिल्ली स्टेशन से भारत, बर्मा, लंका तथा अन्य देशों में नियुक्त भारतीय सैनिकों के लिए कार्यक्रम ब्राडकास्ट किये जाते हैं।

भारत में यदि कोई सैनिक किसी अस्पताल में बीमार रहता है तो उसके दो सम्बन्धियों को उससे आकर मिल जाने के लिए वापसी टिकट दिये जाते हैं।

मार्च १९४४ में विघटित सैनिकों को फिर से काम दिलाने के लिए भी एक विभाग खोल दिया गया है।

भारतीय स्त्रियों ने युद्ध-प्रयत्नों में भरपूर भाग लिया है। कितनी ही डाक्टरनियों ने अपनी सेवाएँ सेना को अर्पित कर दी हैं। सैकड़ों भारतीय स्त्रियाँ नर्सों के रूप में अस्पतालों में काम कर रही हैं। युद्ध-कार्य करनेवाले मजदूरों में भी १३ प्रतिशत संख्या स्त्रियों की है।

भारतीय रेडक्रास

जब कि भारतीय रेडक्रास ने १९३ में ५ लाख रुपये खर्च किये थे उसने १९४३ में १५० लाख रुपये खर्च किये। इस रक़म में से केवल १० प्रतिशत रक़म प्रबन्ध पर खर्च हुई है और शेष रक़म अस्पतालों में बीमार तथा घायलों की सेवा-शुश्रूषा पर खर्च होती है। रेडक्रास की तरफ़ से शत्रु के हाथ में पड़े हमारे युद्धबन्दियों की सहायता भी की जाती है। वे अस्पतालों को कम्बल, चीरफाड़ के औजार, बर्तन, खाद्य पदार्थ, खेल-कूद की वस्तुएँ, वाद्ययंत्र, वायरलेस सेट, लिखने-पढ़ने का सामान, पुस्तकें इत्यादि भेजते हैं।

१९४२ में भारतीय सुख-सुविधा-कोष की तरफ़ से योरप-स्थित भारतीय युद्धबन्दियों को ५,४०,००० से अधिक पार्सल भेजे गये थे।

नये संस्करण

अभी अभी प्रकाशित हुए हैं

अब हम आपको ये पुस्तकें भेज सकते हैं :—

भैरवी—तीसरा संस्करण—इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनायें, असली आर्ट पेपर में चित्र, बहुत अच्छी बँधाई और रैपर। मू० २।॥=)

वासवदत्ता—तीसरा संस्करण—बहुत अच्छे काग़ज़ में स्वच्छ प्रकाशन, चित्र आर्ट पेपर में। मू० २)

कुणाल—तीसरा संस्करण—असाधारण संस्करण—मोनो टाइप में। पुस्तकालयों के लिए। मू० १)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

(पृष्ठ ४ का शेष)

चला गया जहाँ वह छिपा था। बाहर गोलियाँ छूटने की आवाज़ सुनाई दी। थोड़ी देर के बाद वह उन लुटेरों को कन्धे पर ले आया।

वह अफसरों से हमेशा कहा करता था, आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। जब तक आखिरी गोली नहीं लगती है तब तक मत रुको, सिपाहियों से वह कहा करता था, अपना कर्त्तव्य करो। युद्धभूमि में मत डरो।

वह अनुशासन का प्रेमी था। वह सेना से सफाई की अपेक्षा करता था। वह चाहता था कि अधिकारीगण अपना पद-सूचक चिह्न लगाये रहें।

वह सिपाहियों के सामने प्रोत्साहित करनेवाले व्याख्यान देता था। जिससे उनके दिल में हिम्मत और मरने तक लड़ने की शक्ति आती थी।

वह अपना भाव बड़ी स्पष्टता से व्यक्त करता था। एक बार उसने कहा कि जब हमारी फ़ौजें उतरेंगी तब हम जर्मन और इटालियन सेना का नाश कर देंगे। जर्मनों को भगा देने के बाद उसने कहा, देखो तुमने शत्रुओं की प्रतिष्ठा नष्ट कर डाली है। तुम्हारा यश अमर रहेगा।

वह १८८५ में जन्मा। १९०९ में वह मिलिटरी एकेडेमी से ग्रेजुएट हुआ।

वह अच्छा पोलो-खिलाड़ी तथा पहलवान माना जाता था।

१९१७ में वह फ्रांस को गया। उसने वहाँ अमरीका आर्मी टैंक स्कूल स्थापित किया।

जर्मनलाइनों को तोड़ते समय उसने असंघटित पैदल सेना को फिर से एकत्र किया और तब तक उसका नेतृत्व करता रहा जब तक घायल नहीं हुआ। अन्त में वह कोलोनल बनाया गया।

सन्धि के बाद उसने आर्मी पोस्ट पर काम किया। उसने टैंक-युद्धकला का अध्ययन किया। जब जर्मनों ने फ्रांस पर आक्रमण किया उस समय वह टैंक ब्रिगेडियर कमाण्डर बनाया गया क्योंकि वह जर्मन युद्धकला को भली भाँति जानता था।

जब उसे मालूम हुआ कि अफ़्रीका के रेगिस्तान में उसे लड़ना पड़ेगा तब उसने केलीफ़ोर्निया में एक बड़ा ट्रेनिंग सेंटर स्थापन किया। वह सुबह पाँच बजे उठता था, नमक की गोलियाँ खाता था तथा अफ़सरों और जनता में मित्रता स्थापित करता था।

अभी हाल में उसने तीसरी सेना का नेतृत्व किया जिसने राइन नदी को पार कर जर्मनी के भीतर प्रवेश किया। १९४४ में जब उसकी तीसरी सेना नार्मण्डी के बाहर फूट पड़ी तब वह जगत्-प्रसिद्ध हो गया।

तीसरी सेना जर्मनों के खिलाफ़ लड़ने में बराबर प्रधान रही है।

सेनापति विलियम एच० सिंपसन

सिम्पसन गत युद्ध में एक बहादुर नेता था, आज अमरीका की नवीं सेना का नेतृत्व कर रहा है। वह बड़ा निष्ठुर पर नम्र, तथा रणनीति-कुशल है।

१९४३ में उसने सान लोस पर चौथी सेना का नेतृत्व स्वीकार किया। १९४३ में वह बारहवीं सेना का सेनापति हुआ था। १९४४ में उसने कहा कि मेरी सेना जिसका काम शत्रु का नाश करना है युद्ध के लिए तैयार है।

गत युद्ध में वह प्रसिद्ध तैंतीसवीं सेना का प्रथम तो असिस्टेंट था पर बाद में प्रधान हुआ। उसने सभी बड़े-बड़े आक्रमणों में भाग लिया। उसे युद्ध की पूर्ण तैयारियों की ज़रूरतों का यथार्थ ज्ञान था।

उसे जो पदक तथा चाँदी के पदक मिले उनसे उसके कार्यों का महत्त्व प्रमाणित हो जाता है।

१८८८ में नेदरफ़ोर्ड में उसका जन्म हुआ। अमरीका की मिलिटरी एकेडेमी से ग्रेजुएट होने के बाद उसका सैनिक जीवन आरम्भ हुआ। फिलीपाइन्स में काम करने के बाद वह कुछ दूसरे कामों का संचालन करने के लिए अमरीका को लौटा।

फ्रेंच और ब्रिटिश सेनाओं का निरीक्षण करने के लिए सिम्पसन बेल के साथ फ़्रांस गया। वहाँ उसे अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ। बाद में वह असिस्टेंट चीफ़ होकर फिर फ़्रांस गया था। गत युद्ध के बाद उसने बहुत जगह अमरीका में काम किया। वार डिपार्टमेंट जनरल स्टाफ में भी उसने काम किया।

सैनिक विद्या का ज्ञाता होने के नाते आर्मी वार कालिज में बुलाया गया जहाँ उसने १९४० अगस्त तक काम किया। बाद में वह प्रत्यक्ष रणभूमि में गया।

सेनापति लिओनार्ड, टी० जेरो

यह जर्मनी में अमरीका की पन्द्रहवीं सेना का नेता था। इसके पहले वह अमरीका के युद्ध-योजना-विभाग में प्रधान के पद पर था। वह संसार के हर एक हिस्से के लिए लड़ाई की योजना बनाता जहाँ अमरीका की सेनाएँ युद्ध के लिए बुलाई जा सकती थीं।

जेरो सत्तावन साल का है। उसका जन्म पेटरर्सबर्ग में हुआ। वर्जीनिया के मिलिटरी इन्स्टीटयूट में ही उसने पदवी परीक्षा दी। इनफैन्ट्री कमाण्ड एण्ड जनरल स्टाफ स्कूल से तथा आर्मी वार कालिज से भी वह ग्रजुएट हुआ।

इसने अमरीका में चाइना तथा फिलीपाइन्स में काम किया है। पेरिस में उसने जो काम किया था उसके लिए उसे पदक दिया गया।

उसके परिचित उसे "जी जेरो" कह कर पुकारते हैं उसे फ़ील्ड आफ़िसर कहा जाता है जो सेना की शिक्षा की पूर्णता पर ज़ोर देता है। ब्रिगेडियर ली जेरो उसका भाई है।

सेनापति कोर्टने, एच्० हाडजेस

लेफ्टिनेण्ट जनरल कोर्टनी अमरीका की पहली सेना का प्रधान है। यह पद उसे १९४३ की फरवरी से दिया गया है।

१८८७ में जार्जिया के रियासत में उसका जन्म हुआ। वह अमरीका की मिलिटरी का ग्रेजुएट नहीं है फिर वहाँ पढ़ाया है। दो साल सार्जेंट था।

अपनी सेना के साथ वह फ़्रांस को गया। यहाँ उसे म्यू के आक्रमणों से नेतृत्व और लिए पदक और चाँदी के आर्मी वार कालिज तथा फील्ड स्कूल से वह ग्रेजुएट हुआ। युद वह सेना में ही रहा।

१९३८ में वह लेफ्टिनेंट हुआ। जार्जिया के इनफैन्ट्री असिस्टेंट कमाण्टर हुआ। बड़े अवकाश ग्रहण के बाद वह इस अधिकारी नियुक्त हुआ। उन उन्नत पद पाय।

अपने उत्कृष्ट निशानेबाज़ उसे अनेक पदक मिले हैं।

दर्ज़ी छाप
सिलाई का धागा
रुपयों का सर्वोत्तम मोल।
भारतवर्ष में
एकमे थ्रेड कं०, लि०
द्वारा निर्मित
बैंक आफ बड़ोदा बिल्डिङ्ग,
एपोला स्ट्रीट, बम्बई।

THE ACME THREAD CO. LTD.
DURZI CHAAP
ARTICLE
40-1000

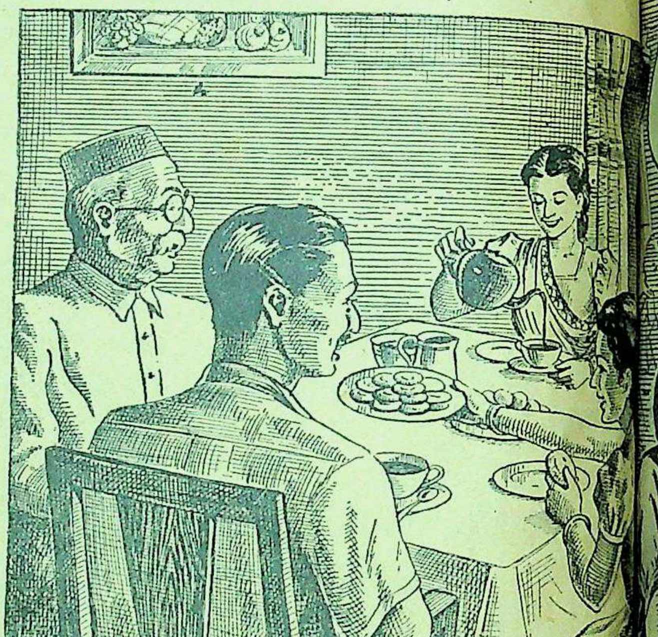

चाय का समय—पारसियों के यहाँ

पारसियों की पाश्चात्य अभ्यासों के अनुकरणों में पराह्न की चाय अधिक सराहनीय है। बहुधा वे भोजन विलम्ब से करते हैं, क्योंकि काम गये हुए गृह-स्वामी की प्रतीक्षा रहती है।

वे चाय में दूध, चीनी योरपीय तरीके की तरह, पीछे से खाने के मिलाते हैं। चाय के साथ नाश्ते में समोसे लेकर मीठी केक भी रहती पारसी महिलाएँ अपनी गृह व्यवस्था पर गौरव रखती हैं और पूर्वजों संचित अत्युत्तम चीनी मिट्टी के पात्रों में कभी कभी खूब शौक से चाय करती हैं।

सर्वत्र भारतवर्ष में पारसी पाये जाते हैं और ताजी ब्रूक बांड चाय उन्हें सदा मिल सकती है।

ब्रूक बॉंड
'दो पत्ती और एक कली"

में जार्जिया के
उसका जन्म हुआ
ा की मिलिटरी
नहीं है फिर
है। दो साल

सेना के साथ वह
ा। यहां उसे
ों से नेतृत्व और
और चांदी के
कालिज तथा फील्ड
ग्रेजुएट हुआ। युद्ध
हा रहा।
में वह लेफ्टिनेंट
या के इनफैन्ट्री
ाण्टर हुआ। वह
ा के बाद वह
ायुक्त हुआ।
य।

त्कृष्ट निशानेबाज़
दक मिले हैं।

के यहाँ

राह की चाय
है, क्योंकि
ीके मे खाने के
ी तक भी रहती
है और पूर्वजों
शौक से चाय
ी टूक ब्रांड चाय

ॉंड

जिन्दगी भर पेंशन लोजिए

एन्यूटी सर्टेन बाँड

"स्वदेशी" की अपूर्व योजना

योजना में युवा, वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी सम्मिलित हो सकते हैं।
आप भी इस योजना से लाभ उठाइए।
ब्याज ४½ प्रतिशत तक मिल जाता है।

स्वदेशी बीमा कम्पनो लि०, आगरा।

सिलसिले को यह दिखाने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है असावधानी की बातचीत, वह चाहे निर्दोष ही क्यों न हो, शत्रु को लाभ पहुंचा सकती है।

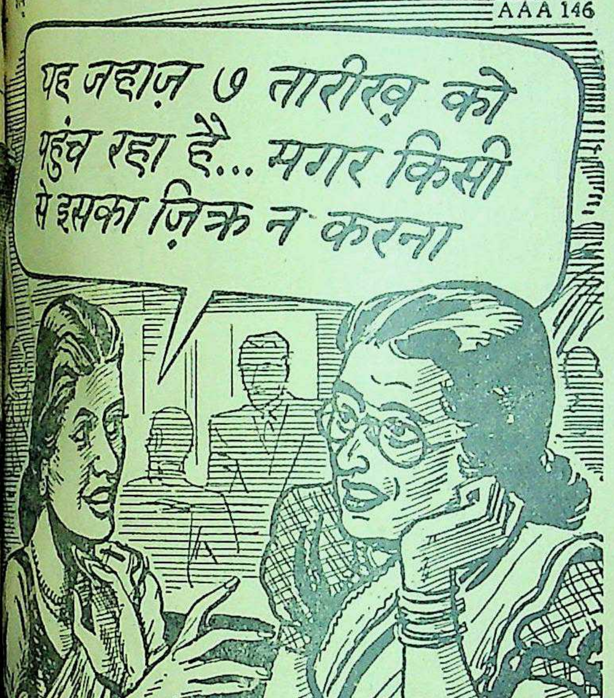
AAA 146
यह जहाज़ ७ तारीख़ को पहुंच रहा है... मगर किसी से इसका ज़िक्र न करना

पहले ही भेद खोल दिया। इनके इस सीधे-सादे वाक्य में मतलब की सारी बात मौजूद है। इन महिला से शत्रु को पता लग ही गया; अब दूसरे ज़रिये से यह मालूम करके कि बन्दरगाह पर जहाज़ पहुंच रहा है, वह इसके नाश की तैयारी सकता है। और अगर उसे इसमें सफलता मिल गई, तो में कही गई उस ज़रा सी बात के कारण सैकड़ों जानें और की आवश्यकता का हज़ारों मन सामान नष्ट हो जायगा। पर उन को इसका पता नहीं कि उन्होंने कोई भूल की है।

कहीं आपसे चूक न हो जाय। शत्रु के जासूस बड़े धूर्त भी के पक्के भी। छोटी छोटी बातों में, कानाफूसी में, को सुरक्षित समझ कर पत्र-व्यवहार में, टेलीफोनों की में जहां बहुत से तार मिले रहते हैं, लोग ऐसी गुप्त बातों का हैं, जिससे जनता के उपयोग के लिए आने वाली सामग्री बल्कि हमारे सैनिकों, नाविकों तथा विमान-चालकों की मुसीबत में पड़ जाती हैं। जंगी के बारे में कोई ज़िक्र न करके ही हम में अपना बचाव कर सकते हैं। इस से हम शत्रु को नीचा दिखा सकते हैं।

तचीत में सावधानी उचित है

के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

तुलसी-रत्नावली

संपादक, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सब को बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

क्लर्क चाहिए

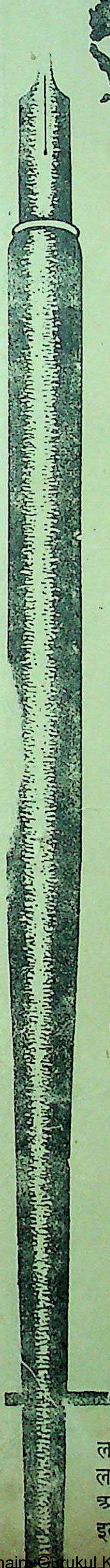

★ शाही हिन्दुस्तानी समुद्री बेड़े में 'राइटर्स' की जगहें और हिन्दुस्तानी फ़ौज (जिसमें इंडियन आर्मी कोर आफ क्लर्क्स शामिल है) तथा शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में क्लर्कों की जगहें ख़ाली हैं।

अच्छी ट्रेनिंग

इन फ़ौजी नौकरियों में से किसी एक में भरती होकर आपको जो अनुभव और ट्रेनिंग मिलेगी वह लड़ाई के बाद हिन्दुस्तान के उद्योग-धन्धों या व्यापारी हलक़ों में अच्छी नौकरी पाने में आपको बहुत सहायता पहुंचायेगी।

अच्छी तनख़्वाह **मुफ़्त भोजन**
पूरी तनख़्वाह पर छुट्टी
मुफ़्त निवास-स्थान **मुफ़्त इलाज**
मुफ़्त पोशाक

आवश्यक योग्यता के बारे में पूरा विवरण निम्नलिखित भरती-दफ़्तरों में से निकटवर्ती दफ्तर से मालूम कीजिए।

लखनऊ—(हे० क्वा०) इस्टर्न एरिया, हजरतगंज।
लखनऊ—३६, विश्वेश्वरनाथ रोड।
आगरा—हन्टले होस्टल, ड्रमन्ड रोड।
इलाहाबाद—१८, कैनिङ्ग रोड।

AAA134

Saridon
Sandoz

सारिडन से
१० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये

तन्दुरुस्त बनो!

क्या आप लखनऊ रेडियो स्टेशन द्वारा प्रतिनित्य ब्राडकास्ट की गई "तन्दुरुस्ती की कसरतें" करते रहते हैं?

सुबह ७-५५ बजे से ज़रा पहले बाक़ायदा रेडियो लगा कर व्यायाम के लिये तैयार हो जाइए।

ये कसरतें सब अवस्थाओं के पुरुषों, स्त्रीयों, और बच्चों के लिये लाभदायक हैं।

व्यायाम के बाद लाईफबॉय साबून से, जो कि अच्छी सेहत का साबून है, नहा लीजिये।

युक्त प्रान्तीय स्वास्थ्य आन्दोलन

L.U.P. 1-169 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIM

जो स्त्रियां ख़ाली है

आजकल उनकी आवश्यकता डबल्यू० ए० सी० (आई) में है—

अर्थात् गृहस्थी अथवा सामाजिक सेवा कार्य में संलग्न नही हैं, उनकी आवश्यकता वमेन्स आगज़ीलरी कोर (इंडिया) में आजकल है। केवल उन महिलाओं को जिनकी उम्र १७ और ५० वर्ष के बीच हो तथा जो भलीभाँति अंगरेजी बोल और लिख सकती हों, आवेदन करना चाहिए।

निवास-स्थान की सुविधा

डबल्यू० ए० सी० (आई) की सदस्यायें सुखपूर्ण निवास-स्थानों में रहती हैं, जिनकी देखभाल इसी संस्था की ज़िम्मेदार महिलाओं द्वारा की जाती है।

शांति-काल

शांति स्थापित होने पर हिन्दुस्तान की उन स्त्रियों को, जिन्होंने शत्रु को पराजित करने में भाग लिया है, शान्ति उपभोग करने का बहुत बड़ा अधिकार होगा।

युद्ध के पश्चात्

व्यापार-वाणिज्य तथा धंधोंमें, हिन्दुस्तान बड़ी आगे बढ़ रहा है और यह है कि शांति स्थापित हो शहरी नौकरियों के लिए अच्छे ट्रेनिंग पाये हुए बहुत कर्मचारियों (स्त्री-पुरुषों) आवश्यकता होगी। डबल्यू० सी० (आई) में नौकरी हुए बहुत सी स्त्रियां प्रबन्ध का बड़ा अच्छा अनुभव प्रा लेंगी जो शहरी नौक सफलता पाने के लिए आवश्यक होता है।

पूरा विवरण

नौकरी के नियमों आदि में पूरा विवरण बिना कि ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० (आई) से प्राप्त किया जा जो स्वयं इस संस्था की सदस्या डबल्यू० ए० सी० (आई) के बारे जो कुछ भी जानना चाहती है, आपको प्रसन्नतापूर्वक बतला दें

WAC INDIA

ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० ए० सी० आई० बम्बई—ए० एफ० आई० बिल्डिंग, हास्पिटल लेन, कलकत्ता—मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, २८, लखनऊ—मार्फ़त टी० आर० ओ०, ईस्टर्न, हज़रतगंज मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, इग्ज़ीबीशन रोड। ग्विन टामस रोड। बंगलोर—कैण्टूनमेण्ट, कबन रोड। २२, डेविस रोड। पूना—स्टाएटन रोड। मद्रास माउण्ट रोड। अथवा अपने निकटवर्ती डबल्यू० (आई) प्लेटून कमाण्डर के पास आवेदन कीजिए।

भारतीय महिला सहायक सेना में
भरती हो जाइए

AAA 18

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [क० मि [illegible] लिमिटेड, २४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

वार्षिक मूल्य ७॥)
प्रतिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक
Sunday. 20th May, 1945
ार, २० मई, १९४५

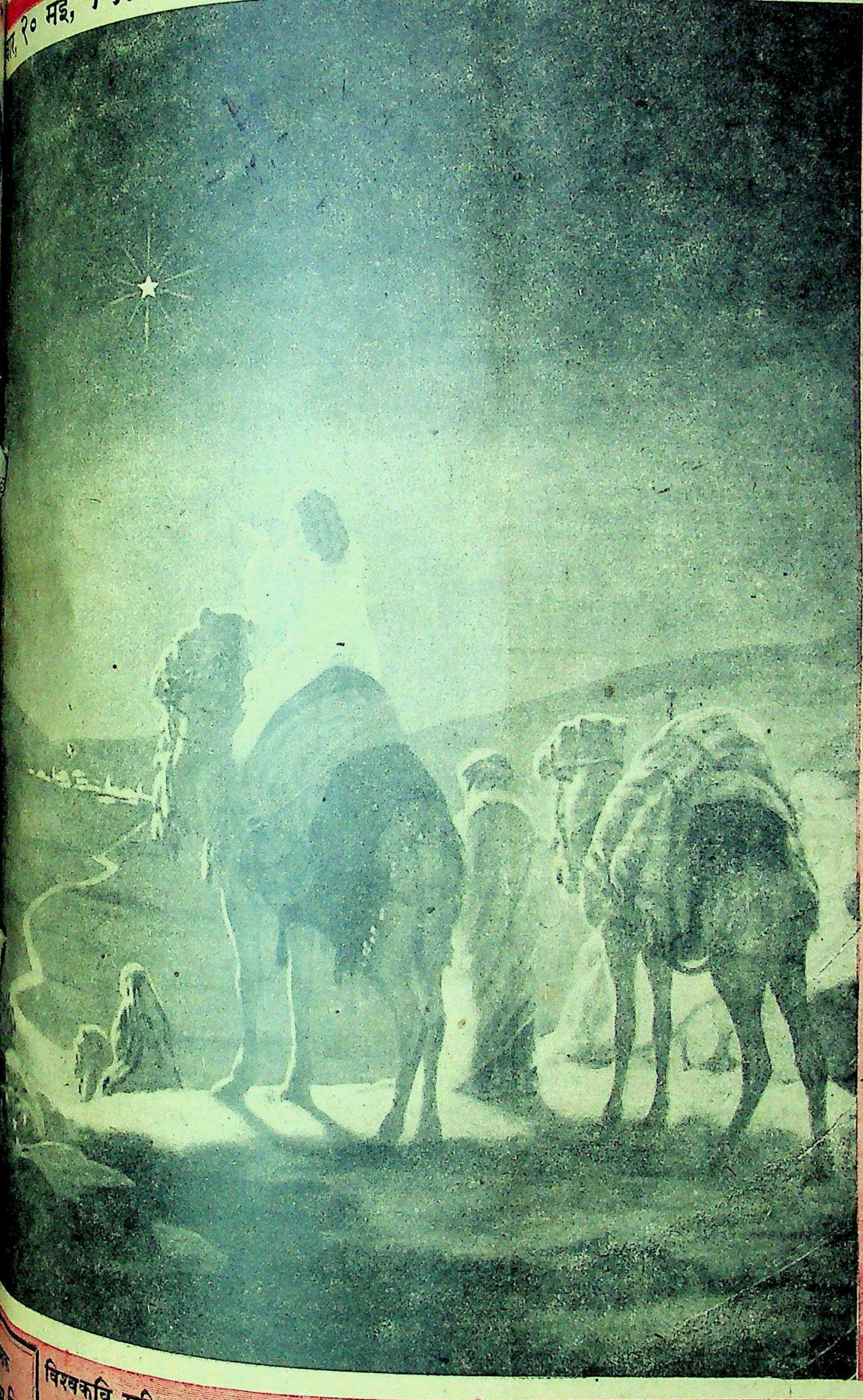

सरस्वती·सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास

अभिसारिका बुभुक्षा
महायुद्ध में अपनी बीती धरतीमाता

आधुनिक उपन्यास

नरक नया क़दम
आरती त्याग का मूल्य
रूपान्तर बहूरानी की हाट
जमींदार देहाती समाज
अग्रणी साथी
निष्कलंकिनी अरक्षणीया
तीन नगीने पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल लाल दूत
मशीन के पुर्ज़े घर का भेदिया
झंडा डाकू समस्या
महान् अपराधी जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हन्दी के निर्माता सूर-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

धर्म और जीवनचरित्र

श्रीरामकृष्णचरितामृत च्यांग-काई-शेक
महाभारत मीमांसा मेरा संघर्ष
तुर्की के पिता कमाल

ऐतिहासिक विचित्र कथा

रूस की क्रान्ति
लखनऊ की शाहज़ादियें

प्रत्येक का मूल्य ॥=) है।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ—इस पुस्तक में विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ की प्रामाणिक जीवनी और उनकी समस्त कृतियों का विवेचनात्मक परिचय दिया गया है। प्रत्येक रचना से पुष्कल उदाहरण देकर उनका हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। हिन्दी में अपने ढंग की यह पहली पुस्तक है जिसके द्वारा आप रवीन्द्रनाथ के विश्वव्याप्त साहित्य तथा जीवन के संबंध में बहुत कुछ जान सकते हैं। विश्वभारती—शान्तिनिकेतन—के प्रमुख विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ५) पाँच रुपये।

के रेगिस्तानों में ऊँटों
प्रकार से चलता है।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

सेनफ्रांसिस्को-सम्मेलन में विश्व-शांति।
राजनैतिक अंगा कब दूर होगा?

SUNLIGHT SOAP
SUNLIGHT SOAP
TOILET SOAP
LIFEBUOY SOAP
LIFEBUOY SOAP

ये तीनों साबून बहुत प्रसिद्ध हैं और लोग इनकी बड़ी ही क़द्र करते हैं।

इन नामों और डीज़ाईनवाले कागज़ के रैपर के अन्दर की बनावटों की अच्छी कालिटी के बारमें जनता का बड़ा विश्वास है। कुछ दिनों से यह देखने में आया है कि और दूसरे साबून बनानेवाले बेईमान कारखानदार अपने ही साबूनों के वास्ते ऐसे नामों, छापों और डीज़ाइनों का उपयोग करते रहे और अब भी कर रहे हैं, जो सनलाइट, लक्स और लाइफब्वॉय साबूनों के नामों छापों और डीज़ाइन की हूबहू नक्ल है। ऐसे नामों, छापों और डीज़ाइन का उपयोग जान बूझ कर जनता को धोका देने के लिये किया जाता है।

चेतावनी!

ट्रेड मार्क कानून का भंग

लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड जो कि सनलाइट साबून, लक्स टॉइलेट सोप और लाइफब्वॉय साबून के बनानेवाले हैं, इसके जरिये चेतावनी देते हैं कि वे किसी शख्स, फर्म, या कम्पनी के खिलाफ हर मुमकिन कार्रवाई, दीवानी, फौजदारी या दोनों, करेंगे जो, सिवाय लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड के बनाये हुये माल के, और किसी ऐसे मालको जिसपर सनलाइट, लक्स या लाइफब्वॉय या किसी और नाम के रैपर, नाम और छाप मौजूद हों जो इन नामों की खिलाफ वरज़ी हो या उनकी हूबहू नक्ल हो, तैय्यार करने, बेचने, बेचने के लिये देने, उसका वर्णन करने, इनवाइस करने और विज्ञापन देने का धन्धा करती हो या उसमें मदत करती हो।

यह विज्ञापन लिवर ब्रदर्स द्वारा जनता के हितार्थ दिया गया है।

L. Com. 54-111 HI

यूनाइटेड कमर्सियल बैंक लि०

सबस्क्राइब्ड् कैपिटल	४ करोड़
पेड अप कैपिटल	२ करोड़

बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स

मिस्टर जी० डी० बिरला (चेयरमैन)

मिस्टर एम० ए० इस्पहानी (वाइस चेयरमैन)।
सर आदम जी हाजी दाऊद
मिस्टर बैजनाथ जालान
" ईश्वरीप्रसाद गोइनका
" अनन्तचरन ला

मिस्टर रमनलाल जी० सरइया (वाइस चेयरमैन)
" महादेव यल० दहानुकार
" नवीनचन्द्र मफतालाल
" मदनमोहन आर० रुइया
" मोतीलाल तपुरिया

शाखायें

आगरा, अहमदाबाद, अजमेर, इलाहाबाद, अमृतसर, आसनसोल, बड़ौदा, बँगलोर, बनारस, बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, कोयम्बटूर, दिल्ली, देवघर, गिरीडीह, हैदराबाद (सिन्ध), जयपुर, कराची, कारीकूड, लाहौर, लायलपुर, मद्रास, मदूरा, नागपुर, नई दिल्ली, ओकारा (पंजाब), पिलानी, पुडूकोटा, क्वैटा, शिकारपुर, सूरत।

पे आफिस

अरिफवाला (पंजाब), बिंदकी (कानपुर), मियाँचन्नू (ओकारा), मान्टगोमरी (ओकारा), पालवाल (दिल्ली)।

विदेशी एजेन्ट

नेशनल सिटी बैंक आफ न्यूयार्क तथा रायल बैंक आफ कनाडा।

जनरल मैनेजर—मि० बी० टी० ठाकुर

हेड आफिस

२ रायल इक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता। ब्रांच आफिस—४ अलबर्ट रोड।

मिस्टर जी० के० टंडन, ब्रांच मैनेजर।

विश्वास उत्पन्न करनेवाले आँक

तेईसवीं त्रैवार्षिक वैल्युयेशन रिपोर्ट घोषित करती है

मृत्यु-संख्या के अनुभव में सुधार
और खर्च के अनुपात में कमी

३ साल का लाभ कम्पनी के ऋणों पर ३) सैकड़ा ब्याज
लगाकर १,५०,८८,०९२) हुआ—

इसके कारण बीमादारों के सुरक्षा-कोष में ५४ लाख रुपये की वृद्धि

बोनस घोषित	आजीवन बीमा पालिशियों पर १२॥) प्रतिहज़ार वार्षिक
	मियादी (एनडाउमेंट) बीमे पर १०) " "

ओरियन्टल

गवर्नमेण्ट सिक्योरिटी लाइफ एशोरेन्स कं० लि०
ब्रांच आफिसः—३२ कैनिङ्गरोड, इलाहाबाद।

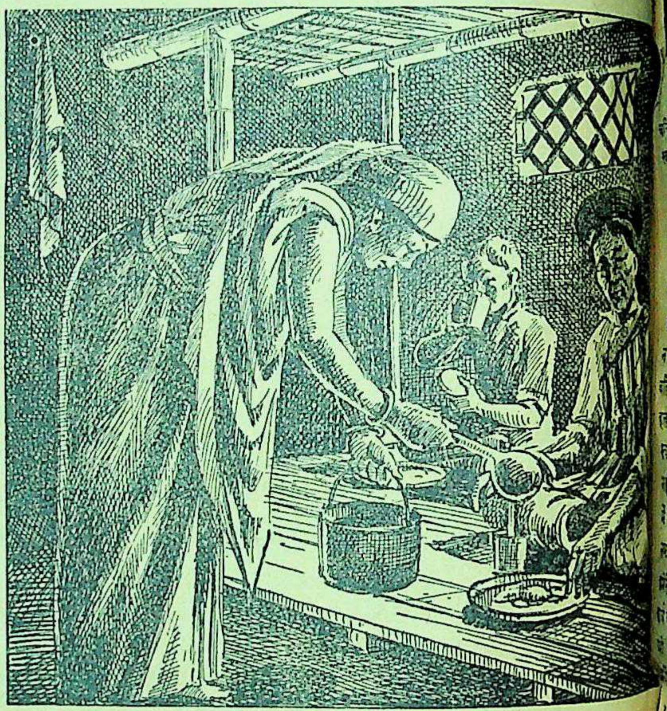

चाय का समय—सिक्कीम में

चाय पीने की प्रथा, सिक्कीम में, लेपचाओं के यहाँ परम्परा से
आ रही है। गरीब श्रेणियों के लोगों में भी उत्सवों में चाय पीने की
कुछ प्रथा रह गई है, अवश्य, चीन के शास्त्रोक्त चाय-पान की
विस्तार रूप में नहीं, परन्तु हाँ, वही भावों का सङ्केत यहाँ भी है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग अलग चाय के पात्र रहते हैं,
दूध चीनी से मिलाकर गरम चाय एक ही पात्र में बनाई जाती है
कलछी के द्वारा वितरण की जाती है।

भीषण चढ़ाव-उतारवाली इनकी जन्मभूमि घाटी और तराइयों
बीच होने के कारण सिक्कीम के निवासियों को एक ऐसे जलवायु
सामना करना पड़ता है जो अधिकतर ठण्ढा है। जो लोग घर में
करते हैं उन्हें अपने को गरम रखने के लिये गरम चाय की
कता है और जो लोग बाहर काम करते हैं वे अपनी प्यास बुझाने
लिए चाय को सर्वोत्तम साधन समझते हैं।

भारतवर्ष के एकान्त भागों में सिक्कीम भी एक उदाहरणमात्र
जहाँ ताजी ब्रूकबाण्ड चाय सर्वदा मिलती है।

ब्रूक बॉंड

"दो पत्ती और एक कली"

देशदूत

सचित्र साप्ताहिक हिन्दी

वर्ष ७ संख्या ३८]

[रविवार, २० मई, १९४५

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

ब्रिटेन के परराष्ट्र सचिव मि० ईडन भी [illegible] हैं, इसलिए वह भी भारतीय [illegible] नहीं दे सकते।

[illegible] की राजधानी [illegible] के सुनहले गुम्बद के नीचे [illegible] पंडित ने [illegible] घोषित किया कि [illegible] और भारत के बीच मित्रता से [illegible] समस्याएँ हल होंगी [illegible] की समस्याओं को [illegible]। जब तक औपनिवेशिक [illegible] रहेंगे, तब तक कोई शान्ति नहीं [illegible] सदियों और पीढ़ियों [illegible] सभ्यता और शान्ति के प्रयत्न [illegible]। मेरा यह विश्वास है कि [illegible] और भारत के बीच के लिए [illegible] अवसर प्राप्त होगा, क्योंकि [illegible] के ढाँचे का निर्माण [illegible]

* *

[illegible] पंडित ने कहा कि संसार को [illegible] एक राष्ट्र की स्वतन्त्रता के [illegible] समस्त विश्व की स्वतन्त्रता [illegible] चलाना है। हमें अमेरिका और [illegible] संसार के समस्त राष्ट्रों को एक [illegible] समझना चाहिए। इसलिए [illegible] लोग अमेरिका के अधिक [illegible] में आ गये हैं।

* *

[illegible] पंडित ने कहा कि मेरा विश्वास [illegible] सभी लोगों के सम्मिलित प्रयत्न [illegible] चाहते हैं कि संसार के समस्त [illegible], सम्मान और शान्ति की [illegible], वैज्ञानिक और सुन्दर संसार का [illegible]। अमेरिका इस नये संसार [illegible] में महत्त्वपूर्ण भाग लेगा।

* *

[illegible] का समाचार है कि सम्राट् तथा [illegible] प्रेसिडेंट ट्रूमन को इँगलैण्ड [illegible] निमंत्रित किया है, जिस पर [illegible] ट्रूमन का स्वीकृत-पत्र लेकर [illegible] इँगलैण्ड वापस लौट रहे हैं। [illegible] प्रेसिडेंट ट्रूमन को त्रिनेता [illegible] के बाद में, जो कदाचित बर्लिन में होगा, जून के महीने में इँगलैण्ड आने के लिए निमंत्रित किया है। प्रेसीडेंट ट्रूमन इँगलैण्ड आने पर सम्राट् और सम्राज्ञी के मेहमान होंगे।

* * *

लन्दन में वैवेल-वार्ता भंग हो जाने के बाद अब यह संभव है कि भारत का प्रश्न एक बार और जोर पकड़े। सम्भवतः ब्रिटिश मंत्रिमंडल भी भारतीय प्रश्न पर आगे विचार करे। जनरल सर क्लाड आचिनलेक ने प्रारम्भिक बातें शुरू कर दी हैं। यद्यपि उनका अधिक समय युद्ध कार्यालय में लगता है फिर भी वे इण्डिया आफिस में भी काफी समय देते हैं।

* * *

महात्मा गांधी से मध्यप्रान्त के भूतपूर्व मन्त्री श्री पी० बी० ओले ने आष्टी और चिमूर के कैदियों की ओर से उपस्थित की गई हेबियस कारपस की दर्खास्त नागपुर हाईकोर्ट द्वारा खारिज होने से उत्पन्न परिस्थिति पर बातें कीं। श्री ओले ने गांधी जी से कहा कि प्रिवी कौंसिल में अपील करने की आज्ञा माँगी गई है। ज्ञात हुआ है कि गांधी जी ने कैदियों की दशा पर बहुत चिन्ता प्रकट की और कहा कि इन लोगों के जीवन की रक्षा के लिए कोई प्रयत्न उठा नहीं रखना चाहिए। सब बात ईश्वर के हाथ है।

पश्चिमी अफ्रीका के सियराल्योन क्षेत्र में गत जनवरी में एक हीरा पाया गया था। यह अपने रंग और अपनी विशेषताओं में संसार के बड़े से बड़े हीरों को मात कर सकता है। अभी इसकी काट-छाँट या पालिश नहीं हुई है और जब तक ऐसा नहीं हो जाता, इसका मूल्य निश्चित नहीं किया जा सकता। जब तक यह हीरा बिक नहीं जाता, वह लन्दन बैंक में जमा रहेगा।

* * *

लन्दन में ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल ने अपने भाषण में कहा—इन सब बातों के बावजूद, अभी जापान मुँह बाये खड़ा है। परेशान और असफल होते हुए भी अभी वह १० करोड़ व्यक्तियों का प्रदेश है जिसके योद्धा मौत को खेलवाड़ समझते हैं। जापानियों की निर्दयता और विश्वासघात का उन्हें मजा चखाने के लिए कितना समय लगेगा और कितना प्रयास करना पड़ेगा, यह मैं नहीं कह सकता। जापान ने खुद हम लोगों का भयंकर नुकसान किया है। साथ ही अमेरिका के साथ हमारा बन्धुत्व का नाता है और साथी की हैसियत से हमें इस एशियाई युद्ध को भी लड़ना और जीतना है। इस नीच महाशक्ति के आतंक से आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा सभी त्रस्त हैं, यह भी हमें नहीं भूलना चाहिए। उन्होंने आड़े समय हमारी मदद की और उनकी सुरक्षा के लिए हमें कुछ भी नहीं उठा छोड़ना चाहिए।

श्री सुभाषचन्द्र बोस इस समय कहाँ हैं ? यह प्रश्न भी आजकल के सामयिक समाचारों से नहीं हल हो पा रहा है।

* * *

युद्ध प्रारम्भ होने के बाद से आयरलैंड से बिना सेंसर किया हुआ पहला समाचार लन्दन पहुँचा। जर्मनी के आत्मसमर्पण का समाचार सुनते ही डबलिन में दंगा शुरू हो गया और कई जगह सड़कों का युद्ध प्रारम्भ हो गया। आइरिश प्रजातन्त्र सेना के, जो श्री डीवेलरा की सरकार-द्वारा विद्रोही मानी गई, एक क्रान्तिकारिणी संस्था है।

* * *

प्रशांत सागर का युद्ध-समाचार है कि १ लाख अमेरिकन तथा जापानी सैनिक दक्षिणी ओकीनावा में घोर संग्राम में एक दूसरे से उलझे हुए हैं। शत्रु गृहदेश की संपूर्ण जनता को प्रार्थना करने का आदेश मिला है ताकि वे अपने देवता सूर्य से वर्तमान संकट को दूर करने के लिए सहायता माँगे। ओकीनावा की राजधानी के लिए युद्ध पूरी तेजी से शुरू हो गया है। ६०० विमानों ने आज मुख्य जापान पर व्यापक रूप से हमला किया।

* * *

फ्रेन्च म्युनिसिपल चुनावों के नतीजों से प्रकट होता है कि फासिस्ट विरोधी दल सामान्य रूप से विजयी रहे हैं। पेरिस के उपनगरों में कम्युनिस्टों की सफलता विशेष रीति से उल्लेखनीय है। कई म्युनिसिपैलटियों जहाँ कई सालों से कंजरवेटिव (कट्टरपंथी) जीतते रहे हैं, समाजवादी तथा कम्युनिस्ट जीते हैं। जिन उम्मीदवारों के सम्बन्ध में संदेह था कि उन्होंने मार्शल पेताँ का समर्थन किया, वे हार गये।

* * *

कोलम्बो में सीलोन इण्डियन कांग्रेस के अन्तिम अधिवेशन में डाक्टर सैयद महमूद ने भाषण देते हुए भारतीय कांग्रेसजनों ने भारत और लंका के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्ध का उल्लेख करते हुए कहा कि दोनों देशों का कल्याण इसी में है कि दोनों एक साथ मिलकर विदेशी प्रभुता से मुक्त होने का यत्न करें।

जागरण-गान

लेखक, श्री उदयशंकर भट्ट

जाग उठा हूँ—जाग उठा हूँ;
एक बार फिर,
मरण निगलकर,
साँस-साँस में, धराकाश में—
नये प्राण भर
जाग उठा हूँ—जाग उठा हूँ;
चलते चलते,
गये मेघ घिर,
अंधकार फिर,
पथ था बीहड़—'इति' से लड़ लड़,
चीर, अँधेरा,
जाग उठा हूँ—जाग उठा हूँ।
भूधर डोले,
धरणी डगमग,
साहस का जग,
टूटा पगपग—किंतु पार कर,
पीड़ा सागर,
जाग उठा हूँ—जाग उठा हूँ।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध नाटककार और कवि श्री उदयशङ्कर भट्ट पिछले दिनों महीनों से रोगग्रस्त रहे। किन्तु अब आप अच्छे हैं। रोगमुक्त होने के बाद आपकी यह पहली रचना है।

जाने कैसे,
गये प्राण फिर,
लौट हुए थिर,
झरनों का स्वर, रोम रोम भर,
गाकर कहते,
'जाग उठा हूँ—जाग उठा हूँ।'

सम्पादक का पृष्ठ

महायुद्ध और विजय

योरोप के महायुद्ध में मित्रराष्ट्रों की विजय हो गई, फैसिज्म और नाजीवाद की पराजय हुई और जिस उद्देश्य से ब्रिटेन, अमरीका और रूस मिलकर युद्ध-ग्रस्त रहे, उसकी पूर्ति हो गई। वास्तव में यह एक ऐसी महान् घटना है जो योरोपीय युद्ध के इतिहास में अमर रहेगी। छः वर्ष पूर्व जब यह युद्ध प्रारंभ होकर अग्रसर हुआ था, उस समय जर्मनी की अपार शक्ति देखकर यह अनुमान होता था कि संसार कुछ ही वर्षों में पलटा खा जायेगा और प्रजातंत्र का स्थान तानाशाही ग्रहण कर लेगी किन्तु मित्रराष्ट्रों की दूरंदेशी, धैर्य, पराक्रम और कूटनीति के परिणाम-स्वरूप तानाशाही का पराभव हुआ और संघर्षों से घिरे और पिसे हुए योरोप ने एक दीर्घ साँस ली। इसी विजय की प्रसन्नता में सारे संसार में ही नहीं मित्रराष्ट्रों के अन्तर्गत उपनिवेशों में भी विजय-दिवस के समारोह मनाये गये। भारतवर्ष में भी पिछले सप्ताह विजय-दिवस के समारोहों की धूम रही।

विजयी होने पर विजय-दिवस तो मनाया ही जाना चाहिए इसमें विवाद का कोई कारण नहीं। किन्तु वास्तव में क्या मित्रराष्ट्रों ने योरोप पर या सारे संसार पर विजय प्राप्त कर ली है? क्या संसार में शांति स्थापना का कार्य प्रारंभ हो गया है और कम से कम शीघ्र ही क्या योरोप में शांति स्थापित हो जायेगी? फिर इस विजय पर इतनी प्रसन्नता और समारोहों की क्या आवश्यकता थी? सच पूछा जाय तो आवश्यकता है इस समय वीरान और ध्वंस योरोप में शांति स्थापना की। किन्तु देखना है कि योरोप में शांति-स्थापना के लिए क्या-क्या उपाय रचे जाते हैं? मित्रराष्ट्रों के युद्ध-रत होने का एक उद्देश्य अवश्य है किन्तु क्या युद्ध के बाद भी आपसी स्वार्थों को त्याग कर वास्तविक शांति की स्थापना के लिए वह तत्पर रहेंगे? इसका कुछ आभास हमें सेनफ्रांसिसको सम्मेलन के अवसर पर भी मिला है। ब्रिटेन और अमरीका तो अभी एकतावादी जान पड़ते हैं किन्तु सोवियट रूस कुछ अपना मत भिन्न प्रगट कर रहा है। पोलैण्ड की समस्या आपसी मामले में ऐसी विचित्र स्थिति उत्पन्न कर रही है कि इसका भविष्य क्या होगा, इस पर अभी कुछ निर्णय नहीं दिया जा सकता। फ़्रांस की समस्या भी कुछ विचित्र जान पड़ती है। नाजी और फैसिस्ट तानाशाही से योरोप इतना ध्वंस हो चुका है कि उसकी आर्थिक, सामाजिक और नैतिक समस्या बड़ी विकट की उलझन में उलझी हुई है। सारे योरोप को पुनर्निर्माण के रास्ते पर लाना है, कहना यह चाहिए कि उजड़ा हुआ घर एक प्रकार से फिर बसाना है। किंतु इस स्थिति पर उसे लाने के लिए नेतृत्व कौन करेगा? यह भी एक सबसे जटिल समस्या है।

इन समस्याओं पर विचार करने तथा सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन की निरुद्देश्य कार्यवाहियों पर ध्यान देने पर ऐसा अनुमान होता है कि पूँजीवादी या साम्राज्यवादी राष्ट्र संसार में शांति-स्थापना की दुहाई तो अवश्य दे रहे हैं किन्तु यदि उनके स्वार्थों की हानि हुई तब? और स्वार्थों की हानि होने पर भी वह क्या वास्तविक शांति के लिए प्रयत्नशील रह सकेंगे? हमारी समझ में तो यही आता है कि ये साम्राज्यवादी स्वार्थों के मामले में किसी की भी मुरौअत करनेवाले नहीं हैं। बड़े राष्ट्र स्वयं चाहेंगे कि एक दूसरे को वह काबू में कर लें, फिर छोटे राष्ट्रों की उनके सामने बोलने या कुछ कहने की हिम्मत कहाँ? इन्हीं कारणों से यह धारणा होती है कि अभी युद्ध का अंत नहीं हुआ है। अभी प्रत्येक के हृदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला जल रही है। इसलिए यह कहना अनुपयुक्त नहीं है कि तीसरे महायुद्ध की नींव भी पड़ रही है। संभव है अभी दो-चार वर्ष यह आग भीतर-भीतर सुलगती रहे और समय पाकर तीसरे महायुद्ध के लिए प्रज्वलित हो उठे। आश्चर्य है जो कि पोलैण्ड महायुद्ध का कारण बना वही यदि भविष्य के महायुद्ध का कारण भी बने तो आश्चर्य नहीं?

इसलिए मित्रराष्ट्रों को जो विजय प्राप्त हुई है सच पूछा जाय तो वह वास्तविक विजय नहीं कही जा सकती। विजय तो उनकी तब है जब तीनों महान्-राष्ट्र मिलकर संसार में और इसके पहले योरोप में ऐसी शांति-स्थापना में सहायक बनें जो उसे आर्थिक, सामाजिक और नैतिक दृष्टि से मजबूत बना दें। मित्रराष्ट्रों की तभी वास्तविक विजय होगी। यदि मुसोलिनी और हिटलर के 'वाद' समाप्त हो गये तो वही वाद साम्राज्यवादी भी अवसर आने पर अपना सकते हैं। क्योंकि आवश्यकता सब कुछ कराती है। इसलिए मित्रराष्ट्रों की विजय तो हुई और योरोप का युद्ध समाप्त हो गया किन्तु योरोप में अशांति पर विजय पाना ही उनका वास्तविक विजय है। मानवता के पुनःनिर्माण और स्थापना से उनकी जय है। जिस दिन वह अवसर आयेगा उसी दिन मित्रराष्ट्रों की विजय होगी और विजय-दिवस के समारोह भी वास्तविक समारोह होंगे।

* * *

पराधीन राष्ट्रों की स्वाधीनता

मित्रराष्ट्र योरोपीय युद्ध में विजयी हुए। अब वे संसार में शांति और व्यवस्था की स्थापना के उपायों की योजना पर विचार कर रहे हैं। इसलिए यह प्रश्न इस समय संसार के पराधीन राष्ट्रों के सम्मुख उपस्थित है कि क्या उनकी स्वाधीनता के बिना संसार में वास्तविक शांति की स्थापना हो सकती है? सेन फ़्रांसिस्को सम्मेलन में शांति और व्यवस्था के संबंध में विचार करने के लिए जो नाटक हुआ है, उससे यह सिद्ध हो चुका है, कि प्रत्येक महान्-राष्ट्रों को भी अपनी अपनी पड़ी हुई है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित अमरीका में भारतीय स्वाधीनता का आन्दोलन कर रही हैं। इसका प्रभाव उन सभी राष्ट्रों पर पड़ रहा है जो आज भी साम्राज्यवादियों के हाथ के खिलौने बने हुए हैं? क्या अमरीका और ब्रिटेन यह समझते हैं कि बिना उनके उपनिवेशों की माँग की पूर्ति हुए बिना ही संसार में शांति-व्यवस्था की तूती बोलने लगेगी? या केवल योरोप में शांति और व्यवस्था की स्थापना सारे संसार पर लागू होती है? यद्यपि योरोप की समस्या इस वक्त स्वयं बड़ी पेचीदा बन बैठी है और वहाँ शांति और व्यवस्था की स्थापना में लोहे के चने चबाने पड़ेंगे किन्तु गौर-साम्राज्य तो किसी न किसी प्रकार फिलहाल एक मार्ग पर लाये भी जा सकते हैं, क्योंकि उनके गोरे प्रभुओं के हाथ में शक्ति, बल और कूटनीति है। किन्तु काले राष्ट्रों के भाग्य का फ़ैसला किस प्रकार होगा जो श्वेत महाप्रभुओं की सदियों से सेवा सुश्रूषा करते आ रहे हैं?

छोटे देशों के अलावा इस समय भारत का ही प्रश्न प्रमुख है। पृथ्वी पर इतना बड़ा भू-खंड दूसरा नहीं है जो आज तक ब्रिटेन का दासानुदास बना हुआ है। संसार के बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ परेशान हैं कि अँगरेज़ भारत को स्वाधीनता प्रदान करें किन्तु ब्रिटेन की वर्त्तमान सरकार 'क्रिप्स-प्रस्ताव' लिए हुए आज भी घोषणा कर रही है कि 'दिया ज़रूर जायेगा, किन्तु हम जैसा दें वैसा लो।' मिस्टर चर्चिल और मिस्टर अमरी दृढ़ संकल्प कर चुके हैं। वाइसराय लार्ड वेवेल तक की बातें जब अनसुनी कर दी गईं तब फिर यह कैसे समझा जाये कि संसार शांति-व्यवस्था की स्थापना के लिए ब्रि बड़ा उत्सुक है? जो कुछ भी हो कि ब्रिटेन को भविष्य में झुकना ही पड़े ब्रिटेन के नाम भारत की पराधीनता पट्टा नहीं लिख गया है। और यह निश है कि जब तक ब्रिटेन भारत को स्वा धीनता नहीं देता तब तक एशिया युद्ध के बाद अपनी वह साख-स्थापि नहीं कर सकेगा जैसी की अब तक है, यदि वह भारतीय माँगों की करता है तो उसकी शक्ति इतनी बन बैठेगी कि जिस प्रकार वह योरोप अपना प्रभुत्व रखता आ रहा है प्रकार एशिया पर भी भविष्य रखेगा। इसलिए मित्रराष्ट्रों विशे अमरीका और ब्रिटेन को पराधीन रा की स्वाधीनता का निर्णय तुरंत चाहिए। युद्ध के बाद सच्ची शांति और व्यवस्था स्थापित करने का यह प्रथम अध्याय होगा।

* * *

महात्मा गांधी ने पंजाब प्रां कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मियाँ इफ्ति उद्दीन को एक पत्र लिखकर, यह मत प्रकट किया है कि जब तक नाजायज संस्था है, तब तक एसेम्ब उप-चुनाव में कांग्रेस की ओर से उम्मीदवार नहीं खड़ा किया जा सकता

क्या वह कलंकिनी थी ?

रोमांचक और मनोरंजक धारावाहिक उपन्यास

'दशदूत' के आगामी अंक से पढ़िये—

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये

शोभना समर्थ
LUX
LUX TOILET SOAP
LEVER BROTHERS

शोभना के रोजाना सौंदर्य प्रसाधन की एक बात है—सुबह शाम लक्स टॉयलेट साबुन का तेज़ फेन अपने शरीर में मलना, फिर साफ पानीसे धोना। वह कहती है—"इस सरल नियमित रीतिसे मेरी अंगकांति मृदु, मुलायम और बेदाग रहती है"। हमारी बहुतेरी फिल्म स्टार यही कहती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 123-111-40 HI

पराधीन राष्ट्रों की स्वाधीनता

क्या ब्रिटेन अपने उपनिवेशों को स्वाधीन करेगा?

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

> सेन्फ्रांसिस्को-सम्मेलन के होते होते मित्रराष्ट्रों ने योरोपीय महासमर पर विजय प्राप्त कर ली, यह संसार में एक महान् घटना है, साथ ही आज का एक प्रश्न यह भी है कि संसार के पराधीन राष्ट्रों को स्वाधीनता मिलनी चाहिए। अमरीका में श्रीमती पंडित भारत की स्वाधीनता के सम्बन्ध में प्रबल आन्दोलन कर रही हैं। इस सामयिक लेख में इसी सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया है।

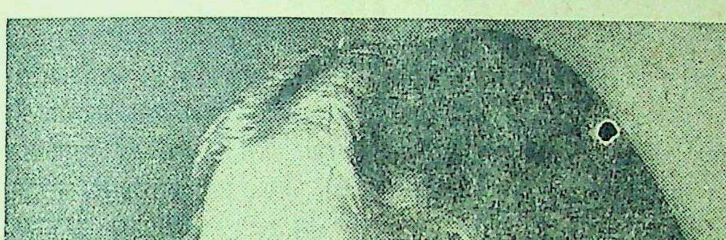

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित अमरीका में भारतीय स्वाधीनता का आन्दोलन कर रही हैं।

का सच्चा प्रतिनिधित्व सम्मेलन-भवन के पास ही संसार के प्रेस-प्रतिनिधियों के सामने कर रही हैं। क्या संसार के राष्ट्रों के राजनीतिज्ञ श्रीमती पंडित के वक्तव्यों को पढ़ते अथवा सुनते न होंगे? इस प्रकार सेन्फ्रांसिस्को-सम्मेलन में भीतर और बाहर दो तरह का प्रतिनिधित्व हो रहा है। भीतर ब्रिटिश सरकार के एजेण्ट हैं। बाहर जिसकी आवाज सर्वसाधारण में गूँज रही है वह जनता के प्रतिनिधि हैं। श्रीमती पंडित स्वतंत्र भारत की आकृति और रूप-रेखा बनाने के लिए ब्रिटिश-कारीगरों का एक बार नहीं कितने ही बार स्वागत कर चुकी हैं। जनता की लोकप्रिय सरकार की वह एक मिनिस्टर रह चुकी हैं और किसी समय भी फिर से निमंत्रित की जा सकती हैं।

भुलावा

जब याल्टा-सम्मेलन में सेन्फ्रांसिस्को-सम्मेलन की चर्चा चली और राष्ट्रों को सम्मेलन में भाग लेने के निमंत्रण मिलने लगे तब केन्द्रीय असेम्बली में इस पर कितनी ही बार यह कोशिश की गई कि सम्मेलन में प्रतिनिधि भेजने के लिए एक दिन वादविवाद होना चाहिए और वह दिन सरकार की ओर से निश्चय किया जाय। परन्तु सरकार यह कब सुनने लगी? उसने इधर-उधर करके इस बात को बिलकुल टाल दिया था। सरकार का यह कड़ा रुख क्या प्रजातंत्रात्मक भावनाओं का समर्थक है? क्या उसने भारतीय लोकतंत्र की कभी कुछ परवाह की है? इस प्रकार सरकार ने केन्द्रीय असेम्बली में इस प्रस्ताव को ऐसा टाला कि वह संसार के सामने न आ सका।

कौंसिल आफ स्टेट, जिसमें सरकार-द्वारा नामजद सदस्यों की संख्या बहुमत में रहती है इस विषय पर वाद-विवाद का समय एक दिन दिया गया था। माननीय श्री धीरुमल राव के भारतीय प्रतिनिधि मंडल के चुनाव-सम्बन्धी प्रस्ताव पर काफी वाद-विवाद हुआ परन्तु नगाड़खाने में तूती की आवाज? प्रस्ताव सरकारी नामजद सदस्यों-द्वारा रद्द हो गया और संसार के सामने प्रचार करने का सरकार को स्वर्ण-सुअवसर प्राप्त हो गया। भारत सरकार के इस प्रतिनिधि-मंडल से भारत की प्रत्येक जाति, दल तथा राजनैतिक क्षेत्रों को गहरा असंतोष है।

भारत की यथोचित माँग

भारत का यह प्रतिनिधि-मंडल भी क्या भारत की माँगों को सम्मेलन के सम्मुख उपस्थित कर रहा है? यह प्रश्न असेम्बली में आया था। विरोधी दल के नेता श्री भूलाभाई देसाई ने ही नहीं बल्कि अन्य दलों के प्रतिनिधियों ने भी सरकार से प्रश्न किये थे। क्या यह प्रतिनिधि-मंडल भारत की माँगों का समर्थन करेगा? भारत-सरकार के गृह-सदस्य ने उत्तर दिया था, "प्रतिनिधि-मंडल अपने उद्देश्यों को व्यक्त करने में स्वतंत्र रहेगा।" सम्मेलन में संसार के तीन महान् राष्ट्र अमेरिका, रूस और ब्रिटेन भाग ले रहे हैं। उनके सम्मुख इन प्रतिनिधियों की क्या आवाज होगी? यही मुख्य प्रश्न असेम्बली के सम्मुख थे। अन्ततोगत्वा प्रतिनिधि-मंडल बन ही गया। विरोधी नेताओं ने बार बार असेम्बली में स्वतंत्र भारत की माँगों की चर्चा चलाई है। किन्तु सुनता कौन है? प्रतिनिधि-मंडल के ऊपर दूसरे देशवालों का भी विश्वास नहीं है तो भारत की कौन कहे? मो० मोलोटोव ने सम्मेलन में भारत की स्वतंत्रता का जो समर्थन किया है वह प्रतिनिधि-मंडल के लिये काफी है। मो० मोलोटोव ने कहा था, "भारत का सच्चा प्रतिनिधित्व स्वतंत्र भारत ही करेगा जो आज इस सम्मेलन में नहीं है।" यही भारत की सच्ची माँग है जिसको भारत का प्रतिनिधि-मंडल कैसे प्रकट कर सकता था? परन्तु श्रीमती विजयलक्ष्मी के वक्तव्यों ने प्रतिनिधि-मंडल की धज्जियाँ उड़ा दीं। सच पूछा जाय तो वे ही देश की प्रतिनिधि हैं जिनके सम्मेलन में न सम्मिलित होने पर रूस-द्वारा भारत की माँगों का समर्थन हुआ।

भारतीय स्वतंत्रता

लन्दन-सम्मेलन में उपनिवेशों के प्रतिनिधियों का जमघट था। क्यों? इसलिये कि भारत तथा अन्य उपनिवेशों को गुलाम बनाये रखना जरूरी है। सर फीरोजखाँ नून के लन्दन के वक्तव्यों में स्पष्ट झलकता है कि वे भारत को अब भी गुलाम रखने के हिमायती हैं। इधर सेन्फ्रांसिस्को के उनके वक्तव्यों में महात्मा जी को राजनीति से विश्राम लेने को कहा गया है। यही नहीं बल्कि प्रतिनिधि-मंडल ने महात्मा जी तथा कांग्रेस को जापान का समर्थक बतलाया है। यह प्रतिनिधि-मंडल कैसी बुद्धि रखता है? ब्रिटिश अधिकारी भारत को जापान विरोधी मानने लगे हैं परन्तु प्रतिनिधि-मंडल को पता नहीं, क्यों वही सूझ बनी है? महात्मा जी ने सम्मेलन को जो सन्देश दिया है वह स्पष्ट है। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता की अपील के साथ ही एशिया और अफ्रीका के गुलाम देशों की स्वतंत्रता की माँग की है। दूसरे यह कि शत्रुराष्ट्रों के साथ मित्रता का व्यवहार होना चाहिए। क्या सर रामस्वामी मुदालियर को महात्मा जी के इस वक्तव्य में अब भी फासिस्ट और नाजीवाद भावना का भास हो रहा है जब कि मित्रराष्ट्र पश्चिमी युद्ध को एकदम जीत चुके हैं? क्या ऐसा ही प्रतिनिधि-मंडल संसार में शान्ति स्थापित करेगा? भारत का वह सन्देश जो महात्मा जी के मुख से निकला है शान्ति का सन्देश है। भारतीय जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व इस समय ब्रिटिश कारागारों में है। केवल एक टिमटिमाती ज्योति अमेरिका के शहरों में भारतीय स्वतंत्रता का दीप जगा रही है? सम्मेलन के कर्णधारों को उस ज्योति से भारतीय स्थिति का ज्ञान करना चाहिए। यद्यपि श्रीमती सम्मेलन में सरकारी दृष्टिकोण को नहीं प्रकट कर सकेंगी फिर भी भारतीय सच्चे चित्र की जो रूप-रेखा उन्होंने खींची है वही देश की माँग है। जिसको सेन्फ्रांसिस्को-सम्मेलन सुलझाना है। वरना भारत का प्रतिनिधि-मंडल सम्मेलन में ब्रिटिश सरकार का केवल एक रेकार्ड है जो लंदन से बज रहा है।

आजादी का मूल्य चुकानेवाला

कांग्रेस और मुस्लिम लीग के समझौते का रहस्य

लेखक, श्री गंगाधर इंदूरकर 'साहित्य रत्न'

कांग्रेस और मुस्लिम लीग की एकता का समझौता, जमाने से चलता आ रहा है किन्तु सुरसा के बदन की भाँति उसका विस्तार बढ़ता ही जा रहा है। कांग्रेस तो कांग्रेस! कम्यूनिस्टों ने तो ऐलान कर दिया है कि बिना कांग्रेस-लीग की एकता के स्वराज्य मिल ही नहीं सकता। योग्य लेखक ने इसी समस्या पर इस लेख में बड़े तर्कपूर्ण ढंग से प्रकाश डाला है और यह बतलाया है कि लीग ऐसी मुसलिम संस्था के साथ महासभा ऐसी हिन्दू संस्था से वास्तविक समझौता हो सकता है। फिर कांग्रेस ही क्यों नहीं अपने को हिन्दू बहुमत के सिद्धान्त को सामने रखकर इस मामले के निबटाने में अग्रगामी बनती?

हिन्दू महासभा के सभापति वीर सावरकर।

"हम आजादी के लिए क्या मूल्य देना चाहते हैं यह प्रश्न महत्त्व का न होकर आजादी हमसे क्या मूल्य चाहती है यह प्रश्न महत्त्व का है।" यह बात अकसर सभाओं में, आपस की बातचीत में, नेताओं के वक्तव्यों में उन लोगों की ओर से कही जाती है जो लोग यह समझते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम एकता तथा लीग-कांग्रेस के सहयोग के बिना स्वराज्य की प्राप्ति असंभव है। यद्यपि यह प्रश्न विचारणीय है कि हिन्दू-मुसलमानों का दिली समझौता होने पर क्या ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तान को स्वराज्य तोहफे के रूप में दे देगी? हम यह मान लेते हैं कि हिन्दू-मुस्लिम एकता होते ही ब्रिटिश सरकार पर कुछ ऐसा अनिवार्य दबाव पड़ेगा जिससे झुककर उसे हिन्दुस्तान को स्वराज्य देने के लिए बाध्य होना पड़ेगा। फिर भी यह प्रश्न उठता है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए क्या कांग्रेस लीग का सहयोग होना जरूरी है? आजादी हमसे जो मूल्य माँगे उसे देने के लिए हमें हमेशा तैयार रहना चाहिए यह बात सच होने पर भी यह भी सच है कि मूल्य देने के पहले हमें देख लेना चाहिए कि जो मूल्य हम दे रहे हैं उससे वास्तव में आजादी प्राप्त हो सकेगी, या वह आजादी का मखौल तो न होगा।

इस सम्बन्ध में विचार करने के पहले हमें कांग्रेस और लीग की स्थिति निष्पक्ष दृष्टि से देख लेनी चाहिए। वैसे कांग्रेस और लीग इन दोनों संस्थाओं का ध्येय पूर्ण स्वराज्य का है किन्तु दोनों में महान् अन्तर है। कांग्रेस के सामने पहले स्वराज्य का लक्ष्य है और बाद में देश की विभिन्न जातियों के स्वार्थों का। ठीक इसका उलटा मुस्लिम लीग का है। मुस्लिम लीग के सामने मुस्लिम जाति के स्वार्थों का प्रश्न पहले है और बाद में स्वराज्य की प्राप्ति का। कांग्रेस जिस सचाई के साथ स्वराज्य की प्राप्ति के लिए देश की विभिन्न जातियों के स्वार्थों का थोड़ा-बहुत बलिदान करने को तैयार रहती है उसी सचाई के साथ मुस्लिम लीग भी मुस्लिम स्वार्थों के लिए स्वराज्य की लड़ाई को कुछ और लम्बी करने में अपनी कोई हेठी नहीं समझती। जिस स्वराज्य में मुस्लिम हितों का प्राधान्य नहीं है उसका मुस्लिम-लीग की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं है। कांग्रेस की दृष्टि में स्वराज्य का महत्त्व अपना महत्त्व है। वह किसी जाति-विशेष के स्वार्थों के साथ सम्बन्धित नहीं है। मैं हिन्दू सभावादियों का यह कहना कदापि नहीं मान सकता कि कांग्रेस मुसलमानों को विशेष प्रश्रय इसलिए देती है कि उसे मुसलमानों से विशेष प्रेम है या वह मुसलमानों से विशेष डरती है। वास्तव में यदि देखा जाय तो प्रतीत होगा कि कांग्रेस को स्वराज्य की इतनी अधिक चाह है कि वह उसके लिए कुछ भी बलिदान करने के लिए तैयार है।

ऐसा क्यों? इस बात का उत्तर देने के लिए हमें इच्छा न रहते हुए भी थोड़ा-सा जातीय दृष्टि से सोचना चाहिए। राजनीतिक इतिहास में जिन लोगों ने देश के लिए अपनी कुर्बानियाँ की हैं उनकी यदि जाति देखी जाय तो वह अधिकांशतः हिन्दू ही मिलेगा। मेरे कहने का यह अर्थ कदापि नहीं है कि मुसलमान देशभक्त नहीं हैं और उसने कुर्बानियाँ नहीं की हैं। किन्तु मुसलमानों की जन-संख्या के हिसाब से भी मात्रा इतनी नहीं है कि वह हिन्दुओं की बराबरी में आ सकें। हमारे कुछ मित्रों के कथनानुसार यह मान लेने पर भी कि उनकी हमारी संस्कृति एक है वे इसी देश के रहनेवाले हैं, इस देश पर उनका उतना ही अधिकार है जितना हिन्दुओं का है, यह मानना ही पड़ेगा कि स्वराज्य की लड़ाई में उनमें और हिन्दुओं में अन्तर है। चाहे हमारे नेता इस बात को प्रकट रूप से स्वीकार न करें किन्तु उनका दिल इस बात को मानता होगा कि स्वाधीनता के संग्राम में हिन्दुओं ने जितना हिस्सा लिया है उतना मुसलमानों ने नहीं। वे हमेशा हिस्सा बटाने के वक्त जरूर आगे बढ़े हैं। मैं यह नहीं कहता कि हिन्दुओं में देशद्रोही और गद्दार नहीं हैं। हमारे देश को इस समय जो मुसीबतें उठानी पड़ रही हैं उसका कारण विदेशी शासक अँगरेज नहीं हमारे छोटे भाई मुसलमान नहीं वह हम हिन्दुओं के ही पाप, बेईमानी, स्वार्थी होने का फल हैं। किन्तु इसके कारण स्वतंत्रता की लड़ाई में हिन्दुओं ने जो हिस्सा लिया है उसे हम भुला नहीं सकते।

इस बात को हममें से अधिकांश लोग जानते हैं कि देश का हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा अधिकांशतः ब्रिटिश नीति तथा कुछ अंशों में दोनों जातियों की मूर्खता के फलस्वरूप पैदा हुआ है। यह बात निश्चित है कि देश में स्वराज्य होते ही हिन्दू-मुस्लिम झगड़े के अधिकांश प्रश्न अपने आप हल हो जायँगे। कुछ लोग कहते हैं कि पाकिस्तान की आवाज लगानेवाले मुस्लिम लीग के सभापति क़ायदे आजम मिस्टर जिन्ना हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य फैलानेवाले ब्रिटिश प्रचारकों के एक एजेंट हैं। मैं इस बात को नहीं मानता। मुझे मिस्टर जिन्ना की सचाई में उतना ही विश्वास है जितना महात्मा गांधी की। अन्तर केवल दृष्टिकोण का है। महात्मा गांधी के सन्मुख कांग्रेसी होने के नाते स्वाराज्य का प्रश्न पहले है और बाद में जाति के स्वार्थों का। इसी प्रकार जिन्ना साहब के सामने मुस्लिम लीग के सभापति होने के नाते मुस्लिम जाति के स्वार्थों का प्रश्न पहले है स्वराज्य का प्रश्न बाद में। जहाँ मूल आदर्शों में ही मतभेद और इतना मौलिक अन्तर है वहाँ सहयोग होने की आशा कैसी? अब तक महात्मा जी के कई बार प्रयत्न करने पर भी समझौता न हो सका इसका यही एकमात्र रहस्य

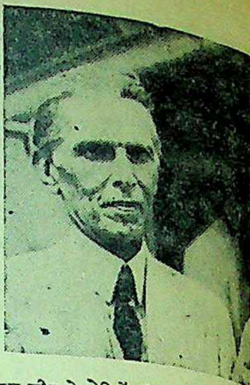

मुस्लिम लीग के प्रेसिडेंट मिस्टर मुहम्मदअली

है। मुस्लिम लीग से समझौता उसी
से हो सकता है जिसका लक्ष्य मुस्लिम
की तरह हो अथवा जिसकी दृष्टि से
स्वार्थों के सामने स्वराज्य का प्रश्न
हो जाता है। यदि यह कहा जाय
अनुचित न होगा कि हिन्दूसभा ही
ऐसी संस्था है जिससे मुस्लिम-लीग
समझौता हो सकता है और जो सम
होगा वह दोनों जातियों की दृष्टि
न्याय्य और उचित होगा।

फिर भी मुझे इस बात का
नहीं है कि किसी भी प्रकार के
से भी हम किसी विशेष
पहुँच सकेंगे। किन्तु यदि समझौता
आवश्यक ही है तो कल्याण की
से देश की एकमात्र राष्ट्रीय
कांग्रेस का यह कर्त्तव्य हो जाता है

शेष पृष्ठ १६ पर देखिए।

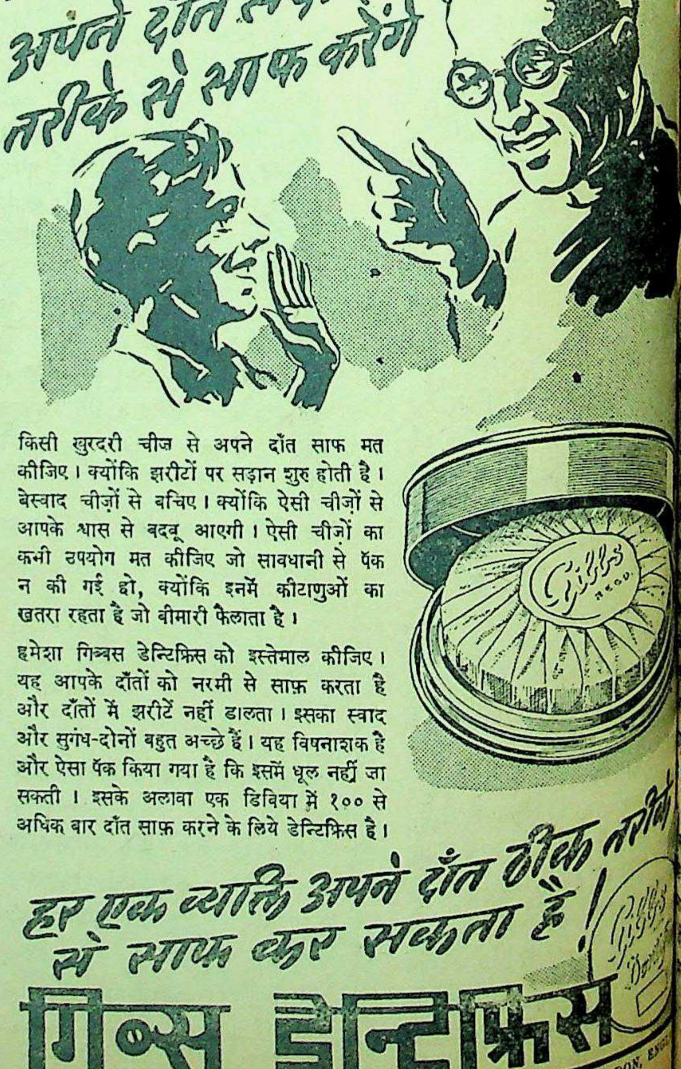
प्रण कीजिए कि आप अपने दाँत सदा इसी तरीके से साफ करेंगे
हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!
Gibbs REGD.

किसी खुरदरी चीज से अपने दाँत साफ मत कीजिए। क्योंकि झरीटों पर सड़ान शुरु होती है। बेस्वाद चीज़ों से बचिए। क्योंकि ऐसी चीज़ों से आपके श्वास से बदबू आएगी। ऐसी चीज़ों का कभी उपयोग मत कीजिए जो सावधानी से पैक न की गई हो, क्योंकि इनमें कीटाणुओं का खतरा रहता है जो बीमारी फैलाता है।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह आपके दाँतों को नरमी से साफ़ करता है और दाँतों में झरीटें नहीं डालता। इसका स्वाद और सुगंध-दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विषनाशक है और ऐसा पैक किया गया है कि इसमें धूल नहीं जा सकती। इसके अलावा एक डिबिया में १०० से अधिक बार दाँत साफ़ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

गिब्स डेन्टिफ्रिस

D. & W. GIBBS LIMITED. LONDON, ENG

विश्व-शांति और नवीन युग

साम्राज्यवादी और अन्य छोटे राष्ट्रों की समस्या

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वम

सेन फ्रांसिस्को-सम्मेलन में युद्ध के बाद विश्व-शांति की योजना के उपायों पर संसार के महान् तथा छोटे राष्ट्रों के प्रतिनिधियों में विचार विनिमय हो चुका है। किंतु जिस स्वार्थ-नीति से साम्राज्यवादी राष्ट्र विचार विनिमय कर रहे हैं, उससे क्या संसार में विश्व-शांति की स्थापना में कोई वास्तविक उपाय निकल सकता है? इस सामयिक लेख में इसी संबंध में प्रकाश डाला गया है। लेख सुन्दर है।

अमरीका के स्वर्गीय प्रेसिडेंट रूजवेल्ट जिन्होंने सेन फ्रांसिस्को में मित्रराष्ट्रों का सम्मेलन बुलाने की योजना बनाई थी।

का अनुसरण न करें जिन से फिर ऐसे विस्फोट हो सकें। यदि प्रतिहिंसा की भावना से हम स्वयं अमानुषिक हो गये तो साम्राज्यशाही का वह आधार जिसके कारण पाँच साल से ग्रसित मानव-समाज कराह रहा है फिर बड़ी शक्तियों द्वारा शोषित किया जायेगा। लड़ाई वस्तुतः सिद्धांत की होती है व्यक्तिगत भावनाओं की नहीं! परन्तु विश्व-शांति के नाम पर जो बैठकें सेन फ्रांसिस्को में हुई हैं उससे यह साफ पता चलता है कि साम्राज्यवादी शक्तियाँ आज भी जन-सत्तात्मक सिद्धांतों का अनुसरण करने के लिए प्रस्तुत नहीं हैं। अपने अपने तर्क में अब भी ब्रिटेन और अमेरिका अपने दिमाग़ में उन कीटाणुओं को पाले रहना चाहते हैं जो समय की गति से युगों पुरानी और निर्जीव हो चुकी है। इन देशों के नेताओं की आँखें अब भी मानवता के क्रमिक विकास का संकेत अनुभव करने में असफल हैं। इतने बलिदान और रक्तपात का क्या रचनात्मक रूप संसार के सामने रखा जा सकता है? संसार के राष्ट्रों की शक्तियाँ मानव जाति के सर्वहित के लिए किस प्रकार लगाई जा सकती हैं आदि प्रश्नों पर अब भी रूढ़िवाद का इतना गहरा कुहरा छाया हुआ है कि प्रकाश की किरणें उन्हीं में उलझी हुई हैं।

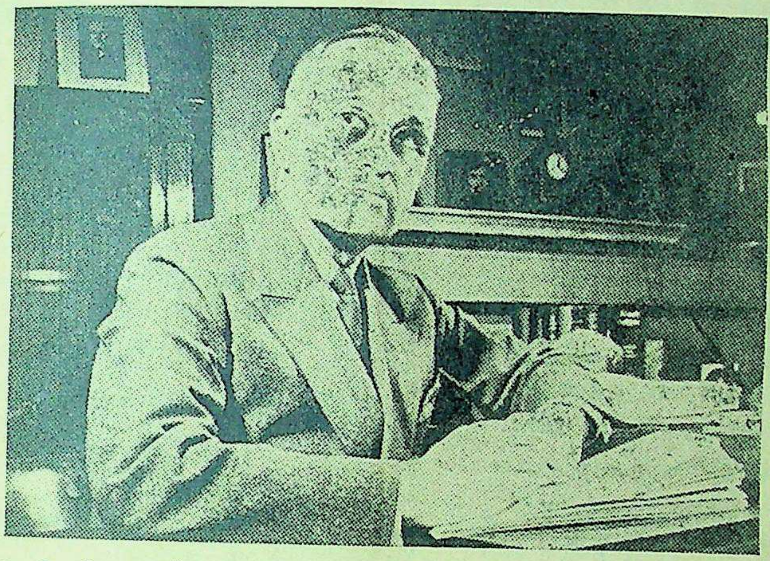

अमरीका के वर्तमान प्रेसिडेंट हैरी ट्रूमन जिन्होंने सेन फ्रांसिस्को अधिवेशन के अवसर पर सम्मेलन बुलाने का उद्देश्य बतलाया था।

विश्व-संघ की कोई भी व्यवस्था उस समय तक असफल रहेगी जब तक हमारे अन्दर विश्व-वंधुत्व की भावना नहीं होगी। विश्व-वंधुत्व की भावना के लिए आवश्यक है कि हमारी स्वतंत्रता विश्व-स्वतंत्रता का एक अंग हो। दूसरे शब्दों में प्रत्येक राष्ट्र की स्वतंत्रता दूसरे राष्ट्र से सम्बद्ध हो। जब तक हम एक दूसरे की संबद्ध स्वतंत्रता के मूल्य को नहीं समझेंगे तब तक विश्व-संघ की आयोजना असफल ही रहेगी। कमजोर विश्व-संघ स्थापित होने से बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों का शोषण उसी रूप से करते रहेंगे जैसा कि अब तक होता आया है। इस शोषण के फलस्वरूप जन-सत्तात्मक शक्तियाँ दुर्बल होकर फिर बड़े राष्ट्रों के पंजे के नीचे आ फँसेंगी। साम्राज्यवाद फलता फूलता रहेगा। विश्व-व्यवस्था शोषण, दरिद्रता और आर्थिक संकटों का पात्र बना रहेगा।

इसके सिवा अल्पसंख्यक समस्यायें भी एक जटिल और गहन रूप में हमारे सामने खड़ी हैं। यदि नाजी सिद्धान्त के अनुसार केवल आर्यन जाति का उत्सर्ग सराहनीय कहा जा सकता है तो ब्रिटिश नीति के अनुसार केवल सफेद जातियों को शासन करने का अधिकार ईश्वर के यहाँ से मिला है। अल्प संख्यकों को अपमानित करने की यह नीति यदि इसी प्रकार संसार में चलाई जाती रही तो भविष्य में सभी राष्ट्र अपनी स्वतन्त्रता स्थापित करने में असफल रहेंगे! यदि उनकी शंकायें और अविश्वास भी उसी प्रकार से चलते रहेंगे तो इसका परिणाम होगा विश्व-संघ का पतन। इसलिए आवश्यक यह है कि विश्व-संघ को यह अधिकार मिले कि वह इस संबंध में अपनी विश्वव्यापक नीति का अनुसरण करा सके और पथ प्रदर्शक भी बन सके।

इसलिए यह आवश्यक है कि विश्व-संघ का अन्तर्राष्ट्रीय कानून ऐसा हो जो मानव-जाति के विकास में सहायक हो। उस कानून का लक्ष्य मानव-इतिहास को उस स्थान पर पहुँचाना हो जहाँ हमारी विश्व-व्यापक सभ्यता और संस्कृति एक साथ मिलती हो। हाँ, एक बात को हमेशा ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि यह ऐक्य साम्राज्यवाद के सिद्धान्तों द्वारा नहीं स्थापित किया जा सकता। विश्व-संघ का जो कुछ भी रूप हो उसका सर्वप्रथम कर्तव्य है जनता को विश्व बन्धुत्व की ओर अग्रसर करना। यह काम उसी समय हो सकता है जब साम्राज्यवाद का नाश हो। फासिस्ट-वाद के पतन से संसार का बोझ हल्का हुआ है। जब साम्राज्यवाद का रूप नष्ट होगा तब संसार एक आराम की साँस ले सकेगा अन्यथा आज का साम्राज्यवाद कल फिर फासिज्म के रूप में विश्व के सामने ताण्डव-नृत्य करता दीख पड़ेगा और उस संहार से मानव-जाति फिर उठ न सकेगी।

माता कस्तूर बा!

लेखक, श्री आरसीप्रसादसिंह

माता कस्तूर बा! स्वर्ग से उतर आ!
दारुण इस दुर्दिन में,
अधःपतन, अवगुण में,
अपनी सन्तानों को एक बार दीख जा!
मर्त्य-भूमि यह कठोर,
मानव-शिशु आत्म-भोर,
धूल में पड़े हुए गोद में इन्हें उठा!
डाल करुण स्नेह-दृष्टि;
कर दे तू अमृत-वृष्टि!
पृथ्वी की आत्मा से माया का बन्ध छुड़ा!

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव

इस पुस्तक में लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हासपरिहास

भंग की तरंग

सर फीरोज खाँ नून ने कहा है कि महात्मा गांधी को राजनीति से अब हट जाना चाहिए और पंडित जवाहरलाल नेहरू को भारत की राजनीतिक बागडोर हाथ में लेनी चाहिए। नून साहब ने बड़ी मेहरबानी की। किन्तु उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि मेरे हाथ में आ जानी चाहिये?

* * *

भारतीय स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में सानफ्रांसिस्को-सम्मेलन में कोई विवाद नहीं होगा। क्या सब बातें इसी सम्मेलन में तय हो जायेंगी? कुछ आगे होनेवाली लड़ाई के लिए भी तो छोड़ देना चाहिये?

* * *

लार्ड वैवेल और भारत-मन्त्री—अमरी की बात का सिलसिला अभी टूटा नहीं, चल ही रहा है। शैतान की आँत के बारे में तो सुना गया था कि उसका अंत नहीं होता अब अमरी साहब की बात के लिए भी कहा जायगा कि वह अनंत है।

एक समाचार से पता चला है कि बलिया में आजकल ईसाई पादरियों का जोर बढ़ गया है और बहुत से हरिजन ईसाई हो रहे हैं। संसार की कोई बात ऐसी नहीं जिसमें बलिया पीछे रह जाय। यदि सिलसिला सधा रहा तो कुछ दिनों में सबसे अधिक ईसाई बलिया में ही मिलने लगेंगे।

* * *

ईश्वर के पुत्र ने समझा कि इस समय जब यूरोप में हमारी इतनी दुर्गति हो रही है तब भारत में हमारा आदर-सत्कार बहुत हो सकता है। और भारत में उन्हें सबसे उपयुक्त स्थान बलिया मिला। बलिया को इस पर महान् गर्व होना चाहिए।

* * *

कहा जाता है कि इंडिया आफिस के दफ़्तर में लार्ड वैवेल को घुसने से संतरी ने रोका। अमरी साहब का दफ़्तर है कि दिल्लगी है? जब अमरी साहब के दिमाग में कोई बात जल्दी घुस नहीं सकती तो उनके दफ़्तर में किसी का घुसना तो कठिन होना ही चाहिए।

* * *

एक गोरखे ने बताया है कि जापानी लोग मनुष्यों को खा जाते हैं। उन्होंने खाद्य समस्या को बड़ी सरल रीति से हल कर लिया। लोग युद्ध में मरते ही हैं। इसके बजाय कि खाने की सामग्री साथ चले और भोजन का सारा बखेड़ा किया जाय, मैदान से मुर्दे उठा लिये और कुतर कुतर कर खा लिया। मुर्दा फेंकने, इत्यादि की झंझट से भी खूब बचे।

* * *

छोटी लाइन में एक ट्रेन में कुछ नैपाली सिपाहियों ने एक टिकट कलक्टर को बाँध दिया और गोरखपुर से दूसरे स्टेशन तक उसे ले गये। यहीं तक खैरियत हुई कि रेल के नीचे नहीं रख दिया। क्योंकि एक तो नैपाली यों ही स्वतन्त्र देश के रहनेवाले दूसरे सैनिक जो परम स्वतन्त्र! वह जो न कर डालें थोड़ा ही है।

* * *

इन्दौर सरकार की ओर से भारत-सरकार को एक पत्र लिखा गया है कि औद्योगिक उन्नति की योजना बनाने के लिए इँगलैंड से एक विशेषज्ञ बुला दिया जाय। कुछ दिनों में राजकार्य सिखाने के लिए भी इँगलैंड से एक विशेषज्ञ मँगाया जायगा। बात तो ठीक है, भारत में यह सब कलायें सिवा विलायतवालों के कौन जानता है?

* * *

बंगाल-दुर्भिक्ष की रिपोर्ट निकल गई। इसकी जिम्मेदारी अधिकांश प्रांतीय सरकार पर और कुछ केंद्रीय सरकार पर लादी गई है। दुर्भिक्ष हो गया तो सरकार क्या करे, सरकार के घर कोई खेती होती है? या सरकार ने मना कर दिया था कि अनाज न उगे? सरकार से दुर्भिक्ष से क्या सरोकार?

* * *

डाक्टर अम्बेदकर का कहना है कि भारत में बहुसंख्यक दल का शासक नहीं होना चाहिए। राजनीति का यह नवीन सिद्धांत है। इस लाजवाब खोज के लिए डाक्टर साहब को नोबुल पुरस्कार मिलना चाहिए।

फ्रायड की जय

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

जीवन में प्रगति अगर चाहो तुम अपना मार्ग बदल डालो।
पूरब की राह चले इतने दिन नहीं ठिकाने तुम आये
पच्छिम की पगडंडी पर चलकर तुमने चारों फल पाये
थे रूढ़िवाद की मकड़ी के जालों में जकड़े पड़े हुए
दकियानूसी कुविचारों के गंदे गड्ढे में गड़े हुए
अब उलट गया युग प्राची नहीं प्रतीची में ऊषा जागी।
वेदों की मुर्दा पोथी में तुम धर्म ढूँढ़ने चलते थे
तुम राम कृष्ण की गढ़ी कथाओं से मन अपना छलते थे
गंगा के चक्कर में डूबे गीता के तुम थे दास बने
अब वह युग आया लेनिन साथी भगवान हमारे खास बने
प्राचीन मंदिरों को तोड़ो अब मूर्ति काम की बैठाओ।
हिंदू-विवाह के संस्कार को कहते प्रथा पुरानी है
यह तो बर्बरतामयी दासता की दुखपूर्ण कहानी है
उद्धार करो जग की महिलाओं का उनका बंधन खोलो
नारी नारी में भेद नहीं जय जय जय फ्रायड की बोलो
दो दिन में देखो मानव कितना ऊपर को उठ जाता है।

पुरातत्व-विभाग को कुछ ऐसा प्रमाण मिला है कि नवीं शताब्दी में भारत और लंका से सम्बन्ध था। हमारी समझ में तो लंका और भारत से विभीषण के जमाने से ही सम्बन्ध हो गया था। गहरी खुदाई से इसका प्रमाण मिलेगा। जितना ही गहरा खोदिये उतना ही अच्छा प्रमाण मिलेगा।

—अगडधत्त

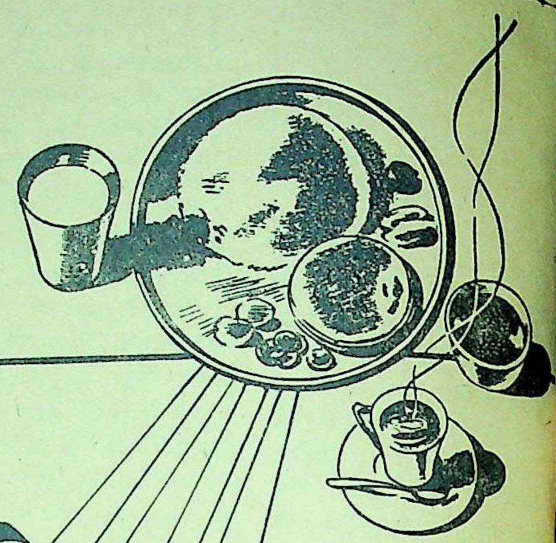

भोजन

मँहगा है...

........परन्तु, ऐसी भी एक चीज है जो हमेशा मिल जाती है।

आपको कोई भी चिन्ता क्यों न सता रही हो—भोजन की, वसन की, जलावन की,—आप हमेशा एक प्याला चाय पीकर अपना दिल खुश कर ले सकते हैं। जब भी आप थके हुए हों, दिल छोटा हो रहा हो या चिन्ता सता रही हो, एक प्याला चाय पीजिये। यह हानिरहित स्फूर्तिदायक है। इसे अपना साथी समझकर हमेशा अपने साथ रखिये। सवेरे तड़के से आधी रात तक ऐसा कोई भी क्षण नहीं जब आप चाय पीकर चंगे न हो सकें।

भारतीय

वक्त पड़ने पर चाय का सहारा

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 240

LIPTON'S
JAKOOJA

भारतीय चायों में सर्व

लिपटन की

जाकूजा चाय

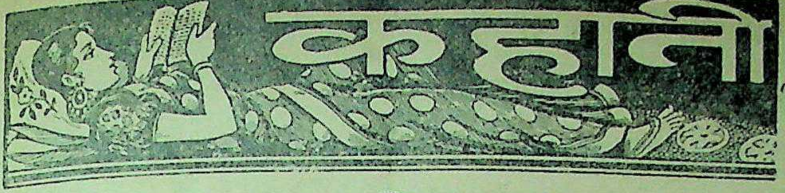

टाइपिस्ट

लेखक, श्री वसन्त भाले

> जीवन के साधारण कामों में भी कभी कभी ऐसी घटनायें घट जाती हैं जिनका प्रभाव हृदय पर पड़े बिना नहीं रहता। मिस वेल्डन के जीवन में वह युवक पहली बार मिला जिसने उसके हृदय को उद्वेलित कर दिया किन्तु अन्त में निराशा के सिवा और कुछ हाथ नहीं लगा। कहानी रोमांचक और हृदय पर प्रभाव डालनेवाली है।

उसे यह आर्थिक स्वालम्बन, नौकरी और स्वतंत्र जीवन ही अधिक पसन्द आता।

आफिस से आते समय मिस वेल्डन ने आज की शाम कैसे व्यतीत करनी होगी इसके बारे में अनेक कार्यक्रम सोच रखे थे। रात को रेडियो पर एक चर्चा थी और एक बड़ा ही विचित्र नाटक ब्राडकास्ट होनेवाला था, इससे उसका कुछ मनोरंजन हो सकता था। उसके बाद लड़ाई की खबरें वह सुनती। इतना सब समाप्त होते होते साढ़े नौ बज जाते और प्रतिदिन की आदत के अनुसार गरम पानी से स्नान कर मुलायम बिछौने पर लेट कर और फिर एक उपन्यास पढ़ते पढ़ते सो जाती!

परन्तु जब उसे 'बस' में जगह मिल जाती तभी यह सब कुछ हो सकता था। पर मनुष्य कुछ सोचता है और होता है कुछ और है! आज दोपहर को हवा में जरा भी आर्द्रता न थी। तेज धूप निकली थी, परन्तु एकाएक आकाश काले बादलों से घिर आया, हवा तेज चलने लगी और बड़े जोर से पानी बरसने लगा!

रास्ते के दूसरी ओर मिस वेल्डन ने नजर डाली। 'बस स्टॉप' के तख्ते के पास बहुत भीड़ थी। सभी बस के मार्ग की प्रतीक्षा कर रहे थे। यह दृश्य देखकर उसके बस में जगह मिलने के सुख-स्वप्न शून्य में विलीन हो गये। भूगर्भ के रेल का स्टेशन बहुत दूर था।

मिस वेल्डन ने बड़ी अशान्ति से रास्ता तय किया। उस जगह 'बस' के बाद 'बस' आती थी पर वहाँ एक भी न ठहरी। वह आगे बढ़ी। अभी सौ कदम भी न चलने पाई थीं कि वह पूरी भींग गई। उसके कृत्रिम घुँघराले बाल बिगड़ गये थे। फिर मिस् वेल्डन दौड़ने लगी क्योंकि उसे पाताल स्टेशन तक पहुँचना था। परन्तु दौड़ते दौड़ते वह एकाएक ठहरी—किसी ने उसके बाहु को स्पर्श किया था!

उसने एकदम मुड़कर देखा। हँसमुख चेहरे का एक युवक उसके पास खड़ा था। फिर उसकी ओर दुर्लक्ष्य कर, वह आगे बढ़ी। उसका हृदय जोर से धड़क रहा था। स्वाभाविक था यह? कब से वह दौड़ रही थी और वह कुछ छ डर कुभी रही थी। वह युवक उसके पीछे पीछे आ रहा था। वह उसके पास आकरकहने लगा—"देखिए, ऐसी

"ओऽऽ वास्तव में सुन्दर है! मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। पर सचमुच वहूँ......" इसके आगे क्या बोले, यह मिस वेल्डन को नहीं सूझा! वह घबरा गई। इन छत्तीस सालों [illegible] युवक ने इस तरह उसके जीवन में प्रवेश नहीं किया था। इसीलिए उसे इस प्रसंग से अत्याधिक आनंद हो रहा था! उसका घबराया हुआ चेहरा देखकर उस युवक ने पूछा—"क्या आप चाय पियेंगी?" मिस वेल्डन ने 'हाँ' कहा "फिर चलिए उधर—आपको वहाँ अधिक अच्छा मालूम होगा।" इतना कहकर वह उसे एक छोटे होटल में ले गया। वहाँ एक टेबुल के पास मिस वेल्डन बैठी थी। उसके सामने रखी हुई कुर्सी पर बैठते हुए उसने गरम चाय और केक्स मँगवाये।

"आपका जाकिट बहुत गीला हो गया है। यहाँ से चाय पीकर जाने तक आप उसे निकालकर सुखा सकती हैं।" और फिर उस युवक के कहने पर उसने चुपचाप जाकिट उतारा और सूखने को डाल दिया। परपुरुष का ऐसा साथ उसके लिए बिलकुल नया था। उस नवीन कल्पना से उसकी विचित्र अवस्था हो गई थी, इसीलिए उस युवक के प्रश्नों का उत्तर देने के बजाय वह जो कुछ कहता था वही चुपचाप करने के सिवा उससे कुछ भी नहीं करते बनता था। उसे भूख लगी थी। चाय केक्स खाकर उसकी दी हुई सिगरेट स्वीकार कर मिस वेल्डन ने उसे सुलगाई।

उसका यह नया मित्र बोलने में बड़ा होशियार था। वह आधे घंटे तक बोलता रहा और फिर एकाएक उसने रिस्टवाच देखी और कुर्सी पर से उठते उठते बोला—"ओ हो! बहुत समय हो गया! मा ने आज मेरे लिए 'मुर्गी' बनाई होगी। मुझे अब जाना चाहिए, आप बैठिए, मैं बिल माँगता हूँ।" ऐसा कहकर वह जाने लगा।

"पर आपका यह कोट मैं वापस कैसे करूँ?" उदास होकर मिस वेल्डन ने पूछा। उसने सोचा कि वह फिर से मिलने का आश्वासन देगा। वह थोड़ी शरमाई।

उसके इस उद्गार पर वह मन में हँसा। "हाँ, सचमुच! मैं तो भूल ही गया था। यह मेरा कार्ड लीजिए। आपका पता मुझे अच्छी तरह से मालूम है।" इतना कहकर उसने हँसते हँसते उससे हाथ मिलाया और चला गया।

वह जिस रास्ते से गया था उस ओर मिस वेल्डन कुछ देर तक देखती रही। जल्दी क्या है? एक मिनट ठहर जाइए! इधर देखिए, यह लीजिए!"

मिस वेल्डन ने अत्यंत तिरस्कारपूर्ण कटाक्ष उस युवक की ओर फेंका। पर उस ओर बिलकुल ध्यान न देते हुए उसने अपना रेनकोट उसे दिया। "थैंक्यू! मुझे ऐसा ही रहना अधिक पसंद है!" मिस वेल्डन ने उसकी इस हरकत का निषेध किया।"

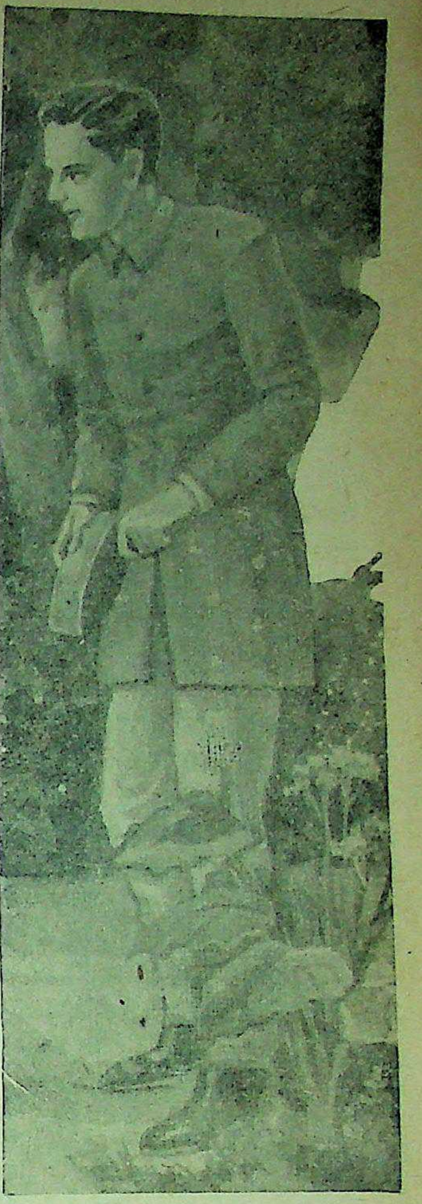

उसने देखा कि मिस वेल्डन ने रेनकोट पहन लिया

"यह क्या? इस ठंड का आप पर बड़ा बुरा परिणाम होगा! नहीं, आप कोट पहन लीजिए!" युवक ने कहा!

"हुँ! पर एकाएक मौत भी आजाय तो बिगड़ा क्या?" निर्विकार मुद्रा से मिस वेल्डन ने उत्तर दिया।

"वाह! यूँही कौन मरना चाहेगा? मुझे मालूम है! लीजिए यह कोट पहन कर अनावश्यक अरिष्ट दूर कीजिए!"

यह सहानुभूति के शब्द थे। स्नेहार्द्र दृष्टि से उसने उसकी ओर देखा और बिना कुछ कहे उसने वह कोट उसके कंधों पर डाल दिया!

"पर आप क्या करेंगे? आप क्या यूँ ही जायेंगे!" कातर स्वर से मिस् वेल्डन बोली "ऊँह! मेरी फिकर न कीजिए! मैंने खुद कपड़े पहने हैं। वा......! बहुत अच्छा! देखा? कितना सुन्दर दिखाता है यह कोट आपको?" रेनकोट को ठीक करते करते उस युवक ने कहा।

सामने की केटली में अभी चाय बची थी, उसने वह चाय पी ली। आफिस से निकलने के बाद जितनी बातें हुईं सभी उसे अपने के समान लगीं। वह विचारों में खो गई।

उस अपरिचित युवक का परिचय नहीं पूछा यह कल्पना मन में आते ही उसने टेबिल पर रखे हुए कार्ड को उठाया। कार्ड पढ़ते ही उसका चेहरा उदास हो गया। वह गंभीर हो गई। उदासीनता और निराशा मुँह पर छा गई! उसने फिर उस कार्ड की ओर देखा। कोई गलती नहीं थी उसके पढ़न में!

उस पर स्पष्ट लिखा था—जॉन ई. ग्रांट, रेनकोट के एजंट।

गोधन और गोरस की उपयोगिता क्यों है ?

हमारा शारीरिक और मानसिक पतन क्यों हो रहा है

लेखिका, श्रीमती रानी चंद्रावती, पीलीभीत

अखिल विश्व में गौ के समान उपकारी अन्य पशु नहीं पाया जाता। यह वह पवित्र विभूति है, जिसका मनुष्य जन्म से लेकर मरण तक उपभोग करता है। मनुष्य-मात्र की दैहिक, भौतिक और आर्थिक उन्नति में गौ और गोरस का विशेष महत्त्व है। गोरस की महत्ता प्राचीन और अर्वाचीन विद्वानों ने निरन्तर मुक्तकण्ठ से स्वीकार की है। वेद की ऋचाओं में गोदुग्ध की महिमा गाई गई है। अथर्ववेद की २।२६।४ ऋचा यह है—

सं सिंचामि गवां क्षीरे समाज्येन बलं रसम्।
सं सिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि
गोपतौ॥

इसका सारांश यह है कि प्रत्येक घर में गो-रक्षा उत्तम प्रकार से की जाये। दूध-घी-मक्खन और छाछ भरपूर हो जिससे (गो-रस से) पोषित मनुष्य हृष्ट-पुष्ट होकर आनन्द से रहें।

पुराणों में गौ का बड़ा पवित्र स्थान रक्खा है। पुत्र-कामना से "नन्दिनी नाम्नी गौ" की राजा दिलीप ने सेवा की थी और उन्हें मनोवाञ्छित फल प्राप्त हुआ था। भगवान् योगिराज कृष्ण का गो-प्रेम भारत का बच्चा बच्चा जानता है। उनका नाम "गोपाल" है। उनकी दूध-मक्खन की चोरी की बाललीलायें हमें आज भी याद हैं। उन्होंने स्वतः गो-सेवा कर गौ, चराकर हमारे सम्मुख गो-सेवा का महान् आदर्श रक्खा है। भक्त सूरदास अपने गोपाल से कहलाते हैं—

"मैया मोरी मैं नहिं माखन खायो।
भोर भई गैयन के पीछे मधुबन मोहिं पठायो।"

संसार तथा ममता-त्यागी ऋषि-मुनियों की पर्णकुटी तक में गो-पालन आवश्यक समझा जाता था। वे सतोगुण प्रधान गो-दुग्ध का पान कर जीवन यापन करते थे। यज्ञादि में, पूजा-अर्चना में और अतिथि-सत्कार में गो-रस का व्यवहार करते थे। इन्हीं महात्माओं के यहाँ कामधेनु, कपिला, सुरभि, नन्दिनी, आदि गायों की निरन्तर सेवा होती थी।

ऐतिहासिक काल में भी गो-धन का बाहुल्य था। प्रत्येक राज्य में गो-धन राज्य की एक श्रेष्ठ निधि समझी जाती थी। गोशाला के संचालन के निमित्त इस विद्या में चतुर गण रक्खे जाते थे। गौ और अश्व-पालन पहचान आदि में बहुधा राजाओं को स्वतः भी ज्ञान होता था। धनाढ्य नागरिकों के यहाँ हजारों गायें पाली जाती थीं। साधारण से साधारण गृहस्थ के यहाँ भी एक-दो गाय अवश्य द्वार पर बँधी रहती थी। दूध घी-दही का प्रचुर मात्रा में व्यवहार होता था। मनुष्य-समाज ने गौ को माता की उपाधि से विभूषित किया था। आज-कल भी हर शुभ कार्य में गौ तथा गो-रस की आवश्यकता सर्वप्रथम है। कन्या को दहेज में, ब्राह्मणों को यज्ञ श्राद्धादि के अवसरों पर गो-दान देने की प्रथा आज भी प्रचलित है। यहाँ तक कि मरते हुए मनुष्य-द्वारा अन्तिम अवसर पर गो-दान कराया जाता है। इस लोक की वैतरणी पार करने का साधन भी गो है ही और परलोक की भी ऐसी मान्यता चली आती है।

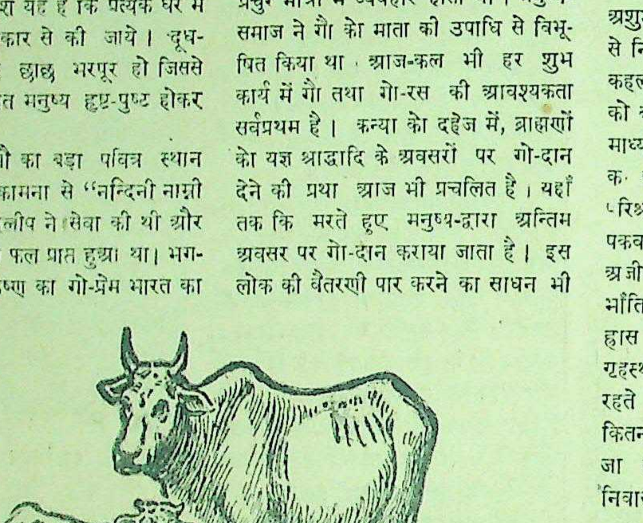

विलायतवाले सर्वगुणसम्पन्न दूध-मक्खन आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करते हैं। हानिप्रद दूध बेचना कानूनी जुर्म है। दूध में मनुष्य-जाति के पोषक सर्वोत्तम द्रव्य वर्तमान हैं। यह वहाँ के विज्ञान-वेत्ताओं ने भाँति भाँति के प्रयोगों-द्वारा सिद्ध कर दिया है। कुछ पिल्लों पर प्रयोग किया गया। इससे यह ज्ञात हुआ कि शुद्ध दूध पर पलनेवाले पिल्ले उन अन्य पिल्लों से जिन्हें मांस का सूप-रोटी आदि पर रक्खा गया था अधिक शक्तिशाली साबित हुए। पाश्चात्य विद्वानों ने दूध की इतनी महिमा मानी है कि उसे सुखाकर टीन के डिब्बों में बन्द कर उन स्थानों और अवसरों पर जहाँ ताजा दूध अलभ्य हो पहुँचाने की व्यवस्था की है। दूध के ठोस पदार्थ से वह लोग बटन-कंघा आदि दैनिक व्यवहार की वस्तुएँ भी बनाते हैं!

हीन भाग्य तो हमारे गोपालक-गोसेवक भारत का है। सदियों से दासता में लोग यथार्थ गो-सेवा भूल गये हैं। फिर भी गो-पूजा की विधि नाम-मात्र ही में सही, अभी अवशेष है। हम लोग तो गोपाष्टमी को गौ की रोली-चावल से पूजा कर अपने कर्त्तव्य की चरम सीमा मानते हैं। गौ की नस्ल का, चारे-दाने का और गोचर भूमि की जरूरत का ध्यान नहीं रक्खा जाता है। हाँ, इतना कदाचित् हर घर में आज भी होता है कि गौग्रास की रोटी सर्वप्रथम बनाई जाती है। यह रीति क्या इसका द्योतक नहीं है कि हमारी गो-सेवा-भावना प्रधान थी और गो को खिला-पिलाकर बाद में हम भोजन करते थे? मगर एक रोटी-मात्र से ही गाय का आहार पूरा नहीं हो जाता। गाय के खान-पान के लिए भूसा, हरी घास और उचित रूप से दाना तथा खली ही चाहिए।

वर्तमान भारत में धनहीन ही नहीं धनाढ्य व्यक्तियों के बालकों के लिए भी शुद्ध परिमार्जित गो-दुग्ध दुर्लभ वस्तु है। जीवन के आडम्बर को जुटाने में लाखों-करोड़ों की निधि का व्यय हो जाता है। डाक्टरों की फीस और दवा में प्रचुर धन व्यय किया जाता है किन्तु उपयोगी गो-दुग्ध का प्रबन्ध नहीं होता। बहुसंख्यक जनता अशुद्ध मिश्रित घी और अब तो "वनस्पति" से निकला हुआ चिकना पदार्थ जो घी कहलाता है, उससे बने हानिप्रद पकवानों को बड़ी रुचि से खाती है। ऐसे अशुद्ध माध्यम से बनी मिठाई खाकर और खिलाकर आनन्द मनाती है। पहले तो शारीरिक परिश्रम की न्यूनता ऊपर से अशुद्ध गरिष्ठ पकवान के भोग का परिणाम अजीर्ण और अजीर्णजन्य प्रायः सभी रोग होते हैं इस भाँति हमारे राष्ट्र की अमूल्य निधि का ह्रास होता जा रहा है। जब कि वैभवशाली गृहस्थ गो-सेवा और गोरस से उदासीन रहते हैं। तब मध्यमवर्ग के घरों में दूध कितना अलभ्य है। इसका अनुमान किया जा सकता है। गरीब विशेष कर शहर-निवासी परिश्रमी जनता की और भी गई

बीती दशा है। बहुत से जन्म से मृ
ग-दुग्ध का स्वाद नहीं जानते।
में गो-सेवा की अ'श की जाती है
वहाँ भी गोचर भूमि के न होने से
चारे की महँगी आदि से गो-धन की
हीन अवस्था है।

वस्तुतः वर्तमान समय में गो-
की नितान्त आवश्यकता है। बहु
की ओर से गो-सेवा, गो-नस्ल-सु
गोचर भूमि आदि के लिए
विविध प्रकार की सुविधायें,
शिक्षा दी जाती है। परन्तु परत
हम विदेशी सत्ता से क्या आशा क
हैं? ऐसी परिस्थिति में हमें स्वतः
त्रुटियों की तरफ ध्यान देना है
उनको सुधारने के लिए हमें
प्रयत्न करना होगा। भारत में
सभी लोगों का कर्तव्य है कि वे
पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें।
मुसलमान, अमीर और गरीब, हर
अपनी सामर्थ्य के अनुसार गौ
प्रयत्न करना चाहिए। इससे एक
दो काज होंगे। आर्थिक लाभ और
सुधार के साथ साथ राष्ट्र-सेवा भी

कार्ड के पीछे रेनकोट बनानेवाला फर्म का नाम छपा था। और लिखा भी था—

"आपको यह रेनकोट पसंद आया तो रख लीजिए और हमें एक पौंड दस शिलिंग का चेक भेज दीजिये, पसंद न आने पर फोन से कहिए, हम उसे वापस ले सकते हैं!"

इसे पढ़कर मिस वेल्डन चकित रह गई, पाँच मिनट विचार कर उसने अपना मनीबेग खोला और चेकबुक बाहर निकाला।

और उस रात मिस वेल्डन घर न जाकर सिनेमा की ओर चली गई।

आरोंदा
नीलगिरि

स्थापना १९०६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, आदि बीमारियों से बचानेवाला।

१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=)
युकलिप पेन बाम तथा दाद का
कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये
बेंगल इम्युनिटि
बाइ-डाइस्टेज
प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत
BI-DIASTASE

भोजन को पचाने योग्य बनाकर
बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० :: कलकत्ता

मारवाड़-यात्रा के संस्मरण

लोकपरिषद् का संगठन और उसका व्यापक कार्य

लेखक, श्री कन्हैयालाल वैद्य

> श्री कन्हैयालाल वैद्य देशी राज्यों की राजनीति के प्रमुख ज्ञाता तथा रियासती नेता हैं। आपने लोकसेवा की दृष्टि से रियासती जनता की बड़ी लगन और त्यागपूर्वक सेवा की है। इस लेख में आपने मारवाड़ यात्रा का संस्मरण लिखा है जिससे यह पता चलता है कि मारवाड़ की वर्तमान राजनैतिक और सामाजिक स्थिति क्या है और लोकपरिषद् तथा प्रजामंडल किस व्यापक रूप में लोकहित का कार्य कर रहे हैं।

[illegible] के प्रमुख राजनैतिक नेता श्री कन्हैयालाल वैद्य।

[illegible] १९४२ में ५ जून को जब [illegible] की जनता अपनी जिम्मेदार [illegible] की लड़ाई लड़ रही थी, एक [illegible] जोधपुर रहकर जनता के उस [illegible] आन्दोलन को मैंने देखा और [illegible] किया था। जुलाई ४२ में सर [illegible] की सरकार ने एक वर्ष के [illegible] राज्य से मुझे निर्वासित कर [illegible]। उसके बाद तीसरे वर्ष पिछली [illegible] को मारवाड़ के जननायक [illegible] जी व्यास के साथ फिर [illegible] और १५ दिन तक श्री [illegible] लोकपरिषद् के प्रमुख [illegible] मथुरादास जी माथुर, [illegible], मारवाड़ के कवि [illegible] जी पुरोहित, हरि-[illegible] साथियों, बहिनों [illegible] मारवाड़ के कस्बों [illegible] मारवाड़ की आज [illegible] किसान-मजदूरों की दशा तथा [illegible] जन-संगठन का जो चित्र [illegible] स्मरणीय है।

[illegible] ने आज के जोधपुर का [illegible] हुआ दिखाई दिया। गरम [illegible] की मिठाइयाँ, शक्कर [illegible] नहीं मिलती हैं। राशनिंग [illegible] का उपयोग करनेवाला [illegible] की समस्या से परेशान है। [illegible] और मुनाफाखोरी का जोर [illegible] पर लोगों की निगाह है। [illegible] मारवाड़ भाषण-स्वतन्त्रता से [illegible] छोटी छोटी और बीकानेर, [illegible] बड़ी-बड़ी रियासतों से [illegible] हुआ है। जहाँ तक जोधपुर की [illegible] और जनता के सभापति [illegible] जयपुर-रियासत से भी [illegible] हुआ है। जोधपुर की जनता [illegible] आन्दोलन में भी सङ्गठन, [illegible] स्वतन्त्रता थी और जनता [illegible] मुकाबला करके भी अपने [illegible] अधिकारों का उपयोग किया [illegible] आज राजपूताने की [illegible] रियासतों में जोधपुर [illegible] अधिक शक्तिशाली और [illegible] प्राप्त किये हुए हैं। [illegible] में राजपूताना की अलवर, [illegible] कोटा रियासतों को छोड़कर [illegible] में जनता का इतना [illegible] नहीं मिलता है [illegible] लोकपरिषद् [illegible] सन् [illegible] और [illegible] के [illegible] संगठन जगह जगह [illegible] है। किन्तु [illegible] में [illegible] है, [illegible] लोक-[illegible] प्रदेश है। इसकी जन-संख्या २५ लाख के करीब है। इसकी ८३ प्रतिशत जमीन जागीरों और सामन्तों के कब्जे में है। शिक्षा की कमी है। १ लाख १३ हजार जनता ही शिक्षित है। खालसा में ही शिक्षा का थोड़ा प्रचार है। जागीरों में तो नाम-मात्र की शिक्षा है। ८३ प्रतिशत जागीरों में १ प्रतिशत जनता भी शिक्षित नहीं है। आश्चर्य की तो बात यह है कि सारे राज्य में जोधपुर को छोड़कर कहीं भी हाई स्कूल नहीं है। यही हाल अस्पतालों का है। सारे मारवाड़ में जहाँ ४,२०० गाँव हैं, केवल २४० स्कूल हैं जब कि केवल २० अस्पताल हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य-सुधार, चिकित्सा, म्युनिसिपैलिटी का अभाव है। हरिजनों की दशा गिरी हुई है। जगह जगह हरिजनों को पीने को पानी भी सवर्णों द्वारा नहीं मिलता है। जागीरों में तो पूरा अन्धेर हैं। ८-१० हजार की आबादी के गाँवों में भी सड़क, सफाई, रोशनी का प्रबन्ध नहीं है। म्युनिसिपैलटी नहीं है। अस्पताल नहीं है। शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं है। लोग बाग के जुल्मों से और बेगार से जनता त्रस्त है। हम जहाँ जहाँ नागौर, मूंडवा, पाली, पीपाड कस्बों और गाँवों में पहुँचे हैं, वहीं यह बातें सुनने देखने मिली हैं।

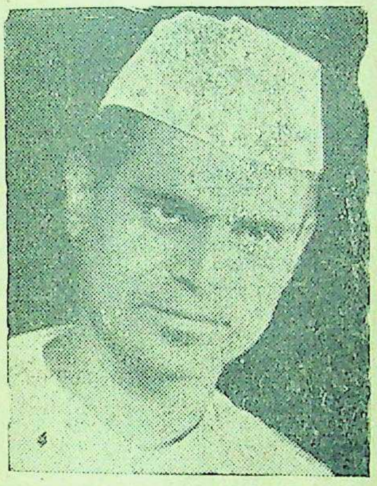

राजस्थान के प्रसिद्ध नेता लोकनायक श्री जयनारायण व्यास।

पाली मारवाड़ का कपड़े का औद्योगिक केन्द्र है। किन्तु मिल-मालिक मजदूरों पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। उनकी यूनियन नहीं बनने दी जा रही है। मामूली माँगें करने पर अगुवा मजदूरों को मिल से निकाल दिया जाता है और आतंक फैलाने के लिए पुलिस की सहायता से मजदूरों को राज्य से बाहर भी कर दिया जाता है, कानून और व्यवस्था मिल-मालिकों ने अपने हाथ में ही ले रक्खी है। मजदूरों के संगठनों को रजिस्टर करने, व उनको काफ़ी वेतन दिलाने और न्याय करने की व्यवस्था हकूमत को करनी चाहिए। जागीरों में सेटलमेंट की समस्या तथा लाग-बाग और बेगार की समस्या किसानों के लिए मुख्य बनी हुई हैं। राज्य के खालसा और जागीरों के गाँवों में तेल शक्कर और कपड़े की समस्या भी भयंकर रूप लेती जा रही है। मुनाफाखोर और काले बाजार के चोर व्योपारी जनता को लूट रहे हैं। इन सब समस्याओं पर राज्य को ध्यान देने की जरूरत है।

हम मारवाड़ में जहाँ जहाँ गये जनता में, मध्यम श्रेणी के लोगों में किसानों और मजदूरों में लोकपरिषद् जिन्दाबाद का नारा सुनाई दिया। जनता ऊपर की समस्याओं का हल करने के लिए लोकपरिषद् से जगह जगह आशा रखती दिखाई दी। लोकपरिषद् के नेताओं पर जनता का पूरा विश्वास दिखाई दिया। नागौर के जिला-सम्मेलन और जगह जगह लोकपरिषद् के कार्यकर्ताओं का सम्मान फूल-हार, नारों, २१ बैल की गाड़ी के जलूसों, सभाओं, सम्मेलनों आदि में हजारों मारवाड़वासियों को शरीक होना इस बात का प्रभाव है कि मारवाड़ की जनता लोकपरिषद के साथ है और जिम्मेदार शासन कायम करने के लिए लोकपरिषद् के झण्डे के नीचे संगठित होती जा रही है।

हम जहाँ जहाँ मारवाड़ में गये लोकपरिषद् की सभाओं में हरिजनों, मुसलमानों, किसानों और मजदूरों तथा अन्य वर्गों के लोगों को शरीक पाया। मुसलमानों का विश्वास भी लोकपरिषद् के नेताओं और संस्था पर उतना ही है जितना अन्य वर्गों का। यही कारण है कि जोधपुर खास में म्युनिसिपैलिटी में मुस्लिम सदस्यों का सहयोग लोकपरिषद् को प्राप्त हैं। लोकपरिषद् की इस प्रतिष्ठा को देख कर नागौर सम्मेलन में आये हुए अजमेर के कांग्रेस नेता श्री अब्दुलशकूर साहब ने भी मारवाड़ लोकपरिषद् के संगठन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी।

लोकपरिषद् की ख्याति केवल राजनैतिक क्षेत्र में ही नहीं है किन्तु गरीबों की झोपड़ियों तक भी। उसकी ख्याति इसलिए भी है कि लोकपरिषद् ने पानी बाढ़, मलेरिया बुखार, बीमारियों और अभी अभी समडीद में नेत्र-यज्ञ का केम्प खोल कर मारवाड़ की गरीब जनता की जो सेवा सहायता की है। ऐसे सेवा-कार्यों में राज्य के मेडिकल अफसर डाक्टर मदान की सेवाएँ लोकपरिषद् को मिलती रहती हैं। जब कि उसके पास मूक जन-सेवक सन्त लाडाराम जी, भाई भँवरलाल जी और श्रीमती नेमी बाई जैसे सेवकों का एक दल है और जहाँ जहाँ हम गये हैं इन सेवकों की चर्चा जनता ने मुक्तकण्ठ से की है। मारवाड़ की जनता को जहाँ ऐसे मूक सेवक और श्री हरीन्द्रकुमार चौधरी श्री हंस जी कलम के द्वारा लोकपरिषद् का सन्देश सुना रहे हैं। वहाँ मारवाड के कवि श्री

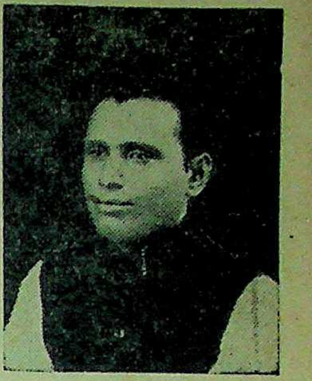

राजस्थान के प्रमुख राजनैतिक नेता श्री हीरालाल शास्त्री।

सुमनेश और कवि श्री गणेशलाल जी और अन्य साथी जोरों से लोकपरिषद् का सन्देश मारवाड़ में फैला रहे हैं।

सन् ४२ में मारवाड़ की जन-जागृति के साथ साथ महिला-जागृति के जो अभूतपूर्व दृश्य दिखाई दे रहे थे वे दृश्य आज भी जगह जगह दिखाई दे रहे हैं। मारवाड़ की नारी-जाति में जागृति का शंख फूँकनेवाली मारवाड़ की माता श्री व्यास जी की माता गोपीबाई व्यास, व्यास जी की स्त्री सौ० गौरजा देवी व्यास, कन्या छोटीबाई श्री सुमनेश की माता श्रीमती गौरजा देवी जोशी, सर्वश्री सूरजकोर माथुर, सौ० सरला देवी व्यास, सौ० रूपकुमारी व्यास, सौ० दुर्गा देवी व्यास, सौ० लक्ष्मी देवी व्यास, सौ० सिरेकुँवर बोहरा, सौ० पार्वती देवी चौधरी, श्री हंस जी की माता, श्री प्रेमावती देवी जी आर्य और बहिन श्री यशोजकुमारी व सरोजकुमारी आदि के साथ जहाँ जहाँ पहुँची हजारों स्त्रियाँ एकत्रित हुई हैं और इन देवियों ने मारवाड़ में स्थाई संगठन बनाने का निर्णय किया है।

कमजोर और समय साधक लोग लोकपरिषद के संगठन से दूर हटते जा रहे हैं और नये नये कार्यकर्ता लोकपरिषद् के संगठन-कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। बम केस के बन्दी, श्री सुधालकर-द्वारा सिफारिश किये शासन-सुधार, जागीरी-सुधार, मजदूर-किसान समस्याएँ लोकपरिषद् के कार्यकर्त्ताओं के सामने हैं। आशा करनी चाहिए कि मारवाड़ की जनता लोकपरिषद् के द्वारा अपने अधिकार प्राप्त करेगी।

मारवाड़ पर आज सारे राजपूताने की निगाह है क्योंकि उसे श्री जयनारायण जी व्यास जैसे तपे हुए त्यागी जननायक प्राप्त हैं। इसी प्रकार मारवाड़ की जनता महाराजा जोधपुर और उनकी सर डोनाल्ड फिल्ड-द्वारा सञ्चालित सरकार से भी आशा रखती है क्योंकि सर डोनाल्ड फिल्ड ने यह घोषित किया था कि:—

कोई भी सरकार तब तक अच्छी नहीं कहला सकती जब तक कि वह जनता के सहयोग, रजामन्दी और नेकनीयती के खुले दायरे पर निर्भर न हो" किन्तु यह तभी सम्भव है जब लोकपरिषद् का सहयोग सरकार ले।

मुफ्त
डायरी फाउन्टेनपेन १९४५
आपने [illegible]
[illegible]
निश्चय किया है [illegible]
इम्पीरियल [illegible] स्टोर्स
के० सा० अमृतसर

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री शमीम कौन हैं ?

अभिनय तथा अभिनय-कला के सम्बन्ध में मेरी मुला ात

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

फिल्म-संसार की प्रसिद्ध अभिनेत्री मेहताब ने कई फिल्मों में बड़ा आकर्षक अभिनय किया है।

पिछले दिनों मैं बम्बई गया था। वहाँ फिल्मी-संसार की विख्यात अभिनेत्री शमीम से मिलने के लिए मैं उनके मकान पर पहुँचा। उस वक्त वे अपने कमरे में बड़े आइने के सामने काले लम्बे कुन्तलों को सँवार रही थीं। नीली सलवार पहिने और लाल रंग की ओढ़नी ओढ़े हुए थीं। शायद पीली धारीदार पञ्जाबी फैशन की कमीज पहने हुई थीं। इस ड्रेस में वह बहुत ही सुन्दर मालूम पड़ रही थीं। शमीम का इतना आकर्षक रूप मैंने फिल्मों में नहीं देखा था, जितना मुझे यहाँ देखने को मिला। आपका शरीर गठा हुआ, चेहरा गुलाब के फूल के समान समझना चाहिये। आपके कपोलों पर गुलाबीपन अधिक है और यही गुलाबीपन शमीम के सौंदर्य में चार चाँद लगा देता है।

आपके कमरे में बहुत तड़क-भड़क नहीं थी। सादगी अधिक नजर आ रही थी।

शमीम ने अब तक बहुत से फिल्मों में काम किया है। आपका सबसे बढ़िया काम बांबे टाकीज-द्वारा निर्मित चित्र 'ज्वार-भाटा' में हुआ है। इस चित्र का आपका अभिनय मानव हृदय में एक 'रोमांच' पैदा कर देता है। "गौरी" फिल्म में भी आपका अभिनय विशेष आकर्षक है। आजकल आप "करदार-प्रोडक्शन" के 'पहिले आप' चित्र में काम कर रही हैं। यह चित्र सामाजिक है। इस चित्र में शमीम को एक कड़ी भूमिका में काम करना पड़ रहा है। आपकी उम्र इस वक्त सत्ताइस साल के लगभग है किन्तु आपका शारीरिक गठन ऐसा है कि देखने में सिर्फ अठारह साल की मालूम पड़ती हैं। आप बहुत ही मिलनसार हैं। बात करने का सलीका भी आप खूब जानती हैं। आपका प्राइवेट जीवन बहुत ही सरल और सादा है। मेरी आपसे क्या वार्ता हुई, उसे मैं यहाँ संक्षेप में दे रहा हूँ।

प्रश्न—आजकल पब्लिक में सिने-कलाकारों का जीवन बहुत ही उच्चकोटि का क्यों नहीं समझा जाता? क्या वास्तव में कलाकारों का "लाइफ-स्टेन्डर्ड" इतनी गिरी हुई हालत में होता है?

उत्तर—पब्लिक चाहे जो समझे, कौन उन्हें रोक सकता है? लेकिन कोई भी व्यक्ति असलियत के तह तक जाने की कोशिश नहीं करता। वास्तविकता को बिना जाने गलत धारणा बना लेना, इसका कौन जिम्मेदार हो सकता है? स्क्रीन पर हमारे जीवन का जो चित्रण आता है, वह हमारे प्राइवेट जीवन का आदर्श नहीं हो सकता। हमारी वास्तविक जिन्दगी और स्क्रीन के जीवन इन दोनों में महान अन्तर होता है। हमारा प्राइवेट जीवन ही कला के धरातल पर घूमता रहता है। आज जो हमारी खिल्ली उड़ाते हैं उनमें से कितनों ने हमारे जीवन को नजदीक से देखने का प्रयत्न किया है? कितनों ने हमारे जीवन को सही रूप से जानने की इच्छा प्रकट की है? मैं तो यही कहूँगी कि वास्तविकता को बिना जाने ये समाज के ठेकेदार अपनी आवाजें बुलन्द किया करते हैं। इनकी नजरों में सिनेमा-संसार "हुस्न का बाजार" "विलासिता की हाट" है। अपना उल्लू सीधा करने के लिए वह हम पर तोहमद लगाया करते हैं। हम लोगों को इतनी फुर्सत नहीं कि हम उन लोगों की नीचता पर ध्यान दें।

प्रश्न—सिने कलाकार का "पहिला फर्ज" क्या है? "पहिले फर्ज" से मेरा मतलब यह है कि कला के क्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व किन किन आदर्शों का ख्याल रखना जरूरी है?

उत्तर—मेरी समझ में सिने-कलाकार का सबसे पहिला फर्ज यह है कि वह इन्सान की जिन्दगी को सही तरीके से समझने की कोशिश करे। इन्सान की जिन्दगी का समझना कोई आसान काम नहीं है। जीवन-अध्ययन करने के लिए हमें जिन्दगी की प्रत्येक गली में घुसना होगा। गली के मोड़ पर खड़े रहने से काम न चलेगा।

फिल्म-अभिनेत्री बासन्ती जो सुन्दर गायिका भी हैं।

इसलिए सिने-कलाकार का यह पहि है कि वह इन्सान की जिन्दगी की को सँभल कर पलटे हर सफे पर व्यक्तित्व की छाप भी लगाता जाय, हाँ, छाप लगाने में कला को संकी गली में न ले जाय, यही ख्याल र आवश्यकता है।

प्रश्न—आप किस ढंग के प्रे भूमिकाओं में अभिनय करना पसन्द हैं और क्यों?

उत्तर—इस सम्बन्ध में मुझे है कि मैं प्रेम के उन पहलुओं चाहती हूँ जिनमें हसरतों की नहीं तोड़ दी जाती। जिन्दगी के उमंगों की आकर्षक रेखाओं से दुनिया का चित्र बनाया जाता है और दुनिया में चार आँखों के सम्मेलन से मादकता की लहर फूट निकलती है शुष्क न होने पाये इस भावना को फिल्मों में कायम रक्खा जाता है, मुझे बेहद पसन्द है। इसलिए कि मैं आदर्शवादियों में नहीं हूँ, जो कि को खोखला करके उत्थान के बढ़ना चाहते हैं। जिन्दगी में सरस सुखाकर तरक्की का पौदा लगाना मैं उसूल के खिलाफ समझती हूँ। इस के प्रेम की रोल में मैं काम करना ठीक नहीं समझती।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षि)

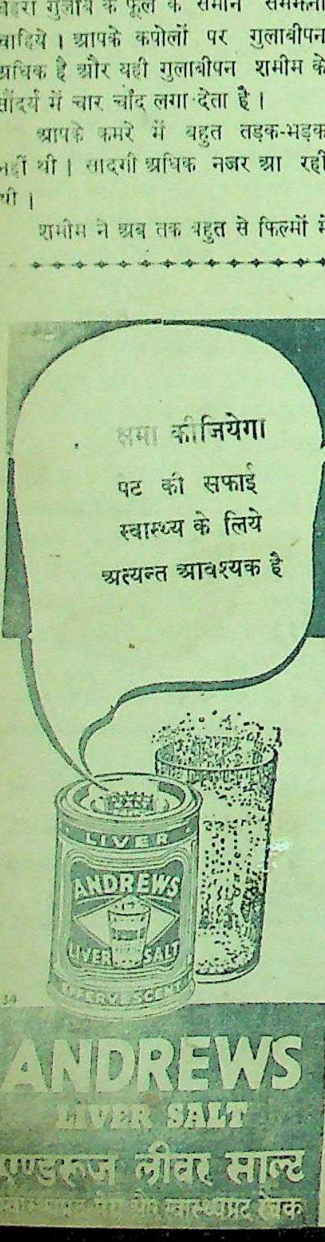

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन, स्वीट, खाकर देखें।

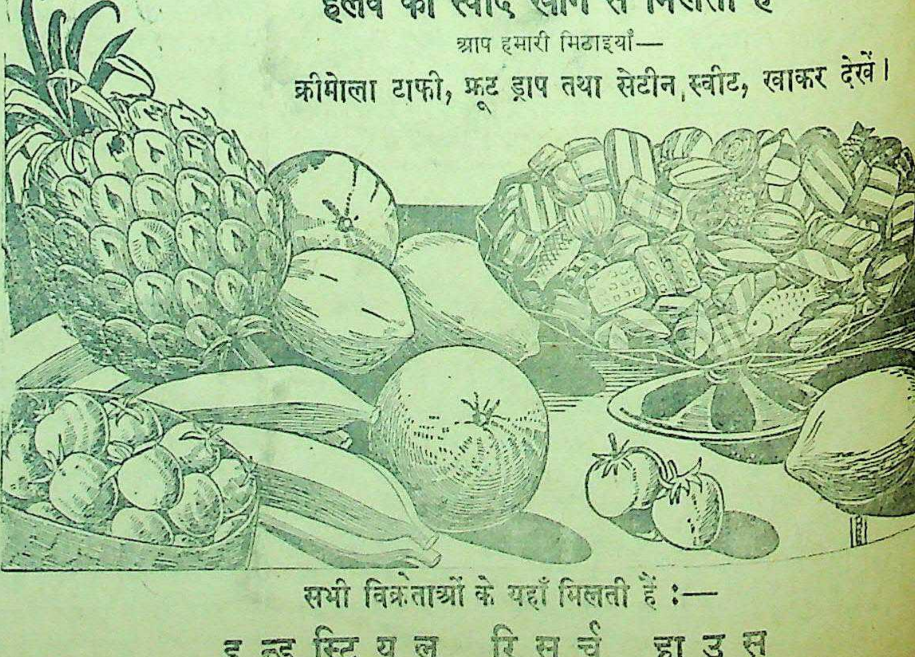

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

बासन्ती जो सुन्दर
नी हैं।

र का यह पहिला
ी जिन्दगी की
हर सफे पर
ी लगाता जाय,
कला को संकी
यही ख्याल रखं

क्स ढंग के प्रेम
ाय करना पसन्द

य में मुझे
न पहलुओं के
हसरतों की
। जिन्दगी के
रेखाओं ने
ाया जाता है और
ावों के सम्मेलन से
फूट निकलती है
ये इस भावना को
रखा जाता है, मुझे
इसलिए कि
हीं हूँ, जो कि
के उत्थान के
जिन्दगी में सरस
पौदा लगाना मैं
समझती हूँ। इस
में काम करना
।
लेखक-द्वारा सुरक्षित)

देखें।

स्वास्थ्य और व्यायाम

गर्मी में स्वास्थ्य उपाय
हमको कैसे रहना चाहिए

सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

अपेक्षा गर्मी में खान-पान में विशेष सावधान रहने है। यहाँ हम कुछ पालनीय हैं।

चार-पाँच बजे उठकर हो किसी मैदान, जंगल शुद्ध वायु-सेवन के लिए टहलते समय दीर्घ श्वास और सुन्दर आरोग्यवर्द्धक टहलने से लौटकर खूब रगड़-रगड़कर स्नान करना

दूध या दही की लस्सी की ठंडाई लेनी चाहिए स्थान पर मुनक्का अथवा का प्रयोग किया चीनी से बचना अत्यन्त है। यदि हो सके तो गर्मी एक बार शाम को किया ग्यारह बजे कोई सा पपीता, नारंगी, चाहिए। भोजन में पदार्थ, अधिक चीनी की वस्तुएँ, आदि निषेधात्मक इनके स्थान पर चोकर- बिना पालिश का दही, छिलकेदार दाल चाहिए जो लोग एक नहीं रह सकते वे दो बार सवेरे का भोजन मात्रा अन्यथा दोपहर काटना

धूप-स्नान लेकर पेड़ू-स्नान है। गर्मी में धूप से न धूप पसीने के रूप में निकालकर शरीर की कम कर देती है।

यथासम्भव दोपहर को न डालनी चाहिए। ऐसा बिस्तर पर लेटते ही और अनिद्रा के रूप में

आदि का प्रयोग भी है। ये उलटे शरीर में इनके स्थान पर फलों का है।

विशेष सताती है, उन्हें ठंडी गीली पट्टी तमाम पर चढ़ानी चाहिए गर्मी कम करने के लिए समय पैर का गर्म स्नान किया जाय।

से हैज़ा आदि रोग पेट को साफ़ रखना बहुत हो जाने पर उपवास करना, जल पीना एनीमा-द्वारा करने से वह सहज ही चला ठंडे जल के साथ केवल भी अचूक औषधि सिद्ध

कोई गुण नष्ट नहीं होता!

पूरी तरह पकने से पहले नारियल तोड़ लिए जाते हैं। अतः उन्हें खोलने से रस गिर कर व्यर्थ जाता है। डेसीकेटेड कोकोनट की प्रणाली में पकने से पहले नारियल तोड़े नहीं जाते। इससे सारा रस और पोषक तत्व उसमें जम जाते हैं।

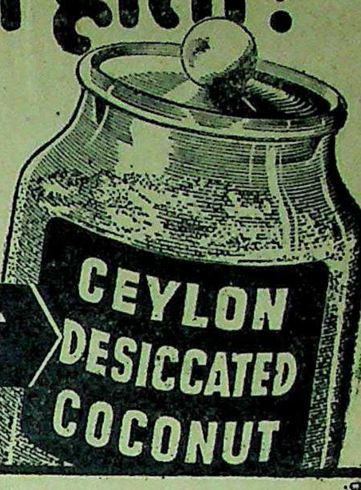

इसमें आपको सब तत्व मिलेंगे

नुस्खों, नमूनों और व्यापारियों के नाम के विवरण के लिए लिखिए:
सीलोन ट्रेड कमिश्नर फ़ार इंडिया, सीलोन हाउस, ब्रुस स्ट्रीट, बम्बई
सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रचारित

प्रत्येक वस्तु कम बरतिए

-आप ख़ुद फ़ायदा उठाइए

-देश को भी फ़ायदा पहुँचाइए

काग़ज़ बचाइए।

छोटी पर्चियों से काम चला लीजिए। पुराने लिफ़ाफ़ों को फिर से काम में लाइए।

अपने देश के ग़रीबों के लिए त्याग कीजिए। आज कल माल और साधनों की बहुत कमी है। प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अपने आप हर चीज़ थोड़ा कम बरते, जिससे दूसरे लोग उससे बिलकुल वंचित न रह जायँ। देश के प्रति यही कर्त्तव्य है।

ऐसे अवसरों से लाभ उठा कर आनन्द प्राप्त कीजिए। आत्म संयम के प्रत्येक कार्य से कुछ पैसा बचता है। ऐसी बचतों के लिए किफ़ायत से काम लीजिए।

दावतें कम दीजिए।

भोजन बरबाद न कीजिए-
यह देश की सेवा होगी।

रस्सी-डोरा बरबाद न कीजिए। ये बहुत महँगे और कम हैं।

बच्चों के पुराने खिलौने मरम्मत कर लीजिए। नये मत ख़रीदिए।

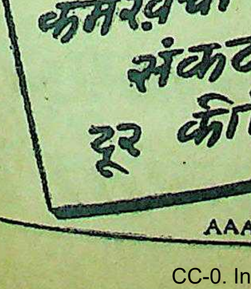

टेलीफ़ोन की ट्रंक-काल कम कीजिए।

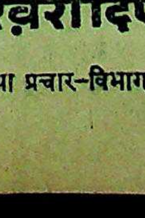

तेज़ रफ़्तार या ज़्यादा बोझ या कम हवा से टायर ख़राब न कीजिए।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

AAA 1 Hindi.

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

विज्ञान-वार्ता

बिना पारिश्रमिक के वस्त्रों की सफ़ाई

अमेरिका के न्यूयार्क शहर में एक ऐसी वस्तु का प्रदर्शन किया गया है जिसका उपयोग प्रत्येक गृहस्थ के लिए अत्यन्त आवश्यक है। एक सफेद द्रव-पदार्थ जिसको 'ड्रैक्स' कहते हैं तैयार किया गया है। इस पदार्थ से हर प्रकार के सूती वस्त्र साफ हो सकते हैं। युद्धोपरान्त इस नवीन आविष्कार का प्रचलन बढ़ जायगा। इस पदार्थ को पानी में घोलकर उसमें गन्दे कपड़े डाल देने पड़ते हैं। थोड़ी देर बाद उसे निकालकर और पानी से धो देने पर उनमें वही स्वच्छता और चमक आ जाती है।

* * *

अध्ययन की नई पद्धति

संसार में शिक्षा की नई नई पद्धतियाँ और पाठ्यक्रम बन रहे हैं। कैम्ब्रिज के टेकनोलोजी इंस्टीट्यूट में पाठ्यक्रम की एक नवीन प्रणाली का प्रारंभ किया गया है। उस पाठ्यक्रम में वस्त्र-कला-अनुसन्धान, भोजन विज्ञान तथा विद्युत्कलायें हैं। इस कार्य के लिए नई नई विज्ञानशालायें होंगी जिनमें युद्ध-शिक्षा का भी प्रबन्ध होगा। वस्त्र-अनुसन्धान को काफी आगे बढ़ाया जायगा। विज्ञान-द्वारा सूतों के अनुसन्धान और खोज की मुख्य शिक्षा होगी। भोजन-विज्ञान के अध्ययन में युद्ध के पश्चात् भोजन उत्पादन समस्या का प्रथम स्थान रहेगा। इस शिक्षा में अच्छे से अच्छे भोजन पदार्थ की खोज की जा रही है, जिससे भोजन का स्वाद न बिगड़ने पावे, इसका ध्यान रखा जायगा। भोजन की तैयारी में समय की बचत आदि विषय इसके अंदर होंगे। समय और मौसम के कारण भोजन में कोई खराबी न पैदा हो यह विषय भी अछूते न बचेंगे। भोजन-विज्ञान का कोर्स ५ वर्ष का होगा। इस समय के भीतर विद्यार्थी कुछ दिन तक संयुक्तराष्ट्र में बितायेंगे।

विद्युत्कला की नई शिक्षा-पद्धति में टेलीफोन-द्वारा वार्तालाप करने के प्रयोग पर विशेष जोर दिया जायगा। विद्यार्थी अपने कुछ समय को फिलाडेलफिया के फिल्को कारपोरेशन में बितायेंगे। वहाँ उन्हें इसका प्रैक्टिकल ज्ञान कराया जायगा।

* * *

समुद्रजल का खारापन गायब

न्यूयार्क के एक पत्र में एक नये यंत्र के आविष्कार का समाचार छपा है। यह यंत्र समुद्रजल को बिजली के लिए प्रयोग में लाते हुए सूर्य-किरणों द्वारा पीने लायक मीठा बना लिया गया है। इस यंत्र का नाम "सनस्टिल" (सूर्य यंत्र) है। यह यंत्र जेब के ढंग के नीले धातु में रहता है, जिसमें एक पौंड (आध सेर) पानी आ सकता है। यह यंत्र रबड़ के लचीलेपन से बना हुआ होता है। एक बड़े थैले में ४० या ५० षड्भुजीय आकृतिवाले काले जल-शोषक होते हैं। ये प्रत्येक नाप में २½ इंच लम्बे होते हैं। जल-शोषक वस्तुएँ नमक अपने अंदर रोक लेती हैं। रिचार्ड डिलानो जो राष्ट्रपति रूजवेल्ट के भतीजे हैं इस यंत्र के आविष्कारक हैं। उन्होंने समुद्रजल को मीठा बनाने का यह प्रथम ज्ञान अपने आईलैण्ड के घर के पास के समुद्र-तट पर टहलते हुए प्राप्त किया है।

विटामिन अनुसंधान संस्था

संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका में विटामिन (पदार्थों के पोष्यतत्वों) के अनुसंधान की एक समिति बनाई गई है। थियोडोर क्रम्प जो कि विथाप केमिकल कम्पनी के अध्यक्ष हैं; न्यूयार्क में ४० कम्पनियों के प्रतिनिधियों की बैठक-द्वारा इंस्टीट्यूट बोर्ड के गवर्नरों के चेयरमैन चुने गये हैं। संसार के पदार्थों के विटामिन अब शीघ्र ही मालूम कर लिये जायँगे।

हमेशा सबसे ऊपर
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम सामग्री
हमारी बनाई स्टैनक्रीम केशों को जमाती, चमक लाती, चिटचिटाहट से परे, व्यवहार में साफ व केश के लिये उपकारी है
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:, कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

धोबी ने फिर नुकसान किया!

—और प्रत्येक वस्तु इतनी महंगी!

जी हां, यदि आपने धोबी को इसी तरह कपड़े फाडने दिये तो वह आपको बरबाद कर डालेगा। जरा सोचिये कि जो कपड़े उसने फाड़े हैं उनको खरीदने के लिये इस महंगी के समय में आपको कितना खर्च आयेगा। अब आपको चाहिये कि धोबी जिस नाशकारक विधि से कपड़े धोता है उस से अपना नुकसान न होने दें, वह रीति केवल नाशकारक ही नहीं अनावश्यक भी है। वस्त्र और दूसरे घरेलू कपड़े सनलाइट के "साबुन-और-बचत" के साधन द्वारा, हानि का जरा भी भय न होते हुए बड़ी सुन्दर रीति से धोये जा सकते हैं। यह ऐसा उत्तम साधन है जिसमें न तो कपड़ों को पटकने की जरूरत पड़ती है न रगड़ने की। सनलाइट की स्वयंक्रियाशील झाग मैले कपड़ों का मैल काट डालती है और उन्हें धोबी के धोये हुए कपड़ों से अधिक साफ और सफ़ेद बनाती है और फिर कपड़े का एक भी धागा नष्ट नहीं होने पाता। अपने नौकर को निम्न लिखित रीति सिखाइये और अपने घर ही में सनलाइट से कपड़े धो कर उन्हें फटने से और पैसे को बरबाद होने से बचाइये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

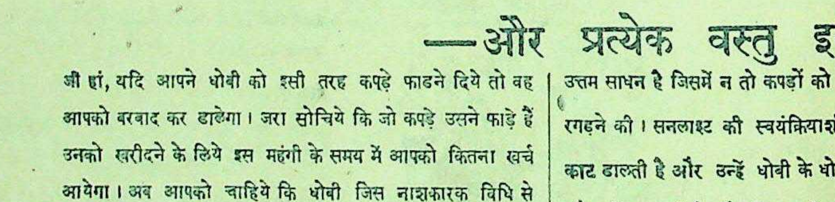

१ कपड़ों को अच्छी तरह भिगो लीजिये, इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३ कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड़ रखेगी। ४ कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन लगाइये

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

SUNLIGHT
SOAP

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

संवाददाताओं के पत्र

पुडूकोटा (दक्षिण भारत) में अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा-सम्मेलन का सातवाँ अधिवेशन माननीय पुरुषोत्तमदास जी की अध्यक्षता में ता० ३१ मई, १ और २ जून को होने जा रहा है। इसमें प्राकृतिक चिकित्सकों और विद्वानों के भाषण, वाद-विवाद, निबन्धपाठ आदि होंगे। इसी विषय की एक प्रदर्शनी का आयोजन भी हो रहा है। विशेष जानकारी के लिए डा० सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, संयुक्त-मंत्री, जाट का कुआ, जयपुर सिटी के पते पर पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

—संवाददाता

* * *

जोधपुर की हिन्दी-प्रचारिणी सभा के तीसरे सालाना जलसे के अवसर पर कई प्रवृत्तियों के साथ ता० २ जून को एक विराट् कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। कवि-सम्मेलन के लिए हिन्दी के अनेकों प्रतिष्ठित और लोकप्रिय कवियों को निमंत्रित किया गया है। सर्वश्री गोपालसिंह नैपाली, शिवमंगलसिंह सुमन, विद्यापति कोकिल, मुकुल, भरत व्यास, महिपाल और गोपालप्रसाद के आने की बहुत अधिक सम्भावना है।

ज्ञात हुआ है कि सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए कलकत्ते के मेयर सेठ आनन्दीलाल पोद्दार बुलाये जा रहे हैं और सम्मेलन के सभापति के पद के लिए 'देशदूत' के सम्पादक श्री ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' का नाम लिया जा रहा है। इतने कवियों का जोधपुर में पहले कभी आना नहीं हुआ इसलिए इस बार कवि-सम्मेलन के प्रति जनता का विशेष आकर्षण दिखाई दे रहा है।

—संवाददाता

* * *

अजमेर सरस्वती बालिका विद्यालय का १३ वाँ वार्षिकोत्सव सर सेठ भागचन्द जी सोनी, एम० एल० ए० के सभापतित्व में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। चर्खा कताई प्रदर्शन, नटखट मुन्नी और कृष्ण, विदुर के राष्ट्रीय और धार्मिक ड्रामा बहुत ही सुन्दर रहे, नगर के प्रतिष्ठित लोगों के अतिरिक्त श्री जयनारायण, श्री व्यास, हरिभाऊ उपाध्याय आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

—पन्नालाल महेश्वरी

* * *

बीकानेर गंगानगर सार्वजनिक पुस्तकालय की ओर से बीकानेर महाराज कुमार श्री करणीसिंहजी बहादुर की वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर शिक्षा-सप्ताह तथा पुस्तकालय का वार्षिकोत्सव सफलतापूर्वक मनाया गया। बीकानेर, सरदारशहर, रतनगढ़, नापासर, अबोहर, भादरा और आसपास के प्रतिनिधियों ने विशेष भाग लिया। सम्मेलन में भाग लेने के लिये सनातनधर्म के प्रतिनिधि श्री मनोहरलाल कपूरिया बी० ए० लाहौर से, सिक्खों के प्रतिनिधि श्री गुरुवचनसिंह ज्ञानी अमृतसर से तथा अञ्जुमने इस्लामियाँ के प्रतिनिधि मौलाना मौहज्जाम अलीखां देवबन से पधारे थे। महाशय रामरत्नजी ने आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व किया था।

ता० ६ मई को पुस्तकालय का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया। आगामी वर्ष के लिए चलता-फिरता पुस्तकालय, लोक-शिक्षण-विभाग और हिन्दी विद्यामन्दिर को विशेष प्रगतिशील बनाने का निश्चय किया गया।

—आचार्य गौरीशंकर

स्टैनिस्ट्रीट

(कंसिट्रेटेड)

चिकेन एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—विदेशी चिकेन एसेन्सों के इतना नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड

कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची

SSK 116

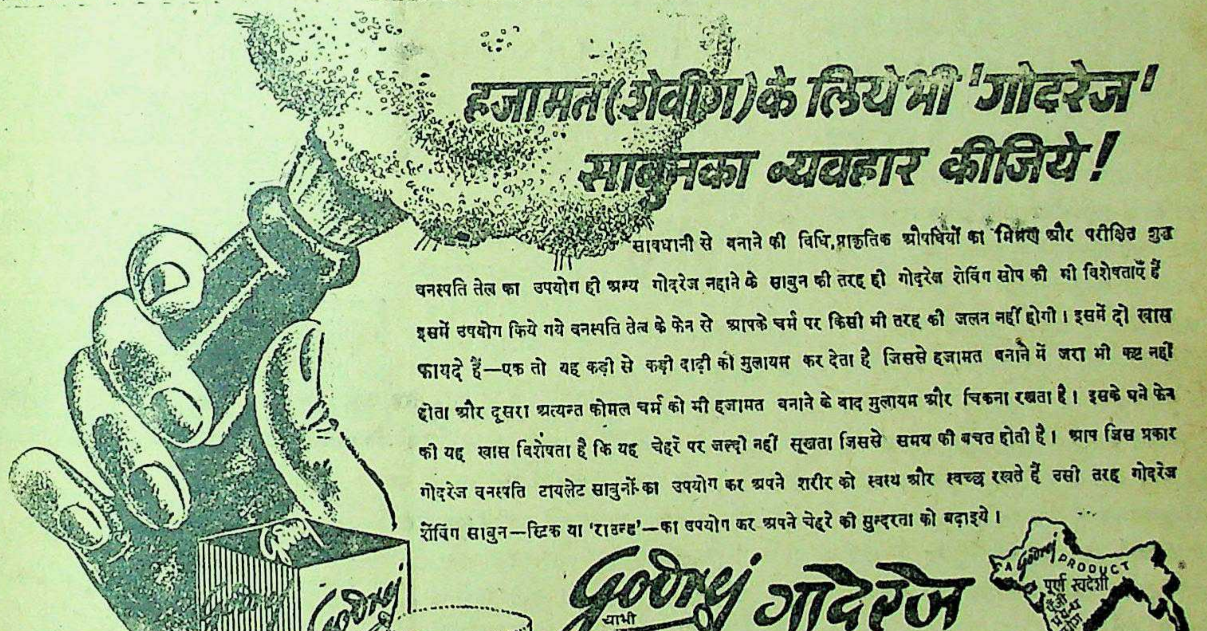

हजामत (शेविंग) के लिये भी 'गोदरेज' साबुन का व्यवहार कीजिये!

सावधानी से बनाने की विधि, प्राकृतिक औषधियों का मिश्रण और परीक्षित शुद्ध वनस्पति तेल का उपयोग ही अन्य गोदरेज नहाने के साबुन की तरह ही गोदरेज शेविंग सोप की भी विशेषताएँ हैं इसमें उपयोग किये गये वनस्पति तेल के फेन से आपके चर्म पर किसी भी तरह की जलन नहीं होगी। इसमें दो खास फायदे हैं—एक तो यह कड़ी से कड़ी दाढ़ी को मुलायम कर देता है जिससे हजामत बनाने में जरा भी कष्ट नहीं होता और दूसरा अत्यन्त कोमल चर्म को भी हजामत बनाने के बाद मुलायम और चिकना रखता है। इसके घने फेन की यह खास विशेषता है कि यह चेहरे पर जल्दी नहीं सूखता जिससे समय की बचत होती है। आप जिस प्रकार गोदरेज वनस्पति टायलेट साबुनों का उपयोग कर अपने शरीर को स्वस्थ और स्वच्छ रखते हैं उसी तरह गोदरेज शेविंग साबुन—स्टिक या 'राउन्ड'—का उपयोग कर अपने चेहरे की सुन्दरता को बढ़ाइये।

गोदरेज चाभी छाप

शेविंग स्टिक ♦ शेविंग 'राउन्ड'

गोदरेज
टायलेट साबुन
नं० १ । नं० २
'वतनी' । सन्दल
लिमडा (नीम) फैमिली
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गारन्टी।

गोदरेज सोप्स लि० — बम्बई ११

गोदरेज के चावी छाप नहाने के साबुनों के प्रति टिकिया उचित दाम

नं० १	॥–)	सण्डल	।–)॥	टर्किश बाथ	≡)
नं० २	।=)॥	लिमडा	।–)॥	शेविंग स्टिक (तीन)	॥–)॥
'वतनी'	।)॥	खस	।–)॥	शेविंग स्टिक (राफील)	।≡)॥
'वतनी' (छोटी टिकिया)	–)।	फैमिली	=)॥	शेविंग 'राउण्ड'	।)॥

जिन शहरों में कस्टम, चुङ्गी या टरमिनल टैक्स देना पड़ता है वहाँ कुछ अधिक दाम देना पड़ेगा।

[पेज ६ का शेष]

वह यह प्रयत्न करे कि देश की दो जातीय संस्थाएँ हिन्दूसभा और मुस्लिम लीग में समझौता हो। दोनों का जातीय समझौता उसके लक्ष्य स्वराज्य की प्राप्ति में सहायक हो सकता है। कांग्रेस को दोनों के तल से ऊपर उठकर रहना चाहिए।

मुस्लिम लीग का इस सम्बन्ध में एक अपना अलग दृष्टिकोण है। वह हिन्दू-सभा से समझौता नहीं करना चाहती। वह हिन्दू-सभा का अस्तित्व ही स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। मुस्लिम-लीग के सभापति श्री जिन्ना के अनुसार कांग्रेस एक हिन्दू-हितों की रक्षा करनेवाली संस्था है और महात्मा गांधी एक हिन्दू नेता हैं। गांधी-जिन्ना का समझौता, राजगोपालाचारी के समझौते का हल, अभी भविष्य के गर्भ में विलीन, देसाई-लियाक़तअली पैक्ट, किसी भी प्रकार का समझौता यदि कांग्रेस के साथ मुस्लिम-लीग का होता है तो इसका अर्थ है कि मुस्लिम लीग अपने जातीय स्वार्थों के प्राप्त करने में सफल हो गई और कांग्रेस मुस्लिम लीग के बराबर एक जातीय संस्था बन गई।

कुछ कांग्रेसी मित्र स्पष्ट तो नहीं वरन् अस्पष्ट रूप से यह कहते हैं कि यदि हिन्दू-सभा भी मुस्लिम लीग की तरह बलवती होती तो आज कांग्रेस की 'सांप-छछुन्दर सी गति न होती।' बात बिलकुल ठीक है किन्तु ऐसा क्यों नहीं हुआ इस पर यदि हम विचार करें तो हमें साफ़ दिखाई देगा कि इसमें हिन्दू जाति या हिन्दूसभा का कोई दोष नहीं है।

यह इतिहास प्रसिद्ध है कि हिन्दू जाति अधिकांश स्वातन्त्र्य-प्रेमी रही है। कांग्रेस के पूर्ण स्वातन्त्र्य के लक्ष्य ने हिन्दुओं को जिस मात्रा में आकर्षित किया है उस मात्रा में अन्य जातियों को नहीं। प्रत्येक जाति में कुछ प्रमुख शक्तियां होती हैं। हिन्दू जाति की प्रमुख शक्तियों को कांग्रेस के पूर्ण स्वातन्त्र्य के लक्ष ने अपनी ओर आकर्षित कर लिया और यह स्वाभाविक ही था। कांग्रेस का लक्ष्य मुस्लिम जाति को आकर्षित न कर सका। मुस्लिम लीग के बलवती होने का यही रहस्य है और यही कारण हिन्दू महासभा के कमजोर होने का है।

अब प्रश्न यह है कि आगे क्या किया जाय? यदि हम यही समझते हैं कि मुस्लिम लीग से समझौता हुए बग़ैर देश का स्वातन्त्र्य नज़दीक नहीं आ सकता तो हमारे लिए अब केवल दो मार्ग रह जाते हैं। एक तो यह कि मुस्लिम लीग की तरह हम भी कांग्रेस को जातीय-संस्था घोषित करें और हिन्दू के नाम पर मुसलमानों से जो कुछ समझौता करना चाहते हैं करें। दूसरे शब्दों में इसी का अर्थ यह होगा कि हम फिलहाल कुछ दिनों के लिए कांग्रेस का अस्तित्व समाप्त कर दें। कांग्रेस को हिन्दू-सभा में मिला दें। कांग्रेस उसका नाम चाहे हिन्दू-सभा हो या और कुछ तब हिन्दू-हितों की दृष्टि से बलवती होगी और होनेवाले समझौते में हिन्दुओं के साथ कोई अन्याय न होने पायेगा।

मुस्लिम लीग के नेता बड़े चतुर हैं। वे इस बात को जानते हैं और इसी लिए वह आग्रह कर रहे हैं कि समझौता कांग्रेस के साथ हो हिन्दू-सभा के साथ नहीं। वे इस बात को जानते हैं कि कांग्रेस के साथ समझौता करने में दुहरा लाभ होगा। स्वातन्त्र्य प्रेम के लिए हिन्दू जो कुछ बलिदान करेंगे वह मिलेगा ही साथ ही कांग्रेस में जो मुसलमान हैं उनका लिहाज करके जो कुछ मुसलमानों को मिल जायगा वह भी हमें ही प्राप्त होगा।

देश-स्वार्थ के सामने व्यक्ति-स्वार्थ को बलिदान करने के पाठ जैसे हमें पढ़ाये गये हैं उसी प्रकार देश के कल्याण के लिए हमें संस्थाओं का मोह, वह चाहे कितनी बड़ी संस्था क्यों न हो, छोड़ना पड़ेगा। अन्त में फिर मैं यह कहना आवश्यक समझता हूँ कि यदि इस समय आजादी कांग्रेस लीग समझौते पर ही रुक गई है तो वह हमें अवश्य करना चाहिए। साथ ही मुस्लिम लीग के कथनानुसार कांग्रेस को हिन्दू-हितों की रक्षा करनेवाली संस्था वास्तव में बनानी चाहिए। यह कांग्रेस को हिन्दू-सभा से सम्मिलित करके भी हो सकता है और उसका स्वातन्त्र्य अस्तित्व रखकर भी हो सकता है। कांग्रेस की प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह कदापि उचित न होगा कि वह जातीय संस्था न होने के कारण हिन्दुओं के लिए कुछ कहने में सांप्रदायिकता समझे और मुस्लिम लीग से हिन्दुओं की ओर से समझौता कर ले। आजादी का मूल्य चुकाने की जो योजना इस समय बन रही है उसे कार्य रूप में परिणत करते समय क्या हमारे 'लीडराने वतन' इस पहलू पर ध्यान देंगे?

३१ वर्ष की उम्र में ही बूढ़ा जान पड़ता था

पीठ की पीड़ा से झुकना मुश्किल हो गया था

क्रुशेन से उसका दर्द जाता रहा

यह ३१ वर्ष का आदमी गुर्दे की ख़राबी के कारण अपनी जवानी में ही बूढ़ा मालूम पड़ता था। कई सप्ताह की पीड़ा के बाद उसको किस प्रकार क्रुशेन से आराम मिला वह आदमी स्वयं बतलाता है :—

"कई सप्ताह से मुझे गुर्दे की बीमारी थी और मैं अपनी ३१ वर्ष की युवा अवस्था में ही बूढ़ा मालूम पड़ता था। यदि किसी काम के लिए मैं कभी झुक जाता तो फिर सीधा होना मौत का सामना करना था। कई लोगों ने मुझे क्रुशेन साल्ट सेवन करने का आदेश किया क्योंकि उन्हें स्वयं इससे फ़ायदा हुआ था। मैंने स्वयं भी सेवन किया और उससे मुझे प्रतिदिन लाभ होने लगा। अब तो मैं २८ मील साइकिल पर चढ़कर काम करने जाता हूँ। मैं क्रुशेन साल्ट बराबर सेवन करूँगा क्योंकि इसी के कारण अब मैं यात्रा कर सकता हूँ। तथा बिना किसी थकावट के दिन भर काम कर सकता हूँ—एस० बी० सी०।

गुर्दे मनुष्य के शरीर के छन्ने हैं और जब तक वे अपना काम ठीक तौर से नहीं करते विषैली चीज़ें जिन्हें बाहर निकल जानी चाहिए रक्त में मिल जाती हैं और शरीर में पीड़ा पैदा कर देती हैं जैसे पीठ का दर्द, गठिया, थकावट इत्यादि। क्रुशेन साल्ट गुर्दों को ठीक रखने की एक उत्तम दवा है जिससे शरीर का सारा विष बाहर निकल जाता है।

सभी अच्छे दवाखानों तथा दूकानदारों के यहाँ मिलता है।

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर सजीव चित्र है। मूल्य २॥≥) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता-जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

यह सूचित करते हुए हमें हर्ष होता है कि हमने जी० जी० टॉफ़ीज़ बनाना शुरू कर दिया है।
GG BRAND
GG
BRAND टॉफ़ीज़
जी. जी. चोकोलेट फैक्टरी आगरा
जी. जी. इंडस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मेसर्स गि लाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक,

If it's ELGIN it's good

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें। जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब. बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलों के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतो मे ही) अपनें नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज कानपूर

देश-विदेश में क्या हो रहा है ?

विदेश

र के मोर्चे पर जर्मनों ने हथियार है। चेकोस्लोव किया की राज- जर्मनों ने जर्मन हाई कमांड के बाद भी लड़ाई जारी लाल सेना ने प्राग को से पूर्णतः मुक्त कर दिया। चार आया है कि चेकोस्लो- शोरनर के सैन्य-दल से इनकार कर रहे हैं, सैन्य दल भी बदले में लड

*

ने फिर यह सूचित किया अभी तक टेरेजिन के एक र बम बरसा रहे हैं, जहाँ तक बन्दी पड़े हुए हैं। सैन्य-दल चेकोस्लोवाकिया करने के लिए अभी तक पश्चिम तथा दक्षिण- हट रहा है।

*

सारिया प्रान्त की राज- का एकमात्र पर अभी तक का है, मार्शल आस्ट्रिया में प्रवेश

*

अभी तक जर्मनों के आत्म-समर्पण-सम्बन्धी होने के सात घंटे ब्रिटिश कब्जा हो

*

कोपेनहेगेन का बन्दरगाह में आ गया है। ग्रीस में जर्मन सेनाओं ने कर दिया है। नार्वे के डाल कर अपने को समर्पित कर दिया है। द्वारा नियुक्त प्रधान मंत्री गिरफ्तार कर लिया

जर्मनों के आत्म-समर्पण जर्मनों का स स्त संगठित गया है। अमेरिकन सैन्य दलों की प्रशान्त के रहा है।

के अन्तर्गत मिंडानाओ नामक महत्वपूर्ण नगर से मुक्त कर दिया के अन्तर्गत ताराकान शहर के केन्द्रीय भाग कब्जा कर लिया है। ने बम के कर लिया है, जो अड्डे से केवल तीन है। बूगेनविली के उत्तर सेना ब्रूक की ओर है। उन्होंने रात्सुआ पर

चीन में पश्चिमी हुनान की संपूर्ण जापानी-पंक्ति चीनियों के एक नये प्रत्याक्रमण के फलस्वरूप ध्वस्त कर दी गई है, जिससे चिनकियांग पर स्थिति हवाई अड्डे के लिए खतरा दूर हो गया है।

बरमा

एक मित्र विज्ञप्ति में कहा गया है कि रंगून पर अधिकार कायम रखने के कार्य की प्रगति सन्तोषजनक रूप से चल रही है। १४वीं सेना के मोर्चे पर मित्र सैन्यदल प्रोम से दक्षिण की तरफ बढ़ते हुए एक ऐसे स्थान पर पहुँच गए हैं जो रंगून से ७५ मील है। थायेट मेवों से २२ मील दक्षिण जापानी सैन्यदल नावों-द्वारा इरावदी के पार करने की चेष्टा कर रहे थे। पर मित्रों ने उन नावों को नष्ट कर दिया है।

अराकान योमा पर कार्रवाइयाँ करनेवाले सैन्यदल इरावदी के पश्चिम में १४वीं सेना के साथ मिल गये।

स्वदेश

यूरोपीय युद्ध के अन्त होने की सूचना पाने पर श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने अपने एक वक्तव्य में कहा कि मित्रराष्ट्रों को इस विजय का उत्सव समुचित रीति से मनाने का एकमात्र तरीका यह है कि

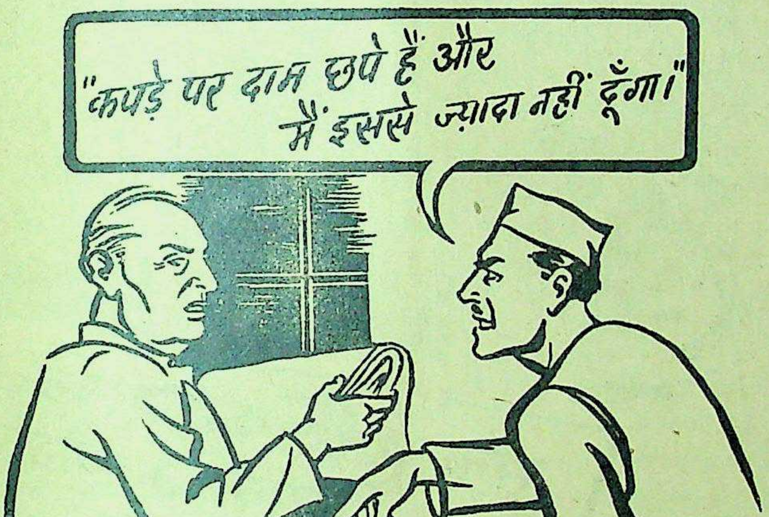

AAA 160 HINDI

ये हैं इनकी चालें-

इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

"कपड़े पर दाम छपे हैं और मैं इससे ज़्यादा नहीं दूँगा"

ठीक है। मुनाफ़ाखोरों को मात देने का यही उपाय है। उनके धोखे में न आइए। अगर वे बेजा दाम लेना चाहें, तो रसीद ले लीजिए और पुलिस में रिपोर्ट कर दीजिए।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

Nº 712
EVEREADY
2 CELL EXTRA LONG LIFE BATTERY

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर

नं ७१२
एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत
रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५

ज्यादा मत दें

B13 60/5

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.,
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

लम्बा होइये

१६ दिनों में आपकी लम्बाई १ से ४ इंच, तक बढ़ सकती है।

अगर आप छोटे कद के हैं तो [illegible] है कि आपके शरीर की २०० [illegible] [illegible] वैज्ञानिक ढंग से टाल्सपाइन [illegible] और ग्रन्थियों को कार्य में [illegible] है तथा १६ दिनों में लम्बाई बढ़ जाती है।

टाल्सपाइन की गोलियाँ इंग्लैंड की [illegible] प्रयोगशाला में वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत की जाती हैं। १६ दिनों तक लगातार प्रति दिन दो गोली सेवन कीजिये। आपकी लम्बाई कई इंच बढ़ी हुई [illegible] देखी। अनेकों मनुष्य इस अपूर्व औषधि के ऋणी हैं।

टाल्सपाइन [illegible] के प्रत्येक पैकेट के साथ [illegible] दी जाती है। [illegible] मूल्य ५।) प्रति पैकेट, डाकमहसूल तथा पैकिंग अलग १।)। प्रतिदिन दोबारे [illegible] के साथ अनेकों प्रमाणपत्र स्वयं पहुँच रहे हैं।

इंग्लैंड में प्रस्तुत
टाल्सपाइन
इंग्लैंड फ़ूड टेबलेट्स

23

डिस्ट्रीब्यूटर्स
दि मिडिल टेडिंग कम्पनी (डिपार्ट डी एफ)
लाइसेंस प्राप्त औषधि विक्रेता व निर्माता।
[illegible] बिल्डिंग, मोरसफुक एंड सन्स के [illegible]
१२७, हॉर्नबी रोड, बम्बई।

सान फ्रांसिस्को में एकत्रित राजनीतिज्ञ सच्चे हृदय से स्थायी शान्ति स्थापित करने का उद्योग करें। यह शान्ति तभी स्थापित हो सकती है जब संसार भर के देशों को पूर्ण स्वाधीनता देकर अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के सिद्धान्तों को दृढतापूर्वक अपनाया जाय।

बंगाल के दुर्भिक्ष के कारणों की जाँच के लिए जो कमीशन नियुक्त किया गया था उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि बंगाल में अकाल तज्जनित महामारियों के फलस्वरूप १५ लाख व्यक्ति मरे। अकाल के लिए रिपोर्ट में भारत-सरकार तथा बंगाल सरकार दोनों को दोषी ठहराया है। बंगाल मन्त्रि-मंडल की शासन-सम्बन्धी अयोग्यता के फलस्वरूप मुनाफाखोरी का बोलबाला है।

* * *

भारतीय उद्योगपतियों का जो प्रतिनिधि-मंडल ब्रिटेन तथा अमेरिका में वहाँ की औद्योगिक परिस्थितियों के निरीक्षण के लिए जा रहा है उसे महात्मा गांधी ने यह सलाह दी है कि जब तक वर्किङ्ग कमेटी के कर्णधार बिना मुकदमा चलाये जेलों में बन्द हैं तब तक प्रतिनिधि-मंडल को निरीक्षण अथवा लज्जाजनक सौदे के लिए इँगलैण्ड तथा अमेरिका नहीं जाना चाहिए।

गांधी जी के इस वक्तव्य पर श्री घनश्यामदास बिड़ला ने एक तार उन्हें भेजा जिसमें उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि औद्योगिक प्रतिनिधि-मंडल पूर्णतः एक गैर-सरकारी प्रतिनिधि-मंडल के रूप में अपने खर्च से इँगलैण्ड और अमेरिका जा रहा है ताकि वहाँ वह वैज्ञानिक उन्नति तथा उत्पादन के लिए नये तरीकों का अध्ययन करे।

श्री घनश्यामदास बिड़ला ने अपने एक वक्तव्य में इसी सम्बन्ध में कहा है कि भारत युद्धोत्तर काल के लिए योजनायें तैयार कर रहा है, इस लिए हमारा उद्देश्य विदेशों में जाकर वहाँ उत्पादन के नये तरीकों का अध्ययन करके देशवासियों को यह बताना है कि दूसरे देशों ने किस हद तक तरक्की की है।

* * *

कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद ने अपने भतीजे श्री नूरुद्दीन अहमद को एक पत्र लिख कर इस बात का विरोध किया है कि स्वास्थ्य सम्बन्धी कारणों से उनकी रिहाई के लिए आन्दोलन न चलाया जाय।

● ● ●

गांधी जी ने प्रेसीडेंट रूजवेल्ट की मृत्यु पर श्रीमती रूजवेल्ट को जो संवेदना का तार भेजा था उसमें लिखा था—“आपके विख्यात पति की मृत्यु पर अत्यन्त विनम्रता से आपके प्रति समवेदना प्रकट करता हुआ मैं इस बात की बधाई भी देता हूँ कि उनकी मृत्यु ऐसे अवसर पर हुई जब मित्रराष्ट्रों की विजय निश्चित थी और वह एक ऐसी संधि में भाग लेने से बच गये जो भीषण रूप से विनाशक थी एक और महायुद्ध की भूमिका होनी।” श्रीमती रूजवेल्ट ने महात्मा जी को धन्यवाद देते हुए लिखा है—“मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि सन्धि के सम्बन्ध में आपकी आशंका निराधार है।”

ग्वालियर के महाराजा श्रीमंत सरकार जीवाजीराव माधवराव शिंदे ने हरिजनों के लिए निम्न-घोषणा प्रकाशित की है—

(१) ग्वालियर राज्य में हरिजन व्यक्तियों को भी और जातियों के नागरिकों की भाँति वेष-भूषा, आभूषणों, सवारियों, विवाह-सम्बन्धी रीतियों, सार्वजनिक स्थानों में प्रविष्ट होने और सार्वजनिक कुओं, तालाबों, नहरों और घाटों से लाभ उठाने के विषय में पूर्ण स्वच्छन्दता प्राप्त है। नागरिकों की भाँति उन्हें भी राजकीय शिक्षणालयों में भर्ती होकर शिक्षा प्राप्त करके अच्छे नागरिक बनने का अवसर प्राप्त है सरकारी छतरियों तथा राजपरिवार के देवघरों के अतिरिक्त, जो कि सर्वसाधारण के लिए खुले हुए नहीं हैं, राज्य के समस्त देवालयों में जो कि राज्य-द्वारा बनाये गये हों अथवा राजकीय सम्पत्ति हों, अथवा जिन की व्यवस्था राज्य-द्वारा की जाती हो, अन्य हिन्दुओं की भाँति हरिजनों को भी प्रवेश करने तथा दर्शनों से लाभ उठाने की पूर्ण स्वच्छन्दता प्राप्त होगी।

श्री कृ० वा० दाते मन्त्री, ग्वालियर सरकार के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है।

—संवाददाता

इन्दौर पुलिस इन्स्पेक्टर जनरल ने राज्य कैबिनेट की आज्ञा से राजस्थान भील-सेवक-संघ के संस्थापक और संचालक श्री बालेश्वर दयाल को आज्ञा दी है कि वह होलकर रियासत छोड़कर बाहर चले जायँ। हुक्म में कहा गया है कि श्री बालेश्वरदयाल जी का सम्बन्ध ऐसे हानिकारक हलचलों से है जिससे महाराजा तथा झबुआ राज्य में अनबन हो सकती है।

श्री बालेश्वरदयालजी हुक्म
ही इन्दौर राज्य की सीमा के बा
गये। पूछे जाने पर आपने कहा
इन्दौर राज्य का निवासी हूँ। मैंने
के सम्बन्धों को किसी राज्य से बि
लिए अथवा युद्ध-विरोधी कार्य न
है। हमें आशा है भली भाँति वि
बाद सरकार अपनी आज्ञा वापस

—सं

नीति-रत्नमाला
धर्मशास्त्र से छाँट छाँटकर
किये गये ललित और उपदेशप्र
का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का
हिन्दी-अनुवाद भी किया ग
मूल्य ॥=) दस आने।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

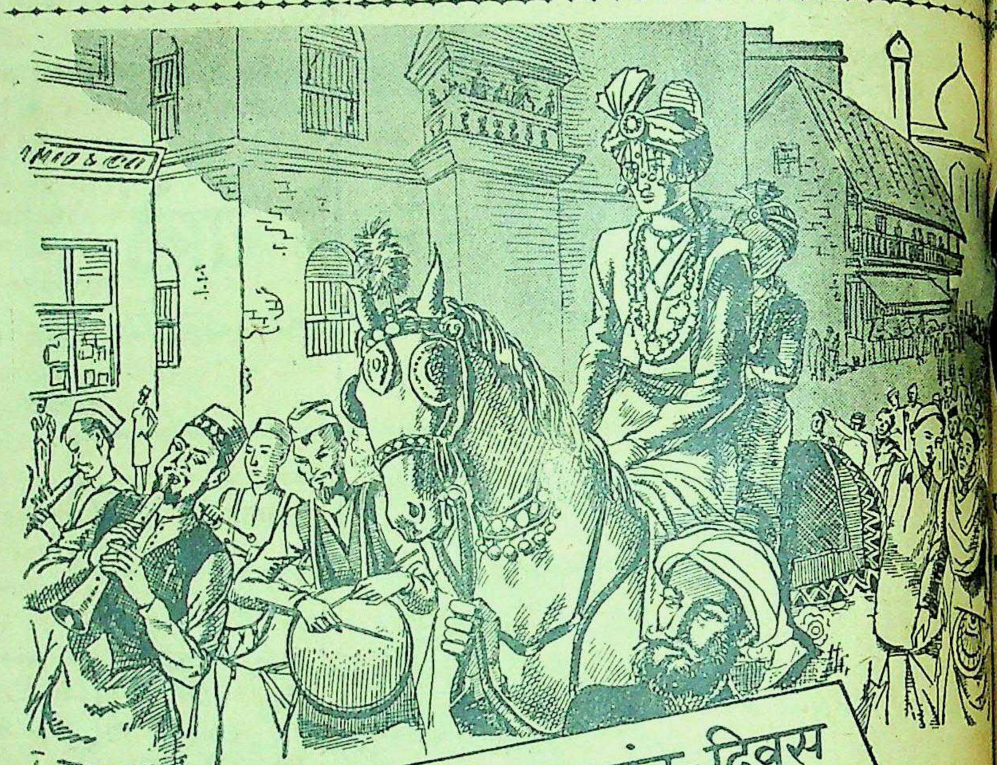

“क्या मैं अपने बच्चों के विवाह का ख़र्च उठा सकूँगा!”
इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप इ
समय क्या उपाय करते हैं।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

शादी-विवाह में रुपया खर्च होता है और वर्षों पहिले बचत की योजना बना कर और बचत के रुपये को समझदारी से लगा कर ही आप इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि आपके बच्चे बड़े होने पर सुचारु रूप से सुखी जीवन प्रारम्भ करें।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

क्लर्क चाहिए

समुद्री बेड़े में 'राइटर्स' की जगहें और हिन्दुस्तानी फ़ौज आर्मी कोर आफ क्लार्क्स शामिल है) तथा शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में क्लर्कों की जगहें खाली हैं।

अच्छी ट्रेनिंग

किसी एक में भरती होकर आपको जो अनुभव वह लड़ाई के बाद हिन्दुस्तान के उद्योग-धन्धों हलक़ों में अच्छी नौकरी पाने में आपको बहुत सहायता पहुंचायेगी।

अभी दरख़्वास्त दीजिए

- अच्छी तनख़ाह
- मुफ़्त भोजन
- तनख़ाह पर छुट्टी
- निवास-स्थान
- मुफ़्त इलाज
- मुफ़्त पोशाक

आवश्यक योग्यता के बारे में पूरा विवरण निम्नलिखित भरती-दफ़्तरों में से निकटवर्ती दफ़्तर से मालूम कीजिए।

—(ई० क्वा०) इस्टर्न एरिया, हजरतगंज।
—२६, विश्वेश्वरनाथ रोड।
—होस्टल, ड्रमन्ड रोड।
—१८, कैनिङ्ग रोड।

AAA 135

---

* मेडिकल ग्रेजुएट्स *

युद्ध चल रहा है...

..और यह स्वाभाविक है कि इसमें सैनिक घायल होते हैं जिन्हें फिर से स्वस्थ बनाना आवश्यक है। आज सैकड़ों फ़ौजी डाक्टर अपने पेशे के अन्दर एक नई दिलचस्प चीज़ पा रहे हैं। सैनिकों की सेवा के द्वारा उन्हें इतना अच्छा अनुभव और ट्रेनिंग प्राप्त हो रही है जो साधारण प्रेक्टिस में आम तौर पर नहीं प्राप्त हो सकती थी। आई० ए० एम० सी० में काम करने के लिए मेडिकल ग्रेजुएटों की अत्यन्त आवश्यकता है। आपको अभी आवेदन करना चाहिए।

योग्यता—उम्मीदवारों के पास ऐसी सनद होनी चाहिए जिसकी रजिस्ट्री ब्रिटेन में हो सकती हो या ऐसी हिन्दुस्तानी सनद होनी चाहिए जो मेडिकल काउन्सिल आफ़ इंडिया द्वारा मंज़ूर की जाती हो। रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिशनर जिनके पास डी० एम० ऐण्ड एस० (मद्रास), एल० एम० ऐण्ड एस० (स्टेट मेडिकल फ़ैकल्टी, पंजाब), एम० सी० पी० ऐण्ड एस० (बंबई), एम० एम० एफ० (बंगाल), एम० एस० एम० एफ० (यू० पी० / पंजाब) या एम० बी० बी० एस० (मैसूर और उसमानिया) की सनद या कोई स्वीकृत विदेशी सनद है, उन्हें भी लिया जा सकता है। उम्मीदवारों को तन्दुरुस्ती फ़ौजी ड्यूटी करने के काबिल होनी चाहिए और आम तौर पर उनकी उम्र ४५ साल से कम होनी चाहिए। निर्वाचित उम्मीदवारों की नियुक्ति आई० एम० एस० में करके तुरन्त ही आई० ए० एम० सी० में पुनः नियुक्ति कर दी जायगी। आई० एम० एस० अफ़सरों के सब अधिकार इन्हें प्राप्त होंगे।

तनख़्वाह—लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर ४५० रुपये माहवार से लेफ्टिनेण्ट कर्नल के ओहदे पर १३५० रुपये माहवार तक। स्वीकृत विशेषज्ञ (स्पेशेलिस्ट) की हैसियत से नियुक्त होने पर मेजर का ऐक्टिंग (स्थानापन्न) ओहदा और तनख्वाह दी जाती है, और इसके अलावा १०० रुपये माहवार स्पेशेलिस्ट की तनख्वाह मिलती है। ग्रेडेड स्पेशेलिस्ट को ऐक्टिंग रैंक (स्थानापन्न ओहदा) दिये बिना १०० रु० माहवार स्पेशेलिस्ट की तनख्वाह दी जाती है। विशेष नियुक्तियों के लिए ३० रुपये से २४० रुपये माहवार तक चार्ज या कमाण्ड की तनख्वाह। वर्दी का भत्ता, ७३२ रुपये। प्रथम नियुक्ति पर तनख्वाह का ऐडवान्स (पेशगी) ३०० रुपये तक। वर्तमान नियमों के अनुसार भत्ते। समुद्र-पार की तनख्वाह १५० रुपये से ४०० रुपये माहवार तक। सफ़र के एलाउन्स और छुट्टी की रियायतें हिन्दुस्तानी फ़ौज के दूसरे अफ़सरों की भांति। पहिले साल की सर्विस के लिए २००० रुपये या १००० रुपये की ग्रेच्यूटी (यह इस बात पर निर्भर करती है कि अफ़सर ने अपनी बुनियादी डाक्टरी सनदें १ जनवरी १९४० से पहिले प्राप्त की हैं या बाद में), इसके बाद हर पूरे साल की नौकरी के लिए एक महीने की तनख्वाह। इंडियन मेडिकल सर्विस के नियमों के अनुसार अपाहिजों के लिए, परिवार के लिए तथा विधवा के लिए पेन्शनें और बच्चों को शिक्षा संबंधी एलाउन्स।

फ़ौजी नौकरी से लाभ—यह बात आम तौर पर मानी जाती है कि जो लोग आई० ए० एम० सी० में नये से नये औज़ारों और तरीक़ों से काम कर लेंगे, लड़ाई के बाद शहरी प्रेक्टिस में उन्हें बहुत लाभ पहुंचेगा।

पूरा विवरण प्राविन्शियल मेडिकल डिपार्टमेण्ट (सर्जन जनरल या इन्सपेक्टर जनरल आफ सिविल हास्पिटल्स) या डाइरेक्टर जनरल, इंडियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली या आफिसर्स कमांडिंग, इंडियन मिलिटरी हास्पिटल्स या डाइरेक्टर आफ मेडिकल सर्विसेज़, जी० एच० क्यू०, नई दिल्ली से प्राप्त हो सकता है।

Indian Army Medical Corps

AAA 19

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव टॉनिक
फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी,
एल० एम० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

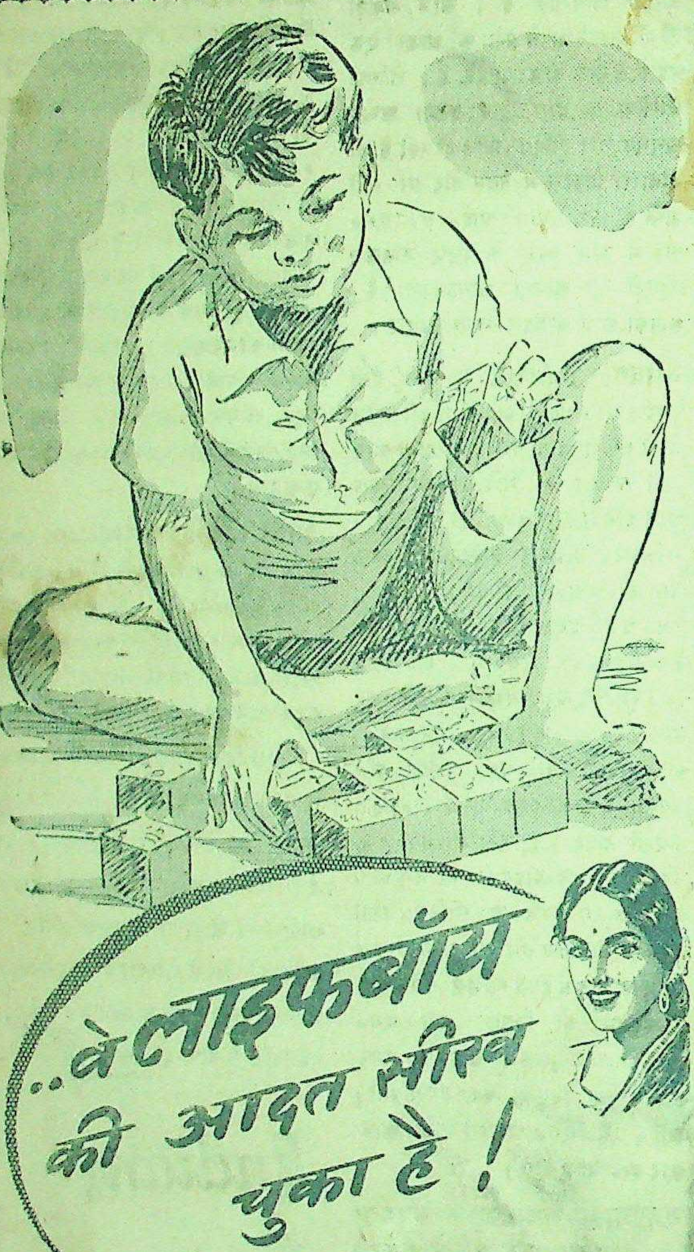
..वे लाइफबॉय की आदत सीख चुका है!

खिलौनों के साथ खेलने से वे अपने हाथों को बुधि से चलाने की आदत बना रहा है। उसकी माँ उसका ध्यान करते हुए जानती है कि उसकी सिखाई हुई आदत—लाइफबॉय का रोज़ाना इस्तेमाल—जो गंदगी के खतरे से जो उसके खिलौनों में तथा घर में लगा रहता है—उसे खेलते समय भी सुरक्षित रखती है।

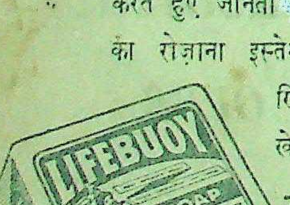

लाइफबॉय का व्यवहार करना, एक ज़रूरी आदत है

30-169 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

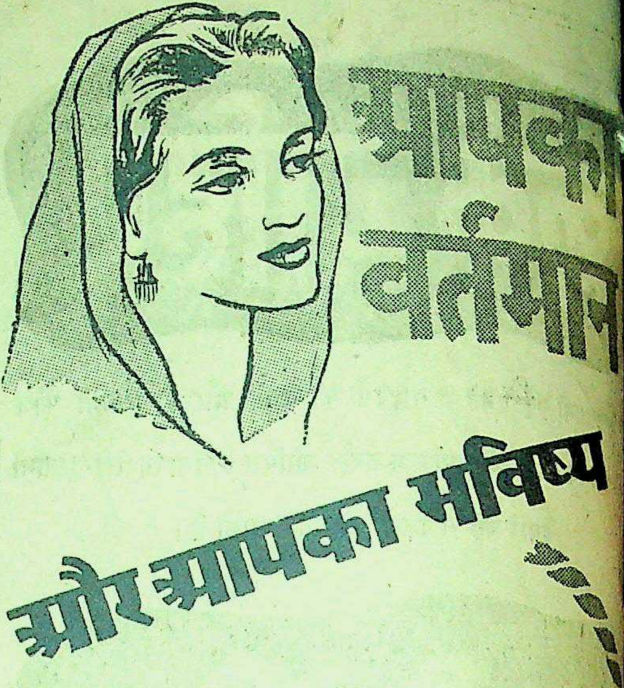

डबल्यू० ए० सी० (आई) नेवल विंग—भारतीय महिला सहायक सेना की समुद्री शाखा—की नौकरी हिन्दुस्तान की स्त्रियों को एक अपूर्व सुअवसर प्रदा करती है कि हिन्दुस्तान के भविष्य के निर्माण में, जो वास्तव में उनका अपना भविष्य है, महत्वपूर्ण भाग लेने के लिए अपने आपको इस समय तैयार कर लें। हिन्दुस्तान की स्त्रियों में उन्नति की उमंग और यह आकांक्षा बराबर बढ़ रही है कि वे भी राष्ट्रीय कार्यों में वैसे ही उत्साह से भाग लें जैसे कि दूसरे देशों की स्त्रियां लेती हैं। हिन्दुस्तान उद्योग-धन्धों और व्यापार-वाणिज्य में बराबर उन्नति कर रहा है और स्त्रियों को आखिर वह सुअवसर प्राप्त हो रहा है जिसकी इन्हें आवश्यकता थी। यह बिलकुल निश्चित है कि शान्ति स्थापित हो जाने के बाद ग़ैर फ़ौजी नौकरियों के लिए अच्छी ट्रेनिंग पाये हुए बहुत से लोगों (स्त्री-पुरुषों) की आवश्यकता होगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि समुद्री शाखा की ट्रेनिंग और नये नये तथा मनोरंजक कामों के द्वारा प्राप्त किया गया बहुमूल्य अनुभव बहुत सी महिलाओं में वह आवश्यक योग्यता उत्पन्न कर देगा जो नागरिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक होती है।

अनेक महिलाएं भरती हो चुकी हैं, किन्तु अभी और अधिक की आवश्यकता है। यह आपके लिए एक महान अवसर है कि अपने आपको हिन्दुस्तान की शानदार परम्परा के योग्य सिद्ध करके दिखा दें।

★पूरे विवरण के लिए किसी भरती दफ़्तर, या निकटवर्ती डबल्यू० ए० सी० (आई) नेवल विंग यूनिट कमाण्डर, या किसी बन्दरगाह के नेवल आफिसर इन्‌चार्ज के पास आवेदन कीजिए।

डबल्यू.ए.सी.(आई) W·A·C(I) की

समुद्री शाखा

में भरती हो जाइए

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [कें० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

र्षिक मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 27th May, 1945

२७ मई, १९४५

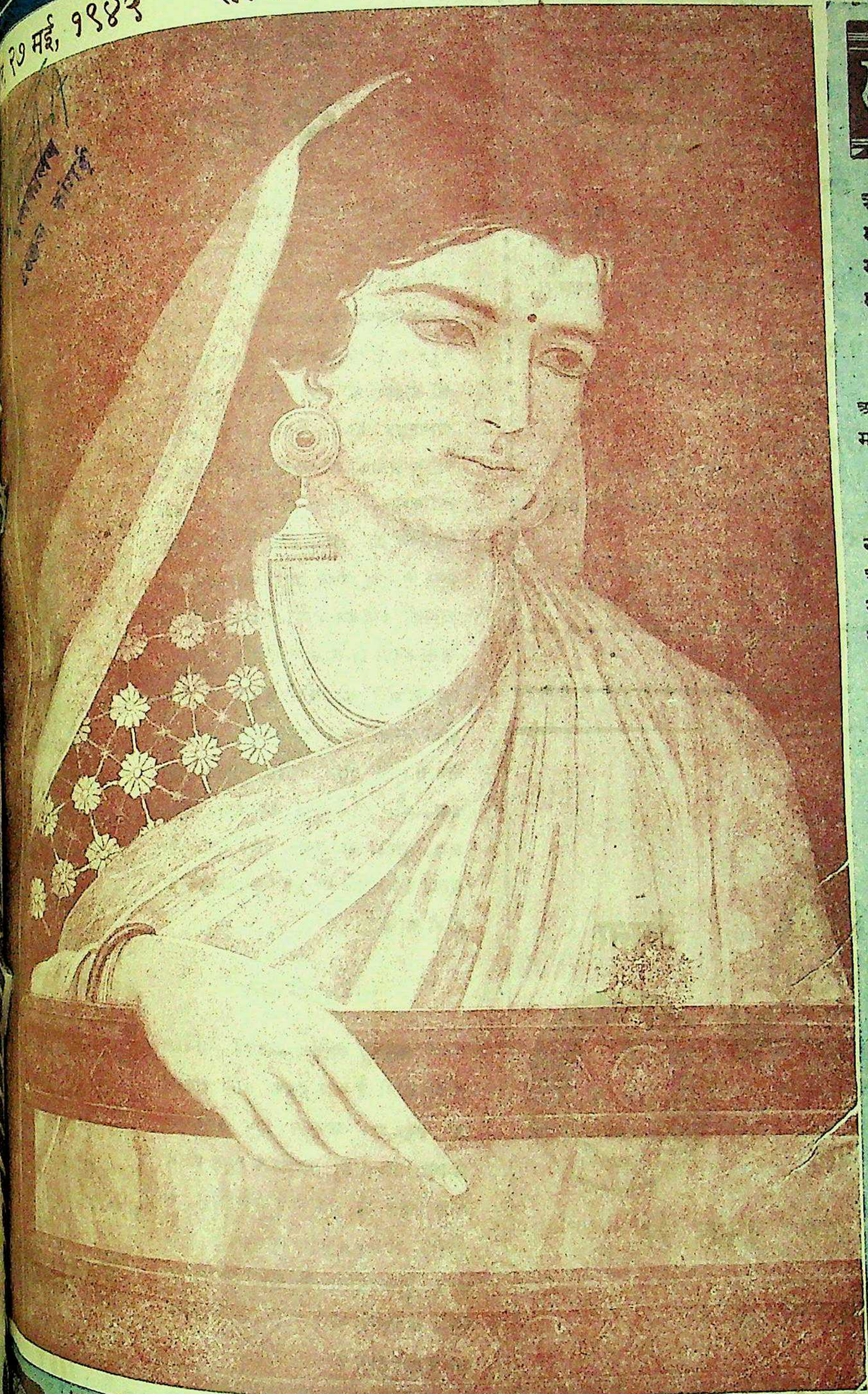

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका
महायुद्ध में अपनी बीती
बुभुक्षा
धरतीमाता

आधुनिक-उपन्यास

नरक
आरती
रूपान्तर
जमींदार
अग्रणी
निष्कलंकिनी
तीन नगीने
नया क़दम
त्याग का मूल्य
बहूरानी की हाट
देहाती समाज
साथी
अरक्षणीया
पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल
मशीन के पुर्ज़े
झंडा डाकू
महान् अपराधी
लाल दूत
घर का भेदिया
समस्या
जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली
पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हिन्दी के निर्माता
सूर-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

प्रत्येक का मूल्य ॥=) है।

वंचिना—बैरम खाँ की संरक्षकता में अकबर का सिंहासन पर बैठना, मुग़ल-राज्य की जमती हुई जड़ को उखाड़ फेंकने के लिए राजपूतों और पठानों का संयुक्त षड्यंत्र, विचित्र राजनैतिक दाँव-पेंच, नन्दिनी और सरदार विजयपाल का शुद्ध सात्विक और रोमांचकारी प्रेम, बैरम खाँ का महान व्यक्तित्व, क्रान्तिकारियों की अनोखी चालें—यह सब आपको इस ऐतिहासिक उपन्यास में मिलेगा। यह तत्कालीन समाज का ऐसा सजीव चित्र आपके सामने उपस्थित करेगा जो जीवन भर न भुलाया जा सकेगा। कथानक ऐसा रोचक और रोमांचक है कि पुस्तक बिना समाप्त किये चैन न पड़ेगा। सजिल्द पुस्तक का मूल्य ३॥) तीन रुपये आठ आने।

भारतीय उद्योग-धंधों में
हुई है, यह भीतर पढ़िये।

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र

मूल्य २ आना

अमरीका में श्रीमती विजयलक्ष्मी पं
क्या वह कलंकिनी थी—वेटिंग

यूनाइटेड कमर्सियल बैंक लि०

सबस्क्राइब्ड् कैपिटल ४ करोड़
पेड अप कैपिटल २ करोड़

बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स

मिस्टर जी० डी० बिरला (चेयरमैन)

मिस्टर एम० ए० इस्पहानी (वाइस चेयरमैन)।
सर आदम जी हाजी दाऊद
मिस्टर बैजनाथ जालान
" ईश्वरीप्रसाद गोइनका
" अनन्तचरन ला

मिस्टर रमनलाल जी० सरइया (वाइस चेयरमैन)
" महादेव यल० दहानुकार
" नवीनचन्द्र मफतलाल
" मदनमोहन आर० रुइया
" मोतीलाल तपुरिया

शाखायें

आगरा, अहमदाबाद, अजमेर, इलाहाबाद, अमृतसर, आसनसोल, बड़ौदा, बँगलोर, बनारस, बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, कोयम्बटूर, दिल्ली, देवघर, गिरीडीह, हैदराबाद (सिन्ध); जयपुर, कराची, कारीकूड, लाहौर, लायलपुर, मद्रास, मदूरा, नागपुर, नई दिल्ली, ओकारा (पंजाब), पिलानी, पुडुकोटा, क्वैटा, शिकारपुर, सूरत।

पे आफिस

आरिफवाला (पंजाब), बिंदकी (कानपुर), मियाँचन्नू (ओकारा), मान्टगोमरी (ओकारा), पालवाल (दिल्ली)।

विदेशी एजेन्ट

नेशनल सिटी बैंक आफ न्यूयार्क तथा रायल बैंक आफ कनाडा।

जनरल मैनेजर—मि० बी० टी० ठाकुर

हेड आफिस

२ रायल इक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता। ब्रांच आफिस—४ अलबर्ट रोड।
मिस्टर जी० के० टंडन, ब्रांच मैनेजर।

रोना
हँसना
GRIPE WATER

ग्राइप वाटर के उपयोग के बाद पेट के दर्द व खट्टे डकार से छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER

— keeps baby well

“दर्प से बढ़ता हुआ बालक” ही असली वुडवर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य सेवन किया करें।

WW 116—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

मधुशाला—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन सिक्त बनाइए। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

मानवता के लिए

इस संसारव्यापी महायुद्ध का अन्त अब निकट आ रहा है। जापान को पराजित करने के लिए जो चेष्टायें हो रही हैं उनके फलस्वरूप स्वाभाविक रूप से हमारे बहुत से सैनिक घायल होंगे। इन व्यक्तियों को डाक्टरों की सहायता और सहानुभूति आवश्यक होगी। सैकड़ों फ़ौजी डाक्टर घायल सैनिकों की सहायता करके चिकित्सा सम्बन्धी इतना अच्छा अनुभव प्राप्त कर लेंगे जो शान्तिकाल में मानवता की सेवा के लिए उनके बहुत काम आयेगा। आपको इंडियन आर्मी मेडिकल कोर में अभी भरती हो जाना चाहिए। योग्यता: उम्मीदवारों को फ़ौजी ड्यूटी के योग्य होना चाहिए और साधारणत: उम्र ४५ वर्ष से नीचे होनी चाहिए। उनके पास एम० बी० बी० एस० या एल० एस० एम० एफ० या एल० एम० एफ० या एल० एम० पी० या इसके बराबर योग्यता होनी चाहिए।

सर्विस की शर्तें

“ए” क्लास सर्विस—इसमें जनरल सर्विस होती है और इसके द्वारा डाक्टरों को युद्ध पर अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलता है। तरक़्क़ी के बहुत अच्छे मौक़े रहते हैं। सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर ४००) रुपए माहवार से तनख़्वाह शुरू होती है और लेफ्टिनेण्ट कर्नल के ओहदे पर १३५० रुपए माहवार तक तरक़्क़ी होती है।

“बी” क्लास सर्विस—इस क्लास में सिर्फ़ हिन्दुस्तान की सीमाओं के अन्दर नौकरी करनी पड़ती है। इस क्लास में ज़्यादा से ज़्यादा कैप्टेन के ओहदे तक तरक़्क़ी होती है। सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर २५० रुपये माहवार से तनख़्वाह शुरू होती है और
ओहदे पर ५५० रुपये
जाती है।

एलाउन्स (दोनों क्लासों के
स्पेशेलिस्ट की तनख़्वाह—
माहवार तक अतिरिक्त उन
लिए जिन्हें स्पेशेलिस्ट (
हैसियत से नियुक्त किया
चार्ज या कमाण्ड की
३० रुपये से २४० रुपये
अतिरिक्त उन अफसरों के
किसी विशेष कार्य पर
गया हो। वर्दी का एलाउन्स—
नियुक्ति पर ७३३ रुपये।
पेशगी-प्रथम नियुक्ति पर १००
ग्रेच्युटी—नौकरी के हर पूरे
लिए एक महीने की औसत
फ़ौज से बर्ख़ास्त होने के समय।
हिजी, परिवार, और विधवा के
पेन्शनें। नियमानुसार बच्चों के
शिक्षा संबंधी भत्ते। सेपरेशन
सफ़र के भत्ते और छुट्टी की रियायतें
स्तानी फ़ौज के दूसरे अफसरों की

प्राविन्शियल मेडिकल
प्रधान (सर्जन जनरल या
जनरल आफ सिविल हास्पिटल्स)
आफिसर्स कमांडिङ्ग, इंडियन
हास्पिटल्स, या डाइरेक्टर आफ
सर्विसेज़, जी० एच० क्यू०, नई
डाइरेक्टर जनरल, इंडियन
सर्विस, नई दिल्ली से पूरा विवरण
हो सकता है।

Indian Army Medical Corps

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, २७ मई, १९४५

७ संख्या ३६]

सीधो-टेढ़ो-खरो-मजेदार

[illegible] की चर्चिल सरकार भी [illegible] की श्राइयल तथा बेहया है। [illegible] लाख कहिए किन्तु वह [illegible] नहीं होती। उस दिन पार्ला- [illegible] सदस्यों ने प्रधान मंत्री मिस्टर [illegible] एक पत्र लिखा है जिसमें [illegible] है कि योरोप के जिस युद्ध में [illegible] महत्वपूर्ण भाग लिया है [illegible] गया है। इसके सिवा यह [illegible] है कि भारतीय केन्द्रिय एसे- [illegible] १४ बार हार खानी [illegible] सिद्ध है भारतीयों को वर्त- [illegible] विश्वास नहीं है। इसलिये [illegible] कि भारत में राष्ट्रीय सरकार [illegible] जाये और समस्त राजनैतिक [illegible] कर दिया जाये। बात तो [illegible] किन्तु बेहयाई की संसार [illegible] नहीं। यदि राष्ट्रीय सरकार [illegible] और राजनैतिक बंदियों [illegible] तो ऐसा न हो चर्चिल [illegible] टूट पड़े! इसलिये [illegible] अधिकारी काहे को [illegible] अगली जुलाई में [illegible] होने जा रहा है, [illegible] इसका परिणाम [illegible] क्या है?

* * *

[illegible] बड़े विचित्र जीव हैं। [illegible] मित्रराष्ट्रों अर्थात् [illegible] परेशानी में [illegible] पोलैण्ड को लेकर [illegible] और हमारे दोनों प्रजातंत्र [illegible] की रक्षा में मर मिटने [illegible] की खिचड़ी ऐसी पक [illegible] उसमें नमक और मसाला [illegible] तो वह खाने में बड़ा स्वाद [illegible] एडिन तो निराश हो [illegible] साफ साफ कह दिया है कि [illegible] में आगे गड़बड़घोटाले [illegible] दे रहे हैं। बात तो कुछ [illegible] की जरूर कही गई [illegible] जा रहा है कि तीनों बड़ों [illegible] लंदन में एकही हो कर [illegible] है। फैसला क्या होगा [illegible] की बात है लेकिन रूस अगर [illegible] और अमरीका पश्चिम!

* * *

[illegible] के यह पुजारी संसार का [illegible] चाहते हैं, किन्तु अपने स्वार्थों में इतने परेशान हैं कि इस वक्त वह गाढ़ी मित्रता कुछ पिलपिलाती सी नजर आ रही है। स्टेलिन बंद गले की कोट वाला प्रजातंत्र चाहते हैं और अमरीका-ब्रिटेन खुले गले के कोटवाला। एक एशिया को खाला जी का घर समझता है तो अमरीका और ब्रिटेन योरोप को। लेकिन हैं ये अभी परम मित्र। इसलिये ये मित्रगण संसार का उद्धार किस जादूगरी से करते हैं यही देखना हैं। संसार में ब्रिटेन अपनी चूना लगानेवाली कला के लिये प्रसिद्ध है? और भगवान की मर्जी से अब एक दूसरा भी मैदान में आ रहा है और वह समझे बैठा है कि चूना लगाना तो हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। रूस का डिक्टेटर बनने के बाद स्टेलिन ने इस कला को पुनर्जीवित किया है और वह अपने को इस कला का आचार्य समझता है। इसलिये देखना है कि प्रजातंत्र संसार में किस करवट बैठता है। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है कि—

सुर नर मुनि सब की यह रीती,
स्वारथ लागि करैं सब प्रीती।

अमरीका, ब्रिटेन और रूस के भाग्य-विधाताओं को कम से कम साधारण नरों में नहीं महानरों में तो गणना होती ही है।

* * *

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल की इँगलैंड यात्रा का रहस्य खुल रहा है। कहा जा रहा है कि वह अपने साथ एक ऐसा थैला ला रहे हैं जिसमें 'स्वराज्य' बड़े एहतियात से रखा हुआ है। हमें स्मरण है कि लार्ड वैवेल ने जब पहले-पहल भारत में पदार्पण किया था, उस वक्त भी वह एक थैला लेकर आये थे। किन्तु हमारे एक मित्र का कहना है कि उस वक्त वह 'थैला' नहीं बल्कि 'थैली' लेकर आये थे। खैर, कोई बात नहीं, 'थैला' न सही 'थैली' ही सही। मुसलिम लीग को विशेष रूप से वाइसराय की इक्जीक्यूटिव के सदस्यों के लिए यह निहायत प्रसन्नता की बात है कि इस बार वह 'थैला' ला रहे हैं। हमारी राय है कि नई दिल्ली में उनके पहुँचते ही 'थैले' को बड़ी सावधानी से टटोल कर खोलना चाहिए। कहीं ऐसा न हो 'स्वराज्य' उसमें ऐसा गायब हो जाये जैसे आज-कल बाजार से काफूर गायब हो गया है। मुसलिम लीगवालों को तो फौरन बंबई में ही पहुँच कर 'थैले' में हाथ लगा देना चाहिए क्योंकि भारत को जो 'स्वराज' मिलनेवाला है उसमें वह आधे के हिस्सेदार हैं। डाक्टर अम्बेदकर को भी ऐसे अवसर से न चूकना चाहिए। रही कांग्रेस, उसकी बात छोड़िए, वह तो बागियों की संस्था है। उन्हें तो 'स्वराज्य' मिलने से रहा। हमारे कम्यूनिष्ट भाइयों को भी बड़ी उम्मीद है। उनके सामने केवल दो सिद्धांत है, या तो लीग के मेल जोल से 'स्वराज्य' मिले या ठिकाने से 'शूराज्य' की स्थापना हो। हम तो बहुत अदना आदमी हैं। इस लिए ऐसी उलटबांसी तो हम बोल नहीं सकते। लार्ड वेवेल ऐसे उदार वाइसराय के थैले में 'स्वराज्य' हो प्राप्त हो सकता है 'शूराज्य' की संभावना नहीं। हाँ कम्यूनिस्ट भाइयों के भाग्य की बात हम नहीं जानते।

* * *

इस वक्त एक मजे की बात दिखाई दे रही है कि श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन और श्री संपूर्णानन्द जी चूँकि हिन्दी के पक्षपाती हैं, इसलिये कुछ मुसलमानों की दृष्टि में वह सच्चे कांग्रेसी नहीं ठहराये जा रहे हैं। हमें तो हँसी आती है कि ऐसा कहनेवाले मुसलमान अपने को कांग्रेसवादी कब से समझने लगे हैं, यह जरा ठिकाने से समझने की बात है। अपने राम की राय में कांग्रेसवादी मुसलमानों से भारत सूना नहीं है लेकिन छाती पर हाथ रखकर गौर करने पर यही पता चलेगा कि प्रत्येक मुसलमान पहले मुसलमान है इसके बाद और कुछ, अर्थात् कांग्रेसी, लीगी, जमायती आदि आदि। क्योंकि प्रत्येक मुसलमान उर्दू को अपनी राष्ट्रभाषा समझता है। हिन्दुस्तानी का भी अगर नाम लेता है तो भी उसका मतलब है उर्दू से। इस पर भी आले दर्जे का वह कांग्रेसी बना का बना ही रहता है। बंबई में डाक्टर जाकिर-हुसेन का भाषण इसके उदाहरण के लिये काफी है। लेकिन किया क्या जाय, अल्पसंख्यक होने का सौभाग्य जो इन्हें प्राप्त है?। सरकार बहादुर साथ ही कांग्रेस को इन्हें प्रसन्न रखना निहायत जरूरी है।

* * *

डाक्टर अब्दुलहक के पत्र 'हमारी जबान' के कथनानुसार श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन 'उर्दू के शत्रु' हैं, क्या इसलिये कि वह राष्ट्रभाषा हिन्दी के पक्षपाती हैं?

ऐसी दशा में यदि श्रद्धेय टंडन जी या श्री संपूर्णानंद जी सच्चे कांग्रेसवादी होते हुए भी अपने को हिन्दू या हिन्दी वाला समझते या कहते हैं तो क्या बेजा? हिन्दी का पक्ष समर्थन करने से न तो वह देशद्रोही हो सकते हैं और न अकांग्रेसी! यदि उर्दू के पक्षपाती कांग्रेसी मुसलमानों की दृष्टि में श्रद्धेय टंडन जी का हिन्दी का पक्ष समर्थन देशद्रोह है तो क्यों नहीं महात्मा गाँधी को बुरा भला कहनेवाले 'हमारी जबान' के खिलाफ जिसके विधाता डाक्टर अब्दुलहक हैं, आवाज उठाई जाती? किन्तु नहीं, मुसलमान हैं बड़े बहादुर और हिन्दू हैं केवल मिल्लत पसंद। उसी का फल हिन्दू आज पा रहे हैं। हमारी तो राय है कि यदि श्रद्धेय टंडन जी हिन्दी के पक्ष समर्थन से कोरे हिन्दू कहे जाते हैं तो अनैतिकता तथा अवसरवाद के शिकारियों से वह लाख अच्छे हैं, इसका फैसला समय करेगा। हिन्दुस्तानी का मूल्य चुकायेंगे वही उर्दू दाँ जिनके लिये हिन्दी को बलिदान का बकरा बनाया जा रहा है।

* * *

यूनाइटेड प्रेस के प्रतिनिधि से मिलने पर श्री राजगोपालाचारी ने कहा कि गांधी जी के वर्धा चले जाने पर मैं उनसे फिर मिलने की आशा रखता हूँ। मुझे प्रसन्नता है कि अब उनका स्वास्थ्य अच्छा है।

* * *

अ० भा० मुसलिम लीग के अध्यक्ष मि० जिन्ना का स्वास्थ्य मरोगान में आने के समय से बहुत सुधर गया है। यदि यह सुधार जारी रहा, तो मि० जिन्ना शीघ्र ही राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेने लगेंगे।

[illegible] युद्धमोर्चे पर विजय प्राप्त करनेवाले सेनापति—आगे जनरल पैटन, जनरल ओमर ब्रैडले, जनरल आइसेन हॉवर, जनरल हाजेज और जनरल सिम्पसन।

सम्पादक का पृष्ठ

आज का रूस—एक रहस्य

योरोपीय युद्ध समाप्त हो जाने पर आज रूस एक रहस्य बन बैठा है। मित्रराष्ट्रों अर्थात् ब्रिटेन, अमरीका तथा रूस ने नाजियों को नेस्तनाबूद करने में अपनी जिस एकता तथा शक्ति-व्यय का परिचय दिया उसी के परिणाम-स्वरूप योरोपीय युद्ध की समाप्ति हुई है, इसमें तनिक भी संदेह की गुंजाइश नहीं है। यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय गति-विधि को देखते हुए हमें बहुत पहले से आभास हो रहा था कि नाजियों को पराजित करने में तीनों मित्रराष्ट्र एक अवश्य हैं किन्तु सैद्धान्तिक दृष्टि से इनकी मनोभावनाओं तथा विचारों में विशेष अन्तर है। इसी लिये शंका होती थी कि क्या भविष्य में भी यह तीनों राष्ट्र युद्ध-सम्बन्धी प्रत्येक मामलों में एक मत रह सकेंगे या नहीं? इसका कुछ कुछ आभास आज हमें रूसी नेताओं के वक्तव्यों, विचारों तथा भाषणों में मिल रहा है। इसका यह तात्पर्य नहीं है कि रूस मित्रराष्ट्रों के गिरोह से अलग हो गया है। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में वह अपनी स्वतंत्र सम्मति अवश्य व्यक्त कर रहा है। इसका पहला प्रत्यक्ष प्रमाण हमें उस वक्त मिला जब कि योरोपियन युद्ध की इतिश्री की घोषणा हुई और मिस्टर चर्चिल, प्रेसिडेंट ट्रूमन तथा मार्शल स्टेलिन के विजय-संदेश प्रचारित हुए। मिस्टर चर्चिल तथा प्रेसीडेंट ट्रूमन ने अपने विजय के सन्देशों में जापान को युद्ध के लिए ललकारा है किन्तु मार्शल स्टेलिन ने क्या कहा? यह भी एक रहस्य का विषय है। आज भी जापान रेडियो अमरीका और ब्रिटेन को अपना शत्रु घोषित कर रहा है किन्तु रूस को वह आज भी अपना मित्र ही समझे बैठा है, यद्यपि उसकी मित्रता की संधि पिछले महीने भंग हो चुकी है। पोलैंड के मामले में रूस अब भी अपनी पूर्व नीति पर स्थिर है वह पोलैंड के लंदन-स्थित पुराने अधिकारियों के सत्व को स्वीकार करने को तैयार नहीं है। जनरल टीटो का मामला अभी भी ताजा ही है। आखिर टीटो को पीछे से या गुप्त रूप से कोई सहारा दे रहा है या नहीं?

सबसे बड़ा रहस्य तो खुला सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में जब कि रूस के परराष्ट्र मंत्री मिस्टर मोलोटोव ने अपने भाषण में ऐसे विचार व्यक्त किये जो साम्राज्यवादी राष्ट्रों की नीति के विपरीत थे। मोलोटोव ने भारत का भी उल्लेख किया साथ ही संसार के पराधीन राष्ट्रों के आत्म-निर्णय की ओर भी उपस्थित प्रतिनिधियों का ध्यान आकर्षित किया। उनके भाषणों तथा विचारों से सेनफ्रांसिस्को-सम्मेलन के वातावरण में साम्राज्यवादियों की स्वार्थ-तत्परता में थोड़ी अस्तव्यस्तता उत्पन्न हो जाना अनिवार्य था। इन्हीं सब समस्याओं के परिणाम-स्वरूप ब्रिटेन के परराष्ट्र मन्त्री मिस्टर ईडेन जब लंदन पहुँचे तो उन्हें मित्रराष्ट्रों की भावी एकता के संबंध में निराशा का विशेष अनुभव हुआ और उन्होंने यहाँ तक कह डाला कि यदि मित्रराष्ट्रों में कुछ कारणों से भविष्य में मतभेद पैदा हो जाये तो आश्चर्य नहीं। अमरीका और ब्रिटेन ने जापान के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ कर दिया है किन्तु रूस क्या कर रहा है? क्या वह भी प्रशांत के युद्ध में जापान को पछाड़ने में दोनों साम्राज्यवादियों से कंधा से कन्धा मिलाकर लग गया है? हाँ, रूस प्रशांत के क्षेत्र में भी अपना स्वार्थ अवश्य रखता है। यद्यपि इसका भी स्पष्टीकरण तो नहीं हुआ है किन्तु मिस्टर मोलोटोव के भाषण में इसका आभास थोड़ा बहुत पाया जाता है।

जो कुछ भी हो इस समय रूस एक रहस्य अवश्य बनता जा रहा है। प्रत्यक्ष रूप से वह मित्रराष्ट्रों का एक अंग अवश्य बना हुआ है किन्तु योरोपीय युद्ध के बाद उसका कोई कर्तव्य नजर नहीं आ रहा है। रूसी राजनीतिज्ञ जो कुछ कह रहे हैं, वह भी बहुत नाप-तोल कर, यही नहीं अनेक महत्त्वपूर्ण समस्याओं पर उसने मौन नीति भी ग्रहण कर ली है। वह बोलता बहुत कम है। राजनीति में जो बोलता कम है वह खतरनाक अधिक समझा जाता है। यही रवैया रूस का भी है। आज कल लोगों का अटकल है कि रूस जापान पर शीघ्र हमला करनेवाला है और वह दिन शीघ्र आयेगा जब रूस और जापान में जमकर लड़ाई होगी। यदि वास्तव में इस कथन में सचाई है तब तो मित्रराष्ट्र सचमुच जापान को बिना पदस्थ किये हुए नहीं रहेंगे किन्तु यदि कुछ गड़बड़-घोटाला हुआ तो भविष्य में इसका परिणाम स्वयं प्रकट होगा। किन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि मित्रराष्ट्रों में अभी तक एकता स्थापित है। उनका पारस्परिक संबंध भङ्ग नहीं हुआ है। ऐसी दशा में जापान के साथ इन तीनों का सामूहिक युद्ध होना अनिवार्य है। फिर भी हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि रूस की आज की नीति इतनी रहस्यमय तथा कूटनीति से पूर्ण है कि कहा नहीं जा सकता कि भविष्य में वह क्या करेगा और उसके वर्त्तमान रहस्य का कब उद्घाटन होगा?

* * *

सम्मेलन का सुधार क्यों?

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी हिन्दी संसार के उन रायबहादुरों में से एक हैं जो ठीक मौके पर प्रायः सचेत हो उठते हैं। उदयपुर में हिन्दी-साहित्य सम्मेलन होने जा रहा है इसलिए वह चाहते हैं कि सम्मेलन में सुधार के लिए एक जाँच कमीशन बैठाया जाये। इसके सिवा उन्होंने कुछ प्रस्ताव भी प्रस्तुत किये हैं जिससे सम्मेलन अधिक उपयोगी और क्रियाशील बन सके। हम तो केवल एक बात पूछना चाहते हैं कि पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के पूर्व सुझावों पर सम्मेलन तथा हिन्दी संसार-द्वारा अब तक कहाँ तक अमल किया गया है? क्योंकि सम्मेलन के सुधार के लिए वह पिछले १५-२० वर्ष से आन्दोलन करते आ रहे हैं? क्या कोई परिणाम निकला? इसका क्या कारण है? इस पर भी क्या उन्होंने कभी गम्भीरता-पूर्वक विचार किया? यह संस्था त्रिशंकु की भाँति अपनी स्थिति बनाये बैठी है अर्थात् न तो यह साहित्यिक संस्था है और न राजनीतिक ही। इसी लिए चतुर्वेदी जी के 'अखबारी प्रचार' का आज तक उसके क्रमागत जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। हमारी समझ में आवश्यक है सम्मेलन के विधान में आमूल परिवर्तन की। हमारा भी सम्मेलन से पिछले २० वर्ष का संबन्ध है। इसलिये अनुभव है कि श्रद्धेय टंडन जी जैसा उसे चला रहे हैं, वह पवित्र और निर्दोष है। जहाँ केवल त्याग और सेवाभाव से ही राष्ट्रभाषा हिन्दी का कार्य होता रहता है वहाँ सुधार की गुंजाइश कहाँ? रहे पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, उनके संबन्ध में तो यह धारणा सदा से घर कर गई है कि वह एक सामयिक और जोरदार रायबहादुर हैं। उनका आन्दोलन प्रायः सामयिक चर्चा का एक अस्थायी विषय बनकर रह जाता है।

* * *

सभापति कौन हो?

उदयपुर में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सभापति कौन हो, इस सम्बन्ध में सम्मेलन कार्यालय से अभी तक कोई नियमित कार्यवाही प्रारम्भ नहीं हुई किन्तु उदयपुर सम्मेलन की स्वागत-कारिणी समिति के उपस्वागताध्यक्ष बनेड़ा के राजकुमार मानसिंह ने प्रस्ताव किया है कि प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक पंडित हरिभाऊ उपाध्याय सभापति-पद पर आसीन किये जायें। राजकुमार मानसिंह ने अपने वक्तव्य में यह भी कहा है कि राजस्थान में होनेवाले इस सम्मेलन का सभापति बनाने में राजस्थानी को न भूलना चाहिए। हम व्यक्तिगत रूप से पंडित हरिभाऊ उपाध्याय के सभापति बनाने के विरोधी नहीं हैं किन्तु जिस तर्क के सहारे राजकुमार साहब हरिभाऊ जी को सभापति बनाना चाहते हैं वह उनकी मर्यादा के विपरीत है। उदयपुर में होनेवाला सम्मेलन अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन है न कि राजस्थान या राजपूताना हिन्दी साहित्य सम्मेलन। सम्मेलन के सभापति का चुनाव नियमावली के अनुसार मतदाताओं के बहुमत द्वारा होता है, जिसकी कार्यवाही शीघ्र ही होगी। जो बहुमत प्राप्त करेगा, वही सभापति होगा। हमारी राय में उदयपुर स्वागत-समिति से पदाधिकारी चुनावसम्बन्धी मामलों और विवादों से यदि अपने को अलग रखें तो अधिक अच्छा होगा। राजकुमार मानसिंह के वक्तव्य की ईमानदारी में मुझे सन्देह नहीं हैं किन्तु उनके तर्क तथा इस सम्बन्ध में नेतृत्व करने के तौर-तरीके में, विधान तथा मर्यादा की दृष्टि से हमारा मतभेद है और उसमें कुछ स्थानीय पक्षपात का अंश दिखाई देता है।

हाँ-हाँ कम्यूनिस्ट—एक दृष्टि

लेखक, श्री 'कौतुक' बनारसी

लेखक—कामरेड किसानसिंह; प्रकाशक—रूस-पुत्र-प्रकाशन समिति, बनारस; पृष्ठ-संख्या ४० × ४ + ६; मूल्य कुछ नहीं, वितरणार्थ।

प्रस्तुत निबन्ध-संग्रह में कामरेड किसानसिंह ने कम्यूनिस्टों के करतब पर कलम-कुल्हाड़ा चलाकर काफी काट-छाँट की है। भूमिका में भारी भरकम विचारों को पाठकों के पैर पर प्रस्तुत करते हुए, सर्वप्रथम आपने लाल रूस की वन्दना की है। तत्पश्चात् पाठक को लाल सलाम करते हुए आपने अपनी उन भभकती भावनाओं का दिग्दर्शन कराया है जिनकी जमावट से जेहन खराब हो जाने पर अन्त में आजिज आकर सभी कम्यूनिस्टों पर एक नजर फेंकनी पड़ी।

कामरेड किसानसिंह ने अपने स
में केवल इतना ही लिखा है कि वे
कभी चारपाई पर पड़ने के पश्चात् ही
रूस पहुँच जाते हैं जहाँ उनका स्वागत
हैसियत से होता है जिस हैसियत से
त्राता स्टालिन और किसी मजदू
मास्को की पार्टी में होता होगा
किसानसिंह को जीवन भर इस बात
दुःख बना रहेगा कि ऐसे अवसर पर
कि स्टालिनिस्ट भारत एक लम्बी
क्रान्ति के दरवाजे पर पहुँच चुका है
युद्ध के कारण रूस नहीं जा पा रहे
इस आन्तरिक दुःख का उन्होंने
उल्लेख कर दिया है। पुस्तक के
निबन्ध कामरेड किसानसिंह के मस्
पर लिखे या कहे गये विचारों के
मात्र हैं। फिर भी किसी स्टालिनि
पर्याप्त सन्तोष के कारण बन सकते हैं
सन्देह की गुंजाइश नहीं।

पहला निबन्ध 'रूस की ओर'
जोरदार चीज है। इस निबन्ध में
अपनी आत्मा को क्षितिज पार
एक मधुर कल्पना की है कि
भारत का प्रत्येक प्राणी, जड़
पवि या पाहन, आकर्षित हो रहे हैं।
उन्हें रोकने और गुमराह करने
शक्तियाँ कार्य कर रही हैं। जिनके
लेखक 'बाबू साहब' ने यह उपाय
है कि प्रत्येक स्टालिनिस्ट को सँभल
कर चलना होगा। किन्तु, यहाँ पुस्त
आलोचक की हैसियत से मुझे यह
ही पड़ेगा कि कामरेड किसानसिंह की
धारणा निराधार है। अभी कुछ दि
पूर्व राहुल जी रूस चले गये हैं।
गुमराह करनेवाले कहाँ रहे? फि
चाह है वहाँ राह है। अपने प्रियत
शरण में जानेवाली मथुरा की चौबा
तो उसके पति रोक ही न सके, वह
पूर्व कृष्ण के चरणों में आ
फिर ऐसा आरोप करना कुछ ठीक

दूसरे निबन्ध में आपने लिखा है
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के रेडियो
प्रस्ताव का पता आपको अधिवेशन
चार मास बाद लगा। इस बीच
पर सुने गये रूसी गानों
समाचारों के सम्बन्ध में आपके
जानेवाले साथियों के क्या विचार हैं,
दूसरे निबन्ध की मूल वस्तु है। बीच
में प्रसंगवश कुछ घटनाओं का भी
है, जैसे पार्टी के एक सदस्य को आर
लिए रूस के गाने सुनने देना अच्छा
समझते थे क्योंकि वह अपने अन्य
के यहाँ मजाक उड़ाया करता था
कहता था कि 'कामरेड किसानसिंह
गाने बिना समझ में आये भी झूम-
सुना करते हैं।'

'लोक-युद्ध की लीला' जैसे निब
कुछ विशेष सुझाव उपस्थित न कर
'कामरेड की कमाई' जैसे निबन्ध में
यह बतलाने की अपूर्व चेष्टा की है
प्रत्येक कम्यूनिस्ट को किसी 'राष्ट्रीय'
में घुसकर उसका भेद लेते रहना चाहि
अखबारों में मजाक का कालम लिख
का ठीक-ठीक पता लगा लेने पर, कु

—शेष पृष्ठ १८ पर दे

[illegible]काल में यह उद्योग-धंधे क्यों ?

[illegible]योगों के लिए है या जनता के लिए भी ?

लेखक, प्रोफ़ेसर गङ्गाचरण पांडेय, एम० ए०

[illegible] ने किस तरह के भारतीय उद्योग-धंधों का विस्तार हुआ और उससे युद्धोद्योग [illegible] आवश्यकताओं की पूर्ति की गई, आंकड़ों-द्वारा इस लेख में यह प्रमाणित किया [illegible] किन्तु इन उद्योग-धन्धों-द्वारा जनता का भी क्या कुछ लाभ हुआ ? यदि हुआ तो [illegible] मंहगाई क्यों अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई है, यह भी तनिक समझने और विचार करने के लिए एक रोचक समस्या है।

[illegible] के बाद ब्रिटिश राष्ट्र [illegible] देशों पर, जो स्वेज नहर के [illegible] हैं, युद्धोद्योग का भार बढ़ [illegible] पर केवल अपने ही लिए [illegible] स्थित मित्र सेना के लिए [illegible] युद्ध-सामग्री प्रस्तुत करने [illegible] आ पड़ी थी। पूर्व देशीय [illegible] निश्चयानुसार भारत को [illegible] के रूप में परिणत [illegible] भारतीय उद्योग का [illegible] गति से आरम्भ हुआ [illegible] आवश्यक युद्ध सामग्री की [illegible] में तैयार होने लगीं। [illegible] जहाजों तक, बटनों से [illegible] और धूप के रंगीन [illegible] तक—भांति-भांति [illegible] के कारख़ाने देश [illegible] विभिन्न रण क्षेत्रों की [illegible] के लिए वस्त्र, शस्त्रास्त्र [illegible] की आवश्यकता थी।

[illegible]

[illegible] अन्य प्रदेशों [illegible] अनेक प्रकार [illegible] थी। मच्छर- [illegible] शस्त्रास्त्रों के उत्पा- [illegible] कई तरह के सूती [illegible]। इसमें सन्देह नहीं [illegible] मिलों को सामरिक [illegible] पूर्ति के लिए करोड़ों [illegible] करना पड़ा। मिलों [illegible] से कम १३८ प्रकार [illegible] तैयार की जाती रही हैं। [illegible] तक सूती उद्योग के [illegible] प्रतिशत भाग सरकार [illegible] की पूर्ति के लिए [illegible] एक वर्ष बाद वह बढ़ाकर [illegible] दिया गया।

[illegible] चीजें भारत में तैयार [illegible] विषाक्त वायु निरोधक [illegible] कपड़ा भी था। तम्बुओं [illegible] में सबसे अधिक रहा [illegible] १९४० में ५३ नई [illegible] गई थीं। मध्य-पूर्व, सुदूर [illegible] के देशों की तम्बुओं और खेमों की अधिकांश पूर्त्ति भारत से ही की गई। सन् १९३९-४० में १ करोड़ रुपये के, सन् १९४०–४१ में ८ करोड़ ३० लाख रुपये के सन् १९४१–४२ में १३ करोड़ के, और सन् १९४२–४३ में १६ करोड़ के खेमों के सरकारी आर्डर मिलों को दिये गये। लगभग ५० हज़ार कारीगर खेमों का ही काम करते रहे हैं।

ऊनी वस्त्रोद्योग का पूर्ण उत्पादन यौद्धिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए लिया जाता था। मिलों और करघे जो ऊनी कपड़ा, मोजे, बनियाइन आदि तैयार करते थे, उन सबको सेना के लिए सरकार ले लेती थी। जून सन् १९४३ तक करघों से बुने २० लाख कम्बल प्राप्त हो चुके थे।

भारत तथा विदेशों की सेनाओं के लिए, हैटें भी भारी संख्या में तैयार की गईं। एक और पदार्थ जिसकी माँग दिनों-दिन बढ़ती ही गई, भारत में भारी संख्या में तैयार हुआ। ये पाट की डोरी से बुने हुए विभिन्न रंगों के जाल थे जिनका उपयोग युद्ध-क्षेत्र में विभिन्न सामग्री को ढांकने और छिपाने के लिए किया जाता था।

हवाई छतरियों का उत्पादन

सन् १९४४ में हवाई छतरियों का विशेषतः आकाश से सामग्री गिरानेवाली छतरियों का उत्पादन सात गुना अधिक बढ़ गया। सूती छतरियों के उत्पादन में बड़ी शीघ्रता से वृद्धि की गई। आकाश से छोटे शस्त्रास्त्र गिराने के लिए रेशम की छतरियाँ भी तैयार की गईं।

सेना के लिए सिले हुए कपड़े सबसे अधिक सन् १९४३ में तैयार किये गये। इन दिनों मध्य-पूर्व की मित्र सेनाओं को सम सामग्री पहुँचाने के लिए, भारत ही निकटतम अड्डा था। मार्च १९४३ में १ करोड़ २० लाख से अधिक सिले हुए कपड़े तैयार हुए। इन दिनों ७० लाख कपड़े हर महीने सिलकर तैयार होते रहे। ८ कारख़ाने अकेले सिलाई का ही काम करते थे। इनमें क़रीब ९० हज़ार कारीगर थे। युद्ध के पाँचवें वर्ष में इन लोगों ने प्रायः २१½ करोड़ गज़ कपड़े और ५ अरब ६० करोड़ गज़ धागे से ७,८९,४१,५९७ कपड़े सीकर तैयार किये, जिनमें ५० करोड़ बटन टांके गये।

भारतीय वायुसेना के चालक आनन्द का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

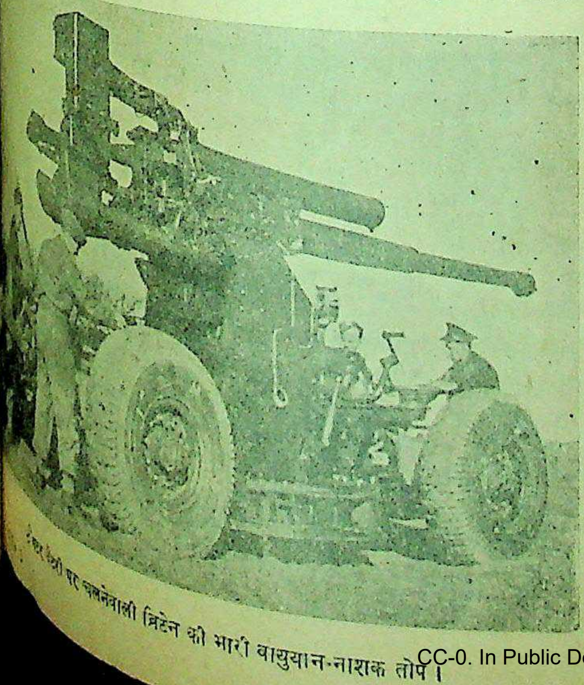

[illegible] पर चलनेवाली ब्रिटेन की भारी वायुयान-नाशक तोप।

लकड़ी का सामान

माल ढोनेवाली मोटरों के ढांचे, जहाज़ और देशी नावें बनाने के काम में भारत की इमारती लकड़ी का काफ़ी प्रयोग किया गया। युद्ध-बंदियों के रहने के लिए कठघरे बहुतायत से इस लकड़ी के बनाये गये। जो अन्य चीज़ें तैयार करके दी गईं, उनमें तार के खम्भे, रेल मार्गों के लिए कई तरह के सलीपर, खेमों के खम्भे, गोलों-कारतूसों को रखने के बक्स आदि अनेक वस्तुएँ थीं। सन् १९४०–४१ में २,४२,००० टन १९४१–४२ में ७,५३,००० टन, १९४२-४३ में ८ लाख ६३ हज़ार टन और १९४३-४४ में १२,७४,००० टन वजनी की लकड़ी की चीज़ें सप्लाई की गईं।

विमान तैयार करने के काम में आनेवाली विशेष प्रकार की लकड़ी भी भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त की गई। अनेक वस्तुएँ निर्माण करने में "प्लाईवुड" की अत्यधिक आवश्यकता थी। अतएव प्लाईवुड तैयार करने के लिए कई कारख़ाने खोले गये। भारत में अब ६ करोड़ वर्गफुट से अधिक "प्लाईवुड" प्रतिवर्ष तैयार होती है।

रसायन उद्योग

भारत के रसायन उद्योग में भी पर्याप्त विस्तार हुआ है। सोडा, चूर्ण, कास्टिक सोडा, ब्लीचिंग पाउडर, क्लोरीन, सोडियम थायो सल्फेट, क्रोमिक एसिड आदि अनेक ऐसे रासायनिक द्रव्य हैं, जो अब भारत में भारी मात्रा में तैयार होने लगे हैं। युद्ध से पहले ये द्रव्य भारत में या तो तैयार ही नहीं होते थे अथवा बहुत ही अल्प मात्रा में तैयार होते थे। औषधियों के काम के अनेक पदार्थ, पहले जो बाहर से मँगाये जाते थे, अब भारत में ही तैयार होते हैं। देशी रसायनों की माँग काफ़ी रही है। स्ट्रिशनीन, केफीन तथा सेंटोनीन नामक द्रव्य भारत में अत्यधिक मात्रा में तैयार किये गये हैं और पेनिसिलीन तैयार करने की व्यवस्था भी की गई है। ऐसी प्रायः ३०० दवाएँ हैं, युद्ध से पहले जो बाहर से मँगानी पड़ती थीं किन्तु अब भारत में ही तैयार होती हैं। अस्पतालों में आनेवाले कई प्रकार के औजार भी देश में ही बनने लगे हैं।

रबड़ और चमड़ा

भारत ने रबड़ की कमी की समस्या संचय, वृक्ष-रोपण तथा पुरानी रबड़ के पुनर्मार्जन-द्वारा बहुत दूर तक हल कर ली है। कई नये कारख़ाने खोले गये और कई पुराने कारख़ाने नागरिक आवश्यकताओं की चीज़ें बनाना छोड़कर सैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ तैयार करने लगे हैं। रबड़ की बनी चीज़ों में भारत प्रायः स्वावलम्बी रहा है।

सरकारी चमड़े के कारख़ाने (गवर्नमेंट हारनेस एंड सैडलरी फैक्टरी) में काम करनेवाले मजदूरों की संख्या २,००० से बढ़ाकर १८ हज़ार कर दी गई है। इसके अतिरिक्त चमड़े के काम के ५ अन्य कारख़ाने भी हैं, जिनमें ७०० ठेकेदार करीब २५ हज़ार मजदूरों से काम लेते हैं। इन कारख़ानों में १५–२० करोड़ रुपये का माल प्रतिवर्ष तैयार होता है।

इनके सिवा टैनरियाँ भी हैं, जिनमें चमड़ा साफ़ किया और कमाया जाता है। टैनरियाँ सरकारी नियंत्रण में काम कर रही हैं। इन टैनरियों में सन् १९४१ में ७६ लाख जोड़े और सन् ४२ में १,६२,२०,००० जोड़े जूते तैयार हुए। सन् ४३ और ४४ में उत्पादन कम हो गया। टैनरियाँ जूतों के विभिन्न भाग, एडी, सोल आदि भी तैयार करती रहीं।

विविध वस्तुएँ

विविध प्रकार की अन्य वस्तुएँ भी तैयार की गईं, जिनमें कुछ ऐसी थीं, युद्ध से पहले जो भारत में नहीं तैयार होती थीं। इनके उत्पादन में कितनी उन्नति हुई है, इसका अनुमान इसी से कर लिया जा सकता है, कि जहाँ सन् १९४०–४१ में कुल ७१ लाख रुपये की वस्तुएँ उपलब्ध हो सकी थीं, वहाँ सन् १९४१–४२ में वे ४ करोड़ ८८ लाख रुपये की प्राप्त हो सकीं। इन विविध वस्तुओं में साइकिलें, सिलाई की मशीनें, स्पिरिट लैम्प, बिजली के बल्ब, सेफ्टी रेजर, ब्लेड, बूट-पालिश आदि सम्मिलित हैं।

ग्रामोद्योग

इनके अतिरिक्त प्रान्तीय सरकारों ने ग्रामोद्योगों से भी कुछ वस्तुओं के उत्पादन की व्यवस्था की है, जैसे कंघे, ताले, सींगों और हड्डियों के बटन आदि। गाँवों में, आवरण के लिए जालों की बुनाई का काम बहुत फैला। १९४१–४२ में गाँवों से १ करोड़ ८२ लाख रुपये के जाल तैयार हुए। ये जाल बड़े काम के होते थे, फिर भी इनका बनाना बहुत सरल था। देहाती क्षेत्रों में जुलाहों ने करघों से पर्याप्त मात्रा में वस्त्र तैयार किया। इसमें खेमों के लिए दुसूती का उत्पादन सबसे अधिक रहा।

सन् १९४१–४२ में छोटे धन्धे करनेवाले व्यापारियों को ४ करोड़ ९८ लाख रुपये के माल के आर्डर दिये गये। १९४२–४३ में ६ करोड़ १० लाख के और आर्डर इन लोगों को दिये गये।

राजपूताना के मीणा और मध्यभारत के भील

समाज-सुधार सम्बन्धी आन्दोलन को क्यों दबाया जाता है?

लेखक, श्री सत्यदेव, विद्यालंकार

राजपूताने में मीणा और भील ऐसी जातियां हैं, जो अशिक्षा, सुधार तथा जागृति के बिना बड़ी गरीबी और दयनीय स्थिति से जीवनयापन कर रही हैं। इस लेख में लेखक ने देशी नरेशों का ध्यान इन जातियों के सुधार तथा सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से उन्हें उन्नत बनाने की ओर विशेष रूप से आकर्षित किया है।

आज देशी राज्यों की स्थिति बड़ी दयनीय होती जा रही है। महायुद्ध के पिछले छः वर्षों में कहीं भी वास्तविक सुधार न होकर स्थिति बदतर ही हुई है। ब्रिटिश भारत के स्वेच्छाचारपूर्ण आर्डिनेंसों से उसको और भी अधिक प्रोत्साहन तथा प्रजा के मौलिक, नागरिक अधिकारों का दमन करनेवाले स्वेच्छाचारपूर्ण शासन को बल ही मिला है। वास्तविकता से सर्वथा रहित शासन-सुधारों का दिखावा भी तो इन राज्यों को करना नहीं आता। जयपुर के शासन-सुधारों को क्रियात्मक रूप देने के लिए जब एक ओर धारा-सभाओं के चुनावों की तैयारियाँ की जा रही थीं, तब दूसरी ओर मीणा राजपूतों के समाज-सुधार के आन्दोलन को दबाने के लिए मीणा सुधार-समिति के कार्य-कर्ताओं के विरुद्ध कानूनों का प्रयोग किया जा रहा था। किसी बड़े से बड़े सन्देह या आशंका के आधार पर भी इस काम को न्यायसंगत नहीं ठहराया जा सकता। गत वर्ष लगभग इन्हीं दिनों मीणों का सम्मेलन सहन नहीं किया जा सका। सम्मेलन का स्वरूप विशुद्ध सामाजिक था। शिक्षा तथा समाज सुधार पर उसमें विशेष जोर दिया गया था। निस्सन्देह मानवता के लिए जरायमपेशा कानून और चौकीदारी-प्रथा को हटाने की माँग जरूर की गई थी।

इन्दौर से इन्हीं दिनों में प्राप्त हुए समाचारों से हमारी वह धारणा और भी दृढ़ हो गई है। राजपूताना के कुछ देशी राज्य जैसे मीणों की जागृति से विचलित हो उठे हैं, ठीक वैसे ही भीलों की जागृति से मध्यभारत के देशी राज्य विचलित हो गये जान पड़ते हैं। मीणों से भी अधिक भीलों को दबाकर रखा गया है। भीलों में मानवीय भावना पैदा ही नहीं होने दी गई। सभी दृष्टियों से वे पिछड़े हुए हैं। जीवन की आवश्यकताओं का आर्थिक दृष्टि से भी पूरा करना उनके लिए सम्भव नहीं रहा है। गरीबी, कंगाली, अशिक्षा और अर्द्धनग्न जंगली जीवन उनका स्वभाव बन गया है। इस दुःसह स्थिति से भीलों का उद्धार करने के लिए अनेक प्रयत्न किये जा रहे हैं। ठक्कर बापा ने अपने को उनकी सेवा में बहुत खपाया है। गुजरात तथा बम्बई से लगे हुए प्रदेश में विशेष कार्य हो रहा है। इन साधकों में श्री बालेश्वरदयाल जी का स्थान अलग ही है। हम उन्हें पिछले सात-आठ वर्षों से जानते हैं। मध्यभारत के सर्वथा उपेक्षित प्रदेश बामनिया में केन्द्र बनाकर वे एक प्रकार से तपस्या ही करने में लगे हुये थे, वहाँ उन्होंने भील आश्रम कायम किया, विद्यालय की स्थापना की, कुछ दवा-दारू का प्रबन्ध किया, सेवामंडल का संगठन किया, दानवीर सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला के पीछे पड़कर राम का मन्दिर बनवाया। भीलों में क्षत्रिय होने की अनुभूति पैदा की और समाज में उनको उचित स्थान दिलाने का यत्न किया। इसी पर झाबुआ और आस-पास के देशी राज्यों में परेशानी पैदा हो गई। कहा जाता है कि झाबुआ के अनुरोध पर इंदौर सरकार ने भी बालेश्वरदयाल जी को २४ घंटों में अपने राज्य से बाहर हो जाने और फिर वापस न आने की नोटिस देकर बामनिया से निर्वासित कर दिया। इंदौर के प्रस्ताव में कहा गया है कि इनकी खतरनाक हरकतें झाबुआ राज्य के साथ इंदौर महाराज के सम्बन्धों में खलल पैदा करनेवाली हैं और वे युक्तप्रान्त के निवासी होने से इंदौर के लिए विदेशी हैं। ये दोनों ही बातें उपहासास्पद हैं। आज तक श्री बालेश्वरदयाल जी के कार्य के सम्बन्ध में कभी भी कुछ भी आपत्ति नहीं की गई। एकाएक निर्वासन का हुक्म हो जाना सिवाय इसके और क्या अर्थ रखता है कि लोक-सेवा के जिस कार्य को राज्य का आश्रय प्राप्त होना चाहिए, उसको भी देशी राज्य सहन नहीं कर सकते। यह कितनी दयनीय स्थिति है!

राजस्थान के यशस्वी पत्रकार श्री अचलेश्वरप्रसाद शर्मा ने बाँसवाड़ा के भीलों की आँखों देखी स्थिति का जो भयानक चित्र खींचा है वह दुःखद है। शर्मा जी लिखते हैं कि राज्य में उपज न होने पर भी अधिकांश जनता गरीबी, अज्ञान और व्याधियों के में बँधी हुई है। देशी रियासतों का यदि ऐसा ही रहा तो मीणों और सरीखी जातियों में भी समाज-सुधार समाज सेवा का सर्वथा निर्दोष निर्विघ्न रूप से चल नहीं सकता। महोत्सव मनाते हुए कानून के की स्थापना होने और जनता को प्रकार की स्वतंत्रतायें प्राप्त होने के किये जा रहे हैं, उनकी इन घटना देखते हुये भारत के देशी राज्यों में वाली दस करोड़ प्रजा के लिये कल्पना भी नहीं की जा सकती।

महादेवी का
विवेचनात्मक गद्य
संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०
(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)
एक मत :—
……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। ……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'
द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।
मूल्य दो रुपये बारह आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

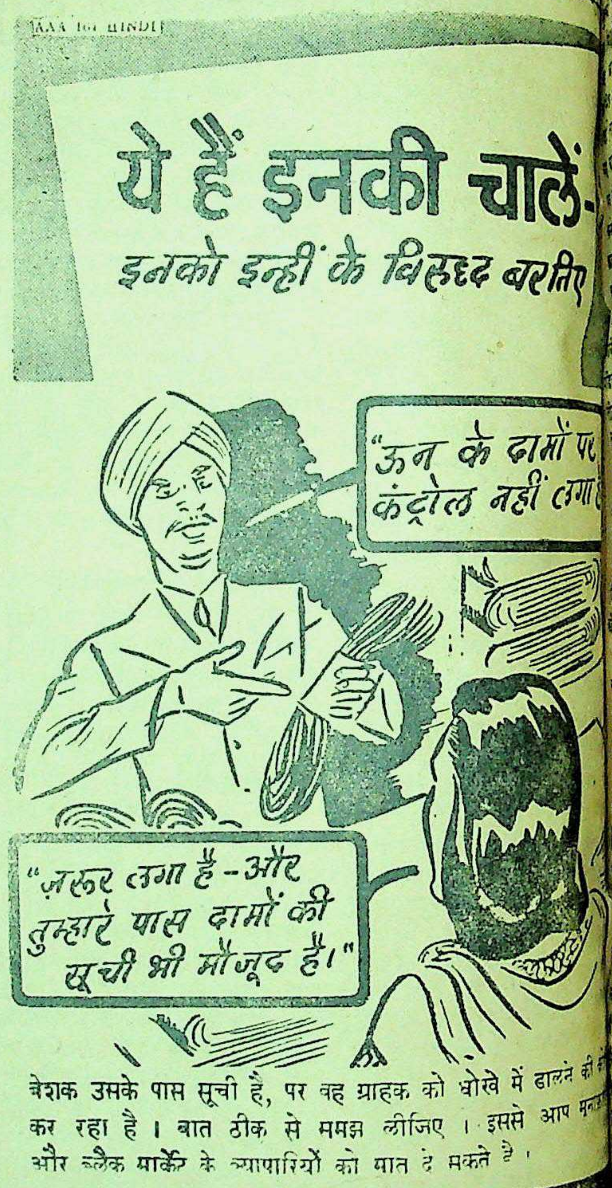
ये हैं इनकी चालें-
इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए
"ऊन के दामों पर कंट्रोल नहीं लगा
"ज़रूर लगा है-और तुम्हारे पास दामों की सूची भी मौजूद है।"

बेशक उसके पास सूची है, पर वह ग्राहक को धोखे में डालने की कर रहा है। बात ठीक से समझ लीजिए। इससे आप मन और ब्लैक मार्केट के व्यापारियों को मात दे सकते हैं।

ब्लैक मार्केट से
हरगिज़ न ख़रीदिए
इस तरह ब्लैक मार्केट
ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग

वार, २७मई, १९४५

अमरीका में श्रीमती पंडित

धीनता के लिए साम्राज्यवादियों को चुनौती

लेखक, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा

अमरीका में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित भारतीय स्वाधीनता के लिए प्रबल न कर रही हैं। इस लेख में लेखक ने उनके कामों का उल्लेख करते हुए यह है कि उनका यह आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता के लिए ही नहीं, संसार के समस्त और राधीन राष्ट्रों की ओर से साम्राज्यवादियों को एक चुनौती के समान है।

अमरीका में श्रीमती विजय- अपूर्व कार्य कर रही हैं। कर दिया है कि भारतीय गौरवपूर्ण संस्था है। भारतीय बुद्धिवादियों पर जो प्रभाव कांग्रेस बाईस वर्षों में पड़ा है उससे कार्यकारिणी सदस्यों तक ही है। कांग्रेस का कोई भी कार्य- नीति को समझता है; और स्पष्टता के बल भी शक्ति का मुकाबला आज कांग्रेस संस्था अपने और त्याग से ४० रूप में मौजूद है। कोई शक्ति कांग्रेस को बन्दी नहीं हो सकती। श्रीमती नैतिकता को भार- करके ब्रिटिश और सिद्धांतों को एक ऐसी दिया है कि जिससे नया जीवन आ को उतना ही सिद्ध कर दिया है जापान और जर्मनी है।

प्रतिनिधि सभा के श्रीमती पंडित ने दिया मालूम पड़ता है जैसे इस नेहरू की आत्मा बोल रही समस्याओं का विवेचनात्मक आपने प्रस्तुत किया पता चलता है कि माननीया पंडित ने नहीं है उसका प्रतिनिधित्व कांग्रेस केवल एक कागजी है। आज यह संस्था अपनी साथ समस्त पीड़ित राष्ट्रों सभा है। कांग्रेस ऐसी देख रही है जिसमें समस्त वर्ग स्वतन्त्र होंगे और एक विश्व स्वतंत्रता पर । अपने प्रार्थनापत्र में भी को स्पष्ट करते हुए ने भारत की वर्तमान परि- डाला है। उन्होंने इस बात को सिद्ध किया भौगोलिक, आर्थिक और रखता है। उसके पीछे की प्राचीन सभ्यता से भी भारत का है। इतने बड़े राष्ट्र को सांस्कृतिक जीवन को बनाकर आज की नैतिकता के बकनाक है इसका चित्र प्रायः प्रतिनिधियों के है। गांधी और जापान में साम्प्रदायिक प्रश्नों सिद्धान्तों का

कहाँ तक पोषण हो रहा है, वैधानिक समस्याओं में वर्त्तमान अँग्रेजी हुकूमत कहाँ तक ईमानदारी बरत रही है; क्रिप्स साहब के प्रस्ताव में क्या रहस्य है, गांधी कहाँ तक बकवासी हैं, नेहरू की क्या विचार-धारा है; भारतवर्ष के ऊपर गरीबी और निरक्षरता का कितना बोझ है और उस बोझ के लिये भारतीय जिम्मेदार हैं या अँग्रेज इन सब का प्रमाणिक रूप आज अमरीकन जनता के सामने मौजूद है। वस्तुतः श्रीयुत एमरी और चर्चिल की नीति का परिचय माननीया पंडित ही ने अमरीका की जनता को बड़ी सजीवता के साथ कराया है।

श्रीमती पंडित के इस कठिन परिश्रम से जो सम्बन्ध अमेरिका और भारत में स्थापित हो गया है उससे भविष्य को क्या मिलेगा, हमें इस पर भी दृष्टिपात करना है। अमरीका विश्व के उन प्रगतिशील शक्तियों के साथ रहा है जिसने स्वतन्त्रता की आवाज उठाई है। स्वयं वाशिङ्गटन और अब्रहिम लिंकन ऐसे राष्ट्रपतियों द्वारा यह राष्ट्र संचालित किया गया है। उन्होंने राष्ट्रीय स्वतन्त्रता और मानव जाति के लिए अपूर्व बलिदान किया है। उस भूमिस्थल पर जहाँ पर कि एक बार अमरीकन जाति ने बैठकर विश्व के सामने अपने स्वतंत्रता की अमर और ऐतिहासिक घोषणा की थी आज उसी जगह विश्व के समस्त राष्ट्रों और मानव जाति के स्वतन्त्रता का प्रश्न सुलझाया जा रहा है। स्वर्गीय प्रेसिडेन्ट रूजवेल्ट ने जिन चार स्वतंत्रताओं की घोषणा करके समस्त मित्रराष्ट्रों को सांत्वना दी थी आज उनके वे सिद्धान्त रचनात्मक कसौटी पर चढ़ाये जा रहे हैं। ऐसे समय में माननीया पंडित केवल भारतवर्ष की समस्याओं पर ही प्रकाश नहीं डाल रही हैं वरन् उन समस्त पीड़ित वर्ग की ओर से जनसत्तात्मक सिद्धान्तों का प्रचार कर रही हैं जिसके लिये विश्व ने पाँच वर्ष तक आग से खेलना उचित समझा है।

श्रीमती पंडित सदैव से पीड़ित वर्गों का प्रतिनिधित्व करती चली आ रही हैं। कांग्रेस मन्त्रिमण्डल के दिनों में एक जिले से दूसरे जिले का दौरा करते हुए हमारे सामने विजयलक्ष्मी जी का वह चित्र आता है जब वह ग्रामीण स्त्रियों से खड़ी होकर उनकी समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न करती थीं। गाँव के अस्पतालों की देखभाल करते समय जब वह डाक्टरों और व्यवस्थापकों के ऊपर नाराज होकर कह उठती थीं कि आप नहीं जानते इनको कितनी तकलीफ है। यदि श्रीमती पंडित को जवाहरलाल जी जैसे भाई पर गर्व हो सकता है तो वह केवल इसलिए नहीं कि वह उनकी बहन हैं वरन् इसलिए कि वह अपने भाई की तरह स्वयं संलग्न और साधना की पोशक हैं। यदि नारी जाति की जाग्रति की अग्रदूतिका के रूप में वह भारत के सामाजिक अपवाद का खंडन कर सकती हैं तो दूसरी ओर भारतीय राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं और संस्थाओं के रंग-मंच पर भी वह अद्वितीय हैं। उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि जवाहरलाल जी की बहन के नाते उन्होंने जवाहरलाल का केवल भावनात्मक अध्ययन नहीं किया है वरन् उनके सिद्धान्तों की गहराई को समझा है। उन्होंने जवाहरलाल जी के आत्मिक संघर्षों को बहुत नजदीक से सुना और समझा है। उनकी विवेचना और आलोचना की है। यही नहीं कांग्रेस की सफल मंत्रिणी के नाते वह भारतीय जीवन की समस्याओं के अनेकानेक पहलुओं से परिचित हैं। इन समस्त अध्ययनों के परिणामस्वरूप माननीया पंडित उन रूढ़वादियों को चेतावनी भी देती हैं जो यह समझते हैं कि नारी जाति केवल घर की चहारदीवारियों में ही बन्द रखने की चीज है। माननीया पंडित ने प्रगतिशील नारी जाति का भी सफल प्रतिनिधित्व किया है।

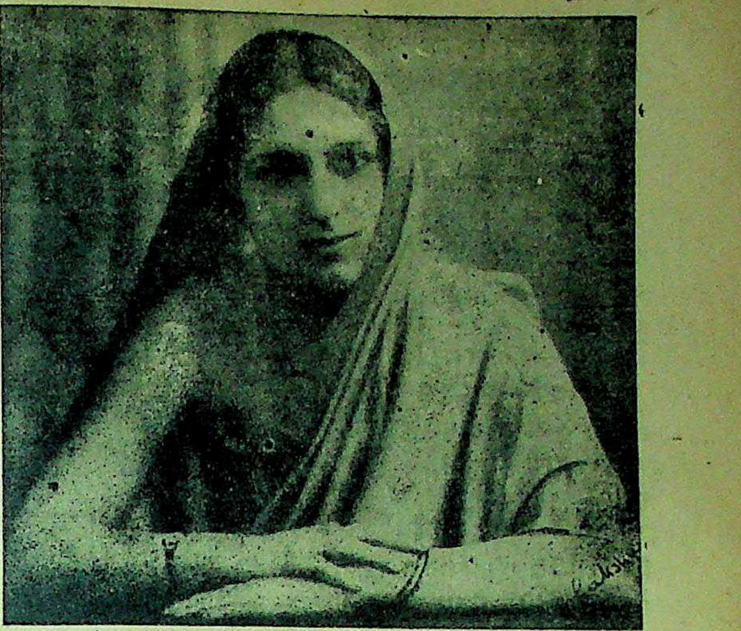

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित आजकल अमरीका में पराधीन राष्ट्रों की स्वाधीनता का प्रबल आन्दोलन कर रही हैं।

वस्तुतः श्रीमती पंडित में स्वर्गीय मोतीलाल नेहरू का धैर्य, पंडित जवाहरलाल नेहरू की संलग्नता तथा नैतिकशक्ति और स्वर्गीय श्रीयुत रंजीत पंडित के व्यक्तित्व की छाप से विवेचना शक्ति इन तीनों का सम्मिश्रण है। नारी जाति की भावनाओं की अवहेलना तो वह नहीं कर सकती हैं, उनमें नारीत्व की सुकुमारता, भिन्नता और शीलता तो पूर्ण मात्रा में है ही। साथ ही उनमें पुरुष की साधना भी है। यदि नारीत्व ने उनमें बलिदान की शक्ति दी है फिर भी वह साधना में भी किसी से कम नहीं। वह किसी भी पुरुष-वर्ग के प्रतिनिधि से केवल इसलिए हार नहीं मान सकती क्योंकि वह स्त्री हैं। श्रीमती पंडित जैसी महिलाओं को हमें और हमारे राष्ट्र के उत्थान के लिए आवश्यकता है। जिस काम को श्रीमती नायडू ने पूर्ण किया था और श्रीमती कमलादेवी ने जिसे आगे बढ़ाया है श्रीमती पंडित उसे सफल बनाने में अवश्य सफलीभूत होंगी।

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 106

पिछले अंक में अभिनेत्री शमीम के संबंध में मेरी इंटरव्यू का प्रारम्भिक अंश प्रश्नोत्तर के रूप में प्रकाशित हुआ था। उसी समय मैंने कुछ और प्रश्नोत्तर किये थे, जो इस प्रकार हैं—

मैंने कहा—क्या आपने अपने जीवन का [illegible] भी सोचा है ?

शमीम—जी हाँ, लेकिन कलात्मक ढंग से नहीं वैसे ही हृदय की डगमगाती भावनाओं के सहारे मैंने एक कहानी लिखी है। जिसमें प्यार के सागर का सिर्फ ज्वार-भाटा का चित्रण है—और कुछ नहीं।

मैंने कहा—अच्छा तो मुझे सुनाइएगा न अपनी दिलचस्पी कहानी ?

शमीम—रहने दीजिए, फिर कभी सुनाऊँगी। अभी वक्त भी नहीं है।

मैंने कहा—आपको दिलचस्प कहानी अवश्य सुनानी पड़ेगी— बिना सुने हुए मैं जाऊँगा भी नहीं।

शमीम—जान पड़ता है बिना सुनाये हुए आपसे पीछा नहीं छूट सकता।

मैंने कहा—सुनाइए जल्दी।

शमीम—मेरी कहानी का शीर्षक है "मुझे तुम्हें देखना नहीं चाहिए।" मैं सिनेमा की दुनिया में कैसे आई—इस पर भी कुछ थोड़ा-सा प्रकाश डाला गया है।

मैं लाहौर गई हुई थी। यह उस वक्त की बात है जब कि मेरी जीवन की डाल पर तरुणाई खिल रही थी। मैं रोज घूमने जाया करती थी। "शालामार बाग" में एक दिन मैं अकेले ही घूमने चल पड़ी, क्योंकि उस दिन घर पर तबीअत नहीं लग रही थी। गर्मी के दिन थे। उस दिन काफी गर्मी थी। इसलिए मैं अपने घूमने के वक्त से कुछ जल्दी ही उस रोज निकल पड़ी। संध्या का सुहावना वक्त था। भगवान् अंशुमाली अपनी रश्मियों को समेट चुके थे। मैं बाग में इधर-उधर चहल-कदमी करने लगी। मेरी जिन्दगी के कोने से एक ऐसी घटा उमड़ी चली आ रही थी, जो मुझे कल्पना की रंगीन दुनिया में लिये जा रही थी।

मैं हँसती हुई एक बेञ्च पर बैठ गई। मेरे सामने पानी का फव्वारा चल रहा था, उसका पानी रंग-बिरंगे फूलों की पँखुड़ियों पर पड़ रहा था। उस रम्य पंखड़ियों पर पानी की वे बूँदें मोती सी चमक रही थीं। मैं इस मनोहर दृश्य को देख रही थी कि मेरे कानों में एक मधुर आवाज आई। मैंने जो ऊपर नजर उठाकर देखा तो एक अपटू-डेट युवक को अपने सामने पाया! उसने कहा—"क्या यह रूमाल आपका है, उधर फूलों के झुरमुट में उड़ रहा था।" मैंने रूमाल लेते हुए कहा—"मुझे मालूम ही न पड़ा कि यह कब मेरे पास से उड़ गया, धन्यवाद है आपको!"

युवक ने हँसते हुए कहा—"धन्यवाद की इसमें क्या बात है?" युवक की आँखों पर सुनहरी कमानी का चश्मा लग रहा था। रंग गोरा था। देखने में बहुत सुन्दर मालूम पड़ रहा था। वैसे तो मैं उसको रोजाना बाग में देखा करती थी लेकिन नजदीक से उसे आज मुझे देखने का अवसर मिल रहा था। वह भी मुझे रोजाना एक निगाह से देख लिया करता था। मैंने उससे पूछा—"आपका नाम क्या मैं जान सकती हूँ?"

"मेरा नाम गुलजार है और आपका नाम, यदि आपको बतलाने में कष्ट न हो?"

सुप्रसिद्ध फिलम-अभिनेत्री शमीम कौन हैं ?

अभिनय तथा अभिनय-कला के सम्बन्ध में मेरी मुलाक़ात

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

"कष्ट किस बात का? मेरा नाम गुलाबी है।"

"नाम तो बहुत सुन्दर है। आपका मुँह भी तो गुलाबी है।"

अब हम रोजाना दोनों "शालामार बाग" में मिलने लगे। यह बाग हम दोनों के लिए स्वर्ग हो रहा था, मेरे दैनिक जीवन का प्रोग्राम टहलना बन गया था। मैं घूमने की तरफ ज्यादा ध्यान देने लगी। घूमने का तो अब केवल एक बहाना रह गया था।

इतवार का दिन था। मैं अपने कमरे में बैठी हुई फूफी से बातचीत कर रही थी। वह कहने लगी—"आज-कल तुम घूमने में विशेष दिलचस्पी लेने लगी हो, क्या बात है? जब से तुमने घूमने में दिलचस्पी दिखलाई है तभी से मैं तुम्हारे अन्दर एक अजीब मस्ती देख रही हूँ। यद्यपि तुम उस मस्ती को बहुत कुछ छिपाने की कोशिश कर रही हो, लेकिन फिर भी वह तुम्हारी शोख आँखों से लुक-छिपकर झाँक ही जाती है।" फूफी की इस बात पर मैं हँस पड़ी। मैंने चाहा कि फूफी की यह बात हँसी के कहकहे के अन्दर विलीन हो जाय किन्तु फूफी मेरी इस बात को ताड़ गई और बोली—"बतलाओ न मुझसे क्या छिपाना।"

मैंने धीमें से फूफी के कान में कुल अब तक की कहानी कह दी। वह हँस पड़ी। उसी समय पोस्टमैन ने आकर एक रंगीन पत्र फूफी के हाथ में रख दिया। फूफी ने उसको खोला पढ़ा, फिर उस पत्र को मुझे देती हुई बोली—"इसको पढ़ जाओ" मैंने उस पत्र को पढ़ा। वह मेरे भाई के जिगरी दोस्त के वालिद के यहाँ से आया था। उनका लड़का आनेवाला था। उसकी खुशी में मुझे बुलाया गया था। मुझे जाने की खुशी बिलकुल नहीं हो रही थी क्योंकि प्यारे गुलजार को छोड़ना पड़ रहा था। फूफी ने मुझको ढाढ़स दिलाया। मैं बेबसी की हालत में उस रोज घूमने गई। मेरे पहुँचने के पहले ही गुलजार बैठा हुआ था। लेकिन वह ग़मगीन नजर आ रहा था। न मालूम क्यों? मैं सोच रही थी क्या उसको मेरी बेबसी का किस्सा मालूम हो गया है? मैं उससे अपने दिल का राज ज्यादा देर तक न छिपा सकी।

मैंने कहा—"मैं कुछ समय के लिए यहाँ से जा रही हूँ। देखिए न यह पत्र!" पत्र पढ़कर गुलजार ने भी अपनी जेब से एक दूसरा पत्र निकालकर मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने उसको पढ़ा—"ओह! क्या तुमको भी जाना है?"

गुलजार ने मेरी ओर देखते हुए कहा—"अच्छा ही हुआ हम दोनों एक ही समय जा रहे हैं। भाग्य की बात है।"

मैं चल पड़ी लाहौर से बम्बई के लिए। रास्ते भर गुलजार का चेहरा मेरी आँखों में झूमता रहा। रेल में तबीअत नहीं लग रही थी। कभी मैं खिड़की से बाहर झाँकती कभी "मोहब्बत" नाम का उपन्यास पढ़ने लगती जिसे चलते वक्त मुझे गुलजार ने दिया था। किन्तु इतने सुन्दर उपन्यास में भी "जी" रहा था। आखिर बेचैनी की काटते हुए बम्बई का बड़ा स्टेशन रिया टरमिनस" आ गया। मैं सामान रखवाकर जैसे ही स्टेशन निकली कि मेरे सामने एक युवक ने आकर कहा—"क्या रशीदअहमद (मेरे भाई के दोस्त के का नाम) के यहाँ जाना है?" मैंने उनकी तरफ देखे हुए कह दिया

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री कुमारी स्नेहप्रभा का एक नृत्य।

"तो क्या आप लाहौर से आयी

मैंने कहा—"जी हाँ।"

"तो यह मोटर हाजिर है। अली साहब ने भेजी है। वैसे तो उ का कोई खास आदमी आता लेकिन किसी जरूरी काम से न आ सका। उन्होंने आपको लेने के लिए भेज दी है।"

"आप कौन हैं?" मैंने पूछा।

"मैं तो मोटर ड्राइवर हूँ।"

मुझे रशीदअली साहब के मकान रास्ता मालूम था। मैंने सोचा कि मोटर ड्राइवर ने कोई चालाकी मैं फौरन मोटर रुकवा दूँगी। मैं रही थी कि उसने फिर कहा— आपका सामान कहाँ है?" मैंने

—शेष पृष्ठ १४ पर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

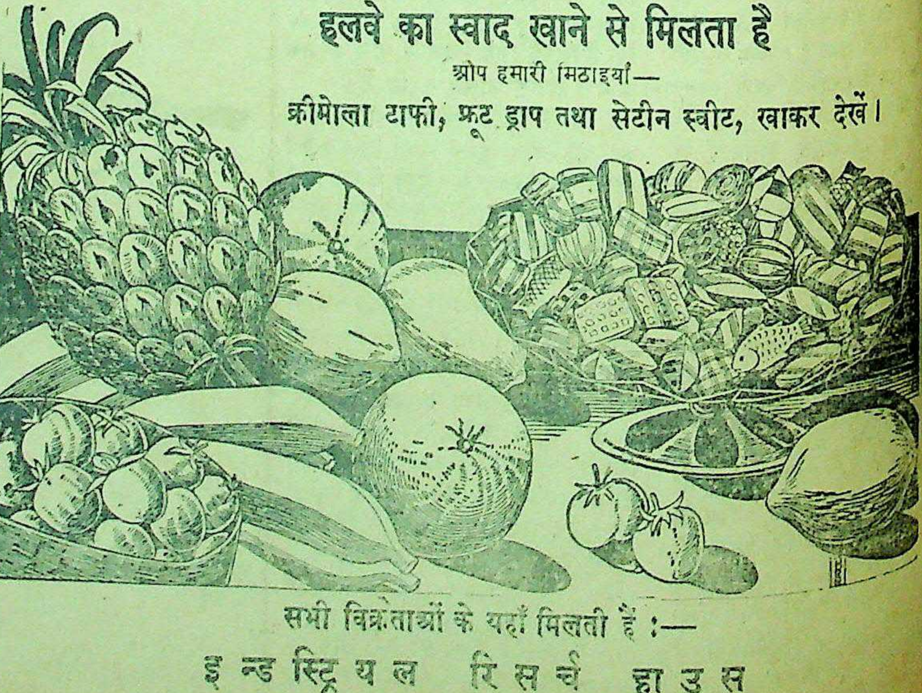

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

नाटक

वेटिंग रूम में

लेखक, श्री बालगोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

> आजकल रेल की यात्रा कठिन है। यात्रा में प्रायः बेमुरौवती हो ही जाती है। इस छोटे एकांकी में कुछ स्त्रियों की वार्ता वेटिंग रूम में कराई गई है। इस वार्ता से सामयिक वातावरण पर भी कुछ प्रकाश पड़ता है। वार्ता रोचक, सुंदर और पठनीय है।

प्रभा—पिछले दिनों से तेज गर्मी पड़ने लगी है।

पद्मा—दीखता है कि इस वर्ष गर्मी खूब पड़ेगी।

प्रभा—सो तो साफ है।

(श्रीमती मीनादेवी वेटिंग-रूम में प्रवेश करती हैं। उनके पीछे चार कुली सामान सहित।)

मीना देवी—यहाँ तो तिल रखने की भी जगह नहीं है। फिर...

कुली—वह देखिये आईने के पास जो जगह है, वहाँ...(रुक कर) लेकिन इतना सामान वहाँ नहीं रखा जा सकता है।

मीनादेवी—यहाँ रख दो। मुझे तो दो घंटे बाद दूसरी गाड़ी मिल जायगी। ये सामान खिसका दो, थोड़ी जगह निकल आयेगी!

पद्मा—(तुनुककर) अरे वाह, देखती नहीं हो कि यहाँ सामान रखा है। हटाकर कहाँ रखेगा?

मीनादेवी—(धीमे स्वर में) आप रुष्ट क्यों होती हैं, कुली जगह बना लेगा। आप तो......

पद्मा—जगह कहाँ बना लेगा? वहाँ मेरा बच्चा सो रहा है। यहाँ जगह नहीं है। आप अपना सामान और कहीं रखें।

मीनादेवी—(झल्लाकर) तो आप ही बतायें, सामान कहाँ रखा जाये? आखिर सामान फेंका तो नहीं जा सकता है। कहीं जगह भी है?

पद्मा—(बड़बड़ाती हुई) जगह नहीं है तो मैं क्या करूँ। (धीमे स्वर में) भला आजकल कोई इतना सामान लेकर यात्रा करता है? गाड़ी में बैठने तक को जगह नहीं मिलती।

एक स्त्री—(पद्मा से) बहन, तुम क्यों लड़ती हो। जगह निकाल सकें, तब तो!

पद्मा—लड़ने की बात नहीं है बहन जी! यहाँ मेरा बच्चा सो रहा है। फिर, इतना सामान!

एक स्त्री—रेलवे में कोई रिश्तेदार होगा, बैठा देगा।

कुली—हुजूर, जल्दी करें। हम लोगों को दूसरी गाड़ी भी तो देखनी है।

मीनादेवी—कहाँ बताऊँ? जहाँ जगह हो, रख दो।

कुली—तो हम उस बेंच के पास रखे देते हैं। आप सामान गिन लें।

(कुली सामान रख देते हैं। मीनादेवी उन्हें गिनती हैं।)

मीनादेवी—पाँच ट्रंक, दो अटैची, चार बिस्तर, तीन टोकरियाँ, थर्मस··· (रुक कर) सामान ठीक है। यह लो पैसे। तीन-तीन आने बाँट लेना!

कुली—यह आप क्या दे रही हैं? इतना सामान और कुल तीन आने। इतने से पेट कैसे भरेगा, सरकार! दो सेर का तो गेहूँ है।

मीनादेवी—बस, मैंने हिसाब से दे दिया। शोर मत करो।

कुली—(विनयपूर्वक) अच्छा, चार आने और दे दीजिए।

मीनादेवी—अच्छा, जाओ दो आने और लो। मेरे पास अब फुटकर पैसे नहीं है।

(मीनादेवी द्वार के निकट बेंच पर बैठ गई। कुली चले गये।)

मीनादेवी—(प्रभा से) आप कहाँ जायेंगी बहन जी?

प्रभा—मैं तो पटने जा रही हूँ। और आप?

मीनादेवी—बरेली।

प्रभा—आप के पास तो बहुत सामान है बहन जी; गाड़ियाँ तो भरी हुई आती हैं। आजकल तो बैठने को जगह मिल जाय, यही बहुत समझो।

मीनादेवी—लेकिन क्या करूँ बहन। जहाँ चार बच्चे होते हैं, सामान हो ही जाता है। मेरे पति बदलकर बरेली गये हैं। उन्हें जल्दी पहुँचना था, इसलिये बच्चों को लेकर वे पहले ही चले गये। अब मैं जा रही हूँ। थोड़ा-थोड़ा सामान जुटाते-जुटाते इतना हो गया। कई बक्सें तो 'ब्रेक' से जा रही हैं।

प्रभा—तभी तो इतना सामान है। मैं भी सोच रही थी कि अब तक आखिर इतना सामान कैसे आप ले जा रही हैं। लड़ाई की वजह से तो और भी मुश्किल हो गई है।

मीनादेवी—कुछ न पूछो बहन! लड़ाई से सभी चीजें महँगी हो गई हैं। जहाँ ९-१० सेर का गेहूँ बिका करता था, अब २ सेर का बिक रहा है। डेढ़ सेर का चावल। क्या कोई खाये और क्या खिलाये? रुपये का दो सेर दूध बिक रहा है।

प्रभा—कपड़ों के दाम देखो, वे भी कितने ऊँचे चले गये हैं। चार रुपये की साड़ियाँ सोलह रुपये की हो गई हैं। अगर यह लड़ाई कुछ रोज और चली, तो गुजर करनी मुश्किल हो जायगी।

मीना—(रूमाल से मुँह पोंछती हुई) गरीबों को तो और मुसीबत है। बेचारे क्या खायें और क्या पहनें?

प्रभा—[illegible] को दो सौ रुपये महीने तनख्वा मिलती है। एक समय था, जब मैं दस-पाँच रुपये बचा लेती थी और आज.... यह भी पता नहीं चलता कि सब रुपये कहाँ चले जाते हैं।

मीनादेवी—(पद्मा से) आप क्या नाराज हैं बहन जी?

सुधा—इस वर्ष मैंने बी० ए० किया है।

पद्मा—नहीं तो। मैं तो आपकी बातें सुन रही हूँ।

प्रभा—(मीनादेवी से) ये मेरी देवरानी हैं।

मीनादेवी—बड़ी खुशी की बात है। मैं सोच रही थी कि शायद आप नाराज हो गईं। एक-दो घण्टे की यह मुलाकात है, फिर आप कहाँ और मैं कहाँ?

पद्मा—मैं बिलकुल नाराज नहीं हूँ। गलती मेरी थी जो मैंने आपको इतना बुरा-भला कह दिया।

मीनादेवी—उसका ख्याल न कीजिये!

(इतने में सुधादेवी आ जाती हैं)

सुधा—(मीनादेवी से) नमस्ते भाभी! आपने शायद मुझे पहिचाना नहीं....! आप झाँसी में थीं न! मैं हूँ सुधा। प्रोफेसर साहब मुझे पढ़ाने आते थे।

मीनादेवी—ओ, तुम, सुधा! अब याद आया। कहाँ जा रही हो? ब्याह हुआ या नहीं? तुम्हारे बाबू जी आजकल कहाँ हैं और छोटी बहन कहाँ है? (कुछ सोचते हुए) क्या नाम था उसका....भला सा नाम था—लज्जा; वह कौन से दरजे में है?

सुधा—भाभी, लज्जा इस साल 'एडमिशन' का इम्तहान देगी।

मीनादेवी—और तुम?

सुधा—मैंने बी० ए० का दिया है।

मीनादेवी—कहाँ जा रही हो?

सुधा—बनारस।

मीनादेवी—अपनी माँ और बाबू जी से मेरा प्रणाम कहना। (रुककर) तू तो बहुत बड़ी हो गई है?

सुधा—(कुछ झेंपती सी) जी।

मीनादेवी—मैं बरेली जा रही हूँ। तुम्हारे प्रोफेसर साहब का 'ट्रान्सफर' वहाँ हो गया है।

सुधा—आप उनसे मेरा प्रणाम कह दीजिएगा। प्रोफेसर साहब बड़े अच्छे हैं। बाबू जी अभी तक उनकी बड़ी तारीफ करते हैं। (कुछ रुककर) शारदा की शादी हुई या अभी नहीं?

मीनादेवी—हाँ, इसी साल हुई है। आजकल वह दिल्ली में है।

सुधा—उससे मिलने की बड़ी इच्छा है। आपके साथ और कौन है?

मीनादेवी—राजन है। इस वर्ष एल-एल०

प्रभा—(मीना से) वह मेरी देवरानी है।

बच्चों को रिश्वत या घूँस?

(माता-पिताओं की सतर्कता जरूरी

लेखक, डा० सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

जयपुर राज्य राजनीतिक सम्मेलन के अवसर पर उसके सभापति श्री पुन्ताम्बेकर ने अपने भाषण में कहा था कि आज-कल हर जगह पैसा लाओ की माँग रहती है। अर्थात् सब जगह रिश्वत का बाजार गर्म है। वर्तमान युद्ध ने तो इसे अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है। यह रिश्वत घर के बाहर की है। पर हम नित्यप्रति अपने बच्चों को भी रिश्वत दिया करते हैं।

बच्चा अपने माता-पिता की कमजोरी को समझ लेता है और बात बात में हठ करता, रोता और चिल्लाता है। माता-पिता बच्चे के इस प्रकार के रोने-चिल्लाने को सहन नहीं करते और उसकी जिद रखने के लिए, जो वह माँगता है, 'उसे देते हैं। इस प्रकार मिठाई, खिलौना अथवा अन्य किसी वस्तु के रूप में बच्चे को रिश्वत देकर चुप किया जाता है। इससे बच्चे की बड़ी हानि होती है।

हमें बच्चों को समय पर ही खिलाना-पिलाना चाहिए। अनियमित रूप से खिलाते रहने से बच्चों का स्वास्थ्य चौपट हो जाता है। माताओं को चाहिये कि बच्चों को समय पर ही दूध पिलायें। इनके रोने-मात्र पर दूध पिलाना या कुछ खिलाना ठीक नहीं। इसी प्रकार बड़ी आयुवाले बच्चों को सबेरे दूध और दो बार सात्विक भोजन खिलाना पर्य्याप्त होता है। बच्चों को चीनी, कढ़ाई से उतरे पदार्थ, मैदा की वस्तुएँ और मसाला न खिलाना चाहिए। बाजारू चीजें तो कभी छूने देनी ही नहीं चाहिए। बच्चों को अधिक अथवा बार-बार चटपटी चीजें खिलाने में सच्चा ममत्व (प्रेम) नहीं है। इससे उनकी आदत बिगड़ती है और वे भविष्य में अच्छे नागरिक नहीं बन पाते। बाल्यावस्था में ही संयम का पाठ सीखना उचित है।

बी० का इम्तहान दिया है। हाँ, किशोर तो विलायत गया था न डाक्टरी पढ़ने? अभी आया या नहीं?

सुधा—इस महीने के अन्त तक आ जायँगे। वे तो फौज में भर्ती हो गये हैं। छुट्टी ली है दो महीने की।

मीनादेवी—राजन के साथ पढ़ता था। न जाने कितने आदमी नित्य फौज में मर-कट रहे हैं। तमाम चीजें उनको भेजी जा रही हैं। एक तरह से देखा जाय तो यह भी ठीक है। अपने देश को दुश्मनों से बचाने के लिए बेचारे देश छोड़कर, माँ, बहनों से दूर, लड़ाई के मैदानों में पड़े हैं। कहो, प्रभा बहन?

प्रभा—हाँ, यह भी बात सही है? (इतने में कुली आता है)

कुली—(पद्मा से) पटने की गाड़ी आनेवाली है। जल्दी कीजिए....सामान।

पद्मा—ये सामान हैं—दो ट्रंक, दो बिस्तरे और एक थर्मस।

कुली—तो चलिए—वक्त कम है। गाड़ी भरी हुई आ रही है।

(कुली सामान ले चलता है। पद्मा अपने बच्चे को गोद में लेती है। प्रभा के हाथ में एक अटैची है।)

पद्मा-प्रभा—माफ करना बहन जी, नमस्ते।

मीनादेवी—नमस्ते।

(बाहर से कई स्त्रियाँ आती हैं! बच्चे रोते हैं और कई स्त्रियाँ बातें करती हैं। मीनादेवी अपने स्थान पर बैठी हैं)

सुधा—मैं भी चलूँ भाभी। इसी गाड़ी से मुझे भी जाना है। नमस्ते।

मीनादेवी—खुश रहो बेटी।

[सुधा वेटिंग रूम से बाहर आती हैं।].

अभी अभी प्रकाशित हुई है

भैरवी—तीसरा संस्करण—इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनायें, असली आर्ट पेपर में चित्र, बहुत अच्छी बँधाई और रैपर। मू० २॥≈)

इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

शर्त

लेखक, श्री भरत व्यास

बिन साथी पार करो जीवन-पथ तो जानूँ!
तुम कहते थे मेरी गति 'निर्झर'-सी सत्वर,
तुम कहते थे 'दिनकर-सी' मेरी चाल चपल।
फिर किस अभाव की स्मृति से घायल-से होकर,
पग-पग पर तुम रुक जाते हो पंथी प्रतिपल।
पाँवों की यह उलझन में कैसे पहचानूँ!
बिन साथी पार करो जीवन-पथ तो जानूँ!

ऊबड़-खाबड़ गिरि-शृङ्गों से गिरकर 'निर्झर'
मंथर-गति से मंजिल तक एकाकी जाता।
बोलो तो यह "दिनकर" किस साथी के सम्मुख
अपना पर दे भिक्षा का आँचल फैलाता?
फिर तुम्हीं एक रुक सकते हो. कैसे मानूँ?
बिन साथी पार करो जीवन-पथ तो जानूँ!

घरेलू सुख की योजना
पहले से बनानी पड़ती है

धन्य है वह मनुष्य जो उन छोटे छोटे सुख-साधनों का आयोजन कर सकता है जिनके बिना घरेलू जीवन में सरसता नहीं आती। रेडियो, टेलीफोन, फर्नीचर, बच्चों के खिलौने आदि का होना अथवा इनका अभाव—यही अन्तर है उस मनुष्य में जिसके पास पैसा है और जिसके पास नहीं है। और लड़ाई के बाद ये वस्तुएँ बहुत सुलभ होंगी। किन्तु इस समय तो एक महीने की—यहाँ तक कि तीन महीने की आय से भी आप इनके लिए पैसे का प्रबन्ध नहीं कर सकते।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

यही कारण है कि बहुत से लोग जो इस समय पैसा बचा सकते हैं हर महीने लगातार कुछ न कुछ बचत करते जाते हैं। इन लोगों को भविष्य में हाथ में पैसा न होने के कारण किश्तबन्दी पर चीज़ें खरीदने की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। और इन लोगों ने देख लिया है कि अपनी बचत की रक़म लगाने की सब से अच्छी मद है:

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४३ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 127—HINDI

साप्ताहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

[१]

रा होगा। बुतल्ले के कमरे में दर्पण के सामने क्ष्मी अपने केश सँवार रही थी। वह अभी स्नान थी। जल-सिक्त केश काले रेशम के लच्छे-से चमक

हाथ में एक चिट्ठी लिये, कमरे में सुरेश ने प्रवेश हा—सुनती हो? हरीश आ रहा है। यह है। लक्ष्मी पीछे मुड़कर पति के मुख की ओर गई।

अकेला एक दीप, भाई हरीश? पति का मान- चलती वकालत जो कुछ भी है, वह अपने की ही बदौलत तो है। पिता के मरने पर हरीश की सहायता की थी। जो अपना भाग्यविधाता आ रहा है। कितना आनन्द होना चाहिए था; एक पुरानी व्यथा से, घोर लज्जा से, क्यों भारी रहा है, क्या जाने?

—कल आ जायगा। यहाँ रहने के लिए ही रहा है।

में आ रही है क्या?

—तो आयेगी ही। चिट्ठी में यह भी —लीक आ रहा हूँ। जिसे जन्म-भूमि नहीं छोड़ा जा सकता।

लक्ष्मी ने कहा—चिट्ठी हमें दो।

लेकर लक्ष्मी ने दो-तीन वार आद्योपांत होकर एक कोच पर बैठ गई। बीती हुई उसकी आँखों के सामने अँधेरा-सा छाने —सोच करने से क्या है? हरीश आएगा

......?

पति छोड़कर कैसे रहेगी? इसके बिना हरीश है।

......!' बात लक्ष्मी के हृदय में न समाई। में कोई मैल न रक्खो, लक्ष्मी। एक अकेला तुम दोनों का परम स्नेह-पात्र भी है। एक बात में नहीं भूल पाती...। सुरेश की ओर देखा।

कहा—अरे राम! राधा दीदी के रहते! यहाँ हैं। बहू का सामना हुआ तो..... समस्या है.....।

कहा—हरीश ने पिता जी का नाम इस भाँति डुबा अपराध में क्षमा न कर सकूँगी.....। यद्यपि मन बड़ा व्याकुल है। नित्य उसी की बात जहाँ रक्खे, उसे सुख से रक्खे।...... को देखना, और हरीश की बहू मानना मुझे अच्छा नहीं है।

......बाहर कुछ, भीतर कुछ रखकर व्यवहार

सुरेश ने कहा—संसार सहनशीलता का दुख दबाकर सहास्यमुख रहना चाहिए। भी चाहिए, नहीं तो जग जंगल हो जाएगा। —एक ही पेट के भाई-बहन, उन्हीं में आपसी ......न, न प्रेम तो मेरा बहुत है। मैं जानती प्यारा भाई है। उसकी कल्याण-कामना के मन में और कुछ नहीं है। उसके अपराधों की से सदैव चाही है, अब भी चाहती हूँ। एक है। प्यारा भाई!.......किन्तु वह में हम लोगों के राह की कंटक बन गई। सागर में डूब गया। जाति में किसी के मुँह कटा जाता है।

—हृदय को हलका करो। संसार में हमारा है। प्रेम की प्यास बुझाने को ही तुम्हारे इस प्रेम से उसे वंचित न करना। अपने मन

लक्ष्मी बैठकर जाने क्या सोचने लगी। लक्ष्मी ने कहा—कल किस समय की है?

सुरेश ने कहा—दिल्ली की ओर से आ रहे हैं। सम्भवतः डाकगाड़ी से ही आयेंगे।

लक्ष्मी ने कहा—स्टेशन पर आदमी भेजना होगा?

सुरेश ने कहा—मैं स्वयं जाऊँगा।

लक्ष्मी ने कहा—अवश्य जाना। ...फिर मन ही मन कहने लगी—पहले आयें तो.....उसके बाद देखो क्या होता है.....।

सुरेश के जाने पर लक्ष्मी चिट्ठी सामने धरकर बैठ गई। चिट्ठी के अक्षरों में छिपे हुए जाने कितने सुख, दुख, दानव-से भयङ्कर रूप में दिखाई पड़ने लगे।.....

* * *

चन्द्रशेखर ने अपने लड़के-लड़की को बड़े प्यार से पाला था। वह कानपुर के एक बहुत बड़े वकील थे। मुवक्किलों की भीड़ के मारे लड़के-बच्चे पास भी नहीं फटकने पाते थे। वर्षा की धारा-सी चाँदी घर में बरसती थी। एकाएक पत्नी के वियोग ने उन्हें कातर कर दिया। यद्यपि चिकित्सा में कोई त्रुटि नहीं हुई। प्रतिदिन छः-छः बार सिविलसर्जन आता था। जिस समय उसकी दशा बिगड़ी—वह मरणासन्न हुई—उस समय वे कचहरी में थे। एक हत्या के अपराधी के छुड़ाने को, सत्य को मिथ्या करके प्रतिवादी की निर्दोषिता सिद्ध करने में व्यस्त थे। जूरी का वक्तव्य समाप्त होते ही मुंशी ने कान में कहा—तुरन्त घर चलिए। घोर विपत्ति आ पड़ी है!

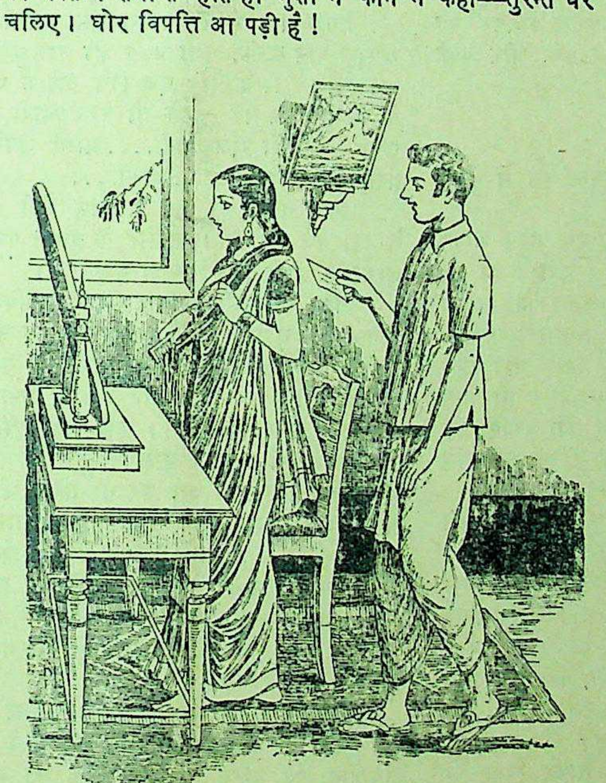

इतने में हाथ में एक चिट्ठी लिये, कमरे में सुरेश ने प्रवेश किया।

चन्द्रशेखर ने हँसकर कहा—विपत्ति! पागल हुए हो! कोई विपत्ति नहीं। पुलिस को अहमक बना दिया है। आसामी निरपराध छूटा जा रहा है।

मुंशी ने इसे उनका प्रमाद समझा। क्योंकि किसी भी केस में वह इतने संलग्न हो जाते थे कि दुनिया को भूल जाते थे। बार बार चेष्टा करने पर भी जब मुंशी बात नहीं समझा पाया तो उसने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर से कहा—खबरदार! मैं उन्हें घर ले जाऊँगा। यहाँ कुछ न कहना।

वही हुआ। घर आकर चन्द्रशेखर स्तम्भित हो गये। किस आनन्द से घर लौटे थे। सचमुच एक खूनी, किन्तु निरपराध छूट गया। उन्हें अपनी शक्ति पर—सफलता पर कितना गर्व था। किन्तु यह क्या! खूनी को बचा सके किन्तु अपनी पत्नी को नहीं बचा सके। सुन्दरी की देह प्राणहीन हो गई है। लड़के-बच्चे चिल्ला-चिल्लाकर रो रहे हैं। चन्द्रशेखर पत्थर की मूर्ति जैसे खड़े रह गये। उसके बाद....

युग और साहित्य

युगद्वन्द्वों तथा उनसे प्रभावित भावी सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण साहित्य के माध्यम से उपस्थित करनेवाले निबन्धों का संकलन। २॥≋)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

ATKINSONS

★ ★ ★

सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

AHO-1-215 HI
J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

Nº 712
EVEREADY
2 CELL
EXTRA
LONG LIFE
BATTERY

अब
मिलती है
कन्ट्रोल भाव
पर

नं ७१२
एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत
रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५
ज्यादा
मत दें

BAS 60/5

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

दूसरे दिन उन्होंने सब मुवक्क़िलों के काग़ज़-पत्र लौटा दिये और फीस भी लौटा दी। किसी का रोना-धोना नहीं सुना। उस दिन से अदालत जाना छूट गया। लड़की और लड़के को लेकर ही दिन काटने लगे। उन्हीं की जिदें पूरी करने में सारा समय लग जाता था।

साथ ही लक्ष्मी का विवाह भी करना था। लड़की पराये घर न जाय, आँखों के सामने ही रहे, इसी लिए उन्होंने विश्वविद्यालय की परीक्षा में सदा सर्वप्रथम आनेवाले, पितृ-हीन, एक विधवा माँ और विधवा बहनवाले लड़के को ढूँढ़ लिया। गजट देखकर उसे खोज लाये, और कन्यादान कर दिया। लड़के की विधवा माँ की साध पूरी हुई। सुरेश मनुष्य हो गया। उन्होंने भी भव-बन्धन त्यागकर काशीवास करना प्रारंभ कर दिया। अंत में चन्द्रशेखर ने सुरेश को लॉ पास कराकर कानपुर के न्यायालय का एक बड़ा वकील बनाकर ही छोड़ा। इनके मुंशी के साथ-साथ मुवक्क़िल भी उसी बस्ते से बँध गये। वकालत के दाँव-पेंच सुरेश ने सब सीख लिये थे, उसकी वकालत चल निकली थी। इधर अच्छे से अच्छे मास्टर हरीश को पढ़ाकर शिक्षित बनाने लगे। लड़के की इच्छा डाक्टरी पढ़ने की थी। अपनी इच्छा न रहते हुए भी चन्द्रशेखर उसे रोक न सके।

लखनऊ में एक मकान ले लिया गया। वहाँ अपने पुराने विश्वासी रसोइए और कहार को उन्होंने भेज दिया। हरीश मेडिकल कालेज में भरती होकर डाक्टरी पढ़ने लगा। दूसरे-तीसरे दिन चन्द्रशेखर भी हरीश के पास पहुँच जाते थे। इसी प्रकार किसी दिन लड़की-दामाद के साथ कानपुर में, किसी दिन लड़के के साथ लखनऊ में वह रहने लगे। शनिवार को लक्ष्मी और सुरेश भी इतवार की छुट्टी मनाने लखनऊ पहुँच जाते थे। जिस समय हरीश फ़िफ्थइयर में था——सहसा चन्द्रशेखर वर्षा के पानी से भीगकर, ज्वर-पीड़ित होकर, कानपुर आये; और फिर वही ज्वर लिये अपने अभ्यास के अनुसार लखनऊ पहुँचे। वहाँ उन्हें निमोनिया हो गया। निमोनिए से पीड़ित होकर बच्चों की माया-ममता छोड़कर वे स्वर्गवासी हुए। जिस वृक्ष की छाया में बच्चे थे, वह वृक्ष अकस्मात आँधी से टूटकर गिर पड़ा। सिर पर की छाया उठ गई। हरीश पढ़ने को लखनऊ में ही रहा। इधर सुरेश की वकालत जम चुकी थी। अतः वह कानपुर में रहा। रही बेचारी लक्ष्मी सो वह अपने बाप के बदले, दिन भर लखनऊ में रह कर रात को कानपुर लौट आती थी। छुट्टी के दिन हरीश भी कानपुर आ जाता था।

संसार में सभी तरह के लोग हैं। लखनऊ कानपुर की आवा-जाई को कोई कहता था भाई-बहन का प्रेम, और कोई कहता था रुपये-पैसे के चोंचले!

[२]

पाँच-सात वर्ष पहले की बात है जिसे स्पष्ट रूप में कहने की आवश्यकता है।

जाजमऊ में बस्ती से मिला चन्द्रशेखर का एक बहुत सुन्दर बाग था, जिसमें बढ़िया सुन्दर फल-फूल होते थे। गंगा के तट पर स्थित इसी उद्यान में रहने के लिये एक सुन्दर भवन था। यह उद्यान चन्द्रशेखर की सुन्दर पत्नी ने अपनी रुचि के अनुसार लगवाया था। वह कभी कभी अपने लड़के-बच्चों को लेकर वहाँ रहने को भी जाती थी। उसकी मृत्यु के पश्चात् चन्द्रशेखर भी प्रायः वहीं वास करते थे। चन्द्रशेखर के बाद हरीश और लक्ष्मी इस उद्यान की देख-रेख करते रहे। कानपुर आने पर हरीश अधिकांश समय वहीं बिताता था।

इसी उद्यान के पास एक आनन्द बाबू नाम के व्यक्ति रहते थे। आनन्द बाबू कानपुर कोर्ट में मुख़्तारी करते थे। वह चन्द्रशेखर के विशेष कृपा-पात्र थे। उन्हीं की बदौलत उन्हें दो-एक केस नित्य मिल जाते थे। इसी लिये चन्द्रशेखर के यहाँ आनन्द का भी आना-जाना लगा रहता था।

आनन्द का एक लड़का था जिसका नाम भैरवनाथ था। पिता परिश्रम करके जो कमाता था, लड़का उससे अपनी छैल-गुण्डई की शौक पूरी करता था। दो बार मैट्रिक में फेल होकर उसने पढ़ने से हाथ खींच लिया। विवश होकर पिता ने बड़ी चेष्टा करके, बड़े-बड़े हाक़िमों की सिफ़ारिश कराके शराब की दूकान का ठेका दिला दिया। परिणाम यह हुआ कि भैरव बाबू मद्यपान में प्रवीण हो गये।

आनन्द बाबू संसार में नहीं रहे। उनकी मृत्यु के बाद भैरव और भी स्वच्छन्द हो गया। केवल मद्यपान और भोग-विलास को छोड़कर उसे संसार का ज्ञान नहीं था। संग साथ के दोष से सट्टे का रोग भी उसे लग गया था।

घर में केवल उसकी सरल और साध्वी स्त्री राजरानी थी। शराबी और जुआरी स्वामी की लातें खाकर भी वह परम पतिभक्त थी। भैरव ने एक-एक करके उसके सब गहने उड़ा दिये। अन्त में ईंट-पत्थर के घर को भी बंधक रख दिया। घर चन्द्रशेखर बाबू के यहाँ ही गिरवीं था। घर गिरवीं होने के बाद भी जब भैरव को रुपया की ज़रूरत पड़ती तो वह अपना क्रोध बेचारी राजरानी पर ही उतारता था। कुलीन आर्य बधू पति देवता के इस अत्याचार को अधिक दिन न सह सकी और उसने खाट की शरण ली। थोड़ा-थोड़ा ज्वर रहने लगा, उस पर भी अत्याचार सहना पड़ता था। रोगिणी होते हुए भी घर का सब काम-काज करना पड़ता था। फलतः रोग ने भयानक रूप धारण कर लिया और खाट उसके जीवन की अविच्छिन्न संगिनी बन गई।

स्त्री के इस रोग में भैरव की विधवा सास और छोटी साली राजकुमारी ने आकर राजरानी की बड़ी सेवा की। राजकुमारी कुलीन घर की कन्या थी। अधिक वयस्क हो जाने पर भी निर्धनता के कारण अविवाहिता थी।

राजरानी की माँ दामाद की कमाई देखकर स्तम्भित रह गई। अपनी रोगिणी पुत्री राजरानी से उसने कहा——यह दशा हो गई है, और तुमने समाचार भी नहीं दिया?.....

राजरानी ने कहा——समाचार ही जानकर क्या करतीं, माँ? हमारा दुख विधना भी नहीं मेंट सकता। तुमको क्यों दुख देती...?

माँ अपनी लड़की की दशा देखकर सिहर उठती थी। सेवा तो खूब करती, पर सेवा से कहीं रोग जाता है? उसके लिए चाहिए औषधि, उसके लिए चाहिए पथ्य, वह कहाँ से मिलता?

जब दामाद रात को घर लौटा तो सास ने कहा——कोई डाक्टर वैद्य बुलाओ भैया! रोग बड़ा कठिन है!

भैरव ने कहा——बहुत अच्छा। आप आ गई हैं, प्रबन्ध कीजिए। आपकी लड़की है.....आपको जो उसकी ममता है वह हम जैसे पराये आदमी को कैसे हो सकती है?

सास अवाक् हो गई। किन्तु तब भी वह शान्त नहीं हुई। जिसके संग वह बात कर रही थी उसका मस्तिष्क ठिकाने है क्या? अभागा विष खाकर पागल हो गया है। सब जानती थी। उसे भी एक दिन अपने मद्यपी पति-द्वारा यही भोग भोगना पड़ा था।

राजकुमारी को देखकर भैरव ने कहा——अरे यह कौन है?

सास ने कहा——उसे पहचान नहीं पाया क्या, बेटा? राजकुमारी......

यह थी सुरा की महिमा, भैरव को राजकुमारी सुर-सुन्दरी सी जान पड़ी।

भैरव ने कहा——वाह वाह, कैसे पहचानेंगे? राजकुमारी परम सुन्दरी हो गई है। बहुत बड़ी हो गई है....आओ, राजकुमारी, आओ। हमसे लज्जा करती हो? एक दिन वह था जब पेड़ों से अमरूद तोड़ती थीं। मालूम होता है सब भूल गईं।

बहनोई की इन बातों से राजकुमारी और भी लज्जित होकर सिकुड़-सी गई। भैरव ने फिर कहा——मेरे पास आने में लज्जा? बात करते-करते भैरव की दृष्टि का कटाक्ष राजकुमारी ने देखा। मानो उनकी हड्डियों में नज़र चुभ रही हो।

इसके बाद भैरव का कुछ ऐसा स्वभाव हो गया कि रात्रि में सुरा पान करके, नशा चढ़ते ही राजकुमारी के लिए उसका मन व्याकुल हो उठता। एक दिन नशे में घर में आकर भोजन के लिए चौके पर बैठते ही राजकुमारी, राजकुमारी पुकारने लगा——कहाँ हो राजकुमारी....आओ अपने बहनोई को अच्छी तरह भोजन खिला दो...आओ....

अपनी दीदी की खाट के पास बैठी हुई राजकुमारी पंखे से हवा कर रही थी। बहनोई के बुलाने पर बोली—तुम जाओ अम्मा, मैं दीदी के ऊपर पंखा झलती हूँ।

सास को आती देखकर भैरव का पित्त जल उठा। उसने कहा—आप बूढ़ी ठूढ़ी....इतनी रात तक जग रही हैं! बीमार पड़ जाओगी....क्यों? राजकुमारी क्या करती है?

सास ने कहा—राजरानी के ऊपर पंखा झल रही है।

भैरव अनमना हो उठा। कुछ कहा नहीं, किन्तु उसने भोजन ठीक-ठीक नहीं किया। सास के कुछ कहने पर उसने कहा—अच्छा नहीं लगता। जिस घर में तनिक भी हँसी नहीं, आराम नहीं, केवल रोग ही रोग! यह कुत्ते के सामने टुकड़ा डाल देना, धत्तेरे घर की.....थाली फेंककर भैरव चौके से बाहर हो गया।

कमरे में बैठे-बैठे राजकुमारी ने यह सब बातें सुनीं। क्या करे? बहनोई सुरा पान करके पागल हो गया है। वह तो पागल नहीं हुई। वह तो सब समझती है। भैरव की दृष्टि से अपने को सदा बचाती रहती है।

किन्तु भाग्य उस पर हँसता है। उसका बहनौता लल्लू था। इसी राजरानी के लड़के के प्रति कर्तव्य ने और माँ के संकट, कन्यादान एवं दरिद्र ने, और भैरव की शराबखोरी ने, पूर्ण वयस्क राजकुमारी को ऐसे पथ पर घसीटना प्रारम्भ किया; जिसका उसने कभी स्वप्न भी न देखा था। प्रायः ढाई मास उपरान्त राजरानी भी चल बसी।

भैरव भी लुचपन की सीमा पार कर गया। यद्यपि मद्य पीकर वह घर न आता; यदि घर आता तो ऐसी दशा में कि राजकुमारी के लिए बाघ के सामने पड़ना अच्छा किन्तु उसके सामने अच्छा नहीं। घर भी नहीं छोड़ा जा सकता। छोटे से बच्चे, लल्लू का क्या हाल होगा? भूखों मर जायेगा, यदि उसकी नानी और मौसी न रही तो

भैरव की सास समुद्र में डूबती-उतराती थी। उसके आगे राजकुमारी है, दामाद को छोड़कर उसके बाद उसको कौन देखेगा? दामाद का यह हाल है। चारों ओर अंधकार ही अंधकार है।

एकाएक लल्लू बीमार पड़ गया। प्यार से, हृदय से चिपटाये रखने से तो रोग अच्छा नहीं होता, नहीं तो राजरानी ही क्यों मरती! सास ने भैरव से दवा का प्रबन्ध करने को कहा तो उसने उत्तर दिया—जिसका बच्चा है उसी के पास जाने दो। हमसे यह सब नहीं होगा।

[क्रमशः

पेट की सफ़ाई
स्वास्थ्य का प्रारम्भिक
नियम है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

आरोंदा १८६६
नीलगिरि
छापनं
स्थापना १९२६] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=)
युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम
कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये
'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्य की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। शब्दों में उर्दू की-सी मादकता श्रेय 'अंचल' को ही है।
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

नये संस्करण
वासवदत्ता—तीसरा संस्करण अच्छे काग़ज़ में स्वच्छ चित्र आर्ट पेपर में। मू०
कुणाल—तीसरा संस्करण—संस्करण—मोनो टाइप पुस्तकालयों के लिए। मू०
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

पाठकों के नाम चिट्ठियाँ

अर्द्धकुम्भी मेले पर सभा का हिन्दी-प्रचार

(श्रीयुत सम्पादक "देशदूत")

...'हरिद्वारी' सज्जन का अनु-... जिन्होंने ६ मई के 'देशदूत' में ... नागरी-प्रचारिणी-सभा काशी ... अर्द्धकुम्भी पर कुछ भी ... हुआ। यदि वे अपना नाम ... तो मैं उनकी बहुमूल्य सलाह ... में हिन्दी-प्रचार का कार्य ... मैं नहीं जानता कि यह बात ... कि हरिद्वार में सभा की ओर ... हुआ? मैंने जो विवरण ... में भेजा था उसमें तो यह ... था। मैंने स्पष्ट लिखा था कि ... के नीचे केवल एक ... श्रीयुत जिंगरस का ... हुआ और एक भजनीक ... यह अनुभव हुआ कि ... बिना भजनीकों के जनता ...। इसके साथ ही मैंने ... सनातन धर्म सभा, महा-... और गुरुकुल काङ्गड़ी ... सम्मेलनों में इस सभा के ... हुए। ऋषिकेश में ... हुआ क्योंकि वहाँ ... के संगीताचार्य तीन ... सूर, मीरा और ... गाते रहे। वहाँ महन्त ... गणेशदत्त जी और ... ने क्रमशः १५, १६ ... की सभापति का आसन ... और सेठ जयदयाल जी ... मनोहरलाल जी गौड़ ... और कई सज्जनों के भाषण ... निकेतन में महामंडले-... जी की अध्यक्षता में ... हुआ। ऋषिकेश ... में भी कुछ सफलता ... ने प्रतिज्ञा की कि ... हिन्दी ही में पत्र-व्यवहार ... था उसको संक्षेप में ...

—रामनारायण मिश्र
प्रधान मंत्री

*

राष्ट्रभाषा-प्रचार और उर्दू

सरल और स्पष्ट बातों को भी कभी कभी बार-बार दोहराने की जरूरत होती है। अभी उस दिन पूना की एक विराट् सभा में श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी का एक भाषण हुआ। टंडन जी ने फारसी भाषा के बारे में जो कुछ कहा वह सब कुछ कदाचित् एसोशिएटेड प्रेस की कृपा से ही उर्दू के बारे में हो गया। दो ही दिन बाद डा० जाकिर हुसेन साहब जैसे जिम्मेदार व्यक्ति को कहना पड़ा—कौन कहता है कि उर्दू विदेशी भाषा है? हाँ, सचमुच हम भी पूछते हैं—कौन कहता है कि उर्दू विदेशी भाषा है? हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की घोषणा के अनुसार उर्दू हिन्दी की ही एक शैली है। हम यदि अपनी सामान्य भाषा का ही प्रचार करते हैं और उसकी किसी विशिष्ट शैली का नहीं तो इससे हम उस शैली के विरोधी कैसे हो सकते हैं? यदि उर्दू हिन्दी कि शैली है तो हमारी अपनी भाषा की शैली है, और यदि वह एक भाषा है तो हमारे अपने देश की भाषा है। राष्ट्रभाषा-प्रचार का आन्दोलन विदेशी भाषा का विरोधी है। किसी भी भारतीय भाषा का विरोधी हो ही नहीं सकता।

इधर पूज्य बापू जी ने लोगों का ध्यान 'हिन्दी और उर्दू' दोनों पढ़ने की ओर आकर्षित किया है। हम नहीं जानते कि उनके उपदेश से प्रभावित होकर कितने उर्दूवाले हिन्दी सीखेंगे, किन्तु यदि हमारे अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में कोई भाई व बहन उर्दू शैली का अभ्यास कर परीक्षा देना चाहें तो हम उनका ध्यान राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति वर्धा-द्वारा होनेवाली 'कोविद' की अतिरिक्त उर्दू-परीक्षा की ओर आकर्षित करते हैं।

अहिन्दी भाषा-भाषी प्रान्तों में उर्दू शैली पढ़ने-लिखने की कितनी माँग है, हम नहीं समझते कि हमारी परीक्षाओं में उर्दू के अतिरिक्त परीक्षा देनेवालों की संख्या इस प्रश्न का कुछ समाधान हो सकती है, किन्तु गत वर्ष की वह संख्या इस प्रकार है—

साल	कुल राष्ट्रभाषा परीक्षार्थी	उर्दू
फरवरी ४४	२०४७८	२१
अगस्त ४४	२२६३७	१८
फरवरी ४५	१६००६	१७

राष्ट्र भाषा प्रचार समिति, वर्धा } भदंत आनंद कौसल्यायन
प्रधान मंत्री

* * *

दोहावली

... उनके गाल के तिल की उपमा सोय,
... की पारी पर मनो चिउँटा चिपका होय।
... शौक है बनें सिनेमा स्टार,
... कुलों का होगा बस उद्धार!
'फक्कड़' कोयल मोर का उनमें हुआ मिलान,
रंग तो कोयल का मिला स्वर है मोर समान।
... तकदीर से धनी सास मिल जाय,
... न फिटकिरी रंग चोखा हो जाय!
'फक्कड़' उनकी नजर है विष की बुझी कटार,
कई मरे मरिहैं कई घायल कई हजार।
... फैशन रेस में हम नहिं पीछे होंय,
... में मो मित्र अब ट्रायल मैरज होंय।
'फक्कड़' जो काँटा बुवै तुम तब बोओ शूल,
तोहि हनै ताको हनौ यह सिद्धान्त असूल।
'फक्कड़' तुकबन्दी करत कवि बनने की आस,
बिना बुलाये फिर रहे सम्मेलन के पास।

—'फक्कड़' लखनवी

अ० भारतीय शिशु-संसार

बाल समाज को यह जानकर हर्ष होगा कि अ० भा० शिशु-संसार द्वारा तीन नवीन योजनायें स्वीकृत की गई हैं जो इस प्रकार हैं। शिशु सदस्य जो संस्था को १) रुपया प्रवेश शुल्क देगा उसको संस्था द्वारा प्रति मास दो बालोपयोगी पुस्तकें और एक पत्रिका घर बैठे मिला करेगी और उसे आस-पास के दूसरे सदस्य का पता भी भेजा जायगा। वह पुस्तकें और पत्र उसे पढ़कर और उनकी आलोचना लिखकर उस सदस्य के पास भेजनी होगी जिसका पता संस्था-द्वारा पहले ही उसे सूचित किया गया होगा। यदि वह चाहे तो आलोचना सीधे संस्था के कार्य्यालय में भी भेज सकता है। जो दूसरा सदस्य होगा वह पुस्तकें और अपनी नई समालोचना संस्था-द्वारा सूचित दूसरी उपशाखा में भी भेज सकता है। इन दो में से जिसकी समालोचना निर्णय-कर्ताओं के द्वारा पुरस्कार के योग्य समझी जायगी उसे तीन महीने तक संस्था मुफ्त पुस्तकें भेजेगी और वह उसे अपने पास रखनी होगी। अच्छा होगा यदि पहला सदस्य अपनी समालोचना दूसरे सदस्य को न भेजकर सीधे प्रधान कार्य्यालय श्रीनगर के पते पर भेजे।

३ जून १९४५ को काश्मीर में शिशु-सप्ताह मनाया जानेवाला है जिसके लिए बालोपयोगी कहानी, कविता और चुटकुलों की आवश्यकता है। अतः शिशु लेखकों से प्रार्थना है कि शीघ्र अपनी सामग्री भेजें जो कुछ स्वीकृत होगा उसके लिए लेखकों को संतोषजनक पारिश्रमिक भी दिया जायगा। १ जून से पहले आई हुई सामग्री पर जून में दिये जानेवाले ६ पुरस्कारों में से कोई पुरस्कार दिया जायगा। जो चुटकुले २५ मई से पहले आयेंगे उन पर विशेष पुरस्कार निश्चित है। लेखकों से सानुरोध प्रार्थना है कि शीघ्र अ० भा० शिशु-संसार कार्य्यालय, कालखुड, हब्बाकदल श्रीनगर काश्मीर के पते अपनी सामग्री भेजें। साथ में अपना पूरा परिचय तथा तीन आने का टिकट भी। क्योंकि लेख प्रकाशनार्थ भी भेजे जाते हैं।

—प्रधानमंत्री

प्राचीनकाल में स्नान के लिए अनेक प्राकृतिक द्रव्य जैसे मूँग, हरे चने के बेसन आदि के उबटन काम में लाये जाते थे। ये शीतलता प्रदान करनेवाले ख्याति प्राप्त द्रव्य माने गये हैं। इससे सुगन्धित हमाम साबुन के ताजगी पहुँचानेवाले फेन की तरह ही आनन्द-दायक शीतलता प्राप्त होती है। यद्यपि उसके समान तेल एवं साफ करनेवाले तत्त्व इसमें नहीं होते। हमाम साबुन में प्राचीन विधियों की सभी सुविधाएँ प्राप्य तो हैं ही साथ ही अत्यन्त आनन्ददायक साबुन की सुविधाएँ और क्षमता भी इसमें सम्मिलित है।

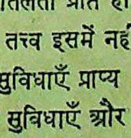

हमाम

आपके स्नान के लिए बड़ा साबुन

A TATA PRODUCT

टास्को सेल्स डिपार्टमेन्ट, जवाहर स्क्वायर, इलाहाबाद।

(पेज ८ का शेष)

इशारा कर दिया। मैं मोटर में बैठ गई पीछे की सीट पर, और वह गाड़ी को "ड्राइव" कर रहा था। मैंने उसका मुँह अभी तक नहीं देखा था। उसकी पीठ ही मेरी तरफ थी।

"आपको कितने रुपये माहवार मिलते हैं?"

"यही पाँच सौ रुपये माहवार।"

"तब तो आपके साहब आपको काफी लम्बी तनख्वाह देते हैं। ठीक है क्यों न दें, बड़े आदमी जो ठहरे। मैंने अपने मन में कहा कि नौकर उनका बड़ा अप-टू-डेट है। लेकिन वह कुछ गमगीन नजर आ रहा था। मैंने पूछा—"तुम इतनी लम्बी तनख्वाह पाने पर भी उदास क्यों नजर आ रहे हो?"

"यह बात तो वही समझ सकता है जिसको प्रेम में वियोग की घड़ियाँ काटनी पड़ी हों। यह आपके समझने की बात नहीं है। मैं भूल से सब कुछ कह गया।" उसने मेरी ओर मुड़कर देखा। मैंने अपना मुँह रूमाल से ढक लिया। उसने कहा—"ओह माफ कीजिए, मुझे आपको देखना नहीं चाहिए।"

मुझे कुछ मोटर-ड्राइवर की आवाज़ परिचित-सी जान पड़ी। मैं कुछ और कहना ही चाहती थी कि इतने में मकान आ पहुँचा। मैं मोटर से उतर पड़ी और आगे भीतर चली गई। मुझे एक कमरे में ले जाया गया। चमकीले-भड़कीले रंगों के फूलों से ढका-सा गलीचा बिछा हुआ था इतना मुलायम कि पैर धँस-से रहे थे। हलके शरबती रंग के काश्मीरी रेशम के परदे टँगे हुए थे। आलमारियों और टेबुलों की ड्रेसिंग निहायत ही दिल लुभानेवाली थी। फूलदानों से ताजे खिले हुए फूलों की महक आ रही थी। चार बड़े पलँगों पर दूध से सफेद स्वच्छ बिस्तर और पलँगपोश बिछे हुए थे। मैं मन ही मन कमरे की सजावट की तारीफ कर ही रही थी कि इतने में अम्मीजान ने आकर कहा—(भाई के दोस्त की वाल्दा को मैं इसी नाम से पुकारती हूँ) आपको स्टेशन से यहाँ तक लाने में फिरोजा ने तकलीफ तो नहीं दी? वैसे तो मैंने उससे हिदायत कर दी थी।

मैंने कहा—आपने मेरे लेने के लिए नौकर को भेजा किसी घर के आदमी को नहीं भेजा। फिर नौकर से जितना आराम मिलना चाहिए उतना मिला।

अम्मीजान ने कहा—यह तू नीलिमा (अम्मीजान मुझको इसी नाम से पुकारती हैं) क्या कह रही है? मैंने तुझको लेने के लिए अपने बेटे फिरोजा को भेजा था। क्या फिरोजा मोटर लेकर स्टेशन नहीं पहुँचा?

मैंने चौंककर कहा—नहीं गये—उन्होंने ड्राइवर को भेज दिया था।

अम्मीजान ने उसी वक्त बेटे को बुलाया। वह मुस्कराता हुआ आया। कमरे में आकर अम्मीजान के पास जो कुर्सी पड़ी हुई थी उसी पर बैठ गया—वह भी अपने किसी गम में—ऐसा मालूम दे रहा था। अम्मीजान ने कहा—क्या तू नीलिमा को लेने के लिए स्टेशन नहीं गया?

"कौन कहता है कि मैं स्टेशन नहीं गया। भला ऐसा हो सकता है?"

मैंने आवाज पहचान ली। यह आवाज वैसी ही थी, जैसी कि मोटर-ड्राइवर की। मैंने अम्मीजान से कहा—"वैसे ही इनको परेशान करने के लिए आपसे झूठी शिकायत कर दी थी। इन्होंने मुझे रास्ते में तंग किया था।"

अम्मीजान हँसती हुई कमरे से चली गईं। बस हम दोनों वहाँ रह गये थे। ईद के चाँद की शीतल रोशनी कमरे के झरोखे से हम दोनों पर पड़ रही थी, हम दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा वह चौंक पड़े—"गुलाबी तुम यहाँ?"

मैंने कहा "और तुम यहाँ?" फिर हमारी खुशी का कोई पार नहीं था।

मैंने कहा—"गुलजार तुम्हीं फिरोजा हो और फिर तुम मोटर-ड्राइवर क्यों बने?"

"गुलाबी, तुम्हीं नीलिमा हो आखिर फिर यह सब क्यों?"

मैंने कहा—"पहले आप बताइए न।"

हम दोनों न जाने क्या क्या सोचकर खिलखिलाकर हँस पड़े। बात दरअसल में यह थी कि मेरा नाम गुलाबी से नीलिमा हुआ और नीलिमा से अब कुछ और....! उनका घर का नाम फिरोजा ही था। वह शायर हैं सिनेमा-संसार में गाना लिखना उनका काम है। इसलिए उनका नाम "गुलजार" फिल्मी-दुनिया में मशहूर है। मुझे भी उन्होंने सिनेमा-संसार में खींच लिया—गुलाबी के नाम से नहीं बल्कि मेरा वह नाम जो कि आपके सबके सामने है। जब कभी मैं प्यार का अभिनय करती हूँ, तब मुझे उनके वह मोहब्बत भरे शब्द याद आ जाते हैं—"मुझे तुम्हें देखना नहीं चाहिए?"

मैंने कहा—आपकी कहानी बड़ी सुन्दर है, साथ साथ रोमांचक भी।"

शमीम—मैंने इस कहानी में कल्पना से काम नहीं लिया है। जीवन की सीधी-सादी वास्तविकता को मैंने इकठा करके एक जगह रख दिया है।

मैंने कहा—क्या यह थोड़ा काम है? वास्तविकता का एक जगह इकठा करना भी तो कलाकार का ही काम है, हर एक का नहीं।

शमीम—"क्या मैं कहानी-लेखिका बन सकती हूँ?"

मैंने कहा—आप तो बहुत जल्दी कहानी-लेखिका बन सकती हैं। फिर आप में उच्च कोटि की कल्पना भी है। जन-रुचि का अध्ययन भी आपने खूब किया है।

शमीम हँस पड़ी। करीब दस मिनट तक बराबर हँसती ही रही। शमीम को साढ़े नौ बजे एक "प्रदर्शन-गृह" में जाना था—वक्त भी हो गया था। इ उससे विदा लेकर वहाँ से बाहर आया। (सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सु

कष्टकर अनियमितता

आपके लिये बीती हुई कहानियाँ हो जायगी यदि आप हमारे अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड विथ विटामिन्स या विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन्स का सेवन करें। स्त्री-रोगों की पुरानी औषधि अशोका के साथ आधुनिक विज्ञानसम्मत औषधियाँ तथा विटामिन्स व विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन्स भी मिलाकर यह बनी है। इसलिये महिलाओंके स्वास्थ्य को गिराने वाली कष्टकर अनियमितता के पंजे से निकालने में यह बेजोड़ है।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
स्त्रीरोगों को अनुपम औषधि

आइ. एम. एस. लैबोरे
लैबोरेटरी व कारखाना:
(लखनऊ)। हेड
रौएल एक्सचेञ्ज

यह मुझे तर रखता है!
यह मुझे ताजा रखता है!
यह प्रफुल्लित करता है!
VINOLIA WHITE ROSE SOAP

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फुर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VINOLIA CO. LIMITED, LONDON, ENGLAND

सुचेता कृपलानी जो आजकल
जेल में नजरबंद हैं।

म के मामलों के बन्दी

आ गया है जब हमें जोध- और दूसरे बम के मामलों के वास्तविक स्थिति पर प्रकाश कुछ बातें जन-साधारण के होंगी। यह धडाके अगस्त हुए जोशीले वाता- से इनमें न कोई सख्त चोट आई। धड़ाका हुआ उस घटना घटी— की धर्मपत्नी, लेडी बताई जाती थीं। इन में कई व्यक्ति गिरफ्तार लम्बी सजायें हुईं। थीं, जुर्माने भी हुए। में भी ऐसी घटनाएँ को सजायें हुई हैं। जोध- द्वारा कैदियों के प्रति जो जाता है वह अनुचित है। होना चाहिए और छोड़ा भी जाना चाहिए। इस उन युवकों से पत्र-व्यवहार उत्तर तो नहीं आया, पर मिनिस्टर साहब के उत्तर में उसमे पता चलता है कि सहानुभूति दी गई और हिंसा इनका विश्वास नहीं है। चीफ से प्रार्थना की गई कि वे में इनके मामलों पर सहानु- विचार करें। बाबू श्रीप्रकाश (केंद्रिय धारा सभा) से गई और उन्होंने भी इनके दिलचस्पी ली। यद्यपि उनके मिनिस्टर के बीच हुई वार्ता का विषय बन चुकी है, इस विषय पर प्रकाश न डाल जी ही के द्वारा प्रकाश प्रतीक्षा करूंगा।

की रिहाई फिलहाल है, अतः सर्वसाधारण तक यह रिहा न हों किसी सुविधायें दिलाने में सुनाये जाने को (२) भोजन जो लोक- को और लोकपरिषद् में पहले थ। केस के बन्दियों को मिलता था। (३) जंजीर व बेड़ियों का हटाया जाना। (४) अस्पताल में रहने की अवस्था में बिना हथकड़ी खाने देना। (५) सरकार-द्वारा समाचारपत्र दिये जाने की व्यवस्था। (६) महीने में एक बार मिलाई।

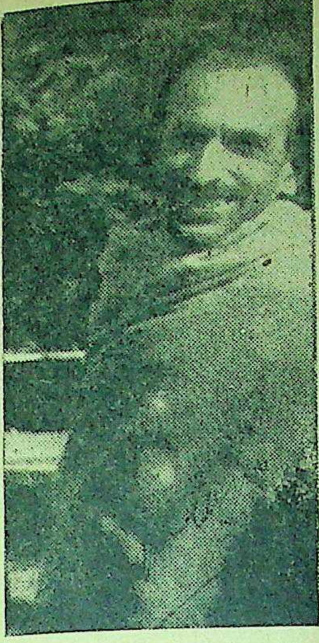

देश के सुप्रसिद्ध नेता आचार्य कृपालानी जो
आजकल करांची जेल में नजरबंद हैं।

बंदियों की आयु और शिक्षा को देखते हुए यह माँगें साधारण हैं। आशा है सरकार—जब तक इनकी रिहाई का मामला विचाराधीन है—इन माँगों को कम से कम मंजूर कर सकेगी। न्याय का तकाजा है, सरकार की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए जरूरी है और समय की माँग है कि जोधपुर-सरकार इन्हें जल्दी से जल्दी उत्तम सुविधायें दे और यह प्रकट करे कि वह इन लोगों को कब तक रिहा करेगा। जितना भी वक्त इन्होंने जेलखाने में बिताया है और जो भी कष्ट इन्होंने झेले हैं वे जरूरत से ज्यादा हैं।

जोधपुर —जयनारायण व्यास

* * *

युक्तप्रांत का प्रथम प्राइवेट नार्मल स्कूल आगामी जुलाई १९४५ से झूँसी (प्रयाग) का सेण्ट्रल ट्रेनिंग स्कूल, नार्मल स्कूल हो गया है। इसमें इस प्रान्त के जिलों से छात्राध्यापक भर्ती किये जायेंगे। छात्राध्यापकों की योग्यता वही होगी जो सरकारी नार्मल स्कूलों के लिए है, पर हाई स्कूल पास लड़कों को तरजीह दी जायेगी। निम्नांकित पते से प्रार्थना-पत्र, डाक्टरी आदि प्रमाणपत्रों के साथ, १५ जून १९४५ तक अवश्य आ जाना चाहिए —हेडमास्टर नार्मल स्कूल, झूँसी, प्रयाग (ओ०टी०आर०)।

* * *

हरिद्वार श्रवणनाथ ज्ञानमंदिर में महन्त शान्तनन्द नाथ तथा महन्त घनश्यामगिरि के तत्त्वावधान में स्वामी रामानन्द जी व्याकरणाचार्य की अध्यक्षता में पंचपुरी की षड्दर्शन साधु मंडल की सभा हुई, जिसमे स्वर्गीय श्री महन्त लक्ष्मणदास जी के प्रति श्रद्धांजलि समर्पित की गई और उनकी आत्मा की शान्ति के लिए भगवान् से प्रार्थना की गई।

१९ मई को हिन्दी साहित्य-संघ की एक सभा हुई, जिसमें हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के माननीय अध्यक्ष त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी के स्वास्थ्य-लाभ के लिए प्रार्थना की गई। संवाददाता

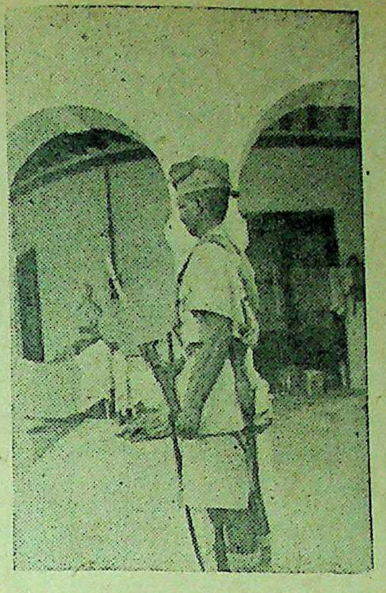

स्वराज्य भवन के बाहरी भाग में त्यागमूर्ति पंडित मोतीलाल नेहरू की प्रस्तर-मूर्ति जिस पर दर्शक फूलमाला चढ़ाते हैं। चित्र में सिपाही पहरा देता हुआ दिखाई दे रहा है

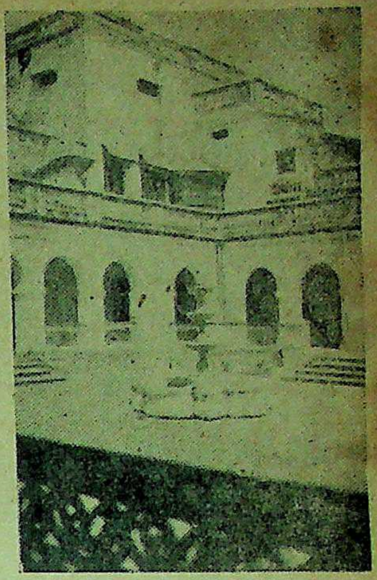

स्वराज्य भवन का एक दृश्य, जहाँ आचार्य कृपलानी का निवास-स्थान था और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का दफ्तर था। यह भवन इस समय सरकार के अधिकार में है।

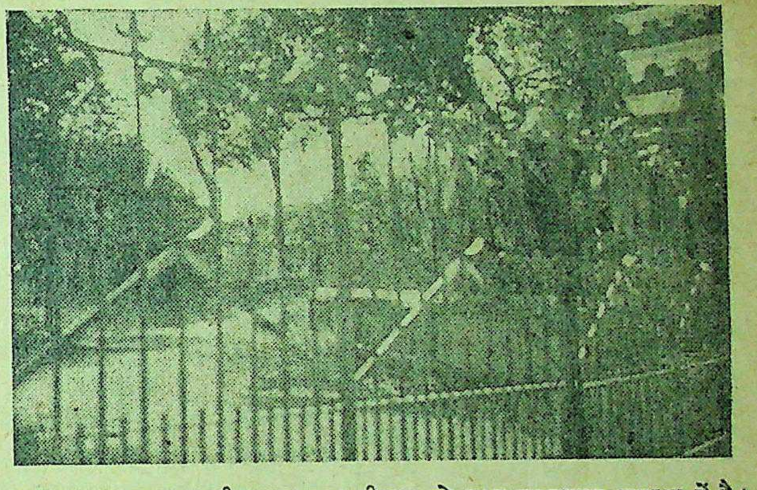

स्वराज्य भवन का बाहरी उपवन या बगीचा, जो आज अस्तव्यस्त अवस्था में है।

बालकोपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएं

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	।।।=)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	।।।=)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा प्रति भाग	१।।।=)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	।।)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश की मनोरंजक और उपदेश-पूर्ण कथाओं का सारांश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएं	।।।=)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेश-पूर्ण सूक्तियों का सग्रह	।।)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

संवाददाताओं के पत्र

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

उदयपुर अधिवेशन की स्वागत समिति का चुनाव

उदयपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन की स्वागत-समिति के सदस्यों की प्रथम बैठक हुई। अब तक कुल ८१३ सदस्य बने। यह निश्चय हुआ कि चुनाव प्रत्यक्ष न होकर अप्रत्यक्ष हो और इसके लिए ८५ व्यक्तियों की स्वागत-कारिणी बना दी गई। ता० १२ मई को स्वागतकारिणी की प्रथम बैठक हुई जिसमें ५१ सदस्य उपस्थित थे। सर्वप्रथम स्वागताध्यक्षपद के लिए श्री मुनि जिनविजय जी, श्री पी० सी० चटर्जी, डा० मोहनसिंह मेहता, कांकरोली के गोस्वामी जी महाराज, राजाधिराज अचरौल, राव साहब मनोहरसिंह, राजकुमार मानसिंह, पं० लक्ष्मीलाल जोशी के नाम प्रस्तावित हुए। पिछले पाँच नाम वापस ले लिये गये। बहुमत से श्री मुनिजी स्वागताध्यक्ष चुने गये।

राजकुमार श्री मानसिंह, पं० लक्ष्मीलाल जोशी और श्री गोपाल मोहता सर्वसम्मति से उपाध्यक्ष चुने गये! कार्यवाहक अध्यक्ष का भार पं० लक्ष्मीलाल जोशी को सौंपा गया है।

मन्त्री-पद के लिए सर्वश्री मोतीलाल मेनारिया, श्री भवानीशंकर वैद्य, श्री हमीरलाल मुर्डिया, पं० उमाशंकर जी और श्री जनार्दनराय के नाम प्रस्तावित हुए जिनमें पहले तीन ने अपने नाम वापस ले लिये। बहुमत से श्री जनार्दनराय नागर मन्त्री चुने गये।

अन्त में २३ आदमियों की कार्यकारिणी घोषित की गई जिसमें सहायक मन्त्री श्री दुर्गावत जी और श्री अर्जुनलाल जी मेहता तथा अर्थमन्त्री कौंसिल सेक्रेटरी श्री भगवतसिंह मेहता चुने गये। परिषदों के संयोजक का कार्य श्री मेनारिया जी को सौंपा गया। कार्यकारिणी में सर्वश्री बोदिया जी, सुखाड़िया जी, कनक, 'मधुकर' आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

क्या श्री हरिभाऊ उपाध्याय सम्मेलन के सभापति होंगे?

सम्मेलन के उदयपुर अधिवेशन के सभापति पद के लिए राजकुमार मानसिंह बनेड़ा ने निम्न-वक्तव्य-दिया है :—

हर्ष है कि सम्मेलन का अधिवेशन इस बार उदयपुर में होने जा रहा है। अब जब कि सम्मेलन के सभापति चुनाव की चर्चा सामने है, हमें राजस्थान के उन मूक सेवकों को नहीं भूल जाना होगा। अतः हिन्दी-साहित्य के उद्भट विद्वान् और 'त्याग-भूमि,' 'मा व-मयूर,' 'जीवन साहित्य' आदि अद्वितीय पत्रों के सम्पादक श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय को यदि इस बार सभापति पद के लिए चुना जाय तो मेरी सम्मति में अत्युत्तम होगा।

श्री उपाध्याय जी का विशेष परिचय देने की जरूरत नहीं। वे अपनी हिन्दी-सेवाओं के लिए काफी प्रसिद्ध हैं। राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करते हुए भी उनका हिन्दी-साहित्य में अपना स्थान है। मैं समझता हूँ, राजपूताना—मालवा में विशेषतः सभी रियासतों पर तथा साहित्यिक जगत् में सर्वत्र समान प्रभाव रखने का कार्य—तत्परता के कारण उनका सभापति चुना जाना और भी उपयुक्त होगा।

* * *

उदयपुर महिला मंडल के अन्तर्गत चलनेवाले श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय के तत्त्वावधान में अध्यापिका शिक्षण-शिविर का श्रीमान् स्वामी सत्यदेव परिव्राजक-द्वारा चित्तौड़ दुर्ग पर उद्घाटनोत्सव का कार्य-क्रम सम्पन्न हुआ। दुर्ग की चट्टानों पर सूर्यास्त के समय एकत्रित आचार्यों और अतिथियों के मध्य शिविर की बहिनों ने वन्देमातरम् गान से उत्सव के कार्यक्रम का प्रारम्भ किया। श्रीयुत शम्भूलाल शर्मा के परिचयात्मक भाषण, श्री रामबहिन के शिविर के उद्देश्य, व पाठ्यक्रम के वक्तव्य एवम् उत्साहवर्धक संगीत, नृत्य के पश्चात् स्वामी सत्यदेव जी का सारगर्भित एवम् प्रेरणाप्रद उद्घाटन भाषण हुआ। —संवाददाता

* * *

अजमेर में आगामी ता० २८,२९ और ३० मई को अखिल भारतीय वीर पुत्र सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन बीकानेर के युवक कार्यकर्ता श्री हजारीमल बँटठिया के सभापतित्व में होगा। इस अवसर पर प्रदर्शिनी, कवि-सम्मेलन तथा कविता, निबन्ध, वाद-विवाद एवं व्यायाम प्रतियोगिता का विशेष आयोजन किया गया है। छात्रों को विशेष जानकारी के लिए, मन्त्री वीर पुत्र सम्मेलन धानमंडी, अजमेर के पते से पत्र-व्यवहार करना चाहिए।

—प्रचार मन्त्री

* * *

हरिद्वार श्री श्रवणनाथ ज्ञानमन्दिर में जगद्गुरु श्री आद्य शंकराचार्य महाराज की जयन्ती स्वामी भागवतानन्द मंडलेश्वर महाराज की अध्यक्षता में बड़े समारोह से मनाई गई। इस अवसर पर ऋषिकुल, गुरुकुल, महावीरदल, गंगासभा तथा साधु-समाज के सभी अखाड़ों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। स्वामी विद्यानन्द मंडलेश्वर महाराज, महन्त शान्तानन्दनाथ, पं० रामनारायण ओझा, प्रो० वेदव्रत विद्यालंकार, प्रो० शुकदेव दर्शनवाचस्पति, पं० उमादत्त व्याकरणाचार्य, पं० चिरंजीवलाल शर्मा आदि के आचार्य के जीवन तथा दार्शनिक सिद्धान्तों पर सारगर्भित भाषण हुए। सभापति महोदय के ओजस्वी भाषण के अनन्तर महन्त शान्तानन्दनाथ के उपस्थित सज्जनों को धन्यवाद देने के उपरान्त सभा विसर्जित हुई।

—संवाददाता

* * *

गोरखपुर (भागलपुर) में गत
१३ मई को मिसेज डी० एल० मकार्ट
अध्यक्षता में मित्रराष्ट्रों की विजय
जर्मनी की पराजय के उपलक्ष
ईश्वर को धन्यवाद दिया गया।
१४ मई को काजी मुहम्मद असगर
पोस्टमास्टर के सभापतित्व में नाग
की ओर से दंगल, बनेठी, कूद
खेल हुए जिसमें उचित पुरस्कार, मि
और कपड़ा वितरण किया
सभा में सामयिक भाषण हुए।
जेम्स मुरार बी० ए०, युगलकिशोर 'आ
रामकेवल प्रसाद 'विशारद', पोस्टमा
मुखिया तथा पटवारी ने इस काम में
योग दिया।

—संवाद

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि
पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनसे उनके भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका खास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि बालकों में सद्विचारों को बचपन में ही बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की इन कृतियों को अपनाना चाहिए, और उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
III) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस लि०, प्रयाग

कपड़े की कमी।

जनता के लिए कपड़े की कमी जो आजकल सर्वत्र अनुभव की जा रही है उससे देहली क्लॉथ मिल्स की दूकानें भी जो डी.सी.एम् स्टोर्स के नामसे सर्वत्र विख्यात हैं और जो बहुधा सैकड़ों ग्राहकों सेघिरी रहती हैं, बची न रह सकीं।

चूँकी दूसरी दूकानों में कपड़ा मिलना कठिन होगया है इसलिए हमारी दूकानों नें उन नये ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित किया है जिन्होंने पहले कभी हमसे कपड़ा नहीं खरीदा था, परिणामतः हम अपने स्टोरों को पहले की अपेक्षा अधिक कपड़ा मुहैय्या करते रहे हैं परंतु खेद है कि अब हम इससे अधिक माँग पूरी करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इन परिस्थितियों में हम महसूस करते हैं कि हमारे ग्राहकों के लिए यह असुविधाजनक है कि बहुत देरतक इंतजार करने पर भी उन्हें थोड़ासा कपड़ा प्राप्त हो सकेगा जोकि हम प्रत्येक ग्राहक को देसकेंगे।

परन्तु तोभी हम अपने माननीय ग्राहकों को विश्वास दिलाते हैं कि इन दिनों हम उनकी अधिक सेवा नहीं कर सकते, यह इसलिए नहीं कि ऐसा करने की हमारी इच्छा नहीं है या हमारी तरफ से इसके लिए प्रयत्न ही नहीं होते हैं वरन पूर्णतया इसलिए कि ऐसा करा सकना हमारी शक्ति के बाहर होगया है। हम अपने ग्राहकों के प्रति भी विश्वास करते हैं कि वे हमारी कठिनाइयों को महसूस करेंगे और हमारे प्रति सहिष्णु बने रहेंगे जबतक कि उपयुक्त अवसर आता है और हम उन्हे पूर्ण सन्तुष्ट करने में समर्थ होते हैं।

दि देहली क्लॉथ एण्ड जेनरल मिल्स
कंपनी, लिमिटेड, देहली।

DCM. 54—Hindi.

भङ्ग की तरङ्ग

…डी॰ ए॰ वी॰ स्कूल में दो-दो …करने के लिए बन गई हैं। …में तीन कमेटियाँ भी …हुई ?

*

…का मत है कि इस साल …का सभापति ऐसे आदमी …जो हिन्दोस्तानी का सम- …अवस्था में डाक्टर आकिर- …बनाया जाय तो कैसा …भी हैं। मुसलमानों …भी कुछ परसेंटेज मिलना …

*

…सम्मेलन की …ही रूस लौट गये। …कि सम्मेलन तो उसी क्षण …क्षण हम वहाँ से …

*

…छपा है कि बर- …लाशें मिली हैं। …एक रूस, एक …एक फ्रांस के …महात्मा ने हिट- …दिये ताकि मित्रराष्ट्रों …झगड़ा न हो।

…कहा है कि भारत …तो मिला ही है। …अपना मतभेद दूर कर …। एक जिन्ना और एक …दीजिये, मतभेद फट …। और इन लोगों का …हाथ का खेल है।

*

…है कि सभी स्वतंत्र हों …लोगों को मंजूर नहीं …हो जायँगे तो फिर …और युद्ध नहीं होगा तो …कैसे चलेंगे ?

*

…विजय दिवस के उपलक्ष …हो गये कि पचास लाख डालर की हानि हो गई। युद्ध में अरबों की संपत्ति स्वाहा हो गई, तो क्या शांति के लिये पचास लाख अधिक है ?

* * *

कहा जाता है कि उस दिन नागरिकों तथा सैनिकों ने शराब की दूकानों और शराबखानों को लूट लिया। खाने पीने की वस्तु की लूट को लूट नहीं कहते। हाँ बंक इत्यादि लूटे गये होते तो लूट होती। यह तो विजयोल्लास था !

* * *

मौलाना फजलुलहक और अल्लामा मशरिकी मिलकर भारत के लिए शासन विधान बना रहे हैं। इस पर यही कहा जा सकता है जो किसी कवि ने कहा है—'खूब निबहैगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो'।

* * *

इस समय योरप को बाहर से एक करोड़ बीस टन अनाज चाहिए। इतना यदि भारत से ही भेज दिया जाय तो कोई हानि नहीं है। दो-एक साल तक बहुत होगा गेहूँ डेढ़ सेर तक बिकेगा और क्या ?

* * *

अखिल भारतीय किसान सभा के मंत्री श्री बंकिम मुकर्जी और अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस की उपमंत्रिणी कुमारी शान्ता मालाराव प्रणय-सूत्र में बँध गये। चलिये कम से कम बम्बई में किसानों और मजदूरों का संगठन अब बहुत मजबूत हो जायगा।

विजयोपलक्ष में लखनऊ में तीस हजार रुपये के कपड़े बाँटे गये हैं। कपड़े तो थे नहीं शायद यह कपड़े विजय के लिए विशेष रूप से बिनवाये गये थे ?

* * *

जमैमतुल उलमा का कहना है कि यदि पूँजीपति लोग हम लोगों को भी उतनी ही सहायता करें जितना कांग्रेस को करते हैं तो एक साल में स्वराज्य मिल जाय। हम भी यही कह सकते हैं कि यदि मुसलमान लोग कांग्रेस की उतनी ही मदद करें, जितनी वह ब्रिटिश गवर्नमेंट की करते हैं तो एक दिन में स्वराज्य मिल जाय।

* * *

सर सुलतान अहमद ने भी रेडियो पर कहा है कि विजय की खुशी में इँगलैंड की सरकार को चाहिए कि भारत को स्वतन्त्र कर दें। आप तो अपने दिमाग में स्वतन्त्र होकर एक छत्र राज्य कर ही रहे हैं, भारत स्वतन्त्र हो या न हो आपकी क्या हानि है?

* * *

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में सुधार चाहते हैं। भई वाह, जब सम्मेलन की बागडोर श्रद्धेय टंडन जी के पवित्र करकमलों में है तो चतुर्वेदी जी को सुधार की जरूरत क्यों दिखाई पड़ी ? क्या बुद्धि का दिवाला तो नहीं निकल गया है ?

—अगड़धत्त शर्मा

…और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण
…। महानता और कीर्ति के लक्ष्य की सिद्धि, कार्य …मतिष्क और शारीरिक शक्ति के सहयोग से ही …। शिवाजी ने अपने युद्ध कौशल, असाधारण नेतृत्व …शक्ति का संतुलन और सैन्य संचालन, साथ ही …स्वस्थता द्वारा अनेक युद्धों को जीत कर मराठा …की नींव डाली।
…स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का

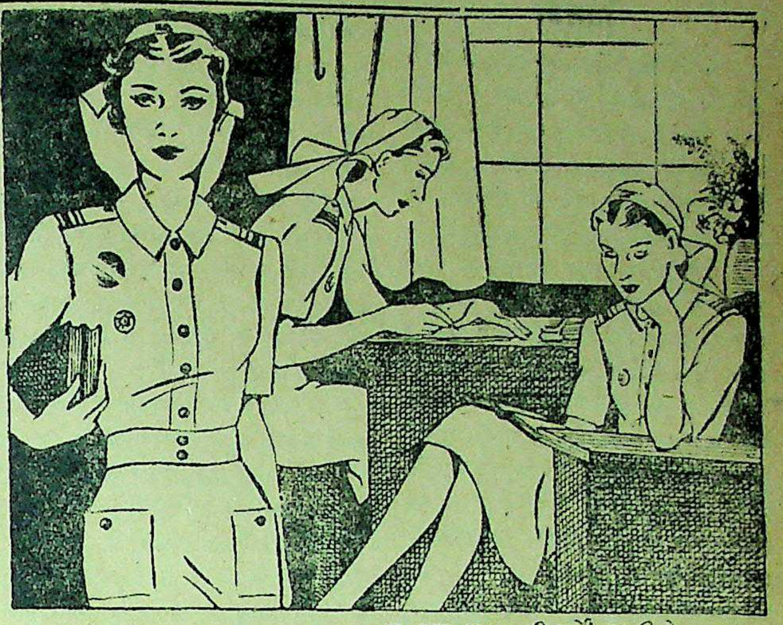

ए॰ एन॰ एस॰ की नर्सें ड्यूटी के बाद

प्रत्येक राष्ट्र की श्रेष्ठ महिलायें युद्ध में भाग ले रही हैं

रूस, चीन, ब्रिटेन, अमेरिका तथा अन्य युद्धकारी राष्ट्रों की महिलायें पुरुषों की भांति आजकल युद्ध में भाग ले रही हैं। सभी देशों की श्रेष्ठ महिलाओं ने अपने लिए वह कार्य चुना है जिसको करने के लिए नारी बहुत अधिक योग्यता रखती है—और यह नर्स का कार्य है।

शान्तचित्त, चातुरी और हृदय की कोमलता—ये नारी के शस्त्रास्त्र हैं। आप इनके द्वारा युद्ध-संचालन करके आत्म संतोष का आनन्द प्राप्त कर सकती हैं। हिन्दुस्तान की आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए॰ एन॰ एस॰) आपको यह सुअवसर प्रदान करती है। इससे लाभ उठाइए !

ए॰ एन॰ एस॰ की प्रथम श्रेणी की ट्रेनिंग आपको इस योग्य बना देगी कि यदि आप चाहें तो बाद में शहरी क्षेत्र में आप स्वतंत्र रूप से नर्स का कार्य कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त जो डाक्टरी ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह गृहस्थी तथा सामाजिक सेवा के कार्य में आपके बहुत काम आयेगा।

पूरे विवरण के लिए
आज ही अपने क्षेत्र की लेडी सुपरिन्टेण्डेण्ट, सेण्ट जान एम्बुलेन्स अथवा डाइरेक्टर जनरल, इण्डियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली को लिखिए।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है:—(१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु॰ से १२६ रु॰ मासिक तक। (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१२५ रु॰ से १७५ रु॰ मासिक तक। दोनों को मुफ़्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती हैं। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही ड्यूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

सब उम्मीदवारों में अँग्रेजी लिखने और बोलने की अच्छी योग्यता होनी चाहिये और आवेदनपत्र मँगाने के लिये अँग्रेजी में पत्र लिखा जाना चाहिये।

a·n·s
आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस
महिलाओं के लिए सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

AAA 1201

देश-विदेश में क्या हो रहा है ?

विदेश

चेकोस्लोवाकिया में फील्ड मार्शल शोएर्नर की जर्मन-सेना अत्यन्त दुराग्रह के साथ प्रतिरोध करती रही। मार्शल कोनीव तथा मार्शल मालीनोव्सकी प्रेग के दक्षिण में एक दूसरे के सम्पर्क में आ गये और प्रतिरोधी जर्मनों का सफाया करते रहे।

यूगोस्लाविया तथा इटली की सीमा पर स्थित महत्त्वपूर्ण बन्दरगाह ट्रीस्ट पर किसका कब्जा होना चाहिये, इस बात को लेकर बड़ा झगड़ा चल रहा है। मार्शल टीटो का कहना है कि चूँकि यूगोस्लाव सेना ने उस पर कब्जा किया है इसलिए वह यूगोस्लाविया के ही शासन के अंतर्गत रहेगा। पर मित्रराष्ट्रों का कहना है कि ट्रीस्ट फील्ड मार्शल एलेग्जेंडर के ही सैनिक शासन के क्षेत्र के अंतर्गत आता है, और जब तक संधि-सम्मेलन में उसके अधिकार के सम्बन्ध में कोई बात तय न हो जाय तब तक टीटो उस पर से अपना अधिकार हटा ले। पर अभी तक मार्शल टीटो उस पर अपना अधिकार जमाये हुए हैं।

डच रेडियो ने सूचित किया है कि ब्रिटिश सैन्य दल हेलीगोलैण्ड के द्वीप पर उतरे हैं।

* * *

न्यूजीलैण्ड के प्रधान मंत्री तथा संरक्षण समिति के अध्यक्ष मि० पीटर फ्रेजर ने सान फ्रान्सिस्को में यह सूचित किया है कि वह दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका से सम्बन्धित 'मैन्डेट' पर किसी भी वाद-विवाद को अनियमित ठहरायेंगे। दक्षिण अफ्रीका उन प्रस्तावों का घोर विरोध कर रहा है जो संरक्षित क्षेत्रों की वर्तमान शासन-पद्धति में रद्दो-बदल करने के उद्देश्य से पेश किये गये हैं।

सान फ्रान्सिस्को सम्मेलन के रूसी प्रतिनिधि-मंडल ने अखिल अमेरिकन क्षेत्रीय समझौते का विरोध किया है। रूसी प्रतिनिधियों का यह तर्क है कि सान फ्रन्सिस्को सम्मेलन के सिद्धान्त संसार की राजनीतिक अविभाज्यता के आदर्श पर स्थापित है, ऐसी हालत में विभिन्न क्षेत्रीय व्यवस्था-पद्धतियाँ कायम करने से और उन पद्धतियों को अपने अपने क्षेत्र की सुविधा के अनुसार शासन-प्रबन्ध के अधिकार प्रदान करने से वह अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा पद्धति भंग हो जायगी जिसकी स्थापना की चेष्टा सान फ्रान्सिस्को में की जा रही है।

रूस ने एक प्रस्ताव पेश किया है कि संरक्षण के अन्तर्गत आनेवाले सभी पराधीन राष्ट्रों का अन्तिम ध्येय स्वतन्त्रता मान लिया जाय। ब्रिटेन और अमेरिका ने इसका विरोध करते हुए 'स्वतन्त्रता' के स्थान पर 'स्वशासन' शब्द पर जोर दिया है।

* * *

ओकीनावा द्वीप की राजधानी नाहा पर अमेरिकनों का कब्जा हो गया है। तालीम और दलओ नदियों के बीच भयंकर रूप से आमने-सामने की लड़ाई चल रही है। अब केवल एक-चौथाई ओकीनावा पर कब्जा करना शेष रह गया है।

लुजोन द्वीप के १० प्रतिशत भाग पर अभी तक जापानियों का कब्जा बना हुआ है। इस बचे हुए क्षेत्र में प्रायः ५०,००० जापानी पहाड़ी स्थानों पर किलेबन्दी कर रहे हैं। तीन तरफ से अमेरिकनों का दबाव बढ़ता चला जा रहा है। मिन्डानाओ में डावाओ के क्षेत्र में भारी लड़ाई हो रही है।

न्यूगिनी में छठा आस्ट्रेलियन डिवीजन विऊई पर आक्रमण कर रहा है। यह स्थान जापानियों का महत्वपूर्ण अड्डा है, और वेवाक के पश्चिम में है। जापानी प्रबल प्रतिरोध कर रहे हैं।

बोर्नियो में आस्ट्रेलियनों ने प्रायः सभी मुख्य स्थानों और नगरों पर कब्जा कर लिया है। जापानी केवल केन्द्र के कुछ पहाड़ी स्थानों पर रह गये हैं।

जापानी संवाद एजेंसी ने यह दावा किया है कि क्यूशू के दक्षिण-पूर्व में मित्रों के दो विमान-वाहक जहाज तथा तीन जंगी जहाज या तो डुबाये या क्षतिग्रस्त कर दिये गये।

चीनी सैन्य-दल फूकियन प्रान्त के महत्वपूर्ण बन्दरगाह फूचाव में घुस गये हैं और फूचाव की सड़कों में भयंकर लड़ाई हो रही है।

प्रोम से दक्षिण की ओर बढ़नेवाले मित्र सैन्य दल रंगून से ९१ मील आगे बढ़ निकले हैं।

दक्षिणी बरमा के प्रायः सभी स्थानों में जापानियों के सफाये का काम जारी है। जापानियों का छिटपुट प्रतिरोध अभी तक चला जा रहा है। कुछ जापानी दल पहाड़ों से होकर भाग निकलने की चेष्टा में हैं। एक दल भागने की चेष्टा में इरावदी के एक द्वीप में जा पहुँचा है। उसका सफाया किया जा रहा है। तुंगू के पूर्व जापानियों का प्रतिरोध धीमा पड़ गया है।

जापानियों द्वारा १९४२ में संगठित तथा कथित आजाद भारत सेना के पूरे बटालियन ने मागवे में १४वीं सेना की एक टुकड़ी के आगे आत्म समर्पण कर दिया।

स्वदेश

महात्मा गांधी ने पंजाब प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मियां इफ्तिखरुद्दीन को एक पत्र लिखा है जिसमें उन्होंने अपना यह मत व्यक्त किया है कि जब तक कांग्रेस एक नाजायज संस्था मानी जाती रहेगी तब तक किसी भी उप-चुनाव के लिये कोई भी उम्मीदवार कांग्रेस की तरफ से खड़ा नहीं किया जा सकेगा।

बंगाल के शासन-प्रबन्ध की जाँच कमेटी ने, जिसके अध्यक्ष भारत सरकार के वर्तमान अर्थ सदस्य सर आर्चीबाल्ड रौलन्ड्स हैं, अपना रिपोर्ट में लिखा है कि शासन-प्रबन्ध में अनैतिकता विस्तृत रूप से फैली हुई है और उसे जड़ से उखाड़ने के लिए बड़े कड़े उपाय काम में लाने होंगे।

अफवाह है कि मौलाना अबुल कलाम आजाद शीघ्र रिहा कर दिये जायेंगे। मौलाना आजाद का स्वास्थ्य साधारणतः अच्छा बताया जाता है।

खबर है कि बरेली में अधिक गर्मी पड़ने के कारण पंडित जवाहरलाल नेहरू को अल्मोड़ा भेजा जायगा।

बंगाल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री फजलुल हक ने लाहौर में एक प्रेस-प्रतिनिधि के आगे यह आशा प्रकट की कि वह फिर मुस्लिम लीग में शामिल हो जायेंगे।

* * *

ज्ञात हुआ कि दिल्ली सरकार स्वास्थ्य-सम्बन्धी के कारणों से कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य श्री आसफअली की रिहाई पर विचार कर रही है।

* * *

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के भूतपूर्व सदस्य श्री जयराम दौलतराम महात्मा गांधी से मिलने शीघ्र ही कराची से महाबलेश्वर जायँगे और उनसे सिंध की वर्तमान परिस्थिति पर बातें करेंगे।

* * *

महात्मा गांधी को जब यह मालूम हुआ कि कुछ दूकानदार खद्दी का सूत चोर बाजार के भाव से बेच रहे हैं तो उन्होंने इस प्रथा की तीव्र निन्दा की। मालूम हुआ है कि यह प्रथा तब से चल पड़ी है जब से एक रुपये की खादी खरीदने के लिये एक आने का खादी का सूत देने का नियम बना है।

* * *

सिंध प्रांतीय कांग्रेस कार्यकर्ता समिति के अध्यक्ष डा० चोइथराम गिडवानी ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि आचार्य कृपलानी के साथ जेल में साधारण बंदियों की अपेक्षा भी दुर्व्यवहार किया जा रहा है। उनकी चिट्ठियाँ उन्हें सेंसर होने के बाद मिलती है और उनकी चिकित्सा का भी कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है।

* * *

हाँ-हाँ कम्यूनिस्ट—एक

(पेज ४ का शेष)

देखकर कार्रवाई भी की जा सके
इसी सिलसिले में आपने यह भी
कि सभा-सोसाइटियों में बैठकर उन
भाषण सुनने से ज्यादा अच्छा हो
प्रत्येक कामरेड अपने पास
कम्यूनिस्ट-विरोधियों को परेशान
प्रारम्भ कर दे। कुछ नहीं तो
इसी सम्बन्ध में बातचीत कर
तय कर ले कि अवसर मिले
कम्यूनिस्ट-विरोधी महाशय फिर
कर सकते हैं। 'कामरेड की कमाई'
निबन्ध प्रत्येक कम्यूनिस्ट के
और मनन करने योग्य चीज है।
का यह सुझाव कि 'प्रत्येक
तार्किक और अपने सिद्धान्तों का
रट्टू नहीं होगा, कुछ नहीं कर
आगे चलकर अमूल्य सिद्ध होगा।

पुस्तक के कुछ निबन्ध तो
स्टालिनिस्टों के काम की चीज,
एक भी न मिली। हाँ,
निबन्ध 'जिना बनाम जिच'
माननीय है। निबन्ध का पहला
श्री जिना की वन्दना से परिपूर्ण है।
पैरा में गांधी जी के ऊपर
की चेष्टा की गई है। निबन्ध
पैरा, कम्यूनिस्ट-पार्टी की
क्या आवश्यकता है, यह विषय
के लिए लिखा गया है। अन्त में
जिना' मिलन पर कुछ 'पोलिटि
कजलियाँ हैं।

सब मिला-जुलाकर पुस्तक पढ़ने
टायटिल की पीठ पर कांग्रेस का
लीग का चाँद मार्का, कम्यूनिस्ट
का हँसिया-हथौड़ावाला, तीनों

और आकर्षित किया है जिन्होंने पहले कभी हमसे कपड़ा नहीं खरीदा था, परिणामतः हम अपने स्टोरों को पहले की अपेक्षा अधिक कपड़ा मुहैय्या करते रहे हैं परंतु खेद है कि अब हम इससे अधिक माँग पूरी करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इन परिस्थितियों में हम महसूस करते हैं कि हमारे ग्राहकों के लिए यह असुविधाजनक है कि बहुत देरतक इंतजार करने पर भी उन्हें थोड़ासा कपड़ा प्राप्त हो सकेगा जोकि हम प्रत्येक ग्राहक को देसकेंगे। परन्तु तोभी हम अपने माननीय ग्राहकों को विश्वास दिलाते हैं कि इन दिनों हम उनकी अधिक सेवा नहीं कर सकते, यह इसलिए नहीं कि ऐसा करने की हमारी इच्छा नहीं है

सन्दल मिडि
अचूक दवा
सुजाक गुर्दे और मूत्राशय की बीमारियों के लिये।
प्रस्तुतकर्त्ता
ग्रिमाल्ट एण्ड कं०

पं० भगवतीप्रसाद वाजपेयी
मूल्य २) दो रुपये
"हिन्दी संसार में जिन
ने सुन्दर कलात्मक कहानि
हैं, उनमें वाजपेयी जी
स्थान है और इस तथ्य
इनकार करेगा कि उनकी
ही कहानियाँ काफी ऊँचे
की हैं।"
प्रकाशक
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ
ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

…ल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक
को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

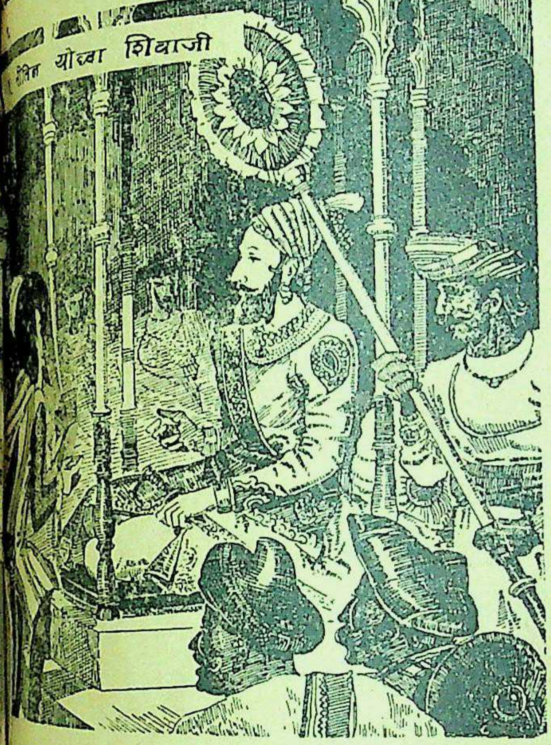

…और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण …रीर। महानता और कीर्ति के लक्ष्य की सिद्धि, कार्य …मतिष्क और शारीरिक शक्ति के सहयोग से ही …। शिवाजी ने अपने युद्ध कौशल, असाधारण नेतृत्व …शक्ति का संतुलन और सैन्य संचालन, साथ ही …रिक स्वस्थता द्वारा अनेक युद्धों को जीत कर मराठा …की नींव डाली।

…स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का …करिये। हेमो द्राक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी …लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों को …हैं। उसके माल्ट पेप्सिन और अंगूरों …शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि …को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असा-…और कान्ति प्रदान करता है।

…रक्षा के लिये -
…द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

…डिस्ट्रिब्यूटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर
…कैमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोडा

AL 260 A

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION

कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफास-
फाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण

तथा

पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL

- * खाँसी
- * ब्रांकाइटिस
- * जुकाम
- * निमोनिया
- * यक्ष्मा
- * पाचनक्रिया

* की आदर्श औषधि *

**तैल अंश को नियंत्रित रखने
के लिये विशेष गुणकारी है**

यदि आपके औषधि विक्रताओं से
न मिले तो कृपया हमें लिखें:—

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

फिल्मस्टारों की तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

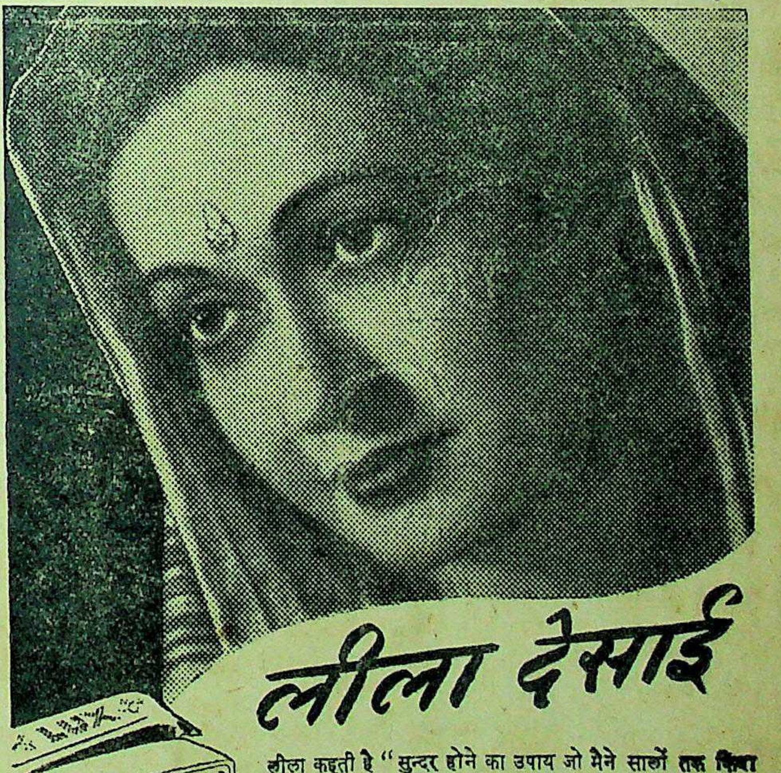

लीला देसाई

LUX
TOILET SOAP

लीला कहती है "सुन्दर होने का उपाय जो मैने सालों तक किया है वह साधारण और शीघ्र है। यह लक्स टॉयलेट साबुन के लगातार और ठीक तरीके से इस्तेमाल करने से होता है। इस सुन्दर बनाने वाले साबुन का फेना पानी में मिलाकर बदन में धीरे धीरे थप थपाया जाये और उसको फिर दूसरे पानी से अच्छी तरह से धो डाला जाये इससे त्वचा साफ, रेशम की तरह नरम और सुगंधित हो जाती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 128-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

किंकिणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव की उ
कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और
की उड़ान इतनी आकर्षण है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें
भूले बिना नहीं रहता मूल्य ॥) बारह आने।
मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

खांसी बाघ की तरह भयंकर है...

सिरोलिन 'रुचि'
सर्दी और खांसी का
सर्वश्रेष्ठ प्रतिषोधक है

इस सिलसिले को यह दिखाने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है कि असावधानी की बातचीत, वह चाहे निर्दोष ही क्यों न हो, शत्रु को लाभ पहुंचा सकती है।

AAA147

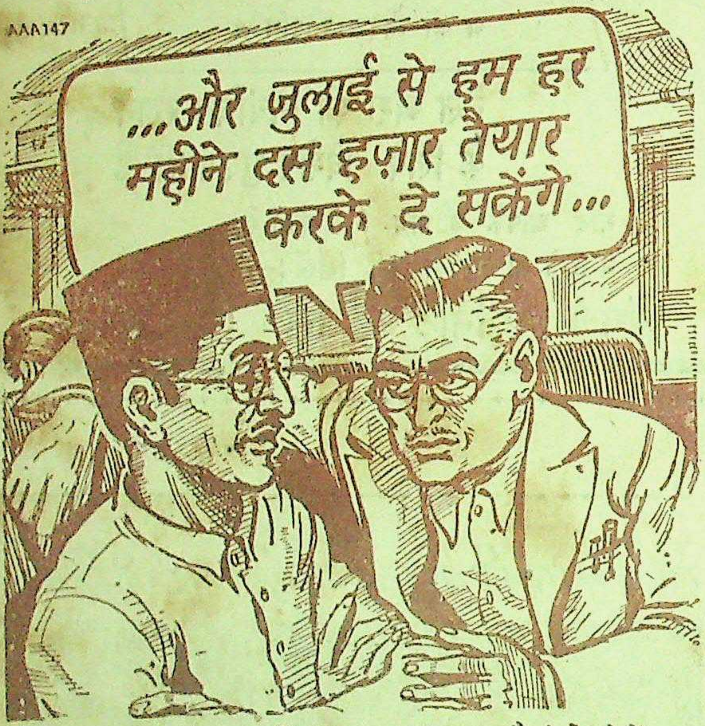
...और जुलाई से हम हर महीने दस हज़ार तैयार करके दे सकेंगे...

गुप्त बातें — इनसे सारा वातावरण व्याप्त है! ये दोनों सज्जन, जो अच्छे और प्रतिष्ठित व्यापारी हैं, अपने जंगी ठेकों के बारे में गुप्त रूप से बातचीत कर चुके हैं। लेकिन रेल के डिब्बे में यह ज़रा सी बात, जो इनके मुंह से निकल पड़ी, टोह में लगे हुए दुश्मन के जासूस को एक महत्त्वपूर्ण भेद बतला सकती है। दस हज़ार क्या चीज़? वह हफ़्तों से इसे जानता है। वह सिर्फ़ तादाद मालूम करना चाहता था। अगर किसी ज़रिये से उसे यह पता लग जाय कि ये चीज़ें कहां भेजी जायंगी, तो हमारी रसद के बारे में एक महत्त्वपूर्ण भेद जापानी दुश्मनों के हाथ लग जायगा।

सुरक्षा का यह अर्थ नहीं कि कम बोलिए, बल्कि यह है कि जंगी तैयारियों का बिलकुल ज़िक्र न कीजिए। इस उपाय से हम शत्रु को विफल मनोरथ बना सकते हैं और अपने सैनिक कौशल के द्वारा उसे आश्चर्य में डाल सकते हैं। इसका एक अर्थ और भी है, अर्थात् जनता की आवश्यकता का सामान हिन्दुस्तान के प्रत्येक भाग में ठीक से पहुंचता रहेगा। जहाज़ों की पहुंच, फ़ौजों की हरकत, कारख़ानों की पैदावार—इन बातों की टोह में दुश्मन हमेशा रहता है। इसका ख़्याल रखिए कि उसको आपके ज़रिये कुछ न मालूम होने पाये।

बातचीत में सावधानी उचित है

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

अच्छी तनख़ाह
मुफ़्त भोजन
पूरी तनख़ाह पर छुट्टी
मुफ़्त निवास-स्थान
मुफ़्त इलाज
मुफ़्त पोशाक

क्लर्कों के लि

हिन्दुस्तानी शाही समुद्री बेड़े की एकाउन्टेन्ट ब्रांच में
की, हिन्दुस्तानी फ़ौज में (जिसमें इंडियन आर्मी कोर आफ
भी शामिल है) तथा शाही हिंदुस्तानी हवाई बेड़े में
जगहें ख़ाली हैं। इन फ़ौजी नौकरियों में जो ट्रेनिंग और
प्राप्त होगा, वह लड़ाई के बाद भारतीय व्यापारिक क्षेत्र में
लाभजनक सिद्ध होगा।

पूरे ब्योरे तथा आवश्यक योग्यता
के विवरण के लिए नीचे लिखे दफ़्त
में से पास के किसी दफ़्तर से पूछिए

AAA 136

लखनऊ—(हे० क्वा०) इस्टन एरिया, हजरतगंज
लखनऊ—१६, विश्वेश्वरनाथ रोड।
आगरा—हन्टले होस्टल, ड्रमन्ड रोड।
इलाहाबाद—१८, कैनिङ्ग रोड।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [... मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७॥)
≡)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

Sunday, 3rd June, 1945

जून १९४५

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका
महायुद्ध में अपनी बीती
घुसुचा
धरतीमाता

आधुनिक-उपन्यास

नरक
आरती
रूपान्तर
जमींदार
अग्रणी
निष्कलंकिनी
तीन नगीने
नया क़दम
त्याग का मूल्य
बहूरानी की हाट
देहाती समाज
साथी
अरक्षणीया
पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल
मशीन के पुर्जे
झंडा डाकू
महान् अपराधी
लाल दूत
घर का भेदिया
समस्या
जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली
पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हिन्दी के निर्माता
सूर-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

प्रत्येक का मूल्य ॥≥) है।

दर्शन और जीवन—इस पुस्तक में दर्शन के साथ जीवन का अनिवार्य सम्बन्ध दिखलाते हुए, प्रत्येक व्यक्ति को दर्शन क्यों पढ़ना चाहिए? इस प्रश्न पर विवेचनात्मक प्रकाश डाला गया है। दर्शनशास्त्र का परिचय प्राप्त करने की इच्छा रखनेवालों के लिए यह पुस्तक अत्यधिक उपयोगी है। केवल इसी एक पुस्तक को मनोयोगपूर्वक एक बार पढ़ जाने पर पाठक को दर्शनशास्त्र के सम्बन्ध की प्रायः सभी प्रमुख बातें ज्ञात हो सकती हैं और फिर वह दर्शनशास्त्र-सम्बन्धी-वार्तालाप में रस प्राप्त कर सकता है। सजिल्द और सुन्दर काग़ज़ पर छपी हुई पुस्तक का मूल्य ३।-) तीन रुपये पाँच आने

ओंकारनाथ कहाँ?
का शिक्षण-शिविर।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

क्या हिन्दुस्तान को स्वतंत्रता मिलेगी?
क्या वह कलंकिनी थी—भटका बालक।

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

- बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ
- ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

- बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक
को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

AAA 162 HINDI

ये हैं इनकी चालें-

इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

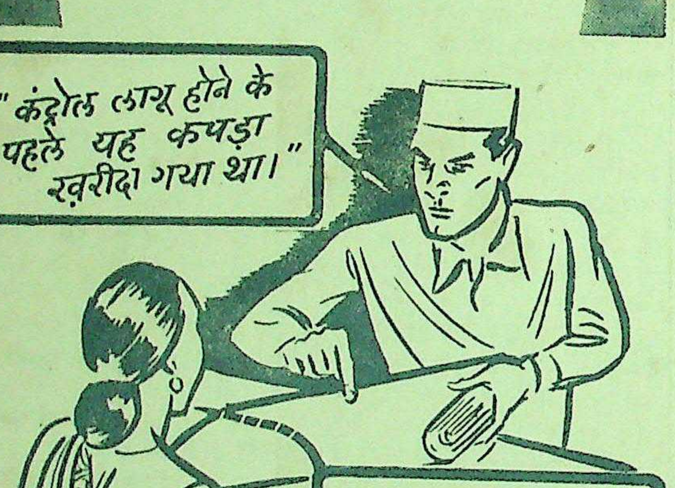
"कंट्रोल लागू होने के पहले यह कपड़ा ख़रीदा गया था।"
"इससे क्या हुआ - हम ज़्यादा दाम नहीं देंगे।"

इन महिला का कहना बिलकुल ठीक है—दुकानदार ग़लत कह रहा है। पिछली महँगाई का बहाना करके कंट्रोल के दामों से ज़्यादा क़ीमत नहीं ली जा सकती।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग द्वारा प्रकाशित

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

लेकिन मेरे करने लायक़ कोई काम भी तो नहीं है!

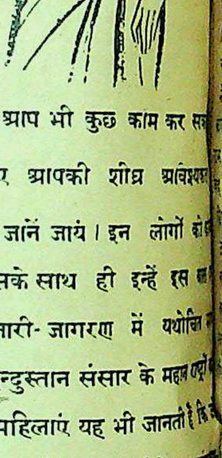

आप अपने मन में जानती हैं कि यह सच नहीं है; फिर भी आप ऐसा कहे जाती हैं। नौ सेना और सेना की शानदार वर्दी पहने हुए वमेन्स आग्ज़ीलरी कोर की सदस्याएं लगातार इस बात की याद दिलाती रहती हैं कि आप भी कुछ काम कर स ……………और इस कार्य के लिए आपकी शीघ्र आवश्य जिससे जल्दी जीत हो जाय और कम जानें जायं। इन लोगों को पालन पर आत्म-संतोष तो है ही, इसके साथ ही इन्हें इस अभिमान भी है कि वे भारतवर्ष के नारी-जागरण में यथोचि ले रही हैं। नारी-जागरण के बिना हिन्दुस्तान संसार के महान पंक्ति में स्थान नहीं पा सकता। ये महिलाएं यह भी जानती हैं कि अनुभव तथा ज्ञान इन्हें आजकल प्राप्त हो रहा है, वह लड़ाई के बाद वाणिज्य के क्षेत्र में इनके लिए बहुत लाभजनक सिद्ध होगा। भर का पूर्ण निश्चय करने से पहिले आपको किसी महिला-भरती- से (निम्नलिखित पते पर) अथवा किसी डब्ल्यू० ए० सी० (यूनिट कमांडर से कोर की नौकरी के बारे में पूरा विवरण मालूम कर चाहिए।

असिस्टेण्ट टेक्निकल रिक्रूटिंग आफिसर्स, डब्ल्यू० ए० सी० (आई)

लाहौर- २२, डेविस रोड। रावलपिंडी-क्विन टामस रोड। लखन
माफ़त टी० आर० ओ० ईस्टर्न, हज़रतगंज। कलकत्ता- माफ़त डी०
आर० ओ०, २८, थियेटर रोड। मद्रास- ३।१८, माउंट रोड।
एफ० आई० बिल्डिंग, हास्पिटल लेन, धोबी तलाव। पूना-स्टापटन रो
पटना- मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, इग्ज़ीबीशन-रोड।
फब्बन रोड।

* वमेन्स आग्ज़ीलरी कोर (इंडिया) *

देशदूत

७ संख्या ४०]

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, ३ जून, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

व्यक्ति जेलखाने गये, अब भी कितने जेलों में पड़े हुए हैं, इसकी क्या जरूरत थी? लेकिन कुछ भी हो कांग्रेस-लीग का गठबंधन हो जाना चाहिए और जो कुछ मिल जाये अँगरेजों की कृपा ही समझना चाहिए। इसके सिवा हमें तो सबसे प्रसन्नता इसी बात की है कि 'स्वराज्य' मिलना अब प्रारंभ हो रहा है और देखिये अगर अँगरेजों की कृपा बनी रही तो यह पराधीन राष्ट्र बहुत जल्दी 'पूर्ण स्वाधीनता' की गठरी अपने सर लाद लेगा और राष्ट्र-संघ में यदि शामिल भी न किया गया तो उसके बाहर बैठने का प्रबंध तो कर ही दिया जायेगा।

* * *

चीनी प्रजातंत्र के प्रेसिडेंट मार्शल च्यांग-काई शेक का यह चित्र अभी हाल में चीनी सेना का निरीक्षण करते समय लिया गया था।

आगामी जुलाई में इँगलैण्ड के चुनाव के पहले ही त्रिराष्ट्र-सम्मेलन होने की योजना बन गई है। ब्रिटेन, अमरीका और रूस फिर एक जगह डटकर दुनिया के भाग्य का फैसला करेंगे। अब तक स्टालिन महोदय की जरूरत थी योरोप में। चूँकि योरोप का मामला अब समाप्त हो गया है इसलिये स्टालिन साहब को एशिया के मोर्चे पर तैनात किया जायेगा। क्यों? आखिर इसका मतलब? योरोप है सफेद लोगों का देश इसलिये उसके भाग्य का निर्णय यदि सफेद कौमें ही करें तो बेहतर है। इसलिये स्टालिन या रूस की वहाँ जरूरत नहीं जान पड़ती। स्टालिन को अब जापान से जूझना है क्योंकि ब्रिटेन और अमरीका चाहते हैं कि अपने मित्र रूस की सहायता से एशिया से जापान को समाप्त कर दें। त्रिराष्ट्र-सम्मेलन की अगली बैठक में यही विषय प्रधान होगा। है तो बहुत अच्छा। स्टालिन यदि मित्रों के लिये एशिया में भी पूरी तरह काम आ जायें तो बड़े भाग्य की बात है। मित्र का धर्म भी है कि वह मित्र की सहायता गाढ़े वक्त पर करे। देखना है स्टेलिन महोदय जो संसार में अपने को बुद्धि का अवतार समझते हैं इस पाँसे के सामने ठहरते हैं या बोल जाते हैं?

* * *

महाबलेश्वर से ज्ञात हुआ है कि आजकल महात्मा गांधी 'हिन्दुस्तानी' के प्रश्नों पर बड़ी मस्ती और मौज में बातें करते हैं। वह प्रायः प्रश्नकर्ताओं से कह दिया करते हैं कि 'हिन्दुस्तानी' का कार्य तो मैंने टंडन जी (श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन) से सीखा है।' पिछले दिनों श्रद्धेय टंडन जी इसी प्रश्न पर वार्ता करने तथा गांधी जी से मिलने के लिये बम्बई गये थे। वार्ता के बीच 'हिन्दुस्तानी' के कुछ मसलों पर श्रद्धेय टंडन जी महात्मा गांधी से सहमत नहीं हुए। मालूम हुआ है कि इसी सिलसिले में महात्मा गाधी जी ने श्रद्धेय टंडन जी से कुछ प्रश्न भी किये थे—

गांधी जी—आपही ने तो कानपुर कांग्रेस में 'हिन्दुस्तानी' का प्रस्ताव उपस्थित किया था!

सेनफ्रांसिस्को में होनेवाले मित्रराष्ट्रों के सम्मेलन में सोवियट रूस के वैदेशिक मंत्री मो० मोलोटोव रूस की वैदेशिक नीति पर जोरदार भाषण कर रहे हैं।

प्रशांत समुद्र के किनारे सेनफ्रांसिस्को में होनेवाले मित्रराष्ट्रों के सम्मेलन में ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री एन्थोनी ईडेन भाषण कर रहे हैं।

टंडन जी—जी हाँ 'हिन्दुस्तानी का प्रस्ताव मैंने ही किया था और काफी विरोध के बाद यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

गाँधी जी—आपका मतलब 'हिन्दुस्तानी' से क्या 'हिन्दी' का था?

टंडन जी—जी नहीं, मेरा मतलब 'हिन्दुस्तानी' से हिन्दी और उर्दू दोनों से था?

गाँधी जी—तब यदि मैं हिन्दी-उर्दू दोनों सीखने पढ़ने और लिखने के लिए लोगों से कहता हूँ तो क्या बेजा है?

यदि सचमुच यह वार्ता सही है तो इसका मतलब रहस्यों से पूर्ण है। राजनीति के पंजे से जब तक भाषा-संबंधी प्रश्न अलग करके नहीं सुलझाया जायेगा तब तक हिन्दी-उर्दू और हिन्दुस्तानी का फैसला ईश्वर ही के हाथ है। मनुष्य के मान का नहीं।

* * *

फ्रांस तथा सीरिया-लेबनान के बीच गोली दगने की तैयारी का काम शुरू हो गया है। सीरिया की प्रतिनिधि-सभा ने अनिवार्य सैनिक भर्ती का प्रस्ताव पास कर दिया है। फ्रांसीसियों की ओर से इस मामले का सामना करने के लिये तैयारी शुरू हो गई है। लेकिन एक बात जरा समझने की है। हमारी ब्रिटिश सरकार फ्रांस के पक्ष में नहीं जान पड़ती और अरब लोगों की ओर अपना पवित्र हाथ बढ़ा रही है। मजा यह है कि फ्रांस ने भी इस झगड़े के फैसले के लिये ब्रिटेन की मध्यस्तता को अस्वीकृत कर दिया है। अब ज़रा गौर करने की बात है कि सीरिया और लेबनान को हमारे साहब लोग पूर्ण स्वतंत्रता दिलाने के पक्ष में हैं या वहाँ भी अपना प्रभाव जमाना चाहते हैं? साहब लोग हैं बड़े चतुर और दूरंदेश। हिंदुस्तान में तो मुसलमानों को वह खुश करते ही आ रहे हैं अब योरोप के इर्द-गिर्द वह अपने इस कार्य का विस्तार करने लगे हैं। योरोप के पुनर्निमाण तथा सफेद जातियों के संगठन का यह बड़ा सुंदर उदाहरण है। देखना है फ्रांस ब्रिटेन के साथ भविष्य में कैसा संबंध स्थापित करता है? किन्तु सीरिया और लेबनान तो भविष्य में तर ही जायेंगे क्योंकि ब्रिटेन के चरण कमलों का वहाँ पदार्पण हो चुका है।

सम्पादक का पृष्ठ

मजदूर दल की नीति !

ब्रिटेन का मजदूर दल जागृत हो उठा है। मिस्टर चर्चिल की सरकार के लिए कहा जा रहा है कि आगामी जुलाई में; नये चुनाव में, उसका पराभव हो जायेगा। चर्चिल के हाथ से शासन की बागडोर मजदूर दल के किसी नेता के हाथ में जायेगी। ऐसी स्थिति क्यों उत्पन्न हो रही है? इसका मुख्य कारण है कि चर्चिल सरकार ने अपनी अनुदार नीति के कारण जो प्रसिद्धि प्राप्त करली है, उसका परिमार्जन। यही नहीं इस कार्य का श्रीगणेश भी हो गया है। मिस्टर चर्चिल ने पुराने मंत्रिमंडल को भंग करके नये मंत्रिमंडल का निर्माण किया है। यह भी मजदूर दल के प्रभाव से ही हुआ है। इससे जान पड़ता है कि मजदूर दल ब्रिटेन के अगले चुनाव में विजयी होने के लिए जी तोड़कर प्रयत्नशील है। ब्रिटेन के मजदूर नेताओं के भाषणों से भी यही ज्ञात होता है कि वह इसलिये शासन-परिवर्तन चाहते हैं कि अनुदारों की शासन-नीति अशांति को व्यापक बनानेवाली है। इसीलिए मजदूर दल ने चुनाव लड़ने का एक उद्देश्य यह भी घोषित किया है कि यदि उसकी जीत हुई तो वह ब्रिटेन के पराधीन राष्ट्रों के साथ अवश्य न्याय करेगा।

इससे यह बात तो समझ में आती है कि अनुदार के स्थान पर उदार शासन की स्थापना होनी चाहिए और हम यह भी जानते हैं कि मिस्टर चर्चिल के स्थान पर यदि मजदूर दल का कोई नेता प्रधान मंत्री हुआ तो वह अधिक उदारता की नीति ग्रहण करेगा, इसमें संदेह नहीं। किंतु एक बात यह स्मरण रखना चाहिए कि ब्रिटिश नीति ऐसी विचित्र तथा मायाविनी है कि निश्चयात्मक रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता। आज मजदूर दल से जो आशायें की जा रही हैं, वह भी भारतीय दृष्टि से विशेष हितकर नहीं हैं। अंतर केवल यही है कि यदि चर्चिल-सरकार पराधीन राष्ट्रों को स्वाधीनता नहीं देना चाहती तो मजदूर सरकार हाथ पैर मार कर किसी तरह औपनिवेशिक स्वराज्य तक पहुँच जायेगी। इसके सिवा मजदूर सरकार से किसी प्रकार की विशेष आशा नहीं की जानी चाहिए। यह सब चुनाव के लटके हैं। हमारी तो यह दृढ़ सम्मति है कि आज इँगलैण्ड में जितने भी राजनैतिक दल हैं, उनका संगठन भी एक विशेष प्रयोजन तथा नीति के आधार पर ही हुआ है। इसलिए सिद्धांत की दृष्टि से सभी दलों की नीति प्रायः एक-सी है। पराधीनता से पूर्ण रूप से छुटकारा पाने की सीमा पर पहुँचने की नीति हमारी समझ में अँगरेजी संस्कृति के विपरीत है। इसलिए हम यदि यह आशा करें कि ब्रिटेन पर मजदूर दल का शासन होते ही अँगरेज भारत को पूर्ण स्वाधीन कर देंगे और संभव है वह भारत छोड़ कर भी चले जायें, यह विचार असंगत और व्यर्थ-सा है। क्योंकि हम जानते हैं कि पहले भी ब्रिटेन की बागडोर मजदूर दल के हाथ में आ चुकी है। मिस्टर रेमजे मेकडानल्ड ऐसे मजदूरों के प्रधान नेता ने प्रधान मंत्रित्व की बागडोर अपने हाथ में ली थी। किन्तु भारत को स्वाधीनता कितने अंश में प्राप्त हुई, यह किसी राजनीतिज्ञ से गुप्त नहीं है।

हाँ भारत को जो ब्रिटेन के उपनिवेशों में सबसे प्रधान और महान् राष्ट्र है, उसे पराधीनता का कितना कटु अनुभव हो रहा है साथ ही मिस्टर चर्चिल तथा मिस्टर अमरी ऐसे अनुदारों की नीति से उसे युद्ध-जन्य कठिनाइयों से कितना कष्ट उठाना पड़ा तथा आज भी पड़ रहा है, शासन परिवर्तन की आवश्यकता का अनुभव तो होता ही है। शासन के कंधा बदलने से संभव है कुछ कठिनाइयाँ दूर हों और आज के भयङ्कर दाँव पेचों से संभव है थोड़ी बहुत मुक्ति मिले, इसी आशा से हम यह अधिक पसंद करेंगे कि कम से कम अनुदारों के हाथ से ब्रिटेन की बागडोर उदारों तथा मजदूर दल के हाथ में आ जाये तो अच्छा ही है।

साथ ही हमें यह भी स्पष्ट करने में संकोच नहीं है कि मिस्टर चर्चिल ने इस महायुद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करने में जो सफलता प्राप्त की है उसके कारण उनकी लोकप्रियता बहुत बढ़ गई है। योरोप पर विजय प्राप्त करना तथा जर्मनी को पराजित करने में मिस्टर चर्चिल की राजनीति का बहुत बड़ा हाथ है। इस प्रकार मिस्टर चर्चिल अपनी अनुदारता के लिए जितने अप्रिय हो गये थे, उतने ही अँगरेजों को जमात में आज लोकप्रिय बन बैठे हैं। इसलिये अभी से यह भविष्यवाणी करना उचित न होगा कि मिस्टर चर्चिल या अनुदारों का दल ब्रिटेन के अगले चुनाव में पराजित ही हो जायेगा और शासन की बागडोर मजदूरों के हाथ में आ जायेगी। फिर भी भारतीय दृष्टि से हम तो यही पसंद करेंगे कि अनुदारों के हाथ से यदि शासन की बागडोर उदार शासकों के हाथ में आ जाये तो भारत तथा पराधीन राष्ट्रों की वर्तमान समस्या सुलझने में अधिक सरलता होगी।

※ ※ ※

यह समन्वयवाद क्यों ?

लोकप्रसिद्ध मीराबाई अपने गिरिधर गोपाल के लिए कहती थीं—'मेरे जीवन मरण के साथी, तोकूँ नहिं बिसरूँ दिन-राती।" श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन के लिए भी हिन्दी का महत्व मीराबाई के गिरिधर गोपाल से कम नहीं है। उन्होंने अपने त्याग और तपस्या से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित कराने में सारे जीवन का उत्सर्ग कर दिया है। हिन्दी संसार उन्हें राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए अपना नेता समझता है। अभी हाल में श्रद्धेय टंडन जी ने एक संवाददाता के इंटरव्यू लेने पर हिन्दी-उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में अपने कुछ विचार प्रगट किये थे उसका अंतिम अंश हम इसी अंक में अन्यत्र उद्धृत कर रहे हैं। हम श्रद्धेय टंडन जी के वक्तव्य के अंतिम अंश के समन्वयवादी विचारों से सहमत नहीं हैं। वास्तव में 'हिन्दी' का आज का प्रश्न बड़ा जटिल है। हमें एक मत का स्पष्ट रूप से समर्थन या विरोध करना चाहिए। एक ओर पूज्य गांधी जी ऐसे महान नेता 'हिन्दुस्तानी' का प्रश्न सुलझाने में लगे हैं और दूसरी ओर उत्तर भारत में बोली जानेवाली हिन्दी भाषा भाषियों का मोर्चा स्थापित है, जिसका नेतृत्व करनेवाले श्रद्धेय टंडन जी हैं। इसलिये जब हम श्रद्धेय टंडन जी के हिन्दी-उर्दू या हिन्दुस्तानी के प्रश्न संबंधी समन्वयवादी दृष्टिकोण पर विचार करते हैं तो कुछ असमंजस में पड़ जाना पड़ता है। निर्णय दो फरीकों में होता है। श्रद्धेय टंडन जी जब एक दल के प्रधान हैं तब उनके समन्वयवादी दृष्टिकोण का क्या अर्थ है? इस प्रकार का विचार हमारा ही नहीं अनेक हिन्दी लेखकों तथा राष्ट्रवादी कांग्रेसवालों का भी है। हमारी राय में हिन्दी ही राष्ट्रभाषा है और लिपि देवनागरी है, इस मत को स्पष्ट प्रगट करना ही श्रेयष्कर है। हिन्दी संसार की केवल यही माँग है। राष्ट्रभाषा के प्रश्न को हमें राजनैतिक दाँव-पेंचों के दलदल में डालकर और उलझाना नहीं है। महात्मा गांधी 'हिन्दुस्तानी' द्वारा राष्ट्र भाषा का प्रश्न सुलझाना चाहते हैं, ठीक है यह एक अलग प्रश्न है। किंतु उर्दूवाले यदि उर्दू के प्रश्न पर दृढ़ हैं तो हिन्दीवालों को हिन्दी के प्रश्न पर दृढ़ रहना ही उचित है, उनके लिये समन्वयवाद शोभनीय नहीं है। हाँ गांधी जी की 'हिन्दुस्तानी' को यदि समस्त राष्ट्र या प्रांतीय भाषा भाषी राष्ट्रभाषा मान लेंगी तो हिन्दीवाले किसी से पीछे नहीं रहेंगे। हिन्दीवाले तो सदा से ही समझौता चाहते रहे हैं। वह न अराष्ट्रीय हैं और न साम्प्रदायिक। किन्तु आज हिन्दी के इस क्रांति के युग में हिन्दीवाले ही यदि समन्वयवादी बन बैठें तो उनकी स्थिति क्या होगी? अभी हिन्दीवालों का केवल एक नारा है—हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और लिपि देवनागरी।

राष्ट्रभाषा हिन्दी है या उर्दू

लेखक, श्री गौरीशङ्कर मिश्र, बी० ए०, एल० एल० बी०

राष्ट्रभाषा का प्रश्न स्वयं सुलझ सकता है। मुगलों के भारतवर्ष में आने के पूर्व इस देश में कोई न कोई भाषा बोली ही जाती थी। डाक्टर ताराचन्द जी इलाहाबाद विश्व-विद्यालय के इतिहासज्ञ हैं और आपका इतिहासज्ञान कहता है कि भारतवर्ष की बोल-चाल की भाषा उर्दू थी। पाश्चात्य शिक्षा-शैली और तदनुसार निर्मित पाठ्य-ग्रन्थों के ज्ञान का ऐसा ही रूप होना चाहिए या। भारत के सिरे के विद्वानों का मस्तिष्क यदि उलटा न चले तो अँगरेजी शिक्षा का महत्व ही क्या है? इस देश का बड़ा से बड़ा आदमी नारदमोहजन्य अपने विकृत रूप के मिथ्याभिमान में चूर है। इसलिये डाक्टर ताराचन्द जी यदि यह भी कहते कि भारतीयों की प्राचीनतम भाषा अँगरेजी थी तब भी कम से कम मुझे तो आश्चर्य न होता।

उर्दू क्या है और भारत में कैसे आई ?

जिस प्रकार अँगरेज आज भारत में भारतीयों से बोलने-चालने के निमित्त अँगरेजी-हिन्दी-उर्दू मिश्रित भाषा बोलते हैं किन्तु वह भाषा भारतीयों की भाषा नहीं कही जा सकती उसी प्रकार विदेशी मुसलमानों ने अपने राज्यकाल में उस समय के भारतीयों को समझाने और उनकी बातों को समझने के उद्देश्य से कुछ जनपदी बोल-चाल के शब्द और कुछ अपनी भाषा के तोड़मरोड़ के शब्द प्रयोग में लाते थे। विशेषतः आक्रमणकारी मुसलमानी सेना को जन-संपर्क में आकर उनसे अपना काम निकालना था अस्तु जो टूटी फूटी भाषा शब्द और विदेशी टेढ़े-मेढ़े शब्द सैनिकों ने प्रयुक्त किये उसी को उर्दू गया। निर्जीव तथा आत्म शून्य बनाने का कार्य मुसलमान ने ही प्रारम्भ किया। लखों हिन्दुओं को विशेषतः शूद्रों को भोजन-छाजन का लोभ देकर और राजबल के सहारे मुसलमान बनाया। पढ़ाना और सुनाना आवश्यक किन्तु पढ़ने के चाव से तो कोई बना नहीं था और पढ़ा-लिखा ने नहीं, हाँ थोड़े से हिन्दुओं ने विशेषतः हमारे कायस्थ भाइयों ने और अरबी पढ़ी और आज तक कोटि के अधिकतर लोग सरकारी फारसी अरबी मिश्रित मुसलमानी भाषा उर्दू में काम करते चले आ मुसलमानी राज्यकाल में प्रायः मुंशीगिरी और न्यायालय का करते रहे और अँगरेजी-राज्यकाल वही जमात अपनी मातृभाषा का देकर अरबी-फारसी-शिक्षा उर्दू भाषा पोषण कर रही है।

क्या आज महात्मा गांधी जी को मालूम कि भारतवर्ष की उन्नति जनता किसी न किसी रूप में तथा तत्सम शब्दों का प्रयोग है? फिर वह क्यों नहीं कहते कि केवल हिन्दी ही एकमात्र भारत राष्ट्रभाषा है और भिन्न उद्देश्य पूर्ति के लिए अधिक सुन्दरी, गुणागरी तथा अधिकतर साहित्य जा सकती है? वह क्यों नहीं 'उर्दू' साढ़े नव करोड़ मुसलमानों भाषा भी नहीं है? वह केवल नगरों अधिक शिक्षित कहेजानेवाले मुसलमानों की भाषा कही जा सकती वह क्यों नहीं कहते कि उर्दू विदेशी से लिपटी-लिपटाई हर दृष्टि से की भावना को छोड़कर और कुछ नहीं सकती? वह क्यों नहीं नागरी लिपि से बढ़कर वैज्ञानिक संसार में न है और न हो सकती है यह भी जानते हैं कि महात्मा जी का प्रचार भी करते थे आज वह साथ नाता या कुनाता जोड़कर भाषा के,. जो न उर्दू है न हिन्दी, 'हिन्दुस्तानी' कहा जाता है, प्रचार बद्ध हुए हैं परन्तु मैं घोर आशावादी ईश्वर में मैं भी विश्वास करने की हूँ और उसके भरोसे रहता हूँ।

हमें कर्त्तव्यशील होना पड़ेगा। साहित्य-सम्मेलन की कार्य्य-समिति स्थायी समिति को प्रत्येक प्रान्त में सम्मेलन स्थापित करना चाहिए, जिले और नगर नगर में हिन्दी- संगठित होनी चाहिए, प्रान्त में लिए छोटी छोटी टोलियाँ बनानी सम्मेलन को पाठ्य-पुस्तकें तैयार चाहिएं। चार-पाच गाँव पीछे हिन्दी पाठशाला होनी चाहिए। बनाने और साहित्य-निर्माण दोनों साथ प्रबन्ध होना चाहिए। कई लाख उपरोक्त कार्य के लिए एकत्र कर में व्यय कर देना चाहिये। व्यय होगा उतना ही काम होगा उतनी ही आय होगी। मुझे तो है हिन्दी राष्ट्र-भाषा है और रहेगी।

ओकीनावा—जापान का प्रवेश-द्वार

योरोप के बाद प्रशांत में भीषण युद्ध का श्रीगणेश

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

> योरोप का युद्ध समाप्त होने पर अब मित्रराष्ट्रों ने जापान से भिडंत करने की ठान ली है। प्रशांत में ओकीनावा द्वीप पर आज-कल बड़ा भयंकर युद्ध हो रहा है। ओकीनावा—जापान का प्रवेश-द्वार है। विद्वान लेखक ने इस लेख में ओकीनावा के युद्ध का महत्त्व बतलाते हुए प्रगट किया है कि मित्रराष्ट्र किस प्रकार जापान पर घेरा डालने और उससे हथियार रखवा लेने की युद्ध-योजना बना रहे हैं।

'रेस्टोरेशन' नाम से यह प्रसिद्ध है। १८६७ में तोकुनावा सोगुनाओ का पतन हुआ। मेजी रेस्टोरेशन का उदय हुआ। इस समय तक जापान की नीति थी, 'सम्राट् का सम्मान करो और विदेशियों को भगा दो।'

मेजी युग के आरम्भ के साथ जापानी साम्राज्य का संगठन प्रारम्भ हुआ। इसके कारण रियूक्यू द्वीप पर जापानी अधिकार स्थापित हुआ, कुरली द्वीप और सखालिन द्वीप में रूस से सीमा का विवाद निपटाया। ओकानावा द्वीप पर जापान का प्रभुत्व स्थापित हुआ। ऐतिहासिक कारणों से जापान रियूक्यू द्वीप पर अपना अधिकार बताता था।

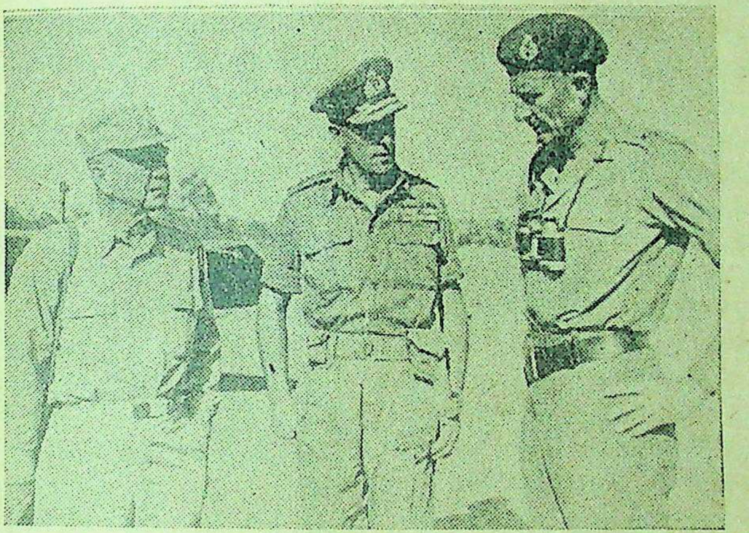

मित्रराष्ट्रों के सेनापतियों का मध्य बरमा में मिलन। बाईं ओर अमरीकन सेनापति डैनियल आई० सुलतान, बीच में एशिया में मित्रराष्ट्रों के प्रधान सेनापति लार्ड लुइस माउंट बेटेन और दाहिनी ओर ब्रिटिश मेजर जनरल एफ० डब्लू० फेस्टिंग।

१९वीं सदी में मिनापोशेनो माये सोयो द्वीप में गया और वहाँ की एक राजकुमारी से उसने विवाह कर लिया। द्वीप पर इसके बाद उसके पुत्र शुन्तेन-मारू का राज्य प्रारम्भ हुआ। कुछ साल बाद सतसूया के दाइपियो के पूर्वज शियाजू तादाहिशा को ओकीनावा द्वीप समेत १२ द्वीपों का राज्य दिया गया। १७वीं सदी में सतसूया के दाइपियो के वंशजों ने सुधार किये और द्वीप पर अपना अधिकार पक्का कर लिया। ये पेकिंग और सतसूया दोनों को खिराज देते थे। १८५४ में इसने अमरीका और फ्रांस से तथा १८५६ में नीदरलैण्ड से सन्धियाँ कीं।

इसी ऐतिहासिक पार्श्वभूमि के बल पर १८७१ में जापान ने इस द्वीप पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का यत्न किया। जापान को बहाना भी मिल गया। कुछ फोरमोसियन ने रियूकियूनों को मार डाला। जापान ने १८७२ में द्वीप के राजा शोताई को तोकियो बुलाया और जापान का एक लार्ड बनाकर उसको खुश किया। वह नाममात्र का राजा रह गया। मगर शोताई चीन भी गया। जापान ने इस पर घोषणा की कि यह द्वीप जापान साम्राज्य का भाग है। १८७३ की सन्धि में रियूनियन प्रजा जापानी प्रजा मान ली गई और १८७४ की पेकिंग सन्धि में चीन ने इस बात को मान लिया। १८७४-७५ जापानी सरकार के गृह-विभाग ने इस द्वीप का शासन अपने नीचे ले लिया। साम्राज्य की सेना का एक भाग यहाँ रखा गया। १८७९ में राजा को पेंशन दे दी गई और द्वीप जापान का एक आन्तरिक भाग हो गया।

साँपों का देश

ओकीनावा में जीवन बिताना बड़ा कठिन है। प्रति परिवार के पास दो एकड़ जमीन है। आबादी ८,२०,००० है। चीनी यहाँ की मुख्य फसल है। यहाँ के लोग मुख्यतः शकरकन्द और खट्टी फलियों पर जीवन-निर्वाह करते हैं। साल में पाँच-छः बार सामुद्रिक तूफान इन द्वीपों पर आते हैं और लोगों के सामने वर्ष भर मकान बनाने की समस्या बनी रहती है। मलेरिया और टाइफाइड की बीमारी यहाँ ज्यादा होती है। द्वीप के लोगों की मुख्य चिन्ता का विषय जहरीले साँप हैं। ओकीनावा में जितने साँप हैं उतने और किसी देश में नहीं हैं।

शीत में जापान पर आक्रमण

मित्रराष्ट्रों के कुछ विशेषज्ञ यह सोच रहे हैं कि जापान के चारों ओर घेरा डालने से ही जापान हथियार डाल देगा। जापान की मुख्य आवश्यक चीजें लोहा, तेल, कपास और ऊन हैं। अन्न का आयात इसकी तुलना में ज्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं है। चावल ४० लाख रु०, गेहूँ २०५ करोड़ रु०, चीनी १०६ करोड़ रु० का आयात होता था। खाद, चारा और तेलहन का भी आयात किया जाता था पर समुद्र पार का बाजार न रहने से निर्यात-व्यापार के लिए आवश्यक चीजों के आयात की भी जरूरत नहीं रही है। जापान को लोहा, सीसा, जस्ता, टिन, बाक्साइट, मैग्नीज, निकल, टंगस्टन, क्रोमियम, एण्टीमनी, पारा, तेल, रबड़ और टिम्बर की कमी होगी। मगर पिछले तीन सालों में विजित साम्राज्य से उसने बहुत जमा कर लिया होगा। जापानी मितव्ययी हैं, इसलिए जापान पर घेरा डाल कर ही उसको हथियार डालने के लिए विवश नहीं किया जा सकता।

जापानी साम्राज्य छिन्न-भिन्न

आस्ट्रेलिया और चीन सागर के बीच घूमनेवाले जहाज जापान पर होनेवाले भावी आक्रमण की सूचना देते हैं। हमले के समय मनीला, इवोजीया और ओकोहामा सामरिक महत्त्व का त्रिकोण बनायेंगे। चीन सागर पर अमरीका की विजय हो जाने से जापानी साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया है और उसको जापान से सप्लाई और रसद पहुँचाना कठिन हो गया है। मलाया, बोर्नियो, हिन्दचीन, स्याम, डच-ईस्ट इण्डीज को जाने का सामुद्रिक मार्ग चीन सागर होकर जाता है। यदि ये समुद्र-मार्ग आगे कट जायँ, तो वहाँ की जापानी सेना को अपने बल पर लड़ना पड़ेगा। जापान पर तीन ओर से एक साथ हमला होगा। बर्मा और हिन्द महासागर की ओर से, चीनी सेना द्वारा, जिसकी संख्या दस लाख है और अमरीकी सेना द्वारा ठेठ जापान पर। जापान के पास ४० लाख सेना है।

दूरी पर विजय

१९४४ के आरम्भ में जापान पर हमला करने में मित्रों के सामने अनेक कठिनाइयाँ थीं। पर इनमें दूरी सबसे अधिक थी। ७वीं हवाई सेना को मध्य-प्रशान्त में संयुक्तराष्ट्र के क्षेत्रफल से ७ गुना से अधिक दूरी पार करनी पड़ती थी। पर अब टोकियो से अमरीका अड्डा २,४६७ मील से १,२६७ मील दूर रह गया है। अमरीकन रणनीति है—जापानी हवाई शक्ति को बेकाम कर देना, अपनी पसन्द का रणक्षेत्र अलग कर देना, जापान के यातायात और रसद के मार्गों को काट देना और जल-थल हवाई सेना के बीच अत्यधिक सहयोग। १४वीं हवाई सेना ने ६,४०,९०० टन के जापानी जहाज डुबोये हैं। १,००,००० टन की सप्लाई उत्तरीय बर्मा पहुँचाई गई। अमरीकी हवाई शक्ति ने जापान तक समृद्ध कच्चा माल पहुँचने से रोक दिया है।

किस दिशा में

अतः स्वभावतः प्रश्न उठता है कि जापान पर शीत का आक्रमण किस दिशा से और किस दिशा में होगा? 'डेलीमेल' ने हिसाब लगाकर बताया है कि २,५०,००० फौज उतारने के लिए १५,००,००० टन शस्त्रास्त्र की ढलाई की जरूरत होगी और ४,००,००० टन प्रतिबार सप्लाई की। इस समय मित्रराष्ट्रों का अड्डा रणक्षेत्र से सिडनी ४,३०० मील, सेनफ्रांसिस्को ४,३०० मील और होनोलूलू ३,३०० मील है। इसलिए अनुमान किया जाता है कि पहले सिंगापुर और हिन्द-चीन के अड्डे प्राप्त किये जाने में और यहाँ सप्लाई और रसद को अगर जमा किया जायगा मलक्का समुद्र धुनी को और ब्रिटिश क्रूजरों के बढ़ने से भी यही सूचित होता है कि मित्रों का पहला लक्ष्य सिंगापुर होगा। सिंगापुर के हाथ में आ जाने से अमरीका को ९०,००० मील समुद्र पार से माल न लाकर फारसकोयन खाड़ी से ४,००० मील दूर से माल मिला करेगा। इसलिए जापान की मुख्य भूमि पर हमला होने से पहले सिंगापुर को विजय किया जायगा।

क्या भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होगी?

क्रिप्स तथा कांग्रेस के प्रस्तावों में क्या अन्तर है ?

लेखक, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल, कहा जाता है कि कुछ ऐसी योजना लेकर भारत आ रहे हैं, जिससे भारतीय राजनैतिक अड़ंगा हल हो जायेगा। विद्वान लेखक ने इस सुंदर लेख में यह बतलाया है कि क्रिप्स-प्रस्ताव-द्वारा साम्राज्यवादी ब्रिटेन भारत का अड़ंगा किस प्रकार दूर करना चाहता है साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि कांग्रेस की माँग क्या है ? यदि ब्रिटेन क्रिप्स-योजना के अनुसार भारत को स्वतंत्रता देना चाहता है तो उससे भारतीय राजनैतिक अड़ंगा हल नहीं हो सकता।

भारत मंत्री मिस्टर अमरी जो अपनी कट्टर नीति पर दृढ़ हैं।

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल ने इँगलैंड में मिस्टर चर्चिल और मिस्टर एमरी के सामने यह माँग पेश की थी कि जब तक उन्हें इस बात का अधिकार न दिया जायेगा कि वह कांग्रेस के बन्दी नेताओं को जेल से मुक्त कर वर्त्तमान राजनैतिक अड़ंगों को हल कर सकेंगे तब तक वह भारतवर्ष का वाइसराय होना पसन्द नहीं करेंगे। अपनी इस माँग में वाइसराय कहाँ तक सफल हुए हैं यह भी स्पष्ट है। मि० एमरी लार्ड वैवेल के इस विचार से कभी भी सहमत नहीं हैं। उन्होंने पिछले सप्ताह जो वक्तव्य दिया है उसमे भी यह स्पष्ट हो जाता है कि १९३५ के पुराने विधान या 'क्रिप्स-प्रस्ताव' के सिवा अँगरेजी हुकूमत किसी भी रचनात्मक ढंग से भारत की समस्याओं पर सोचने के लिए तैयार नहीं है।

वर्त्तमान परिस्थितियों में जब कि लार्ड वैवेल के केन्द्रीय हुकूमत को १४ बार हार खानी पड़ी है और प्रांत के मुस्लिम लीगी शासन-व्यवस्था पर जनता-द्वारा अविश्वास का प्रस्ताव पास कर दिया गया है, वाइसराय को अपनी कमजोरी का अनुमान हो गया है। लेकिन दुख इस बात का है कि अब भी वह साम्राज्यवादी सिद्धांतों के चंगुल में इस प्रकार से फँसे हैं कि किसी भी भारतीय समस्या को निष्पक्ष होकर भारतीय दृष्टिकोण से विचार करने में असफल हो रहे हैं। जिस आधार पर लार्ड वैवेल भारतीय शासन-विधान की नई रूप-रेखा तैयार करने में व्यस्त हैं वह साम्राज्यवादी सिद्धांतों का ऐसा रूप है जिसके पनपने से भारतीय अड़ंगा अगले बीस साल के लिए अमर हो जायेगा और ब्रिटिश साम्राज्य का भार भारतवर्ष पर बना रहेगा। लार्ड वैवेल के प्रस्ताव के आलोचनात्मक अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि वह स्वयं अपने अधिकार में किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं लाना चाहते। केन्द्रीय कार्य-कारिणी को पूर्ण रूप से जनता का प्रतिनिधि न बनाकर अपने हाथ की संस्था बनाना चाहते हैं। सेनापति की शक्तियों की व्याख्या उनके दिमाग में आज भी वही वर्त्तमान है जैसा कि क्रिप्स-प्रस्ताव के समय उन्होंने बताया था। पर भारतीय राजनैतिक अड़ंगा उस समय तक हल नहीं हो सकता जब तक कि वाइसराय, केन्द्रीय कार्य-कारिणी और सेनापति के अधिकारों की पूर्ण रूप से व्याख्या न की जाये। लार्ड वैवेल के इस प्रस्ताव और मिस्टर अमरी के तर्क से यह साफ पता चलता है कि अँगरेज अब भी भारतीय समस्याओं को ईमानदारी से सोचने के लिए प्रस्तुत नहीं हैं।

लार्ड वैवेल की प्रस्तावित आयोजना की आधारभूत प्रेरणा यह है—(१) क्रिप्स-प्रस्ताव के आधार पर भारत-सम्बन्धी राजनैतिक अड़ंगे की बात फिर से प्रारम्भ होनी चाहिए, (२) वाइसराय के कार्य-कारिणी सदस्यों को पूर्ण रूप से भारतीय होना चाहिए (३) यह भारतीय सदस्य वाइसराय के प्रति अपना उत्तरदायित्व रखेंगे और (४) इन आधारों पर जो शासन-व्यवस्था स्थापित होगी वह जापान के खिलाफ युद्ध लड़ने के लिए बाध्य होगी।

प्रश्न यह उठता है कि यदि यह आयोजना ब्रिटिश सरकार-द्वारा मान भी ली जाये तो क्या भारतीय राजनैतिक दल इसको स्वीकार कर सकेंगे ? कुछ लोगों का यह खयाल है कि वाइसराय की यह योजना सप्रू-समझौता-कमेटी के प्रकाशित वक्तव्य और नवाबजादा लियाकतअली और श्री भूलाभाई देसाई की वार्ता के मूल सिद्धांतों के आधार पर बनाई गई है। लियाकतअली और देसाई की वार्तालाप-सम्बन्धी सामग्री हमारे पास नहीं है पर सप्रू-समझौता कमेटी के निर्णय से भी वाइसराय का प्रस्ताव विशेष सम्बन्ध रखता हुआ नहीं मालूम पड़ता।

क्रिप्स-प्रस्ताव के आधार पर भारतीय नेता आज नये ढंग से बातचीत करने के लिए प्रस्तुत नहीं हैं। आज भारतवर्ष के सामने पूर्ण स्वतन्त्रता के सिवा किसी भी दूसरे प्रस्ताव पर बात करने का समय नहीं। वर्त्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को देखते हुए कांग्रेस कभी भी क्रिप्स-प्रस्ताव-रूपी टुकड़े के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकती। जिस समय कांग्रेस ने क्रिप्स-प्रस्ताव पर विचार किया था और मित्रता का हाथ बढ़ाया था उस समय और आज के समय में तीन वर्ष का अन्तर पड़ गया है। आज दुनिया का नकशा बदल चुका है। क्रिप्स-प्रस्ताव पुरानी दुनिया की चीज है।

गांधी जी ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट शब्दों में कह दिया है कि क्रिप्स-प्रस्ताव हमारे ऐक्य का घातक है। भारतवर्ष को विभिन्न भागों में विभाजित करने का सिद्धांत क्रिप्स-प्रस्ताव में मौजूद है। जिस समय क्रिप्स अपने प्रस्ताव को लेकर भारत आये थे उस समय के चित्र से साफ पता चलता है कि वह उन आयोजना के साथ भारतवर्ष में आये थे जिनके सहारे अंग्रेज १५० वर्ष से हमारे ऊपर शासन करते आये हैं। अँगरेजी हुकूमत बार-बार इस प्रस्ताव को दोहराकर हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान पर आघात करती है। उसका उद्देश्य भारतीय राजनैतिक दलों और भारतीय जनता को नीचा दिखाना है। भारतवर्ष पूर्ण स्वतन्त्रता चाहता है, क्रिप्स-प्रस्ताव साम्राज्यशाही हाथों का दिया हुआ एक टुकड़ा है। भारतवर्ष की आवाज आज साम्राज्यवादी शासन के विरुद्ध है और क्रिप्स-प्रस्ताव उन साम्राज्यवादी सिद्धान्तों का पोषक। इस प्रकार से लार्ड वैवेल की पहली शर्त निराधार मालूम पड़ती है।

लार्ड वैवेल की दूसरी शर्त भी भारतीय जनता के लिए अहितकर है। किसी राष्ट्र-द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि सदैव अपनी राष्ट्रीय जनता के सामने उत्तरदायी होते हैं। लार्ड वैवेल के अनुसार निर्वाचित भारतीय सदस्यों की कार्यकारिणी वाइसराय के प्रति अपना उत्तरदायित्व नहीं रख सकती। इससे यह सिद्ध है कि लार्ड वैवेल प्रगति-शील होते हुए भी साम्राज्यवादी विचार-धारा के विशिष्ट प्रवाह के विरुद्ध नहीं सोच सकते। आज भी वह अपनी उसी पुरानी गति के साथ चलना चाहते हैं जिस गति से कि पिछले वाइसराय चलते आये हैं। वाइसराय की कार्यकारिणी सदस्यों को गोरा से काला बनाने-मात्र से भारतीय स्वतन्त्रता का हल नहीं निकल सकता। यों तो कई काले सज्जन वाइसराय की कार्यकारिणी में आज भी मौजूद हैं। इसलिये आज की भारतीय जनता वैधानिक पहलू को खूब समझती है।

गांधी जी ने जेल के छूटने के बाद जो प्रस्ताव अँगरेजी पत्रकार-द्वारा वाइसराय के पास भेजा था उससे कम के लिए कांग्रेस आज भी तैयार नहीं। जिस स्वतन्त्रता के लिए अँगरेज जाति ने गृह-विद्रोह करके अपने सम्राट् की हत्या तक की थी; जिस इँगलैण्ड के इतिहास के लिए आज चर्चिल, गैडस्टन, पिट और लायड जार्ज जैसे नेताओं की आवश्यकता है क्या वह इँगलैण्ड स्वतन्त्रता को भारत के सम्बन्ध में भूल जाना श्रेयस्कर समझता है ? जब गांधी जी ने भारतीय स्वतन्त्रता के पक्ष में अँगरेजी हुकूमत से केवल स्वतन्त्रता की घोषणा के शर्त पर युद्ध-सम्बन्धी आयोजनाओं में सहायता देने के लिए हाथ बढ़ाया था उस समय लार्ड वैवेल ने गांधी जी को विरोधी विचारवाला बताकर मिलने से इनकार किया था। गांधी जी के प्रत्येक आयोजनाओं को अवहेलना की गई थी। गांधी जी को जापान का पक्षपाती बताया गया था, कांग्रेस को एक फासिस्ट संस्था का नाम दिया गया था। आज उसी फासिस्ट संस्था के लिए वाइसराय महोदय को इतनी उत्सुकता क्यों है ? गत वर्ष के जुलाईवाले गांधी जी के प्रस्ताव पर अँगरेजी हुकूमत क्यों नहीं विचार करती ? लार्ड वैवेल अपनी शक्तियों और अधिकारों के इतने इच्छुक क्यों हैं ?

सप्रू—समझौता कमेटी के बारे में भी दो एक शब्द कह देना आवश्यक है। आलोचनात्मक अध्ययन के पक्षपात हमें उसमें भी काफी गलतियाँ मालूम पड़ती हैं। पहली और सबसे बड़ी गलती जो इस कमेटी की रिपोर्ट में है वह यह है कि कमेटी

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल जो '
थैला' लेकर भारत लौटनेवाले हैं।

ने १९३५ के विधान के आधार
सोचने का कष्ट किया है। '१९
विधान समाप्त हो चुका है। उसे
बार-बार खोदने की आवश्यकता क्यों
नहीं पड़ती है। १९३५ के विधान
परिवर्तन-मात्र से या उसमें थोड़ा-
धन करने से आज का राजनैतिक
दूर नहीं हो सकता। आज कांग्रेस
के विधान से काफी दूर आ चुकी है
उसके लिए पीछे लौटना

यदि यह मान भी लिया जाय
स्थायी समय के लिए ही इस
के अनुसार शासन-व्यवस्था
जायेगी फिर इसमें वाइसराय के
और भारतीय सदस्यों के वैधानिक
कारों के बिना व्याख्या किये
अधूरा ही रह गया है। हम यह
कि यह व्यवस्था केवल थोड़े दिनों
की जायेगी पर हमें सदैव सतर्क
चाहिए कि इसी व्यवस्था के अनुसार
विधान बनेगा और भावी विधान
तक उचित रूप से नहीं बन सकता
कि स्थायी शासन-व्यवस्था
सिद्धान्तों पर निर्धारित नहीं की

दूसरे दृष्टिकोण से यह पता
कि रक्षा-सदस्य और सेनापति के
कारों की व्याख्या नहीं की गई
प्रस्ताव के असफलता का मुख्य
रक्षा सदस्य के अधिकार पर हु
सप्रू-कमेटी ने इस प्रश्न पर विशेष
नहीं डाला है बल्कि रक्षा के
पूर्ण रूप से वाइसराय के हाथ में
है। यह बात सिद्धांततः गलत-सी
पड़ती है। सेना की शक्ति किसी
राष्ट्र के हाथ में देने के लिए कांग्रेस
नहीं। कांग्रेस सेनापति को युद्ध की
शक्ति मानती है। रक्षा नीति में वा
सलाह दे सकता है, वह सर्वमान्य
सकता।

इन बातों के अतिरिक्त इसमें
संख्यक दलों को इतना अधिकार
दिया गया है कि व्यवहार से
आतंक की संभावना अधिक पाई
कोई भी जनसत्तात्मक शासन-व्यवस्था
बात के पक्ष में नहीं हो सकती।
बात जिसकी व्याख्या करने में यह
असफल रही है वह यह है कि प्रति
असेम्बली के मंत्रियों के अधिकार के
में, उनका उत्तरदायित्व असेम्बली
मेम्बरों के प्रति होगा या वाइसराय के
इस पर विशेष प्रकाश नहीं डाला गया

—शेष पृष्ठ १५ पर

विद्यार्थी शिक्षण-शिविर क्या है?

कांग्रेस नागरिकता के लिए छात्रों की नई ट्रेनिंग

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

> भारत के विद्यार्थी वर्ग को, किस प्रकार की राष्ट्रीय-शिक्षा तथा ट्रेनिंग दी जाये कि वह सुयोग्य नागरिक बन सके, इसे क्रियात्मक रूप देने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी-कांग्रेस-द्वारा आयोजित बम्बई में विद्यार्थी शिक्षण-शिविर का कार्य आजकल हो रहा है। 'देशदूत' के पाठकों से परिचित श्री नारायणदत्त तिवारी विद्यार्थी-कांग्रेस के कार्यालय-मंत्री हैं और इस समय शिक्षण-शिविर में ट्रेनिंग लेने के लिए बम्बई गये हैं। इस लेख में आपने शिक्षण-शिविर के कार्यों पर बड़ा सुंदर, सामयिक और रोचक प्रकाश डाला है।

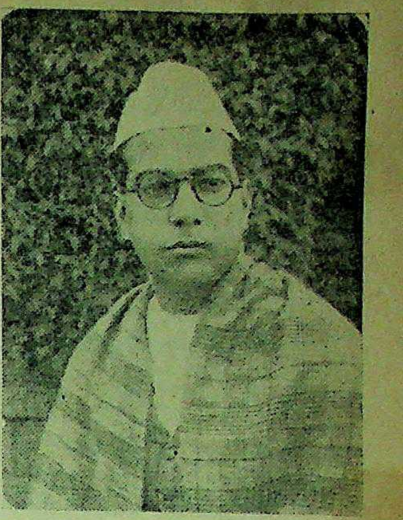

कामर्स कालेज वर्धा के प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने शिक्षण-शिविर में गांधी-योना तथा हिन्दुस्तानी प्रचार के संबंध में भाषण किया है।

सामाजिक विषयों पर वादविवाद होते रहते हैं। इतवार का दिन ऐतिहासिक स्थानों के भ्रमण, मजदूर तथा किसान केन्द्रों के सामाजिक पहलू के अध्ययन के लिए रखा गया है। पिछले इतवार को हम सब लोग बोरिभली (बम्बई से १७ मील दूर) की १४१ ऐतिहासिक गुफाओं को देखने के लिए गये थे। इन गुफाओं के अन्दर पत्थर की विशाल मूर्तियाँ और बृहदाकार आयतन कटे हुए तथा पच्चीकारी से सजे हुए विशाल कमरे, भारत की प्राचीन संस्कृति का गुणगान गाते हुए, हृदय में अनोखी भावनाओं का संचार कर रहे थे।

विभिन्न विषयों पर दिये गये ३० या ४० भाषणों में से कुछ विशेष भाषणों का सार यहाँ पर देना आवश्यकीय है। प्रथम उल्लेखनीय भाषण बम्बई प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री श्री एस० के० पाटिल का था, जिसे कि उन्होंने शिक्षण-शिविर का उद्घाटन करते हुए दिया। उन्होंने घोषणा की कि 'भारत की चालीस करोड़ जनता का विजय-दिवस (भी-डे) तब तक नहीं आ सकता जब तक कि हमें स्वतन्त्रता नहीं प्राप्त हो जाती। जिस दिन हमें स्वतन्त्रता प्राप्त होगी, वही दिन भारत के लिए भी-डे (विजय-दिवस) सिद्ध होगा।'

तत्पश्चात् भारत के प्रसिद्ध मजदूर-नेता श्री रोहित दावे ने 'भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्रीय भावनाओं की प्रगति, पर दो व्याख्यान दिये। मुगल-काल से लेकर वर्त्तमान काल तक की भारतीय जनता की राष्ट्रीय विचार-धाराओं का दिग्दर्शन करते हुए उन्होंने घोषणा की कि 'भारतीय राष्ट्रीय भावनायें अपनी पूर्णता को गांधीवाद और समाजवाद के मिश्रण-द्वारा ही प्राप्त कर सकती हैं। भारत में व्यापार और उद्योग-धन्धों का केन्द्रीयकरण वांछनीय नहीं होगा। अगर हम भारत के ७ लाख गाँवों की हृदयगत भावनाओं में स्वतन्त्रता की स्वच्छ भावनाओं की अनुभूति पैदा कर सकें, तो भारत एक अभूतपूर्व जागृत अवस्था को प्राप्त हो जायेगा। उसके द्वारा एक ऐसी बाढ़ उत्पन्न होगी जो समस्त विदेशी नियंत्रण को अपने प्रवाह में बहा ले जायेगी। गांधी जी के विचारों में मस्तिष्क-सम्बन्धी-निरंकुशता नहीं है। वह मस्तिस्क को यांत्रिक ढंग पर विशेष सिद्धान्तों के आधार पर चलता हुआ नहीं देखना चाहते। आज प्रत्येक भारतीय नागरिक का एक अध्ययनशील और कर्तव्यशील पुरुष बनना आवश्यक है।'

तीसरा महत्त्वपूर्ण भाषण 'गांधी-योजना के प्रवर्त्तक और हिन्दुस्तानी प्रचार-समिति' के मंत्री प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल का हुआ जिसमें उन्होंने भारतीय विद्यार्थियों के लिए गांधीजी-द्वारा संशोधित चौदह नियमों को विस्तृत रूप में समझाया तथा हिन्दुस्तानी प्रचार और निरक्षरता-निवारण पर विशेष जोर दिया। हिन्दुस्तानी के विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि 'मैं यह नहीं चाहता कि हिन्दुस्तानी प्रान्तीय भाषाओं के अस्तित्व को ही नष्ट कर दे। हिन्दुस्तानी तो केवल अन्तःप्रान्तीय व्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जानेवाली भाषा के रूप में सीखी जायेगी। प्रत्येक भारतीय के लिए यह अनिवार्य होगा कि वह अपनी प्रान्तीय भाषा के सिवाय अन्तःप्रान्तीय भाषा के माध्यम हिन्दुस्तानी को भी सीखे।'

इस लेख के लेखक तथा शिक्षण-शिविर में भाग लेनेवाले श्री नारायणदत्त तिवारी।

चौथा महत्त्वपूर्ण भाषण हिन्दुस्तानी योजना के कट्टर समर्थक श्री सुन्दरलाल जी का हुआ जिसमें उन्होंने सन् १९४२ की अगस्त-क्रान्ति को 'पूर्ण अर्थ में जनता का युद्ध' बतलाया और उसे एक 'अहिंसात्मक लड़ाई' घोषित किया। आपने कहा कि धर्म के आधार पर राष्ट्र-निर्माण करना बिलकुल असत्य है। आधुनिक राष्ट्र धार्मिक आधारपर आश्रित नहीं हैं। संसार एक महान् राष्ट्र-संघ होने जा रहा है, ऐसे समय में देश-विभाजन की बात करना पागलपन है। लेकिन अगर दो रास्ते हमारे सामने हों जिनमें से एक गुलाम किन्तु 'संगठित भारत' की ओर ले जाता हो और दूसरा 'स्वतन्त्र पर टुकड़ों में बँटे हुए भारत' की ओर ले जाता हो तो मैं दूसरे रास्ते को पसन्द करूँगा। स्वतन्त्र भारत कभी विभाजित नहीं हो सकता, यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। इसलिए अगर धर्म को अपने सच्चे रूप में रहना है, तो रूढ़िवादी धर्मों को संसार के इतिहास से उठ जाना चाहिए। भाषाओं के विषय में घोषणा करते हुए श्री सुन्दरलाल जी ने कहा कि 'अगर हिन्दी-हिन्दुस्तानी-उर्दू सम्बन्धी वर्त्तमान वादविवाद जारी रहा तो कुछ समय पश्चात् सारे देश में भाषाओं के दो टुकड़े हो जायँगे। गुजराती-उर्दू, गुजराती-हिन्दी, बँगला-हिन्दी, बँगला-उर्दू इत्यादि। इसलिए हिन्दुस्तानी का प्रचार ही देश के लिए लाभदायक है, क्योंकि चालीस साल पहले यही भाषा भारतीय जनता-द्वारा बोली जाती थी और उस समय इस हिन्दी-उर्दू वादविवाद का नाम तक न था।'

पाँचवाँ भाषण केन्द्रीय एसेम्बली के कांग्रेसी नेता श्री भूलाभाई देसाई का था। उन्होंने 'नागरिकता' के संबध में बतलाते हुए यह घोषणा की कि 'क्रान्ति बिना तैयारी के नहीं हो सकती। प्रचार-कार्य का समय अब जाता रहा है, अब तो काम करने का समय है। और मस्तिष्कों को ठोस बनाने का समय है। मेरे एसेम्बली के साथी, अपने साहित्यिक दिखावे में घोषणा करते हैं 'मैं विरोध करने को तैयार हूँ।' ऐसी असमंजस में डालनेवाली बातें आदर्श नागरिकों में नहीं होनी चाहिये। आदर्श सिद्धान्तों और सम्मुख खड़ी हुई समस्याओं में सदा विरोध रहता है। सच्चे नागरिक को सामने की समस्याओं का सामना करना चाहिये। हमें अपनी बौद्धिक और मानसिक भावनाओं का विकास करना आवश्यक है और उन्हें देश के लिये आदर्श-रूप में परिणित करना है।'

संयुक्तप्रांत से आनेवाले शिक्षार्थियों के नाम जिलेवार इस प्रकार हैं:— (१) श्री रामसुमेर शुक्ल (गोरखपुर), (२) श्री पंचानन मिश्र (बलिया), (३) श्री रामचन्द्र शुक्ल (बनारस), (४) श्री नारायणदत्त तिवारी (कुमायूँ), (५) श्री विपिनकुमार गुप्ता (इलाहाबाद), (६) श्री माताबदल जैसवाल (इलाहाबाद), (७) श्री नागेश्वरप्रसाद (गाजीपुर), (८) श्री योगेन्द्र शुक्ल (उन्नाव), (९) श्री रामरतन शुक्ल (कानपुर), (१०) श्री महेशप्रसाद पांडे (कानपुर), (११) श्री रजनीकान्त मिश्र (लखनऊ), (१२) श्री रमाकान्त पांडे (लखनऊ), (१३) श्री रामकृष्ण अवस्थी (लखनऊ), (१४) श्री मुनिदेव (मेरठ) और (१५) श्री जंगबहादुरसिंह (बाँदा)।

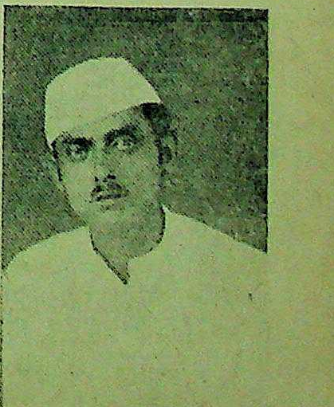

अखिल भारतीय विद्यार्थी-कांग्रेस के सभापति श्री रामसुमेर शुक्ल।

सुशिक्षित नवयुवतियों की भी जिम्मेदारी है

पढ़े-लिखे युवकों पर ही गुण्डा होने का दोषारोपण क्यों ?

लेखक, श्री कृष्णकुमार गुप्त, बी० काम०

कुछ समय पूर्व संयुक्तप्रान्त के प्रमुख शहर लखनऊ में किसी स्थान पर कालेज अथवा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने राह चलती नवयुवतियों से छेड़-छाड़ की। उक्त विषय को लेकर लखनऊ के एक संवाददाता ने 'हताश दर्शक' के नाम से अँगरेजी समाचारपत्रों में कुछ पत्र प्रकाशित कराये। लेखक यद्यपि पुरुष प्रतीत होता था तब भी स्त्रियों का पक्ष लेकर न्याय-संगत आन्दोलन करने के लिए बाध्य हुआ। तत्पश्चात् "हताश दर्शक" के पत्रों के यथोचित उत्तर भी अँगरेजी दैनिकों में छपे। अब समय आ गया है कि इस समस्या पर प्रकाश डाला जाय और किसका दोष है तथा इस प्रश्न के हल करने का क्या उपाय है—इन सब बातों पर विचार किया जाय।

स्कूलों, कालेजों तथा यूनिवर्सिटियों के छात्रों और बाहरी मनचले युवकों-द्वारा प्रत्येक स्थान पर सड़कों पर, स्टेशनों पर, सिनेमा-भवनों में, शिक्षा-केन्द्रों में, सभाओं में अशिष्ट एवं कुव्यवहार की घटनायें दिन प्रतिदिन देखने में आती हैं। इस प्रकार की गुंडों की करतूतों को देखकर वास्तव में दुःख होता है और बड़ा बुरा भी लगता है। जब विदेशीय और विजातीय हमारी स्त्रियों को सताते हैं तब तो हमें क्रोध आता है। जब ऐसे दृश्य पढ़े-लिखे मनुष्यों-द्वारा होते हैं तो हमारा मस्तक शर्म से पृथ्वी में धँस जाता है। जिन शिक्षित नवयुवकों का कर्त्तव्य अपनी बहिनों की गुंडों से रक्षा करना हो यदि वेही इस निन्दित कार्य करने पर तुल जाँय और गुंडे बनने पर उतारू हो उठें तो इससे अधिक क्या लज्जा की बात हो सकती है? इन "भद्र पुरुषों" को कब बुद्धि आयेगी और कब ये सँभलेंगे? इनके साथ देश का भविष्य है। इनकी उन्नति के बिना देश की उन्नति तथा देश का सुधार असम्भव है। यहाँ तक हुआ "हताश दर्शक" का कथन।

समर्थक अधिक उत्साही हुआ करते हैं। वे कहते हैं और कहेंगे कि "हताश दर्शक" को कदापि निराश न होना चाहिए। उसे अपने हाथ में एक भारी मोटा डंडा ले लेना चाहिए और परिणाम की चिन्ता न करके गुंडापन के नाश के लिए डंका पीट देना चाहिए। मनुष्य जीवन में एक बार ही जीता है और यदि वह फौरन आवश्यक कार्य नहीं करता तो उसे फिर अवकाश नहीं मिलता। स्त्री के प्रति आकर्षण पुरुषों में स्वाभाविक रूप से वर्त्तमान होते हैं परन्तु इनको काबू में रखना पड़ता है अन्यथा सीमा से परे जाने पर यही असभ्यता तथा गुंडेपन में परिवर्तित हो जाते हैं।

युवकों-द्वारा युवतियों के साथ अनुचित व्यवहार का कारण एवं उपाय युवतियाँ भी हो सकती हैं। क्या वे पाश्चात्य तितलियों की भाँति सर्वत्र स्वच्छन्द नहीं विचरतीं? क्या उनके वस्त्र इतने महीन और पतले नहीं होते जिनमें से उनके अंग-प्रत्यंग साफ तौर से दिखाई दें? क्या यह आधुनिक महिलायें प्रकृत प्रदत्त सौन्दर्य से सन्तुष्ट न होकर कृत्रिम वस्तुओं की शरण नहीं लेतीं? कदाचित् उसका उत्तर होगा कि सब युवतियाँ इस श्रेणी में नहीं आतीं तो इसका दूसरा उत्तर यह भी है कि सब युवक गुण्डे भी नहीं होते। स्त्री और पुरुष का सम्पर्क लोहे और चुम्बक की भाँति है। स्त्री चुम्बक है; पुरुष लोहा। लोहा चुम्बक को अपनी ओर आकर्षित नहीं करता, स्त्रियाँ जब स्वयं भूल करेंगी तो उन्हें उसका परिणाम भुगतना ही पड़ेगा।

इसी समस्या पर किसी सज्जन ने पिछले दिनों एक पत्र में सुन्दर लेख लिखा था, उसका सारांश यह है कि लेखक महोदय दिल्ली-जैसे विशाल नगर में एक दिन सन्ध्या के समय देहली गेट के पार फीरोजशाह कोहला रोड पर टहलने निकले। थोड़ी ही दूर पहुँचे थे कि अचानक पाँच नवयुवतियों की टोली उन्होंने अपने पीछे आते हुए देखी। महाशय जी संकोच के कारण धीरे-धीरे चलने लगे। विचार किया कि यह लोग निकल जायँ तो अच्छा हो। युवतियों ने भी धीरे चलना प्रारम्भ कर दिया। लेखक के पास अब तीव्र चाल से बढ़ने के अतिरिक्त कुछ चारा न था। परन्तु, जब वे तेजी से चले तो युवतियों ने भी कदम बढ़ा दिये। वह आश्चर्य में पड़ गये, कर ही क्या सकते थे। युवतियाँ सुसज्जित, आकर्षक और प्रतिभाशाली थीं। बात यहीं समाप्त नहीं हुई। उन्होंने कुछ कटाक्ष भी किये और लेखक की वेशभूषा, चलने के ढंग इत्यादि को भी अछूता न छोड़ा। इस प्रकार यह नवयुवतियों का "टर्न" था। २-३ घंटे पश्चात् वे एक कालेज होस्टल में घुसती हुई दृष्टिगोचर हुईं और ज्ञात हुआ कि वह विद्यार्थिनियाँ थीं। ऐसी है अवस्था इन उन्नत नवयुवतियों की, तब कौन कह सकता है कि इनका अपराध पुरुषों की अपेक्षा अधिक नहीं है।

अस्तु! कहा गया है कि तब भी शिक्षित नवयुवकों के विरुद्ध शिकायतों में सार है। हो सकता है, परन्तु न केवल वे ही पुरुष जिनके विरुद्ध आरोप है उसके लिए उत्तरदायी हैं बल्कि वे भी जो कि शिकायत करते हैं। कारण यह है कि हमने अन्धे होकर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली तथा सभ्यता को अपनाया है और अपने बालकों और बालिकाओं की शिक्षा की ओर यथेष्ट ध्यान नहीं दिया है जिसके फलस्वरूप वे आचरण, धर्म और अनुशासन-रहित बन जाते हैं। जिस प्रकार वर्त्तमान अँगरेजी शिक्षा-द्वारा, जिसमें "गुलस्तां बोस्तां"-जैसी पुस्तकों के लिए कोई स्थान नहीं, पुरुषों का नैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक पतन हुआ है ठीक वही दशा स्त्रियों की हुई है। माता-पिता बालिकाओं के जीवन-निर्णायक होते हैं और वे ही उन्हें पवित्रता और सच्चरित्रता से दूर ले जाते हैं। हमारे घरों में चटक, मटक, वासना, प्रदर्शन इत्यादि संक्रामक वस्तुओं का साम्राज्य होता है। इन सबको पाकर युवतियाँ स्वयं युवकों को आकर्षित करती हैं। सारांश यह है कि हमें स्वयं अपने में सुधार करना है और जब सफल हो जायँ तभी हम तरुणों को दोष दे सकते हैं।

हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं कि युवकों-युवतियों के मध्य सद्व्यवहार की कमी है और उसका होना थोड़ा-बहुत वांछनीय भी है। हमारा समाज न पूर्व के आदर्शों को लेकर चलता है और न पश्चिम को ही अपना गुरु मानता है। रूढ़िवाद की सीमा होती है, परन्तु भारत में वह भी नहीं है। यह एक भ्रान्त धारणा है कि नवयुवकों के नवयुवतियों के सम्पर्क में आने से चरित्रहीन हो जाने का भय रहता है। वस्तुस्थिति यह है कि विदेशों में स्त्री-पुरुष साधारण रीति से एक-दूसरे से मिल सकते हैं, न किसी युवक का मस्तिष्क किसी युवती के विषय में हर प्रकार की बातें सोचने में आन्दोलित रहता है और न युवतियों के ही हृदय में हर समय पुरुषों की आवश्यकता रहती है। किसी भी बुद्धिमान् मनुष्य को यह मानने में आपत्ति न होनी चाहिए कि गुप-चुप के मिलन से स्वतंत्र मिलन बलवर्द्धक और सुखद होता है। भारत २०वीं सदी में भी इतना नहीं समझ पाया है। अधिक न कहकर

भारतीय नृत्य-कला में प्रवीण और
प्रयाग निवासिनी कुमारी आशा ओझा का
बंबई में सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता श्री
चतुर्वेदी के साथ सम्पन्न हो गया।

इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि
के लिए, ताकि युवक-युवतियाँ
कंधा भिड़ाकर स्वतंत्रता
आगे बढ़ सकें, इस
शीघ्रातिशीघ्र समझ लेना चाहिये।

निष्कर्ष यह है कि न नवयुवकों
ही अपराध है और न
सारी बेचारी नवयुवतियाँ ही
उत्तरदायी हैं। हमारा तो सारा
संगठन ही गलत है और उसी में
करने की महती आवश्यकता है।

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफास-फाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी * ब्रांकाइटिस
* जुकाम * निमोनिया
* यक्ष्मा * पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि-विक्रताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें:—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

प्रयोग और ... आरी आशा ओं ... म-अभिनेता श्री ... थ सम्पन्न हो गया।

पर्याप्त होगा कि ... युवक-युवतियाँ ... स्वतंत्रता है ... इस साधारण ... लेना चाहिये।

है कि न नवयुवकों ... और न परिस्थिति ... वतियाँ ही इसके ... हमारा तो सारा ... और उसी में हमें ... आवश्यकता है।

याकोल
IACOL
इटिस
या
या
रखने
री है
कलकत्ता

पति रूजवेल्ट के जीवन पर नया फिल्म

अरब रुपये से हालीवुड में एक नई योजना

लेखक, श्री उमेश जोशी

(अमरीका) की सुप्रसिद्ध ट्वेंटी गोल्डविन पिक्चर्स" प्रकाशित की है कि के जीवन को रजत पट । इसके लिए अलग है। इस कमेटी में छः हैं, जिनकी तनख्वाह प्रतिमाह है। इस कमेटी "है। इसका मुख्य के जीवन के विभिन्न करना है। "रिफ- ने 'अमेरिकन पिक्चर्स" एक वक्तव्य प्रकाशित अपनी-अपनी कहानी के सम्बन्ध में भेजने का कहानी ठीक समझी "रुपया दिया "सिने राइटरों" जायेगा।

के पूरे जीवन के संबंध में फिल्म तैयार हो रहा है।

इस कमेटी के पास "तीस आ चुकी हैं, जिनको अलग सहायक-समिति को यह समिति चुन- कहानियाँ "रिफलेक्टव ढूँढ सकेगी और उन्हीं विचार किया जायेगा। इतनी तक संसार के किसी भी दी गई है। यह पहला मौका की ओर से इतनी भारी के लिए दी जायगी। समिति में सौ क्लर्क रक्खे प्रधान कार्य आई हुई चुनाव करना एवं राष्ट्र- निकट सम्बन्ध रखनेवाले जीवन-वृत्त-सम्बन्धी सामग्री क्लर्कों का वेतन दो है। इस सहायक पाँच कहानियाँ छाँट के पास भेजी हैं, जिन जा रहा है। उन पाँचों के नाम हैं—आर० एस० ब्रिटल, एच० पी० हुनार, मिस लिवोवोर्न और के० जी० हार्डी। इन पाँचों कहानियों में से मिस लिवोवोर्न की कहानी पर विशेष नम्बर अब तक प्राप्त हुए हैं।

अमेरिका के सबसे बड़े लोकप्रिय राष्ट्रपति के जीवन की फिल्म निर्मित करने के लिए हालीवुड ने लगभग एक अरब रुपया खर्च करना निश्चय किया है। अब तक जितनी भी फिल्में बनी हैं, उन सबों से यह रकम कई गुनी ज्यादा है। जिस फिल्म में एक अरब रुपया खर्च किया जा रहा है, उस फिल्म की आमदनी क्या होगी, इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है।

हालीवुड के सुप्रसिद्ध डायरेक्टर मिस्टर वेन की संरक्षता में यह फिल्म निर्मित की जा रही है। आर्ट डायरेक्शन की जिम्मेदारी मिस्टर हेडलेक को दी गई है। मिस्टर हेडलेक राष्ट्रपति के जीवन-सम्बन्धी चित्रों का संकलन भी कर रहे हैं। "मेक-अप" का काम हालीवुड की विख्यात महिला श्रीमती इरला को दिया गया है। श्रीमती इरला "मेक-अप" में बड़ी कुशल हैं। उन्होंने "मेक-अप" के कई नवीन तरीकों का सृजन किया है। वैसे भी श्रीमती इरला राष्ट्रपति रूजवेल्ट के सहयोग में रह चुकी हैं। इसलिए वह उनके विभिन्न भावों के स्वरूप का चित्रण ठीक तरह कर सकती हैं।

डायरेक्टर मिस्टर वेन ने एक ताजा वक्तव्य निकाला है। वह इस प्रकार है—"हम राष्ट्रपति रूजवेल्ट के जीवन को चित्रण करने में वास्तविकता का विशेष ख्याल रक्खेंगे तथा यह भी ख्याल रक्खेंगे कि उनके किसी भी सिद्धान्त का हमसे खून न हो जाय। उनके जीवन की विशेषताओं का जब तक हम [illegible] के साथ विश्लेषण न कर लेंगे तब तक हम रजत पट पर उनका जीवन प्रस्तुत न करेंगे। वास्तव में मिस्टर रूजवेल्ट दुनिया के अमर विभूति और वर्त्तमान लड़ाई के मुख्य सूत्रधार थे। ऐसे आदर्श-पुरुष के जीवन की फिल्म निर्मित करने में हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है।"

राष्ट्रपति के जीवन को चित्र-पट पर लाने का सुझाव सर्वप्रथम मिस्टर डिलपार्ड ने हालीवुड की "सिने पार्लियामेन्टीय-बोर्ड" में पेश किया था और "सिने पार्लियामेन्ट" ने उसे सहर्ष स्वीकार किया था। इस प्रस्ताव के पास होने में सबसे बड़ी मार्के की घटना यह हुई है कि विपक्ष में एक भी वोट नहीं पड़ा—हालीवुड के इतिहास में यह अभूतपूर्व घटना है!

इस फिल्म के प्रारम्भिक भाग में राष्ट्रपति के मृत्यु-समय के सुन्दर सन्देश का चित्रण होगा, तथा उन विशेषताओं पर भी प्रकाश डाला जायेगा, जिनके द्वारा राष्ट्रपति का जीवन विकाश-क्षितिज के अन्तिम विन्दु तक पहुँचा! इसके सिवा मिस्टर रूजवेल्ट के सबसे गहरे और जिगरी मित्र तथा ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री मिस्टर चर्चिल का भी एक छोटा-सा सन्देश होगा। सन्देश ही नहीं, वह सभी मुलाकातें जो कि राष्ट्रपति के साथ हुई थीं, उनका भी इस फिल्म में समावेश किया जायेगा!

इस फिल्म की मुख्य भूमिका में मिस्टर पेज, जिनकी कि शक्ल राष्ट्रपति से मिलती-जुलती है, काम कर रहे हैं। हालीवुड ने इस फिल्म के सम्बन्ध में दावा किया है कि यह सिनेमा-संसार का सर्वश्रेष्ठ चित्र होगा!

डिग्री तथा डिप्लोमा प्राप्त कीजिये

मिडिकल, इञ्जीनियरिंग, ला, बी० ए०, एम० ए०, पी० यच० डी० इत्यादि की डिग्री नाममात्र की फीस पर देशी तथा विदेशी यूनिवर्सिटी से प्राप्त करें। प्रास्पेक्टस के लिए लिखें।

भारत कम्पनी, शिकोहाबाद यू० पी०।

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०
(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है। ……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

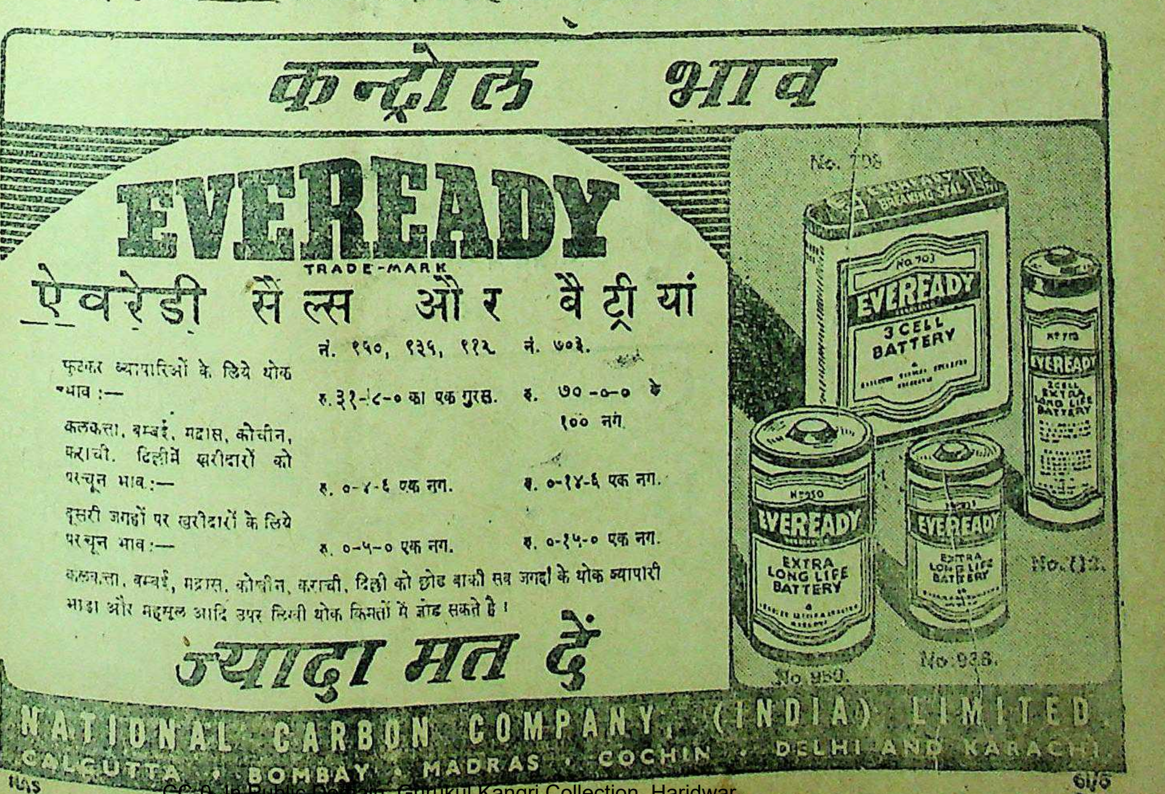

कन्ट्रोल भाव

EVEREADY
TRADE-MARK
ऐवरेडी सैल्स और बैट्रीयां

	नं. १५०, १३५, ११२	नं. ७०३.
फुटकर व्यापारिओं के लिये थोक भाव :—	रु. ३१-८-० का एक गुरस.	रु. ७०-०-० के १०० नग.
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्लीमें खरीदारों को परचून भाव :—	रु. ०-४-६ एक नग.	रु. ०-१४-६ एक नग.
दूसरी जगहों पर खरीदारों के लिये परचून भाव :—	रु. ०-५-० एक नग.	रु. ०-१५-० एक नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्ली को छोड़ बाकी सब जगहों के थोक व्यापारी भाड़ा और महसूल आदि उपर लिखी थोक किमतों में जोड़ सकते है।

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY, (INDIA) LIMITED.
CALCUTTA · BOMBAY · MADRAS · COCHIN · DELHI AND KARACHI.

संपादक के नाम चिट्ठियां

उदयपुर में होनेवाले सम्मेलन की स्वागतसमिति का चुनाव

(श्री संपादक 'देशदूत')

उदयपुर में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्वागत-समिति का चुनाव हो गया है। स्वागताध्यक्ष के चुनाव में बड़ी सरगर्मी रही। लोगों को यह आशा थी कि श्री लक्ष्मीलाल जोशी या राजकुमार मानसिंह स्वागताध्यक्ष चुने जायँगे किन्तु श्री मुनि जिनविजय जी के चुने जाने से भी लोगों को प्रसन्नता ही हुई है। मंत्रिपद के लिए भी श्री जनार्दनराय नागर का चुना जाना उचित ही हुआ है। श्री जनार्दनराय उदयपुर के युवक कार्यकर्ता और हिन्दी के सुन्दर लेखक हैं। कार्यकारिणी समिति में भी जिन सज्जनों का चुनाव हुआ है, वह भी अच्छे कार्यकर्त्ता, हिन्दी-प्रेमी और राष्ट्रवादी व्यक्ति हैं। इस प्रकार चुनाव तो [illegible] ही हुआ है। सम्मेलन का अधिवेशन [illegible]पूर्वक होगा, ऐसी आशा की जाती है।

इस चुनाव के सिलसिले में मैं आपके पत्र-द्वारा एक बात स्पष्ट कर देना चाहता हूँ वह यह कि अब तक सम्मेलन के अधिवेशन के सम्बन्ध में जितनी विज्ञप्तियाँ निकली हैं, उसमें 'ओज' और 'प्रवाह' की अधिकता है। सम्मेलन वैधानिक दृष्टि से किस प्रकार दृढ़ और प्रत्येक हिन्दीवाले के लिये प्रिय हो सकता है, हिन्दी लेखकों तथा साहित्य सेवियों का उसका सम्पर्क किस प्रकार अत्यन्त घनिष्ठ हो सकता है, साथ ही हिन्दी-प्रचार में उसे किस प्रकार की क्रियाशीलता का परिचय देना चाहिए, इसके सम्बन्ध में विज्ञप्तियों में विशेष सुझाव उपस्थित नहीं किये गये। केवल आदर्श का प्रचार अधिक किया गया है। एक बात का स्मरण रखना चाहिए कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन एक साहित्यिक संस्था है और राष्ट्रभाषा की दृष्टि से थोड़ी बहुत राजनैतिक भी है। हमें विश्वास है कि उदयपुर की स्वागत-समिति के अधिकारी और सदस्यगण यदि 'सम्मेलनी प्रपंचों' से अपने को अलग रखकर हिन्दी के सभी वर्ग के लेखकों को सम्मेलन के नजदीक लाने में प्रयत्नशील होंगे तो वह हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की अधिक सेवा कर सकेंगे। उन्हें एकांगीयता से सदैव अपने को बचाते रहना चाहिए, तथा ऐसे महोदयों से सावधान रहना चाहिए जो 'राष्ट्रीयता' के नाम पर गुटबन्दी तथा नेतृत्व की भूख से, परम पीड़ित हैं।

आगरा —स्थायी-समिति का
२५ मई, ४५ एक सदस्य

* * *

लेखकों से

कुछ समय पूर्व 'सुखमय जीवन ग्रन्थमाला' का आयोजन प्रकाशित किया जा चुका है। ग्रन्थमाला के लिए—नागरिक शिक्षा, स्कूल के छात्र और उसका जीवन, कालेज के छात्र और उनका जीवन, गार्हस्थ्य जीवन, अवकाश-प्राप्त जीवन, बातचीत की सभ्यता, खान-पान की सभ्यता, व्यायाम और शारीरिक विकास, मध्यम श्रेणी की आय और उसका सदुपयोग, शिशु-शिक्षा का आदर्श आदि विषयों पर डबल क्राउन १६ पेजी साइज में सौ-सौ पृष्ठों की पुस्तकें चाहिए। स्वीकृत पुस्तक पर ५००) नकद पुरस्कार दिया जायगा। लिखना प्रारंभ करने के पहले पुस्तक की रूपरेखा और उस विषय पर लिखने की योग्यता का परिचय "श्री जगदम्बाप्रसाद गुप्त, मन्त्री—सुखमय-जीवन-ग्रन्थमाला कार्यालय, आर० बी० एस० जैन रबर मिल्स, चौक बनारस" के पते पर भेजकर सहमति प्राप्त कर लेना अच्छा होगा।

—डा० श्यामसुन्दरदास, अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, रामनारायण मिश्र, फूलदेवसहाय वर्मा।

सम्मेलन का सभापतित्व

ता० ६ मई के 'देशदूत' में मैंने श्री ठाकुरप्रसाद वर्मा का पत्र पढ़ा। वर्मा जी की इस बात का मैं समर्थन करता हूँ कि इस वर्ष उदयपुर में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन का सभापति आचार्य पं० केशवप्रसाद मिश्र को बनाना चाहिये। पं० केशवप्रसाद जी मिश्र आजकल काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष हैं। आशा है, हिन्दी-प्रेमी इस वर्ष साहित्य-सम्मेलन का सभापति पं० केशव जी को चुनकर हिन्दी को स्थिर बनाने में सहायता देंगे। 'देशदूत' के पाठकों के विचारों का मैं सहर्ष स्वागत करूँगा।

काशी —रमाशंकर

सौन्दर्य और प्रेम की कविता
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये
'अंचल' में कीट्स की सौन्द
की तड़पन तथा शैली की गीति
अजस्र झरना-प्रवाह वड्स्वर्थ है।
शब्दों में उर्दू की-सी मादकता
श्रेय 'अंचल' को ही है।
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

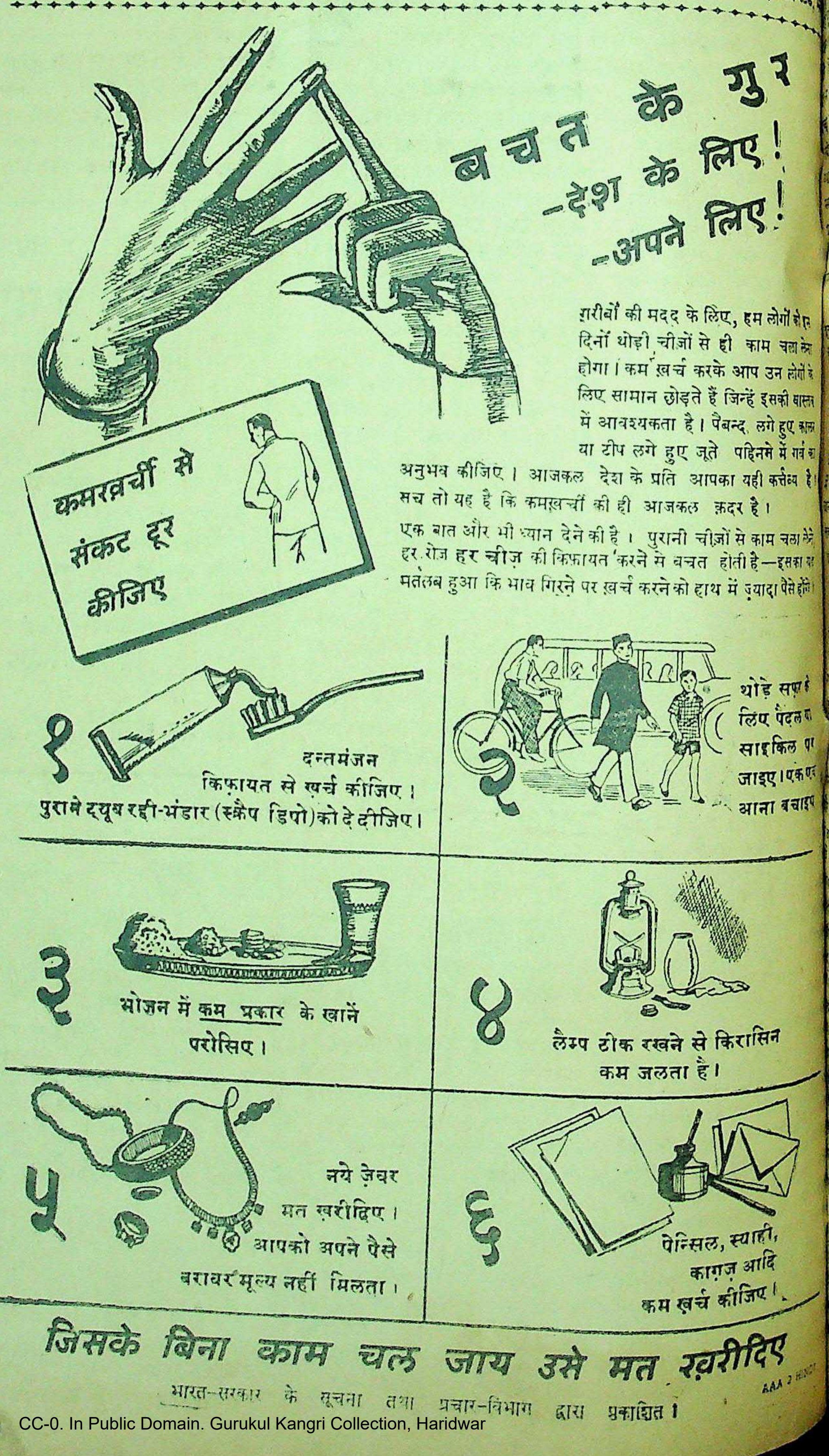

बचत के गुर
—देश के लिए!
—अपने लिए!

ग़रीबों की मदद के लिए, हम लोगों को इन दिनों थोड़ी चीज़ों से ही काम चलाना होगा। कम ख़र्च करके आप उन लोगों के लिए सामान छोड़ते हैं जिन्हें इसकी खास्त में आवश्यकता है। पैबन्द लगे हुए कपड़े या टीप लगे हुए जूते पहिनने में गर्व का अनुभव कीजिए। आजकल देश के प्रति आपका यही कर्त्तव्य है। सच तो यह है कि कमख़र्ची की ही आजकल क़दर है।

एक बात और भी ध्यान देने की है। पुरानी चीज़ों से काम चलाने और हर रोज हर चीज़ की किफ़ायत करने से बचत होती है—इसका यह मतलब हुआ कि भाव गिरने पर ख़र्च करने को हाथ में ज़्यादा पैसे होंगे।

कमखर्ची से संकट दूर कीजिए

१ दन्तमंजन किफ़ायत से ख़र्च कीजिए। पुराने ट्यूब रद्दी-भंडार (स्कैप डिपो) को दे दीजिए।

२ थोड़े सफ़र के लिए पैदल या साइकिल पर जाइए। एक एक आना बचाइए

३ भोजन में कम प्रकार के खानें परोसिए।

४ लैम्प ठीक रखने से किरासिन कम जलता है।

५ नये ज़ेवर मत ख़रीदिए। आपको अपने पैसे बराबर मूल्य नहीं मिलता।

६ पेन्सिल, स्याही, काग़ज़ आदि कम ख़र्च कीजिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

AAA 2 HINDI

भाषा का प्रश्न कैसे हल हो ?

दुस्तानी' का तात्पर्य है हिन्दी और उर्दू

के स्थानीय संवाददाता श्री गंगाधर इंदूरकर 'साहित्य-रत्न' ने पिछले दिनों
श्री पुरुषोत्तमदास टंडन से हिन्दी-उर्दू, तथा हिन्दुस्तानी के सम्बन्ध में होनेवाले
विवादों पर एक महत्त्वपूर्ण इंटरव्यू ली है, जो भारतीय पत्रों मे प्रकाशित हुआ है।
का कतिपय महत्त्वपूर्ण अंश हम यहाँ देते हैं जिससे श्रद्धेय टंडन जी के राष्ट्रभाषा-
सम्बन्धी समन्वयवादी विचारों पर सुन्दर प्रकाश पड़ता है।

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन।

ने वर्षों में हाल में जो
बुलाई थी उसने दो
उनमें से इस विषय के
हिन्दी और उर्दू का समन्वय
से पूर्ण रीति से सहमत
सबसे पुराना मत रहा है
के विषय में, कि सब
हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियाँ
होलें, मेरा मतभेद है।
से सहमत होने की प्रबल
भी मेरी बुद्धि यह नहीं
कि उनका यह प्रस्ताव
मैं यह नहीं समझता कि
बंगाली, उड़िया आदि
के बोलनेवाले हिन्दी
की भिन्न शैलियाँ और
को तैयार होंगे।
की माँग केवल
कि जो नागरी
उसके द्वारा हिन्दी
से परिचित हों
साथ ही दोनों
जिस शैली को
दूसरी शैली
उन्हें साधारण
नियम यही हो
और मुसलमान दोनों में
लोगों का होना
शैलियों और लिपियों
सकें किन्तु ऐसा
नहीं बनाया जा सकता।
यही है कि एक राष्ट्र-
लिपि हो, किन्तु जब
कारणों से या सामाजिक
इच्छित बात नहीं होती
आवश्यक है कि जहाँ हिन्दी
शैलियाँ चलती हैं हिन्दी
विरोध की सूरत न खड़ी
दोनों को बराबर की सुवि-
। प्रत्येक व्यक्ति को पूरा
कि वह अपने बच्चों की शिक्षा
या उर्दू में, अपने नागरिक
कार्य हिन्दी में करे या
दोनों शैलियों में काम करने
और से पूरा प्रबन्ध हो।
व्यय होगा। किंतु उसे
समझना चाहिए। ईमान-
नीति को चलाने में हिन्दी
का कोई प्रश्न नहीं उठ
कार्यों में शासन का संपर्क
है उनमें दोनों शैलियों का
होना चाहिए। सब
आज राष्ट्रीय दृष्टि से
है कि हिंदी और
इस बात पर
शैली के जानकारों
होगा। जिस व्यक्ति के
है और जिसे वह
उसको अपना काम
करने की पूरी सुविधा दी जाय। अँगरेज़ी भाषा का जो आक्रमण हमारी शिक्षा और साधारण कामों पर हो रहा है उसकी रोक-थाम हिन्दी और उर्दू दोनों के प्रेमी मिलकर ही कर सकते हैं।

कांग्रेस के विधान में हिन्दी और उर्दू को स्थान मिले, इसका प्रयत्न मैंने सन् १९१९ में अमृतसर कांग्रेस के समय आरंभ किया था। सन् १९२५ में कानपुर में मेरे प्रस्ताव पर उन लोगों के बहुत विरोध के बाद जिन्हें अँगरेजी भाषा का मोह था हिन्दी और उर्दू को जगह मिली थी। दोनों के लिए 'हिन्दुस्तानी' शब्द का प्रयोग मैंने अपने प्रस्ताव में किया था। उससे तात्पर्य था हिन्दी और उर्दू। कांग्रेस के विधान में हिन्दुस्तानी शब्द से केवल यह मतलब था कि हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियाँ अलग-अलग बरती जायँ।

इस विषय में अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू की ओर से निकलनेवाले समाचारपत्र 'हमारी जबान' ने अपने १६ मार्च की संख्या में कांग्रेस के विधान में हिन्दुस्तानी शब्द के मतलब समझने में भूल की है। उसने यह समझा है कि कांग्रेस ने मेरे प्रस्ताव पर हिन्दुस्तानी शब्द की एक परिभाषा दी और वह यह कि जो भाषा उत्तरी भारत के देहातों के हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं वह हिन्दुस्तानी है। वास्तव में कांग्रेस ने कोई भी परिभाषा 'हिन्दुस्तानी' शब्द को नहीं दी, उसके विधान में केवल 'हिन्दुस्तानी' भाषा में काम करने की बात कही गई है।

इस प्रकार आज की हालत में जहाँ मैं इस बात का पक्षपाती हूँ कि हिन्दी और उर्दू दोनों को खुला अवसर हो और इनमें से किसी के ऊपर कोई मजबूरी न हो, वहाँ मेरी आन्तरिक भावना यह है कि देश में ऐसी सुबुद्धि फैले और साम्प्रदायिकता और रूढ़िवाद से हम इतने ऊँचे उठें कि हिन्दी और उर्दू के समन्वय के प्रश्न को हम अपनी सद्भावनाओं से हल कर सकें।

क्या भारत को स्वतंत्रता प्राप्त होगी ?

(पेज ६ का शेष)

लन्दन विश्वविद्यालय के विद्वान् प्रोफेसर श्रीयुत लासकी ने इस प्रश्न पर अपना मत प्रकट करते हुए तीन बातों पर विशेष रूप से अँगरेजी शासकों का ध्यान आकर्षित कराना चाहा है। पहली बात है (१) केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य केन्द्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बली के प्रति उत्तरदायी बनाये जायें। (२) यह प्रतिनिधि सभा ऐसे परिषद् की आयोजना करे जो भारतवर्ष की वैधानिक परिषद् के रूप में स्वतन्त्र भारत का विधान बनाये और इस प्रकार युद्धोपरांत भारत को स्वतन्त्र राष्ट्र माना जाये।

जहाँ तक विधान-परिषद् और युद्ध से सम्बन्ध रखनेवाली शासन-व्यवस्था का सम्बन्ध है कांग्रेस का ध्येय इस प्रकार है—

(१) भारतीय स्वतन्त्रता की घोषणा के बाद एक स्थायी शासन-व्यवस्था स्थापित की जायेगी जो मित्र-राष्ट्रों के साथ युद्ध-सम्बन्धी आयोजनाओं में पूर्ण रूप से साथ देगी।

(२) यह स्थायी सरकार समस्त राजनैतिक दलों के सहयोग से स्थापित की जायेगी।

(३) इस प्रकार से व्यवस्थित सरकार की स्थापना के पश्चात् समस्त प्रमुख राजनैतिक दलों की एक सभा होगी जो भारत रक्षा-सम्बन्धी नीति में एक होकर आरंभात्मक और शस्त्र द्वारा मित्र-राष्ट्रों की सहायता करेगी।

(४) इस सहायता से यह प्रतिनिधि सभा किसान और मजदूरों के लिए जापानी और दूसरे विरोधी शक्तियों से लड़ने की आयोजना करेगी।

(५) यह एक विधान-परिषद् की आयोजना भी करेगी जो सर्वदलों के विचार-विमर्श से भारत का भावी विधान बनायेगी।

कांग्रेस के इस प्रस्ताव ने स्पष्ट रूप से भारत के भावी विधान और उन शर्तों की रूप-रेखा हमारे सामने रख दी है जिससे किसी भी प्रकार की शंका अथवा सन्देह उत्पन्न होने की संभावना असंभव है। अगर अँगरेजी हुकूमत यह समझती है कि कांग्रेस के ऊपर प्रतिबन्ध लगाकर वह अपनी आयोजना में सफलता प्राप्त करेगी तो यह उसकी भूल होगी। कांग्रेस आज भी अपने विश्वास और नीति में वैसी ही दृढ़ और अटल है जैसे कि पहले थी।

* * *

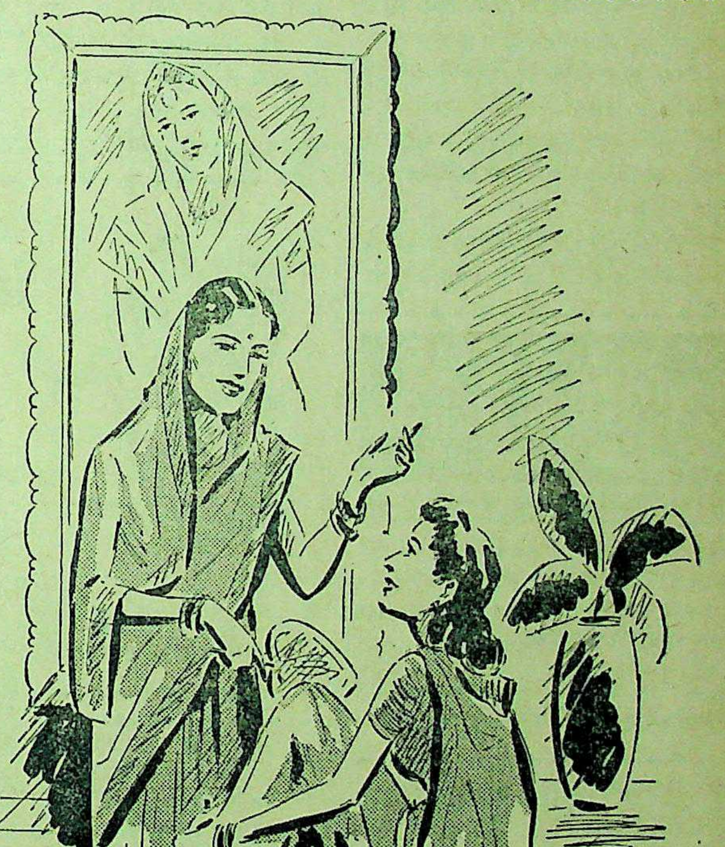

कुटुम्ब में
सौन्दर्य कायम रहे

माताजी कह रही हैं: "मेरी माँ इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसबीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसबीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी माँ के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है जो है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे कई पीढ़ीयों तक कुटुम्ब में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

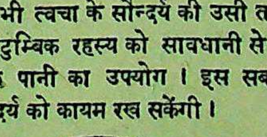

पिअर्स साबुन
सौन्दर्य का सेवक

TG. 40-172 HI
A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

संवाददाताओं के पत्र

इन्दौर के श्री नरहर गणेश [illegible] लीडर इन्दौर धारा-सभा प्रजामण्डल पक्ष ने निम्न वक्तव्य मित्रों की जीत विषयक इन्दौर धारा सभा में पास हुए प्रस्ताव पर फैल रही बातों के सम्बन्ध में प्रकाशित किया है—

धारा-सभा का दूसरा अधिवेशन ता० १७ को समाप्त हुआ। उसमें यूरोपीय युद्ध की समाप्ति पर बधाई देनेवाला सरदार किबे नेता लिबरल पार्टी-द्वारा उपस्थित एक प्रस्ताव मंजूर हुआ है। उसका समर्थन मैंने किया था। समर्थन करते हुए नीचे लिखे शब्दों में मैंने अपने भाव प्रकट किये थे—यूरोप के युद्ध में जो मनुष्य-संहार हो रहा था, वह अब रुक गया। यह खुशी की बात है क्योंकि हम हमेशा अहिंसा और शान्ति के चाहनेवाले हैं। युद्ध के प्रदेशों में यह बताया जाता रहा है कि मित्रराष्ट्र जनतंत्र तथा स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। अतः चूँकि अब यूरोप की लड़ाई खतम हो चुकी है। हम आशा करें कि इसमें से भारतवर्ष की स्वतंत्रता की भी कोई सूरत निकलेगी।

इन्दौर-राज्य प्रजामण्डल के दफ्तर में तारीख २२ की रात्रि में आग लग गई। लेकिन कोई खास नुकसान नहीं हुआ है।

अत्यन्त ही विश्वस्तसूत्र से मालूम हुआ है कि करीब ९ वार्डों से खड़े किये गये इन्दौर नगर प्रजामंडल के उम्मीदवार इन्दौर म्युनिसिपल चुनाव में निर्विरोध चुन लिये गये हैं।

इन नौ चुने हुए म्युनिसिपल मेम्बरों में से खास-खास के नाम ये हैं—श्री मनोहरसिंह जी मेहता वार्ड १९। श्री मेहता प्रजामंडल की कार्यकारिणी समिति के सदस्य और इन्दौर-राज्य नागरिक स्वाधीनता परिषद् के मन्त्री हैं। श्री रामेश्वरदयालजी तोतला, भूतपूर्व मंत्री इन्दौर-राज्य प्रजामंडल वार्ड नं० २२। श्री बाबूलाल पाटोदी नेता गुमास्ता आन्दोलन इन्दौर और श्री हस्तीमल जैन हैं।

—संवाददाता

* * *

अजमेर में उदयपुर चित्तौड़गढ़ से लौटते हुये युक्तप्रान्त के भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द जी यहाँ पधारे। स्थानीय साहित्यकारों की ओर से 'वाणी मन्दिर' में समारोहपूर्वक आपका स्वागत किया गया। पुष्पमालाओं तथा जलपान का सुन्दर आयोजन था। स्वागत समारोह में भाग लेनेवालों में सर्व श्री पं० हरिभाऊ जी उपाध्याय, प्रोफेसर रामेश्वर जी, गौरीशंकर जी ओझा, मुकुटबिहारीलाल जी भार्गव, जीतमल जी लूडियाँ, प्रो० गोकुललाल जी असावा, चन्द्रगुप्त जी वार्ष्णेय, सेठ रामरिछपाल जी सीरिया तथा मेयो कालेज के हिन्दी प्रोफेसर श्री कक्कड़ साहब के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री 'दीपक' जी ने सबका सुन्दर ढंग से परिचय कराया तथा 'वाणी मन्दिर' की ओर से बाबू सम्पूर्णानन्द जी को एक ग्रन्थ भेंट किया गया।

आगामी ता० ११, १२ और १३ जून को प्रताप जयन्ती के शुभ अवसर पर स्थानीय राष्ट्रीय प्रकाशन-संस्था 'वाणी मन्दिर' का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जायगा। इस अवसर पर साहित्य-परिषद्, कवि सम्मेलन तथा राजस्थान पत्र-प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जा रहा है। राजस्थान के कई प्रमुख पत्रकार, साहित्यसेवी, कवि तथा कलाकार इस उत्सव में पधारेंगे।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के उत्सव से निवृत्त होने के बाद श्री सम्पूर्णानन्द जी भूतपूर्व शिक्षा-मन्त्री 'नवजीवन' कार्यालय में भी कुछ समय के लिये पधारे। आपके सम्मान में सभी प्रमुख कार्यकर्ता निमंत्रित थे। श्री सम्पूर्णानन्द जी ने पत्रकार-कला के आदर्श पर सुन्दर विचार प्रकट किये। आपने कहा—"जो बात सत्य और उचित प्रतीत हो उसे ईमानदारी और निर्भीकता के साथ प्रकट कर देनी चाहिए उसे सदैव ऐसी बात कहनी चाहिये जो लोक-कल्याण के लिये हो। हर सत्य बात अवश्य कहने की नहीं होती। इससे कटु सत्य से भी कहीं बचना चाहिये। मिस मेयो की तरह गन्दी रिपोर्टों से कोई लाभ नहीं।"

—संवाददाता

* * *

जोधपुर हिन्दी प्रचारिणी सभा के तीसरे सालाना जलसे का प्रारम्भ साहित्य-सप्ताह के उद्घाटन से हो गया है। सभा के प्रधान मंत्री श्री सूर्यराज व्यास ने सप्ताह का उद्घाटन करते हुये कहा कि हिन्दी-रक्षा का प्रश्न हमारे सामने देश की रक्षा के प्रश्न से किसी तरह कम महत्त्व का नहीं है। हिन्दी हमारे जीवन में इस प्रकार घुल-मिल गई है कि कोई
भी प्रयास उसे हमसे अलग न
सकता। प्रांतीय भाषाओं की च
हुए श्री सूर्यराज ने कहा कि प्रांतीय
हिन्दी की पोषक हैं और जो
प्रान्तीय भाषाओं के विरुद्ध बोलन
हिन्दी और देश का अहित क
श्री व्यास ने अन्त में जोधपुर के
से अपने दैनिक व्यवहारों में
उपयोग करने का अनुरोध किया।

साहित्य सप्ताह में कहानी,
और भाषण-प्रतियोगिता रखी गई
कालेज के विद्यार्थी और
ख्यातनामा साहित्यकार भाग ले
हस्तलिखित पत्रिकाओं की प्रति
लिए इस पत्र तक कई पत्रि
विशेष अंक आ चुके हैं। सप्ताह
बड़ा आकर्षण राजस्थान के ले
लिखित साहित्य की विशाल प्र
भाषण प्रतियोगिता में श्री
जोशी और मरुधरमल पुरस्
घोषित किये गए।

—

* *

वर्धा महिला-आश्रम के मन्
हैं—महिला-आश्रम में प्रवेश के लि
दन-पत्र भेजने का समय २५ मई
कर ५ जून कर दिया गया है।
आनेवाले आवेदन-पत्रों पर विचा
साधारणतया संभव न होगा।
खुलने की तारीख में जो
कोई परिवर्तन नहीं किया गया।
से निवेदन है कि वे पूर्ण अनु
संस्था में हाजिर न हों।

—सीताचरण

आरोंदा १८६९ नीलगिरि तेल
वापरो
लाण्डालेकर बंधु. बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।

१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

३ घड़ियाँ तथा २४६ उपहार सिर्फ ४) में

जो लोग हमारी दो शीशियाँ ओटो गुलाब या चार डिब्बी जर्दा ४) में खरीदेंगे उन्हें एक रोल्ड गोल्ड गिलट की नकली कलाई घड़ी, एक सेफ्टी रेजर, एक सेविंग-ब्रश, एक साबुन, एक आइना, एक कंघा, एक बत्ती, एक अँगूठी, एक सेट बटन, एक चम्मच, दो नकली कलाई घड़ियाँ, एक जोड़ा गिनब्रिजर्वर, (अपने पैर का नाप भेजें) एक जोड़ा जूते का फीता, एक मनीबेग, चार रोल्ड गोल्ड की चूड़ी, चार हेयर-क्लिप, एक पैर का पालिश, एक तेल पालिश, एक सूत का गोला, बावन ताश के पत्ते। पैकिंग तथा डाक-व्यय ॥।=)।

पता—विक्टोरिया वाच कं० (D. S)
पोस्ट बाक्स नं० १२२१६ कलकत्ता (सेक० १९०)

आहार स्वादिष्ट और भरपेट रहे लेकिन उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है!
डालडा ठीक यही करता है-हमारे परिवारको गौरसे देखिये।
DALDA VANASPATI
The DALDA COOK BOOK Price Re.1/-
डालडा
स्फूर्ति के लिये
पोषक-तत्व संपन्न

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डालडा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें कामकारी बातें और १९० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक प्रती होनीही चाहिये। Dept. A113 P.O. Box No. 353, Bombay के पतेपर चार आने के पोस्टज स्टाम्प भेजियेगा।

आप जब अपने परिवारके लिये आहार बनाती हैं तब क्या इस ओर ख्याल रखतीं हैं? भोजन केवल स्वादिष्ट रहनेसे काम नहीं चलता; उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है। चंद आहार कई औरोंसे अधिक शक्तिदायी होते हैं, तो कई-कई हम हररोज खाते हैं-बिल्कूल शक्ति नहीं देते। यह हमारी तन्दुरुस्ती के लिये ठीक नहीं-ना, हानिकारक होनेकी भी संभावना है; खास करके बच्चोंके लिये। लेकिन भोजन अधिक उत्साहदायी बनाना मुश्किल नहीं। एक सरल मार्ग है डालडा का इस्तेमाल करना। उसमें, प्रकृति के बढिया शक्तिदायी तथा उत्साहदायी अन्नांश पाये जाते हैं। इसके अलावा डालडा से आहार में जो स्वाद आती है वह दूसरी कोई चीज नहीं ला सकती। आप स्वयं अनुभव कीजियेगा।

HVM 32-178-40 HI

HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO.

देश-विदेश में क्या हो रहा है?

विदेश

के मजदूरदल की कार्यकारिणी र्चिल के इस प्रस्ताव को ठुकरा जापान की लड़ाई समाप्त होने सरकार जारी रहे। मजदूरदल फलस्वरूप मिस्टर चर्चिल के पद से इस्तीफा दे दिया। उनका इस्तीफा स्वीकार करने के सिरे से प्रधान मंत्री के पद उन्हें नये चुनाव तक एक कायम करने का आदेश १५ जून को भङ्ग कर जुलाई में आम चुनाव बड़े जोरों से चुनाव की है और पार्लामेंट की ६०० 'सीटों' के लिए रहता है।

* * *

मार्शल टीटो और एलेक्जेंडर के बीच गंभीर और लड़ाई की नौबत मार्शल एलेक्जेंडर ने किया कि वह में लाकर शस्त्र- अपना कब्जा मार्शल एलेक्जेंडर एड्रियाटिक सागर- युगोस्लावियन सीमा शान्ति-सम्मेलन सरकार का अधिकार विवाद के बाद ने ग्रोरीन्थिया खाली ट्रीस्ट के सम्बन्ध में हो गये हैं, जो तय होंगी। ट्रीस्ट पर सेना का क़ब्ज़ा हो टीटो का कहना है कि करने के लिए तैयार अधिकारों की सुरक्षा देंगे।

* * *

संवाददाता ने सूचित प्रतिनिधियों ने विश्व- विधान में राष्ट्रों के प्रादे- पर अमेरिकन प्रस्तावों संयुक्तराष्ट्र-सम्मेलन को से बचा लिया है। है कि संरक्षण-प्रणाली लागू नहीं होगी जो बन गये हैं। यह नई है जो भारत और भी लागू होती है। कि ब्रिटेन, चीन तथा इस बात पर समझौता प्रणाली के अन्तर्गत स्वाधीनता भी रहेगा। मंडल के अध्यक्ष ने सूचित किया के अलावा १४ नये विश्व- की मांग पेश

जाती है कि सान जून को समाप्त

मि० चर्चिल ने अपने नये मंत्रिमण्डल की घोषणा की है उनके अन्य सदस्य में इनके नाम इस प्रकार हैं।

मि० ब्रेन्डेन ब्रैकन, जो इस समय सूचना मंत्री हैं, मजदूर पार्टी के मि० ए० वी० अलेक्जेंडर के स्थान पर नौसेना मंत्री होंगे। मि० हैरोल्ड मैकमिलन तो मध्यपूर्व के प्रतिनिधि मंत्री हैं। लिबरल सर आर्कीबाल्ड सिनक्लेयर के स्थान पर वायुयान मंत्री होंगे। सर जेम्स ग्रिग, युद्ध मंत्री अपने पद पर बने रहेंगे। लार्ड लूलटन मि० एटली के स्थान पर मंत्रिमंडल के लार्ड प्रेसीडेंड बनेंगे और वह शायद उपप्रधान मंत्री का भी कार्य करें।

* * *

मजदूर मंत्री मि० बेविन ने, अपने दल की वैदेशिक नीति की रूप-रेखा खींचते हुए कहा—"यदि मजदूरदल की सरकार स्थापित होगी तो हम 'इंडिया आफिस' बन्द करके औपनिवेशिक दफ़्तर को भारत-सम्बन्धी कार्य सौंप देंगे। इससे यह विश्वास उत्पन्न किया जा सकेगा कि भारत का शासन व्हाइट हाल-द्वारा नहीं किया जा रहा है।

भारत के भूतपूर्व उप-मंत्री, मजदूरदल के लार्ड लिस्टोवेल ने कहा है कि ज्यों ही मजदूरदल की सरकार की स्थापना हो जायगी त्यों ही इस बात का प्रयत्न किया जायगा कि भारत को जल्दी से जल्दी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक अधिकार दे दिये जायँ।

* * *

डि वेलरा ने आयर के अन्तर्गत स्लीगो में भाषण देते हुए कहा कि वर्त्तमान महायुद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि युद्ध अभी केवल अपनी द्वितीय अवस्था में पहुँच पाया है, आपने रक्षा-सम्बन्धी सुदृढ़ नीति की आवश्यकता बताई।

* * *

फ्रांस में जो म्युनिसिपल चुनाव हुए हैं उनसे पता चला है कि झुकाव वामपक्षियों की ओर अधिक और ४६८ म्युनिसिपैलिटियों में कम्यूनिस्टों और साम्यवादियों का बहुमत है।

* * *

ओकोनावा का पतन सन्निकट है। प्रतिदिन अमेरिकनों की नई कुमकें पहुँच रही हैं और ओकीनावा की छोटी-सी 'सीगफ्रीड पंक्ति' को ध्वस्त करती हुई महत्वपूर्ण पहाड़ियों पर कब्जा करती जाती हैं। आनाबारू नामक नगर पर अमेरिकनों का क़ब्ज़ा हो गया है।

मिन्डानाओ में अमेरिकन फ़ौजों ने प्रान्तीय राजधानी मालाबाले पर क़ब्ज़ा कर लिया है। फिलिपाइन्स के दक्षिण में मोरोटाइ द्वीप पर जापानी नये सिरे से उतरे। मोरोटाइ फिलिपाइन्स के अमेरिकनों के लिए रसद सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण अड्डा है और साथ ही डावाओ तथा ताराकान पर किये जाने वाले आक्रमणों का अड्डा भी यही रहा है।

हुनान में चीनियों का बढ़ाव जारी है। वे पाओचिंग से १८ मील की दूरी तक बढ़े हैं। फ़ूचाव पर चीनियों ने फिर से क़ब्ज़ा कर लिया है।

[illegible] हवाई किलों ने ४,५०० टन दाहक बम बरसाकर वहाँ के एक महत्त्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र में भयंकर अग्नि-कांड मचा दिया।

* * *

बरमा में टौंगू के पूर्व जापानियों ने प्रबल रूप से प्रतिरोध करना आरम्भ कर दिया है। वे शान पहाड़ियों की प्राकृतिक रक्षापंक्ति का पूर्ण उपयोग कर रहे हैं। वे इस बात की कोशिश में हैं कि स्याम की ओर भागने के जिन मार्गों की ओर १४ वीं सेना बढ़ रही है वहाँ उसे आगे बढ़ने से तब तक रोका जावे जब तक संभव है। उनके प्रतिरोध से उनकी बिखरी हुई सेना की टुकड़ियों को स्याम की ओर भागने के लिए समय मिल रहा है।

टौंगू के पूर्व मावची रोड पर जापानियों ने मित्रों पर प्रत्याक्रमण किया, पर इसमें उन्हें सफलता नहीं मिली है। संपूर्ण क्षेत्र में मित्रराष्ट्रों-द्वारा जापानियों के सफाये का काम जारी रहा।

* * *

आजकल जापान पर मित्रराष्ट्रों का हवाई आक्रमण बहुत विशाल रूप धारण कर रहा है। पिछले ४८ घण्टों के भीतर टोकियो पर ८५०० से अधिक दाहक बम बरसाये गये हैं और मित्रों की इस बम-वर्षा से समूची जापानी राजधानी प्रज्ज्वलित हो रही है। टोकियो का कुल क्षेत्रफल २१६ वर्गमील है जिसमें ३५ वर्गमील से अधिक भाग जलकर बिलकुल नष्ट हो चुका है।

* * *

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

अब ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) वैसी ही बहुत अच्छी शर्तों पर आगामी सूचना तक मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को आपको घर बैठे पहुँच जाया करेगा।

इस ऋण में आप जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।

आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ऋण की असल रक़म १५ अगस्त, १९५९ के बाद, किन्तु १५ अगस्त, १९६१ से पहले पहले वापस मिल जायगी।

आपकी पूँजी आपको हर समय वापस मिल सकती है, क्योंकि यह लोन मार्केट में आसानी से बेचा जा सकता है। अभी आवेदन कीजिए।

ऋण के जिन खरीदारों पर इनकम-टैक्स लागू नहीं होता अथवा कम शरह पर लागू होता है, वे टैक्स का रुपया वापस ले सकते हैं।

AAA 222 Hindi

रुपया बचाइए

और

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

लन्दन में भारत के प्रसिद्ध व्यवसायी श्री जी० डी० बिड़ला का जो इँगलैंड आए हुए हैं, आज प्रातःकाल न्यूज क्रानिकल में एक इन्टरव्यू प्रकाशित हुआ है। उसमें कहा गया है कि पिछले चन्द दिनों के अन्दर श्री बिड़ला ने मि० एमरी तथा लार्ड वेवेल से वार्ता की है और उनसे कह दिया है कि 'ले लो या छोड़ दो' का प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया जायगा। उन्होंने यह भी कहा है कि अगर पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा उनके सहयोगी जेल से रिहा कर दिये गये और फिर उन्हें उत्तरदायित्व-पूर्ण सरकार का संगठन करने का अवसर न दिया गया तो फिर ६ महीने के अन्दर वे बन्द हो जायँगे।

* * *

ब्रिटेन में भारतीय कांग्रेसवादियों की कमेटी ने ब्रिटिश मजदूर दल और कम्यूनिस्ट दल को इस आशय का पत्र भेजने का निश्चय किया है कि दोनों दल आपस में मिलकर आगामी चुनाव में मि० एमरी का स्पार्कब्रुक (बर्मिंघम) में विरोध करें।

* * *

प्रोफेसर हेराल्ड लास्की ने इण्डिया लीग कानफरेंस में भाषण करते हुए बताया कि मि० एमरी की राय में पाकिस्तान की योजना ब्रिटिश सरकार को अमान्य है और वह उस पर विचार न करेगी। मि० एमरी ने इस बात का खंडन किया है और कहा है कि उन्होंने इस तरह की बात कभी नहीं कही।

स्वदेशी

श्री राजगोपालाचारी ने पूना में भाषण देते हुए कहा कि वर्त्तमान परिस्थिति में लार्ड वेवेल कोई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव लेकर नहीं आ सकते। उन्होंने बताया कि जब तक वर्किंग-कमेटी के सदस्य रिहा नहीं कर दिये जाते तब तक गांधी जी देश का नेतृत्व ग्रहण करने को तैयार नहीं हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यदि सरकार इन नेताओं को अनिश्चित काल तक जेल में बन्द किये रहेगी तो गांधी जी को कांग्रेस तथा देश का नेतृत्व अपने हाथ में लेने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

खबर है कि प्रान्तीय सरकार पं० जवाहरलाल नेहरू तथा आचार्य नरेन्द्रदेव की रिहाई के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार से पत्र-व्यवहार कर रही है।

एक सरकारी सूचना में कहा गया है श्री आसफ अली का स्वास्थ्य खराब होने के कारण भारत सरकार ने उन्हें रिहा कर देने का निश्चय किया है।

* * *

कहा जाता है कि महात्मा गांधी ने अपने पास आये हुए कुछ प्रश्नों के उत्तर में कहा है कि अँगरेज सरकार भारत के लिए जब स्वतंत्रता का सिद्धान्त स्वीकार कर लेगी तो उस समय औपनिवेशिक पद बनाम स्वतंत्रता का निर्णय किया जा सकता है।

हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पर खबर है कि गांधी जी ने कहा कि जिन हिन्दुओं ने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया है वे केवल धर्म के परिवर्तन के कारण पृथक् राष्ट्र होने का दावा नहीं कर सकते।

सन् १९४२ के अगस्त के दङ्गों के संबन्ध में महात्मा जी ने कहा कि सरकार ने स्वयं मुझे विश्वासघात और जापानियों की सहायता करने के प्रयत्न के अभियोग से बरी कर दिया है।

भारत-सरकार के भोजन-सदस्य सर जे० पी० श्रीवास्तव ने कल शाम को फुड डिपार्टमेंट इंस्टीट्यूट का उद्घाटन करते हुए इस प्रकार भाषण दिया जैसे सरकार में परिवर्तन होने ही वाले हैं। आपने वेवेल मिशन के सफलता की कामना की और कहा कि मुझे आशा है कि वह दिन दूर नहीं है जब भारत को स्वाधीनता मिल जायगी, जो उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

* * *

'स्टेटसमैन' पत्र का कहना है कि संभव है कि केन्द्रीय एसेम्बली और कौन्सिल आफ स्टेट वर्त्तमान कार्यकाल अगले अक्टूबर महीने में समाप्त होने पर भंग कर दी जायें।

पत्र कहता है कि लेजिस्लेटिव डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी सर जार्ज स्पेन्स ने प्रान्तीय सरकारों को पत्र लिखकर कहा है कि लार्ड वेवेल के भारत आने के एक हफ्ते बाद नई दिल्ली से एक घोषणा केन्द्रीय एसेम्बली के अक्टूबर में भंग किये जाने और उसके बाद तत्काल चुनाव करने के सम्बन्ध में की जानेवाली है।

* * *

कांग्रेस सेविका तथा कुमारिका दल के ग्रीष्मकालीन शिविर का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय एसेम्बली की कांग्रेस पार्टी के नेता श्री भूलाभाई देसाई ने कहा कि पिछले युद्ध में हमने अँगरेजों पर विश्वास किया और हम बेवकूफ बने। अब अँगरेजों को अपनी सचाई सिद्ध करने का दूसरा अवसर प्राप्त हुआ है।

* * *

ज्ञात हुआ है कि यरवदा सेंट्रल जेल में सरदार पटेल का स्वास्थ्य खराब होने पर उन्होंने पूना के डाक्टर घरपुरे से मिलने की अनुमति माँगी थी, पर जेलों के इंस्पेक्टर जनरल ने अनुमति नहीं दी, क्योंकि नजरबन्द कैदियों को प्राइवेट डाक्टरों से सलाह लेने की आज्ञा नहीं है।

* * *

डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी तथा डा० मेघनाद साहा मास्को और लेनिनग्राड में होनेवाले विज्ञान-परिषद् के जयन्ती उत्सव में शरीक होने के लिए कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में जा रहे हैं।

* * *

महात्मा गांधी ने महाबलेश्वर में हिन्दुस्तान स्काउट्स एसोसियेशन में भाषण करते हुए कहा कि इस समय भारत की वही करुण दशा है जो एक समय द्रौपदी की थी और हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए कि क्या यह अवसर उत्सव मनाने का है।

* * *

कालसी अशोक-आश्रम में
से एक मास का अवकाश हो
आश्रम को नागथात में वहाँ
सयाना ठा० गुनानसिंह जी ने भूमि
है। इसी भूमि को ठकर बाबा ने
में जाने पर आश्रम के लिये पसन्द
था। आश्रम के व्यवस्थापक श्री
जी शास्त्री भी शीघ्र ही नागथात में
हैं। नवीन विद्यार्थियों का प्रवेश
समाप्ति पर जून में होगा।

प्रविष्ट होनेवाले छात्रों के
कार्यालय में १५ जून तक आ जाने
योग्य छात्रों को छात्रवृत्ति देने
प्रबन्ध किया गया है।

* *

काशी-नागरी-प्रचारिणी
साहित्य-अन्वेषक श्री दौलतराम
प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों की
के लिए प्रयाग आये हुए हैं।
इलाहाबाद शहर और जिले में
खोज का काम प्रारम्भ कर दि
प्राचीन साहित्य की रक्षा करना
आवश्यक है। यह तभी सम्भव
प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों के विवरण
जायँ और उनकी प्रतिलिपि की
जिन सज्जनों के पास हस्तलिखित
उन्हें साहित्य-रक्षा के लिए इस
कार्य में सहयोग देना चाहिए।
जिले में हस्तलिखित ग्रंथों की
है, इसी लिए इस ओर
विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

—

एक सप्ताह में उस स्त्री के कूल्हे का दर्द भाग गया

क्रुशेन की पहली मात्रा से ही आराम होने लगा

अब वह क्रुशेन की छोटी मात्रा प्रतिदिन पीती है

६ वर्ष पहले जब स्त्री के कूल्हे का दर्द हुआ तब वह कठिनाई से चल फिर पाती थी। अनेकों उपचार किये किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। उसने क्रुशेन का सेवन किया और तत्क्षण लाभ भी हुआ। केवल एक सप्ताह में उसके कूल्हे का दर्द जाता रहा।

वह कहती है, "६ वर्ष हुए मैं कूल्हे के दर्द से परेशान थी। मैं मुश्किल से चल पाती थी। हमने अनेकों उपचार किया किन्तु व्यर्थ। तब मैंने क्रुशेन साल्ट सेवन करना आरम्भ किया। पहली ही मात्रा से तुरन्त लाभ हुआ। एक सप्ताह में मैं एकदम चंगी हो गई। अब मैं प्रति दिन एक चम्मच क्रुशेन साल्ट एक प्याले गर्म जल में पीकर दूसरा काम करती हूँ। अब मैं पिछले चार वर्षों से विधवा हूँ और मेरे एक पुत्र है अतः मैं कठिन श्रम करती हूँ। मुझे अपनी जीविका उपार्जन के लिए ६ बजे सवेरे से ११ बजे रात तक काम करना पड़ता है। मेरी उम्र ५२ वर्ष की है किन्तु सबकी निगाह में मैं ३२ वर्ष की मालूम पड़ती हूँ।

—(श्रीमती) यफ० ई० आर०

यदि आपको कूल्हे का दर्द है तो क्रुशेन से अवश्य लाभ उठाइये। क्रुशेन अनेक खनिज लवण का अनुपातिक सम्मिश्रण है जो दस्तावर तथा मूत्रवर्द्धक है। इस दोहरी क्रिया से क्रुशेन सारी शरीर को स्वच्छ कर देता है। क्रुशेन की नियमित मात्रा से आपकी सारी इन्द्रियाँ मुस्तैद बनी रहती हैं तथा अपना कार्य सुचारु रूप से करती रहती हैं। क्रुशेन साल्ट सभी अच्छी दूकानों तथा दवाखानों में मिलता है।

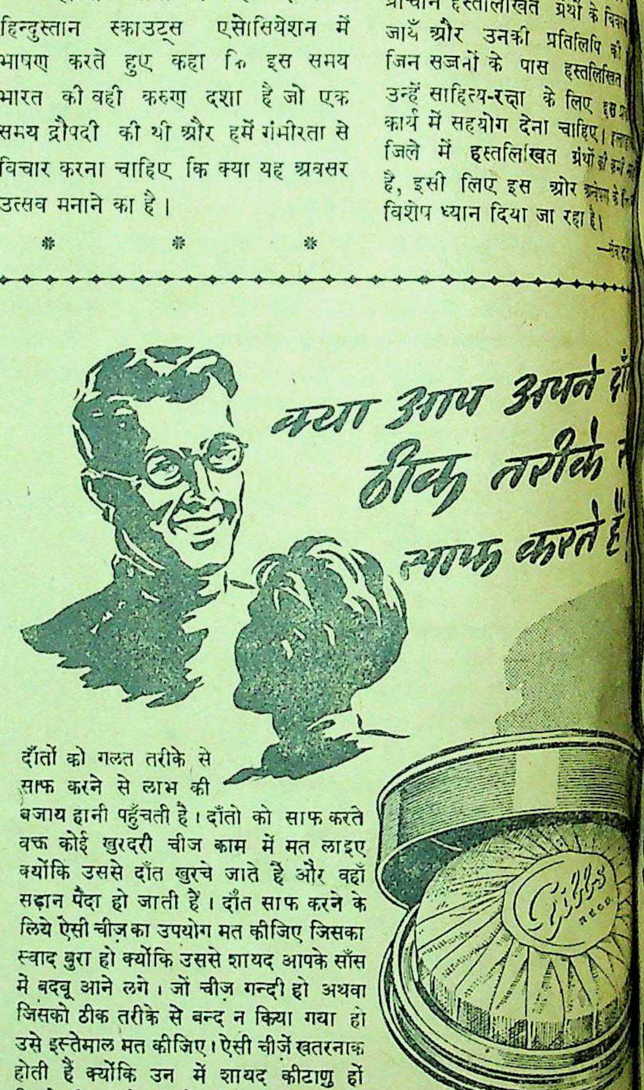
क्या आप अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करते हैं?
Gibbs REGD.

दाँतों को गलत तरीके से साफ करने से लाभ की बजाय हानी पहुँचती है। दाँतो को साफ करते वक्त कोई खुरदरी चीज काम में मत लाइए क्योंकि उससे दाँत खुरचे जाते हैं और वहाँ सड़ान पैदा हो जाती हैं। दाँत साफ करने के लिये ऐसी चीज़ का उपयोग मत कीजिए जिसका स्वाद बुरा हो क्योंकि उससे शायद आपके साँस मे बदबू आने लगे। जो चीज़ गन्दी हो अथवा जिसको ठीक तरीके से बन्द न किया गया हो उसे इस्तेमाल मत कीजिए। ऐसी चीजें खतरनाक होती हैं क्योंकि उन में शायद कीटाणु हों जिनसे बीमारी फैलती है।

हमेशा (गिब्स डेन्टिफ्रिस) इस्तेमाल कीजिए। वह आपके दाँतों को सुगमता से साफ कर देता है इसका स्वाद और इसकी सुगंध दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है और डिबिया मे बन्द रहता है जिससे इस पर धूल नहीं गिरती। इसके इलावा इस डिबिया में १०० बार से अधिक दाँत साफ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GD. 12-33 HI D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENG

प्राइज़ बांड में रुपया लगाने से "भाग्य खुल सकता है"- यह है कथन ५० हज़ार रुपये का इनाम पाने वाले भाग्यवान का।

जब कि जनवरी, सन् १९४५ में प्राइज़ (इनामी) बांड लाटरी के नतीजे प्रकाशित किये गये, तो कलकत्ते के श्रीयुत पी. सी. घोष को पता चला कि वे १०० रुपये का ५० हज़ार रुपये का इनाम पाने वाले भाग्यवान हैं। एक वक्तव्य में श्रीयुत घोष ने कहा:—

"मैंने १०० रुपये का इनामी बांड ख़रीदा था, और मुझे यह कहने में प्रसन्नता हो रही है कि इस पर मुझको ५० हज़ार रुपये का इनाम मिला है।

इनामी बांड में लगी हुई रक़म सुरक्षित रहती है और एक प्रकार से यह युद्ध-प्रयत्नों में सहयोग है; किन्तु इसके अतिरिक्त इससे अपनी तक़दीर आज़माने का बड़ा अवसर मिलता है और आदमी का भाग्य खुल सकता है।

कलकत्ते के रिज़र्व बैंक से मुझे इनाम का रुपया बिना किसी देरी के मिल गया और उन्होंने इस संबंध में जो शिष्टता दिखाई उसकी मैं प्रशंसा करता हूँ।

"मुझे आशा है कि जिन लोगों ने अभी तक इनामी बांड नहीं ख़रीदे हैं वे अविलम्ब ले कर लेंगे।"

AAA 211 Hindi

इनामी बांड दो क़ीमतों के हैं—१०० रुपये वाले और १० रुपये वाले। १०० रुपये वाले एक लाख इनामी बांडों के हर सिलसिले पर, पहला इनाम ५० हज़ार रुपये का, दो दूसरे इनाम बीस-बीस हज़ार रुपये के और दो तीसरे इनाम पाँच-पाँच हजार रुपये के। १० रुपये वाले एक लाख इनामी बांडों के हर सिलसिले पर, पहला इनाम ढाई हज़ार रुपये का, दो दूसरे इनाम सवा-सवा हज़ार रुपये के, पाँच तीसरे इनाम पाँच-पाँच सौ रुपये के और दस चौथे इनाम ढाई-ढाई सौ रुपये के। जनवरी, सन् १९४९ तक हर छमाही इनाम निकाले जायँगे और उसके बाद बांडों की असल रक़म वापस दे दी जायगी। प्रत्येक बांड को इनाम जीतने का मौक़ा आठ बार और मिलेगा; वही बांड कई बार इनाम जीत सकता है। इनाम की रक़म पर इनकम टैक्स, सुपर टैक्स, एक्सेस प्राफ़िट टैक्स और कारपोरेशन टैक्स नहीं लगता।

इनामी बांड ख़रीदिए

अगली लाटरी में ४ लाख रुपये के इनाम।

आप रिज़र्व बैंक आफ़ इंडिया अथवा इम्पीरियल बैंक आफ़ इंडिया की किसी शाखा से, अथवा सब बड़े-छोटे सरकारी ख़ज़ानों से प्राइज़ (इनामी) बांड ख़रीद सकते हैं। एक आदमी कितने बांड ख़रीदे इसकी कोई हद मुक़र्रर नहीं है।

अगली लाटरी
जुलाई
१९४५

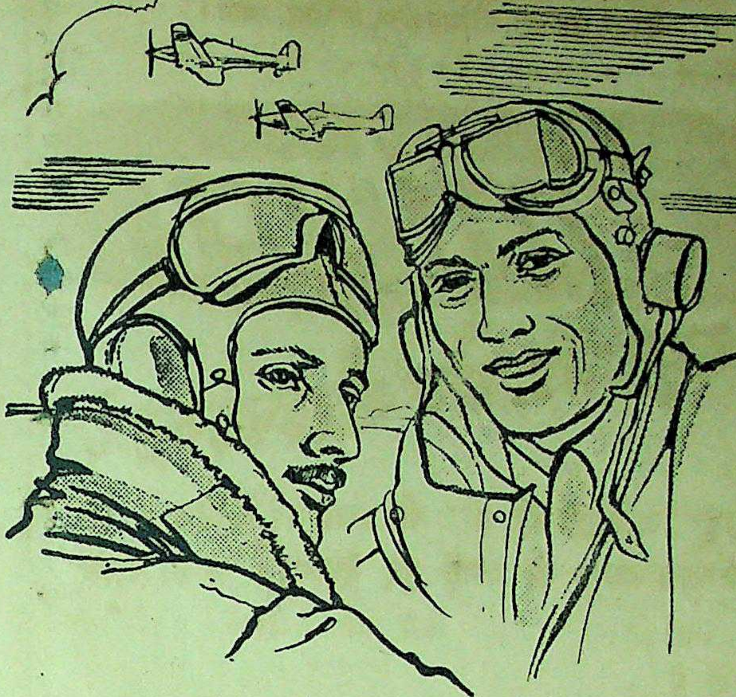

"श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ"-शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक में अच्छी शिक्षा और अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य के अलावा कुछ और भी होना आवश्यक है। उसे दृढ़ निश्चय, परिश्रमी और साहसी भी होना चाहिए। अपनी वीरता और योग्यता के बल पर शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक इस लड़ाई में बड़े बड़े कार्य करके दिखा चुके हैं। ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ काम करना बड़े सम्मान और गर्व की बात है। आज शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक वीरता में हिन्दुस्तान की श्रेष्ठ परम्परा की रक्षा कर रहे हैं। कल, ये युवकगण अन्तर्राष्ट्रीय अभियान के क्षेत्र में हिन्दुस्तान के हितों की रक्षा करेंगे। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफ़सर से पूछ सकते हैं।

AAA 81

निबन्धावली—लेखक, महापंडित राहुल सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल जी के सामाजिक तथा साहित्यिक और दार्शनिक निबन्धों का संग्रह किया गया है। इसमें कुल निबन्ध हैं और राहुल जी ने देश और विदेश के दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मधुसखा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० [illegible] अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

कमीशन

समुद्री बेड़े, फ़ौज और हवाई बेड़े में

हिन्दुस्तानी समुद्री बेड़े, फ़ौज और हवाई बेड़े के लिए अफसरों की सख्त ज़रूरत को देखते हुए हेडक्वार्टर्स में छः स्टाफ़ आफ़िसर (भरती) नियुक्त किये गये हैं जिनके पते नीचे लिखे हैं।

इन अफ़सरों में से प्रत्येक के मातहत समुद्री बेड़े, फ़ौज और हवाई बेड़े के अफ़सरों का एक एक दल रहेगा जो अपने हेडक्वार्टर के आसपास के शहरों का दौरा करेगा।

इन दलों के दो काम होंगे: (१) जनता को इन तीनों फ़ौजी शाखाओं की नौकरियों, इनकी हालत, तनखाह वग़ैरह के बारे में परिचित कराना। (२) इन तीनों फ़ौजी शाखाओं के कमीशण्ड अफ़सरों की जगहों के लिए योग्य उम्मीदवारों को चुनना जो छः सर्विस सेलेक्शन बोर्डों के सामने पेश किये जायेंगे जिन्हें अन्तिम चुनाव का अधिकार है।

*

असाई बिल्डिंग्स, कोलाबा, बंबई।
५, बे रोड, लखनऊ।
११०, सेण्ट जान् पार्क, लाहौर।
१५, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।
असेम्बली रेस्ट हाउस, नागपुर।
कब्बन रोड, बंगलोर।

*

अपने स्थानीय अख़बार में सूचना देखिए

इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि ये छः दल प्रान्तीय सेलेक्शन बोर्डों के सहकारी हैं, इनकी जगह पर नहीं बनाये गये हैं। प्रान्तीय सेलेक्शन बोर्डों का काम अब भी चालू है। आप चाहें तो अपनी दरख्वास्त (१) अपने प्रान्तीय सेलेक्शन बोर्ड अथवा (२) अपने निकटवर्ती भरती दफ्तर के पास भेज सकते हैं अथवा स्टाफ़ आफ़िसर (भरती) के सामने सीधे आवेदन कर सकते हैं जब वे आपके हलक़े में दौरे पर हों।

AAA 87

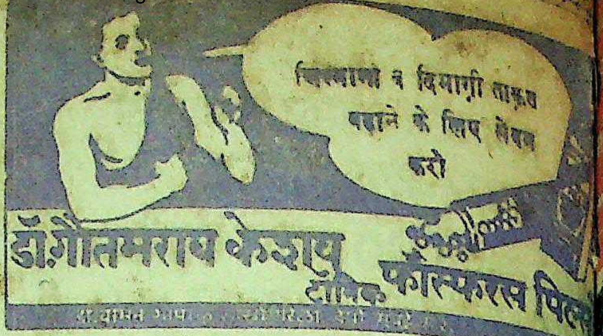

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी, एल० एम० धौलाकिया एन्ड ब्रदर्स।

कपड़े की कमी।

जनता के लिए कपड़े की कमी जो आजकल सर्वत्र अनुभव की जा रही है उससे देहली क्लॉथ मिल्स की दूकानें भी जो डी.सी.एम् स्टोर्स के नामसे सर्वत्र विख्यात हैं और जो बहुधा सैकड़ों ग्राहकों सेघिरी रहती हैं, बची न रह सकीं।

चूँकी दूसरी दूकानों में कपड़ा मिलना कठिन होगया है इसलिए हमारी दूकानों नें उन नये ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित किया है जिन्होंने पहले कभी हमसे कपड़ा नहीं खरीदा था, परिणामतः हम अपने स्टोरों को पहले की अपेक्षा अधिक कपड़ा मुहैय्या करते रहे हैं परंतु खेद है कि अब हम इससे अधिक माँग पूरी करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इन परिस्थितियों में हम महसूस करते हैं कि हमारे ग्राहकों के लिए यह असुविधाजनक है कि बहुत देरतक इंतजार करने पर भी उन्हें थोड़ासा कपड़ा प्राप्त हो सकेगा जोकि हम प्रत्येक ग्राहक को देसकेंगे।

परन्तु तोभी हम अपने माननीय ग्राहकों को विश्वास दिलाते हैं कि इन दिनों हम उनकी अधिक सेवा नहीं कर सकते, यह इसलिए नहीं कि ऐसा करने की हमारी इच्छा नहीं है या हमारी तरफ़ से इसके लिए प्रयत्न ही नहीं होते हैं वरन पूर्णतया इसलिए कि ऐसा करा सकना हमारी शक्ति के बाहर होगया है। हम अपने ग्राहकों के प्रति भी विश्वास करते हैं कि वे हमारी कठिनाइयों को महसूस करेंगे और हमारे प्रति सहिष्णु बने रहेंगे जबतक कि उपयुक्त अवसर आता है और हम उन्हे पूर्ण सन्तुष्ट करने में समर्थ होते हैं।

दि देहली क्लॉथ एण्ड जेनरल मिल्स कंपनी, लिमिटेड, देहली।

DCM. 54—Hindi.

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० [illegible] [के० मित्र-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १० पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योति

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

रविवार, १० जून, १९४५

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका — बुभुक्षा
महायुद्ध में अपनी बीती — धरतीमाता

आधुनिक-उपन्यास

नरक — नया क़दम
आरती — त्याग का मूल्य
रूपान्तर — बहूरानी की हाट
जमींदार — देहाती समाज
अग्रणी — साथी
निष्कलंकिनी — अरक्षणीया
तीन-नगीने — पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल — लाल दूत
मशीन के पुर्जे — घर का भेदिया
झंडा डाकू — समस्या
महान् अपराधी — जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली — पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हिन्दी के निर्माता — सूर-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

प्रत्येक का मूल्य ||=) है।

वीणा-ग्रन्थि—हिन्दी के युगान्तरकारी कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो प्रख्यात पुस्तकों का यह सम्मिलित संस्करण है। ये दोनों पुस्तकें पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुकी हैं और इनके द्वारा पन्त हिन्दी के चोटी के कवि बन चुके हैं। पन्त की कला का जो रूप इन पुस्तकों में प्रकट हुआ है, वह अन्यत्र नहीं मिलता। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है और ग्रन्थि में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना-द्वारा विकसित कर एक खण्ड-काव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

[illegible] जनके जिता की [illegible] दिनचर्या कैसी थी.

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

प्रधान मुफ़्ती गिरफ़्तार क्यों हुआ?
क्या वह कलंकिनी थी—विचित्र ढंग।

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें, जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

"If it's ELGIN it's good!"

धी एलगिन मिल्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर।

सोल सेलिंग एजेन्टस् :—

मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर।

EH-21

एक बड़ी सामाजिक बुराई को किस प्रकार मिटाया जा रहा है

दो वर्ष पहले ब्लैक मार्केट का बुरा हाल था—भाव चढ़े हुए थे और धनी लोगों तक को जीवन की अनेक आवश्यकताओं से वंचित रहना पड़ता था। आख़िर सरकारी कंट्रोल जारी हुए, और जनता में भी भावों को कम कराने के लिए बड़े ज़ोर से जोश उमड़ा। इन उपायों को सफलता मिल रही है। बहुत से मुनाफ़ाख़ोर अब जेल में हैं। बहुतों का माल ज़ब्त किया जा चुका है। भाव गिर रहे हैं।

आप किस प्रकार सहयोग कर सकते हैं

किसी चीज़ के लिए बेजा दाम न दीजिए। जो दुकानदार अपनी करतूतों से बाज़ नहीं आते, उनकी रिपोर्ट थाने में कर दीजिए। मिल जुल कर काम कीजिए और मुनाफ़ाख़ोरों के हथकंडों को बेकार बना दीजिए। दूसरे लोगों से भी ऐसा ही करने को कहिए।

AAA 155 HINDI

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग द्वारा प्रकाशित

अब शान्ति हुई

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट द्वारा प्रकाशित

कलकत्ता बम्बई मद्रास करांची लखनऊ

असह्य दर्द से छुटकारा

"हर महीने होने वाली इस असह्य दर्द से छुटकारा पाने के लिये आपको हमारे अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड विथ विटामिन्स (विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन युक्त भी यह मिलता है) जैसे टॉनिक की जरूरत है। स्त्री रोगों की प्राचीनतम औषधि अशोका के साथ आधुनिकतम औषधियां व विटामिन या फिर विटामिन व हौरमोन के संमिश्रण से बना होने के कारण थोड़े समय में समस्त गड़बड़ियों को दूर कर यह ऋतु-श्रृंखला स्वाभाविक कर देता है।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड

विटामिन युक्त

विटामिन व हौरमोनयुक्त भी

स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि

आइ. एस. एस. लैबोरेटरी

लैबोरेटरी व कारखाना:

(लखनऊ)। हेड आफिस:

रौएल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

KIK

सप्ताह की सामयिक और प्रमुख घटनायें

भारत में और विदेश में कहाँ क्या हो रहा है?

ट्रूमन जो जापान पर घेरा [illegible] लिए आतुर हैं।

[illegible] की गैरहाजिरी के बाद [illegible] लार्ड वैवेल लंदन से [illegible]। कराची में समुद्री [illegible] समय अपनी मधुर [illegible] उन लोगों को निहाल [illegible] आपका स्वागत करने [illegible] और आशा यह की [illegible] आप अपने 'दिमागी [illegible] कुछ ठोस पदार्थ [illegible] आधार पर हम [illegible] उन प्रश्नोत्तरों [illegible] चाहते हैं जो [illegible] कमेटी के सदस्य और [illegible] हुए थे।

[illegible] ने पूछा था—"क्या आप [illegible] में कुछ परिवर्तन हुआ [illegible] ने युद्ध के प्रति [illegible] रुख धारण किया, उसमें [illegible]। यदि आप समझते हैं [illegible] नहीं हुआ, तो इसका [illegible] आपके मत में कांग्रेसमैनों [illegible] परिस्थिति में पुनः मंत्रिमंडल [illegible] चाहिये।"

[illegible]—"आपको कांग्रेस के १९३९ के [illegible] नहीं, बल्कि [illegible] पर [illegible] चाहिये। [illegible] जनता [illegible] ने १९४२ [illegible] प्रस्ताव [illegible] कुछ शर्तें [illegible]। पद- [illegible] शर्तें [illegible] कांग्रेस [illegible]। ये शर्तें [illegible] के अनुरूप [illegible] गांधी के [illegible] प्रतीक [illegible]

पर निर्भर करती है। यही एकमात्र शर्त है।

* * *

माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि युक्त-प्रांतीय सरकार ने कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रमुख पत्र 'पीपुल्स वार' तथा उसके हिन्दी और उर्दू संस्करणों पर जो रोक लगाई है, वह नितान्त अनुचित है।

यह रोक ठाकुर चन्द्रसिंह के लेख के कारण लगाई गई है। उक्त लेख में १९३० में पेशावर में जो घटनायें घटीं, उनका ऐतिहासिक सिंहावलोकन है। ऐतिहासिक तथ्यों को दबाने की युक्तप्रांतीय सरकार की चेष्टा बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कही जा सकती। चन्द्रसिंह तथा उनके अन्य गढ़वाली भाइयों ने पठानों को अपना ही भाई मानकर उन पर गोली चलाने से इनकार कर दिया था तथा अपने अफसरों की आज्ञा भंग करने के लिए कष्ट सहन किया था। यह ऊँचे दर्जे की वीरता थी। अपने पठान भाइयों के लिये उन्होंने जिस प्रकार कष्ट सहन किये, उस पर सारे राष्ट्र को गर्व है। यह बात उल्लेखनीय है कि रोक सीमाप्रांतीय सरकार ने नहीं, बल्कि युक्तप्रांतीय सरकार ने लगाई है। मुझे यकीन है कि सरकार ने उक्त पत्र पर रोक लगाकर अन्याय किया है। इसका फल यही होगा कि बहुसंख्यक लोग, पेशावर में गढ़वालियों ने जो शानदार कुरबानियाँ की हैं उनकी गाथा से अपनी ज्ञानवृद्धि करेंगे।

* * *

पोलैण्ड के प्रश्न पर रूसी परराष्ट्र मंत्री श्री मोलोटोव से वार्ता भंग हो गई थी। उसके बाद से अमेरिकन मंत्री श्री स्टेटिसन ने रूस के प्रति कुछ नरम रुख अख्तयार किया है। ख्याल किया जाता है कि अँग्रेज मंत्री श्री स्टेटिसन के संकेत पर श्री स्टेटिनस ने जो कड़ा रुख रूस के प्रति धारण किया था वह उचित नहीं था। इस संबंध में अमेरिकन आलोचक श्री ड्रियु पियर्सन ने लिखा है कि अमेरिकन दूत श्री डेविस अँग्रेज प्रधान मंत्री श्री चर्चिल से यह कहेंगे कि वे रूस को सूई चुभोना बन्द करें। अमेरिकन व्हाइट-हाउस के सलाहकारों का ख्याल है कि श्री चर्चिल अमेरिका और रूस के बीच सन्देह उत्पन्न करके प्रसन्न होते हैं, पर अमेरिका इसे पसन्द नहीं करता।

इस विषय में एक और नवीनतम समाचार मिला है। वह यह कि रूस ने सानफ्रान्सिस्को सम्मेलन के अपने प्रधान प्रतिनिधि मोशियो सोबोलोव को वापस बुला लिया है। उनकी वापसी का आदेश ठीक उस समय प्राप्त हुआ है जब कि मास्को ने याल्टा के प्रस्ताव की उस परिभाषा को अस्वीकृत कर दिया था जिसका मजमून पाच बड़ों की बैठक में तैयार किया गया था। रूसी प्रतिनिधि के वापस चले जाने से फ्रिस्को-सम्मेलन के महत्त्व को काफी चोट पहुँची है।

* * *

"फ्रांस न केवल सीरिया और लेबनान के सम्बन्ध में ही बल्कि समूचे पूर्वी अरब-संसार के सम्बन्ध में समझौते के लिए वार्तायें चलाने को तैयार है" यह घोषणा जनरल डि-गाले ने पत्र-प्रतिनिधियों के सम्मेलन में की है। अपनी इस घोषणा में जनरल डि-गाले ने लेवान्ट में फ्रेंच-विरोधी आन्दोलन शुरू करने के लिए बहुतेरे ब्रिटिश एजेंटों तथा ब्रिटिश शस्त्रों की सहायता से फ्रेंच चौकियों पर हमला करने के लिए सीरियन पुलिस को दोषी बताया है। जनरल डि-गाले ने ब्रिटेन पर आरोप लगाया कि लेवान्ट में ६ लाख ब्रिटिश सेना रक्खी गई है, जब कि फ्रेंच लोग अपनी सेनाएँ पश्चिमी रेगिस्तान की तरफ हटा ले गये हैं और उस क्षेत्र में सिर्फ लगभग ५,००० फ्रेंच सैनिक रह गये हैं।

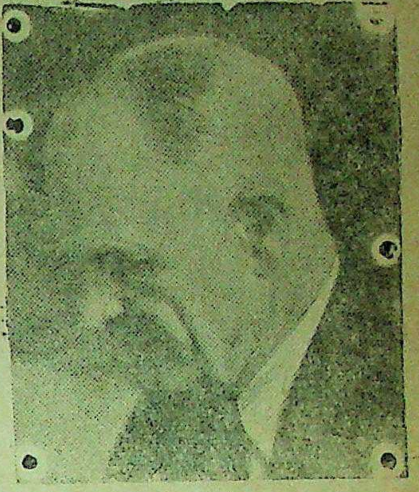

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल भारत आ गये और राजनैतिक नेताओं से मिलने की योजना बना रहे हैं।

इस सम्बन्ध में एक बात और विशेष रूप से उल्लेखनीय हुई है। वह यह कि रूस ने माँग की है कि सीरिया के झगड़े को तय करने में रूस और चीन को भी शामिल किया जाये। रूस ने इस बात को गलत बताया है कि अरब संसार पश्चिमी राष्ट्रों—विशेषकर ब्रिटेन—की घरेलू क्षेत्र की चीज नहीं है। अतः उसके झगड़ों को तय करने में रूस और चीन को भी स्थान दिया जाये। इस माँग से खूब सनसनी फैली है।

* * *

वायसराय लार्ड वैवेल सपत्नीक, दस सप्ताह की गैरहाजिरी के बाद, लंदन से भारत फिर लौट आये हैं। आप बहुत ही अच्छे और स्वस्थ दिखते थे। समुद्री वायुयान से उतरते हुए आप मुस्कराये। कुछ प्रतिष्ठित अधिकारियों ने आपका स्वागत किया। लार्ड वैवेल के साथ उनके सेक्रेटरी सर इवान जेंकिन्स, रिफार्म कमिश्नर राव बहादुर मेनन आदि थे। उनका वायुयान ४ जून की रात को ८। बजे कराची पहुँचा। सिंध के गवर्नर और जनरल रिचर्डसन ने वायसराय का स्वागत किया। अनुमान किया जाता है कि इस बार आप खाली हाथ नहीं लौट रहे हैं। वायसराय की कार्यकारिणी कौंसिल में नये सदस्यों की नियुक्ति, प्रान्तों में धारा ९३ के अन्तर्गत गवर्नरी शासन का अन्त और राजनीतिक कैदियों की रिहाई की आशा की जाती है।

सेनफ्रांसिस्को सम्मेलन में भारत की ओर से भाग लेनेवाले भारतीय प्रतिनिधि (बायें से दाहने) सर वी० टी० कृष्णाचारी, सर ए० रामस्वामी मुदालियर और सर फिरोज खां नून'

सम्पादक का पृष्ठ

सीरिया और लेबनान

सीरिया और लेबनान की जो समस्या पिछले दिनों बड़ी उग्र रूप धारण करती जा रही थी, प्रसन्नता की बात है कि अब वहाँ शान्ति स्थापित हो रही है और ब्रिटिश हस्तक्षेप के कारण रक्तपात फिलहाल रुक-सा गया है। किन्तु क्या इन दोनों मुस्लिम प्रदेशों में वास्तविक शांति की स्थापना हो गई है और भविष्य में भी रहेगी, इस पर अभी से कुछ नहीं कहा जा सकता। फ्रांस यद्यपि जर्मनी-द्वारा कुचला जा चुका है किन्तु उससे मुक्ति पाते ही उसमें फिर साम्राज्यवादी प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई और इसीलिए वह सीरिया और लेबनान की स्वाधीनता के लिए बाधक बन बैठा। फ्रांस की यह मनोवृत्ति साम्राज्यवादी राष्ट्रों की उस लड़ाकू प्रवृत्ति का ताजा नमूना है जो युद्ध के बाद योरोप में शांति स्थापना की डोंडी पीट रहे हैं। किन्तु ब्रिटेन तो बड़ा ही बुद्धिमान है, वह अवसर से कब चूकने वाला? उसे मालूम है कि इस समय फ्रांस पर रूस का जादू चल रहा है इसलिये उसे प्रजातन्त्र की रक्षा के नाम पर सीरिया और लेबनान का पक्ष लेना और फ्रांस की उदंडता के विरोध में सक्रिय होने के लिये बाध्य होना पड़ा है। बात तो सही जान पड़ती है किन्तु हैं दोनों साम्राज्यवादी राष्ट्र। फ्रांस हो या ब्रिटेन या अन्य कोई साम्राज्यवादी राष्ट्र हो, किसी भी प्रजातन्त्र राष्ट्र का वह कितना भला कर सकते हैं, इसका रहस्य प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का ज्ञाता भलीभाँति समझता है।

वास्तव में बात यह है कि पूर्व प्रदेशों में ब्रिटेन की पैंतरेबाजी नहीं चल पा रही है। इसीलिये उसे इस अवसर पर श्वेत जाति का विरोध और काली जाति का समर्थन करना पड़ा है। ब्रिटेन जब स्वयं अपने उपनिवेशों को पराधीन बनाये हुए है तब उससे यह आशा करना कि सीरिया और लेबनान की स्वाधीनता की रक्षा के लिये वह हस्तक्षेप कर रहा है, यह धारणा विवादग्रस्त है। वह बिना स्वार्थ के कदम बढ़ानेवाला नहीं है। फ्रांस के नये नेता जनरल डिगाल, जो पहले ब्रिटेन के भरकम सहयोगियों में समझे जाते थे, स्वार्थ सिद्धि के लिये जूझने को तैयार हो गये। ब्रिटेन को भी अपने स्वार्थ के सामने जनरल डिगाल को छोड़ना पड़ा। जनरल डिगाल के इस कथन में कि सीरिया और लेबनान ही क्यों मिस्र, अरब आदि सभी राष्ट्रों के सम्बन्ध में एक अन्तर्राष्ट्रीय पंचायत द्वारा फैसला होना चाहिए, तथ्य जान पड़ता है। फिर भी फ्रांस की नीति अन्यायपूर्ण तो रही ही; इसलिये हमें रक्तपात रुक जाने पर तो प्रसन्नता अवश्य है और इसका श्रेय ब्रिटेन को प्राप्त है किन्तु साम्राज्यवादियों के शासन के अन्तर्गत जितने भी राष्ट्र हैं, उनकी स्वाधीनता के संबन्ध में सभी साम्राज्यवादी एक से हैं। जैसा फ्रांस वैसा ही ब्रिटेन। क्योंकि सभी साम्राज्यवादी अपना स्वार्थ पहले देखते हैं। सीरिया और लेबनान भी इन्हीं स्वार्थों के वातावरण में चक्कर काट रहा है।

* * *

वाइसराय लार्ड वेवेल आ गये

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल इँगलैंड से भारत आ गये। भारत में काफी अर्से से यह आशा की जा रही है कि वह अपने साथ कुछ ला रहे हैं और आते ही भारतीय राजनैतिक अड़ंगा किसी न किसी रूप में हल करेंगे। यह प्रसन्नता की बात है कि वाइसराय महोदय ने आते ही जादूगर का सा खेल प्रारम्भ कर दिया है। वह राजनैतिक समस्या हल अवश्य करेंगे किन्तु पहले श्री भूलाभाई देसाई, मौलाना लियाकत अली खाँ तथा वीर सावरकर से भेंट करेंगे। यदि वार्ता से कुछ फल निकला तब वह इस सम्बन्ध में अंतिम निर्णय देंगे। नेताओं के मिलने के बाद ही यह भी निश्चय होगा कि राजनैतिक कैदी छोड़े जायें या नहीं? नाटक तो बड़ा सुंदर होने जा रहा है। यदि कांग्रेस, मुसलिम लीग तथा हिन्दू महासभा के अभिनेताओं ने सुन्दर अभिनय किया साथ ही एकता का कोई मार्ग निकला तो अवश्य ही लार्ड वेवेल कुछ न कुछ आशापूर्ण निर्णय देंगे। हाँ, यदि कुछ गड़बड़ी हुई तो फिर जैसी स्थिति आज है वह ज्यों की त्यों बनी रहे तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

असल बात यह है कि ब्रिटिश सरकार चाहती है कि कुछ समय के लिये प्रांतों का शासन संयुक्त मंत्रिमंडलों के आधीन कर दिया जाये। जिस प्रकार कांग्रेस मंत्रिमंडलों की स्थापना करके दो वर्ष तक तमाशा देखा गया उसी प्रकार दो तीन वर्ष तक एक नया तमाशा खड़ा किया जाये। केन्द्रिय सरकार तथा वायसराय की कार्यकारिणी में भी भारतीय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधित्व के अनुसार परिवर्तन किया जाये। लार्ड वैवेल का विचार तो उत्तम है और हमारी राय में प्रांतों में संयुक्त मंत्रिमंडलों की स्थापना से ब्रिटिश सरकार घाटे में नहीं रहेगी किन्तु क्या भारत की पराधीनता दूर होने का मार्ग यही है? क्या वास्तव में प्रजातंत्र तथा स्वराज की स्थापना का प्रारम्भ इसी प्रकार की नीति से होगा? महात्मा गांधी ने तो इस संबन्ध में अपनी राय स्पष्ट कर दी है। वह भारतीय स्वाधीनता का वायदा करा लेना चाहते हैं साथ ही वह यह भी चाहते हैं कि मंत्रि-मंडलों के संबन्ध में कांग्रेस ही अंतिम फैसला कर सकती है। इसका अर्थ यह है कि सबसे पहले राजनैतिक कैदियों की मुक्ति होनी चाहिए। हम कह नहीं सकते कि लार्ड वैवेल की राजनीति क्या है और वह कहाँ तक राजनैतिक अड़ंगा दूर करने के लिये तैयार हैं किन्तु यह सही है कि जो नाटक होनेवाला है यदि वह सफलतापूर्वक अभिनीत न हुआ और भारतीय राजनैतिक दलों में एकता स्थापित न हुई तो भविष्य और भी अधिक अंधकारपूर्ण हो जाये तो आश्चर्य नहीं।

* * *

पंजाब के सार्वजनिक स्वास्थ्य-विभाग के हाल के पर्यावलोकन से यह पता चलता है कि संसार के सभी उन्नत देशों में मनुष्य के जीवन-काल की आशा जिस हद तक की जाती है वह ब्रिटिश भारत के आंकड़ों की तुलना में बहुत अधिक है। इस पर्यावलोकन के अनुसार एक भारतीय की औसत आयु २६ वर्ष है। हालैण्ड में औसत आयु २६ है, न्यूजीलैण्ड में ६५, और आस्ट्रेलिया में ६३ है। इँगलैण्ड और वेल्स में औसत आयु ५८ वर्ष है और स्काटलै
६७ वर्ष है। प्राच्य देशों में
प्रत्येक व्यक्ति की औसत आयु
भारत की तुलना में ड्योढ़ी है।

अभी तैयारी कीजिये

हिन्दुस्तान के शिक्षित वर्ग में यह ख्याल अभी पैदा हुआ है कि स्त्रियों को भी व्यापारी काम सीखना चाहिए। यह ठीक है कि स्त्रियाँ पढ़ाने, चिकित्सा करने, तीमारदारी आदि कामों में बरसों से हिस्सा ले रही हैं, किन्तु अभी तक हिन्दुस्तान की महिलाओं ने इनके अतिरिक्त किसी और किस्म के रोज़गार की ओर ध्यान नहीं दिया था। अब हिन्दुस्थान की स्थिति तेज़ी से बदल रही है। हिन्दुस्तान व्यवसाय वाणिज्य में बराबर उन्नति कर रहा है और इस प्रकार स्त्रियों को वह अवसर मिल रहा है जिसकी इन्हें आवश्यकता है। यह बिलकुल निश्चित है कि शान्ति स्थापित हो जाने पर ग़ैर फ़ौजी नौकरियों के लिये अच्छी ट्रेनिंग पाये हुए बहुत से लोगों (स्त्री-पुरुषों) की आवश्यकता होगी। डबल्यू० आर० आई० एन० एस० हिन्दुस्तान की स्त्रियों को लड़ाई के इस महत्वपूर्ण समय में अपने देश की सेवा करने का अपूर्व एवम् बहुमूल्य अवसर प्रदान करती है। यही नहीं, इससे अधिक भी! इसमें कोई सन्देह नहीं कि डबल्यू० आर० आई० एन० एस० की ट्रेनिंग और नये नये तथा मनोरंजक कामों के द्वारा प्राप्त किया गया बहुमूल्य अनुभव बहुत सी महिलाओं में वह आवश्यक योग्यता उत्पन्न कर देगा जो नागरिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक होती है।

पूरे विवरण के लिए किसी भरती दफ़्तर, या निकटवर्ती डबल्यू० आर० आई० एन० एस० यूनिट कमाण्डर या किसी बन्दरगाह के नेवल आफिसर इन्चार्ज के पास आवेदन कीजिए।

वमेन्स रायल
इंडियन
नेवल सर्विस
WRINS

वमेन्स आग्ज़ीलरी कोर इंडिया

में भरती हो जाइए

AAA 15

प्रधान मुफ़्ती गिरफ़्तार क्यों हुआ ?

अरबों के नेता का घटनापूर्ण मनोरंजक जीवन

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

> एक-दो नहीं बरन अनेक बार पुलिस तथा ब्रिटेन की आँखों में धूल झोंककर ठीक अवसर पर, अप्रत्याशित रूप से, अन्तर्धान होकर निकल भागने वाले अरबों के दुस्साहसी नेता, पैलेस्टाइन के प्रधान मुफ़्ती, के रोमांचकारी जीवन का चित्रण प्रस्तुत लेख में किया गया है।

में इन्होंने कुछ विशेष शिक्षा ग्रहण नहीं की।

अरब राष्ट्रवादी जनता की राजनैतिक माँग की विवेचना के लिए ब्रिटिश सरकार ने सन् १९२१ में एक सर्वोच्च मुस्लिम परिषद् की स्थापना की थी। उसके सभापति को सरकार-द्वारा वेतन भी मिलता था। सन १९२३ में यह उस परिषद् के भी सभापति निर्वाचित किये गये इस प्रकार अरब-जनता के धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में अग्रणीय थे। इन दोनों पदों के कारण पैलेस्टाइन की वकफ़ सम्पत्ति की आय का वितरण भी इन्हीं के हाथ में था। धर्मभीरु मुसलमान दातव्य स्कूल तथा अन्य कार्यों के लिए स्थावर सम्पत्ति का दान कर दिया करते हैं जिसकी आय से इन संस्थाओं का खर्च चलता है। पैलेस्टाइन की वकफ़ सम्पत्ति की आय प्रत्येक वर्ष आठ लाख रुपये पड़ती थी परन्तु उनका प्रयोग दाताओं की इच्छानुसार न करके मुफ्ती अरब क्रांति को आर्थिक सहायता प्रदान किया करते थे—यह बात उनके शत्रु कहते हुए भयभीत नहीं होते। मुसलमानों के धार्मिक न्यायालय के निरीक्षण का भार भी मुफ़्ती के हाथ में था और इस प्रकार मुल्लाओं की नियुक्ति में काफ़ी हाथ था। पैलेस्टाइन में यह वह समय था जब ब्रिटिश सरकार ने अरबों को प्रथम यूरोपीय युद्ध में स्वाधीनता का वचन देकर भी विजय प्राप्ति के बाद उसका पालन नहीं किया था। पैलेस्टाइन स्वाधीन होना तो दूर रहा ब्रिटिश सरकार ने यहूदियों को दिये हुए एक अन्य वचन के अनुसार पैलेस्टाइन को यहूदियों की राष्ट्रीय भूमि बनाना आरम्भ कर दिया। तत्कालीन राष्ट्रसंघ ने भी ब्रिटेन को पैलेस्टाइन पर अस्थायी रूप से शासन का आदेशपत्र दे दिया। संसार के कोने-कोने से यहूदी पैलेस्टाइन में पदार्पण करने लगे जिससे अरब-जनता क्षुब्ध हो उठी और उनके प्रवेश के विरुद्ध और अपनी पूर्ण स्वाधीनता प्राप्ति के लिए आन्दोलन आरम्भ कर दिया अरब परम्परा से हिंसा के पक्षपाती हैं अतएव यहूदियों की जिस उपाय से भी हानि हो सके उसका अवलम्बन करने से नहीं हिचकते। समय-समय पर पैलेस्टाइन में अरब और यहूदियों के परस्पर जो दंगे होते रहे हैं उनमें यहूदियों के जान-माल की काफी क्षति हुई है। इस कार्य में मुफ़्ती ने अरबों का नेतृत्व किया। यद्यपि अरबों की नर्म तथा गर्म पालिसी के छः राजनैतिक दल हैं फिर भी मुफ़्ती का 'पैलेस्टाइन अरब दल' सबसे अधिक प्रभावशाली है। कई वर्षों तक इन छः दलों में काफी संघर्ष रहा परन्तु सन् १९३६ में इन दलों में समझौता हो गया और एक संयुक्त कार्यकारिणी समिति का निर्वाचन अरब उच्च समिति के नाम से हुआ और सन् १९३७ में मुफ़्ती उसके प्रधान निर्वाचित हुए. पैलेस्टाइन में जो सन् १९३६ में अरब यहूदी दंगे हुए थे उसकी तह में मुफ़्ती का ही आन्दोलन ब्रिटिश सरकार ने देखा। अतएव अरब उच्च समिति को अवैध घोषित किया गया। उसके सदस्यों को गिरफ़्तार करके निर्वासित कर दिया गया। जुलाई सन् १९३७ में स्वयं मुफ़्ती तो यरूशलम के मुसलमानों के पवित्र मन्दिर में जाकर अपने सुदानी अंगरक्षक के साथ छिप रहे। यदि ब्रिटिश पुलिस मन्दिर में जाकर मुफ़्ती को पकड़ने की चेष्टा करती तो भीषण दंगा हो जाने की संभावना थी। इसलिए उनकी निगरानी करने के लिए ब्रिटिश पुलिस तैनात कर दी गई। परन्तु फिर भी १६ अक्तूबर सन् १९३७ को एक फ़कीर के भेष में पुलिस की आँखों में धूल झोंककर यह अन्तर्धान हो गये।

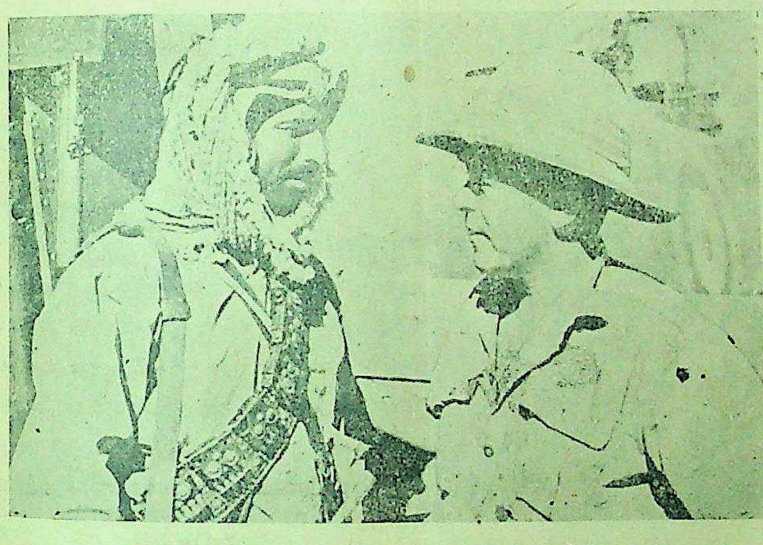

अरब में एक अरबी और अँग्रेज सैनिक से वार्ता

बाद के समाचारों से पता लगा कि वह सीरिया में हैं। तत्पश्चात् अप्रैल सन् १९४१ में ईरान में जो जर्मन पक्षपाती रशीदअली-जैसे मन्त्रियों ने शासन-सूत्र अपने अधिकार में कर लिया था उस षड्यन्त्र में भी अँगरेज़ों को मुफ़्ती का कुछ सहयोग मालूम होता था। ईराक से यह ईरान आये और वहाँ से इटली होते हुए जर्मनी पहुँचे। दिसम्बर १९४१ से मई सन् १९४५ तक यह जर्मनी में ही रहे और हिटलर से भेंट भी की थी परन्तु यह परम सन्तोष की बात है कि पैलेस्टाइन के अरब मुफ़्ती के प्रति आदर-भाव रखते हुए भी प्रस्तुत युद्ध में मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध और जर्मनी के पक्ष में उन्होंने कुछ विशेष भाग नहीं लिया।

इस समय मुफ़्ती का सितारा डूब रहा है। स्विट्ज़रलैंड में वह बन्दी है और आशा है कि जब मित्रराष्ट्र स्विटजरलैंड पर प्रभाव डालेंगे तो मुफ़्ती को वह हस्तान्तरित कर देंगे। उस समय मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध मुफ़्ती ने क्या-क्या गर्हित कार्य किये हैं वह प्रकाश में आयेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राणदण्ड नहीं तो इन्हें एक लम्बे काल के लिए कारावास का दण्ड मिले। युद्धकाल में पैलेस्टाइन का जो सैनिक महत्त्व है, युद्धोत्तरकाल में भी विश्वसुरक्षा की दृष्टि से ज्यों का त्यों बना रहेगा। ऐसी अवस्था में मुफ़्ती को अरब जनता का नेतृत्व ग्रहण करने देना ब्रिटेन बहुत ही खतरनाक समझेगा। अतएव विचार करने से हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि अब मुफ़्ती के राजनैतिक जीवन का प्रायः अन्त-सा हो गया है, और पैलेस्टाइन के अरबों को अपने लिए अब एक अन्य नेता की खोज करनी चाहिए।

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

मातृमण्डल

स्त्रियों की परिस्थिति में सुधार कैसे हो ?

आर्थिक तथा ललितकला की उन्नति जरूरी है

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०, 'साहित्य-रत्न'

विजयलक्ष्मी पंडित सानफ्रांसिस्को में स्वतंत्र भारत की आवाज़ ऊँची करने में आपने अद्भुत का परिचय दिया है।

प्रायः दो हजार वर्ष पूर्व मीडिया नामक पाश्चात्य विदुषी तथा दार्शनिक ने आश्चर्य तथा दुःख प्रकट करते हुए लिखा था 'कितने दुख की बात है कि समस्त बौद्धिक जीवों में स्त्रियाँ ही सबसे अधिक दुखी तथा असहायावस्था में हैं।' वास्तव में यह कथन सत्यतापूर्ण है। भारतवर्ष में स्त्रियों-सम्बन्धी यह कथन और भी घटित होता है। भारतीय महिलाओं की तुलना जब अमेरिका, इँगलैंड, चीन तथा जापान में रहनेवाली स्त्रियों से की जाती है तो विषमता प्रत्यक्ष हो जाती है। हमारे देश की नारियों की अवनति में पर्दा, बाल-विवाह, अशिक्षा, विधवा विवाह का अभाव तथा अन्य सामाजिक कुरीतियाँ विशेष रूप से सहायक हैं। पाश्चात्य देशों में स्त्रियों की जो कुछ उन्नति हो सकी है वह इन सब दोषों के त्याग के कारण। घर की दीवालों के भीतर सम्मानित राजबन्दियों का-सा जीवन व्यतीत करती हुई हमारी माँ-बहनें अपना स्वास्थ्य नष्ट कर डालती हैं फिर भी उनकी औषधि तथा उपचार का कोई विशेष प्रबन्ध नहीं।

भारतवर्ष में नारियों की यह दुर्दशा सदैव से नहीं रही है। पूर्वकाल का इतिहास इस बात का द्योतक है कि हमारे यहाँ बाल-विवाह नहीं होते थे। स्त्रियों को विवाह-सम्बन्धी स्वतंत्रता थी। विवाह में लड़कियों की अनुमति अपेक्षित थी और स्वयंवर-प्रथा इसका सबसे प्रधान उदाहरण है। दहेज में प्राप्त धन तथा उपहार पर विवाहिता का पूर्ण अधिकार रहता था, पर आज वह वरपक्ष की बपौती-सी समझी जाती है। निःसन्तान विधवाओं को विवाह कर लेने की आज्ञा थी। स्त्रियों को शिक्षा भी दी जाती थी। गार्गी तथा मैत्रेयी-जैसी विदुषी इसकी प्रमाण हैं। पर्दा आज की तरह इतना प्रबल नहीं था। स्त्रियाँ सभाओं में वाद-विवाद भी करती थीं। ह्वेनसांग (६००-६६४ सन्) ने अपनी भारत-यात्रा में उल्लेख किया है कि जब वह सम्राट् हर्ष के दरबार में महायान सिद्धान्त पर भाषण देने गया था तो उस समय सम्राट् की विधवा बहन ने भी वाद-विवाद में भाग लिया था।

परन्तु यवन आक्रमणों ने स्त्रियों की स्वतन्त्रता के मूल में कुठाराघात किया। अलबेरूनी की भारत-यात्रा के समय (सन् १०१७-१०३० तक बाल-विवाह का चलन हो चुका था। इस समय तक स्वयंवर की प्रथा थोड़ी-बहुत उठ चुकी थी और विधवा-विवाह की प्रथा उठ ही गई थी।

सीता और सावित्री के उच्च नारीत्व के दृष्टान्त आज भी हमारे यहाँ उदाहरणस्वरूप दिये जाते हैं, परन्तु इस प्रकार के दृष्टान्त देनेवाले समय के परिवर्तन की ओर लेशमात्र भी ध्यान नहीं देते। हमारी देवियों का व्यक्तित्व पराधीनता के आश्रित है। पुत्री, वधू, माता और वैधव्य सभी दशाओं में वे पराधीन ही बनी रहती हैं। कानून ने उनके सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकार अत्यन्त सीमित कर रक्खे हैं। उनकी शिक्षा के लिए कोई विशेष प्रबन्ध नहीं होता। निरन्तर सन्तान-उत्पत्ति तथा गृहस्थी में मजदूरों का-सा जीवन व्यतीत करती हुई वह जीवन के दिवस पूरे किया करती हैं। सीता और सावित्री के उच्च आदर्शों को उदाहरणस्वरूप रखनेवाले अधिक मनुष्य ही होते हैं परन्तु उन्हें यह बात ज्ञात नहीं है कि इन सभी प्रतिकूल परिस्थितियों और कठिनाइयों में सभी सीता और सावित्री कैसे बन सकती हैं? यदि उन्हें स्वतन्त्रता दी जाय और शिक्षा का समुचित प्रबन्ध किया जाय तो निश्चय ही वह मनुष्यों से अधिक उन्नति कर सकती हैं। दुःख की बात है कि ब्राह्मणों में स्त्रियों की दशा और भी शोचनीय है। खाना बनाने और गृहस्थी में कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहकर वह अपने जीवन के भारस्वरूप दिन पूरा करती हैं परन्तु दहेज की लालच में उनके घर के मनुष्य, पाखण्ड की मूर्ति भी, इस विषय पर लेशमात्र ध्यान नहीं देते।

भारतीय महिला-समाज की दशा सुधारना महत्त्वपूर्ण है। दुःख है कि नारियाँ स्वयं अपने अधिकारों को भूली बैठी हैं। महिला-समाज की उन्नति के लिए सबसे आवश्यक साधन है उनकी आर्थिक दशा का सुधार। जब तक हमारी देवियाँ स्वयं इस योग्य नहीं हो जायँगी कि कुछ उपार्जन कर सकें तब तक उन्हें पुरुष का सहारा सदैव अपेक्षित ही रहेगा। अधिक अवलम्बन खोजने से शक्तिहीन हो जाना स्वाभाविक ही है। अतः यदि अधिक सहारा न खोजकर योग्य बन जायँ कि अपने गुणों अपनी जीविका कमा लें तो उन में महान् परिवर्तन उपस्थित हो पुरुषों को इस बात का ज्ञान रहता स्त्रियाँ उन्हीं के आश्रित हैं प्रकार रक्खी जायँगी रहेंगी ही निश्चय उन्हें अत्याचार की ओर पूर्वक पथ खोल देता है। स्त्रि आर्थिक उन्नति के लिए न केवल नौकरी ही करनी चाहिए वरन् ललितकलाओं का भी अध्ययन करना चाहिए। आर्थि सुधार के लिए यह आवश्यक है शिक्षा का भी प्रबन्ध हो।

हजामत (शेविंग) के लिये भी 'गोदरेज' साबुनका व्यवहार कीजिये!

सावधानी से बनाने की विधि, प्राकृतिक औषधियों का मिश्रण और परीक्षि वनस्पति तेल का उपयोग ही अन्य गोदरेज नहाने के साबुन की तरह ही गोदरेज शेविंग सोप की भी विशेषतायें इसमें उपयोग किये गये वनस्पति तेल के फेन से आपके चर्म पर किसी भी तरह की जलन नहीं होगी। इसमें दो फायदे हैं—एक तो यह कड़ी से कड़ी दाढ़ी को मुलायम कर देता है जिससे हजामत बनाने में जरा भी होता और दूसरा अत्यन्त कोमल चर्म को भी हजामत बनाने के बाद मुलायम और चिकना रखता है। की यह खास विशेषता है कि यह चेहरे पर जल्दी नहीं सूखता जिससे समय की बचत होती है। आप जिस गोदरेज वनस्पति टायलेट साबुनों का उपयोग कर अपने शरीर को स्वस्थ और स्वच्छ रखते हैं उसी शेविंग साबुन—स्टिक या 'राउन्ड'—का उपयोग कर अपने चेहरे की सुन्दरता को बढ़ाइये।

गोदरेज
टायलेट साबुन
नं० १ । नं० २
'वतनी' । सन्डल
लिमडा (नीम) फैमिली
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'

१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गारन्टी।

गोदरेज सोप्स लि० — बम्बई

गोदरेज के चाबी छाप नहाने के साबुनों के प्रति टिकिया उचित दाम

नं० १	॥-)	सण्डल	।-)॥	टर्किश बाथ	≡)
नं० २	।=)॥	लिमडा	।-)॥	शेविंग स्टिक (तीन)	॥-)॥
'वतनी'	।)॥	खस	।-)॥	शेविंग स्टिक (रीफिल)	।≡)॥
'वतनी' (छोटी टिकिया)	-)।	फैमिली	=)॥	शेविंग 'राउण्ड'	)॥

जिन शहरों में कस्टम, चुङ्गी या टरमिनल टैक्स देना पड़ता है वहाँ कुछ **अधिक** दाम देना पड़ेगा।

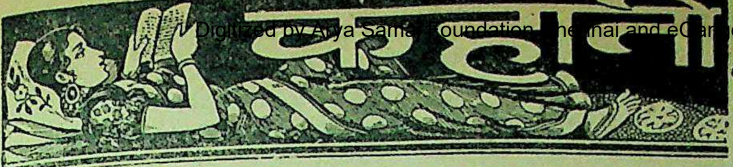

विचित्र ठग

लेखक, श्री विजयकुमार मिश्र

> बुद्धि की विलक्षणता के कारण संसार के बड़े-बड़े नगरों में अच्छा खासा व्यवसाय होता है। बुद्धि की विचित्रता से लोग प्रतिदिन हजारों की आय करते हैं। इस कहानी में एक व्यक्ति की बुद्धि की विचित्रता प्रगट की गई है। वह व्यक्ति ठग तो नहीं था किंतु अपनी बुद्धि से ऐसे विधान रचता था कि लोगों को चकित रह जाना पड़ता था। कहानी मनोरंजक और पठनीय है।

[illegible] रखने के लिए सेक्रेटरी और [illegible]

[illegible] गोड़ पर सेठ अम्बा-[illegible] की जवाहिरातों तथा [illegible] वृहद् दूकान थी। सेठ [illegible] अपनी ईमानदारी, सच्चाई, [illegible] वाक्पटुता से नल बाजार [illegible] कोने में स्थित अपनी [illegible] को बढ़ाकर उसे वर्त्तमान [illegible] था, जिसका किराया ही [illegible] एक हजार रुपया मासिक [illegible] के लम्बे लम्बे शो केसों में [illegible] आभूषण तथा [illegible] की दृष्टि बलात् [illegible] कर लिया करते थे। [illegible] रखवालों, चपरासियों [illegible] सेल्समैनों तथा अन्य [illegible] उनके स्थिति-गौरव [illegible] था। दूकान [illegible] अम्बाशंकर के [illegible]

[illegible] बैठे-बैठे एक दिन [illegible] की दीवाल में बने [illegible] से झाँककर देखा कि [illegible] उनकी दूकान के सामने [illegible] गौर वर्ण का एक सुन्दर [illegible] पहिने और पाइप का धुआँ [illegible] पार करके दूकान में [illegible]। उसके सुन्दर व्यक्तित्व [illegible] से प्रभावित होकर सेठ [illegible] उसकी अभ्यर्थना के लिए [illegible]। वेषभूषा तथा रंग-ढंग [illegible] तथा समृद्ध व्यक्ति [illegible]। आगन्तुक ने अपना [illegible] के महाराजा के प्राइवेट [illegible] में दिया। सेठ अम्बाशंकर [illegible] हुआ कि कुछ दिन पूर्व [illegible] जन्मभूमि में पढ़ा था कि [illegible] महाराज उन दिनों [illegible]। आगन्तुक ने बताया [illegible] विवाह उसी मास के अन्त [illegible] राज्य की सुन्दरी राजकन्या [illegible] और अपनी पत्नी को [illegible] उपहार देने के लिये महा-[illegible] की तलाश में हैं।

[illegible] महाराज पसन्द करेंगे?' [illegible] की, 'हीरा, मोती, [illegible]...!'

[illegible] आगन्तुक ने उत्तर दिया, [illegible] निर्दोष और शुभ्र [illegible]। प्रेम के सम्मुख महाराज [illegible] करें, [illegible] होता है', सेठ अम्बा-[illegible] कहा। पैंतालिस [illegible] और सामन्तों का अध्य-[illegible]

सेठ जी ने एक विशेष सेफ खोला। इस सेफ में कुछ ऐसे रत्न थे, जिनका मूल्य हजारों में आँका ही नहीं जा सकता था। इसी लिए वे प्रदर्शन के लिए शो केसों में नहीं रखे जाते थे, बल्कि बड़ी हिफाजत से उन्हें इस सेफ में रखा जाता था। केवल अत्यन्त सम्मानित ग्राहक ही उन्हें देख पाते थे! इसी सेफ से कुछ अत्यन्त बहुमूल्य हीरे निकालकर सेठ अम्बाशंकर ने एक चमकीली वार्निशदार मेज पर पड़े हुए मखमल के चौकोर टुकड़े पर फैला दिये। बिजली के तीव्र प्रकाश में इन जाज्वल्यमान रत्नों की शुभ्र दीप्ति से सम्पूर्ण कमरा ही नहीं आलोकित हो उठा, आगन्तुक ग्राहक के नेत्र भी चौंधिया उठे।

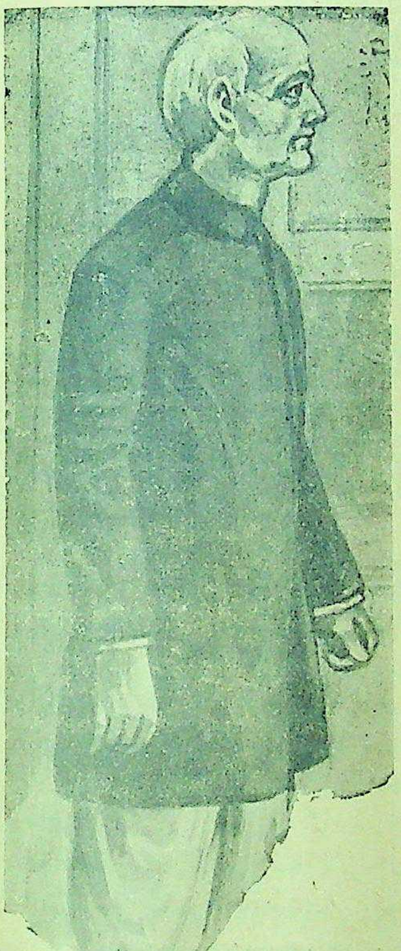

सेठ अम्बाशंकर हीरे की खोज में।

उदयगंज के महाराज के सेक्रेटरी ने अनेक रत्नों को देखा, जाँचा, परखा और अन्त में एक रत्न उठा लिया। उस राशि में यह हीरा सर्वोत्कृष्ट था। वह बहुत बड़ा न था, फिर भी दीप्ति तथा शुभ्रता में कोई उसकी तुलना में न बैठता था।

'महाराज इसी को पसंद करेंगे', उसने इस बेपरवाही से कहा मानो सेफ्टीरेजर के ब्लेड खरीद रहा हो। सेठ अम्बाशंकर ने मुस्कुराकर उसका अनुमोदन किया। पूछने पर उन्होंने उसका मूल्य पचीस हजार रुपया बताया।

'मूल्य की कोई परवा नहीं सेठ जी', आगन्तुक ने कहा, प्रश्न केवल यही है कि महाराज इसे पसंद कर लें। इस हीरे को उन्हें दिखाना होगा। क्या आप इसे होटल तक भेज देंगे?'

सेठ अम्बाशंकर का माथा ठनका। गत पैंतालीस वर्षों से वे यही व्यवसाय कर रहे थे और इस अवधि में उन्हें अनेक बार अनेक प्रकार के ठग, शरीफ, शिक्षित तथा धन-सम्पन्न से साबिका पड़ चुका था। इतने मूल्यवान् रत्न को वे इस प्रकार एक अपरिचित के हवाले करने की मूर्खता कैसे कर सकते थे?

अत्यन्त नम्रतापूर्वक सेठ जी ने कहा, जी ठीक है, किन्तु उचित जमानत अथवा परिचय पाये बिना हम इतने मूल्यवान् रत्न को इस प्रकार कैसे...।

'ओह मैं भूल ही गया था,' आगन्तुक चौंककर बोला, 'मुझे सबसे पहले यह दिखाना चाहिए था।' यह कहकर उसने सेठ अम्बाशंकर के हाथ में एक पत्र रख दिया, जो एक प्रसिद्ध बैंक मैनेजर ने उनको लिखा था और जिसमें कहा गया था कि पत्रवाहक एक प्रतिष्ठित राजा का सेक्रेटरी है, जिसका विश्वास किसी भी धनराशि के लिए किया जा सकता है।

'क्या इससे काम निकल जायगा?' आगन्तुक ने पूछा, 'अथवा मैं...।'

'जी, ठीक है, यह बिलकुल काफी है, सेठ जी ने कहा। उन्हें आगन्तुक का वचन बैंक के पासबुक में चढ़े धन की भाँति सत्य हो गया। उन्होंने आवश्यक रसीद लेकर आगन्तुक को हीरा दे दिया और वह चला गया।

प्रायः दो घंटे के पश्चात् ही आगन्तुक पुनः लौटा। बोला, 'महाराज को हीरा बहुत पसन्द आया है। पर वे इससे संतुष्ट नहीं हैं। दाम उनके अनुमान से कम ही रहा। अतः वे चाहते हैं कि इसी जोड़ का एक और हीरा आप उन्हें दें तथा दोनों को इयररिंग के एक सुन्दर जोड़ में जड़ दें। नई महारानी के लिए यह एक अत्यन्त उपयुक्त उपहार होगा।'

'निःसंदेह, किन्तु यह जरा कठिन काम है', सेठ अम्बाशंकर ने सफल व्यापारी की चतुरता के साथ कहा, इसकी जोड़ का हीरा मिलना मुश्किल है। यह अत्यन्त निर्दोष रत्न है। मेरे पास तो इसका जोड़ा है नहीं। तलाश करना पड़ेगा। किन्तु इसके जोड़ के हीरे का दाम बहुत अधिक होगा।

'अन्दाजन कितना?'

'चालीस-पैंतालीस हजार से कम में न मिलेगा। इससे कुछ अधिक ही समझिये।'

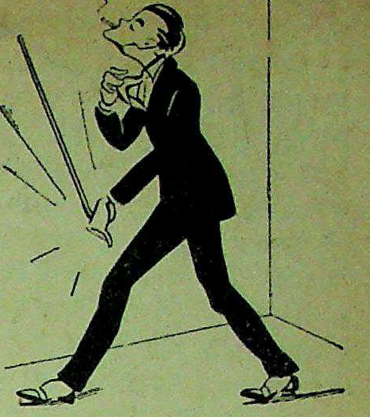

महाराजा का प्राइवेट सेक्रेटरी (विचित्र ठग) होटल के बाहर के मार्ग की ओर।

'ओह, हमारे महाराज आपके रत्न पर मुग्ध हैं। इसके जोड़ का हीरा जड़े जाने पर बननेवाले इयररिंग के लिए वे प्रसन्नतापूर्वक पचहत्तर हजार रुपये तक दे सकते हैं। किन्तु यह काम अड़तालीस घंटे के अन्दर ही होना चाहिए। उनको अब अधिक दिन यहाँ ठहरना भी नहीं है।' यह कहकर सेक्रेटरी महोदय चले गये।

दो दिन का समय अत्यन्त अल्प अवधि थी। इतने कम समय में इस प्रकार के दुष्प्राप्य हीरे के जोड़ का पता लगाना कठिन काम था। किन्तु सेठ अम्बाशंकर ने इसी व्यवसाय में एक युग बिता दिया था। उनके साधन और अनुभव अद्वितीय थे। वे भली भाँति जानते थे कि किस प्रकार के रत्नों के लिए कहाँ खोजना चाहिए और इसीलिए उन्होंने यह गुरुतर कार्य स्वीकार कर लिया था। उन्होंने उसी समय अपने कुछ परिचित जौहरियों के पास सूचना भेज दी कि अमुक प्रकार तथा आकृति के हीरे के लिए वे चालीस हजार रुपया तक दे सकते हैं।

उदयगंज के महाराज के सेक्रेटरी महोदय भी इस बीच खाली नहीं बैठे रहे। सेठ अम्बाशंकर से हीरा पाते ही वह एक अन्य प्रख्यात जौहरी के पास पहुँचे, जो अलंकार तथा जवाहरात रेहन रखकर समय असमय पर धनिकों तथा सट्टेबाजों का काम निकाला करता था। उस उत्कृष्ट हीरे को उन्होंने उसके पास दस हजार रुपये में रेहन रख दिया और कहा कि दूसरे दिन ही उसे छुड़ा ले जायँगे। जौहरी ईमानदार आदमी था और उसने बताया कि हीरा पचीस हजार से कम का नहीं है और यदि वे चाहें तो उस पर उन्हें दस हजार रुपये और भी मिल सकते हैं, किन्तु सेक्रेटरी महोदय ने कहा कि उन्हें केवल दस हजार की ही आवश्यकता है, क्योंकि जरूरत उसी दिन की थी और संध्या होने के कारण बैंक बन्द हो गये थे। दूसरे दिन बैंक खुलते ही रुपया पहुँचाकर अपना रत्न ले जाने का आश्वासन देकर आप वापस चले आये।

दूसरे दिन सुबह ही जौहरी को सेठ अम्बाशंकर की सूचना मिली, जिसमें उन्होंने अपने द्वारा वर्णित हीरे की आकृति के हीरे के लिए चालीस हजार रुपये देने की घोषणा की। अत्यन्त विस्मय के साथ जौहरी ने देखा कि पिछली संध्या को वह भद्र सज्जन जो हीरा उसके पास रेहन रख गये थे, सेठ अम्बाशंकर द्वारा वर्णित हीरे से उसका अद्भुत सादृश्य था। काश वह भद्र सज्जन इसे बेचने को राजी हो जायँ।

जौहरी इसी उधेड़बुन में था कि सेक्रेटरी महोदय दस हजार रुपये तथा उसके सूद के साथ उसके सामने हाजिर

हुए। रसीद पेश करके आपने अपना हीरा वापस माँगा। जौहरी ने उनके द्वारा बढ़ाये हुये हजार-हजार रुपये के दसों नोटों तथा कुछ अन्य रुपयों की ओर देखा तक नहीं। आगन्तुक को कुर्सी पर बिठलाकर उन्होंने उसके लिए पान और सिगरेट मँगवाये तथा रत्नों के सम्बन्ध में उसकी जानकारी और उसके उत्कृष्ट संग्रह की प्रशंसा करते रहे। धीरे-धीरे उन्होंने उससे यह भी प्रकट कर दिया कि वह हीरा बहुत अधिक मूल्य में बिक सकता है और फिर यह पूछ ही लिया कि क्या वे उस हीरे को बेचने को तैयार हैं? सेक्रेटरी महोदय कुछ क्षण उसके मुख को गौर से देखते रहे और फिर अकस्मात् बोल उठे, 'जी नहीं। मैं उसे बेचूँगा नहीं।'

'पर आपको बहुत अधिक दाम मिल सकता है। बाजार में ऐसे हीरे की जबरदस्त माँग है। इस समय इस पर आप बहुत अधिक लाभ उठा सकते हैं।'

सेक्रेटरी साहब ने कुछ रुख दिया। बोले, 'कितना रुपया मिल जायगा आपके ख्याल में इस समय? क्या वास्तव में बहुत लाभ हो सकता है?'

'यही प्रायः तीस हजार रुपया।'

'जी नहीं, इतने से धन के लिए मैं यह अलभ्य वस्तु हाथ से न गँवाऊँगा।'

अन्ततः पैंतीस हजार रुपये पर मामला तय हो गया। जौहरी को अनायास ही पाँच हजार रुपये मिल रहे थे। उसने तत्काल पैंतीस हजार रुपये सेक्रेटरी महोदय के हाथ में रखे और हीरा अपने सेफ में। रुपया लेकर सेक्रेटरी महाशय दूकान से बाहर निकले।

सड़क पर आते ही आपने तुरन्त एक टैक्सी को इशारा किया और उस पर बैठकर सीधे सेठ अम्बाशंकर की दूकान पर पहुँचे। बोले, 'मिला दूसरा हीरा।'

'जी नहीं, पर शीघ्र ही मिल जायगा। हम प्रयत्न कर रहे हैं।'

'खैर तो जाने दीजिए। हमें एक अत्यन्त आवश्यक राजनैतिक कार्य से आज ही दिल्ली चला जाना है। महाराज दूसरे हीरे के लिए ठहरेंगे नहीं। यदि मिल जाय, तो आप उदयगंज को लिख दीजियेगा। हाँ, आप अपने पिछले हीरे का मूल्य तो ले लीजिए। बैंक से रुपया निकालते समय सोचा आपको नकद ही देता चलूँ।'

'कृपा है आपकी', यह कहते हुए सेठ अम्बाशंकर ने पच्चीस हजार रुपये लेकर सेक्रेटरी महोदय को रसीद बनवा दी और अनुरोध किया कि उनकी दूकान पर महाराज तथा सेक्रेटरी महोदय सदा ऐसी कृपा बनाये रखें। सेक्रेटरी महोदय ने भी उन्हें भद्रोचित आश्वासन दिया और विदा माँगकर चले। सेठ अम्बाशंकर उन्हें स्वयं टैक्सी तक पहुँचाने गये। टैक्सी एक ओर चल पड़ी और सेक्रेटरी महोदय सेठ अम्बाशंकर के नेत्रों के सम्मुख से सदा के लिए विलुप्त हो गये।

पाँच मिनट बाद ही वह सूदखोर जौहरी हाँफता हुआ सेठ अम्बाशंकर की दूकान में घुसा और साँस रोकते हुए बोला, "मिल गया, मुझे वैसा ही हीरा मिल गया, सेठ जी, जैसा आप चाहते थे।"

सेठ अम्बाशंकर ने उससे हीरा लेकर जाँचा और सिर हिलाते हुए बोले, 'बेशक वही है।' उन्होंने अपने हीरे को पहिचान लिया था।

परन्तु अब हमें इसकी आवश्यकता नहीं है। हमारा ग्राहक सौदा तोड़ चुका है। पर तुम्हें यह मिला कैसे?

जौहरी ने सारी घटना कह सुनाई। अम्बाशंकर ने समझाया कि वह एक धूर्त ठग था। जौहरी ने तुरन्त पुलिस में रिपोर्ट की और वह इस अपूर्व ठग से सम्पर्क स्थापित करने के चक्कर में है, किन्तु उसके अपराध के विषय में पुलिस स्वयं सन्दिग्ध है कि भारतीय दंड विधान की कौन-सी धारा उसके लिए अभियोग लगाने के निमित्त प्रयुक्त की जा सकती है, तथा उस पर ठगी का आरोप लग भी सकता है। सेठ अम्बाशंकर को उससे किसी प्रकार की भी शिकायत नहीं है। उसने उनका हीरा खरीदा और उसका पूरा मूल्य दे दिया। हीरा खरीदकर उसका मूल्य चुकाये बिना ही उसे रेहन करके भी उसने कोई जुर्म नहीं किया, क्योंकि वादे पर सौदा लेकर बीच में ही उसे बेच अथवा रेहन रखकर वादे का भुगतान करने का व्यवसाय बम्बई में हजारों व्यक्ति नित्य किया
सूदखोर जौहरी को भी उसने
क्योंकि वह तो अपना हीरा बेच
रहा था, जौहरी ने स्वयं ही
बेचने के लिए प्रलोभन दिया
स्वेच्छा से इतना अधिक दाम दे
खरीदा और उसने.........उसने
दस हजार रुपये बना लिये

क्या कोई वकील महोदय
सूदखोर जौहरी की वैधानिक सहा
सकते हैं?

धोबीने जो हानि की है

—ज़रा सोचिये उसे पूरा करने में कितना खर्च आयेगा!

आजकल कपड़ा की जो कीमतें हैं उन्हें देखते हुए धोबियों को कपड़े देकर उनका नाश कराना पैसे को पानी में फेंकना है। आपको चाहिये कि कपड़ों को अधिक से अधिक चलाए। आपको कपड़ों के बारे में ध्यान रखना चाहिये। कपड़ा धोने की धोबियों की जो बेढंगी रीति है उसकी अब कोई ज़रूरत नहीं। आप खुद सनलाइट साबुन से मैले से मैले कपड़े को भी सुलभता से साफ़ कर सकते हैं। सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग के बारे में तो आपने ज़रूर सुना होगा, इस झाग में मैल काटने की जो शक्ति है वह बलवान से बलवान धोबी की मोटी से मोटी मोगरी और कड़ी से कड़ी चट्टान से कहीं अधिक है और वह भी इस तरह काम करती है कि मैल काटते समय कपड़े को कोई हानि नहीं पहुंचाती। कपड़े धोने की सरल रीति नीचे दर्ज की जाती है:— इसे पढ़िये और आज ही अपने घर में सनलाइट के "साबुन-और-बचत" रीति से कपड़े धोना शुरू कर दीजिये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

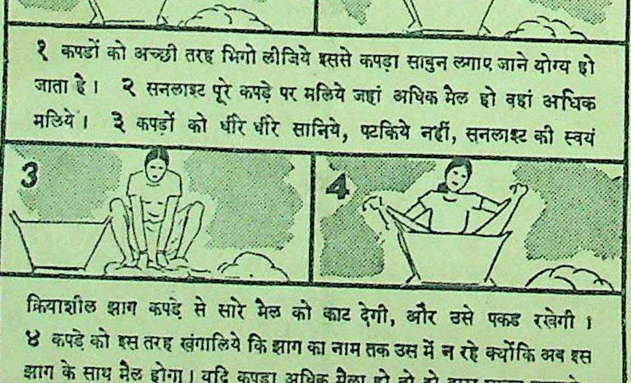

१ कपड़ों को अच्छी तरह भिगो लीजिये इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३ कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड़ रखेगी। ४ कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उस में न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन लगाइये।

S. 68-208 HI

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है
SUNLIGHT
SOAP
Releases Reward!
GUARANTEED
SUNLIGHT SOAP
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

साप्ताहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

कारी, मनोरंजक और रोचक—

(गताङ्क से आगे)

—बहुत अच्छा। किन्तु यह न भूल जाइएगा कि इस र में कुछ कानूनी राय लेनी है, नहीं तो आपको की आवश्यकता न थी।

का कौतूहल बढ़ गया।

के आते ही लक्ष्मी ने कहा—हमने आदमी भेजकर को बुलाया है।

ने कहा—आने दो, अच्छा ही है। जीजा जी भी मिनट में आ रहे हैं।

कमरे के सामनेवाले चबूतरे पर एक आरामकुर्सी गया। सोचने लगा—जिस जगत में इतना सुन्दर सुन्दर तारे, इतना सुन्दर मन्द-सुगन्धित पवन, सुधा धारावत् जल प्रवाहित है, वहाँ यह करुणा क्यों बजती है? सारे देश में अन्नहीन विधवायें का पीपल बनकर बैठी हैं अविवाहिता सैकड़ों देश में यह दहेज की प्रथा कुछ नई प्रथा नहीं है जिसने (छोटा जुआँ) कर दिये हैं। कितने ही आत्म- पत्रों में छपते हैं! किन्तु किसके हृदय को

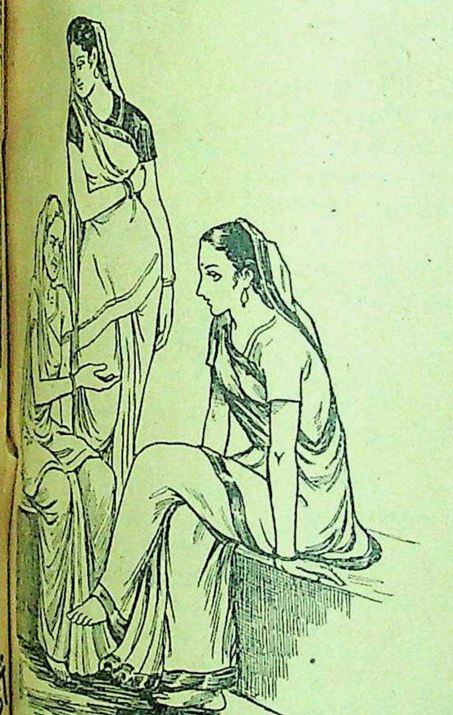

और एक बुढ़िया—सम्भवतः उस लड़की की माँ, लड़की समेत कुछ धीरे-धीरे बातें कर रही थी।

अंधकार घना होता आ रहा था... उस लड़की की नहीं आई? एक कौतूहल-सा उत्पन्न हुआ। हरीश ओर देखा तो दूसरी ओर के बरामदे में उसकी बहन बुढ़िया—सम्भवतः उस लड़की की माँ—लड़की समेत बातें कर रही थी। उसने सोचा स्त्रियों के वार्त्ता- में जाना ठीक नहीं। उसने नौकर को पुकारा—

—जी, हुजूर कहता हुआ आ पहुँचा। हरीश ने जी कहाँ हैं?

ने कहा—उधर बरामदे में चाय बना रहे हैं।

तो मैं भी पहुँचूँ। चाय तो मुझे भी पीना है।'

ने जाकर सुरेश से पूछा—क्यों, दीदी से बात-चीत भी नहीं।'

निश्चय किया?'

एक बात होने पाई थी कि उसकी माँ आ गई।

सुरेश ने कहा—उन लोगों से बात हो लेने दो.... मैं सोचता था कि हरीश कहाँ चला गया?

हरीश ने कहा—मैं वहीं कमरे के सामने चबूतरे पर बैठा था। कुछ विचित्र-सा लग रहा था।

सुरेश ने कहा—क्या कोई कविता का भाव उठा था? कुछ लिखा?

हरीश बोला—क्या सब समय छन्द-रचना के लिए एक ही सा मन होता है?

सुरेश ने कहा—मन में यदि शान्ति सुख है... तो क्या भाव नहीं उठते....?

हरीश ने कहा—शान्ति सुख की कविता!.... जिस कविता का जन्म दुख और वेदना से हुआ है वही विश्व के प्राण स्पर्श करती है। कृष्ण के विरह में राधा की वेदना की कल्पना करके जिस कविता की सृष्टि हुई है ऐसी और कहीं कविता है, तो बताओ? महाकवि शेले ने स्वयं कहा है—

(हमारे मधुरतम गान वे हैं जो अधिकतर वेदनापूर्ण भावों को प्रकट करते हैं)

सुरेश ने कहा—ठीक है। इसी दोष से मैं कवि नहीं हो सका। हमारा भाव सुख के ही समय जागता था। अपनी कविता की कथा सुनायें? सुनो....

हरीश—चाय का पानी बहुत खौल चुका है, जीजा जी। अच्छे केटली खोले बैठे हो। जो बनाओगे सो चाय तो होगी नहीं, और चाहे जो कुछ हो। यह निश्चय है।

सुरेश—अच्छा सावधान कर दिया भाई। तुम क्या जानो, हम जब कालेज में पढ़ते थे तो केवल स्कालरशिप लेने की ही सनक नहीं थी, वरन् जिससे हम अधिक व्यावहारिक हो सकें, इसकी ओर भी ध्यान था। परीक्षा में प्रथम आये, इसे हम कोई बड़ी बहादुरी नहीं समझते। संसार से मन को खींचकर पुस्तक के पन्नों में घुसाये रखने की योग्यता बहुत लोग दिखा सकते हैं; किन्तु प्रत्येक प्रतिवर्ष फर्स्ट ही आयेगा ऐसा भी नहीं। हमारी शक्ति सभी कामों में लगती थी। बाढ़ का चन्दा, इलेक्शन की कन्वेसिंग, नर्सिंग (परिचर्या) में नाइटिंगेल, पिकनिक में द्रौपदी वृत्ति, नाटक खेलने में, पर्दा, स्टेज, भाड़ा करने से लेकर, बैकुण्ठ मन्दिर से छल्लेदार बाल तक खरीदना, स्टेज पर नायक बनना आदि सभी कामों में अपनी शक्ति का परिचय बराबर सव्यसाचीवत् दिया करता था। चाय बनाना तो अति तुच्छ व्यापार है। ऐसे पान लगाये हैं कि बड़े-बड़े बाबुओं ने प्रशंसा की है। आज यह दुर्दशा क्यों है, जानते हो?

हरीश ने कहा—बताओ, बताओ।

सुरेश ने कहा—तुम्हारी दीदी के कारण।-एकदम हस्त-पद-रहित जगन्नाथ हो गया हूँ। कोई काम ही नहीं करने देतीं। घर जमाई को काम करते देखकर चार जने हँसेंगे, इसीलिए उनकी बेइज्जती होगी, नहीं तो तुम्हारे पिता जी भूलनेवाले लोग नहीं थे। यदि कहीं भूल जाते तो गजट देखकर, प्रिन्टर को लाकर, हमें ढूँढ़कर, तुम्हारी बहन से विवाह न कर देते।

हरीश—ठहरिये, मैं दीदी से यह सब कहता कि इन दिनों आपका परिहास बहुत बढ़ गया है।

केटली में चाय डालते हुए सुरेश ने कहा—ऐसा न करना, हरीश। घर जमाई की वेदना का तथ्य कोई नहीं जानता। किसी उपन्यास-लेखक ने भी अब तक इस दुख से दुखी होने का अवसर नहीं पाया है।

हरीश ने कहा—जाने भी दो इन सब बातों को। अभी जो कविता की बात कर रहे थे सो कहो।

सुरेश ने कहा—हाँ देखो तो, बात का क्रम ही भूल गया था। कह रहे थे कि सुख-शान्ति में ही हमारे भाव उठते थे। उस समय हम एस० डी० कालेज हॉस्टेल में थे। एक लड़के के बीमार होने पर यार लोगों ने एक बकरे की बलि तपेश्वरी देवी के लिए मान रक्खी थी। हम लोगों ने जो सुना तो उन लोगों से छीन-झपटकर पाँच रुपये लिये और एक मोटा-ताजा बकरा मोल ले आये। बलि चढ़ाकर हमीं ने उसको पकाया। विश्वास नहीं करोगे, वैसा प्रसाद फिर खाने को नहीं मिला! तभी एक कविता लिखी थी। सुनो—

रुदन कर दीन हीनता से शीश पर पृथ्वी न उठा लो।
दीनता मिट जाये, ऐसा प्रसाद मांस अगर खा लो।।

हरीश खिलखिलाकर हँस पड़ा। रहो, रहो मनुष्य का खून

आरोंदा
१८६९
नीलगिरि तेल
— वापरो —
लाण्डलेकर बंधु, बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।

१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥-) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर

नं ७१२
एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत
रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५
ज्यादा मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

No 712
EVEREADY
2 CELL
EXTRA
LONG LIFE
BATTERY

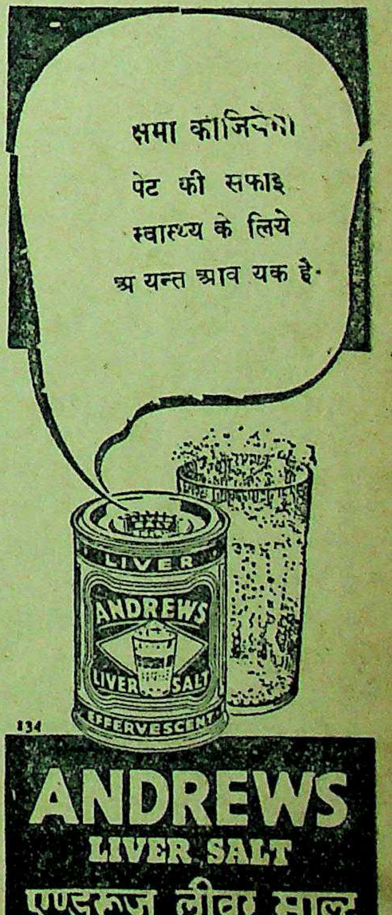

क्षमा कीजियेगा।
पेट की सफाई
स्वास्थ्य के लिये
अत्यन्त आवश्यक है

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

करोगे क्या? जो भाग्य में लिखा था सो तो छोड़ दिया। इस तरह स चर्चा करते रहते तो सबको काव्य से छुड़ाकर महाप्रसाद के शोहए में ही डुबकियाँ देते-देते बकरा-वंश का ध्वंस कर डालते।

सुरेश ने प्याले में चाय भरी। हरीश ने कहा—उस लड़की को भी एक प्याला चाय भेज दो।

सुरेश ने कहा—यह चार प्याले फिर निकाले किस लिए हैं? दो हम तुम लेंगे, दो उन लोगों के लिए। हम देखते हैं, इन दिनों हरीश! स्त्री-जाति के प्रति तुम्हारी बड़ी सहानुभूति उत्पन्न हो रही है। यह स्वाभाविक भी है। तुम्हारे हृदय-राज्य का सिंहासन शून्य है। मन मातङ्ग सूँड़ उठाकर राजमहिषी की खोज में दिशा-विदिशा के ज्ञान से हीन होकर चारों ओर दौड़ रहा है। किन्तु हमारे हृदय के राज्य सिंहासन पर रानी के रहते हुए भी और एक व्यक्ति को स्थान नहीं मिलेगा, ऐसा क्यों सोचते हो? तुम्हारी दीदी हैं, जानता भी हूँ, मानता भी हूँ, तुम सोच मत करो। रवि ठाकुर के कथनानुसार—

'सहि न सकत उर भ्रमर चरण चाप।'

जैसा हल्का हमारा हृदय नहीं है।

आज तुम्हें क्या हो गया है, जीजा जी? इतनी बे-रोक-टोक व्यर्थ की बातें तो मैंने तुम्हारे मुँह से कभी नहीं सुनीं।

सुरेश—अरे यार, शास्त्र में भी तो कहा है कि 'प्राप्तेतु षोडशे वर्षे पुत्रम् मित्र वदाचरेत' अर्थात् सोलह वर्ष का पुत्र होने पर उससे भी मित्रवत् व्यवहार करो। तो फिर तुम्हारा हमारा क्या सम्बन्ध है, जानते हो?

प्याले में दूध और चीनी मिलाकर हरीश ने दो प्याले नौकर के हाथ अन्दर भेज दिए।

सुरेश ने चाय पीते हुए कहा—जिस घर की यह लड़की है वह है भैरव का घर; जो तुम्हारे पास बन्धक है, और भैरव सटोरिया मशर्फी, गुण्डों का सरदार है।

'होगा!'

सुरेश ने कहा—सुना है धन-हीनता के कारण इस लड़की की माँ ब्याह नहीं कर पाती और दामाद की छाती का पीपल हो रही है। एक सुपात्र वर खोज दिया जाय, बुढ़िया का उद्धार हो जाय। तुम्हारी बहिन से भी मैंने कह दिया है। बुढ़िया आ गई थी इसलिए इधर चला आया।

हरीश ने ठण्डी साँस लेकर कहा—खूब सोचा, जीजा जी। यह गंगा में डूबने गई थी। मर्मान्तिक व्यथा न होने तक कोई आत्म-हत्या नहीं करता।

'आत्म-हत्या! तुमसे किसने कहा?'

हरीश—कहा किसी ने नहीं। तुम सोचो तो यदि घाट पर मैं न पहुँच जाता तो क्या होता? अब भी रोमांच हो उठता है।

सुरेश ने कहा—इसके दो ही कारण हो सकते हैं। या तो दुःख-यातना सहनशीलता की सीमा को पार कर जाय, या फिर भावोद्वेग बढ़ जाय।

हरीश ने कहा—यह भावोद्वेग गरीबों का रोग नहीं है। मैंने डाक्टरी में पढ़ा है।

सुरेश ने कहा—तो कोई रहस्य होगा।

हरीश ने कहा—यह रहस्योद्घाटन करना ही होगा। एक मनुष्य के प्राण....

सुरेश ने हँसकर कहा—मनुष्य जैसा मनुष्य! एक तरुण युवती! किसी ने कहा है कि सुन्दर मुख की सर्वत्र जय होती है। [illegible] यदि तरुणी का हो तो ....

हरीश ने कहा—रहो जीजा जी, तुम्हारी जीभ आजकल खूब चलने लगी है।

(४)

बुढ़िया के आते ही बड़े आदर से लक्ष्मी ने उसे बिठाकर कहा—माताराम आज आपकी लड़की से घाट पर हमारी जान-पहचान हो गई है। कैसी अच्छी लड़की है! जैसी शान्त है, वैसी ही देखने में भी है।

माँ का मन आनन्द की प्रभा से उज्ज्वल हो उठा। हितू-व्यवहारी जहाँ कोई नहीं है, जिस नगरी में उसके दुख की ओर देखनेवाला कोई भी नहीं है, ऐसे बुरे समय में वहाँ भी एक आश्रय है! बुढ़िया ने कहा—और न कहो बिटिया। यही लड़की तो भारस्वरूप है। दुख की सीमा नहीं है। कहते-कहते बुढ़िया की आँखों से अजस्र अश्रुधारा फूट निकली।

लक्ष्मी ने कहा—केवल विवाह ही की तो चिन्ता है, इसी के लिए कह रही हो?

बुढ़िया—विवाह छोड़कर और कौन-सी चिन्ता है, बिटिया! लड़के-लड़की हम सभी को एक मानती हैं। केवल यही एक विवाह का बोझा है कि जिसके मारे कन्या जन्मते ही, हृदय की वात्सल्य-धारा सूख जाती है। चन्द्रमा जैसी रूपवती होने पर तो और भी दुख होता है।

बुढ़िया की बात लक्ष्मी ने समझी। उसने कहा—ऐसी सुन्दर लड़की....आप चिन्ता न करिए। इसके विवाह का दायित्व हम अपने ऊपर लेती हैं।

आँखें फाड़े हुए सिर नीचा किये बुढ़िया बैठी रही। आँसुओं की धारा बह रही थी। लड़की की ओर देखते हुए उसने कहा—केवल हृदय में एक ही घाव थोड़े ही है। कहाँ-कहाँ फाहा रक्खोगी, बेटी? एक तो दुख सहते-सहते दुनिया से चली गई; वह बेचारी कभी सुख का मुँह न देख सकी। उसके मरने से मैं बड़ी सुखी होती, लेकिन वह मांस का एक लोथड़ा—नन्हा बच्चा—छोड़ गई है। हम लोगों के पैरों में बेड़ी डाल गई है। हिलने-डुलने का भी अवसर नहीं। बाँस की झोपड़ी को चारों ओर से अग्नि की लपटें लपेटे ले रही हैं। बुढ़िया का दुख-स्रोत कहते-कहते प्रबल हो उठा।

लक्ष्मी ने कहा—चुप रहो माताराम। रोने से कहीं दुख घटता है? जो तुम्हारा मुख ताक रहे हैं उनकी ओर देखो।

बुढ़िया ने एक लम्बी साँस लेकर कहा—बिटिया अब देखने की शक्ति नहीं रह गई है। विधाता के आघात पर आघात सहकर लुञ्ज-पुञ्ज हो गई हूँ।

लक्ष्मी बुढ़िया की ओर देखती रह गई। उसे क्या कहकर सान्त्वना दे, वह सोच न सकी। भगवान् मनुष्य को गढ़कर इतना दुख-दर्द भी उसे दे सकते हैं! मनुष्य और इतना असहाय!

नौकर चाय दे गया। लक्ष्मी ने राजकुमारी से चाय पीने को कहा। राजकुमारी सिर नीचा किये चुप बैठी थी। लक्ष्मी से उसने कहा—मैं चाय नहीं पीती।

लक्ष्मी ने कहा—जो चीज कभी नहीं पी है तो क्या कभी पी ही नहीं जाती? मैं भी तुम्हारी बड़ी बहन हूँ—दीदी हूँ—बड़ों की बात टालनी नहीं चाहिए।

मलिन मृदुहास्ययुक्त कम्पित अर्ध-दृष्टि से राजकुमारी ने लक्ष्मी को देखा। लक्ष्मी ने बड़े प्यार से कहा—पाप होता है। कहकर बिहारी को पुकारकर कहा—जाओ दो तश्तरियों में मीठा और नमकीन लेते आओ।....समझे?

[क्रमशः

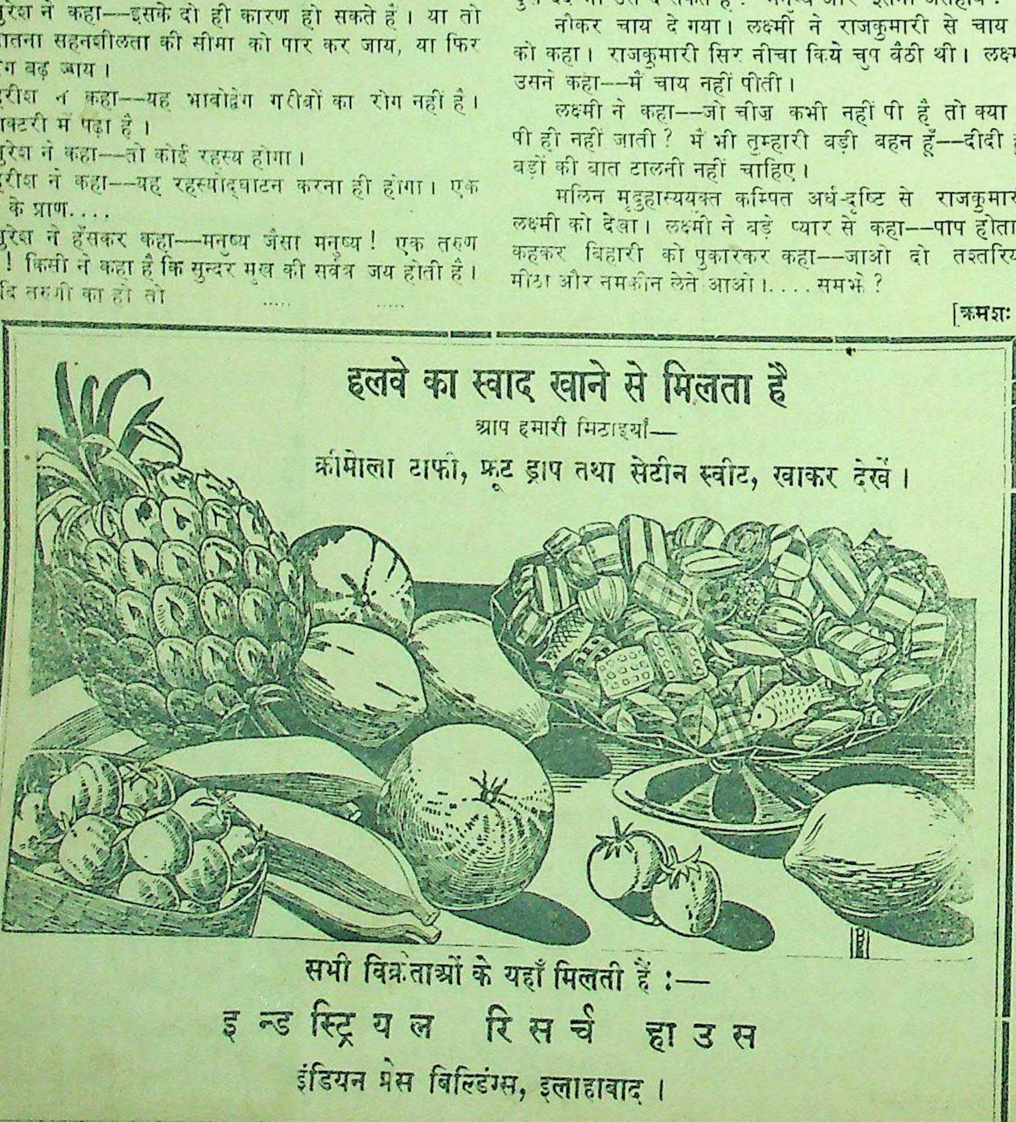

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

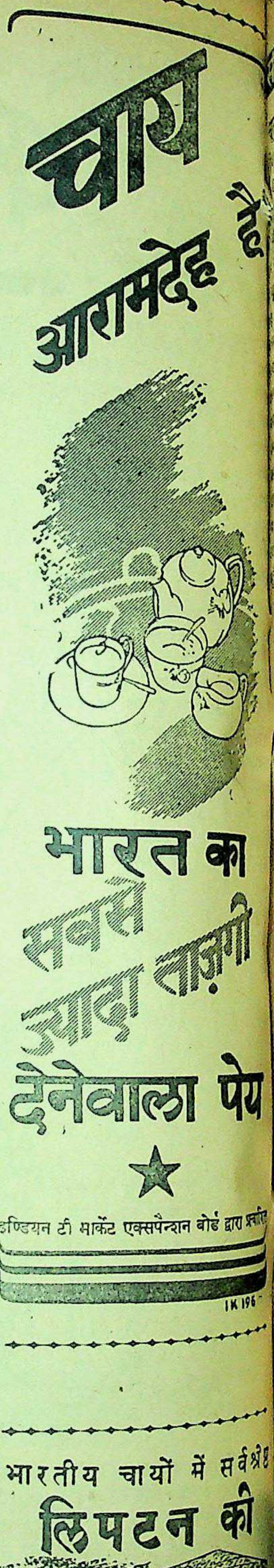

चाय आरामदेह है

भारत का सबसे ज्यादा ताज़गी देनेवाला पेय

★

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 196

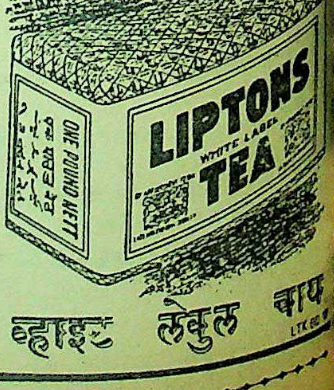

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

दाताओं के पत्र

वेदी जी को उपाधि

के निज संवाददाता-द्वारा]
विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि
पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी
S.Z.R.B. 'सामयिक और जोर-
पुर' की उपाधि दी है उससे
नहीं हुए, यद्यपि उसके उप-
उन्होंने उदयपुर-सम्मेलन पर
को एक चाय पार्टी देने का
लिया है। उस पार्टी का
लोढ़ाराम जी को बनाया
लोढ़ाराम जी स्वभावतः
में हैं। इससे दोनों में
है। समझौते के लिए
है। चाय पार्टी या भंग पार्टी
चाय चक्रम' में जो
के पंडाल के पास ही
हो।

*

महिला मंडल के तत्त्वावधान
महिला-शिक्षण-शिविर चित्तौड़
संयुक्तप्रांत के प्रसिद्ध नेता
जी अध्यक्ष पद पर विराजे।
ने उत्सव का कार्य-क्रम
कैम्प चीफ श्रीराम बहन ने
के व्यवस्थापक निम्नां-
मृदुला बहन, श्री
बहन, श्री कमला
वर्मा, श्री हरिभाऊ
जी कांवड़िया, श्री
गुप्ता, श्री सिद्धराज
प्रयाग विद्यापीठ
प्रसाद इत्यादि।

समूह को मंडल की
कराते हुए मंडल की
कमलाकुमारी क्षत्रिय ने
श्रीमान् सम्पूर्णानन्द जी
मंडल को सहयोग देते
की।

ड्रिल आदि रोचक कार्य-
बाद शिविर में सम्मिलित हुई
वितरण कर अध्यक्ष
सम्पूर्णानन्द जी ने ओजस्वी
किन्तु सरस, सारगर्भित और महत्त्वपूर्ण भाषण दिया। संस्था की सम्पूर्ण सराहना करते हुए शिविर के लिये चित्तौड़ दुर्ग जैसी प्रेरणाप्रद स्थान चुनने के लिये प्रसन्नता प्रकट की। प्रौढ़ शिक्षण के कार्य को सफल प्रयोग बतलाकर निज को परीक्षाएँ चलाने की भी आपने सलाह दी। स्त्री-शिक्षा के महत्त्व और भारतीय संस्कृति में माता के गौरवपूर्ण स्थान पर प्रकाश डाल कर अनेक उदाहरण और अपने अनुभवों का जिक्र करते हुए महिला-मंडल को सदैव सहयोग देते रहने का आश्वासन दिया। आम, टमाटर, संतरा आदि का रस, चटनियाँ, शरबत व अचार और कागज और कार्डबोर्ड का कार्य, खनिज पदार्थ एवं इतिहास व भूगोल के श्रेणीबद्ध कार्यों की एक छोटी सी प्रदर्शिनी भी लगाई गई थी।

पद्मिनी के महल, चित्तौड़ दुर्ग और मेवाड़ का सुन्दर मॉडल बनाया गया व "जौहर ज्वाला" नाम का दैनिक पत्र भी बहनों ने निकाला था।

अंत में मंडल के अध्यक्ष श्रीमान् पं० लक्ष्मीलाल जी जोशी ने सम्पूर्णानन्द जी का आभार मानकर संस्था के कर्मचारियों के साथ ही शिविर को सफल बनाने के लिये श्री दशोदा जी, श्री बोर्डिया जी, श्री श्रीमाली जी, श्री शम्भूलाल जी एवम् श्री पं० जगन्नाथ जी आदि विद्वानों को धन्यवाद दिया।

उत्सव में चित्तौड़गढ़ के नागरिकों की भारी उपस्थिति तो थी ही, पर उदयपुर से भी कई व्यक्ति पधारे थे जिसमें उल्लेखनीय में थे—मेवाड़ प्रजा-मंडल के मंत्री श्री बयाजी, राजस्थान बनवासी विद्यालय के संचालक श्री मेहता जी, हिन्दी विद्यापीठ के श्री गौड़ जी, मेवाड़-राज्य शिक्षा-विभाग के डायरेक्टर साहब, असिस्टेन्ट डायरेक्टर साहब, इन्स्पेक्टर ऑफ स्कूल्स एवं विद्या भवन के आर्गनाइजिंग सेक्रेटरी श्री योगेशचन्द्र जी। —संवाददाता

* * *

वर्धा निबंध-स्पर्धा मंडल के कार्यवाहक लिखते हैं—महात्मा गांधी का युद्ध-कालीन राजनैतिक कार्यों से भारत प्रगति पर बढ़ा या नहीं? इसे कारण-सहित व्यक्त कीजिए। यह निबंध ४ हजार शब्दों का होना चाहिए। उक्त विषय पर निबंध भेजने की अंतिम तिथि १५ जून १९४५ है। निबंधों पर श्रेष्ठता की दृष्टि से प्रथम, द्वितीय, तृतीय आदि के क्रम से ६०), ३०), १५), १०) और ५) के पुरस्कार दिये जायेंगे। विद्यार्थियों को इस निबंध-प्रतियोगिता में पूर्ण भाग लेना चाहिए।

दूरदर्शी पिता का सुखी पुत्र

इसकी शिक्षा और सफलता का अच्छा प्रबन्ध हो गया है....

यह अभी केवल नन्हा बालक है; किन्तु इसका पिता दूरदर्शी है और वह जानता है कि पढ़ाने-लिखाने में पैसा ख़र्च होगा; इसलिए उसने बुद्धिमानी से इसकी पढ़ाई के लिए पैसा जमा करा दिया है। इस रक़म में १२ वर्ष में व्याज से ५० प्रति शत वृद्धि हो जायगी, जिसके आधार पर बड़े होने पर विश्वविद्यालय में इसका ख़र्च भली भाँति पूरा हो जायगा और पूर्ण तथा लाभजनक शिक्षा प्राप्त करके यह विश्वास तथा आशा के साथ संसार-क्षेत्र में प्रवेश कर सकेगा।

यह अपने पिता के प्रति कितना ऋणी होगा कि उसने नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में अपनी बचत की रक़म लगा कर बड़ी समझदारी से काम लिया। क्या आप अपने पुत्र के लिए ऐसा कर सकेंगे? यह आप पर निर्भर करता है।

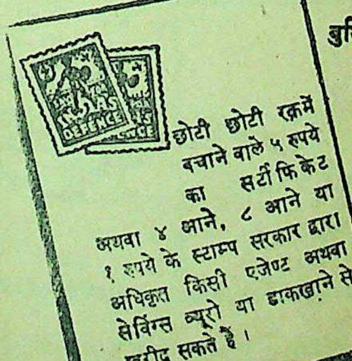

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

बुद्धिमान माता-पिता के दल में आप भी सम्मिलित हो जाइए और अपनी आमदनी की बचत

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट में लगाइए।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १९ रुपये हो जाते हैं।
★ ४$\frac{1}{2}$ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुऐ व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 124—HINDI

स्टानिस्ट्रीट
(रजिस्टर्ड)
चिकेन एसेंस
स्वास्थ्य की गारंटी है—
चिकेन एसेन्सों के उत्तम
गुण इसमें मौजूद हैं।
स्टानिस्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड
अमृतसर मद्रास कराची
BSK 116

विचित्र जगत

संसार के सोने की स्थिति

संसार के सोने की स्थिति का हिसाब लगाते हुए एक पत्र ने लिखा है कि इस वक्त अर्जेंण्टाइना में सबसे अधिक सोना है। इसके बाद दक्षिणी अमेरिका के देशों में सोना पाया जाता है। इन देशों के सोने की स्थिति में युद्धकाल में अधिक उन्नति हुई है। युद्धोत्तर काल में इन देशों की स्थिति सोने की दृष्टि से बहुत अच्छी रहेगी। युद्ध के पूर्व संसार का सबसे अधिक सोना संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के पास था परन्तु दो वर्ष अथवा एक वर्ष की हानि से संयुक्त-राष्ट्र की स्वर्ण-स्थिति गिर गई है।

युद्ध से तटस्थ राष्ट्र, स्विटजरलैण्ड, स्पेन और स्वीडेन ने इस बीच स्वर्ण-स्थिति में काफी उन्नति की है। फ्रांस ने भी अपनी स्वर्ण-स्थिति को काफी सुधार लिया है। हालैण्ड भी इन सबसे कम नहीं है। जर्मनी ने इस युद्ध में काफी सोना इधर-उधर से लूटा है। परन्तु उसकी यह स्वर्ण-स्थिति युद्धोत्तर काल में नहीं रहेगी। उसको उस सोने को देर-सबेर वापस करना ही होगा। बेलजियम, जेकोस्लेवाकिया, हालैण्ड और फ्रांस प्रायः स्वर्ण-स्थिति में मजे में रहेंगे। किंतु प्रायः युद्ध से युक्त देशों की स्थिति बहुत अच्छी न रहेगी। ब्रिटिश उपनिवेश स्वर्ण-स्थिति में अच्छी दशा में रहेंगे। हाँ, रूस की स्थिति को समझने में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। जापान की स्वर्ण-स्थिति बिलकुल जर्मनी जैसी रहेगी। इस प्रकार स्वर्ण-स्थिति युद्ध के पूर्व की अपेक्षा अब काफी बदल रही है। इसका पता तो अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के समय ही लगेगा।

* * *

सबसे बड़ा हीरा

संसार का सबसे बड़ा हीरा जो जरा भी कटा फटा नहीं है सियर्रा लियून में पाया गया था। यह हीरा एक मनुष्य के वेस्टकोट की जेब में रखकर लन्दन ले जाया गया था। कदाचित् इस हीरे को "विजय हीरा" कहा जाये। इसकी आकृति मुर्गी के साधारण अंडे के आकार की है और वजन ७७० कैरेट है। इस हीरे का पानेवाला सिपर्रा लियून का एक निवासी था। उसने इस हीरे को जनवरी में पाया। इस समय यह सिपर्रा लियून ऐलेक्शन ट्रस्ट कम्पनी की सम्पत्ति है। उसने कहा है कि इस हीरे में बड़े गुण हैं इसलिए उद्योगधन्धों में इसका उपयोग न किया जायगा। इसमें एक दरार जान पड़ती है। अतः यह मणियों के लिए काटा जायगा उस समय इसकी कीमत कदाचित् बढ़कर ५ लाख पौण्ड होगी।"

* * *

बहु-विवाह-प्रथा

अमेरिका के मोरमन परिवार में बहु-विवाह बुरा नहीं माना जाता था। अब भी कहीं-कहीं ऐसा होता है परन्तु कानून ऐसा नहीं है। लोग लुक-छिपकर ऐसा करते हैं। इस परिवार के एक श्रेष्ठ व्यक्ति श्री जोसेफ डब्लू० सर के पाँच स्त्रियाँ और २० बच्चे हैं।

गत वर्ष यफ० बी० आई० के एजेण्ट साल्टलेक सिटी के एक मकान में घुसे और उसमें सात मनुष्यों को बहु-विवाह जुर्म में गिरफ्तार किया। पचास व्यक्ति अन्य शहरों में भी गिरफ्तार किए गए।

मुकदमे के समय मुद्दाअलेह (अभियुक्तों) में से एक ने कहा, "बहु-विवाह कोई अमृत नहीं है। जो कोई यह समझता है कि यह मजाक है। प्रयत्न करके देख सकता है।"

उन्हीं अभियुक्तों में से दूसरे ने कहा, शादियों का बाहुल्य लड़ा नहीं जा सकता। यह आवश्यकता सर्वथा रहेगी कि स्त्रियों का बाहुल्य हो।

* *

अमेरिका के सैनिक कुत्ते

युद्ध में कुत्ते से भी काफी काम गया है। अमेरिका में १०,००० से कुत्ते अमेरिका की फौजों के साथ क्षेत्रों में कार्य करते हैं। इस प्र डिवीजन जिनमें ये कुत्ते कार्य कर "के—९" कहलाता है। ये कुत्ते स्काउट्स, सन्तरी, पैक ले जानेवाले, का पता लगाने का कार्य करते हैं। ही घायल सिपाहियों ने सैनिक कुत्ते साथ रखने के लिए प्रार्थना की कोई ऐसा सिपाही नहीं दिखलाई प सैनिक कुत्ता रखने से इनकार करता

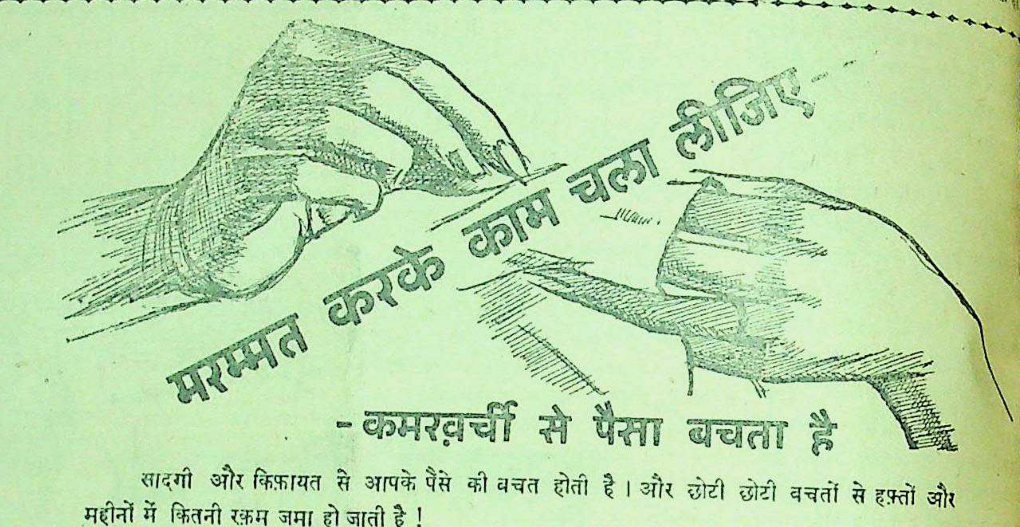
मरम्मत करके काम चला लीजिए

-कमखर्ची से पैसा बचता है

सादगी और किफ़ायत से आपके पैसे की बचत होती है। और छोटी छोटी बचतों से हफ़्तों और महीनों में कितनी रक़म जमा हो जाती है!

आजकल कम ख़र्च करना आपका परम कर्त्तव्य है, क्योंकि अगर आप ज़रूरत से ज़्यादा ख़रीदेंगे तो ग़रीबों को माल नहीं मिल सकता। इस परिस्थिति से लाभ उठा कर आप आर्थिक रूप से स्वयं अपना और अपने देश का हित-साधन कर सकते हैं।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

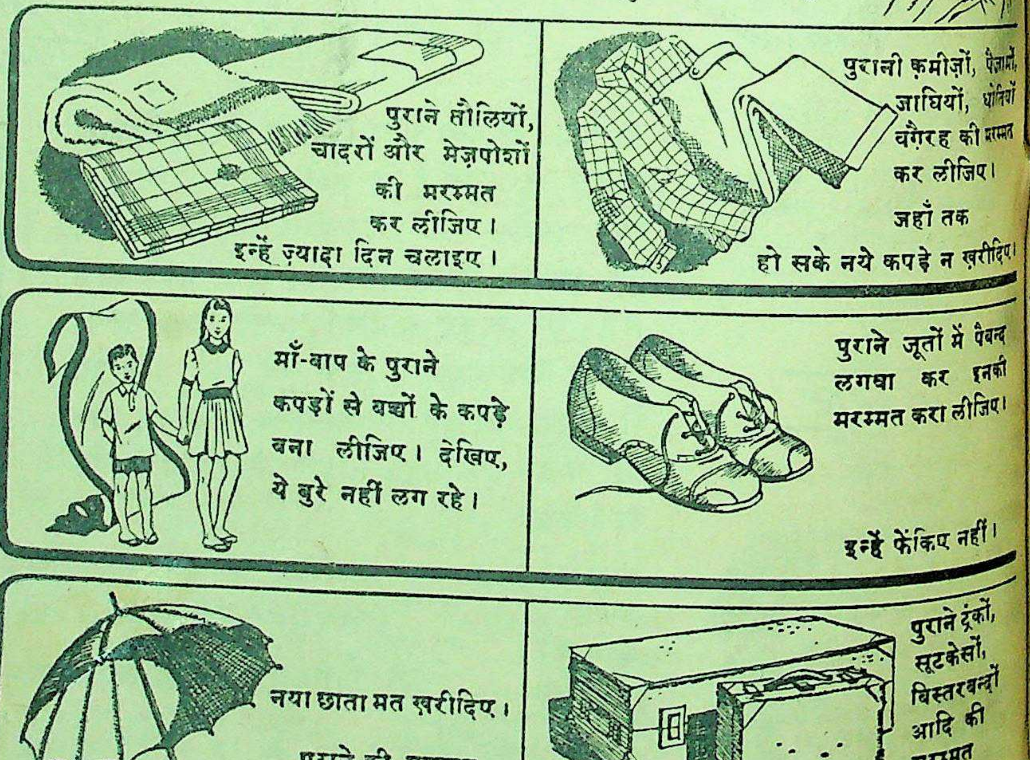

पुराने तौलियों, चादरों और मेज़पोशों की मरम्मत कर लीजिए। इन्हें ज़्यादा दिन चलाइए।

पुरानी क़मीज़ों, पैजामों, जाघियों, धोतियों वग़ैरह की मरम्मत कर लीजिए। जहाँ तक हो सके नये कपड़े न ख़रीदिए।

माँ-बाप के पुराने कपड़ों से बच्चों के कपड़े बना लीजिए। देखिए, ये बुरे नहीं लग रहे।

पुराने जूतों में पैबन्द लगवा कर इनकी मरम्मत करा लीजिए। इन्हें फेंकिए नहीं।

नया छाता मत ख़रीदिए। पुराने की मरम्मत करा लीजिए।

पुराने ट्रंकों, सूटकेसों, बिस्तरबन्दों आदि की मरम्मत करा लीजिए। नये बहुत महँगे हैं।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

अचूक दवा

सुजाक गुर्दे और मूत्राशय की बीमारियों के लिये।

प्रस्तुतकर्त्ता
ग्रिमाल्ट एण्ड कं०

के नाम चिट्ठियाँ

दोषी कौन है ?

जल्दी गिरता है। हिट- हो गया है किन्तु उसका बड़ा वाद' अभी जीवित है। इन अन्य देशों को अपने अधि लाभ उठाने की लिप्सा— ही तो मौजूद है। साम्राज्य- हिटलरी लुटेरों का मुकदमा में उनका उत्साह सराह- सेनाओं के आत्मसमर्पण के युद्ध के दोषियों (वार क्रिमि- जोरों से जारी है। जो अपराधी ऊँच जायँगे, या उन्हें उचित दण्ड दिया उन्होंने प्रत्यक्ष अथवा युद्ध को जन्म देने या चलाने है, किन्तु इन लोगों का ! साम्राज्यवादियों-द्वारा से इनका फैसला कर- और व्यर्थ होगा क्योंकि और हिटलरवाद दोनों एक रह चुके हैं। डिक्टेटर- साम्राज्यवादिता का ही है ? क्या साम्राज्यवादी की शक्ति बढ़ाने में है ? इतिहास इस बात कि इँग्लैंड और फ्रांस लिनी की शक्ति को दिया था। इन दोनों से बोलशेविज्म के हैं। क्यों न हो— रूस का सिद्धान्त इनके गुरुमंत्र—जो हमारा है उस पर हम अपना अधिकार रक्खेंगे—के विरुद्ध था। ये चाहते थे कि धुरीराष्ट्रों की शक्ति का उत्थान हो और वे बोलशेविज्म का नाश करें।

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री नेविल चेम्बरलेन ने इटली के विषय में लिखा था कि इटली सिग्नोर मुसोलिनी के व्यक्तित्व के अन्दर एक नई शक्ति का उत्पादन कर रहा है जिसमें एक नया दृष्टिकोण और एक नया ओज है। केवल मुसोलिनी को प्रसन्न करने के लिए सर सेमुएलहोर और लावल एबीसीनिया की परतन्त्रता के लिये सहमत हो गये थे। लार्ड हेलीफेक्स ने तो यहाँ तक कि लीग आफ्-नेशन्स से इटली-द्वारा एबीसीनिया की विजय को स्वीकार करवाना चाहा था। हमारे भाग्य-रक्षक एमरी ने कहा था कि एबीसीनिया की जनता मुसोलिनी के शासन में अपने सम्राट् के शासन की अपेक्षा अधिक मजे में है। एमरी ही का विचार था कि रूस और ब्रिटेन का मिलकर नाजी-फासिस्ट शक्तियों से युद्ध करने की बात सोचने से बुरा और कुछ न होगा। लायड जार्ज ने मुसोलिनी की प्रशंसा में एक पैम्फलेट (लघु पत्रिका) लिखा था जिसका प्राक्कथन उस समय के ब्रिटिश वैदेशिक मन्त्री लार्ड हेलीफेक्स-द्वारा सुशोभित किया गया था। आसवल्ड मासले ने तो खुल्लमखुल्ला हिटलर की प्रशंसा लिखी थी और प्रसिद्ध मिथ्यावादी बेवरली निकोलस ने उस प्रशंसा की प्रशंसा लिखी थी। क्या विंटसन चर्चिल इस प्रकार के अपराध से मुक्त हैं ? नहीं। वह दिन हम लोगों को भूला नहीं है जब कि चर्चिल ने हिटलर का शब्द-चित्र खींचते हुए उसे इस 'दोषपूर्ण' और 'अन्यायी' संसार को सुधारने के लिये एक समर्थवान शक्ति बतलाया था।

इस प्रकार जिस समय भारतीय कांग्रेस नेता नाजी-फासिस्ट विरोधी भावना के कारण अपनी स्वतंत्रता के लिए युद्धरत देश चीन और स्पेन की सहायतार्थ भारतवर्ष में कोने-कोने से चंदा इत्यादि एकत्रित कर रहे थे, उस समय ब्रिटिश राजनीतिज्ञ तथा उनसे प्रभावित लीग-आफ-नेशन्स् चुपचाप बैठी अपनी दोतरफा चाल का परिणाम देख रही थी। चोर-चोर मौसेरे भाई ! उनका विचार था—बीच में क्यों पड़ा जाय ; अपना लाभ भले ही न हो, सिद्धान्त की रक्षा तो हो ही रही है !

संसार की गतिविधि बदलती गई। समय-चक्र ने उन्हीं भारतीय नेताओं को जिनके नस नस में नाजी-फासिस्टों को समूल नष्ट करने की भावना दौड़ रही थी कारागार के सीखचों के भीतर डाल दिया ! यहाँ तक कि वे धुरी-राष्ट्र-पक्षी तक कहे गये ! आज विजयी होने के नाते साम्राज्यवादियों को 'युद्ध-अपराधियों' का न्याय करने का अधिकार प्राप्त हुआ है, यद्यपि निष्पक्ष दर्शक की दृष्टि में न्यायाधीश भी उसी अपराध का अपराधी है। किन्तु 'जान बुल' के भयंकर अपराधों का मुकदमा कौन करेगा ? भारतीय नेताओं को कैद में डाल देनेवाले दोषियों को भी युद्ध अपराधियों के साथ समुचित दण्ड मिलना चाहिए। यदि यह असम्भव है तो इसके प्रतिकार स्वरूप सारे संसार से साम्राज्यशाही भावना को निर्मूल कर देना चाहिए, यदि यह भी नहीं हो सकता, तो लाखों 'युद्ध अपराधी' मौत के घाट उतारे जायं किन्तु संसार से भावी युद्ध की संभावना कभी नहीं मिट सकती। वास्तविक अपराधियों के ही नाश में विश्व का कल्याण है, उनके द्वारा उत्पन्न फल-फूल-पत्तियों के नाश में नहीं !

मुहातशिमगंज, —कुमारी शान्त तिवारी
प्रयाग

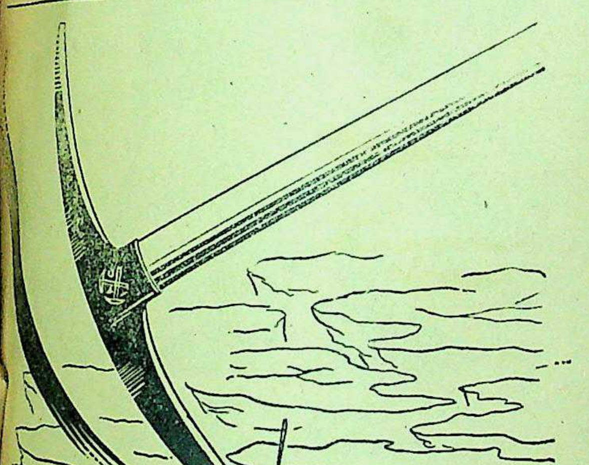

ता . . . .

आप अनुभव करते हैं कि इस साम्राज्य की उन्नति के लिए तथा रेलपथों का निर्माण कितना प्रधान है। साधारण औज़ार हैं इन्हीं की सहायता से में सुधार एवं अच्छी तथा अधिकाधिक सड़कें निर्माण होती हैं।

इन साधारण औज़ारों के प्रस्तुत से लोहे और इस्पात के उद्योग-धंधे, अपनी पूर्ण शक्ति द्वारा भारतवर्ष की उन्नति की शीघ्रता में सहायक हो रहे हैं।

A I C
TRADE MARK

AGRICO TOOLS
एग्रिको औज़ार

यू० पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिमी
सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध
के डिस्ट्रिब्यूटरर्स्।
मेसर्स मोहम्मद दीन ऐंड सन्स,
ग्रैन्ड ट्रंक रोड, अमृतसर,
बन्दर रोड, कराची।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड, (एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमुरी द्वारा प्रचारित।

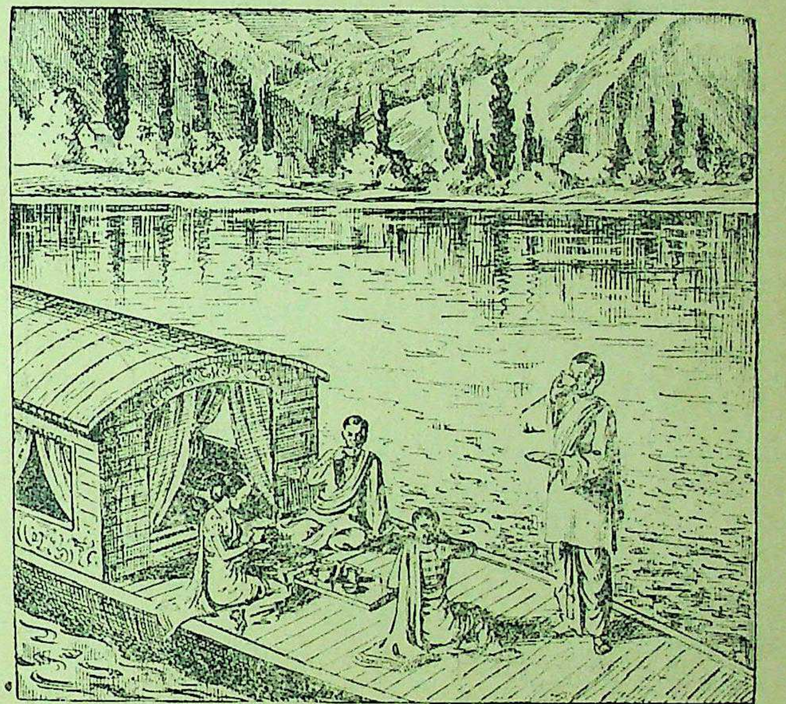

चाय का समय—चेनार के नीचे

नदी, काननों और सरोवरों में बर्फ़ से ढके पहाड़ों का प्रतिबिम्बित दृश्य ही काश्मीर के सौदर्य्य का महत्त्व है। लकड़ी की बनी मनोरम उलझनवाली किनारियों तथा नकाशीदार असबाबों से भरी हाउस-बोटें घाटियों के स्रोत में मन्द मन्द बहती हैं ?

छुट्टी के मनोरञ्जन में जो काश्मीर गये हैं, वे ही अपराह्न के चायपान की प्रतिष्ठा का आनन्द अनुभव कर सकते हैं। चाय, यद्यपि वे नदी के किनारे पर टहलने के बाद कुछ विलम्ब से पीते हैं फिर भी इस मन्दता में खूबी है।

बहुत सी हाउस बोटों में चमकीले काश्मीरी चाय के पात्रों का प्रबन्ध रहता है और पाश्चात्य शिष्टाचार के अनुसार चाय के प्याले में दूध व चीनी को मिलाकर पीते हैं।

वहाँ भी घर ऐसा सम्पूर्ण भारतवर्ष से गये हुए मनोरञ्जनकारियों को ब्रूक बाण्ड चाय मिलती है।

ब्रूक बाँड

'दो पत्ती और एक कली"

नया साहित्य

"नया साहित्य" के प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक कृतियों के ऐसे संग्रह समय-समय पर प्रस्तुत करते रहना है, जो हमारे गतिशील साहित्य के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालते हुए, अन्य प्रान्तीय तथा दूसरे देशों की साहित्यिक कृतियों को भी पेश करेंगे, जिससे लेखकों और पाठकों को तुलनात्मक अध्ययन में अधिक सुविधा हो। यों तो देश में सर्वत्र ही किन्तु विशेष रूप से हिन्दी-साहित्य-जगत में आज एक ऐसी विषम परिस्थिति पैदा हो गई है, जिसे साहित्यिक गतिरोध नाम से भी पुकारा-जा सकता है। जन-जीवन और जन-आन्दोलनों में भाग लेनेवाले अनेक हिन्दी-साहित्यिक आज हतोत्साह, उद्विग्न और थके हुए मालूम होते हैं।

किन्तु हमें पूर्ण विश्वास है कि यह मानसिक अवसाद न अधिक टिकाऊ है और न ही यह साहित्यिकों के अन्तर्तम से प्रेरित हुआ जान पड़ता है। देश के इस व्यक्तिगत और सामूहिक अवसाद के भीतर पहले से भी अधिक बलवती और विस्तारमयी स्वातंत्र्य भावना है। ऊपरी विघ्न-बाधाओं में छिपी हुई वास्तविकता यह है कि देश अपने ध्येय के जितना निकट आज है उतना पहले कभी न था। इस घटना को जब हम अन्तर्देशीय विशाल भूमिका में देखते हैं, (जहां जन-स्वातंत्र्य का संग्राम विजयी और संसार को कई सदियों पीछे ढकेल देने की आकांक्षा रखनेवाला नाजीवाद, पूर्णतः पराजित हुआ है), तो हमारा अवसाद सहज में छिन्न-भिन्न हो जाता है। आशा है हमारे सहयोगी साहित्यिक अपने बचे खुचे अवसाद को भुलाकर समाज-जीवन को स्वस्थ, सबल और सुन्दर बनाने के हेतु "नया साहित्य" को अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

रचनात्मक, आलोचनात्मक और अनुसंधान तथा शोध-संबंधी साहित्य का अधिक से अधिक प्रतिनिधित्व कर सकने के लिए हम पहले एक वर्ष में "नया साहित्य" का कम से कम ६ भागों में प्रकाशन करेंगे। पहला भाग जुलाई के मध्य में प्रकाशित होगा। संग्रह में डिमाई साइज़ के १०४ पृष्ठ होंगे। एक प्रति का मूल्य एक रुपया होगा। इस पते पर पत्र-व्यवहार करना चाहिए—राजभवन, सैण्डहर्स्ट रोड, बम्बई ४।

यशपाल, रामविलास शर्मा,
प्रकाशचन्द्र गुप्त, शिवदानसिंह चौहान,
पहाड़ी, नरेन्द्र शर्मा,
अमृतलाल नागर, रमेश सिनहा

* * *

कानपुर पुखरायाँ, हारामऊ के प्रेम पुस्तकालय तथा वाचनालय का वार्षिक चुनाव श्री एस० के० सिंह से सभापतित्व में हुआ। निम्न पदाधिकारी चुने गये। श्री रूपकिशोर सचान सभापति, श्री धीरेन्द्रकुमारसिंह उपसभापति, श्री शिवनारायण प्रधान मन्त्री, श्री प्रतापनारायण उपमन्त्री, श्री अनन्तकुमार पाण्डेय प्रचार मन्त्री, श्री रामस्वरूप कोषाध्यक्ष, श्री कन्धईप्रसाद रैदास पुस्तकाध्यक्ष, श्री रेवतीरमन सचान निरीक्षक और श्री सुरेन्द्रकुमारसिंह मैनेजर।

—संवाददाता

* * *

आगरा गीता-मन्दिर का ग्रीष्मावकाशकालीन शिक्षण-शिविर १ जून से ३० जून तक एक महीने के लिए यह अस्थायी विद्यालय चलाया जायगा। प्रधानाध्यापक प्रसिद्ध विद्वान् श्री प्रो० सत्येन्द्र जी एम० ए० नियुक्त किये गये हैं।

—संवाददाता

हरिद्वार में हिन्दी-सेवक-मंडल का अधिवेशन कविराज श्री उपेन्द्रनाथ शर्मा के सभापतित्व में हुआ। पं० चिरंजीवलाल शर्मा-द्वारा प्रस्तावित तथा ब्रह्मचारी हरिजीवन-द्वारा अनुमोदित निम्न-प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ—मंडल का यह अधिवेशन भारत के समस्त हिन्दू समाचारपत्रों के संचालकों की सेवा में प्रार्थना करता है कि वह अपने-अपने समाचारपत्रों के पते लिखने में केवल हिन्दी-भाषा को अपनावें। —संवाददाता

* * *

बंगाल सरकार ने आर्थिक वर्ष में ११ मई १९४५ तक बंगाल सरकार ने सहायक योजनाओं के अन्तर्गत २१ लाख से अधिक रुपया स्वीकृत किया है। कृषि-ऋण में ११.०८,४०० रुपये, धर्मार्थ सहायता के लिए १५,२३,४६१ रुपये टेस्ट रिलीफ के लिए। ६,०६,६५९ रुपये जीविका-निर्माण में ३,२५,७६० रुपये तथा सिंचाई योजना में ११,१५,१९८ रुपये स्वीकृत किये गये हैं।

बंगाल युद्ध-कोष, रेड-क्रास फन्ड तथा ईस्ट इंडिया फन्ड में २६ अप्रैल १९४५ तक क्रमशः १,६१,५६,०३६ रुपये तथा, ६,८२,८५७ रुपये प्राप्त हुए हैं। —संवाददाता

इधर उधर

बर्लिन में मोटर गाड़ियों
करनेवालों ने सन् १९२१ ई०
तक ८०,००,००,००० पौण्ड
अदा किये हैं।

* *

इँग्लैण्ड में "हिताहित के
रकम" जो ब्रिटिश खजाने में
अदा की गई है ३१०१ पौंड
रकम पिछले वर्षों की रकम
पौण्ड के मुकाबले बहुत ही कम है।

* *

गैस लाइट को चीनियों ने
उपयोग किया था। उन्होंने प्राकृ
नमक के खानों से बाँसों की नलि
भेजा था।

* *

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका में
का समूह बिक्री के लिए
है। ये अंडे एक तरतीब से
घर की स्त्रियों को जब एक
आवश्यकता पड़ती है तो वे उसे
कर गर्म कर लिया करती हैं।

GG
BRAND
SQUASHES
LEMON
SQUASH
फलपेय

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इंडस्ट्रीज़

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी बाजार, देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मेसर्स गिरधरलाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली।

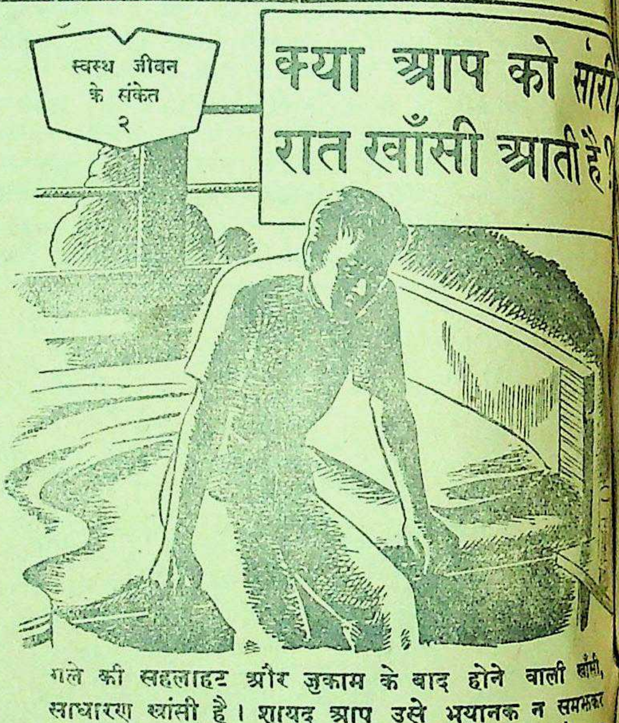

गले की सहलाहट और जुकाम के बाद होने वाली खाँसी, साधारण खांसी है। शायद आप उसे भयानक न समझकर चिकित्सा और उपचार न करें। शायद सारी रात बैठ कर खांसते रहनेपर भी आप उसकी अवहेलना करें। परंतु इस अवहेलना का परिणाम भयानक है। क्योंकि आप के फेफड़े इतनी कोमल झिल्ली के बने हैं कि वे खाँसी के झटकों को नहीं सह सकते।

ग्लाइकोडीन टर्प वसाका डाक्टरों द्वारा प्रयुक्त और प्रमाणित, खांसी की औषधि है। वह खांसी को तुरंत शान्ति देती और उसके मूल कारणों को नष्ट करती है। उस के शक्ति शाली परमाणुं खांसी को समूल नष्ट करने वाले हैं।

स्नायु विकार से उत्पन्न हुई हर प्रकार की खाँसी के लिये अपने डाक्टर की सलाह लीजिये।

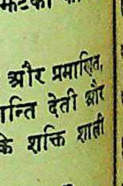

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका
शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर
अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड,

[illegible] दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

ारिडन से
मिनट में ही
किस्म का दर्द
दूर कीजिये
Saridon

कपड़े की कमी।

के लिए कपड़े की कमी जो आजकल सर्वत्र अनुभव की जा रही है उससे देहली क्लॉथ मिल्स की दूकानें जो डी.सी.एम्. स्टोर्स के नामसे सर्वत्र विख्यात हैं सदा सैकड़ों ग्राहकों सेघिरी रहती हैं, बची नहीं।

दूसरी दूकानों में कपड़ा मिलना कठिन होगया है हमारी दूकानों नें उन नये ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित किया है जिन्होंने पहले कभी हमसे कपड़ा नहीं खरीदा था, परिणामतः हम अपने स्टोरों को पहले की अपेक्षा अधिक कपड़ा मुहैय्या करते रहे हैं परंतु कि अब हम इससे अधिक माँग पूरी करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इन परिस्थितियों में हम महसूस करते हैं कि हमारे ग्राहकों के लिए यह असुविधाजनक है बहुत देरतक इंतजार करने पर भी उन्हें थोड़ासा कपड़ा मिल सकेगा जोकि हम प्रत्येक ग्राहक को देसकेंगे।

तोभी हम अपने माननीय ग्राहकों को विश्वास दिलाते हैं कि इन दिनों हम उनकी अधिक सेवा नहीं कर सकते, इसलिए नहीं कि ऐसा करने की हमारी इच्छा नहीं है या हमारी तरफ से इसके लिए प्रयत्न ही नहीं होते हैं वरन इसलिए कि ऐसा करा सकना हमारी शक्ति के बाहर होगया है। हम अपने ग्राहकों के प्रति भी विश्वास रखते हैं कि वे हमारी कठिनाइयों को महसूस करेंगे और हमारे प्रति सहिष्णु बने रहेंगे जबतक कि उपयुक्त अवसर आता है और हम उन्हे पूर्ण सन्तुष्ट करने में समर्थ होते हैं।

दि देहली क्लॉथ एण्ड जेनरल मिल्स
कंपनी, लिमिटेड, देहली।

DCM. 84—Hindi.

शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में प्रबन्धक सहकारियों की शीघ्र आवश्यकता है

शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में नान-कमीशण्ड अफ़सरों की एक नई शाखा खोली गई है। इस शाखा में भरती होकर बहुत से व्यक्ति अच्छी ट्रेनिंग और अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, जो लड़ाई के बाद नागरिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें पूरी तरह तैयार कर देगा। आर० आई० ए० एफ़० (शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े) के एड्मिन्सट्रेटिव असिस्टेण्टों (प्रबन्धक सहकारियों) के ज़िम्मे यह महत्वपूर्ण काम होगा कि हिन्दुस्तानी हवाबाज़ों की भलाई और प्रबन्ध संबंधी कार्यों में वे कमाण्डिङ्ग अफ़सरों को सहायता पहुँचावेंगे। जो लोग लड़ाई के बाद हवाई बेड़े में न रहें उन्हें दूसरी सरकारी नौकरियां पाने का बहुत अच्छा मौक़ा मिलेगा, क्योंकि सरकार ने यह ज़िम्मा लिया है कि सरकारी नौकरियों की एक बड़ी तादाद उन लोगों के लिए ख़ाली रखी जायगी जो आजकल फ़ौजी नौकरी में हैं।

योग्यता

शिक्षा : कम से कम किसी विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट होना चाहिए। उम्र : २० से ३८ साल। तन्दुरुस्ती : डाक्टरी लिहाज से तन्दुरुस्त और बीमारियों से बरी। ओहदा : उम्मीदवारों को एअरक्रैफ्टमैन सेकेण्ड क्लास के ओहदे पर भरती किया जायगा और ट्रेनिंग के लिए जाने पर ऐक्टिंग सार्जण्ट (पेड) के ओहदे पर तरक्क़ी हो जायगी। तनख़ाह : ऐक्टिंग सार्जण्ट (पेड)—११५ रु० माहवार। फ्लाइट सार्जण्ट—१३० रुपये माहवार। वारण्ट आफिसर—२०० रु० माहवार। रियायतें : ऐडमिन्सट्रेटिव असिस्टेण्ट को मुफ़्त में भोजन, कपड़ा, रहने की जगह, चिकित्सा और दांत के इलाज की सुविधायें तथा वे सब भत्ते और रियायतें मिलती हैं जिनके पाने का अधिकार शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के दूसरे फ़ौजी कर्मचारियों को होता है।

दरख़्वास्त देने का तरीक़ा

अपने पास के भरती-दफ़्तर को लिखिए या खुद जाकर मिलिए। इनकी सूची नीचे दी जाती है:—

लखनऊ—(हे० क्वा०) ईस्टर्न एरिया, हजरतगंज।

लखनऊ—३६, विश्वेश्वरनाथ रोड।

आगरा—हन्टले होस्टल, ड्रमन्ड रोड।

इलाहाबाद—१८, कैनिङ्ग रोड।

AAA 1491

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन
पचाने के लिये
प्रकृति पाचक-
रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न
कर सकी तो आपके
पाचन के लिये
बेंगल इम्युनिटि
बाइ-डाइस्टेज
प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE

विशुद्ध वनस्पतियों
से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर
बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

भारत माता

अपने बच्चों से कहो ! कि
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

IMPORTANT TO MOTHERS
Nº 99
WOODWARD'S CELEBRATED
"GRIPE WATER"
INFANTS PRESERVATIVE

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"रूप से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

I-WW 117—117 W. WOODWARD LTD. LONDON ENGLAND

मधुशाला—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की ... री-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

---

५० हज़ार रुपया इनाम पाने वाले का कथन

"मैं बहुत प्रसन्न हूँ !"

जनवरी, सन् १९४५ में प्राइज़ (इनामी) बांड की लाटरी के नतीजे जब प्रकाशित हुए तो दूसरे बहुत से लोगों की भाँति सर बी. एल. मित्र के सुपुत्र, कलकत्ता निवासी श्री युत बी. मित्र ने भी नतीजों की तालिका पर नज़र दौड़ाई। उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन्हें ५० हज़ार रुपये का पहला इनाम मिला है।

श्री युत मित्र ने इनामी बांड इसलिए ख़रीदे थे कि एक तो इनमें रक़म पूर्णतया सुरक्षित रहती है और दूसरे बहुत से इनाम पाने का मौक़ा रहता है। उन्होंने हँसते हुए कहा—"मुझे इनाम पाने का भरोसा नहीं था। किन्तु चूँकि भाग्य ने मेरा साथ दिया, मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

श्री युत मित्र धीर तथा गंभीर चित्त के व्यक्ति हैं और इस लिए अपने सौभाग्य के कारण उनके जीवन में यकायक कोई परिवर्तन नहीं हुआ। उनका कहना है—"कौन जाने, ५० हज़ार रुपये की यह रक़म शायद कभी किसी अच्छे काम में लग जाय।"

इनामी बांड दो कीमतों के हैं—१०० रुपये वाले और १० रुपये वाले। १०० रुपये वाले एक लाख इनामी बांडों के हर सिलसिले पर, पहला इनाम ५० हजार रुपये का, दो दूसरे इनाम बीस-बीस हजार रुपये के और दो तीसरे इनाम पाँच पाँच हजार रुपये के। १० रुपये वाले एक लाख इनामी बांडों के हर सिलसिले पर, पहला इनाम ढाई हजार रुपये का, दो दूसरे इनाम सवा-सवा हजार रुपये के, पाँच तीसरे इनाम पाँच-पाँच सौ रुपये के और दस चौथे इनाम ढाई-ढाई सौ रुपये के। जनवरी, सन् १९४९ तक हर छमाही इनाम निकाले जायँगे और तब सब बांडों की असल रक़म वापस दे दी जायगी। प्रत्येक बांड को अभी इनाम जीतने का मौक़ा आठ बार और मिलेगा; वही बांड कई बार इनाम जीत सकता है। इनाम की रक़म पर इनकम टैक्स, सुपर टैक्स, एक्सेस प्राफिट टैक्स और कारपोरेशन टैक्स नहीं लगता।

AAA 212 Hindi

इनामी बांड ख़रीदिए

पिछली लाटरी में ४ लाख रुपये के इनाम।

अगली
लाटरी
जुलाई
१९४५

आप रिजर्व बैंक आफ इंडिया अथवा इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की किसी शाखा से, अथवा सब कहीं बड़े-छोटे सरकारी ख़ज़ानों से प्राइज़ (इनामी) बांड ख़रीद सकते हैं। एक आदमी कितने बांड ख़रीदे इसके लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं है।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्र-द्वारा [illegible] लिमिटेड, [illegible] पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पाद

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

वार्षिक मूल्य ७॥)
एक संख्या =)

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

१७ जून, १९४५

Sunday, 17th June, 1945

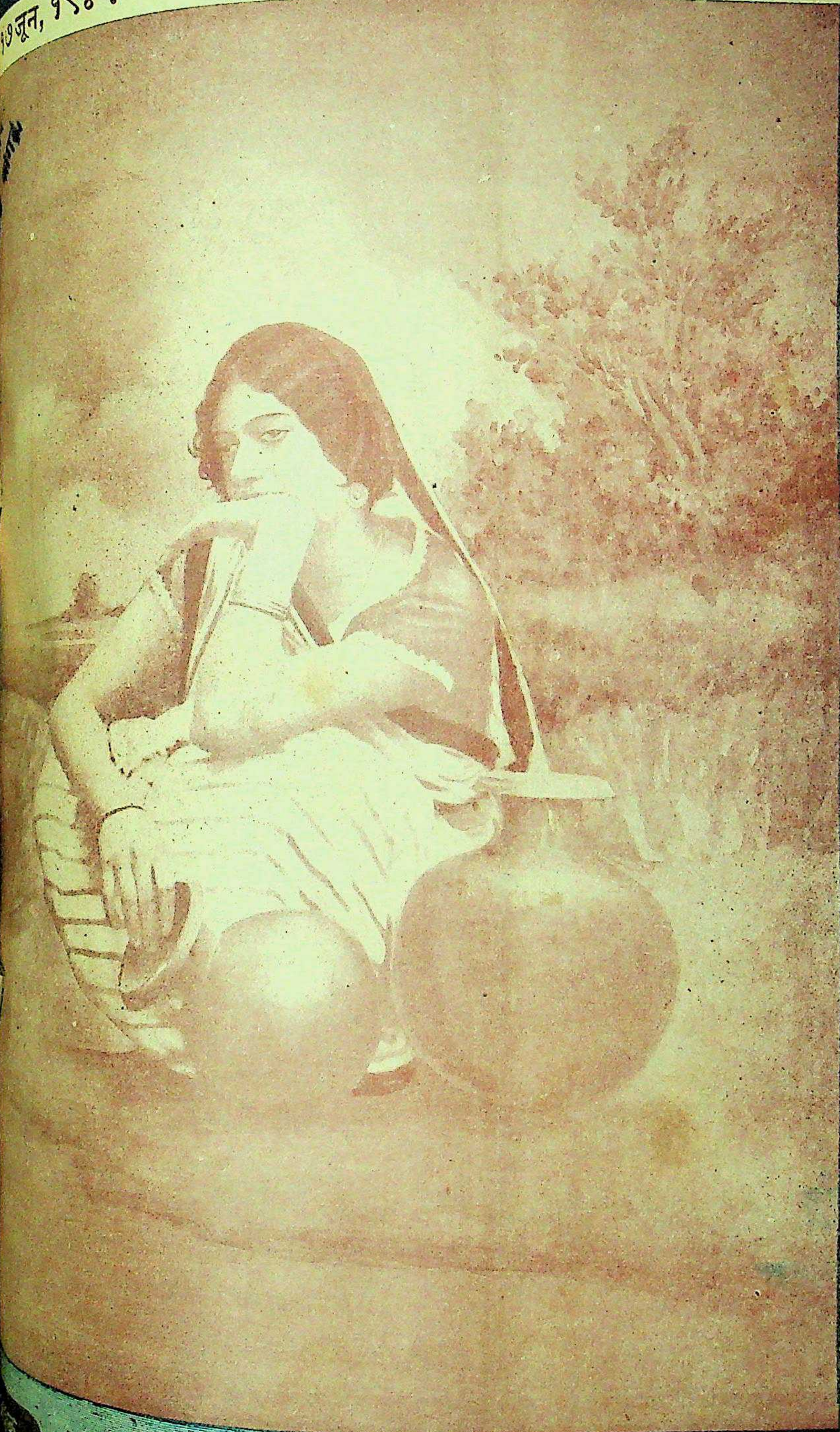

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। नया विषय और नयी रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका
बुभुक्षा
महायुद्ध में अपनी बीती
धरतीमाता

आधुनिक-उपन्यास

नरक
नया क़दम
आरती
त्याग का मूल्य
रूपान्तर
बहूरानी की हाट
जमींदार
देहाती समाज
अग्रणी
साथी
निष्कलंकिनी
अरक्षणीया
तीन-नगीने
पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल
लाल दूत
मशीन के पुर्ज़े
घर का भेदिया
झंडा डाकू
समस्या
महान् अपराधी
जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली
पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
योरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हिन्दी के निर्माता
सूर-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

प्रत्येक का मूल्य ॥=) है।

भैरवी—इसकी राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनाएँ, असली आर्ट पेपर पर चित्र, बहुत अच्छी जिल्द और रैपर सहित, तृतीय संस्करण। मूल्य २।।≡) दो रुपये ग्यारह आने।

की सभ्यता कैसी थी?
बनेंगे?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र

कांग्रेस और देशीराजों की समस्या।
स्वतंत्र चीन की आधुनिक सेना।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गई।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

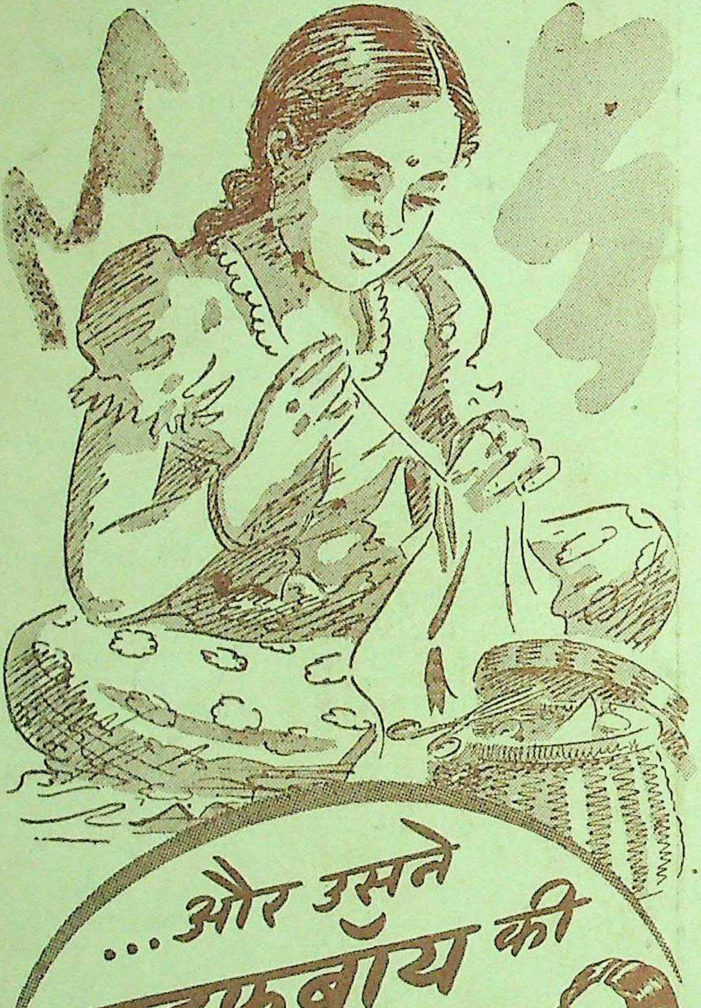

सूई के हर एक टाँके के साथ वह एक गुणवन्ती नन्हीं बालिका बनने की शिक्षा ले रही है। उसकी माता जानती है कि वह एक स्वस्थ बालिका भी होगी, क्योंकि उसने प्रतिदिन लाइफ़बॉय सोप के प्रयोग की आदत भी सीख ली है।

यह आदत उसे स्वास्थ्य और शक्ति के गुप्त शत्रु गन्दगी के ख़तरे से बचाती है।

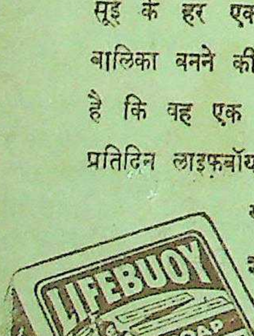

लाइफ़बॉय का
व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत है

L. 81-169 HI

कपड़े की कमी।

जनता के लिए कपड़े की कमी जो आजकल सर्वत्र अनुभव की जा रही है उससे देहली क्लॉथ मिल्स की दूकानें भी जो डी.सी.एम् स्टोर्स के नामसे सर्वत्र विख्यात हैं और जो बहुधा सैकड़ों ग्राहकों सेघिरी रहती हैं, बची न रह सकीं।

चूँकि दूसरी दूकानों में कपड़ा मिलना कठिन होगया। इसलिए हमारी दूकानों नें उन नये ग्राहकों को अपनी और आकर्षित किया है जिन्होंने पहले कभी हमसे कपड़ा नहीं खरीदा था, परिणामतः हम अपने स्टोरों को पहले की अपेक्षा अधिक कपड़ा मुहैय्या करते रहे हैं परंतु खेद है कि अब हम इससे अधिक माँग पूरी करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। इन परिस्थितियों में हम महसूस करते हैं कि हमारे ग्राहकों के लिए यह असुविधाजनक है कि बहुत देरतक इंतजार करने पर भी उन्हें थोड़ासा कपड़ा प्राप्त हो सकेगा जोकि हम प्रत्येक ग्राहक को देसकेंगे।

परन्तु तोभी हम अपने माननीय ग्राहकों को विश्वास दिलाते हैं कि इन दिनों हम उनकी अधिक सेवा नहीं कर सकते, यह इसलिए नहीं कि ऐसा करने की हमारी इच्छा नहीं है या हमारी तरफ से इसके लिए प्रयत्न ही नहीं होते हैं वरन पूर्णतया इसलिए कि ऐसा करा सकना हमारी शक्ति के बाहर होगया है। हम अपने ग्राहकों के प्रति भी विश्वास करते हैं कि वे हमारी कठिनाइयों को महसूस करेंगे और हमारे प्रति सहिष्णु बने रहेंगे जबतक कि उपयुक्त अवसर आता है और हम उन्हें पूर्ण सन्तुष्ट करने में समर्थ होते हैं।

दि देहली क्लॉथ एण्ड जेनरल मिल्स कंपनी, लिमिटेड, देहली।

DCM. 84—Hindi.

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, १७ जून, १९४५

७ संख्या ४२]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

गांधी

वेवेल इँगलैण्ड
उन्होंने आते ही
दिया है।
मंडल सचमुच
, अब तो कोई
! अब मुसलमानों
आ रही है तब
समझौता तो कर
इसका उदाहरण
है। वहाँ संयुक्त
, और अब देखिये
कानूनी करार
यदि इसी तरह सभी
मुस्लिम लीग, हिन्दू
मिलकर एकता के
डालें तो स्वाधीनता
जायेगी और कम से
पाबंदियों का सरकार
कर दिया जायेगा।
प्राप्त करने का यह
और भविष्य के
है।

*

मंडलों का निर्माण है तो
। लेकिन ईश्वर ने
हिन्दू नाम के जीव-
सबक मिलेगा।
मन्त्री होंगे ही,
मुसलमान भाइयों ने
सही हैं उनको
है? दो-एक सीट
ही। अछूत-अल्प
की रक्षा के लिये
रूप से दिलचस्पी
उनका भी प्रतिनिधित्व
ही रह गई हिन्दू
शायद उसे भी
। भाग्य की
जितने कांग्रेस-
भी तो हिन्द

ही होंगे ? लेकिन हाँ, कांग्रेस तो साम्प्रदायवाद समझती नहीं लेकिन मुसलिमलीग उन्हें हिन्दू कहने से कब चूकनेवाली है ? इस प्रकार से जो मंत्रिमंडल बनेगा, वह वास्तव में नायाब होगा। कांग्रेस मंत्रिमंडल का अतीत हमारे सामने है, अब इस खिचड़ी मंत्रिमंडलों का भविष्य देखना है ?

*　　　*　　　*

सेनफ्रान्सिस्को सम्मेलन में पाँच बड़े राष्ट्रों में पूर्ण समझौता हो गया और इससे जान पड़ता है कि नये राष्ट्रसंघ की अब पुनः स्थापना में कोई कसर नहीं है। युद्ध के बाद अगर संसार के राष्ट्रों के प्रतिनिधित्व के लिए नये राष्ट्रसंघ की स्थापना न हुई तो संसार का उद्धार कैसे होगा ? पिछले युद्ध की समाप्ति के बाद भी तो राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई थी ? और उसका परिणाम क्या हुआ ? एक दूसरे महायुद्ध की तैयारी। सचमुच 'राष्ट्रसंघ' पर जान पड़ता है शनि की दृष्टि लग गई है, इसकी स्थापना हुई और समझ लीजिए कि संसार में शांति और सुरक्षा के नाम पर नई गर्दिश आई। लेकिन मित्रराष्ट्रों की वैधानिक ढङ्ग से काम करने की पुरानी आदत पड़ गई है। विशेषकर अमेरिका और ब्रिटेन को। हुकूमत के बिना यह संसार में जीवित नहीं रह सकते। इसलिए राष्ट्रसंघ बनना ही चाहिए। भविष्य तो खुदा के हाथ रहता है, अँगरेज और अमरीकन भी तो आखिर मानव ही हैं।

*　　　*　　　*

वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्यों में इस वक्त देशभक्ति का जोश उमड़ पड़ा है। वह औपनिवेशिक स्वराज्य तो ब्रिटिश सरकार से ले ही लेना चाहते हैं। जरूर लेना चाहिए, यही अवसर है। जो काम आज तक कांग्रेस नहीं कर सकी, यहाँ तक कि मुस्लिम लीग पाकिस्तान नहीं ले सकी, तो कार्यकारिणी के सदस्यों को यदि औपनिवेशिक स्वराज्य मिल जाय तो आश्चर्य की क्या बात है ? सदस्यों ने युद्ध के इस गाढ़े समय में सरकार की जैसी सहायता की है, वैसी दूसरे के भाग्य में बदी ही नहीं थी। लेकिन अपने राम की राय है कि वह दिन लद गये, अब भारत में एक नया नाटक शुरू होनेवाला है, उसके अभिनेता चुन लिये गये हैं। अभिनेत्रियाँ चुनी गईं कि नहीं, हमें कम से कम खबर नहीं—इसलिए कार्यकारिणी के सदस्यों को केवल दर्शक की हैसियत से नाटक देखना पड़ेगा। क्योंकि इस बार डाइरेक्टर लार्ड वैवेल नये पहलू का डाइरेक्शन लेकर लंदन से आये हैं। इसलिए उनकी गुंजाइश फिलहाल नहीं जान पड़ती। धैर्य से काम लेना चाहिए।

*　　　*　　　*

जर्मनी का पराजय हो गया। मित्रराष्ट्रों ने उसका बटवारा भी कर लिया। ठीक ही है। शिकार हो जाने पर बटवारा यदि नहीं होता तो शिकारी किसका मुख देख कर जिन्दा रहें ? यदि उनके हत्थे कुछ नहीं लगता तो हृदय को तसल्ली कैसे हो ? लेकिन बड़े शोक का विषय है कि नाज़ी डिक्टेटर हर हिटलर किसी के हत्थे नहीं चढ़ा। उसके ही कारण से संसार का उलट फेर हुआ। मित्रराष्ट्रों की अपार जल-स्थल और वायुसेना भी उसके अब तक के मरने-जीने का कोई पता नहीं लगा सकी है। कोई कहता है मर गया और कोई है जीवित है। पिछले दिनों एक नया अन्वेषण हुआ है कि हिटलर ने मरने के दो दिन पूर्व ईवाब्रान नामक फिल्म अभिनेत्री से विवाह किया था। यह खूब रहा, एक ओर सर पर मौत के बादल मँडरा रहे थे, दूसरी ओर विवाह का नक्कारा बज रहा था। हिटलर भी क्या विचित्र जीव था ?

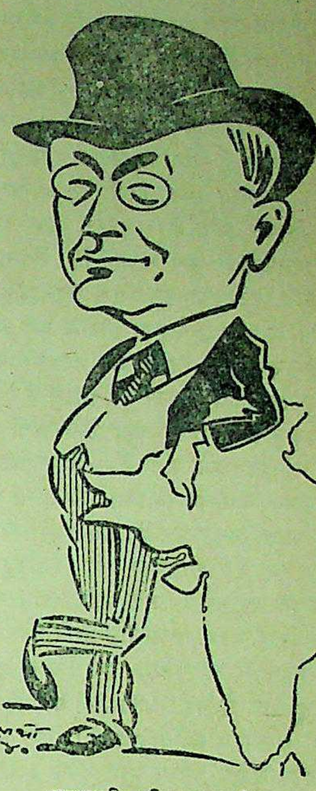

भारतसचिव मिस्टर अमरी

योरोप के युद्ध में करोड़ों सैनिक स्वाहा हो गये। पृथ्वी कितने ही मानवों से रहित हो गई किन्तु एशिया हाई कमांड बड़ा भाग्यशाली निकला। प्रेसिडेंट ट्रूमन ने कहा है कि योरोपीय युद्ध मोर्चे के जितने सैनिक शेष हैं वह सब एशिया के युद्ध मोर्चे पर लगा दिये जायेंगे। इसके सिवा सबसे बड़ी प्रसन्नता इस बात की है कि एक हजार चूहों की पल्टन भी दक्षिण पूर्व एशिया हाई कमांड की ओर कूच करनेवाली है। इन चूहों को डाक्टरों ने निरोग सिद्ध कर दिया है। चूहों की पल्टन के सरदार शेफील्ड विश्वविद्यालय के अध्यापक ब्राडनिंग बनाये गये हैं। वाकई यह कुमक जहाँ दक्षिण पूर्व एशिया के युद्ध मोर्चे पर दाखिल हुई वहाँ जापानियों को भागते देर न लगेगी। एशिया को जापानी साम्राज्यवाद से मुक्त करने के लिये मित्रराष्ट्रों की इस सूझ की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है। यों तो मित्रराष्ट्रों की जीत तो जापानियों के विरुद्ध होती ही किन्तु चूहों की पल्टन द्वारा यदि जापानी साम्राज्य ध्वंस हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं।

*　　　*　　　*

ब्रिटिश पार्लियामेंट का अंत १५ जून को हो गया। ५ जुलाई को नया निर्वाचन होगा और २७ जुलाई को नई पार्लियामेंट बन जायेगी। देखना है जीत किसकी होती है ? मजदूर दल जीतता है या टोरी दल ? लेकिन भारत के लिये तो जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ। जैसे टोरी वैसे मजदूर। क्योंकि कौन अँग्रेज है जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद का पोषक नहीं ? यदि ब्रिटिश साम्राज्यवाद न रहा तो आखिर अंग्रेज संसार पर आधिपत्य कैसे कायम रख सकेंगे ? पार्लियामेंट के चुनाव के बाद ही लंदन में ब्रिटेन, अमरीका और रूस का सम्मेलन होनेवाला है। ब्रिटिश पहले ब्रिटिश है, इसके बाद प्रजातंत्रवादी, स्वराज्यवादी और सब कुछ !

सेनफ्रांसिस्को में होने वाले विश्वसुरक्षा सम्मेलन में—बाईं ओर से दाहनी ओर—रूस के वैदेशिक मंत्री एम० मोलोटोव, अमरीका में ब्रिटिश राजदूत लार्ड हेलीफाक्स और ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री एन्थोनी ईडेन।

सम्पादक का पृष्ठ

पराधीन राष्ट्रों की स्वाधीनता

पिछले कुछ दिनों से सीरिया, लेबनान तथा फ़्रांस के बीच एक गंभीर झगड़ा हो रहा है। यह झगड़ा वास्तव में स्वतंत्रता तथा साम्राज्यवादी प्रभुत्व की इच्छाओं का है। पराधीन लेबनानियों की स्वतंत्रता की इच्छा के प्रति हमारी हार्दिक सहानुभूति है साथ ही यह भी प्रसन्नता का विषय है कि, ब्रिटेन ने हस्तक्षेप करके लेबनान की माँगों के औचित्य का समर्थन किया है। परन्तु, यहाँ हम यह समझने में भूल न करें कि लेबनान के प्रति ब्रिटेन का वास्तविक सद्भाव है। ब्रिटेन के भीतरी उद्देश्य निराले हैं। एक समाचार-पत्र ने ब्रिटेन की मध्यपूर्व की नीति पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि, "लेबनान के मामले में जहाँ फ़ेन्च दोषी हैं वहाँ अँगरेज कम नहीं हैं। जिस ब्रिटेन को लेबनानियों की स्वतंत्रता की माँगों के प्रति इतना प्रबल प्रेम है, उसने भारतवर्ष में १९४२ के स्वतंत्रता के सामूहिक आंदोलन को कुचल डाला, पंडित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद आदि नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया तथा कितनों ही की दुर्दशा की गई। कांग्रेसी-नेता पहिले से ही फासिज्म के विरोधी थे। फिर भी ब्रिटेन ने उनको पकड़ा और अनेक प्रकार के अत्याचार करके देश में मध्यकालीन बर्बर युग की पुनरावृत्ति की।" इस सत्य को देखते हुए "शिकागो ट्रिब्यून" ने ब्रिटेन की मध्यपूर्व की नीति को दांभिक बताया है, जो हमें उचित मालूम पड़ता है।

ब्रिटेन की इस दांभिक नीति का भंडाफोड़ निकट-पूर्व में अधिक हुआ है। वहाँ तो जर्मनी की डर नहीं था फिर भी जब कि, अमेरिका की सेनाएँ यूरोप में लड़ रही थीं, तब अँगरेजी फौजें निकटपूर्व में विद्यमान थीं। "इसीलिए न्यूयार्क पोस्ट" ने लेबनान व फ़्रेंच सेनाओं के हटाने पर जितना जोर दिया है उतना ही जोर अँगरेज़ी सेनाओं के हटाने पर भी। फ़्रेंच नेता जनरल डिगाल ने चर्चिल को इसलिए दोष दिया कि उन्होंने लेबनानियों को फ़्रेन्चों के विरुद्ध आंदोलन करने को उसकाया। डिगाल ने यह प्रस्ताव किया कि लेबनान की समस्या पाँच बड़ों के सामने रखकर तय की जाय। इसका विरोध चर्चिल तथा उनके सहकर्मियों ने तीव्रता से किया है। परन्तु हम डिगाल के प्रस्ताव को अनुचित नहीं समझते हैं। इस प्रस्ताव को मान लेने का अर्थ यह है कि औपनिवेशिक प्रश्न किसी खास देश का विशेषाधिकार नहीं है वह एक सामूहिक प्रश्न है जिसका हल समस्त देशों के द्वारा ही होना चाहिए। ब्रिटेन को उस प्रस्ताव को मान लेने में डर यह है कि उसे अपने समस्त उपनिवेशों के प्रभुत्व से हाँथ धोना पड़ेगा। वह चाहता है कि उपनिवेशों का प्रश्न उसका घरेलू प्रश्न बन कर रहे, जिसमें हस्तक्षेप करने का किसी को हक नहीं। इसीलिए तो ब्रिटेन अमेरिका को भारतवर्ष के मामले में हस्तक्षेप करने नहीं देता क्योंकि उसको हिन्दुस्तान की स्वाधीनता का प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं प्रतीत होता। मि० फिलिप्स का पंडित जवाहरलाल नेहरू आदि के साथ परामर्श करना, गांधी जी से मिलने के लिए वायसराय से प्रार्थना करना एक बड़ी कूटनीतिपूर्ण घटना थी। मानो भारतवर्ष ऐसा एक पवित्र मंदिर है—जिसमें ब्रिटेन की आज्ञा के बिना प्रवेश करना अच्छा नहीं समझा जाता।

तात्पर्य यह है कि ब्रिटेन अपने उपनिवेशों का स्वयं ही भाग्य-विधाता बनना चाहता है। अतएव इसने डिगाल के उचित प्रस्ताव का विरोध किया है। हमारा कर्तव्य है कि, हम सब पीड़ित और पराधीन देशों के प्रति अपनी पूरी सहानुभूति और सहायता प्रदान करें।

गीत

लेखक, श्री 'अंचल' एम० ए०

हरी चूनर पहनकर आ रही वर्षा सोहागिन फिर।
कहीं बन बीच फूलों में पड़ी थी स्वप्न में सोई,
उलझते बादलों की लट पिया हलका गया कोई;
तिमिर ने राह कर दी—राह कच्ची धूप की धोई,
पवन की रागिनी मोती भरे आकाश में खोई;
पहन धानी लहरिया आ रही वर्षा सोहागिन फिर।
गुँथी है जुगनुओं से मोरपंखी किशमिसी चोली,
दिये गुलनार माथे पर शफ़क़ की रेशमी रोली;
हिंडोलों की लहर में गीत की कोमल कड़ी बोली,
लकीरें खींच पारे की बलाका व्योम में डोली;
लिये मन नव वधू का चल पड़ी वर्षा सोहागिन फिर।
हिना से लाल हाथों में लजीले चाँद की थाली,
चमकती दामिनी ज्यों माँग की हो ईंगुरी लाली;
विभा की दर्पणी में देख अपना रूप मतवाली,
फटी पौ आज यौवन की रही जो गूँज हरियाली;
पहन मंजीर झरनों के चली वर्षा सोहागिन फिर।
मचलती और खिलती सद्य स्नाता-सी चली आती,
नये सुकुमार रंगों में किरण-सा रूप छिटकाती;
अधर दाँतों तले दाबे—सभी को देखती भाती,
कमर में इन्द्र धनुषी करधनी सौ बार बल खाती;
हरी चूनर पहनकर आ रही वर्षा सोहागिन फिर।

उदयपुर के सम्मेलन का सभापतित्व

आगामी हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व का प्रश्न उपस्थित है। उस पर विचार-विनिमय भी पत्रों द्वारा होने लगा है। कुछ समय पूर्व उदयपुर अधिवेशन के कार्यकर्ताओं ने कुछ वक्तव्यों द्वारा यह सुझाने की चेष्टा की है कि सम्मेलन को अब राष्ट्रीय कांग्रेस की भांति वस्तुतः भारतीय रूप धारण करना चाहिए। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन को कार्यक्षेत्र में उतरना है। अब तक परीक्षा को छोड़कर दूसरा कोई कार्य सम्मेलन की ओर से कारणवश नहीं हो सका। संस्था में वास्तविक त्याग को टटोलना पड़ता है। वर्तमान परिस्थिति को दृष्टि में रखते हुए इसमें त्याग और त्यागियों का समावेश अनिवार्य है।

मुसलमान समाज राष्ट्रीयता-विकाश में बहुत पीछे है ही। उसे अच्छा अवसर मिला है कि वह समग्र हिन्दुस्तान को उर्दू भाषा और फ़ारसी लिपि सीखने के लिए कहे। राष्ट्रीय कांग्रेस में नागरी तथा नागरी लिपि का पक्ष लेना राष्ट्रीय-मुसलमानों तक की दृष्टि में राष्ट्रीय अपराध है। बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन और बाबू सम्पूर्णानन्द जी "हिन्दी राष्ट्र-भाषा हो सकती है" ऐसा घोषित करने के कारण कांग्रेस प्रतिनिधि सभा में रहने के अयोग्य हैं। ऐसी भयंकर स्थिति हमारे ही हाथों किसी न किसी कारण उत्पन्न हो गई है।

ऐसे कुसमय में हमें उदयपुर के सम्मेलन के लिए ऐसा सभापति निर्वाचित करना चाहिए जो निर्भीक हो। जो वर्ष भर अधिक से अधिक समय देकर सम्मेलन के अंग-प्रत्यंग को सिरजे और उन्हें सुचारु, सुडौल तथा सशक्त बनाने के जितने साधन हों उन सब को उपस्थित करे। ऐसा व्यक्ति, चाहे हिन्दी का उच्चकोटि का विद्वान् हो या न हो, परन्तु उसमें राष्ट्रभाषा के वर्तमान रूप को विराट तथा सुन्दर से सुन्दर बनाने की लगन हो। ऐसे दायित्वपूर्ण भार के लिए किसी विश्वविद्यालय का कोई अध्यापक उपयुक्त नहीं हो सकता। हिन्दी भाषा के धनिक-प्रेमी इस कार्य के लिए उपयुक्त होते परन्तु उनमें न तो हृदय है और न आत्मा। वह भी इस पद के लिए बेकार हैं। अतः कोई निर्धन त्यागी इस कार्य के सम्पादन की क्षमता रख सकता है। परन्तु त्यागी, साधु या संन्यासी नहीं, गृहस्थ हो और वह भी सर्वाङ्गपूर्ण और स्वस्थ। ऐसे व्यक्ति को उदयपुर सम्मेलन के सभापति-पद के लिए ढूंढ़ना चाहिए या सम्मेलन की ओर से घोषित कर देना चाहिए कि इस सेवा के लिए जो हिन्दी प्रेमी तैयार हैं वह पत्र-द्वारा अपनी स्वीकृति भेजें। ऐसे पत्र-प्रेषकों में से किसी एक को निर्वाचित कर लिया जाये।

पाठकों को संभवतः यह भद्दा जँचेगा कि सभापति बनने वाले स्वयं अपनी इच्छा प्रगट करें परन्तु मेरी तुच्छ बुद्धि में आज का समय हिन्दी के लिए अतीव भयंकर है। आज हिन्दी के विरुद्ध केवल सौ कौरव ही नहीं सौ कौरव और पांच-पाँडव एक सौ पाँच का जत्था उसे मटियामेट करने पर उतारू हो गया है। ऐसी दशा में हमें ऐसा 'सभापति चुनना चाहिए जो अपना मस्तक किसी भी विदेशी भाषा अथवा लिपि के सामने तनिक भी न झुकाये, जो किसी ढंग से किसी प्रकार के समझौते से मिला। हमें आज ऐसे हिन्दी- उदयपुरी सम्मेलन के मंच पर है जो कौरव-पाण्डव दोनों झुकाये और सम्मार्ग पर शक्तिधारी कौन होगा? हमारे ढूँढ़ें, खोजें और लायें। बाद उन्हें प्रकाश में लाने की चेष्टा हाता बोतिया

—गौरीशं

गोरखपुर बी० ए० एल०

लक्ष्मणशक्ति—इसी लेखक
एक खण्ड काव्य। इसकी
आधार रामायण का युद्ध काण्ड
लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे।
सुलझी हुई और मुद्रा
मूल्य ।।।) बारह आने।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्र

लावण्य
का स
टाटा का
ओ डी कोलोन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि
जवाहर स्क्वायर, इलाहाबा

पार्लियामेंट का आगामी चुनाव

कट्टरपंथो और मजदूरदल में प्रतिद्वन्द्विता क्यों ?

क्या मजदूरपार्टी ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के हाथ की कठपुतली है ?

लेखक, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा

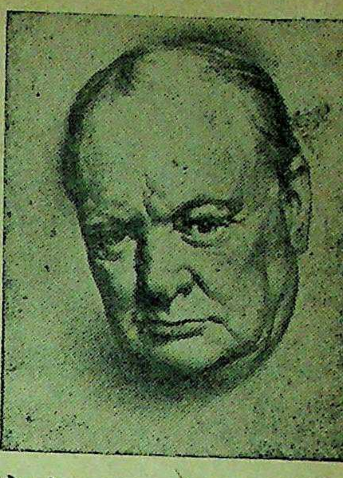

ब्रिटेन के कट्टरपंथी, टोरीदल के प्रधान नेता और ब्रिटेन के प्रधान मत्री मिस्टर चर्चिल।

ब्रिटिश पार्लियामेंट के आगामी चुनाव में कट्टरपंथी अर्थात् टोरीदल और मजदूरदल में भयंकर प्रतिद्वंद्विता होने जा रही है। टोरीदल तो सदा से अपने साम्राज्यवादी प्रभुत्व का नारा लगाता आया है और मजदूर दल पराधीन राष्ट्रों के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाता आया है। किन्तु टोरी और मजदूर पार्टी के वास्तविक उद्देश्यों का आधार क्या है ? इस लेख में योग्य लेखक ने दोनों दलों के उद्देश्यों का वर्णन करते हुए यह बतलाया है कि ब्रिटेन के राजनैतिक दलों का उद्देश्य एक सा ही है। उनसे विशेष आशा न रखनी चाहिये। जैसा टोरीदल वैसा ही मजदूर दल।

समस्त राजनैतिक दलों ने अपनी अपनी नीति की भी घोषणा की है और जनता के सामने अपने दृष्टिकोण को रखकर चुनाव-सम्बन्धी आयोजना में लगे हैं ! जहाँ तक टोरीदल का सवाल है मिस्टर चर्चिल ने अपने ५ जून के रेडियो द्वारा दिये गये वक्तव्य में समाजवादी सिद्धांतों की आलोचना करते हुए कहा है कि वह उस शासन व्यवस्था के विरुद्ध सदैव से रहते चले आये हैं और भविष्य में भी रहेंगे जो सामूहिक शासन व्यवस्था के अंतर्गत राज्य की प्रधानता व्यक्ति से ऊपर उठा देते हैं ! समाजवादी सिद्धातों से आक्रांत श्रीयुत चर्चिल ने व्यक्तिवादी होने की घोषणा की है और समाजवादी मजदूर-दल की आलोचना करते हुए समाजवाद को ब्रिटिश जनता के प्रकृति के प्रतिकूल बताया है। रही भारत सम्बन्धी नीति की घोषणा, सो भी लार्ड वैवेल द्वारा भेजे गये प्रस्ताव से विदित है कि टोरीदल के प्रधान नेता श्री चर्चिल भारत सम्बन्धी नीति में साम्राज्यवादी सिद्धांतों का ही अनुकरण करेंगे यह टोरीदल की भारत-सम्बन्धी नीति है।

मजदूरदल के नेताओं ने जो वक्तव्य इधर अपने चुनाव के सम्बन्ध में दिये हैं उनसे न केवल ब्रिटिश जनता वरन् भारतीय लोगों को भी कुछ झूठी आशायें दी गई हैं। वह इस बात को भूल गये हैं कि भारत-सम्बन्धी किसी भी नीति में कोई भी अँगरेजी राजनैतिक दल सर्वप्रथम साम्राज्यवादी सिद्धान्तों का पोशक है फिर किसी दूसरे सिद्धांत का ! भारत-सम्बन्धी नीति में मजदूरदल, लिबरल और टोरीदल सब बराबर हैं बल्कि टोरीदल अधिक ठीक है क्योंकि उसकी नीति स्पष्ट होती है, उसमें किसी भी प्रकार का धोखा होने की सम्भावना कम रहती है। मजदूर-दल की नीति वस्तुतः एक धोखे की नीति के आधार पर बनती है। अभी कुछ दिन हुए श्री बेविन ने मजदूरदल के भारत नीति-सम्बन्धी घोषणा करते हुए कहा है कि विजयी मजदूरदल भारत कार्यालय को औपनिवेशिक दफ़्तर में परिवर्तित करके भारत को क्रमशः पूर्ण स्वतंत्रता की ओर अग्रसर करेगा। एक दूसरे वक्तव्य में आपने कहा कि भारत ने क्रिप्स-प्रस्ताव को ठुकराकर बड़ी भूल की है। हम क्रिप्स-प्रस्ताव के आधार पर ही भारत के अड़ंगे को दूर करेंगे। कहने की आवश्यकता नहीं कि मजदूरदल की यह नीति केवल एक धोखे की ही नीति है। वर्त्तमान राजनैतिक परिस्थितियों में बेविन के इस वक्तव्य से यह साफ पता चलता है कि मजदूरदल की आगामी नीति भारतीय वैधानिक समस्याओं में वही रहेगी जो एमरी साहब की रहेगी।

विस्मय की बात यह है कि श्री राजगोपालाचारी जैसे नेता मजदूरदल से बड़ी आशायें रखते हैं। राजा जी यह भूल जाते हैं कि पिछले क्रिप्स-प्रस्ताव के समय क्रिप्स ने पहले उन्हीं साम्राज्यवादी सिद्धांतों का अनुकरण किया था जिनके पीछे एमरी की नीति थी। क्या उस समय मजदूर दल के नेता बेविन महोदय का हाथ भारत सम्बन्धी आयोजना में नहीं था ? यदि राजा जी सर स्टेफोर्ड क्रिप्स के प्रस्ताव की कड़ी से कड़ी आलोचना उस समय कर सकते थे तो आज सर्वश्री बेविन या क्लेमेन्ट एटली के वक्तव्य में कौन-सा ऐसा परिवर्तन आ गया है जिसके कारण उनकी उत्सुकता इतनी अधिक हो गई है ? भारत-सम्बन्धी नीति जिसके कि जन्मदाता चर्चिल और एमरी कहे जाते हैं उनके पोशक बेविन और एटली भी हैं। जिस मजदूरदल के पक्ष में आज राजा जी की श्रद्धांजलि हर्ष से चढ़ रही है उसी मजदूरदल के नेता सर स्टेफोर्ड क्रिप्स ने कांग्रेस के खिलाफ अमेरिका में ऐसी बातों की घोषणा की है जिनके रहते हुए मजदूरदल पर किसी भी प्रकार का विश्वास नहीं किया जा सकता।

इन बातों के अतिरिक्त रेमजे मैकडानल्ड की पिछली शासन व्यवस्था में भारत को गोलमेजपरिषद् के परिणाम-स्वरूप साम्प्रदायिक फूट का वह बीज मिला है जिसके कारण हमारी समस्त शक्तियों को छिन्न-भिन्न करने में ब्रिटिश साम्राज्यशाही नीति सफल हुई है। डाक्टर अम्बेदकर जैसे अछूतों के नये नेता बनाये गये ! महात्मा गांधी जैसे व्यक्ति से कहा गया कि हम तो बहुत कुछ देने को प्रस्तुत हैं पर आप लोग स्वयं इतने अयोग्य हैं कि उन चीजों को ले नहीं सकते। रेमजे मैकडानल्ड, मिस्टर बेविन और मेजर एटली से कम उदार नीतिवाले नहीं थे ?

वास्तव में यदि देखा जाये तो ब्रिटिश मजदूरदल तीन प्रवृत्तियों की विचार-धाराओं की सम्मिलित संस्था है। इस दल में सर्वप्रथम तो वह दल है जो ब्रिटिश इतिहास में चर्चिल दल के नाम पार्लियामेंट में सुधार कराने के लिए वर्षों पूर्व आन्दोलन कर रहे थे। इस दल के सामने कोई भी रचनात्मक या जनसत्तात्मक शक्ति नहीं थी। यह केवल कुछ संशोधनों की पोशक थी। और उन्हीं संशोधनों द्वारा यह पार्लियामेंट में कुछ सुधार-सम्बन्धी आन्दोलन में सफल हुई थी। इसलिए यदि देखा जाये तो यह साम्राज्यवादी सिद्धांतों में टोरीदल के समान ही है।

दूसरा दल जो इस मजदूरदल में सशक्त है वह है ट्रेड यूनियन दल। ट्रेड यूनियन दल को यदि देखा जाये तो ब्रिटिश पूँजीपतियों ने अपने रुपये के जोर से अपने कब्जे में कर लिया है। इसलिए ट्रेड यूनियन आन्दोलन के पोशक लोग जो मजदूरदल में सम्मिलित हैं वह मजदूरों के प्रतिनिधि न होकर उन पूँजीपतियों के प्रतिनिधि हैं जिनके द्वारा ब्रिटिश शासन-व्यवस्था कायम है ! प्रोफेसर लास्की ने ब्रिटिश शासन विधान की व्याख्या करते हुए इस बात को स्पष्ट रूप से बताया है कि केवल २५० बड़े खानदान ब्रिटिश हुकूमत और पार्लियामेंट के शासन के विधाता हैं। इन्हीं खानदानों में प्रायः सभी राजनैतिक दल सम्मिलित हैं। इससे हमारे दिमाग में किसी भी प्रकार की शंका नहीं उठ सकती क्योंकि वह ट्रेड यूनियन जिसे समाजवादी सिद्धान्तों का अनुकरण करते हुए मजदूरों का प्रतिनिधित्व करना चाहिए था वह पूँजीपतियों के हाथ का एक खिलौना-मात्र है।

तीसरा समाजवादी दल है जो स्वयं इस बात का पोशक है कि साम्राज्य की स्थापना बगैर ब्रिटिश शासन-व्यवस्था के चल ही नहीं सकती। इन लोगों का यह तर्क है कि ब्रिटिश मजदूर इस बात को कभी भी पसन्द न करेंगे कि उनकी शक्ति का ह्रास करके साम्राज्य का नाश किया जाये ! साम्राज्य ही की बदौलत उन मजदूरों को लाभ होता है अतएव वह ब्रिटिश साम्राज्य

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

ब्रिटिश मजदूरदल के एक प्रमुख सदस्य मिस्टर क्रिप्स जिनके प्रस्ताव को भारत ने स्वीकार कर दिया था।

कांग्रेस और देशी रियासतें

औद्योगीकरण की समस्या किस प्रकार हल होगी ?

लेखक, श्री लादूराम जोशी

जयपुर राज्य प्रजामंडल के दौसा में होनेवाले सप्तम अधिवेशन के सभापति श्री लादूराम जोशी ने देशी राज्यों के सुधार तथा उन्नति के सम्बन्ध में बड़ा ओजपूर्ण और उपयोगी भाषण दिया है। यह लेख भी उसी भाषण का एक अंश है, जो पठनीय साथ ही विचारणीय भी है।

आज देशी रियासतों की सब हलचल और संस्थाएँ कांग्रेस से प्रत्यक्षतया या अप्रत्यक्षतया प्रकाश पाती हैं क्योंकि कांग्रेस ही भारत में एक ऐसी महान् और सर्वव्यापी संस्था है जिससे स्वराज्य या आजादी की आशा लोगों ने बाँध रखी है। कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के प्रस्ताव के बाद ही इनमें से अधिकांश संस्थाओं का विकास हुआ है। कांग्रेस का जब गवर्नमेंट के साथ सम्पर्क होता है तो देशी रियासतों में भी इसकी लहर फैलती है और जब कांग्रेस रचनात्मक कामों की तरफ झुकती है तो उसका असर इधर होता ही है। गत पचीस वर्षों से पूज्य महात्मा जी का कांग्रेस की और देश की अन्यान्य प्रवृत्तियों में अखण्ड और अविचल प्रभाव रहा है। सारे देश के कार्यकर्त्ताओं में से अधिकांश महात्मा जी के सिद्धान्तों, आदर्शों और विचारों से प्रभावित हैं। जिधर वे झुक जाते हैं उधर ही देश के लाखों कार्यकर्त्ता भी झुक जाते हैं। जब सन् ४२ में उन्होंने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव रखा तो लाखों लोगों ने उनका अनुसरण किया और आज वे जब ग्रामसेवा की तरफ झुके हैं तो लाखों आदमियों के सामने ग्रामसेवा का चित्र उपस्थित हो गया है। महात्मा जी के प्रति जो प्रगाढ़ भक्ति और श्रद्धा है और उनके सिद्धान्तों और आदेशों के पीछे जो एक निष्ठा है वह हमें प्रेरित करती है कि हम भी यहाँ रियासतों में समग्र ग्रामसेवा का कार्य चालू करें। रचनात्मक काम से ही सच्चा जनसम्पर्क कायम हो सकता है। उसी के द्वारा हम राष्ट्र की प्रस्तुत जन-शक्तियों का विकास कर सकते हैं। जिन कमियों या दुर्बलताओं के कारण हम गुलाम बने वह अभी तक बनी हुई हैं। उनको दूर करके राष्ट्र में शक्ति, संगठन व अनुशासन लाने का इससे बढ़कर कोई उपाय नहीं है। ठेठ देहात में बिना पहुँचे हम राष्ट्र के उद्धार की कल्पना नहीं कर सकते। शहरों में शिक्षा है, पर साथ में बुद्धि-भेद भी है। वहाँ नागरिकता के भाव जागृत हुए हैं तो निष्ठा की कमी है। बाहर आधुनिक आन्दोलनों के केन्द्र हैं लेकिन उनके पीछे स्थिरता कम है। गाँवों को यदि हम जागृत कर दें, महात्मा जी के कार्यक्रम के अनुसार उनके साथ हमारा सजीव सम्पर्क हो जाय तो हम राष्ट्र में एक अजेय शक्ति जागृत कर सकते हैं। वे ही राष्ट्र के सच्चे सिपाही बन सकते हैं, क्योंकि वहाँ भावुकता, बुद्धिभेद व अस्थिरता कम है, ठोसपन ज्यादा है। इसलिए अब हमें गाँवों की तरफ अधिक ध्यान देने की जरूरत है। वहाँ अशिक्षा को दूर करना, संगठन करना, रचनात्मक काम—जैसे खादी, अस्पृश्यता निवारण, कृषि-सुधार, गोनस्ल सुधार, सफाई आदि बातों की कस्बों के बनिस्बत ज्यादा आवश्यकता है। इसकी पूर्ति में धारासभाओं का भी उपयोग किया जाना चाहिये। धारा सभायें रचनात्मक कामों से बल प्राप्त करेंगी व बदले में राज्य व सरकार के द्वारा उन्हें बल दिलाने का प्रयत्न कर सकती हैं।

देशी राज्यों में उद्योगीकरण

आजकल देशी रियासतों में उद्योगीकरण के प्रयत्न हो रहे हैं। मैं खुद तो छोटे छोटे ग्राम उद्योगों के विकास में ही विश्वास रखता हूँ, परन्तु जब तक उनके द्वारा देश की सब जरूरतें रफा नहीं होने लगतीं तब तक बड़े बड़े कारखानों का भी स्थान देश में रहेगा ही। पर इन कारखानों का स्वागत करते हुए हम लोगों पर और स्थानीय सरकारों पर एक नई जिम्मेवारी आ जाती है। वह यह कि हम देखें कि उद्योगीकरण द्वारा लोगों का शोषण न होकर उनका फायदा हो। अच्छे अच्छे मिल, कारखाने और फैक्टरियाँ खुलने से जहाँ व्यापार और उद्योग-धंधों का विकास होगा वहाँ गाँव के आदमियों का खिंचकर इनके आस पास आबाद होना स्वाभाविक है। कारखाने के मालिकों का फ़र्ज है और सरकार तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं पर इसकी जिम्मेवारी है कि उनको वाजिब मजदूरी मिले, उनकी सुख-सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाय, उनके रहने के मकान स्वास्थ्यवर्धक, सुविधाजनक हों, उनकी शिक्षा-दीक्षा का समुचित प्रबन्ध हो। साथ ही वह यह देखें कि फेक्टरी एक्ट बने हुए हैं या नहीं। हों तो उनमें उचित संशोधन कराके उन्हें मजदूरों के प्रति हितकारी बनावें। अगर कानून बने हुए हैं तो उनका अमल भी ठीक तरह से हो रहा है या नहीं। मजदूरों से कितने समय काम लिया जाता है। उनको क्या पगार दी जाती है ? उनका संगठन है या नहीं ? यदि नहीं है तो किस लाइन पर करना चाहिये ? मंडल की तरफ से मजदूर-संगठन के लिए कोई न सफल कदम उठाना ही चाहिये। स्टेट रेलवे और बी० बी० सी० आई०, के मजदूरों के तरफ भी अपने को ध्यान देना है। महात्मा जी की रीति-नीति पर चलनेवाली "हिन्दुस्तान-मजदूर-सेवक-संघ" नामक संस्था पहले से खुली हुई है जो अब इस दिशा में अधिक क्रियाशील हो रही है। इसी आदर्श व रीति-नीति से मजदूरों का अधिक भला होगा, ऐसा विशेषज्ञों का कहना है।

प्रजा-मंडलों के नियन्त्रण की आवश्यकता

देशी रियासतों में प्रजामण्डल, लोकपरिषद् आदि विभिन्न संस्थाएं काम करती हैं। इनका प्रत्यक्षतः कांग्रेस से कोई सम्बन्ध नहीं है और न ये कांग्रेस के नियन्त्रण में ही हैं। हाँ, यह दूसरी बात है कि वे कांग्रेस की छाया में काम करती हैं और वहाँ से उनको प्रकाश मिलता है। इसी तरह इन पर देशी-राज्य लोकपरिषद् का भी नियन्त्रण नहीं है। इससे कहीं कहीं रीति-नीति, अनुशासन आदि में शिथिलता पाई गई। अतः मेरी राय में सबसे अच्छी स्थिति तो यही हो सकती है ब्रिटिश भारत की तरह देशी राज्यों में भी कांग्रेस का ही संगठन हो और रियासतों में उसकी जिला कमेटियाँ कार्य करें। पर इसका निर्णय तो कांग्रेस के हाई कमाण्ड के ही अधिकार में है। मुझे यह विश्वास जरूर है कि जिस दिन रियासतों में अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा हो जायँगी उसी दिन कांग्रेस का संगठन सब जगह हो जायगा। पर उस समय के पहले हमारे इन संगठनों का सामञ्जस्य और एकीकरण हो तथा इनमें समान रीति-नीति बरती जाय। यह राजपूताना का एक प्रान्त बनाने की दृष्टि से भी परम आवश्यक है। इस सम्बन्ध में तत्काल क्या किया जा सकता है, यह हम सबको सोचना चाहिए। वैसे हमने रियासती कार्यकर्त्तामंडल के रूप में ऐसा संगठन बना लिया है जिसमें सभी प्रजामंडलों के प्रतिनिधि हैं। उसमें आवश्यक सुधार करके व तत्परता से काम करके उसे एक ऐसी बलशाली संस्था बनाया जा सकता है जिससे सब प्रजामण्डलों को प्रकाश भी मिले व उनकी रीति-नीति पर अपने आप उसका अंकुश लगता रहे।

अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू।

इ - स्ला - म
की
सच्ची पूजा किसने की
यह जानने के लिए पढ़िए
— इस्लामी —
दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

स्वादिष्ट व मनको लुभानेवाली

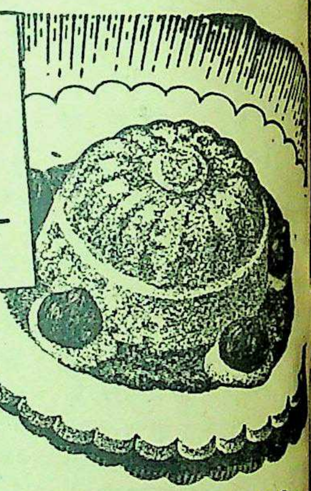

दौराला की बरफ सी सफेद चीनी बढ़िया और शुद्ध जो केक पेस्टरीज और पुडिंग की बनावट में चार चाँद लगा देती है और अत्यन्त स्वादिष्ट बना देती है

अन्य दौराला चीनी से बनी चिजें

Icing
Daurala
Icing Sugar
DAURALA SUGAR

क्युब सुगर, काफी क्रिस्टल्स, गोल्डेन सिरप और ट्रिकल। टाफी और अन्य मिठाईयां

कास्टर चीनी
कास्टर चीनी टेबल के लिये बढ़िया बर्फ सी सफेद और साफ सुथरी चीनी

डमारारा चीनी
करोमेल पुडिंग और मिठाईयां बनाने के लिये भूरी चीनी। यह आप की काफी की सुगंधी को बढ़ाती है। यह बहुत अनुपात में काफीगृह में उपयोग की जाती है जो हिन्दुस्तानी काफी हौसों में चलाये जाते हैं।

दिल्ली क्लाथ मिल स्टोर्स और सब बड़ी दूकानों में मिलती है।

दौराला की बढ़िया चीनी
दौराला सुगर वर्क्स, दौराला (यु. पी.)
व्यापारिक पत्रव्यवहार का पता:—
दि दिल्ली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं. लि. दिल्ली
DCM

चीन भारत में सफाई कैसी थी ?

आज की शासन-व्यवस्था में भी वही बात है ?

लेखक, श्री छविनाथ पांडेय बी० ए०, एल-एल० बी०

के शासन में सफाई और स्वास्थ्य की कितनी दुर्दशा है ? जनता कितनी निराश
प्राचीन भारत में शासन-व्यवस्था में भी ऐसी ही दशा थी ? विद्वान् लेखक के
जोदारो की खोदाई की प्राचीनता तथा उस समय के स्वास्थ्य और सफाई के प्रयोगों का
करते हुए यह बतलाया है कि हमें सचेत होकर समाज और जाति की उन्नति के लिए
प्रणाली का अनुसरण तथा नगरों और गाँवों का सुधार करना चाहिए ।

मोहेंजोदारो की खोदाई का एक दृश्य ।

भारत की सभ्यता जगत्-प्रसिद्ध
सभ्यता ने अपने दिव्य प्रकाश
को आलोकित कर दिया था ।
जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी
का ज्ञान संसार को पहले पहल
मिला । सफाई और स्वास्थ्य
में भी प्राचीन आर्यों का
अन्य देशों की अपेक्षा कहीं
आधुनिक युग में जो खोदा-
हैं उनमें ऐसे चिह्न पाये गये हैं
से विदित होता है कि इस
में भी भारत के निवासी
अधिक ध्यान रखते थे ।
की दृष्टि में जल की बहुत
प्राचीन युग से ही है ।
के नित्य कर्म का प्रधान
है । जो लोग प्रतिदिन
वे अपवित्र समझे जाते
निगाह से देखा जाता
संहिता में लिखा है:—

पवित्र बनाता है,
करता है, थकान
से स्वेदजनित गन्दगी
मैल काटता है, शरीर
बनाता है और उसे स्फूर्ति
है।"

में जो खोदाई हुई है उसमें
की सभ्यता के चिह्न
जमीन के अन्दर इस तरह
और भव्य स्नानागार पाये गये
विस्मय होता है और यही
है कि इस प्राचीन नगर में
अधिक ध्यान दिया जाता
किसी प्राचीन नगर में
रहा होगा । जो विशाल
जमीन के अन्दर पाया गया
रचना को देखकर आज
बड़े विज्ञानवेत्ता दांतों तले
। स्नानागार
का चिह्न
है जिसका व्यास
फुट है और
तथा
के लिए बड़े बड़े
हैं । इस विशाल
के अलावा अनेक
स्नानागार भी पाये
रचना भी
हद और

की खोदाई
भी विदित
नगर में पीने का
दिया जाता
की
है कि किसी
भी प्रकार जल के गन्दा होने की सम्भावना नहीं प्रतीत होती। कुओं की बनावट वैज्ञानिक द्वारा इस प्रकार हुई है कि गन्दे जल का एक बूँद भी कुएँ के अन्दर नहीं जा सकता। कुएँ के आस-पास पानी जमा होकर सड़े नहीं, इसका पूरा ध्यान रखा गया था। कुएँ के चारों ओर इस तरह की ढालू नालियाँ बनी हुई थीं कि जो भी पानी गिरता था, बहकर चला जाता था। पानी भरने वालों की भीड़ को रोकने के लिए प्रत्येक कुएँ के पास बैठने के स्थान बने थे जहाँ लोग बैठकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करते थे और बारी आने पर पानी भरते थे।

जल की पवित्रता का इतना ज्यादा ध्यान प्राचीन आर्यों का था कि उसे उन्होंने देवता का रूप दिया था। वह उसकी पूजा करते थे, उसके यश वर्णन के गीत गाते थे। जल को किसी भी प्रकार अपवित्र करना अधर्म समझा जाता था। द्विजातियों के बालकों को उपनयन-संस्कार के समय अनेक तरह के उपदेश दिये जाते हैं उनमें जल के सम्बन्ध में भी कई उपदेश हैं, जैसे, जल में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिये, कुएँ में झाँकना नहीं चाहिये। मनु ने भी जल के अपवित्र करने को बहुत बड़ा अधार्मिक कृत्य बतलाया है। शुश्रुत ने अपनी संहिता में लिखा है कि टूटे हुए बर्तन का जल नहीं पीना चाहिए, क्योंकि टूटा हुआ बर्तन सुचारु रूप से ढाँका नहीं जा सकता, इसलिए उसका जल साफ नहीं रह सकता। उसके गन्दा होने की सदा सम्भावना बनी रहती है।

प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में यत्र-तत्र मलमूत्र का त्याग वर्जित है। इसे दूषित बतलाया जाता है और कहीं कहीं तो इसे सामाजिक अपराध तक माना गया है। चरक ने लिखा है कि पुरीष त्याग की आवश्यकता प्रतीत होने पर मनुष्य को धनुष पर तीर चढ़ाकर बस्ती के बाहर की तरफ फेंकना चाहिये और जहाँ तीर जाकर गिरे उतनी दूर जाकर ही पुरीष त्याग करना चाहिये अर्थात् पुरीष त्याग के लिये मनुष्य को सदा गाँव से बहुत दूर एकान्त में जाना चाहिये। वहाँ कम से कम नव इंच गहरा गड्ढा खोद कर पुरीष त्याग करना चाहिये। निवृत्त होने के बाद उसे पुनः मिट्टी से तोप देना चाहिये।

मोहेंजोदारों की खोदाई में उस प्राचीन नगर में नालियों का सुन्दर और सुव्यवस्थित सिलसिला मिला है। उसकी तुलना किसी भी अच्छे आधुनिक नगर की गलियों से की जा सकती है। प्रत्येक सड़क और गली में एक या दो नालियाँ बनी थीं और ऊपर से ढँकी रहती थीं। उनके ऊपर का ढक्कन इस प्रकार का होता था कि आवश्यकता पड़ने पर उसे आसानी से हटाकर नाली को साफ कर दिया जा सके। प्रत्येक घरों के पनालों का सम्बन्ध इन नालियों से था। पनाले इस तरह के बने थे कि बेरोक टोक पानी नालियों में बह जाये। सड़कों पर जहाँ तहाँ आजकल की तरह बड़े बड़े मैनहोल बने थे जिनमें से होकर सफाई करनेवाले अन्दर घुस कर सफाई का काम करते थे। नगर से बाहर को बड़े बड़े खाने बने थे जहाँ नालियों द्वारा यह गन्दा पानी जाकर जमा होता था। घरों का कूड़ा-कर्कट फेंकने के लिये भी नालियों में और सड़कों पर जगह जगह डोलचे रखे रहते थे जहाँ लोग कूड़ा-कर्कट जमा कर देते थे और कूड़ा गाड़ियाँ उन्हें उठाकर नगर से बाहर किसी निर्दिष्ट स्थान पर फेंक देती थीं। प्रसिद्ध ग्रीक यात्री मेगास्थनीज ने ईसा से पूर्व चौथी सदी में भारत-भ्रमण किया था। पाटलिपुत्र नगर की सफाई का वर्णन करते हुए उसने लिखा है कि उस नगर से बाहर शहर के गन्दे जल का ६०० फुट चौड़ा और ३० फुट गहरा कुण्ड था जिसमें नगर का गन्दा जल नालियों-द्वारा बहकर जाता था और जमा होता था।

मोहेंजदारो नगर का निर्माण भी वैज्ञानिक ढङ्ग से हुआ था। राजमार्ग, सड़क और गलियाँ नपी-तुली थीं। न कहीं टेढ़ी और न बाँकी। इससे यही अनुमान किया जा सकता है कि इस बात पर विशेष ध्यान रक्खा जाता था कि कोई भी मकान-वाला सड़क की जगह को दबाने या अपने मकान से मिलाने का यत्न न करे। सभी मकान पक्के ईंटों के बने हुए पाये जाते थे। नालियाँ मकानों से सटकर इस तरह सीध में बनी हुई पाई जातीं थी कि किसी भी मकान मालिक को आगे बढ़ने की गुंजायश नहीं थी। नगर के निर्माण को देखकर यह पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि नियम और कानून के पालन पर पूरा ध्यान रक्खा जाता था।

हिन्दू धर्मशास्त्रों में गृह-निर्माण के लिए स्थान चुनने का विधान दिया गया है। एक प्राचीन ग्रंथ में बताया गया है कि गृहस्थ को कैसी भूमि पर मकान बनाना चाहिए ? जहाँ गृहस्थ निवास के लिए घर बनाना चाहे वहाँ की जमीन ठोस होनी चाहिए। गड्ढों को भरकर तैयार की हुई भूमि पर मकान नहीं बनाना चाहिये। जिस जमीन पर कटीली झाड़ियाँ उगती हों या दूधदार पेड़ उगते हों, वह जमीन भी गृह-निर्माण के लिए अनुपयुक्त बतलाई गई है। दलदल जमीन, ऊँची-नीची जमीन, वह जमीन जहाँ चारों ओर से आकर पानी जमता हो, मकान बनाने के योग्य नहीं समझी जाती थी। समतल भूमि या दक्खिन तरफ ढलवी भूमि मकान बनाने के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त बताई गई है। जमीन की उपयुक्तता की जाँच के लिए निम्नलिखित तरीका बतलाया गया है।

"मकान बनाने के लिए जो जमीन चुनी जाय उसमें दो फुट गहरा खोदकर फिर उसी मिट्टी से गढा भर देना चाहिये। यदि खोदी हुई मिट्टी से गढा भर जाय तो

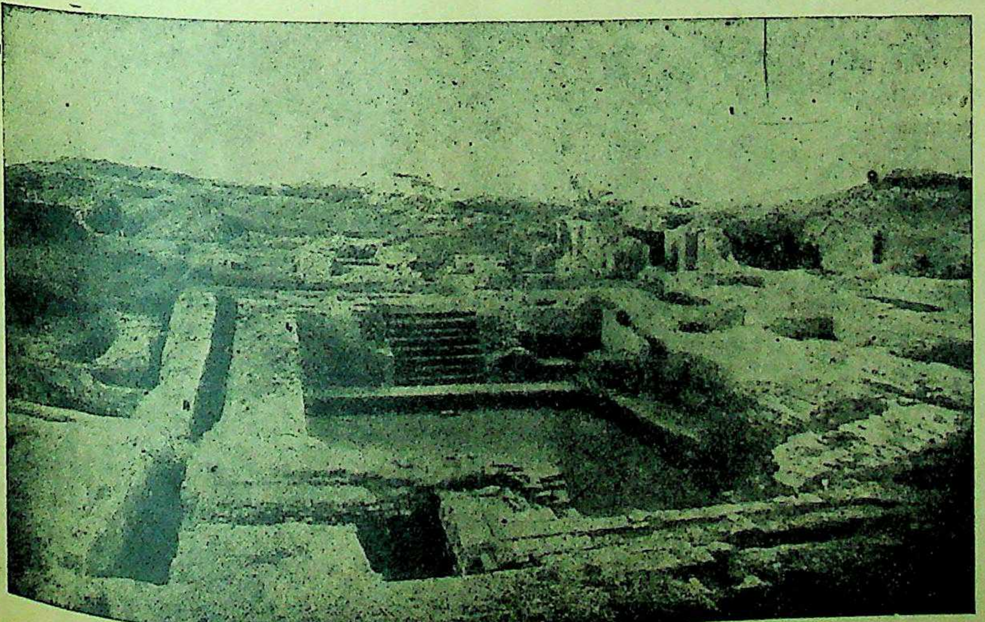

मोहेंजोदारो में खोदाई होने पर प्राचीन काल के गृह-निर्माण के अनेक चिह्न प्राप्त हुए हैं।

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिये

साहित्य-चर्चा

हिन्दी प्रेमी कांग्रेसवादी और उर्दू प्रेमी मुसलमान

हिन्दुस्तानी प्रचार ने वर्धा-सम्मेलन के बाद एक नया रूप ग्रहण किया है। हम जानते हैं कि साधारण भाषा राष्ट्र के भिन्न-भिन्न टुकड़ों को आपस में एकत्रित करने में बड़ी सहायता देती है। राष्ट्रीय आन्दोलन और एकता के लिए एक राष्ट्र-भाषा अत्यावश्यक है। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी है जिसे दूसरे शब्दों में सरल हिन्दी तथा उर्दू कहा जा सकता है। उर्दू भाषा एक समझौते का परिणाम था परन्तु उर्दू के लेखकों ने उसे फारसी से इतना सजा दिया है कि हिन्दी पाठकों में उसके प्रति अश्रद्धा उत्पन्न होने लगी है। डाक्टर अब्दुलहक ने वर्धा-सम्मेलन में बोलते हुए कहा था कि उर्दू जनता की भाषा है, परन्तु इतिहास में उर्दू कभी राज भाषा नहीं थी, मैं उनसे सहमत हूँ परन्तु आज की साहित्यिक उर्दू, फारसी व्याकरण, फारसी साहित्य और फारसी राष्ट्रीय भावनाओं के बहुत पास है। उर्दू जनता की भाषा भी हो सकती है परन्तु केवल लखनऊ और दिल्ली में। मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि प्राचीन तथा आज की हिन्दी का एक-एक शब्द राष्ट्रीय भावनाओं तथा विचारों से ओत-प्रोत है। भारत जैसे परतन्त्र देश की भाषा राष्ट्रीयता से सम्बन्धित रही है परन्तु उर्दू-साहित्य ईश्वर के प्रेम, विलासी मुगल राजाओं तथा रानियों की प्रशंसा और लखनऊ, दिल्ली और आगरे आदि के चित्रण से भरा है। मेरी उर्दू-साहित्य की जानकारी मुझे बतलाती है कि राष्ट्रीय भावनाओं का शतांश भी इसके किसी कोने में नहीं है। हिन्दी ने अत्यन्त श्रद्धा के के साथ राष्ट्रीय जीवन और आन्दोलन के चरणों में अपना बलिदान किया है।

राष्ट्रीय मुसलमानों ने सहारनपुर और जगह-जगह पर ऐसे प्रस्ताव पास किये हैं जिनमें उन्होंने कांग्रेस के उन नेताओं का विरोध किया है जो हिन्दी की सेवा कर रहे हैं और हिन्दुस्तानी का विरोध। हमारे प्रान्त में पूज्य टंडन जी, बाबू सम्पूर्णानन्द और श्रीमान् बालकृष्ण शर्मा का बुरी तरह विरोध किया जा रहा है। मेरी "आजाद मुसलमानों" से यह प्रार्थना है कि वह आज की दशा का ज्ञान अच्छी तरह से प्राप्त करें। पूज्य टंडन जी और शर्मा जी का हिन्दुस्तानी के प्रति विरोध ठीक है। हमारे कांग्रेसी मुसलमानों का कथन है कि जो कांग्रेसी हिन्दुस्तानी में विश्वास नहीं रखते वे या तो त्यागपत्र दे दें या इस प्रश्न पर शान्त रहें। पर यह असत्य है एक व्यक्ति जब कांग्रेस का सदस्य बनता है, इसका यह अर्थ नहीं होता कि वह अपना धर्म, भाषा, संस्कृति सब कांग्रेस के हाथ बेच देता है। आज जिस भाषा का प्रचार हिन्दुस्तानी के नाम से किया जा रहा है उस भाषा में हमारी राष्ट्रीयता को अत्यन्त क्षति पहुँचेगी।

हिन्दी भाषा की विजयपताका उर्दू पर केवल इसी लिए फहरा रही है कि हिन्दी भाषा ने अपना एक-एक शब्द राष्ट्रीयता को समर्पण कर दिया है। हिन्दी-लेखकों ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में अपना बलिदान किया है। सन् १९४२ के आन्दोलन में कितने ही हिन्दी सम्पादकों, लेखकों और कवियों को कारागार का दंड भोगना पड़ा और पड़ रहा है। कितने ही समाचारपत्र छपने बन्द हो गये, कितनी ही हिन्दी पुस्तकों पर प्रतिबन्ध लगाया गया। आज जिस भाषा ने इतना बलिदान किया है और साधारण जनता तक राष्ट्रीय माँगों को पहुँचाया है—क्या उसका यही पारितोषिक होगा कि देश की राष्ट्रभाषा में उसका कोई स्थान न रहे ? हिन्दुस्तानी के नाम से प्रचार की जानेवाली भाषा हिन्दी से कोसों दूर है वह फारसी से सजी हुई उर्दू भाषा है। यही कारण है कि बाबू सम्पूर्णानन्द आदि इस भाषा का विरोध कर रहे हैं। पूज्य टंडन जी ने कई बार यह कहा है कि उन्हें हिन्दुस्तानी नाम से चिढ़ नहीं हैं। आज जिस भाषा को हिन्दुस्तानी बतलाया जा रहा है और जिसका प्रचार रेडियो, युद्ध-प्रचार की फिल्मों और रेलों में किया जा रहा है वह उस भाषा से कोसों दूर है जिसने हमें राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया है तथा स्वतन्त्रता का सच्चा मार्ग दिखाया है। यदि हमारे राष्ट्रपति मौलाना अब्दुलकलाम आजाद सभापति के पद से उर्दू और फारसी का प्रचार कर सकते हैं तो क्या कांग्रेस के साधारण सदस्य जो हिन्दी में पले हैं और जिन्होंने देश-भक्ति हिन्दी से ही सीखी है उनको हिन्दी का प्रचार करने का तनिक भी अधिकार नहीं है ?

फिर यह कैसे सम्भव हो सकता है जब कि आज दर-दर हिन्दी का अपमान हो रहा है उस समय देश के नेता जो हिन्दी में पले हैं जिन्होंने देश-सेवा हिन्दी से ही सीखी है जिन्होंने हिन्दी का सिंचन अपने रक्त से किया है वह आज इस विषय पर या तो शान्त रहें या उनका विरोध न करें ? आज रेडियो के सम्बन्ध में भी हिन्दी के लेखकों ने कोई विरोध नहीं किया है केवल वहाँ हिन्दी को उचित स्थान देने के लिए कहा गया है। कांग्रेस के सदस्यों को जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह इस प्रश्न पर जो उचित हो समझकर करें—कोई उन्हें कभी नहीं रोक सकता।

लखनऊ —भोलानाथ सिनहा

मन्त्री, हिन्दुस्तानी साहित्य-संघ

* * *

साहित्यकार-संसद्—एक निवेदन

हाल में 'साहित्यकार-संसद्' की स्थापना हुई है। इसके सभापति हैं महाकवि मैथिलीशरण जी गुप्त। उप-सभापति हैं पण्डित माखनलाल जी चतुर्वेदी। जेनरल सेक्रेटरी कवियित्री महादेवी जी वर्मा और कोषाध्यक्ष राय कृष्णदास जी। प० इलाचन्द्र जी जोशी, श्री जैनेन्द्रकुमार जी और शास्त्राचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेद्वी आदि सम्मान्य लेखक सदस्य हैं।

संस्था के पास अभी अपनी जमीन, अपना भवन नहीं, जहाँ साहित्यिक सर्वक्षण रहकर साहित्य-निर्माण करें, भिन्न भाषा-भाषी विद्वान् ठहरें, विचार-विनिमय हो, साहित्य की गति-विधि का निरीक्षण और नियन्त्रण हो और राष्ट्र के भाषा-साहित्य की रूपरेखा तैयार की जाय। कवियित्री जी ने इसके लिए तीन लाख रुपये की अपील निकाली है। यह बड़ी रकम नहीं। साहित्य-प्रेमी धनिक-जन अपनी इच्छित सहायता श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०, १ एलगिन रोड, प्रयाग के पास इस उल्लेख के साथ भेजने की कृपा करें कि वे 'साहित्यकार-संसद्' के लिए उक्त धन भेज रहे हैं।

इस अङ्ग की व्यापक पूर्ति के लिए यह भी आवश्यक है कि जल्द प्रयाग में एक खुला अधिवेशन किया जाय गुप्त जी के सभापतित्व में। सभी प्रान्तों के साहित्यिक हिन्दी-अहिन्दी-भाषी आमन्त्रित हों, विचार-विनिमय हो। इससे संसद् के उद्देश्य प्रकाश में आ जायँगे, भिन्न भाषा-भाषी साहित्यिकों के हिन्दी या राष्ट्रभाषा के प्रति विचार स्पष्ट हो जायँगे, भविष्य का मार्ग प्रशस्त हो जायगा, एक नया जीवन, नई स्फूर्ति आ जायगी। प्रदर्शन से लोगों को प्रान्तीय, दैशिक और सार्वभौमिक सङ्गीत-साहित्य-कला आदि का हिन्दी के माध्यम से परिचय हो जायगा। बहुत तरह की सुविधाएँ आयेंगी और असुविधाएँ दूर होंगी। जो सहमत हों वे मेरे दारागंज, प्रयाग के पते पर पत्र लिखें। भी सूचित करें कि उनकी सम्मति में क्या क्या होना आवश्यक है और क्या अनावश्यक। सम्पादक-बन्धु निवेदन को अपने अपने पत्र में देकर प्रचार करने की कृपा करें।

'साहित्यकार-संसद्' के एक प्रभावशाली व्यक्तित्व—निराला जी।

—सूर्यकांत त्रि

दारागंज, प्रयाग 'निरा

* * *

सम्मेलन की पुस्तकों की बिक्री

हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बिक्री की नई व्यवस्था के अनुसार श्री भवानीप्रसाद गुप्त, 'कृष्णकला-पुस्तकमाला कार्यालय, ई, मुट्ठीगञ्ज इलाहाबाद, सम्मेलन के एजेन्ट नियुक्त किए गए हैं। सम्मेलन द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिका और प्रश्नपत्र आदि उन्हीं से मँगावें और पुस्तक भी सीधे उन्हीं से सम्बन्ध स्थापित सम्मेलन ने उन्हें आज्ञा दी है कि लन की पुस्तकों पर वही कमीशन सम्मेलन अब तक देता रहा है सम्मेलन भविष्य में नियुक्त करे। पुस्तकें तथा अन्य सामग्री प्राप्त कठिनाई पड़े तो हमें तुरन्त जाय।

—श्रीनाथसिंह,

हिन्दी साहित्य सम्मेलन,

कन्ट्रोल भाव

EVEREADY
TRADE-MARK
ऐवरेडी सैल्स और बैट्रीयां

नं. ९५०, ९३५, ९१२ नं. ७०३.

फुटकर व्यापारिओं के लिये थोक भाव :— रु.३१-८-० का एक गुरस रु ७०-०-० के १०० नग

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्लीमें खरीदारों को परचून भाव :— रु. ०-४-६ एक नग. रु. ०-१४-६ एक नग

दूसरी जगहों पर खरीदारों के लिये परचून भाव :— रु. ०-५-० एक नग. रु. ०-१५-० एक नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्ली को छोड बाकी सब जगहों के थोक व्यापारी भाड़ा और महसूल आदि उपर किसी थोक किमतों में जोड सकते है।

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY, (INDIA) LIMITED
CALCUTTA BOMBAY MADRAS COCHIN DELHI AND KARACHI

अवसरवादी

लेखक, लोकनायक श्री जयनारायण व्यास

आज देश में अवसरवादियों का बोलबाला है। देशभक्ति, राष्ट्रीयता और नेतृत्व के बाह्य आडंबर से वास्तविक त्याग और सेवा की भावना को ठेस पहुँच रही है। श्रीकांत भी कुछ इसी प्रकार का अवसरवादी नेता था। राजस्थान के राष्ट्रकर्मी और तपे हुए नेता श्री जयनारायण व्यास ने इस छोटी सी कहानी में अवसरवादी नेतृत्व से पूर्ण वातावरण का अत्यन्त सुंदर और रोचक चित्रण किया है। कहानी सामायिक और प्रभावोत्पादक है।

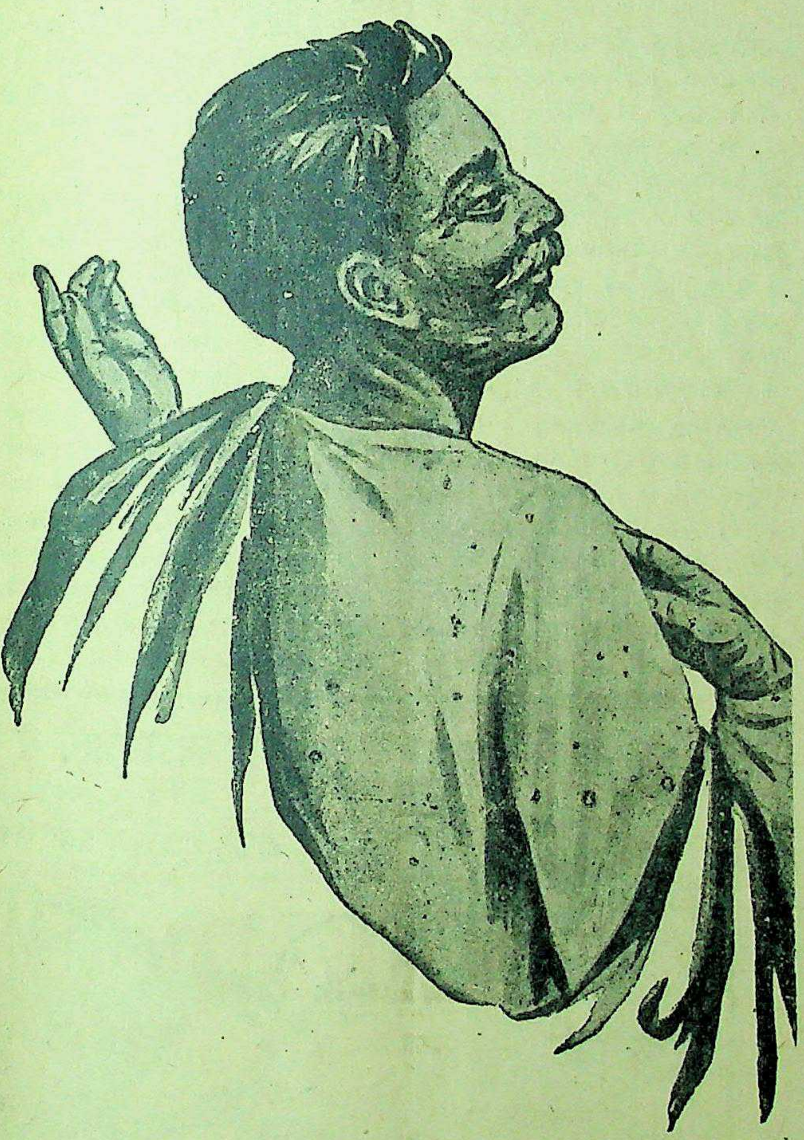

"यह युग आजादी प्राप्त करने का है"—श्रीकांत ने भाषण करते हुए कहा।

कर रहे हैं। यह बात कभी बर्दाश्त नहीं की जायगी। गाँव का जो भी आदमी स्कूल के लिये चंदा देगा वह जमीन से बेदखल किया जाकर गाँव से निकाल दिया जायगा।" दोनों ने हाँ में हाँ मिला दी।

समुद्र में रहकर भला मगर से बैर किया जा सकता है? पंचों ने निश्चय किया कि स्कूल न बनाया जाय परन्तु चूँकि पाठशाला बनवाने का वायदा लछमन चौधरी ने किया था इसलिये उसने पंचों की राय के खिलाफ अपनी राय दी। पंच लोग इस बात को तो मान गये कि दरअसल है तो जमींदार की ज्यादती; पर झगड़ा मोल लेना कोई नहीं चाहता था।

लछमन ने पंचों से कहा—आप अन्याय का पक्ष कर रहे हैं। किसान पंचायत न्याय का पक्ष जरूर लेगी। मैं उनकी सहायता से स्कूल जरूर खुलवाऊँगा चाहे घर, जेवर सभी क्यों न बेचने पड़ें।

"पड़े बेचा करो घर", एक बूढ़ा पंच बोला। "तुम्हारी जिद के पीछे क्या हम जागीरदार से झगड़ा मोल लेंगे?"

(३)

किसान पंचायत के दफ्तर में श्रीकान्त बाबू बैठे हुए थे। वे सभापति जी से "सिद्धान्त" की चर्चायें कर रहे थे। लछमन ने आकर नमस्कार किया। सारी स्थिति बताई। सभापति जी ने सलाह दी—'जब तक परिस्थिति अनुकूल न हो आप स्कूल न खोलिए। जो लोग अपने बच्चों को पढ़ाने के इच्छुक हैं उनके बच्चों को निजामात बोर्डिंग में भेज दें। आप अपनी जेब से १५ रुपये माहवार खर्च करने को तैयार हैं। हम इस रकम से ५ लड़कों के पढ़ाने की व्यवस्था कर देंगे। जो रकम इजाफा खर्च होगी उसके लिये आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं।'

"यही तो कमजोरी है" श्रीकान्त बाबू बीच ही में बोल उठे। "किसानों में 'स्पिरिट' पैदा होती है आप उसे कुचल देते हैं। आप क्यों नहीं कहते कि आप में हिम्मत नहीं? रघुनन्दन की आखिर हस्ती ही क्या है? जनता का बल पीसकर उसका सुर्मा बना सकता है, बशर्ते कि नेता लोग उसके हाथ न रोकें।"

सभापति जी ने हँस दिया। बोले, "जनता में बल हो तब न"? श्रीकान्त कब चुप रहनेवाले थे। चट से जवाब दिया, "बल हो तब न?" जनाब आप अपनी कमजोरी जनता पर लाद रहे हैं। आप जनता का अपमान कर रहे हैं।

लछमन वापस चला गया। उसके हृदय में सभापति जी के रवैये से उतना ही अफसोस हुआ जितना जागीरदार के रवैये से रोष। "क्या हम लोगों को योंही घुल घुलकर मरना होगा?" उसने मन ही मन कहा।

(४)

जब जिला अस्पताल में अधमुआ लछमन लाया गया तो श्रीकान्त भी पहुँच गया। सभापति जी तो वहाँ पहले ही से मौजूद थे। चोटों का सार्टिफिकेट लेने के बाद सभापति जी दूसरे कामों में लग गये।

"मैंने कहा था ये लोग किसी काम के नहीं। इनके भरोसे जमींदार से झगड़ा मोल लेना बेवकूफी है। इन्हें तुमसे क्या मतलब; इन्हें तो चाहिये अपनी नेतागिरी।" श्रीकान्त ने लछमन को छोटा सा लेक्चर सुना दिया।

लछमन बेचारा क्या जवाब देता? वह जानता था उसे उत्तेजना श्रीकान्त ने दी थी, नकि सभापति जी ने।

* * *

दूसरे ही दिन शहर में हैंडबिल बँटा। उसका हेडिङ्ग था "पंचायत का बेहूदा बचपन।" हस्ताक्षर थे श्रीकान्त के। उसमें लिखा था—

"बेचारा लछमन मर रहा है। पंचायत के नेताओं ने पहले तो उसे जमींदार से झगड़ा मोल लेने की बेहूदा प्रेरणा दी और जब वह पिट गया तो मुकदमेबाजी और आन्दोलन से हिचकते हैं। किसान पंचायत की इस तरह की बेहूदा बचपन के विरोध में मैं सभा की सदस्यता से त्यागपत्र देता हूँ।"

* * *

तीसरे दिन ठाकुर रघुनन्दन और श्रीकान्त रिज होटल में एक साथ चाय पीते देखे गये।

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की

मधूलिका

मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

क्या कुमारी शान्ता आप्टे नुमाइशी हैं ?

भारतीय नारियों को सबल बनने का एक नया संदेश

लेखक, श्री उमेश जोशी

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री कुमारी शांता आप्टे।

पिछले दिनों रणजीत-स्टूडियो में एक बड़ी दिलचस्प घटना घटित हो गई। काश्मीर के महाराजा साहब और महारानी साहिबा स्टूडियो देखने के लिए सैट पर आये। कुमारी शान्ता आप्टे किसी चित्र की भूमिका में कार्य कर रही थीं। रणजीत के निर्मातागण महाराजा साहब को स्टूडियो की कुल चीजें दिखाकर जब कुमारी जी के पास लाये तो उन्होंने आपका परिचय नुमाइशी ढंग से कराया। निर्माता की इस अनोखी नीति से शान्ता आप्टे के हृदय को ठेस पहुँची। उनके सामने उस वक्त एक ही रास्ता था कि वह स्टूडियो से चली जायँ। उन्होंने ऐसा ही किया। भारतीय नारी के आदर्श की रक्षा करना आपके जीवन का लक्ष्य है। इस सम्बन्ध में आपने जो संदेश दिया वह भारतीय नारियों के लिए बड़ा ही लाभप्रद है।

कुमारी जी की यह प्रबल इच्छा है कि यह मेरा संदेश भारतीय नारियों तक पहुँच सके, जिससे कि उनमें भी मेरी ही तरह सबलता आये। वह अधिकारों की रक्षा करना सीखें। किंतु यह तभी हो सकता है जब कि उनके व्यक्तित्व में निर्मलता, दिव्यता का समन्वय होगा। कुमारी शान्ता आप्टे का कहना है—

आज पुरुषों ने नारी को नुमाइशी उपकरण समझ लिया है। वह नारी-सौंदर्य को विलासिता के हाट में प्रदर्शन करना चाहते हैं। पुरुष नारी का जो उपासक है वह सिर्फ उसके चमकते हुए यौवन-पुष्प की सरसता पर मस्त हो रहा है और झूम रहा है। जब नारी के सौंदर्य का समय समाप्त हो जाता है तब उसके बाद उसका अस्तित्व पुरुष-समाज में दूध की मक्खी की तरह हो जाता है। रूप की सीमा के बाहर नारी का कोई मूल्य नहीं, कोई अस्तित्व नहीं। दाम्पत्य-जीवन का आधार भी आजकल शारीरिक-सौंदर्य के धरातल पर निर्मित किया जाता है। इसी लिए दाम्पत्य-जीवन में आज उच्छृङ्खलता का दौर-दौरा है। आज समाज में नारी का सौंदर्य प्रदर्शनी को सामग्री बनी हुई है। जब तक हम इस अवलम्ब के विरुद्ध जोरदार आवाज बुलन्द न करेंगी तब तक नारी का समाज में दम घुटता रहेगा। मेरा अपना निजी हमेशा से यह सिद्धान्त रहा है कि मैं अपने को पुरुषों से सबल समझती हूँ और एक नारी को समझना भी चाहिए अगर आज की दुनिया में गौरव के साथ जिन्दा रहना है तब! नारी का अपनापन ही उसके पतन का सम्बल होता है। इसलिए जब तक हम अपने अन्दर से "अपनापन" को न निकाल देंगे तब तक ये पुरुष हमको नुमाइशी वस्तु ही समझते रहेंगे। फिल्मी-दुनिया में रहने के लिए बड़ी सबलता चाहिए। फिल्मी-दुनिया ही क्यों? आजकल तो सम्पूर्ण समाज का वातावरण ही गन्दा हो रहा है। पुरुष वासना की आँधी में तिनके की तरह उड़ा चला जा रहा है। अतएव नारियों को ही पुरुषों का पथ-प्रदर्शक बनना चाहिए। तभी नारीवर्ग की रक्षा हो सकेगी, साथ ही पुरुषवर्ग भी भूले हुए मार्ग से पुनः जीवन के प्रशस्त पथ पर आ सकता है। समाज के यह पूँजीपति, जो कि समाज की रीढ़ कहे जा सकते हैं, आजकल दौलत के बल पर सिनेमा अभिनेत्रियों को प्रलोभन दिया करते हैं। हमारे चरित्र को डिगाने के लिए वह नित नये जाल फेंका करते हैं। इधर उन्होंने फिल्म-व्यवसाय भी प्रारम्भ कर दिया है। अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए जो चिड़िया उनके जाल में फँस जाती है, उसी को वे "पब्लिसिटी" के बल पर ख्याति के सातवें आसमान पर चढ़ा देते हैं और जो वास्तव में कला के उपासक हैं उनको पीछे की ओर ढकेल दिया जाता है। इस तरह से झूठी ख्याति की भूख से प्रवाहित होकर कुछ "नारी व्यक्तित्व" से गिरी हुई अभिनेत्रियाँ इन दौलतमन्दों की प्रणयलीला में भाग लिया करती हैं। बाद में उन्हीं को पश्चात्ताप के आँसू भी बहाने पड़ते हैं। उनकी मदभरी जवानी को लूटकर ये दौलतमन्द उन्हें विलासिता की सामग्री न समझकर अपने से दूर फेंक देते हैं। जहाँ पर पड़ी हुई वह अपनी किस्मत को कोसा करती हैं।

मैं दौलतमन्दों को घृणा करती हूँ और तब तक करती रहूँगी, जब तक कि वह धन के जोर से "नारी की अस्मत" का लूटना बन्द न कर देंगे। आज के दौलतमन्द अगर मैं यह कहूँ कि "नारी-सौंदर्य" के जबर्दस्त डाकू हैं, लुटेरे हैं तो
है ? इनके सामने नारी का पड़ना
कर्ष के खण्डहर में गिरना है।
हमेशा सचेत रहना चाहिए।
होना भी हमारे लिए "जहर" के

आज पुरुष का प्रेम हमारे
सौंदर्य की चमक पर उभरता है
तक पुरुष का संबन्ध हमारे बाहरी
की खूबसूरती पर टिका रहेगा तब
हमें पुरुष अपने विलास की नुमाइशी
ही समझते रहेंगे। इसलिए
का यह परम कर्तव्य हो जाता है
पुरुष से सम्बन्ध जोड़ने से पहले
अधिकारों की रक्षा होने की
ले। तभी वह अपने जीवन का
के हाथों में सौंपे। भारतीय नारी
मुझे एक मूल्यवान् बात और
यह कि शारीरिक-सौंदर्य के साथ ही
सौंदर्य के विकास की ओर अवश्य
क्योंकि हार्दिक सौंदर्य में ही
सत्य, नम्रता एवं सहिष्णुता
का समन्वय है। इन्हीं गुणों के
नारी अपने को सबल बना सकती
चाहती हूँ कि मेरे इस
व्यस्त हृदय की भावनाओं
हिन्दुस्तान की प्रत्येक नारी

[सर्वाधिकार लेखक द्वारा

यही कुमारी शांता आप्टे हैं।

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

नये संस्करण

वासवदत्ता—तीसरा संस्करण—बहुत अच्छे काग़ज़ में स्वच्छ प्रकाशन; चित्र आर्ट पेपर में। मू० २)

कुणाल—तीसरा संस्करण—असाधारण संस्करण—मोनो टाइप में। पुस्तकालयों के लिए। मू० १)

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

आरोंदा १८६९ नीलगिरि तेल
खाडिलकर रोड, बम्बई ४.

स्थापना १९२६ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।

१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

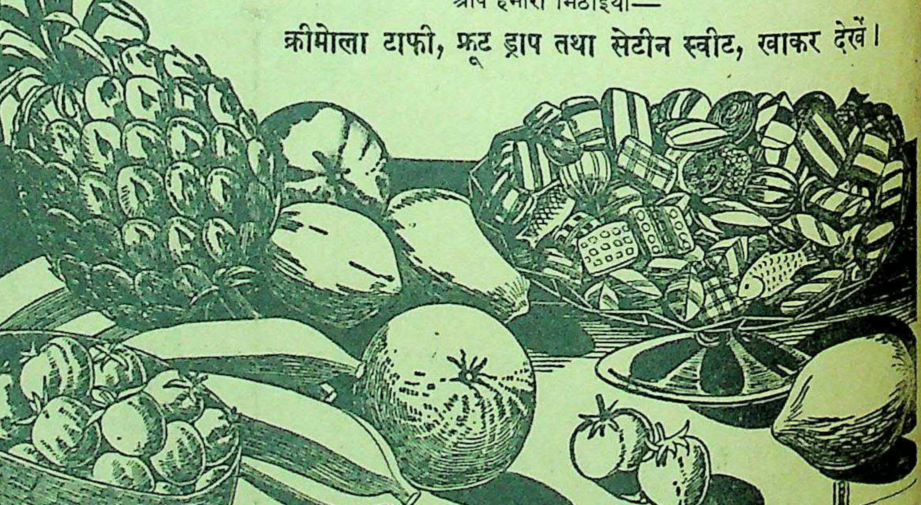
हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

संपादक के नाम चिट्ठियां

नैतिक पीड़ितों की सहायता

युक्तप्रांत के लखीमपुर-खीरी ऐसे जिले में आज लगभग १५० राज- पीड़ित हैं, जिनमें से १३० पाँच वर्ष से ४८ वर्ष तक के लिए जेल की यातनाएँ भोग रहे हैं। उनमें २७ हैं जिनकी ५५ वर्ष से ऊपर की है। इनमें से बहुतों के मकान खुद सम्पत्ति लुट गई, खेती छिन गई और में बन्द हैं। उनके स्त्री बच्चों के लिए का स्थान है और न खाने को लगभग दो सौ भाई जेल से मुक्त आ चुके हैं। उनकी भी यही कुछ घर ऐसे हैं, जिनमें पिता सब भाई जेलों में बन्द हैं और तथा असहाय स्त्रियों के अति- और कोई नहीं है।

राजनारायण मिश्र के, जो फाँसी हँसते-हँसते चढ़ गये, जिनका बढ़ गया था, अन्य दो भाई बाबूराम ३८ वर्ष के लिए, २० वर्ष के लिए, हैं। घर में अनाथ बच्चों और के अतिरिक्त कोई पुरुष पचासों घरों का है।

के घरों में १४ युवती हैं जिनके विवाह होने हैं। श्री राजनारायण बाबूराम की पुत्री भी के विवाह किसी प्रकार चुके हैं।

के लगभग ४० परिवारों के लिए २४ घंटों में कम से रोटी का प्रबन्ध हो तीन सौ रुपये मासिक की इनकी कन्याओं का विवाह इनको कपड़े, रामायण, पुस्तकें, स्लेट पेन्सिलें पहुँचाई इसके लिए पाँच हजार रुपयों की

२६ परिवारों की सहायता में मासिक, पाँच विवाहों के सौ रुपये, कपड़ों, पुस्तकों दो सौ रुपये और दो सौ सहायता के कार्य्यों में खर्च चुके हैं। इन राजबन्दियों की के लिए मान्य भाइयों की कमेटी है। धन भी प्राप्त होता है। के मंत्री श्री फीरोज सी सहायता पहुँचाते हैं। पर नाकाफी है। यह काम दो- का नहीं है। हर भाई-बहन कार्य में हाथ बँटाना है। भाई-बहन से अपील करते हैं इन वीर भाइयों की सहायतार्थ या एक मुश्त कुछ करें, इन देशभक्तों के दुखी सहायता उन्हें करनी है, इसे

खीरी जिला राजनैतिक कमेटी, लखीमपुर-खीरी के पते से भेजी जाय। किसी अन्य न दी जाय। कुछ अधिकारी करते हुए घूमते हैं।

मिश्र, एम० एल० ए०
लीडर, यू० पी० लेजिस्लेटिव
कांग्रेस पार्टी, मंत्री

सिनेमा और हिन्दी-प्रचार

आजकल जितना प्रचार सिनेमा का है, उतना किसी और कला का नहीं। अनपढ़ व्यक्ति से लेकर विद्वान् व्यक्ति तक अपने मनोरंजनार्थ सिनेमा देखने जाया करते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि आज सिनेमा देखनेवालों की संख्या दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। फिल्मों के गीत आज बच्चे-बच्चे की जिह्वा पर चढ़ गये हैं। प्रायः दिल बहलाने के लिए कम्पनियाँ ऐसे ही गीतों को जनता के सामने रखना चाहती हैं जो सस्ते तथा बाजारू हों और अधिक दिनों तक प्रत्येक स्थानों में धूम के साथ गाये जायँ। इसका परिणाम यह होता है कि उस स्थान में खेल अधिक दिनों तक चलता है और उस खेल से अधिक से अधिक पैसा खींचने का प्रयत्न किया जाता है। ऐसे सस्ते, चलते-फिरते गीत-लेखकों में श्री मधोक आदि का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है। जब जनता सिनेमा देखने के लिए जाती है तब उसके सामने दो बातें रहती हैं। पहली कहानी, दूसरी उसके गीत। अगर दोनों चीजें अच्छी मनोरंजक रहीं तो वह खेल चल निकलेगा अन्यथा वह खेल असफल हो जायेगा। कहानी तथा गीतों में जनता गीतों को अधिक अपनाती है। अतः हमारे गीत जैसे रहेंगे वैसा ही प्रभाव जनता के ऊपर पड़ेगा। गीत अगर उर्दू के होंगे तो उर्दू का प्रचार और हिन्दी के होंगे तो हिन्दी का प्रचार होगा।

हिन्दी कलाकारों एवं कवियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हुआ है। उनका प्रवेश सिनेमा-जगत् में होना प्रारम्भ हो गया है। परिणामस्वरूप कई कलाकार एवं कवि इस ओर अग्रसर हो रहे हैं। इनमें सर्वश्री नरेन्द्र शर्मा, भगवतीचरण वर्मा, मोती बी० ए०, गोपालसिंह नेपाली, भगवतीप्रसाद वाजपेयी तथा उपेन्द्रनाथ 'अश्क' आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। हिन्दी-प्रचार का कार्य इन कवियों के द्वारा अधिक से अधिक हो सकता है। अगर हमारे सिनेमा के गीतकार अपना सहयोग दें तो हिन्दी शीघ्र ही अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है।

हम यह कह सकती हैं कि इन कलाकारों एवं गीतकारों से हिन्दी को बहुत लाभ पहुँच सकता है। हमारे गीतकारों का ध्यान इस दिशा की ओर गया तो यह निश्चय है कि हिन्दी उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो सकेगी।

जम्मू (काश्मीर) —कुमारी चिंता

* * *

डाक्टर बड़थ्वाल-स्मृति-ग्रन्थ

डा० बड़थ्वाल-स्मारक ट्रस्ट-कमेटी ने स्वर्गीय डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल स्मृति-ग्रन्थ यथाशीघ्र दो भागों में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। प्रथम भाग में डा० बड़थ्वाल संबंधी संस्मरण यथा (१) जीवनी, (२) साहित्य, (३) व्यक्तित्व, (४) अध्यापन, (५) आलोचना, (६) कविता, (७) गद्य-काव्य, (८) नाटककला, (९) व्यंग्य, (१०) शोध-कार्य, (११) सिद्धान्त, (१२) विनोद, (१३) हिन्दी की देन, (१४) चिट्ठी-पत्रियाँ, (१५) इन्टरव्यू, (१६) विद्यार्थियों को सार्टिफिकेट, (१७) ग्रन्थों का परिचय, (१८) भूमिका, (१९) सम्पादन, (२०) भाषण इत्यादि का उल्लेख रहेगा। इस भाग का सम्पादन स्मारक-प्रकाशन-कमेटी कर रही है।

दूसरे भाग में हिन्दी संत-साहित्य पर, जिसके डा० बड़थ्वाल विशेषज्ञ माने जाते हैं, अधिकारपूर्ण लेखों-द्वारा विशेष प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायगा। इस भाग का संपादन पं० हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, शांतिनिकेतन, के प्रधानत्व में डा० श्यामसुन्दरदास जी, डा० धीरेन्द्र वर्मा जी, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल जी और श्री शम्भूप्रसाद जी बहुगुणा कर रहे हैं। इसलिए इस संबंध के लेख श्री हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, शांतिनिकेतन के पते पर भेजे जायें।

—ललिताप्रसाद नैथानी
प्रबंध सम्पादक बड़थ्वाल स्मृति-ग्रन्थ।

डिग्री तथा डिप्लोमा प्राप्त कीजिये

मिडिकल, इञ्जीनियरिंग, ला, बी० ए०, एम० ए०, पी० यच० डी० इत्यादि की डिग्री नाममात्र की फीस पर देशी तथा विदेशी यूनिवर्सिटी से प्राप्त करें। प्रास्पेक्टस के लिए लिखें।

भारत कम्पनी, शिकोहाबाद यू० पी०।

ब्लैक मार्केट को
मिटा कर
अपना पैसा बचाइए

कंट्रोल के कारण ब्लैक मार्केट के व्यापारियों के काम में रुकावट हुई है। इसी तरह लोगों का यह निश्चय भी कि ज़्यादा दाम नहीं देंगे, बहुत लाभजनक सिद्ध हुआ है। इन दोनों रुकावटों के कारण ब्लैक मार्केट के व्यापारी के सामने दो ही रास्ते खुले रहते हैं—या तो वह व्यापार छोड़ दे (या जेल जाय), और या उचित मुनाफ़े पर माल बेचे। इस अच्छे काम को जारी रखिए। कपड़ों, पीतल के बर्तनों और जूतों पर दाम छपे रहते हैं। ख़रीदने से पहले इन्हें देख लीजिए। दवाओं और दूसरी बहुत सी वस्तुओं के दाम प्रकाशित कर दिये गये हैं, और प्रत्येक दुकानदार के लिए क़ीमतों की सूची प्रदर्शित करना आवश्यक है। जो चीज़ ख़रीदिए, उसके लिए रसीद हमेशा लीजिए। अगर क़ीमत बहुत ज़्यादा हो, तो बिना संकोच पुलिस में रिपोर्ट कीजिए। समाज के इन शत्रुओं पर दया न कीजिए।

मुनाफ़ाख़ोरों के ख़िलाफ़ जो आन्दोलन चल रहा है
उसमें शामिल होकर आप भावों को गिरा सकते हैं।
ब्लैक मार्केट के मिटने पर आपका पैसा बचेगा।

AAA 157 HINDI

ब्लैक मार्केट से
हरगिज़ न ख़रीदिए
इस तरह ब्लैक मार्केट
ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

संवाददाताओं के पत्र

इन्दौर शहर में घास का अकाल इसलिए पैदा हो गया है कि व्यापारीवर्ग-द्वारा घास का भाव अत्यधिक बढ़ा दिया गया है। जहाँ घास शहर में दस रुपये में एक हजार पिण्डी बिकता था, वह आजकल दस रुपये में सिर्फ एक सौ ही दिया जाता है। इसके कारण पशुपालन में बहुत ही मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। यही नहीं, भाव-वृद्धि से शहर में आनेवाले दूध पर भी उसका असर प्रत्यक्ष पड़ रहा है।

यह मालूम हुआ है कि कुछ अर्जियाँ सरकार के पास भेजी गई हैं जिसमें सरकार से घास के भाव नियन्त्रित करने और उसका बराबर वितरण करने की प्रार्थना की गई है। प्रजामंडल क्षेत्रों में बातचीत करने से पता चला कि प्रजामंडल भी इस समस्या को सुलझाने के लिए प्रयत्न कर रहा है। प्रजामंडल की कार्य-समिति की हाल ही में हुई बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया और एक उप-समिति भी बनाई गई है।

होलकर सरकार के गजट में प्रकाशित हुआ है कि वर्तमान कौन्सिल आफ म्युनिसिपाल्टी की अवधि १८ जून तक बढ़ा दी गई है। इसका कारण यह कहा जाता है कि सरकारी नामजद सदस्यों की नामावली जो अभी अभी नई म्युनिसिपल कौन्सिल के लिए प्रकाशित की गई है उसके प्रकाशन में कुछ भूल हो गई थी। इस कारण तारीख २७ मई को चुनी गई नई म्युनिसिपल कौन्सिल की बैठक अब ता० १८ के बाद ही होगी ऐसा अनुमान किया जाता है।

होलकर सरकार के गजट में प्रकाशित एक विज्ञप्ति से पता चलता है कि महाराजा की इच्छानुसार इन्दौर म्युनिसिपल कौंसिल को यह अधिकार दिया गया है कि वह अपना सभापति चुन ले। इस हुक्म के कारण सरकार-द्वारा कौंसिल पर जो तीन चौथाई अर्थात् २५ सदस्यों-द्वारा सभापति चुना जाने की कैद थी वह अपने आप खत्म कर दी गई है, श्रीमन्त की इस आज्ञा पर जागृत नागरिकों में संतोष प्रकट किया जा रहा है और चूँकि वर्तमान कौंसिल में इन्दौर प्रजामंडल का बहुमत है चारों ओर यही चर्चा है कि प्रजामंडल कौन्सिल का सभापति किसको बनाता है।

इन्दौर म्युनिसिपल कौन्सिल में प्रजा-मंडल का बहुमत हो जाने से सरकार ने ऐसे लोगों को नामजद किया है जो हर समय सरकारी पक्ष का ही समर्थन करने को तैयार हैं। यही नहीं उनमें से कुछ तो व्यापारी हैं जिन्हें सरकारी कान्ट्रेक्टस् दिये जाते हैं और जिसके कारण उनका सम्बन्ध और जीविकोपार्जन का सवाल हर समय लगा रहता है। चार गैर-सरकारी नामजद सदस्यों के नाम ये हैं—सर्वश्री छगनलाल मित्तल, सीताराम पोद्दार, मुन्तज़िम ए खास बहादुर ए० जी० शर्मा और मुन्तज़िम बहादुर डी० बी० द्विवेदी। —संवाददाता

*　　*　　*

दिल्ली सस्ता साहित्य-मण्डल के अनुरोध से लगभग ३ वर्ष पूर्व स्वर्गीय सेठ जमनालाल बजाज की जीवनी लिखने की जिम्मेदारी श्री हरिभाऊ उपाध्याय ने ली थी, परन्तु अगस्त-आन्दोलन के सिलसिले में नजरबन्द हो जाने के कारण सामग्री जुटाने के अलावा अधिक काम न हो सका। अब श्री उपाध्याय जी सूचित करते हैं कि उन्होंने जीवनी लिखने के लिए सारी सामग्री का फिर से अध्ययन शुरू कर दिया है और वे चाहते हैं कि स्वर्गीय सेठ जी की आगामी वर्षी तक जीवनी लिखकर प्रकाशित हो जाय। अतएव जिन सज्जनों के पास ऐसे पत्र, लेख, वक्तव्य, फोटो या अन्य कोई सामग्री हो जिससे जीवनी के लिखने में सहायता मिल सके वे उसे उपाध्याय जी को अजमेर के पते पर भेजने का कष्ट करें। काम हो जाने पर उनकी सामग्री उनको सुरक्षित वापिस भेज दी जायगी। —संवाददाता

*　　*　　*

शाहपुरा रामस्नेहि सम्प्रदाय के प्रधानाचार्य्य स्वामी श्री १००८ श्री निर्भय-राम जी महाराज विद्वान् संत मण्डली के सहित जोधपुर चातुर्मास्य करने के लिए पैदल जाते समय रामस्नेहि-दिवाकर स्वामी श्री भगीरथराम जी महाराज की शुभ प्रेरणा से मदनगंज-किशनगढ़ पधारे। स्वामी जी महराज का जुलूस निकाला गया। स्वामी जी का मदनगंज के बड़ा राम सनातन वैदिक धर्म के विविध विषयों पर प्रवचन होते रहे। हजारों आम जनता के अलावा नगर के प्रतिष्ठित धनी-मानी सज्जन और राज्य के उच्च अधिकारीवर्ग भी जुलूस में तथा सारगर्भित प्रवचन में नित्य सम्मिलित होते थे। राज्याधिकारियों में यहाँ के सेशन जज श्री ठाकुर सरदारसिंह जी और होम मिनिस्टर श्री नारायणदास जी की धार्मिक भक्ति सराहनीय रही। मदनगंज की जनता की ओर से एक अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया। इस महोत्सव पर खास उल्लेखनीय बात यह हुई कि आर्य्य-हिन्दू-सूर्य्य श्रीमंत महाराणा साहब की ओर से भी दो प्रतिनिधि उदयपुर राज्य के उच्चाधिकारी यहाँ आये और सत्संग में सम्मिलित हुए। इस आयोजन का श्रेय रामस्नेहि सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध आशुवक्ता स्वामी श्री भगीरथ राम जी महाराज को है। —संवाददाता

*　　*　　*

मैमनसिंह में बंगाल प्रान्तीय छात्र-सम्मेलन का आठवाँ अधिवेशन जिला मैमनसिंह में १,२,३ जून को बहुत समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के निर्वाचित सभापति श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल की अभ्यर्थना के लिए जिला कांग्रेस कमेटी के पदाधिकारी, किसान और मजदूरों के प्रतिनिधि, तथा बहुतेरे विद्यार्थी स्टीमर स्टेशन जगन्नाथ घाट ही पर पहुँचे हुए थे। रात को बारह बजे जनता की अपार भीड़ को चीरकर मैमनसिंह स्टेशन से स्वयंसेवक दल ने सभापति को अपने निवासस्थान पर पहुँचाया।

दूसरे दिन सभापति का एक शानदार जुलूस निकला जो करीब एक मील लम्बा था। जिसमें किसान, मजदूर, विद्यार्थी और शहर के निवासी सभी सम्मिलित थे। जुलूस सभास्थल पर खत्म हुआ और आरकेस्ट्रा पर वन्देमातरम् गायन के बाद श्री रामसुमेर शुक्ला ने विद्यार्थी तथा कांग्रेस झण्डा फहराया।

सभापति ने विद्यार्थियों को देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने के लिए उपदेश दिया। उन्होंने हिन्दू छात्रों को मुसलमान मित्र बनाने के लिए विशेष रूप से आग्रह किया। कम्युनिस्टों की नीति की निन्दा करते हुए सभापति ने चरखे का भी विरोध किया। "चरखा पराजय का प्रतीक है।" 'स्वावलम्बन ही मुक्ति का उपाय है', इस पर जोर देते हुए सभापति ने बतलाया कि किसी बाहरी देश से यहाँ तक कि रूस से भी सहायता की आशा रखना भ्रम-मात्र है। —संवाददाता

*　　*　　*

बीकानेर (सरदार शहर) सार्वजनिक पुस्तकालय ने अपना ३६वाँ वर्ष समाप्त कर ३७वें वर्ष में पदार्पण किया है। गत वर्ष ३१,५०२ पाठकों ने वाचनालय से लाभ उठाया एवं १४,८७४ पुस्तकें पुस्तकालय के बाहर पढ़ने के लिए गईं। इस वक्त पुस्तकालय में ५ दैनिक, १५ साप्ताहिक व पाक्षिक, ३३ मासिक और २ त्रैमासिक पत्र आते हैं। पुस्तकालय की ओर से एक चलता-फिरता पुस्तकालय भी व्यवस्थित ढंग से चल रहा है। —संवाददाता

अलीगढ़ में अखिल भारतीय ना ब्राह्मण महासभा का २४वाँ वार्षिकोत् २४, २५, २६, जून १९४५ को श्री हीरालाल जी बी० ए०, एल० एल० बी के सभापतित्व में मनाया जायेगा। उ अवसर संयुक्त-प्रान्तीय नायि ब्राह्मण सम्मेलन, कवि-सम्मेलन, शिक्षण-सम्मेलन आर्थिक-सम्मेलन, क्षौरकार-सम्मेलन महिला-सम्मेलन आदि भी होंगे। —संवाददा

*　　*　　*

लायलपुर की हिन्दी-प्रचारिणी स की ओर से १२ जून को जिला हिन्दी साहित्य-सम्मेलन बड़े समारोह से मना गया जिसमें एक पत्र-प्रदर्शिनी की आयोजना की गई थी। —संवाद

विशुद्धता की माप

अशुद्ध कच्चे माल से या स्वास्थ्य रक्षा के नियमों की अवहेलना कर, बनाये गये पदार्थों में खास कर के खाद्य-पदार्थ, औषधि और प्रसाधन सामग्रियों में, जो भीषण खतरा छिपा हुआ है उससे रक्षा पाने का जनता को पूर्ण अधिकार है।

बहुत से देशों में खाद्यपदार्थों व औषधियों की विशुद्धता की रक्षा के लिये कानून बने हैं और कड़ाई से उनका पालन किया जाता है। भारत में ऐसा कानून नहीं के बराबर है और, इसीलिये रक्षा नहीं मिलती। बिकने आई वस्तुओं के बनाने वालों पर विश्वास करने के अलावा जनता के लिये और कोई चारा नहीं है।

जनता के प्रति अपने कर्तव्य का हमें हमेशा खयाल रहता है और हमें यह लिखते हुए प्रसन्नता होती है कि स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट की मोहर लगी सभी वस्तुएं संसार के किसी भी देश द्वारा निर्द्धारित विशुद्धता के माप से किसी भी अंश में कम नहीं हैं चाहे कच्चे माल की उत्तमता से देखा जाय चाहे बनाने के तरीके और हालातों से।

स्टैनिस्ट्रीट

ब्रूसिन . केसिन सीमेण्ट . डिस्इन्फेक्टेण्ट्स . कैफीन . कुर्चिनेटम (ऐमोबिक) प्रिपरेशन्स . इन्जेक्ट्यूल्स . लार्विसाइड्स . लेप्रोसी प्रिपरेशन्स . ल्युकोडर्मा . लिक्विड एक्सट्रैक्ट्स . पर्फ्यूम्स . पर्मानेंट हेयर वेविंग प्रिपरेशन्स . स्टेन्स इन सौल्युशन . सिरिचुअस प्रिपरेशन्स . स्ट्रिकनिन . सिरप्स . टैब्लेट्स . टिंचर्स . टौयलेट प्रिपरेशन्स

के बनाने वाले

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐन्ड कम्पनी लिमिटेड द्वारा प्रचारित

कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 115

साप्ताहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

[illegible] जाने पर लक्ष्मी ने कहा—सब चीजें घर की ही [illegible] खाने से जी नहीं खराब होगा।

[illegible] आ जाने पर बुढ़िया ने कहा—खा लो बिटिया। [illegible] सिर माथे पर। जीवन में तो कभी खाया नहीं है, [illegible] भाग्य में है कि नहीं, कौन जाने?

[illegible] ने कहा—विवाह की कहीं कोई बातचीत हुई है क्या?

[illegible] ने कहा—न बेटी। कहाँ होगी, कैसे होगी, कोई [illegible] इसी चिन्ता में पड़ी हूँ।

[illegible] यही बात सुनना चाहती थी। राजकुमारी से भी [illegible] पाया था। उसने इस विषय में अधिक चर्चा [illegible] जिससे कहीं, बुढ़िया के मन में और कोई व्यर्थ बात [illegible] चुप हो रही।

[illegible] ने कहा—बच्चा खाट पर पड़ा है। दामाद भी कोई [illegible] है। हमारे ऊपर बड़ा बोझा आ पड़ा है। [illegible] होता कि दामाद दूसरा विवाह नहीं करेगा। ऐसी [illegible] जायगा?

[illegible] उसे रौंदती ही आयेगी—कहते-कहते बुढ़िया [illegible] खींची।

[illegible] लक्ष्मी ने कहा—जब यह हाल है तब भी [illegible] व्याह देगा?

[illegible] चाहे जिस चीज की कमी हो बेटी, पर [illegible] है।...मैं ही अपना बोझा हल्का करने [illegible] उसे व्याह देने का निश्चय कर चुकी हूँ।

[illegible] ने कहा—क्या कह रही हो?

[illegible] से बुढ़िया ने कहा—इसके बिना और कोई [illegible] रही! इस पर भी अपने बहनौते के ऊपर जो [illegible] होगा, वह और किसका हो सकता है? अपनी [illegible]—मांस के लोथड़े—को मनुष्य करना ही होगा।

[illegible] कहा—तुम तो कह रही थीं कि तुम्हारी उस [illegible] का कभी मुख नहीं देखा?

[illegible]—बिटिया, मनुष्य सुख नहीं दे सकता, यदि भाग्य में [illegible]

[illegible] ने कहा—तो भी जान-बूझकर कुएँ में ढकेलने से तो [illegible] सकता।

[illegible]—सब जानती हूँ बेटी। मेरे न भाई है न बेटा जो [illegible] पास पैसा भी नहीं है। अबला स्त्री-जाति; क्या करूँ?

[illegible] ने कहा—उस बच्चे का और इस कन्या का दायित्व [illegible] तो? आप ही के दामाद का नाम भैरव है? [illegible] घर हम लोगों के यहाँ बन्धक है।

[illegible] ने कहा—क्या तुम चन्द्रशेखर बाबू की कोई हो?

[illegible] उन्हीं की बिटिया हूँ।

[illegible] सहसा लक्ष्मी के पैरों में लोट गई और कहने लगी—[illegible] रक्षा कर सकती हो, बेटी। ऋण से खोपड़ी के [illegible] है, तब भी बदमाशी का अन्त नहीं है। रक्त [illegible] हो गया। अपने ही लड़के नहीं मानते तो जमाई [illegible]? इस पर मेरा कौन जोर? सोचती हूँ, जो अपना [illegible] वह लड़के को और घर को देखे-भाले तो [illegible] मैं उसी के हाथ सौंप दूँ। यह बात मैंने भैरव [illegible] थी। सम्भवतः वह इस पर राजी है। दो दिन से [illegible] रहता है। भले आदमी की तरह घर में रहता है। [illegible] नौकरी की बात भी सोच रहा है।

[illegible] ने कहा—राजकुमारी का सुन्दर रूप देखकर आपको [illegible] रहा होगा। विवाह के बाद फिर वही लच्छन होंगे। [illegible] नहीं छूटती।

[illegible]—नहीं तो दुविधा में पड़ी हूँ।

[illegible] की तश्तरियाँ वैसी ही धरी थीं। लक्ष्मी ने कहा—[illegible]! सकुचाती क्यों हो? ऐसे काम नहीं चलेगा—[illegible] में राजकुमारी का मन बह गया। उसने तश्तरी [illegible] स्वर में कहा—आप नहीं खायेंगी क्या?

[illegible] ने हँसकर कहा—खाएँगी कैसे। हमारा भाई आया [illegible] है। उनको बिना खिलाये हम कैसे खायें।

[illegible] ने कहा—उन लोगों से पहले मैं ही......?

लक्ष्मी ने कहा—इसमें कौन दोष है। तुम सबसे छोटी हो। छोटों को बिना खिलाये बड़े कैसे खा लेंगे।

इसके बाद राजकुमारी कोई आपत्ति न उठा सकी।

लक्ष्मी ने बुढ़िया से कहा—माँ जी, एक बात कहना चाहती हूँ....।

'माँ जी' शब्द से बुढ़िया का मन प्राण शीतल हो गया। बोली—क्या बात है, बिटिया?

लक्ष्मी ने कहा—मैं कहती हूँ कि राजकुमारी को, यदि आप कहें तो मैं अपने घर ले जाऊँ। आप भी अपना नाती लेकर चलिए।....किन्तु राजकुमारी दो दिन हमारे पास रहेगी। हम वहाँ अकेली हैं, जी नहीं लगता।....क्या कहती हो?

बुढ़िया मन में प्रसन्न हो गई। उसने कहा—राजकुमारी अकेली ही जाय तो क्या बात है? तुम्हारी बड़ी कृपा है बिटिया। उस बच्चे-कच्चे को लेकर काहे को आपदा बुलाओगी!

लक्ष्मी ने कहा—नन्हें बच्चे हमें बड़े प्यारे लगते हैं। मैं तो मोहल्ले के बालकों को प्रायः बुलाती हूँ।

बुढ़िया ने कहा—जान पड़ता है तुम्हारी गोदी अभी भगवान् ने नहीं भरी!

लक्ष्मी का मुख लज्जा से लाल हो गया। उसने सिर झुका लिया।

बुढ़िया ने कहा—इतनी उदारमना न होतीं तो भगवान् क्यों इतना बड़ा आदमी बनाते!

लक्ष्मी ने कहा—तो फिर आपको स्वीकार है?

बुढ़िया ने कहा—अपने बच्चे की बात मैं कह सकती हूँ। दूसरे के बच्चे की बात मैं कैसे कहूँ!

लक्ष्मी ने कहा—भैरव से तुम कहना कि चन्द्रशेखर बाबू की लड़की ने नेवता दिया है।...नाती की आयु कितनी होगी?

बुढ़िया ने कहा—अगले सावन में चौथे में पड़ेगा।

लक्ष्मी ने कहा—तो आप उसे ले आइए। हम लोग अभी यहाँ दो घंटे हैं। खा-पीकर घर जायँगे। आपको चलना ही होगा। छोड़ेंगी नहीं।

बुढ़िया ने हँसकर कहा—बहुत अच्छा बिटिया। तुम्हीं को देवी समझकर तुम्हारे ही द्वारे आज से पड़ी रहूँगी। असहाय दीन-दुखियों का पालन करती हो। भगवान्! स्वामी, पुत्र लेकर जन्म जन्म सुखी रहो।

बुढ़िया चली गई। लक्ष्मी ने राजकुमारी से कहा—खा-पी चुकीं? आओ, चलो, बाग़ में घूमें। अपने भाई और पति से परिचय करा दें। नहीं, नहीं, लज्जा क्या? आज से तुम हमारे घर की लड़की हुईं। हमारे कोई छोटी बहन नहीं है। तुम आज से हमारी छोटी बहन हो गईं।

राजकुमारी को लेकर लक्ष्मी उद्यान में आई। उसने अपने हाथ के लगाये, जाने कितने पेड़ दिखाये। यह गंधराज उन्होंने लगाया था। यह चम्पा मेरे भाई हरीश ने लगाया था।

एक झोपड़ी-सी देखकर राजकुमारी ने पूछा—यह क्या है, दीदी?

ओह! वह तो छायाघर है। इसमें भी बहुत-से पेड़-पत्ते हैं। देखोगी? यह आर्किड है, यह विलायती नाम है। देशी नाम है पारिजात। पारिजात की कथा तुमने सुनी है? रुक्मिणी के हाथ में पारिजात देखकर सत्यभामा ने हठ किया था कि हम भी पारिजात लेंगी। रुक्मिणी को नारद जी ने पारिजात दिया था। सत्यभामा को यह सहन नहीं हुआ। भगवान् कृष्ण ने पारिजात लाने का आदेश दिया, किन्तु इन्द्र ने पारिजात नहीं दिया। जब स्वयं भगवान् इन्द्रलोक गये और इन्द्र को युद्ध में हराया तब पारिजात ला सके और सत्यभामा को प्रसन्न कर सके। यह वही पारिजात है। मैंने बचपन में रास-लीला में यह सब देखा था।

सिर हिलाकर राजकुमारी ने इस कथा के जानने के सम्बन्ध में हाँ किया।

लक्ष्मी ने कहा—तो हमने व्यर्थ में ही इतनी बकवास की? क्या करें कोई संगी नहीं है। चलो घर, आज तुमको खूब दिक करूँगी।

राजकुमारी विस्मित और अवाक् थी। इस उद्यान में काहे के लिए आई थी, क्या हो गया! इस सुन्दर उद्यान को देखकर कितनी भयानक भावनाएँ उसके मन में उठती थीं। समझती थी इसके स्वामी बड़े ही निर्दय होंगे। दुखियों के सतानेवाले!

स्वास्थ्यके नियम थोड़े और सरल हैं।

क्षमा कीजिये
स्वास्थ्य का प्रश्न
सर्वप्रथम आता है

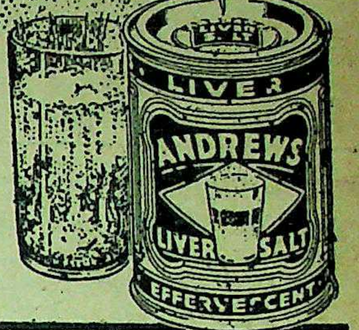

अन्दरूनी सफाई के लिये
ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्य के लिये

लम्बा होइये

[illegible] दिनों में आपकी लम्बाई १ से ४ इंच [illegible] बढ़ सकती है।

अगर आप छोटे [illegible] १०० [illegible] १६ दिनों में लम्बाई बढ़ जाती है।

टासपाइन की [illegible] वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत की जाती है। १६ दिनों तक [illegible] प्रति दिन [illegible] कीजिये। [illegible]

[illegible]

इंग्लैंड में प्रस्तुत
टासपाइन
ग्लैंड फुड टेबलेट्स

डिस्ट्रीब्यूटर्स
दि ब्रिटिश ट्रेडिंग कम्पनी [illegible]
[illegible]

किन्तु सो तो नहीं। यह ज्वालामुखी पर्वत स्नेह का समुद्र है क्या ?

लक्ष्मी ने कहा—यह बड़ा पेड़ काहे का है, बताओ तो !

राजकुमारी ने कहा—मैं नहीं जानती।

लक्ष्मी ने कहा—नाशपाती का है। हमारे बाबू जी एक बार एक मुवक्किल के साथ काश्मीर गये थे। इसे वहाँ से लाये थे। सब कुछ इसकी सेवा हुई किन्तु इसमें फल न फला। जो भी हो बाबू जी का स्मारक है। फलवाले पेड़ों से भी अधिक हमको प्यारा है।

राजकुमारी ने कहा—हम लोगों के देश में नाशपाती नहीं होती क्या ?

नहीं, कहाँ हुई ? बाबू जी ने तो बड़ी चेष्टा की...

अरे वह देखो ! यह लोग, छोटे बच्चों की तरह क्या कर रहे हैं ! थोड़ी ही दूर पर एक अमरूद के नीचे हरीश और सुरेश खड़े थे। सुरेश ने एक अँकसी तैयार की थी।

लक्ष्मी ने कहा—तुम लोग क्या कर रहे हो ?

हरीश ने कहा—जीजा जी ने अमरूद की सूखी डाल लेकर अँकसी बनाई है। कदम के फूल तोड़ेंगे।

लक्ष्मी ने कहा—कदम के फूल का क्या होगा ?

सुरेश ने अपनी अँकसी सँभालते हुए बिना मुँह घुमाये ही कहा—कदम फूल की माला गूँथकर तुम्हारे गले में पहनायेंगे। आज इस बाग़ में रास-लीला होगी। हरीश हमारा सखा होगा।

भर्त्सना भरी वाणी में लक्ष्मी ने कहा—जाओ, जाओ। दिन दिन तुम्हारी गँवारू रसिकता बढ़ रही है। शासन की आवश्यकता है।

सुरेश ने कहा—क्या भाई मोर-मुकुट और वंशी चुरा लोगी ? और कहते-कहते रासधारियों की तरह से गाना आरम्भ कर दिया। लक्ष्मी दौड़कर सुरेश के पास गई और उसनें कहा—एक नया व्यक्ति हमारे घर आया है। क्या सोचेगा वह ! तुम कैसी बातें कर रहे हो !

सुरेश ने कहा—क्या सोचेगा ? यही सोचेगा कि दोनों में बहुत प्रेम है।

लक्ष्मी ने कहा—देखिए ! हमने उसको आज से अपनी छोटी बहिन मान लिया है। समझे ?

सुरेश ने लक्ष्मी की ओर देखते हुए कहा—ठीक है, "कण्टक-वन में आकर हमने पाया पंकज फूल, हे सखि पाया पंकज फूल।"

लक्ष्मी—अरे ! अरे !....

[क्रमशः

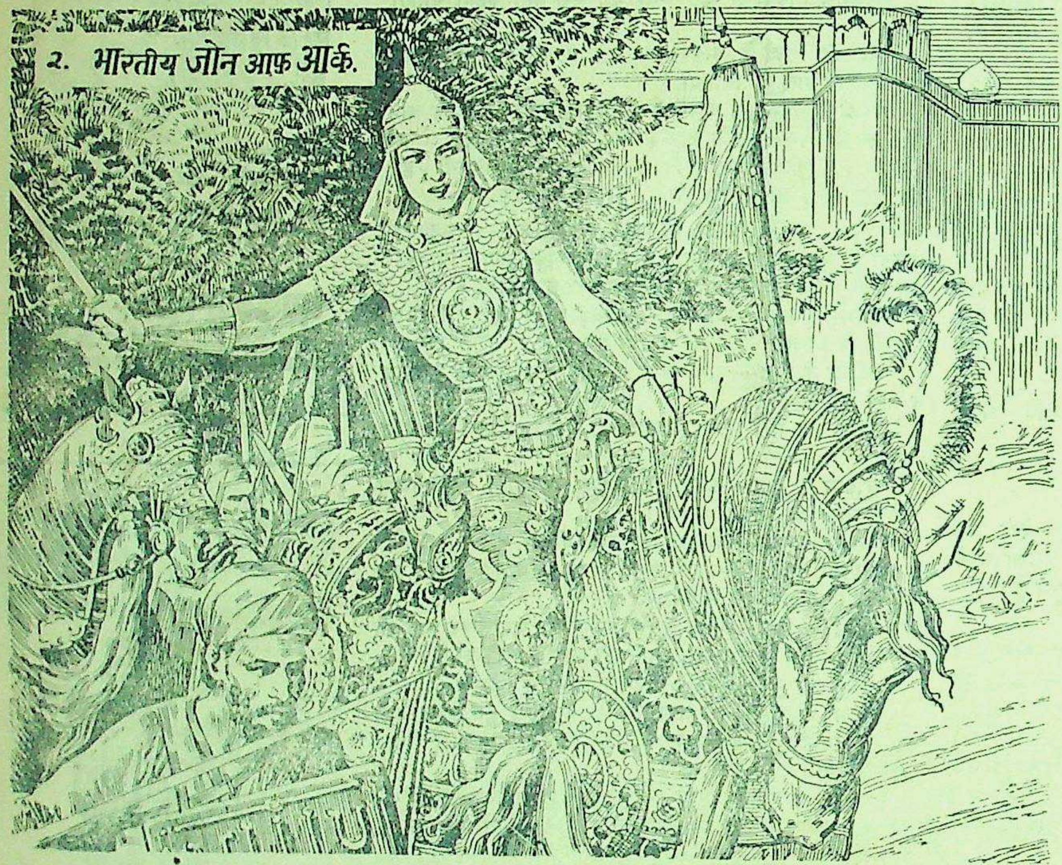
२. भारतीय जोन आफ आर्क.

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल कारण स्वस्थ शरीर।

चाँदबीबी सुन्दरी ही नहीं अपितु मुस्लिम जाति की एक साहसी योद्धा भी थी। आत्म समर्पण करने कि अपेक्षा मृत्यु को अधिक सुखकर समझते हुए, क़िले में घिरी हुई, शत्रु की अपेक्षा कहीं छोटी सेना का स्वयं संचालन और वीरता पूर्वक युद्ध करते हुए वह वीर गति को प्राप्त हुई। उसके असामान्य साहस से पूर्ण सुन्दर स्वास्थ्य ने उसका नाम भारतीय इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों से लिख कर अनन्त काल के लिये अमर कर दिया।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट का सेवन करिये।

हेमो द्राक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चे सभी को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो-फ़ास्फ़ेट्स स्नायुवों को शक्ति देते हैं। उसके माल्ट, पेप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

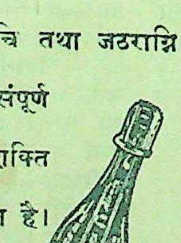

स्वास्थ रक्षा के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

Alembic

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड बरोडा

Al. 251—Hindi

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि
पण्डित सोहनलाल जी द्विवे
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आ

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार के दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनसे भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहि उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते बालकों में सद्विचारों को बचपन से बोना चाहिए; उन्हें द्विवेदी जी कृतियों को अपनाना चाहिए, और कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
।।।) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस,लि०, प्र

सत्तर वर्ष की उम्र में स्वस्
इसके पहले वह गठिया के कारण
पंगुल हो गया था
क्रुशेन साल्ट से वह नया आदमी
बन गया

उसकी लड़की लिखती है कि व्यक्ति गठिया के कारण एक सम कुल पंगुल हो गया था। जब से क्रुशेन का सेवन आरम्भ किया जिन्दगी नई हो गई यद्यपि उनकी ७० वर्ष की है। अब तो उनका परिवार गठिये से बरी है :—

"मेरे पति तथा मैं कुछ एक क्रुशेन का सेवन इस घृणित गठिया उपचार के लिए कर रही हूँ। मेरे पिता ने इसका सेवन कई वर्ष तक और यहाँ तक कि वे इसे अपने जीवन आवश्यक अंग समझने लगे थे। सेवन से पहले वे गठिया के कारण पंगुल हो गये थे। उन्होंने प्रायः प्रकार के इलाज किये किन्तु कोई लाभ हुआ। मैं अब विश्वासपूर्वक कह हूँ कि क्रुशेन से वह एकदम नये बन गये। इस समय उनकी उम्र की है और वे बिलकुल मुस्तैद हैं—
श्रीमती,

शरीर में अम्ल की अधिकता के गठिया हो जाता है। क्रुशेन साल्ट के पदार्थ अम्ल नष्ट कर देने के लिए हैं। इसके अन्य पदार्थ इन्द्रियों-द्वारा विष को बाहर निकाल देते हैं और आपका कष्ट दूर हो जाता है और नये जीवन का संचार हो जाता है।

क्रुशेन बाजार के सभी औषधि विक्रेताओं तथा दवाखानों में मिलता है।

स्वास्थ्य और व्यायाम

खरबूजे का उपयोग

खरबूजे के लिये उपयोगी क्यों?

डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

दिन की बात है मेरे एक
हुए थे। भोजन के समय
कतरे खरबूजे के भी
रोटी, शाक-पात आदि खा
उन्होंने एक कतरा तो
खा लिया और बाकी के
कि आजकल हैज़े के
लगे। मैंने आश्चर्य
देखा और कहा, "आप
चाहे आपकी रोटी,
हैजा पैदा कर दे, पर यह
हानि नहीं करेगा। मेरी
न रुची और उन्होंने
छुआ तक नहीं।

तात्पर्य यह है कि हम लोगों
धारणा ने घर कर लिया
हैजा उत्पन्न करता है।
खरबूजा ऋतु का
वह ज़रा गर्म जरूर है।
पखाना साफ होता है।
ठण्डे और आरोग्य-
खरबूजा खा लेने
होती। मैं अक्सर
प्रतिदिन आठ-
खाकर रहा हूँ।
खरबूजा या और
भाजी खाना अच्छा

आवश्यक है कि खरबूजा
यथासम्भव मीठा हो।
साथ खरबूजा खाना ठीक
बार भरपेट अन्न खाकर
के वशीभूत हो खरबूजा
है। भोजन मे पूर्व खर-
। खरबूजे को काटने
देर पानी में डाल दिया
गर्मी निकल जाती है।
कहना है कि दूध के साथ
तुरन्त हैजा हो जाता है।
कई बार अनुभव करके
पाया। अलबत्ता अम-
आदि की खटाई के साथ खर-
ठीक रहता है। यह बात
रखना उचित है कि रोटी,
की बनी वस्तु—मसाले-
आचार-मुरब्बा आदि
वस्तुओं की अपेक्षा खरबूजा
है। इसमें सब गुण

साहित्य

तथा उनसे प्रभावित भावी
की समन्वयपूर्ण साहित्य के
करनेवाले निबन्धों

२॥≡)

लिमिटेड, इलाहाबाद

मनोरंजक चुटकुले

पड़ोस की धौंस

एक कारखाने के मालिक जिस दूकानदार से कपड़ा खरीदते थे अपने यहाँ के अधिकतर मजदूरों का भी उसी दूकानदार के यहाँ राशनिङ्ग कार्ड दिलाकर ग्राहकों में नाम लिखवा दिया। एक दिन मालिक और कुछ बड़े आदमी दूकानदार की दूकान से कपड़ा खरीदकर लिये जा रहे थे। एक मजदूर भी कार्ड लेकर आया। वह बोला—साहु जी कपड़े के लिए आया हूँ।

सेठ—अभी कोटा नहीं आया।

मजदूर—तो वे लोग बिना कोटा आये ही कहाँ से कपड़ा लिये जा रहे हैं?

सेठ—चलो, चलो। बेकार बकवाद मत करो, उनको दिया गया है, बस।

मजदूर—तो अब अगला कोटा खतम ही समझिए।

सेठ जी—क्या आज कल सरकारी नौकरी में हो गये हो?

मजदूर—राशनिङ्ग अफसर का मैं पड़ोसी हूँ। आप भी क्या कहेंगे? अच्छा रहने दीजिए जा रहा हूँ।

सेठ जी—अच्छा फिर लिये ही जाओ।

* * *

डाक्टरी बिल

एक व्यक्ति ने किसी दिन एक बीमार से कहा, "तुम तो हृदयरोग के बीमार जान पड़ते हो। क्यों नहीं किसी अनुभवी डाक्टर से सलाह लेते?"

रोगी ने उत्तर दिया, "जितना डाक्टर की सलाह मेरे लिए उपयोगी न होगी उतना उसके फीस का बिल मेरे कमजोर हृदय को ऐसा धक्का देगा कि जिससे मैं खड़ा नहीं रह सकता।"

* * *

बीमारी कैसी है?

डाक्टर ने एक रोगी से पूछा, "तुमको कौन सा मर्ज है?"

रोगी, "मैं ऐसा मरीज हूँ कि मैं स्वयं नहीं जान सका कि मैं बाहरी बीमारी से बीमार हूँ अथवा भीतरी।"

अधिक बचतें
-युद्ध के लिए!
-शान्ति के लिए!

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

इन दिनों ज़्यादातर चीज़ों की बहुत कमी है। माल की बहुत अधिक खींचतान है। ग़रीबों को उचित भाग तब तक नहीं मिल सकता, जब तक आप अपने ख़र्च में कमी नहीं करते। देश के प्रति आपका यह कर्त्तव्य है कि यथासंभव कम से कम वस्तुओं से काम चला लें।

आर्थिक दृष्टि से भी कमख़र्ची बड़ा अच्छा गुण है। थोड़ी थोड़ी बचत रोज़ करते रहने से महीने में नियमित रूप से कुछ धन-संचय हो जाता है—बचत के इन रुपयों को शान्ति स्थापित होने और भाव गिरने पर ख़र्च करना चाहिए।

साबुन लगाने के बाद इसे सुखा कर धरिए।

इस प्रकार यह अधिक चलता है।

भोजन बनाने में कम आग जलाइए।

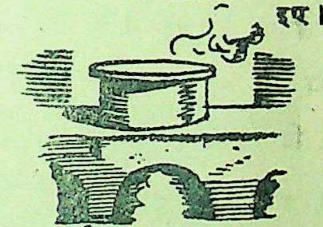

ईंधन बचाइए।

अपनी मोटर बंद करके रख दीजिए।

लड़ाई के लिए पेट्रोल की ज़रूरत है।

शान्ति स्थापित होने तक

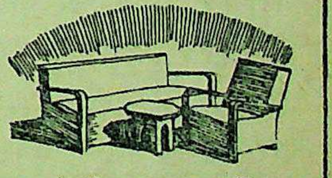

नया फर्नीचर मत ख़रीदिए।

शादी-विवाह में ख़र्च घटाइए।

वस्तुओं के स्थान पर नक़द रक़म देना ज़्यादा अच्छा है।

कम नौकरों से

काम चला लीजिए।

अगर चिट्ठी से काम चल जाय तो

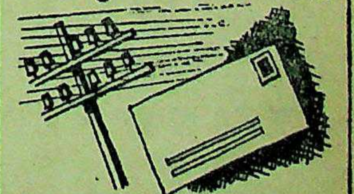

तार न भेजिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

AAA 4 HIND

प्राचीन भारत में सफाई कैसी थी ?

(पेज ७ का शेष)

उस जमीन को मकान बनाने के सर्वथा उपयुक्त समझना चाहिये। यदि गड्ढा उतनी मिट्टी से नहीं भरे तो उस भूमि को उत्तम नहीं मानना चाहिए। शाम को गड्ढे में पानी भर देना चाहिये। रात भर उसी तरह पड़े रहने देना चाहिए। सबेरे जमीन की जाँच करनी चाहिये। अगर कुल पानी न सूख जाय तो उस जमीन को उत्तम समझना चाहिये, यदि पानी सूख जाय पर मिट्टी में तरी रहे तो जमीन को मध्यम श्रेणी का मानना चाहिए। यदि तरी भी न रह जाय तो उस भूमि पर मकान नहीं बनाना चाहिए। इसके बाद प्रत्येक कमरे की लम्बाई, चौड़ाई आदि के बारे में नियम बतलाये गये हैं। देहातों में आज भी इन नियमों का अंशतः पालन होता है।

शारीरिक सफाई का जितना ज्यादा ध्यान आर्यों को था उतना शायद संसार की अन्य किसी जाति को नहीं था। आज भी शारीरिक सफाई के लिए हिन्दू जाति ख्यात है। आर्यों का ख्याल था कि शारीरिक सफाई पर ही समाज की सफाई निर्भर करती है। यदि समाज के व्यक्ति गन्दे रहेंगे तो समाज का स्वास्थ्य कभी भी अच्छा नहीं रह सकता। आयुर्वेद में प्रसिद्ध विद्वान शुश्रुत ने दाँतों की सफाई, आँखों की सफाई, मुँह की सफाई, केशों की सफाई, तेल मालिश तथा व्यायाम पर बहुत ज्यादा जोर दिया है। इन क्रियाओं को कैसे सम्पन्न करना चाहिए इसके लिए उन्होंने नियम भी दे दिये हैं। नंगे पाँव चलने-फिरने को उन्होंने स्वास्थ्य के लिए बहुत ज्यादा हानिकर बतलाया है। सिर के बालों का मुण्डन कराना तथा नख कटवाना मनुष्य के पाप को दूर करनेवाला बतलाया गया है। इससे शरीर में स्फूर्ति आती है। चित्त प्रसन्न रहता है, भाग्योदय होता है और शरीर का तेज बढ़ता है। रंगीन वस्त्र धारण करना निषिद्ध बतलाया गया है। लिखा है कि स्वस्थ शरीर की आकांक्षा रखनेवाले मनुष्य को सफेद तथा स्वच्छ वस्त्र धारण करना चाहिये। शरीर पर जो वस्त्र धारण किया जाय उसे प्रतिदिन स्वच्छ जल से धो डालना चाहिये। ऐसे स्थान पर जाना वर्जित बतलाया गया है जहाँ जहरीली छूत की बीमारियाँ फैली हों। मूत्र और पुरीष का अवरोध करना सर्वथा अनुचित कहा गया है। बस्ती के आस-पास जलाशय के निकट तथा खुली भूमि पर मल-मूत्र का त्याग निषिद्ध बतलाया गया है। नख से भूमि को नहीं कुरेदना चाहिए। सभा-समाज में बैठे रहने पर यदि छींक, खाँसी या जम्हाई आ जाय तो हथेली से मुँह और नाक ढँक कर ही इन क्रियाओं को सम्पन्न करे। भोजन के बारे में भी कई नियम बनाये गये हैं। आहार नियमित होना चाहिये, भूख रहते चौका पर से उठ जाना चाहिये। हाथ-पैर धोकर ही भोजन करने बैठना चाहिए। किसी का जूठा या या उच्छिष्ट भोजन नहीं ग्रहण करना चाहिए। भोजनालय की सफाई और भोजन की स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखा गया है। भोजन की सामग्री में बहुत लोगों का हाथ नहीं लगना चाहिये। जिस भोज्य सामग्री का रङ्गरूप और वास मन के अनुकूल न हो उसे नहीं खाना चाहिये। जिस भोज्य पदार्थ को देखकर मन में उल्लास न पैदा हो उसे नहीं खाना चाहिए। जिस स्थान पर मक्खियाँ भिनभिना रही हों वहाँ भोजन नहीं करना चाहिये। आयुर्वेद के पण्डितों ने तो यहाँ तक विधान कर दिया है कि दूसरे का इस्तेमाल किया हुआ छाता, जूता, माला, आभूषण और वस्त्र कदापि नहीं धारण करना चाहिये।

सार्वजनिक सफाई और स्वास्थ्य शासन विधान का ही एक अंग था। इसके लिए कड़े नियम बनाये गये थे जिनका पालन समान रूप से देशी और विदेशी सबको करना पड़ता था। विदेशियों के स्वास्थ्य का बहुत अधिक ध्यान रखा जाता था। मेगास्थनीज ने अपने यात्रा-वर्णन में लिखा है :—

"विदेशियों की देखभाल के लिये एक अलग मोहकमा ही रहता था। इस बात पर बहुत अधिक ध्यान रखा जाता था कि कोई भी नागरिक किसी विदेशी के साथ दुर्व्यवहार तो नहीं करता। कोई विदेशी बीमार पड़ जाता था या किसी भी प्रकार उसका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता तो उसकी देखभाल तथा चिकित्सा के लिये राज्य की ओर से प्रबन्ध किया जाता था। यदि कोई विदेशी दुर्भाग्यवश मर जाता था तो वे उसका विधिवत् अन्तिम संस्कार कर देते थे और उसके पास जो सामान इत्यादि रहता था उसे उसके परिवारवालों के पास भेज देते थे।"

इस विवरण से सहज में ही अनुमान किया जा सकता है कि प्राचीन युग के आर्यों में सफाई और स्वास्थ्य का कितना अधिक ध्यान था? यहाँ तक कि वे परदेशियों तक के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखते थे और उन्हें स्वस्थ रखने का पूरा यत्न करते थे।

यही कारण है कि उस समय यहाँ के लोग दीर्घजीवी होते थे। सौ वर्ष की आयु साधारण बात समझी जाती थी। लेकिन आज यहाँ की क्या हालत है? यहाँ की औसत आयु २६ साल है जब कि इँगलैंड की ६२ और अमरीका की ६४ साल है। प्राचीन युग के यदि किसी नागरिक की अकाल मृत्यु होती थी तो उस देश का राजा उसके लिये जिम्मेदार समझा जाता था और उसे अपनी सफाई देनी पड़ती थी। ब्राह्मण-शिशु और मर्यादा-पुरुषोत्तम रामचन्द्र की कथा पुराण-प्रसिद्ध है। लेकिन आजकल हमारी हालत क्या है! प्रतिहजार १६७ शिशु मरते रहते हैं और हम निसहाय अपनी आँखों यह सब देखते हैं कि लोग भूखों मर रहे हैं तो भी कोई सुननेवाला नहीं है, तब भला शिशुओं की मृत्यु पर कौन ध्यान देगा? यहाँ तो प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में लोग केवल मलेरिया के शिकार होते रहते हैं। अभी एकमात्र विहार मे मलेरिया तथा महामारी से न जाने कितने लाख प्राणी काल के कराल गाल में चले गये, लेकिन सरकार के कान में जूँ तक नहीं रेंग सकी। बंगाल में अन्न के अभाव से लाखों प्राण-पखेरू उड़ गये। हमारी हालत तो यहाँ तक दयनीय हो गई है कि बच्चा गर्भ में आया नहीं कि रोग उसे लगा नहीं। वह तो रोग को साथ लेकर ही इस पृथ्वी पर पदार्पण करता है। यदि १०० आदमियों के स्वास्थ्य की पूरी जाँच की जाय तो शायद एकाध ही ऐसे निकलेंगे जिनका शरीर किसी न किसी बीमारी का घर न हो। लेकिन हम ऐसे बदनसीब हैं कि हमने इसी को अपनी

प्राकृत अवस्था मान ली है।
हालत शुतुरमुर्ग पक्षी के समान
है। खतरा आने पर जिस तरह
में अपना सिर गाड़ लेती है
इस राष्ट्रीय संकट के प्रति हम
से उदासीन हैं। हम इन संकटों
तरह से घिरते जा रहे हैं लेकिन
त्राण पाने का हम कोई भी उचित
नहीं करना चाहते। यदि अब
नहीं संभले और राष्ट्र के
कामना से संयुक्त यत्न इस कराल
रोग को मिटाने के लिये नहीं
हमारे देश, हमारी जाति और
सन्तति का भविष्य अन्धकारपूर्ण
हमारा अतीत नितांत उज्ज्वल
हमारे पूर्वजों ने हमारे लिये
दिया है। हमने उस रास्ते पर
छोड़ दिया है। इधर-उधर भटक
इसी से हमारी यह दशा हो
क्या हमें उचित नहीं है कि देश,
और समाज के कल्याण के लिये
ही बतलाये मार्ग का अनुसरण करें
राष्ट्र में वह तेज, वह गौरव, वह
भर देने का यत्न करें जो हमारी जाति
चिर अर्जित संपत्ति थी और जिसके
संसार भर में हमारी प्रतिष्ठा
ख्याति थी।

७० वर्ष से भी अधिक

समय से 'ओरियन्टल' ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति एवम् सुरक्षा की स्थापना की है। केवल १९४४ में ८७३९८ व्यक्तियों ने लगभग २२,००,००,०००) बीमा कराया

फन्ड ३६॥। करोड़ के ऊपर

हमसे हर प्रकार के जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामर्श करके आप सदा लाभ में रहेंगे।

ओरियन्टल

गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स क० लि०
भारतवर्ष में संस्थापित १८७४ प्रधान कार्यालय, बम्बई
शाखा—३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद

यह कितना तर कर देता है !
यह कितना ताजा कर देता है !
यह कितना आनन्ददायक है !
VINOLIA WHITE ROSE SOAP
विनोलिया व्हाइट रोज साबुन
VWR 17-221 HI
VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND
आप गर्मीसे परेशान क्यों हैं, जबकि विनोलियासे एक बार स्नान कर लेनेपर आप शीतल हो जायेंगे? अपने शरीर लसलसा क्यों रखते हैं, जबकि मक्खन, जैसे सफेद साबुनका फेन आपको ताजा बना और रख सकता है! और आप विनोलियाकी सुगंधको हमेशा आनन्ददायक और प्रफुल्लित करनेवाला पायेंगे। मस्तिष्क और शरीर पर टानिककी तरह इसका असर होता है।

भङ्ग की तरङ्ग

मंडली का कहना है कि एक सप्ताह के पहले कोई नहीं होगी। जिस बात के सोचने- सप्ताह लग गये उसके कहने सप्ताह भी नहीं लगेगा ?

*

महिला का कहना है कम्युनिस्ट सोवियट रूस से हैं। पता नहीं, और पाते हैं तो हैं तो अचरज क्या ? यहाँ तो लाते हैं और इगलैंड के हैं और चर्चिल के स्वर में हैं।

*

का कहना है कि जलकर राख हो जाये राजधानी नहीं हटायेगा। हैं। जब टोकियो जलकर तो हटनेवाला कौन रह

अग्रवाल ने भारत विधान तैयार किया है जिसका विधान है। पहले तो नाम- है। हिन्दुस्तानी भाषा में विधान होना चाहिए। है कि स्वदेशी में ! केवल चर्खा कातना आव- चाहिए, शासन तो सब लोग

*

में एक महाशय जिस लड़की उसके स्वीकार न करने पर नहर में कूद पड़े। अफसोस में भूल की। आपका

*

है कि हिटलर मरे उन पर मुकदमा अवश्य यह नहीं तो हो सकता है हिटलर बनाकर उस पर रस्म पूरी की जाय ?

दिल्ली की [illegible] महीने में राशनिंग की दूकानों में गेहूँ का भाव सस्ता होगा। एक महीने में तो स्वराज्य ही मिलनेवाला है फिर तो चार पैसे सेर गेहूँ मिलेगा।

* * *

भारतीय मुस्लिम मजलिस के अध्यक्ष ने कहा है कि भारतीय मुसलमानों को फ्रांस से लड़ना चाहिए। यही तो हमारी भी राय है किन्तु भारतीय मुसलमान किस चीज से लड़ेंगे यह जरा सोचना है।

* * *

डाक्टर सैयद महमूद कहते हैं कि वैवेल-योजना में मुख्य बात यह देखने की है कि हृदय बदला कि नहीं। पहले यह पता लगाना चाहिए कि हृदय है कि नहीं, बदलने का प्रश्न पीछे है।

* * *

श्री टंडन जी का मत है कि कांग्रेस को मुस्लिम लीग के बराबर करना अन्याय है। जान पड़ता है आज तक ब्रिटिश सरकार न्याय ही करती चली आई है ?

* * *

अभी कुछ ही दिन हुए कहा जाता था कि कांग्रेस बागी संस्था है। आज उसे पाँच जगहें बड़े लाट की शासन परिषद् में मिल रही हैं, इससे बढ़कर ब्रिटेन की नेक नीयती का क्या सबूत हो सकता है ?

* * *

कहा जाता है कि चर्चिल का दल मजदूरदल में फूट डालने की कोशिश कर रहा है। युद्ध और प्रेम में सभी बातें ठीक समझी जाती हैं। इसलिए इसकी शिकायत करना बेकार है।

* * *

सुनते हैं उदयपुर सम्मेलन में बहुत से सुधार होनेवाले हैं। सुधारवादियों को इसका नेता पंडित भगीरथप्रसाद दीक्षित को बनाना चाहिए। क्योंकि उनसे बढ़कर सम्मेलन का सुधारक देखने में न भूतो न भविष्यति।

* * *

उन्होंने सम्मेलन का आज तक इतना हित किया है कि यदि उदयपुर में उन्हें सम्मेलन का सभापति बनाया जाय तो अनुचित न होगा। और यदि वह स्वीकार न करें क्योंकि वह बहुत विनम्र हैं, तब स्थायी समिति के सदस्य बालाभ्यासी जी तो हैं ही।

—अगड़धत्त शर्मा

यह पच्छिमी हवा है

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

पश्चिम से हवा चली है।
सभ्यता चली द्रुत गति से
मनसिज भी रूठे रति से
पैदा करने का साधन अब हुई नली है।
हैं देव कहाँ या देवी
पागल हैं इनके सेवी
फ्रायड की प्रतिमा की होती गली गली है।
अँगरेजी क्यों न पढ़ें हम
ऊँचे पर क्यों न चढ़ें हम
अँगरेजीवाला हिन्दीवालों से अधिक बली है।
भारत की परियाँ काली
जैसे तमाल की डाली
लन्दन की कोयलेवाली जूही की एक कली है।
पत्नी जी टाइप चलातीं
सौ रुपये मासिक लातीं
पतिदेव निरे टीचर हैं, सत्तर में उमर ढली है।

किंकिणी—इस पुस्तक के लेखक श्री राजाराम श्रीवास्तव की उत्तमोत्तम फुट कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षण है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं रहता मूल्य ।।।) बारह आने।
मैनेजर बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

यूनाइटेड कमर्सियल बैंक लि०

सबस्क्राइब्ड् कैपिटल ४ करोड़
पेड अप कैपिटल २ करोड़

रिजर्व फन्ड ७½ लाख

बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स

मिस्टर जी० डी० बिरला (चेयरमैन)

मिस्टर एम० ए० इस्पहानी (वाइस चेयरमैन)।
सर आदम जो हाजी दाऊद
मिस्टर बैजनाथ जालान
" ईश्वरीप्रसाद गोइनका
" अनन्तचरन ला

मिस्टर रमनलाल जी० सरइया (वाइस चेयरमैन)
" महादेव यल० दहानुकार
" नवीनचन्द्र मफतालाल
" मदनमोहन आर० रुइया
" मोतीलाल तपुरिया

शाखायें

आगरा, अहमदाबाद, अजमेर, इलाहाबाद, अमृतसर, आसनसोल, बड़ौदा, बँगलोर, बनारस, बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, कोयम्बटूर, दिल्ली, देवघर, गिरीडीह, हैदराबाद (सिन्ध), जयपुर, कराची, कारीकुड, लाहौर, लायलपुर, मद्रास, मदुरा, नागपुर, नई दिल्ली, ओकारा (पंजाब), पिलानी, पुडूकोटा, क्वैटा, शिकारपुर, सूरत।

पे आफिस

अरिफवाला (पंजाब), बिंदकी (कानपुर), मियाँचनू (ओकारा), मान्टगोमरी (ओकारा), पालवाल (दिल्ली)।

विदेशी एजन्ट--समस्त संसार में

जनरल मैनेजर—मि० बी० टी० ठाकुर

हेड आफिस

२ रायल इक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता। ब्रांच आफिस—४ अलबर्ट रोड।
मिस्टर जी० के० टंडन, ब्रांच मैनेजर।

पेट की शिकायतें

अपर्याप्त पेट के रस के कारण
उत्पन्न होती हैं:--

※ अजीर्ण ※ अपच
※ कठिन संग्रहणी ※ पाकाशय प्रदाह
※ रक्त की कमी आदि ※

व्यवहार कीजिये

बाई-ग्लिसरीन
एसिड-पेपसिन
BI-GLYCERINE-ACID-PEPSIN

निरोग होने पर निर्बलता में
प्रत्येक भोजन के पश्चात् बाई ग्लिसरीन एसिड पेपसिन एक खुराक लेने से पाचन में सहायता मिलती है।

स्वादिष्ट रूप में पेट के लिए साधारण रस पदार्थ

यदि आपको यह अपने केमिस्ट के यहाँ प्राप्त न हो तो कृपया लिखें :—

बङ्गाल इम्युनिटी कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता

युद्ध की साप्ताहिक डायरी

जापान पर मित्रराष्ट्रों की आक्रमण-नीति क्या है ?

ओकीनावा और चीनी रण-क्षेत्र में भयंकर संघर्ष हो रहा है

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

जापान ने सन् १९४१ में यह समझ लिया था कि यूरोप में ब्रिटेन तथा रूस का शक्ति शीघ्र क्षीण हो जायगी और वहाँ उसके मित्र जर्मनी का प्रभुत्व स्थापित होगा। इसी आशा पर उसने बड़ी तत्परता से प्रशांत की द्वीपावलियों, मलाया, बर्मा आदि पर अधिकार करके हिन्द महासागर तक में अपनी धाक जमा ली थी। उसे आरम्भ में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई किन्तु आज उसे विफलता और विपदाओं का सामना करना पड़ रहा है।

अमरीकी और ब्रिटिश सेनायें विगत वर्ष ६ जून को नारमंडी में उतरीं और दूसरा मोर्चा खोलकर जिस द्रुतगति के साथ शत्रु अधिकृत देशों को मुक्त कर उन्होंने जर्मन भूमि पर पदार्पण किया तथा नाजी सेनाओं को बिना शर्त के आत्मसमर्पण करने को विवश किया उससे संसार भली भाँति परिचित है। मित्रों की इस यूरोपीय विजय की भूमिका बनानेवाले उनके पवन-प्रहार ही हैं, जिनके द्वारा जर्मनी के समस्त औद्योगिक केन्द्र, यातायात साधन और महत्त्वपूर्ण स्थल प्रायः ध्वस्त कर दिये गये थे अथवा यों कहिये कि उन्होंने महती अभियान सेनाओं के सफल आक्रमणों के लिये मार्ग प्रशस्त कर दिया था।

जापान को पहुँचती होगी। जापानी यह प्रचार करते हैं कि हजारों की संख्या में इन प्रहारों से नागरिकों के गृह नष्ट हो गये किन्तु इससे वे सभ्य संसार की दया को आकर्षित नहीं कर सकते। कारण, जापान में आजकल घर घर में कारखाने मौजूद हैं जो लड़ाई का सामान तैयार करते हैं और जिन्हें नष्ट किये बिना जापान को नहीं हराया जा सकता।

अमेरिका और ब्रिटेन इस बात पर कटिबद्ध हैं कि चाहे जितना भी धन-जन के रूप में मूल्य चुकाना पड़े जापान को उसी भाँति ध्वस्त किया जायगा जिस प्रकार जर्मनी हराया गया है। प्रेसीडेंट ट्रूमन ने अपने एक हाल के वक्तव्य में कहा है कि ३५,००,००० सैनिक जो यूरोप में लड़ चुके हैं उन्हें भी प्रशांत की लड़ाई में लगा दिया जायगा और इस प्रकार सुदूर पूर्व में ७०,००,००० सेना शत्रु पर आक्रमण करेगी। उन्होंने कहा है कि पुनः सैन्य-संगठन की बात तो जाने दीजिए उसे साँस लेने तक का समय नहीं दिया जायगा। ब्रिटेन का भी आरम्भ से यही प्रण है कि जर्मनी के बाद जापान पर पूरी शक्ति से आक्रमण किया जायगा।

ओकीनावा द्वीप में, जो जापान से अधिक दूर नहीं है, इस समय सुदूरपूर्व के रणांगण का एक अतिशय महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। वहाँ जापानी जी तोड़कर लड़ रहे हैं। जापानी प्रधान मंत्री द्वारा हाल में यह कहा गया था कि ओकीनावा का युद्ध महासमर का निर्णायक संग्राम है। उसी के परिणाम पर जापान का भाग्य निर्भर है। अमरीकी सेनायें निरंतर वहाँ उतर रहीं हैं और नाहा के विशाल हवाई अड्डे पर उनका अधिकार हो चुका है। जिसके फलस्वरूप यह कहा जाता है कि वहाँ की लड़ाई का अंतिम चरण पूरा होनेवाला है। ओकीनावा पर अधिकार हो जाने के बाद मित्रों के लिए जापान की मुख्य भूमि पर आक्रमण करना सुलभ हो जायगा और शत्रु की रण-योजना छिन्न-भिन्न हो जायगी।

चीन के संबन्ध में लेफ़्टिनेंट जेनरल विडीमियर ने कहा है कि अब चीन में हमको ऐसी स्थिति प्राप्त हो गई है कि हम रक्षण-युद्ध न करके आरोहण युद्ध कर रहे हैं कि बर्मा की विजयिनी सेनायें चीन पहुँच रही हैं और हुनान प्रान्त में वे चीनियों की सहायता करके शत्रु को पीछे हटा रही हैं। हाल के समाचारों से विदित हुआ है कि

उसी प्रकार के दृश्य आज सुदूर पूर्वी रणांगण में देखे जाते हैं। जापान के प्रमुख औद्योगिक नगरों पर औद्योगिक बम-वर्षा की गई। अमरीकी उड़नकिलों के बड़े बड़े दल भीषण बम-वर्षा करके यहाँ के कारखानों को स्वाहा कर रहे हैं। टोकियो रेडियो पर इधर यही कहा जाता है "ये पवन प्रहार शत्रु के भावी आक्रमण के लिए रास्ता खोल रहे हैं। वाशिंगटन में नये विध्वंसकारी ज्वालामुखी बम के बारे में जिसने पिछले तीन सप्ताहों में टोकियो, याकोहामा तथा ओसाका को जला डाला, विस्तार से सूचनायें दी गई हैं। इस बम में मैगनेजियम, पेट्रोल, फासफोरस आदि वस्तुयें भरी रहती हैं। जब यह जमीन पर गिरता है तो चारों दिशाओं में २५ गज तक ज्वाला फेंकता है। इन वायु-आक्रमणों में भारी व्यय होता है। ऐसे एक बड़े हमले का मूल्य करोड़ों रुपया होता है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि जब हजारों की संख्या में अमरीकी उड़नकिले जापान पर लहरा कर इस प्रकार हजारों दाहक बम गिराते होंगे तो उनसे कितनी भारी क्षति

गीत

लेखक, श्री 'रमण'

मेरे वे वरदान नहीं अब !
कोमल उर में भर दे कम्पन,
लुप्त हो गये वे स्वर-सिहरन—
वातायन से हृदय खींच लें, मेरे वैसे गान नहीं अब !
कुछ को मैं भी भूल चुका हूँ,
मस्तक पर रख धून चुका हूँ—
पता नहीं वे कौन किधर हैं, आज जान-पहिचान नहीं अब !
दूर एक क्रन्दन सुनता हूँ,
सिन्धु आँख में ले जलता हूँ—
सुनकर मोम न बन जायें जो, सँगिनी ! वैसे प्राण नहीं अब !

पार्लियामेंट का आगामी चुनाव

(पेज ५ का शेष)

को मिटते नहीं देख सकते। वस्तुतः ब्रिटिश समाजवादी ऐसे पूँजीपति हैं जिनका स्वार्थ साम्राज्य के साथ बँधा हुआ इसलिये समाजवादी दल भी ब्रिटेन लिए समाजवादी हो सकता है भा लिए नहीं।

इस प्रकार से राजनैतिक दृष्टिको और ब्रिटिश मजदूरदल के आलोचन अध्ययन करने से यह साफ हो जाता दल वस्तुतः ब्रिटिश टोरीदल से कि प्रकार कम नहीं है। इस पर भी राजा जैसे राजनीतिज्ञ मजदूरदल पर आशायें लगाये हुए हैं। राजा जी म दल को टोरीदल से अधिक पसन्द हैं परन्तु मजदूरदल और टोरीदल वास्तविक रूप में एक ही हैं ! जहाँ भारत का सम्बन्ध है दोनों दल समान हैं।

ल्यूचाउ के बाहरी क्षेत्र में चीनी सेनायें पहुँच चुकी हैं जो इंडोचीन की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण रेलवे जंकशन है। लुजोन मिंडनाओ, कोर्नियो, न्यूगिनी और योगेनविली में अमरीकी तथा आस्ट्रेलियन सेनायें सफलतापूर्वक शत्रु से लोहा ले रही हैं। वर्षागम के समय बर्मा में ब्रिटिश और भारतीय सेनाओं का मुख्य कार्य जापानियों को छिपे हुये स्थानों से ढूँढ निकालना तथा उनके भाग निकलने के स्थानों को अवरुद्ध करना है। इस कार्य में उन्हें सफलता मिली है, भीषण लड़ाइयों के बाद उन्होंने अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया है।

इसकी ज़मानत
हिन्दुस्तान की दौलत

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

इतने कम समय में इतनी बड़ी रकम का लगाया जाना पहले लोन के खरेपन का और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का बड़ा विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है, अर्थात ब्याज साल में दो बार इनकम टैक्स काटने के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रक़म के वापस दिये जाने का ज़िम्मा लिया जाता है। जितनी रकम चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। जरूरत पर जब चाहें मार्केट में बेच कर नक़द रक़म प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम टैक्स अगर लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल जायगा। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम करने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुकसान के खतरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा ब्याज मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिजर्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

AAA 223 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित

१७ जून, १९४५

...डिकल ग्रेजुएट्स *

...द्धि ...ल रहा है ...

...स्वाभाविक है कि इसमें ...होते हैं जिन्हें फिर से स्वस्थ ...श्यक है। आज सैकड़ों ...पने पेशे के अन्दर एक ...चीज़ पा रहे हैं। सैनिकों ...के द्वारा उन्हें इतना अच्छा ...ट्रेनिंग प्राप्त हो रही है जो ...में आम तौर पर नहीं ...थी। आई० ए० एम० ...करने के लिए मेडिकल ...आवश्यकता है। ...वेदन करना चाहिए।

...दवारों के पास ऐसी ...जिसकी रजिस्ट्री ब्रिटेन ...या ऐसी हिन्दुस्तानी सनद ...मेडिकल काउन्सिल ...की जाती हो। ...प्रैक्टिशनर जिनके ...एस० (मद्रास), ...(स्टेट मेडिकल ...बी० पी० ऐण्ड ...एम०एफ० (बंगाल), ...(यू० पी०/पंजाब) ...एस० (मैसूर और ...सनद या कोई स्वीकृत ...है, उन्हें भी लिया जा ...उम्मीदवारों की तन्दुरुस्ती ...करने के काबिल होनी ...तौर पर उनकी उम्र ...होनी चाहिए। निर्वाचित ...नियुक्ति आई० एम० ...तुरन्त ही आई० ए० एम० ...नियुक्ति कर दी जायगी। ...एम० अफ़सरों के सब अधि- ...होंगे।

...टिनेण्ट के ओहदे पर ...माहवार से लेफ्टिनेण्ट कर्नल ...१३५० रुपये माहवार तक। ...(स्पेशलिस्ट) की हैसियत ...पर मेजर का ऐक्टिंग ...ओहदा और तनख्वाह दी ...इसके अलावा १०० रुपये ...की तनख्वाह मिलती ...को ऐक्टिंग रैंक (स्थानापन्न ओहदा) दिये बिना १० ६० माहवार स्पेशलिस्ट की तनख्वाह दी जाती है। विशेष नियुक्तियों के लिए १० रुपये से २४० रुपये माहवार तक चार्ज या कमाण्ड की तनख्वाह। वर्दी का भत्ता, ७३३ रुपये। प्रथम नियुक्ति पर तनख्वाह का ऐडवान्स (पेशगी) ३०० रुपये तक। वर्तमान नियमों के अनुसार भत्ते। समुद्र-पार की तनख्वाह १५० रुपये से ४०० रुपये माहवार तक। सफ़र के एलाउन्स और छुट्टी की रियायतें हिन्दुस्तानी फ़ौज के दूसरे अफ़सरों की भांति। पहिले साल की सर्विस के लिए २००० रुपये या १००० रुपये की ग्रेच्यूटी (यह इस बात पर निर्भर करती है कि अफ़सर ने अपनी बुनियादी डाक्टरी सनदें १ जनवरी १९४० से पहिले प्राप्त की हैं या बाद में), इसके बाद हर पूरे साल की नौकरी के लिए एक महीने की तनख्वाह। इंडियन मेडिकल सर्विस के नियमों के अनुसार अपाहिजों के लिए, परिवार के लिए तथा विधवा के लिए पेन्शनें और बच्चों को शिक्षा संबंधी एलाउन्स।

फ़ौजी नौकरी से लाभ—यह बात आम तौर पर मानी जाती है कि जो लोग आई० ए० एम० सी० में नये से नये औज़ारों और तरीक़ों से काम कर लेंगे, लड़ाई के बाद शहरी प्रैक्टिस में उन्हें बहुत लाभ पहुंचेगा।

पूरा विवरण प्राविन्शियल मेडिकल डिपार्टमेण्ट (सर्जन जनरल या इन्सपेक्टर जनरल आफ सिविल हास्पिटल्स) या डाइरेक्टर जनरल, इंडियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली या आफिसर्स कमांडिंग, इंडियन मिलिटरी हास्पिटल्स या डाइरेक्टर आफ मेडिकल सर्विसेज़, जी० एच० क्यू०, नई दिल्ली से प्राप्त हो सकता है।

Indian Army Medical Corps

AAA 19

प्राइज़ बांड के इनाम पाने वाले भाग्यवान व्यक्तियों में से चार

अगली बारी आपकी हो सकती है!

दिल्ली के पोस्टमैन को २५०रु. का इनाम

"मेरी हैसियत के एक शख्स के लिए २५० रुपये का इनाम खुदाई नेमत है। इस रक़म ने मेरी ज़िन्दगी सँवार दी।" यह है कहना दिल्ली के सैयद शमसुज़्ज़मां का, जिनके पास १०रुपये वाला एक इनामी बांड है और जो जनवरी, सन् १९४५ की लाटरी में इनाम पाने वालों में से एक हैं। उनकी राय में "इनामी बांड रुपया लगाने की सब से अच्छी मद है।"

एक बार इनाम, दुबारा फिर उम्मीद

बम्बई के मिस्टर जार्ज सी० ग्रेशस को १० रुपये वाले बांड पर २५० रु० का इनाम मिला। उनका कहना है— "मुझे परम संतोष प्राप्त हुआ है। अभी तो मेरे लिए इनाम पाने के आठ और मौक़े हैं!" मिस्टर ग्रेशस ने इनाम की आधी रक़म से और इनामी बांड ख़रीद लिये हैं।

"महान आश्चर्य"

जगरांव, पंजाब के निवासी श्रीयुत सत्यपाल गुप्त ने जिन्हें ढाई हज़ार रुपये का इनाम मिला, कहा—"अपना नम्बर पढ़ कर मुझे प्रसन्नता तो हुई ही, महान आश्चर्य भी हुआ।"

"स्वप्न में भी न सोचा था।"

सियालकोट के श्रीयुत दीनानाथ शर्मा ने, जिन्हें पांच सौ रुपये इनाम में मिले, अपने हृदय के उद्गार इन शब्दों में प्रकट किये— "मैंने स्वप्न में भी न सोचा था कि इस प्रकार सौभाग्य के दर्शन होंगे। मेरी राय में सब को इनामी बांड में रुपया लगाना चाहिए।"

इनामी बांड दो कीमतों के हैं-१०० रुपये वाले और १० रुपये वाले। १०० रुपये वाले एक लाख इनामी बांडों के हर सिलसिले पर, पहला इनाम ५० हजार रुपये का, दो दूसरे इनाम बीस-बीस हजार रुपये के और दो तीसरे इनाम पाँच पाँच हजार रुपये के। १० रुपये वाले एक लाख इनामी बांडों के हर सिलसिले पर, पहला इनाम ढाई हजार रुपये का, दो दूसरे इनाम सवा-सवा हजार रुपये के, पाँच तीसरे इनाम पाँच-पाँच सौ रुपये के और दस चौथे इनाम ढाई-ढाई सौ रुपये के। जनवरी, सन् १९४९ तक हर छमाही इनाम निकाले जायेंगे और तब सब बांडों की असल रक़म वापस दे दी जायगी। प्रत्येक बांड को अभी इनाम जीतने का मौक़ा आठ बार और मिलेगा; वही बांड कई बार इनाम जीत सकता है। इनाम की रक़म पर इनकम टैक्स, सुपर टैक्स, एक्सेस प्राफिट टैक्स और कारपोरेशन टैक्स नहीं लगता।

इनामी बांड ख़रीदिए

पिछली लाटरी में ४ लाख रुपये के इनाम।

अगली लाटरी जुलाई १९४५

आप रिज़र्व बैंक आफ इंडिया अथवा इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की किसी शाखा से, अथवा सब कहीं बड़े-छोटे सरकारी ख़ज़ानों से प्राइज़ (इनामी) बांड ख़रीद सकते हैं। एक आदमी कितने बांड ख़रीदे इसके लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं है।

AAA 213 Hindi.

...निबन्धावली—लेखक, महापंडित ...सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल ...सम्बन्धी तथा साहित्यिक और दार्श- ...का संग्रह किया गया है। इसमें कुल ...हैं और राहुल जी ने देश और ...के दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण मीमांसा आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य-जीवन का सुन्दर [illegible] मूल्य २॥≢) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता-जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

क्लर्कों के लिए अच्छी ट्रेनिंग

शाही हिन्दुस्तानी समुद्री बेड़े में 'राइटर्स' की, हिन्दुस्तानी फ़ौज में (जिसमें इंडियन आर्मी कोर आफ क्लार्क्स भी शामिल है) तथा शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में क्लर्कों की जगहें ख़ाली हैं।

इन फ़ौजी नौकरियों में जो ट्रेनिंग और अनुभव प्राप्त होगा, वह लड़ाई के बाद भारतीय व्यापारिक क्षेत्र में बहुत लाभजनक सिद्ध होगा।

अच्छी तनख़ाह
मुफ़्त ख़ूराक
पूरी तनख़ाह पर छुट्टी
मुफ़्त में रहने की जगह
मुफ़्त इलाज
मुफ़्त पोशाक

पूरे ब्योरे तथा आवश्यक योग्यताओं के विवरण के लिए नीचे लिखे दफ़्तरों में से पास के किसी दफ़्तर से पूछिए:—

AAA 137

लखनऊ—(ई० ए०) ईस्टर्न एरिया, हजरतगंज।
लखनऊ—२६, विश्वेश्वरनाथ रोड।
आगरा—हन्टले होस्टल, ड्रमन्ड रोड।
इलाहाबाद—१८, कैनिङ्ग रोड।

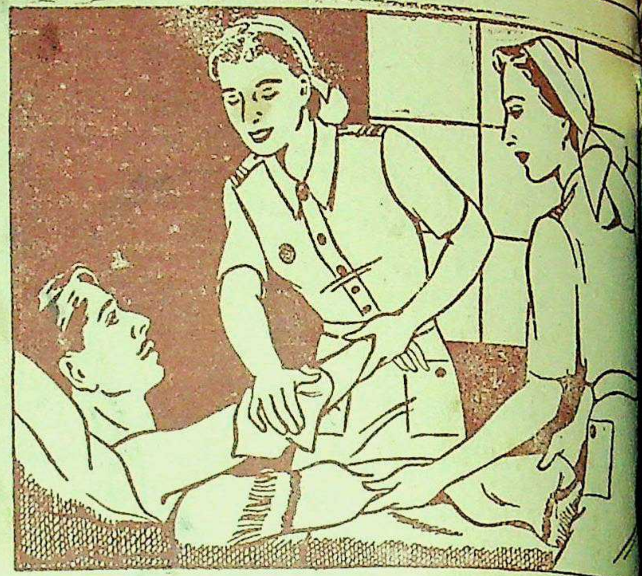

ए० एन० एस० की नर्सें कार्य

क्या आप यह मानती हैं कि दया नारी का स्वाभाविक गुण है?

हिन्दुस्तान के फ़ौजी अस्पतालों में आजकल जो नर्से रोगियों और घायलों की तीमारदारी कर रहीं हैं उन्हें 'दयामयी' की उपाधि दी जाती है; और यह उचित भी है। आगज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए० एन० एस०) की सदस्याओं को सर्वश्रेष्ठ एवम् सम्मानपूर्ण कार्य करने का गौरव प्राप्त होता है। इसके द्वारा आप युद्ध-प्रयत्नों में सहायता पहुँचा सकती हैं।

युद्ध के पश्चात् ए० एन० एस० की नौकरी छोड़ने प आप यदि चाहें तो सीधे शहरी क्षेत्र में जाकर स्वतंत्र रूपसे प उपयोगी कार्य सँभाल सकती हैं, क्योंकि ए० एन० एस० में आपको बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी जायगी और उच्चकोटि का अनुभव प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त जो डाक्टरी ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह भविष्य में पत्नी, माता एवम् सामाजिक कार्यकर्त्री की हैसियत से आपके बहुत काम आयेगा।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है — (१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१२५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही ड्यूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

पूरे विवरण के लिए आज ही लिखें।

लखनऊ—लेडी डिस्ट्रिक्ट आफिसर
सेन्ट जान एम्बुलेन्स ब्रिगेड
ओवरसीज, ११० ए० दी
माल लखनऊ।
आगरा—मिसेज डी० गिब्ज
मैट्रन, थार्नटन हास्पिटल
आगरा।

a·n·s

आगज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस

महिलाओं के लिए

सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्र-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७।)
ंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

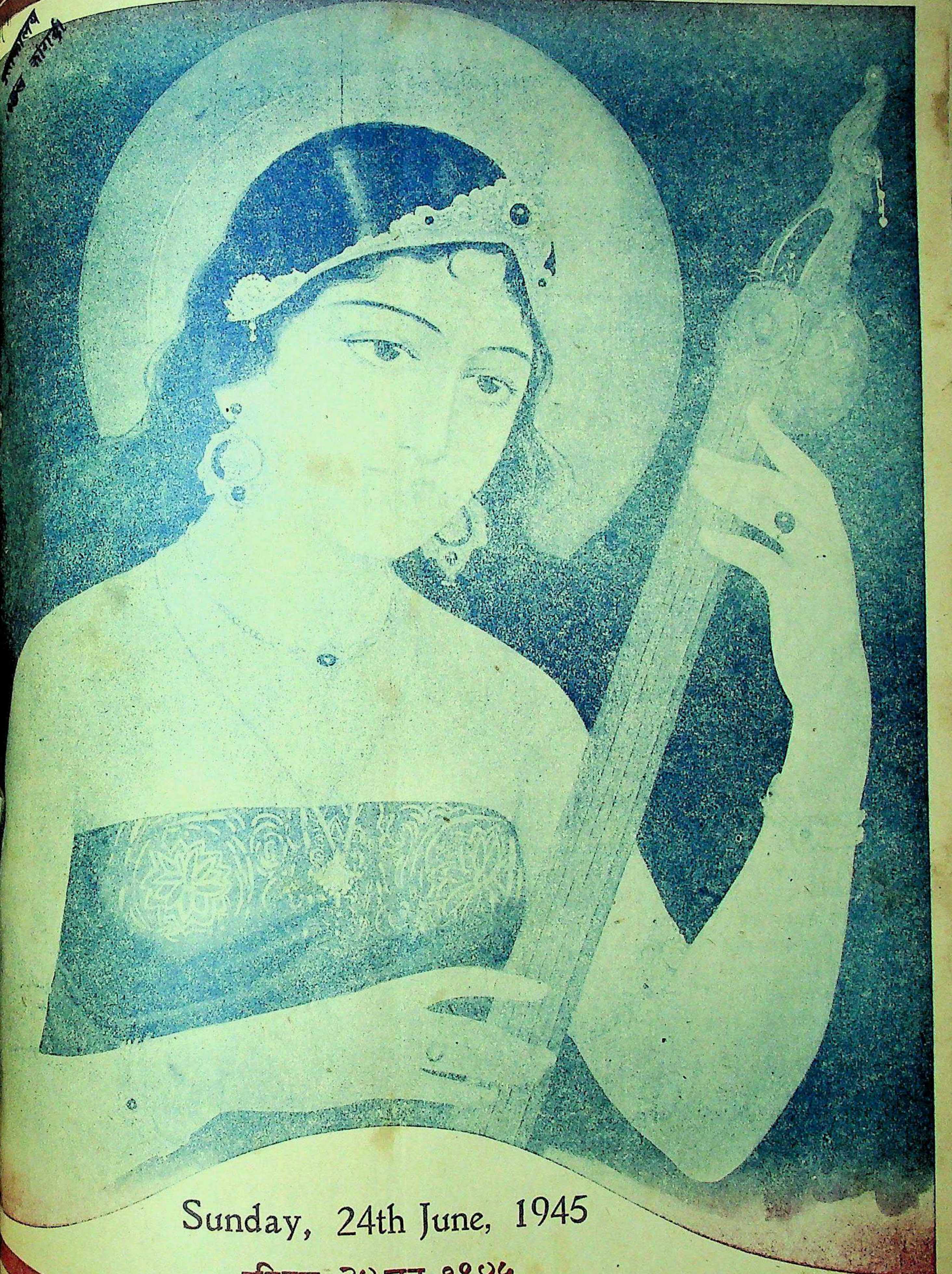

Sunday, 24th June, 1945

रविवार, २४ जून, १९४५

मंडल की स्थापना क्यों हो?
की आधुनिक सेना।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य ② आना

सूचना-विभाग की फिल्में—हास-परिहास
क्या वह कलंकिनी थी—जग्गू एक कहानी

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इस सिलसिले को यह दिखाने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है कि असावधानी की बातचीत, वह चाहे निर्दोष ही क्यों न हो, शत्रु को लाभ पहुंचा सकती है।

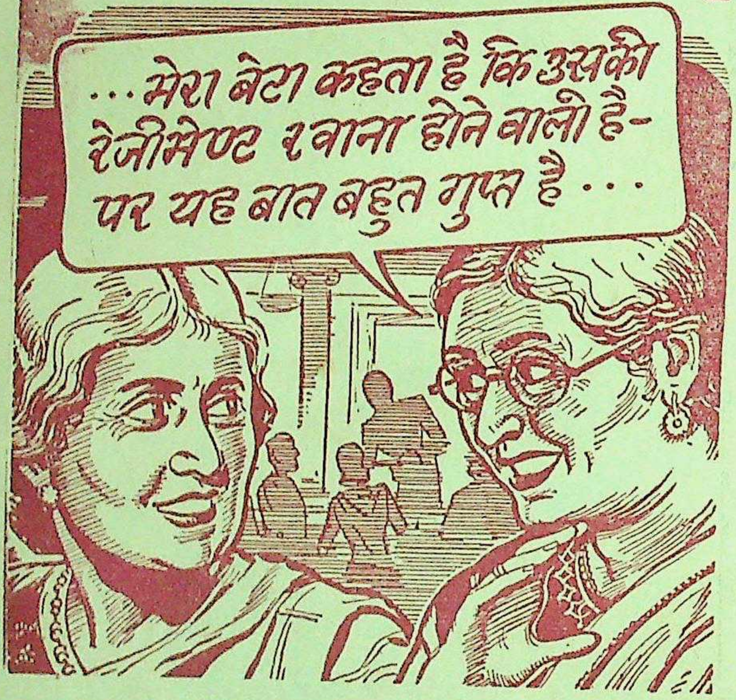
...मेरा बेटा कहता है कि उसकी रेजीमेण्ट रवाना होने वाली है- पर यह बात बहुत गुप्त है...

क्या आश्चर्य है कि इन महिला ने, जो अपनी समझ से बहुत सावधानी बरत रही हैं, एक महत्वपूर्ण सैनिक योजना का भेद खोल दिया हो। दुश्मन का धुन का पक्का कोई जासूस बड़ी आसानी से यह मालूम कर सकता है कि यह कौन सी रेजीमेण्ट है और कहां जायगी। इस प्रकार हरकत करने वाली दूसरी रेजीमेण्टों का हाल भी वह मालूम कर सकता है। इस तरह की छोटी छोटी बातों को आपस में जोड़ कर, संभव है, वह बर्मा में नई फ़ौज के उतारे जाने अथवा हमारे नये आक्रमण का पता लगा ले। ज़रा सी बात मुंह से निकालने में भी कितना बड़ा ख़तरा रहता है!

यह बात ठीक से समझ लीजिए कि दुश्मन के जासूस छोटे छोटे इशारों को जोड़ कर पूरी बात का पता लगा लेते हैं। किसी रेजीमेण्ट की हरकत, जहाज़ की रवानगी की तारीख, जंगी कारख़ानों में सामान की तैयारी— इस प्रकार की असंबंधित बातें शत्रु के बड़े काम की होती हैं। अपने सैनिकों को सहायता पहुंचाने, उनकी जानों की रक्षा करने तथा शत्रु पर सफलतापूर्वक आकस्मिक आक्रमण करने का केवल एक ही निश्चित उपाय है कि आप जंगी तैयारियों का बिलकुल ज़िक्र न करें—ज़रा सा भी भेद दुश्मन को न मिलने पाये।

बातचीत में सावधानी उचित है

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

AAA 145

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये
बेंगल इम्युनिटि
बाइ-डाइस्टेज
प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE

विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर बदहज़मी, बादीपन, खट्टा डकार तथा गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

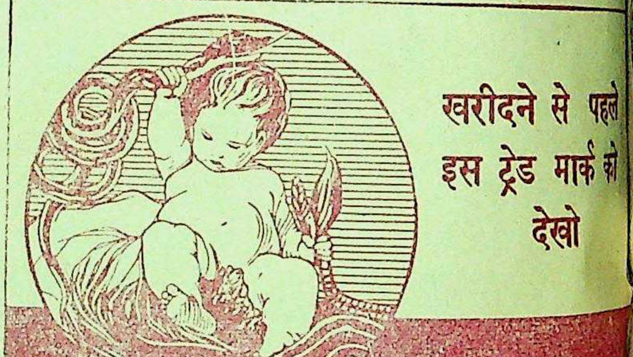

खरीदने से पहले इस ट्रेड मार्क को देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर

के बोतल सदैव साथ रक्खें। यह बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है!

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117

W. WOODWARD LTD. LONDON ENGLAND

प्रकाशित हो गया—
वार्षिक बाल-सखा
बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।
हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।
बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।
मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)
...र बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

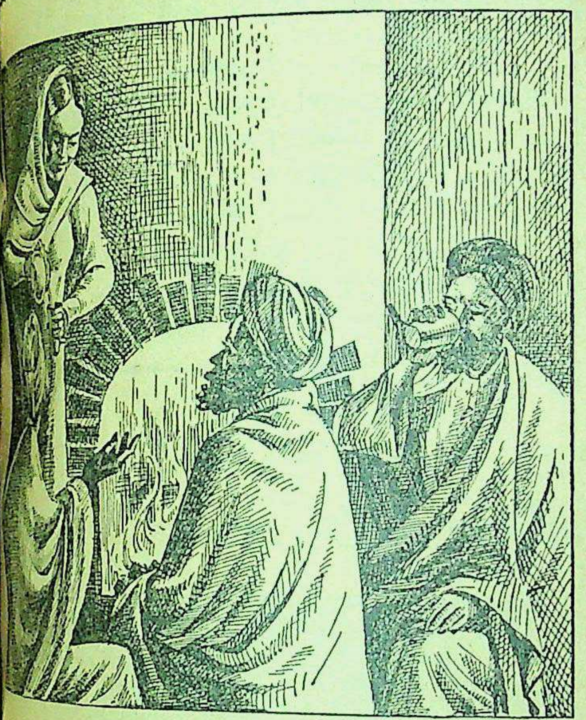

...य का समय—सिखों के यहाँ

...न सम्बन्धी वीर संस्था जिसने कि सिखों को उत्तेजित किया था, ...चाय पीने से नहीं रोकती।

...व्यासिक मनुष्य हैं और सोच समझकर किसी चीज को ...ते हैं। वे लकीर के फकीर नहीं हैं। अतः उनकी चाय पीने की प्रथा ...हम लोग इसी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यह उनके शक्तिशाली ...र्तिमय जीवन के अनुकूल है।

...जानते हैं कि गरम चाय गरम जलवायु को सम बनाती है और ...उष्णीय प्रदेशों को तो विशेष रूप से इसलिए यह खूब प्रचलित भी ...चीनी मिश्रित गरम चाय वे पीतल के गिलास में ही पीते हैं। ...दिनों में चाय ठंढ पहुँचाकर बल प्रदान करती है और जाड़े में ...दूर कर रक्षा करती है।।

...भारत में सर्वत्र फैले हैं, परन्तु ताजी ब्रुक बाँड चाय और ज्यादा ...है—अपने दूरस्थ ग्रामों में भी व्यवहृत है।

ब्रूक बाँड

'दो पत्ती और एक कली"

खाँसी बाघ की तरह भयंकर है...

सिरोलिन 'रुचि'
सर्दी और खाँसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषोधक है

AAA 159 HINDI

ये हैं इनकी चालें-
इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

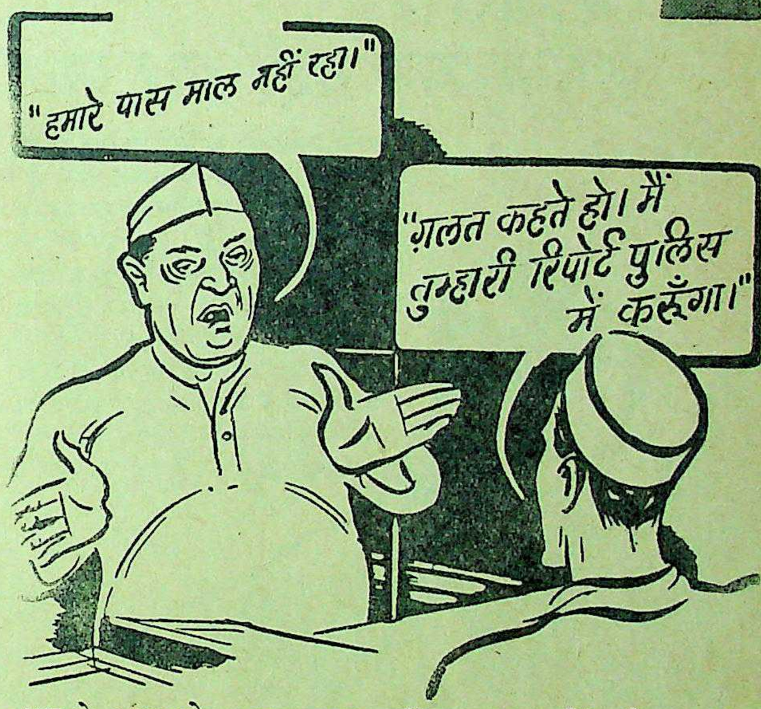
"हमारे पास माल नहीं रहा।"
"ग़लत कहते हो। मैं तुम्हारी रिपोर्ट पुलिस में करूँगा।"

बहुत से मुनाफ़ाख़ोर, अगर आप उन्हें ज़्यादा दाम देने को न कहें, यह बहाना कर देते हैं कि माल ख़त्म हो चुका है। इनकी रिपोर्ट फ़ौरन कीजिए। इनकी दुकान वग़ैरह की तलाशी ली जायगी।

ब्लैक मार्केट से
हरगिज़ न ख़रीदिए
इस तरह ब्लैक मार्केट
ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

"If it's ELGIN it's good!"

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपडे, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपडा (गांठ) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाडी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतो मे ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
मुख्य विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ग्रोल्ड जनरलगंज, कानपूर

EK 22-HIN

यूनाइटेड कमर्सियल बैंक लि०

सबस्क्राइब्ड् कैपिटल ४ करोड़
पेड अप कैपिटल २ करोड़

रिजर्व फन्ड ७½ लाख

बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स

मिस्टर जी० डी० बिरला (चेयरमैन)

मिस्टर एम० ए० इस्पहानी (वाइस चेयरमैन)।
सर आदम जी हाजी दाऊद
मिस्टर बैजनाथ जालान
" ईश्वरीप्रसाद गोइनका
" अनन्तचरन ला

मिस्टर रमनलाल जी० सरइया (वाइस चेयरमैन)
" महादेव यल० दहानुकार
" नवीनचन्द्र मफतालाल
" मदनमोहन आर० रुइया
" मोतीलाल तपुरिया

शाखायें

आगरा, अहमदाबाद, अजमेर, इलाहाबाद, अमृतसर, आसनसोल, बड़ौदा, बँगलोर, बनारस, बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, कोयम्बटूर, दिल्ली, देवघर, गिरीडीह, हैदराबाद (सिन्ध), जयपुर, कराची, कारीकूड, लाहौर, लायलपुर, मद्रास, मदुरा, नागपुर, नई दिल्ली, ओकारा (पंजाब), पिलानी, पुडुकोटा, क्वैटा, शिकारपुर, सूरत।

पे आफिस

अरिफवाला (पंजाब), बिंदकी (कानपुर), मियाँचनू (ओकारा), मान्टगोमरी (ओकारा), पालवाल (दिल्ली)।

विदेशी एजन्ट—समस्त संसार में

जनरल मैनेजर—मि० बी० टी० ठाकुर

हेड आफिस

२ रायल इक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता। ब्रांच आफिस—४ अलबर्ट रोड।
मिस्टर जी० के० टंडन, ब्रांच मैनेजर।

जब प्रकृति
अपना काम नहीं कर पाती

आपको, अपनी ऋतु का समय नियमित करने के लिये ऊपरी सहायता की जरूरत पड़ती है। अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड से यह सहायता आपको मिल सकती है। इसमें स्त्रीरोगों की प्राचीनतम भारतीय औषधि—अशोक—व नवीनतम औषधि विज्ञान द्वारा अनुमोदित औषधियाँ व विटामिन है। यह विटामिन और हौरमोन के साथ भी मिलती है। इसलिये यह स्त्रियों के कष्ट निवारण में अति लाभप्रद है। अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड के सेवन से आपका नष्ट स्वास्थ्य व स्फूर्ति थोड़े दिनों में फिर आयेंगे।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि

आइ. एम. एस. लैबोरेटरी लि:
लैबोरेटरी व कारखाना: अमौसी (लखनऊ)। हेड आफिस: ५ रौएल एक्सचेञ्ज प्लेस, कलकत्ता

KIK

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये

रमोला

रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे पहली
उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल से
निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य प्रसाधन की
सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और साथ ही
कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे
स्त्री की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो सकती है।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 150-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

देशदूत

७ संख्या ४३]
सचित्र हिन्दी साप्ताहिक
[रविवार, २४ जून, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

ने पिछली बार लिखा था कि भारतीय राजनीतिक समस्या के लिये एक नया नाटक है। यह प्रसन्नता की प्रथम प्रदर्शन २५ जून होने जा रहा है। लार्ड वैवेल जाकर नाटक के डाइरे- की अच्छी ट्रेनिंग प्राप्त की तो मिस्टर चर्चिल और डाइरेक्टर मौजूद हैं जो को वहाँ से बैठे बैठे करते हैं। लार्ड वैवेल ने और प्रजातन्त्रात्मक किया है। यदि उनके अनुसार अभिनेताओं ने किया और नाटक तो भारतवर्ष में स्थापित हो जायेगा। प्रधान उद्देश्य ही भारत ब्रिटिश झीदार बन सके शीघ्र ही हो सुन्दर है, इससे ही होगी।

* * *

डाइरेक्टर लार्ड वैवेल डाइरेक्टर हैं, कांग्रेस की भूलाभाई देसाई और की ओर से नवाबजादा खाँ। जो कुछ भी हो नाटक के प्रारम्भिक कार्यों मिली है उसके लिये और लियाकत अली खाँ है। सचमुच यह दोनों एकता के प्रतीक नेता हृदय कि नाटक सफल हो जिससे भारतीय हाथों से होने लगे। इन्हीं असिस्टेन्ट डाइरेक्टरों की कृपा से कांग्रेस और मुस्लिम लीग रंगमंच पर एक साथ उतरने की तैयारी कर रही है।

हिन्दू महासभा के सभापति मुकर्जी को शिमला निमन्त्रित नहीं किया गया है।

* * *

लार्ड वैवेल का यह नाटक सफल होता है अथवा असफल यह तो शिमला में होनेवाले नाटक के अभिनेताओं पर निर्भर है किन्तु एक बात की हमें बड़ी ही प्रसन्नता हुई है और वह यह कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य जेलों से एक लम्बी अवधि के बाद बाहर आ गये हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, आचार्य कृपलानी, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद, श्री शंकर राव देव तथा और भी कुछ कांग्रेस नेता जेलों से छूट आये हैं। नाटक के अभिनय के पूर्व कार्य का श्रीगणेश बड़े सुन्दर तरीके से हुआ है। वास्तव में यदि नाटक होने के पूर्व इतना भी न हुआ होता तो मामला खटाई में ही पड़ा समझना चाहिये था लेकिन तात्कालिक एकता के प्रेमियों द्वारा गलती हो कैसे सकती थी?

* * *

नाटक सफल हो या असफल किन्तु इसमें सबसे बड़ी खूबी यह है कि जितने भी अभिनेता निमंत्रित हैं उनका चुनाव बड़ी खूबी से किया गया है। केवल वैधानिक-बुद्धि वाले नेता निमंत्रित किये गये हैं। श्री भूला भाई देसाई तथा नवाबजादा लियाकतअली खाँ ने चुनाव अच्छा किया है। प्रान्तों के भूतपूर्व तथा वर्तमान प्रधान मंत्री और असेम्बली के पार्टियों के नेता। सिक्खों की ओर से मास्टर तारासिंह और अछूतों की ओर से श्री शिवराव। इस तरह के चुनाव से अपने राम को बेहद प्रसन्नता इसलिये हुई है कि जहाँ तक हुआ है कडुये दिमागवालों को नहीं निमन्त्रित किया गया है। केवल विधान के पंडितों को ही बुलाया गया है। पता नहीं उड़ीसा के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्रीविश्वनाथदास को भी बुलाया गया है या नहीं?

* * *

रह गये महात्मा गाँधी। महात्मा जी को तो छोड़ा नहीं जा सकता। क्योंकि सोचा गया होगा कि ऐसा न हो तो नाटक ही गड़बड़ाध्याय में कहीं न पड़ जाये? क्योंकि पिछला क्रिप्स-प्रस्ताव महात्माजी के कारण भंग हुआ था। यद्यपि पंडित नेहरू उसके पक्ष में थे, किन्तु इस बार ठीक रास्ता पकड़ा गया है। महात्मा जी से नाटक की रचना में बहुत कुछ सलाह भी ले ली गई है। पं० नेहरू जेल में थे ही, उनसे राय लेने की विशेष आवश्यकता भी नहीं समझी गई। मौलाना आजाद ने तो जेल के बाहर आने पर कहा कि उन्हें कुछ पता ही नहीं है। परन्तु यह प्रसन्नता की बात है मौलाना साहब को लार्ड वेवेल ने शिमला सम्मेलन में निमंत्रित कर दिया है। इस प्रकार इस नाटक की सफलता में अभी तक कोई सन्देह नहीं है। बशर्ते कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी कांग्रेस को साम्प्रदायिक संस्था घोषित कर दे और हिन्दू मुसलिम एकता की आधी साझेदारी वाले अभिनय पर अपनी मुहर लगा दे।

* * *

सबसे बड़ी बात यह है कि मिस्टर जिन्ना भी सम्मेलन में अभिनय करने के लिये बुलाये गये हैं। ठीक है वह क्यों न बुलाये जाते? जब महात्मा गांधी बुलाये जा रहे हैं तो मिस्टर जिन्ना का वहाँ पहुँचना निहायत जरूरी है। क्योंकि मुसलिम लीग के वह 'गांधी जी' हैं ही। यदि पहले नहीं भी थे तो अब उन्हें बना दिया गया है। इधर मिस्टर जिन्ना का तथा लीग का रवैया ठीक महात्मा गांधी तथा कांग्रेस के समानांतर ही रहा है। इसी का यह फल मिल रहा है कि इस नाटक में लीग आधे की साझीदार बन रही है?

इससे बढ़कर उन्हें और कौन-सी प्रसन्नता होगी कि आराम के साथ बैठे हुए आधे के हकदार बन गये। कांग्रेस से तो उनकी लीग ही अच्छी रही। जेलखाने तथा परेशानियों से बचे रहे यही कम क्या है?

* * *

ता० २५ जून से नाटक शुरू होगा। देखना है इसकी सफलता कहाँ तक होती है? डाक्टर सर तेज बहादुर सप्रू, चक्रवर्ती श्री राजगोपालाचार्य का आशीर्वाद रहा तो सफलता अवश्य मिलेगी। हमारी राय में तो एक बार संयुक्त मंत्रिमंडल सभी प्रांतों में अवश्य संगठित हो और केन्द्र में भी संयुक्त कार्यकारिणी बन जाये। फिर देखिये क्या होता है! ब्रिटेन की कृपा से कांग्रेस का विरोध करते करते लीग आज आधे की हकदार बनने जा रही है और यदि संयुक्त मंत्रिमंडल बन गया तो ईश्वर चाहेगा तो वह कभी पूरे की भी हकदार बन बैठेगी। इसलिए लार्ड वैवेल को हम इस अवसर पर बधाई दिये बिना नहीं रह सकते। ईश्वर उनके नाटक-निर्देशन में सफलता दे।

* * *

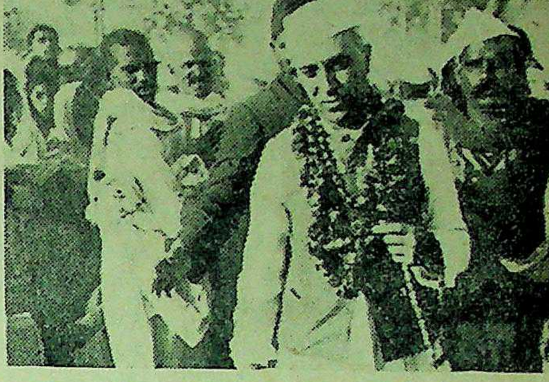

जेल से छुटने के बाद पंडित जवाहर लाल नेहरू का लाखों जनता ने स्वागत किया है। यह चित्र लखनऊ में स्वागत के समय लिया गया है।

अब रही इस योजना के अनुसार केन्द्रिय कार्यकारिणी समिति के संगठन के बाद प्रांतों के संगठन की बात। वह तो और भी एक नई दुनिया बसानेवाली है। यदि प्रांतों में भी ४०,४०,२० प्रतिशत के बटवारे से मंत्रिमंडलों का संगठन हुआ तो फिर म्यूनिसिपल बोर्डों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों ने क्या कुसूर किया है कि वहाँ भी इसी अनुपात से बटवारा न हो? क्योंकि जब प्रारंभ ही से शुभ काम हो रहा है तब उसका निर्वाह तो अंत तक होना हीं चाहिए। नहीं तो संयुक्त मोर्चा की स्थापना और एकता में बाधा पड़ सकती है। . योजना से बहुमतवाला हिन्दू संप्रदाय गोर में चाहे भले ही चला जाय किन्तु मुसलमान भाइयों में नया जीवन तो आना ही चाहिये। हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए यह कम महत्व की बात नहीं है। हिन्दू जाति तो केवल दो कामों के लिए जिन्दा है, या तो पिटने के लिए या त्याग और बलिदान के लिये। उसके लिए यही क्या कम है? इसलिए अपने राम तो बड़े प्रसन्न हैं कि योजना स्वीकृत हो जाये और वास्तविक रूप में हिन्दू-मुसलमानों की एकता का प्रारम्भ हो। 'तात्कालिक योजना' बड़ी ही जनतन्त्रपूर्ण है, क्योंकि बिना किसी चुनाव के झगड़े के बैठे बैठाले मुफ्त में सीटें, पद और शासन की बागडोर प्राप्त हो रही है।

* * *

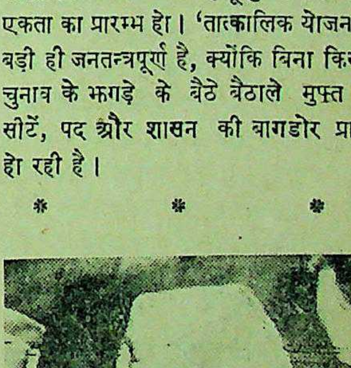

प्रिंस अब्दुल इलाह, ईरान की गद्दी के हकदार आजकल अमरीका में हैं। आपने प्रेसिडेंट ट्रूमन से भी मुलाकात की है।

सम्पादक का पृष्ठ

लार्ड वेवेल की नई योजना

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल ने लन्दन से लौटते ही भारतीय राजनैतिक अड़ंगे को हल करने के लिए ब्रिटिश सरकार की ओर से एक नई योजना प्रस्तुत की है। इस योजना के अनुसार केन्द्रीय सरकार का पूर्ण रूप से भारतीयकरण होगा और वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्यों की संख्या हिन्दू, मुसलमान और अल्प संख्यक दलों के अनुसार ४०-४० और २० प्रतिशत के अनुपात से निर्धारित की जायेगी। केवल रक्षा विभाग भारत के प्रधान सेनापति के हाथों में रहेगा। वाइसराय के मूल अधिकार ज्यों के त्यों बने रहेंगे किन्तु आश्वासन यह दिया गया है कि उनका उपयोग विशेष परिस्थिति को छोड़कर सम्भवतः नहीं किया जायेगा। इस योजना को प्रस्तुत करते हुए लार्ड वेवेल ने कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्यों को जेलों से मुक्त कर दिया है साथ ही कांग्रेस पर लगाये गये विभिन्न प्रतिबन्धों को भी वापस लेना प्रारम्भ कर दिया गया है। लार्ड वेवेल की यह योजना केन्द्रीय असेम्बली के नेता श्री भूलाभाई देसाई और मुसलिम लीग के उपनेता नवाबजादा लियाकत अली खाँ के समझौते के अनुसार प्रस्तुत की गई है। यह भी कहा गया है कि यह एक 'तात्कालिक' योजना है।

लार्ड वेवेल की यह योजना कैसी है? कांग्रेस की घोषित नीति 'पूर्ण स्वराज्य' के अनुसार यह कहाँ तक मान्य हो सकती है इस पर कुछ कहने के पूर्व हमें इस बात से अत्यन्त प्रसन्नता है कि देश के तपे हुए राष्ट्रकर्मी और नेता जेल से बाहर आगये हैं। पिछले तीन वर्ष से वह जेल की यातना सहते आ रहे थे। उनके बाहर आजाने से राष्ट्र में जागृति की नई लहर आ गई है। हमारी राय में तो यह भी अत्यन्त आवश्यक था कि जितने भी कांग्रेस कार्यकर्ता जेलों में अभी तक बंद हैं, उन्हें भी अब तक मुक्त कर दिया जाता किन्तु लार्ड वेवल ने योजना को प्रस्तुत करते हुए नजरबंदों की आम रिहाई का ऐलान नहीं किया। फिर भी यह संभावना है कि सभी राजनैतिक बंदी जिन्होंने पिछले वर्षों में राष्ट्रीय भावनाओं से प्रेरित होकर देश के लिये अपना त्याग और बलिदान दिया है, शीघ्र ही जेल बाहर दिखाई पड़ेंगे।

स्वर्गीय लोकमान्य तिलक का कहना था कि ब्रिटिश सरकार से स्वाधीनता-प्राप्ति के लिये युद्ध करते हुए वह जो कुछ दे उसे ग्रहण कर लेना चाहिए और आगे की प्राप्ति के लिए लड़ते जाना चाहिए। लार्ड वेवेल ने जो योजना प्रस्तुत की है इस सिद्धांत के अनुसार भी उसे स्वीकार कर लेना राष्ट्र के लिये घातक होगा। यद्यपि हम जानते हैं कि ब्रिटिश सरकार जो कुछ भी दे रही है वह मायाजाल से घिरा हुआ है। समय पर वह अपनी नीति में किस प्रकार का उलट-फेर करे इसकी केवल कल्पना ही की जा सकती है। यह कितने दुःख की बात है कि वेवेल-योजना केवल साम्प्रदायिक दृष्टिकोण पर आधारित है। केन्द्रीय सरकार का भारतीयकरण साम्प्रदायिक आधार पर होगा। केवल साम्प्रदायिक आधार पर ४०, ४० और २० प्रतिशत के अनुपात से सीटों का बटवारा हम राष्ट्रीय दृष्टिकोण से खतरनाक समझते हैं। कांग्रेस वर्किंग कमेटी इस योजना पर क्या निर्णय देगी, वह किस सीमा तक इस योजना में परिवर्तन तथा संशोधन चाहेगी और शिमला में होनेवाले विभिन्न दलों के नेता विचार-विनिमय के बाद इस पर क्या अन्तिम निर्णय करेंगे यह सब होते हुए भी हमें यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि यदि यह योजना ज्यों की त्यों स्वीकृत की जाती है तो इससे साम्प्रदायिक भावनाओं का जोर और अधिक व्यापक होगा और अखिल भारतीय राष्ट्रीयता को एक जबरदस्त ठेस पहुँचेगी। कांग्रेस आज भी राष्ट्र के समस्त वर्गों का सामूहिक प्रतिनिधित्व करती है। हिन्दू, मुसलमान, अछूत, अल्पसंख्यक सभी दलों और वर्गों की उसके प्रति आस्था है किन्तु आज सरकार उसी कांग्रेस को मुसलिम लीग ऐसी साम्प्रदायिक संस्था के सामने ही नहीं किन्तु बराबरी पर लाकर खड़ा करने का उपचार रच रही है। योजना में 'सवर्ण हिन्दू' शब्द ही इस बात का प्रमाण है कि हिन्दू होते हुए भी अल्प संख्यकों को भी हिन्दू-जाति से अलग करने की चेष्टा की गई है। इसी लिये महात्मा गांधी तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल ने योजना के इस अंश पर भारी मतभेद प्रगट किया है। इसके सिवा सबसे बड़ा प्रश्न तो है कांग्रेस में सदा से रहनेवाले लाखों मुसलमानों का। उनका क्या होगा? उनके प्रतिनिधित्व की उलझन कैसे सुलझाई जायेगी? क्योंकि मुसलिम लीग की तो इस योजना के अनुसार पाँचों घी में है। वह अपने ४० प्रतिशत के प्रतिनिधित्व में एक इँच भी नहीं हटेगी, और यदि यह समझा जाये कि कांग्रेसी मुसलमान केवल पद के लिये मुसलिम लीग में सम्मिलित हो जायेंगे यह कदापि संभव नहीं। कांग्रेस उन्हें कदापि अपने से अलग नहीं कर सकती। इसका निर्णय कैसे होगा? क्योंकि लार्ड वेवेल ने जो योजना प्रस्तुत की है उसमें वह कोई परिवर्तन करने को अभी तैयार नहीं हैं। हिन्दू-मुसलिम आधार पर स्वीकृत होनेवाली योजना के रहस्यों का यह भी एक मूल पहलू है। हम नहीं समझते कि इस योजना पर मुहर लगाने वाले श्री भूलाभाई देसाई, नवाबजादा लियाकत अली खाँ तथा समर्थन करनेवाले श्री राजगोपालाचार्य ऐसे वैधानिक नेताओं की दृष्टि से यह समस्या परे हो?

यों तो इस योजना को हम क्रिप्स प्रस्ताव से भी गया गुजरा समझते हैं किन्तु जहाँ राष्ट्रीय दृष्टि से यह असन्तोषपूर्ण है वहाँ बहुमत की दृष्टि से तो घोर निराशाजनक है। संसार के प्रत्येक देशों में अल्पसंख्यक हैं और वहाँ उनकी संख्या के अनुपात से ही उन्हें शासन संचालन में प्रतिनिधित्व दिया जाता है किन्तु इस वक्त भारतवर्ष में ही यह नई नीति बरती जा रही है कि ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ अल्पसंख्यकों की उन्नति की आड़ में बहुमत के सत्ता को अपहरण करने पर तुले हुए हैं। इस प्रकार की योजना प्रजातंत्रात्मक दृष्टि से कतई विपरीत है। फिर भी यदि इस योजना से कांग्रेस और लीग तथा मुसलिम एकता स्थापित हो स के लिये प्रसन्नता की ही बात हो

विषण्ण मुख को प्रसन्न बनाइये

युद्धकाल में कष्टों की सीमा नहीं।
भोजन मँहगा, वसन मँहगा, जलावन मँहगा, नौकर मँहगा,
मँहगा ही नहीं मिलना मुश्किल! और अवकाश,
तो ढूँढ़े नहीं मिलता। परन्तु आप
अभी भी चाय का सहारा ले सकते हैं।
यह अभी भी जरूरत भर मिल जाती है और सस्ती है!
बढ़िया गर्मागर्म चाय आपके शिथिल तन्तुओं को सजीव कर
आपके मस्तिष्क को आराम देगी।
दुनियाँ भर में मची हुई इस खलबली में यह,
आपके चित्त को शान्त रखेगी।

यह पोषक है, हानिकर नहीं।
निजी पैदावार है,
पूरा भरोसा है।

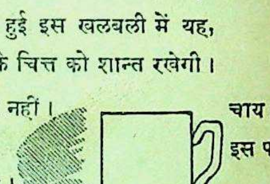

चाय हमारी
इस पर हमें

भारतीय
वक्त पड़ने पर चाय का सहारा लीजिये
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

JAKOOJA BRAND
FINEST TEA DUST
LIPTON'S
FINEST DUST
JAKOOJA

भारतीय चायों में सर्वश्रे
लिपटन की
जाकूजा चाय

वैवेल-प्रस्ताव और कांग्रेस

क्या भारतीय राजनैतिक अड़ंगा दूर होगा ?

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

भारतीय राजनैतिक अड़ंगे को हल करने के लिए वाइसराय लार्ड वैवेल ने एक नई योजना प्रस्तुत की है। इस लेख में वैवेल-योजना की पूर्ण रूप से खरी समीक्षा की गई है और यह बतलाया गया है कि यदि इसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया तो देश के हित में विशेष हितकर न होगा। साथ ही जन-तंत्र की दृष्टि से अन्याय भी होगा।

की रक्षा करेगा। (४) भारतीयों के हाथ में अर्थ और गृह-विभाग भी आ जायेगा। (५) वाइसराय के कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव वाइसराय विभिन्न सम्प्रदायिक दलों-द्वारा प्रस्तावित प्रतिनिधियों में से करेंगे और उनकी नियुक्ति वाइसराय के सिफारिश पर सम्राट्-द्वारा की जायेगी। (६) वाइसराय के नियन्त्रण के अधिकार वर्तमान विधान के अनुसार ही रहेंगे पर वह अपने अधिकार का दुरुपयोग नहीं करेंगे। (७) अस्थाई सरकार से भावी विधान के निर्माण में कोई भी अड़चन नहीं पड़ेगी।

इस रूप-रेखा से जो चित्र हमारे सामने आता है वह उस भीषण और कटु भविष्य की सूचना देता है जो भारत के साम्प्रदायिक समस्या को और भी जटिल बनाने में सहायक होगा। पहली बात तो यह है कि इस घोषणा में भारतवर्ष के साम्प्रदायिक दलों को प्रधानता देकर राजनैतिक समस्या की अवहेलना की गई है। कांग्रेस का नाम तक नहीं लिया गया। वस्तुतः कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना आजाद और पंडित जवाहरलाल नेहरू को आमन्त्रित न करके लार्ड वैवेल की इस आयोजना ने मुसलिम लीग को प्रोत्साहन दिया है। कांग्रेस के नेताओं को मुक्त करके इस प्रस्ताव ने उस कूटनीति का पालन किया है जो जनमत को लार्ड वैवेल के पक्ष में कर देने में सफल हो और फिर उस साम्प्रदायिक समस्या को और भी उलझा दे।

महात्मा गांधी भी वाइसराय लार्ड वैवेल से वर्तमान योजना के सम्बन्ध में विचार-विनिमय के लिए मिल रहे हैं।

दूसरी बात जो इस अस्थायी युद्धकाल तक की शासन-व्यवस्था के स्थापित करने में बाधक और साम्राज्यशाही नीति को पालन करने में सहायक होगी वह है इस साम्प्रदायिक दलों की वाइसराय के कार्य-कारिणी समिति में संख्या-सम्बन्धी अड़चन! यदि वाइसराय के तेरह सदस्यों में मुस्लिम लीग को पाँच सदस्य चुनने का अधिकार मिलेगा तो कांग्रेस संस्था को राष्ट्रीय संस्था न बनाकर ब्रिटिश नीति एक साम्प्रदायिक संस्था बना देगी। 'कांग्रेस' शब्द राष्ट्रीय संस्था के रूप में अभी तक मानी गई है। इसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी सम्प्रदाय के लोग हैं। इसलिए यह कहना कि कांग्रेस और मुस्लिम लीग को साम्प्रदायिक नीति के अनुसार समान स्थान कार्यकारिणी में मिले यह अनुचित ही नहीं, कांग्रेस को टुकड़ों में विभाजित करना है। यदि कांग्रेस प्रस्ताव के इस अंश को स्वीकार करती है तो प्रगट है कि इससे राष्ट्रीय ऐक्य की भावना, जिसे कांग्रेस वर्षों से प्रचारित करती रही है, उससे पदच्युत हो जायेगी। इस दृष्टिकोण से यदि देखा जाये तो सरकार ने कांग्रेस को पराजित करने की आयोजना की है।

क्रिप्स-प्रस्ताव और वैवेल-प्रस्ताव दोनों के अध्ययन से यह पता चलता है कि वैवेल-प्रस्ताव क्रिप्स-प्रस्ताव से भी गिरा हुआ है क्योंकि इसमें देश-रक्षा सदस्य के अधिकार की पूर्ण रूप से व्याख्या नहीं की गई है। प्रधान सेनापति को न केवल युद्ध-सम्बन्धी रणक्षेत्र की आयोजनाओं का प्रतिनिधि माना गया है वरन् उनको समस्त शक्तियों का प्रतिनिधि बनाकर उन सभी कार्यकारिणी सदस्यों से ऊँचा उठा दिया है जो वाइसराय के समिति में रहेंगे। युद्ध-सम्बन्धी आयोजनाओं का नागरिक जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए आवश्यक यह है कि युद्ध-सम्बन्धी समस्त योजनायें सिविल मेम्बरों के मतानुसार हों और उनके मत के अनुसार फौजी कामों में हाथ लगाया जाये। परन्तु वैवेल-प्रस्ताव से यह पता चलता है कि प्रधान सेनापति का अधिकार और सदस्यों के समान नहीं रहेगा।

क्रिप्स-प्रस्ताव में यह बात साफ तौर पर घोषित कर दी गई थी कि युद्ध के पश्चात् भारत को स्वतंत्रता प्रदान की जायेगी परन्तु लार्ड वैवेल के इस घोषणा में भावी स्वतंत्रता के बारे में किसी भी प्रकार का उल्लेख नहीं किया गया है। भारत जापान के विरुद्ध युद्ध लड़ेगा, पर युद्धोपरांत भारतवर्ष और ब्रिटेन का क्या सम्बन्ध होगा? भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में माना जायेगा या उसे अपनी साम्प्रदायिक विभिन्नता का भार ढोना पड़ेगा? वह जापान से लड़ने के पश्चात् भारतीय जनता को किस ओर ले जायेगा इत्यादि प्रश्न ऐसे हैं जिनकी कुछ भी चर्चा वैवेल के प्रस्ताव में नहीं की गई है। जहाँ तक ब्रिटिश पर्लियामेन्ट के नियंत्रण का सम्बन्ध है वह तो अब भी पूर्ण रूप से भारतीय कार्य-कारिणी समिति पर दिया गया है। सर स्टेफर्ड क्रिप्स ने १४ जून को एडिनबरा के एक वक्तव्य में यह कहा है कि ब्रिटिश पर्लियामेन्ट का अधिकार अब भी वैसा ही रहेगा जैसा कि पहले था। ऐसी अवस्था में भारतीय सदस्य भारतीय जनता के प्रति अपने को उत्तरदायित्व समझेंगे या ब्रिटिश पार्लियामेन्ट को? यदि वह वाइसराय के प्रति उत्तरदायी हैं तो वर्तमान कार्यकारिणी समिति और नवीन आयोजना की समिति में क्या अंतर होगा? भारतीय राजनैतिक स्वतंत्रता को ब्रिटिश सरकार ने कहाँ स्वीकार किया? यह स्थिति न तो केनाडा औपनिवेशिक के बराबर है और न दक्षिणी अफ्रिका या आस्ट्रेलिया के औपनिवेशिक स्वतंत्रता की ही पोषक है।

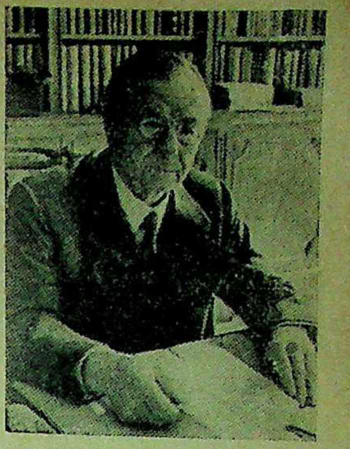

भारत-सचिव मिस्टर अमरी जिन्होंने भारतीयों को स्वराज्य का नया तोहफा दिया है।

वाइसराय महोदय के प्रभुत्त्व शक्ति के बारे में भी हमें ध्यानपूर्वक सोचना आवश्यक है। वाइसराय महोदय ऐसी परिस्थिति में भारतीय जनता के मतानुसार अपने उत्तरदायित्व रखेंगे या नहीं? स्पष्ट है कि ब्रिटिश पार्लियामेन्ट का पूर्ण प्रभुत्व भारतीय सम्बन्ध में वैसा ही रहेगा। क्रिप्स-प्रस्ताव में तो पार्लियामेन्ट के शक्तियों की व्याख्या वाइसराय के सम्बन्ध में वही थी जो भारत की अब है। कांग्रेस ने क्रिप्स-प्रस्ताव को केवल इसी कारण अस्वीकार किया था क्योंकि उसमें रक्षा-सदस्य और वाइसराय के प्रभुत्व शक्ति की व्याख्या उसी रूप में की गई थी जिस रूप में वर्तमान कार्यकारिणी काम कर रही है। कांग्रेस जनता की संस्था है। कांग्रेस के सामने जनमत का बंधन है। जनता के प्रति उत्तरदायित्व रखना कांग्रेस के लिये आवश्यक है। इसलिये कोई भी राजनैतिक जनतंत्र संस्था उस समय तक शासन-व्यवस्था में हाथ नहीं लगा सकती जब तक कि उसे जनता के प्रतिनिधित्व करने का अवसर न मिले।

सोरनसेन के प्रश्न का उत्तर देते हुए, मजदूर दल के प्रधान नेता मि० एटली ने १४ जून के अपने वक्तव्य में चिकनी-चुपड़ी बातों से कांग्रेस को धोखा देने का प्रयत्न किया है। पार्लियामेन्ट के इस वक्तव्य में

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

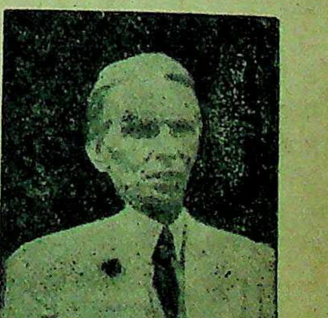

मुस्लिम लीग के प्रेसिडेन्ट मिस्टर जिन्ना जिन्हें बैठे बिठाये बहुमत का अधिकार मिल रहा है।

स्वतंत्र चीन की आधुनिक सेना

क्या वह जापानी सत्ता को स्वीकार कर सकता है ?

लेखक, प्रोफेसर रामसिंह नेगी, एम० ए०

> प्रजातंत्र चीन की स्वतंत्र सेना का संगठन किस प्रकार का है और उसने पिछले आठ वर्षों के लगातार युद्ध में जापान को किस प्रकार पराजित किया है उनमें कितना साहस, देशभक्ति और लगन होती है इसका कुछ वर्णन इस लेख में किया गया है।

चीन की सेना आधुनिक है। वर्तमान चीनी सेना मार्शल च्यांग काई शेक की सृष्टि है। मार्शल ने चीनी सेना को आधुनिक सैनिक शिक्षा ही नहीं दी, किन्तु उसमें जोश और आदर्श भी उत्पन्न कर दिया है। पहले तो उन्होंने अफसरों की शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया। एक 'मिलिटरी एकाडमी' स्थापित करके होनहार नवयुवकों को छाँटकर उसमें भर्ती किया और उन्हें आधुनिक सैनिक-शिक्षा में पूर्ण शिक्षा दी। उनके द्वारा उन्होंने नई चीनी सेना का संगठन किया जो इस समय आश्चर्यजनक काम कर रही है।

चीनी सैनिक की गर्मी की वर्दी में खाकी कोट, हाफपैंट, चप्पल, पट्टी और टोपी या घास की हैट होती है। उसे बरसाती नहीं दी जाती और न उसे तंबू ही मिलता है। किसी किसी अफसर को छाता मिल जाता है। अपनी बन्दूक, बैनट और गोलियों के अतिरिक्त उसको जो सामान लादकर मार्च पर जाना पड़ता है उसका बोझ प्रायः दस सेर होता है जिसमें उसके एक दिन को खाने के लिए चावल भी रहता है।

स्वतंत्र चीन के रक्षक मार्शल च्यांग काई शेक।

साधारण सिपाही का मासिक वेतन आठ चीनी डालर है। आजकल दूसरे देशों की मुद्रा के विनिमय में इन आठ डालरों का मूल्य बहुत कम है। भारतीय मुद्रा में शायद पूरा एक रुपया भी नहीं है। उसे वेतन के सिवाय भोजन भी मिलता है और उसके परिवार को खाने के लिए चावल और हर छमाही में कुछ कपड़ा दिया जाता है जिससे वे इच्छानुसार कपड़े बना लें। अफसरों का वेतन कुछ अधिक है। लफ्टंट को ९८ डालर (चीनी) प्रतिमास मिलता है। उन्नति होने पर प्रत्येक पद के लिए ४० डालर वेतन बढ़ता जाता है। जैसे कमान को ९८+४०=१३८, मेजर को १३८+४०=१७८, लफ्टंट कर्नल को १७८+४०=२१८, कर्नल को २१८+४०=२५८, मेजर जनरल को २५८+४०=२९८, लफ्टंट जनरल को २९८+४०=३३८ और पूरे जनरल को ३३८+४०=३७८ डालर मासिक वेतन मिलता है।

किन्तु सेना की योग्यता और शक्ति वेतन से नहीं नापी जा सकती। उसका असली मापदण्ड उसका जोश, कष्ट-सहिष्णुता, साहस और लगन है। चीनी सिपाही को दिन भर में खाने के लिए एक सेर चावल दे दीजिए और वह कड़े से कड़ा काम करने और भयंकर से भयंकर युद्ध में कूद पड़ने को तैयार है। उस बेचारे को बहुधा तरकारी भी नहीं मिलती। मांस या दाल की तो चर्चा ही नहीं होती। सेर भर चावल के बल पर वह जापान की दुर्दमनीय सेना से आठ साल से लोहा ले रहा है। उसने बर्मा की सीमा के दुर्गम पहाड़ों की कल्पनातीत कठिनाइयों से लड़कर सड़क बना डाली है। उसने चीन के भयानक दर्रों को सैनिक सामान लेकर पार किया है और सहिष्णुता के ऐसे काम किये हैं जिनको देखकर दाँतों के नीचे उँगली दबानी पड़ती है। इसी सेना ने पिछले आठ वर्षों में कम से कम १५ लाख जापानी सिपाहियों को मौत के घाट उतारा और प्रायः बीस लाख को घायल किया। प्रायः ३,००० लड़ाइयाँ लड़ीं। यद्यपि अपने साठ लाख सिपाही खेत रहे या बेकाम हुए, फिर भी शक्ति बढ़ाकर अपनी संख्या पचास लाख सिपाहियों की कर ली। उसने दो लाख टन भारी मशीनें जापानियों के हाथों से बचाने के लिए नगरों से हटाकर सैकड़ों मील दूर, पहाड़ों को पार कर, सुरक्षित स्थानों में पहुँचाईं। चीनी सेना का अब तक का काम बड़ा ही प्रशंसनीय रहा है और वह संसार के इतिहास में अमर रहेगा

अचूक दवा

सुजाक गुर्दे और मूत्राशय
की बीमारियों के लिये।

प्रस्तुतकर्त्ता
ग्रिमाल्ट एण्ड कं०

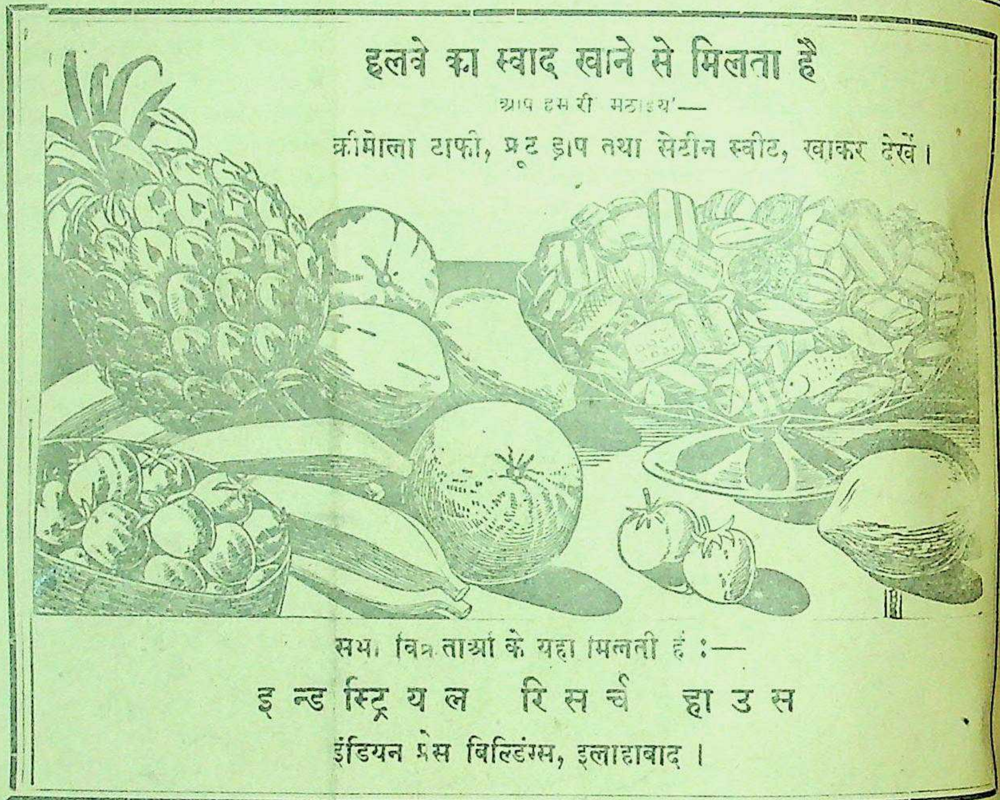

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सब विक्रेताओं के यहां मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

क्या हम प्रतिथियों के सत्कार में सहायता कर सकते हैं ?

इस मौसम की चीज़ें

CC BRAND

फलपेय (SQUASH)
नारंगी (ORANGE)
नीबू (LEMON)
नीबूबारली (LEMON BARLY)
नीबूकार्डियल (LEMON CORDIAL)
आम (MANGO)

जी. जी. फ़्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी बाजार, देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मेसर्स गिरधरलाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली।

जग्गू

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

संसार में श्रमजीवियों की समस्या बड़ी दयनीय और हृदय पिघला देनेवाली है। फिर यदि श्रमजीवी स्वाभिमानी हुआ तब तो उसके श्रम का मूल्य भी कभी कभी शून्य के रूप में परिणत हो जाता है। जग्गू भी कुछ इसी प्रकार का श्रमजीवी था। हिन्दी के कलाकार शर्मा जी ने जग्गू के दैनिक जीवन का वास्तविक और मर्मस्पर्शी चित्रण इस कहानी में बड़ी सजीवता तथा आकर्षण के साथ किया है।

कई महीने से बचाकर मैंने बीस रुपये भेजे थे, उसके बाद से कल जो चिट्ठी आई, तो माँ ने जाने क्या सोचकर यह बात लिखवाई है—'अरे, तू आ जा जग्गू...तू लौट आ! हम भूखे रह लेंगे। एक वक्त ही खाकर काट लेंगे।'

उसी समय ललाइन ने पास आकर कहा—'अरे, इस थाली को ठीक से माँज, जग्गू! इस पतीली को भी! देख कितना घी लगा है, इसे साफ कर।' फिर उसने कहा—तेरे लाला घी खाते ही नहीं। जिन्दगी क्या बेखाये ही चलती है, वह यह समझते ही नहीं।

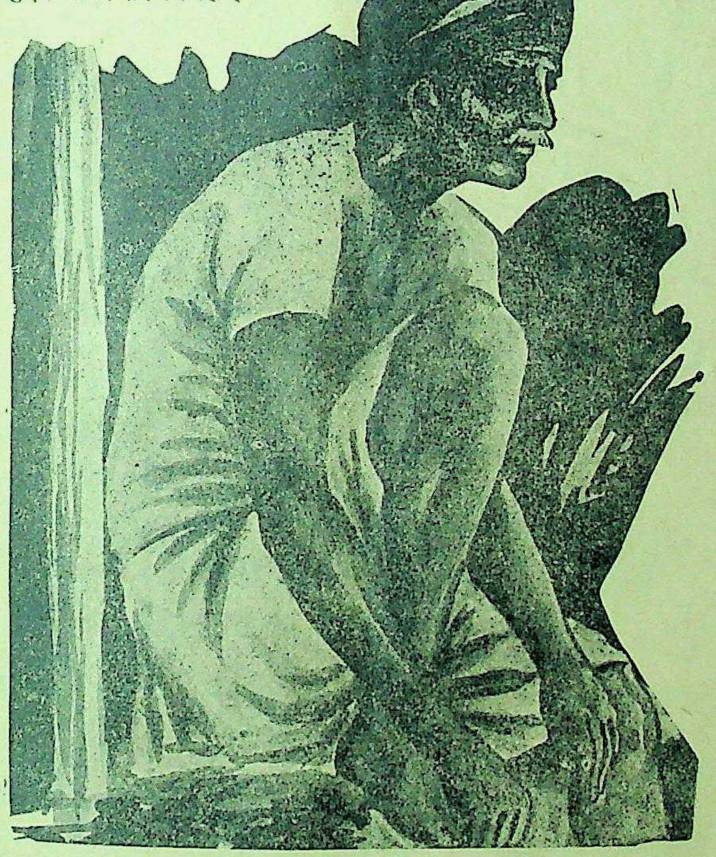

जग्गू घर का काम करता हुआ अपनी बुढ़िया माँ की याद कर रहा है।

जग्गू उस थाली को फिर माँजने लगा और ललाइन ने उस पूड़ी, साग और पापड़ के टुकड़ों से मिश्रित जूठन को देख, जग्गू से फिर कहा—'इन्हें गाय को या कुत्तों को खिला देना, समझे!'

लेकिन जग्गू अपनी माँ और उसकी चिट्ठी में उलझा हुआ बोल उठा—जी, समझा!

और वह कह रहा था—'हाँ, मा ने लिखा तो है, तू आ जा रे, जग्गू। तू मेरी आँखों के सामने आ जा, मेरे बच्चे। मैंने तुझे जाने कैसे कैसे पाला है और बड़ा किया है।'

जग्गू बर्तन माँज चुका। ललाइन ने कहा—'जग्गू, मुनुआ को गोद में ले ले। इसे चादर भी ओढ़ा ले।'

जग्गू ने अपने ठिठुरते हुए हाथों से मुनुआ को ले लिया। वह रो और मचल रहा था। जग्गू काँप रहा था और ठिठुर रहा था। उसी समय मुनुआ ने उस पर पेशाब और पाखाना कर दिया। जग्गू पैरों तक सन गया। कुरता खराब हो गया। यह देख, एकाएक उसके मन में आया कि वह मुनुआ को फेंक दे। लेकिन इसके विपरीत उसने नितान्त दीन होकर ललाइन को पुकार कर कहा–मालकिन...

मालकिन ने अन्दर से पूछा—क्या है रे?

'मुनुआ ने पाखाना कर दिया। मेरा कुरता-धोती...'

तभी अन्दर से आ ललाइन ने तड़ित भाव से कहा—ओहो, छैला का कुरता-धोती खराब कर दिया। तो खड़ा क्यों है रे? ला, मुनुआ को मुझे दे। गँवार कहीं का। यह नहीं सूझा कि मुनुआ रो रहा है, तो जरा चुप करा दे। इतने दिन शहर में आये हुए हो गया और रहा ढोर का ढोर!

यह सुनकर जग्गू क्या कहता? कैसे कहता! फिर ऐसा एक ही तो दिन नहीं था उसका। नित्य ही आये दिन वह लाला से और ललाइन से कुछ न कुछ सुनता और जाने अपने हृदय के किस गहरे गह्वर में उसे उतारकर रख लेता। वह जैसे सचमुच ही गँवार है, मूर्ख है और जानवर है, इसी से तो उन दस रुपयों पर लाला जी के यहाँ पड़ा है। हालाँकि उसे पता है कि पहला आदमी बीस रुपये लेता था और केवल दूकान का ही काम करता था और आश्चर्य यह कि वह बीस रुपयों से भी सन्तुष्ट नहीं था।

जिसके विपरीत यह जग्गू है—जगपालसिंह—जो अपने गाँव में खेतीबारी के काम में लगा हुआ, न तो इतनी कुटिलता जानता था और न कभी वह ऐसा अवसर पा सका था। किन्तु इस संसार रूपी भवसागर में पड़कर, बहता हुआ वह जिस शहर में आ गया और एक बड़े बाँध की आड़ से अटक गया, उससे वह छूट भी नहीं पाता था। उसका दम घुट रहा था, जीवन गल रहा था। लेकिन उसे तो माँ और बहिन का पेट भरना था। जैसे हो, उनके लिए अनाज देता था और अपने जीवन की आड़ में उनके जीवन को सुरक्षित बनाये रखने का प्रयत्न करता था।

इसी से जो दस रुपये वह पाता, उनमें से एक रुपया उस अन्धी कोठरी का किराया देता और तीन-चार रुपये में अपनी गुजर कर लेता। वह प्रायः एक ही समय खाता और रात या दिन को भूखे पेट रहकर अपनी गुजर कर लेता।

लेकिन जब वह शहर की ऊँची-ऊँची मकानों की मीनारें देखता और उन भव्य तथा सुन्दर अट्टालिकाओं में से अलभ्य, अकल्पित अट्टहास होते सुनता और उससे अपनी स्थिति का मिलान करता तो उसकी आत्मा में विद्रोह उत्पन्न हो उठता। बाजार में आती-जाती मोटर-बग्घियों में स्त्री-पुरुषों की सुनहरी और चमकीली पोशाकों को देखकर बरबस ही, वह अपने फटे और चिथड़े हुए कुरते से उनकी तुलना करता। तब अपने को हीन पाकर वह भोला जग्गू जाने कितने अधीर और कातर भाव से अपने आप कहता—'यह लोग भाग्यशाली हैं...किसी पूर्व जन्म में अच्छे कर्म कर आये हैं, ये लोग!...और जग्गू दुर्भागी है।'

बरबस ही, जग्गू अपने से यह कहता और अपने आस-पास की दीवारों से टकराता हुआ एक तुमुल घोष वह जो अपने कानों से सुनता, तो उसे भी समझने का प्रयत्न करता और अपने आप कहता—हाँ, वैसा ही तो भाग्य नहीं है, जग्गू! भाग्य कुछ और है। हाँ, और...

और सच, वह सुनता नहीं था क्या, कि जो लोग ऐसा कहते, उसके विपरीत, वह जाने किस प्रेरणा से, अपने अन्दर के परमेश्वर की किस इच्छा से जब-तब अपने आप कहता—जो चोर हैं, जो लुटेरे हैं, जो दम्भी और क्रूर हैं, वही तो हैं यह सब इनमें हृदय नहीं है। लूटना और धन का अंबार लगाना ही इनका धर्म और जीवन का नैमित्तिक कर्म है।

'और तुम!...तुम!' मानो जग्गू की तड़पती हुई और जीवन की व्यथा से पूर्ण हुई आत्मा बरबस ही उससे प्रश्न करती और कहती—जीवन तो तुम भी चाहते हो, जग्गू! माँ और बहिन के लिए चाहते हो। बताओ, तुम ऐसे ही, कुढ़-कुढ़ कर ही इसका अन्त करना चाहते हो!...

तब सचमुच ही जग्गू विद्रोही हो उठता। वह तड़प जाता। लगता कि उसकी आत्मा में जो चीत्कार है वह बरबस ही उसे झकझोर रही थी जिससे कि उसका दम घुट रहा था।

एक दिन लाला ने उसे फटकारते हुए कहा—'अबे, जग्गू! देखता हूं तू ठीक से काम नहीं करता। मुनुआ की माँ कहती थी कि तू उसके बताये काम भी नहीं कर पाता। कहे देता हूँ, तू ऐसा करेगा, तो कान पकड़कर निकाल दूँगा।'

यह सब सुनकर जैसे जग्गू पीठ पर घूँसा खा जाता था। वह तड़पते साँप की तरह क्रोध में भर गया। छूटतेही बोला—जो मेरे पैसे हैं, वह दो लाला जी, मैं काम नहीं करूँगा...अब नहीं!

यह सुन, लाला ने और अधिक कुपित होकर चिल्लाकर कहा—'तेरा कोई पैसा नहीं है! निकल, भाग, यहाँ से।' यह कहते लाला ने तड़ाक से जग्गू के थप्पड़ मार दी। उसे दूकान से धक्का भी दे दिया।

यह देख, जैसे युग-युग का सोया और दबा हुआ उस जग्गू का स्वत्व जाग उठा। उसने अपने दाँतों को भींच लिया, हाथ का घूँसा बाँध लिया और लाला अपनी गद्दी पर बैठे-न-बैठे कि उसके हाथ का वह घूँसा उनके मुँह पर पड़ गया। जग्गू ने लाला की गर्दन पकड़ ली और समय था कि वह अपने मजबूत हाथों से लाला जी को उठा लेता और सामने की गटर में फेंक देता किन्तु तभी लोगों ने बीच-बिचाव किया। जग्गू का जो हिसाब निकलता था वह दिलवा दिया। जग्गू चला गया।

लेकिन जग्गू को तो जीवित रहना था और काम करना था, इसलिए वह एक रिक्शावाले के यहाँ फिर नौकर हो गया। वह रिक्शा चलाने लगा। उसे पहले से अधिक पैसा भी मिलने लगा। सुबह वह रिक्शा सँभालता और शाम को छोड़ता। इतने बीच में उसने दो-तीन सौ रुपया बचाया और माँ को भेज दिया। उसके पिता का जो ऋण उसे चुकाना था वह आधे से अधिक खतम हो गया। बहिन का विवाह करने के लिए लड़का भी देख लिया। इसी से जग्गू सोचता है कि वह कुछ दिन और रिक्शा चलायेगा। फिर गाँव चला जायगा और खेती के काम में लग जायगा।

किन्तु इतना ही करने के लिए और अपनी स्थिति के उस साफ-सुथरे मोड़ पर आने के लिए जग्गू ने जिन परिस्थितियों से लड़ कर अपने जीवन और स्वास्थ्य का क्षय किया, लगा कि वह उसकी दृष्टि से ओझल न होकर भी, ओझल बन गया था। अपनी विवशता, दीनता और जीवन की असहनीय व्यापकता के कठोर आघातों ने मानो उसे यही करने के लिए विवश किया था। घुटनों से ऊपर तक धोती चढ़ाये और गाढ़े की मिरजई पहने जग्गू जाड़े, बरसात और गर्मी में अपने रिक्शा का हत्था पकड़े घण्टी बजाते हुए जहाँ-तहाँ भागता और आता-जाता दिखाई देता था। रिक्शा में वह जाने किस-किस प्रकार के व्यक्तियों को बैठा चुका था और उनके बताये स्थानों पर उन्हें पहुँचा चुका था।

इधर कुछ दिन से जग्गू बीमार दिखाई देता था। उसके शरीर का ढाँचा सूख गया था। फिर भी वह अपना काम करता था और पैसे कमाता था। एक दिन जब सुबह-सुबह वह रिक्शा लेकर चला, तो स्वयं ही अनुभव हुआ कि उसके पैरों में दम नहीं था। आँखों में अँधेरा था। लेकिन जिस अविराम गति से वह नित्य अपना काम करता, उसी प्रकार वह उस दिन भी चल पड़ा। दिन चढ़े तक उसने एक रुपया कमा लिया। जब वह स्टेशन से एक खद्दरधारी सज्जन को लेकर चला, तो जग्गू काफी थक गया था। उन सज्जन को जाना भी दूर था। फिर भी, जग्गू अपने प्राणों की समस्त शक्ति को समेट भागने की चेष्टा करने लगा। लेकिन लगता यह था कि उससे भागा नहीं जाता था। वैसे सवारी एक थी, परन्तु तीन-चार मन से कम बोझीली नहीं थी। साथ में जो सामान था, उसकी गणना अलग। ले-देकर जग्गू जब नियत स्थान पर पहुँचा, तो उसका दम फूल गया। आँखों के सामने अँधेरा छा गया। साथ ही, उसे खाँसी और कफ का जो रोग था, वह भी, एकाएक कुपित होकर तीव्र हो गया था। सवारी ने जब उसे पैसे दिये, तो जग्गू ने खाँसते हुए और बलगम का एक गुच्छा-सा थूकते हुए, मानो आँखों के द्वार पर आये, अपने प्राणों को बरबस रोकते हुए कातर हुए स्वर में कहा—बाबू जी, बस, इतने......।

लेकिन बाबू का ध्यान तो ओर लगा हुआ था, जब कि उनके ने रिक्शा से बिस्तरा उतारते हुए, बँधी चाँदी की दो सिल्लियों को नीचे दिया था। जिनका खन-से हुआ बाबू जी को चौंकाने में समर्थ हो गया

इसके विपरीत वह जग्गू था, उन चाँदी की सिल्लियों को देखते ही खाँस रहा था और गिड़गिड़ा था—बाबू जी तुम ऐसे कि चार कम......।

और बाबू जी ने भर्त्सनापूर्ण उसकी ओर देखकर चाँदी की सिल्लि उठवा कर मकान के अन्दर अपने बढ़ा दिये थे।

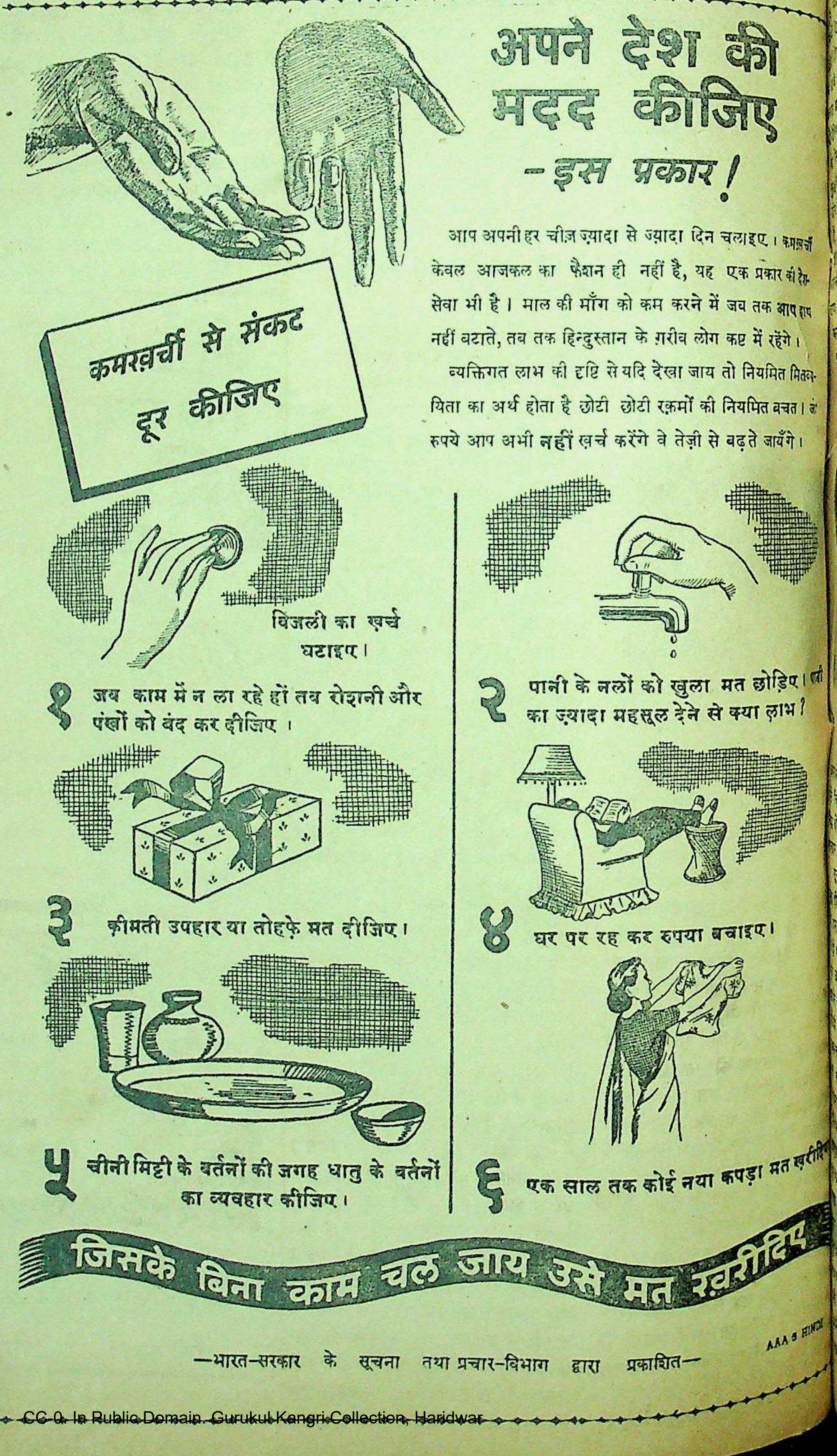

अपने देश की मदद कीजिए
—इस प्रकार!

आप अपनी हर चीज़ ज़्यादा से ज़्यादा दिन चलाइए। कमख़र्ची केवल आजकल का फ़ैशन ही नहीं है, यह एक प्रकार की देश-सेवा भी है। माल की माँग को कम करने में जब तक आप हाथ नहीं बटाते, तब तक हिन्दुस्तान के ग़रीब लोग कष्ट में रहेंगे।

व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से यदि देखा जाय तो नियमित मितव्ययिता का अर्थ होता है छोटी छोटी रक़मों की नियमित बचत। जो रुपये आप अभी नहीं ख़र्च करेंगे वे तेज़ी से बढ़ते जायँगे।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

बिजली का ख़र्च घटाइए।

१ जब काम में न ला रहे हों तब रोशनी और पंखों को बंद कर दीजिए।

२ पानी के नलों को खुला मत छोड़िए। पानी का ज़्यादा महसूल देने से क्या लाभ?

३ क़ीमती उपहार या तोहफ़े मत दीजिए।

४ घर पर रह कर रुपया बचाइए।

५ चीनी मिट्टी के बर्तनों की जगह धातु के बर्तनों का व्यवहार कीजिए।

६ एक साल तक कोई नया कपड़ा मत ख़रीदिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

AAA 3 HINDI

—भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित—

सूचना-विभाग की फिल्मों का रवैया

सुधार की आवश्यकता क्यों जान पड़ती है ?

लेखक, श्री बालगोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

... फिल्म-दर्शकों ने सूचना-... फिल्में देखी होंगी। प्रायः सभी ... फिल्म दिखाने के पूर्व १०- ... के बाद सूचना-विभाग की ... जाती हैं। प्रत्येक फिल्म ... और उनके द्वारा देश-विदेश ... तथा युद्ध की प्रगति पर ... जाता है। ऐतिहासिक और ... के आधार पर इन चित्रों ... किया जाता है। इन चित्रों में ... सफल तथा मनोरंजक ... के सम्मुख प्रस्तुत किये गये ... से हवाई जहाज तक", ... संगीत", "सुनहले पर्दे की ... भारत की कारीगरी" ..." और "बिजली की ... इनमें से अधिकांश चित्र ... बनाये गये हैं, जिनमें ... दिलचस्पी नहीं रही है। ... "अधिक अनाज ... मोर्चे के लिए रुपये

...जगत् की प्रसिद्ध अभिनेत्री
मीनाक्षी

... तथा "राशनिङ्ग" आदि कई ... हैं जिनको देखने से यह स्पष्ट ... है कि इन चित्रों के पीछे ... प्रचार की भावना छिपी हुई है। ...विभाग की फिल्मों का निर्माण ... से आरम्भ हुआ है। वास्तव ... चित्रों का निर्माण प्रचार की दृष्टि ... किया गया था। चार वर्ष ... जापान ने भारतवर्ष पर आक्रमण ... दी थी, तो सरकार को ... बढ़ाने के लिए आदमियों की ...। सरकार को भारतीय कांग्रेस ... नहीं प्राप्त था। सरकार ने ... के अन्तर्गत चित्रों का ... आरंभ किया। फिल्म-क्षेत्र के ... तथा विशेषज्ञों को ... के लिए नियुक्त किया ... इन चित्रों के निर्माता ... और भारतीय फिल्म-क्षेत्र के ... अनुभवी व्यक्ति हैं और एक ... उन्होंने कई चित्रों का दिग्दर्शन ... किन्तु इस बार वे जनता की ... चित्रों का निर्माण ... जो चित्र बनाये गये हैं, फिल्म-दर्शकों के लिए, जो केवल मनोरंजन के लिए सिनेमा जाते हैं, उनका कोई मूल्य नहीं है। "जहाज कैसे बनते हैं", "सिपाहियों के स्कूल", "समुद्री बेड़े के नाविक", "भारतीय-सेना के साथ एक दिन", "हिन्दुस्तान के लिए जहाज" तथा 'सुनहला मौका' आदि फिल्मों का निर्माण केवल प्रचार की दृष्टि से किया गया था, ताकि भारतीय सेना में अधिक लोग भर्ती हो सकें। फिल्म दर्शकों तथा सिनेमा के मालिकों को आर्थिक की दृष्टि से क्षति होने लगी। उन्होंने सूचना-विभाग की फिल्मों को दिखाना बन्द कर दिया और इसके खिलाफ एक आन्दोलन चलाया। अन्त में सिनेमा मालिकों पर सरकारी आदेश जारी किया गया और वे कानून के अन्दर जकड़ दिये गये।

इस आन्दोलन से सूचना-विभाग की फिल्मों को मनोरंजक बनाने का प्रयत्न किया गया। उनमें पार्श्वसंगीत तथा टीका-टिप्पणी का प्रबन्ध किया गया ! इस समय प्रत्येक फिल्म के साथ पाँच भाषाओं में (हिन्दुस्तानी, बंगाली, तेलगू, तामिल तथा अँगरेजी) में टीका होती है। ताकि दर्शक फिल्म को समझ सकें।

सूचना-विभाग की फिल्मों में हिन्दी की उपेक्षा की जाती है और कठिन उर्दू तथा अन्य विदेशी भाषाओं की प्रधानता रहती है। यदि हम ध्यान से देखें तो सूचना-विभाग की दशा भी रेडियो-विभाग जैसी ही है। जिस प्रकार रेडियो-विभाग में हिन्दी के लिए कोई स्थान नहीं है और उस विभाग के लोगों ने उर्दू को ही अधिकारी भाषा करार दी है। सूचना-विभाग की भी भाषा-सम्बन्धी नीति ठीक इसी प्रकार की है। हिन्दी में कभी कभी टाइटिल दिये जाते हैं, वे भी गलत होते हैं। उदाहरण के लिए मैं कुछ टाइटिलों के नाम देता हूँ।

"जीत गये", "कठन दिन", "खबरों का खुलासा"। इनसे इस बात का भली भाँति पता चलता है कि सरकार के सूचना-विभाग के फिल्म बनाने की युनिट में कितने लोग हिन्दी जाननेवाले हैं और कितने हिन्दी विद्वान् उस विभाग में कार्य कर रहे हैं ? कभी कभी सूचना-विभाग की फिल्मों में ऐसे शब्दों को सुनने का अवसर मिलता है, जिनको यदि हिन्दी शब्द-कोष में ढूँढ़ा जाय तो भी देखने को न मिले। आज सिनेमा का प्रभाव मनुष्य जाति पर विशेष रूप से है। दर्शकों के दिलों में हिन्दी के प्रति उदासीनता की भावना पैदा की जा रही है। सारे समाज पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन जिस प्रकार रेडियो की भाषा के विरोध में आन्दोलन चला रहा है, उसी प्रकार सूचना-विभाग की फिल्मों में प्रयोग होनेवाली भाषा की दुर्दशा की ओर उसका ध्यान क्यों नहीं जाता ? रेडिय [illegible] तो कुछ, थोड़े लोग ही सुनते हैं किन्तु सिनेमा तो पढ़े-अनपढ़, बूढ़े-बच्चे सभी देखते हैं और उसका उनके जीवन पर प्रभाव भी विशेष रूप से पड़ता है।

सूचना-विभाग के फिल्मी यूनिट के पब्लिक रिलेशन अफसर मि० एच० सी० हसूम का यह कहना है कि इस विभाग में हिन्दी के विद्वानों से काम लिया जाता है और वे "हिन्दुस्तानी" कमेंटरी की जाँच करते हैं। यह बात कहाँ तक सच है या हो सकती है, यह कोई भी हिन्दी का ज्ञाता जिसने सूचना-विभाग की फिल्में देखी हैं, बता सकता है। इतना ही नहीं, हिन्दी के जो भी दो-चार शब्द कमेंटरी में आते हैं, उनका उच्चारण भ्रष्ट होता है और हिन्दी भाषी जनता के कानों में खटकता है।

आजकल के जीवन में छोटे फिल्मों की विशेष उपयोगिता है विशेषकर जब कि लड़ाई चल रही है। विद्यार्थियों को शिक्षण देने की दृष्टि से भी सरकार का यह प्रयास सराहनीय है, किन्तु इस समय सूचना-विभाग के फिल्मों को देखते हुए घोर निराशा होती है। भारत-सरकार शीघ्र ही अपना ध्यान इस ओर आकर्षित करे तो सम्भव है छोटे फिल्मों में अधिक सुधार हो सके।

हमेशा सबसे ऊपर
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम सामग्री
हमारी बनाई स्टैनक्रीम केशों को जमाती, चमक लाती, चिट-चिटाहट से परे, व्यवहार में साफ व केश के लिये उपकारी है
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लिः, कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर
102

लीजिए दो नये साबुन!
इनके उपयोगसे आप प्रफुल्लित हो जायेंगे

सालों के सतत प्रयत्न के पश्चात् डी. सी. एम. केमिकल्स, आप की सेवामें अपूर्व गुणवाले दो साबुन प्रस्तुत करते हैं। इन दोनों साबुनों के दैनिक उपयोग से आपकी मुखाकृति की सुन्दरता बढ़ेगी और संसर्गी रोगों से रक्षा भी होगी।

'पाइनतार' रोग-कीट नाशक साबुन

यह साबुन दवाइयों के योग से बना है। इसमें दो गुण है। शरीर को स्वच्छ एवं निर्मल रखके के साथ साथ उसकी संक्रामक रोगों से रक्षा भी करता है। इस साबुन के दैनिक उपयोग के अभ्यस्त बन जाइए। ठंडी जल में इसके खूब झाग उठते हैं।

PINE-TAR
ANTISEPTIC SOAP

बसन्त ब्यूटी सोप

यह उत्तम तेलों के योग से निर्मित है। इसका सुगन्धित फेन चमड़ी के लिए सौंदर्य वर्द्धक है। इसके नियमित उपयोग से आपकी मुखाकृति दमक उठेगी और आप आपने मित्रों के लिए ईर्ष्या और प्रशंसा के विषय बन जायेंगे।

यह डी. सी. एम. केमिकल वर्क्स, देहली का बना हुआ है जो प्रत्येक बडे स्टोर या निकटस्थ डी. सी. एम. स्टोर से प्राप्त हो सकता है। व्यापारिक पूछताछ के लिए लिखिए :-

देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स, कम्पनी लिमिटेड, देहली।

DCM. 48.

स्वर्गीय चन्द्रकिशोर मालवीय

हिन्दी के एक प्रतिभाशाली लेखक का निधन

लेखक, श्री रामकिशोर मालवीय

अत्यन्त दुख का विषय है कि हिन्दी के होनहार और प्रतिभाशाली लेखक प्रयाग के श्री चन्द्रकिशोर मालवीय का केवल २६ वर्ष की अल्पायु में हैजे से देहान्त हो गया। श्री चन्द्रकिशोर ने पिछले पाँच-सात वर्षों से लिखना शुरू किया था और इसमें सन्देह नहीं कि वे बहुत अच्छा लिखने लगे थे। 'देशदूत', 'तरुण', 'सरस्वती', 'विशाल भारत', 'विश्वमित्र', 'माधुरी', दिल्ली के 'हिन्दू' आदि पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रायः निकला करते थे। वे यों तो विभिन्न विषयों पर लिखा करते थे, किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय विषय में उनकी रुचि अधिक थी और इस संबंध में उनके लेख पठनीय तथा उत्तम होते थे। श्री चन्द्रकिशोर मालवीय की लेखनी में बल था, भाषा परिमार्जित और ओजपूर्ण होती थी और लिखने की शैली आकर्षक थी। इधर कुछ दिनों से उन्होंने कहानियाँ लिखनी शुरू की थीं और वह भी अच्छी बन पड़ती थीं।

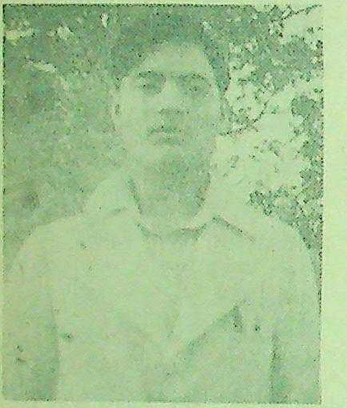

'देशदूत' के एक प्रमुख और युवक लेखक स्वर्गीय श्री चंद्रकिशोर मालवीय।

श्री चन्द्रकिशोर मालवीय को लिखने का व्यसन-सा था। प्रायः युवकों को सिनेमा तथा स्पोर्ट्स आदि का शौक होता है, किन्तु चन्द्रकिशोर को पढ़ने और लिखने का शौक था। प्रायः रात-रात भर वे लिखते ही रह जाते थे। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित सैकड़ों लेखों के अतिरिक्त उनके सौ-डेढ़ सौ लेख और कहानियाँ अप्रकाशित रखी हैं। यों चन्द्रकिशोर अच्छे-खासे गठीले शरीर के युवक थे, किन्तु रात-रात भर जागकर लिखने के कारण इधर उनका स्वास्थ्य कुछ गिर गया था।

चन्द्रकिशोर मालवीय को लेखक होने का शौक बाल्यावस्था से ही था। स्वर्गीय पंडित कपिलदेव जी मालवीय से चन्द्रकिशोर का निकट सम्बन्ध था और बचपन में ही एक बार पं० कपिलदेव जी के यह पूछने पर कि अपने जीवन में तुम क्या बनना चाहते हो, चन्द्रकिशोर ने कहा था कि लेखक बनना चाहते हैं। निस्सन्देह चन्द्रकिशोर मालवीय ने अपने जीवनोद्देश्य की पूर्ति की थी और भविष्य में उनके और अधिक उन्नति करने की पूरी आशा थी। इधर उनका इरादा पूर्णरूप से पत्रकार-जीवन में आने का था और पटना के एक प्रमुख दैनिक पत्र से उनके पास आफर भी आया था और वहाँ वह जानेवाले भी थे, परन्तु विधि के विधान को कौन जानता है? वह इतनी थोड़ी आयु में अपने मन के हौसलों को लिये हुए इस दुनिया से सदा के लिए चले गये।

श्री चन्द्रकिशोर मालवीय स्वभाव के अत्यन्त सरल, बड़े ही मिलनसार, मृदु-भाषी और प्रसन्न-चित्त युवक थे। समाज-सेवा की लगन उनमें अधिक थी और असहायों की सेवा करने में उन्हें बड़ा सन्तोष और आनन्द-लाभ होता था। प्रयाग मालवीय युवक सभा के वे उत्साही कार्यकर्ता और सहायक मंत्री थे। उनके निधन से मालवीय युवक समाज को भारी क्षति पहुँची है।

इन पंक्तियों के लेखक का श्री चन्द्रकिशोर मालवीय से निकट का सम्बन्ध था और उनके असामयिक निधन से उसकी व्यक्तिगत हानि हुई है। समझ में नहीं आता कि चन्द्रकिशोर के पिता प्रयाग के प्रतिष्ठित वैद्य पंडित प्राणनाथ चतुर्वेदी वैद्य, रुग्ण माता और उस निरीह बालिका के प्रति किन शब्दों में और कैसे इस असह्य दुख में सहानुभूति प्रकट की जाय, जिसे सारा जीवन वैधव्य व्यतीत करना है। परमात्मा इन दुखी लोगों को यह घोर कष्ट सहन करने की शक्ति और उस युवक की आकांक्षापूर्ण आत्मा को शान्ति प्रदान करे, इससे अधिक कुछ कहने की मुझमें सामर्थ्य नहीं है।

अरोंदा १८६६ नीलगिरि यापन
स्थापना १९२६] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल

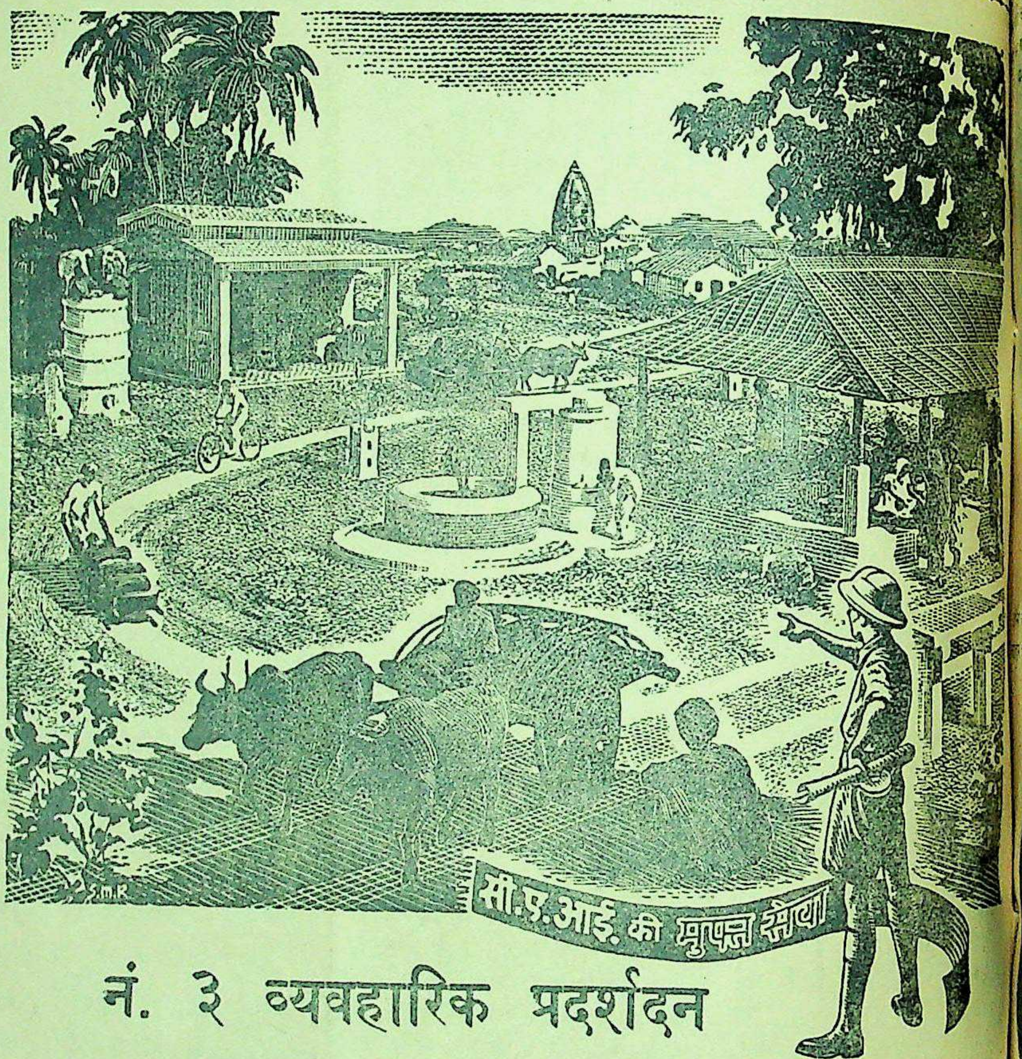

नं. ३ व्यवहारिक प्रदर्शदन

युद्ध बाद की तमाम निर्माणव्यवस्थाओं में ग्राम्य जनों के भाग्य सुधार को सर्व प्रथम स्थान दिया जाना उचित ही है। विश्वास रखिए व्यवहारिक प्रदर्शन राजा और प्रजा दोनों के लिए समानरूप से सहायक है जिससे यह प्रकट होजाता है कि ग्राम-दशा किस प्रकार सुधारी जा सकती है। हमने अभी हाल में ही कतिपय सुधारों को विरार-एक गांव बम्बई से ३८ मील दूर-में कार्यान्वित कियाहै। इन सुधारों में नूतन ग्राम-भवन निर्माण, सब मौसमों में काम आनेवाला विस्तृत लम्बा पक्का रास्ता, अनाज रखने के लिए टिकाऊ खात, स्वच्छ और निर्मल बाजारी चबूतरा, पेयजल-प्रपात, हथगड्डी, साइकलवाले, और अकेले पहिये वाली बैलगाड़ी के उपयुक्त पगडंडी, विकास विधि में नवीनता आदि सम्मलित थीं। आशा की जाती है कि इस प्रकार के प्रदर्शन से जनता की कुछ मूल्यवान सेवा हो सकेगी, और अधिक जानकारी के लिए लिखिए :- कॉंक्रीट एसोशिएशन आफ इंडिया, ७० क्वीन्सवे नई देहली

सी.एम.आय. डिस्ट्रीब्यूटर्स

दि कॉंक्रिट एसोशी-एशन आफ इन्डिया
दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि. का
टेकनीकल आरगेनाइझेशन
CM 78—Hindi

राष्ट्र के कर्णधार जेलों से बाहर

वाइसराय की नई योजना पर विचार-विनिमय करनेवाले कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य तथा प्रान्तों के भूतपूर्व कांग्रेसी प्रधान मन्त्री और नेता

पंडित जवाहरलाल नेहरू
लम्बी अवधि के बाद जेल से
हैं। आपका सारे देश में
स्वागत हुआ है।

विश्वबंधु महात्मा गांधी
ने वाइसराय लार्ड वेवेल की नई योजना में 'सवर्ण हिन्दू' शब्द पर आपत्ति उठाई है और उसे अराष्ट्रीय बतलाया है।

राजेन्द्रप्रसाद
करके जेल से
स्वास्थ्य अभी
नहीं है।

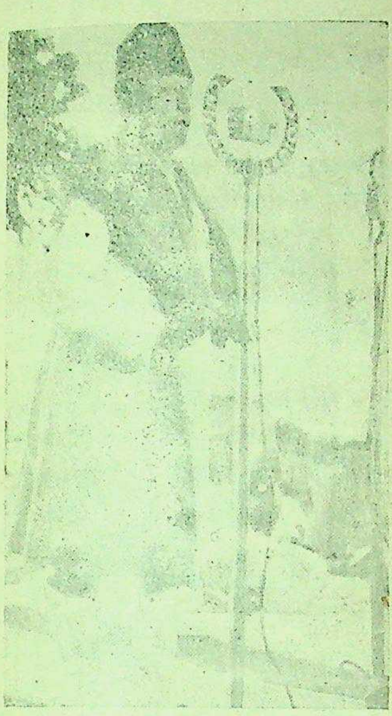

राष्ट्रपति मौलाना आजाद
भी बाँकुड़ा जेल से छूटकर बाहर आ गये हैं।

सरदार वल्लभ भाई पटेल
साबरमती जेल से छूटकर आ गये हैं।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री
आचार्य जे० बी० कृपलानी
करांची जेल से बाहर आ गये हैं।

नेता आचार्य नरेन्द्रदेव जी
के साथ जेल से लंबी अवधि
छोड़े गये हैं। आप अभी
अस्वस्थ हैं।

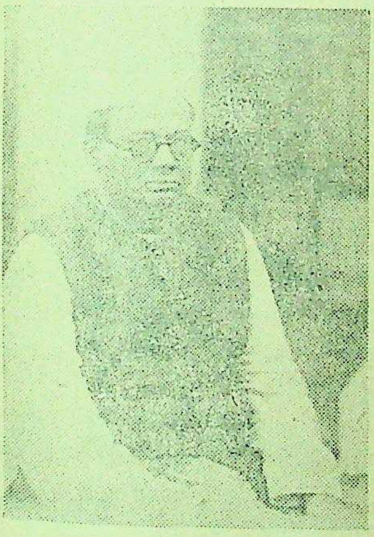

विहार के भूतपूर्व प्रधान मंत्री
श्री श्रीकृष्ण सिनहा
शिमला में वाइसराय द्वारा बुलाये जानेवाले नेता-सम्मेलन में सम्मिलित होनेवाले हैं।

वैवेल योजना के विधाता श्री भूलाभाई देसाई
केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के नेता हैं और राजनैतिक अड़ंगों को सुलझाने में लीन हैं।

युक्तप्रान्त के भूतपूर्व प्रधान मंत्री
गोविन्दवल्लभ पंत
आजकल अस्वस्थ हैं और अलमोड़ा में अपना इलाज करा रहे हैं।

कांग्रेस मंत्रिमंडल के प्रधान
डाक्टर खान साहब

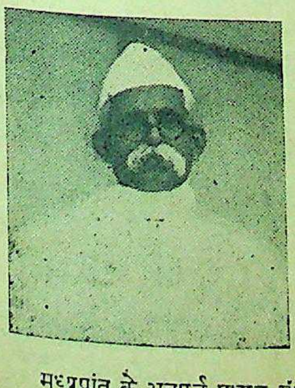

मध्यप्रांत के भूतपूर्व प्रधान मंत्री
पंडित रविशंकर शुक्ल

उड़ीसा के भूतपूर्व प्रधान मंत्री
विश्वनाथ दास

वैवेल योजना के समर्थक चक्रवर्ती
श्री राजगोपालाचार्य

संवाददाताओं के पत्र

इंदौर के श्री लक्ष्मनरायण जी चौहान संयोजक प्रजामंडल घास-समिति ने एक वक्तव्य में कहा है कि यहाँ आश्चर्य और परेशानी इस बात से हो रही है कि प्रति ढोर सिर्फ पाँच पौंड घास प्रतिदिन के हिसाब से राशन दिया जा रहा है। इस राशन से ढोर का पेट नहीं भर सकता है। छोटे बड़े ढोर को एवरेज पन्द्रह पौंड तो मिलना ही चाहिए।

नगर कांग्रेस कमेटी के कार्य्यकर्त्ताओं ने इन्दौर शहर में कांग्रेस कमेटी के सदस्य बनाना प्रारंभ कर दिया था। पता लगाने से ज्ञात हुआ है कि अभी तक कुल ७,००० सदस्य बनाये गये हैं।

श्री किशोर भाई त्रिवेदी, जिन्हें कि ग्वालियर सरकार-द्वारा निर्वासन किया गया है और जो कि नगर कांग्रेस कमेटी के दफ्तर में ता० ७ से अनशन कर रहे हैं, का स्वास्थ्य ठीक है। तौलने पर उनका वजन अवश्य कम हो गया है, लेकिन कोई चिन्ता की बात नहीं है।

—संवाददाता

* * *

लाहौर के फिल्म-निर्माता इम्तिआज अली ताज की "धमकी" जो कि आजकल पंचोली स्टूडियो में तैयार की जा रही है एक अत्यन्त ही सनसनीपूर्ण कृति होगी। शीरी फरहाद की शीरीं रागनी २०,०००.रु० [illegible] वेतन पर इस फिल्म की नायिका चुनी गई है। भारतीय फिल्म-संसार में नवागता 'स्मृति', अलनासर, जी० एन० बट टेहढ़ी गरदनवाले विनोद और ओमप्रकाश इस चित्र के प्रसिद्ध अभिनेता हैं।

सेठ दलसुख पंचोली की "कैसे कहूँ" फिल्म इसी महीने रिलीज हो जायगी, अन्तिम पहाड़ी दृश्यों की शूटिंग के बाद निर्देशक मोती गिडवानी अपने साथियों सहित डलहौजी से वापस आ गये हैं। आजकल सेठ रामनारायण देव "पगडण्डी" फिल्म तैयार करने में लगे हुए है।

—संवाददाता

* * *

देहरादून कन्यागुरुकुल का नया वर्ष १ जुलाई से प्रारम्भ होगा। जो महानुभाव अपनी कन्याओं को गुरुकुल में प्रविष्ट कराना चाहते हैं उन्हें जून मास में ही अपनी कन्याओं को लाकर प्रविष्ट करा देना चाहिए। केवल ३० कन्यायें ही प्रविष्ट की जा सकेंगी।

—मुख्याधिष्ठाता

* * *

हरिद्वार में गर्मी की अधिकता के कारण सेवा-समिति की ओर से ठंडे पानी का चलता-फिरता प्याऊ का प्रबन्ध हुआ है जिसमें रामशरणदास गुप्ता, सरदार ध्यानसिंह, पं० लक्ष्मीराव निराश आदि सेवा भाव से दिलचस्पी ले रहे हैं।

वैवेल-प्रस्ताव और कांग्रेस

(पेज ७ का शेष)

उन्होंने कहा—"मैं उन आरोपों से जो कांग्रेस पर लगाये गये हैं उनसे अनभिज्ञ नहीं हूँ। मुझे कभी भी उसमें विश्वास नहीं था और न है कि कांग्रेस कभी भी ऐसे आन्दोलन में सहायता अथवा ऐसे आन्दोलन की आयोजक हो सकती है।" एटली साहब ने बातों से ब्रिटिश शासन के उस अध्याय को जिसमें गांधी जी जैसे नेता पर फासिस्ट होने का अभियोग लगाया था उससे अपना उत्तरदायित्व हटाना चाहा है पर यदि सर स्टेफर्ड क्रिप्स और मजदूर दल को क्रिप्स-प्रस्ताव और वैवेल-प्रस्ताव पर गर्व हो सकता है और वे उसके भागी बनने में अपना सौभाग्य समझते हैं तो फिर १९४१ के अगस्त से और आज तक के साम्राज्यवादी कूटनीति से उन्हें घबड़ाहट क्यों मालूम होती है?

कांग्रेस व्यक्ति की संस्था नहीं है जैसा कि पंडित जवहरलाल जी ने गत १६ जून को जेल से छूटने पर अपने वक्तव्य में कहा है कि "भारतीय स्वतन्त्रता कुछ चुने हुए लोगों के लिए नहीं हो सकती। भारतीय स्वतन्त्रता प्रजातांत्रिक और आर्थिक समानता के आधार पर ही निर्धारित हो सकती है जिनमें हमारे देश की चालीस करोड़ जनता समानता के अधिकार को अपना सकेगी......ब्रिटिश शासनकाल में बंगाल की भुखमरी ब्रिटिश आर्थिक और
राजनैतिक के सम्बन्ध में न केवल ए
प्रमाण है वरन् वह उसके निकम्मे
ढांचे की मृत्यु-पत्रिका है।" कै
दृढता को वैवेल-प्रस्ताव दिलाने
असफल होगी? जो लोग कुछ नहीं
अच्छा है वे सिद्धान्त के पोषक है
लिए कुछ कहना नहीं है किन्तु
प्रस्ताव में वे प्रतिक्रियाशील कारण
भी मौजूद हैं।

श्री भूलाभाई देसाई और नवा
लियाकतअली खान लार्ड वैवेल
प्रस्ताव के पृष्ठभूमि में साम्रा
सिद्धान्तों के दृढ़ नियमों से
सतर्क होंगे जितने कि वे केन्द्रीय
व्यवस्था को सशक्त और राष्ट्रीय
उत्सुक हैं। वस्तुतः श्री भूलाभाई दे
नवाबजादा साहब वैवेल-प्रस्ताव
देख रहे हैं जो प्रकाश के सामने है
पीछे ब्रटेन की क्या चाल है
भी उन्होंने पूर्णरूप से देखा है?

अन्तिम बात यह है कि इस
में देशी रियासतों को ब्रिटिश
भिन्न बना दिया है! लार्ड वैवेल ने
के भौगोलिक एकता के पोषक होते
इस बात को क्यों और कैसे स्वीकार
लिया है? यदि भारत की देशी रियासतों
सम्बन्ध रखनेवाली नीति को ब्रिटिश
सुलह-द्वारा अपने को बाध्य
फिर उन रियासतों की जनता
देने में क्यों हिचकते हैं?

आकस्मिक दुर्घटनाओं का भीषण प्रकोप

——बद्रीनाथ के मार्ग में लारी दुर्घटना से ३१ यात्रियों की मृत्यु हुई।
——मनीरामपुर के पास ट्रेन दुर्घटना से १४ व्यक्तियों की मृत्यु हुई।
——लाहौर के पास धर्मशाला रोड पर एक लारी और ट्रक में भिड़न्त हो जाने पर ६ यात्री मर गये।
——आगरे में एक दूकान पर बिजली का पंखा ठीक करते हुए एक आदमी मर गया।
——शिकोहाबाद में एक फैक्टरी मैनेजर अचानक डूबकर मर गये।
——मुरादाबाद में पटाखे की आवाज से भड़के हुए घोड़े के कुचल देने से दो व्यक्तियों की जानें गईं।
——टूंडला के पास आँधी से कई गाँवों में दरख्तों के टूटने से और मकानों के गिरने से कई व्यक्ति मर गये।
——कानपुर में धोखे से दवा के बदले में जहर पी जाने से एक स्त्री की मृत्यु हो गई।

यह खबरें तो हमारी नजरों से गुजर गईं और न मालूम कितनी दुर्घटनायें नित्य घटती रहती हैं, जिनका हमें पता भी नहीं रहता कहीं किसी को साँप काटता है। कोई धोखे से विष खा लेता है। आग लग जाने से या जल जाने से मृत्यु हो जाती है। बिजली तो पता नहीं कितनी भेंट रोज लेती है। रेल और मोटर के कारण तो ऐसी मृत्यु-संख्या बहुत ही बढ़ गई हैं इस प्रकार अचानक मृत्यु हो जाने पर आश्रित कुटुम्बी जन किस प्रकार दुखी होते हैं इसे कौन नहीं जानता।

इसी कारण स्वदेशी ने

घातक दुर्घटना पालिसी

निकालकर केवल एक बार २५) रुपये में एक हजार के हिसाब से १० हजार तक का बीमा कराने की प्रणाली निकाली है। यह योजना बड़ी लोकप्रिय सिद्ध हुई है। आप भी अपना बीमा कराने के लिये विशेष विवरण मँगा लें।

श्रीचन्द दौनेरिया, मैनेजिंग डाइरेक्टर
स्वदेशी बीमा कम्पनी लिमिटेड
स्वदेशी बीमा नगर आगरा

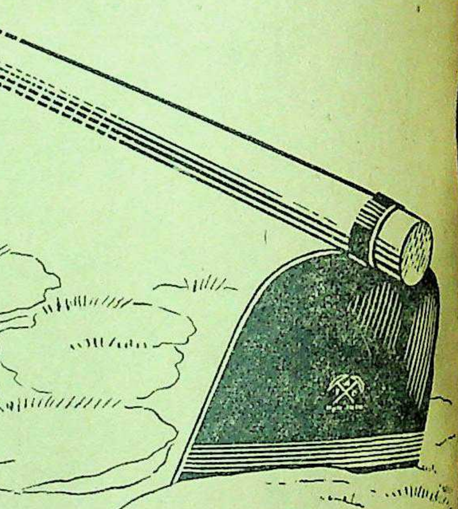

सहायक कुदाल

बाँध बाँधनेवाले मजदूरों के हाथ में या भूमि जोतनेवाले किसानों के हाथ में, कुदाल राष्ट्र की उन्नति में अपना काम जारी रखता है।

अभी के व्यवहार तथा शान्तिकाल की प्रचुर आवश्यकताओं के लिए प्रस्तुत होते हुए लोहे और इस्पात का उद्योग-धंधा, भारतवर्ष की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के निमित्त इन औज़ारों को और भी अधिकाधिक संख्या में तैयार कर रहा है।

A I C
TRADE MARK

AGRICO TOOLS
एग्रिको औज़ार

यू० पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध के डिस्ट्रिब्यूटर्स।
मैसर्स मोहम्मद दीन एंड सन्स,
ग्रैन्ड ट्रंक रोड, अमृतसर,
बन्दर रोड, कराची।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड,
(एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमूरी द्वारा प्रचारित।

देश-विदेश में क्या हो रहा है ?

विदेश

मार्शल टीटो की युगोस्लाव र्ई हैं और मित्रराष्ट्रों के साथ का समझौता हो गया है। मार्शल टीटो का कहना है के साथ अन्याय किया चूंकि वे मित्रराष्ट्र के बीच हैं, इसलिये इस प्रकार कर रहे हैं।

फौजों ने उन क्षेत्रों को है जो रूस के अधिकार में सीमाप्रांत से वे बहुत और हटते जा रहे हैं। पोलिश नेताओं के एक सम्मेलन का आयोजन किया जो पोलिश नेता रूस में गये थे वे शीघ्र ही छोड़

* *

लेबनान की समस्या के तथा ब्रिटिश अमेरिकन किसी प्रकार का समझौता दिखाई देती। फ्रांस ने पर पाँच बड़ों के सम्मेलन किया था उसके सम्बन्ध से कोई स्वीकृति ब्रिटेन तथा अमेरिका और चीन इस मामले क्योंकि ऐसा करने से उनका अधिकार और

* *

कैन्टन के महत्त्वपूर्ण ओर बढ़ रही हैं और उन्होंने निमिंग पर कब्जा कर हिन्द-चीन की सीमा से ३० है। जापानियों के प्रबल फलस्वरूप चीनी सैन्यदलों के अंतर्गत ईशान से जो लिनचाउ से ४३ मील ओर है।

फौजें जापान-द्वारा अधि- बोर्नियो में उतरी हैं। आठ बढ़कर उन्होंने ब्रुनाई पर लिया है। उत्तरी ब्रुगेनविली सैन्यदलों ने तटवर्ती मोर्चा लिया है और वे भीतर की रहे हैं।

के उत्तरी मोर्चे में जापा- समाप्त कर दिया गया दक्षिणी सिरे पर १३ वर्ग जापानियों का अधिकार शेष रह

* *

सम्मेलन में अस्वीकृति- अधिकार के सम्बन्ध में रूस राष्ट्रों के साथ एकमत हो प्रश्न पर तथा संरक्षण- भी सम्मेलन में समझौता अधिकार-सम्बन्धी प्रस्ताव के विरुद्ध ३० वोटों से पास फ्रांसिस्को सम्मेलन २३ जायगा। सम्मेलन की में प्रेसीडेन्ट ट्रूमन

खबर है कि मार्शल स्टालिन ने तीन बड़ों के सम्मेलम के लिये अपनी स्वीकृति दे दी है, यह भी खबर है कि तीनों बड़े राष्ट्रों के नेता जुलाई में संभवतः वियना में मिलेंगे।

* * *

मि॰ एमरी ने कामन्स सभा में भाषण देते हुए कहा कि मार्च १९४२ को जो प्रस्ताव भारतीय विधान के सम्बन्ध में रखा गया था वह अभी तक पूर्णतया उसी पूर्व रूप में कायम है।

* * *

चेकोस्लोवाकियन सरकार ने यह घोषित किया है कि उसने अपने सीमाप्रांतों से सभी सुडेटन जर्मनों को हटा देने का विचार कर लिया है और इस उद्देश्य से उसने नियमित सेना तथा देशभक्त सैन्य दलों को भेजा है, ताकि वे सीमाप्रांतीय जर्मनों के प्रत्याशित प्रतिरोध का सामना कर सकें। इस कार्रवाई के फलस्वरूप प्रायः ३० लाख सुडेटन जर्मनों का सामूहिक निर्वासन होगा।

* * *

नेटाल की भारतीय जनता के प्रश्न पर जाँच करने के लिये जो जुडीशल कमीशन नियुक्त किया गया था उसने यह सिफारिश की है कि दक्षिण अफ्रीका की संघ सरकार को चाहिये कि वह भारत सरकार के आगे यह प्रस्ताव रखे कि वह अपना एक प्रतिनिधिमंडल, जिसमें भारतीयों की संख्या अधिक हो, उक्त प्रश्न पर संघ सरकार से वार्ता करने के लिये भेजे।

स्वदेश

भारत के वायसराय लार्ड वैवेल ने १४ जून की शाम को रेडियो पर भाषण करते हुए बताया कि उन्हें सम्राट् की सरकार ने भारत के नेताओं के सामने ऐसे प्रस्ताव उपस्थित करने का अधिकार दिया है जिससें भारत की वर्तमान राजनीतिक अवस्था में सुधार हो और वह स्वशासन के ध्येय तक पहुँच सके।

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सभी सदस्यों को रिहा कर दिया गया है।

लार्ड वैवेल ने जो प्रस्ताव पेश किये उनका सार इस प्रकार है—कमांडर इन-चीफ को छोड़कर जो कि युद्ध-सदस्य रहेंगे, वायसराय की कार्यकारिणी समिति का पूर्ण भारतीयकरण किया जायगा। ब्रिटेन के व्यापारिक स्वार्थों की रक्षा के लिये भारत में एक ब्रिटिश हाई कमिश्नर नियुक्त किया जायगा। वायसराय की नई कौंसिल में सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों का प्रतिनिधित्व बराबर-बराबर रहेगा। कौंसिल वर्तमान विधान के अन्तर्गत ही काम करेगी।

शिमला में एक कानफरेन्स २५ जून को होगी, जिसमें इन व्यक्तियों को निमंत्रित किया गया है—सभी प्रांतों के वर्तमान तथा भूतपूर्व प्रधान मंत्री, केन्द्रीय एसेम्बली की कांग्रेस पार्टी के नेता तथा मुसलिम लीग के उपनेता, कौंसिल आफ स्टेट के कांग्रेस तथा मुसलिम लीग पार्टियों के नेता, एसेम्बली के राष्ट्रीय दल तथा यूरोपियन दल के नेता। इनके अतिरिक्त गांधी जी तथा मि॰ जिन्ना भी निमंत्रित किये गये हैं।

भारत मंत्री मि॰ एमरी ने ब्रिटिश साम्राज्य के पत्र प्रतिनिधियों के सामने आज कहा कि अँगरेज सरकार ने भारत के लिए जो नए प्रस्ताव किये हैं उनके द्वारा यह सम्भावना भी है कि पंडित जवाहर लाल नेहरू या मौलाना अबुल कलाम आजाद या अन्य भारतीय नेताओं के नाम वाइसराय की कार्यकारिणी कौंसिल का सदस्य होने के लिए नामजदगी से अलग न रहें। मि॰ एमरी ने कहा कि शिमला के सम्मेलन में प्रस्तावों पर विचार करते समय प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों के प्रश्न भी सम्भवतः उठाये जायँगे।

* * *

हिन्दू महासभा के अध्यक्ष डा॰ श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने वेवेल योजना पर एक वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें उन्होंने लिखा है, "इसमें कोई सन्देह नहीं कि इस योजना का मुख्य उद्देश्य मुसलिम लीग को और अधिक सन्तुष्ट करना तथा हिन्दुओं के न्यायोचित राजनीतिक अधिकारों को कुचलना है।" डा॰ मुकर्जी आगे कहते हैं—हिन्दू महासभा को, जो कि हिन्दू हित का न्यायोचित प्रतिनिधित्व कर सकती है, परामर्श के लिए भी नहीं निमंत्रित किया गया है। ऐसे मौके पर हिन्दू महासभा की उपेक्षा करने का एक मात्र उद्देश्य यही है। ब्रिटिश सरकार तथा लार्ड वैवेल जानते हैं कि हिन्दू महासभा ऐसी योजना का घोर विरोध करेगी जिसका उद्देश्य साम्प्रदायिकता की बलिवेदी पर हिन्दुओं तथा राष्ट्रीय हित की बलि चढ़ाना है।

उसकी स्फूर्ति कायम रखनेकी जिम्मेवारी आपपर होती है!
DALDA VANASPATI
The DALDA COOK BOOK Price Re.1/-
भोजनको ज्यादा स्फूर्तिदायी बनानेमें डालडाकी मदद होती है-हमने यह दिखा दिया है।

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १९० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक कापी होनीही चाहिये। Dept. B113 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टेज स्टाम्प भेजियेगा।

माताओ, आप जब अपने परिवार का भोजन बनाती हैं तब आपके क्षेत्रमें कितनी भारी शक्ति होती है? क्या आपने कभी इसका ख्याल किया है? आपके बच्चोंको स्फूर्तिले, हट्टे कट्टे बनाना या उन्हें निःशक्त, हताश और नाकामयाब करना आपके बनाये हुए भोजन पर और उसके बनानेमें जिन चीजोंका इस्तेमाल हुआ है उनपर अवलंबित है। हरएक चीजकी "स्फूर्तिदायी शक्ति" अपनी ही ढंगकी होती है। चंद बहुत स्फूर्तिदायी होती हैं और कई नमकीन, मीठी चीजें खानेमें अच्छी लगती हैं लेकिन उनसे शक्ति नहीं बढती। इसीसे कई लोग, जो बहुत खाते हैं, हमेशा निःशक्त और निकम्मे मालूम होते हैं। खानेकी सभी चीजें हम ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। बस, उन्हें जीवनसत्व-परिपूर्ण डाल्डामें पकाइये। डाल्डामें प्रकृतिके बढिया "अन्नांश" मौजूद हैं।

पोषक-तत्व संपन्न डालडा स्फूर्ति के लिये

HVM 33-176-40 HI

HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

स्वास्थ्य और व्यायाम

औषधियों का प्रयोग

एक डाक्टर प्रकृति-चिकित्सक क्यों बन गया ?

डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०, एन० डी०

डाक्टर लिन्डलाहर अमेरिका के एक बड़े नामी डाक्टर थे। लगभग ८० वर्ष की अवस्था में आपको दमे की शिकायत हुई। आप अमेरिका से जर्मनी चिकित्सा के लिये चले गये। वहाँ अकस्मात् एक प्राकृतिक-चिकित्सक से भेंट हो गई। उसने उनके नेत्रों की परीक्षा करके कहा, "मित्र, तुमने कभी आयडीन लिया था। वही आज तुम्हारे फेफड़ों पर जम कर दमे के रूप में कष्ट दे रहा है। आयडीन के चिह्न तुम्हारे नेत्र में स्पष्ट हैं।" इस पर डाक्टर लिन्डलाहर ने झुँझलाकर जवाब दिया, "तुम मूर्ख हो। मैंने कभी आयडीन नहीं लिया और यदि कभी लिया भी हो, तो उससे अब इस दमे का क्या सम्बन्ध है, इत्यादि।" इस पर प्राकृतिक-चिकित्सक ने रोगी डाक्टर को समझाया और कहा कि कुछ याद करो। रोगी डाक्टर ने पूर्व जीवन का स्मरण करके कहा, कि ओह, जब मैं छः वर्ष का था, तब बर्फ पर चलने के कारण मेरे पैर सूज गये थे और मेरी माता ने सूजन को मिटाने के लिए कई दिनों तक 'आयडीन' का प्रयोग किया था, अस्तु।

इस वार्तालाप का ऐसा प्रभाव पड़ा कि डाक्टर लिन्डलाहर उसी दिन से प्राकृतिक चिकित्सक हो गये। अमेरिका वापस लौटकर उन्होंने हजारों की आमदनी को लात मार दी। एक बड़ा प्राकृतिक चिकित्सालय तथा विद्यालय स्थापित किया उन्होंने प्रचलित औषधियों की कड़ी आलोचना करते हुए प्राकृतिक चिकित्सा-सम्बन्धी उच्चकोटि के कुछ ग्रन्थों का निर्माण किया। वे ग्रन्थ अपने ढंग के निराले और अद्वितीय हैं वह हजारों प्राकृतिक चिकित्सकों का आज भी मार्ग-प्रदर्शन करते हैं।

आपने अपनी 'नेत्र निदान' नाम की पुस्तक में स्पष्ट लिखा है कि दवाएँ दो प्रकार की होती हैं। एक वनस्पतिजन्य और दूसरी गैर-वनस्पतिजन्य। जड़ी-बूटी आदि की गणना प्रथम प्रकार की दवाओं में है। इन्जेक्शनों, फूँकी हुई दवाओं, पारा, जस्ता, लोहा, आयडीन की गणना गैर-वनस्पतिजन्य हैं। ये दवाएँ शरीर में पच नहीं सकतीं और मृत्यु पर्यंत अनेक प्रकार के कष्ट पैदा करती हुई शरीर में रहती हैं। इनका स्नायु-संस्थान तथा रक्त पर बड़ा घातक प्रभाव पड़ता है। डाक्टर लिन्डलाहर ने इस विषय पर खूब लिखा है। आपने प्रत्येक घातक दवा का रंग अथवा चिह्न के नेत्र में संकेत होना बतलाया है। वर्षों पूर्व लिये गये इन्जेक्शनों तथा भस्म आदि के चिह्न नेत्र से जाने जाते हैं।

वस्तुतः दवाओं के प्रयोग से शरीर की अवर्णनीय हानि होती है। इतना कह देना काफी है कि आजकल के फैले हुए अधिकांश जीर्ण रोगों का कारण पूर्व ली गईं दवायें ही होती हैं। अतएव स्वास्थ्य एवं रोग-मुक्ति चाहनेवालों को रोगावस्था में अधिक दवायें न लेकर उपवास, फलाहार, सूर्य-स्नान आदि की शरण लेनी चाहिये। भीतरी विष को निकालने के ये ही सर्वोत्तम उपाय हैं। भीतरी विष को बिना निकाले केवल लक्षणों को दबाने का प्रयत्न करना लाभ के स्थान पर हानि करता है।

मुस्लिम लीग और शिया सम्प्रदाय

(श्रीयुत सम्पादक 'देशदूत')

आज से लगभग पाँच वर्ष पूर्व, मार्च सन् १९४० ई० में आल इण्डिया मुस्लिम लीग ने अपने लाहौरवाले अधिवेशन में पाकिस्तान-प्रस्ताव को रखा था। राष्ट्र को अपना अंगच्छेद अभीष्ट न था, अतः उसने तत्काल एक स्वर से इसका घोर विरोध किया। यदि दुर्भाग्यवश देश आत्म-निर्णय के उन घातक-सिद्धान्तों को जिनका उक्त प्रस्ताव में प्रतिपादन हुआ है, स्वीकार कर लेता, तो उसकी भी वही दुर्गत हुई होती जो बलकान-राष्ट्रों एवं अल्स्टर-प्रान्तों की हुई थी। किन्तु फल-स्वरूप राष्ट्र के अन्दर पृथक्करण का विष तेजी से फैलने लगा। फिर क्या था—द्रविड़स्तान, सिक्खस्तान, अछूतस्तान प्रभृति अनेक 'स्तानों' की माँग पर माँग होने लगी, और सरकार को भी साम्प्रदायिक-अनैक्य की ओट में शिकार खेलने का सुवर्ण-सुयोग मिल गया और हमारी राजनीतिक माँगें टरकाई जाने लगीं।

मि० जिन्ना को अब तक 'स्तानों' की इन बढ़ती हुई माँगों के विषय में कुछ बोलने की अपेक्षा मौनावलम्बन ही श्रेयस्कर प्रतीत हो रहा था; परन्तु अब इन घटनाओं ने एक नया रूप धारण किया है, जिसके फलस्वरूप एक ऐसी विकट समस्या उत्पन्न हो गई है जिसकी उपेक्षा करना मि० जिन्ना के लिए अब और अधिक सम्भव नहीं दीख पड़ता। मुस्लिम-शिया-सम्प्रदाय ने लीग की बाजारू राजनीति से ऊबकर आत्म-निर्णय के सिद्धान्तों पर 'शियास्तान' की जोरदार माँग प्रारम्भ कर दी है। मि० हुसेन भाईलाल जी ने वाइसराय को तार देकर सूचित किया है कि शिया-सम्प्रदाय को लीग के नेतृत्व में तनिक भी विश्वास नहीं है और उसे भय है कि लीग के हाथों में उसके स्वत्व सुरक्षित न रह सकेंगे। गत ९ जून को बम्बई के भूतपूर्व शरीफ श्री मुहम्मद भाई राव जी ने एक वक्तव्य प्रकाशित कर यह एलान किया है कि मुस्लिम-लीग का यह दावा कि वह भारतवर्ष के १० करोड़ मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिधि-संस्था है, सरासर गलत है। उन्होंने यह भी बताया है कि शिया-सम्प्रदाय को लीग में विश्वास नहीं है क्योंकि वह धनी-मानी रईस सुन्नियों और नवाबजादों की सिर्फ एक जमात है और केवल उन्हीं का प्रतिनिधित्व कर सकती है। इससे भी अधिक महत्त्व की बात उन्होंने यह कही है कि भावी वैवेल-योजना के बारे में राजनीतिक मण्डली में यह अनुमान किया जा रहा है कि वह भूलाभाई-लियाकतअली योजना पर अवलम्बित है, जिसके फल-स्वरूप शासनाधिकार में हिन्दुओं और मुसलमानों को ४०-४० प्रतिशत अधिकार दिये जानेवाले हैं, जो कि शिया-सम्प्रदाय को कभी भी मान्य नहीं हो सकते। श्री मुहम्मद भाई के कथनानुसार अधिकारों के अनुपात में इस प्रकार संशोधन होना चाहिए—हिन्दू ४० प्रतिशत, शिया २० प्रतिशत और सुन्नी २० प्रतिशत।

अभी हाल में अखिल भारतीय शिया राजनीतिक सम्मेलन के सेक्रेटरी मिर्जा जफरहुसेन का जो वक्तव्य निकला है वह और भी जोरदार है। उन्होंने शिया-सम्प्रदाय के लिए एक 'शियास्तान' की माँग की है और उसके लिए यह दलील पेश की है कि शिया लोगों की संख्या सिक्खों से अधिक है, अतः जब 'सिक्खस्तान' का निर्माण सम्भव है, तो कोई कारण नहीं कि 'शियास्तान' का निर्माण न हो सके।

अब मि० जिन्ना ही बतायें कि क्या वे 'शियास्तान' बनाये जाने की माँग को मानने के लिए तैयार हैं, या नहीं? यदि हैं तो वे आज तक मुस्लिम-लीग के एक-मात्र मुस्लिम-प्रतिनिधि-संस्था होने की जो आवाजें लगा रहे थे, क्या वह केवल दिखावा-मात्र था? और यदि 'शियास्तान' उन्हें मान्य नहीं तो फिर आत्म-नि उन्हीं सिद्धान्तों द्वारा निर्मित 'पाकि ही कैसे मान्य हो सकता है?

१८७ ए०, रोशन बाग,
प्रयाग

—विश्वना
'विश

फ़िल्मी-गाने

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना तो "फिल्म सङ्गीत" मँगाइये। अ ९ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्ये में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी लिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभा डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)। पता—संगीत कार्यालय, हाथरस यू

छमाही व्याज
~घर बैठे लीजिए

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) भी वैसी ही अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है और इस समय बड़ी और छोटी दोनों तरह की रक़में लगाने के लिए सब से अच्छी मद है। **जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।**

इस ऋण की ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत है और गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। अगर इससे पहले आप नक़द रक़म प्राप्त करना चाहें, तो इस ऋण को हर समय मार्केट में बेच सकते है।

व्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम-टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को चुका दिया जायगा और सरकारी चेक आपके घर पर पहुँच जाया करेगा। इसे आप साधारण चेक की भाँति भुना सकेंगे। आपको यह संतोष भी प्राप्त होगा कि आप हिन्दुस्तान की सहायता कर रहे हैं, क़ीमतों को घटा रहे हैं और अच्छा व्याज भी पा रहे है।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

AAA 224 H

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

ाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

शारी, मनोरंजक और रोचक—

(गताङ्क के आगे)

भई, हमने अपना मुँह सी लिया है, अब नहीं

को तोड़-मोड़कर फेंक दिया, और कहा— परिचय के लिए आवे तो आप लोगों के यह

राजकुमारी के पास आया और बोला— बहिन हो, इसलिए, भई 'आप आइए' ऐसा दोनों क्या कहती हो ?

ने हँसकर सिर लचा लिया। सुरेश ने कहा— बहुत अच्छा है। राजकुमारी लज्जा से सिर

—देखो भाई पहचान लो। हमारा नाम सुरेश है हरीश। यह हैं हमारे साले—अर्थात्, यह —हमारी धर्म-पत्नी जी के छोटे भाई हैं।

साथ ही एक हास्य-ध्वनि उठी।

(५)

—जहाँ बुड्ढे बुड्ढियाँ नहीं हैं, हास्य की परिपूर्ण है। इसके अतिरिक्त उस दीप्ति के असीम प्राचुर्य है। सभी ओर आनन्द होता है मानो महामाया रचित कोई

—देखो भाई पहचान लो। हमारा नाम सुरेश है और

राजकुमारी को, केवल, बचपन में पढ़े हुए इन्द्रप्रस्थ पुरी की कथा, मयदानव के भित्तियों की कथा ही याद आ रही थी। इस घर के स्वामी कोई दुर्योधन नहीं हैं! का बनाया हुआ है। अतएव वैसी घटना सकती। यह जानकर भी वह चकित थी। यह मनुष्य के बनाये हैं और दूसरी बिजली बनाये हैं, किन्तु दोनों में कितना भेद है! को अपने कमरे में बिठाकर किसी कार्य विस्मय-विमूढ़ होकर शहर के आश्चर्य- रही थी।

क्यों, जड़भरत की भाँति विस्मित फिरो, देखो-भालो, बैठे बैठे क्या करती

वह उठकर कहाँ जाय, क्या देखे, अवाक् होकर लक्ष्मी के मुख की ओर देखती रह गई।

लक्ष्मी ने कहा—क्या नहाओ धोओगी नहीं? तो रहने दो, जाओ हाथ ही मुँह धो लो। जाओ।....लेकिन भई तुम्हारा बहनोई भी धन्य है, लड़के को भी नहीं भेज सका। तुम्हारी माँ भी इसी से नहीं आईं। हमने तो तुमको छीन लिया है, नहीं तो वह तुमको छोड़ता नहीं। पकड़ ले जाता। लल्लू के लिए राजकुमारी का मन जाने कैसा हो रहा था। उसे यदि यहाँ ला सकती तो अच्छा होता। राजकुमारी ने कहा—आप नहीं जानतीं वहाँ कितना डरते हुए रहना पड़ता है।

लक्ष्मी ने कहा—कल सवेरे हम जगन काका को भेजेंगी। वह भी इसी ज़िले के आदमी हैं। मैं भी इसी ज़िले की लड़की हूँ। तुम्हारे बहनोई के हाथ से लड़के को बचाना ही है। देखूँ कैसे क्या होता है?

राजकुमारी चुप थी।

लक्ष्मी ने कहा—चलो घर बार दिखा लावें। तुम को हम छोड़ेंगी नहीं। अगर कहीं भेजेंगी तो उस घर में नहीं वरन् तुम्हारे वर के घर में एक दम भेजेंगी। क्यों?.....

राजकुमारी ने लज्जा से गर्दन झुका ली। लक्ष्मी उसे घर-बार दिखाने घसीट ले चली।

बँगले के कमरे में इज़ीचेअर (आरामकुर्सी) पर, पैर फैलाए हरीश पड़ा था। कमरा बिजली के प्रकाश से जगमगा रहा था। राजकुमारी हरीश को देखकर सकुचाई। लक्ष्मी ने कहा—अह, हा, यह हमारे भाई हैं। इसने तुम्हारे प्राण बचाए हैं। संकोच किस बात का?

यह बात सुनते ही राजकुमारी की आँखों के सामने मानो पृथ्वी फोड़कर मृत्यु का अंधकार धुएँ के रूप में छा गया। उसका हृदय काँप उठा।

लक्ष्मी ने कहा—क्यों, क्यों, आओ।

सुसज्जित कमरे में एक किनारे एक पलंग पड़ा था। उस पर मोटे गद्दे पर स्वच्छ चादर बिछी थी, तकिए रक्खे थे, मसहरी लगी हुई थी। हवा से चवँर जैसी झालर हिल रही थी। एक ओर सुन्दर टेबुल था; सामने पैड मुड़ी हुई आर्मचेअर थी। मेज़ पर काग़ज़ पत्र, पैड और फाउन्टेनपेन रक्खे हुए थे। बीचो-बीच कमरे में एक छोटी मेज़ पर सुन्दर फूलों के गुलदस्ते सजे हुए थे। एक ओर शृंगारदान लगा था। पास ही बड़ी-बड़ी शीशे की आलमारियाँ रक्खी हुई थीं। भीतों पर लगे चित्रों को राजकुमारी देखने लगी। तन्द्रामग्न-सी आँखों को फिराया तो सामने हरीश को देखा, उसकी दोनों आँखें बन्द-सी हो गईं। सोचने लगी—यही वह स्निग्ध दृष्टि है जो घाट पर मुझ डूबती हुई पर पड़ी थी और मरण मार्ग से यहाँ खींच लाई। मानो इसी दृष्टि ने कहा था—जगती जीवन का स्थान है। मरण का नहीं। तब मैं क्यों मरूँ? और दूसरों के पीछे!

मेज़ का एक खाना खींचकर लक्ष्मी ने कई हाड़ निकाले; और कहा—देखती हो, राजकुमारी? अरे बाप!

राजकुमारी ने कहा—यह तो मुर्दे के हाड़ हैं?

हाँ हाँ, छुआ दूँ तुम्हें?

राजकुमारी हँसी—कैसी बच्चों की सी सरलता। कैसा आनन्द है! अपना भूला हुआ बचपन उसकी आँखों के सामने झूल गया। ऐसी ही हँसी थी, ऐसा ही खेल था। किन्तु हाय आज!....वह सब कहाँ है?

राजकुमारी ने कहा—इन हाड़ों से क्या होता है?

लक्ष्मी—हरीश लखनऊ में डाक्टरी पढ़ता है न, सारी पढ़ाई इन्हीं हाड़ों से होती है। मनुष्य के कहाँ कौन हाड़ है....बड़े मज़े की बात है। हम खूब इन्हें दिक्क करती हैं कि अपनी विद्या तनिक हमें भी पढ़ा दो। हरीश को निद्रा-मग्न देखकर—ऐं, दुष्ट! यह सई साँझ सोने का समय है कि आँखें मूँदकर हम लोगों को बहका रहा है, सुनता नहीं!

लक्ष्मी ने हाथ पकड़कर हरीश को धक्का दिया। उसने आँखें मलते हुए कहा—क्या है दीदी? किन्तु राजकुमारी पर दृष्टि पड़ते ही वह सँभलकर बैठ गया।

लक्ष्मी ने कहा—अरे भई यह हाड़ कहाँ के हैं? हाथ के या पैर के?

बक तो चुका हूँ। तुम्हीं बताओ?

डिग्री तथा डिप्लोमा प्राप्त कीजिये
मिडिकल, इञ्जीनियरिंग, ला, बी० ए०, एम० ए०, पी० यच० डी० इत्यादि की डिग्री नाममात्र की फीस पर देशी तथा विदेशी यूनिवर्सिटी से प्राप्त करें। प्रास्पेक्टस के लिए लिखें।
भारत कम्पनी, शिकोहाबाद, यू० पी०।

पेट की सफ़ाई स्वास्थ्य का प्रारम्भिक नियम है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

ATKINSONS
* * *
सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

AHO-1-215 HI
J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

लक्ष्मी—स्मरण नहीं आता।

हरीश—जाओ तो नम्बरों की जगह तुम्हें शून्य मिलें।

लक्ष्मी—जैसा मास्टर वैसी विद्या।

हरीश हँसा। उसने कहा—थोड़े समय में तो सीखने की यह विद्या है नहीं। हुँ!

लक्ष्मी ने कहा—आओ राजकुमारी इसी बिछौने पर बैठो आकर, आज इन्हें सोने नहीं देंगे।

हरीश ने कहा—हाँ भई, लोग सच कहते हैं कि ब्याह होने के बाद लड़की पराये घर की हो जाती है। फिर बहन का भाई का कौन मोह! और सब कोई आनन्द से सो रहा होगा, हमारे लिए ही मनाही है।

लक्ष्मी ने चिढ़कर कहा—अरी मेरी माँ। सुनती हो राजकुमारी? जिसके सोने के लिए कहा जा रहा है वह तो रस्सी तुड़ाकर, जैसे बैल भागता है, अपन मुवक्किलों के पास जाकर बैठा है। अपने भाई से ही बातचीत करने के लिए आई हूँ और भाई ही यह मिथ्या दोषारोपण करता है। देखा है तुमने ऐसा दुष्ट भाई कहीं?

हरीश ने तपाक से कहा—देखी है ऐसी बहिन कहीं? कि हमारे पिता ने जिसके लिए घर पानी कर दिया उसे पशु बतायें।

लक्ष्मी ने कहा—सब कोई अपना नित्य दर्पण में मुख देखता है। जो [illegible] होगा?

हरीश ने कहा—जाने भी दो यह जूलाँजी (जन्तु विज्ञान) की बातें। आप यहाँ क्यों आई हुई हैं, यह तो बताइए?

क्यों आई हैं? घर में एक नया अतिथि आया है, उससे न कोई बात करता है न कोई चीत करता है। एक एक कोने में सब पड़े हैं। आगन्तुक क्या सोचेगा!

इस बात पर हरीश ने राजकुमारी की ओर देखा। देखते ही दोनों आँखें बन्द-सी हो गईं। जो बोलना चाहता था बोल न सका।

लक्ष्मी इस ओर लक्ष्य करके हँसी और बोली—वाह, भाई तुमने तो ऐसा भाव बनाया जैसे ब्याह के समय वर अपने मुख का बनाता है।

हरीश ने बात काटते हुए कहा—ठहरो, ठहरो। इस प्रकार विवेकहीन क्यों हुई जाती हो? पागल हो क्या? किसी को बुलाकर अपमान करती हो क्या? छिः छिः, जैसे वयस बढ़ रही है वैसे वैसे बचपन भी बढ़ता जाता है?....तुमको ऊँच-नीच का कुछ ध्यान नहीं है, दीदी। क्रमशः

बहुत से लोगों को व्यापार करने का अच्छा मौका मिलने पर हाथ मल कर यह कहना पड़ता है

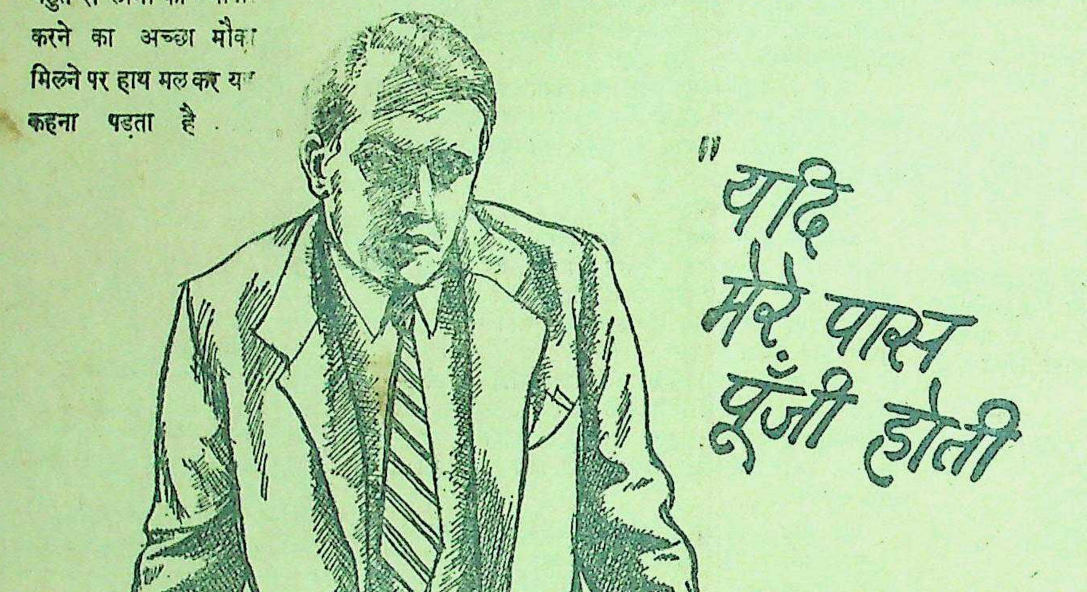
"यदि मेरे पास पूँजी होती

जब पूँजी के अभाव में अनुभव और योग्यता व्यर्थ हो जाती है—जब किसी व्यक्ति को केवल इसलिए नौकरी करनी पड़ती है कि व्यापार के लिए पास में पैसा नहीं—तो उसे जीवन का सब से कटु अनुभव होता है। किन्तु जो लोग बुद्धिमान है और जिन्होंने भविष्य के लिए रुपया बचाया है, उन्हें ऐसी परिस्थिति का सामना कम करना पड़ता है। उनकी बुद्धि तथा अनुभव से मिल कर उनके हाथ का पैसा सोने पर सुहागे का काम करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने आने या १ रुपये स्टाम्प सरकार द्वारा मिकृत किसी एजेण्ट वा सेविंग्स ब्यूरो या खाने से खरीद ते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।

★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।

★ जमा हुए ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

क्या आज से बारह वर्ष बाद आपकी भी आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि ऐसे अवसरों से लाभ उठा सकें? बेशक हो सकती है, यदि आप अपनी बचत की रक़म को नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगाने का आज ही निश्चय कर लें, जो सुरक्षित हैं और साथ ही जिनमें बहुत अच्छा ब्याज भी मिलता है। अभी बुद्धिमानी से काम [illegible] और अपने भविष्य को सुरक्षित [illegible]।

AAA 120 B.

सौन्दर्य और प्रेम की कवि
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्द
की तड़पन तथा शैली की गीति
अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है।
शब्दों में उर्दू की-सी मादकता
श्रेय 'अंचल' को ही है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

स्टैनिस्ट्रीट
(कंसिंटेटेड)
चिकेन
एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है
विदेशी चिकेन एसेन्सों के
नाइट्रोजेन इसमें मौजूद है।
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं. लि
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर

अब
मिलती
कन्ट्रोल भ
पर

No 712
EVEREADY
2 CELL
EXTRA
LONG LIFE
BATTERY

नं ७
एवरेडी
बम्बई, कलकत्ता,
कोचीन, देहली
कराची में पर
रु. ०-४-
दुसरी जगह रु.
ज्यादा
मत

BBS 60/5

EVEREAD

NATIONAL CARBON CO. (INDIA)
Calcutta, Bombay, Madras,
Delhi and Karachi.

शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में प्रबन्धक सहकारियों की
शीघ्र आवश्यकता है

शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में नान-कमीशण्ड अफ़सरों की एक नई शाखा खोली गई है। इस शाखा में भरती होकर युवक से व्यक्ति अच्छी ट्रेनिंग और अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, जो लड़ाई के बाद नागरिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें पूरी तरह तैयार कर देगा। आर० आई० ए० एफ० (शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े) के एड्मिन्सट्रेटिव असिस्टेण्टों (प्रबन्धक सहकारियों) के ज़िम्मे यह महत्वपूर्ण काम होगा कि हिन्दुस्तानी हवाबाज़ों की भलाई और प्रबन्ध संबंधी कार्यों में कमाण्डिङ्ग अफ़सरों को सहायता पहुँचावेंगे। जो लोग लड़ाई के बाद हवाई बेड़े में न रहें उन्हें दूसरी सरकारी नौकरियां पाने का बहुत अच्छा मौक़ा मिलेगा, क्योंकि सरकार ने यह निश्चय किया है कि सरकारी नौकरियों की एक बड़ी तादाद उन लोगों के लिए ख़ाली रखी जायगी जो आजकल फ़ौजी नौकरी में हैं।

योग्यता

शिक्षा: कम से कम किसी विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट होना चाहिए। उम्र: २० से ३८ साल। तन्दुरुस्ती: डाक्टरी जांच में तन्दुरुस्त और बीमारियों से बरी। ओहदा: उम्मीदवारों को एअरक्रैफ्टमैन सेकेण्ड क्लास के ओहदे पर भरती किया जायगा और ट्रेनिंग के लिए जाने पर ऐक्टिंग सार्जेण्ट (...) के ओहदे पर तरक्क़ी हो जायगी। तनख़ाह: ऐक्टिंग सार्जेण्ट (पेड)-११५ रु० माहवार। फ्लाइट सार्जेण्ट-१३० रु० माहवार। वारण्ट आफिसर-२०० रु० माहवार। रियायतें: एड्मिन्सट्रेटिव असिस्टेण्ट को मुफ़्त में भोजन, कपड़ा, रहने की जगह, चिकित्सा और दांत के इलाज की सुविधायें तथा वे सब सुविधायें और रियायतें मिलती हैं जिनके पाने का अधिकार शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के दूसरे फ़ौजी कर्मचारियों को होता है।

दरख़्वास्त देने का तरीक़ा

अपने पास के भरती-दफ़्तर को लिखिए या खुद जाकर मिलिए। जिनकी सूची नीचे दी जाती है:—

लखनऊ—(ई० क्वा०) ईस्टर्न एरिया, हजरतगंज।
...—३२, विश्वेश्वरनाथ रोड।
...—...हे होस्टल, ड्रमन्ड रोड।
...—१८, कैनिङ्ग रोड।

AAA 1491

जिस्मानी व दिमाग़ी त...
बढ़ाने के लि...
...

डॉ. गौतमराव केशव टॉनि...

इलाहाबाद क एजन्ट—बलदे...
एल० एस० धौलकि...

...OOT
...RATED
...WEEKLY
... 2 ANNAS
...st July, 1945

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक-माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका	घुंघुरा
महायुद्ध में अपनी बीती	वर्तीमाला

आधुनिक-उपन्यास

नरक	नया क़दम
आरती	त्याग का मूल्य
रूपान्तर	बहूरानी की हाट
जमींदार	देहाती समाज
अग्रणी	साथी
निष्कलंकिनी	अरक्षणीया
...न-नगीने	पत्नी

रहस्य-रोमांच

...पा महल	लाल दूत
...ीन के पुर्जे	घर का भेदिया
...डा डाकू	समस्या
...हान् अपराधी	जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर	

स्वस्थ जीवन के संकेत ३

प्राय: देखा गया है कि हम लोक स... वधानी के कारण समय पर चिकित... बहुधा ज़ान तक से हाथ धोना प... रहते खांसी की उचित चिकित्सा ... ग्लायकोडिन टर्प वसाका खांसी ... सैंकड़ो अनुभवी डाक्टरों ने इस की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की है। यह रोग के मूल तक पहूँच कर भयानक से भयानक खांसी को भी कुछ ही दिनों में शर्तिया आराम करता है।

स्नायु-सम्बन्धी असाध्य खांसी में डाक्टरों से राय लें।

ग्लाइकोडिन टर्प-वसाका

शान्तिदायक तथा खांसी को नष्ट करती है।

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

अलेम्बिक केमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड, बरोदा

...-निबन्धावली—लेखक, महापंडित राहुल सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल जी के ...-सम्बन्धी तथा साहित्यिक और दार्शनिक निबन्धों का संग्रह किया गया है। इसमें कुल ... निबन्ध हैं और राहुल जी ने देश और ... के कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

हरी **ला दीदी**—एक सौतेली बहन माता पिता से विहीन
लक्ष्मी- किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती
हरीश ह का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है।
यह विद्या है नल्पया।
लक्ष्मी ने क **कडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद**
आकर, आज इन्हें

हरीश ने कहा—
के बाद लड़की पराये घर
का कौन मोह! और सब क
लिए ही मनाही है।

लक्ष्मी ने चिढ़कर कहा—अ
कुमारी? जिसके सोने के लिए क
तुड़ाकर, जैसे बैल भागता है, अपन
बैठा है। अपने भाई से ही बातर्च
और भाई ही यह मिथ्या दोषारोप
ऐसा दुष्ट भाई कहीं?

हरीश ने तपाक से कहा—देखी
हमारे पिता ने जिसके लिए घर पानी क

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर और सजीव चित्र है। मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज का कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

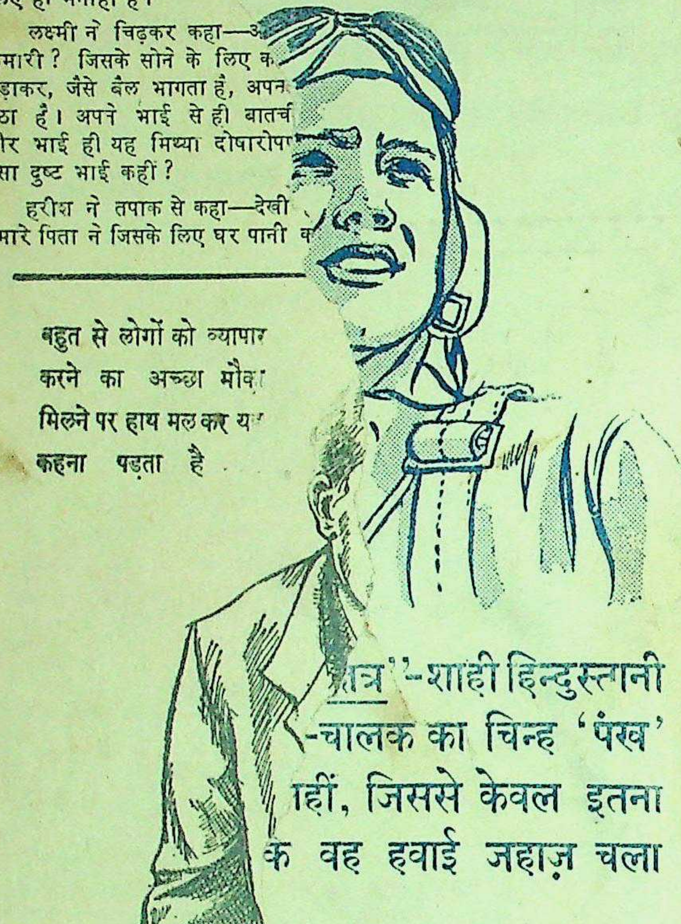

बहुत से लोगों को व्यापार
करने का अच्छा मौक
मिलने पर हाथ मल कर य
कहना पड़ता है

त्र"-शाही हिन्दुस्तानी
-चालक का चिन्ह 'पंख'
हीं, जिससे केवल इतना
क वह हवाई जहाज़ चला

विक श्रेष्ठता उस सब से
गुण के कारण है जिसे
क्रम के नाम से पुकारते हैं।

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ दीजिए जिसका सबूत वह दे चुका है; उस कार्य के मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार कीजिए जिसे वह आजकल कर रहा है; और यह भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने देश के और स्वयं अपने भावी हित की नींव डाल रहा है। तब आपको पता लग जायगा कि हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दीप्तिमान नक्षत्र वही है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

AAA 82

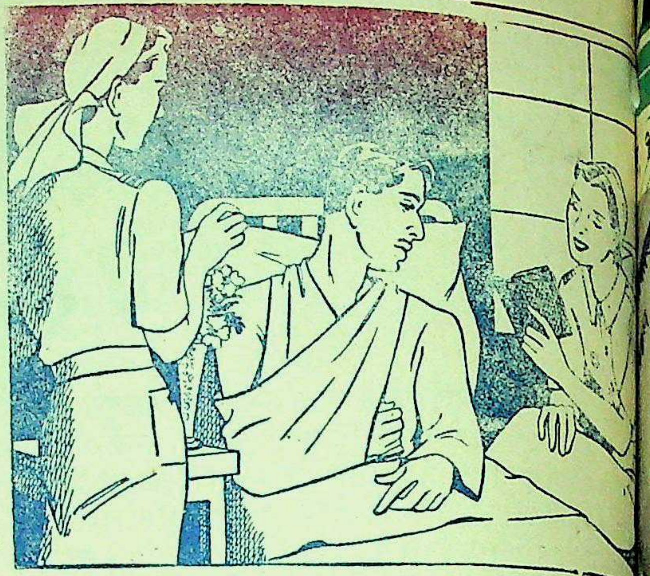

नर्स की वर्दी नारी के लि
सबसे अधिक गौरवपूर्ण है

नारी होने की हैसियत से आज आपका स्थान हिन्दुस्तान के घायल सैनिकों के बीच होना चाहिए—आपको अपनी चातुरी तथा हृदय की कोमलता द्वारा कष्ट-निवारण एवम् प्राण-रक्षा के कार्य में लग जाना चाहिए।

हिन्दुस्तान की आगज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए० एन० एस०) की सफ़ेद वर्दी धारण करना बहुत गौरव की बात है। नर्स का कार्य मानव समाज की सर्वोत्तम सेवा है और इसके द्वारा आपको अपूर्व आनन्द प्राप्त होगा। इस समय आपके सहयोग की आवश्यकता है। शीघ्र ही भरती हो जाइए!

युद्ध-कार्य में सहायता पहुँचाने के साथ साथ इससे एक और लाभ होगा। ए० एन० एस० में आपको उच्च कोटि की जो ट्रेनिङ्ग मिलेगी उसके आधार पर यदि आप चाहें तो युद्ध के पश्चात् शहरी क्षेत्र में स्वतन्त्र रूप से यह सम्मानपूर्ण कार्य कर सकती हैं। इसके अतिरि जिन स्त्रियों को गृहस्थी संभालनी है अथवा सामाजिक सेवा के क्षेत्र में प्रवेश करना है उनके लिए यह चिकित्सा सम्बन्धी अनुभव बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है:—(१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक। (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१२५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ़्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही डयूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

पूरे विवरण के लिए
आज ही अपने क्षेत्र की
सुपरिण्टेण्डेण्ट, सेण्ट
एम्बुलेन्स अथवा डाइरे
जनरल, इण्डियन मेडि
सर्विस, नई दिल्ली को लि

a·n·s

आगज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्वि

महिलाओं के लिए स
अधिक सम्मानपूर्ण का

AAA

इया की संदेशवा

क मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१ जुलाई, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 1st July, 1945

सरस्वती-सिरीज़

अपने ढंग की अनोखी पुस्तक माला है। क्या विषय और क्या रोचकता, सभी दृष्टियों से इस माला की पुस्तकें अनमोल हैं।

विश्व-उपन्यास-माला

अभिसारिका
महायुद्ध में अपनी बीती
घुसुना
धरतीमाता

आधुनिक-उपन्यास

नरक
आरती
रूपान्तर
जमींदार
अग्रणी
निष्कलंकिनी
तीन-नगीने
नया क़दम
त्याग का मूल्य
बहूरानी की हाट
देहाती समाज
साथी
अरक्षणीया
पत्नी

रहस्य-रोमांच

छिपा महल
मशीन के पुर्जे
झंडा डाकू
महान् अपराधी
लाल दूत
घर का भेदिया
समस्या
जीवन-ज्योति
अनन्त की ओर

कहानी-संग्रह

नीम चमेली
पूर्व के पुराने हीरे
रवीन्द्रनाथ की चुनी हुई कहानियाँ
यूरप की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ
पश्चिम की चुनी हुई कहानियाँ

हिन्दी-साहित्य

हिन्दी के निर्माता
[illegible]-संदर्भ
हिन्दी के वैष्णव कवि

प्रत्येक का मूल्य ॥=) है।

हिन्दी साहित्य—यह हिन्दी साहित्य का परिवर्द्धित और परिमार्जित संस्करण है। पहले की दो आवृत्तियों में यह हिन्दी भाषा और साहित्य के नाम से प्रकाशित हुआ था, किन्तु अब इसे स्वतन्त्र रूप में प्रकाशित किया गया है। कवियों के विषय में जो नये अनुसंधान हुए हैं उन सबका इसमें समावेश हो गया है। साहित्यिक स्थिति के वर्णन में भी आवश्यक परिवर्तन किये गये हैं। हिन्दी साहित्य के प्रत्येक विद्यार्थी को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ४) चार रुपये।

राष्ट्रों की स्वतन्त्रता क्यों?
जवाहरलाल नेहरू आ गये।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

लार्ड वैवेल का प्रस्ताव कैसा है?
हार्स पावर—क्या वह कलंकिनी थी?

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सबको बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में प्रबन्धक सहकारियों की

शीघ्र आवश्यकता है

शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में नान-कमीशण्ड अफ़सरों की एक नई शाखा खोली गई है। इस शाखा में भरती होकर बहुत से व्यक्ति अच्छी ट्रेनिंग और अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, जो लड़ाई के बाद नागरिक जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें पूरी तरह तैयार कर देगा। आर० आई० ए० एफ० (शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े) के एड्मिन्सट्रेटिव असिस्टेण्टों (प्रबन्धक सहकारियों) के ज़िम्मे यह महत्वपूर्ण काम होगा कि हिन्दुस्तानी हवाबाज़ों की भलाई और प्रबन्ध संबंधी कार्यों में वे कमाण्डिङ्ग अफ़सरों को सहायता पहुँचावेंगे। जो लोग लड़ाई के बाद हवाई बेड़े में न रहें उन्हें दूसरी सरकारी नौकरियां पाने का बहुत अच्छा मौक़ा मिलेगा, क्योंकि सरकार ने यह ज़िम्मा लिया है कि सरकारी नौकरियों की एक बड़ी तादाद उन लोगों के लिए ख़ाली रखी जायगी जो आजकल फ़ौजी नौकरी में हैं।

योग्यता

शिक्षा : कम से कम किसी विश्वविद्यालय का ग्रेजुएट होना चाहिए। उम्र : २० से ३८ साल। तन्दुरुस्ती : डाक्टरी लिहाज से तन्दुरुस्त और बीमारियों से बरी। ओहदा : उम्मीदवारों को एअरक्राफ्टमैन सेकेण्ड क्लास के ओहदे पर भरती किया जायगा और ट्रेनिंग के लिए जाने पर ऐक्टिंग सार्जण्ट (पेड) के ओहदे पर तरक्क़ी हो जायगी। तनख़ाह : ऐक्टिंग सार्जण्ट (पेड)-११५ रु० माहवार। फ्लाइट सार्जण्ट-१३० रुपये माहवार। वारण्ट आफ़िसर-२०० रु० माहवार। रियायतें : ऐडमिन्सट्रेटिव असिस्टेण्ट को मुफ़्त में भोजन, कपड़ा, रहने की जगह, चिकित्सा और दांत के इलाज की सुविधायें तथा वे सब भत्ते और रियायतें मिलती हैं जिनके पाने का अधिकार शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के दूसरे फ़ौजी कर्मचारियों को होता है।

दरख़्वास्त देने का तरीक़ा

अपने पास के भरती-दफ़्तर को लिखिए या ख़ुद जाकर मिलिए। इनकी सूची नीचे दी जाती है :—

लखनऊ—(हे० क्वा०) ईस्टर्न एरिया, हजरतगंज।
लखनऊ—३६, विश्वेश्वरनाथ रोड।
आगरा—हन्टले होस्टल, ड्रमन्ड रोड।
इलाहाबाद—१८, कैनिङ्ग रोड।

AAA 1491

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

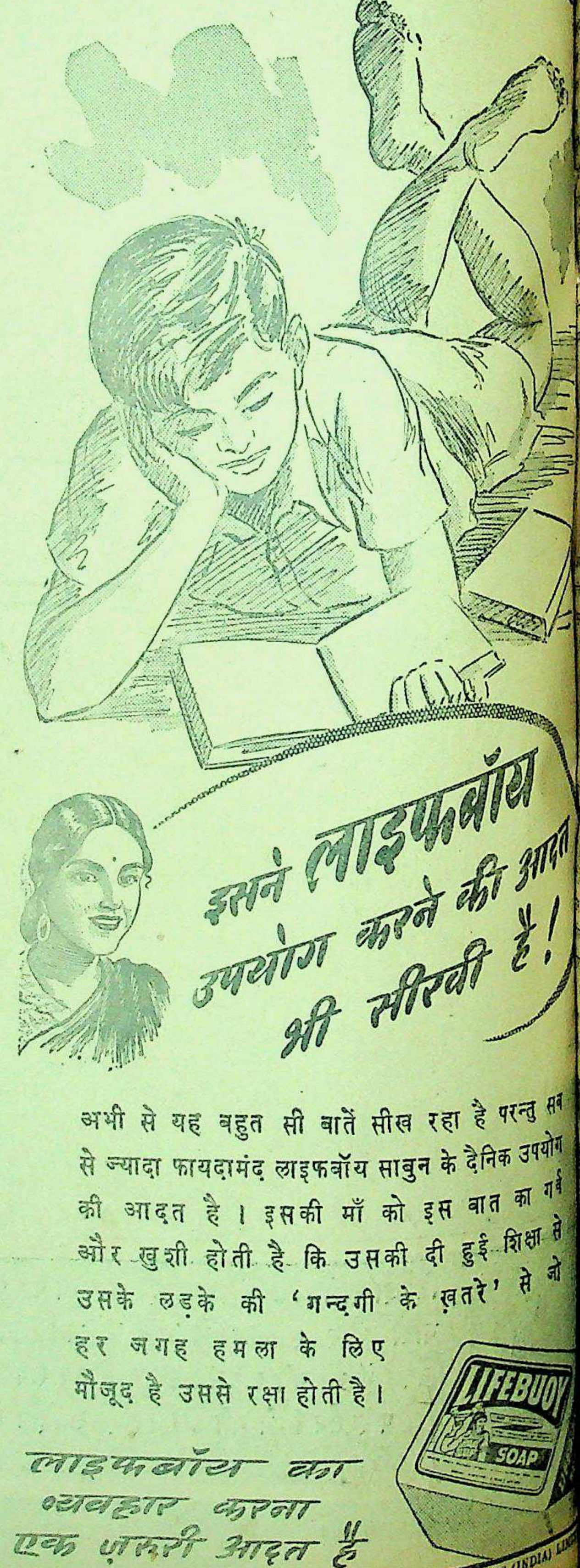
इसने लाइफ़बॉय उपयोग करने की आदत भी सीखी है!
LIFEBUOY
SOAP
लाइफ़बॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

अभी से यह बहुत सी बातें सीख रहा है परन्तु सब से ज्यादा फायदामंद लाइफबॉय साबुन के दैनिक उपयोग की आदत है। इसकी माँ को इस बात का गर्व और खुशी होती है कि उसकी दी हुई शिक्षा से जो उसके लड़के की 'गन्दगी के ख़तरे' से जो हर जगह हमला के लिए मौजूद है उससे रक्षा होती है।

L. 77-169 HI
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

खा
र। साथ
परिपूर्ण।
क गई।
इस अंक
टेड, प्रयाग
हे परन्तु सब
दैनिक उपयोग
ात का गर्व
ई शिक्षा से
रे' से जो
LIFEBUOY
SOAP
HERS (INDIA) LIM

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

वर्ष ७ संख्या ४४]

[रविवार, १ जुलाई, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

[illegible] में दाँवपेंच भी एक अजीबो- [illegible] है। ब्रिटिश दाँवपेंच सारी [illegible] नाम है। इसी दाँवपेंच के [illegible] प्रस्ताव की मरम्मत हुई [illegible] दाँवपेंच की बदौलत मिस्टर [illegible] भारतवर्ष को स्वाधीनता [illegible]। इसी दाँवपेंच के कारण [illegible] महान योरोपीय युद्ध [illegible] अपने अपने दाँव-पेंच में [illegible] दुनिया के राष्ट्र लगे हुए हैं। [illegible] दाँव-पेंच में मस्त है। [illegible] आर्थिक बागडोर अपने [illegible] चाहता है, ब्रिटेन अपने [illegible] लगा रहता है, नहीं [illegible] राष्ट्र के विरुद्ध लेबनान [illegible] मामले में वह उसका पक्ष [illegible] भी अपने दाँव-पेंच में [illegible] हैं। वह भी अमरीका [illegible] दाँवपेंच को देखते हुए [illegible] हो रहा है।

*

[illegible] सम्मेलन समाप्त हो [illegible] महान राष्ट्रों ने [illegible] कोई कसर नहीं [illegible] बदौलत अब [illegible] पुनर्निर्माण होने जा [illegible] महान् राष्ट्रों ने—— [illegible] रूस, चीन और फ्रांस—— [illegible] बदौलत इस प्रकार के [illegible] है कि नये बननेवाले [illegible] ईश्वर ने चाहा तो वही [illegible] कि पिछले राष्ट्रसंघ की [illegible] महान राष्ट्रों ने अपने- [illegible] संसार के उद्धार करने [illegible] बनाई है वह भी रहस्यों से [illegible]। सभी ने अपने बचाव के [illegible] लगा दिये हैं। उसमें से एक [illegible] इन पंचों की पंचायत में [illegible] किसी को भी आपत्ति होगी [illegible] कोई विचार विनिमय न [illegible] दाँवपेंच ही की बदौलत आपसी [illegible] के लिये लोप हो गई। भला [illegible] राष्ट्र है जो अपने स्वार्थ को [illegible]? बहुमत के निर्णय का [illegible] दिया गया है। रहे छोटे-छोटे राष्ट्र, एक तो इनके दाँव-पेंच की यों भी कोई परवाह नहीं करता दूसरे पंचों की दाँवपेंच के आगे उनकी क्या पूछ हो सकती है?

[illegible] की सेना मार्शल टीटो जिसका [illegible] में हो गया है।

* * *

सबसे मज़ेदार दाँवपेंच चल रहे हैं भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में। आज कल भारतीय राजनैतिक अडंगे के हल के दाँव-पेंच ज़रा समझने लायक़ हैं। ब्रिटिश सरकार हमेशा से दाँवपेच वाली रही ही है। भारत की स्वाधीनता के संबंध में उसके दाँवपेंच न जाने कितने वर्षों से चल रहे हैं। उसका नारा अब तक यही रहा है कि भारतीय राजनैतिक दल स्वयं जब आपस में झगड़ते हैं तो उन्हें स्वाधीनता कैसे दी जा सकती है? यह भी एक प्रकार का दाँवपेंच ही था। मुसलिमलीग ऐसी संस्था जो भारत के दस करोड़ मुसलमानों के प्रतिनिधित्व का आज दावा करती है, वह भी ब्रिटिश दाँवपेंच की बदौलत। मुसलिमलीग काहे को राजी हो और काहे को भारत को स्वराज्य मिले। यही नहीं ब्रिटिश दाँवपेंच ने पाकिस्तान की उत्पत्ति भी की है। उसी दाँवपेंच का फल है कि हिन्दुस्तान को टुकड़ों में बाँटे जाने की तैयारी हो रही है। ब्रिटिश दाँवपेंचों की कृपा से आज भारत में राजनीतिक दलों के दलदल का प्रादुर्भाव हुआ है। और दलदल ऐसा तैसा नहीं, कोई वहाँ से उबरने वाला नहीं। क्योंकि उबरने की कुंजी ब्रिटिश सरकार सदा से अपने पास रखती है। क्रिप्स-प्रस्ताव भी इसी दलदल में पड़कर टापता ही रह गया।

* * *

अब फिर एक नया दाँवपेंच जारी हुआ है। वाइसराय लार्ड वेवेल ने बड़ी दौड़धूप के बाद भारत के लिये एक नई योजना सम्राट् की सरकार से स्वीकृत कराया है। क्योंकि भारतीय अडंगे को सुलझाये बिना तथा केन्द्रिय सरकार का भारतीय करण किये बिना जापान को हराया कैसे जा सकेगा? लार्ड वेवेल ने घोषणा की कि सवर्ण हिन्दुओं और मुसलमानों के बराबर के प्रतिनिधित्व से वाइसराय की कौंसिल का निर्माण होना चाहिए। केन्द्रिय असेम्बली में कांग्रेस दल के नेता श्री भूलाभाई ने नवाबजादा लियाकतअली-खां मुसलिमलीगी को मिलाया और खिचड़ी ठिकाने से पकने लगी और पकते-पकते इस हालत पर पहुँच गई कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी के नेता, जो तीन साल से जेलों में पड़े थे, छोड़ दिये गये और शिमला में नेताओं की कान्फ्रेंस बुलाई गई। ब्रिटिश दाँवपेंच साधारण नहीं होता। बड़ी दूर की कौड़ी लाने में यह संसार को चकमें में डालने में सफल रहा है। यह दांव पेंच ब्रिटिश दिमाग को उपज है। उन्होंने सोचा कि ऐसा कुछ कांड होना चाहिए कि भारतीय राजनैतिक दल स्वयं दाँवपेंचों के जाल में उलझ जायें और आनंदपूर्वक बैठकर स्वराज्य का तमाशा देखा जाय।

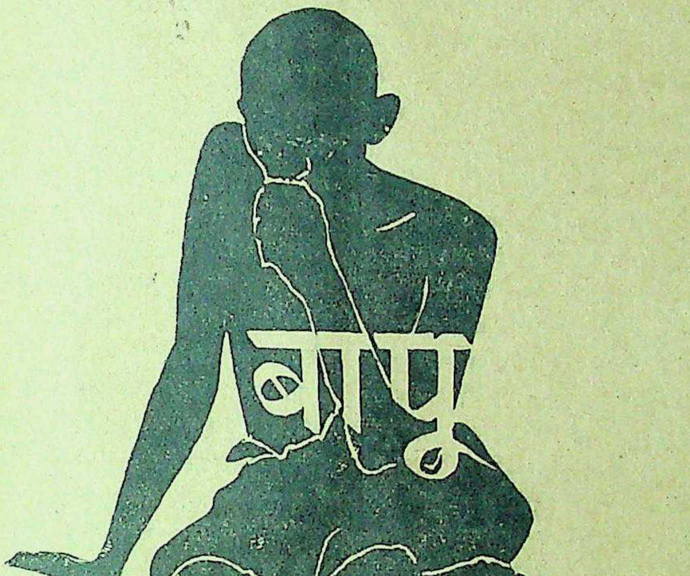

* * *

किन्तु महात्मा गांधी का दाँवपेंच भी कुछ ऐसा वैसा नहीं। उन्होंने सोचा बहुत ठीक। दाँवपेंच की काट दाँवपेंच से ही हो सकती है। गांधी जी ने पहले तो सरकार की अछूतों को हिन्दुओं से अलग करने की नीति का विरोध किया और एक ऐसा दाँव लगाया जो आज प्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे रहा है। शिमला कान्फ्रेंस में सवर्ण हिन्दुओं का प्रतिनिधित्व किया राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद ने। 'सवर्ण' [illegible] का खात्मा तो वहीं हो गया। अब चाहे लार्ड वेवेल अपनी निर्धारित योजना में कोई परिवर्तन करें या नहीं? मुसलिमलीग की ओर से मिस्टर जिन्ना और कांग्रेस की ओर से मौलाना आजाद——दोनों मुसलमान——वाइसराय की कार्यकारिणी के निर्माण में भाग ले रहे हैं। यह है दाँवपेंच और है पक्का गांधीवादी दाँवपेंच। कहाँ से कहाँ ले जाकर पटका। मुसलिम लीग और मिस्टर जिन्ना चकित हैं पर कर ही क्या सकते हैं? क्योंकि सामने उनके सर्वेसर्वा लार्ड वेवेल जो बैठे हैं। मज़ा यह है कि महात्मा गांधी स्वयं शिमला-सम्मेलन में शरीक नहीं हुए। यह नीति भी दाँवपेंच से खाली नहीं है। गांधी जी शिमला कान्फ्रेंस में शरीक न होंगे, इसका पता चला तब जब वह शिमला पहुँच गये। अगर मिस्टर जिन्ना को पहले से मालूम होता कि गांधी जी कान्फ्रेंस में शरीक न होंगे तो वह भी उनकी नकल करने पर उतारू होते किंतु सच तो यह है कि गांधी जी के दाँवपेंच के आगे मिस्टर जिन्ना अभी कच्चे ही नहीं निरे बच्चे भी हैं।

* * *

मुसलिम लीगर सच पूछा जाय तो दाँवपेंच वाले हैं ही नहीं। केवल एक मिस्टर जिन्ना हैं, वह अकेले कर ही क्या सकते हैं? बाक़ी मुसलिम लीग नवाबों और खानबहादुरों का जमघट है। एक तो वह ब्रिटिश दाँवपेंच में यों ही चक्कर काटते फिरते हैं फिर उन्हें भारतीय राजनीतिक दाँवपेंच और खासकर गांधीवादी दाँवपेंच समझने के लिए कम से कम दस बार जेलखाना काटना चाहिए। मुसलिम लीग और उसके सरगना लोग तो प्रसन्न हैं कि बैठे बैठाले क्या हिन्दू कामरेडों को पटकनी दिया। लड़ाई के शुरू में भी हमारी ही धूम रही और भारत के स्वराज्य में भी अब हम आधे के हक़दार बन बैठे हैं। किन्तु अभी तो शुरू के ही दाँवपेंच हैं, ज़रा आगे तो बढ़िये जनाब! वाइसराय की कार्यकारिणी का निर्माण तो होने दीजिए। शासन करना आसान नहीं है। अब मालूम होगा कि लीग के नेता दाँवपेंच जानते हैं या कांग्रेस के नेता। क्योंकि जो दाँवपेंच और चाणक्य की राजनीति न जानेगा वह शासन क्या करेगा पत्थर?

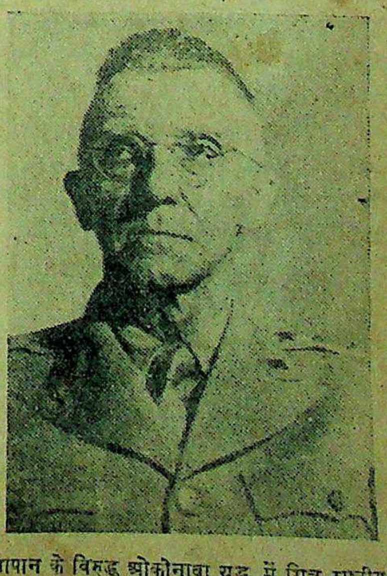

जापान के विरुद्ध ओकीनावा युद्ध में मित्र राष्ट्रीय प्रधान सेनापति जनरल स्टिलवेल।

सम्पादक का पृष्ठ

नई केन्द्रीय सरकार

पंडित जवाहरलाल नेहरू से एक पत्रकार ने प्रश्न किया कि जिस अनुपात में हिन्दू, मुसलमान तथा अल्प-संख्यक-दलों के प्रतिनिधियों द्वारा वाइसराय की कार्य-कारिणी का संगठन होने जा रहा है क्या उसका प्रभाव अन्य प्रान्तों के मंत्रि-मंडलों के संगठन पर भी पड़ेगा? पंडित नेहरू ने कहा कि केन्द्रिय सरकार में जैसी 'बेहूदगियाँ' होगी उसका प्रभाव सारे देश पर पड़ना अनिवार्य है। इसका यह स्पष्ट अर्थ है कि वेवेल-योजना के अनुसार ४०,४० और २० प्रतिशत के अनुपात से जो नया संगठन होने जा रहा है, वह न तो राष्ट्रीय दृष्टि से लाभदायक है और न बहुमत की दृष्टि से ही। इसका मूल कारण केवल यह है कि राष्ट्रीयता तथा साम्प्रदायिकता का गठबंधन। हम कह नहीं सकते कि वर्तमान योजना कार्य-रूप में परिणित होने के बाद कितनी सफलता प्राप्त करेगी, उससे देश में किस सीमा तक संयुक्त मोर्चा स्थापित होगा और एकता का मार्ग कहाँ तक प्रशस्त होगा, किन्तु अब तक मुसलिमलीग का जो रुख कांग्रेस के प्रति रहा है, उससे तो निराशा ही होती है। मुसलिम लीग सदा से पाकिस्तान के नाम पर देश के बँटवारे की माँग करती आई है। उसने अभी तक सम्पूर्ण देश की स्वाधीनता के सिद्धान्त को स्वीकार तक नहीं किया है और उसे सदैव कांग्रेस से खतरा बना रहा क्योंकि उसकी समझ में 'कांग्रेस' हिन्दू बहुमत का एक सामूहिक संगठन है। फिर हम कैसे विश्वास करें कि इस प्रकार की नई योजना के कार्यान्वित होने पर हमें वैसा ही फल मिलेगा जिसकी हम कल्पना ही नहीं सतत उद्योग भी करते आये हैं। हम संयुक्त मंत्रि-मंडल के विरुद्ध नहीं हैं, किन्तु इस प्रकार के संयुक्त मंत्रि-मंडल की स्थापना से क्या सचमुच लाभ होने की आशा की जानी चाहिए कि जहाँ भारतीय शासन विधान के बराबरी के तराजू पर तौले जाने की योजना बन गई है और भविष्य में देश के उद्धार की पूरी आशा भी बाँध ली गई है?

वाइसराय लार्ड वेवेल ने शिमला में होनेवाले नेता सम्मेलन में जो भाषण दिया है उससे उनके प्रति एक आकर्षण तो निश्चित रूप से उत्पन्न हो उठता है। उन्होंने बड़ी सहृदयता से योजना को स्वीकार कर लेने के लिए नेताओं से अपील की है, साथ ही यह भी आश्वासन दिया है कि इससे देश का भविष्य उज्ज्वल होगा और वह दिन शीघ्र आयेगा जब कि भारत भी ब्रिटिश साम्राज्य के स्वाधीन राष्ट्रों में गिना जायेगा। लार्ड वेवेल एक फौजी व्यक्ति हैं। कहा जाता है कि फौजी व्यक्ति बड़े भयंकर और कट्टर होते हैं किन्तु जैसी भी इस समय नीति दिखाई दे रही है, उसे देखते हुए उनकी प्रशंसा करनी ही पड़ती है। लार्ड लिनलिथगो ने भारतीय राजनीति में जिस प्रकार की क्षुब्धता उत्पन्न कर दी थी और क्रिप्स-प्रस्ताव की असफलता के बाद राष्ट्र की जैसी दुर्दशा हुई थी, उसका किसी न किसी रूप में लार्ड वेवेल शमन करने के लिए उद्यत हो गये हैं। उन्होंने पिछली बातें भूल जाने के लिए भी नेताओं से आग्रह किया है।

इस प्रकार लार्ड वेवेल की भावना में हमें कोई दुर्भावना नहीं जान पड़ती किन्तु एक दूसरी भावना स्वयं उत्पन्न होती है। अब तक कहा यह जाता रहा है कि भारत में एक तीसरी शक्ति (अँगरेज़) हिन्दू-मुसलमानों की एकता में अपने स्वार्थों के लिए बाधक है। इसके परिणाम स्वरूप ब्रिटिश नीति की छीछालेदर भी संसार में एक अर्से से हो रही है इसलिये हमारी समझ में इस नई योजना के कार्य रूप में परिणित हो जाने पर ब्रिटिश सरकार बहुत कुछ अपने को सुरक्षित बना लेगी। उसे शायद ही ऐसा अवसर आये जब कि उसे भारतीय दलों के मामले में बीच-बिचाव करने का अवसर आये। बराबरी के दावे वाले दल स्वयं बड़ी खूबी और शक्ति के साथ भिड़ते रहेंगे, क्योंकि उनके हाथ में शासन की बागडोर होगी। यदि एक दल के सामने राष्ट्र का स्वार्थ है तो दूसरे दल के सामने अपने सम्प्रदाय का। आखिर कब तक इस प्रकार के दो विभिन्न आदर्शों के संघर्ष को रोका जाता रहेगा? संघर्ष होता रहना अनिवार्य है साथ ही सारे देश में उसका व्यापक होना भी अनिवार्य है। इसलिए लार्ड वेवेल को छोड़कर कम से कम अँगरेज़ों की बुद्धि की प्रशंसा तो हमें करनी ही पड़ती है। आज की योजना के फल स्वरूप आनेवाले वर्षों में यदि साम्प्रदायिक भावनाओं का प्राबल्य हो तो आश्चर्य क्या है?

फिर भी हम शिमला सम्मेलन की सफलता के पक्षपाती हैं क्योंकि अब वह समय नहीं रहा कि संघर्ष और भारतीय राजनैतिक अड़ंगे का व्यापक प्रभाव बना रहे। इस प्रकार के संयुक्त मंत्रि-मंडल से दो लाभ तो तत्काल हो ही सकता है। आज अन्न और वस्त्र की जो त्राहि-त्राहि देश में मची है, उसका अंत तो किसी न किसी रूप में होगा ही। समस्त राजनैतिक बंदियों की रिहाई होगी। क्योंकि यदि सार्वजनिक शांति और परेशानी से जनता को न उबारा गया तो संयुक्त-मंत्रि-मंडल की लोकप्रियता पर पानी फिर जायेगा। यद्यपि ४०-४०, २० प्रतिशत के अनुपात के बटवारे की नीति से नेताओं में मतभेद है, और कई नेता तो इस प्रकार की एकता को एक धोखा भी समझते हैं, किन्तु कांग्रेस, राष्ट्र के नेताओं तथा महात्मा गांधी पर राष्ट्र का विश्वास है। इसलिए नई योजना के कार्यान्वित होने के परिणामों को ४० करोड़ जनता बड़ी आशा से देख रही है।

लक्ष्मणशक्ति—राजाराम श्रीवास्तव-द्वारा रचित एक खण्ड काव्य। इसकी कथा का आधार रामायण का युद्ध-कांड है जिसमें लक्ष्मण मूर्छित हो गये थे। भाषा सुलझी हुई और मुहाविरेदार है। मूल्य ।।।) बारह आने।

इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

'लालचूनर'

(आलोचना)

लेखक, डाक्टर रामकुमार वर्मा, एम० ए० पी० एच-डी०

'लालचूनर' सुप्रसिद्ध कवि अंचल की कविताओं का संग्रह है। आधुनिक हिन्दी
सुप्रसिद्ध रहस्यवादी कबि श्री रामकुमार वर्मा ने इस आलोचना में 'लालचूनर' की
प्रगति पर सुंदर तथा स्पष्ट प्रकाश डाला है। आलोचना अत्यन्त सुंदर और
है, इसलिये हिन्दी साहित्य के विद्यार्थियों के लिये पठनीय और विवेचनीय है।

'लालचूनर' अंचल की कविताओं का संग्रह है और मेरी प्रिय वस्तु है। लाल-किनारी से सजी हुई अंचल की यह 'लालचूनर' ७२ पृष्ठों की एक ललित पुस्तक हो गई है और लाल रेखाओं से सजी होने के कारण ही संभवतः इसके नाम की सार्थकता है क्योंकि इस पुस्तक को पढ़ने के बाद में भावना की दृष्टि से किसी विशेष निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका कि इसका नाम 'लालचूनर' क्यों होना चाहिए? संभव है कि इस संग्रह में नारी से संबंध रखनेवाली भावनाएँ विशेष रूप से स्थान पा सकी हैं और कविताओं में जीवन की क्रान्ति भावनाओं के क्षेत्र में स्थान-स्थान पर परिलक्षित हुई है, इसलिए पुस्तक यह नाम पाने की अधिकारिणी हो गई हो, किन्तु यदि मेरी व्यक्तिगत राय ली जाय तो मुझे यह नाम पसंद नहीं आया। समाज-शास्त्री और अन्तर्द्रष्टा कवि इन स्त्री-विषयक वस्तुओं की प्रदर्शिनी न सजाएँ तो अच्छा है लेकिन मैं अपनी सम्मति मनवाने का औचित्य किसी भी मित्र के सामने नहीं रखना चाहता। मैं अपनी जिज्ञासा को इसी बात से शान्त कर लेना चाहता हूँ कि संभव है रूसी सिद्धान्तवाद ने हमारे कवियों को लाल शब्द विशेष रूप से अंगीकार करा लिया हो अथवा कवि 'अंचल' के नाम के उपयुक्त 'लालचूनर' सर्वश्रेष्ठ नाम प्रतीत हुआ हो? मैं इस 'लालचूनर' की छवि आद्यन्त देख गया हूँ।

'लालचूनर' का भावना-क्षेत्र मेरे अत्यन्त निकट है और मैं इसके सौन्दर्य को अत्यन्त सूक्ष्म-दृष्टि से देख सकता हूँ। प्रकृति का शृङ्गार, नारी के अन्तर्जगत का भावना-सम्मत आरोहावरोह, विपन्न हृदय की अनिर्वचनीय उदासीनता, मधुमास की मदिर समीरण की आकांक्षा, पावस की संध्या, सत्य और स्वप्न की संघर्षमयी किरण और छाया जिनमें अंचल की कविताओं का सौन्दर्य विविध गतियों से स्पष्ट हुआ है पुस्तक की श्रीसम्पन्नता के लिए विशेष रूप से सहायक हैं। मैं 'अंचल' की कविताओं में सौन्दर्यान्वेषण की वही प्रवृत्ति पाता हूँ जो रहस्यवादी कवियों की भावनाओं का 'दृष्टिकोण' है। अन्तर केवल यही है कि अंचल का यह सौन्दर्य-बोध भौतिकता के अधिक समीप आ गया है और उसमें रूप-लिप्सा का विशेष आग्रह है। 'अंचल' की इन कविताओं को मैं चार मनोभावों में विभाजित कर सका हूँ—पहला तो आत्म-चिन्तन है जिसमें कवि हृदय की समस्त अनुभूतियाँ जीवन का तत्व लेकर प्रकृति के अंगों में प्रतिबिम्बित हो उठी हैं। अंचल की ये पंक्तियाँ मुझे बहुत पसंद आई हैं:—

जो अडिग रहता अड़ा
तूफ़ान में बरसात में
टूट जाता है वही
तारा शरद की रात
मुक्त जीवन की प्रगति भी
द्वन्द्व में संघात
फूल काँटों में खिलाया
सेज पर मुरझा गया

इसी प्रकार 'नहीं जाती' शी
में निराश और क्षुब्ध हृदय की
तूफ़ान की तरह आक्रमण करनेवाले
की क्रूरता और बच्चे की तरह
वाले कष्ट की मनुहार अत्यन्त
और अयाचित शब्दों में स्पष्ट हो

किसी के रूप की आसक्ति
जीवन से नहीं जाती
नहीं जाती किसी की याद
प्राणों से नहीं जाती।

'पावस की संध्या', 'स्वप्न और
'मंजिल' आदि रचनाएँ भी आत्म-चि
के क्रोड़ से निकल कर जीवन के
के साथ अनुभव की कलिकाओं में
हो उठी हैं। मैं समझता हूँ कि 'अंचल'
मनोभाव के क्षेत्र में बहुत गहराई
पहुँचे हैं और यही क्षेत्र उनका सबसे
सफल-क्षेत्र है।

दूसरा मनोभाव संवादों का
ये संवाद किसी प्रेमिका या प्रेमी
की पारस्परिक सहानुभूति और
या निराशा का सहारा लेकर
किये गए हैं। इन संवादों में मुझे
से अधिक कवि कल्पना के दर्शन
"दूर्वादिल सी मेरी आत्मा",
की पंखड़ियाँ". "सृष्टि सुषमा
आदि पंक्तियों में संवाद अधिक
मय भले ही हो गया हो किन्तु
कुछ बनावट भी आ गई है,
जैसे दो व्यक्ति परस्पर बातचीत
हुए एक दूसरे को काव्यमय विशे
संबोधित करते जायँ। फिर भी मैं रीति
की काव्य-परिपाटी के अनुसार इसे
मन में अधिक खटकने नहीं दूँगा।
की कलात्मक दृष्टि से ये कविताएँ
हैं और चित्रांकन की दृष्टि से सजीव
वर्ग में 'ठहर जाओ' 'निवेदन' 'नारी'
कविताएँ मुझे बहुत अच्छी लगीं।

मनोभावों के तीसरे क्षेत्र में
चित्रण के कुछ अच्छे अवतरण हैं।
अवतरणों में यह प्रकृति-चित्रण
उन्मुक्त और त्रुटियों से रहित है।
प्रकृति को उन समस्त भावनाओं से
लित मानता हूँ जिनमें यह प्राणी
अपने जीवन में प्रभावित होता है।
और सच्चे वर्णन में प्रकृति एक दर्पण
भाँति स्वयं ही निर्मल और सृष्टि की
अधिक प्रभावशालिनी शक्ति है।
कविता में सबसे अधिक हितकर
आपकी कविता में प्रकृति ऐसे ही
स्पष्ट हुई है किन्तु मालूम होता है

—शेष पृष्ठ १६ पर

पंडित जवाहरलाल नेहरू आये

राष्ट्र का एक महान् और जाग्रत कर्णधार

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

राष्ट्र के महान् नेता और जागृत कर्णधार पंडित जवाहरलाल नेहरू जेल से वापस आ गये। असंख्य जनता ने उनका स्वागत किया। इस छोटे, सुंदर और स्फूर्ति प्रदान करनेवाले लेख में पंडित जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई है और राष्ट्र के मार्ग प्रदशन के लिये आशा प्रगट की गई है।

नेहरू फिर आ गये और
और लेखों का प्रारंभ कर
दिया है।
के सामने बिजली सी
तरह चमकी,
के सामने फिर
आशियाने की।
के सींखचों (कफस) के
व्यक्ति ने आकर
प्रकाश फैला दिया।
संसार के सन्मुख,
और मलीनता के
उस व्यक्ति ने
दिया। जनता को
और अपने स्वप्नों
स्वरूप में मूर्तिमान्
हुआ आशियाना
पंडित नेहरू की जय-
क्रान्ति उत्पन्न
से गूँजती हुई वह
के हृदय की भावनाओं
थी। अलमोड़ा, रानीखेत,
इलाहाबाद तथा बम्बई

में एकत्रित असंख्य जन-समूह अपने प्रिय नेता के माथे की सिकुड़नों और बुढ़ापे की निशानियों में से भी राष्ट्र का संदेश लेने आया था। वे जानते थे कि सामने हाथ जोड़कर उनका अभिवादन करता हुआ असाधारण मनुष्य, नेतागिरी का प्रदर्शन करनेवाले संसार का प्रतीक नहीं, वरन् उनकी व्यक्तिगत तकलीफ़ों और नित्य-प्रति की आनेवाली भयंकर कठिनाइयों को समझनेवाला, उनके कष्ट के लिए आँसू बहानेवाला, झगड़नेवाला, यातना सहनेवाला, जान को भी न्यौछावर करनेवाला है। केवल यही भावना उन लाखों ग़रीबों के बोझीले भार से दबे मनुष्यों को क्रान्ति की चिनगारी बनाने के लिए पर्याप्त थी। पंडित नेहरू सदा ही इस दुर्दमनीय भावना-प्रवाह के अधिष्ठाता और प्रेरक रहे, आज भी हैं तथा आगे भी रहेंगे।

पंडित नेहरू ही आज पहले नेता थे, जिन्होंने कारागृह से मुक्त होते ही शहीदों की यादगार में प्रथम बार सर झुकाया तथा उन देशभक्तों को जो कि आज भी अगस्त प्रस्ताव और आजादी के झंडे को फहराते हुए सरकार की खुफ़िया पुलिस का मूक सामना कर रहे हैं, अपनाकर उन्हें न्यौता दिया, शाबाशी दी और घोषणा की कि 'आनन्द-भवन में सदा ही ऐसे मनुष्यों का स्वागत होगा'। उनको अपनी और अपने ७ साथियों की मुक्ति से कोई प्रसन्नता नहीं हुई क्योंकि उनके कई हज़ार साथी अब भी जेलों की भीषण यातनायें सह रहे हैं। उन्हें चिमूर और आष्टी, जौनपुर और कुलशेखरपट्टनम् के उन फांसी के झूले से लिपटने को तैयार नवयुवकों की याद आती थी। अपने अपूर्व स्वागत के समय, जय-जयकारों के बीच जिस समय पंडित नेहरू को हर्ष से उल्लासपूर्ण हो जाना चाहिए था, उस क्षण भी पंडित जी की आत्मा, भूखे बंगाल और मलाबार की वेदी पर चढ़े लाखों प्राणियों के मूक क्रन्दन और हज़ारों भोले परिवारों के जीवन-नाटक के पटाक्षेप की ओर बरबस खिंच जाती थी।

अभी हाल ही की बात है। बम्बई में अखिल-भारतीय-विद्यार्थी-कांग्रेस ने नागरिकता-शिक्षण-कालेज खोला था, जिसमें सम्मिलित होकर मुझे भी शिक्षा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उसमें एक व्याख्यान के दौरान में बम्बई-प्रान्तीय-कांग्रेस-कमेटी के मंत्री श्री एस० के० पाटिल ने एक बड़ा मनोरंजकपूर्ण रहस्योद्घाटन किया, श्री पाटिल ने पंडित नेहरू की तीव्र और आश्चर्यजनक सूझ का उदाहरण देते हुए बतलाया कि "९ अगस्त सन् १९४२ को जब नेतागण गिरफ़्तार होकर अहमदनगर क़िले की ओर स्पेशल ट्रेन में ले जाये जा रहे थे, गाड़ी के डिब्बों में V 'वी' के निशान चिपके हुए थे। पंडित जी के मस्तिष्क में सहसा एक सूझ आई तथा उन्होंने एक V चिह्न का काग़ज उखाड़कर दूसरे V चिह्न के काग़ज़ पर जोड़कर चिपका दिया, जिससे उस चिह्न का रूप W के आकार का हो गया। उन्हीं दिनों कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया था। पंडित जी ने इस W शब्द को 'विड्रा' (हट जाओ, छोड़ो) नाम के अँगरेजी शब्द का प्रतीक माना। और यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अगर भारत में उस समय किसी जगह पर भी पंडित जी को इस (W) सूझ का पता लग गया होता तो सरकार का स्वयं का प्रचारित V निशान उसके ख़तरे का कारण बन सकता था। किन्तु अब तो वह समय रहा नहीं। योरोप विजय पर ब्रिटेन की ओर से (V) विजय-दिवस भी मनाया जा चुका है और समय के परिवर्तन से कांग्रेस W (विड्रा) का नारा भी समाप्त हो चुका है।

आज पंडित जी पुनः क्रियाशील हैं। वह वैवेल के प्रस्तावों को उस दृष्टि से नहीं देखते, जिस दृष्टि से कि बहुत से विधानवादी, या अवसरवादी राजनीतिक नेता उसे देखते चले आये हैं। उनकी दृष्टि तो बिना किसी धार्मिक या वर्गिक रूप-रंग को लिए हुए, पूर्णतया भारतीय है। वह तो किसी भी राजनीतिक घटना को चाहे वह क्रान्ति का बिगुल हो, या स्वाधीनता की ओर पहुँचानेवाली एक और सीढ़ी, इतिहास के खाली पृष्ठों पर लिखा जानेवाला और प्रगति के हाथों उलटा जानेवाला एक और पन्ना समझते हैं। वह प्रत्येक शब्द को स्वाधीनता के भारतीय मापदण्ड के अनुसार तौलकर कहते हैं। वह हर प्रकार से, शब्दों की ठोकरें मार मार कर हमें अपने झंडे के नीचे ली गई प्रतिज्ञा की व अपनी स्वाधीनता को प्राप्त करने के लिए आवश्यक स्फूर्ति की चेतना का बोध कराते रहते हैं। देश उनकी गम्भीर वाणी का निनाद सुनने के लिए आकुल था। तीन साल के लम्बे समय के बाद पंडित जी अपनी ९ जेल-यात्रा के भार से वृद्ध हो, हमें पुनः मार्ग-प्रदर्शन करने के लिए प्रस्तुत हैं। पंडित नेहरू के समान नेता आज हमारे नेतत्व के लिए मौजूद हैं।

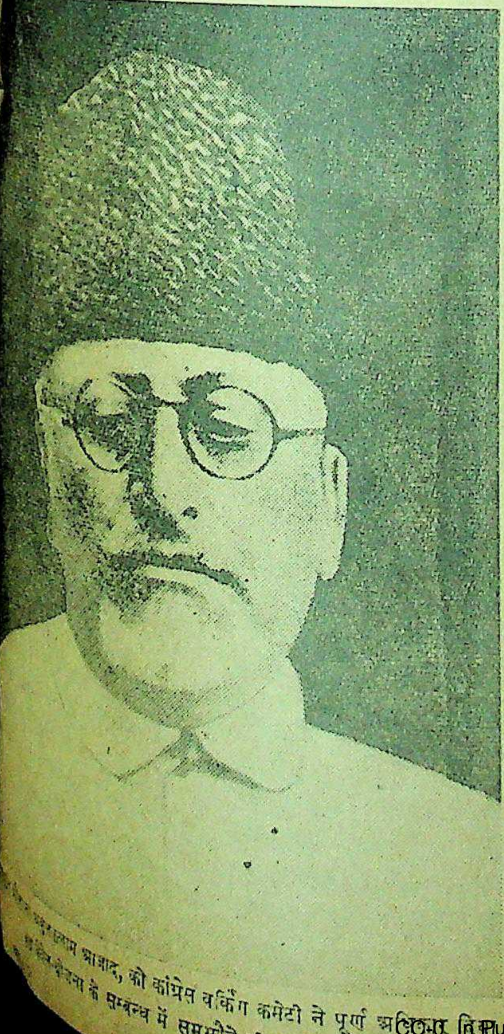

आज़ाद, को कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने पूर्ण अ[illegible]
के सम्बन्ध में समझौते की वार्ता करें।

भारत के वाइसराय लार्ड वेवेल जिन्होंने भारतीय राजनैतिक अड़ंगे को दूर करने की नई योजना प्रस्तुत की है और जिसे विभिन्न दलों के नेताओं से स्वीकार करने की अपील की है।

जर्मनी पराजित और पराधीन भी

तानाशाह कैसर और हिटलर ने क्या भूलें कीं ?

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

पिछले महायुद्ध में जर्मनी केवल पराजित ही हुआ था किन्तु इस बार के युद्ध में वह पराधीन भी हो गया है, यह उन दो जर्मन तानाशाहों—कैसर और हिटलर—की देन है जिन्होंने योरोपीय युद्ध का प्रारम्भ किया। इस सुन्दर लेख में विद्वान् लेखक ने जर्मनी की तब की और आज की स्थिति का तुलनात्मक वर्णन किया है जो पठनीय तथा विचारणीय है।

जर्मनी का भूतपूर्व तानाशाह विलियम कैसर जिसने योरोपीय युद्ध का प्रारंभ किया था।

सन् १९१४-१८ का युद्ध ५१ महीने में समाप्त हुआ था और योरप का यह युद्ध ६८ मास तक रहा अर्थात् पिछले युद्ध से वर्तमान युद्ध तंतीस प्रतिशत अधिक काल तक चला है। इन दोनों युद्धों में अँगरेज और उनके साथी जीते हैं और जर्मनी हारा है। पिछले युद्ध में जर्मनी के कर्णधार कैसर विलियम थे जो युद्ध-समाप्ति पर राजगद्दी छोड़कर भाग गये थे। इस युद्ध में जर्मनी का विधाता हर हिटलर था वह कहाँ है? मरा है या जीवित है? इसका अभी कुछ पता नहीं है किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि उस देश के शासन की बागडोर उसके हाथ में नहीं है। इस प्रकार दोनों हालतों में जर्मनी के शासनतन्त्र में भारी परिवर्तन हुआ है, यह हमें मानना चाहिए किन्तु यह भी ज्ञातव्य है कि गत युद्ध की अपेक्षा इस युद्ध में जर्मनी का मानमर्दन अधिक हुआ है।

अव्वल दौड़ पीछे चौड़

पिछले युद्ध में जर्मन सेनापतियों ने बेलजियम व बालकन में थोड़े-बहुत प्रदेश हस्तगत किये थे। वे अपनी विजय-यात्रा का कार्यक्रम बहुत लम्बा-चौड़ा न बना सके थे क्योंकि वह युद्ध खाइयों का युद्ध था और इसमें महीनों की प्रतीक्षा कर लेने के बाद कुछ सफलता प्राप्त होती है। यह युद्ध विजयों की दृष्टि से जर्मनों के लिए महत्त्वपूर्ण था। उत्तर की ओर नार्वे की उत्तरी सीमा पर, पूर्व में स्टालिनग्राड और काकेशस के मोर्चे पर, रनिला में अलअलामीन और सुदूर केनिया में एवं पश्चिम में फ़्रांस और स्पेन के मध्यवर्ती पिरामीज़ पहाड़ों में जर्मन-सेनाएँ दहाड़ती नज़र आती थीं किन्तु परिणाम जो हुआ वह विजय में नहीं पराजय में है। दोनों युद्धों में प्रथम काल में जर्मनों ने झपाटे के साथ हमला किया है और कुछ काल के लिए अभूतपूर्व सफलता लाभ की है। इसके विपरीत अँगरेज व उनके साथी दोनों युद्धों में पहले-पहल बुरी तरह हारे हैं और मीलों खदेड़े गये हैं किन्तु लम्बे काल में जाकर अँगरेज़ों ने अपने संयम, संगठन एवं नीति-कौशल से जर्मनों को भारी मात दी है। योरप के बहादुर जर्मन की दौड़ में ख़ूब आगे रहते हैं किन्तु चिर प्रतीक्षा, संयम व नीति कुशलता का उनमें अभाव रहता है। परिणाम यह हुआ कि जर्मन सैनिक विजय की दशा में मदमाता है, उसका हौसला बढ़ा रहता है किन्तु पराजय की अवस्था में वह घबरा जाता है और लड़ाई को उस ढंग से नहीं लड़ पाता जिस हालत में कि वह विजयी होने की दशा में लड़ रहा था। पिछले युद्ध में फ़्रांसीसी मोर्चे को सन् १९१७-१८ में जर्मन सैनिक तोड़ने में असमर्थ रहे जब कि उसी मोर्चे पर सन् १९१४-१५ में उनकी बड़ी धूमधाम थी। इस युद्ध में भी फ़्रांस, रूस, इटली और अफ़्रीका में जर्मन एक बार पीछे हटने लगे थे तो पीछे ही हटते गये और एक दफ़ा भी आगे न बढ़ पाये। यदि यही सिलसिला अँगरेजों का होता जो सन् ३९,४०,४१ व ४२ में वे लगातार पीछे हटे थे तो हटते ही जाते और हार जाते किन्तु नहीं, बाद में वे आगे बढ़े और ख़ूब आगे बढ़े और अन्त में विजयी हुए। स्पष्टतः जर्मनों को "आगे दौड़ व पीछे चौड़" की कहावत उनके हराने में सार्थक हुई।

क्षति और पराजय

यह तो हुई दोनों युद्धों में समानता। विभिन्नता इस बात में है कि गत युद्ध में पराजय की अवस्था में भी जर्मन सेनायें फ़्रांस की सरगर्मी पर विद्यमान थीं। अस्थायी संधि के बाद उन्हें फ़्रांस खाली करना पड़ा था। इस युद्ध में पराजय के समय जर्मन सेनायें नार्वे व डेनमार्क में तो अवश्य विद्यमान थीं किन्तु स्वदेश में उनका बुरा हाल था। अँगरेज व अमरीकन और रूसी सेनाओं ने जर्मनी के चप्पे-चप्पे को रौंद डाला था जर्मन सेनाओं को बिना किसी शर्त के आत्म-समर्पण के लिए बाधित किया था। एक दृष्टि से तो बहुत से लोग कह सकते हैं कि पिछले युद्ध में जर्मन सरकार युद्ध बन्द करके मित्रराष्ट्रों द्वारा पेश की गई वरसाई की अपमानजनक शर्त को मानने के लिए बाध्य की गई थी किन्तु इस बार वहाँ कोई सरकार नहीं है जो मित्रराष्ट्रों की पेशकश को सुनने के लिए भी तैयार हो। ऐसे लोगों की विचार-धारा में पर्याप्त मौलिकता है किन्तु सचाई यह है कि कैसर और उनके साथी फ़्रांस की सरगर्मी पर पराजय को स्वीकार करके अपने देश को विनाश से बचा सके थे। जर्मनी ने उस युद्ध में अपने विरोधी देशों के गाँव, कस्बे, शहर, खेत व बड़े बड़े उद्योग-धन्धे तहस-नहस कर दिये थे किन्तु विरोधी उसकी ज़मीन पर न तो युद्ध काल में पैर रख सके थे और न उसको कुछ क्षति पहुँचा सके थे। आज जर्मनी हारा तो है ही उसके बड़े बड़े शहर व स्वयं राजधानी बर्लिन ख़ाक का ढेर बन गये हैं, उसके कल-कारख़ानों का समूलोच्छेदन हो गया है। यह है कैसर व हिटलर के ज़माने की पराजय का भेद और आनेवाली जर्मन सन्तानें इस क्षति को कभी न भूल सकेंगी।

केवल क्षति होकर ही जर्मनी बना रह सकता तो भी उसकी ख़ुशक़िस्मती थी किन्तु इस युद्ध में वह न केवल पराजित हुआ है अपितु पराधीन भी हो गया है। कैसर के जर्मनी ने अरबों क्षति पूर्ति की रकम दी, अपने देश का अंग-भंग सहा, सेना की कमी स्वीकार की व जर्मन बड़े की अन्त्येष्टि के लिए तैयार हुआ किन्तु जीवन के लिए आवश्यक स्वतंत्रता उसकी अक्षुण्ण रही। यह स्वतंत्रता बनी रहे तो इन्सान पनप सकता है, उठ सकता है और पुनः उन्नति कर सकता है। किन्तु! किन्तु आज का जर्मनी पराजित है और दुश्मन के क़ब्ज़े में है। पाँच जून को हुई एक घोषणा के अनुसार जर्मनी पर ब्रिटेन, फ़्रांस, अमेरिका व रूस का संयुक्त शासन होगा। उसकी सेनायें क़ैदियों में परिणत कर दी जायेंगी, हवाई व जहाज़ी बेड़ा समाप्त कर दिया जायगा और उसके सुन्दर व सुघड़ युवकों को दूर देशों के खेतों में मज़दूरी करने के लिए लाचार किया जायेगा। युद्धकाल में विजित देशों के साथ जर्मनों ने कैसा बरताव किया था इसे प्रामाणिक रूप से कोई भारतीय नहीं जानता। हम थोड़ी देर के लिए माने लेते हैं कि वह अत्यन्त घृणित व नृशंसता का बरताव था किन्तु वह सब था युद्ध-जनित परिस्थिति में। शान्तिकाल में जर्मन विदेशियों के साथ नृशंसता का बरताव करते यह मानने में हमें संकोच होता है किन्तु आज पराजित जर्मनी व जर्मनों के साथ जो निष्ठुर बरताव की रूपरेखा हमारे सामने आई है वह सभ्यता को अतिक्रमण करती है। तिस पर अँगरेज़ व उनके साथी अपने को शान्ति व न्याय का पुजारी बतलाते हैं और जर्मनों को क्रूर कहने में आनन्द लेते हैं यह कुछ गौरव की बात तो नहीं है। तो भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि पराजय की अवस्था में कैसर का जर्मनी हिटलर के जर्मनी से कहीं अच्छा व गौरव से पूर्ण था।

अपमान नहीं मृत्यु

हाँ! एक बात अवश्य है। कैसर के जर्मनी ने पराजय स्वीकार की और उसके फल-स्वरूप अपमानजनक वरसाई सन्धि को अपने गले में बाँधने के लिए वह लाचार हुआ। हिटलर का जर्मनी इस दृष्टि से कहीं अधिक गौरव की वस्तु है। उसने लड़ते-लड़ते मर जाना स्वीकार किया है किन्तु अपने ऊपर अपमान-जनक शर्तें लादना स्वीकार नहीं किया। कैसर युद्ध के बाद घर से, स्वदेश से भाग गया था और दुश्मन के पंजे से बचने के लिए हालैंड के एक गाँव में जा छिपा था—आज का हिटलर उससे कहीं ऊँचा है। उसने अन्तिम दम तक लड़ाई लड़ी है, बर्लिन के गली, कूचे व घर घर में ख़ून की नदी बहने दी है किन्तु जान रहते न पराधीनता स्वीकार की है और न अपमान-जनक शर्तें सुनने की इच्छा प्रकट की है। उसने युद्धारम्भ से पहले भी अनेक बार कहा था कि दुनिया इस भूल में न रहे कि इस बार जर्मनी में सन् १९१८ की पुनरावृत्ति होगी और हिटलर का वह कहना सत्य रहा। अब योरप का युद्ध समाप्त हो गया है किन्तु हिटलर व उसके साथियों ने स्पष्ट कर दिया है कि वे अपने देश की

जर्मनी का दूसरा तानाशाह हिटलर
योरप में दूसरे महायुद्ध का बीज बोया

आन के लिए अपनी जान न्योछावर
के लिए सदा तैयार हैं। हमारे दे
राणा प्रताप ने सारा मेवाड़ खाली
दिया था किन्तु अकबर की शर्तें
न की थीं। आज अभागे जर्मनी का
यही हाल है। वह लड़ते लड़ते समाप्त हो
गया है और कहने को दूसरों के हाथ
में चला गया है लेकिन भावी सन्तति के
आगे वह सबक़ छोड़ गया है जिसे पढ़
जर्मन सन्तानें अपने पुरखों के साहस,
त्याग व बलिदान की दाद देंगी।
समय कब आयेगा इसे न आज जर्मन
हैं और न उनके विजेता किन्तु
अधिक देर तक पराधीन रहेगा यह
सत्य है। स्वतंत्रता के उन दिनों में
जर्मन पराजय के इन दिनों की
कष्ट-कथा को भुला न सकेंगे।
तब कष्ट-दाताओं के प्रति उनके
जो भाव उदय होंगे उन्हें न होने दे
चतुर राजनीतिज्ञ का काम है।
लगता है कि आज के विजेता
रहे हैं और सचाई यह है कि उन
भूल ही योरप में एक नया युद्ध
कर सकती है।

बाल-साहित्य के अद्वितीय
पण्डित सोहनलाल जी द्विवे
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी
पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का
है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद
माननीय सम्पूर्णानन्द जी का
है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार
दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनसे
भावों की गम्भीरता और भाषा का
प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य
उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं
बालकों में सद्विचारों को बचपन
बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की
कृतियों को अपनाना चाहिए, और
कृतज्ञ होना चाहिए।
बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
॥।) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०,

पराधीन राष्ट्रों की स्वतन्त्रता

क्या 'तीन बड़ों' के सम्मेलन में इसका निर्णय होगा ?

लेखक, श्री बालाजीराव जोशी, बी० ए०

सानफ्रांसिस्को सम्मेलन समाप्त हो गया और भविष्य में तीन बड़े राष्ट्रों—अमरीका, ब्रिटेन और रूस—का सम्मेलन होनेवाला है। प्रश्न यह है कि क्या सानफ्रांसिस्को सम्मेलन सफल रहा ? इसका उत्तर तो केवल यही है कि यदि संसार के पराधीन राष्ट्रों को स्वाधीन कर देने के सिद्धान्त को साम्राज्यवादी राष्ट्र स्वीकार करते हैं तो वह सफल है नहीं तो असफल। योग्य लेखक ने इस लेख में इन्हीं प्रश्नों पर सुंदर प्रकाश डाला है।

स्वभावतः यह प्रश्न सामने आता है कि सानफ्रांसिस्को की शांति-योजनाओं के प्रति सार्वजनिक आस्था, विश्वास और प्रसन्नता क्यों नहीं है ? क्या हमें हिटलरी युद्ध तथा उसके द्वारा होनेवाली परेशानियों का विकास ही प्रिय है ? नहीं, ऐसी बात नहीं है। हम शांति एवं सुरक्षा चाहते हैं—पर उनकी स्थापना के लिए जिस प्रकार कूटनीति तथा स्वार्थपूर्ण चालें चली जा रही हैं उनसे हमारा तीव्र विरोध है। हमारी यह दृढ़ धारणा है कि इन प्रस्तावों की ओट में बड़े मित्रराष्ट्र अपने साम्राज्य के विस्तार करने तथा छोटे पराधीन राष्ट्रों को अधिक से अधिक तादाद में अपनी मुट्ठी में रखने का, भीतर ही भीतर प्रयत्न कर रहे हैं और जब तक साम्राज्य-लिप्सा और कमजोर देशों को गुलाम और कठपुतली बनाने की प्रवृत्ति का पूर्णतः निर्मूलन संसार के भाग्य-विधाता कहे जानेवाले बड़े मित्र-राष्ट्रों के दिमाग से नहीं जाता तब तक दुनिया में सार्वजनिक शांति और सुरक्षा का वास्तविक प्रादुर्भाव होना सम्भव नहीं है। सम्पूर्ण निःशस्त्रीकरण, आर्थिक दबाव, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, अन्तर्राष्ट्रीय संरक्षक सेना तथा समाज को उन्नत बनानेवाली समितियाँ आदि कृत्रिम उपायों से, न तो भूतकाल में सफलता प्राप्त हो सकी और न तो इस समय ही हो सकेगी! इन उपायों से मुट्ठी भर परन्तु सर्वशक्तिमान् बड़े राष्ट्रों की ही पूर्ण उन्नति और लाभ की अधिक सम्भावना है। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए, तथाकथित स्वार्थ-प्रेरित प्रस्तावों को सार्वजनिक हित का मुलम्मा देना यह तो हमारे बड़े राष्ट्रों की एक अभ्यस्त कूटनीति है। सानफ्रांसिस्को का यह मुलम्मा समझदार विचारकों की दृष्टि में आये बिना नहीं रह सकता।

उदाहरण के लिए प्रबंधक समिति ही ले लीजिए। प्रबंधक समिति की स्थापना का मूल उद्देश्य है, उपनिवेशों को अपने अधिकार में रखना तथा उनको स्वाधीन बनाने के बजाय और दृढ़ता से पराधीन और शोषित करते जाना। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में बाधा पड़ने की सम्भावना देखकर ब्रिटेन और अमरीका ने, रूस के इस प्रस्ताव का कि उपनिवेशों को स्वयं निर्णय का हक दे दिया जाय, कड़ा विरोध किया है। ब्रिटेन की इस कूटनीति का, सच्चा उदाहरण हिन्दुस्तान में मिलता है। डेढ़ सौ वर्षों से हिन्दुस्तान का प्रबन्ध अँगरेजों के हाथ में है। परन्तु खेद है कि आज तक वह "स्वतंत्रता की जिम्मेदारियों" को वहन करने योग्य नहीं बनाया जा सका। हम यह देखते आये हैं कि हिन्दुस्तान का प्रत्येक स्वातंत्र्य-आन्दोलन कुचल डाला गया है, नेताओं को कारागृह में बन्द कर दिया गया है। साथ ही यहाँ की आर्थिक, सामाजिक, सैनिक, शिक्षा-सम्बन्धी, राजनैतिक सभी तरह की जागृति और उन्नति को रोकने का प्रबल प्रयत्न किया जाता रहा है।

जो हाल डेढ़ सौ वर्षों के प्रबन्ध में हिन्दुस्तान का हुआ है वही हाल निःसन्देह प्रबंधक समिति के अन्तर्गत आनेवाले अन्य देशों का भी होगा। एक बार जहाँ कोई देश प्रबन्ध समिति के माया-जाल में पड़ा वहाँ अप्रत्यक्ष रूप से वह साम्राज्यवादी राष्ट्र का एक 'घरेलू' मामला बन जाता है। हिन्दुस्तान के प्रश्न को भी ब्रिटेन अपना एक घरेलू मामला बनाता आया है। इसी लिए उसने भारत के सम्बन्ध में अमरीका को भी हस्तक्षेप नहीं करने दिया। सीरिया, लेबनान और फ्रेंच के युद्ध का ही उदाहरण लीजिए। लेबनानियों का पक्ष लेने में, वस्तुतः ब्रिटेन की वास्तविक सद्भावना नहीं है। यह भी उसकी एक चाल है। क्या कारण है कि जनरल डि गाल के इस प्रस्ताव को कि पाँच बड़े राष्ट्र लेबनानियों की माँगों पर विचार करें, ब्रिटेन ने ठुकरा दिया था? इसका साफ अर्थ यह है कि दाम्भिक सद्भाव की ओट में ब्रिटेन धीरे-धीरे फ्रेंचों की प्रभुता अपने हाथ में लेना चाहता है।

बड़े राष्ट्रों के इस प्रकार के इस काले कारनामे, जो अब तक छिपे थे, सानफ्रांसिस्को में प्रकट हो गये हैं। रूस ने "ऊपर से सुहावने प्रतीत होनेवाले" कई प्रस्तावों का जोरदार शब्दों में विरोध किया था, इस कारण काफी हलचल भी रही है। हम जानते हैं कि हिटलर के पराभव के लक्ष्य पर एकमत होने पर भी मित्रराष्ट्रों में सिद्धान्त और नीतियों की भिन्नता रही है, जिसके फलस्वरूप आज हम उनमें सन्देह और आशंका को दिन प्रतिदिन बढ़ता हुआ ही पाते हैं।

अतएव जब तक साम्राज्य-तृष्णा, छोटे देशों को जान-बूझकर असमर्थ बनाकर उन पर प्रभुत्व स्थापित करने की प्रवृत्ति का पूर्णतः अन्त नहीं हो जाता और "स्वयं जीना और दूसरों को निर्भयता से जीने देने" की सद्भावना का सच्चा उदय नहीं होता तब तक सानफ्रांसिस्को जैसे सम्मेलन राष्ट्रसंघ के दयनीय परिणाम को ही प्राप्त करेंगे। यदि सच्ची शान्ति स्थापित करनी है तो, सभी देशों को स्वतन्त्र कर दिया जाना चाहिए। प्रभुत्व का अधिकार एकदम मिटा दिया जाय और फिर स्वतन्त्र देशों के हार्दिक सहयोग के बल पर सार्वजनिक हित की योजनायें बनाई जायँ। मनोविज्ञान के अनुसार असन्तोष, अशान्ति का जनक होता है। मुट्ठी भर बड़े राष्ट्रों की शान्ति पर समस्त संसार की, जिसमें पराधीन देशों की संख्या अधिक है, शान्ति कदापि निर्भर नहीं रह सकती। असन्तुष्ट और परतन्त्र देश हमेशा विश्वशान्ति में गम्भीर बाधा उपस्थित करते रहेंगे जिससे छोटी-मोटी लड़ाइयों का ताँता निरन्तर बँधा रहेगा।

श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित आजकल अमरीका में हैं। आपने भारतीय तथा अन्य पराधीन राष्ट्रों की स्वाधीनता के लिये प्रबल आन्दोलन कर रही हैं।

सार्वजनिक स्वातन्त्र्य का महत्त्वपूर्ण तत्व स्वीकार कर लेने पर हिन्दुस्तान को जो गुलाम देशों में 'बुजुर्ग' है, शीघ्रातिशीघ्र स्वतन्त्रता दे देना बहुत जरूरी है। इसका मतलब, किसी खास या वैयक्तिक देश को स्वतन्त्रता देना नहीं है, बल्कि, सभी गुलाम देशों की स्वतन्त्रता और स्वयं शासन के जन्म-सिद्ध अधिकार को मंजूर करना, तथा उनको उत्थान और जागरण की सुनहली आशा और ढाढ़स और प्रोत्साहन देना है। भारत की आकांक्षाएँ सभी गुलाम देशों की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, इसलिए उसकी आकांक्षाओं को कुचल डालना गुलाम देशों की आकांक्षाओं को कुचल डालना है। इसी लिए अमरीका में श्रीमती पंडित ने हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता को इतनी प्रधानता देकर उसे ब्रिटेन की लंबी-चौड़ी घोषणाओं की सचाई की कसौटी माना है।

यदि भारत को स्वतन्त्रता न दी गई तो वह स्वयं ही स्वतन्त्र होगा। जैसा कि वैवेल-वार्ता के समय महात्मा जी ने मार्मिकता से कहा था, "वह अपनी स्वतन्त्रता अनिच्छुक हाथों से छीन लेगा।" हमारी समझ में छीनने का सच्चा अर्थ है, गुलाम देशों की स्वतन्त्र-भावनाओं के सामने, प्रभुत्वशाली राष्ट्रों को लाचार होकर नतमस्तक होना पड़ेगा। क्योंकि बढ़ते हुए असंतोष की आग के सामने साम्राज्यवादी प्रभुओं का किसी प्रकार का भौतिक बल टिकना कठिन है। अतएव जिसे वह कल लाचार होकर देने को तैयार होगा उसे आज ही खुशी से और सम्मान के साथ प्रदान करना ही बुद्धिमानी है।

सर फिरोज खाँ नून सरकार की ओर से सानफ्रांसिस्को सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे।

हिन्दी-उर्दू का यह समन्वय क्यों ?

श्रद्धेय टंडन जी की इस नवीनता का क्या अर्थ है ?

लेखक, श्री रविशंकर शुक्ल, बी० ए०, एल-एल० बी०

> श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास जी टंडन हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण हैं। उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर बैठाने का सतत उद्योग किया है किन्तु पिछले दिनों उनके एकाध वक्तव्य से जो हिन्दी-उर्दू के समन्वयवादी भावनाओं से ओत-प्रोत हैं, हिन्दी संसार में भ्रम उत्पन्न हो गया है। इस लेख में श्री शुक्ल जी ने श्रद्धेय टंडन जी के समन्वयवादी दृष्टिकोण पर अपना मत प्रगट किया है।

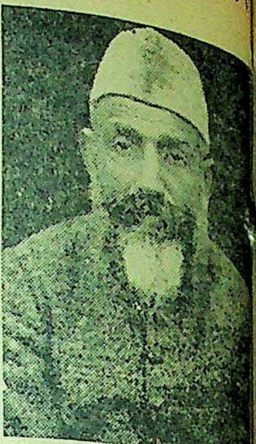

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन हि साहित्य-सम्मेलन के प्राण हैं।

श्रद्धेय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने हिन्दी को राष्ट्र-भाषा के पद पर प्रतिष्ठित कराने के लिए जो प्रयत्न किया है वह किसी से छिपा नहीं है। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा माननेवालों के वे नेता हैं पर अभी हाल में (२५ मई, १९४५) हिन्दी, उर्दू तथा हिन्दुस्तानी के विषय में उनका जो वक्तव्य निकला है उसके कुछ अंशों को पढ़कर असमंजस में पड़ जाना पड़ता है। वक्तव्य की कुछ बात टंडन जी के पिछले अवसरों पर प्रकट किये गये विचारों से मेल भी नहीं खाती हैं! इस वक्तव्य को पढ़कर कुछ ऐसा भास होता है कि मुसलमानों की और उर्दूवालों की कटु आलोचना से टंडन जी पर बहुत प्रभाव पड़ा है। इसमें उन्होंने हिन्दुस्तानीवालों की हाँ में हाँ मिलाते हुए हिन्दी और उर्दू को कृत्रिम उपायों से मिलाने की बात पर जोर दिया है। इस वक्तव्य से यह ध्वनि निकलती है कि टंडन जी ने अपना नारा कि 'हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा हो सकती है' बदल दिया है और अब वे हिन्दी और उर्दू को 'फ़्यूज' करके राष्ट्र-भाषा का निर्माण करने की ओर इशारा करने लगे हैं। टण्डन जी हिन्दी भाषा-भाषियों का नेतृत्व कर रहे हैं, राष्ट्र-भाषा हिन्दी की बागडोर उनके हाथ में है, इसलिए उनके समन्वयवाद से हिन्दी-संसार का चिन्तित होना स्वाभाविक है।

वक्तव्य को पढ़कर यह समझ में नहीं आता कि हिन्दी और उर्दू को मिलाने की क्या आवश्यकता है? टण्डन जी ने स्वयं कहा है कि हिन्दी का इस देश की मिट्टी से सदैव सम्बन्ध रहा है, उसकी धारा और परम्परा प्राचीन है, आधुनिक हिन्दी ही हिन्दी का वास्तविक देशज स्वरूप है और उर्दू शैली हिन्दी पर अत्यधिक विदेशी प्रभाव पड़ने से बनी है। फिर हिन्दी-उर्दू को मिलाना कैसे संभव है और उसकी क्या आवश्यकता पड़ गई? हिन्दी में ऐसी कौन-सी त्रुटि है जिसे राष्ट्र-भाषा बनाने के लिए उसमें उर्दू मिलाकर दूर किया जाय? इस मिलाने की बात से तो यह मालूम पड़ता है कि अभी ऐसी कोई एक भाषा नहीं है जो अँगरेजी का स्थान ले सके (क्योंकि हिन्दी और उर्दू एक ही चीज नहीं है और दोनों को राष्ट्र-भाषा मानने से या टण्डन जी के यह कहने से कि अँगरेजी के स्थान में हिन्दी या उर्दू जिसमें जिसकी मर्जी आये उसमें काम किया जाय, समस्या हल नहीं होती) और टण्डन जी की राय में हिन्दी-उर्दू के विद्वान् मिलकर बैठें और हिन्दी उर्दू का 'ऐक्सेप्टेबिल फ्यूजन' करके एक नई तीसरी शैली निकालें जो अँगरेजी का स्थान ले। कब यह तीसरी शैली निकली, कब वह मान्य हुई, कब वह प्रचलित हुई और कब उसने अँगरेजी को निकाला अथवा निकालने में समर्थ हुई? टण्डन जी तो उससे भी आगे बढ़कर भारतीय लिपियों में एक राष्ट्र-लिपि का भी "इवाल्व" करने की बात करने लगे! टण्डन जी पुरानी 'ट्रैडिशन्स' को छोड़ने की बात करने लगे लेकिन बिना 'ट्रैडिशन' की एक नई अनगढ़ भाषा अँगरेजी को कभी निकाल सकेगी या भारत जैसे राष्ट्र का कार्य सम्पादन कर सकेगी? किस राष्ट्र ने अपनी प्राचीन भाषा-परम्परा का इस प्रकार परित्याग किया है? खेद है कि 'हिन्दुस्तानी' और तद्जनित साम्प्रदायिकता की लपेट में सम्मेलन के कर्णधार भी आने लगे। इससे राष्ट्र-भाषा की समस्या का हल और दूर होता जायगा और गुत्थी उलझती जायगी। हम यह तो भूल ही जाते हैं कि भाषाएँ बनाई नहीं जातीं, और एक ऐसी भाषा ही जिसकी जड़ें गहरी हैं, जिसकी प्राचीन परम्परा है, जिसका अपना प्राचीन साहित्य है और जिसका स्वरूप निश्चित है, अँगरेजी का स्थान ले सकती है। ऐसा नहीं हो सकता कि हिन्दी-उर्दू के विद्वान् एक फतवा दे दें और हिन्दी-उर्दू समाप्त होकर एक नई शैली चलने लगे (और अँगरेजी जैसी भाषा का स्थान ग्रहण कर ले!) यदि चलने भी लगे तो जब तक नहीं चलती है तब तक क्या किया जाय? तब तक क्या अँगरेजी का पल्ला पकड़े बैठे रहें! (उर्दू को शामिल करके हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने की बात एक बेकार बात है) हिन्दी को ही राष्ट्र-भाषा मानने में क्या आपत्ति है?

टण्डन जी कहते हैं कि संस्कृत और फारसी आर्य परिवार की भाषाएँ हैं और राष्ट्र-भाषा के निमित्त उनका एक सुन्दर समन्वय हो सकता है। ऐसा समन्वय करने के तीन ही कारण हो सकते हैं—(१) चूँकि संस्कृत और फारसी आर्य-परिवार की भाषाएँ हैं इसलिए समन्वय होना चाहिए। यदि ऐसा है तो अँगरेजी, जर्मन, ग्रीक और लैटिन भी आर्य भाषाएँ हैं—उनका भी समन्वय होना चाहिये। फिर अँगरेजी से द्रोह भी क्यों? सभी आवश्यक शब्द अँगरेजी से ले लिये जायँ। बड़ा सुभीता रहेगा और समस्या मजे में हल हो जायगी। यदि अँगरेजी विदेशी है तो फारसी भी विदेशी है। भारत में इस समय अँगरेजी का वह प्रभुत्व है जो फारसी का कभी नहीं हुआ और अँगरेजी के मेल से 'बाबू हिन्दुस्तानी' बनकर ऐसी प्रचलित हो गई कि उर्दू कभी नहीं थी और हिन्दी पर अँगरेजी का इतना प्रभाव पड़ा है जितना फारसी का कभी नहीं पड़ा। फिर फारसी का संस्कृत से निकट सम्बन्ध है, हिन्दी से नहीं। हिन्दी के सबसे निकट पंजाबी, गुजराती, मराठी और बँगला हैं, इसलिए सबसे पहले इनका समन्वय क्यों नहीं होना चाहिए? इनके बाद संस्कृत और प्राकृत का नम्बर आता है और फिर भी यदि काम न चले तब कहीं फारसी की ओर देखा जा सकता है। जो विदेशी शब्द हिन्दी में बहु प्रचलित हैं उन्हें नहीं निकाला जा सकता, लेकिन यदि उनके प्राचीन देशी पर्याय मौजूद हैं और हिन्दी में प्रचलित हैं तो उन्हें भी स्थान देना पड़ेगा, अर्थात् जो देशी शब्द हिन्दी में इस समय भी मौजूद हैं उसमें से कोई शब्द भी किसी भी समन्वय की हालत में नहीं निकाला जा सकता। (२) यदि मुसलमानों को खुश करने के लिए ऐसा किया जाय तब तो राष्ट्र-भाषा बन चुकी। फिर भी यदि यही अभिप्राय है तो साफ साफ क्यों नहीं कहा जाता? 'फारसी आर्य भाषा है' आदि कहने की क्या आवश्यकता है? फिर अरबी शब्दों का ही बहिष्कार कैसे कर सकते हैं? उन्हें प्रसन्न करने के लिए क्या अरबी का भी 'समन्वय' करना आवश्यक नहीं होगा? (३) जो शब्द भारतीय भण्डार में है ही नहीं उन्हें फारसी से ले जाय। अगर 'कोअलीस' से यही है तो ठीक है लेकिन पहले जरा साफ कहने की आवश्यकता है और हि फारसी के समकक्ष अँगरेजी आदि भाषाओं को भी रखना पड़ेगा।

यह भी याद रखना चाहिए भारत में केवल आर्य नहीं बसते, भारत की राष्ट्र-भाषा के निर्माण में आ और अनार्य की भित्ति पर कुछ किया गया तो द्रविड़ों का विरोध अवश्यम्भावी है। उन्हें खुश करने के लिए संस्कृत, फारसी के साथ तामिल, तैलगू आदि का भी करना पड़ेगा। यह दलील कि आर्य भाषा है और उसका समन्वय आर्य भाषाओं से हो सकता है, चलेगी क्योंकि अनार्य फिर उसे ही क्या करें। यदि बिना किसी आ कता के होते हुए केवल मुसलमा खुश करने के लिए हिन्दी में कर फारसी का पुट दिया जा तो जिस राष्ट्र के लिए राष्ट्र-भाषा जा रही है उसके द्रविड़ निवासि तामिल, तैलगू भी मिलाई जा बस इसी प्रकार अनन्त काल भर की भाषाओं का हिन्दी

—शेष पृष्ठ १४ पर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

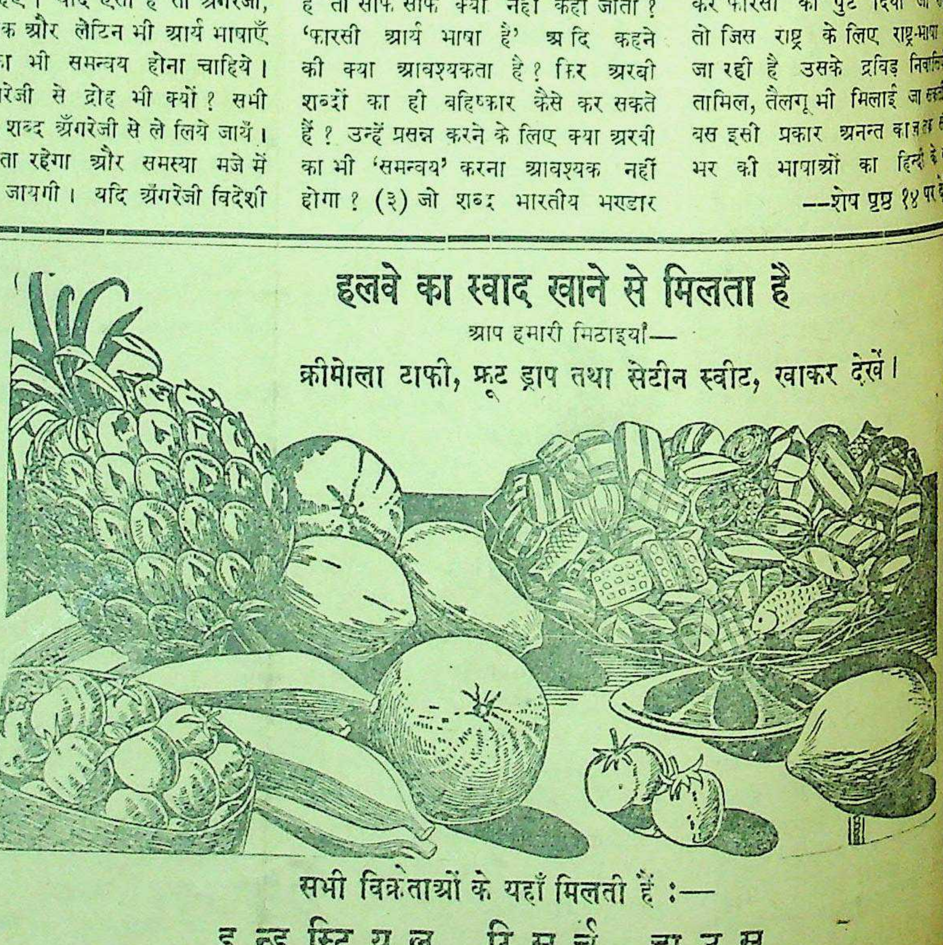

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

नाटक

हार्स पावर

लेखक, सेठ गोविन्ददास, एम० एल० ए० (केन्द्रिय)

मध्य-प्रांत के सुप्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी और हिन्दी के उच्च कोटि के नाटककार और साहित्यकार सेठ गोविन्ददास जी पिछले दिनों जेल से छूटकर आये हैं। आपने जेल में कई साहित्यिक ग्रंथों की रचना की है। कई एकांकी नाटकों की भी वहीं रचना हुई है, उन्हीं में से एक यह भी है। इस हास्यपूर्ण एकांकी में आपने आधुनिक युग के राजाओं की सूझ-बूझ का जीता जागता और सुन्दर चित्रण किया है, जो पठनीय है।

काला रंग और उस रंग में बड़ी बड़ी खिचड़ी मूँछें देखते ही बनती हैं। मन्त्री अपने रंग रूप और पोशाक के कारण खानसामों से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। हवलदार को "कारेमल" मनुष्य कहा जा सकता है।]

राजा—(क्रोध से गरजकर हवलदार से) हाँ जिसने-जिसने भी इस फसल को रौंदा हो उसे तत्काल काँजीहाउस के हवाले करो! यह सड़क केवल रियासत के आवागमन के लिए है, आप लोगों के लिए नहीं; (मन्त्री से) क्यों मन्त्री जी ?

मन्त्री—हिजहाइनेस ठीक फरमाते हैं।

राजा—(हवलदार से) और देखो महल में आकर मुझे फौरन सूचना दो कि रौंदनेवाला काँजीहाउस के अन्दर बंद कर दिया गया।

हवलदार—जो हुक्म, सरकार।

(राजा मटकता हुआ एक विचित्र चाल से बेंत को घुमाते-घुमाते सड़क पर पीछे की ओर चलता है। पीछे-पीछे मंत्री और हवलदार भी चलते हैं।)

(लघु यवनिका)

* * *

दूसरा दृश्य

स्थान—राजमहल का बैठकखाना।

समय—मध्याह्न।

[बैठकखाने में पूर्वीय और पश्चिमी दोनों ढंगों की सजावट का अद्भुत मिश्रण है। आयाशी का सामान इतना अधिक है कि कमरा बैठकखाना न दिखकर सजावट का सामान बेचने की दूकान-सा दिखाई देता है। राजा गद्दी पर बैठा हुआ हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। वह कुरता और ढीला पाजामा पहने है तथा नंगे सिर। कुरते से उसकी अंग की शोभा और अधिक खिल गई है। नंगे सिर पर बीच में माँग निकाले हुए लम्बे बालों ने उसे जनखे का रूप दे दिया है। स्वच्छ वस्त्रों में एक नौकर का प्रवेश]

नौकर—हुजूर, हवलदार साहब सेवा में हाजिर होना चाहते हैं।

राजा—हाँ, हाँ, भेजो, तत्काल उन्हें।

(नौकर का प्रस्थान और हवलदार का प्रवेश।)

राजा—बैठो, हवलदार कहो क्या हुआ ?

हवलदार—(कालीन पर बैठते हुए) सरकार के हुक्म के मुताबिक फसल रौंदनेवाला काँजीहाउस के हवाले कर दिया गया।

राजा—बहुत खुशी·······बहुत खुशी हुई मुझे यह सुनकर।

हवलदार—लेकिन, हुजूर, वह काँजीहाउस के अन्दर बन्द नहीं हो सका।

राजा—अच्छा, यह क्यों ?

हवलदार—बहुत बड़ा होने की वजह से और उसे काँजीहाउस तक पहुँचाने में भी बड़ी दिक्कत हुई, कई आदमियों को ले जाना पड़ा।

राजा—अच्छा, यह क्यों ?

हवलदार—यही कि बहुत बड़ा होने सबब। उसी के साथ उसका मालिक भी काँजीहाउस में पहुँच गया है। वह काँजीहाउस का महसूल चुकाकर उसे ले जाना चाहता है। काँजीहाउस के मुंशी ने महसूल के तमाम निरख देख डाले पर उसे छोड़ने के लिए कितना महसूल लिया जाना चाहिए, इसकी कोई निरख नहीं मिल रही है।

राजा—अच्छा, यह क्यों ?

हवलदार—इसलिए, सरकार, कि वह न घोड़ा है न बैल, न गाय है, न भैंस, न बछड़ा है, न पैंड़िया, न गधा है, न खच्चर।

राजा—तब आखिर वह है क्या !

हवलदार—मोटरलारी, हुजूर।

राजा—ओह! (विचारते हुए) अच्छा, जरा मंत्री जी को तो बुलाओ।

हवलदार—(उठते हुए) जो हुक्म।

(राजा हुक्का गुड़गुड़ाते हुए अत्यन्त गम्भीरता से विचार करता है। मंत्री के साथ हवालदार का प्रवेश। मंत्री अपने पहले की ही वेश-भूषा में है।)

राजा—बैठिए, मंत्री जी (हवलदार से) बैठो, हवलदार।

(दोनों कालीन पर बैठ जाते हैं।)

राजा—(मंत्री से) आपने सुन लिया, काँजीहाउस में एक बड़ी भारी समस्या खड़ी हो गई है।

मंत्री—अभी सुना हेर हाइनेस, और समस्या का हल भी सोच लिया है।

राजा—अच्छा, वह क्या ?

मंत्री—इन सब मशीनों में हार्स पावर होते हैं। उस मोटरलारी में जितने घोड़ों की लागत होगी उस हिसाब से उसका महसूल ले लिया जायगा।

राजा—(हर्ष से उछलकर मानो कोई फुटबाल उछला हो, मंत्री के हाथ पर हाथ मार कर वाह, मंत्री जी, वाह····
····वाह! मंत्री जी, वाह! क्यों न हो, आपका खानदान मंत्रियों का खानदान रहा है न! आप खानदानी मंत्री हैं—हवलदार, जाओ, फौरन जाओ मोटरलारी के हार्स पावर के हिसाब से उसके मालिक से महसूल लेकर मोटरलारी को तत्काल छोड़ दो।

(यवनिका)

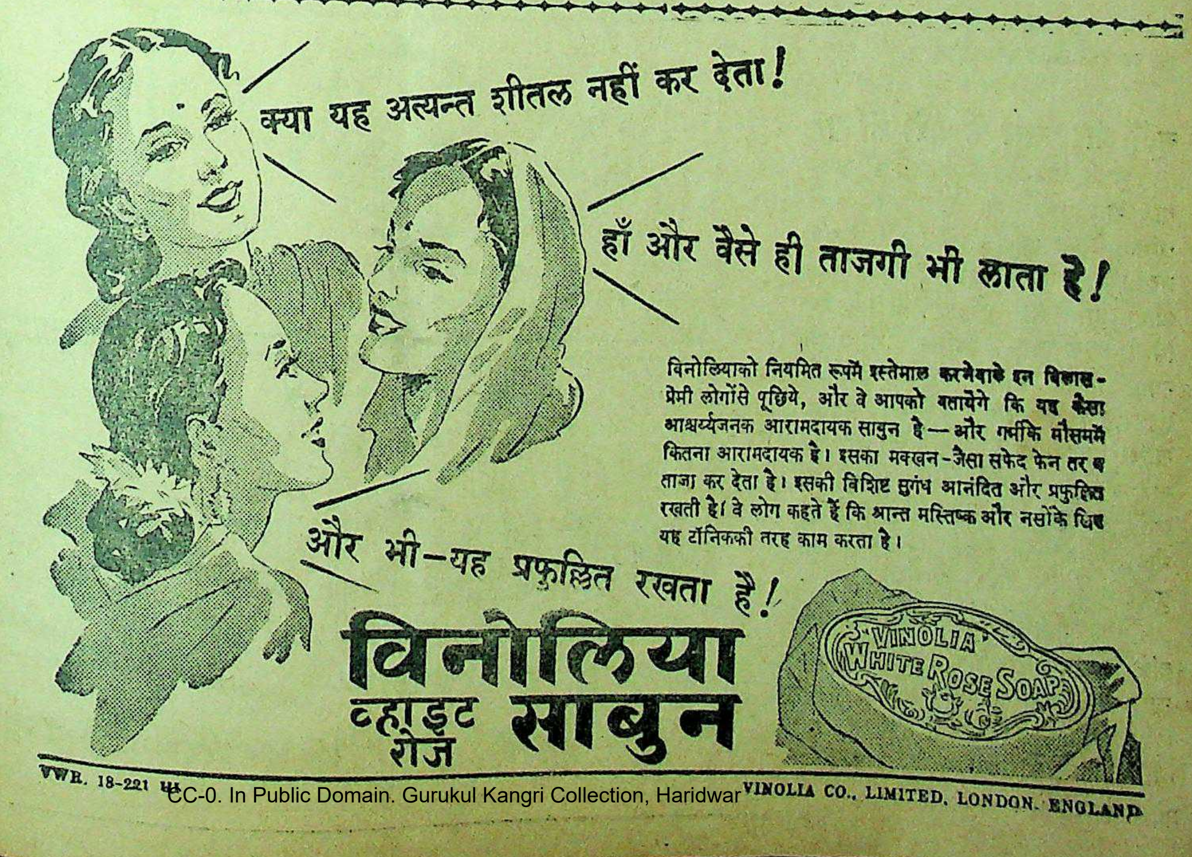
क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!
हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!
और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!
विनोलिया
व्हाइट रोज साबुन
"VINOLIA" WHITE ROSE SOAP

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन तर व ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

VWR. 18-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON. ENGLAND

इधर उधर की

टेलीविजन

१९३६ में संसार में पहली बार इँग्लैंड में ही टेलीविजन-व्यवस्था स्थापित हुई। यह व्यवस्था १९३८ तक अन्य किसी देश में स्थापित न हुई थी और इँग्लैंड ही एक-मात्र ऐसा देश था जहाँ यह व्यवस्था थी। इस व्यवस्था के द्वारा बहुत-से इँग्लैंडवासी अपने घरों में बैठे-बैठे टेनिस और क्रिकेट के खेल तथा अन्य दर्शनीय घटनाएँ देखा करते थे। टेलीविजन का ट्रांसमिटिंग स्टेशन लंदन के उत्तर में था और ३० मील के अर्द्धव्यास में चारों ओर काम करता था। इससे एक चौथाई अँगरेज जनता लाभ उठाती थी। यही नहीं स्टेशन से ५० मील की दूरी तक यह टेलीविजन स्टेशन काम करता था और इसके दृश्य उतने ही स्पष्ट और आनन्ददायक होते थे जितने सिनेमा के संवाद चित्रों के दृश्य।

टेलीविजन की उन्नति में दूसरे महायुद्ध के छिड़ने से बाधा उपस्थित हुई। सैनिक कारणों से टेलीविजन स्टेशन बन्द कर दिया गया। इस विषय के विशेषज्ञों की अन्यत्र आवश्यकता पड़ी। रेडार की उन्नति के लिए उनके विशेष ज्ञान की बहुत आवश्यकता थी। ब्रिटेन को यह पता था कि आत्मरक्षा के लिए रेडार का उन्नत करना आवश्यक है। इस ओर से उदासीन होना उसके लिए घातक था। ब्रिटेन एक छोटा-सा द्वीप है और शाही वायुसेना के जहाजों की संख्या भी बहुत नहीं थी अतः वैज्ञानिकों ने अपनी पूरी शक्ति इसको उन्नत करने में लगा दी। ब्रिटेन पहले से ही इस ओर से सतर्क था और रक्षात्मक युद्ध के समय अपनी सारी शक्ति लगा कर उसने इसे उन्नत बनाया। पर टेलीविजन को इसका शिकार बनना पड़ा। गत एक दो वर्षों में ब्रिटेन अपनी शेष शक्ति को संग्रह करके अपना कार्य आरम्भ करने की योजना बना रहा है। युद्ध के कार्यों से खाली होते ही वैज्ञानिक इस अनुसंधान में लग जायँगे। रेडार के सम्बन्ध में जो अनुभव वैज्ञानिकों को प्राप्त हुई है वे भी उपयोगी सिद्ध होंगे। कुछ ही समय के बाद वह समय आनेवाला है जब टेलीविजन का व्यापक प्रचार होगा!

* * *

चूहों और बतख के अंडों की सैर

भारत के जनरल हेडक्वाटर्स की यातायात शाखा को हाल के सप्ताहों में जो सामान भेजना पड़ा है उसमें टाइफ्स कीटाणुग्रस्त चूहे, बतख के अंडे, रेशम के कीड़े और मधुमक्खियाँ भी थीं। चूहों के एक पिंजरे को वायुयान में जनरल से भी पहले स्थान मिला, क्योंकि चूहों को प्रयोग के लिए निश्चित अवधि के भीतर ही प्रयोगशाला पहुँचना था। परिणाम यह हुआ कि जनरल के लिए सुरक्षित स्थान पर चूहे ले जानेवाला अँगरेज सैनिक बैठा और उसकी गोदी में चूहों का पिंजरा सावधानी से रखा हुआ था।

एक चीनी यात्री को बतख के कुछ अंडे लेकर कई महाद्वीपों के ऊपर वायुयान-द्वारा यात्रा करनी पड़ी है। वह अमरीका के एक मुर्गी-पालन केन्द्र में गया था, जहाँ सेना के लिए खाद्योत्पादन के सम्बन्ध में प्रयोग हो रहे थे।

कराची के बन्दरगाह पर कीटाणुनाशक दवा छिड़कनेवाले कर्मचारी को एक नये वायुयान का द्वार खोलने पर यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वायुयान में यात्रियों की जगह मधुमक्खियाँ भरी हुई हैं। कराची से एक तार में कहा गया था "इस बन्दरगाह पर मधुमक्खियोंवाला वायुयान पहुँच गया। उनकी अवस्था खूब अच्छी है। खेद है कि कुछ मक्खियों की मृत्यु हो गई है।"

* * *

वैज्ञानिकों ने चूहों को दावत दी

रंगून के चिड़ियाघर में सेना के वैज्ञानिकों ने चूहों की "दावतों" का प्रबन्ध यह जानने के उद्देश्य से किया है कि वे किस खाद्य को कितना पसंद करते हैं। उनके इस प्रयोग से भारतीय सेना के बहुत-से धन की बचत हो सकती है। रंगून में छः विभिन्न प्रकार के चूहे होते हैं, किन्तु किस्मों की इस अधिकता से मेजर जे० एल० हैरिसन के, जो सेना के जन्तुविनाश दस्ते के प्रधान हैं, उत्साह ही में वृद्धि हुई है। मेजर हैरिसन गत दो वर्षों से पश्चिमी अफ्रीका, मध्यपूर्व और ईरान में चूहों की रोकथाम के कार्य का नेतृत्व करते रहे हैं।

रंगून के चिड़ियाघर के सर्पगृह में रंगून के छः किस्मों के चूहे छः अलग-अलग स्थानों में रखे गये हैं। प्रत्येक स्थान पर बाँस की बनी रकाबियों में विभिन्न प्रकार के नाज रखे गये हैं और इस प्रकार पता लगाया जा रहा है कि रंगून के चूहे किस नाज को अधिक तेजी से खाते हैं।

भारतीय सेना का एक प्रेक्षक लिखता है मेजर हैरिसन ने मुझे इन कीड़ों के बहुत से नमूने दिखाये, जो सेना के खाद्य को सफाचट कर जाते हैं। इनमें से कु जन्तु तो इतने छोटे थे, जिन्हें खुर्दबीन बिना देखा भी नहीं जा सकता था। के बन्दरगाहों में आनेवाला नाज भी पहले इन्हीं विशेषज्ञों के पास परीक्षा लिए भेजा जाता है।

फ़िल्मी-गाने!

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना तो "फिल्म सङ्गीत" मँगाइये। अब ६ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी लिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभाग डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)।
पता—संगीत कायालय, हाथरस यू०

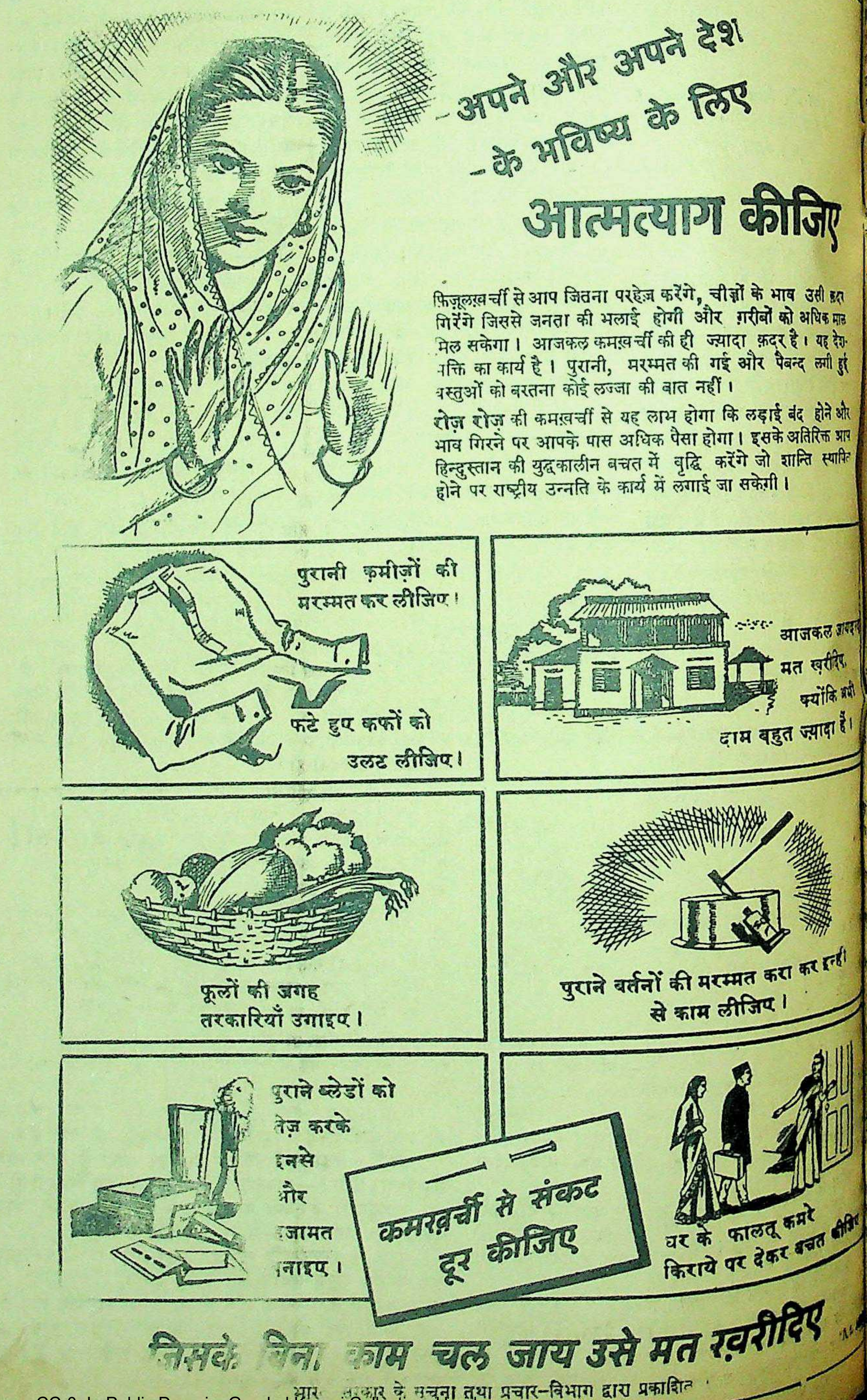
अपने और अपने देश
के भविष्य के लिए
आत्मत्याग कीजिए

फ़िज़ूलख़र्ची से आप जितना परहेज़ करेंगे, चीज़ों के भाव उसी कदर गिरेंगे जिससे जनता की भलाई होगी और ग़रीबों को अधिक माल मिल सकेगा। आजकल कमख़र्ची की ही ज़्यादा क़द्र है। यह देशभक्ति का कार्य है। पुरानी, मरम्मत की गई और पैबन्द लगी हुई वस्तुओं को बरतना कोई लज्जा की बात नहीं।

रोज़ रोज़ की कमख़र्ची से यह लाभ होगा कि लड़ाई बंद होने और भाव गिरने पर आपके पास अधिक पैसा होगा। इसके अतिरिक्त आप हिन्दुस्तान की युद्धकालीन बचत में वृद्धि करेंगे जो शान्ति स्थापित होने पर राष्ट्रीय उन्नति के कार्य में लगाई जा सकेगी।

पुरानी क़मीज़ों की मरम्मत कर लीजिए!
फटे हुए कफ़ों को उलट लीजिए।
आजकल मत ख़रीदिए, क्योंकि दाम बहुत ज़्यादा हैं।
फूलों की जगह तरकारियाँ उगाइए।
पुराने बर्तनों की मरम्मत करा कर इन्हीं से काम लीजिए।
पुराने ब्लेडों को तेज़ करके इनसे और हजामत बनाइए।
कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए
घर के फालतू कमरे किराये पर देकर बचत कीजिए
जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

धारावाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक——

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली——इसी जगह ना है। कई दिन से मैं यह देख रही हूँ। इसका है?

ने दौड़कर हरीश का हाथ पकड़ लिया, कहा——सत्य स्मरण है, लखनऊ वाले घर में तुम सहसा छत पर में बराण्डे में दमालू पका रही थी——पड़ोस के हो रहा था, मैं अपने पैरों को दबाते हुए छत पर थीं और तुम उस घर की ओर उदास नेत्रों से देख मैंने तुम्हारे कान में कर दिया था "कू" और तुम स्वर में इतनी चौंकन, तो मुख देखने से न जाने तुम हमारे ऊपर आगबबूला हो उठे थे?

लक्ष्मी का मुँह ताकता रह गया। थोड़ा रुककर एक पहेली हो। बंकिम बाबू के मनोरमा के चरित्र

खिलखिलाकर बोली——इसमें तुमने बुद्धि की हीनता

ने झुंझलाये स्वर में कहा——करो तुम गड़बड़, हम जाते हैं। उनके किस मुवक्किल को किसने ठग लिया है——जाकर सुनेंगे। उन रद्दी

का हाथ पकड़कर लौटाते हुए कहा—— भाई। हम कुछ नहीं बोलेंगी; लेकिन तुमको पड़ेगी।

कहा——क्या कथा सुनोगी? इस तरह गले पड़

कहा——कुछ बाइसकोप में नया नहीं देखा क्या? किन्तु राजकुमारी सुनेगी। यहाँ आकर बिचारी कि भाई-बहन में कैसा सद्भाव है! देखकर सिहर न भाई राजकुमारी यह बात नहीं है!

छोटे बच्चों की तरह से भाई-बहन का विवाद हो रही थी। वह बिचारी अँगरेज़ी नहीं जानती विवाद का कारण क्या है समझ नहीं पाती थी। बात ने उसे और भी हँसी आगई। उसने सिर

ने कहा——हरीश को बड़ा सुख... लखनऊ रहता अकेले बाइसकोप देखता है। हम तुम भी किसी कभी देखा है?

ने सिर हिला दिया——नहीं।

ने कहा——कितनी देश-विदेशों की, मनुष्य के सुख- घटनाएँ होती हैं। हरीश, बोलो न भाई! अभी अन्तिम है।

——हमको याद नहीं रहता, दीदी! सचमुच इस दूसरे सप्ताह भूल जाता है। चोटी पकड़कर हिलाते हुए लक्ष्मी ने कहा——झूठे

ने चोटी छुड़ाते हुए कहा——अच्छा, अच्छा, भाई है। सुनो——

ने कहा——हाँ।

ने थोड़ी देर आँखें मूँदकर कहा——प्राचीनकाल में एक राजा थे। राजा का नाम हरिश्चन्द्र था। लक्ष्मी ने छलाँग मारकर हरीश को एक धक्का कहा——बड़े दुष्ट हो, हम कोई क्या नन्हीं बच्ची हैं, की कथा सुनाने आये हो? देखेंगी कैसे सोओगे। किया। हमारा नहीं अतिथि का——यदि बदला

लक्ष्मी का मुँह बन्द करते हुए कहा——थमो, थमो न कर देना, नहीं तो न्यायालय की सज़ा हो अपने अपराध की क्षमा चाहता हूँ और सचमुच सुनाना है।

में लक्ष्मी फूल उठी।

की बिठाती हुई और स्वयं बैठती हुई बोली—— नहीं मिलती। देखी तुमने, छोटे भाई की में बहुत उपद्रव सहे हैं। अब बड़ी बहन का सम्मान सुरक्षित रखना ही होगा। दो एक दिन में यदि भूल जाऊँ तो, राजकुमारी भाई, तुम स्मरण दिला देना।

हरीश ने कहा——दो एक दिन में तुम हमें कहाँ पाओगी? हम तो कल ही चम्पत हो जायँगे।

लक्ष्मी ने कहा——तो हम भी कल सन्ध्या समय लखनऊ में ही होंगी।

हरीश ने कहा——हमको तो नहीं पाओगी, क्योंकि हम तो अपनी ड्यूटी पर रात को १० बजे तक रहेंगे।

लक्ष्मी ने कहा——हम कल रात भर वहीं ठहरेंगी। बिना बदला चुकाये नहीं लौटेंगी।

हरीश ने कहा——इसी को हठधर्मी कहते हैं।

लक्ष्मी ने कहा——सो तो तुम जानती ही हो। याद है आम के अचारवाली बात?

खू-ऊ-ब! कहकर हरीश हँसा, और बोला——अपनी बड़ाई ही करोगी या कथा भी सुनोगी?

न, न, भाई। कहो भाई कहो.....

हरीश ने कहा——एक कठिन समस्या है। कथा प्रेम की है, जो हम कहना नहीं चाहते।

लक्ष्मी ने कहा——कहो भी।

गल्प अच्छी थी। सात समुद्र पार, तालवन से घिरा हुआ एक द्वीप था। उसी द्वीप में बुड्ढा श्याम रहता था। उसकी एक लड़की थी लूसी। श्याम बिचारा मछली, फल इत्यादि बेचता था। अपने बाप को व्यापार के काम में सहायता करते हुए कार्याधिक्य होने पर लूसी दौड़-धूप में नाचती-सी थी। समुद्र की लहरें उसकी खेल की साथिन थीं। अतः उसे डर या भय न था। श्याम का एक कर्मचारी टेड उसके इस खेल का साथी था। टेड तरुण व्यक्ति था, एवं असीम साहसी भी था।

इस प्रकार ये लोग सुख से दिन व्यतीत करते थे। किसी बात का न तो दुख था, न अभाव था। सहसा एक दिन प्रचण्ड अंधड़ में पड़कर एक जलयान टूट जाने पर अमेरिका के एक धनिक का पुत्र बेनहार्डि उस द्वीप-तट पर आ लगा। उसे मूर्च्छित अवस्था में पड़े हुए प्रातःकाल टेड ने देखा। वह जाल कंधे पर धरे मछली मारने आया था। उसने बेनहार्डि को अपनी डोंगी में उठाकर रख लिया। लूसी भी तैरने के लिए वहाँ आई थी। लूसी ने भी उसकी सेवा में हाथ बँटाया। टेड से कहा——जाओ, जल्दी थोड़ा-सा दूध लाओ। टेड के जाने पर बेनहार्डि ने आँखें खोलीं। उसने लूसी से कहा——क्या तुम कोई अप्सरा हो, अथवा जलदेवी हो?

कथा खूब जम रही थी। हरीश की वर्णनशैली में एक शक्ति है। वह सरस से सरस गल्पकार है। दोनों श्रोता तन्मय होकर सुन रहे थे। उनके मन उसी द्वीप में थे। इतने में ही एकाएक सुरेश ने कमरे में आकर कहा——सुनते हो? इनके बहनोई ने आकर नीचे बड़ा उत्पात मचा रक्खा है।

कुसुमित कानन में मानो तुषार-पात हो गया। राजकुमारी का मुख नीला हो गया। लक्ष्मी उठके खड़ी हो गई। हरीश अत्यन्त स्तब्ध हो गया।

सुरेश ने कहा——अपना मत देने से पूर्व इसी बेचारी से पूछो कि यह यहाँ रहेगी या अपने बहनोई के संग जायगी।

लक्ष्मी की निद्रा-सी टूटी। उसने कहा——वाह, वह कौन हैं! वह तो क़ानूनन उसके संरक्षक या गार्जियन हो नहीं सकते। तुम भी वकील होकर घबराये जाते हो।

सुरेश ने कहा——अ-ह-हा, तुम नहीं समझीं। यह कोई कचहरी की बात थोड़े ही है। यह तो एक सद्व्यवहार की बात है।

लक्ष्मी ने कहा——जो नीचता पर उतर आया है उसके साथ सद्व्यवहार कैसा!——राजकुमारी तुम्हीं बताओ क्या चाहती हो?

राजकुमारी ने लक्ष्मी के अंचल का एक छोर कसके पकड़ रक्खा था। उसने कहा——मैं तो न जाऊँगी।

सुरेश ने राजकुमारी की ओर देखा और कहा——तब इसमें कुछ न कुछ रहस्य अवश्य है।

लक्ष्मी ने कहा——तुम नहीं जानते, इसमें बहुत-सी बातें हैं। राजकुमारी हम लोगों के निकट निरापद रहेगी। उसकी माँ रहने को कह गई हैं। हमने अपने ऊपर भार ले लिया है। तुम उसे क्यों हाँक देना चाहते हो?

क्षमा कीजिएगा
पेट स्वच्छ रखनेवाला
एन्ड्रयूज आपका
शरीर सुव्यवस्थित
रखता है
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT
133

ANDREWS
LIVER SALT
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय और स्वास्थ्यप्रद रेचक

लम्बा होइये

[illegible]

इंग्लैंड में प्रस्तुत
टाल्सपाइन
ग्लैंड फूड टेबलेट्स
डिस्ट्रीब्यूटर्स
[illegible]

हरीश ने कहा—सत्य ही है। मैं स्तम्भित हूँ [illegible] को एक भले आदमी के यहाँ, अपनी माँ की आज्ञा से आई है तो उसे ले जाने की तड़तड़ी क्यों है ?

सुरेश—विलक्षण व्यक्ति है।

लक्ष्मी ने कहा—यह तो जान ही लो कि राजकुमारी के साथ विवाह करने को वह पागल है। राजकुमारी नहीं चाहती, उसकी माँ ने निरुपाय और विवश होकर अनुमति दी ह। क्यों भाई ? सुना है उसका घर हमारे यहाँ बन्धक है ! तनिक जगन काका को तो पुकारो।

सुरेश ने कहा—क्या कुछ रह गया है ? जगन काका बाहर थे। उनसे उसने कहा—कि घर बन्धक है तो डिग्री कराके दखल लीजिए; किन्तु हमारी युवती साली पर क्यों अधिकार कर रक्खा है ? उसकी बातें अत्यन्त नीच लोगों की सी हैं।

लक्ष्मी ने कहा—निकलवा दो उसे यहाँ से; हम नहीं भेजेंगी जो उसे करना है कचहरी, पुलिस में जाकर करे।

सुरेश बाहर जाने लगा। लक्ष्मी ने कहा—क्या कहोगे ?

पहले धीरे से समझायेंगे, अंत में क़ानून भी बताएँगे—कहकर सुरेश हँसा।

[illegible] नहीं लगती। एक लड़की के जीवन-मरण का प्रश्न है। हँसी-खेल नहीं है।

सुरेश चला गया। राजकुमारी रोने लगी। वह रुँधे गले मे बोली—क्या होगा दीदी ?

कुछ नहीं होगा।

राजकुमारी—लल्लू का क्या होगा ?

लक्ष्मी ने कहा—धीरज धरो, कुछ होगा ही। मैं प्रबन्ध करूँगी। ...हरीश...

हरीश ने सुना तो वह भी बाहर जा पहुँचा।

लक्ष्मी क्षण भर के लिए स्तम्भित होकर खड़ी हो गई। राजकुमारी ने पूछा—क्या है, दीदी ?

आओ चलें तुम्हारे बहनोई की भैरव-मूर्ति भी देख लें !

राजकुमारी घबराई। लक्ष्मी ने कहा—कोई नवाबी है ? इस घर से जो खींच ले जायगा ? हमारे घर के आदमी क्या मिट्टी के माधव हैं ?

[क्रमशः

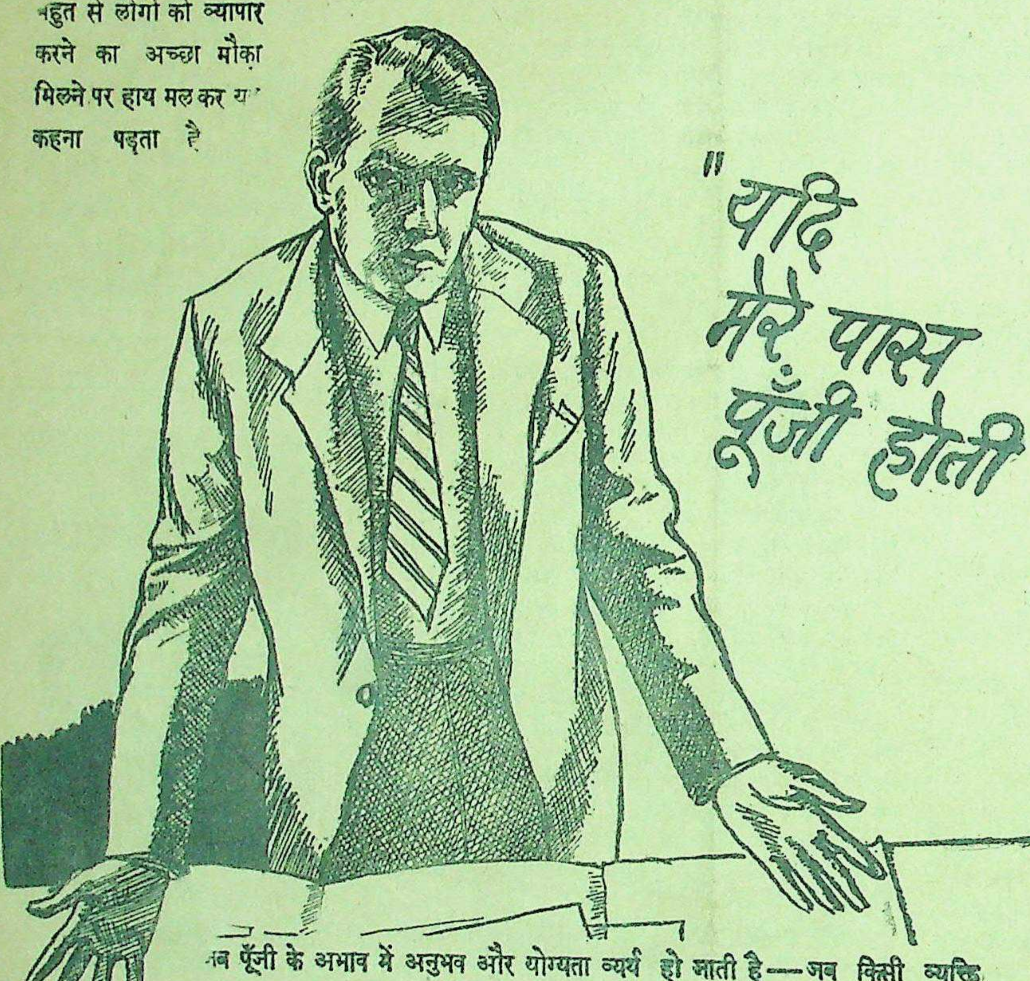

बहुत से लोगों को व्यापार करने का अच्छा मौका मिलने पर हाथ मल कर यह कहना पड़ता है

जब पूँजी के अभाव में अनुभव और योग्यता व्यर्थ हो जाती है—जब किसी व्यक्ति को केवल इसलिए नौकरी करनी पड़ती है कि व्यापार के लिए पास में पैसा नहीं—तो उसे जीवन का सब से कटु अनुभव होता है। किन्तु जो लोग बुद्धिमान है और जिन्होंने भविष्य के लिए रुपया बचाया है, उन्हें ऐसी परिस्थिति का सामना कम करना पड़ता है। उनकी बुद्धि तथा अनुभव से मिल कर उनके हाथ का पैसा सोने पर सुहागे का काम करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।

★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।

★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

क्या आज से बारह वर्ष बाद आपकी भी आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि ऐसे अवसरों से लाभ उठा सकें ? बेशक हो सकती है, यदि आप अपनी बचत की रक़म को नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगाने का आज ही निश्चय कर लें, जो सुरक्षित हैं और साथ ही जिनमें बहुत अच्छा व्याज भी मिलता है। अभी बुद्धिमानी से काम लीजिए और अपने भविष्य को सुरक्षित कीजिए।

AAA 129 HI

No 712
EVEREADY
2 CELL
EXTRA
LONG LIFE
BATTERY
B&S
60/S

अब
मिलती है
कन्ट्रोल भा
पर

नं ७१
एवरेडी बै

बम्बई, कलकत्ता,
कोचीन, देहली,
कराची में परचून
रु. ०-४-१
दुसरी जगह रु. ०-

ज्यादा
मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

कमर के दर्द से उसका जीवन भार हो गया था

पीड़ा इतनी भयंकर थी कि [illegible] कठिन था

केवल दो बोतल क्रुशेन से सब ठीक हो

३ वर्ष की कठिन यातना और एकदम आराम। यह स्त्री क्रुशेन [illegible] इतनी प्रसन्न है कि वह लोगों [illegible] बतला देना चाहती है कि क्रुशेन से [illegible] कैसे स्वास्थ्य-लाभ हुआ। उसका [illegible] प्रकार है :—

"मैं यह बतला देना [illegible] समझती हूँ कि ३ वर्ष की [illegible] के बाद नसों की जलन तथा कमर के [illegible] से मुझे किस प्रकार छुटकारा मिला। [illegible] सब रोग क्रुशेन की केवल दो बोतल [illegible] जाता रहा जब कि अन्य उपचारों से [illegible] कोई भी लाभ नहीं हुआ। मैंने [illegible] साल्ट के बारे में पढ़ा और उससे [illegible] उठाया। पहले मैं अपने घर में [illegible] फिर नहीं सकती थी और अब मैं [illegible] में तीन मील चल सकती हूँ। [illegible] तो यह है कि इससे मुझमें चुस्ती [illegible] गई है। क्रुशेन वास्तव में आश्चर्य[illegible] है। (श्रीमती) ए० एन०

मूत्राशय ही मनुष्य की [illegible] छन्ना है। यदि यह सुस्त पड़ जाता [illegible] मल-विकार एकत्र होकर रक्त-दोष [illegible] देता है। क्रुशेन के छः प्राकृतिक [illegible] आपके मूत्राशय को सुचारु रक्खेंगे [illegible] आपके रक्त को जहरीला होने से बचा[illegible] कमर के दर्द से आपको तुरन्त छुट[illegible] मिल जायगा और यदि आप बराबर [illegible] का सेवन करते रहेंगे तो यह पीड़ा [illegible] कभी भी न होगी।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे दवा[illegible] में मिलता है।

संपादक के नाम चिट्ठियां

सम्मेलन का पुनर्संगठन

भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मे-
अधिवेशन आगामी दशहरे
की राजधानी उदयपुर में होने
राष्ट्रभाषा हिन्दी के अखिल
सम्मेलन के स्वागत का अवसर
निवासियों को परम हर्ष हो रहा
हमें अपने उत्तरदायित्व का
हम चाहते हैं कि अखिल
साहित्य-सम्मेलन उदयपुर
और नई गति-विधि प्राप्त
वर्षों के सम्मेलन के कार्य
और हमारे राष्ट्र की वर्तमान
ऊहापोह एवम् समस्या
यह परम आवश्यक है कि
के साथ निष्पक्ष होकर सारे
पर दृष्टिपात करें और
नया तैयार करें। यह तो
अखिल भारतीय हिन्दी
ने गत ३२ वर्षों में (१)
हिन्दी मनोवृत्ति उत्पन्न
कार्य किया है (२)
के प्रचार-प्रसार
समग्र भारतवर्ष में एक
उत्पन्न कर दिया है।
हिन्दी-आन्दोलन
प्रतिष्ठा तथा स्थान
रहा है।
ठीक ठीक नहीं हो
हिंदी के लेखक और
उपेक्षणीय न हों और
के झंडे के नीचे एक
बनाकर न बैठें। कुछ
के साहित्यकार अपने इस
होते जा रहे हैं। ऐसा
पर सोचना आज बड़ा
अतीत के सब कारणों तथा
अब प्रकाश पड़ना चाहिये;
सिरे से अखिल भारतीय
में अपना स्थान प्राप्त कर
साहित्य तथा संस्कृति के
विकास में लग जाना चाहिये।
से वातावरण उत्पन्न होकर
और स्वरूप उत्पन्न नहीं
तक आन्तरिक शक्ति,
उत्पन्न हुए बिना राष्ट्र-
? केवल आन्दोलन और
हो जायगा ?
प्रश्नावलियों का उत्तर क्या
और विद्वानों द्वारा प्राप्त
की वर्तमान अवस्था
स्पष्ट मत क्या है ?
क्या परिवर्तन चाहते
के प्रकाशनों के बारे में
है ? (४) साहित्यकारों
किन कार्यों और कार्य-
सकता है ? अब तक ऐसा
? (५) जनपद आन्दोलन
मत तथा सुझाव
एकीकरण तथा हिन्दी
राय दीजिये। (७)
से देश में आपकी
प्रवृत्ति चल रही
की हिन्दुस्तानी के
मत देने की कृपा

करें। (९) अहिन्दी-प्रान्तों के साहित्यकारों को राष्ट्रभाषा हिन्दी की सेवा में किस प्रकार अधिकाधिक प्रवृत्त किया जाय। (१०) सम्मेलन को वस्तुतः समस्त भारतवर्ष का बनाने के लिए आपके सुझाव तथा सूचना दें।

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर देकर आप सम्मेलन तथा स्वागत-समिति को बड़ी सहायता देंगे।

उदयपुर —जनार्दनराय नागर
मंत्री

* * *

सम्मेलन का सभापतित्व

'देशदूत' के पिछले अंकों से पता लग रहा है कि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का आगामी वार्षिकोत्सव अगले अक्टूबर में उदयपुर में होने जा रहा है। अधिवेशन के सभापति के चुनाव के लिए भी नाम अब सामने आ रहे हैं। अभी तक जो नाम सामने आये हैं उनमें से श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन, श्री वियोगी हरि और श्री हरिभाऊ उपाध्याय के नाम उल्लेखनीय हैं। मैं एक बात यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि जिस सम्मेलन का सभापतित्व महात्मा गांधी जी, श्रद्धेय राजेन्द्रप्रसाद जी, डाक्टर अमरनाथ झा, स्वर्गीय गणेशशंकर जी विद्यार्थी, श्रद्धेय पुरुषोत्तमदास जी टण्डन, पंडित माखनलाल चतुर्वेदी जैसे पुरुषों ने किया है आज भी उनके ही सानी का कोई पुरुष चुनना चाहिए। नाम प्रस्तावित करते समय लोगों का जो रुख रहता है खास कर सम्मेलन के साथ तो ऐसा ही सदा से रहा है कि लोग यह भूल जाते हैं उन्हें अखिल भारतीय संस्था के सभापति का चुनाव करना है।

सम्मेलन में जो थोड़े-से दल बन गये हैं, और उसे आगे बढ़ाने के सिवा आपस में जूझना ही जिनका एकमात्र काम रह गया है उनसे तो कोई अच्छा नाम पाना कठिन ही है। इसलिए उन लोगों से जिनके हाथ में आज सम्मेलन की बागडोर है मैं प्रार्थना करूँगा कि सम्मेलन को नष्ट न करें अगर अपना सब कुछ देकर भी सम्मेलन की प्रतिष्ठा रख सकें तो अच्छा है। मैं देखता आ रहा हूँ कि सम्मेलन में कुछ ऐसे .लोग जमे हुए हैं जिन्हें अपनी नेतागिरी के छिन जाने का अंदेशा-सा लगा रहता है। यही कारण है कि वे सदा बौखलाए से नजर आते हैं और जहाँ किसी चुनाव या इस प्रकार का अवसर आता है तो सम्मेलन का महत्त्व छोड़कर झट उन्हें विधान और गुटबंदी की याद आने लगती है और उन्हीं लोगों को सामने लाकर खड़ा करते हैं जिनकी ओट में ये अपनी राग अलाप सकें।

मैं दो नाम प्रस्तावित करता हूँ। एक आचार्य नरेन्द्रदेव जी का और दूसरा श्री सेठ गोविन्ददास जी का। ये नाम पिछले सभापतियों के सामने ठहरेंगे। नरेन्द्रदेव जी और गोविन्ददास जी की सेवाएँ हिन्दी के प्रति क्या हैं यह स्पष्ट हैं। सेठ जी के नाटक हिन्दी में अपना सर्वप्रथम स्थान रखते हैं। नरेन्द्रदेव जी की हिन्दी, हिन्दी-साहित्यिकों से छिपी नहीं है भले ही साहित्य के लिए उन्होंने कोई अमर रचना न दी हो पर क्या किसी साहित्यिक को इस पर विरोध हो सकता है? साथ ही आचार्य जी तथा सेठ जी की राष्ट्र के प्रति जो सेवाएँ हैं उनके लिए तो सारा भारत आभारी है।

एक बात और है। सम्मेलन को अखिल भारतीय संस्था कही जाती है। इसलिए आवश्यक है कि युक्तप्रांत के अलावा दूसरे प्रान्तों को भी सम्मेलन के सभापतित्व की कुर्सी पर अपने साहित्यिक प्रतिनिधित्व को देखने का अवसर मिलना चाहिए।

इस सुझाव पर मैं अपने साहित्यिक महारथियों का तथा सम्मेलन के सभापति बनाने का दावा करनेवाले दलों तथा नेताओं की सम्मति जानना चाहूँगा।

प्रयाग
१६ जून,४५ —ओंकारनाथ शरद

* * *

सिनेमा-दर्शकों का नैतिक पतन

विभिन्न सिने साहित्यिक पत्रों के "संपादक की डाक" स्तंभ के अंतर्गत जो प्रश्न और उत्तर छपते हैं उनसे आजकल के सिनेमा-दर्शकों की कुत्सित मनोवृत्ति का पर्याप्त आभास मिलता है। मेरा मस्तक उस समय लज्जा से झुक जाता है जब सिने साहित्य के पाठकों की नैतिक दुश्चरित्रता के परिचायक ऐसे प्रश्नों को पढ़ता हूँ जिनमें पाठक जो अधिकांश में स्कूल और कालेज के अनुभवशून्य विद्यार्थी (क्या वह सच्चे अर्थों में विद्यार्थी हैं?) सम्पादक जी की पत्नी से ही प्रेम करने का दावा करते हैं और सम्पादक जी से उनकी पत्नी का फोटो माँगते हैं। खैर, सम्पादक जी भी मनचले जीव ठहरे और ऐसे प्रश्नों का मुँहतोड़ उत्तर यह कहकर देते हैं कि प्रत्येक भाई को अपनी बहन के फोटो पाने का अधिकार है। दुःख का विषय है कि भारत जैसे पुण्य देश में जहाँ "मातृवत् परदारेषु" का आदर्श पालन किया जाता था वहाँ का नैतिक आदर्श इतना गिर गया है कि पाठक सम्पादकों की पत्नियों पर हाथ साफ़ करने में भी नहीं हिचकते। धिक्कार है ऐसे दर्शकों पर। यदि पाठक ऐसे प्रश्नों की सफ़ाई में यह कहने की चेष्टा करें कि यह तो महज़ मज़ाक़ है तो फिर भी इस गन्दे मज़ाक़ को इन सिने पत्रों में कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। यह भद्दा मज़ाक भी पाठकों की विकृत मनोवृत्ति का ही सबूत है।

आजकल के दर्शक सिनेमा इसलिए नहीं जाते कि कलापूर्ण चित्र और अभिनय देखें या कर्णमधुर गायन सुनें। वह तो अधिकतर मानसिक व्यभिचार के लिए जाते हैं। रजतपट पर किसी अभिनेत्री का चुलबुलापन देख लिया और उसे प्रेम करने लगे हालाँकि उस अभिनेत्री से व्यक्तिगत परिचय तक नहीं। इस इक्कीसवीं शताब्दी के मजनूँ अपने दिल पत्रों द्वारा उन अभिनेत्रियों के चरणों में समर्पित करते हैं और वह भी ऐसी जल्लाद हैं कि अपने मखमली सैंडिलों से उन हृदयों को निर्दयतापूर्वक ठुकरा देती हैं। कई अभिनेत्रियों ने स्वीकार किया है कि उनके प्रशंसकों के पत्रों में प्रेम (या वासना) का ऊल-जलूल प्रदर्शन ही प्रधानतया रहता है। जो अधकचरे नौजवानों की घृणित मनोवृत्ति का परिचायक है। कई तो जहाँदीदे भी होते हैं जो अपनी सुगृहिणी पत्नियों को परित्याग कर अभिनेत्रियों को अपनाने के लिए जी-जान से उत्सुक रहते हैं। काश! वह जानते कि हाथी के दाँत खाने के और, और दिखाने के और होते हैं। जो अभिनेत्रियाँ रजतपट पर सती-साध्वी स्त्रियों का अभिनय करती हैं वह व्यक्तिगत जीवन में कितनी रंग-रँगीली होती हैं और उनमें अधिकांश किसी एक की होकर रहना जानती ही नहीं। इसलिए सिनेमा-दर्शकों को उचित है सिनेमा केवल मनोरंजन की दृष्टि से और इन प्रेम के झमेलों से स्वयं रखने की चेष्टा करें।

राँची —युगलकिशोर
२१ जून,४५ एम० ए०,

ब्रज-भाषा

इरता

। इन
बिक
।

साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और ब्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु ब्रज-भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान् कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — बिहारी-विभव
भूषण-भारती — मतिराम-मकरंद
पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।~) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

स्वास्थ्य और व्यायाम

नेत्र-ज्योति कैसे बढ़े ?

दैनिक जीवन में कुछ उपाय

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

यदि आपके नेत्र दुर्बल हैं तो निम्नलिखित उपाय कीजिए—

प्रातःकाल हाथ-मुँह धो एक प्याला गर्म जल पीकर दो-चार मील टहलने जाइए। लौटकर दस-पन्द्रह मिनट विश्राम लेकर शान्त चित्त हो सूर्य की ओर मुख करके नेत्र बन्द कर लीजिए फिर अपने चेहरे को धीरे-धीरे घुमाइये। इस प्रकार दस-पन्द्रह मिनट किया जाय और फिर छाया में आकर पाँच-सात मिनट तक दोनों हाथों की हथेलियों से बन्द नेत्रों को ढक कर पामिंग किया जाय। इसके पीछे नेत्रों को प्याले से अथवा यों ही ठण्डे जल से धोना ज़रूरी है। किसी चौड़े पात्र में ठण्डा जल भर कर मुख को उसमें डुबोया जाय और बार-बार नेत्रों को जल में खोला जाय तो और भी अच्छा है। यह क्रिया सायंकाल पाँच-छः बजे भी दोहराई जा सकती है।

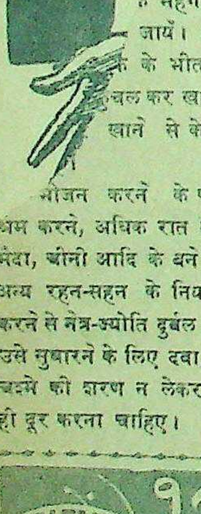

इस क्रिया के अलावा नेत्र-विकारों को दूर करने और ज्योति को बढ़ाने के लिए भोजन-सुधार अत्यावश्यक है। रोगी को सबेरे कुछ न खाना चाहिए। दोपहर के मय बिना पालिश का चावल या चोकर-ाथ की चक्की के पिसे आटे की रोटी, ज़ी, नारियल की गरी और थोड़ा खाना उचित है। भोजन के साथ स कुचले हुए किसी कच्चे शाक ना बड़ी दवा का काम देता े बाद भूख लगने पर केवल ा रस पीना चाहिए। शाम व को बिलकुल स्थान न ल कच्चा दूध या मीठा ए। फलों के स्थान पर ये जा सकते हैं। यह भी ह महँगे और बिना ऋतु जायँ। अगर केला खाया े के भीतर की सफेदी को चल कर खा लेना चाहिए— खाने से केला जल्दी हज़म

भोजन करने के पश्चात् मानसिक श्रम करने, अधिक रात तक जागने, दाल, मैदा, चीनी आदि के बने पदार्थ खाने तथा अन्य रहन-सहन के नियमों का पालन न करने से नेत्र-ज्योति दुर्बल होती है। अतएव उसे सुधारने के लिए दवा, आपरेशन अथवा चश्मे की शरण न लेकर मूल कारणों को ही दूर करना चाहिए।

१९८६ नीलगिरि
बम्बई ४.
स्थापना १९२८ | जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख० अलग, सुलेमान पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

'लालचूनर'

(पेज ४ का शेष)

कवि ने जानबूझ कर कुछ ऐसे ठोकर देने वाले चित्र रखे हैं जिनसे हृदय काँप उठता है। जैसे "मुर्दे की भीगी राख सदृश भारी है मेरा दिल पत्थर, जब कि पुरवा के मीठे झोंके से हिलता है तृण-तृण तरु-तरु पर"। यह चीज़ कुछ समझ में नहीं आती। अपने समस्त जीवन के अनुभव में किसी भी पावस की संध्या में मेरा दिल इतना भारी नहीं हुआ और जब दिल मुर्दे की भीगी राख सदृश हो भी तो वह पत्थर कैसे हो सकता है ? भले ही अपने संचित अरमानों के लुट जाने पर हृदय अवर्णनीय परिस्थिति को पहुँच गया हो किन्तु भावना से ओत-प्रोत कवि हृदय पावस की संध्या में जब कि पुरवा के मीठे झोंके चल रहे हों तो दिल चाहे जो कुछ हो जाय लेकिन मुर्दे की भीगी राख नहीं हो सकता। कहानीकार या उपन्यासकार यह चित्र लाए तो मुझे कोई शिकायत नहीं किन्तु कवि इससे भी भयानक उपमान उपस्थित करने की चेष्टा करते हुए यह चित्र जो अंचल की कविता में है उपस्थित करने की कामना नहीं करना चाहेगा। यह तो काव्य-सामग्री के विपरीत बात है। चित्रकार कड़े से कड़ा रंग अपने चित्र में भर दे किन्तु वह उस चित्र में लाल रंग के लिए खून का उपयोग कभी न करेगा। कम से कम मेरी भावना इस तरह की है।

'अंचल' की कविताओं का चौथा वर्ग सुप्रसिद्ध प्रगतिशील विचारों का हो सकता है। 'जनगीत' और 'तुम्हें सौगंध है कयूर के उन जानिसारों की' शीर्षक रचनाएँ एक प्रकार की सामाजिक क्रान्ति आक्रोश पूर्ण रचनाएँ हैं। रक्त-शोषण की प्रथा, कसी हुई हथकड़ी और बेड़ीवाली बातें इन रचनाओं की आधार-शिलाएँ हैं। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि इस प्रकार की समस्त रचनाएँ हमारे प्राचीन चारण-काल की पुनरावृत्ति है जिनमें ललकार, आक्रमण, युद्ध और विध्वंस की जोशीले कड़खे की चालवाली वर्णनात्मक पदावलियाँ अधिक हैं। आजकल की प्रगतिशील रचनाएँ इसी जोश का उदाहरण रखने में सफल हो सकी हैं। यह कहकर मैं इस प्रकार की कविताओं का मूल्य कम नहीं करना चाहता किन्तु इस प्रकार की रचना जन-जागरण के लिए भले ही उपयोगी हो, किन्तु कविता के उत्थान-युग की मज़बूत कड़ियाँ संभवतः 'न बन सकें' जब तक कि इनमें जोश के सिवा जनता के जीवन की गहराई न हो। मैं अंचल की इस स्पष्ट सच्चाई के लिए उनका आदर करता हूँ जब वह लिखते हैं "परन्तु जब मैं ईमानदारी से सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि मेरे पास जनता के हृदय की वेदना या जनता के प्रति वह संवेदना कहाँ है जो उसके सहस्रधार जीवन को सहस्रधार प्रेरणाएँ दे सके" मैं देखता हूँ कि केवल अंचल के संबंध में ही यह बात सच नहीं किन्तु इस पीढ़ी के लगभग सभी कवियों के हृदय की यही वस्तु-स्थिति है। मैं नवीन जागरण का पोषक हूँ। साथ ही साथ मैं यह भी चाहता हूँ कि यह नवीन जागरण भारतीय जनता के सांस्कृतिक विकास में एक बढ़ा हुआ कदम हो। मैं किसी दूसरे राष्ट्र के प्रयोगों से लाभ उठाते हुए भी अपने राष्ट्र की परिस्थितियों को भूल नहीं सकता। मैं भारतवर्ष को रूस की एक कॉलोनी नहीं समझना चाहता, जैसा कि हमारे बहुत से प्रगतिशील कवि देश और जनता को रूस के ही भाववाद से एक इंच भी घटा बढ़ाकर नहीं चित्रित करना चाहते। लेकिन पराधीन देश निर्बल व्यक्ति की स्त्री की तरह अपनी निजी शक्ति खो बैठता है। यह प्रश्न दूसरा है और इस पर मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता किन्तु इस नवीन युग के कवि-समुदाय से राष्ट्रोत्थान की जिस रूप-रेखा की आशा एक उगता हुआ राष्ट्र करना चाहता है, वह देखने में नहीं आ रही है।

हिन्दी के आलोचकों ने अंचल को प्रगतिशील कवि के नाम से पुकारा है। मैं तो देखता हूँ कि अंचल आधुनिक रूप में कहलाने वाले प्रगतिशील कवियों से बहुत भिन्न हैं। उनमें मूलतः वे ही प्रेरणाएँ हैं जो स्थायी कवित्ववाले कवि में होती हैं और जिसमें सौन्दर्यान्वेषण की, ललित सृष्टि की प्रेम और घृणा के शाश्वत भावों की मात्रा यथेष्ट रूप से वर्तमान है। युगकालीन संस्कार भले ही अंचल से दो-चार कविताएँ आधुनिक प्रगतिशीलता की लिखा लें तथापि इन कविताओं में अंचल की आत्मा उस गहराई से अपने को स्पष्ट नहीं करती जिस गहराई से वह प्रकृति या मानवीय सुख और दुख में प्रगट होती है। मैं इस संग्रह के लिए अंचल को बधाई देता हूँ और यह चाहता हूँ कि वे स्वयं आत्म-विश्लेषण कर अपने क्षेत्र को चुनें। मुझे विश्वास है कि यदि उपयुक्त क्षेत्र का निर्णय वे कर लेंगे तो उनकी भविष्य की काव्य सम्पत्ति बहुतों को धनवान बना सकेगी। मैं बड़ी उत्सुकता से उनके [illegible] रास्ता देख रहा हूँ।

संवाददाताओं के पत्र

अजमेर में अखिल भारतीय संगीत-सम्मेलन जो समाप्त हो गया। विशाल पंडाल दर्शकों से भरा रहता था। बाहर से आनेवालों में मास्टर बात, खानसाहब गुलामअली और मिस मैनका के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कार्य-क्रम दिलचस्प होने के कारण जनता के आग्रह पर सम्मेलन एक दिन के लिए और बढ़ाना पड़ा। अंतिम दिन सम्मेलन के उप-सभापति श्री जयकृष्ण मेहरा असि-लोकों एण्ड कैरिज सुपरिन्टेन्डेन्ट का संगीत विषय पर एक संक्षिप्त भाषण हुआ। आपने अपने भाषण में मीरा, भक्त सूर-दास और अमीर खुसरो के उदाहरण देकर संगीत की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। अंत में श्री मेहरा ने श्री शिवदासानी चीफ़ कमिश्नर और रायबहादुर ठाकुर ओंकारसिंह डिप्टी कमिश्नर, रायसाहब जवाहरलाल रावत और रायबहादुर पंडित मिट्ठनलाल भार्गव को सहयोग प्रदान करने पर धन्यवाद दिये।

—संवाददाता

* * *

ंडित वंशीधर मिश्र, एम० एल० ए०,
प्रान्तीय असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के

कांगड़ी गुरुकुल विश्वविद्यालय में तुलनात्मक धर्म-विज्ञान और अर्थ-शास्त्र के विद्वान् उपाध्याय श्री० पं० हरिदत्त जी वेदालंकार को उनकी लिखी हुई "हिन्दू-विवाह-मीमांसा" नामक पुस्तक पर हिन्दी-मण्डल" नामक साहित्यिक की ओर से १२५०) बारह सौ रुपये का पारितोषिक प्रदान किया है। इस ग्रन्थ में हिन्दू-विवाह संस्था ऐतिहासिक क्रमिक विकास दिखा सुयोग्य लेखक ने हिन्दू-विवाह संस्था आधुनिक स्थिति और भविष्य पर अच्छा विवेचन किया है। निश्चित हो यह पुस्तक हिन्दी साहित्य में अपना विशि और गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त करेगी।

कांगड़ी गुरुकुल विश्वविद्या आगामी उपाधि वितरण उत्सव पर कोर राज्य के दीवान सर सी० पी० स्वामी ऐयर दीक्षान्त भाषण देंगे। महोत्सव और दीक्षान्त समारोह ईस्टर की छुट्टियों में होगा। कांगड़ी में श्री बिरला जी द्वारा निर्मित वे का उद्घाटन आगामी २६ जुलाई आर्य-समाज के नेता श्री नारायण (दिल्ली) के कर-कमलों द्वारा हो

—सं

* *

कलकत्ता दुर्भिक्ष-सहायक तालों की अवधि पहली अप्रैल से लिए फिर बढ़ाई गई है। इन अस्प कुल २०,०३० रोगियों के रहने का है। ३८३ डाक्टर, ३,५३१ ५,९५१ अन्य नौकर इन अस्पतालों कार्य करने के लिए नियुक्त हैं।

मैं शा सबसे
स्टैनक्रीम
केश सँवारने की सर्वोत्तम
केशों को जमाती
चमकाती
चिटचिटाहट से परे
व्यवहार में साफ
केश के लिये उपकारी
आजकल
मिल रही

भंग की तरंग

…लीग की ओर से कहा गया …आजाद शिमला-सम्मेलन में …। मुसलिम लीग के आगे …भी कोई चीज़ नहीं हैं, …आजाद ही हैं।

*

…ने कायदे आज़म की धम- …और ध्यान नहीं दिया और …आजाद को बुला ही लिया। …था कि कोई वायसराय …के मत के विरुद्ध नहीं चल …वेवेल ने बहुत साहस का …!

*

…शिमले में एक भाषण देते …ने कहा है कि हम चाहते …ने शीघ्र अपना विधान …गया। जान पड़ता है …नशा चढ़ जाता …लोगों को भूल …।

चुनाव के सम्बन्ध में एक भाषण अमरी साहब दे रहे थे। उस समय श्रोताओं में से एक व्यक्ति ने टोका और कहा कि हम लोगों को अब युवक चाहिए अमरी बहुत बूढ़े हो गए हैं। श्रीमती अमरी वहाँ उपस्थित थीं, उन्होंने जोरों से इसका विरोध किया। जब श्रीमती अमरी उन्हें युवक होने का सर्टिफिकेट देती हैं तब और किसी के कहने से क्या होता है?

* * *

ग्वालियर के एक गाँव में राजपूतों ने हरिजनों पर हमला किया। राजपूत वीर जाति ठहरी, वीरता दिखानी ही चाहिए। जब और कोई नहीं मिला तो बेचारे हरिजन ही सही।

* * *

बहुत लोगों की राय है कि वेवेल-योजना में हिन्दू-मुसलमानों को बराबर जगहें दी गईं, यह अन्याय है। हमारी समझ में तो यह दया है। हिन्दुओं को भी मुसलमानों के बराबर कर दिया गया इससे बढ़कर क्या मेहरबानी हो सकती है? नहीं तो हिन्दुओं को एक भी जगह नहीं मिलनी चाहिए थी। क्या हिन्दू भी कोई जाति है?

मेरी द्विविधा

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

…अब तक में निश्चित कौन ठीक है सामा,
…की खींच रही बे फुलिस्टाप, बे कामा।
कौन ठीक है क्या पहनूँ—मैं धोती या पाजामा,
'परिमल' पढ़ूँ मस्त होकर या रो-रो करके 'यामा'।
…मुलाकर वपु को या बन जाऊँ—गामा,
…शान सहित या धौंसा और दमामा।
गांधी—का चरखा है महासभा का है हंगामा,
जैसे एक हृदय हो सम्मुख कई खड़ी हों बामा।
…द्विविधा में निकल न पाई कुछ इच्छा अभिरामा,
…बाहर नहीं निकलते कभी दलाई लामा॥

…मंत्रिमंडल ने लीग की …के कानून के संबंध में …दिया। कायदे आज़म …अपनी कुंडली दिखानी …पर साढ़े साती तो नहीं

*

…पता चला है कि सबसे …कांग्रेस में होते हैं। …संख्या के तो सैकड़ों हैं। …इस समय १६६ साल का …है, समुद्र-मंथन के समय …बूँदें उधर भी

*

…है जिसे हम लोग …में जानते हैं। यह …थी। इस- …हुआ। ननि- …सुनकर चित्त …हम लोगों …नानियों का रंग-

* * *

कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड में एक सदस्य ने एक प्रस्ताव भेजा है कि कुत्तों तथा वेश्याओं पर टिकस लगाया जाय। कात्यायन ने कुत्ता युवक और इंद्र को एक साथ तो कर दिया था किन्तु कुत्तों ओर वेश्याओं का संयोग कानपुर में ही होता दिखाई देता है।

* * *

वेश्याओं की आमदनी जानने के लिए, म्युनिसिपल सदस्यों की एक कमेटी होनी चाहिए जो समय-समय पर जाँच करके आमदनी के अनुसार टिकस लगाया करे। इस समिति के सदस्य होना बहुत से लोग स्वीकार करेंगे।

* * *

क्या कानपुर में कोई प्रगतिशील नहीं है जो इस प्रस्ताव का विरोध करे? इनकम टैक्स के ऊपर यह अलग से टैक्स कैसा? क्या कानपुर में वेश्याओं की आमदनी इधर अधिक बढ़ गई है?

—अगड़धत्त शर्म्मा

महादेवी का
विवेचनात्मक गद्य
संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०
(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है।……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।
मूल्य दो रुपये बारह आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका सम्मूद्ध
जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाना…मस्तिष्क शीतल रखना है
JM-1-H

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कलकत्ता

विदेश तथा युद्ध-समाचार

ब्रिटेन में चुनाव-आन्दोलन जोर पकड़ रहा है

सानफ्रांसिस्को-सम्मेलन की इतिश्री २६ जून को हो गई

ब्रिटेन में चुनाव-आन्दोलन तेजी से चल रहा है। जिस क्षेत्र (स्पार्कब्रुक) से मि० एमरी खड़े हुए हैं वहीं से दो और व्यक्ति खड़े हुए हैं। उनमें से एक हैं श्री रजनी पामदत्त (कम्यूनिस्ट) और दूसरे हैं एल्डरमैन सुमेरे (मज़दूर उम्मीदवार)।

श्री रजनी पामदत्त ने अपने एक भाषण में मि० एमरी को हराने के लिए संयुक्त समर्थन की अपील की है। उनका कहना है कि मि० एमरी ने भारत-मंत्री की हैसियत से जो कुछ भी किया है वह प्रजासत्तावाद के लिए कलंक है। उन्होंने यह भी कहा कि मि० एमरी कालिमामय टोरी प्रतिक्रियावाद के प्रतिनिधि हैं। कहा जाता है कि इस क्षेत्र में चुनाव की लड़ाई बहुत कड़ी होगी और कोई नहीं कह सकता कि विजय किसकी रहेगी।

इंगलैंड के नये चुनाव में क्या मिस्टर अमरी पुनः चुने जायेंगे ?

बेलजियम में लिबरल तथा समाजवादी दोनों दल राजा लिओपोल्ड के खिलाफ़ हो उठे हैं। राजा लिओपोल्ड से गद्दी त्याग देने को कहा जा रहा है, पर वह इसके लिए राजी नहीं हो रहे हैं। पर दोनों दलों के विरोध के कारण राजा लिओपोल्ड किसी भी सरकार की स्थापना के लिए पार्लामेंटरी बहुमत नहीं पा सकेंगे, ऐसा अनुमान किया जाता है।

सम्मेलन की कार्रवाई समाप्त हो चली है। अन्तिम अड़ंगा नये विश्व-संगठन की साधारण सभा में विवाद-क्षेत्र की सीमा निर्धारित करने के प्रश्न का रह गया था। उस पर भी अब पाँच महाशक्तियों तथा आस्ट्रेलिया के बीच समझौता हो गया है। इस अड़ंगे के दूर होने के फलस्वरूप साधारण सभा नये अधिकार-पत्र के अन्तर्गत किसी भी विषय पर वाद-विवाद कर सकेगी।

२६ जून को राष्ट्रपति ट्रूमान के भाषण के बाद सम्मेलन समाप्त हो गया।

सीरिया और लेबनान

उत्तर-पश्चिम सीरिया में तुर्की सीमा के निकट फिर लड़ाई हो गई और फ्रेंच सैन्यदलों ने स्थानीय सैनिकों पर गोलियाँ चलाईं। एलेप्पो में सीरिया-निवासियों के एक समूह ने फ़्रेंच बारिकों पर आक्रमण किया। ब्रिटिश सैन्यदलों ने बीच में पड़कर उन्हें रोका और फ्रेंच सैनिकों को स्थान खाली करने की सुविधा प्रदान की। सीरिया-निवासियों ने जब फ्रेंच बारिकों पर हमला किया तो उन्होंने फ्रेंच कमांड के अन्तर्गत बहुत-से सीरियन सैनिकों को फ्रेंच सेना का साथ छोड़ देने के लिए राजी कर लिया।

फ्रेंच सैनिकों ने सीरियनों को आक्रमण करते देख पलटे में गोलियाँ चलाईं, ब्रिटिश फौजों के बीच-बचाव से मामला शांत हुआ।

जनरल डे गाले ने लेवान्ट के मामले में हस्तक्षेप करने के लिए ब्रिटेन को दोषी ठहराया है और इस विषय को अन्तर्राष्ट्रीय संघ में विचारार्थ रखने का प्रस्ताव किया है।

मित्रराष्ट्रों तथा मार्शल टिटो के बीच सीमारेखा के सम्बन्ध में समझौता हो गया है। ट्रीस्ट के दक्षिण पोला नामक बंदरगाह से लेकर ड्रावे नदी पर स्थित विलाश नामक स्थान के बीच एक सीमारेखा दोनों के अधिकार-क्षेत्र के बीच निर्धारित की जावेगी।

सानफ्रांसिस्को-सम्मेलन समाप्त

सानफ्रान्सिस्को-सम्मेलन में संरक्षण-सम्बन्धी प्रस्ताव पर पूर्ण मतैक्य हो गया है। इस प्रस्ताव में संरक्षित पराधीन राष्ट्रों को पूर्ण स्वतंत्रता दिये जाने का संशोधन नहीं रखा गया है और केवल उन्हें क्रमिक गति से स्वशासन की ओर अग्रसर करने की नीति निर्धारित की गई है।

ओकीनावा की लड़ाई ८२ दिन के बाद अब समाप्त हो गई है। यह लड़ाई बहुत ही कड़ी रही। इसमें ८७,३४३ जापानी मारे गये और २,५६५ क़ैद किये गये।

ओकीनावा और बोर्नियो

ओकीनावा के दक्षिण-पश्चिम में मियाको द्वीप के निकट दो मित्रराष्ट्रीय आक्रमणकारी नौ सेनायें आ पहुँची हैं। खास जापान के दो दक्षिण द्वीप हुनश और क्यूशू पर हवाई क़िलों के आक्रमण का वेग बढ़ गया है। इन सब कारणों से जापान में यह आशंका की जा रही है कि क्यूशू में अमेरिकनों का आक्रमण सन्निकट है।

जापानी सैन्यदलों ने वेनचो के बंदरगाह पर फिर से क़ब्ज़ा कर लिया है। चीनी सैन्यदल क्वांगसी प्रान्त में लियूचौ से २८ मील पश्चिम की ओर सान का चीफ़ तक पहुँच गये हैं। लियूचौ हिन्द-चीन के लिए जापान का दक्षिणी गलियारा है।

बोर्नियो में आस्ट्रेलियन सैन्यदल उत्तरी तट पर स्थित टूटोंग नामक स्थान की ओर ३५ मील तक आगे बढ़े हैं और ताराकान शहर के बहिर्भाग में स्थित जापानी अड्डे पर भी उन्होंने क़ब्ज़ा कर लिया है।

स्वदेश

शिमला में नेता-सम्मेलन २५ जून को दिन में ११॥ बजे वायसराय-भवन में आरम्भ हुआ। महात्मा गांधी को छोड़कर सभी निमंत्रित सज्जन उपस्थित थे। सम्मेलन में निमंत्रित सभी सज्जनों से बारी-बारी हाथ मिलाने और दो-चार शब्द उनसे बोलने के बाद वायसराय लार्ड वेवेल वायसराय-भवन के लान को पार कर वहाँ उपस्थित बहु-संख्यक पत्र-संवाददाताओं के पास पहुँचे और उन लोगों से इस बात पर जोर दिया कि बहुत संयत ढंग से सम्मेलन-सम्बन्धी समाचार प्रकाशित करें।

आज सम्मेलन के आमंत्रित सदस्यों का स्वागत करते हुए वायसराय ने कहा, 'यह वैधानिक समझौता नहीं है, यह भारत की जटिल समस्याओं को अंतिम रूप के हल करने के लिए किया गया प्रस्ताव नहीं है। यह योजना ऐसी भी नहीं है जिसमे कि अन्तिम निर्णय के सम्बन्ध में पहले से कोई फ़ैसला दे दिया गया हो या उसमें कोई पक्षपात की बात हो। यदि यह सफल हुई तो मुझे विश्वास है कि इसके द्वारा समझौते का मार्ग प्रशस्त और अधिक निकट हो जायगा।

हमारी सबकी राजनीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता तथा सद्भावना की यहाँ परीक्षा होगी, केवल भारत की दृष्टि में नहीं, संसार की दृष्टि में। मैंने अपने ब्राडकास्ट में कहा था कि हमें कुछ बातें भूल जानी चाहिएँ और कुछ क्षमा कर देनी चाहिएँ। हमें अपने पुराने ईर्ष्या-द्वेष से ऊपर उठना चाहिए, हमें अपने वर्गगत तथा दलगत लाभ से ऊपर उठना चाहिए। और भारत की भलाई पर, ४० करोड़ जनता की भलाई पर विचार करना चाहिए तथा सोचना चाहिए कि हम अभी तथा भविष्य में भारत की उन्नति के लिए सम्राट् की सरकार के इस नये प्रस्ताओं को किस प्रकार मिलकर कार्यान्वित कर सकते हैं। यह सरल कार्य नहीं है, और जब तक हम ऊँचे स्तर से विचार-विनिमय न करेंगे, हम सफल न होंगे।

वायसराय ने आगे कहा कि फिलहाल आप लोगों को मेरा नेतृत्व स्वीकार करना ही होगा। जब तक विधान में सभी की सहमति से परिवर्तन नहीं होता तब तक भारत में अच्छी शासन-व्यवस्था और
शान्ति रखने के लिए मैं सम्राट् की स
के प्रति जिम्मेदार हूँ। आप विश्वास
मैं भारत का सच्चा मित्र हूँ। इस
रेन्स में, जो कि मैं विश्वास कर
कि भारत के सर्वोत्तम हित के लि
होनेवाली बहस में मैं रहनुमाई करने
कोशिश करूँगा।"

जानकार हल्कों की बातचीत से
पड़ता है कि वैवेल-सम्मेलन शायद
के अधिवेशन के बाद कुछ दिन
स्थगित हो जाय।

* *

ज्ञात हुआ है कि श्री अरविन्द
ने वेवेल-प्रस्तावों के पक्ष में अप
प्रकट किया है और वह सिफ़ारिश
कि वेवेल प्रस्ताव स्वीकार कर लिए
उन्होंने यह कहा कि वेवेल-योजना
प्रस्ताव से अच्छी है।

* *

कलकत्ते के भारतीय व्यवसायि
ने भारत सरकार से यह अपील की
देश की बदली हुई स्थिति को ध्या
रखते हुए भारत-रक्षा क़ानून के अ
जारी किए गए विविध क़ानूनों और
नेन्सों में सुधार किए जावें।

* *

कांग्रेस के प्रधान मंत्री आचार्य कृपलानी
ने एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते
हुए कहा कि वायसराय को समस्त रा
नीतिक क़ैदियों को छोड़ देना चाहिए
उससे उनकी घोषणा के लिए
अनुकूल वातावरण उत्पन्न होता।

* *

श्री हुसेन भाई लाल जी एम०
ए० (केन्द्रीय) ने इस बात पर खेद
किया है कि मुसलमानों में शिया,
ईसाई, एँग्लो-इण्डियन तथा अन्य
संख्यकों के प्रतिनिधि शिमला-सम्मे
निमंत्रित नहीं किए गए, यद्यपि
सदा युद्ध-प्रयत्नों में सरकार के सा

* *

हिन्दू महासभा शिमला-सम्मेलन
अलग क्यों रक्खी गई, इस
वक्तव्य देते हुए मौलाना आज़ाद ने
कि इसका एक कारण यह हो सकता
जिन व्यक्तियों को निमंत्रित किया
वे एसेम्बली की किसी न किसी पा
सम्बन्धित हैं, पर हिन्दू महासभा
कोई पार्टी वहाँ नहीं है।

* *

हिन्दू महासभा के प्रधान
एल० बी० भोपतकर ने वेवेल
के सम्बन्ध में अपना विचार प्रकट
हुए कहा कि यह योजना न केवल रा
और लोकतंत्र के सिद्धान्तों के वि
बल्कि भारत को नये ढंगों से वि
करनेवाली है। वह मुसलमानों का
करनेवाली और हिन्दुओं के प्रति
पूर्ण है।

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी २)
अनुराग १)
कलंक १)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥=)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

दी अथवा बच्चों की—
शिक्षा के लिये——

एक मुश्ती वैवाहिक व जीवन प्रवेश पालिसी
सर्वप्रिय होती जा रही है
आप भी बीमा कराकर इससे लाभ उठायें।
विशेष विवरण के लिये लिखिये

स्वदेशी बीमा कम्पनी लिमिटेड
स्वदेशी बीमा नगर, आगरा।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

े हैं इनकी चालें-
नको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

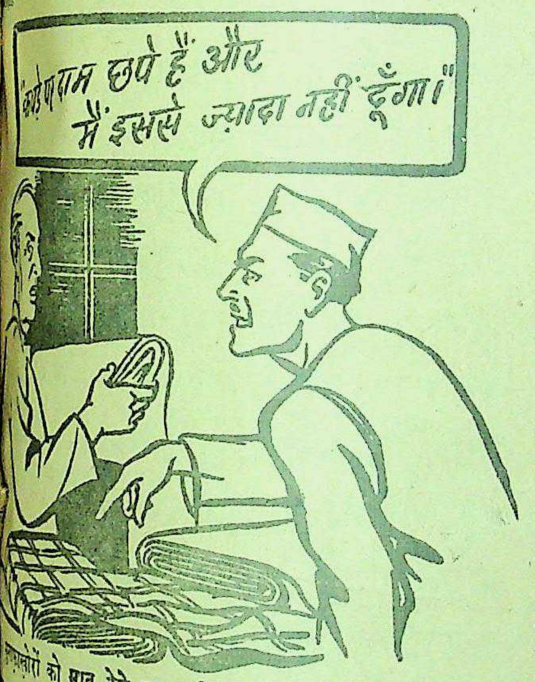
दाम छपे हैं और
मैं इससे ज़्यादा नहीं दूँगा।"

ज़ोरों को मात देने का यही उपाय है। उनके धोखे में
अगर वे बेजा दाम लेना चाहें, तो रसीद ले लीजिए और
कर दीजिए।

ब्लैक मार्केट से
रगिज़ न ख़रीदिए
स तरह ब्लैक मार्केट
ख़त्म हो जायगा

के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

३४ लाख रुपये रोज़
लगाये गये!

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) आपको अपनी रक़म बहुत अच्छी शर्तों पर हिन्दुस्तान को ऋण की भाँति देने का एक और सुअवसर प्रदान करता है। आप अपने देश को सहायता पहुँचायेंगे, भावों को घटाने में सहयोग करेंगे, और ३ फ़ी सदी सालाना व्याज, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार आपके घर पर पहुँचता रहेगा।

आप जितनी रक़म चाहें इस ऋण में लगा सकते हैं। गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म हर हालत में १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। इस दौरान में अगर आपको नक़द रुपये की ज़रूरत हो तो इस लोन को जब चाहें मार्केट में बेच सकते हैं। अगर आप पर इनकम टैक्स लागू न होता हो या कम शरह पर लागू होता हो, तो अधिक चुकाया गया टैक्स वापस मिल जायगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा ख़रीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी ख़ज़ाने से ख़रीद लें।

AAA 225 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

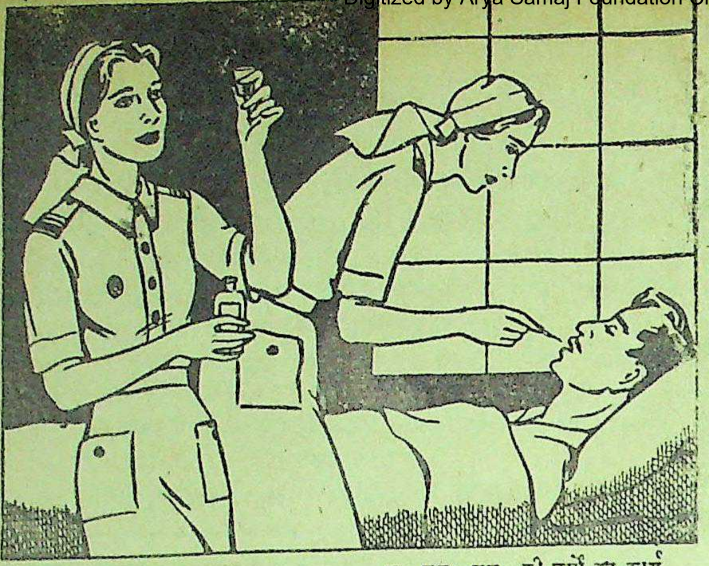

ए० एन० एस० की नर्सों का कार्य

महिलाओं के लिए स्वतन्त्र, निःस्वार्थ तथा सम्मानपूर्ण जीवनवृत्ति

आज कल समाज यह नहीं पसन्द करता कि कोई नवयुवती घर पर आलस्य से अपना समय बिताये। आप जैसी बुद्धिमती आधुनिक महिला को हिन्दुस्तान की आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस में मनोरंजक एवम् लाभप्रद नौकरी मिल सकती है। "दया की संदेशवाहिका" नर्स के श्वेत वस्त्र और टोपी से बढ़कर कोई भी वर्दी सम्मानपूर्ण नहीं होती।

ए० एन० एस० (आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस) में उच्चकोटि की जो ट्रेनिंग मिलती है उसके आधार पर लड़ाई के बाद शहरी क्षेत्र में नर्स का बहुत अच्छा काम सरलतापूर्वक मिल सकता है। यदि आपका कार्य-क्रम भिन्न है तो भी जो डाक्टरी ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह आपकी गृहस्थी में अथवा राष्ट्रीय सामाजिक सेवा के क्षेत्र में बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। इस सुअवसर को हाथ से न जाने दीजिए।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है — (१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२६ रु० मासिक तक (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१३५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का पिछला अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही डयूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

a·n·s

आग्ज़ीलरी नर्सिङ्ग सर्विस

महिलाओं के लिए
सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

AAA 1197

पूरे विवरण के लिए आज ही लिखें।

लखनऊ—लेडी डिस्ट्रिक्ट आफिसर
सेन्ट जान एम्बुलेन्स ब्रिगेड
ओवरसीज, ११० ए० दी
माल लखनऊ।

आगरा—मिसेज डी० गिब्ज
मैट्रन, थामस्टन हास्पिटल
आगरा।

"विजय-प्राप्ति का दृढ़ निश्चय"

लड़ाई के प्रारम्भ होने से बहुत प ही, संसार भर में हिन्दुस्तान के समुद्री बे और फ़ौज के जवानों की परम्परागत वीरता और साहस का सिक्का बैठ चुका था।

अब हिन्दुस्तान के विमान-चालकों को दिन दिन जो शानदार सफलता मिल रही है, उ देश की उज्ज्वल परम्परा में चार चांद दिये हैं। शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े विमान - चालक उस कीर्ति की पूर्णतया कर रहे हैं जो हिन्दुस्तान को वीरता के क्षेत्र प्राप्त है। साहस, बुद्धि तथा विजय-प्राप्ति दृढ़ निश्चय—ये गुण उनमें विशेष रू पाये जाते हैं। आज वे जापानियों का कुचल रहे हैं। कल वे हिंदुस्तान की युद्धो कालीन अभियान-कला के केंद्र होंगे। हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में इन जैसे और लोगों की अभी आवश्यकता है। भरती के नियम आप किसी भी भरती-अफ़सर से सकते हैं।

AAA

पुरातत्त्व-निबन्धावली—लेखक, महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल जी के पुरातत्त्व-सम्बन्धी तथा साहित्यिक और दार्शनिक निबन्धों का संग्रह किया गया है। इसमें कुल अठारह निबन्ध हैं और राहुल जी ने देश और विदेश के कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गां पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८८० पृ सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मि

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

जुलाई, १९४५

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक

Sunday, 8th July, 1945

द्वन्द्व—यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव-हृदय के अन्तद्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेपण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

सुरक्षा के लिये नया संघ"।
और अल्प-संख्यक।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

आजकल की लड़ाई कैसे लड़ी जाती है ?
गोपी (कहानी)—क्या वह कलंकिनी थी ?

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०
(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह !)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है।……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण परिपाक खूब हुआ है। सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा समाचार

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने

मूल्य २) दो रुपया।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फ़र्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

अब ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) वैसी ही बहुत अच्छी शर्तों पर आगामी सूचना तक मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को आपको घर बैठे पहुँच जाया करेगा।

इस ऋण में आप जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।

आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ऋण की असल रक़म १५ अगस्त, १९५९ के बाद, किन्तु १५ अगस्त, १९६१ से पहले पहले वापस मिल जायगी।

आपकी पूँजी आपको हर समय वापस मिल सकती है, क्योंकि यह लोन मार्केट में आसानी से बेचा जा सकता है। अभी आवेदन कीजिए।

ऋण के जिन खरीदारों पर इनकम-टैक्स लागू नहीं होता अथवा कम शरह पर लागू होता है, वे टैक्स का रुपया वापस ले सकते हैं।

AAA 222 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

इस सिलसिले को यह दिखाने के लिए प्रकाशित किया जा रहा कि असावधानी की बातचीत, वह चाहे निर्दोष ही क्यों न हो शत्रु को लाभ पहुंचा सकती है।

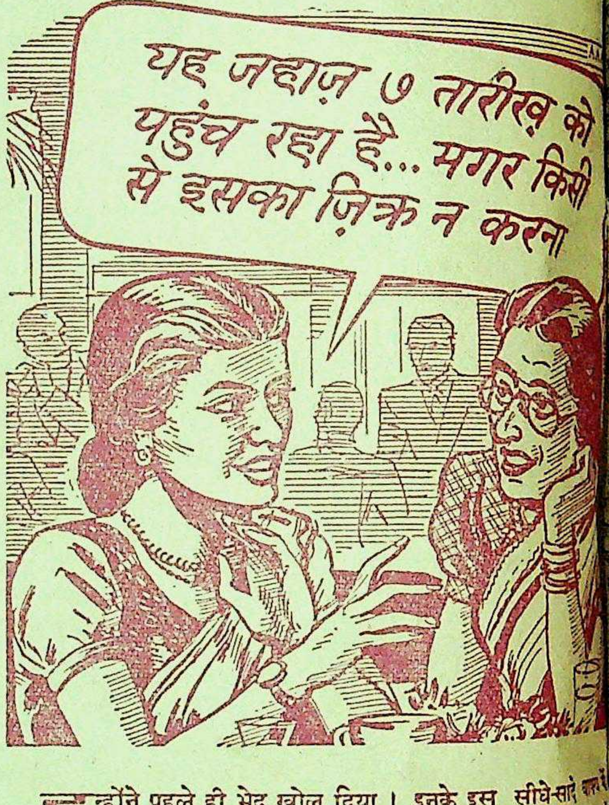
यह जहाज़ ७ तारीख़ को पहुंच रहा है... मगर किसी से इसका ज़िक्र न करना

इन्होंने पहले ही भेद खोल दिया। इनके इस सीधे-सादे दुश्मन के मतलब की सारी बात मौजूद है। इन महिला से तारीख़ का पता लग ही गया; अब दूसरे ज़रिये से यह मालूम किस बन्दरगाह पर जहाज़ पहुंच रहा है, वह इसके नाश की कर सकता है। और अगर उसे इसमें सफलता मिल असावधानी में कही गई उस ज़रा सी बात के कारण सैकड़ों जनता की आवश्यकता का हज़ारों मन सामान नष्ट हो जायगा। महिला को इसका पता नहीं कि उन्होंने कोई भूल की है।

देखिए, कहीं आपसे चूक न हो जाय। शत्रु के जासूस बड़े हैं और धुन के पक्के भी। छोटी छोटी बातों में, बन्द लिफ़ाफ़ों को सुरक्षित समझ कर पत्र-व्यवहार में, बातचीत में जहां बहुत से तार मिले रहते हैं, लोग ऐसी गुप्त भेद दे देते हैं, जिससे जनता के उपयोग के लिए आने वाली ही नहीं, बल्कि हमारे सैनिकों, नाविकों तथा विमान-चालकों जानें तक मुसीबत में पड़ जाती हैं। जंगी तैयारियों के बारे में कोई ज़िक्र न करके ही हम दुश्मन से अपना बचाव कर सकते हैं। इस हथियार से हम शत्रु को नीचा दिखा सकते हैं।

बातचीत में सावधानी उचि

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित।

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ८ जुलाई, १९४५

…७ संख्या ४५]

…धी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

…के नेता-सम्मेलन का क्या
…निर्णय १४ जुलाई
…। कांग्रेस वर्किंग-कमेटी
…हो चुकी। इससे मुसलिम
…मुसलमान परेशानी
…परेशानी की ऐसी
…सरकार पाकिस्तान
…सहायता न करेगी ?
…जिन्ना सबसे अधिक
…कलाम आजाद से।
…कांग्रेस इन महापुरुष
…बिठाकर मेरी नेतागिरी
…पर तुली हुई है। लेकिन
…तो है ही। क्या
…लीग और मिस्टर
…।

* * *

…वाइसराय की
…के निर्माण में क्रिया-
…? वाइसराय ने
…को मंत्रि-मंडल
…प्रगट की है।
…लीग के लिए
…क्योंकि मिस्टर
…मौलाना अबुल
…कम पंडित
…है। वाकई है
…जिन्ना लीग के
…गांधी के सिवा
…नहीं कर सकते।
…तो सबसे बड़े
…करते आज मिस्टर
…बदनाम हो गये हैं।
…के आगे मौलाना
…क्या है ?

* * *

…और मिस्टर जिन्ना
…की कार्य-कारिणी
…मुसलमान सदस्य हों
…में रहें। किन्तु लार्ड
…जान पड़ती है कि
…मुसलमान चाहे वह लीगी
…और कोई दलदली।
…कुछ भी हो, नवाबजादा
…की परेशानी बढ़ जाना
…हरि भजन को ओटन
…भूलाभाई देसाई से
…समझौता क्या किया
…। लेकिन इसको
…और दाँव-पेंच। अँगरेज़
…समझते हैं किन्तु उन्हें
…मुबारकबाद, वह घर
…। उन्हें तो अपने काम
…वेवेल यह जानते हैं
…ऐसी शक्तिशाली और
…सहयोग मिल रहा है जो
…प्रतिनिधित्व करती है तो
…उन्हें क्या परवाह !
…लीग को याद किया
…कमांडर कंसीडरेशन
…रहता है।

*

…सबसे बड़ी यह है कि
…आजाद और क्या करें
…वक्त तो मुसलिम लीग के विरोध में अन्य मुसलिम न जाने कितनी जमातें टिड्डी की तरह टूट पड़ी हैं और लीग की लहलहाती खेती को चर जाना चाहती हैं। जमायतुलउलेमा, मोमिन, अहरार, शिया और इसी तरह की जाने कितनी जमातें लीग के मुकाबले मैदान में आ डटी हैं। आखिर इन लाखों मुसलमानों का प्रतिनिधित्व भी तो कौंसिल में होना चाहिए या लीग ही सब के हिस्से का हलुआ हजम कर जाना चाहती है ? भाग्य की बात तो देखिये कि अँगरेज़ सरकार इस वक्त इस क़दर न्याय पर तुल गई है कि भरी कान्फ्रेंन्स में भी मिस्टर जिन्ना के विरोध करने पर भी लार्ड वेवेल ने मौलाना आजाद को अपने दल के संबंध में सब कुछ कहने का मौका दिया है। हमें दुःख है कि मिस्टर जिन्ना न जाने किसका मुँह देखकर शिमला की ओर रवाना हुए थे ?

* * *

महात्मा गांधी तो निरपेक्ष भाव से जाकर शिमला में जम गये हैं। उन्हें किसी से क्या लेना देना ? कांग्रेस जो कुछ चाहे करे और मौलाना आजाद जो चाहें करायें। खैर उनकी छोड़िये। लीग की खबर श्री भूलाभाई देसाई और श्री राजगोपालाचार्य भी नहीं ले रहे हैं। राजा जी तो लीग के पाकिस्तानी दावे के समर्थक भी रहे हैं। श्री भूलाभाई बेचारे पिछली बातें भूलते से नजर आ रहे हैं। यह अफ़सोस की बात है। लेकिन किया क्या जाये ? इस वक्त लीग के ग्रह दुरुस्त नहीं हैं। अब तक लीग तथा उसके नेताओं का राज्य रहा और अब कुछ दिन फिर कांग्रेसी राज्य की बहार देखिये। सत्याग्रह, धरना और असहयोग का अस्त्र तो गांधी जी ने पहले ही से लोगों को दे रखा है किन्तु मुसलिम लीग के खानबहादुर और नवाब साहबान तो ब्रिटिश सरकार के साथ गुनाह करना भी तो पसंद नहीं करते ? मुसलिम सभ्यतावाली जमात जो ठहरी !

* * *

हाँ, चल तो मेरे घोड़े सरपट चाल

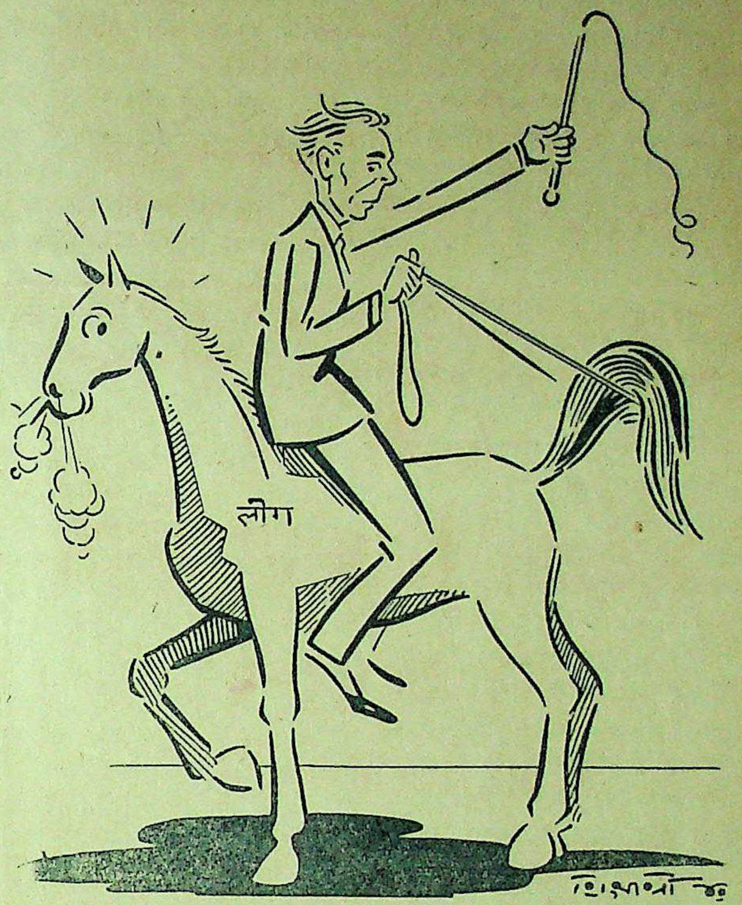

कहा जाता है कि सरदार पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू और पंडित गोविन्द वल्लभ पंत को वाइसराय की कार्यकारिणी में रहने के लिए कहा जायेगा। बात तो पते की है। किन्तु क्या ही अच्छा होता—जैसा कि आचार्य कृपलानी के कथनानुसार देसाई-लियाक़तअली पैक्ट के अनुसार इरादा यह था कि वाइसराय की कार्यकारिणी कौंसिल बन जाये तब वर्किंग-कमेटी के सदस्य जेलों से छोड़े जायें—काश ! पहले ही कौंसिल का निर्माण हो गया होता ? लेकिन साहब तो बड़ा बुद्धिमान् होता है। उसने कोदों देकर दुनिया को उँगली पर नचाने की कला नहीं सीखी है। उसी ने सब कुछ अब तक किया है और वही सब कुछ आज भी कर रहा है खूब सोच-समझकर और बड़ी दूरंदेशी से। उसके तो स्वार्थ की पूर्ति पहले होनी चाहिए। कांग्रेस, लीग, सभा, जमैयत सब उसे समय समय पर प्यारे हैं। इसके बाद स्वराज्य, जनतंत्र, स्वाधीनता, स्वतंत्रता जो चाहे माँग लीजिये। देने से इनकार करना उसने सीखा ही नहीं।

* * *

वाइसराय ने पंडित नेहरू से कहा है कि हम लोग एक दूसरे को क्षमा कर दें और पिछली बातें भूल जायें। जरूर क्षमा कर देना चाहिए और भूल जाना चाहिए। नहीं तो कौंसिल का निर्माण कैसे होगा ? पिछले अगस्त आन्दोलन के समय जो कुछ विपदायें आईं यदि वह सब केवल पद-प्राप्ति की गढ़े में तोप दी जायें तो इससे बढ़कर कांग्रेस की राष्ट्रीयता और क्या हो सकती है ? पद क्या ठहरा रायसाहबी और रायबहादुरी के खिताब हो गये। लेकिन जनता बड़ी स्वार्थी और कान की कच्ची है।

गीत

लेखक, श्री सुधीन्द्र एम० ए० 'साहित्यरत्न'

साधना हैं गान मेरे !
विविध गीतों में निरन्तर गा रहा मैं आत्म परिचय !
भर उन्हीं में स्वगत सुख-दुख प्रणय-परिणय, जय-पराजय !
घोल देते अन्य जन हैं गान में अपनी व्यथाएँ,
गूँथ देते हैं उन्हीं में सुख-दुखों की निज कथाएँ—
गीत बनते विश्व-जन के
ये सरल आख्यान मेरे !
लक्ष्य कुछ गोपन लिये सब चल रहे अपने पथों से,
एक ही पथ दीखता मुझको सभी के उन रथों से,
रूप सबकी पुतलियों में मैं स्वयं का ही निरखता,
और अधरों पर सभी के प्रेम का पीयूष चखता,
बन गये हैं गान ही ये
आज अनुसन्धान मेरे !
श्वास जो दो बाहु से फैले किले निज प्रेय को भर,
बाँधने आये मुझे वे आज शत-शत पाश बनकर,
एक तुमको बाँधने को जो रचे ये बन्ध अगणित,
रह गया उनमें स्वयं मैं आज आठों याम सीमित,
बस गये इन बन्धनों में
आज युक्ति विधान मेरे !
देखने तुमको यहाँ मैंने मरण के द्वार खोले,
'डूब लो मुझमें प्रथम' यों प्रणय—पारावार बोले !
मरण जीवन-नाट्य के हैं पट जिन्हें कि उठा रहे तुम,
अमर अभिनेता बने मुझमें स्व-रूप रचा रहे तुम,
पा गये तुमको मुझी में
आज प्रणयी प्राण मेरे !

सम्पादक का पृष्ठ

१४ जुलाई

शिमला में होनेवाले नेता-सम्मेलन के भाग्य का निर्णय १४ जुलाई को होगा। क्या केन्द्रीय सरकार के भारतीयकरण के एक क्रियात्मक स्वरूप का निर्णय वाइसराय द्वारा उसी दिन होगा? अब तक की कार्यवाहियों को देखने से यह स्पष्ट हो गया है कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी संपूर्ण राष्ट्र के हित को ध्यान में रखकर लार्ड वेवेल की योजना के कार्यान्वित होने में सहयोग देने के लिए तत्पर है। किन्तु मुसलिम लीग? जिसके स्वार्थों का ध्यान सदा से सरकार रखती आई है, आज वही लीग और उसके विधाता मिस्टर जिन्ना योजना के सफलीभूत होने में बाधक सिद्ध हो रहे हैं। लीग चाहती है कि शिमल-सम्मेलन असफल हो और वेवेल-योजना खटाई में पड़ जाये? किन्तु हिन्दू-मुसलिम एकता का सदा से नारा लगाने वाली सरकार क्या इस समय अपनी बंदरबाँटवाली नीति को तिलांजलि देने जा रही है? आखिर नेता-सम्मेलन चौदह दिन के लिए स्थगित क्यों किया गया? वाइसराय और मिस्टर जिन्ना को १४ जुलाई तक यह भी पता चल जायेगा कि ब्रिटेन के चुनाव का क्या परिणाम निकला और भावी शासन-नीति के संचालन में टोरियों का प्रभुत्व होगा या अन्य दलों का? मिस्टर जिन्ना का निर्णय तो बहुत कुछ इसी आधार पर निर्भर है और वाइसराय द्वारा सदस्यों के चुनाव पर भी इसका प्रभाव किसी न किसी रूप में पड़ ही सकता है। वास्तव में अब वह स्थिति आ गई है जब कि लार्ड वेवेल की अग्नि परीक्षा होनेवाली है। यदि लीग अपने दावे पर दृढ़ रहती है और वाइसराय बिना उसकी परवाह किये हुए भी कार्य-कारिणी का निर्माण केवल कांग्रेस के सहयोग से करते हैं तो सचमुच इस समय संसार में यह एक विचित्र घटना होगी। और यदि केवल लीग की आड़ में नेता सम्मेलन भंग होता है तो कहना यही पड़ेगा कि यह सब कुछ जो अब तक हुआ ब्रिटिश-नीति का मायाजाल था। किन्तु जान यही पड़ता है कि अब कुछ होकर ही रहेगा और वाइसराय लार्ड वेवेल कुछ करने पर तुल गये हैं। १४ जुलाई के दिन क्या निर्णय होता है इस पर भारत का भविष्य बहुत कुछ निर्भर है।

* * *

रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति

पंजाब प्रांतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की ओर से प्रांत में आल इंडिया रेडियो की हिन्दी-विरोधी सप्ताह बड़ी धूम-धाम से और सफलतापूर्वक मनाया गया। रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति तो अब व्यापक रूप से स्पष्ट हो गई है। शिमला सम्मेलन के समाचारों को प्रचारित करने में भी यह स्पष्ट हो गया कि उसकी नीति एक दल तथा सम्प्रदाय विशेष के लिए पक्षपातपूर्ण है। हम समझते हैं कि राष्ट्रीय कोष से जिस सार्वजनिक हित के लिए लाखों रुपये प्रतिवर्ष व्यय होते हैं उसके दुरुपयोग का यह भी एक प्रत्यक्ष प्रमाण है। वास्तव में रेडियो की सारी मशीनरी ही एक साँचे में ढली है। इसलिए उसमें आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। पंजाब ऐसे अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांत ने रेडियो की हिन्दी विरोधी नीति के संबंध में जो आवाज़ बुलंद की है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय उतनी थोड़ी है।

* * *

यह चिढ़ क्यों?

हिन्दी पत्रकार संघ, प्रयाग के एक प्रस्ताव द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि अहमदनगर में नजरबंद कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्यों को हिन्दी का कोई दैनिक या साप्ताहिक पत्र नहीं दिया जाता था। यद्यपि नजरबंद नेताओं ने इसकी माँग की थी किन्तु भारत सरकार के गृह-विभाग ने कोई सुनवाई नहीं की। पत्रकार संघ ने सरकार की इस हिन्दी-विरोधी नीति की तीव्र निन्दा की है। सच तो यह है कि सरकार सदैव से जन-संपर्क से घबड़ाती रही है। हिन्दी जनता की भाषा है और हिन्दी पत्र सदा से राष्ट्रीयता के पक्षपाती रहे हैं। इसलिए सरकार की दृष्टि में वह कांटे की तरह खटकते रहे हैं। यदि हिन्दी सरकार के लिए अहितकर तथा उपेक्षणीय मानी जाती रही है तो हिन्दी के पत्रों को वह कैसे प्रश्रय दे सकती है? जब नजरबंदों को अँगरेज़ी, उर्दू, मराठी, गुजराती आदि सभी भाषाओं के पत्र पढ़ने को मिलते थे तब हिन्दी के ही दैनिक और साप्ताहिक पत्रों से उन्हें क्यों वंचित रखा गया? हिन्दी राष्ट्रीयता की प्रतीक है। वह कभी भी सरकारी सहयोग से समुन्नत नहीं हुई। इसलिए इस प्रकार की उपेक्षा से उसका भविष्य उज्ज्वल ही होगा इसमें संदेह नहीं।

* * *

त्रिनेता सम्मेलन और शांति

आगामी त्रिनेता सम्मेलन में संसार में शान्ति और सुव्यवस्था की स्थापना के सम्बन्ध में कई महत्त्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित होनेवाले हैं। अमरीका, ब्रिटेन और रूस तीनों ने मिलकर सानफ्रांसिस्को सम्मेलन की इतिश्री जिस आधार पर की है कि उसे भावी महायुद्ध के लिए एक चुनौती समझा जाये तो अनुचित नहीं है। राष्ट्रपति ट्रूमन का दावा है कि त्रिराष्ट्र सम्मेलन शान्ति और सुरक्षा का कोई मार्ग ढूँढ़ निकालेगा। हम नहीं समझते हैं कि जो साम्राज्यवादी राष्ट्र हथियारों, फौजों और शक्ति के बल से संसार पर आधिपत्य जमाना चाहते हैं उन्हें शांति और सुरक्षा की बातें बघारते हुए संकोच क्यों नहीं होता? जब तक महान् राष्ट्रों में स्वार्थ लोलुपता वर्तमान है और जब तक छोटे राष्ट्रों को दलित और हड़प करने की नीति चालू है तब तक शांति और सुरक्षा केवल बकवास मात्र है। साम्राज्यवादियों ने शांति तथा प्रजातंत्र की स्थापना की आड़ में संसार में इतना भीषण युद्ध उत्पन्न किया जिसमें करोड़ों धन-जन की हानि हुई और आगे जो उपचार हो रहा है उसका क्या भविष्य होगा इसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती।

कचहरियों में हिन्दी की उपे

हिन्दीवालों की भीरुता और वकीलों की परे

लेखक, श्री चंद्रपाल वाजपेयी शास्त्री

कचहरियों में हिन्दी के प्रचार के लिए अर्द्ध शताब्दी से आन्दोलन हो रहा है
आज भी वहाँ हिन्दी भाषा तथा लिपि की जो उपेक्षा हो रही है उसका कारण है हि
भाषियों और प्रेमियों की अनुदारता और भीरुता। इस लेख में हिन्दी-साहित्य-सम्मे
प्रचारक श्री चन्द्रपाल जी ने अपने अनुभवों को प्रकट करते हुए वकीलों की कठिना
जिक्र किया है और हिन्दी भाषियों से हिन्दी प्रचार के इस आवश्यक अंग की पू
लिए सक्रिय होने का अनुरोध किया है।

संयुक्त-प्रांत की कचहरियों में हिन्दी की जो उपेक्षा होती है उसकी ओर हिन्दी-भाषियों का ध्यान समुचित रूप से नहीं गया तथा हम लोगों ने इस सम्बन्ध में अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया। रेडियो की भाषा के विरुद्ध आज अच्छा और संतोषजनक आन्दोलन चल रहा है, पर रेडियो से भी अधिक महत्त्व का कार्य कचहरियों की भाषा का सुधार है। रेडियो का संबंध तो शहरों में रहनेवाले धनी-मानी सुशिक्षित लोगों से है पर कचहरियों का संबंध सर्व-साधारण से है। कहने को तो उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाएँ कचहरी की स्वीकृत भाषाएँ हैं किन्तु हिन्दी के लिए साधारणतः वहाँ कोई स्थान नहीं है। साधारण देहाती कचहरियों में आकर भटकता फिरता है। जो काम वह स्वयं कर सकता है उसके लिए उसे पैसे देने पड़ते हैं तथा पैसे देने पर भी उसका काम अधूरा ही रहता है। प्रायः छोटी-छोटी बातों के लिए उसे नाजायज तौर पर ठगा जाता है। इसका कारण यही है कि जिस भाषा और लिपि में वह समझ सकता है तथा जिस भाषा और लिपि में उसे कागज पाने और दाखिल करने का अधिकार है उसमें उसका कार्य नहीं किया जाता बल्कि एक ऐसी भाषा और लिपि उसके ऊपर जबरदस्ती लादी जाती है जिससे वह बिलकुल अनभिज्ञ है। न्यायालय रहते हुए भी न्याय उसके लिए बहुत ही महँगा और दुरूह हो गया है। इसके अतिरिक्त उस बढ़ती हुई अदालतों की घूसखोरी की जड़ भी बहुत कुछ यही है। आज चारों तरफ सरल भाषा की पुकार है। सभी लोग कहते हैं कि हमें जनता की समझ में आनेवाली भाषा अपनानी चाहिए पर क्या किसी का ध्यान अदालती भाषा की ओर भी है? किसी भी अदालत का कोई भी समन देख लीजिए अर्बी, फ़ारसी के कठिन शब्दों से भरा हुआ है। फौजदारी, माल और दीवानी कोई भी अदालत ले लीजिए उसकी भाषा बिना कुछ खर्च किये न मुद्दई समझ सकता है न मुद्दाअलेह। इकरारनामे, वसीयतनामे, तमस्सुक तथा अन्य इसी प्रकार के कागज जिन अभागों को लिखाना पड़ता है वही जानते हैं कि उनका क्या परिणाम होता है? वे चाहते कुछ हैं लिखा कुछ और जाता है। वे तो बेचारे दस्तखत भर कर देते हैं। उन्हें क्या मालूम कि उसमें लिखा क्या है। मुन्शी लोग उनकी शर्तें एक गुप्त भाषा में गढ़ देते हैं तथा चतुर लिखानेवाले उनके लिखने वालों की अनभिज्ञता का बेजा फायदा उठाते हैं।

अशिक्षित देहाती की बात जाने दीजिए। हिन्दी के अच्छे-अच्छे विद्वान् भी इन कचहरियों में जाकर मूर्ख बन जाते हैं। एक हिन्दी का बी० ए० भी साधारण प्रार्थनापत्र अपने हाथ से लिखकर नहीं पेश कर सकता है। उसे मामूली उर्दू पढ़े अर्जीनवीस की सेवा में भेंट चढ़ानी ही होती है। हिन्दी पढ़े हुए वकील जो उर्दू नहीं जानते, अपने मुन्शी के आश्रित हैं। हिन्दी पढ़नेवालों
की संख्या तीव्र गति से बढ़
हिन्दीवालों की यह संख्या
शिक्षा किस काम की। यदि
सर्व-साधारण से संबंध रखने
काम नहीं देती तो उसका

आखिर यह सब क्यों?
उर्दू दोनों ही कचहरी की मानी
हैं और दोनों में ही कार्य हो
प्रत्येक व्यक्ति को अधिकार है
भाषा और लिपि में उसे सुविधा
पत्र दाखिल करे और ले।
भाषियों की भीरुता के कारण
यह अन्याय हो रहा है अन्यथा
उनके इस अधिकार को कोई
सकता। कचहरियों की एक परम्परा
आ रही है जिनके हाथ में वहाँ
हैं वह नौकरशाही की ही
हैं। वह कब चाहेंगे कि जनता
बातों को समझ सके वह तो एक
के दास हैं और उसके बनाये रखने में
लाभ है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की
में संयुक्तप्रांत की कचहरियों में
से हिन्दी की स्थिति की जानकारी
घूम रहा हूँ। इस सिलसिले में मुझे
वकीलों से बातचीत करने का
है। हिन्दी में काम न कर सकने
मजबूरियाँ वकीलों ने दिखाई
जिलों में एक-सी हैं।

(१) प्रायः वकील यह कहते हैं
हिन्दी के अर्जीनवीस ही नहीं मिल
मजबूरी वस्तुतः मजबूरी नहीं
लोग काम करना चाहते हैं,
हिन्दीवाले भरे पड़े हैं।
करना चाहते हैं, उनकी बात ही
गोरखपुर, जनपद हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
के सभापति पद से भाषण करते हुए
जी ने कहा था कि "हिन्दी
वकील अनुत्साहित करते हैं,
की प्रेरणा देने की अपेक्षा उन्हें पीछे
हैं। आज जो हिन्दी पढ़ते हैं
लिए अदालत में किसी काम की
रहती।" प्रतिवर्ष संयुक्तप्रान्त
से हजारों हिन्दी के युवक निकलते
जीविका के लिए मारे-मारे फिरते
कोई काम देनेवाला नहीं। वकील
तो उन्हें काम दे सकते हैं। पुराने
नवीसों से भी हिन्दी में काम
सकता है ऐसा शायद ही कोई
हो जो हिन्दी न जानता हो।
के अर्जीनवीस हिन्दी में अपने
काम-काज कर सकते हैं। रामायण
गीता पढ़ सकते हैं। पर अदालत का
नहीं कर सकते। आरम्भ में
कुछ असुविधा होगी पर अभ्यास
दूर हो सकती है। हिन्दी फार्मों की
पूरी तो हिन्दी में हो ही सकती है

(२) वकील दूसरी मजबूरी
दिखलाते हैं कि उर्दू में शीघ्रता से
होता है हिन्दी में देर लगती है। यह
थाथी है। सारे संसार का कार्य
नहीं होता। ऐसी लिपियाँ भी हैं जो

—शेष पृष्ठ १८ पर

कांग्रेस और मुस्लिम लीग

केन्द्रीय शासन का भारतीयकरण कैसे होगा ?

लेखक, डाक्टर रविशंकर रावल एम० ए०, डी० लिट०

> शिमला सम्मेलन की कार्यवाहियों से यह स्पष्ट हो गया है कि वाइसराय की कौंसिल का भारतीयकरण होगा। लार्ड वेवेल और कांग्रेस कुछ कर गुजरने पर उद्यत हैं किंतु मुसलिम लीग अडंगा डाल रही है। लेख में विद्वान् लेखक ने यह बतलाया है कि इस समय लार्ड वेवेल की इच्छा क्या है और कांग्रेस अपने आदर्शों की रक्षा करते हुए वर्तमान योजना की सफलता में किस प्रकार योग दे रही हैं। और लीग अडंगा डालने की नीति क्यों ग्रहण कर रही है। लेख सामयिक तथा सुन्दर है।

मौलाना आजाद जो शिमला सम्मेलन में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

आई है, यदि आज वही, चाहे वह अपने स्वार्थों के वशीभूत ही क्यों न हो, अडंगे के हल के लिए प्रयत्नशील है तो उसमें सफलता क्यों न मिलेगी? उसे सबसे अधिक भय था, कांग्रेस का। क्योंकि कांग्रेस यदि समझौते के लिए तैयार न होती तो सचमुच ज़िच का सुलझाना असंभव था। इस समय अँगरेज़ मुसलिम लीग की उतनी परवाह नहीं कर रहे हैं जितनी कांग्रेस की। कांग्रेस अब तक ग़ैर क़ानूनी है। सन् ४२ के अगस्त आन्दोलन से कांग्रेस के सभी नेता और कार्य-कर्त्ता जेलों में बंद कर दिये गये। सभी नेता इस बात में दृढ़ थे कि जो भी कठिनाई आयेगी उसे सहन किया जायेगा किन्तु यह स्थिति कब तक रह सकती थी? आखिर ब्रिटिश सरकार को संसार की परिस्थिति को भी तो देखना है? कांग्रेस के प्रति किये गये व्यवहार से वह अपने को संसार में कब तक अप्रिय बनाती रहती। इसी लिये योरोप के युद्ध समाप्त हो जाने पर अब उसके लिए आवश्यक हो गया है कि वह कांग्रेस ऐसी महान् तथा राष्ट्रीय संस्था को संतुष्ट करे क्योंकि एशिया तथा पूर्वी देशों पर उसे अपना आधिपत्य स्थापित करना बाकी है। केवल मुसलिम लीग को संतुष्ट और कांग्रेस को असंतुष्ट करके वह सफलता कदापि नहीं प्राप्त कर सकती थी। इन्हीं सब समस्याओं पर विचार करके भारतीय अडंगा सुलझाने के लिए ब्रिटिश सरकार स्वयं आगे बढ़ी है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य जेलों से छोड़ दिये गये और आज वह भी भारतीय राजनैतिक अडंगे को हल करने में व्यस्त हैं।

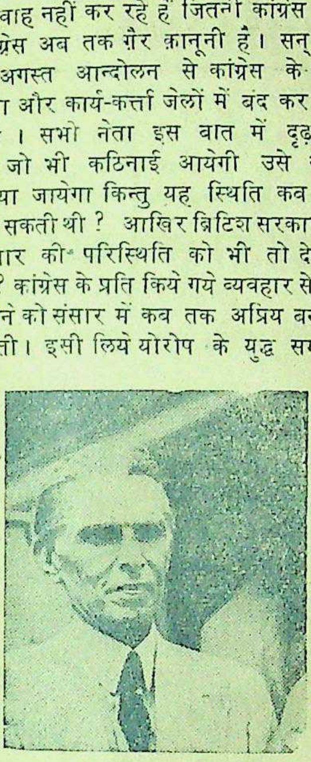
मिस्टर जिन्ना अपने नेतृत्व की परेशानी से वेवेल योजना से असंतुष्ट हैं।

कांग्रेस की नीति

कांग्रेस एक राष्ट्रीय सस्था है। वह भारत के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करती है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, सिख, अछूत कोई वर्ग या दल नहीं है जिसका कांग्रेस प्रतिनिधित्व न करती हो। साम्प्रदायिकता से वह दूर है। क्रिप्स-प्रस्ताव के समाप्त हो जाने पर और उसके पहले भी कांग्रेस प्रयत्न करती रही है कि सभी दलों में एकता स्थापित हो और भारतीय स्वाधीनता के लिए एकमत से अहिसात्मक युद्ध किया जाये साथ ही ब्रिटिश सरकार से भी भारत को स्वतंत्र करने की माँग की जाये। किन्तु लीग इस महान् कार्य में सदैव से बाधक रही और 'पाकिस्तान' की माँग पर वह इतनी दृढ़ता से डटी रही कि कांग्रेस तथा गांधी जी की इच्छाओं पर सदा पानी फिरता रहा। चूँकि कांग्रेस में सभी जातियाँ शरीक हैं, इसलिए उसे मुसलिम लीग ऐसी साम्प्रदायिक संस्था की परवाह न करनी चाहिए थी फिर भी चूँकि सरकार की दृष्टि में लीग ही मुसलमानों की प्रतिनिधि संस्था है इसलिए गांधी जी को कई बार मिस्टर जिन्ना से भेंट करने पर भी निराशा ही हुई। क्योंकि कांग्रेस का प्रधान उद्देश्य तो ब्रिटेन से युद्ध करना था और इसी लिए उसने लीग से समझौता करने का प्रयत्न भी किया।

मिस्टर जिन्ना ने यह समझ लिया था कि चूँकि सरकार उनके साथ है इसलिए उन्होंने कांग्रेस की परवाह नहीं की और बराबर अपनी पाकिस्तानी रट लगाये रहे, किंतु अब वह समय आया है जब सरकार स्वयं भारतीय अडंगे को दूर करने के लिए उद्यत है। कांग्रेस तो एक राजनैतिक संस्था है। समय समय पर अपना मत परिवर्तन करना तथा नई नीति से राष्ट्रीय स्वाधीनता की पूर्ति के लिए युद्ध करना तो उसकी नीति है। यदि आज सरकार ने भारतीय स्वाधीनता की ओर क़दम बढ़ाया है तो कांग्रेस कदापि पीछे नहीं हट सकती। इसी लिए शिमला सम्मेलन में कांग्रेस नेता शरीक हुए हैं।

वाइसराय की नई कार्य-कारिणी में अनुपात की दृष्टि से ही कांग्रेस नाम प्रस्तावित करने जा रही है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, अछूत सभी का प्रतिनिधित्व कांग्रेस की ओर से होगा और वाइसराय को चुनाव करने का हक होगा। यद्यपि वाइसराय ने सवर्ण-हिन्दू, मुसलमान, तथा अछूतों को कौंसिल में चुने जाने की घोषणा की है किन्तु कांग्रेस 'सवर्ण' के दृष्टिकोण से वाइसराय के पास नाम प्रस्तावित करके न भेजेगी। क्योंकि वह केवल हिन्दुओं की ही नहीं समस्त राष्ट्र की संस्था है। लाखों मुसलमानों ने भी कांग्रेस आन्दोलन में त्याग किया और वलिदान दिया है। वह उन्हें कैसे छोड़ सकती है? मिस्टर जिन्ना की ओर से भले ही यह कहा जाये कि मुसलमानों की संस्था लीग है, इसलिए उसका प्रतिनिधित्व भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधित्व है किन्तु कांग्रेस का रुख केवल राष्ट्रीय है। यह भी निश्चय है कि वाइसराय यदि इस समय कांग्रेस के रुख पर नहीं चलते तो यह कान्फ्रेंस किसी भी समय भंग हो सकती है किन्तु अब भंग होने का कोई भय नहीं है। ऐसा जान पड़ता है कि कान्फ़्रेन्स असफल न होगी और कांग्रेस की इच्छा के अनुसार ही उचित रूप में वाइसराय कौंसिल के सदस्यों का चुनाव करेंगे। यद्यपि ४०,४० और २० प्रतिशत के आधार पर ही चुनाव होगा किन्तु प्रत्येक वर्गों के प्रतिनिधियों को प्रतिनिधित्व मिलेगा ऐसी आशा है।

मुसलिम लीग की बाधा

कांग्रेस की अग्रगामी प्रगति में मिस्टर जिन्ना तथा उनकी लीग ने सदा ही अडंगा उत्पन्न किया है। इस बार लार्ड वेवेल ने जब योजना प्रस्तुत की और ४०,४०,२० के अनुपात से चुनाव के प्रतिनिधित्व की घोषणा की तब लीग तथा उसके अनुयायी बड़े प्रसन्न हुए और ऐसा जान पड़ा कि उन्होंने 'हिन्दू जमात' को ले डाला। किन्तु जिन्ना तो बड़े चतुर हैं। उन्होंने पहले ही वाइसराय को लिखा कि शिमला सम्मेलन स्थगित होना चाहिए किन्तु वाइसराय ने उनकी एक न सुनी। फिर भी लीगी प्रसन्न ही, रहे। किन्तु कान्फ्रेंस की कार्यवाहियों से यह पता चलता है कि मुसलमानों का प्रतिनिधित्व केवल लीगी मुसलमानों को ही नहीं सौंपा जायेगा बल्कि कांग्रेसवादी मुसलमानों तथा पंजाब के मुसलमानों का भी प्रतिनिधित्व होगा। ऐसी स्थिति में लीग का चौंकना अनिवार्य है। मिस्टर जिन्ना चाहते हैं कि मुसलिम सदस्य वही चुने जायें जिन पर लीग अपनी मुहर लगा दे। किन्तु वाइसराय इस सिद्धान्त को मानने को तैयार नहीं हैं। इससे उनके चुनाव के अनुपात में भी कोई अंतर नहीं पड़ता है। मुसलमान तो मुसलमान।' उन्हें तो मुसलमानों की सभी जमातों को संतुष्ट करना है। केवल लीग को ही संतुष्ट करने से सरकार का लाभ नहीं है। पंजाब ने इस युद्ध में बड़ी सहायता पहुँचाई है, इसलिए वहाँ का प्रतिनिधित्व कौंसिल में होना ज़रूरी है। कांग्रेसी मुसलमानों को छोड़ देना असंभव है क्योंकि जिस मुसलिम जमात को कांग्रेस का समर्थन प्राप्त है, उसकी शक्ति कम नहीं है। सरकार यह भी जानती है कि मुसलिम लीग नवाबों तथा नवाबजादों की संस्था है। वह तो सरकार की मुट्ठी में यों भी है। उसका जनता से कोई संबंध नहीं। इसलिए उसका प्रतिनिधित्व रहेगा अवश्य किन्तु सभी मुसलिम-सदस्यों पर उसका शासन नहीं रह सकता। सरकार इस वक्त उन सभी दलों का सहयोग प्राप्त करेगी जिनका संबंध जन-साधारण से है।

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

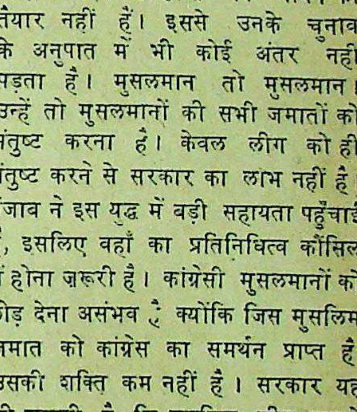
क्या पंडित जवाहरलाल नेहरू वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्य बनेंगे?

हास परिहास

भंग की तरंग

आखिर जिन्ना और कांग्रेस में नामावली के सम्बन्ध में समझौता नहीं हुआ। लाट साहब ने पहिले ही ग़लती की। उन्हें चाहिए था कि जिन्ना को ही सब नाम प्रस्तावित करने का अधिकार देते।

* * *

पाँच राष्ट्रीय मुस्लिम संस्थाओं ने बड़े लाट के पास एक प्रस्ताव भेजा है कि लीग मुसलमानों की प्रतिनिधि संस्था नहीं है। आप केवल मुसलमानों की कह रहे हैं, अरे वह तो भारत की प्रतिनिधि संस्था है। कांग्रेस तो केवल इने-गिने हिन्दुओं की प्रतिनिधि संस्था है।

* * *

हिन्दुस्तानी प्रचार-सम्मेलन का जो साहित्य बोर्ड बना है उसमें हिन्दी के चार विद्वान् हैं। पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री जैनेन्द्रकुमार जैन, पंडित हरिभाऊ उपाध्याय, पंडित सुन्दरलाल। इसी चार खंभे पर हिन्दी टिकी हुई है। इन हिन्दी के विद्वानों के ढूँढ़ने में बड़ा परिश्रम किया गया होगा।

* * *

हिन्दी भाषा और साहित्य के ऐसे प्रकांड पंडित हिन्दी-साहित्य सागर को मथकर निकाले गये हैं। आज हम लोगों की आँखें खुल गई कि ऐसे रत्न छिपे हुए थे और हम लोग अंधकार में थे।

* * *

पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि ये लोग हिन्दी चाहे न जानते हों, हिन्दुस्तानी के पंडित हैं। आप लोग हिन्दुस्तानी साहित्य का निर्माण करेंगे और हिन्दी जो बहुत दिनों तक हम लोगों के हृदय की देवी रही है उसके स्थान पर हिन्दुस्तानी देवी को स्थापित करेंगे।

* * *

हाथी की लीद से काग़ज़ बनाने का प्रयोग हो रहा है। कहा जाता है कि लीद का बना काग़ज़ अच्छा होता है। गदहे की लीद का भी प्रयोग करना चाहिए क्योंकि हाथी कम हैं, गदहे अधिक हैं और काग़ज़ की माँग भी अधिक है।

* * *

कानपुर में एक जगह हरिकीर्तन हो रहा था। उसे कुछ मुसलमानों ने रोका। भला ईश्वर का नाम कोई ले यह मुसलमानों को कैसे सह्य हो सकता है? भाँड़ों का नाच होता तो कभी न रोकते।

* * *

बर्नार्ड शा ने कहा है कि पामदत्त के विरुद्ध वही लोग वोट देंगे जो मूर्ख हैं। शा साहब को यह भी ज्ञात है कि इंगलैंड में ऐसे लोगों की कमी नहीं है?

* * *

चटपटे चौपदे

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

मिले कल रास्ते में बाँगड़ूमल,
कहा—कैसा मचा है आज हल्ला।
कहा मैंने—नहीं मालूम तुमको—
मिला स्वाधीनता का है पुछल्ला।
नहीं है हिन्दुओं में कुछ 'एनरजी'
करो जिसकी जहाँ जैसी हो मरजी।
बहुत चिल्लायें सावरकर भले ही,
गला फाड़ा करें 'बेढब' मुकरजी।

* * * * *

वेश के हित के लिए कुरबानियाँ कुछ कीजिए,
छोड़कर हिन्दी अरे हिन्दोस्तानी लीजिए।
आपको थोड़ी मुसलमानी अगर मंजूर हो,
जाम तब स्वाधीनता का मस्त होकर पीजिए।
मुहब्बत की जमाने में अजब तुमने हवा बाँधी,
उड़े कितने, तुम्हारे प्रेम की ऐसी चली आँधी।
जमाना अब न लैला और मजनू का रहा, सुन लो,
मज़ा आ जाय तुम जिन्ना बनो बन जायँ हम गाँधी।

अमरी साहब इस समय सर जे० पी० श्रीवास्तव का सर्टिफ़िकेट लिये घूम रहे हैं। सर जे० पी० ने इस समय नमक खूब अदा किया। नौकर वही नमकहलाल है जो समय पड़ने पर मालिक के काम आये। सर जे० पी० ने भारत की नाक रख ली।

स्मट्स साहब ने सर रा
मुडालियर की बड़ी प्रशंसा की
कहा है कि आप भारत के पहले
मंत्री होंगे। मुडालियर साहब भार
प्रधान हो सकते हैं किन्तु भारत की
ऐसो रही तो प्रधान दास भले
सकते हैं।

* *

बड़े लाट साहब ने अपने भाष
कहा है कि हम लोगों को भूल जाना
और क्षमा कर देना चाहिए। इस
पर हमें आष्टी चीमूर तथा जौनपु
वंदियों का स्मरण हो आया। क्या
लाट साहब इन्हें क्षमा कर देंगे?

* *

मुस्लिम अखबार बाबू पुरुषोत्त
टंडन जी और बाबू सम्पूर्णानंद को
विरोधी कहते हैं। सीधे इस्लाम-विरो
क्यों नहीं कह दिया जिसमें सब बातें
जातीं।

—अगड़धत्त श

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

CEYLON
DESICCATED
COCONUT

कोई गुण नष्ट नहीं होता!
पूरी तरह पकने से पहले नारियल तोड़ लिए जाते हैं। अतः उन्हें खोलने से रस गिर कर व्यर्थ जाता है। डेसीकेटेड कोकोनट की प्रणाली में पकने से पहले नारियल तोड़े नहीं जाते। इससे सारा रस और पोषक तत्व उसमें जम जाते हैं।
इसमें आपको सब तत्व मिलेंगे
पुस्तकों, नमूनों और व्यापारियों के नाम के विवरण के लिए लिखिए: सीलोन ट्रेड कमिश्नर फार इंडिया, सीलोन हाउस, ब्रुस स्ट्रीट, बम्बई
सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रचारित

सानफ्रांसिस्को का वह नया चार्टर !

५० राष्ट्रों के प्रतिनिधियों का एक नया राष्ट्र-संघ बना

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

सानफ्रांसिस्को सम्मेलन समाप्त हो गया। मित्र राष्ट्रों तथा संसार के ५० राष्ट्रों ने एक चार्टर तैयार किया है साथ ही एक संगठन का भी निर्माण किया है और उसी आधार पर संसार में शांति और सुरक्षा की स्थापना की योजना बनाई गई है। इस लेख में योग्य लेखक ने चार्टर की रूप-रेखा पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि वह संगठन विश्व को अशांति से कहाँ तक सुरक्षित रख सकेगा तथा पुराने राष्ट्रसंघ तथा इस नये संगठन में क्या अंतर है ? लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

को अन्य सब संगठनों से अधिक अधिकार प्रदान किये गये हैं। चीन, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन और अमेरिका इस कौंसिल के स्थायी मेम्बर माने गये हैं तथा ६ अन्य मेम्बरों के चुन कर लिए जाने का विधान बनाया गया है। इस सुरक्षा कौंसिल को कान्फ्रेंस की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना सुरक्षित रखने के लिए पूरी जिम्मेदारी दी गई है। इस स्थिति, को ध्यान में रखते हुए कौंसिल के द्वारा किया जानेवाला प्रत्येक कार्य 'मित्रराष्ट्र' संगठन की कार्य-प्रणाली का अंग माना जायेगा। सुरक्षा-कौंसिल के अन्दर कार्य पंचायतों, समझौतों, मित्रतापूर्ण बातचीतों तथा अन्य शान्तिपूर्ण उपायों से राष्ट्रों के आपसी झगड़े सुलझाना, इस बात का निश्चय करना कि किस राष्ट्र के किस कार्य द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शान्ति को हानि पहुँचती है तथा ऐसे राष्ट्र के प्रति कौन से ऐसे उपाय किये जा सकते हैं जिनसे कि वह शान्ति-भंग न करें। सुरक्षा कौंसिल के नीचे रहनेवाली एक युद्ध-परिषद् के हाथ में 'मित्र-राष्ट्र' संगठन की अंतर्राष्ट्रीय फौज रहेगी जिसको कि कौंसिल कोई उपाय न रह जाने पर शान्ति-भंग करनेवाले राष्ट्र के विरुद्ध मनमाने तौर पर प्रयुक्त कर सकेगी।

(३) आर्थिक और सामाजिक कौंसिल। इस कौंसिल का कार्य राष्ट्रों के मध्य आर्थिक और सामाजिक प्रयत्नों में एक दूसरे से सहयोग में वृद्धि करना होगा। रहन-सहन के तरीक़ों में बदलवा कर स्वास्थ्य को उत्तम तथा स्वस्थ रखने के नये-नये उपायों को अंतर्राष्ट्रीय रूप से प्रयोग में लाते हुए, इस कौंसिल के लिए अनिवार्य होगा कि वह शिक्षा, संस्कृति और अर्थ-संबंधी नये-नये प्रयोगों को विशेष समितियों के सहयोग के द्वारा, संसार के लाभार्थ स्वीकृत करे।

(४) ट्रस्टीशिप कौंसिल ठीकेदारों की समिति। यह कौंसिल ऐसे देशों पर ठीकेदार या ट्रस्टी नियुक्त करेगी जो कि (१) पहले से ही किसी ठीकेदारी शासन-व्यवस्था में हो (जैसे फिलिस्तीन, सीरिया, ईराक, लेबनान आदि) (२) या ऐसे देश जो दूसरे महायुद्ध में शत्रु से विजित किये गये हों (३) ऐसे प्रदेश में हों जिन्हें कि किसी राज्य ने स्वयं ठीकेदारी शासन के अंतर्गत कर दिया हो।

(५) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय। इस न्यायालय का कार्य 'मित्र-राष्ट्र' संगठन के न्याय-विभाग को संभालना होगा। क़ानून की सीमा के अन्दर आनेवाले सभी अंतर्राष्ट्रीय झगड़े इसी संस्था द्वारा निबटाये जायेंगे। प्रत्येक 'मित्र-राष्ट्र' इस न्यायालय का मेम्बर होगा।

(६) सेक्रेटेरियेट। इस मित्रराष्ट्रीय संगठन के विस्तृत लेखे के कार्य को संभालने के लिए सुचारु दफ्तरों को चलाने के लिए एक सेक्रेटेरियेट-विभाग भी खोला गया है। चार्टर के पन्द्रहवें परिच्छेद में इस विभाग के कार्यों की सीमा को विस्तृत रूप से बतलाया गया है।

इस प्रकार हमने देखा कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए मित्रराष्ट्र कितनी महान् योजना का निर्माण कर रहे हैं। पर अब यह मालूम करना है कि यह विश्व-संगठन अपने लक्ष्य को पूरा करने में सफल होता है या नहीं ? पच्चीस साल पहले भी मित्र-राष्ट्रों ने एक राष्ट्रसंघ का निर्माण किया था। उसका लक्ष्य भी संसार से युद्ध का बहिष्कार करना तथा शान्ति स्थापित करना था। उसमें भी अन्तर्राष्ट्रीय अदालतें और दफ्तर खोले गये थे। पर परिणाम विपरीत ही हुआ। संसार को बीस साल के अन्दर ही दूसरे महायुद्ध और पहले से भी भयंकर नर-संहार के लिए कमर कसनी पड़ी। राष्ट्र-संघ, काग़ज़ पर लिखी हुई नाम-मात्र की संस्था की तरह अंधकार में विलीन रहा। शान्ति के स्वप्न और भी धुँधले हो गये। तो क्या सानफ़्रांसिस्को में प्रस्तावित नये मित्रराष्ट्रीय संगठन की योजना भी कोरी प्रस्तावना मात्र रह कर तीसरे दावानल का कारण होगी ? गौर से देखने पर इस योजना में पिछले राष्ट्रसंघ से भिन्न चार नई बातें हैं:—

चीनी प्रजातंत्र के डिक्टेटर मार्शल च्यांग काई शेक

(१) इस योजना में यूनाइटेड इस्टेट्स आफ अमेरिका और सोवियट यूनियन पहली बार मुख्य भाग ले रहे हैं। सन् १९ के राष्ट्रसंघ की योजना से यह दोनों बड़े राष्ट्र उदासीन थे।

(२) इस योजना में शान्ति-भंग करने वाले राष्ट्र के प्रति मित्रराष्ट्रों के सम्मिलित बल-प्रयोग का खुला प्रस्ताव है जो कि पिछले राष्ट्रसंघ की योजना में भी था।

(३) नवीन मित्रराष्ट्रीय संगठन पिछले राष्ट्रसंघ की अपेक्षा अधिक वैधानिक रूप में ढाला गया है क्योंकि इसके पदाधिकारियों अर्थात् राष्ट्रपति, मंत्रीगण और ऐसेम्बली के सदस्यों का वैधानिक प्रणाली से चुनाव होगा।

(४) शत्रु-राष्ट्रों (जर्मनी, इटली और जापान) के प्रति इसमें अधिक कठोर व्यवहार का प्रस्ताव किया गया है। सन् १९ के राष्ट्रसंघ के जन्मदाताओं में जापान भी एक प्रमुख राष्ट्र था, पर अब वह एक 'शत्रु-राष्ट्र' की तरह सब शान्ति-कालीन योजनाओं से अलग रक्खा जायगा।

राष्ट्रपति ट्रूमन जिन्होंने फ्रिस्को सम्मेलन की इतिश्री कर देने की घोषणा की।

पर क्या हथियारों के बल पर संसार पर शान्ति लादने की चेष्टा करनेवाले इस चार्टर को सफलता मिलनी सम्भव है ? यह चार्टर संसार के सभी देशों की शान्ति-स्थापना की इच्छा का परिणाम नहीं है। यह तो विजयी राष्ट्रों का पराजित राष्ट्रों को कभी उन्नतिशील न होने देने का प्रयत्न-मात्र है। 'मित्र-राष्ट्र' और 'शत्रु-राष्ट्र' दो वर्गों में संसार को विभाजित करके युद्ध बन्द नहीं हो सकता। क्या युद्ध, युद्ध के द्वारा ही बन्द हो सकता है ? अगर यही शान्ति स्थापित करने का मार्ग है, तो सन् १४ से सन् १९ तक चलनेवाला प्रथम महायुद्ध तथा उससे भी भीषण यह द्वितीय महायुद्ध, केवल संसार को युद्ध के भयंकर विनाश से मुक्त करने के ही लिए लड़े गये थे ? उनके पीछे क्या साम्राज्यवाद और पूँजीवाद, या फासिस्टवाद का कोई षड़यन्त्र नहीं था ? चोर को चोरी करने से रोकने के लिए क्या डकैती करना आवश्यक है ? अगर हम इस दृष्टिकोण से इस चार्टर को देखें तो हमें मालूम पड़ता है कि यह 'मित्रराष्ट्र' नामक महान् संगठन, युद्ध में विजयी हुए पूँजीवादी ब्रिटेन, अमेरिका तथा स्टालिनस्ट रूस का एक गुट है, जो संसार के ऊपर अपने स्थायी प्रभाव को स्थिर रखने के लिए ही अन्तर्राष्ट्रीय संगठन की रचना कर रहे हैं।

इस बात के सत्यासत्य का निर्णय चार्टर द्वारा बनाई गई 'सुरक्षा-कौंसिल' के कार्यों द्वारा किया जा सकता है। यह बात ध्यान देने योग्य है कि सुरक्षा कौंसिल के स्थायी सदस्य पाँच विजयी राष्ट्र ही हैं तथा इसी कौंसिल को राजनीतिक व युद्ध-सम्बन्धी इतने अधिकार प्रदान किये गये हैं कि सारा 'मित्रराष्ट्र'

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

स्वतंत्र फ्रांस के सर्वेसर्वा जनरल डिगाल।

बादल उमड़-घुमड़ घिर आये !

कौन गगन में छाये हैं पुलकित होकर मँडराये

वर्षा ऋतु आगई। बादलों का समूह उमड़-घुमड़ कर आसमान में छा गया। यह बादल क्या हैं, कितनी तरह के होते हैं। इसका सुंदर तथा रोचक वर्णन इस सामयिक लेख में किया गया है। लेख पठनीय और रोचक है।

आषाढ़ के महीने की प्रतीक्षा थी। जलती हुई 'लू' से धरती जल रही थी। जनता दिन चढ़ते ही गर्मी से घबड़ाकर पेड़ों की छाया में, झोपड़ियों में, ताहखानों में, खस की टट्टियों लगे कमरों में घुस जाती थी। किसान यह सब गर्मी सहता हुआ अन्नदाता बादलों की प्रतीक्षा में बैठा रहता था।

आषाढ़ का महीना आया। आर्द्रा नक्षत्र लगा। आकाश में बादलों के समूह दिखलाई पड़ने लगे।

एक झड़ी लगी। प्रकृति मुसकुराने लगी। पत्तों की धूल धुल गई। वे हरियाली से चमकने लगे। धरती का ताप पानी से बुझ गया। ताल-तलैया भर गईं। आम और नीम की बड़ी-बड़ी डालों में झूले पड़ गये। सावन आया। कजली गाई जाने लगी। किसान ने जोतना-बोना आरंभ कर दिया। मोर नाचने लगे। रात में झिल्लियों की झनकार से दसों दिशाएँ गूंजने लगीं। पानी कभी फुहार में, कभी बौछार में और कभी मूसलाधार बरसने लगा। सारा देश आनन्दित हो उठा। कवियों की कविता की धारा अमंद्रगति से बह चली। आनन्दघन जी कहने लगे--

पर-कारज देह कों धारे फिरो,
परजन्य! जथारथ ह्वै दरसौ।
निधि नीरसुधा के समान करौ,
सबही विधि सज्जनता सरसौ।
'घनआनँद' जीवनदायक हौ,
कछु मेरिहू पीर हिये तरसौ।
कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन,
मो अँसुआँन की लै बरसौ!

आपने देखा होगा कि बादल बराबर अपना आकार बदलते रहते हैं और कभी-कभी तो बड़े-बड़े बादल देखते-देखते आकाश में न मालूम कहाँ विलीन हो जाते हैं। आप सोचते होंगे कि इसका कारण क्या है। कारण बहुत स्पष्ट और सरल है। जैसे नदी के किनारे का कुहरा हवा के गर्म हो जाने पर विलीन हो जाता है, वैसे ही आकाश का वह कुहरा जिसे हम बादल कहते हैं जब किसी गर्म हवा की तह में पहुँच जाता है, या पृथ्वी से उठती हुई गर्म हवा उस तक पहुँच जाती है तो कुहरे के जलकण फिर भाप बनकर हवा में घुल जाते हैं। ऊपर की हवा का तापमान एक-सा नहीं होता। कहीं अधिक ठंडा, कहीं कम ठंडा और कहीं गर्म होता है। किन्तु वहाँ हवा बराबर चला करती है। बादल बराबर हवा में उड़ता रहता है। जब उसका कोई भाग गर्म हवा में पहुँचता है तो वह फिर भाप बनकर अदृश्य हो जाता है या अदृश्य भाप ठंडी हवा में जाकर फिर जलकण बन जाती है। इसी उलट-फेर के कारण बादलों का आकार बदला करता है। पहाड़ों के ऊपर हवा ठंडी रहती है। इससे उन पर गर्मी के दिनों में कुहरा छाया रहता है। किसी किसी हिमशृंग (बर्फीली चोटी) पर सदैव बादल छाये रहते हैं या उसके शिखर के पास सदैव एक दो बादल के टुकड़े बने रहते हैं। इसका कारण यह है कि बर्फ के कारण चोटी के पास ही हवा बहुत ठंडी रहती है और जब भाप भरी वायु नीचे से वहाँ पहुँचती है तो वहाँ पहुँचकर वह कुहरा बन जाती है। स्विटजरलैंड में मैटरहार्न नामक एक चोटी है। उसके पास सदैव एक बादल बना रहता है जिसे 'मैटरहार्न का झण्डा' कहते हैं क्योंकि वह उसके एक ही ओर रहता है। इसका कारण यह है कि वहाँ जो हवा चलती है वह बहुत तेज़ होती है और केवल उसी ओर कुछ देर ठहरती है जो उसकी गति के विपरीत है। अर्थात् यदि हवा पूर्व से चल रही है तो पूर्व में तो हवा ठहरेगी नहीं। चोटी की आड़ के कारण चोटी के पश्चिम में हवा की गति कम होगी। इससे पश्चिम की ओर जो हवा होगी उसमें कुहरा बन जायगा जो दूर से बादल मालूम पड़ता है।

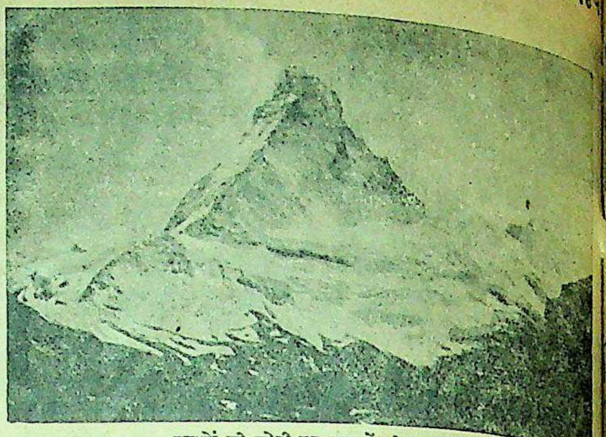

पहाड़ों की चोटी पर बादलों की पताका।

रुइया बादल का एक दृश्य।

साधारण रूप से कोई भी बादल ३००० फ़ुट से कम नीचाई पर नहीं होते और जाड़े की अपेक्षा गर्मी में अधिक उँचाई पर होते हैं।

वैसे तो बादल कई प्रकार के होते हैं किन्तु उनके मुख्य भेद चार हैं--(१) रुइया, (२) तहदार, (३) अलकावली और (४) घटा।

रुइया--ये फूले हुए रुई के ढेर मालूम होते हैं। नीचे इनका पेंदा बड़ा होता है और ऊपर की ओर इनका आकार घटता जाता है जो कभी-कभी त्रिकोण की तरह मालूम पड़ता है। यह धरती से लगभग एक मील की उँचाई पर रहते हैं। ये सबेरे अधिक दिखलाई पड़ते हैं और ज्यों ज्यों दिन की गर्मी बढ़ती है ये कम होते जाते हैं। दोपहर में तो ये बिलकुल विलीन होकर आकाश को स्वच्छ छोड़ देते हैं। जब ये रहें तो समझ लेना चाहिए कि दिन साफ़ होगा और वर्षा न होगी। इन बादलों की चाल पाँच हज़ार फुट की उँचाई पर प्रायः २४ या २५ मील प्रतिघंटे होती है।

तहदार बादल--ये बादल क्षितिज के पास फैली हुई चद्दर के समान मालूम पड़ते हैं। संध्या के समय वायु के जलकण हवा में नीचे उतर आते हैं और उनके कारण ये बादल बन जाते हैं। इन्हीं के कारण बहुधा 'अंबर-डंबर' दिखलाई पड़ते हैं। रहीम ने कहा भी है 'अंबर-डंबर साँझ के ज्यों बालू की भीत'। ये बहुत जल्द बनते हैं। ठंडी रात्रि में ये बहुधा बना करते हैं। सबेरा होते ही गर्मी के कारण ये मिट जाते हैं। ये बादल भी इस बात के द्योतक हैं कि पानी नहीं बरसेगा। इन बादलों की गति प्रायः २० मील प्रतिघंटे होती है।

अलकावली--ये गुच्छों के रूप में दूर तक फैले रहते हैं और ये बहुत होते हैं। अर्थात् इनमें मोटाई नहीं इनके आकार भी अनेक प्रकार के और ये बराबर अपना आकार बदल हैं। ये बहुत उँचाई पर होते हैं। उँचाई धरती से ५ से लेकर १० तक होती है। ये 'अलकावली' बादल के कणों के पानी के रूप में जम नहीं बनते। वास्तव में ये बहुत छोटे परमाणुओं (बर्फ की बहुत महीन से बनते हैं क्योंकि इतनी उँचाई पर के कारण जल जम जाता है। या तो गुच्छों तथा गादों के रूप में या लम्बी पतली धारियों के आकार में मालूम पड़ते हैं। कभी कभी ये बहुत हो जाते हैं और क्षितिज के एक कोने दूसरे कोने तक उनकी धारी हैं। जब ये दिखलाई पड़ें तो समझ चाहिए कि ऋतु में परिवर्तन होने है। जब उनके किनारे धुंधले हो वर्षा को निकट मान लो यदि उनके स्पष्ट और तेज हों तो समझना चा अभी कई दिन तक पानी नहीं बर

तीस हज़ार फ़ुट उँचाई पर इन की चाल १५० मील प्रतिघंटे तक क्योंकि यहाँ हवा बहुत तेज

घटा--इस प्रकार का बादल गहरा, नीचा और काले या नीले होता है। ये कभी कभी दूर से पहाड़ियों की तरह मालूम होते हैं। बहुत ऊँची नहीं होतीं। इनसे हैं, इनमें बिजली कौंधती और होती है। इनकी गति पृथ्वी से उँचाई की हवा के ऊपर निर्भर है।

ये तो बादलों के चार मुख्य किन्तु इन चारों में से दो या तीन से अलग अलग तरह के बादल हैं। उनको इन छोटे से लेख में समझाया जा सकता।

पानी कैसे बरसता है--हम हैं कि बादल वास्तव में कुहरा है अति छोटे जल के परिमाणु हवा में रहते हैं। इनके तैरते रहने का कारण है कि इनका आकार इनके बोझ की बड़ा होता है। जब सर्दी के कारण जलकण आपस में मिल जाते हैं तो अनुपात में इनका वजन बढ़ता है अनुपात में इनका आकार नहीं इसका फल यह होता है कि बोझिल वज़नी हो जाने के कारण ये हवा नहीं सकते और पृथ्वी की आकर्षण के कारण उस पर मेह की बूंद के गिरने लगते हैं। किन्तु यदि रास्ते बूँदों को सूखी हवा की कोई तह मिल तो वे उस हवा में फिर भाप बन जायँगी और यदि वे नम हवा में गिरें तो उनमें उस हवा में घुली हुई भी पानी बनकर मिल जाती है और बड़ी होकर गिरने लगती हैं। यही है कि कभी वर्षा की बूँदें छोटी और बड़ी होती हैं।

बादलों की घटा।

कहानी

गोपी

लेखक, श्री ओंकारनाथ 'शरद'

परेशानियाँ, गलतफहमियाँ और पारस्परिक व्यवहार में भूलें प्रायः होती हैं और उन भूलों का दुष्परिणाम भी भुगतना ही पड़ता है। गोपी का भी जीवन कुछ दुर्भाग्य ने उसकी पत्नी मुँदरी और बेटी सोना को भी उससे छीन लिया। प्रसिद्ध कहानीकार ने इस कहानी में मुँदरी, हीरू और गोपी के वास्तविक परिस्थितियों का चित्रण किया है। कहानी करुण रस से ओत-प्रोत, मार्मिक और हृदयस्पर्शी है।

ने तो कहा था कि आज मर जायगा। कल का ही वह देख सके पर अभी क्यों नहीं?"

पर करवटें बदलने हुए उस बूढ़े गोपी ने। अढ़ाई महीने की इस अब मर जाने को बाध्य। इसी लिए वह मरने को हो गया था। रात को वह सुनकर वह कितना उसे कठिन कारावास रहा गया था। पर यह हो आये, तो क्या वह कैसे हो सकता है? ना चाहिए। संसार गया है। अब तक दुनिया की सैर कर तीस साल उसका। सदा ही वह किसी मजदूर रहा है। शायद भी हुआ था।

तक उसने जाने कितनी लिया है। कहीं एक जगह से अधिक नहीं टिक सका। इस तरह मरने के पहले गोपी को याद आने लगीं। उठा। आह करके उसने और आँखें बन्द कर लीं। होने पर सामने एक काला- गया और उस पर बनते- वह ध्यान से देखने लगा। उसने देखा दो प्राणियों को। मर चुके थे। एक उसकी और दूसरा उसका सुख-दुख। मुंदरी की सुधि आते ही हो उठा। विकलता उसके में व्याप गई। हाय! यदि जीवित होती तो क्या इस में भी उसे परेशानी होती। उसके सिरहाने बैठकर उसका। उसे भी मारनेवाला के ही भार से मुंदरी की। भले ही गोपी को वह पसन्द हुआ वह उसकी सगी थी। इस प्रकार का व्यवहार चाहिए था।

आया। पन्द्रह साल पहले जब मिल से उसे निकाल। दूसरे शहर के लिए उसने। उस दिन दिन भर वे। शाम को एक नीम के डाला। साथ में केवल उसके गोदवाली बच्चा नाम रक्खा था सोना।

और हीरू जो अपने निठल्लेपन के लिए मशहूर था और बात बहुत करता था, पेड़ के नीचे पड़ाव डालते ही वह बैठकर हाय-हाय करने लगा।

"क्या शोर मचाने लगा...।" गोपी ने डाँटा।

"कुछ नहीं, कुछ नहीं।"

"तब चुप रहो।"

"हाँ भउजी को साथ लाये हो न तभी चुप करा रहे हो।" हीरू ने व्यंग किया।

"मुँदरी मुँह छिपाकर मुस्करा पड़ी। गोपी हँसी पीकर बोला—"चल अगले स्टेशन से तार दे देना बुधिया को।"

"हाँ हाँ ठीक है कितनी दूर है स्टेशन?"

"जितनी दूर सरग है।"

"तब तो दूर है, इतने दिन भला कैसे कटेंगे?" हीरू ने कहा!

"फिर करेगा क्या?"

"हम तो लौट जायँगे।"

"बड़ा बुजदिल है, फिर वही डर की बात करने लगा।"

"अच्छा भाई यह बताओ क्या वहाँ चलने पर तुरन्त काम मिल जायगा!"

"जरूर मिलेगा नहीं तो हम लोग मजदूर-संघ में शामिल हो जायँगे।"

इस कहानी के लेखक श्री ओंकारनाथ शरद।

"और नहीं तो हड़ताल कर दोगे, क्यों?" दाँत निकालकर हीरू ने कहा।

"हाँ और क्या?" गोपी ने शान से कहा।

"अब की हड़ताल किया था तब शहर छोड़ना पड़ा! और फिर अब हड़ताल का नाम लोगे तो दुनिया ही छोड़नी पड़ेगी। समझे!"

गोपी मिल में हड़ताल करने का स्वप्न देख रहा है।

"चुप रह!"

"अच्छा!" हीरू चुप हो गया।

दूसरे दिन वे अपनी अन्तिम मंजिल पर थे। आज इनके पास का रहा-सहा खाना भी समाप्त हो चुका था। मुंदरी को रात से ही बुखार था। देह उसकी अंगारे-सी गर्म थी। शरीर के दर्द से वह टूटी जा रही थी। रह-रहकर वह चीत्कार कर उठती थी। "हाय भाग्य!"

यह सब गोपी देखता था किंतु उस पर उसका कोई प्रभाव नहीं। मुंदरी अगर मर भी जाय तो भी उसे कुछ दुःख न होगा।

थोड़ी दूर चलने पर मुंदरी ने हिम्मत छोड़ दी। एक पेड़ का सहारा लेकर वह बैठ गई और कराहने लगी। सचमुच दर्द उसको असह्य हो रहा था। पर गोपी को यह सब अच्छा न लगा बिगड़कर बोला—"इसी लिए कह रहा था कि मत अभी चल। पीछे चली आना।"

"तो वहाँ अकेले किसके सहारे रहती!" हीरू ने पक्ष लिया।

"तू हमारे बीच में मत बोला कर। मैंने कई बार कह दिया।"

"अच्छा।" हीरू ने कह दिया।

इसके बाद थोड़ी देर सन्नाटा रहा। मुंदरी ने बैठकर बेटी सोना को, जिसे रास्ते भर वह बँदरिया की तरह कलेजे से चिपकाये थी, वहीं भूमि पर लिटा दिया और उसका सिर अपने पाँवों पर रख लिया। लिटाते वक्त वह बोली—"देखो सोना को भी बुखार तेज हो रहा है। साँस भी इसकी ठीक नहीं समझ पड़ती।"

"मर जाने दो नानी को"—खिजलाहट का भाव प्रकट करते हुए गोपी ने कहा।

मुंदरी के दिल में यह बात आग-सी छू गई, पर चुप ही रही। तड़पकर रह जाने के सिवा उसके पास था क्या? पेड़ के सहारे लुढ़ककर वह आधी लेट गई। इस समय थकान के कारण उसे कुछ आराम मिला और सोना उसके पाँवों की तकिया लगाये आँख मूंदे पड़ी रही। थोड़ी देर में मुंदरी को झपकी आ गई। गोपी और हीरू भी बातें करते करते उठे और गाँव में कुछ खाने का बन्दोबस्त करने चले गये।

आधे घण्टे के लगभग वे दोनों लौटे। हीरू के हाथ में एक छोटी सी पोटली थी। अवश्य ही उसमें कुछ अनाज था। मुंदरी अभी तक सो ही रही थी। असहाय सोना पर क्या गुजरा इस आधे घंटे में यह किसी को नहीं मालूम था। आते ही गोपी ने व्यंग किया—"देख हीरू कैसे मजे में सो रही है यह!"

हीरू आगे बढ़ा और पास जाकर पुकारा—"भउजी! भउजी!!" अँगड़ाई लेकर भउजी उठी।

पर उठने में ज्यों ही उसने अपने पांव सिकोड़े कि सोना का सिर एक ओर को लुढ़क गया। मुंदरी ने उसे ज्यों ही छुआ कि—हाय सोना! हाय सोना! करके वह चिल्लाने लगी। वह कभी ही अपनी आँखें मूँदकर संसार से नाता तोड़ चुकी थी।

गोपी और हीरू ने भी सोना को सावधानी से देखा। हाय भाग्य! करके मुंदरी बिलख पड़ी।

गोपी ने कहा—"अच्छा हुआ मर गई।"

हीरू बोला—"ठीक ही है जाने उसे हम लोगों के साथ क्या-क्या तकलीफें होतीं।"

मुंदरी दुःख की मारी चीखकर बोली—"हाँ हत्यारो! तुम्हें क्या दुःख, उसके मरने का। वह तो हमारी बेटी थी न, तुम्हारी कौन थी? हाय! यही सुनने को अभी तक मैं जिन्दा हूँ। भगवान् हमें भी क्यों नहीं मार डालता?"

"चुप, रहो भउजी! जो उसको बदा था वही हुआ। किसी ने मार तो नहीं डाला।" हीरू ने सान्त्वना देने की कोशिश की!

"चुप रह तू! बेकार टाँय-टाँय कर रहा है मर गई, मर गई क्या उसे बुला लायेगा क्या? और दुःख कैसा लड़की थी, कोई लड़का होता तो बात भी थी।"

"अरे औलाद तो औलाद। चाहे लड़का हो या लड़की...।" हीरू ने कहा।

"तू फिर नहीं चुप होता! अब अगर बोले तो मारपीट हो जायगी।" गोपी बिगड़ा।

हीरू मन मारकर चुप हो गया। दुःखिया मुंदरी सोना के नाम पर रोती ही रही। गोपी भी मुँह लटकाये एक ओर को निहारता रहा।

फिर थोड़ी देर आसरा देखकर हीरू उठा। सोना को उठाया। थोड़ी दूर आगे जाकर पेड़ों के पीछे उसे गाड़ दिया। इस समय उसे बड़ा दुःख हो रहा था। सोना उससे खूब हिल गई थी। वह भी सोना को प्यार करता था मानो उसी की बेटी हो। हीरू की आँखें इस समय बरस रही थीं।

सोना अब मिट्टी हो गई थी इसी लिए उसे मिट्टी में ही दबा दिया गया।

अँधेरा होने पर सोना का मोह वहीं पेड़ तले छोड़कर सभी आगे बढ़े। सुबह वे शहर में अवश्य पहुँच जायँगे।

मुँदरी बीच-बीच में रोने लगती थी। हीरू उसे समझाता और चुप कराने की कोशिश करता। गोपी रह-रहकर खाक हो रहा था।

तभी दरवाजे पर कुछ आहट हुई। गोपी ने करवट ली। सोचा--शायद कोई है। पर काल को छोड़कर वहाँ कौन हो सकता था? बीमारी की दशा में उसने करवट ली फिर उलटकर सीधा लेट गया। उसे फिर याद आया।

शहर आये बीस दिन हो गये थे। मजदूरी तो मिली नहीं थी। धर्मशाले में वह रह रहा था। धर्मशाले का मैनेजर भी अब इन्हें ठिकाना ठीक करने को परेशान किये था। हीरू कहीं गया था। वहाँ अकेली मुंदरी एक कोने में पड़ी थी। गोपी नशे में चूर था। कोठरी में घुसते ही वह बोला--"कुछ खाने-वाने को है?"

"कुछ खाने को नहीं है। जाओ बाजार से कुछ ले आओ। तुम और हीरू खा लेना हमारी तबीअत ठीक नहीं है।"

"तुझे हीरू की क्या पड़ी है। ला दे कुछ पैसे मेरे लिए।"

"पैसे! सुबह ही तो अठन्नी दी थी न!"

"तो क्या अठन्नी अब तक रक्खी है?"

"तो मेरे पास पैसे नहीं हैं। कहाँ तक दूँ। अठन्नी सबेरे ही तो दी थी। आमदनी का नाम नहीं। रुपया रोज का खर्च है। जाने कैसे निगोड़े से पाला पड़ा।" मुंदरी सब एक ही सांस में कह गई।

"क्या कहा! पैसे नहीं हैं। मैं जानता हूँ तू सब किसके लिए रक्खे है।"

"किसके लिए?" चीखकर मुँदरी बोली।

"हीरू के लिए। ला दे चुड़ैल नहीं तो....।" कहते-कहते गोपी ने एक लात....।

"यह कलंक! अत्याचार!!--हाय राम!" करके वह रो पड़ी।

"ला, देती है या नहीं!"

"नहीं, नहीं है मेरे पास कुछ।" रोते हुए उसने कहा।

"ले फिर हरामजादी!" कहकर उसने फिर एक लात जमाई।

अब की मुँदरी बिलबिला उठी। रोते रोते उसने अपने आँचल में बँधी उस गिट्ठी को दांत से खोलते हुए कहा--"मार ले हत्यारे! भगवान् तुझसे बदला लेगा।"

"ला जल्दी चुड़ैल!"

मुँदरी ने एक चवन्नी गोपी के हाथ में रक्खी।

"और ला!"

"अब जो दो-चार आने हैं क्या वह भी न रहने दोगे?"

"मैं कहता हूँ दे।" कहकर गोपी ने हाथ से मुँदरी के सिर पर जोर से मारा और उसके आँचल में बँधी सभी इकन्नी दुअन्नी उसने ले ली और उलटे पाँव वापस बाहर निकल गया।

मुँदरी अपने भाग्य पर जोर-जोर से रोने लगी। गोपी को जाते देख मुँदरी उठी पर पाँव उसके लड़खड़ा गये और वह धड़ाम से बेहोश होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी।

फिर कब तक वह इस मूर्छा की दशा में पड़ी रही इसका पता नहीं। हाँ, बहुत रात गये हीरू आया। दिन भर की थकान से उसका शरीर चूर-चूर हो रहा था। बड़ी मुश्किल के बाद आज उसे नौकरी मिल गई थी। इस खुशखबरी को वह शीघ्र ही अपनी भउजी और गोपी को सुना देना चाहता था। अधखुले दरवाजे को पूरा खोलकर वह भीतर आया। कोठरी भर में अँधेरा मँडरा रहा था। पहुँचते ही उसने पुकारा--

"भउजी!" पर भउजी न बोली।

"भउजी, भउजी!!"

"हाँ।" बड़े कष्ट के स्वर में वह बोली।

"क्या तबीअत अधिक खराब है भउजी।" यह हीरू का स्वर था। मुंदरी काँप उठी।

पागल-सी वह जोर से बोली--"तुम यहाँ से चले जाओ।"

"क्यों, क्या बात है।" हीरू को यह व्यवहार नवीन लगा।

"बस मैं कहती...हूँ...तुम चले..।" इसके आगे उसका स्वर खो गया।

"भउजी!" हीरू को शक हुआ, उसने पुकारा पर भउजी अब बोलने में असमर्थ थी

जेब से दियासलाई निकालकर उसने जलाकर देखा। उसकी वह करुणामयी मुँदरी भउजी अब अपनी आँखें उलट चुकी थी, हाथ-पाँव ठण्डे होकर कड़े हो चुके थे। बेबसी के कारण मुँह खुला था। मृत्यु का यह नग्न रूप देखकर हीरू हिल गया। सलाई की सींक राख हो चुकी थी। अँधेरे में ही टटोलकर उसने देखा--भउजी की नाड़ी थम चुकी थी।

एक झटके से वह गोपी के ढूँढ़ने के लिए बाहर निकला। गोपी कोठरी के द्वार

पर ही मिला। हीरू को भीतर से
देख गोपी एकदम से चिल्ला उठा
भीतर क्या करता था रे! नीच
तुझे मैं....।"

बीच ही में क्रोध से भरकर
उसको गर्दन में हाथ लगाकर उसे
ढकेल दिया और कहा--"चुप रह अभागे
हीरू की आँखों से टप-टप
एक साथ कई बूँद आँसू गिरकर
कोठरी की ड्योढ़ी को भिगो गये।"
तभी एक झटका लगा और
ने अपने रूखे गालों पर बहते आँ
पोछने का असफल प्रयत्न किया पर
हाथ खाट पर से उठ न सके।
सब बातें वह अब भूल गया।
में आ गया कि डाक्टर की बात अ
होनेवाली है।

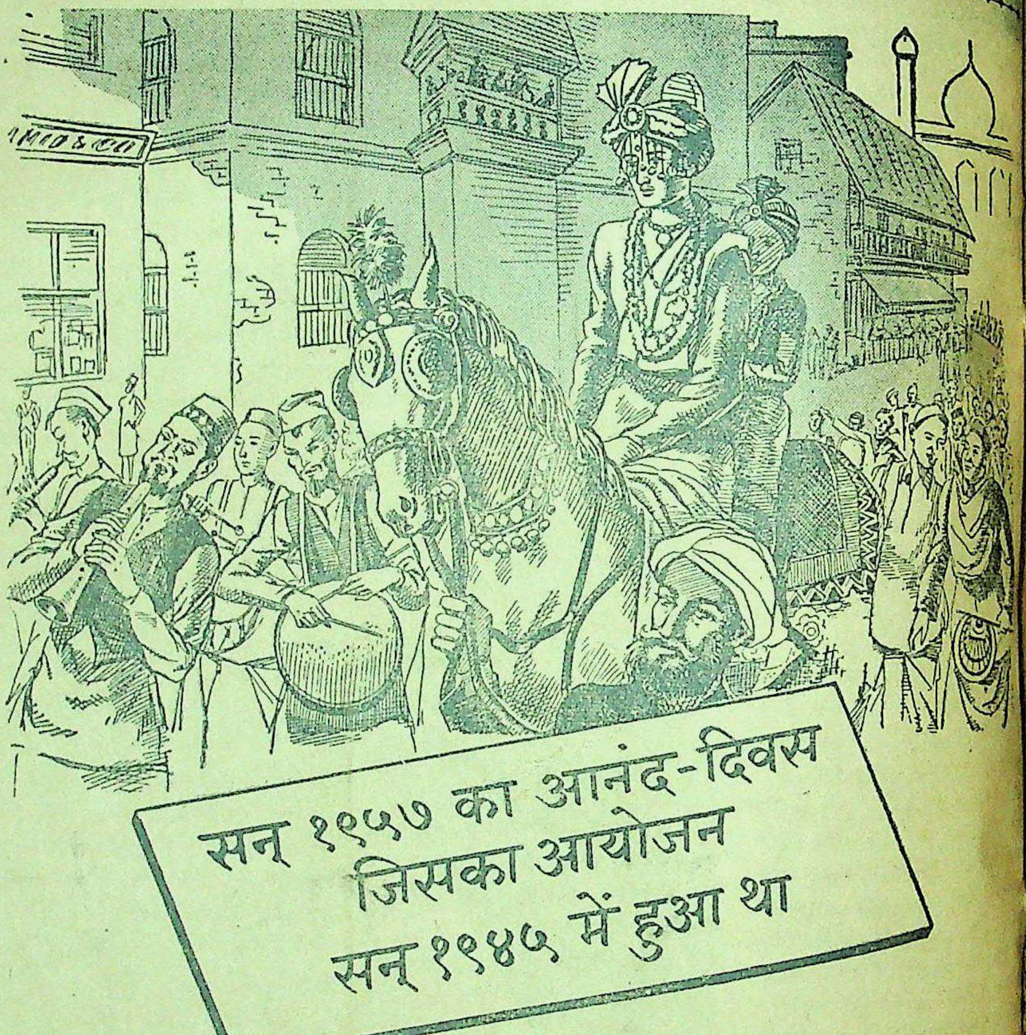

" क्या मैं अपने बच्चों के विवाह का खर्च उठा सकूँगा ?" इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप इस समय क्या उपाय करते हैं।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

शादी-विवाह में रुपया खर्च होता है और वर्षों पहिले बचत की योजना बना कर और बचत के रुपये को समझदारी से लगा कर ही आप इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि आपके बच्चे बड़े होने पर सुचारु रूप से सुखी जीवन प्रारम्भ करें।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 128—HINDI

फिल्म-जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री—रमोलादेवी

भारतीय फिल्म-कला पर प्रश्नोत्तर और एक इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

...फिल्म-अभिनेत्री कुमारी शान्ता आप्टे

पंजाब की सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री रमोला

'देशदूत' के पिछले अंक में सुप्रसिद्ध ...नेत्री रमोलादेवी से भेंट करने ... जो वार्ता हुई उसका एक अंश ...हो चुका है। उसी सिलसिले में ...वार्ता हुई वह इस प्रकार है।

...ने रमोलादेवी से एक कहानी ...आग्रह किया। बड़ी बहस-...के बाद वह सुनाने को राजी हो ...।

...जी ने कहा—"रमोला-... कहानी जल्दी सुनाइये, ...सुन लूँ—मुझे कार्य-... है!"

...शादी अभी हुई है ...हुई—मेरा प्रथम ...से हुआ? इसी को मैंने ...किया है। मेरी कहानी ...'परमानेन्ट-शेल्टर'"

...दिन थे। शायद जून का ...काश्मीर में थी। काश्मीर ...मेरे हृदय में बड़ा मादक ...। एक दिन शाम को मैं "डल-...किनारे पैदल ही घूमने निकल ..." का मनोहर दृश्य ...करने लगा और मैं एक मीठा ...लगी। इसी मीठे स्वप्न से ...होकर बहुत दूर चली गई। ...पता भी न चला। एकाएक ...आकर पूछा—"मैं अमेरिका ...में आया हुआ हूँ, मुझे हिन्दु-...आये हुए कुल चार महीने हुए ...की हर चीज देखने के लिए ...। यदि आपको एतराज न हो, ...करके काश्मीर में मुझे क्या-...चाहिए बतलाने की कृपा ...आपसे पूछने का साहस ...कि मैं आपको अमेरिकन ...रहा हूँ।"

...ठिठक गई। और पास ही ...के पुलिन पर एक मनोहर ...हुई थी, हम दोनों उसी ...घास के फर्श पर बैठ गये। ...उड़ रही थी। "डल-...वक्षस्थल पर नौकायें ...इन नौकाओं में बैठे हुए ...रहे थे।

..."आप अमेरिका से क्यों ...हुए हैं?"

..."मैं रायल एअरफोर्स ...। लड़ाई के सिलसिले में ...पड़ा।"

मैंने कहा—"मैं आपका नाम पूछ सकती हूँ?"

"मैं आपको अभी अपना असली नाम नहीं बतला सकता क्योंकि मैं मिलिट्री-फोर्स में हूँ। लेकिन हाँ तब तक के लिए मुझे आप "गोल्डन" के नाम से पुकार सकती हैं।"

मैंने कहा—"इसी नाम से क्यों पुकारूँ? जब नाम फर्जी है, तब चाहे कोई क्यों न हो?"

युवक ने कहा—"इस नाम से मेरे जीवन से कुछ लगाव है। यह नाम बिलकुल फर्जी नहीं है। मेरी माँ का रक्खा हुआ प्यार का नाम है। इसलिए इस नाम को फर्जी कहना भी ठीक नहीं जँचता। अच्छा तो आप भी अपना परिचय दीजिएगा, यदि आपको कष्ट न हो तो।"

मैंने कहा—कष्ट कैसा? मुझे रमोला कहते हैं सिनेमा-संसार में। लेकिन मेरा यह नाम सही नहीं है। आपका जितना सम्बन्ध आपके नाम से है, उतना ही मेरा ताल्लुक इस नाम से है!

"तो आप सिनेमा-संसार की स्टार भी हैं, मुझे आपसे मिलकर बड़ी ख़ुशी हुई। आप अपना असली नाम तो बतला दीजिए।"

"अभी नहीं—वक्त आने पर जब कि हम दोनों के बीच से मिलिट्री-फोर्स का दायरा दूर हो जायगा, तभी हम दोनों एक दूसरे को ठीक तरह पहचान सकेंगे।"

मेरी इस बात पर मिस्टर गोल्डन खिलखिलाकर हँस पड़े!

मिस्टर गोल्डन ने कहा—"कल का प्रोग्राम "जल-क्रीड़ा" का होना चाहिए।"

मैंने कहा—"जैसी आपकी मर्जी।"

हम लोग जैसे ही फूलों के कुन्ज से बाहर निकले कि सहसा बादल घुमड़ आये। चार-छः क़दम ही हम चले होंगे कि पड़ा-पड़ पानी पड़ने लगा। मिस्टर गोल्डन के पास "बरसाती-कोट" था। उसको वह मुझे देते हुए बोले—"इसे ले लीजिए, जिससे आपके कपड़े ख़राब न हों।"

मैंने कहा—"फिर आप भी तो भीग जायेंगे इससे क्या फ़ायदा। एक का लाभ और एक का नुकसान।"

मिस्टर गोल्डन ने कहा—'अच्छा तो हम दोनों ही को इस कोट की "शेल्टर" में आ जाना चाहिए, क्यों ठीक है न रमोला?'

मैं हँसती हुई बरसाती कोट की शेल्टर में चली गई। मिस्टर गोल्डन भी उसी के शेल्टर में थे। करीब आध घंटे तक हम दोनों इस "शेल्टर" में रहे। इसके बाद बादल साफ़ हो गया। मैं "उनको" भी अपने निवास-स्थान पर ले गई। करीब एक घंटे के वह मेरे यहाँ ठहरे। मैंने उन्हें हिन्दुस्तान की बहुत सी दिलचस्प बातें बतलाईं, जिनको सुनकर वह बहुत प्रसन्न हुए।

* * *

चाँदनी रात थी। मैं और मिस्टर गोल्डन दोनों ही नौका में बैठे हुए "प्रकृति-सौन्दर्य" का आनन्द ले रहे थे। वास्तव में काश्मीर सौन्दर्य की खान है! मिस्टर गोल्डन 'प्राकृतिक सौंदर्य' को देखकर आनन्दित हो रहे थे! उन्होंने कहा—"अगर आपको कष्ट न हो तो एक गाना सुनाने की मेहरबानी करें।"

मैंने कहा—"कष्ट की तो कोई बात नहीं—लेकिन पहिले आपको अपना गाना सुनाना पड़ेगा। इसके बाद मैं सुनाऊँगी।"

मुझे हिन्दुस्तानी गाना तो आता नहीं, इसलिए शेक्सपियर का एक गीत सुनाये दे रहा हूँ। मुझे उम्मीद है कि आपको वह पसन्द आयेगा!

मैंने कहा—"आप शेक्सपियर का ही गीत सुनाइये।" उन्होंने गाना गाया, जिसका कि मतलब संक्षेप में यह था—"इस सुमनों की तल्प पर तुम आकर विश्राम करो। तब तक मैं तुम्हारे गुलाबी—कपोलों को सहलाता हूँ। तुम्हारे जूड़ों में—मुश्क-प्रसून सजा देता हूँ। तुम्हारे प्यारे कर्ण-युगलों को चूमता हूँ। तुम सो जाओ इस चाँदनी-रात में। जिससे कि मैं तुम्हें अपनी बाहों में भर लूँ—उसी प्रकार जिस प्रकार वनलता द्रुमों से लिपटी रहती है। जिस प्रकार पादप की शाखाओं को लतायें आलिंगन करती हैं।"

उन्होंने कहा—"अब तुम्हारी बारी है गाने की—गाओ न।"

मैंने कहा—"मैं आपको गाना जरूर सुनाऊँगी, लेकिन अभी नहीं। फिर जब हम दोनों के जीवन एक लड़ी में बँध जावें।"

"तो फिर अब क्या देर है" उन्होंने मेरे हाथ को अपने हाथ में लेते हुए कहा!

मैं मुस्करा पड़ी। मेरे शरीर का प्रत्येक रोम मुस्करा पड़ा, विहँस पड़ा!

इस तरह हँसते-खेलते हम लोगों के दिन व्यतीत होने लगे! हम दोनों के जीवन में आनन्द का सागर हिलोड़े मार रहा था! हम दोनों ने एक-दूसरे की हृदय-पुस्तक के प्रत्येक परिच्छेद को ध्यान से पढ़ लिया था। दोनों के बीच आशाओं के सुनहरे स्वप्नों का भव्य-जाल बिछा हुआ था। ऐसे सुनहरे स्वप्न, जिनमें प्रेम की भव्य दुनिया की नींव पड़ चुकी थी। हम दोनों एक-दूसरे के नज़दीक पहुँच गये।

मिस्टर गोल्डन ने कहा—"अच्छा तुमको याद है—अपने वायदे की—"

मैंने कहा—"किस वायदे की। मुझे तो इस वक्त कुछ याद नहीं पड़ता।"

उन्होंने कहा—"तुमने गाने के लिए कहा था न?"

"ओह! तुमको यह बात अब भी याद है।" "अच्छा मैं गाये देती हूँ"—मैंने एक अमेरिकन गीत गाया। उसका मतलब संक्षेप में यह था—"मेरे प्रियतम किसी दिन मैं तुम्हारे "कोट के शेल्टर" में गई थी, आज तुम मेरे हृदय के "परमानेन्ट शेल्टर" में आ गये। यहाँ से तुम भाग कर नहीं जा सकते। इस शेल्टर की ख़ूबी यही है कि जो एक बार इसके अन्दर आ गया वह चाहने पर भी भागकर नहीं जा सकता! इस "परमानेन्ट-शेल्टर" में किवाड़ प्रेम के लगे हुए हैं—जो इसमें बन्द हो गया—वह फिर हमेशा के लिए बन्द ही हो जायगा।"

मेरे गाने को सुनकर वे बहुत ख़ुश हुए। उन्होंने कहा—"प्यारी रमोला क्या मैं आज तुम्हारे "परमानेन्ट-शेल्टर" में हूँ।"

मैं हँस पड़ी। मेरे शरीर के प्रत्येक अवयव हँस पड़े!

बातचीत करते-करते, वक्त काफ़ी हो गया था—मधुर जी को भी जल्दी हो रही थी। रमोला ने जो अपनी "वाच" में देखा तो साढ़े नौ बज चुके थे। अतः मैं सुन्दर संस्मरण लेकर रमोला से विदा हुआ।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

फ़िल्मी-गाने !

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना चाहें तो "फ़िल्म सङ्गीत" मँगाइये। अब तक ९ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक भाग में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वर-लिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभाग ३) डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)।
पता—संगीत कार्यालय, हाथरस यू० पी०

आरोंदा १८६९ नीलगिरि तेल
साण्डलेकर बं. पू. बम्बई ४.
स्थापना १९२६ | ज़ुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय | र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ़्लुएंजा, प्लेग, टाइफॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥-) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

इधर उधर की

समुद्र के भीतर तेल की लाइन

युद्धकाल में, इंजीनियरों की सबसे बड़ी सफलता का भेद अब खोला जा सकता है। लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि मित्रराष्ट्रों की यूरोप-स्थित विशाल यंत्र-सज्ज सेनाओं को, इँग्लिशचैनेल के भीतर से जानेवाली विशेष प्रकार की पाइप लाइनों से तेल पहुँचाया जाता रहा है। इस प्रकार लिवरपूल (ब्रिटेन) से भेजा गया तेल, नलों की इन लाइनों-द्वारा राइन नदी के पार फ़्रैंकफर्ट (जर्मनी) तक सीधे जाता रहा है।

नलों की पहली लाइन गत वर्ष १२ अगस्त को तैयार हो गई थी और उसके द्वारा यूरोप की मित्रसेनाओं के लिए नित्य लगभग १० लाख गैलन पेट्रोल पम्प किया जाता था। समझा जाता है कि उस उमय से यूरोपीय युद्ध की समाप्ति तक लगभग १२ करोड़ गैलन तेल नलों की इन लाइनों-द्वारा यूरोप को भेजा गया।

नलों की ऐसी २० लाइनें तैयार की की गई थीं। इनमें से ४-५ लाइनों में शेरबुर्ग (फ़्रांस) के लिए और १५-१६ से बोलोन के लिए तेल जाता था। युद्धारम्भ के बाद प्रायः १ हज़ार मील लम्बी तेल की जो लाइन ब्रिटेन में तैयार की गई थी, चैनेल के पार जानेवाली लाइनें उससे मिला दी गई थीं। लाइनों के निर्माण के समय बड़ी सतर्कता से काम लेना पड़ा था, जिसमें उन पर शत्रु की निगाह न पड़ने पावे। तेल को नलों के भीतर भीतर दूर तक पहुँचाने के लिए अत्यधिक दबाव डालनेवाले विशेष प्रकार के पम्पिंग स्टेशन गुप्त स्थानों में तैयार किये गये थे।

सारा कार्य बिना किसी दुःखद कांड के सम्पन्न हुआ, तो भी, कभी तूफ़ानों के कारण समुद्र अत्यधिक अशांत हो उठता था, जिससे कार्य में बाधा पड़ने की आशंका होने लगती थी। इंजीनियरों के इस बड़े अनुष्ठान को "प्लूटो" का सांकेतिक नाम दिया गया था। 'पाइप लाइन अंडर दि ओशन' शब्दों के प्रथम अक्षरों को जोड़ कर इस सांकेतिक शब्द की रचना की गई थी। यद्यपि यह बताना असम्भव है कि ये लाइनें तयार कराने में कितना धन व्यय हुआ, फिर भी यह निश्चित है कि करोड़ों लग गये।

पाइप तैयार करने के लिए एक खास फ़ैक्टरी खोली गई और उसमें पाइपों का बनना शुरू हुआ। पाइपों को लपेटने के लिए भारी चरखों की भी आवश्यकता थी। वे भी बनवाये गये। इनकी लम्बाई ९० फ़ुट और व्यास ५० फ़ुट का होता था। जो पाइप इन पर से लाये जाते थे, उन्हें मिलाकर इनका कुल वज़न १,६०० टन हो जाता था, जो एक विध्वंसक [illegible] के वज़न के बराबर है। एक चरखे में ७० मील लम्बे पाइप लपेटे जा सकते थे। इन चरखों को समुद्र में चलाने और पाइप लाइन डालने में बड़े ही कौशल तथा साहस से काम लिया गया।

* * *

रङ्गीन शीशे का कपड़ा

वैज्ञानिकों ने शीशे का रंगीन कपड़ा तैयार किया है। यह कपड़ा सुन्दर तो है ही और साथ ही साथ इसमें ये भी गुण विद्यमान हैं कि न तो इस पर धब्बा लगता है, न रंग फीका पड़ता है और न आग से जलता है। मोड़ने तोड़ने पर भी न तो यह टूटता है और न इसमें विकार पैदा होता है। यह कपड़ा सजावट के काम में लाया जायगा। वैज्ञानिक ऐसी योजनाएँ बना रहे हैं जिनके फल-स्वरूप यह पहनने के भी काम आ सके। शेफ़ील्ड यूनिवर्सिटी के ग्लास टेकनोलाजी के प्रोफ़ेसर डब्ल्यू टर्नर की धर्मपत्नी ने नववधू के रूप में इसे पहना भी था।

* * *

नया वायुयान

लंदन के श्री जान डब्ल्यू बूथ ने बताया, "मैं अमेरिकनों के सामने विलास के साधनों में एक नवीन वस्तु रखना चाहता हूँ।" उन्होंने कहा, "दक्षिण अमेरिका जानेवाले ब्रिटिश वायुयानों में प्रवेश-द्वार के पास एक विश्रामकक्ष और एक घूमने-फिरने योग्य डैक होगा। इसमें ४० व्यक्ति एक साथ यात्रा कर सकेंगे।

लगभग आधे यात्रियों के लिए स्प्रिंगदार बिस्तरे होंगे। बटन दबाते ही शेष लोगों की कुर्सियाँ झूलेवाले बिस्तरों का रूप धारण कर लेंगी। एक और बटन दबाते ही कुर्सी में लगे डिब्बे में से गरम कपड़े और कंबल आदि निकल पड़ेंगे। प्रत्येक वायुयान में रसोईघर, दो स्नानागार, भोजनालय तथा यात्रा के समय काम करने के इच्छुक यात्रियों के लिए निजी कमरे की व्यवस्था होगी।

* * *

चित्र उतारने का नया ढंग

पूर्वी वायुसेना का चित्र उतारनेवाला दल लगभग १,००,००० आकाश से लिए गये चित्र लेकर अपने अड्डों पर वापस आया। इन यानों के चालक जापानी प्रदेशों में फैले मित्रराष्ट्रों के गुप्तचरों के समान ही जापानियों के लिए बड़े भयप्रद सिद्ध हुए हैं।

पूर्वी वायुसेना के चित्र उतारनेवाले दल के चालक अब ईरावदी के किनारे पर झुके हुए वृक्षों के नीचे छिपी हुई छोटी-छोटी नावों का पता लगाते हैं, किसी पहाड़ी रास्ते पर जाती हुई कुछ लारियों के चित्र उतारते हैं तथा जापानी सैनिकों और जंगल में छिपाकर रखे हुए सामान का पता लगाते हैं।

एक दल ने एक बार २४ घंटों में इन चित्रों की १,५०० प्रतियाँ तैयार की हैं। चित्रों को धूप में सुखाना तो आसान है परन्तु वहाँ उनकी रक्षा भी करनी पड़ती है क्योंकि एक बार एक बैल छः चित्रों को खा गया।

इन्हीं चित्रों के कारण बमवर्षा करने के लिए केन्द्र चुने जाते हैं। इन चित्रों का तत्काल उपयोग किया जाता है और कभी उन्हें उपयुक्त अवसर आने तक के लिए सुरक्षित रख छोड़ते हैं।

बर्मा के मोर्चे पर मित्रों की स्थल सेनाएँ इन्हीं चित्रों की सहायता से बनाये गये नक़शों के सहारे आगे बढ़ रही हैं। कई चित्र तो विशेषतः सेना के लिए ही लिए जाते हैं। एक सैन्यदल शत्रु पर आक्रमण करने के कुछ घंटों पूर्व ही शत्रु स्थानों के चित्र माँगता है। आगे जाकर वायुयान चित्र लेने जाते हैं तथा पीछे-पीछे स्थल सेनाएँ उन्हीं के अनुसार कार्यक्रम बना लेती हैं।

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बेंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज BI-DIASTASE विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर
बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

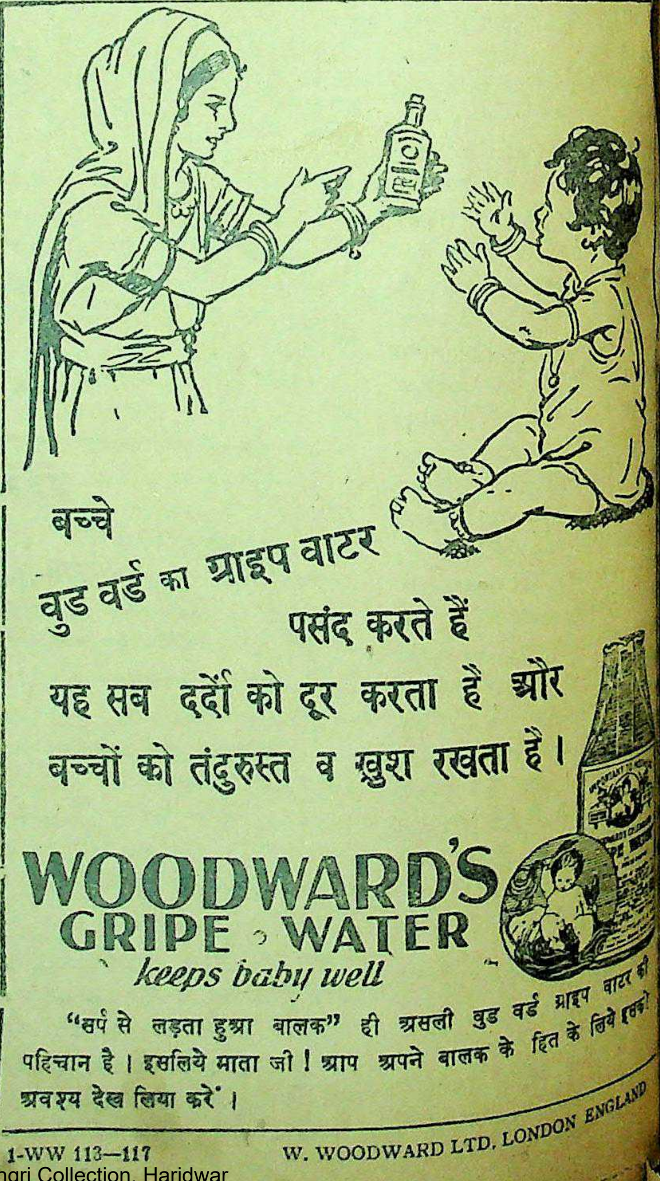

बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 113—117 W. WOODWARD LTD. LONDON ENGLAND

संपादक के नाम चिट्ठियां

लेखक और पारिश्रमिक

यह प्रश्न व्यापक बन रहा कारों की आर्थिक स्थिति जाय ? मेरी समझ में हो सके साहित्यकार अपनी साधन सिर्फ़ साहित्य को ही हमारे यहाँ दुर्भाग्य से पाश्चात्य स्थिति नहीं है कि प्रत्येक की जीविका साहित्य-सृजन रूप में चल सके। कार किसी ऐसे व्यवसाय जिससे उसको प्रत्येक महीने निश्चित रक़म मिल जाया रक़म निश्चित रूप से साहित्यकार की आर्थिक हद तक दूर होकर शांति और संतोष प्राप्त है। उदाहरण के लिए, एक किन्तु कहीं पर अध्यापक की चेष्टा करे। ध्यान में रखनी होगी साहित्यकार के स्वीकृत ! दिन भर "क्लर्की" क्या लिख सकता को कायम रखने- चाहिए।

हित्यकार अध्यापक । किन्हीं विचित्र बहुतों को सिर्फ़ अपना निर्वाह करना ग़रीब प्रतिभाशालियों संपन्न करना अत्यन्त क्योंकि उनकी सारी प्रायः आर्थिक कठि- करने और जीवन को में ही खर्च हो जाता का उदाहरण यहाँ । गोल्ड स्मिथ का सारा पूर्ण था। उसको इसी करना पड़ा और ऐसी तमाम पड़ीं जिनका साहित्यिक मूल्य नहीं है। क्योंकि धन-प्राप्ति की इच्छा से ही यदि उसे आर्थिक संतोष निश्चय ही उसने उत्कृष्ट दी होती ! हिंदी में ग़रीब प्रतिभाशाली पाते कठिनाइयों से बेहद परे- बेचारे बहुत कुछ लिखना नहीं पाते—पैसे के स्वीकृत सिद्धान्तों और करनी पड़ती है, उनकी समय के इस घोर अपव्यय उनको अनुकूल वाता- परम कर्त्तव्य है। साहित्य की श्रीवृद्धि में ही जायगी।

का कहना है कि साहित्य बेचा जाता है, धन के साहित्य लिखा जा सकता से अधिकांश सहमत प्रतिभा और प्रेरणा परिस्थितियों में भी ग़रीब साहित्यिक उत्कृष्ट साहित्य निर्माण कर सकता है। हमारे सामने गोल्ड स्मिथ तथा तुलसीदास, तुकाराम, ज्ञानेश्वर आदि संत कवियों के उदाहरण हैं। परन्तु हमारा मुख्य कथन यह है कि मनुष्य संतुष्ट एवं निश्चिन्त परिस्थिति में ही सच्चा साहित्य-सृजन कर सकता है। जब तक साहित्यकार का जीवन आर्थिक और घरेलू चिंताओं से जर्जर है तब तक उसको संतोष और शांति प्राप्त होना कठिन है। आर्थिक संतोष से वास्तव में साहित्यकार के ध्येय को अनुकूल वातावरण मिलता है।

प्रयाग —बालाजीराव जोशी
२४ जून, ४५ बी० ए०

* * *

सम्मेलन का सभापतित्व

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी उदयपुर-अधिवेशन के लिए सभापति के चुनाव का प्रश्न हिन्दी भाषा-भाषियों के सम्मुख है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का दृष्टिकोण सदा संकुचित रहा है, ऐसी धारणा तो मेरी नहीं है; पर उसकी प्रवृत्ति यदा-कदा अवश्य ऐसी रही है। राष्ट्र-भाषा का प्रश्न एक प्रान्त विशेष का प्रश्न नहीं है। हिन्दी अवश्य भारत के विशेष क्षेत्र की मातृ-भाषा है, और उसी क्षेत्र के महान् साहित्यकारों ने अपनी अमर कृतियाँ प्रदान करके उसकी श्रीवृद्धि की है। उन साहित्यकारों के प्रति सम्मान प्रकट करना हमारा कर्त्तव्य है। पर इस उदारता में हमें ऐसे साहित्यिकों की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए जिनकी मातृ-भाषा अलग है फिर भी जो अपनी मातृ-भाषा के प्रति अगाध प्रेम रखते हुए भी हिन्दी की अभिवृद्धि में सबल योग प्रदान करते रहे हैं। उनका सम्मान करना भी हमारा फ़र्ज़ है। मैं ऐसे ही एक महान् कलाकार का नाम हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, उदयपुर-अधिवेशन के सभापति-पद के लिए प्रस्तुत करता हूँ। वे हैं—श्री कन्हैयालाल माणिकलाल जी मुंशी। आप भारत के मान्य नेता हैं और गुजराती साहित्य के महान् स्रष्टा हैं। हिन्दी-साहित्य में उनका अध्ययन तथा योग उपेक्षणीय नहीं है।

कुछ साहित्यिक 'बन्धुओं' ने आचार्य श्री. केशवप्रसाद जी मिश्र का नाम सम्मेलन के सभापति-आसन के लिए प्रस्तुत किया है। आचार्य मिश्र जी मेरे गुरु रह चुके हैं और उनके प्रति मेरे हृदय में अगाध श्रद्धा है। उनका सभापति होना मेरे लिए गौरव की बात है। पर 'हिन्दी और राष्ट्र-भाषा' का प्रश्न एक विशेष रूप लेकर देश के सम्मुख आ रहा है, ऐसे समय में हमें अपना सेनानी वर्तमान परिस्थिति पर ध्यान देकर ही चुनना होगा। मैं उन साहित्यिक बन्धुओं को सविनय यह राय दूँगा कि आचार्य श्री मिश्र जी का नाम इस वर्ष साहित्य-परिषद् के सभापति के लिए प्रस्तुत करें, जो अधिक उपयुक्त होगा।

अजमेर —डाक्टर विष्णुलाल
२० जून, ४५ अम्बालाल जोशी

* * *

इलाहाबाद-रायबरेली लाइन

इलाहाबाद-रायबरेली लाइन पर चलनेवाली गाड़ी का समय इतना अधिक असुविधा-जनक है कि यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान में यात्रा करने में बहुत ही कठिनाई उठानी पड़ती है। इस लाइन में आने और जाने के लिए केवल एक ही एक गाड़ी है, वह भी रात को चलती है। इसके सिवा इस गाड़ी में यात्रियों की ऐसी अपार भीड़ होती है कि जंक्सन से रवाना होने से पहले ही यह खचाखच भर उठती है और यात्रियों की एक बहुत बड़ी भीड़ गाड़ी में स्थान प्राप्त करने के लिए अन्त समय तक भटकने के बाद निराश होकर रह जाती हैं। ऐसी अवस्था में बीच के स्टेशनों से गाड़ी पर सवार होने की इच्छा रखने वाले यात्रियों पर क्या बीतती होगी, इसका अनुमान किया जा सकता है।

इस लाइन के देहात के स्टेशन इतने छोटे हैं कि उनमें यात्रियों को ठीक से बैठने भर को भी जगह नहीं मिलती। फिर रात्रि में रुककर विश्राम करना तो बहुत दूर की बात है। जो यात्री प्रयाग की ओर से जाते हैं, उन्हें आधी रात के भयानक समय में गाड़ी से उतरकर घर पहुँचने के लिए कोसों का रास्ता तय करना पड़ता है। इसके विपरीत जिन लोगों को प्रयाग की ओर आना होता है, उन्हें भी घर और स्टेशन की बीच की दूरी के अनुसार आधी-रात के बाद से ही यात्रा करनी पड़ती है। परिणाम यह होता है कि जिस दिन किसी को गाड़ी से यात्रा करनी होती है, उस दिन उसे प्रायः सारी रात जाग कर ही बितानी पड़ती है, चाहे उसे पश्चिम से पूर्व आना हो या पूर्व से पश्चिम। देहातों में रात को स्टेशन से घर जानेवाले तथा घर से स्टेशन आनेवाले यात्रियों के गुंडों और बदमाशों से लूटे जाने का बड़ा भय रहता है। साथ ही बरसात के दिनों में सर्प आदि का भी भय रहता है। पिछले साल बरसात के दिनों में स्टेशन के रास्ते में साँप काट लेने के कारण कई यात्रियों के प्राणों से हाथ धो बैठने के समाचार सुनने में आये हैं। ऐसी अवस्था में हम आशा करते हैं कि ईस्ट-इंडियन रेलवे के अधिकारी-वर्ग इस लाइन के यात्रियों की दुर्दशा पर ध्यान देते हुए गाड़ियों के आने-जाने के समय में सुविधा-जनक परिवर्तन कर देने की कृपा करेंगे।

२१, कटरा प्रयाग। —ठाकुरदत्त मिश्र

सौन्दर्य और प्रेम की कविताएँ
लिखनेवाले कवि
'अंचल'
की
मधूलिका
मूल्य दो रुपये

'अंचल' में कीट्स की सौन्दर्यानुभूति की तड़पन तथा शैली की गीति-काव्य की अजस्र झरना-प्रवाह धड़कन है। संस्कृत शब्दों में उर्दू की-सी मादकता लाने का श्रेय 'अंचल' को ही है।

—वीणा

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

कन्ट्रोल भाव

EVEREADY
TRADE-MARK
ऐवरेडी सैल्स और बैट्रीयां

	नं. १५०, १३५, ११२	नं. ७०३.
फुटकर व्यापारिओं के लिये थोक भाव :—	रु. ३१-८-० का एक गुरस	रु. ७०-०-० के १०० नग
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची. दिल्लीमें खरीदारों को परचून भाव :—	रु. ०-४-६ एक नग.	रु. ०-१४-६ एक नग
दूसरी जगहों पर खरीदारों के लिये परचून भाव :—	रु. ०-५-० एक नग.	रु. ०-१५-० एक नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्ली को छोड बाकी सब जगहों के थोक व्यापारी भाडा और महसूल आदि उपर लिखी थोक किमतों मे जोड सकते है।

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY, (INDIA) LIMITED.
CALCUTTA • BOMBAY • MADRAS • COCHIN • DELHI AND KARACHI.
NAS 61/5

वर्षा की कहावतें

एक बूँद चैत में परै,
सहस बूँद सावन में हरै।
चैत मास जो भीग भिगोवैं,
फिर बैशाखै टेसू बोवैं।

* * *

जेठ मास जो तपै निरासा,
तो जानो बरसा की आसा।
जै दिन जेठ चलै पुरवाई,
तै दिन सूखा सावन लाई।

* * *

असाढ़ मास अठैं अँधियारी,
जो निकलै चन्दा जलधारी।
चन्दा निकलै बादल फोर,
साढ़े तीन मास बरसा का जोर।

* * *

सावन पहली पंचमी,
गरम उदै जो भान।
वर्षा होगी उत घनी,
ऊँचे जानो धान॥

* * *

सावन पहले पाख में,
दसमी रोहन होय।
महँगा नाज और सवलप जल,
बिरला बिलसै कोय॥

* * *

जब बरसेगा उत्तरा,
नाज न खावै कंसरा।
ढेले पर चील बोलै,
गली गली में पानी डोलै।

* * *

तपै मिरगिसिरा जोई,
तब पूरन बरसा होई।

* * *

पानी बरसै बहन न पावै,
तब खेती का मजा पावै।

* * *

जब बरसे तब बाँध कियारी,
पूर किसान जो हाथ कुदारी।

* * *

बोली लोमड़ी फूली काँस,
अब नाहीं बरसा की आस।

* * *

मेघ जो बरसै सेवाती,
चरखा चलै न बोलै ताती।

* * *

साँझै धनुष बहाने पानी,
कहैं घाघ सुन पंडित ज्ञानी।
एक पानी जो बरसै सेवाती,
कुरमी पहिरैं सोने की पाती।

* * *

रात दिना घमछाहीं,
घाघ कहैं बरसा अब नाहीं।

* * *

शुक्रवार की बादरी,
रही सनीचर छाय।
घाघ कहैं सुन घाघनी,
बिन बरसे न जाय॥

* * *

हथिया बरसे चित्रा मड़राय,
घर बैठे किसान रिरियाय।
पानी बरसे आधा पूस,
आधा गेहूँ आधा भूस।

* * *

चमकै पश्चिम उत्तर ओर,
नित जानो पानी है जोर।

* * *

सावन कबीर प्रथम दिन,
उगत न देखै भान।
चार महीना बरसे पानी,
याको है परमान॥

सानफ़्रांसिस्को का वह नया चार्टर

(पेज ७ का शेष)

संगठन उनके हाथों नाचनेवाला एक कठपुतली-मात्र रह जाता है।

इस चार्टर में मनुष्य को स्वतत्र होने का जन्मजात अधिकारी घोषित किया गया है, पर स्वतन्त्रता की यह मानवीय परिभाषा 'ठीकेदारी—(ट्रस्टीशिप-कौंसिल) समिति' की स्थापना करने के लिए लागू नहीं हो सकती। अपने आर्थिक और व्यापारिक स्वार्थों के लिए शक्तिशाली पूँजीवादी और स्टालिनवादी राष्ट्र किस प्रकार दूसरी छोटी-छोटी क़ौमों व देशों पर ठीकेदारों के वेष में शासन करना चाहते हैं—यही भावना इस समिति की प्रस्तावना के पीछे ओत-प्रोत जान पड़ती है। इस साम्राज्यवादी प्रणाली को अन्तर्राष्ट्रीय रूप देकर क्या परिणाम हो सकता है—यह हमें सीरिया, लेबनान, फिलस्तीन, पोलैंड, मिश्र व फ्रेंच-इंडोचीन के उदाहरणों से मिल सकता है। इस भय की पूर्ण सम्भावना है कि कहीं संसार के ये बड़े शक्तिशाली राष्ट्र, संसार के सारे देशों को किसी न किसी बहाने उनके ठीकेदार बनकर, अपने स्वार्थों के लिए, हथिया न लें? जब हम चार्टर में दिये गये ऐसे देशों के भविष्य की रूपरेखा का विश्लेषण करते हैं, जिन्हें अभी स्वशासनाधिकार प्राप्त नहीं है, तो हमारी यह शंका और भी पुष्ट हो जाती है। दासत्व के बन्धन से बँधे इन देशों के लिए जो सुन्दर भविष्य की कल्पना इस 'चार्टर' ने की है, उसमें कहीं भी 'स्वतन्त्रता' शब्द का नाम नहीं है। स्वशासन करने का अधिकार प्राप्त कर लेना ही इन देशों के लिए काफ़ी होगा। चार्टर के शुरू में दिये गये स्वतन्त्र मनुष्य' की परिभाषा में शायद इन देशों के करोड़ों 'मनुष्य' नहीं आ सकते। एशिया महाद्वीप की एक अरब जनता, अफ़्रीका और दक्षिणी अमेरिका के छोटे-छोटे देश, जो कि पाश्चात्य साम्राज्यवाद की लोलुपता के शिकार हो चुके हैं, कभी भी इस चार्टर के अनुसार स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेंगे—यह असम्भव मालूम पड़ता है। हमें तो डर लगता है कि शायद 'मित्रराष्ट्र' नामक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के द्वारा दी गई वह धमकी जिसके द्वारा वह भविष्य में शान्ति-भंग करनेवाले राष्ट्रों को युद्ध-द्वारा नष्ट कर देने की घोषणा करते हैं, कहीं इन्हीं स्वतन्त्रता के लिए माँग करनेवाले गुलाम राष्ट्रों के लिए प्रयुक्त न की जाय? चार्टर द्वारा बनाई गई छः कौंसिलों के कार्य-क्षेत्र को देखकर ही ब्रिटेन, रूस और अमेरिका की यह गुप्त चाल समझ में आ जाती है। एक और शर्त के अनुसार किसी शान्ति-भंग करनेवाले विद्रोही राष्ट्र के विरुद्ध तब तक कोई अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं की जायगी, जब तक कि (सुरक्षा-कौंसिल का प्रत्येक स्थायी सदस्य उस कार्य का समर्थन नहीं करता। यह एक बड़ी ही संगठित और पेचीदी बात है क्योंकि इसके अनुसार अगर उदाहरणतः पोलैंड में किये स्टालिनिस्ट रूस के तानाशाही अत्याचारों की कोई अन्तर्राष्ट्रीय जाँच, या इसी प्रकार अँगरेज़ों की भारत या आयरलैंड में किये गये पाशविक दमन की वस्तुस्थिति का निरीक्षण करना ठहराया जाय, तो सुरक्षा-कौंसिल के एक भी सदस्य (चूँकि रूस व ब्रिटेन दोनों कौंसिल के स्थायी मेम्बर हैं) के विरोध से यह जाँच सम्भव न हो सकेगी।

संसार में शान्ति स्थापित करने के लिए आज चार्टरों की आवश्यकता नहीं, पर हृदयों और मस्तिष्कों के परिवर्तन की आवश्यकता है। संसार को 'शक्तिशाली' राष्ट्र, निर्बल' राष्ट्र, 'शत्रु-राष्ट्र' या 'मित्रराष्ट्र' नामक दो या चार भागों में विभाजित करके शान्ति स्थापित करने की चेष्टा करना पूर्णतया असम्भव है। आज शान्ति के लिए यौद्धिक क्रान्ति की ज़रूरत नहीं, वरन् मानसिक और नैतिक क्रान्ति की ज़रूरत है। मनुष्य को हिंसात्मक उपायों पर से विश्वास हटाना होगा तथा संसार से स्टालिन, चर्चिल व ट्रूमन के द्वारा प्रेषित साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद को हटा देना होगा। स्वतन्त्रता व स्वशासन
बघारनेवाले या नकली ठीकेदार
सबसे बड़े शत्रु हैं। समानता व
बंधुत्व के मानसिक धरातल के
विश्व का नया शान्ति-चार्टर बनाना
फ़िस्को का यह विश्व-सुरक्षा-चार्टर
आनेवाले तूफ़ानी युद्धों की साम्राज्य
भूमिका-मात्र है तथा हमें इसे,
ही स्वरूप के अनुसार देखना
परखना है।

मुफ़्त
एक पोस्टकार्ड भेजकर
कलेण्डर १९४५ तथा फाउन्टेन
मँगाइये।
यूनाइटेड कारपोरेशन, हल्का नं
अमृतसर

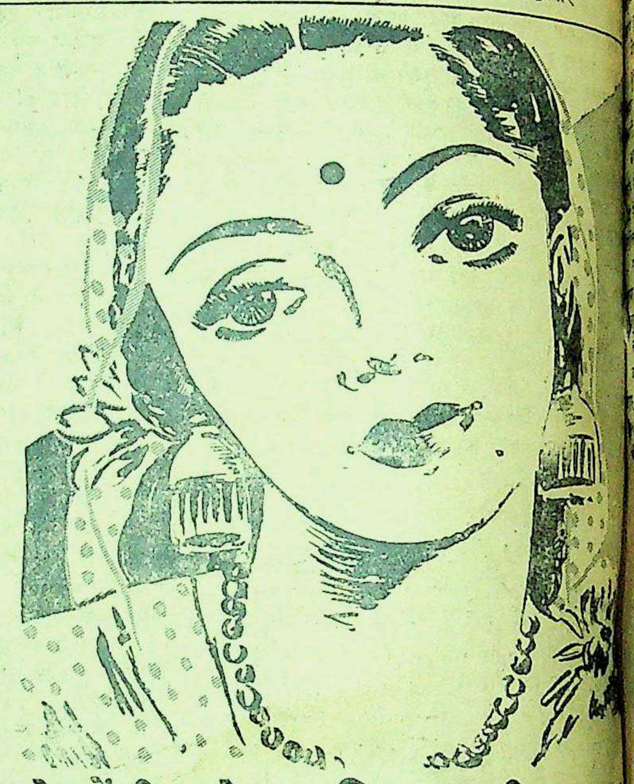

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दर
फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व सँवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते
दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वा
कमनीयता और मजबूती नष्ट हो

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से
जवाकुसुम बड़ी आसानीसे
निकाल देता है और बालोंको
मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध
मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका सम्मूक्ष
जवाकुसुम
केशोंकी शोभा बढ़ाना.....मस्तिष्क शीतल

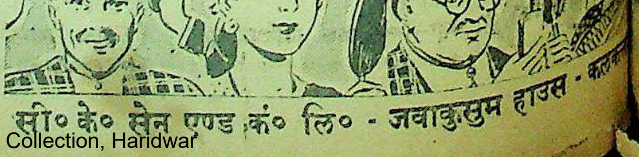

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कल

हिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

(६)

भैरव बहुत बिगड़ रहा था। हरीश ने आकर जाओ, यहाँ तुम्हारा गुण्डापन न चलेगा। जो आके।

आँखें लाल-पीली करके कहा—यह जुलुम? है या तुम्हारा, जो छोटी साली से बलपूर्वक चाहते हो? जो तुमने कीर्ति की है उससे वह निकट रहने में अपने को सुरक्षित नहीं समझती। ? न जाने क्या धमकी देकर भैरव चला गया। बातें होने पर सुरेश ने देखा कि राजकुमारी रही है। सुरेश ने कहा—कोई भय नहीं है। रहो।

हल्ला उठा। भैरव अपनी सास को लेकर लखनऊ जा रहा था। फाटक पर मोटर थी। घर में आकर खड़ी हो गई।

आदर से बिठाया और पूछा—क्या समाचार है? शर्मा हो रहे हैं। सवेरे से हमें घसीट ले जाना चाहते हैं।

ऊँचे स्वर में कहा—हमसे क्या बात हुई कसाई को सौंपोगी क्या?

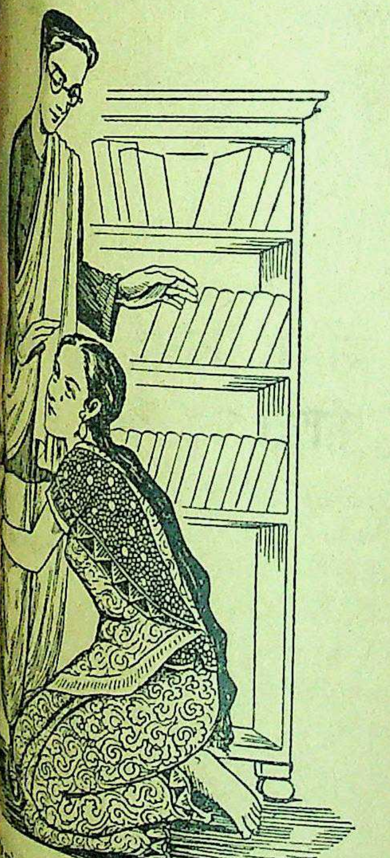

कमरे में आकर अपनी कुछ किताबें निकाल रहा था। आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी और रोने लगी।

बैठी रही। लक्ष्मी ने एक संयत स्वर यहाँ नंग-नाच करके भैरव बाबू गए हैं। है तब, आज पौ फटते ही फिर तुम्हें। तनिक भी देर रहा न गया। कन्या के क्या कोई कूड़ा-कर्कट है? रो पड़ी—बोली—क्या करूँ, बेटी? पर जल उठी। रोयेंगी पर प्रयत्न न जायगा? चेष्टा करो। हुए कहा—क्या करूँ बिटिया, हाथ पाँव क्यों कटे हैं? कन्या के कारण ही तो? जब कन्या का सब भार, और तुम्हारा भी सब भार हम लेने को तैयार हैं तो हाथ पाँव क्यों कटे हैं? लड़का उसका भी है, तुम्हारा ही नहीं है। अपने बच्चे को कोई नहीं मार डालेगा। तुम्हें मैं दासी बनने को नहीं बुलाती। तुम हमारे यहाँ जेठी जठेरी बड़ी बूढ़ी बन कर ससम्मान रहो आकर।

बुढ़िया चुप थी।

लक्ष्मी ने कहा—एक ओर कहती हैं जमाई बदमाश है, सब उड़ाए देता है! फिर उसकी इच्छापूर्ति को भी तैयार हैं। वह कैसे भला बनेगा? मैं कहती हूँ यदि उसी से विवाह करना है तो पहले उसे भला मनुष्य तो बनाइए नहीं तो जैसे एक मर गई है यह भी समाप्त हो जायगी!

बुढ़िया ने लम्बी साँस लेकर कहा—सब समझती हूँ बिटिया, किन्तु...

किन्तु परन्तु क्या, संसार में दूसरा पात्र नहीं है?

बुढ़िया ने कहा—उसका घर उजड़ा जाता है। ...उस पर छोटा बच्चा है। कहीं से दूसरी विवाह लाया तो सौतेली माँ अपने मार्ग के कण्टक को कुचल डालेगी।

लक्ष्मी ने कहा—लड़के का आगा-पीछा तो देखती हो किन्तु अपनी लड़की का नहीं देखती हो। वह लड़की है इसलिए मिट्टी की है। जहाँ चाहो अँध-मुख ढकेल दो?

इतने में हरीश ने आकर कहा—फिर वह दिक करने को आ गया है। जीजा जी मुवक्किलों के पास बैठे हैं, हमें भेजा है, कहा है—जैसे हो झंझट निपटाओ। राजकुमारी को भेज दो।

लक्ष्मी ने कहा—उसका जन्म ही अकारथ हो जायगा। क्या उत्पात मचाये है, मैं भी तो सुनूँ। मनुष्य से मिलने के लिए मनुष्य दो दिन के लिए आता नहीं है क्या?

हरीश ने कहा—बताओ, मैं क्या बताऊँ? मैं तो रुक सकूँगा नहीं, लखनऊ जा रहा हूँ। हुआ तो ट्रेन से शाम को आ जाऊँगा। कार मत भेजना। हरीश अपने कमरे में आकर अपनी कुछ किताबें निकाल रहा था। इतने में राजकुमारी आकर उसके पैरों पर गिर पड़ी और रोने लगी।

राजकुमारी ने हरीश की प्राण-रक्षक करुण मूर्ति की ओर देखकर कहा—हमको वहाँ मत भेजिए।

हरीश ने कहा—कृपा करके मेरे पैर मत छुइए।

राजकुमारी ने कहा—मैं तो नहीं जाऊँगी चाहे जो भी कुछ हो।

हरीश ने कहा—यह उत्पात हो रहा है, मैं जा रहा हूँ। दीदी से क्या तुम्हारी माँ की बात नहीं हो रही है?

राजकुमारी ने कहा—वे सब बातें मैंने सुनी हैं। अम्मा...

हरीश ने अस्त-व्यस्त होकर कहा—तुम्हारी माँ भी हठ कर रही हैं। मैं तो आश्चर्य में हूँ।

राजकुमारी ने कहा—माँ की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। उस पर ध्यान न दीजिए। जीजा जी ने जाने क्या पढ़ा दिया है।

हरीश ने कहा—दीदी किसी से दबनेवाली नहीं हैं। जो उचित होगा वही वह करेंगी।

राजकुमारी ने कहा—आपके जीजा जी ने जो आदेश दिया है?

हमें ठहरने का समय नहीं है। तब भी मैं दीदी से कहे जाता हूँ, और शाम को लौट आऊँगा।

राजकुमारी ने कहा—कृपा करके जब आश्रय दिया है तो इसे ठीक ही करके जाइए। मेरा और कोई रक्षक नहीं है....

बाकी बात आँसुओं की बाढ़ ने कह दी.....

हरीश ने दीदी के पास आकर पुकारा—दीदी! और कहा—एकाएक कुछ न कर बैठना। इसमें कुछ षड्यन्त्र ज़रूर है। बुढ़िया से कह दो भयभीत न हो। मैं जाता हूँ। शाम को लौट आऊँगा।

कानपुर से लेकर लखनऊ तक हरीश के हृदय में राजकुमारी की करुण मूर्ति बार बार आ रही थी।

लक्ष्मी को बुढ़िया ने साफ़-साफ़ बतलाया कि जमाई बाबू रात को कहते थे, 'जहाँ मन होगा चले जायँगे और किसी का मुख नहीं देखेंगे। मैंने सब छोड़ भी दिया, तो भी राजकुमारी को दूसरे घर भेज दिया गया। मेरा घोर अपमान है। मैं किसी को कैसे मुख दिखाऊँगा?' बिटिया मैं भी पापी पेट लेकर स्वर्ग-नरक का डर छोड़कर उसी के यहाँ पड़ी हूँ। पैसे भी तो पास नहीं हैं।

चाय
शान्तिदायक है

भारत का
सबसे बढ़कर आराम
देनेवाला पेय
★
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित
IM 197

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की

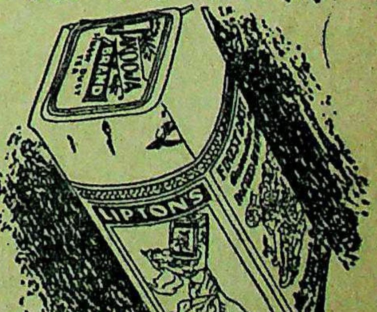

जाकूजा चाय

लक्ष्मी ने कहा—घर छोड़ जाना इतना सहज नहीं है। उसके पास भी तो पैसा नहीं है।

बहुत तरह से लक्ष्मी ने बुढ़िया को समझाया। बुढ़िया ने कहा—मेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है बिटिया जो तुम ठीक समझो सो करो।

बुढ़िया ने राजकुमारी की ओर देखा। राजकुमारी ने कहा—हम वहाँ नहीं जायेंगी। साथ ही लक्ष्मी की ओर भिक्षा की एक प्रार्थना-दृष्टि डाली। माता ने कन्या के शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा—उसने लल्लू को नहीं लाने दिया। लड़की मौन होकर व्याकुलता से माता की ओर देख रही थी।

लक्ष्मी ने कहा—आप माँ-बेटी दोनों हैं ही। बात कर न लीजिए। मैं इसमें बाधा न दूँगी। आप लोगों पर हमारा जोर तो कुछ है नहीं। जो उचित समझिए निश्चय कर लीजिए।

माता ने कहा—सो तो ठीक ही है, बिटिया। तुम्हारी कृपा है। भगवान् ने तुम्हें इतना बड़ा बनाया क्यों है?

लक्ष्मी वहाँ से चली गई। माँ बेटियों ने इस उत्पात को मिटाने पर विचार कर लिया।

आध घण्टे के उपरान्त जब लक्ष्मी वहाँ आई तो बुढ़िया ने कहा—रहने दो बिटिया इसे अपने ही पास। भाग्य में उसके बदा क्या है, कौन बता सकता है? जहाँ अच्छी रहे, रहे। बुढ़िया चलने को खड़ी हो गई।

लक्ष्मी ने कहा—आप तो जा रही हैं!

बुढ़िया ने कहा—वहाँ नाती अकेला पड़ा है, बिटिया...

लक्ष्मी ने कहा—उसको तो वह क्या यहाँ भेजेगा?

बुढ़िया ने कहा—अपने संग लिये आ रही थी, परन्तु उसने लाने नहीं दिया।

बुढ़िया अपनी चादर सँभालती हुई चल दी। आज भैरव ने कोई हल्ला आदि नहीं मचाया। बँगले के द्वार पर शान्त बैठा रहा। बुढ़िया को अकेली फिरती हुई देखकर वक्र दृष्टि से उसकी ओर देखा। बुढ़िया ने कहा—राजकुमारी नहीं आई बेटा, क्या करूँ?

भैरव चुपचाप घर लौट आया।

दिन के बारह बजे होंगे। लक्ष्मी ने अपनी नई मोल ली हुई सिंगर मशीन पर राजकुमारी के लिए वाइल के ब्लाउज़ सीना प्रारम्भ कर दिया—राजकुमारी, कल और कल चलानेवाली का विचित्र कौशल देखकर मुग्ध और विस्मित थी। इतने में ही, हाय-हाय करती हुई, आकर बुढ़िया ने एक दुख-भरी डिड़कार छोड़ी।

लक्ष्मी ने कहा—क्या हुआ, अरे क्या हुआ?

बुढ़िया ने कहा—यहाँ से चुपचाप जाकर लड़के को प्रेम से स्नान कराकर वह चावल और दाल लाया, जिसे मैंने पकाकर दोनों के लिए परोसा...कहकर बुढ़िया बड़े जोर से फिर रो पड़ी। लक्ष्मी ने कहा—उसके बाद?

बुढ़िया ने कहा—स्वयं खाया, लड़के को खिलाया, मुझसे कहा—आप भी खा लीजिए, मैं भोजन कर ही रही थी कि रसोई के द्वार पर सज-धजकर आकर उसने कहा—लड़के को लेकर हम तो जाते हैं, तुम यहाँ राज करो। मैं भोजन छोड़कर दौड़ पड़ी, बहुत समझाया, पर उसने एक न सुनी। एक गठरी कंधे पर रखकर, लड़के को लेकर पाँव धमधमाता हुआ चला गया।

बुढ़िया सिर पीटकर रोने लगी।

लक्ष्मी ने विस्मयाविष्ट होते हुए कहा—होगा, तुम घर में ताला लगाकर यहाँ चली आओ। लड़के का बाप है, प्यार करता है, ठीक ही है। मार तो डालेगा नहीं। अन्ततः उसका लड़का ही तो है।

बुढ़िया का करुण क्रन्दन नहीं रुका। बहुत बहुत सान्त्वना देकर लक्ष्मी ने भैरव की खोज में एक आदमी भेजा, जो कि उसे पहचानता था। उसे बख्शीश का लालच भी दिया। बुढ़िया भी दामाद के घर में ताला बन्द करके लक्ष्मी के घर आ गई। लक्ष्मी ने भैरव के घर पर दृष्टि रखने के लिए नौकरों से कह दिया।

—क्रमशः

बाल-साहित्य के अद्वितीय
पण्डित सोहनलाल जी द्वि
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू
है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद

माननीय सम्पूर्णानन्द जी
है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार
दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनमें
भावों की गम्भीरता और भाषा
प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहि
उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते
बालकों में सद्विचारों को बचपन
बोना चाहिए; उन्हें द्विवेदी जी
कृतियों को अपनाना चाहिए, और
कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मू
।||) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०,

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सबको बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १।) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

मौसम का असर
मुझ पर नहीं होता क्योंकि मैं
बसन्त ब्यूटी सोप का उपयोग करती हूँ

साफ सुथरा चेहरा रखने का भेद यही है कि बसन्त ब्यूटी सोप जैसे साबुन का उपयोग करना, जो चुने हुए उपकरणों से बनाया गया है और जिसके अधिक सुगंधित साबुन के झाग चमड़ी को मौसम की कठिनाई से सुरक्षित रखते हैं।

बसन्त
ब्यूटी सोप

यह डी. सी. एम. केमिकल वर्क्स, देहली का बना हुआ है जो प्रत्येक बड़े स्टोर या निकटस्थ डी. सी. एम. स्टोर से प्राप्त हो सकता है।

व्यापारिक पूछताछ के लिए लिखिए:-
देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स, कम्पनी लिमिटेड, देहली।

DCM. 51.—6" x 2 col.

सरहदी सूबे की कांग्रेसी सरकार के प्रधान मंत्री
डा० खाँ साहब
मोटर में आग लगने से बाल बाल बच गये
आकस्मिक दुर्घटनाएँ
दिन पर दिन बढ़ रही हैं

—करांची में एक लारी के गिरने से ७ व्यक्ति मर गये।
—आगरे में फौजी मोटर से एक नौजवान मर गया।
—बनारस में एक बरात में क्रोधित हाथी से दबकर कई आदमी मर गये।
—श्रीनगर में नाव के डूबने से ३ आदमी डूब गये।
—गंगा दशहरे पर आगरे में जमुना स्नान करती हुई तीन लड़कियाँ डूबकर
—मदरास में एक पेड़ के गिरने से दबकर तीन आदमी मर गये।

इस प्रकार की रोजाना सैकड़ों आकस्मिक दुर्घटनाएँ हमें पढ़ने और दे
मिलती हैं, किसी को जहरीले जानवर काटते हैं तो कोई विष खाकर मरता है।
लग जाने से या जल जाने से मृत्यु हो जाती है। बिजली तो पता नहीं कि
रोज लेती है। रेल और मोटर के कारण तो ऐसी मृत्यु-संख्या बहुत बढ़ गई है।
प्रकार अचानक मृत्यु हो जाने पर आश्रित कुटुम्बी जन भी दुखी होते हैं
नहीं जानता।

इसी कारण स्वदेशी ने
घातक दुर्घटना पालिसी

निकालकर केवल एक बार २५) रुपये में एक हजार के हिसाब
हजार तक का बीमा कराने की प्रणाली निकाली है। यह योजना बड़ी
सिद्ध हुई है। आप भी अपना बीमा कराने के लिए विशेष विवरण मँगा लें।

श्रीचन्द दौनेरिया, मैनेजिंग डाइरेक्टर
स्वदेशी बीमा कम्पनी लिमिटेड
स्वदेशी बीमा नगर आगरा

साप्ताहिक डायरी

र पूर्व में जापान और अमेरिकनों की मुठभेड़
ओकीनावा का युद्ध समाप्त—प्रशान्त की अग्रगामी प्रगति

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

नी सम्राट् हिरोहितो ने अपने न के संदेश में यह स्वीकार किया हमारे राष्ट्र, जापान के इतिहास में पूर्व संकट का समय है।' नी प्रधान मंत्री एडमिरल भी सम्राट् के कथन का समर्थन हैं। उन्होंने जापानी जनता को देते हुए कहा है 'आप लोगों के आज वैसा ही भीषण संकट है जैसा कि सन् १२७४ लोंद्वारा स्वदेश के पदाक्रांत उपस्थित था।' क्यों न हो, मित्रों की अभियान सेना प्रशांत बढ़ा रही है। यूरोप- के बाद से ही सुविशाल ब्रिटिश जहाजी बेड़ा सुदूरपूर्व सागरों कार्रवाही कर रहा है। उनकी जापान को वही चमत्कार हैं जैसा कि शत्रु देश घेरने के को दिखाया था। अमरीकी टोकियो, याकोहामा, कोबे आदि प्रायः बमों की कर दुर्धर्ष अग्निकाण्डों का करते हैं जैसा जर्मनी के चुके हैं। वहाँ के छोटे- जिनमें सैनिक-सामग्री हो रहे हैं। अधिकृत मार खाकर भाग रहे पलायन की तैयारी में हैं। निकाले जा चुके हैं। बड़ा क्षेत्र, लुजोन कआर्थर-द्वारा स्वतंत्र र्नियो में आस्ट्रेलिया नाये हैं और इस बात रहा है कि सुमात्रा पर जायगी। उधर चीन- पर जापानी रक्षणात्मक रहे हैं और चीनी सेनायें का संबल पाकर उनका हैं। अनेक विजित का पुनः अधिकार हो की सबसे महत्त्वपूर्ण विजय हुई है जिससे अमरीकी जापान के अति समीप एक हो गया है जहाँ से जापान पर सफल आक्रमण किये ओकीनावा युद्ध के विषय पर कहा जा चुका है परिणाम पर जापान का अतः ओकीनावा की हार नायकों का हताश होना है।

*

द्वीपावली का प्रमुख टापू जापान के दक्षिणी छोर से मील दूर स्थित है। ओकी- विषय में एडमिरल निमिज विज्ञप्ति में कहा है कि ८२ संग्राम के बाद २१ जून को युद्ध समाप्त हो गया। दो हुई शत्रु-सेनाओं को घेरा इस युद्ध की भी भीषणता बात से मिल जायगा कि जापानी मारे गये। हताहत १ अमरीकी और ६ में रहा। अमरीकी सेना जनरल बकनर ने बड़े घोषित किया था 'हमारी डिवीजन एक ही सप्ताह ओकीनावा की लड़ाई जीत सिद्ध हुआ किन्तु में वीरगति को प्राप्त हुए। वास्तव में अमेरिका के सैनिक इतिहास में इस विकट संग्राम में १०वीं अमरीकी सेना के इस कुशल नेता का नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। स्वर्गीय सेनापति के स्थान पर सुप्रसिद्ध अमरीकी जेनरल स्टिलवेल कमान सँभालेंगे जो भारत, चीन और बर्मा स्थित अमरीकी सेनाओं का कुशल नेतृत्व कर चुके हैं और मार्शल च्यांग-काई-शेक के चीफ आफ स्टाफ़ का पद भी सुशोभित कर चुके हैं। कहने का तात्पर्य यह कि वह सुदूरपूर्व की सामरिक परिस्थितियों से पूर्णरूपेण परिचित हैं। लेफ्टिनेंट जेनरल डू लिटिल ने भी हाल में यह कहा है कि मैं निकट भविष्य में प्रशांत पहुँचूंगा और अपने अष्टम अमरीकी वायुयानदल को २०वें वायुदल से संयुक्त करके जापान पर दोहरा आक्रमण करूँगा। प्रधान मंत्री चर्चिल ने ओकीनावा-विजय के उपलक्ष में प्रेसीडेन्ट ट्रूमन को बधाई का सन्देश भेजा है जिसमें उन्होंने अमेरिकन शौर्य की सराहना की है और ब्रिटेन की जनता की ओर से बधाई दी है। इसके उत्तर में प्रेसीडेन्ट ट्रूमन ने श्री चर्चिल को यह सन्देश भेजा है कि ओकीनावा-विजय शत्रु की जो अब भी हमारी सभ्यता के लिए एक खतरा है, पूर्ण पराजय के लिए उठाया गया दूसरा क़दम है।

न्यूयार्क रेडियो ने सुदूरपूर्व की अमेरिकन हवाई सेना के जनरल जार्ज के इस कथन को दुहराया कि फार्मोसा के द्वीप को हवाई हमलों से इस कदर ध्वंस किया जा चुका है कि अनुभवहीन चालक वहाँ बिना किसी आशंका के बम-वर्षा के नये तरीक़ों का अभ्यास कर सकते हैं। चीनी सेनाओं को तटवर्ती क्षेत्र में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। उनका फुचाउ से लेकर वेनचाउ तक २०० मील लंबी सागरतटीय चिट पर अधिकार हो चुका है। दोनों बंदरगाह बड़े महत्त्व के हैं। इन पर अधिकार का अर्थ यह है कि चीनी सेनायें अब जापान और फामोसा के बीच की शत्रु-अधिकृत जहाज़ी लाइन के लिए बाधक सिद्ध होंगी और ओकीनावा-स्थित अमरीकी सेनाओं से उनकी दूरी केवल ४५० मील रह गई है। हांकाउ-नानिंग रेलवे के मुख्य स्टेशन ल्युचाउ के लिए युद्ध जारी है।

* * *

आस्ट्रेलियन सेनायें बोर्नियो के मुक्तिकरण का कार्य बड़ी सफलता से कर रही हैं। प्रशांत के क्षेत्र में बोर्नियो युद्ध का केन्द्र बन गया है। वहाँ मित्र-सेनायें जापानियों को महत्त्वपूर्ण स्थान से भगा रही हैं। उत्तर-पूर्वी बोर्नियो में जापानियों का प्रतिरोध पूर्णतया समाप्त हो गया है। लुबोंग, सेरिया और मीरी पर मित्रों का अधिकार हो चुका है। यहाँ तेल साफ़ करने के बड़े-बड़े कारख़ाने हैं। जापानी इस बात की चेष्टा कर रहे हैं कि जहाँ-जहाँ तेल के सोते हैं वे स्थान नष्ट कर दिये जायँगे। तेल के टापू ताराकान में शत्रु का प्रतिरोध क्षीण हो चुका है और उसके फलस्वरूप उत्तरी बोर्नियो की ये दोनों दिशाएँ आस्ट्रेलियनों को हस्तगत हैं। बालिकपैपन के केन्द्रीय तेल-क्षेत्र पर निरंतर बम-वर्षा हो रही है। संभव है उस पर आस्ट्रेलियन शीघ्र अधिकार कर लें। अतएव इस बड़ी द्वीपावली पर अधिकार हो जाने के बाद जापान पर आक्रमण करनेवाले उड़नक़िलों को तेल भरने का नया साधन उपलब्ध हो जायगा।

* * *

सुमात्रा के उत्तर पूर्वी [illegible]का का जल डमरूमध्य होकर ब्रिटिश सेना के जहाजों ने वायुयानों की सहायता से गोलाबारी की। ऐसे आक्रमण का अभिप्राय सिंगापुर जाने का मार्ग प्रशस्त करना है। मेलबोर्न रेडियो ने सूचित किया है कि न्यूगिनी के अंतर्गत वेवाक जंगलों में आस्ट्रेलियन सैन्यदल भीतर घंसते हुए पहली बार आग उगलनेवाले टैंकों का प्रयोग कर रहे हैं। बूगेनविली में आस्ट्रेलियन सैन्यदल अभी तक २०,००० जापानियों का संहार कर चुके हैं। मिडानो में अमेरिकन फौजें डेवाओं के क्षेत्र में बढ़ीं और उन्होंने दो नगरों पर क़ब्ज़ा कर लिया।

* * *

बर्मा में घोर वर्षा होने के कारण कोई विशेष सैनिक कार्यवाही संचालित होना कठिन है। रंगून-मांडले रेलवे के पश्चिम में सुना गया है अब भी १२,००० जापानी घिरे हुए हैं जो कभी-कभी भीषण प्रतिरोध करते हैं, किन्तु ब्रिटिश और भारतीय सेनायें उनके संहार में दत्तचित्त हैं, जिन्हें बर्मा छापामार दलों की भी सहायता प्राप्त है।

* * *

जापान की सुदूर-पूर्वीय रणक्षेत्र में दुर्गति आरम्भ हो गई है और अधिकृत प्रदेशों को छोड़कर स्वदेश को बचाने के लिए अपनी सैनिक योजना के क्षीण करने के अतिरिक्त उसके पास दूसरा उपाय नहीं है। मित्रों के सामूहिक आक्रमण की तैयारी तेज़ी से हो रही है। हाल में जनरल मार्शल ने सूचित किया है कि अमेरिका का इरादा जापान के विरुद्ध लड़ाई में एक वर्ष के अन्दर ७०,००,००० आदमियों को तैयार करने का है। अतः प्रशांत में ऐसा भीषण तूफ़ान आनेवाला है जो जापान को पूर्णतया विनष्ट कर देगा।

घोषणा
भारत-सरकार के
इनामी बांड
तीसरी लाटरी

शुक्रवार, १३ जुलाई, १९४५, ११ बजे सवेरे,
सर कोवास जी जहाँगीर हाल, बम्बई

भारत सरकार के पंचवर्षीय ब्याजरहित इनामी बांड्स, १९४९ की तीसरी छमाही लाटरी में १३ जुलाई, १९४५ को ११ बजे सवेरे सर कोवास जी जहाँगीर हाल, बंबई में इनाम निकाले जायँगे। यह कार्य निम्नलिखित व्यक्तियों की कमेटी के नियन्त्रण में होगाः—

(१) सर कोवास जी जहाँगीर बैरोनेट, के० सी० आई० ई०, सी० बी० ई०, एम० एल० ए०, रेडीमनी मैन्सन, चर्च गेट स्ट्रीट, फोर्ट, बंबई। (चेयरमैन)
(२) श्री सी० आर० ट्रेवोर, डिप्टी गवर्नर, रिज़र्व बैंक आफ इंडिया, बंबई। (मेम्बर)
(३) श्री आर्थर पेथर, मेम्बर लोकल बोर्ड (वेस्टर्न एरिया), रिज़र्व बैंक आफ इंडिया, बंबई। (मेम्बर)
(४) श्री रामदेव आनन्दीलाल पोद्दार, पोद्दार चैम्बर्स, फोर्ट, बंबई। (मेम्बर)
(५) श्री ए० ए० जसदानवाला, दि क्रिकेट क्लब आफ इंडिया, ब्रेबोर्न स्टेडियम, बंबई। (मेम्बर)
(६) श्री एन० सुन्दरेशन, ओ० बी० ई०, ज्वाइण्ट सेक्रेटरी, फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट, गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया, नई दिल्ली। (मेम्बर)
(७) श्री जे० एन० आहूजा, चीफ एकाउण्टेण्ट, रिज़र्वबैंक आफ इण्डिया, बंबई। (सेक्रेटरी)

लाटरी के स्थान पर आम लोग मुफ़्त में प्रवेश पा सकेंगे। जीतने वाले नम्बरों की सूची समाचारपत्रों में प्रकाशित की जायगी।

निम्नलिखित सिलसिलों का हर बांड
लाटरी में शामिल किया जायगा।

१०० रु० के इनामी बांडों के सिलसिले—ए०, बी०, सी० और डी०
१० रुपये वाले इनामी बांडों के सिलसिले—ए ए, ए बी, ए सी, ए डी, ए ई, ए एफ़, ए जी, ए एच, ए जे, ए के, ए एल, ए एम, और ए न।

तीसरी लाटरी के बाद इनामी बांडों के नये सिलसिले नहीं बेचे जायँगे और जिन सिलसिलों के पूरे बांड अभी तक नहीं बिके उन्हीं तक बिक्री सीमित रहेगी।

फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट, गवर्नमेंट आफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित।

कचहरियों में हिन्दी की उपेक्षा

(पेज ४ का शेष)

से अधिक समय लेती हैं, पर उनमें भी कार्य होता ही है। विहार, सी० पी० और अधिकांश देशी रिसासतों का कार्य नागरी लिपि में ही होता है। फिर जल्दी या देर का लगना तो अभ्यास पर है।

(३) अकसर वकीलों ने मुझे यह भी बताया कि कुछ अफसर हिन्दी में काम करने नहीं देते वे हिन्दी से खार खाये बैठे हैं। हिन्दी का कागज पेश करते ही फेंक देते हैं और अपमानसूचक शब्दों में कहते हैं कि "यह क्या हिन्दी चिन्दी लाये हो।" कुछ अफसरों का दुस्साहस यहाँ तक बढ़ जाता है कि वे खुल्लमखुल्ला कहते हैं कि, "मैं इस मामले को खारिज कर दूँगा क्योंकि यह मेरी समझ में आनेवाली भाषा और लिपि में नहीं है।" कुछ लोग हिन्दी के साथ उर्दू की प्रतिलिपि भी तलब करते हैं। आमतौर पर वकील यह कहते हैं कि भाई वकालत तो हमारा व्यापार है और हम अफसरों को असंतुष्ट करके अपने पेशे को खतरे में नहीं डाल सकते। आश्चर्य की बात है कि ये बातें मुझे वे लोग सुनाते हैं जिन्हें हम कानूनदाँ कहते हैं तथा जिन्हें जीवन भर क़ानून की ही लड़ाई लड़नी पड़ती है। यदि आज भी कचहरियों में इस प्रकार की घटनाएँ घट रही हैं तो बड़ी ही गंभीर बात है और हिन्दी-भाषियों का इस तरह सहते जाना अच्छा नहीं। यदि आप जरा दृढ़ता से काम लें तो आपका कागज फेंकने की कौन कहे प्रतिलिपि माँगने का साहस भी कोई नहीं कर सकता। आई० सी० एस० और पी० सी० एस० दोनों के लिए हिन्दी-उर्दू जानना आवश्यक है। हिन्दी से द्वेष रखनेवाले ऐसे सभी अधिकारी साम्प्रदायिकता में मदमस्त हैं। कई ज़िलों में हिन्दी ने काम करनेवाले आनरेरी मजिस्ट्रेटों और रेवेन्यू अफसरों से उच्च अधिकारियों के यह कहने की शिकायतें सुनाई पड़ीं कि "अदालत सुधार की जगह नहीं है।" उर्दू अवध की अदालतों की परम्परा की भाषा है।" इस पर सख्ती से अमल हो। यह सब बातें तास्सुब और पक्षपात से भरी हुई हैं इन्हें संकुचित साम्प्रदायिकता से अलग नहीं रखा जा सकता। एक ओर तो हिन्दी-विरोधियों की यह नीति है दूसरी ओर हिन्दीवाले अपनी सहनशीलता में निष्क्रिय और दब्बू बने हुए हैं, उनमें अपने अधिकार की आवाज उठाने का न गौरव है न साहस। आखिर यह बातें कब तक चलती रहेंगी। जिनका सारा इतिहास, धर्म, संस्कृति नागरी में है जो हिन्दी की थपकियों व गीतों में पले और बड़े हुए हैं, तथा हिन्दी जिनके घरों की भाषा है जिन्होंने हिन्दी में तुतलाना सीखा है उन वकीलों और अर्जीनवीसों को कुछ तो हिन्दी के दमन की ठेस लगनी चाहिए। जिन हिन्दी-भाषियों को अदालतों से काम पड़ता है उन्हें भी अपने वकीलों और अर्जीनवीसों पर अपनी भाषा और लिपि में काम करने के लिए दबाव डालना चाहिए। जो लोग अदालतों की एक पृथक् भाषा और गुप्त लिपि बनाये रखना चाहते हैं वे हिन्दी-भाषी जनता के पैसे पर अधिक दिन नहीं पल सकते।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के हिन्दी प्रचार के पीछे कोई भी द्वेषपूर्ण अथवा संकुचित साम्प्रदायिक मनोवृत्ति नहीं है। हमारा प्रचार केवल जनता की भाषा और अधिकारों के लिए है। हम नहीं चाहते कि उर्दू अदालतों से हटा दी जाय। हम केवल यह चाहते हैं कि हिन्दी-भाषियों को भी अपनी भाषा के प्रयोग की स्वतंत्रता मिले। हम अदालतों के प्रचलित सरल सुबोध पारिभाषिक शब्दों को भी रखना चाहते हैं। जो हम पर हठी तथा कठिन भाषावादी होने का लांछन लगाते हैं वे देखें हमारी अदालती भाषा का नमूना क्या है। हमारे वकालतनामे का नमूना यह है। "हम श्री... को उपरोक्त मुकदमे की पैरवी के लिए मेहनताना अदा करने का वचन देकर अपना वकील नियुक्त करते हैं। उक्त वकील महोदय को हम अधिकार देते हैं कि इस मुकदमे में वह हमारी तरफ़ से पैरवी करें आवश्यक सवाल पूछें, जवाब दें, बहस करें, दस्तावेज व कागज अदालत में दाखिल करें व वापस लें।" इस भाषा से उर्दू पर कौन-सा गजब ढाया जाता है जिसके लिए इतना शोर मच रहा है और जिस पर मुसलमान अफसर वकील तथा उर्दू के समर्थक वावैला मचा रहे हैं। क्या यह सरल हिन्दी नहीं है। जो लोग उर्दू में काम कराना चाहें हम उन्हें नहीं रोकते पर जिन पर जबरदस्ती उर्दू लादी जाती है तथा जिनके कागज फेंके जाते हैं उनकी भाषा-स्वातन्त्र्य की रक्षा हम अवश्य चाहते हैं।

कांग्रेस और मुस्लिम लीग

(पेज ५ का शेष)

शिमला सम्मेलन से मिस्टर जिन्ना तथा लीगी मुसलमानों को पता चल गया है कि हमारा स्वप्न पूरा न होगा और पाकिस्तानी लीग का बोल-बाला होना असंभव है। इसी लिए मिस्टर जिन्ना ने अड़ंगा उत्पन्न किया है कि मुसलमान सदस्यों का चुनाव लीग की इच्छा से होना चाहिए। किन्तु वाइसराय अब कुछ करने-धरनेवाले नहीं। अब मिस्टर जिन्ना को पुरानी बातों की भी याद आ रही है। वह महात्मा गांधी से एक अलग कान्फ्रेंस बुलाने की अपील करते हैं और शिमला सम्मेलन की ज़रूरत नहीं समझते। अब शायद उन्हें पता चला है कि गांधी जी से मिलकर समझौता कर लेना अधिक अच्छा था, बनिस्बत इसके कि जो कुछ निर्णय वाइसराय करें वह उन्हें बाध्य होकर मानना पड़े। अब वाइसराय ऐसे तुल गये हैं कि जिन्ना के पाकिस्तान की इतिश्री होना चाहती है।

अल्प संख्यकों तथा अन्यवर्गों का भी कौंसिल के निर्माण में ध्यान रखा जायेगा। सिखों की ओर से मास्टर तारासिंह और अछूतों की ओर से रायबहादुर श्री शिवराज तैयार बैठे हैं।

जो कुछ भी हो अब यह करीब करीब निश्चय हो गया है सभी दलों के नेता वाइसराय के पास कौंसिल की सदस्यता के लिए नामों की शिफारिश करने जा रहे हैं और उनमें से प्रतिनिधित्व की दृष्टि से वाइसराय सदस्यों का चुनाव करेंगे। अनुमान है लीग से ३, कांग्रेसी मुसलिम २, पंजाबी मुसलिम १ इस प्रकार ६ सदस्य मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करेंगे। कांग्रेस की ओर से ३ हिन्दू, १ पारसी, १ ईसाई तथा १ आध अन्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करेंगे। अछूतों की ओर से १ और सिखों का १ प्रतिनिधि होगा। इस प्रकार १५ सदस्य वाइसराय की कौंसिल में होंगे। लीग की डिक्टेटरी कौंसिल के निर्माण में समाप्त होने जा रही है।

इंदौर से 'गुमास्ता' नामक पाक्षिक पत्र प्रकाशित हो गया है। यह पत्र इंदौर नगर गुमास्ता मंडल का मुखपत्र है और गुमास्ता आन्दोलन का पूरा पूरा समर्थक है।

इन्दौर नगर प्रजामंडल की कार्यकारिणी की बैठक श्री कृष्णकान्त व्यास की अध्यक्षता में प्रजामंडल दफ़्तर में हुई। गत सभा की रिपोर्ट पढ़ी गई और तीन प्रस्ताव स्वीकृत हुए। एक प्रस्ताव-द्वारा राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद, अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद् के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, श्री देव, और पट्टाभी सी
रमैया तथा आचार्य नरेन्द्रदेव की रिहाई
स्वागत किया गया। भरतपुर प्रजा-परि
के नेताओं की गिरफ्तारी का घोर विरो
करता हुआ दूसरा प्रस्ताव पास किया गया
और इसी प्रस्ताव में भरतपुर सरकार
इस कार्यवाही को अनुचित कहकर
माँग की गई है कि उन्हें नेताओं को—
ही रिहा किया जाय। तीसरे प्रस्ताव में
श्री किशोरभाई की निर्वासन आज्ञा को
ग्वालियर महाराजा-द्वारा रद्द किये
पर संतोष प्रकट किया गया है और
किशोरभाई का अभिनंदन किया है।

—संवाददा

१०००) का इनाम 'इम्पीरियल पजिल' में जीतिये

पूर्त्तियाँ भेजने की अन्तिम ता० ३०-७-४५ है

पहला इनाम—७००) सही उत्तरवाली पूर्त्तियों पर जो हमारे सीलबन्द उत्तर से हू-बहू मिलती होंगी।

दूसरा इनाम—५०) कोई-सी एक लाइन सही होनेवाली पूर्त्तियों पर।

८०) तथा २०) के दो पुरस्कार दो सबसे अधिक पूर्त्तियाँ भेजनेवालों को मिलेंगे।

१५०) का एक अलग पुरस्कार उस पूर्त्ति पर जो सबसे पहले आयेगी।

क्या करना है?—दिये हुए वर्ग में १ से ९ तक के हिस्से इस प्रकार भरो कि आड़े, तिरछे, सीधे जिधर से भी गिनें, जोड़ १५ हो। एक हिस्सा केवल एक ही बार प्रयोग होगा।

सीलबन्द उत्तर 'देशदूत' के १२-८-४५ में देखें।

नियम—प्रवेश फीस प्रत्येक पूर्त्ति की १) है। पूर्त्तियाँ जितनी चाहें सादे कागज पर मय अपने नाम पते के भेजें। फीस मनीआर्डर या पोस्टल आर्डर से ही भेजें। मनीआर्डर की रसीद साथ में नत्थी करके भेजें। फीस किसी भी हालत में वापस न होगी। एक व्यक्ति को एक ही इनाम मिलेगा। दाखिला फीस कम या ज्यादा आने पर इनाम की रकम भी घट-बढ़ सकती है। मैनेजर का निर्णय अन्तिम तथा कानूनन मान्य होगा। उपर्युक्त नियम इस प्रतियोगिता की जरूरी शर्त है। इन नियमों का उल्लंघन करनेवाली पूर्त्ति प्रतियोगिता में शामिल नहीं की जायेगी। सब प्रकार के अदालती झगड़े मुरादाबाद की ही Law Courts में तय किये जायेंगे, अन्यत्र नहीं। पूर्त्तियाँ तथा फीस भेजने का पता—

मैनेजर, 'इम्पीरियल पजिल', मुरादाबाद, यू० पी०

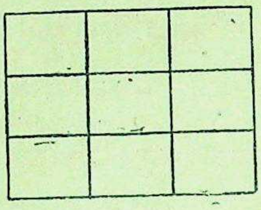

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये

साधना बोस

"मैंने अपनी त्वचाकी निगरानी का काम लक्स टॉयलेट साबुन पर सौंप दिया है"—यह सौंदर्यवती साधना का कहना है। नहानेका यह खुशबूदार साबुन वह हमेशा इस्तेमाल करती है। उसका तेज फेन उसकी त्वचा सुकोमल, मृदु और निष्कलंक रखता है। अपनी त्वचा की निगरानी के लिये बहुत सी फिल्म-स्टार लक्स टॉयलेट साबुन ही पर निर्भर रहती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

शित हो गया—

र्षिक बाल-सखा

च्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार । साथ
ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण ।

जारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं ।

ल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक
को शीघ्र मँगाकर पढ़िए ।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

जर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ।

एण्डरूजकी प्रतीक्षा कीजिये !

नहीं जब सफ़ाईकी व्यवस्था सरल होगी और साल्ट काफी परिमाणमें प्राप्त हो सकेगा । यह वही आप अच्छे जानते हैं, जो पूर्ण विशुद्ध है, वैज्ञानिक क्रिया स्वास्थ्य विज्ञानके नियम पर आश्रित है ।

सब्र कीजिये......प्रतीक्षाके फलस्वरूप एण्डरूजसे जायेंगे । आन्तरिक सफाई द्वारा हर रोज स्वास्थ्य लिये हर जगह इसकी प्रशंसा हो चुकी है ।

दिन आप पुनः ताजगी और स्फूर्तिदायक एण्डरूजके आनन्द ले सकेंगे ।

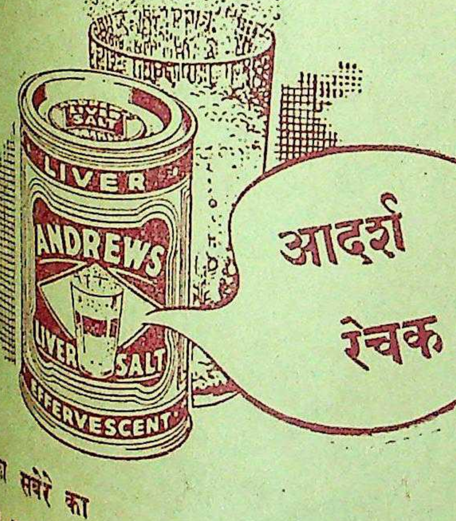
LIVER SALT
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT
आदर्श रेचक

सवेरे का

ANDREWS

एण्डरूज

आन्तरिक सफाई के लिये

स्वास्थ्य का प्रथम नियम है

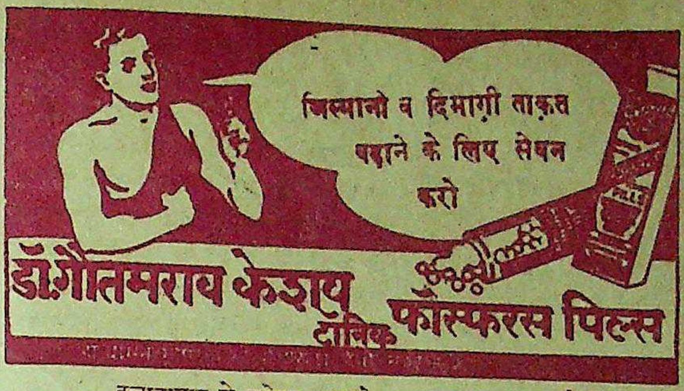
जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ.गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी
एल० एस० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स ।

AAA 161 HINDI

ये हैं इनकी चालें-

इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

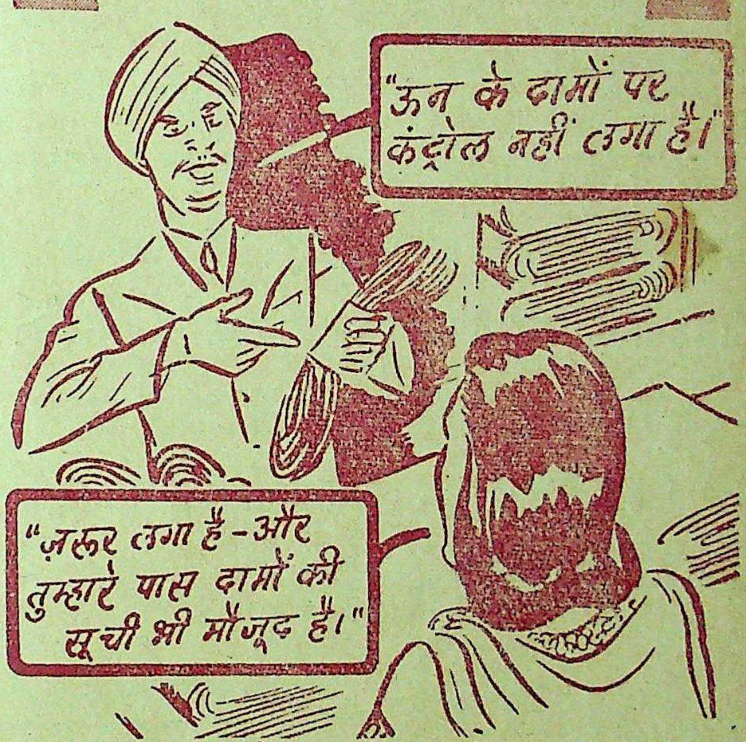
"ऊन के दामों पर कंट्रोल नहीं लगा है।"
"ज़रूर लगा है - और तुम्हारे पास दामों की सूची भी मौजूद है।"

बेशक उसके पास सूची है, पर वह ग्राहक को धोखे में डालने की कोशिश कर रहा है । बात ठीक से समझ लीजिए । इससे आप मुनाफ़ाखोरों और ब्लैक मार्केट के व्यापारियों को मात दे सकते हैं ।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग द्वारा प्रकाशित

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

"सदा सम्मान"...जब से यह महायुद्ध प्रारम्भ हुआ, भारतीय विमान-चालकों ने संसार को दिखा दिया है कि अवसर आने पर हिन्दुस्तान हवाबाज़ी में भी किसी से कम नहीं। हमारे योद्धाओं की वीरता तथा सफलता ने शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े का मस्तक ऊँचा कर दिया है, और इससे पता चलता है कि हमारा भविष्य बड़ा शानदार है।

आज, अधिकाधिक साहसी नवयुवकों को आमन्त्रित किया जा रहा है कि वे इस नवीन सैन्य-संघटन में सम्मिलित होकर विमान-चालक बनें। शान्ति स्थापित होने पर उनका ज्ञान स्वयं उनके लिए बहुत लाभजनक सिद्ध होगा। उस समय भी, आज की भांति शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालकों का बड़ा सम्मान होगा। कोई भी भरती-अफ़सर आपको आवेदन करने का नियम बता देंगे।

AAA 80

If it's ELGIN it's good!

अगर यह एलिगन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपडे, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालैन सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाडी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमे पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अत: फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों मे ही) अपनें नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

EK 23

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर

प्रमुख विक्रेता (थोक)

मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ग्रोल्ड जनरलगंज, कानपूर

कष्टकर अनियमितता

आपके लिये बीती हुई कहानियाँ हो जायगी यदि आप हमारे अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड विथ विटामिन्स या विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन्स का सेवन करें। स्त्री-रोगों की पुरानी औषधि अशोका के साथ आधुनिक विज्ञानसम्मत औषधियाँ तथा विटामिन्स व विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन्स भी मिलाकर यह बनी है। इसलिये महिलाओंके स्वास्थ्य को गिराने वाली कष्टकर अनियमितता के पंजे से निकालने में यह बेजोड़ है।

अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड

विटामिन युक्त

विटामिन व हौरमोनयुक्त भी

स्त्रीरोगों को अनुपम औषधि

आइ. एम. एच. लैबोरे

लैबोरेटरी व कारखाना:

(लखनऊ)। हेड आफि

रौएल एक्सचेंज प्लेस,

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 15th July, 1945

१५ जुलाई, १९४५

वीणा-ग्रन्थि—हिन्दी के युगान्तरकारी कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो प्रख्यात पुस्तकों का यह सम्मिलित संस्करण है। ये दोनों पुस्तकें पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुकी हैं और इनके द्वारा पन्त हिन्दी के चोटी के कवि बन चुके हैं। पन्त की कला का जो रूप इन पुस्तकों में प्रकट हुआ है, वह अन्यत्र नहीं मिलता। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है और ग्रन्थि में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना-द्वारा विकसित कर एक खण्ड-काव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

मुसलिम लीग की नीति।
की योजना की पृष्ठ-भूमि।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

चीन-जापान युद्ध का नवाँ वर्ष प्रारंभ।
प्रेम और कर्तव्य—क्या वह कलंकिनी थी?

हमाम

हमाम की गाढ़ी और सुगंधित झाग ने उसे सारे भारत में एक सुप्रसिद्ध साबुन सिद्ध कर दिया है। हम इसकी बढ़ती हुई माँग को पूरा करते जा रहे हैं।

हर जगह इसका स्टाक उपस्थित है
अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

HAMAM
A TATA PRODUCT
HAMAM

जवाहर स्कायर इलाहाबाद।
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०,

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

प्रथम खंड
राजनैतिक इतिहास

लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ए०। हिन्दी में इस विषय का यह अद्वितीय ग्रंथ है। इस पुस्तक पर लेखक को मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में इससे बड़ी सहायता मिलती है। मेहरौली का लौहस्तम्भ, भितरी की राजमुद्रा, कुमार गुप्त का करमदण्डा का लेख की प्रतिलिपि चिकने कागज पर मुद्रित है। अच्छा कागज, बढ़िया जिल्द बड़े आकार के २५० पृष्ठ। मूल्य केवल ४) चार रुपये।

द्वितीय ख
सांस्कृतिक इति
इस खण्ड में गुप्तका
प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मु
विकास, शिक्षा-प्रणाली, सा
धार्मिक दशा, भौतिक जीवन,
बृहत्तर भारत और गुप्तयुग
वर्णन है। गुप्त राजाओं के सम
संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले
प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त
ऐसा विशद और प्रामाणिक वि
भारतीय भाषा में शायद
बढ़िया कागज, अनेक चित्र, सु
बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या सा
ऊपर, मूल्य ५।-) पांच रुपये

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

आ रहा है!
आपकी सुबहका एण्डरूज!

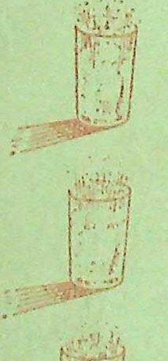

आशा है कि एण्डरूज लिवर साल्ट शीघ्र ही विदेशोंसे यहां पहुंचेगा और आप फिर एण्डरूजसे प्रातःकालीन आनंद उपभोग करेंगे। एण्डरूज संसारकी सर्व प्रिय नमकीन झाग देने वाली औषधि है। आप अपने चिर-परीचित और परीक्षित एण्डरूजकी प्रतीक्षा करें जो पूर्ण विशुद्ध, वैज्ञानिक प्रणालीसे मिश्रित प्रयोगशाला द्वारा परीक्षित तथा प्रस्तुत-किया स्वास्थ्य-विज्ञानके नियमोंपर आश्रित है।

एण्डरूज आन्तरिक सफाई कर दैनिक स्वास्थ्य ठीक रखता है। आवश्यकतापर एक ग्लास एण्डरूज पी लें। यह निश्चय ही आन्तरिक सफाई करेगा।

ANDREWS
एण्डरूज
आन्तरिक सफाई के लिये

आदर्श रेचक
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य का प्रथम नियम है

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इ[illegible] दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध [illegible] मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध
जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता....मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० · जवाकुसु[illegible] हाउस · कलकत्ता

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, १५ जुलाई, १९४५

र्ष ७ संख्या ४६]

नेहरू वाइसराय की कार्य सम्मिलित होने जा रहे हैं।

सम्मेलन में मिस्टर मोहम्मद अड़ गये हैं। क्यों? इसलिए ही मुसलमानों की एक- संस्था नहीं मानी जा रही मिस्टर अमरी तो अभी के पद पर हैं ही? है कि जल में गाड़ी में नाव' अपनी अपनी अपना वक्त। इस वक्त मुसलिम-प्रेम और लीग कुछ जँच सा नहीं रहा है। बात तो यह है कि अँगरेज़ के नहीं और सबके सगे हैं। राजनैतिक स्वार्थ में बाधा वह किसी की भी सुननेवाले ताक पर रख देते हैं। विपरीत उनसे बढ़कर कोई निष्पक्ष दिखाई न पड़ेगा।

* *

तो इस वक्त अँगरेज़ बहादुरों को ऐसे दलों का साथ देने में भलाई रही है जो जनता पर प्रभुत्व और जिनमें सामूहिक संगठित शक्ति क्योंकि जापान तो एशिया में परेशानी बन ही बैठा है साथ ही रूस भी गड़बड़ घोटाले की चाल चल कि समझ में नहीं आता कि वह क्या है? जापान के सम्बन्ध में नीति उस सांप की-सी हो गई छूछूंदर को मूँह से पकड़कर भी और न उगल ही सकता है। अपना रोब सारे हिन्दुस्तान चाहते हैं और बाज़ारों के बन जाना चाहते हैं। जनता और गल्ले के अभाव से परेशान की दुर्गति इसका प्रत्यक्ष प्रमाण विजयालक्ष्मी पंडित को जाने के लिए अँगरेज़ों ने पासपोर्ट अपनी जान की आफ़त मोल दुनिया में अलग शोर मचा कि ब्रिटिश भारत को पीसे डाल हालत में अँगरेज़ यदि परेशानी हों तो आश्चर्य की कौन सी

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

ऐसी दशा में बताइये कि लार्ड वैवेल साहब मुसलिम लीग को खुश करके उसे ओढें या बिछायें। उन्हें सभी परेशानियों से बचाने वाली केवल एक राष्ट्रीय सरकार का ही भरोसा है। हां, लीग चाहे तो वह भी शामिल हो सकती है। रह गया पाकिस्तान। सो अँगरेज़ पहले इंगलिस्तान की बात सोचेंगे, इसके बाद पाकिस्तान और एक नहीं दर्जनों 'स्तानों' की बातें करेंगे। यह सब बातें तो उनके मनोरंजन और दिलबहलाव के लिए हैं। लेकिन यह समय न तो दिल बहलाने का है और न न मनोरंजन का। स्वराज्य भारत को मिले या नहीं किन्तु लार्ड वैवेल कम से कम इस समय तो कुछ करके ही दम लेंगे और कांग्रेस भी कुछ कर डालने पर तत्पर हो गई है। रही लीग आती है तो आये नहीं तो अल्ला खैर सल्ला। उसकी आवश्यकता तो समय पर होगी ही। लेकिन इस वक्त उसकी आवश्यकता का विशेष अनुभव नहीं किया जा रहा है। इसलिए हम तो यही कहेंगे कि :—

ऐ मुसलिमलीग न हो गमगीन
दिन अच्छे आनेवाले हैं।

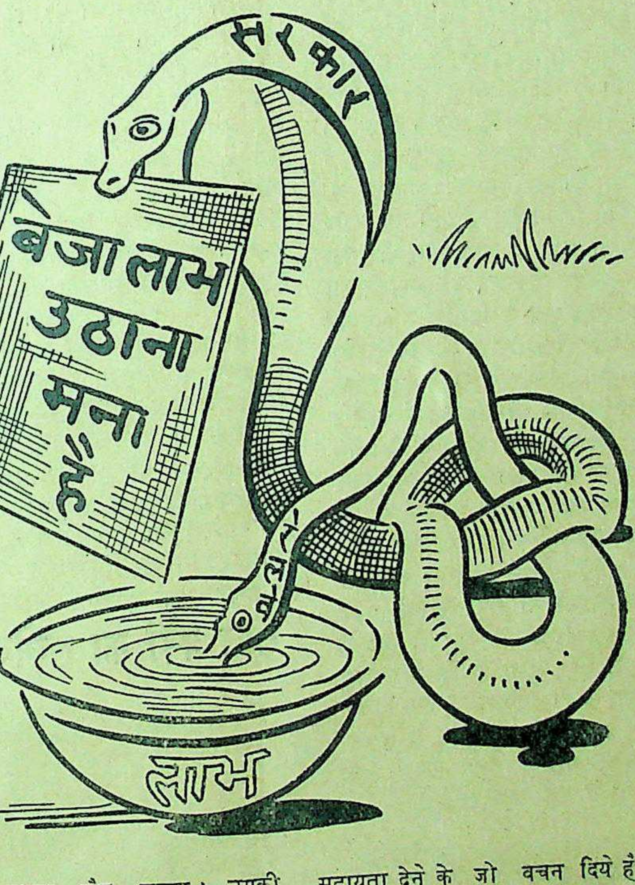
सरकार
बेजा लाभ उठाना मना है
लाभ

* * *

चीन के नये प्रधान मंत्री डाक्टर सुंग रूस को सूँघने के लिए रूस पहुँच गये हैं। डाक्टर सुंग चीन के प्रसिद्ध पूँजीपति हैं। हाँ, रूस पूँजीपतियों का विरोधी सुना जाता है। इसलिए डाक्टर सूँग की सूँघ का कुछ परिणाम अवश्य ही निकलना चाहिए। भारतवर्ष के वर्तमान महान पूँजीपति टाटा-बिरला-दलाल आदि भी तो इस वक्त इंगलैंड और अमरीका में सूँघने के लिए गये हैं किन्तु डाक्टर सूँग तो जरूरत से मास्को गये हैं। अब देखना है रूस कुछ पिघलता या नहीं? मंगोलिया और मंचूरिया को तो स्वयं सूँघ चुका है। उसी पर वह दाँत भी लगाये है। दो सूँघनेवालों में कहाँ तक निभती है? और डाक्टर सूँग रूस को जापान से भिड़ाने में सफल होते हैं या असफल?

* * *

अमरीकन कांग्रेस के एक प्रतिनिधि ने ब्रिटेन पर यह आरोप लगाया है कि उसने प्रशांत के युद्ध में जिस प्रकार योग देने का वचन दिया था वैसा योग वह नहीं दे रहा है। ब्रिटेन ने जापान के विरुद्ध सहायता देने के जो वचन दिये हैं, मैं नहीं देख रहा हूँ कि एक भी ब्रिटिश सैनिक उस क्षेत्र में कहीं उतरा हो। यह खूब रही। जब ब्रिटेन ने हिन्दुस्तान ही को उधार-पट्टा के क़ानून के अनुसार अमरीकनों के हवाले कर दिया तो अब क्या वह किसी का घर लेंगे? जापान से अमरीका लड़ता है तो ठीक ही है किन्तु ब्रिटेन जो आज हिन्दुस्तान को फौरन से पेश्तर वाला स्वराज्य देने जा रहा है वह भी तो इसी के लिए है? क्या अँगरेज बेवकूफ़ हैं कि योरोप से छूटे तो एशिया में आकर अपनी ज़ान दें? एशियावाले एशियावाले को सर करें इसका प्रबन्ध हो रहा है। रहे अमरीकन सो यदि वह गुलगुला खाना चाहते हैं तो उन्हें म्याऊँ के ठौर पर पहुँचने में घबराहट क्यों हो रही है? वह जापान से लड़ते रहें, ब्रिटेन की केवल नैतिक सहानुभूति ही इस वक्त हजार तोपखानो से बढ़ कर है।

महात्मा गांधी ने कांग्रेस की सूची को स्वीकृत कर लिया है।

* * *

हमारे यहाँ एक कहावत प्रसिद्ध है कि 'बूड़ा वंश कबीर का उपजे पूत कमाल।' भारत सचिव मिस्टर अमरी के भी एक सपूत हैं जान अमरी। मिस्टर अमरी बेचारे ब्रिटिश साम्राज्य वाद के दृढ़ करने में लगे रहे किन्तु उनके पुत्र जान अमरी नाजियों से मिल कर ब्रिटिशसाम्राज्य को उखाड़ने के लिए बर्लिन से ब्राडकास्ट करते रहे। अब जान अमरी लंदन पकड़ कर लाये गये हैं और ३० जुलाई तक के लिए हवालात में बन्द कर दिये गये हैं। खैर भारत-सचिव मिस्टर अमरी के वंश के बूड़ने का तो कोई प्रश्न ही नहीं किन्तु घर का भेदी लंका ढाह की कहावत को सुपुत्र जान अमरी ने पूरी तरह चरितार्थ किया है।

* * *

हिन्दू महासभा वैवेल-योजना के विरुद्ध बड़े ज़ोर का शाब्दिक विरोधी प्रस्ताव पास किया है। यही नहीं एक विरोधी सप्ताह भी मनाया गया और हड़ताल होने की भी घोषणा की गई। मुसलिम सरकारी अफ़सरों का कहना है कि हड़ताल बड़ी ही सफल रही किन्तु देखनेवालों का कहना है और ख़बर भी आई है कि संभव है उस वक्त देखनेवालों की आँखों में मोतियाबिन्दु हो गया हो किन्तु हड़ताल तो किसी भी माई के लाल ने नहीं की। परन्तु ये टके पंथी हिन्दू नेता जिन्हें न हिन्दू जनता पूछती है और न इनके द्वारा हिन्दुओं का कभी तक कोई लाभ ही हुआ, इधर-उधर घोषित करते हैं कि हिन्दुओं के गले पर छुरी फिर रही है। हमारी तो राय यह है कि ये टके पंथी, अवसरवादी, स्वार्थी बने नामधारी हिन्दू नेता स्वयं हिन्दू तथा हिन्दू जाति को बदनाम करके उसे कहीं का भी नहीं रहने देना चाहते। कहाँ २२ करोड़ हिन्दू जाति और कहाँ यह फुदकते हुए नीम हकीम नेता।

सम्पादक का पृष्ठ

शिमला-सम्मेलन किधर ?

आजकल शिमला-सम्मेलन की गतिविधि और परिस्थियों को देखकर अनायास ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या सम्मेलन सफल होगा या आसफल? सारे देश की आँख नेता-सम्मेलन तथा वाइसराय के अंतिम निर्णय की ओर लगी हुई है। जहाँ तक कांग्रेस का संबंध है, अब यह पूर्णरूप से स्पष्ट हो चुका है कि उसकी ओर से कोई ऐसी वाधा नहीं डाली जा रही है जिस पर उँगली उठाई जा सके। कांग्रेस प्रेसीडेन्ट मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कार्यकारिणी के सदस्यों के चुनाव के लिए जो सूची वाइसराय के सामने पेश की है, वह भारत के प्रत्येक दल के प्रतिनिधित्व से पूर्ण है। कांग्रेस की सूची से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि यदि वाइसराय उसे स्वीकार कर लेते हैं तो केन्द्रीय सरकार के राष्ट्रीयकरण हो जाने में तनिक भी सन्देह नहीं है। सूची में भारतीय राजनैतिक दलों का प्रतिनिधित्व करनेवाले चोटी के नेताओं के नाम सम्मिलित किये गये हैं। किसी भी राजनैतिक दल को कुछ कहने-सुनने की गुँजाइश नहीं है। यहाँ तक कि मुसलिम लीग ऐसी साम्प्रदायिक संस्था, जिसने कांग्रेस-नीति का सदा से विरोध ही किया है तथा हिन्दूमहासभा के प्रतिनिधित्व को भी नहीं भुलाया गया है। अब वाइसराय अंतिम निर्णय क्या देते हैं यह तो उनके हाथ की बात है किन्तु यदि सम्मेलन किसी भी कारण से असफल होता है तो कांग्रेस पर उसकी किसी प्रकार की भी जिम्मेदारी नहीं आती है।

सबसे बड़ी अड़चन उत्पन्न की जा रही है मुसलिम लीग की ओर से। मुसलिम लीग का यह दावा है कि वही भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करनेवाली एक मात्र संस्था है किन्तु वाइसराय तक ने लीग के इस दावे को अस्वीकार किया है। इसलिए मिस्टर जिन्ना तथा लीग की वर्किंग कमेटी ने अभी तक यह निश्चय किया है कि वह वाइसराय के पास लीग के प्रतिनिधित्व की सूची उपस्थित नहीं करेगी। इससे वाइसराय के सामने कुछ अड़चन अवश्य उत्पन्न हो गई है। अब प्रश्न यह है कि जिस ब्रिटिश प्रोत्साह की बदौलत लीग ने आज अपनी स्थिति मज़बूत की है, क्या वाइसराय उसकी बिना परवाह किये ही कार्य-कारिणी के सदस्यों का चुनाव समाप्त कर देंगे? यह कौन नहीं जानता कि लीग तथा मिस्टर जिन्ना सदा से सरकार परस्त रहे हैं और सरकारी इशारे पर भी लीगी नीति संचालित होती रही है। साथ ही एक बात समझने की और है कि वाइसराय से ९० मिनट तक वार्ता करने के बाद मिस्टर जिन्ना ने यह निर्णय किया है कि लीग चुनाव में भाग न लेगी। हिम्मत तो बड़ी जबरदस्त है। हम कह नहीं सकते कि मिस्टर जिन्ना ने किन रहस्यों की आड़ में इस प्रकार का साहस दिखाया है कि किन्तु यह भी सच है कि यदि वाइसराय दबाव डालेंगे तो मिस्टर जिन्ना और लीग की इतनी हिम्मत नहीं कि वह अंत तक अपने निर्णय पर दृढ़ रहें। लेकिन अभी तो समय है। जहाँ तक अड़ने-झगड़ने की गुंजाइश है वहाँ तक लीग का रवैया दुरुस्त है। किन्तु लीग का एक दावा तो समाप्त हो ही गया है कि वह कार्य-कारिणी के सभी मुसलिम सदस्यों का प्रतिनिधित्व करती है। पंजाब ऐसे प्रांत को सरकार कभी भी भुला नहीं सकती। पंजाबी यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार का युद्धोद्योग में बड़ा जबरदस्त हाथ रहा है। उसके प्रतिनिधित्व को लार्ड वैवेल किसी तरह भी अस्वीकार नहीं कर सकते। इसलिए लीग का पुराना स्वप्न तो भंग हो ही गया। मिस्टर जिन्ना का नेतृत्व कम से कम इस सम्बन्ध में समाप्त हो गया है।

अब प्रश्न है वाइसराय के निर्णय का। क्या मुसलिम लीग के असहयोग से भी वाइसराय कार्य-कारिणी के निर्माण में सहयोग देंगे? जहाँ तक वाइसराय की इच्छा तथा भावना का प्रश्न है वहाँ तक हमें यह कहने में तनिक भी हिचक नहीं है कि वह उदारतापूर्ण है। वह चाहते हैं कि कार्य-कारिणी का भारतीयकरण अवश्य हो और उन्होंने जो योजना प्रस्तुत की है उसे वह क्रियात्मक रूप देने में दृढ़ दिखाई देते हैं। अब तक की कार्यवाहियों से तो यह भी स्पष्ट हो चुका है कि यदि लीग असहयोग करती है तब भी लार्ड वेवेल कार्य-कारिणी का निर्माण करेंगे। फिर भी वह चाहते हैं कि लीग भी कार्य-कारिणी में अपने सदस्यों का प्रतिनिधित्व करे जिससे किसी भी राजनैतिक दल को यह कहने का अंत में अवसर न रहे कि उसकी उपेक्षा की गई। कहने का तात्पर्य यह है कि लार्ड वेवेल पर ही सम्मेलन की सफलता या असफलता निर्भर है, साथ ही लीग का सहयोग भी बहुत कुछ लार्ड वेवेल की इच्छा पर ही निर्भर है। यह हो नहीं सकता कि लार्ड वैवेल हृदय से चाहें कि लीग अवश्य ही कार्यकारिणी के निर्माण में भाग ले और नवाबों तथा नवाबजादों की यह संस्था असहयोग करने की हिम्मत दिखाये! इसलिए अनुमान यही होता है कि लीग और मिस्टर जिन्ना की तात्कालिक अकड़ विशेष अर्थ नहीं रखती। लार्ड वैवेल की एक मधुर फटकार से मिस्टर जिन्ना रास्ते पर आ जायेंगे। किन्तु अभी तो समय भी है। मान-मनौअल भी थोड़ी-बहुत होनी ही चाहिए। इतना सब होते हुए भी अंत में यह कहना ही पड़ता है कि वाइसराय लार्ड वैवेल के ही हाथ में समस्त निर्णय है। यदि वह वास्तव में हृदय से चाहते हैं कि उनकी योजना सफल हो तो अब उसके मार्ग में कोई बाधा नहीं है।

सभापति और प्रधान मंत्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अगले वर्ष के लिये

(श्री संपादक 'देशदूत')

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन उदयपुर में होने जा रहा है। यद्यपि अभी सभापति का निर्वाचन भी नहीं हुआ और प्रारम्भिक कार्यवाही भी अभी अधूरी पड़ी हुई है किन्तु नये चुनाव की कानाफूसी प्रारम्भ हो गई है। सभापति तो कोई न कोई बन ही जायेगा। क्योंकि किसी साहित्यिक के बनने की विशेष आशा तो है नहीं इसलिए हिन्दी के कर्मठ और चुनाव लड़नेवाले लोग अभी मौन हैं। यों भी हिन्दीवाले उदार भी बड़े हैं, क्योंकि कोई भी नामी व्यक्ति सम्मेलन के सभापतित्व की गद्दी पर बैठाया जा सकता है। हाँ, हिन्दी का कोई पुराना साहित्य-सेवी सभापति बने इसकी उन्हे विशेष चिन्ता नहीं है। अलबत्ता उनका 'नारा' यह अवश्य बना रहता है कि सम्मेलन में साहित्यसेवियों की पूँछ नहीं है यद्यपि इस आरोप के वह स्वयं उत्तरदायी हैं क्योंकि समय पर उनके द्वारा वास्तविक साहित्य-सेवियों की उपेक्षा होती हुई देखी गई है।

सभापति के के लिए इस समय दो नामों की ओर विशेष गौर हो रहा है। एक तो हैं हिन्दी के महाकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त और दूसरे हैं श्री वियोगी हरि। इनके सिवा श्री बालकृष्ण शर्मा, आचार्य नरेन्द्रदेव, सेठ गोविन्ददास, श्री हरिभाऊ उपाध्याय और श्री संपूर्णानन्द जी का नाम भी लिया जा रहा है। श्री गुप्त जी का नाम पहले भी सम्मेलन के सभापतित्व के लिए आ चुका है किन्तु वह सदा से इस पद के ग्रहण करने में संकोच करते आये हैं। किन्तु इस बार कहा यह जाता है कि पंडित बालकृष्ण शर्मा ने यह आश्वासन दिया है कि यदि गुप्त जी का चुनाव सभापति-पद के लिए होता है तो वह उन्हें राजी कर देंगे। एक तगड़े कोने से श्री वियोगी हरि का भी नाम आ रहा है। एक दल श्री सुमित्रानन्दन पंत को सभापति बनाना चाहता है। उसकी दलील यह है कि प्रसाद, प्रेमचन्द्र आदि ऐसे महारथी स्वर्गवासी हो गये और उन्हें सम्मेलन गौरव नहीं प्रदान कर सका। इसलिए जब राष्ट्रीय या वोटों के बलवाले हिन्दी प्रेमी ही सभापति होते रहेंगे तो इन साहित्य सेवियों और कलाकारों का नम्बर कब आयेगा? जो कुछ भी हो अभी सम्मेलन के प्राण मानने का रुख इस संबंध में कुछ हुआ है क्योंकि सभापति के चु उनकी दिलचस्पी का भी विशेष पड़ता है। इसीलिए यह मामला घपले में पड़ा हुआ है।

इसी सिलसिले मे मंत्रि-मंडल के परिवर्तन का भी प्रश्न सामने आ है विशेष कर नये प्रधानमंत्री के के संबंध में खासा दाँव-पेंच चल रहा वर्तमान प्रधान मंत्री पंडित मौलि शर्मा चूंकि दिल्ली में रहते हैं और में किये जानेवाले वायदों को भी पूरी तरह निभा नहीं सके हैं, इसलिए प्रधान मंत्री की खोज की जा रही पंडित मौलिचन्द्र शर्मा ने रेडियो के में वक्तव्य तो कई ठाठ के दिये हैं कि और मामलों में सम्मेलन को सहयोग नहीं प्राप्त हुआ जितने की आशा की गई थी। इसलिए प्रधान के पद के लिए भिक्षु भदंत आनंद कौसल्यायन का नाम लिया जा रहा है। आनंद ने 'रेडियो के ठगों' की जो कहानी लि है उससे हिन्दी वाले बड़े प्रभावित हुए और उनकी इच्छा है कि वही प्रधान बनाये जायें। राष्ट्र-भाषा प्रचार समि तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की कमान उनके हाथों में दी जाने की सोची जा रही है। हिन्दी वालों का कहना है कि आनंद जी बड़े वीर पुरुष हैं। वह भिड़ते भी भली भाँति हैं और हिन्दी के दावा और उद्देश्य उनके हाथों सुरक्षित रहेगा।

आनंद जी की विद्वत्ता और कार्य-कुशलता से कौन परिचित नहीं है? उनमें कई गुण हैं। वह प्रायः व्यंग्य पूर्ण बातें करते हुए देखे गये हैं। हिन्दू के इतने कट्टर पक्षपाती हैं कि प्रायः जातक का रिफरेंस दिये बिना नहीं रहते। हिन्दी के साहित्यिकों का वह आदर अवश्य करते हैं किन्तु ज़रा आराम के साथ सोच-विचार कर। वह इतने स्वतंत्र विचार के हैं कि उचित और इच्छानुकूल कार्य बिना किसी की सम्मति के भी कर डालते हैं किन्तु ऐसे कार्य जिन्हें वह करता उचित नहीं समझते उस पर अपने से बड़ों की सम्मति भी ले लेते हैं। संघटनिस्ट भी वह दृढ़ हैं। ऐसी दशा में यदि आनंद जी सम्मेलन के प्रधान मंत्री बनाये जायें तो उचित ही है।

किन्तु यह सब उदयपुर की स्वागत समिति पर निर्भर है। कहा जाता है कि स्वागत समिति के मंत्री तथा कुछ अन्य कार्य-कर्ता हिन्दुस्तानी के पक्षपाती हैं। वह वक्तव्य पर वक्तव्य निकाल कर सम्मेलन को नये सिरे से संगठित करने का घोषणा कर रहे हैं। वह उसे नव जीवन और स्फूर्ति प्रदान करने पर आरूढ़ हैं। देखना है कि क्या होता है? यह सब भविष्य की बात है।

१ जुलाई, ४५ —राजवल्लभ ओझा

तीन बड़ों का सम्मेलन

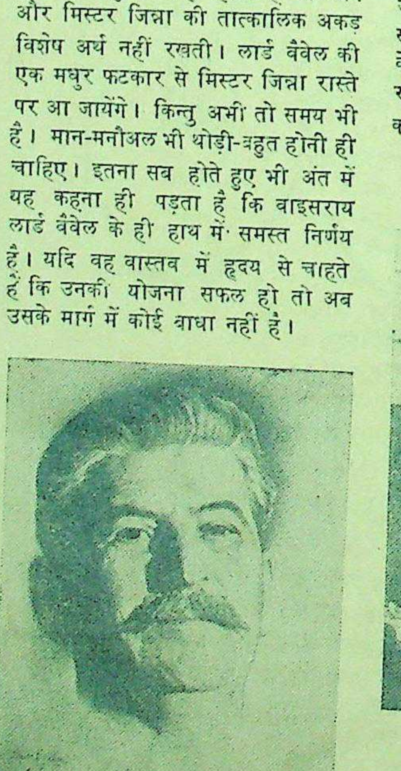

सोवियट रूस के डिक्टेटर स्टेलिन।

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन।

तीन बड़े राष्ट्रों का सम्मेलन जर्मनी में बर्लिन के आस-पास किसी विशेष स्थान पर होनेवाला है।

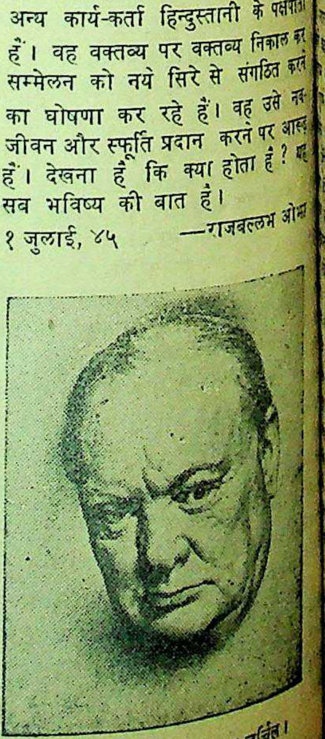

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मिस्टर चर्चिल।

लार्ड वैवेल की योजना क्या है ?

कांग्रेस उसे क्यों स्वीकार करने को तैयार है ?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

> वैवेल-योजना की वास्तविकता क्या है ? किन कारणों और परिस्थियों से प्रभावित होकर ब्रिटिश सरकार ने भारत के वर्तमान राजनैतिक अड़ंगे को दूर करने की तात्कालिक योजना प्रस्तुत की है और कांग्रेस आज उसे क्यों स्वीकृत कर रही है, इन सभी बातों को ध्यान में रखकर विद्वान् लेखक ने इस लेख में गम्भीरता पूर्वक प्रकाश डाला है। इससे वैवेल-योजना की पार्श्वभूमि को समझने में सरलता होगी। लेख सुंदर, सामयिक और पठनीय है।

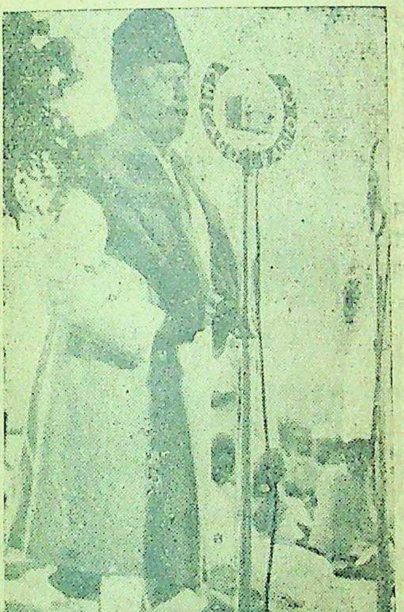

राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद जिन्होंने कार्यकारिणी के लिये सदस्यों की सूची वाइसराय के सामने उपस्थित कर दी है।

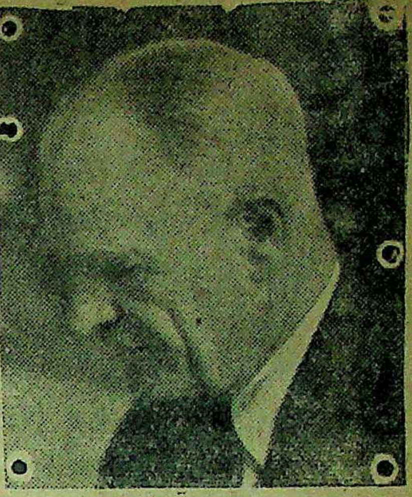

वाइसराय लार्ड वैवेल १४ जुलाई को कार्यकारिणी के चुनाव पर निर्णय दे रहे हैं।

है। जापान को पराजित करने में भी वह इसी नीति को बरतना चाहता है। चीनी सैनिक और अमरीकन सैनिक बर्मा-रोड खुलते ही बर्मा छोड़ गये हैं। इसलिए मलाया, सिंगापुर और डच ईस्टइंडीज को विजय करने के लिए ब्रिटिश सैनिकों की जरूरत है। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड इस विशाल प्रदेश को जीतने के लिए सैनिक इच्छा करने पर भी पर्याप्त सैनिक नहीं दे सकते। क्योंकि आस्ट्रेलिया की आबादी ७० लाख से ज्यादा नहीं है। ब्रिटेन अपने सैनिक इस मोर्चे पर लाना नहीं चाहता। क्योंकि उसके कल-कारख़ानों को चलाने के लिए जन-शक्ति की जरूरत है। अमरीका नागरिक जनता के उपयोग का माल तैयार करने में लगा है। यदि ब्रिटेन जापान की लड़ाई समाप्त होने तक प्रतीक्षा करे तो अमरीका दुनिया के सारे बाजारों और हाटों पर छा जायगा, जैसे आज अमरीकन ब्लेड भारत के बाजार में छाये हुए हैं। उस समय अमरीका को स्थान-च्युत करके ब्रिटिश माल के लिए बाजार बनाना कठिन होगा। इसलिए ब्रिटेन यूरोप की लड़ाई से खाली सैनिकों को पुनः शान्तिकाल के उद्योग में लगाना चाहता है, ताकि व्यवसायिक और व्यापारिक प्रतियोगिता में वह अमरीका से पीछे न रह जाय और ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत प्रदेशों का बाजार उसके हाथ से न निकल जाय। इसलिए वह चाहता है कि भारत की जन-शक्ति मलाया, सिंगापुर और डच ईस्ट-इण्डीज को जीतने में लगाई जाय। यह भारत के जन-नायकों के सहयोग के संभव नहीं है। परिश्रान्त और परिक्लान्त राष्ट्र को वे ही इस काम के लिए तैयार कर सकते हैं। फलतः, आज जापानी हमले का भय न होने पर भी, जापानी सैनिकों द्वारा अधिकांश बर्मा खाली कर देने के बाद भी ब्रिटेन भारत में तथा कथित राष्ट्रीय गवर्नमेंट स्थापित करने को उद्यत हुआ है। उसको घर की परिस्थितियों और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति ने इसके लिए बाध्य कर दिया है कि वह भारत में ब्रिटेन के अनुकूल राष्ट्रीय गवर्नमेंट स्थापित करे। मोलोटोव की प्रेरणा या सोवियत गवर्नमेंट को प्रसन्न करने के लिए उसने यह नहीं किया है।

पूँजीपतियों का भय

भारतीय पूँजीपति, उद्योगपति और उनके समर्थक वैवेल-योजना का स्वागत कर रहे हैं और भारत-मंत्री मिस्टर एमरी के स्वर में स्वर मिलाकर कह रहे हैं कि वर्तमान परिस्थिति में इससे अधिक अच्छी योजना दूसरी नहीं हो सकती। इसका कारण क्या है ? भारतीय पूँजीपति और उद्योगपति ब्रिटिश पूँजीपतियों और उद्योगपतियों के साथ भारत में वास्तविक जन-शासन स्थापित होने से पहले ही मूल और भारी उद्योग स्थापित कर लेना चाहते हैं। इसके लिए केन्द्र में तथा कथित राष्ट्रीय गवर्नमेंट का स्थापित होना वे आवश्यक समझते हैं। क्योंकि उनको भय है कि यदि इस समय वे पूरी तरह से सचेत नहीं होते हैं तो भविष्य में उनका कोई स्थान नहीं रहेगा। भारतीय जनतंत्र स्थापित होने पर मूल और भारी उद्योग वैयक्तिक न होकर राष्ट्र के होंगे। कराँची कांग्रेस के प्रस्तावों में इसका स्पष्ट रूप से उल्लेख है। कांग्रेस-द्वारा नियुक्त नेहरू-योजना कमेटी का यही निर्णय है। भारतीय पूँजीपति और उद्योगपति उसके इस निर्णय को व्यर्थ करने के लिए इस काल में ये उद्योग विदेशी पूँजी की सहायता से स्थापित कर लेना चाहते हैं। यदि भविष्य में भारतीय गवर्नमेंट ने इन उद्योगों के राष्ट्रीयकरण का विचार किया तो उसके सामने वही कठिनाई आवेगी जो कि जमीन्दारी का अन्त करने का निश्चय करने पर भी बंगाल सरकार उसका अन्त नहीं कर पा रही है। ब्रिटेन में कोयला और बैंकों का जिन कारणों से राष्ट्रीयकरण नहीं हो पा रहा है, उन्हीं कारणों से भारत में भी उस समय इन उद्योगों का राष्ट्रीयकरण न हो सकेगा। इनको राष्ट्र-सम्पत्ति बनाने के दो उपाय होंगे। एक क्रान्ति और दूसरा उद्योगपतियों को मुआवजा देकर। भारत में क्रान्ति की–रूस जैसी क्रान्ति की—निकट भविष्य में सम्भावना नहीं है। गांधी जी की विचार-धारा ने क्रान्ति के बीजों को नष्ट कर दिया है। हाँ, समझौते का मार्ग शेष रह जाता है। इसमें उद्योगपतियों से उद्योग राष्ट्र लेगा तो उनको मुआवजा देना होगा। वह भारी रक़म गवर्नमेंट के देने में असमर्थ होने पर, इस देश में ब्रिटिश पूँजी की सहायता से पूँजीवादी व्यवस्था बनी रहेगी और कभी भी जहाँ तक मनुष्य की कल्पना जाती है—मूल और भारी उद्योगों का राष्ट्रीय-करण न होगा। यही कारण है कि श्री नलिनीरंजन सरकार, 'प्रमुख भारतीय' लन्दन से और उनके प्रभाव तथा उनके द्वारा संचालित पत्र भारत में यह वैवेल-योजना के अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने में उत्साह से प्रवृत्त हैं और इसको स्वीकार करने के लिए राष्ट्र से कह रहे हैं। ब्रिटिश पूँजी का स्वार्थ स्पष्ट है। फलतः ब्रिटिशपत्र और ब्रिटिश राजनीतिज्ञ शिमला-परिषद् की ओर टकटकी लगाये बैठे हैं। ब्रिटिश पूँजी को भविष्य में भारत में आश्रय शायद ही मिले। अतः वैवेल-योजना को भारत से स्वीकार करने के लिए आग्रह किया जा रहा है और कहा जा रहा है कि यह कुछ अंशों में तो क्रिप्स-योजना से भी अच्छी है।

प्रतिगामी है

वैवेल-योजना को अनेकों ने स्वाधीनता का द्वार बताया है और कुछ का कहना है कि यह क्रिप्स-प्रस्ताव से भी आगे जाती है। पर वस्तुतः बात यह नहीं है। यह प्रतिगामी है और भारतीय राष्ट्रीयता को छिन्न-भिन्न करनेवाली है। श्वेतपत्र के पैरा १५ में भारत के प्रति ब्रिटेन के इरादे को बताना है। भारत की रक्षा में ब्रिटेन की जिम्मेदारी बनी हुई है। यह नहीं कहा गया है कि लड़ाई समाप्त होने के बाद यह भारतीयों के हाथ में सौंप दिया जायगा। भारत की रक्षा करने की ब्रिटिश जिम्मेदारी का कब अन्त होगा ?

श्वेतपत्र के १६वें पैरे को देखने से यह नहीं मालूम होता कि परराष्ट्र सदस्य के क्या कर्तव्य होंगे ? क्या वह परराष्ट्र सचिव के समान कार्य करेगा और अफ़गानिस्तान, रूस और भारत के अन्य पड़ोसी राष्ट्रों से इम्पीरियल गवर्नमेंट को जिक्र किये बगैर अनाक्रमण पैक्ट कर सकेगा ? क्या भारत का अर्थ सदस्य साम्राज्य के बाहर से भारत की साख पर मैशीनरी और प्लाट ख़रीद सकेगा ? क्या वह राष्ट्रीय भारत की आकांक्षा के अनुसार आर्थिक स्वतन्त्रता का व्यवहार कर सकेगा ? भारत-मंत्री ने कहा है कि सीमाप्रांत भूमिजनों—आदिम-निवासियों—का विषय परराष्ट्र सदस्य के अधिकार-क्षेत्र से बाहर रहेगा ? भूमिजन निवासी भारत में आबादी की दृष्टि से चौथे नम्बर पर है। यथा—

	ब्रिटिश भारत (लाखों में)	रियासतें (लाखों में)
सवर्ण हिन्दू	१५०·९	६५·२
हरिजन	३९·९	८·९
मुसलमान	७९·४	१५·०
भूमिजन	१६·७	८·७
सिख	४·२	१·६
ईसाई	३·५	२·८

इसलिए यह न समझना चाहिए कि हिन्दू केवल सवर्ण और असवर्ण इन दो भागों में बाँटे गये हैं। बल्कि सवर्ण, असवर्ण और भूमिजन इन तीन भागों में बाँटे गये हैं। एक जाति के विरुद्ध दूसरी जाति केवल खड़ी नहीं की गई है, बल्कि हिन्दुओं को तीन भागों में विभक्त करके एक दूसरे के विरुद्ध खड़ा कर दिया गया है। यदि सिखों को भी हिन्दुओं में माना जाय;

जैसे कि आज से २५ साल पहले थे, तो कहना होगा कि हिन्दू चार भागों में बाँट दिये गये हैं। सवर्ण हिन्दू भी दक्षिण में ब्राह्मण और ब्राह्मणेतर में बँटे हुए हैं, यह न भूलना चाहिए। इसलिए यह योजना राष्ट्रीय शक्तियों को छिन्न-भिन्न करनेवाली है।

सीमा की रक्षा का भार भी भारतीयों को नहीं सौंपा गया है, क्यों? भय किधर से है? रूस आज ब्रिटेन का मित्र है। फारस की खाड़ी पर रूस की नजर क्या ब्रिटेन को पसन्द नहीं है? अफ़गानिस्तान भारत पर हमला नहीं कर सकता? भारत की सामरिक महत्त्व की सीमा पूर्व और दक्षिण में बदल गई है। फिर सीमा की रक्षा का भार क्यों नहीं दिया गया?

योजना का मूल

शिमला-परिषद् का उद्घाटन करते हुए लार्ड वैवेल ने कहा है कि वर्तमान समय में आपको मेरा नेतृत्व स्वीकार करना होगा। ऐसा मालूम होता है कि वाइसराय श्रीकृष्ण के शब्दों में भारत से कह रहे हैं—"सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहंत्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः" १४ जुलाई तक के लिए स्थगित परिषद् की कारंवाई ने बता दिया कि लार्ड वैवेल का कथन सच था। मिस्टर एमरी ने पार्लियामेंट में कहा था नई योजना का मूल या फलक्रम वाइसराय पर निर्भर होगा। अन्तिम निर्णायक वाइसराय स्वतः होंगे। इसका अर्थ है कि ह्वाइटहाल का शासन आज के समान बना रहेगा।

शासन-समिति का पूर्णतः भारतीयकरण नहीं किया गया है। कमाण्डर-इन-चीफ़ और गवर्नर-जनरल ये दो अँगरेज रहेंगे। यह समिति-धारा सभा के प्रति नहीं, बल्कि गवर्नर-जनरल के प्रति और उसके द्वारा ब्रिटिश गवर्नमेंट के प्रति जिम्मेदार होगी। शासन-समिति के सदस्यों का चुनाव भारतीय एसेम्बली की बहु-संख्यक पार्टी में से नहीं, बल्कि ब्रिटिश भारत की मुख्य राजनीतिक पार्टियों और हितों में से किया जायगा। अल्पसंख्यक वर्गों के प्रतिनिधियों का बहुमत होगा, अतः शासन-समिति संयुक्त रूप से जिम्मेदार न होगी। समिति के सदस्यों का चुनाव प्रान्तों में से भी किया जायगा और सवर्ण हिन्दू और मुसलमान एक समान प्रतिनिधित्व पायेंगे। २५ करोड़ हिन्दू और ९ करोड़ मुसलमान एक समान माने गये हैं!

प्रान्तों में भी

जिन प्रांतों में एक पार्टी का अजेय बहुमत है, उनमें भी वाइसराय के कथनानुसार मंत्रि-मंडल में मुख्य पार्टियों की समान शक्ति होगी। वाइसराय के इस कथन का कि 'प्रान्तों में भी संयुक्त मन्त्रि-मण्डल होगा' और क्या अर्थ हो सकता है? आचार्य कृपलानी ने इसका विरोध किया है। उन्होंने ठीक कहा है कि जिनका प्रोग्राम एक हो, दृष्टिकोण एक हो, ध्येय एक हो उन्हीं दलों का संयुक्त मन्त्रि-मंडल बनना सम्भव है। पर वैवेल-योजना ने इस बात को भुला दिया है।

क्रिप्स-योजना वाइसराय के वीटो अधिकार से टकरा कर चूर-चूर हो गई थी। वह आज कायम है। वाइसराय ने केवल इतना आश्वासन दिया है कि वे उसका अनुचित रीति से उपयोग न करेंगे। क्रिप्स-योजना में लड़ाई चलाने का भार केवल प्रधान सेनापति पर दिया गया था, पर सेना के मुल्की विषय भारतीय युद्ध सचिव को दिये गये थे। फिर क्रिप्स-योजना भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देती थी और साम्राज्य से अलग रहने का अधिकार भी देती थी। पर वैवेल-योजना इस विषय में चुप है। यद्यपि मिस्टर एमरी ने कहा है कि मार्च १९४२ का क्रिप्स-प्रस्ताव अभी तक कायम है।

अल्पकालिक

वैवेल-योजना अल्पकालिक है। पर यह अल्पकालिक व्यवस्था लड़ाई समाप्त होने के कब तक चलती रहेगी, यह कुछ नहीं बताया गया है। १९१९ का और १९३५ का इण्डिया एक्ट चालू रहेंगे और १९१४ के पिट के इण्डिया एक्ट द्वारा दिया गया वाइसराय का वीटो अधिकार भी बना रहेगा। भविष्य के लिए इसमें कुछ संकेत नहीं है। इसमें भारतीय शासन के ध्येय की भी चर्चा नहीं है। इस कारण वैवेल-योजना प्रतिगामी और क्रिप्स-योजना से भी पीछे ले जानेवाली है।

क्यों स्वीकार किया?

इस अवस्था में प्रश्न होता है कि फिर कांग्रेस ने सिद्धान्तः वैवेल-योजना को क्यों स्वीकार कर लिया? इसका उत्तर स्पष्ट और सरल है। कांग्रेस को दो बुराइयों में से कम बुराई को चुनना था। उसने आज के गतिरोध की अपेक्षा आज की अपेक्षा कुछ अधिक गतिमान और गतिशील अवस्था को चुनना पसन्द किया है। आत्मरक्षा की भावना ने उसको प्रेरित किया है कि वह इसको स्वीकार करे। यदि वैवेल-योजना अमल में नहीं आती तो वर्तमान स्थिति कायम रहेगी, कांग्रेस गैर-क़ानूनी रहेगी, फौजी और पुलिस राज्य कायम रहेगा। भाषण और लेखन स्वातन्त्र्य अटूट रहेंगे। सभाबन्दी रहेगी। जीवन-प्रवाह रुका रहेगा। इसको गतिमान करने के लिए कांग्रेस ने वैवेल-योजना को सिद्धान्तः स्वीकार किया है। वह जन-सेवा की भावना से, यह जानते हुए भी वाइसराय की कौंसिल में उसका बहुमत न होगा, उसने शासन-सूत्र लेने का निश्चय किया है। शासन का स्वर बदल जायगा, पुलिस के डण्डे तने न रहेंगे, मुनाफ़ाखोरी का अन्त हो जायगा, जबर्दस्ती वारलोन न उगाहा जायगा और जनता एक बार फिर सिर ऊँचा करके और छाती तानकर चल सकेगी। राष्ट्र में आज मुर्दनी और निराशा छाई हुई है। वीर और सेनानी थक गये हैं। इनको सुलझाने का अवसर देना आवश्यक है। अतः कांग्रेस ने अगली लड़ाई की तैयारी के विचार से इस अवसर का लाभ उठाने और वेवेल-योजना को स्वीकार करने का निश्चय किया है। आत्मरक्षार्थ किये गये कार्य के लिए कांग्रेस को दोष नहीं दिया जा सकता क्योंकि कहा गया है—'आत्मार्थं पृथिवीं त्यजेत्।'

अभी अभी प्रकाशित हुई है

भैरवी—तीसरा संस्करण—इमीटेशन
आर्ट पेपर पर रचनायें, असली
आर्ट पेपर में चित्र, बहुत अच्छी
बँधाई और रैपर। मू० २॥≡)
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

अनाजों का नया भाव
क्या राशनिंग योजना सफल है

लेखक, श्री दीनबन्धु पाठक

आजकल भोजन की समस्या कपड़े की समस्या से उग्र रूप धारण करती जा रही है। कपड़ा तो बाजारों से गायब सा हो गया है। भोजन के लिए खाद्य-पदार्थों की कमी विशेष रूप से हो गई है। सभी प्रान्तीय सरकारें अपने प्रांतों की खाद्य-समस्या को अपने हाथ में ले चुकी हैं पर, उनको सुचारु रूप से चलाने में उनकी कमजोरियाँ पग-पग पर झलक रही हैं। दूसरे प्रान्तों की समस्या क्या है इस पर कुछ कहना एक दूर के आदमी को ठीक नहीं जँचता पर अपने इस प्रांत का दृश्य तो हमारे सामने है। युक्तप्रान्त की सरकार ने एक प्रेस नोट निकालकर गेहूँ और अच्छे चावल की दर बढ़ा दी है। प्रेस नोट का कहना है कि सरकार की भाव निर्धारित करनेवाली नीति चार बड़े सिद्धान्तों पर आधारित है। वे सिद्धान्त हैं:—(१) सरकार खाद्य-पदार्थों के अनाज से व्यापारिक लाभ नहीं उठाना चाहती। (२) सरकार टैक्स अदा करनेवालों को भी हानि नहीं पहुँचाना चाहती। (३) सरकार अनाज पैदा करनेवालों को भी कम क़ीमत नहीं देना चाहती। (४) सरकार जन-संख्या के ग़रीबों को एक ऐसी क़ीमत पर भोजन देना चाहती है जिसको वह दे सके।

ये सरकार के आदर्शवादी सिद्धान्त हैं जिनको लेकर वह जनता को भोजन देना चाहती है। सरकार की अभिलाषा तो बहुत अच्छी है परन्तु कुछ चीजें ऐसी हैं जिनसे राशनिंग योजना आज दोषपूर्ण होती जा रही है। चावल जिसको सरकार अच्छी क़िस्म का कहकर भाव बढ़ाना चाहती है बंगाल के जिलों में १२ रुपये मन बिकता है। बंगाल सरकार ने कलकत्ता जैसे शहर में १६ रुपये मन चावल का भाव निर्धारित कर दिया है। कलकत्ता छोटा शहर नहीं है। तो फिर यू० पी० की सरकार चावल कहाँ से ख़रीदती है जो इलाहाबाद और लखनऊ जैसे शहरों तक में मँहगा पड़ रहा है? हमारा यह विचार नहीं कि सरकार अनाजों से लाभ उठा रही है। परन्तु सरकार को चाहिए कि चावल अपने नियत दर से सस्ता करके जनता के हाथ बेचे। फिर जो चावल कलकत्ता में सस्ता पड़ रहा है वह युक्त प्रांत की जनता के लिए महँगा क्यों पड़े?

प्रश्न आगे आता है कि गेहूँ भी तो महँगा पड़ रहा है। अभी कुछ दिन पूर्व तक ३ सेर ८ छटाँक के हिसाब से भाव था। उससे घट कर ३ सेर ४ छटाँक हुआ। आगे और घटनेवाला है। हमारा ख्याल

है कि यू० पी० सरकार पं
ख़रीदती है। तो फिर जो गे
ख़रीदा जाय वह ३ सेर ४
बेचा जाय? क्या यह रक़म गेहूँ
वालों के जेब में जाती है? फिर
प्रत्येक आदमी इस विभिन्नता
चाहेगा। इसके लिए कौन नहीं
सकता?

जो अनाज शहरों में दिया
यदि उस ओर ध्यान दिया
स्पष्ट दिखाई देगा कि जिस
सरकार अच्छी क़िस्म का चाव
है उसमें ख़राब क़िस्म के
मात्रा में मिले हैं उन चावलों में
कूड़े-करकट की मात्रा कम नहीं रहती
सरकार व्यापारियों को चावल
क़िस्म देती है परन्तु वहाँ पहुँच
चावल क्यों रद्दी दशा में बदल
क्या ख़रीददारों को इसी प्रकार
खिलाया जाने का सरकारी
अथवा व्यापारियों की यह
है! सरकारी कर्मचारी इन
ओर ध्यान देते होंगे?

गेहूँ के सम्बन्ध में भी यही
आमतौर से है। जो गेहूँ
लिया जाता है उसे साफ़ करने
के अतिरिक्त मिट्टी, भूसे तथा
के ढेर निकलते हैं। यह हो सकता
उसमें कुछ भूसा तथा कंकड़ी हो
उस गेहूँ में कैसे आ गया?
गेहूँ, चने की पैदावार होती है।
अन्दर चना का मिलना तो कुछ ठीक
है परन्तु उसके अन्दर जो
जाता है? सरकारी ख़रीद से
को गेहूँ मिलता है। फिर उनमें
और अन्य अनाजों का मिश्रण
५ सेर के भाववाले गेहूँ को ३ सेर
बेचने पर भी उसमें कूड़े-करकट
है? यह तो नहीं कहा जा
सरकार ऐसा करती है जब कि
स्वयं जनता को खिलाने की
अपने सिर पर ले चुकी है।
तात्पर्य यह है कि अनाज की
बिगड़ ही जाती है। साथ ही
को बेजा लाभ उठाने के लिए
मिला देने में प्रोत्साहन मिल
जनता को शहरों में ऐसे मँहगे
करना पड़ रहा है। सरकार
राशनिंग नीति में शहर
भोजन पहुँचाने की जिम्मेदारी
आसान है परन्तु उसका निभाना
कठिन हो रहा है। क्या सरकार
के इस संकट काल में अपनी
योजना द्वारा लाभ पहुँचायेगी?
तक तो हमें उसकी नीति कुछ
की दृष्टिगोचर होती रही है।
अनाज का भाव कम करके वह
में सफलता प्राप्त करती है।

आवश्यकता है

आर्यन पेपर मिल्स लिमिटेड

के बचे हुए हिस्से बेचने के लिए आधुनिक ढंग की मशीनों के लिए पेशगी रुपया दिया जा चुका है।
कम्पनी ने अपनी निजी जमीन में कागज बनानेवाली घास लगाना आरम्भ कर दिया है।
मैनेजिङ्ग एजन्ट जब तक साधारण तथा विशेष हिस्सों पर ५ तथा ६ प्रतिशत मुनाफा न दे देंगे
किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक न लेंगे।

माल का वितरण

कम्पनी के हिस्से बेचनेवालों में सबसे अधिक सफल एजन्टों को जिले तथा डिवीजन की मिल का माल
बेचने की एजन्सी दी जायगी।
विवरण के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें:—
बेंगाल शेयर डीलर्स सेन्डीकेट लि०, "शेयर डीलर्स हाउस", चौरङ्गी स्क्वायर, कलकत्ता

कांग्रेस और मुस्लिम लीग का रवैया

राष्ट्रीय-साम्प्रदायिक दलों में यह बटवारा क्यों?

लेखक, श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा

राष्ट्रीय कांग्रेस की राष्ट्रीयता और मुसलिम लीग की साम्प्रदायिकता पूर्णरूप से स्पष्ट हो चुकी है। इसलिए राष्ट्रीय दृष्टिकोण से लीग के सहयोग बिना भी कांग्रेस कार्यकारिणी में सभी दलों तथा वर्गों का प्रतिनिधित्व कर सकती है। इसी लिये उसे पद ग्रहण कर लेना चाहिए। इन्हीं सब दृष्टिकोणों पर ध्यान रखते हुए इस लेख में प्रकाश डाला गया है। लेख सामयिक और पठनीय है।

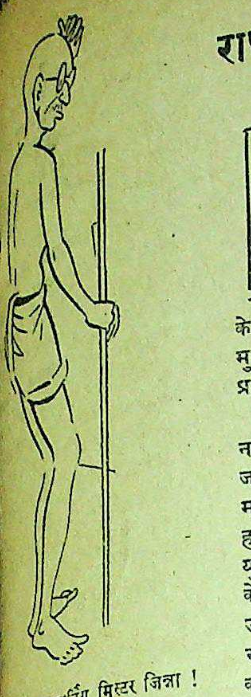

—गुड मार्निंग मिस्टर जिन्ना ! क्या हाल है ?

स्ताव के अनुसार यदि देखा ग्रेस और मुसलिम लीग दो ही महान् संस्थाओं को एक माना गया है ! दुर्भाग्य- नैतिक त्रुटियों के साथ साथ प्रस्ताव की एक दुर्बलता है मुसलिम लीग को साम्प्रदायिक नैतिक समानता प्रदान की साम्प्रदायिक दृष्टिकोण की ही केन्द्रीय शासन मुसलिम सीटों का अपने बताती है। वस्तुतः एक मुसलमानों को भारतवर्ष के जाति का प्रतिनिधि मान राष्ट्रीय मुसलमानों के साथ है जो वर्षों से राजनैतिक विश्वास रखते हुए कांग्रेस और प्रत्येक रचनात्मक कार्यक्रम रहे हैं। राष्ट्रीय मुसलमानों राष्ट्रीय दृष्टि से मुसलिम है क्योंकि मुसलिम लीग और साम्प्रदायिक झमेलों में उदार मनोवृत्ति का अनुसरण रही है। अहरार, मा और मोमिन इत्यादि ऐसी हैं जो मुसलमान धर्म और जाति करते हुए भी राष्ट्रीय और विचार-धारा में प्रगतिशील यों के साथ हैं।

तक मुसलिम लीग के पूर्ण रूप जाति के एक मात्र प्रतिनिधि का दावा है उसकी वास्तविकता है। मोमिन संस्था के प्रधान जहीरउद्दीन ने अपने एक मुसलिम लीग की इस घोषणा करते हुए कहा है कि मैं अपने विश्वास में दृढ़ हूँ कि हमारी संस्था मुसलिम लीग से पैरों पर खड़ी हुई स्वतन्त्र लीग जो कि अकेलेपन नीति पर जीवित हैं उसका नहीं माना है। एक और मौलाना हुसेन अहमद यादली उलमा को राष्ट्रीय की एकमात्र संस्था माना स्पष्ट करते हुए उन्होंने के नेतृत्व का समर्थन है। ऐसी ही अहरार पार्टी है। खाकसारों के नेता भी लीग के वर्तमान डालते हुए गांधी जी करने की आयोजना के साथ हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि मुसलिम लीग समस्त मुसलिम जाति का प्रतिनिधि कैसे हो सकती है?

राष्ट्रीय मुसलमानों के सम्बन्ध में नवाबजादा लियाक़तअली ख़ां ने पंडित जवाहरलाल नेहरू की जीवनी से जो मत अपनी दृष्टिकोण की पुष्टि के लिए हमारे सामने प्रस्तुत किया है वह अप्रसंग युत और केवल कांग्रेस को बदनाम करने के लिए किया गया है। नवाब साहब ने उस प्रसंग विशेष को जिसमें पंडित जी ने राष्ट्रीय मुसलमानों की सम्मति की व्याख्या करते हुए उन वाक्यों को लिखा है उसकी गूढ़ता को ही इन्होंने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। यह बात स्पष्ट है कि जब साम्प्रदायिक आधार पर मुसलिम लीग ने एक संस्था क़ायम की है तो उसमें सिद्धान्ततः राष्ट्रीय मुसलमानों का कोई भी स्थान नहीं रह जाता। प्रान्तीय लीग की राजनैतिक विचारधारा साम्प्रदायिक रंग में इतनी रँगी हुई है कि प्रगतिशील राष्ट्रीय मुसलमान के लिए उसमें कोई स्थान रह ही नहीं जाता है। यह संस्था भारतवर्ष की ठीक कम्यूनिष्ट पार्टी है जो मिस्टर जिन्ना जैसे साम्प्रदायिक नेता को भी राष्ट्रीय नेता और देशभक्त के रूप में देखती है। मुसलिम लीग क़ी राजनैतिक नीति को देख कर उन मुसलमानों के लिए जो राष्ट्रीय विचारों को मान कर आगे चल रहे हैं उनके लिए काफ़ी उलझन आ गई। गोलमेज परिषद् के बाद से कम्यूनलवार्ड की स्थापना से राष्ट्रीय मुसलमान का स्थान कुछ विचित्र-सा रहा। पंडित जी ने केवल उस अवस्था और दशा का उल्लेख अपनी जीवनी में इसी दृष्टिकोण से किया है ताकि उन समस्याओं और राष्ट्रीय मुसलमानों के बलिदान की इज्जत की जाये और उनकी रक्षा भी! जवाहरलाल जी कुछ ऐसे वैसे व्यक्ति नहीं जिनको नवाबज़ादा साहब इतनी आसानी से इधर-उधर कर सकें। पंडितजी मुसलिम जाति के पूर्ण पक्षपाती तो नहीं पर उस जाति के समर्थक अवश्य हैं। इसके अतिरिक्त उन्हें अपने शब्दों और भावों से ऐसा स्नेह है कि जिस प्रकार से उसकी व्याख्या नवाबज़ादा साहब ने की है वह किसी भी राजनैतिक वर्ग से आशा नहीं की जा सकती।

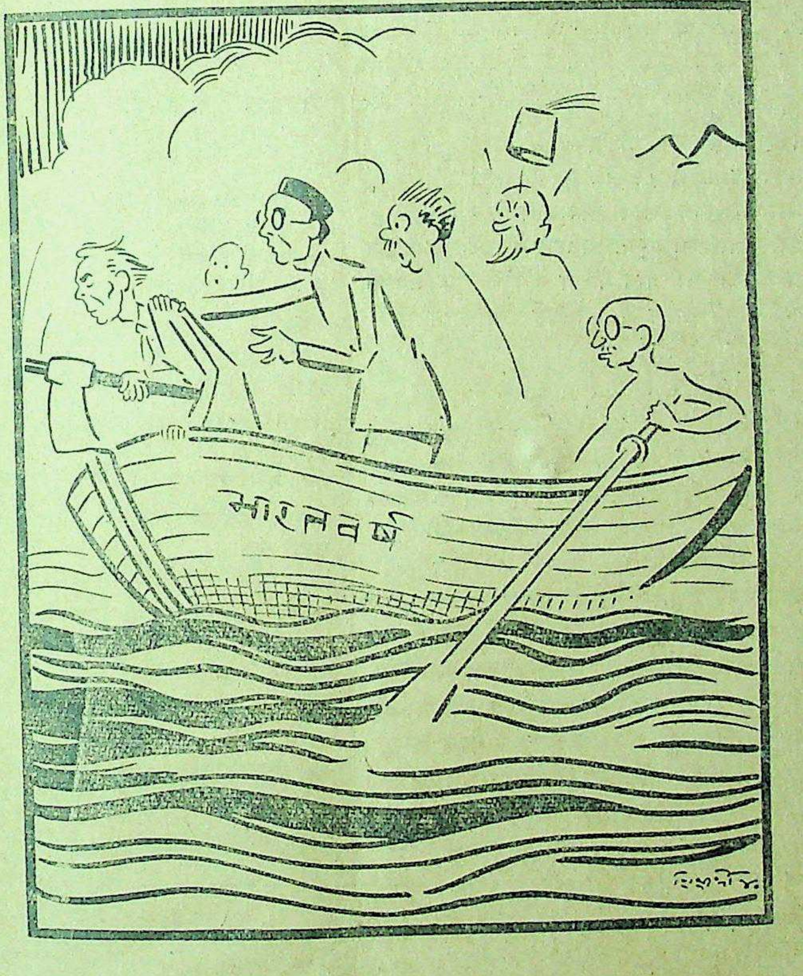

नवाब साहब का यह कहना कि मुसलिम लीग का विशिष्ट उत्तरदायित्व जनता के सामने केवल कांग्रेस संस्था के संकीर्णतम दृष्टिकोण से ही है, सर्व-मान्य नहीं कहा जा सकता! कांग्रेस ने सदैव इस बात की चेष्टा की है कि राष्ट्रीय विचार की पृष्ठ-भूमि पर हिन्दू मुसलिम समस्या का उचित रूप से हल निकाला जाये पर श्री जिन्ना ने सदैव एक न एक अडंगा इन रचनात्मक आयोजनाओं में लगाया है। पिछले साल गांधी जी के समस्त आयोजनाओं को जिन्ना ने केवल इसलिए ठुकरा दिया था कि वह व्यक्तिगत रूप में ही आयोजना लेकर आये थे। इसलिए किसी भी राजनैतिक दल के प्रतिनिधि न होने के कारण श्री जिन्ना के लिए उनके किसी भी प्रस्ताव का महत्त्व नहीं था। मुसलिम लीग की राष्ट्रीयता धार्मिक एकता के बल पर है या उन राजनैतिक सिद्धान्तों पर है जिसे कि हम वैज्ञानिक कह सकते हैं?

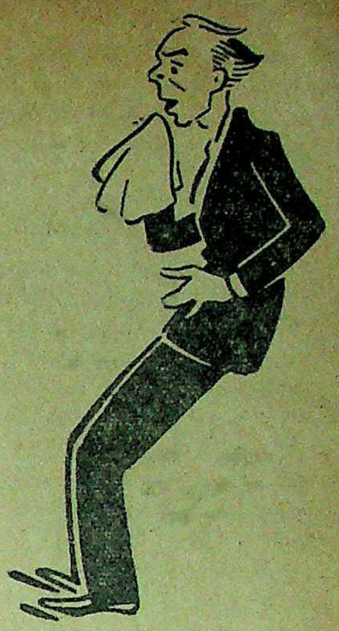

मिस्टर जिन्ना—अरे मिस्टर गांधी, आप आये तो थे। नेता सम्मेलन के लिये किन्तु........

मिस्टर जिन्ना ने मुसलिम राज की परिभाषा देते हुए जिस धार्मिक परिभाषा का रूप हमारे सामने प्रस्तुत किया था उससे यह पता चलता है कि यह केवल एक राजनैतिक अडंगा और गुत्थी को और भी उलझाने के सुलझा नहीं सकते हैं। वस्तुतः लीग उन आशंकाओं से इतना अधिक दलित है कि उसके लिए हम इस बात की कल्पना करें कि कांग्रेस के साथ वह अपने अस्तित्व को स्थापित रख सकती है बिलकुल असम्भव है। मुसलिम लीग के सामने राष्ट्र विशेष की समस्या पूर्णरूप से उपस्थिति नहीं है उसके दृष्टिकोण से साम्प्रदायिक शक्ति राष्ट्रीय स्वतन्त्रता से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान परिस्थियों में क्या करना चाहिये? वस्तुतः कांग्रेस का ध्येय किसी भी राजनैतिक दलबन्दी के रूप में वायसराय की कार्यकारिणी में जाना नहीं है। कांग्रेस उन सब जाति और सब दलों की एक ऐसी संस्था है जो भारतीय स्वतंत्रता के लिये वर्षों से लड़ती आ रही है और भविष्य में वह लड़ती रहेगी। कांग्रेस भारतीय एकता और स्वतंत्रता की प्रतिनिधि सभा है। मुस्लिम लीग यदि यह समझती हो कि कांग्रेस स्वशक्ति के लिये मुस्लिम लीग का विरोध करती है तो सब ग़लत है। कांग्रेस केवल एक का विरोध करती है और वह है अंगरेजी साम्राज्यवाद। परन्तु इन शक्तियों की आलोचना करते हुए भी कांग्रेस के सामने कुछ रचनात्मक आयोजनायें हैं जिनको प्रस्तुत करके राष्ट्रीय सेवा करना कांग्रेस का कर्तव्य है।

बहुत से लोगों का यह कहना है कि जब तक मुस्लिम लीग की सम्मति न हो तब तक वायसराय-पद ग्रहण करना अनुचित है पर वास्तव में ब्रिटिश नीति और जनता की हालत ऐसी है कि दशा उस समय तक नहीं सँभल सकती जब तक कि केन्द्र में हमारी राष्ट्रीय शासन व्यवस्था न हो। इसलिए कांग्रेस यदि मुस्लिम लीग के बिना मंत्रिपद ग्रहण कर सकती है तो उसे ग्रहण करना अनिवार्य है।

दूसरी आपत्ति जो कांग्रेस के भीतरी दिमाग में यह है कि इस प्रकार केन्द्रीय शासन व्यवस्था अपने हाथ में लेने से कांग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता के पथ से पतित हो गई है। वस्तुतः कांग्रेस मंत्रिपद ग्रहण से यदि किसी भी प्रकार से जनता को सशक्त बना सकेगी तो आनेवाले पूर्णस्वतंत्रता के युग में वह अधिक सशक्त और अनुभवी होगी। जनता उसके साथ और नजदीक होगी। आतंक की भावना जो अब भी जनता में पूर्णरूप से व्याप्त है उसमें कमी होगी। परिणाम स्वरूप कांग्रेस यदि बिना मुसलिम

चीन-जापान युद्ध का नवाँ वर्ष

प्रजातंत्र के लिए लोहा लेता हुआ बढ़नेवाला राष्ट्र

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

चीन-जापान युद्ध का आठवाँ वर्ष समाप्त हो गया और ७ जुलाई से नवें वर्ष का आरंभ होता है। चीन ने अपने प्रजातंत्र की रक्षा के लिए साम्राज्यवादी जापान से जिस वीरता तथा बहादुरी से लोहा लिया है, वह इतिहास में अमर है। इस लेख में योग्य लेखक ने चीन के इस संघर्ष पर सुंदर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

जापान से लोहा लेते हुए चीनी प्रजातंत्र की आठ वर्ष से लगातार रक्षा करनेवाले मार्शल च्यांग काई शेक।

आज से ठीक आठ साल पहले ७ जुलाई, सन् १९३७ को पेकिंग से दस मील दक्षिण-पश्चिम की ओर मार्कोपोलो पुल पर जापानी और चीनी दस्तों की एक हल्की झड़प हुई। दूसरे ही दिन कई जापानी डिवीज़नों ने चीनी सीमा को पार कर वानपिंग के शहर पर अधिकार कर लिया। उस समय कौन जानता था कि यह छोटी सी घटना एक भयंकर युद्ध के रूप में परिणत हो जायगी जिसके तूफ़ान में करोड़ों सैनिक नौ साल तक विजय प्राप्त करने के लिए जीवन तथा मृत्यु से खेलते रहेंगे। चीन की सीमा पर खेले गये खेल ने साम्राज्यवादी जापान की लिप्सा से प्रभावित होकर एक संयत आक्रमण का रूप धारण कर लिया। इस प्रकार चीन आक्रामकों का पहला शिकार हुआ और उसे अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए अपने आज के समस्त मित्रराष्ट्रों में से अधिक रक्तदान देना पड़ा। उसने घोर दुर्दिन देखे, मंचूरिया और उत्तरी तथा पश्चिमी चीन के सारे मैदानी तथा उपजाऊ प्रदेश हाथ से निकल गये, नानकिंग, पेकिंग, शंघाई, कैंटन, हांको तथा इंचांग जैसे प्रसिद्ध नगरों से हाथ धोना पड़ा—यही नहीं वरन् उन्हें अपने समस्त प्रमुख औद्योगिक व व्यापारिक क्षेत्रों का विनाश देखना पड़ा, करोड़ों सैनिकों की बलि देनी पड़ी। संसार का अन्य कोई भी देश लगातार इतने विनाश को सह सकने पर असमर्थ होकर आक्रमणकारी के सामने सिर झुका देता। पर चीनी जनता का नैतिक बल तथा साहस असाधारण है। वांग-चिंग-वी और चीनी कम्यूनिस्टों के देशद्रोह से भी विचलित न होकर चीन लड़ता रहा। ब्रिटेन और अमेरिका ने जो आज चीन के मित्रराष्ट्र हैं, उसे पहले बहुत कम सहायता दी, यहाँ तक कि ब्रिटेन ने तो बर्मा-रोड को ३ महीने के लिए जापान से समझौता करके बन्द कर दिया और चीन को बड़ी मार्मिक हानि पहुँचाई। अपने ही बल पर, अपने ही द्वारा बनाई गई मशीनों के युद्धोद्योग द्वारा चीन ने पिछले आठ सालों के अन्दर जिस असाधारण आत्मविश्वास से जापान से लोहा लिया, वह संसार के स्वाधीनता के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

चीनी सेनायें आज विजय-पथ की पथगामिनी हैं। यूरोप में हिटलर के पराभव और मित्रराष्ट्रों की विजय ने जापान की अवश्यम्भावी हार का रास्ता खोल दिया है। मित्रराष्ट्रीय फौजें बर्मा, फिलीपाइन्स व ओकीनावा के महत्त्वपूर्ण जापानी अड्डों पर अधिकार कर चुकी हैं। बालिकपापान और ताराकान के प्रसिद्ध तेल-क्षेत्रों के लिए भी भयंकर रूप से युद्ध चल रहा है। चीन में भी जनरल च्यांग की सेनायें प्रथम बार महान् प्रत्याक्रमण कर रही हैं। चीनी युद्ध का आठवाँ साल चीन की सेनाओं के लिए सबसे भयंकर समस्याओं का प्रतीक बन कर, प्रादुर्भूत हुआ था। सन् ४४ के अप्रैल व जून मास में जापानी सेनाओं ने होनाननामक चीनी प्रान्त पर आक्रमण कर सारी पीपिंग-हांको रेलवे लाइन पर जो कि उत्तरी चीन को मध्य या दक्षिणी चीन से मिलानेवाला प्रमुख यातायात मार्ग था, क़ब्ज़ा कर लिया था। तत्पश्चात् जापानी फारमर्ड डिवीजन हांको से कैंटन जानेवाली महत्त्वपूर्ण रेलवे लाइन पर क़ब्ज़ा करने के लिए बढ़े और इस हेतु उन्होंने हांको व वूचांग प्रान्त की सीमा पर २ लाख सैनिक तथा कैंटन के बन्दरगाह पर ८०००० सैनिकों को इकट्ठा कर उत्तर व दक्षिण की ओर एक साथ आक्रमण प्रारम्भ कर दिया। उन्हें अपने आक्रमण में चीनी सेनाओं के पास अस्त्र-शस्त्र और रसद की न्यूनता से अतीव सफलता प्राप्त हुई और हूपेह नामक चीनी प्रान्त की राजधानी चांगण शीघ्र ही उनके अधिकार में आ गया। तत्पश्चात् जापानी डिवीजन सियांग नदी के किनारे किनारे बढ़ते रहे और उन्होंने चूचो, लिलिंग, युहसीन सिंगसियांग तथा हेंगसान के महत्त्वपूर्ण चीनी शहरों पर अधिकार कर लिया। हेंगयाग नामक शहर के लिए, जो कि चीन का प्रमुख हवाई अड्डा तथा दक्षिणी होनान का यातायात केन्द्र है एक बड़ी खौफ़नाक लड़ाई हुई तथा ४७ दिन के घेरे के बाद जापानी उस नगर पर अधिकार कर लेने में सफल हो गये। इस घेरे में घिरे हुए १६२७५ मनुष्यों में से केवल ९७३ मनुष्य ही सुरक्षित बच सके, बाकी सब अपने कर्तव्य को पूरा करते हुए मारे गये। कैंटन-हांको रेलवे पर अधिकार कर लेने के बाद जापानी हूनान-क्वांगसी रेल पर अधिकार करने के लिए आगे बढ़े और पहली बार उन्होंने इस युद्ध के लिए तीन लाख पचास हज़ार सैनिकों को पयुक्त किया वे आगे बढ़ते ही गये और चुंगकिंग के नजदीक के एक शहर क्वीयांग तक उनकी सेनायें पहुँच गईं।

चीन के लिए यह समय सबसे अधिक संकट का था। अगर जापानी क्वीयांग पर अपनी स्थिति को सुरक्षित कर चुंगकिंग की ओर धावा करते तो चीन का रहा-सहा भाग भी जापानी अधिकार में चला जाता। पर चीन ने एक बार पुनः अपनी शक्ति को समेटा, नई कुमुक एकत्र की गई, जापानी फौजों पर प्रत्याक्रमण किया गया और उन्हें पीछे हटाकर हूनान की सीमा तक खदेड दिया गया। यहाँ पर ध्यान रखना आवश्यक है कि यह चीनी प्रत्याक्रमण दिसम्बर मास में हुआ था जब मि राष्ट्र पूरी शक्ति से जर्मनी के विरु रहे थे और जनरल रंडसेड का अ टुकड़ियों पर सख्त प्रत्याक्रमण क था। इस समय चीन के जन्म-मरण प्रश्न मित्रराष्ट्रों के लिए निम्न-कोटि था और वे उसे कोई ठोस सहायता पहुँचाने में असमर्थ से थे। जो कुछ स वह दे भी रहे थे, वह हवाई के द्वारा थोड़ी थोड़ी करके भेजी थी। उत्तरी बर्मा में तो चीनी पहले से ही प्रत्याक्रमण कर जापानी को सालवीन नदी से पीछे हटा चुकी भामो, नामखाम, मांडले तथा के महत्वपूर्ण बर्मी शहरों पर ब्रिटिश अधि चीनी सहायता के ही द्वारा हुआ।

इस प्रकार चीन ने संसार के देश-प्रेम व स्वतंत्रता के सम्मान का त्यागपूर्ण आदर्श प्रस्तुत किया है, वह करणीय है। हम भारतीय तो चीनी से सांस्कृतिक व धार्मिक गठबंधनों सदियों से जुड़े हुए चले आ रहे हैं हमें अभिमान है कि चीन आज एशिया स्वतंत्र व प्रजातंत्र वादी मनुष्यों व जाति का नेतृत्व कर रहा है। हम भारतवासि को भी अपने चीनी भाइयों के आदर्श शपथ लेनी है कि हम अपने देश के कुछ भी अछूता न रखेंगे। चीन और भारत ने संसार को भूतकाल में सभ्यता और संस्कृति के बहुत से पाठ पढ़ाये हैं और अब वह स्वर्ण-दिवस जल्दी ही आनेवाला है जब कि एक बार पुनः इन्हीं देशों की संसार के रंगमंच में तूती बोलेगी। हमें इस दिशा के लिए अभी से सक्रिय रूप में प्रयत्नशील होना है।

लीग के भी शासन व्यवस्था को संभाल ले तो उससे वह जनता की सेवा करने में अधिक सफल होगी। मौलाना आज़ाद के शब्दों में—"कांग्रेस के सामने हर दशा में राष्ट्रीय दृष्टिकोण और पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष ही उपस्थित रहेगा और प्रत्येक कदम जो कांग्रेस उठाती है और उठायेगी वह उसके उन समस्त नीति के अनुरूप होगा जिनका अनुभव वह पिछले कई वर्षों से करती आ रही है।.........मैं यह अनुभव करता हूँ कि यदि कांग्रेस यथाशक्ति साहस और बल के साथ आज के से नाजुक समय पर ध्यान नहीं देगी और अपने राष्ट्रीय नीति का प्रतिपादन नहीं करेगी तो जिसके लिये कि कांग्रेस सदैव आगे रही है उसी कांग्रेस संस्था का भविष्य अंधकारमय हो जावेगा।"

एक महान् व्यक्ति

संसार में व्यक्ति का महत्त्व उसके व्यवहार तथा आचरण पर निर्भर करता है। सद्व्यवहार तथा सदाचार करनेवाले व्यक्ति ढूँढ़ने पर मिल जाते हैं किन्तु दूसरों को सदाचारी तथा सद्व्यवहारशील बनाने वाले व्यक्ति संसार में बहुत ही कम मिलते हैं। बंग-साहित्य-सम्राट् श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ऐसे ही व्यक्तियों में एक हैं। आपके उपन्यास पाठक को निश्चय ही सदाचारी तथा सद्व्यवहारी बनाते हैं। किन्तु तारीफ यह है कि आप अपने उपन्यासों में कहीं भी उपदेश नहीं दिया करते हैं। मनोरंजक तथा सरल भाषा में वास्तविक जीवन का चित्रण ही आपकी विशेषता है। उनके उपन्यासों के निम्नलिखित अनुवाद उनकी सभी विशेषताएँ लिये हुए हैं।

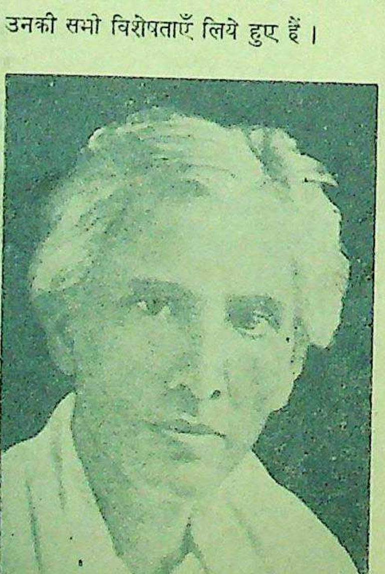

ब्राह्मण की बेटी	१।/)
वैकुंठ का बिल	।।≡)
छुटकारा	१।/)
लेन-देन	३।/)
मझली दीदी	१)
गृहदाह	३।/)
परिणीता	१।/)
श्रीकान्त (दो भाग)	४)
शुभदा	१।।)

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

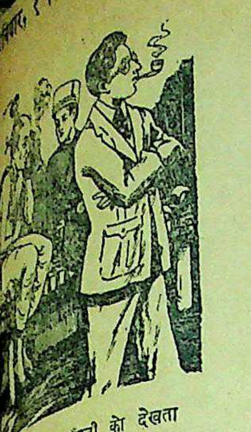

गाड़ी में चाँदनी को देखता
हुआ खड़ा रहा।

और प्रभाकर को परमात्मा
ही साथ संसार के रंगमंच पर
अन्तर तो केवल आधे घंटे
उस आधे घंटे के अन्तर ही
और बड़े की पदवी दे दी।
और प्रभाकर छोटा था।
बचपन से साथ रहे खेले-कूदे,
एक ही सा कपड़ा पहना, एक
एक ही सा प्यार पाया,
बचपन लाँघकर जवानी
पकड़ा! साथ ही साथ बढ़े
राम और लक्ष्मण की जोड़ी में
था। मगर ये तो दोनों
दो शरीर और एक

एक दूसरे से होड़ ले रहे
करके कालिज में पहुँचे।
वकीलों में से थे। इन
अलावा उनके कोई और
के कोई ख़ास रिश्तेदार
प्राणी सुख और शान्ति
कर रहे थे। दोनों
से इतने मिलते-जुलते थे
सहसा पहचान नहीं पाता
बड़ा है और कौन छोटा?
माथे पर एक नन्हा-सा
मा-बाप को पहचानने में
थी!

* * *

हो प्रभा।"
में आया।"
अब क्या काम रह गया, तैयार
फिर?"
कह तो रहा हूँ—तुम चलो,
हूँ।" कुछ झल्लाकर प्रभा

तो तुम आओ मैं चला। आज
कहता हुआ दिवा साइकिल
मारता क्षण भर में आँखों से
गया! जब प्रभा ने देखा कि
दूर निकल चुका होगा
उठाकर धीरे-धीरे पैडिल
के एक चौराहे पर जा खड़ा
और दूर निगाह दौड़ाई। देखा
लड़कियों से भरी हुई उधर
रही है! दो बैल, गाड़ी को
और गाड़ीवान तख्ते पर बैठा
रहा है। पीछे स्कूल की
साथ चली आ रही है। गाड़ी
थी, कि दाई को बैठने के
भी जगह न थी।
बचा कर प्रभा ने चाँदनी
चाँदनी गाड़ी में सब
कोनेवाली सीट पर
से प्रभा को देख रही
दोनों की आँखें एक दूसरे
बातें कर अलग हो
गाल लज्जा से लाल हो
होंठों की मुस्कराहट
सामने किताब लगा ली
कोई समझ न पाये।
फेर कर मुस्करा पड़ा।
द्वारा एक दूसरे के भावों

प्रेम और कर्तव्य

लेखिका, श्रीमती इन्दिरा खन्ना

प्रभाकर और दिवाकर दोनों जुड़वाँ भाई थे और उन दोनों के बीच एकाएक चाँदनी का आगमन हुआ। चाँदनी के आते ही दोनों के जीवन में क्या परिवर्तन हुआ और अंत में क्या परिणाम निकला, इसका अत्यन्त रोचक वर्णन इस सुंदर कहानी में किया गया है। पारस्परिक जीवन के अन्तर्द्वंद्वों से पूर्ण कहानी पठनीय है।

को समझने की कोशिश की। यही क्रम तब तक चलता रहा जब तक दोनों अलग न हो गये! दूसरे चौराहे पर चाँदनी की गाड़ी मुड़ गई। प्रभा भी तेजी से अपनी साइकिल पर निकल गया।

आधा घंटा बीत चुका था। प्रभा को क्लास में जाने की हिम्मत न हुई, एक पेड़ के नीचे आकर बैठ गया। घंटा ख़तम हुआ—दिवाकर बाहर निकला—देखा प्रभा पेड़ के नीचे चुपचाप बैठा न जाने क्या सोच रहा है। पास जाकर उसे आवाज़ दी—प्रभा ने चौंककर देखा दिवा कई दोस्तों के साथ पास ही खड़ा है!

"प्रभा आज बड़ी देर कर दी, कहाँ रह गये?"

कहीं तो नहीं। अतुल मिल गया था, उसी से बातचीत करने में देर हो गई!"

"अच्छा" कहकर दिवा वहीं बैठकर दोस्तों से गप लड़ाने लगा।

भैया से आज पहले पहल झूठ बोलते प्रभा को दुख हुआ—मगर अब चारा ही क्या था?

छुट्टी हुई, दिवा ने प्रभा को खोजने के लिए चारों ओर निगाह दौड़ाई मगर प्रभा का कहीं पता न चला! वह कभी का सबकी आँख बचाकर भाग खड़ा हुआ था। वह चौराहे पर पहुँच साइकिल रोक कर खड़ा खड़ा लड़कियों की गाड़ी का इन्तज़ार कर रहा था। दूर से गाड़ी चली आ रही थी। एक-दूसरे को देख चेहरे पर हलकी-सी लहर फैल गई। थोड़ी दूर तक दोनों का साथ रहा!

दिवा ने आकर देखा कि प्रभा कमरे में पलँग पर चुपचाप लेटा आँखें मूँदे पड़ा है।

"प्रभा, तुम कब घर आये, मैं तो वहाँ तुम्हें खोजता रहा।"

"मैं तो आज जल्दी ही चला आया था। सिर में दर्द हो रहा था।" कहकर प्रभा ने करवट बदल ली।

शहर में प्रदर्शनी हो रही थी। सभी प्रदर्शनी में चक्कर काट रहे थे। प्रभा भी दिवाकर और कई मित्रों के साथ इधर-उधर घूम-फिरकर देख रहा था, कि उसने दूर से कई लड़कियों के झुण्ड में एक परिचित चेहरा देखा। वह पीछे होकर चलने लगा। मित्रों को पता न हो पाया कि वह किसी पर नजर रखकर चल रहा है! दिवाकर मित्रों के साथ काफ़ी आगे बढ़ चुका था। प्रभा ने खड़े होकर देखा कि आज चाँदनी आसमानी साड़ी पहने हुई है, उसके सुन्दर गोरे मुख पर वह साड़ी ख़ूब खिल रही है! उसकी निगाह आकाश पर खिलते चाँद पर पड़ी। एकदम अवाक् हो गया, मानो चाँद आकाश से पृथ्वी पर उतर आया हो। वह समझ न पाया कि वह आकाश पर खिलते चाँद को देखे या जमीन पर निकले हुए चाँद को—और चाँदनी से उसकी आँखें जा टकराईं।

दिवाकर ने पान की दूकान से पान खरीद कर दोस्तों को दिया फिर प्रभा को देने को जो इधर-उधर देखा तो उसे वहाँ से गायब पाया। एक साथी ने कहा, कहीं किसी से बात करता हुआ रुक गया होगा! इस प्रकार वह सब दूसरा चक्कर काट रहे थे कि उन्होंने दूर से प्रभा को कुछ लड़कियों के पीछे एक सुन्दर लड़की के पास पास चलते हुए देखा। प्रभा ने भी इनको देखा। वह क़दम बढ़ाता हुआ उनके पास पहुँच गया।

"कहाँ गुम हो गये थे यार" शलेन्द्र ने व्यंग किया।

"गुम कहाँ होता भला, रास्ते में सुधीर दूसरी ओर घसीट ले गया था, तुम लोग आगे बढ़ आये!"

दिवाकर का क्षणिक संदेह दूर हो गया। फिर शायद चाँदनी दूसरा चक्कर लगाकर घर लौट गई थी, क्योंकि प्रभा को वह फिर न दिखाई पड़ी!

दिवाकर परेशान! "तो आखिर प्रभा को हो क्या गया है? क्या उसे भी दुनिया की हवा लग गई है? क्या वह भी किसी के मोहब्बत के जाल में फँस गया है? क्या इससे वह मुझसे कटा-कटा सा फिरता है? पहले घंटों मेरे साथ बैठा बातें किया करता, साथ पढ़ने जाते, साथ घूमते और हर काम साथ ही साथ होता—और अब! मैं कभी बातें करने को बुलाता भी हूँ तो पढ़ने का बहाना बनाकर टाल जाता है। समझ में नहीं आता कि क्या बात हो गई है?" दिवाकर बैठा हुआ मन ही मन बड़बड़ा रहा था इतने में मोहन धड़धड़ाता कमरे में आ घुसा।

"अमा यार! चुपचाप बैठे क्या बुदबुदा रहे हो।"

"कुछ तो नहीं, यों ही बैठा सोच रहा था कि चलूँ थोड़ा सिविल-लाइन्स हो घूम आऊँ!"

"अकेले कैसे हो? प्रभा कहाँ है?" चारों ओर निगाह दौड़ाकर मोहन ने पूछा।

"वह बड़ी देर से बाहर एक दोस्त के पास गया हुआ है।"

"किस दोस्त के पास। झूठ।"

"झूठ? तो क्या वह बहाना..."

"तुम हो उल्लू—वह तुम्हें बेवक़ूफ़ बनाकर अपनी माशूक़ा के पीछे—"

"मोहन—अपनी जबान बन्द करो।" अपनी बाँहों की आस्तीन चढ़ाते हुए क्रोध से दिवा ने मोहन की ओर देखा! "तुम जानते हो यह सब बातें किसके आगे कर रहे हो। प्रभा मेरा भाई है उसके बारे में जरा भी मैं ख़ुराफ़ात नहीं सुनना चाहता।"

"तुम यह लाल आँखें किसे दिखा रहे हो दिवाकर, अगर मेरी बात का यक़ीन नहीं तो अपनी आँखों से देख लो—या कभी सुन लेना कि मैंने क्या झूठ कहा था, और तुम कितने गहरे पानी में थे।"

"तो"......

"तो वो, कुछ नहीं। छोड़ो इन बातों को चलो जरा सिविल-लाइन्स घूम आयें।"

चुपचाप दिवाकर ने कोट पहना और दोनों एक ही साइकिल पर बैठकर घूमने निकल पड़े।

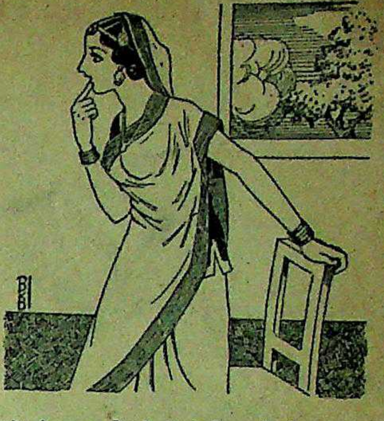

चाँदनी बारात देखने के लिये कमरे से बारजे की ओर बढ़ी।

* * *

एक दिन की घटना है। दिवाकर ने देखा कि प्रभा लड़कियों की एक गाड़ी के साथ चला जा रहा है। वह ठिठका। उसे मोहन के कहे शब्द याद आ गये।

प्रभा को दिवा का पीछा करना जरा भी ज्ञात न हो पाया। दिवाकर उन दोनों के पीछे-पीछे चाँदनी के घर तक गया। दिवा ने देखा कि जब चाँदनी गाड़ी से उतर रही थी तब एक सफ़ेद काग़ज़ उसके हाथ से जमीन पर जा गिरा! प्रभा ने गाड़ी दूर चले जाने पर काग़ज़ उठाकर जेब में रख लिया और घर जाने को घूम पड़ा। प्रभा की निगाह दिवा पर पड़ने के पहले ही वह दूसरे चौराहे पर घूम पड़ा और नज़रों से ओट हो गया!

घर पहुँचकर दिवा सीधे अपने कमरे में जा पहुँचा और धम से पलँग पर जा गिरा। आज उसे ज्ञात हुआ कि उसका स्नेही भाई उससे कितनी दूर जा पहुँचा है।

* * *

पलक मारते साल बीत गया। प्रभा का क्रम न टूटा। दिवाकर सब कुछ समझ कर भी चुप था। एक दिन दिवाकर किसी बड़े जरूरी काम से चाँदनी के घर की तरफ़ से जा रहा था। किसी की बारात निकल रही थी। चारों तरफ़ से लोग अपने दरवाजे और खिड़कियों से शानदार बारात देख रहे थे। चाँदनी भी खिड़की से बारात देखने में तल्लीन थी। इतने में ज्योंही दिवाकर उसकी खिड़की के नीचे से होकर उधर से निकला त्योंही चाँदनी के गले से मोतियों का हार खुलकर दिवाकर के सिर पर जा गिरा! चाँदनी को इसका जरा भी पता न लग पाया क्योंकि वह बारात देखने में तल्लीन थी। दिवाकर ने घबड़ाकर हार उठा लिया और हाथ में देखा। नुमाइश में से ख़रीदा हुआ मोतियों का हार था। ऊपर देखा तो चाँदनी सामने खड़ी बारात देख रही थी। वह समझ न पाया कि अब इस हार को क्या करूँ? वह इतना घबड़ा गया कि फिर आगे न बढ़ सका और चुपचाप उलटे पैर घर लौट आया। घंटों कुर्सी पर बैठ सिगरेट के धुएँ के गोल चक्कर में अपने विचारों में गोता लगाता रहा!

* * *

"भैया पढ़ रहे हो।"

"नहीं तो। क्यों क्या काम है?" किताब सामने से हटा कर दिवाकर ने पूछा!

"कुछ ख़ास काम तो नहीं है।"

"अच्छा तो मेरे पास कुर्सी खिसका लाओ। अब तो तुम कभी बैठकर बात भी नहीं करते।"

प्रभा कुर्सी पास ले आया, और इधर-उधर किताब उलटने-पलटने लगा।

'प्रभा।'

"जी भैया।"

"मैं देखता हूँ तुम आजकल बड़े

गम्भीर रहते हो। क्यों चाँदनी तो अच्छी तरह से है?

"चाँदनी" प्रभा ने आश्चर्य से पूछा—"तो क्या दिवा भाई तुम सब कुछ जानते हो?"

"हाँ प्रभा मैं सब कुछ बहुत दिनों से जानता हूँ कि तुमने उससे मोहब्बत की है!"

"तब ठीक है।"

"प्रभा एक बात बताओगे?"

"जरूर बताऊँगा—जब मालूम ही है सब कुछ—तो अब छिपाऊँ क्यों?"

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी और चाँदनी की क्यों कर मित्रता हुई?"

"तो क्या सुनोगे? एक दिन मैं मैच खेलने जा रहा था, इतने में एक तेजी से मोटर आ रही थी। दूसरी तरफ़ एक लड़कियों की गाड़ी थी मैं बीच में था—कहीं भी निकलने का रास्ता न था मैं एकदम घबड़ा गया। साइकिल डगमगाई और गाड़ी के एक कोने से जा टकराई—मैं साफ़ साफ़ बचा। सभी लड़कियाँ मेरी ओर सहमी-सी देख रही थीं। मुझे बचते देखकर सबके चेहरे खिल उठे। चाँदनी का सुन्दर चेहरा भय और ख़ुशी से चमक रहा था। मैं घबड़ाकर बिना इधर-उधर देखे टूटी साइकिल ले वहाँ से चल पड़ा। अपने पीछे मैंने लड़कियों की जोर की खिलखिलाहट भी सुनी।

फिर रोज ही कालिज से आते-जाते चाँदनी दिखाई पड़ती। धीरे-धीरे नजरों के खेल ने हम दोनों को मोहब्बत का पाठ पढ़ाना शुरू किया।

"कभी तुमको उसने ख़त भी लिखे?" दिवाकर ने अपना शक मिटाने के लिये प्रभा से पूछा।

"हाँ भैया ख़त तो हम रोज ही किसी न किसी बहाने से एक दूसरे को दे दिया करते थे। इसी तरह से महीनों बीत गये, हमारा क्रम जारी था। एक दिन चाँदनी को गाड़ी से गायब पाया, सोचा शायद बीमार होगी या घर पर कुछ काम होगा न आ पाई होगी—फिर कितने ही दिन उसे गायब पाया। एक दिन उसके घर जाने पर देखा कि दरवाजे पर 'ToLet' लिखा है। पड़ोसियों से पूछा—मगर सच्ची ख़बर कोई न दे पाया कि अचानक वह लोग कहाँ चले गये। मुझे अपने ऊपर बड़ा क्रोध आया कि पहले ही रोज क्यों न आकर घर पर देख गया था। रोज अपनी मूर्खता पर अपने को कोसा करता हूँ।"

प्रभा अपनी दास्तान सुना ही रहा था कि नीचे से किसी के पुकारने की आवाज आई—यह कहता हुआ "रुको भैया मैं अभी आया शायद राजन नीचे बुला रहा है," प्रभा धड़धड़ाता नीचे उतर गया।

* * *

तूफ़ान मेल अपनी तीव्र गति से चला जा रहा था। कानपुर के स्टेशन पर मुसाफ़िरों की भीड़ देखने लायक थी। मेल के आते ही लोगों की दौड़ शुरू हो गई। कितने ही मुसाफ़िर डिब्बों से निराश होकर लौट रहे थे। इतने ही में एक सज्जन इन्टर क्लास के डिब्बे में घुसे। जगह न थी। पास एक परिचित चेहरे को देखकर रुक गये। थोड़ा सिर खुजलाया।

"कमलाकर तुम यहाँ?" और तपाक से उनका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

कमलाकर ने पहले आश्चर्य से उधर देखा मगर शीघ्र ही उन्हें अपने स्कूल के साथी चन्दन की याद आ गई।

"चन्दन! चन्दन ही तो हो न तुम। भाई बड़े दिनों बाद मुलाक़ात हुई।"

"क्या तुम्हारे पास समान नहीं है—कहाँ तक जाना है।"

"दिल्ली जा रहा हूँ। सामान जनाने डिब्बे में रखवा दिया।"

"क्या भाभी साहबा भी साथ हैं?"

"हाँ तुम्हारी भाभी और बेटी चाँदनी भी साथ है?"

"अच्छा तो तुम्हारे लड़की है—और भी कोई सन्तान है?"

"हाँ बस, एक लड़की है—और तुम्हारे?"

"मेरे दो जुड़वा लड़के हैं।"

"कितने बड़े होंगे?"

"यही अब शादी लायक हो गये हैं। मैं तो बड़े की शादी के ही सिलसिले में दिल्ली जा रहा हूँ।"

"भई वाह, हम भी तो चाँदनी की शादी के लिए दिल्ली जा रहे हैं।" इतने ही में अन्दर कई आदमियों के घुस आने से शोर-गुल बढ़ गया। उन्हें अपनी बातें यहीं समाप्त कर देनी पड़ीं।

"चन्दन!"

"क्या भई।"

"मैंने एक बात सोची"

"कहो"

"मैं यह सोचता हूँ कि अपना वह सम्बन्ध जो बीच में टूट गया था उसको फिर से क़ायम कर लें। बचपन से साथ-साथ खेले—साथ ही साथ शादी हुई। मगर इस पेट ने हमारी मित्रता आगे न बढ़ने दी। दोनों पढ़ाई समाप्त करके अलग-अलग हो गये। अब फिर से क्यों न मित्रता का सूत्र बाँध लें?"

"मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा!"

"यही कि तुम अपनी लड़की की शादी मेरे बड़े लड़के दिवाकर से कर दो। और इस तरह से हमारा टूटा सम्बन्ध फिर से क़ायम हो जायेगा। तुमने अभी लड़केवाले से कुछ तय तो नहीं किया है?"

"नहीं तो तै-वै अभी कुछ नहीं हुआ है। मुझे ख़बर लगी थी कि एक लड़का है जो चाँदनी के लायक़ सब तरह से ठीक है। मुझे तुम्हारा यह सम्बन्ध मंजूर है।"

"तो चलो कानपुर लौट चलो।" आगे अलीगढ़ का स्टेशन आते ही दोनों चाँदनी और उसकी माँ-सहित उतर गये।

"यहाँ क्यों उतर गये? जाना तो दिल्ली है और उतर गये अलीगढ़ के स्टेशन पर।"

"दिल्ली जाने का इरादा बदल दिया है—

"भला क्यों?" उतावली से चाँदनी की माँ ने पूछा। और स्टेशन पर बड़े भैया आकर परेशान जो होंगे।

"अब तो कुछ भी हो। जिस काम के लिए हम दिल्ली जा रहे थे वह पूरा हो गया। यों ही भीड़ के कारण सफ़र करने की हिम्मत नहीं पड़ती अब बेकार जाकर क्या होगा। बड़े भैया को मैं अभी तार किये देता हूँ कि किसी कारण से हम नहीं आ सकते।" एक ही साँस में चन्दन कह गया।

"हाँ तो यह तो बताओ कि किस जरूरी काम से यहाँ उतर गये?"

"तुम कमलाकर को जानती हो न? वह मेरा बचपन का मित्र है। आज अचानक कानपुर स्टेशन पर ट्रेन पर चढ़ते समय मिल गया उसके भी शादी लायक़ लड़के हो गये हैं! वह अपनी जाति का भी है—मित्र के नाते हमें ज्यादा दहेज आदि का झंझट भी न करना पड़ेगा।"

"अच्छा तो वह है कहाँ?"

"यहीं पर मेरे साथ वह उतर गये हैं और रुको मैं उन्हें अभी बुला लाता हूँ।" कहता हुआ, चन्दन कमलाकर को बुलाने चला गया।"

* * *

आज दिवाकर की सुहागरात थी। मन ही मन उस मिलन-बेला का इन्तज़ार उतावली से कर रहा था। शादी इतनी आनन-फ़ानन हुई कि किसी को लड़की देखने का मौक़ा ही न मिल पाया। दिवाकर ने उस गोरे-गोरे हाथों को देखा जो बार-बार कपड़ों में से निकल कर कपड़ों में ही छिप जाते थे। उस मधुर बेला की याद आते ही दिल में गुदगुदी-सी उठने लगती थी।

प्रभा भी सुन्दर भाभी पाकर फूला नहीं समा रहा था। मगर समझ में नहीं आता था कि क्योंकर अपनी नई भाभी को देखे! सारे दिन औरतें उसको चारों ओर से घेरे बैठी रहीं।

दिवाकर अपने कमरे में बैठा किताब पढ़ रहा था। आज उसका कमरा ख़ास तौर से सजाया गया था। चारों ओर से गुलाब की ख़ुशबू आ रही थी। पूरा कमरा फूलों से सजा हुआ था। इतने ही में दिवाकर ने कपड़ों की सरसरासट सुनी। दरवाजे की तरफ़ मुँह करके देखा कि किसी ने कपड़ों से लिपटी एक मूर्ति को अन्दर कर बाहर से कुन्डी चढ़ा दी! दिवाकर किताब रख कर मूर्ति के पास जा खड़ा हुआ और हाथ पकड़ कर पलँग के पास लाकर उसे उस पर बैठाकर धीरे से उसका अवगुण्ठन हटा दिया। कमरे में मानो चाँद निकल आया।

"ओह चाँदनी तुम यहाँ?" और घबड़ा कर दो क़दम पीछे हट गया!

चाँदनी भी जल्दी के कारण जान न पाई थी कि उसकी शादी कहाँ तय हुई है। अपने सामने दिवाकर को पाकर उसे आश्चर्य के साथ बड़ी ख़ुशी भी हुई और वह उसे प्रभाकर ही समझी। उसका रोम-रोम अपने प्रियतम को पति के रूप में पाकर नाच उठा। मगर दिवाकर का इस तरह से घबड़ा जाना उसकी समझ में नहीं आया।

"तुम इतने घबड़ाये क्यों हो? क्या मेरी शादी तुम्हारे साथ नहीं हुई है? मेरे जन्म-जन्मान्तर के 'प्रियतम' आज तुम्हें पति के रूप में पाकर कितनी ख़ुश हूँ। मेरी जन्म-जन्म की साध पूरी हो गई। वह यह कहती हुई उठकर उसके चरणों को अपने कोमल हाथों से पकड़कर अपना माथा उस पर टेक दिया।

दिवाकर बेहोशी की हालत में था। चाँदनी के शीतल स्पर्श से चेतना जागी। "मगर-मगर" हुआ दिवाकर दूर जाकर खड़ा हो

"अगर मगर कुछ नहीं। क्या यह शादी पसन्द नहीं करते थे?"

"नहीं, नहीं, रुको मैं अभी आता हूँ" कहता हुआ दिवाकर कमरे से बाहर गया। चाँदनी दुख और आश्चर्य में हुई चुपचाप पलंग पर जा बैठी।

दिवाकर को परेशान अपने कमरे आते देखकर प्रभा ने पूछा—"क्या बात दिवा भाई भाभी को अकेली छोड़कर कैसे आये। इतने घबड़ाये क्यों हो।" कुर्सी पर हताश सा होकर धम से बैठ

"प्रभा मुझे नहीं मालूम था कि भाभी ही चाँदनी है।"

"भाभी" चाँदनी ही है, यह क्या रहे हो भैया—"चाँदनी यहाँ कहाँ आई—तुमने समझने में ग़लती नहीं की।"

"नहीं भाई मैं ठीक ही कह रहा विधाता ने हमारे साथ गहरा किया है। भाग्य ने तुम्हारी चाँदनी छीन मेरे हाथों में सौंपदी। तुम जाओ उसके वह बेचारी चुपचाप न जाने क्या सोच रही होगी। मैं उससे कुछ भी बता पाया। उसका दिल टूट जायेगा वह जानेगी कि प्रभा नहीं कोई और ही उसका पति बना है।"

"अब चारा ही क्या है" निराश होकर प्रभा यह कहते हुए चाँदनी के कमरे की ओर चल पड़ा!

प्रभा को फिर अपने पास आते देख वह अपना अपमान भूल गई और होठों पर हँसी बिखर गई। अपनी पूर्वपरिचित मुस्कराहट देखकर प्रभा की आँखें गीली हो आईं।

"तो क्या तुम इसी तरह मुझसे ही भागे रहोगे?"

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिये

पेट की शिकायतें
अपर्याप्त पेट के रस के कारण
उत्पन्न होती हैं:—
* अजीर्ण * अपच
* कठिन संग्रहणी * पाकाशय प्रदाह
* रक्त की कमी आदि *
व्यवहार कीजिये
बाई-ग्लिसरीन
एसिड-पेपसिन
BI-GLYCERINE-ACID-PEPSIN
निरोग होने पर निर्बलता में
प्रत्येक भोजन के पश्चात् बाई ग्लिसरीन एसिड पेपसिन एक खुराक लेने से पाचन में सहायता मिलती है।
स्वादिष्ट रूप में पेट के लिए साधारण रस पदार्थ
यदि आपको यह अपने कैमिस्ट के यहाँ प्राप्त न हो तो कृपया लिखें :—
बङ्गाल इम्युनिटी कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता

कारदार कृत 'कानून' फिल्म कैसा है?

मेहताब, जागीरदार और साहू मोदक का अभिनय

लेखक, श्री हरस्वरूप 'नीलम'

कारदार प्रोडक्टन द्वारा
कारदार द्वारा निर्देशित
में है जिसमें चेष्टा की जाने
नहीं प्राप्त होती है।
सामाजिक भावनाओं की
है।

कालेज का छात्र अशोक
उषा एक-दूसरे से प्रेम
वे दोनों ही समाज-
से परिपूर्ण हैं। श्वेत-
युवतियों से विवाह करते
कुछ ही समय में छोड़कर
करते हैं, उनका सम्पूर्ण
कर देते हैं और यह सब
होता है। यह सोच
समाज के इस कर्म के
ते हैं और वे समाज के
विरोध में एक नाटक का
चाहते हैं। उधर अशोक के
के हृदय पर आघात करके

में अभिनय करनेवाली प्रसिद्ध अभिनेत्री मेहताब।

एक लड़की से विवाह करते
कालेज का छात्र है। उसके
हैं और उनके मुनीम की
की ओर आकृष्ट होती है किन्तु
की ओर आकृष्ट है और
चञ्चल है। कभी वह
आकृष्ट हो जाता है कभी
हंसा की ओर—किन्तु वह
ता है कि वह पुष्पा से
गा।

पिता, जो कि एक मनचले
में विवाह करने के
अपने लड़के से उषा का
देकर स्वयं विवाह
तैयार होते हैं। रमेश
है किन्तु असफल रहता
हंसा से विवाह करने के
है। एक दिन घटनावश
मृत्यु हो जाती है और
जाती है। इससे अशोक
है। यहीं कथानक
बद्ध नहीं है। एक

प्रकार से अधूरा ही है। कथानक के लेखक हैं जनाब 'क़ाबिल' साहब लेकिन, बड़े दुःख के साथ कहना पड़ता है कि उनकी कहानी में काबिलियत नहीं दिखाई पड़ी।

इस फिल्म में मेहताब, उल्लास, जागीरदार, साहू मोदक, निर्मला इत्यादि ने अभिनय किया है। अशोक के रूप में उल्लास का अभिनय उनके पूर्व चलचित्रों से गिर गया है। उषा के रूप में मेहताब का अभिनय साधारण है। हंसा के रूप में निर्मला का अभिनय उतना खराब नहीं जितना की रमेश के रूप में साहू मोदक ने किया है। जागीरदार ने रमेश के पिता के रूप में सफल अभिनय किया है।

संवाद साधारण है। गायन के गायन भी साधारण हैं। [illegible] गानों [illegible] का बाहुल्य है। ध्वनि, आलेखन और चित्रा-लेखन का कार्य सफल हुआ है।

चलचित्र की भाषा के सम्बन्ध में यही कहा जा सकता है कि वह हिन्दुस्तानी भी न होकर उर्दू है। हिन्दू-समाज से सम्बन्ध रखनेवाले इस चलचित्र में इस प्रकार उर्दू शब्दों के प्रयोग हों यह उचित नहीं जान पड़ता। जो कि उदाहरण के लिए पत्र में 'प्रिय पुत्र' न लिखकर हिन्दू पिता अपने पुत्र को 'बरखुरदार राहतजान नूरचश्म' ऐसे भयावने शब्दों का प्रयोग करता है। भाषा की दृष्टि से यह चलचित्र हिन्दी भाषा-भाषी जनता के साथ पूर्णतया अन्याय करता है।

यह कहने में संकोच नहीं किया जा सकता कि निर्देशक ने जिस उद्देश्य को लेकर—समाज-सुधार—यह चलचित्र निर्मित किया है वह उद्देश्य उपेक्षा के योग्य नहीं है फिर भी कारदार ने अपने पूर्व चित्रों की भाँति ही इस चलचित्र 'कानून' में भी हिन्दू-समाज को विकृत रूप में दिखाया है। यदि मैं यह कहूँ कि उन्होंने गुण्डों की एक नई दुनिया बनाकर उसे हिन्दू समाज का रूप दिया है तो अन्याय न होगा। यह पहला समय नहीं है जब कि कारदार ने हिन्दू-समाज पर आघात किया है बल्कि 'शारदा' 'नमस्ते' इत्यादि अन्य चलचित्रों में भी उन्होंने हिन्दू-समाज को निम्नकोटि में प्रस्तुत किया है। कारदार के इस मनोवृत्ति के विरुद्ध अनेक प्रसिद्ध फिल्म-पत्रकार लिख चुके हैं किन्तु उन्होंने अब तक अपने चित्रों में कुछ भी परिवर्तन नहीं किया है। यह साम्प्रदायिकता की भावना कुछ निर्देशकों के हृदय में भरी है और वे किसी न किसी रूप में उसका प्रयोग कर ही लेते हैं। निर्देशक कारदार के लिए यही उचित है कि वे हिन्दू-समाज का इतना विकृत चित्रण करके जनता में निम्नकोटि के भावों का प्रचार न करें तो देश और समाज का अधिक कल्याण हो।

फ़िल्मी-गाने!

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना चाहें तो "फिल्म सङ्गीत" मँगाइये। अब तक ६ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक भाग में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वरलिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभाग ३) डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)।

पता—संगीत कार्यालय, हाथरस यू० पी०

नीम का तेल
चर्म स्वास्थ्य और सौन्दर्य के लिये

बीस वर्षोंसे देश वासियों को स्वच्छ एवं नीरोग रखने में गोदरेज की सेवायें स्मरणीय हैं। केवल शुद्ध वनस्पतियों से साबुन निर्माण का आरम्भ इस देश में गोदरेज ने ही किया। लोगों की भिन्न भिन्न रुचियों को सन्तुष्ट करने वाले तरह तरह के उत्तम साबुनों के द्वारा गोदरेज का नाम सारे हिन्दुस्तान में विख्यात हो गया है। संस्कृति आरम्भ कालसे प्रशंसा प्राप्त प्रकृति की अदभुत देन नीम के आरोग्यवर्धक गुणोंको जो जानते हैं उन्हे गोदरेज 'लिमडा' साबुन भेट करते हैं। नीमके ठण्डक पहुंचाने वाले, शान्तिदायक, जन्तुनाशक एवं चर्मरोग नाशक गुण इस नीमके तेलसे बने 'लिमडा' साबुन में पुर्ण रुपसे विद्यमान हैं। गोदरेज अन्य दूसरे नहानेके साबुन को विख्यात वैज्ञानिकों और चर्मरोग विशेषज्ञोंने जिस लिये मुक्त कण्ठसे सराहना की है इस 'लिमडा' को भी उन गुणोंसे आप पुर्ण पायेंगे। 'लिमडा' साबुन के घने एवं कोमल फेनसे अपने शरीर को स्वच्छ रखिये और भारतीय चर्म की पुश्तैनी आरोग्यता और सुन्दरता को कायम रखिये।

Godrej Limda
NEEM
गोदरेज चावी छाप नीम लिमडा टायलेट साबुन

गोदरेज
टायलेट साबुन
नं० १ । नं० २
'वतनी' । सन्दल
लिमडा (नीम) । फैमिली
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'
१०० प्रतिशत शुद्ध और पशु चर्बी रहित होने की गॅारन्टी।

गोदरेज सोप्स लि० — बम्बई ११

गोदरेज के चावी छाप नहाने के साबुनों के प्रति टिकिया उचित दाम

नं० १	॥–)	सण्डल	।–)॥	टर्किश बाथ	≡)
नं० २	।=)॥	लिमडा	।–)॥	शेविंग स्टिक (तीन)	॥–)॥
'वतनी'	।)॥	खस	।–)॥	शेविंग स्टिक (रीफिल)	।≡)॥
'वतनी' (छोटी टिकिया)	–)।	फैमिली	=)॥	शेविंग 'राउण्ड'	।)॥

जिन शहरों में कस्टम, चुङ्गी या टरमिनल टैक्स देना पड़ता है वहाँ कुछ अधिक दाम देना पड़ेगा।

संपादक के नाम चिट्ठियां

राजस्थान हि० सा० सम्मेलन

गत १९४० ई० में राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का प्रथमाधिवेशन और स्थापन उदयपुर में हुआ था। प्रान्त के साहित्यिक इतिहास में हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर का वह प्रयास उल्लेखनीय रहेगा। उसी हिन्दी विद्यापीठ ने जयपुर के वाद उदयपुर में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन को निमंत्रित किया। प्रान्त के कुछ पत्रों में इस प्रकार के विचार प्रकट किये गये हैं कि सम्मेलन का उदयपुर अधिवेशन क्या उदयपुर को राजस्थान से अलग मानकर किया जा रहा है? राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को चला न सकने की असफलता की झेंप मिटाने के लिए मेवाड़ के साहित्यकार अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ अधिवेशन कर रहे हैं। निस्सन्देह उक्त विचार न केवल भ्रामक हैं वरन् मेवाड़ के लिए अपमानजनक भी है। हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर ने ही आज पाँच वर्षों से घर-घर भीख माँग कर राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को चलाया है। दुर्भाग्य से मेरे कई बार प्रयत्न करने पर और अजमेर के विशेषाधिवेशन में एकत्र प्रतिनिधियों से मुक्ति चाहने पर भी मुझे इसके प्रधान मंत्री पद से अलग न होने दिया गया। हिन्दी विद्यापीठ के व्यापक रचनात्मक कार्य के साथ-साथ राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का काम भी मुझे करना ही पड़ता है। अवसरवादियों और गुटबाजों के हाथों में इसे मैं कदापि जाने नहीं दे सकता। राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन राजस्थान का प्रथम प्रान्तव्यापी साहित्यिक-सांस्कृतिक आन्दोलन है, जो हमारे सद्भाव, एकत्र और संकल्प के क्रमशः उद्भव के साथ साथ आगे बढ़ रहा है।

उदयपुर राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का केन्द्र होने और राजस्थान सम्मेलन के पदाधिकारियों के अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन की कार्य-समिति के सामान्य पदाधिकारी होने के नाते सहज ही समस्त राजस्थान की साहित्यिक चेतना और भावना का प्रतीक हो जाता है। मुनि जी जिन विजय जी ३३वें उदयपुर-अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष हैं, पंडित लक्ष्मीलाल जी जोशी कार्यवाहक अध्यक्ष हैं। राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभी कार्यकर्ता इसके कार्यकर्ता हैं। हिन्दी विद्यापीठ ने कभी भी अपने को राजस्थान से अलग नहीं माना, वरन् उसने सदा ही अपनी संस्थाओं तथा प्रवृत्तियों में समस्त राजस्थान की भावनाओं का ध्यान रक्खा है। हमारा सदा ही यह प्रयत्न रहा है कि समस्त राजस्थान उठे—साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से यह गौरवशाली प्रान्त एक बार सजीव हो उठे। यही कारण था दुबारा अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन को उदयपुर में निमंत्रित करने का।

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें उदयपुर-अधिवेशन को समस्त राजस्थान की भावना और चेतना की पृष्ठभूमि देने के लिए क्या किया जाय? क्या यह अब भी—जयपुर के बाद भी—कहना होगा कि उदयपुर अधिवेशन गंभीरता के वातावरण में बुलाया गया है? उदयपुर-अधिवेशन का उद्देश्य अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन में नई चेतना भरना, उसे नया मार्ग-दिशा दिखाना है। यह कार्य केवल बातों या वक्तव्यों से न होगा। यह महत्त्वपूर्ण कार्य तभी सम्पन्न होगा, जब हम निम्न कार्य-क्रम को पूर्ण करने में लग जायें—

(१) राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के काफ़ी सदस्य बनाये जायें। राजस्थान का प्रत्येक साहित्यकार और हिन्दी-प्रेमी अपने इस एक-मात्र प्रान्तीय संगठन का सदस्य बन जाय।

(२) राजस्थान में जगह-जगह हिन्दी कार्य के लिए संस्थायें स्थापित की जायें और उनको अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से संबन्धित करवा लिया जाय।

(३) कचहरियों में हिन्दी भाषा के प्रवेश तथा प्रचार के लिए आन्दोलन-समितियाँ संगठित की जायें।

(४) राजस्थान भर की प्रतिष्ठित हिन्दी संस्थायें अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उदयपुर-अधिवेशन के लिए पूरी तैयारी करें।

(५) सम्मेलन के उदयपुर-अधिवेशन के लिए ऐसे प्रतिनिधि भेजें जायें, जो राजस्थान की हिन्दी समस्याओं के साथ सम्मेलन की समस्याओं पर स्पष्ट विचार रखते हों और जो सहृदयता तथा सचाई के साथ सम्मेलन की सेवा के लिए श्रम करनेवाले हों।

यह पंचमुखी कार्यक्रम यदि हमने आनेवाले तीन महीनों में पूरा कर लिया, तो निस्संदेह हम उदयपुर के ऐतिहासिक आँगन में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को नई चेतना तथा नया मार्ग दिखा दे सकेंगे। उदयपुर-अधिवेशन को इसी लिए हमें समस्त राजस्थान का एक और दूसरा अधिवेशन मानना चाहिए।

उदयपुर —जनार्दनराय नागर,
३० जून, ४५ स्वागत मंत्री

* * *

राष्ट्रभाषा का एक मूक सेवी

पंजाब जैसे उर्दू के गढ़ प्रान्त में ऐसे व्यक्ति भी हैं जो खामोशी से राष्ट्र-भाषा की वर्षों से सेवा करते आ रहें हैं और हिन्दी जगत उन्हें जानता तक नहीं। कौन नहीं जानता कि १९वीं शताब्दी में ऋषि दयानन्द ने हिन्दी भाषा की अमूल्य सेवा की और उनके बाद से यह सेवा आर्य-समाज के शिक्षणालयों और आर्य-पत्रों ने गत ७२ वर्षों से जारी रखी है।

आर्यसमाज का प्रचार अधिकतर पंजाब में ही है और इसी लिए पंजाब से कई आर्य समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे हैं और उनमें से भी एकआध को छोड़कर शेष सभी फ़ारसी लिपि में छपते हैं। दो पत्र तो गत ४०-४५ वर्षों से—उस समय से जब कि दैनिक पत्रों का सर्वथा अभाव था—जहाँ आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार करते आ रहे हैं वहाँ राष्ट्र-भाषा हिन्दी की भी सेवा कर रहे हैं। सभी जानते हैं कि इन आर्य पत्रों ने विशेषतः 'प्रकाश' ने अपने ४० वर्षीय जीवन में हजारों उर्दू भाषी पाठकों को हिन्दी सिखाई है। केवल यही नहीं अपितु उसके यवन पाठकों ने भी हिन्दी शब्दों को अपनाया है। यही कारण है कि जब साप्ताहिक 'प्रकाश' दिल्ली ने अपने ४१वें वर्ष के आरम्भ में उसकी लिपि को फ़ारसी से नागरी में बदलने की घोषणा की तो कुछ हिन्दी हितैषियों की ओर से इसका घोर विरोध किया गया। 'प्रकाश' के संचालन का लिपि बदलने सम्बन्धी यह निश्चय हिन्दी को राष्ट्र-भाषा का पद दिलाने के लिए हो रहे आन्दोलन से प्रभावित कुछ हिन्दी प्रेमियों की माँग का परिणाम था। परन्तु लिपि बदले जाने का विरोध करनेवालों का कहना था कि नागरी लिपि में छपकर 'प्रकाश' हिन्दी के प्रचार में सहायक न होगा क्योंकि उसको पहले से ही हिन्दी पढ़े पढ़ सकेंगे और उर्दू भाषियों को हिन्दी शब्दों से परचित कराने का स्तुत्य कार्य बन्द हो जायगा इस पर श्री हितैषी अलावलपुरी संचालक (प्रकाश) ने नागरी लिपि के प्रचारार्थ एक स्तम्भ नागरी लिपि सिखाने के लिए 'प्रकाश' में खोल दिया। अब तक उसके हजारों उर्दू पाठक हिन्दी के साथ नागरी लिपि भी सीख गये हैं। हिन्दी के लिए बढ़ रहे उग्र आन्दोलन के सम्मुख निश्चय किया गया है कि १ जनवरी ४६ से 'प्रकाश' का हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित किया जाय। यद्यपि 'प्रकाश' तथा उसके अन्य सहयोगी आर्य पत्र फ़ारसी लिपि में छपते हैं तथापि उनकी भाषा निरन्तर संस्कृतनिष्ठ हिन्दी है। केवल यही नहीं 'प्रकाश' सम्पादक श्री हितैषी जी ने तो हिन्दी-साहित्य की भी अमूल्य सेवाएँ की हैं।

उनकी कुछ रचनायें हैं:—गीता-गान—गीता का श्लोकबार एक-एक दोहे में सम्पूर्ण अनुवाद। उपनिषद्-गान—पाँच उपनिषदों का पद्यमय अनुवाद। ऋषि-गान—ऋषि दयानन्द की सम्पूर्ण जीवनी पद्य में। हितैषी-रामायण—वाल्मीकि रामायण का पद्यमय सार। सन्ध्या-गान—जो वैदिक सन्ध्या के मंत्रों का मद्यपद्य अनुवाद है। यह सब रचनाएँ जहाँ उर्दू लिपि में छपकर हिन्दी-भाषा के प्रचार का साधन बन गई हैं वहाँ इन्हें नागरी लिपि में छपवाकर योग्य लेखक ने हिन्दी-साहित्य में भी अमूल्य वृद्धि की है। उनकी नवीन रचना का नाम 'हितैषी के गीत' है जो उनके भक्ति-विभोर गीतों का संग्रह है। इस कृति के सम्बन्ध में पंजाब के सभी पत्रों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। प्रसिद्ध कवि श्री उदयशंकर भट्ट ने अपनी सम्मति देते हुए कहा है—हितैषी के गीत नामक पुस्तिका देखी। मैं संगीत के सम्बन्ध में बहुत कुछ नहीं जानता फिर भी इतना कह सकता हूँ कि पुस्तिका में श्री हितैषी जी ने उपयोगिता को ध्यान में रखकर उसका निर्माण किया है। संगीत की प्रक्रिया के सम्बन्ध में गीत सुन्दर ढंग से दिये गये हैं। पुस्तिका संगीत प्रेमियों और नवसिखों के लिए उपयोगी होगी—ऐसा मेरा विश्वास है।"

हिन्दी-साहित्य इस मूक सेवी से बड़ी आशाएँ कर सकता है और यदि वह कोई नई रचना हिन्दी साहित्य को न भी दे पाये तो भी उसने इस समय तक अपने २९ वर्षीय जीवन में हिन्दी-साहित्य को जो
कुछ दिया है और राष्ट्र-भाषा के लि
कुछ किया है उसे भुलाया नहीं जा
शिमला
१ जुलाई, ४५
(हिन्दी-

* *

हिन्दी-लिपि-सुधार

काशी नागरी-प्रचारिणी
प्रबन्ध-समिति ने अपने २४ चैत्र
के अधिवेशन में एक उपसमिति इस
की है कि वह यह विचार करे कि
युग में नागरी लिपि में सुधार तथा
आवश्यक हैं या नहीं, विद्वानों-द्वारा
सुधारों और संस्कारों की ग्राह्यता के
में उक्त प्रबन्ध समिति के समक्ष
सम्मति उपस्थित करे। इस उपसमिति
एक अधिवेशन २४ और २५
हुआ और यह मंतव्य स्थिर किया
नागरी लिपि में सुधार और संस्
अब तक जितने प्रयत्न किये गये हैं
सबका एकत्र संग्रह करके उपयुक्त
के साथ विद्वानों की सम्मति के
प्रकाशित किया जाय। अतएव जिन
ने इस विषय में प्रयत्न किया है उन
सज्जनों से मेरा आग्रह है कि अपने
का पूरा विवरण मेरे पास शीघ्र,
१५ दिन के भीतर, भेज देने की कृपा
आशा है हमें इस कार्य में लिपि वि
का सहयोग सुलभ होगा।

काशी, —कृष्णानन्द, संयोजक
५ जुलाई, ४५

* *

श्रीनिवास दास पुरस्कार

ब्रज साहित्य मंडल की ओर से
का "श्रीनिवास दास पुरस्कार"
लेखकों को ब्रजभाषा साहित्य की
मौलिक कृति पर इस वर्ष दिया
पुरस्कार के लिए प्राप्त रचनाएं
अधिक प्राचीन नहीं होनी चाहिए।
रचना की ६ प्रतियाँ कार्यालय में
जन्माष्टमी तक आ जानी चाहिए।
विवरण के लिए निम्न पते पर पत्र
करें—

मथुरा, —गोपाल
६ जुलाई, ४५

मुफ़्त
एक पोस्टकार्ड भेजकर
कलेण्डर १९४५ तथा फाउन्टेन
मँगाइये।
यूनाइटेड कारपोरेशन, हल्का नं०
अमृतसर

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर सं
पूजा-गीत
क्यों पढ़ना चाहिए?
हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—
'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दि
कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं।
परिपाक खूब हुआ: सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि
ने कला की उच्छृङ्खल एवं वकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"
द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।
—राष्ट्रभाषा-समाचार
अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है
मूल्य २) दो रुपए।
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हास परिहास

भंग की तरंग

...ा सम्मेलन के सम्बन्ध में ...णियाँ सुनाई दे रही हैं। ...रत के बड़े-बड़े ज्योतिषी कहाँ ...विष्यवाणी किया करते थे? ...हुए बताते?

*

...ोतिषी ने बताया है कि मौलाना ... इस समय इतना ऊँचा है ...गिरे तो वह कीड़ा हो जायगा। ...आसन का उन्होंने नहीं बताया ...ऊपर कीड़ा भी गिरे तो पहाड़

*

...शिमला सम्मेलन हो रहा है ...में चुनाव हो रहा है। ...परिणाम अनिश्चित है। इधर ...चर्चिल हैं। किसी विशेष ...ऐसी घटनाएँ घटी हैं। बस, ...करें तो बेड़ा पार हो।

...कांग-काई-शेक अब चीन न ...। इस घोर वियोग की ...मारशल में सहानुभूति है। ...के बाद जब चीन भी ...मैडम बिना मारशल का ...ाम लोगा?

*

...ों को चिन्ता है कि यदि ...शासन-परिषद् में शामिल ...का नेतृत्व कौन करेगा? ...करने के लिए बहुत उत्सुक ...अवसर मिल जायगा। जरा ...ान दीजिये?

*

...के एक पत्र के सम्पादक ...भी शिमला में तार ...में कांग्रेसियों ने हड़ताल ...स्वतंत्र जाँच हो, नहीं तो ...करेगा। यदि कांग्रेस का ...कराना है तो उसमें जाँच ...ता है? हाँ, आप अनशन ...कती है।

*

...माफी माँगने के लिए ...में गोली चलाने की ...में कुछ तो रंग आना ...आजकल रंग से सस्ता भारतीयों का रक्त है ... गया काफी है।

* * *

कहा जाता है कि जापान के सम्राट् की हत्या का प्रयत्न किया गया। जान पड़ता है हत्या करनेवाले गहरे देशभक्त थे। उन्होंने सोचा कि अमरीकी बम से मरने के बजाय देशवासियों के हाथों मरना अधिक अच्छा है।

* * *

एक बहुत बड़े विद्वान् ने लार्ड वैवेल के पास तार दिया है कि महात्मा गांधी और जिन्ना जेल की एक कोठरी में बंद कर दिये जायँ और तब तक बंद रहें जब तक वैवेल प्रस्ताव पर समझौता न हो जाय। इसके साथ यह भी होना चाहिए कि उन्हें भोजन भी न दिया जाय। महात्मा जी तो उपवास के अभ्यस्त हैं। हाँ, जिन्ना साहब एक ही दिन में राह पर आ जायँगे।

* * *

कलकत्ते के एक दूकानदार ने २३४ नकली राशन कार्ड पर ६ महीने तक गल्ला लिया। दूकानदार पुलिस विभाग का पुराना कर्मचारी तो नहीं था? ऐसी चतुराई साधारण लोगों को नहीं आ सकती।

* * *

बंबई कारपोरेशन के सदस्य ने कहा है कि राष्ट्रीय सरकार होने पर घुड़दौड़ बंद हो जायगी। उस समय बैलगाड़ी की दौड़ शुरू करानी चाहिए। स्वदेशी भी है और प्राचीन भी।

* * *

प्रयाग के हलवाइयों ने मौलाना आजाद तथा लार्ड वैवेल को तार दिया है कि शासन-परिषद् में हमारा प्रतिनिधित्व भी आवश्यक है। हम लोग लाखों की संख्या में हैं। हमारी राय में शासन-परिषद् में एक हलवाई एक नाई, एक धोबी, एक चमार, एक दर्जी, एक क़ब्र खोदनेवाले और एक डोम की बहुत आवश्यकता है। इन्हीं से जीवन भर काम चलता है। राष्ट्र के लिए सबसे उपयोगी यही हैं। और सब घेलुए में।

* * *

ब्रिटेन के चुनाव में इस साल गधों का भी उपभोग किया गया है। जरूर, यह तो अच्छा ही हुआ। चुनाव का नतीजा निकलने पर पता चलेगा।

—[illegible] शर्मा

उन्होंने न माना

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

...नाया बहुत पर उन्होंने न माना।
कहा—आज भाई बुलाने पधारे
बड़ा काम है आज घर पर हमारे
पिता जी नया मोल घर ले रहे हैं
लिखा है कि आ और तू देख जा रे
...ी के लिए हो गईं वह रवाना।
सवेरे कहाँ चाय, जलपान कैसा
न कत्था सुपारी, भला पान कैसा
पता कुछ नहीं दाल-चावल कहाँ है
धरा है कहाँ कौन सामान कैसा
...मुझी को पड़ा आज भोजन बनाना।
जला हाथ, हलवा हुआ भात सारा
हुई आज भाजी नमक का पिटारा
बनी दाल ऐसी अजब आज 'बेढब'
धँसा लाज से है समुंदर बेचारा
...हीं रोटियाँ, कोयला है चबाना।

स्वास्थ्य और व्यायाम

आम की उपयोगिता

स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

आम ऋतु का बड़ा स्वादिष्ट, पौष्टिक तथा रक्तवर्द्धक फल है। भारतवर्ष में आम अधिकता से पैदा होता है। इस फल को कई प्रकार से काम में लाया जाता है।

आम पाक—बहुधा वैद्य लोग आम का पाक बनवाकर रोगियों को सेवन कराते हैं। यह बड़ी पौष्टिक वस्तु समझी जाती है।

अमचूर—कच्चे आम को काटकर सुखा दिया जाता है सूखने पर वह अमचूर कहलाता है इसका अत्यधिक प्रयोग आँत, पेट एवं रक्त को ख़राब करता है। वीर्य के लिए अमचूर अथवा अन्य खटाई भयंकर शत्रु है। अतएव अमचूर यदाकदा ही खाना चाहिए।

आमरस या आमसत—आम के ताज़ा रस को आमरस तथा जमे हुए को आमसत कहते हैं। ये दोनों बड़े गुणकारी तथा स्वादिष्ट होते हैं। यह आमसत अत्यधिक उष्णोत्पादक होता है। अकसर आमरस रोटी के साथ खाया जाता है। यह उचित नहीं है। रोटी अथवा अन्य किसी स्टार्च (श्वेतसार) के साथ आमरस का खाना पाचन में बाधा डालता और हानि करता है। अतएव आम या उसके रस को अकेला ही खाना उचित है।

आम की चाय—छः माशा छाया में सूखी हुई आम की पत्तियाँ लेकर उन्हें चार छटाँक जल में उबाल लिया जाय। जब आधा जल रह जाय, तब उसे छानकर जरा-सी देशी शक्कर मिलाकर उसे पी लिया जाय। यह चाय रात्रि को सोते समय पी जाय तो अच्छा है। इससे जुकाम, गले का भारीपन, पेट की ख़राबी, प्रमेह, प्रदर, बवासीर, क़ब्ज़ प्रभृति रोग दूर होते हैं।

केरी की छाछ—कच्चे आम को उबालकर या सेंककर नरम बना लिया जाता है। फिर उसका रस निकालकर पानी के साथ नमक और सिका जीरा मिलाकर पिया जाता है। नमक के स्थान पर गुड़नुमा शक्कर भी मिलाई जा सकती है। उबले आम का रस लू, धूप वग़ैरह के लिए बहुत मुफ़ीद चीज है।

हमारा भ्रम—लोगों का ख्याल है कि अधिक आम खाने से शरीर में अत्यधिक गर्मी उत्पन्न होकर फोड़े-फुन्सी निकल आते हैं और इस गर्मी को शान्त करने के लिए आम के साथ दूध अवश्य पीना चाहिए पर यह बात ग़लत है। दूध के साथ आम लेना ठीक नहीं वह पेट में जाकर गड़बड़ करता है। आम को विधिपूर्वक भोजन का प्रधान अंग समझकर खाने से उसके दुर्गुण स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं। दो बार भरपेट अन्न खाकर फिर स्वाद के लिए आम खाना हानि नहीं करता है। आम को खाने से पूर्व थोड़ी देर जल में डाल देने से उसकी गर्मी निकल जाती है। कलमी आम की अपेक्षा चूसने का आम अधिक गुणकारी होता है। आम का रस तथा गूदा खाते समय यदि उसका छिलका भी खा लिया जाय तो बहुत अच्छा है।

बालकोपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	।।।-)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	।।।-)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा प्रति भाग	१।।।-)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	।।)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश की मनोरंजक और उपदेश-पूर्ण कथाओं का सारांश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएँ	।।।-)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेश-पूर्ण सूक्तियों का संग्रह	।।)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

संवाददाताओं के पत्र

प्राकृतिक चिकित्सा-सम्मेलन

अखिल भारतीय प्राकृतिक चिकित्सा सम्मेलन का ७वाँ अधिवेशन माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास जी टंडन की अध्यक्षता में विगत ३१ मई, १ और २ जून को पुडूकोटा स्टेट में होनेवाला था। सब तैयारियां हो चुकी थीं। अतिथिगण पहुँचने भी लगे थे पर रियासत के विदेशी मंत्री ने सभा-सोसाइटियों पर आम प्रतिबन्ध लगाकर सम्मेलन के अधिवेशन की अनुमति नहीं दी। स्वागताध्यक्ष के युक्तियुक्त तर्कों एवं अनुनय-विनय द्वारा प्रधान मंत्री से अनुमति प्राप्त करने की बड़ी चेष्टा की पर सब व्यर्थ रहा। अंत में निराश होकर त्रिचनापली में केवल एक दिन के लिए प्रारम्भिक अधिवेशन हुआ।

खेद है कि माननीय टंडन जी अस्वस्थ हो जाने के कारण वहाँ न पहुँच सके। अब निश्चय किया गया है कि विशेष अधिवेशन टंडन जी की ही अध्यक्षता में मद्रास में अथवा अनुमति मिल जाने पर पुडूकोटा में ही आगामी दशहरे की छुट्टियों में किया जाय।

त्रिचनापली का प्रारम्भिक अधिवेशन पटना हाईकोर्ट के जस्टिस श्री भोमेश्वर प्रसाद सिनहा के सभापतित्व में हुआ। आपने अधिवेशन न होने देने के लिए राज्य की नीति के प्रति भारी खेद प्रगट करते हुए डाक्टर के० लक्ष्मण शर्मा की प्राकृतिक चिकित्सा-क्षेत्र में की गई सेवाओं का उल्लेख किया। तदुपरान्त बाहर से आये हुए तार, पत्र आदि पढ़े गये। कुछ लोगों के छोटे-छोटे भाषण हुए। अन्त में डाक्टर शर्मा ने सारगर्भित प्रभावोत्पादक भाषण किया।

आपने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली पूर्ण वैज्ञानिक आदि काल से चली आनेवाली एवं स्वतन्त्र है। अन्य पद्धतियों से निराश होकर भी हजारों व्यक्तियों ने इससे लाभ उठाया है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि इसे जीता जागता रक्खे और आजकल की कृत्रिमता में इसे न भूले। सरकार को भी प्राकृतिक चिकित्सा-प्रणाली की सत्ता स्वीकार करके इसके अनुयायियों को पूर्ण स्वतंत्रता देनी चाहिए। टीका अथवा अन्य इन्जेक्शनों को जनता के लिए अनिवार्य बनाना प्रजा के मौलिक एवं प्रधान अधिकारों को छीनना है। एलोपेथी के हानिकारक फल देखते हुए भी उसे अनावश्यक प्रोत्साहन दिया जा रहा है। दुर्भाग्यवश हमारे नेता भी उसी नौका में बहे जा रहे हैं। वे नहीं जानते कि जनता के स्वास्थ्य सम्बन्धी अधिकार भी हैं और उनकी रक्षा होनी चाहिए। मैंने सप्रू कमेटी के पास भी एक मेमोरेंडम भेजा था। वैसा ही मेमोरेंडम सेठ लक्ष्मीनारायण गाड़ोदिया तथा प्राकृतिक चिकित्सा समिति, अजमेर की ओर से भी भेजा गया था पर आज तक उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया। अतएव मैं अनुरोध करता हूँ कि देश के भावी राजनैतिक विधान में प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों को संयुक्त कराने की व्यवस्था का घोर प्रयत्न किया जाना चाहिए।

—संवाददाता

*   *   *

इंदौर के श्रीमंत होल्कर सरकार ने हाल ही में श्री शांतिलाल जीतमल छाजेड़ बी० एस० सी० (ऐंजी) को 'हायर टेकनिकल" शिक्षा के लिए भारत सरकार की योजनानुसार विदेश भेजना तय किया है। श्री छाजेड़ "मेसाचुसेट्स इन्स्टीट्यूट" (अमेरिका) में शिक्षा ग्रहण करेंगे।

श्री छाजेड़ का विद्यार्थी जीवन बहुत ही सफल रहा है। आपने सन् १९४४ में बनारस विश्वविद्यालय से बी० एस० सी० इलेक्ट्रिक और मेकेनिकल इन्जीनि
परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की।
१९४० में अजमेर बोर्ड की "इन्टर
की परीक्षा में वे होल्कर कालेज,
से सर्वप्रथम रहे जिसके लिए उन्हें
पदक प्रदान किया गया था।
भी वे तिलोकचन्द जैन हाईस्कूल,
से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे।
सेठ नयमल गंभीरमल फ़र्म के
स्वर्गीय सेठ बालचन्दजी साहब
हैं।

—संवाद

धोबी ने फिर नुकसान किया!

—और प्रत्येक वस्तु इतनी महंगी

जी हां, यदि आपने धोबी को इसी तरह कपड़े फाड़ने दिये तो वह आपको बरबाद कर डालेगा। जरा सोचिये कि जो कपड़े उसने फाड़े हैं उनको खरीदने के लिये इस महंगी के समय में आपको कितना खर्च आयेगा। अब आपको चाहिये कि धोबी जिस नाशकारक विधि से कपड़े धोता है उस से अपना नुकसान न होने दें, वह रीति केवल नाशकारक ही नहीं अनावश्यक भी है। वस्त्र और दूसरे घेरलू कपड़े सनलाइट के "साबुन-और-बचत" के साधन द्वारा, हानि का जरा भी भय न होते हुए बड़ी सुन्दर रीति से धोये जा सकते हैं। यह ऐसा उत्तम साधन है जिसमें न तो कपड़ों को पटकने की जरूरत है न
रगड़ने की। सनलाइट की स्वयंक्रियाशील झाग मैले कपड़ों
काट डालती है और उन्हें धोबी के धोये हुए कपड़ों से अधिक
और सफ़ेद बनाती है और फिर कपड़े का एक भी धागा नष्ट नहीं
पाता। अपने नौकर को निम्न लिखित रीति सिखाइये और
घर ही में सनलाइट से कपड़े धो कर उन्हें फटने से और पैसे को
होने से बचाइये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सिखाइये

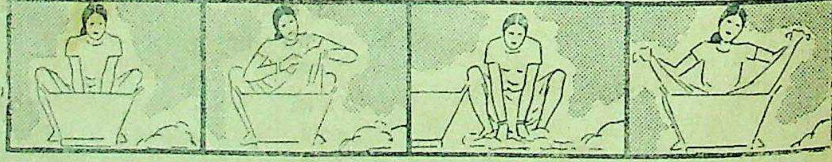

१. कपड़ों को अच्छी तरह भिगो लीजिये, इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २. सनलाइट पूरे कपड़े पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३. कपड़ों को धीरे धीरे रगड़िये, पटकिये नहीं, सनलाइट की स्वयं क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड़ रखेगी। ४. कपड़े को इस तरह खंगालिये कि झाग का नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन लगाइये।

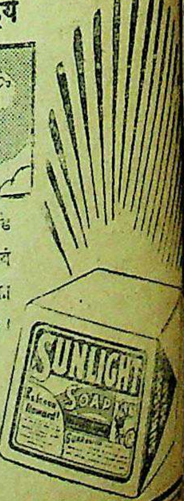

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

S. 70-300

LEVER BROTHERS

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ९ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारावाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

रोमांचकारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

(७)

को नौकर ने खबर दी कि लड़के को लेकर भैरव या गया है। और वहीं उसने नौकरी कर ली है। ने कहा—तनिक उसके मालिक और नौकरी आदि दो तो हम और बख्शीस देंगी।

८ बजे होंगे। राजकुमारी की माँ अपने भाग्य पर थी। लक्ष्मी ब्लाउज सी रही थी। इतने में राजकुमारी कहा—दीदी! वह आये नहीं?

राजकुमारी ने सिर लचा लिया। लक्ष्मी ने कहा—

मारी ने सिर हिलाकर 'हाँ' कह दिया।

गया था, किन्तु उसकी ड्यूटी १० बजे तक अस्पताल हम लोग वहीं चलेंगी।

मारी चुप थी। वह अपने प्रश्न पर लज्जित-सी हो गई न सकी उसका मन क्यों व्याकुल हो उठा।

क्षण लक्ष्मी ने कहा—न भाई, कल कैसे जायँगे। आयेगा। उससे कह दूँगी कि हम लोग सिनेमा को आयेंगी। चलोगी न?

उत्सुकता भरे स्वर में राजकुमारी ने कहा—चलूँगी।

ने कहा—हरीश का मकान कैसरबाग़ की ठीक सड़क सुन्दर है।

बाद दो ब्लाउज तैयार हो गये। लक्ष्मी ने राजकुमारी ख़लीफ़ा दर्जियों की-सी तीव्र दृष्टि, कभी पीठ पर, पर, कभी कमर पर डाली। बिलकुल फिट, लाओ

मारी ने मृदु हास्य के साथ सिर झुका लिया।

ने कहा—पहनो इन्हें—बाज़ार से और कुछ कपड़े । कटपीस के बढ़िया टुकड़े तो हरीश ही से मँगवा-

मारी ने कहा—क्यों दीदी, व्यर्थ का खर्च कर रही हो?

ने कहा—भाई अपना अपना पहनो। हम नहीं अपने जो तुमने सोचा हो। हमने अपनी रुचि के बनाये हैं, रुचि के बनवा लो।

में लक्ष्मी को स्मरण हो आया और उसने पूछा—कहाँ चली गईं? उनको भाई, बुआ कहूँ या मौसी कहूँ, बताओ?

मारी ने कहा—इसको में क्या जानूँ!

ने फिर कहा—मैं तो भाई बुआ ही कहूँगी, मौसी उनका क्या अधिकार रहेगा? बुआ होने से तो अपने के ऊपर, उनकी भूमि सम्पत्ति पर एक प्रकार का रहता है।

मारी ने हँसते-हँसते कहा—यह तो तुम्हीं जानो दीदी!

ने कहा—बुआ जी को बुलाऊँ?

मारी ने कहा—बुलाओ न दीदी। केवल रोना-धोना अम्मा क्या समझेंगी!

ने कहा—विचारियों ने आजीवन दुख पाया है....

मारी ने कहा—सो तो पाया ही है। हम लोगों के ही ऐसी है। गाँव में केवल थोड़ी-सी भूमि है, वह जाने क्या होता?

ने कहा—जब घर का कोई पुरखा नहीं तो कैसे काम

मारी ने कहा—यही तो बात है। पिता जी किसी किया करते थे। वहाँ से हर महीने ढाई रुपया

ने कहा—होगा, जाने दो। थोड़ी देर चुप रहकर बड़े बात बताओगी, रज्जो? तुम्हें कैसा वर

उहुँ' कहकर रज्जो खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई। लक्ष्मी ने हँसकर कहा—'उहुँ' करने से तो काम चलेगा नहीं। विवाह की शर्त पर ही मैंने तुम्हें रक्खा है। नहीं तो भैरव पकड़ ले जायगा।

रज्जो ने कहा—कौन ले जायगा? कहाँ ले जायगा?

ठीक ही है। इतनी जल्दी भूल गई?

इसी समय महाराजिन ने कहा—बेटी रानी भोजन नहीं करोगी?

लक्ष्मी ने कहा—आपके जामाता महोदय खा चुके?

महाराजिन ने कहा—हाँ, उन्होंने कहा है कि चलकर परोसो।

लक्ष्मी ने कहा—उनको खा लेने दो, तब हम लोग खायँगी।

सबका खाना-पीना हो जाने के उपरान्त लक्ष्मी ने रज्जो से कहा—१० बज गये हैं, अब सो जाओ।

लक्ष्मी के कमरे के बराबर ही दूसरे कमरे में रज्जो का बिछौना बिछा दिया गया था। बुढ़िया ने अपना प्रबन्ध नीचे ही कर लिया था। रज्जो के कमरे की खिड़की से बँगले के बड़े-बड़े ताड़ चाँदनी में उस समय दैत्य से लगते थे, जब बादल कभी-कभी चन्द्रमा को ढक लेते थे। वह देख रही थी इस अंधकार और उजाले में अपनी आशा और निराशा की झलक।

अभी तक जन-कोलाहल वैसा ही था। भैरव का भयानक रूप उसके हृदय में उदय हो-होकर उसे अब भी भयभीत कर रहा था। वह भगवान् कृष्ण को पुकार रही थी।...हे द्रौपदी के रक्षक, मेरी रक्षा करो....!

इसी समय माता ने आकर देखा कि रज्जो आँख मूँदे बैठी है। माँ ने पूछा—सोई नहीं? अब भी बैठी है?

तुम्हारे लिए! तुम्हें नींद लगी?

माँ ने कहा—हाय! लल्लू....

रज्जो—भगवान् तो सबकी खबर रखते हैं!

माँ—किन्तु किसके हाथ पड़ा है जा के....

रज्जो—किसी के हाथ पड़े, भरोसा उसी का है। जब कोई उपाय नहीं है तो पराये घर में रो-धो कर अशान्ति न उत्पन्न करो।

दोनों सो रहे। किन्तु आँखों में नींद कहाँ! चिन्ता चुड़ेल कहाँ सोने देती है। मुँदी आँखों के आगे छाया मूर्तिवत् कभी भैरव, कभी लल्लू, कभी लक्ष्मी, कभी सुरेश, कभी हरीश घूमते। कभी-कभी गंगा के धवल जल पर चलती हुई एक छाया-मूर्ति उसे पुकारती—आ री, आ री! मरने से भय? हाँ, हृदय में एक अधीर इच्छा मानो उसे मरने से रोक रही थी।

रज्जो ने देखा—वह जल पर चलने वाली छाया-मूर्ति के पीछे विवश होकर घोर अँधेरे में जा रही है।....एकाएक प्रकाश फैल गया, किसी ने हाथ पकड़कर पीछे फिर घाट पर खींच लिया।...कौन था...हरीश? वह उठकर बैठ गई। बादल के छोटे-छोटे बच्चे चन्द्रमा से वहीं आँख-मिचौनी खेल रहे थे। नीचे नौकर-चाकर चखचख लगाये थे। मँजते हुए बर्तन खड़भड़ा रहे थे। थोड़ी देर में सन्नाटा हो गया। फिर वह लेट गई, आँखें मूँद लीं। फुलवाड़ी में बिल्लियाँ लड़ पड़ीं। सहसा यह क्या? शब्द कैसा.. फिर उठ बैठी, लक्ष्मी के कमरे की घड़ी में टन्-टन् बारह बजे। वह जँगले के पास आकर खड़ी हो गई। एक तल्ले के किवाड़ों में फिर वह धक्के का शब्द...

नीचे बराण्डे के सामने पार्वती महाराजिन अचेत सो रही थी। उसे बुलायें क्या? दिन भर की हारी-थकी है। किन्तु यदि भैरव आ गया हो, तो? ज़ीने के किवाड़ों में फिर वही कराघात! रज्जो ने पूछा...कौन?....

मैं हूँ, हरीश।

उसने चटखनी खोल दी। साथ ही टार्च का प्रकाश उसके मुख पर पड़ा। हरीश—आप हैं? क्या सब लोग सो गये?

रज्जो—जी हाँ।

दीदी भी खूब हैं। मैं आने को कह गया था। खाने-पीने को भी कुछ नहीं रक्खा?

रज्जो ने कहा—खाना तो यहाँ नहीं है। दीदी को जगाऊँ?

रहने दो।

बराण्डे के कोने की ओर हरीश के सोने का कमरा था। रज्जो ने वहाँ जाकर देखा तो उसे सब ठीक-ठाक दिखाई दिया।

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर
नं ७१२
एवरेडी बैटरी
बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत
रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५
ज्यादा मत दें
EVEREADY
NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin, Delhi and Karachi.

EVEREADY
2 CELL EXTRA LONG LIFE BATTERY
No 712

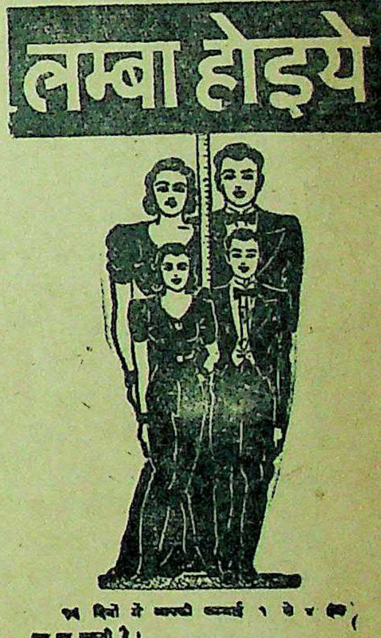
लम्बा होइये
[illegible]
इंग्लैंड में प्रस्तुत
टानसपाइन
ग्लैंड फ़ूड टेबलेटस
डिस्ट्रीब्यूटर्स
दि ब्रिटिश टेडिंग कम्पनी (डिपार्ट डी ए १)
लाइसेंस प्राप्त औषधि विक्रेता व निर्माता।
२० कैंडी हाउस, मियर वेदर रोड,
अपो० ताज, बम्बई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हरीश ने कहा—आपको एक हमारा काम करना होगा—कि जब तक मैं हाथ-मुँह धोता हूँ तब तक आप स्टोव और चाय की केटली यदि ला दें तो अच्छा हो। जानती तो हैं, कहाँ है ?

रज्जो, गर्दन हिलाकर 'अच्छा' कहकर चली गई। उसके जाते-जाते हरीश ने कहा—कृपया यहीं लाकर रख दीजिए। कष्ट तो होगा, क्षमा करना।

हाथ-मुँह धोकर कमरे में आकर उसने देखा कि रज्जो स्टोव जलाने की चेष्टा कर रही है, किन्तु न जानने के कारण जला नहीं पाती।

हरीश ने कहा—लाइए—मैं उसे जलाता हूँ। आप लपककर केटली में थोड़ा-सा पानी लेती आयें, और कृपा कर चाय का डब्बा भी लेती आयें। टीन का दूध और चीनी यहीं है।

रज्जो ने कहा—केवल चाय ही पीकर रह जाइएगा ? घी मैदा भी ले आऊँ ?

हरीश हँस पड़ा—नहीं, नहीं हमारे पास बिस्कुट हैं। इसी से क्षुधा शान्त कर लेंगे। रज्जो ने कहा—दीदी को बुलाऊँ ?

न,न, कल सबेरे मजा होगा, जब एकाएक दीदी हमको देखेंगी—कहकर हरीश हँसा।

रज्जो ने पहली बार जीवन में एक मनुष्य को इस प्रकार हँस हँसकर बातें करते हुए और आनन्दित देखा। यह उसकी दुखित कल्पना से परे था। यह हँसी और बातें अच्छी भी लगीं।

हरीश बिस्कुट खाकर और चाय पीकर पलँग पर लेट गया। रज्जो ने कहा—मसहरी खींच दूँ ?

हरीश ने कहा—रहने दो हम खींच लेंगे।

रज्जो थोड़ी देर खड़ी रही फिर सोचा कि अब यहाँ ठहरने का कोई प्रयोजन नहीं है। जाते हुए उसने कहा—मैं जाती हूँ, आप सोइए।

हरीश पता नहीं क्या सोच रहा था। उसने कहा—आपकी निद्रा भंग कर दी, क्षमा कीजिएगा।

रज्जो ने कहा—मुझे कोई कष्ट नहीं हुआ। इस पर हरीश भी चुप था और रज्जो भी चुप थी।

रज्जो जाने लगी। हरीश ने कहा—आप जा रही हैं ? हाँ ठीक है। रज्जो ठहर गई। हरीश ने कहा—वहाँ के क्या समाचार हैं ? सबेरे मामला कैसे निपटा ?

रज्जो लज्जित-सी थी। अकेले कमरे में पर पुरुष से बातें करते हुए उसके हृदय में एक कँपकँपी-सी हो रही थी। उसने मृदु स्वर में उत्तर दिया—बहुत बातें हैं। दीदी से सुनिएगा।

रज्जो चली गई। उसने अपने कमरे के किवाड़ बन्द कर लिये। हरीश एक लम्बी साँस छोड़कर सोने की चेष्टा करने लगा।

—क्रमशः

सन्टल मिडि
अचूक दवा
सुजाक गुर्दे और मूत्राशय की बीमारियों के लिये।
प्रस्तुतकर्त्ता
ग्रिमाल्ट एण्ड कं०
GSK

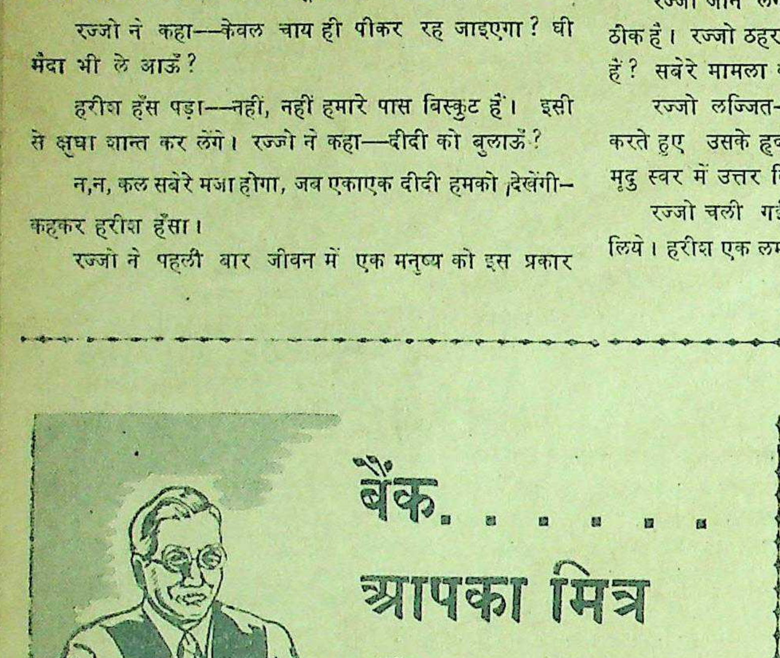

बैंक......
आपका मित्र

हमें यह अच्छी तरह मालूम है कि आप अपने हित की बात हमसे ज्यादा जानते हैं लेकिन तोभी कभी-कभी आपको अपने कारबार एवं आर्थिक समस्याओं में बाहरी सलाह की जरूरत तो होती ही होगी !

हमारा आपसे अनुरोध है कि आप हमारी .ाओं से लाभ उठायें तथा हमारे बैंक को अपना मित्र समझें। हम आपको हर तरह की सुविधा देने के लिए प्रस्तुत हैं।

बक्रीत मूलधन—
४ करोड़ रु०
चुकाया हुआ मूलधन—
२ करोड़ रु०
सुरक्षित कोष—
७½ लाख रु०

विदेशी एजेंट संसार के हर हिस्से में

यूनाइटेड कमार्शियल बैंक लि०

जी० डी० बिरला, चेयरमैन
जेनरल मैनेजर—बी० टी० ठाकुर
हेड आफिस :
२, रायल इक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।
ब्रांच आफिस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर

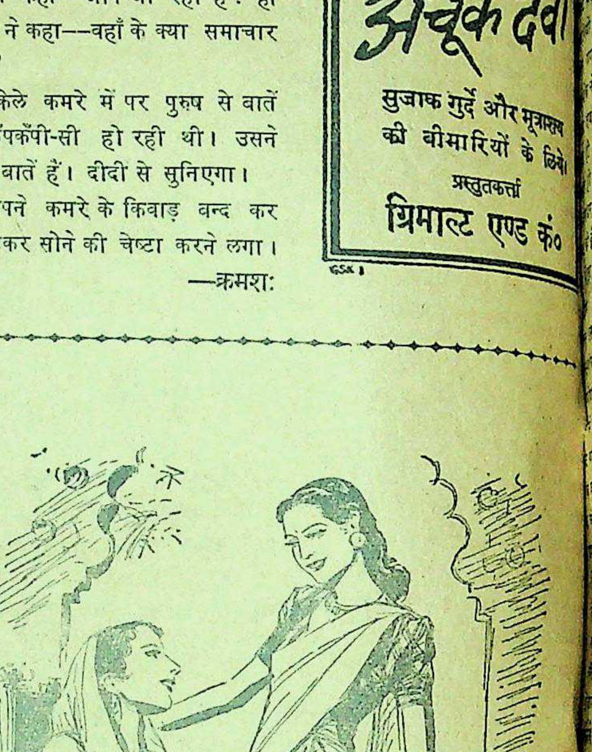

सौंदर्य की
दो पीढ़ियाँ

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य में उतनी ही ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है जितनी कि उसकी सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी माँ की सलाह पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी कोमल त्वचा की रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी त्वचा की रक्षा करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी निस्संदेह उसी तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की त्वचा है।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

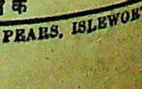

पिअर्स साबुन
सौन्दर्य का सेवक
TG. 38-172 HI
A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

साप्ताहिक डायरी

ीन-जापान युद्ध की आठवीं वर्षगाँठ

यो द्वीप पर आक्रमण—जापान पर हवाई हमले

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

न के विरुद्ध चीनी संग्राम की
के अवसर पर अमरीका
ने मार्शल च्यांग-काई-
को जो संदेश भेजा है
कि जापानी सैन्यशक्ति को
का कार्य पूरा होनेवाला है।
के विनाश के लिए संपूर्ण मित्र-
दी जायगी। मार्शल च्यांग-
बतलाया है कि 'अमरीकी
सामग्री प्राप्त चीनी, सेनायें
से लोहा लेने के लिए
। पैसिफ़िक-टास्क-फ़ोर्स
शरमन ने भी आशा
५ महीने अथवा एक वर्ष
संग्राम समाप्त हो
चाहे जब समाप्त हो
के लक्षण तो स्पष्टतया
कि सुदूरपूर्व में मित्रों के
आक्रमण आरम्भ
। मित्रों के शिविर में
वार्ता चल रही है कि
द्वीपावली जापानियों
कर ली गई है वह
भाँति लाभदायक
यूरोप के युद्ध में
वहाँ से त्रिमुखी
है—पश्चिम से
जापान पर और दक्षिण
साम्राज्य पर।

दक्षिण-दिशा में मित्र
चालू हो चुका है।
के नेतृत्व में बोर्नियो पर
तेल-क्षेत्र को आक्रांत
सैन्यदल उतारे गये।
सेनाओं के साथ
और जापानियों ने
पर निशाना साधकर
किन्तु वह बच गये।
पैपन नगर के मुख्य
ने क़ब्ज़ा कर लिया
सेनायें भी पूर्व की ओर
शहर के अधिकांश भाग
लिया। पश्चिम में उन्होंने
क़ब्ज़ा कर लिया, जो
है। तट के मोर्चे
अब मित्रों के क़ब्ज़े में
तेल जमा करने का
के सबसे अग्रवर्ती स्थानों
में है। द्वीप के मध्य
पर क़ब्ज़ा कर लिया
अन्तिम जापानी हवाई
टैंकों की प्रगति के
हो रहा है।
का कहना है
मित्रों के सफल युद्ध-
पुनः उपलब्ध
बालिक पैपन
ईस्टइंडीज के
शत्रु की पहुँच

कमान की एक
के २५ मील

उत्तर-पूर्व सिटांग नदी की मोड़ पर मित्रों के स्थानों पर जापानियों के छोटे छोटे लगातार कई हमले हुए हैं। पेगू के २६ मील उत्तर-पूर्व पेगूसिटांग नहर पर मुक़ाबला करनेवाले जापानियों ने लीगू नामक गाँव में प्रवेश किया। बर्मा की परिस्थिति में बहुत ही कम परिवर्तन हुआ है। ब्रिटिश और भारतीय सैनिक ताँगू सड़क पर पूर्व की तरफ़ बढ़ रहे हैं। अनुमान किया जाता है कि बर्मा की उन तीन जापानी सेनाओं, में से जिनमें पहले कुल २,००,००० सैनिक थे, अब केवल ५४,००० सैनिक बचे हैं। शाही वायुसेना को जापानी जहाज़ों के विरुद्ध कुछ सफलता मिल चुकी है, जिसमें १०,००० टन के तेलवाहक जहाज़ का स्याम की खाड़ी में डुबाया जाना भी सम्मिलित है। बर्मा बेंकाक रेलवे के महत्त्वपूर्ण पुल के ३ मेहराब पर यह पुल बेंकाक से ८० मील की दूरी पर है। भारी बम गिराकर नष्ट कर दिये गये।

चीन

दक्षिण-पूर्वी चीन में जापान के दक्षिणी गलियारे से बढ़ती हुई चीनी सेनाओं ने ल्यूचेंग पर क़ब्ज़ा कर लिया जो कि क्वांगसी प्रान्त में लूचाव के अड्डे से, जिस पर चीनियों का दुबारा क़ब्ज़ा हो गया है, २० मील उत्तर है। जापानी पीछे हटकर चुंगटू चले गये हैं। लूचाव, क्वेंलिग सड़क पर बढ़नेवाली अन्य चीनी सेनाएँ यू नदी के किनारे पर पहुँच गई हैं जो लूचाव के पूरब में ६ मील पर है। पीली नदी के उत्तर से लेकर फ़्रेंच इंडोचीन तक जापानी यातायात के साधनों पर १४ वीं हवाई सेना के हमले जारी हैं।

स्थल के और हवाई हमले

प्रशान्त सागर के ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े के साथ रहनेवाले 'डेली मेल' के संवाददाता का कहना है कि 'भविष्य में प्रशान्त में जो युद्ध होगा, अब तक के जल-युद्ध की कोई भी प्रणाली उसकी तुलना में न आ सकेगी। आगे चलकर मित्र विमानों के आक्रमण विशद रूप ग्रहण करेंगे। शत्रु पर अन्तिम प्रहार करने के लिए अमेरिकन तथा ब्रिटिश सैन्यसमूह, इस समय व्यापक तैयारी करने में पूर्ण पारस्परिक सहयोग के साथ संलग्न हैं। साकीशिमा द्वीपसमूह के निकटवर्ती समुद्र की लड़ाई में ब्रिटिश प्रशान्तीय बेड़े को जो अनुभव प्राप्त हुआ है वह बहुत ही मूल्यवान् है। अन्त में संवाददाता कहता है—ब्रिटिश तथा अमेरिकन, दोनों ही बेड़ों के जिन जल सेनापतियों से मेरी बातें हुई हैं, उनको इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, 'कि जापान आत्मसमर्पण करने से राष्ट्रीय आत्मघात को अच्छा समझता है और ऐसा ही करने का उसका इरादा भी है।' जो हो सुदूरपूर्व में ब्रिटिश जलसेना का भीषण कार्य आरम्भ हो गया है। "ट्रेनचेन्ट" नामक ब्रिटिश पनडुब्बे ने १०,००० टन का एक जापानी क्रूज़र डुबा दिया। जापान के पास ही ओकीनावा सागर में इस समय ३ मित्र बेड़े, जिनमें ३ जंगी जहाज़, ३ क्रूज़र, २० विध्वंसक और २५० छोटे जहाज़ हैं, वे गश्त लगा रहे हैं। टोकियो रेडियो का कहना है कि इधर प्रशांत में जावा से लेकर जापान तक मित्र विमानों ने आक्रमण करके २६ जापानी जहाज़ डुबा दिये और बहुत से हवाई एवं सप्लाई अड्डे ध्वस्त किये।

जहाँ तक जापान की मुख्य भूमि पर मित्र हवाई हमले का सम्बन्ध है वह प्रतिदिन बढ़ रहा है। ३,००० टन बम क्यूशू और होंशू पर गिराये गये और तब से लगातार जापान के विभिन्न क्षेत्रों पर लगातार ऐसे ही भीषण वायु-आक्रमण जारी हैं। हाल ही में वाशिंगटन में प्रेस-प्रतिनिधियों की कान्फ़्रेंस में अमेरिका के उप-वैदेशिक मंत्री ने जनरल कार्ल स्पाट्स के नेतृत्व में प्रशान्त में अमेरिकन हवाई सेना का एक नया कमान स्थापित किये जाने की घोषणा की। आपने यह भी घोषित किया कि अमेरिकन हवाई हमलों के फलस्वरूप औद्योगिक महत्त्व के ६ बड़े-बड़े जापानी नगरों का सफ़ाया हो चुका है और अब आगे होनेवाले हवाई हमलों के लक्ष्य कम से कम ४० गौण नगर बनाये जायँगे। टोकियो रेडियो के कथनानुसार जापान में हर व्यक्ति मित्रों के भावी आक्रमण के विषय में चिंतित है। चीन के प्रधान मंत्री डाक्टर सूँग का रूस जाना उनके लिए बड़ी घबरहट उत्पन्न कर रहा है। जापानियों को भय है कि रूस-चीन में नई संधि हो जाने पर लाल सेना भी हम पर आक्रमणकारी न हो जाय?

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक। वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा। (सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिघ्र प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगावें।

बिकाऊ है
बीस घोड़े की ताकत का हरन्सबी इंजन डबल भारी फ़्लाइ व्हील, कम चला हुआ—नये के मुआफ़िक विकाऊ है।
पता—श्री तीर्थराज आटाकल
७४ कटरा इलाहाबाद

आरोंदा १८६६
नीलगिरि तेल
शुद्ध छाप
साण्डलेकर बंधु, बम्बई ४.
स्थापना १९२६] ज़ुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय [र० नं० १८६९
हैजा, मलेरिया, इन्फ़्लुइंजा, प्लेग, टाइफ़ॉइड आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख० अलग, युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम हमारे कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

प० रामचन्द्र वैद्य शास्त्री अलीगढ़ की
रजिस्टर्ड
बालरक्षाघुटी
बालकों के रोगों का नाश कर निर्बलों को पुष्ट बनाती है और दाँत सुगमता से निकालती है। पीते रहने वाले रोगी नहीं होते। मूल्य।=) दर्जन ३) मह० पृथक् शर्बत नहीं स्वादिष्ट आसव है दूसरों से तिगुनी बड़ी शीशी है। हज़ारों एजेन्ट हैं नये व्यापारी नमूना बक्स और नियम मुफ़्त मगा देखें।
पता:- सुधावर्षक औषधालय अलीगढ़

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ़्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

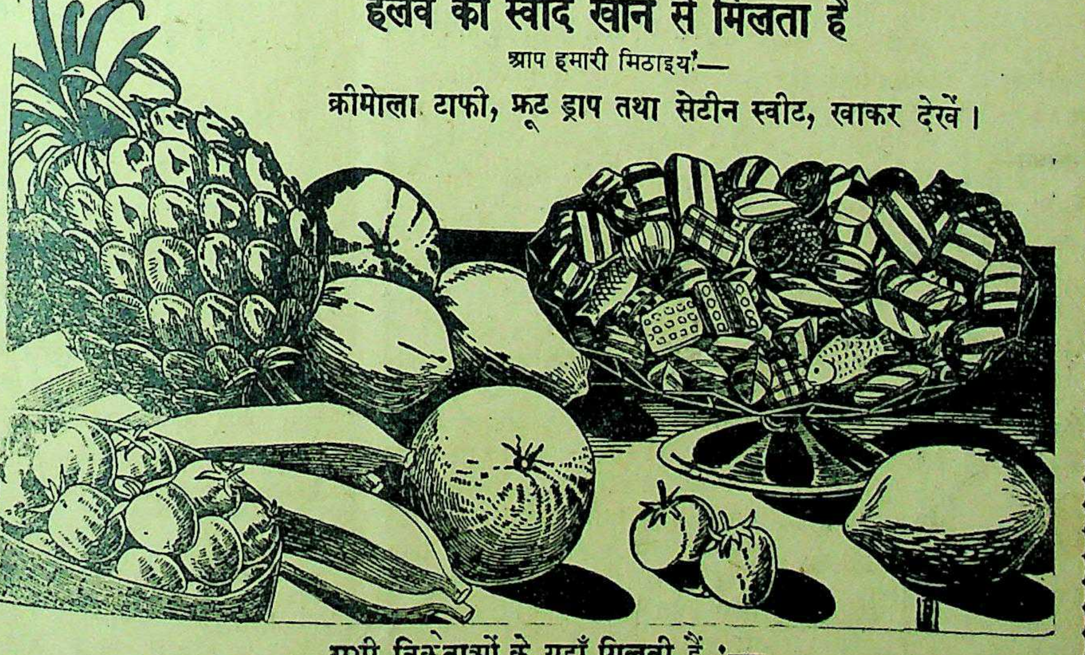

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

प्रेम और कर्तव्य

(पेज १० का शेष)

प्रभा कुर्सी पर पास ही बैठ कर बोला–"चाँदनी तुम ग़लती पर हो। जिनसे तुम्हारी शादी हुई है वह मैं नहीं मेरे बड़े भाई दिवाकर थे।"

"यह क्या कह रहे हो। मैंने तो अभी तुम्हीं से बातें की थीं तुम्हीं मेरा हाथ पकड़ कर पलँग तक लाये थे।"

"विश्वास मानो मैं नहीं था। हम और दिवाकर दोनों जुड़वाँ भाई हैं! सूरत-शक्ल में ज़रा भी अन्तर नहीं है।"

"आह भगवान तूने यह क्या किया" यह कहकर चाँदनी ने अपने दोनों हाथों से आँखें मूँद लीं और रो पड़ी।

* * *

"प्रभा ?"

"हाँ भैया।" प्रभा ने दिवाकर की तरफ़ देखा। दिवाकर बोला––

"तुम और चाँदनी दोनों एक दूसरे को प्राणों से बढ़कर प्यार करते हो। एक दूसरे के दिल में सच्ची मोहब्बत है। प्रेम से बढ़कर संसार में कोई पवित्र बन्धन नहीं है। भगवान् ने खिलवाड़ किया। खैर, चाँदनी मेरी नहीं आज से तुम्हारी स्त्री है। यह जरूर है कि मैंने चाँदनी को अग्नि के सात फेरे लगाकर ही पाया है। मगर तुमने उसके दिल पर राज्य किया है। प्रभा तुम मुझे संसार में सबसे बढ़कर प्रिय हो। जब मुझे तुम्हारी मोहब्बत का पता चला था तो मैंने तहे दिल से भगवान् से प्रार्थना की थी कि चाँदनी तुम्हारी ही होकर रहे। और जब चाँदनी भगवान् ने मेरे हाथ में सौंपी तो आज मैं तुम्हारे हाथों उसे सौंपता हूँ। यही मेरा सबसे बड़ा कर्तव्य है। आज तक हर एक चीज में तुम्हारा हिस्सा रहा। और चाँदनी में भी तुम्हारा हिस्सा भला कैसे अलग हो सकता है। मेरा जीवन तुम दोनों की देख-भाल ही में बीत जायेगा।"

"नहीं भैया ऐसा न कहो, कहकर प्रभा दिवाकर के चरणों में लोट गया। चाँदनी भी उसके चरणों के पास बैठी रोती रही।

प्रभा चाँदनी को पाकर खुश था। चाँदनी प्रभा को अपने सम्मुख देख भूत- और भविष्यकाल को भूल गई थी। दिवाकर प्रभा और चाँदनी को खुश देखकर सुखी था।

* * *

"प्रभा बेटा यहाँ आओ।"

"क्या माता जी ?"

"दिवा और वह कहाँ हैं ?"

"क्यों ? ऊपर हैं।"

'कुछ नहीं। मैं यों ही पूछ रही थी।"

"फिर भी !"

"यह कह रही थी कि दिवा की शादी हो ही चुकी अब तेरी भी शादी करके तुझ से भी छुटकारा पाऊँ।"

"मगर अभी इतनी जल्दी क्या है।" प्रभा ने घबड़ा कर पूछा।

"क्या कहा, जल्दी क्या है। भला अब शादी न करोगे तो क्या बुढ़ापे में करोगे ?"

"लेकिन !"

"लेकिन से काम नहीं चलेगा बेटा ! हेमेन्द्र बाबू कई बार आ चुके हैं। अब तक उन्हें हम टालते ही आ रहे हैं। अब तुम्हीं बताओ उन्हें क्या जवाब दें? तुम्हारे पिता जी ने तो हामी भी भर ली है।"

"इतनी जल्दी हामी भरने की क्या जरूरत थी। मुझ से पूछा तो होता।" यह कहकर दुखित-सा प्रभा ऊपर भैया के कमरे में चला गया।

* * *

"चाँदनी एक बात सुनोगी !"

"क्यों नहीं, कहो। आज तक कौन––सी बात नहीं सुनी।"

"यही कि अम्मा ने मेरी शादी तय कर ली है।"

"हाँ ठीक तो है उन्हें हमारे सम्बन्ध का क्या पता ?"

"मगर मैं तो यह शादी नहीं करूँगा।"

"लेकिन माता जी को क्या जवाब दोगे ?"

"हाँ यही मैं भी सोच रहा हूँ। खैर, भैया से कुछ कहूँ शायद वह कुछ बता सकें।"

चाँदनी सोचने लगी––मैं कितनी अभागी हूँ। मुझे खुश रखने के लिए ही मेरे पति ने अपनी खुशी से अपना जीवन बलिदान कर प्यारे भाई के हाथों मुझे सौंप दिया मगर मेरा कर्तव्य तो यही था कि अपने पति के चरणों में जीवन लुटा देती। पर आह। यह क्या किया। प्रेम अन्धा बना—कर्तव्य ने मुझे नीचे गिरा दिया। वह भी मुझे कितना प्यार करते हैं, शादी से इनकार कर दिया। अम्मा जी और पिता जी कितने दुखी हैं। मेरा अब यही कर्तव्य है कि आत्म-हत्या कर लूँ फिर तो वह अवश्य शादी कर लेंगे। साथ ही मेरे मरने के बाद मेरे पति की भी शादी हो जायेगी। हे ईश्वर मुझे शक्ति दो कि मैं अपने कर्तव्य को पूरा कर लूँ। मैंने ही इस हरी-भरी गृहस्थी में आग लगाई।" आज चाँदनी का दिल बार बार उसे धिक्कार रहा था।

उधर प्रभा भी परेशान था। दिवाकर और चाँदनी दोनों ही उसे शादी करने पर बाध्य कर रहे थे। उसे रह-रहकर दिवा भाई का ख्याल आता था। उसी की मोहब्बत ने ही तो बड़े भाई को सादा जीवन व्यतीत करने को बाध्य किया था। उसी ने तो उनकी स्त्री को छीना था। अब वह दूसरी स्त्री को लाकर उसके भी जीवन को बरबाद नहीं करना चाहता था।

आखिर वह दिन भी आ ही गया जब कि प्रभा का टीका चढ़नेवाला था। चाँदनी प्रभा के हठ से परेशान थी––डर था कि कहीं ऐन मौक़े पर प्रभा इनकार न कर दे उसने भी आत्म-हत्या करने का निश्चय कर ही लिया था।

रात का अन्धकार चारों ओर फैला था, केवल चाँदनी के कमरे में अब भी हलका-हलका प्रकाश फैला हुआ था। वह पलँग पर बैठी कुछ लिख रही थी—लिखती जाती थी और फाड़ती जाती थी। आख़िर एक पर्चे पर लिखा––

"मैं अपनी खुशी से आत्म-हत्या कर रही हूँ। मेरे मरने के बाद दोनों भाई विवाह करके सुख से जीवन व्यतीत करें। यही मेरी उन दोनों से अन्तिम प्रार्थना है।

"चाँदनी"

तड़के ही से घर में चहल-पहल मची थी। घर में मेहमान भरे थे। धूप निकल आई, मगर चाँदनी और प्रभा दोनों में से कोई अपने अपने कमरे से बाहर न हुए। आखिर दिवाकर ऊपर आया और दोनों के दरवाज़े खटखटाये लेकिन जवाब नदारद ! काफ़ी देर हो गई। आखिर हताश होकर और घरवालों को ख़बर की—सब घबड़ाये हुए ऊपर आये। बढ़ई को बुलवाकर दरवाज़े तुड़वाये। दोनों कमरों के अन्दर के दृश्य को देखकर सबके दिलों पर वज्रपात सा हुआ। प्रभा और चाँदनी दोनों ही इस दिखावटी दुनिया से नाता तोड़ दूसरे लोक को चले गये थे। प्रभा के हाथ में एक पत्र था—दिवा ने रोते रोते उसके हाथ से खत ले लिया––दूसरे कमरे में जाकर पढ़ा, लिखा था––

प्यारे भैया !

चरणों में प्रणाम।

जब सबेरे मुझे अपने सामने न पाओगे तब दौड़े मेरे कमरे तक आओगे। जब तुम मुझे इस हालत में देखोगे तो तुम्हारी क्या हालत होगी वह मैं जानता हूँ। मगर मैं लाचार हूँ। तुम मुझसे इतना अधिक स्नेह रखते थे कि अपना जीवन मेरे ऊपर निछावर कर दिया। हँसते हँसते चाँदनी को मेरे हाथों सौंप दिया। मगर मैं कितना नालायक़ था, प्रेम के नशे ने मुझे मदहोश बना दिया था। ज़रा भी तुम्हारा ख्याल न किया था।

मेरी एक अन्तिम प्रार्थना है कि मेरे मरने के बाद चाँदनी को स्त्री रूप में ग्रहण कर लेना। मैं चाँदनी की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैंने आज तक केवल बातचीत के और हँसी-मज़ाक़ के कभी उसे स्पर्श नहीं किया। वह पवित्र है। उसे अपनाने में तुम्हें ज़रा भी संकोच न होना चाहिए। नहीं तो मेरी आत्मा दूर होकर भी रोयेगी।

मेरे लाख इनकार करने पर भी अम्मा ने मेरी शादी तय कर दी। कल ही टीका भी चढ़नेवाला है। मगर मैं नहीं चाहता कि एक दूसरी लड़की को लाकर उसका जीवन बरबाद करूँ। मैं उसे प्यार नहीं कर सकूँगा। मैंने जीवन में केवल एक से ही प्यार किया है।

भैया, तुम बचकर मुझे दो-दो स्त्री देकर विलासी जीवन बिताने को कह रहे थे, और तुम मेरे ही कारण संन्यासी जीवन बिताओ यह मुझे मंजूर नहीं। अब मेरा यही कर्तव्य है कि जिस चाँदनी को तुम से छीन तुम्हें सन्यासी बनाया था उसे फिर तुम्हें सौंप दूँ––मेरे जीवित रहते कभी तुम चाँदनी को नहीं अपनाओगे, यह मैं खूब अच्छी तरह से जानता हूँ। चाँदनी को अच्छी तरह रखना।

तुम्हारा स्नेह और चाँदनी का प्रेम––

दोनों की याद लिये बिदा
यह खत चाँदनी को भी दिखा
तुम्हा

दिवा के हाथों से खत ज़मीन
गया। आँखों के आगे अँधेरा
कर्तव्य और प्रे यह गहरा
था। दोनों ही अपना
पिंजड़ा तोड़कर अनजाने ही में
को उड़ गये।

जिस घर में अभी अभी
नग़मा बज रहा था वह रुदन से
दो अर्थियाँ साथ साथ घर से
चिता धू-धू कर जल रही थी।
को एक ही चिता पर सुलाया
दिवाकर बेहोश-सा पास ही पानी में
पैर डाले बैठा आँसू बहा रहा था।
लोग जो अर्थी के साथ आये थे,
लौट चुके थे।

दिवा साल भर से बीमार है।
की एक एक हड्डी आसानी से
सकती है। आज प्रभा और चाँद
वर्षी थी। रह-रहकर दिवा के
आँसू चू पड़ते थे।

वह मेज के सामने खड़ा प्रभा
चाँदनी की तसवीर को आँसू-भरी
से देख रहा था। उसके कानों में
रेडियो में गाये हुए कुछ शब्द पड़
उसे लगा मानो चाँदनी प्रभा को
करके कह रही है "मेरे जनम मरन के
चल चिता में सो जायें!" और एक
ही दोनों की तसवीर फ़र्श पर आ गिर
उधर दिवाकर कटे वृक्ष की तरह
टकराता हुआ ज़मीन पर गिरकर
हो गया। उसके प्राणपखेरू भी
चाँदनी और प्रभा के पास चले गये।

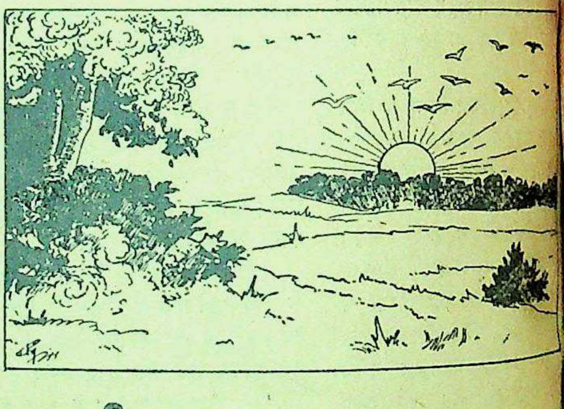

आईऽ वसन्त बहाऽ

इसी लिए उषःकाल के समय प्रकृति में संगीत की ध्वनि गूँज उठी है। अवसर का लाभ उठाकर क्या आप अपने भ्रान्त और थके हुए मन को न करना चाहेंगे? अवश्य चाहेंगे। हृदय को संगीत में प्रस्फुटित करने कवियों की कृतियाँ इस विषय में आपको सहायक होंगी। पं० सोहनलाल द्वि की भैरवी आपके हृदय में जागृति का संचार करेगी तो ठा० गोपालशरण की माधवी प्रकृति के सौन्दर्य का मूक चित्रपट आपको दिखायेगी। इसी मधूलिका सौंदर्य और प्रेम की कविताएँ सुनाकर आपका हृदय आनन्द और प्रसन्नता से भर देगी।

वीणाग्रन्थि	२)	मधूलिका	२)	भैरवी	२॥≡)
मधुस्रवा	१।)	माधवी	२)	मंजीर	१)
मानवी	२।-)	कौमुदी	॥≡)	माधुरी	॥≡)
		सुमना	२।	किंकिणी	॥।)

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

शित हो गया—

र्षिक बाल-सखा

के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ
भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

ल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक
को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २) डाक व्यय ।)

बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

७० वर्ष से भी अधिक

ओरियन्टल ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति एवम् सुरक्षा की स्थापना की है। केवल १९४४ में ८७३९८ व्यक्तियों ने लगभग २२,००,००,०००) बीमा कराया

फन्ड ३६।।। करोड़ के ऊपर

हमसे हर प्रकार के जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामर्श करके आप सदा लाभ में रहेंगे।

ओरियन्टल

गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स कं० लि०
भारतवर्ष में संस्थापित १८७४ प्रधान कार्यालय, बम्बई

शाखा—३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद
ब्रांच, सेक्रेटरी, मि० ए० सी० गुप्ता।

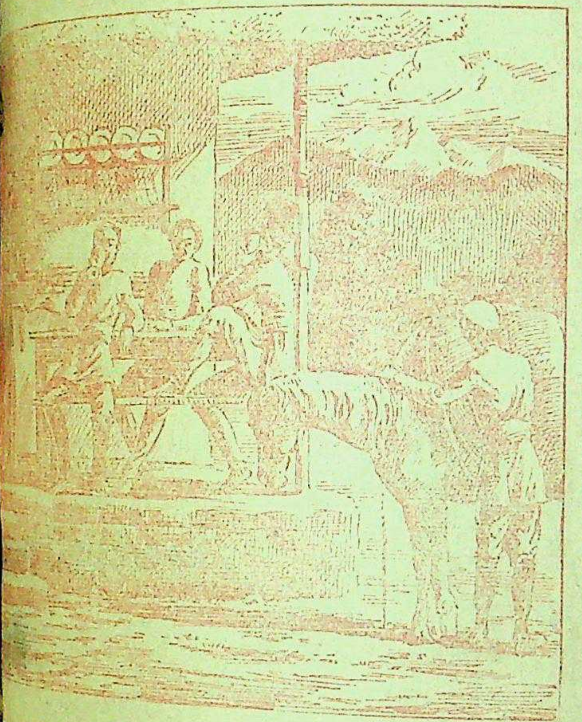

का समय—हिमालय के प्रदेशों में

की निराली सड़कें भारतीय महान् उत्तरी दीवार में घाटियों और जाती हैं। यहाँ के निवासियों के लिए खच्चर ही प्रधान तथा सुन्दर ऊन जैसी कीमती उपज को भारतीय मैदानों जीवन निर्वाह करते हैं।

यात्रियों का कंठ गर्मी में ताप से सूखता है और उन्हें ठिठुराती है। परन्तु चाय जिसे वे यथेच्छ इन पर्व-पीते हैं, रास्ते को सरल बनाती है और सीमान्त होने पर प्रोत्साहन देती है।

पुष्प दूध-चीनी मिश्रित तैयार की गई चाय पीते किया हुआ लकड़ी का लम्बा प्याला पूरबी हिमालय पात्र है, परन्तु और स्थानों में बहुधा पीतल या का ही व्यवहार होता है।

चाय सर्वत्र पहाड़ी प्रदेशों में अत्यधिक प्रसिद्ध है जिस के मैदानों में।

क बाँड

"दो पत्ती और एक कली"

AAA 162 HINDI

ये हैं इनकी चालें-

इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

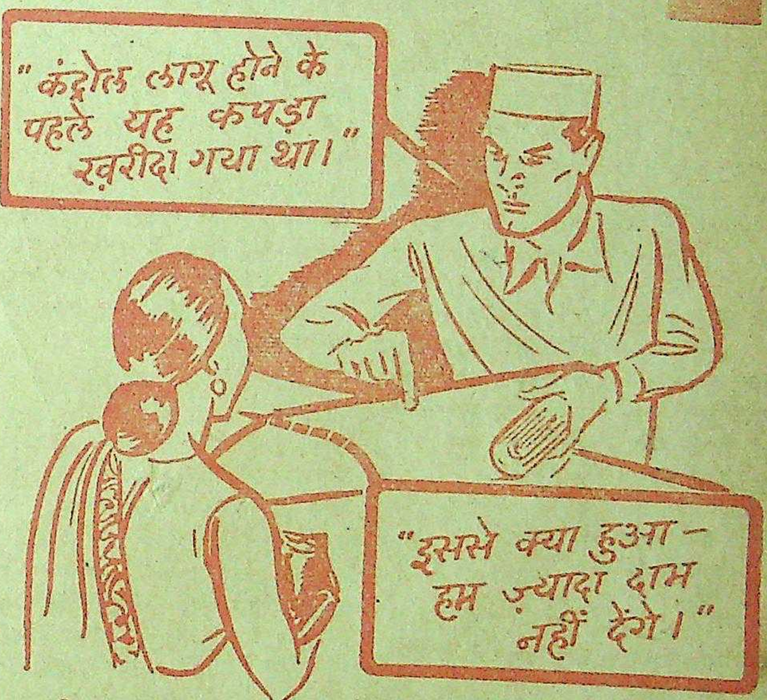
"कंट्रोल लागू होने के पहले यह कपड़ा ख़रीदा गया था।"
"इससे क्या हुआ - हम ज़्यादा दाम नहीं देंगे।"

इन महिला का कहना बिलकुल ठीक है—दुकानदार ग़लत कह रहा है। पिछली महँगाई का बहाना करके कंट्रोल के दामों से ज़्यादा क़ीमत नहीं ली जा सकती।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग द्वारा प्रकाशित

सारिडन से
२० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये
Saridon

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

इतने कम समय में इतनी बड़ी रकम का लगाया जाना पहले लोन के खरेपन का और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का बड़ा विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है, अर्थात ब्याज साल में दो बार इनकम टैक्स काटने के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रकम के वापस दिये जाने का जिम्मा लिया जाता है। जितनी रकम चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। जरूरत पर जब चाहें मार्केट में बेच कर नकद रकम प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम टैक्स अगर लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल जायगा। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम करने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुकसान के खतरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा ब्याज मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिजर्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खजाने से खरीद लें।

AAA 223 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित

[illegible]—एक [illegible] ... भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन [illegible] है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र [illegible] मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

SAHARANPUR

"श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ"-शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक में अच्छी शि[illegible] और अच्छे शारीरिक स्वास्थ्य के अलावा कु[illegible] और भी होना आवश्यक है। उसे दृढ़ निश्च[illegible] परिश्रमी और साहसी भी होना चाहिए। अपनी वीरता और योग्यता के बल पर शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक इस लड़ाई में बड़े बड़े कार्य करके दिखा चुके हैं। ऐसे श्रेष्ठ व्यक्तियों के साथ काम करना बड़े सम्मान और गर्व की बात है। आज शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक वीरता में हिन्दुस्तान की श्रेष्ठ परम्परा की रक्षा कर रहे हैं। कल, ये युवकगण अन्तर्राष्ट्रीय अभियान के क्षेत्र में हिन्दुस्तान के हितों की रक्षा करेंगे। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

AAA

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष (के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible] रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित) — सम्पादक—[illegible]

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

जुलाई, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 29th July, 1945

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में अमर हैं। मूल्य २)

असफल क्यों हुआ ?
कैसे लड़ी जाती है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

क्या नेता-सम्मेलन असफल हुआ है?
धोखा (कहानी) क्या वह कलंकिनी थी?

मुफ़्

एक पोस्टकार्ड भेजकर डायरी, कलेण्डर १६४६ तथा फाउन्टेन पेन मुफ़्त मँगाइये।

यूनाइटेड कारपोरेशन, हल्का नं० १३,
अमृतसर

ATKINSONS

* * *

सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

AHO-1218 HI

J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

अब
मिलती है
कन्ट्रोल भाव
पर

नं ७१२
एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून क़ीमत
रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५
ज्यादा
मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.,
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

आवश्यकता है

आर्यन पेपर मिल्स लिमिटेड

के बचे हुए हिस्से बेचने के लिए एजन्टों की।

आधुनिक ढंग की मशीनों के लिए पेशगी रुपया दिया जा चुका है। कम्पनी ने अपनी निजी ज़मीन में कागज बनानेवाली घास लगाना आरम्भ कर दिया है।

मैनेजिंग एजन्ट जब तक साधारण तथा विशेष हिस्सों पर ५ तथा ६ प्रतिशत मुनाफा न दे
किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक न लेंगे।

माल का वितरण

कम्पनी के हिस्से बेचनेवालों में सबसे अधिक सफल एजन्टों को जिले तथा डिवीजन की मिल का माल बेचने की एजन्सी दी जायगी।

विवरण के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें :—

बेंगाल शेयर डीलर्स सेन्डीकेट लि०, "शेयर डीलर्स हाउस", चौरङ्गी स्क्वायर, कलकत्ता

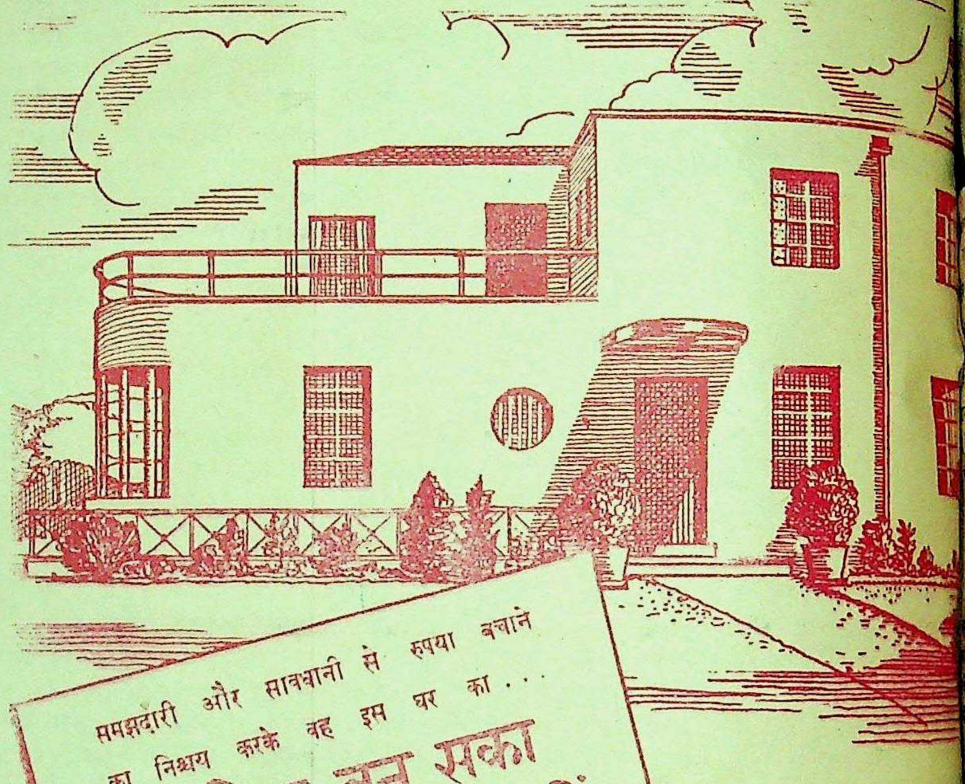

समझदारी और सावधानी से रुपया बचाने का निश्चय करके वह इस घर का . . .
मालिक बन सका
१० ईंटें उसने ख़रीदीं
-पाँच हिन्दुस्तान ने दीं!

इस घर की लागत का एक तिहा
हिन्दुस्तान की ओर से दिया
है, क्योंकि इसके बुद्धिमान मालि
अपनी बचत की रक़म को ने
सेविंग्स सर्टीफ़िकेटों में लगाया
घर बनाने में उसे जितना ख़र्च पड़ा, उसके लिए उसकी बच
रक़म पर ५० प्रति शत अधिक रुपया उसे व्याज के रूप में मि

आज कल, रुपया लगाने की जितनी सुरक्षित मदें हैं, उनमें से ने
सेविंग्स सर्टीफ़िकेटों में सब से अच्छा व्याज मिलता है।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफ़िकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति जो आज कल रुपया बचाने का निश्चय करे, १२ वर्ष में हर १० रुपये के १५ रुपये बना सकता है और इस प्रकार अपनी भावी उन्नति की मज़बूत नींव रख सकता है। कमख़र्ची और
का यही समय है, क्योंकि आमदनी
है। आप यथाशक्ति रुपया बचा

नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेट ख़रीदिए।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफ़िकेट को १८ महीने बाद)।

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, २९ जुलाई, १९४५

७ संख्या ४८]

[illegible] होनेवाले वर्धा के सुप्रसिद्ध [illegible] श्री विनोबा भावे ।

[illegible] सम्मेलन

[illegible]) में होनेवाला त्रिराष्ट्र [illegible] गया। अमरीका, ब्रिटेन [illegible] मित्रों ने बैठकर [illegible] पकाई। सुना गया [illegible]' को सभी प्रकार [illegible] थीं। खूब आराम [illegible] के पुजारी प्रेसिडेंट [illegible] तथा मजदूर- [illegible] मार्शल स्टेलिन ने [illegible] साथ ही जापान को [illegible] गुप्त मंत्रणा की। [illegible] चर्चिल घाटे में रहे, [illegible] तो प्रेसिडेंट ट्रूमन [illegible] परवाह रही और न [illegible] थी। इँगलैण्ड के [illegible] गत बना रखी थी। [illegible] कि मार्शल स्टेलिन को [illegible]

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

वह जिन्दा है। वह मुर्दा से जिन्दा कैसे हो गया, यह आश्चर्य की बात अवश्य है? अगर सचमुच वह जिन्दा है तो तुफ़ है मित्रराष्ट्रों की हवाई और समुद्री ताकत पर। जर्मनी को तीन ओर से घेरनेवाली मित्र फौज़ें लपकती ही रह गईं और हिटलर फिर भी नौ दो ग्यारह हो गया? और यदि उसके मरने की खबर सच है तब भी हम मित्रराष्ट्रों की फौजी ताकत की सराहना कैसे करें? यह तीनों मिल कर जब उसे जिन्दा पकड़ लेते तब तो बात भी थी। कम से कम एक बार अन्तर्राष्ट्रीय नुमायश तो हो ही जाती। और करोड़ों रुपये का सौदा भी हो जाता जिससे युद्ध-कोष की भी अच्छी वृद्धि होती। जो कुछ भी हो यदि हिटलर जिन्दा है तो मित्रराष्ट्र शायद कुछ सोच-विचार थोड़ा बहुत करें भी और यदि मुर्दा है तो फिर पौ बारह! सुना है कि योरप से नाजीवाद का अन्त हो गया फिर यह किस अक्लमन्द ने तमाशा शुरू कर दिया है? अमरीकन पत्रकार जो न करें सो थोड़ा!

* * *

प्रान्तीय-शासन रिपोर्ट और लीग

संयुक्त-प्रान्तीय शासन की गत वर्ष की रिपोर्ट प्रकाशित हो गई। उसमें मुस्लिम लीग के साथ लम्बी-चौड़ी सहानुभूति प्रगट की गई है। उसमें एक जगह लिखा गया है कि 'अन्दरूनी फूट से मुस्लिम लीग की इज्जत को नुकसान पहुँचा।' वाकई है निहायत अफसोस की बात। इज्जत जाने के मामले में अफसोस जाहिर करना इंसानियत भी है और हमारी प्रांतीय सरकार तो इंसानियत की अवतार बनकर पैदा हुई है। लेकिन बंगाल में मुस्लिम लीग की इज्जत क्यों न बचाई गई जब कि गवर्नर साहब खुद ही सर्वेसर्वा हैं? बन बैठे, आसाम में मुस्लिम लीग की इज्जत कहाँ गई जहाँ सर सादुल्ला कांग्रेस से समझौता करके मन्त्रिमण्डल चला रहे हैं? सीमाप्रान्त में लीग का बल कहाँ लुप्त हो गया है? पंजाब में लीग को यूनियनिस्टों ने क्यों धर पटका है? इन प्रान्तों में मुस्लिम लीग की इज्जत के नाम पर कोई आँसू बहानेवाला भी नहीं मिल क्या? यहाँ की प्रान्तीय सरकारें भी साँस नहीं ले रही हैं। जो कुछ भी हो हमारे प्रान्त की सरकार के एक ही आँख है इसी से सबको वह एक नजर से देखती रहती है। इज्जत लेना, इज्जत देना और इज्जत के नाम पर आँसू बहाना उसका बहुरुपियापन बड़ा ही आकर्षक और मनोरंजक है।

* * *

गवनर-सम्मेलन होगा

शिमला में नेताओं का सम्मेलन समाप्त हो गया किन्तु लार्ड वैवेल की सम्मेलन करने की प्यास अभी बुझी नहीं है। इसीलिये नई दिल्ली में अगस्त के प्रारम्भ में फिर एक जलसा प्रांतों के गवर्नरों का होनेवाला है। इस जलसे में सभी प्रांतों के गवर्नर शरीक होंगे। अपने राम की राय में इस तरह के सम्मेलन की बड़ी जरूरत थी क्योंकि अगर केन्द्रीय सरकार का भारतीयकरण नहीं हो सका तो कोई बात नहीं, इतने से लाट साहब हार कैसे मान लें? इसलिये अब प्रांतों में संयुक्त मन्त्रिमंडल कायम करने का एक नया शिगूफा छेड़ा जानेवाला है। जिन गवर्नरों ने प्रांतों के शासन की बागडोर अपने हाथ में ले रखी है, उनसे संभवतः यह कहा जायेगा कि अब आप लोग कन्धे पर से तीर-कमान हटा लीजिए और आने दीजिए मैदान में भारत के अपने अपने ढंग से स्वतन्त्रता चाहनेवाले गिरोहों को। इससे और कुछ हो चाहे न हो, अन्त में चाहे शिमला सम्मेलन की तरह इस नाटक की भी इतिश्री हो जाये किन्तु कुछ दिन चहल-पहल तो रहेगी ही। आजकल लड़ाई के इस जमाने में कुछ न कुछ मनोरंजन होता रहना चाहिए। क्योंकि सरकार जब फौजियों के मनोरंजन की जिम्मेदारी ले सकती है तो जनता के मनोरंजन की जिम्मेदारी भी उसे लेनी ही चाहिए।

* * *

कम्यूनिस्ट नारे में परिवर्तन

सुना है भारतीय कम्यूनिस्ट अपने 'मिस्टर जिन्ना जिन्दाबाद' के नारे में परिवर्तन करनेवाले हैं। इसके दो कारण हैं। एक तो वह कांग्रेस से अलग किये जानेवाले हैं, दूसरे लन्दन के प्रसिद्ध कम्यूनिस्ट श्री रजनी पामदत्त ने मिस्टर जिन्ना को प्रतिक्रियावादी कहना शुरू कर दिया है। इसलिए भारतीय कम्यूनिस्ट भी यह चाहने लगे हैं कि कुछ न कुछ करना चाहिए नहीं तो पार्टी की नाड़ी कैसे चलेगी! कांग्रेसी विरोध कर रहे हैं, कहीं लीग भी कांग्रेस की नकल करने लगे—जैसा कि वह करती आ रही है—तब तो वह कहीं के नहीं रहेंगे। इसलिए बुद्धिमान् पहले से ही सचेत हो जाते हैं और कम्यूनिस्ट हैं पूरी तौर से अक्लमंद। वह अक्ल चाहे रूस से उधार ही क्यों न ली गई हो, किन्तु है वह उनकी मौलिक। समय समय पर बदलते और पार्टी-पावर को मजबूत करते रहना ही तो कम्यूनिस्ट क्या प्रगतिवादी दलों का फर्ज ही है। ईश्वर उन्हें सुबुद्धि दे।

* * *

उदयपुर सम्मेलन

उदयपुर में होनेवाले हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अधिवेशन की तारीखें घोषित कर दी गईं और वह १५, १६, १७ आक्टोबर को उदयपुर में अधिवेशन होगा।

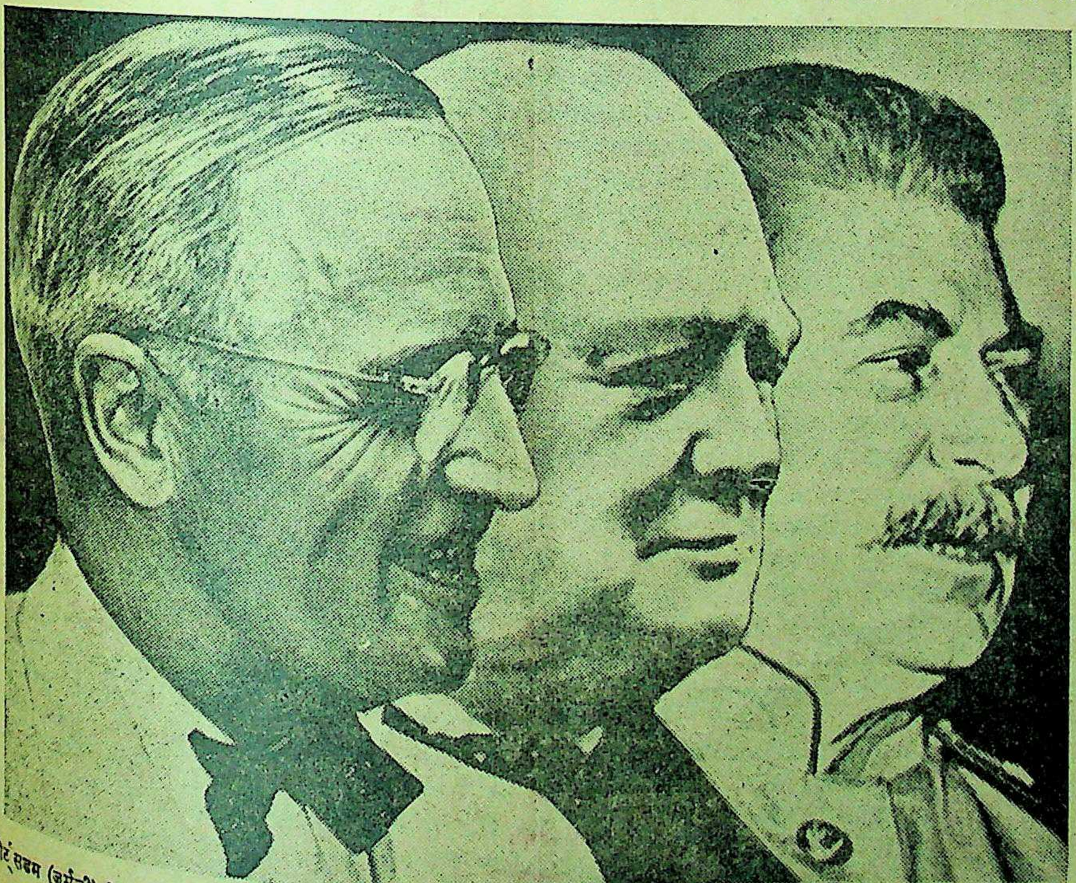

पोट्सडम (जर्मनी) के त्रिराष्ट्र सम्मेलन में भाग लेनेवाले संसार के तीन सयाने' प्रेसिडेंट ट्रूमन, मिस्टर चर्चिल और मार्शल स्टेलिन का ताजा चित्र।

सम्पादक का पृष्ठ

कांग्रेस और कम्यूनिस्ट

आजकल कांग्रेसवादियों और कम्यूनिस्टों में उग्र विवाद चल रहा है। कांग्रेसवादियों की ओर से कम्यूनिस्टों पर उनकी अवसरवादिता के संबंध में अनेक आरोप लगाये जा रहे हैं। यही नहीं उन्हें कांग्रेस से भी अलग किये जाने के प्रस्ताव भी सामने आ रहे हैं। सच पूछा जाय तो गांधीवादी कांग्रेसी तथा कम्यूनिस्टों का यह पुराना संघर्ष है। फिर भी इसे मानने और समझने में किसी को संदेह नहीं है कि पिछले दिनों जब कांग्रेसवादी जेलों में बंद थे, और जनता का पथ-प्रदर्शन करनेवालों का एकदम अभाव हो गया था तब कम्यूनिष्टों ने उनका पथ-प्रदर्शन किया और उन्हें युद्ध में अधिक से अधिक सहयोग देने के लिये प्रोत्साहित किया। उन्होंने संसार-व्यापी साम्राज्यवादी युद्ध को प्रजातंत्रवादी युद्ध कह कर प्रचार-कार्य किया। इस युग की उनकी यही सबसे बड़ी देन है। इसके सिवा मुस्लिम लीग ऐसी साम्प्रदायिक संस्था को यदि जीवित रखनेवाली तथा उसे अधिक से अधिक प्रजातंत्रवादी समझनेवाली कोई संस्था है तो वह है कम्यूनिस्ट पार्टी। आज मिस्टर जिन्ना और मुसलिम लीग की प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों के कारण ही भारत का राजनैतिक अड़ंगा नहीं हल हो रहा है। यहाँ तक कि शिमला में होनेवाला नेता सम्मेलन भी केवल लीग तथा मिस्टर जिन्ना के 'इन्कार' पर समाप्त हो गया। किन्तु कम्यूनिस्ट आज भी लीग और जिन्ना को राष्ट्रीय एकता के हल का एक-मात्र नारा बनाये हुए हैं।

कम्यूनिस्टों की यह प्रगतियाँ तो प्रत्यक्ष हैं किंतु इसके सिवा भी उन पर कुछ ऐसे इलजाम लगाये जाते हैं जिनका संबंध भारत से नहीं विदेशों तथा साम्राज्यवादी राष्ट्रों से है। जो कुछ भी हो हम इस प्रकार के विवादों के पचड़े में नहीं पड़ना चाहते किन्तु एक बात अब स्पष्ट हो गई है कि कम्यूनिस्ट पार्टी तथा उसके नेताओं को अपनी वर्तमान नीति में काफी उलट फेरने की आवश्यकता है। कम्यूनिस्टों को भारतीय आदर्शों को सामने रख कर कार्य करना है। सारे भारत को रूस की नकल करने का उपदेश देना भारतीय संस्कृति तथा भारतीय किसान-मजदूर वर्ग की परम्परा की इतिश्री कर देना है। उन्हें जो कुछ भी सोचना और करना है उस पर भारतीयता की पूर्ण छाप होनी चाहिए। विदेशियों की नकल करते करते हिन्दुस्तान आज गुलामी में इतना जकड़ गया है कि उससे छुटकारा पाना ही असंभव हो रहा है फिर रूस की ही नकल करके हमें या हमारे देश को किस हद तक मोक्ष मिलने की आशा की जा रही है? हम यह मानते हैं कि कम्यूनिस्ट देशभक्त भी हैं, कांग्रेस में उन्होंने काम भी पहले किया है किन्तु पिछले पाँच वर्षों के अनुभव से यह सिद्ध हो चुका है कि यह वर्ग भी मुस्लिम लीग या हिन्दू महासभा से कुछ कम प्रतिक्रियावादी नहीं है। इस वर्ग का उद्देश्य ध्वंसात्मक अधिक है निर्माणात्मक कम। इसलिये हम आशा करते हैं कि कम्यूनिस्ट विशेष कर कम्यूनिस्ट पार्टी के प्रधान श्री पूर्णचन्द जोशी इस विषम समस्या की ओर ध्यान देंगे क्योंकि यदि आज भारत के सभी दल एकमत होकर भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति का प्रयत्न करें तो अधिक उपयुक्त है यह देश दुर्भाग्य है कि दलों का दलदल बढ़ता जा रहा है और जनता विभिन्न प्रकार के नेतृत्व से परेशान है कि आखिर वह क्या करे? कांग्रेस के त्याग और बलिदान से जनता पूर्ण प्रभावित है इसलिये कांग्रेस का प्रभुत्व तो रहेगा ही किन्तु यदि कम्यूनिस्ट पार्टी भी अपना विदेशी चोंगा उतार फेंके और भारतीय दृष्टिकोण से स्वतंत्रता के युद्ध में सहयोग दे तो हमारी शक्ति और भी अधिक दृढ़ हो सकती है। किन्तु रूसी भूत की कृपा से ऐसा होना क्या असम्भव जान पड़ता है।

* * *

राष्ट्रकवि की हीरक-जयंती

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की ६०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर काशी में हीरकजयंती महोत्सव मनाने की योजना की गई है। इसी अवसर पर राष्ट्रकवि को एक थैली भी अर्पित की जायेगी। श्री मैथिलीशरण जी गुप्त हिन्दी के उन उज्ज्वल रत्नों में से एक हैं जिनकी आभा से साहित्य तथा भाषा को अभूतपूर्व प्रकाश मिला है। आपकी कलात्मक रचनाओं से राष्ट्र-जागरण, हिन्दी-साहित्य तथा कला के विकास में कितनी अधिक सहायता मिली है इसका ऐतिहासिक महत्त्व है। जयंती का यह समारोह उनकी दीर्घकालीन तपस्या और साहित्य-सेवा के अनुरूप ही है। हम प्रत्येक हिन्दी प्रेमी से अनुरोध करेंगे कि गुप्त जी को जो थैली दी जानेवाली है, उसमें वह अधिक से अधिक सहयोग प्रदान करे और इस शुभ अवसर पर उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना करे।

* * *

वाजपेयी जी का अभिनन्दन

कलकत्ता के पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी अभिनन्दन समिति के तत्वावधान में संपादकाचार्य पंडित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी का, उनकी दीर्घकालीन हिन्दी सेवा के उपलक्ष में, २६ जुलाई को सार्वजनिक अभिनन्दन होना निश्चय किया गया है। पूज्य वाजपेयी जी ने हिन्दी की जिस लगन और त्याग से सेवा की है, वह हिन्दी संसार से छिपा नहीं है। हम अभिनन्दन समिति के संयोजक श्री वसन्तलाल मुरारका तथा श्री भालचन्द्र शर्मा को बधाई देते हैं कि वह हिन्दी के एक वयोवृद्ध और तपस्वी का सार्वजनिक सम्मान करने जा रहे हैं। हम भी इस शुभ अवसर पर पूज्य वाजपेयी जी का अभिनन्दन करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दीर्घजीवी होकर हमारा मार्ग प्रदर्शन करते रहें।

बिकाऊ है

बीस घोड़े की ताकत का हरन्सवी इंजन डबल भारी फ्लाइ व्हील, कम चला हुआ—नये के मुआफिक बिकाऊ है।

पता—श्री तीर्थराज आटाकल
कटरा इलाहाबाद

क्या नेता-सम्मेलन असफल रहे

सरकार, कांग्रेस, मुस्लिम लीग को क्या मि

लेखक, श्री गंगाधर इन्दूरकर, 'साहित्यरत्न' (पत्रकार)

शिमला में नेता-सम्मेलन की असफलता पर तरह तरह की टीका-टिप्पणी हो रही है
सम्मेलन की असफलता का दोष सरकार और लीग के मत्थे मढ़ा जा रहा है
लेख में पत्रकार लेखक ने यह बतलाया है कि शिमला-सम्मेलन असफल नहीं
है। क्यों सफल हुआ है इसको तर्क पूर्ण दृष्टि से इस लेख में सिद्ध किया
लेख पठनीय तथा मनोरंजक है।

शिमला-सम्मेलन समाप्त हो गया। अधिकांश नेता उसकी असफलता से दुखी हुए हैं किन्तु कुछ आशावादियों को उसकी असफलतामें भी सफलता की किरणें दिखाई दे रही हैं। सम्मेलन को असफल माननेवाले भारतीय तथा विदेशी राजनीतिज्ञ असफलता का भार मुस्लिम लीग तथा मिस्टर जिन्ना पर मढ़ रहे हैं। कुछ लोग दबी जबान से लार्ड वैवेल पर भी इसका उत्तरदायित्व दे रहे हैं। बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो शिमला-सम्मेलन की असफलता कांग्रेस के सर मढ़ते हों।

तो क्या सचमुच शिमला-सम्मेलन असफल हुआ है? शिमला-सम्मेलन में भाग लेनेवाली तीन प्रमुख पार्टियाँ कही जा सकती हैं। सर्वप्रथम ब्रिटिश साम्राज्यशाही के प्रतिनिधि स्वरूप लार्ड वैवेल, दूसरी कांग्रेस और तीसरी मुस्लिम लीग। निष्पक्षता के साथ यदि विचार किया जाय तो शिमला-सम्मेलन के आरम्भ में इन तीनों प्रमुख पार्टियों के सामने अपने एक निश्चित और प्रमुख उद्देश्य थे। यदि सचाई के साथ पूछा जाय तो यह तीनों पार्टियाँ शिमला-सम्मेलन में अपने अपने उद्देश्य को पूर्ण करने में पूरी तरह सफल भी हुई हैं। अतः शिमला-सम्मेलन को सफल कहने में कोई आपत्ति नहीं की जानी चाहिए।

* * *

शिमला-सम्मेलन के मूल प्रस्तावों को उपस्थित करने में लार्ड वैवेल ईमानदार थे या नहीं, यह प्रश्न महत्त्व का नहीं है, किन्तु जिस ब्रिटिश सत्ता का वे प्रतिनिधित्व कर रहे हैं उसमें ईमानदारी की कितनी भावना है यह चीज महत्त्व की है। इस शिमला-सम्मेलन से यह स्पष्ट हो गया कि अन्य वायसरायों की तरह लार्ड वैवेल जैसा कि उन्हें होना चाहिए ईमानदार हैं किन्तु भारत या भारतीय जनता के प्रति नहीं, अपने मालिकों के प्रति—ब्रिटिश हुकूमत के प्रति। ब्रिटिश हुकूमत यह घोषित करना चाहती थी, जैसा कि उसने पहले भी कई बार किया है कि भारतीय जनता को यदि वह आपस में समझौता कर लें तो उसे कुछ अधिकार देना चाहती है। ब्रिटिश हुकूमत जो कुछ देने का स्वाँग कर रही थी उससे भी अधिक वह चाहती थी, अपनी नीति का प्रचार। इस दृष्टि से लार्ड वैवेल ने ब्रिटिश सत्ता के प्रतिनिधि स्वरूप में जो नाटक रचा, उसकी एक निष्पक्ष व्यक्ति की दृष्टि से अवश्य सराहना करनी चाहिए। शिमला-सम्मेलन से यह बात प्रगट हो गई कि लार्ड वैवेल जैसे चतुर सेनानी हैं वैसे ही चतुर राजनीतिज्ञ। हो सकता है कि अपने इस महत्त्वपूर्ण कार्य के कारण वह भविष्य में और किसी महत्त्वपूर्ण पद पर आसीन कर दिये जायँ। हम भारतीयों को भी लार्ड वैवेल के प्रति कोई शिकायत नहीं होनी चाहिए। विरोधी की कोई राज-
नीतिक चाल सफल होने के
उसके प्रति कोई द्वेष नहीं होना
यह हमारा दोष है कि हम विरो
में आ जाते हैं।

ब्रिटिश निर्वाचन का
है और चर्चिल पंथियों का
पार्लामेंट में फिर भी है।
में चर्चिल पंथियों की
वैवेल ने की है उसे चर्चिल
कभी भूल न सकेंगे। इस
कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी शिमला
में पूर्णतः सफल रहे हैं।

* *

शिमला-सम्मेलन में मिस्टर
जो रुख लिया उसे यदि
देखा जाय तो वह ठीक ही था।
राय में मुस्लिम लीग मुसलमानों की
मात्र प्रतिनिधि संस्था है। इसमें
है कि मुस्लिम हितों का
निधित्व करनेवाली संस्था मुस्लिम
है। मुसलमानों की जो अन्य
वे मुसलमानों के एक विशेष
मतविशेष का प्रतिनिधित्व
भारत के समस्त मुसलमानों
बाँग देनेवाली संस्था, यह
पड़ेगा, कि मुस्लिम लीग ही है।
ने जो प्रस्ताव उपस्थित किये थे
किये जाते तो मुस्लिम लीग
कोई स्थान ही नहीं रहता।
पहले मुसलमान हैं तब भारतीय
सामने मुसलमानों का हित
का बाद में। जिस स्वतन्त्रता में
को विशेष हक नहीं वह
के लिए बेकार है। मिस्टर जिन्ना
दृष्टिकोण ठीक है और साम्प्रदायिक
मान की दृष्टि से वह ठीक
यदि इस सम्मेलन में
हिन्दुओं को प्रतिनिधि रूप में
किया जाता और वह वाइसराय
हिन्दू सदस्यों को नामजद करने
लीग की तरह हक न माँगती
भी साम्प्रदायिक अस्तित्व समाप्त
मुस्लिम लीग के सामने उसके
प्रश्न उपस्थित था। अतः उन्होंने
किया, उसकी राय से सहमत
भी, हम कह सकते हैं कि
किया। वायसराय ने लीग के
मानों की प्रतिनिधि होने का
शब्दों से स्वीकार न किया हो
लीग के सहयोग के अभाव में
सम्मेलन को असफल घोषित
स्वीकार ही सा कर लिया। यदि
मुस्लिम लीग की सर्वप्रतिनिधित्व
स्वीकार भी कर लेते तो भी शिमला
की असफलता निश्चित थी।
कांग्रेस सहयोग न करती। इस
यह देखते हैं कि मुस्लिम लीग

—शेष पृष्ठ १० पर

आजकल लड़ाई कैसे लड़ी जाती है

युद्ध भूमि में सैनिक कार्यों का मनोरंजक वर्णन

लेखक, श्रीयुत चन्द्रदत्त बी० ए०

आजकल का युद्ध कैसे होता है, इसे जानने के लिये उत्सुकता होनी अनिवार्य है। इस सुंदर लेख में यह बतलाया गया है कि विभिन्न मोर्चों पर सैनिक युद्ध किस प्रकार करते हैं और हथियारों का प्रयोग किस प्रकार होता है। लेख से युद्ध के कई मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक पहलुओं का ज्ञान होता है।

करती है। सैनिकों पर कमान्ड करनेवाले व्यक्तियों का कर्त्तव्य यह देखना होता है कि इन निर्णयों का भली भाँति पालन हो रहा है या नहीं।

जब सेनाओं में एक बार गुत्थम-गुत्थी हो जाती है तो अवसर के अनुसार युक्ति से काम लेने को दाँव-पेंच कहते हैं। युद्ध-कला या युद्ध चातुर्य्य और दाव-पेंच में फर्क है, यह बात याद रखने की है, गो कि दोनों आवश्यक रूप से एक-दूसरे से सम्बद्ध हैं।

दाँव-पेंच युद्ध में संलग्न समय की होशियारी और कार्य्य को कहते हैं, पर युद्ध-चातुर्य्य एक ऐसी तरकीब है जिससे युद्ध के तमाम हिस्से पर नज़र रखना पड़ता है। दाँव-पेंच को लड़ाई में लगी हुई सेनाओं के कार्य्य का अध्ययन कहा जाता है और युद्धकला को स्वयं युद्ध का ही अध्ययन। पहले का सम्बन्ध मिलिट्री अधिकारियों से और दूसरी का राजनीतिक विचारकों से होता है। सचमुच, आजकल का युद्ध साथ साथ चलनेवाले कई युद्धों से मिलकर बनता है। इसलिए युद्ध चातुर्य्य से बढ़कर दाँव-पेंच ही अच्छी तरह से निर्णय कर सकता है कि अपनी फौजों का अधिक से अधिक उपयोग किस स्थान और अवसर पर हो सकता है। यही मुख्य चाभी है जो विजय-मार्ग का फाटक खोलती है।

युद्ध के किसी भी भाग में दाँव-पेंच सेनाओं के वश की बात है। कमान्डर का यह कर्त्तव्य होता है कि मुख्य-मुख्य सैनिक मसलों पर विचार कर ले, जैसे घने जंगल से होते हुए ऊपर की पहाड़ी पर क़ब्ज़ा किये हुए दुश्मन की ओर किस प्रकार आगे बढ़े? इस बात का कैसे पता चले कि शत्रु के कौन-कौन से हिस्से बड़ी दृढ़ता के साथ सुरक्षित हैं और कौन कमज़ोर है? आक्रमण में विमानों तथा अन्य वर्तमान मशीनी ताक़तों का सबसे अच्छा प्रयोग किस भाँति हो? पिछड़ते हुए दुश्मन का लौटकर प्रत्याक्रमण कर बैठने पर उसको कैसे रोका जाय, या सही-सलामत शत्रु के चंगुल से कैसे निकला जाय आदि?

इन तमाम और अन्य ऐसे ही मसलों के लिए दाँव-पेंच के तरीक़े निकाले गये हैं। कमान्डिंग आफ़िसर का काम यह है कि वह इन दाँव-पेंचों को समझे। उन सब आक्रमणों में इनका प्रयोग करे जिनके लिए कि वह ज़िम्मेदार होता है।

एशिया हाई कमांड के सर्वोच्च सेनाध्यक्ष लार्ड लुई माउन्ट बेटेन परामर्श कर रहे हैं।

आजकल की विशाल सेना को युद्ध-क्षेत्र में उतारने के पूर्व उसके लिए बहुत बड़ी तैयारी करनी होती है। इस तैयारी की ज़िम्मेदारी वार आफ़िस पर है। साथ ही साथ दुश्मन की तैयारी तथा उसकी मन्शा का पता लगाते रहना भी ज़रूरी है। विशाल युद्ध-आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए गवर्नमेन्ट को देश के उद्योग-धंधों को भी साथ में घसीटना पड़ता है।

आरमी काउन्सिल का सेना पर पूरा पूरा अधिकार है। चीफ़ आफ इम्पीरियल जनरल स्टाफ़ मिलिट्री ट्रेनिंग दिलाने तथा युद्ध अनुभव इकट्ठा करने के अतिरिक्त युद्ध-संचालन का ज़िम्मेदार होता है। फौज बढ़ाने और उसे संगठित करने का भार ऐडजूटेन्ट जनरल पर है। फ़ौज को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजना या बाहर भेजना, उसके लिए आवश्यक सामग्री का इन्तज़ाम करना, क़िलेबन्दी करना तथा तमाम फ़ौजी इमारतों की ज़िम्मेदारी आदि क्वार्टर मास्टर जनरल विभाग पर रहती है। तीनों में से प्रत्येक विभाग को ऐसे कितनी सैकड़ों समस्याओं का हल करना रहता है। ये कार्य दुश्मन के अस्त्रों को निष्फल सिद्ध करने के प्रयत्नों से लेकर सहायक स्त्री सेना के इन्तज़ाम तक फैले हैं। युद्ध की प्रत्येक जटिल समस्या को दूरदर्शी की भाँति देखकर उसे अपने पक्ष में लाना होता है।

संचालन केन्द्र से लेकर दूर से दूर युद्ध छोर तक समाचार लेने, देने तथा युद्ध-सामग्री पहुँचाने का इन्तज़ाम फैला हुआ रहता है और इसी पर युद्ध-रथ की प्रगति निर्भर है। पैदल फ़ौज, तोपख़ाना, और नये नये ढंग के मशीनी रिसाले—इन सब के साथ साथ इंजीनियर, सिगनलमैन और अन्य लड़ाई के कार्य्य के योग्य सिखाये गये व्यक्तियों की इतनी मूल्यवान् आवश्यकता होती है कि बिना इनके आगे बढ़ना असम्भव है।

सेना के भिन्न भिन्न कार्य्यों के संगठन का स्वरूप मोर्चे पर ही तरह तरह की दाँव-पेंच की कुशलता के साथ देखने में आता है। ये आवश्यकतायें घंटे-घंटे पर स्वयं-रक्षा या आक्रमण के दाँव-पेंच के अनुसार बदलती रहती हैं। आगे आनेवाली बातों के लिए, पहले से ही लेखा-जोखा और अनुमान बैठा लिया जाता है—कि, गाँवों पर कब्ज़ा करना, जंगलीय प्रदेशों में लड़ना और नदी पार करना आदि—क्योंकि इन सब परिस्थितियों में स्थान का भौगोलिक ज्ञान अति आवश्यक है।

आक्रमण का स्वरूप केवल स्थान विशेष के भौगोलिक स्थिति पर ही निर्भर नहीं करता वरन् शत्रु की शैन्य-शक्ति पर भी। वर्तमान आक्रमण में अगुआ बम बरसानेवाला विमान होता है जो हथियार के बोझ से लदे टैंकों के आगे बढ़ने का रास्ता साफ़ करता चलता है; फिर इन टैंकों के पीछे नाना प्रकार की मशीनों से सुसज्जित विशाल सेना आगे बढ़ती है। तेजी से घूम फिर सकनेवाली मशीनी फ़ौजें, टैंक तथा हथियारबन्द गाड़ियाँ रक्षा लाइन में थोड़ा भी गैप पा जाने पर अन्दर घुसतीं, फैलती शत्रु के पीछे के हिस्से को बरबाद करने लगती हैं। जीते हुए स्थान पर अधिकार क़ायम करने के लिए पैदल फ़ौज टुकड़ियों में आगे बढ़ती है। टैंक विरोधी तोपों के अतिरिक्त समूचा तोपख़ाना विमानों के साथ-साथ काम करता चलता है। इस दाँव-पेंच को पहले-पहल जर्मनों ने पोलैंड, हालैंड तथा मई सन् ४० में फ़्रांस के आक्रमण में इस्तेमाल किया था।

आक्रमण के सिद्धान्तों में 'अचानक हमले' की भी गिनती है। पर आजकल

—शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

मोटर पर चढ़ी हुई बाफर्स तोप

मीरांबाई—नाम या उपनाम ?

ऐतिहासिक दृष्टि से क्या सही और क्या गलत है ?

लेखक, कुँवर सुखबीरसिंह गहलौत

(इतिहास-विभाग, लखनऊ-विश्वविद्यालय)

इस लेख के लेखक ने ऐतिहासिक प्रमाण देते हुए यह सिद्ध किया है कि मीरांबाई कवियित्री का नाम ही है। मीरां एक विदेशी शब्द न होकर शुद्ध भारतीय शब्द है जिसका प्रचलन मीरांबाई के जन्म से भी पहले था।

इस लेख के लेखक कुँवर सुखबीरसिंह गहलौत। आप जोधपुर के सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ ठाकुर जगदीशसिंह गहलौत के सुपुत्र हैं।

भक्तशिरोमणि, मीरांबाई का जीवन-चरित हिन्दी के अनेक कवियों की तरह हमारे सामने एक पहेली बना हुआ है। उनके जीवन के विषय में कोई भी कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कह सकता है। मीरां ने अपने लिए लिखा भी बहुत ही कम है। लिखतीं भी क्या? वे तो श्रीकृष्ण की भक्ति में सब कुछ भूली बैठी थीं। हम केवल उनके रचे पदों से उनके जीवन का एक धुँधला-सा चित्र खींच सकते हैं। मीरां ने अपने लिए जो कुछ लिखा वह केवल किसी प्रसंगवश। उन पदों में भी क्षेपक बहुत हैं जिनके कारण उनमें पूर्णतया सत्यता खोजना बहुत कठिन है।

मीरां के जीवन में सबसे पहले प्रश्न आता है उनके नाम के विषय में। क्या मीरां नाम भी "भूषण" की तरह उपनाम ही है? क्या यह नाम जन्म-नामकरण के समय रक्खा गया था या बाद में किसी विशेष गुण के कारण उपनाम स्वरूप रक्खा गया? इसके लिए सर्वप्रथम स्वर्गीय डाक्टर पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने एक शंका उठाई[1]। उनका कहना था कि "मीरां कवियित्री का नाम नहीं बल्कि उपनाम है। साथ ही यह एक विदेशी शब्द है और हिन्दी में विशेष अर्थ में प्रयोग किया गया है। उनको यह भ्रम कबीर की इन साखियों को देखकर हुआ है :—

(१)

चोहट्टे चिन्तामणि चढी,
हाड़ी मारत हाथि।
मीरां मुझ सूँ मिहर,
करिइब मिलौं न काहू साथि॥

(२)

कबीर चाल्या जाइया,
आगे मिल्या खुदाई।
मीरां मुझसौं यौं कह्या,
किनी फुरमाई गाई॥

(३)

हज काबै ह्वै ह्वै गया,
केती बार कबीर।
मीरां मुझमें क्या खता,
मुखा न बोलै पीर॥

इनमें "मीरां" का अर्थ है ईश्वर। पहली तथा तीसरी साखी में मीरां सम्बोधन-कारक है तथा दूसरी में कर्त्ताकारक। डाक्टर साहब को इसका मूल शब्द किसी देशी कोष में नहीं मिला। उनके विचार में यह शब्द आया फ़ारसी से और उसी से "मीरां" शब्द की व्युत्पत्ति का होना सम्भव है। अंत में वह इस निर्णय पर पहुँचे कि यह शब्द एक विदेशी शब्द है और कवियित्री को उनके समकालीन साधु-संतों ने उनके भक्ति-भाव को देखकर यह उपनाम दिया। अतः उनके विचार से मीरांबाई का अर्थ हुआ—प्रभु-पत्नी या ईश्वर की स्त्री।

इस विषय में सबसे पहले शंका उठती है कि क्या मीरां शब्द का प्रयोग सबसे पहले कबीर ने ही किया? क्या यह नाम इसके पहले हिन्दी साहित्य में नहीं मिलता? हिन्दी-साहित्य में सबसे प्रथम "मीरां" नाम से साम्य रखता हुआ ऐतिहासिक नाम मिलता है—"हम्मीर" जो वि० सं० १३८३ (ई० सन् १३२६) के लगभग चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) की राजगद्दी पर बैठे थे[1]। कवियित्री मीरां के ही समकालीन हम जोधपुर के राव मालदेव राठोड़ की पुत्री का नाम भी मीरां पाते हैं जिसका विवाह वागड़ प्रदेश (दक्षिणी राजपूताना) में हुआ था[2]। इन्हीं राव मालदेव का झगड़ा कवियित्री मीरां के चाचा से बराबर चलता रहा। बहुत कम संभव है कि एक राजा अपनी पुत्री का नाम अपने शत्रु की पुत्री के नाम से साम्य रखता हुआ रक्खे। यह तो तभी संभव है जब कि यह नाम बहुतायत से प्रचलित हो। इससे यही प्रतीत होता है कि मीरां शब्द का प्रयोग हिन्दी नामकरण में १४वीं शताब्दी में कबीर के बहुत पहले आरम्भ हो गया था। भक्त या कवियित्री मीरां के बाद यह नाम बहुत ज्यादा प्रयोग में आने लगा।

अब प्रश्न उठता है कि मीरां शब्द किस भाषा का है और इसका क्या अर्थ है? फ़ारसी और अरबी भाषा के दो शब्द हैं—अमीर और मीर। इनका अर्थ है—सरदार या प्रधान। मुसलमानी राजत्व काल में हम मीर बख्शी, मीर बहर, मीर मजलीस, मीर मुन्शी आदि प्रधान अधिकारियों के पद पाते हैं। १४वीं शताब्दी के लगभग राजपूताने पर मुग़लों के आक्रमण आरम्भ हो गये थे और इसी कारण बहुत सम्भव है कि राजपूताने में भी विदेशी शब्दों का प्रयोग आरम्भ हो गया होगा। मीरां के पदों में भी विदेशी शब्द जहाँ तहाँ दिखाई दे जाते हैं। लेकिन यह संभव नहीं कि एक राजपूत राजकुमार या राजकुमारी का नाम या उपनाम विदेशी रक्खा जाय। राजपूत सदा अपनी आन व शान पर मिटनेवाले रहे हैं। अब कुछ कुछ पुरुषों के नामों में विदेशीपन आने लगा है, फिर भी हिन्दू महिलाओं के नामों में नहीं। अतः मीरां का समय देखते हुए यह असम्भव है कि एक श्रीकृष्ण के प्रेम में पागल हुई राजपूत राजकुमारी का नाम या उपनाम विदेशी रक्खा जाता।

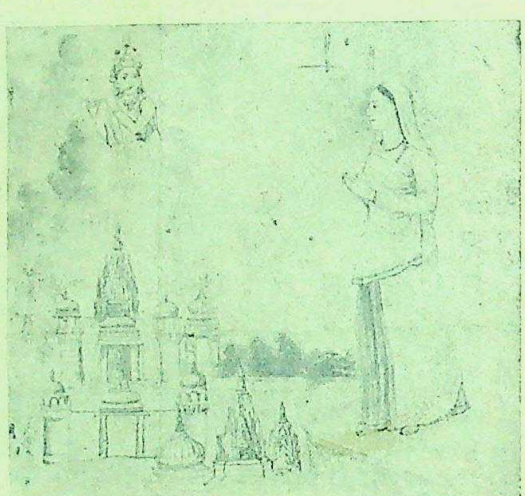

मीरांबाई का यह चित्र जोधपुर के किले के प्राचीन संग्रह से मिला हुआ है। इसमें मीरां मेड़ता नगर में अपने बनवाये चारभुजा (श्रीकृष्ण) के मंदिर के पास खड़ी हैं। आज तक के मीरां के बाजारू चित्रों में यही असली चित्र है। राजपूताने की विधवा महिलाओं का पहनावा इसी प्रकार का रहा है साथ ही उनका स्वास्थ्य और शरीर का नाप भी। यद्यपि यह चित्र मीरां का समकालीन नहीं जँचता फिर भी मीरां के चित्र से बहुत कुछ मिलता है।

"मीरां" से ही बहुत कुछ साम्य रखता संस्कृत का एक शब्द है—वीर। इसी वीर शब्द का स्त्रीलिंग है—वीरां अर्थात् पुत्री या लड़की। राजपूताने में बच्चों को ज्यादातर इसी नाम से पुकारते हैं। इतिहास में भी यह नाम पाया जाता है। जोधपुर में वीरां नामक एक कवियित्री भी हो गई है[1]। उसके पद भी कृष्ण भक्ति से परिपूर्ण हैं। भारतीय साहित्य में ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिनमें "व" शब्द का "म" हो गया है। यथा कवल—कमल, साँवला—श्यामला, ब्राह्मण—माहण, विवेक—विमेख, विनती—मिनती आदि। सम्भव है कि यही "वीरां" शब्द मीरां का मूल शब्द हो। यही वीरां नाम मीरां में बदलकर प्रचलित हो गया हो। वीरां के पुल्लिंग वीर का अर्थ होता है बहादुर

जिसका राजपूतों में प्रयोग
सम्भव है।
दूसरी ओर हिन्दी में कुछ
भी हैं जिनसे मीरां शब्द की
और भी ज्यादा सम्भव है। वे
मिहिरण = शिव; मर्य = वीर;
सूर्य या चन्द्र। इन्हीं संस्कृत शब्दों
तथा उच्चारण के फेर से मीर
में कोई सन्देह नहीं। किसी नाम को
से स्त्रीलिंग बनाने में "आं"
राजस्थानी भाषा में बहुत
इस कारण मीर से मीरां होने
सन्देह नहीं। उदाहरणस्वरूप
भी कई नाम हैं—तेजां, पुष्पा,
आदि। बहुत से लेखक मीरां
कहते हैं व प्रयोग में लाते हैं।
नहीं। शुद्ध उच्चारण मीरां ही है।
अतः मीरां संस्कृत का ही
डाक्टर बड़थ्वाल ने "बाई" का
है पत्नी। राजपूताने में बाई
माँ, बहन या बेटी के लिए होता है
के लिए नहीं। अतः मीरां बाई
प्रभुपत्नी लगाना तो किसी तरह
नहीं।

कुछ विद्वानों का मत है कि
पूर्व उसके पिता रतनसिंह के एक
हुआ था। जिसका नाम
उसकी अबोध अवस्था में ही
इससे माता बड़ी शोकातुर हुई।
कर पीर की एक आया ने
के ख्वाजा मोहनुद्दीन चिश्ती के
पीर सय्यद मीरांहुसैन खंगसवार
माँगने को कहा। माता ने वैसा ही
और उसी कारण मीरां का जन्म
यह मत उचित नहीं जंचता।
हम आगे चलकर देखेंगे। मीरां
माता-पिता की पहली संतान थीं
की आयु के पहले २० वर्षों में ही
गई थी। इस कारण यह सम्भव
उसके माता-पिता भरी जवानी
के लिए इतने लालायित हों
कोटि देवताओं को छोड़कर पीरों
दौड़ते फिरें। कम से कम
कुलदेवी तथा हिन्दू देवताओं से
दूसरी ओर अजमेर (तारागढ़) के
सय्यद मीरांहुसैन खंगसवार
हाथों से वि० सं० १२५९ हि०
३ (हिजरी ५९८ ता० १७
सन् १२०२ ता० १२ अप्रैल)
मारा गया था। उसकी
सं० १६०१ (ई० सन् १५४४)
नीय न होकर केवल एक सिपाही की
विश्रामशय्या ही रही[1]। सर्वप्रथम
अकबर यहाँ (अजमेर) एक
तरह वि० सं० १६१८ माघ
सन् १५६२ जनवरी) में आया
के पश्चात् मीरां साहब की
धार्मिक पूजनीय स्थान बन
अतः वि० सं० १६१८ (हि०
मीरां साहब एक पीर की तरह
हुए। इस प्रकार मीरांबाई के
पीर मीरांहुसैन खंगसवार (मीरां
का लोग नाम भी नहीं जानते
क्यों वह कैसे मीरां की माता
की दरगाह पूजने जाती। इस कारण
साहब के कारण मीरां का
जाना बहुत ही सन्देहजनक है।
तब क्या मीरां नाम ही है?
रतनसिंह राठोड़ की यह पहली
थी। व राव दूदा जी को
सर्वप्रथम इसी पौत्री को देखने
मिला था। इस कारण यह मत

---

[1]—मीरांबाई नाम; सरस्वती भाग ४०, संख्या ३ पृ० २११–१३।

[1]—ठाकुर जगदीशसिंह गहलौत, राजपूताने का इतिहास पृ० २०३।

[2]—डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, खण्ड १ पृ० ३२९।

[1]—मुन्शी देवीप्रसाद; "महिला मृदुवाणी" पृ० ३९ (ई० सन १९०५)

[1]—दीवान बहादुर हरबिलास
एम० एल० ए०, "अजमेर
एण्ड डिस्क्रिपटिव" पृ० ५६
संस्करण)।

—शेष पृष्ठ १७ पर

वैवेल-योजना असफल क्यों हुई?

राष्ट्र में साम्प्रदायिक और बटवारे की नई समस्यायें

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

वैवेल-योजना समाप्त हो गई इसीलिए शिमला सम्मेलन भी भंग हो गया। किन्तु योजना की प्रतिक्रिया इस समय क्या हुई और भविष्य में उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, यह भी समझने का विषय है। योजना से साम्प्रदायिक और दलबन्दी के बटवारे की नई नई समस्यायें भविष्य में उत्पन्न हों तो आश्चर्य नहीं? इस लेख में इन्हीं समस्याओं पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया है। लेख सामयिक, सुन्दर और विचारणीय है।

का प्रश्न राष्ट्रीय शासन-व्यवस्था स्थापित करते समय तो उठता नहीं आज तो केवल युद्धोपरान्त राष्ट्रीय शासन-व्यवस्था क़ायम करने का प्रश्न था। भावी वैधानिक परिषद में मुस्लिम लीग के विचारों की पुष्टि न की जाती तो मुस्लिम लीग और उसके नेता श्री जिन्ना को शियाकत हो सकती थी।

परन्तु यदि देखा जाये तो वैवेल प्रस्ताव स्वयं इतना कमज़ोर था कि किसी भी प्रकार से उसकी सफलता असम्भव थी। मुस्लिम लीग ने उसको अपने मतलब और दृष्टिकोण से देखा था और सोचा था कि यदि ५० सीट लीग को मिल जायेंगी तो उसे सफलता मिलेगी। अपने को समस्त जाति का प्रतिनिधि मान कर मुस्लिम लीग ने इस अवसर पर अड़ंगा डालने की नीति का ठीक-ठीक प्रतिपादन किया है। उस संस्था से आशा ही किस बात की की जा सकती थी?

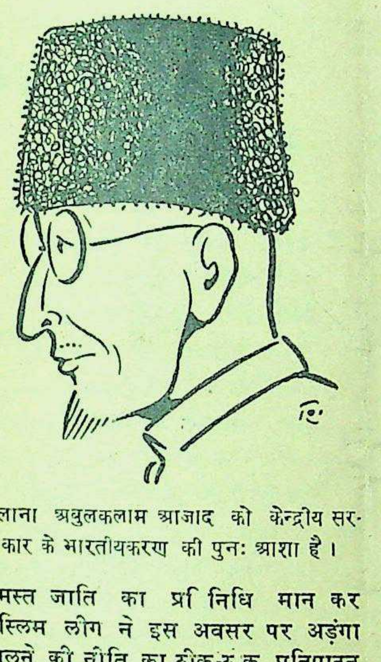

मौलाना अबुलकलाम आजाद को केन्द्रीय सरकार के भारतीयकरण की पुनः आशा है।

सबसे बड़ी ग़लती जिसको लार्ड वैवेल अन्त तक नहीं सुधार सके वह थी कांग्रेस और मुस्लिम लीग को समान स्थान देना। लार्ड वैवेल के इसी समानता के दृष्टिकोण से कांग्रेस को भी काफ़ी झुंझलाहट हुई है। एक साम्प्रदायिक संस्था के सामने लार्ड वैवेल ने राष्ट्रीय संस्था का अनादर किया है। वैवेल प्रस्ताव ने भविष्य के लिए साम्प्रदायिक समस्या को इतना गहरा बना दिया है कि जिससे साम्प्रदायिक प्रतिक्रियावादी शक्तियां आज काफ़ी मजबूत और दृढ़ हो गई हैं। मुस्लिम लीग की आवाज काफ़ी अधिक बढ़ गई है और साम्राज्यवादी नीति की विजय हुई है।

कुछ लोगों की समझ में नहीं आता कि जब अन्य भारतीय राजनैतिक दलों ने वैवेल प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तो केवल योरोपियन और लीग के न मानने से सम्मेलन को क्यों असफल बनाया गया? इस बात में सबसे पहले जैसा कि मौलाना आज़ाद ने कहा है वह है लार्ड वैवेल के व्यक्तित्व की दुर्बलता। एक शक्तिवान वाइसराय कभी भी एक पार्टी के अस्वीकार करने से उन पार्टियों की अवहेलना न करता जो कि साथ देने को प्रस्तुत थीं। जब प्रान्तों में कांग्रेस जैसी संस्था को बन्द करके लीग की शासन-व्यवस्था आसानी से चलाई जा सकती है, जब बंगाल जैसे अकाल में भी लीग शासन-व्यवस्था सुचारु रूप से चल सकती है और कांग्रेस को बन्दी बनाकर लाशों की देखभाल की जा सकती है तो यदि मुस्लिम लीग ने वैवेल प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया था, फिर भी यदि वाइसराय चाहते तो बाक़ी पार्टियों की सहायता से कार्यकारिणी आसानी से चला सकते थे।

परन्तु ऐसा सम्भव भी कैसे हो सकता था? ब्रिटिश साम्राज्यवादियों की नीति उसी दिन बदली जिस दिन कांग्रेस ने अपने चुने हुए नामों की पत्रिका वायसराय को भेंट की! पहले तो शायद कांग्रेस को ही इस असफलता का भार ढोना पड़ता, पर जब कांग्रेस को स्वीकृति मिल गई तब ह्वाइट हाल के भी कान खड़े हुए। वैवेल घोषणा में कहीं भी इस बात का नाम नहीं लिया गया है कि यदि निमंत्रित पार्टी में से कोई भी उस प्रस्ताव को अस्वीकार करेगा तो शासन-व्यवस्था नहीं क़ायम की जा सकेगी यदि इस बात की घोषणा भी साथ-साथ की जाती तो शायद कांग्रेस का दूसरा ही रुख होता। सारी योजना को नई दृष्टि से देखा जाता और फिर कान्फ़्रेंस के होने के पहले ही यह साफ़ मालूम हो जाता कि वैवेल प्रस्ताव क्या है और क्या अस्तित्व रखता है? सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स के प्रस्ताव की भांति डाउनिंग स्ट्रीट से जो नये-नये चुटकुले ठीक उस समय पेश किये गये थे जब कि सर स्टेफ़र्ड अपनी उलझी हुई आयोजना का एक चित्र हमारे सामने रख चुके थे, ठीक उसी तरह एमरी साहब ने अपनी अंतिम नीति का पालन ठीक उस समय किया जब कि प्रायः सभी चीज़ें ठीक तरीक़े से एक रास्ते पर आ चुकी थीं। जब वायसराय की घोषणा में हमें यह बात नहीं मिलती तो फिर सिवा उसके कि अंतिम समय पर मिस्टर एमरी ने इस बात पर जोर दिया हो कि यदि मुस्लिम लीग उसे स्वीकार नहीं करती तो आयोजना असफल हुई और कोई कारण इसकी असफलता के लिए नहीं मानी जा सकती।

वे काग़ज़ी घोड़े जो शिमला में दौड़ाये गये थे वह यहीं तक सीमित नहीं है। जैसा कि हम जानते हैं कि वैवेल प्रस्ताव अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के परिवर्तन और सैनफ़्रांसिस्को सम्मेलन में ब्रिटिश नीति के भंडाफोड़ होने से ही जन्म पा सका है। ब्रिटिश हुकूमत ने फिर अंतर्राष्ट्रीय जनमत को अपने पक्ष में करने की कोशिश की है। इतनी बड़ी सूची जिसके अनुसार शिमला कान्फ़्रेंस की आयोजना की गई थी, वह केवल इस बात पर नष्ट की जा सकती है कि मुस्लिम लीग ने—जो केवल मुसलमानों के एक वर्ग की प्रतिनिधि सभा है—उसे अस्वीकार कर दिया है। वस्तुतः ब्रिटिश शासन ने वैवेल योजना को असफल बनाकर अंतरराष्ट्रीय देशों को यह बताने की कोशिश की है कि हम तो सब कुछ देने के लिए तैयार हैं पर हिन्दुस्तानी स्वयं इतने बड़े नालायक़ हैं कि उन्हें

भारत के वाइसराय लार्ड वैवेल जिन्होंने अपनी योजना की असफलता स्वीकार की है।

स्वतंत्रता लेनी आती ही नहीं। उसका भी उत्तर साफ़ है। स्वतन्त्रता न तो किसी भी राष्ट्र को कोई राष्ट्र दे सकता है और न वह राष्ट्र जो दी हुई स्वतन्त्रता पर टिका है कभी भी स्वतन्त्रता का अनुभव ही कर सकता है। स्वतन्त्रता लेने की चीज़ है, वैवेल आयोजना के सहारे स्वतन्त्रता ढूंढ़ना ग़लत है।

ब्रिटिश नीति का मुक़ाबला भी करना आसान नहीं। भारतीय स्वतन्त्रता को वैवेल प्रस्ताव ने साम्प्रदायिक समस्या बना दिया। उस राजनैतिक जाग्रति को जिसे कांग्रेस ने पिछले ३० वर्षों से देश में फैलाया था आज उस पर जो एक बड़ा धक्का लग गया है और वह है साम्प्रदायिकता का। भविष्य में इस साम्प्रदायिक समस्या का क्या परिणाम होगा इसको भी समय ही बता सकेगा।

जिस आधार को मानकर कांग्रेस ने वाइसराय के कार्यकारिणी के पद को ग्रहण करने की बात सोची थी वह सिद्धान्ततः तो ठीक था पर वस्तुतः उससे अब नई-नई उलझनें देश के सामने आकर खड़ी हो गई हैं। यह मानते हुए कि कांग्रेस ने जनता में फैली हुई अशांति की रक्षा के लिए पद-ग्रहण करना चाहा था किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में इसका प्रभाव उलटा पड़ा है। साम्प्रदायिक दृष्टिकोण से परिस्थिति में कोई भी परिवर्तन नहीं दिखलाई देता। कांग्रेस ने साम्प्रदायिक आधार पर मुस्लिम लीग के साथ जो शासन-व्यवस्था स्थापित करने की कोशिश की यह स्वयं गलत थी। कांग्रेस में भी एक प्रकार की फूट की आशंका दिखाई देती है। यदि वाइसराय की कार्यकारिणी में एक सीट राष्ट्रीय मुसलमान के लिए कांग्रेस रखना चाहती थी तो फिर अन्य सम्प्रदायवाले भी तो यही चाहेंगे? जैसे ईसाई, सिक्ख और दूसरी जातियाँ। सरदार तारासिंह

—शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

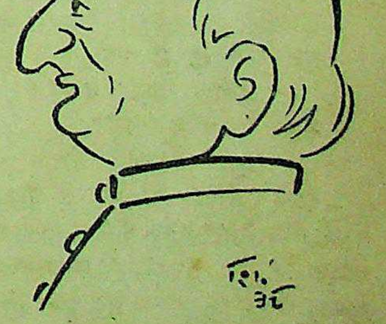

श्री भूलाभाई देसाई जिनका हाथ वैवेल-योजना में विशेष रूप से था।

गाँवों में रचनात्मक कार्य-क्रम

आर्थिक संकटों के दूर करने का एक उपाय

लेखक, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू

महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों में गाँवों को आदर्श गाँव बनाना भी एक महत्त्वपूर्ण कार्य है, हमारे प्रान्त के सुप्रसिद्ध नेता डाक्टर काटजू कार्यक्रम के इस अंग की पूर्ति के लिये उद्योगशील हैं। आपके प्रयत्न से प्रयाग जिले के एक गाँव में इस महत्त्वपूर्ण कार्य का प्रारम्भ हुआ जिसका वर्णन इस लेख में किया गया है। जनता से इसके लिए आर्थिक सहायता अपेक्षित है।

इस समय भारतवर्ष में तरह तरह की कठिनाइयाँ भारतवासियों के सामने उपस्थित हैं। हर चीज का अभाव है। अनाज, कपड़ा, तेल आदि सभी आवश्यक चीजों का अकाल-सा है। कुछ लोग यह समझते हैं कि लड़ाई पच्छिमी देशों में समाप्त हो गई है, जापानवाली लड़ाई भी ज़्यादा नहीं चलेगी और यह कठिनाइयाँ शीघ्र ही दूर हो जायँगी। यह विचार सही नहीं है। अपने भारतवर्ष में कपड़ा, चावल आदि बहुत-सी चीजें विदेशों से आती थीं। लड़ाई के पहले तो सबको याद होगा कि जापान के सस्ते माल ने हमारे बाजारों पर कब्जा कर लिया था। योरोप और अमेरिका से भी भिन्न-भिन्न चीजें आती थीं। अब जापान से सब माल आना बन्द हो गया और बरसों तक वहाँ से माल आने की आशा नहीं है। योरोप में लड़ाई बन्द हो गई, सही है, परन्तु योरोप तो बरबाद हो गया। वहाँ की मिलें, फैक्टरियाँ और कारखाने सब तबाह हो गये। बरसों तक योरोप वालों को बाहर से माल मँगाना पड़ेगा। इस सबका परिणाम यह है कि हमारे देश में बाहर से माल आना मुद्दतों तक असम्भव है। वास्तव में हमारी हार्दिक कामना भी यही है कि भारत इस दृष्टि से पूर्णरूपेण स्वावलम्बी हो जाय और हमको किसी विदेशी वस्तु की मुहताजी न रहे। कांग्रेस का रचनात्मक कार्य-क्रम इसी सिद्धान्त पर निर्भर है। बल्कि इस कार्य-क्रम में तो एक दूसरी विशेषता यह भी है कि भारत का प्रत्येक गाँव स्वावलम्बी होगा और ग्राम-निवासियों को जो उनको आवश्यकता की चीजें हैं, सब गाँवों में ही मिल जायेंगी। मुख्य चीजें जो दैनिक जीवन के लिये दरकार हैं वे हैं कपड़ा, घी, तेल, साबुन और जूते इत्यादि। यह सब चीजें गाँवों में आसानी से बन सकती हैं। हमारे गाँव आजकल दरिद्र हैं। ग्रामवासियों के पास धन बहुत कम है। लेकिन गरीबों का धन तो उनका समय होता है, अगर वे अपने समय को नष्ट न करें तो अपनी जरूरत की सब चीजें बना सकते हैं। कांग्रेस की स्वातंत्र्य-योजना से रचनात्मक कार्यक्रम का जो सम्बन्ध है उसकी अधिक चर्चा करना जरूरी नहीं। पच्चीस बरस का अनुभव यह बतलाता है कि अहिंसा, असहयोग और रचनात्मक कार्यक्रम ये तीनों मिलकर हमारी स्वतन्त्रता हासिल करने के जबरदस्त हथियार हैं और इनके द्वारा भारत की ही राजनैतिक मुक्ति नहीं होगी बल्कि समस्त संसार के त्राणकर्त्ता यही होंगे।

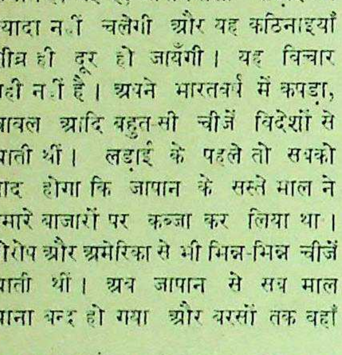

युक्त-प्रांत के सुप्रसिद्ध कांग्रेस नेता डाक्टर कैलाशनाथ काटजू गाँवों में रचनात्मक कार्यक्रम की ओर सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

गांधी जी के उपदेश से इसी नीति पर ध्यान देकर चरखा-संघ ने अपनी नीति बदल दी है। अब यह चेष्टा है कि हर गाँव स्वावलम्बी हो जाय। गाँव के लोग अपना कपड़ा स्वयं तैयार करें। ग्राम-उद्योग द्वारा और चीजें बनायें। बाहर के लोगों की सहायता पर अधिक विश्वास न करें और न उन पर निर्भर या आश्रित रहें, अपनी मुक्ति अपने परिश्रम से करें। इसी पहलू पर नजर रखते हुए चरखा-सङ्घ ने यह निश्चय किया है कि १ जुलाई से खादी उसी ग्राहक के हाथ बेची जायगी जो कम से कम प्रत्येक रुपये मूल्य में दो पैसे का सूत अदा करेगा। कामना यह है कि इस तरीके से चरखे का प्रचार अधिक हो।

आजकल रचनात्मक कार्यक्रम की चारों तरफ चर्चा है। घूम-फिरकर इधर-उधर भटकने के बाद अब फिर हम सबको इस पर विश्वास पैदा हो गया है। गाँव गाँव में इसको चलाने की चर्चा हो रही है और वर्तमान समय की कठिनाइयों को जानते हुए ग्रामवासी इस कार्यक्रम पर अमल करने को बहुत उत्सुक भी हैं। आवश्यकता यह है कि इस समूचे कार्यक्रम को नियमानुसार माला के रूप में एक ही में गूँथ दिया जाय और जिले भर के गाँव एक संगठित रूप से इस काम को करने लगें। गाँववालों को कच्चा माल प्राप्त करने में बड़ी असुविधा होती है। चरखे और घानी इत्यादि नहीं मिलतीं, अच्छी रुई नहीं मिलती, कपड़ा बुनने का अच्छा प्रबन्ध नहीं होता। जो माल तैयार हो, गाँव में उसकी खपत होने के बाद माल की बिक्री का कोई उचित प्रबन्ध हो। इसकी आवश्यकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हर जिले में एक ऐसी संस्था हो जो प्रत्येक ग्राम-केन्द्र की सहायता और रक्षा करे तथा अपने प्रबन्ध से खादी-उत्पादन के केन्द्र खोले।

इसी विचार से प्रयाग में एक ट्रस्ट कायम किया गया है। इसका काम [illegible] उत्पादन के लिए इलाहाबाद जिले में कई केन्द्र स्थापित करे और अन्यान्य ग्राम-उद्योगों को भी समुन्नत करने की व्यवस्था करे। इन केन्द्रों में केवल खद्दर ही नहीं बनाया जायगा बल्कि काफी चरखे भी बिक्री के लिये बनाये और रक्खे जायँगे, अच्छे प्रकार की रुई भी स्टाक की जायगी, कपड़ा बुनने की भी सुव्यवस्था होगी। जो भाई-बहिन चरखा चलाना चाहेंगे उनको ट्रस्ट के केन्द्रों की हर चीज उचित दामों में मिल सकेगी और अपने सूत का कपड़ा वे बुनवा सकेंगे। ट्रस्ट का एक कार्य यह भी होगा कि जो ग्राम-केन्द्र या कोई और भाई, बहिन रचनात्मक कार्य आरम्भ करेंगे उनको उचित एवम् सन्तोषजनक रीति से आर्थिक सहायता भी कर्जे के रूप में या और किसी ढंग से दी जायगी। ट्रस्ट का एक जबर्दस्त मकसद यह है कि खादी और ग्राम-उद्योग की बनी हुई चीजों का चलन बढ़े।

हमारी इच्छा है कि प्रयाग का यह ट्रस्ट प्रान्त के दूसरे जिलों के लिए एक नमूना बन जाय और इसी आ
प्रान्त के सब जिलों में रचना
बढ़ाया जावे और हर जिला जितनी
पूँजी की जरूरत हो, अपने जि
इकट्ठा करके पूरी करे। यह भी
है कि जब प्रान्त में कम से कम
ऐसे हो जायँ तो उन सब की एक
संस्था बनाई जाय ताकि वे
सहयोग से एक दूसरे की सहायता

आरोंदा ब्रुज ब्रप १८६६ नीलगिरि छाप
स्थापना १९२६] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय
हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएंजा, प्लेग, आदि बीमारियों से बचानेवाला।
१ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५॥=) डा०ख०
युकलिप पेन बाम तथा दाद का मरहम कारखाने में बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये

शीघ्र आयगा!

लाखों व्यक्ति हर रोज सबेरे स्वास्थ्यवर्धक एण्डरूजका आनंद लेनेसे बंचित रह जाते थे पर उन्हें इसका विश्वास होना चाहिये कि निकट भविष्यमें विपुल परिमाणमें जहाजसे माल पहुंचेगा। अपने चिर-परिचित एण्डरूजकी प्रतीक्षा करें जो पूर्ण विशुद्ध, वैज्ञानिक प्रणाली से निर्मित, प्रयोगशाला द्वारा परीक्षित तथा प्रस्तुत किया स्वास्थ्य विज्ञानके नियमोंपर आधित है। अब आप पुनः हर रोज प्रातः एण्डरूजके ग्लासका आनंद ले सकेंगे आन्तरिक सफाई होगी जो स्वास्थ्य ठीक रखनेके लिये आवश्यक है।

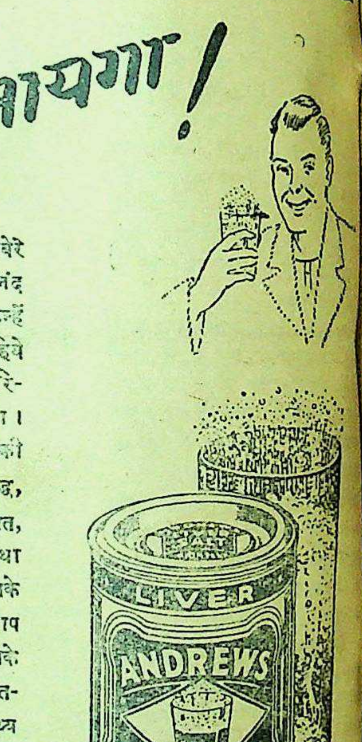

आपका सबेरे का
ANDREWS
एण्डरूज
आन्तरिक सफाई के लिये
आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य का प्रथम नियम
24

धोखा

लेखिका, सुश्री एम० तकम्मा, सरस्वती

> प्रायः युवकों में उच्च शिक्षा प्राप्त करते ही और यदि विदेश हो आये तो और भी उनकी वैवाहिक भावनाओं में परिवर्तन होते देखा गया है। पूर्व की भावनाओं पर पश्चिमी भावनायें प्रभाव जमा लेती हैं। इस कहानी में इसी प्रकार की घटनाओं से पूर्ण वातावरण का चित्रण किया गया है, लेखिका दक्षिण भारत की एक हिन्दी-प्रेमिका विदुषी हैं, साथ ही मलयालय भाषा की श्रेष्ठ कहानी लेखिका भी हैं।

"क्यों ?"

"आप विलायत जा रहे हैं, साहब बन कर धन, कीर्ति, डिग्री आदि के साथ लौटेंगे, इसलिए !"

"क्या, मेरी यात्रा तुम्हें पसन्द नहीं ? इसका क्या कारण है ?"

"क्या कारण है ? कुछ नहीं ! आपको किस बात की कमी है ? डिग्री लेकर आप बड़े पद पर नियुक्त हो जायेंगे, और धन कमायेंगे। क्या मामा की अतुल सम्पत्ति आपके लिए काफ़ी नहीं है ? मेरे पिता जी और अम्मा की भी दी हुई भारी संपत्ति जो मेरे नाम से है, वह भी तो आप ही की है ? इससे भी तृप्त नहीं होते ? बी० ए०, एम० ए०, डाक्टर तक की डिग्री आप हिन्दुस्तान में रहकर प्राप्त कर सकते हैं। फिर आप विलायत क्यों जा रहे हैं ? मैं इसका दूसरा ही अर्थ निकालूँगी ?"

"क्या ?"

"विलायत हो आनेवाले हिन्दुस्तानी एक एक मेम साहबाओं को भी ले आते हैं। उनकी सफ़ेद आँखों, भूरे बालों, गोरे शरीरों तथा स्वतन्त्र जीवन पर मुग्ध होकर माता-पिता, पत्नी या सन्तानों तक को यहाँ के युवक भूल जाते हैं। कौन जाने आप इस प्रलोभन से छूट सकेंगे कि नहीं ?"

कुमार ज़ोर से हँस पड़े, बोले––"वाह मेरी रानी ! तुम्हारी शंका विचित्र है। मैंने सोचा था पढ़ी-लिखी लड़कियाँ, खास कर तुम जैसी युवती ऐसी मिथ्या धारणा नहीं रख सकतीं । किन्तु तुम भी उन मामूली लड़कियों में से एक निकलीं। अगर मेरे ऊपर तुम्हें इतना भी विश्वास नहीं तो पिता जी की इच्छा के अनुसार अभी हमारा विवाह हो जाय। मैंने सोचा था कि विलायत से वापस आकर ही विवाह करना ठीक होगा।"

"विवाह हो जाय या न हो, इसमें क्या रखा है ? आप तो वहाँ स्वतन्त्र ही रहेंगे न ? अगर आपका प्रेम सच्चा है तो मुझे क्या डर ?" विमला ने कहा।

"तुम व्यर्थ की चिन्ता छोड़ो विमला। हमारा विवाह छुटपन में ही हो गया है न। मैं गोरे चमड़ेवाली, सफ़ेद आँखोंवाली, भूरे बालवाली मेम साहबाओं के चक्कर में नहीं पड़ूँगा, आँखउठाकर भी नहीं देखूँगा। विश्वास रखो। उनके सफ़ेद चमड़ों से मनोहर है तुम्हारा शरीर, उनकी सफ़ेद आँखों से सुन्दर हैं तुम्हारी काली-काली लम्बी आँखें, उनके भूरे बालों से मोहक हैं तुम्हारे ये काले घुँघराले बाल"। विमला के सिर पर हाथ फेरकर कुमार ने कहा।

"आप तो अब कवि बन गये––" मुस्कुराकर विमला बोली।

"क्यों नहीं ? अठारह वर्ष से तुम्हारे साथ हूँ। मैं तुम्हारा पुजारी हूँ। तुम्हीं मेरे हृदय-मन्दिर की देवी हो रानी"– विमला का होंठ चूमकर कुमार बोले।

"केवल बातों से कोई प्रयोजन नहीं, कार्य रूप में भी दिखाना चाहिए विमला !" बोली।

"रात-दिन मेरी आँखों में तुम्हारी यही मूर्ति वर्तमान रहेगी, विश्वास करो" कुमार ने कहा। विमला ने एक लम्बी साँस छोड़ी।

* * *

कुमार विलायत चले गये। विमला का संसार शून्य हो गया। वह उत्साह-रहित हो गई। चिन्ता ने उसके सुन्दर शरीर पर भी अधिकार जमा लिया। यह देखकर ज़मीन्दार बहुत ही चिन्तित हुए। बी० ए० पास होते समय विमला ने इच्छा प्रकट की थी कि अब वह मेडिकल कालेज में पढ़ेगी। उस समय कृष्णकुरूप इसलिए चुप रहे थे कि पुत्र तो विलायत जा रहे हैं, अब भानजी भी चली जायगी तो घर सूना हो जायगा। पर अब वे समझ गये कि इस तरह का अकेला जीवन विमला का नाश करेगा। उन्होंने विमला को मद्रास के मेडिकल कालेज में भर्ती कराया। कुमार के जाने के बाद दो वर्ष तक बराबर पत्र आते रहे। तीसरे वर्ष वे वापस आनेवाले थे। पर आये नहीं, कोई ख़बर भी नहीं दी। कृष्णकुरूप तथा विमला ने कई पत्र भेजे, कोई जवाब नहीं मिला। घर में शोक छा गया। विमला ने दुख को हृदय में छिपा लिया। उसकी माँ अपनी पुत्री का विवाह और कहीं करना चाहती थी। जब पाँचवाँ वर्ष भी बीत गया, कुमार की कोई ख़बर नहीं मिली। तब कुरूप जी ने भी अपनी बहन की राय मान ली। किन्तु विमला ने हठ किया कि वह विवाह नहीं करेगी। वह एम० बी० बी० एस० प्रथम श्रेणी में पास हो गई। कालेजकेसब लोग उसको बहुत चाहते थे। उसके कालेज की एक प्रोफ़ेसर मिस मार्टिन विमला को सबसे अधिक चाहती थी। विमला ने अपना हृदय-रहस्य मार्टिन से प्रकट किया है। मिस मार्टिन जब अपनी बहन की शादी के लिए एक वर्ष की छुट्टी लेकर विरायत गई तब विमला से कुमार का एक फोटो भी ले गई थी। इतना ही नहीं, उच्च शिक्षा के लिए विमला को इँगलेंड बुलाया भी था।

विमला ने जब विलायत जाने के लिए बहुत हठ किया तब कृष्णकुरूप ने मान लिया। मिस मार्टिन ने ज़मींदार को लिखा भी था कि उच्च शिक्षा पाने के लिए विमला को इँगलैंड भेजें। वह अपने साथ विमला को रख सकती हैं और दूसरे साल वे दोनों साथ ही मद्रास वापस आ सकेंगी। कुरूप जी कई बार मद्रास में मिस मार्टिन से मिल चुके थे। मिस मार्टिन की उदारता एवं स्नेहशीलता का परिचय पाने से और उनकी भी इच्छा होने पर विमला भी विलायत भेजी गई। घर की स्त्रियों ने बहुत शोर मचाया, पर कुरूप जी ने परवाह नहीं की। विमला ने जाते समय मामी को आश्वासन दिलाया कि लौटते समय कुमार भी साथ रहेंगे।

विमला को देखकर मिस मार्टिन बहुत ही प्रसन्न हुईं। अपनी सगी बहन की तरह वह विमला को प्यार करती थीं, वह प्रेम अब पक्का हो गया। मिस मार्टिन और विमला ने कुमार की बहुत खोज की, पर उनका कोई पता नहीं चला।

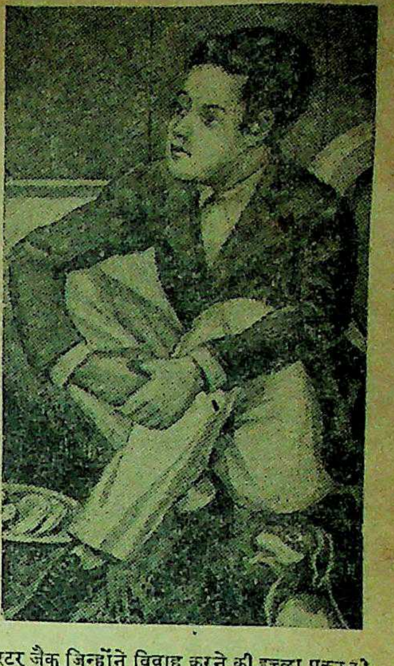
मिस्टर जैक जिन्होंने विवाह करने की इच्छा प्रकट की

मिस मार्टिन के एक भाई और एक बहन थी। बहन का विवाह हो गया था, भाई मिलिटरी आफ़िसर थे। वे एक बार छुट्टी पर घर आये। मिस मार्टिन ने विमला से बताया भी था कि भाई किसी लड़की से प्रेम करते हैं, छुट्टी न मिलने से अब तक विवाह नहीं हुआ है। एक दिन जब भाई आये तो मिस मार्टिन ने उनसे पूछा––

"क्यों जैक ! तुम विवाह नहीं करोगे ? मैं नौकरी से कहीं चली जाऊँ तो घर कौन सँभालेगा ? बूढ़ी अम्मा की देख-रेख कौन करेगा ? तुमने मुझे एक लड़की की बात लिखी थी न? उसका क्या हुआ?

जैक ने एक लम्बी साँस छोड़ी। मार्टिन ने फिर पूछा––"तुम चुप क्यों हो गये ? क्या बात है ?"

"क्या बताऊँ बहन, उसने मुझे धोखा दिया है। मिस मेरी एक हिन्दुस्तानी युवक से विवाह करना चाहती है। इधर दो वर्ष से वह मुझे चिट्ठी-पत्री नहीं भेजती। कल मैंने अपने एक दोस्त से जान लिया है कि वह एक बारिस्टर हिन्दुस्तानी को चाहती है। वह आदमी बड़ा धनी है।"

"उसका नाम मालूम है ?" विमला ने पूछा।

"जी नहीं। पर मैं एक हफ़्ते के भीतर ही सब बातें जान लूँगा। उस व्यक्ति से उसका विवाह नहीं हो सकता।"

तीन दिन बाद विमला, मिस मार्टिन और उनके भाई जैक तीनों सिनेमा देखने गये। मिस मार्टिन कभी-कभी विमला को आदमी का ड्रेस पहनाया करती थीं। वह पोशाक विमला को ख़ूब अच्छी लगती थी। उसके घुँघराले बाल हैट के भीतर जब घुस जाते तो उसका मुख बिलकुल पुरुष का-सा लगता था। कई बार कालेज के ड्रामे में विमला युवक बनी है। थियेटरों में जाते समय विमला यही पोशाक पसन्द करती थी, इससे उसकी मित्रमंडली भी उसको जल्दी पहचान नहीं सकती थी।

वह तीनों पास-पास बैठे थे, उनसे थोड़ी दूर पर दो स्त्रियाँ और एक पुरुष बैठे थे। जैक की दृष्टि उन पर पड़ी। उन्होंने धीरे से बहन से कहा––"देखो मिस मेरी, उसकी बहन मिसेस फ़ेडरिक और वह हिन्दुस्तानी युवक बैठे हैं" मिस मार्टिन ने उस ओर देखा। वह कुमार का फोटो देख चुकी हैं इसलिए उन्होंने तुरन्त पहचान लिया। पर बगल में बैठनेवाली विमला ने भाई-बहन की बातें भी नहीं सुनीं और मिस मेरी और कुमार को भी नहीं देखा। मिस मार्टिन

ने धीरे से भाई से कहा—"अब तुम चुप रहो। कल हम ठीक प्रबन्ध करेंगी।"

दूसरे दिन सबेरे जैक बाहर चले गये, रात को करीब आठ बजे लौट आये। मिस मार्टिन ने उत्सुकता से पूछा—"क्या खबर है?" जैक का चेहरा उदास था। वह बोला—"बहन, उस लड़की ने मुझे धोखा दिया है, परसों उसकी शादी है। मैं बदनसीब हूँ। उससे एक बार मिल भी नहीं सका। सबेरे ही सब पिकनिक के लिए चले गये हैं। कल फिर मिलने की चेष्टा करूँगा। शादी की बात उसके मुख से ही मैं सुनना चाहता हूँ।"

"नहीं, जैक, तुम कल उन लोगों से मत मिलो। मैं सब कुछ ठीक कर लूँगी। अच्छा यह बताओ कि वह आदमी कनवरशन कर चुका कि नहीं?"

"कनवरशन नहीं हुआ। उसकी क्या जरूरत! विवाह के बाद दोनों अमेरिका जाने को सोच रहे हैं।"

मिस मार्टिन ने फिर कुछ भी नहीं कहा।

सबेरे वह भाई को लेकर सीधे रजिस्ट्रार के पास गईं। एक घंटे तक बातें करते रहे, लौटते समय भाई-बहनों के मुख पर प्रसन्नता झलक रही थी।

विमला दोनों की राह देख रही थी। मिस मार्टिन ने बाहर जाते समय उससे कहा था "भाई के लिए एक लड़की देखने जा रही हूँ।" विमला ने उनके आते ही पूछा—

"क्या लड़की पसन्द आई? कैसी है?

"पसन्द तो मुझे आई है, पर भाई कहते हैं तुम भी देखकर राय बताओ तभी वह तृप्त हो सकते हैं।" मिस मार्टिन ने कहा।

"मेरी पसन्द का क्या मूल्य है? जिसे शादी करनी है उन्हीं की पसन्द देखिये" विमला ने हँसकर कहा। जैक भी जोर से हँस पड़ा। वह बोला—"कुछ भी हो, मेरी बहन विमला को भी अब वर चुनना होगा। मैं ही सेलक्ट करूँगा।'' विमला शरमा गई, मिस मार्टिन हँसने लगीं।

सबेरे मिस मार्टिन ने विमला से कहा—"ग्यारह बजे हमें एक जगह जाना है, तुमको मर्द की पोशाक पहननी होगी।" मिस मार्टिन विमला को पुरुष वेष में देखना अधिक पसन्द करती थीं। अक्सर वह पुरुष का ड्रेस पहनकर मार्टिन के साथ रात को घूमने जाया करती थी, पर आज वह उसे दिन में ड्रेस पहनाने लगीं तो उसे आश्चर्य हुआ!

रजिस्ट्रार की कचहरी के सामने कार खड़ी हो गई तो विमला ने पूछा,—"यहाँ क्यों जा रहे हैं?"

"यहाँ एक दोस्त की शादी है, उसे देखकर चलेंगे" जैक ने कहा।

रजिस्ट्रार के प्राइवेट रूम में मार्टिन और विमला बैठ गईं। थोड़ी देर बाद एक सिपाही ने आकर उनको बुलाया। वे दोनों रजिस्ट्रार के पास पहुँचे! मिस मार्टिन ने विमला से धीरे से कहा—"देखो, यहाँ हिम्मत से काम करना, रजिस्ट्रार पूछे तो कह देना तुम्हारा विवाह हो गया है।" रजिस्ट्रार ने दोनों स्त्रियों को आदर के साथ पास ही बिठाया। जैक कुछ दूर पर खड़े हो गये। पाँच मिनट बाद मिस मेरी, उसकी बहन और कुमार वहाँ पहुँच गये। कुमार ने विमला की ओर ध्यान नहीं दिया। विमला के चेहरे का रंग बदल रहा था! मार्टिन उसका धैर्य से बैठने का उपदेश दे रही थीं! रजिस्ट्रार ने पूछा—"[illegible] यह पहली शादी है?"

"जी हाँ" कुमार ने सिर झुकाकर जवाब दिया। "मिस मेरी, तुम्हारी भी पहली ही शादी होगी न?"

"जी हाँ"—

"जी नहीं, यह लड़की झूठ बोल रही है। उसकी उँगली में जो अँगूठी है, वह मैंने पहनाई है। हमारे विवाह का निश्चय तीन साल पहले ही हो गया था।" जैक ने कहा।

"ओह! मि० जैक, तुम यहाँ?" मेरी ने चिल्लाया।

"और देखिये, यह युवक भी अविवाहित नहीं, इसकी भी पत्नी है, मैं जानती हूँ" मिस मार्टिन ने उठकर कहा।

"झूठ, मैं अविवाहित हूँ" कुमार ने गुस्से में कहा।

"वाह, तुम अविवाहित हो, तो देखो, अपनी स्त्री को" यह कहकर मार्टिन ने विमला के सिर से हैट उठाया। उसके काले घुँघराले बाल एकदम बन्धन-मुक्त होकर गिर पड़े! सब लोग चकित हो गये! कुमार ने आश्चर्य से पुकारा—"ओह! विमला!" पर तुरन्त ही उनका मुख विवर्ण हो गया। वह सिर झुका कर बैठ गये।

रजिस्ट्रार ने कहा—यह बड़े दुख और लज्जा की बात है। मिस विमला जैसी स्त्री को छोड़कर, सिर्फ़ चमड़े के गोरेपन से आकृष्ट होकर, एक विदेशी, विजातीय स्त्री से विवाह करने की इच्छा ठीक नहीं है। हिन्दुस्तानियों में यह एक भारी दोष पाया जाता है। अक्सर लोग अपनी स्त्रियों को भूल कर विदेशी स्त्रियों पर मोहित हो जाते हैं। मिस विमला जैसी स्त्री मिलना अपना सौभाग्य समझो। और मिस मेरी, तुमसे मैं क्या कहूँ? मैं विश्वास करता हूँ, अब भी तुमसे प्रेम करनेवाले मि० जैक से विवाह करके तुम सुखी बनोगी। मिस मेरी ने सिर उठाकर जैक को देखा। उसकी आँखें भरी थीं। जैक की तरफ़ उसने हाथ उठाया, तुरन्त जैक ने उसका हाथ पकड़कर, प्रेम के साथ हिलाया। उसी वेदी में, पाँच मिनट के भीतर उन दोनों का भी विवाह हो गया।

विमला ने कुमार का हाथ पकड़कर कहा—"चलो, मामा बीमार हैं। कल ही हमें यहाँ से निकलना चाहिए। मिस मार्टिन भी मद्रास तक साथ रहेंगी।"

"विमला, मैं कौन सा मुख लेकर आऊँ? तुम मुझे माफ़ करोगी?"

"यह गोरा सा, साहब का मुख लेकर ही चलिए। वहाँ किसी को भी आपकी यहाँ की करतूत मालूम नहीं। रही मेरी बात। माफ़ी ही नहीं, आपके रोग के लायक दवा भी मैं दे दूँगी। मैं डाक्टर हूँ, यह बात शायद आप भूल गये।"

"ईश्वर ने हमें बचाया है" फीकी हँसी हँसकर कुमार बोले।

"ईश्वर ने नहीं, मिस मार्टिन ने" विमला हँसकर बोली।

कुमार ने मार्टिन से हाथ मिलाया।

"क्या मेरी कोई गिनती नहीं? सब कुछ बहन को ही दे रहे हैं क्या?" मि० जैक ने पूछा—"आपको तो मिस मेरी मिली है न?" विमला ने पूछा। सब हँस पड़े।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्र

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। परिपाक खूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि ने कला की उच्छृङ्खल एक विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।"

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार,

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपए।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

ब्लैक मार्केट को
मिटा कर
अपना पैसा बचाइए

कंट्रोल के कारण ब्लैक मार्केट के व्यापारियों के काम में रुकावट है। इसी तरह लोगों का यह निश्चय भी कि ज़्यादा दाम नहीं बहुत लाभजनक सिद्ध हुआ है। इन दोनों रुकावटों के कारण ब्लैक के व्यापारी के सामने दो ही रास्ते खुले रहते हैं—या तो वह छोड़ दे (या जेल जाय), और या उचित मुनाफ़े पर माल बेचे। अच्छे काम को जारी रखिए। कपड़ों, पीतल के बर्तनों और जूतों पर छपे रहते हैं। ख़रीदने से पहले इन्हें देख लीजिए। दवाओं और दूसरी सी वस्तुओं के दाम प्रकाशित कर दिये गये हैं, और प्रत्येक दुकानदार लिए क़ीमतों की सूची प्रदर्शित करना आवश्यक है। जो चीज़ ख़रीदिए, लिए रसीद हमेशा लीजिए। अगर क़ीमत बहुत ज़्यादा हो, तो बिना पुलिस में रिपोर्ट कीजिए। समाज के इन शत्रुओं पर दया न कीजिए।

मुनाफ़ाख़ोरों के ख़िलाफ़ जो आन्दोलन चल रहा है
उसमें शामिल होकर आप भावों को गिरा सकते हैं।
ब्लैक मार्केट के मिटने पर आपका पैसा बचेगा।

AAA 151

ब्लैक मार्केट से
हरगिज़ न ख़रीदिए
इस तरह ब्लैक मार्केट
ख़त्म हो जायगा

भारत - सरकार के सूचना तथा प्रचार - विभाग द्वारा प्रकाशि

हालीउड की कुमारी मैटिल्डा स्टेफेनिया कौन हैं?

मास्को में होनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य सम्मेलन में सर्वश्रेष्ठ

लेखक, श्री उमेश जोशी

१९५५ के प्रारम्भ में जनवरी के समाह में रूस की राजधानी मास्को नेशनल डांसिंग सोसाइटी" की ओर र्राष्ट्रीय महिला-नृत्य-समारोह" का आयोजन हुआ, जिसमें विश्व की सुप्रसिद्ध नर्तकियों ने भाग लिया। दुःख के साथ कहना पड़ता है कि "नृत्य कान्फ्रेन्स" में भारतीय नर्तकी भी नहीं थी। हो सकता है कि "युद्ध" भारतीय नर्तकियों के भेजने में हुई हो! "नृत्य-समारोह" दो के दायरे में किया गया था! एक गोलाकार सरोवर बनाया गया चारों तरफ दर्शकों के लिये बनाये गये थे—उन "स्टेप्स" के मुलायम गद्दे बिछे हुये थे! के बीच में सफेद संगमरमर का हंस के आकार का बनाया उसी हंस की सुन्दर पीठ पर मैटिल्डा स्टेफेनिया के नृत्य का किया गया था। सरोवर के पर सफेद लकड़ी के कमल थे। जिनमें अन्य नर्तकियों के था। उन कमलों के चारों कुमकुमे लगे हुये थे। सीलिंग चमकते हुये आसमान गई थी।

के दस बजे नृत्य-समारोह के पर्दे हटाये गये। वहिश्त सभी दर्शकों के सामने लगा। कुमारी स्टेफेनिया लाल रंग की रेशमी प्रकार की चोली) पहि- यह लिवार्न जाली की बनी स्टेफेनिया का शरीर रहा था। इसी किस्म की ड्रेस थी, जो कि पर नृत्य कर रही थीं! "कूटी-एनहान्संग चार्म" स्टेफेनिया का सौंदर्य इतना हो रहा था। हंस सरोवर तरफ विहार कर रहा था। द्वारा सरोवर के पानी को परिवर्तित किया जाता था। हरा आदि! कभी कभी पीला और आधा पानी लाल और उसमें धवल हंस के दिव्य सौन्दर्य को मनोहर प्रतीत हो रहा था। को विस्मय के वातायन से

ने कुमारी मौटिल्डा स्टे- को सर्वश्रेष्ठ घोषित करते निकाला है, जो "मास्को- में प्रकाशित हुआ है। वह

महिला-नृत्य-समारोह में संख्या तीन हजार है, कुमारी मैटिल्डा स्टेफेनिया सब नर्तकियों में सर्व- नृत्य की सराहना रूस मार्शल स्टेलिन, अमेरिका, व ब्रिटेन के प्रधान आदि के संदेशों में नम्बर इस प्रकार प्राप्त नृत्य में, ८० नम्बर नृत्य-अभिनय के ९९ नम्बर हृदय के भावों को अपने शरीर के प्रत्येक अंगों द्वारा प्रदर्शित करने में, १०० नम्बर जल के अन्दर नृत्य करने में, कुल नम्बर आपके हुये ४३४; ५०० नम्बरों में से ४३४ नम्बरों की पानेवाली संसार में आप ही हैं। यह घटना नृत्य-इतिहास में एक ही है। आपसे पूर्व अब तक किसी भी नर्तकी ने इतने उच्चकोटि के नम्बर उपलब्ध नहीं किये! इससे पहले "अन्तर्राष्ट्रीय नृत्य समारोह" में सर्वश्रेष्ठ होने के नाते एक प्रमाण-पत्र और स्वर्ण-पदक जो कि हीरे-जवाहारातों से जड़ा हुआ है, प्रदान किया गया। इस स्वर्ण-पदक की कीमत पच्चीस लाख रुपये के लगभग है। इतनी कीमत का स्वर्ण-पदक अब से पहिले किसी नर्तकी को नहीं भेंट किया गया।

इस नृत्य-समारोह की एक फिल्म भी निर्मित की गई है—जिसका प्रदर्शन योरपीय देशों में तो हो गया है, परन्तु अभी तक यह एशिया में नहीं प्रदर्शित हुई।

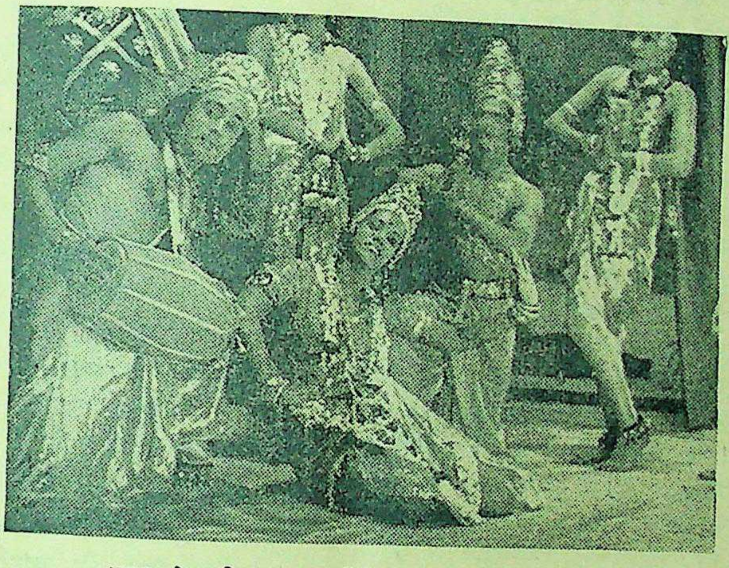

भारत की सुप्रसिद्ध नृत्यकला-विशारदा अजूरी का नृत्य-प्रदर्शन

कुमारी स्टेफेनिया का पूरा परिचय "स्क्रीन-वर्ल्ड" में प्रकाशित हुआ है जिसे हम पाठकों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं—

कुमारी स्टेफेनिया की उम्र इस समय वीस साल की है। आपका जन्म इटली के एक छोटे से ग्राम "ओ मेना" में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा आपने वहीं प्राप्त की थी। पढ़ने-लिखने में आप प्रखर प्रतिभावाली थीं। संगीत एवं नृत्य-कला में आपको प्रारम्भ से ही अनुराग रहा। बाद में कविता एवं छोटी-छोटी कहानियाँ लिखने का शौक भी पैदा हो गया। आप किसी यूनीवर्सिटी से कोई डिग्री उपलब्ध न कर सकीं। इसका प्रधान कारण यह था कि आप बारह साल की उम्र में ही एक जगह न रह सकीं। आपको इसी छोटी-सी उम्र में ही कुल योरोपीय देश देखने का अवसर मिल गया था। क्योंकि आपके चचा किसी कपड़े की मिल के मैनेजिंग डायरेक्टर थे। उन्हीं के साथ आपको हर जगह जाना पड़ा। उन्हीं का आप पर विशेष प्रेम था। आपके माता-पिता की मृत्यु तो उसी वक्त हो गई थी जब कि आपकी उम्र पाँच-छः साल की थी। अतएव आप माता-पिता के भार से वंचित रहीं। चाचा-चाची ने ही आपका पालन-पोषण किया। किताबों के पढ़ने का शौक आपको अधिक था। आपने अनेक उच्चकोटि के कलाकारों की पुस्तकों का अध्ययन कर डाला। इससे आपकी विद्वत्ता में चार चाँद लग गये।

आपकी प्रथम कविता "अमेरिकन चिल्डरंस" में प्रकाशित हुई। यह कविता इतनी दर्दनाक थी कि इसको पढ़ने पर पाठकों की आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। भाषा भी बहुत जोरदार है। आपकी कविता का शीर्षक था "फ्राइंग लाइफ" यानी "उड़ती हुई जिन्दगी"। इस कविता से उत्साहित होकर आपने और भी अनेक कवितायें लिख डालीं।

इसके बाद आपकी प्रथम कहानी "लाफिंग मैन" इटली के मासिक पत्र "चेरेल टा" में प्रकाशित हुई। इस कहानी पर आपको बीस हजार रुपये का पुरस्कार मिला। इस प्रकार आपकी रुचि साहित्य-सेवा की ओर झुक गई। "लाफिंग मैन", कहानी की "थीम" आपको कहाँ से प्राप्त हुई। यह आपने स्वयं लिखा है। आप लिखती हैं कि "जब मैं स्वीटजरलैंड की एक पहाड़ी पर घूम रही थी, शाम का समय था। शीतल वायु बह रही थी। उस रोज मेरे साथ कोई नहीं था। मैं अकेले ही इधर-उधर प्राकृतिक सौन्दर्य का पान कर रही थी। कागज-पेन्सिल मेरे हाथ में थी, लेकिन उस कागज पर एक भी शब्द नहीं लिखा गया। मेरे हाथ से वह कागज कब उड़ गया। उसका मुझे बिलकुल पता नहीं। एक नौजवान ने हँसते हुए मुझ से कहा—"यह कागज जनाब का है? मुझे पूछने का साहस इसलिए हो गया कि आपके हाथ में सिर्फ पेन्सिल लगी हुई है। इसलिए कागज का होना लाजमी है। दोनों में परस्पर अटूट सम्बन्ध है।"

"धन्यवाद, कागज मेरा ही है, हवा के झोंके से उड़ गया। मैं कुछ लापरवाह-सी हूँ।"

"आपको लापरवाह न होना चाहिए। लापरवाही इन्सान को कुछ का कुछ बना देती है।"

"हाँ यह आप ठीक कहते हैं। भविष्य में लापरवाह अधिक न रहूँगी। मैं आपकी यह कीमती राय मान लेती हूँ। हम दोनों जब बातचीत में लग रहे थे, उसी दरम्यान में मेरी एक मिलनेवाली सहेली भी आ पहुँची। हम दोनों को हँसते हुए देखकर वह भी मेरे पास उसी बेञ्च पर आ बैठी। उसने कहा—"आपके पति महाशय तो बहुत सुन्दर हैं। ईश्वर ने आपका जोड़ा खूब मिलाया है। शादी भी कर ली और हमको दावत भी नहीं दी।"

सहेली की इस बात पर हम दोनों हँस पड़े और दिल खोलकर हँसे। मैंने कहा—"तू ही अपनी कहती जायेगी—कि मुझे भी कुछ कहने देगी।"

उसने फिर कहा—"अब तुम क्या कहोगी। शादी भी कर ली तो अब किस मुँह से कहने की हकदार हो?"

"इसके लिए मैं लज्जित हूँ।" इसी बीच में उस आये हुए युवक ने मेरे कानों में धीरे से कहा—"आप अपनी सहेली के कहने में लापरवाही न कीजियेगा। क्यों न हम उसके विश्वास को ठीक साबित कर दें?"

मैंने भी हँसते हुए उसके कान में कह दिया—"बहुत ठीक, ऐसा ही होगा।"

हम दोनों को चुपके चुपके बातें करते देख मेरी सहेली बोल उठी—अच्छा तो आपको मेरी मौजूदगी से कष्ट हो रहा है। मैं जा रही हूँ। माफ करना।"

* * *

मैंने युवक से कहा—"यह भी हम लोगों की जिन्दगी में एक अजीब घटना है कि हम लोग शादी के दरवाजे पर पहुँच चुके हैं। लेकिन अभी तक हम दोनों को एक दूसरे की जिन्दगी का इतिहास नहीं मालूम।"

"अच्छा तो अब मालूम करा दीजिये" युवक ने मुस्कुरा कर कहा—

मैंने कहा "मेरा नाम मैटिल्डा स्टेफेनिया है। मुझे संगीत-कविता-नृत्य आदि का शौक है। नृत्यों का प्रदर्शन भी मैं योरप के कई प्रदर्शन-गृहों में कर चुकी हूँ। अब आप अपना परिचय दीजिये।"

युवक ने मुस्कराते हुए कहा—"आपका परिचय सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। मेरा नाम के० एम० डेविलटन है। मैं हालीवुड की लेवोरेटरी का डायरेक्टर हूँ। आज कल मैं स्वीटजरलैण्ड में सिर्फ सैर-सपाटे के लिये चला आया हूँ, लेकिन........।

हम लोग एक महीना स्वीटजरलैण्ड रहे। हम दोनों ने एक दूसरे के जीवन को खूब अच्छी तरह समझ लिया। एक दिन मिस्टर डैनिलटन ने कहा—स्टेफेनिया, क्यों न तुम फिल्मी दुनिया में प्रवेश करो?

मैंने प्रस्ताव को बिना किसी हिचकिचाहट के सहर्ष स्वीकार कर लिया।

"मैं अपने जीवन-साथी को "लाफिंग

इधर उधर की

चार सौ वर्ष से भी अधिक प्राचीन कुरान

"मक्का की तीर्थ-यात्रा" शीर्षक पुस्तक की लेखिका, लेडी एवलिन कावाल्ड ने लन्दन के इस्लामिक सांस्कृतिक केन्द्र को कुरान की एक बहुमूल्य हस्तलिखित पुस्तक भेंट की है। इस हस्तलिखित पुस्तक में कुरान की आद्योपान्त आयतें लिखी हुई हैं। सन् ८६८ हिजरी में यह पुस्तक कुस्तुन्तुनियाँ में लिखकर समाप्त की गई थी। इस पुस्तक पर अब्दुल हमीद इब्न अब्देल हे इब्न अब्दुल्ला उपनाम अल हाफिल के हस्ताक्षर हैं और जब लेडी ई० एवलिन, गत महायुद्ध से पूर्व एस्वान के पास ठहरी हुई थीं तो अल इद्रीसी संस्था के एक सदस्य द्वारा यह पुस्तक उन्हें भेंट की गई थी। अभी यह हस्तलिखित पुस्तक इस्लामिक सांस्कृतिक केन्द्र में ही रखी रहेगी। लेकिन जब केन्द्रीय लन्दन मस्जिद बन कर तैयार हो जायगी तो यह वहाँ के लिए स्थानान्तरित कर दी जायगी।

* * *

संसार का एक आश्चर्यजनक यत्र

भारतीय स्त्री-सहायक दल की ग्यारह सदस्याओं के पास टेबिल बनानेवाला एक यंत्र है जो संसार के अन्य यंत्रों से अधिक जटिल और सुकुमार है। इस यंत्र का नाम होलरिथ है। नई दिल्ली में ब्रिटिश वायुसेना के हेडक्वार्टर्स में इसे काम में लाया जाता है।

उसमें अनेक बटन, स्विच और लीवर थे। इस यंत्र से इतनी सुविधा तो हुई है कि वायुसेना के विभिन्न कर्मचारियों के आवश्यक कागजों का वर्गीकरण और पृथक्करण करने में घंटों के परिश्रम की बचत हो जाती है। इस वर्गीकरण और पृथक्करण के कार्य को केवल भारतीय स्त्री-सहायक दल ही, जो ब्रिटिश वायुसेना के साथ काम कर रहा है, इस यंत्र पर करता है।

* * *

मैन" के नाम से पुकारती हूँ और वह मुझे "लाफिंग फ्लावर" के नाम से पुकारते हैं। जब मिस्टर डैविलटन ने मेरे सामने एक प्रस्ताव रखा कि हम दोनों की जिन्दगी का एक फिल्म बनना चाहिये—उसके लिये तुम एक कहानी लिखो और उसका शीर्षक रखना "लाफिंग फ्लावर"।

मैंने कहा—नहीं—"लाफिंग मैन" रखा जायेगा। अन्त में मेरा ही निश्चय स्वीकृत किया गया। "हाली वुड" ने "लाफिंग मैन" एक फिल्म निर्मित की—जिसको कि डायरेक्ट मिस्टर डैविलटन ने स्वयं किया—कहानी-लेखिका और गीतकार मैं स्वयं रही।"

कुमारी स्टेफेनिया ने अभी हाल में "ह्वाइट हार्स" में बड़ा ही सुन्दर अभिनय किया है। यह फिल्म हिन्दुस्तान के सभी बड़े शहरों में चल रहा है! आजकल आपकी तनख्वाह अस्सी हजार प्रतिमाह है।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

वैवेल-योजना असफल क्यों हुई ?

(पृष्ठ ७ का शेष)

सिक्खों के प्रतिनिधि हुए फिर राष्ट्रीय सिक्खों का एक और प्रतिनिधि हो, इस प्रकार की नई उलझनों की आशंका भविष्य में पाई जाती है। पूर्ण रूप से एक राष्ट्रीय मुसलमान और राष्ट्रीय हिन्दू का तो प्रश्न ही नहीं है। वास्तव में प्रश्न यह है कि हम किस दृष्टिकोण से इस समस्या पर विचार करते हैं। वस्तुतः कांग्रेस ने इस प्रकार सोचकर भूल की है।

मुस्लिम वर्ग में भी अब दो दल हो गये। पहला तो उन मुसलमानों का है जो लीग के साथ हैं और दूसरा दल है उन मुसलमानों का जो लीग से सहमत नहीं हैं। मुसलमानों के इन दो विचार धारावाले दल दो तरफ़ इशारा करेंगे। एक कांग्रेस की ओर और दूसरा लीग की ओर। बीचवालों के लिए तो कोई स्थान ही नहीं बचता। जिस प्रकार से सिक्खों का भी एक अलग टुकड़ा हिन्दुओं से अलग दुनिया है, ठीक उसी प्रकार से मुसलमानों को भी दो भागों में विभाजित होना आवश्यक है।

ऐसा मालूम पड़ता है कि श्री जिन्ना को अपनी शक्ति पर पूर्ण विश्वास है। वाइसराय महोदय से नये चुनाव की माँग के बारे में अधिक तो नहीं कहा जा सकता पर यह बात स्पष्ट है कि कांग्रेस ही जीतेगी। चुनाव में साम्प्रदायिक सिद्धान्तों की आधारभूत प्रेरणा उतना काम नहीं करती जितना कि प्रजातान्त्रिक समस्याओं की नई योजनायें। जो रचनात्मक कार्यक्रम कांग्रेस ने जनता में किये हैं, उनसे प्रभावित होकर जनता के साधारण चुनाव में लीग जीत जायेगी, यह असम्भव-सा मालूम पड़ता है।

सुना जाता है कि वाइसराय अपनी कार्य-कारिणी का पुनः संगठन कर रहे हैं। ब्रिटिश नीति के अनुसार भारतीय साम्प्रदायिकता की आड़ में फूट का बीजारोपण अब एक नये सिरे से डाल दिया गया है। शिमला कान्फ्रेंस के पश्चात् उस प्रभाव से बचने के लिए हमें तेजी से क़दम बढ़ाना चाहिए। भय तो इस बात का है कि कहीं प्रतिक्रियाशील प्रवृत्तियाँ कांग्रेस के संगठन को जर्जरित न कर दें? इसकी सामग्री प्रस्तुत कर दी गई है, उसका उपयोग करना या न करना कांग्रेस के संगठन पर है। पर जहाँ तक ब्रिटिश साम्राज्यशाही का सम्बन्ध है, उसने तो अपना काम कर ही दिया है।

इधर सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि कांग्रेस अब क्या करे? जनता की पीड़ा और अशांति को वह उस समय तक दूर नहीं कर सकती जब तक शासन-व्यवस्था की बागडोर उसके हाथ में न आये। जिस भावना से उसने शासन-व्यवस्था लेनी चाही थी उसका परिणाम भी हमारे सामने मौजूद है। इस समय कोई भी राजनैतिक आन्दोलन नहीं चलाया जा सकता। केवल कांग्रेस-कार्यकारिणी के सदस्य कांग्रेस-संस्था को संगठित करने में कैसे सफल होंगे यह भी प्रश्न है। योरप में तो लड़ाई समाप्त हो चुकी है पर जापान से लड़ने के लिए उस समय तक ब्रिटिश हुकूमत की नीति वैसी ही रहेगी जब तक कि कांग्रेस की ओर से उसको पूर्णरूप से विश्वास न हो जाये कि वह इस युद्ध-योजना में किसी भी प्रकार से विघ्न नहीं डालेगी। इन परिस्थितियों में कांग्रेस को अनेकों समस्याओं का हल भी निकालना है।

[illegible] है, उनके विचार में अब भी कोई विशेष परवर्तन नहीं है। जो अड़ंगा मुस्लिम लीग के नाम पर डाला गया है वह भी एक दिखावटी अड़ंगा है पर कांग्रेस के लिए ब्रिटिश हुकूमत ने विचित्र परिस्थितियाँ पेश कर दी हैं। शिमला कान्फ्रेंस का कम से कम इतना प्रभाव तो होना ही चाहिए कि कांग्रेस से प्रतिबन्ध हटा दिया जाये और कांग्रेस अपनी योजना को सफल बनाने में जनता से सहायता ले सके। राजनैतिक कैदियों के बिना छोड़े भविष्य की कोई भी आयोजना सफल न हो सकेगी।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ९ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा मर्मस्पर्शी चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) आपको अपनी रक़म बहुत अच्छी शर्तों पर हिन्दुस्तान को ऋण की भाँति देने का एक और सुअवसर प्रदान करता है। आप अपने देश को सहायता पहुँचायेंगे, भावों को घटाने में सहयोग करेंगे, और ३ फ़ी सदी सालाना ब्याज, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार आपके घर पर पहुँचता रहेगा।

आप जितनी रक़म चाहें इस ऋण में लगा सकते हैं। गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म हर हालत में १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। इस दौरान में अगर आपको नक़द रुपये की ज़रूरत हो तो इस लोन को जब चाहें मार्केट में बेच सकते हैं। अगर आप पर इनकम टैक्स लागू न होता हो या कम शरह पर लागू होता हो, तो अधिक चुकाया गया टैक्स वापस मिल जायगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

रुपया बचाइए और ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन १९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा

रावाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

कोट उतारा। वह बहुत भारी था। कोट की थैली हुए एक पाकेट केस, स्टेथिस कोप, फार्माकोपिया आने क्या क्या था। उसने कहा—देखा रज्जो? रखने का भी समय भैया को नहीं।

वस्तुएँ यथास्थान रख दीं और कपड़ों के साथ देने के लिए नौकर से कह दिया।

ने कहा—धोबी तो आठ-दस दिन माँ आवति है।

कहा—तू देखता नहीं है, मैले कपड़े पहन कर बाबू है? दूसरे दिन कपड़े बदलवा दिया कर, समझा?

कहा—बाबू जी रिसहे होति हैं। कहति हैं कि मलि-

कहा—इन सब बातों पर ध्यान न दिया कर। कह अगर आकर मैले कपड़े देखेंगी तो जुर्माना कर

कहा—यही होई दीदी।

कहा—मेरा भाई इस विषय में बड़ा आलसी है। की कलम लाना हो तो दौड़कर मलिहाबाद दिन रात को दस बजे यहीं, इस घर में बात-डालीगंज की मटर की बात चल पड़ी। वह मटर ले आया। मैंने कहा—नौकर को क्यों ने कहा—यह काम नौकर नहीं कर सकता।

रात को चोर की तरह चुपचाप किवाड़ मरण हो आई।

से कहा—आओ इसी बिछौने पर बैठो। हो जाओ।

सकी—वह मेज़ पर के पुस्तक-पत्रा देखती में जीने में किसी के आने की आहट हुई। गई। लक्ष्मी ने हरीश को आते हुए देखकर के खोल इतने मैले क्यों हैं?

को देना भूल गया।

कहा—न अपने हाथ देते हो, न नौकर को देने

कहा—इसमें हमारा ही दोष है। नौकर हमारी सकता।

यह तो बताइये, आप गये कहाँ थे?

बल्ब (लट्टू) मोल लेने।

लगाने के लिए?

के लिए। भाई, तुम्हीं ने एक बार कहा लट्टू बदल दो।

हाँ! अब समय आया है, लट्टू बदलने का? के डर से?

तो तुम हमको जानती ही हो, और क्या कहें। तो मैं खूब जानती हूँ कि तुम कितने बड़े अहदी अपने शरीर के लिए। इस बार घर जाकर कि एक पढ़ी-लिखी गार्जियन लेडी (संरक्षक) ढूंढ दो, जो उसकी देख-भाल करती रहे।

ने, भई, पढ़ी-लिखी मुझे नहीं चाहिए। आज-स्त्रियाँ अपने वर के लिए विपत्ति होती हैं। कान काट देंगी।

लक्ष्मी ने रज्जो की ओर देखा। रज्जो में, सड़क पर चलती हुई जनता को देख रही लखनऊ की जैसी भीड़ उसने कभी नहीं देखी सब नया था।

हरीश ने कहा—तुम लोग सिनेमा

और जिज्ञासा की दृष्टि से देखा। रज्जो पर के तमाशे से वह अच्छा तमाशा है? ठीक चलते-फिरते जीव हैं। सिनेमा है। बिना देखे समझ में नहीं आयेगा।

रज्जो कौतूहल की दृष्टि से लक्ष्मी की ओर ताकती रह गई। लक्ष्मी ने फिर कहा—यहाँ तो हम रोज़ ही आती रहती हैं। और यहाँ आकर सिनेमा का रोग भी उभड़ पड़ता है। चलना हो तो भाई जल्दी से हाथ मुँह धोकर तैयार हो जाओ।

हरीश ने कहा—तुम तो कानपुर में बाज़ार से कपड़े भी खरीदने को कह रही थी। यहीं से क्यों नहीं ले लेतीं?

लक्ष्मी ने कहा—अच्छा याद दिलाया। पहला काम तो यही करना है। सिनेमा तो फिर भी देखा जा सकता है। तुम्हारी ड्यूटी कब है?

हरीश—इस सप्ताह के उपरान्त.....

लक्ष्मी ने कहा—तो फिर सिनेमा कल चलेंगी। कहीं अच्छा चित्र चल रहा है?

हरीश ने उत्साहपूर्वक कहा—इस सप्ताह यहाँ सभी चित्र अच्छे चल रहे हैं।

लक्ष्मी ने कहा—तो फिर कल सिनेमा का ठीक रहा। चलो आज यहाँ से कुछ सामान ले लें।

इसी समय कानपुर से मोटर आकर मकान के नीचे खड़ी हो गई। उसी पर सवार होकर सब लोग अमीनाबाद पहुँचे। एक बढ़िया बनारसी साड़ी, दो साधारण सूती साड़ियाँ, ब्लाउज का कपड़ा आदि सभी कुछ मोल ले लिया गया। कपड़े पसन्द करने में हरीश ही का मत प्रधान था। लक्ष्मी ने कहा—मैं तो भैया हरीश की अनुमति से ही सब वस्तुएँ पसन्द करती हूँ।

रज्जो लज्जित सी हो गई, विशेषकर इस पर कि उसके वस्त्र हरीश पसन्द करेगा।

प्रायः दो घंटे में यह लोग बाज़ार से लौटे।

लक्ष्मी ने कहा—चलो भाई, अब चलना चाहिए।

हरीश ने कहा—बस इतने ही में.....?

लक्ष्मी ने कहा—रज्जो बहिन चुप क्यों हो? कुछ बातचीत करो। क्या हम लोग मनुष्य नहीं हैं, मूर्ति हैं?

रज्जो और भी लज्जित सी हो गई।

लक्ष्मी ने कहा—चलना हो तो चलो, नहीं तो लखनऊ ही घूमा जाये। यहाँ खड़े-खड़े क्या होगा। तुम कभी लखनऊ आई हो?

रज्जो ने सिर हिलाकर 'नहीं' कर दी।

तो फिर आओ चलो घूमें ही चल के।

कार पर तीनों जने निकल पड़े। मक्खी भवन, इमामबाड़ा, शाहनज़फ आदि सभी इमारतों का परिचय हरीश देता जा रहा था। बेली गारद में यह लोग गये। वहाँ का भी इतिहास रज्जो ने सुना। कार गोमती के किनारे से कानपुर रोड की ओर चल पड़ी। हरीश ने कहा—क्या तुम लोग मुझे कानपुर ले जाओगी?

लक्ष्मी—तो क्या हुआ? सवेरे चले आना।

हरीश—सो तो आयेंगे ही। तब भी हमें ११ बजे क्लास में पहुँचना है। ९ बजे वाली ट्रेन से आ जायेंगे।

लक्ष्मी—कुछ हानि नहीं, मोटर से ही आ जाना।

हरीश—नहीं, नहीं, तुम लोग कल सायंकाल फिर आओगी। इससे ड्राइवर को अधिक दौड़ाना ठीक नहीं।

उसकी लम्बी बातें जब दीदी से होती हैं तो प्रायः समाप्त होना कठिन हो जाता है। उस पर रज्जो भी साथ थी जिसके नवीन आकर्षण में बातों का ताँता बँध गया था।

(९)

दूसरे दिन कालेज के घण्टे कुछ अच्छे नहीं लग रहे थे। कब छुट्टी होगी, कब दीदी और रज्जो आयेंगी यही ध्यान लगा हुआ था। यद्यपि उसने दीदी से कह दिया था कि विवाह नहीं करूँगा फिर भी गृहस्थाश्रम का एक मनोरम चित्र आँखों में घूम जाता था। मानो वह काम-काज के बाद विश्राम कर रहा है और उसके निकट एक लज्जावनत मूर्ति खड़ी है—युवती बधू....

किन्तु बधू के रूप में रज्जो क्यों सामने आती है? न न! उसने घड़ी देखी तो मानो घण्टे कटना ही नहीं चाहते थे।

पृथ्वी पर चिरस्थायी कुछ नहीं है। रोगी का रोग भी समय पर घट जाता है। रुद्र की संहार-मूर्ति, प्रलय का मेघ भी शान्त हो जाता है। घण्टे भी कट गये, छुट्टी हो गई।

अभी अभी प्रकाशित हुई है
भैरवी—तीसरा संस्करण—इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनायें, असली आर्ट पेपर में चित्र, बहुत अच्छी बँधाई और रैपर। मू० २॥=)
इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

काम पर जाते उसे डर लगता है
भुजाओं की पीड़ा असह्य हो गई थी
किन्तु क्रुशेन से वह चंगा हो गया

गठिया की पीड़ा से उसकी भुजायें बेकाम हो चली थीं। यह कोई अचम्भा नहीं कि उसे काम पर जाते डर लगता था। फिर भी आज वह इतना मुस्तैद हो गया है जितना पहले कभी नहीं था और काम में उसे आनन्द आने लगा है। उसके पत्र में आप पढ़ेंगे कि ऐसा किस प्रकार हुआ—

वह लिखता है, मैं गठिया के कारण बहुत ही परेशान था और मेरे घुटनों में इतनी पीड़ा थी कि मैं कठिनता से उसे सहन कर पाता था। बरसात के दिनों में तो भयंकर पीड़ा होती थी। मैं परेशान था कि अपनी भुजाओं से किस प्रकार काम लूँ और जब मैं काम पर जाता था तो एकदम बेकाम बना रहता था।

इसके बाद एक व्यक्ति ने मुझे क्रुशेन-साल्ट सेवन करने की सलाह दी और केवल १ बोतल के सेवन से मुझे आराम मालूम पड़ने लगा। अब मैं क्रुशेन-साल्ट का बराबर सेवन करता हूँ और इससे अब मैं एकदम अच्छा हो गया। इतनी चुस्ती आ गई है जितनी कई वर्ष से नहीं थी मेरा जीवन कष्टपूर्ण तथा अंधकारमय हो गया था किन्तु अब तो काम पर जाने में प्रसन्नता आती है। डर का तो नाम-निशान नहीं।

—एस० बी०

मांसपेशियों तथा जोड़ों में अम्ल एकत्र हो जाने से ही गठिये का दर्द होता है तथा शरीर जकड़ जाता है। क्रुशेन-साल्ट आपके लीवर तथा पित्ताशय को सुचारु एवम् स्वस्थ बनाता है जिससे पाचन-क्रिया ठीक हो जाती है तथा अनावश्यक अम्ल जो कष्ट का कारण है बाहर निकल जाता है।

क्रुशेन-साल्ट बाजार में सभी दूकान, औषधि विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

सन्टल
मिडि
अचूक दवा
सुजाक गुर्दे और मूत्राशय की बीमारियों के लिये।
प्रस्तुतकर्त्ता
ग्रिमाल्ट एण्ड कं०

हरीश हर्षित होकर घर लौट रहा था। किसी ने पीछे से पुकारा—ए हरीश!

हरीश ने घूमकर देखा—क्लास का साथी रासबिहारी आ रहा है। उसने कहा—अरे भाई अमीनाबाद तो चलो, हमारी श्रीमती जी की आज्ञा तो पालन करो। एक इक्के पर बैठ लो, एक साड़ी लिवा दो चलकर। कल हमारी साली का ब्याह है।

हरीश ने कहा—आज भाई तनिक भी समय नहीं है। बहुत ज़रूरी काम है। घर में इस समय दीदी बैठी हैं।

हताश होकर रासबिहारी ने कहा—अरे यार आध घण्टा या चालीस मिनट.........।

—न भई, आज पाँच मिनट भी नहीं। क्षमा करो. कल सवेरे ....

उसने कहा—कल निश्चय.......?

हरीश भागता चला गया। पीछे से रासबिहारी ने चिल्लाकर कहा—देखो भाई कल निश्चय ले देना.......On Hir Majestiy's Service (सम्राज्ञी की सेवा में) नहीं तो कल ही साधू होना पड़ेगा।

[illegible] 'अच्छा अच्छा' कहते हुए दृष्टि से ओझल हो गया।

हरीश ने घर में आकर अपने कमरे में देखा तो मूर्तिवत् रज्जो उसके बिस्तर पर बैठी हुई है। उसी की कापी लिये कविताएँ पढ़ रही है। यह रचनाएँ उसी की थीं।

हरीश ने कुछ कुण्ठित होते हुए कहा—दीदी ने तो उसे नहीं देखा? लेकिन दीदी हैं कहाँ?

रज्जो ने चौंक कर कापी रख दी।

हरीश को दीदी का भय था। फिर पूछा—क्या वह आई नहीं? कहाँ हैं?

रज्जो ने सिर झुकाते हुए कहा—स्नानागार में है।

आह! तो तुम कापी क्यों देख रही थीं? पागलपन....

रज्जो ने लज्जा से सिर और नीचा कर लिया। हरीश ने कहा—अरे भाई दीदी ने तो नहीं देख लिया?

रज्जो ने कहा—नहीं।

हरीश ने कापी के पन्ने उलटते हुए कहा—आदि से अन्त तक पढ़ डाला क्या?

—क्रमशः

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्री

इस पुस्तक में लेखक की फुटकर कविताओं का संग्रह है। कविताओं की भाषा और कल्पना की उड़ान इतनी है कि पाठक कुछ क्षण के लिए अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २), डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से जवाकुसुम बड़ी आसानीसे गर्दा निकाल देता है और बालोंकी जड़ मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाना.......मस्तिष्क शीतल रखना

JM-1-H

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कलकत्ता

रोजाना डाढ़ी बनाते समय प्रसन्न मुख रहिए

रोजाना डाढ़ी बनाते समय की ग्लानि और असुविधा को डी. सी. एम. शेविंग स्टिक अथवा कप सोप का उपयोग कर दूर कर दीजिए। उनकी सुगन्धि और फेन की यह विशेषता है कि ये कठोर से कठोर डाढ़ी को मुलायम बना देते हैं इसी लिए साफ, स्निग्ध और सुखद हजामत बन जाती है।

सुखद रूपसे डाढ़ी बनाने के लिए

डी.सी.एम. शेविंग स्टिक या कप सोप का उपयोग कीजिए

ये साबुन डी.सी.एम. केमिकल वर्क्स, देहली के बने हुए हैं जो प्रत्येक बड़े स्टोर या निकट के डी.सी.एम. स्टोर से मिल सकते हैं।

व्यापारिक पूछताछ के लिए लिखिए :-

देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स कम्पनी लिमिटेड, देहली।

DCM. 47.

पादक के नाम चिट्ठियां

म्मेलन का सभापतित्व

हित्य-सम्मेलन के उदयपुर भापति पद के लिए आज- त्रों में, विशेषतः हिन्दी चर्चा हो चली है। हमारे यों ने कुछ नाम इस सुझाया है। जिसमें काशी विद्यालय के प्रोफेसर आदरणीय द मिश्र और पण्डित 'नवीन' के नाम विशेष । इधर सुना था कि कुछ मैथिलीशरणगुप्त का नाम कर रहे हैं। मुझे इस विषय नहीं कहना है। पर तो भी हमारे सम्मुख है। इधर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन न रह कर सम्प्रदाय है और यह हमारे वृद्धि के लिए घातक है। देश की भाषा है। शर्मा 'नवीन' हमारे गांधीवादी नेता हैं। पर रूप उनके साहित्यिक हैं; इसलिए हम उन्हें है। राजनीतिज्ञ या में। वे अगर हमारे हमें हमारे गौरव की मैं एक और नाम करता हूँ, और की श्रेष्ठ कवियित्री कुमारी चौहान का। स्त्री-सभानेत्री नहीं जी को जो ख्याति एवं साहित्यिक क्षेत्रों है वह सर्वविदित है। अधिकांश भाग कारागृह में बिताकर उन्होंने में लगाया है। आज वे या प्रान्त की न होकर हो चुकी हैं; और इसका को अभिमान होना वाणी-वीणा ने हमको साहित्य को और हमारी सन्देश दिया है, और ऊँचे हो उठे हैं, उसमें बड़ा हाथ है। उनमें भी काफी बड़ी है, नेतृत्व दे सकेंगी; यह है।

में अन्य साहित्यिक जानना चाहूँगा, यदि वे सम्मति दे सकें।

४५ —रामकृष्ण

*   *

और देशी राज्य

तो देशी रियासतों में जनता, आज जिस रही है उसकी स्थिति अमेरिकन हब्शियों पर अत्याचारपूर्ण कथा की में होनेवाली सजीव की जा सकती है। कि राजनीतिक जागरण हो जाने के फल-स्वरूप आज रियासती जनता एवं वहाँ पर बसनेवाली ९५ प्रतिशत मूक, अशिक्षित जनता की ख़रीद-फरोख्त कम से कम नहीं होती, व्यवहार रूप में यह न होने पर भी अंशतः यह प्रथा भी जागीरदारों में चालू है। दारोगा की तरह रियासती जागीरदारों, एवं राजा-महाराजाओं की गढ़ी कई जातियाँ हैं जो पूर्णतः गुलाम हैं। उनका शरीर, उनकी जायदाद, उनके बच्चे, उनकी स्त्री तक पर इन जागीरदारों का अधिकार रहता है। एवं स्थावर संपत्ति की तरह इनका लेन-देन भी होता है।

बीसवीं शताब्दी के इस युग में, रियासती भारत में नागरिक अधिकारों का थोड़ा-बहुत जो अधिकार है उस पर भी कुठाराघात हो रहा है। ब्रिटिश भारत में एक ओर जहाँ लोकनायकों को जेल के बाहर किया जा रहा है, रियासतों की लौह शक्ति लोकनेताओं को सींकचों के पीछे बंद कर, मूक, अशिक्षित, पराधीन जनता को और भी अधिक घने अंधकार में डालने का दुष्प्रयत्न कर रही है।

४० करोड़ हिन्दुस्तान की गुलामी अगर विश्वशान्ति एवं प्रगति के मार्ग में एक भीषण व्याघात कर सकती है; तो क्या भारत की १० करोड़ रियासती जनता को रियासती-नरेशों एवं जागीरदारों के पराधीन रखकर, उनका भाग्य सदा के लिए उन निरंकुश शासकों के हाथ में बेचकर, ३० करोड़ ब्रिटिश भारत स्वतन्त्रता का उपभोग कर सकता है? लोकनेताओं एवं देश के होनहार विद्वानों का ध्यान रियासती प्रजा के दुःख-दर्द की ओर जाना निहायत जरूरी है। इसलिए बुद्धिमानी इसी में है कि इस ओर अधिक से अधिक शीघ्रता से ध्यान दिया जाय।

३१ क्लाइव स्ट्रीट —चंदनमल भूतोडिया
कलकत्ता

*   *   *

कुमार साहित्यमंडल

अखिल भारतीय कुमार-साहित्यमंडल की शाखाएँ गोरखपुर, कानपुर, पटना, मुंगेर, वर्धा आदि के अतिरिक्त कई स्थानों पर सुचारुरूप से चल रही हैं। वहाँ पर पाक्षिक गोष्ठियाँ, मासिक हस्त-लिखित पत्रिका, प्रतियोगिता, भाषण, वाद विवाद होता है। इस प्रकार यह संस्था रचनात्मक कार्य कर रही है। बिहार-प्रांतीय मण्डल की स्थापना तीन महीने पहले हो चुकी है। क्योंकि इस संस्था का नियम व्यर्थ प्रोपेगेण्डा और सदस्यों की संख्या बढ़ाना नहीं है, इसी लिए अधिक इसका प्रचार नहीं हो सका है। रचनात्मक कार्य करने के लिए इसने क़दम उठाया है। किन्तु जब तक प्रत्येक प्रान्त में उत्तरदायी प्रान्तीय मण्डल न हो इसका कार्य प्रत्येक प्रान्त नहीं हो सकता। युक्तप्रान्तीय मंडल की स्थापना अत्यन्त आवश्यक है। यद्यपि कुमारों और युवकों की ऐसी संस्था अवश्य है फिर भी इतने कम समय में व्यापक होनेवाली इस संस्था का साथ देकर अधिक कार्य हो सकता है। अतएव युक्तप्रांत के उत्साही युवक, कुमार, कुमारी साहित्य-प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे वहाँ पर एक संयुक्त प्रान्तीयमण्डल की स्थापना कर इस मण्डल के उद्देश्यों की पूर्ति करने में हाथ बटावें। हमें स्कूल कालिज के विद्यार्थियों से पूर्ण आशा है। विशेषकर आगरा, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस आदि हिन्दी क्षेत्रों में प्रान्तीय मण्डल का कार्यालय हो सके तो अत्युत्तम होगा। उत्साही साहित्य-प्रेमी—श्रीमधुसूदन याज्ञिक, प्रधान मंत्री, २६६ हैदरकुली, चाँदनी चौक दिल्ली, से पत्र-व्यवहार कर सकते हैं और विशेष जानकारी के पत्र मँगवा सकते हैं।

दिल्ली —मधुसूदन याज्ञिक
५ जुलाई, ४५ प्रधान मंत्री

ब्रज-भाषा

साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और ब्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु ब्रज-भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान् कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — बिहारी-विभव
भूषण-भारती — मतिराम-मकरंद
पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION

कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफास-फाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा

पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL

* खाँसी * ब्रांकाइटिस
* जुकाम * निमोनिया
* यक्ष्मा * पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *

तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है

यदि आपके औषधि-विक्रताओं से
न मिले तो कृपया हमें लिखें:—

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

संवाददाताओं के पत्र

दिल्ली अ० भा० कुमार हिन्दी-साहित्य-मंडल ने इस वर्ष कुमार लेखक लेखिकाओं को प्रोत्साहन देने के लिए हिन्दी कहानी और कविता-प्रतियोगिता कराने का निश्चय किया है। सर्व-श्रेष्ठ तीन कहानियों और तीन कविताओं पर मौलिकता, भाषा, प्रवाह, उद्देश्य तथा कला की दृष्टि से पुरस्कार दिये जायेंगे। प्रथम पुरस्कार २१) रु०, द्वितीय पुरस्कार १५) रु०, तृतीय पुरस्कार ११) रु०। रचनाएँ १५ अगस्त १९४५ तक, मधुसूदन याज्ञिक, प्रधान मंत्री, अ० भा० कुमार हिन्दी-साहित्य-मंडल, २६६—हैदरकुली, चाँदनी चौक, दिल्ली के पते पर पहुँच जानी चाहिएँ। —संवाददाता

* * *

लाहौर के पंचोली पिक्चर्स के प्रोडक्शन डाइरेक्टर श्री छगन देसाई ने प्रेस इन्टरव्यू देते हुए कहा कि १९४२-४४ में भारतीय फिल्म-व्यवसाय उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था परन्तु इसी उन्नति काल ने फिल्म-व्यवसाय को एक नाज़ुक स्थिति में डाल दिया है यदि स्थिति सुधर न पाई तो भारतीय फिल्म व्यवसाय ऐसी दशा को प्राप्त होगा कि जिसका हम अनुमान भी नहीं लगा सकते। फिल्म-व्यवसाय को इस खतरे से बचाने के लिए आपने दो साधन बताये हैं। प्रायः भारतीय फिल्म-निर्माता कुछ प्रसिद्ध अभिनेताओं को इकट्ठा करके उन्हें अनुचित रोल देकर चित्र तैयार करा लेते हैं और उसे मार्केट में ढकेल देते हैं। इस तरीके से अभिनेता अपनी विशेष योग्यता खो बैठते हैं। भारतीय फिल्म-कम्पनियों को यह घृणित प्रथा छोड़नी होगी।

फिल्म-कम्पनियों को चित्र-निर्माण-व्यय काफी हद तक घटाना पड़ेगा। जो लोग फिल्म व्यवसाय के शुभचिन्तक हैं उन्हें नियमपूर्वक परिश्रम से काम करना चाहिए ताकि इस व्यवसाय की सब त्रुटियाँ दूर हो जायें।

श्री छगन देसाई ने आगे कहा कि टिकटों की सेल में जो कमी देखने में आई है उससे यह स्पष्ट है कि फिल्म-व्यवसाय का पतनकाल आ पहुँचा है। चित्रों के हंगामी खरीददार मार्केट से लुप्त हो रहे हैं। यदि वर्त्तमान स्थिति पर काबू न पाया गया तो युद्ध के बाद हानि को प्राप्त होनेवाले शिल्प-व्यवसायों में फिल्म व्यवसाय का नाम सबसे पहला होगा।

—संवाददाता

* * *

आगरा के अजीतप्रसाद जैन भूतपूर्व पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी (यू० पी०) ज्योतिषी, राधेश्याम द्विवेदी मथुरा, विद्यावती राठौर एम० एल० ए० आगरा (यू० पी०), शाह गौरसरन गुप्ता एडवोकेट वृन्दावन, राय बहादुर जमुनाप्रसाद चेयरमैन म्यूनिसिपल-बोर्ड मथुरा, प्रो० कृष्णचन्द्र एम० एल० ए० वृन्दावन (यू० पी०) आदि २१ नेताओं के हस्ताक्षर से निम्न अपील प्रकाशित हुई है—

वृन्दावन से ४ मील दूर मांट तहसील में एक विशाल भांडीर वन है जो भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाभूमि है। आजकल वहाँ बहुत बड़ी संख्या में बनगायें हो गई हैं। पिछले वर्षों से कुछ स्वार्थी लोगों ने छिप छिपकर गायों को पकड़ना और उनको कसाइयों के हाथ बेचना शुरू कर दिया। इस भयंकर गोवध को रोकने तथा किसानों की इस समस्या को हल करने के लिए कुछ उत्साही तथा शिक्षित नवयुवकों ने व्रज-ग्राम सेवा-संघ की स्थापना की जिसके अन्तर्गत एक गोशाला वृन्दावन से ४ मील दूर छाँहरी नामक स्थान पर खोली जा चुकी है। वहाँ पर ये गायें ख़रीदकर पाली जा रही हैं। यहाँ उनके स्थान, जल और चारे का समुचित प्रबन्ध है। ज़िले के कलक्टर महोदय व अन्य अधिकारी भी इस कार्य में बड़ी दिलचस्पी ले रहे हैं। उन्होंने एक विशेष अफ़सर द्वारा इस गोशाला तथा इसके हिसाब की जाँच कराई है एवं इसके कार्य से प्रभावित होकर प्रान्तीय सरकार से ४,०००) रुपये की सहायता की सिफ़ारिश की है। इस समय गोशाला में लगभग १६० गायें हैं जिनके भूसे का व्यय लगभग ३०) रुपया प्रतिदिन है। अगले दो-तीन मास में गायों की संख्या लगभग ७०० हो जायेगी। जब गायें ७०० हो जायेंगी उस समय लगभग १००) रुपया प्रतिदिन व्यय होगा। इस प्रकार प्रथम वर्ष का व्यय ३६०००) रु० होगा। आशा है कि अगले वर्ष तक इसके संचालक इस गोशाला को स्वावलम्बी बना लेंगे। अभी एक वर्ष गायें बाहर नहीं निकाली जा सकतीं। हमें आशा है कि गोशाला के पुण्य कार्य के लिए आप हमारी सहायता करने में पीछे न रहेंगे।

* * *

टिहरी राज्य प्रजा-मंडल के प्रधान मंत्री श्री प्रेमदत्त ने गढ़वाल के वीर मैक्स्विनी शहीद श्रीदेव सुमन की पहली वर्षी मनाने के लिये एक मार्मिक अपील प्रकाशित करते हुए लिखा है कि सारे देश में गढ़देश के निवासियों को यह दिन बड़े उत्साह के साथ अपने वीर नेता का स्मरण करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनी चाहिए। ८४ दिन के लम्बे अनशन के बाद जेल में उनका जो देहावसान हुआ वह भारत के देशी राज्यों के और स्वेच्छाचारी शासन के प्रतिकूल आत्मोत्सर्ग था। इससे देशी राज्यों के आनन्दोलन को काफी बल मिला है। इसलिए अ० भा० देशी राज्य लोकपरिषद् के प्रधान मन्त्री श्री जयनारायण जी व्यास की अपील के अनुसार यह वीर दिवस सभी देशी राज्य के निवासियों-द्वारा मनाया जाना चाहिए। हिन्दी के सुप्रसिद्ध पत्रकार तथा लेखक और श्रीदेव सुमन जाँच कमेटी के एक सदस्य श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार ने हमारे अनुरोध पर ५० पृष्ठ की एक पुस्तिका शहीद श्रीदेव सुमन के सम्बन्ध में उनकी अमर कहानी लिखकर प्रकाशित की है।

—संवाददाता

* * *

आगरा से सेठ अचलसिंह एम० एल० ए० संयोजक सूचित करते हैं कि अखिल भारतवर्षीय पशुरक्षा सम्मेलन की स्वागतकारिणी-समिति की आम बैठक २९ जुलाई १९४५ को तीसरे पहर ३॥ बजे म्युनिसिपल टाउनहाल आगरा में होगी। उस दिन स्वागत-समिति के पदाधिकारी और कार्यकारिणी के सदस्यों (जिनकी संख्या अधिकारियों-सहित ३१ होगी) का चुनाव होगा।

—संवाददाता

साहित्य-चर्चा

(१) चित्रमय जोधपुर, (२) राजस्थानी कृषि कहावतें, (३) क्या जयचद देशद्रोही था—प्रकाशक हिन्दी-साहित्य-मन्दिर, मेडती गेट, जोधपुर।

ठा० जगदीशसिंह गहलौत जी सुप्रसिद्ध इतिहासलेखक तथा पुरातत्व के अन्वेषक के रूप में हिन्दी जगत् को भली भाँति परिचित हैं। उनका "राजस्थान का इतिहास" काफ़ी लोकप्रियता और प्रतिष्ठा प्राप्त कर चुका है। पहली पुस्तिका में विद्वान् लेखक ने खासकर यात्रियों की सुविधा के लिए राठौड़ की कर्मभूमि जोधपुर के प्राचीन इतिहास का संक्षिप्त दिग्दर्शन तथा उसके आधुनिक स्वरूप, स्थिति और स्थानों का सचित्र वर्णन किया है। हिंदी में ऐसी पथप्रदर्शक किताबों की बड़ी जरूरत है। गहलौत जी ने इस जरूरत को भली भाँति पूरा किया है।

दूसरी पुस्तक में राजस्थान के किसानों में चिरकाल से प्रचलित किंवदंतियों और कहावतों का संकलन किया गया है। कहावतें ऐतिहासिक ज्ञान के लिए सहायक मानी गई हैं। इन कहावतों से राजस्थानी किसानों और इनकी खेती के बारे में बहुत-सी मनोरंजक एवं महत्त्वपूर्ण बातें ज्ञात होकर राजस्थान के इतिहास पर कुछ प्रकाश पड़ता है। अन्य प्रांतीय जनता की सुविधा के लिए कहावतों का हिन्दी और अँगरेजी में अनुवाद किया है।

तीसरी किताब में जयचंद को, जो इतिहास में, देशद्रोही के रूप में बदनाम है, निर्दोष साबित करने का प्रयत्न ... है। गहलौत जी के मतानुसार "... रासो" का ऐतिहासिक मूल्य नहीं ... पृथ्वीराज-जयचंद की लड़ाई, ... का अपहरण, शब्दवेधी बाण, ... हिन्दू साम्राज्य को नष्ट करने ... मुसलमानों को उत्तेजित करने ... आदि तथाकथित ऐतिहासिक ... ऐतिहासिक प्रमाणों से हीन हैं। ... नहीं कहते कि गलहौत जी की ... व्यर्थ हैं प्रत्युत वे माननीय हैं। ... मत में प्रस्तुत विषय पूर्णतः ... होने के कारण, और विभिन्न दृष्टि... दृष्टिकोणों की अपेक्षा रखता है ... विवादास्पद प्रश्न का निर्णय तो ... इतिहासज्ञ ही कर सकते हैं। ... है कि गहलौत जी ने प्रस्तुत ... प्रेरणा देकर इतिहासज्ञों का ध्यान ... किया है। हम गहलौत जी का ... अभिनंदन करते हैं, और आशा ... कि वे खासकर हिंदी में ही ... हिंदी के ऐतिहासिक क्षेत्र को समृद्ध ... का प्रयत्न करेंगे।

—बालाजी राव

कानपुर श्री प्रेम पुस्तकालय हारामऊ, पुखरायाँ के संस्थापक बाबू सुरेन्द्रकुमारसिंह ने पुस्तकालयभवन निर्माण के लिए ४ बीघे जमीन जो बहुत उपजाऊ है ५ वर्ष के लिए संस्था को प्रदान की है। इसके लिए उन्हें धन्यवाद है।

—संवाददाता

* * *

कोंच के सुप्रसिद्ध साहित्यिक और शिक्षा-प्रेमी पं० गनेशदत्त पालीवाल, बी० ए०, रईस (पिंडारी) ने बुंदेलखंड के प्रगतिशील, साप्ताहिक 'वीरेन्द्र' की राष्ट्रीय सेवाओं से प्रसन्न होकर देश के ५० वाचनालयों को 'वीरेन्द्र' की एक एक प्रति वर्ष भर तक निःशुल्क देने का निश्चय किया है। सर्वप्रथम आवेदनपत्र भेजनेवाले ५० वाचनालयों को भी यह सुविधा मिलेगी। पता—'वीरेन्द्र' कोंच, यू० पी०।

बाल-साहित्य के अद्वितीय ...
पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी
पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू ... है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद ...
माननीय सम्पूर्णानन्द जी ... है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार ... दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनमें ... भावों की गम्भीरता और भाषा ... प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य ... उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह ... बालकों में सद्विचारों को बचपन ... बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी ... कृतियों को अपनाना चाहिए, और ... कृतज्ञ होना चाहिए।
बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
।॥) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास
प्रथम खंड
राजनैतिक इतिहास
लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ए० हिन्दी में इस विषय का यह अद्वितीय ग्रंथ है। इस पुस्तक पर लेखक को मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में इससे बड़ी सहायता मिलती है। मेहरौली का लौहस्तम्भ, भितरी की राजमुद्रा, कुमार गुप्त का करमदण्डा का लेख की प्रतिलिपि चिकने कागज़ पर मुद्रित है। अच्छा कागज़, बढ़िया जिल्द बड़े आकार के २५० पृष्ठ। मूल्य केवल ४) चार रुपये।
द्वितीय खंड
सांस्कृतिक इतिहास
इस खण्ड में गुप्तकालीन ... प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मुद्रा, ... विकास, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक ... धार्मिक दशा, भौतिक जीवन, ... वृहत्तर भारत और गुप्तयुग की ... वर्णन है। गुप्त राजाओं के समय की ... संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले के ... प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त ... ऐसा विशद और प्रामाणिक विवेचन ... भारतीय भाषा में शायद ही ... बढ़िया कागज़, अनेक चित्र, सुन्दर ... बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या साढ़े तीन ... ऊपर, मूल्य ५।=) पाँच रुपये पाँच ...
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

सयानों का पोट्‌सडम में सम्मेलन

पर मित्रराष्ट्रों का हवाई आक्रमण प्रारम्भ हो गया है

(विशेष सैनिक संवाददाता-द्वारा)

के राष्ट्रपति श्री ट्रूमन, मंत्री श्री चर्चिल और रूस के मार्शल स्टालिन का सम्मेलन पोट्सडम नगर में इन तीनों नेताओं के साथ सचिव, राजनीति-विशारद, विषयों के विशेषज्ञ भी सलाह- में पोट्सडम पधारे थे। इस सम्मेलन का प्रमुख उद्देश्य यूरोप व्यवस्था निश्चित करना शक्ति का मूलोच्छेद करने की तैयार करना था। मास्को- के विशेष संवाददाता का तेहरान के सम्मेलन में विजय हुआ, याल्टा-सम्मेलन में बनाकर तैयार की गई पोट्सडम में वास्तविक शान्ति के उपाय निकाले गये हैं। प्रेसिडेंट ट्रूमन सम्मेलन के और नेताओं ने भावी विचार किया।

*

समाचार-समिति ने "आशी" स्थिति संवाददाता हुए कहा है कि जापानी सम्मेलन से बहुत भय- के प्रत्येक लक्षण जापान पर पहले की इस सम्मेलन का प्रत्यक्ष तक जापान की जनता है, उसका ह्रास है। ब्रिटिश और अम- वायुसेनाओं की संयुक्त उग्र रूप धारण कर विचाराधीन सप्ताह में उनके ने अभूतपूर्व साहस के साथ के मुख्य धरातल पर । टोकियो की खाड़ी में दो पर हमला किया गया, पर जापानी नौ-सेना का छिपा हुआ मिला। एड- ने घोषणा की है कि टोकियो मील दक्षिण में याकूसुका अड्डे में जापानी नौ-सेना के पाये गये और वायुयान- से उड़े हुए विमानों ने उन । चौथी बार जापान के होनशू पर आक्रमण करते हुए अमेरिकन और ब्रिटिश सेनाओं टोकियो खाड़ी की जापानी अड्डे पर बमवर्षा की, जहाँ कि के जंगी जहाज आदि गये थे। इसके अतिरिक्त के पूर्वी द्वार पर अमेरिकन गोलाबारी की। टोकियो सिन नोजिमा स्थान को व्यापक क्षति पहुँचाई समाचार-समिति के आधार किया गया है कि इस ऐति- में मध्यवर्ती होनशू में नौ-सैनिक अड्डे पर तथा मित्रों के वायुयानवाहक लगभग ६०० विमानों था, जिसमें से १२१ दिये गये या क्षति- में प्रशान्त-ब्रिटिश- कमांडर ने भविष्यवाणी की थी कि शीघ्र ही ब्रिटिश विमान अमेरिकनों से मिलकर जापान पर रात-दिन हमला करेंगे। रात-दिन हमले करने ही होंगे। हम उन्हें विश्राम लेने नहीं दे सकते। उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हो रही है। इस संयुक्त नौ-सेना के प्रहारों के अतिरिक्त विचाराधीन सप्ताह में अमरीकी उड़नकिलों ने प्रातःकाल उनके अभूतपूर्व दल पर ५७वाँ सफल आक्रमण किया और जापान के प्रमुख प्रदेश होनशू नगरों पर ४,००० टन घातक बम गिराये। इन नगरों में मुख्य औद्योगिक नगर चौशी, याकोहामा, पुकिन, ओकाज़की, हिटाची आदि शामिल हैं। यद्यपि वायु-प्रहारों का लक्ष्य जापान बन गया है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि अधिकृत प्रदेशों पर अन्यत्र मित्रविमान धावा नहीं करते। ऐडमिरल निमिज की विज्ञप्ति में कहा गया है कि मित्रविमानों के एक दल ने कोरिया क्षेत्र में भारी हमला किया, जिससे १२ जापानी जहाज़ डूबे या क्षतिग्रस्त हुए और इसके अतिरिक्त तेल के एक कारखाने तथा रेलवे को व्यापक रूप से क्षति पहुँची। शंघाई पर भी वायु-आक्रमण हुआ है। अतः इन नौ-सैनिक वायु-आक्रमणों की तीव्र प्रगति, जिसके द्वारा जापान की वायुसेना और जलसेना की शीघ्र क्षति हो रही है और फिलिप्पाइन, डच ईस्ट इंडीज़, बर्मा आदि में होनेवाली स्थल कार्यवाही, जिनमें जापान के १५००००० सैनिक काम आ चुके हैं, पूर्व के शत्रु पर सामूहिक आघात करने के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। चीनी सेनाओं का उत्साह बढ़ रहा है और वे जापानियों से अपने खोये हुए प्रदेश को तेजी से छीन रही हैं। मार्शल च्यांगकाई शेक का यह दावा है कि चीन को सैनिकों की आवश्यकता नहीं। यदि पर्याप्त सामग्री और वैमानिक सहायता मिलती गई तो जापान को एशिया महाद्वीप में ही परास्त किया जा सकता है। प्रधान चीनी मंत्री डाक्टर सुंग को तो यहाँ तक आशा है कि इसी वर्ष के अंत में अथवा आगामी वर्ष के आरम्भ में युद्ध समाप्त हो जायगा। क्वाँग्सी प्रान्त में लड़नेवाली चीनी सेनाओं के प्रधान जेनरल चांग ने कहा है कि इस प्रान्त के अड्डों को प्राप्त करने के बाद हम सागरतटीय जापान में जापानी सेनाओं पर प्रहार कर सकते हैं। उनका कथन है कि इस प्रान्त की राजधानी क्वीलिन, जो जापान का प्रमुख अड्डा है और अमरीकनों का जो पहले हवाई अड्डा था, के लिए संकट उपस्थित हो गया और उसका शीघ्र पतन हो जायगा। उन्होंने यह भी कहा कि कैंटन के १२० मील पश्चिम बुचाउ का बड़ा बन्दरगाह १० दिन के भीतर हमें हस्तगत होगा। फुकीन प्रान्त में अमोय के दक्षिण-पश्चिम में बची हुई जापानी सेनाओं को घेरा जा रहा है। उत्तर-पूर्व के मोर्चे पर चीनी कम्यूनिस्ट सेना ने जापानियों से कई नगर छीन लिये हैं। ल्यूचाउ-कीलिन सड़क की दिशाओं से भी चीनियों को लाभ हुआ है। इंडोचीन सीमा के पास के तुनचिङ्ग नगर पर उनका अधिकार हो गया है।

* * *

आजकल लड़ाई कैसे लड़ी जाती है

(पेज ५ का शेष)

की लड़ाई में 'अचानक हमला' मुश्किल सी बात है क्योंकि जब किसी भी भारी आक्रमण के लिए सेना की अनेकों टुकड़ियाँ, टैंक आदि का बड़ी संख्या में इकट्ठा करना आवश्यक है तब इतने विशाल जमाव को शत्रु के वैमानिक गुप्तचरों से, जब तक कि आकाश पर इतना एकाधिकार न प्राप्त कर लिया गया हो कि शत्रु का एक भी विमान अपने आकाश में न आ सके, छिपाना असम्भव है। पता लगाने की गरज़ से चक्कर काटते हुए विमानों में से केवल एक ही देखकर या फ़ोटो लेकर आक्रमकारी के गुप्त इरादों का भण्डा-फोड़ कर सकता है। और फिर, जैसा कि पिछले महायुद्ध में हुआ था, प्रारम्भिक हवाई आक्रमण या तोपों का आग उगलना शत्रु के भारी इरादे को जताने में पर्य्याप्त हैं।

किन्तु आदर्श हमला वह है जब आक्रमणकारी तमाम ताक़तों के साथ एकाएक धावा बोल दे। इसके लिए तैयारियाँ चुपके से और होशियारी के साथ करनी चाहिए ताकि दुश्मन को अपनी रक्षात्मक शक्तियों को 'नाज़ुक स्थान' पर इकट्ठा करने का अवसर ही न मिले। दाँव-पेंच का एक आवश्यक अंग यह भी है कि ज़मीन की ओट का, आक्रमण करने वाला टुकड़ियों के चुपके चुपके जमा करने में, पूरा लाभ उठाये। इशारा पाने पर तत्क्षण इरादे को कार्य्य में बदलने की तीव्र गति भी अचानक हमले की सफलता का एक अंश है।

जब कि आक्रमण से शत्रु के कमज़ोर स्थान का पता चल गया हो तब दाँव-पेच की एकाग्रता सिद्धान्त का उपयोग कर बढ़िया फ़ौजों को 'निर्णय स्थान' पर लाकर डटा देना चाहिए। अतः अतिरिक्त फ़ौजों को तत्परता से इधर उधर भेज सकना भी एक दाँव-पेंच है। जब कि तमाम फ़्रन्ट पर लगातार दबाव डाला जा रहा हो, रिज़र्व में पड़ी फ़ौजों की तत्पर सहायता से आक्रमण सफल बनाया जा सकता है।

आक्रमणवाली फ़ौज के दो हिस्से होते हैं। एक आगे बढ़नेवाली कतार और दूसरी अतिरिक्त फ़ौज। जब अधिक से अधिक ताक़त आक्रमण के निर्णयात्मक स्थान पर झोंक दी जावे तब अतिरिक्त सेना को विजय के साथ साथ आगे बढ़ने में तत्पर रहना चाहिए या अगर अगली कतार उद्देश्य-प्राप्ति में असफल हो रही है तो उसे पूरा कराना चाहिए। अतिरिक्त का दूसरा काम आगे बढ़नेवाली कतार में मरने की कमी को पूरा करना होता है, प्रत्याक्रमण का मोर्चा थांभना होता है और क़ब्ज़े में आई सम्पत्ति एवं भूमि पर दृढ़ता प्राप्त करना है।

ऐसे हमलों में पैदल फ़ौज का वह हिस्सा काम में लाया जाता है जिसे राइफल प्लैटून कहते हैं। एक राइफल प्लैटून में तीन हिस्से होते हैं और हर हिस्से में आठ-आठ आदमी। इनमें का कोई भी हिस्सा आग उगलने का आक्रमण की तरह से इस्तेमाल किया जा सकता है। यह अधिक से अधिक संख्या है जिस पर सेना-नायक का किसी भी समय व्यक्तिगत अधिकार है।

हर सिपाही की अपनी अपनी राइफल होती है जिसमें दस राउन्ड तैयार रहते हैं और ४० राउन्ड रिज़र्व में रहता है। साथ में संगीन भी रहती है। इनके अतिरिक्त एक को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति ब्रेन गन के लिए तीन-तीन मैगज़ीनें लिये रहता है। एक बचा हुआ बैटिल रिज़र्व का काम करता है। हर एक के पास चार-चार विस्फोटक बम, उनको छूटाने की प्याली तथा एक एक ब्रेनगन रहते हैं।

जहाँ तक हो सके ब्रेन गन को पहले से ही आक्रमण स्थान के पास प्लैटून ट्रक (साथ में लड़ाई का सामान ले चलनेवाली टुकड़ी) के मध्य अड़ा देना चाहिए। प्लेटूनकी यह टुकड़ी अपने दूसरे हिस्सों के लिए दो अतिरिक्त ब्रेनगन रखती है और साधारण तथा एक ब्रेनगन वायुयान विध्वंसिनी तोप का काम करती है। ब्रेनगन और राइफलों को सामग्री पहुँचाने के अतिरिक्त यह एक टैंक विरोधिनी राइफल तथा हथियारों को भेदनेवाले विस्फोटक पदार्थ, जल्दी फूटनेवाले बम, उनको छुड़ाने के लिए प्यालियाँ आदि सामान भी साथ में रखती हैं।

आक्रमण के पहले कम्पनी कमान्डर के आदेशानुसार प्लैटून कमाण्डर अपने आदमियों को हिदायतें दिये रहता है। वह उन्हें बता चुका रहता है कि कब और कहाँ पर आक्रमण करना है, कब और कहाँ इकट्ठा हो जाना है और कब और कहाँ फिर अपने अपने स्थान पर वापस आ जाना है। किस ढंग से और किस ओर आगे बढ़ना है। फ़ासले और रास्ते की दशा का भी हाल पहले से बता दिया जाता है। अगली कतार में किन्हें किन्हें रहना है, यह भी जना दिया जाता है। आक्रमण करने का इशारा और समय पहले से ही सूचित रहता है। वह यह भी आगाह किये रहता है कि आक्रमण में दुश्मन-द्वारा धुएँ का पर्दा डाल दिये जाने पर कैसे काम लिया जाय।

बर्मा के विषय में एक एसोसिएटेड प्रेस के विशेष संवाददाता का कहना है कि ६,००० से लेकर ८,००० तक के जापानियों का जो भारी दल पेगू योमास में फँसा हुआ है वह सम्भव है कि भारी वर्षा के कारण लड़ाई में सन्नाटे से लाभ उठा कर सिटांग नदी को पार करने और पूर्व की तरफ भागने का प्रयत्न करे और यही उनकी रक्षा की एक-मात्र आशा है। मांडले-रंगून सड़क के दोनों तरफ के धान के पानी भरे खेत और सिटांग के नीचे का क्षेत्र तेजी से सूख रहा है। ये जापानी, अभी तक संगठित हैं, परन्तु यह समझा जाता है कि वे कोई बड़ी लड़ाई नहीं लड़ सकते।

* * *

आस्ट्रेलियन सेना ने सारवाक में ३६ मील के मासती द्वीप पर बिना विरोध के कब्जा कर लिया है। दक्षिण-पूर्वी बोर्नियो में बालिक पापेन से खाड़ी के पार आस्ट्रेलियन सातवें डिवीजन के सैनिक अपना अधिकार तटवर्ती क्षेत्रों में बढ़ा रहे हैं। पूर्वी बोर्नियो के प्रमुख तेल-केन्द्र सम्बोडजा पर आस्ट्रेलियन सेना ने २० जुलाई को अधिकार कर लिया है। बुगेनविले में भीषण वर्षा के कारण युद्ध शिथिल पड़ गया है।

(पेज ६ का शेष)

सन्तान थी और इसी बालिका को अपनाकर उन्हें सन्तोष धारण करना पड़ा। मिहिर, मिहिरण अर्थात् सूर्य्य, चन्द्र, शिव आदि के उपासक इन मेड़तिया राठोड़ों ने अपनी एकमात्र लाडली सन्तान का नाम अपने इष्टदेव पर रक्खा हो तो कोई आश्चर्य नहीं। मीरां ने स्वयं भी एक जगह लिखा है :—

"मेड़तिया घर जन्म लियो है, मीरां नाम कहायो।" नरसी मेहता, तुकाराम आदि समकालीन संतों ने भी उनका मीरां नाम होना लिखा है।

इन सब बातों को देखते हुए हमें यही कहना पड़ेगा कि मीरां कवियित्री का नाम ही है। यह नाम माता-पिता का ही जन्म-नामकरण के समय दिया नाम है। साधु-संतों आदि के द्वारा दिया उपनाम नहीं। मीरां शुद्ध देशी शब्द है। पहले इस शब्द का ज़्यादा प्रचार न था, लेकिन बाद में भक्त व कवियित्री मीरांबाई के कारण वह आदरसूचक बन सर्वसाधारण के नामों में प्रयोग होने लगा।

क्या नेता-सम्मेलन असफल रहा ?

(पेज ४ का शेष)

उद्देश्यों के प्रति शिमला-सम्मेलन में पूर्ण सफल रही है।

*   *   *

अब रहा कांग्रेस का प्रश्न। शिमला-सम्मेलन में सम्मिलित होने के पहले ही कांग्रेस के सभापति मौलाना अबुलकलाम आजाद ने यह घोषित किया था कि कांग्रेस किसी प्रकार अपने को सवर्ण हिन्दुओं का प्रतिनिधि मानकर साम्प्रदायिक संस्था न बनायेगी। कांग्रेस ने रुचाई के साथ अपने इस कथन का पालन किया। मौलाना आजाद को निमंत्रित कर ब्रिटिश सत्ता के प्रतिनिधि वायसराय ने अंशतः यह स्वीकार कर लिया कि कांग्रेस कोई साम्प्रदायिक संस्था नहीं है। इस प्रकार कांग्रेस भी अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल मानी जा सकती है।

रहा यह कि शिमला-सम्मेलन जिस अस्थायी सरकार की स्थापना के लिए बुलाया गया था उसकी बात शिमला-सम्मेलन में निमंत्रित प्रमुख पार्टियों में से किसी भी पार्टी को अस्थायी सरकार की स्थापना की कोई विशेष उत्सुकता नहीं थी। हाँ होती तो अच्छा था। नहीं हुई कोई बात नहीं। कांग्रेस का यह रुख पं० जवाहरलाल नेहरू ऐसे कांग्रेस के प्रमुख नेताओं ने शिमला-सम्मेलन के पहले ही स्पष्ट कर दिया था। मुस्लिम लीग को स्थायी या अस्थायी किसी भी सरकार की स्थापना में उत्सुकता नहीं होती जिसमें मुस्लिम हितों की विशेषता प्रामुख्य न हो। रही ब्रिटिश सरकार, उसे तो केवल यह दिखाना था कि वह कुछ देना चाहती है। इस प्रकार हम यह देखते हैं—शिमला-सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता इसी में निहित है कि इस सम्मेलन में परस्पर विरोधी पार्टियाँ अपने अपने उद्देश्य में पूरी तरह सफल हुई है।

इसमें असफल हुए तो वह हिन्दू मुसलमान दल जिनका कोई प्रतिनिधित्व इस सम्मेलन में नहीं था, जिनके सामने कपड़ा और भोजन का सवाल राजनैतिक सिद्धान्तों से भी अधिक महत्व का है, जो वर्तमान के बदलने की राह तीव्र गति से देख रहे हैं, किन्तु इसके लिये हम किसी भी पक्ष को दोष नहीं दे सकते। जैसा कि पं० जवाहरलाल नेहरू ने कहा है कि 'भारत से तीसरी पार्टी को निकाल दिया जाय और जनता स्वयं अपने प्रश्नों को नये दृष्टिकोण से नये नेतृत्व से सुलझाए' किन्तु इसमें कितनी देर लगेगी यह अभी कहा नहीं जा सकता। हाँ इतना अवश्य स्पष्ट है कि हमारे सामने केवल एक प्रश्न है कि तीसरी पार्टी को अर्थात् ब्रिटिश हुकूमत को भारत के बाहर किस प्रकार किया जाय ?

युग और साहित्य

युगद्वन्द्वों तथा उनसे प्रभावित भावी सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण साहित्य के माध्यम से उपस्थित करनेवाले निबन्धों का संकलन। २॥≡)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य है। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी २)
अनुराग १)
कलंक १)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥≡)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

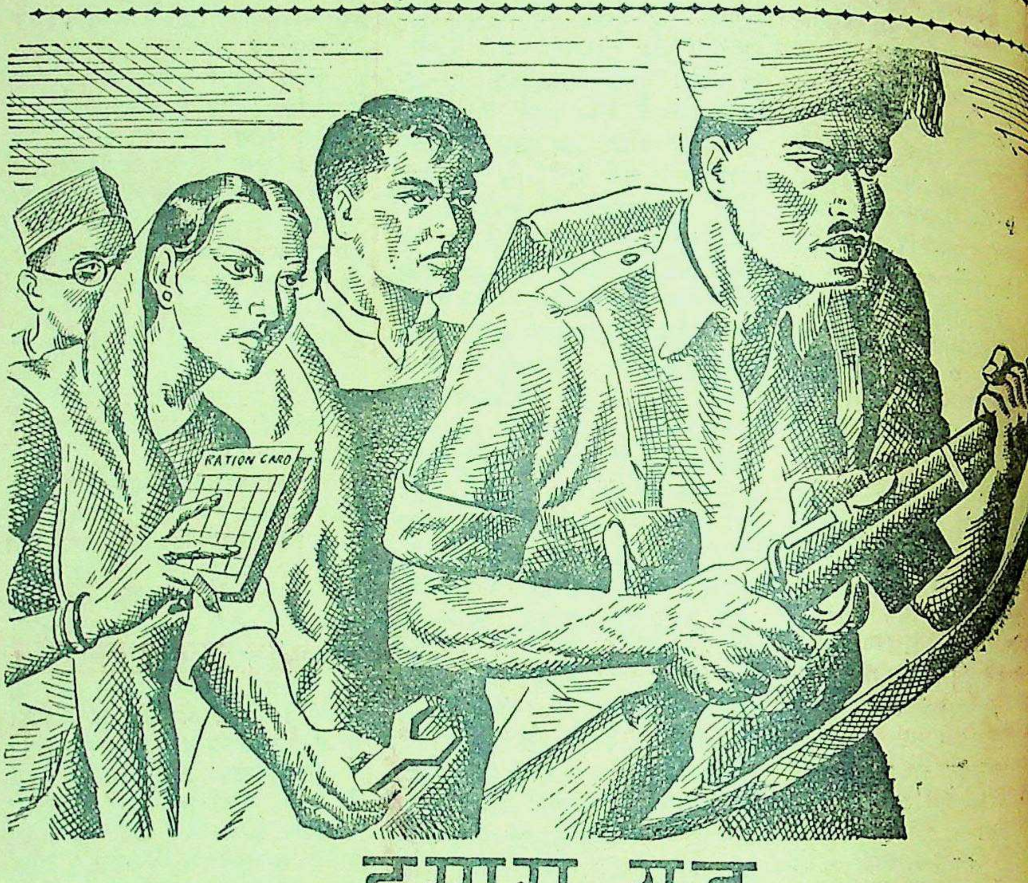

हमारा युद्ध

आठ वर्ष पहले जब जापान ने चीन पर अकारण आक्रमण किया, हिन्दुस्तान ने स्पष्ट रूप से इसकी निन्दा की। जब नाज़ी लुटेरों ने दुनिया को तबाह करने के लिए युद्ध छेड़ा, हिन्दुस्तान ने आक्रमणकारियों का सामना करने में गौरवपूर्ण भाग लिया। हमारे सैनिकों, नाविकों और विमान-चालकों ने इस बड़े काम के लिए अपनी जानें दीं; हमारे मज़दूर और कारीगर लड़ाई के ज़्यादा से ज़्यादा हथियार बनाने के लिए कारख़ानों में जी तोड़ मेहनत करते रहे; माल की कमी और चीज़ों की महंगाई से हम सबको कष्ट उठाना पड़ा; किन्तु हमारे युद्ध-प्रयत्नों में कोई कमी नहीं हुई।

अब नाज़ियों के बिना शर्त हथियार डालने के बाद हमारा महान संघर्ष आख़िरी मंज़िल पर पहुंच गया है। आक्रमण और अत्याचार के विरुद्ध यह युद्ध आज पहले की अपेक्षा और अधिक हमारा अपना युद्ध बन गया है। अपराजित जापान हमारी सुरक्षा तथा शांति के लिए बहुत बड़ा संकट है।

शत्रु अब तक काफ़ी बलवान है। उसके सैनिक बड़े वहशी होते हैं और आख़िर दम तक लड़ते हैं। उसके साधनों में अभी कमी नहीं हुई। हमें अभी भीषण युद्ध करना है। इसलिए सुख से सोने का समय अभी नहीं आया। हमारे दृढ़ संकल्प से हिन्दुस्तान के बहादुर जवानों का हौसला बढ़ेगा और वे दुश्मन के घर में पहुंच कर उससे बिना शर्त हथियार डलवा कर रहेंगे।

अपने सैनिकों के त्याग के सामने हमारी कठिनाइयां कुछ भी नहीं। हमें साहस और दृढ़ता के साथ अपनी ज़िम्मेदारी निभाते रहना चाहिए और जीत का दिन निकट लाने के लिए पहले की अपेक्षा और अधिक प्रयत्न करना चाहिए।

हमारा युद्ध जारी है....

AAA 353 डिपार्टमेण्ट आफ इन्फ़र्मेशन एण्ड ब्राडकास्टिङ्ग, गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित।

अगर यह एलगिन है तो यह श्रेष्ठ है
...टर्किश व हुक्काबैक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें, धारीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी ...की कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एलगिन।

ELGIN
it's good!

...कपड़ा (गांठें) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या ...अधिकृत व्यापारियों द्वारा ही भेज सकते हैं। भारतवर्ष के किसी भी ...हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलों के रूपमें पेढ़ेन्वार द्वारा निर्यात ...निषेध है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों में ही) ...अपने शहरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

...दी एलगिन मिल्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर।
सोल सेलिंग एजेण्ट्स :—
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर।
EK-25 HI

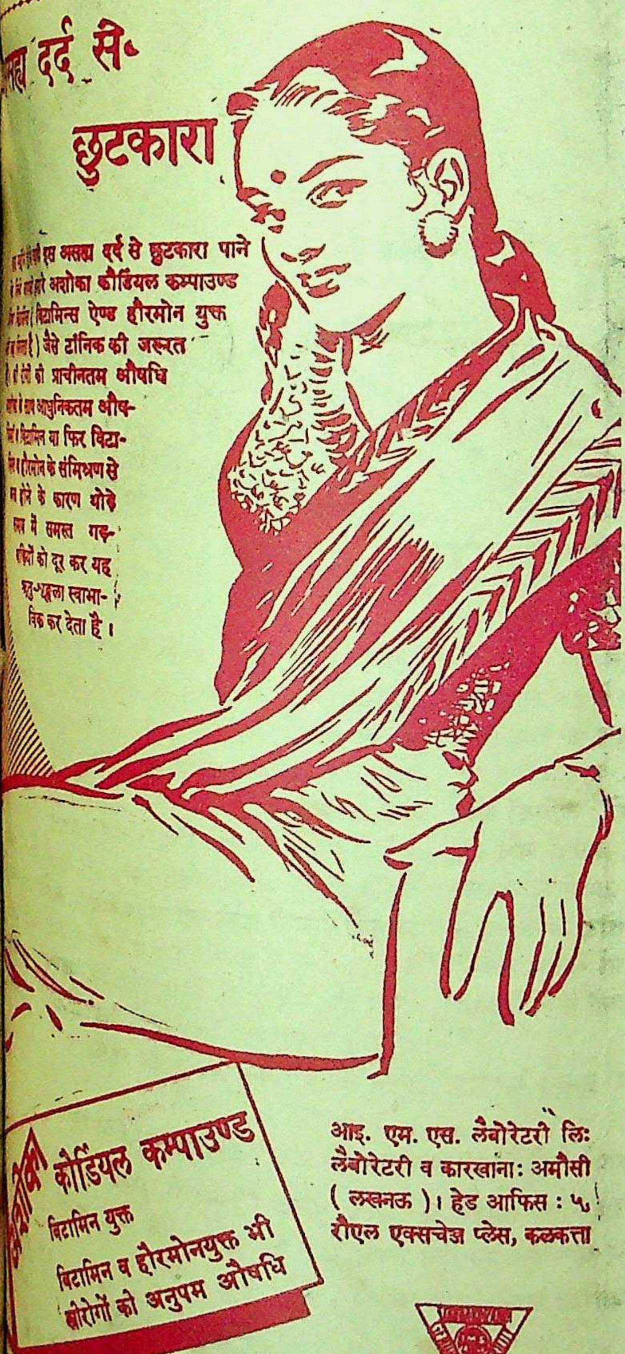

...दर्द से छुटकारा

...इस असह्य दर्द से छुटकारा पाने ...अशोका कौर्डियल कम्पाउण्ड ...(विटामिन्स ऐण्ड हौरमोन युक्त ...) जैसे टॉनिक की जरूरत ...की प्राचीनतम औषधि ...आधुनिकतम औष- ...विटामिन या फिर विटा- ...हौरमोन के संमिश्रण से ...होने के कारण थोड़े ...में समस्त गड़- ...बड़ियों को दूर कर यह ...शृंखला स्वाभा- ...विक कर देता है।

...कौर्डियल कम्पाउण्ड
विटामिन युक्त
विटामिन व हौरमोनयुक्त भी
...रोगों की अनुपम औषधि

आइ. एम. एस. लैबोरेटरी लि:
लैबोरेटरी व कारखाना: अमौसी
(लखनऊ)। हेड आफिस : ५,
रौएल एक्सचेञ्ज प्लेस, कलकत्ता

KIK 3

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस कल्पना और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

"विजय-प्राप्ति का दृढ़ निश्चय" इस लड़ाई के प्रारम्भ होने से बहुत पहले ही, संसार भर में हिन्दुस्तान के समुद्री बेड़े और फ़ौज के जवानों की परम्परागत वीरता और साहस का सिक्का बैठ चुका था।

अब हिन्दुस्तान के विमान-चालकों को दिन प्रति दिन जो शानदार सफलता मिल रही है, उसने देश की उज्ज्वल परम्परा में चार चांद लगा दिये हैं। शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक उस कीर्ति की पूर्णतया रक्षा कर रहे हैं जो हिन्दुस्तान को वीरता के क्षेत्र में प्राप्त है। साहस, बुद्धि तथा विजय-प्राप्ति का दृढ़ निश्चय—ये गुण उनमें विशेष रूप से पाये जाते हैं। आज वे जापानियों का सिर कुचल रहे हैं। कल वे हिंदुस्तान की युद्धोत्तर-कालीन अभियान-कला के केंद्र होंगे। शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में इन जैसे और बहुत लोगों की अभी आवश्यकता है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

AAA 83

फ़िल्मी-गाने !

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना चाहें तो "फ़िल्म सङ्गीत" मँगाइये। अब तक ६ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक भाग में ७० फ़िल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वरलिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभाग ३) डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)।

पता—संगीत कार्यालय, हाथरस यू० पी०

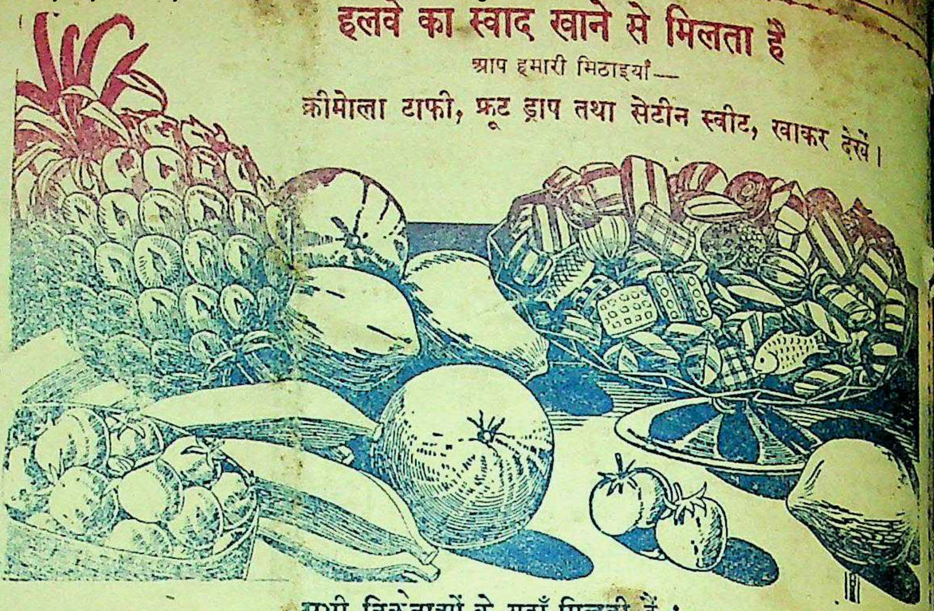

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

लावण्य का सार

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

जिन आहारों को आप खूब पसन्द करते हैं…

उनको शक्तिदायी बनाओ!

DALDA VANASPATI

DALDA COOK BOOK Price Re.1/-

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कैसे
हरएक स्त्रीको होनीही चाहिये।
(अंग्रेजी) में आहार के बारे
१५० से अधिक आहारोंक
आपके पास इसकी एक
Dept. C113 P.O. Box No.
के पते पर चार आने के पोस्टल

पिताजी कहते हैं कि मुझे हर काममें स्फूर्ति रहती है।

क्या आप जानते हैं कि हमारे चंद आहार हमारे लिये फायदेमन्द नहीं? उनसे पेट तो भर जाता है लेकिन जितनी शक्तिका हम हररोज व्यय करते हैं उतनी उनसे वापस नहीं मिलती। इसके बारेमें सोचना आवश्यक है न? हमारा आरोग्य, सुख, कामयाबी, —सभी हमारी शक्तिपर निर्भर हैं। अगर चाहिये उतनी शक्ति हम हमारे भोजन से न पा सकें तो, आज ना सही कल, हमें पछताना होगा। वैसे सभी आहार कुछ ना कुछ शक्ति देतेही हैं। लेकिन हमारे भोजनमेंसे कई ऐसे हैं जिनसे बहुत कम शक्ति पैदा होती है। इन आहारों के साथ ज्यादा शक्तिदायी चीजों का इस्तेमाल करके हम उन्हींसे अधिक शक्ति पा सकते हैं। जीवन सत्त्व-सपूर्ण डालडा इस काममें बहुत मदद करता है। यह बढ़िया चीज कुछ ऐसे "अन्नांश" देती है जो प्रकृति के सबसे ऊंचे दर्जेके शक्तिदायी हैं। सभी आहार डालडा में बनाना फायदेमन्द है—सिर्फ़ सुरक्षा के लिये।

पोषक-तत्त्व संपन्न **डालडा** स्फूर्ति के लिये

HVM. 34-178-40 HI

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७॥)
संख्या ३)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१२ अगस्त, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 12th August, 1945

द्वन्द्व—यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव-हृदय के अन्तद्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

जय किसकी हुइ ?
मंत्रिमंडल क्यों ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

हास-परिहास, मातृ-मंदिर, रंगमंच, छुरी (कहानी), क्या वह कलंकिनी थी ?

सारिडन से
१० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये
Saridon

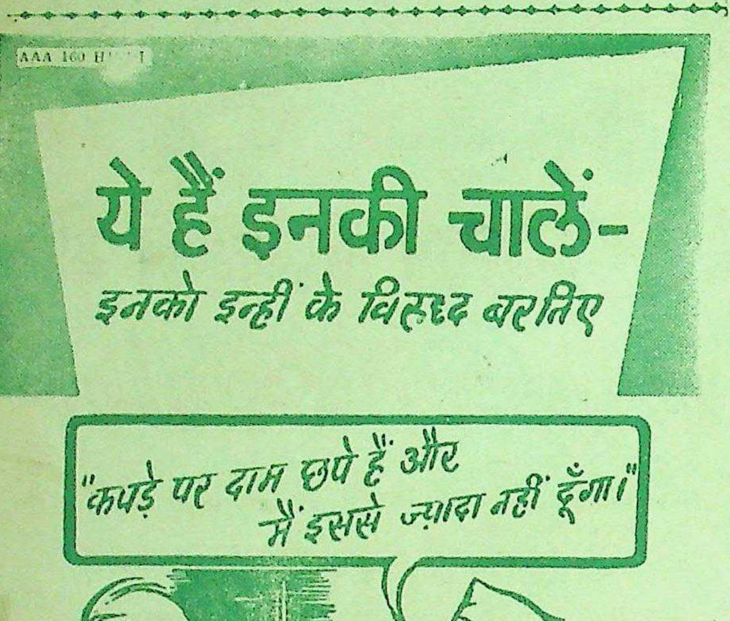
AAA 160 H
ये हैं इनकी चालें-
इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए
"कपड़े पर दाम छपे हैं और
मैं इससे ज़्यादा नहीं दूँगा।"

ठीक है। मुनाफ़ाखोरों को मात देने का यही उपाय है। उनके धोखे मे न आइए। अगर वे बेजा दाम लेना चाहें, तो रसीद ले लीजिए और पुलिस में रिपोर्ट कर दीजिए।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

इनमें दुर्गन्ध नहीं क्योंकि
पाइनतार का उपयोग करते
पाइनतार
PINE-TAR
TAR
DCM
DCM. 41.

"पाइनतार" बीमारी के कीड़े नाशक साबुन का नित्य उपयोग करने शरीर में बदबू नहीं आती है छूत का रोग दूर होता है। साबुन बीमारी के कीटाणुनाशक दवाइयों से बनाया गया है। जिससे यह शरीर को रखने के साथ साथ बीमारी से भी रक्षा करता है। मुलायम चमड़ी के ऊपर भी इसका उपयोग हो सकता है।

साबुन बीमारी के कीटनाशक रसायनिक तत्त्वों से बना है। पानी में खूब झाग छोड़ता है।

यह डी. सी. एम. केमिकल वर्क्स, देहली का बना हुआ है जो प्रत्येक बड़े स्टोर या निकटस्थ डी. सी. एम. स्टोर से प्राप्त हो सकता है।

व्यापारिक पूछताछ के लिए लिखिए:-

देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स, कम्पनी लिमिटेड, देहली

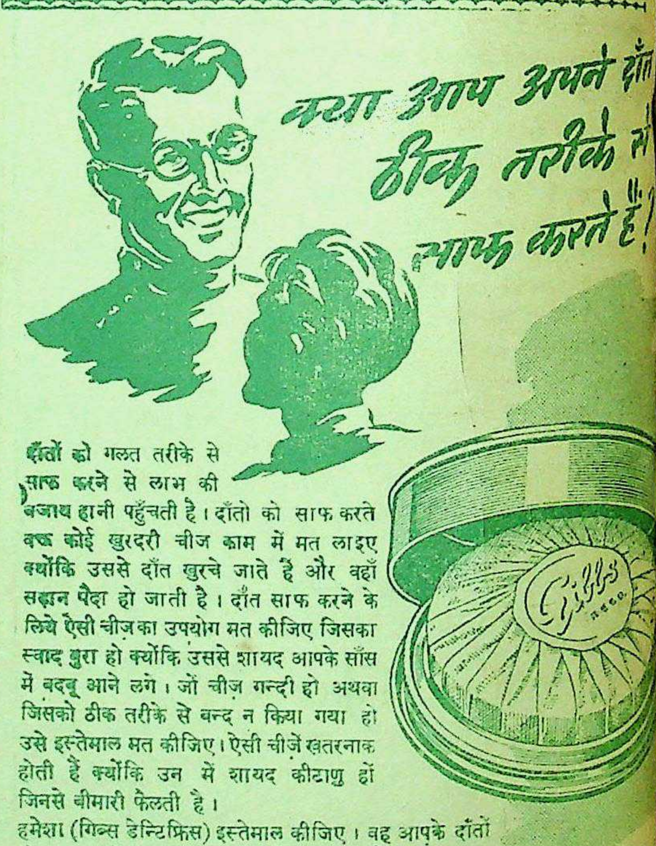
क्या आप अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करते हैं?
Gibbs
हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!
गिब्स डेन्टिफ्रिस
GD. 12-33 HI
D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON,

दाँतों को गलत तरीके से साफ करने से लाभ की बजाय हानी पहुँचती है। दाँतो को साफ करते वक्त कोई खुरदरी चीज काम में मत लाइए क्योंकि उससे दाँत खुरचे जाते हैं और वहाँ सड़न पैदा हो जाती है। दाँत साफ करने के लिये ऐसी चीज़ का उपयोग मत कीजिए जिसका स्वाद बुरा हो क्योंकि उससे शायद आपके साँस में बदबू आने लगे। जों चीज़ गन्दी हो अथवा जिसको ठीक तरीके से बन्द न किया गया हो उसे इस्तेमाल मत कीजिए। ऐसी चीज़ें ख़तरनाक होती हैं क्योंकि उन में शायद कीटाणु हों जिनसे बीमारी फैलती है।

हमेशा (गिब्स डेन्टिफ्रिस) इस्तेमाल कीजिए। वह आपके दाँतों को सुगमता से साफ कर देता है इसका स्वाद और इसकी सुगंध दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है और डिबिया में बन्द रहता है जिससे इस पर धूल नहीं गिरती। इसके इलावा इस डिबिया में १०० बार से अधिक दाँत साफ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हज़ारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २), डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

---

३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
सन् १९५९-६१
के बारे में आवश्यक विवरण

...फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में ...गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ ...अधिक रुपया लगाया गया था।

...समय में इतनी बड़ी रकम का लगाया जाना पहले लोन के ...और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का ...विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी ...पर जारी किया गया है, अर्थात व्याज साल में दो बार इनकम टैक्स ...के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ ...बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रक़म के ...दिये जाने का ज़िम्मा लिया जाता है। जितनी रक़म चाहें लगायें, ...प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ज़रूरत पर ...मार्केट में बेच कर नक़द रक़म प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम ...लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल ...। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम ...में सहायता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुक़...ख़तरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा व्याज मिलता ...।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर ...अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में ...बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ ...की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

AAA 223 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

...इंडिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में अमर हैं। मूल्य २)

प्रकाशक—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

काग़ज़
अब ज़्यादा आसानी से
-और कंट्रोल के दामों पर मिल सकता है

ग़ैर सरकारी ज़रूरतों के लिए जो काग़ज़ मिल रहा था, उसका परिमाण अब बढ़ा दिया गया है। हिन्दुस्तानी कारख़ानों का बना हुआ और विदेश से आया हुआ काग़ज़ अब और अधिक परिमाण में पबलिक के लिए दिया जा रहा है।

इस वृद्धि के आधार पर पेपर कंट्रोल (इकानमी) आर्डर, १९४४ की धाराओं में अब काफ़ी रियायतें कर दी गई हैं। पढ़ाई की किताबें छापने वालों का कोटा सन् १९३९ के कुल ख़र्च के ५० फ़ी सदी की बजाय ८० फ़ी सदी तक कर दिया गया है, और दूसरों का कोटा सन् १९४३ के कुल ख़र्च के ३० फ़ी सदी की बजाय ६० फ़ी सदी तक।

उचित आवश्यकताओं के लिए अब काग़ज़ ज़्यादा आसानी से और कंट्रोल के दामों पर मिल सकता है। स्पष्ट है कि कंट्रोल के उपाय सफल सिद्ध हो रहे हैं।

बात समझ लीजिए-
अपने अधिकार माँगिए

डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़ ऐण्ड सिविल सप्लाइज़, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

AAA 408

बाल-साहित्य के अद्वितीय कवि

पण्डित सोहनलाल जी द्विवेदी

की

तीन पुस्तकें

झरना—शिशु-भारती

बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू का कथन है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद आई हैं।

माननीय सम्पूर्णानन्द जी का कथन है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार की ऊँचे दर्जे की कवितायें लिखते हैं, जिनसे उनके भावों की गम्भीरता और भाषा का प्रभुत्व प्रकट होता है, लेकिन, बालसाहित्य तो उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मानते हैं कि बालकों में सद्विचारों को बचपन में ही बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी की इन कृतियों को अपनाना चाहिए, और उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी!

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य

।॥) बारह आने

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

सूरज छाप सर्वत्र मिलता है स्था. १८९६

स्वदेशी

अमृतांजन

नीलगिरि तेल

नमूना मुफ़्त

युकॅलिप पेन बाम

दादकामरहम

खांडालेकर बन्धु

बम्बई ४

EVEREADY
3 CELL EXTRA LONG LIFE BATTERY

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर

नं ७१२ एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत रु. ०-४-६.

दुसरी जगह रु. ०-५

ज्यादा मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.,
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी	१)
अनुराग	१)
कलंक	१)
गल्पगुच्छ (चार भाग)	४॥=)
टाल्सटाय की कहानियाँ	१)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

लो धोबी ने एक और हानि की!

—और इधर कपड़े इतने महंगे

इस महंगी के समय में अगर धोबी आपके कपड़े पटक पटक कर उनकी धज्जियां उड़ा दे तो कैसे काम चलेगा, आपको चाहिये कि आप इस तरह साफ करने की विधि का खोज करें जिससे वे कम फटें ताकि हरएक कपड़ा अधिक से अधिक चले। अब समय है कि आप **अपने घर** में सनलाइट की "साबुन-और-बचत" की विधि से कपड़े धोयें। कपड़े धोने की यह सरल विधि धोबियों की बेढंगी विधि से कहीं उत्तम है क्योंकि वह सरल है, कपड़ों को अधिक साफ़ करती है और उनका एक धागा भी नष्ट नहीं करती। सनलाइट की जोरदार और स्वयंक्रियाशील झाग मैले कपड़ों के मैल को पटके या रगड़े बिना ही काट डालती है, इससे कपड़े अत्यंत स्वच्छ दिखाई देते हैं और अधिक समय तक चलते हैं। आज ही अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" की विधि सिखा दीजिये।

अपने नौकर को सनलाइट की "साबुन-और-बचत" रीति सि

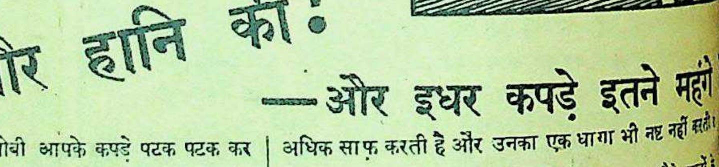

१ कपड़ों को अच्छी तरह भिगो लीजिये, इससे कपड़ा साबुन लगाए जाने योग्य हो जाता है। २ सनलाइट
पर मलिये जहां अधिक मैल हो वहां अधिक मलिये। ३ कपड़ों को धीरे धीरे सानिये, पटकिये नहीं, सनलाइट
क्रियाशील झाग कपड़े से सारे मैल को काट देगी, और उसे पकड़ रखेगी। ४ कपड़े को इस तरह खंगालिये
नाम तक उसमें न रहे क्योंकि अब इस झाग के साथ मैल होगा। यदि कपड़ा अधिक मैला हो तो दो बारा साबुन

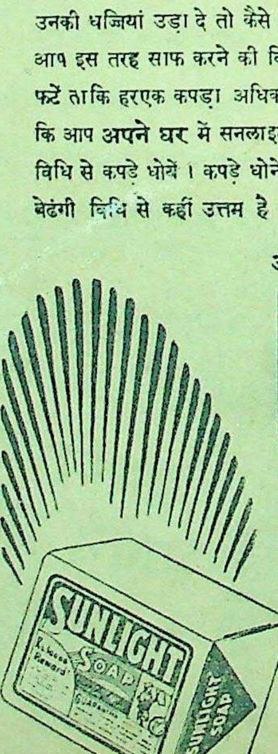

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

LEVER BROTHERS

देशदूत

वर्ष ७ संख्या ५०] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, १२ अगस्त, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

जवाहरलालजी नेहरू आजकल
है, कहना यह चाहिए कि वह
रहे हैं। यद्यपि पंडित जी सारे
और सारा देश उनका है किन्तु
श्मीरी पंडित होने के नाते
की पितृ-भूमि तो है ही। इसी-
पिछले दिनों वहाँ की राष्ट्रीय
काश्मीरी पंडितों तथा पंडिता-
होने के लिये विशेषरूप
दिया था। काश्मीर में केवल
हैं, एक मुसलमान और
पंडित कहलाते हैं। जिस
ने सारे देश की राष्ट्रीयता
है, उसी तरह काश्मीर को
दोनों समझ बैठी हैं। वहाँ
डेढ़ चावल की खिचड़ी
है। वाकई अगर आज काश्मीर
और पंडिताइनों का समाज चेत
हकों के लिये हर मामले
जिस तरह आज वह
में बाजी मारे हुए है
के क्षेत्र में भी उनका
सकता है? इसलिए
संजीदा राय है कि
और पंडिताइनें मैदान
जल्दी तैयारी कर
नहीं तो मुसलिगलीग
उन्हें समूचा निगल
सा?

* *

आन्दोलन की स्मृति
' मनाने की जो धूम-
अधिकारियों की एक
पानी फेर दिया? क्यों?
'सच्चे लोकतंत्र' का
हैं और ब्रिटेन तो सारी
'लोकतंत्र' के आधार पर
मिला रहा है? आखिर
' में कौन सा तूफान बरपा
सरकार के पास फौज-
पुलीस-पल्टन की कमी
भयभीत होने की जरूरत
लेकिन हमारी सरकार तो
देखती है न! यह
कि कांग्रेस वाले 'स्वतंत्रता
और मुसलिम लीग यों ही
रहे? अगर दोनों
सरकार का पैंतरा देखने
हालत में अपने राम
सकते हैं? मजदूर सरकार
है। स्वराज्य तो जल्दी से
ही, फिर इतनी उतावली
'स्वतंत्रता सप्ताह' न
नहीं। ब्रिटेन की नई
दुनियाँ में 'सच्चा लोकतंत्र'
है तो क्या भारतवर्ष को
अधिकारियों को अगले
भाव मालूम होगा?

*

मिस्टर पेथिक लारेंस
मिस्टर अमरी वयोवृद्ध थे
भी वयोवृद्ध हैं। अच्छा
चूल तो मिली! यही

नहीं मिस्टर लारेंस महात्मा गाँधी के प्रति भी बड़े श्रद्धालु हैं। सन् १९१२ में वह ९ महीने के लिए जेल भी हो आये हैं। यों तो आदमी पैदा होने के पहले भी ९ महीने की सजा भुगत आता है किन्तु मिस्टर लारेंस की सन् १२ वाली दूसरी जेल यात्रा थी। सबसे बड़ी बात यह है कि न वह शराब पीते हैं और न सिगरेट, बीड़ी या सिगार ही। बड़े धार्मिक और आचार-विचार के व्यक्ति हैं। अपने राम को तो प्रसन्नता इस बात से हुई कि इँगलैंड के इंडिया आफिस में एक नये महात्मा का आगमन हुआ है। इसीलिए हमें अब विश्वास हो गया है कि भारत को मजदूर सरकार जल्दी से जल्दी स्वराज्य देगी नहीं तो ऐसे महात्मा को भारत मन्त्री के पद पर बिठालने की उसे आवश्यकता ही क्या थी? इंडिया आफिस और हिन्दुस्तान की चूल मिलनी शुरू हो गई है। फिर भी अभी तो श्रीगणेश है—

इब्तदाये इश्क है, रोता है क्या?
आगे आगे देखिये होता है क्या?

* * *

पोर्टसडम सम्मेलन में त्रिनेताओं ने जो निर्णय किया है उससे स्पेन का डिक्टेटर जनरल फ्रांको बिगड़ खड़ा हुआ है। जनरल फ्रेंको ने कहा है कि वह अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में शामिल होने की भीख नहीं माँग सकता। यह है डिक्टेटरी की आवाज़! लेकिन बच्चू को नहीं मालूम कि अब सिर्फ अमरीका और ब्रिटेन का ही बोलबाला नहीं है बल्कि डिक्टेटर स्टेलिन भी इस मासले में शरीक हैं। हर हिटलर ने भी इसी तरह की बोलियाँ पहले बोलना शुरू किया था लेकिन दूध का जला मट्ठे को भी फूँक फूँक कर पीता है, इसलिए इस बार हिटलर के बाद फ्रेंको की बारी है। जर्मनी तो बाँट ही लिया गया, स्पेन का भी नम्बर भविष्य में आये तो क्या आश्चर्य! क्योंकि अब तो लोकतन्त्र, स्थापित होनेवाला है न? फिर फ्रेंको ऐसे डिक्टेटर की क्या जरूरत रह जायेगी? अमरीका, ब्रिटेन और रूस के वर्णसंकरी लोकतन्त्र से ही योरोप ही नहीं सारे संसार का उद्धार किया जायेगा। जरा शांत रहिए। देखते चलिये। हिटलर और मुसोलिनी जब न रह गये तो फ्रेंकों के रहने के लिऐ कहाँ जगह है? लोकतन्त्र की जय और फ्रांकोतंत्र की क्षय!

* * *

भारतीय राजनीतिक क्षेत्र में एक नई प्रगति शुरू हो गई है। कांग्रेसवादियों की ओर से जब से कम्यूनिस्टों को कांग्रेस से अलग किये जाने का शोर-गुल प्रारंभ हुआ है तब से यह जान पड़ता है कि कम्यूनिस्ट खिसिया से गये हैं। क्योंकि कई सभाओं में दोनों दलों में मारपीट और सर फुड़ौअल की भी नौबत आ पहुँची। लेकिन कम्यूनिस्टों को खिसियाने की जरूरत क्या है? कांग्रेस के नेता जब तक जेल में रहे तब तब उन्होंने खूब गुलछर्रें उड़ाये और अब थोड़े दिन के लिये तकलीफ ही सही। थोड़े दिन वक्त काट लेना भलेमानुषों का काम भी है, और कम्यूनिस्ट हैं भले आदमी, इसे सारी दुनिया जानती ही है। असल बात तो यह है कम्यूनिस्ट भाइयों को रूस को साधे रहना चाहिए क्योंकि पितृ-भूमि का बड़ा माहात्म्य है। कभी न कभी कांग्रेसवाले जेल तो जायेंगे ही, और कम्यूनिस्टों की फिर पाँचों उँगली घी में होगी। मार-पीट करना तो मूर्खों का काम है। बुद्धिमान का लक्षण है अवसरवादिता और वक्त पर फायदा उठाना! और शोर-गुल मचाने में कामरेडों का मुकाबला ही कौन कर सकता है? इसलिये समय का इंतजार कीजिए।

* * *

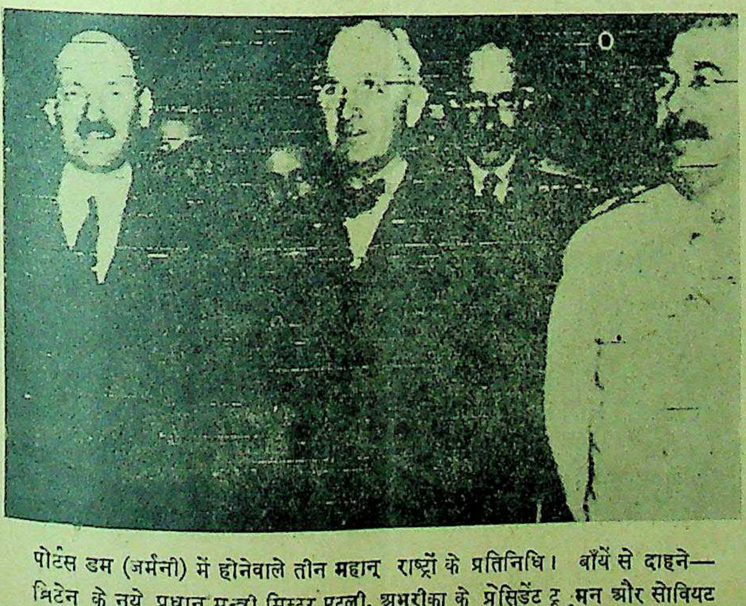

पोर्टस डम (जर्मनी) में होनेवाले तीन महान् राष्ट्रों के प्रतिनिधि। बाँयें से दाहने—ब्रिटेन के नये प्रधान मन्त्री मिस्टर एटली, अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रुमन और सोवियट रूस के विधाता मार्शल स्टेलिन।

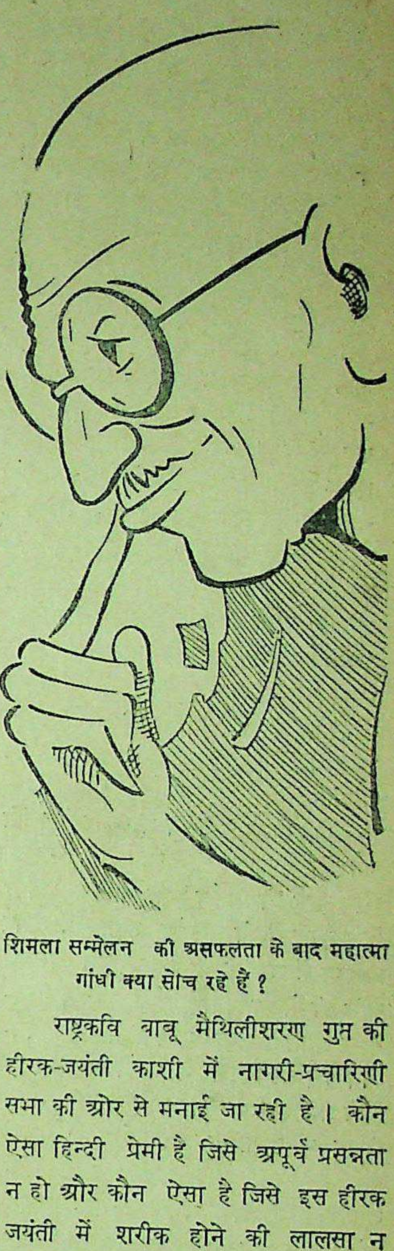

शिमला सम्मेलन की असफलता के बाद महात्मा गांधी क्या सोच रहे हैं?

राष्ट्रकवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त की हीरक-जयंती काशी में नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से मनाई जा रही है। कौन ऐसा हिन्दी प्रेमी है जिसे अपूर्व प्रसन्नता न हो और कौन ऐसा है जिसे इस हीरक जयंती में शरीक होने की लालसा न उत्पन्न हुई हो? किन्तु इस शाही युग में जहाँ नौकरशाही अपनी शाही के लिये प्रसिद्धि प्राप्त कर चुकी है वहाँ यदि सभा के विधाताओं की सभाशाही भी वाहवाही प्राप्त कर ले तो क्या बेजा? बहती गंगा में हाथ सभी धो लेते हैं। नौकरशाही ने जिस तरह 'स्वाधीनता दिवस' के मनाये जाने पर पाबंदी लगा दी है उसी तरह सभाशाही ने जयंती देखनेवालों पर १०) की फीस-अदायगी की पाबंदी लगा दी है। जो १०) नहीं दे सकते वह हिन्दी प्रेमी हीरक जयन्ती के तीनों दिन के जलसे में शरीक नहीं हो सकते। इसका मतलब यह है कि हिन्दी के दरिद्रनारायण पहले १०) के कर्जदार बनें तब कहीं राष्ट्रकवि की हीरक जयन्ती देखने पायें! अपने राम की राय ही क्या हो सकती है? प्रतिबन्धों का यह युग है ही। कहाँ राष्ट्रकवि मैथिली बाबू ऐसे लोकप्रिय दरिद्रनारायण की हीरक-जयंती और कहाँ हिन्दी के दरिद्रनारायणों के प्रति थैलीशाही के लिए यह सभाशाही?

सम्पादक का पृष्ठ

पोट्सडम में क्या हुआ ?

पोट्सडम-सम्मेलन में ब्रिटेन, अमरीका तथा रूस के त्रिनेताओं ने क्या निर्णय किया और संसार की सुरक्षा तथा व्यवस्था के लिए उन्होंने किस प्रकार का पारस्परिक समझौता किया, इसका विवरण प्रकाशित हो चुका है। तीनों नेताओं के निर्णय का प्रधान लक्ष्य जर्मनी को पूर्ण रूप से नियंत्रित ही नहीं वरन् उसका पूर्णतया पुनर्निर्माण भी करना है। निर्णय में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि जर्मनी भविष्य में सैनिक तथा आर्थिक दृष्टि से किसी प्रकार भी उभड़ने न पाये और अपने पड़ोसी राष्ट्रों के लिए पुनः खतरे का कारण न बन सके। इसके सिवा सम्मेलन की ओर से ब्रिटिश, अमरीका, रूस, चीन तथा फ्रांस के प्रतिनिधियों की एक उपसमिति भी बनाई गई है जो अन्य राष्ट्रों की व्यवस्था, सुरक्षा तथा संधि के सम्बन्ध में अपनी योजना प्रस्तुत करेगी। इस प्रकार पोट्सडम-सम्मेलन की कार्रवाई बड़ी खूबसूरती के साथ समाप्त करके प्रजातन्त्र या लोकतन्त्र के पुजारीगण अपने अपने देश को वापस चले गये। अगला सम्मेलन संभव है वाशिंगटन में हो, किन्तु इसका निर्णय बहुत कुछ मार्शल स्टेलिन के अंतिम निर्णय पर निर्भर है !

पोट्सडम-सम्मेलन में संसार में शांति और सुव्यवस्था की स्थापना के लिये और चाहे जो निर्णय हुआ हो किन्तु जर्मनी के सम्बन्ध में जो निर्णय हुआ है, और भविष्य में उसके प्रति जिस नीति के बर्ते जाने की योजना बनाई गई है, वह साम्राज्यवादी नीतियों तथा भावनाओं से ओतप्रोत है। हर हिटलर ने जर्मनी का संचालन जिस प्रकार किया और यदि उसकी नीति संसार में अशान्ति उत्पन्न होने का कारण बनी तो उसका दोषी स्वयं हिटलर तथा उसका नाजीदल है न कि जर्मनी की आठ करोड़ जनता। जर्मनी सदा से एक वीर और लड़ाकू राष्ट्र रहा है। कितने ही विख्यात वैज्ञानिकों का वह जन्मदाता है। रासायन शास्त्र के विद्वानों तथा पंडितों की वह सदा से उर्वर भूमि रही है। कल, कारखानों तथा विभिन्न प्रकार के उद्योग-धन्धों के लिए भी संसार में उसकी एक अलग साख है। किन्तु अब त्रिनेता-सम्मेलन की नीति के अनुसार जर्मनी भविष्य में एक खेतिहर देश ही रह जायेगा, इस बात के समझने में विशेष कठिनाई नहीं होती है। हम पूछते हैं कि क्या त्रिनेताओं के लोकतन्त्र की इसी नीति से जर्मनी में सच्चे लोकतन्त्र का उदय होगा ? जो नीति बर्ती जानेवाली है, उससे तो यह स्पष्ट दिखाई देता है कि जर्मनी में प्रतिक्रिया तथा प्रतिशोध की भावनाओं का निरन्तर उदय होता जायेगा और वह अवसर भविष्य में आ सकता है और उसका वही परिणाम हो सकता है जैसा कि वारसाई की संधि के पश्चात् आये दिन संसार को देखना पड़ा है। त्रिनेताओं को पिछले युद्ध का अनुभव है इसीलिए शायद इस बार प्रतिबन्ध बड़ी कड़ाई से किया जानेवाला है। किन्तु हिटलरशाही न तो बार बार आ ही सकती है और न डिक्टेटरशिप में प्रजातन्त्र पनप ही सकता है। समझने की बात यह भी है कि इस युद्ध में जर्मनी की भी हानि हुई है। इसलिए सैनिक तथा आर्थिक सभी दृष्टियों से उसे पूर्ण संगठित करने की आवश्यकता है। उद्योग-धन्धों को भी पुनर्जीवित करना है। जर्मनी में प्रतिबंध की कड़ाई की आवश्यकता हो सकती है किन्तु राष्ट्रीय तथा लोकतन्त्र की दृष्टि से उसकी संस्कृति की पूरी रक्षा भी की जानी चाहिए। साथ ही देश को धनधान्य तथा समृद्धिपूर्ण बनाने में पूरी ताकत लगाई जानी चाहिए, तभी वहाँ सच्चे जनतन्त्र की स्थापना की जा सकती है। नियन्त्रण और प्रतिबंध राष्ट्र के लिये साधक होने चाहिएं न कि बाधक। हाँ यदि त्रिराष्ट्रों के नेता जर्मनी की इंच इंच भूमि को बाँट लें और शासन-व्यवस्था तथा जर्मन साम्राज्य को सदा के लिए समाप्त कर दें तो अवश्य ही उनकी नीति के अनुसार 'सच्चे लोकतंत्र' की वहाँ स्थापना हो सकती है। क्योंकि न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी। किन्तु ऐसा करना भी उनके वश का रोग नहीं है। त्रिनेतागणों में स्वयं अपने स्वार्थों के लिए भीतरी संघर्ष का रहना अनिवार्य है क्योंकि प्रत्येक संसार पर अपनी तानाशाही की प्रधानता रखना चाहता है। शांति और सुरक्षा की आड़ में वह अपनी अपनी घात में आर्थिक और व्यापारिक नियंत्रण का स्वप्न बराबर देखते रहते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि योरोप में तभी सच्ची शांति और सुव्यवस्था स्थापित हो सकती है जब कि प्रत्येक राष्ट्र का लोकमत के अनुरूप संगठन होगा। साम्राज्यवादी राष्ट्रों की छत्रछाया में छोटे राष्ट्रों का उद्धार कदापि नहीं होगा। उन्हें आर्थिक, व्यापारिक, सामाजिक और सामरिक नीति के संचालन में पूर्ण स्वाधीनता मिलनी चाहिए। योरोप की ही भाँति एशिया में भी इसी नीति के आधार पर शांति और सुव्यवस्था की स्थापना की आवश्यकता है। जापान का युद्ध अभी शेष है। पहले मित्रराष्ट्रों को इसके अंत के लिए संगठित शक्ति से जोर लगाना है। केवल जर्मनी को पंगु बना देने से ही संसार का उद्धार न होगा। फैसिस्ट राष्ट्रों में ईमानदारी के साथ लोकतंत्र का उदय होना आवश्यक है इसमें संदेह नहीं किन्तु सच्चे लोक-तंत्र का उदय साम्राज्यवादी छत्रछाया में नहीं बल्कि जनता की अपनी भावना तथा लोक-तंत्रवादी विचारों के प्रचार तथा प्रसार से होगी। इसी प्रकार के संगठन से योरोप तथा एशिया दोनों महादेशों में युद्ध के बाद शांति, सुरक्षा तथा सुव्यवस्था की स्थापना होगी।

* * *

नये भारत मन्त्री

मजदूर सरकार के हाथ में ब्रिटेन के शासन की बागडोर जब से आई है तब से बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही थी कि भारत मन्त्री के पद पर किसकी नियुक्ति होती है ? पोट्सडम-सम्मेलन से वापस लौटने पर प्रधान मन्त्री मिस्टर एटली ने भारत मन्त्री की नियुक्ति की घोषणा कर दी। मिस्टर पेथिक लारेंस नये भारत मन्त्री बनाये गये हैं। कहा जाता है कि नये भारत मन्त्री भारतीय स्वाधीनता के 'सिद्धान्तों' के पक्षपाती हैं और बड़े दयालु तथा सहृदय व्यक्ति हैं। हमें भी आशा है कि उनमें यह सभी गुण मौजूद होंगे और यदि यह ठीक है तो भारत की स्वाधीनता-प्राप्ति में वह सहायक भी हो सकते हैं। लेकिन हमारा अनुभव यह भी है कि जब तक राजनैतिक नेता-विरोधी दल में रहते हैं तब तक सिद्धान्त तथा आदर्शवाद बूकने में उन्हें बड़ा आनन्द आता है किन्तु जहाँ शासन की मैशीन के वह भी कल-पुर्जे बने वहाँ वह भी अधिकारपूर्ण ढंग से बातें शुरू कर देते हैं। पता नहीं नये भारत मन्त्री में यह अभूतपूर्व परिवर्तन होगा या नहीं ? क्योंकि अब वह भी एक अधिकारपूर्ण पद पर विराजमान हुए हैं। मिस्टर पैथिक लारेंस वयोवृद्ध हैं और उन्हें राजनैतिक जीवन का पुराना अनुभव भी है। इसलिये हम तो यही चाहेंगे कि वह अपने थोड़े से राजनैतिक तथा अधिकारपूर्ण जीवन में ऐसा कार्य कर जायें जिससे वह अपनी कीर्ति को अक्षुण्ण बनाने में समर्थ हो सकें। भारत को उनसे बड़ी बड़ी आशायें हैं। भारतीय नेताओं ने उनकी नियुक्ति से प्रसन्नता भी प्रगट की है। भूतपूर्व भारत मन्त्री मिस्टर अमरी ने अपनी कटुतापूर्ण नीति से जो अपकीर्ति अर्जित की है आशा है मिस्टर पैथिक लारेंस उसके परिमार्जन में समर्थ सिद्ध होंगे और भारत ही नहीं समस्त लोकतन्त्रवादी राष्ट्रों की दृष्टि में लोकप्रियता प्राप्त करेंगे।

मजदूर सरकार की जिम्मेदा

क्या भारत को स्वाधीनता प्राप्त होने की आशा

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

ब्रिटेन में आज मजदूर-सरकार का शासन है। टोरी दल की पराजय से ब्रिटि
साम्राज्य में एक नई प्रगति उत्पन्न हो गई है। अब देखना है कि नई मजदूर स
गुलामराष्ट्रों विशेषकर भारत के प्रति क्या राजनैतिक नीति स्थिर करती है ? यदि भारत
स्वतन्त्रता में मजदूर सरकार सहायक होती है तो उसकी लोकप्रियता में संदेह नहीं है।
बड़ी आशाओं को लेकर मजदूर सरकार के आगे बढ़नेवाले कदम की प्रतीक्षा की जा रही है।

इधर कुछ ही दिनों के अन्दर ब्रिटेन के जो चुनाव सम्बन्धी आँकड़े प्रकाशित हुए हैं उनसे ब्रिटेन की जनता की मानसिक क्रान्ति का स्पष्ट चित्र सामने आ जाता है। पार्लियामेंट की कुल ६२७ सीटों में से केवल २१० सीट चर्चिल तथा उनकी पार्टी को मिल सकी हैं। इन २१० सीटों में से भी टोरी पार्टी के केवल १६५ मेम्बर विजयी हुए हैं। दूसरी तरफ़ ब्रिटिश मजदूरदल ने ही अकेले ३६० सीटों पर अधिकार कर पार्लियामेंट में बहुमत प्राप्त कर लिया है। श्री चर्चिल और उनके परराष्ट्रमन्त्री श्री ऐंथोनी ईडन को छोड़कर अन्य सभी पुराने तथा गिने-चुने टोरी मिनिस्टर बहुत अधिक वोटों से मजदूरदल के उम्मीदवारों से हारे हैं। भारत पर ६ साल से आतंकपूर्ण शासन करके बंगाल के भयंकर अकाल और सन् ४२ के असाधारण दमन के लिए जिम्मेदार, श्री लियोपोल्ड एमरी भी मजदूर-उम्मेदवार श्री आल्डरमैन शर्मर के द्वारा हरा दिये गये।

ब्रिटेन में टोरीवाद की हुई यह भयंकर हार समाजवादी सिद्धान्तों की अनुपमेय विजय है। साम्राज्यवाद के सबसे मजबूत गढ़ में हुआ यह परिवर्त्तन इस युद्ध के पारिणामस्वरूप जनता की बदली हुई मनोवृत्तियों का परिचायक है। विश्व की

जनता अब मंच के ऊपर से
जानेवाले आदर्शों पर विश्वास नहीं
ब्रिटेन के प्रमुख दैनिक पत्र
गार्जियन' ने इसी भावना को
हुए लिखा है कि 'हम आज एक
नीतिक संसार में प्रवेश कर रहे हैं।
थोड़ा भी सन्देह नहीं कि भविष्य के
अंधकार को देखकर हमें तथा
नेताओं को कँपकँपी हो आती है,
दृढ़ता के साथ नवीन पथ पर
रहे हैं और होंगे।' आगे चल
'गार्डियन' अखबार कहता है कि
चुनाव-द्वारा बहुत-सी बुरी चीजों
कर दिया गया है। ब्रिटिश चुनाव
में सर्वत्र होनेवाली उन भावनाओं
क्रान्ति के समानान्तर है जो कि
प्रणालियों और पुराने शासनों के
उठ खड़ी हुई है।' अन्य प्रमुख
पत्र भी एक आवाज से यही
हैं कि 'वर्तमान चुनाव ने यह
दिया है कि ब्रिटेन में एक
क्रान्ति हो चुकी है।' यह शान्तिमय
इतने आकस्मिक और चुपचाप ढंग
कि स्वयं मजदूरदल के नेताओं
यह उम्मीद न थी। इसका
कारण सैनिक मतदाताओं का
को वोट देना भी था। ऐसा मालूम
है कि ब्रिटेन के समस्त सैनिक
वोट केवल मजदूरदल को दिये।
मजदूरदल ने अपने साधारण
हुए सम्मेलन में जो ऐतिहासिक
किये तथा श्री बेविन और
लास्की ने जो समाजवाद से
वक्तव्य दिये थे, उनसे ब्रिटिश
ढाढ़स मिला और उन्होंने यह
कर लिया कि अब २५ साल से
गले पड़े हुए टोरीवाद को ढकेल
देंगे। ब्रिटेन की इस नवीन क्रान्ति
वही रहस्य है। सामन्तशाही और
शाही के सम्पुट से तैयार किये
टोरीवाद की रक्षा विन्सटन
युद्ध-जनित व्यक्तिगत प्रभाव भी
सका। जनता के नवीन भावना
के सामने टोरी नेतृत्व का
सहसा मचमचाता हुआ सा गिर

पर क्या ब्रिटेन में हुई यह
क्रान्ति तथा मजदूरदल का नवीन
इस क्रान्ति की भावनाओं के अनुकूल
ब्रिटिश तथा अन्य देशों की
को अपने कार्यों-द्वारा सन्तुष्ट कर
क्या अब भी भारत, बर्मा तथा
ब्रिटिश उपनिवेशों में वही
साम्राज्यवादी पद्धति काम में लाई
क्या अब भी 'शिमला-नाटक' की
धोखाधड़ियाँ, या पुराने
अलापे जायेंगे ? क्या एटली,
लास्की और लिस्टोवेल का नेतृत्व,

—शेष पृष्ठ १५ पर

इस जय-पराजय में दोषी कौन?

क्या वैवेल-योजना का भूत फिर सर पर चढ़कर बोलने वाला है?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

शिमला में होनेवाला नेता-सम्मेलन भंग अवश्य हो गया है किन्तु क्रिप्स-प्रस्ताव की भाँति वैवेल योजना भी अभी मृत नहीं हुई। सम्मेलन में किस की जय और किस की पराजय हुई और क्यों? इसका विवेचन इस सुंदर लेख में किया गया है। साथ ही यह स्पष्ट किया गया है कि इँगलेण्ड में जो शासन-परिवर्तन हुआ है उसमें भी विशेष आशा नहीं की जानी चाहिये।

वैवेल-योजना के विधाता वाइसराय लार्ड वैवेल।

सम्राट् के प्रतिनिधि की सच्चाई और नेकनीयती पर विश्वास हो गया। कांग्रेस-नेताओं की देशभक्ति, राष्ट्रीयता की अच्छी भावना और देशहित के लिए उचित युक्ति-युक्त और सम्मानपूर्ण शर्तों पर सरकार से सहयोग करने की तैयारी से वायसराय प्रभावित हुए। यह एक नई शक्ति है, नई पूँजी है और इसका सुफल प्रगट होना अनिवार्य है। वैवेल-कान्फरेन्स फेल हुई है, किन्तु वैवेल-योजना जीवित है। इसलिए यह कैसे कहा जा सकता है कि शिमला-परिषद् सर्वथा असफल रही है और उसका कोई सुफल नहीं निकला है?

भारी अड़चन

१४ जून को लार्ड वैवेल ने अपने ब्राडकास्ट भाषण में कहा था—"यह वैधानिक समझौता करने या लादने का प्रयत्न नहीं है। सम्राट् की सरकार को आशा थी कि साम्प्रदायिक समस्या को हल करने के लिए भारतीय राजनीतिक दलों में कोई समझौता हो जायगा, क्योंकि यह समस्या ही सबसे बड़ी अड़चन थी, किन्तु यह आशा पूरी न हो सकी।" इस बड़ी बाधा और भारी अड़चन के मौजूद रहते हुए भी ब्रिटिश सरकार ने अपने प्रस्ताव पेश किये और कान्फरेन्स बुलाई गई। इससे भारत में ही नहीं अपितु ब्रिटेन, अमरीका और शेष संसार में यह असर उत्पन्न हुआ कि ब्रिटिश सरकार पिछले ४० साल से बहुसंख्यक लोगों के विरुद्ध अल्पसंख्यकों को उभाड़ कर साम्प्रदायिक समस्या को बढ़ा-चढ़ाकर जो पाप कर रही है, उसका प्रायश्चित करना चाहती है और भारतीय जनता को इस कारण से पहुँची हुई हानि की आंशिक रूप से भर पाई करना चाहती है। अन्यथा शिमला कान्फरेंस बुलाने की कोई जरूरत नहीं थी। मिस्टर जिन्ना की माँगें ४-५ साल से सामने थीं। बम्बई में पिछले साल महात्मा गांधी और मिस्टर जिन्ना के बीच १९ मुलाकातें हुई थीं, पर कांग्रेस-लीग में समझौता होने का मार्ग नहीं निकला था। सरकार इस बात को जानती थी। फिर भी उसने कान्फरेंस को बुलाया।

सरकार प्रायश्चित करना चाहती है, इसके कई प्रमाण भी मिले। मिस्टर जिन्ना द्वारा विरोध करने पर भी वायसराय ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को बुलाया। कायदे आजम का कान्फरेन्स को स्थगित करने का अनुरोध स्वीकार नहीं किया गया। लीग की आम चुनाव तुरन्त कराने की माँग स्वीकार नहीं की गई, जिससे लीग की शक्ति का अन्दाजा लगाया जा सके। वायसराय ने लीग के मसीहा को यह वचन देने से इन्कार कर दिया कि वायसराय की शासन-समिति में किसी राष्ट्रवादी मुसलमान को नहीं लिया जायगा। यही नहीं लार्ड वैवेल ने राष्ट्रपति आजाद को आश्वासन दिया कि किसी पार्टी को समझौते के मार्ग में बाधा डालने न दिया जायगा। इस कारण भारतीय राजनीतिक क्षितिज आशा से रंजित हो उठा था। पर वह एक सपना सिद्ध हुआ। क्योंकि मिस्टर जिन्ना की मागें विद्यमान थीं। अड़चन और मुख्य बाधा दूर नहीं हुई थी। साम्प्रदायिक समस्या को हल करने के लिए सरकार मिस्टर जिन्ना की सारी माँगें पूरी कर सकती थी और उसके बाद अन्य पार्टियों को बुलाती, जो सहयोग के लिए तैयार होतीं। सरकार कांग्रेस का सहयोग प्राप्त किये बगैर मिस्टर जिन्ना को केन्द्रीय गवर्नमेंट बनाने के लिए कह सकती थी, जिससे गति अवरोध का अन्त हो जाय। इसके विपरीत गवर्नमेंट मिस्टर जिन्ना द्वारा असहयोग करने पर अन्य पार्टियों को गवर्नमेंट बनाने के लिए कह सकती थी। पर इसके लिए यह आवश्यक था कि ब्रिटिश सरकार गति-अवरोध को दूर करने का दृढ़ संकल्प करे। क्या उसका ऐसा संकल्प था?

क्या उचित था?

जब पहले से साम्प्रदायिक समझौता न हुआ था, न पार्टियों में ऐक्यमत हुआ था तब कान्फरेन्स को बुलाना और उसकी विफलता की घोषणा करना क्या ब्रिटिश सरकार के लिए उचित था? सच्चाई यह है कि २५ जून को सब पार्टियों ने वैवेल-योजना के निहित प्रस्तावों को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया था। इसलिए मूल सिद्धान्तों पर 'आवश्यक समझौता' होने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। कान्फरेन्स भंग हुई मिस्टर जिन्ना की इस अनुचित माँग पर कि लीग एकमात्र मुस्लिम पेनल के नामों को चुनेगी। उसमें कोई परिवर्तन न किया जाय और मुस्लिम भारत का एकमात्र लीग ही प्रतिनिधित्व करती है। लार्ड वैवेल ने लीग की इस माँग को मंजूर नहीं किया और वायसराय ने मुस्लिम नामों का पेनल बनाया और वह मिस्टर जिन्ना को स्वीकार नहीं था। १४ जुलाई को वायसराय ने कान्फरेन्स के असफल होने की घोषणा की और कहा कि मिस्टर जिन्ना ने नामों की सूची देने से इन्कार कर दिया और उन्होंने उनकी सूची भी मानने से अस्वीकार कर दिया। इसलिए कान्फरेन्स पार्टियों में 'आवश्यक एकता' न होने से फेल नहीं हुई, बल्कि इसलिए कि लार्ड वैवेल को यह स्वीकार नहीं था कि मिस्टर जिन्ना को उनके मन के अनुसार चलने दिया जाय और न मिस्टर जिन्ना को यह स्वीकार था कि लार्ड वैवेल के चुने हुए मुसलमान मुस्लिम कौंसिलर बनें। इसलिए इस कान्फरेन्स की विफलता के लिए दोषी कौन है, और कितना है, इस पर भली प्रकार विचार करना चाहिए। कांग्रेस इस परीक्षा से केवल अधिक गौरव और यश के साथ बाहर आई है।

हिन्दुओं के साथ अन्याय

"इस सारे नाटक में सबसे अधिक उल्लेख-योग्य बात यह है कि हिन्दुओं के अधिकारों और उनकी भावनाओं को

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

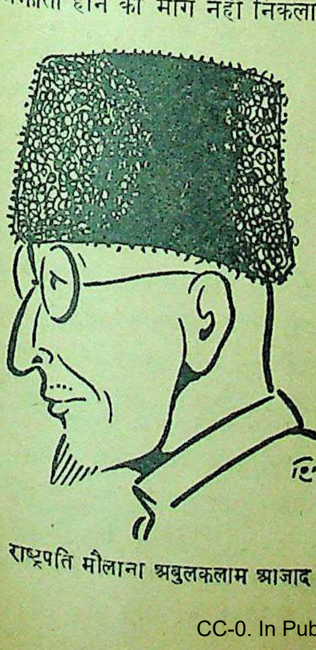

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद।

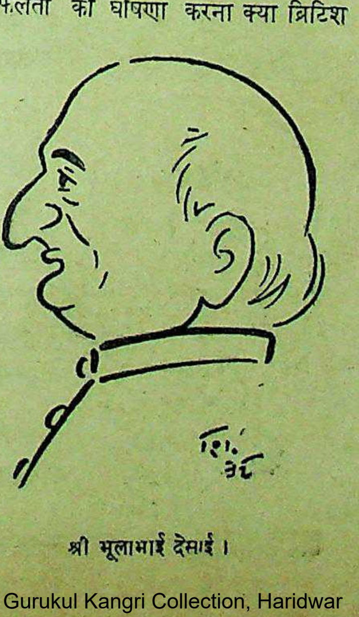

श्री भूलाभाई देसाई।

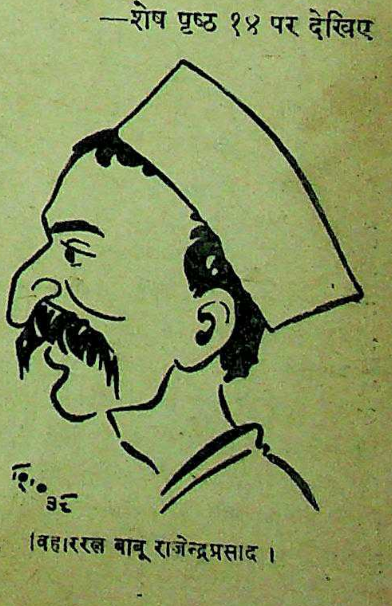

बिहाररत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद।

मातृमण्डल

आधुनिक महिला-समाज में अशिक्षा क्यों है ?

सरकार को इस ओर अग्रगामी कदम बढ़ाना चाहिए !

लेखक, श्री त्रिलोकीनारायण दीक्षित, एम० ए०

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू भारत की महिलाओं का नेतृत्व करती हैं।

आज से ६० वर्ष पूर्व कोर्ट आफ डायरेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में लिखा था कि 'किसी भी हालत में भारतीय महिला-समाज की शिक्षा का प्रश्न उपेक्षणीय नहीं है। इस समस्या की अवहेना का अभिप्राय है भारत की जनता के एक बड़े हिस्से को अंधकार में रखना।' परन्तु स्त्रियों की शिक्षा-प्रणाणी में न तो कोई विशेष परिवर्तन ही हुआ और न उधर ध्यान ही दिया गया। सन् १९४१ ई० की जन-संख्या में स्त्रियों की शिक्षा पर इस प्रकार की टिप्पणी लिखी गई "अभी तक केवल २% स्त्रियों में ही साक्षरता है।" नारियों की शिक्षा की ओर न केवल हमारी सरकार वरन् भारतवर्ष की समस्त जनता कितनी विमुख रही है, यह बात स्पष्ट है। वास्तव में इस पराधीनता का सबसे बुरा प्रभाव महिला-समाज पर ही पड़ा। आज ही से नहीं युगों से महिला-मण्डल सबसे अधिक घाटे में रहता आया। मुग़ल राज्य के आरम्भ से तो नारियाँ पिंजड़े के पक्षी बनाकर ही रक्खी गईं।

सन् १९३१ ई० से १९४१ तक कुल ४% साक्षरता की वृद्धि हुई और पुरुषों की साक्षरता १४% से २२% हो गई अर्थात् ८% की उन्नति हुई। परन्तु शोक है कि नारियों की साक्षरता जो २% पिछले वर्षों में थी वही बनी रही और उसमें परिवर्तन के लक्षण भी न दृष्टिगोचर हुए। तुलनात्मक रीति से देखने पर इस बात का पता चलता है कि ट्रावन्कोर स्त्रियों की शिक्षा के विषय में अग्रदूत है। भारतवर्ष के किसी भाग में भी स्त्रियों की साक्षरता इतनी बढ़ी-चढ़ी हुई नहीं है जितनी आज ट्रावन्कोर में है। इसके पश्चात् कोचीन का स्थान आता है। ट्रावन्कोर में ३६% स्त्रियों की साक्षरता है और कोचीन में २६·५%। इसके बाद प्रान्तों की गणना में बम्बई सर्वप्रथम है। बम्बई प्रान्त की स्त्रियों में ९ प्रतिशत शिक्षा और बंगाल में ७%।

पर्दा और बालविवाह की कुप्रथाओं के कारण स्त्रियों की शिक्षा-समस्या पर सदैव से कुठाराघात होता आ रहा है। पर्दा की कुप्रथा ने न केवल उनके शारीरिक स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया है वरन् उनकी मानसिक उन्नति में भी पर्याप्त बाधा डाली है।

कितने महान् आश्चर्य का विषय है कि भारतवर्ष के किसी भाग में भी स्त्रियों की शिक्षा का प्रतिशत पुरुषों से अधिक नहीं है। पारसी, क्रिश्चियन तथा यहूदी भारत में काफी प्रगतिशील वर्ग माने जाते हैं पर उनमें भी स्त्रियों की शिक्षा उतनी अधिक नहीं है जितनी कि पुरुषों की। निम्नलिखित संख्याओं से प्रकट होगा कि वास्तव में भारत की प्रत्येक जाति में स्त्रियों की शिक्षा और साक्षरता पुरुषों की तुलना में अत्यन्त अल्प है।

संख्या	जाति	पुरुष	स्त्रियाँ
१	पारसी	८४·५%	७३·४%
२	यहूदी	४८·८%	३३·८%
३	क्रिश्चियन	३५·२%	२०·३%
४	जैन	५८·२%	१०·६%
५	सिक्ख	१३·८%	२·९%
६	हिन्दू	१४·४%	२·१%
७	मुसलमान	१०·७%	१·५%

उपर्युक्त आँकड़े स्वयं इस बात के द्योतक हैं कि स्त्री-शिक्षा की भारत में कितनी उपेक्षा की जा रही है। उनकी शिक्षा के लिए सरकार की ओर से कोई भी समुचित प्रबन्ध नहीं है। शहरों को छोड़कर जब देहातों की ओर हम दृष्टिपात करते हैं तो और भी बुरी दशा दिखाई देती है। वहाँ आपको कन्या-पाठशालाओं का नाम-निशान भी नहीं दिखाई देगा। प्राइमरी शिक्षा का भी यही हाल है। समस्त भारतवर्ष में २८ लाख लड़कियाँ प्राइमरी शिक्षा पा रही हैं जब कि बालकों की संख्या ८६ लाख से भी कुछ ज्यादा है। बालकों की शिक्षा पर प्रायः सात करोड़ रुपया खर्च किया जाता है और लड़कियों की शिक्षा पर केवल १·५ करोड़।

(बाईं ओर) राजकुमारी अमृतकौर जो भारत की सुप्रसिद्ध महिला हैं।

प्राइमरी शिक्षा के बाद माध्यमिक शिक्षा का तो और भी बुरा हाल है। समस्त भारत में बालिकाओं की माध्यमिक शिक्षा के लिए कुल १,३०० स्कूल हैं और बालकों के लिए १२,००० स्कूल। इन १,३०० स्कूलों में सरकारी स्कूलों की संख्या केवल २०० है। इनमें से प्रायः ८०% ऐसे स्कूल हैं जिनको जनता की सहारा है अथवा पुण्यार्थ चलाये

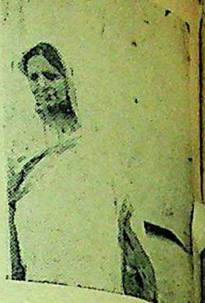

श्रीमती हामिद अली भारतीय प्रसिद्ध कार्यकर्त्री हैं।

यूनिवर्सिटी शिक्षा के लिए कालेज हैं जिनमें से ४५ कालेज बालिकाओं के लिए निर्मित हैं।

प्रौढ़ाओं की शिक्षा के लिए की नीति पूर्णतया उपेक्षापूर्ण है। मिनिस्ट्री के समय में भले ही किये गये थे।

नारियों की पिछड़ी हुई दशा किसी भी साधना से उन्नति हो तो वह है साक्षरता। हमारे समाज ही नहीं वरन् देश के लिए भी का बड़ा महत्त्व है। भिन्न-भिन्न मण्डलों के लिए यह मेरा प्रस्ताव है गाँवों में प्रयत्न करके बालिकाओं स्कूल खुलावें। इसी में महिला-समाज कल्याण है।

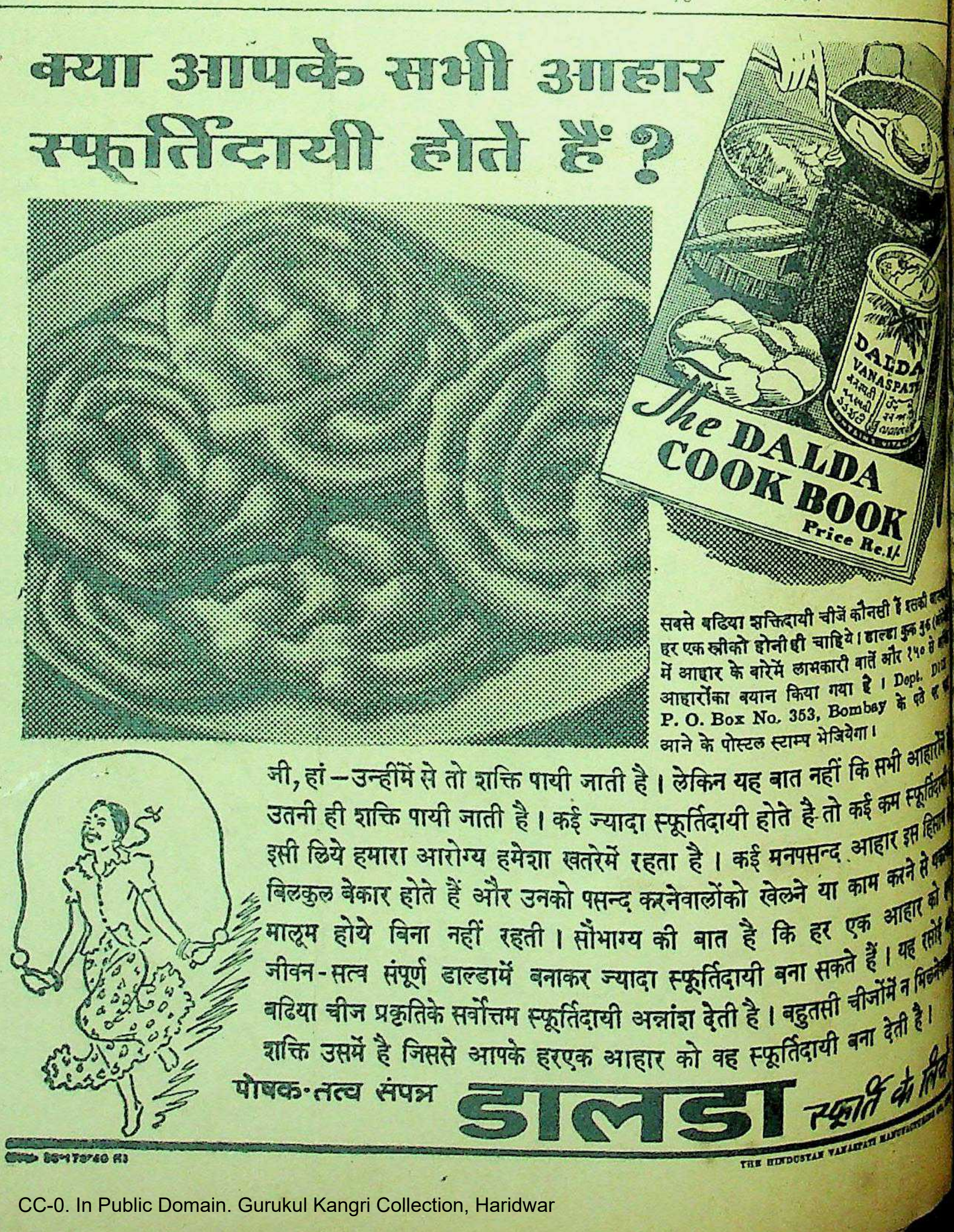

क्या आपके सभी आहार
स्फूर्तिदायी होते हैं ?

The DALDA COOK BOOK
Price Re.1/-

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी
हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डाल्डा कुक बुक
में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से
आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D
P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर
आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमें से तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारों
उतनी ही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते है तो कई कम
इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस
बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करने से
मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हर एक आहार को
जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह
बढिया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न
शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न डालडा स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING

छुरी

लेखक, श्री अचिन्त्यकुमार सेनगुप्त

अनुवादक, श्री नित्यानंद तिवारी

बंगला कथा-साहित्य में आधुनिक कलाकारों की कथायें अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। यह कहानी भी आधुनिक कलाकार की नवीन तथा मर्मस्पर्शी रचना है। अनुवादक ने इस कहानी को नजरबन्दी की अवस्था में फतहगढ़ जेल में अनुवादित किया है। आजकल की पढ़ी-लिखी जमात के युवकों के मनोभावों का बड़ा ही मार्मिक, वास्तविक और मनोवैज्ञानिक चित्रण इस कहानी में किया गया है जिसका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

यह स्थान ऐसा दुनिया के बाहर है कि क्या बतलाऊँ? ऐसी कोई भी एक चहल-पहल नहीं है कि युवतियों की साड़ी की ज़रा-सी चंचल फर-फराहट तक सुनी जा सके। स्टेशन जाने के लिए घोड़ागाड़ी इन देवियों के लिए काठ की सन्दूक़ बन जाती है। एक के घर से दूसरे के घर घूमने जाने के लिए इन लोगों का जो मार्ग होता वह भी किसी के घर के अन्दर से ही होकर। इस जगह अभी भी कोई ऐसी आँधी नहीं उठी कि युवतियाँ त्रस्त होकर फुर्तीले हाथों से कमरे के जँगलों को ही बन्द कर देंगी। यहाँ के अधिकारीवर्ग भी ऐसे प्रान्तीयतावादी हैं कि सपत्नीक घूमने-फिरने के लिए निकलने तक का किसी को साहस नहीं है। धूप से पीले हो गये खेतों के ऊपर से केवल साइकिल चलाये चल रहा हूँ।

इस प्रकार का महिमान्वित सूर्योदय, जीवन में ऐसा मैंने कभी देखा नहीं—इससे कोई विशेष क्षति हुई हो, ऐसा तो जान नहीं पड़ता। आज तीन महीनों से इस मुहकमे में आया हूँ, साइकिल पर चढ़कर कितने ही चक्कर लगाये हैं, किन्तु घाट अथवा हाट, जँगला अथवा आँगन—कहीं भी एक ऐसी युवती न देख पाया जिसे पल भर के लिए भी उसके इस जन्म के घोर दुर्भाग्य की सुधि दिला पाता। क्योंकि ऐसी युवती देखने में ही मुझे अच्छी लगेगी जो निराले में ही एक बार जान जायेगी, अन्ततः मैं सोचूँगा वह सोच रही है, 'यदि इनकी श्रीमती हो पाती'—और तत्क्षण ही चैतन्य होकर सोचेगी, अन्ततः मैं समझूँगा कि वह सोच रही है, अभी भी तो उसका समय नहीं बीत गया! मैं होऊँगी नहीं, किन्तु मैं हो सकती हूँ। इस दर्पण के अन्दर आज मैं एक साधारण-सी युवती को भी अपरूप सुन्दरी के रूप में देख पाता, किन्तु बिना चार आँखें हुए भला वही क्या सोचेगी, और मैं ही क्या समझूँगा?

लाल फीतों से बँधी हुई फाइलें अनिद्रा से थकी रात की मैली-कुचैली आँखों की भाँति असह्य हो उठीं, सायंकालीन क्लब एक पिंजड़ानुमा चिड़ियाघर जान पड़ता, साइकिल से चक्कर काटा हुआ रास्ता एक क्रमानुसार कर्तव्य हो गया। ऐसी प्रसारित यहाँ की प्रकृति है, नीली और श्यामल—इस तक में ज़रा-सा भी जीवन नहीं है। क्योंकि, मैंने विचार कर देखा है, अगर मन में किसी रमणी की स्मृति की सुषमा न हो तो प्रकृति का सम्पूर्ण उपभोग नहीं किया जा सकता, वह बिलकुल ही एक मानचित्र-सा हो उठती है।

इसी भाँति [illegible] के [illegible] के ध्वंस और पाट की खेती के नियंत्रण को लेकर व्यस्त हूँ कि अचानक एक असम्भव घटना घट गई। हाँ, उसे घटना ही कहा जा सकता है। भौंचक होकर सोचा, अरे मैं इतने दिनों तक था कहाँ?

रेलवे स्टेशन शहर से प्रायः दो मील दूर है। छुट-पुट घरोंवाले खेतों से होती हुई डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की सुर्ख़ीवाली सड़क स्टेशन को छूती हुई लोकल-बोर्ड की कची सड़क से होकर गाँव के अन्दर चली गई है। उसी सन्धि-स्थल के समीप ही एक बनिये की छोटी-सी दूकान है। दूकान इसके पूर्व किसी दिन मेरी आँखों के सामने पड़ी है या नहीं, याद नहीं कर पा रहा हूँ, यद्यपि दौरा समाप्त करके अनेकों बार इसी की बगल से होकर घर लौटा हूँ। आज अचानक वही दूकान चौरंगी के शो-केसों की अपेक्षा भी अधिक सजी हुई जान पड़ी।

नीचे बरामदे में बाँस का मचान बाँधकर यह दूकान बनी है। भीतर की ओर दरवाजा देखकर जान पड़ता है पिछवाड़े, दूकानदार का अन्तःपुर है। मचान के ऊपर कितने ही मिट्टी के गमलों में नाना भाँति की दाल, नमक, सूखे मिर्चें, अदरक और हल्दी से लेकर इलायची-सुपारी तक, कुछ जापानी खिलौने, गृहस्थी के लिए आवश्यक छुट-पुट वस्तुएँ, ग्राम्य-जीवन का सस्ता शृङ्गार का साज-सरंजाम। दूकान से सटी हुई थोड़ी-सी भूमि में घोड़े का एक अस्तबल है, शाम की ट्रेन का समय हो रहा है, इसी कारण कोचवान गाड़ी जोत रहा है।

दूकान की भीड़ को देखकर मैंने हिसाब लगाकर जाना कि आज बाजार का दिन है, पंसारी लोग शहर के बाजार से खरीद-फरोख़्त करके घर लौटते समय यहाँ से कोई रानी-मार्का तेल, कोई उर्द की दाल, कोई यह-वह खरीदे लिये जा रहा है। इतना सब छान-बीन कर देखे बिना मेरे लिए अन्य उपाय न था, यद्यपि प्रकट रूप से उस जगह मैं उतर पड़ा था किसी के द्वारा एक दियासलाई खरीदने के लिए।

'ऐ छोकरे सुन।' रास्ते के एक लड़के को मैंने बुलाया।

मेरी आवाज सुनकर ग्रामीण खरीददारों का दल त्रस्त हो उठा। निरुपाय स्तब्ध हो एक-दूसरे का हाथ दबा कर दबे और डरे कण्ठ में कहा-सुनी करने लगे, 'साहब,' बड़े साहब हैं।'

बहुत ही अच्छा लगता है अबोध जनता का यह भक्तिपूर्ण भय देखने में। किन्तु मचान के ऊपर बैठी काले फीते में केश की चोटी को मजबूती से बाँधकर जो युवती रखे हुए शीशे के सामने झुकी हुई फुर्तीली उँगलियों से वेणी बाँध रही है, उसकी भाव-भंगी में रत्ती भर भी फ़र्क अथवा परेशानी न दिखाई पड़ी। केवल कुटिल-कटाक्ष फैले हुए दोनों काले नेत्र एक बार उठाकर उसने मेरी ओर ताका और फिर केश-शृंगार में व्यस्त हो गई।

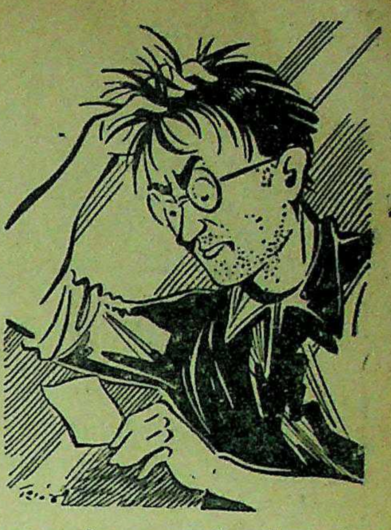
वह घास के लान पर उसकी स्मृति की उधेड़बुन में पड़ा था।

लड़के के समीप आने पर मैंने उसके हाथ में एक पैसा दिया। कहा, 'एक दियासलाई तो ले आ—' कहकर केस से एक सिगरेट निकाल अँगूठे के नाखून पर ठोंकने लगा।

युवती जरा भी संकुचित न होकर, बिना मुँह उठाये ही, वैसी ही स्थिर भाव में लड़के से बोली, 'इस दूकान में दियासलाई नहीं है।'

लड़के ने पैसा लौटा दिया।

अचानक जान पड़ा, जैसे साइकिल की चेन और ब्रेक कहीं कुछ बिगड़ गई है! इसी से उसे हिला-डुला कर व्यर्थ ही ठीक करने की चेष्टा करने लगा। मैंने देखा कि इस बीच युवती ने एक बार भी आईने से दृष्टि नहीं हटाई। वैसी ही निर्लिप्त बैठी बैठी हलकी हँसी की छींटें फेंकती हुई किसी किसी के साथ परोक्ष में नटखटपन कर रही है। मैंने सुना, स्पष्ट सुन पाया, कोचवान को संबोधित करके वह बोली, 'जमाल साहब' की मशीन खराब हो गई है, गाड़ी से कोठी पर पहुँचा न आ।' यह कहकर घनी पलकें उठा कर उसने मेरी ओर तीक्ष्ण दृष्टिपात किया।

इतना हो जाने के बाद फिर साइकिल पर चढ़कर लौटा न जा सकता था। इसी से गम्भीर मुख बनाकर कोचवान को संबोधित करके बोला, 'ऐ, लाओ गाड़ी।'

हुक्म सुनते ही गाड़ी आ उपस्थित हुई। स्वयं ही साइकिल को छत पर मैंने चढ़ा दिया। गाड़ी पर बैठ कर सिगरेट जलाई। अपने चारों ओर जरा सन्नाटा देखकर, आँख बचाकर मैंने ताका, शायद युवती एक बार देखे ही। किन्तु उसकी अवज्ञा आश्चर्यजनक थी।

उस दिन कैसा भाग्य था, क्लब न जा सका, आठ बजे के पहले ही डिनर खाकर बाहर की लान पर, आरामकुर्सी में लेट रहा। दोनों नेत्र भरकर एक साथ ही कितने तारे देखे, कितनी आशा और व्यर्थता, इसकी कोई सीमा न थी। सोचा, यह कैसे सम्भव हो सकता है।

युवती पश्चिम के ओर की है, अवस्था अठारह से बाईस के बीच होगी। शरीर पर एक तंग और कष्टदायक अँगिया, सफेद जमीन पर काली छाप की एक पतली और फरफराती साड़ी धारण किये

है। रजनीगंधा के पुष्प-दण्ड से लेकर धूप में चमचमाती हुई खिंची तलवार के साथ नारी-शरीर की बहुतेरी उपमायें मैंने देखी हैं, किन्तु उसके इस सुगठित और भावपूर्ण शरीर का वर्णन कर सकूँ, ऐसे शब्द मनुष्य की भाषा में अभी तक नहीं रचे गये। उसकी समस्त असाधारणता थी उसके दोनों नेत्रों में—वे कैसे अद्भुत नेत्र हैं—मानो शरीर के चमड़े को बेध-कर हड्डियों तक आकर बिंधते हैं। उन नेत्रों में रत्ती भर भी कोमल ममता नहीं है, बल्कि जैसे एक कठोर विद्रूप भरा हो। वह जिसकी ओर देखती मानो उसे तीव्र नेत्रों से संकेत करके कहती—पकड़ गये।

इसके बाद और दो-तीन दिन तक अनावश्यक रूप में दूकान से दूर खड़ा होकर मुझे इसकी-उसकी माँग करनी पड़ी है, किन्तु उतनी ही बार उस युवती ने अस्वाभाविक निर्लिप्ततापूर्ण गम्भीर शब्दों में उत्तर दिया है—इस दूकान में वह वस्तु न मिलेगी।

दूकान के सामने एक छोटा छिछला पोखरा था। उस दिन कमीज पहनकर हाथ में हण्टर लेकर अनावश्यक प्रातः भ्रमण के लिये निकल पड़ा था। देखा, युवती एक पेड़ की जड़ पर बैठकर रात के जूठे बर्तन माँज रही है। कंधे तक खुली हुई हैं दोनों बाँहें, सर का घूँघट पीठ पर खसका हुआ है, सम्पूर्ण दृश्य कैसा असहाय सा था।

मुझे देखते ही उच्च और मधुर हँसी से भरे शब्दों में वह पुकार उठी, 'अरे लखना रे।'

छः-सात वर्ष का एक बालक कहीं से दौड़ आया। उससे दबे कण्ठ से कुछ संकेत करते ही, उसने दोनों हाथों से युवती की पीठ पर खसक आया हुआ वस्त्र खींच कर सर पर कर दिया। हाथों-द्वारा उसे खींच कर ठीक करने के उपरान्त युवती अपने बैठने में एक कठिनता का अनुभव करने लगी। उसने बालक को सामने खड़ा कर रक्खा एक धृष्ट प्रहरी की भाँति। मन ही मन मैंने एक गहरी मार खाई।

अतएव उसका जो साधारण हाव-भाव है, उसमें उसकी इस कठोर गम्भीरता का कहीं भी कोई समर्थन नहीं पाया जाता। उसको जब प्रथम बार मैंने देखा था, देखा था तरल हँसी की लहरों में लोट-पोट हुई जा रही है, उसका बैठना और खड़ा होना, भीतर चला जाना और दूकान के मचान पर चढ़कर बैठना आदि समस्त छोटे-मोटे भाव-प्रदर्शन में एक ऐसी चपलता थी जो साधारण नेत्रों से सुचारु और संगत जान पड़ने योग्य संभवतः न थी। अथवा मुझे देखते ही क्या, वह गम्भीरता से पूर्ण या विद्रूप से तेज हो उठती है। हो सकता है, मुझसे वह भय करती हो; किन्तु उसकी दूकान से अप्राप्य वस्तुओं की खरीदारी की अनावश्यक व्यस्तता देखकर मुझसे डरने की उसे और आवश्यकता न थी। और, मैं कितना बड़ा अनुग्राहक हूँ, यह बात उससे छिपी न थी। सर्किल इन्सपेक्टर को चुपचाप बुलाकर पूछने से ही उसकी इस दूकान के सम्बन्ध में अनेक लोमहर्षक इतिहास संभवतः जाना जा सकता है, कुल मिलाकर कितनी बार उस दूकान की तलाशी हुई है और कितनी ही रातों में उस जगह बिना लाइसेन्स के अनेक केस रचे गये हैं। यह दूकान काहे की है, यह समझने को सम्भवतः रत्ती भर भी कौतूहल का अवकाश न था। दूकान की यह सजावट, युवती का यह साज-शृङ्गार, चटक-मटक, चाल-ढाल और सबसे बढ़कर उसका यह एकाकीपन—सब कुछ विशेष मात्रा में स्पष्ट था। और कहने को, यह जानकारी ही मुझे सबसे अधिक बिंध रही है। अतएव उसके इन दोनों नेत्रों के एक अदृश्य रहस्यों के साथ उसके इस विलासितापूर्ण शरीर-गठन की कोई संगति न ढूँढ़ पाता था। मन में विचार उठता, कहीं एक बहुत बड़ी भूल कर बैठा हूँ।

सोचा, दूत भेजूँ। निर्जन रात्रि में अँधेरे बँगले में बैठकर उसे अभिसारिणी बना लूँ। किन्तु भेजूँ किसे? जो आज मेरा अनुचर है, मेरी बदली हो जाने पर, वही फिर मेरा गुप्तचर हो जायगा, अतएव किसी का विश्वास नहीं। हम लोग सब कुछ नष्ट कर सकते हैं, किन्तु ख्याति नहीं नष्ट कर सकते। कोई क्षति क्षति ही नहीं है, यदि ख्याति अछूती बनी रहे। फिर, यही ख्याति है हम लोगों का काँटों का मुकुट, जितनी वह शोभायुक्त है, उतनी ही वह प्रतिबन्धक भी है।

अर्दली से कहा, 'पाँव की नस में न जाने कैसा दर्द हो रहा है, साइकिल से न जा सकूँगा। एक गाड़ी चाहिए।'

अर्दली ने पूछा—'स्टेशन?'

'नहीं' पैदल चलना कठिन है। करीब आठ मील का मार्ग है। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की पक्की सड़क है।'

'लिये आता हूँ।'

'और, सुनो।' उसे मैंने बाधा दी। 'जमाल की गाड़ी में नई रँगाई हुई है, नया टायर पहियों पर चढ़ा है। उसे न ला सकोगे?'

'क्यों न ला सकूँगा।'

अर्दली ने जमाल की ही गाड़ी लाकर हाजिर की। एक फाइल लेकर निकल पड़ा। साथ किसी को नहीं लिया।

जमाल को यदि भीतर बैठाकर बात-चीत करूँ तो गाड़ी न चल सकेगी, अतएव शहर की सीमा पार होते ही मैं स्वयं कोचबक्स पर चढ़कर बैठ गया। खूब आनन्द आता है, ऐसा एक लड़कपन का भाव दिखाते हुए लगाम अपने हाथों में ले ली। जमाल बगल में बैठकर परम आत्मीयता का अनुभव करने लगा।

पूछा, 'मालूम होता है गाड़ी तुम्हारी है?'

जमाल कुंठित होकर बोला, 'मेरी नहीं है। गौरिया की गाड़ी है।'

'कौन गौरिया? वही जिसकी बनिये की दूकान है?'

'हाँ। मैं ठीके में काम करता हूँ। वेतन पाता हूँ। पन्द्रह रुपये मासिक।'

'अच्छा! तब तो उसके बहुत धन है!'

'हाँ, वह तो थोड़ा-बहुत है ही। पहले बकरी का दूध बेचती थी, शायद कुछ दिनों तक स्टेशन पर झाड़-पोंछ का भी काम उसने किया है।'

मैंने पूछा, 'उसका घर कहाँ है?'

'फैजाबाद अथवा मुजफ्फरपुर।'

'यहाँ क्यों आई है?'

'पति के साथ लड़कर।'

'कहते क्या हो, क्या उसका विवाह हो गया है?'

'आज छः वर्ष हुए। स्वामी ने उसे शायद एक दिन बहुत मारा था, 'चूल्हे के सम्मुख भोजन बनाते समय ऊँघ गई थी' ऐसा कहकर। इसी से नाराज होकर भाग आई है।'

'अब लौटकर न जायगी?'

'तब एक बार कहकर देखिए न। मारने दौड़ेगी।'

'ठीक ही तो है। भला क्यों लौटकर जायगी ही, बताओ, जब इस स्थान पर उसे कोई दुःख नहीं है।' घोड़े की पीठ पर खींचकर एक चाबुक जमाई, फिर बोला 'किन्तु उसका स्वामी क्या उसे लेने नहीं आया?'

'बाद में वह कहीं आ न जाय, इसी लिए वह तकिये के नीचे एक बड़ी-सी छुरी लेकर सोती है।'

मैं सम्भवतः कुछ डर गया। बोला, 'दूसरों की बारी में वह छुरी जान पड़ता है उसकी आँखों की पुतलियों में चमक उठती है।'

बात को नीरस करने योग्य जमाल में उतनी सूक्ष्मता न थी। इसी से मैं फिर बोला, 'भीतर तो ज़रा-सी एक छोटी कोठरी है, उतने ही में तुम लोगों को कैसे जगह मिलती है?'

'कैसा अनर्थ है,' जमाल का सम्पूर्ण शरीर सिहर उठा—'मैं उस घर में रहूँगा?' आप कहते क्या हैं, बाबू साहब, मैं तो उसका नौकर हूँ, वेतन पाता हूँ।'

मैंने अनुभव किया, युवक जमाल का बलिष्ठ और कठोर शरीर मानो के लिए संकुचित और पालतू हो गया।

'फिर उस जगह रहता कौन है?'

'उसके देश की एक बूढ़ी वही छुरी।'

'और कोई नहीं?'

'मैंने तो कभी देखा नहीं।' जमाल ने मेरे हाथ से लगाम ले पराजित की भाँति गाड़ी के अन्दर बैठ गया।

उस दिन संध्या बीत जाने के नभमण्डल में घनघोर घटा कालेज छोड़ने के बाद वही प्रथम था जब मैंने कुरता-धोती पहना। अमावस्या के लिए अन्धकार, मैं भी वैसे ही कोट-हैट जान पड़ती। आदि यदि अपने शरीर के डालें, तो वे एक सियार की तरह जायें, मैं भी उसी तरह टाई-पतलून कर क़स्बे में ससुराल आकर सुकुमार बाबू बन गया। पहचानने में अपने को ही बहुत जा रही है, दूसरे की तो बात

—शेष पृष्ठ ४८ पर देखिए

सौंदर्य की
परम्परा कायम रख रही हैं

जवान लड़कियों के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी मां ही उन्हें बहुमूल्य सलाह दे सकती है। इस रूपवती मां ने अपनी सुन्दर बेटी को अपना बढ़िया गुर दिया है कि पियर्स साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम रखा जा सकता है। यह शिक्षा इस मां ने अपनी मां से ली थी और अपने बचपन से ही इस पर अमल करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही प्यारी और सुन्दर है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की परवाह करती है। इसलिये उसकी मां की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

PEARS'S

पिअर्स साबुन
सौन्दर्य का सेवक

SG. 39-172 HI
A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

हमारा रंगमंच

तिहासिक फिल्म 'मुमताज महल' कैसा है ?

हन, खुर्शीद और राजेन्द्रसिंह का आकर्षक अभिनय

लेखक, श्री हरस्वरूप माथुर

महल' फिल्म रणजीत द्वारा
श्री केदार शर्मा द्वारा निर्देशित
है। रणजीत के सभी चलचित्र
ही कोटि के होते हैं किन्तु श्री
के द्वारा निर्देशित चित्र जो
निर्मित हुए हैं, कुछ विशेषता
हैं। इस सम्बन्ध में 'गौरी'
लिया जा सकता है किन्तु
अन्याय न होगा कि श्री
की वह विशेषता 'मुमताज
से नहीं प्रगट हुई है।
का कथानक है इतिहास
आ मुमताज महल के
उसी को स्थायी रूप देने के
का निर्मित होना।
एक दूसरे से मिलते हैं
खुर्रम अर्जुमन की ओर
। शहजादा खुर्रम जब

अभिनेत्री और गायिका खुर्शीद।

है तो वह अर्जुमन से विवाह
अर्जुमन का नाम मुमताज
शाहजहाँ के नाम से
शाहजहाँ मुमताज महल के
है और प्रतिज्ञा करता
की प्रेम-स्मृति के लिए
पर एक ऐसी 'इमारत'
प्रलय के समय तक
और आकृष्ट किये रहे।
में वह राज्य-काज भी
नूरजहाँ, जो कि वृद्ध है
और ध्यान देने के लिए
शाहजहाँ फिर से राज्यकार्य
है। महावत खाँ एक गढ़
के लिये शाहजहाँ से आज्ञा
समय शाहजहाँ शयना-
कारण वह शीघ्रता में,
की आज्ञा मुमताज
अब शाहजहाँ को यह
मुहर' बिना उसकी
पर लगाई गई है तो
इस अनधिकार चेष्टा
है। मुमताज महल
कि शाहजहाँ से वह
पायेगी। वह पूर्व
इससे अब उसका
ही उठता है।
शाहजहाँ उससे छः

दिन तक नहीं मिलता। साँतवे दिन रात्रि में मुमताज महल जब मरणशय्या पर होती है तो अपनी पुत्री जहाँनारा के अनुरोध से उसे मुमताज के निकट आना पड़ता है और कुछ ही क्षण में वह प्राण त्याग देती है। शाहजहाँ को अब स्मरण आता है कि यही समय है जब कि वह पृथ्वी के वक्ष पर ताजमहल को प्रतिष्ठित कराके अपने प्रेम का परिचय दे। शीराज नामक शिल्पी ताजमहल निर्मित करता है और शाहजहाँ आगरे के किले से जमुना तट पर, पूर्णेन्दु की शुभ्र ज्योत्सना में, ताजमहल को देखकर अपने सुख, दुख और प्रेम को स्मरण करता हुआ जीवन के दिवस व्यतीत करता है।

इस फिल्म की कथा यही है। कथा में श्रृंखला नहीं है। बहुत से दृश्यों को तो केवल प्राकृतिक दृश्य दिखाने के लिए ही रखा गया है वह कथानक से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। रेगिस्तान और पहाड़ी घाटियों के दृश्य वास्तव में अत्यन्त सजीव हैं क्योंकि ये दृश्य स्वयं निर्देशक ने राजपूताना में जाकर लिये थे।

इस फिल्म में चन्द्रमोहन और खुर्शीद ने शाहजहाँ और मुमताज महल के रूप में अभिनय किया है। शाहजहाँ के रूप में चन्द्रमोहन का अभिनय और मेकअप दोनों ही साथ देते हैं किन्तु खुर्शीद को अभिनय तथा मेकअप में सफलता नहीं मिली है। उसका अभिनय साधारण है। मुमताज महल के मरने पर चन्द्रमोहन का शाहजहाँ के रूप में अभिनय और अन्त में ताजमहल के ऊपर अपने हृदय के उद्गार प्रकट करते हुए जो अभिनय किया है यह वास्तव में चन्द्रमोहन की उत्कृष्ट अभिनय कला के उदाहरण हैं। उनके मुख से निकले संवाद हृदय में घर कर लेते हैं।

अन्य अभिनेताओं में राजेन्द्रसिंह, याकूब, उर्मिला आदि हैं जिनका अभिनय साधारण है। याकूब महावत खाँ के रूप में स्वाभाविक अभिनय नहीं कर पाये हैं।

इस चलचित्र के निर्देशक केदार शर्मा हैं। केदार शर्मा ने रणजीत में प्रवेश करके केवल एक ही ऐसा चलचित्र प्रस्तुत किया है जिससे सन्तोष किया जा सकता है। वह चलचित्र है 'गौरी'। इसके पश्चात् श्री केदार शर्मा के चलचित्र उचित रूप में नहीं प्रस्तुत हुए। ऐसा प्रतीत होता है कि 'मुमताज महल' के साथ निर्देशक ने अधिक परिश्रम किया है फिर भी यह चलचित्र उच्चकोटि का नहीं हो पाया है, एक साधारण चलचित्र है किन्तु इसमें सब दोष निर्देशक का नहीं है अपितु अभिनेताओं और कथाकार का भी है। फिर भी फिल्म सुन्दर और दर्शनीय है, इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृंखल एक विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपए।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

ामान के लिए रुपया चाहिए

हिन्दुस्तान भर में रेड क्रास के कार्यकारी दल हज़ारों की संख्या में विशेष वस्तुएं नित्य प्रति बनाते रहते हैं। ये कार्यकारी दल बहुत बड़े परिमाण में आवश्यक सामान तैयार कर चुके हैं और इनका कार्य बराबर बढ़ रहा है। इंडियन रेड क्रास ऐण्ड सेण्ट जान संस्था की ओर से करोड़ों गज़ सामान प्रति वर्ष खर्च किया जाता है। इस संस्था के लिए इनका व्यावहारिक कार्य बहुत ही उदारतापूर्ण तथा उपयोगी होता है। आप शायद इस व्यावहारिक ढंग से सहयोग नहीं कर सकते। किन्तु यथाशक्ति धन देकर आप इंडियन रेड क्रास की सहायता कर सकते हैं—और आपकी सहायता की बहुत आवश्यकता भी है।

हमारे ७०१ कार्यकारी दलों की रिपोर्टों से पता चला कि गत मार्च में समाप्त होने वाले ६ महीनों के भीतर १० लाख ६५ हज़ार वस्तुएं बनाई गईं। इनकी सूची में अस्पताली कपड़े और वार्डों के काम की दूसरी वस्तुएं, पट्टियां, घायलों की मरहम-पट्टी का सामान, बीमारों के मोज़े, ऊनी कपड़े, पैजामें, चादरें और इसी प्रकार की अन्य आवश्यक वस्तुएं सम्मिलित हैं।

इंडियन रेड क्रास के द्वारा

अपने घायल और बीमार सैनिकों की सहायता दिल खोल कर कीजिए

AAA313

हास परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

लोगों ने खबर उड़ाई है कि महात्मा गांधी फिर इसलिये उपवास करनेवाले हैं कि शिमला-सम्मेलन विफल हो गया। यदि ऐसी बातों पर महात्मा जी उपवास करना आरंभ करेंगे तो उनका सारा जीवन उपवास ही करने में बीत जायगा।

* * *

सिंध सरकार ने हिन्दोस्तानी अनिवार्य करने का संकल्प किया है। टट्टी की ओट में क्यों खड़े होकर काम करना चाहते हैं? क्या उर्दू कहने में कुछ लज्जा मालूम पड़ती है? क्या उर्दू इतनी लज्जाजनक है?

* * *

खबर है कि लखनऊ सेंट्रल जेल में ५६ बंदी अनशन कर रहे हैं। जो शिकायतें उस जेल की सुनी जा रही हैं उसके कारण सभी कैदी अनशन नहीं कर रहे हैं यही आश्चर्य है!

* * *

कहा जाता है कि इन बंदियों के लिये भोजन तथा वस्त्र की उचित व्यवस्था नहीं है। जेल के बेचारे कर्मचारी इस मँहगी के जमाने में पहिले अपनी व्यवस्था में लगे होंगे। बंदियों की कहाँ तक व्यवस्था करें?

* * *

एक अमेरिकन पत्र का कहना है कि चर्चिल के हट जाने से अमेरिकन सेना को कोई खेद नहीं हुआ। जब इँग्लैंड ने उन्हें खेद दिया तब संसार को किस बात का खेद?

* * *

एक पत्र ने छापा है कि 'सर गिरजा लंदन में' लंदन में तो गिरजा के लिये स्थान है ही। भारत में तो मंदिर चाहिये। यहाँ गिरजा का क्या प्रयोजन?

* * *

प्रांतीय सरकार एक योजना बनानेवाली है जिससे इस प्रांत के दस बड़े नगरों में खालिस दूध बेचने का प्रबन्ध होगा। यह दूध बरगद, पीपर और मदार का होगा कि गाय-भैंस का यह स्पष्ट नहीं हुआ?

* * *

गाय तो पर्याप्त संख्या में हैं नहीं। विलायत से हारलिक्स का दूध मँगा कर और वही घोल कर दिया जाय तो संभवतः योजना सफल हो जाय।

* * *

एक समाचार है कि इँगलैंड के रेलवे-कर्मचारियों ने कुछ माँगें पेश की हैं। यदि वह मंजूर न की गईं तो वे हड़ताल करेंगे। जान पड़ता है मजदूर सरकार को सिर मुँड़ाते ही ओले पड़ेंगे?

* * *

कुछ लोगों का कहना है कि अगस्त आन्दोलन के अवसर पर कम्युनिस्टों ने देश के साथ विश्वासघात किया। अपने साथ क्या किया, यह देखिये। यदि उनके पाकेट भर गये और सरकारी खजाने का कुछ माल उनके घर आ गया तब देश को छोड़िये। देश के लिए तो और लोग [illegible] ही।

* * *

बरसात में अनेक जीव पैदा होते हैं। इसी अवसर पर जौनपुर में एक नये इतिहास के पंडित पैदा हुए, सैयद तफज्जुल दाऊद खाँ। उन्होंने एक पुस्तक लिखी

चटपटे चौपदे

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

दर्द कुछ ऐसा उठा मैं सो गया, और सब संसार मुझ पर रो गया;
क्या दवा का दाम बतलाऊँ तुम्हें, आठ आने सेर नेनुआ हो गया।

* * *

छोड़ धोती सूट अपनाने लगे, और वह अंडा उबलवाने लगे;
हो गया मालूम अँगरेजी पढ़ी—आज जब वह मेज पर खाने लगे।

* * *

रेल जब है बैल की गाड़ी कहाँ, है नहीं भोजन, भला नाड़ी कहाँ;
पहनिये पतलून आधे पाँव का, श्रीमती जी अब यहाँ साड़ी कहाँ।

* * *

अब हुकूमत के लिए मजदूर हैं, इस खुशी से हम नशे में चूर हैं;
पर हमें मालूम यह है हो रहा, हजरते 'बेढब' अभी दिन दूर हैं।

है—'रियल शिवाजी' उसमें शि
उनकी माता पर कुछ आरोप कि
असरी साहब तो चले गये नहीं
कुछ पुरस्कार देते। अब देखिये
आजम आपको क्या देते हैं?

* *

मिस्टर जिन्ना को चाहिए
अपना उत्तराधिकारी बना
ऐसा विद्वान् मिलना इस युग
है। मुसलमान का मुसलमान और
महान् विद्वान् भी।

* *

कुछ लोग आप पर एक
दावा करने जा रहे हैं। उन्हें
सैयद साहब के सामान देख
करें। व्यर्थ में कोर्ट फीस में
खर्च कर रहे हैं। —अगस्त

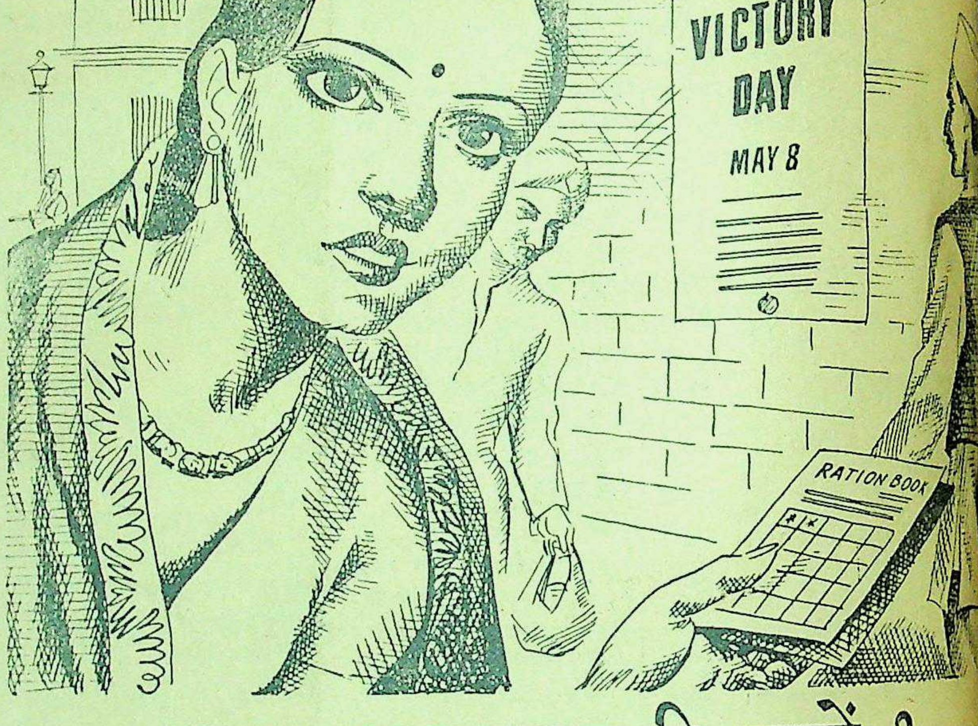

अब राशनबन्दी क्यों?

श्री मती जी, हम आपकी कठिनाई ख़ूब समझते हैं। आप कई वर्ष से कष्ट उठा रही हैं—राशनबन्दी—कंट्रोल माल की कमी—महंगाई। आप कहेंगी—'यह सब कब तक?'

जर्मनी ने बिना शर्त हथियार डाल दिये। अब साथी राष्ट्रों की शक्तिशालिनी सेनायें बचे हुए शत्रु जापान का नाश करने के लिए मोर्चे पर लाई जा रही हैं। हिन्दुस्तान एक समय साथी राष्ट्रों के बचाव का मुख्य केन्द्र था: अब यह देश साथी सेनाओं के आक्रमण का मुख्य केन्द्र बन गया है। किन्तु याद रखिए, शत्रु अभी काफ़ी बलवान है और हमें भीषण संघर्ष करना है। ज़रूरत का सामान बनाने वाले कारख़ानों को सामान बनाना पड़ रहा है; बाहर से सामान लाने जहाज़ों को फ़ौजें और हथियार लाने पड़ रहे हैं। की भांति अब भी भोजन, वस्त्र, ईंधन, औषध और आवश्यक वस्तुओं पर पहला अधिकार हमारे को है। युद्ध के कष्टों से छुटकारा अवश्य मिलेगा: जब तक दुश्मन को बिना शर्त हथियार डालने मजबूर नहीं किया जाता, तब तक हमें धैर्य होगा।

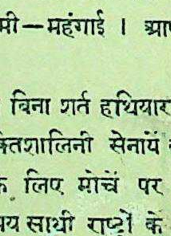

हमारी अपेक्षा हमारे वीर योद्धा अधिक विपत्ति का सामना कर रहे हैं। इसलिए हमें उचित है कि हम उनकी सहायता में कमी न करें। अन्तिम जीत का दिन निकट है। हमें दृढ़ रहना चाहिए। हम तनिक भी विचलित न हों, युद्ध-प्रयत्नों में ज़रा सी भी शिथिलता न दिखायें, और शीघ्र से शीघ्र जीत हो ऐसी चेष्टा करें। जीत का दिन निकट लाने और मूल्यवान प्राणों की रक्षा के लिए हमें पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए।

हमारा युद्ध जारी है....

AAA 355 डिपार्टमेण्ट आफ़ इनफ़र्मेशन एण्ड ब्राडकास्टिङ्ग, गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित।

संपादक के नाम चिट्ठियां

सम्मेलन का सभापतित्व

जुलाई के 'देशदूत' में हिन्दी-
के उदयपुर-अधिवेशन
सभापति-पद के लिए हिन्दी
कवियित्री श्रीमती सुभद्रा-
का नाम सुझाया गया है।
साहित्य-साधना आज हिन्दी-
नहीं है। उन्होंने जो कुछ
जो कुछ भी कर रही हैं,
है। प्रेमचन्द के बाद
जी के चर्खे की कोई सच्ची
सुभद्रा जी की लेखनी
लेखनी युवकों को बल
और वृद्धों का वार्धक्य
है। सुभद्रा जी निर्जीव
हैं, वह प्रेमचन्द जी के
साहित्यिकों में हैं, जो
रोशनी दिखलाते हैं, और
पीछे पीछे चलो।
हिन्दी-प्रेमी सुभद्रा जी को
बनाकर यह दिखला
भी भारत नारियों का
सकता है। आज भी भारत
नायडू, श्रीमती विजय-
श्रीमती कमलादेवी चट्टो-
अरुणा आसफ अली,
चौहान और श्रीमती
वीर नारियाँ भरी
कीर्त्ति और विद्वत्ता
त्रियों से कम नहीं है।

—नरदेवसिंह शास्त्री,
एम० ए०, साहित्यरत्न

* *

(२)

सम्मेलन के सभापतित्व
व्यक्तियों के नामों का
है, परन्तु प्रस्तावक प्रायः
है कि भाषा का सम्बन्ध राष्ट्र
रूप में रहा करता है।
तब तक उन्नति नहीं कर
वह राष्ट्र के साथ कन्धे से
न चले। साहित्य-सम्मेलन
का एक कारण यह भी
राष्ट्र की आवश्यकता के
बनाने का प्रयत्न करता
देश के मान्य नेताओं-जैसे
बाबू राजेन्द्रप्रसाद, सेठ
और बाबू सम्पूर्णानन्द
रहा है। इधर कुछ दिनों
प्रतिक्रियावादी वर्ग का
हिन्दी को राष्ट्र से दूर ले
है और उसे उर्दू से एक
है। सम्मेलन ने बरा-
द्वारा यह स्वीकार किया
हिन्दी से पृथक् भाषा नहीं,
है। इन सब बातों
इस समय हमें एक ऐसे
सम्मेलन की बागडोर
हिन्दी को राष्ट्रभाषा
अधिक सहायक हो।
हिन्दुस्तानी के विवाद
की प्रगति को रोकना
इसलिए मैं हिन्दी-
करूँगा कि वे इस
के लिए महात्मा
गांधी या श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल ऐसे किसी व्यक्ति का निर्वाचन करें जो हिन्दी उर्दू और हिन्दुस्तानी के विवाद का अन्त करके हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में सफल हो सके। हमें इस समय अपना दृष्टिकोण अधिक उदार बनाना है, इससे हिन्दी का अहित नहीं हित ही होगा।

लखनऊ, २७ जुलाई —रघुनाथ मोहन

* * *

मैथिलीशरण-हीरक-जयन्ती

काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा के तत्त्वावधान में होनेवाले श्री मैथिलीशरण-हीरक-जयंती-महोत्सव का कार्यक्रम इस प्रकार निश्चित किया गया है—

शनिवार ११ अगस्त, स्वस्त्ययन, संगीत; सायंकाल ८ बजे से हरिश्चन्द्र कालेज में। रविवार १२ अगस्त, कवि गोष्ठी, रात्रि में ९ बजे से, हरिश्चन्द्र कालेज में। सोमवार १३ अगस्त, जलपान, ७ बजे; आचार्य नरेन्द्रदेव जी का 'समाज और साहित्य, पर प्रवचन, सायं ८ बजे। राष्ट्रकवि की रचनाओं का अभिनय, रात्रि में ९ बजे; हरिश्चन्द्र कालेज में।

तीनों दिन के इस समारोह में केवल महोत्सव के सदस्य प्रवेश पा सकेंगे। सदस्यता का न्यूनतम शुल्क १० रुपया है तथा सदस्य होने की अंतिम तिथि ७ अगस्त है।

उक्त कार्यक्रम के अतिरिक्त रविवार १२ अगस्त को कायंकाल साढ़े चार बजे महोत्सव की ओर से काशी नागरीप्रचारिणी सभा में राष्ट्रकवि का सार्वजनिक अभिनंदन किया जायगा जिसमें उन्हें थैली भी भेंट की जायगी। जो संस्थाएँ उन्हें मानपत्र अर्पित करना चाहें, ७ अगस्त तक इसकी सूचना जयंती-कार्यालय, काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा में भेज दें जिसमें कार्यक्रम में उसका समुचित समावेश किया जा सके।

—रामनारायण मिश्र, राय कृष्णदास
संयुक्त मन्त्री

* * *

'निराला' जी का सम्मान

हिन्दी के महाकवि 'निराला' जी के सम्मान में हम लोगों ने शीघ्र ही एक छोटी-सी अभिनन्दन-पुस्तिका हिन्दी-संसार को भेंट करने का निश्चय किया है। छोटी होने पर भी यह पुस्तिका अपने ढंग की एक ही होगी। इसका मूल्य पाँच रुपया होगा। बिहार की सुप्रसिद्ध प्रकाशन-संस्था 'तारा-मण्डल' ने इसके प्रकाशन का भार अपने ऊपर ले लिया है। 'निराला' जी के सम्बन्ध में जो सज्जन कुछ लिखना चाहें, वे शीघ्र इस पते पर पत्र-व्यवहार करें।

अंगारधर —आरसी प्रतापसिंह
दरभंगा —नन्दकिशोर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

यह कितना तर कर देता है!
यह कितना ताजा कर देता है!
यह कितना आनन्ददायक है!
VINOLIA WHITE ROSE SOAP
विनोलिया व्हाइट रोज साबुन
VWR. 17-221 HI
VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

आप गर्मीसे परेशान क्यों हैं, जबकि विनोलियासे एक बार ही स्नान कर लेनेपर आप शीतल हो जायेंगे? अपने शरीरको लसलसा क्यों रखते हैं, जबकि मक्खन. जैसे सफेद इस साबुनका फेन आपको ताजा बना और रख सकता है? और आप विनोलियाकी सुगंधको हमेशा आनन्ददायक और प्रफुल्लित करनेवाला पायेंगे। मस्तिष्क और शरीर पर सचमुच टानिककी तरह इसका असर होता है।

इस जय-पराजय में दोषी कौन ?

(पेज ७ का शेष)

चुच.ने में जरा भी संकोच नहीं किया गया। तीन चौथाई बहुमत को एक तिहाई कर दिया गया।" समस्या को सुलझाने के ख्याल से कांग्रेस ने भी इतना अधिक झुकना और भारी अन्याय को मानना स्वीकार कर लिया। देश का बहुसंख्यक समुदाय देश के शासन में अल्पमत में हो जाय, यह किसी भी देश में स्वीकार नहीं किया जायगा। पर सम्राट्-सरकार ने इस पर भी यह घोषित करने का साहस किया है कि 'आवश्यक ऐक्य और समझौता' न होने से कान्फरेन्स भंग हो गई। जब कि सत्य यह है कि 'वीटो' का अधिकार वायसराय के नहीं मिस्टर जिन्ना के हाथ में रख दिया गया है। देश की शासन-समिति में मुसलमानों को एक तिहाई जगह दी गई, जब कि वह एक चौथाई के अधिकारी हैं। वायसराय लीग को चार सीटें देने के लिए तैयार थे, यद्यपि भारत के किसी भी मुख्य प्रान्त में यह शासन-शक्ति में नहीं है, और तीन सीटों से अधिक पाने की अधिकारिणी नहीं है। सम्राट् की सरकार मिस्टर जिन्ना से इतना अधिक घबराती है कि उसने उनको भारी रियायत देने से पहले; सवर्ण हिन्दुओं के समान मुसलमानों को सीट मिलेगी—कान्फरेन्स को बुलाने का साहस नहीं किया। पर मिस्टर जिन्ना की भूख खुराक मिलने के साथ बढ़ती ही गई। सम्राट् सरकार ने मिस्टर जिन्ना की माँग को हिन्दुओं का ख्याल करके अस्वीकार नहीं किया, बल्कि 'ग्लैंसी-खिजिर-विरोध' का आदर करके लीग की माँग स्वीकार नहीं की है। जहाँ तक हिन्दुओं का सम्बन्ध है, सम्राट्-सरकार हिन्दुओं की स्वाधीनता और अधिकारों को जब चाहे बेच सकती है। शिमला-सम्मेलन की यही शिक्षा है, यह न भूलना चाहिए।

मुस्लिम दृष्टिकोण

मुस्लिम लीग का ख्याल दूसरा है। उसका विचार है कि शिमला-कान्फरेन्स में भाग लेकर उसने महान् त्याग किया है। क्योंकि (१) वैवेल-योजना मुसलमानों के स्वभाग्य निर्णय के सिद्धान्त—पाकिस्तान—को न स्वीकार करती है और न रद्द करती है (२) 'विचाराधीन व्यवस्था जरूर मध्यकालिक है, मगर लीग कोई ऐसी वैधानिक स्थिति स्वीकार नहीं कर सकती, जिससे पाकिस्तान के मुद्दे को नुकसान पहुँचे या पृथक् प्रभुत्व-शक्ति-सम्पन्न मुस्लिम राज्य की स्थापना में विलम्ब हो (३) यदि लीग को कौंसिलरों के चुनने के अधिकार से वंचित किया जाता है, तो लीग भावी वैधानिक समझौते की चर्चा में भाग लेने के अपने प्रतिनिधित्व की प्रकृति खो देती है (४) कौंसिल की शक्ति और रचना इस तरह से बदली जा सकती है कि मध्यकालिक काल में मुस्लिम हितों को नुकसान पहुंचे और (५) इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो पीछे मध्यकालिक व्यवस्था न सन्निहित होगी और स्थायी न होगी, वह भारत की स्थायी विधान बनाने के समय राष्ट्रीय पंचायत के निर्णय को प्रभावित करने में अधिक लाभजनक स्थिति में होगी? कायदे-आजम ने स्थिति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मुस्लिम लीग ऐसी किसी बात को न मानेगी जो लीग की नीति और सिद्धान्त के विरुद्ध हो।

इसके मुकाबले कांग्रेस का दृष्टिकोण देखिए, [illegible] परम्परा खोकर भी सरकार से सहयोग करने के लिए तैयार हो गई।

सर्वसम्मति

१४ जून के ब्राडकास्ट में लार्ड वैवेल ने कहा था—'नई शासन-समिति के निर्माण के सम्बन्ध में, जो संगठित राजनीतिक लोकमत की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण हों' भारतीय नेताओं से परामर्श लूँगा। इसमें यह भी कहा गया था—"यदि दुर्भाग्यवश यह बैठक असफल रही तो हमें दलों के परस्पर निकट आने के समय तक अब की तरह काम चलाते रहना पड़ेगा।" २५ जून को वायसराय ने कान्फरेंस का नेतृत्व स्वयं ले लिया। कान्फरेंस में पाँच-छः पार्टियाँ थीं और लीग उनमें से एक थी। मुसलमानों का केवल लीग द्वारा ही नहीं अपितु पंजाब और सीमाप्रान्त के प्रधान मन्त्रियों और कांग्रेस के प्रेसीडेंट मौलाना आजाद द्वारा प्रतिनिधित्व हो रहा था। कान्फरेंस का उद्देश्य स्वीकार कर लेने के बाद मि० जिन्ना को नाम-सूची देने से इन्कार न करना चाहिए था। यह काम तो वे पहले ही वायसराय को सौंप चुके थे। मि० जिन्ना/द्वारा नाम की सूची देने से इन्कार करने पर सम्राट् की सरकार के लिए कान्फरेंस के भंग होने की घोषणा करना उचित नहीं था। पर सम्राट् की सरकार ने मि० जिन्ना का सहारा लेकर कान्फरेंस भंग कर दी। इससे यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट का इरादा कान्फरेंस को सफल बनाना नहीं था और लार्ड वैवेल कांग्रेस और अन्य अल्पसंख्यक वर्गों को पूर्ण बता रहे थे। यदि सिख असहमत होते तो क्या कान्फरेंस के विफल होने की घोषणा की जाती? महात्मा गांधी तक ने कान्फरेंस के लिए वायसराय का नेतृत्व स्वीकार कर लिया था। इसलिए लार्ड वैवेल का यह काम था कि वे मार्ग ढूँढ़ निकालते और मि० जिन्ना के विरोध की परवाह न करते, पर दृढ़ नेतृत्व का अभाव था। पेशवाए आजम आजाद ने स्थिति का विश्लेषण ठीक किया है कि मि० जिन्ना के रवैया का आश्रय लेकर ब्रिटिश सरकार द्वारा कान्फरेंस भंग कर दी गई। फ्रेंच लेखक अनातोले ने लिखा है कि स्त्रियों के बारे में कठिनाई यह है कि न तो आप उनके साथ रह सकते हैं और न उनके बिना ही रह सकते हैं। वायसराय की भी यही अवस्था है। वे न लीग के साथ रह सकते हैं और न लीग के बिना रह सकते हैं। वायसराय की द्विविधा भारत का गति-अवरोध है।

जिन लोगों ने मि० जिन्ना के हाथ में 'वीटो' का अधिकार रखा है वे भारतीय प्रगति के बारे में सच्चे और ईमानदार नहीं कहे जा सकते। शासन-समिति में यदि मि० जिन्ना आज ५० प्रतिशत जगहें माँग रहे हैं, तो वे केवल अपने मालिकों से देश से विश्वासघात करने का अपनी अपनी उजरत मांग रहे हैं। यह झगड़ा मि० जिन्ना और उनके मालिक के बीच का है।

कांग्रेस क्या भाग लेगी ?

लार्ड वैवेल और मि० एमरी के भाषणों में यदि इस बात का जरा भी इंगित होता कि मि० जिन्ना के हाथ में 'वीटो' करने का अधिकार है, तो कांग्रेस क्या स्वाधीनता की घोषणा करने, भारत छोड़ो का प्रस्ताव पास करने और १६१६ के [illegible] ने के लिए पिछले २५ साल से कोशिश करने के बाद भी क्या इस सीमा तक आत्मसमर्पण करती और मैत्री के लिए हाथ पसारती? कल्पना-शून्य ब्रिटिश गवर्नमेंट ही ऐसा कर सकती है। कांग्रेस यह जानते हुए कान्फरेंस में गई थी कि नाम की अंतिम सूची वायसराय की होगी। वायसराय संशोधन और परिवर्तन सुझा सकते थे। यदि मौलाना आजाद को वे स्वीकार न होते तो वायसराय और मौलाना का अलग होना उचित होता। वायसराय ने अपनी सूची केवल मि० जिन्ना को दिखाई थी। मि० जिन्ना ने उसको मानने से इन्कार कर दिया। लार्ड वैवेल ने उस सूची को फिर कान्फरेंस के सामने पेश ही नहीं किया। २६ जून के बाद से कान्फरेंस बैठी ही नहीं। पर्दे के पीछे मुसलमानों से काम लिया जाता रहा। इसलिए यह कहना गलत है कि कांग्रेस की एक सीट की माँग के कारण कान्फरेन्स फेल हो गई, वायसराय ने जब लीग 'फुहरर' से १५ मिनट बात की थी और ह्वाइट हाल को सूचित किया कि मि० जिन्ना का रवैया बदला नहीं है, उसी समय शिमला-नाटक समाप्त हो गया था। शिमला-नाटक की विफलता के लिए कांग्रेस को दोष नहीं दिया जा सकता। यदि वह दोषी है तो उसमें भाग लेने की दोषी है, उसने ब्रिटिश सरकार के रवैये को समझा नहीं और लार्ड वैवेल में अन्ध-विश्वास किया।

आगे क्या होगा ?

ब्रिटेन में एक क्रान्ति हुई है। निम्न मध्यमवर्ग ने शासन-सूत्र अपने हाथ में लिया है। इनके नेता मेजर एटली हैं, जो साइमन कमीशन के एक सदस्य थे।

ब्रिटेन के अन्दर कोयला,
लिखित उद्योगों का राष्ट्रीय
यह ठीक है पर यह सोचना
सरकार की नीति में परिवर्तन
होगी। मि० एमरी की पराजय
अर्थ लगाना कि मजदूर दल
नीति पसन्द नहीं है, गलत होगा।
योजना का समर्थन करते
लिस्टोवेल ने मि० एमरी की
जो भूरि-भूरि प्रशंसा की थी,
चाहिए। वैवेल-योजना उसकी
भारत भेजी गई थी। इसलिए
नाटक भी उसी की इच्छा से
है, इसे मानने में हमें संकोच
चाहिए। ब्रिटेन के निम्न
भी मनोवृत्ति साम्राज्यवादी है,
घर में समाजवाद का पोषक है।
भारत को इससे अधिक की
भूल होगी। चुनाव भी भी
गई है। पर वह इस साल
संदेह है। वह जापान की पराजय
हुआ भी तो अगले साल होगा।
पर से प्रतिबन्ध हटाने और
और नजरबन्दों की रिहाई में
जा रही है, वह सरकार की
की सूचक है। बजट-अधिवेशन
चुनाव न होगा। इसलिए भारतीय
अवरोध के उस समय तक बने
सम्भावना की कल्पना करनी ही

बिकाऊ है

बीस घोड़े की ताकत का
इंजन डबल भारी फलाइ
चला हुआ—नये के
बिकाऊ है।
पता—श्री तीर्थराज
कटरा, इलाहाबाद

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बेंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत
BI-DIASTASE

भोजन को पचाने योग्य बनाकर बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

नई दिल्ली की चिट्ठी

आष्टी-चिमूर के कैदी और लार्ड वैवेल

डोर ग्रेगरी की इंगलैण्ड-यात्रा—गवर्नर सम्मेलन में क्या —भारत मंत्री मिस्टर पेथिक लारेंस कौन हैं?—'लंदन टाइम्स' की पत्रकारिता का क्या यही नमूना है?

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

पुरानी दिल्ली जहाँ म्युनि-
ओं की हलचल में डूबी हुई
दिल्ली में और विशेष रूप
क्षेत्रों में जर्मनी के भाग्य का
वाले पोट्सडम सम्मेलन के
ब्रिटेन की सोशलिस्ट सरकार
सम्मेलन की चर्चा थी। प्रिवी
चिमूर और आष्टी के प्राण-
कैदियों की अपील नामंजूर किये
समाचार से भी यहाँ के कानूनी
क्षेत्रों में भारी सनसनी फैल
सरकारी क्षेत्रों में पूछ-ताछ
हुआ है कि वाइसराय
गांधी जी से बातचीत के
कैदियों के दया-याचना-पत्र
विचार करेंगे।

*

सरकार के आर्थिक सलाहकार
ग्रेगरी इस सप्ताह इँगलैंड जा
योजना को लेकर जायँगे,
ने कोई विज्ञप्ति जारी
मालूम हुआ है कि वे
के बीच की अनेक
पर विचार-विनिमय
वहाँ जाकर भारत के
निधि में से और
के लिए ब्रिटिश सरकार
भारतीय औद्योगिक-
और इँगलैंड में की
से भारत-सरकार की
बन गई है। भारत का
चुकाने के प्रश्न पर भी
होगा।

* *

कि गवर्नर-सम्मेलन समाप्त
सम्भवतः शीघ्र ही
अबुलकलाम आजाद से
सम्पर्क स्थापित करनेवाले
ने अपने पत्र-व्यवहार में
कांग्रेसी नजरबन्दों और
अखिल भारतीय कांग्रेस
कमेटियों को वैधानिक
जिन कांग्रेस जनों के विरुद्ध
है और जो अभी तक
हैं, उनके वारंट रद्द
में है।
सम्मेलन में इन मुद्दों पर
किया जा चुका है, इस-
वैवेल शीघ्र ही मौलाना
कि उन्होंने उचित
देने का वचन दिया
बीच में यह लगभग
कि प्रान्तीय सरकारें
करने की रफ़ार
और शीघ्र ही कांग्रेसी
घोषित कर देंगी।
निश्चित कदम
अवश्य लगेगा क्योंकि
की कार्रवाई से लन्दन
अप्रसन्न करना होगा और इसके बाद मजदूर-सरकार को अपनी भारत-सम्बन्धी नीति निर्धारित करनी होगी।

* * *

७३ वर्षीय मजदूर कार्यकर्ता श्री पेथिक लारेंस की भारत-मन्त्री के पद पर की गई नियुक्ति का यहाँ के सरकारी एवं राजनीतिक क्षेत्रों में स्वागत हुआ है। मगर जिन भारतीयों को भारत कार्यालय के तत्काल हटाये जाने की आशा थी उन्हें इस घोषणा से कुछ निराशा अवश्य हुई है। जिन लोगों ने शिमला-सम्मेलन की असफलता पर सर स्टैफर्ड क्रिप्स और मेजर एटली की आलोचनाओं को ध्यान से पढ़ा है, उनका यह कहना है कि मजदूर पार्टी केवल वहीं तक मजदूर है जहाँ तक कि इंगलैंड का सम्बन्ध है, मगर हिन्दुस्तान के लिए वह उतनी ही साम्राज्यवादी है, जितनी कि अनुदार पार्टी। उनकी राय में मजदूर पार्टी फिलहाल भारत के सामने कोई नया प्रस्ताव पेश नहीं करेगी। हाँ, इतना अवश्य हो जायगा कि हिन्दुस्तान में नौकरशाही का दृष्टिकोण कुछ बदल जायगा और कांग्रेस कैदियों की रिहाई, नागरिक-स्वतंत्रता एवं कांग्रेस संस्थाओं पर से पाबन्दियाँ हटा ली जायँगी।

* * *

जिन ब्रिटिश समाचारपत्रों में शिमला-सम्मेलन के समाचार प्रकाशित हुए हैं, वे हाल ही में नई दिल्ली पहुँचे हैं। ब्रिटिश संवाददाताओं-द्वारा कांग्रेस के रुख को गलत ढंग से पेश करने की जो आशंका प्रकट की गई थी वह बिलकुल सही निकली। उन्होंने न केवल कांग्रेस के रुख को ही गलत ढंग से रखा, बल्कि ब्रिटिश पाठकों पर ऐसा प्रभाव डालने का प्रयास किया है कि जैसे कांग्रेस कोई महत्त्वपूर्ण संस्था ही नहीं है। उदाहरण के तौर लन्दन 'टाइम्स' ने "शिमला-सम्मेलन और कांग्रेस की गलत फ़हमियाँ" शीर्षक समाचार प्रकाशित किया है। उसमें बताया गया है कि बावजूद मौलाना अबुलकलाम आजाद के कांग्रेस पर हिन्दुओं का ही आधिपत्य है। जहाँ मास्टर तारासिंह की स्वर्ण-जटित तलवार, पंजाब प्रीमियर मलिक खिजर हयात खाँ टिवाना का सफेद तुर्रा और जिन्ना की योरपियन वेष-भूषा की प्रशंसा में आधा कालम खर्च कर दिया गया, वहाँ कांग्रेस नेताओं के स्वागत आदि पर एक शब्द भी नहीं। "डेली टेलीग्राफ" ने केवल इतना समाचार छापा—"गांधी जी के शिमला पहुँचने पर हिन्दू सभा के लोगों ने विरोध-प्रदर्शन करने के लिए उनकी मोटर पर काला झण्डा लगा दिया।" "टाइम्स" ने आगे यह भी लिखा है कि कांग्रेस की कुछ गलतफहमियों को देखते हुए शिमला-सम्मेलन का सफल होना कोई सहज काम नहीं है। ये स्वार्थी ब्रिटिश पत्रकार किस प्रकार इँगलैंड की जनता को धोखा देते हैं, यह उनके संगठित षड्यन्त्र का एक नमूना है।

मजदूर सरकार की जिम्मेदारी

(पेज ७ का शेष)

ईडैन, एमरी वा ब्रॉडन ब्रैकन के नेतृत्व से भिन्न होगा, या रामजे मैकडानल्ड की तरह वे मजदूर नेता भी बाद को प्रतिक्रियावादी हो जायेंगे? कहीं इन नेताओं की नीति 'ब्रिटेन में समाजवादी, पर बाहर साम्राज्यवादी' तो नहीं होगी? यह सब सवाल एक साथ प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में उठते हैं। नवीन ब्रिटिश प्रधान मन्त्री, तथा मजदूरदल के सबसे बड़े नेता श्री क्लीमेंट एटली ने हाल में भी इस बारे में कुछ प्रकाश डाला है। वे कहते हैं, 'पर-राष्ट्रीय मामलों में हमारी एक पुरानी परम्परा है जो कि आर्थर हैंडरसन के परराष्ट्र मन्त्रित्व के समय वर्त्ती गई थी। लडाई को सदा के लिए बन्द करने के लिये संसार में एक नवीन प्रणाली की आवश्यकता घोषित करने में हम कभी नहीं चूके हैं। ठीक इसी प्रकार हमारी एक विश्वव्यापी आर्थिक योजना भी है जिसमें हमारा लक्ष्य संसार की समस्त जनता के रहन-सहन के मापदंड को ऊपर उठाना है। हमारा बहुमत हमें समाजवादी दल के निश्चयों को कार्य-रूप में परिणत में पूर्ण सहायता देगा।' मजदूर क्षेत्रों के द्वारा यह भी घोषित किया गया है कि ब्रिटेन के सारे कारखानों का शीघ्र ही राष्ट्रीयकरण कर दिया जायगा जिसमें रेलवे, कोयले और लोहे की खानें, अन्य भारी सामान पैदा करनेवाले कारखाने तथा 'बैंक आफ़ इँग्लैंड' भी शामिल होगा।' प्रोफ़ेसर लास्की की एक घोषणा के अनुसार यह भी मालूम होता है कि 'मजदूरदल नष्ट होते हुए राजवंशों और पिसे हुए सामाजिक रीति-रिवाजों को और भी शीघ्र खत्म करने में सहायता करेगा।' अब देखना यही है कि मजदूर सरकार कहाँ तक विश्वव्यापी शान्ति, नये संसार-मार्ग तथा राष्ट्रीय औद्योगीकरण द्वारा संसार की जनता के रहन-सहन के दण्ड को ऊँचा करती है?

पर भारत की वैधानिक आकांक्षाओं का क्या होगा? अगर मजदूर सरकार पहले की तरह ही भारतीयों के प्रति लुकाछिपी का बर्ताव करेगी तो उसके सारे समाजवादी सिद्धान्त संसार के न्याय के सामने थोथे प्रमाणित हो जाएँगे। ब्लैकपूल कान्फरेन्स में श्री अर्नेष्ट बेविन ने भारत-सम्बन्धी एक घोषणा में कहा था कि 'मजदूर सरकार बनाते ही पहला काम इंडिया आफिस को तोड़कर 'डोमिनियन्स आफिस' में मिला देना होगा ताकि भारतीयों को यह विश्वास हो जाये कि उनका शासन अब सीधे ह्वाइट हाल से नहीं होता।' लेकिन ब्रिटिश मजदूर नेताओं को यह समझ लेना चाहिए कि इंडिया आफिस के एक जगह से दूसरी जगह बदल दिये जाने से ही भारतीय माँगें पूरी नहीं हो जातीं? भारत की भूख एक सांकेतिक कार्य द्वारा नहीं बुझ सकती। अगर एटली, मौरिसन व बेविन ने भारत के प्रति वही उदासीन व्यवहार किया जैसा कि वह चर्चिल की राष्ट्रीय सरकार में शामिल होकर करते रहे, तो ब्रिटिश मजदूर सरकार केवल नाम की ही समाजवादी होगी। समाजवाद संकुचित नहीं होता। समाजवाद के साथ साथ साम्राज्यवाद नहीं चल सकता। अगर ब्रिटिश मजदूर सरकार स्पेन के फ्रांको को निकाल कर आदर्श स्थापित करना चाहती है या संसार में एक नया 'आर्डर' लाना चाहती है तो भारत ही उसकी पहली तथा एकमात्र कसौटी है। आज प्रत्येक भारतीय आशाभरी दृष्टि से ब्रिटिश मजदूर-सरकार की स्थापना की ओर देख रहा है। इसलिए श्री एटली आदि को चाहिए कि वे शीघ्र इस ओर कदम उठायें नहीं तो उनके आदर्शों की कल्पना एक कोरी डींग और 'एमरी की अलाप' मात्र ही रह जायेगी। नई ब्रिटिश सरकार को संसार में अपने सदाशयता के जलाशय को परिपूर्ण करने के लिए तथा विश्वशान्ति के लिए 'अँगरेजो भारत छोड़ो' तथा 'साम्राज्यवादियो, विश्व छोड़ो' के ऐतिहासिक मार्ग को अपनाना ही श्रेयस्कर होगा।

अभी अभी प्रकाशित हुई है

भैरवी—तीसरा संस्करण—इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनायें, असली आर्ट पेपर में चित्र, बहुत अच्छी बँधाई और रैपर। मू० २॥≥)

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्तव

इस पुस्तक में लेखक की उत्तमोत्तम फुटकर कविताओं का संग्रह किया गया है। कविताओं की भाषा इतनी मधुर और कल्पना की उड़ान इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षण के लिए उसमें अपनी सुध बुध भूले बिना नहीं रहता। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

प्रथम खंड

राजनैतिक इतिहास

लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ए० हिन्दी में इस विषय का यह अद्वितीय ग्रथ है। इस पुस्तक पर लेखक को मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में इससे बड़ी सहायता मिलती है। मेहरौली का लौहस्तम्भ, भितरी की राजमुद्रा, कुमार गप्त का करमदण्डा का लेख की प्रतिलिपि चिकने काग़ज़ पर मुद्रित है। अच्छा काग़ज़, बढ़िया जिल्द बड़े आकार के २५० पृष्ठ। मूल्य केवल ४) चार रुपये।

द्वितीय खंड

सांस्कृतिक इतिहास

इस खण्ड में गुप्तकालीन शासन-प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मुद्रा, साहित्यिक विकास, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक दशा, धार्मिक दशा, भौतिक जीवन, ललितकला, वृहत्तर भारत और गुप्तयुग की महत्ता का वर्णन है। गुप्त राजाओं के समय की आर्य-संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले के आगे प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त संस्कृति का ऐसा विशद और प्रामाणिक विवेचन किसी भारतीय भाषा में शायद ही मिले। बढ़िया काग़ज़, अनेक चित्र, सुन्दर जिल्द, बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या साढ़े तीन सौ से ऊपर, मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के प्राचीन साहित्य शोध-विभाग के तत्त्वावधान में 'सूर्यमल चाखन' की स्थापना राजस्थानी भाषा और साहित्य तथा उससे सम्बन्धित समस्याओं पर वर्ष में तीन मौलिक लिखित भाषणों के आयोजनार्थ राजस्थान के स्वर्गीय महाकवि सूर्यमल के नाम पर मुनि जी श्री जिनविजय जी अध्यक्ष भारतीय विद्याभवन बम्बई तथा सभापति राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा हुई थी। इसका उद्घाटन-भाषण श्री जैनेन्द्रकुमार जैन दिल्ली ने किया था। इसके प्रथम भाषणकर्ता श्रीयुत रायबहादुर रामदेव जी चोखानी के भाषणों के बाद राजस्थानी भाषा और साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्रीयुत नरोत्तमदास स्वामी एम० ए० बीकानेर द्वितीय भाषणकर्त्ता मनोनीति हुए थे।

इसलिए अब द्वितीय भाषणकर्त्ता के भाषण 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' विषय पर आगामी १९-२०-२१ अगस्त को उदयपुर में हो रहे हैं। साथ ही 'राजस्थानी भाषा-परिषद्' की भी आयोजना हो रही है जिसमें बाहर के कई विद्वानों के भाग लेने की पूर्ण संभावना है।

—पुरुषोत्तमदास मेनारिया

* * *

जोधपुर में वस्त्र संकट गंभीर रूप धारण कर चुका है। पिछले कपड़ा वितरण के दिनों में दूकानों के सामने हजारों की भीड़ जमा रहती थी और जन-समूहों में धक्कामुक्की होने, कपड़े फटने और बटुवे खोने की कई घटनाएँ घटीं। पिछले दिनों से जोधपुर-लोकपरिषद् की ओर से शहर के कोने-कोने में १०० से अधिक नुक्कड़ सभायें की गई हैं और वार्डों में की जानेवाली वार्ड आम सभाओं में मिलाकर आज तक ५०,००० से अधिक लोगों ने भाग लिया है, जहाँ मौजूदा कपड़ा चोरी, मुनाफाखोरी व सरकारी उपेक्षापूर्ण नीति की निन्दा करते हुये जनसमितियों द्वारा कपड़े के वितरण एवं कपड़ा राशनिंग की माँग सरकार से की गई है।

यहाँ यह भी स्मरण रहे कि जोधपुर रियासत के लिये ब्रिटिश भारत से प्रतिमाह ११०० गाँठें और पाली मिल के उत्पादन का ८० प्रतिशत कपड़ा मिला हुआ है। पिछले पाँच महीनों में सरकार केवल $\frac{1}{3}$ कोटा ही दाखिल कर सकी है।

—संवाददाता

* * *

कालपी में श्री केदारनाथ मिश्र के निवासस्थान पर श्री हिन्दी-साहित्य-संघ की बैठक पं० झम्मनलाल जी हेडमास्टर मिडिल स्कूल के सभापतित्व में हुई, जिसमें संघ के पुनः कार्य संचालन के लिए पदाधिकारियों का चुनाव इस प्रकार हुआ—सभापति—श्री पं० छबीलाल जी पाण्डेय एम० एल-सी० (चेयरमैन डि० बोर्ड उरई) उप-सभापति—श्री झम्मनलाल जी हेडमास्टर मिडिल स्कूल, श्री रामेश्वर, दयाल जी द्विवेदी एम० ए० 'श्रीकर', प्रधान-मन्त्री पं० केदारनाथ मिश्र एम० ए०, साहित्य-मन्त्री पं० मोहनलाल जी सांडिल्य 'मोहन', कार्यालय-मन्त्री श्री गोविन्दशरण गुप्त 'गोविन्द', अर्थ-मन्त्री—श्री० ला० गौरीशंकर जी गुप्त, प्रचार-समिति श्री सेठ प्रेमसुखदास जी माहेश्वरी, श्री रामाधार जी 'कविराम', श्री बाबूप्रसाद जी पाण्डेय, संघ की ओर से श्री तुलसी-जयन्ती और मैथिलीशरण गुप्त की 'हीरक-जयन्ती' मनाई जा रही है।

—मन्त्री

* *

हैदराबाद (दक्षिण) हिन्दी प्रचार सभा की साधारण सभा का अधिवेशन समाप्त हो गया। आगामी वर्ष के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए हैं—उपसभापति, श्री बी० रामकिशनरावजी एडवोकेट प्रधान मंत्री, श्री जितेन्द्रनाथ जी 'वाम्रे'। उपमंत्री, श्री रामगोपाल 'संघी'। साहित्य समिति के अध्यक्ष, श्री गयाप्रसाद 'शास्त्री'। परीक्षा मंत्री, श्री गोपालराव 'अपसिंगीकर'। प्रचार मंत्री, श्री श्रीराम शर्मा। साहित्य मंत्री, श्री कमलप्रसाद 'कमल'। कोषाध्यक्ष श्री विश्वेश्वरनाथ 'गुप्त'। 'हिन्दी शिक्षण निधि समिति' के अध्यक्ष श्री पन्नालाल जी 'पीती' पूर्ववत् रहेंगे।

प्रतिवर्ष के अनुसार सभा की ओर से तुलसी जयंती मनाई जानेवाली है। श्रावणी तीज को राष्ट्र-कवि श्री मैथिलीशरण जी 'गुप्त' की हीरक-जयन्ती मनाने के लिए हिन्दी प्रचार सभा की ओर से यहाँ एक योजना की जा रही है।

—संवाददाता

* * *

इंदौर राज्य प्रजा-मंडल की ओर से अखिल भारतीय देशीराज्य लोक परिषद् के प्रधान मंत्री इंदौर, महीदपुर, भानपुरा, बड़वाह, खडावदा, कांटाफोड, खतिगाँव आदि शाखा-सभाओं ने गत ता० २५ जुलाई को स्वर्गीय देवसुमन दिवस मनाया। आम सभाएँ की गईं और श्री देवसुमन जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा टेहरी दरबार से निष्पक्ष जाँच की माँग की गई। भानपुरा प्रजा-मंडल ने राजस्थान भील-सेवक-संघ के संचालक श्री बालेश्वरदयाल जी की निर्वासन आज्ञा हटा लेने के संबन्ध में एक प्रस्ताव-द्वारा इन्दौर सरकार से प्रार्थना भी की।

—संवाददाता

* * *

पटना (सेवदह) श्री राजेन्द्र-साहित्य महाविद्यालय कृषि अवकाश में ११ अगस्त से १० सितम्बर तक बन्द रहेगा। इस बीच में बाहर के परीक्षार्थी यहाँ आने का कष्ट न करें।

हाँ, १६ अगस्त तक परीक्षार्थियों के आवेदन-पत्र लेने के लिए कार्यालय खुला रहेगा।

—प्रधानाध्यापक

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ९ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव-हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इधर उधर की

साबू के बाद दुर्गा मोटा

साबू को अलेग्जंडर कोडी ने ढूँढ निकाला था और दुर्गा मोटा को भारतीय फिल्म-संसार में प्रसिद्ध सेठ दलसुख पंचोली ने।

वैवल सम्मेलन के आकर्षण से मुख्य व्यक्तियों के झुण्ड हिमालय की पर्वत शृंखलाओं की ओर गये। दलसुख पंचोली के कामेडी स्टार दुर्गामोटा भी इन व्यक्तियों में से एक थे।

शिमला-सम्मेलन के समय जो अमरीकन पत्रकार वहाँ उपस्थित थे उनकी दृष्टि ६५० पाउण्ड वजनवाले दुर्गा मोटा पर पड़ी। दुर्गा मोटा की डीलडौल का उन पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने उसे चाय पीने का निमंत्रण दिया। दुर्गामोटा ने उसी दिन जीवन में पहली बार जी भर कर खाना खाया। दुर्गा मोटा ने दो पाउण्ड रोटियाँ, बारह आउन्स मक्खन और एक पाउण्ड पेस्टरी पर खूब हाथ साफ़ किये।

बाद में दुर्गा मोटा ने एक इन्टरव्यू देते हुए कहा—"चाय इतनी रसपूर्ण थी कि जी चाहता था कि और पिये जायें। इसके लिए मैं अमरीकन पत्रकारों का बहुत आभारी हूँ।"

दुर्गा मोटा अमरीका जाने
एक निमन्त्रण साथ लिए हु
वापस आ गये हैं। अमरीकन
उन्हें यह आश्वासन दिलाया है
उनकी खूब देख-भाल की जाये
दुर्गा-मोटा के सामने केवल एक
नाई है और वह है अँगरेज़ी भा

* *

हिटलरी गैस की प्रयोग

हिटलर ने गैस का प्रयोग
नहीं किया कि गत महायुद्ध में
जगह काम करते हुए उस पर
प्रयोग हुआ था। यह बात जर्मनी
ने मित्र राष्ट्रीय अधिकारियों को
जब कि मुएन्सटर में जर्मनी की
गैस प्रयोगशाला पर मित्रों का
गया। इन प्रयोगशालाओं पर
लगा था और जिनमें हजारों मन
गैस जमीन में गड़ी थी। प्रयोग
वर्ग मील में फैली हुई थी और
जहर से जर्मनी पर उगी हुई
सारी जल गई थी।

* *

भारतवर्ष में भिखमंगों की
१४ लाख के लगभग है इनमें से
अंधे हैं आधा लाख गूँगे, बहरे
लाख पागल हैं।

* *

THE UNITED COMMERCIAL BANK LTD · AT YOUR SERVICE

विश्वास दिलाने वाले
आँकड़े

विक्रीत मूलधन................४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन........२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन................७½ लाख रुपया

चेयरमैन
जी० डी० बिरला

शाखायें एवं एजेंसियाँ समस्त भारत तथा
विदेश में

जेनरल मैनेजर
बी० टी० ठाकुर

हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत

यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड।
हेड आफिस—२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।
ब्रांच आफिस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर

साप्ताहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

रोमांचकारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

ऐसी प्रतिज्ञा है, बताओ न।

किन्तु तुम निश्चिन्त होकर रहो। बिना मेरे उसका होगा। समझीं?

जाने किस काम के लिए, जैसे हरीश ने बाँस की आरम्भ की थीं उसी तरह रज्जो भी तोड़ रही हरीश को दाँत कुरेदने के लिए फिर तिनका न तोड़ना एकाएक रज्जो ने उफ़ किया।

एकदम चौंककर कहा—तुम्हारी भी वही दशा? अब तुम इनकी फाँस निकालो।

झटकर चिमटी से फाँस निकाल कर फेंक दी। उसने कहा—आयोडीन लगा दें? कहीं सेप्टिक रही।

कहा—थोड़ी-सी ही अवस्था में दाँत कुरेदते हो और सबको भोगना पड़ता है।

पर आयोडीन की बूँद टपकाते हुए कहा—— मनस्क हो गई थीं न? लड़कियों का स्वभाव। तब भी इसके लिए मैं कहता हूँ कि वह वर मन के अनुरूप होगा।

रज्जो द्रुतगति से कमरे में घुस गई। लक्ष्मी ने स्तम्' हो गया?

भी कहा—ठीक कहती हो। भगवान् सबको, नहीं तो दूसरा जन्म फाँस निकालने के लिए

—लो जल्दी करो। सिनेमा को देर हो रही है। खड़ी थी।

(१०)

इसी भाँति व्यतीत हो गये। रज्जो के पढ़ने- ठीक प्रबन्ध हो गया। रज्जो लक्ष्मी की स्नेह- दुख भूल गई। जब-जब कानपुर में हरीश आ आनन्द का ज्वार आ जाता और चले जाने पर का अति उच्छ्वास क्रमशः मन्थर हो की लज्जा अब उतनी अधिक नहीं रही, किंचित्

छुट्टी पर हरीश ने कहा——चलो आगरा, मथुरा परामर्शानुसार निश्चित दिन पर सुरेश, हरीश, चारों व्यक्ति यात्रा के लिए चल दिये।

रज्जो की मा से कहा—आओ बुआ जी, चलो तुम्हें में दर्शन करा लावें।

कहा—रहने दो बिटिया। हमारे लिए तुम्हीं सब मन चंगा तो कठौती में गङ्गा। मन नहीं चंगा गङ्गा।'

छोड़कर हरीश सबको लेकर पहले दिल्ली महान् दुर्ग, मुग़लों के विलास की मृत- की चाँदनी-सा मलीन, निर्जीव....... इतिहास के पन्ने उलटकर विदेशी मुग़लों सुनाने लगे। यही है वह प्राचीन इन्द्रप्रस्थ! यही है यमुना स्तम्भ जिसे अल्तमश मीनार कर दिया। की सीमा नहीं थी। इतनी बड़ी पृथ्वी! कहा—क्या इस पर चढ़ा नहीं जा जा सकता। हरीश ने कहा——चलो दीदी कीर्ति-समूह का दर्शन करके लक्ष्मी विस्तृत मैदान में एक जगह बैठ गई और लोग जाओ, भाई, मैं तब तक यहीं

तो हम तुम्हारा हाथ पकड़ कर ले चलेंगे। तो फिर रहने दो; सब लोग चलते तो... न, तुम लोग जाओ। सुरेश की ओर नहीं जाओगे क्या, जो बैठ गये हो?

सुरेश ने कहा——यह अभिशापित मैदान विलासी यवनों की आत्माओं से परिपूर्ण है। मुझे लक्ष्मण का कुण्डलिया खींचनेवाला मंत्र याद नहीं है। इसलिए तुम्हें अकेला छोड़कर कैसे जा सकता हूँ! साथ हो थका भी हूँ।

लक्ष्मी ने कहा——क्या प्रश्न था क्या उत्तर है! भले आदमी की बात है?

रज्जो भी सुरेश की ओर देख रही थी। हँसकर सुरेश ने कहा——ज्ञात होता है——समझ में नहीं आया।

झिड़की देते हुए लक्ष्मी ने कहा——न.......।

सुरेश ने कहा——जानती नहीं हो, निराश प्रेम की वेदना यहाँ की वायु में हाहाकार मचाती फिर रही है। कितने शहज़ादे, शहज़ादियाँ, बन्दे बाँदियाँ हृदय में निराश प्रेम की वेदना लेकर यहाँ से विदा हो गईं। उनके वासना भरे व्याकुल प्राण आज भी यहीं रूप-पिपासा लिए छटपटाते फिरते हैं। और जीवित विधर्मी दैत्य भी इसी खोज में घूम रहे हैं। किसके पहरे में तुम्हें यहाँ छोड़ जाऊँ?

लक्ष्मी ने बात काटते हुए कहा——अच्छा, अब बस करो। जितनी जितनी उम्र बढ़ती जाती है उतना-उतना इठलाना भी।

हरीश ने कहा——जीजा जी की जीभ तो थोड़ी सी कुतर ले।

सुरेश ने कहा——अरे दुर्वृत, इस रसना का रस तो तेरी दीदी ही जानती हैं, तू नहीं जान सकता। तभी......

घोर असभ्य! कहकर लक्ष्मी ने सुरेश को झिड़क दिया। सुरेश ने कहा——क्षमा करो, क्षमा करो प्रिये। इस भाँति अविनीत कभी न होऊँगा।

रज्जो को यह सरस प्रमोद-लीला बड़ी अच्छी लग रही थी। वह हँस रही थी।

लक्ष्मी ने कहा——अच्छा है, तुम जाओ हरीश, इनको पहरा देने दो।

रज्जो ने सलज्ज कण्ठ से कहा——यदि तुम्हीं नहीं जा रही हो, दीदी, तो मैं क्या करूँगी? वह कौन ऐसी चीज़ है जिसके बिना देखे काम न चलेगा।

लक्ष्मी ने कहा——नहीं नहीं तुम जाओ, देख आओ।

हरीश कैमरा लेकर इन लोगों की फोटो लेने का उद्योग कर रहा था। हरीश ने कहा——जीजा जी थोड़ा बाईं ओर और खिसक आइये। आपका आधा ही फोटो आ रहा है।

सुरेश ने कहा——अजी आधा ही रहने दो। आधा गङ्गा में बह गया समझो।

लक्ष्मी ने हँसते हुए कहा——पढ़े-लिखे आदमी यह नहीं जानते कि कहाँ गङ्गा है, कहाँ यमुना।

सुरेश ने कहा——ओह हो! भूल गया। इतना कहकर, लक्ष्मी से सटकर खड़ा हो गया।

हरीश ने कहा——जीजा जी, आप भद्दे आदमी हैं।

सुरेश ने कहा——ज्ञात होता है तुमने कभी शंकर की अर्द्ध नारीश्वर मूर्ति नहीं देखी। अतः आज दर्शन कर लो।

लक्ष्मी ने कहा——वकीलों के झूठे तर्क में क्या रक्खा है। तुम फोटो लो और रज्जो को जल्दी ले जाओ। कुतुब पर चढ़कर देख आओ।

हरीश फोटो लेकर सलज्ज रज्जो को आगे-आगे करके कुतुब पर चढ़ने लगा।

सीढ़ियों का कोई अन्त नहीं था। रज्जो का श्वास फूल उठा और पैर उठाना कठिन हो गया। हरीश ने कहा——थक गईं क्या?

रज्जो ने मधुर हँसी हँसते हुए कहा——भई अब पैर नहीं उठते।

हरीश ने कहा——दो-चार सीढ़ियों के बाद थोड़ी खुली जगह मिलेगी, वहीं सुस्ता लेना। हाथ पकड़ लूँ क्या?

रज्जो ने लज्जित होते हुए कहा——नहीं नहीं। कुछ सीढ़ियाँ चढ़कर दोनों ही बैठकर सुस्ताने लगे।

हरीश ने कहा——यह कुतुबमीनार महाराज पृथ्वीराज की कन्या का कीर्ति-स्तम्भ है। उनकी कन्या यमुना इस पर चढ़कर नित्य प्रति यमुना जी के दर्शन किया करती थीं। इसका पुराना नाम यमुना-स्तम्भ था। पीछे से कुतुबुद्दीन ने उसको भंग कराकर, उसमें कुछ परिवर्तन करके इसका नाम कुतुबमीनार रख दिया।

—क्रमशः

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

August, 1945

लि
डा॰
निकल र
पता–संगीत

अपन

लेखक, श्रीयुत चन्द्र

मनुष्य के चरित्र में कि दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत सकता है, यह बात इस पुस्तक में ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है—और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।||) बारह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस,
लिमिटेड, प्रयाग।

असह्य सिर दर्द से वह एकदम बरी हो गई

क्योंकि वह क्रुशेन साल्ट सेवन करने लगी

इस स्त्री के सिर की पीड़ा यदा-कदा वाली नहीं थी। किसी गोली अथवा टिकिया से किसी भी प्रकार का फायदा नहीं होता था। उसका रोग प्रारम्भिक चिकित्सा के मान का नहीं था किन्तु जब क्रुशेन ने रोग की जड़ ही उखाड़ना आरम्भ किया तो उसका सारा दर्द सहज में ही जाता रहा।

वह स्त्री इस प्रकार लिखती है, "मुझे भयंकर सिर दर्द हुआ करता था। असह्य पीड़ा होती थी किसी भी प्रकार की गोली अथवा टिकिया से किसी भी प्रकार का लाभ नहीं हुआ। एक दिन सवेरे मैंने साधारण रूप से एक गिलास गर्म पानी के साथ क्रुशेन का सेवन किया। बाद में नियमित रूप से क्रुशेन सेवन करती रही और तब से मुझे यह भयंकर सिर दर्द नहीं हुआ। क्रुशेन अन्य दवाओं से मुझे उपयोगी प्रतीत हुआ। मैंने इसे बहुत ही लाभदायक पाया। —श्रीमती एल॰ ए॰ डब्लू॰

इस भयंकर सिर दर्द का कारण प्रायः शरीर का मल हुआ करता है जिससे रक्त में विष फैल जाता है। क्रुशेन साल्ट के ६ प्राकृतिक लवण से शरीर की सारी इंद्रियाँ अपना काम सुचारु रूप से करने लगती हैं और शरीर में जमे हुए विष को निकाल बाहर करती हैं। आपका भीतरी शरीर एकदम साफ तथा शान्त हो जाता है। इस प्रकार सिर दर्द, चेहरे का पीलापन, नेत्र का धुँधलापन आदि जाता रहेगा। आपका शरीर क्रुशेन की कभी अवहेलना नहीं कर सकता। मात्रा बढ़ाने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। सिर दर्द दूर हो जाने के बाद क्रुशेन के सेवन से आपके शरीर का क्रम नियमित रहता है।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे दवाखानों तथा दूकानों में मिलता है।

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के प्राचीन
साहित्य शोध-विभाग के तत्त्वावधान में
'सूर्यमल चासन' की स्थापना राजस्थानी ।
भाषा और साहित्य तथा उससे सम्बन्धित में
समस्याओं पर वर्ष में तीन मौलिक लिरि
भाषणों के आयोजनार्थ राजस्था लटकती
स्वर्गीय महाकवि सूर्यमल के नाम था मचान
जी श्री जिनविजय जी अध्यक्ष तर्ज के साथ
विद्याभवन बम्बई तथा सभापति तरह कोई एक
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा देश की वही
इसका उद्घाटन-भाषण पर बैठी वही सुन
जैन दिल्ली ने किया।
भाषणकर्ता श्रीयुत गौरिया रुकी, किन्तु
चोखानी के भाल भर भी चकित न हुई।
भाषा और से बोली, 'मचान के नीचे से
श्रीयुत को निकाल दे।'
वीक। उसने मोढ़ा निकाल दिया। छाते को
थे न में लटकाकर वाटर प्रूफ़ को हाथों
में लटकाकर बैठ गया, किन्तु उससे क्या कहूँ? कहाँ तो मैंने सोचा था, मुझे देखकर वह मेरा स्वागत करने में निहाल हो उठेगी, किन्तु इसके बदले एक ऐसे ढंग का मुँह उसने बना लिया जैसे मैं आनन्दोत्सव में उद्यत एक मृत्यु-दण्ड की भाँति आ बैठा हूँ। कहाँ है उसकी वह छलना, और कहाँ है उसकी वह छुरी!

दासी से वह बहुत गम्भीर होकर बोली, 'तू भीतर जा, बाबू के साथ मुझे कुछ बातचीत करनी है।'

नाम के पहले और बाद में मैं 'बाबू' शब्द नहीं पसन्द करता, यह बँगला भाषा से अनजान गौरिया के जानने की बात भी न थी, फिर भी जान पड़ा कि इस बात में उसने जान-बूझकर ही अवज्ञा दिखाई है। किन्तु फिर भी वृष्टि-ध्वनि के क्षण में कुछ एकाकीपन दिखाई पड़ा, यह जानकर मैं प्रसन्न हुआ।

किन्तु गौरिया की बात गौरिया ही जाने। सड़क के दोनों किनारे की नालियाँ जल से भर गईं। गौरिया एकाग्र चित्त से रामायण के पृष्ठ उलटती जा रही है।

अन्त में मैं ही बोला—सचमुच ही तुमसे कुछ कहना है। कहूँ?

नीची दृष्टि और रूखे गले से गौरिया बोली, 'यदि अनुचित न हो तो कहिये।'

'नहीं, यह भी कोई बात है, भला अनुचित बात मैं कह सकता हूँ' इसके बाद सूखा कण्ठ कुछ साफ करके मैं बोला, 'इतनी रात में, अभी भी तुमने अपनी दूकान क्यों खोल रक्खी है?'

वह आँखें उठाकर थोड़ा हँसी। बोली, 'खुली न रखने पर वर्षा से भीगे लोग आकर खड़े कहाँ होंगे?'

यह वाक्य-बाण मेरे ही ऊपर उसने छोड़ा है, ऐसा समझते मुझे देर न हुई।

ठीक इसी समय कोई एक व्यक्ति पानी में राग अलापते अलापते दूकान में आ खड़ा हुआ। दूकान में घुसकर वही गान आडम्बरपूर्ण भाव-भंगी में रूपान्तरित हुआ जा रहा था, मुझे देखकर वह व्यक्ति अचानक दाँतों के नीचे जीभ दबाकर स्तम्भित हो गया।

ताक के ऊपर से एक शीशी उतार कर गौरिया बोली, 'यह है तुम्हारा तेल', और एक पोटली निकालकर, 'यह है तुम्हारा नमक।' कहकर दासी को पुकारा। बोली भीतर एक छाता है न? उसे दे दे, तीन कोस के लगभग उसका गाँव है, वह घर चला जाय।'

समिति श्री। छाते को निकाल लाई। गौरिया श्री रामाधक्त से बोली, 'जल्दी भाग। अभी जी पाएँनी बरसने लगेगा।'
जयन्ती वह सर पर छाता लगाकर चला गया गुनगुनाता हुआ। दूर से उसके सुरीले कण्ठ की गीत मैंने सुन पाया।

गौरिया ने मेरी ओर व्यथित नेत्रों से देखा। बोली, 'अब आप भी मकान जाइये बाबू साहब। नहीं तो इसके बाद यदि फिर कोई आ जाय, तो उसे भगाने के लिए आप का ही छाता उसे देना पड़ेगा और यह ठीक न होगा। आप घर जाइये।'

शब्दों से बढ़कर शब्द का स्वर बहुत ही अच्छा लगा। मैंने कहा, 'वर्षा न रुकने तक अपनी इस जगह पर थोड़ी देर बैठने देने में भी तुम्हें आपत्ति है?'

'है।' गौरिया नीरस स्वर में बोली, 'यह जगह अच्छी नहीं है।'

'उससे मेरा क्या! बाहर वृष्टि हो रही है, इसी से यहाँ कुछ देर के लिए बैठा हुआ हूँ और तो कुछ नहीं।'

'किन्तु निर्धन के घर में मुक्ता का हार देखने पर लोग तो उसे चोरी का धन ही समझकर सन्देह करते हैं, बाबू साहब।' गौरिया की सम्पूर्ण आकृति जैसे वेदना से नम्र हो आई:—'इससे निर्धन और भी निर्धन हो जाता है, फिर, इससे मुक्ता का भी वह मूल्य नहीं रह जाता। आप घर जाइये।'

'वाह, विपद् में पड़कर क्या तुम्हारे यहाँ आकर कोई खड़ा न होने पायेगा?'

'किन्तु मुझे तो भय लगता है बाबू साहब, यहाँ आकर तुम विपद् में न पड़ जाओ।' गौरिया कुछ चंचल हो उठी, 'अभी भी बहुतेरे पंसारियों को सौदा ले जाना बाकी है। वर्षा के कारण निश्चय ही कहीं राह में रुके होंगे। तुम्हें वे लोग यहाँ देखेंगे, सूखा छाता और सूखी बरसाती लिये मोढ़े के ऊपर सूखे मुँह बैठे हुए, यह मैं किसी भी प्रकार न देख सकूँगी। मैं हीन हूँ, किन्तु तुम भी हीन होगे, यह देखते ही मेरा हृदय फट जायेगा, बाबू साहब।'

यह कह कर ही उसने दासी को पुकारा; बोली, ताड़ के पत्तेवाले छाते को लगाकर जमाल को बुला ला उसके घर से। गाड़ी बाहर निकालना होगा। बाबू साहब को पहुँचा आयेगा उनकी कोठी।'

मैं उठ खड़ा हुआ। 'नहीं, 'नहीं, गाड़ी क्यों? पैदल ही चला जाऊँगा।'

बरसाती कोट शरीर पर ओढ़कर सड़क पर उतर आया। पीछे से गौरिया बोली, 'नमस्कार।'

मैंने फिर कर देखा तक नहीं। प्रायः ऊर्ध्व स्वाँस से ही निकल आया। कब कोठी पहुँच कर इस धोती और कुर्ते को उतार कर फिर, परिचित कमीज और नेकर से सुशोभित होऊँगा, इसके लिये ही हाँफ उठा। प्रतीत हुआ एक अथाह अपमृत्यु से ईश्वर ने मेरी रक्षा की है। लेकिन क्या वह ईश्वर है?

केवल वह दूकान ही नहीं, वह शहर भी मुझे छोड़ना पड़ा। इसी से डलहौजी स्कायर में अनेकों दौड़-धूप और सिफारिश करने के बाद मेरी बदली हो सकी।

माल-असबाब पहले ही रवाना हो चुका है, बाद में मैं, अकेला; कहना अधिक होगा, जमाल की गाड़ी पर नहीं; स्टेशन पर एक छोटी-मोटी भीड़ होगी और बहुतेरे लोगों के साथ अनेक प्रकार की रटी-रटाई मालूमी बातचीत करनी होगी, इसी भय से ट्रेन छूटने को कुछ ही समय रहते मैं रवाना हुआ।

गौरिया की उसी दूकान की बगल से होकर गाड़ी जा रही है। मैंने देखा गौरिया मचान के ऊपर नहीं है। गमले खाली पड़े हैं, प्रतीत हुआ कि इन्हीं कई दिनों में मकान की श्री उतर गई है। सोचा, जाते समय उसे एक बार देख सकूँ तो बहुत अच्छा होता।

देखा, समीप के उसी पोखरे के किनारे एक सूखी शाखाओं वाले वृक्ष के नीचे खड़ी होकर वह मेरा जाना देख रही है। मेरे साथ दृष्टि मिलते ही वह थोड़ा-सा मुस्कुराई। उसकी जरा-सी मुस्कुराहट कैसी मोहिनी थी, यह विस्तृत रूप से वर्णन करूँ, ऐसी शक्ति मुझमें नहीं है। दुःख के प्रातःकाल की भाँति विषाद में निर्मल, विरह में करुण की वह हँसी।

दुःख को, क्षति की अपरिमेय
साधारण हँसी से फूल की
खिला देना होगा, यदि ऐसी
संसार में होती हो, तो उस
गौरिया ने 'फुल-मार्क' पाया है।
इतनी देर तक किसी भी
ओर न देखा था। मैंने आज
कितना विषाद, कितना स्नेह और
शान्ति है।

गाड़ी कुछ दूर चली
बोला, 'विदा, गौरिया।'

गौरिया ने शायद
किन्तु जाते समय उससे
रहा हूँ, यह सोचकर उसने
आँखें छिपा लीं।

इतने दिनों बाद
परदेश नौकरी करने जा रहा हूँ।

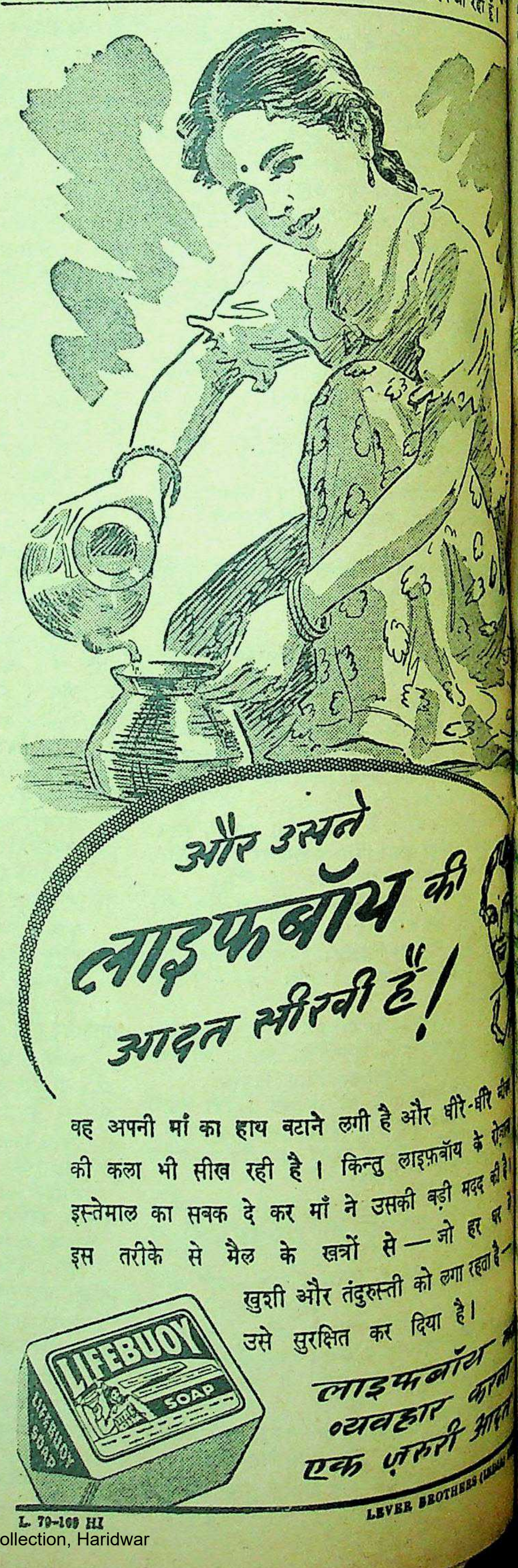

और उसने लाइफबॉय की आदत सीखी है!

वह अपनी मां का हाथ बटाने लगी है और धीरे-धीरे
की कला भी सीख रही है। किन्तु लाइफ़बॉय के
इस्तेमाल का सबक दे कर माँ ने उसकी बड़ी मदद की है।
इस तरीके से मैल के खत्रों से — जो हर
खुशी और तंदुरुस्ती को लगा रहता है —
उसे सुरक्षित कर दिया है।

लाइफबॉय
व्यवहार करना
एक ज़रूरी आदत

LEVER BROTHERS

L. 79-109 HI

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

August, 1945

एण्डरूजकी प्रतीक्षा कीजिये!

वह दिन दूर नहीं जब सफ़ाईकी व्यवस्था सरल होगी और ...लिवर साल्ट काफ़ी परिमाणमें प्राप्त हो सकेगा। यह वही ... जिसे आप अर्सेसे जानते हैं, जो पूर्ण विशुद्ध है, वैज्ञानिक ... किया स्वास्थ्य विज्ञानके नियम पर आश्रित है। ... कृपया सब्र कीजिये......प्रतीक्षाके फलस्वरूप एण्डरूजसे ... लाभ उठायेंगे। आन्तरिक सफ़ाई द्वारा हर रोज स्वास्थ्य ... के लिये हर जगह इसकी प्रशंसा हो चुकी है। ... दिन आप पुनः ताजगी और स्फूर्तिदायक एण्डरूजके ... आनन्द ले सकेंगे।

LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT
आदर्श रेचक

...सवेरे का

ANDREWS

एण्डरूज

आन्तरिक सफाई के लिये

...सफाई स्वास्थ्य का प्रथम नियम है

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

...डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें, ...के कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालैनी ..., पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

ELGIN

it's good!

...एल्गिन मिल्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर।
सोल सेलिंग एजेण्ट्स:—
...नारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर।

कपड़े

क़िस्में

पर— कपड़

अधिक

सरकार के कहने पर कपड़े के कारख़ाने इस बात पर राज़ी हो गये हैं कि कपड़े और सूत की कुछ सीमित क़िस्में ही तैयार की जायं, जिससे हिन्दुस्तान के लोगों को अधिक परिमाण में कपड़ा और सूत मिल सके।

इस अच्छी योजना के कारण वर्ष में कपड़े के कुल उत्पादन में लगभग ४० करोड़ गज़ की वृद्धि हो जायगी। भविष्य में कारख़ानों का ९० प्रति शत उत्पादन निम्नलिखित क़िस्मों पर निर्भर होगा:—

धोती
चादर
क़मीज़ का कपड़ा
मलमल
ड्रिल
कोट का कपड़ा

लट्ठा
चद्दर
वायल
ड्रिल
टसर
तौलिया

फ़ौजों के लिए कपड़े की मांग और निर्यात में कमी हो जाने से और अधिक परिमाण में कोयला मिलने के कारण भी अब कई करोड़ गज़ अधिक कपड़ा तैयार किया जा सकेगा।

जितने कपड़े की अभी आवश्यकता हो केवल उतना ही ख़रीदिए, जिससे आपके ग़रीब भाइयों को भी काफ़ी कपड़ा मिल सके। अब हर महीने कपड़ा अधिक परिमाण में बनाया जा रहा है।

बात समझ लीजिए और

ख़ातिर जमा रखिए

डिपार्टमेण्ट आफ इण्डस्ट्रीज़ ऐण्ड सिविल सप्लाइज़,
नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

AAA 346

...निबन्धावली—लेखक, महापंडित ...सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल ... तथा साहित्यिक और दार्श- ... संग्रह किया गया है। इसमें कुल ... है और राहुल जी ने देश और ... की दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान-राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर हिन्दी विद्यापीठ के प्राचीन
साहित्य शोध-विभाग के तत्त्वावधान में
'सूर्यमल चाखन' की स्थापना राजस्थानी
भाषा और साहित्य तथा उससे सम्बन्धित
समस्याओं पर वर्ष में तीन मौलिक लिखि
भाषणों के आयोजनार्थ राजस्था
स्वर्गीय महाकवि सूर्यमल के नाम
जी श्री जिनविजय जी अध्यक्ष
विद्याभवन बम्बई तथा सभापति
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा
इसका उद्घाटन-भाषण
जैन दिल्ली ने किया
भाषणकर्ता श्रीयुत
चोखानी के भ
भाषा और
श्रीयुत
वीको
था थे।

समिति श्री
श्री रामाध
जी पाण्डे
जयन्ती
जन्म

म्पनी लि०

रा

मबर्ड एस्टेट बौंड
लटक]ered Estate Bond]

खरीदतो है

सज्जन बौंड बेचना चाहें
वे दफ्तर में आकर मिलें
अथवा पत्र-व्यवहार करें

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता ... मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० · जवाकुसुम हाउस · कलकत्ता

"केवल सर्वोत्तम" – शाही हिन्दुस्ता
हवाई बड़े के विमान चालकों में मुख
मुख्य गुण प्रायः एक से होते हैं, और उन
जो सबसे बड़ा गुण होता है वह है साह
जो कार्य वे लोग आज कल कर रहे
वह दोहरी विशेषता रखता है। इन
पहला उद्देश्य है जापानियों पर विज
प्राप्ति, और दूसरा है अनुभव तथा योग
ता प्राप्त करना, जिससे लड़ाई में जीत
बाद नागरिक अभियान की उन्नति
लिए हिन्दुस्तान की सेवा की जा सके
साहसी तथा पराक्रमी नवयुवकों
इस शानदार दल में सम्मिलित होने
लिए अभी और बहुत से नवयुवकों
आवश्यकता है। केवल सर्वोत्तम व्य
ही यह कार्य कर सकेंगे, क्योंकि इसके लि
असाधारण साहस एवम् पराक्रम आ
श्यक होता है। भरती होने के निय
आप किसी भी भरती अफसर से पू
सकते हैं।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७॥)
=)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१९ अगस्त, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 19th August, 1945

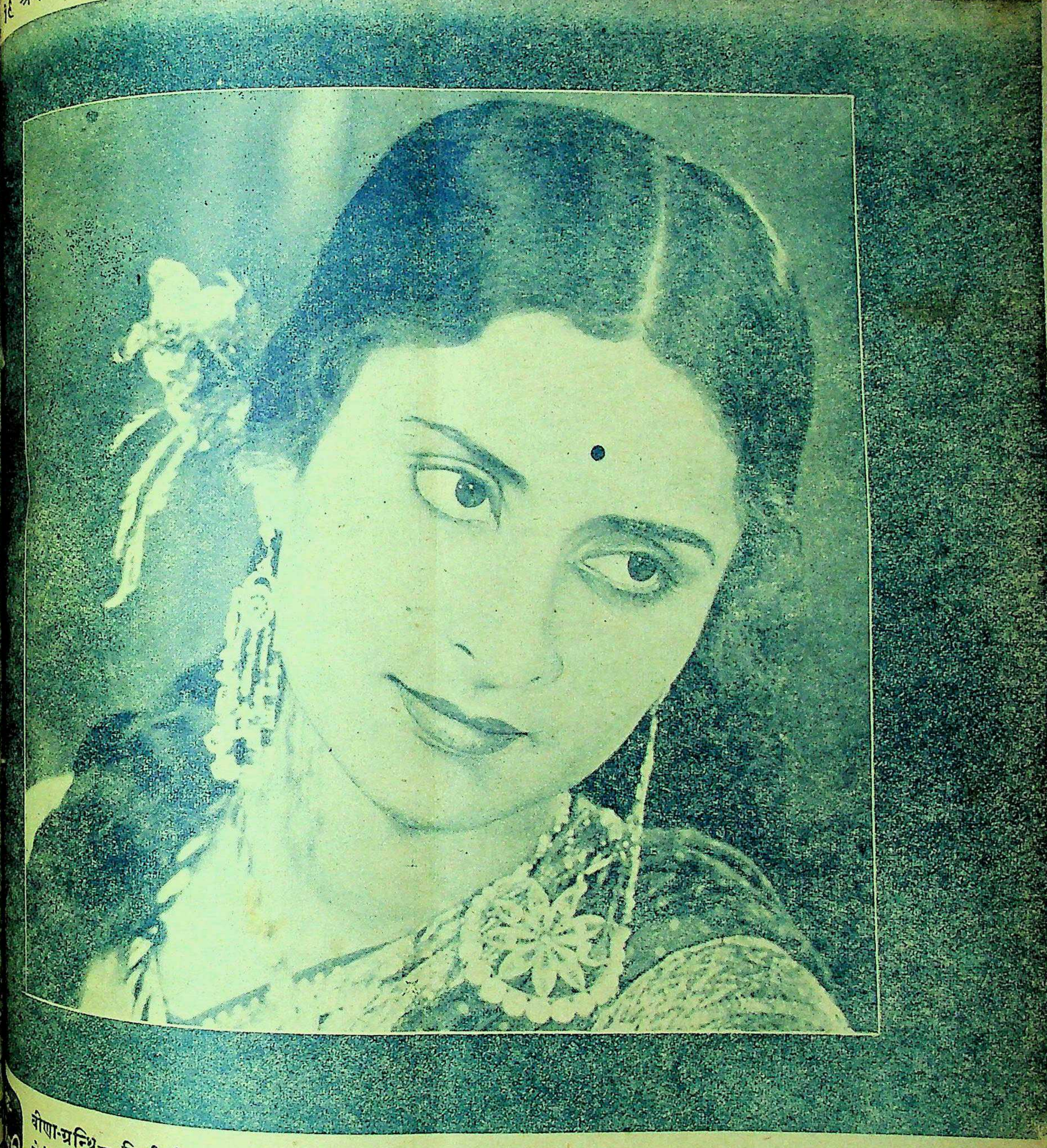

वीणा-ग्रन्थि—हिन्दी के युगान्तरकारी कवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त की दो प्रख्यात पुस्तकों का यह सम्मिलित संस्करण है। ये दोनों पुस्तकें पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुकी हैं और इनके द्वारा पन्त हिन्दी के चोटी के कवि बन चुके हैं। पन्त की कला का जो रूप इन पुस्तकों में प्रकट हुआ है, वह अन्यत्र नहीं मिलता। वीणा मौलिक कविताओं का संग्रह है और ग्रन्थि में कवि ने एक छोटे-से कथानक को अपनी कल्पना-द्वारा विकसित कर एक खण्ड-काव्य की रचना की है। मूल्य २) दो रुपये।

प्रतिनिधि सभा
श्यामसुन्दर दास !

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

भारत अपने आप स्वयं स्वतंत्र होगा ?
वह कौन था (कहानी) वह कलंकिनी थी?

प्रकाशित हो गया—

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मंगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २), डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

AAA 161 HINDI

ये हैं इनकी चालें-

इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

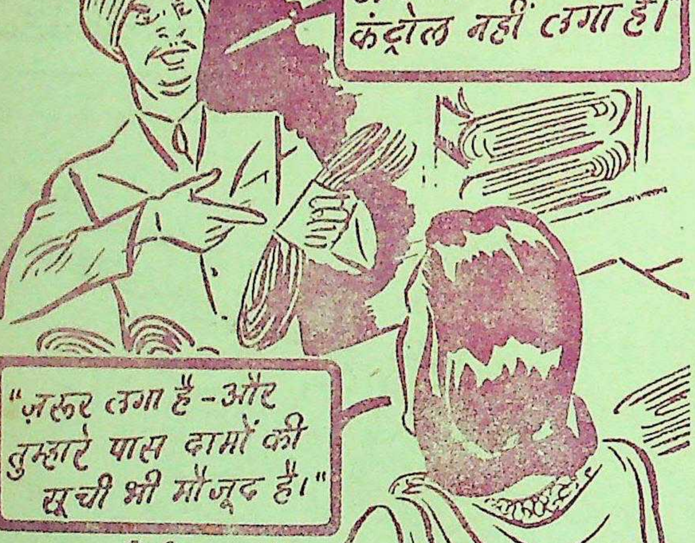
"ऊन के दामों पर कंट्रोल नहीं लगा है।"
"ज़रूर लगा है-और तुम्हारे पास दामों की सूची भी मौजूद है।"

बेशक उसके पास सूची है, पर वह ग्राहक को धोखे में डालने की कोशिश कर रहा है। बात ठीक से समझ लीजिए। इससे आप मुनाफ़ाखोरों और ब्लैक मार्केट के व्यापारियों को मात दे सकते हैं।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक मार्केट ख़त्म हो जायगा

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित

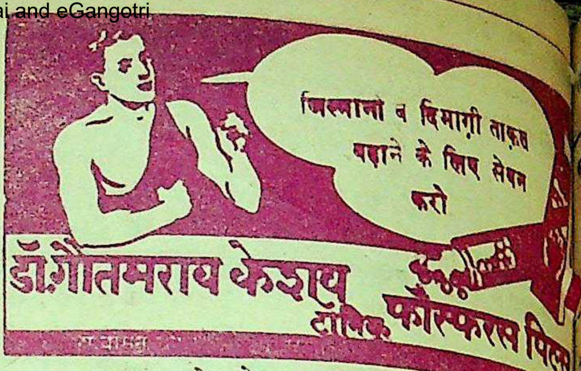
जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराव केशव
टॉनिक फौस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी
एल० एस० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४८ बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) भी वैसी ही अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है और इस समय बड़ी और छोटी दोनों तरह की रकमें लगाने के लिए सब से अच्छी मद है। जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई तिबन्ध नहीं।

इस ऋण की ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत है और गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। अगर इससे पहले आप नक़द रक़म प्राप्त करना चाहें, तो इस ऋण को हर समय मार्केट में बेच सकते हैं।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम-टैक्स काटने के बाद, साल दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी चुका दिया जायगा और सरकारी आपके घर पर पहुँच जाया करेगा। आप साधारण चेक की भाँति सकेंगे। आपको यह संतोष भी प्राप्त कि आप हिन्दुस्तान की सहायता रहे हैं, क़ीमतों को घटा रहे हैं अच्छा ब्याज भी पा रहे है।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, दिल्ली, और कानपुर में रिज़र्व आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया शाखाओं या किसी सरकारी ख़ज़ाने ख़रीद लें।

रुपया बचाइए और ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन १९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा

श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-सूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि की उच्छृंखल एक विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

देखवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपये।

(बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इस सिलसिले को यह दिखाने के लिए प्रकाशित किया जा रहा है कि असावधानी की बातचीत, वह चाहे निर्दोष ही क्यों न हो, शत्रु को लाभ पहुंचा सकती है।

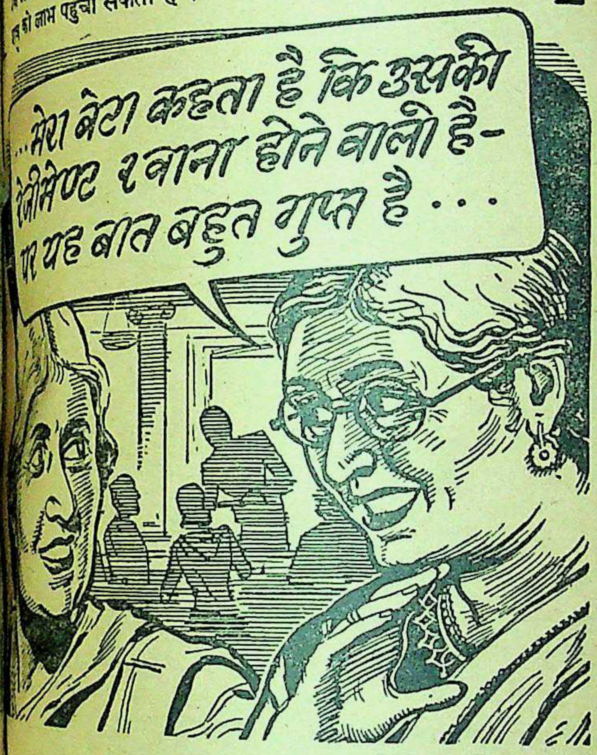
...मेरा बेटा कहता है कि उसकी रेजीमेण्ट रवाना होने वाली है- पर यह बात बहुत गुप्त है . . .

क्या आश्चर्य है कि इन महिला ने, जो अपनी समझ से बहुत सावधानी बरत रही हैं, एक महत्वपूर्ण सैनिक योजना का भेद दिया हो। दुश्मन का धुन का पक्का कोई जासूस बड़ी आसानी से यह मालूम कर सकता है कि यह कौन सी रेजीमेण्ट है और कहां जाती। इस प्रकार हरकत करने वाली दूसरी रेजीमेण्टों का भी वह मालूम कर सकता है। इस तरह की छोटी छोटी बातों को आपस में जोड़ कर, संभव है, वह बर्मा में नई फ़ौज के जाने अथवा हमारे नये आक्रमण का पता लगा ले। ज़रा सी बात मुंह से निकालने में भी कितना बड़ा ख़तरा रहता है!

यह बात ठीक से समझ लीजिए कि दुश्मन के जासूस छोटे छोटे टुकड़ों को जोड़ कर पूरी बात का पता लगा लेते हैं। किसी रेजीमेण्ट की हरकत, जहाज़ की रवानगी की तारीख, जंगी कारखानों में सामान की तैयारी— इस प्रकार की असंबंधित बातें बड़े काम की होती हैं। अपने सैनिकों को सहायता पहुंचाने, उनकी जानों की रक्षा करने तथा शत्रु पर सफलतापूर्वक आकस्मिक आक्रमण करने का केवल यही एक निश्चित उपाय है कि आप जंगी तैयारियों का बिलकुल ज़िक्र न करें—ज़रा सा भी भेद दुश्मन को न मिलने पाये।

बातचीत में सावधानी उचित है

भारत सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित। AAA 143

फ़िल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

LUX TOILET SOAP

माया बॅनर्जी

"मै नियमित रूपसे लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूं इससे मेरी अंगकांति बेदाग, और मुलायम रखनेमें मुझे कोई कठिनाई नही पड़ती"—यह है मायाका कहना। इस खुशबूदार साबुन का तेज फेन, मैल और बदीको, शरीर के छिद्रोंसे दूर रखता है इससे अंगकांति मृदु, मुलायम और मोहक हो जाती है। बहुतसी हिंदी फिल्म स्टार लक्स टॉयलेट साबुन नियमित रूपसे इस्तेमाल करती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 124-111-40 HI LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

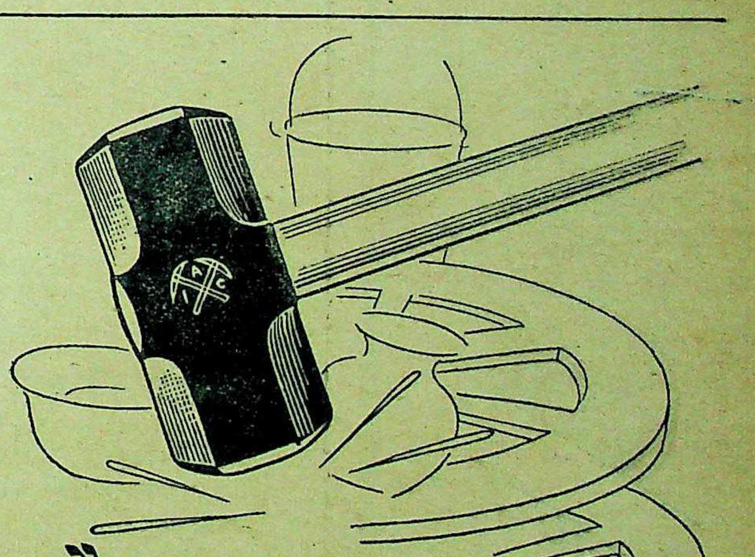

हथौड़ा . . . . . .

अभी भारतवर्ष के लोहारखाने कार्य्य में व्यस्त हैं परन्तु शान्ति-स्थापन के साथ उनके कार्य्य और भी अधिक बढ़ जायेंगे।

लोहे और इस्पात का उद्योग-धंधा, साधारण परन्तु मजबूत हथौड़ा लोहार के हाथों में दे ज्वलन्त धातुओं को अत्यावश्यक आकारों में परिणत कर प्रगति के चक्कों को चलायमान करने में सहायता दे रहा है।

A I C
TRADE MARK

AGRICO TOOLS
एग्रिको औज़ार

यू० पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिमी
सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध
के डिस्ट्रिब्यूटर्स।
मेसर्स मोहम्मद दीन ऐंड सन्स,
ग्रैन्ड ट्रङ्क रोड, अमृतसर,
बन्दर रोड, कराची।

ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड,
(एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमूरी द्वारा प्रचारित।

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था. १९२६
स्वदेशी
आरोम १८६६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़
युकॅलिप पेन बाम
दाद का मरहम
खाण्डालेकर बन्धु
बम्बई ४

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी
अनुराग
कलंक
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥
टाल्सटाय की कहानियाँ

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

लावण्यं का सार

टाटा का ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

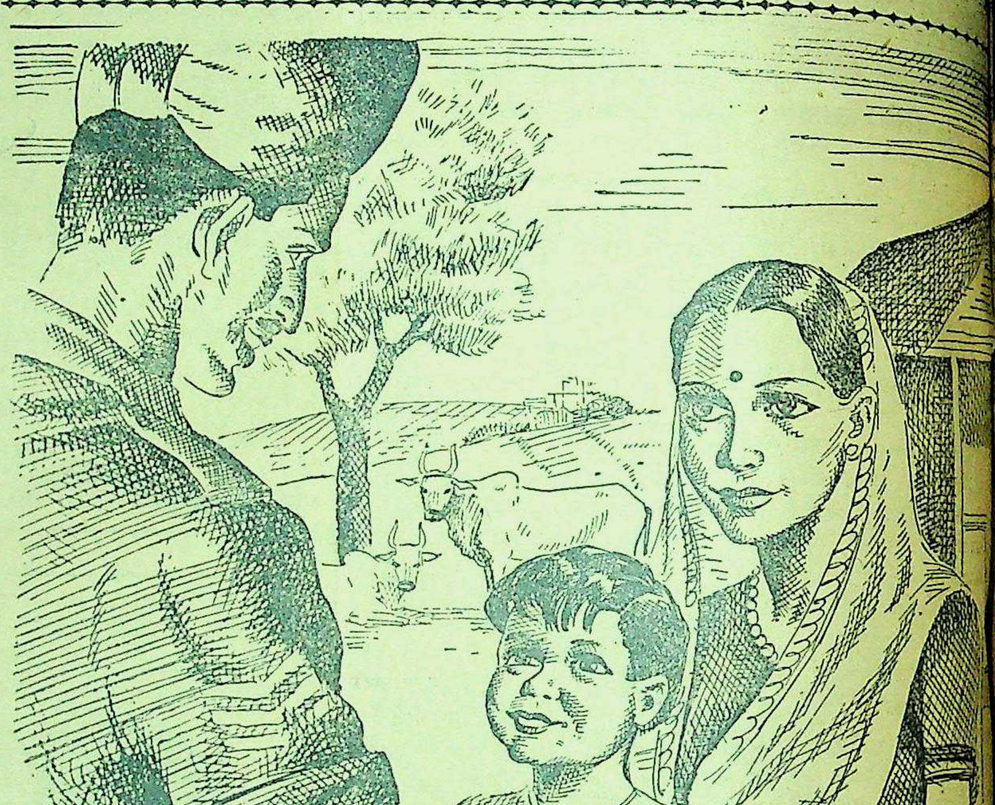

यह शुभ घड़ी आयेगी

युद्ध समाप्त हो गया। वह कुशल-मंगल घर लौट आया है। वह अब दुबारा न जायगा। आनन्द के आँसू आंखों में भरे हुए उसकी पत्नी उसका स्वागत कर रही है। उसका पुत्र जिसे वह मां की गोद में छोड़ गया था उसकी ओर गंभीर भाव और गर्व से देख रहा है। यह शुभ घड़ी अनेक परिवारों में अवश्य आयेगी, जब जापान के विरुद्ध छिड़ा हुआ संघर्ष सफलतापूर्वक समाप्त हो जायगा।

साथी राष्ट्र युद्ध का अन्त शीघ्र लाने के लिए भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। पूर्वी क्षेत्र में शस्त्रास्त्र बहुत बड़े परिमाण में लाये जा रहे हैं। भारी सेनायें हमारे जवानों के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर लड़ने को चली आ रही हैं। युद्ध का अन्त हमारी जीत पर होगा। इस प्रश्न का उत्तर कि 'हमारे वीर सैनिक कब लौटें बात पर निर्भर है कि हमारे देशवासी युद्ध-प्रय किस प्रकार सहयोग करते हैं। हमें अपनी कोशि ढील नहीं दिखानी चाहिए। हमें बड़े साहस और संकल्प के साथ युद्ध-कार्यों में सहयोग करते रहना चा

जापान के वहशी और पाशविक सेनापति हैं कि युद्ध लम्बा हो जाय, जिससे तंग आ कर दुश्मन से समझौता कर लें और तमाम देश और जो उन्होंने सीनाज़ोरी से हथिया लिया है उनके में छोड़ दें। किन्तु हम उनको एक दिन के लिए की समाप्ति में अनावश्यक विलम्ब लगाने का अवसर देंगे। एक एक दिन जो बीत रहा है, हमारे अनेक सै नाविकों और विमान-चालकों की भेंट लेकर आता

हमें अपने कल्याण के लिए युद्ध में शीघ्र से शीघ्र विजय प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, जिससे मानव-जाति सुख एवम् सम्मान से शांति का उपभोग कर सके।

हमारा युद्ध जारी है....

डिपार्टमेंट आफ इनफर्मेशन एण्ड ब्राडकास्टिंग, गवर्नमेंट आफ इण्डिया द्वारा प्रकाशित। AAA

वर्ष ७ संख्या ५१] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, १९ अगस्त, १९४५

सीधो-टेढ़ो-खरो-मजेदार

की स्मृति में हिन्दी संसार में जयंतियाँ मनाई गई हैं।

है कि वर मरे या विवाह तो खत्म हुआ। और कौन जिन्दा रहे, होता ही रहेगा किन्तु व्यापी दानवी युद्ध तो जो एशिया में सफेद विरोधी था, उसने । गाते-गाते व्याह भी , अमरीका और रूस आज वह दिन देखने को युद्ध की इतिश्री हो एशियावालों के लिये नारे पर पानी फिर एशिया और योरोप के सहयोग से एक नये वाला होगा जो देखते आठ वर्ष से, ब्रिटेन-वर्ष से और सोवियट घंटे से जापान से भिड़ने दिन अब आ पहुँचा के मार्ग से फेसिस्ट राष्ट्रों के हो चुका। केवल मित्रराष्ट्र अपने हाथ में लेंगे सुरक्षा की दुन्दुभी इतने कि जो राष्ट्र आज कान खुल ही नहीं भी हो जायँगे। मित्रराष्ट्रों हुई, इसके लिए वह है ही। जिसकी लाठी मित्रराष्ट्रों के लाठी की विजय भैंस भाग खड़ी हुई।

* * *

आत्म-समर्पण तो कर ही एशिया का बटवारा भी करेंगे जिस तरह उन्होंने है। बटवारा किस तरह उसकी तकदीर कैसी है मिलना है, यह सब कुछ मिलेगा। चीन चाहेगा ज्यादा हिस्सा मिले। जानि देख गुसांऊ— यह भी चाहेगा मेटियामेट कर दिया पीली कौम दूसरी देखना चाहेगी? रूस घंटे की लड़ाई लड़ी सबसे ज्यादा लंबा को एशियावाला भी समझे बैठा है, इसलिये योरोप की तरह एशिया पर भी वह अपना प्रभुत्व जरूर चाहेगा। यही नहीं वह सबसे आगे बाजी मारने की उधेड़बुन में होगा किन्तु अब तो बटवारे की पूरी रस्म अदायगी चौधरियों के हाथ की बात होगी। दोनों चौधरी बन्धु—ब्रिटेन और अमरीका—ऊँचे आसन पर बैठ कर अब फैसला करेंगे कि उनके सहयोगियों को क्या मिलना चाहिए? चौधरी बटवारा तो करेंगे ही, इसमें संदेह नहीं लेकिन कुंजी अपने पास रखेंगे। क्योंकि चौधरी बनने का कुछ फल तो उन्हें मिलना ही चाहिए? बटवारा करने में छोटा चौधरी ब्रिटेन सारी दुनिया में विख्यात है ही।

* * *

मुसीबत आई जापानी सम्राट् हिरोहितो की। आज उनकी गिनती संसार के सबसे अधिक धनी व्यक्तियों में होती है। पर्दे में वह चलते हैं। सारे जापान के वह स्वयं मालिक हैं। मिकाडो खानदान के वह १२८वें सम्राट् हैं। किन्तु न जाने किस घड़ी में उसका जन्म हुआ था कि आज उन्हें आत्म-समर्पण करना पड़ा। अब उन्हें पता चलेगा कि वाकई प्रजातंत्र क्या है और प्रजातंत्र के पुजारी साम्राज्यवादी राष्ट्र किस तरह संसार का शासन करते हैं! ईश्वर चाहेगा तो अब उन्हें यह भी मालूम होगा कि नई तहजीब या रहन-सहन क्या है और एशियावालों को किस तरह योरोपियन बन कर रहना चाहिए। सम्राट् हिरोहितो पर एक ग्रह २० वर्ष पूर्व ही लगा था जब उन्होंने अमरीका, ब्रिटेन तथा योरोप के अन्य देशों का भ्रमण किया था। वही ग्रह अब साकार रूप में प्रकट हुआ है। उन्हें क्या मालूम था कि जिन तहजीबी मुल्कों का वह भ्रमण कर रहे हैं वही तहजीब सिखाने के लिए उनके घर में घुस पड़ेंगे? भाग्यं फलति सर्वदा। भाग्य की बात है। आज भारत में भी तो राजा महाराजा हैं! वह जैसी बढ़िया जिन्दगी बिता रहे हैं, सम्राट् हिरोहितो को भी वही दिन देखना पड़े तो आश्चर्य क्या है? पूर्वी सभ्यता पर अब पश्चिमी सभ्यता का जरूर असर पड़ना चाहिए नहीं तो मित्रराष्ट्रों की विजय का परिणाम ही क्या निकलेगा?

* * *

कायदे आजम आजकल कांग्रेस से बड़े नाराज हैं। वह उसे हिन्दू राज्य की प्रतिनिधि संस्था समझते हैं। महात्मा गांधी को खरीखोटी सुनाने के लिए तो उनका अवतार ही हुआ है। क्यों नहीं, गांधी जी की नकल करते करते वह आज परले सिरे के लीडर बन बैठे हैं। इसलिए यदि वह गांधी जी को अपना प्रतिद्वन्द्वी समझते हैं तो क्या बेजा? कम से कम उनकी नेतागिरी तो कायम ही है। पाकिस्तान बने या न बने इसकी उन्हें उतनी फिक्र नहीं है जितनी अपनी लीडरी की। अँगरेज की दृष्टि में वह अल्पसंख्यक लीडर सबसे बड़ा लीडर समझा जाता है जो बहुमत के हर मामले की खिलाफत करता हो। उसके साथ चाहे कोई न हो किन्तु कम से कम हल्ला तो मचाता ही रहे। कायदे आजम ने यही अब तक किया है और आज भी यही कर रहे हैं। "होता नहीं है कुछ भी दिले-जार के लिए, जो कुछ भी हो रहा है सब अखबार के लिए—" जो कुछ मिस्टर जिन्ना कर रहे हैं वह अपनी लीडरी के लिये। खुदा सलामत रखे अँगरेजों को, उनकी लीडरी आगे भी चलती रहेगी। जब वाइसराय लार्ड वैवेल ने मिस्टर जिन्ना की खातिर शिमला-सम्मेलन का सफाया कर दिया तो फिर लीडरी कायम रखना तो उनके बायें हाथ का खेल है। चन्दा और लीडरी इन्हीं दोनों का कायदे आजम को फिक्र है और बुद्धिमान् ऐसा करते ही हैं।

* * *

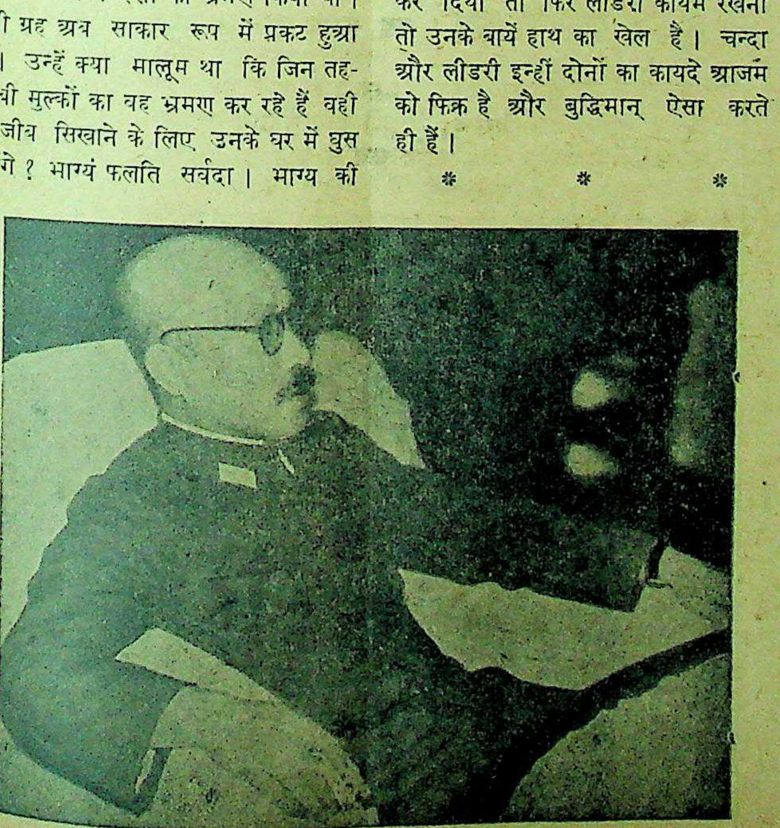

जापान के वैदेशिक मंत्री जनरल टोजो ने मित्रराष्ट्रों के सामने आत्म समर्पण की घोषणा की है।

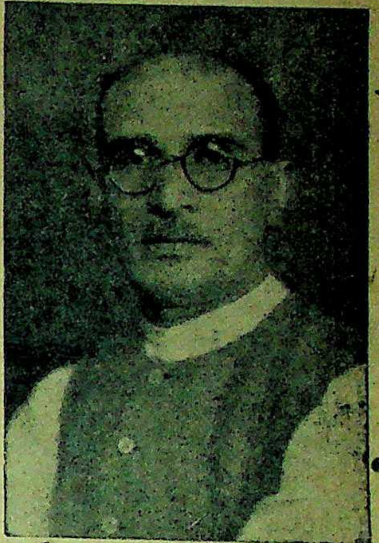

महात्मा गांधी के अनन्य भक्त और प्राइवेट सेक्रेटरी स्वर्गीय श्री महादेव देसाई की वर्षी गत सप्ताह सारे देश में मनाई गई है।

कायदे आजम मिस्टर मुहम्मद अली जिन्ना आज कल बड़े प्रसन्न हैं। क्यों, आखिर उन्हें क्या कोई तोहफा मिलनेवाला है? अगले चुनाव में मुसलिम लीग दुंदुभी बजाने के लिये कई लाख का चन्दा इकट्ठा करके मिस्टर जिन्ना को दिया जानेवाला है। क्यों नहीं, चंदा है ही ऐसी चीज! सुप्रसिद्ध मरहूम शायर अकबर इलाहाबादी ने लिखा है—

कुछ काम है न धंदा है,
जहाँ चंदा है वहाँ बंदा है।

अब चंदे के जोर पर चुनाव की लड़ाई लड़ी जायेगी। जान पड़ता है इस बार मुसलिम लीग खैरात ज्यादा करेगी क्योंकि उसके उम्मीदवारों को राष्ट्र और जाति के नाम पर आम मुसलमानों का वोट मिलना तो कठिन ही है, इसीलिये चंदा इकट्ठा करके खैरात करने का रास्ता निकाला जा रहा है। बम्बई, संयुक्त-प्रांत तथा अन्यान्य प्रांतों में अभी से चंदेबाजी शुरू हो गई है। क्योंकि बिना चंदे के चुनाव की लड़ाई में मजा ही नहीं आ सकता। एक हाथ से चंदा लिया जाये और दूसरे हाथ से ख़र्च किया जाये, जनता के पैसे का उपयोग इसी तरह होना भी चाहिए। जो कुछ भी हो चुनाव के दिन भाग्य से आते हैं। सरकार की कृपा से वह दिन आनेवाला है, इसलिये चंदेबाजी ज़रूरी ही है। चंदे की रकम है, इसलिये उसे खूब खुल कर उड़ाना चाहिए। कोई अपने बाप की कमाई है? जनता का पैसा है किस दिन के लिये!

* * *

युद्ध के खतम होते होते 'परमाणु बम' का आविष्कार भी हो ही गया! आखिर इस दानवी और विप्लव मचानेवाले बम का आविष्कार कहाँ हुआ? इसके आविष्कार का सारा श्रेय अमरीका ले लेना चाहता है। ब्रिटेन भी कह रहा है, किन्तु धीरे से, कि यह तो हमारा आविष्कार है। अब ब्रिटेन और अमरीका आपस में निपट लें कि इसका माता-पिता कौन है? लेकिन शांति और सुरक्षा के लिए 'परमाणु बम' का आविष्कार अच्छे मौके से हुआ। इसकी आगे खासी जरूरत भी पड़ेगी।

सम्पादक का पृष्ठ

जापान की पराजय

जापान ने मित्रराष्ट्रों को आत्म-समर्पण कर दिया। इस समाचार से संसार-व्यापी युद्ध के वातावरण में अब साँस लेने का अवसर उपस्थित हुआ है। जो जापान पिछले ८ वर्ष से चीन से, ४ वर्ष से ब्रिटेन और अमरीका से तथा ३६ घंटे से रूस से युद्ध करने में व्यस्त रहा, वह एकाएक आत्म समर्पण के लिए तैयार हो गया, यह संसार में शान्ति चाहने तथा युद्ध समाप्त होने की बाट जोहनेवाली करोड़ों जनता के लिए शुभ-चिह्न है। योरप में फासिज्म का विनाश तो ही चुका है और वहाँ मित्रराष्ट्र कुछ न कुछ करने की योजना भी बना चुके हैं, इसलिए ऐसे अवसर पर जापान का त्राहिमाम् की आवाज बुलन्द करना विशेष आशाप्रद है। इससे अब जान पड़ता है कि संसार युद्ध-वातावरण से शीघ्र ही मुक्त हो जायेगा और एक नई विचार-धारा का प्रादुर्भाव होगा।

हमें जापान के आत्मसमर्पण से प्रसन्नता होनी अनिवार्य है क्योंकि हम भारतीय ब्रिटिश राज्य में पनप और फलफूल रहे हैं और फिर अमरीका ऐसा राष्ट्र जिसका दाहना और सोवियट रूस ऐसा नया विजयी राष्ट्र जिसका बायाँ अंग है उसकी शक्ति का अन्दाज लगाना कठिन ही नहीं महाकठिन है! रूस ऐसे मजदूर प्रेमी राष्ट्र को एशिया में युद्ध छेड़ते ही जापान ने घुटने टेक दिये, यह वास्तव में अमरीका तथा ब्रिटेन की बुद्धिमानी तथा चतुराई का एक ज्वलन्त उदाहरण है। जो रूस मिस्टर चर्चिल के समय जापान का मित्र बना रहा और जो पोट्सडम सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में जापान के विरुद्ध युद्ध घोषित करने के लिए तैयार नहीं हुआ, वही रूस पोट्सडम के दूसरे अधिवेशन में, जिसमें ब्रिटेन के नये प्रधान मंत्री मिस्टर एटली सम्मिलित हुए थे, जापान के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार हो गया और उसने युद्ध-घोषणा भी कर दी। इसलिये इस बात के समझने में कठिनाई नहीं होती कि यदि रूस जापान के विरुद्ध सक्रिय रूप से मैदान में न उतरता साथ ही अमरीका के 'परमाणु बमों' के दानवी काण्ड न उत्पन्न होते तो शायद जापान इतना शीघ्र घुटने न टेक देता। ब्रिटेन में नई सरकार के आते ही रूस भी सक्रिय हुआ तथा इन्हीं सबके परिणाम स्वरूप जापान को आत्म-समर्पण करना पड़ा और अब दोनों ओर से युद्ध स्थगित कर दिया गया है। इस वक्त मित्रराष्ट्र जापान को प्रतिबन्धों में जकड़ने के लिये व्यस्त हैं और निश्चित रूप से कुछ शर्तों के अनुसार कार्यवाही हो रही है। जर्मनी की भाँति जापान के लिये भी मित्रराष्ट्र कुछ ऐसे प्रतिबंध तैयार कर रहे हैं जिससे भविष्य में वह सर उठाने लायक न रह जाये।

भविष्य में योरोप और एशिया में मित्रराष्ट्रों की शांति-योजना के परिणाम स्वरूप चाहे जो स्थिति उत्पन्न हो, किन्तु युद्ध की इतिश्री हो गई, यह बहुत बड़ी बात है। अब भविष्य में ब्रिटेन, अमरीका और रूस संसार पर शासन करेंगे। रह गये चीन और फ्रांस यह तो इन राष्ट्रों के पिछलगुए हैं। इनकी आवाज़ में मौलिकता नहीं है। अब योरोप और एशिया पर तीनों मित्रराष्ट्रों का आधिपत्य होगा और इन्हीं तीनों की सलाह से शांति और सुरक्षा-योजना को भविष्य में कार्य रूप में परिणित किया जायेगा। संसार का भविष्य क्या होगा तथा रूस, ब्रिटेन और अमरीका की मित्रता के अनुसार एशिया के बटवारे की क्या स्थिति होगी यह तो भविष्य में स्पष्ट होगा ही, हाँ, एक कहावत प्रसिद्ध है कि तीन तीकट महा वीकट। यह तीनों राष्ट्र विकट हैं और तीनों के अलग अलग स्वार्थ भी हैं। इसलिए हम अभी से कोई भविष्यवाणी नहीं करना चाहते किन्तु वह दिन देखने को कभी न कभी मिल सकता है जब ब्रिटेन और अमरीका, सोवियट रूस की भी खबर लेने में समर्थ सिद्ध हो सकते हैं। आज जो रूस जापानी आत्म-समर्पण का कारण बना वही कल ब्रिटेन और अमरीका को आत्म-समर्पण करने की स्थिति में स्वयं पड़ जाये तो विशेष आश्चर्यजनक नहीं।

* * *

राष्ट्रीय सप्ताह

पिछले अगस्त आन्दोलन की स्मृति में सारे देश में राष्ट्रीय सप्ताह बड़ी लगन, तत्परता, धूमधाम तथा समारोह पूर्वक मनाया गया। देश प्रेमियों तथा राष्ट्र सेवकों ने बलिदान होनेवालों की स्मृति में श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं, साथ ही किसानों, मजदूरों को जाग्रत करने और राष्ट्रीय भावना के प्रचार तथा प्रसार में पूरा योग दिया। इस प्रकार के समारोह प्रत्येक स्वतन्त्र देश में मनाये जाते हैं किन्तु हमारा देश तो पराधीन है इसलिए यदि यहाँ उसके मनाये जाने में किसी प्रकार के विघ्न उपस्थित हुए या सरकारी तौर से प्रतिबन्ध लगाये गये तो आश्चर्य की कौन सी बात है? हमें तो आश्चर्य इसलिए भी हुआ कि जो सरकार पारस्परिक समझौते तथा राष्ट्रीय अड़ंगे के हल के लिये पिछले दिनों उपाय निकालने में व्यस्त रही, वेवेल-योजना के समाप्त होते ही उसका रूप बदल गया। सम्भवतः सरकार समझती है कि राष्ट्रीय समारोहों से जनता में उत्तेजना फैलती है और इसीलिए उसकी ओर से अनेक प्रांतों में सही या गलत प्रतिबन्ध लगाये गये। यह शांति-स्थापना का एक बढ़िया नमूना है। हमने एक ओर सरकार की ओर से शांति स्थापना के नाम पर प्रतिबन्धों का जाल बिछते हुए देखा और दूसरी ओर शांतिपूर्वक और बिना सरकारी प्रतिबन्धों का उल्लंघन किये हुए राष्ट्रवादियों तथा जनता को राष्ट्रीय सप्ताह मनाते हुए देखा। हमें अत्यन्त प्रसन्नता इसलिए हुई कि कम से कम सरकार की सख्ती से अप्रसन्न होकर राष्ट्रवादियों ने असहयोग करने की प्रवृत्ति तो नहीं अपनाई! प्रतिबन्धों के होते हुए राष्ट्र ने राष्ट्रीय सप्ताह मनाया तो, यही क्या कम है। सन् ४२ के अगस्त आन्दोलन में जनता की ओर से किया गया जो हिंसक कार्य था यद्यपि हम उसे अहिंसा की नीति के विरुद्ध समझते हैं किन्तु सरकार की ओर से जिस प्रकार का हिंसक दमन किया गया उसकी जितनी निंदा की जाय उतनी ही थोड़ी है। मनुष्य भावुकता के प्रवाह में बहकर सही-गलत सभी प्रकार का कार्य कर बैठते हैं। इसलिये हम उनके आदर्श के प्रति सन्देह नहीं कर सकते, हाँ, उनकी कार्य-पद्धति में मतभेद होने की गुंजाइश हो सकती है। इन सभी विचार-धाराओं को समझने की आवश्यकता है उन्हें जिनके हाथों में शासन की बागडोर है किन्तु अब समझने बूझने का युग नहीं है। यह युग है मूँड़ मुड़ाया और ओले गिरे।

राष्ट्रीय सप्ताह के सफलता पूर्वक तथा लगन से मनाये जाने के लिये हम राष्ट्रवादियों, देशभक्तों तथा ईमानदार कार्यकर्ताओं को बधाई देते हैं। इसलिये और भी बधाई देते हैं कि सरकारी प्रतिबंधों के होते हुए उनका कार्यक्रम शांतिमय और जाग्रत रूप में संचालित किया गया। उन्होंने जल्दबाजी या सरकारी प्रतिबंधों का तत्काल उल्लंघन करने की ओर ध्यान नहीं दिया और राष्ट्रपति मौलाना आजाद के आदेशों का पूर्णरूप से पालन किया गया। समय के अनुसार कार्य साधना बुद्धिमानी तथा उसे बिगाड़ देना मूर्खता का लक्षण है। हम भी उन शहीदों अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं अगस्त आन्दोलन में भाग लेकर लीला समाप्त की थी। आज हम से राष्ट्रीय समारोह मना लेते हैं, गनीमत हैं किन्तु क्या वह दिन जब भारत स्वाधीन होगा और 'राष्ट्रीय सप्ताह' 'स्वाधीनता सच्चे रूप में और समारोह पूर्वक सकेंगे ? इस प्रकार के राष्ट्रीय मूल्य स्वतन्त्र राष्ट्र तथा स्वाधीन आंक सकती है, राष्ट्रों को गुलाम की नीयत वाले तथा प्रजातन्त्र के ब्रिटेन की समझ के बाहर की

उत्तर भारत की सुप्रसिद्ध प्रकाशन प्रेस लिमिटेड प्रयाग के संस्थापक चिंतामणि घोष की बर्षी गत ११ मनाई गई।

* *

स्वर्गीय बाबू श्यामसुंदर

हिन्दी-संसार के वयोवृद्ध और विद्वान् रायबहादुर बाबू दास का स्वर्गवास हो गया। हिन्दी के उन प्रधान स्तम्भों में जिनके सहारे भाषा निर्माण, उसकी उन्नति हुई है। आपके अधिकांश समय हिन्दी-साहित्य की उसे पूर्ण समुन्नत बनाने में व्यतीत भारतवर्ष में हिन्दी की प्रधान साहित्यिक संस्था नागरी प्रचारिणी काशी आपके अध्यवसाय, लगन तथा कीर्ति का एक स्तंभ है। अनेक उच्च कोटि के ग्रंथों का निर्माण करके आपने को ऊँचा उठाने में प्रधान पुरानी पीढ़ी के आचार्यों निर्माताओं में आपका प्रमुख कहना यह चाहिए कि दास जी सच्चे सेवक ही नहीं वरन् एक जो हिन्दी के लिए जिये और सेवा करते हुए स्वर्गवासी साहब के-से सिद्धान्ती और रक्षा के लिए दृढ़ संकल्पवाले ही गिने मिलेंगे, इसलिए स्वर्गवास से हिन्दी की जो है उसकी पूर्ति फिलहाल सम्भव हम बाबू साहब के स्वर्गवास दुखी हैं और ईश्वर से प्रार्थना उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान उनके दुखी परिवारवालों को धैर्य।

याद किसी की

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

कोकिल के स्वर बनकर जैसे आई याद किसी की!
शायद सो न सका, भारी हैं आसमान की पलकें,
फिर उदास हैं, सरल कल्पना की ज्यों बिखरी अलकें,
तारा टूटा या कि हृदय ने
तोड़ दिया दम अपना,
फिर भी, नभ-गंगा की छवि सी छाई याद किसी की!

तारों के पीले चेहरों को भी बादल ने घेरा,
फूटी एक कली उपवन में, डूब गया दिल मेरा,
और सुबह के पाँच बजे की
भरी-भरी-सी आँखें,
कौन बताये ओस कहाँ से लाई याद किसी की!

मेरी साधों की दुनिया के डूबे सभी सितारे,
पर, मुझको साधों से प्यारे हैं साधों के प्यारे,
मेरे मन की नीरवता में
रंग भर देंगी किरणों
नील क्षितिज पर, वह देखो, मुस्काई याद किसी की!

जापान का आत्मसमर्पण क्यों?

मित्रराष्ट्र अंतिम विचार-विनिमय कर रहे हैं ?

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया। ब्रिटेन, अमरीका और रूस योरोप की भाँति एशिया में बटवारे, अन्यान्य अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों तथा जापान के संबंध में एक हल अथवा निर्णय में व्यस्त हैं। फिर भी योग्य लेखक ने इस लेख में इस ओर इशारा किया है कि जिस तरह की मित्रराष्ट्र कार्यवाही कर रहे हैं वह तीसरे महायुद्ध के लिए एक चुनौती के समान है।

जापानी सम्राट् हेरोहितो जिन्होंने जापानी आत्म-समर्पण की घोषणा की है।

रीका, एक तीसरे महायुद्ध की तैयारी कर रहा है। 'एटम-बमों' या 'राकेट-बमों' के द्वारा संसार पर जबरदस्ती लादी गई शान्ति स्थिर रह सकती है या नहीं, यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है।

*　　　*　　　*

दूसरा सवाल जापान के प्रति मित्रराष्ट्रों के सम्भावित व्यवहार का है। अमरीका ने अपने मित्रराष्ट्र ब्रिटेन और रूस की अनुमति से जो शर्तें जापान के सामने रखी हैं, उनमें पोट्सडम सम्मेलन के निर्णयों पर विशेष जोर दिया गया है। जापान से बिना किसी शर्त के आत्मसमर्पण करने और अपने समस्त यौद्धिक साधनों को मित्रराष्ट्रों को दे देने की माँग भी की गई है। यह भी बिना किसी सन्देह के कहा जा सकता है कि जिस तरह पोट्सडम सम्मेलन में जर्मनी को एक अन्न पैदा करनेवाले खेतिहर राष्ट्र में परिवर्त्तित कर देने की प्रस्तावना की गई है, उसी तरह जापान में भी औद्योगीकरण को रोका जा सकता है। इधर जापान ने जिस शर्त पर आत्मसमर्पण करने की इच्छा जाहिर की है, वह मिकाडो की सत्ता की मित्रराष्ट्रों द्वारा स्वीकृति ही है। जापान के सम्राट् मिकाडो की वैधानिक स्थिति का प्रश्न, एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रश्न है, जिस पर विचार करना अत्यावश्यक है।

*　　　*　　　*

जापानी अपने सम्राट 'मिकाडो' को ईश्वर का अवतार मानते हैं और उसके व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये वे अपने को पूर्णतया न्यौछावर कर सकते हैं। अगर मित्रराष्ट्र 'मिकाडो' की वैधानिक स्थिति को कम करने का जरा भी प्रयत्न करेंगे तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि समस्त जापानी जाति 'एटम-बमों' का साहस पूर्ण सामना करके अपनी पूर्ण 'हाराकिरी' (आत्महत्या) कर लेगी। यह भी स्पष्ट है कि जापानी राष्ट्र के इस आत्मघात को कोई भी सभ्य राष्ट्र पसन्द नहीं करेगा। इसके सिवाय, जापान ही एक ऐसा देश नहीं है जहाँ अभी राज-तंत्र और राजा की सत्ता पर किसी जाति-विशेष का पूर्ण-विश्वास हो। उदाहरणार्थ—ब्रिटिश जाति भी अपने सम्राट् को अत्यन्त श्रद्धाभाव से देखती है। ब्रिटिश सम्राट् की वैधानिक स्थिति भी आज वैसी ही है जैसी कि जापानी सम्राट् 'मिकाडो' हिरोहितो की! कुछ मित्र-राष्ट्रीय राजनीतिज्ञों की भी यही राय है कि 'मिकाडो' की सत्ता को अक्षुण्ण रहने देना चाहिये ताकि जापानी राष्ट्र अपने 'देवता' के इशारे पर शन्ति पूर्ण रहे। यह भी देखना है कि मित्रराष्ट्र जापानी साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों का किस प्रकार बँटवारा करते हैं? क्या वह उन सब देशों (जैसे, श्यांम, फ्रेंच इंडोचीन, डच द्वीप समूह, कोरिया, मंचूरिया आदि की स्वतंत्रता-सम्बन्धी भावनाओं की उपेक्षा न करते हुए उन्हें आजाद कर देंगे, या उन्हें ठीकेदारी के अंतर्राष्ट्रीय पट्टे में बाँधकर गुलाम बना डाला जायेगा? क्या स्टालिनिस्ट रूस अपने यूरोपीय साम्राज्यवाद के अनुरूप एशियाटिक साम्राज्यवाद की भी स्थापना करेगा? क्या कोरिया व मंचूरिया सोवियट रूस के प्रभाव में आ जायेंगे जैसा कि एक कोरियन राजनीतिज्ञ के वक्तव्य से मालूम होता है? क्या 'स्टालिन' चीन में अपने स्टालिनिस्ट कम्यूनिस्ट गिरोह का लाभ उठा कर चीन में गृह-युद्ध करवाना उचित समझेगा? इस बात के आसार दिखलाई देते हैं कि स्टालिन अपनी डिक्टेटरशिप का प्रभाव एशिया पर डालने की पूरी पूरी चेष्टा करेगा। यह भी मालूम होता है कि एशिया के उपनिवेशों को लेकर मित्रराष्ट्रों के बीच में एक भयंकर बखेड़ा उठ खड़ा होगा क्योंकि रूस, अमेरिका और ब्रिटेन तीनों ज्यादा से ज्यादा अधिकृत प्रदेश के ठीकेदार बनना चाहेंगे।

आज युद्ध का दावानल शान्त है, पर संसार में ज्वालामुखियों की संख्या बढ़ रही है। शान्ति के नाम पर प्रज्वलित यह ज्वालामुखी कब विस्फोट कर बैठें, कोई नहीं कह सकता। समाजवाद, साम्यवाद और प्रजातन्त्र के नाम पर चली जानेवाली भयंकर शतरंजी चालों का परिणाम अवश्यमेव भयंकर ही होगा। आज साधारण मनुष्य, किसान या मजदूर के लिये कोई विश्राम-केन्द्र नहीं शेष रहा है। सभी तरफ निस्सहायता मुँह बाये खड़ी है। संघर्षों के शक्तिशाली चक्रों के बीच राष्ट्र ध्वस्त होते जा रहे हैं। फिर भी शान्ति होने की कोई सम्भावना नहीं। शस्त्रों का महायुद्ध समाप्त हुआ, अब बँटवारे का महायुद्ध शेष है। शायद यह संघर्ष एक तीसरे वरसाई की प्रस्तावना को लेकर, तीसरे महायुद्ध की भूमिका के रूप में, मानव-सभ्यता के विनाश का कारण हो। अंधकारपूर्ण भविष्य.........

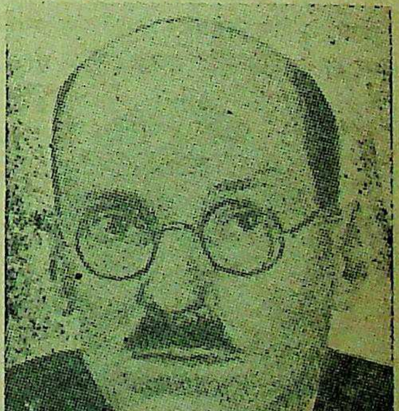

अमरीका के प्रेसिडेन्ट ट्रुमन जिन्होंने 'एटम बमों' के दान की महत्त्व का वर्णन किया है।

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगावें।

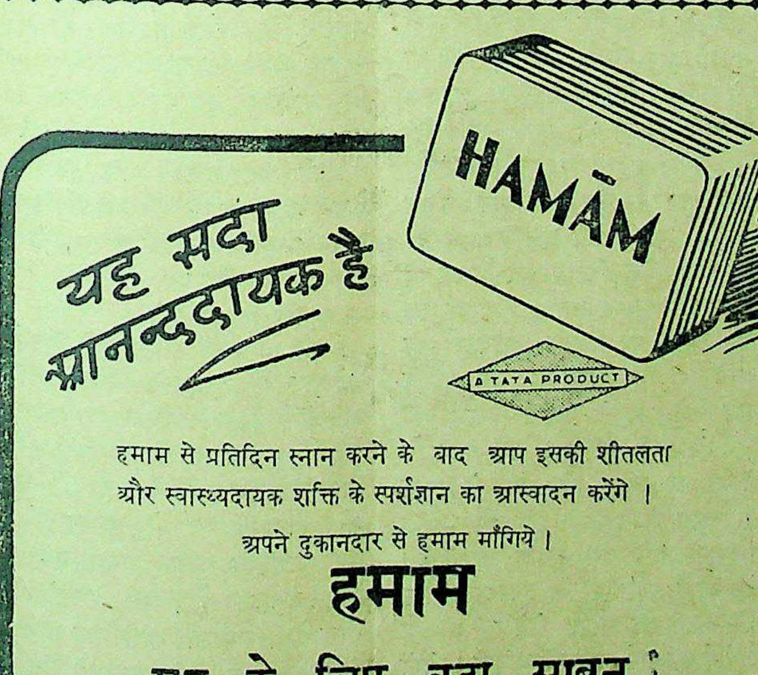

हमाम से प्रतिदिन स्नान करने के बाद आप इसकी शीतलता और स्वास्थ्यदायक शक्ति के स्पर्शज्ञान का आस्वादन करेंगे।

अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

हमाम

सब के लिए बड़ा साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

प्रान्तीय कांग्रेस प्रतिनिधि एसेम्बली

वैवेल-योजना और कांग्रेस सम्बन्धी विवादों के कुछ संस्मरण

लेखक, श्री गंगाधर इंदूरकर 'साहित्यरत्न' (पत्रकार)

संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस-प्रतिनिधि-सभा के सभापति माननीय श्री टंडन जी।

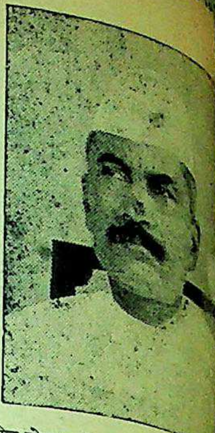

वैवेल योजना के सम्बन्ध में कांग्रेस-
सभा में प्रस्ताव उपस्थित करनेवाले
कैलाशनाथ काटजू।

> संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस प्रतिनिधि-सभा की बैठक पिछले सप्ताह प्रयाग में हुई। प्रांत के गण्य-मान्य नेता बैठक में उपस्थित थे। वैवेल-योजना तथा कांग्रेस का सहयोग इस बैठक का विवादग्रस्त विषय था। पत्रकार लेखक ने इस लेख में अधिवेशन के समय के संस्मरणों का उल्लेख करते हुए मनोरंजक बातें लिखी हैं। लेख सुन्दर तथा पठनीय है।

गत ५ अगस्त। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का सत्यनारायण कुटीर! सवेरे ६॥ बजे का समय। प्रान्त के प्रमुख कांग्रेसी नेता कुछ अन्दर, कुछ बाहर। सबके मुख पर चिन्ता की रेखा। जिला मजिस्ट्रेट ने सभी प्रकार की सभाओं और जुलूसों पर ७२ घंटे पहले नोटिस देने की रोक लगा दी थी। कहा जाता है कि यह स्वाधीनता-सप्ताह के कारण—विशेषकर उसमें 'शहीद-दिवस' का हौवा सरकार की समझ में न आने के कारण—रोक लगाई है। माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन तथा शहर कांग्रेस-प्रतिनिधि-एसेम्बली के सभापति पंडित विश्वम्भरनाथ पांडेय को कलेक्टर ने बुलाया था। टंडन जी ने तो अपने तीखे स्वभाव के अनुसार जाने से इनकार कर दिया। किन्तु पंडित विश्वम्भरनाथ टंडन जी की अनुमति से कलेक्टर से मिलने गये। लोगों की जबान पर एक ही चर्चा थी कि अब क्या होगा? प्रांतीय रिप्रेजेन्टेटिव एसेम्बली की बैठक होगी या नहीं? कुछ तेज मिजाज के नवयुवक सत्याग्रह की माँग पेश कर रहे थे और कुछ लोग मौलाना आजाद के शान्तिपूर्ण व्यवहार करने के आदेश की ओर ध्यान दिला रहे थे।

* * *

आखिरकार पं० विश्वम्भरनाथ पांडेय कलेक्टर से मिलकर लौट आये। उनका चेहरा कुछ उदास तथा गम्भीर दिखाई दे रहा था। पत्र-प्रतिनिधियों ने उन्हें रास्ते में ही घेरने की कोशिश की किन्तु वे सबको झांसा देकर चले गये सत्यनारायण कुटीर में, जहाँ प्रान्त के चोटी के नेता बैठे हुए थे।

पांडेय जी ने कलेक्टर से हुई बातों का सारा दास्तान कह सुनाया। यह भी मालूम हुआ कि रोक विशेषकर 'स्वाधीनता-सप्ताह' पर ही है, फिर भी आज की बैठक हो या नहीं, इस बात का कोई निर्णय नहीं हुआ। बैठक शुरू होने का समय दो बजे से था। लगभग १२॥ बजे टंडन जी ने बड़ी दृढ़ता से यह निश्चय किया कि बैठक अवश्य होगी। लोग कहते हैं कि इसमें और लोगों की सम्मति नाम-मात्र को थी। बैठक के संबंध में एक पत्र टंडन जी ने कलेक्टर को भेज भी दिया। यद्यपि पत्र में तार्किक दृष्टि से कलेक्टर को यह बताने की कोशिश की गई थी कि इस बैठक के होने में किसी कानून को भङ्ग नहीं किया जा रहा है, किन्तु सभी सोच रहे थे कि हमें दो घंटे में कहाँ जाना है? टंडन जी के चेहरे पर दृढ़ता का प्रतापी तेज टपक रहा था। हाल ही में छूटे हुए कुछ नेता टंडन जी के इस निश्चय से कुड़मुड़ा भी रहे थे।

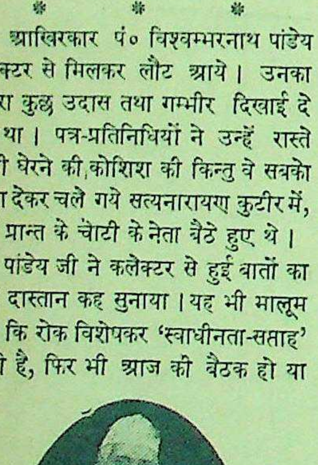

आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने डाक्टर काटजू के प्रस्ताव का समर्थन किया था।

पंडित कमलापति त्रिपाठी ने डाक्टर काटजू के प्रस्ताव का जोरदार समर्थन किया था।

प्रयाग संगीत-समिति का हाल। दरवाजे बंद। प्रान्तीय प्रतिनिधि एसेम्बली के सदस्य एक-एक कर अन्दर किये जा रहे थे। सभी लोगों के चेहरे पर उत्सुकता तथा गहरी चिन्ता की रेखायें झलक रही थीं।। संगीत-समिति का हाल तिरंगे झण्डों से सजा हुआ था। मंच पर नेतागण बैठे हुए थे। कुछ प्रमुख कांग्रेसी हाल के बाहर खड़े होकर अपनी देशभक्ति का प्रदर्शन कर रहे थे। सभा का प्रारम्भ हुआ। टंडन जी एक चौड़ी चौकी पर बैठकर कलेक्टर को उन्होंने जो पत्र लिखा था उसे पढ़कर सुनाने लगे। गहरी शान्ति विराज रही थी। टंडन जी ने जब यह कहा कि कलेक्टर का उत्तर भी प्राप्त हो चुका है तब लोग अपने कानों की श्रवण-शक्ति को दुगुनी करके उसे सुनना चाहते थे। टंडन जी ने सुना दिया कि कलेक्टर ने लिखा है कि बैठक गैर-कानूनी होते हुए भी इस पर कोई कार्रवाई नहीं की जायगी। लोगों का दिल कलेजे में आ गया। संगीत-समिति के दरवाजे एक एक करके खुलने लगे। सभा की कार्रवाई शुरू हुई। कई प्रस्ताव पास हुए। किन्तु आये हुए सदस्यों का उस ओर विशेष ध्यान नहीं था। कुछ चोटी के नेताओं को छोड़कर लोगों के मन में यही भावना थी कि बेकार फँसे जा रहे थे। चलो, अच्छा हुआ। निजात मिली।

अन्त में डा० कैलाशनाथ काटजू ने प्रतिनिधि-एसेम्बली की कार्यकारिणी से स्वीकृत शिमला-सम्मेलन-सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित किया जो एक मुख्य प्रस्ताव था। श्री कमलापति त्रिपाठी के शब्दों में वह प्रस्ताव गड़े मुरदे उखाड़ना भर था। यही एकमात्र प्रस्ताव था जिस पर एसेम्बली तथा उसकी कार्यकारिणी ने कई घंटे माथा-पच्ची की थी। इस प्रस्ताव के प्रमुख विरोधी श्री संपूर्णानन्द जी थे। प्रस्ताव उपस्थित कर बाकी बहस दूसरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई।

* * *

दूसरे दिन जब प्रस्ताव पर बहस होने लगी तब इसके विरोधकों—बनाम संशोधकों की संख्या और भी बढ़ गई जिसमें प्रमुख रूप से श्री रऊफ जाफरी साहब का नाम लिया जा सकता है।

यह देखिये। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रचार-मंत्री श्री सत्यदेव शास्त्री माइक्रोफोन की तरह ही सीधे खड़े होकर मूल प्रस्ताव का समर्थन कर रहे थे।

जब श्री सम्पूर्णानन्द जी बोलने को खड़े हुए तो मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि ये बोलना नहीं चाहते हैं किन्तु लाचार होकर बोल रहे हैं। किन्तु आपने जब डा० कैलाशनाथ काटजू के प्रस्ताव की धज्जियाँ उड़ानी शुरू किया तब काटजू साहब अपनी गर्दन बाएँ कंधे पर टेक कर आँखों की पुतलियाँ ऊपर चढ़ाकर तिरछी नजर से एक बार देखने लगे। श्री सम्पूर्णानन्द जी के प्रस्ताव को उपस्थित करने का ढंग देखकर क्षण भर के लिये यह लगा कि डाक्टर काटजू का प्रस्ताव अब कहीं का न रहेगा। और सच भी है कि यदि डाक्टर काटजू के प्रस्ताव को श्री कमलापति त्रिपाठी तथा आचार्य नरेन्द्रदेव का समर्थन न प्राप्त होता तो निश्चय ही काटजू साहब का प्रस्ताव गिर गया होता।

जब श्री कमलापति त्रिपाठी बोलने को उठे तो लोगों को लगा कि ये बनारसी होने के नाते श्री सम्पूर्णानन्द जी का समर्थन अवश्य करेंगे। मूल प्रस्ताव के समर्थकों को श्री त्रिपाठी के इस वाक्य से बड़ा ही धक्का लगा होगा कि 'मैं तो प्रस्ताव को इस समय उपस्थित करना अनावश्यक और फिजूल समझता हूँ।' श्री त्रिपाठी जी की सरल, प्रवाहपूर्ण और साहित्यिक भाषा का प्रभाव काटजू साहब के प्रस्ताव को पास करने में बहुत कुछ सहायक रहा, इसमें सन्देह नहीं। त्रिपाठी जी ने कहा कि मैं डाक्टर काटजू के प्रस्ताव का इसलिए समर्थन करता हूँ

कि वह दोष-रहित है। वह
लिए कोई बन्धन नहीं डालता।
में त्रिपाठी जी का अभिप्राय
सकता है कि डाक्टर काटजू के
कोई दम नहीं है अतः उसको
करने या न करने में कोई हानि

आचार्य नरेन्द्रदेव जी जब
का समर्थन करने के लिये खड़े
लोगों की उत्सुकता और बढ़ी।
आचार्य जी ने 'उर्दू ए मुअल्ला'
अख्तियार की तब हमारे जैसे
पढ़े-लिखे लोगों को केवल यही
रहा था कि आचार्य जी बोल रहे हैं,
ओर से और तेजी के साथ बोल रहे हैं
प्रस्ताव के समर्थन में बोल रहे हैं।
आचार्य जी ने अपने भाषण का
हिस्सा श्री रऊफ जाफरी के एक
खंडन करने में लगाया जिसमें
लियाकतअली पैक्ट के अनुसार
प्रस्तावों में कांग्रेस और लीग
स्थान न देकर साम्प्रदायिक
की जिम्मेवारी ब्रिटिश हुकूमत
गई थी।

जहाँ तक हम समझते हैं
जी का भाषण इतनी उच्च कोटि
कि उसे बहुत ही कम लोग
होंगे। अन्त में मतगणना हुई
काटजू का प्रस्ताव सर्वसम्मति
गया। संपूर्णानन्द जी के प्रस्ताव
५० के विरुद्ध ६२ मत आये।
हरिश्चन्द्र वाजपेयी भी श्री
के समर्थन तथा मूल प्रस्ताव के
मंच पर खड़े हुए थे किन्तु
आपके विचार आपकी आवाज
हो गये। लोगों तक पहुँच ही न

यदि यह देखा जाय कि
इस बैठक से देश की राजनीति
अग्रसर हुई तो निराशा ही नजर

—शेष पृष्ठ १४ पर

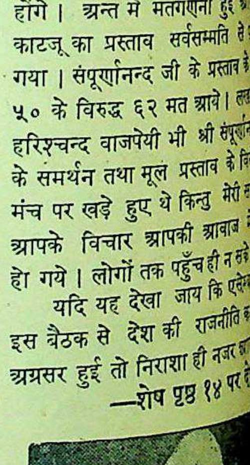

कांग्रेस प्रतिनिधि सभा में डाक्टर काटजू के
पर संशोधन उपस्थित करनेवाले श्री

कहानी

वह कौन था ?

लेखक, प्रोफेसर भगवतीप्रसाद पांथरी, एम० ए०

वह कुली था, दिन भर की मेहनत-मजदूरी से थककर चूर हो जाता था, किन्तु वह अपने साहस पर सदा दृढ़ रहता। वह अपनी भावी पत्नी के विवाह की कल्पना की उधेड़बुन में इतना लीन रहता कि उसे श्रम की तनिक भी परवाह न रहती और थोड़े ही दिन में अधिक से अधिक रुपया इकट्ठा करने की चिन्ता में लीन रहता। किन्तु परिणाम यह हुआ कि एक दिन भावी आशाओं पर पानी फिर गया और उसके शरीर से प्राण-पखेरू उड़ गया। उसकी कल्पना और आशा चूर चूर हो जाती है। लेखक ने कुली जीवन की मार्मिक भावनाओं का इस कहानी में बड़ा सुन्दर चित्रण किया है।

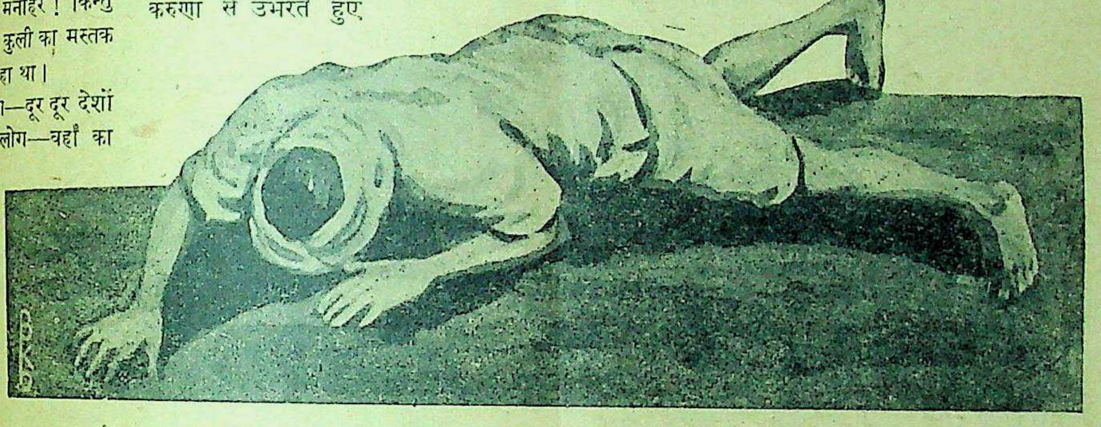

पहाड़ी कुली बोझ की थकान से पृथ्वी पर गिर पड़ा।

बड़ी आँखें ममता के जल से भर आईं—शायद वे पहाड़ी की हालत—उसकी बोझ से झुकी कमर—जीवित रहने के लिये उसका यह दानवीय परिश्रम जिसके नीचे उसका दुर्बल मानवीय हृदय हाँप रहा था—को देखकर, जिसे उसका मालिक आदमी नहीं, केवल पहाड़ी जानवर समझ रहा था, उसे दया आ गई थी। पर अबला की दया भी "अबला" थी, वह यह भली भाँति समझती भी थी। अतः करुणा से उभरते हुए हृदय को विस्मृति से दबाने का प्रयत्न करती हुई कुछ न बोली और जल्दी-जल्दी उसने अपने कदम आगे फेंके जिससे कि वह कुली पीछे छूट जाय और वह करुणार्द्र दृश्य उसकी आँखों के सामने से ओझल हो जाये।

वे आगे चल दिये। परन्तु वह कुली मस्त किसी अप्रत्यक्ष आनन्द में झूमता हुआ, रास्ते में थकावट को भूलता हुआ—आराम करता, आगे बढ़ा चला जा रहा था। बोझ का भार जैसे उसे मालूम ही न पड़ता था। शायद रँगीली आशा की छलनाओं ने उसके बोझ पर अपने पंखों का सहारा लगा रक्खा था अतः उसे कमर पर कोई बोझ मालूम नहीं पड़ता था।

पहाड़ी मस्त झूमता-सा जा रहा था। उसकी आँखें सामने की चौरस मैदानी भूमि को छोड़कर पहाड़ियों की काँठियों पर ही उलझी हुई थीं। उसके मन में एक अपूर्व आनन्द का सागर हिलोरें मार रहा था और उसका हृदय उन हिलोरों में नाच रहा था। सुन्दर भविष्य की मनोहर कल्पनायें सावन की झड़ी की तरह उसके मस्तिष्क में नाच रही थीं। उसके हृदय के संसार में आशा और सुखद कल्पना की परियों का अनुपम नृत्य हो रहा था। और यद्यपि वह राजपुर की उतराई से नीचे चला आ रहा था—मशीन के एक पुतले की भाँति—परन्तु उसका ध्यान अपने हृदय के रङ्ग-मञ्च पर होनेवाले इन नृत्यों पर ही था।

वह टिहरी से दूर एक गाँव का था। उसके माँ और बाप बचपन ही में मर चुके थे। उस समय वह दस वर्ष का था। वृन्त पर कली ने अभी मुख भी न खोला था कि बिरवा ही सूख चला। माता-पिता की गोद से वह लुढ़क गया था और अनाथ के रूप में संसार ने उसे देखा। दया से अड़ोस-पड़ोसवालों ने और दूर के सगे-सम्बन्धियों ने कुछ दिन उसकी मदद जरूर की किन्तु जब वह जवान हो गया तो लोगों ने उसको उसकी तक़दीर पर छोड़ दिया। सब दिन कौन करता है किसी की मदद ? और फिर अड़ोस-पड़ोसवालों को जरूरत ही क्या पड़ी थी कि वे दूसरों के लड़के की देख-भाल की पीड़ा अपने सिर पर लें ? स्वार्थ ही तो सांसारिक प्रेम, श्रद्धा, सेवा और भक्ति का प्रेरक है। उस अनाथ से भला किसी की क्या स्वार्थ-सिद्धि हो सकती थी; अतः वह जीवन-क्षेत्र में ढकेल दिया गया—अपने भाग्य पर और अकेला।

वह अकेला था। उसके पास भी थोड़ी-सी ज़मीन थी जो माँ-बाप उसके लिए छोड़ गये थे, किन्तु वह अकेला क्या करता ? और यद्यपि अदले-बदले में पास-पड़ोसी थोड़ी बहुत मदद उसे पहुँचा देते थे, परन्तु इतने से उसका कोई काम न निकल पाता था। फिर खेती से इतनी उपज होनी भी कठिन थी कि राज्य का मामला भी वह भर सकता—और जब दो-तीन बार का मामला उस पर जमा हो गया तो पटवारी ने ज़मीन कुर्क करने का हुक्म दे दिया। माता-पिता जो सिर छिपाने के लिए पत्थरों का छाया हुआ एक झोंपड़ी-सा मकान छोड़ गये थे वह भी हाथ से जाने लगा। खैर उसने एक नवीन झोंपड़ी तैयार कर सिर को घाम-पानी से बचाने का प्रबन्ध तो कर लिया—"किन्तु इस तरह कब तक काम चलेगा ?" यह सोचकर उसका हृदय कराह उठा। वह सोचने लगा अगर 'पूरी खेती न कमाई गई और कुछ इधर-उधर करके न जुटा पाया तो गाँव में रहना मुश्किल है।' इससे उसका दिल काँप उठा—मामला ! और ये विचार उसके मस्तक को जलाने लगते—और जब एक दिन उसके गाँव की एक स्त्री ने जो रिश्ते में उसकी भौजाई लगती थी उस पर दया दिखाते हुए बड़े माया-भरे शब्दों में उसको सलाह दी "झंगा—अरे देसावर जा न कहीं से थोड़ा-बहुत कमा के ला और विवाह कर—तब तेरे खेत, अरे बंजर तो न पड़े रहेंगे !" झंगा का हृदय एक अप्रत्यक्ष हर्ष की भावना से खिल-सा उठा। उसके ओंठों में आशा लहराई, जीवन के अँधियाले में एक प्रकाश की रेखा-सी चमकती दिखाई दी—झंगा को मालूम पड़ा कि उसके सामने जो अंधकार फैला हुआ था वह दूर हटता-सा जा रहा है। एक नारी के प्रेमपूर्ण आशा-भरे शब्दों ने उसके अंधकार को सूर्य-रश्मियों की तरह चीर डाला है, किन्तु उसे मालूम न था कि देश किधर और किस तरफ है—इसलिए उसने भौजी से पूछा—"भौजी किधर है देश ?" भौजी के स्वामी कई बार मसूरी में रिक्शे खींचकर, उसकी कमाई से अपनी प्यारी पत्नी के लिए कई चीजें ला चुके थे—जैसे गबरून की अँगिया, गुड़ व नारियल—इसलिए भौजी को मालूम था कि मसूरी देश है क्योंकि वहाँ कमाई होती है और वहीं से उसके स्वामी कैसी-कैसी भली चीजें उसके लिए लाया करते हैं। अतः उसने जल्दी उत्तर दिया "मसूरी ज़ा झंगा।"

और तब झंगा ने सोचा...ठीक, उसे अब रहस्य मालूम हो गया—उसे गरीबी को दूर करने का रास्ता मिल गया। अब वह मसूरी जायगा, वहाँ देश है, और वह वहाँ ज़ाकर बोझ ढोयेगा, रिक्शा खींचेगा और देसियों के यहाँ बर्तन माँजने की नौकरी कर, खूब धन कमा जब घर लौटेगा, तब वह ब्याह करेगा एक सुन्दर लड़की के साथ और उसके जीवन में ऊषा अपनी क्रीड़ा की लाली ले मुस्करायेगी। वह फिर जीवन की तरंगों पर उछलता हुआ नाचेगा। इसलिए मसूरी जाने से पहले उसने इधर-उधर गाँव में एक खोज-भरी दृष्टि डाली थी और एक सुन्दर लता-सी लहलहाती सुकुमारिका को भी वह देख चुका, और देखने के बाद—उस प्यारी मूर्ति को अपने इष्ट की तरह हृदय में छिपा, उसने मसूरी की राह पकड़ी थी।

उसके दिल में उमंग थी, मस्तिष्क में आनेवाले जीवन की तसवीर चमक रही थी और भविष्य की सुखद कल्पनाएँ उसके मन को नचा रही थीं।

ऐसी आशाएँ लिये वह मसूरी भी पहुँच गया, जब धड़ाधड़ कुलीगिरी मिलने लगी तो उसकी आशा ने उसे गुदगुदा

कर कहा—"बस अब......क्या, और उमंग में आकर उसने सोचा अगर मन भर की जगह वह दो मन बोझ उठाये तो दुगनी मजदूरी पायेगा और...और तब वह जल्दी ही बहुत-सा रुपया जमा कर लेगा। उसे असल में उस लड़की से मिलने, ब्याह करने और उसके साथ सुख के दिन बिताने की जल्दी हो रही थी। वह सोच रहा था कैसे वह दिन आयेंगे, वह इस संसार में तब अकेला थोड़े ही होगा, उसका भी एक साथी होगा, उसका भी एक छोटा-सा सुख से भरा और प्यार से ढका घर होगा। उसकी दुनिया नाच उठेगी। तब थोड़े ही वह किसी का आश्रित होगा, तब वे दो होंगे, और दो क्या क्या नहीं कर सकते ? खेत बंजर न पड़े होंगे, उसकी सूखी खेती लहलहा उठेगी। खेत धान के सुवर्ण से नाच उठेंगे, और वह... आह—उसका हृदय मधुर निःश्वासें छोड़ रहा था, साथ ही सोचता जाता था—"तब वह गाय, बैल, बकरी लेकर अपना आँगन भी तो सजा सकता है, वह ढोरों को पानी पिलायेगा, उन्हें वन में चराने ले जायेगा, मँगनी के बैलों की जगह तब अपने ही बैलों से हल चलायेगा। दूध पीयेगा और उनके लिए घास ? वह उसकी प्यारी पत्नी लाया करेगी, और वह गीतों के संगीत में लय होकर पहाड़ियों और टीलों पर घास काटती होगी तब वह ढोरों को पास के पोखर में पानी पिलाने ले जायगा ! ओह, कैसा होगा तब हमारा जीवन—सुन्दर, सुखमय और स्वर्गीय, तब समस्त संसार सुख के फूलों में हँसता लोटता होगा !" इस तरह सोचते हुए सुख से पुलकित हो उसका गात सिहर उठा, आँखें छलछला उठीं, क्योंकि वह अपनी स्थिति में दूर कल्पनालोक में पहुँचा हुआ था।

तेजी से अपनी कल्पना के इस रंगीन भविष्य को वह अपने निकट खींच लाना चाहता था। यह हो सकता था कि ज्यादा मेहनत और भारी से भारी बोझा ढोकर, बहुत पैसे मिलें और वह ब्याह कर सके। इसी लिये वह दुगना काम करना चाहता था, यही सोचकर आज ढाई मन का बोझ भी उठाया, राजपुर की उतार पार करता चला जा रहा था।

लोग उसे देखकर दंग थे, वह अपनी ही मस्ती में उड़ रहा था, उसकी आँखों के सामने राजपुर का उतार न था, पीठ के बोझ का विचार न था, और लोगों का ध्यान भी न था, वह तो आँखों में आशा के रंगों को घोलता, बेसुध चला जा रहा था। सड़क पर और भी कोई चल रहा है। उसे ज्ञान न था, उस पर कोई हँस रहा, देख रहा उसे मालूम न था, लोग क्या सोचते होंगे ? उसे परवाह न थी। वह तो केवल चला जा रहा था—आँखों में उसके बस—उसकी आराध्य-इष्ट देवी नाच रही थी। अपनी ही कल्पना में वह देख रहा था जैसे वह उसी लड़की के साथ कलेवे की रोटी रूमाल में बाँध कर और भी रोटियाँ लिये—गाँव के अन्य भाग्यशाली लोगों की भाँति—अपने खेतों में काम करने जा रहा है। उसे मालूम पड़ रहा था कैसा सुखमय है यह जीवन। और आनन्द की एक मुसकाती लहर उसके सूखे ओंठों पर नाच उठी।

"आह", वह फिर सोचने लगा—"अपनी पत्नी के साथ साथ काम करने में क्या आनन्द है ? तब मेरा काम कितना [illegible] जाऊँगा—मेरी पत्नी मेरे लिए छौंक कर गरमागरम कलेवा बना कर लायेगी, जब हल लगा कर थका-सा घर लौटूँगा तो गर्म पानी पैर सेंकने को तैयार मिलेगा, तब आराम से खाना खा मैं दो घड़ी विश्राम करूँगा, जब फिर खेत पर जाऊँगा, वह भी साथ होगी—वह खेत निरायेगी मैं गोड़ूँगा। फसल होने पर मैं काटूँगा और वह—प्यारी-प्यारी पूलियाँ बाँधेगी।" इस प्रकार सारा काम दो भागों में बाँट उसने अपने को पूरा हल्का कर लिया था। उसने सोचा तब उसके दुःखों का अवश्य अन्त हो जायगा। यही सोचते उसका हृदय उछल पड़ा। आशा ने उसे गुदगुदा दिया। एक अभूतपूर्व प्रसन्नता की झलक उसके चेहरे पर खेल रही थी और उसके कदम आनन्द में झूमते हुए से खूब लम्बे-लम्बे पड़ रहे थे। ढाई मन का बोझ उसे फूल सा लग रहा था।

राहगीरों को ताज्जुब होता कि इतना बोझ और इतनी तेजी से चला जा रहा है ? पहाड़ पर सैर को आई नारियाँ उसे देख सोचतीं—"आदमी नहीं वह देव है ?" और सैलानी देशी अपनी पत्नियों को इस प्रकार आश्चर्यान्वित होते देख उन्हें समझा रहे थे—ऊँह, अरे वह तो पहाड़ी है।..."इसमें आश्चर्य क्या ?" उनकी धारणा थी पहाड़ी और जंगली पशु में कोई अन्तर नहीं। वह अवश्य साधारण मनुष्यों से भिन्न हैं। परन्तु यह किसे मालूम होता उसके जंगली आवरण के नीचे ढका, एक मानवीय कोमल हृदय है और इस समय यह कुली आदमियों की ही तरह—काव्य और कला के पंखों पर उड़नेवालों की तरह—अपने सुखमय भविष्य की कल्पना के पंखों पर उड़ा जा रहा है।

मसूरी की उतार पूरी कर अब वह राजपुर से देहरादून भागनेवाली मोटर रोड पर आ पहुँचा। पर उसे पता न था वह कहाँ है ? वह तो चला जा रहा था। उसकी आँखें भी दिल में होनेवाले आशाओं और अभिलाषाओं के नाच-रंग के बीच मस्त थीं।

उसी वक्त एक मोटरलारी घर...र...र...सड़क पर निकली—कुली बीच सड़क पर चला जा रहा था, वह अपनी भावी प्रियतमा के साथ हँसी-खेल में मस्त था, अपने खेतों में उसके संग काम पर था, सामने उसके सुख का सागर लहलहा रहा था। फिर भोंपू-भोंपू की लगातार आवाज भी क्योंकर उसे सुनाई देती ? मोटर उसके ऊपर ही थी कि उसे होश आया, सकपकाया, वह उछल कर बेसुध दौड़ उठा—पर किधर—जिधर मोटर। मोटर का रुख मुड़ा...धड़ाम्...घर-र-र एक तरफ बोझ [illegible] और एक भयानक दर्दभरी चीत्कार के साथ—कुली का शरीर......।

लारी रुकी, सवारियाँ भी उतरीं, रास्ते में आने-जानेवाले सैलानी भी ठहरे। सब घटनास्थल पर घिर आये, लोगों में हल्ला सा मच उठा......कौन [illegible] था ? कौन आदमी था ? [illegible] आवाजें आने लगीं। तभी एक [illegible] लापरवाही से चिल्ला कर [illegible] अरे, वह तो एक पहाड़ी था...... लोग संतोष की आह भर चल [illegible] आकाश में पक्षियाँ अजीब कोला[illegible] उड़ रही थीं...।

इ - स्ला - म

की

सच्ची पूजा किसने की ?
यह जानने के लिए पढ़िए।

— इस्लामी —
दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

अन्न ...
जलावन ..
वस्त्र ...
बच्चों की शिक्षा ...
युद्ध ...

दुश्चिन्ताओं के घेरे में

युद्ध ने सभी पर बहुत ज्यादा खिंचाव डाल दिया है। क्या सैनिक, क्या व्यापारी, क्या किसान, सभी पर इसका असर पड़ा है। खाद्य-पदार्थों का मिलना मुश्किल हो रहा है और फिर मंहगी की तो हद नहीं। ठसाठस भरी हुई ट्राम, बस और रेलों में यात्रा करना कष्टप्रद तो है ही कभी कभी जोखिम में भी डाल देता है। युद्ध के पहले कपड़े के जो दाम थे उनमें और आज के दामों में आकाश पाताल का अन्तर है फि मिलते भी कहाँ हैं ! सभी को पहले से कठिन और अधिक दबाव में काम करना पड़ता है।

यही कारण है कि इतने ज्यादा आदमी, दिन भर की मेहनत से चू होने के बाद बढ़िया चाय का आनन्द व आराम उपभोग करने को उत्कंठित हो उठते हैं। चाय स्फूर्ति लाती है, प्रसन्नता लाती है, थकावट कम करती है।

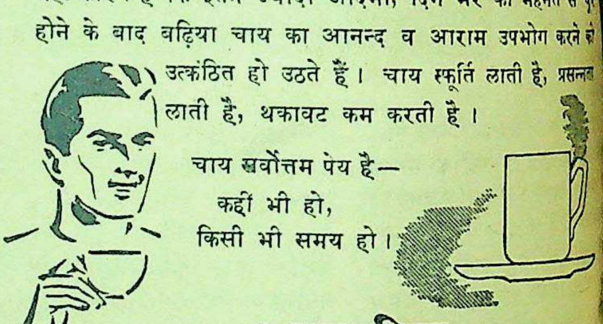

चाय सर्वोत्तम पेय है—
कहीं भी हो,
किसी भी समय हो।

भारतीय
वक्त पड़ने पर **चाय** का सहारा
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित
IK 235

JAKOOJA
LIPTON'S
JAKOOJA

भारतीय चायों में सर्व

लिपटन की

जाकूजा चाय

स्वर्गीय बाबू श्यामसुंदरदास

हिन्दी-संसार के एक महारथी और उद्भट विद्वान्

लेखक, पण्डित लल्लीप्रसाद पांडेय

हिन्दी संसार के सुप्रसिद्ध महारथी और उद्भट विद्वान् रायबहादुर बाबू श्यामसुंदर का स्वर्गवास हो गया। हिन्दी के लिये बाबू साहब की सेवाएँ स्वर्णाक्षरों में अंकित होंगी, इसमें संदेह नहीं। इस लेख में लेखक ने कुछ स्मृतियों का उल्लेख करते हुए बाबू साहब की स्वर्गीय आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की है।

हिन्दी-संसार के स्तम्भ और वयोवृद्ध रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास गत बुधवार ता० ८ अगस्त हो गया। बाबू साहब ने के प्रचार तथा उच्च कोटि के में अपना सारा जीवन स्वर्गीय आचार्य पंडित द्विवेदी ने आपकी हिन्दी- पर मुग्ध होकर ही लिखा था—

प्रचारक विमल बी० ए० पास।
बाबू श्यामसुन्दरदास ॥

बाबू साहब ने हिन्दी की सेवा और त्याग-भाव से की है उसका ही नहीं ऐतिहासिक

* * *

जुलाई की ही तो बात है। मैं की ओर अपनी धुन में कि बाँस फाटक पर, एक बाबू साहब ने बड़े विस्मय यहाँ कहाँ! वे उसी दिन किसी विवाह में गये रात को गया। देर तक शरीर ठीक नहीं था, जल्दी चल बसने के कोई मुझे क्या पता था कि अन्तिम साक्षात्कार है। उन्होंने एक हिन्दी- पुस्तकें छापने के सम्बन्ध में था।

लिखी, सम्पादित, पुस्तकों की गिनती उनका अध्यवसाय वे सदा कुछ न कुछ रहते थे। इसके अतिरिक्त गुण था संगठन व्यक्तियों को ढूँढ़कर काम लेने और उनको में बाबू साहब अद्वितीय गुण की सराहना उनके हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय मुख्याध्यापक रहते हुए परिश्रम किया। उनके छात्र मुख्य स्थानों में हिन्दी हैं और उनके लिखे या ग्रन्थ विविध विश्व- जाते हैं।

प्रसिद्ध मासिक पत्रिका का सम्पादन एक थी जिसके एक बाबू थे। फिर सम्पादन-भार लिया आचार्य द्विवेदीजी ने इस सूत्र से बाबू साहब प्रेस से स्थापित जीवन भर रहा।

* * *

को छोड़कर बाबू जीवन सभामय था। वे नागरीप्रचारिणी सभा के सर्वस्व थे और सभा उनके लिए सब कुछ थी। सभा को उन्होंने प्रतिष्ठा दिलाई और सभा ने उनको सम्मानित किया। लगभग ३ वर्ष की बात है कि बाबू साहब काशी से लखनऊ चले गये थे। उनका काशी से चला जाना कुछ व्यक्तियों को छोड़कर किसी को पसन्द नहीं था। उनके लखनऊ-प्रवास-काल में काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने बाबू श्रीप्रकाश जी से उन चित्रों, पदकों और चोगा आदि का अनावरण समारोह कराया जो उक्त बाबू साहब ने ही सभा को सौंप दिये थे। उक्त अवसर पर बाबू श्रीप्रकाश जी ने दास बाबू के चरित पर बहुत सुन्दर भाषण किया था। बात यह है कि बाबू श्रीप्रकाशजी बाबू साहब के छात्र रह चुके हैं इस कारण उन्हें बाबू साहब का अध्ययन समीप से करने का पर्याप्त समय मिला था। उन्होंने कहा था कि दूसरों की सेवाओं के गौरव की रक्षा करते हुए यह कहने में अत्युक्ति नहीं कि नागरीप्रचारिणी सभा की एक एक ईंट पर दास बाबू की छाप लगी है। विश्वविद्यालय से उन्हें जितना समय मिलता था, सबका सब सभा की सेवा में लगा देते थे। उनके लिए खेल-तमाशा, मेला और पर्व सब कुछ सभा थी। और सभा थी उन दिनों हिन्दी की समस्त हलचलों की प्रतीक। हिन्दी के हित के लिए उन्होंने जितना परिश्रम किया उतना बहुत कम लोगों ने किया होगा।

वे कभी हाकिमों से मिलते थे तो सभा के हित और हिन्दी की उन्नति के लिए। रायबहादुर होने पर भी वे हाकिमों का दरबार करने नहीं जाते थे। प्रथम श्रेणी के स्वाभिमानी थे। जिससे मतभेद हो जाता उससे तने रहते थे। माली हालत अच्छी न रहने पर भी यदि उन्हें किसी का उपकार करने का अवसर मिल जाता तो वे चूकते न थे। और उपकृत व्यक्ति प्रत्युपकार करना चाहता तो असन्तुष्ट हो जाते थे। उनके बहुत से गुणों की प्रशंसा करने के बाद अन्त में वक्ता ने यह आकांक्षा प्रकट की थी कि जिस चतुर्थ अवस्था में लोग बाहर से काशीवास करने आते हैं उसमें बाबू साहब का उस काशी से बाहर रहना कदापि अभीष्ट नहीं जिसकी उन्होंने आजीवन सेवा की है। ईश्वर करे, वे शीघ्र ही काशी आवें और अपना अमूल्य सहयोग काशी-वासियों को दें।

इन पंक्तियों के लेखक को यह आशा न थी कि बाबू साहब इतने जल्दी काशी लौट आवेंगे। पर विश्वनाथजी ने कृपा की और बाबू साहब साल भर के भीतर ही काशी आ गये। यह उनके लिए और काशीनगरी के लिए भी प्रशंसा की बात थी।

* * *

बाबू श्यामसुन्दरदास आस्तिक हिन्दू थे। पूजा-पाठ पर उन्हें विश्वास था। ज्योतिष पर उनको बहुत आस्था थी। कहते थे कि आयु तो ७० से] कम है ज्योतिष-गणना के अनुसार; परन्तु ज्योतिषियों की राय है कि गृहिणी के आयुष्य का हिस्सा मिल जाने से आयु बढ़ जायगी। इस पर उन्हें अटल विश्वास था। गृहिणी उनको बहुत मानती थीं। बड़ा ध्यान रखती थीं कि उनको कब, कौन-सी वस्तु खाने को दी जाय और कौन सी दवा का सेवन कराया जाय। पिछले साल जब उनकी सहधर्मिणी का शरीर छूटा तब मेरा माथा ठनका। ऐसी सेवा-परायणा सुगृहिणी का साथ बुढ़ापे में छूटने से बाबू साहब का अधिक समय तक जीवित रहना मेरी दृष्टि में सम्भव ही न था। मैं अपने मित्र शर्मा को साथ लेकर उसी दिन, शाम को, उनके पास गया तो उनका अटल धैर्य देखकर दङ्ग रह गया। उन्होंने रत्ती भर भी घबराहट प्रकट नहीं की। बात यह थी कि उनकी अर्धाङ्गिनी कई महीने से अतीसार से पीड़ित थीं और उनके लिए उस रोग का इलाज शरीर छोड़ना ही था। कदाचित् यही सोचकर बाबू साहब ने धैर्य धारण कर लिया होगा। पर मेरी समझ में वे उसी दिन से अवलम्बहीन हो गये थे। और निरवलम्ब शरीर अधिक समय तक टिक ही कैसे सकता था।

* * *

"अधीतमध्यापितमर्जितं यशः।"

बाबू श्यामसुन्दरदास का जीवन हिन्दी पढ़ाने, हिन्दी-साहित्य की अभिवृद्धि करने और हिन्दी-लेखकों को प्रोत्साहित करने की सतत साधना में बीता। उन्होंने अपने बाल्यकाल में जिस हिन्दी की दीन-हीन दशा देखी थी उसी को खूब सम्पन्न और समुत्फुल्ल देखकर उन्होंने महाप्रयाण किया है। अपनी कल्पना का मूर्त रूप देखने से वे अपनी पारिवारिक कठिनाइयों और शारीरिक अस्वस्थता में भी सुखी रहते थे। उनके जवान दो बेटे उनके सामने उठ गये। गृहिणी चल बसीं। शरीर रोगमन्दिर हो गया। इस स्थिति में पुनर्जन्म के लिए प्रयाण ही तो श्रेयस्कर होता है। पर हिन्दीवालों के लिए तो उनका जीवन अधिक से अधिक समय तक आवश्यक था। इसलिए उनके तिरोभाव के दुःसंवाद से सभी मर्माहत हुए हैं। काशी की नागरीप्रचारिणी सभा का तो एक आधारस्तम्भ ही गिर गया। बाबू साहब कहा करते थे कि हम तो सभा का अर्द्धशती उत्सव देखने के लिए जीवित हैं। सो उन्होंने उस उत्सव को जी भर कर देख लिया। इच्छा पूरी हो गई। उस उत्सव में सभा के तीनों प्रतिष्ठाता उपस्थित थे, यह बड़े हर्ष की बात थी। यह भी एक विचित्र घटना है कि जुलाई के अन्त में काशी की नागरीप्रचारिणी सभा का वार्षिक चुनाव हुआ और अगस्त के दूसरे सप्ताह में बाबू साहब ने अपनी इहलीला संवरण कर ली।

हिन्दी के महारथी स्वर्गीय रायबहादुर डा० श्यामसुन्दरदास।

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर और सजीव चित्र है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता-जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

भारतीय फिल्म के एक होनहार कलाकार

श्री आर० पी० किशोर से मेरी मनोरंजक मुलाकातें

लेखक, श्री उमेश जोशी

भारतीय रंगमंच के जगमगाते सितारे श्री आर० पी० किशोर मसूरी के विख्यात "सवाया होटल" में ठहरे हुए थे। मैंने अभिनय-कला के सम्बन्ध में आपकी अच्छी ख्याति सुन रक्खी थी। अतएव मेरी इच्छा थी कि एक इंटरव्यू की जाये और मैं अभिनय-कला तथा आपकी जीवन-घटनाओं पर प्रकाश डालूँ! इतवार का दिन था। सर्दी काफी पड़ रही। मैं श्री कुमार से मिलने के लिये "सवाया होटल" पहुँचा। मैंने कमरे के अन्दर प्रवेश किया, देखा कि श्री किशोर खद्दर का कुर्ता और धोती दूध की तरह की तरह स्वच्छ पहने हुए हैं। उन्होंने आराम-कुर्सी से उठकर हाथ मिलाया! पास ही दूसरी आराम-कुर्सी पर मुझे बिठलाया। उनका कमरा कलात्मक ढंग से सजा हुआ था, राष्ट्रीय तस्वीरों के अलावा और किसी प्रकार की तस्वीर मुझे उनके कमरे में नहीं दिखाई पड़ी। आपकी उम्र इस वक्त सिर्फ बीस साल की है। मेरी आपसे क्या क्या बातें हुईं, वह इस प्रकार है—

प्रश्न—रंगमंच की दुनियाँ में आप किस आदर्श को लेकर आये? उस आदर्श की रक्षा करने में आप कहाँ तक सफल हुए?

उत्तर—इन्सान के अन्दर प्रेम, सहानुभूति और संगठन दृढ़ करने के लिये एवं अस्पृश्यता का निवारण करने के लिये ही मैंने रंगमंच का सहारा लिया है। मैं जानता हूँ कि अस्पृश्यता इंसान की कमजोरी का परिचायक है। इसलिये पूर्ण दृढ़ता के साथ इसके विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करने के लिये मैंने फिल्म-संसार में प्रवेश किया। बड़े गौरव के साथ—आज इंसानी जिदंगी के साथ अस्पृश्यता अभिशाप बनकर जोंक की तरह चिपटी हुई है। आज ऐसे खेलों की जरूरत है जिनमें दलित वर्ग को उठाने की क्षमता हो, जिनमें मानव को मानव बनाने का संदेश हो। ऐसे ही खेल मानव को उत्थान की ओर बढ़ा सकते हैं। मुझे अपने इसी आदर्श की पूर्ति के लिये आत्मीय जनों और अभिभावकों का साथ छोड़ना पड़ा। सिर्फ आदर्श-रक्षा के लिये। यही मैं प्रत्येक मानव से आशा रखता हूँ कि सच्चे आदर्श के लिये उसे अपने जीवन को भी उत्सर्ग करना पड़े तो पीछे कदम न हटाना चाहिये।

प्रश्न—क्या एक कलाकार राष्ट्रीय पथ पर नहीं चल सकता?

उत्तर—एक कलाकार राष्ट्रीय-पथ पर चल कर अपने को कला की दुनियाँ में भी बहुत आगे बढ़ा सकता है। वास्तव में सच्ची कला के अंतराल में ही राष्ट्रीयता के बीज पनप रहे हैं। राष्ट्र एवं कला इन दोनों को हम एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते। मेरा तो यहाँ तक विश्वास है कि राष्ट्रीयता की नींव पर कला का भव्य प्रासाद निर्मित होता है। राष्ट्र-जीवन और कला इन्हीं सब को मिला कर अभिनय का स्वरूप बनता है। आज मानव राष्ट्रीयता के विरुद्ध कुछ नहीं सुनना चाहता। आज का युवक कोरमकोर ऐश्वर्य की दुनियाँ की दिल लुभाने वाली भावना को नहीं देखना चाहता—क्योंकि वह समझता है कि राष्ट्रीयता के दामन में ही मानवता का विकास है, और मानवता के विकास में ही कला का विकास है तथा कला के विकास में ही जीवन का प्रकाश है। जीवन के प्रकाश से ही आत्मा परमात्मा में व्याप्त होती है।

प्रश्न—आप किस तरह के "खेल" में काम करना अधिक पसंद करते हैं और क्यों?

उत्तर—मैं उस भूमिका में काम करना अधिक पसंद करता हूँ जिसमें मानवता ही मानव का विशाल धर्म और पूजनीय दृष्टिकोण समझा जाता हो। शृंगार की ओट में कामुकता का नग्न प्रदर्शन न होता हो। नारीत्व के विकास के लिये जिसमें मनोहर और वास्तविक कहानी से एक अभिनव संसार का सृजन किया जाता हो।

प्रश्न—आप अभिनय के अलावा और किन किन कार्यों में दिलचस्पी लेते हैं?

उत्तर—मैं 'मेकअप' का काम भी करता हूँ। मुझे यह काम अधिक पसन्द है। नाटक लिखना भी मुझे बहुत अच्छा लगता है। मेरा एक ड्रामा "बीसवीं सदी" लोगों ने दिल खोल कर पसन्द किया है। नाटक लिखना मैं क्यों अधिक पसन्द करता हूँ, इसलिये कि जिससे मैं अपनी आदर्श-पूर्ति ठीक रूप में कर सकूँ।

प्रश्न—आपकी हाबी क्या क्या हैं?

उत्तर—मैं तैरना अधिक पसन्द करता हूँ। तैर कर स्नान करने से सौन्दर्य में निखार आता है। स्वास्थ्य भी चुस्त रहता है। हृदय में प्रफुल्लता का विकास होता है। खेलों में मुझे क्रिकेट, वालीवाल, हाकी आदि बड़े अच्छे लगते हैं। अच्छे ही नहीं बल्कि मैं इन सबका खिलाड़ी भी हूँ। घोड़े की सवारी से भी मुझे शौक है। स्वाध्याय करने का मुझे बहुत शौक है। अधिकतर विश्वकवि टैगौर, जार्ज बर्नार्डशा और जयशंकरप्रसाद आदि कवियों व नाट्यकारों के जाज्वल्यमान ग्रन्थों से मुझे अधिक स्नेह है। हिन्दी में जयशंकरप्रसाद जी के नाटकों ने मुझे अधिक प्रभावित किया है। जिन लोगों का यह ख्याल है कि प्रसाद जी के नाटक स्टेज पर नहीं खेले जा सकते, वह गलत समझते हैं। मैं प्रेमचन्द जी के उपन्यासों का भी प्रेमी हूँ।

प्रश्न—आप अपना पारिवारिक परिचय दीजिये?

उत्तर—दलित वर्ग की एक-मात्र प्रतिनिधि-संस्था अखिल भारतीय दलित वर्ग-संघ (लीग) के संस्थापक डाक्टर धर्मप्रकाश का पुत्र हूँ। मेरे पिता जी "मानव-धर्म" के संस्थापक भी हैं। मैं यू० पी० के एक छोटे से नगर बरेली का रहनेवाला हूँ और प्रान्तीय दलित-वर्ग-संघ (लीग) का मन्त्री हूँ।

प्रश्न—आप अपने जीवन की न भूलनेवाली कोई घटना सुनाइये?

उत्तर—यों तो जीवन की बहुत सी ऐसी घटनायें हैं जिन्हें मैं नहीं भूल सकता क्योंकि मैं जिस उद्देश्य को पूरा करना चाहता हूँ उसके लिये न जाने कितनी घटनायें घटी हैं और वे मेरे हृदय-पटल पर अंकित हैं लेकिन फिर भी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता उस जीवन घटना का शीर्षक है "जो कुछ दिया उसे मत छीनो"

सन् १९४२ का वर्ष था। मैं यू० पी० के लखनऊ नगर में ठहरा हुआ था। इतवार का दिन था। कांग्रेस की सारी वर्किंग कमेटी गिरफ्तार कर ली गई थी। मैं एक जुलूस को लीड करके अमीनुद्दौला पार्क में ले गया। पुलिस ने जुलूस को आगे बढ़ने से रोका। भला देश के दीवाने क्यों रुकने लगे? लाठी-प्रहार प्रारम्भ हो गया—मैंने जनता से अहिंसक रहने की अपील की। मेरे ऊपर लाठियों की बौछार होने लगी। मैं बेहोश हो गया। मुझे मालूम नहीं कब और कौन मुझे घर लाया। रात के ठीक बारह बजे मैंने आखें खोलीं—मैंने अपने सामने सौन्दर्य की प्रतिमा "प्रभा रानी" को देखा। उसकी आखों में आसुओं के बिन्दु छलक रहे थे। उन आसुओं के अन्तस्थल में वेदना उमड़ रही थी। उसकी उम्र सिर्फ चौदह साल की थी।

बाद को हम दोनों एक ही मकान में रहते थे। नीचे के भाग में मैं अकेला रहा करता था और ऊपर के भाग में प्रभा अपने माँ-बाप के साथ रहा करती थी। उसके माँ-बाप का स्नेह भी मुझ पर अधिक था। उन्हें मुझ पर पूर्ण विश्वास था। कभी कभी खाना भी मैं उसके यहाँ खा लिया करता था। वैसे मेरे खाने-पीने का प्रबन्ध होटल में था। प्रभा इस बात से मुझ से नाराज रहा करती थी कि मैंने होटल में खाने का प्रबन्ध क्यों किया? फिर भी वह अपने अतुल स्नेह से प्रभावित कर मुझे अपने यहाँ खाने के लिए बाध्य कर ही लिया करती थी!

मैं होटल से खाना खाकर वापस लौट रहा था। घर आकर मैंने देखा कि एक कमरे में अकेली पड़ी हुई प्रभा गाना गा रही है। मैं गाना सुनने लगा—

जो कुछ दिया उसे मत छीनो,
आशा की कलियाँ मत बीनो!"

जैसे ही गाना समाप्त हुआ, मैंने कहा, "क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?" प्रभा ने मुड़कर देखा और मुझे हँसते हुए पाया। उसने कहा—"भैया किशोर, अब तुम छिप कर गाना भी सुनने लगे हो? बहिन का भाई के ऊपर कोई कन्ट्रोल नहीं। फिर कमरे में प्रवेश करने की इजाजत माँगना आपको शोभा नहीं देता—"

मैंने कहा "प्रभा, गाना तुम खूब अच्छा गाती हो। तुम्हारी मीठी तान सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई—"

प्रभा ने हँसते हुए कहा—"अच्छा तो भैया किशोर, तुम मुझे इसके बदले में उपहार दोगे?"

फिल्म-जगत् की प्रसिद्ध अभिनेत्री और
कला में प्रवीण लीला देसाई।

"जो तुम माँगोगी वही मैं दे दूँ"

"सच किशोर।"

"इसमें भी कोई शक है क्या!"

"अच्छा तो मुझे अपने हृदय विमल भ्रातृ-प्रेम उपहार में दे दो आपकी बड़ी कृतज्ञ हूँगी।"

"यह तो मैं पहले ही तुम्हें चुका हूँ।"

"इस प्रेम को आप भविष्य में तो नहीं?"

"मुझसे तुम यह आशा कर प्रभा? मुझे बहिन के दामन से प्रेम का कोई अधिकार नहीं। भारतीय यही कर्तव्य है। भाई का बहिन से छीनना ही मानो दोजख में जाना है।"

× ×

मैं बंबई में स्वर्गीय जयशंकर अमर लेखनी द्वारा लिखित "सम्राट गुप्त" के एक खेल में अभिनय वापस आया। मैंने अपने "स्लीपिंग में प्रवेश किया। रोशनी जलाई। मेरी टेबिल पर एक पत्र रखा है। उसको जल्दी से खोला और पढ़ना किया—भैया किशोर! सप्रेम

जब से तुमने यहाँ से प्रस्थान है—तब से कोई भी कार्ड नहीं आखिर यह निर्ममता क्यों? अपनी बहिन को इतनी जल्दी भुला क्या तुमने अपना दिया हुआ वापिस ले लिया? मैंने यह आशा नहीं की थी। मैं तो आपसे यही विनम्र निवेदन कर सकती "जो कुछ दिया उसे मत छीनो।" की आशा में?

आपकी अभागी बहिन—

प्रभा का पत्र आज भी मेरे क्षित रखा है। पत्र को देखकर मैं हूँ "काश हम दोनो ने एक के पेट से जन्म लिया होता" तो दुनियाँ की परवाह न थी। आज के प्रेम के मध्य में दुनिया की रही है। लेकिन जितना ही मैं से दूर भागना चाहता हूँ उतना और नजदीक पहुँच जाता हूँ। मैं एकान्त में बैठा होता हूँ तो भोले-भाले मीठे शब्द मेरे कानों ध्वनित होने लगते हैं—

"जो कुछ दिया उसे मत

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार

अभी अभी प्रकाशित
भैरवी—तीसरा संस्करण
आर्ट पेपर पर
आर्ट पेपर में चित्र,
बँधाई और रैपर।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड

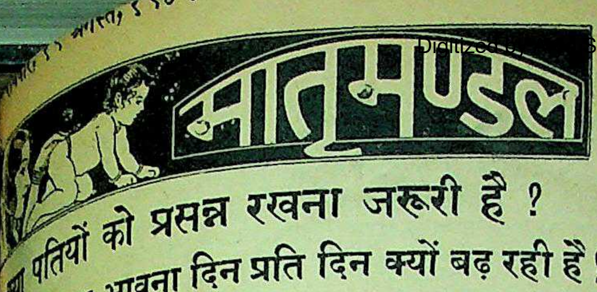

मातृमण्डल

क्या पतियों को प्रसन्न रखना जरूरी है ?

...यह अहम् भावना दिन प्रति दिन क्यों बढ़ रही है ?

लेखिका, सुश्री शान्ति माहेश्वरी बी० ए०, प्रभाकर

...काल जाग्रति का काल
...पुरुषों में ही नहीं बल्कि स्त्रियों
...जाग्रति की लहर फैल चुकी है।
...ही बुद्धि में बलशाली समझा
...न्तु वर्तमान काल में स्त्रियों ने
...में अपने कार्यों से साबित
...है कि वे भी उनसे बुद्धि में
...हीं हैं। यही कारण है कि
...पुरुषों का जीवन विडम्बना-
...बना हुआ है। पुरुष
...कि उनकी पत्नियाँ अब भी सीता
...के समान हों। चाहे हों या न
...' में 'पतियों को प्रसन्न
...है ?' के लेखक ने बर्टन
...के दृष्टान्त से भारतीय
...उचित ग्रहण करने के लिए
...हैं।

...पुत्री पंडित जवाहरलाल
...के साथ इस समय
...हैं।

...की स्त्रियों के दृष्टान्त
...होता है कि उनके पतियों
...अपना लिया है और
...सावित्री बनने के प्रयत्न
...परन्तु भारतवर्ष में तो
...कुछ और है। यहाँ तो
...वेदों में भी कहा है कि
...है, न मानकर गुलाम
...समान समझते हैं और
...पैर की जूती के समान
...फेंक दो।
...लगाना, नौकर
...रखना, उन्हें अंधकार में
...और भोग की वस्तु
...है तो हमें फिर से
...के चरित्र की कल्पना
...के पति-धर्म ग्रहण
...नहीं बन सकता
...धर्म ग्रहण न करें।
...रूप है तो पत्नी
...लक्ष्मी का आदर
...भी सुख-शान्ति
...सकता। स्त्रियों का
अनादर करने से गृहस्थ-जीवन पर ही नहीं बल्कि देश पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। जब स्त्रियाँ निर्बल, दब्बू और अशिक्षित होंगी तो उनकी सन्तान भी वैसी ही होगी। क्योंकि सन्तान पर मा का ही प्रभाव अधिक पड़ता है। अतः जब तक उन्हें स्वयं स्वतन्त्रता का अनुभव न होगा तब तक वह अपनी सन्तानों को कैसे इसका स्वाद बता सकती हैं ?

लेखक ने कहा है कि नव पतिव्रत के लिए पत्नी में छः गुणों का होना आवश्यक है।

पहली बात तो यह है कि पत्नी को पति के लिए अच्छे से अच्छा भोजन बनाकर देना चाहिए, क्योंकि इसके बिना उसका स्वास्थ्य खराब हो जायेगा। यह ठीक है कि बिना पौष्टिक भोजन के स्वास्थ्य खराब हो जायेगा। परन्तु जहाँ परस्पर प्रेम है वहाँ तो यह प्रश्न रहता ही नहीं। दूसरे यदि ऐसा भी है तो क्या पत्नी को पौष्टिक भोजन की आवश्यकता नहीं जब कि वह पत्नी ही नहीं मा का भी पद ग्रहण करती है ? पति को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि उसकी पत्नी का स्वास्थ्य तो खराब नहीं है। रहा, जूते साफ करने का प्रश्न, वह यह है कि जहाँ पति-पत्नी में पूर्ण सहयोग होगा वहाँ जूते या थूक उठाने में भी घृणा नहीं की जाती है।

दूसरी बात यह है कि स्त्रियाँ जिस पतरी में खाती हैं 'उसी में छेद करती हैं।' और ऐसा करने से वह जीवित नहीं रह सकतीं। पश्चिम की स्त्रियों की भाँति जरा जरा-सी बात में सम्बन्ध-विच्छेद करने को तैयार हो जाती हैं। इसका अर्थ तो यह हुआ कि स्त्री घर की रानी न होकर एक नौकर के समान है और वह पुरुष से हीन है। पर कभी भी एक हाथ हथेली नहीं बजती है। यदि पति रुपया कमाता है तो पत्नी गृह-कार्य करती है। अतः दोनों के क्षेत्र भिन्न होते हुए भी बराबर के हैं। इसमें न पति का कोई पत्नी पर एहसान है और न पत्नी का ही। यदि पुरुष स्त्रियों के बिना जीवित रह सकते हैं तो स्त्रियाँ भी रह सकती हैं। जहाँ नव प्रतिशत पुरुष पत्नी में जरा भी किसी बात की कमी होने पर एक नहीं छः विवाह करने को तैयार हैं, वहाँ यदि एक-दो स्त्रियाँ पति की परिताड़नाओं से तङ्ग आकर सम्बन्ध-विच्छेद कर भी लेती हैं तो कौन आश्चर्य की बात है ? जब पति-पत्नी में पूर्ण सहयोग होगा तो फिर संबन्ध-विच्छेद करने की क्या आवश्यकता होगी ?

तीसरी बात यह है कि स्त्रियों को बहस नहीं करनी चाहिये। पति यदि अत्याचार भी करे तो मूक रहना चाहिए। भगवान् ने स्त्री, पुरुष दोनों को ही बराबर शक्ति प्रदान की है। जब तक दोनों ही इसका प्रयोग उचित रूप में न करेंगे तब तक गृहस्थ-जीवन कलह का घर बना रहेगा। जैसा कि पत्नी को वेदों में अर्द्धाङ्गिनी कहा है, उसके अनुसार पति का कर्त्तव्य है कि जो कार्य गृहस्थी से सम्बन्ध रखते हैं उनमें पत्नी की भी सलाह ले और यदि पत्नी कोई बात ठीक कहती है तो उसे माने। पत्नी का भी कर्त्तव्य है कि वह पति की बातों को ध्यान से देखती रहे कि वह कोई ऐसा कार्य तो नहीं कर रहा है जिससे उसी का ही नहीं बल्कि सबका जीवन नष्ट होने की सम्भावना है। मान लीजिए किसी का पति शराब पीता है और बुरे रास्ते पर चल रहा है और वह अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता है तो इस समय पत्नी का क्या धर्म होगा ? क्या उसके दुष्ट कार्य भी पत्नी को शिरोधार्य करने चाहिए ? यदि पत्नी किसी भी प्रकार से पति को नहीं रोकती है तो इसका परिणाम क्या होगा ?

चौथी बात यह है कि स्त्री में विनोद-प्रियता, सहनशीलता और प्रेम होना चाहिए। यह ठीक है कि स्त्रियों के ये गुण ही नहीं परन्तु आभूषण के समान हैं। और उनमें पुरुषों की अपेक्षा ये गुण अधिक होने चाहिए। परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि ये गुण सिर्फ स्त्रियों के लिए ही हों बल्कि पति में भी होने अनिवार्य हैं। किसी स्त्री में ये सब गुण हैं परन्तु पति जी महाराज पूरे अक्खड़ और इसके विपरीत हों तो पत्नी कहाँ तक सहन कर सकती है ? पुरुषों की इन्हीं भावनाओं से आज सैकड़ों गृह नरकमय बन रहे हैं। किसी के माता-पिता ने पति की इच्छानुसार धन नहीं दिया या कोई अशिक्षित है या जरा भी सौन्दर्य में कम है तो पति एकदम छोड़ देते हैं और दूसरा विवाह कर लेते हैं। ऐसी बातें प्रायः देखने में आती हैं कि एक पत्नी के होते हुए पुरुष एक नहीं छः विवाह भी कर ले तो कोई दोष नहीं और यदि स्त्री बहुत दुःखी होकर दूसरा विवाह तो क्या यदि सम्बन्ध-विच्छेद भी करती है तो महान् पाप है। अब सुन्दरता का प्रश्न है कि वे अपने को सुन्दर बनाये रखें यदि वह ऐसा नहीं करती हैं तो पति कुछ ही दिन में विरक्त हो जायेगा। संसार में कौन प्राणी ऐसा है जो अपने को वस्त्र व आभूषणों से सजाकर सुन्दर बनने का प्रयत्न नहीं करता, विशेषकर स्त्रियों की तो और भी इस तरफ अधिक रुचि पाई जाती है। परन्तु कई बार देखने में आता है कि पत्नी चाहे कितनी सुन्दर और होशियार हो फिर भी पति जी महाशय विरक्त हो जाते हैं। अतः सौन्दर्य का कोई प्रमाण न होकर भावनाओं पर ही निर्भर है। सौन्दर्य के पुजारी दोनों ही होते हैं। भेद इतना ही है कि स्त्री समाज के बन्धनों के कारण और धर्म के कारण पति के लिये विचार प्रकट नहीं कर सकती और पुरुष कर देता है।

अन्त में यही कहा जा सकता है कि जब तक पति-पत्नी दोनों अपने कर्त्तव्यों को नहीं पहचानेंगे तब तक गृहस्थ-जीवन कभी भी सुखी और आनन्दमय नहीं हो सकता। जब पत्नी पति को ईश्वर-तुल्य समझती है तो पति को भी उसे लक्ष्मी के समान समझना चाहिए। क्योंकि पत्नी जूती के समान न होकर पति के लिए अर्द्धाङ्गिनी होती है। दोनों में परस्पर सहयोग होना आवश्यक है। जिन घरों में स्त्रियों का अनादर होता है, वहाँ कभी भी सुख नहीं होता। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का हृदय अधिक कोमल होता है। अतः उन्हें थोड़ा-सा भी पति की तरफ से अच्छा व्यवहार मिल जाये तो वह जूते साफ करना तो क्या, कोई भी घृणित कार्य करने को तैयार रहती है। भारतवर्ष में अब भी प्रतिशत ऐसी स्त्रियाँ मिलेंगी जो पतियों के अत्याचारी होने पर भी उन्हें देवता के तुल्य समझती हैं। दोनों को ही एक दूसरे को आदर्श बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। तभी जीवन आनन्दमय हो सकता है।

पेट की शिकायतें
अपर्याप्त पेट के रस के कारण
उत्पन्न होती हैं:—
* अजीर्ण * अपच
* कठिन संग्रहणी * पाकाशय प्रदाह
* रक्त की कमी आदि *
व्यवहार कीजिये
बाई-ग्लिसरीन
एसिड-पेपसिन
BI-GLYCERINE-ACID-PEPSIN
निरोग होने पर निर्बलता में प्रत्येक भोजन के पश्चात् बाई ग्लिसरीन एसिड पेपसिन एक खुराक लेने से पाचन में सहायता मिलती है।
स्वादिष्ट रूप में पेट के लिए साधारण रस पदार्थ
यदि आपको यह अपने केमिस्ट के यहाँ प्राप्त न हो तो कृपया लिखें :—
बङ्गाल इम्युनिटी कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता

संवाददाताओं के पत्र

बीकानेर में क्या हो रहा है ?

लेखक, श्री सुमनेश जोशी (पत्रकार)

दूधवाखारा की किसान समस्या को लेकर बीकानेर ने दमन के इन दिनों बहुत अधिक जोर पकड़ लिया है। जनपक्ष की ओर से काम करनेवाले गुप्त दस्तों की खोज करने के नाम पर वहाँ के कर्मचारी शिक्षित लोगों को हर तरह से परेशान कर रहे हैं। बीकानेरी दमन के सम्बन्ध में वायसराय और राष्ट्रीय नेताओं को जो तार दिये गये थे और जो प्रचार का कार्य चल रहा है इनसे सरकार बड़ी चिन्तित हो उठी है और बड़ी मुस्तैदी से खोज की जा रही है कि ये तार लिखनेवाले और भेजनेवाले कौन हैं ?

* * *

राजपूताना कार्यकर्ता संघ के संयोजक श्री देशपांडे जी और श्री हरिभाऊ जी उपाध्याय अभी अभी इन सारी समस्याओं की जाँच करने और सही जानकारी प्राप्त करने के लिए बीकानेर गये थे। नोखा स्टेशन से ही पुलिस उनके पीछे पड़ गई। बीकानेर पहुँचते ही वे कस्टेडी में ले लिये गये। उन्हें १८ नम्बर की स्टेट कोठी में ठहराया गया और जब तक वे बीकानेर में रहे उन पर सख्त पहरा रखा गया। बीकानेर में कोई व्यक्ति उनसे नहीं मिल सका। बीमानेर में उनके ३० घंटे ठहरने के बारे में कई अफवाहें बीकानेर में उड़ रही हैं। उन्हें दूसरे दिन पहली गाड़ी से पीछे रवाना कर दिया गया।

श्री शास्त्री जी के प्रश्न का उत्तर

श्री हीरालाल जी ने अपने वक्तव्य में जो प्रश्न बीकानेर राज्य से किये हैं—उनमें एक यह भी है कि क्या राजपूताना या बाहर का कोई जिम्मेदार आदमी दूधवाखारा के मामले की सही जानकारी हासिल करने के लिए बीकानेर और दूधवाखारा आना चाहें तो बीकानेर सरकार की ओर से कोई रुकावट तो नहीं होगी ? इसका उत्तर बीकानेर की सरकार ने जुबान से नहीं लेकिन श्री देशपांडे जी और श्री हरिभाऊ जी जैसे और प्रान्त के जिम्मेवार नेताओं को बीकानेर के किसी नागरिक से मिले बिना पीछे रवाना करके अपनी क्रिया से दे दिया है।

बीकानेर राज्य प्रजा-परिषद् के सभापति श्री मघाराम वैद्य भी पिछले पन्द्रह दिनों से बीकानेर जेल में बन्द हैं। उन्होंने क्या अपराध किया ? इसका बीकानेर राज्य के पास कोई उत्तर नहीं है। दूधवाखारा के किसानों को जो अपनी दाद-फरियाद करने के लिए अपने गाँव से बीकानेर में आये थे केवल खाने-पीने की सुविधा देने का थोड़ा प्रबन्ध किया था। केवल इसी अपराध में वे गिरफ्तार कर लिये गये। उनकी खासी पिटाई की गई। आज भी उनकी गर्दन में बेहद चोटें लगी हैं। उनकी जाँघों में बहुत दर्द है और सारे शरीर पर पिटाई के नीले निशान जमे हुए हैं उन्हें काल कोठरी में रखा गया है। उनके इलाज की कोई व्यवस्था नहीं है। अकारण पिटाई करनेवाले पुलिस कर्मचारियों के खिलाफ श्री वैद्य के रिश्तेदारों ने अदालत में मुकदमा दायर किया था लेकिन न्यायाधीश ने वह मुकदमा खारिज कर दिया।

नारायण बहुत बीमार हैं

समाचार मिले हैं कि श्री मघाराम वैद्य का लड़का रामनारायण इन दिनों जेल में बहुत बीमार है लेकिन उसके उपचार की कोई व्यवस्था नहीं की जा रही है।

* * *

आगरा में अखिल भारतीय पशु-रक्षा सम्मेलन की स्वागतकारिणी की कार्यकारिणी की एक बैठक उप-स्वागताध्यक्ष डाक्टर महमूदुलहसन के सभापतित्व में हुई। यह सदस्य कोआप्ट किये गये—डाक्टर नारायणप्रसाद अष्ठाना इलाहाबाद, श्री शिवप्रसाद अग्रवाल अछनेरा, सेठ मदनगोपाल बागला हाथरस, श्री सुशीलचन्द्र चतुर्वेदी फीरोजाबाद, श्री शम्भूनाथ चतुर्वेदी होलीपुरा, श्री जोशी राधेश्याम द्विवेदी मथुरा, सेठ रामरत्न गुप्त एम० एल० ए० कानपुर।

सम्मेलन का प्रथम विराट् अधिवेशन ता० २४, २५, २६ दिसम्बर को आगरे में होगा। कार्यकारिणी का कोरम ११ का रहेगा। स्वागताध्यक्ष व स्वागत मन्त्री हर उपसमिति के मेम्बर होंगे। अर्थसमिति में रा० सा० सेठ मटरूमल बनाड़ा, श्री चौबे जैगोपाल जी और श्री विश्वम्भरनाथ खंडेलवाल रहेंगे। सम्मेलन रामलीला के मैदान में होगा। पंडाल समिति के अध्यक्ष श्री जी० पी० तिवारी इंजीनियर बनाये गये। प्रदर्शनियों का प्रबन्ध यह सज्जन करेंगे—

पशु-प्रदर्शनी—श्री विश्वम्भरनाथ खंडेलवाल। कृषि-प्रदर्शनी—श्री प्रभाकर जी। चर्मरहित वस्तु-प्रदर्शनी—श्री बद्रीप्रसाद मोदिला। घास और चारा प्रदर्शनी—श्री प्रभाकर जी।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर में होनेवाले अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३ वें अधिवेशन की तिथियाँ पत्रों में प्रकाशित हुई थीं। इन प्रकाशित तिथियों की सूचना स्वागत-समिति कार्यालय से नहीं भेजी गई थी। उदयपुर स्वागत समिति की गत ता० २० जुलाई की बैठक में अधिवेशन के लिये दशहरा निश्चित किया गया है और तिथियों का निश्चय श्रीमान् श्रीजी हजूर के पधारने की सुविधानुसार किया जायगा, तय हुआ था। अतः अभी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुई तिथियाँ निश्चित न मानी जायँ। अधिवेशन दशहरे पर ही होगा यह निश्चित है।

—जनार्दनराम नागर, स्वागत मन्त्री

* * *

सेवदह (पटना) श्री राजेन्द्र-साहित्य-महाविद्यालय, में अगस्त - दिवस और तुलसीजयन्ती समारोह के साथ प्रधानाध्यापक श्री मथुराप्रसाद सिंह के अधिनायकत्व में मनाया गया, जिसमें रायबहादुर श्री श्यामसुन्दरदास जी के निधन पर समवेदना प्रगट की गई और उनकी स्वर्गीय आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई।

—कामेश्वरप्रसाद सिंह

* * *

इंदौर (गौराकुंड) श्री वीर सार्वजनिक वाचनालय एवं श्री म० भा० हिन्दी साहित्य-समिति की ओर से सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण जी गुप्त-की हीरक-जयंति-उत्सव इन्दौर राज्य प्रजा-मंडल के अध्यक्ष राष्ट्रकर्मी श्री मिश्रीलाल जी गंगवाल

(पेज ८ का शेष)

इस सकट के समय बैठक मे
मार्ग-प्रदर्शन नहीं, आवश्यक
विचार नहीं, देश के सामने कोई
नहीं रक्खा गया। जो थोड़े बहुत
पूर्ण प्रस्ताव भी पास किये गये वे
सभापति-द्वारा उपस्थित किये गये
न तो उन पर भाषण हो सके और
विचार-विनियम।

एसेम्बली की सारी बैठक में
काटजू के प्रस्ताव पर श्री टंडन भी
चुपचाप थे। शायद उन्हें जो कुछ
था उन्होंने पहले और प्रतिनिधि
की कार्य-कारिणी में कह-सुन लिया

के नेतृत्व में सफलतापूर्वक मनाया
इस अवसर पर प्रसिद्ध राष्ट्र सेवी
सत्यदेव परिव्राजक का ओजस्वी
हुआ। संपूर्ण सभा की ओर से
के इस अनन्य सेवक की दीर्घायु
प्रार्थना की गई।

* * *

प्रयाग महिला-विद्या-मन्दिर
साधारण सदस्यों की एक सभा
लाडोरानी जुतशी के निवास
हुई। सर्वसम्मति से यह निश्च
कि संस्था का प्रबन्ध केवल स्त्रियों
में रहे। आगामी वर्ष के लिये निम्न
पदाधिकारिणी चुनी गईं। सभा
श्रीमती लाडोरानी जुतशी, उप-सभा
मिसेज वी० के० सिंह, मंत्राणी
रमादेवी टण्डन, उप-मंत्राणी
देवकीदेवी सक्सेना, कोषाध्यक्ष
रमादेवी मालवीया। इनके
और महिला-सदस्याओं की
कार्यकारिणी समिति बनाई गई।

—रमादेवी टंडन

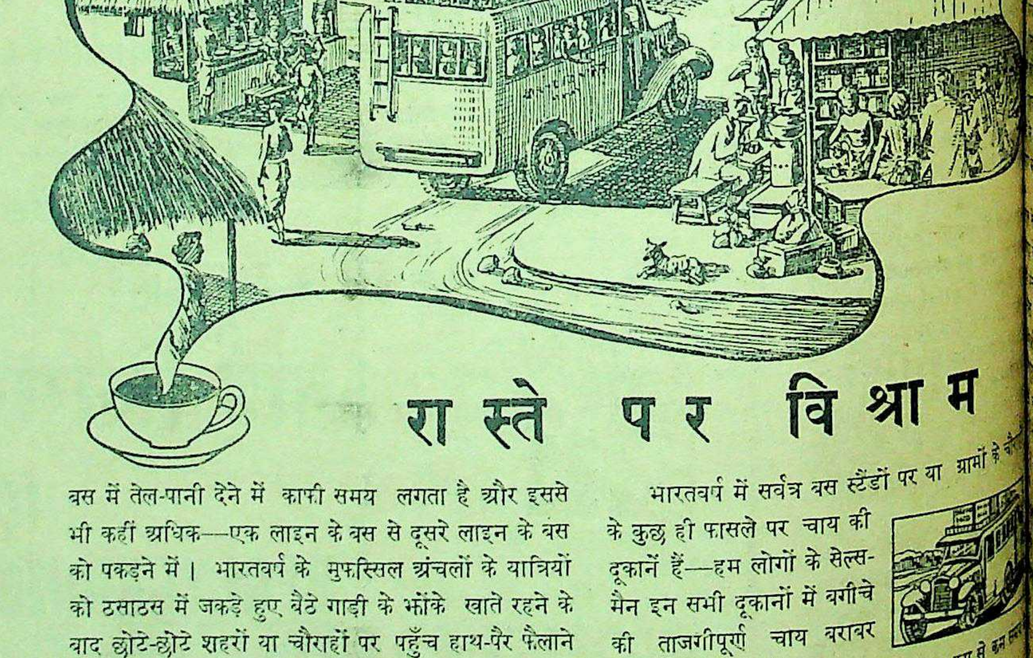

रास्ते पर विश्राम

बस में तेल-पानी देने में काफी समय लगता है और इससे भी कहीं अधिक—एक लाइन के बस से दूसरे लाइन के बस को पकड़ने में। भारतवर्ष के मुफस्सिल अंचलों के यात्रियों को ठसाठस में जकड़े हुए बैठे गाड़ी के झोंके खाते रहने के बाद छोटे-छोटे शहरों या चौराहों पर पहुँच हाथ-पैर फैलाने के लिए लगभग घण्टे तक या उससे अधिक समय मिल जाता है।

इससे भी बेहतर होता है जब कि शारीरिक या मानसिक थकावट एक प्याला ताजा ब्रुक बण्ड चाय से दूर की जाती है।

भारतवर्ष में सर्वत्र बस स्टैंडों पर या ग्रामों के चौ के कुछ ही फासले पर चाय की दूकानें हैं—हम लोगों के सेल्समैन इन सभी दूकानों में बगीचे की ताजगीपूर्ण चाय बराबर सप्लाई करते रहते हैं।

ताजा—कम से कम
बगीचे से प्याला

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

युद्ध की प्रगति

ने आत्म-समर्पण कर दिया—युद्ध समाप्त

उसकी भावी नीति पर विचार-विनिमय कर रहे हैं

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

ने जापान के विरुद्ध युद्ध की हुए सोवियट परराष्ट्र मन्त्री ने मास्कोस्थित जापानी किया कि चूँकि मित्र- अनुरोध किया है कि विरुद्ध युद्ध में उनका साथ मित्रों के प्रति सच्चा के उद्देश्य से उनका कर लिया है।

*

मि० प्रेथिक लारेंस भारतीय पत्रकारों के एक घोषित किया है कि उनके वह है ब्रिटेन, भारत समानता की स्थिति । इस आदर्श की पूर्ति किन उपायों-द्वारा होगी, पर उन्होंने कहा कि जो भी हों, भारत के कार्यों के पीछे यही करता रहेगा।

*

फ्रांको की स्थिति हो उठी है। पोट्सडम फ़ासिस्ट नीति की है, और अब तीन बड़े भी समर्थन उन्हें प्राप्त जनरल डिगाल की के लिए पूरा जोर वह जनरल फ्रांको से ले। जनरल फ्रांको अन्तिम उपाय काम रहे हैं। वह स्पेन के फिर से किसी राजा हैं और इस पद के खोज में हैं। उनका में राजतन्त्र की स्थापना का एक बहुत बड़ा लेगा। पर वह उनकी जाता है।

के बीच नये समझौते थी वह भंग हो गई कुछ भी रियायतें देने है।

*

जापान के विरुद्ध युद्ध ही अकस्मात् पूर्वी तथा में हमला बोल दिया। इस क्षेत्र में १,००० मील कर लिया है। जापानी रूसियों के साथ रही हैं। सोवियट के रेलवे स्टेशन तथा कब्जा कर लिया है।

*

नये घातक बम का है। इस व्यापक रूप नाम रखा गया है बम का विस्फोट बमों के बराबर नगर हिरोशिमा गया, जिसके ध्वस्त हो गया है। उसके दूसरे जापानी नगर गया और नगर को भी है। इस विराट विध्वंसक बम ने युद्धकला में क्रान्ति मचा दी है और जापान की लड़ाई में एक पूर्णतः नई स्थिति उत्पन्न कर दी है। कहा जाता है कि इस नये बम से जापानियों में ऐसा घोर आतंक छा गया है जो कल्पनातीत है।

फिलिपाइन्स के अन्तर्गत लुजोन के पहाड़ों पर जो जापानी सैन्यदल महीनों के संहार के बाद भी बचे हुए थे वे ठीक तरह से भोजन न प्राप्त होने पर भी अत्यन्त दुराग्रह के साथ लड़ रहे हैं। लुजोन के जापानी कमांडर को आत्मसमर्पण करने की अन्तिम चेतावनी दी गई है।

* * *

जापानी न्यूज एजेन्सी के ब्राडकास्ट से यहाँ मालूम हुआ—"जापान पोट्सडम कान्फरेन्स की शर्तें इस आधार पर मानने को तैयार है कि पोट्सडम सम्मेलन की कोई ऐसी माँग न हो जिससे मिकाडो के सर्वश्रेष्ठ शासन के विशेषाधिकार पर कोई आघात लगे।

११ अगस्त को अमेरिका के वैदेशिक मन्त्री मि० जेम्स बार्न्स ने मित्रराष्ट्रों की तरफ़ से स्विस दूत के मार्फत जापान के आत्म-समर्पण के प्रस्ताव का जवाब भेज दिया। जवाब में संयुक्त-राज्य अमेरिका ने यह माँग की है कि जापानी सम्राट् का जापान पर शासन करने का अधिकार मित्रराष्ट्रों के सर्वोच्च अधिनायक के मातहद में स्वीकार किया जायगा। जापानी सम्राट् के लिये यह आवश्यक होगा कि वह आत्म-समर्पण की शर्तों को प्रामाणिक करार दें और उन्हें पोट्सडम-घोषणा को कार्यान्वित करनी होगी। सर्वोच्च मित्र अधिनायक के पद पर एक अमेरिकन की नियुक्ति होगी।

७० वर्ष से भी अधिक

समय से 'ओरियन्टल' ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति एवम् सुरक्षा की स्थापना की है। केवल १९४४ में ही ८७३९८ व्यक्तियों ने लगभग २२,००,००,०००) का बीमा कराया

फन्ड ३६।।। करोड़ के ऊपर

हमसे हर प्रकार के जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामर्श करके आप सदा लाभ में रहेंगे।

ओरियन्टल

गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स कं० लि०
भारतवर्ष में संस्थापित १८७४ प्रधान कार्यालय, बम्बई
शाखा—३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद
ब्रांच, सेक्रेटरी, मिस्टर ए० सी० गुप्ता।

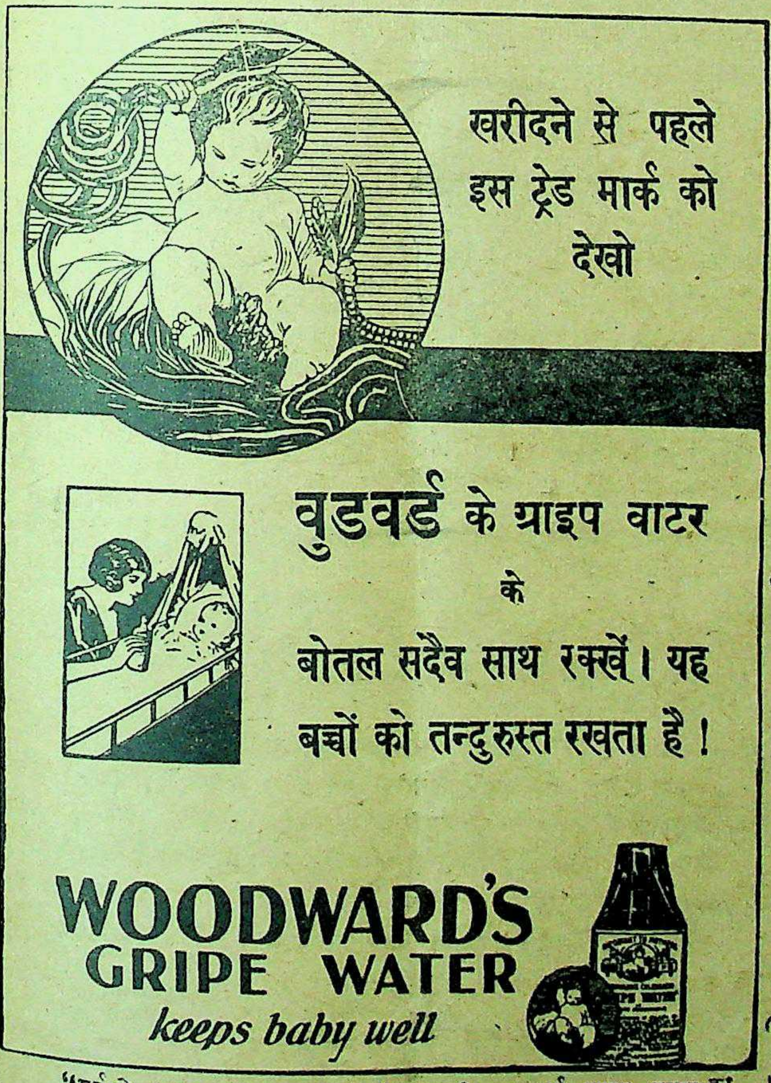

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली, वुड वर्ड ग्राइप वाटर का पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 10 क —117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND.

माफ कीजिये—
अन्दरूनी सफ़ाई
सब से पहले है!
LIVER
ANDREWS
LIVER SALT
EFFERVESCENT

स्वास्थ्य के नियम थोड़े और सरल हैं। बाहरी सफ़ाई के अलावा भीतरी सफाई ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। कारण केवल अन्दरूनी सफाई से स्वास्थ्य और शरीर ठीक रहता है।...अन्दरूनी सफाई से निश्चिन्त रहने के लिए नियमित रूप से एण्डरूज सेवन कीजिये। यह सफाई करता है, और ठंढक पहुँचाता है।

प्रथम—एण्डरूज़ मुँह और जीभ को साफ़ रखता है।

बाद में—पाकस्थली और अम्ल की बीमारी दूर करता है।

फिर—लीवर को ताक़त पहुँचाता और पेट की गड़बड़ी दूर करता है।

अन्त में—आपकी अन्दरूनी सफ़ाई के लिए एण्डरूज़ पेट की सफ़ाई करता है। कष्टदायक विष को बाहर निकाल फेंकता है, कब्ज़ियत को दूर कर रक्त को साफ़ करता और ठंढक पहुँचाता है।

अन्दरूनी सफ़ाई के लिए
नियमित रूप से व्यवहार करें।

ANDREWS
LIVER SALT

एण्डरूज़ लीवर साल्ट
स्वस्थ्यप्रद पेय — स्वास्थ्यप्रद रेचक
Health Drink – Tonic Laxative

115

बोर्नियो द्वीप का क्या महत्त्व है ?

प्रशांत में तेल के कुओं और भंडारों की उर्वर भूमि

लेखक, श्री शिवशंकर वार्ष्णेय बी० एस-सी०

प्रशांत में बोर्नियो द्वीप का एक अलग महत्त्व है। तेल के कुँओं और भंडारों की यह उर्वर भूमि है। जापान ने सन् ४२ में इस द्वीप पर अधिकार कर लिया। किन्तु अब मित्र-राष्ट्र इस पर पुनः अधिकार करने में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इस लेख में बोर्नियो के प्राचीन तथा आधुनिक महत्ता पर प्रकाश डाला गया है।

बोर्नियो संसार का दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है। इसका क्षेत्रफल लगभग ३,००० वर्गमील और इसकी जन-संख्या २५,००,००० से कुछ अधिक है। जनवरी, १९४२ से यह जापान के अधिकार में चला गया है। जापानियों ने इसे अपने नवीन साम्राज्य का राजनीतिक और औद्योगिक केन्द्र बनाने का विचार किया था।

जापान का अधिकार स्थापित हो जाने के पश्चात्, मित्रराष्ट्रों ने बोर्नियो के तेल-भंडारों पर बारम्बार बमवर्षा की है। बालिकपेपन तो बमवर्षा का मुख्य लक्ष्य हो गया है। जापान ने इसी द्वीप की रक्षा के लिये सुदृढ़ दुर्ग बनाये हैं, लेकिन मित्रराष्ट्रीय बमवर्षकों ने उन्हें ध्वस्त करने में बड़ा सराहनीय काम किया है। जापान के शासनांतर्गत इस द्वीप के निवासियों की क्या दशा है, इसका अभी तक पता नहीं चल सका है।

* * *

बोर्नियो चार भागों में बटा हुआ है। पहला, डच बोर्नियो, जो द्वीप के दक्षिणी और पूर्वी समुद्री किनारे तक है, दूसरा, ब्रिटिश उत्तरी बोर्नियो, तीसरा ब्रुंसी जो द्वीप के उत्तर-पश्चिमी समुद्रतट तक है, और चौथा, लेबून का द्वीप। डच बोर्नियों का क्षेत्रफल सम्पूर्ण द्वीप का तीन-चौथाई अंश है। बोर्नियों का समुद्र-तट दलदलों से भरा पड़ा है। आसपास अनेक छोटे द्वीप और चट्टानें फैली हुई हैं जिनके कारण आने-जानेवाले जहाजों को निरन्तर खतरा बना रहता है। सारा द्वीप पर्वतों और घाटियों से आच्छादित है। चारों ओर घने जंगल फैले हुए हैं। द्वीप में ऐसी कई नदियाँ हैं जिनमें बड़ी बड़ी नौकाओं-द्वारा यातायात जारी रहता है, किन्तु इन नदियों के दहाने इस योग्य नहीं हैं कि वे समुद्री जहाजों को द्वीप के भीतरी भागों में जाने के लिये मार्ग दे सकें। यहाँ पर अनेक झीलें और सोते भी हैं। द्वीप की मुख्य पैदावार रबर, शक्कर, गरी, चावल आदि हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के जानवर भी यहाँ पाये जाते हैं जिनमें गैंडे और हाथी विशेष उल्लेखनीय हैं।

* * *

किन्तु बोर्नियो का महत्त्व उसके तेलभंडारों पर निर्भर है। बालिकपेपन और तराकान में बड़े बड़े तेल के कुएँ स्थित हैं जो संसार भर में प्रसिद्ध हैं। मीरी और सेराई स्थानों के कुओं से भी तेल का उत्पादन प्रचुर मात्रा में किया जाता है। जापानियों ने इस द्वीप पर विद्युत्गति से बढ़ कर अधिकार किया था, किन्तु तो भी ब्रिटिश और डच सैनिकों ने यथाशक्ति तेलभंडारों को द्वीप खाली करने के पूर्व ही बरबाद कर दिया था। लेकिन इन तीन वर्षों में जापानियों ने मित्रराष्ट्रीय बमवर्षा के बावजूद भी, इन तेलक्षेत्रों का पुनर्निर्माण कर लिया है और उन्हें इनसे प्रचुर मात्रा में तेल प्राप्त हो रहा है।

* * *

बोर्नियो का प्राचीन इतिहास अत्यन्त आकर्षक और मनोरंजक है। यहाँ के आदिमनिवासी, जो 'डायक' कहलाते हैं, शताब्दियों से जंगली हैं और वे द्वीप के भीतरी प्रान्तों में अब भी रहते हैं। वे जंगली जानवरों के मांसादि पर अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। समुद्र के किनारे पर रहनेवाले मनुष्य 'लौट' कहलाते हैं। उनकी जीविका समुद्री डकैतियों पर अवलम्बित है।

सोलहवीं शताब्दी में हालैंड और पुर्तगाल देशों के व्यापारी बोर्नियों होकर मसाले के द्वीपों को जाया करते थे। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में ब्रिटिश और डच ईस्ट इंडिया कम्पनी ने इस द्वीप में व्यापारिक केन्द्र स्थापित कर लिये। सन् १६६८ तक अँगरेजों ने यहाँ पर एक बड़ी बस्ती बसा ली। १८०६ में डच और अँगरेज दोनों को बोर्नियो-निवासियों के विरोध के कारण द्वीप छोड़ देना पड़ा, किन्तु कुछ समय पश्चात् जब वहाँ के सुल्तानों में आपस में झगड़ा हुआ तो वे फिर उनमें से किसी सुल्तान का पक्ष लेकर वहाँ आ बसे।

* * *

सन् १८३९ में सिंगापुर के आसपास समुद्री डाकुओं ने बड़ा उपद्रव मचा रखा था। भारतीय सेना के एक अवकाश-प्राप्त अफसर श्री जेम्स ब्रुक ने इनका दमन आरम्भ किया। जब वह बोर्नियो के सारावाक प्रान्त में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ केडायकों ने सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। उन्होंने उन विद्रोहियों का दमन करने में सुल्तान को सहायता दी। सुल्तान ने प्रसन्न होकर जेम्स ब्रुक को सारावाक का राजा बना दिया। जेम्स ब्रुक ने धीरे धीरे वहाँ पर सुशासन की व्यवस्था की। फलतः ब्रिटेन की सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि से विभूषित कर दिया। तब से सारावाक पर ब्रुक के वंशजों का शासन है और वहाँ के राजा कहलाते हैं। बोर्नियो पर जापान का अधिकार हो जाने के कारण, सारावाक का वर्तमान राजा ब्रुक इस समय आस्ट्रेलिया में शरणार्थियों की भाँति रह रहा है।

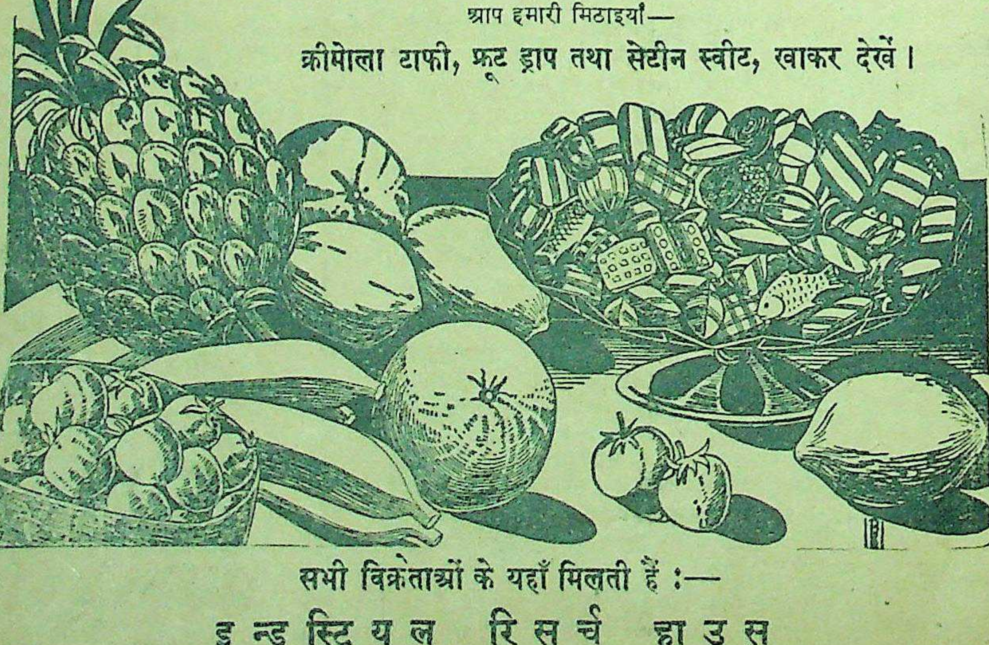

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

इधर उधर

राकेट बम क्या है ?

कप्तान एडवर्ड टेलर ब्रिटेन
विख्यात आविष्कारकर्ता और
वे रात-दिन नये नये आविष्कार करने
धुन में लगे रहते हैं। आलू छीलने
का आविष्कार उन्हीं ने किया है।
उनका सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण
राकेट बम है। इसकी गति
प्रति घंटा है। यह शब्द से भी
वेगवान् है। कुछ समय पहले
भेद किसी को नहीं बताया
अन्यथा इससे शत्रु लाभ उठा
राकेट बम का लक्ष्य अचूक
और वह जमीन में बहुत
चले जाने के बाद फटता है।
आठवीं वायुसेना ने सबसे पहले इस
हालैंड-स्थित जर्मन पनडुब्बियों के
किया था। यह बम कंक्रीट के सुदृढ़
में गहराई तक प्रवेश कर गया और
जबर्दस्त क्षति पहुँचाई।

* *

युद्धारम्भ से अब तक संयुक्त
पनडुब्बियों ने जापान के ११,०
को जल-मग्न किया।

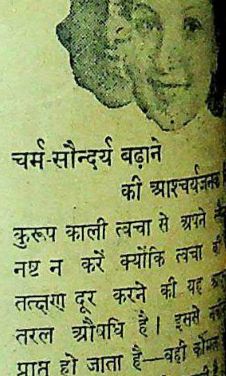

काली त्वचा ४-६
अंश तक स्वच्छ
हो गई
चर्म-सौन्दर्य बढ़ाने
की आश्चर्यजनक
कुरूप काली त्वचा से अपने
नष्ट न करें क्योंकि त्वचा
तत्क्षण दूर करने की यह
तरल औषधि है। इससे
प्राप्त हो जाता है—वही कोमल
वर्ण जिसे प्रत्येक स्त्री चाहती है
हाइटेक्स की आज ही परीक्षा
देखें कि आपकी त्वचा कितनी
हो जाती है। आपके वर्ण
आपकी भुजाओं के लिए गौर
हाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं
त्वचा में सीधे प्रवेश कर
त्वचा को पोषती है।
हाइटेक्स की एक बोतल
देखें। इसके परिणाम पर
होगा।
वितरक : जी० अथरटन एण्ड
लि० २८, अपोलो स्ट्रीट,
४ मिशन रो, कलकत्ता।
Whitex
WHITENS THE S

धारावाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गतांक के आगे)

के पश्चात् रज्जो ने कहा—विश्राम कर लिया, फिर भी सीढ़ियाँ चढ़ने में रज्जो का पैर नहीं उठ रीश ने बिना कुछ कहे सुने ही उसे गोदी में उठा जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

ने कहा—अरे, अरे! यह क्या कर रहे हैं, आप? छोड़ दीजिए!

कुछ भी नहीं सुना और ऊपर के बराण्डे में रज्जो बैठा दिया। दिगन्त-प्रसरित उस दृश्य को देखकर हो गई। उसके मुँह से निकल पड़ा—वाह, कितना

स्वेद-सिक्त शरीर लिए बैठा हाँप रहा था। उसको ने कहा—आप भी तो आततायीपन करते हैं। ने कहा—कृपया मेरे कोट के बटन तो खोल दीजिए। खोल दिये। उसका निश्वास हरीश की देह में लगा का वायु। हरीश का चित्त आवेशपूर्ण हो उठा। की ओर देखा तो ऐसा ज्ञात हुआ कि उसकी रही हैं और सन्मुख का संसार पाताल में धँसकर रहा है। दोनों हाथों से मलते हुए, आँखें मुँदने न की चेष्टा करने लगी।

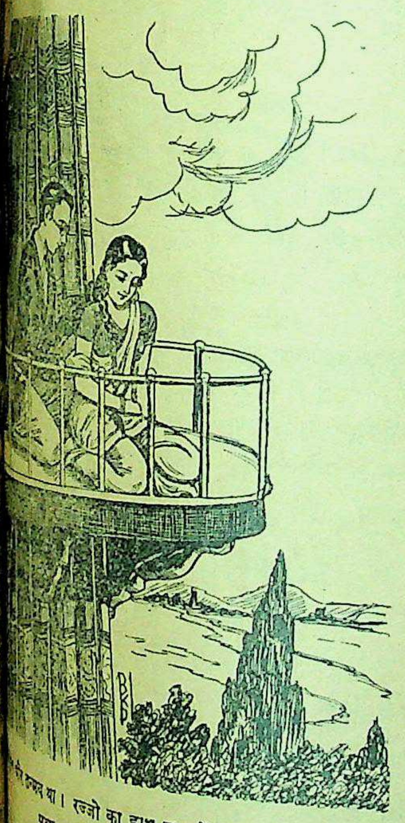

था। रज्जो का हाथ हाथ में लेकर बड़ी देर बाद पूछा—कहो विश्राम पाया?

—रज्जो? रज्जो की चेतना इस पुकार के हो गई। वह किसी मायालोक में थी। हरीश ? रज्जो.....। में कितनी ममता, माया और शान्ति किस रागिनी के स्वर की मूर्च्छना से भरे ? हरीश मुग्ध और तन्मय था। रज्जो बड़ी देर बाद पूछा—कहो विश्राम पाया? सागर पार करके जीवलोक में लौटी थी।

चारों ओर अच्छी तरह देख लो। ...चारों ओर प्राचीन इतिहास की जाने की चेष्टा की। रज्जो ने कहा— आप थक गये हैं।

हरीश ने हँसते हुए कहा—नहीं नहीं, हम थके नहीं हैं।

रज्जो ने कहा—एक शरीर का बोझा जो उठा लाये!

हरीश ने आँखें मूँदकर कहा—ऐसा बोझा तो यदि जीवन भर उठा सकूँ......

रज्जो के सामने रङ्गों से भरा आकाश था।

हरीश ने खड़े होकर कहा—उठो रज्जो, चलें।

रज्जो उठ खड़ी हुई, किन्तु उसका सिर घूम गया, शरीर काँप उठा और वह अचेतन होकर गिरने ही को थी कि हरीश ने शीघ्रता से उसे थाम लिया। हरीश ने कहा—वह देखो यमुना कुहरे के जाल में कैसी अस्पष्ट छाया में ढँक-सी गई है।

रज्जो ने चेतना सँभालते हुए कहा—जी हाँ, अद्भुत है....

रज्जो का हाथ पकड़कर हरीश खड़ा था। उसने कहा—कभी यहाँ राजा और रानियाँ दर्शन करने आते होंगे। आज केवल हम तुम हैं।

रज्जो अपलक नेत्रों से यमुना की ओर देख रही थी। हरीश ने कहा—उस राजा की दृष्टि में यह पृथ्वी कितनी सुन्दर होगी!

रज्जो तन्मय थी। वह सोच रही थी कि अतीत के विस्मृत दिन फिर लौट आये हैं, और इस समय भी राजा रानी दर्शन कर रहे हैं। इधर हरीश भी इसी भाव में मग्न था। उसने स्निग्ध कण्ठ से पुकारा—रानी!

इस 'रानी' शब्द ने मनो-स्वप्न को भङ्ग कर दिया। वह एक बार सिहर उठी।

हरीश उसकी ओर देखकर हँस पड़ा। उसने पुकारा—रज्जो!

रज्जो ने केवल हरीश की ओर देखा और 'उफ़' ! के अतिरिक्त एक शब्द भी उसके मुँह से नहीं निकला।

हरीश ने कहा—देखने में अच्छा तो लगता है?

रज्जो ने कहा—अति सुन्दर।

हरीश न कहा—तुम्हारी तन्मयता का लाओ एक चित्र ले लूँ। ऐसा लगता है मानो तुम्हीं रानी हो। रज्जो ने कहा—और आप राजा?

रज्जो के कानों में विद्रूप का अट्टहास सुनाई पड़ा। लज्जा से गर्दन झुक गई।

हरीश ने हँसकर कहा—राजा की रानी होकर, नाते में तुम मेरी कौन लगीं?

'जाइए'—कहकर रज्जो ने लज्जित होकर हाथों से अपना मुँह ढँक लिया।

हरीश ने कहा—अच्छा ऐसे ही सही। यह पोज़ अच्छा होगा।

रज्जो वैसे ही मुँह ढँके खड़ी रही। हरीश ने फोटो ले लिया।

हरीश ने अनेक समाधियाँ, मन्दिर और रणाङ्गन उसे दिखाये।

रज्जो ने पूछा—क्या कुरुक्षेत्र का युद्ध यहीं हुआ था? सचमुच क्या यही कुरुक्षेत्र है?

हरीश ने कहा—नहीं, कुरुक्षेत्र दिल्ली से लाहौर जाते हुए पड़ता है। युद्ध वहीं हुआ था, यहाँ नहीं। क्या वहाँ भी चलोगी?

रज्जो ने कहा—नहीं भई, मुझे वह युद्ध-विग्रह के स्थान अच्छे नहीं लगते।

हरीश ने कहा—मुझे भी। तुम्हें क्या अच्छा लगता है, रज्जो?

रज्जो लज्जा से चुप थी। मानो उसके ओंठ किसी ने सी दिये हों।

हरीश के आग्रह करने पर उसने कहा—मुझे वह राजा-रानीवाली बात बड़ी अच्छी लगती है।

हरीश ने हँस दिया।

(११)

अच्छे दिन कट रहे थे....दिल्ली से आगरा पहुँचे।

दूसरे दिन लौटने का निश्चय था। चारों व्यक्ति सन्ध्या को ताजमहल देखने चले। यद्यपि पूर्णिमा नहीं थी तो भी चाँदनी छिटकी हुई थी।

ताज से विदा होते-होते लक्ष्मी ने कहा—यह स्थान भी एक तीर्थ ही है। स्वामी स्त्री को कितना प्रेम कर सकता है इसका इतिहास इस भवन के प्रत्येक पाषाण पर अमर अक्षरों में खुदा हुआ है।

[illegible] नहीं हैं परन्तु उससे कम अपनी स्त्री को प्रेम नहीं करते।

फ़िल्मी-गाने !

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना चाहें तो "फ़िल्म सङ्गीत" मँगाइये। अब तक ६ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक भाग में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वर-लिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभाग ३), डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)।
पता—संगीत कार्यालय, हाथरस, यू० पी०.

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है—और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस,
लिमिटेड, प्रयाग।

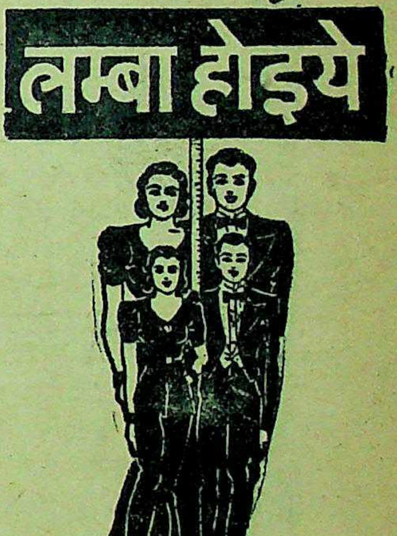

लम्बा होइये

[illegible]

इंग्लैंड में प्रस्तुत
टाल्सपाइन
ग्लैंड फ़ूड टेबलेट्स
डिस्ट्रीब्यूटर्स
दि ब्रिटिश टेडिंग कम्पनी (डिपार्ट डी ए १)
लाइसेंस प्राप्त औषधि बिक्रेता व निर्माता।
२० कैंडी हाउस, मियर वेदर रोड,
अपो० ताज, बम्बई।

हरीश ने कहा—जीजा जी तुम कविता लिखा करो। यह शक्ति तो तुम में है ही। वही जो बकरे के मांसवाली कविता लिखी थी एक दिन....

सुरेश ने कहा—अरसिक कहीं के। स्त्री के साथ बकरे के मांस की क्या तुलना?

लक्ष्मी ने सुरेश की ओर देखते हुए कहा—तुम्हारे लिए दोनों बराबर हैं। तुम्हारी स्त्री न होकर यदि हम तुम्हारी मुवक्किल होती तो तुम हमारा मुँह ताका करते।

सुरेश ने कहा—भगवान् बड़े चतुर हैं। तुम्हारा मुख देखने से पैसा नहीं पा सकते थे, पागल भले ही हो जाते, जिससे तुम्हारा मुक़दमा हार जाता। इसी लिए उसने तुम्हें मुवक्किल नहीं बनाया। अतएव जो कुछ हो, वही बनी रहो।

हरीश ने कहा—रज्जो आओ, हम तुम सैर कर लें; इन लोगों को कविता करने दो।

लक्ष्मी ने कहा—बैठो न!

हरीश ने कहा—नहीं भाई, यहाँ यदि इस प्रकार का कलह, इस प्रकार का तर्क चलेगा तो ताजमहल का घोर अपमान है। आओ रज्जो....

रज्जो स्वप्न के आवेश में विभोर थी। शाहजहाँ, मुमताज... चिरयुग के अमर प्रणयी-प्रणयिनी! इस मर्म्मर कुंज में आज भी उनका निश्वास प्रवाहित हो रहा है। ताजमहल वैभववान् के प्रेम-वैभव का चिह्न है। तभी लोग इस मर्म्मर-गठित प्रेम के गुणगान करने में मुखर होते हैं। दुखी ग़रीबों के प्रेम की भी महिमा इससे कम नहीं है। किन्तु उसको कौन गायेगा। कवि तो वैभव देखता है। ज्ञात नहीं आकाश के देवता ग़रीबों को लक्ष्य करते हैं या नहीं।

लक्ष्मी ने कहा—चलो हरीश हम तुम इस तीर्थ की प्रदक्षिणा कर लें; फिर जाने भाग्य में यहाँ आना हो या नहीं हो।

रात्रि में ११ बजे तक ये लोग वहाँ रहे। इसके उपरान्त अपने स्थान पर लौट आये।

अन्त में वह सुख-स्वप्न भंग हुआ। फिर वही कानपुर का कोर्ट, फिर वही मेडिकल कालेज और नित्य नैमित्तिक कार्य-प्रणाली......।

घर आते ही रज्जो की माँ ने कहा—तुम्हारे जीजा जी आये हुए थे। अभी तीन ही चार दिन हुए हैं, गये हैं। चेहरा ऐसा हो गया है कि पहचाना नहीं जाता!

रज्जो ने पूछा—लल्लू संग में नहीं था क्या?

माँ ने कहा—था क्यों नहीं! किन्तु मेरे पास उसने उसे नहीं छोड़ा।

जगन ने भी यह समाचार सुनाया कि भैरव ने अपने ऋण के सब रुपये देकर अपना मकान बन्धक से छुड़ा लिया। भैरव की विधवा बहिन अपने जेठ के मर जाने पर यहीं आ गई है। उसी के गहने और रुपये लेकर मकान छूटा है।

भैरव ने उन्नाव में एक नौकरी की है, और एक छोटी-सी दुकान भी खोली है। विधवा राधा अपने बाप की देहली, जाजमऊ-वाले घर को ही बसाये हुए है।

लक्ष्मी ने पूछा—जगन काका, क्या भैरव यहाँ नहीं है?

नहीं बेटी। वह अपने लड़के को लेकर फिर उन्नाव चला गया है।

हरीश की परीक्षा निकट थी। कानपुर आना-जाना बहुत कम होता था। इधर रज्जो भी हरीश की इच्छानुसार पढ़ने-लिखने में लगी थी।

एक दिन जब हरीश आया तो लक्ष्मी ने कहा—हरीश, विवाह के सम्बन्ध में दो स्थानों से बातचीत चल रही है।

हरीश ने कहा—तुमने यह कैसे जाना कि मैं अभी विवाह करना चाहता हूँ।

लक्ष्मी ने कहा—नहीं नहीं, तुम्हारे लिए नहीं, रज्जो के लिए कह रही हूँ।

हरीश ने कहा—वाह! उसके विवाह के सम्बन्ध में तो तुमने पहले ही ठीक कर रक्खा है।

—क्रमशः

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रा

इस पुस्तक में ६ कहानियाँ हा
है। इस संग्रह की विशेषता
स्वाभाविकता है। मानव-हृदय
कुलताओं तथा दुर्बलताओं का
चित्रण आपको अन्यत्र न मिले
१) एक रुपया।

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्री

इस पुस्तक में लेखक की
फुटकर कविताओं का संग्रह
है। कविताओं की भाषा
और कल्पना की उड़ान
है कि पाठक कुछ क्षण के
अपनी सुध-बुध भूले बिना
मूल्य ।॥) बारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

THE NEW
Rexona
MEDICATED SOAP
Rexona
CONTAINING CADYL
अब!
आधिक झाग
और सुगन्धि
देनेवाला

चर्म स्वास्थ से ही
चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सॉना से

चर्म स्वास्थ की रक्षा कीजि

आपकी त्वचा तभी सुन्दर हो सकती है जबकि वह स्वास्थ्य हो और इसको स्वास्थ्य ही बनाए रखना चाहिए, नहीं तो वह सौन्दर्य शीघ्र जाता रहेगा। त्वचा को स्वास्थ्य और सुन्दर रखने के लिए ही सुन्दर, हरेरंग के और आसानी से फेन देने वाले टॉयलट साबुन रैक्सॉना का आविष्कार हुआ है। यह चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' की मिलावट से बनाया जाता है, जा कि ताज़गी और स्वा
दायक है।
रैक्सॉना की झाग इस स्वास्थ्य
'कैडिल' को शीघ्र ही श
रुओं में पहुँचा देती है।
अपना काम करता है झाग
पर जमा हुई धूल और
को साफ़ करके त्वचा को
और सुरक्षित रखती है।
स्वास्थ्य के लिए सदैव रैक्सॉ
स्नान कीजिये।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल कि
स्वास्थ-दायक और ताज़गी देनेवाले तेलों का
जोकि चर्म को स्वास्थरखने में बहुत गुण
हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों
इसकी सराहना की है।

फुन्सी, फोड़े, ऐकज़ीमा, मुँहासे, औ
की कलौंस, झुर्रियां, ददौरे आदि स
चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये।
यद्यपि अभी सप्लाई कम है फि
बहुत से दूकानदारों के यहां
टिन मिल सकते है।

बच्चों के लिए रैक्सॉना...
रैक्सॉना की झाग इतनी कोमल और स्फूर्तिदायक होते हैं कि बच्चों की कोमल त्वचा के लिए तो यह आदर्श है। डाक्टर इस को इस्तेमाल करने की हिदायत करते हैं। याद रखिए रैक्सॉना का 'कैडिल' बच्चे की चर्म की फुन्सी फोड़ों से रक्षा करेगा।

REXONA PROPRIETARY

RP. 27-220-40 HI.

…अनुराग

…का, श्री विमला रा…
…स्तक में ६ कहानियाँ…
…मह की विशेषता…
…ता है। मानव-हृदय…
…तथा दुर्बलताओं का…
…पको अन्यत्र न मिले…
…पया।

किंकिणी

…, श्री राजाराम…
…पुस्तक में लेखक की…
…विताओं का संग्रह…
…ताओं की भाषा…
…मना की उड़ान…
…ठक कुछ क्षण के…
…सुध-बुध भूले बिना…
…बारह आने।
…इंडियन प्रेस, लिमिटेड…

…ता है!

…क्से

…ा कीजिए

…के ताज़गी और…
…ी झाग इस स्वास्थ्य…
…को शीघ्र ही…
…पहुँचा देती है।…
…म करता है…
…हुई धूल और…
…करके त्वचा को…
…क्षित रखती है।…
…के लिए सदैव…
…जिये।

…गया कैडिल…
…गी देनेवाले तेलों…
…रखने में बहुत…
…ने भी इसके गुणों…

…, मुँहासे, आँख…
…दर्दी आदि सभी
…मरहम लगाये।
…कम है फिर भी
…के यहाँ मिलते

…ONA PROPRIETARY…

…र साहित्य
…ओं तथा उनसे प्रभावित भावी
…की समन्वयपूर्ण साहित्य के
…उपस्थित करनेवाले निबन्धों
…। मूल्य २॥≥)।
…स, लिमिटेड, इलाहाबाद

अब
…न्ट्रोल भाव पर
मिलते है

EVEREADY
…टॉर्च बैटरी के बल्ब

…के लिए थोक भाव :—
… १।।-३-० १०० नग
… १(-१४-० " "
…के लिए परचून भाव :—
… ६ आने
… " ८ आने
…माम त दें

…COMPANY (INDIA) LTD.
…CALCUTTA • MADRAS
…KARACHI • DELHI

…KINSONS
★ ★ ★
सुगन्धी
चमकदार
…पुल केशों
के लिये
रैंकिन्सन्ज़
…र आइल
और
…र ब्रिलन्टाइन

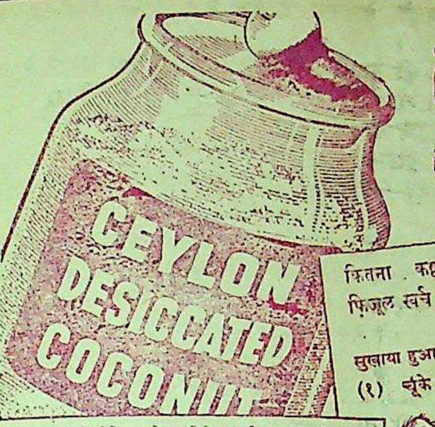

वह किसा किसाया
व प्रकृति से ही अच्छा होता है।

CEYLON DESICCATED COCONUT

उपयोग करनेकी रीति, नमूने व विक्रेताओं के नाम आदि के लिये भारतस्थित सीलोन ट्रेड कमिश्नर, सीलोन हाऊस – ब्रूस स्ट्रीट – बम्बई को लिखिये।
सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रकाशित।

कितना कष्ट रहित:—कि चाहें तक किसा हुआ तयार।
फ़िज़ूल खर्च से बचत:—क्यों कि आप चाहें तब सिर्फ़ ज़रूरत हो उतनाही खर्च करते हो।

सुखाया हुआ नारियल मामूली नारियल से क्यों अच्छा होता हैं:

(१) चूंके जो नारियल सुखाया जाता है उसकी कादत खास तौर से की जाती है व वह झाड़पर पूरा पकने पर ही तोड़ा जाता है।

(२) चूंके किसने के पहिले उनमे जो आरोग्य व बलदायक रस होता है वह उसी गोले मे सोखने दिया जाता है–जिससे कि उस रस मे से तनिक भी बेकार न जाए।

(३) चूंकि सुखाने के वक्त उसका पानी ही केवल सुखाया जाता है–नकि रस–इसलिये उबालनेपर किसा हुआ नारियल तत्काल किसे हुए नारियल से ज़ादा किफ़ायत होता है।

आपके लिये सुखाया हुआ 'सीलोन' नारियल ही अच्छा है।

आपके लिये सिलोन का सुखाया हुवा नारियल ही अच्छा है।

CBK-6 HINDI

बहुत से बूढ़े लोग जो रोज़गार जारी रखने पर मजबूर होते हैं भयभीत मन से यह कहते सुनाई देते हैं . . .

"मैं इतना बूढ़ा नहीं जितना कि दिखाई पड़ता हूँ।"

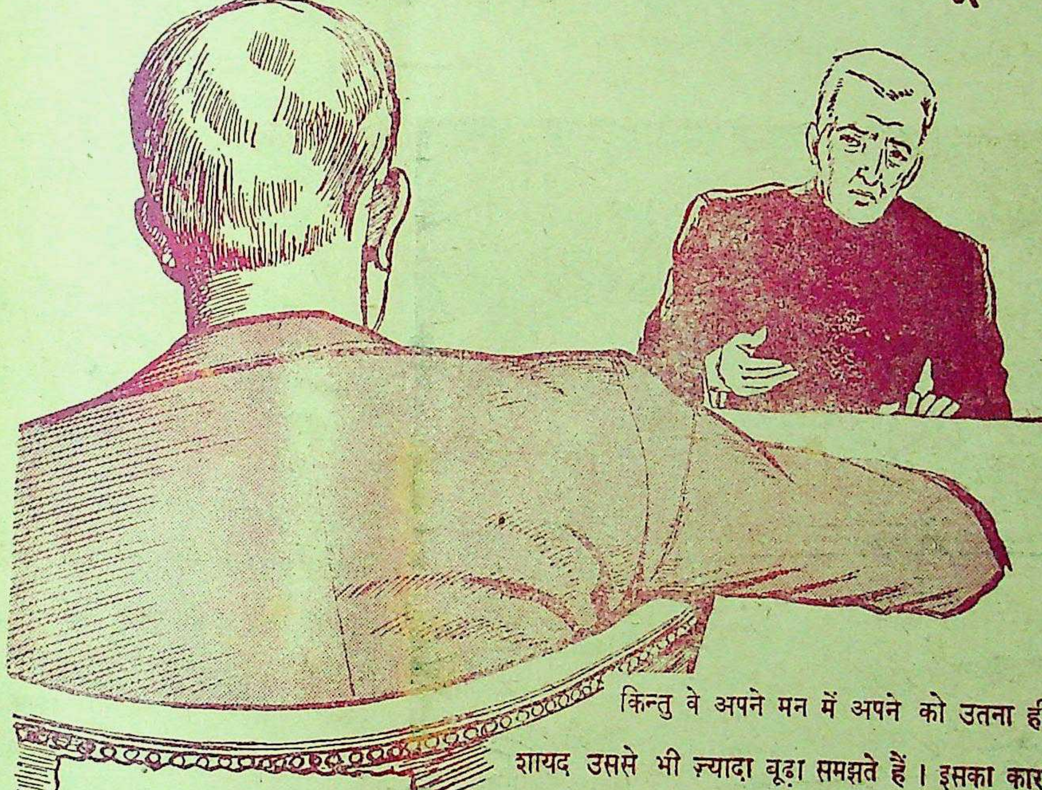

किन्तु वे अपने मन में अपने को उतना ही बूढ़ा, शायद उससे भी ज़्यादा बूढ़ा समझते हैं। इसका कारण यह होता है कि उन्होंने अपने भविष्य के लिए कोई आधार नहीं बनाया, हाथ में पैसा नहीं रखा। हर गिरा-पड़ा काम उन्हें स्वीकार कर लेना पड़ता है। उनका जीवन बहुत निराशापूर्ण होता है। किन्तु यह ज़रूरी नहीं कि आपको भी ऐसी मुसीबत का सामना करना पड़े। यदि आप अभी योजना बना लें, तो आप वृद्धावस्था में शान्ति एवम् सम्मान के साथ विश्राम कर सकते हैं।

बुद्धिमान लोग जिन्हें अपने भविष्य का ख़्याल है अपनी बचत के रुपये को आजकल नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगा रहे हैं। अपने सुरक्षित भविष्य में उन्हें पूर्ण विश्वास है। आपको भी ऐसा विश्वास प्राप्त हो सकता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४$\frac{1}{4}$ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुऐ ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 128 HINDI

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। अनुराग और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

"सदा सम्मान"...जब से यह महायुद्ध प्रारम्भ हुआ, भारतीय विमान-चालकों ने संसार को दिखा दिया है कि अवसर आने पर हिन्दुस्तान हवाबाज़ी में भी किसी से कम नहीं। हमारे योद्धाओं की वीरता तथा सफलता ने शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े का मस्तक ऊँचा कर दिया है, और इससे पता चलता है कि हमारा भविष्य बड़ा शानदार है।

आज, अधिकाधिक साहसी नवयुवकों को आमन्त्रित किया जा रहा है कि वे इस नवीन सैन्य-संघटन में सम्मिलित होकर विमान-चालक बनें। शान्ति स्थापित होने पर उनका ज्ञान स्वयं उनके लिए बहुत लाभजनक सिद्ध होगा। उस समय भी, आज की भांति शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालकों का बड़ा सम्मान होगा। कोई भी भरती-अफ़सर आपको आवेदन करने का नियम बता देंगे।

AAA 80

काग़ज़

अब ज़्यादा आसानी

-और कंट्रोल के दामों पर मिल सकता

ग़ैर सरकारी ज़रूरतों के लिए जो काग़ज़ मिल रहा था, उसक परिमाण अब बढ़ा दिया गया है। हिन्दुस्तानी कारख़ानों का बना हु और विदेश से आया हुआ काग़ज़ अब और अधिक परिमाण पबलिक के लिए दिया जा रहा है।

इस वृद्धि के आधार पर पेपर कंट्रोल (इकानमी) आर्डर, १९४ की धाराओं में अब काफ़ी रियायतें कर दी गई हैं। पढ़ाई की किताबें छापने वालों का कोटा सन् १९३९ के कुल ख़र्च के ५ फ़ी सदी की बजाय ८० फ़ी सदी तक कर दिया गया है, और दूसरों का कोटा सन् १९४२ के कुल ख़र्च के ३० फ़ी सदी की बजाय ६० फ़ी सदी तक।

उचित आवश्यकताओं के लिए अब काग़ज़ ज़्यादा आसानी से और कंट्रोल के दामों पर मिल सकता है। स्पष्ट है कि कंट्रोल के उपाय सफल सिद्ध हो रहे हैं।

बात समझ लीजिए-
अपने अधिकार माँगिए

[illegible] आफ़ इण्डस्ट्रीज़ ऐण्ड सिविल [illegible], नई दिल्ली
द्वारा प्रकाशित।

प्रधान सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

र्षिक मूल्य ७॥)
ति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२६ अगस्त, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 26th August, 1945

भैरवी—इसकी राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनाएँ, असली आर्ट पेपर पर चित्र, बहुत अच्छी जिल्द और रैपर सहित, तृतीय संस्करण मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

हिंदीहितो कौन हैं ?
ज़रूरी क्यों है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

जापानी आत्म-समर्पण की कहानी।
भोंपू बज रहा था—वह कलंकिनी थी?

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस. १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक, बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगावें।

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था: १८२६
स्वदेशी
आरोंदा १८६६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ्त
युकॅलिप [illegible] बाम
बम्बई ४

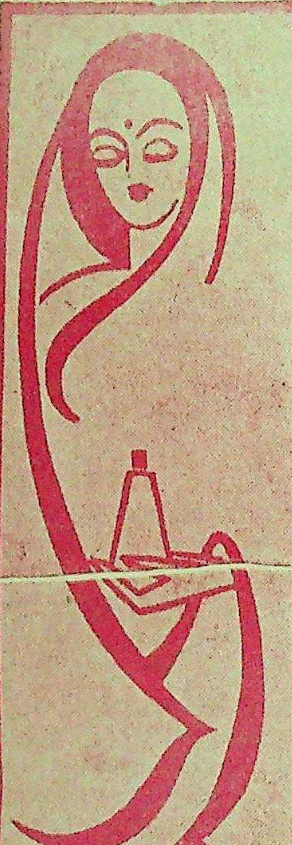

लावण्य का सार ?

टाटा का
ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

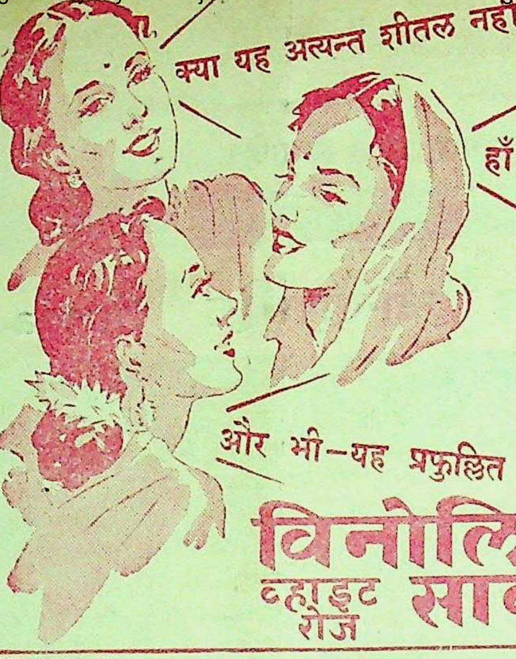

क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!

हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विला-
प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा
आश्चर्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके
कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन
ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और
रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसोंके
यह टॉनिककी तरह काम करता है।

और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!

विनोलिया
व्हाइट रोज साबुन

VINOLIA
WHITE ROSE SO

VWR. 19-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGL

सी.ए.आई. की मुफ्त सेवा

नं. ४.... आदर्श योजनाएँ

काँक्रीट एसोशिएशन ऑफ इंडिया ने अनेक कार्यों के लिए आदर्श योजनाएँ प्रस्तुत की हैं, जो स्थानीय परिस्थितियों के निराकरण के लिए तनिक सुविधा की अपेक्षा रखती हैं।

चाहे कोई पक्की सड़क हो या कोई पुल अथवा कोई विशाल व्यापारिक भवन हो या छोटा सा किसान का घर हो, सर्वत्र ही काँक्रीट एसोशिएशन कार्यारम्भ के समय अपनी निःशुल्क सम्मति, एवं निःशुल्क सहायता प्रदान करता है।

इस निःशुल्क सेवा से लाभ उठाने में चूक न कीजिए, इसके द्वारा आपको एसोशिएशन के बृहद् ज्ञान एवं अनुभव का भी पुरा पता चलजायेगा, पत्र-व्यवहार के लिए ७०, क्वीन्सवे, नई देहली को लिखिए।

दि कांक्रिट एसोसी-एशन आफ इन्डिया
दि सीमेंट मार्केटिंग कं. आफ इन्डिया लि.
आरगेनाइजेशन

देशदूत

र्ष ७ संख्या ५२] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, २६ अगस्त, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

...में आगामी चुनाव
...सरकार से परामर्श
...लंदन जा रहे हैं।

...ही नायाब चीज ...में प्रजातन्त्र अपना ...डिक्टेटरशिप तो योरोप ...हिटलर और मुसो- ...हो गये। अब बच ...जनरल फ्रैंको। सो ...ही वाली है। ...जातन्त्र के बाड़े में ...आ रहे हैं। अम- ...सोवियट रूस को आज ...गद्दारियों का पेशा ...रहा है, कि ऐसा न ...के बाड़े से निकल ...प्रजातन्त्र का पक्का ...ब्रिटेन तो उससे भी ...है। इसका सब से ...संसार में उसके जितने ...उसी के प्रजातन्त्र की ...यह नया रूस वह तो ...का जीता-जागता ...की डिक्टेटरी वहाँ है जरूर, यहाँ तक कि उसके खिलाफ चूँ-चपड़ करनेवालों को गोली का शिकार बनना पड़ता है लेकिन पूरा सोवियट है प्रजातन्त्र! फिर योरोप के प्रजातन्त्रीय महाद्वीप होने में कसर क्या रह गई है?

...वैदेशिक मंत्री और
...जिन्होंने जापानी
...की घोषणा की है।

* * *

अब एशिया की बारी है। यहाँ प्रजातन्त्र की असली सूरत देखने को मिलेगी। क्योंकि योरोपियन हमेशा से दूसरे मुल्कों को प्रजातंत्र का जबरदस्ती पाठ पढ़ाते आये हैं। फिर एशिया में जब तक वह सच्चे प्रजातंत्र की स्थापना नहीं करेंगे तब तक उनका लात लगना यहाँ उतना सरल नहीं है जितना योरोप में। क्योंकि यहाँ का पानी ही दूसरा है। अब तो मार्ग और भी खुल गया है। जापान समाप्त हो गया इसलिए अमरीका और ब्रिटेन अपने प्रजातन्त्र को बड़ी खूबी के साथ फैलाने का बन्दोबस्त करेंगे। प्रशान्त सागर में तो प्रजातंत्र ने अपने पैर फैला दिये हैं। हिन्दुस्तान में परले सिरे का प्रजातंत्र लगभग १ सदी से इतना पैर फैला चुका है कि अब यहाँ स्वराज्य की जरूरत ही नहीं समझी जा रही है। रह गया चीन, उसकी दोनों चौधरी परवाह ही क्या करते हैं? मिस्टर चर्चिल जब तक जिन्दा हैं तब तक 'ब्लेक नेशनों' को हाँकने का काम उन्हीं के जिम्मे रहेगा, भले ही इँगलैंड में मजदूर सरकार हो या कोई और? अभी आत्मसमर्पण की संधि-कार्यवाही चल ही रही है लेकिन चीन के 'हांगकांग' बन्दरगाह पर अँगरेज अधिकार करने के लिए दौड़ पड़े हैं। उनकी इस प्रजातन्त्रीय दौड़ के आगे चीन के च्यांग काई शेक की क्या हस्ती है जो अब तक उधार पट्टा कानून के मुताबिक उनके कर्जदार बन बैठे हैं? अफगानी आगा उसके सिर पर खड़े हैं। प्रजातंत्र का वह नमूना बेमिसाल है।

* * *

रह गया सोवियट रूस और उसके डिक्टेटर स्टेलिन साहब! सो हमारे साहबों को स्टेलिन साहब की ज्यादा फ़िक्र नहीं है। उनसे वह पीछे भुगतेंगे। कहावत है कि कम खाने और गम खाने का परिणाम अच्छा होता है। प्रजातन्त्र के पुजारी अमरीका और ब्रिटेन कम खाने के लिये तो तैयार नहीं हैं किन्तु कम से कम इस वक्त गम खाने के लिये तैयार हो सकते हैं। प्रजातन्त्र का पहला सूत्र यही है। योरोप में स्टेलिन साहब जिस तरह जर्मनी के हिस्सेदार बन बैठे हैं उस तरह एशिया में उनका रवैया न चलेगा। पोलैंड की तरह यहाँ भी उन्हें मंचूरिया और कोरिया मिल जाये यही गनीमत है। प्रजातन्त्र के मुताबिक उन्हें असल में कुछ भी नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि एशिया में उन्होंने किया ही क्या? उन्हें अपना प्रजातन्त्र अपने ही घर की हद में रखना चाहिए। अमरीकन और ब्रिटिश प्रजातन्त्र और स्टेलिन साहब के प्रजातन्त्र में चूहे और बिल्ली का-सा बैर है। प्रशान्त में उनका लात लगेगा नहीं क्योंकि समुद्र और स्टेलिन से खुदाई बैर जान पड़ता है। इस मामले में योरोप और एशिया दोनों महाद्वीपों में उसकी तकदीर नदारद है। और अगर कहीं स्टेलिन साहब ने अपने प्रजातन्त्र की हाँक लगाई और हाथ पैर फैलाना शुरू किया तो मुमकिन है चौधरी लोग संसार में शान्ति और सुरक्षा की स्थापना करनेवाले रामबाण का, जो 'परमाणु बम' के नाम से राक्षस योनि में उत्पन्न हुआ है, इलाज न शुरू कर दें? रह गया जापान, वह तो मृत्यु शैया पर है ही, किन्तु मित्रराष्ट्र उसे प्रजातन्त्र की बूटी पिलाकर जरूर जिन्दा रखेंगे। क्योंकि आखिर रूसी प्रजातन्त्र के लिए भी तो किसी माई के लाल को जिन्दा रखना चाहिए?

* * *

हाँ, भारतवर्ष में प्रजातन्त्र की एक नई लहर लहरानेवाली है। वह है चुनाव की चहल-पहल। ब्रिटेन की मजदूर सरकार का, हिन्दुस्तान को स्वराज्य देने का यह पहला कदम होगा। असल में प्रजातन्त्र के पहले उसूल की पूर्ति चुनाव से ही होती है। कांग्रेसी, अकांग्रेसी, मुसलिम लीगी, हिन्दू महासभाइट, हरिजन, ईसाई, पारसी, सिख एक बार फिर कौंसिलों की सीटों के लिए जूझेंगे और प्रजातन्त्र का नंगा नाच देखने को मिलेगा। ब्रिटेन के प्रजातन्त्र के मुताबिक भले आदमी की पहचान यही है कि उसे सबसे ज्यादा 'वोट' मिले। पाप-पुण्य, छोटे-बड़े, अमीर-गरीब की पहचान अब सिर्फ 'वोटों' पर निर्भर है। चन्दा बटोरने का धंधा भी शुरू हो गया है! मिस्टर जिन्ना को लाखों की थैली इसलिये मिल रही है कि वह चुनाव की घुड़दौड़ में अपने काबिल घोड़ों को कामयाबी दिलायें, अर्थात् उन्हें 'वोट' दिलायें। इँगलैण्ड की मजदूर सरकार साम्राज्यवाद का जनाजा, चुनाई प्रजातंत्र की ढोल बजाकर, निकालने की तैयारी कर रही है। क्यों न हो अब मिस्टर एटली का राज्य है न! मिस्टर चर्चिल का राज्य तो है नहीं कि प्रांतों पर गवर्नरी शासन अपना अड्डा जमाये रहे? अब तो भारतवर्ष की हुकूमत भारतीयों के हाथों से होगी, स्वराज्य भी मिलेगा, इसीलिये तो प्रजातंत्रीय प्रणाली के अनुसार चुनाव का नुस्खा तैयार किया गया है। प्रजातंत्र अब अपने असली रूप में आनेवाला है, गुलाम भारतीयों के लिये इससे बढ़कर और स्वराज्य मिलने का दूसरा रास्ता हो ही क्या सकता है?

* * *

जापान के प्रधान मंत्री श्री सुज़ुकी जिन्होंने अपने पद से त्याग पत्र दे दिया है।

चुनाव का जोर इतना बढ़ रहा है कि आगामी १ अक्तूबर को केन्द्रिय असेम्बली का कार्यकाल समाप्त हो जायेगा। भारत के नये मजदूर मन्त्री लार्ड पेथिक लारेंस की प्रजातन्त्रीय घोषणा हो गई है। वाइसराय लार्ड वेवेल अब फिर इँगलैंड जा रहे हैं। पिछली बार तो वह ब्रिटिश चुनाव से प्रभावित होकर वेवेल-योजना का तोहफ़ा भारत के लिये लाये थे और अब देखना है कि इस बार भारतीय चुनाव के लिये कौन-सा तोहफा लेकर आते हैं? प्रजातन्त्र का सचमुच अब बोलबाला होनेवाला है। जब लार्ड वेवेल और ब्रिटेन की मजदूर सरकार चुनाव कराने के लिये तैयार हो गई तब तो प्रजातंत्र बिना कायम हुए रह ही नहीं सकता। क्योंकि मजदूर सरकार को चुनाव का अब चस्का लग गया है। पहले चुनाव की चहल-पहल हो, फिर इसके बाद गोलमेज कान्फ्रेंस का नम्बर आयेगा। भारतीयों के लिये क्या हमारी नई मजदूर सरकार आवागमन तथा दुनिया गोल है के प्रजातन्त्र की याद दिलाने जा रही है?

* * *

जापान के भूतपूर्व प्रधान मंत्री और जनरल तोजो जिन्होंने आत्मसमर्पण की घोषणा की है।

सम्पादक का पृष्ठ

जापान के बाद

मित्रराष्ट्रों ने जापान पर विजय प्राप्त कर ली और योरोप की भाँति एशिया में भी उनकी साख स्थापित हो गई तथा दूसरे महायुद्ध का अन्त हो गया। पिछले छः वर्षों के युद्ध-ग्रस्त जीवन से सारा संसार परेशान हो उठा था। प्रत्येक की यही अभिलाषा और जिज्ञासा थी कि युद्ध का अन्त कब होगा? किन्तु पोस्टडम सम्मेलन के निर्णय के अनुसार सोवियट रूस के मंचूरिया और कोरिया की ओर बढ़ने तथा अमरीकनों द्वारा 'परमाणु बमों' के गिराये जाने से जापान ने घुटने टेक दिये और अब मित्रराष्ट्र एशिया में भी धीरे धीरे अपना प्रभुत्व स्थापित कर लेंगे, इसमें सन्देह नहीं। यद्यपि आत्म-समर्पण के बाद जापान तथा मित्रराष्ट्रों में समझौते की जो कार्यवाहियाँ हो रही हैं, उसकी रफ्तार बहुत मंद है, रूस ने भी अभी पूरी तरह से युद्ध नहीं बन्द किया है और चीन में भी गृह-युद्ध छिड़ जाने के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। फिर भी अगले महीने में मित्रराष्ट्रों द्वारा एशिया के बटवारे का क्रियाकलाप अवश्य होगा और तब इसका पता चलेगा कि चीन, अमरीका, रूस और ब्रिटेन किस प्रकार आपस में बटवारा करते हैं, साथ ही जापान किस स्थिति में रहने दिया जाता है और किस प्रकार की शासन-नीति की वहाँ स्थापना होती है?

इसे कौन नहीं जानता कि एशिया की समस्या काफी उलझी हुई है। योरोप की भाँति यहाँ का बटवारा उतना सरल नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र के अलग अलग स्वार्थ हैं। चीन आठ वर्ष से जापान से युद्ध कर रहा है इसलिए उसे सबसे अधिक सजग रहना अनिवार्य भी है। अमरीका और ब्रिटेन तो संसार के परले सिरे के धाव राष्ट्रों में हैं, इसलिये प्रशांत सागर तथा स्थल के महत्त्वपूर्ण भागों पर वह अपना अधिकार चाहेंगे ही। रह गया रूस वह भी पोलैण्ड की भाँति एशिया में भी मंचूरिया, मंगोलिया तथा कोरिया पर अपना पूर्ण प्रभुत्व चाहेगा ही। ऐसी परिस्थिति में एशिया में बटवारा आसान नहीं है फिर भी चूँकि मार्ग का काँटा जापान अब समाप्त हो चुका है, इसलिए किसी न किसी तरह बटवारा तो होगा ही क्योंकि युद्ध की फिलहाल मित्रराष्ट्रों में इच्छा नहीं रह गई है। इतना सब होते हुए भी हमारे लिए यह अनुमान करना आसान है कि अमरीका और ब्रिटेन के लिए व्यापारिक दृष्टि से एशिया उर्वर भूमि है और अब तो जापान ऐसे व्यापारिक राष्ट्र से होड़ लेने की स्थिति भी निर्मूल हो चुकी है, इससे यह दोनों अपने भावी स्वार्थों की पूर्ति के लिए बटवारे में अपनी स्थिति मजबूत बनाने में तनिक भी ढील नहीं देंगे, इसे भी हम भलीभाँति जानते हैं।

खैर, यह सब तो भविष्य की बात है, जो कुछ होगा, वह सामने आयेगा। किन्तु यह परिताप की बात है कि एशिया के एक लड़ाकू राष्ट्र का सदा के लिये अंत हो गया। यद्यपि हम जापान की साम्राज्यवादी नीति के सदा से विरोधी रहे हैं किन्तु एक जाग्रत राष्ट्र में जो गुण होने चाहिएं, उसके हम प्रशंसक भी रहे हैं। व्यापारिक दृष्टि से जापान योरोपीयन व्यापारियों का सदा लोहा लेता रहा है और सैनिक दृष्टि से भी उसकी हार आज तक कभी नहीं हुई थी। रूस ऐसे महान् राष्ट्र को भी वह पराजित कर चुका है। इसलिये एशिया में ऐसे जाग्रत राष्ट्र का समाप्त हो जाना संसार के प्रत्येक जाग्रत राष्ट्र के लिये शोभाजनक नहीं है। हम कह नहीं सकते हैं कि मित्रराष्ट्र जापान के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, किन्तु यह एक प्रकार से निश्चय है कि जापान का भावी संगठन प्रजातन्त्र के आधार पर किया जायेगा और व्यक्ति विशेष के अधिकार या डिक्टेटरशिप की इतिश्री भी कर दी जायेगी। इस प्रकार यदि जापान में सच्चे प्रजातन्त्र की स्थापना हुई तो उसे अपने पूर्व गौरव की रक्षा में सहायता ही मिलेगी, इसकी आशा तो की ही जानी चाहिए।

इसी सिलसिले में हम एक बात और भी कह देना चाहते हैं कि अमरीकनों ने जापान ऐसे राष्ट्र को पराजित करने में 'परमाणु बम' ऐसे विध्वंसक बम का उपयोग करके अनुचित कार्य किया है। जापानी सम्राट के भाषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने राष्ट्र को बरबाद होने से बचाने के लिये आत्मसमर्पण किया है। हम पूछते हैं कि अमरीकनों ने यदि इस 'अणु बम' का अविष्कार पहले ही से कर रखा था तो उसका प्रयोग जर्मनी के विरुद्ध क्यों नहीं किया गया? क्या गोरे राष्ट्र गोरे राष्ट्रों के प्रति सहानुभूति रख सकते हैं किन्तु काले राष्ट्रों के प्रति नहीं? नहीं तो एशिया में ऐसे ध्वंसक बम के उपयोग की उन्हें क्यों आवश्यकता पड़ गई? जिस अस्त्र के उपयोग से सार्वजनिक और निरपराधों का जीवन खतरे में पड़ जाये उसका उपयोग अन्तर्राष्ट्रीय विधान की दृष्टि से भी अनुचित है, फिर भी अमरीकनों ने अपने कर्त्तव्य का पालन 'परमाणु बम' गिरा कर किया। यही नहीं हमने पढ़ा है कि 'परमाणु बम' अधिक से अधिक संख्या में अमरीका में तैयार हो रहे हैं। तो क्या इससे यह समझा जाये कि अभी से किसी अगले युद्ध की तैयारी में अमरीका लगा हुआ है? इसलिए ऐसे ध्वंसक अस्त्र का जल्दी से जल्दी अन्त हो जाना चाहिए। नहीं तो संसार की भावी शांति और सुव्यवस्था खतरे से खाली नहीं रह सकती।

मित्रराष्ट्र युद्ध के बाद शान्ति और सुरक्षा-व्यवस्था की स्थापना करना चाहते हैं, साथ ही प्रजातन्त्र के आधार पर राष्ट्रों का पुनर्निर्माण और संगठन भी। इसका स्वागत कौन राष्ट्र नहीं करेगा? किन्तु जहाँ वह अन्य शक्तिशाली और पराजित महान राष्ट्रों को निशस्त्र करने की योजना बना रहे हैं वहाँ उन्हें भी निशस्त्रीकरण के आदर्श का थोड़ा बहुत पालन करना चाहिए और 'परमाणु बम' ऐसे भयङ्कर अस्त्र का तो अस्तित्व ही मिटा देना चाहिए। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' की कहावत के अनुसार हिंसक नीति का परित्याग करना ही उनके लिए श्रेयस्कर है।

*　　*　　*

राष्ट्रभाषा की उलझन

राष्ट्रभाषा हिन्दी है या हिन्दुस्तानी?

महात्मा गाँधी ने अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सदस्यता से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। यद्यपि महात्माजी सम्मेलन के नियमानुसार उसकी सदस्यता से अपना सम्बन्ध विच्छेद नहीं कर सकते क्योंकि वह दो बार सम्मेलन के सभापति के आसन पर विराजमान हो चुके हैं और सभापति सम्मेलन की स्थाई समिति का स्थाई सदस्य समझा जाता है। फिर भी महात्मा जी को सम्मेलन से अपने को अलग कर लेना पड़ा क्योंकि ऐसी परिस्थिति ही उत्पन्न हो गई।

पिछले सप्ताह महात्मा गाँधी और हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सर्वेसर्वा माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन के बीच होने वाला पत्र-व्यवहार प्रकाशित हुआ है। उससे स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी जी का यह सम्बन्ध विच्छेद 'राष्ट्रभाषा' के प्रश्न को लेकर हुआ है। गांधीजी 'हिन्दुस्तानी' को भारत की राष्ट्रभाषा मानते हैं और माननीय टंडनजी 'हिन्दी' को। गाँधीजी के मतानुसार हिन्दी और उर्दू के सरल रूपों का प्रचार और प्रसार आवश्यक है और उसके मेल से जो भाषा बनती है वही 'हिन्दुस्तानी' है। चूँकि ऐसी भाषा को हिन्दू-मुसलमान दोनों सरलतापूर्वक समझ सकते हैं इसलिए वही राष्ट्रभाषा भी है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए गाँधीजी ने 'हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा' की स्थापना की है जिसका आदर्श है राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी का प्रचार और प्रसार। इसके साथ ही गाँधी जी ने राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी के प्रचार के लिए हिन्दी और उर्दू दोनो लिपियों का सीखना, लिखना तथा पढ़ना अनिवार्य बतलाया है। दूसरी ओर माननीय टंडनजी 'हिन्दी' को राष्ट्रभाषा समझते हैं और हिन्दी-साहित्य सम्मेलन भी इसी आदर्श की पूर्ति करता आ रहा है। टंडनजी उर्दू को हिन्दी का ही एक रूप समझते हैं। फिर भी गाँधी जी की इस नीति से वह भी सहमत हैं कि हिन्दी-उर्दू का समन्वय किया जा सकता है और इस प्रकार यदि कोई तीसरी भाषा बनती है, और वह राष्ट्रभाषा मान ली जाती है, तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है। हाँ, टंडनजी को हिन्दी-उर्दू दोनों लिपियों की अनिवार्यता पर सबसे बड़ी आपत्ति है। वह इसे कतई अव्यवहारिक समझते हैं। महात्मा गाँधी और माननीय टंडनजी के पत्र-व्यवहार का यही लब्बोलबाब है। 'राष्ट्रभाषा' की परिभाषा के सम्बन्ध में भी महात्मा जी और टंडनजी के विचारों में थोड़ा बहुत मतभेद है।

वास्तव में हिन्दी संसार तथा राष्ट्रभाषा के प्रेमियों के सामने उक्त परिस्थिति से एक जटिल समस्या उत्पन्न हो गई है। हम इस सम्बन्ध में अपने विस्तृत विचार अगले अङ्क में प्रकट करेंगे। किन्तु दो-एक बातों की ओर हम पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। सच तो यह है कि महात्मा गाँधी ऐसी विभूति का सम्मेलन से अलग हो जाना अच्छा नहीं हुआ। जिस महान व्यक्ति की छत्रछाया में सम्मेलन ने पिछले लगभग २५ वर्ष से राष्ट्रभाषा हिन्दी की पताका सारे देश में फहराई और जिसके कारण सम्मेलन तथा राष्ट्रभाषा की महत्ता ने अखिल भारतीय तथा

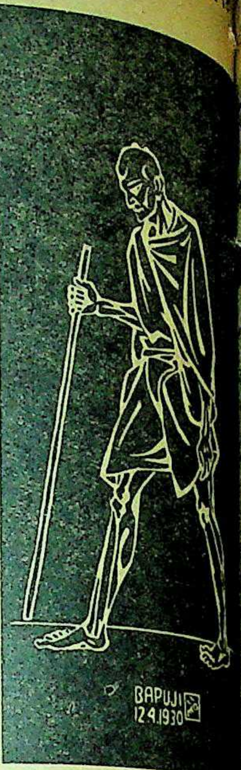

व्यापक रूप ग्रहण करने में स
की, उसका सम्बन्ध विच्छेद न तो
के लिये हितकर है और न हि
के लिए। एक ओर महात्माजी के
सहयोग से 'हिन्दुस्तानी प्रचार
राष्ट्रभाषा 'हिन्दुस्तानी' का प्र
करेगी और दूसरी ओर सम्मेलन
से राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार
अहिंदी प्रांतों में होगा।

इस प्रकार राष्ट्रभाषा के प्रचार
में कितना 'कन्फ़्यूजन' उत्पन्न
भी गंभीरता से समझने की
पहले एक ध्येय और आदर्श
संयुक्त मोर्चा स्थापित था और
मोर्चों से राष्ट्र-भाषा के दो भि
धाराओं का प्रचार और संचा
साथ ही गांधी जी के अलग हो
सम्मेलन अब अपने को शुद्ध '
कहलाने में समर्थ हो सकेगा?
के प्रथम श्रेणी के नेता सम्मेलन
प्रकार सक्रिय सहयोग प्रदान करते
कि वह अब तक करते रहे हैं?
सम्बन्धविछेद से भी गांधी जी
सहयोग सम्मेलन को प्राप्त रहे
कांग्रेस का 'हिन्दुस्तानी' का प्र
बदस्तूर स्थिर है तो क्या कांग्रे
लिये सम्मेलन से सहयोग रख
न होगा? यही सब समस्यायें
करोड़ों हिन्दी-भाषा भाषियों
भाषा प्रेमियों के लिये विचार
भदंत आनन्द कौसल्यायन के
देने से संतोष नहीं कर लेना
'जिस प्रकार कांग्रेस के चार आने
न रहने पर भी गांधी जी कांग्रे
नहीं है, उसी तरह त्यागपत्र
वह सम्मेलन या हिन्दी से भी
रहेंगे।' कांग्रेस और सम्मेलन
बिल्कुल भिन्न है। हम सम
सम्मेलन की स्थायी समिति को
पर गम्भीरता पूर्वक सोचना
तक हिन्दी साहित्य तथा सा
सम्बन्ध है वहाँ तक तो सम्मेल
अब तक शून्य के बराबर रहा है
राजनैतिक और राष्ट्रीय दृष्टि से
वह अपने पूर्व गौरव की र
समर्थ बना रहे, तो अच्छा ही है।

रपूर्व के महायुद्ध-सेनानायक

उंट बैटन, निमिट्ज, लीज़, ब्लेमी फ्रेजर और हेल्सी कौन हैं ?

लेखक, श्री गगनविहारी मेहता, एम० ए०

और प्रशांत महासागर के युद्ध-क्षेत्र में कई अमरीकन और ब्रिटिश सेनापतियों दर्शन किये हैं। जल, स्थल और वायु के भयंकर युद्ध में इन सेनापतियों रहा है। इस छोटे से लेख में कुछ सेनापतियों के जीवन तथा कार्यों का साधारण वर्णन किया गया है, जो जानकारी से युक्त है।

माउंटबैटन

हाई कमांड के सर्वोच्च माउंटबैटन के पिता मिरल थे-और उनकी विक्टोरिया की नातिन एक कैडेट के रूप में से अपना काम आरम्भ के अनन्तर १८ वर्ष उत्तर सागर के एक प्रधान अफ़सर का पद

का अन्त होने पर नौसेना के सामान्य में लग जाते किन्तु आफ़ वेल्स के साथ न्यूज़ीलैंड की यात्रा के और दो वर्ष बाद वे उनके साथ भारत, की यात्रा में गये। भी यह न सोचा न् ब्रिटिश नाविक के सर्वोच्च सेनापति के

युद्ध के छिड़ने पर विध्वंसक बेड़े की और नौसेना के नये उनके अनुभवों ने उन्हें योग्य योद्धा सिद्ध कर

में माउंटबैटन को का सर्वोच्च सेनापति उनके बाद बर्मा के युद्ध का श्रेय भी उनके और शीघ्र निर्णय करने ही है। उन्होंने वर्षा हुए जङ्गल की लड़ाई को तोड़ने का निर्णय परिणाम यह हुआ कि उलझ गये और अन्त उनकी पराजय हुई। सातवें और पाँचवें भारतीय डिवीजन को अराकान से उठाकर ले जाने का फल यह हुआ कि इम्फाल के युद्ध का रूप ही बदल गया और आगे चलकर रंगून के जल एवं स्थल युद्ध ने भविष्य की रूप-रेखा स्पष्ट कर दी।

युद्ध हाई कमांड के सर्वोच्च सेनाध्यक्ष लार्ड लुईमाउंट बैटन दूसरे सेनापति से वार्ता कर रहे हैं।

एडमिरल चेस्टर निमिट्ज

सन् १९४१ के दिसम्बर में एडमिरल निमिट्ज प्रशान्त के प्रधान सेनापति नियुक्त हुए। पहले एडमिरल हसबेंड ई० किमेल इस प्रदेश के प्रधानसेनापति थे। निमिट्ज की नियुक्ति से जल-सेना के प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य हुआ। स्वयं निमिट्ज को भी आश्चर्य हुआ। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने उन्हें उच्चपद दिया। जिस समय निमिट्ज प्रशान्त के प्रधान सेनापति बनाये गये उस समय वहाँ की स्थिति बड़ी विकट थी। प्रशान्त के बेड़े के आठ बड़े जहाज पर्ल हार्बर में डूबे हुए थे। अन्य तीन जहाज हानिग्रस्त थे। बेड़े का धैर्य भी प्रायः भंग हो गया था। निमिट्ज ने धीरे धीरे गड़बड़ और घबराहट दूर करके शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित की।

नियुक्ति के बाद कुछ मास तक वे सार्वजनिक रूप से प्रायः कुछ भी नहीं बोले और काम करते रहे। उन्होंने मार्शल गिलबर्ट पर और वेक और मार्क्स पर जो हमले किये वे बड़े साहस के कार्य थे। अन्य कोई व्यक्ति प्रायः ऐसा साहसिक कार्य न करता। वे अपने पास के साधनों से जो कुछ कर सकते थे वह उन्होंने किया। उन्होंने सार्वजनिक रूप से यह शिकायत नहीं की कि उन्हें अमुक अमुक साधन पर्याप्त परिमाण में नहीं मिले। उन्होंने मिडवे की लड़ाई की सफल समाप्ति के होने तक जिस कौशल से जल-सेना का संचालन किया वह प्रशंसनीय है।

पनडुब्बियों में दीर्घकाल तक काम करते रहने के कारण निमिट्ज को संधिवात रोग हो गया है पर प्रशान्त के टापुओं की गरम जलवायु से यह रोग रुका रहता है। भीषण संग्राम करते हुए भी वे अपने शरीर को स्वस्थ रखने में समर्थ हैं।

जनरल सर आलिवर लीज

जनरल सर लीज को सैनिक-वृत्ति अपनाये हुए ३० वर्ष हो गये। १९१४ में आप कोल्ड स्ट्रीम गार्ड्स में भरती हुए और अभी २० वर्ष की अवस्था पूरी भी न हुई थी कि आपको लड़ाई के मैदान पर जाना पड़ा। गत महायुद्ध में आप तीन बार घायल हुए। द्वितीय महायुद्ध छिड़ने पर, १९४० में आप हालैंड वापस बुला लिये गये और फिर उसी पद पर फ्रांस भेजे गये। वहाँ आपने ब्रिटिश अभियान सेना के बड़े फौजी दफ़्तर के उप-प्रधान का कार्य किया। जर्मनों के तूफानी बढ़ाव के समय ब्रिटिश सेना को डंकर्क तक पीछे हटा लाने में आपने बड़े कौशल से काम लिया। १९४२ में आप मिस्र भेजे गये और इसी वर्ष २३ अक्टूबर को अलामीन में आपने ३०वीं कोर को जर्मनों पर हमला करने की आज्ञा दी। आपके नायकत्व में भारतीय सेना का संगठन किया गया और उस युद्ध की तैयारी की ट्रेनिंग प्राप्त करने लगा जिसने एक वर्ष बाद बर्मा के युद्ध का पाँसा ही पलट दिया।

सुदूरपूर्व के प्रधान अमरीकन सेनापति जनरल मेकार्थर जो जापानी आत्मसमर्पण के लिए प्रधान अधिकारी बनाये गये हैं

एडमिरल सर ब्रूस फ्रेजर

एडमिरल सर ब्रूस फ्रेजर को ब्रिटेन की नौसेना का एक महान् युद्ध कार्य दिया गया। एडमिरल फ्रेजर में श्री चर्चिल के बहुत से गुण हैं। देखने और व्यक्तित्व में वे भूतपूर्व प्रधानमंत्री के ही समान असाधारण लगन और अनन्त शक्ति के स्रोत जान पड़ते हैं। हृष्ट-पुष्ट शरीर, चौड़े जबड़े और कटे-फटे चेहरे के एडमिरल फ्रेजर के नेत्र सदा विनोद से नाचा से करते हैं और उनके नेत्रों की यह ज्योति उनके चेहरे को आलोकित किये रहती है। इसी कारण उनसे मिलनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में उनके मैत्रीपूर्ण नेत्रों की एक अमिट छाप छा जाती है।

प्रशांतसागर के सेनापति एडमिरिल निमिट्ज जिन्होंने नौसेना के युद्ध में साहसपूर्ण कार्य किया है।

सुदूरपूर्व में नौसेना के सेनापति एडमिरल फ्रेजर को जर्मन युद्धपोत "शार्नहार्स्ट" को डुबानेवाले व्यक्ति के रूप में जानती है। यह दुर्दमनीय युद्धपोत १९४३ के बड़े दिन को आर्कटिक महासागर में ऐतिहासिक समुद्री संघर्ष के उपरान्त डुबोया गया था। शाही नौसेना को निकट से जानने वाले उन्हें ब्रिटेन के एक सबसे प्रमुख नौसैनिक तोप विशेषज्ञ और रण-नीति विशारद के रूप में जानते हैं। आप ब्रिटेन के एक प्रमुख लड़ाकू नौसेना नायक तथा समुद्री और हवाई शक्ति के संयोग के महत्त्व को भली भाँति समझने वाले व्यक्ति हैं।

नौसैनिक प्रतिनिधि के रूप में रूस में भी एडमिरल फ्रेजर को पूर्ण सफलता मिली। सोवियट हवाई स्टेशनों में वायुयानों के निरीक्षण की अपेक्षा उन्होंने चालकों तथा मशीन-विशेषज्ञों के निवास स्थान में पहुँच कर उनसे बातें करने में समय व्यतीत करना उचित समझा।

एडमिरल विलियम हेल्सी

एडमिरल विलियम एफ० हेल्सी आधुनिक युग के नाविक हैं। वे ऐसे नाविक हैं जिनकी गति आकाश में भी है। वे किसी युद्धपोत पर नहीं रहते बल्कि एक विमान-वाहक जहाज से ही युद्ध का संचालन करते हैं।

वे छोटे और नाटे कद के हैं। उनकी आयु ६३ वर्ष की है। वे "बुल" (सांड) के नाम से विख्यात हैं। दस वर्ष हुए उन्हें नौसेना का चालक बनाया गया था। वे अभी तक नाविक और चालक दोनों ही हैं। सम्भवतः अमरीकी सेना में वे सबसे अधिक उल्लेखनीय व्यक्ति हैं।

जनरल सर थामस ब्लेमी

जनरल सर थामस ब्लेमी केटा के मिलटरी स्टाफ कालेज के स्नातक हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध में उन्होंने मध्यपूर्व और दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त में स्थल मोर्चों पर आस्ट्रेलियन फौजों की कमान की। १९४२ में

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

जापानी सम्राट् हिरोहितो कौन हैं?

रहस्यमय और मनोरंजक जीवन की एक झाँकी

लेखिका, कुमारी प्रेमलता जोशी, बी० ए० (आनर्स)

जापान के सम्राट् हिरोहितो कौन हैं, क्या करते हैं? उनका रहन-सहन तथा दैनिक जीवन कैसा है, वे किस प्रकार पूजे जाते हैं, उनकी वंश परंपरा कैसी है और कहाँ तक उस पर वे चल रहे हैं, इन सबका मनोरंजक वर्णन इस लेख में किया गया है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

जिन विदेशी लोगों ने जापान के सम्राट् हिरोहितो से भेंट की है उनका कहना है कि सम्राट् बड़े ही प्रसन्न चित्त व्यक्ति प्रतीत होते हैं। उनका कद नाटा है। उनकी दूर की दृष्टि कमजोर है। वे आज कल कुछ हृष्ट पुष्ट हो रहे हैं। उनमें व्यक्तित्व का अभाव है और न्यूनाधिक रूप में संज्ञा-शून्य से प्रतीत होते हैं। किन्तु यह सब होते हुए भी जापानी जनता की दृष्टि में वे पूर्णतया दिव्य पुरुष हैं।

जापान के सम्राट् को 'तेनो' अथवा 'तेन्शो' उपनाम से सम्बोधित किया जाता है जिसका अर्थ देवोपम राजा अथवा ईश-युक्त है। जापान का सम्राट् तेनो सूर्य देवी आमातेरासू का १२६वाँ वंशज है। यह सब जापानियों के लिये एक मनोरंजक पौराणिक आख्यायिका-मात्र नहीं है वरन् यह उनके लिये स्पष्ट एवं निर्विवाद ऐतिहासिक तथ्य है।

जापान के सम्राट् हिरोहितो।

अब से ८० वर्ष पूर्व जापान का शासन-सूत्र 'शोगुन' नामक सैनिक शासकों के हाथ में था। उस समय सारा जापान संसार के एक कोने में पड़ा था, उसका अन्य देशों से कोई सम्बन्ध न था। अन्त में, जापानी जनता ने उपर्युक्त शासकों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और एक नवयुवक सम्राट् को अपने पूर्वजों के सिंहासन पर दुबारा बैठाया।

* * *

कुछ शिष्टजनों के सम्मिलित प्रयत्नों से जापान की बाह्य रूप रेखा पाश्चात्य साँचे में ढल गई। ब्रिटिश विधान का अनुकरण करके जापान में एक नई सरकार की स्थापना की गई। इस नये विधान के अनुसार जापान का सम्राट् नाममात्र का सम्राट् रह गया। उसके शासन-सम्बन्धी अधिकांश अधिकारों का अन्त हो गया। किन्तु जापानी जनता के हृदय में उसके देवत्व के प्रति सम्मान अब भी ज्यों का त्यों स्थिर है। जापान के प्रचलित विधान के अनुकूल हिरोहितो तीसरे सम्राट् हैं। उनके पितामह का नाम सम्राट् मीजी था जिनके शासन-काल में जापान में सीमान्त प्रथा का अन्त हुआ और समस्त देश एक शक्तिशाली औद्योगिक और सैनिक राज्य में परिणत हो गया। इसी समय से जापान संसार के अन्य देशों के सम्पर्क में आने लगा। यदि उदार भावनाओं का प्रचार करने के लिये उपर्युक्त आन्दोलन चलता रहता तो सम्राट् मीजी अवश्य ही एक उदार सम्राट् हो गये होते।

* * *

विद्याध्ययन के लिये हिरोहितो उस स्कूल में भेजे गये जहाँ केवल कुलीन विद्यार्थी ही पढ़ सकते थे। यहाँ पर उनका परिचय अन्य विद्यार्थियों से हुआ। जब वे युवराज हो गये तब उन्हें बाह्य संसार का न्यूनाधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये इँगलैंड का परिभ्रमण करने को भेज दिया गया। उनकी विदेश-यात्रा पुराने लकीर के फकीर जापानियों के लिये बड़ी ही उथल-पुथल मचा देनेवाली बात थी।

जब १९२६ में सम्राट् हिरोहितो के पिता का देहावसान हुआ तब वे सिंहासनारूढ़ हुए और उन्होंने अपने शासन का उपनाम दिव्य शान्ति रखना पसंद किया। किन्तु प्रतिक्रिया-काल का सूत्रपात हो चुका था। स्थल और जल सेना नायकों ने पहले ही से जापान सरकार पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया था।

हिरोहितो जापान में दिव्य शान्ति स्थापना का स्वप्न देखते थे। किन्तु उनमें इतनी बुद्धि नहीं थी कि जिससे वे अपने देश के उच्च अधिकारियों को कार्य करने से रोक सकें। निःसंदेह उनका जापान पर पूरा पूरा आधिपत्य था। जो कुछ वे कह देते थे वही शब्द कानून की भाँति अनुल्लंघनीय माने जाते थे। जापानी जनता का प्रत्येक व्यक्ति उनके प्रति ईश्वर की भाँति भक्ति रखता था। किन्तु, यह सब कुछ होते हुए भी, सम्राट् व्यावहारिक रूप से जापानी सैनिक और नौसैनिक अधिकारियों के हाथ की कठपुतली थे।

* * *

हिरोहितो अपना जीवन अन्य जापानी सम्राटों की भाँति एकान्त में व्यतीत करने लगे। वे उद्यान से परिवेष्टित अपने राजप्रासाद की चहारदीवारी के अन्तर्गत अथवा हयाना-स्थित सुरक्षित समुद्री कुटीर में अपना साधारण जीवन व्यतीत कर रहे हैं। वे एक सच्चे पति और पिता हैं। वे अपने सफेद घोड़े पर चढ़ना बहुत पसंद करते हैं। उन्हें गोल्फ और टेनिस खेलने का शौक है। तैरना भी उन्हें विशेष रुचिकर प्रतीत होता है। वे जलजन्तु-विद्या से विशेष दिलचस्पी रखते हैं।

* * *

उनका व्यक्तिगत जीवन बड़ा ही सरल है। वे मितव्ययी हैं। यद्यपि हिरोहितो संसार के सबसे अधिक धनसम्पन्न व्यक्ति हैं तो भी वे अपव्ययता से घृणा करते हैं। किन्तु सम्राट् होने के कारण वे अपनी मानवता का भली भाँति प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। उनके दरबार का ठाट-बाट अवर्णनीय है। जो कोई राज-मंत्री उनसे भेंट करने जाता है तो उसे घुटने टेक कर उनके सामने खड़े रहना पड़ता है। जापान की जनता के सामने इस सामान्य व्यक्ति को ईश्वरीय रूप सिद्ध करने के लिये प्रत्येक संभव उपाय से काम लिया जाता है। यह बताया जाता है कि उनका अब भी वही स्वरूप है जो २,५०० वर्ष पूर्व स्वयं सूर्य देवी ने इस जापान के

प्रदान किया था।

जापानी लोग इस

विश्वास करते हैं। हिरोहितो के

रूप में उनका अटल विश्वास

यह परिणाम है कि जब कोई

अनुभव करता है कि वह

कमान से लिये अयोग्य है तो

हिचकिचाहट के (हाराकिरी)

कर लेता है।

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० की अनमोल कृतियाँ

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और

इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है।

।।।) बारह आने।

मधुस्रवा में नवीन शैली की, जीवन में मधु बरसानेवाली सुन्दर रचनाएँ हैं।

पढ़कर प्रत्येक कविता-प्रेमी को अपना जीवनरस मधुर बनाना चाहिए।

१।-) एक रुपया पाँच आने।

लक्ष्मण-शक्ति में रामायण की सुप्रसिद्ध कथा का वर्णन बढ़िया छन्दों में

से कवि ने किया है। युद्ध-वर्णन, हनुमान और रामविलाप आदि को पढ़कर

विह्वल हो जाता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है।

राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य

हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है।

।।।=) चौदह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

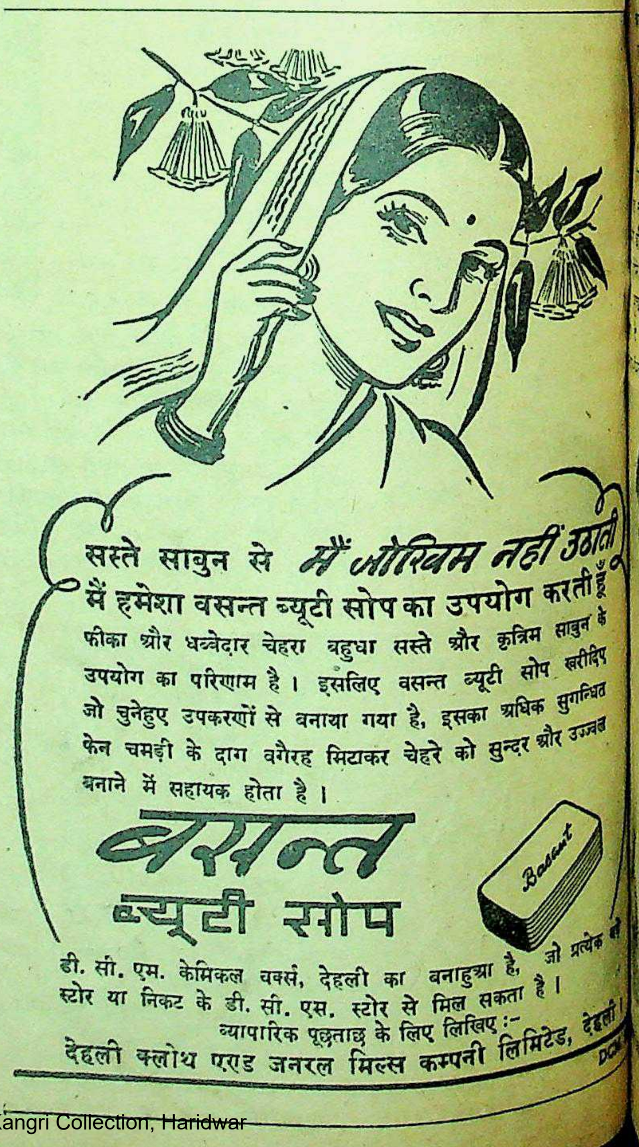

सस्ते साबुन से मैं जोखिम नहीं उठाती
मैं हमेशा वसन्त ब्यूटी सोप का उपयोग करती हूँ
फीका और धब्बेदार चेहरा बहुधा सस्ते और कृत्रिम साबुन के उपयोग का परिणाम है। इसलिए वसन्त ब्यूटी सोप खरीदिए जो चुनेहुए उपकरणों से बनाया गया है, इसका अधिक सुगन्धित फेन चमड़ी के दाग वगैरह मिटाकर चेहरे को सुन्दर और उज्ज्वल बनाने में सहायक होता है।

बसन्त ब्यूटी सोप

डी. सी. एम. केमिकल वर्क्स, देहली का बनाहुआ है, जो प्रत्येक स्टोर या निकट के डी. सी. एस. स्टोर से मिल सकता है।

व्यापारिक पूछताछ के लिए लिखिए :-
देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स कम्पनी लिमिटेड, देहली।

भारतीय स्वतन्त्रता ज़रूरी क्यों ?

नहीं तो संसार में संघर्ष बराबर चलता रहेगा

लेखक, श्री रामभरोस मालवीय

जापान का युद्ध समाप्त हो गया। अब दुनिया में अमरीका, ब्रिटेन और रूस नये विश्व-निर्माण में अग्रसर हो रहे हैं। लेखक ने इस लेख में यह बतलाया है कि अमरीका और ब्रिटेन को यह समझ लेना चाहिए कि फिर भी उनका साम्राज्यवाद अभी खतरे से खाली नहीं है। सोवियट रूस धीरे धीरे अपनी साख बढ़ाता जा रहा है और इससे बचने का एकमात्र उपाय है भारतीय स्वाधीनता की घोषणा। नहीं तो अशांति की समाप्ति असंभव है और एक समय वह देखना पड़ सकता है जब संसार तीसरे महायुद्ध में पदार्पण करे। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

हो जाता है। लार्ड लिनलिथगो और महात्मा जी में भी मित्रता थी मगर वही महात्मा जी के सबसे बड़े विरोधी साबित हुए। पति-पत्नी में भी विचार भिन्नता होने पर तलाक दे दिया जाता है। संसारी मनुष्य के लिए मित्रता है एक तरह का स्वार्थ और जहाँ स्वार्थ समाप्त हुआ वहीं दोस्ती का अन्त है। इँगलैंड तथा अमेरिका से रूस की मित्रता कब तक कायम रहेगी यह भविष्य के गर्भ में है फिर भी दूसरे महाभारत के होने का अन्दाजा लोग अभी से लगा रहे हैं।

* * *

था—"मैं ब्रिटेन की साम्राज्यशाही को जापान-द्वारा हमला होने पर बर्मा, सिंगापुर, मलाया को एक के बाद दूसरे को ताश के पत्ते की तरह उड़ते हुए देखकर हैरत में हूँ। मैं इनकी शक्ति को देखकर समझता था कि इनमें कुछ चमत्कार होगा, फावड़ा लेकर क्या मैं भी इसे खोदकर फेंक दूँ ?" पंडित जी ने ब्रिटेन की कमजोरी पर दुखी होकर ही सब कुछ कहा था, ऐसा उनके विचारों से जाहिर होता है। इँगलैण्ड का हित तो इसमें था कि वह भारत से समझौता करके अपनी साख बढ़ाता ? ऐसा नहीं तो उसे रूस की हाँ में हाँ मिलानी पड़ेगी।

सावन की रात

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

सिहरती सी सावन की रात !
सुमुखि तुम्हें क्या याद न आती मधुर मिलन की बात ?

जो जीवन था आज सुरति है,
आकुल सी अभिव्यक्ति विरति है,
नेह-नगर के परदेशी पर, यह कैसा आघात ?

सजल चाँदनी विष बरसाती,
सुप्त भावनाएँ सरसाती,
सुखद क्षणों की सुधि में सहसा प्रमुदित पुलकित गात !

उन्मन सी कुछ कोयल बोली,
गूँज उठी मधुपों की टोली,
रात नहीं विह्वल वियोग की जागृति का यह प्रात !

जिस तरह बर्लिन में रूस के दाखिल होने पर जर्मनी ने हथियार डाला था उसी तरह रूस के हथियार उठाते ही जापान ने हथियार डाल दिया है, यह समझने की बात है ! जर्मनी तथा जापान दोनों रूस से परास्त हुए केवल इँगलैंड या अमेरिका से नहीं। प्रकृति करवट बदल रही है। पतन-उत्थान और उत्थान-पतन विधि का विधान है। जो इसे नहीं समझेगा उसका अन्त होगा। आज तक साम्राज्यवाद का बोलबाला दुनिया में था अब साम्यवाद का सूर्य चमक रहा है। इँगलैंड तथा अमेरिका इसे न समझेंगे तो प्रकृति उन्हें समझायेगी। रूसी भालू हर ओर मुँह फैलायेगा। उससे बचने के लिए उसी का रूप धारण करना पड़ेगा।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू इँगलैण्ड के सबसे बड़े मित्र हैं। उन्होंने इसी से बार-बार उसे सचेत किया है। उन्होंने बार-बार कहा है कि सम्राज्यवाद का जमाना लद चुका है, उसका अन्त करीब है। ऐसा होते हुए भी वह इँगलैण्ड की जड़ नहीं उखाड़ना चाहते। सन् ४२ में प्रयाग के पुरुषोत्तम पार्क में उन्होंने [illegible]

दूसरे की शक्ति अपने लिए हितकर नहीं होती। उसका तभी तक भला है जब तक उसके मन की करते जाइए। आज इँगलैण्ड की नहीं रूस की साख दुनिया में बढ़ रही है। इँगलैण्ड इधर न देखेगा तो उसे धोखा खाना पड़ेगा।

* * *

इँगलैण्ड अब भी समझ ले तो उसका हित है वह भारत को आजाद कर दे इसी में उसका कल्याण है। भारत और इँगलैण्ड एक होकर दुनिया में अपना प्रभुत्व कायम रख सकते हैं। जापान के बाद भारत पर भी रूस की आँख उठने की संभावना है किन्तु रूसी साम्यवाद का मुकाबला भारत ही कर सकता है दूसरे में उसके सामने ठहरने की ताकत नहीं है। भारत साम्यवाद का उपासक होते हुए भी रूसी साम्यवाद से उसे नफरत है। वह अपना साम्यवाद अहिंसा-द्वारा स्थापित करना चाहता है, जिसमें सभी का समान अधिकार होगा। रूस का साम्यवाद एक दिन पूँजीवाद का चोगा धारण करेगा जिसमें मानव-संहार होगा। अहिंसा-द्वारा साम्यवाद चिरस्थायी होगा। रूस का साम्यवाद हिंसा-द्वारा अस्थायी है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित का, न्यूयार्क (अमरीका) के अस्पताल में आपरेशन हुआ है। आप बराबर स्वास्थ्य-लाभ कर रही हैं।

दूसरा युद्ध खत्म हुआ, इसमें विजय का श्रेय रूस को प्राप्त हुआ, अब अगर भारत का भाग्य उदय न होगा तो तीसरा युद्ध होगा और उसमें विजय का श्रेय भारत को प्राप्त होगा। स्वतन्त्रतारूपी सूर्य प्रथम भारत में उदय हुआ और अस्त होते हुए वह यूरोप पहुँचा। अब भारत की फिर बारी है। जब तक भारत आजाद न होगा, संसार में युद्ध होते रहेंगे। इसलिए भारत को स्वतंत्रता प्रदान करके इस अशांति को दूर करनी चाहिए। भारत त्याग से राज्य का संचालन करता है। दूसरे मुल्क हुकूमत के गर्व में विलासी हो जाते हैं। हुकूमत विलासिता से नहीं त्याग से ही कायम रह सकती है। प्राचीन भारत में राजा प्रजा के हित के लिए राज्य करते थे। उसके विपरीत दुनिया में आज राज्य का संचालन हो रहा है। प्रजा का अहित और राजा का हित प्रधान हो गया है। उसका अन्त होने पर ही दुनिया में शान्ति कायम हो सकती है। इँगलैण्ड सचमुच विश्व का, जिसमें उसका भी कल्याण है, चाहता है तो उसे भारत को आजाद करना चाहिए।

कांग्रेस को चाहिए कि समझौते का भाव अलग करके अपने लक्ष के लिए कटिबद्ध हो जाये। भारत की आजादी के दिन करीब हैं। वह प्रकृति-द्वारा आजाद होगा। प्रकृति भारत को आजाद करेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

अनुराग
लेखिका, श्री विमला रानी
इस पुस्तक में ६ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव-हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

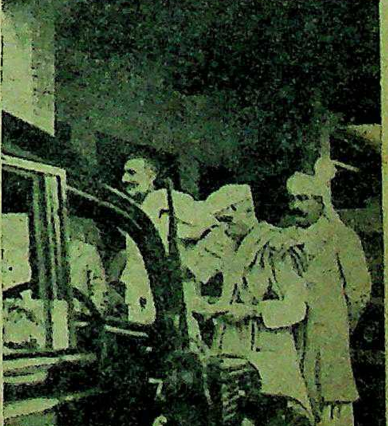

काश्मीर में सीमाप्रांत के गांधी खान अब्दुल गफ्फार खाँ, पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ।

हिन्दीवाले अपने को पहचानें!

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के सभापति गोस्वामी गणेशदत्त जी से एक भेंट

लेखक, श्री उमेश जोशी

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के वर्तमान सभापति गोस्वामी गणेशदत्त जी ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में किये गये कुछ प्रश्नों का क्या उत्तर दिया इसका इस लेख में समावेश है। लेख अत्यन्त रोचक तथा हिन्दी की कुछ समस्याओं पर सुन्दर प्रकाश डालनेवाला है।

मैं अपने अंतरंग मित्र डाक्टर धर्मप्रकाश जी के साथ पूज्य गोस्वामी जी से मिलने के लिए "महावीर यात्री-गृह" ठीक शाम के पाँच बजे पहुँचा। "महावीर यात्री-गृह" हरिद्वार में यात्रियों के ठहरने का एक सुविधाजनक विख्यात स्थान है। इसी में तीन-चार कमरे गोस्वामी जी के लिए रिजर्व थे। मैं जब पहुँचा तब गोस्वामी जी चारपाई पर लेटे हुए थे क्योंकि वे बीमार थे। दाँतों में कुछ तकलीफ थी। डाक्टर साहब ने मेरा परिचय गोस्वामी जी से कराया। गोस्वामी जी बहुत ही धीमे-धीमे बोल रहे थे। उस धीमी बोली में भी एक दिव्य ओज था जो मानव प्राणियों को बरबस अपनी ओर खींच रहा था। तकलीफ होने पर भी गोस्वामी जी मेरे प्रश्नों का जवाब देने के लिए तत्पर हो गये। मैंने कहा—"रहने दीजिये महाराज, मैं फिर कभी प्रश्नों को आपसे पूछ लूँगा। अभी आप आराम कीजिये।" गोस्वामी जी ने चौंककर कहा—"यह कैसे हो सकता है? आप इतनी दूर से आये हुए हैं और फिर निराशा लिये हुए लौटें? हिन्दी के लिए मैं जीवन के अन्तिम क्षण तक सेवा करना चाहता हूँ। आप प्रश्न करने में हिचकिये नहीं। जो भी आप हिन्दी के सम्बन्ध में प्रश्न करेंगे मैं संक्षेप में उसका उत्तर देने का प्रयत्न करूँगा।"

* * *

प्रश्न—आप माननीय टंडन जी के हिन्दी-उर्दू के समन्वयवाद के दृष्टिकोण से सहमत हैं या नहीं?

उत्तर—मैं हिन्दी में किसी किस्म का समन्वय नहीं चाहता। मैं हिन्दी को हिन्दी की दृष्टि से देखना चाहता हूँ। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि टंडन जी तो हिन्दी के प्राण हैं फिर वे क्यों समन्वयवाद के पचड़े में फँस गये? मैं यह विश्वास भी नहीं कर सकता कि टंडन जी जैसे हिन्दी के हमदर्द समन्वयवाद के पिष्ठपोषक होंगे? मैं हिन्दी को किसी दूसरे रूप में नहीं देखना चाहता। हिन्दी का विस्तार हिन्दी के ही धरातल पर हो सकता है, किसी अन्य विदेशी भाषा की पृष्ठभूमि पर नहीं। मैं यह भी नहीं चाहता कि जो विदेशी शब्द हिन्दी भाषा में मिश्रित हो गये हैं उनको निकालकर फेंक दिया जाय। जिन शब्दों को हिन्दी में बोलते हुये सैकड़ों वर्ष हो गये उन शब्दों पर हिन्दी का आधिपत्य है। उनको विदेशी कहना ही हिन्दी का अपमान करना है। टंडन जी अपने लक्ष्य से क्यों फिसल गये इस सम्बन्ध में मैं कुछ नहीं जानता। अभी तक तो मैं यह भी नहीं समझ सका कि उनके समन्वयवाद से क्या प्रयोजन है?

प्रश्न—क्या आपको हिन्दुस्तानी नाम प्रिय है?

उत्तर—मुझे हिन्दुस्तानी नाम से कोई चिढ़ नहीं, मैं चाहता हूँ कि देश के सब निवासी अपने को हिन्दुस्तानी कहने में अपना गौरव समझें लेकिन उनकी भाषा हिन्दी ही होनी चाहिये। भाषा के रूप को बदलकर प्रगति-पथ पर बढ़ना मानव का महान् पतन है, मैं हिन्दी का कोई दूसरा नाम रखने का समर्थक नहीं और न मैं हिन्दी के ऊपर किसी किस्म की चमचमाती पालिश करवाना चाहता हूँ।

प्रश्न—आप देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी ही को क्यों समझते हैं?

उत्तर—आपका प्रश्न बहुत ही जटिल है। तबीअत भी मेरी अस्वस्थ है—गम्भीर प्रश्नों का उत्तर देने में मैं असमर्थ हूँ—लेकिन फिर भी मैं उत्तर थोड़ा बहुत दूँगा ही—क्योंकि प्रश्न तो आप कर ही बैठे हैं। मैं यह भी नहीं चाहता कि आप अपने प्रश्न को वापस लें। आज हिन्दी का अस्तित्व प्रबल है और उसका प्रभुत्व कुल भारतवर्ष पर है। भारतवर्ष में जितनी भी जबानें बोली जाती हैं, उन सबसे हिन्दी मिलती-जुलती है और कोई ऐसी भाषा नहीं जो सब प्रान्तों की भाषाओं से समानता रखती हो। इसके अलावा हिन्दी के बोलनेवालों की संख्या आज अन्य-भाषाओं के बोलनेवालों की संख्या से अधिक है। हिन्दी का साहित्य भी ऊँचे धरातल की ओर जा रहा है। आज हिन्दी अपने साहित्य के बल पर अपना सिर गौरव के साथ ऊपर उठा सकती है। उर्दू में इतनी ताकत नहीं कि वह राष्ट्रभाषा बन सके। उर्दू बोलनेवालों की संख्या भी अधिक नहीं है। इसलिये राष्ट्रभाषा हिन्दी ही बन सकती है।

प्रश्न—आपका विद्यार्थियों के लिए क्या सन्देश है?

उत्तर—मेरा विद्यार्थियों के लिए यही संदेश है कि वे अपना कर्तव्य समझकर हिन्दी की रक्षा करने में अपने को आगे बढ़ावें। आज विद्यार्थी-वर्ग हिन्दी से कुछ उदासीन-सा मालूम पड़ रहा है। वे आपस में मित्र-मंडली में हिन्दी का व्यवहार करें अँगरेजी का नहीं। चिट्ठी-पत्री भी प्रायः हिन्दी में ही लिखा करें। अँगरेजी का प्रयोग सिर्फ उस वक्त करें जब कि हिन्दी से उनका काम न निकलता हो। मैं समझता हूँ कि आज शिक्षार्थियों का सबसे बड़ा कर्तव्य देश के प्रति भाषा की रक्षा करना है। और यह कार्य वह आसानी से कर भी सकते हैं। इस कार्य के करने में उन्हें स्कूल या कालेज नहीं छोड़ना पड़ेगा बल्कि अपनी शिक्षा के साथ साथ यह कार्य चलता रहेगा। इसके बाद विद्यार्थियों को चरित्रवान होना चाहिए। विलासिता के जीवन का बलिदान करना ही विद्यार्थी-जीवन पर विजय प्राप्त करना है। विद्यार्थी-वर्ग को चरित्र-निर्माण के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहिए और न राष्ट्रीयता के विरुद्ध। राष्ट्र के साथ साथ चलना प्रत्येक विद्यार्थी का प्रधान कर्तव्य है।

प्रश्न—आपके सभापतित्व के बाद रेडियो-आन्दोलन का क्या होगा? क्या उदयपुर-सम्मेलन भी आपके कार्यक्रम को अपनायेगा?

उत्तर—जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक मैं रेडियो-आन्दोलन चलाता रहूँगा। चाहे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के होनेवाले सभापति मेरी इस नीति के समर्थक हों या नहीं। यदि रेडियोवालों ने हिन्दी के अस्तित्व को मान लिया—तब तो ठीक है, वरना मुझे तो देश के कोने कोने में रेडियो के विरुद्ध आन्दोलन जोश के साथ करना पड़ेगा। हिन्दी की शक्तिशाली आवाज को रेडियोवाले दाब नहीं सकते एक न एक दिन रेडियोवालों को हमारे सामने झुकना पड़ेगा। जिस प्रकार पंजाब प्रान्त ने रेडियो आन्दोलन-सप्ताह मनाया, उस प्रकार अन्य प्रान्तों ने नहीं मनाया। यहाँ तक कि हिन्दी की जन्म-भूमि यू० पी० इस कार्य में पीछे रही। इसका मतलब यही है कि अभी हिन्दी के कलाकार हिन्दी के प्रति अपना कर्तव्य नहीं समझते।

इन प्रश्नों के जवाब के बाद गोस्वामी जी ने कहा—"कहिये जोशी जी अभी और कुछ प्रश्न शेष हैं या समाप्त हो गये?" मैंने कहा—"गोस्वामी जी, मैं आपकी इस कृपा के लिये बड़ा कृतज्ञ हूँ कि तबीअत ठीक न होने पर भी आपने इतना कष्ट किया। अब कोई प्रश्न शेष नहीं।" गोस्वामी जी ने हँसते हुये कहा—कष्ट कैसा, यह तो मेरे जीवन का उद्देश्य ही है। हिन्दी की सेवा करना ही मेरे जीवन का महान् लक्ष्य है।

भोजन के लिये भी गोस्वामी जी ने हम लोगों से पूछा। उन्होंने कहा—

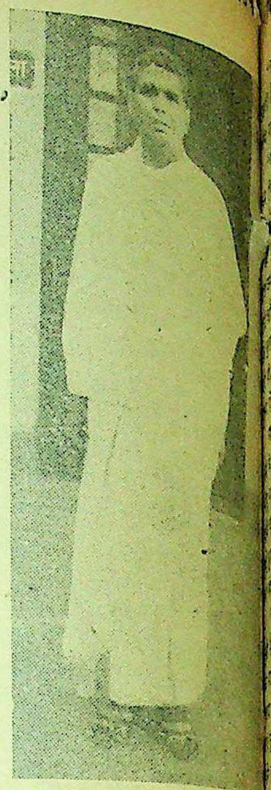

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के सभापति
गणेशदत्त जी।

"आप दोनों को भोजन यहीं करना
मैंने कहा—"गोस्वामी जी आज
माफ़ी चाहता हूँ। हाँ यदि भोजन
ही है, तो कल कराइये। मेरी इस
सुनकर गोस्वामी जी तथा अन्य
कर्मचारी हँस पड़े। आखिरकार
दूसरे दिन के लिये टाल दिया गया।

बातचीत करते करते दो
गये थे। उनके दवा खाने का
गया था। मैं प्रणाम करके उनसे
हुआ।

(लेखक-द्वारा सर्वाधिकार

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफासफाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी * ब्रांकाइटिस
* जुकाम * निमोनिया
* यक्ष्मा * पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि-विक्रेताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें:—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

कहानी

भोंपू बज रहा था

लेखिका, श्रीमती इंदिरा खन्ना

गरीबी बड़ी बुरी है। पेट के लिये इंसान को क्या क्या नहीं करना पड़ता, इसका अनुभव सबको कैसे हो सकता है? अभागिन अचला को भी पापी पेट के लिये सर्वस्व ही नहीं त्याग करना पड़ा वरन् उसे अंत में अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा। इस कहानी में अचला का बड़ा ही सजीव, मार्मिक और वास्तविक चित्रण किया गया है, जो पठनीय तथा हृदयस्पर्शी है।

पानी गिरने की भी आवाज आ रही थी, जो अन्धकार को और भी भयानक बनाने में सहायक हो रही थी। लिफ्ट नीचे जाकर खटके के साथ अपने स्थान पर रुक गया। वहाँ बिजली की रोशनी जल रही थी। प्रकाश देखकर अचला की जान में जान आई। लिफ्ट से नीचे उतरकर शान्ति की साँस ली। उसने चारों ओर उन काली दीवालों को देखा, साथ ही भेड़िये-सी चमकदार आँखोंवाले अजय बाबू को भी। उस भयानक जगह में वह भी दानव-सा लग रहा था। आँखों के लाल डोरे, भारी भरकम शरीर, चेहरे पर अनगिनती माता के दाग, उससे ज्यादा न देखा गया। सिकुड़ी-सी अपने दल के आगे-पीछे, लुकती-छिपती वह काम की जगह जा पहुँची।

* * *

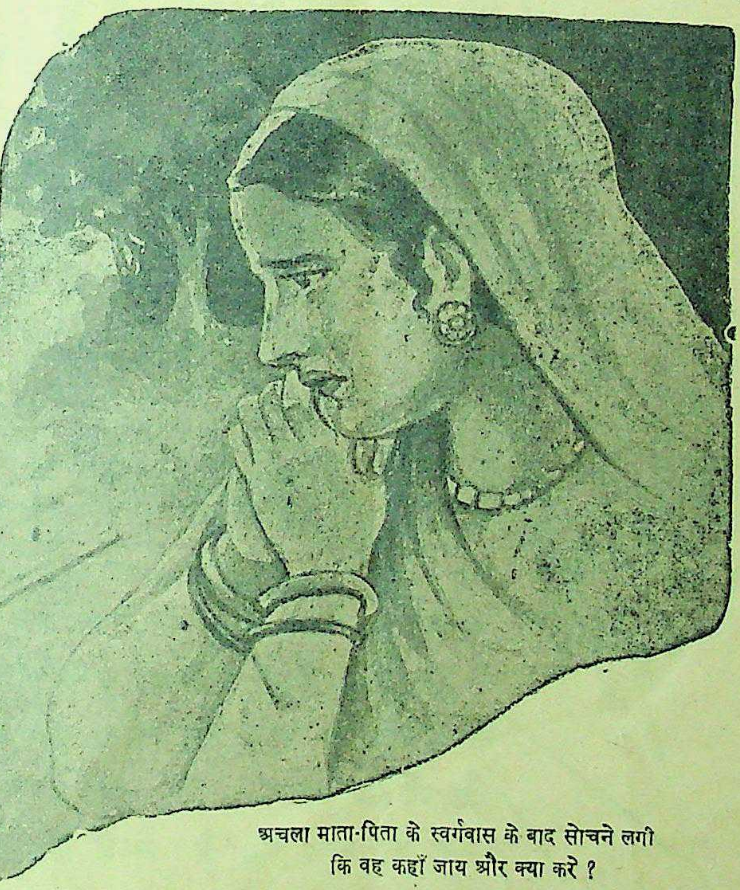

अचला माता-पिता के स्वर्गवास के बाद सोचने लगी कि वह कहाँ जाय और क्या करे?

काम में अपने को भूली अचला व्यस्त थी। पीछे से किसी ने आँचल पकड़कर खींचा। वह चौंककर घूम पड़ी, अजय बाबू दूर पर खड़े इशारा कर रहे थे। आँचल खींचनेवाली एक बूढ़ी कामिन थी! अचला किसी भी तरह उसके साथ जाने को तैयार न थी। कामिन ने हर तरह से उसे समझाया—"अरे, देख वह साहब बुला रहे हैं। तुझे रुपये भी देंगे, अगर तू उन्हें पसन्द आ गई तो, बस तू मालामाल हो जायेगी।"

"मगर मैं कहती हूँ मुझे रुपये नहीं चाहिए।"

"यह क्या कहती है, रुपये नहीं चाहिए। आजकल की महँगाई के जमाने में तो जितना अधिक रुपया मिल जाये उतना ही थोड़ा है! तू भाग्यशालिनी है। अगर तू चुपचाप चली चलेगी तो ठीक है नहीं तो तेरी बड़ी गत बनाई जायेगी। जानती नहीं यह काजल की कोठरी है, जो आता है फिर बचकर नहीं जाता।" बुढ़िया एक साँस में अपना अनेकों बार अजमाया हुआ वाक्य दुहरा रही थी! मगर जब अचला किसी भी हालत में राजी न हुई तब अजय बाबू स्वयं उसका हाथ पकड़कर दूसरी ओर ले गये।

आधे घंटे बाद उसी स्थान से दो मूर्त्तियाँ प्रकट हुईं। एक की आँखें लाल थीं, शायद रोई थीं। साथ ही कपड़े अस्त-व्यस्त! हाथ में दस रुपये का नोट तुड़ा-मुड़ा सा था और दूसरी थीं विजय और वासना में डूबी हुई।

अचला फिर काम में लग गई, थकी और दुखी-सी। हाय रे पेट, इच्छा न रहते हुए भी इस पापी पेट के लिए इन्सान को क्या नहीं करना पड़ता? उसका अंग-अंग टूट रहा था। आँखों में नींद झूम रही थी। उससे अधिक काम न हो सका। थककर एक कोयले के ढेर पर बैठ गई। अपनी बेबसी पर उसे बार बार रोना आ रहा था। रोते रोते कब उसकी आँख लग गई इसकी उसको ज़रा भी ख़बर नहीं थी।

उसी वक्त वह स्वप्नलोक में पहुँचकर अपने पिछले जीवन को दुहराने लगी—

"आज की अचला और प्यार से पली लाड़ली इकलौती अचला में कितना महान् अन्तर था। कितने बकरे भेड़ देवी-देवता की भेंट चढ़ाने, कितनी ही मनौतियाँ मनाने पर अचला सी फूल से भी अधिक कोमल सुन्दर कन्या पाकर माँ-बाप फूले न समाये। सारे गाँव के लोगों ने खूब खा और ताड़ी पी कर, झूम-झूम नाचकर कन्या के लिए शुभ कामना की।

"अचला का पिता अच्छा खाता-पीता किसान था। दिन कठिन मेहनत और रात सुख की नींद में कट जाती थी। चिड़ियों के चहचहाने के साथ ही वह अपने हल-बैल लेकर खेत में पहुँच जाता था। इसी तरह हँसी-खुशी में दिन बीत रहे थे।

"गाँव में बड़ा भयानक हैजा फैल रहा था। घर के घर तबाह हो रहे थे। जो एक बार खटिया पकड़ता फिर उठने का नाम न लेता। मृत्यु ही से उसकी मुक्ति होती। एक दिन अचला का पिता भी अपने साथ हैजे के कीटाणु लेता आया। सारी रात के और दस्त ने उसे अधमरा कर दिया। सूर्य उदय भी नहीं हुआ था कि अचला की माँ पर अचला का भार सौंप कर वह सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो गया। भरा-पूरा घर तबाह हो गया। चारों ओर से बुरे दिनों ने आ घेरा। अचला के पिता के मरते ही उसके खेतों पर अपना हक बतानेवाला, अपने को भतीजा कहलानेवाला भी आकर खड़ा हो गया। धीरे-धीरे उनके सारे खेतों पर चलाकी से कब्जा कर लिया गया। बेचारी विधवा रो-धोकर रह गई। घर पर जवान बेटी को देखकर उसकी नींद हराम होने लगी। जो कुछ उसके पास बचा था वह भी खतम हो चुका था। भूखों मरने की नौबत आ गई।

"आकाश में रह रहकर बिजली चमक रही थी। अचला की माँ भी टूटी खाट पर पड़ी कराह रही थी। दस दिन से बीमार थी। मगर दवाई कहाँ से आती जब कि पेट भरने तक को अन्न नहीं मिलता? भूख से छटपटाती अचला रोगी माँ के सिरहाने बैठी उसके सूखे बालों पर उँगलियाँ फेर रही थी। आधी रात बीत चुकी थी। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। इतने में एक उल्लू उड़ता हुआ आया और उसके झोपड़े के ऊपर बैठकर अपनी डरावनी बोली बोलने लगा। अचला माँ की देह से, भय के कारण, चिपट गई। पर उसी क्षण उसे लगा कि माँ का गर्म शरीर बर्फ के समान ठंडा पड़ा है। नाड़ी टटोली, नाक पर हथेली रखी, मगर सब व्यर्थ। भय से दूर छिटक कर वह खड़ी हो गई। उल्लू अब भी हूँ-हूँ कर रहा था। भय के कारण उससे रोते भी न बना। अपने को अब एकदम अकेली पाकर वह डर से काँपने लगी। मगर इस अपने घर के अलावा गाँव में उसका था ही कौन? अन्धकार में माँ के शव को छोड़कर वह बाहर निकल पड़ी। मगर वह जाये भी कहाँ?

"इतने बड़े संसार में अब वह एकदम अकेली थी। उसके आगे थी पेट की कठिन समस्या। वह गाँव से बाहर निकल कर अकेली ही पथ पर बढ़ चली। बचपन से उसने कलकत्ते के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। वह बराबर चलती गई। आकाश में सफेदी फैलने लगी। थककर

एक पेड़ की जड़ से टेक लगाकर बैठ गई। जब आँख खुली तो देखा कि एक व्यक्ति ललचाई हुई आँखों से उसकी ओर घूर रहा था। अचला को जगी हुई देखकर वह उसके पास आया। अचला की गरीबी पर उसे दया आ गई और वह उसे अपने घर ले आया। मगर संसार तो बड़ा ही स्वार्थी है। अचला उसकी वासना का शिकार बनी, और करती भी क्या? पेट की समस्या तो उसे सुलझानी ही थी। दिन बीतते गये। एक दिन उसे ज्ञात हुआ कि उसकी जगह अब एक दूसरी लड़की कहीं से लाई गई है। एक दिन घर के मालिक ने बुलाकर उसे घर से बाहर चले जाने को भी कह दिया। अब अचला फिर बिना घर-द्वार की होकर सड़कों पर ठोकरें खाने लगी। इतने ही में एक मोटर उसके पास आ खड़ी हुई। एक महाशय उतरे, उससे अनेकों सवाल कर डाले और फिर उन्होंने मोटर में बैठने का संकेत किया।"

एकाएक उसी वक्त सोती अचला का सिर दीवाल से टकराया आँख खोलकर उसने देखा कि वह तो कोयले की खान के अन्दर ही बैठी है। क्षण भर बाद फिर आँख मूँदकर अपने बचे हुए स्वप्न की कड़ियाँ जल्दी जल्दी पूरी करने लगी!

"मोटर में थी अचला,—उड़ चली मोटर सड़कों को पार करती, अपने पीछे धूल का तूफान उड़ाती और जा पहुँची हावड़ा के विशाल पुल पर। मोटर एक विशाल भवन के आगे जा खड़ी हुई। मोटर का स्वामी अचला का हाथ पकड़कर घर के अन्दर ले चला। अनेक दास-दासियाँ दौड़ पड़ीं। दासियों के मुख पर मुसकराहट थी। फँस गई अचला एक बार फिर जाल में। रात को एक बार फिर लुट गया उसका सतीत्व! मगर पेट का प्रश्न कुछ दिनों के लिए हल हो गया। पर थोड़े दिनों बाद वहाँ से भी निकाल दी गई। फिर तो अनेकों बार उसे अपने को बेच-बेचकर पेट की समस्या हल करनी पड़ी।

कलकत्ते शहर में हवाई हमला होनेवाला था। शहर के रहनेवाले अपने प्राणों की रक्षा के लिए शहर छोड़कर भाग रहे थे। अचला तीन दिन की भूखी सड़कों पर हाथ फैलाये भीख माँग रही थी। एक दिन अपने जीवन से उकता कर अपनी पेट की ज्वाला सदैव के लिए मिटाने के लिए नदी-किनारे जा पहुँची। पानी गले तक आ गया। मगर इतने ही में अनादि की दृष्टि डूबती हुई अचला पर पड़ गई। वह डुबकी लगाकर पहुँच गया अचला के निकट, और उसे किनारे ले आया! वह भी शहर से भागकर गाँव में रहने को जा रहा था। वह अचला को भी साथ लेता आया। यहाँ आकर अचला कारखाने में भरती हो गई, अनादि क्रूर स्वभाव का व्यक्ति था। अचला पर पूरी हुकूमत चलाता था। कभी भी जरूरत पड़ने पर अचला को मार भी पड़ती थी। मगर अचला के दिल में अपने बचानेवाले के लिए श्रद्धा थी। वह अपनी इस जिन्दगी से सन्तुष्ट थी। पर हाय री स्त्री जाति, वहाँ भी इंसान कहलाने वालों से अबला अचला अपनी रक्षा न कर पाई। कारखाने में अजय बाबू उस पर अब अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे!"

अचला का सिर फिर दीवाल से टकराया। आँख मलकर बैठ गई। चारों ओर देखा तो कोई न दिखाई पड़ा। वह अकेली अन्धकार में बैठी थी। पैर के पास उसकी बत्ती टिमटिमा रही थी, वह लिफ्ट के नीचे आने के लिए खड़ी हुई इन्तजार कर रही थी। लिफ्ट आ रुका। दूसरा

बैच उतर रहा था। सब उतर गये,
अचला को खड़ी देखकर उसके
बताई। वह अकेली ही लिफ्ट
खड़ी हुई! जल्दी में उसे पकड़ने
सुध न रह गई थी।

लिफ्ट ढाई सौ फीट ऊपर
था। नीला आकाश नजर आने
अरे यह क्या? मुँह से एक भयानक
निकल गई। तेजी से लिफ्ट नीचे
था। टूट गये थे उसके मोटे
रस्से। वह नीचे जाकर गिरा।
एक एक हड्डी दूर तक नीचे
थी। दूर पर उसका एक हाथ
था। उसमें ठुसा था दस रुपये
मानो वह नोट अचला के इस
अंत का उपहास कर रहा हो।

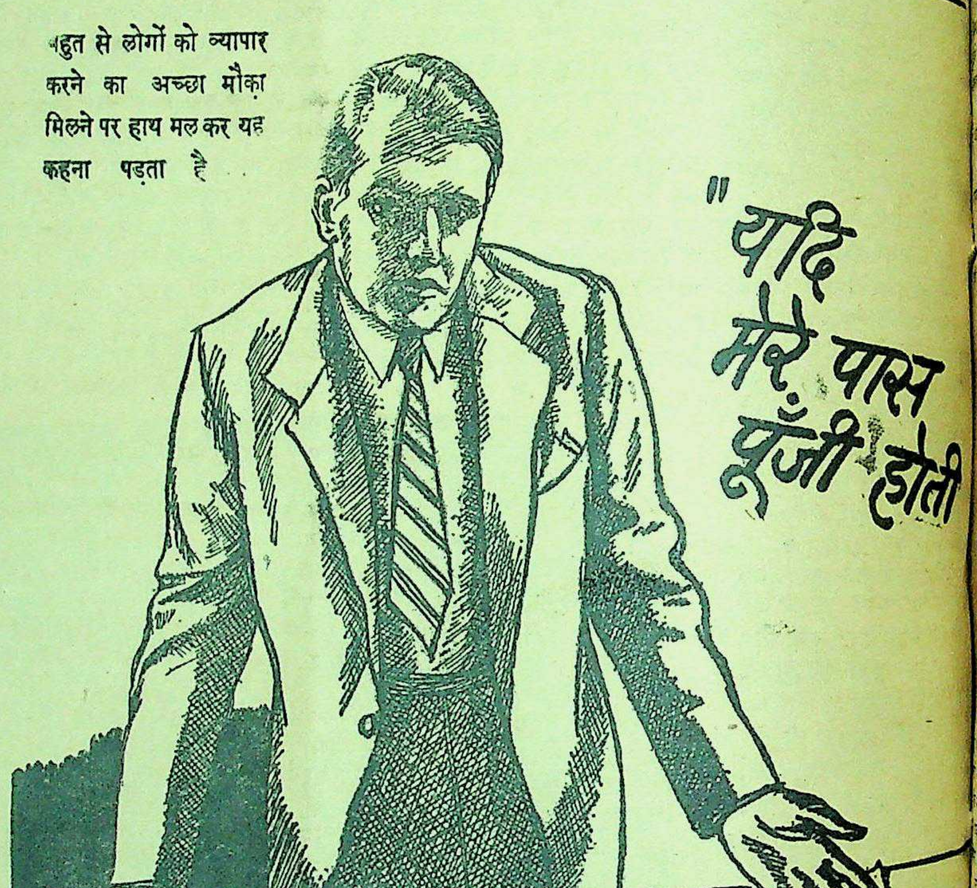
"यदि मेरे पास पूँजी होती

बहुत से लोगों को व्यापार करने का अच्छा मौक़ा मिलने पर हाथ मल कर यह कहना पड़ता है

ब पूँजी के अभाव में अनुभव और योग्यता व्यर्थ हो जाती है—जब किसी व्यक्ति को केवल इसलिए नौकरी करनी पड़ती है कि व्यापार के लिए पास में पैसा नहीं—तो उसे जीवन का सब से कटु अनुभव होता है। किन्तु जो लोग बुद्धिमान है और जिन्होंने भविष्य के लिए रुपया बचाया है, उन्हें ऐसी परिस्थिति का सामना कम करना पड़ता है। उनकी बुद्धि तथा अनुभव से मिल कर उनके हाथ का पैसा सोने पर सुहागे का काम करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफ़िकेट अथवा ४ आने
आने या १ रुपं
स्टाम्प सरकार द्वार
क्त किसी एजेण्ट
ा सेविंग्स ब्यूरो या
ाने से खरीद
हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।

★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।

★ जमा हुये ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

क्या आज से बारह वर्ष बाद आपकी
आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि ऐसे अ-
सरों से लाभ उठा सकें? बेशक हो सकती
है, यदि आप अपनी बचत की रक़म
नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगाने
आज ही निश्चय कर लें, जो सुरक्षित
और साथ ही जिनमें बहुत अच्छा
भी मिलता है। अभी बुद्धिमानी से
लीजिए और अपने भविष्य को सु
नाइए।

AAA 129 HINDI

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर
No 712
EVEREADY
2 CELL EXTRA LONG LIFE BATTERY

नं ७१२
एवरेडी बैटरी
बम्बई, कलकत्ता, मद्रास
कोचीन, देहली, और
कराची में परचून कीमत
रु. ०-४-६.
दुसरी जगह रु. ०-५
ज्यादा
मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD.
Calcutta, Bombay, Madras, Cochin,
Delhi and Karachi.

[illegible]साहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

[illegible]कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

[illegible] कहा—यह बात न जाने कब हुई थी। तुम्हारा [illegible]? एक बार उसे यहाँ लाओ तो, जिससे हमें निश्चय [illegible]

[illegible] कहा—पहले रज्जो को लिखना-पढ़ना, काम-काज [illegible] उसका ठीक निश्चय कर लिया है। अगले साल पास [illegible] विवाह कर लेगा। तुम साल-छः महीने भी नहीं रुक [illegible]

[illegible] कहा—उसकी माँ जो प्राण खाये जाती है। कहती [illegible] जाऊँ।

[illegible] कहा—उसको समझा दो। जब तुमने यह दायित्व [illegible] लिया है तो वह क्यों घबराती है?

[illegible] तक हुई।......

[illegible] हरीश भोजन करने बैठा तो रज्जो परोस रही [illegible] ने पूछा—विवाह करोगी, रज्जो?

[illegible] हटकर लज्जा से सिर लचाकर निश्चेष्ट हो गई।

[illegible] कहा—और क्या, विवाह के लिए और कोई वयस [illegible] वर्ष की हो गई है। बूढ़ी हुई जा रही है

[illegible]—दीदी तुम तो अट्ठाईस की हुई हो। तो [illegible] बूढ़ी हुई?

[illegible]—तो अब क्या कोई दाढ़ी से फौजें थोड़े ही [illegible]

[illegible] कहा—तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हें खोपड़ी खपाने [illegible] नहीं। विवाह हो जायेगा।

[illegible] में गड़ी जा रही थी। हँसते-हँसते लक्ष्मी ने [illegible], बुआ जी को तुम्हीं तनिक समझा देना।

[illegible] कहा—बहुत अच्छा, मैं समझा दूँगा।

......फाल्गुन का महीना बीत रहा था। उन्नाव [illegible] को एक व्यक्ति आया और उसने समाचार दिया [illegible] रोग-ग्रस्त हो गया है। उठने की शक्ति नहीं [illegible] की भी दशा वही है। यदि उसकी सास वहाँ [illegible] कोई पानी-पत्ता देनेवाला हो जाय। भैरव चाहता [illegible] जाऊँ किन्तु लल्लू किसी भाँति बच जाय।

[illegible] ही बुढ़िया ने व्याकुल होकर रोते हुए लक्ष्मी से [illegible] समाचार कहा।

[illegible] कहा—लल्लू इतना अस्वस्थ हो गया है? मैं भी [illegible] यहीं लाकर दवा कराऊँगी।

[illegible] कहा—तुम लोगों के जाने की आवश्यकता नहीं। [illegible] भेजती हूँ। वह दोनों जनों को यहाँ ले आयेंगे।

[illegible] रोकर आकाश सिर पर उठा लिया। जो जन [illegible] था बुढ़िया उसी के साथ चल दी। लक्ष्मी ने एक [illegible] इसलिए कर दिया कि यदि सुविधा हो सके तो [illegible] तुरन्त कानपुर ले आया जाये।

[illegible] माँ से हाथ जोड़कर यही प्रार्थना की कि जैसे [illegible] यहीं ले आना।

[illegible] सेवक ने लौटकर संवाद दिया कि बीमारी बहुत [illegible] आ नहीं सकते। उन लोगों की रज्जो को [illegible] इच्छा है।

[illegible] सुना तो उसने अश्रुपूर्ण नेत्रों से लक्ष्मी की ओर [illegible]

[illegible] कहा—उसको हम कहाँ भेजेंगी। हाँ, यह ठीक [illegible] मोटर से ले आया जाय।

[illegible] कहा—कैसे कहें बिटिया। वे आयेंगे नहीं। बूढ़ी [illegible] दिन के लिए रज्जो को बुलाया है। दवा-दर्पण तो [illegible] अच्छी नहीं देख पड़ती।

[illegible] सकी। वह केवल रो रही थी। सुरेश ने [illegible] मोटर से ही भेज दिया जाय और मोटर से ही [illegible]

[illegible] कहा—नहीं, यह कौन हमीर हठ है जो अपने घर [illegible] नहीं आ सकता।

[illegible] उसी पुराने व्यक्ति ने आकर संवाद दिया [illegible] है। एक दो दिन भी कटना कठिन है।

रज्जो के हृदय में उथल-पुथल मच गई। उसकी बहन राजरानी ने मरते समय कहा था—रज्जो! लल्लू तुमको सौंपती हूँ!....वही लल्लू.......!

रज्जो रोती हुई लक्ष्मी के पैरों पर गिर पड़ी। उसने कहा—मोटर से ही चली जाऊँ दीदी। जीजा जी ने तो कह ही दिया है।

लक्ष्मी भी नारी का हृदय रखती थी। उसने कहा—कुछ हानि नहीं, जाओ। कार वहीं रहेगी। तुमको लेकर लौटेगी।

लक्ष्मी ने अपने पुराने ड्राइवर को न जाने क्या समझा कर रज्जो को उन्नाव भेज दिया।

लल्लू आज बिछौने से मिल गया है। भैरव ने कहा—क्या रज्जो, बड़ा आदमी होकर ममता-माया भी छूट जाती है?

रज्जो ने देखा—लल्लू आँखें बन्द किये पड़ा है। उसने बुलाया—लल्लू, लल्लू? लल्लू ने आँखें खोलीं और फिर बन्द कर लीं।

रोते हुए रज्जो की माँ ने कहा—दो दिन से आँखें नहीं खोली हैं, बिटिया। जाने क्या होनहार है।

रज्जो ने आँसू पोंछते हुए पूछा—डाक्टर क्या कहता है?

माँ ने कहा—यही कहता है कि अब जीने की कोई आशा नहीं है। जो दिन है सो दिन है।

रज्जो का हृदय भग्न करके शोक का सागर आँसुओं के रूप में उमड़ पड़ा।

खाट पर गिरकर रज्जो ने पुकारा—अरे मेरे लल्लू! तुम्हें क्या हुआ है, मेरे पुतुआ?

सन्ध्या के समय ड्राइवर ने कहा—चलो बिटिया, चलें। आँसू पोंछते हुए रज्जो ने कहा—मैं नहीं जा सकती हूँ इन्दर। तुम देख तो रहे हो। दीदी से कह देना, क्रुद्ध न हों।

इन्दर ने कहा—कल फिर आ जाना।

रज्जो ने कहा—लल्लू को ऐसी दशा में छोड़कर मैं पल भर को भी कहीं नहीं जा सकती, इन्दर। कह देना सब लोग मुझे क्षमा करें।

दूसरे दिन लक्ष्मी स्वयं ही आई। रज्जो ने रोते हुए कहा—क्या होनहार है दीदी? लल्लू को नहीं बचा सकूँगी क्या?

लक्ष्मी कुछ उत्तर नहीं दे सकी। केवल आँखों से आँसू गिरने लगे।

रज्जो ने पुकारा—दीदी.........

लक्ष्मी ने कहा—जाने दो यह सब देखकर मैं तुमसे चलने के लिए नहीं कह सकती। क्या डाक्टर कोई आशा नहीं दिलाता?

अश्रु-गद्गद कण्ठ से रज्जो ने कहा—नहीं।

पाँच-सात दिन और कट गये। एक दिन लक्ष्मी और हरीश फिर आये। डाक्टर को बुलाकर हरीश ने बहुत बातें कीं। गम्भीर मुद्रा लेकर जब हरीश लड़के के पास आया तो लक्ष्मी ने पूछा—क्यों, इन्जेक्शन आदि से कुछ नहीं होगा?

हरीश ने कहा—दशा बहुत बुरी है। शरीर में रक्त नहीं रह गया है। काले ज्वर की अन्तिम अवस्था है। एक मास पहले कुछ हो सकता था.......।

कमरे में एक ओर पैर फैलाये हुए सिर झुकाये भैरव बैठा था। हरीश ने उससे कहा—यदि बच्चे के बीमार पड़ते ही खबर देते तो क्या होता?

भैरव ने कहा—हुँः। इस "हुँः" के साथ भैरव ने एक बड़ी लम्बी प्रलय गर्जनवत् साँस छोड़ी।

हरीश और लक्ष्मी रात्रि में ही चल दिये। चलते समय हरीश ने रज्जो से एकान्त में बुलाकर कहा—हमारी परीक्षा प्रारम्भ हो गई है। आ नहीं सकूँगा। आकर कुछ कर भी नहीं सकता। तुम नित्य एक चिट्ठी लिखती रहना। दस-दस के दो नोट रज्जो को यथा आवश्यक व्यय करने के लिए दे गया। साथ ही यह भी कह गया। देखो सावधान रहना! मैं शीघ्र ही आऊँगा......।

कार चली गई। भैरव आड़ से लक्ष्य कर रहा था। उसने आकर पूछा—क्या दे गया है? उसकी आँखों में हँसी...पानी चढ़ी कृपाण-सी चमक रही थी।

रज्जो ने कहा—रुपये दे गये हैं। यदि आवश्यकता हो तो लीजिए।

"हुँः" के साथ ही सर्प की-सी फुफकार सुनाई दी।

फ़िल्मी-गाने!

हूबहू असली तर्ज़ में घर बैठे सीखना चाहें तो "फिल्म सङ्गीत" मँगाइये। अब तक ६ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक भाग में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वर-लिपियाँ दी गई हैं। मूल्य प्रतिभाग ३), डा० ।=) मासिक पत्र "सङ्गीत" भी बराबर निकल रहा है, वार्षिक मूल्य ४≡)।
पता—संगीत कार्यालय, हाथरस, यू० पी०.

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है—और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

गठिया के कारण घुटने जकड़ गये थे

उसकी पीड़ा १० वर्ष तक कायम रही

उसके बाद क्रुशेन से छुटकारा हुआ

एक विवाहित स्त्री लिखती है कि १० वर्ष तक मैंने गठिया की असह्य यातना बरदाश्त की। औषधियों पर मैंने मनमाना रुपया बरबाद किया। मैं क्रुशेन की तारीफ अक्सर सुना करती थी आखिरकार १ दिन जी में आया कि मैं इसकी आजमाइश क्यों न करूँ लेकिन तब तक तो मेरे घुटने इतने जकड़ गये जैसे सीमेन्ट में।

फिर मैंने क्रुशेन की एक बोतल खरीदी और एक चम्मच प्रतिदिन सबेरे पीना आरम्भ कर दिया। बोतल समाप्त हो जाने पर मैंने समझा कि अन्य चीजों की भाँति यह भी एक चीज है और इससे कोई लाभ न होगा किन्तु मेरे पति ने कहा कि थोड़ा और मौका दो और एक दूसरी बोतल भी सेवन करो जिससे इसका असर आपके रक्त पर भी हो सके। फिर मैंने दूसरी बोतल भी खरीदी और इसके समाप्त होने के पूर्व ही मेरे घुटने खुल गये और एकदम खुल गये। मुझे स्वयम् आश्चर्य होता था कि मैं ऊपर चढ़ जाती थी और बिना किसी की मदद के नीचे उतर आने लगी। मैं इससे बहुत ही प्रभावित हुई और इसका सेवन जारी रक्खा। मैंने तीसरी बोतल भी खरीदी और अब मैं वह स्त्री नहीं रही जो पहले थी। अभी उस दिन मैं ४ मील चल चुकी हूँ और प्रसन्न रही।

—(श्रीमती) ई० ए०

अन्य रोगियों को विश्वास दिलाने के लिए और अधिक कहा ही क्या जा सकता है। कुछ भी हो उन्हें क्रुशेन की परीक्षा तो करनी ही चाहिए। गठिया रोग की मात्रा $\frac{१}{२}$ चम्मच सबेरे १ गिलास गर्म पानी के साथ खाली पेट।

क्रुशेन साल्ट बाजार के सभी दवाखानों में मिलता है।

फुफकार के सिहरकर रज्जो ने भैरव को देखा। भैरव ने कहा—चन्द्रशेखर बाबू का बेटा है, चन्द्रशेखर बाबू का!

यन्त्र-चलित-सी रज्जो ने कहा—जी हाँ।

भैरव ने फिर "हुँः" कर दिया।

दो दिन के उपरान्त सन्ध्या का अँधेरा घना हो रहा था। लल्लू ने चिल्लाना प्रारम्भ किया। उसके शरीर में प्रबल प्रकम्पन था और श्वासोच्छ्वास में महान् वेग। उसे शान्त रखना कठिन हो गया।

भैरव द्वार पर बैठा-बैठा सिगरेट के कश ले रहा था।

रज्जो ने आकर कहा—जीजा जी........

भैरव ने कर्कश स्वर में झिड़कते हुए कहा—क्या हुआ?

रज्जो ने आर्द्र स्वर में कहा—लल्लू को न जाने क्या हुआ जा रहा है, तनिक डाक्टर को बुलाओ।

—डाक्टर को बुलाकर क्या होगा? उसने तो बता ही दिया है।

रज्जो ने तीव्र स्वर में कहा—इससे क्या?.....

अपनी बात बिना समाप्त किये ही अधीर रज्जो दौड़कर फिर घर में आई। पुकारा—लल्लू........? किन्तु यह क्या? लल्लू के मुँह पर फेन जैसा क्या है? हैं! आँखें क्यों उलट गईं। माँ अब उसको हृदय से लगाकर कह रही है—अरे मेरे बच्चे, कहाँ जा रहे हो?

रज्जो जड़ मूर्तिवत् खड़ी रह गई। क्या करे, क्या न करे? हे ईश्वर यह कष्ट.....हे भगवान्! हे भगवान्.....

जो व्यक्तिसं बाद लेकर कानपुर गया था उसको डाक्टर के पास भेजने के लिए रज्जो उसके घर तक दौड़ी गई। द्वार से पुकारा—पंचम, पंचम! उसके सामने आते ही रज्जो ने कहा—पञ्चम भैया दौड़कर तनिक डाक्टर को बुला दो, लल्लू की दशा अच्छी नहीं है।

पञ्चम हक्का-बक्का होकर रज्जो को देखता रह गया। रज्जो ने कहा—मेरे पञ्चू भैया, तनिक दौड़कर जाओ, भगवान् तुम्हारा भला करे।

रज्जो ने फिर सोचा—सम्भव है पञ्चू देर में पहुँचे, या डाक्टर को ठीक समझा न पाये, वह भी उसी के पीछे दौड़ने लगी। अँधेरे में ठोकर लगकर पैर का अँगूठा क्षत-विक्षत हो गया। उसे पता भी नहीं था। वह केवल दौड़ रही थी।

हठात् सामने पञ्चम को न देखकर सोचने लगी अन्धकार में अज्ञात पथ पर कहाँ जा रही हूँ? उधर घर में बच्चा अब है कि नहीं है? वह फिर घर की ओर तीर की तरह से छूट पड़ी। उसने घर पर आकर देखा, भैरव निश्चिन्त रूप से सिगरेट पी रहा है। सामने एक टूटी धुँधली लालटेन जल-जलकर और भी अँधेरे को घना कर रही है। इस अँधेरे में छाया की अनेक मूर्त्तियाँ कैसी दौड़ रही हैं? उसका हृदय काँप उठा। घर में जाकर उसने देखा कि माँ रो रही है। लल्लू में अब चेतना का कोई चिह्न नहीं।

रज्जी ने माँ से कहा—क्यों रोती हो माँ? लल्लू अब कहाँ है? दीदी उसे ले गई।

—क्रमशः

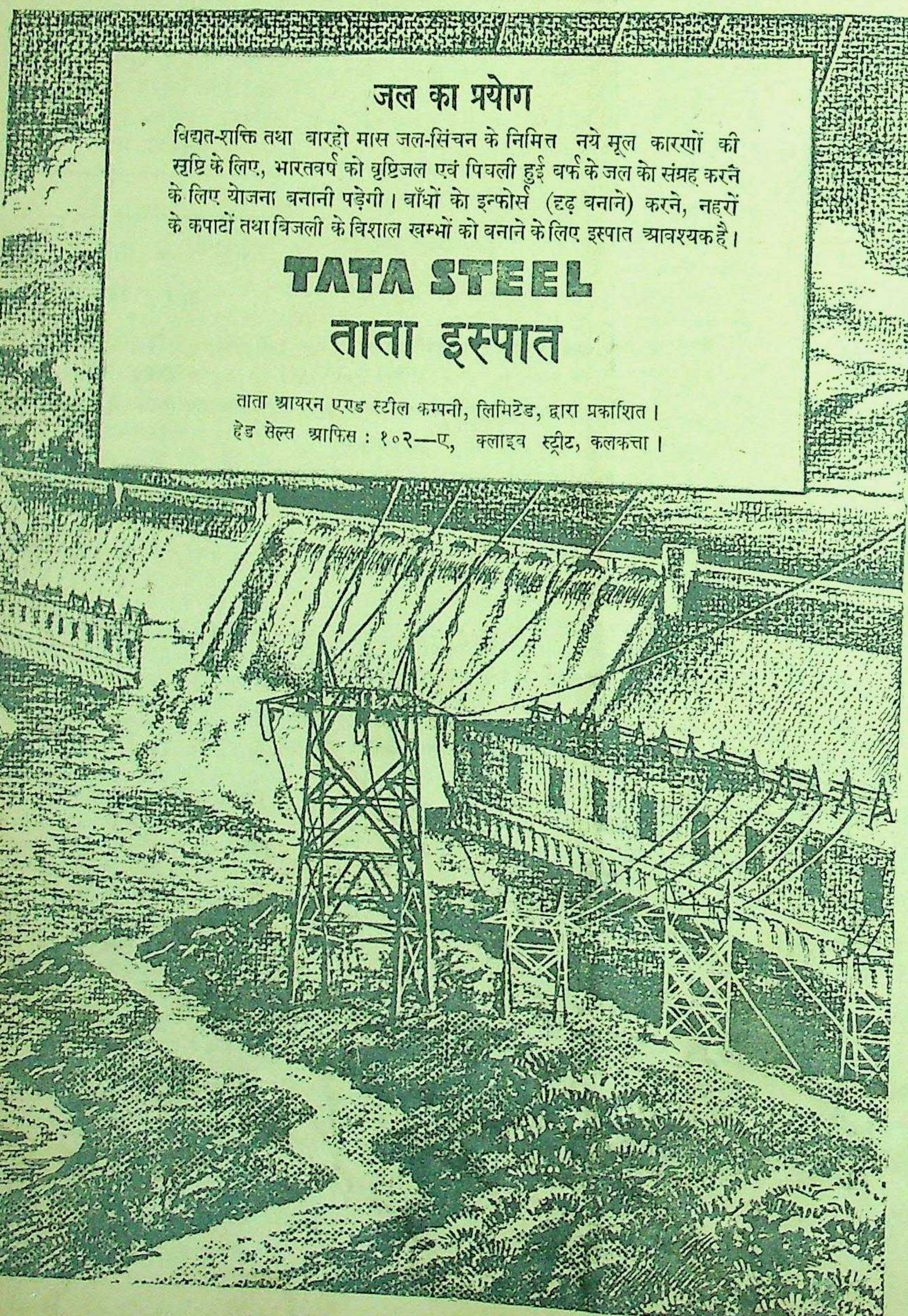

जल का प्रयोग

विद्युत-शक्ति तथा बारहो मास जल-सिंचन के निमित्त नये मूल कारणों की सृष्टि के लिए, भारतवर्ष को वृष्टिजल एवं पिघली हुई बर्फ के जल को संग्रह करने के लिए योजना बनानी पड़ेगी। बाँधों को इन्फोर्स (दृढ़ बनाने) करने, नहरों के कपाटों तथा बिजली के विशाल खम्भों को बनाने के लिए इस्पात आवश्यक है।

TATA STEEL
ताता इस्पात

ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड, द्वारा प्रकाशित।
हेड सेल्स आफिस : १०२—ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

स्वास्थ्य

बच्चों के रोग और

प्राकृतिक-चिकित्सा उपयोगी

लेखक, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद
एम० ए०, एन० डी०

प्राकृतिक चिकित्सा का
कि शरीर की आन्तरिक जीवन-श
इस बात का प्रयत्न करती है कि
भीतर किसी प्रकार का कूड़ा-
विजातीय द्रव्य न रहे। जब
गुदा, फेफड़ा तथा चर्म आदि
भीतरी विष को निकालने में
रहता है तथा खान-पान-सम्ब
के कारण उसे थोड़ा-सा भी वि
मिलता, तब वह ज्वर, निमोनिय
हैजा जैसे रोग उत्पन्न कर देता है।
इस बात के सूचक हैं कि भोजन
दो, साफ हवा में रहो, शुद्ध
रहो और शरीर को विश्राम
इनसे डरकर दवाओं-द्वारा इन्
शरीर के शुद्धि-मार्ग में केवल
नहीं अपितु घातक भी है।
की जीवन-शक्ति अधिक सबल
होती है, इसलिए वे अकसर कि
रोग के शिकार बन सकते हैं। ऐसे
बच्चों को अनाप-शनाप दवाएँ दे
स्वास्थ्य को सदा के लिए नहीं
चाहिए। नीचे हम बच्चों के
सात्विक एवं हानिरहित नुस्खे लिख

बच्चों के लिए यन्त्र-तावीज़
पर कटि-सूत्र बाँधना चाहिए।
अथवा डायन आदि के चक्कर
भी ठीक नहीं।

बच्चों के पेट की सफाई
ध्यान रखना चाहिए। क़ब्ज़ को
लिए खाली पेट पर आध घंटे त
वस्त्र की पट्टी बाँधना सबसे अच्छा
है। ज्वरावस्था में रीढ़ की अथवा
पट्टी अचूक साबित हुई है।
स्नान कराने से पीलिया, रक्त की
का दर्द प्रभृति रोग बहुत जल्द
जाते हैं। फोड़े-फुन्सियों के लिए
मिट्टी की पुलटिस अपना सानी नहीं
इन उपचारों के अलावा उपचार
भोजन-सुधार को भी न भूलना
जो लोग बिना दवा दिये नहीं र
वे नीचे लिखे नुस्खे काम में ला स

जन्म-घुट्टी—एक तोला गु
अजवायन मिलाकर जल के साथ
पात्र में रखकर अग्नि पर पकावे।
जाने पर छानकर बच्चे को पिलावे।

सोंठ, बड़ी हरड़ और काला
थोड़ा-थोड़ा पत्थर पर घिस कर ब
पिलाने से उनके हरे-पीले दस्त और
दोनों में बहुत लाभ होता है।

आधी छटाँक बुझा हुआ चू
तोला शहद के साथ आध पाव
घोलकर रख दे। जब सब चूना
बैठ जाय तब ऊपर के साफ
निथारकर एक शीशी में रख ले।
की ५ से लेकर १० बूँद तक दूध के
मिलाकर पिलाने से बच्चों के
वाले दस्त तथा उलटी बन्द हो

सिरस के बीजों की माला
बालक के गले में पहनाने से दाँत
में बड़ी सुगमता होती है।

धूप में बिठाकर बच्चों के
सरसों का तेल मलने से शरीर
सबल होता है।

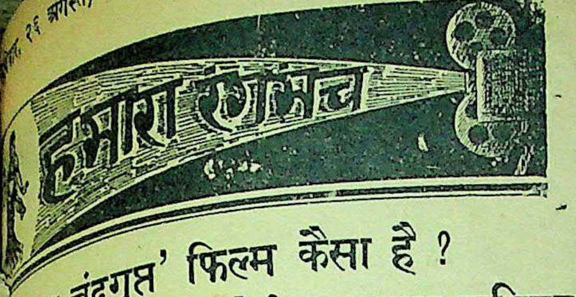

'सम्राट् चंद्रगुप्त' फिल्म कैसा है ?

मुबारक और रेणुकादेवी का सुन्दर अभिनय

लेखक, श्री गोविन्दराव मराठे

फिल्म-कम्पनियों ने धार्मिक फिल्म तो बहुत से बनाये, फिल्मों की ओर उनका रहा है। यही कारण है ऐतिहासिक फिल्म उँगलियों ही बन पाये हैं। है कि रणजीत फिल्म दिग्दर्शक श्री जयन्त अब उक्त कम्पनी से विच्छेद कर लिया है, नामक फिल्म प्रस्तुत करके कदम आगे बढ़ाया है।

सेल्यूकस की कन्या का अभिनेत्री रेणुका देवी।

फिल्म का कथानक स्पष्ट हो जाता है। राजनीतिज्ञ एवं अर्थ- ने किस प्रकार नन्द-वंश का नाश कर खदेड़कर उसे भारत वही कथा इस फिल्म

फिल्म-कम्पनियों में चित्र में भी ऐसे दृश्य हैं, नहीं देता। किन्तु को हटाने एवं के लिये किया जाता सकता है, बशर्तें कि ऐसे न की जाय, जो अश्लील की वास्तविकता से कुछ । ऐसा करना तो सत्य होगा। इस फिल्म के तो नहीं, बल्कि उसकी ।

प्रमुख रूप से ईश्वर- मुबारक, रेणुकादेवी की चन्द्रगुप्त की भूमिका में अभिनय किया है। में नायमपत्नी भी खरे सेल्यूकस का अभिनय स्थिर होकर किया है, उनके ऊँचे उठने सेल्यूकस की कन्या का ने किया है, जो इस भूमिका के लिए ने गलती की है। इसके लिए, मेरे विचार से, वनमाला उपयुक्त ठहरतीं, जो 'सिकन्दर' फिल्म में यूनानी युवती का अभिनय सफलतापूर्वक कर चुकी हैं।

फिल्म का दिग्दर्शन स्वयं जयन्त देसाई ने किया है। इस विषय में इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि जयन्त देसाई उतना सफल दिग्दर्शन नहीं कर सके, जितना सोहराब मोदी या गजानन जागीरदार आदि ने किया है।

संवाद और पद्य मध्यम कोटि के हैं। संवादों की भाषा भारतीय भूमिकाओं के लिए हिन्दी और यूनानी भूमिकाओं के लिए उर्दू रखी गई है यह एक अच्छी बात है। संगीत भी मध्यम कोटि का ही है।

इस फिल्म के दो प्रसंग हमें बहुत अच्छे लगे। पहला प्रसंग वह है, जब सेल्यूकस का सेनापति चन्द्रगुप्त का वध करने के लिये एक मदिर-मस्त हाथी को उसके पीछे लगा देता है, किन्तु संयोगवश सेल्यूकस की कन्या ही उसका लक्ष्य बन जाती है, जिसे उसका प्रेमी चन्द्रगुप्त वीरतापूर्वक बचा लेता है। दूसरा प्रसंग है चन्द्रगुप्त और सेल्यूकस की सेनाओं का युद्ध। ये युद्ध-दृश्य उतने ही अच्छे बन पड़े हैं, जितने सोहराब मोदी-दिग्दर्शित 'सिकन्दर' के।

अन्त में इतना ही कहना ठीक होगा कि यद्यपि फिल्म उच्चकोटि का नहीं है, फिर भी ऐतिहासिक फिल्म-निर्माण की दृष्टि से जयन्त देसाई महोदय बधाई के पात्र हैं।

*　　*　　*

दुर्गा मोटा की अमरीका-यात्रा

६५० पाउंड पर काम करने वाले पंचोली फिल्म स्टार दुर्गा मोटा ने अमरीका जाने का पासपोर्ट प्राप्त करने के लिये प्रार्थना-पत्र भेज दिया है। आजकल दुर्गा मोटा अँग्रेजी पढ़ने में व्यस्त हैं। उन्होंने १५०) मासिक वेतन पर एक अध्यापक अंग्रेजी सीखने के लिये रखा है। उन्हें आशा है कि वह तीन महीनों में अच्छी अंग्रेजी बोलना सीख जायँगे।

अमरीकन संवाददाताओं ने उन्हें यह विश्वास दिलाया है कि हालीवुड में उन्हें बहुत सम्मान से रखा जायेगा वह इस सम्बन्ध में अमरीकन स्टूडियोज के साथ पत्र-व्यवहार भी कर रहे हैं। आशा है कि दो महीनों में इस बात का कोई निश्चित फैसला हो जायगा। दुर्गा मोटा अब अमरीकी-यात्रा की तैयारियों में व्यस्त हैं। उन्हें यह विश्वास है कि स्थानीय सप्लाई अफसरों की कृपा से वे आवश्यक वस्तुयें प्राप्त कर सकेंगे।

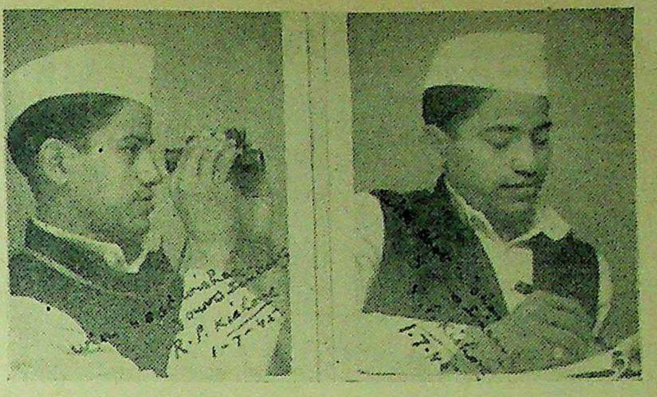

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता श्री आर० पी० कुमार जिनका इंटरव्यू 'देशदूत' के गतांक में प्रकाशित हो चुका हैं।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी ४ नवम्बर का अंक बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल रहा है

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियों, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अनेक सादे चित्रों से सुसज्जित।

एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिये।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

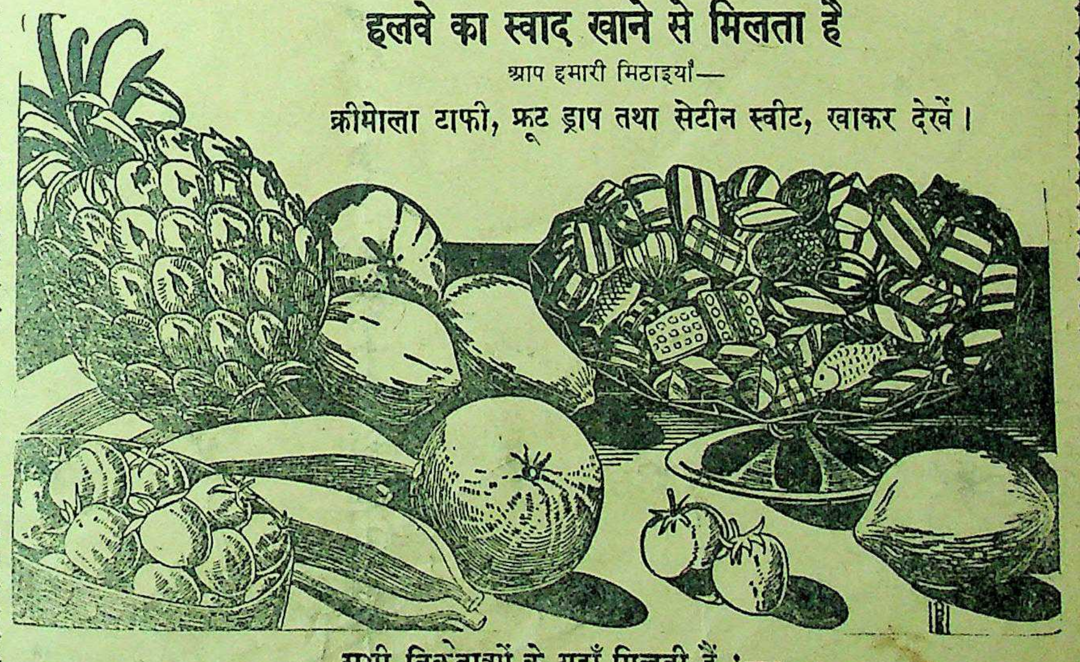

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

संपादक के नाम चिट्ठियां

सम्मेलन का सभापतित्व

प्रिय सम्पादक जी,

१२ अगस्त के 'देशदूत' में श्री रघुनाथ मोहन का पत्र पढ़कर यह आशङ्का दृढ़ हो जाती है कि हिन्दी की सुन्नत राष्ट्रीयता की दुहाई देकर की जायगी। हम इन तथाकथित राष्ट्रवादियों से पूछना चाहते हैं कि हिन्दी किस प्रकार राष्ट्र के साथ नहीं चल रही है? क्या हिन्दी का यही दोष है कि वह अपने आप को विदेशी लिपि उर्दू लिपि के बजाय देवनागरी में लिखती है और विदेशी शब्दों के बजाय अपने को भारत की प्राचीन राष्ट्र-भाषा संस्कृत के शब्दों से सजाती है? आधुनिक तुर्की में तुर्की भाषा में से अरबी-फारसी शब्दों को और आधुनिक फारस में फारसी में से अरबी शब्दों को चुन चुन कर निकालना राष्ट्रीयता है किन्तु हिन्द में हिन्दी में से हिन्दी शब्दों को निकाल निकाल कर अरबी-फारसी शब्दों को जान बूझकर भरने का विरोध करना प्रतिक्रिया है? तुर्की के मुसलमान तुर्की लिपि को निकालकर रोमन लिपि ग्रहण कर सकते हैं किन्तु भारत में भारतीय मुसलमानों से स्वदेशी देवनागरी लिपि को राष्ट्र-लिपि स्वीकार करने के लिये कहना साम्प्रदायिकता है? उर्दू हिन्दी से पृथक् भाषा है अथवा केवल हिन्दी की एक शैली? इस प्रश्न का व्यवहार में कोई महत्त्व नहीं है।

जिस बात का महत्त्व है वह यह है कि उर्दूवाले स्वदेशी देवनागरी छोड़कर विदेशी फारसी लिपि में लिखते हैं और स्वदेशी शब्दों को छोड़कर विदेशी शब्दों से अपनी भाषा सजाते हैं। किसी भाषा का वास्तविक अर्थ में दो शैलियों में ऐसा अन्तर नहीं होता, और न ऐसा होता है कि दो शैलियों की अलग अलग पढ़ाई हो और जो एक शैली जानता हो वह बिना पढ़ाये दूसरी शैली न समझ सके। वास्तव में प्रतिक्रियावादी वे हैं जो एक सर्वाङ्गपूर्ण स्वदेशी लिपि के होते हुये राष्ट्र-भाषा की दो लिपियाँ, जिनमें से एक विदेशी है, करार देकर राष्ट्र-भाषा की समस्या को और जटिल, कठिन और दुर्गम बना रहे हैं। प्रतिक्रियावादी वे हैं जो भाषा को भी साम्प्रदायिकता का अखाड़ा बनाकर उसमें 'हिन्दू शब्दों' और 'मुसलमान शब्दों' का अनुपात निश्चित कर रहे हैं। प्रतिक्रियावादी वे हैं जो हिन्दी में अरबी-फारसी शब्दों की भरमार करके राष्ट्र के अहिन्दी-भाषियों के लिये उसे दुरूह बना रहे हैं। हिन्दी की एक तीसरी शैली 'बाबू हिन्दुस्तानी' भी तो है जिसे शिक्षित समुदाय बोलता है और जिसमें यथासंभव न संस्कृत के शब्द चलते हैं न अरबी-फारसी के वरन् अँगरेजी के। इस शैली को क्यों भुला दिया जाता है? क्या आज भारत में लाखों भारतीय इसे नहीं बोलते या अँगरेज़ी नहीं बोलते या लाखों भारतीयों की मातृ-भाषा अँगरेज़ी नहीं है? हिन्दी की एक तीसरी लिपि रोमन भी तो है जिसमें बहुतेरे आज हिन्दी और हिन्दुस्तानी लिख रहे हैं? रोमन लिपि भी राष्ट्र-लिपि क्यों नहीं मान ली जाती? वास्तव में बात यह है कि उर्दू, 'बाबू हिन्दुस्तानी' आदि हिन्दी की विभिन्न भ्रष्ट शैलियाँ विभिन्न परिस्थितियों में बन सकती हैं लेकिन उनको हिन्दी के समकक्ष उसी प्रकार नहीं रक्खा जा सकता जिस प्रकार पिजिन इँगलिश को किंग्स इँगलिश के समकक्ष नहीं रक्खा जा सकता और न उनका हिन्दी के साथ समन्वय या 'फ्यूजन' किया जा सकता है।

यही बात लिपि के साथ लागू है। भारत की राष्ट्र-भाषा किंग्स हिन्दुस्तानी अर्थात् हिन्दी ही हो सकती है। अगर राष्ट्रीयता के माने भाषा को विदेशी साज सज्जा से विभूषित करना है तो ऐसी राष्ट्रीयता हमें नहीं चाहिये। अगर उदारता के माने अपनी भाषा, अपने शब्द, अपनी लिपि त्यागकर अपनी आत्म-हत्या करना है तो उसे दूर से नमस्कार है। हम सम्मेलन का आवाहन करते हैं कि वह इस हिन्दुस्तानी की बला से जो राष्ट्रीयता का जामा पहनकर आई है हमारी सभ्यता और संस्कृति की प्रतीक हिन्दी को बचाये। हम सम्मेलन की बागडोर ऐसे व्यक्ति को देना चाहते हैं जो हिन्दुस्तानी के इस अन्धड़ में दृढ़ स्तम्भ की भाँति अचल खड़ा रहे और हिन्दी की निर्मल ज्योति राष्ट्र में छिटकाता रहे। समय आयेगा जब स्वयम् मुसलमान यह माँग करेंगे कि हमारी राष्ट्र-भाषा हिन्दी हो। परन्तु यदि सम्मेलन ही विचलित हो गया और उसने हिन्दी को नष्ट हो जाने दिया तो हमारी संस्कृति का नाश निश्चित है।

आश्चर्य है श्री रघुनाथ मोहन महात्मा गांधी जी और श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल का नाम सम्मेलन के सभापतित्व के लिये प्रस्तावित करते हैं जब कि हिन्दी-हिन्दुस्तानी का विवाद उन्हीं का चलाया हुआ है, जब उन्होंने सैद्धान्तिक मतभेद के कारण सम्मेलन से त्यागपत्र दे दिया है और जब वे हिन्दुस्तानी रूपी प्रतिक्रिया के नेता हैं। जब उन्हें हिन्दी नाम ही पसन्द नहीं रहा और जब वे हिन्दी-उर्दू की त्रिवेणी के समर्थक हैं तब वे "हिन्दी-उर्दू और हिन्दुस्तानी के विवाद का अन्त करके हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने में सफल" कैसे होंगे? यदि सम्मेलन को अपना और हिन्दी का अन्त करना ही अभीष्ट हो तो भले ही उन्हें सभापति बनाये।

गांधी जी और हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के पास हिन्दुस्तानी प्रचार के लिये वैसे ही बहुत साधन हैं, कम से कम हिन्दी के सम्पादकों से प्रार्थना है कि वे भ्रान्तिमूलक विचारों के प्रचार में योग न दें।

लखनऊ —सूर्यप्रकाश, एम० ए०

* * *

प्रवासी मेवाड़वासी और सम्मेलन

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ उदयपुर-अधिवेशन पुण्य-भूमि मेवाड़ में दशहरे के अवसर पर होने जा रहा है। मेवाड़ के लिये यह सौभाग्य का और गौरव का विषय है कि हिन्दी विद्यापीठ के निमंत्रण को स्वीकार कर भारत राष्ट्र की यह गङ्गा-अरावली की सघन पहाड़ियों के बीच आ उपस्थित हुई। मेवाड़ के प्रत्येक नर-नारी का यह परम कर्त्तव्य है कि इस साहित्य निर्झरणी का तन, मन, धन से स्वागत करें।

मेवाड़ की इन [illegible] पहाड़ियों-कन्दराओं के बीच आज भी भक्तिमती मीराँ की बेसुध तान प्रतिध्वनित हो रही है। स्वतंत्रता के पुजारी वीर शिरोमणि प्रताप और कला के उपासक कुम्भा की ओज-भरी वाणी शताब्दियों से इन्हीं दुर्गम घाटियों में से नूतन प्राणवान संदेश देती हुई नभमंडल गुञ्जार रही है। इसी पवित्र भूमि में युगों से पोषित इस वाणी की अजस्र धारा का स्वागत न करेंगे तो किसका करेंगे।

मेवाड़ से बाहर बसे हुए मेवाड़वासियों से हमारा निवेदन है कि वे जहाँ कहीं भी हों इस महायज्ञ में पूर्ण सहयोग दें और अपना सम्पूर्ण नाम-पता स्वागत-मंत्री अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन ३३वें अधिवेशन के पते से भेज दें ताकि यहाँ की समस्त कार्यवाही उनके पास भेजी जा सके। प्रवासी मेवाड़ियों को
कार्य की सफलता के लिए अधिक
प्रयत्नशील होना चाहिए।

अतः मेरी एक बार और
है कि प्रवासी मेवाड़ी अपना
स्वागत-मंत्री के पास शीघ्राति
और स्वागत सदस्य बनकर इस
में स्वागत समिति का हाथ बटावें।

हिन्दी विद्यापीठ —गिरि
उदयपुर

युग और साहित्य
युगद्वन्द्वों तथा उनसे
सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण
माध्यम से उपस्थित करनेवाले
का संकलन। मूल्य २॥=)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहा

३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
सन् १९५९-६१
के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९५ बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) आपको अपनी रकम अच्छी शर्तों पर हिन्दुस्तान को ऋण की भाँति देने का एक और सुअवसर करता है। आप अपने देश को सहायता पहुँचायेंगे, भावों को घटाने में करेंगे, और ३ फ़ी सदी सालाना ब्याज, इनकम टैक्स काटने के बाद, दो बार आपके घर पर पहुँचता रहेगा।

आप जितनी रकम चाहें इस ऋण में लगा सकते हैं। गवर्नमेंट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म हर हालत में १५ अगस्त, सन् के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जा इस दौरान में अगर आपको नक़द रुपये की ज़रूरत हो तो इस लोन को चाहें मार्केट में बेच सकते हैं। अगर आप पर इनकम टैक्स लागू न हो या कम शरह पर लागू होता हो, तो अधिक चुकाया गया वापस मिल जायगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया नेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा

उदयपुर में सम्मेलन का ३३वाँ अधिवेशन

क्या यहाँ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्रति फैले हुए असंतोष का निराकरण होगा ?

'देशदूत' के ९ अगस्त के अंक में उदयपुर में होनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के सम्बन्ध में एक समाचार प्रकाशित हुआ था, साथ ही यह भी प्रकाशित हुआ था कि स्वागत-मंत्री श्री जनार्दनराय नागर ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया है और उसके सम्बन्ध में जिज्ञासा भी प्रगट की गई थी। उसी सम्बन्ध को लेकर एक लम्बा पत्र श्री नागर जी ने हमें लिखा है। इस पत्र में उन्होंने अपने त्यागपत्र के सम्बन्ध में सफाई देते हुए सम्मेलन की वर्तमान गतिअवरोधक नीति, उसके परिमार्जित, लोकप्रिय तथा भावी क्रियात्मक संगठन पर भी अपने स्पष्ट विचार व्यक्त किये हैं। साथ ही उन्होंने सम्मेलन में नव-जीवन का संचार करके उसे नवयुग के पथ पर अग्रसर करने की ओर भी संकेत किया है। हम पत्र को अविकल रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। हिन्दी तथा सम्मेलन के प्रेमियों को इसे ध्यान-पूर्वक पढ़ना चाहिए और यह समझना चाहिए कि इन पंक्तियों में स्वागत-मंत्री ही नहीं सारा मेवाड़ बोल रहा है।

यही कहती हैं कि यह संभव है, यह संभव है। कैसे यही हिमालय के समान प्रश्न है।

उदयपुर आते-आते सम्मेलन ३२ वर्ष का जीवन व्यतीत कर चुकेगा। हमारा यह सम्मेलन सयानी उम्र में आ गया है और इधर हमारा भारतीय राष्ट्र भी नवोद्भव का सयानापन प्राप्त कर रहा है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन और भारतीय प्रजा के जीवन के विकास के साथ एक अविभाज्य सम्बन्ध है। प्रयाग स्थित अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन चाहे विस्तार और अन्य दृष्टियों से अखिल भारतीय न लगे, परन्तु भावना और प्रतीक की दृष्टि से वह निस्संदेह अखिल भारतीय है। इसका प्रमाण हमें तब मिला, जब अरावली पर्वतमालाओं में इर्द-गिर्द बसे हुए इस कोने में आये हुए मेवाड़ में स्वागत-समिति के निर्माण के समय लोकरुचि की तरंगें लहरा उठीं। हम सब मेवाड़ भर के उत्साहपूर्ण उत्तर से प्रसन्न और आश्चर्य में रत थे। सोचिये, ८१४ सदस्यों की विशाल स्वागत-समिति बनी है, जिसमें सब हैं—सारा मेवाड़ है। मंत्री, अफसर, नागरिक, लोक-सेवक, स्वयं-सेवक सब सारे मेवाड़ का ख़मीर जैसा भी वह स्वागत-समिति में उपस्थित है। यह क्या एक नगर, एक प्रान्त विशेष के हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के लिए सम्भव है ? दूर क्यों जायें, राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ही को लीजिये। वह तो राजस्थान का प्रान्तीय संगठन है। उसके लिए मेवाड़ क्या राजस्थान में आज बहुत ही कम उत्साह रह गया है। निस्संदेह अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन समस्त भारतीय राष्ट्र की वाणी के मंच के रूप में अब दृढ़तापूर्वक प्रतिष्ठित हो गया है। इसके लिए गत ३२ वर्षों का अखण्ड और निरन्तर कार्य कारण है; देश के चोटी के नेताओं का समर्थ हाथ कारण है। इसके मूल में उत्तम प्रतिभाओं और कई अच्छे कार्यकर्त्ताओं का प्राण एवं दृष्टि है। इसके मूल में एक नये स्वर्गोपम भारतीय राष्ट्र की महान् जनवाणी की संघर्षपूर्ण आराधना के मूक स्वर हैं। पर लोहा तप-तप कर आज अविचल मेरुदण्ड बन गया है।

पर, हमारी चिन्ता यह है—क्या हम इस लोहे को जानते हैं ? क्या हम इस पानी को पहिचानते हैं ? आज क्या हमारी दशा उस व्यक्ति की सी नहीं है, जो अपने महत्त्व से अनभिज्ञ हो, जो अपने शील और अपनी गरिमा भूल गया हो ? आप सोचिये न, आज गत कुछ वर्षों में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के बारे में कितना असन्तोष फैल गया है ? माना कि तिल का ताड़ करने की विरोध की आदत है; माना कि गलतियाँ और कुछ अव्यवस्था हमारे मौलिक अभावों के कारण अनिवार्य हैं; परन्तु हमारी सफाई यह नहीं हो सकती। हमारी सफाई हमारा उत्तरोत्तर विकास एवं कार्यक्रम का दृढ़ संगठित तथा गत्यात्मक विस्तार है। इन दिनों सौभाग्य से मुझे समस्त हिन्दी-जगत् से सम्पर्क साधने का अवसर स्वागत-समिति के अनुग्रह से मिला है। जो सम्मेलन के हितचिन्तक हैं, जो सम्मेलन के विषय में विचारते किंतु दुखी हैं, वे सब चाहते हैं कि सम्मेलन के विषय में फैल रहा असन्तोष दूर किया जाना चाहिये। हम यह अनुभव कर रहे हैं कि सम्मेलन में एक विचित्र प्रकार का गति-अवरोध पैदा हो गया है। पर एक प्रकार का 'इनर्शिया' है। पता नहीं इसका क्या कारण है ? परन्तु सत्य यह है, ऐसा लगता है। हो सकता है, असन्तोष के अत्यधिक प्रचार से हमारे मानस ऐसे हो गये हों; परन्तु स्वागत-मंत्री की भाँति थोड़ा-सा सम्पर्क सम्मेलन की वर्तमान और विगत उत्तरदायी व्यक्तियों से साधते ही मुझे ऐसा लग रहा है कि असन्तोष की मात्रा तथा विस्तार अनुचित हो सकता है, असन्तोष नहीं।

हम सबकी कठिनाई यह है कि सम्मेलन के उत्तरदायी व्यक्ति इस असन्तोष को 'प्रतिदिन का रगड़ा' मान कर चलते हैं शायद, कदाचित् वे इसे गम्भीरता से नहीं लेते। लेते भी हैं तो कदाचित् कई कारणों से वे विवश हैं। परन्तु यह सब तो हम सम्मेलन-प्रेमियों के दुःख के अनुमान मात्र हैं। होना तो यह चाहिए, साहस और दृढ़ता के साथ सद्भावना को लेकर सत्य-स्थिति को सामने लाया जाय और उसका निर्मम विश्लेषण कर असत्य तथा गन्दगी को दूर किया जाय। अन्यथा, यह परिस्थिति हमें अन्दर ही अन्दर खोखला बना रही है, और एक दिन हमें पता भी न लगेगा और हमारा यह महल प्रयत्न करने पर भी भरभरा कर टूट गिरेगा। ईश्वर ऐसा न करे।

आज ३२ वर्षों के बाद यह उचित भी है कि हम सम्मेलन के इतिवृत्त का निष्पक्ष अवलोकन तथा अन्वीक्षण करें। कार्य और विस्तार की जाँच करें। प्रतिवर्ष अधिवेशन मना लेना और सामयिक प्रस्ताव पास कर देना रचनात्मक कार्य के युग में अब कितने दिन चलेगा ? उदयपुर में हम प्रजा का मानस देखते हैं तो हमें यहाँ रचनात्मक आधार और ठोस कार्य का बड़ा आग्रह दीखता है। लोग अब निरे प्रचार को चन्दा नहीं देते। इधर सारे भारतवर्ष में लोक-जीवन निस्संदेह भावुक और प्रचारात्मक राष्ट्रीय चेतना के युग को समाप्त कर एक प्रगतिशील रचनात्मक युग में प्रवेश कर रहा है। हमारा सारा राष्ट्रीय लोक-जीवन रचनात्मक कार्यक्रम के लिए तड़प रहा है; सोच रहा है; योजनायें बना रहा है। ऐसी हालत में हमारा यह हिन्दी साहित्य-सम्मेलन क्या अपनी वर्तमान गति-अवरोध की-सी दशा में अर्ध-मूर्च्छित, अर्ध-जाग्रत का सा बना रहेगा ?

उदयपुर में ही नहीं, राजस्थान भर में आज एक ही भावना फैल रही है कि ३३वाँ उदयपुर-अधिवेशन "नई चेतना और नई मार्ग-दिशा" पावे। यह चेतना क्या हो, यह मार्ग-दिशा क्या हो, इसकी कुंजी क्या प्रयाग में है ? हमारे इस अखिल भारतीय हिन्दी तीर्थ की विभूतियों में लोकमानस में अवगाहन करने की उमंग कितनी है, हम नहीं जानते।

पर यदि प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के नव अभ्युदय की भावना को तनिक भी प्रतीत करता हो, तो यह उसी का कर्त्तव्य है कि वह हिले डुले। हमारा, स्वागत-समिति का तो कर्त्तव्य इतना ही है कि अधिवेशन के लिए 'वातावरण और विचार' की तंत्री बजा दें। हमारा नम्रता और आदर के साथ यही प्रयत्न है। बाकी स्वागत तो सभी करते हैं। हल्दीघाट और चित्तौड़ के मेवाड़ की जनता भी शवरी के बेर सम्मेलन के श्रीरामचन्द्र के आगे रक्खेगी।

मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हम तो सम्मेलन के सेवक और स्वयं-सेवक के नाते ही यह भावना पैदा करना चाहते हैं। हमारा सम्मेलन में पूर्ण विश्वास है; हम उसके भक्त हैं और चाहते हैं कि अपनी कठोर आत्म-परीक्षा द्वारा स्वाधीन भारतीय राष्ट्र की प्रभावशालिनी सेवा के योग्य हमारा यह अद्वितीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन हो।

उदयपुर, —जनार्दनराय नागर
१० अगस्त, ४५ स्वागत-मन्त्री

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में अमर हैं। मूल्य २)

प्रकाशक—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

संवाददाताओं के पत्र

लखनऊ हिन्दी-साहित्य-परिषद्, की ओर से ब्वायज़ ऐँग्लो बंगाली हाई स्कूल में ता० १५ अगस्त को पं० निर्मलचन्द्र चतुर्वेदी के सभापतित्व में तुलसी-जयन्ती मनाई गई। कुमारी सुलोचना चौधरी, श्री प्रमिलादेवी, श्री शिवकुमार अय्यर एवं श्री दिनेशचन्द्र जोशी ने गो० तुलसीदास के कुछ पद गाकर सुनाये। श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, श्री छंगालाल मालवीय एम० ए०, श्री यमुनाप्रसाद उपाध्याय एवं पं० ब्रह्मदत्त तिवारी ने गोस्वामी तुलसीदास के सम्बन्ध में भाषण दिये।

—प्रेमलता तिवारी 'विशारद'

* * *

आगरा में आगामी ता० २४, २५ तथा २६ दिसम्बर को अखिल भारतीय पशु-रक्षा-सम्मेलन का विराट् अधिवेशन होने जा रहा है। इस पुण्य कार्य के साथ ही साथ तीन प्रदर्शिनियों के खोलने का भी आयोजन किया जा रहा है :—पशु-प्रदर्शनी, कृषि-प्रदर्शनी तथा चर्म-रहित वस्तु-प्रदर्शिनी। चर्म-रहित-वस्तु-प्रदर्शनी के लिए जिन महानुभावों एवं संस्थाओं के पास ऐसे कुछ पदार्थ हों, जिनमें चर्म की जगह कपड़ा, लकड़ी, लोहा एवं अन्य किसी वस्तु का प्रयोग किया गया हो, वे प्रदर्शनार्थ उन्हें भेजने की कृपा करें। मार्ग-व्यय समिति पर होगा। निर्णायकों के निर्णय के अनुसार पुरस्कार, पारितोषिक, तथा प्रमाणपत्र भी प्रदान किये जायेंगे।

—बद्रीप्रसाद मोहिला

* * *

ग्वालियर राज्य के २२ प्रतिष्ठित, राज्य-हितैषी तथा हिन्दी के विद्वानों के हस्ताक्षर से ग्वालियर-राज्य-हिन्दी-साहित्य-सभा, लश्कर के भवन-निर्माण के लिये ६० सहस्र रुपये के लिये अपील प्रकाशित हुई है। अपील में कहा गया है कि ग्वालियर राज्य की राजधानी में 'श्री ग्वालियर-राज्य-हिन्दी -साहित्य-सभा' की नींव आज से ४३ वर्ष पूर्व डाली गई थी, और इसके अंतर्गत 'चलते फिरते पुस्तकालय' का आयोजन किया गया था। अब जब कि राज्य में हिन्दी का प्रचार उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है, श्रीमंत सरकार की कृपा से हिन्दी को राज्य-भाषा का गौरवमय पद प्रदान किया गया है, यह परमावश्यक प्रतीत होता है कि सभा अपना तथा अपने पुस्तकालय का कार्य-क्षेत्र सम्पूर्ण राज्यव्यापी बनाये। इस आयोजन के लिये राज्य की राजधानी में एक साहित्य-भवन की आवश्यकता दीर्घकाल से अनुभव की जा रही है, जहाँ से लश्कर अथवा ग्वालियर ही नहीं संपूर्ण राज्य में हिन्दी के प्रचार एवं उन्नति के निमित्त सूत्र-संचालन किया जा सके। इस कार्य के संपादन के हेतु हमें ६० सहस्र की धन-राशि की अपेक्षा है।

* * *

ग्वालियर में जे० सी० एम० हाई-स्कूल में प्रोफेसर गुरुप्रसाद टंडन के सभापतित्व में तुलसी-जयन्ती का उत्सव मनाया गया। गोस्वामी के जीवन और साहित्य पर श्री रामचन्द्र श्रीवास्तव 'चन्द्र', एम० ए०, 'साहित्यरत्न' एवं प्रोफेसर बदरीनाथ के सारगर्भित भाषण हुए। तदनन्तर सर्व श्री 'तरुण', 'अभागा', 'किशोर', 'बिसरिया' आदि कवियों ने महाकवि को अपनी श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित कीं। प्रोफेसर शिवमंगलसिंह 'सुमन' की छाती फाड़ देनेवाली करुण कविता 'बंगाल का अकाल' तथा सुकवि 'चंचल' की वीर रस-पूर्ण कविता 'विक्रम' तथा वीरेन्द्र मिश्र की 'संघर्ष' का सजीव पाठ हुआ।

—संवाददाता

* * *

ग्वालियर राज्य हिन्दी साहित्य-सभा वर्तमान हिन्दी-साहित्य के प्रतिष्ठाता विद्यावाचस्पति डाक्टर श्यामसुन्दरदास, एम० ए०; डी० लिट् के निधन पर शोक प्रकट करती है और हिन्दी वाङ्मय की इस अमूल्य हानि पर समस्त हिन्दी भाषा-भाषी जनता के कण्ठ से कण्ठ मिलाकर हार्दिक समवेदना व्यक्त करती है। परमात्मा शोक-संतप्त परिवार को इस महान दुख के अवसर पर धैर्य्य तथा स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—संवाददाता

* * *

बीकानेर सरदारशहर में १० अगस्त को साहित्य-समिति की ओर से हिन्दी साहित्य के प्रकांड पण्डित-नागरी-प्रचारिणी सभा के आदि संस्थापक आचार्य श्यामसुन्दर दास जी के दुःखद देहावसान से हार्दिक शोक प्रकट किया गया। वक्ताओं ने दिवंगत आचार्य की हिन्दी-सेवा के प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उनकी आत्मा को शान्ति और शोक-संतप्त परिवार को सान्त्वना प्रदान करे।

११ अगस्त को आचार्य ओंकारनाथ जी के सभापतित्व में स्थानीय साहित्य-समिति की ओर से कविवर मैथिलीशरण गुप्त की हीरक जयन्ती का समारोहपूर्वक आयोजन किया गया। गुप्त जी की साहित्य-सेवा का अभिनन्दन करते हुए वक्ताओं ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह दीर्घजीवी होकर अपनी कमनीय कलाकृतियों से माँ भारती के भण्डार को सर्वाङ्गपूर्ण करते रहें।

—राधाकृष्ण गोयल

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ की, नये विधान के अनुसार गत १३ अगस्त को हिन्दी-विद्यापीठ-महाविद्यालय में रात्रि में प्रथम बैठक हुई। श्रीमान् सेठ श्रीगोपाल मोहता सर्वसम्मति से आगामी पाँच वर्षों के लिये हिन्दी - विद्यापीठ के कुलपति चुने गये। वैद्यराज पं० भवानीशंकर उपकुलपति और श्रीजनार्दन राय नागर आगामी पाँच वर्षों के लिए प्रधान मंत्री या पीठस्थविर चुने गये। श्री मदनलाल शर्मा कोषाध्यक्ष चुने गये।

हिन्दी-विद्यापीठ-कुल ने श्रीमान पं० लक्ष्मीलाल जी जोशी की संस्था के प्रति की गई गत आठ वर्षों की मूक सेवाओं के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और सर्वसम्मति से निश्चय किया कि पं० लक्ष्मीलाल जी जोशी हिन्दी-विद्यापीठ के प्रथम संस्थापक, प्रथम ट्रस्टी और कुल के आजीवन स्थायी सदस्य बनाये जायें। हिन्दी-विद्यापीठ सरस्वती-मन्दिर में आपका चित्र भी टाँगा जाये और आगामी हिन्दी-विद्यापीठ-स्थापना दिवस पर आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाय।

श्रीमान् नाथूलाल जी व्यास को अपना पुस्तकालय हिन्दी-विद्यापीठ को प्रदान करने के उपलक्ष्य में हिन्दी-विद्यापीठ-कुल ने श्री व्यास जी के प्रति उनकी इस सहायता के प्रति कृतज्ञता प्रकट की और धन्यवाद अर्पित किया।

श्रीमान् डा० श्यामसुन्दरदास जी के निधन पर हिन्दी विद्यापीठ-कुल ने हार्दिक शोक प्रकट किया।

—गिरिधारीलाल शर्मा
प्रचार-मंत्री,

* * *

जन्माष्टमी का ऐतिहासिक पर्व सन्देश-वाहक के रूप में प्रतिवर्ष आता और चला जाता है। सिवाय शुष्क आमोद-प्रमोद के हम इसके लिए और करते ही क्या हैं? आज का हिन्दू गोपाल-कृष्ण की तो पूजा करता है और कृष्ण की गौओं को बधिकों के हाथों बेच देने में कुछ पाप नहीं समझता। इस ऐतिहासिक पर्व पर समूल गौरक्षा के लिए बहुत कुछ किया और कराया जा सकता है, आवश्यकता है लगन के साथ काम करनेवालों की। उत्सव में उपस्थित जनता को गौरक्षा का जीवन-सन्देश पढ़कर सुनाया जाये और हिन्दू-मात्र को गौरक्षा के लिए
किया जाये। गौरक्षा का
और प्रतिज्ञा-पत्र डाकव्यय के लि
का टिकट भेजकर निम्न पते से
मँगा लीजिये—मंत्री गौरक्षा प्रचार
पोस्ट लखनादौन।

*

सरगोधा—हिन्दी-प्रचारिणी
की एक विशेष बैठक में दो प्रस्ताव
हुए। उनमें से एक के द्वारा
श्यामसुन्दरदास जी बी० ए० के नि
शोक और उनके परिवार के प्रति
का भाव प्रकट किया गया है और
के द्वारा राष्ट्रकवि श्री मैथिली
की 'हीरक जयन्ती' पर उन्हें हार्दिक
दी गई और उनकी देश, जाति और
भाषा के प्रति की गई सेवाओं की
की गई।

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से
भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर
है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है।
मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

THE UNITED COMMERCIAL BANK LTD.
AT YOUR SERVICE

विश्वास दिलाने वाले
आँकड़े

बिक्रीत मूलधन................४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन........२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन................७½ लाख रुपया

चेयरमैन
जी० डी० बिरला
शाखायें एवं एजेंसियाँ समस्त भारत तथा
विदेश में
जेनरल मैनेजर
बी० टी० ठाकुर
हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत

यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड।
हेड आफिस—२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।
ब्रांच आफिस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर

...की युद्ध—डायरी

...जापानी आक्रमण के पिछले चौदह वर्ष !

...तथा मित्र-राष्ट्रों से युद्ध का एक लंबा लेखा-जोखा

...सितम्बर, १९३१ रात्रि को ...के मुकडेन नामक स्थान पर एक ...हुआ। टोकियो सरकार के कथना- ...सैनिकों ने दक्षिण मंचूरिया ...जापानी अधिकृत भाग के एक ...उड़ा दिया था।

...द्वारा मंचूरियन दुर्घटना का ...की बात उसी प्रकार निश्चय ...नहीं जा सकती जिस प्रकार ...के अग्निकांड की जिम्मेदारी ...निश्चय रूप से नहीं लादी जा ...दोनों कांडों के घटनाक्रम से ...प्रमाण बड़े जोरदार हैं और ...में बदले की कार्रवाई ...की गई कि संसार का ...भाग रक्त-रंजित हो गया। ...जनरलों ने सोचा था कि ...की घटना से उन्हें ...हथिया लेने और महान् ...चीन में आक्रमण करने ...जायगा उन पर उन ...की जिम्मेदारी है, जिनका ...तथा उनके नगरों के ...प्रयोग किया गया है।

...मारितो ने मित्रराष्ट्रों को ...समर्पण कर दिया है।

...के कथित बमकांड और ...परमाणु बमकांड के मध्यवर्ती ...करोड़ों व्यक्ति मर चुके हैं ...के व्यवहार का मान ...है कि मानव समाज के ...संभावना के भी सम्बन्ध ...है। छोटे-छोटे बच्चे ...के अभ्यासी हो चुके ...ने, जिन्होंने १४ वर्ष पूर्व ...योजना बनाई थी, अपनी ...तथा सनकीपन को संसार ...है। आज उसी की प्रति- ...मिली। परमाणु बमों की ...जापान को हथियार डाल ...१४ वर्ष की जापान ...की युद्ध-डायरी नीचे दी ...से पाठक इतिहास ...कर सकते हैं।

...१८ सितम्बर—चीन के ...(मंचूरिया) पर जापान

चीन के विधाता मार्शल च्यांगकाई शेक को, ८ वर्ष से लड़नेवाले जापान ने, आत्म-समर्पण कर दिया।

१९३२—१ मार्च—जापान-द्वारा मंचुडुओ को कठपुतली राष्ट्र के रूप में परिवर्तित किया जाना।

१९३७—७ जुलाई—पेकिंग के निकट चीनी सैन्यदलों पर जापानी सैनिकों का गोली चलाना।

१३ अगस्त—शंघाई में लड़ाई प्रारम्भ। चीनी कांड का समारम्भ।

१५ सितम्बर—चीन ने लीग से अपील की, जिसने एक वर्ष बाद, अपने सदस्य राष्ट्रों को जापान के विरुद्ध, आर्थिक दंड-व्यवस्था लागू करने का अधिकार प्रदान कर दिया। किसी भी राष्ट्र ने ऐसा नहीं किया।

१२ नवम्बर—शंघाई का पतन।

१३ दिसम्बर—नानकिंग में जापानियों द्वारा लूटमार।

१९३८—२९ दिसम्बर—बर्मा रोड की पूर्ति।

१९४०—२३ सितम्बर—फ्रांसीसी हिंद-चीन में जापानी सेनाओं का अवतरण।

१९४१—७-८ दिसम्बर—पर्ल हार्बर, मलाया और हांगकांग पर आक्रमण, जापान के विरुद्ध ब्रिटेन और अमेरिका की युद्ध-घोषणा। जर्मनी द्वारा अमरीका के विरुद्ध युद्ध-घोषणा।

२५ दिसम्बर—हांगकांग का पतन।

१९४२—१५ फ़र्वरी—सिंगापुर का पतन। पतन के फलस्वरूप ६०,००० व्यक्ति युद्ध-बन्दी बने।

९ मार्च—रंगून का पतन।

४ मई—कोरल (प्रवाल) सागर से दक्षिण की ओर जानेवाले आक्रमणकारी बेड़े से आस्ट्रेलिया को खतरा। अमरीकी बेड़े ने बीच ही में रोक कर इस जापानी बेड़े को परास्त कर दिया—पहली निर्णयात्मक जापानी सैन्य-पराजय।

जून—मिडवे द्वीपों पर अधिकार करने का जापानी प्रयत्न निष्फल। इस दूसरी सैन्य-पराजय से जापान के विस्तार की इतिश्री हो गई।

अगस्त—अमरीकी ग्वाडलकनाल पर उतर गये और सोलोमन्स की ओर बढ़ने लगे।

१९४३—१८ सितम्बर—न्यूगिनी में ले पर पुनः अधिकार।

नवम्बर—गिलबर्ट द्वीपों, मेकिन और तरावा पर पुनः अधिकार।

१५ दिसम्बर—न्यू ब्रिटेन पर सेना का उतरना।

१९४४—१ फरवरी—मार्शल द्वीपसमूह पर सेना उतर गई।

१५ जून—मेरियानी द्वीपसमूह पर आक्रमण।

४ अगस्त—बर्मा में मितकिना पर अधिकार।

२१ अक्तूबर—फिलिपाइन द्वीपसमूह में लेटे पर सैनिक उतरे।

२४ अक्तूबर—फिलिपाइन द्वीप-समूह से दूर जापान की करारी नौ-सैनिक पराजय।

२४ नवम्बर—मेरियाना द्वीप-समूह से उड़कर उड़नेकिलों ने पहली बार टोकियो पर बमवर्षा की।

१९४५—१६ मार्च—जापान से ७५० मील दूर स्थित इवोजीमा पर अधिकार।

३ मई—रंगून पर पुनः अधिकार।

२१ जून—जापान से ३५० मील दूर स्थित ओकीनावा पर पूर्ण अधिकार।

६ अगस्त—हिरोशिमा पर पहले परमाणु बम से आक्रमण।

८ अगस्त—जापान के विरुद्ध रूस की युद्ध-घोषणा।

९ अगस्त—दूसरा परमाणु बम नागासाकी पर फेंका गया।

१० अगस्त—जापान आत्मसमर्पण को तैयार हो गया।

१२ अगस्त—एडमिरल निमित्ज से सुलह की बातचीत।

१४ अगस्त—जापान ने पोट्सडम शर्तों पर आत्मसमर्पण कर दिया।

इधर उधर की

पोट्सडम का आँखों देखा वर्णन

बर्लिन में हानेवाले 'त्रिराष्ट्र नायक' सम्मेलन का वर्णन करनेवाले एक संवाददाता ने उस स्थान का वर्णन इस प्रकार किया है—

"त्रिराष्ट्र नायक" सम्मेलन का कार्यालय एक दुर्ग जैसी आकृति वाले दुतल्ले भवन में है। भवन के मध्य में स्थित प्रांगण में एक बिलकुल वृत्ताकार फूलों की क्यारी है जिसमें फूलों के पौधों से एक लाल रंग का तारा बनाया गया है। यहाँ केवल त्रिराष्ट्र नायकों की मोटरगाड़ियाँ ही प्रविष्ट हो सकती हैं, दूसरों को चलकर ही आना पड़ता है।

यहाँ से एक छोटा-सा मार्ग सम्मेलन के कमरे में जाता है और संभवतः वह कमरा उन सभी कमरों में सबसे अधिक आकर्षक है जिसमें अब तक ऐसे सम्मेलन हुए हैं। कमरे के एक सिरे पर बहुत-सी बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ लगी हैं जिनका रुख मैदान की ओर है। सम्मेलन के इस ऐश्वर्यपूर्ण केन्द्रीय कमरे के इधर-इधर तीनों प्रतिनिधि मंडलों के लिए कमरे और कार्यालय हैं।

इसी पार्श्व में आगे चलकर एक बड़ा-सा भोजनागार है जिसमें चालीस व्यक्तियों के बैठने योग्य एक मेज थी और उसके आगे दूध के समान सफेद रंग का रसोईघर था। इसका अध्यक्ष रूसी सरदार गोगो गैलिट्ज़न था जो याल्टा में भी था। उसी पार्श्व में दुतल्ले पर विश्रामागार, शयनागार, स्नानागार और एक विशाल सम्पर्क केन्द्र था जहाँ सरकारी कार्यालयों को रास्ता जाता था।

एक महान् व्यक्ति

संसार में व्यक्ति का महत्त्व उसके व्यवहार तथा आचरण पर निर्भर करता है। सद्व्यवहार तथा सदाचार करनेवाले व्यक्ति ढूँढ़ने पर मिल जाते हैं किन्तु दूसरों को सदाचारी तथा सद्व्यवहारशील बनाने वाले व्यक्ति संसार में बहुत ही कम मिलते हैं। वंग-साहित्य-सम्राट् श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय ऐसे ही व्यक्तियों में एक हैं। आपके उपन्यास पाठक को निश्चय ही सदाचारी तथा सद्व्यवहारी बनाते हैं। किन्तु तारीफ यह है कि आप अपने उपन्यासों में कहीं भी उपदेश नहीं दिया करते हैं। मनोरंजक तथा सरल भाषा में वास्तविक जीवन का चित्रण ही आपकी विशेषता है। उनके उपन्यासों के निम्नलिखित अनुवाद उनकी सभी विशेषताएँ लिये हुए हैं।

ब्राह्मण की बेटी	१।-)
बैकुंठ का बिल	॥≡)
छुटकारा	१।-)
लेन-देन	३।-)
मझली दीदी	१)
गृहदाह	३।-)
परिणीता	१।-)
श्रीकान्त (दो भाग)	४)
शुभदा	१॥)

मैनेजर, बुकडिपो इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हास परिहास

भङ्ग की तरङ्ग

जापान ने आत्म-समर्पण कर दिया। यह आत्म-समर्पण क्यों न होता जब आतम बम गिराया गया। आतम और आत्मा का गहरा सम्बन्ध भी है।

* * *

खाँन अब्दुल गफ्फार खाँ के एक वक्तव्य से जान पड़ता है कि सीमाप्रान्त का अधिकारी वर्ग कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल से सहयोग नहीं कर रहा है। क्यों करें? बेचारों की रोजी आप बन्द कर रहे हैं, आमदनी बन्द कर रहे हैं फिर भी सहयोग की आशा?

* * *

ग्वालियर रियासत के एक गाँव की पुलिस की चौकी पर बिजली गिर पड़ी। जान पड़ता है भगवान् क्षीर सागर से जाग पड़े हैं।

* * *

खबर है कि फील्डमार्शल स्मट्स भारतीय नेताओं का एक सम्मेलन दक्षिण अफ्रीका में बुला रहे हैं। सर फीरोज खाँ नून तथा सर रामस्वामी मुदालियर को बुला लिया जाये क्योंकि इनसे बढ़कर नेता कौन हो सकता है और इनसे स्मट्स महोदय भी प्रसन्न होंगे।

* * *

भरतपुर राज्य में विद्यार्थियों ने हड़ताल कर रखी है। अच्छा है, राज को कालेज बन्द कर देना चाहिए। इतना भी व्यय क्यों शिक्षा पर किया जाय? राज्य के लिए तो अच्छा ही है कि लड़के छोड़ दें पढ़ना।

* * *

ऐसा सुना जाता है कि वायसराय ने डाक्टर जियाउद्दीन को एक पत्र लिखा है। उसमें पूछा गया है कि जिन विद्यार्थियों ने राष्ट्रपति का अपमान किया था उन्हें क्या दंड दिया गया? मेरा तो सुझाव है कि उन्हें इस साल बी० ए० या एम० ए० की डिगरी परीक्षा के बिना ही दे दी जाय। उन्होंने लीग की अपूर्व सेवा की है।

* * *

लोग कहा करते हैं कि मुसलमान लोगों में 'तहजीब' बहुत होती है। इसी संस्कृति को सिखाने के लिए सर सैय्यद ने अलीगढ़ कालेज खोला था। यहाँ के विद्यार्थियों का व्यवहार देखकर सर सैय्यद की रूह आनन्द के मारे बाँसों उछल पड़ी होगी।

* * *

प्रयाग में लड़कियों के स्काउट एसोसियेशन ने बालिकाओं को शारीरिक शिक्षा देने की योजना तैयार की है। मेरा निवेदन तो सिर्फ यह है कि कृपया उन्हें शारीरिक शिक्षा देकर कहीं 'आटम बम' तो न बना डालियेगा?

* * *

कायदे आजम को बड़ा कष्ट है कि महात्मा गांधी शिमला-सम्मेलन में कांग्रेस प्रतिनिधि की हैसियत से क्यों नहीं शरीक हुए? खैरियत है कि कायदे आजम ने अपना सिर नहीं फोड़ लिया केवल वक्तव्य देकर चुप रह गये।

* * *

इस वक्तव्य ने कायदे आजम के मन की ठीक ठीक अवस्था बता दी है। उन्होंने कहा कि जब तक महात्मा गांधी और कांग्रेस हिन्दू-राज स्थापन का सपना नहीं छोड़ देती तब तक मुसलमान लोग ब्रिटिश सरकार से अलग नहीं हो सकते। यह तो हम लोग पहले से ही जानते थे। वाकई आप अँगरेजी राज से कैसे अलग हो सकते हैं!

* * *

और सच बात तो यह है कि आपकी ही बदौलत ब्रिटिश राज कायम है। आप नहीं तो ब्रिटिश राज नहीं और ब्रिटिश राज नहीं तो आप नहीं।

* * *

लार्ड पेथिक लारेंस ने कहा है कि भारत के सम्बन्ध में मेरी बहुत दिनों से दिलचस्पी है। इसी से हम भी यही समझ रहे हैं कि कोई नई बात होने की सम्भावना नहीं है। सब पुरानी ही बातें रहेंगी।

* * *

एक सूचना निकली है कि श्री जनार्दनराय नागर ने उदयपुर में होनेवाले साहित्य सम्मेलन के मन्त्रिपद से इस्तीफा दे दिया। क्या बिना झगड़े के स्वागतकारिणी एक नया आदर्श स्थापित करना चाहती है?

—अगड़धत्त शर्मा

वर्षा

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

रिमझिम रिमझिम वर्षा आई।
मानो किसी विरहिणी ने प्रियतम की चि
दादुर की टर-टर की ध्वनि कानों को ऐसी भाई।
देती कवि सम्मेलन में कविता जिस भाँति सुनाई॥
जहाँ तनिक-सी भी मिट्टी है घास वहाँ उग आई।
ज्यों जग के कोने-कोने देते अँगरेज दिखाई॥
पत्थर पर भी जहाँ तहाँ देखो फैली है काई।
मानो फसल बाल की गंजे के सिर पर उग आई॥
सूरज की है चमक नहीं नभ में बदली है छाई।
मानो अलकें उनके सुन्दर आनन पर लहराई॥
सड़कों पर कीचड़ की ऐसी 'बेढब' है अधिकाई।
मानो विधना ने फैलाई लाकर यहाँ मलाई॥

सुदूरपूर्व के युद्ध सेनानायक

(पेज ५ का शेष)

जब जनरल मैकार्थर दक्षिण पश्चिमी प्रशान्त क्षेत्र के लिए प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिये गये तो सर थामस ब्लेमी इस क्षेत्र में मित्रराष्ट्रीय स्थल सेनाओं के सेनापति हो गये। दोनों विश्व-युद्धों में उन्होंने फ्रांस से लेकर न्यूगिनी तक विस्तृत युद्ध क्षेत्र में जो उल्लेखनीय सैनिक कार्य किये हैं उनसे सिद्ध होता है कि वे एक अद्वितीय प्रतिभा-सम्पन्न सेनानायक हैं।

जब जापानियों ने प्रशान्त में आक्रमण कर दिया तो जनरल ब्लेमी
लियन इम्पीरियल फौजों के साथ
की रक्षा के लिए वापस आ गये।
१९४२ के निराशापूर्ण दिनों में
सेना की कमान अपने हाथ में
जनरल मैकार्थर के सहयोग में
उन्होंने शत्रु-सैन्य-संगठन को
छिन्न भिन्न कर दिया। युद्ध
इतना सफल हुआ कि इसके
राष्ट्रीय सैनिक प्रगति पश्चिमी
फिलिपाइन और उसके आगे तक
से हुई।

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

ब्रज-भाषा

साहित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और ब्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु ब्रज-भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान् कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — विहारी-विभव
भूषण-भारती — मतिराम-मकरंद
पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग।

ाज्य का इतिहास

प्रथम खंड

तिक इतिहास

वासुदेव उपाध्याय एम० विषय का यह अद्वितीय पर लेखक को मंगला- मिल चुका है। प्राचीन का अध्ययन करने में मिलती है। मेहरौली की राजमुद्रा, कुमार का लेख की प्रतिलिपि पर मुद्रित हैं। अच्छा जिल्द बड़े आकार के केवल ४) चार रुपये।

द्वितीय खंड

सांस्कृतिक इतिहास

इस खण्ड में गुप्तकालीन शासन-प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मुद्रा, साहित्यिक विकास, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक दशा, धार्मिक दशा, भौतिक जीवन, ललितकला, वृहत्तर भारत और गुप्तयुग की महत्ता का वर्णन है। गुप्त राजाओं के समय की आर्य-संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले के आगे प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त संस्कृति का ऐसा विशद और प्रामाणिक विवेचन किसी भारतीय भाषा में शायद ही मिले। बढ़िया काग़ज़, अनेक चित्र, सुन्दर जिल्द, बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या साढ़े तीन सौ से ऊपर, मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

ये हैं इनकी चालें—

इनको इन्हीं के विरुद्ध बरतिए

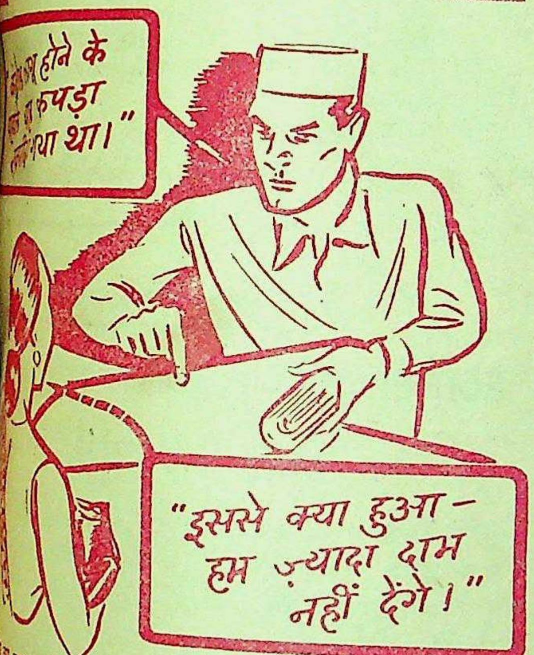
होने के कपड़ा गया था।"
"इससे क्या हुआ— हम ज़्यादा दाम नहीं देंगे।"

का कहना बिलकुल ठीक है—दुकानदार ग़लत कह रहा है। का बहाना करके कंट्रोल के दामों से ज़्यादा क़ीमत नहीं ।

ब्लैक मार्केट से हरगिज़ न ख़रीदिए इस तरह ब्लैक म ख़त्म हो जाए

के सूचना तथा प्रचार - वि

"If it's **ELGIN** it's good!"

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, व अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलों के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों में ही) अपनें नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर

मुख्य विक्रेता (थोक)

मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपूर

EK 22-HIB

कुटुम्ब में सौन्दर्य कायम रहे

मताजी कह रही हैं: "मेरी माँ इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसवीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसवीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी मां के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है जो है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे कई पीढ़ीयों तक कुटुम्ब में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

H. ENGLAND

वस्तु हैं। यौवन ओ

हिन्दी भाषाभाषी भारतीय जनता का पत्र मूल्य २ आना

वन

भारतीय सूती वस्त्र-

षड्यंत्र (कहानी) क्या

आपके स्नान के लिए

HAMĀM
A TATA PRODUCT

हमाम की गाढ़ी और सुगंधित झाग अत्यन्त हर्षदायक है । प्रतिदिन के स्नान में इसका प्रयोग कीजिये ।

हर जगह इसका स्टाक उपस्थित है

अपने दुकानदार से हमाम साबुन माँगिये ।

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

आ रहा है!

आपकी सुबहका एण्डरूज!

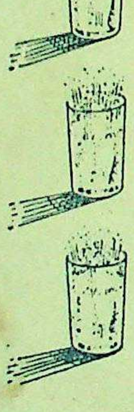

आशा है कि एण्डरूज लिवर साल्ट शीघ्र ही विदेशोंसे यहां पहुंचेगा और आप फिर एण्डरूजसे प्रातःकालीन आनंद उपयोग करेंगे । एण्डरूज संसारकी सर्व प्रिय नमकीन झाग देने वाली औषधि है । आप अपने चिर-परीचित और परीक्षित एण्डरूजकी प्रतीक्षा करें जो पूर्ण विशुद्ध, वैज्ञानिक प्रणालीसे मिश्रित प्रयोगशाला द्वारा परीक्षित तथा प्रस्तुत-क्रिया स्वास्थ्य-विज्ञानके नियमोंपर आश्रित है ।

एण्डरूज आन्तरिक सफाई कर दैनिक स्वास्थ्य ठीक रखता है । आवश्यकतापर एक ग्लास एण्डरूज पी लें । यह निश्चय ही आन्तरिक सफाई करेगा ।

ANDREWS

एण्डरूज

आन्तरिक सफाई के लिये

आदर्श
रेचक
LIVER
ANDREWS
LIVER

खांसी बाघ की तरह भयंकर है...

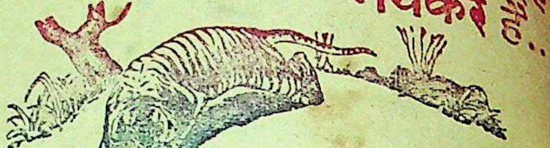

सिरोलिन 'रुचि'

सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषेधक है

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्द

फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे । इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है । हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है । फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते ।

दोनों कारणोंसे ही बालोंकी

कमनीयता और मजबूती नष्ट

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से

जवाकुसुम बड़ी आसानीसे

निकाल देता है और बालोंकी

मजबूत बनाता है । इसके

मस्तिष्क शीतल हो जाता है ।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका सम्मूल्य

जवाकुसुम

JM·2·H

केशोंकी शोभा बढ़ाना.....मस्तिष्क शीतल

८५

… मुसलमान

… ती होती है । इसी

… े लिए सर सैय्यद ने

… ली साहित्य

… ान्यद से इस्तीफा दे दिया । क्या बिना झगड़े के स्वागतकारिणी एक नया आदर्श स्थापित करना चाहती है ?

—अगड़धत्त शर्मा

भूषण-भा

मूल्य प्रत्येक

मैनेजर बुकडिपो

ड कं० लि० · जवाकुसुम हाउस ·

सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मि

र्षिक मूल्य ७॥)
ति संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२ सितम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 2nd September, 194

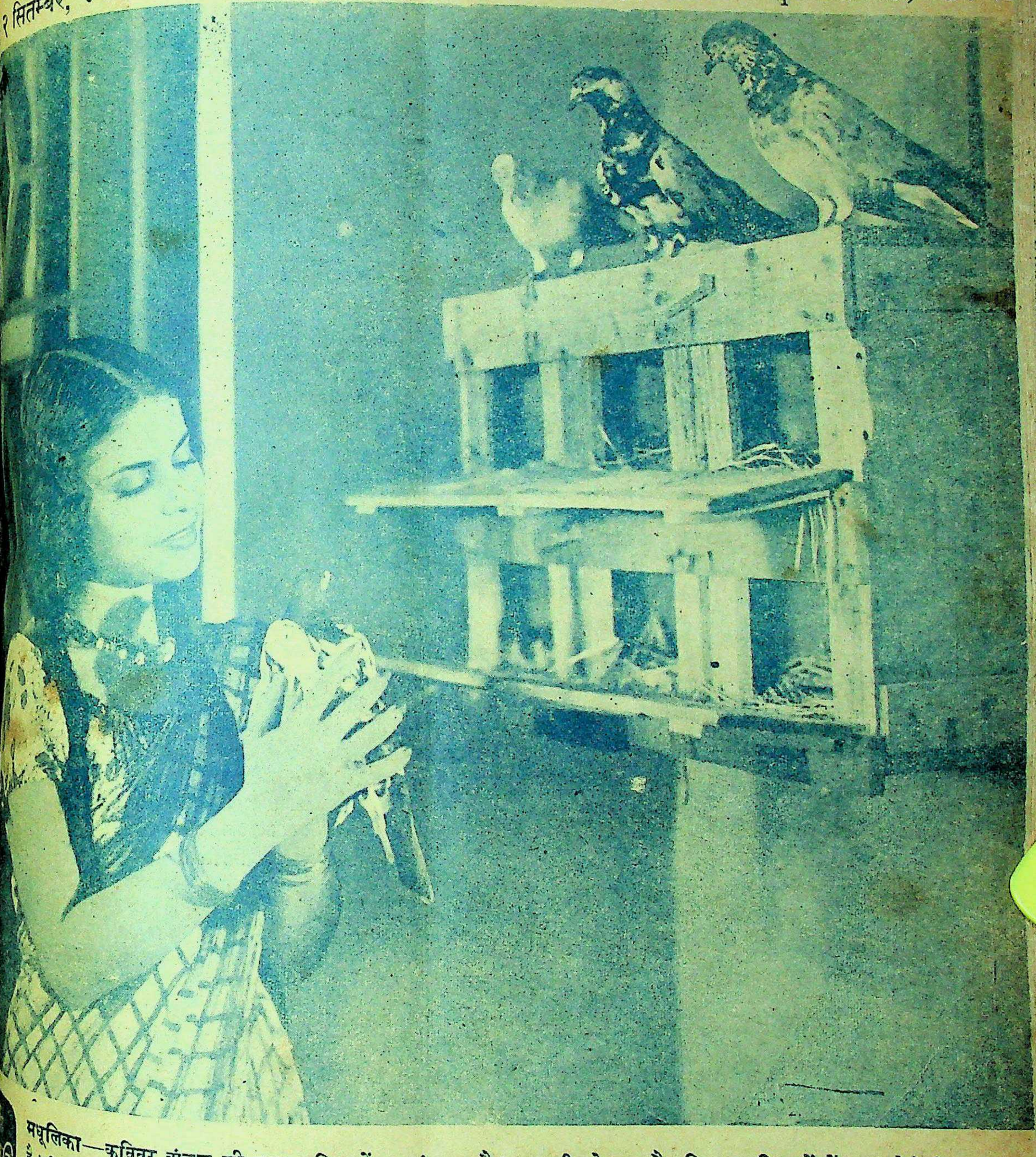

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

से एशिया का भविष्य।
न-संगठन की समस्या।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

भारतीय सूती वस्त्र-व्यवसाय का भविष्य।
षड्यंत्र (कहानी) क्या वह कलंकिनी थी?

मझली दीदी—एक सौतेली बहन अपने माता-पिता से विहीन भाई के प्रति किस प्रकार का अधिक से अधिक हृदयहीन व्यवहार कर सकती है, इस बात का इस उपन्यास में बहुत ही उत्तम चित्र अंकित किया गया है। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

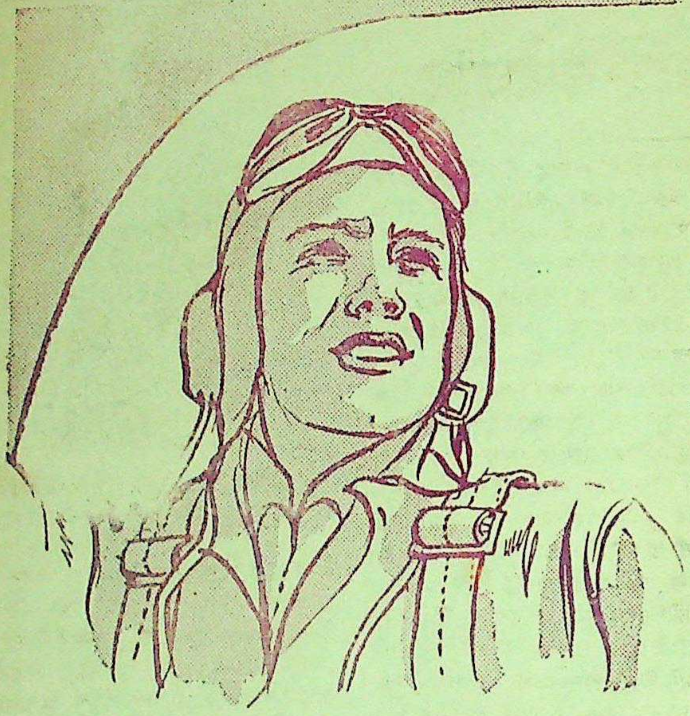

"देश के दीप्तिमान नक्षत्र"-शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक का चिन्ह 'पंख' (विंग्स) मात्र ही नहीं, जिससे केवल इतना प्रकट होता है कि वह हवाई जहाज़ चला सकता है।

उसकी वास्तविक श्रेष्ठता उस सब से अधिक प्रशंसनीय गुण के कारण है जिसे साहस अथवा पराक्रम के नाम से पुकारते हैं।

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ दीजिए जिसका सबूत वह दे चुका है; उस कार्य के मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार कीजिए जिसे वह आजकल कर रहा है; और यह भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने देश के और स्वयं अपने भावी हित की नींव डाल रहा है। तब आपको पता लग जायगा कि हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दीप्तिमान नक्षत्र वही है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

AAA 82

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। परिपाक खूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।

—राष्ट्रभाषा-समाचार,

अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

आपको ये बातें जानने का अधिकार है -

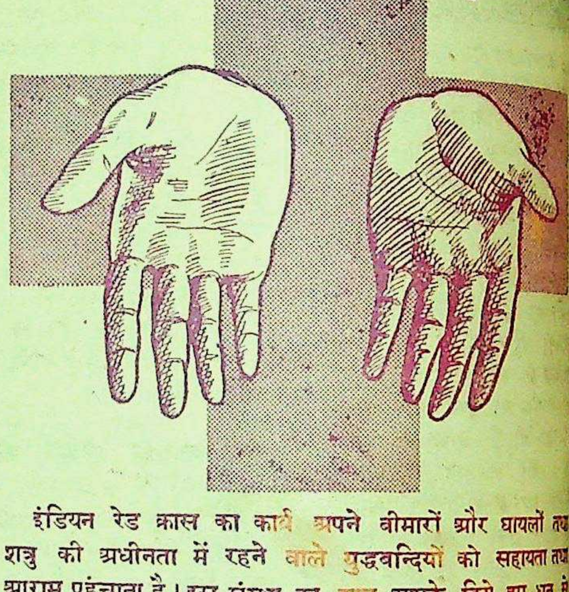

इंडियन रेड क्रास का कार्य अपने बीमारों और घायलों तथा शत्रु की अधीनता में रहने वाले युद्धबन्दियों को सहायता तथा आराम पहुंचाना है। इस संस्था का काम आपके दिये हुए धन से चलता है और यह पूर्णतया सार्वजनिक चन्दे पर निर्भर करती है। १९४४ में २ करोड़ ८२ लाख रुपये की आय में से प्रधान कार्यालय से इस संस्था के प्रबन्ध पर केवल ३/$\frac{५}{८}$ प्रति शत रक़म खर्च की गई, यद्यपि इसका विस्तार बहुत बड़ा और कार्य बड़ा पेचीदा है।

परोपकारी कार्यों के लिए संगठित की गई संस्थाओं में से यह सर्वश्रेष्ठ तथा सबसे कम खर्च पर चलने वाली संस्था है। बहुत चतुरता से वस्तुएं खरीद कर और इनका वितरण करके अपने अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के द्वारा यह संस्था संसार भर में आपके वीर सैनिकों के सम्मुख आपके मैत्री भाव का प्रतिनिधित्व करती है और उनके प्रति आपकी प्रशंसा तथा कृतज्ञता का प्रमाण उपस्थित करती है।

ऐसे महान कार्य को कोई दूसरी संस्था नहीं कर सकती। यह आपकी सहायता पाने की अधिकारिणी है, जिस प्रकार वीर सैनिकगण जिनकी सेवा यह करती है आपके आदर एवम् श्रद्धा के पात्र हैं।

इंडियन रेड क्रास के द्वारा

अपने घायल और बीमार सैनिकों की सहायता दिल खोल कर कीजिए

AAA 314

देशदूत

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

र्ष ८ संख्या १]

[रविवार, २ सितम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

...चन्द्र बोस का जापानी
...में स्वर्गवास हो गया ।

...राजनीति इस वक्त डुब-
...। अमरीका, ब्रिटेन, रूस
...मित्रराष्ट्रों के आपसी दाँव-
...चल रहे हैं। वह सच्चे
...शक नहीं । अमरी-
...जापानी भूमि पर
...वह पूरी तरह से
...रहे हैं। जापान
...बाल बाँका भी नहीं
...अपने साथ 'पर-
...हैं। बुद्धिमान ऐसे
...का क्या ठिकाना ?
...करना आवश्यक
...शांति स्थापना का एक
...बम' इसीलिये उसे
...उचित ही है।

* *

...ट्रूमेन इस वक्त
...कर रहे हैं। ट्रूमेन
...नाम ही है। देखिये
...आत्मसमर्पण करते ही
...दिया गया! ब्रिटेन
...मिस्टर एटली और
...मिस्टर चर्चिल अपने
...से काफ़ी नाराज़ हो
...साहब की यह हरकत
...आई। अगर उन्हें
...इतिश्री करनी ही
...तो कम से कम
...लेना ही चाहिए था।
...वक्त बहके से जान
...में जो कुछ आ रहा है
...पट्टा बन्द कर देने
...विरोध
...

मित्र-राष्ट्रों में रूस की हरकत इस वक्त ऐसी है कि समझ में नहीं आता कि आखिर वह चाहता क्या है? जापान ने युद्ध बन्द कर दिया, अमरीका तथा ब्रिटेन समझौते की ओर बढ़ रहे हैं किन्तु रूस खिचड़ी अगल पकाता जा रहा है। मंचूरिया तो उसने हड़प ही लिया और कोरिया भी अब उसी के हाथ लगा-सा जान पड़ता है। आखिर यह सब क्यों? वह सोचता है कि मार लिया जाय जितना मारते बने, बाद को कौन किसका होता है? चीन से उसकी एक ओर संधि होती है और दूसरी ओर चीनी कम्यूनिस्ट उसके ही बल पर ही कुँजड़े और कसाई बनने को तैयार बन बैठे हैं। चीन के प्रधान मंत्री मिस्टर सुंग इस वक्त मास्को, वाशिंगटन और लंदन का चक्कर काट रहे हैं और सभी से संधि करते हुए दिखाई दे रहे हैं। सच तो यह है कि रूस योरोप की तरह एशिया में भी मारने-खाने में व्यस्त है। यदि रूस की ऐसी ही चाल रही तो चीन कितने दिन गम खायेगा और अमरीका तथा ब्रिटेन की उसकी दोस्ती आगे कितने दिन तक चलेगी?

* * *

चीनी बन्दरगाह हाँगकाँग को ही लीजिए। जापान के आत्मसमर्पण करते ही हाँगकाँग पर कब्जा करने की बाज़ी लग गई। मार्शल च्यांगकाई शेक एक ओर से दौड़े और दूसरी ओर से ब्रिटेन। लेकिन खुदा का शुक्र है कि मार्शल के बुद्धि आ गई। ब्रिटेन के पुराने एहसानों ने उन्हें यह सलाह दी कि इस वक्त सिर्फ बन्दरगाह के लिये झगड़ा करना ठीक नहीं है। ब्रिटेन ही फिलहाल उस पर अपना कब्जा जमाये रहे। लेकिन मार्शल च्यांग अभी संतुष्ट हो कर नहीं बैठे। वह मित्र-राष्ट्रों की बड़ी पंचायत में हाँगकाँग के मामले को उठायेंगे। वहाँ क्या फैसला होता है यह तो बात की बात है लेकिन अँगरेज हाँगकाँग में जम गये हैं। जमे को उखाड़ना मार्शल च्यांग के वश का रोग नहीं है। फिर योरोपियनों के आगे एशियाटिकों को बात करने की तमीज कहाँ?

* * *

हिन्दू महासभा इस वक्त क्रांति के पथ पर अग्रसर हो रही है। डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी के सभापति होने से सचमुच उसकी कदर बढ़ गई है। हिन्दू-महासभा ने अपने दिल्ली अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास करके अपने पदाधिकारी राजाओं, रायबहादुरों और सरों से यह अनुरोध किया है कि वह सरकारी उपाधियाँ छोड़ दें। फिर क्या था, सर गोकुलचंद नारंग, राजा महेश्वरदयाल सेठ और रायबहादुर हरिश्चंद अब 'सर' 'राजा' और 'रायबहादुर' नही रह गये। यह लक्षण शुभ हैं। मुस्लिम लीग के लिये यह नोट कहने की बात है। बात असल में यह है कि अब चुनाव आनेवाला है। चुनाव है ही ऐसी आफ़त! त्याग की जरूरत भी है। बिना त्याग के जनता कैसे बश में आयेगी? कांग्रेसवाले तो पहले ही से त्यागी बन बैठे हैं। इन त्यागियों के आगे महात्यागी बनने से ही काम चल सकता है। हिन्दू-महासभा इस महात्याग के लिये बधाई की पात्र तो है ही।

* * *

वाइसराय लार्डवेवेल इँगलैण्ड में मजदूर सरकार से बातचीत कर रहे हैं। सच पूछा जाय तो लार्ड वेवेल अब उड़ने की कला में निपुण हो गये हैं। पिछली बार भी वह उड़ कर लन्दन पहुँचे थे और वेवेल-योजना उड़ा कर यहाँ लाये थे। इस बार देखना है कि जब वह उड़ कर यहाँ आते हैं तो अपने साथ क्या उड़ा लाते हैं? मजदूर सरकार तो जमाने से उड़ने की कला में दक्ष है। अब दोनों उड़नेवालों का सत्संग एक नई हरकत पैदा करेगा। अपने राम इसे जानने के लिये उतावले हो रहे हैं। ब्रिटेन में तो हमें नहीं मालूम पर भारतवर्ष में उड़नेवालों की बड़ी कदर है। कांग्रेस, मुस्लिम लीग, हरिजन, अछूत बड़ी आशा से लार्ड वेवेल की भावी उड़न-लीला को देखने के लिये आतुर हैं।

* * *

कांग्रेस से कुछ कांग्रेसी मुसलमान मुस्लिम लीग की ओर खिसक रहे हैं। केन्द्रीय असेम्बली के डिप्टी लीडर मिस्टर अब्दुल कयूम को इलहाम हुआ है कि लीग में शामिल होने से ही मुस्लिम जमात की रक्षा हो सकती है। पंजाब में भी कुछ इसी तरह की हरकत हुई है। आखिर यह क्यों? असल बात यह है कि लीडरी जो न कराये सो थोड़ा! वैवेल-योजना के समय कयूम साहब ने सोचा था कि बस अब मार दिया लेकिन वहाँ जब श्री भूलाभाई देसाई तक की पूछ नहीं हुई तब कयूम साहब किस खेत की मूली थे? सीमाप्रान्त में खान बन्धुओं का स्वराज्य है, इसलिए वहाँ भी कयूम साहब अब सफाचट्ट हैं, इसलिए मुस्लिम लीग में शामिल होना ही उन्होंने ठीक समझा। सवेरे का भूला शाम को अगर घर आ जाये तो उसे भूला न समझना चाहिए। बेहतर है कि कच्चे कांग्रेसी मुसलमान लीग की शरण में चले जायें, क्योंकि वहाँ कम से कम हलुआ खाने को तो मिलेगा। यहाँ तो चक्की का पीसा आटा है या नीम की चटनी और ज्यादा हुआ तो फल फलाहारी!

सर स्टेफर्ड क्रिप्स, ब्रिटिश मंत्रिमंडल के एक प्रमुख सदस्य हैं और लार्ड वेवेल को वार्ता में शामिल हुए हैं।

* * *

हमारी सरकार ने अब कांग्रेस को कानूनी करार दे दिया है। क्यों न कानूनी करार देती? चुनाव जेलखाने में रहकर थोड़े ही होता है? लड़ाई के लिए मैदान में मोर्चेबन्दी होती है। क्या हमारी सरकार जरा-सी बात नहीं समझती, जो योरोप और एशिया का इतना बड़ा जंग फतह कर चुकी है? लेकिन शुक्र है कि कांग्रेस कानूनी हो गई। अब कुछ चहल-पहल दिखाई देगी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, वर्किंग कमेटी की बैठकें बम्बई में होनेवाली हैं। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों का संगठन भी जारी है। लार्ड वैवेल विलायत से आये और चुनाव के युद्ध का बिगुल बजा!

* * *

युद्ध समाप्त हो गया और अब सरकार २० लाख व्यक्तियों को अवकाश देने की स्कीम तैयार कर रही है। आगामी अक्तूबर से अवकाश देने का काम होगा। आवागमन तो भारतीय दर्शन का आदर्श है। अँगरेज भारत में आकर परले सिरे के दार्शनिक बन गये हैं। २० लाख में से ५० हजार भङ्गी, धोबी, और दर्जी अपना पुराना राग अलापने लगेंगे। जो लोग बेकार हो जायें वह क्यों नहीं चुनाव पार्टी में शामिल हो जाते?

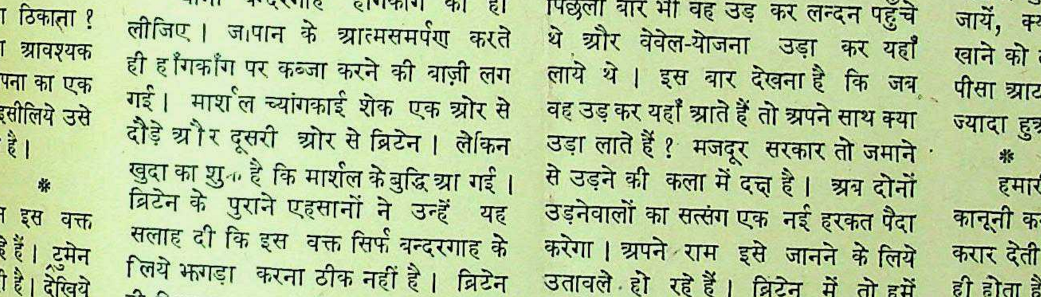

सर एम० जी० एन० स्टापफोर्ड। जनरल सर क्रिस्टीसन। मेजर जनरल राबर्ट्स। जनरल सर जी० ए० पी० स्कून्स।

सुदूरपूर्व के युद्ध क्षेत्र में इन ब्रिटिश फौजी सेनापतियों ने महत्त्वपूर्ण लड़ाई लड़ी है।

सम्पादक का पृष्ठ

नया वर्ष !

'देशदूत' इस अंक से अपने जीवन के आठवें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। पिछले सात वर्ष के जीवन में उसने राष्ट्र, समाज, साहित्य और हिन्दी संसार की कैसी सेवा की है, इसका निर्णय तो 'देशदूत' के हजारों पाठक तथा हिन्दी भाषाभाषी जनता ही कर सकती है। किन्तु इतना कहने में हमें तनिक भी संकोच नहीं है कि 'देशदूत' का आदर्श सदा से राष्ट्रीय रहा है। पिछले कांग्रेस मंत्रिमण्डल के समय में इसका जन्म हुआ था और जिस राष्ट्रीय नीति को उस समय अपनाया गया था, उसी परम्परा पर आज भी वह चलता जा रहा है। 'देशदूत' में समय समय पर विविध विषयों पर जो रचनायें प्रकाशित होती रही हैं, उसका उद्देश्य और ध्येय भी यही रहा है कि हिन्दी भाषी जनता का स्तर अन्तर्राष्ट्रीय, भारतीय, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक दृष्टि से ऊँचा होता जाये तथा उसे सामयिक से सामयिक विविध विषयों का ज्ञान प्राप्त होता रहे। साथ ही उनका मनोरञ्जन भी होता रहे। 'देशदूत', ने अब तक कितनी लोकप्रियता प्राप्त की है, इसका बहुत कुछ अनुमान आजकल हिन्दी के साप्ताहिक पत्रों के पहले तथा आज के भीतर बाहर के रूपों को देखकर किया जा सकता है। इससे अधिक हम और कुछ कहना नहीं चाहते। यद्यपि हम 'देशदूत' को जैसा बनाना चाहते थे वैसा युद्ध-जनित परिस्थितियों के कारण नहीं बना सके किन्तु वह समय शीघ्र आनेवाला है जब कि हम पाठकों तथा हिन्दी भाषा भाषी जनता की पूरी सफलता से सेवा करने में समर्थ होंगे। इसलिये नये वर्ष के उपलक्ष्य में हम अपने हजारों पाठकों, प्रेमियों, लेखक-लेखिकाओं, मित्रों तथा सहयोगियों को बधाई देते हैं जिनकी अपार अनुकंपा से हमारा मार्ग सदा प्रशस्त होता रहा और हम आगे बढ़ने में समर्थ होते रहे हैं। हमें विश्वास है कि उनका सहयोग हमें पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा, जिससे हम उनकी अधिक से अधिक सेवा करने में समर्थ होते रहें।

* * *

आगामी सार्वजनिक चुनाव

भारत में केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारा-सभाओं के नवीन संगठन के लिए नये चुनाव की चर्चा प्रारम्भ हो गई है। ब्रिटेन की मजदूर सरकार ने यह आदेश जारी किया है कि अगले आर्थिक वर्ष से केन्द्र तथा प्रान्तों में नये चुनाव के अनुसार मंत्रि-मंडलों की स्थापना की जानी चाहिए। हमें तो प्रसन्नता इसी बात की है कि आज प्रान्तों पर जो एकांगीय शासन है उसके अन्त का दिन आनेवाला है। अब गवर्नर साहबानों के एकछत्र शासन के दिनों का अन्त होने जा रहा है। कहना तो यह चाहिए कि लार्ड वैवेल ने तानाशाही के युग की समाप्ति का संकल्प कर लिया है और प्रजातन्त्रीय प्रणाली के अनुसार शासन चलाने का बंधन बाँधा है। किन्तु इस बीच के समय के लिए क्या प्रबन्ध हुआ? क्या अभी छः-सात महीने तक गवर्नरों का शासन प्रान्तों में बना रहेगा? एक बात अवश्य है कि हमारी नई मजदूर सरकार है बड़ी चतुर। उसने कम से कम नये चुनाव की घोषणा करके एक ऐसा दाँव फेंका है कि इससे वर्तमान शासन की आलोचनाओं में थोड़ी बहुत कमी हो जानी अनिवार्य है। जो कुछ भी हो चुनाव तो होगा ही और उसके लिए सरकार तथा चुनाव लड़नेवाली पार्टियों की ओर से आन्दोलन भी शुरू हो गया है। कांग्रेस, मुस्लिम लीग, राष्ट्रीय मुसलमान, हरिजन-अछूत, ईसाई आदि जितने भी दलादल हैं उनमें इस समय क्रान्ति मची हुई है और सभी का ध्यान इस ओर आकर्षित हो गया है। कांग्रेस इस चुनाव में प्रमुख भाग लेने जा रही है और वह सफल भी होगी, इसमें सन्देह नहीं। चुनाव-आन्दोलन उस वक्त से और भी प्रबल रूप धारण करेगा जब लार्ड वैवेल लन्दन से वापस आकर भावी चुनाव के सम्बन्ध में कुछ नवीन, कुछ प्राचीन तथा कुछ वैधानिक दृष्टिकोण से एकाध वक्तव्य देंगे। भारत आने पर वह कोई विस्तृत वक्तव्य अवश्य देंगे क्योंकि पिछली बार भी वह जब लन्दन गये तो वेवेल-योजना लेकर वापस आये और इस बार भी वह कोई चीज अवश्य लायेंगे जिससे वैधानिक दृष्टि से आगामी चुनाव के संबंध में कुछ न कुछ प्रकाश पड़ सके।

जो कुछ भी हो यह तो होगा ही और चुनाव सरकार करायेगी ही किन्तु इस समय सबसे अधिक समझने की बात यह है कि यह चुनाव जिन कागज-पत्रों तथा वोटर-सूची के आधार पर होने जा रहा है या होगा क्या वह सच्चे जनतन्त्र-प्रणाली के अनुकूल है? केन्द्रिय एसेम्बली के वोटरों की सूची तैयार हो गई है, कायदे के अनुसार अब उसमें कोई हेर-फेर नहीं हो सकता। जिन दिनों कांग्रेस नेता वेवेल-योजना के अनुसार शिमले की हवा खा रहे थे उन्हीं दिनों एसेम्बली की वोटर-सूची का अन्तिम रूप से परिमार्जन हो रहा था। केन्द्रिय वोटिंग-सूची जन-तन्त्र के चुनाव के कितनी अनुकूल है इसका अनुभव उसके अध्ययन से भलीभाँति हो सकता है। रह गया प्रान्तों में चुनाव की प्रणाली। यहाँ भी वही दशा है। अब नई वोटर-सूची तैयार होने से रही। पुरानी से ही काम चलाया जायेगा। कहने का तात्पर्य यह है कि क्या जो चुनाव होने जा रहा है वह जन-तंत्र के चुनाव के अनुकूल है? हमारी समझ में तो जब तक प्रत्येक बालिग वोट देने का अधिकारी नहीं समझा जाता तब तक इस प्रकार के चुनावों को न तो सार्वजनिक ही कहा जा सकता है और न जनतंत्र से पूर्ण। दूसरे केन्द्रिय तथा प्रांतीय धारा सभाओं में प्रतिनिधियों की संख्या अधिक विस्तृत होने की आवश्यकता है। किन्तु यह तभी संभव हो सकता है जब कि प्रत्येक बालिग वोट देने का अधिकारी हो। सरकार के लिये यह कार्य कठिन नहीं है। पार्लामेंट चाहे तो वैधानिक परिवर्तन या संशोधन भी कर सकती है। किन्तु कैसा विधान और कैसा परिवर्तन? चुनाव होकर रहेगा और जैसा सरकार चाहेगी, उसी नियम के अनुसार कार्य होगा।

इन बातों की ओर ध्यान आकर्षित करने का कारण यही है कि सरकार को सचेत होकर जनतंत्रीय कार्य पद्धति की रक्षा करनी चाहिए साथ ही कांग्रेस तथा राष्ट्रीय दलों को भी सभी दृष्टि-कोण से सावधान होने की आवश्यकता है। क्योंकि भावी चुनाव बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। वर्षों बाद केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारा-सभाओं का चुनाव होने जा रहा है। इसी चुनाव से भारत के राजनैतिक दलों की सार्वजनिक शक्ति स्पष्ट रूप से प्रगट होगी और राजनैतिक तथा वैधानिक दृष्टि से मार्ग प्रशस्त होगा।

* * *

महान् योधा का बलिदान !

जापानी रेडियो के कथनानुसार भूतपूर्व राष्ट्रपति राष्ट्रगौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस का स्वर्गवास हो गया। यदि यह समाचार सत्य है तो ऐसा कौन भारतीय है जिसने मार्मिक पीड़ा का अनुभव न किया हो? सुभाष बाबू की देशभक्ति, त्याग और बलिदानी-जीवन की अमर स्मृतियाँ आज देश की करोड़ों जनता के हृदय-पटल पर अंकित है। वह भारतीय स्वाधीनता के कट्टर पक्षपाती तथा उसकी प्राप्ति के लिए प्रत्येक उपाय से तैयार रहने वाले थे। देश की वर्तमान जागृति में उनका विशेष हाथ रहा है। वह उग्र विचारों के पक्षपाती थे। विदेशी शासन के कट्टर शत्रु थे। इसी कारण उन्हें जेल यात्रा भी कई बार करनी पड़ी। यातनाओं तथा कष्टों से काल के गाल में जाते जाते भी बच गये थे। यद्यपि कांग्रेस की वर्तमान नीति से वह कुछ अंशों में सहमत नहीं थे फिर भी कांग्रेस के प्रधान स्तम्भों में उनकी गणना होती रही है। वह जल्दी से जल्दी देश में स्वाधीनता स्थापित करना चाहते थे। इसीलिए वह युद्ध-काल में ही भारत से एक रहस्यपूर्ण ढङ्ग से लुप्त हो गये और ब्रिटेन के शत्रुराष्ट्रों से मिलकर भारतीय स्वाधीनता के लिए कार्य तथा आन्दोलन करते रहे। यद्यपि उनकी स्वाधीनता प्राप्ति की यह नीति गलत थी किन्तु उनका आदर्श भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति तो था ही।

ऐसे वीर सेनानी और महानतम योद्धा के स्वर्गवास से किसे दुख न होगा? जापान ऐसा सम्राज्यवादी भी उनके प्राणों की रक्षा न कर सका, जिसके वह सहायक बने हुए थे। जापानी अस्पताल में उनकी मृत्यु हुई। सुभाष बाबू के देशप्रेम और बलिदान की कहानियाँ स्वाधीनता के इतिहास में अमर रहेंगी, इसमें संदेह नहीं। ऐसे वीर, साहसी, राष्ट्रवादी और महान् योद्धा के स्वर्गवास के अवसर पर हम अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

जीवन-संग्राम से पीछे न हटो

कृष्ण जन्म का सच्चा और वास्तविक रूप क्या

लेखक, अचार्य धर्मदेव शास्त्री, अशोक-आश्रम, कालसी

सारा भारतवर्ष जन्माष्टमी की रात्रि को मध्यरात्रि तक जागकर और प्रायः श्रद्धालु हिन्दू उपवास रखकर कृष्णजन्म के लिए उत्सुकता और तत्परता को प्रकट करता है। प्रतिवर्ष यही क्रम चलता है और ऐसा करते हुए हजारों वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। रात्रि के बारह बजे तक जाग कर और उपवास करके श्रद्धालु जन, आत्मसन्तोष के लिए कृष्ण जन्म हो गया, ऐसा मान लेते हैं और इस खुशी में यथेच्छ भोजन करते हैं तथा

उत्सव मनाकर अपने
समझ लेते हैं। उपवास किसी
किया जाय वह लाभप्रद ही है।
स्वास्थ्य के लिए ही नहीं,
और आत्म-निरीक्षण के लिए
की आवश्यकता और
"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन
यह सत्य है। साथ ही यह भी
"मानसिक स्वास्थ्य के बिना पूर्ण
स्वास्थ्य दुर्लभ है।"

उपवास इन दोनों प्रकार के
लाभ का आजमाया हुआ
अनिच्छापूर्वक भूखा रहना
ईश्वर-भक्ति से दूर रखने का
जब कि स्वेच्छापूर्वक भूख
आत्मिक विकास और ईश्वर
पता का साधन है (उप=
आवश्यकता इस बात की है कि
केवल रस्म-आदायगी न हो।
आत्मिक भूख को जागृत करे।

* *

क्या सचमुच जन्माष्टमी
श्रीकृष्ण का जन्म होता है?
फिर देश में कंस, जरासंध और
संख्या दिन प्रतिदिन कैसे बढ़ती

सूर्य के उदय का अभिनव
सूर्यनारायण का उदय ही
नहीं रहने देता। श्रीकृष्ण-
अन्याय, अत्याचार तथा
साथ नहीं रह सकते।

अधर्म का ह्रास और धर्म
वृद्धि ही सच्चा श्रीकृष्ण-जन्म है।

भगवान कृष्ण ने गीता
अध्याय में—'यदा यदा हि
र्भवति' की स्थिति में आत्म-
कही है। इस श्लोक की अगली
मुख्य कार्य बताये हैं।

१—साधुओं का परित्राण।
२—दुष्टों का विनाश।
३—धर्म की संस्थापना।

इसके साथ ही छठे अध्याय
कहा है—

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मान
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव

अर्थात् अपना उद्धार स्वयं
ही होता है, दूसरे के किये नहीं।

मेरा जन्माष्टमी के दिन
विनम्र निवेदन है कि गीता
बातों को एक साथ मनन करें।

ऐसा करने पर मालूम होगा
कृष्ण-जन्म और आमोद्धार
कार्य हैं। जनता जनार्दन
गीता की सच्ची शिक्षा
मणिदीपक है, तब हम देखेंगे कि
कार में रहनेवाले अन्याय और
रूपी कंस तथा जरासंध न होंगे।

प्रभु वह शुभ दिन शीघ्र
राज्य हो परन्तु यह धर्मराज्य
विरुद्ध विकट महाभारत
होगा।

जीवन-संग्राम में विजयी
ईश्वर के निमित्त बन कर
भक्ति है। आइये, हम
लिए तैयारी करें।

जापान के आत्म-समर्पण से—

एशिया की भावी राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

> जापान ने मित्रराष्ट्रों को आत्मसमर्पण कर दिया। एशिया के एक उन्नत और शक्तिशाली राष्ट्र का अंत हो गया। किंतु उसके पराभव का एशिया की भावी राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ सकता है; इसका, घटनाओं के तुलनात्मक अध्ययन के साथ, एक गंभीर विवेचन विद्वान् लेखक ने इस लेख में किया है। लेख अत्यन्त सुंदर और जानकारी से पूर्ण है।

हथियार डाल दिये। उसकी
सेना राजा दिलीप
के समान हाथ में शस्त्र
उसका कुछ उपयोग न कर
के सामने पाण्डवों ने जिस
थी, उसी प्रकार एटम
के सामने जापान ने
बचाई है। जापान के राजा
द्वारा आत्म-समर्पण
बताया है। भस्मासुर
जाता है वह जिस पर हाथ
भस्म हो जाता था। पर
एक व्यक्ति का नहीं,
और प्रदेश के प्रदेश, चर-
मानव और पशु, चेतन
को स्वाहा कर देता है।
से सामरिक नीति की
रूस को जापान के विरुद्ध
करने को बाध्य किया गया।
तिथि को यदि रूस
युद्ध-घोषणा करता तो
अन्तरीप मंगोलिया की
को आत्म-समर्पण न
प्रलय-बम ने बड़े बड़े
युद्ध-विद्या के पण्डितों और
की भविष्य शक्ति को
और मि० चर्चिल के इस
का युद्ध हमारी आशा
और अकस्मात् समाप्त
कर दिखाया।

भविष्यवाणी

के नौ-सेना-मन्त्री
था कि यूरोप का
वर्ष बाद जापान
होगी। उन्होंने कहा
लड़ाई १९४९ में
एशिया में भी दूसरा
में ही समाप्त हो गया।
भविष्यवाणी गलत न
में प्रलय-बम सहसा
देता। ओकीनावा द्वीप
तीन मास लगे थे।
विजय करने
था। यदि इसी अनु-
विजय करने में मित्रों
तो कर्नल नाक्स की
सिद्ध न होती।

लाख सेना जापान के
थी। इस सेना को परा-
कम से कम मित्रों को
द्वीपों पर उतारनी
के लिए निरन्तर रसद
और गोला-बारूद मुहैय्या
माल १३,०००
। इस विशाल सेना
आवश्यक रण-सामग्री
ग्रेटब्रिटेन के समान
जरूरत थी। फ्रांस
और

आवश्यक था। फिलिपाइन में सेना का जमा करना जरूरी था। पश्चिमी यूरोप से सुदूरपूर्व में सेना और युद्ध-सामग्री लाने में ६ मास से १८ मास लगते। चीन में जापानी सेना २० लाख की तादाद में थी और नानकिङ्ग की सेना १३ लाख की संख्या में थी। इस ३३ लाख सेना से लड़ने के लिए मित्रों को भी कम से कम इतनी सेना उतारनी पड़ती। चीनी सेना मौजूद थी पर वह शस्त्रास्त्र से विहीन थी। इसलिए जापान पर हवाई दुर्गों-द्वारा प्रतिदिन हवाई हमले होने पर और जापानी किलेबन्दी, उद्योग-धन्धों, जापानी अड्डों को ध्वंस करने के बाद भी एडमिरल नीमिज ने कहा था कि जापान पर बड़ा हमला करने के लिए सेना उतारने में मित्रों को १८ मास लग जायेंगे। मित्रराष्ट्र ८० लाख सेना जमा कर रहे थे। इस विशाल सेना को इकट्ठा करना, इसके लिए आवश्यक युद्ध-सामग्री, रसद, रासन १३००० मील दूर से लाकर इकट्ठा करना समय की अपेक्षा रखता है। सिंगापुर से टोकियो तक एक साथ प्रबल और विशाल हमला करने के लिए भारी तैयारी की आवश्यकता थी। जापानी अन्त तक, अन्तिम साँस रहने तक लड़ते हैं, यह सोलोमन, न्यूगिनी, बर्मा में लड़ रहे जापानियों ने—दिखा दिया है। इसलिए यदि जापान को पुरानी समर-नीति-द्वारा ही विजय किया जाता और अमरीकी युवकों की जान बचाने और युद्ध को जल्दी समाप्त करने के उद्देश्य से भस्मासुर प्रलय-बम न छोड़ा जाता तो प्रशान्त की लड़ाई अभी समाप्त न होती और कम से कम १९४७ तक तो खिंच ही जाती।

जनरल डगलस मैकआर्थर मित्रराष्ट्रों की ओर से जापान से समझौता करने का नेतृत्व कर रहे हैं।

रूस का आक्रमण

राजा हिरोहीतो ने जापान के हथियार डालने के कारणों को बताते हुए रूस का उल्लेख नहीं किया है। पर क्या जापान के जल्दी आत्म-समर्पण करने में रूस का हाथ कुछ भी नहीं है? क्या जापान, ब्रिटेन और फ्रांस के समान अपनी गवर्नमेंट टोकियो से उठाकर हारबिन नहीं ला सकता था? मंचूरिया और कोरिया में जापान ने लड़ाई की भारी तैयारी कर रखी थी। औद्योगिक दृष्टि से ये दोनों प्रदेश जापान को लड़ने में बहुत मदद दे सकते थे। इसलिए रूस की जापान के विरुद्ध युद्ध-घोषणा और रूसी सेना का ९ अगस्त को तीन ओर से मंचूरिया और कोरिया पर हमला करना भी जापान के हथियार डालने में एक मुख्य हेतु हुआ है; यह मानना पड़ेगा। रूस-द्वारा हमला करने के कारण जापान चारों ओर से घिर गया था, उसके लिए बचकर निकलने का कोई मार्ग शेष नहीं रहा था। चीन-जैसे विशाल देश में वह जर्मन मार से त्रस्त रूसी सेना के समान पीछे हट सकता था, और मित्रराष्ट्रों को काला पहाड़ की लड़ाई लड़कर थका सकता था और लम्बी लड़ाई से मित्रों के थकने पर सन्धि-चर्चा-द्वारा शान्ति प्राप्त करने की आशा कर सकता था, पर रूसी सेना ने हारबिन और मुकडन की ओर बढ़कर उसके लिए इसका भी अवकाश नहीं रखा। फलतः जापान को आत्मरक्षा की भावना से प्रेरित होकर हथियार डालना पड़ा। एशिया ही नहीं, विश्व के इतिहास में यह एक महान् घटना है। पिछले ८० साल से जो राष्ट्र बराबर आगे बढ़ता जाता था, अपना विस्तार करता जाता था, शक्ति और बल बढ़ाता जाता था, उसके साम्राज्य का अन्त हो गया, उसके स्वप्न धूल में मिल गये और उसके मनोरथ चूर-चूर हो गये। पिछले ८० सालों में जापान ने पराजय क्या वस्तु है, यह नहीं जाना था। 'सूर्योदय' के उपासक जापान ने सूर्यास्त की कल्पना नहीं की थी। एक दिन भोर में अमरीकी नौ-सेना ने सोते जापान को जगाया था, बाहरी दुनिया से उसका परिचय कराया था और आज उसी अमरीकी नौ-सेना ने जापान को पुनः अपने बिल में जाने के लिए बाध्य किया है।

पराजय निश्चित

१८९५ से जापान अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहा है। १९०५ में रूस को पराजित करके उसने यूरोपियन राष्ट्रों को चेतावनी दी कि वे एशिया में मनमानी नहीं कर सकते, उसकी अवहेलना नहीं कर सकते, उसकी राय के बगैर एशिया का भाग्यनिर्माण नहीं कर सकते। १९१४-१८ की लड़ाई में उसने ब्रिटिश साम्राज्य की पहरेदारी का काम अपने ऊपर लिया और इसके पुरस्कार में प्रशान्त के अन्दर जर्मन द्वीपों को पाया और शमौल तक जापान का झण्डा पहुँच गया। १९३१ में मंचूरिया को उसने फतह किया। ७ अगस्त १९३७ को उसने चीन पर हमला किया। वर्ष भर के अन्दर चीन का समुद्रतट का सारा प्रदेश और चीनी रेलवे लाइन अधिकृत कर ली। चीन में ये उपजाऊ और यातायात के साधन-सम्पन्न भाग को लेकर वह बैठ गया और नानकिंग गवर्नमेंट स्थापित करके उसने चीन के साथ झड़पें जारी रखीं। ७ दिसम्बर को पर्ल हारबर, मनीला, सिंगापुर, गुआम आदि स्थानों पर एक साथ हमला किया। अमरीकी नौ-सेना इस अप्रत्याशित हमले से विकलांग हो गई। अमरीका को जापानी हमले की इस समय आशंका तक नहीं थी। क्योंकि ७ दिसम्बर १९४१ को ठीक इसी समय जापानी राजदूत एडमिरल कीशी साबूरो नोमूरा और साबूरो कुरुसु शान्ति कायम रखने पर बातचीत करके मुस्कराते हुए अमरीका के स्टेट डिपार्टमेंट (परराष्ट्र-विभाग) से बाहर निकले थे। जापानी हमला हिम-प्रवाह के समान फैल गया और १५ फरवरी को सिंगापुर

—शेष पृष्ठ १८ पर

जनरल सर ओलिवर लीस
जनरल एच० आर० ब्रिग्ज
मेजर जनरल मसर्वी
जनरल डब्लू० जे० स्लिम

(सुदूरपूर्व के युद्ध में हिन्दुस्तानी फौजों के सेनापति तथा युद्ध-कमांडर)

किसानों का संगठन और कांग्रेस

सरकारी और राष्ट्रीय विचारधाराओं पर एक दृष्टि

लेखक, श्री सत्यदेव शास्त्री

(१)

भारत एक खेतिहर और किसान-प्रधान देश है। इसलिये किसानों के एक दृढ़ और शक्तिशाली संगठन की भी जरूरत है। इस लेख में विद्वान् लेखक श्री शास्त्री जी ने सरकार तथा किसानों के पारस्परिक सम्बन्ध, किसानों में राष्ट्रीय जागृति तथा आन्दोलन कांग्रेस के सहयोग की दृष्टि से अध्ययन पूर्ण प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा किसान-आन्दोलन की जानकारी से पूर्ण है।

संयुक्त-प्रांतीय कांग्रेस प्रतिनिधि सभा के सभापति माननीय श्री पुरुषोत्तम दास टंडन, जिन्होंने प्रांतीय कांग्रेस के कानूनी करार दिये जाने पर असेम्बली के भंग कर देने का आदेश दिया है।

किसान देश की रीढ़ की हड्डी है। समाज का आधार-स्तम्भ है। किसान एक छोटा-सा सीधा-सादा शब्द है; किन्तु इसमें भावी क्रान्ति का मूल मन्त्र छिपा हुआ है। हिन्दुस्तान में ८०. फी सदी किसान हैं। हैमिल्टन ने बहुत ठीक कहा है कि रैय्यत हिन्दुस्तान है और हिन्दुस्तान रैय्यत है। कृषि-प्रधान देश होने से किसानों की समस्या ही हिन्दुस्तान की मुख्य समस्या है। इस लेख में मैं यह दिखाने की चेष्टा करूँगा कि किसान-समस्या को हल करने के लिए कांग्रेस कहाँ तक यत्नशील रही है। आज इसकी समस्या क्या है और इसका हल क्या होगा?

यह एक सरल प्रश्न है कि जमीन का मालिक कौन है? जमीन का जोतनेवाला किसान या लगान वसूल करनेवाला जमींदार या सरकार? उत्तर भी सरल है।

बहुत पुराने जमाने से हिन्दू और मुस्लिम राज्य में हिन्दुस्तान में जमीन पर किसानों का मालिकाना हक रहा है जो आज सभ्य संसार का स्वीकृत आदर्श माना जा रहा है। डा० रैस डेविड्स का कहना है कि बौद्ध-धर्म के उदय के समय भारत की ग्रामीण आर्थिक नीति मुख्यतया जमीन के मालिक किसानों की ग्राम्य-समाज प्रथा पर अवलम्बित थी जिसे योरप में पीजेंट प्रोप्राइटीशिप कहते हैं। हिन्दूकाल में राज्य का अस्तित्व भी मुख्यतया खेती की उन्नति के लिए था। भूमि के मालिकाना हक पर बहस करते हुए जैमिनी का एक सूत्र है—"न भूमिः स्यात् सर्वम् प्रत्यविशिशत्वात्" राजा भूमि को दान में नहीं दे सकता। जहाँ तक इसके मालिकाना हक का सम्बन्ध है, इस पर सबका समान हक है। जमीन के मालिकाना हक का इस्लामिक आदर्श भी वही था जो हिन्दुओं का रहा।

ईस्ट इंडिया कंपनी हिन्दुस्तान में व्यापार करने के उद्देश्य से आई; किन्तु धीरे धीरे कल, बल और छल से उसके हाथ में शासन-सूत्र आ गया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने रुपया कमाना ही, चाहे वह जिस तरीके से हो, अपना एकमात्र उद्देश्य बनाया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने इस हिन्दू सिद्धान्त को कि "नो राजन्यो भूमिर्धनम्" अर्थात् जमीन राजा का धन नहीं है, तथा इस्लामिक आदर्श की तिलांजलि देकर सम्पूर्ण अनुचित उपायों से रुपया कमाने का रास्ता अख्तियार किया। यद्यपि बर्क ने तत्कालीन गवर्नर जनरल हेस्टिङ्गस पर गबन का मुकदमा चलाया था; किन्तु उसके उत्तराधिकारियों ने नाजायज तरीकों से रुपया पैदा करने का काम बराबर जारी रखा। कंपनी के जीवन को कायम रखने के लिए यह आवश्यक समझा गया कि किसानों की जमीनें ज़ब्त कर ली जायँ, उन्हें नीलाम पर चढ़ाकर अधिक बोली बोलनेवालों को दे दी जाय जिससे वह अधिक मुनाफा उठा सके।

पिट्स इंडिया ऐक्ट में जान-बूझकर रैय्यत की जगह राजा शब्द रखा गया। संक्षेप में जमींदारी प्रथा की यही जड़ है। बंगाल, बिहार और उड़ीसा का कृषकवर्ग अपनी जमीन के मालिकाना हक से महरूम कर दिया गया और उपज के कुछ भाग अनाज के रूप में कर देने का जो उन्हें नैसर्गिक अधिकार प्राप्त था उससे वे वंचित कर दिये गये। १७९८ ई० में लार्ड वेलेज़ली ने मद्रास में जमींदारी प्रथा को जारी करने का हुक्म निकाला यद्यपि वहाँ जमींदार बिलकुल नहीं थे।

जमींदारी प्रथा के शुरू होने से किसानों और खेती की दशा बराबर बिगड़ती गई। कृषि के सुधार के सम्बन्ध में अपनी रिपोर्ट पेश करने के लिए डा० बोयलस्कर के चेयरमैनशिप में एक कमीशन इँगलैंड से भारत भेजा गया। इस कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार पैदावार का अनुमान इस प्रकार है:—

देश	ब्रूशेल्स	प्रतिएकड़
भारत	१०	,,
यूनाइटेड किंगडम	२८	,,
फ्रांस	१७	,,
जर्मनी	१८	,,

विश्लेषण से यह मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान की जमीन वैसी ही उपजाऊ है जैसी उपजाऊ इँगलैंड की है; किन्तु उपज में इतने अन्तर का कारण क्या है? इसका कारण कमीशन के मतानुसार यह है—(१) चरागाह की कमी से बैलों की नस्ल का ह्रास, (२) पूँजी का अभाव, (३) वैज्ञानिक खाद के बिना लगातार फसल काटने से भूमि की उपजाऊ शक्ति कम हो गई है, (४) बीज का अच्छा न मिलना, (५) सिंचाई और पानी के विकास का अभाव, (६) किसानों पर ऋण का बोझ और जमीन के टुकड़े टुकड़े होना और धीरे धीरे जमीन का साहूकारों के हाथ में जाना।

काशी के बाबू श्रीप्रकाश, एम० एल० ए० (केन्द्रीय) जिन्हें किसान-सभाओं के संगठन में विशेष दिलचस्पी है।

औरंगजेब की मृत्यु के बाद से देश में अराजकता और अव्यवस्था फैल गई थी जो १८५७ ई० के विद्रोह के रूप में फूट पड़ी। १७६५ ई० से १८५८ ई० तक हिन्दुस्तान में ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन-अव्यवस्था, अराजकता तथा किसानों के प्रति घोर अन्याय का शासन था। सन् १८५८ ई० में ब्रिटिश राज्य ने हिन्दुस्तान के शासन की बागडोर कम्पनी के हाथ से अपने हाथ में ले ली। इसके बाद से किसानों के साथ कुछ अनुकूलता का व्यवहार शुरू हुआ। १८५९ ई० में किसानों के सम्बन्ध में एक ऐक्ट पास हुआ। इस ऐक्ट की धारा ६ के अनुसार किसान को १२ वर्ष तक किसी जमीन को जोतते रहने और उस पर काबिज रहने पर उस जमीन पर मौरूसी हक़ हासिल हुआ।

इस ऐक्ट के पास होने के पूर्व कम्पनी के राज्य में किसान जमींदार की बिलकुल मर्जी पर थे। उन्हें कोई अधिकार नहीं था। यहाँ तक कि लार्ड बेंटिंग ने १८१२ के नियम ५ में इस बात को साफ तौर से मंजूर किया है कि रैय्यत ज़मींदार की मर्जी पर है। १८२८ ई० के पूर्व जमींदारों-द्वारा काश्तकारों से बिना किसी रोक के अधिक से अधिक लगान वसूल करना और बकाया लगान वसूली में काश्तकार की जायदाद को जब्त कर लेने तथा बिना मुकदमा चलाये उसे कैद करा देने का एकतरफा अधिकार जमींदार को दिया गया था। यही उस समय का कानून था।

१८८५ ई० में मि० ह्यूम तथा सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि नेताओं के उद्योग से कांग्रेस की स्थापना हुई। वास्तव में यह कांग्रेस की संस्था ब्रिटेन और भारतीय जनता के बीच सौहार्द्र स्थापित करने के उद्देश्य से कायम हुई थी। कांग्रेस के दिग्गज नेता प्रारम्भ में ब्रिटिश राज्य के गुणगान गाने से अघाते नहीं थे। कांग्रेस ने प्रारम्भ से ब्रिटेन और भारत के बीच मैत्री की कड़ी का काम किया। इसकी नीति 'भिक्षां देहि' की नीति थी। कांग्रेस प्रस्तावों-द्वारा अपनी माँगें ब्रिटिश सरकार के सामने पेश करती थी। किन्तु कांग्रेस का स्वरूप प्रारम्भ से ही राष्ट्रीय रहा। राष्ट्र की सबसे बड़ी राजनीतिक संस्था का स्वरूप इसने ग्रहण किया। इसमें जाति-पाँति, रंग और धर्म का भेद नहीं था। इसका दरवाजा प्रत्येक भारतीय के लिए खुला हुआ था चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, पारसी या ईसाई। इसके प्रथम उमेशचन्द्र बनर्जी ईसाई थे।

संयुक्त-प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के श्री कृष्णदत्त पालीवाल, एम० एल० ए० अब जेल से छूट कर आ गये हैं और राष्ट्रीय कार्य सँभालने में लग

प्रारम्भ में कांग्रेस का ब्रिटिश की नेकनीयती में बड़ा विश्वास था। धीरे धीरे कांग्रेस नेताओं का यह होता गया और उनका यह पक्का हो गया कि बिना अपने पैर के हुए राजनीतिक अधिकारों की हो सकती। कांग्रेस ने स्वावलंबन ग्रहण कर जनता में अधिकारों की लिए आन्दोलन करना प्रारम्भ किया।

भारतवर्ष चूँकि कृषि प्रधान इसलिए कांग्रेस के लिए यह था कि उसने अपने जीवन के किसानों की समस्या पर ध्यान उस समय थोड़े थोड़े समय के लिए बस्त होता था जिसमें लगान-वृद्धि रैय्यत को बड़ी कठिनाई होती थी। बाद में १८८८ ई० में होनेवाले चौथे अधिवेशन में कांग्रेस समिति को यह काम सौंपा कि इस के विचार करके १८८६ के अधिवेशन अपनी रिपोर्ट पेश करे।

१८८६ ई० में बाबू वैकुंठनाथ इसका उल्लेख करते हुए यह १८६० में दुर्भिक्ष के कारणों की लिए जो कमीशन नियुक्त हुआ दायमी बन्दोबस्त की सिफारिश जिसे भारत-मंत्री ने अपने खरीते कर लिया था। साथ ही उन्होंने बताया कि कभी कभी तो लगान हुई रकम गाँव में पैदा होनेवाली से भी बढ़ जाती है जैसा कि मि० कालविन के सामने आये एक मालूम पड़ता है।

१८९२ ई० में कांग्रेस ने निश्चित और स्थायी करने के लिए

—शेष पृष्ठ १६ पर

संयुक्त-प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान केशवदेव मालवीय, एम० एल० ए० आ गये हैं और कार्यालय का भार

भारत का सूती वस्त्र-व्यवसाय

जापानी पतन से भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

युद्ध के प्रभाव से भारतीय सूती वस्त्र-व्यवसाय जनता की दृष्टि से अधिक लाभदायक सिद्ध नहीं हुआ, किन्तु अब जापान के पराभव से भारत को अपने वस्त्र व्यवसाय को उन्नत बनाने में विशेष सहायता मिलेगी। क्योंकि अब उसे जापान से प्रतिद्वंद्विता न करनी पड़ेगी। रह गया ब्रिटेन, वहाँ उसे भारत द्वारा अपने वस्त्र-व्यवसाय की सफलता में पूर्ण योग नहीं मिल सकता। विद्वान् लेखक ने इस लेख में आंकड़ों से यह सिद्ध किया है कि भारतीय सूती वस्त्र-व्यवसाय का भविष्य उज्ज्वल है।

महात्मा गांधी जो खद्दर को स्वराज्य-प्राप्ति का साधन समझते हैं।

ही भारत सरकार ने जापान का जितना पावना भारत में निकलता था उसे अचल कर दिया और फिर दिसम्बर १९४१ में तो जापान ने युद्ध-घोषणा भी कर दी। इसलिये सन् १९४२-४३ तथा उसके परवर्ती वर्षों में जो कुछ कपड़ा आया वह केवल ब्रिटेन और अमेरिका से ही। दोनों ही देश इधर युद्ध में इतने व्यस्त थे कि भारत की जनता के लिए केवल नाममात्र का वस्त्र-निर्यात कर सके।

इसी काल में भारत ने अपने उत्पादन के निर्यात में भी क्रमशः वृद्धि की। साथ ही १९४२-४३ और उसके परवर्ती काल को छोड़कर विदेश से आये वस्त्रों के पुनर्निर्यात में भी क्रमशः वृद्धि हुई जैसा कि निम्नांकित आँकड़ों से प्रकट है।

भारत से सूती वस्त्र का निर्यात और पुनर्निर्यात

	निर्यात			पुनर्निर्यात		
	करोड़	लाख	गज	करोड़	लाख	गज
१९३७-३८	२४	१३	,,	१	२५	,,
१९३८-३९	१७	७०	,,	१	५७	,,
१९३९-४०	२२	१३	,,	१	६७	,,
१९४०-४१	३९	१	,,	४	३५	,,
१९४१-४२	७७	२५	,,	८	५१	,,
१९४२-४३	८१	९०	,,	१	६३	,,
१९४३-४४	४६	१५	,,		६	,,

पाठक कह सकते हैं कि जब स्वयं भारत में ही सन् १९४१-४२ से ही कपड़े की कमी अनुभव हो रही थी तो उस समय भारतीय सूती मिल-मालिकों और व्यवसायियों को यह उचित नहीं था कि भारत की आवश्यकताओं की अवहेलना करके न केवल भारत का उत्पादन निर्यात करते अपितु विदेश से आये हुए माल का भी निर्यात करते। इसमें सबसे अधिक अखरने की बात सन् १९४२-४३ में हुई क्योंकि उस वर्ष उत्पादन और आयात की मात्रा न्यूनतम थी और निर्यात की मात्रा सब वर्षों से अधिक। दूसरे शब्दों में भारत की नागरिक तथा सैनिक जनता के लिये वस्त्रों में यूरोपीय युद्ध-घोषणा से पूर्व की बनिस्बत २३ प्रतिशत कमी आ गई परन्तु निर्यात के बारे में कहा जा सकता है कि गत विश्वव्यापी युद्ध के पूर्व से ही भारत मिस्र तथा अफ़्रीका के ब्रिटिश, डच, बेलजियम, फ्रेंच उपनिवेशों, ईरान, अरब, बर्मा, लङ्का इत्यादि देशों को सूती वस्त्र-निर्यात करता था परन्तु वहाँ जापानी तथा ब्रिटिश दोनों देशों से भीषण मुकाबला करना पड़ता। अतएव ब्रिटेन के युद्ध में संलग्न रहने के कारण तथा जापान के शत्रु-राष्ट्र होने के नाते वहाँ उन दोनों देशों से वस्त्र न आने की वजह से उन देशों में अपार कष्ट हो रहा था और वस्त्र के मूल्य में असाधारण वृद्धि हो रही थी। इसलिए कष्ट का निवारण करने के लिए तथा भविष्य में इन बाजारों में अपना पैर जमाने के लिए यह आवश्यक था कि भारतीय उद्योगपति इस सुनहरे अवसर से लाभ उठाते। इसीलिए भारतीय जनता की माँग को तीन चौथाई के लगभग पूरा करने के पश्चात् बाकी चौथाई से अधिक भाग उन देशों को निर्यात किया गया। अब जापान की पराजय के बाद दो तीन वर्ष तक और भारत को इन बाजारों में अपने पैर जमाने का मौका मिलेगा क्योंकि इस काल में ब्रिटेन अपनी तथा यूरोप की वस्त्र-आवश्यकता की पूर्ति में व्यस्त रहेगा। तत्पश्चात् वहाँ ब्रिटेन में प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता पड़ेगी। इसी अर्से में भारत पुनः चीन को अपने सूती वस्त्र का निर्यात आरम्भ कर सकता है। चीन के अर्थ-मंत्री डाक्टर वाङ्ग्वेनहाव ने आशा प्रकट की है कि जापानी युद्ध के पश्चात् भारत और चीन का व्यापारिक सम्बन्ध प्रर्याप्त मात्रा में बढ़ जायगा। डाक्टर वाङ्ग ने यह भी कहा है कि चीन भारतीय रुई और सूती वस्त्र के विनिमय में रेशम दे सकता है। हमें भी आशा है कि भारतीय उद्योगपति इस सुझाव से लाभ उठायेंगे।

चीन-जापान युद्ध के पूर्व चीन भारत से केवल १४ या १५ हजार रुपये के सूती वस्त्र मँगाया करता था। चीन ने भारत से सन् १९३६-३७ या १९३७-३८ के मुकाबले सन् १९३८-३९ में एक करोड़ रुपये की अधिक रुई मँगाई थी, यद्यपि उस वर्ष के भारत से चीन में निर्यात की हुई वस्तुओं का मूल्य ढाई करोड़ से भी कम था और रुई उस निर्यात का ७० प्रतिशत थी।

भारत की परिस्थिति भी बड़ी विचित्र है। पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य किसी ग्रह का निवासी इस दशा को देखकर हँसे बिना नहीं रह सकता। लंकाशायर की मिलों में अधिकतर अमेरिकन रुई का प्रयोग होता है जो 'लांग स्टेपल' के नाम से विख्यात है क्योंकि उस रुई का सूत लम्बा निकलता है। हम उसे 'दीर्घसूत्र' रुई कह सकते हैं। भारत में अधिकतर रुई 'शार्ट स्टेपल' या 'लघुसूत्र' के किस्म की होती है। चूँकि भारत ने सूती वस्त्र-व्यवसाय में ब्रिटेन का अनुकरण किया अतएव भारत में जो सूती वस्त्र की मिलें हैं, उनमें भारत की समस्त रुई का पूर्णरूपेण उपयोग नहीं हो सकता। भारत को मिस्र, केनिया, संयुक्तराष्ट्र अमेरिका इत्यादि देशों से अपनी मिलों के लिए रुई मँगवानी पड़ती है और अपनी रुई चीन तथा जापान इत्यादि देशों को निर्यात कर देनी पड़ती थी। क्योंकि

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

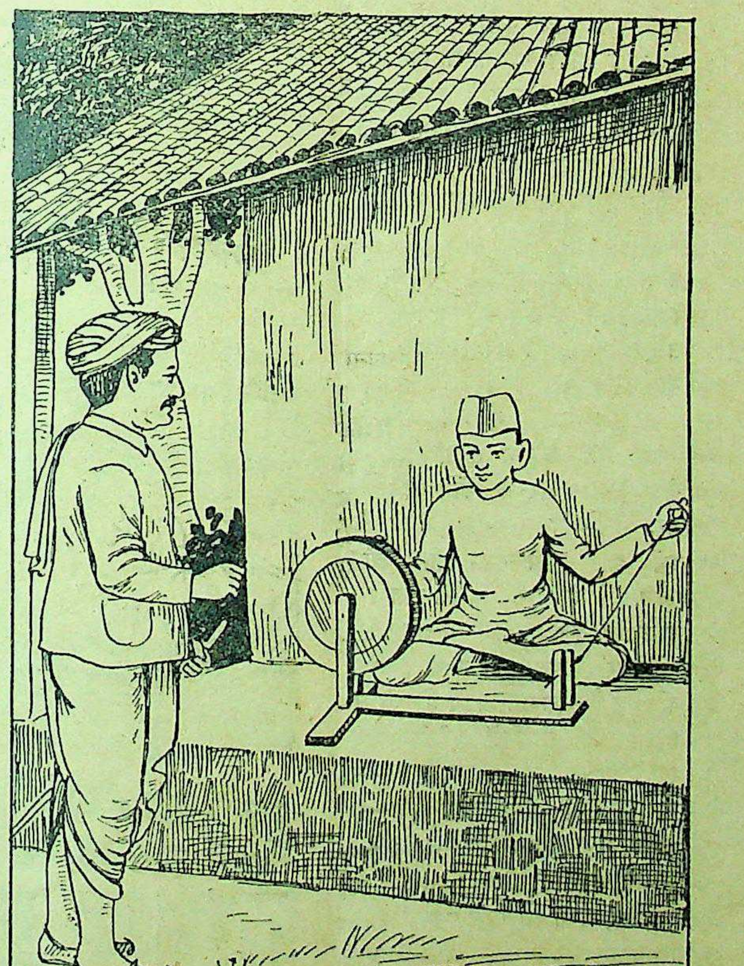

मातृमण्डल

हिटलर की सहचरी—ईमा ब्रायन कौन है ?

आनन्द, ऐश्वर्य और अभिलाषाओं का बलिदान क्यों ?

लेखक, श्री मनमोहन खंडूरी

पिछले वर्षों में विख्यात व्यक्ति दुनियाँ के एक कोने से दूसरे कोने तक तहलका मचानेवाले हिटलर को आज कौन नहीं जानता ? दिन रात अपने कार्य में व्यस्त, नाजी जर्मनी के उत्थान और उसे संसार भर का सिरताज बनाने आदि से उसे फ़ुरसत ही न मिलती थी। तब नारियाँ तो क्या पुरुष ही हिटलर की रूह से काँपते थे। फिर भी जीवन-पर्यन्त हिटलर अकेला न रह सका। नारी के स्वाभाविक आकर्षण ने उस रूखे, हृदयहीन कहलाने वाले हिटलर के मन तक में घर कर लिया।

साधारण २४ वर्षीय, काले बालों वाली 'ईमा ब्रायन' को एक दिन हिटलर का फोटोग्राफ लेने के लिए स्टूडियो के अधिकारी ने किसी तरह तैयार किया, बेचारी 'ईमा' डरती, मरती, घबड़ाती हुई हिटलर के पास तक पहुँच ही गई। जब वह वापस अपने मालिक के पास आई तो 'ईमा ब्रायन' का मुख प्रसन्न था। वह हँसती हुई उमंग में बोली—"हिटलर अपने पोज देने के लिए ही नहीं बैठा, उसने प्रसन्नता के साथ मुझसे अनुरोध भी किया कि कौन सा अच्छा पोज उसके लिए उचित है। इतना ही नहीं वह जितना श्रेष्ठ है उतना ही कोमल, सज्जन और सच्चा भी है। वह साधारणता और प्रसन्नता के साथ हँसता हुआ मुझसे बातें करता रहा। उसने यह भी जानने की इच्छा की कि मेरा कुटुम्ब कौन सा है, कहाँ है, मुझे मेरा यह पेशा कैसा लगता है ? आदि-आदि।"

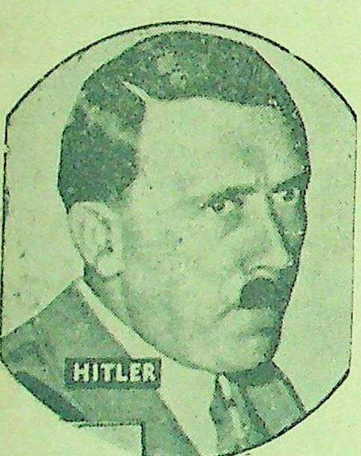

हर हिटलर जिसकी ईमा ब्रायन एक सच्ची सहचरी थी।

* * *

एक दिन 'ईमा ब्रायन' हिटलर की प्राइवेट सेक्रेटरी बन गई। दिन प्रतिदिन उस नारी की अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं और शौक में परिवर्तन आने लगा। 'ईमा' की सहेलियों को उसके इस परिवर्तन पर घोर अचम्भा होने लगा। उन्होंने उससे पूछा भी। ईमा ने कहा—मेरी प्यारी सहेलियो ! मैं अपने होठों में लाली नहीं लगाती हूँ, न चेहरे पर पाउडर, न पैरों में रंग क्योंकि इन सबको मेरा 'फ्यूहरर' (हिटलर) पसन्द नहीं करता। निस्सन्देह आज भी बहुसंख्यक नारियाँ इस पर हँसेंगी और उन्हें यह बात खटकेगी; अपने अधिकारों पर कुठाराघात समझेंगी। परन्तु 'ईमा' ने अपने को हिटलर के अनुकूल बना लिया। जैसा कि एक नारी का कर्त्तव्य है।

एक दिन आया—'ईमा' हिटलर के लिए अच्छे, हितकारी, सच्चे मित्रों को ढूँढ़ निकालती और दुश्मनों का पता लगाती थी। वह नाजी डिक्टेटर के प्राइवेट और आफिशियल फोनों को सुनती, उनका यथोचित उत्तर देती। वह हेडक्वार्टर में अधिकतर सभी विशेष परिषदों, सभाओं और सम्मेलनों में उपस्थित रहती। हिटलर के विशेष सभासदों में 'ईमा' का प्रमुख स्थान था। उसके प्राइवेट और अन्तरंग पत्रों और सम्वादों को वह स्वयं फाड़ कर पढ़ देती और स्वयं उचित उत्तर लिख कर भेज भी देती। सभाओं के लिए तैयारी करती, सोचती और मजमून तैयार करती, हाई कमाण्ड तक के लिए संदेश और आज्ञा भेजती थी।

'ईमा ब्रायन' ने अपने हिटलर को एक पल के लिए भी नहीं छोड़ा। ज्यों ही लड़ाई का पाँसा पल्टा हिटलर को एक सहायक मित्र और शक्ति की निस्सन्देह आवश्यकता पड़ी। 'ईमा' ने यथाशक्ति आखिरी दम तक कर्तव्य निभाया। हिटलर भली भाँति जानता था कि एक नारी की कोमलता, उसकी स्वाभाविक आवश्यकताएँ और इच्छाएँ क्या-क्या होती हैं........। परन्तु 'ईमा' ने उसे इतना समय ही कभी इन बातों के लिए न दिया कि वह चिन्ता प्रदर्शित करे।

'ईमा' स्वयं हिटलर के लिए खाना बनाती। वह क्या और कैसा खाना खायेगा या पसन्द करता है, इस सब का प्रबन्ध वह स्वयं ही करती थी, वह हिटलर का बड़ा ध्यान रखती। उसके मुँह में जाने से पहले स्वयं ईमा भोजन तश्तरियों में से चख लेती थी। संसार के कोने कोने से सौदागर, सेठ-साहूकार भाँति भाँति के डिजाइन और उपहार—बर्लिन और पेरिस जैसे देशों से 'ईमा' के लिए लाते। पर वह उनका क्या करती ? ये सब चीज़ें उसके हिटलर को पसन्द ही न थीं। एक दिन की बात है एक स्त्री अपने मुँह को न रोक सकी। उसने ईमा को प्रतिदिन एक साधारण सफेद गाउन में ही देखा था—तो ईमा को लम्बे हाथों झाड़ दिया—। इसके उत्तर में नम्रतापूर्वक ईमा ने कहा—"बहिन मेरे 'फ्यूहरर' को यही पसन्द है !! मैं क्या करूँ। मैं तो लाल रंग पसन्द करती हूँ। परन्तु उसे अच्छा नहीं लगता।" यह किस्सा तब का ही है जब मित्रसेनाएँ धड़ाधड़ पूर्व, पश्चिम उत्तर और दक्षिण से आगे बढ़ती ही चली जा रही थीं। और हिटलर का पतन अवश्यम्भावी था।

'स्मिरकिङ्ग केरनु' का कहना है—३० अप्रैल १९४५ को मैं 'ईमा ब्रायन' को भूमि के नीचे तहखाने में मिला तो वह अकेली और संकट में पड़ी सी मालूम देती थी, वह चिल्लाती भी थी—"मैं यहीं मर जाऊँगी लेकिन यहाँ से कहीं जाऊँगी नहीं।"

यह है एक साधारण नारी क
जिसने अपने आनन्द, ऐश्वर्य और
लाषाओं का अपने 'फ्यूहरर' हि
लिए बलिदान कर दिया। इसमें
की क्या बात है ? यदि नाजी
हर हिटलर एक साधारण
और झुक गया ! 'ईमा' का
ऐसा था।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी ४ नवम्बर का अंक बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल रहा है

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियों, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अन्य सादे चित्रों से सुसज्जित।

एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिएँ।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करना अवश्यक है!

खुरदरी चिज़ें दांतों को खरोंच देती हैं और खरोंचों से
पैदा होती है। बुरे स्वादवाली चीज़ों से आपके
बदबू आने लगेगी। जो चीज़ें गन्दी रहती हैं
सावधानी से पेक नहीं किया जाता है, वे
होती हैं-क्योंकि बहुधा उनमें कीटाणु
जिससे बीमारी फैलती है। इसलिये,
ऐसी चीज़ों से कभी मत साफ़ कीजिए।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल
यह किसी खरोंच के बिना आपके दांत बहुत
साफ कर देता है। इसका स्वाद और सुगंध
बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है। और ठीक
पेक होने के कारण धूल से बचा रहता है।
अलावा एक डिब्बिये में इतना डेन्टिफ्रिस होता
१०० बार से जादा दांत साफ़ करने के लिये

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

GD. 18-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON,

षड्यंत्र

लेखिका, श्रीमती कमला त्रिवेणीशङ्कर

> पुरुषों में स्त्रियों—विशेष कर पराई स्त्रियों—के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक है। किन्तु समाज या घरेलू परिस्थितियों के भय से जब वह वाह्यरूप से बनने तथा अपने को आदर्शवादी सिद्ध करने, तथा स्वाभाविक को अस्वाभाविक बनाने की चेष्टा करने लगता है तब आश्चर्य अवश्य होता है। इस कहानी में प्रसिद्ध कहानी-लेखिका ने ऐसे ही आदर्शवादी का बड़ा ही मनोरंजक चित्रण किया है जो पढ़ते ही बनता है।

अन्यथा स्त्रियाँ हमारे जीवन में कब नहीं रहतीं, जन्म के बाद से माँ, बहन, पत्नी, बेटी किसी न किसी रूप में तो वह हमारे साथ ही रहती हैं। फिर महिला-मित्र में ही ऐसी क्या विशेषता है। —मैं बोला—

"है, और अवश्य है? आज नहीं पर कभी न कभी तुम्हें मानना होगा?"

"असम्भव है।"

"असम्भव ही कभी सम्भव होता है–" डाक्टर मेहता ने आमलेट का टुकड़ा मुँह में रखते हुए कहा।

"पर तुम्हें शायद किसी महिला ने अब तक मित्र बनाया नहीं"—श्रीमती जी ने मेरी आँखों से दृष्टि मिलाकर कहा।

"सच है पर मेहता के तर्क से मैं कभी भी सहमत नहीं हूँ।"

उस दिन के बाद भी इस विषय को लेकर अकसर मुझमें और कुमकुम में वाद-विवाद होता रहा। उनका कहना था कि अज्ञात रूप से मैं भी महिला-मित्र का इच्छुक अवश्य होऊँगा और उस दिन जो कुछ मैंने कहा था केवल अपने को एक आदर्श-पुरुष की श्रेणी में रखने के लिए। अन्यथा पुरुष स्वभावतः स्त्रियों की ओर आकृष्ट होते ही हैं।

मैंने कहा—"परीक्षा कर देखो?"

"इसकी जरूरत नहीं"—कुमकुम ने कहा। इसके बाद बात आई-गई हो गई।

(२)

फरवरी का आखिरी दिन था। मौसम बराबर पर आ गया था। क्लब का ग्राउन्ड चारों ओर से फूलों से लद गया था, खेलकर पसीने से लथपथ मैं लौट रहा था कि गेट के बाईं ओर लतर की झुरमुट के एक सफेद गुलाब पर नजर पड़ गई। आश्चर्य हुआ लतर में गुलाब? विशेषकर इतने बड़े गुलाब का कोई पौधा अब तक क्लब में था भी नहीं। मैंने सोचा कुमकुम के जूड़े में ये कितने सुन्दर लगेंगे? और कुदकर उसे खींचकर तोड़ना चाहा कि सहसा धानी साड़ी का आँचल फरफरा उठा और एक तरुणी घूमकर खड़ी हो गई।

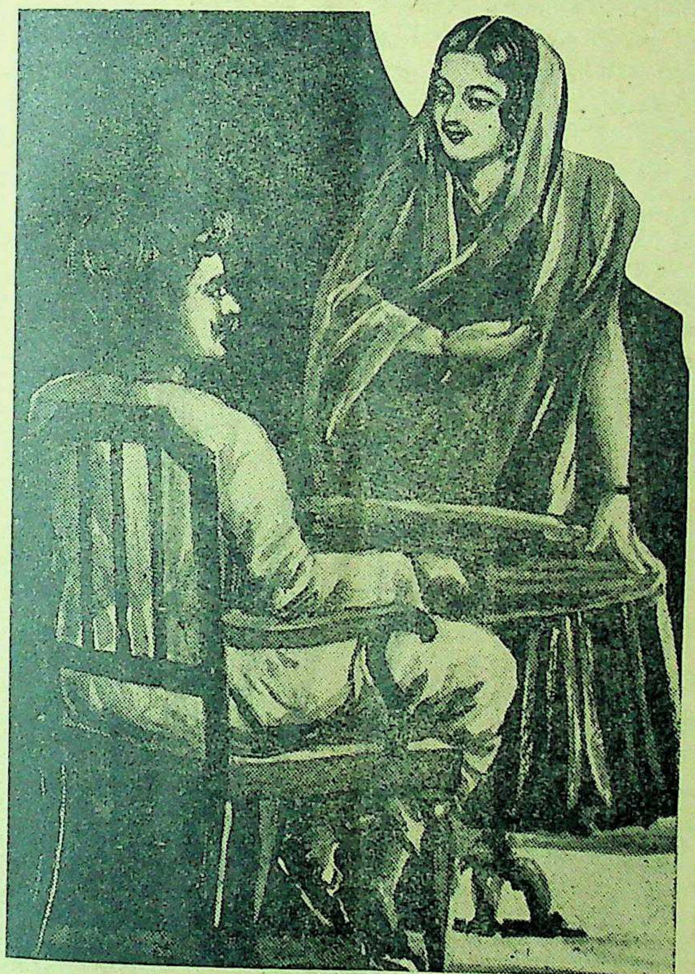

पत्नी के पूछने पर पति अपने को आदर्शवादी सिद्ध करने में......।

"क्या चाहते हैं आप? यह फूल?"—वह बोली। "जी माफ कीजियेगा, भ्रम हुआ मुझे......लतर और आपकी साड़ी का रंग एक-सा ही है।"

कोई बात नहीं......आपको शायद यह फूल बहुत पसन्द है यह लीजिये और जूड़े का फूल उतार कर उसने मेरे सामने कर दिया।

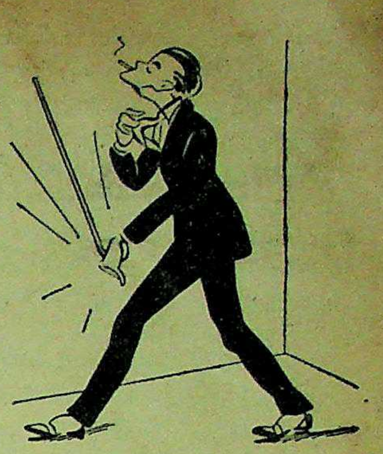

घर के आदर्शवादी बाहर निकलकर सिनेमा की ओर।

"जी नहीं......जी नहीं......इसकी सुन्दरता उसी स्थान पर अधिक है...?" मैं झिझकते हुये बोला।

"नहीं, नहीं, आपके कोट के बटन हॉल में भी ये बहुत सुन्दर लगेंगे"—और मुस्कुराते हुए उसने वह फूल मेरे हाथ में दे दिया।

"धन्यवाद!" मैं बोला। इच्छा हुई कि उसे अपने हाथों उसके जूड़े में लगा दूँ। पर प्रथम परिचय में यह उपयुक्त नहीं लगा। और उस दिन का यह अल्प परिचय एक रहस्यमय घटना का बीजारोपण कर गया। उसने बताया कि मैं डा॰ चौधरी की पौत्री हूँ नैना! मैंने दादा साहब से आपके बारे में कई बार सुना है कि आप में स्पीच देने की अद्भुत कला है और पिछले डिबेट में मैं मौजूद भी थी, इसके लिए आपको बधाई! कल शाम को यदि असुविधा न हो तो चाय पर आने की तकलीफ कीजियेगा, दादा साहब आपसे मिलकर बहुत खुश होंगे।

बीबी का डर कहिये या अपनी झिझक उस दिन शिष्टता के साथ मैंने चाय का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया और वह फूल बटन होल में लगाये गर्व से फूला फूला घर आया।

सामना पड़ते ही मैंने कुमकुम के सामने उसे पेश कर दिया। उसने उलट-पलट कर देखा फिर सूँघा और मुँह बनाकर बोली—"यह दिया किसने?"

"एक साहब ने......बस यही समझ लो, तुम्हारे ही लिए मैं उससे झपट लाया।"

बीबी ने संदिग्ध दृष्टि से देखकर कहा—साहब का दिया तो यह हो ही नहीं सकता। कोकोनट आयल (नारियल का तेल) की बू आ रही है। लगता है किसी के जूड़े में था अब तक?"

"अरे मान लो उन साहब ने ही कोकोनट आयल लगाया हो तो? घर की चीजें खतम भी तो होती रहती हैं।" मैं बोला।

"जी पर वे साहब जूड़ा कहाँ से ले आयेंगे, यह फूल लगता है काफी देर तक जूड़े में रक्खा गया है?"

मुझे आश्चर्य लग रहा था। मैं छः महीने बैठकर सोचता तब भी तेल की बू को पहचानना मेरे लिए मुश्किल था, जहाँ कि श्रीमती जी ने सूँघते ही बता दिया। इसके बाद दो सप्ताह निकल गये, नैना से मेरी मुलाकात एक बार और हुई और वह भी क्लब में! उसी दिन मुझे यह भी मालूम हुआ कि आप खेलने में भी कमाल करती हैं। अच्छे अच्छे खेलनेवालों को भी उन्होंने मात दे दिया। सर्जन साहब हमारे क्लब के

पुराने और सम्मानित सदस्य थे। अब आजकल वृद्धावस्था के कारण आप खेल तो नहीं पाते पर क्लब के कुछ विशेष आयोजन पर निमन्त्रण अवश्य स्वीकार कर लेते हैं। उन्हीं द्वारा यह भी मालूम हुआ कि मिस नैना एम० बी० बी० एस० की चौथे साल की स्टूडेन्ट है।

उस दिन डाक्टर मेहता ने मुझे आड़े हाथों लिया। बोले—"मिस नैना का जादू चल गया न तुम पर!"

"मिस नैना को मालूम है कि मैं शादी-शुदा हूँ और मेरी बीबी एक होनहार जासूस का दिमाग रखती है"।—मैं बोला।

डाक्टर मेहता खिलखिला कर हँस कर बोले—"फिर तो सावधानी से रहना, जासूस बीबी हर हालत में ख़तरनाक है।"

मैंने उन्हें विश्वास दिलाया कि महिला-स्त्रियों से यद्यपि मुझे कुछ खास दिलचस्पी नहीं है लेकिन सावधान रहूँगा।

* * *

मार्च में कुछ जरूरी केस ऐसे इकट्ठे हुए कि मिस नैना तो क्या कुमकुम से भी बात करने की फुर्सत नहीं हो पाती थी। रात को कहीं ग्यारह बारह के बाद मुवक्किल उठते! वे कभी सो गई रहतीं और कभी बच्चों में परेशान रहतीं।

पर २८ मार्च को कोर्ट से लौट कर देखा तो एक लाल लिफाफा रजिस्टर में दबा रक्खा था। निकाल कर पढ़ा तो मालूम हुआ वह सर्जन साहब के यहाँ से आया है। परसों मिस नैना की वर्षगाँठ है और इस उपलक्ष्य में वह एक पार्टी दे रहे हैं, जिसमें मैं भी निमंत्रित हूँ?

कुमकुम ने शायद लिफाफा देखा नहीं था अन्यथा पूछ-ताछ तो अवश्य ही होती। मैंने भी खुदा का शुक्र माना कि सस्ते छूटे अन्यथा कैफियत देते देते जान पर आ बनती।

अब समस्या थी मेरे पास जन्म-दिन पर उपहार देने की। प्रथा का पालन किस प्रकार किया जाय? मिस नैना तो क्या जरूरी खर्च का नाम लेने पर भी रुपये मिलने से रहे। श्रीमती की बातों का जवाब देते देते दिमाग खाली हो जायेगा भले ही।

इस बीच दो दिन की छुट्टियाँ भी आ पड़ी। अस्तु, कोई उपाय सूझ नहीं पड़ता था, मिस नैना के फूल की कीमत मुझे किसी न किसी रूप में चुकाना आवश्यक था। और यही शायद उसका उपयुक्त अवसर भी था। लेकिन कहीं भी कोई गुंजाइश न थी।

मान लीजिये क़र्ज़ हम ले सकते थे, लेकिन उसकी आदत न थी और अगर बात किसी प्रकार बीबी तक जा पहुँची तो जाने क्या गुल खिले! और युद्ध का विषैला गैस 'तोप' और 'बम' से भी खतरनाक है।

मेरी समस्या हल नहीं हुई। तीसरा दिन आ पहुँचा और सिल्क का नया सूट, रेशमी टाई, नये बूट, नाइट कैप पहन कर जब मैं आँगन में आया तो कुमकुम ने अपनी आदत के माफिक पूछा—कहाँ जा रहे हो?

"यह बुरी आदत है, जाते वक्त टोकना?"—मैं बोला।

मूड अच्छा था, श्रीमती जी मुस्कराकर बोलीं—"टोक तो कुछ ख़ास जगहों के लिए होती है। जैसे रिजल्ट लेने जाना या ससुराल जाना या प्रेमिका के पास जाना...।"

"और किसी बड़े मुकदमे में बहस के लिये जाना"...—मैं बात काट कर बोला।

"इसे मैं नहीं मानती वह तो जज के दिमाग की उपज रहती है और इस वक्त भी कोई मुकदमे का काम भी नहीं।"

"अच्छी बात है, खाने का इन्तजार न करना। मेहता ने बोटिङ्ग के लिये बुलाया है, कुछ देर में लौटूँ शायद! तुम खाना खा लेना।"

कुमकुम ने पान देकर विदा किया।

गेट पर सर्जन साहब मिले, गले लगाया, मिस नैना की कोमल देह जैसे फूलों के भार से झुकी पड़ रही थी। कुछ विशेष भाव-भंगी और मुस्कान से वह सब का [illegible] हार भी काफी संख्या में इकट्ठे थे।

बड़ी देर तक बातचीत—लड़ाई और भविष्य में आगे क्या होगा—चलती रही। इस बीच चाय-पानी भी चलता रहा, काफी आदमी इकट्ठे थे। कई लोगों का परिचय हुआ।

इसके बाद मिस नैना ने बताया—"हमारा एक छोटा-सा क्रिकेट ग्राउंड है। हमारे घर के बड़े, बूढ़े, बच्चे सभी उसमें खेलते हैं, आप देख कर जरूर खुश होंगे।" जरूर चलिये? दो तीन लड़कियों के साथ हम लोग उधर ही चले।

'उपहार' की कामना फिर प्रबल हुई। सहसा एक बात याद आई अपनी अँगूठी तो दी ही जा सकती है। 'खो गई?' कुछ संजीदा होकर कहने पर कुमकम को विश्वास करना ही पड़ेगा। और अँगूठी है भी हल्के दामों की।

दो बार उँगली से निकाल निकालकर हमने फिर पहन ली—आज तक अँगूठी किसी को दी न थी, अँगूठी का मतलब कुछ और का और न हो जाये।

क्रिकेट ग्राउंड सचमुच सुन्दर था और मिस नैना का हर एक चीज के लिये सुलझाते हुये बतलाना और भी आकर्षक था। फूलों के पौधे कब कहाँ से मँगाये गये, कैसे लगाये गये, कब फूलते हैं, कब झड़ते हैं आदि बहुत सी बातें वे मुझे और अपनी सहेलियों को बतलाती रहीं। अब इधर आकर रोशनी खतम हो गई थी, बादल के टुकड़ों से छन कर चाँदनी हल्का-सा प्रकाश दे रही थी। एक एक कर उसकी सहेलियाँ, पीछे छूटने लगीं और मैंने देखा अब मैं हूँ और मेरे कुछ पीछे पीछे कभी बगल से चलती मिस नैना।

उपयुक्त अवसर था या मेरी बेवकूफी, अँगूठी उतारकर मैंने कहा—आज की हार्दिक शुभ कामनाओं के साथ तुच्छ उपहार भी आपको स्वीकार पड़ेगा।

"धन्यवाद!" मिस नैना ने बेतकल्लुफी से हाथ बढ़ा दिया। मैंने लेकर अँगूठी पहना दी। इसके लोग लौट पड़े। छूटी हुई सभी सहेलियाँ फिर साथ हो गईं।

रात १२ बजे घर लौटे। भेंट की हुई माला के फूल अब थे! कुमकुम ने करवट ली पर ठीक नहीं समझा।

सुबह नींद खुली। कुमकुम आँखें बन्द किये पड़ी थी। मैंने आँखों से देखा—मेरी अँगूठी मँझली उँगली में पड़ी चमक रही है। चाप उठ कर मैं ड्राइङ्गरूम में

उस दिन आँखें बचाते बचाते जब कोर्ट से लौटा तो देखा कि एक सी मंडली मेरे घर में भी उपस्थित जिसमें प्रमुख थे डाक्टर मेहता। के साथ मैंने देखा कि मिस नैना से घुली मिली बड़ी बेतकल्लुफी से कर रही है!

उस दिन मैं कितना जानकर कि अँगूठी मैंने नैना के बल्कि कुमकम की ही उँगलियों में थी और जो कुछ भी इस कुमकुम के षड्यंत्र से हुआ!

डाक्टर मेहता ने मुट्ठियाँ कहा—मेरी बात तुम्हें माननी पड़ेगी मानता हूँ, पर कुमकम के अपनी सफाई इस बार नहीं दे क्योंकि मिस नैना विवाहित ही बच्चों की मा भी थीं और अर्से कालेज में साथ रह चुकी थीं।

मैंने आगे के लिये कसम खा

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफासफाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी
* जुकाम
* यक्ष्मा
* ब्रांकाइटिस
* निमोनिया
* पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि-विक्रेताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें:—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

फिल्मस्टारों की तरह त्वचा की रक्षा कीजिये।
शोभना समर्थ
शोभना के रोज़ाना सौंदर्य प्रसाधन की एक बात है—सुबह शाम लक्स टॉयलेट साबुन का तेज़ फेन अपने शरीर में मलना, फिर साफ पानीसे धोना। वह कहती है—"इस सरल नियमित रीतिसे मेरी अंगकांति मृदु, मुलायम और बेदाग रहती है"। हमारी बहुतेरी फिल्म स्टार यही कहती है।
लक्स टॉयलेट साबुन

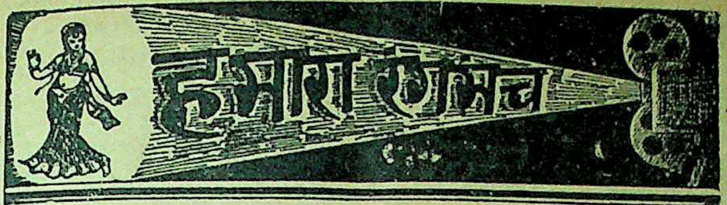

प्रसिद्ध अभिनेत्री और संगीतज्ञा सुलताना!

अभिनय कला सम्बन्धी मनोरंजक और सुंदर इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

उन्होंने हम लोगों को देख लिया था। मैंने देखा—वह एक खूबसूरत बीस वर्ष की तरुण युवती हैं।

मिस सुलताना ने हँसते हुए हम दोनों से कहा—आइये "गेस्ट रूम" में, वहीं हम लोगों की वार्ता हो। सुलताना के पीछे-पीछे हम उनके "गेस्ट रूम" में गये ठीक उसी तरह जिस प्रकार हिन्दुस्तान गांधी जी के पीछे पीछे जा रहा है। "गेस्ट रूम" में पहुँचकर हम सब मखमली गद्देदार आरामकुर्सी पर बैठ गये। डाक्टर साहब ने मेरा परिचय मिस सुलताना से कराया। इसके बाद हम लोग बराबर मिलते रहे और दस दिन तक वहाँ रहे भी।

इन दस दिनों के अन्दर मेरी और सुलताना से किन किन विषयों पर वार्ता हुई, वह इस प्रकार है।

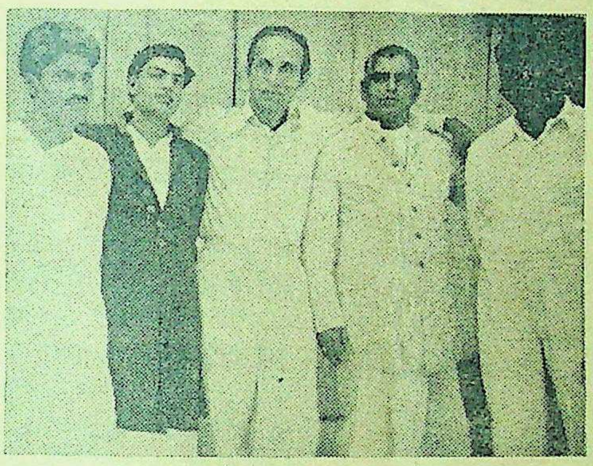

बंबई के अमर स्टूडियो में—दादा गुंजाल (निर्देशक) ब्रजेन्द्र गौड़ (गीत और संवाद लेखक) सुरेन्द्र देसाई एम० ए० (निर्देशक) ए० पी० कपूर (निर्देशक) पं० गोविन्दराम (संगीत निर्देशक)।

प्रश्न—फिल्मों और नाटकों के देखने का क्या प्रयोजन है? क्या मनोरञ्जन को हम फिल्मों और नाटकों से निकाल नहीं सकते? आदर्श रक्षा के लिए क्या हम इतना भी त्याग नहीं कर सकते?

उत्तर—फिल्मों और नाटकों के देखने का मुख्य प्रयोजन आदर्श के घूँघट में से मनोरञ्जन का दर्शन करना है। मनोरञ्जन को हम फिल्मों और नाटकों से निकाल नहीं सकते। मैं तो यह कहती हूँ कि मनोरञ्जन के धरातल पर नैतिक आदर्श का प्रासाद बनवाना चाहिये। जो लोग मनोरञ्जन के विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द करते हैं वह मानो जानते हुए पतन के गढ़े में गिरते हैं। वास्तव में मनोरञ्जन फिल्मों का प्राण है। यदि हम दुनियाँ को विकासवादी, आदर्शवादी, प्रगतिवादी देखना चाहते हैं तो हमें मनोरञ्जन को मृत्यु के मुख में नहीं झोंक देना चाहिये बल्कि हमें उसके वर्तमान स्वरूप में सुधार करना चाहिये। मनोरञ्जन के स्वरूप में जो गन्दगी जम गई है उसे हमें दुरुस्त करना चाहिए। मेरा तो यह भी विश्वास है कि चरित्र-निर्माण में भी मनोरञ्जन सम्बल का कार्य करता है।

प्रश्न—क्या विवाह के लिये पहले प्रेम होना आवश्यक है?

उत्तर—जी हाँ! मैं तो प्रेम के बिना विवाह व्यभिचार समझती हूँ। बिना प्रेम के विवाह, विवाह नहीं कहला सकता। मैं तो प्रेम का दूसरा नाम ही विवाह मानती हूँ। जिस विवाह की नींव प्रेम के सुन्दर धरातल पर नहीं रक्खी गई है वह विवाह, विवाह नहीं, बल्कि एक जीवन-बन्धन है। वह दाम्पत्य-जीवन को असहनीय वेदना से कस देता है। प्रेम करना जीवन के लिए परम आवश्यक है लेकिन शादी करना उतना जरूरी नहीं। जहाँ प्रेम है वहीं शादी का वैभव भी विकसित होता है। आजकल की हिन्दुस्तान की वैवाहिक पद्धति के मैं बिलकुल खिलाफ हूँ। क्योंकि इसमें भारतीय नारी को अपने जीवन-आकांक्षाओं को बलिदान करना होता है। इसलिए मैं यह अच्छा समझती हूँ कि आजकल के विवाह से तो लड़की को कुँवारी रहना चाहिये। आज-कल का विवाह पाप का परिचायक है। जिस विवाह के अन्दर जीवन में शान्ति नहीं आई तो ऐसे विवाह करने से क्या लाभ? अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

प्रश्न—आपकी तालीम कहाँ तक है?

उत्तर—मैंने उर्दू, फारसी, अरबी और कुछ अँगरेजी का अध्ययन किया है। लेकिन यह सब अध्ययन प्राइवेट ही हुआ है। अब तो मैं हिन्दी भी जान गई हूँ जब से फिल्मी-संसार में आई हूँ।

प्रश्न—आप फिल्मी-संसार में किस प्रकार आईं?

उत्तर—मुझे नाच-गाने का शौक प्रारम्भ से ही था। मेरे पिता लाहौर के एक लखपती हैं। पिता से मेरी किसी बात पर अनबन हो गई। उन्होंने मेरी सहायता करना बन्द कर दिया। मैं संकट में पड़ गई। यह मेरा पहला मौका था कि मेरे जीवन में आर्थिक समस्या का प्रश्न उठा। मैं कुछ घबड़ा गई। लेकिन मेरी प्रिय सहेली मुख्तार बेगम से एकाएक भेंट हो गई, जो उन दिनों कलकत्ते से लाहौर में आई हुई थी। उन्होंने मुझे फिल्मी-संसार में आने के लिए मजबूर किया। मैं उनकी बात को न टाल सकी। क्योंकि मेरे सामने आर्थिक कठिनाइयाँ थीं। मैं उनके साथ कलकत्ता चली गई और वहाँ जाकर मैंने "हालीवुड थियेट्रिकल कम्पनी" में नौकरी कर ली। तभी से मैं बराबर फिल्मी-संसार में कार्य कर रही हूँ।

प्रश्न—आपके पिता का नाम क्या है, और आप अपना भी पूरा नाम बतलाइये?

उत्तर—मेरे पिता का नाम चौधरी दीनमुहम्मद है, और मेरा पूरा नाम फारुख सुलताना है।

प्रश्न—आप अपनी सर्वप्रिय फिल्मी कृति बतलाइयेगा।

उत्तर—अपनी किसी भी फिल्म को मैं सर्वप्रिय नहीं कह सकती और न मुझे कहने का अधिकार ही है। किसी कृति को सर्वप्रिय कहने का स्वत्व तो जनता को है। वही फिल्म के अच्छे-बुरे का निर्णय कर सकती है। हाँ, मैं स्वयं अपनी दो पुरानी फिल्मों को विशेष पसन्द करती हूँ। इसका यह मतलब नहीं कि जनता भी उन्हीं फिल्मों को पसन्द करेगी। वह फिल्में हैं—"मतवाली मीरा" और "तकदीर की तोप"।

प्रश्न—आपकी हाबी क्या क्या हैं?

उत्तर—मुझे देश-विदेश की यात्रा करना अधिक प्रिय है। अब तक फिलिस्तीन, मिस्र, श्याम, ईरान, अरब और अपने हिन्दुस्तान के करीब करीब सभी नगरों में मैं अच्छी तरह घूमी हूँ। अपने पिता के साथ मैं मिस्र में बहुत दिनों तक रही और वहाँ के साहित्य का भी अध्ययन किया। मुझे नई नई पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक है। कहानियाँ पढ़ना तो मुझे अधिक भाता है। कहानियाँ पढ़ते वक्त तो मैं खाना-पीना भी भूल जाती हूँ।

प्रश्न—आप किस प्रकार की भूमिका में कार्य करना अधिक पसन्द करती हैं?

उत्तर—मुझे ट्रेजडी की भूमिका में काम करना अधिक प्रिय लगता है। जितना सीन हृदयद्रावक होगा उतना ही मेरा कार्य बेहतरीन होगा। दुखान्त जिन्दगी के चढ़ाव-उतार का चित्रण करने में मुझे अधिक सन्तोष होता है। मैं सुखान्त खेल में उतना श्रेष्ठ अभिनय नहीं कर सकती। यही मेरे अभिनय में कमी है।

प्रश्न—आप ड्रेसिंग में किस प्रकार का स्टाइल पसन्द करती हैं?

उत्तर—मुझे हिन्दुस्तानी स्टाइल पसन्द है। मैं विदेशी ड्रेसिंग से नफरत करती हूँ। मुझे अपने देश के विभिन्न ड्रेसों पर गौरव है। मुझे प्राइवेट जीवन में पञ्जाबी ड्रेस अधिक अच्छा लगता है और यही पहिनती भी हूँ।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है—और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

संपादक के नाम चिट्ठियां

पतियों को प्रसन्न रखना जरूरी क्यों है ?

आज हमारी सुकुमार भावनायें और महान् उद्देश्य खो गये हैं। आज हम भोग की वस्तु समझी जाती हैं। पुरुष पग-पग पर हमें लांछित और दलित करने में ही अपना गौरव समझते हैं। परन्तु प्रश्न उठता है कि इसका उपाय क्या है ? हमारी "विदुषी" बहिनें बिना संकोच कह देंगी कि जो हमारी इज़्ज़त नहीं करते, जो सहधर्मिणी व गृहलक्ष्मी होते हुए हमारा आदर नहीं करते, उनसे सम्बन्ध-विच्छेद कर देना चाहिए। हममें भी शक्ति है। जब हमारे ही अधिकार हमें नहीं मिलते तब हम क्रान्ति करेंगी।

किन्तु हम स्त्रियाँ पत्नीत्व के लिए ही नहीं पैदा होती हैं। पत्नी होने ही से हमारा उत्तरदायित्व नहीं पूरा हो जाता। नारी उत्सर्ग के लिए उत्पन्न होती है। वह माता है। उसके ऊपर समाज का क्या सम्पूर्ण राष्ट्र का उत्तरदायित्व है। नारी पूरी सृष्टि की निर्माता है। अपनी विदुषी बहिनों के मुख से यह सुन कर "यदि पति से नहीं बनती तो सम्बन्ध-विच्छेद कर दो" दुख होता है। जिसके हाथ में भावी सन्तान का भविष्य है उनके विचार इतने उच्छृङ्खल ? हमारे विचारों में दृढ़ता होनी चाहिए जिससे रास्ते के काँटों को उखाड़कर हम अपना जीवन-पथ सुगम बना सकें।

पुरुषों और समाज के ऊपर हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हमें फिर से अपने अधिकारों को समझना है जिन्हें हम अपनी उदासीनता से खो चुकी हैं। अब उन्हें अपना कण कण मिटा कर भी वापस लेना है, जिससे हमारी भावी संतान उससे वंचित न रह सके।

जब हम एक व्यक्ति को ही अपने अनुकूल नहीं बना सकतीं तो समाज और राष्ट्र की बात तो दूर ही रहेगी। नारी के अधिकारों का कोई क्षेत्र नहीं है। प्रत्येक स्त्री पति के ऊपर पूरा अधिकार चाहती है; परन्तु क्रान्ति और संघर्ष से केवल अधिकार मिल सकते हैं हृदय नहीं जीता जा सकता।

उन्नाव, —कुसुमकुमारी सक्सेना
२० अगस्त, ४५

* * *

प्रेमी-अभिनन्दन ग्रन्थ

हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्रकाशक और विद्वान् लेखक श्री नाथूराम जी प्रेमी के सम्मानार्थ जिस अभिनन्दन ग्रन्थ का आयोजन किया गया है, उसकी अधिकांश सामग्री संकलित हो चुकी है। आशा की जाती है कि शेष सामग्री इस मास के अंत तक पूर्ण हो जायगी और ग्रन्थ सितम्बर के मध्य में प्रेस में दे दिया जायगा। ग्रन्थ अठारह विभागों में विभक्त है।

संस्मरण और जीवनी, भारतीय संस्कृति, जैन दर्शन, संस्कृत और प्राकृत साहित्य, भाषा विज्ञान, कला, पुरातत्त्व, हिन्दी-साहित्य (गद्य), हिन्दी साहित्य (पद्य), जैन साहित्य, बँगला साहित्य, गुजराती साहित्य, मराठी साहित्य, अँगरेजी साहित्य, साहित्य प्रकाशन, बुन्देलखंड प्रान्त, समाज सेवा, नारी जगत।

सामग्री के संकलन और संपादन का कार्य हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाओं के लगभग चार दर्जन विद्वान् कर रहे हैं। ग्रन्थ करीब एक हजार पृष्ठ का होगा और उसका मूल्य अनुमानतः पन्द्रह रुपये होगा। लेकिन जनसाधारण की सुविधा को ध्यान में रख कर निश्चय किया गया है कि जो भाई दो रुपये पेशगी भेज कर अपनी प्रति ३० सितम्बर तक सुरक्षित करा लेंगे, उन्हें वह दस रुपये में ही दिया जायगा। कागज की कमी और प्रेस की कठिनाई के कारण कम ही प्रतियाँ छपवाई जा रही हैं। अतः साहित्य-प्रेमियों से अनुरोध है कि वे अपनी प्रति शीघ्र ही रिजर्व करा लें। ग्रन्थ के अक्तूबर में तैयार हो जाने की संभावना है।

टीकमगढ़, —यशपाल जैन, बी० ए०,
सी० आई० एल-एल० बी०,

* * *

सम्मेलन का सभापतित्व

हिन्दी की वर्तमान गति-विधि को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उदयपुर-अधिवेशन के लिये ऐसे सभापति की आवश्यकता है जो अपने व्यक्तित्व, प्रभाव और ज्ञान-मान के द्वारा ऐसा मार्ग निर्देश करे कि हिन्दुस्तानी, राष्ट्र-भाषा, लिपि का प्रश्न, प्रान्तीय भाषा और जनपदीय आन्दोलन जैसी गम्भीर समस्याओं का सम्यक् समाधान हो सके। वह एक क्रियात्मक योजना के आधार पर जनता और राष्ट्र को अपनी शक्ति का परिचय दे सके। सम्मेलन का संचालन कुछ नव-निर्मित नियमों पर आधारित हो जिससे जगत पूज्य प्रताप की वीर प्रसविनी जन्मभूमि उदयपुर में एक नवीन समारोह के साथ नवशक्ति का प्रदर्शन हो। मैं इन्हीं उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ सभापतियों के नाम प्रस्तावित करता हूँ—श्री जवाहरलाल नेहरू, श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री धीरेन्द्र वर्म्मा, श्री गौरीशंकर ओझा, श्री बनारसीदास चतुर्वेदी, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री रायकृष्णदास, श्री सुमित्रानन्दन पंत।

सांभरझील, —सुधीर त्यागी, एम० ए०

* * *

बाल-साहित्य पर जैन पुरस्कार

'हिन्दी बाल-साहित्य का आलोचनात्मक और तुलनात्मक सिंहावलोकन तथा उसके भावी समृद्धि के सुझाव, इस विषय पर सर्वोत्तम निबन्ध लिखनेवाले को कानपुर के श्री मनोहरलाल जैन द्वारा १००) का पुरस्कार प्रदान किया जायगा। निबन्ध लगभग ४००० शब्दों का हो। निबन्ध में हिन्दी बाल-साहित्य की तुलना अँगरेजी बाल-साहित्य से की जानी चाहिए। बालकों की तीन मुख्य अवस्थाओं (शैशव, बाल्यकाल तथा किशोरावस्था) के अनुकूल साहित्य पर पूर्ण विशद विवेचन होना चाहिए। यदि निबन्ध हिन्दी लिपि में लिखा जाय तो उसका अँगरेजी अनुवाद आना आवश्यक है ताकि अन्य भाषाओं के बालसाहित्य पर आमंत्रित निबन्धों का तुलनात्मक अध्ययन हो सके।

निबंध १५ अक्टूबर ४५ तक श्री कृष्णविनायक फड़के, शैशव मंत्री तथा गृह शिक्षा विभाग, अखिल
शिक्षा सम्मेलन, श्रद्धानन्द पार्क,
के पते पर आने चाहिएँ।

—कृष्ण विनायक फड़के,

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी
और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से
प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान
बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक
चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों
के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-
में अमर हैं। मूल्य २)

प्रकाशक—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

अब ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) वैसी ही बहुत अच्छी शर्तों पर आगामी सूचना तक मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी ख़ज़ाने से खरीद लें।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को आपको घर बैठे पहुँच जाया करेगा।

इस ऋण में आप जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।

आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ऋण की असल रक़म १५ अगस्त, १९५९ के बाद, किन्तु १५ अगस्त, १९६१ से पहले पहले वापस मिल जायगी।

आपकी पूँजी आपको हर समय वापस मिल सकती है, क्योंकि यह लोन मार्केट में आसानी से बेचा जा सकता है। अभी आवेदन कीजिए।

ऋण के जिन ख़रीदारों पर इनकम-टैक्स लागू नही होता अथवा कम दर पर लागू होता है, वे टैक्स का रुपया वापस ले सकते हैं।

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

(१२)

दिन प्रातःकाल भैरव श्मशान से लौटा....उसकी शान्त मूर्ति थी! वेदना की तपस्या से, पर्वत की पानी होकर बह चली थी। थके हुए असहाय सास के पैरों पर गिरकर करुण-कण्ठ से बोला—

के हृदय में गत दुख की स्मृति जाग गई! दूसरे ही के जल में अस्पष्ट छायालोक अदृश्य हो गया। कहा—अब मुझे आज्ञा दीजिए। संसार में नहीं

का हृदय व्यथा से पूर्ण हो गया। उसने कहा—क्या ?

कार करके रो उठा। अब मैं यहाँ नहीं रह सकूँगा। वैराग्य लूँगा, योग साधूँगा, खूब संसार देख लिया! ने लगी। रज्जो जड़काष्ठ हो रही थी। उसने दृष्टि से भैरव को देखा। मन में घृणा उत्पन्न हो स्थान को त्याग कर आँगन की ओर चली गई।

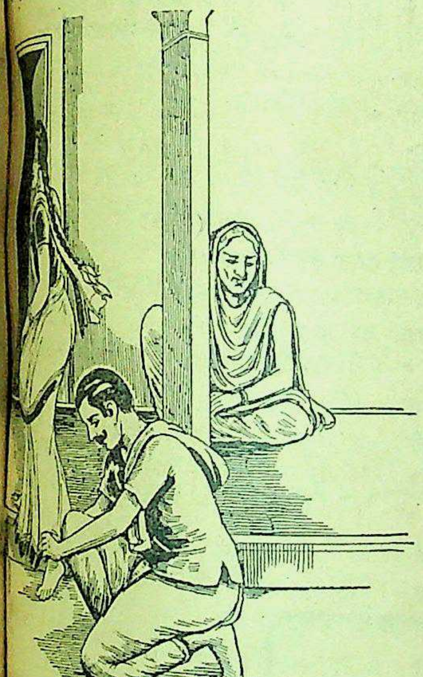

हटना चाहती थी। भैरव ने कसकर पैर पकड़ लिये और मुझे क्षमा कर दो, नहीं तो मैं पैर नहीं छोड़ूँगा।

आँसुओं का बाँध टूट गया था। चिल्ला-चिल्ला कर बुढ़िया उसके आँसू पोंछने लगी। सोच रही थी मेरी यहाँ सर्वस्व रहा है। सैकड़ों दुख पाकर भी उसने मुझसे कुछ नहीं कहा। सास ने जामाता को समझाया-बुझाया। प्रायः तीन बजे भैरव ने चीज़-वस्तु प्रारम्भ कर दिया। सास ने पूछा—क्या करते हो

तो इस घर में एक पल नहीं रहूँगा। मेरे लल्लू चारों ओर है। मैं योगी हो जाऊँगा, नहीं तो दूँगा। यह कहकर भैरव दोनों हाथों से जोर से लगा।

हाथ पकड़ लिये और कहा—हाय बेटा! बुढ़िया ने पुकारा—रज्जो, अरे देख तो आकर

घृणापूर्ण दृष्टि से दूर ही से भैरव को देखा। लक्ष्य किया और दौड़कर रज्जो के पैरों पर अपराध क्षमा करो, तुम मेरी 'छोटी बहिन हो। इसी कारण मेरा लल्लू मुझे छोड़ गया।

रज्जो वहाँ से हटना चाहती थी। भैरव ने कसकर पैर पकड़ लिये और कहा—पहले मुझे क्षमा कर दो, नहीं तो मैं पैर नहीं छोड़ूँगा।

रज्जो ने दोनों हाथ पकड़कर उसको उठाया और कहा—जीजा जी क्या पागल हो गये हो? मैं वह सब भूल गई।

क्षमा, क्षमा, क्षमा चाहता हूँ। बोलो अब क्षमा कर दिया? कहकर और चिल्ला उठा।

अन्ततोगत्वा रज्जो को कहना ही पड़ा—क्षमा कर दिया भाई क्षमा कर दिया!

परम शान्त निश्वास छोड़कर भैरव ने 'ओह!' किया और कहा—चलो तुम लोगों को चन्दू चाचा के यहाँ कानपुर छोड़ आवें।

बुढ़िया ने कहा—तुम भी चलो बेटा। अपनी पिता-पितामह की देहली पर तुम भी रहना।

उसने कहा—न-न, वहाँ का घर तो मुझे 'खाऊँ-खाऊँ' करेगा। चलो तुम लोगों को वहीं पहुँचा दूँ, जिन लोगों ने तुम्हें सिर पर उठाकर रखा है। मैं विपत्ति-ग्रस्त हूँ; तुम लोगों को और क्यों कष्ट दूँ?

बुढ़िया ने कहा—ऐसा भी कहीं होता है बेटा? इस वयस में कहीं योग-बैराग लिया जाता है?

भैरव ने कहा—न न न, अब मुझे गृहस्थी में न फँसाओ। मेरा हृदय दग्ध हो गया है।

बुढ़िया ने कहा—ऐसा भी कहीं होता है बेटा, छिः! मेरी दशा क्या नहीं हो चुकी? तो भी.........

भैरव ने कहा—अब कोई उपाय नहीं। रज्जो को लेकर आप रहें और उसे विवाह दें और वह सुखी हो और उसका सुख देखकर दो दिन आप भी सुखी हो लें। मुझे इस घर में अब नहीं रहना है। मैंने सब प्रबन्ध कर लिया है। गाड़ी द्वार पर आ गई है। चलो तुम लोगों को कानपुर पहुँचा दूँ। यह घर चिता है चिता! इसमें हहर-हहर आग जल रही है। चलो रज्जो चलो.........

रज्जो भी इस घर को विष जैसा समझ रही थी। लल्लू इसी में विलीन हो गया।

बुढ़िया ने बाहर निकलकर देखा तो एक बैलगाड़ी और बैलों की जोड़ी खड़ी थी। उसने कहा—यह क्या बेटा? रेल, बस कुछ नहीं है क्या?

भैरव ने कहा—इतनी सब गृहस्थी है, रेल और बस से क्या-क्या ले चलेंगे? और उस पर छुट्टियों की भीड़! गाड़ी से ही रातोरात निकल चलेंगे और खर्चा भी कम लगेगा।

इन लोगों को लेकर गाड़ी कानपुर के रास्ते पर चल पड़ी। सूर्य डूब चुका था। प्रायः दीपक जलने लगे थे। मार्ग में एक बार घने पेड़ों का झुरमुट मिला, उसके उपरान्त लम्बा-चौड़ा मैदान। बड़ी सड़क को छोड़कर गाड़ी एक कच्चे रास्ते पर चलने लगी। गाड़ी घूमते ही भैरव ने कहा—ठीक इधर से बहुत जल्दी पुल पर निकल चलेंगे। मार्ग में पेड़ों के पास से झींगुरों ने अपनी रागिनी प्रारम्भ कर दी थी। गाड़ी अविराम गति से चली जा रही थी। बहुत दूर से, किसी मन्दिर में होता हुआ हरिकीर्तन सुनाई दे रहा था। चार-पाँच घण्टे चलने पर भी न तो गङ्गा दिखाई दीं न गङ्गा का पुल और न रेल की पटरी। अनुमानतः ग्यारह बजनेवाले थे कि गाड़ीवान ने पुकारा—बाबू जी, बाबू जी,—भैरव औंघ रहा था। बुढ़िया ने उसको हाथ से जगाते हुए कहा—देखो बेटा गाड़ीवाला बुला रहा है। भैरव ने आँखें मिचमिचाते हुए कहा—क्या है?

गाड़ीवान ने कहा—अब बैलन ते नहीं चला जाति है। साहेब अब तौ सबेरे पहुँचाउब।

भैरव ने उसे डपटते हुए कहा—बड़ा अंधेर किया रे! यह चारों ओर उजाड़ ही उजाड़। यहाँ ठहरेंगे कहाँ?

भयभीत रज्जो से भी बिना बोले न रहा गया। उसने कहा—जो भी हो, जैसे भी हो इससे कहो कि कानपुर तक पहुँचा दे। हम इसे दस रुपये पुरस्कार देंगी, जीजा जी!

भैरव ने कहा—सुनता है रे! पुरस्कार मिलेगा। यह जंगली रास्ता छोड़कर बड़ी सड़क से ले चल।

गाड़ीवान ने कहा—मालिक हम का तौ रतौंधी आवति है। कहाँ खाई-खत्ती माँ डारि देई। तुम्हरीउ जान जाई, हमरीउ जान जाई। सबेरे तक धीरज धरो।

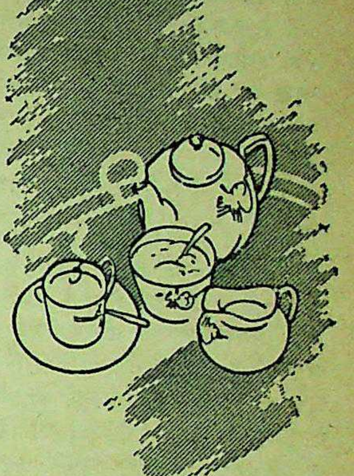

चाय
शान्तिदायक है

भारत का
सबसे
बढ़कर आराम
देनेवाला पेय
★

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IM 197

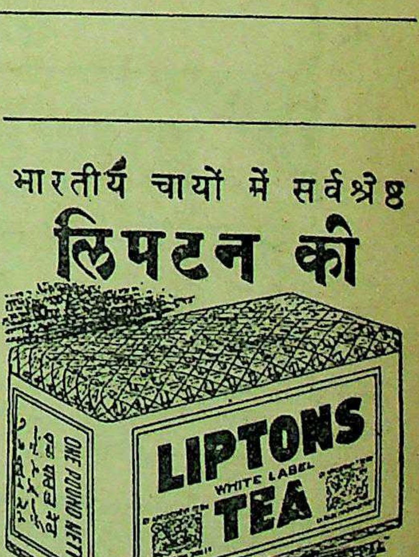

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ
लिपटन की

व्हाइट लेबुल चाय

LTK 80

भैरव ने कहा—बड़ी कठिनाई है क्या करें?

रज्जो ने कहा—न, जीजा जी, इससे कहो गाड़ी चलावे।

भैरव के फिर कहने पर उसने उत्तर दिया—हमरे गोरू मरिजैहैं साहेब, जौ कहूँ ऊँचे-खाले पाँव परिगा तौ बड़ी विपति होई।

रज्जो ने गाड़ीवान को स्वयं डाँटते हुए कहा—तूने बड़ी सड़क क्यों छोड़ दी?

गाड़ीवान ने कहा—हः गोला ते आवइँ माँ तौ इत्ती राहौ ना कटति।

रज्जो ने कहा—यहाँ रहेंगी कहाँ?

तुम स्वावौ। हम जागि ल्याब। कौनौ डेरु नहीं परा है।

मैं अभी जाता हूँ। देखता हूँ यहाँ निकट कोई ठहरने का स्थान है कि नहीं! कहकर उस अन्धकार में भैरव आँखों से ओझल हो गया। रज्जो को जैसे काठ मार गया हो। आध घंटे के बाद भैरव लौटकर आया और उसने कहा—चलो यहीं पर एक ब्राह्मण का घर है। वहीं ठहरेंगे।

रज्जो गाड़ी से उतर पड़ी। क्योंकि इस खुले हुए लम्बे-चौड़े मैदान में उसे चोर-डाकुओं का बहुत भय लग रहा था।

ब्राह्मण के घर के द्वार के कमरे में शीतलपाटी बिछाकर रज्जो अपनी माँ के साथ आकर बैठ गई। भैरव ने कहा—मैं गाड़ी पर जाकर सोता हूँ। तुम लोग यहीं सोओ। ब्राह्मण ने कहा—यहाँ कोई डर नहीं है।

राम राम करके रात कटी। दुश्चिन्ताओं की कोई सीमा न थी। रज्जो ने बैठे-बैठे रात काट दी। आशा के मृदु उच्छ्वास के आवेग की भाँति सवेरे प्रकाश पूर्व से फूट निकला। रज्जो ने आँखें पसार कर देखा तो चारों ओर मैदान ही मैदान था। कोसों तक कहीं न तो कोई पेड़, न कोई घर ही दिखाई देता था। केवल उसी मकान के पास दो-तीन मड़ैयाँ और एकआध टूटा-फूटा घर था। उसको दूर तक न तो कोई गाड़ी ही दिखाई दी न उसका बहनोई ही।

अपने बड़े-बड़े दाँत काढ़े ब्राह्मणी ने आकर अपनी भयानक भावभंगी से पूछा—सोई तो थीं बिटिया?

रज्जो ने कहा—हाँ, किन्तु उसने ब्राह्मणी की जो मूर्ति देखी, उससे भय की विभीषिका और भी भयानक हो उठी।

रज्जो ने कहा—हमारी गाड़ी कहाँ चली गई?

मैं तो नहीं जानती बिटिया—कहकर ब्राह्मणी चली गई।

सूर्य बहुत ऊँचे उठ आया। बेला बढ़ने लगी। किन्तु, कहाँ है भैरव? कहाँ है गाड़ी? रज्जो ने अपनी माँ को सोते से पुकारा—अम्मा! बुढ़िया ने आँखें खोलकर चारों ओर देखा तो स्तम्भित हो गई। रज्जो ने कहा—यह कौन-सा काण्ड है? सवेरे ही कानपुर चलने की बात थी और अब न तो कहीं जीजा जी दिखाई देते हैं और न कहीं गाड़ी!

बेला और बढ़ चली। रज्जो चारों ओर आँखें फाड़-फाड़ कर देख रही थी। इतने में भैरव दिखाई दिया। उसने आकर कहा—ऐसा साला बदमाश गाड़ीवान था, कुछ कह नहीं सकता। कानपुर पहुँचाने के पेशगी चार रुपये लिये थे किन्तु रात भर चुपचाप खड़ा रहा और पौ फटते ही जो मैं टट्टी-फरागत को गया तो सब असबाब वहीं उँडेल कर गाड़ी भगा ले गया। दूर तक खोज कर हार गया, कहीं पता नहीं चलता।

रज्जो ने झल्ला कर कहा—क्या कहीं उड़ गया! आप उसे ढूँढ़कर लाइये। ऐसे काम नहीं चलेगा जीजा जी।

भैरव धम से बैठ गया और बोला—मेरा तो रोगी शरीर अब चलेगा नहीं है। [illegible] तब भी एक आदमी को भेजकर गाड़ी लाने का प्रबन्ध किया है।

रज्जो की आँखों के सामने अन्धकार था। सोचती थी कुछ क्षण में ही कानपुर पहुँचकर हरीश के आनन्दनिकेतन में विश्राम लूँगी, किन्तु बीच ही में यह वज्रपात कैसा? उसने तीव्र दृष्टि से भैरव को देखा और कहा—निश्चिन्त होकर बैठने से काम नहीं चलेगा, जीजा जी।

भैरव बिछी हुई शीतलपाटी पर लेट गया और आँखें बन्द करते हुए बोला—थोड़ा विश्राम कर लेने दो बिटिया, मैं निश्चिन्त नहीं हूँ।

देखते-देखते दुपहर हो गई। सूर्य की प्रखर किरणों से प्रान्तर जल उठा। क्रमशः गर्मी बढ़कर असह्य होती जा रही थी। रज्जो कमरे के द्वार पर निस्तब्ध होकर ऐसे बैठी हुई थी जैसे किसी ने मिट्टी की मूर्ति को भीत में चिपका दिया हो।

दोपहर को ब्राह्मण अपने घर आया। रज्जो ने उससे कहा—पण्डित जी, गाड़ी यहाँ कहीं मिली क्या?

ब्राह्मण ने हँसते हुए कहा—मैं ग़रीब बुड्ढा गङ्गावासी, पाँच कोस दूर यहाँ से गाँव है आज तो नहीं, कल खबर देकर मँगवा दूँगा।

रज्जो ने कहा—आप आज ही गाड़ी मँगा दीजिये हम आपको प्रसन्न कर देंगी।

ब्राह्मण—सामर्थ्य नहीं है बिटिया। आज तो आशा नहीं है, कल अवश्य बुला दूँगा बिटिया।

रज्जो ने झुँझला कर कहा—क्या यों हीं रास्ते में ही पड़ी रहेंगी जीजा जी।

भैरव ने कहा—हमारे लिए जैसा घर वैसा रास्ता।

रज्जो ने क्रोधित होकर कहा—किन्तु हम लोगों की अभी वह अवस्था नहीं आई है।

भैरव ने रज्जो की ओर देखा और कहा—हुँ:........ मैं समझता हूँ। सोच न करो, मैंने आदमी भेजा है।

निरुपाय! नितान्त निरुपाय! ......ब्राह्मणी ने आकर कहा—कुछ रसोई इत्यादि नहीं चढ़ाओगी क्या?

रज्जो ने कोई उत्तर नहीं दिया।

ब्राह्मणी ने फिर कहा—अहवातियों को उपास करना तो ठीक नहीं है।

रज्जो ने चिल्लाकर कहा—कौन अहवाती? कौन सौभाग्यवती?

उसने ठोड़ी पर तर्जनी रखकर सिर हिलाते हुए कहा—अरे बाबा, अहवाती नहीं हो तो यह बाबू जी कौन हैं?

रज्जो ने कहा—वे हमारे बहनोई हैं।

ब्राह्मणी ने ज़ोर से हँसते हुए कहा—यह बात है, तब तो दूसरा घर देखो बिटिया, यहाँ तुम नहीं रह सकतीं।

यह कैसा कुत्सित व्यवहार है! रज्जो का हृदय सिहर उठा। उसने रुद्र हुंकार से पुकारा—अम्मा! चलो यहाँ से, इसी समय चलो। उठो जल्दी उठो।

मा ने कहा—कहाँ जाएँगी बिटिया?

रज्जो ने कहा—जहाँ देख पड़े, तहाँ चलो। नहीं तो मैं जाती हूँ—एक मिनट नहीं ठहरूँगी। और चलने के लिए उठकर खड़ी हो गई।

—क्रमशः

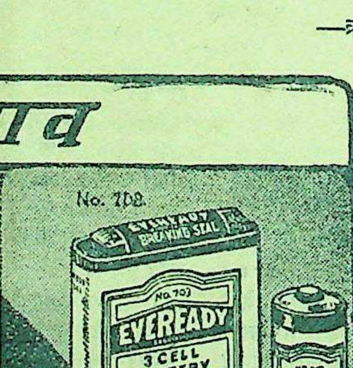

कन्ट्रोल भाव

EVEREADY
TRADE-MARK
ऐवरेडी सैल्स और बैट्रीयां

नं. ९५०, ९३५, ९१२ नं. ७०३.

फुटकर व्यापारिओं के लिये थोक भाव :— रु.३१-८-० का एक ग्रुस. रु. ७०-०-० के १०० नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्लीमें खरीदारों को परचून भाव :— रु. ०-४-६ एक नग. रु. ०-१४-६ एक नग.

दूसरी जगहों पर खरीदारों के लिये परचून भाव :— रु. ०-५-० एक नग. रु. ०-१५-० एक नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्ली को छोड़ बाकी सब जगहों के थोक व्यापारी भाड़ा और महसूल आदि उपर लिखी थोक किंमतों में जोड़ सकते है।

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY, (INDIA) LIMITED.
CALCUTTA • BOMBAY • MADRAS • COCHIN • DELHI AND KARACHI.
HAS
61/5

स्वास्थ्य और व्याया

हैज़ा या विसूचिका

बचने के लिए साधारण

लेखक, श्री सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग,

आजकल हैजे में होनेवाली
वैद्य, हकीम तथा सगे-सम्बन्धियों
समय तक प्रयत्न करने पर
मौतें सुनने में आती हैं।
जवान लड़का मर गया और
विधवा हो गई आदि दुःखजनक
सुनाई पड़ती हैं। कहीं कहीं तो
तथा गाँव के गाँव तबाह हो जाते हैं।

तीव्र या नया रोग जैसे
ज्वर, प्लेग, दर्द, निमोनिया
तरह हैजे का रोग भी शरीर की
बढ़ी हुई गर्मी के कारण होता है।
चिकित्सा अर्थात् उपवास,
वाष्प आदि के उपचारों से यह
जल्दी काबू में आ जाता है।
कराहते, दस्त और कै के मारे
अन्तिम साँस लेते रोगी शीघ्र
होते हैं। प्रकृति की राय में हैजा
शत्रु नहीं है और इससे
शत-प्रतिशत बचने चाहिए,
ठीक (प्राकृतिक) इलाज हो।
जाय तो रोगी होकर अकाल
ग्रास होना भाग्य का नहीं
हमारे गलत इलाज का परिणाम है।
के रोगी के लिए रोगावस्था में
का पालन होना चाहिए—

(१) रोग के लक्षण
हो जाने तक रोगी को कुछ
न दीजिये। हाँ, कै की
न करके रोगी को थोड़ा-थोड़ा
अवश्य पिलाना चाहिये।

(२) यदि मिल सके तो
ताजा नीबू का रस पानी में
चाहिये। नीबू हैजे की रामबाण

(३) रोगी के पेट पर
घंटे के अन्तर पर मिट्टी की पट्टी
चाहिए। सीने पर गीले
चढ़ाना भी ठीक होता है।
दस्त-कै आदि तुरन्त दूर होते हैं।

(४) रोगी को खुले
साफ हवा में रखिये। घबराना न

प्रिंस होमियोपैथिक
बनारस १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड
वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों
(सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में
प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्वदेशी
आरोग्य
नीलगिरि
नमूना मुफ्त
युकॅलिप पेन बाम
दाद का मरहम

सपरिहास

भङ्ग की तरङ्ग

सुनी है कि मौलवी अब्दुल ने कांग्रेस छोड़ दिया और मुस्लिम स्वीकार किया है। शायद सपने में से कहा कि कांग्रेस में रहना की दुश्मनी है।

*

कायदे आजम को एक पत्र जिसमें मुस्लिम लीग में प्रविष्ट माँगी है और कहा है कि मुस्लिम लीग में नहीं है वह रही है। मुझे कयूम साहब का पता तो नहीं है किन्तु जान आपको अक्ल के दाँत निकल जरा देर में निकले लेकिन...। असेम्बली में कांग्रेस की लीडर थे। अब आशा है में आप पूरे लीडर हो

*

पूछिये तो एक बात है की ओर से शासन-समिति के नामावली पेश की गई थी साहब का नाम नहीं था। तो में क्यों रहते ? कांग्रेस में इसलिए आते हैं कि मुसल- अब अधिक लाभ होगा। के क्या करेंगे ?

*

ने कयूम साहब को लिखा है कि आशा है और अनुकरण करेंगे। वही है किन्तु न करें तो बदकिस्मती के अतिरिक्त

*

चुनाव, काल में जो कुछ न हो जाय आश्चर्य नहीं। हिन्दू-महासभा के नेता अपनी अपनी उपाधियाँ छोड़ने को उतारू हो गये हैं। बस छः-छः महीने चक्की भी पीस आइये, सर्टिफिकेट-प्राप्त नेता हो जाइएगा।

* * *

कहा जाता है, राशन और कंट्रोल १९४७ तक जारी रहेंगे। क्या सरकार का विचार राशन उठाने का भी है ? हमारा तो ऐसा विचार था कि जब दो-एक छटाँक चावल तथा पाव भर गेहूँ से एक आदमी का काम चल सकता है तब अधिक की आवश्यकता ही क्या है ? राशन अँगरेजी हुकूमत के समान सदा के लिए भारत में होना चाहिए।

* * *

यूरोप के कितने नर-नारी भूखों मर रही हैं। वहाँ भी तो अनाज की आवश्यकता होगी। यदि यहाँ से राशन उठ जायगा तो वहाँ लोगों को भोजन कैसे मिलेगा ?

* * *

सरकार की ओर से योजना बन रही है कि देश में सत्ताईस वनस्पति घी के और नये कारखाने खोले जायँ। सरकार गोभक्ति जान पड़ती है। वह समझती है कि गैया माता पूजा के लिये हैं। उनका दूध-घी खाना पाप है। इसलिए वनस्पति घी इतना यहाँ बनना चाहिए कि किसी को घी खरीदने का पाप न करना पड़े।

* * *

सर पद्मपत सिंहानिया सर मैरिस हैलेट की यादगार बनाने के लिए बड़े उत्सुक हैं। एक बात तो है। सर मैरिस हैलेट की यादगार जो बनवायेगा उसकी यादगार यों ही अपने आप बन जायगी। गर्वनर साहब ने काम ही ऐसा किया है।

* * *

कायदे आजम चुनाव के लिए रुपये एकत्र कर रहे हैं। रुपये से तो कम काम होगा। आपको चाहिए कि अमेरिका से एटम बम दो-चार मँगवा लें। कांग्रेस की सभाओं के ऊपर छोड़ दें, लीग की विजय हो जायगी।

* * *

रेडियो-विभाग से आधे लोगों को सरकार हटानेवाली है। अवसर अच्छा है। जितने हिन्दी जाननेवाले हों उन्हें तुरत बरखास्त कर देना चाहिए।

—अगड़धत्त शर्मा

वह चले ! चले !!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

खबर मिली अखबारों से अमरी अब नाता तोड़ चले,
भारत के सिंहासन को बरबस छोड़ चले;
इस दुर्दिन में जिन्ना साहब का कुछ न इन्होंने ख्याल किया,
जब पीठ उन्हें सहलानी थी, आँखें बदलीं, मुँह मोड़ चले।

* * *

सालों से जमे जहाँ थे उनको वहीं उखाड़ दिया;
इस महा युगल को चौचक चित्त पछाड़ दिया;
गंदा कर रखा था जिसने भारत-मन्त्री के दफ़्तर को,
अँगरेजी जनता ने उनको कतवार समझ कर झाड़ दिया।

* * *

आहत किये चले, गांधी को गाली दिये चले,
शासन का डंडा अपने हाथों लिये चले;
दामन मुस्लिम लीगी जामे का फटा जा रहा है बेढब,
अफ़सोस निहायत है मुझको क्यों आप उसे बे सिये चले ?

* * *

पी० की अफ़सोस सिफारिश कुछ न तुम्हारे काम आई,
तुमने मुँह की खाई, हे चर्चिल के छोटे भाई;
बंगाल-निवासी भूखों की यदि की होती तुमने पूजा,
तब रो-रोकर तुम धोते क्यों अपने मुँह की काली काई ?

* * *

की चर्चा आज कहाँ बिस्तर को बाँधे आप चले,
जितने भारत के सारे थे सब अभिशाप चले;
मजदूरों की जनता का सूरज उदय हुआ है दुनिया में,
एकत्र हुए थे तम में जो पूँजीवादी के पाप, चले।

संवाददाताओं के पत्र

काशी में ता० १६ अगस्त को मुहल्ला हनुमान फाटक के श्री हनुमान-मन्दिर में पं० विश्वनाथप्रसाद मिश्र के सभापतित्व में तुलसी-जयन्ती-महोत्सव मनाया गया। सर्वश्री श्यामसुन्दर लाल, श्रीभागवतदत्त मिश्र, हरिदास "विमलेश" एवं शिवनाथ एम० ए० के भाषण हुये। श्री रामसुन्दर लाल ने कहा कि तुलसीदास जी का स्थान विश्व-कवियों में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। श्री भागवतदत्त मिश्र ने तुलसी की काव्य-कला पर प्रकाश डाला। श्री शिवनाथ एम० ए० ने तुलसी को महान् व्यक्ति बतलाया। अंत में, सभापति जी का बड़ा ही सुन्दर भाषण हुआ। सभापति जी ने कहा कि तुलसीदास जी एक महान् कवि थे। उनकी रचनाएँ बड़ी ही उच्च कोटि की हुई हैं। —संवाददाता

* * *

कानपुर पुखरायाँ हारामऊ की जीवन-सुधार-सभा लिमिटेड का वार्षिक चुनाव श्री राजाराम सचान की अध्यक्षता में हुआ। पदाधिकारी सर्वश्री रामदीन तिवारी सभापति, सुरेन्द्रकुमार सिंह मन्त्री, रामनारायण जी उपमन्त्री, जगन्नाथ जी खजांची विहारी कोली श्री गुलजारी रैदास, श्री गुपाली कुम्हार, श्री रामस्वरूप तिवारी, श्री श्रीकृष्ण सचान, श्री गुलजारी सचान तथा देवीदयाल सचान पंच चुने गये।

—संवाददाता

* * *

इन्दौर-नगर-प्रजामण्डल के अध्यक्ष श्री कृष्णकान्त व्यास के सभापतित्व में गत १६ अगस्त की रात को एक निमन्त्रित सभा हुई। जिसमें सर्वश्री परांजपे, गंगवाल और परुलेकर के प्रजामण्डल के अगस्त ४२ के प्रस्ताव पर ओजस्वी भाषण हुए। श्री व्यास जी ने अपने भाषण में प्रजामण्डल की माँग का प्रतिपादन करते हुए कहा कि आज भी इन्दौर-सरकार उत्तर दायित्वपूर्ण हुकूमत की मांग की मंजिल को दूर समझ रही है। यही कारण है कि वह राज्य के १५ लाख प्रजाजनों को नागरिक स्वाधीनता जैसे मामूली हकों से रहित रख रही है। यदि सरकार समय रहते नहीं चेतती तो भविष्य में उत्तरदायित्व की वही जिम्मेदार होगी।

अगस्त ४२ के आन्दोलन में जिन संस्थाओं ने और नागरिकों ने प्रजामण्डल का साथ दिया था, उनका आभार माना गया और जिन कार्यकर्ताओं का अवसान हो चुका है, उनको श्रद्धांजलि अर्पण की गई और प्रतिज्ञा दोहराई गई।

सुबह सन् ४२ के आन्दोलन के सर्वाधिकारी श्री सरवटे साहब ने झण्डा फहराने की रस्म अदा की। राष्ट्र-सेवा-दल की रैली हुई और सामूहिक चरखा कताई भी। प्रजामण्डल की एक लाख निधि के लिये धन संग्रह का काम भी शुरू हो गया है। एक लाख की निधि में ५१ हजार रुपये एकत्रित करने का कोटा इन्दौर नगर को मिला है। —संवाददाता

* * *

इंदौर के प्रसिद्ध हास्य-रस-लेखक श्री पुरुषोत्तम महादेव वैद्य सिनेमेटोग्राफर के पिता श्री डाक्टर महादेव पृथ्वीनाथ जी का स्वर्गवास हो गया। डाक्टर साहब इन्दौर-राज्य के एक सम्माननीय पदाधिकारी और श्रीमंत महाराजा तुकोजी राव होलकर के विशेष कृपा भाजन थे।

—संवाददाता

* * *

बीकानेर-राज्य (गंगानगर) में नवयुवक-सार्वजनिक पुस्तकालय के तत्त्वावधान में राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त की हीरक जयन्ती और तुलसी जयन्ती समारोहपूर्वक मनाई गई। १२ अगस्त को गुप्त जी की हीरक-जयन्ती और १५ अगस्त को तुलसी-जयन्ती का उत्सव हुआ। १३ और १४ अगस्त को भाषण, प्रतियोगिता और गीता-सम्मेलन का आयोजन हुआ। पहले तीन दिन मैजिक लैन्टर्न-द्वारा चित्र भी दिखलाये गये। १२ अगस्त को एक कवि-सम्मेलन भी हुआ। —संवाददाता

हिन्दी साहित्य

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है। जो कुछ इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी अप्रामाणिक और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा समालोचक बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा और साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी साहित्य' के नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक वर्णन ही नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं से परिचित कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई हैं। हिन्दी-साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये अनुसन्धान हुए हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस प्रकार हिन्दी-साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक है जिससे वे साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

किसान-संगठन और कांग्रेस

(पेज ६ का शेष)

से कहा, "जिससे कि कृषि को उन्नत करने के लिए पूँजीपति और मजदूर मिलकर काम कर सकें और कृषि-सम्बन्धी बैंकों की स्थापना के लिए भी सरकार से प्रार्थना की। अगले साल भारत-मंत्री द्वारा दिये गये उन वचनों की पूर्ति करने के लिए कहा गया, जो उन्होंने अपने १८६२ और १८६५ के खरीतों में दायमी बन्दोबस्त के लिए दिये थे। १८९६ ई० में कांग्रेस ने अपनी माँग और ढीली की और प्रार्थना की कि मियादी बन्दोबस्त हो तो वह ६० साल के लिए हुआ करे। १९०३ ई० में कांग्रेस इससे कुछ और आगे बढ़ी और लगान अधिक न लिया जाय। इसके लिए कानूनी और अदालती रुकावटें लगाने के लिए कहा।

१८९४ ई० में आबपाशी के प्रश्न पर कांग्रेस ने मद्रास के अधिवेशन में विचार किया। जिस समय यह हुक्म निकला था कि आबपाशी का कर ४) से बढ़ाकर ५) कर दिया जाय। इन दिनों लगातार दुर्भिक्ष पड़ रहे थे। कांग्रेस ने इसका कारण इन करों और महसूलों की लगातार वृद्धि ही बतलाया। १८९६ ई० में देश में जो दुर्भिक्ष पड़ा, उससे उत्पन्न परिस्थिति के कारण कांग्रेस को सरकार की आर्थिक नीति का सिंहावलोकन करना पड़ा। उसने सरकार पर अन्धाधुन्ध सैनिक-व्यय करने का दोष मढ़ा और उस खर्च की पूर्ति के लिए लोगों पर लगाये जानेवाले अत्यधिक कर और भारी लगान का कारण बतलाया। इन दुर्भिक्षों का दूसरा कारण सरकार की उपेक्षा-नीति के कारण देश और स्थानीय उद्योग-धन्धों को प्रायः नष्ट होना बतलाया गया। सरकार से अकालरक्षक कोष बनाने की प्रार्थना की गई। इसके बाद ही एक अकाल कमीशन बैठाया गया। १८९९ ई० में कांग्रेस ने सरकार पर फिर एक बार जोर डाला कि सरकारी खर्च में कमी की जाय, स्थानीय और देशी उद्योग-धन्धों की उन्नति की जाय और जमीन के लगान तथा दूसरे करों में कमी की जाय। अगले साल सारे प्रश्न पर फिर व्यापक रूप से विचार किया गया और इस बात की माँग पेश की गई कि भारतवासियों की आर्थिक अवस्था की जाँच कराई जाय।

कानून जंगलात—इन कानूनों से भी जनता के कष्टों में काफी वृद्धि हुई। इनकी तुलना तो भूमि-कर और नमक-कर से ही की जा सकती है। इन कानूनों के सम्बन्ध में १८९१ ई० के नागपूर कांग्रेस में मि० पाल पीटर पिल्ले ने यह विचार प्रकट किया था कि कलम की एक ही रगड़ में सरकार ने रैय्यत के स्थायी अधिकारों को नष्ट करके ग्रामीण समाज व्यवस्था में उलट-पलट कर दी। डा० बेसेंट ने कहा था कि, "इस बात में जरा भी संदेह की गुंजाइश नहीं रही कि देहातियों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ जितना इन कानूनों ने किया उतना और किसी चीज ने नहीं। एक उत्तरी अर्काट के जिले में १८९१ ई० में ९ महीने के अन्दर ही ३ लाख पशु मर गये।

१८९२-९३ में बड़ी नम्रता के साथ भारत-सरकार से प्रार्थना की गई कि जंगलात के कानूनों से जो कठिनाइयाँ उत्पन्न हुई हैं—खास कर दक्षिण-भारत और पंजाब के इलाकों में उनकी जाँच कराई जाय। पंजाब-सरकार ने इसके सम्बन्ध में जो नियम बनाये वे इतने कठोर और अन्यायपूर्ण थे कि नवें अधिवेशन में पं० मेघराम ने उन्हें अत्यन्त स्वेच्छाचारी और किसी भी सभ्य सरकार के लिए कलंक रूप बतलाया। इसके अनुसार कहीं आग लग जाती, फिर वह चाहे आकस्मिक हो या किसी दूसरे ने लगाई हो तो उसके लिए वही व्यक्ति जिम्मेदार माना जाता जो उस जमीन का मालिक होता या उस समय उस पर काबिज होता; और उसके साथ उसी तरह का व्यवहार होता, मानो उसने जान-बूझकर कानून की परवाह नहीं किया। जिन पहाड़ी लोगों के लिए पहाड़ों पर पैदा होनेवाली घास और लकड़ी ही सब कुछ थी, उसी पर उनकी और उनके पशुओं का सहारा था, उनके लिए उसे लेने की मनाही कर दी गई। यहाँ तक कि जंगल में तापने के लिए वे आग भी नहीं जला सकते थे। इसके विरुद्ध कांग्रेस की ओर से आन्दोलन हुआ जिसके फलस्वरूप २० अक्टूबर १८९४ को भारत सरकार ने एक गश्ती प्रस्ताव प्रकाशित किया जिसमें जंगलों के प्रबन्ध में रैय्यतों की कृषि-सम्बन्धी आवश्यकता के सामने आर्थिक प्रश्नों को कम महत्त्व देने का सिद्धान्त स्वीकार किया था।

इस पर कांग्रेस ने अपने दसवें अधिवेशन में आग्रह किया कि तीसरे और चौथे प्रकार के जंगलों में जलाने की लकड़ी, पशु चराने के अधिकार, पशुओं के खाने की चीजें, मकान और खेती के औजार बनाने के लिए सागौन और खाने की जंगली चीजें आदि—उचित प्रतिबन्धों के साथ—हर हालत में मुफ़्त में दी जाय। और जंगलों की सीमायें इस प्रकार निश्चित की जायँ कि जिससे किसानों को इस महकमे के कर्मचारियों से तंग हुए बिना अपने सामूहिक अधिकारों के उपयोग करने की छूट रहे? ग्यारहवें और चौदहवें अधिवेशनों में इस बात पर जोर दिया गया कि जंगलात के कानूनों का उद्देश्य जंगलों की आमदनी का जरिया बनाना नहीं, बल्कि किसानों और पशुओं के लिए उन्हें रक्षित रखना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कांग्रेस किसानों के हितों और अधिकारों की रक्षा में बराबर सतर्क रही और प्रस्तावों और आन्दोलनों से उनके हितों की रक्षा में बराबर सचेष्ट रही। इसके बाद इन विषयों पर कांग्रेस अधिवेशनों में हम कोई खास प्रस्ताव करते हुए नहीं पाते हैं। १९०४ और १९०५ में कांग्रेस का दृष्टिकोण बदला, और वह व्यापक हुआ। उसका ध्यान व्यापक राष्ट्रीयता और स्वशासन की ओर आकृष्ट हुआ।

इ - स्ला - म
की
सच्ची पूजा किसने की ?
यह जानने के लिए पढ़िए।
— इस्लामी —
दुनिया का सिरताज
(कमालपाशा का चरित्र)
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

भारत का सूती वस्त्र-व्यवसाय

(पेज ७ का शेष)

चीन तथा जापान के उद्योगपतियों ने अपने यहाँ ऐसी मशीनें स्थापित की थीं कि भारत की रुई का भली भाँति उपयोग किया जा सके। हम जापान की व्यावसायिक बुद्धि की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते कि भारत की रुई जहाज-द्वारा जापान ले जाकर वहाँ कपड़ा बुनकर दुबारा अपने जहाजों द्वारा भारत में पहुँचा कर और आयात-कर देने के बाद भी उस कपड़े का मूल्य भारतीय रुई से भारत में प्रस्तुत कपड़े के मूल्य से कम पड़ता था। नीचे दिये आँकड़ों से इस बात का आभास मिलता है कि भारत ने अपनी शोचनीय अवस्था का अनुभव किया है और क्रमशः दीर्घ सूत्र रुई का उत्पादन बढ़ रहा है:—

	१९२४-२७ का वार्षिक औसत	१९३८-४१ का वार्षिक औसत
लघु सूत्र	४०,५६,००० गाँठ	३३,१५,००० गाँठ
मध्यम तथा दीर्घ सूत्र	१६,४४,००० गाँठ	१९,३३,००० गाँठ

जापान को जो आत्म-समर्पण की शर्तें दी गई हैं उनसे स्पष्ट है कि जापान को भारत से रुई मँगाने की अनुमति दी जायगी परन्तु जो वस्त्र तैयार होगा वह जापान-निवासियों के लिए और हर्जाने के रूप में शायद चीनियों को भेजने के लिए इस्तेमाल होगा। इस प्रकार एक ओर भार तीय रुई का निर्यात जापान को रहेगा और दूसरी ओर भारत प्रस्तुत सूती वस्त्रों के मुकाबले में रहेगा। सूती वस्त्र के व्यवसाय में दो जबरदस्त प्रतिद्वन्दी हैं, ब्रिटेन जापान। भारत के स्वराज्य की माँग रोड़ा अटकाने के दण्ड-स्वरूप ब्रिटि माल का बायकाट सन् १९३० से आरम्भ हो गया था और इस सम कम ऐसे देशद्रोही भारतीय होंगे जो सूती वस्त्रों के अतिरिक्त अन्य कुछ न हों। इसीलिए क्रमशः भारतीय ब्रिटेन के पैर उखड़ रहे थे। गत २६ ब्रिटेन की क्या स्थिति हुई है उसका आभास निम्नांकित आँकड़ों से हो सके

भारत में आयात-सूती वस्त्र के परि

का प्रतिशत

ब्रिटेन १९१३-१४-९७.१, १९
२९-७५.२, १९३६-३७-४४,
३८-४५, १९३८-३९-३२। जापान
१४-.३, १९२८-२९-१८.४, १९३६
५३, १९३७-३८-५२, १९३८-३९-

इस प्रकार भारतीय बाजार से जैसा प्रतिद्वन्दी निकल जाने पर सूती वस्त्र-उद्योग और व्यवसाय की उन्नति होगी और जब तक ब्रिटेन को स्वाधीनता देने में आनाकानी उसे भारतीय बाजार से निराश होना लंकाशायर के कपड़े भारत में जोर से नहीं बिक सकते।

आर्यन पेपर मिल्स लिमिटेड
हेड आफिस : १२ चौरंघी स्क्वायर कलकत्ता
मिल तथा बगीचा : महूदा (बी० यन० रेलवे)

* इँगलैंड से आधुनिक ढंग की मशीने मँगाने के लिए आवश्यक—पेशगी भेजी जा चुकी है।
* कम्पनी की निजी जमीन में पेपर मिल्स के लिए घास लगाना आरम्भ कर दिया गया है।
* मैनेजिंग एजेन्ट जब तक टैक्स रहित ५% साधारण हिस्सों पर तथा ६% असाधारण हिस्सों पर लाभ वितरित न कर देंगे कोई पारिश्रमिक नहीं लेंगे।

निर्धारित मूल्य पर ही अब भी हिस्से मिल रहे हैं
—रुपया अदा करने का तरीका—

साधारण हिस्से प्रत्येक १०) के :—१) प्रति हिस्सा आवेदन पत्र के साथ। १) प्रति हिस्सा एलाटमेन्ट के दिन से १ मास के अन्दर तथा शेष रक़म चार बराबर किश्तों में।

असाधारण हिस्से १००) के प्रत्येक (टैक्स रहित क्यूमुलेटिव) १०) प्रति हिस्सा आवेदन पत्र के साथ तथा शेष एलाटमेन्ट होने की तिथि से ७ दिन के अन्दर।

शेयरों के लिए आवेदन पत्र के साथ १) प्रति आवेदन पत्र आना चाहिये।
जहाँ हमारे एजन्ट नहीं हैं वहाँ हिस्से बेचने के लिये एजन्टों की आवश्यकता है।

पूँजी लगाने के सम्बन्ध में सरकार की यह अनुमति प्राप्त हो चुकी है कि उतनी रक़म जितनी कि केन्द्रीय सरकार की राय में (देशी रियासत शामिल होने पर बादशाह के प्रतिनिधि की राय से) परिस्थितियों के कारण किसी अनिश्चित समय तक काम में लगाने की आवश्यकता न हो सुरक्षित जमानतों में उस तक लगी रहेगी जब तक उचित समय रुपया लगा देने का नहीं आ जायगा। अनुमति देने के साथ सरकार इस प्रकार की कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेती है कि कम्पनी के बारे में जो स्टेटमेंट दिया गया है वह सत्य है अथवा कम्पनी की दृढ़ता की सरकार जिम्मेदार है।

नई दिल्ली की चिट्ठी

ीय असेम्बली का चुनाव और वोटर-सूची !

माप्ति की प्रतिक्रिया—आर्थिक मंदी का दूसरा उदाहरण

जदूर सरकार की परीक्षा—स्वर्गीय श्री सुभाषचंद्र बोस।

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

ी की प्रतिक्रिया

ली लड़ाई की समाप्ति पर
ई है उनमें सबसे पहली श्रेणी है
वालों की। प्रत्येक ताँगेवाला
ाई देता है कि उसकी कमाई
समाप्त हो चला है। असे-
ियों के चले जाते ही उनका
पड़ जायगा। दूसरी श्रेणी
लोगों की जिनको लड़ाई के
नौकरियाँ मिल गई थीं।
सरकारी नौकरी के अन्तिम
हैं। यद्यपि अभी तक कोई
नहीं हुई है, परन्तु
मालूम हुआ है कि अर्थ-
आर्चिबाल्ड रालैंड्स युद्ध-
दफ्तरों को शीघ्र ही तोड़कर
करना चाहते हैं। निकट
ही होनेवाली घोषणा के फल-
कम चालीस हजार सरकारी
जायँगे। कंट्रोल और राश-
अभी फिलहाल ज्यों के
तु जिन नई-नई वस्तुओं
लागू की जानेवाली थी,
दी गई है और कपड़े
जिनको लागू हुए अभी
नहीं हुए हैं, आगामी
करने के हुक्म जारी
इससे यह प्रकट होता है
अधिकारियों की इन
युद्ध के बाद कई साल
री रहेगा, आम धारणा
काल के अन्दर ही यह सब
। तीसरी श्रेणी में वे
और व्यापारी लोग हैं
परिस्थितियों से लाभ
मुनाफा कमाया है। बाहर
और देशी उद्योगों का
जाने के कारण व्यापारियों को
बन्द हो जाने की संभावना
पहुँची है।

* *

का दूसरा उदाहरण

जापान के आत्म-समर्पण के
ऐसी प्रतिक्रिया हुई है कि
जापानी माल बाजार में
जापानी खिलौने मिलते
अब खिलौनेवालों की
जापानी खिलौनों की भरमार
की मंडी पर भी
। कपड़े के दाम गिरने
बाहर के व्यापारी अपने
खरीदने नहीं आये जिसका
कि हजारों कपड़े की गाँठें
व्यापारियों का लगभग
हुआ है। कपड़ा
एक-मात्र संस्था दिल्ली
एसोसियेशन को
आर्थिक संकट पर
लिए एक जरूरी और
बुलाकर यह निश्चय
सरकार ने शीघ्र ही
निर्णीत नहीं किया तो

व्यापारी उनको जैसा चाहें वैसा बेचने के लिए स्वतन्त्र होंगे। युद्ध के बाद आनेवाली आर्थिक मन्दी का यह एक आभास है।

* * *

मजदूर सरकार की परीक्षा

भारत के लिये कोई नवीन राजनीतिक योजना बनाकर लाने के लिये लार्ड वैवेल के पुनः लन्दन जाने से हिन्दुस्तान की राजनीतिक गति-विधि का चक्र घूमकर पीछे चला गया है और शिमला-सम्मेलन से पहले की स्थिति फिर आ गई है। नई दिल्ली के सरकारी एवं राजनीतिक क्षेत्रों का यह ख़याल है कि वाइसराय को इस बार लन्दन में उस विरोध का सामना नहीं करना पड़ेगा जो कि पिछली बार टोरी पार्टी के भारत-मन्त्री द्वारा हुआ था। अब उन्हें एक ऐसी सरकार से वार्तालाप करनी होगी जिसके दृष्टिकोण और कार्यक्रम बिलकुल नये हैं। तब और अब के बीच पुल के नीचे से बहुत पानी बह चुका है। आज लन्दन का राजनीतिक क्षितिज एक सोशलिस्ट सरकार के नारों से गूँज रहा है। परन्तु इस मजदूर सरकार का सोशलिस्ट कार्यक्रम केवल इँगलैंड तक ही सीमित रहेगा या भारत पर भी उसका प्रभाव पड़ेगा, यह देखना अभी बाकी है। यह तो तय ही है कि संसार के निष्पक्ष लोग भारत को ब्रिटेन के घोषित उद्देश्यों की कसौटी मानते हैं। वह इस कसौटी पर कितना खरा उतरता है, यह कुछ ही दिनों में प्रकट होनेवाला है।

* * *

असेम्बली के वोटरों की सूची

असेम्बली के चुनावों की घोषणा से सारे देश में बिजली की लहर-सी दौड़ गई है। दिल्ली और नई दिल्ली के राजनीतिक क्षेत्रों का ध्यान सहसा उस सूची की ओर आकर्षित हो गया है जो कि स्थानीय सरकार ने गत कुछ महीनों पहले प्रकाशित कर दी थी। उस समय चूँकि असेम्बली के चुनावों में बहुत कम लोगों की दिलचस्पी थी इसलिए किसी ने कोई विशेष आपत्ति नहीं की। परन्तु अब नई घोषणा के प्रकाश में मतदाताओं की उस सूची का महत्त्व समझ में आया है। उक्त सूची को सरसरी नजर से देखते ही उसका बेहूदापन प्रकट हो जाता है। युद्ध के इन ६ वर्षों में दिल्ली और नई दिल्ली की जन-संख्या चौगुनी बढ़ जाने पर भी उसके मतदाताओं में कोई विशेष वृद्धि नहीं दिखाई गई है। नई दिल्ली में हजारों सुशिक्षित महिलाओं के रहते हुए भी मतदाताओं की सूची में केवल ३१ महिलाओं के नाम हैं। सूची की अपूर्णता का इससे अधिक प्रमाण और क्या हो सकता है? नई दिल्ली के मुख्य-मुख्य नागरिकों के हस्ताक्षरों सहित एक आवेदन पत्र चीफ कमिश्नर के पास भेजा गया है जिसमें उनसे असेम्बली के मतदाताओं की नई सूची बनवाने की प्रार्थना की गई है।

* * *

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्

देशी राज्यों के सम्बन्ध में १२ प्रस्ताव

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् की स्थायी समिति की विशेष बैठक गत ६, ७ और ८ अगस्त को श्रीनगर में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये।

देश के विभिन्न भागों के देशी राज्यों की लोक परिषदों, प्रजामण्डलों तथा अन्य जन संस्थाओं को अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् से सम्बन्धित करने के लिए एक उपसमिति का निर्माण किया जाय, जो इस सम्बन्ध में १५ सितम्बर तक स्थायी समिति को रिपोर्ट दे। इस उपसमिति के मन्त्री तथा संयोजक श्रीजयनारायण व्यास रहें। अन्य सदस्य डा० पट्टाभि, आचार्य नरेन्द्रदेव, श्री के० टी० वाशयाम और काश्मीर के एक प्रतिनिधि होंगे।

पुनर्संगठन होने के पूर्व श्री जयनारायण व्यास कार्यवाहक मन्त्री रहेंगे, वह सुविधानुसार एक आफिस खोलें।

श्री व्यास विभिन्न देशी राज्यों की संस्थाओं से सम्बन्ध भी स्थापित करें और देशी राज्य लोक परिषद् से सम्बन्धित कराने के लिये प्रयत्न करें।

पूर्ण अधिवेशन के लिये शीघ्र उचित कार्यवाही की जाय। परिषद् के संयोजक आवश्यकता पड़ने पर रियासती कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन बुलायें। स्थायी समिति की आगामी बैठक में इस पर विचार हो।

अध्यक्ष की सलाह से कार्य चलाने के लिए उचित स्टाफ रखा जाय। इसके लिए २० हजार रुपया चन्दा एकत्र करने को परिषद् की शाखाओं से कहा जाय।

तीन वर्षों के बाद परिषद् स्थायी समिति की बैठक हो रही है। इस काल में देश के इस बीच में, संसार में भारी परिवर्तन हो गये। फासिस्ट इटली तथा नाजी जर्मनी की हार से यूरोप में इन्कलाबी शक्तियों को मुक्ति मिल गई है। हर-स्थान पर नई शक्तियाँ और विचार कार्य कर रहे हैं। पुरानी व्यवस्थायें और संस्थायें मिट रही हैं। साम्राज्यवादी और अनुदार ब्रिटेन के निर्वाचन में श्रमिक दल की विजय विराट परिवर्तन को सूचित करती है।

एशिया में भी साम्राज्यवाद का अन्त करने के लिए विराट शक्तियाँ कार्य कर रही हैं। यूरोप के समान ही पूर्व के युद्ध का अन्त होने से एशिया में भी क्रान्ति की शक्तियों को मुक्ति मिलेगी। यदि शीघ्र ही प्रजा तान्त्रिक स्वतन्त्रता और रंग भेद दूर कर नई व्यवस्था न की गई तो साम्राज्यवाद के विरुद्ध भीषण संघर्ष अवश्यंभावी है।

भारत में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता व स्वतन्त्रता-प्रिय विश्व के साथ सहयोग के लिए शक्तिशाली आन्दोलन चल रहा है। स्वतन्त्रता की नई शक्तियों का प्रभाव भी बढ़ रहा है।

भारतीय जनता की स्वतन्त्रता की तीव्र भावना को बतलानेवाला आन्दोलन यद्यपि हिंसा और सैनिक शक्ति तथा अमानुषिक उपायों से दबा दिया गया फिर भी जनता की स्वतन्त्रता की भावना और भी शक्तिशाली और दृढ़ हो गई है। परिषद् की स्थायी समिति इस आन्दोलन के शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि तथा इसमें त्याग करने व दुःख उठानेवाले को बधाई देती है।

भारत में जो विशाल परिवर्तन हो रहे हैं उसका प्रभाव रियासतों पर निश्चित रूप से पड़ेगा।

इन परिवर्तनों से अवश्य ही देश की पूर्ण प्रजातान्त्रिक स्वाधीनता के उद्देश्य से चलनेवाला आन्दोलन तब तक नहीं रुक सकता जब तक कि जमींदारी प्रथा का नाश होकर सभी जनता स्वतन्त्र और प्रगतिशील जीवन नहीं व्यतीत करती है। स्थायी समिति घोषित करती है कि रियासतों की जनता का उद्देश्य भारत के भीतर ही राज्यों में पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना है। छोटी रियासतों को एक साथ मिलकर या बड़े प्रान्तों व रियासतों में मिलकर एक इकाई बनाना चाहिए। भारत व रियासतों के भावी पुनर्संगठन के समय सांस्कृतिक एकता का विशेष ध्यान रखा जायगा।

स्थायी समिति इस परिवर्तनशील समय में रियासती जनता से अपने उद्देश्य के लिए मजबूत व संगठित होने की अपील करती है। आशा है देश-नरेश इस बात को अनुभव करेंगे कि इस कार्य में सहयोग के अतिरिक्त उनके लिए दूसरा मार्ग नहीं है।

श्री देवसुमन के सम्बन्ध में स्थायी समिति की पूर्ण रिपोर्ट मिली है। श्री सुमन की गिरफ़्तारी अनुचित थी तथा आप के साथ अमानुषिक व्यवहार किया गया था। समिति टेहरी राज्य की निन्दा करती है।

वर्तमान परिवर्तित स्थिति में भी रियासतें अपनी पुरानी दमन नीति पर दृढ़ हैं। जनता के नागरिक अधिकारों, सभाओं, जुलूसों, पत्रों पर प्रतिबन्ध लगे हैं। समिति देशी नरेशों से इस दमन नीति के अन्त करने की प्रार्थना करती है, क्योंकि इस नीति से संघर्ष ही बढ़ेगा। रियासतों के राजबन्दियों की शीघ्र रिहाई भी आवश्यक है।

स्थायी समिति मध्य भारत के कुछ रियासतों विशेष कर झाबुआ के निर्धन भीलों पर होनेवाले अत्याचारों की निन्दा करती है।

भरतपुर की सरकार द्वारा भरतपुर के १८ कार्यकर्ताओं की गिरफ़्तारी पर स्थायी समिति खेद प्रकट करती है और महाराजा से उनकी रिहाई की प्रार्थना करती है।

हैदराबाद के निजाम की घोषणा पर खेद प्रकट करते हुए स्थायी समिति घोषित करती है कि कोई भी सन्धि या अन्य बातें उत्तरदायी शासन के मार्ग में रुकावट नहीं बन सकतीं।

स्वर्गीय सुभाष बाबू

टोकियो के अस्पताल में श्री सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु के समाचार की सच्चाई में यहाँ के सरकारी क्षेत्र बहुत कम विश्वास कर रहे हैं। इन क्षेत्रों का कहना है कि टोकियो रेडियो ने एक बार पहले भी हवाई दुर्घटना में श्री सुभाष बोस की मृत्यु का समाचार फैलाया था। परन्तु जिन परिस्थितियों में सुभाष बाबू के सिंगापुर से टोकियो आने और हवाई जहाज के गिरने से प्राप्त हुई चोटों के कारण अस्पताल में उनकी मृत्यु होने का जो विस्तृत विवरण दिया गया है उस सबसे जापानी समाचार-समिति का उक्त समाचार सही भी हो सकता है। कुछ भी हो, ऐसे समय पर जब कि सुभाष बाबू को बचाने के लिए एक देश-व्यापी आन्दोलन छिड़ चुका था, उनकी मृत्यु का समाचार निस्सन्देह बहुत दुःखदाई है और उसने भारत की राजधानी को एक बार के लिए शोकसागर में डुबो दिया है।

जापान के आत्म-समर्पण से—

(पेज ५ का शेष)

के पतन और रंगून से ब्रिटिश गवर्नमेंट के पलायन से जापानी साम्राज्य हिन्द महासागर और प्रशान्त महासागर पर स्थापित हो गया। टोकियो से सिंगापुर तक और चिन्दविन नदी से लेकर न्यूगिनी द्वीप के आग्नेय छोर तक जापानी झण्डा फहराने लगा। इतना बड़ा विशाल साम्राज्य चार मास में स्थापित कर लिया। जादू से जैसे आम का पेड़ खड़ा हो जाता है, उसी प्रकार जापानी साम्राज्य पल मारते ही स्थापित हो गया। डच, फ्रेंच और अमरीकी साम्राज्य का एशिया से अन्त हो गया। आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड के प्राण संकट में पड़ गये। आस्ट्रेलिया ने मध्यपूर्व से अपनी सेना वापस बुला ली। अमरीका के पूर्वीय तट पर रोशनी गुल हो गई। न्यूयार्क जापानी विमानों के हमले के भय से कम्पित हो उठा। पर यह समय बहुत देर नहीं रहा। जापान ने साम्राज्य स्थापित कर लिया, पर उसकी रक्षा के लिए उसके पास साधने-सामग्री का अभाव था। पर्लहारबर में जापान ने अमरीका के ५ जंगी जहाज, १६ लड़ाकू जहाज डुबो दिये थे। पर संयुक्तराष्ट्र अमरीका इस धक्के को सँभाल ले गया। वह चेत गया। उसका औद्योगिक उत्पादन इस तेजी से बढ़ा और उसने युद्ध-काल के अनुरूप इतनी जल्दी अपने को बना लिया कि जापान ने इसकी कल्पना नहीं की थी। नई दुनिया का सारा कच्चा माल संयुक्त-राष्ट्र की इच्छा पर छोड़ दिया गया और अमरीका की सारी शक्ति विमानों, जहाजों और गोला-बारूद बनाने में लग गई। अटलाण्टिक और प्रशान्त दोनों के लिए अलग अलग बेड़े बनाये गये। जापानी साम्राज्य का सूर्य ४ मई १९४२ को अस्ताचलगामी हो गया था। प्रवाल समुद्र में जापानी बेड़े और अमरीकी बेड़े की पहली टक्कर हुई और उसमें जापान के १५ जंगी जहाज, २ विमानवाहक डूब गये, २० जहाज भग्न हो गये १०० विमान गिर गये।

दूसरा मुकाबला ३ से ६ जून तक मिचवे में हुआ। जापान ने १६ जहाज, ४ क्रूजर, २७५ विमान गँवा दिए और अमरीका ने एक विमानवाही, १ विनाशक, १५० विमान खोये। इसके बाद जापानी नौसेना फिर सामने नहीं आई। मनीला में अमरीकी सेना के उतरने के समय जापानी बेड़े ने प्रतिरोध करने की इच्छा प्रकट की थी, पर उस समय भी वह हट गया। जापान ने इसके बाद से एल्यूशियन द्वीपों को जीतने को छोड़कर-रक्षात्मक लड़ाई लड़ना शुरू कर दिया और आक्रमणात्मक लड़ाई फिर वह न लड़ा। जापान की कमजोरी स्पष्ट थी। उसके साम्राज्य का जितना विस्तार था, उसकी रक्षा के लिए उसके पास आवश्यक जहाज और विमान न थे, जो तोकियो का सम्बन्ध गुआल कनाल से लेकर अण्डमान निकोबार तक बनाए रखें और इनको एक सूत्र में पिरोये रखें! इतने बड़े साम्राज्य को दृढ़ संगठन में रखने के लिए शक्तिशाली हवाई और नौबेड़ा यातायात के लिए जहाज और विमान भारी संख्या में चाहिए था। जापान के पास कच्चे माल की कमी थी। पेट्रोल भी उसके पास पर्याप्त था। डच ईस्ट इण्डीज का रबड़ और पेट्रोल उसकी इच्छा पर था, पर जापान औद्योगिक दृष्टि से अमरीका के समान आगे नहीं बढ़ा हुआ था। उसके कल-कारखाने १९४४ तक हवाई हमलों से मुक्त रहने पर भी अमरीका के समान उत्पादन नहीं कर सकते थे। उसके पास मैशीनरी का अभाव था। उसके विमान अमरीकी विशालकाय विमानों से टक्कर नहीं ले सकते थे। फलतः जापान ७ अगस्त से पहले-पहल जितनी फौज जहाँ उतार सका था, उसके बाद वहाँ और वह विशेष कुमुक नहीं भेज सका। ७ अगस्त को गुडयाल कनाल पर अमरीकी फौज उतरी। इसके साथ लड़ाई की लहर ने पलटा खाया और वह जापान के प्रतिकूल और अमरीका के अनुकूल हो गई। एडमिरल निमिज का बेड़ा जब आ गया और उसने फिलिपाइन के इर्द-गिर्द के ६०० मील के अन्दर गिलबर्ट, मार्शल, मैरियाना, पलाऊ पर सेना उतार कर इनको जीत लिया और गुआम, सैवान और मिनियन अड्डों से तोकियो १,५०० मील दूर रह गया। और मैरियाना में जापानी बेड़े के शक्ल दिखाने के बाद पीठ फेर देने से इसमें सन्देह नहीं रहा था कि जापान की हार निश्चित है। २० अक्टूबर १९४४ को जब मैकआर्थर की सेना निरे में उतरी और जापान उसको रोक नहीं सका, तभी निश्चित हो गया था कि आज जापान का सूर्य अस्त हो गया है।

यह बात नहीं कि जापान ने इसका प्रतिकार नहीं किया। जापान जानता था कि यह सम्भव है। इसलिए उसने भाग्य-निर्णायक लड़ाई—जापानी द्वीप-समूह में न लड़कर चीन में लड़ने का निश्चय किया था और सिंगापुर तक उसने रेल-पथ बनाया था, पर ब्रिटिश सेना-द्वारा बर्मा-विजय ने और प्रलय-बम के हमलों के भय ने तथा रूसी युद्ध-घोषणा ने उसकी इस योजना को भी विफल कर दिया और लड़ाई को लम्बी चलाने की उसकी योजना को रद्द कर दिया।

आज इस बात का विचार करने से कोई लाभ नहीं है कि यदि जापान अप्रैल १९४२ में भारत पर हमला करता और जब जर्मन सेना स्टालिनग्राड में लड़ रही थी, उस समय वह रूस पर कैस्पियन सागर और आमूर नदी के तट से दोहरा हमला करता, तो क्या जापान को आज यह दिन देखना पड़ता? जो हुआ नहीं और जो हो नहीं सका उसके सोचने का यह समय नहीं है।

एशिया का भविष्य

प्रश्न आज यह है कि जापान के आत्मसमर्पण के बाद एशिया का भविष्य क्या होगा? जापान एक बड़ी शक्ति अब एशिया में नहीं रही। क्या चीन उसका स्थान ले सकेगा? चीन गृह-युद्ध के भय से काँप रहा है। येनान के सेनापति जापान से आत्मसर्पण कराने की सन्धि-चर्चा में अपना प्रतिनिधि चुंगकिंग से अलग भेजना चाहते हैं और वे मार्शल च्यांग का आर्डर नहीं मान रहे हैं।

यह ठीक है कि मास्को चुंगकिंग गवर्नमेंट को मानता है, और उससे ही सन्धि की बात कर रहा है, पर येनान के कम्युनिस्ट उसकी प्रेरणा के बिना यह सब कर रहे हैं, यह नहीं कहा जा सकता। इसलिए जब तक चीन अपनी घरेलू लड़ाई को समाप्त नहीं कर लेगा और संयुक्त चीन का उदय नहीं होगा, चीन के लिए यह आशा करना कि वह जापान का स्थान लेगा, मनमोदक खाने के समान है। चीन आज अमरीकी रूस के अन्तर्राष्ट्रीय कान्फरेंसों में भाग ले रहा है, और चार अभय शक्तियों में है। अपनी शक्ति और बल के भरोसे नहीं। इसलिए जापान को जो अग्र-पूजा का स्थान प्राप्त था, वह उसको न होगा।

इसलिए एशिया में दो बड़ी शक्तियाँ रह गईं—रूस और अमरीका। मि० चर्चिल ने स्वीकार किया है कि ब्रिटेन अब प्रथम श्रेणी का राष्ट्र नहीं रहा है। एटामिक बम अमरीका के पास है। मि० चर्चिल का ख्याल है कि इसका रहस्य अभी कई वर्ष तक और किसी को न मालूम हो सकेगा। इसका अर्थ है कि जब तक इसका रहस्य मालूम नहीं होता, या इसका प्रतिकार मालूम नहीं होता तब तक सबसे बड़ी शक्ति अमरीका रहेगा, रूस नहीं, और पोट्सडम में रूस को जैसे अग्र-पूजा का सम्मान प्राप्त हुआ है, वह भविष्य में उसको प्राप्त न होगा। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र ने बलगेरिया की गवर्नमेंट को नोट भेजने का साहस किया है कि चुनाव ठीक रीति से नहीं हो रहा है और उसकी गवर्नमेंट में सब जनता का मत शामिल नहीं है। अमरीका के प्रधान हवाई सेनापति जनरल आरनोल्ड का यह दर्प कि अमरीका सारे एशिया पर प्रभुत्व स्थापित कर सकता है, थोथा नहीं कहा जा सकता। अमरीका आज टोकियो को अगले काफी सालों के वास्ते अपना अड्डा बनाने का इरादा कर रहा है। वह ५,००० मील तक मार करनेवाले बम-वर्षकों के भरोसे यह सुख-स्वप्न देख रहा है। प्रेसीडेंट ट्रूमन ने घोषित कर दिया है कि अमरीका अपनी सुरक्षा के लिए प्रशान्त में कई द्वीप अपने पास रखेगा। यही नहीं अमरीका, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो में भी अड्डे चाहता है। डच लोग इससे निराश हुए हैं। अमरीकी सेना के नीदरलैंड ईस्ट इण्डीज में रहने से डच प्रभाव मन्द पड़ जायगा। सम्राट् जार्ज षष्ठ ने जरूर फ्रांस को फ्रांस का पुराना साम्राज्य वापस देने का आश्वासन दिया है और फ्रांस हिन्द चीन को पाने की आशा कर रहा है, पर ब्रिटेन, फ्रांस और नीदरलैंड अपने एशियाई साम्राज्यों को अमरीकी संरक्षण में नहीं रखेंगे और उसको संरक्षण में पायेंगे। इसलिए एशिया में दो ही प्रबल शक्तियाँ होंगी, अमरीका और रूस। रूस की स्थल सेना शक्तिशाली है पर प्रलय बम ने उसकी शक्ति को भी कम कर दिया है। यह होते हुए भी रूस का साम्राज्य और प्रभाव ब्लाडीवोस्टक से होकर बन्दरगाह तक फैला हुआ है और इससे ही सन्तुष्ट न रहकर वह मंगोलिया, मंचूरिया और कोरिया को अपने साम्राज्य के अन्दर या अपने प्रभाव-क्षेत्र में लेने को उत्सुक है। हारबिन में जापानी सेना से आत्म-समर्पण की अलग बातचीत करना उसकी इसी नीति का द्योतक है। डा० सुंग की मास्को से, चीन-रूस समझौता हो जाने के बाद लन्दन में रुके बिना वाशिंगटन जाना सूचित करता है कि रूस उत्तरीय चीन और मंचूरिया को एक अलग राज्य अपने बीच मंगोलिया और कोरिया के समान बनाना चाहता है और चीनी तुर्किस्तान (सिकियान) भी अपने साम्राज्य में मिला लेना चाहता है। इस अवस्था में स्पष्ट है कि भारत की
और पश्चिमोत्तर सीमा और ईरान
से रूसी सेना स्पर्श करेगी और यदि
की खाड़ी में रूस का प्रवेश-मार्ग
जायगा तो वह भारत की पश्चिमी
पर भी प्रभाव डालेगा। फलतः
अमरीका का अनुसरण करेगा।

टक्कर

रूस और अमरीका के स्वार्थों
टक्कर चीन में ही होगी और इसीलिए
सुंग वाशिंगटन गये हैं। अमरीका
का बाजार चाहता है। दूसरी ओर
चीन को अपने प्रभाव में रखना
है। एल्यूशियन द्वीपों को अड्डा
अमरीका समस्त एशिया पर अपना
स्थापित करने का स्वप्न देख रहा
रूस की सुरक्षा-योजना खतरे में
है। रूस अपनी सुरक्षा के नाम पर
सीमा का पूर्व और पश्चिम में विस्तार
रहा था, पर प्रलय-बम ने उसकी
नीति को विफल कर दिया है। इस
रूस और अमरीका का द्वन्द्व निश्चित
और यह चीन में होगा।

इस भावी युद्ध की तैयारी का
कहाँ बनेगा? फिलिपाइन में एक
बनेगा, तो दूसरा भारत में।
बटेविया और सुरावस्था सहायक
सकते हैं पर मुख्य नहीं। भारत
लड़ाई के लिए अच्छा अड्डा
इसके लिए भारत के उद्योग-धंधों
विकास किया जायगा, जैसे पिछली
के बाद ताता को संरक्षण देकर किया
था। सन्तुष्ट भारत ही ब्रिटेन के लिए
कन्धे पर बन्दूक रखकर अमरीका के
लड़ सकता है। इसलिए यह भी निश्चित
है कि भारत अखण्ड रहेगा, पाकि
मर गया और सदा के लिए दफना
गया, और भारत को मिस्र-जैसी
भी प्राप्त होगी। इसलिए जापान
पराजय भारत के लिए शुभ ही सिद्ध
और जापानी सूर्य के अस्त होने से
स्वाधीनता का सूर्य उदय होगा।
दूसरी लड़ाई भी गुजर गई और
परतन्त्र ही रहा, यह दुःख हमें न
चाहिए।

किंकिणी

लेखक, श्री राजाराम श्रीवास्त
इस पुस्तक में लेखक की उ
फुटकर कविताओं का संग्रह कि
है। कविताओं की भाषा इतनी
और कल्पना की उड़ान इतनी
है कि पाठक कुछ क्षण के लिए
अपनी सुध-बुध भूले बिना नहीं
मूल्य ।।।) बारह आने।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी
इस पुस्तक में ६ कहानियों का
है। इस संग्रह की विशेषता कहानि
स्वाभाविकता है। मानव-हृदय की
कुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा
चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा।
१) एक रुपया।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

हर थाली से उन्हें ज्यादा स्फूर्ति दीजिये!

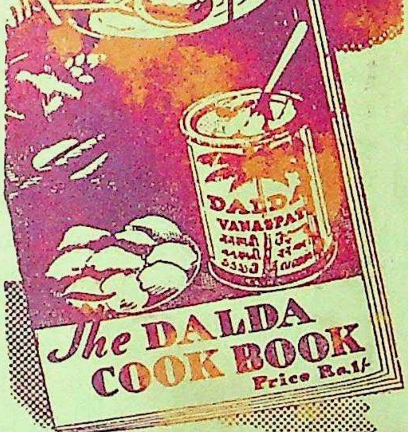

रसोई बनाने के पहले एक बात ध्यानमें रखना जरूरी है। बच्चोंको स्फूर्तिदायी चीजें—बहुत शक्ति देने वाली—खिलाना आवश्यक है। इधर यह भी मानना जरूरी है कि आहारों की स्फूर्तिदायी शक्तिमें जमीन-आसमान की तफावत होती है। हो सकता है कि बच्चे चाहे उतना खायें फिर भी उन्हें काफी स्फूर्ति न मिले—ना, प्राय: ऐसा ही होता है। लेकिन याद रहे कि आहार की हर चीज जीवन-सत्वसंपूर्ण डाल्डामें तैयार करनेसे वह अधिक स्फूर्तिदायी होती है। जिस घर की रसोई डाल्डामें बनती है उस घरमें स्फूर्ति की कमी रहने की कोई संभावना नहीं क्योंकि रसोई की यह चीज प्रकृति के बढ़िया शक्तिदायी अन्नांश देती है। और आहारों को ज्यादा रसीले बनाती है। अलावा इसके वह केवल वनस्पति से बनती है।

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारीबातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. E113 P.O.Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

HVM. 36-178-40 HI

पोषक-तत्व संपन्न

डालडा

स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

न्धावली—लेखक, महापंडित …त्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल …म्बन्धी तथा साहित्यिक और दार्शनिक …का संग्रह किया गया है। इसमें कुल …है और राहुल जी ने देश और …कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान-राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

सारिडन से
२० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये
Saridon

इलाहाबाद के एजेन्ट— बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी
एल० एस० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

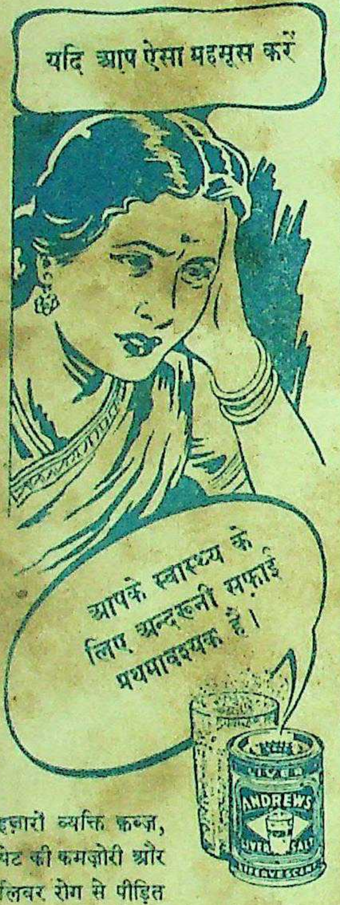
यदि आप ऐसा महसूस करें
आपके स्वास्थ्य के लिए अन्दरूनी सफ़ाई प्रथमावश्यक है।
ANDREWS LIVER SALT

हज़ारों व्यक्ति कब्ज़, पेट की कमज़ोरी और लिवर रोग से पीड़ित हैं। उनकी कार्यशक्ति क्षीण और सुख नष्ट हो जाता है। सिर दर्द और आलस उन्हें हमेशा कष्ट देता है। यह पेट की गन्दगी से होता है। इन विषों को एण्डरूज़ से धोकर जीवन को नष्ट करनेवाली शिकायतों से छुटकारा लीजिये।

प्रथम—एण्डरूज़ मुँह और जीभ को साफ़ रखता है।

बाद में—पाकस्थली और अम्ल की बीमारी दूर करता है।

फिर—लीवर को ताक़त पहुँचाता और पेट की गड़बड़ी दूर करता है।

अन्त में—आपकी अन्दरूनी सफ़ाई के लिए एण्डरूज़ पेट की सफ़ाई करता है। कष्टदायक विष को बाहर निकाल फेंकता है, कब्ज़ियत को दूर कर रक्त को साफ़ करता और ठंडक पहुँचाता है।

अन्दरूनी सफ़ाई के लिए
नियमित रूप से व्यवहार करें।

ANDREWS
LIVER SALT

एण्डरूज़ लीवर सारट
स्वास्थ्यप्रद पेय — स्वास्थ्यप्रद रेचक

Health Drink — Tonic Laxative

116

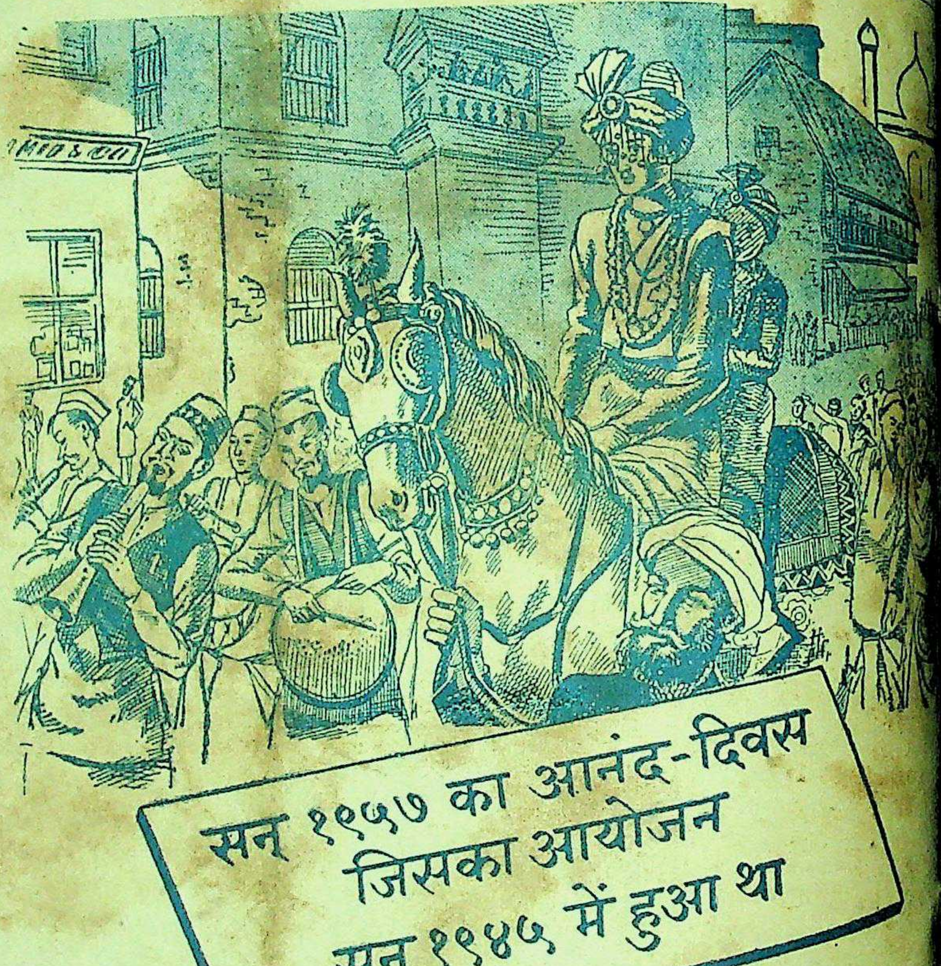
सन् १९५७ का आनंद-दिवस
जिसका आयोजन
सन् १९४५ में हुआ था

" क्या मैं अपने बच्चों के विवाह का खर्च उठा सकूँगा
इस प्रश्न का उत्तर इस बात पर निर्भर करता है कि आप
समय क्या उपाय करते हैं।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

शादी-विवाह में रुपया खर्च होता है और वर्षों पहिले बचत की योजना बना कर और बचत के रुपये को समझदारी से लगा कर ही आप इस बात का निश्चय कर सकते हैं कि आपके बच्चे बड़े होने पर सुचारु रूप से सुखी जीवन प्रारम्भ करें।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिके

- ★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं!
- ★ ४१ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़!
- ★ जमा हुए ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [कें० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७॥)
ख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सितम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 9th September, 1945

भैरवी—इस पुस्तक के लेखक पंडित सोहनलाल द्विवेदी हैं, जिन्होंने आधुनिक काव्य-जगत् में अपनी युग-वाणी के लिए ख्याति प्राप्त की है। ग्रंथ की राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनाएँ, असली आर्ट पेपर पर चित्र, बहुत अच्छी जिल्द और रैपर सहित, तृतीय संस्करण। मूल्य २॥=)

व्यापक प्रभाव क्यों ?
परमाणु बम क्या है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

किसानों का आन्दोलन और कांग्रेस।
शिलाखंड—क्या वह कलंकिनी थी?

छूत के रोग से रक्षा

क्योंकि यह प्रत्येक दिन 'पाइनतार' का उपयोग करता है।

छोटे बच्चे हमेशा मिट्टी कीचड़ से खेला करते हैं नहीं मालूम कब छूत के रोग के शिकार हो जायँ। माताओं के लिए कितना अच्छा होता यदि वे जान पातीं कि 'पाइन तार' साबुन से नहलाने से छूत के रोग से वे मुक्त होते हैं। दवाइयों से बनेहुए इस साबुन में बीमारी के कीड़ों के नाश की शक्ति है जो स्वच्छता के साथ साथ छूत की बीमारी से रक्षा करती है। इस का प्रयोग चमड़ी को हानि नहीं पहुँचाता है

'पाइन तार' साबुन बीमारी के कीड़ों का नाशक है। ठंडे पानी में स्वतः ही इसके झाग उठते हैं। डी. सी. एम केमिकल वर्क्स, देहली का बनाहुआ है जो प्रत्येक बड़े स्टोर या निकट के डी.सी.एम स्टोर से मिल सकता है।

PINE SOA
DCM

पाइनतार

साबुन बीमारी के कीड़ों का नाशक है। ठंडे पानीमें स्वतः ही इसके झाग उठाते हैं।

यह डी. सी. एम. केमिकल वर्क्स, देहली का बना हुआ है जो प्रत्येक बड़े स्टोर या निकटस्थ डी. सी. एम. स्टोर से प्राप्त हो सकता है।

व्यापारिक पूछताछ के लिए लिखिए :-

देहली क्लोथ एण्ड जनरल मिल्स, कम्पनी लिमिटेड, देहली

DCM. 50

बच्चे

वुड वर्ड का ग्राइप वाटर

पसंद करते हैं

यह सब दर्दों को दूर करता है और

बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
GRIPE WATER

WOODWARD'S GRIPE WATER

keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 113—117

W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २), डाक व्यय।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रया

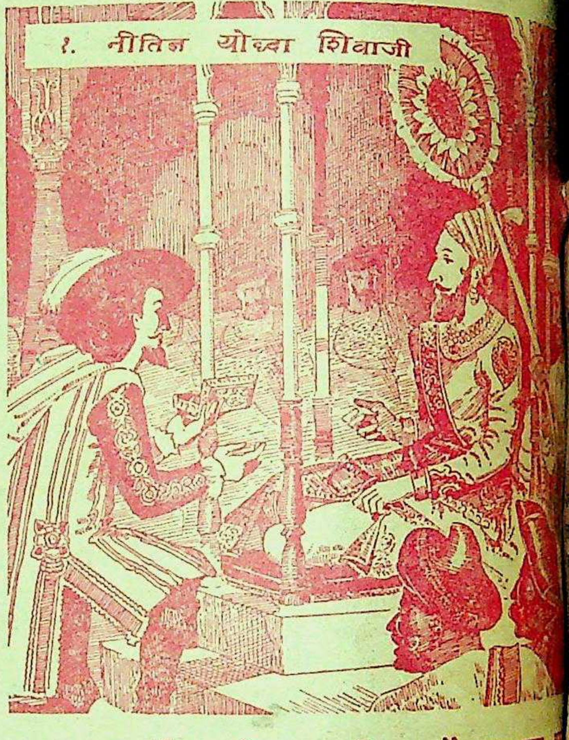

पराक्रम और शक्ति शाली कार्यों का मूल स्वस्थ शरीर। महानता और कीर्ति के लक्ष्य की सिद्धि कुशल पुरुषोंने मतिष्क और शारीरिक शक्ति के सहयो की है। शिवाजी ने अपने युद्ध कौशल, असाधारण शक्ति, शत्रु शक्ति का संतुलन और सैन्य संचालन, पूर्ण शारीरिक स्वस्थता द्वारा अनेक युद्धों को जीत कर साम्राज्य की नींव डाली।

शारीरिक स्वस्थता के लिये हेमो-द्राक्षो-माल्ट सेवन करिये। हेमो द्रक्षो माल्ट पुरुष स्त्री और बच्चों को समान लाभदायक है। उनके ग्लीसरो फास्फेट्स स्नायु शक्ति देते हैं। उसके माल्ट पेप्सिन और अंगूरों का रस पाचन शक्ति, भोजन में रुचि तथा जठराग्नि की शक्ति को बढ़ाते हुए संपूर्ण शरीर को असाधारण शक्ति और कान्ति प्रदान करता है।

स्वास्थ रक्षा के लिये -

हेमो-द्राक्षो-माल्ट व्यवहार कीजिये

अलेम्बिक डिस्ट्रिब्युटर्स लि. मेटसन रोड, कानपुर

अलेम्बिक कैमिकल वर्क्स कम्पनी लिमिटेड

देशदूत

८ संख्या २]   सचित्र हिन्दी साप्ताहिक   [रविवार, ९ सितम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

के प्रमुख और क्रियाशील
मोरीसन।

की तरह एशिया
ही लिया। छः वर्ष
परिणाम निकल
हो गये, करोड़ों
का संहार हुआ,
हुई तथा अन्न और
दुनिया में हाय हाय
है कि जान पर
हाय! हाय!! देखी
खानेवालों की।
पर आफत आई तो
आई। लेकिन मित्र
टाट उलट गया।
इधर जापानी। अब
अमरीका, ब्रिटेन, रूस
पीछे जुड़ा हुआ चीन!
। इन्हीं का राज्य है।
जोर मारनेवाला है कि
थोड़ा। बात यह है कि
हुई है और विजय के
अगर सभी राष्ट्रों
बेजा? विजय के बाद
चाहिए।

* * *

युद्ध के बाद मित्र-राष्ट्रों
समझने लायक भी
रीका, ब्रिटेन और रूस
सब मित्र-राष्ट्र! रूस
दौड़ा और ले मरा तीस
। अमरीका 'एटम
पर चढ़ दौड़ा और
ले मरा। रह गया
नेवाला नहीं था।
भूत की लंगोटी
पर कब्जा हो
। उसके लिये यही
ने चीनी कम्यूनिस्टों
दिये। कुछ भी हो
है। फिर कौन है
इस दुनिया में पैदा
होनी ही चाहिए।
इनकार कर

सकता है कि यह सबके सब पहले सिरे के मित्र-राष्ट्र नहीं हैं? अवश्य हैं। हाँ आगे यह सब मित्र-राष्ट्र रहते हैं या नहीं, इसके लिये जन्म भर का कोई ठेका थोड़े ही लिये हैं। जैसे लड़ाई खतम होते होते अमरीका का उधार पट्टा कानून छूमंतर हो गया उसी तरह युद्ध समाप्त हो जाने पर मित्र-राष्ट्रीयता गायब हो जाये तो कौन-सी बड़ी बात है? आगे जब फिर युद्ध होगा तो देखा जायगा, अब तो शांति का डंका पिटने ही वाला है।

* * *

कहावत प्रसिद्ध है कि जंगल में शेर एक ही होता है। उसी तरह इस वक्त संसार में मार्शल स्टेलिन ही सिर्फ एक डिक्टेटर हैं। हिटलर और मुसोलिनी पर उनकी छाया ऐसी पड़ी कि उनका नाम निशान जाता रहा। अब वही सिर्फ डिक्टेटर हैं और है उनकी सहचरी रूसी डिमाक्रसी। एक म्यान में दो तलवार कैसे रह सकती है? स्पेन के डिक्टेटर फ्रैंको साहब भी अपने को डिक्टेटर समझते रहे हैं। फिर वह डिक्टेटर स्टेलिन की छाया से कैसे बच सकते हैं? उन पर भी अब निगाह गई है। अब बच्चू को लेने के देने पड़ेंगे। स्पेन सरकार पर जर्मनी से मिलकर रूस के विरुद्ध षड्यंत्र रचने का अभियोग लगाया गया है। मित्रराष्ट्रों की निगाह में एक काँटा और बाकी है, उसका भी चलते चलाते सफाया क्यों न कर दिया जाये? फ्रैंको साहब की डिक्टेटरी गई और योरोप पर प्रजातन्त्र के पुजारी अमरीका, ब्रिटेन और रूस का एक छत्र राज्य कायम हुआ! नहीं तो प्रजातन्त्र योरोप में पनपेगा कैसे?

* * *

आजकल भारतीय कम्यूनिस्टों की ग्रह दशा गड़बड़ जान पड़ती है। देशभक्तों की जमात में आज वह उसी तरह दुरदुराये जा रहे हैं जिस तरह मद्रास प्रांत में पुजारी गए शूद्रों को। सन् ४२ के आन्दोलन के बाद कम्यूनिस्टों ने जिस तरह 'खाओ, पिओ, और मौज करो' का नारा लगाते हुए जैसी अच्छी खासी लीडरी की उसी की प्रतिक्रिया आज देखने को मिल रही है। कांग्रेस नेताओं तथा हजारों कांग्रेस मैनों के जेल से वापस आते ही उनकी लीडरी को गहरा धक्का लगना अनिवार्य है। जो कल परले सिरे के देशभक्त थे, आज वह गद्दार करार दिये जा रहे हैं। समय का फेर इसी को कहते हैं। कांग्रेसवाले प्रांतो पर शासन पहले भी कर चुके हैं और आगे फिर भी करेंगे ही लेकिन वह तो अब कम्यूनिस्टों के पेशे पर भी दाँत लगा बैठे हैं। किसान और मजदूर संगठन का खुदाई ठेका कम्यूनिस्टों के हाथ में रहा है लेकिन कांग्रेसवाले इस लहलहाती खेती पर भी कब्जा करना चाहते हैं। ऐसी हालत में अगर कम्यूनिस्टों का कुनबा नाराज हो बैठा है तो इसमें बेजा क्या है? जब कम्यूनिस्ट भाइयों के पितृदेव रूस महाराज गोला-बारूद से शांति स्थापना के लिये सचेत हैं तो बेचारे निहत्थे भारतीय कम्यूनिस्ट हाथ पैर भी न हिलायें यह कैसे हो सकता है?

* * *

इसी के परिणाम स्वरूप पिछले दिनों बम्बई में कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य श्री शङ्करराव देव जब भाषण दे रहे थे तब थोड़े से कम्यूनिस्ट भाइयों ने हाथ-पैर हिलाकर ऐसा हो हल्ला मचाया कि सभा भङ्ग हो गई। यही नहीं मारपीट की ऐसी नौबत आई कि कुछ लोगों को अस्पताल भेजने की व्यवस्था की गई। किसान-मजदूरों के संगठन में वह जरूर अहिंसावादी रहे हैं किन्तु सरकार के साथ पिछले तीन साल से 'लोकयुद्ध' का नारा लगाते लगाते उनकी जबान काफी पैनी हो गई है। इसलिए आज यदि वह वक्त पर मारपीट कर बैठते हैं तो क्या बेजा है? लीडरी का खेत चरना तो उनका प्रधान पेशा है। या तो सब मिलकर एकता के साथ, जिसमें कांग्रेसी और मुस्लिम लीगी दोनों का भला हो, लीडरी का खेत चरें नहीं तो किसी के पेशे पर हाथ लगाना कहाँ की शराफ़त है?

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन क्या उधार पट्टा पुनः चालू करने की सोच रहे हैं?

* * *

कांग्रेस वर्किंग कमेटी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी बम्बई में होने जा रही है। इस बार दोनों कमेटियों के सामने दो सवाल बेढब हैं। एक तो है कम्यूनिस्टों की सद्गति के लिए मार्गप्रशस्त करना और दूसरे अगले चुनाव की लड़ाई लड़ना। बात यह है कि युद्ध समाप्ति के बाद भारत को स्वराज्य देने का रास्ता निकाला गया है प्रांतों तथा केन्द्रिय सरकार के शासन संगठन के लिये नया चुनाव! कांग्रेस चुनाव में भाग लेगी ही क्योंकि सरदार पटेल और पंडित जवाहरलाल नेहरू भी यही चाहते हैं। लार्ड वेवेल भी कुछ दिन में लंदन से वापस आनेवाले हैं। वह इस बार क्या तोहफ़ा लाते हैं, इसकी बड़े जोरों से प्रतीक्षा की जा रही है। यदि वह चुनाव संबंधी कोई तोहफ़ा लाये तो चुनाव का युद्ध गरमायेगा। कांग्रेस चुनाव में विजयी होगी। साथ ही मुसलिम लीग भी विजयी होगी क्योंकि हमारी सरकार लीग की सरपरपस्त है। लेकिन बड़े बड़े लिबरल नेता, खास तौर से कम्यूनिस्टों के लिये भी सरकार ने कुछ सोचा है कि नहीं? कांग्रेस तो इन्हें सपोर्ट करने से रही, वहीं क्या कम उम्मीदवार हैं? यदि इन दलों के भाग्य विधाताओं के भाग्य के फैसले की कोई सूरत निकल आती तो क्या पूछना लेकिन वक्त पर कोई नहीं पूछता। चलते का नाम गाड़ी है। सरकार किसके किसके लिये करे? प्रजातंत्र में तो यह सब होता ही है। प्रजातंत्र का अर्थ ही यही है कि सुनिये सबकी और करिये अपनी सी। ब्रिटिश प्रजातंत्र जिन्दाबाद!

* * *

जिज्ञासा

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

प्रिय मिलन का दिन न आया!
युग-युगों का स्नेह-साथी
साधना में क्षीण होकर,
बज रहा हूँ भूल सुख-सुधि
वेदना की वीण बनकर,
प्राण मेरी रागिनी का स्वर न क्यों पहिचान पाया?
करुण कितना प्रेम पारावार—
की प्रिय थाह पाना,
दूर से परिचित किसी की
चाह में उस पार जाना,
कौन जाने फिर कहाँ यह पूर्ण होगी मोह माया?

सम्पादक का पृष्ठ

महासमर का अन्त

योरोप की भाँति एशिया के महायुद्ध का भी अब पूरी तौर से अन्त हो गया। जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया और मित्रराष्ट्रों के शर्तनामें पर उसकी ओर से हस्ताक्षर भी हो गये। पिछले ६ वर्ष के लगातार युद्ध से अब संसार को मुक्ति मिली है। मित्रराष्ट्रों ने फैसिस्ट शासकों के अन्त करने का जो बीड़ा उठाया था, वह पूर्ण हो गया। योरोप से इटली और नाजी फैसिज्म के अन्त होते ही यह आशा की जा रही थी कि एशिया से जापानी फैसिज्म के अन्त करने में कम से कम दो-तीन वर्ष और लगेंगे किन्तु 'आटम बम' के नाशक प्रभाव तथा लाल सेना के आक्रमण से जापान ने जितनी जल्दी घुटने टेक दिये उतनी उससे आशा नहीं की जा रही थी। अब समस्त संसार फैसिज्म शासकों द्वारा मुक्त हो चुका है। निकट भविष्य में मित्रराष्ट्रीय प्रजातन्त्र की आँधी सारी दुनियाँ में व्यापक रूप ग्रहण करने वाली है। जर्मनी की भाँति जापान का संगठन भी प्रजातन्त्रीय शासन प्रणाली के अनुसार होगा। आज संसार का मानव मात्र युद्ध के हाहाकार से परेशान है। दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षण में युद्ध ने इतना व्यापक और भयंकर रूप ग्रहण कर लिया है कि प्राणी मात्र का व्याकुल हो उठना अनिवार्य है। इसलिए युद्ध की पूर्ण रूपेण समाप्ति पर प्रसन्न होना प्रत्येक के लिए स्वाभाविक है। यद्यपि अभी सार्वजनिक दृष्टि से युद्ध का प्रभाव लगभग दो-तीन वर्षों तक बना रहना अनिवार्य है फिर भी आशा यही होती है कि भविष्य शान्ति और व्यवस्थित रूप में सुधरेगा। जिन कठिनाइयों का आज सामना किया जा रहा है उससे क्रमागत मुक्ति मिलती जायेगी।

हम सच्चे प्रजातन्त्र के पुजारी हैं, इसलिए संसार से तानाशाही का अन्त हुआ यह बहुत ही अच्छा हुआ। अब आवश्यकता है संसार के प्रत्येक राष्ट्रों में वास्तविक प्रजातन्त्रीय प्रणाली के अनुरूप शासन व्यवस्था की स्थापना की। यदि ऐसा हुआ और मित्रराष्ट्रों ने सचाई के साथ प्रजातन्त्र की स्थापना में सफलता प्राप्त की तो संसार सदा के लिए शान्ति, सुख और समृद्धि का अनुभव करेगा, किन्तु यदि प्रजातन्त्र के नाम पर उनकी नीति तानाशाही की शिकार बनती गई तो भविष्य में तीसरे महायुद्ध के बीजारोपण होने में सन्देह की गुंजाइश नहीं रह जाती। किन्तु यह सफलता निर्भर है अमरीका, ब्रिटेन, रूस तथा चीन की एकता पर। देखना है यह राष्ट्र योरोप और एशिया में प्रजातन्त्रीय शान्ति की स्थापना में अपनी संयुक्त नीति का किस प्रकार से संचालन करते हैं? फिर भी मित्रराष्ट्र युद्ध को संसार से समाप्त करने के लिए जनता के बधाई के पात्र हैं। योरोप और एशिया अब अपने युद्धजनित जीवन से शान्ति तथा व्यवस्थापूर्ण पथ की ओर अग्रसर होने जा रहा है, इसका भी श्रेय मित्रराष्ट्रों को ही है।

* * *

रूस और चीन का गठबन्धन

एशिया का युद्ध समाप्त होते होते सोवियट रूस और चीन के बीच ३० वर्षों के लिये जो सन्धि हुई है, अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से उसका विशेष महत्व है। वास्तव में रूस इस समय अपनी चतुराई और राजनीति में पूरी तरह सफलता प्राप्त कर रहा है। एक ओर डगलस मेकआर्थर जापानी आत्मसमर्पण की कार्यवाहियों में व्यस्त थे और दूसरी ओर रूस चीन के साथ सन्धि करने में व्यस्त था। रूस इस बात को भली भाँति जानता था कि जहाँ देर हुई और अमरीका तथा ब्रिटेन जापानी जंजाल से मुक्त हुए कि चीन की नोचा-चोंथन प्रारंभ हुई। इसलिये उसने जापानी आत्मसमर्पण की मूल कार्यवाही की विशेष परवाह न करके बड़ी दूरंदेशी से चीनी सन्धि की ओर ही लगा रहा। सच तो यह है कि रूस ने मंचूरिया पर हमला और चीनी कम्यूनिस्टों को आंतरिक शक्तिप्रदान करके स्वतन्त्र चीन को ऐसी स्थिति मे डाल दिया कि च्यांगकाई शेक-दल को सिवा रूस से सन्धि करने के दूसरा चारा ही नहीं रह गया। रूसी सन्धि होने के बाद इसमें संदेह नहीं है कि चीनी गृह-युद्ध समाप्त हो गया। यह सन्धि इतनी शीघ्रता से हुई कि अन्य मित्रबंधुओं को आगे कहने सुनने की गुंजाइश ही नही रह गई। रूस यह भी जानता है कि जापानी आत्मसमर्पण के बाद मित्रराष्ट्रों में जो बटवारा होगा उसमें उसे विशेष प्राप्ति की आशा नहीं है। क्योंकि जब उसने जापान के विरुद्ध मित्रराष्ट्रों की पूरी तौर से सहायता ही नहीं की तो बटवारे में उसे प्राप्ति की आशा ही कैसे हो सकती थी? इसीलिये उसने बड़ी दूरंदेशी से चीन से आगामी ३० वर्ष के लिये अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि की है, जो भविष्य के लिए एशियाई राजनीति पर व्यापक प्रभाव डालनेवाली सिद्ध हो सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के विद्वान और कूटनीतिज्ञ रूस और चीन की इस सन्धि के महत्त्व को भली भाँति समझ सकते हैं।

रूस-चीन की इस तीस वर्षीय संधि के अनुसार चीन और रूस किसी भी तीसरे आक्रमणकारी राष्ट्र के विरुद्ध एक दूसरे की सहायता करेंगे। औद्योगिक उन्नति में प्रत्येक एक दूसरे के सहायक होंगे। पोर्टआर्थर बन्दरगाह पर दोनों राष्ट्रों का ३० वर्ष तक समान अधिकार होगा। मंचूरिया की रेलों पर दोनों देशों का समान प्रभुत्व रहेगा। चीन ने बाहरी मंगोलिया की स्वतन्त्रता को स्वीकार किया है। तीन महीने के भीतर रूस मंचूरिया छोड़ देगा और चीन का उस पर पूरा अधिकार होगा।

इस प्रकार संधि की शर्तें इतनी स्पष्ट हैं कि यदि चीन भविष्य में कम्यूनिष्ट विचारधाराओं से पूर्ण प्रभावित हो जाये तो आश्चर्यजनक नहीं समझा जा सकता। चीन ऐसे साम्राज्य की आबादी इस समय संसार में सबसे अधिक है। राजनैतिक, आर्थिक, व्यापारिक, और सामाजिक विकास की वहाँ पूरी गुंजाइश है। यदि यह गठबन्धन भविष्य में मजबूत होता गया तो इसमें संदेह नहीं कि एशिया में यह एक शक्तिशाली संगठन सिद्ध होगा। इस संधि के बाद अमरीका और ब्रिटेन की क्या राजनीति दिखाई देती है यह तो भविष्य की बात है, हाँ यदि संधि बराबर कायम रही और शर्तों के अनुसार सहयोग बना रहा तो गोरे साम्राज्यवादियों के लिये विशेष कर योरोपियन और अमरीकनों के लिये यह संधि योरोप बनाम एशिया की दृष्टि से खतरे से खाली न समझना चाहिए।

* * *

सम्मेलन का सभापतित्व

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उदयपुर अधिवेशन का सभापति कौन हो, हिन्दी-संसार का आज का यह एक प्रमुख प्रश्न है। हिन्दी-प्रेमियों को आज ठिकाने से यह नहीं सूझ रहा है कि कौन-सा ऐसा व्यक्ति है जिसके सभापति के आसन पर सुशोभित होने से सम्मेलन के गौरव की रक्षा होगी और हिन्दी की रक्षा में जो अपना अधिक से अधिक समय देने के लिए तत्पर होगा।

सम्मेलन के सभापति का चुनाव होगा और वह चुनाव पिछले पचीस वर्ष की परिपाटी के अनुरूप ही होगा। इसलिए यह आवश्यक है कि हम सभापति का चुनाव किस प्रकार करें और किस व्यक्ति के हाथ सम्मेलन की बागडोर अगले वर्ष के लिए सौंपें जो सम्मेलन के पूर्व गौरव की रक्षा के अनुरूप हो और राष्ट्र-भाषा की दृष्टि से भी उसका सहयोग संस्था तथा हिन्दी-प्रेमियों के लिए पथ-प्रदर्शक हो। इस समय हिन्दी प्रेमियों के सामने गुजराती-साहित्य के प्रसिद्ध कलाकार श्री के० एम० मुंशी, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन और श्री बालकृष्ण शर्मा के नाम विशेष रूप से लिए जा रहे हैं। माननीय टंडन जी तो सम्मेलन के प्राण ही हैं। सम्मेलन उन्हीं की माया है। इसलिए उन्हें सम्मेलन का सभापति बनाने में कोई तुक नहीं है। घर ही में बटवारा उचित नहीं, जब कि सभापति न होते हुए भी टंडन जी ही उसके सर्वस्व हैं। इसके सिवा टंडन जी दो बार सम्मेलन के सभापति हो भी चुके हैं। इसलिए हमारी समझ में श्रद्धेय टंडन जी को उदयपुर अधिवेशन का सभापति बनाने का प्रश्न ही नहीं उठाया जाना चाहिए। इन नामों में सर्वोत्तम नाम है श्री कन्हैयालाल माणिक लाल मुंशी का। यदि श्री मुंशी सभापति बनाये जाते हैं तो सम्मेलन का गौरव पूर्ववत् अक्षुण्ण रहेगा और इस आसन के लिए वह अधिकारी व्यक्ति भी हैं। श्री मुंशी की गुजराती साहित्य के सुप्रसिद्ध कलाकारों में गणना होती है। साहित्यिक होते हुए भी वह प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ भी हैं। यदि हिन्दी प्रेमी बहुमत से श्री के० एम० मुंशी को सभापति-पद पर प्रतिष्ठित करते हैं तो वह एक साहित्यिक का ही सम्मान नहीं बल्कि हिन्दी भाषा भाषी प्रान्तों में हिन्दी प्रचार तथा राष्ट्रभाषा के आदर्श की भी रक्षा करते हैं। साथ ही सम्मेलन की

आज की राजनीति, उद्देश्य और
भी रक्षा होती है। हिन्दी प्रेमियों
सम्बन्ध में विचार-विनिमय करके
कर लेना चाहिए। गुजराती हो
श्री के० एम० मुंशी हिन्दी सम्मे
से च्युत होंगे या हिन्दी की रक्षा
किसी प्रकार का धोखा हो सकता है,
हम मानने को तैयार नहीं है।
उदयपुर सम्मेलन का सभा
मुन्शी को बनाना उचित है,
स्थिति में जब कि उदयपुर की
समिति की भी यही इच्छा है।

रह गये पंडित बालकृष्ण शर्मा
जी हिन्दी के उद्भट कवि और
इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं।
सम्मेलन के सभापति के आसन
अभी हम उन्हें नहीं मानते।
तक उनको रुकना चाहिए।
हिन्दीवाले शर्माजी की ओर
धिंत हो उठे हों कि जेल से
उन्होंने महात्मा गाँधी की 'हिन्दुस्
विरोध किया है, इसलिए उन्हें
सभापति इस समय मिलना
उनकी यह कोरी भावुकता है।
भाँति जानते हैं कि शर्मा जी
दार जीवों में से हैं। सभापति
बालकृष्ण जी शर्मा सम्मेलन के
'हिन्दुस्तानी' के सिद्धान्तों आ
करके पूज्य बापूजी से लड़ाई
हम नहीं समझते हैं और ऐसा
के लिए न तो शोभाजनक होगा
वह ऐसा कर ही सकते हैं।
शायद लोग यह समझते हों
सम्मेलन के मंच पर हिन्दी-हिन्दु
युद्ध का प्रदर्शन होगा, और
पति बनकर प्रदर्शन का संचाल
पूर्वक करायेंगे, यह सब व्यर्थ
और आशावाद है। बहरहाल
सभापतित्व के लिये अभी काफी

इससे यह स्पष्ट हो जाता है
वर्ष के सभापतित्व के लिए सबसे
उपयुक्त व्यक्ति श्री के० एम०
इसलिए हिन्दी प्रेमियों को उन्हें
सम्मेलन का सभापति पद देना
अभी सभापति का अंतिम चुनाव
इसलिए हम हिन्दी प्रेमियों की
जानना चाहते हैं। 'देशदूत'
व्यवहार को स्थान दिया जायेगा।
एम० मुंशी अखंड भारत के
सर्वविदित हैं ही साथ ही एक
कार और अहिन्दी भाषा भाषी
सम्मेलन के सभापतित्व के लिये
उपयुक्त और हिन्दी-हित-रक्षा में
सिद्ध हो सकते हैं।

RAMESH RAJ & Co
KARACHI

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट
वास्कट इत्यादि साफ तथा
तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि
माल एकदम उचित रेट पर
जाता है। माल बहुत कम है।
ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची

जापान और भारत का व्यापार

भारत की आर्थिक उन्नति का भविष्य कैसा है ?

लेखक, श्री गगनविहारी मेहता एम० ए०

> जापान के आत्म-समर्पण से क्या भारत की आर्थिक और व्यापारिक उन्नति को स्वतन्त्रता प्राप्त होगी ? 'जापानी युद्ध के पूर्व भारत और जापान का व्यापारिक संबन्ध कैसा था और आयात-निर्यात की नीति किस स्थिति तक ग्रहण की जा चुकी थी, इसका लेखा-जोखा आँकड़ों सहित अर्थशास्त्र के विद्वान् लेखक ने इस सुन्दर लेख में स्पष्ट किया है। लेख जानकारी से पूर्ण है।

भारत के सुप्रसिद्ध व्यवसायी सेठ घनश्यामदास बिड़ला अमरीका और इँग्लैंड भ्रमण करके भारत वापस आ गये हैं।

का उल्लेख गजों में किया गया था इसलिए जापान ने कपड़े के उन थानों की चौड़ाई बढ़ा दी जो वह भारत के बाजार में भेजता था। (२) सन्धि में 'फेंट' सम्मिलित नहीं थे। अतः जापान ने इस ढंग का बहुत-सा कपडा भारत के बाजार में भेजा। कपड़े के नियमित थान जान-बूझकर फेंटों में काटे जाते थे। इसका उद्देश्य था सन्धि में अनुल्लिखित बात से अनुचित लाभ उठाना। (३) इसी प्रकार सन्धि में सिले हुए कपड़ों का भी उल्लेख नहीं था। अतः ऐसे कपड़े भी बढ़ते हुए परिमाणों में भारत के बाजारों में भेजे गये। (४) नकली रेशम के कपड़े का भी सन्धि में उल्लेख नहीं था। जापान अधिकाधिक परिमाणों में यह कपड़ा भी भारत में भेजने लगा। (५) उत्तर - चीन की जापान-नियन्त्रित मिलों से भारत में अधिक थान भेजे गये।

प्रारम्भिक संधि सन् १९३४ में की गई थी। सन् १९३७ के संशोधित समझौते में स्थिति कुछ अच्छी हुई।

भारत में जापानी माल का आयात

जापान ने भारत में अपना तैयार माल बहुत कम मूल्य पर और बहुत बड़े परिमाण में भेजना प्रारम्भ किया। शीशे का सामान, बूट, जूते, लोहे का सामान, ऊनी माल आदि तरह तरह का सस्ता तैयार माल बढ़ते हुए परिमाणों में भारत में भेजा गया और इस प्रकार भारत के बहुत से छोटे छोटे और पनपते हुए नये उद्योग-धंधों और हस्तशिल्पों को हानि पहुँचाई गई। जापान से भारत में आनेवाले विभिन्न प्रकार के तैयार माल का परिमाण और मूल्य बढ़ा और उसकी किस्में बढ़ीं तथा भारत से जापान जानेवाला बहुत प्रकार का माल बहुत कम हो गया। फलतः जापान भारत में उतना ही माल भेजने में समर्थ नहीं हुआ जितना भारत से वहाँ भेजा जाता था, बल्कि वह भारत से वहाँ भेजे जानेवाले माल से अधिक माल यहाँ भेजने में भी समर्थ हुआ। जापान से भारत में आनेवाले माल की किस्में तो बढ़ गईं पर भारत से जापान को प्रधानतः कुछ ही किस्मों का माल जाता था जिसमें मुख्य कपास थी। भारत अपने कपास की बिक्री के लिए प्रधानतः जापान पर निर्भर हो गया। इसका फल यह हुआ कि जापान का बाजार भारत के कपास के उत्पादकों की समृद्धि के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण हो गया। भारत से प्रतिवर्ष बाहर जानेवाली रुई की ३० लाख गाँठों में से १५ लाख से २० लाख तक गाँठें केवल जापान जाती थीं जो प्रधानतः छोटे रेशे की रुई की गाँठें होती थीं। एक ही बाजार पर इस प्रकार अनुचित रूप से अवलम्बित रहना लाभदायक नहीं था। इसका प्रतिकूल फल तब दिखाई दिया जब सन् १९४१ के मध्य से भारत के हाथ से जापान का बाजार भी निकल गया। यूरोप के बाजार तो उसके हाथ से सन् १९४० से पहले ही निकल गये थे। यदि अधिक अन्न उपजाने का उद्योग सफल नहीं हुआ होता और भारत की मिलों ने अधिक रुई का उपयोग न किया होता तो युद्धकाल में भारत के रुई के उत्पादकों की स्थिति बहुत ही बिगड़ गई होती। अधिक अन्न उपजाने के उद्योग के कारण लोग कपास आदि वस्तुओं की खेती छोड़कर अनाज की खेती करने लगे।

भारत और जापान का व्यापार—युद्ध के पूर्व

युद्ध से पूर्व भारत और जापान के व्यापार की प्रवृत्ति इस प्रकार थी :—

वर्ष	जापान से आये माल का मूल्य	जापान में भेजे गये माल का मूल्य	भारत के अनुकूल (+) या प्रतिकूल (–) आयात माल और निर्यात माल का अन्तर
१९३४-३५	२०,८० लाख	२४,५९ लाख	+ ३, ७९
१९३५-३६	२१,८४ ,,	२१,८९ ,,	+ ५
१९३६-३७	२१,२७ ,,	३०,०७ ,,	+ ८, ८०
१९३७-३८	२२,१९ ,,	१८,१३ ,,	– ४, ०६
१९३८-३९	१५,४१ ,,	१४,५९ ,,	– ८२
१९३९-४०	१९,२९ ,,	१४,१६ ,,	– ५, १३
१९४०-४१	२१,५५ ,,	९,१९ ,,	– १२, ३६
१९४१-४२	११,७८ ,,	४,७७ ,,	– ७, ०२

.........जापान से

जापान से भारत आनेवाले माल का मूल्य १९३४-३५ और १९३७-३८ के बीच बढ़ गया। बाद को उसका जो ह्रास हुआ वह संभवतः इस कारण हुआ कि जापान चीन से युद्ध करने में व्यस्त था और फलतः अपने ग्राहकों को पहले की भाँति माल भेजने में असमर्थ था। पर भारत की दृष्टि से जो बात अधिक महत्त्वपूर्ण है वह यह है कि सन् १९३६-३७ के बाद भारत से जापान जानेवाला माल बहुत ही कम हो गया और इसका यह फल हुआ कि भारत से जापान में जितना माल जाता था उससे कहीं अधिक माल वहाँ से यहाँ आने लगा। सन् १९३६-३७ में जापान में भारत ने ८ करोड़ ८० लाख अधिक रुपये का माल भेजा, पर सन् १९४०-४१ में जापान ने यहाँ १२ करोड़ ३६ लाख अधिक रुपये का माल भेजा।

जापान से आनेवाले विभिन्न माल

सन् १९३७-३८ के इस व्यापार के विश्लेषण से यह देखा जा सकता है कि भारत में जापान से आनेवाला माल कितनी किस्मों का था। इस वर्ष इस माल का मूल्य २२ करोड़ १९ लाख रुपये तक पहुँच गया, यह उपर्युक्त तालिका की अवधि में अधिक से अधिक मूल्य था।

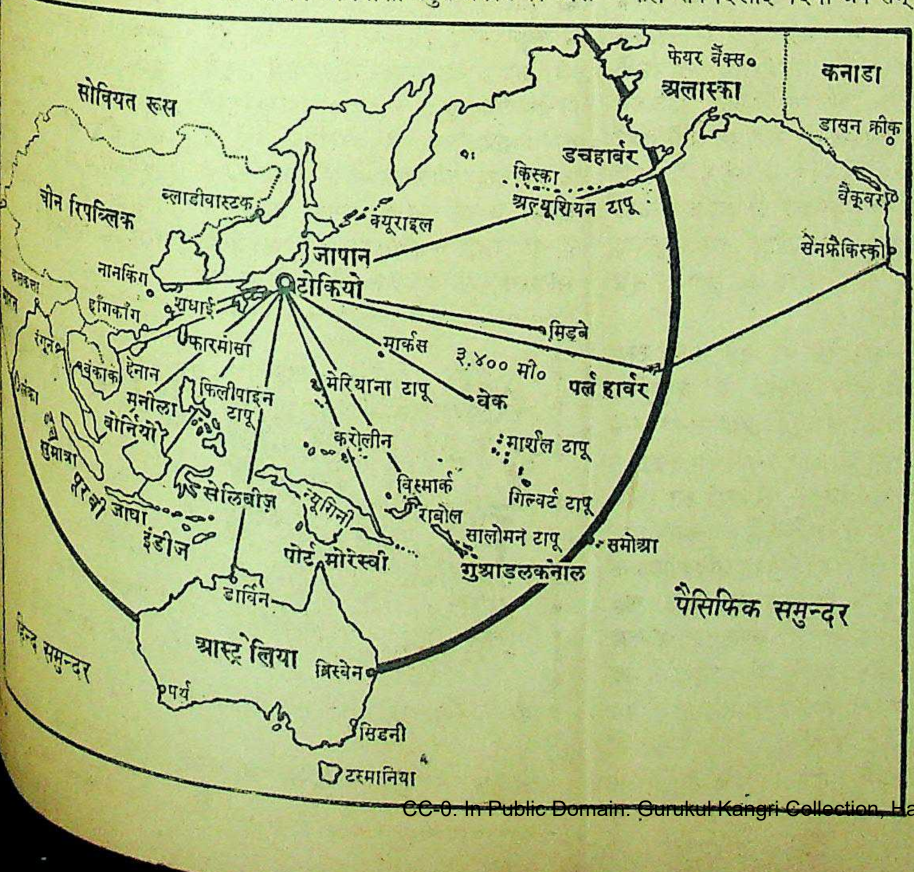
सोवियत रूस
चीन रिपब्लिक
ब्लाडीवास्टक
क्यूराइल
जापान
टोकियो
नानकिंग
शंघाई
हाँगकाँग
फारमोसा
हेनान
बैंकाक
रंगून
मनीला
फिलीपाइन टापू
बोर्नियो
सुमात्रा
डच ईस्ट इंडीज
जावा
सेलिबीज़
न्यूगिनी
पोर्ट मोरेस्बी
डार्विन
आस्ट्रेलिया
पर्थ
ब्रिसबेन
सिडनी
टस्मानिया
हिन्द समुन्दर
करोलीन
मेरियाना टापू
मार्कस
३,४०० मी०
वेक
मिड्वे
पर्ल हार्बर
मार्शल टापू
गिल्बर्ट टापू
बिस्मार्क
राबौल
सालोमन टापू
गुआडलकनाल
समोआ
पैसिफिक समुन्दर
किस्का
अल्यूशियन टापू
डचहार्बर
अलास्का
फेयर बैंक्स०
कनाडा
डासन क्रीक
वैंकूवर
सैनफ्रैंकिस्को

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

'अञ्चल'

लेखक, पंडित सूर्य्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

युग-प्रवर्त्तक कवि 'निराला' जी की यह सुन्दर [illegible] हिन्दी कवि अंचल तथा उनकी रचनाओं पर है। निराला जी ने बंगला, उर्दू तथा अँगरेजी के प्रगतिवादी कवियों की रचनाओं का हवाला देते हुए अंचल की प्रगतिवादी रचनाओं की वास्तविकता स्वीकार की है। हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए यह लेख पठनीय तथा विवेचनीय है।

जैसे आधुनिक लड़ाई के नये अस्त्र बने, अँगरेजी के रोमैन्टिक युग के बाद से अब तक कविता के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए, इसी तरह खड़ीबोली के काव्य में। पूरी गाथा के लिए एक छोटे निबन्ध में जगह नहीं। छायावाद-युग की परिणति के साथ देश में राजनैतिक और सामाजिक चेतना ने पल्टा लिया। काव्य पर नया रंग चढ़ा। सभी प्रान्तीय साहित्य का स्वर बदला। नई चीज अपने समय में लोगों को कम पसन्द आई। बङ्गाल में रवीन्द्रनाथ और शरच्चन्द्र के रहते पोस्ट वार और समाजवादी साहित्य का प्रवर्तन हुआ और विरोध के होते हुए तरुणों में प्रसार पाता रहा। इसके लम्बे विवेचन की आवश्यकता नहीं। संसार के साहित्य की छाया सभी साहित्यों पर पड़ती है। हमारी भी पड़ती होती, मगर पराधीनता घातक है, फिर भी कुछ आदान रहता है।

हमारे राजनीति के विद्वान् कवियों ने देखा, देश में जैसे रहने की जगह नहीं; तरह तरह के वाद—जैसे, साम्राज्यवाद, पूँजीवाद आदि समाज को निगले जा रहे हैं; सुख के तराने सूखे जा रहे हैं; भजन व्यर्थ है, भोजन नहीं मिलता; मिहनत करने पर भी पेट नहीं भरता; विपन्नता बढ़ती जा रही है; भाषा में बड़ा सिंगार है; शृङ्गार करवट बदलना चाहता है; ललकार दूसरी ऐंठ लाना चाहती है; कवियों ने ठाट बदला। अञ्चल उनमें प्रमुख हैं। काम लगन से किया। अच्छा किया। विचार आज की सामाजिकता है। विद्वान् अञ्चल इसके लिए भी अचञ्चल नहीं। उनकी मुखालफत होती है, बुद्धदेव की हुई, राशिद की हुई। काम जारी है। तीखी ललकार से अञ्चल ने कहा—

“आज तो संघर्ष को मैं प्यार करता !
आज मैं विद्रोह की हुङ्कार भरता !
हो रहा प्रतिपल सजग,
पीड़ित न अब यह वक्ष होता।
अब न मैं चीत्कार सुन कर,
शून्य गृह में बैठ रोता।

चाल अरबी घोड़े की है, तलवार तेज चलने के लिए छोटे खांड़े में आ गई है।

प्रगतिशील अञ्चल की गति बहुत तेज, शब्दों से फँसती-फँसाती नहीं।

“बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते।
पहचान सकोगे तुम कैसे,
हम महाशक्ति के विश्वासी।
हम घिसी व्यवस्था के दुश्मन,
हम नूतन जग के विन्यासी”

“हालका हासिर जीवने कि एल फसलेर काल ?”

विष्णु दे की सीधी रचनाओं में भी गौरव की सृष्टि अञ्चल में नहीं, वह लहराता और उड़ जाता है, जैसे बढ़ कर बढ़ा लेता हो।

“मग की पाषाणी बाधाएँ
चट्टानें पारद सी गलतीं
जब हम बनजारों की टोली
जय के उपकरणों सी चलती।”

अञ्चल समरसेन की तरह आधुनिक हैं। एक ही उम्र प्रायः।

“मड़केर कलरोल,
नूतन शिशुर कान्ना.
चिरकाल वेला भूमिर,
समुद्रेर शेषहीन संगम !”

समरसेन की तरह अञ्चल का भी—

“आज खुले कुन्तल लेकर ही,
चलो प्रलय के गीत कहें।
चलो विपथगा के प्यासे,
हम महाकाल की आँच सहें।”

बहुत सुन्दर है। समालोचक प्रोफेसर नंददुलारेवाजपेयी को—छायायादी कवियों के पीछे जैसे अञ्चल पीछे—आँच सहनी पड़ी।

राशिद की तरह

“खारे युगीलां ही सही,...
दोस्त से दस्तोगरेवां ही सही !
यह भी कुछ शबनम नहीं,
पीला नहीं, रेशम नहीं।”

या विष्णु दे की तरह—

“चोरा बालि डाकि दूरदिगन्ते,
कोथाय पुरुषकार ?”

भाषा का लदाव अञ्चल ने छोड़ दिया है। स्वच्छ झरना है उज्ज्वल तेज। जैसे उधर जो गहरी है, इधर वह गतिशील। शृङ्गार भी अञ्चल का ऐसा ही—

“ये जग-शतदल की सुकुमारी
कलियाँ सोईं प्यारी प्यारी।”

किरणशङ्कर का जैसा—

“उतरोल निबिड़ रजनी।
खोलो रक्त लाज-आवरण
लज्जा-अपमान-शङ्का छाड़ो।...
हे ललिता, फिराओ नयन !”

क्लीफ़ोर्ड डाइमेन्ट की भाषा—

“I cut quick circles with the stick;
It whistles in the April air
An eager songs, a bugle call,
A signal for the running feet,
For rising flyes flashing sun,
And windy tree with surging crest.”

अञ्चल—

“सुनकर निशि में सोता कोई
उठता चौंक अतीत किसी का
वह व्याकुल संगीत किसी का
जैसे पास दौड़ता आता
व्याकुल तीव्र तृषा उकसाता
और शून्य का पथ भर आता
होता मन अपुनीत किसी का।”

तोल की विषमता जाने दें। क्या तोड़ है अञ्चल में ? सीधा पकड़ना हिन्दी को अँगरेजी के मुकाबले रखा है।

अञ्चल की कविता में भी रोमान्स है मगर आधुनिक ढंग का। सामाजिक चेतना संसार के भिन्न भिन्न देशों में भिन्न भिन्न प्रकार से आई है, पर पूँजीवाद और रूढ़िवाद के खिलाफ सभी हैं, अञ्चल की रचना भी यह है। जो लोग प्रसाद, पन्त, महादेवी की भाषा की नाप लेकर अञ्चल आदि आधुनिक कवियों की जाँच करेंगे, वे धोखा खायेंगे। क्योंकि उनका हिसाब दूसरा है। बंगला के बड़े बड़े आलोचक रवीन्द्रनाथ की कविता की छाँह में सांस लेकर आधुनिक कवियों की एक मुद्दत से उपेक्षा कर

युग-प्रवर्तक कवि श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

रहे हैं। फिर भी साहित्य गतिशील है। तरुण बड़ों की ऐसी आलोचना की ओर ध्यान नहीं देते। यह भी है कि पुराना नये का साथ नहीं कर सकता। उसकी तैयार हुई रुचि पुराने ढर्रे को लिये हुए बढ़ नहीं पाती। जाँच अधूरी होती है। कुछ कहते हैं, यह वाद कामयाब न होगा। पर वे भूल जाते हैं कि वाद के रूप में अधिक दिन तक साहित्य में कुछ भी नहीं रहा। महाकाव्य लिखने की धारा बहुत पहले से साहित्य के नये प्रगमनों में मन्द होकर लुप्त हो चुकी है, परन्तु प्रायः लोग पूछते हैं, आपने महाकाव्य लिखा है ? हम गहरे नहीं पैठते।

देशभक्ति को लीजिए; पहले देश के नाम से उद्बोधन होता था, प्रोत्साहन चलता था, लोग उससे जीवन पाते थे; अब साहित्यिक उसको थोड़ा समझते हैं; वे वाद के नाम से जो कुछ लिखते हैं, वही देशभक्ति है, देश को उन्हीं की आवश्यकता है। अञ्चल में ऐसी देशभक्ति भरी है।

“भूखे थे भूचाल युगों के,
भूखे थे तूफान भयङ्कर।
सर्वनाश की यह तसवीरें
जो भूखी अकुलाती घर घर।”

ऐसा कवि राजनीति का गांधीवाद छोड़ गया है। उसके मूल सिद्धान्तों की जैसी इसकी भाषा नहीं। भाव में तीखी चोट है। समझौता नहीं।

आधुनिकों की भाषा का सुधार भी अञ्चल में मिलता है। पहले के वाक्यों को सही समझनेवाले, उनके न्यास को स्थायी समझकर सदा के लिए अपनी आत्मा रख देनेवाले, ऐसी भाषा से ऊबेंगे, नाराज होंगे, क्योंकि मन में यह सीधे घर नहीं करती। छायावाद के युग में जो रूप भाषा का था, वह बदल चुका है, यह साधारण पाठक को मालूम है जो कालिज हो आया है। बँगला में अँगरेजी की तरह, ऐसा प्रवर्तन आधुनिक पद्यों में और है। हिन्दी और उर्दू में भी आ गया है। हिन्दी ने इधर खासी निर्भीकता की। इसमें अञ्चल का भी हाथ है—

“चिर नपुंसक बन्धनों में,
बँध हुआ जीना असम्भव।”

और—

“आँसुओं की स्याह महफिल
अब न गीली आँच करती।”

भाषा की सफाई और
और उदाहरण—

“कुछ न पूछो हृदय के उन्माद
कुछ न पूछो गन्ध-अन्ध प्रमाद
रूप की नव तरुण ज्वाला,
कुछ न पूछो प्रणय-मधुर विराट

काव्य के साथ सफाई
है। भाषा का ढाँचा नया,
आधुनिक—

“आज जीवन मृत्युहीन अनन्त
आज पापिनि वेदना का अन्त
किरण मुखर उषा-कदम्ब
हेम-विकसित मद-प्रगल्भ दिगन्त

यौवन की मादकता—

“चीर दूँगा विश्व के तूफान
आज उन्मुख हूँ क्षितिज के
बस न पूछो प्राण, सीमाहीन
दलित कर दूँगा गगन के मान

इस कवि में गान्धीवाद की
वह राजनीति, वह संस्कृति
कवि से छूट गई है। 'परिमल'
इनकी प्राक्कथा मालूम होगी।

“है आज यही तन्मयता
टूट पड़ें सप्तर्षि-शिरा से
मानवता के मस्तक पर
जल-जल उठें चन्द्रलेखा

डाइलन् थामस् ने जैसे लिखा है—

“The force that drives
water through the
Drives my red blood.”

इसी की जैसे दूसरी रेखा है—

“आज फेंक दूं सब आग्रह
प्रतिदान भँवर ने याद

अञ्चल ने 'फ्री वर्स' सफल
पढ़ना भी अच्छा है, मुक्त छन्द

“देखता हूँ जब मैं
मानव घिनौना और

फीका लाश की तरह, पत्थर
हाँ पत्थर
तब मेरे इस छिन्न-भिन्न टूटे
जीवन का दहकता
मारू

कुछ लोग कुछ तरह की
मजाक करते हैं। कल एक
है। लिखा है, इस सम्मेलन में
रापन्न और कोसनेवाली
रचनाएँ न पढ़ी जायेंगी। जब भी
बन पड़ता है, फिर भी मैं उपदेश
देता, न किसी की मानता हूँ
बन्दिश। प्रचार मेरे साहित्य में
आधुनिक धारा के सम्बन्ध में
खामोश रहा। पढ़ने से इतर
है। वीभत्स सौन्दर्य की दूसरी
इसको आधुनिक साहित्य में जगह

“हड्डियों का निचोड़।
पाप की प्रतिमा—कुत्तों से
समसामयिक ज्योतिरिन्द्रनाथ

बँगला में लिखा है—

“कुष्टेर सारि
अन्ध, खञ्ज, बधिरेरा
(कोढ़ की कतार, अन्धे, लँगड़े
गले गले।)

यह जनगीत नहीं, जनता से
सम्पर्क है। गहरी आलोचना की
है। किताबें दो तीन युग के
लिखी जा सकती हैं। आधुनिक
दान वैसा ही एसकेप (पलायन)
जा सकता है। मगर वैसी ही ऊँची
भी उसकी कही जा सकती है।
काव्य ऐसा है। बाद की पीढ़ी
खुशी है।

युद्ध-समाप्ति का व्यापक प्रभाव

चोर बाजार, मजदूरदल और बाबू श्रेणी में एक भावी उथल-पुथल

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

> योरोप और एशिया का युद्ध समाप्त हो गया है। इसलिये आर्थिक, सामाजिक और व्यापारिक दृष्टि से उसका व्यापक प्रभाव पड़ना अनिवार्य है और बेकारी भी व्यापक हो सकती है। इस सुन्दर और रोचक लेख में युद्ध-समाप्ति का भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से जो प्रभाव व्याप्त होगा उसका दिग्दर्शन कराया गया है। सरकार तथा जनता के शुभ-चिंतकों को इस भावी परिस्थिति के लिये सचेत होना चाहिए।

आशा थी कि इन चीजों का चोर बाजार खत्म हो जायगा। किन्तु चीनी का चोर बाजार राशन के बावजूद भी चलता रहा। राशनशुदा चीनी का भाव जब २० रु० मन था, तो हलवाइयों को चोर बाजार में चीनी ३२ रु० मन के भाव से बड़ी आसानी से मिल जाती थी। चोर बाजारवाले किस तरह चीनी प्राप्त कर लेते होंगे, यह वे ही जानते हैं। जून १९४५ से कपड़े का राशन हुआ। लेकिन चोर बाजार में भी कपड़ा बिक रहा है। राशन के अनुसार महीन कपड़े की यूनिट बहुत कम है। अधिकांश कपड़ा मोटा ही है। इसलिए महीन कपड़ा चोर बाजार में काफी बिकता रहा। 'सरोजिनी' वायल जब राशन की दुकानों पर दिखाई भी ही नहीं देती, चोर बाजार में इसकी भरमार है। कोयले का भी राशन हो चुका है। लेकिन राशनशुदा कोयले में पानी और चूरे की आम शिकायत रहती है। इसलिए चोर बाजार में लकड़ी का वह कोयला अच्छी तरह मिल जाता है, जो एकदम सूखा होता है, मोटा होता है और ताप काफी देता है। राशनशुदा लकड़ी के कोयले का भाव यदि ४ रु० २ आना मन है तो चोर बाजार में अच्छे कोयले का भाव ५ रु० मन है। यह कोयला अमूमन मोटरों और लारियों के 'गैस-प्लांटों' के लिए आता है। यदि आज युद्ध समाप्त हो गया तो दिल्ली के चोर बाजार के व्यापारी अत्यन्त निराश और दुःखी होंगे। इनके साथ वे व्यापारी भी निराश होंगे, जो युद्ध-काल में मुनाफ़ा कमाने के आदी से हो गए थे।

दस्तकार और मजदूर

युद्ध काल में कई हजार दस्तकारों, लड़ाई पर काम करनेवाले मजदूरों तथा मिल-मजदूरों को भी बेकारी का शिकार होना पड़ेगा। दफ्तरों के बढ़ जाने से गाँवों के ६-६, १०-१० वर्ष की उम्र के बालक अपना काम-काज छोड़कर दफ्तरों में चपरासी हो गये थे। अब गाँव वापिस जाने की उनकी क़तई इच्छा नहीं। वे इधर-उधर नौकरी की तलाश में हैं। वे चिन्तित हैं कि शहर की जिन्दगी गुजार लेने के बाद वे गाँवों में कैसे रह सकेंगे?

सरकारी ठेकेदार

सरकारी ठेकेदारों ने युद्ध-काल में दोनों हाथों से कमाया। उन्होंने हवेलियाँ खड़ी कर लीं। इनमें से जो नये ठेकेदार हैं, वे तो कुछ कुछ चिन्तित हैं, परन्तु पुरानों को किसी किस्म की चिन्ता नहीं। युद्ध-काल में उन्हें जिन इमारतों व सड़कों आदि के निर्माण के ठेके मिले थे; अब उन्हें गिराने के ठेके भी उन्हीं को मिलेंगे। इसलिए उनकी खुशी में कोई खास फ़र्क नहीं आ रहा है।

बँधी तनख्वाहवाले

युद्ध-समाप्ति से यदि किसी को खुशी है तो वे लोग हैं, जिनकी तनख्वाहें बँधी हुई हैं। इनमें से कुछ की तनख्वाहें युद्ध-काल में युद्ध-पूर्व की तनख्वाहों से दुगुनी और तिगुनी हो चुकी हैं। कुछ को युद्ध-काल में महँगाई का भत्ता मिलता था। युद्ध समाप्त होने पर उनके यह भत्ते उनकी असली तनख्वाह में मिला दिये जाते हैं। वे अपनी इन तनख्वाहों को लेकर सन् १९३९ के स्वप्न देख रहे हैं। उन्हें आशा है कि यदि युद्धकाल में आटे का भाव ५ आ० ६ पा० सेर रहा तो वह दिन दूर नहीं जब कि उसका भाव पहिले की तरह १ आना ६ पा० सेर हो जायगा। दाल यदि आज १० आना सेर बिक रही है, तो उसका भाव कल ३ आना सेर हो जायगा। चावल यदि आज ११ आना सेर है तो ३ आना सेर हो जायेगा। घी यदि आज ५ रु० ५ आ० ४ पाई सेर मिल रहा है तो वह १ रु० २ आ० सेर के भाव से मिलने लगेगा। सरसों के तेल का भाव यदि आज १ रु० ८ आ० सेर है तो वह बाद में ५ आ० सेर हो जायगा। आलू महँगा होकर यदि आज १ रु० सेर बिक रहा है तो वह २ आ० सेर बिकने लगेगा। दूध का भाव यदि ८ आना सेर है तो बाद में वह २ आ० ६ पाई सेर हो जायगा। दही का भाव यदि आज १२ आ० सेर है तो कल ३ आ० सेर में बिकने लगेगा। यदि अमुक बाबू के परिवार में ३ बालिग और २ बच्चे हैं तो उसे आजकल हर महीने १००-१५० रु० सिर्फ अपने भोजन पर खर्च करना पड़ता है। यदि १९३९ की अवस्था फिर आ गई तो उसे सिर्फ ३० रु० खर्च करने पड़ेंगे।

मकानों की हालत

युद्ध समाप्त हो जाने के बाद मकानों की हालत सुधर जायगी। दफ्तरों में स्थायी तौर से काम करनेवाले बाबुओं को युद्धकाल में सख्त परेशानी रही, जो गैर-सरकारी दफ्तरों में नौकर थे। उनकी तनख्वाहें कम थीं। इसलिए मोटी-मोटी तनख्वाहें पानेवाले सरकारी नौकरों ने मकान-मालिकों को डरा कर उनसे मकान खाली करा लिया लेकिन अब ऐसे बाबुओं की परेशानी दूर हो जायगीं। युद्ध-काल में सरकार की ओर से कई हजार क्वार्टर नए बनाए गए। इसलिए युद्ध के बाद यह आशा की जाती है कि काम करनेवाले तमाम सरकारी बाबुओं को क्वार्टर मिल जायँगे। युद्धकाल में पुरानी दिल्ली ऐसे नगर में दो दो कमरोंवाले मकानों का किराया ४० रु० मासिक रहा। मकान में बिजली का कनेक्शन नहीं, पृथक् स्नानागार व रसोई नहीं। किन्तु युद्ध के बाद ऐसे मकानों को ५ रु० में भी कोई न लेगा। युद्ध-काल में जिन अप-टू-डेट मकानों का किराया ६०-६० रु० था, उन्हीं को युद्ध के बाद १५ रु० में भी लेने के लिए कोई तैयार न होगा।

कम के कम दिल्ली में ऐसे मकान-मालिक बहुत हैं जिन्होंने सन् १९३९ से १९४५ तक एक बार भी अपने मकानों में चूने की पुताई नहीं कराई। युद्ध समाप्त होने के बाद मकान-मालिक दिवाली पर अपने मकानों की पुताई शुरू कर देंगे। युद्धकाल में मकान-मालिक लोग किरायेदारों से साफ कह दिया करते थे कि इस टूटे-फूटे मकान की मरम्मत हमारे बस की नहीं। यदि रहना चाहो तो मरम्मत खुद करा लो और यदि न रहना चाहो तो मकान खाली कर दो।

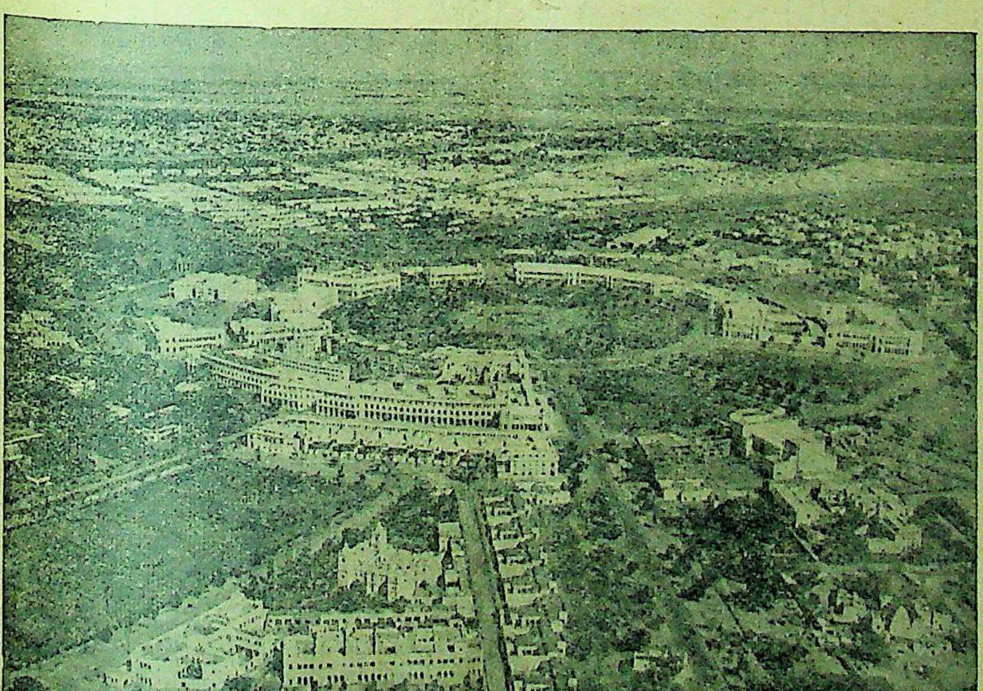

भारत सरकार की राजधानी नई दिल्ली का एक विहग दृश्य, जहाँ युद्ध समाप्ति का व्यापक प्रभाव पड़नेवाला है।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन

विज्ञान-जगत् के महान् व्यक्ति की जीवन-झाँकी

लेखक, श्री शंकर भारद्वाज, एम० ए०, एल० एल० एम०

जगत्-प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन के नाम से कौन शिक्षित व्यक्ति परिचित नहीं है ? उन्होंने अपने वैज्ञानिक चमत्कारों से, सतत अध्ययन और खोज से संसार को चकित कर दिया है। यह लेख आइन्स्टीन के सरल तथा सादे जीवन की एक झाँकी-मात्र है, जो पठनीय है।

प्रोफेसर आइन्स्टीन की जगत्पूजा इस बात का स्पष्ट उदाहरण है कि अभी जन-साधारण अंध मनुष्य-पूजा से ऊँचे नहीं उठ पाये हैं। मेरा यह तात्पर्य नहीं कि प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन सम्मान के योग्य नहीं हैं। परन्तु मैं तो केवल इतना कहता हूँ कि उनके असंख्य भक्तों और प्रशंसकों में कितने ऐसे व्यक्ति होंगे जिन्होंने उनके वैज्ञानिक खोज के महत्त्व को समझने का प्रयत्न-मात्र किया हो, या जो उनके वैज्ञानिक सिद्धांतों को समझने की तनिक भी क्षमता ही रखते हों ? ऐसे मनुष्य गिने-चुने ही होंगे जो इतना भी समझ सकें कि उनके वैज्ञानिक अनुसंधान का हमारे जीवन-दृष्टिकोण पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? परन्तु फिर भी वह आज देवता के समान पूजे जा रहे हैं। कई मनुष्य ऐसे भी हैं जो उन्हें नास्तिक अथवा क्रान्तिकारी कहकर बदनाम करने की कुचेष्टा करते हैं। मनहाटन के गिर्जे में तो उनकी देवता के तुल्य पूजा होती है! यह क्यों ? क्योंकि जन-साधारण को तो कोई इष्टदेव चाहिये, जिसके आगे वे आत्म-समर्पण कर सकें। अपने आराध्य देव के गुणावलोकन अथवा उसके संदेश को समझने से उन्हें कोई सरोकार नहीं। आइन्स्टीन ने स्वयं इस बात पर आश्चर्य प्रकट किया है कि जन-साधारण के सम्पर्क में न आने पर भी उनको मनुष्य-मात्र का श्रद्धा-भाजन होना पड़ा है। आइन्स्टीन जन-तंत्रवादी हैं, और किसी भी व्यक्ति का—उसका नैतिक अथवा बौद्धिक स्तर कितना ही ऊँचा क्यों न हो—अत्यधिक स्तुति के वह विरोधी हैं।

* * *

संभव है कि जीवन के शुष्क संसार में रहने के कारण उनमें एकाकीपन आ गया है, जो संसार में खुले रहनेवाले साधारण मनुष्य को प्रभावित कर देता है। क्योंकि आइन्स्टीन के असाधारण, असंसारी व्यक्तित्व को देखकर ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि जैसे हम किसी सूर्य, चन्द्र अथवा मंगल-लोक के वासी से भेंट कर रहे हों!

आइन्स्टीन के दामाद डिमट्री मेरीनोफ ने हाल ही में उनकी जीवनी लिखी है। उनका कहना है कि आइन्स्टीन की प्रसिद्धि का कारण उनकी गहरी एवं सरल मनुष्यता है।

निर्लोभी आइन्स्टीन

प्रिन्स्टन (अमेरिका) नगर में उनके घर पर सुबह से शाम तक मिलनेवालों का ताँता लगा रहता है। संसार भर के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ, नेता, लेखक, कवि, दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं कलाकार उनके दर्शनों को लालायित रहते हैं। अनेक नर-नारी, पत्र-द्वारा अपने व्यक्तिगत एवं घरेलू प्रश्नों पर उनकी राय माँगते हैं! कई इच्छुक तो उनसे आर्थिक सहायता की भी याचना कर बैठते हैं। डाक-द्वारा नित्य प्रति उपहार-स्वरूप धन और अमूल्य वस्तुएँ उनके पास आती हैं। वह प्रायः इन अमूल्य पुरस्कारों को वापस लौटा देते हैं। हाल ही में उन्होंने ३०,००० डालर की सुन्दर वायलिन वापस लौटा दी थी। यद्यपि आइन्स्टीन को गान-विद्या से बड़ा प्रेम है।

सरलता और सादगी के प्रतीक

आइन्स्टीन का जीवन बहुत सरल है। उन्हें बाह्य आडम्बर से सख्त घृणा है। वह जुर्राब तक नहीं पहिनते। केवल घोर सर्दियों में ही जुर्राब और दस्ताने इस्तेमाल करते हैं। घर में उनकी पोशाक एक चमड़े की वास्कट, ढीली खाकी पतलून और चप्पल होती है, और इसी पोशाक में वह अपने घर पर आये हुए बड़े से बड़े मेहमान से भी मिलने में तनिक भी संकोच नहीं करते। स्वाध्याय का कमरा है—ऋषि-आश्रम।

उनका अपना स्वाध्याय का कमरा ऋषियों के प्राचीन आश्रम की याद दिलाता है। बिना पालिश की एक छोटी सी मेज, कुछ वैसे ही सादे पुस्तकें रखने के रैक, एक छोटी सी तिपाई और काठ का दिवान यह है उनके निजी कमरे की शोभा। हाँ, कागज, पेंसिल और पुस्तकों की इस कमरे में भरमार रहती है।

अपरिग्रहव्रती—ज्ञानयोगी !

प्रिन्स्टन यूनीवर्सिटी से इस समय उन्हें २०,००० डालर सालाना मिलते हैं, हालाँकि बोर्ड से पूछने पर उन्होंने केवल ५,००० लाडर ही साल भर के लिए माँगे थे!

सच्चे ब्राह्मण की तरह आइन्स्टीन को धन, और वैभव की तनिक भी चाह नहीं। वे अपरिग्रहव्रतधारी ज्ञानयोगी हैं। रौकफेलर संस्था ने उन्हें इस बात पर बाध्य किया है कि वे कम से कम एक सहायक विद्यार्थी के लिए २५० डालर प्रतिवर्ष लेना मंजूर करें। बहुत हिचकिचाहट के बाद आइन्स्टीन ने सहायता मंजूर कर ली। जब २५० डालर का चेक उनके पास आया तब वह उसे किसी किताब में निशानी [illegible] गये! रौकफेलर संस्था ने यह समझा कि उन्हें यह सहायता मंजूर नहीं है, इसीलिए वह चेक बैंक नहीं भेजा गया, अतः मजबूर होकर उन्हें उस सहायता का धन अगले वर्ष से रोक देना पड़ा।

एकांतप्रिय और लजीले होने के साथ ही साथ आइन्स्टीन बड़े निर्भीक भी हैं। गांधी जी की तरह अहिंसाव्रतधारी होने के कारण, उन्हें किसी से भय नहीं है। जर्मनी से निर्वासित होने के बाद वे कुछ काल तक इँगलैंड में आकर रहे। ब्रिटिश सरकार ने उनकी रक्षा के लिए प्रसिद्ध स्काटलैण्ड यार्ड की एक गारद उनके घर भेज दी। उन्होंने हँसकर फौजी गारद वापस लौटा दी और कहा कि मुझे किसका डर है, जब मेरा कोई शत्रु ही नहीं है। इँगलैंड में उनकी प्रसिद्धि इतनी हो गई थी कि यदि वे किसी सिनेमा अथवा आपरा में चले जाते तो लोग खेल के बीच में ही उनका मान करने के लिये अपनी अपनी जगह खड़े हो जाते।

सहृदय आइनस्टीन

आइन्स्टीन बड़े सहृदय हैं और उनके परिवार के लोगों को उन्हें धूर्तों से बचाने के लिये, आये-गये पर कड़ी निगरानी रखनी पड़ती है। एक बार एक प्रसिद्ध एलीवेटर कम्पनी का खरीदार उनके केवल दो मंजिले घर पर एलीवेटर लगाकर चला गया। जब मित्रों ने पूछा कि इस छोटे से मकान को एलीवेटर की क्या आवश्यकता थी तो वे हँसकर बोले—भाई, मैं उसे कैसे मना करता। मुझे वह बहुत भाया। मनुष्यता के आगे एलीवेटर बड़ी तुच्छ चीज है!

जगत् की गूढ़ पहेली को सुलझाने में अनवरत परिश्रम करने का आइन्स्टीन में बच्चों जैसा भोलापन भी है। बड़े बड़े जनरल स्टोरों में घूम घूमकर नाना प्रकार की तड़क-भड़क और ऐश्वर्य की सामग्री को देखते-भालते रहना, उनका मनोरंजन है। एक बार वे बड़ी देर तक एकज़िब के बटुए को खोलते-मूँदते रहे, मानो कोई छोटा बच्चा किसी खिलौने से खेल रहा हो।

कृत्रिमता के कट्टर शत्रु

उन्हें बनावट से सख्त घृणा है। प्रायः समाज-द्वारा माननीय धनी अथवा सफल पुरुष मुलाकात के लिये आये हुए आइन्स्टीन से योंही उनकी थ्योरी आफ रैलिटिविटी के विषय में प्रश्न कर बैठते हैं। आइन्स्टीन का गम्भीर मौन उन्हें
शर्मिन्दा कर देता है।

खोया हुआ आइनस्टीन

आइन्स्टीन घर में भी भूले
रहते हैं। कई बार खाना
"वह अपने वैज्ञानिक विचारों" में
जाते हैं और मजाल है कि उनका
सम्बन्धी उन्हें स्वप्न-संसार से
में लाने की चेष्टा करे! वे घर-
रहते हुए भी, कमल की नाईं
ऊपर उठे हुए हैं। संसार की
चीज उन्हें आकर्षित नहीं कर
न विकट दुःख ने ही उन्हें
लित किया है।

आठ वर्ष हुए, जब उनकी
देहान्त हो गया तब वह धीरे से
जीवन-सहचरी की शय्या से
गम्भीरता से अपनी लड़की और
को आज्ञा दी कि जाओ अब
की गोद में सुला दो।

आइन्स्टीन के जिसने एक
दर्शन कर लिये वह कभी उन्हें
सकता। उनका अत्यन्त कोमल
मुँह, उन्नत ललाट, अनन्त
विलीन गहरी आँखें, श्वेत
लम्बे बाल, उनकी गम्भीर एवं
हमें किसी प्राचीन ऋषि का स्मरण
है। वास्तव में आइन्स्टीन एक
व्यक्ति हैं, जो इस जगत् की
समझने और सुलझाने में अनवरत
में संलग्न हैं।

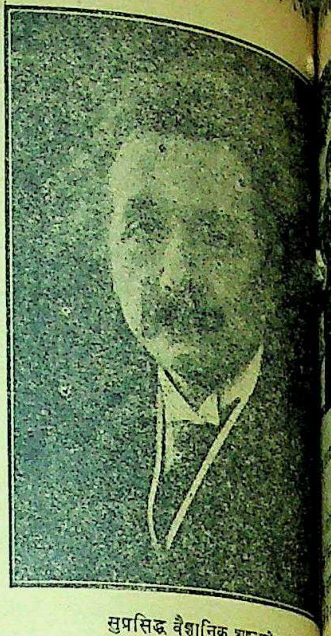

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक अइन्स्टीन।

किरण !

लेखक, श्री जगन्नाथ, एम० ए०

जब हुई क्षितिज के पार किरण !
तब कलिका कलिका मुसुकाई, चिड़ियों ने छेड़ी सहनाई,
लख बातों से लम्बी छाया, दुनिया समझी लेकर आई;
स्वर्गिम् युग का उपहार किरण !
पर ज्यों-ज्यों वह समीप आई, आतप से धरती घबड़ाई;
कुम्हलाने लगीं वही कलियाँ, जो थीं स्वागत में मुसुकाई;
बन गई शिरों पर भार किरण !
जग नहीं चाहता इन्द्रासन, जग चाह रहा बस परिवर्तन;
वह अन्धकार हो या प्रकाश, दोनों ही के दोनों बन्धन;
सुनती थी बारम्बार किरण !

अपनी बात
लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण
मनुष्य के चरित्र में किन
दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर
किस प्रकार अपने जीवन को
सकता है, यह बात इस पुस्तक में
ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई
लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों
पर। अपने चरित्र का निर्माण करने
प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक
पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥) बारह
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन
लिमिटेड, प्रयाग।

शिलाखण्ड

लेखक, श्री रवीन्द्र वर्मा

युवक और युवतियों का भावुकता के प्रवाह में बह जाना आश्चर्यजनक नहीं। इसके दुष्परिणामों का सामना उन्हें करना ही पड़ता है। इंद्र और शारदा भी ऐसी ही भावुकता में बह गये। उन्हें जीवन प्रवाह में किस प्रकार से संघर्षों का सामना करना पड़ा और अंतिम परिणाम क्या हुआ, इसका चित्रण इस कहानी में बड़ी सजीवता से किया गया है। कहानी बड़ी सुंदर, रोचक और करुण है।

"मुझे हर्ष है कि मैं अपने सामने इतने प्रतिभाशाली युवक को देख रही हूँ!"

"और मुझे भी हर्ष है कि भारत की नारियाँ अब उतनी पिछड़ी न रह सकेंगी।"

धीरे धीरे इन्द्र और शारदा एक दूसरे के सम्पर्क में अधिक आते गये।

* * *

पाप और पुण्य!

जिस कार्य को हम छिपा कर करते हैं उन्हें ही हम पाप कहकर पुकारते हैं। वे ही कर्म यदि समाज के नियमों में आ जावें तो उन्हें हम धर्म कहा करें। वे मनुष्य जो समाज के प्रतिनिधि और धर्म के ठेकेदार बने हुए हैं, अपने धर्म की ओट में जघन्य पाप करते हैं और उसे सब पुण्य कहा करते हैं। जो एक के यहाँ पाप है वही दूसरे के यहाँ पुण्य! पर परिस्थितियाँ तो अपने अनुसार मनुष्य को कार्य कराती ही हैं।

इन्द्र ने देखा उसके हृदय में एक भीषण ज्वाला थी—एक जलती शिखा—और जब वह शारदा को देख लेता तो उसकी ज्वाला का वेग कम हो जाता।

जो प्रेम-वल्लरी उसके हृदय में कब से मुरझाई हुई थी वह शारदा का स्नेह-सलिल पाकर हरीभरी हो उठी।

उसे संयत की चेष्टा अधिक न रोक सकी।

विशाल वासुकि के श्वास में खिंचे हुए पशु की तरह वह पतन के भीतर निगल लिया गया।

क्या यह सब पाप था? हाँ वह समाज के प्रचलित नियमों में आबद्ध न था।

धीरे धीरे समय बीतने लगा। इन्द्र भावी विपत्ति की कल्पना से घबड़ा उठा। उसे ऐसा लगता कि समाज उसे खाने के लिए दौड़ रहा हो।

जब कभी उसे लगता कि कोई उसके सर्वनाश के लिए खड़ा है—चारों ओर सूची-भेद्य अन्धकार, कुछ भी दृष्टि में नहीं आता—फिर कहीं से सिसकियों की और क्रन्दन की ध्वनि आने लगती—इन्द्र चौंक पड़ता—उसके ओठों से दबी हुई चीख-सी निकल पड़ती।

इन्द्र में सहन करने की शक्ति नहीं थी। वह शहर छोड़कर चल दिया और शारदा—वह सपना देख रही थी।

'वह रेगिस्तान पर चली जा रही है। चारों ओर रेत ही रेत! दूर तक कुछ दृष्टि में नहीं आता। भीषण दोपहरी। जलती हुई रुई-सी धूप में रेत उड़ा जा रहा है। वह बढ़ी जा रही है। सहसा आँधी। चारों ओर अँधेरा। खजूर के पेड़ भीषण ध्वनि से टूटने लगे, शारदा गिर पड़ी।'

शारदा चौंककर जाग गई। वह फिर सिसक-सिसक कर रोने लगी।

* * *

शारदा अपने नवजात शिशु को लिये हुए काशी के एक सूने पथ पर चली जा रही थी। तीन पहर रात बीत चुकी थी। नीरव रात में कहीं से भी कुछ सुनाई नहीं पड़ता। कभी कभी पवन के झोकों से पत्तों में मरमर की ध्वनि आने लगती। शारदा की पद-आहट चाँदनी के फेनिल पट पर सुनाई पड़ती। शारदा ने शिशु को प्यार से अपने वक्ष से चिपटा लिया। मातृ-स्नेह से उसके आँसू उमड़ पड़े। पर उसी के ही कारण उसकी यह दुर्दशा हुई—शारदा काँप उठी। एक पेड़ के नीचे उसने बालक को रख दिया। बालक रोने लगा। कुछ दूर जाकर वह फिर लौट आई। बालक को गोद में लेकर वह फिर चुप कराने लगी। फिर वहीं उसे छोड़कर आगे बढ़ने लगी। उसने सोचा—बालक को कोई पथिक दया करके ले ही जायेगा। अब यह जीवन किस लिए? गङ्गा की गोद ही अब मुझे चिर शान्ति है। इस दुःखमय जीवन से कैसा प्रेम?

शारदा आगे बढ़ने लगी। वह कई रातों से जाग रही थी। उसके पैरों में अधिक शक्ति नहीं थी। उसने सोचा कि जीवन का अन्त करने से पहले कुछ शान्ति का तो अनुभव कर लूँ। वह कुछ दूर जाकर बैठ गई। धीरे धीरे उसकी आँखें झपने लगीं। बालक के रोने की ध्वनि अब भी उसके कानों में गूँज रही थी। वह पत्थर पर सिर रख कर सो गई। उसके ओंठ नीले पड़ रहे थे। शीत में वह ठिठुर रही थी।

सबेरा हुआ—शारदा अपनी निद्रा में बेसुध पड़ी थी। न जाने कितने दिनों बाद वह सोयी थी।

कुछ पथिक उस मार्ग से निकले। एक पेड़ के नीचे शीत से ठिठुरा बालक पड़ा था—अब भी उसके चेहरे पर मुस्कराहट थी। पास जाकर देखा, बालक मृत्यु की सुखद गोद में था। वे आगे बढ़े, शारदा मार्ग के किनारे सो रही थी। उसके शुभ्र कपोलों पर नीली नीली शिरायें झलक रही थीं। उसकी अधखुली आँखें मानो अब भी किसी की राह देख रही हों।

* * *

न्यायालय में शारदा खड़ी हुई थी। उसे कुछ भी घबराहट नहीं थी। मानो वह मृत्यु का आदेश सुनने के लिए ही उत्सुक हो। "क्या वह बालक तुम्हारा ही था?"

शारदा मौन खड़ी रही।

"क्या उसकी हत्या तुम्हीं ने की?" शारदा प्रकाश की ओर टकटकी लगाये खड़ी रही। फिर उसने हँसकर कहा, "हाँ मैंने ही की। मुझे दण्ड दीजिए।"

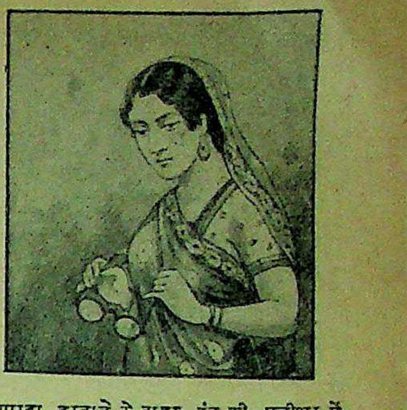

शारदा दरवाज़े के बाहर इंद्र की प्रतीक्षा में खड़ी हुई है।

"अच्छा तुमको इस अपराध में ७ वर्ष का कारावास दिया जाता है।"

शारदा चौंक पड़ी। उसने क्रोध में आकर कहा, "क्या यही है तुम्हारा न्याय? न्याय कहता है कि हत्या के स्थान पर हत्या का ही दंड देना चाहिए। फिर यह कैसा खेल? मुझे तुम्हारी कठोर करुणा की आवश्यकता नहीं। मुझे फाँसी दो" शारदा उद्विग्न थी।

पर उसकी ध्वनि केवल आकाश से गूँजकर ही लौट आई। वह मरने का प्रयत्न करने पर भी न मर सकी। गंगा की गोद में जाने से उसे पहले निद्रा ने रोक लिया। फाँसी को कठोर मनुष्य की करुणा ने धिक्कार दिया।

क्या यही है समाज का न्याय! वह मनुष्य को जीने भी नहीं देता—मरने भी नहीं देता? हँसते हुए प्राणी को देखकर वह उसका सर्वनाश करना चाहता है और मृत्यु की ममतामयी गोदी में जाने पर वह अपनी कठोर दया दिखाता है। पाप कहाँ? पुण्य कहाँ? सुख लूटनेवाले मानव को मिलता है दुःख! दुःख ही पाप है तो उससे छूटने के लिए क्रूर समाज मौत के सुख को भी नहीं आने देता? बस समाज का एक ही काम है—मनुष्य के सुनहले सपनों को नष्ट करना।

* * *

कई वर्ष बीत गये। गंगा-तट की सिकता-भूमि पर न जाने कितने मनुष्य पड़े रहा करते हैं। स्नेहहीन दीपक की लौ ऐसे ज्योतिवाले नेत्र, अस्थिशेष ऐसे हाथ-पैर, झुर्रियों से भरे पड़े चेहरे और झुकी हुई कमरवाले कितने ही कंकाल गंगा के पवित्र पुलिन पर भीख माँगा करते हैं।

कभी कभी कोई व्यक्ति दया कर कुछ रोटी के टुकड़े डाल दिया करता है। उसको पाने के लिए कितने ही कंकाल और कुत्ते एक ही साथ दौड़ पड़ते हैं। उसके बाद कुत्तों और उन भिखमंगों का झगड़ा देर तक हुआ करता है। यह सब एक करुणा-भरी, आँसू के तरल गीन की कहानी है।

कितनी ही स्त्रियों के अस्थिपिंजर बालक 'रोटी-रोटी' कहकर क्षुधा से चिल्लाया करते हैं। वे भिखारिनें अपने वक्ष पर केवल बालों की लटें डाले बैठी रहती हैं। कौन जाने उन्हें कपड़ा ही अंग ढाकने के लिए नहीं मिलता अथवा ऐसा करने से भीख कुछ अधिक मिल जाती है?

इन्हीं भिखारियों के जमघट में 'इन्द्र' भी पड़ा है। हड्डियों का ढाँचा, धँसी हुई आँखें, और बड़े बड़े बालों ने उसे इस विशाल जन-समूह में छिपा लिया था।

वह सोच रहा था—"वह विद्यालय का एक छात्र है। कक्षा में शारदा उससे

मिलती है। नवीन वर्ष का समारोह है। फिर कई महीनों बाद गङ्गा के समीप शिलाखण्डों पर इन्द्र ने एक दिन तूलिका से लिख डाला 'शारदा' पास ही में शारदा ने अंकित कर दिया 'इन्द्र'। वे दोनों नाम चन्द्रमा के प्रकाश में हँसने लगे!

फिर इन्द्र भय से भाग जाता है। कुछ ही दिनों बाद वह एक अखबार में पढ़ता है कि शारदा को उसके नवजात शिशु की हत्या के अपराध में ७ वर्ष का कठिन कारावास। अपराधी इन्द्र अपने को उसी समाज की दृष्टि से बचाने के लिए जिसके कारण उसकी और शारदा की इतनी दुर्दशा हुई, गङ्गा के किनारे भिखारी के वेश में रहने लगा। उस अवस्था ही में उसे कुछ शान्ति का अनुभव होता।"

इतने में ही एक पथिक का पैर इन्द्र के सिर में लगा। उसका सपना नष्ट हो गया। वह पथिक घूरकर बोल उठा—"क्यों बे पड़ा है रास्ते में, एक डण्डा कसकर मारूँ सिर फूट जाये।"

इन्द्र ने सोचा यही है मनुष्य का सभ्य समाज!

* * *

शारदा के पहाड़ ऐसे दिन बीतते न थे। पर धीरे धीरे उसे अभ्यास हो गया। धीरे धीरे मास और फिर वर्ष भी बीत गये। अब उसे अपनी अंधकार से भरी हुई कोठरी से प्रेम हो गया था। वहाँ के छोटे छोटे कीड़े-मकोड़े के साथ उसकी समवेदना थी।

उस कोठरी में एक छोटा-सा छेद था। उसमें एक पक्षी का जोड़ा प्रतिदिन आकर बैठा करता। शारदा उन दोनों से बहुत प्रेम करती। एक दिन बेचारी विहगी अकेली ही आई। बहुत देर तक वह कोठरी में चक्कर काटती रही। पर उसका विहग नहीं लौटा। पीड़ा से विह्वल विहगी भूमि पर गिर पड़ी। शारदा उसके जलते हुए शरीर को प्यार से सहलाने लगी। वह कहती—"घबरा मत, तेरा विहग आता ही होगा।" पर वियोग से संतप्त विहगी का शरीर और भी तपता जाता। उसने सदैव के लिए आँखें बन्द कर ली।

शारदा चौंक पड़ी। उसके मुँह से एक चीख निकल गई। शारदा के सात वर्ष समाप्त हो गये। उसे कारागृह से बाहर जाने की आज्ञा हुई।

उन्मादिनी के समान शारदा चल पड़ी। उसके बाल बिखरे हुए थे। वह एक यन्त्र की भाँति जाह्नवी के तट की ओर बढ़ने लगी। वह सोचने लगी—"अब तो स्वतन्त्र हूँ। चाहे जो कर सकती हूँ। अब अपना जीवन स्नेहमयी गंगा को अर्पण कर दूँ। इस कष्टमय जीवन से किसी तरह छुटकारा पा लूँ!"

रात हो चली। चाँदनी छिटकी हुई थी। चारों ओर केवल [illegible] सा गूँज रहा था। शारदा बढ़ी जा रही थी। शारदा ने सोचा न जाने कितने बार इन सात वर्षों से चाँदनी व्यंग की हँसी छिड़कने आई होगी। शारदा को वह स्थान अच्छी तरह स्मरण था जहाँ उसने और इन्द्र ने एक दूसरे के नाम शिलाखण्ड पर अंकित किये थे। पर अब इन्द्र से उससे क्या! नारी का कोई भी सहायक नहीं—सब हृदय को कुचलकर टुकड़े टुकड़े करनेवाले क्रूर हैं।

शारदा के पैर अपने आप उसी शिलाखण्ड की ओर बढ़ने लगे। वह वहाँ पहुँच गई। अब भी धूमिल सा शारदा और इन्द्र का नाम चाँदनी में दृष्टि आ रहा था। शारदा एक क्षण के लिए वहीं पर बैठ गई। सहसा वह चौंक पड़ी। एक भयानक आकृति का मनुष्य शिला के समीप बैठा हुआ उसे घूर घूर कर देख रहा था। वह भय से चीख मार कर नदी की ओर भाग गई।

बड़े बड़े बालों से भरा हुआ मुँह, हड्डियों का ढाँचा और मैले कपड़ों के कारण शारदा इन्द्र को न पहचान सकी। पर इन्द्र ने शारदा को पहचान लिया।

गङ्गा के विस्तृत वक्ष पर चन्द्र अपना फीका फीका प्रकाश बिखेर रहा था। तारों की झिलमिल करती पाँति धीरे धीरे धीमी होती जा रही थी। गङ्गा जैसे सो सी रही थी। शारदा उसकी गोद में लुढ़क गई। नदी में कुछ वर्तुलाकार लहरें बन गईं।

इन्द्र भी दौड़कर उस अथाह जलराशि में कूद पड़ा। उसने शारदा को अपनी निर्बल बाँहों में कसकर पकड़ लिया। पर भयङ्कर गर्जना करती हुई लहरें उन दोनों को सदैव के लिए बाहु में लेकर बह गईं। मृत्यु ने उन दोनों को सदा के लिए एक में मिला दिया।

आकाश का अन्तिम तारा निष्प्रभ होकर डूब गया। कुछ ही देर में लहरें किनारे पर आकर उस शिलाखण्ड पर जिस पर शारदा और हन्द्र का नाम अंकित था, टकराईं। टुकड़े टुकड़े होकर शिलाखण्ड लहरों में बह चला।

अनुराग

लेखिका, श्री विमला रानी

इस पुस्तक में ९ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव-हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

शीघ्र आयगा!

लाखों व्यक्ति हर रोज सवेरे स्वास्थ्यवर्धक एण्डरूजका आनंद लेनेसे बंचित रह जाते थे पर उन्हें इसका विश्वास होना चाहिये कि निकट भविष्यमें विपुल परिमाणमें जहाजसे माल पहुंचेगा। अपने चिर-परिचित एण्डरूजकी प्रतीक्षा करें जो पूर्ण विशुद्ध, वैज्ञानिक प्रणाली से मिश्रित, प्रयोगशाला द्वारा परीक्षित तथा प्रस्तुत क्रिया स्वास्थ्य विज्ञानके नियमोंपर आश्रित है। अब आप पुनः हर रोज प्रातः एण्डरूजके ग्लासका आनंद ले सकेंगे आन्तरिक सफाई होगी जो स्वास्थ्य ठीक रखनेके लिये आवश्यक है।

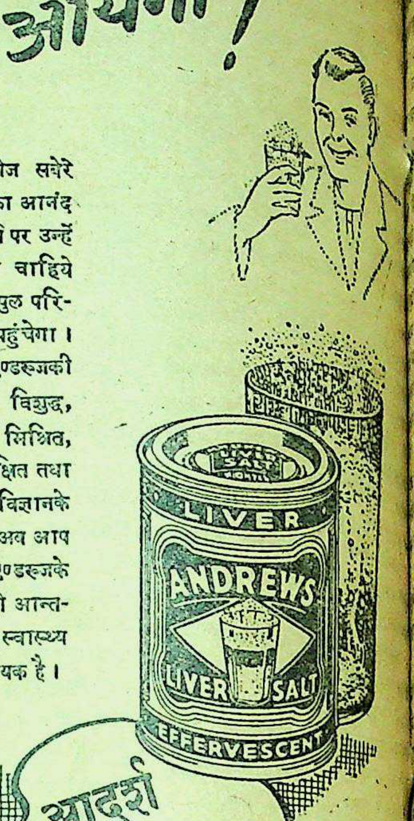

आपका सवेरे का

ANDREWS

एण्डरूज

आन्तरिक सफाई के लिये

आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य का प्रथम नियम है

24

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

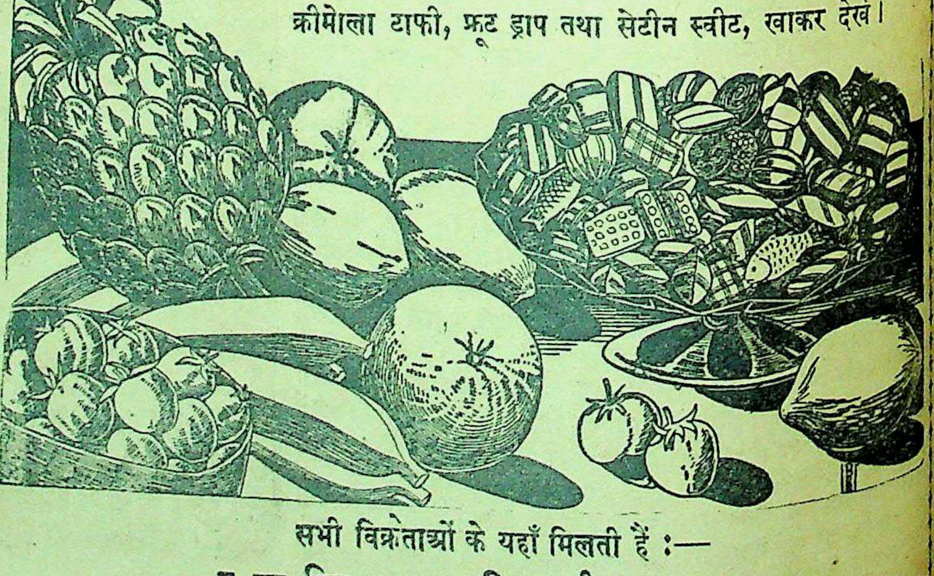

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

प्रसिद्ध फिल्म-अभिनेत्री और संगीतज्ञा सुलताना !

अभिनय-कला-सम्बन्धी मनोरंजक और सुंदर इंटरव्यू

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री सुलताना ।

देखने की हो रही थी। लेकिन मुझे आपका पता नहीं मालूम था। आज मेरी आकांक्षा पूरी हो गई।"

मैंने कहा—"आप लोग तो अपना परिचय दीजिये ?"

युवक ने पुनः कहा—"मेरा नाम गनपतलाल है, और ये मेरे बड़े भाई मणिकलाल बाबू हैं। मेरे भाई कई फिल्मों के डाइरेक्टर भी रह चुके हैं। लेकिन आजकल यह एक थियेट्रिकल कम्पनी को संचालित कर रहे हैं। मैं भी उसी कम्पनी में काम करता हूँ। आप भी कभी हमारी कम्पनी का खेल देखने आइये न !"

"हाँ मैं अवश्य आऊँगी !" मैंने उन दोनों की प्याली में चाय उंड़ेलते हुए कहा।

मैं एक फिल्म की शूटिंग से लौट रही थी। रास्ते में परिचित पोस्टमैन ने मुझे एक पत्र दिया। वह पत्र बाहर से भी काफी सुन्दर था। पता भी सुन्दर ढङ्ग से लिखा गया था। मैंने घर आकर पत्र को खोला। पत्र को पढ़कर मुझे आज से दो साल पहले की घटना कुछ कुछ याद आ गई। इस पत्र ने मेरे जीवन-पुस्तक के अतीत के पृष्ठ उलट दिये। जीवन के अन्दर प्रेम का उफान आने लगा। उस पत्र में क्या था ? वह पत्र इस प्रकार था—

"बहुत दिनों के बाद यह पत्र मैं आपको लिख रहा हूँ। आप तो शायद मुझे भूल ही गई होंगी। हमारी आपकी "पहिली भेंट" आज से दो साल पूर्व बरसात में आपके ही कमरे में हुई थी। आपने उस वक्त जैसी कृपा की थी उसे मैं आज तक नहीं भूला हूँ। बात यह हुई कि हमारी कम्पनी दूसरे दिन ही सरकार की विशेष आज्ञा से कलकत्ते से चली गई। इसलिए मैं दुबारा आपसे न मिल सका। अब हमारी कम्पनी फिर कलकत्ते आ रही है। उसका पूरा प्रबन्ध कलकत्ते में हो चुका है। आप अवश्य ही खेल देखने आइयेगा। अगर आप कम्पनी में नौकरी करना चाहें तो मैं आपको पाँच हजार रुपये प्रतिमाह दे सकता हूँ। फिलहाल जो आपको फिल्म-कम्पनी में मिल रहा है, उससे एक हजार रुपये अधिक। अगर आपको यह भी शर्त मंजूर न हो तो लिखिये कि आप कितने वेतन पर आ सकती हैं ? बस, इतने में ही आप सब कुछ समझ लीजियेगा। मुझे उम्मीद है कि आप मेरे इस विनम्र निवेदन को ठुकराने का प्रयास न करेंगी। आपके स्नेह-भरे व्यवहार ने मेरे हृदय के अन्दर घर कर लिया है। अब तक जो मैंने पत्र नहीं डाला उसका प्रधान कारण सिर्फ अपनी हृदय की कमजोरी है। लोक-लज्जा का भूत मेरे सिर पर था। अब उसे मैं दफना चुका हूँ। आप मुझे अपना जीवन-साथी बनाना स्वीकार करें या न करें। इस पत्र को आप मेरे जीवन की "पहली भेंट" समझिये।

मैं इस पत्र को पढ़कर माणिकलाल के प्रबल व्यक्तित्व में बह गई। हालांकि मुझे उनकी ठीक तरह शक्ल-सूरत भी याद नहीं रही। क्योंकि बहुत अरसा हो गया था। सिर्फ इतना तो जानती थी कि वह बड़े आदमी हैं। कम्पनी के मालिक हैं। मैंने उनसे मिलने का निश्चय कर लिया। इधर मुझे भी प्रेम और दौलत दोनों की आवश्यकता थी। फिर क्यों न इस सुनहरे मौके से फायदा उठाया जाता ?

एक दिन रात के दस बजे मैं शाहजहाँ थियेट्रिकल कम्पनी में खेल देखने गई। खेल का नाम था—"बहुत सोये, अब जागो" मैं 'ओर-चेस्ट्रा' क्लास में बैठी हुई माणिक बाबू की प्रतीक्षा कर रही थी, खेल आधा समाप्त हो गया, लेकिन माणिक बाबू नहीं दिखलाई दिये। मैं सोच रही थी कि क्या आज उनका पार्ट नहीं है ? खेल फिर आरम्भ हुआ। मैंने अपने बगलवाले सज्जन से पूछा कि क्या माणिक बाबू का आज पार्ट नहीं है ? उन्होंने हँसकर उत्तर दिया—"क्या आप माणिक बाबू को नहीं पहिचान सकीं ? वह मेन कोमिक में कार्य कर रहे हैं।" इतने में माणिक बाबू स्वयं कोमिक के सीन में आ गये। उन सज्जन ने फिर कहा—"देखिये यही महाशय हैं, जिनको कि आप पूछ रही थीं।" मैं उनको देखकर दंग रह गई, जैसी मैंने कल्पना उनके सम्बन्ध में की थी, वैसे वह न निकले। मैं अपनी समझ पर पछताने लगी। नाम सुन कर किसी आदमी को पसन्द न करना चाहिये, जब तक उसको अच्छी तरह देख न लिया जाये। माणिक बाबू का काम देखकर जनता बहुत खुश हो रही थी। बहुत जोर से तालियाँ पिट रही थीं। लेकिन मैं विशेष आनन्दित नहीं हो रही थी। स्त्री-स्वभाव के अनुसार मैं रूप को अधिक चाहती थी। जब खेल समाप्त हुआ तो माणिक बाबू आये और मेरा बड़ा स्वागत किया। खाना भी खिलाया। मैं उनकी इस शिष्टता से उनके व्यक्तित्व की तरफ प्रभावित हो गई।

मैं सिनेमा जगत् से कुछ दिनों के लिये अवकाश लेकर उनकी कम्पनी में काम करने लगी। हम दोनों की उस पहली भेंट की अमूल्य स्मृति मेरे पास एक बच्ची की शक्ल में है जिसका नाम इन्दिरा है। आज मेरे पास उनके प्रेम की "पहली भेंट" यही मेरी प्यारी बच्ची इन्दिरा है, जो कि मेरे जीवन की अमर-साधना का प्रतिफल है।

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

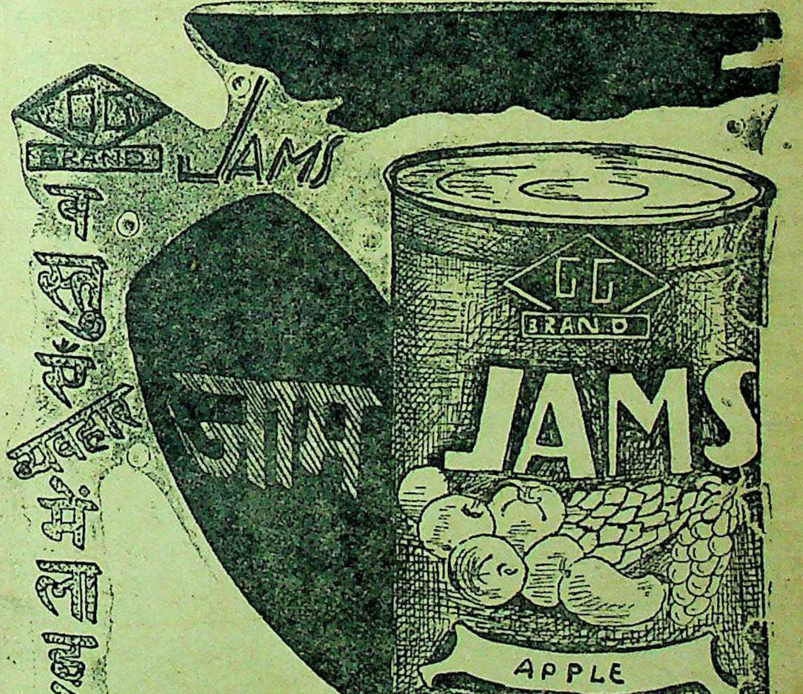

जी. जी. फ्रूट प्रिज़र्विंग फैक्टरी आगरा

जी. जी. इंडस्ट्रीज

जी० जी० सेल्स डिपो, (१) किताब महल, होर्नबी रोड, बम्बई (२) चावड़ी बाजार, देहली (३) मून हाउस, पी ४० मिशन रो एक्स्टेन्शन, कलकत्ता (४) मेसर्स गिरधरलाल वकील, जनरलगंज, कानपुर (५) मेसर्स गिरधरलाल वकील, दर्जी चौक, बरेली।

संपादक के नाम चिट्ठियां

'सम्राट् चंद्रगुप्त' फिल्म कैसा है?

(श्री संपादक देशदूत)

मैंने निर्देशक जयंत देसाई कृत 'सम्राट् चंद्रगुप्त' फिल्म पर एक आलोचना लिखकर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के प्राण माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन के पास सम्मति के लिये भेजी थी। माननीय टंडन जी ने मेरे पत्र को पढ़कर जो उत्तर दिया है उसे और अपने मूल-पत्र को आपकी सेवा में भेज रहा हूँ, कृपया इन्हें प्रकाशित करके फिल्मी-जगत् में हिन्दी भाषा के प्रति होनेवाले अन्याय का प्रतिकार कीजिए।

मेरा पत्र

मैंने श्रद्धेय टंडन जी को जो पत्र लिखा था वह इस प्रकार है—

"जयंत देसाई कृत फिल्म 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' को, देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया। मैंने यह कभी नहीं सोचा था कि ऐतिहासिक सत्य की यहाँ तक हत्या की जा सकती है। नन्द अत्याचारी अवश्य था पर वह एक विशाल साम्राज्य का अधिपति था, लेकिन उसको एक मूर्ख से भी बदतर दिखाया गया है। हार खाने के बाद सिल्यूकस का चन्द्रगुप्त को विष देने का प्रयत्न एक कल्पित कहानी है जिस पर किसी को विश्वास भी नहीं हो सकता। सबसे गज़ब की बात तो सिल्यूकस-द्वारा चन्द्रगुप्त का पकड़ा जाना है जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। एक बच्चा भी जानता है कि चन्द्रगुप्त सिल्यूकस से कभी नहीं हारा, न वह सिल्यूकस का कैदी और गुलाम बना, न उसको कभी सिल्यूकस की पुत्री हेलेन ने कोड़े से पीटा और उससे अपनी पालकी उठवाई, न वह हेलेन के प्रेम में दीवाना बना और न उसकी वीरता का कारण उसका हेलेन के प्रति प्रेम था जैसा फिल्म में दर्शाया गया है। अधिक अच्छा होता, यदि चित्र के निर्माता इतिहास की दुर्दशा न कर भारत के हमारे प्रथम सम्राट् को, जिनके विषय में हम भली भाँति जानते हैं, यूनानियों का और एक यूनानी स्त्री के प्रेम का गुलाम दिखाने और उनके नाम से अनुचित लाभ उठाकर रुपया कमाने के बजाय अपनी चित्र-कुशलता दिखाने के लिये किसी कल्पित कहानी को चुन लेते। यदि सम्राट् चन्द्रगुप्त-जैसा चित्र एक स्वतंत्र और आत्माभिमानी देश में दिखाया जाता तो वहाँ के दर्शक विद्रोह कर देते। परन्तु भारत में ऐसा कोई नहीं दीखता जो सिनेमा जैसे शक्तिशाली साधन के द्वारा राष्ट्रीय इतिहास और राष्ट्र के महापुरुषों के जीवन-चरित्र को दूषित और विकृत करने के और जनता की आँखों में उन्हें गिराने के भीषण अपराध में ऐसे चित्रों के निर्माताओं को दण्ड दे। सच तो यह है कि यदि इतिहासज्ञ अथवा राष्ट्रकर्मी चाहें तो 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' के निर्माताओं पर मुक़दमा चला सकते हैं।

'हुमायूँ' चित्र में इतिहास को विकृत कर राजपूतों को नीचा दिखाया गया है और उनका अपमान किया गया है। इस चित्र में पाकिस्तान की आवाज़ स्पष्ट सुन पड़ती है। इतिहासज्ञ अथवा राजपूत इस चित्र के निर्माताओं पर भी मुक़दमा चला सकते हैं। कम से कम हमें ऐसा विकट आन्दोलन करना चाहिये कि सब हिन्दू, हमारी मातायें तथा बहिनें तो अवश्य ही ऐसे चित्रों का बहिष्कार कर दें। जब निर्माताओं की जेब पर आ बनेगी तब उनकी अकल ठिकाने आ जायगी। वे हमारे पैसे से ही हमें लांछित करते हैं।

'सम्राट् चन्द्रगुप्त' की एक और बात मर्म भेदनेवाली है। इसमें भारतीय पात्र तो हिन्दी में बोलते हैं, परन्तु यूनानी पात्र उर्दू में बोलते हैं। समझ में नहीं आता कि यह भाषा-भेद किस आधार पर किया गया है? फिल्म के ऊपर लिखा है 'हिन्दी चित्र'। अगर यही चित्र अँगरेजी में या बंगला में बने तब तो भाषा का कोई भेद नहीं किया जायगा। न चन्द्रगुप्त हिन्दी बोलते थे और न सिल्यूकस उर्दू बोलता था। एक भाषा हिन्दी में किसी एक चित्र में कुछ पात्रों को छाँट कर उनसे उर्दू बुलवाने का कोई कारण नहीं है। फिर, जब चन्द्रगुप्त पकड़ कर सिल्यूकस के दरबार में लाया जाता है तब चन्द्रगुप्त भी उर्दू में बोलता है परन्तु जब सिल्यूकस चन्द्रगुप्त के दरबार में पकड़ कर लाया जाता है तब वह हिन्दी में नहीं बोलता वरन् उर्दू में ही बोलता रहता है। जब किसी यूनानी पात्र की किसी भारतीय पात्र से बातचीत होती है तो प्रायः दोनों उर्दू में बोलते हैं। जहाँ कहीं भारतीय पात्र हिन्दी में बोलता है परन्तु यूनानी पात्र उर्दू में उत्तर देता है (उदाहरण-स्वरूप चन्द्रगुप्त के दरबार में चन्द्रगुप्त का हिन्दी में बोलना परन्तु सिल्यूकस का उर्दू में उत्तर देना) वहाँ तो परिस्थिति बड़ी हास्यास्पद हो जाती है। नन्द के महल में नन्द को प्रसन्न करने के लिये उर्दू की ग़जलें गाई जाती हैं, सिल्यूकस 'ब्राह्मण' का उच्चारण सदैव 'बिरहमिन' करता है, सिल्यूकस की पुत्री अपने पिता को सदैव 'अब्बा' कहकर पुकारती है और चन्द्रगुप्त के साथ विवाह हो जाने के बाद भी उर्दू में बोलती रहती है। संवाद-लेखक ने भारतीय हिन्दू पात्रों से भी शुद्ध हिन्दी नहीं बुलवाई है। ऐसा मालूम होता है कि हिन्दी से उसे कुढ़न है और उनसे हिन्दी बुलवा कर उसने हमारे ऊपर बड़ी मेहरबानी की है। "मुकर्रर, इलाका, फर्ज़, इन्साफ़, सज़ा, शाहज़ादी, इज्जत, वतन, दुश्मन, ज़ाती, कब्ज़ा, लब, मग़रूर," आदि आदि जैसे शब्द चाणक्य और चन्द्रगुप्त से कहलवाये जाते हैं, किन्तु आदि से अन्त तक किसी यूनानी पात्र के मुँह से विशुद्ध उर्दू छोड़कर एक भी हिन्दी का शब्द नहीं निकलता। ये सब बातें हिन्दुओं के चित्रों के लिये ही रिज़र्व हैं। किसी मुसलमान महापुरुष के चित्र में ऐसा करने का साहस किसी चित्र-निर्माता को नहीं होता। 'हुमायूँ' और 'शाहन्शाह बाबर' देखने से सब स्थिति स्पष्ट हो जाती है। सम्राट् चन्द्रगुप्त को देखकर इसमें शक करने की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती कि निर्माता ने हिन्दू संस्कृति, जिसकी भाषा प्रतीक है; को नीचा दिखाने की चेष्टा की है और यूनानी संस्कृति को मुस्लिम संस्कृति से अभिन्न दिखाया है जब कि उस समय दुनिया के पर्दे पर मुस्लिम संस्कृति नाम की किसी चीज़ का अस्तित्व ही नहीं था। 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' भ्रमात्मक, भारतीय इतिहास तथा संस्कृति के प्रति झूठा, राष्ट्र के सम्मान पर तथा भारत के उस महान् सम्राट् के शुभ्र चरित्र पर एक कलंक है जिसने भारत की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई जीती।

हिन्दी जगत् के लिये जो बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है वह यह है कि हिन्दी के फिल्मों में मुसलमान तथा विदेशी पात्रों से उर्दू बुलवाई जाती है और हिन्दू पात्रों से उर्दू-मिश्रित हिन्दी। 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' के अलावा 'शकुन्तला'; 'कादम्बरी' आदि में भी यही बात है। 'हुमायूँ', 'बाबर' की बात छोड़िये जो ठेठ उर्दू में हैं किन्तु जिन्हें देखने भी हमारी मातायें, बहनें और बालक लाखों की संख्या में पहुँचते हैं, 'रामशास्त्री' और 'रत्नावली' जैसे चित्र ठेठ उर्दू में हैं और उर्दू का प्रचार करते हैं। यह स्थिति अत्यन्त भयंकर है। रेडियो के मुक़ाबले सिनेमा अधिक व्यक्तियों पर और अधिक स्थायी प्रभाव डालता है, परन्तु सिनेमा-द्वारा हिन्दी के धोखे से उर्दू प्रचार के विरोध में हमने क्या किया है? रेडियो सरकार-द्वारा संचालित है, उसका विरोध अवश्य होना चाहिये, परन्तु सिनेमावालों की दवा तो हमारे ही पास है। क्या हम आशा करें कि उदयपुर में सम्मेलन रेडियो के साथ साथ सिनेमा पर भी दृष्टि डालेगा और सिनेमावालों को राह पर लाने के लिये ज़ोरदार कदम उठायेगा?"

माननीय टंडन जी का पत्र

माननीय टंडन जी ने उक्त पत्र का उत्तर देते हुए जो सम्मति प्रगट की है वह इस प्रकार है—

"प्रिय सूर्यप्रकाश जी, नमस्कार।

अपका ३ तारीख का पत्र मिला। मैंने 'सम्राट् चन्द्रगुप्त' शीर्षक पत्र पढ़ा। मैं आपसे इस बात में सहमत हूँ कि चित्रपटों की भाषा के सम्बन्ध में ध्यान देने की आवश्यकता है। लगभग २॥ महीने हुए जब मैं बम्बई गया था तब वहाँ कई चित्रपट संचालकों से मैंने भाषा के विषय में बातें की थीं। समाचारपत्र यदि सजग होकर इस विषय में टीका-टिप्पणी किया करें तो लाभ हो सकता है। वैयक्तिक रीति से चित्रपट-संचालकों से बातचीत करने का प्रभाव भी पड़ सकता है। सबसे बड़ा प्रभाव तो चित्रपट देखनेवाली जनता अपनी माँग-द्वारा डाल सकती है।"

३० अगस्त ४५ —सूर्य्यप्रकाश एम० ए०

* * *

महात्मा गांधी का त्याग-पत्र और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

महात्मा गांधी के अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से त्याग-पत्र दे देने से निश्चय ही राष्ट्र-भाषा हिन्दी के सेवकों, प्रेमियों तथा सैकड़ों ही कार्यकर्ताओं के सामने सजीव दुःख और सोच का प्रसंग आ खड़ा हुआ है। सर्वश्री गांधी-टंडन पत्र व्यवहार भी प्रगट हो चुका है। दोनों ओर के मुद्दे साफ हैं। अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें उदयपुर अधिवेशन के स्वागत-मंत्री की भाँति मैं अनुभव कर रहा हूँ कि दशहरे पर होनेवाले उदयपुर-अधिवेशन में अब हिन्दी-हिन्दुस्तानी का प्रसंग प्रमुख रहेगा। जयपुर का वातावरण हिन्दी और राजस्थानी से घहरा रहा है। उदयपुर का वातावरण हिन्दी और हिन्दुस्तानी के मार्मिक विषय

से भरा रहेगा। हिन्दी-सेवकों, का
और प्रेमियों का कर्तव्य हो जाता है
अपना कठोर आत्म-निरीक्षण क
बारे में अपना मत स्पष्ट और दृढ़ क

महात्मा गांधी के साथ ए
राष्ट्र-भाषा बनाने के तन तोड़
लगे हुए कई व्यक्ति भी सम्मेलन
हिन्दी के कार्य-क्षेत्र से कदाचित् वि
दक्षिण-भारत-हिन्दी-प्रचार-सभा
इस ओर जा रही है। पत्र
अपील करते हुए महात्मा जी
वक्तव्य अभी पत्रों में प्रकाशित हु
वह इस मनोवृत्ति का सूचक है।
मनोवृत्ति बढ़ती गई तो सम्मेलन के
बधान में होनेवाला राष्ट्र-भाषा-प्र
अहिन्दी प्रान्तों का कार्य अखिल
हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा के अधीन
जायगा। तब अखिल भारतीय हि
साहित्य-सम्मेलन के राष्ट्र-भाषा
संबन्धी कार्य की क्या गति होगी!

संक्षेप में महात्मा जी का
अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
जीवन में एक ऐसा धक्का है
मोटे भूकम्प के समान है। हिन्दी
लिये यह गम्भीरता और उत्तरदा
साथ जहाँ आगे बढ़ने का सवाल है
अपने निर्मम आत्म-निरीक्षण का
है। महात्मा जी और उनके म
कार्यकर्ता तपे हुए और सधे हुए
कार्यकर्ता हैं। अखिल भारतीय
साहित्य-सम्मेलन के पास इस माने
हैं? गाँधी जी के चले जाने से ए
नैतिक शक्ति भी सम्मेलन के
जा सकती है। यह हिन्दी का
और दुर्भाग्य दोनों है कि गांधी
जा रहे हैं।

मैं समस्त हिन्दी संसार
उदयपुर अधिवेशन के सभा
लिये ऐसे व्यक्ति को चुनने
करता हूँ जो राष्ट्रभाषा हिन्दी
प्रान्तीय भाषा के रूप में अपदस्थ
बचा सके। जो दृढ़ता और आत्म
के साथ इस गम्भीर आन्तरिक
तूफान से राष्ट्रभाषा हिन्दी की
खेकर ले जा सके।

आवश्यकता इस बात की
अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन
३३ वें उदयपुर-अधिवेशन के पू
भर के कुछ व्यक्तियों की एक
बुलाई जाय और महात्मा जी त
भक्तों तथा साथियों के द्वारा उ
प्रथम श्रेणी की समस्या पर सभी
से विचार किया जाय।

यह समय चुप रहने और
का नहीं है। हिन्दी की प्रत्येक
संगठित होकर कार्य करने का यही
है। हमें सदा ही ध्यान में रख
हिन्दी गत एक हजार वर्षों से भा
जनता की अभिव्यक्ति करती आ
हिन्दी जहाँ तुलसीदास से बनी,
तुलसीदास से भी ऊपर थी;
हिन्दी जहाँ गांधी से बनी, वहाँ
गाँधी से भी ऊपर है। भारत
हिन्दी-पुत्रों और पुत्रियों को
संकल्प के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी
कटिबद्ध होना है। स्पष्ट है,
दशहरे पर होनेवाले ३३वें उदयपुर
वेशन का महत्त्व एक दम बढ़
है। परिस्थिति पर विचार करने
स्वागत-कारिणी-समिति का
शीघ्र बुलाया जा रहा है।

—जनार्दनराय
स्वागत

उदयपुर
१८ अगस्त ४५

की तरङ्ग

अधिकारी ने एक वक्तव्य अलीगढ़-विश्वविद्यालय के स्टेशन पर उद्दंडता का करते हैं। रेलवे अधिकारी समझा होगा। पाकिस्तान होगा, इसका वे प्रयोग करते

* *

विद्यार्थी बिना टिकट करते हैं। इससे इतना ज्ञात पाकिस्तान में रेलों पर टिकट इस व्यवस्था के लिए हम अभी से धन्यवाद देते हैं।

* *

विश्वविद्यालय के वाइस- ने कहा है कि उस दिन आजाद के प्रति जो किया गया उसमें बाहरी विश्वविद्यालय के विद्यार्थी भी कुछ कुछ ऐसा ही मत लगाकर हिन्दू-विश्वविद्या- तो शायद वहाँ नहीं पहुँच

* *

ऐसा कानून बनानेवाली मेडिकल कालेज की अर्थात् गवर्नर के हाथ में है। यदि हमारी राय सर- की डिगरी भी वही गवरनर महोदय कह है और वही सरजन! होगी?

* *

से लोगों ने पूछा कि कब तक चलेगी?

उन्होने उत्तर दिया [illegible] साल तक चलेगी। बात यह है कि यहाँ राशनिंग युद्ध आरम्भ होने के बहुत दिनों बाद आरम्भ हुई है। जितने समय तक युद्ध चलता रहा उतने दिनों तक तो राशनिंग चलनी ही चाहिये।

* * *

एक समाचार आया है कि भारत के प्रान्तों में गवर्नर भारतीय भी बनाये जायँगे। हो या न हो, ऐसी सूचनाएँ सुना देने से भारतवासियों को काफी संतोष हो जाता है। इतना कम नहीं है।

* * *

कहा जाता है कि मजदूर-सरकार ऐसे लोगों की एक सूची तैयार कर रही है जो गवर्नरी के पद के योग्य हों। मेरे विचार से सरकार की ओर से एक 'आवश्यकता है' अखबारों में छप जाना चाहिये। लोग अरजियाँ तो कम के कम भेज दें। कई सालों के लिए गवर्नर मिल जायँगे।

* * *

ब्रिटेन के अनेक स्थानों में घोर पानी बरसा है। कहा जाता है कि ऐसी वर्षा कई बरसों से नहीं हुई थी। लड़ाई भी तो ऐसी नहीं हुई थी, मजदूर-सरकार भी तो कभी ऐसी नहीं बनी थी। ब्रिटेन में सभी नवीन बातें हो रही हैं। चर्चिल पछाड़े भी तो ऐसे कभी नहीं गये थे?

* * *

हिन्दुस्तानी लिटरेरी बोर्ड जो हिन्दुस्तानी में पुस्तकें प्रकाशित करेगा वह ऐसे लेखकों की खोज में है जिन्हें अरबी का भी ज्ञान हो। क्योंकि बिना अरबी जाने हिन्दुस्तानी में पुस्तकें नहीं लिखी जा सकतीं। इस आदर्श से तो क़ायदे आजम भी, जिनके कारण यह सब हो रहा है, इसके लिए बिलकुल अनफिट हैं।

* * *

काशी-नागरी-प्रचारिणी-सभा एक ऐसी लिपि का प्रचार करनेवाली है जो बिलकुल नवीन ढंग की है। इस लिपि को स्वीकार किया है पंडित केशवप्रसाद मिश्र [illegible] स्वीकार भी किया है। इस लिपि के प्रचार के बाद मिश्र जी का स्थान हिन्दी में वही होगा जो राजनीति में महात्मा गांधी का है।

* * *

महात्मा गांधी की हिन्दुस्तानी और नागरी-प्रचारिणी-सभा की यह लिपि जिस समय एक साथ मिल जायँगे, देश में उसी दिन दोपहर के समय स्वराज्य मिल जायगा। काशी का और वर्धा का पुराना सम्बन्ध भी है।

—अगड़दत्त शर्मा

बिजली का पंखा

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

घरर घरर मेरे सम्मुख बिजली का पंखा घूम रहा।
मत इसे निरा पंखा समझो,
यह तो सजीव मस्ताना है;
चक्कर पर चक्कर काट रहा,
पूँजीवालों का नाना है।
रहा निरंतर मानो यह प्रियतम से है महरूम रहा।
सम्मुख चाहे कोई आये,
चूहा हो चाहे बिल्ली हो।
बलिया हो या बहराइच हो,
मथुरा हो चाहे दिल्ली हो।
मंजिल पर चला जा रहा है मस्ती में झूम रहा।
पूँजीवादी जो जग में है,
यह उनकी एक निशानी है।
इस प्रगतिशीलता के युग में,
यह पंखा विष का पानी है।
का रक्षक है क्या तुम्हें नहीं मालूम रहा?
जो घुरहू और पनारू हैं,
वे गरमी में मर जाते हैं।
और आप लगाकर टेबुल पर,
बिजली का फ़ैन चलाते हैं।
अब झाड़ फूंक देंगे यदि प्रगतिशील कुछ 'ब्रूम'१ रहे।

THE SECRET OF YOUR BABY'S HEALTH
बालसुधा
Bal
BEST FO
Child
SUKH SANCHARAK CO. LTD
MUTTRA

BAL SUDHA
AN IDEAL TONIC FOR WEAK & DEFICIENT CHILDREN
SUKH SANCHARAK Co. LTD
MUTTRA

फ़िल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

LUX TOILET SOAP

माया बॅनर्जी

"मै नियमित रूपसे लक्स टॉयलेट साबुन इस्तेमाल करती हूं इससे मेरी अंगकांति बेदाग, और मुलायम रखनेमें मुझे कोई कठिनाई नही पड़ती"—यह है मायाका कहना। इस खुशबूदार साबुन का तेज फेन, मैल और बदीको, शरीर के छिद्रोंसे दूर रखता है इससे अंगकांति मृदु, मुलायम और मोहक हो जाती है। बहुतही हिंदी फिल्म स्टार लक्स टॉयलेट साबुन नियमित रूपसे इस्तेमाल करती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 124-111-40 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

संवाददाताओं के पत्र

इन्दौर गत सप्ताह मध्यभारत की कई रियासतों में भीषण वर्षा हुई है। पीपलोदा स्टेट से आई हुई खबर के अनुसार ज्ञात हुआ है कि यहाँ इतना पानी बरसा कि "शिव" नामक नदी में बाढ़ आ गई और बुडरखेड़ा का तालाब जो कि पीपलोदा शहर से ६ मील की दूरी पर है, पूरा भर गया। तालाब का पानी बाद में फूट गया और नदी की बाढ़ का पानी शहर में तालाब के पानी के साथ घुस गया। करीब १०-१२ फुट पानी पीपलोदा शहर में चढ़ गया। मकानों की पहली मंजिलें जलमग्न हो गईं। जनता ने अपनी जान बड़ी मुश्किल से बचाई।

एक कुटुम्ब ने छत पर चढ़कर पाट पर बैठकर जान बचाने का प्रयत्न किया, लेकिन पानी बढ़ता ही गया। वह छत तक पहुँच गया और पाट को बहा ले गया। उस कुटुम्ब में से एक छोटी-सी बालिका को छोड़ कर सब मर गये। यह लड़की भी मर जाती लेकिन जब वह पानी के साथ पाट पर बैठी हुई बही चली जा रही थी, तब उसके हाथ में एक वृक्ष की डाल आ गई और उस पर वह लटक गई। जब पानी उतरा तो उसे उतारा गया। इसी तरह एक चमार के कुटुम्ब का किस्सा सुना गया है। उसके घर में भी एक छोटी लड़की के अलावा कोई नहीं बचा। कहा जाता है कि कई लाख के जेवर और कीमती सामान पानी में बह गये। कापी तथा व अन्य अनाज का नुकसान कूता जा रहा है। मवेशियों की जान जाने की खबर है। २००० से अधिक पीपलोदा निवासियों को एक मकान के अन्दर ही भोजन कराया जाता रहा। सहायता-कार्य में श्री विजयसिंह ठाकुर साहब का कार्य प्रशंसनीय रहा।

हजारों लोग बेघरबार हो गये और शरीर पर पहने हुए कपड़ों के अलावा उनके पास कुछ भी नहीं रहा। पीपलोदा-बाढ़ पीड़ितों की सहायता की जाने की अत्यन्त आवश्यकता है। पीपलोदा के राष्ट्रीय कार्यकर्ता और उत्साही नवयुवकगण कार्य में लगे हैं। पीपलोदा के श्री तेजमल जी नान्देचा के संयोजकत्व में एक बाढ़-पीड़ित सहायक-समिति का निर्माण किया गया है। जो महानुभाव सहायता करना चाहें वे श्री मंत्री, पीपलोदा-स्टेट-बाढ़-पीड़ित सहायता-समिति, पीपलोदा स्टेट, पीपलोदा वाया जावरा (मध्यभारत) के पते से भेजें।

इन्दौर-राज्य-प्रजामंडल के सभापति श्री मिश्रीलाल गंगवाल और प्रजामंडल पत्रिका के सम्पादक श्री बैजनाथ महोदय के पास पीपलोदा के कार्यकर्तागण गये और उन्हें परिस्थिति से अवगत कराया। इन्दौर से भी सहायता भेजी गई है।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर हिन्दी-विद्यापीठ, सरस्वती मंदिर में प्राचीन साहित्य-शोध-विभाग के अन्तर्गत स्थापित "सूर्यमल आसन" के द्वितीय अभिभाषक प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी का गत १६ अगस्त को हिन्दी विद्यापीठ प्राचीन साहित्य शोध-विभाग के सुयोग्य मंत्री श्री सूरजलाल शर्मा ने परिचय दिया। परिचय के पश्चात् मोई (मेवाड़) के ठिकानेदार श्रीमान् डूंगरसिंह भाटी की अध्यक्षता में स्वामी जी का प्रथम भाषण हुआ। ता० १६ के सभापति हिन्दी-विद्यापीठ के कुलपति श्रीमान् सेठ श्रीगोपाल जी मोहता मनोनीत हुए थे। दूसरे दिन श्रीमान् डूंगरसिंह भाटी ने अध्यक्ष-पद ग्रहण किया।

ता० २० को श्रीमान् पृथ्वीसिंह मेहता विद्यालङ्कार गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक और 'विहार-दर्शन' के लेखक की अध्यक्षता में स्वामी जी का दूसरा भाषण हुआ। भाषण के अनन्तर उदयपुर के प्रसिद्ध और नई पीढ़ी के कवियों के कविता-पाठ हुए। कवि-सम्मेलन का सभापतित्व स्वामी जी ने ही किया। श्री नाथुलाल महारिया, कन्हैयालाल ओझा, शलभ, तख्तसिंह भटनागर एवं अन्य कई कवियों ने इसमें भाग लिया। उदयपुर में यह इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ कवि-सम्मेलन था।

ता० २१ को श्री स्वामी जी का तीसरा विद्वत्तापूर्ण भाषण हिन्दी-विद्यापीठ के भूतपूर्व कुलपति और मेवाड़ शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर श्रीमान् लक्ष्मीलाल जोशी के सभापतित्व में हुआ। २१ अगस्त को हिन्दी-विद्यापीठ का जन्म-दिवस था। प्रधान मंत्री श्री जनार्दनराय नागर का जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सुन्दर भाषण हुआ। श्री लक्ष्मीलाल जोशी को हिन्दी विद्यापीठ की निरन्तर सेवा कुलपति रहकर करने के उपलक्ष्य में कुल की ओर से अभिनन्दनपत्र दिया गया। श्रीमान् जोशी जी का अन्तिम भाषण हुआ और श्रीमान् स्वामी जी को १५१) रुपये की थैली समर्पित की गई। श्रीमान् स्वामी जी ने थैली को स्वीकृत कर पुनः विद्यापीठ को समर्पित कर दिय।

—गिरिधारीलाल शर्मा

* * *

हैदराबाद मारवाड़ी नवयुक मण्डल की ओर से श्री गणेशोत्सव के उपलक्ष में आगामी ता० १३, १४, १५ सितम्बर ४५ ई० को "सनातनधर्मसभा-भवन" बेगम बाजार में एक विराट् कवि-सम्मेलन की योजना की गई है। उत्तर-भारत से देव-पुरस्कार-विजेता श्री हरदयालुसिंह, श्री 'चातक' और श्री 'शिशु' आ रहे हैं। समस्यायें— आने से, ला, मानस-दुकूल में, हम न कहैंगे, तुम लाख कहिबौ करौ, चारु चितवन में। विषय—ओस, मातृ-भूमि या अपनी सर्वोत्तम रचना। उत्तमोत्तम रचनाएँ पुरस्कृत की जायेंगी। जो कवि महोदय उपस्थित न हो सकें वे अपनी रचनाएँ—श्री मधुसूदनदास चतुर्वेदी संयोजक, ५१ फीलखाना, हैदराबाद (दक्षिण) के पते पर भेजने की कृपा करें।

—संवाददाता

* * *

अजमेर में सरस्वती-बालिका विद्यालय में जन्माष्टमी महोत्सव कुँवर लालसिंह शक्तावत सेटिलमेंट अफसर के सभापतित्व में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। श्री स्वामी भवानीदयाल जी संन्यासी ने स्त्रियों के लिए पुस्तकालय एवं वाचनालय का उद्घाटन किया। डाक्टर सूर्यदेव शर्मा एम० ए० का 'गीता की पवित्र शिक्षा' पर एक महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ। कन्याओं के मनोहर भजन हुए। जनता ने अनेक कन्याओं को मैडिल प्रदान किये और वाचनालय की सहायतार्थ चार सौ रुपये दान में प्राप्त हुए।

—पन्नालाल माहेश्वरी

* * *

कलकत्ता (बंगाल) में जून माह के अन्तर्गत २४७ चलते-फिरते अस्पतालों द्वारा बंगाल के विभिन्न जिलों में १८०४७६ रोगियों की चिकित्सा हुई है। १००८ चिकित्सा-केन्द्रों में इसी महीने १५१०५८ रोगियों की चिकित्सा की गई है। इस समय प्रान्त में १०० बेडवाले ५७, ५० बेडवाले १०३ तथा २० बेडवाले ४६३ अस्पताल स्थापित हैं। इन अस्पतालों में ३६१ डाक्टर तथा ३४५० नर्स कार्य कर रही हैं।

—संवाददाता

* * *

जयपुर वनस्थली विद्यापीठ में श्री सुभाषचन्द्र वसु की मृत्यु के समाचार से शोक की लहर दौड़ गई। शान्ता-सदन में विद्यापीठ के और कार्यकर्ताओं की सम्मिलित हुई। जिसमें श्री सुभाष बाबू श्रद्धांजलि अर्पण की गई और शोक पास किया गया।

भिंस होमियोपैथिक कॉले
बनारस १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमि
वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों
(सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें
प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त

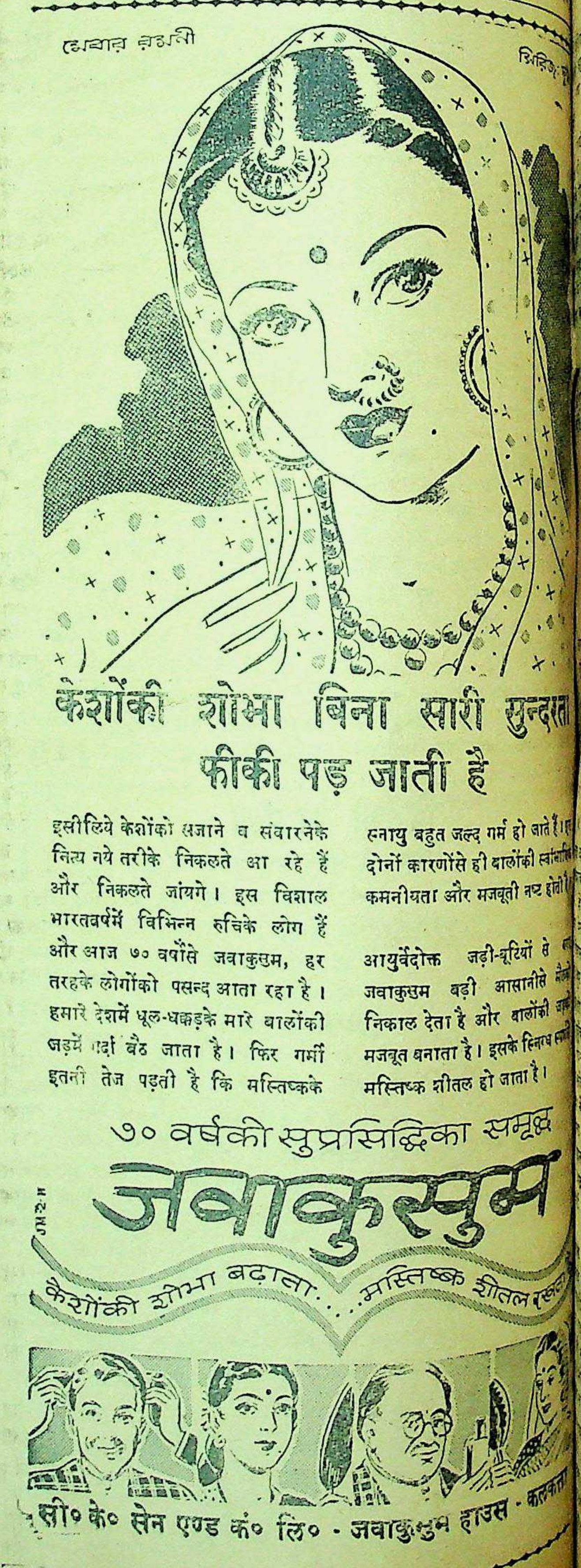

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभावि कमनीयता और मजबूती नष्ट होती

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से जवाकुसुम बड़ी आसानीसे निकाल देता है और बालोंकी मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका सम्मूल
जवाकुसुम
केशोंकी शोभा बढ़ाता... मस्तिष्क शीतल रखता

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कलकत

साहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

कहा—ठहर, मैं भैरव से कहती हूँ। हम लोग जावेंगी!

कर चिल्लाते हुए रज्जो ने कहा—चूल्हे में, भाड़

दी। पीछे-पीछे बुढ़िया भी। बड़े जोर की भुल- लगे। रज्जो भी नहीं चल पा रही थी। को पड़ रहे हों। सिर घूमने लगा। इतने अँधेरा दिखाई पड़ने लगा। वह जैसे अँधेरे कुएँ । जब आँख खुली तो देखा कि चारों ओर समुद्र हुई तरंगों के साथ मानो घड़ियाल उसे खा दौड़ रहे हैं। आँखें फिर बन्द हो गईं और का अन्धकार।

× ×

उपरान्त जब हरीश सन्ध्या के समय घर पहुँचा से घिरा हुआ बैठा था। बराण्डे में जल गर्म —विहारी, जल किसलिए गर्म हो रहा है? —दीदी अस्वस्थ हो गई हैं।

ने आकर देखा गर्म बोतल से लक्ष्मी था। उसने पूछा—क्या हुआ दीदी?

—कालिक पेन।

हो गये। सवेरे से कुछ कम हुआ है।

सूचना क्यों नहीं दी?

—तुम्हारी परीक्षा का समय है। मिथ्या न कोई प्राणान्तक रोग तो है नहीं। इसी से रज्जो का भी समाचार न मँगा सकी।

—वहाँ मैं स्वयं जाऊँ?

। हरीश ने फिर कहा—कितना समय लगेगा?

—पहले खा-पी लो।

वहाँ हो आऊँ। उस पाजी बहनोई का मुझे नहीं। उसके लिए कोई कार्य असाध्य नहीं है।

× ×

ने आकर कहा—ओ दीदी, हरीश बाबू तो इसी रहे हैं।

, बिना कुछ खाये-पिये? सम्भवतः तुमको ही.... .....

कर बैठ।

हरीश ने उन्नाव के बुधवारी मोहल्ले के उसी देखा कि वहाँ ताला बन्द है। घर में कोई भी ने यह संवाद सुनाया कि लड़के के मरने के दूसरे लोग बैलगाड़ी पर चढ़कर यहाँ से चले गये। आकर चुप्पी साध ली और अपने कमरे में पड़ नहीं खाया। दूसरे दिन गङ्गा पार के कितने , किन्तु कोई पता नहीं चला। उसकी सुमन हो गया। पत्रों में बहुत विज्ञापन किया गया नहीं चला।

१३

महीना था। दोपहर लौट चुकी थी। हरीश हुए फूलों को देख रहा था। सोच रहा था कि आप लोगों ने भूमि पर फुलवारी लगाई है, मैं गमलों में लगाऊँगी। जिसकी गंध से अड़ोस- हो उठेगा और उसने लगा भी दिया। उसका रज्जो क्या जीवित है? भैरव ने अपना और उसने प्राण दे दिये होंगे।

कहाँ जाता है? उसके सुवर्ण-रूप का क्या इतना रहस्योद्घाटन किया, किन्तु मरणोपरान्त नहीं जान सका?

पुकारा—हरीश......

भाव से लक्ष्मी को देखा। लक्ष्मी ने कहा—निराश मत हो भैया। रज्जो अभी जीवित है......मेरी आत्मा कहती है।

हरीश ने कहा—मिथ्या धीरज धराने से क्या होता है। वह जीती होती तो चिट्ठी अवश्य डालती।

लक्ष्मी के मन में भी यही बात आती थी। उसका भी जी भर आया।

भाई-बहन मौन थे। आकाश के उज्ज्वल प्रकाश को अंधकार ने प्रायः निगल लिया था। केवल नक्षत्रगण म्लान होकर क्षीण दृष्टि से पृथ्वी को देख रहे थे।

सुरेश ने आकर नीरवता भंग की। और कहा—तुम भाई-बहन यहाँ चुपचाप क्यों बैठे हुए हो? आओ चलो नीचे आओ।

हरीश और लक्ष्मी तब भी चुप थे। सुरेश को इस विकट व्यापार के समझने में देर न लगी। उसने कहा—भाई हम भूखों मरे जा रहे हैं, तुम लोग सुनते हो नहीं।

सुरेश ने हरीश का हाथ पकड़ा और कहा—आओ भाई, कहाँ से सहसा हमने एक छोटी-सी बच्ची पाई थी और पल मारते कहाँ बिला गई? हमारा भी मन मसोस रहा है।

लक्ष्मी ने कहा—मैं भाग्य को नहीं मानती थी; अब मानना पड़ा। नहीं तो कहीं ऐसा होता है?

हरीश ने कहा भाग्य को दोष वृथा देती हो! क्या तुम एक आदमी नहीं भेज सकती थीं?

सुरेश ने कहा—बड़ी भूल हो गई। लक्ष्मी ने कहा—मैंने राधा दीदी को गुप्तचर बनाकर भैरव की बहन के यहाँ रोज पता लगवाया किन्तु कोई पता नहीं लगा।

सुरेश और लक्ष्मी ने जैसे-तैसे करके हरीश को भोजन कराया। किन्तु ऐसे कितने दिन चल सकता था!

लक्ष्मी ने उसकी परीक्षा सम्बन्धी बातें करके मन का भाव बदलना चाहा, किन्तु सफल न हुई। सब लोग जाकर सो रहे।

रात्रि में तीसरे प्रहर विकट आँधी आई और साथ ही वज्र-निनाद करता हुआ मूसलधार पानी बरसने लगा। घर के चौखट, किवाड़, खिड़कियाँ, सिटकनियाँ हड़-हड़कर आर्तनाद कर उठीं। झंझावात के हुंकार से हरीश की नींद खुल गई। उसने खिड़की पर खड़े होकर बिजली के प्रकाश में अनुभव किया कि आज ही प्रलय हो जायगा। उसने कहा—प्रलय आओ तुम रज्जो को ढूँढ़ने चले हो? आओ......

सचमुच आँधी का ज़ोर प्रबल हो उठा। हरीश पागल की भाँति घर से निकलकर बीच रास्ते में आकर खड़ा हो गया। एका-एक बिजली चमकी और उसने देखा कि फाटक पर श्वेत वस्त्र धारण किये जाने कौन खड़ा है। उसने दोनों हाथ बढ़ाकर कहा—

तुम कौन? रज्जो?

वस्त्रों से ढका हुआ शरीर उसके शरीर पर आकर जड़ से कटे हुए वृक्ष की भाँति गिर पड़ा। उसने उस मूर्ति को गोदी में उठा लिया और घर में आकर अपनी शय्या पर लिटाकर धीरे से प्रकाश किया। देखकर स्तम्भित हो गया। मुख से एक धीमी ध्वनि निकल पड़ी। रज्जो! ....भगवान्.....

रज्जो मूर्च्छित पड़ी थी। हरीश अन्ततः मेडिकल कालेज का विद्यार्थी था। मूर्च्छा के उपचार से वह अनभिज्ञ न था। उसने पल भर भी देर न करके अपनी सारी शक्ति लगाकर रोगी की परिचर्या की।

रज्जो ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं।

हरीश ने पुकारा—रज्जो....अब कोई भय नहीं, मैं हरीश हूँ। भीगे हुए वस्त्र उतार डालो। मैं दीदी को बुलाये लाता हूँ।

लक्ष्मी भी आ गई। दोनों शुश्रूषा में ऐसे लगे कि रात्रि स्वप्न हो गई।

प्रातःकाल हो गया। आँधी-पानी का नाम नहीं था। भगवान् भास्कर पूर्व में मन्द-मन्द हँसी से स्वर्ण बिखरा रहे थे।

रज्जो के पाँव में महावर और मत्थे पर सिन्दूर देखकर हरीश चौंक पड़ा। लक्ष्मी ने उसे बताया कि भाँवरें पड़ने से पहले ही रज्जो किसी भाँति वहाँ से अपने बहनोई के कुचक्र से निकल भागी। उसका विवाह बलपूर्वक किया जा रहा था; किन्तु वह न हो सका।

हरीश न कहा—मैं भैरव को एक बार देख लूँगा।

नसों की जलन से उस स्त्री को छुटकारा मिलता ही न था

न दिन में चैन और न रात में नींद

आखिरकार क्रुशेन से ही फायदा हुआ

उन लोगों के हित के लिए जो लोग उसी की भाँति रोगग्रस्त हैं यह कृतज्ञ स्त्री इस प्रकार लिखती हैं :—

"पिछले मई के महीने में मेरी नसों में बड़ी जलन होने लगी जिसके कारण दिन में चैन तथा रात में नींद हराम थी—दर्द का तो कहना ही क्या था।

अनेकों दवायें सेवन कीं किन्तु बहुत कम फायदा हुआ। अन्त में एक स्त्री ने जो कि मेरी ही भाँति पहले बीमार थी और जिसको क्रुशेन से लाभ हुआ था, मुझे क्रुशेन सेवन करने की सलाह दी। पहली बोतल सेवन करने से मुझे फायदा मालूम हुआ और अब मैं पीड़ा से एकदम मुक्त हूँ। नींद खूब आती है। मैं क्रुशेन की कृतज्ञ हूँ। श्री० यच० सी०

नसों की जलन भी गठिये की तरह खून में अम्ल की अधिकता से होती है। क्रुशेन में संमिश्रित ६ प्रकार के प्राकृतिक लवणों में से कुछ तो अम्ल को गलाते हैं और कुछ उसे शरीर से बाहर निकाल देते हैं।

क्रुशेन शरीर की व्यवस्था इतनी सुचारु रखता है, अनावश्यक मैल से इतना मुक्त रखता है कि शरीर में अम्ल इत्यादि एकत्र होने ही नहीं पाता। क्रुशेन साल्ट बाजार में सभी औषधि विक्रेताओं के यहाँ मिलता है।

अब मिलती है कन्ट्रोल भाव पर

नं ७१२ एवरेडी बैटरी

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, कोचीन, देहली, और कराची में परचून कीमत रु. ०-४-६.

दुसरी जगह रु. ०-५

ज्यादा मत दें

EVEREADY

NATIONAL CARBON CO. (INDIA) LTD., Calcutta, Bombay, Madras, Cochin, Delhi and Karachi.
No 712
EVEREADY
2 CELL EXTRA LONG LIFE BATTERY

लक्ष्मी ने कहा—जिस कन्या का तेल चढ़ गया और सब कुछ हो गया यदि भाँवरें नहीं पड़ीं तो क्या हो गया? कन्या तो उसी की हो गई। तुम्हारे जोजा जी कहते थे कि भैरव अदालत में यह भी कह सकता है कि भाँवरे भी पड़ गई हैं और यह मेरी ठीक धर्म-पत्नी है। व्यर्थ का हाहाकार मचेगा और हमारे पुरखों के सम्मान में धब्बा लगेगा।

हरीश ने कहा—हमें इसकी चिन्ता नहीं। जब उसने इच्छापूर्वक विवाह नहीं किया है तो यह विवाह नहीं हो सकता।

लक्ष्मी ने कहा—किन्तु तुम्हारे जीजा जी कहते हैं कि सम्भवतः हिन्दू ला तुम्हारे अनुकूल नहीं पड़ेगा।

हरीश ने कहा—मैं इसके लिए नहीं डरता। यदि हिन्दुओं में ऐसे हो विवाह मान लिया जाता है तो इस अत्याचारी समाज को छोड़कर हम गिर्जे में जाकर दोनों हो क्रिश्चियन हो जायँगे और विवाह कर लेंगे। देखें फिर कौन क्या कर सकता है?

लक्ष्मी ने इसे हरीश का प्रमाद समझा। उसने रज्जो से कहा—बहन अब हमारा कोई अधिकार नहीं है। तुम भैरव की धर्म-पत्नी हो चुकी हो। हम भैरव को समझायेंगी कि जिससे तुम्हें कोई कष्ट न हो; किन्तु अब तो तुम्हें उसी के साथ रहना पड़ेगा।

रज्जो ने लक्ष्मी के पैर पकड़ लिए और कहा—दीदी मैंने विवाह नहीं किया है। यह सिन्दूर मेरे बलपूर्वक हाथ बाँधकर चार-चार आदमियों ने पकड़कर लगवाया था। मैं प्राण दे दूँगी, किन्तु जीजा जी के सङ्ग न जाऊँगी।

हरीश ने कहा—दीदी विवाह-संस्कार के नाम पर कलंक मत लगाओ। हिन्दू-धर्म ऐसे नीच कृत्य को विवाह नहीं कह सकता। तुम विवाह का मिथ्या अर्थ लगा रही हो।

लक्ष्मी गम्भीर मुद्रा धारण करके मौन हो गई।

दूसरे दिन मोहल्ले भर में निन्दा-स्तुति की हाट गर्म हो गई।

सन्ध्या के समय भैरव भी चीत्कार करता हुआ पहुँचा। कह रहा था—हमारी स्त्री को आप लोगों ने अपने घर में किस न्याय से बन्द कर रक्खा है? बड़े आदमी हैं किन्तु न्यायालय में तो बड़ा छोटा चलेगा नहीं।

हरीश ने सिंह की भाँति उछलकर उसकी गर्दन पकड़ ली और बड़े ज़ोर से धक्का देते हुए चिल्लाकर कहा—निकल यहाँ से सुअर कहीं का! निकल हमारे बँगले से!

भैरव भी गला फाड़ फाड़कर और अधिक चिल्लाने लगा और कहने लगा यह अन्याय आप लोग करते हैं......

हरीश ने फिर धक्का देते हुए कहा—फिर यहाँ चिल्लाता है, निकल बदमाश कहीं के!

इस झगड़े में हरीश को आकर रज्जो ने पकड़ लिया और कहा—आप मुझे आज्ञा दीजिए। मैं आपके सम्मान को धक्का पहुँचा कर और आपको विपत्ति में डालकर जीना नहीं चाहती।

हरीश ने कहा—नहीं, नहीं उसे अदालत जाने दो; जो कुछ होगा देख लेंगे।

भैरव ने कहा—हाँ, अदालत ही में फैसला होगा, अदालत में हो फैसला होगा।

अबे जा जा, जो करना हो सो कर ले।

भैरव बँगले से झपटकर चला गया।

लक्ष्मी सोच रही थी—शान्त-गृह में यह अशान्ति! यद्यपि रज्जो अनाथ है, असहाय है किन्तु इस भाँति संसार में कैसे मुँह दिखायेंगे।

रज्जो ने आकर पुकारा—दीदी......

लक्ष्मी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप मुँह लटकाये वहाँ से चली गई। रज्जो की आँखों के सामने अन्धकार था। वह वहीं दालान में एक कोने में गुड़ी-मुड़ी होकर रह गई। उस समय निस्तब्ध रात्रि थी। चारों ओर निस्तब्धता थी। हरीश ने आकर पुकारा—रज्जो.......

भग्न हृदय रज्जो एक ठण्डी साँस लेकर उठ खड़ी हुई। हरीश ने कहा—चलो हम इस अन्यायी समाज को छोड़कर और कहीं चलें। अब यहाँ नहीं रहना है। —क्रमशः

बाल-साहित्य के अद्वितीय
पण्डित सोहनलाल जी द्वि
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारती
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू
है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद
माननीय सम्पूर्णानन्द जी
है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार
दर्जे की कवितायें लिखते हैं,
भावों की गम्भीरता और
प्रकट होता है, लेकिन,
उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह
बालकों में सद्विचारों को
बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी
कृतियों को अपनाना चाहिए,
कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मूल्य
।॥) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि.

THE NEW
Rexona
MEDICATED SOAP
Rexona
CONTAINING CADYL
अब!
अधिक झाग
और सुगन्धि
देनेवाला

चर्म स्वास्थ से ही
चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!
रैक्सॉना से
चर्म स्वास्थ की रक्षा कीजिए

आपकी त्वचा तभी सुन्दर हो सकती है जबकि वह स्वास्थ्य हो और इसको स्वास्थ्य ही बनाए रखना चाहिए, नहीं तो वह सौन्दर्य शीघ्र जाता रहेगा। त्वचा को स्वास्थ्य और सुन्दर रखने के लिए ही सुन्दर, हरेरंग के और आसानी से फेन देने वाले टॉयलट साबुन रैक्सॉना का आविष्कार हुआ है। यह चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' की मिलावट से बनाया जाता है, जो कि ताज़गी और स्वास्थ्य-दायक है।

रैक्सॉना की झाग इस स्वास्थ्यदायक 'कैडिल' को शीघ्र ही शरीर के रुओं में पहुँचा देती है। जहाँ यह अपना काम करता है झाग शरीर पर जमा हुई धूल और पसीने को साफ़ करके त्वचा को स्वस्थ और सुरक्षित रखती है। चर्म-स्वास्थ्य के लिए सदैव रैक्सॉना से स्नान कीजिये।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ्य-दायक और ताजगी देनेवाले तैलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थ्यरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

बच्चों के लिए रैक्सॉना...
रैक्सॉना की झाग इतनी क़ोमल और स्फूर्तिदायक होते हैं कि बच्चों की कोमल त्वचा के लिए तो यह आदर्श है। डाक्टर इस को इस्तेमाल करने की हिदायत करते हैं। याद रखिए रैक्सॉना का 'कैडिल' बच्चे की चर्म की फुन्सी फोडों से रक्षा करेगा।

फुन्सी, फोड़े, ऐकज़ीमा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिर भी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते है।

RP. 27-220-40 HI.
REXONA PROPRIETARY LIMITED

हमारी दिल्ली की चिट्ठी

पं० जवाहरलाल नेहरू और आजाद हिन्द-सेना

माननीय टंडन जी और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

पुरुषोत्तमदास टंडन राष्ट्रभाषा
समर्थन कर रहे हैं।

सप्ताह भारी राजनी-
साथ समाप्त हुआ। लग-
बाद पं० जवाहरलाल
ने यहाँ राजनीतिक
कर दी। स्टेशन पर
स्वागत और सार्वजनिक-
ऊपर की उपस्थिति ने
और खास तौर से
में जनता की श्रद्धा
दिया। नई दिल्ली के
हुई नेहरू जी की प्रेस-
से उल्लेखनीय रही।
के अतिरिक्त उसमें
बहुत अधिक संख्या
लगभग दो घंटे के निजी
एक अमरीकी संवाद-
ने और भी अधिक बढ़ा
सुभाष बाबू की आजाद
में अपने विचार प्रकट कर
संवाददाता ने सेगान
देते हुए यह कहा कि
जीवित हैं और उनको
मित्रराष्ट्रों-द्वारा उन पर
जाय। संवाददाता ने बहुत
बोलते हुए यह आग्रह
आजाद हिन्द-सेना अम-
विरुद्ध लड़ी है, इसलिए
कार्रवाई की जायगी।
पत्र के युद्ध-संवाददाता

श्री नारायण ने जब उक्त अमरीका संवाददाता मि० वैग के कथन का खण्डन किया और सर्वथा निराधार बताया तब तो मि० वैग का पारा और भी गरम हो गया और उसने कहा कि वे युद्ध-मोरचे पर उस समय मौजूद ही नहीं थे। मि० नारायण ने चुनौती देते हुए कहा कि "भारत-सरकार इस बात का प्रमाण दे सकती है कि मैं बर्मा के मोर्चे पर उपस्थित था और जिस समय आजाद हिन्द-सेना के लोगों को कैद किया गया उस समय भी मैं वहीं मौजूद था। क्या मि० वैग एक भी ऐसा उदाहरण पेश कर सकते हैं कि जिसमें आजाद हिन्द-सेना के किसी सिपाही की गोली से कोई अमरीकन सैनिक हताहत हुआ हो।" पंडित नेहरू जी इन दोनों संवाददाताओं की झड़प में बहुत दिलचस्पी ले रहे थे। लाहौर से पंडित नेहरू जी के साथ आई एक पञ्जाबी-महिला को भी जोश आ गया और उसने एक ही बात कहकर अमरीकी संवाददाता का मुँह फेर दिया। उसने कहा, "सुभाष बोस की सेना अमरीकनों से लड़ने के लिए अमरीका नहीं गई। वह हिन्दुस्तान को ब्रिटिश हुकूमत के जुए से मुक्त करने के लिए भारत की सीमा पर लड़ रही थी। अमरीकी सेना को भारत की सीमा में लड़ने का क्या अधिकार था? जब कांग्रेस और ब्रिटिश-सरकार का झगड़ा होता है तो अमरीका इसे केवल घरेलू झगड़ा बताकर उसमें हस्तक्षेप करने से इनकार कर देता है। अब जब सुभाष बाबू, यदि वे जीवित हैं, और उनकी आजाद हिन्द-सेना के भविष्य-का प्रश्न है, तो अमरीका उसमें क्यों दिलचस्पी लेना चाहता है। हम इसे कभी भी सहन नहीं करेंगे।" अमरीकी संवाददाता की बोल बन्द हो गयी। नेहरू जी ने कहा, "यह मैं पहली बार सुन रहा हूँ कि सुभाष बाबू जीवित हैं। मेरा ऐसा विश्वास नहीं है। आजाद हिन्द-सेना के लोगों पर मुकदमा चलाये जाने के लिए हम सहमत हैं। क्योंकि, इससे और भी तथ्य प्रकट होंगे। परन्तु मुकदमा हमारे द्वारा चुने हुए निष्पक्ष जजों के सामने चलाया जाय। युद्ध के अपराधियों की सूची भी हम तैयार करेंगे और उस सूची में कुछ ऐसे नाम भी होंगे जो आज भारत-सरकार के बहुत बड़े-बड़े अधिकारी बने हुए हैं, परन्तु जो वास्तव में सुभाष बाबू से कहीं अधिक मुजरिम हैं। उनके मामले पर ब्रिटिश या अमरीकन दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि भारतीय दृष्टिकोण से विचार किया जाय। हम यह भी जानना चाहेंगे कि उन भारतीय युवकों को ब्रिटिश फौजी अधिकारी किन परिस्थितियों में सिंगापुर और मलाया में उनके भाग्य पर छोड़कर चले आये।" नेहरू जी प्रेस-कान्फरेंस के बाद सार्वजनिक-सभा में भाषण देने के लिए सीधे गांधी-ग्राउन्ड गये।

* * *

चीफ कमिश्नर ने एक विज्ञप्ति जारी करके दिल्ली-प्रान्तीय-कांग्रेस-कमेटी और अन्य कांग्रेस-संस्थाओं पर से पाबन्दी हटा ली। कांग्रेस-सोशलिस्ट-पार्टी पर से भी पाबन्दी उठाना दिल्ली की ही विशेषता है। दिल्ली-प्रान्तीय-कांग्रेस-कमेटी के प्रधान-मन्त्री श्री जुगलकिशोर खन्ना को भी जो अभी तक नजरबन्द थे, कांग्रेस-कार्यालय और उसकी सम्पत्ति सँभालने के लिए जेल से रिहा कर दिया गया है। दिल्ली में अब केवल चार नजरबन्दी बाकी रहे हैं। वे भी शीघ्र ही छोड़े जानेवाले हैं।

* * *

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हलचल उत्पन्न करनेवाले भाषणों का तांता लगा दिया है।

माननीय बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन के यहाँ पधारने पर हिन्दी-साहित्यिकों की गतिविधि में भी नया जीवन आ गया। कुछ साहित्यिकों ने टंडन जी से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन-सम्मेलन से गांधी जी का त्यागपत्र और रेडियो की हिन्दी-विरोधी नीति आदि विषयों पर चर्चा की। सम्मेलन के मन्त्री पं० मौलिचन्द्र शर्मा ने बताया कि गांधी जी को दुबारा सम्मेलन में लाने के लिए एक और प्रयास किया जाय। कुछ अन्य साहित्यिकों का यह विचार था कि गांधी जी द्वारा त्यागपत्र देना हिन्दी के लिए हितकर हुआ है। उनका कहना है कि सम्मेलन में ऐसे व्यक्ति न रहें तो अच्छा है जो खुल्लमखुल्ला सम्मेलन की घोषित नीति के विरुद्ध काम कर रहे हैं।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी ४ नवम्बर का अंक बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल रहा है

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियों, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अनेक चित्रों से सुसज्जित।

ग्राहकों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिएँ।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बेंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर
बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

जापान और भारत का व्यापार

(पेज ५ का शेष)

दस लाख रुपये से अधिक मूल्य की ३४ मुख्य मदें या वस्तुएँ हैं जिनमें प्रत्येक वस्तु की कई किस्में हैं। इनके अतिरिक्त १० लाख रुपये से कम मूल्य की विभिन्न मदें हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि जापान से भारत में कई किस्मों का माल आता था। उपर्युक्त बहुत सी वस्तुओं या मदों की भारत की वैसी ही वस्तुओं से प्रतियोगिता थी। भारत के वस्त्र-व्यवसाय के अलावा उसके जिन उद्योग-धन्धों को हानि पहुँची वे ऊन, रेशम, शीशे और शीशे के सामान, मिट्टी के बरतनों और चीनी मिट्टी के बरतनों, शृङ्गार-सामग्री, बिजली के माल, हाथकरघे, खिलौने बनाने आदि के उद्योग-धंधे थे। हाथकरघे में ऊनी कम्बल और रेशम बुनने के करघे शामिल हैं।

भारत से कम माल का निर्यात

भारत में जापान से आनेवाले तरह-तरह के इस माल की तुलना में भारत बहुत कम किस्मों का माल वहाँ भेजता था जिसमें कपास, जूट और जूट की तैयार वस्तुएँ, लोहा, मैंगेनीज, लाख, चमड़ा, अभ्रक और कुछ अन्य वस्तुएँ थीं।

५ लाख रु० की निम्न सीमा के बावजूद भी उपर्युक्त अवधि के सबसे अनुकूल वर्ष सन् १९३६-३७ में जापान से भारत के निर्यात-व्यापार में कुल १४ मुख्य मदें थीं। इस वर्ष में निर्यात माल का मूल्य ३० करोड़ ७ लाख रु० हो गया और भारत से ८ करोड़ ८० लाख अधिक रुपये का माल जापान को भेजा गया। इस निर्यात माल के पूरे मूल्य का लगभग ८५ प्रतिशत भाग कपास का मूल्य था और बाकी १५ प्रतिशत भाग में अन्य निर्यात माल का मूल्य था। इस प्रकार भारत से जापान जानेवाले माल की किस्में कम ही नहीं थीं पर भारत मुख्यतः कपास ही जापान को भेजता था।

मध्यपूर्व और पूर्वी अफ़्रीका में भारतीय निर्यात के लिए सुअवसर

भारतीय बाजार में जापानी माल की प्रतियोगिता अतीत काल में भारतीय औद्योगिक विकास के लिए बड़ी भारी बाधा थी। भविष्य में कम से कम कुछ वर्षों के लिए अब यह बाधा दूर कर दी गई है और युद्धोत्तर काल में यह देश जापानी माल की प्रतियोगिता के भय से विमुक्त रहकर अपने औद्योगिक विकास की योजना बना सकता है। यही नहीं, इस समय निर्मित वस्तुएँ विशेषतया कपड़े के थान आदि के निर्यात-व्यापार में उन्नति करने के लिए भारत को यह अनुकूल अवसर प्राप्त हुआ है। युद्धकाल में भारत ने विभिन्न दिशाओं में अपनी उत्पादन-क्षमता बढ़ा ली है और उसके लिए यह सम्भव हो जाना चाहिए कि वह अपने पड़ोसी देशों को वे सब भिन्न-भिन्न प्रकार की निर्मित वस्तुएँ भेज सके जिन्हें युद्ध से पूर्व जापान उन देशों के बाजारों में भेजा करता था।

मध्यपूर्व के देश भारतीय कपड़े के लिए अच्छे बाजार प्रमाणित होने चाहिएँ। पूर्वी अफ़्रीका के देश इस समय भारत से उन चीजों का बड़े पैमाने पर आयात कर रहे हैं जिन्हें युद्ध से पहले जापान से मँगाया करते थे। यह स्थिति युद्धोत्तर काल जारी रहनी चाहिए। युद्ध से पहले सारे देशों के लिए सबसे अधिक जापान से होता था किन्तु अब स्थान भारत ने ग्रहण कर लिया है देश भारत के कपड़े की बहुत बड़ी मंडी बन चुके हैं।

अभी अभी प्रकाशित हुई है
भैरवी—तीसरा संस्करण—
आर्ट पेपर पर रचनाएँ,
आर्ट पेपर में चित्र, बहुत
बँधाई और रैपर। मू०
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

आर्यन पेपर मिल्स लिमिटेड

हेड आफिस : १२ चौरंघी स्क्वायर कलकत्ता

मिल तथा बगीचा : महूदा (बी० यन० रेलवे)

* इँगलैंड से आधुनिक ढंग की मशीने मँगाने के लिए आवश्यक—पेशगी भेजी जा चुकी है।

* कम्पनी की निजी जमीन में पेपर पिल्स के लिए घास लगाना आरम्भ कर दिया गया है।

* मैनेजिंग एजेन्ट जब तक टैक्स रहित ५% साधारण हिस्सों पर तथा ६% असाधारण हिस्सों पर लाभ वितरित न कर देंगे, कोई पारिश्रमिक नहीं लेंगे।

निर्धारित मूल्य पर ही अब भी हिस्से मिल रहे हैं

—रुपया अदा करने का तरीका—

साधारण हिस्से प्रत्येक १०) के :—१) प्रति हिस्सा आवेदन पत्र के साथ। १) प्रति हिस्सा एलाटमेन्ट के दिन से १ मास के अन्दर तथा शेष रक़म चार बराबर किश्तों में।

असाधारण हिस्से १००) के प्रत्येक (टैक्स रहित क्यूमुलेटिव) १०) प्रति हिस्सा आवेदन पत्र के साथ तथा शेष एलाटमेन्ट होने की तिथि से ७ दिन के अन्दर।

शेयरों के लिए आवेदन पत्र के साथ १) प्रति आवेदन पत्र आना चाहिये।

जहाँ हमारे एजन्ट नहीं हैं वहाँ हिस्से बेचने के लिये एजन्टों की आवश्यकता है।

पूँजी लगाने के सम्बन्ध में सरकार की यह अनुमति प्राप्त हो चुकी है कि उतनी रकम जितनी कि केन्द्रीय सरकार की राय में (देशी रियासत शामिल होने पर बादशाह के प्रतिनिधि की राय से) परिस्थितियों के कारण किसी अनिश्चित समय तक काम में लगाने की आवश्यकता न हो सुरक्षित जमानतों में उस समय तक लगी रहेगी जब तक उचित समय रुपया लगा देने का नहीं आ जायगा। यह अनुमति देने के साथ सरकार इस प्रकार की कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेती है कि कम्पनी के बारे में जो स्टेटमेंट दिया गया है वह सत्य है अथवा कम्पनी की दृढ़ता की सरकार जिम्मेदार है।

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

इतने कम समय में इतनी बड़ी रक़म का लगाया जाना पहले लोन के खरेपन का और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का बड़ा विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है, अर्थात व्याज साल में दो बार इनकम टैक्स काटने के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रक़म के वापस दिये जाने का ज़िम्मा लिया जाता है। जितनी रक़म चाहें लगावें, कोई प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। जरूरत पर जब चाहें मार्केट में बेच कर नक़द रक़म प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम टैक्स अगर लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल जायगा। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम करने में सहाँयता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुकसान के खतरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा व्याज मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिजर्व बैंक आफ़ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खजाने से ख़रीद लें।

AAA 223 Hindi

रुपया बचाइए और

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

ऑफ इंडिया के फाइनेन्स डिपार्टमेंट द्वारा प्रकाशित

स्वदेशी
मिलता है
स्था. १८२६
आरोग्य १८९६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़्त
बम्बई ४

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी	२)
अनुराग	१)
कलंक	१)
गल्पगुच्छ (चार भाग)	४।।≡)
टाल्सटाय की कहानियाँ	२)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

टाटा का
ओ डी कोलोन
... मिल्स कं० लि०

घरेलू सुख की योजना
पहले से बनानी पड़ती है

धन्य है वह मनुष्य जो उन छोटे छोटे सुख-साधनों का आयोजन कर सकता है जिनके बिना घरेलू जीवन में सरसता नहीं आती। रेडियो, टेलीफोन, फर्नीचर, बच्चों के खिलौने आदि का होना अथवा इनका अभाव—यही अन्तर है उस मनुष्य में जिसके पास पैसा है और जिसके पास नहीं है। और लड़ाई के बाद ये वस्तुएँ बहुत सुलभ होंगी। किन्तु इस समय तो एक महीने की—यहाँ तक कि तीन महीने की आय से भी आप इनके लिए पैसे का प्रबन्ध नहीं कर सकते।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफ़िकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

यही कारण है कि बहुत से लोग जो इस समय पैसा बचा सकते हैं हर महीने लगातार कुछ न कुछ बचत करते जाते हैं। इन लोगों को भविष्य में हाथ में पैसा न होने के कारण किश्तबन्दी पर चीज़ें ख़रीदने की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ेगा। और इन लोगों ने देख लिया है कि अपनी बचत की रक़म लगाने की सब से अच्छी मद है:

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४६ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 127—HINDI

खांसी बाघ की तरह भयंकर हैं...

सिरोलिन 'रुचि'

सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषोधक है

..वे लाइफबॉय की आदत सीख चुका है!

खिलौनों के साथ खेलने से वे अपने हाथों को बुधि से चलाने की आदत बना रहा है। उसकी माँ उसका ध्यान करते हुए जानती है कि उसकी सिखाई हुई आदत – लाइफ़बॉय का रोज़ाना इस्तेमाल – जो गंदगी के ख़तरे से जो उसके खिलौनों में तथा घर में लगा रहता है – उसे खेलते समय भी सुरक्षित रखती है।

LIFEBUOY
SOAP

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है

L 50-169 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०,
अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु
पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन
सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

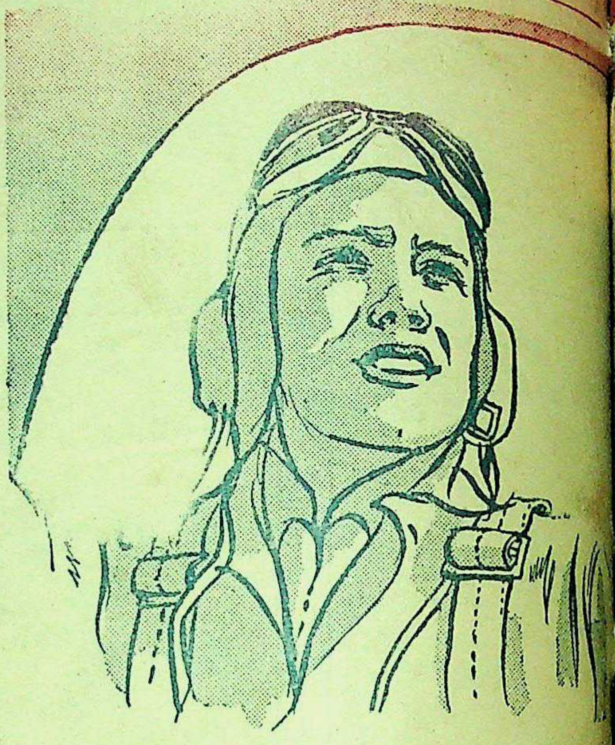
"देश के दीप्तिमान नक्षत्र"-शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक का चिन्ह 'पंख' (विंग्स) मात्र ही नहीं, जिससे केवल इतना प्रकट होता है कि वह हवाई जहाज़ चला सकता है।

उसकी वास्तविक श्रेष्ठता उस सब से अधिक प्रशंसनीय गुण के कारण है जिसे साहस अथवा पराक्रम के नाम से पुकारते हैं।

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ दीजिए जिसका सबूत वह दे चुका है; उस कार्य के मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार कीजिए जिसे वह आजकल कर रहा है; और यह भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने देश की और स्वयं अपने भावी हित की नींव डाल रहा है। तब आपको पता लग जायगा कि हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दीप्तिमान नक्षत्र वही है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१६ सितम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 16th September, 1945

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

—आटम बम !
का भविष्य क्या है?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

किसानों का आन्दोलन और कांग्रेस।
गरीबी (कहानी) क्या वह कलंकिनी थी?

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक, वायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगावें।

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था. १८२६
स्वदेशी
आरोंदा ९८६६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़्त
युकॅलिप पेन बाम
दादकामलहम
पाडलकर बन्धु
बम्बई ४

कठिन परिश्रम के बाद,

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी २)
अनुराग २)
कलंक २)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥=)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफ़ी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

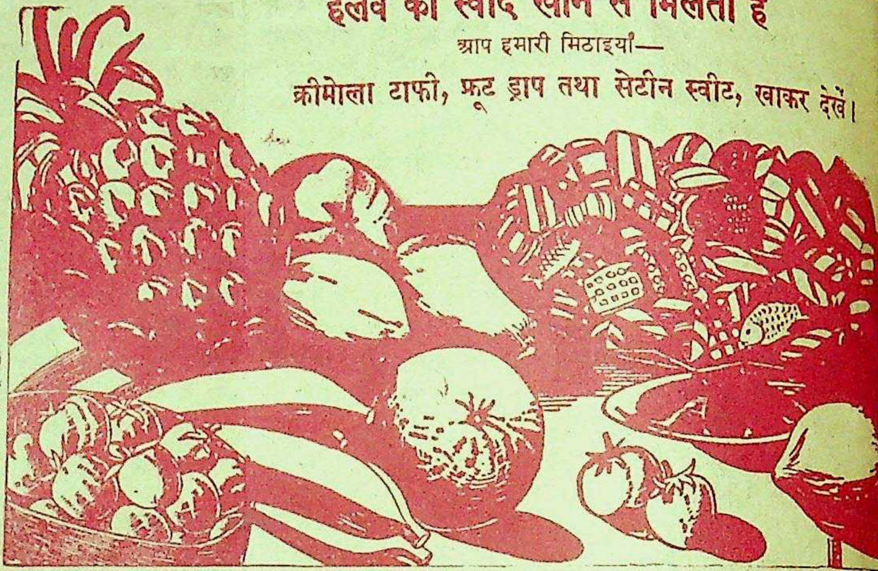

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

अन्दरूनी सफ़ाई के लिये यह है
ANDREWS
LIVER SALT

एण्डरूज़ का छलकता हुआ गिलास आनंद और ताज़गी देने के अलावा पेट को स्वच्छ कर शरीर और दिमाग़ को तरोताज़ा करता है। बाहरी सफ़ाई से अन्दरूनी सफ़ाई का अधिक महत्त्व है और हज़ारों व्यक्ति एण्डरूज़ का सेवन कर अपना स्वास्थ्य ठीक रखते हैं।

प्रथम—एण्डरूज मुँह और जीभ को साफ रखता है।

बाद में—पाकस्थली और अम्ल की बीमारी दूर करता है।

फिर—लिवर को ताकत पहुँचाता और पेट की गड़बड़ी दूर करता है।

अन्त में—आपकी अन्दरूनी सफाई के लिये एण्डरूज पेट की सफाई करता है। कष्टदायक विष को बाहर निकाल फेंकता है; कब्जियत को दूर कर रक्त को साफ करता और ठंढक पहुँचाता है।

अन्दरूनी सफाई के लिये नियमित रूप से व्यवहार करें।

**ANDREWS
LIVER SALT**
एण्डरूज लीवर साल्ट
स्वास्थ्यप्रद पेय — स्वास्थ्यप्रद रेचक

Health Drink — Tonic Laxative

117

बेबुलाए मेहमान

ऐसे मेहमान कि जिनके स्वागत के लिए बहुत तरह की तैयारियाँ की गई हों उनसे मिलने से कहीं अधिक बेबुलाए मेहमान से मिलकर खुशी होती है।

घर हो या व्यवसाय-गृह, शीत या ग्रीष्म एक प्याला ताजा चाय ही साधारणतः अपने मेहमानों के सत्कार में समर्पित किया जाता है।

सर्वत्र भारतवर्ष के शहरों में स्थित डिपो से हमारे सेल्समैनों द्वारा ब्रुक बाण्ड चाय होता है। और जहाँ भी हो यह चाय आपके टेबुल पर बिलकुल बगीचे की ताजगी-सम पहुँचता है।

ब्रुक ब

दो पत्तियाँ और एक कली

देशदूत

र्ष ८ संख्या ३] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, १६ सितम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

साहित्य-सम्मेलन के आगामी परिषदों के सभापतियों के लेकर यह अनुमान होने लगा भी प्रजातंत्र अपने खूँटे के रहा है। परिषदों के सभापति अपने को जबरदस्ती पड़ गये हैं जिनका काम को चराना ही रहा है। जो करना ही नहीं देखते बल्कि और सिखाते भी हैं। हिन्दी ऐसी महान संस्था का उद्धार द्वारा होगा। श्री और पण्डित सूर्यकांत ऐसे कर्मठ साहित्यकारों के आगे क्या पूछ हो सम्मेलन का सभापति सबसे बड़ी डिगरी है स्कूलों बाजी, और कनवेसिंग। कि यह प्रजातंत्र का युग समझते हैं कि यह षटयन्त्र है कि। राष्ट्रभाषा हिन्दी के उद्धार का मार्ग आरंभ हो गया है।

* *

राजगोपालाचार्य अब हो गये हैं, अपने राम प्रसन्नता हुई। राजा कांग्रेसवादी ही रहे लेकिन में पिछले दिनों वह कि उन्हें कांग्रेस से त्याग- । खैर, देर आयद दुरुस्त हुआ और बड़े मौके आ गये। कांग्रेस वर्किंग सीटें खाली हैं। आखिर ही! इसलिए अपने है—यदि छोटी न —राजा जी को चांस मिलना हिन्दू-मुस्लिम एकता के राजा जी विशेषज्ञ हैं, आगे एकता की ठनगन होती राजा जी ही ऐसी उलझन के लिए फिट नेता भी हैं, कमेटी में भी उनका स्थान

* *

काई शेक एक वर्ष तक में धूमधाम और आराम पधारी हैं। अब वह पहले नहीं पहुँची हैं। इसलिए कोई तगड़ी बात और शुरू होनेवाली है। देशभक्ति से कोई इनकार सकता है? वह प्रजातन्त्र है। राष्ट्रीयचीन की ही की है। हाँ एक अमरीका और ब्रिटेन के में थोड़ी सी जगह भी क्योंकि अपनी जन्म- तो उनका थोड़ा- और ब्रिटेन भी ठहरा दोस्त। फिर वह करें पर उन्हें चीन, रूस का गठबन्धन अच्छा तो न लगा होगा, क्योंकि वह सदा से कम्यूनिस्टों के खिलाफ रहीं, किन्तु अब हो ही क्या सकता है, न वह अमरीका जातीं और न चीनी-रूसी गठबन्धन होता। अफसोस है कि—

किस्मत का खेल देखिये,
टूटी कहाँ कमन्द ?
दो चार हाथ जब कि,
लबे बाम रह गया॥

जनरल च्यांग और मैडम च्यांग ने प्रजातन्त्र चीन की पिछले आठ-नौ वर्ष के लगातार युद्ध से रक्षा की और जब सचमुच लड़ाई खतम हो गई, उनका दिन फिरा तो झपट्टा मार कर रूस हलुआ खाने को कूद पड़ा। किस्मत का खेल इसी को कहते हैं।

* * *

चुंगकिंग में जनरल च्यांगकाई शेक और अमरीकन जनरल वेडमेयर जापानी आत्म-समर्पण का समाचार सुनकर प्रसन्न हो रहे हैं।

मुसलिम लीग के विधाता मिस्टर जिन्ना कराची के एक प्रेस कान्फ्रेंस में गिरफ़्तार हो गये। गिरफ़्तार इसलिए कि एक मुसलिम पत्रकार ने मिस्टर जिन्ना से 'पाकिस्तान' की परिभाषा बतलाने के लिये कहा। मिस्टर जिन्ना ने समझाने के लिये समय चाहा! सच तो यह है कि 'पाकिस्तान' मिस्टर जिन्ना की जेब में एक चलती फिरती तस्वीर है। फिर तस्वीर सबको थोड़े ही दिखाई जाती है और न मिस्टर जिन्ना तस्वीराफरोश ही हैं। जिन्हें पाकिस्तान की तस्वीर देखना और समझना हो वह मुस्लिम लीग में शामिल हो जायें। तस्वीर दिखाई पड़ने लगे "पाकिस्तान' की। बिना मन्त्र लिये जिस तरह उस्ताद का ज्ञान समझ में नहीं आ सकता, उसी तरह बिना लीग में शामिल हुए 'पाकिस्तान' की परिभाषा समझ में नहीं आ सकती। इस वक्त गुरु सरकार और चेला मिस्टर जिन्ना के सिवा फरिश्ता भी नहीं है जो 'पाकिस्तान' की परिभाषा बता दे, इंसान की तो बात करनी ही न चाहिए। ऐसी है मुसलिम पाकिस्तान की गूढ़ परिभाषा!

* * *

सुना जाता है कि भविष्य में मजदूर सरकार गवर्नरों का पद भी भारतीयों को भी देने वाली है। क्यों नहीं भारतीय जब स्वराज्य के योग्य बन गये हैं तो गवर्नरी तो स्वराज्य के भीतर की ही चीज है। अपने राम का यह सुझाव है कि वाइसराय के वर्तमान कार्यकारिणी के सदस्यों को एक एक करके प्रांतों का गवर्नर बनाया जाना चाहिए। क्योंकि सिवा सर फ़िरोज़ खाँ नून को छोड़ कर अगले चुनाव का जुनून किसी पर भी नहीं चढ़ा! इसलिये ऐसे वीर पुरुषों का सरकार द्वारा सम्मान तो होना ही चाहिए। सदस्यों ने युद्धकाल में सरकार की जो सहायता की है वह स्वर्णांकित है, इसलिये उन्हें गवर्नरी का पद देना उचित ही होगा। भारतीय शासन का भारतीयकरण हो जायेगा साथ ही इन परोपकारियों के प्रति सरकार अपने कर्तव्य का भी पालन कर डालेगी। फिर कौन कहनेवाला होगा कि प्रांतों पर गोराशाही का शासन है?

* * *

वाइसराय लार्ड वेवेल और भारत मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस ने भारत सरकार को आदेश दिया है कि वह आगामी चुनाव के लिये मतदाताओं की वर्तमान सूची में संशोधन और परिवर्तन का काम शुरू कर दे। वास्तव में सरकार इस वक्त बड़ी उदारता से काम ले रही है। बात यह है कि लार्ड वेवेल कांग्रेस को नाराज नहीं करना चाहते और मुसलिम लीग की नाराजगी का उन्हें डर ही नहीं है। किसी तरह चुनाव होना चाहिए। प्रांतों में मिश्रित मंडल कायम होना चाहिए, तब नई चहल-पहल शुरू हो। वातावरण में गर्मी आये, क्योंकि अगर महात्मा जी ने फिर कहीं अनशन शुरू कर दिया तो मामला खटाई में पड़ जायेगा। ऐसी दशा में सरकार को ज़रूर उदारता दिखाना चाहिए। चुनाव का बहिष्कार न होना चाहिए, सारी सहूलियत सरकार देने को तैयार हैं, लीजिए दिल खोलकर!

* * *

कांग्रेस के नेता इस समय कम्यूनिस्टों से बेतरह नाराज हो गये हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में यह निर्णय हो जायेगा कि कम्यूनिस्टों का भविष्य क्या होगा? भविष्य चाहे जो कुछ भी हो लेकिन यह सही है कि कांग्रेस की उन्हें उतनी चिन्ता नहीं है जितनी मुस्लिम लीग की। पंडित जवाहरलाल नेहरू या महात्मा गांधी जिन्दाबाद के साथ ही वह मिस्टर जिन्ना जिन्दाबाद भी चाहते हैं और मजदूरों को इसका उपदेश भी देते हैं! लेकिन जरूरत एक नये किस्म के जिन्दाबादी नारे के गढ़ने की है। कम्यूनिस्ट पार्टी के सर्वेसर्वा मिस्टर पूरनचन्द्र जोशी ऐसे एकता के नारे की तलाश में हैं। लेकिन मुसीबत है बेचारों को, कांग्रेसवादियों के मारे। लेकिन जब तक पितृदेश का वरद्-हस्त उनके सर पर है तब तक उन्हे क्या चिंता? कांग्रेस तो पूँजीवादियो की संस्था है न! और अखिल-भारतीय कम्यूनिष्ट पार्टी शुद्ध मजदूर और किसानों की। फिर डर किस बात का?

* * *

सचमुच ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना आजकल सरल नहीं, बड़ा कठिन कार्य है। जब विश्वामित्र ऐसे ऋषि की बुद्धि डाँवाडोल हो गई तो इस धरती का मनुष्य तो मनुष्य ही नहीं हाड़-मांस का पुतला है। सेवाग्राम के श्री प्यारेलाल जी भी मनुष्य ही हैं, इसीलिये वह भी ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न कर सके। 'अमृतबाजार पत्रिका' के कथनुसार श्री प्यारेलाल जी की उम्र ४३ वर्ष की है और जिससे विवाह करने के वह इच्छुक हैं उस कुमारी की केवल १६ वर्ष की। अपने राम की श्री प्यारेलालजी से सच्ची और पूरी सहासुभूति है। कलियुग है ही इससे इनकार कौन कर सकता है? फिर श्री प्यारेलाल जी के मानवसुलभ हृदय पर अगर कलियुग ने अपनी छाया डाल दी है तो बेजा क्या है? विवाह होना चाहिए। विवाह और उम्र से मतलब क्या है? प्रेम सम्बन्धी विवाह विशुद्ध प्रेम के परिणाम स्वरूप होते हैं न कि उम्र, शकल, सूरत और ठाठ-बाट देख कर।

सम्पादक का पृष्ठ

बालिग मताधिकार

भारत सरकार ने केंद्रीय असेम्बली तथा प्रांतीय एसेम्बलियों और कौंसिलों के चुनाव की घोषणा कर दी और आगामी नये बजट के पूर्व ही चुनाव-कार्य समाप्त हो जायेगा तथा प्रांतों की बागडोर नये मंत्रिमंडलों के हाथ में आयेगा। सरकार की इस घोषणा से नये चुनाव की चर्चा और उसका प्रचार जोरों से प्रारम्भ हो गया है। कांग्रेस अपनी पूरी शक्ति से चुनाव में भाग लेने का विचार रखती है। मुसलिमलीग भी भारतीय मुसलमानों की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था के नाम से चुनाव में भाग लेगी। इनके सिवा हिन्दू महासभा तथा हरिजन-अछूत दल भी चुनाव में भाग लेंगे। किन्तु समझना यह है कि क्या सचमुच आजकल चुनाव की जो प्रणाली प्रचलित है वह वास्तविक रूप से प्रजातंत्रात्मक है ? भारत की आबादी ४० करोड़ से भी अधिक है किन्तु वोट देनेवालों की संख्या लगभग ४-५ करोड़ है। क्या ४ या ५ करोड़ वोटरों ४० करोड़ व्यक्तियों के भाग्य-निर्णय का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता रखते हैं ? क्या इसी प्रकार की चुनाव-प्रणाली को सार्वजनिक रूप दिया जा सकता है ? सच तो यह है कि हमारे देश में ब्रिटिश सरकार जिस तरह प्रजातन्त्र के नाम से तरह तरह के नाटक रचा करती है, उसी प्रकार से वह चुनाव का नाटक भी रच रही है। इसमें न तो वास्तविकता है और न प्रजातंत्र की गंध ! इस तरह के चुनाव प्रजातंत्र की मखौल उड़ानेवाले तथा दुनिया के धोखे में डालनेवाले हैं।

इस तरह के सार्वजनिक चुनावों का महत्त्व तभी बढ़ सकता है जब कि सरकार बालिग मताधिकार की नीति स्वीकृत करे। प्रत्येक बालिग स्त्री या पुरुष चुनाव के महत्त्व को समझे और अपने अधिकार की उपयोगिता का अनुभव करे। केन्द्रीय असेम्बली और प्रान्तीय एसेम्बलियों का चुनाव इसी नीति के सहारे होना जरूरी है। इसीलिए कांग्रेस नेता नवीन चुनाव में बालिग मताधिकार की माँग प्रस्तुत कर रहे हैं। केन्द्रीय एसेम्बली के मतदाताओं की सूची तैयार ही हो गई है, और उसकी सार्वजनिक उपयोगिता की कलई भी खुल चुकी है, इसलिए यदि उसी आधार पर चुनाव हुआ तो जिन प्रजातंत्रीय नेताओं के हाथ में केन्द्रीय सरकार की बागडोर जायेगी, वह जनता के लिए कितने हितकर होंगे, यह विचारणीय है। अन्य प्रान्तों में भी पुराने मताधिकार की सूची के अनुसार ही चुनाव होने जा रहा है। ऐसी सूचियों की अधूरी, भ्रष्ट, अंट-संट और बेतुकी होना अनिवार्य है। मजा यह है कि इस आधार पर होनेवाले चुनावों को बड़े गर्व से सार्वजनिक और प्रजातंत्रीय चुनाव का नाम दिया जाता है। इसलिये आवश्यक है बालिगमताधिकार की नीति ग्रहण की जाने की। इसीलिये कांग्रेस प्रेसिडेंट मौलाना आजाद ने बालिग-मताधिकार के महत्व का अनुभव करके घोषित किया है कि चुनाव में यही नीति अपनाई जाये। कांग्रेस के अन्य नेताओ ने भी इसका अनुभव किया है। यदि नेताओं ने अपने मत पर अधिक जोर दिया, तो संभव है कि निकट भविष्य में सरकार एक महत्वपूर्ण कदम उठाये। क्योंकि हम जानते हैं कि सरकार के लिये कांग्रेस ऐसी सार्वजनिक और लोकप्रिय संस्था को तरह देना अत्यन्त कठिन है। इसी आधार पर केन्द्रीय तथा प्रांतों की मत सूचियाँ पुनः तैयार होनी चाहिए तभी पुराने दोषों का परिमार्जन हो सकता है। यह कितना मजाक है कि थोड़े से मत दाताओं के बल पर सार्वजनिक चुनाव का नाटक रचा जाये और अधिकांश बालिग मतदाता उसे समझने, अपनी राय प्रगट करने के भी अधिकारी न समझे जायें ? इसलिये चुनाव के सम्बन्ध में कांग्रेस नेताओं ने जो रुख लिया है वह न्याय संगत है। कांग्रेस जनता की संस्था है। उसके द्वारा जनता की अवहेलना हो ही कैसे सकती है ? सार्वजनिक चुनाव के नाम पर वह इस तरह का अंधेर कैसे सहन कर सकती है ? यदि कांग्रेस की इच्छानुसार सरकार मताधिकार की समस्या क्रियात्मक रूप से सुलझाने को अभी तैयार नहीं है तो कम से कम कांग्रेस को सार्वजनिक हित की दृष्टि से चुनाव से अलग रहना ही श्रेयस्कर है। हाँ समय थोड़ा अवश्य है, कठिनाइयाँ भी हैं किन्तु सरकार के पास आदमियों तथा पैसे का अभाव नहीं है, समस्या सुलझाई जा सकती है और सार्वजनिक हित की रक्षा के लिये नवीन मताधिकार की नीति में परिवर्तन किया जा सकता है! हमें प्रसन्नता है कि भारत सरकार मताधिकार के प्रश्न पर विचार-विनियन तथा मतसूचियों में संशोधन और परिवर्द्धन के लिये भी तैयार हो गई है। आशा है एक प्रशस्त मार्ग दिखाई देगा।

* * *

प्रांतीय शासन में परिवर्तन

भारत सरकार ने प्रांतों में वैधानिक शासन व्यवस्था की स्थापना के लिये आगामी चुनाव की जो घोषणा की है, उससे प्रांतों के राजनैतिक जीवन में एक नई लहर उत्पन्न हो गई है। कांग्रेस नेताओं के जेलों से छोड़ दिये जाने तथा कांग्रेस पर से प्रतिबंध उठा लिये जाने से प्रांतों की राजनीति एक नई दिशा की ओर अग्रसर होती हुई दिखाई दे रही है। पिछले ६ वर्ष से उन प्रांतों पर, जहाँ से कांग्रेस मन्त्रिमंडलों ने त्यागपत्र दे दिये थे, गवर्नरी शासन का बोलबाला है। कहना यह चाहिए कुछ आई० सी० एस० के अफसरों द्वारा ऐसे प्रांतों का शासन प्रजातन्त्र की आड़ में चलाया जा रहा है और अब तो यह निश्चित रूप से पता चल गया है कि यह स्थिति कम से कम आगामी चुनाव तक अवश्य ही बनी रहेगी क्योंकि ऐसे प्रांतों में प्रांतीय गवर्नरों की ओर से प्रांतीय एसेम्बलियाँ भंग कर दी गई हैं। जब तक आगामी चुनाव नहीं हो जाता और मन्त्रिमंडलों की नई व्यवस्था नहीं हो जाती है तब तक गवनरों तथा आई० सी० एस० के जबरदस्त हाकिमों द्वारा प्रांतों का शासन चलता रहेगा।

प्रांतों में गवर्नरी शासन अब तक कैसा चल रहा है, युद्ध के इस बीच में यह शासन प्रबन्ध जनता के लिये कितना हितकर सिद्ध हुआ है, यह छिपी हुई बात नहीं है। फिर भी यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि इस प्रकार की निरंकुश शासन प्रणाली और डिक्टेटरशिप से सरकार का जो भी हित हुआ हो किन्तु जनता के हितों पर कुठाराघात ही हुआ है।

कांग्रेस नेताओं के जेलों से छूट आने पर सरकार के लिए उचित था कि वह बहुमत प्राप्त उन नेताओं को आमन्त्रित करके प्रांतीय शासन की बागडोर पुनः जनता के हाथों में सौंपने की चेष्टा करती किन्तु ऐसा न करके उसने नये चुनाव की आड़ में प्रांतीय एसेम्बलियों को भंग कर दिया जिससे किसी नवीन शासन व्यवस्था की—विशेष कर कांग्रेस मंत्रिमंडलों की—स्थापना के लिये दूसरा मार्ग ही न रह जाये। हो सकता है कि कांग्रेस चुनाव तक प्रांतों का शासन-भार ग्रहण करने के लिये तैयार भी हो जाती किन्तु अब तो दरवाजा ही बन्द कर दिया गया है। सरकार तो स्वयं परिस्थिति को समझती ही थी, साथ ही मुसलिम लीग की भी यही इच्छा थी कि बिना नये चुनाव के कांग्रेस मंत्रिमंडलों की पुनः स्थापना न होने पाये क्योंकि इससे लीग को यह भय था कि इसका प्रभाव आगामी चुनाव पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इस प्रकार विचार पूर्वक सोचने और समझने पर ऐसा अनुभव होता है कि सरकार तथा लीग के षटयंत्र से ही प्रांतीय कौंसिलें और एसेम्बलियाँ भंग की गई हैं। क्योंकि असेम्बलियाँ यदि पिछले छः वर्ष से प्रांतों में बनी रहकर शासन व्यवस्था में कोई बाधा नहीं उत्पन्न कर सकीं तो तीन-चार महीने यदि और बनी रहतीं तो कौन-सा पहाड़ गिर पड़ता ? सरकार की ओर से कहा यह जाता है कि आगामी चुनाव में लोकतन्त्रीय दृष्टिकोण से अधिक से अधिक सहायता करने तथा कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए गवर्नरों ने यह नया आदेश निकाला है किन्तु सही बात यही जान पड़ती है कि सरकार नये चुनाव के पहले कुछ भी नहीं करना चाहती थी। फिर मिस्टर जिन्ना तथा मुस्लिम लीग को भी गवर्नरों का ही शासन अधिक प्रिय है, इसलिए सरकार का भी उस ओर झुक-जाना अनिवार्य है।

जो कुछ भी हो, चुनाव होगा और उसके अनुसार जब मंत्रिमंडल बनेंगे तो वैसी व्यवस्था होगी किन्तु इस समय गवर्नरी शासन को अपनी बागडोर ढीली करनी चाहिए। विशेष रूप से जब कि युद्ध समाप्त हो चुका है और नागरिक जीवन को अधिक से अधिक सुलभ बनाने की आवश्यकता है। सबसे पहले अन्न और वस्त्र के अभाव की पूर्ति की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जितनी भी जल्दी हो सार्वजनिक जीवन को कठिनाई में डालनेवाले प्रतिबन्धों की समाप्ति हो जानी चाहिए। कोई भी शासन उस समय तक कभी भी लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि वह जनता की सुख-सुविधा की ओर ध्यान नहीं देता। किन्तु क्या गवर्नरी शासन अपनी पिछली नीति में परिमार्जन करके प्रजातंत्रीय शासन-प्रणाली की नीति—कम से कम चार ही मास के लिये सही—ग्रहण करेगा ?

* * *

रेडियो वाले कब चेतेंगे ?

अखिल भारतीय रेडियो वि
राष्ट्र-भाषा का जो अपमान अन
से हो रहा है, हिन्दी संसार के
विरोध तथा बहिष्कार के
बदस्तूर जारी है। इससे स्पष्ट है कि
अधिकारियों के कान पर जूँ
नहीं रेंगी है। वह अपनी
पर पूर्ववत् दृढ़ हैं। रेडियो की
में अभी तक तनिक भी परि
हुआ है। इसका अर्थ यह है कि
विभाग को भारतीय जनता द्वारा
वाली भाषा के उपयोग की
परवाह है और न वह अपनी
पक्षपात की नीति को अभी
तैयार है। सच तो यह है कि रेडियो
सदा से उर्दू को पूर्ण प्रोत्साहन
बहुमत द्वारा बोली जाने वाली हिन्दी
बहिष्कार। ऐसी स्थिति में हिन्दी
का यह कर्तव्य है कि वह रेडियो
आन्दोलन चलाता जाये तब तक,
कि रेडियो द्वारा होनेवाले अँधेर
नहीं हो जाती। बहुमत के
पैसे का दुरुपयोग जिस सीमा तक
जा रहा है और एक सम्प्रदाय
भाषा को जिस प्रकार प्रोत्साहन
रहा है, इसकी संभावना तो
अँगरेजी हुकूमत में होना
है। रेडियो की मैशीनरी जिन हाथों
और जिनके द्वारा इसका संचालन
है, उनकी नीति ही जब पक्षपात
तब हिन्दी के प्रति वहाँ अंधेर
और क्या हो ? वर्तमान शासन
दुनिया भर की खुराफातें हो
उसी प्रकार रेडियो विभाग की
है। जनता आन्दोलन करती
वह न्यायोचित माँगों की पुकार
है, किन्तु वहाँ कोई सुनवाई नहीं,
कोई अंकुश नहीं है। वह अपनी
राग अलापते जा रहे और जब तक
हाथों में रेडियो विभाग का
तब तक वह अपनी पूर्व नीति
इसमें संदेह नहीं। इसलिये आवश्यक
मैशीनरी के कल-पुर्जों के आमूल
की, सफाई की और निष्पक्ष व्यक्ति
उसके संचालन की। हिन्दी
हिन्दी-उर्दू के सैद्धांतिक उलझन
पड़कर जोरदार आवाज उठाते
चाहिए कि रेडियो विभाग निष्पक्ष
में सौंपा जाये। पिछले दिनों पंजाब
हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने रेडियो
सप्ताह मना कर अपनी जोरदार
उठाई थी और अब संयुक्त प्रान्तीय
साहित्य सम्मेलन की ओर से यही
उठाई गई है। अन्य प्रांतों को भी
नीति को अपनाना चाहिए। १६
को संयुक्त-प्रांत में रेडियो विरोधी
मनाने का निश्चय हुआ है। प्रत्येक
और ग्राम की हिन्दी-जनता भारत
के रेडियो विभाग में होनेवाली
विरुद्ध एकमत से विरोध प्रदर्शन
और आगे भी करती रहे। क्योंकि
काम अन्य प्रांतों के लिये केवल
प्रशस्त नहीं करेंगे वरन् हिन्दी
भाषी जनता को एक सूत्र के
भी सहायक सिद्ध होंगे।

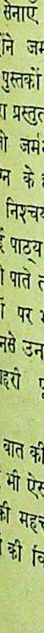

जर्मन-शिक्षा का भविष्य क्या है?

नाजी तथा सैनिक सिद्धांतों की जगह मित्रराष्ट्रीय प्रजातंत्र

लेखक, श्री युगलकिशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०

मित्रराष्ट्रों ने जर्मनी पर आधिपत्य स्थापित कर लिया है और अब वहाँ नाजी-शिक्षा-पद्धति के स्थान पर प्रजातंत्रीय शिक्षा-पद्धति की नवीन योजना के अनुसार कार्य होने जा रहा है। इस सुंदर और सामयिक लेख में विद्वान् लेखक ने प्रजातंत्रीय शिक्षा-विकास के सिलसिले में कई महत्त्वपूर्ण विचार प्रगट किये हैं, जो पठनीय हैं।

की संख्या में छापी जा रही हैं। इन पाठ्य पुस्तकों की तैयारी में ऐसे जर्मन विद्वानों तथा शिक्षकों की सहायता ली गई है जो नाजियों के अत्याचारों से पीड़ित होकर अमेरिका में शरणार्थी बने थे। यह पाठ्य पुस्तकें विभिन्न अवस्थाओं के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए तैयार की गई हैं और इनमें शिक्षा की नवीनतम पद्धतियों की सहायता ली गई है। पुस्तकों में चित्र, ग्राफ, नकशे, तुलनात्मक चार्ट सभी प्रचुर मात्रा में दिये गये हैं जिससे जर्मन राष्ट्र के उगते सितारे पुनः स्वयं स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी समालोचनात्मक विचारधारा का विकास कर सकें। नाजियों-द्वारा प्रस्तुत जिन पाठ्य पुस्तकों में आयनस्टाइन के नवीन सिद्धान्तों की उपेक्षा की गई थी उन्हें नष्ट करके कागज तैयार करनेवाली मशीनों में डाल दिया गया है और उसी प्रकार जीवविद्या की वह पुस्तकें भी, जिनमें जर्मन जाति की महत्ता का नाजी सिद्धान्त प्रतिपादन किया गया था, कागज की मशीनों में गूदा बन रही हैं।

साहित्य, गणित, इतिहास, भूगोल इत्यादि स्कूलों के साधारण पाठ्य विषयों पर लिखी पुस्तकों के अतिरिक्त एक 'संसार का इतिहास' भी लिखा गया है जिसमें ऐतिहासिक घटनाओं को उनकी महत्ता के अनुसार स्थान दिया गया है और प्रशिया और जर्मनी के विकास का संसार के अन्य भागों पर क्या प्रभाव पड़ा है उसका नये ढंग से विवेचन किया गया है।

इन पाठ्य-पुस्तकों की तैयारी में मानव जाति के आदर्श परिवार के विचित्र लक्षणों का पारस्परिक सम्बन्ध, समाज के प्रति मनुष्य का कर्त्तव्य, विभिन्न धर्मों के प्रति सहिष्णुतापूर्वक व्यवहार तथा धर्म के वास्तविक रूप पर प्रकाश डाला गया है और समस्त मानव जाति के विद्वानों की रचनाओं को स्थान दिया गया है। स्वयं जर्मन लेखकों की रचनाओं की उनमें प्रमुखता है। सुप्रसिद्ध जर्मन कवि हाइन की कविताओं का भी समावेश किया गया है जिन्हें नाजियों ने यहूदी कह कर बहिष्कार कर दिया था।

यह मानी हुई बात है कि नाजियों के हाथ में शासनसूत्र आते ही जर्मन शिक्षा का नाजीकरण आरंभ हो गया था। सन् १९३९ या उससे पूर्व पैदा हुए बच्चों को किसी न किसी समय नाजी शिक्षा-पद्धति का शिकार बनना ही पड़ा है। उनके दिमाग में जर्मन जाति की श्रेष्ठता, राष्ट्र के लिये समस्त व्यक्तिगत स्वार्थों की बलि, प्रजातन्त्र के प्रति घृणात्मक विचार, जर्मन जाति का संसार-विजेता होने के स्वप्न, यहूदियों के प्रति क्षोभ तथा घृणा, व्यक्तिगत स्वाधीनता की उपेक्षा इत्यादि के भाव कूट कूट कर भरे गये हैं। उन बच्चों के हृदय में, यह विश्वास भी आ गया होगा कि विगत महायुद्ध में जर्मनी का पतन केवल क्षणिक है और वह समय दूर नहीं जब जर्मन जाति पुनः इस गृह पर निरंकुश शासन करेगी। जिन प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की खिल्ली नाजी उड़ाया करते थे उन्हीं प्रजातन्त्र राष्ट्रों-द्वारा जर्मनी का पतन उन बच्चों की आँखें अवश्य खोल सकेगा यदि उनका ध्यान प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की ओर आकर्षित किया जाये। हो सकता है कि आज के छात्र समय आने पर जर्मनी में प्रजातन्त्र की स्थापना में सहायता दें और भविष्य में जर्मनी के आक्रमण की आशंका से संसार मुक्त हो सके। जो विद्यार्थी विश्वविद्यालयों में पढ़ते थे उन्हें प्रजातन्त्रात्मक राष्ट्रों में अन्वेषण करने की सुविधा प्रदान करनी होगी।

जैसा हम देख चुके हैं, शिक्षा के पुनर्गठन की समस्या पाठ्यपुस्तकों पर ही निर्भर नहीं करती। इधर कुछ वर्षों तक तो जर्मनी को स्कूल तथा कालेज के लिये इमारतों की ही कमी अनुभव होगी। विद्यार्थियों के लिये पर्याप्त भोजन, वस्त्र और शरण-स्थल की कमी कम दुःखदायी न होगी। चूँकि इन विद्यार्थियों के अभिभावकों की आर्थिक अवस्था अनिश्चित सी रहेगी, वह अपसे बच्चों का सुचारु रूप से निरीक्षण न कर सकेंगे। इसलिये कम से कम कुछ काल के लिये तो बोर्डिंग हाउस से संयुक्त स्कूल खोलने पड़ेंगे। मित्रराष्ट्रों द्वारा नियुक्त निरीक्षकों को इन छात्रों तथा छात्राओं के चरित्रगठन की ओर भी ध्यान देना होगा।

जर्मन बालकों की शिक्षा में शिक्षक का महत्त्वपूर्ण स्थान रहेगा। यदि उनके चुनाव में जरा भी चूक हुई तो मित्रराष्ट्रों द्वारा प्रस्तुत पाठ्य पुस्तकें शिक्षक तथा विद्यार्थियों के सामने खुली रहने पर भी उन्हें नाजी सिद्धान्तों के प्रवाह से नहीं बचाया जा सकता और नियन्त्रण बेकार होगा। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों के चुनाव में विशेष सतर्कता बरतनी चाहिये। प्रत्येक शिक्षक को नियुक्त करने से पहले उसके राजनैतिक विचारों की जाँच कर लेनी होगी और इस बात का भी पता लगाना होगा कि नाजी शासन काल में नाजी दल के प्रति उसके क्या विचार थे? नाजियों ने मित्रराष्ट्रों को धोखा देने के लिए कुछ प्रमुख नाजियों को भी जेलों में डाल दिया था। मुक्त करने पर उनसे सतर्क रहना होगा। नियुक्ति के पश्चात उन्हें प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की शिक्षा देनी होगी और उन्हें इस बात का प्रोत्साहन दिया जायेगा कि अपने आधीन छात्रों में वही भाव उत्पन्न करें। इन शिक्षकों का जीवन सुखमय नहीं होगा क्योंकि नाजी दल के प्रति सहानुभूति रखनेवाले भी इन्हें देशद्रोही की उपाधि से विभूषित करेंगे। यदि मित्रराष्ट्र यह प्रयत्न करें कि जर्मन-भाषा-भाषी अँगरेज, अमेरिकन या फ्रेंच जर्मन बालकों को पढ़ायें तो एक विप्लव उपस्थित हो जायेगा। इसलिए उन्हें जर्मन होना आवश्यक है। परन्तु ऐसे जर्मन जो उस देश की सैनिकवाद की पोषक भावनाओं के स्थान में प्रजातन्त्र के सिद्धान्तों की पुष्टि करें।

इन शिक्षकों की नियुक्ति के बाद भी उनका निरीक्षण यह देखने के लिए आवश्यक होगा कि कहीं वह शिक्षक पुनः नाजी सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन या प्रचार तो नहीं कर रहे हैं?

इतना सब होते हुए भी ऐसा प्रतीत होता है कि जर्मनी जैसे सैनिकवाद-पोषक देश में प्रजातन्त्र का बीज बोना रेत में खेती करने के समान ही प्रमाणित होगा। यह विवादग्रस्त विषय है कि जिस देश में शताब्दियों से भुजबल को ही महत्ता दी गई है और राष्ट्र की उन्नति के बहाने कई आकांक्षाग्रस्त व्यक्तियों ने जर्मन युवकों को शतरंज के मोहरों से अधिक महत्त्व नहीं दिया है—जिस देश में प्रजातंत्र दस बारह वर्ष भी न टिक सका, वहाँ निकट भविष्य में प्रजातंत्र राष्ट्रों के प्रति कोई आदर का भाव उत्पन्न होगा। हमारा विश्वास है कि जर्मनी को प्रजातंत्रात्मक, राष्ट्र बनाने के लिये वहाँ बीस पच्चीस साल ही अधिकार नहीं रखना होगा परन्तु एक शताब्दी लगेगी और इस काल में त्रिनायकों में सहयोग की जो भावना प्रदर्शित हो रही है वह इनके इस समय परस्पर विरोधी स्वार्थों के संघर्ष से शीघ्र ही नष्ट हो जायेगी और सैनिकवाद के सिद्धान्तों से ओतप्रोत जर्मनी पूँजीवाद तथा साम्यवाद के मध्य एक बफ़र (Buffer) राष्ट्र का काम देगा।

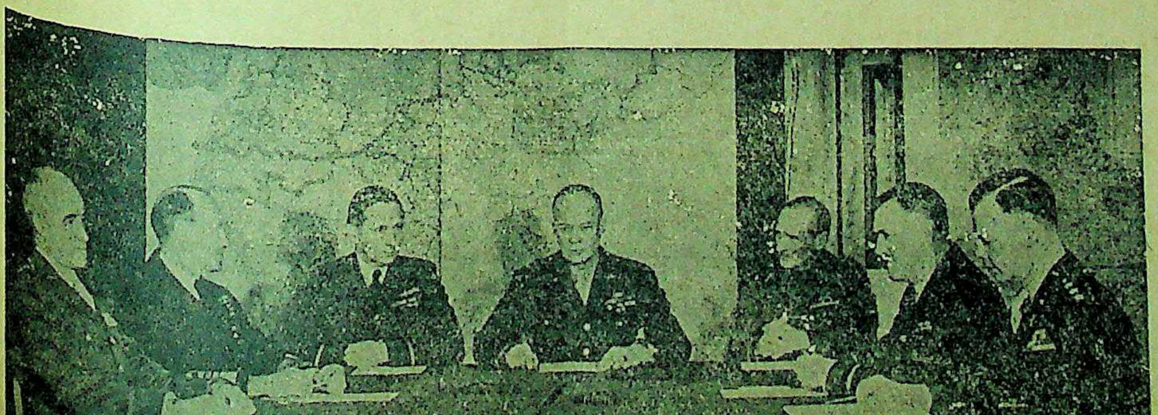

विजित जर्मनी पर शासन करनेवाले [illegible] परामर्श कर रहे हैं।

राष्ट्रभाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी?

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी से बात चीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

हिन्दी-साहित्य में भेंट, बातचीत तथा इंटरव्यू का बड़ा महत्त्व है। 'देशदूत' के पाठकों से परिचित लेखक श्री जोशी जी ने इस दिशा में विशेष सक्रियता दिखाई है। इस लेख में माननीय श्री टंडन से हुई बात चीत को बड़ी सुन्दरता से अंकित किया गया है, जो प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी के लिये पठनीय है।

ठीक रात्रि के नौ बजे मैं अपने परम मित्र श्रीयुत किशोर के साथ श्रद्धेय टंडन जी के बँगले पर पहुँचा। उस वक्त टंडन जी बँगले के सामनेवाले हरे-भरे लान में आरामकुर्सी पर बैठे हुए थे। उनके पास कोई बनारस के कांग्रेस नेता बैठे हुए वार्ता कर रहे थे। मैं भी अपने मित्र के साथ खाली कुर्सियों पर बैठ गया। हाँ, बैठने से पूर्व श्रद्धेय टंडन जी से हाथ जोड़कर मैंने अभिवादन किया। मैंने देखा कि उनकी भव्य मूर्ति भारत के प्राचीन ऋषियों की याद दिला रही थी। उनके सादे जीवन को देखकर मेरा सिर उनके सम्मुख नत हो गया। एकाएक टंडन जी ने कहा—"मैं अभी पाँच मिनट में फारिग हुआ जाता हूँ। तब मैं आपसे बातचीत करूँगा।" मैं पुनः टंडन जी की सरल प्रकृति पर विचार करने लगा। ख्याति की दुनिया में टंडन जी आज इतने बढ़ गये हैं कि उनके दैनिक कार्यक्रम में भी कभी कभी अस्त-व्यस्तता आ जाती है—क्योंकि उनके सामने देश और भाषा की सेवा करना मुख्य प्रश्न है। इसी के लिए वे सब कुछ भूल जाते हैं। वह हर व्यक्ति का ख्याल रखते हैं। चाहे वह किसी भी श्रेणी का क्यों न हो।

टंडन जी ने हँसते हुए कहा—"आप लोगों को बहुत कष्ट हुआ।"

मैंने कहा—"कष्ट कैसा? कष्ट तो आपको हो रहा है, क्योंकि हम आपका कीमती वक्त ले रहे हैं, यह जानते हुए भी कि यह समय आपके आराम का है।"

"मेरा तो यह रोज का कार्यक्रम है। आपको मेरे लिए जो आज प्रतीक्षा करनी पड़ी—उसके लिए मुझे दुःख है।"

मैंने कहा—"छोटे व्यक्तियों की छोटी-सी छोटी बात को भी आप बड़ा महत्त्व देते हैं। उनकी प्रत्येक बात का आपको विशेष ख्याल रहता है। मैं आपकी इस कृपा के लिये आभारी हूँ।"

मेरी टंडन जी से जो वार्ता हुई वह इस प्रकार है—

प्रश्न—हिन्दी उर्दू के समन्वय का आपने समर्थन क्यों किया है जब कि आप हिन्दी के एक सुदृढ़ वर्तमान सम्बल हैं।

उत्तर—हिन्दी-संसार ने मेरे वक्तव्य का गलत अर्थ लगा लिया। "समन्वय" से मेरा मतलब सिर्फ हिन्दी उर्दू के गठबन्धन से है। लेकिन यह गठबन्धन समानता के आधार पर होना चाहिए, राष्ट्र के हित के लिए हित इसी में है कि हिन्दी-उर्दू एक ही मार्ग पर चले न कि दो पृथक् पृथक् पथों पर बढ़ने का प्रयास करे। आज के युग में पृथक् मार्ग का सृजन करना ही राष्ट्रीयता का दिवाला निकालना है। गांधी जी का यह कहना कि हिन्दी-उर्दू दोनों को ही सीखना चाहिए मैं इस मत से सहमत नहीं हूँ। मैं दोनों को एक ही लड़ी में गूँथ देना चाहता हूँ और उस लड़ी का नाम मैं हिन्दी रखना चाहता हूँ। हिन्दी-उर्दू दोनों के समन्वय के बाद भी हिन्दी अपने अस्तित्व को मिटा नहीं सकती। हम हिन्दी हैं। हमारा देश "हिन्दी" है और उसकी भाषा भी हिन्दी ही रहेगी। हम जो समन्वय के लिए तैयार हैं वह शक्ति के साथ न कि चापलूसी के साथ। हम उर्दूवालों के साथ समझौता कर सकते हैं अपने अस्तित्व को लोप करके नहीं, बल्कि हिन्दी की रक्षा करते हुए। हिन्दी की रक्षा करना मेरे जीवन का प्रधान आदर्श है। इस आदर्श को मैं मरते दम तक छोड़ नहीं सकता। मैंने राष्ट्र की भलाई के लिए ही समन्वय का प्रश्न उठाया है। मैं चाहता हूँ कि आजादी के मार्ग में भाषा रोड़ा न बन जाये। इसलिए मैंने समन्वय का सुझाव रक्खा। उर्दू के वे शब्द जो कि आम जनता में प्रचलित हैं उन्हीं को हम हिन्दी में अपना सकते हैं। फारसी के कठिन शब्दों को नहीं। समन्वयवाद से मेरा मतलब यह नहीं है कि हिन्दी अपने देदीप्यमान स्वरूप को नष्ट कर दे। यदि मुसलमानों को अपनी भाषा पर नाज है तो हम हिन्दीवालों को भी अपनी "हिन्दी" पर गौरव है। लेकिन मैं तो मुसलमानों को भी हिन्दी ही कहता हूँ। "हिन्द" देश में जितने भी व्यक्ति हैं वह सब हिन्दी ही हैं और उनकी भाषा भी एक ही होनी चाहिए। अगर हिन्दुस्तानी के नाम पर ही हिन्दू-मुसलमानों की एकता निर्भर हो तो मैं हिन्दी से हिन्दुस्तानी भी कर सकता हूँ, सिर्फ राष्ट्र की रक्षा के लिए। लेकिन यह उसी वक्त हो सकता है जब कि एक इसी प्रश्न पर एकता रुक रही हो। लेकिन उस हिन्दुस्तानी का रूप उर्दू के धरातल पर निर्मित नहीं किया जायगा। बल्कि जनसाधारण की आम भाषा हिन्दी के विशाल प्रांगण में हिन्दुस्तानी को पनपाया जायगा। मतलब यह है कि "हिन्दी" चाहे किसी रूप में हो किन्तु वह अपनी प्रबल शक्ति को स्फूर्ति-हीन नहीं बना सकती।

प्रश्न—कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में तो आपने ही "हिन्दुस्तानी" का प्रस्ताव रक्खा था, और वह पास भी हो गया था। क्या आजकल आप उस प्रस्ताव के समर्थक नहीं हैं? यदि हैं तो फिर आप हिन्दी के समर्थक कैसे हो सकते हैं?

उत्तर—कानपुर कांग्रेस अधिवेशन में मैंने ही हिन्दुस्तानी प्रस्ताव पास कर पाया था। लेकिन उस हिन्दुस्तानी से मेरा मतलब आजकल की हिन्दुस्तानी से नहीं था। मेरा मतलब तो उस हिन्दुस्तानी से था जिसमें हिन्दी के गले को न घोटा जाये। मैं महात्मा जी के हिन्दुस्तानी के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हूँ। वह उर्दूवालों की हत्या करके उर्दू को आगे बढ़ाने की कोशिश खुशामद करना ठीक समझते हैं। खुशामद क्यों की जाये? क्यों न हम बराबर का अधिकार रक्खें? जो समझौता खुशामद के आधार पर होगा वह अधिक दिनों तक नहीं चल सकता और न उसका विशेष महत्त्व हो सकता है। वैसे तो गांधी जी ने "हिन्दी" की भी बहुत अधिक सेवा की है। इतनी अधिक कि उनका नाम हिन्दी में अमर रहेगा—लेकिन आज वह अपने ध्येय से विमुख हो रहे हैं, सिर्फ मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए। सिर्फ दूसरों को प्रसन्न करने के लिए मैं भाषा का बलिदान करना ठीक नहीं समझता। अब तो उन्होंने हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन [illegible] सदस्यता से भी त्यागपत्र दे दिया है सिर्फ अपने को 'हिन्दुस्तानी' का प्रबल समर्थक बनाने के लिए। मैं तो यह कहता हूँ कि गांधी जी उर्दू का प्रचार करते हुए भी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सदस्य रह सकते थे। हिन्दीवालों को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी।

प्रश्न—हिन्दू अपने को किस प्रकार विकास-मार्ग पर बढ़ा सकते हैं?

उत्तर—मैं तो इस वक्त एक ही साधन बतलाऊँगा जो कि मुख्य है। वह साधन है हरिजनों को अपनाना। हिन्दू-समाज पर यह बड़ा भारी कलङ्क है कि हिन्दू-समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा दूसरी कौमों में चला जा रहा है। आज हिन्दू दिन बदिन कम होते चले जा रहे हैं। एक दिन वह आयेगा कि जब हिन्दुओं की संख्या उँगलियों पर गिनने योग्य हो सकती है। उस वक्त उनको राजनैतिक अधिकारों से भी वंचित कर दिया जायेगा। मुझे यह नहीं मालूम कि हिन्दू क्यों हरिजनों को अपनाने में संकोच करते हैं? क्यों नहीं उनको अपना भाई समझकर गले लगाते? सेवा करना दुनिया में सबसे मुश्किल कार्य है। और इसी कार्य को वह कर रहे हैं बड़े गौरव के साथ। उस कार्य का हिन्दू-समाज उन्हें पारितोषिक यह दे रही है कि तुम अछूत हो। हम लोगों से दूर रहो, तुम नीच हो। क्या ही अच्छा इनाम है? शरीर पर तो कोड़े मारे जा रहे हैं फिर भी वह इसी हाल में प्रसन्न हैं। मेरा तो यही कहना है कि सब हिन्दू-मात्र को एक हो जाना चाहिए राष्ट्र के हित के लिए। अब वह समय नहीं रहा कि सब अपनी डेढ़ ईंट की मसिजद बनाते फिरें। वक्त का तकाजा यही है कि वह देश की पुकार पर अपने को एकता के सूत्र में आबद्ध कर लें। इसी में हिन्दूहित की रक्षा हो सकती है। तभी हिन्दू विकास-क्षितिज की ओर बढ़ सकते हैं।

प्रश्न—आपके जीवन का उद्देश्य क्या है?

उत्तर—क्या आपको मेरे जीवन का उद्देश्य नहीं मालूम? मैं तो यही चाहता हूँ कि देश से गुलामी को निकालने में मैं अपनी हस्ती को मिटा दूँ। गुलामी की हस्ती को मिटा देना मेरे जीवन का मुख्य ध्येय है। इसके अलावा हिन्दी की रक्षा करना और उसको राष्ट्र-भाषा बनाना भी मेरे आदर्श के अन्दर है। स्वतन्त्र भारत में हिन्दी ही राष्ट्र-भाषा हो सकती है। गरीबों की सहायता करना भी मैं अपने सिद्धान्त के अनुकूल समझता हूँ। मैं मरते दम तक हिन्दी और देश की सेवा करता रहूँगा। मैं अपने को बड़ा सौभाग्यशाली समझता हूँ कि मैंने भारत जैसी पवित्र भूमि में जन्म लिया। इसलिए उसकी रक्षा करना मैं अपना धर्म समझता हूँ। इन्सान का सबसे बड़ा धर्म देश की रक्षा करना है।

वार्ता करते करते करीब एक घण्टा हो गया था। टंडन जी के भोजन का वक्त हो गया था। बल्कि कुछ देर भी

माननीय टंडन जी।

हो गई थी। करीब साढ़े दस बज
अतएव मैंने कहा—"आपको खाने
देर हो रही है। इतना वक्त देकर
आपने बड़ी कृपा की। मैं इस
कभी भूल नहीं सकता।"

टंडन जी ने हँसते हुए कहा—
की चर्चा के प्रत्येक क्षण
स्वर्णिम आनन्द समझता हूँ।
कार्यों में व्यक्तिगत स्वार्थों का
देना मैं कोई बड़ी बात नहीं

मैंने कहा—"यह तो
नता है।"

जाने से पूर्व मैंने और श्री
दोनों ने श्रद्धेय टंडन जी को
चलते वक्त रात्रि की धूमिल
मैंने एक नजर टंडन जी के
डाली। उनका चेहरा दमदमा
एक दिव्य आभा प्रस्फुटित हो
जो कि मुझे बरबस उन्हें मुड़
को बाध्य कर रही थी।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा

Add Charm
TO YOUR LOVELINESS
WITH
Asha
BEAUTY PREPARATIONS
MATCHES THE

रसिक स्त्रियों का भूषण
आशा
सौंदर्य-साधन
आशा फेस पाउडर, स्नो क्रीम
इत्यादि सब अच्छे दूकानों में
विशेष ज्ञान के लिए लिखिए
आशा एजेन्सी, प्रिन्सेस स्ट्रीट,

भारतीय विद्यार्थी-आन्दोलन

क्रियात्मक और शक्तिशाली संगठन का क्या महत्त्व है

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

भारतीय जन-आन्दोलन को प्रबल बनाने में विद्यार्थियों की क्रियात्मक शक्तियों तथा संगठन का विशेष हाथ रहा है। इस लेख में लेखक ने यह बतलाया है कि छात्र-संगठन में किस प्रकार की क्रियाशीलता तथा वास्तविक त्याग-भावना की आवश्यकता है और किस प्रकार यह संगठन अधिक दृढ़ता प्राप्त करता हुआ राष्ट्र के अनुकूल हो सकता है ?

अखिल भारतीय विद्यार्थी कांग्रेस के सभापति श्री रामसुमेर शुक्ल।

में अपना थोड़ा समय लगाना उचित समझा और विद्यार्थी अथवा नवयुवकों का वह आन्दोलन जो केवल एक वर्ग-विशेष तक सीमित था जन-आन्दोलन के रूप में आया। उसने प्रत्येक नवयुवक अथवा विद्यार्थी को मजबूर किया कि वह भी अपने समय का कुछ अंश इस ओर दे। इस प्रेरणा की सफलता ही युवक-आन्दोलन की सफलता है।

इस आधारभूत भावना के साथ जहाँ एक आवाज अँगरेजी शासन-व्यवस्था के प्रति उठनी स्वाभाविक थी वहीं अनुभव ने यह बतलाया कि वर्त्तमान शासन-व्यवस्था में पूँजीपतियों और समाज के उस उच्च वर्ग का सहयोग है जो जन-साधारण के ऊपर अवलम्बित है। वर्गीक संघर्ष में पिसे मानव-जीवन की प्रगतिशील प्रवृत्तियों को रोकने की प्रतिक्रियाशील प्रभुता यदि किसी भी संस्था-द्वारा आयोजित की जा सकती है तो वह है जिसे हम पूँजीपतियों के वर्ग में आसानी से रख सकते हैं। पूँजीपति व्यवसायी ही नहीं होता। वस्तुतः जब कोई भी जब-आन्दोलन तेजी से चलता है तो उस जन-आन्दोलन में रूढ़ियों को लानेवाली शक्ति यह वर्ग सदैव से मानव-इतिहास में उत्पन्न करता चला आया। राजनैतिक आन्दोलन जब जन-आन्दोलन के रूप में जनता के सामने आया तो इस वर्ग ने अपना रूप बदला। साहित्य-क्षेत्र में भी इसके रूप में परिवर्तन हुआ। राष्ट्रीय राजनैतिक आन्दोलन में यह वर्ग दानवीर के रूप में अपने देशभक्ति का परिचय गला फाड़ फाड़ कर देने लगा। साहित्यिक-क्षेत्र में भी इसी समाज का प्रभुत्व है। मिल-मालिकों और व्यवसाय-सम्बन्धी आयोजनाओं का तो कहना ही नहीं—हो सकता है राष्ट्रीय कांग्रेस की शक्ति कुछ इससे क्षीण हो परन्तु जिस संस्था को जनता अपने हाड़ और मांस से बनाती है उसमें इन चीजों का महत्त्व बहुत कम हुआ करता है। ऐसा न करने से हमारी विचार-धारा में अड़चनें पड़ती हैं हमारे नैतिकता का ह्रास होता है।

दुःख तो इस बात पर मालूम होता है जब विद्यार्थी-आन्दोलन में भी यह वर्ग अपना आधिपत्य जमाने की चेष्टा करता है! विद्यार्थी-आन्दोलन किसी भी प्रकार के प्रतिक्रियाशील शक्ति को उभरने का अवसर नहीं दे सकता। विद्यार्थी-आन्दोलन का मुख्य लक्ष्य आर्थिक विद्रोह है। समाज के आर्थिक शोषण करनेवालों के प्रति विद्रोह है। युगों के प्राचीन कड़ियों में बँधे मानव-समाज की पराधीनता को तोड़ने में राष्ट्रीय शक्तियों की सहायता करना है। आरामकुर्सी पर बैठे बैठे ऊँघनेवाले, पैन्ट के क्रीज की खबर के साथ साथ अपने को रईस कहलानेवाले सज्जनों और व्यक्तियों को इस संस्था में आकर इसे भी गन्दा नहीं करना चाहिए। उन्हें उन व्यक्तियों के प्रति जो कि कीड़े की भाँति जीवन व्यतीत करते हैं श्रद्धा भले ही हो पर उनके लिए त्याग करना असम्भव है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है उन जगहों पर केवल एक वर्ग-विशेष का आदर-सत्कार किया जा सकता है सबका नहीं।

श्रद्धेय पंडित जवाहरलाल नेहरू जी ने प्रयाग विद्यार्थी कांग्रेस के स्वयंसेवक दल का उद्घाटन करते समय ठीक ही कहा था कि व्यक्तिगत मतभेदों से संस्थाओं का बहुत समय नष्ट होता है पर इन व्यक्तिगत मतभेदों को उत्तेजित करने में ऐसे ही व्यक्ति सहायक होते हैं जिनके महत्वाकांक्षाओं के पीछे कोई सिद्धान्त का अन्वेषण नहीं रहता वरन् एक नेतृत्व की रक्षा ही सबल रहती है। सक्रिय विद्यार्थी आन्दोलन किसी भी प्रतिक्रियाशील शक्ति को उभरने का अवसर नहीं दे सकता। जो सदैव से शोषित रहा है उसको उभरने का अवसर न देकर यदि विद्यार्थी-आन्दोलन समाज के उस वर्ग-द्वारा जो मौके मौके पर खद्दर पहन लेता है संचालित किया जायेगा तो यह जानी हुई बात है कि उससे प्रगतिशील शक्तियाँ नष्ट होंगी; उससे रचनात्मक आयोजनायें असफल होंगी और विद्यार्थी-संस्था भी अन्य संस्थाओं की भाँति एक अजीब संस्था हो जायेगी। आज का पीड़ित मानव ही आज के संसार का प्राण है। निस्तेज, निशक्त, संघर्षरहित मानव-समाज का वर्ग तो शान्त है। हलचल तो वहाँ है जहाँ संघर्ष करना पड़ता है और जहाँ यदि आज खाने को है तो कल का ठिकाना नहीं है। विद्यार्थी-आन्दोलन उन उपेक्षितों का है जो खपड़ैलों के मकान में रहकर एक समय चूनी खाते हैं और दूसरे समय दाल रोटी। ऐसे वर्ग को आज प्रतिनिधि मानना पड़ेगा।

प्रश्न यह उठता है कि ऐसे समय पर हम क्या करें ? कहने की आवश्यकता नहीं कि हमें तर्किक बुद्धि से काम लेना पड़ेगा। हमें अपने विद्यार्थियों को उस वर्ग तक ले जाना पड़ेगा जो अब भी शहर की ऊँची ऊँची अँगरेजी पढ़ने और बोलनेवालों के सामने कुछ थोड़ा-सा दबा रहता है। हमें अपने आन्दोलन में उनकी आवश्यकता नहीं जो कुछ न करके विद्यार्थी-आन्दोलन में समय केवल एक दिलचस्पी के लिए देते हैं वरन् हमें उन लोगों तक पहुँचना है जो संघर्षों में व्यस्त रहने के कारण अपने सद्भावनाओं को कार्यरूप में परिणत करने में असफल हैं। हमें अपनी शक्ति को आगे बढ़ाने के लिए उन स्तरों तक पहुँचना है जहाँ से स्रोत की धारा स्फुटित होती है। यों तो विद्यार्थी-संस्था समस्त विद्यार्थियों की है ही, परन्तु प्रत्येक रचनात्मक विद्रोह के लिए आवश्यक है ऐसी संस्था को प्रतिक्रियाशील शक्तियों से बचाया जाये।

अन्त में एक बात और कह देना अनुचित न होगा और वह यह कि पददलित वर्ग का प्रतिनिधित्व केवल वही संस्था कर सकती है जो राष्ट्रीय विचार-धारा के साथ-साथ राष्ट्रीय जन-आन्दोलनों की समर्थक हो। "लोक युद्ध" और "अगस्त आन्दोलन" के बाद से विद्यार्थी-वर्ग में जो एक नवीन और बहुत ही प्रतिक्रियाशील—क्योंकि राष्ट्रीय जनान्दोलन के प्रति यह संस्था सदैव उदासीन और अक्रिय आलोचक के रूप में आन्दोलन करती रही है—संस्था भी बनी है! जब हम विद्यार्थी-संस्था को उपेक्षित वर्ग का प्रतिनिधि बनाना चाहते हैं तो हमारा मतलब उन विद्यार्थियों से है जो राष्ट्रीय हों और राष्ट्रीय कांग्रेस से अपनी सहानुभूति रखते हों। जो विद्यार्थीदल कम्यूनिस्ट संस्था के अंतर्गत संगठित है वह तो प्रतिक्रियाशील वातावरण का पोषक है उस संस्था से हमारी सहानुभूति तो हो ही नहीं सकती।

विद्यार्थी-आन्दोलन का भविष्य बहुत कुछ इस बात पर भी निर्भर है कि हम उस विचार-धारा को लोकप्रिय बनायें जो स्थायी शान्ति उपस्थित कर सके। इसमें हमारे राष्ट्रीय नेताओं को सहायता देनी पड़ेगी और उनका सहयोग भी होना आवश्यक है।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी ४ नवम्बर का अंक बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल रहा है

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियों, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अनेक सादे चित्रों से सुसज्जित।

एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिएँ।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

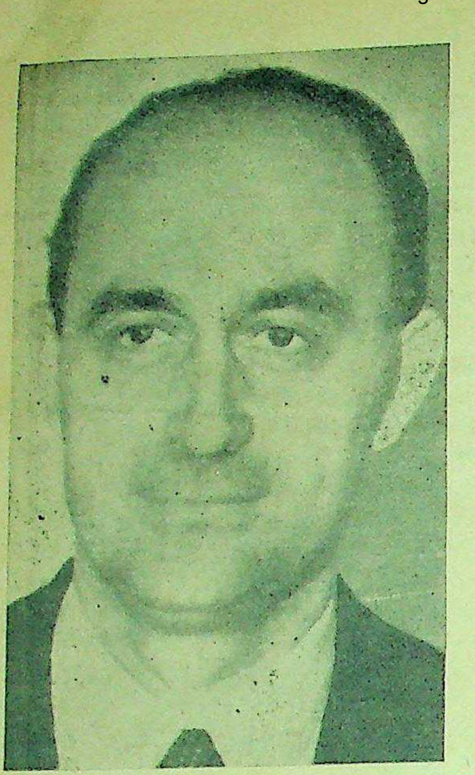
डाक्टर एनरिको फर्मी—(कोलम्बिया यूनीवर्सिटी) इन्होंने एटामिक बम बनाने की बात सोची।

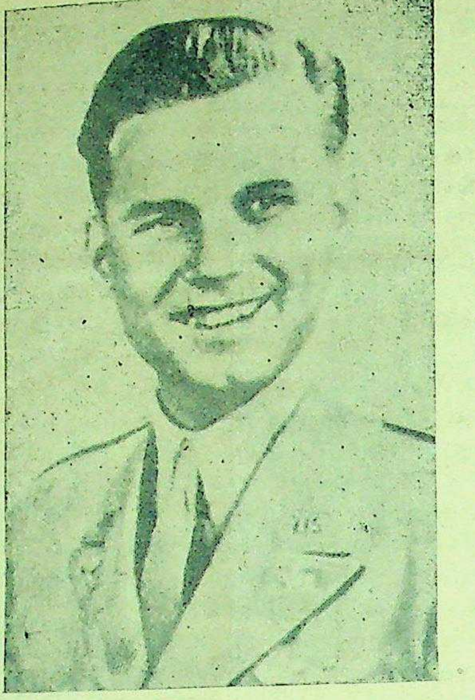
कैप्टन राबर्ट ए० लेविस ने पहली बार एटामिक बम गिराने में सफलता प्राप्त की थी।

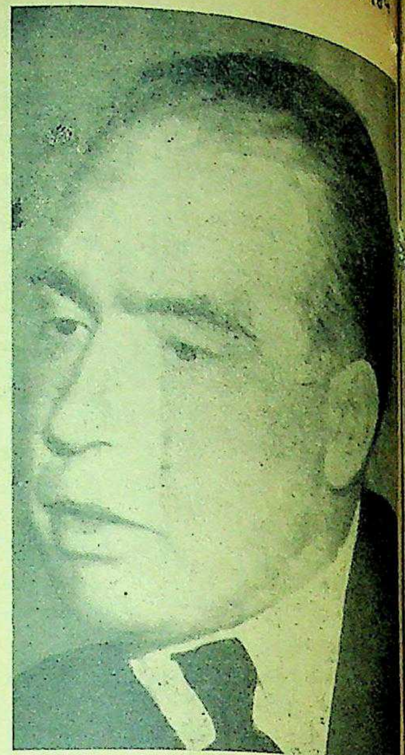
डाक्टर नील्स बोर-डेनमार्क का साइन्टिस्ट। इन्होंने ए बम बनाने की तरकीब सोची।

आटम बम-संसार की एक हलचल

मानव-सभ्यता का नाशक महान् क्रांतिकारी अस्त्र

लेखक, श्री रमाकांत त्रिपाठी, बी० ए०

अमरीका के वैज्ञानिकों ने मानव-सभ्यता के नाशक आटम बम का आविष्कार किया है। यद्यपि अभी तक इस नवीन आविष्कार के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी नहीं प्राप्त हुई किन्तु इसके द्वारा होनेवाली ध्वंस लीलाओं की अनेक कथायें प्रचलित हो गई हैं। इस छोटे लेख में 'आटम बम' के सम्बन्ध में साधारण विवरण दिया गया है।

जापान के दो प्रसिद्ध नगर हिरोशिमा और नागासाकी आटम बम के प्रयोग से ध्वस्त हो गये यह समाचार दुनिया में बड़ी तेजी से फैल गया था और उनकी प्रतिक्रियाएँ भी भिन्न-भिन्न रूपों में हुईं केवल एक बम से नगर के नगर और प्रजा का नाश कर देने की संभावना ने युद्ध के लिए विज्ञान का एक नया क्षेत्र उत्पन्न कर दिया है। यही कारण है कि जापान को इतना शीघ्र आत्म-समर्पण कर देना पड़ा। युद्ध से पीड़ित जनता युद्ध के अन्त का स्वागत प्रसन्नता से करती है परन्तु तो भी ऐसे भयंकर आविष्कार को कोई भी पसन्द न करेगा। कुछ राजनीतिज्ञ और कूटनीतिक भी नाश के ऐसे भयंकर अस्त्र का स्वागत कर सकते हैं लेकिन धार्मिक पुरुष, वैज्ञानिक और पत्रकार एकमत से मानव-सभ्यता के नाशक इस बम की निन्दा करते हैं।

* * *

अभी तक समाचारपत्रों से जितना ज्ञात हुआ है उससे आटम बम का प्रयोग यही सिद्ध करता है कि यह एक भयानक कँपा देनेवाला अस्त्र है। हिरोशिमा पर बम गिराये जाने के पहले भी इसका प्रयोग मेक्सिको के रेगिस्तान में वैज्ञानिकों और युद्ध के अधिकारियों-द्वारा किया जा चुका है जो इसकी अपार शक्ति को प्रकट करता है। जहाँ पर बम गिराया गया उस स्थान पर मध्याह्न के सूर्य से कई गुने अधिक चमकीले सूर्यों का-सा प्रकाश हुआ। उससे एक बड़ी लहर और चिनगारियाँ उठीं, २५० मील दूर की खिड़कियाँ खड़खड़ा उठीं। उसके पश्चात् एक भयानक आवाज हुई। उससे उठे हुए हवा के झोंके ने ५ मील दूरी पर भी दो आदमियों को गिरा दिया तथा ४०,००० फीट से भी अधिक ऊँचा धुएँ का बादल भी खौल उठा।

परन्तु यह प्रयोग तो नमूने के तौर पर हुआ था। हिरोशिमा पर गिराये गये बम को जिन लोगों ने आँखों देखा वह कुछ और ही बतलाते हैं। जब विस्फोट हुआ तब नगर एक बड़े मिट्टी और धुएँ के बादल में बदल गया।

फोटो लिये गये चित्रों से ज्ञात होता है कि जिस समय बम छोड़ा गया उस समय केवल धुएँ का पहाड़-सा दिखलाई पड़ता था। बम गिरने के चार घण्टे पश्चात् भी आग और धुआँ ही दिखलाई पड़ता था। जहाँ कुछ क्षण पहले नगर की इमारतें, सड़कें दिखलाई पड़ती थीं वहाँ धुएँ के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं रह गया। यह सब इतनी जल्दी हुआ कि उसके बीच की प्रतिक्रियाएँ नहीं बतलाई जा सकतीं। वहाँ से १० मील की दूरी पर भी धुएँ का गुब्बारा छाया हुआ था। २-३ मिनट के पश्चात् ही हिरोशिमा भी एक ४०,००० फीट ऊँचे काले धुएँ के पहाड़ में बदल गया।

दूसरे दिन नागासाकी नगर के ऊपर भी जब आटम बम गिराया गया तो उसकी भी वही दशा हुई। नगर का अधिकांश भाग बरबाद हो गया और दो लाख से अधिक जनता देखते-देखते नष्ट हो गई। फलस्वरूप जापान के सामने आत्म-समर्पण के सिवा और कोई चारा ही न रह गया।

इस प्रकार आटम बम के आविष्कार से युद्ध का अन्त हो गया और इसका श्रेय अमेरिका, इँग्लैण्ड और कनाडा के वैज्ञानिकों को मिला। प्रयोगशाला में लगभग १,००,००० वैज्ञानिक काम करते थे जिनमें अमेरिका के कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिक मुख्य थे और उन्हीं की देख-भाल में काम होता था।

प्रायः सभी वैज्ञानिक इस बात से सहमत हैं कि जिस सिद्धान्त पर आटम बम का निर्माण हुआ है यदि वही सिद्धांत मानव जाति के लाभ के लिए प्रयोग में लाया जाय तो बहुत लाभ हो सकता है। लेकिन यदि कोई भी राष्ट्र केवल अपने स्वार्थ को सामने रखकर इसका प्रयोग करेगा तो उससे संसार की संस्कृतियाँ मिट जायेंगीं। अभी तो इँग्लैण्ड और अमेरिका को ही इन सिद्धांतों का ज्ञान है लेकिन जब आविष्कार हो चुका है तो कभी न कभी अन्य राष्ट्र इसको जानने में समर्थ होंगे ही। रूस ने तो इसके आविष्कार का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। यदि इस पर अभी से नियंत्रण न रक्खा गया तो यह आविष्कार एक दिन संसार के नाश का कारण होगा।

इस आविष्कार के साथ एक नया युग प्रारम्भ होता है। सभी विज्ञानवेत्ता यह बतलाते हैं कि अधिक खोज-बीन से उसका प्रयोग मानव-हित के विभिन्न पहलुओं में किया जा सकता है। वैसे तो अभी तक प्रकृति से अधिक नाश करनेवाले साधन मनुष्य के पास नहीं थे लेकिन अब मित्र-राष्ट्रों के पास उसी कोटि का साधन आटम बम आ गया है जिसके द्वारा किसी भी शत्रु का नाश किया जा सकता है। इसलिए यदि अन्तर्राष्ट्रीय संबंध इस प्रकार के स्थापित न हो सके कि एक दूसरे को सहयोग देकर रह सकें तो ध्वंस का कोई अन्त नहीं हो सकता। आटम बम और इसके भयंकर परिणामों की जिम्मेदारी संसार के महान् नेताओं के ऊपर है। इस भयानक भेद का संरक्षण होना चाहिए जो इस नाशकारी अस्त्र को शान्ति और सुव्यवस्था में परिणत कर सके

आटम बम की शक्ति के द्वारा

नाश तो हो ही सकता है और उसकी

भी हो सकती है। ऐसी संभावना है

इँग्लैण्ड के वैज्ञानिक लन्दन में शीघ्र

त्रित होंगे और इस बात पर विचार

सबसे पहला कार्य इस शक्ति पर

नियंत्रण होना चाहिए। उस

का क्या विधान होना चाहिए और

में संसार-सुरक्षा के लिए अस्त्र

को कैसे रोका जाय ? इस पर

होगा कि खोज का कार्य किस

बढ़ाया जाय जिससे मानव-जाति

लाभ उठा सके। किसके अधिकार

यह रहेगा और केवल एक राष्ट्र ही

लाभ न उठाने पाये बल्कि वह

काम की वस्तु हो।

ऐसा सोचा जाता है कि

इसके द्वारा पानी भी बरसाया जा

जहाज चल सकेंगे, बिजली का

सकेगा और ऐसी ही कितनी अन्य

का काम इससे लिया जा सकेगा।

इस बात की खोज में बराबर

हैं। कैम्ब्रिज, लिवरपूल तथा

विश्वविद्यालयों में भी इसका काम

है। इस बात की भी सम्भावना है

शक्ति के द्वारा प्लेटिनम सोने

सोना शीशे में भी बदला जा सकेगा।

अपनी बात
लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य
मनुष्य के चरित्र में किस
दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर
किस प्रकार अपने जीवन को
सकता है, यह बात इस पुस्तक में
ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है
लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के
पर। अपने चरित्र का निर्माण करने
प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक
पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन
लिमिटेड, प्रयाग।

दो कहानियाँ !

गरीबी

लेखक, पंडित मोहनलाल नेहरू

और देशभक्त पं० मोहनलाल नेहरू।

हुत जोर से पड़ रही थी।
आसमान पर काफी ऊँचे
थे। बसंती हवा जोर से
रही थी। यहाँ तक कि
खड़े रहने से भी बदन में
। मैं पैदल ही चल पड़ा!
ईंधन अपनी दूकान पर
रहा था।
जरा थोड़ा घूम-घाम
बड़े जोर का जाड़ा है, मैंने
दूकान से घसीट लिया
चल खड़ा हुआ। वह
'भई गेंदन तू तो तंग
पागलपन की भी कोई हद
पैरों पर खड़े रहता है।
में रुपया-धेली पीट ही

इस बीच में कटरे से
थे और कम्पनीबाग के
पहुँचे थे। सड़क की पटरी
बैठा पुकार रहा था, "कोऊ
गुलाम पर करो दया', यही
मैंने कहा 'यार नाक में
देखो मँगते बैठे हैं। कहाँ

उसने कहा "दिन भर
वह लोग सताया करते हैं।
नफरत है।"
यह है कि इतनी मुसीबत
उठता है, मगर भाई
ही सब भूल जाते हैं और
खाते-पीते हैं।'
जी तो नहीं घबराता।
कि इस तरह यह लोग खूब
हैं। एक बार एक अंधे ने
कोतवाली में रिपोर्ट लिखवाई
जानसेनगंज के नाले पर
गया था, तो उसके घर से
गड़े हुए खोद ले गया।'
तो किसी इक्के-दुक्के का
फिर भी शक तो सभी पर

हमने देखा कि एक सूखा
सड़क के किनारे हाथ
रहा है 'बाबू जी, कुछ देते
पास पैसा नहीं था। मैंने
पैसा दे दे तेरे पास तो हैं।
माँगनेवालों से चिढ़ हो
मैं कभी भी न दूँ।'
पीछे से एक खाली
आगे निकल गये।

उनमें आपस में बातें हो रही थीं। एक अपना कुछ हाल बता-रहा था। हम भी उनके पीछे-पीछे तेज चलने लगे।

"हाँ हमार भी न्योता किहिन रहा, मुदा भय्या जाड़ा बड़ा कड़ा रहा, सो हम तो नाहीं गयेन। हम कहा के ससुर जाड़ा कौन खाय कोठरिया में सुकड़ के पड़ रहें।' एक ने कहा।

'जाने हम कौन पाप किये रहे, जो ठेला खींचे का पड़ा, अगले जनम में कौन जाने का किहे पड़ी।' दूसरा बोला।,

तीसरा बोला 'हम गरीबन की कौन पूछे। भगवान भी तो हमका भूलाय गये हैं।'

एक ने कहा 'वाह कलेजा कतहूँ महाजन का होत है? सो तो गरीबन का ही होत है। गरीब सोला आना कमाइस खरच दिहिस, बिहान के भगवान मालिक हैं, सो बनिया भला कर सकत है? ससुर छदाम बचत है सो बचाय लेत है दस दिन में देखो कै पैसा बचाइस।'

बाकी दोनों बोले, सो तो ठीक ही है।

हम दोनों एक दूसरे की तरफ देखने लगे। चोट तो हम पर चाहे न हो मगर हमारे ही से भाइयों पर थी।

'बड़ा बदमाश है' ईंधन ने कहा।

"मगर है तो हमारी यही हालत। हम तुम सब यही करते हैं। अभी परसों ही की बात है। मैं बाजार जा रहा था। एक अत्यन्त दुखी दरिद्र स्त्री ने पैसा माँगा। जी में तो आया दे दूँ मगर जेब में छः ही आने थे और मुझे साग-भाजी लेनी थी। यह सोच कर कि कहीं कमी न पड़ जाये जेब से हाथ निकाल लिया और उसकी बात सुनकर अनसुनी कर दी।"

"वह बात दूसरी है, तुम्हें कौन देता। क्या कुँजड़ा उधार मान लेता? मगर मैं तो कहता हूँ कि यह लोग एतबार के काबिल होते ही नहीं। एक बार की बात सुनो। मुझे तो इनसे सख़्त नफ़रत है ही। एक दफे एक सारंगिये ने मुझे छेंका। मैंने टालने को कहा नोट है पैसे वापस करो तो आध आना दूँगा। पहले तो वह टालता रहा और जब देखा मैं न दूँगा तो भाई जान साढ़े पन्द्रह आने मुझे दे दिये। क्या करें झेंप में देना पड़ा वरना मैं तो फूटी कौड़ी भी न देता। हैं कि नहीं बेईमान।'

मैंने कहा 'हाँ एक ही मछली तालाब को गन्दा कर देती है। यों तो घर के नौकर भी बाजे बड़े बदमाश होते हैं।'

'जी हाँ बाज की खूब रही। सभी हरामखोर, नमकहराम होते हैं। इन पर तो जितना ही बन पड़े सख्ती करनी चाहिए।'

'भई यह तो तुम गजब ही करने लगे' मैंने कहा।

'अजी रोज ही भिखमंगों की तरह तनखाह बढ़ाने की माँग पेश करते हैं। पेट नहीं भरता? हम क्या करें? हमारे सिर खाना चाहते हैं और जोरू-बच्चों को भी खिलाना चाहते हैं। अरे भई उनसे कहो काम करें। हाँ काम नहीं होता' उसने बड़े जोश से कहा।

'जमाना भी तो खराब है। महँगाई देखो। क्या हम अपनी तरक्की नहीं चाहते? वे चाहते हैं तो हम क्यों चिढ़ें,' मैंने कहा।

'बस तुम तो हर वक्त उन्हीं की तरफ़दारी करते हो हमेशा औंधी बात।'

इतने में उसकी दूकान आ गई। वह दूकान पर बैठ गया और मैं भी आगे बढ़ चला क्योंकि दफ़्तर के लिए देर हो रही थी।

बाहर और भीतर

लेखक, श्री बालाईचन्द मुखोपाध्याय

अनुवादक, श्री नित्यानन्द तिवारी

हम लोगों का मन साधारणतः दो भागों में विभक्त है। एक बाहरी दूसरा भीतरी। जो बाहरी भाग है वह शिष्ट, सामाजिक एवं सभ्य है। किन्तु भीतरी हर समय सभ्य और सामाजिक नहीं रहता। उसकी गति-विधि और चिन्ता-प्रणाली विचित्र है। बाहर के मन का कार्य-कलाप देखकर भीतर का मन कभी हँसता, कभी रोता एवं कभी कभी सलाह देता है। दोनों भागों में कलह भी नित्य-नैमित्तिक है।

रामकिशोर बाबू का भीतरी मन बहुत दिनों से मृतप्राय हो गया है। बाहर के मन के अत्याचार ने उसे जर्जर कर डाला है। रामकिशोर बाबू वकील हैं। हत्यारे को बचाने के लिए झूठी साक्षी गढ़ने का प्रयास, बड़े ज़मींदारों के होकर निर्धन प्रजा के सर्वनाश का साधन जुटाना और जाली वसीयतनामा आदि बनाने का परामर्श देना इत्यादि कामों में उन्होंने बाहर के व्यावहारिक मन की सहायता ली थी। भीतरी मन ने पहले-पहल तो घोर प्रतिवाद करके अनेक प्रकार के अनर्थों की सृष्टि की, किन्तु आज-कल वह कुछ नहीं करता।

उस दिन प्रातःकाल रामकिशोर बाबू अपने खल्वाट मस्तक पर हाथ फेरते फेरते वाटिका में टहल रहे थे। एक विधवा की सम्पत्ति के उत्तराधिकार के मुकदमे में वे कुछ समय से परेशान से थे। आज उस मामले की पेशी अदालत में होगी। उसके लिए वे कुछ उद्विग्न-से हो रहे थे। अन्यमनस्क तो थे ही!

इतने में ही एक प्रौढ़ अवस्था के सज्जन ने आकर नमस्कार करते हुए कहा, 'महाशय, मैं एक आवश्यक विषय में आपकी राय लेना चाहता हूँ।' रामकिशोर बाबू आगन्तुक व्यक्ति को पहचानते न थे। अतएव निःसंकोच भाव से बोले, 'कानून से संबंधित किसी भी सलाह के लिये मैं फीस ले लेता हूँ, यह तो आपको मालूम ही होगा?'

'जी हाँ, परन्तु कितना देना होगा?'

'बत्तीस रुपये।'

'अच्छा, ठीक।'

दोनों व्यक्ति बैठक में जाकर बैठ गये।

आगन्तुक बोले, 'मेरे एक सम्बन्धी हैं, उनके एकमात्र पुत्र का विवाह हुए प्रायः आज दस वर्ष हुए। आज तक कोई भी सन्तान आदि नहीं हुई। संभावना भी अधिक नहीं है।'

"क्या डाक्टरों को कभी दिखलाया था?'

'हाँ, उन लोगों का भी यही मत है कि बाल-बच्चे होना कठिन ही जान पड़ता है।'

'लड़का खूब हृष्ट-पुष्ट तो है?'

'हाँ, लड़के को किसी भी प्रकार का रोग नहीं है।'

'तब आप मुझसे किस विषय में सलाह चाहते हैं?' कहकर रामकिशोर बाबू ने अपनी सुँघनीदानी से एक चुटकी सुँघनी ली।

'इस सम्बन्ध में आपके पास केवल इतना ही जानने के लिए आया हूँ कि यदि मान लीजिए सन्तानाभाव में वंश का लोप ही हो जाय, तो अन्त में उस सब सम्पत्ति पर किसका अधिकार होगा?'—आगंतुक बोले।

सुँघनी को नथुनों से खींचकर रामकिशोर बाबू बोले, 'जब लड़का पूर्ण रूप से स्वस्थ है, तब वह फिर से स्वच्छन्दतापूर्वक विवाह कर सकता है। 'हिन्दू-ला' के अनुसार इसमें कोई बाधा नहीं।'

रामकिशोर बाबू ने कहा—क्या डाक्टरों को कभी दिखाया था?

'हाँ, है तो नहीं! किन्तु कानूनी अड़चन न होने पर भी, क्या हर समय हर काम का करना सम्भव है?'

रामकिशोर बाबू मुस्कराकर बोले, 'क्या भावुकता में पड़ने से इस पृथ्वी पर अधिक दिन रहा जा सकता है, भाई साहब। इन्हीं सब निरर्थक भावुकता में पड़कर ही तो हम लोग डूबने जा रहे हैं!'

रामकिशोर बाबू ने भावुकता की निस्सारिता पर एक लम्बी-चौड़ी वक्तृता झाड़ी। उनके बाहरी मन ने युक्ति और तर्क एकत्रित किये। भीतरी मन मौन था।

आगन्तुक फिर बोले, 'मान लीजिए यदि वे लोग लड़के का दूसरा विवाह न करें तो सम्पत्ति किसे मिलेगी?'

'कानून के अनुसार जो उत्तराधिकारी हो सके'—रामकिशोर बाबू निधड़क कह गये।

अन्त में अपनी दी हुई व्यवस्था को

फिर से दुहराना न भूले—'महाशय जी, लड़के का दूसरा विवाह कर दीजिए। क्या बाँझ बहू से गृहस्थी में सुख-शान्ति प्राप्त हो सकती है? बाल-बच्चे न होने पर गृहस्थी श्मशान के तुल्य लगती है! महाशय जी, मैंने जो उचित समझा, वही सलाह दी। यदि आपके भावुक हृदय को धक्का लगा हो तो मुझे क्षमा कीजिएगा!'

आगन्तुक बोले, 'नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं। आप स्पष्टवादी व्यक्ति हैं और मुवक्किल के सच्चे हितैषी हैं, ऐसा ही सुनकर तो मैं आपके पास आया हूँ।'

बत्तीस रुपये मेहनताने के देकर आगन्तुक सज्जन ने विदा ली।

* * *

चार-पाँच दिन बाद एक गाड़ी आकर रामकिशोर बाबू के द्वार पर रुकी। गाड़ी से एक अल्पवयस्का युवती उतरकर भीतर चली गई।

रामकिशोर बाबू विधुर थे। घर में ब्राह्मण-कहारों का राज्य था। दोपहर का समय था, एक झाड़-पोंछ करनेवाले लड़के के अतिरिक्त घर में कोई और न था। रामकिशोर बाबू कचहरी गये थे। लड़का ट्रङ्क-बिस्तर आदि उतारकर भीतर ले गया। ट्रङ्क के ऊपर सुन्दर अक्षरों में लिखा था—'सरोजनी देवी।'

लड़के के व्यवहार से जान पड़ा कि वह सरोजनी देवी को पहचानता नहीं। इसके अतिरिक्त युवती के व्यवहार से भी उसे आश्चर्य हुआ।

सरोजनी ने भीतर बरामदे में ट्रङ्क और बिस्तर रखवा कर, उस लड़के से पूछा—'बाबू जी कहाँ हैं?'

'कचहरी गये हैं।'

'कब तक आयेंगे?'

'यह तो ठीक नहीं बता सकता।'

इसके बाद वह अपने बक्स पर विषाद की प्रतिमा की भाँति बैठी रही।

* * *

रामकिशोर बाबू कचहरी से लौटते ही सन्न हो गये, 'अरे, ये कौन? सरो, तू एकाएक बिना सूचना दिये कैसे चली आई?'

'उस घर में तो अब मेरे लिए स्थान नहीं है पिता जी!'

'क्यों, बात क्या है?'

रामकिशोर बाबू कन्या के आश्चर्यजनक व्यवहार से क्रमशः विस्मित हो रहे थे।

'स्थान नहीं है' क्या मतलब?'

'वह लोग 'उनका' दूसरा विवाह कर रहे हैं! तुमने भी तो यही सलाह दी थी, क्यों पिता जी?'

'मैंने सलाह दी थी, क्या मतलब?'

'उन लोगों ने एक अपरिचित व्यक्ति को तुम्हारे पास भेजकर तुम्हारी ठीक राय जान ली है। अन्त तक मैंने तो यही सुना है। तुमने शायद कहा था—लड़के का विवाह कर देना ही अच्छा—'

रामकिशोर बाबू के नेपथ्यवासी भीतरी मन ने उस समय बाहरी मन की चाबी को अच्छी तरह दबाकर पकड़ रक्खा था। किंकर्त्तव्यविमूढ़ रामकिशोर बाबू अपनी एकमात्र कन्या के मुख की ओर असहाय और विक्षिप्त से होकर देखते रहे।

सरोजनी ने पूछा, 'सचमुच तुमने कहा था, पिता जी?'

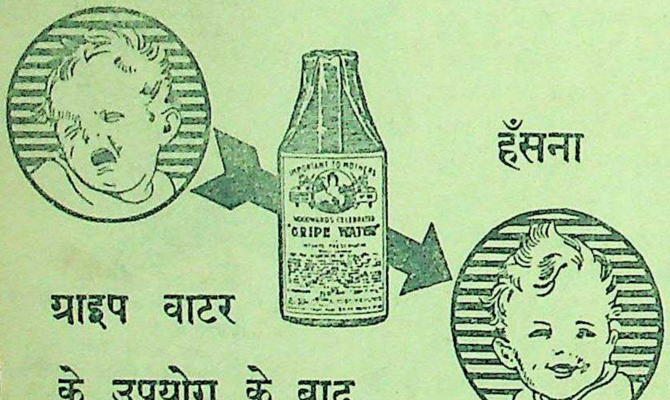

ग्राइप वाटर
के उपयोग के बाद
पेट के दर्द व खट्टे डकार से
छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— *keeps baby well*

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—117　W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

परिवार का प्यारा

बच्चों के स्कूल से
और पिता के दफ़्तर से
आने के बाद नारियल की
कतली सबसे पुष्टिकर और
स्वादिष्ट सामग्री है। डेसीकेटेड
कोकोनट ही उसे सरल और
स्वादिष्ट बनाता है।

आपको सिर्फ इतना चाहिए
२ औंस मक्खन, ३ औंस शकर, ६ औंस डेसीकेटेड कोकोनट, २ औंस आटा, २ अंडे, आधा चम्मच डबलता पानी और थोड़ा सा कोचीनील.

शकर और बटर (मक्खन) को पीस कर क्रीम बना लो। एक-एक करके अंडा मिलाओ और अच्छी तरह कूटो। ४ औंस डेसीकेटेड कोकोनट मिलाओ, फिर आटा और बेकिंग पाउडर मिलाओ। इस मिश्रण की चिकता कागज़ जिस पर चिपका हो ऐसे लम्बे स्पेच टीन में डाल कर २० मिनट तक धीरे २ पकाओ। ठडा होने दो। स्पेच के मिश्रण में गरम पानी मे मिली हुई चीनी मिलाओ। डेसीकेटेड कोकोनट को कोचीनील की कुछ बूँदों के साथ मिलाओ और ठडा होने वाले मिश्रण पर छिड़को। ठडा होने से पहले कतलियां काट लो। बम्बई में तथा भारत में अन्य स्थानों पर थोक व्यापारियों और स्टाक रखने वालों की सूचना और नमूनेके लिए लिखिए ;

दी सिलोन ट्रेड कमिश्नर फार इंडिया
सिलोन हाउस, ब्रूस स्ट्रीट, बम्बई

सिलोन का
सूखा खोपरा　किसी किसाया व सबसे अच्छा होता है।

सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रचारित

CBK 13-

THE UNITED COMMERCIAL BANK LTD.
AT YOUR SERVICE

विश्वास दिलाने वाले
आँकड़े

विक्रीत मूलधन................४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन........२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन................७½ लाख रुपया

चेयरमैन
जी० डी० बिरला

शाखायें एवं एजेंसियाँ समस्त भारत तथा
विदेश में

जेनरल मैनेजर
बी० टी० ठाकुर

हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत

यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड।
हेड आफिस—२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।
ब्रांच आफिस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर

'रतन' फिल्म कैसा है ?

ओं द्वारा समाज की वास्तविकता का चित्रण

लेखक, श्री देवदासी

' का नवीनतम चित्र
की एक समस्या लेकर
है। गाँव की एक चंचल
की बेटी गौरी अपने
गोविन्द को प्यार करती
दुनिया भी गौरी तक
की चञ्चलता पर मुग्ध
गोविन्द की भावुकता पर
दोनों को एक दूसरे पर
रात को गोविन्द को
सुनाई देता है। वह
जाता है। गोविन्द
प्रेम का समाचार मिला
कोई बाधा नहीं डाली
जीवन में प्रेम किया
और गौरी पर वज्रपात
का विवाह शहर के एक
जिनकी उम्र गौरी की

ने अपने सुंदर नृत्य के लिए
अभिनेत्री अजूरी।

जाता है। पति-पत्नी को
के हृदय में टीस उठती
होता है कि वह एक कोमल
नाओं को नष्ट कर रहा है।
आदर्श बनाकर स्त्री-सहयोग
की चेष्टा करता है। परन्तु
मनुष्य था। उसके हृदय में
थीं। एक रात्रि को जब
घूम रहे थे, उसके हृदय में
तृष्णा तीव्र होती है। वह
गौरी के शयन-कक्ष में।
'मैना' की चीत्कार उसे
होने से रोक देती है।
करती है कि जब तक गोविंद
वह गाँव न जायेगी।
के अवसर पर गोविन्द
आकर उसकी सुषुप्त स्मृतियाँ
है। उधर गोविन्द घर
इधर उधर, दिन-रात
पुत्र-प्रेम में पागल पिता
लेकर उसे खोजता है
नहीं मिलता। गौरी यह
आती है। एक बार
के वन में 'संकेत शब्द'

गूँज उठता है। गौरी गोविन्द को ढूँढ लेती है। गोविन्द यहीं पर विष मिला हुआ पान खा लेता है और उसकी मृत्यु हो जाती है। उसका पिता भी उसी समय वहाँ पहुँचता है। उसे विश्वास था कि प्रेम ने गोविन्द को 'मजनू' बना दिया पर गौरी को 'लैला' न बना सका। वह प्रतिहिंसा से प्रेरित होकर गौरी की हत्या की चेष्टा करता है पर वह बच निकलती है और उसकी मृत्यु अपने स्वामी के घर पहुँचते ही हो जाती है। पुत्र के प्रेम में बुड्ढा पिता पागल हो जाता है। वह रात रात भर लालटेन लिये घूमा करता है। उसे अब भी गोविन्द और गौरी का संकेत-शब्द सुनाई देता था।

चित्र का कथानक और उसके प्रदर्शित करने का ढङ्ग सुन्दर है। उसका आरम्भ न तो नायिका के प्रथम दर्शन से हुआ और न अन्त नायक-नायिका के परिणय बन्धन से ही हुआ। हो सकता है कि इसमें 'देवदास' की छाया पड़ी हो। कहानीकार के भाव न तो किसी कालेज से सम्बन्ध रखते हैं और न शहर की ऊँची अट्टालिकाओं से। वह तो भारत के गाँव में मिलते हैं। उनमें ग्रामीणों की-सी चञ्चलता, भोलापन और सरलता है। गौरी और उसके पति गोविन्द का चरित्र-चित्रण बहुत ही स्वाभाविक ढङ्ग से और भारतीय संस्कृति को निभाते हुए किया गया है। नारी की कितनी ही इच्छायें समाज पर बलि हो जाती हैं। पुरुष चेष्टा करने पर भी अपनी उच्छृङ्खलता नहीं भूल पाता। उसकी तृष्णा एक दिन विभीषिका-सी प्रज्वलित हो उठती है। नारी को उसमें न इच्छा रहने पर भी जलना पड़ता है। परन्तु आज नारी का यह आदर्श नहीं होना चाहिए। उसे सजग होने की आवश्यकता है।

चित्र में अभिनय किया है—स्वर्णलता, वास्ती, करन दीवान, बद्रीप्रसाद और राजकुमारी शुक्ला ने। स्वर्णलता ने इस चित्र में सुन्दर अभिनय किया है। वास्ती और करन दीवान का अभिनय भी सराहनीय है। राजकुमारी शुक्ला अपने पूर्व अभिनय के धरातल पर बनी रही। बद्रीप्रसाद का अभिनय अन्तिम रील में अत्यन्त सुन्दर हो गया है।

'रतन' का कवि और संगीत-निर्देशक दोनों ही सफल कहे जाने चाहिए। एक-आध को छोड़कर सभी आकर्षक और मधुर हैं, यद्यपि उनकी ट्यून पुरानी ही हैं। यदि गाने स्वर्णलता के ही गाये हुए हैं तो उसने उनमें भी काफी उन्नति कर ली है।

अजूरी का नृत्य सुन्दर है। आदर्श की रक्षा करते हुए इतने सुन्दर ढङ्ग से नृत्य का प्रदर्शन बहुत कम चित्रों में होता है। भाषा कथानक के अनुकूल है। चित्र-लेखन और ध्वनि-आलेखन साधारण है। दृश्यावली भी सुन्दर है। अंतिम दृश्य तो आँखों में आँसू ला देता है!

दुःखान्त के कारण 'रतन' फिल्म यद्यपि हृदय पर एक भार-सा छोड़ जाता है। मनोरञ्जन के दृष्टिकोण से देखनेवालों के लिए भी उसमें काफी सामग्री है।

सिनेमा में हिन्दी के साहित्यकार क्या कर रहे हैं ?

श्री सुमित्रानंदन पन्त

युगप्रवर्तक कवि पं० सुमित्रानन्दन पंत उदयशङ्कर के चित्र "कल्पना" के गीत लिखने मदरास पहुँच गये हैं।

श्री ब्रजेन्द्र गौड़

श्री ब्रजेन्द्रनाथ गौड़, जिन्होंने "सावन" के संवाद और 'रत्नावली', 'पनिहारी' और 'मगधराज' के कुछ गीत लिखे थे। रूस के 'मैसफिल्म स्टूडियो' द्वारा निर्मित रूसी भाषा के चित्र "सिक्स पी-एम-आफ़्टर वार" के हिंदी संस्करण के गीत और संवाद लिख रहे हैं। यह चित्र हिन्दी में 'रशियन फिल्म डिस्टीब्यूटर्स' अब कर रहे हैं।

श्री गोपालसिंह नैपाली

श्री गोपालसिंह नैपाली ने 'मजदूर' में कुछ गीत लिखे हैं। संभवतः वे फिल्मिस्तान के आगामी चित्र के गीत भी लिखें।

श्री बालगोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

श्री बालगोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव प्रभात चित्र "गोकुल" के संवाद लिखने में संतोषी को सहयोग दे रहे हैं।

श्री भरत व्यास

शालीमार पिक्चर्स के श्री भरत व्यास जो कि उक्त कम्पनी के आगामी चित्रों में अभिनय करेंगे। "मन की जीत" में लिखे अपने गीतों से बड़ी ख्याति पा रहे हैं। आजकल वे "श्री कृष्ण भगवान्" और "पृथ्वीराज संयुक्ता" के गीत लिख रहे हैं।

श्री नरेन्द्र शर्मा

श्री नरेन्द्र शर्मा बाम्बे टाकीज चित्र "दशहरा" के गीत लिखने में व्यस्त हो गए हैं।

श्री नीलकंठ तिवारी

श्री नीलकंठ तिवारी बाम्बे टाकीज छोड़कर गीत लेखक की हैसियत से लक्ष्मी-प्रोडक्शन में आ गए हैं।

श्री भगवतीचरण वर्मा

श्रीयुत भगतीचरण वर्मा जयन्त फिल्म में निर्माता की हैसियत से अपनी कहानी "आकाश दीप" का चित्र बना रहे हैं।

श्री अमृतलाल नागर

श्री अमृतलाल नागर "वीर कुणाल" समाप्त करके द्वारका खोसला के सामाजिक चित्र "प्रकाश" और श्री वीरेन्द्र देसाई के चित्र "सौत" और अमर पिक्चर्स के पौराणिक चित्र "सीता स्वयंवर" का पेपर वर्क कर रहे हैं।

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी

श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी विष्णु सिनेटोन के आगामी सामाजिक चित्र के संवाद लिखना आरम्भ कर चुके हैं। आपने फिल्मिस्तान के सामाजिक चित्र "मजदूर" में थोड़ी देर के लिए अश्क जी के साथ अभिनय भी किया है।

सुदर्शन जी

आप आजकल निर्मात्री मिस मेहताब के सामाजिक चित्र "साथी" की कहानी और संवाद लिख रहे हैं।

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क

आपने "मजदूर" के संवाद लिखे हैं और अभिनय भी किया है। अब फिल्मिस्तान के आगामी चित्र के संवाद लिख रहे हैं।

अब
कन्ट्रोल भाव पर
मिलते हैं

EVEREADY
एवरेडी बेटरी के बल्व

हिन्दुस्तान में सब जगह फुटकर व्यापारियों के लिए थोक भाव:—
नं. 1161 (2.5V) } नं. 1162 (3.8V) } रु. ११-४-० १०० नग
नं. 1163 (6.2V) .... „ १६-१४-० „ „

हिन्दुस्तान में सब जगह खरीददारों के लिए परचून भाव:—
नं 1161 (2.5V) } नं 1162 (3.8V) } .... एक नग ६ आने
नं.1163 (6.2V) .... „ ८ आने

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY (INDIA) LTD.
BOMBAY • CALCUTTA • MADRAS
COCHIN • KARACHI • DELHI

लम्बा होइये

[illegible]

इंग्लैंड में प्रस्तुत
टासपाइन
ग्लैंड फ़ूड टेबलेट्स
डिस्ट्रीब्यूटर्स
दि ब्रिटिश टेडिंग कम्पनी (डिपार्ट डी ए १)
लाइसेंस प्राप्त औषधि बिक्रेता व निर्माता।
२० कैंडी हाउस, मियर वेदर रोड,
अपो० ताज, बम्बई।

संपादक के नाम चिट्ठियां

उदयपुर सम्मेलन का सभापति कैसा हो ?

गत २६ अगस्त के आपके प्रसिद्ध पत्र "देशदूत" में प्रकाशित उदयपुर-अधिवेशन के स्वागत मंत्री की जनार्दनराय नागर के पत्र और पत्र पर दी गई आपकी टिप्पणी को मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा। आपने टिप्पणी में यह लिखा कि इसमें केवल श्री नागर जी ही नहीं अपितु समस्त मेवाड़ बोल रहा है, यह उचित ही है।

आज अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन परिवर्तन के द्वार पर आकर खड़ा हो गया है। यों ही आज सारे राष्ट्र की आँखें राजनैतिक वातावरण से उत्पन्न परिस्थिति पर लगी हुई हैं। फिर महात्मा जी द्वारा संचालित हिन्दी और हिन्दुस्तानी की समस्या भी हमारे सामने मूर्त्त होती हुई दिखाई दे रही है। इस समय अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का भी परम कर्तव्य है कि वह भी अपने आपको पुनर्संगठित और भारतीय रूप में आगे बढ़ावे।

आज हिन्दी - हिन्दुस्तानी की समस्या हमारे सामने जटिल है! वह भी ऐसे व्यक्ति द्वारा संचालित की जा रही है, जिसमें समस्त राष्ट्र श्रद्धा और विश्वास रखता है और रखना भी चाहिए। इस पर आज देश के तमाम नेता सोचने को वाध्य हैं। सम्मेलन की नीति तो हिन्दी के बारे में स्पष्ट है पर फिर भी उसे उदयपुर-अधिवेशन के समय उदयपुर में इस विषय पर सोचना पड़ेगा और निर्णय भी कुछ करना ही पड़ेगा। श्री नागर जी ने अपने पत्र में स्पष्ट कर दिया कि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को इस वर्तमान परिस्थिति से ऊपर उठना चाहिए। ठीक है, अब वह समय नहीं है कि सम्मेलन केवल-प्रचार और परीक्षाओं के बल पर ही आगे बढ़ सकेगा। बत्तीस वर्षों बाद सम्मेलन से यह भी आशा की जाती है कि वह राष्ट्र के निर्माणात्मक कार्य में पूर्णतया सहायता दे।

अखिल भारतीय हिन्दी - साहित्य-सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन को हिन्दी विद्यापीठ, उदयपुर ने केवल इसी लिए निमंत्रित नहीं किया कि वह भी अन्य अधिवेशनों के समान केवल तीन दिन का उत्सव कर २०,०००) रु० खर्च करे। हिन्दी विद्यापीठ उदयपुर ने निमंत्रण देते समय इस बात का सम्पूर्णतः ध्यान रक्खा था कि सम्मेलन प्रगति करे और वह उदयपुर-अधिवेशन के पश्चात् नई उमंग, नई आशा और नये चैतन्य के साथ कार्य-क्षेत्र में अवतीर्ण हो। हिन्दी विद्यापीठ, उदयपुर का यह भी स्पष्ट और निश्चित मत है कि सम्मेलन भविष्य के लिए एक पन्द्रह वर्षीय अथवा दस वर्षीय योजना स्वीकृत करे और उसे कार्य-रूप में परिणत करे। इसी लिए हिन्दी विद्यापीठ कुल ने अपने घोषणा-पत्र में यह स्पष्ट किया था कि अखिल भारतीय हिन्दी - साहित्य-सम्मेलन के ३३वें उदयपुर-अधिवेशन का सभापति ऐसा हो जिसमें समस्त राष्ट्र विश्वास और श्रद्धा रखता हो जिसकी छाया में हिन्दी को बल तथा पोषण मिल सके। हिन्दी विद्यापीठ ने हिन्दी जगत् के सामने सभापति के चुनाव की एक कसौटी रक्खी थी और हिन्दी-संसार ने उसका स्वागत भी किया है। अब वह प्रश्न आ गया है जब हमें इस कसौटी को सामने रखकर ३३वें अधिवेशन के सभापति का चुनाव करना है।

मैंने सभापति के लिए एक ऐसे ही व्यक्ति का नाम प्रस्तावित किया था जो इधर तीन-चार पत्रों में प्रकाशित हुआ था। पत्रों में इस बात की चर्चा भी देखने को मिली कि सम्मेलन का सभापति विशुद्ध साहित्य-सेवी ही होना चाहिए। पर मेरा इसमें नम्र मतभेद है। इस समय हमें राष्ट्र की आवश्यकता और परिस्थिति के अनुकूल ही किसी राष्ट्रीय स्तम्भ और हिन्दी के सच्चे पोषक को ही सभापति चुनना चाहिए जिससे सारा हिन्दी जगत् एक ग्रंथि में ग्रथित हो सके और हिन्दी वह पतितपावनी गंगा बने जिसमें समस्त राष्ट्र अवगाहन कर अपने को सौभाग्यशाली समझे।

हिन्दी भारती की यह भागीरथी न जाने कितनी घाटियों और गिरिकन्दराओं को पार कर भक्तिमति मीरा और वीर-शिरोमणि प्रताप की पवित्र भूमि में प्रवाहित होने जा रही है ? शताब्दियों से यह सलिल धारा मेवाड़ में बह रही है। इस समय हमें सावधानी और दृढ़ता के साथ आगे बढ़ना है। समय के अनुकूल सभापति के लिये गुजराती साहित्य के अनन्य सेवक और हिन्दी के प्रेमी श्री कन्हैयालाल जी माणिकलाल जी मुंशी अधिक उपयुक्त रहेंगे। मुंशी जी जयपुर-सम्मेलन के राष्ट्र-भाषा-परिषद् के सफल सभापति रह चुके हैं। आपका सभापति पद से दिया गया भाषण आपका हिन्दी के प्रति प्रेम और क्रियात्मक सजीवता प्रकट करता है। आशा है मतदाता श्री मुंशी जी को मत देंगे।

हिन्दी विद्यापीठ — विनीत
उदयपुर — गिरिधारीलाल शर्मा

※ ※ ※

सम्मेलन और सभापतित्व !

उदयपुर हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ऐसे समय हो रहा है जब कि यूरोपियन और एशियाटिक-युद्ध समाप्त हो चुका है और युद्धजन्य विषम परिस्थितियाँ क्रमशः कम होती जा रही हैं। साथ ही रचनात्मक कार्यों के लिए द्वार खुल गया है। इस समय हमें सम्मेलन का सभापति किसी हिन्दी के सम्मानित साहित्यिक, या वयोवृद्ध देश-सेवी नेता को बनाने का मोह परित्यक्त कर देना चाहिए। हमें केवल काम का व्यक्ति चुन लेना है, जो सम्मेलन को वर्ष भर हिन्दी के हित में अपने मौलिक विचारों-द्वारा चला सके। अभी तक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपनी पुरानी परिपाटी का ही अनुकरण करता रहा है। इसका दुष्परिणाम यह हुआ है, कि सम्मेलन हिन्दीवालों के लिए एकमात्र महोत्सव रह गया है। हम सब एक दो-तीन दिन के लिए एक स्थान पर इकट्ठे होते हैं, निरर्थक बहस-मुबाहिसे करते हैं, कुर्तों की आस्तीनें तानकर अपना अनुचित जोश प्रदर्शित करते हैं, हवाखोरी करते हैं और अधिक सक्रियता की ओर पैर बढ़ाया तो प्रस्तावों की झड़ी लगा देते हैं। मतलब यह है कि सम्मेलन के अधिवेशनों में दिल्ली मुसावल अधिक की ही कहा होती रही है।

उदयपुर में होनेवाले हिन्दी-सा
के सभापति-पद के लिये प्रसिद्ध
एम० मुंशी का नाम प्रस्तावित है।

यह क्रान्ति का युग है, से अधिक किसी वस्तु का मूल्य इस नीति का जितना सुन्दर लन्दनवालों ने 'चुनाव'-द्वारा किया है, वही हमारे लिए चाहिए। हम सम्मान और भावना को उठाकर और समयोचित व्यक्ति के हाथ में के लिए सम्मेलन की बागडोर

इसी दृष्टिकोण को समक्ष इस वर्ष सम्मेलन के सभापतित्व पं० बनारसीदास चतुर्वेदी प्रस्तावित करता हूँ। चतुर्वेदी जी तक अनेक सुझाव 'हिन्दीवालों रख चुके हैं। अनेक आन्दोलनों में योजनाएँ तैयार कर चुके हैं आन्दोलनों को जीवन-दान दे चुके

वैसे इस बार भी सम्मेलन के प्रतित्व के लिए अनेक नाम हैं, जिनमें पं० जवाहरलाल, धीरेन्द्र वर्मा आदि के नाम लेकिन मैं केवल पं० बनारसीदास के अतिरिक्त सम्मेलन एवं हिन्दी हित में किसी का नाम नहीं मदने की गोट लश्कर —शम्भुनाथ

(ग्वालियर)

स्टैनिस्ट्रीट
चिकेन
(कंसिंट्रेटेड)
एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी
हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 121

यह मुझे तर रखता है !
यह मुझे ताजा रखता है
यह प्रफुल्लित करता है !
VINOLIA WHITE ROSE SOAP

विनोलिया एक बड़ा ही आरामदायक साबुन है। इससे स्नान करनेपर हर बार आश्चर्यजनक शीतलता और निहायत ताजगी आ जाती है। और इस साबुनकी सुगंध इतनी स्फुर्तिदायक और प्रफुल्लित करनेवाली है कि विश्रान्त मस्तिष्क और शरीरको एक नवजीवन-सा प्राप्त हो जाता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR 16-221 HI
VINOLIA CO. LIMITED, LONDON,

हिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

री, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

—नहीं नहीं, मेरे लिए आप यह सब क्यों छोड़ें। हैं; मुझे जाने दीजिए। कहीं अन्धमुख चली

—तुमको मेरे साथ चलना ही होगा। मैं अपनी को वरण कर रहा हूँ। यदि तुम इस समाज को चलने को नहीं तैयार हो तो मैं अपने प्राण यहीं

थी। हरीश ने फिर कहा——मनुष्य-जीवन भी उच्च बनाने के सैकड़ों मार्ग हैं। चलो.... हिलो-डुलो नहीं। हरीश ने कहा——कहाँ रहोगी?

बिलख कर रोने लगी। हरीश ने फिर कहा—— विकृत रूप देखकर भी मैं यहाँ नहीं रह सकता। कर चलना है; मुझे समाज का परित्याग करना

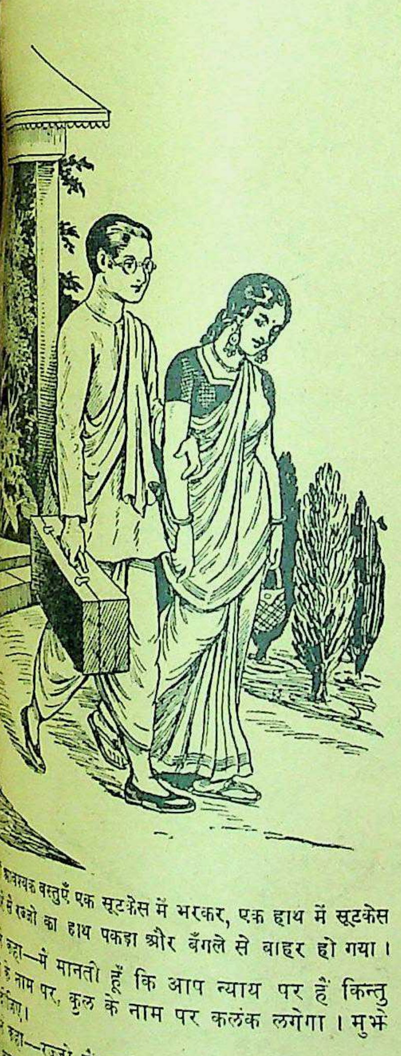

वश्यक वस्तुएँ एक सूटकेस में भरकर, एक हाथ में सूटकेस से रज्जो का हाथ पकड़ा और बँगले से बाहर हो गया।

कहा—मैं मानती हूँ कि आप न्याय पर हैं किन्तु नाम पर, कुल के नाम पर कलंक लगेगा। मुझे गा।

कहा—रज्जो मैं तुमसे पहले मरने को तैयार हूँ। की उपेक्षा-दृष्टि और समाज की कलंक-रटना किन्तु जिसके एक बार मैंने प्राण बचाये हैं और उसको प्राण देते नहीं देख सकता और पृथक् नहीं

आवश्यक वस्तुएँ एक सूटकेस में भरकर, एक लिया और दूसरे से रज्जो का हाथ पकड़ा और हो गया।

नक्षत्र नत नेत्रों से पृथ्वी को देख रहे थे। की घड़ी ने टनटन करके ३ बजा दिये। सूर्य-कलंक की कालिमा लिये हुए पूर्व दिशा शान्ति के नीड़ आनन्द की उज्जवलता भरा गृह......समाज का कुत्सा कलरव गूँज उठा——"हरीश भैरव की बहू को लेकर भाग गया।" लक्ष्मी कम्पित मूर्च्छित देह से भूमि पर लोट रही थी। सुरेश पत्थर की मूर्ति........और वैसा ही निर्जीव-सा था।

आज यश से उज्जवल चन्द्रशेखर बाबू के गृह पर उनके श्रद्धालु भी विद्रूप की टिटकारी भरते हुए कलंक का कीचड़ फेंक रहे थे। भैरव की बहन राधा बँगले के द्वार पर हाहाकार मचा रही थी। जब सुरेश ने आकर उसे डाँटा तब वह वहाँ से गई।

रात्रि में लक्ष्मी ने सुरेश से कहा——इस बदनाम घर में रहना अब ठीक नहीं। जब पिता जी का नाम डुबोकर हरीश ही इस घर को छोड़ गया तो——ब्याही बेटी पड़ोसी——मैं ही क्यों रहूँ!

अनेक आलोचनाओं-प्रत्यालोचनाओं के उपरान्त सुरेश ने कहा——हरीश तुम्हारा छोटा भाई है। उसने कोई अपराध नहीं किया है। किन्तु फिर भी संसार के लोग उसकी कुख्याति करते हैं तो करें; किन्तु तुम्हें उससे आँखें नहीं फेरना चाहिए। जिसका मन आवे हमसे व्यवहार रक्खे जिसका मन आवे व्यवहार न रक्खे; किन्तु हम हरीश को नहीं छोड़ सकते।

संसार को लेकर चलना है तो हमें हरीश को छोड़ना ही पड़ेगा। जो हो उसने कुल का नाम धराया है।

स्नेह का समुद्र सूख गया। सुरेश स्तब्ध रह गया।

एक मास के उपरान्त लक्ष्मी को हरीश का पत्र मिला। उसमें अभिमान और वेदना की बहुत-सी बातें थीं। अन्त में लिखा था——

....लखनऊवाला घर मैंने छोड़ दिया। कहाँ जाऊँगा, क्या करूँगा पता नहीं; फिर भी यहाँ न रहूँगा। भैरव यहाँ भी आया था किन्तु रज्जो को नहीं खोज पाया। वह एक कन्या विद्यालय के बोर्डिंग हाउस में रहकर पढ़ रही है। मैंने उसके व्यय का सब प्रबन्ध कर दिया है।

मैं भैरव की बात कह रहा था। वह पुलिस लाने गया था किन्तु एक सज्जन के पास वह एक पत्र छोड़ गया है, जिसमें लिखा है, "मैं रेलवे लाइन पर लेटने जा रहा हूँ। इस हत्या का पाप हरीश और रज्जो पर पड़ेगा।" मैं इस अभिशाप को सिर मत्थे लेने को तैयार हूँ; किन्तु रज्जो का विवाह उससे हुआ है इसे कभी नहीं मान सकता।......

१४

सवेरे ही हरीश आ पहुँचा। सुरेश उसे लेने के लिए स्टेशन पर गया था। उसने सेकण्ड क्लास में देखा किन्तु हरीश नहीं दिखाई दिया। यह सोचकर कि सम्भवतः नहीं आया वह लौट रहा था। किन्तु वह चौंक पड़ा जब हरीश ने पीछे से पुकारा——जीजा जी!

सुरेश ने देखा कि हरीश और रज्जो दोनों ही खादी का परिधान पहने आ रहे हैं। हँसता हुआ वह लपककर उनके पास पहुँचा। रज्जो ने सुरेश के पैरों पर सिर झुकाकर प्रणाम किया। सुरेश ने कहा——अच्छी तो हो रज्जो?

रज्जो ने कहा——आपके आशीर्वाद से।

हरीश की ओर देखकर सुरेश ने कहा——इंटर क्लास में आये? मैं तुम्हें सेकण्ड क्लास में विलायती साहबों में ढूँढ़ रहा था।

हँसकर हरीश ने कहा——साहब को क्या समझते हो?

सुरेश हँसा और उसने कहा——नेता हो गये तो टोपी भी नहीं देते। और इतना ही सामान है तुम्हारे पास?

उसने कहा——नहीं नहीं ब्रेकवान में सामान रक्खा है।

सुरेश ने कहा——टिकट मुझे दो। मैं सामान लेकर आता हूँ। बाहर गाड़ी खड़ी है, तुम लोग उसमें बैठकर घर चलो।

हरीश ने कहा——उसके लिए आपको कष्ट नहीं करना होगा। वहाँ विनोद है। बहुत चतुर लड़का है। वह सब ठीक करके ले आयेगा। हम सब साथ-साथ घर चलें।

सुरेश ने पूछा——विनोद कौन है?

हरीश ने कहा——वह....एक विचित्र लड़का है। बम्बई से मैं उसे खींच लाया। पूना में डाक्टरी पढ़ता था। कालेज के प्रिंसिपल ने उसे गाली दी। इस पर विनोद ने उसकी घूँसों से नाक तोड़ दी। इसी पर उसको जेल भी जाना पड़ा। इसके उपरान्त वह मुझे बम्बई में मिला। बड़ा गुणवान् है। उससे मिलकर

युग और साहित्य
युगद्वन्द्वों तथा उनसे प्रभावित भावी सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण साहित्य के माध्यम से उपस्थित करनेवाले निबन्धों का संकलन। मूल्य २॥=)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये तो
ग्रिमौल्ट्स
सिरप को
याद कीजिये

बदन की कालिमा दूर हो जाने पर गौर तथा सुन्दर त्वचा

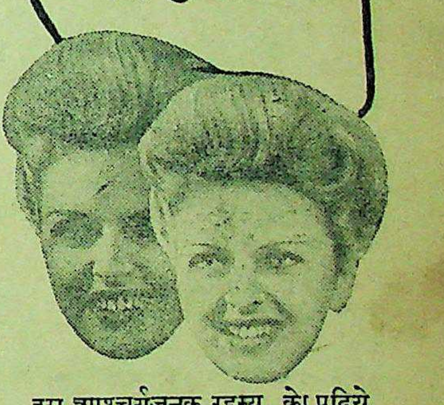

इस आश्चर्यजनक रहस्य को पढ़िये
जब चेहरे की कालिमा दूर हो जाती है तो नवीन गौर वर्ण की सुन्दरता निखर पड़ती है। वही कोमल एवम् मृदुल रूप जिसकी प्रत्येक स्त्री को चाह है और जिसकी प्रत्येक पुरुष प्रशंसा कर रहा है।
ह्वाइटेक्स आश्चर्यजनक तरल औषधि चेहरे की कालिमा को तुरन्त दूर करती है। इससे आपका रूप गौर तथा विशेष मृदु हो जाता है जिससे आपके सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तथा आकर्षण में विशेष वृद्धि होती है।
ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं है। और न इससे किसी प्रकार के दूषित धब्बे ही रह जाते हैं। यह त्वचा में प्रवेश कर त्वचा को पोषता है। आज ही एक बोतल खरीदें।
वितरक : जी० अथरटन एन्ड कं० (ईस्टर्न) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रो, कलकत्ता।
Whitex
WHITENS THE SKIN

आप बड़े प्रसन्न होंगे। चलो अब चलें; दीदी के देखने को प्राण छटपटा रहे हैं। बहुत दिनों से देखा नहीं।

सुरेश ने कहा—आओ आओ, किन्तु रज्जो खड़ी रही। सुरेश ने कहा—क्यों रज्जो, खड़ी क्यों हो? आओ चलें। चलती क्यों नहीं हो?

हँसते हुए हरीश ने कहा—जीजा जी अब उसका नाम रज्जो नहीं है। अब उसका नाम है विमला देवी।

सुरेश ने कहा—अच्छा! यह बात है? तीनों आदमी आकर मोटर पर बैठ गये।

हरीश ने पूछा—जगन काका क्यों नहीं आये?

सुरेश ने कहा—पाँच-छः मास हुए उनका तो स्वर्गवास हो गया।

हरीश ने कहा—उनको प्लेटफार्म पर न देखकर मेरे मन में बुरी-बुरी आशंकाएँ हो रही थीं। बड़े दुःख की बात है कि वह नहीं रहे—कहकर उसने एक निश्वास छोड़ा।

कार चल दी। वही पुराना परिचित पथ था। किन्तु यह क्या, आगे चलकर कार दूसरे मार्ग पर क्यों मुड़ गई?

हरीश ने कहा—जीजा जी किधर जा रहे हैं, हम लोग?

सुरेश ने कहा—हम अपने यहाँ तुम लोगों को ले चल रहे हैं।

हरीश ने कहा—ओह! आप लोगों ने दूसरा घर ले लिया है। गाड़ी अपने मार्ग पर चली जा रही थी। हरीश ने एक निश्वास छोड़कर कहा—उस घर ने तो अपराध नहीं किया था। अपराध न होते हुए भी मेरा अपराध कहा जा सकता है। क्या आप लोग मुझे ग्रहण करेंगे, या व्यर्थ ही मैं यहाँ आया?

सुरेश का हृदय हाहाकार कर उठा। उसने कहा—क्या बकते हो हरीश! वे सब बातें जिह्वा पर मत लाओ। भूल जाओ।......

हरीश ने कहा—भूले हुए था किन्तु यहाँ आकर फिर स्मरण हो आई। मैं भूलना चाहता हूँ यदि आप लोग भी भूल जाएँ।

गाड़ी सुरेश के फाटक के सामने पहुँच गई थी। सामने खुला हुआ स्थान था। बीच में पुष्पोद्यान, उसके दोनों ओर सुर्खी की सड़क और सुन्दर भव्य भवन सामने ही था।

गाड़ी रुकते ही सुरेश और हरीश उतर पड़े। हरीश ने कहा—दीदी कहाँ हैं? क्या ऊपर छिपी हुई बैठी हैं? आँखें सजल हो उठीं। दीदी कहीं न दिखाई पड़ी।

हरीश का हृदय धक्-धक् करने लगा। उसने कहा—जीजा जी, क्या मैं उसी पुराने घर में जाऊँ? चाबी तो दीजिए। विनोद सब वस्तुएँ लेकर वहीं जायेगा, जैसा मैंने उसे पहले बतला दिया था।

सुरेश ने कहा—यह क्या बात है, हरीश? ऐसा भी कहीं हो सकता है?

हरीश ने हँसकर कहा—क्यों नहीं हो सकता' जीचा जी? होता ही है। तुम नहीं समझते—कहते-कहते हरीश गाड़ी पर फिर बैठ गया। उसने कहा—ड्राइवर हमारे बँगले पर गाड़ी ले चलो। जानते हो, कहाँ है? डी० ए० वी० कालेज के पीछे। लट्ठेवाली कोठी के पास।

सुरेश ने कहा—पागलपन न करो हरीश। उतरो.....। इसके उपरान्त उसने रज्जो की ओर देखकर कहा—बहू तुम पहले उतरो।

हरीश ने सुरेश के दोनों हाथ पकड़कर कहा—जीजा जी तुम्हारा यह स्नेह हम नहीं भूलेंगे। तुम्हारे ही पास सदा रहा और रहने को आया भी था, परन्तु....

—कैसा परन्तु......?

दीदी के देखने को मैं यहाँ तक आया किन्तु दीदी कहाँ है? मैंने हत्या नहीं की है। चोरी और जाल नहीं किया है—मेरी दीदी मेरे देखने को तनिक भी उत्सुक नहीं है? उसकी माया-ममता चूर्ण हो चुकी है—कहकर वह जोर-जोर से रोने लगा।

—क्रमशः

भाइयो!...
चर्म-स्वास्थ्य के लिये
रैक्सॉना
प्रयोग कीजिये

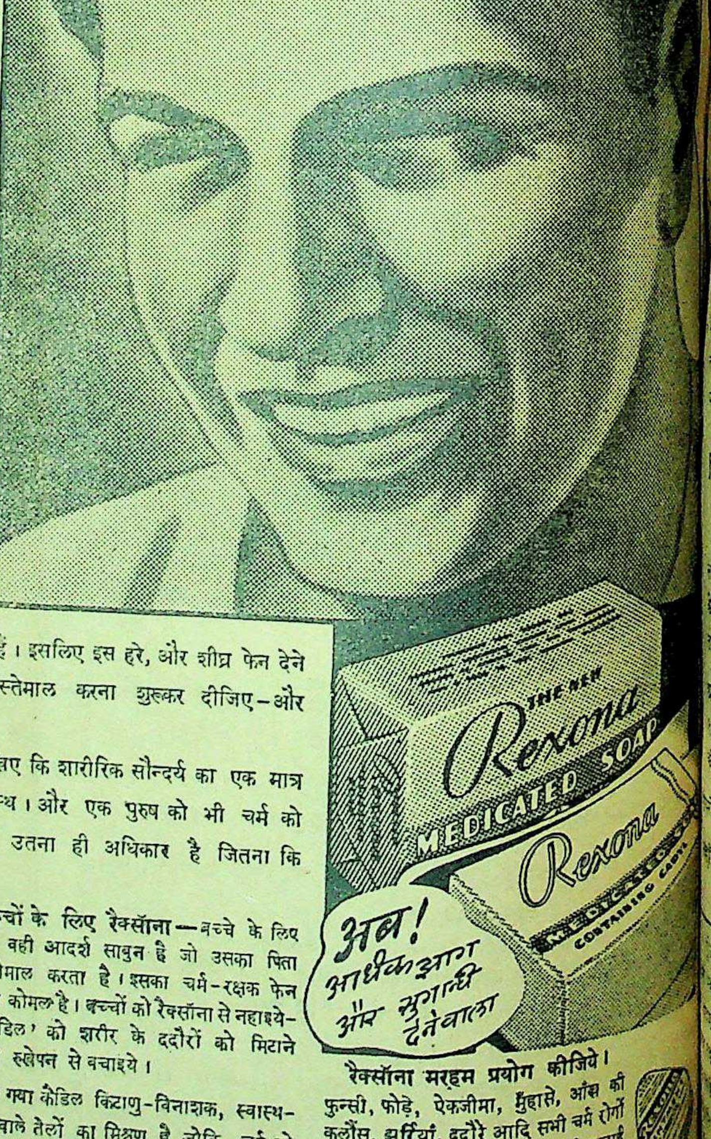

जल्दी में यह धारणा मत बनाइये कि रैक्सॉना केवल स्त्रियों के रंग को निखारने वाला एक नया साबुन है। चर्म स्वास्थ का महत्त्व जाननेवालों सब के लिए रैक्सॉना एक ज़रूरी टॉयलेट साबुन है। यह ऐसा ताज़गी और स्फूर्तिदायक साबुन है जिसे इस्तेमाल करके पुरुषों को आनन्द आता है।

इस आकर्षक, हरे, और शीघ्र फेन देनेवाले साबुनका ये सबसे बड़ा लाभ है कि यह स्वास्थदायक और चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' से बनाया गया है। रैक्सॉना का शीघ्र बननेवाला ज्यादा फेन स्फूर्ति और स्वास्थदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रुओं में-जहाँसे सब चर्मरोग और दाग़ प्रायः शुरू होते हैं- पहुँचा देता है। ऐसे आपकी सारी त्वचा किटाणुरहित, मुलायम, और साफ़ हो जाती है।

अब आप जान सकते हैं कि नियमित रूप से रैक्सॉना का प्रयोग करने से आप निश्चित ही अपने चर्म को स्वस्थ और सुरक्षित रख सकते हैं। इसलिए इस हरे, और शीघ्र फेन देने वाले साबुन को इस्तेमाल करना शुरूकर दीजिए—और करते रहिए।

नोट—यह याद रखिए कि शारीरिक सौन्दर्य का एक मात्र आधार है चर्म-स्वास्थ। और एक पुरुष को भी चर्म को आकर्षक बनाने का उतना ही अधिकार है जितना कि एक स्त्री को।

बच्चों के लिए रैक्सॉना—बच्चे के लिए भी वही आदर्श साबुन है जो उसका पिता इस्तेमाल करता है। इसका चर्म-रक्षक फेन बड़ा कोमल है। बच्चों को रैक्सॉना से नहाइये-'कैडिल' को शरीर के ददौरों को मिटाने दीजिए और शरीर को रूखेपन से बचाइये।

★रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ-दायक और ताज़गी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।
फुन्सी, फोड़े, ऐकजीमा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों मे रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते हैं।

RP. 28-220-40 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

भैरवी—तीसरा संस्करण
आर्ट पेपर पर रंगीन
आर्ट पेपर में चित्र,
बँधाई और रैपर।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

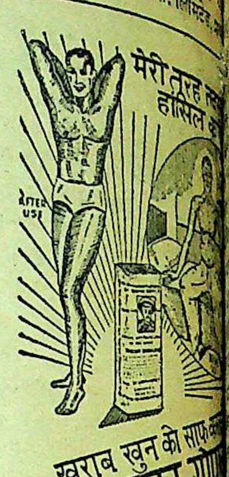

खराब खुन को साफ़ करने
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज़्ड
सार्सापरिला

इलाहाबाद के एजेन्ट—
अन्तूलाल जौहरी एल० एस०
एन्ड ब्रदर्स।

र उधर की

भाटा-सूचक यंत्र

के लिए जलयानों प्रयोग आरम्भ होने के समय तथा नदियों के मुहानों के चढ़ाव-उतार से नाविकों रहा है। जल-तल ज्वार और उसके उतार हैं। कभी कहीं ५० फुट से ज्वार देखने में आया है, अवसर में ३० फुट ऊँचा को मिला करता है। नदियों के तल के इस चन्द्र और सूर्य की चाल है। सर्वप्रथम प्रसिद्ध द्वारा पृथ्वी-आकर्षण के बाद, लोगों ने और सूर्य की खिंचाव भी जल की सतह पर है। यह भी विदित और भाटे का परिमाण और सूर्य के स्थान पर तदनन्तर मालूम हुआ कि सहायता से चन्द्र और सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है, अतएव, इसी आधार पर भावी ज्वार-भाटे के चढ़ाव-उतार की माप का निश्चय करना भी सम्भव हो सकता है।

१९वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में लार्ड केल्विन ने, जो स्वयं एक उत्साही नाविक भी थे, ज्वार-भाटे के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए बताया कि किस प्रकार एक जटिल ज्वार-भाटा, अनेक साधारण ज्वार-भाटों में विभाजित किया जा सकता है और फिर प्रत्येक साधारण ज्वार-भाटे के समय और माप की भविष्यवाणी की जा सकती है। आपने भविष्य में होनेवाले ज्वार-भाटों के समय और उँचाई मालूम कर सकने के लिए एक भावी ज्वार-सूचक यंत्र तैयार किया, बाद में जिसके सिद्धान्तों के आधार पर इंडिया आफिस के लिए भी इसी तरह का एक यंत्र बनवाया गया।

भावी ज्वार-सूचक विशेष यंत्र की कार्य करने की विधि मनोमुग्धकारी है। लपेटे हुए २२ इंच की चौड़ाई के कागज पर वह अपने आप वक्र रेखा (कर्व) खींचता रहता है। एक दिन की रेखा के लिए ६ इंच और इसी हिसाब से पूरे वर्ष के लिए ६० गज कागज लगता है। इस रेखा की सहायता से वर्ष के भीतर किसी भी दिन और समय के ज्वार की उँचाई मालूम की जा सकती है।

अरबी में हिन्दी शब्द-वृद्धि

१०वीं शताब्दी में अरब-व्यापारी भारत के पूर्वी तट पर सब जगह फैल गये थे। यहाँ के शासकों ने भी इन लोगों को निवास-गृह तथा व्यापार की सुविधाएँ प्रदान कीं। इस प्रकार, कारोमंडल तट इन 'व्यापारियों का मुख्य मार्ग बन गया। अरब-व्यापारी इत्र, चंदन, कपूर, लवंग, नारियल, लकड़ी, टाट, सूती मखमल, हाथी दाँत, मिर्च, सीसा, बाँस, बेंत तथा औषधियाँ भारत से ले जाते और इन्हें पश्चिमी देशों में बेचा करते थे। भारत के पूर्वी तटवर्ती स्थानों में अरबों ने शीघ्र ही अपना प्रभाव बढ़ा लिया, यहाँ तक कि प्रमुख अरब, मन्त्रियों, दूतों तथा मालगुजारी वसूल करनेवाले अधिकारियों के पदों पर नियुक्त किये जाने लगे। अरब और भारत के बीच इस घनिष्ठ सम्बन्ध के फलस्वरूप अरब भाषा में हिन्दी के अनेक शब्द सम्मिलित हो गये। 'मुश्क' 'जंजील' और 'काफूर' नामक हिन्दी शब्द कुरान तक में पाये जाते हैं।

* * *

श्री नीलकंठ तिवारी का विवाह

बम्बई में रहकर सिनेमा-द्वारा साहित्य सेवा करनेवाले हिन्दी के प्रसिद्ध कवि पं० नीलकंठ तिवारी का विवाह राजकोटनिवासी तथा वहीं से प्रकाशित होनेवाले 'विराट-भारत' गुजराती पत्र के संचालक एवं सम्पादक श्रीयुत श्रीकृष्ण शर्मा की विदुषी पुत्री श्री रमादेवी के साथ हो गया। विवाह पूर्ण वैदिक रीति से भारत तथा भारत के बाहर वैदिक धर्म का प्रचार करनेवाले पं० कन्हैयालाल जी [illegible] ने कराया।

* * *

बोर्डों का चुनाव एक वर्ष बाद

युक्तप्रांतीय बजट में प्रकाशित हुआ है कि सरकार ने प्रांत के जिला बोर्डों का कार्यकाल पुनः एक वर्ष के लिए बढ़ा देने का निश्चय किया है। अब बदायूँ डिवीजन में ३० अक्टूबर तथा शेष प्रांत में १४ दिसम्बर १९४६ तक नये निर्वाचन न होंगे। जब से युद्ध प्रारम्भ हुआ है तब से अभी तक जिला बोर्डों के निर्वाचन नहीं हो पाये हैं और वर्तमान बोर्ड दस दस साल पुराने हैं। बताया जाता है कि नवीन निर्वाचन इसलिए नहीं हो पाते, क्योंकि अधिकारी अभी युद्ध-प्रयत्नों में अधिक व्यस्त हैं।

न पेपर मिल्स लिमिटेड

स : १२ चौरंघी स्कायर कलकत्ता

तथा बगीचा : महूदा (बी० यन० रेलवे)

से आधुनिक ढंग की मशीने मँगाने के लिए आवश्यक—
भेजी जा चुकी है।

की निजी जमीन में पेपर मिल्स के लिए घास लगाना
कर दिया गया है।

एजेन्ट जब तक टैक्स रहित ५% साधारण हिस्सों पर
६% असाधारण हिस्सों पर लाभ वितरित न कर देंगे, कोई
मिक नहीं लेंगे।

निर्धारित मूल्य पर ही अब भी हिस्से मिल रहे हैं

—रुपया अदा करने का तरीका—

हिस्से प्रत्येक १०) के :—१) प्रति हिस्सा आवेदन पत्र
साथ। १) प्रति हिस्सा एलाटमेन्ट के दिन से १ मास के अन्दर
शेष रकम चार बराबर किश्तों में।

हिस्से १००) के प्रत्येक (टैक्स रहित क्यूमुलेटिव)
प्रति हिस्सा आवेदन पत्र के साथ तथा शेष एलाटमेन्ट होने
तिथि से ७ दिन के अन्दर।

के लिए आवेदन पत्र के साथ १) प्रति आवेदन पत्र आना चाहिये।

हमारे एजन्ट नहीं हैं वहाँ हिस्से बेचने के लिये एजन्टों की
आवश्यकता है।

ने के सम्बन्ध में सरकार की यह अनुमति प्राप्त हो चुकी है कि
कि केन्द्रीय सरकार की राय में (देशी रियासत शामिल होने
प्रतिनिधि की राय से) परिस्थितियों के कारण किसी अनिश्चित
में लगाने की आवश्यकता न हो सुरक्षित जमानतों में उस समय
तक उचित समय रुपया लगा देने का नहीं आ जायगा। यह
के साथ सरकार इस प्रकार की कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं
के बारे में जो स्टेटमेंट दिया गया है वह सत्य है अथवा
की सरकार जिम्मेदार है।

सौंदर्य की दो पीढ़ियाँ

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य में उतनी ही ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है जितनी कि उसकी सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी माँ की सलाह पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी कोमल त्वचा की रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी त्वचा की रक्षा करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी निस्संदेह उसी तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की त्वचा है।

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक खुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TG. 28-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

संवाददाताओं के पत्र

अजमेर में कन्या गुरुकुल

हमें यह सूचित करते हुए खुशी होती है कि राजपूताना शिक्षा-प्रचारक-मण्डल बम्बई की ओर से महात्मा गांधी के वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर आगामी २ अक्टूबर १९४५ को गांधी आश्रम हटूडी (अजमेर) में एक कन्या गुरुकुल खोला जायगा। इसमें ७-८ वर्ष से लेकर १४-१५ वर्ष तक की लड़कियाँ भरती की जायेंगी। छात्रावास आदि का मासिक खर्च कुल २०) होगा। असमर्थ छात्राओं के लिए कुछ छात्रवृत्ति का भी प्रबन्ध किया गया है। शारीरिक और वैदिक शिक्षा के अलावा उद्योग, संगीत, कलाकौशल आदि देशोपयोगी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जायगा। पहली से दसवीं कक्षा तक का पाठ्यक्रम स्वतंत्र रखा गया है। जो माता-पिता अपनी लड़कियों को भरती कराना चाहें वे नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें।

हाथी भाटा —भागीरथी देवी उपाध्याय
अजमेर

* * *

आगरा में होनेवाले अखिल भारतवर्षीय पशुरक्षा-सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में गोशालाओं तथा डेयरी फार्मों तथा पशुरक्षा-समितियों को अपने प्रतिनिधि भेजते समय इस प्रश्नों का उत्तर देना चाहिए—

संस्था रजिस्टर्ड है अथवा नहीं? गोशाला में कितनी गायें दूध देनेवाली और कितनी दूध न देनेवाली हैं? दूध देनेवाली गायें प्रतिदिन कितना दूध देती हैं? गोशालाओं और डेयरी फार्मों में कितने और किस किस किस्म के साँड़ हैं? संस्था के पदाधिकारियों तथा मेम्बरों के नाम और पते? संस्था कब स्थापित हुई? संस्था की रिपोर्ट अगर कोई हो। गोशाला या डेयरीफार्म के साथ क्या कोई कृषिफार्म या चरागाह भी है? अगर है तो उसका क्या क्षेत्रफल है? चारे का प्रबन्ध किस प्रकार किया जाता है?

—अचलसिंह, एम० एल० ए०
प्रधान मन्त्री

* * *

अखिल भारतीय श्री रामस्नेही युवक मंडल, देहली के प्रधान डा० मनोरथराम शास्त्री 'रामस्नेही' अपने प्रधान कार्यालय—रामद्वारा, कूँचा पातीराम देहली से सूचित करते हैं कि—

'श्रीमान् कुँ० हरिश्चन्द्र देव वर्मा 'चातक' कविरत्न (शान्ति-निकेतन) अतरौली, छिबरामऊ फर्रुखाबाद (यू० पी०) एक 'आलोक' नामक कविता-संग्रह का सम्पादन कर रहे हैं। पुस्तक में भारत के सभी उत्कृष्ट हिन्दी कवियों की कविताओं का संमिश्रण होगा। अतः समस्त भारतीय हिन्दी-महाकवियों से निवेदन है कि वे पुस्तक के सम्पादन को सफल बनाने के लिए अपनी सर्वोत्कृष्ट दो-दो कविताएँ मय संक्षिप्त आत्म-परिचय के शीघ्रातिशीघ्र उनके उक्त पते पर या हमारे नाम भेज दें।

—डा० मनोरथराम शास्त्री 'रामस्नेही'

* * *

बीकानेर राज्य साहित्य-सम्मेलन का पंचम अधिवेशन जो दशहरे पर दुलपुर में होनेवाला था, अब दिसम्बर में होगा। क्योंकि उन दिनों हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन उदयपुर में हो रहा है। स्वागत-समिति ने तीन नाम सभापति पद के लिए प्रस्तुत किये हैं। श्री विद्याधर शास्त्री एम० ए०, श्री नरोत्तमदास स्वामी एम० ए०, श्री माधवप्रसाद एम० ए० सोलिसिटर। इनमें से सम्मेलन के सदस्यों-द्वारा जिनको अधिक मत प्राप्त होंगे, वे सभापति चुने जायेंगे।

—आचार्य ओंकारनाथ

* * *

उदयपुर में होनेवाले अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, के अवसर पर 'आगत' अतिथियों को प्रांत की समुचित साहित्य सामग्री से परिचय देने का प्रथम आयोजन राजस्थान क्षितिज—साहित्य-अंक के प्रकाशन द्वारा होगा। साहित्य-अंक के परिचायक पृष्ठों में प्रकाशित होने के लिए लेखन कार्य का लेखा पूरे परिचयसहित—एक सप्ताह में आ जाना चाहिए। विशेष अंक का मूल्य १)

—ऋषि जैमिनी कौशिक
—जगदीशप्रसाद माथुर, 'दीपक'

* * *

जयपुर वनस्थली विद्यापीठ में श्रीकृष्ण जयन्ती उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। श्रीकृष्ण बाल-जीवन के कुछ चित्र प्रस्तुत करने के पश्चात् सेठ गोविन्ददास के नाटक 'कर्त्तव्य' के कुछ दृश्य अभिनीत किये गये। अजन्ता के चित्रों का अभिनय और मूक नाट्य भी दिखाया गया। दोनों प्रकार के अभिनय अत्यन्त सफल रहे। श्री पं० जयदेव विद्यालंकार तथा श्री बजरंगबहादुर पर व्याख्यान हुए।

* *

खंडवा विद्यार्थी सन् १९३५ से स्थापित है, इस नाम बदलकर 'दिनेश लिया है। गत वर्ष कुशल बालक श्री दिनेशचंद्र एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई बालक की स्मृति में यह नया मंडल ने किया है। इस वर्ष मंडल, श्री विश्वम्भरनाथ द्वारा रचित 'भीष्म' नामक तैयारी शि० ला० मालवीय के में कर रहा है।

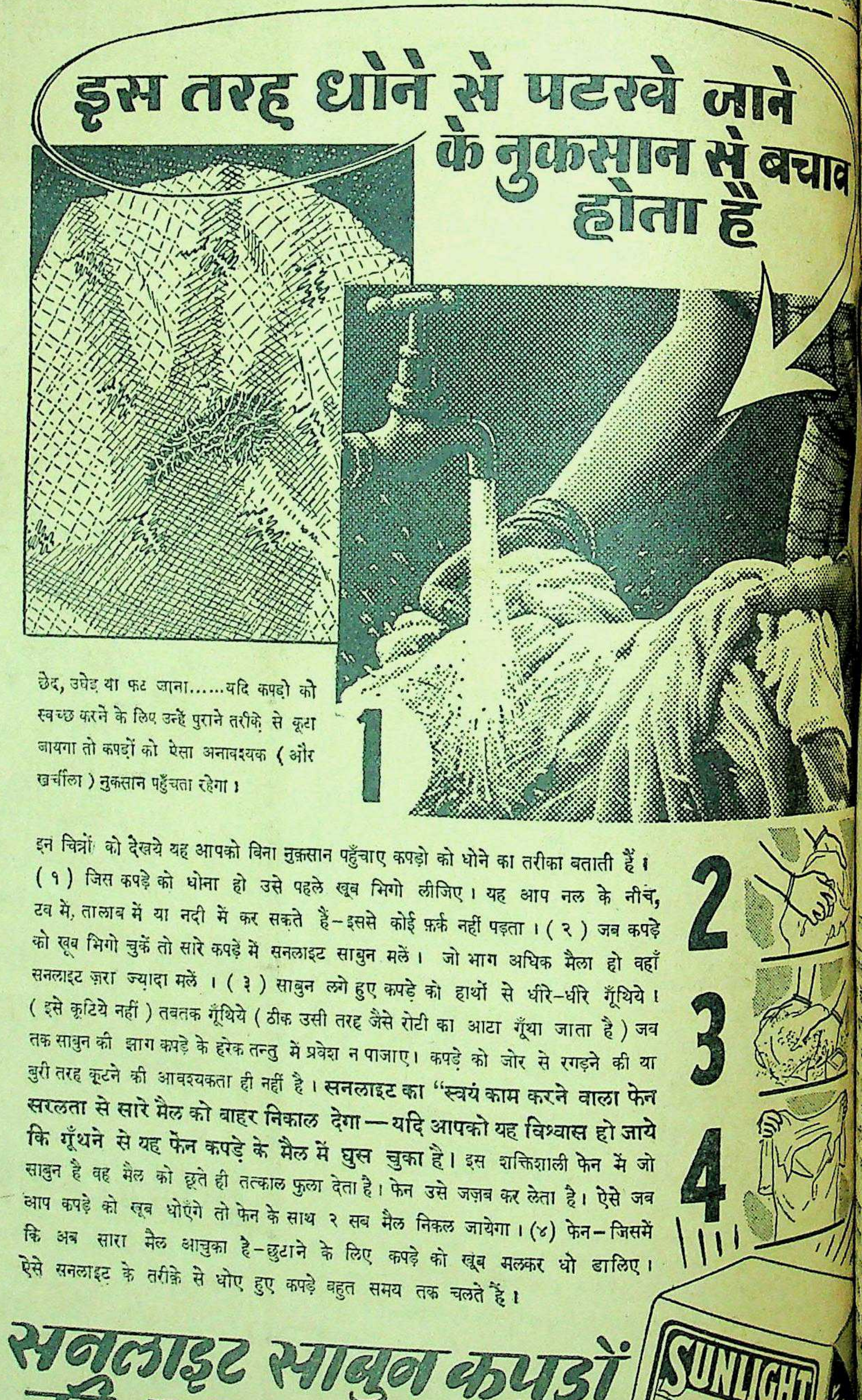
इस तरह धोने से पटखे जाने के नुकसान से बचाव होता है
1
2
3
4
सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है
SUNLIGHT SOAP
Rs.10000 Reward!
GUARANTEED

छेद, उधेड़ या फट जाना......यदि कपड़ो को स्वच्छ करने के लिए उन्हें पुराने तरीके से कूटा जायगा तो कपड़ों को ऐसा अनावश्यक (और खर्चीला) नुकसान पहुँचता रहेगा।

इन चित्रों को देखये यह आपको बिना नुक़सान पहुँचाए कपड़ो को धोने का तरीका बताती हैं। (१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं-इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। (२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट ज़रा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपड़े को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाग कपड़े के हरेक तन्तु में प्रवेश न पाजाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरी तरह कूटने की आवश्यकता ही नहीं है। **सनलाइट का "स्वयं काम करने वाला फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा—यदि आपको यह विश्वास हो जाये कि गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है।** इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को छूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएंगे तो फेन के साथ २ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन—जिसमें कि अब सारा मैल आचुका है-छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए। ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

S. 74-86 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

की तरङ्ग

है कि राजपूताना के शाह- और दरजियों को की आज्ञा राज्य की ओर गई है। राज्य ने वाकई दे दिया है। जान पड़ता जनता-द्वारा शासन होने

* * *

खबर छपी है कि वहाँ इतना सुन्दर प्रबन्ध है कि प्रकार की कठिनाई नहीं कपड़े मिल जाते हैं। क्यों अफसर को भारत भर अफसर बना दिया जाय? और आनन्दित हो उठेगा।

* * *

मुस्लिम लीग के उप-प्रधान मिलने के कारण भूख- हैं। रमजान में रोजा तो शाम को भोजन और की हड़ताल हो गई और हुआ।

* * *

जिले के डलमऊ तहसील में सिलसिले में जिला के हाकिम अफसरों की उपस्थिति में तथा कौव्वाली का भी तो इससे हिन्दू-मुस्लिम स्थापित हुआ, दूसरे का भी अच्छा प्रयत्न सभी दृष्टि से स्तुत्य था।

* * *

लास्की ने एक भाषण कि ब्रिटेन दूसरे दर्जे की । पहले यह पता लगाना शक्ति है कि नहीं? तब जायगा कि दूसरे दर्जे की

* * *

का कहना है कि हमारे रईसों को आगामी के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं और सरकारी सहायता का आश्वासन भी दे रहे हैं। इसमें हानि ही क्या है? हमारा तो मत है कि गवर्नर साहब रिटायर होने के बाद स्वयं चुनाव में खड़े हो जायँ और देखें क्या होता है?

* * *

सीतामऊ में सुभाष बाबू की मृत्यु के लिए शोक-सभा करने की आज्ञा नहीं दी गई। वहाँ के राज्य के कर्त्ता-धर्ता बहुत बड़े विद्वान् हैं; डीलिट हैं। उदार विचारों के हैं और नवयुग के आदमी हैं।

* * *

सिंहल की राज्य-परिषद् में एक सदस्य ने लगातार ग्यारह घण्टे तक भाषण दिया। आनन्द की बात है कि लङ्का अभी तक अपनी पुरानी बातों को ढोता चला जा रहा है। किसी समय वहाँ लोग छः-छः महीने तक केवल सोते ही रहते थे, फिर बोलने की कौन कहे?

* * *

सुना जाता है कि युक्तप्रांत में प्रति व्यक्ति को साल में साढ़े तेरह गज कपड़ा मिलेगा। शायद साढ़े तेरह दिन दूकानदार के यहाँ दौड़ना पड़ेगा और साढ़े तेरह घंटे खड़ा रहना पड़ेगा।

आगरा में श्रीयुत गुलाबराय एम० ए० इस बात की चेष्टा कर रहे हैं कि प्रत्येक घर में तुलसी का पौधा लगाया जाय। साथ ही साथ मुसलमानों के घरों में खजूर का पेड़ लगाने का भी तो प्रबन्ध होना चाहिए? तब असली एकता होगी। नहीं तो कैसे काम चलेगा?

* * *

आपका कहना है कि चाय के स्थान पर तुलसी का काढ़ा लोग पीने लगें तो अपव्यय से बच जायें। और कपड़े के स्थान पर पत्ते लोग पहना करें तब भी खर्च में बहुत कमी हो सकती है न?

* * *

सुना जाता है हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी में शिक्षा देने की व्यवस्था कर रहा है। यदि ऐसा हुआ तब तो गजब हो जायगा। फिर विद्यार्थी कोट-पतलून कैसे पहनेंगे और प्रांत के गवर्नर कैसे बनेंगे?

—अगड़धत्त शर्मा

कब अइहैं!

श्री चन्द्रशेखर पांडेय, एम० ए० बी० टी०

अहो हरि वे हू दिन कब अइहैं।
दिन सब कंट्रोल टूटि कै मंडी-हाट सजइहैं?
पसेरी गेहूँ, कब चाउर दस सेर बिकइहैं?
द्वारे कब छः-पइसा-बोतल तेल भरइहैं?
बजाज दुइ आना गज चरखाना गले लगइहैं?
की गठरी सर पै धै गली-गली चिल्लइहैं?
साबुन की बट्टी कब आना माँ अइहैं?
की दुइ माचिस के सँग एक सुई कब दइहैं?
देख रस्ता माँ कब इक्कावाले चिल्लइहैं?
बाबू दुइ पैसा माँ बहुत तेज लै जइहैं?
राम कबहूँ डेब्बा माँ सेइ अकेले जइहैं?
रिटर्न रेलवे वाले खुसी खुसी कब दइहैं?
छः आना सेर जलेबी बड़े ठाठ से खइहैं?
जो यह कर देव प्रभू तो नित तुम्हार गुन गइहैं?
हरिश्चन्द्र की 'अहो हरि वे हू दिन कब अइहैं' की पैरोडी)

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह
पूजा-गीत
क्यों पढ़ना चाहिए?
हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं:—
'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।
द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।
—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा
अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

अब शान्ति हुई!
स्टैनिस्ट्रीट
ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
SSK 118

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

पेट की शिकायतें
अपर्याप्त पेट के रस के कारण
उत्पन्न होती हैं:—
* अजीर्ण * अपच
* कठिन संग्रहणी * पाकाशय प्रदाह
* रक्त की कमी आदि *
व्यवहार कीजिये
बाई-ग्लिसरीन
एसिड-पेपसिन
BI-GLYCERINE-ACID-PEPSIN
निरोग होने पर निर्बलता में
प्रत्येक भोजन के पश्चात् बाई ग्लिसरीन एसिड पेपसिन एक खुराक लेने से पाचन में सहायता मिलती है।
स्वादिष्ट रूप में पेट के लिए साधारण रस पदार्थ
यदि आपको यह अपने केमिस्ट के यहाँ प्राप्त न हो तो कृपया लिखें :—
बङ्गाल इम्युनिटी कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता

हमारी नई दिल्ली की चिट्ठी

आजाद हिन्द सेना के लिये नई व्यवस्था

चुनाव लड़ने के लिये राष्ट्रीय मुसलमानों का नया मोर्चा

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

राजधानी की रक्षा के लिये कई गाँवों की जमीनें लेकर जो हवाई अड्डा और विशाल फौजी बैरकें निर्माण की गई थीं, वे आज आजाद हिन्द सेना के आदमियों को नजरबन्द करने के उपयोग में आ रही हैं। नई दिल्ली कांग्रेस कमेटी ने भारत-सरकार पर आजाद हिन्द सेना के अफसरों के साथ किये जानेवाले बर्ताव के बारे में जो आरोप लगाये हैं, उनका सरकार ने अभी तक कोई खंडन प्रकाशित नहीं किया है। भारत-सरकार की विज्ञप्ति में केवल यह बात स्पष्ट की गई है कि आजाद हिन्द सेना के आदमियों पर खुली अदालत में मुकदमा चलाया जायगा और उनको कानूनी सहायता प्राप्त करने की छूट दी जायगी। भारत-सरकार का युद्ध-विभाग इस आजाद हिन्द सेना के लोगों को तीन श्रेणियों में बाँटकर उनकी पृथक्-पृथक् सूची तैयार कर रहा है। पहली श्रेणी में वे लोग हैं जो केवल शत्रु को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से इस सेना में शामिल हुए। इन लोगों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की जायगी और पुरस्कृत कर के उन्हें सेना में कायम रखा जायगा। दूसरी श्रेणी में वे लोग हैं जो केवल दबाव के कारण उक्त सेना में शामिल हुए। उनके विरुद्ध भी किसी प्रकार का मुकदमा नहीं चलाया जायेगा। उनके लिये केवल सेना से निकाल दिये जाने की सजा पर्याप्त समझी गई है। तीसरी श्रेणी उन लोगों की है जो मित्र-राष्ट्रों के विरुद्ध उक्त सेना को संगठित करने और उसका नेतृत्व करने के दोषी बताये गये हैं। तीसरी श्रेणी के लोगों पर मुकदमा चलाने के लिये भारत-सरकार आवश्यक सामग्री जमा कर रही है। और आजाद हिन्द सेना को दिल्ली के समीप लाकर नजरबन्द करने का उद्देश्य यही हो सकता है कि इन लोगों पर दिल्ली में ही शायद मुकदमा चलाया जायेगा।

कुँवर दिलीपसिंह

लाहौर हाईकोर्ट के भूतपूर्व जस्टिस कुँवर दलीपसिंह के वक्तव्य ने जिसमें उन्होंने यह बताया है कि आजाद हिन्द सेना के लोगों को 'शत्रु युद्ध-बन्दी' ही माना जा सकता है, दिल्ली के अदालती क्षेत्रों में विशेष दिलचस्पी पैदा कर दी है। कुँवर दलीपसिंह ने इस सम्बन्ध में वास्तव में पंडित नेहरू के कथन की ही पुष्टि की है।

काश्मीर से श्री आसफअली के साथ आकाश-मार्ग से दिल्ली पधारते ही राष्ट्रपति मौलाना आजाद ने आगामी चुनावों को स्थगित करने और व्यापक आधार पर मतदाताओं की नई सूचियाँ तैयार करने के बारे ने जो वक्तव्य दिया उस पर भारत-सरकार का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ है। मालूम हुआ है कि इस बारे में भारत-सरकार लन्दन के निकट सम्पर्क में है और सरकार के एक उच्च अधिकारी के कथन के अनुसार तो लार्ड वैवेल ने लन्दन से मतदाताओं की सूचियाँ संशोधित करने की हिदायतें भी जारी कर दी हैं।

राष्ट्रीय मुसलमानों का नया मोर्चा

मौलाना आजाद ने दिल्ली में राष्ट्रीय मुस्लिम नेताओं के साथ विचार-विनियम किया और आगामी चुनावों में मुस्लिम लीग के विरुद्ध मुस्लिम सीटों पर राष्ट्रीय मुसलमान खड़ा करके एक संयुक्त मोर्चा बनाने की योजना तैयार की गई। मौलाना आजाद को दिल्ली में अपने मेजबान के घर एक व्यक्ति की बाधित अनुपस्थिति बहुत अखर रही थी और इस चीज को उन्होंने कई बार प्रकट भी किया। वह थी दिल्ली की अगस्त १९४२ के आन्दोलन की वीरांगना श्रीमती अरुणा आसफअली की अनुपस्थिति। श्रीमती अरुणा अगस्त १९४२ से ही फरार हैं। मालूम हुआ है कि सरकार शेष नजरबन्दियों के साथ-साथ उन लोगों के मामलों पर भी विचार कर रही है जिनके विरुद्ध वारेंट निकले हुए हैं और जो अभी तक गिरफ़्तार नहीं किये जा सके हैं। इस सम्बन्ध में श्रीमती अरुणा आसफअली के मामले की फाइल भी मँगाई गई है और सरकार निकट भविष्य में ही किसी निश्चय पर पहुँचनेवाली है। श्रीमती आसफअली की निजी सम्पत्ति पहले ही नीलाम की जा चुकी है।

दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी

दिल्ली प्रांतीय कांग्रेस कमेटी और अन्य कांग्रेसी संस्थाओं की चल और अचल सम्पत्ति सरकार ने लौटा दी है। चल सम्पत्ति या तो नष्ट हो चुकी है या पुलिस-द्वारा कौड़ियों के मूल्य बेच दी गई बताई जाती है। प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री श्री जुगलकिशोर खन्ना को कांग्रेस कमेटी का लेटरबक्स एक कबाड़ी की दूकान पर रखा हुआ देखकर भारी आश्चर्य हुआ। पूछने पर मालूम हुआ कि उक्त कबाड़ी ने वह लेटरबक्स तथा कुछ अन्य सामान पुलिस से खरीदा था। मालूम हुआ है कि सारी क्षति का अनुमान लगाने के बाद सरकार पर क्षति-पूर्ति का दावा किया जायगा।

नये चीफ कमिश्नर

संयुक्तप्रांत के चीफ सेक्रेटरी श्री क्रिस्टी ने गत सप्ताह दिल्ली की चीफ कमिश्नरी का कार्यभार सँभाल लिया। सन् १९२७ में ये दिल्ली के डिप्टी कमिश्नर रह चुके थे। दिल्ली में उन्हें जो अविलम्ब कार्रवाई करने की आवश्यकता है, और यह कि श्री सुभाष बोस के साथी लाला शंकरलाल-सहित दिल्ली के जो ६ कांग्रेस-कार्यकर्त्ता अभी तक नजरबन्द हैं, उन्हें रिहा कर देना चाहिए।

इसके अलावा दिल्ली के बहुत से
की गति-विधि पर जो प्रतिबन्ध
उन्हें तुरन्त हटाकर वहाँ
फिर से स्थापित करने का उद्योग

अनुराग
लेखिका, श्री विमला रानी
इस पुस्तक में ९ कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह की विशेषता कहानियों की स्वाभाविकता है। मानव-हृदय की व्याकुलताओं तथा दुर्बलताओं का ऐसा सजीव चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा। मूल्य १) एक रुपया।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

उफ़...
अन्न...
जलावन...
बच्चे...
नौकर...

उसकी झंझटें बहुत हैं
बेचारी गृहिणी पर आजकल दया आती है : उसका जीवन चिन्ताओं व झंझटों से भर गया है। अन्न हद से ज्यादा मँहगा—कपड़ों व जलावन की समस्या निपटने में नहीं आती—बच्चों को स्कूल और पति को काम पर भेजना कुस्वप्न-सा हो गया है। परन्तु अभी भी उसकी एक सच्ची सखी बच गई है जो हमेशा उसका साथ देगी। उस सखी का नाम है, चाय। वह कितनी ही थकी माँदी या चिन्ताग्रस्त क्यों न हो. चाय उसके बोझ को हलका कर देगी. दुश्चिन्ताओं का अन्त कर देगी. भविष्य का सामना हँसते हँसते करने के लिये उसे नई आशा. नया बल प्रदान करेगी : चिन्ता छोड़. उसकी विचार-धारा आने वाले सुखद समय की कल्पना में प्रवाहित होने लगेगी।

वक्त पड़ने पर भारतीय चाय का सहारा
इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

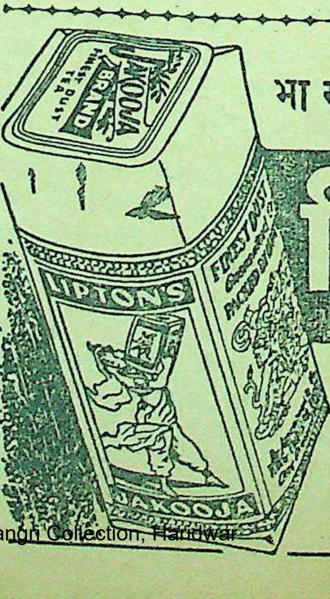
JAKOOJA BRAND FINEST TEA DUST
LIPTON'S
FINEST DUST
JAKOOJA

भारतीय चायों में सर्व
लिप्टन की
जाकूजा चाय

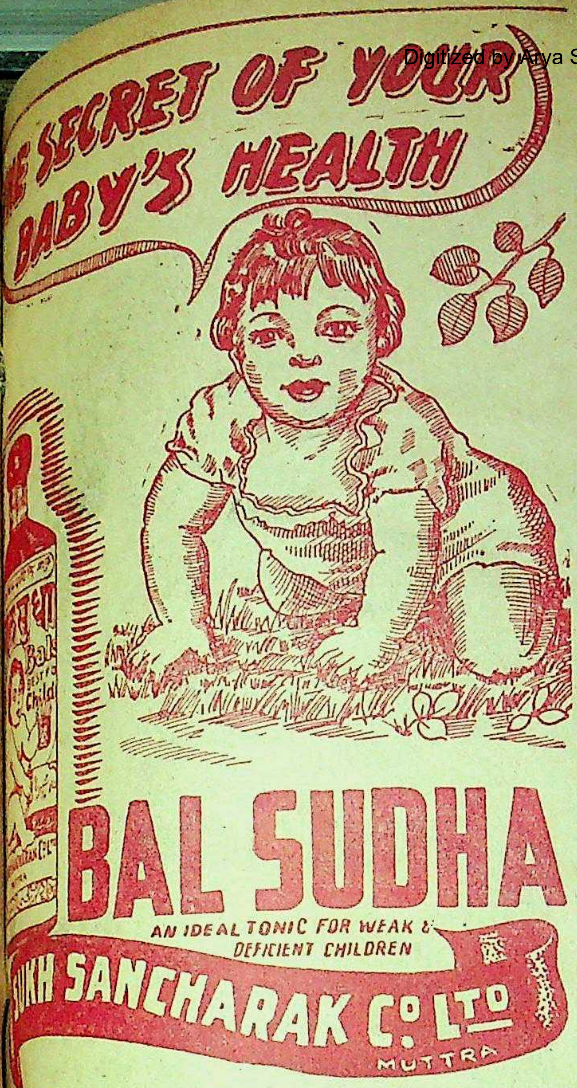
THE SECRET OF YOUR BABY'S HEALTH
BAL SUDHA
AN IDEAL TONIC FOR WEAK & DEFICIENT CHILDREN
SUKH SANCHARAK Co. LTD
MUTTRA

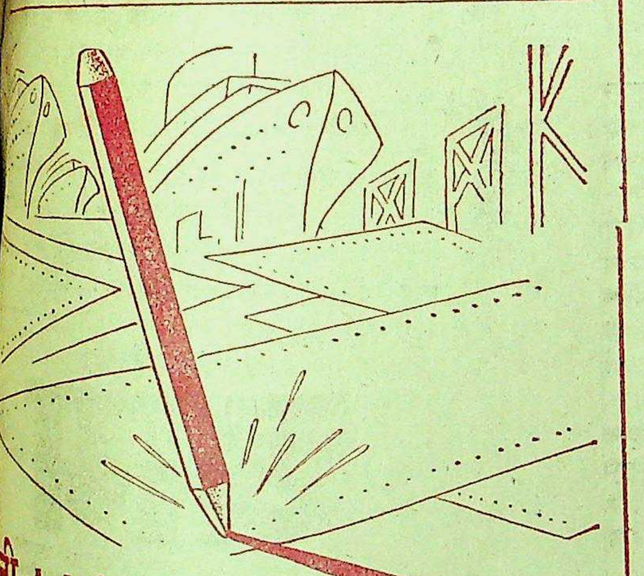

नी . . . . . .

। यह अद्भुत उद्योग धन्धा जीवन-रेखा डालते हुए व्यापार तथा समृद्धि स्थापित करता है। भारत- सामानों के योजनाएँ तैयार हो रही हैं।

साधारण हथौड़ा व छेनी जहाज निर्माण में प्रधान भाग लेती है। लोहे और इस्पात का उद्योग धन्धा इन आवश्यक औज़ारों को प्रदान कर इस देश की प्रगति में अत्यधिक सहायता कर रहा है।

A I C
TRADE MARK

AGRICO TOOLS

एग्रिको औज़ार

यू० पी०, पंजाब तथा सरहदी सूबों के वितरक—
मेसर्स मोहम्मद दीन ऐंड सन्स,
ग्रैन्ड ट्रङ्क रोड, पोष्ट बाक्स नं० ४८, अमृतसर तथा
बन्दर रोड, कराची।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड,
(एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमूरी द्वारा प्रचारित।

वार्षिक बाल-सखा

बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान का भण्डार। साथ ही वर्ष भर की मनोरंजन सामग्री से परिपूर्ण।

हजारों प्रतियाँ हाथों हाथ बिक गईं।

बाल-साहित्य के रसास्वादन के लिए इस अंक को शीघ्र मँगाकर पढ़िए।

मूल्य केवल २), डाक व्यय ।)

मैनेजर बाल-सखा, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

छमाही व्याज

~ घर बैठे लीजिए

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) भी वैसी ही अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है और इस समय बड़ी और छोटी दोनों तरह की रक़में लगाने के लिए सब से अच्छी मद है। **जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।**

इस ऋण की ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत है और गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। अगर इससे पहले आप नक़द रक़म प्राप्त करना चाहें, तो इस ऋण को हर समय मार्केट में बेच सकते हैं।

व्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम-टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को चुका दिया जायगा और सरकारी चेक आपके घर पर पहुँच जाया करेगा। इसे आप साधारण चेक की भाँति भुना सकेंगे। आपको यह संतोष भी प्राप्त होगा कि आप हिन्दुस्तान की सहायता कर रहे हैं, क़ीमतों को घटा रहे हैं और अच्छा व्याज भी पा रहे हैं।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

AAA 224 Hindi

रुपया बचाइए

और

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

मधुवर्षा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

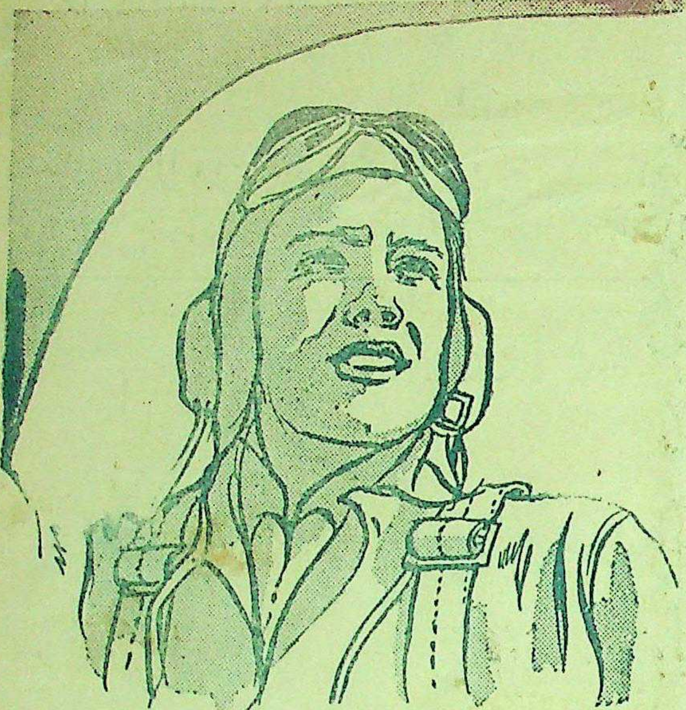

"देश के दीप्तिमान नक्षत्र"—शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक का चिन्ह 'पंख' (विंग्स) मात्र ही नहीं, जिससे केवल इतना प्रकट होता है कि वह हवाई जहाज़ चला सकता है।

उसकी वास्तविक श्रेष्ठता उस सब से अधिक प्रशंसनीय गुण के कारण है जिसे साहस अथवा पराक्रम के नाम से पुकारते हैं।

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ दीजिए जिसका सबूत वह दे चुका है; उस कार्य के मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार कीजिए जिसे वह आजकल कर रहा है; और यह भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने देश के और स्वयं अपने भावी हित की नींव डाल रहा है। तब आपको पता लग जायगा कि हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दीप्तिमान नक्षत्र वही है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

AAA 82

RAMESH RAJ & Co
KARACHI

पुराने गरम को

हर प्रकार के हाफ कोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा तथा कराची का बना हुआ माल एकदम उचित रेट पर जाता है। माल बहुत कम है। ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, करा

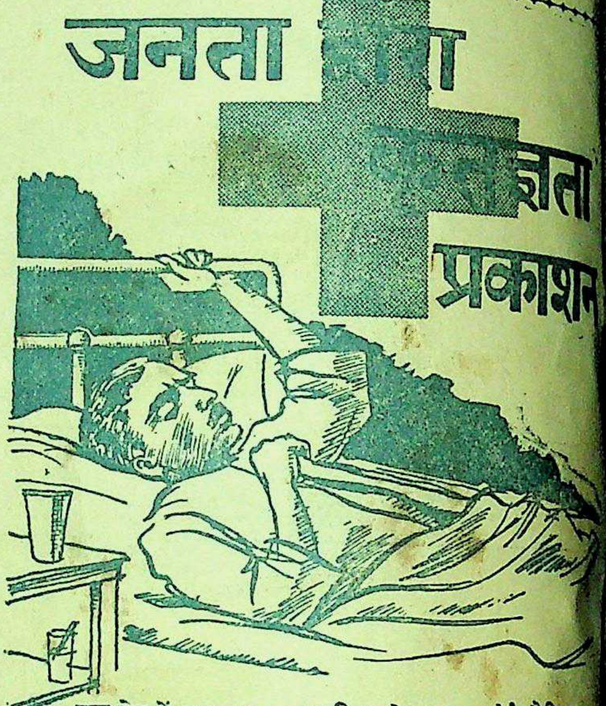

युद्ध-क्षेत्र में घायल या ज्वर ग्रसित होकर जब कोई सैनिक में आता है, तो औषध तथा चिकित्सा के अतिरिक्त उसे और भी की आवश्यकता होती है। उसे यह भी प्रतीत होना चाहिए कि उसे नहीं दिया गया है और जनता ने असावधानी में उसकी वीरता की नहीं की है। सान्त्वना के लिए उसे सिगरेट, मिठाई, संगीत, तथा मनोरंजन के अन्य साधन चाहिएं, जिनका प्रबन्ध रेड क्रास के से होता है। उसे पत्र लिखवाने के लिए, पुस्तकालयों का प्रबन्ध के लिए लोगों की आवश्यकता होती है।

आज हिन्दुस्तान के हज़ारों अस्पतालों में, आपके चन्दे की से, रेड क्रास द्वारा यही कार्य हो रहा है। संसार के इतिहास में परोपकारी कार्यों के लिए अपना नहीं रखती। आपके धन का चतुरता से सदुपयोग करके बीमार और घायल जवानों को पहुंचाई जाती है, जो उनके प्रति कृतज्ञता एवम् सहानुभूति का तथा ज्वलन्त प्रमाण है। रेड क्रास सेंट जान ग़ैर सरकारी स्वयंसेवक संस्था है। अपने कार्य के लिए सार्वजनिक चन्दे और जनता की सहानुभूति पर निर्भर करती है। महान कार्य के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता है।

यह एक महान कार्य है, जिसके लिए आपको उदारतापूर्वक पहुंचानी चाहिए। अपने वीर सैनिकों के लिए हम जो कुछ भी करें थोड़ा

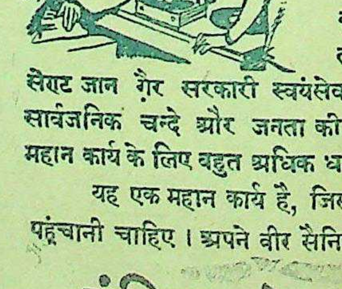

इंडियन रेड क्रास के द्वारा

अपने घायल और बीमार सैनिकों की सहायता दिल खोल कर कीजिए

AAA 312

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्म

मूल्य ७॥)
संख्या ३

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

सितम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 23th September, 1945

द्वन्द्व—यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव-हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≶) दो रुपये ग्यारह आने।

घिर रहे हैं।
कांग्रेस की नीति।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

कांग्रेस और कम्यूनिस्ट पार्टी किधर ?
उसकी डायरी—वह कलंकिनी थी ?

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

प्रथम खंड

राजनैतिक इतिहास

लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ए० हिन्दी में इस विषय का यह अद्वितीय ग्रंथ है। इस पुस्तक पर लेखक को मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में ससे बड़ी सहायता मिलती है। मेहरौली का लौहस्तम्भ, भितरी की राजमुद्रा, कुमार गुप्त का करमदण्डा का लेख की प्रतिलिपि चिकने कागज़ पर मुद्रित है। अच्छा कागज़, बढ़िया जिल्द बड़े आकार के २५० पृष्ठ। मूल्य केवल ४) चार रुपये।

द्वितीय खंड

सांस्कृतिक इतिहास

इस खण्ड में गुप्तकालीन शासन-प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मुद्रा, साहित्यिक विकास, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक दशा, धार्मिक दशा, भौतिक जीवन, ललितकला, वृहत्तर भारत और गुप्तयुग की महत्ता का वर्णन है। गुप्त राजाओं के समय की आर्य-संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले के आगे प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त संस्कृति का ऐसा विशद और प्रामाणिक विवेचन किसी भारतीय भाषा में शायद ही मिले। बढ़िया कागज़, अनेक चित्र, सुन्दर जिल्द, बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या साढ़े तीन सौ से ऊपर, मूल्य ५।=) पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके लिय नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जबाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में मैल बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जबाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जबाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता... मस्तिष्क शीतल रखता है

JH-2 B

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जबाकुसुम हाउस - कलकत्ता

THE SECRET OF YOUR BABY'S HEALTH

बालसुधा
Bal
BEST FO
Child
SUKH SANCHARAK C° LTD
MUTTRA

BAL SUDH

AN IDEAL TONIC FOR WEAK
DEFICIENT CHILDREN

SUKH SANCHARAK C° LTD
MUTTRA

प्रण कीजिए कि आप अपने दाँत सदा इसी तरीके से साफ करेंगे

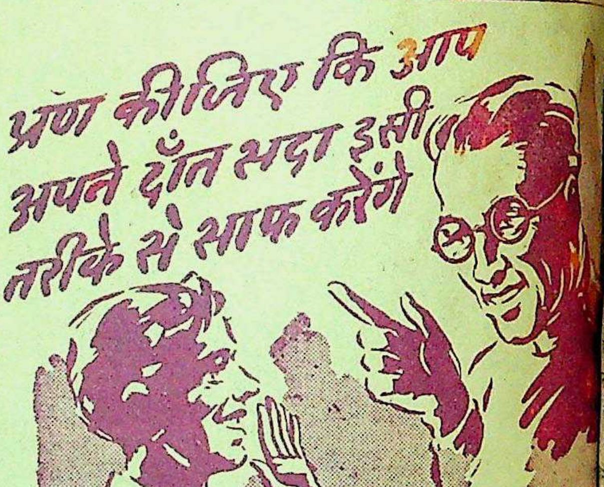

किसी खुरदरी चीज से अपने दाँत साफ़ मत कीजिए। क्योंकि झरीटों पर सड़न शुरु होती है। बेस्वाद चीज़ों से बचिए। क्योंकि ऐसी चीज़ों से आपके श्वास से बदबू आएगी। ऐसी चीज़ों का कभी उपयोग मत कीजिए जो सावधानी से पैक न की गई हो, क्योंकि इनमें कीटाणुओं का खतरा रहता है जो बीमारी फैलाता है।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह आपके दाँतों को नरमी से साफ़ करता है और दाँतों में झरीटें नहीं डालता। इसका स्वाद और सुगंध-दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विषनाशक है और ऐसा पैक किया गया है कि इसमें धूल नहीं जा सकती। इसके अलावा एक डिबिया में १०० से अधिक बार दाँत साफ़ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON

देशदूत

संख्या ४]

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, २३ सितम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

लन्दन से भारत गये हैं।

पांच राष्ट्रों के वैदे- लगा रहे हैं। अमरीका, वैठकी ऐसी हो रही अंत में कौन विजयी राष्ट्रों के भविष्य और ब्रिटेन तो ऐसे माँ-बाप अपने बच्चों होते हैं। अमरीका और बल्गेरिया को के लिये उतावले रूस कहता है कि हमें हो, यह तो वहाँ वाले की तो राय है कि रूस पोट्सडम सम्मेलन के है। अमरीका और सभी योरोपीय राष्ट्रों के है। तो आखिर बच्चों कुछ कर ही जाना को इस घरेलू-मामले में क्या जरूत है ?

*　　*

सोवियट रूस भी शामिल डेढ़ चावल की खिचड़ी है ? अब तो लड़ाई खत्म अब भी अमरीका और प्रजातन्त्र योरोपीय राष्ट्रों में सफल न हुए तो इस पाप होगा। सच पूछा राष्ट्र ही प्रजातन्त्र को के साथ कायम रख अपना कम्यूनिज्म है। अपने राम वैदेशिक की चहल पहल बड़े है। जान पड़ता है कि रूस है। बन्दर क्या जाने इस जमाने में जो सच्चा समझ में प्रजातन्त्र आ सकती है ? आखिर कुछ भी तो नतीजा या यों ही यह बैठक- रूस तो सचमुच बैठकबाजी 'हुर्र' करने पर उतारू जान पड़ता है।

*　　*　　*

क्या तमाशा है ? रूस की हरकत देखकर वाकई बड़ी परेशानी होती है। एक ओर लाल रूस अमरीका और ब्रिटेन के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल भी रहा है और दूसरी ओर वह चुपचाप योरोप तथा एशिया के राष्ट्रों से संधियाँ भी करता जा रहा है। इधर चीन से तीस वर्ष की संधि वह कर ही चुका है उधर रूमानिया से भी उसकी संधि हो गई है। वैदेशिक मंत्रियों की बैठकबाजो में इटली के बटवारे में भी वह हाथ मारने की कोशिश कर रहा है। अमरीका तो जो कुछ मिलेगा ले ही लेगा किन्तु बेचारे ब्रिटेन को सचमुच जब तक ज्यादा न मिले तब तक उसका कैसे गुजारा हो सकता है ? लेकिन रूस साहब से अगर कुछ बचे तब तो ? वह जर्मनी का तिहाई हिस्सा लेकर बैठा है और अब इटली, आस्ट्रिया, यूगोस्लेविया और जाने किसकी किसकी ताक में बैठा है। वाकई है यह परेशानी की बात ! युद्ध के बाद शान्ति और सुरक्षा की व्यवस्था हो रही है या रूस साहब दूसरे जंग की तैयारी का बन्धन बाँध रहे हैं ?

*　　*　　*

श्री भूलाभाई देसाई और लियाकत अली खाँ साहब ने जो समझौता किया था और लार्ड वैवेल साहब ने जिसकी आड़ में शिमला में नेताओं को इकट्ठा करके जो नाटक खेला था, उसका अन्त तो हो ही चुका है लेकिन देसाई-लियाकत अली समझौते की खुमारी अभी पिछले दिनों मिटाई गई है। नवाबजादा ने श्री देसाई से जो समझौता किया था वह व्यक्तिगत था और देसाई ने जो कुछ किया था वह महात्मा जी से पूछकर। क्या तमाशा है ? असल बात यह है कि जब कुछ होने को ही नहीं था, और मुस्लिम लीग या मिस्टर जिन्ना साहब की आड़ में नवाबजादा साहब एक तमाशा ही रचना चाहते थे तो उसी का परिणाम तो अन्त में सारे देश को भुगतना ही पड़ा। जिन्ना साहब के करिश्मे से वैवेल योजना तो जरूर गदरबूद हो गई लेकिन कांग्रेस नेता जेलों से छूट गये इसका श्रेय तो श्री देसाई ही को प्राप्त है। देर आयद दुरुस्त आयद, देसाई-नवाबजादा की खुमारी मिट गई, अपने राम को इसकी खुशी है।

*　　*　　*

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने आगामी चुनाव के लिए नेताओं की एक समिति बना दी है। मौलाना अबुलकलाम आजाद, सरदार बल्लभ भाई पटेल, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, पंडित गोविन्दबल्लभ पन्त, श्री आसफ अली, डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया, और श्री शंकरराव देव समिति के सदस्य हैं। बोर्ड तो निहायत माकूल और सुन्दर बना है लेकिन अपने राम यह जानना चाहते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरू समिति में क्यों नहीं हैं ? जो कुछ भी हो समिति अच्छी बनी है। अब देखना है मुस्लिम लीग आगे अपना पैंतरा कैसे बदलती है ? क्योंकि उसने कांग्रेस के कदमों पर चलने का पिछले सालों से अच्छा अभ्यास कर लिया है। कहावत भी है कि 'करत करत अभ्यास ते, जड़मति होति सुजान'। मुस्लिम लीग को जड़मति से सुजान बनने की परेशानी तो बनी ही रहती है।

मैडम च्यांकाई शेक अमरीका में विश्राम करने के बाद पुनः चुगकिङ्ग पहुंची हैं।

*　　*　　*

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने 'आत्म निर्णय' के अधिकार के संबन्ध में जो निर्णय किया है उससे मुस्लिम लीग और 'पाकिस्तान' के पुजारियों के पेट में चूहे कूदने लगे हैं। लीग के नेता यह समझे बैठे थे कि कांग्रेस ने 'आत्म निर्णय' के सिद्धांत को स्वीकार किया और मुस्लिम प्रांतों को स्वराज्य मिला। क्या बात है, स्वराज्य क्या है हँसी ठट्ठा ! मुस्लिम लीग स्वराज्य चाहती है और कांग्रेस भाड़ झोंकना चाहती है ? अब तो सारे देश को स्वराज्य मिलता है तो ठीक नहीं तो 'पाकिस्तानी' चिड़िया हवा में उड़ गई। वाइसराय लार्ड वेवेल 'पाकिस्तान' चाहते ही नहीं तो क्या बिना अँगरेजों की मर्जी के 'पाकिस्तान' बन जायेगा ? अपने राम की राय में सारा देश 'अखंडिस्तान' बनेगा और मुस्लिम लीगी 'पाकिस्तान' के लिये यहाँ कहाँ जगह है ? क्योंकि अगला चुनाव 'अखंडिस्तान' और 'पाकिस्तान' का फैसला कर देगा। हाथ कंगन को आरसी क्या ? आने दीजिए दिसंबर-जनवरी का महीना। फिर देखिये।

*

गीत

लेखक, श्री सुधीन्द्र एम० ए० 'साहित्यरत्न'

अमर जन्म बनता मरण की कथा से !
प्रलय में न होती अपरिमित सुधा जो !
नहीं प्राण को तीव्र लगती क्षुधा तो ॥
न यदि फूल ही कण्टकों बीच पलते।
चरण तो न ये स्पर्श पाते मचलते ॥
विरह पार जग में मिलन जो न बसता।
न नाविक कभी उस भँवर बीच धँसता ॥
मधुर प्रेम बनता विरह की व्यथा से !
प्रणय-लाभ की निधि जलधि में न होती।
नदी तो न यों पत्थरों बीच रोती ॥
न होती कहीं शान्ति के प्रेम-आँधी।
दिशा भूलकर तो भटकती न आँधी ॥
न क्षय जो सुखद पूर्णिमा को बुलाता।
क्षयी तो न मर मर नये जन्म पाता ॥
सफल सिद्धि हैं साधना की प्रथा से,
मधुर प्रेम बनता विरह की व्यथा से !

'देशदूत' का 'दीपावली अंक'

आगामी ४ नवम्बर प्रकाशित होगा !

सम्पादक का पृष्ठ

वर्किंग कमेटी का निर्णय

कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने अपने पूना के अधिवेशन में दो महत्वपूर्ण निश्चय किये हैं। एक तो है आगामी धारासभाओं के सार्व-जनिक चुनाव में पूरी शक्ति से भाग लेना और अधिक से अधिक संख्या में राष्ट्र-वादियों द्वारा धारासभाओं पर अधिकार प्राप्त करना। कांग्रेस के इस महत्त्वपूर्ण निर्णय से सरकारी तथा गैर सरकारी क्षेत्रों में बड़ी प्रसन्नता प्रगट की जा रही है! यही नहीं पिछले कई वर्षों से धारासभाओं द्वारा कोई सार्जजनिक कार्य न होने तथा प्रान्तों में गवर्नरी शासन के आधिपत्य से जो राजनैतिक उलझन उत्पन्न हो गई है, उससे प्रजासत्तात्मक शासन-प्रगति तथा जनता के हितों की जो हानि हुई, वह किसी से छिपी नहीं है। कांग्रेस मंत्रि-मंडलों के त्याग-पत्र देने तथा सन् ४२ के आन्दोलन के बाद और संसार व्यापी युद्ध के परिणाम स्वरूप विभिन्न प्रांतों की राजनैतिक, आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थिति में जिस प्रकार का पराभव हुआ उसका प्रभाव आज व्यापक रूप से देखने को मिल रहा है। इसलिये युद्ध समाप्त होने, कांग्रेस को कानूनी करार दिये जाने तथा नेताओं के जेल के बाहर आ जाने पर यह अनिवार्य हो जाता है कि प्रांतों के शासन में एक नया जीवन उत्पन्न हो। सरकार भी वर्तमान गत्यवरोध कब तक रख सकती थी? इसीलिए उसे नये चुनाव की घोषणा करनी पड़ी। देश की शक्तिशाली राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस नवीन निर्वाचन में भाग लेने जा रही है। इससे राष्ट्र में एक नवीन जागृति ही नहीं उत्पन्न होगी वरन् अगले वर्ष के प्रान्तीय शासनों में राष्ट्रीय शक्ति का विशेष हाथ भी होगा और उसका परिणाम सार्वजनिक जीवन पर पड़े बिना नहीं रह सकता। इसलिए कांग्रेस का चुनाव में भाग लेने का निश्चय राष्ट्रीय हित की दृष्टि से उचित ही हुआ है।

दूसरा महत्वपूर्ण निर्णय वर्किङ्गकमेटी ने 'आत्म निर्णय' के सम्बन्ध में किया है। लोगों को पहले यह संदेह था कि अल्पसंख्यकों के लिये आत्म-निर्णय की स्वतन्त्रता कांग्रेस स्वीकार कर लेगी किन्तु प्रसन्नता की बात है कि वर्किङ्गकमेटी ने आत्म-निर्णय की स्वतन्त्रता के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया। भारत अखंड है और संपूर्ण भारत की स्वाधीनता की प्राप्ति ही कांग्रेस का प्रधान उद्देश्य है। इसमें संदेह नहीं है कि मुसलमानों को आत्मनिर्णय का अधिकार यदि कांग्रेस देती तो उसे अन्य अल्पसंख्यकों के लिये भी कुछ न कुछ करना ही पड़ता। सच तो यह है कि यदि कांग्रेस 'आत्म-निर्णय' के सिद्धान्त को स्वीकार कर लेती तो इससे अन्य अल्पसंख्यक जातियों के प्रति, जिनकी संख्या मुसलमानों से कम नहीं हैं, घोर अन्याय करती और इसका परिणाम होता गृह-कलह। किन्तु कांग्रेस तो समस्त राष्ट्र की संस्था है। उसके सामने समस्त राष्ट्र तथा जनता के कल्याण की भावना है, उसका आन्दोलन और त्याग राष्ट्र की पूर्ण स्वाधीनता पर ही आधारित है। इसीलिये कांग्रेस वर्किंग कमेटी का निर्णय उसकी मर्यादा और सम्मान के अनुरूप ही है क्योंकि 'अखंड भारत' के सिद्धांत का निर्णय वह पहले भी कर चुकी है।

इस प्रकार कांग्रेस वर्किंग कमेटी के यह दोनों निर्णय राष्ट्रीय दृष्टि से बड़े महत्त्व के हैं। हमें विश्वास है कि बम्बई में होने वाली अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी भी वर्किंग कमेटी के निर्णय की पुष्टि करेगी क्योंकि राष्ट्र की राजनैतिक बागडोर आज उसके ही हाथों में है।

* * *

टैनकजेमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले, कटे, मुहासे, सड़ा, गला घाव तथा
एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
२) डिबिया
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 123

राशनिंग और कन्ट्रोल का अंत

लेखक, डाक्टर भगवानदास जी

युद्ध के पहले अर्द्ध-सरकारी रूप से पत्रों में यह समाचार छपा था कि राशनिंग का अन्त युद्ध के साथ ही हो जायगा, या ३१ मार्च सन् १९४५ को। आज युद्ध समाप्त हुए महीनों हो रहे हैं परन्तु राशनिंग का कार्य तोड़ने के बदले बढ़ाया जा रहा है। यह क्यों, समझ में नहीं आता? पहले लोगों को खाने के लिए ८ छटाँक गेहूँ दिया जाता था, उसके बाद घटाकर ६ छटाँक कर दिया गया और अब जब कि लड़ाई खतम हो चुकी है घटाकर केवल ४ छटाँक कर दिया गया है। क्या सरकार जनता को यह बताने की कृपा करेगी कि ऐसा करने का कारण क्या है?

जेलों से लौटे हुए सज्जनों से यह ज्ञात हुआ है कि राजनैतिक बन्दियों को ६ छटाँक आटा और ३ छटाँक दाल मिलती है तथा अराजनैतिक बन्दियों को १२ छटाँक आटा
और २ छटाँक दाल। क्या
पास इस विश्वास के प्रमाण हैं कि
नैतिक बन्दी अधिक खाते हैं और
पेट बड़ा है? क्या वह उन लोगों
परिश्रम करते हैं जो जेल के
किये हुए क्षेत्रों में रहते हैं?
तो यह हुए कि वे नागरिक
जेलों से बाहर रहकर, अथक
हैं और तब कहीं रूखा-सूखा
हैं, जेलों के भीतर काम करके
भोजन पाकर अधिक अच्छे रूप में
हैं।

जीवन की दूसरी आवश्यक
की है। भला अब उसके राशन
आवश्यकता है? युद्ध के समय
हम राशन लगाये जाने को
हैं, लेकिन अब उसके जारी रखने
कारण नहीं जब कि देश में खाना
हमारी जरूरतों से अधिक पैदा
है। हमें तो इस बात पर विचार
करना चाहिए कि खाना और
मिल सकता जब कि सरकार
और अनाज अधिक पैदा करने
को अधिक खूबी के साथ निभा
है। फ़सलें भी अच्छी हो रही हैं
रात-दिन चलती हैं। क्या उनकी
जन-संख्या भी बढ़ रही है?

ऐसा कहा जाता है कि सरकार
और अनाज बाहर भेजकर
उठा रही है। हम मानते हैं कि
सत्य नहीं है लेकिन बिलकुल
नहीं है। फिर यह बात तो
चित है कि सरकार स्वयं
और अन्य वस्तुएँ जमा करे
कि वह दूसरे लोगों को इसी
सजायें दे और जुर्माना करे
करती है। ऐसा करके वह
और अपने स्थान से गिर रही
ही अन्न और कपड़ा बरबाद
कितना ही आटा नदियों में
है, और खाद के लिए जमीन
गाड़ा जा रहा है। बहुत-सा तो
ताओं को लाभ के लिए बेचा
जिनमें अफ़सरों का हिस्सा रहता

कौन जानता है कि कितना
गला, और खराब आटा राशन
में बेचने के लिए भेजा जाता है
तरह की बीमारियाँ जैसे
बुखार, मलेरिया और हैजा
और जिसका प्रभाव बंगाल,
संयुक्त-प्रान्त में प्रत्यक्ष दिखलाई
संयुक्तप्रान्त के गवर्नर
का बहुत ही ख्याल है,
इस बात की सलाह देते हैं कि
के साथ कैलसियम मिला
चाहिए।

प्रश्न है कि अब भी
अनाज की राशनिंग क्यों
चल ही नहीं रही है अपितु
कड़ाई के साथ नियम लागू हो रहे
पहले से भी अधिक परेशानी
वाले हैं।

यदि सरकार भूखों के
नंगों के तन ढकने के लिए
प्रबन्ध नहीं कर सकती तो
समझें कि वह अयोग्य है और
ही अन्त होना चाहिए?

ताजमहल!

लेखिका
कुमारी हरदेवी मलकानी एम० ए०, बी० टी०

शरद् पूर्णिमा की अत्यन्त मधुर रात्रि! इस सुन्दर एवं शान्तिमय रात्रि में समस्त विश्व में आनन्द का साम्राज्य दिखाई देता है। अपने सौरभ का प्रसार लेकर कुमुदिनी-कुल भी नित्य की अपेक्षा आज के दिन अधिक विकसित हो उठती है। नदियों की चंचल लहरें कल-कल करती हुई अपने प्रेमी समुद्र से मिलने को उतावली हो उठती हैं। प्रकृति चन्द्रिका की रमणीयता को प्राप्त कर ऐसी रमी हुई मालूम होती है मानो उसने क्षीर समुद्र में स्नान किया हो।

मनुष्य—मनुष्य तो भावनामय प्राणी है। ऐसे मधुर एवं रमणीक समय में उसका मस्तिष्क कहीं नाव पर सैर करना चाहता है, कहीं मित्रमण्डली में बैठ कर पार्टी की योजना बनाता है अथवा यों कहिए कि वह कहीं अन्यत्र जाकर अपने दिल-बहलाव की सामग्री ढूँढ़ निकालता है। मेरे सामने भी एक बार ऐसी ही समस्या उपस्थित हुई और हमारी मित्रमण्डली ने भी आगरे जाकर ताजमहल देखने की ठानी। सुन रक्खा था कि शरद्-पूनो के दिन इस सुन्दर समाधि की अद्वितीय छटा देखने के लिए संसार के कोने कोने से स्त्री-पुरुष आते हैं।

यह विशाल भवन भारत के मुग़ल-सम्राट् शाहजहाँ के पत्नीप्रेम का जीता-जागता स्मृति-चिह्न है जो आगरा में यमुना के दाहिने किनारे पर स्थित है।

सुधाकर की उस निर्मल ज्योत्स्ना में ताज की छटा निराली ही थी। दूध-सी स्वच्छ चाँदनी में श्वेत संगमरमर का बना हुआ वह स्मृति-मन्दिर, भारत सम्राट् के स्नेह का प्रतीक ताज, अपनी अद्वितीय सौन्दर्यमयी शोभा बिखेरने में लीन था और रवितनया की उल्लसित तरंगें दौड़ दौड़ कर उसे आलिङ्गन करने को उतावली हो रही थीं।

भारतीय-कला का यह सुन्दर विशाल भवन आज भी दो प्रेमी हृदयों की महान साधना को और उनके अनन्य प्रेम को प्रदर्शित कर रहा है। इस मकबरे की सुन्दरता को देखकर समस्त विश्व की आँखें स्तब्ध हैं। मनुष्य की आँखें सुखी और मन मानव-जीवन के इस करुणाजनक अन्त को देखकर क्षुब्ध हैं। जिस शाहजहाँ ने अपनी स्वर्गीय पत्नी की समाधि पर अपने प्रेम की अंजलि अर्पण की, जिसने अपनी सहचरी प्राण-प्रिया प्रियतमा की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए उसे बनवाया, वह आज भी उस बुझते हुए दीपक की याद दिला रहा है।

कितने ही प्रेमी यहाँ आकर इस मकबरे पर अपने नेत्रों के अमूल्य मोती बिखेर जाते हैं, कितने प्राणी अपनी उमंगों पर पाला फेर जाते हैं और कितने ही अपने हृदयों में इस बुझते हुए दीपक की बुझती लौ से भूली हुई स्मृतियों को हरा-भरा कर जाते हैं। अगणित उमंगों को लिये हुए मानव इस प्रेम-मन्दिर में प्रवेश करता है और अगणित उसाँसें भरता हुआ वह बाहर लौट आता है। कितने हर्ष और उल्लास को लेकर प्राणी इस प्रेम-निकेतन में प्रवेश करता है और हृदय पर दुःख का भार लिये हुए वापस निकलता है। कितने ही हृदयों को यह क्षुब्ध और विचलित कर देता है।

समय आता है और चला जाता है। नित्य ही सूरज अपनी स्वर्णमयी तीव्र छटा को बिखरा कर अस्त होता है। चाँद घटता और बढ़ता है। बसन्त का सौरभ अपनी मादकता को बिखराकर लौट जाता है। कितने ही हेमन्त और शिशिर इस प्रेम-मंदिर को देखकर आँसू बहाते हैं और कितने ही ग्रीष्म इसको छूकर उत्तप्त उसाँसें भरते हुए वापस जाते हैं। कितने ही प्रलयंकारी दृश्यों को देखता हुआ यह मकबरा आज भी भग्नहृदय प्रेमी की प्रेमिका को अपने हृदय में छिपाये हुए मौन खड़ा है।

पर फिर भी इसके श्वेत कठोर पत्थर पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि चाहे मेरे बनानेवाले शिल्पी भूमि में समा गये हों; चाहे इसके निर्माता का कहीं नाम-निशान न रह गया हो पर—पर मैं आज भी उस भारत-सम्राट् शाहजहाँ के हृदय की दहकती हुई चिरवियोग की एक जाग्रत वह्नि हूँ; मैं ही उस दुःखी हृदयागार की एक बूँद हूँ, मैं ही उस प्रेम-पुष्प का सौरभ हूँ, मैं ही उस सौन्दर्यपूर्ण स्वरूप की प्रतिभा हूँ, मैं ही प्रेमाग्नि की धधकती ज्वाला हूँ; और मैं ही दीपक की झिलमिलाती लौ हूँ और मनुष्य के अचिरस्थायी प्रेम को चिरस्थायी बनाये हुए हूँ। अतृप्त वासनाओं की वासना हूँ तथा अपूर्ण आकांक्षाओं की आकांक्षा हूँ।

महात्मा गांधी !

धारासभाओं का आगामी चुनाव

कांग्रेस तथा अन्य राजनैतिक दलों का भविष्य कैसा है ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

धारासभाओं का आगामी चुनाव बड़े महत्त्व का होने जा रहा है ! कांग्रेस अपनी पूरी शक्ति से चुनाव में भाग लेने जा रही है। मुस्लिम लीग तथा अन्य राजनैतिक दल भी चुनाव में अपने भाग्य की परीक्षा करने जा रहे हैं। इस लेख में लेखक ने आगामी निर्वाचन पर राजनैतिक दलों की दृष्टि से प्रकाश डाला है। लेख जानकारी से पूर्ण है।

म्मेलन की असफलता
बात पर तमाम राज-
देश की अन्य जन-
केन्द्रित रहा, वह था
का पुनर्निर्वाचन।
कारणों में से एक
का यह दावा कि
एकमात्र प्रतिनिधि
स्तावित वाइसराय
चों मुस्लिम सीटों
अधिकार केवल उसी
की सत्यता को सिद्ध
मांग मुस्लिम लीग
कि शीघ्र ही नवीन आम चुनाव होने चाहिये। कांग्रेसी क्षेत्रों में चुनाव की तरफ कोई विशेष उत्साह प्रदर्शित नहीं किया गया। राष्ट्रपति आज़ाद ने तो यहाँ न कहा कि नवीन चुनाव का उचित समय अभी नहीं है। लेकिन मुस्लिम लीग पूरी तेजी से चुनाव की तैयारी में लग गई और विभिन्न प्रान्तों में लीगी कमेटियों का पुनर्संगठन एवं चुनाव लड़ने के लिये यथोचित अर्थ-व्यवस्था होने लगी।

चुनाव और ब्रिटिश सरकार

धारासभाओं का चुनाव हुए नौ साल हो गये। जब जब भी नये चुनाव की बात उठाई गई ब्रिटिश हुकूमत युद्ध परिस्थिति की दुहाई देकर तिथियाँ टालती गई यहाँ तक की युद्ध में क्रियात्मक भाग लेनेवाले रक्तरंजित फ्रांस, बेल्जियम, जेकोस्लेवियाआदि योरोपीय देशों में और स्वयं इँगलैंड में अनुकूल व्यवस्था हो जाने पर शीघ्र से शीघ्र नये चुनाव हुए, लेकिन हिन्दुस्तान में जहाँ केवल युद्ध-परिस्थिति का प्रभाव-मात्र पड़ा था, धारासभाओं के निर्वाचन में व्यर्थ का विलम्ब किया गया। अब आगामी मार्च तक चुनाव की सब क्रियायें समाप्त हो जायेंगी। इसी कारण सिंध, बिहार, मध्यप्रान्त और संयुक्त-प्रांत में असेम्बलियाँ भंग कर दी गई हैं। चुनाव-संघर्ष में ईमानदारी और निष्पक्षता बरती जाये और पूर्ण स्वतंत्रता के साथ प्रचार हो सके इसके लिए आवश्यक था कि सरकार, नागरिक-स्वतंत्रता को पुनः प्रदान करती लेकिन विपरीत इसके उसने कांग्रेस के अन्तर्गत काम करनेवाली कांग्रेस समाजवादी और फार्वडब्लाक आदि दलों पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और अनेक तपे हुए राजनीतिक कार्यकताओं को जो चुनाव के समय में अपनी संस्थाओं के लिए अत्यावश्यक सिद्ध हो सकते हैं, अब तक सीखचे के पीछे कैद कर रखा है। प्रान्तों में असेम्बली-भंग के कारण, 'गवर्नरी राज' क़ायम रहेंगे। यही नहीं ऐसा सुना जाता है, जैसा कि श्री रफ़ीअहमद किदवयी साहब ने अपने एक वक्तव्य में कहा भी है, कि सरकार जमींदारों और अपने पिट्ठुओं को कांग्रेस के विरुद्ध चुनाव लड़ने के लिए भी उत्साहित कर रही है। साथ ही ऐसा लगता है कि ब्रिटिश सरकार चुनाव-संघर्ष में विभिन्न पार्टियों की सामर्थ्य और प्रभाव का अन्दाज करना चाहती है।

वर्तमान मतदाताओं की सूची सन् ३६ में तैयार हुई थी। उसके बाद एक बार सन् ४२ में उसमें संशोधन हुआ फिर भी उसमें कितनी ही अशुद्धियाँ और भूलें भरी हुई हैं। इसे सरकारी व्यवस्था की 'कुशलता' का परिचय रखनेवाले लोग समझ सकते हैं। उसके अतिरिक्त मतदाताओं की संख्या में कितनी वृद्धि हुई है उसके लिए सरकार विशेष उत्सुक नहीं है। वोटर लिस्ट में अपना नाम चढ़वाने की अन्तिम तिथि २२ अक्टूबर रखी गई है। इतने कम समय में अधिक से अधिक कार्य की आशा अकेले सरकार के बूते की बात भी नहीं है। कांग्रेस की तरफ से ऐसी विज्ञप्ति हुई है कि वोटर-सूची के संशोधन में हर एक कार्यकर्त्ता को बग़ैर किसी कांग्रेसी पक्ष या विपक्ष के भेद के हर एक वोट देने के अधिकार प्राप्त व्यक्ति का नाम पहुँचाना चाहिए। ऐसा ही प्रयत्न मुस्लिम लीग भी कर रही है। लेकिन यह कार्य ऐसा है कि विभिन्न राजनैतिक पार्टियाँ संयुक्त रूप से और पारस्परिक सहयोग के ढङ्ग पर करें तो अधिक सुविधा, शीघ्रता और सुचारुता से यह कार्य सम्पन्न हो सकता है। नागरिक अधिकारों की रक्षा हर एक राजनीतिक पार्टियों का ध्येय रहता है। मतदाता-सूची संशोधन ऐसा कार्य है जिसमें प्रत्येक अधिकार-प्राप्त नागरिक को अपने अधिकार के उपयोग का समुचित अवसर मिलना चाहिए।

चुनाव और कांग्रेस

चुनाव-प्रश्न पर अनेक नेताओं ने अपनी राय प्रकट की है। पं० नेहरू ने काश्मीर और पञ्जाब की यात्रा के दौरान में कहा था कि वे एक बार सारे देश का तूफानी दौरा करना चाहते हैं। कार्य-समिति के सदस्य श्री शङ्करराबदेव ने तो एक प्रकार से चुनाव-सभायें शुरू ही कर दी हैं। राजाजी भी चुनाव में भाग लेने के लिए तैयार हो गये हैं। राष्ट्रपति आजाद

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य धारासभाओं के चुनाव की ओर——

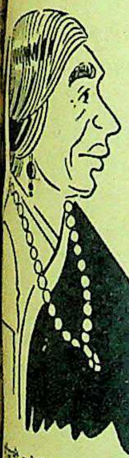

सरोजिनी नायडू ।

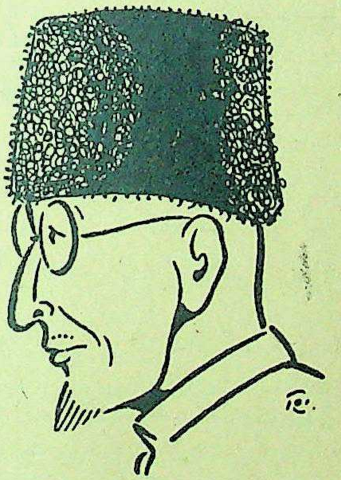

मौलाना अबुल कलाम आजाद ।

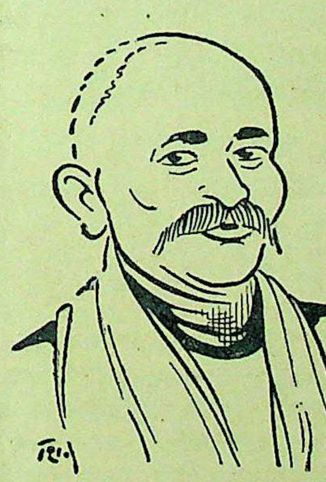

श्री पट्टाभि सीतारमैया ।

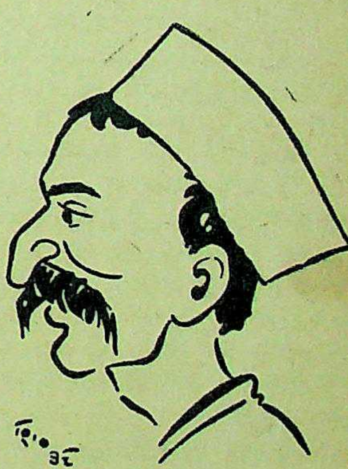

डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ।

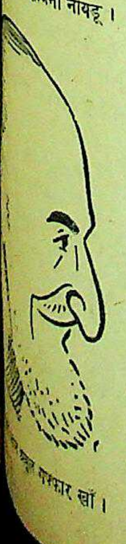

गफ्फार खाँ ।

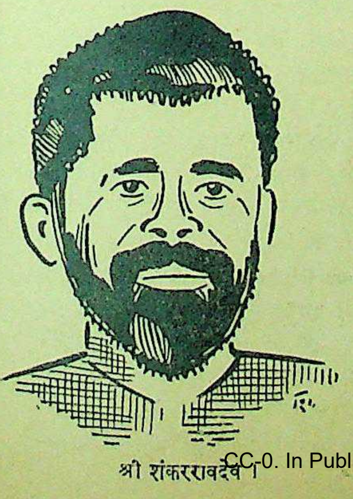

श्री शंकरराबदेव ।

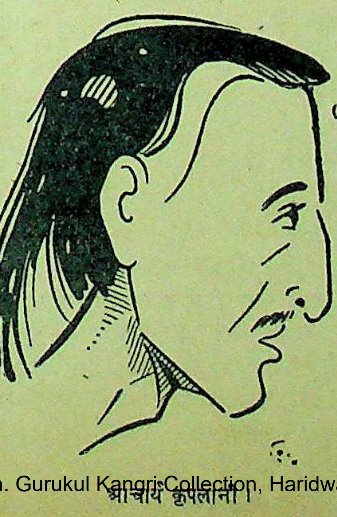

आचार्य कृपलानी ।

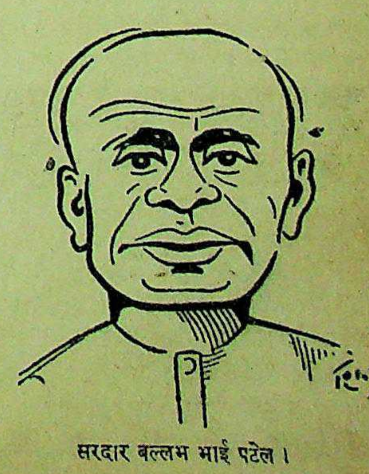

सरदार बल्लभ भाई पटेल ।

एक राष्ट्र, एक नेता, एक कार्य-क्रम

भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता ही हमारा एक लक्ष्य हो

लेखक, श्री गंगाधर इंदूरकर 'साहित्यरत्न' (पत्रकार)

> जेल से छूटे हुए अनेक कांग्रेसी नेताओं का यह नारा है कि एक राष्ट्र, एक नेता, और एक कार्य-क्रम, इसमें संदेह नहीं है कि हमारा प्रधान लक्ष्य है भारतीय पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति। योग्य लेखक ने इस सुन्दर लेख में यह बतलाया है कि यदि हम छोटी-छोटी समस्याओं के हल करने में अपनी शक्ति का अपव्यय न करके उस बड़े ध्येय की प्राप्ति में सफलता प्राप्त कर लें तो हमारी भीतरी समस्यायें स्वयं ही हल हो जायेंगी।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू, जो एक कार्य-क्रम के सिद्धांत को माननेवाले हैं।

एक पौराणिक कथा है। कौरव और पांडव गुरु द्रोणाचार्य से धनुर्विद्या सीख रहे थे। सामने के पेड़ पर एक चिड़िया बैठी हुई थी। गुरु द्रोणाचार्य ने उस चिड़िया को मारने के लिये दुर्योधन को आदेश दिया। जब दुर्योधन ने धनुष की डोरी कानों तक खींचीं तब आचार्य ने पूछा—दुर्योधन! तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है? दुर्योधन ने कहा 'गुरुदेव' मुझे पक्षी दिखाई दे रहा है। आचार्य ने पूछा और कुछ? दुर्योधन ने कहा—"जी! पेड़, पेड़ के हरे हरे पत्ते, विशाल आसमान यह सब दिखाई दे रहा है। गुरुदेव ने कहा—दुर्योधन, तुम निशाना नहीं लगा सकते। और हुआ भी ऐसा ही। इसके बाद और कौरव तथा अर्जुन को छोड़कर बाकी पांडवों ने निशाना लगाने की कोशिश की। उनसे भी द्रोणाचार्य ने ये ही प्रश्न किये और उन्होंने भी दुर्योधन की तरह ही उत्तर दिये। कोई ठीक निशाना न लगा सके। अन्त में जब अर्जुन की बारी आई तब द्रोणाचार्य ने अर्जुन से भी यही प्रश्न किया। अर्जुन ने कहा, 'गुरुदेव' मुझे केवल काला-सा पक्षी का सिर ही दिखाई दे रहा है। मेरे सामने और कोई चीज नहीं है। आचार्य ने कहा कि अर्जुन, तुम्हीं निशाना लगा सकते हो। अर्जुन की कमान से तीर छूटी और पक्षी का सिर कटकर नीचे गिर गया।

* * *

महाभारत की यह एक छोटी-सी कहानी है, किन्तु राजनीति की महत्त्वपूर्ण शिक्षा इसमें भरी हुई है। वह शिक्षा क्या है—"जिस लक्ष्य की प्राप्ति करनी हो उस लक्ष्य की ओर एकाग्र होना चाहिए। दूसरी सभी चीजों से ध्यान हटाकर चाहे वह कितनी ही बड़ी या महत्त्वपूर्ण क्यों न हो, एकमात्र अपने लक्ष्य को देखना चाहिए।

हमारे नेताओं को भी अब यह स्पष्ट रूप से मालूम हो गया है कि हमें अपने सामने एक कार्यक्रम रखना चाहिए। हमारी सारी ताकत उसी में केन्द्रीभूत होनी चाहिये। हमें अपना ध्यान और चीजों से चाहे वह कितनी ही महत्त्वपूर्ण क्यों न हों, हटा लेना चाहिये। आज की अवस्था में हमारा एक ध्येय और एक कार्यक्रम क्या होना चाहिए? जाहिर है कि हमारा वह ध्येय भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता तथा एकमात्र उसके लिये आवश्यक कार्यक्रम है।

इस बात की ओर युक्तप्रान्त के कुछ कांग्रेसी नेताओं ने संकेत भी किया है। सर्व श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, रफी अहमद किदवई, बालकृष्ण शर्मा आदि नेताओं ने एक नेता, एक कार्य-क्रम, एक राष्ट्र तथा एक ध्येय की आवाज उठाई है। यह हमारे देश की आजादी नजदीक आने का सूचक है। हमें इस बात का ज्ञान हो गया है कि यदि हमें देश की आजादी शीघ्र प्राप्त करनी है तो हमें और सभी चीजों को कुछ समय के लिये स्थगित करके केवल आजादी के काम में डट जाना होगा।

आज हमारा देश सबसे प्रथम स्वराज्य चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति समझता है कि विदेशी सत्ता के जुल्मी पंजों से यदि आज हम अपने देश को किसी प्रकार मुक्त कर लेते हैं तो दूसरे सवाल चाहे आपस में लड़ झगड़ कर ही क्यों न तै हों, थोड़े ही दिनों में अपने आप हल हो जाएँगे। आज अनेक ताजे प्रश्न ऐसे हैं जो अपना शासन होने के बाद आसानी से हल किये जा सकेंगे। इस समय हमें अपनी सारी ताकत—ताकत का एक-एक क्षण विदेशी सत्ता से देश का शासन हथियाने में लगाना है।

महात्मा गांधी तथा अन्य कांग्रेसी नेता पूना-प्राकृतिक स्वास्थ्य-गृह में जा रहे हैं।

* * *

आज देश के सामने कई प्रश्न हैं। उनमें हिन्दू - मुसलिम एकता का प्रश्न प्रमुख है। देश में शायद ही कोई ऐसा मूर्ख हो जो यह न चाहता हो कि देश में एकता होनी चाहिए। किन्तु सवाल यह है कि जातीय आधार पर यदि एकता हो भी गई तो क्या वास्तव में वह एकता स्थायी हो सकती है? जब आज संसार समान व्यक्तित्व की पुकार मचा रहा है, गरीब और अमीर की सीमाएँ खत्म कर देने की इच्छा प्रकट की जा रही है तब ऐसे समय में जातीय आधार पर की गई एकता किस काम आयेगी? कोई भी व्यक्ति जन्मत: न हिन्दू है न मुसलमान। ये जातियाँ आवश्यकतानुसार बनाई गई थीं। नये संसार में इस प्रकार की जातियाँ समाप्त होकर रहेंगी। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही जातियों के लिए संसार में स्थान न होगा। भविष्य में हिन्दुस्तान में रहनेवाला चाहे वह किसी भी जाति का क्यों न हो, हिन्दू, हिन्दुस्तानी, इण्डियन या भारतीय कहा जायगा। यह शब्द किसी धर्म का प्रतीक न होगा, देश का प्रतीक होगा।

* *

हो सकता है कि इसमें कुछ लोगों को मतभेद हो। किन्तु मुस्लिमलीग के मुट्ठी भर मुसलमान तथा हिन्दूसभा के इने-गिने हिन्दुओं को छोड़कर आज किसे इस बात की पर्वाह है कि वह हिन्दू है या मुसलमान? वर्तमान पीढ़ी के कुछ पुरुषों तथा स्त्रियों में हिन्दू-मुसलमान का विचार हो सकता है, किन्तु आगे आनेवाली पीढ़ी में इसका जरा भी विचार न होगा। साथ ही यह भी जाहिर है कि सांप्रदायिकतापूर्ण वातावरण का जहर यदि हम आनेवाली पीढ़ी के कानों में, चाहे एकता ही के नाम क्यों न हो, उगलते रहेंगे तो निश्चय ही वह उसे भूल न सकेगी। इस बात का प्रमाण तो यही है कि महात्मा गांधी जैसे महान् व्यक्ति ने दिल से सचाई के साथ एकता के लिए जितनी कोशिश की, एकता उतनी ही दूर भागती गई। इसमें महात्मा गाँधी का दोष नहीं, मानव स्वभाव का दोष है। इस छोटे से दोष का फल देश में एक विकट सांप्रदायिक समस्या के सामने खड़ी हो गई है। यह हमारे स्वराज्य के लक्ष्य के रास्ते में खड़ा हुआ एक पहाड़ है। यदि आज हम इस पहाड़ को गिराने या तोड़ने की कोशिश करेंगे तो हमारी शक्ति इसी में लग जायेगी। हम स्वराज्य तक शीघ्र न पहुँच सकेंगे। यदि इस समय किसी तरह इस पहाड़ को कतरा कर हम स्वराज्य के लक्ष्य तक पहुँच जाते हैं और हमारे हाथ में शासन आता है तो हम ऐसे एक नहीं सैकड़ों पहाड़ों को देश की वास्तविक इच्छा की सुरंगे लगाकर नेस्तनाबूद कर देंगे।

पं॰ बालकृष्ण शर्मा ने हाल ही में अपने एक भाषण में कहा था कि हिन्दू-मुस्लिम-समस्या उत्पन्न होने की जिम्मेवारी हिन्दुओं पर है और पाकिस्तान उनके पाप का परिणाम है। मैं शर्मा जी के कथन से पूर्णत: सहमत न होने पर भी मान लेता हूँ कि आज की समस्या का उत्तरदायित्व हिन्दुओं पर है। सही है। अपने पूर्वजों की गलतियों का फल हम भुगत रहे हैं। किन्तु मैं शर्मा जी से पूछना चाहता हूँ कि जिन गलतियों के लिए हम

राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम
राष्ट्र के पक्षपाती हैं।

अपने पूर्वजों को कोस रहे हैं,
कर वे ही गलतियाँ आज हम
जा रहे हैं? क्या इसका
होगा कि आगे आनेवाली हम
ठीक उसी तरह जिस तरह आज
पूर्वजों को कोस रहे हैं उसी तर
भी अधिक हमें कोसेगी और ग

* *

प्रत्येक मनुष्य को समान
यह आज के समाजशास्त्र का
है। किसी जाति-विशेष में पैदा
कारण किसी को कुछ विशेष
यह बात आज का समाज
सकता। यदि आज हम इस
न मानेंगे और एकता के नाम
विशेष को प्रश्रय देते रहेंगे तो
होगा? कुछ समय बाद आज
ऊँची गिनी जाती हैं वे नीची
जो आज नीची समझी जाती हैं,
समझी जायेंगी। समस्या
बनी रहेगी। ब्राह्मण शब्द
चुका है। आज के 'महाराज' और
शब्द किस श्रेणी के व्यक्ति
हैं? एक समस्या को हल
दूसरी समस्याएँ खड़ी कर
तरह की बुद्धिमानी न होगी।

* *

इसी प्रकार दूसरा
हरिजनों का है। हरिजनों
जो केवल आर्थिक है, अभी
नहीं पहुँचा है। मुसलमानों
आज वास्तव में देखा जाय
समस्या थोड़े से पुराने जड़वादियों
है, साधारण समाज के सामने नहीं
भी आज के पढ़े-लिखे समझदार
सामने व्यक्तिगत रूप से यह
नहीं। जिस हरिजन व्यक्ति का
तल समाज की मध्यम श्रेणी के
उसके साथ व्यवहार करने में
कोई संकोच नहीं है। इसलिए
केवल यह सवाल है कि
छोड़कर सारे समाज की आर्थिक
किस प्रकार दूर कर दी जाय?
की आर्थिक विषमता हम
सकते हैं जब हमारे हाथ में
शासन हो और हमारा स्वराज्य हो।
लिए हमने पहले कहा है कि
अपनी सारी शक्ति स्वराज्य के
केन्द्रीभूत करनी चाहिए। उसे प्राप्त
पर हमारे आज के सारे सवाल
आप हल हो जायेंगे और यदि नहीं
उन्हें हल करने में हमें बहुत ही
होगी।

इसीलिए हमारे प्रान्त के
नेताओं ने जो एक नेता, एक
और एक झण्डा की
उठाई है वह बहुत ही महत्त्व
हमारे आज के नेता के सामने
लक्ष्य हो और वह हो
भारतीय पूर्ण स्वराज्य प्राप्त

स्पेन में संकट के बादल घिर रहे हैं?

क्या जनरल फ्रैंको की डिक्टेटरी अब समाप्त होने वाली है?

लेखक, श्री विजयकुमार मिश्र

स्पेन में संकट के बादल घिर रहे हैं। प्रजातंत्र दल, जनरल फ्रैंको के फासिस्ट शासन के विरुद्ध संगठित हो रहा है। यदि अमरीकन और ब्रिटिश पूँजीपति और टोरी उसके सहायक न रहे और ब्रिटेन की मजदूर और रूसी सरकार एक मत होकर अग्रसर हुई तो फ्रैंको की तानाशाही का अंत ही समझना चाहिए। विद्वान् लेखक ने स्पेन की वर्तमान राजनीति पर प्रकाश डालते हुए यह स्पष्ट किया है कि इस राष्ट्र का भविष्य क्या है?

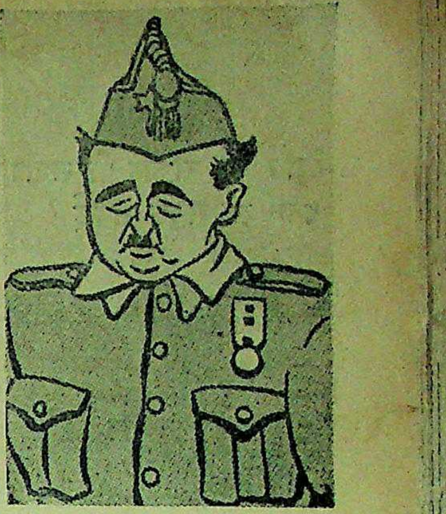

स्पेन के डिक्टेटर जनरल फ्रांको।

इसी आशंका से अपने वक्तव्य में यह भी स्पष्ट कर दिया था कि यदि फ्रैंको नकली राजतंत्र स्थापित करके अपनी तानाशाही स्थिर रखने का प्रयत्न करेगा, तो मज़दूर-दल उसे भी स्वीकार न करेगा।

मज़दूर-दल अपने नेता प्रोफेसर लास्की के अनुसार ऐसे किसी भी शासन को स्वीकार न करेगा, जो जनता की इच्छा के विपरीत होगा। ब्रिटेन के टोरी राजनीतिज्ञों ने ग्रीस, बेल्जियम तथा इटली में ऐसी सत्ताओं का पृष्ठपोषण किया, जिन्हें वहाँ की सार्वजनिक सहानुभूति का एक अंश भी नहीं प्राप्त है। मज़दूर-दल यदि अपने नेता के वक्तव्य में विश्वास करता है, तो उसे उन देशों में उन दलों का समर्थन करना चाहिए, जो प्रजा का विश्वास प्राप्त कर सकें। क्या प्रोफेसर लास्की का वक्तव्य भारत पर भी लागू होगा? अथवा अटलांतक चार्टर की भाँति भारत इस वक्तव्य की परिधि से भी बाहर है?

स्पेन तो मज़दूर-दल की वैदेशिक नीति की कसौटी है। टोरी साम्राज्यवादी स्पेनिश-समस्या को सदा गौण महत्त्व ही देते रहे हैं। बल्कि अनेक अवसरों पर उन्होंने फ्रैंको का विरोध करने से खुल्लमखुल्ला इनकार भी कर दिया। यद्यपि ब्रिटिश जनता और मित्र-राष्ट्रों के दबाव में टोरियों को स्पेनिश फासिस्टों का विरोध करना पड़ा किन्तु उन्होंने कभी भी कोई ऐसा काम नहीं किया, जिससे स्पेन में फ्रैंको की स्थिति संकटग्रस्त हो। संसार से तिरस्कृत फ्रैंको की एकमात्र आशा लंदन और न्यूयार्क के अरबपति व्यवसायी हैं, जिनको फ्रैंको सरकार की कृपा से स्पेन के व्यापार से करोड़ों रुपये का लाभ होता है।

मजदूर-दल से आशा की जाती है कि वह फ्रैंको के सम्बन्ध में अपनी नीति दृढ़तापूर्वक तथा विचारशीलता के साथ निर्धारित करेगा। ब्रिटिश पूँजीवादी स्पेन में फ्रैंको सरकार को स्थिर रखने के लिए लाखों पाउण्ड प्रतिवर्ष प्रचार आदि में व्यय करते हैं। अमेरिकन उद्योगपतियों का भी यही हाल है। अँगरेजों का तो नहीं मालूम, किन्तु एक तालिका के अनुसार एक वर्ष में अमेरिकन व्यवसायियों ने स्पेन पर ५ करोड़ डालर व्यय किये। पूँजीवादियों के समर्थन से बनी हुई ब्रिटिश तथा अमेरिकन सरकारों ने 'फार्च्यून' नामक पत्रिका के अनुसार (गत मार्च का अङ्क देखिए) १६ करोड़ डालर की आर्थिक सहायता पाई। अतएव मजदूर-दल को सावधान रहना पड़ेगा। यदि पूँजीवादियों ने स्पेन को आर्थिक सहायता देना जारी रखा, तो वामपक्षियों की समस्त फ्रैंको विरोधी योजना व्यर्थ हो जायगी।

पोट्सडम-सम्मेलन में सम्भवतः समाजवादी ऐटली तथा साम्यवादी स्टालिन के प्रभाव से ही निश्चित हो चुका है कि स्पेन को आर्थिक मदद न दी जाये।

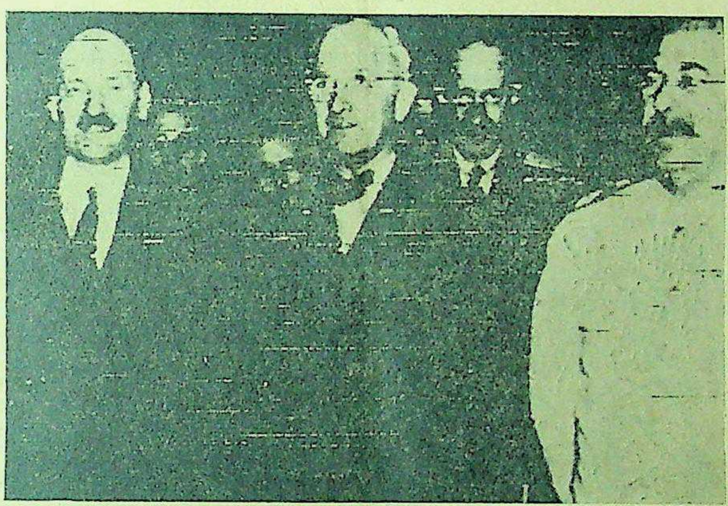

पोर्टस्डम-सम्मेलन में स्पेन को चुनौती देने वाले नेता मिस्टर एटली, प्रेसीडेंट ट्रूमन और मार्शल स्टेलिन।

ब्रिटिश मजदूर-दल के नेता प्रोफेसर हेरोल्ड लास्की की इस युक्ति का समर्थन यूरोप के सभी समाजवादी दलों-द्वारा हुआ है कि मित्रराष्ट्रों को स्पेन से व्यापारिक तथा आर्थिक सम्बन्ध त्याग देना चाहिए। वास्तव में यदि स्पेन के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध जारी कर दिये गये, तो फैलेञ्जिस्ट नेता के फासिस्ट शासन को समाप्त होते देर न लगेगी।

मैक्सिको के एक समाचार में कहा गया है कि प्र० नेग्रिन ने वहाँ पर स्पेनिश प्रजातन्त्र दल का पुनःसंगठित करना प्रारम्भ कर दिया है। उनकी घोषणा का स्वागत स्पेन की जनता ने प्रसन्नता के साथ किया है और नेग्रिन से स्पेनिश जनता को अपनी मुक्ति की आशा है। प्रजातन्त्रवादी दल स्पेन की जनता का सच्चा प्रतिनिधि है। स्वदेश को फ्रैंको के निरंकुश शासन से बचाने के लिए इस दल ने गृह-युद्ध में जो वीरता दिखाई थी, वह अवर्णनीय है। बर्लिन और रोम की सहायता के बिना फ्रैंको प्रजातन्त्र दल को पराजित भी नहीं कर सकता था। प्रजातन्त्र-दल के उन संकटमय दिनों में भारत ने भी उसकी महत्त्वपूर्ण सहायता की थी। पं० नेहरू स्वयं वहाँ गये थे और भारत से धन तथा चिकित्सा-सम्बन्धी यथेष्ट सहायता भेजी थी। स्पेन के सभी फासिस्ट-विरोधी दल एक स्वर से प्रजातन्त्र का समर्थन करते हैं और उसी के नेतृत्व में स्वदेश को मुक्ति देना चाहते हैं। स्पेनिश जनता को त्राण मिलने का समय समीप आ रहा है। स्पेन के निर्वासित नेताओं में, जो विभिन्न दलों के अध्यक्ष हैं, एकता हो ही गई है और वे प्रजातन्त्रवादी नेता डा० नेग्रिन का नेतृत्व स्वीकार करने को तैयार हैं। यदि ब्रिटेन और अमेरिका स्पेन के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबन्ध और लगा दें, तो फ्रैंको के फासिस्ट शासन की समाप्ति में विलम्ब न लगेगा।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक
'दीपावली अंक'
आगामी ४ नवम्बर का अंक बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल रहा है
पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियों, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अनेक सादे चित्रों से सुसज्जित।
एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिएँ।
इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।
मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

संपादक के नाम चिट्ठियां

सम्मेलन की सफाई या सभापति बनने की सनक समाई ?

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के सभापति तथा परिषदों के सभापतियों का प्रारम्भिक चुनाव हो गया। अब उनका अन्तिम चुनाव होने जा रहा है। हमें प्रसन्नता है कि सभापति का चुनाव ठिकाने से अभी तक हुआ है और मतदाताओं ने सुप्रसिद्ध साहित्यिक और राजनैतिक नेता श्री के० एम० मुंशी को सबसे अधिक मत दिये हैं। इससे आशा होती है कि अन्तिम चुनाव में भी श्री के० एम० मुंशी को ही सबसे अधिक मत मिलेंगे। श्री मुंशी के सिवा जिन अन्य व्यक्तियों को अधिक मत मिले हैं, उनकी योग्यता तथा विद्वत्ता में सन्देह नहीं है किन्तु अपनी राजनैतिक ख्याति के कारण ही उन्हें अधिक मत मिले हैं। श्री के० एम० मुंशी को सबसे अधिक मत मिलने का श्रेय उदयपुर सम्मेलन की स्वागत कारिणी-समिति के कर्मठ सदस्यों तथा प्रधानमंत्री श्री जनार्दनराय नागर को है जिन्होंने निरन्तर आन्दोलन करके मतदाताओं का ध्यान आकर्षित किया है। क्योंकि हमें सम्मेलन के मतदाताओं के बारे में पूरा अनुभव है, उनकी लियाकत के हम पूरी तरह कायल हैं क्योंकि जब वह स्वर्गीय साहित्य-सेवियों तक को सभापति-पद के लिये मत देने में पीछे नहीं रहते तो जीवितों में से किसी को मत देने के लिए उन्हें बरगला लेना बायें हाथ का खेल है। सभी मतदाता ऐसे नहीं हैं किन्तु ऐसों की संख्या कम नहीं है। बहुत से मतदाताओं को गायत्री-मंत्र की भाँति चार-छः नाम याद हैं, वह पिछले १५-२० वर्ष से उन्हीं को मत देते आ रहे हैं। बार बार वही परिषदों के सभापति चुने जाते रहते हैं। मतदाता इतने दयालु हैं कि उनसे किसी को भी मत दिला दीजिए, म्युनिसिपल बोर्डों और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के चुनाव की भाँति उम्मीदवार की उनके पास बजरिये डाक या बजरिये पैर पहुँच हो जानी चाहिए, फिर फतहयाबी में कसर न समझना चाहिए।

इसका प्रमाण सम्मेलन के परिषदों के लिए होनेवाला नया चुनाव है। कैसे कैसे महापुरुष, विद्वान्, काबिल, लायक-फायक, सम्मेलन पर जान देने वाले, पैदल चलकर जोरों से कनवेसिंग करनेवाले सभापति पद के लिए नामजद हुए हैं, यह गौरतलब है। पिछले कुछ वर्षों से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के विरुद्ध यह शिकायत रही है कि वह तो एक गुट्ट के हाथ में है और इसके लिए कुछ लियाकतवाले सफाई का झाड़ू लेकर आगे बढ़े और ऐलान किया कि बस अब सम्मेलन की सफाई हो जायेगी और केवल राष्ट्रीय लोगों के हाथ में सम्मेलन की बागडोर रहेगी। हमने सोचा था कि बड़ा अच्छा काम होने जा रहा है किन्तु इस बार के परिषदों के सभापतियों के चुनाव से यह स्पष्ट हो गया है कि ऐसे लोग सम्मेलन की सफाई करने की आड़ में सभापति बनने की ताक में बैठे थे। सभापति चुनवाने में उन्होंने अपनी राष्ट्रीयता का सुन्दर परिचय दिया है। अपने को सभापति या मन्त्री चुनवा लेने से ही यदि राष्ट्रीयता के आदर्श की पूर्ति होती है और सम्मेलन की गुटबन्दी दूर होती है तो भविष्य के लिए यह अच्छा नुस्खा तैयार कर दिया गया है। लेकिन सच तो यह है कि दुनिया में सबकी दवा है किन्तु बेशर्मी, बेहयाई और निर्लज्जता की कोई दवा नहीं है। जो लोग केवल यही समझे बैठे हैं कि सम्मेलन का सभापति अपने को बनवा लेने से ही सम्मेलन का हित हो सकता है, सम्मेलन राष्ट्रीय हो सकता है या गुटबन्दी दूर हो सकती है, उनके सम्बन्ध में कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। स्वार्थपरता की भी सीमा होती है, किन्तु ऐसों की लिप्सा और स्वार्थ तो छायावादी कविता की तरह असीम और अनन्त है।

श्री सुमित्रानन्दन पन्त ऐसे कलाकार मद्रास में जीवन-यापन कर रहे हैं, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला' ऐसे कलाकार और श्रीमती महादेवी वर्मा, अपनी साहित्य-साधना में लीन हैं। श्री भगवतीचरण वर्मा, ऐसे कलाकार को पैसे के लिए फिल्मों की शरण लेनी पड़ी है किन्तु इन्हें साहित्य परिषद् तक का सभापति बनाने में साहित्य-सम्मेलन और उसके हजारों मतदाताओं [illegible] का अनुभव करना पड़ता है। हम स्वर्गीय प्रसाद जी और श्री प्रेमचन्द ऐसे कलाकारों को भी खो चुके हैं किन्तु उन्हें सार्वजनिक सम्मान तक नहीं दे सके। इन साहित्य-सेवियों का त्याग त्याग नहीं समझा गया फिर भी सम्मेलन और उसके विधाता अपने को राष्ट्रीय कहलाने पर गर्व करते हैं। यही कारण है कि सम्मेलन से हिन्दी-साहित्य-सेवी और कलाकार उदासीन होते जा रहे हैं। माननीय टंडन जी, वियोगी हरि, आचार्य नरेन्द्रदेव, लक्ष्मीनारायण मिश्र आदि ने सभापति निर्वाचन से अपने नाम वापस ले लिये हैं। क्योंकि सम्मेलन के सभापतियों के चुनाव ने तो म्युनिसिपैलिटियों और डिस्ट्रिक्ट-बोर्डों की शक्ल अख्तियार कर ली है। जो सभापति बनना चाहे वह पहले घर-घर चक्कर काटे, गुटबन्दी करे, झूठी राष्ट्रीयता की दुहाई दे तब कहीं मुट्ठी भर की उपस्थितिवाले सम्मेलन के परिषदों का सभापति-पद प्राप्त करे। यह है सम्मेलन का प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय चुनाव।

अब सम्मेलन के साहित्य-परिषद् के सभापति कौन होंगे? पण्डित भागीरथप्रसाद दीक्षित! यह कौन साहब हैं कोटा के भूतपूर्व इंस्पेक्टर और जो सम्मेलन की स्थायी समिति-द्वारा तीन वर्ष के लिए सम्मेलन की मर्यादा भङ्ग करने के उपलक्ष में उसकी सदस्यता से वंचित कर दिये गये हैं। राष्ट्र-भाषा परिषद् का सभापति कौन होगा, श्रीमती सावित्री दुलारेलाल। यह कौन साहबा हैं? दुलारे दोहावली के रचयिता और प्रथम देव-पुरस्का
श्री दुलारेलाल जी की बीबी!
खासा बोल लेती हैं।

बताइए जब सम्मेलन के
के लिए ऐसे संसार-विख्यात
नाम आया है तब इनकी समझ
साहित्य-सेवी कौन है? पन्त, निरा
राष्ट्रीयता और साहित्य-सेवा के
भरते हैं। इसी से समझ लेना
कि सम्मेलन किधर ले जाया जा
सम्मेलन में आज जो कुछ हो र
राष्ट्रीयता की आड़ में जिस प्रकार
फैल रही है, वह उसे स्वयं पराज
ले जा रही है।

आज सम्मेलन को महात्मा
महापुरुष को अपने से अलग देखना
है, यही उसकी राष्ट्रीय संस्था
ज्वलन्त प्रमाण है। इसी तरह हिन्दी
कारों से भी उसका कोई संपर्क
है और जो थोड़े बहुत हिन्दी-प्रेमी
भी धीरे धीरे दूर होते जा रहे
लोग जयपुर-सम्मेलन में या उसके
मण्डल के चुनाव में उपस्थित थे
भलीभाँति देखा था कि जो
सफाई का झाड़ू लिए घूम रहे
सम्मेलन के सभापति या मंत्री
अपने त्याग, राष्ट्रीयता और
प्रति प्रेम का परिचय दे रहे हैं।
बंदी दूर करने के लिए बौखलाये
वह स्वयं गुटबंदी करके सम्मेलन
बंदी का शिकार बनाने में लगे हुए

—स्थायी समिति का एक

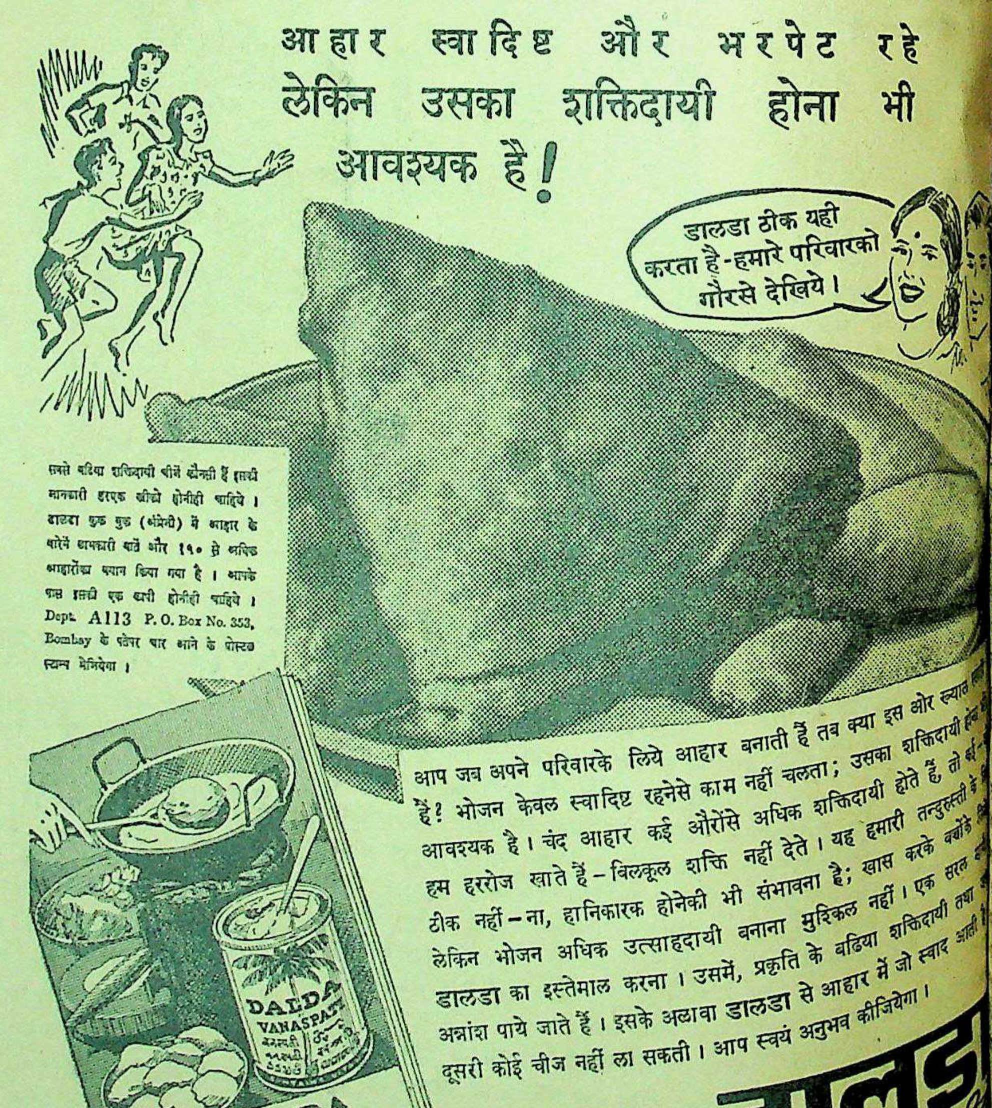
आहार स्वादिष्ट और भरपेट रहे लेकिन उसका शक्तिदायी होना भी आवश्यक है!
डालडा ठीक यही करता है-हमारे परिवारको गौरसे देखिये।
DALDA VANASPATI
The DALDA COOK BOOK Price Re.1/-
पोषक-तत्व संपन्न
डालडा
स्फूर्ति के
HVM 38-178-40 HI
HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हरएक बीबी को होनीही चाहिये। डालडा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १९० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। आपके पास इसकी एक प्रती होनीही चाहिये। Dept. A113 P. O. Box No. 353, Bombay के पतेपर चार आने के पोस्टज स्टाम्प भेजियेगा।

आप जब अपने परिवारके लिये आहार बनाती हैं तब क्या इस ओर ख्याल
हैं? भोजन केवल स्वादिष्ट रहनेसे काम नहीं चलता; उसका शक्तिदायी
आवश्यक है। चंद आहार कई औरोंसे अधिक शक्तिदायी होते हैं, तो
हम हररोज खाते हैं – बिलकूल शक्ति नहीं देते। यह हमारी तन्दुरुस्ती के
ठीक नहीं – ना, हानिकारक होनेकी भी संभावना है; खास करके बच्चोंके
लेकिन भोजन अधिक उत्साहदायी बनाना मुश्किल नहीं। एक सरल
डालडा का इस्तेमाल करना। उसमें, प्रकृति के बढ़िया शक्तिदायी तथा
अन्नांश पाये जाते हैं। इसके अलावा डालडा से आहार में जो स्वाद
दूसरी कोई चीज नहीं ला सकती। आप स्वयं अनुभव कीजियेगा।

कहानी

उसकी डायरी

लेखक, श्री बालगोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

जीवन कठिनाइयों, परेशानियों और संघर्षों से पूर्ण है, उस शिक्षित युवक को अपने आदर्शवाद के कारण किस तरह संघर्षों का सामना करना पड़ा अपमानित होना पड़ा और दर दर की ठोकरें खानी पड़ीं इसका सजीव और मार्मिक चित्रण उसने अपनी डायरी में किया है। कहानी अत्यन्त सुन्दर और हृदय में एक वेदना छोड़ जानेवाली है।

मेरे मन में यही भावना थी कि मैं सत्य और न्याय की रक्षा करूँगा। यह प्रत्येक युवक सोचता है, और अपनी शक्ति के अनुसार इस सिद्धान्त का पालन करता है। किन्तु मेरी वह शक्ति नष्ट हो गई, जब मैंने दुनिया का यह व्यापार देखा। व्यापार से मेरा मतलब यह है कि जब हमने लोगों के भीतर काम करनेवाली मनोवृत्ति को देखा; उनके भीतर की आत्मा में प्रवेश कर, उन्हें विवेक की कसौटी पर कसा। तब देखा, लोग कितने ढोंगी, मक्कार और धोखेबाज होते हैं। आज यदि मेरा अनुभव मुझे धोखा नहीं दे रहा है, तो मैं यह कहूँगा, कि इन्सान की जिन्दगी में आज भी बर्बरता है, हैवानियत है। भले ही ऊपर से वह सभ्य और शिक्षित दीखता हो। मैं अपने परिवार में अकेला न था। मेरी माँ थी। बीस वर्ष पूर्व वह विधवा हो चुकी थी या यों समझ लीजिए कि जब मेरे पिता की मृत्यु हुई, तब मैं केवल चार वर्ष का था। मेरी माँ ने मुझे शिक्षा दी। अपने तन का पैसा बचा-बचाकर उसने मेरे लिए किताबें खरीदीं। कपड़े बनवाये। मुझे कभी यह सोचने का मौक़ा न दिया, कि मेरा बाप मर चुका है। मेरी फीस के रुपये जुटा-जुटा कर देती थी। स्वयं भूखी रहती किन्तु मेरे लिए खाना तैयार रखती थी। यह सब हो रहा था एक बड़ी आशा पर—कि मैं पढ़कर नौकरी करूँगा, घर की स्थिति अच्छी हो जायेगी, और हमारा जीवन भी सुखमय होगा। यदि माँ के मन में ऐसी भावना थी, तो इसमें आश्चर्य नहीं। आज प्रत्येक माँ या बाप जब बेटे को स्कूल में शिक्षा के लिए भेजते हैं, तो उसके मन में यही भावना रहती है कि पढ़कर उसका बेटा नौकरी करेगा, धन कमायेगा। समाज में आदर प्राप्त कर, कुल की परम्परा की इज्जत को कायम रख सकेगा। यह भावना दृढ़ होती है, उतनी ही दृढ़ जितना एक व्यक्ति 'पत्थर की मूर्ति' को देखकर श्रद्धा से नत-मस्तक हो जाता है।

"जब नौकरी के लिए मैंने कदम उठाया तो किसी को मेरे ऊपर तरस न आया। लोगों के सामने झुका; गिड़गिड़ाया, खुशामदें कीं, किन्तु कुछ हासिल न हुआ। चूँकि दुनिया में प्रेम, दया और बन्धुत्व की भावना का अभाव है, इसलिए एक व्यक्ति दूसरे पर विश्वास नहीं करता। मैं जबरदस्त आशावादी था। जीवन में निराशा क्या, और कैसी होती है, तब तक मुझे कुछ मालूम न थी। लेकिन दर-दर की ठोकरें खाने के बाद मैं निराश हो गया। उस समय की मुझे एक घटना याद है। मैंने अपने एक परिचित से 'ट्यूशन' के लिए भी कह रखा था। उन्होंने अपने एक मित्र के यहाँ मेरे लिए प्रबन्ध कर दिया, पन्द्रह रुपये महीने पर। मैं उन सज्जन के यहाँ गया। उन्होंने मुझे एक बार ऊपर से नीचे तक देखा, मानो मेरे में कुछ नूतनता हो या उन्हें मेरे 'आदमी' होने में सन्देह हो। मुझे बैठने को कहा, खुद अपने काम में लग गये। वे वकील थे। जब उनके मुवक्किल चले गये, तब उन्होंने कहा—"देखिए, मेरी लड़की जवान है, और आप भी......। मैं तो कोई बूढ़ा व्यक्ति चाहता हूँ। फिर भी, मैं इस पर विचार करूँगा।...और मुझे ऐसा लगा तब, मानो मेरे गाल पर किसी ने जोर का एक चाँटा मारा हो। मैं तिलमिला उठा। चरित्र पर अविश्वास प्रकट कर, उन सज्जन ने मेरी आत्मा का भारी अपमान किया। लेकिन मैं वहाँ से चला आया और फिर कभी नहीं गया। उस दिन से मैंने 'ट्यूशन' का विचार त्याग दिया।

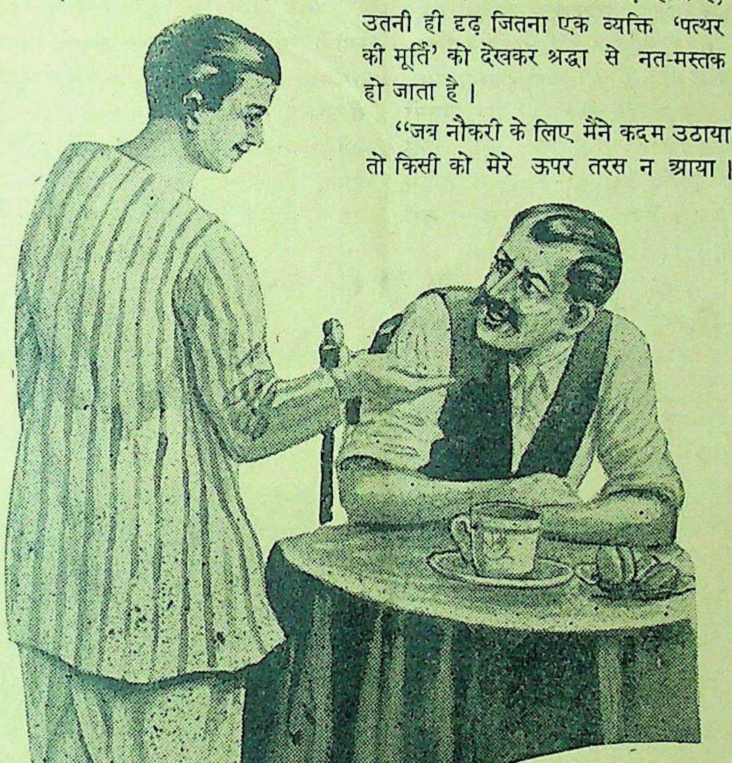

डाक्टर मुस्कराया—बोला—बूढ़ा नहीं है, कुल चालीस की तो उमर ही है।

"कुछ लोगों की कोठी में काम की तलाश में गया। भारी तोंदवाले सेठ देखने में बड़े सहृदय और दयालु जान पड़ते हैं, पर वास्तव में उनको दुनिया में रुपयों से बढ़कर कुछ भी प्यारा नहीं। वे अपनी गद्दी पर बैठकर रुपये गिनते हैं, नौकरों को डाँटते हैं। हुकूमत करना वे भली भाँति जानते हैं। मैं एक सेठ जी के पास बैठा था, उन्होंने नौकरी देने का आश्वासन दिलाया था। मेरे सामने वहाँ दो-चार व्यक्ति लँगोट लपेटे, चिमटा लिये, माथे पर तिलक लगाए आकर खड़े हो गये। सेठ जी के यहाँ से उन्हें भरपेट खाना मिला और पैसे। लेकिन ये होते क्या हैं—लुच्चे और बदमाश। खाना पेट भर मिल जाता है, पैसा भी मिल ही जाता है उसका गाँजा और चरस पीते हैं। सेठ जी ने मुझसे पूछा!" "आप क्या काम करेंगे?" मैंने कह दिया, कि मैं सब काम कर सकता हूँ,—हिसाब का, माल-असबाब का, दूकान का, जो काम भी वे मुझ से लेना चाहेंगे! किन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, तो उन्होंने मुझे देखने से साफ इनकार कर दिया। यदि मैं ब्राह्मण होता, तो मुझे नौकरी वहाँ मिल ही जाती। इसमें राज यह था कि ब्राह्मणों को देने से पुण्य होता है या उनकी आत्मा को मरने पर शान्ति मिलेगी। जब कि और लोगों से उनको भय रहता है, व्यापार में घाटा उठाने का। इस प्रकार मैं बराबर अपनी नौकरी की तलाश में रहा।

"मुझे उन पूँजीपतियों पर क्रोध आता है जो मोटर में बैठकर गुलछर्रे उड़ाते हैं। बड़ी बड़ी दावतें देते हैं। बँगले में आराम की नींद सोते हैं। उनको देखकर, कौन कह सकेगा कि भारत में करोड़ों आदमी नंगे-भूखे रहते हैं। न उन्हें तन ढाँकने को कपड़ा मिलता है, न खाने को भोजन। किन मुसीबतों से वे अपनी जिन्दगी पूरी करते हैं। हजारों बच्चे बिना दूध के तड़प-तड़प कर मर जाते हैं। औरतों को अपना शरीर तोपने को पूरा कपड़ा मुअस्सर नहीं होता। इनकी कल्पना से मेरे हृदय में पूँजीपतियों के विरुद्ध विरोध की भावना दिन-पर दिन प्रबल होती जा रही थी। धीरे धीरे मेरे हृदय की आशाएँ और उमंगें मिटने लगीं। मैंने पाया जीवन में भारी संघर्ष—हर तरफ उत्पीड़न—हर तरफ दुश्चिन्ता। इनका निर्माण हमने किया है—हम मानवों ने, जो अपने को समर्थ समझते हैं।

तब कुछ महीनों की निरन्तर दौड़-धूप के उपरान्त, मैं माँ को घर छोड़, नौकरी की तलाश में बाहर निकला। कहीं मेरी सुनवाई न हुई—न हुई। बहुत थक गया था। करीब में एक रेस्तराँ था, कई

मर्तबा मैं उसके इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। चार पैसे देकर चाय पीने का लोभ मैं संवरण न कर सका। मैं अन्दर चला गया। मैंने चाय मँगाकर पी। मेरे बगल में मेज पर एक सोने की घड़ी रक्खी हुई थी। वहाँ और कोई था भी नहीं। मैं उसे उठाकर चल दिया। ऐसा करने को तो मैंने किया। पर साथ ही प्राणों में एक अजीब तरह का भारीपन मालूम हुआ। मैंने महसूस किया कि मेरे हृदय की कटुता, जिसे अब तक दबाने का मैं बराबर प्रयत्न करता रहा, आज प्रबल हो गई। पिछले दो-तीन महीने के भीतर मेरे अन्दर परिवर्तन हो रहा था; और मैं समझ नहीं पा रहा था। आज मैं समझ गया।

रेस्तराँ से अभी मैं दस-पन्द्रह कदम गया था; कि पीछे से दो तीन आदमियों ने दौड़ कर मुझे पकड़ लिया। उनके 'चोर-चोर' कहकर चिल्लाने की भारी आवाज से कुछ ही देर में बहुत से आदमी इकट्ठे हो गये। मैं डरा नहीं उनसे। सरलता से घड़ी को लौटा दिया। किसी ने कहा—"चोर है। बदमाश है। निरहकट है। बाबू बना फिरता है। कमीना है। पुलिस में दे दो। ठिकाने लग जायेगा......। तरह तरह की बातें वे करते रहे, और अन्त में दो कानस्टेबिलों ने आकर मुझे घेर लिया। दो दिन मैं हवालात में बन्द रहा। मेरे विचारों में परिवर्तन हो रहे थे। मानवता का मेरे अन्दर से ह्रास हो रहा था और पशुता उसका स्थान लेती जा रही थी। मैं जानता हूँ, मेरे अन्दर इन दिनों पशुता जग उठने के कारण क्या हैं—मेरे जीवन की असफलतायें और संघर्ष! मैं लड़ता लड़ता थक गया था। अन्त में मैं अपने भीतर की कमजोरियों को छिपा न सका...।

"मुझे छः महीने की सजा हो गई। इस बीच, मैं जो कुछ था या बनना चाहता था, उसकी कल्पना मैंने नहीं की। मेरे प्राणों ने हिंसा को स्वीकार कर लिया। साथ ही मैं सोचता रहा, अपनी माँ के विषय में, उसने मेरे प्रति क्या धारणा बना ली होगी? और मैं कुछ पीड़ित था, इस भावना से, कि यहाँ से निकलने पर मैं चोर कहलाऊँगा। लोगों की आँखों में मेरे प्रति घृणा के भाव होंगे। गेहूँ में घुन लग जाने से जिस प्रकार उसके भीतर का पदार्थ खाली हो जाता है, वैसे ही इस विचार ने मेरे आदर्शों को खा डाला और मैं छूँछा रह गया।

छः महीने बाद मैं छूटकर ज्यों ही बाहर आया तो मुझे मालूम हुआ, कि दो सप्ताह पूर्व मेरी माँ का देहान्त हो चुका।

दो सप्ताह—पूरे पन्द्रह दिनों बाद मुझे एक मिल में काम मिल गया। काम था कुलियों की देख-रेख करना और उनकी हाजिरी लेना। मैंने काम थाम लिया। किन्तु मेरे भीतर की कटुता बाहर निकलने की बार बार चेष्टा कर रही थी और मैं उचित अवसर की ताक में रहने लगा।

मैंने वहाँ जो कुछ देखा, उससे मेरा अनुभव और अधिक कटु हो गया। शोषण-उत्पीड़न! यही मेरे चारों ओर था। बल निर्बल पर हावी रहता है। जो कुछ है रुपया है, और इस रुपये ने मनुष्य का ईमान, उसका कर्त्तव्य, उसका व्यक्तित्व उसकी आत्मा—सब कुछ खरीद ली है। मजदूर १८-२० घंटे काम करते थे। सामान बाहर भेजा जा रहा था। मिल मालिकों को अच्छी आमदनी हो रही थी। बड़ी-बड़ी दावतें उड़तीं, पार्टियाँ होतीं; लेकिन यह सब किसके बूते पर? मजदूरों की गाढ़ी मेहनत की कमाई का पैसा इस तरह फूँका जा रहा था। लोग भूखों मर रहे थे, घर-घर में महँगाई के कारण पेट की ज्वाला दहक रही थी, पर वे लोग दिन पर दिन मोटे होते जा रहे थे।

एक दिन मजदूरों ने काम रोक दिया। उनमें आग को फैलानेवाला मैं था। उनमें चेतना की चिनगारी मेरी ही लगाई हुई थी। भारी असन्तोष फैलता गया। मैंने उनका नेतृत्व किया। उन्हें जीवन का मार्ग बताया। लेकिन उसी समय एक दुर्घटना और हुई। सुमेर की जवान पत्नी नन्दा लापता थी, और सुना जा रहा था, कि किसी अधिकारी का इसमें हाथ था। सुमेर कमजोर था। काम भले ही वह २० घंटे कर ले, लेकिन लड़कर विरोध करने की ताकत उसमें नहीं थी। मैंने उसे विश्वास दिलाया, कि उसकी पत्नी का पता मैं लगा दूँगा। जिस व्यक्ति पर मुझे सन्देह था, मैं उसके पास गया और उससे स्पष्ट शब्दों में मैंने पूछा। किन्तु उसने कुछ भी बताने से इन्कार कर दिया। समय के साथ साथ मेरा विचार उस पर स्थिर होता गया। पाँच दिन बाद वह मरी पाई गई। मैंने सुमेर की तरफ से बदला चुका लिया। उस अधिकारी की मौत मेरे हाथों से ही शायद लिखी थी। पिछले कुछ दिनों से वह नन्दा के पीछे लगा हुआ था। कई प्रलोभन दे चुका था।

न्याय का चक्र इतना संकुचित है, कि भला नन्दा की मौत का बदला क्या लेता?

मुझे फाँसी की सजा हुई।...

बाद में सजा घटाकर १८ वर्ष की कर दी गई। इसका कारण यह था, कि मरने के पूर्व नन्दा के हत्यारे ने अपराध स्वीकार कर लिया था। इस प्रकार अठारह वर्ष बाद, जब मैं बाहर निकला, तो देख रहा हूँ, दुनिया बदल गई है। संघर्ष बढ़ गया है। अमीरों और गरीबों में होड़-सी लगी है।

मेरी आँखों की रोशनी कम हो गई है। वाक्-शक्ति भी अब उतनी न रही, क्योंकि मैं अन्य कैदियों से अलग, दूर रखा गया था। मेरे पास किसी को आने का हुक्म न था, किसी को बोलने का हुक्म न था। वहाँ मैं 'खूनी' था...खूनी!

अन्य कैदी भी मुझे देखकर, फुसफुसाई हुई आवाज से इशारे किया करते थे—'वह खूनी...।' उन्हें भी मुझ से भय था। प्रथम दिवस जब मैं जेल से मुक्त किया गया था, उसी समय से मुझ में अपने प्रति घृणा हो रही है, और अब प्रयत्न सदा यही रहता है, कि मैं इस व्यावहारिक दुनिया से अपनी दृष्टि सदा के लिए हटा लूँ।

* * *

उसकी डायरी समाप्त कर मैंने रख दी। डाक्टर मेरी तरफ गौर से देखता रहा। शायद इस कहानी के बाद, मेरे ऊपर क्या देखना चाहता था। और की आकृति, उसके पैरों अपना भारी प्रभाव छोड़ गये

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था. १८२६
स्वदेशी
[illegible] १८६६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ्त
युकॅलिप पेन बाम
दादकामरहम
[illegible]लकर बंधु
बम्बई ४

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफासफाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाको
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी
* जुकाम
* यक्ष्मा
* ब्रांकाइटिस
* निमोनिया
* पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि-विक्रेताओं से न मिले तो कृपया हमें लिखें:—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलक

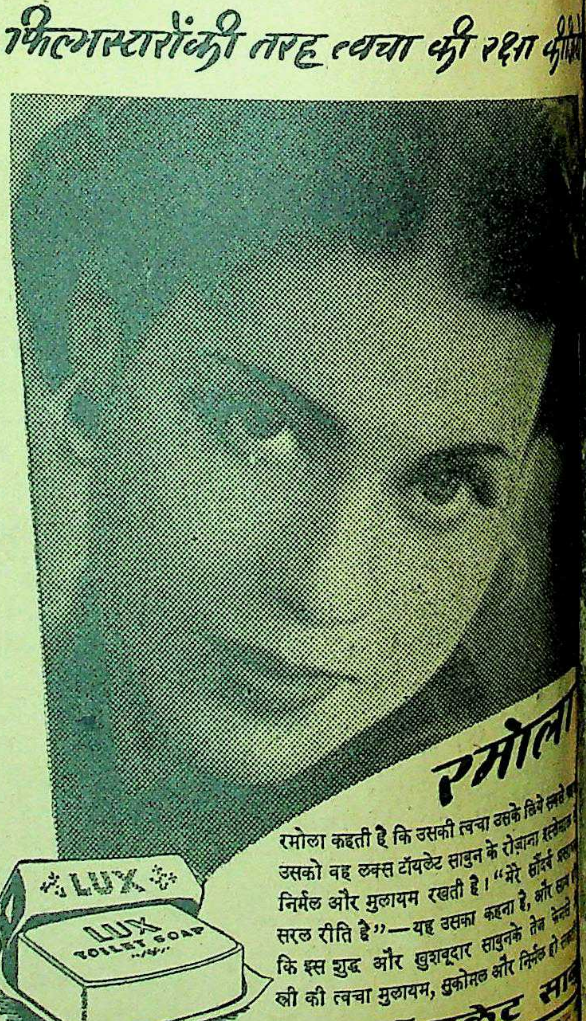

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा की
रमोला
रमोला कहती है कि उसकी त्वचा उसके लिये सबसे
उसको वह लक्स टॉयलेट साबुन के रोज़ाना इस्तेमाल
निर्मल और मुलायम रखती है। "मेरे सौंदर्य
सरल रीति है"—यह उसका कहना है, और
कि इस शुद्ध और खुशबूदार साबुनके तेज फेनसे
ली की त्वचा मुलायम, सुकोमल और निर्मल हो
लक्स टॉयलेट सा

सुप्रसिद्ध अभिनेत्री विवियन ले कौन है ?

वर्ष की बालिका का अभिनेत्री बनने का स्वप्न पूरा

लेखिका, श्रीमती सुशीला निगम

अँगरेजी चित्र देखते हैं वे नेत्री विवियन ले के नाम परिचित हैं। उसका जीवन सुन्दर उदाहरण है कि यदि यों को आरम्भ से ही स्थितियाँ मिल जायँ तो वे उन्नति के शिखर पर आरूढ़ हो विवियन ले 'गान विद दि विंड' हारा का ऐतिहासिक अभि- का अभिनय-संबंधी सर्व- प्राप्त कर चुकी है।

* *

ले जब आठ वर्ष की थी तो आगन्तुक ने आकर उससे होकर वह क्या बनना चाहती ने बड़े तपाक से उत्तर नेत्री"। कितने ही बालक- खेल में अनेक स्वाँग करते ले की तरह बाल्यावस्था ने अभिनय-कला को बनाया हो और करने में उसकी भाँति हो।

* *

पिता शेयरों की दलाली उसके पुरखे फ्रांसीसी थे। आयरिश थी। विवियन १९१३ में दार्जिलिंग में लन्दन में विद्याभ्यास करने से पूर्व वह अपने माता-पिता के साथ संसार के अनेक भागों के भ्रमण कर चुकी थी।

१४ वर्ष की अवस्था में वह इटली के एक फ्रांसीसी कानवेंट में भरती हुई। उसने नाट्यकला और साज-सज्जा की ओर विशेष ध्यान दिया। कुछ समय बाद उसने पेरिस के एक प्रसिद्ध बालिका-विद्यालय में प्रवेश किया। यहाँ भी वह अभिनय-कला की शिक्षा प्राप्त करती रही।

कुछ दिन बवेरिया में बिताकर वह आयर्लैंड में अपनी माँ के घर पहुँची। यहाँ उसे समवयस्क युवक-युवतियों के साथ घुड़-सवारी और शिकार करने का अवसर प्राप्त हुआ, किन्तु यहाँ का सामाजिक जीवन उसे पसन्द नहीं आया। वह तुरन्त लन्दन चली आई और और नाट्यकला की शाही एकेडेमी में भरती हो गई।

एक दिन एकेडेमी की एक सहपाठिनी ने उसे बताया कि फिल्म-कम्पनियों में एक वाक्य बोल सकनेवाली लड़कियों को "एक्सट्रा" में भरती कर लिया जाता है और उन्हें प्रतिदिन एक गिनी के हिसाब से वेतन दिया जाता है। बस दोनों लड़कियाँ भाग्य आजमाने के लिए चल पड़ीं। विवियन ने पहला चित्र तैयार होने के ही समय असिस्टेंट डाइरेक्टर को बता दिया कि वह "एक्सट्रा" मात्र नहीं है, बल्कि अभिनय भी कर सकती है। इस प्रकार उसे कई छोटे-छोटे पार्ट अदा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

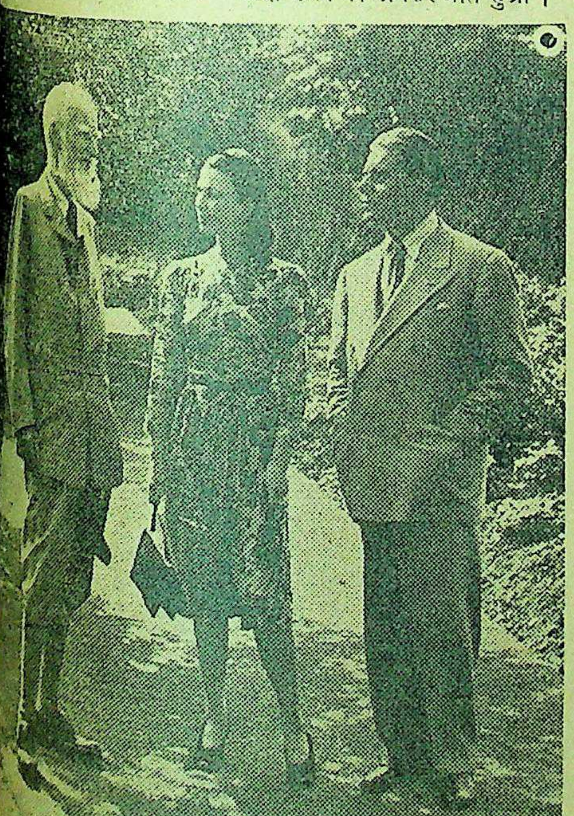
विवियन ले 'डाक्टर्स डिलेमा' नाटक में अभिनय करने के पूर्व कलाकार जार्ज बर्नार्ड शा से परामर्श कर रही है।

अभी विवियन के मन में अभिनय-कला को पेशे के रूप में ग्रहण करने का विचार नहीं उत्पन्न हुआ था। वह तो केवल अभिनय की शिक्षा ही ग्रहण करना चाहती थी। परन्तु कई फिल्म-निर्माताओं का ध्यान उसकी ओर आकृष्ट हो चुका था। लंदन में विवियन को अपने प्रथम नाटक में सफलता मिलते ही सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता अलेक्जेंडर कोर्डा ने उसे ५०,००० पौंड के कंट्राक्ट पर लेना स्वीकार किया। इस छोटी, छरहरी, भूरे बाल और नीली आँखोंवाली युवती में कोर्डा को वह प्रतिभा दिखाई दी, जिससे प्रथम श्रेणी की अभिनेत्रियाँ बना करती हैं।

* * *

इस प्रकार अलेक्जेंडर कोर्डा ने विवियन ले के साथ अपना पहला चित्र "फायर ओवर इँग्लैंड" तैयार किया। इसके बाद और कितने ही चित्र उन्होंने तैयार किये। परन्तु जिस चित्र ने विवियन ले को संसार की अभिनेत्रियों की रानी बना दिया वह "गान विद दि विंड" था। इसमें उसने 'स्कार्लेट ओ हारा' का अमर अभिनय किया। इस अभिनय के लिए उसे अमरीकी चलचित्र एकेडेमी का सर्वोत्तम पारितोषिक प्राप्त हुआ। उसने लारेंस आलीवेर के साथ "हेमलेट" के प्रदर्शन में ओफीलिया का अभिनय डेन्मार्क में किया। इसके अतिरिक्त उसने उसी अभिनेता के साथ अमेरिका में "रोमियो-जूलियट" के प्रदर्शन में भाग लिया। साथ ही उसने लेडी हेमिल्टन में बहुत अच्छा काम किया। इस चित्र में लारेंस आलीवर ने लार्ड नेलसन का अभिनय किया था।

इसके उपरान्त वह आलीवर के साथ, जिससे उसने विवाह कर लिया था, विवियन ले इँगलैंड वापस चली आई। यहाँ उसने बर्नार्ड शा के सुप्रसिद्ध नाटक "डाक्टर्स डिलेमा" के प्रदर्शन में भाग लिया। युद्ध छिड़ने पर विवियन का पति आलीवर वायुसेना में भरती हो गया और वह स्वयं मित्रराष्ट्रीय सैनिकों के मनोरंजन के लिए विभिन्न मोर्चों का दौरा करने गई।

जो भी हो, आठ वर्षीय बालिका का अभिनेत्री बनने का स्वप्न भली भाँति सत्य सिद्ध हुआ है।

एण्डरूजकी प्रतीक्षा कीजिये!

अब वह दिन दूर नहीं जब सप्लाईकी व्यवस्था सरल होगी और एण्डरूज लीवर साल्ट काफी परिमाणमें प्राप्त हो सकेगा। यह वही एण्डरूज है जिसे आप अर्सेसे जानते हैं, जो पूर्ण विशुद्ध है, वैज्ञानिक तथा प्रस्तुत क्रिया स्वास्थ्य विज्ञानके नियम पर आश्रित है।

तब तक कृपया सब्र कीजिये......प्रतीक्षाके फलस्वरूप एण्डरूजसे आप लाभ उठायेंगे। आन्तरिक सफाई द्वारा हर रोज स्वास्थ्य वृद्धि करनेके लिये हर जगह इसकी प्रशंसा हो चुकी है।

एक सुन्दर दिन आप पुनः ताजगी और स्फूर्तिदायक एण्डरूजके ग्लासका आनन्द ले सकेंगे।

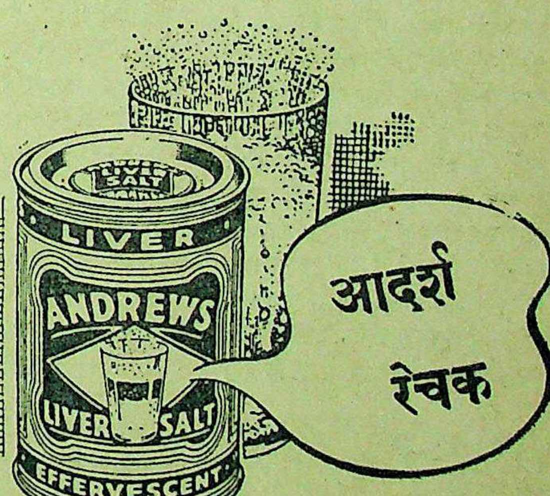

आपका सबेरे का

ANDREWS

एण्डरूज

आन्तरिक सफाई के लिये

आन्तरिक सफाई स्वास्थ्य का प्रथम नियम है

श्रीमती सरोजिनी नायडू कांग्रेस वर्किंग कमेटी में शरीक होने के लिए पूना गई थीं।

मातृमण्डल

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय
कत्रियों में अग्रणी महिला हैं।

सुखी वैवाहिक जीवन का रहस्य क्या है ?

दैनिक जीवन में छोटी बातों पर ध्यान जरूरी क्यों ?

लेखक, श्री रमाकान्त त्रिपाठी, बी० ए०

प्रायः लोग यह समझते हैं कि विवाह के पश्चात् सुखी जीवन बहुत थोड़े दिनों तक रहता है। लेकिन यह विषय गम्भीरतापूर्वक विचार करने का है। यदि जीवन में हम कुछ साधारण-सी गलतियों को भी सुधार सकें तो उतनी कठिनाई नहीं होती। कुछ और अधिक सचेत होने पर तो विवाह-बन्धन एक ऐसी शक्ति का काम करता है जो हमें कार्यक्षेत्र के लिए तैयार करती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम उदारता सीखें और इस बात पर ध्यान रक्खें कि कोई भी ऐसा काम नहीं होना चाहिए जो बीच में रोड़ा न अटका सके, अन्यथा हमारा जीवन क्लेश और कष्टों में ही बीतता रहेगा।

सफल दाम्पत्य जीवन के लिए हमें छोटी-छोटी बातों पर एक तो ध्यान ही नहीं देना चाहिए और यदि ऐसा करना ही पड़े तो चाहिए कि आपस में उसे सुलझा लिया जाया करे। तभी हम सुखी रह सकते हैं।

एक परिवार की बात है कि पति महोदय आमतौर पर मञ्जन करने के बाद मंजनदानी का ढक्कन खुला ही छोड़ देते थे। श्रीमती जी को इससे चिढ़ थी। उन्होंने पति देवता को समझाया। इस पर उन्होंने उसे इतना कस कर बन्द करना प्रारम्भ किया कि उसके जल्दी खुलने ही में भी दिक्कत होने लगी। बाद को उन्होंने आपस में समझौता कर लिया कि ऐसा काम हो जिससे किसी को न तो चिढ़ ही हो और न कष्ट ही। फिर तो कष्ट की कोई बात ही नहीं रही। हाँ, कुछ समय के लिए यह एक विनोद भी हो गया जिसमें दोनों एक दूसरे के प्रति कुछ अधिक खिंच गये। जीवन में कुछ क्षण, कुछ घटनाएँ ऐसी भी होनी चाहिएँ जिससे विनोद हो सके क्योंकि उनसे एक नई स्फूर्ति पैदा होती है।

पति-पत्नी एक दूसरे की गुप्त बातों के लिए काफी सचेत रहते थे। फिर भी एक दूसरे के कमरे में बिना सूचना दिये न जाते थे। एक दूसरे का पत्र भी नहीं पढ़ते थे, यद्यपि दोनों इस बात को जानते थे कि ऐसा करने से कोई हानि नहीं। एक का दूसरे पर विश्वास था।

स्त्री और पुरुष के कमरे अलग-अलग होने चाहिए और उनके मनोरञ्जन के साधन भी। मेरे कहने का तात्पर्य यह नहीं कि वे पूर्णतया एक दूसरे से घुलें-मिलें नहीं, अपितु यह कि जीवन में एक दूसरे का आदर करना सीखें। एक दूसरे के व्यक्तिगत विचारों तथा कामों की स्वतन्त्रता का ध्यान रक्खें। इसका परिणाम यह होता है कि एक दूसरे के प्रति और अधिक आकर्षित होते हैं, उनमें प्रेम बढ़ता है।

एक परिवार में पति-पत्नी सोने जाने के पहले एक दूसरे को पुकार लेते थे, या यों कहिए कि अपने काम की सूचना दे देते थे जिससे दोनों निश्चिन्त रहते थे। पति महोदय श्रीमती जी के कुछ मित्रों को पसन्द नहीं करते थे और वह भी पति महोदय के कुछ मित्रों की मित्रता नहीं चाहती थीं। मित्रता इतनी आवश्यक नहीं कि जिससे दाम्पत्य जीवन में स्त्री-पुरुष में झगड़ा पैदा हो। अच्छे मित्रों को एक तो कोई यह नहीं चाहेगा कि अलग किया जाय, फिर यदि ऐसा हो भी तो आपस में शांतिपूर्वक इस बात का निपटारा कर लेना चाहिए।

ऐसे निपटारों के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता ऐसी इच्छा की है जो समझौता चाहती हो। इसमें किसी भी ओर से बहुत बड़े आत्म-त्याग की आवश्यकता नहीं। वैवाहिक-जीवन में त्याग कोई स्थान नहीं रखता क्योंकि वह तो अपनी अपनी विनम्रता है और विनम्रता मनुष्य को महान् बना देती है।

कौटुम्बिक जीवन में कुछ काम ऐसे भी हैं जिन पर स्त्री या पुरुष-विशेष का ही अधिकार समझा जाता है। पुरुषों की प्रायः रुपये-पैसे के मामले में तथा स्त्रियों की अन्य घरेलू बातों में चला करती है। परन्तु अधिकांश स्त्री-पुरुष इस बात को समझने में असफल रहते हैं और यह चाहते हैं कि हर एक बात में उन्हीं की चले। ऐसी स्थिति में एक दूसरे से परामर्श कर सकते हैं लेकिन जबरदस्ती अपनी-अपनी चलाना ठीक नहीं है।

मनुष्य जब तक स्वतन्त्र रहता है, पैदा करता है और मनमाना खर्च भी। विवाह के उपरान्त यदि दोनों आपस में समझौता करके, बजट बना कर हिसाब से खर्चा न चला सकें तो जीवन दुखी हो जाता है। प्रत्येक को अपने ऊपर नियन्त्रण रखना ही चाहिए कि जिससे समझौते का अनुशासन भंग न हो। साथ ही ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि किसी एक की प्रसन्नता बिलकुल भारी हो जाय।

आलस्य का स्थान भी जहाँ तक हो सुखी जीवन में नहीं होना चाहिए। थोड़ी-सी असावधानी से प्रायः बड़े बड़े अनर्थ हो जाया करते हैं। थोड़े समय का आलस्य-त्याग बड़ी से बड़ी सुविधा प्रदान करता है, यदि उचित समय पर काम किया गया हो तो ?

पति-पत्नी के बीच किसी भी मामले में किसी तीसरे व्यक्ति का थोड़ा भी दखल नहीं होना चाहिए। जो कुछ भी तय करना हो वह आपस में ही कर लें। छः कानों से अधिक में पड़ी बात फैल जाती है और उसका परिणाम अच्छा नहीं होता। जहाँ तक हो अपने बच्चों के सामने भी कोई उनके सम्बन्ध की या निजी बातें नहीं करनी चाहिए।

यह सब सुखी जीवन की छोटी-छोटी बातें मालूम पड़ती हैं परन्तु वास्तव में यही हैं बहुत बड़ी। यदि इन्हीं पर ध्यान रक्खा जाय तो सुख की एक बहुत बड़ी कमी को पूरा किया जा सकता है। कुछ और भी दाम्पत्य जीवन की कठिन समस्याएँ हैं जिन में एक जादू-भरी समझ है जो किसी भी दम्पति को प्रेम के बन्धन में बाँधने में समर्थ होती हैं।

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५
गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियो
बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डि
(सर्टिफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या
प्राप्त करें। नियमावली मुफ्त

आर्यन पेपर मिल्स लिमिटेड
हेड आफिस : १२ चौरंघी स्कायर कलकत्ता
मिल तथा बगीचा : महूदा (बो० यन० रेलवे)

- इँगलैंड से आधुनिक ढंग की मशीने मँगाने के लिए आवश्यक—पेशगी भेजी जा चुकी है।
- कम्पनी की निजी जमीन में पेपर मिल्स के लिए घास लगाना आरम्भ कर दिया गया है।
- मैनेजिंग एजेन्ट जब तक टैक्स रहित ५% साधारण हिस्सों पर तथा ६% असाधारण हिस्सों पर लाभ वितरित न कर देंगे, कोई पारिश्रमिक नहीं लेंगे।

निर्धारित मूल्य पर ही अब भी हिस्से मिल रहे हैं
—रुपया अदा करने का तरीका—

साधारण हिस्से प्रत्येक १०) के :—१) प्रति हिस्सा. आवेदन पत्र के साथ। १) प्रति हिस्सा एलाटमेन्ट के दिन से १ मास के अन्दर तथा शेष रक़म चार बराबर किश्तों में।

असाधारण हिस्से १००) के प्रत्येक (टैक्स रहित क्यूमुलेटिव) १०) प्रति हिस्सा आवेदन पत्र के साथ तथा शेष एलाटमेन्ट होने की तिथि से ७ दिन के अन्दर।

शेयरों के लिए आवेदन पत्र के साथ १) प्रति आवेदन पत्र आना चाहि
जहाँ हमारे एजेन्ट नहीं हैं वहाँ हिस्से बेचने के लिये एजेन्टों
आवश्यकता है।

पूँजी लगाने के सम्बन्ध में सरकार की यह अनुमति प्राप्त हो चुकी है
उतनी रकम जितनी कि केन्द्रीय सरकार की राय में (देशी रियासत शामिल
पर बादशाह के प्रतिनिधि की राय से) परिस्थितियों के कारण किसी अनि
समय तक काम में लगाने की आवश्यकता न हो सुरक्षित जमानतों में उ
तक लगी रहेगी जब तक उचित समय रुपया लगा देने का नहीं आ जायगा।
अनुमति देने के साथ सरकार इस प्रकार की कोई जिम्मेदारी अपने ऊपर
लेती है कि कम्पनी के बारे में जो स्टेटमेंट दिया गया है वह सत्य है
कम्पनी की दृढ़ता की सरकार जिम्मेदार है।

हिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

ारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

पड़ा। उसने कहा—हरीश.....

दादा और हम दोनों एक ही हाड़-मांस से बने हैं। अपने ही हाड़-मांस का अनादर मैं उन्होंने मेरे घर का ही बहिष्कार नहीं किया किया है। व्यंग्यात्मक हँसी हँसते हुए उसने दादा को परित्याग नहीं कर सकता। मेरी तो सबसे ऊँची, सबसे बड़ी, वही, हैं। उनसे कह को आऊँगा।

—उन्हीं ने मुझे स्टेशन भेजा था। किसी दरवाज़े से आकर मत लौटो भैया। बात

सुरेश ने रोते हुए कहा—बहू बहू तुम

में आँसू भरकर कुछ कहना चाहा किन्तु उठे और गला भर आया।

कहा—बहू तुमने कई बार मुझे जीजा जी मेरा कहना मानो।

कि सूखे बाल बिखराये हुए मलिन वेश, शोक पुकारती चली आ रही है। मानो सती दक्ष से निकली हो। वह अत्यन्त हतप्रभ- ममता और समाज के निर्मम शासन उसके रहे थे। वह पाषाण पर खुदी हुई विषाद की। हरीश का हाथ पकड़कर उसने खींचा र चलो। बहू को गाड़ी पर से उतार लो।

—उसको तो तुम्हीं उतारो। वह आज इस घर नहीं है।

उसने कहा—जो भी हुआ, हुआ। आओ चलो।

कि लक्ष्मी की दृष्टि में भ्रातृ-स्नेह उसे बुला कुलाभिमान और जाति-समाज का भय उसकी। कितने दिन के बाद स्नेह का भिखारी होकर द्वार पर आया है; किन्तु वह भिक्षा उसे नहीं के मुख से नपे-तुले शब्द निकल रहे हैं। के आवरण में ढँके हुए से हैं। यह शब्द है? कदापि नहीं........

कहा—कोई बात नहीं है दीदी। हमने अन्याय गये थे कि तुम्हारा भी समाज है, तुम्हारी भी है और उसमें तुम्हें रहना है। कोई बात नहीं।

देखकर हरीश ने कहा—जीजा जी आप मुझे अतएव ड्राइवर को कहिए कि हम लोगों को लौट आये। दादा को समझा दो कि यदि हो गई हो तो उसे गंगाजल से पवित्र हँसी हँसते हुए उसने फिर कहा—दीदी हमारी है। हम इन 'दारु भूतो मुरारिः' की पूजा ही

ड्राइवर से कहा—चलो ले चलो हमारे बँगले पर। आदेश को अमान्य न कर सका। गाड़ी चल दी। खड़ा रह गया। लक्ष्मी को मूर्च्छा आ गई और पड़ी। आँखों से वारिद-वारिधारा बरस रही

१५

साफ-सुथरे थे। पुराने द्वारपाल महानन्द करते हुए कहा—"अच्छे तो हो भैया?"

तुम तो अच्छे हो महानन्द दादा?

हुए उसने कहा—अब इस बूढ़ी वयस में

—क्यों, क्यों, क्या हुआ?

की माँ गई, छोटे-छोटे बच्चों का भार आँखों में आँसू भरते हुए उसने कहा।

समवेदना प्रकट की। उसने देखा कि न तो वैसी है न अड़ोस-पड़ोस के बँगले ही वैसे रह गये हैं। उनमें बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है। उसने एक लम्बा निश्वास छोड़कर पुकारा—विमला!

विमला गृह की निस्तब्धता से स्तम्भित थी। पुरानी स्मृति जाग उठी थी। हरीश ने कहा—इस तरह खड़ी मत रहो। अपना घर-द्वार देखो। वस्तुएँ सँभाल कर रक्खो।

महानन्द की ओर लक्ष्य करके उसने कहा—महानन्द दादा एक ब्राह्मण रसोइया कहीं से ढूँढ़कर लाओ। मिलेगा?

महानन्द ने कहा—सो हमने सब ठीक कर रक्खा है। अभी नहाकर आ रहा है।

बहुत अच्छा। हाँ भाई, सब वस्तुएँ गाड़ी में लदी आ रही हैं उनको उतरवा लेना।

बहुत अच्छा भैया। क्या और भी आदमी चाहिए। मैंने बिसनू को भी रख लिया है।

हरीश ने सोचकर कहा—एक दासी भी चाहिए। बस तुम्हारी पेंशन; जितने दिन हम यहाँ रहें हमारे पास ही रहना और अपने बच्चों को देखना। हम लोग बहुत असहाय हैं। अब हमारा यहाँ कोई नहीं है।

उसने आँखों में आँसू भरकर कुछ कहना चाहा; परन्तु कह नहीं सका।

सामान से भरी गाड़ी आ गई। संग में विनोद था।

हरीश ने कहा—बँगला तो नहीं ढूँढ़ना पड़ा?

विनोद ने कहा—नहीं सब कोई जानते हैं। गाड़ीवाला भी बहुत पहले से आपका बँगला जानता है और अब तक नहीं भूला है।

सब कोई जानता है? कोई नहीं भूला? हाय रे अभाग्य, दीदी ही भूल गई।

विनोद ने कहा—कौन वस्तु कहाँ रक्खी जायगी, दादा? बताइए तो।

हरीश ने कहा—लेबोरेटरी ऊपर के कमरे में रहेगी। अपनी भाभी की वस्तुएँ और अपनी वस्तुएँ तथा हमारी वस्तुएँ भी ऊपर ही चालान कर दो।

एक घंटे में सब वस्तुएँ जहाँ की तहाँ पहुँच गईं। विनोद कमरे में बैठा पंखे की हवा खा रहा था। विमला स्नान करने गई थी। वैसे तो विमला को कोई कठिनता नहीं प्रतीत हुई, किन्तु पहले का जैसा भरा-पूरा घर न होने से वह बड़ी व्याकुलता का अनुभव कर रही थी। भैरव का स्मरण कर एक बार वह सिहर उठी। किन्तु भैरव अब कहाँ है? वह तो सम्भवतः पृथ्वी का भार हलका कर गया! फिर एक बार हृदय काँप उठा।

हरीश अपने कमरे में माइक्रसकोप फिट कर रहा था। विनोद ने कहा—पहले नहा लो, दादा। जल-पान कर लो फिर यह सब करो।

राइट ओ। कहकर हरीश उठ पड़ा। पेकिंग बक्स खोलकर माइक्रसकोप लेकर फिर अस्त-व्यस्त हो गया। इधर विमला जँगले से फुलवारी की ओर देख रही थी। उसे स्मरण हो आई बहन-भाइयों की बाल-लीला। सुरेश की हँसी-मसखरी—कैसा आनन्द था। क्या जीवन सर्वस्व देकर भी वह दिन लौटाकर लाये जा सकते हैं?

स्टोव और केटली लेकर विनोद कमरे में आया। स्टोव जलाकर उसने पूछा—चाय के लिए जल कहाँ मिलेगा, भाभी?

विमला ने कहा—सामने गंगा भरी हैं, ले आओ जाकर। नहीं तो अपने दादा को बुलाओ। आकर दें।

विनोद ने कहा—जितनी देर में उन्हें हम बुलायेंगे उतनी देर में हम स्वयं जल ले आयेंगे। कोलम्बस ने अमरीका को खोज लिया; हम जल को कल भी नहीं खोज पायेंगे?

विनोद जल लेने, गया। हरीश का माइक्रसकोप फिट हो चुका था। चाय का जल गर्म हो रहा था। विनोद प्याले धो रहा था। बँगले के पेड़ों पर पक्षी मधुर कलरव कर रहे थे। ऐसा कलरव विनोद ने कभी नहीं सुना था। वह ध्यानमग्न था। इतने में द्वार पर आकर लक्ष्मी ने पुकारा—हरीश!

इस पुकार से हरीश चौंक उठा। लक्ष्मी को लेने को आगे बढ़कर विमला पहुँची। उसने कहा—आओ दीदी आओ। दीदी विस्मित होकर नवयुवक विनोद को देख रही थी। उसने गम्भीर स्वर में कहा—हरीश कहाँ हैं?

इधर गये हुए हैं। विमला ने कहा।

आगरा में राशनिंग और कन्ट्रोल

आगरा शहर में गल्ले व कपड़े का कन्ट्रोल बिलकुल असफल हुआ है। अगर सरकार जनता के वास्ते कपड़े व अन्न का प्रबन्ध नहीं कर सकती तो उसे कन्ट्रोल को खत्म कर देना चाहिए। इस समय प्रान्तीय सरकार कन्ट्रोल को इस प्रकार चिपकाये हुए है जैसे कि एक बँदरिया अपने मरे हुए बच्चे को चिपकाये फिरती है। आगरे में १६ जून से राशनिंग शुरू हुआ है। पहले महीने में ६ छटाँक गेहूँ, २ छटाँक चावल, २ छटाँक चना और २ छटाँक जौ दिये थे। यह एक आदमी के वास्ते काफी था। इसके अलावा इस स्कीम में गाय, बैल, घोड़े आदि जानवरों के वास्ते कोई व्यवस्था न थी। आगरा जिले में पिछली रबी की फसल रुपये में पाँच आना मुश्किल से हुई है। उसके फलस्वरूप देहातों में गेहूँ २॥ सेर, चना ३ सेर और जौ ३। सेर बिक रहे हैं। उस पर भी लोगों को मुश्किल से नाज मिल रहा है।

अधिकारियों ने आगरा की मंडी का सारा चना व जौ व गेहूँ मई में ही कन्ट्रोल रेट से खरीद लिया था। यानी ११।) मन गेहूँ, ८≋) मन चना, ७॥।-) मन जौ। १६ जुलाई से राशनिंग में चना व जौ देना बन्द कर दिया, यानी केवल ६ छटाँक गेहूँ और २ छटाँक चावल मिलने लगा। जिसका परिणाम यह हुआ कि मजदूर लोग जो करीब २ लाख के हैं, भूखों मरने लगे। इस सम्बन्ध में स्थानीय व प्रान्तीय सरकार को लिखा गया और पब्लिक मीटिंग की गई और प्रस्ताव भेजे गये पर अधिकारियों के कान पर जूँ तक न रेंगी। अब पहली सितम्बर से ६ छटाँक गेहूँ के बजाय ४ छटाँक गेहूँ कर दिये गये, जिसका परिणाम यह हुआ कि अब आम जनता भूखों मरने लगी है। बाजारों में चना व जौ किसी भाव में नहीं मिलते और न गेहूँ ही बाजार में है। अगर प्रान्तीय सरकार जनता को कम से कम १२ छटाँक अच्छा नाज और तीन सेर चना व जौ घोड़े व जानवरों को नहीं दे सकती है तो उसे कन्ट्रोल समाप्त कर देना चाहिए और व्यापारियों को स्वतंत्र व्यापार करने का मौका दिया जाये।

मैं उम्मीद करता हूँ कि स्थानीय व प्रान्तीय सरकार शीघ्र से शीघ्र कोई न कोई प्रबन्ध करेगी वरना स्थिति बड़ी गम्भीर हो जावेगी।

—अचलसिंह, एम० एल० ए०

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ॥।) बारह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस,
लिमिटेड, प्रयाग।

लक्ष्मी मुँह लटकाये हुए उसी ओर चल दी। पीछे पीछे विमला थी। किन्तु किसी के मुख से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। यह वही लक्ष्मी और हरीश को जन्म देनेवाला घर था। हरीश के हाथ में माइक्रसकोप था। लक्ष्मी ने आकर पुकारा—हरीश!

हरीश ने माइक्रसकोप रखकर आगे बढ़कर कहा—आओ, दीदी।

लक्ष्मी निस्तब्ध थी, निर्वाक् थी। विमला संकोच से सूखकर काँटा हो रही थी। पहले का-सा भाई-बहन का हास्य-कौतुक न था। बातों की झड़ी न थी। दोनों चुप थे। बात करने के लिए कोई विषय ढूँढ़े नहीं मिल रहा था।

लक्ष्मी ने कहा—नीचे सम्भवतः रसोइया आ गया है। भोजन इत्यादि का क्या प्रबन्ध हुआ?

महानन्द दादा जानें। हम तो इधर के कामों में.......

हरीश ने फिर कहा—तुम यहाँ कैसे आ गई दीदी?

लक्ष्मी ने कहा—क्या मैंने कोई अपराध किया है?

हरीश ने आँखें मिचमिचाते हुए कहा—मैं तो कहता नहीं हूँ कि अपराध किया है।

लक्ष्मी ने पूछा—उस कमरे में जहाँ रज्जो है, यह युवक कौन घुसा हुआ है?

हरीश ने कहा—ओह! वह विनोद है। मेरी ही भाँति अनाथ, असहाय, अभागा, नहीं तो मेरे पास कैसे आता! उसकी बड़ी भारी कथा है—जैसे महाभारत की कथा।

लक्ष्मी चुप थी। हरीश ने फिर कहा—यहाँ तो सब ऐतिहासिक महापुरुष ही हैं। एक इन्हीं को देख लीजिए—विमला की ओर संकेत करते हुए उसने कहा। और वह लड़का? वह तो बिलकुल पागल है।

हरीश ने कहा—तुम अकेली क्यों आई? जीजा जी कहाँ हैं?

लक्ष्मी ने कहा—तुम जानते हो उनके वही मुवक्किल हैं, और वे हैं।

हरीश ने कहा—बिलकुल ठीक। जीजा जी ही एक ऐसे हैं जो नहीं बदले। नहीं तो आकाश, जल, वायु, पृथ्वी, घर, द्वार नाते सम्बन्धी सब बदल गये। क्यों न दादा? हरीश ने इतना कहकर एक लम्बा निश्वास छोड़ा।

लक्ष्मी ने कहा—मैं आई थी, पानी.....यदि भोजन का प्रबन्ध यहाँ न होता तो अच्छा था; क्योंकि अभी मैं मरी नहीं हूँ।

—क्रमशः

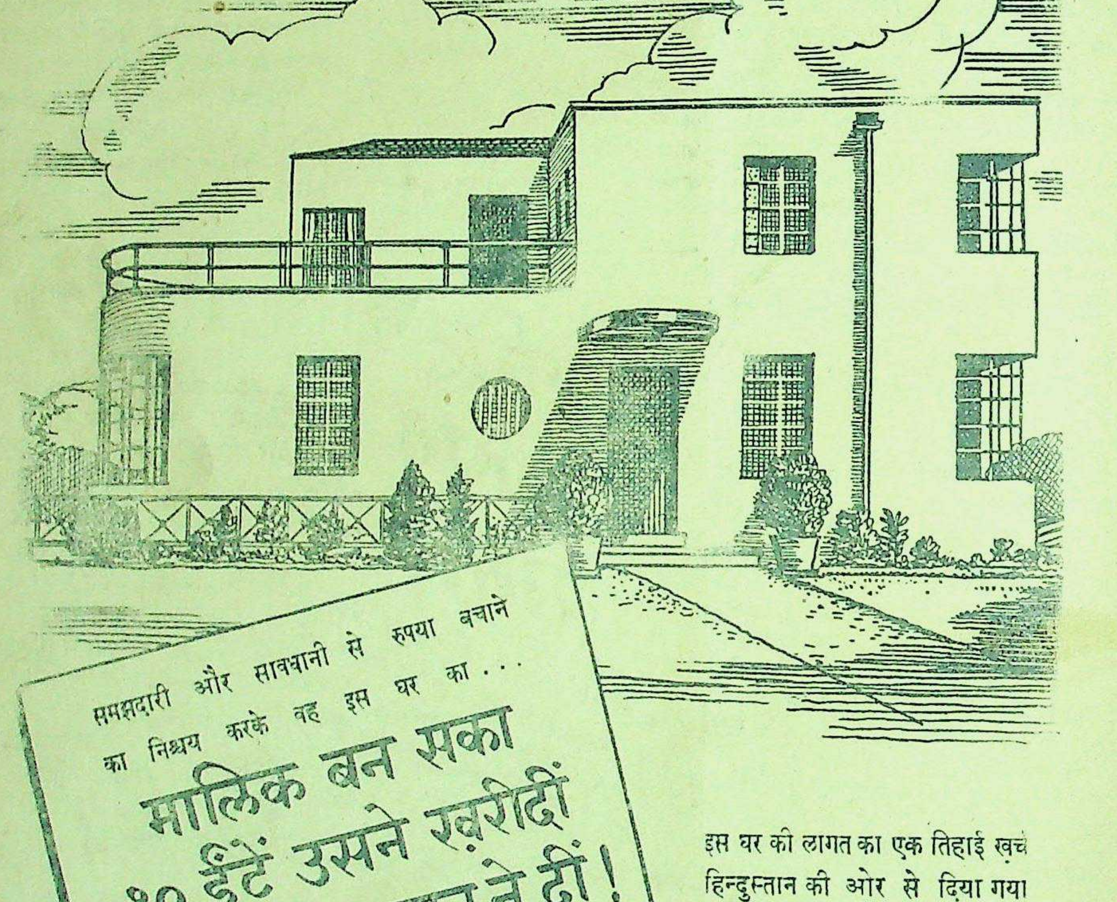
समझदारी और सावधानी से रुपया बचाने का निश्चय करके वह इस घर का...
मालिक बन सका
१० ईंटें उसने ख़रीदीं
-पाँच हिन्दुस्तान ने दीं!

इस घर की लागत का एक तिहाई ख़र्च हिन्दुस्तान की ओर से दिया गया है, क्योंकि इसके बुद्धिमान मालिक ने अपनी बचत की रक़म को नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेटों में लगाया था। घर बनाने में उसे जितना ख़र्च पड़ा, उसके लिए उसकी बचत की रक़म पर ५० प्रति शत अधिक रुपया उसे ब्याज के रूप में मिला।

आज कल, रुपया लगाने की जितनी सुरक्षित मदें हैं, उनमें से नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेटों में सब से अच्छा ब्याज मिलता है।

छोटी छोटी रक़में बचानेवाले ५ रुपये का सर्टीफ़िकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति जो आज कल रुपया बचाने का निश्चय करे, १२ वर्ष में हर १० रुपये के १५ रुपये बना सकता है और इस प्रकार अपनी भावी उन्नति की मज़बूत नींव रख सकता है। कमख़र्ची और बचत का यही समय है, क्योंकि आमदनी ज़्यादा है। आप यथाशक्ति रुपया बचाइए और

नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेट ख़रीदिए।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफ़िकेट को १८ महीने बाद)।

AAA 125—HIND

हिन्दी के कवियों, ले
और विद्वानों से

अखिल भारतीय हिन्दी
सम्मेलन का ३३वाँ अधिवे
१७,१८,१९ अक्टूबर के लगभग
में हो रहा है। उसमें होनेवाले
तथा कवि-सम्मेलन में भाग लेने
भारतवर्ष के तमाम विद्वानों
को जो हिन्दी माध्यम-द्वारा अपने
विचार प्रकट कर सकें सादर नि
परिषदों में निबन्धों के अतिरि
विनिमय के लिए भी अलग
जायगा, जो विद्वान् परिषदों में
चाहें—निबन्ध लिखकर या
बोलकर, वह कृपया अभी सूचि
कृपा करें। कवियों से निवेदन
कविगण कवि-सम्मेलन में भाग
वे अपनी कविता-सहित भाग लेने
पूर्व दे दें। कवि-सम्मेलन में
भाग ले सकेंगे जिन्हें पहले
चुकी होगी। इस प्रकार की
स्वागत-समिति के साहित्य-मंत्री
३० सितम्बर तक पहुँच जानी
परिषदों के विषयों की सूची
प्रकाशित की जायगी। निबन्धों
में यह ध्यान रखा जाय कि निबन्ध
तथा गवेषणापूर्ण हों।

—दुर्गाशंकर दुर्गावत,

बृहत् प्रदर्शनी की योज

अखिल भारतीय हिन्दी
सम्मेलन उदयपुर स्वागत-
निश्चय किया है कि प्रदर्शनी
जन किया जाय। यों तो
प्रत्येक अधिवेशन के अवसर
का आयोजन किया जाता
स्वागत-समिति और
मन्त्री श्रीमान् कमललाल
प्रदर्शनी की सफलता में
हैं। राजस्थान और भारत
संस्थाओं और हिन्दी-प्रेमियों
समिति की प्रार्थना है कि
प्रदर्शनी विभाग में प्रदर्शित
वस्तुएँ हों वे कृपा कर,
कार्यालय में सूचना भेज दें
में—राजस्थानी भाषा और
सम्बन्धी प्राप्य सभी प्राचीन
महत्त्वपूर्ण सामग्री, राजस्थान
सम्बन्धी उपलब्ध सामग्री,
चित्र, शिलालेख आदि।

राजस्थानी भाषा, सा
ज्ञातव्य एवं संस्कृति-विषयक
प्रदर्शनी में हों; जिससे रा
अतीति तथा वर्तमान व्यक्त हो

हिन्दी संसार-सम्बन्धी
कारी, इस विभाग में रा
के कार्य की रूप-रेखा, हिन्दी
परिचय, हिन्दी-साहित्यकारों
सम्बन्धी सामग्री, हिन्दी पा
भाषा सम्बन्धी चार्ट वि
वांछनीय हैं। वस्तुओं की सुर
स्वागत-समिति का होगा त
व्यय भी स्वागत-समिति ही उ

हिन्दी की समस्त सं
प्राचीन संग्रह-प्रेमियों और
निवेदन है कि २५ सितम्बर त
समिति कार्यालय में सूचना
को पार्सल द्वारा मन्त्री प्रदर्शनी
पते से भेज दें।

—गिरि

दिल्ली की चिट्ठी

गामी चुनाव कांग्रेस पूरी ताकत से लड़ेगी

ौतियों का प्रश्न—प्रकाशन सलाहकार समिति—कागज समिति—सर फिरोज खाँ नून ने त्यागपत्र क्यों दिया ? वाइसराय लार्ड वैवेल की वापसी

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

केन्द्रीय और प्रान्तीय
आगामी चुनावों में भाग
का यहाँ के सरकारी एवं
में भारी स्वागत हुआ
के एक प्रमुख अधिकारी
फैसले पर हर्ष प्रकट करते
यदि कांग्रेस चुनावों का
लेती तो देश में एक और
हो जाता। मुस्लिम लीगी
फैसले से बहुत निराशा हुई
ने कांग्रेस के फैसले के
स्थिति पर नये सिरे से
है और जिन सीटों का
निर्वाचन के आधार पर
से अधिकांश पर अपने
न करने का निश्चय
के तौर पर लीग
क्षेत्र से कोई उमीदवार
रहा है। हिन्दू महासभा
उमीदवार खड़ा नहीं
यदि कोई स्वतन्त्र
न हुआ तो कांग्रेस
असेम्बली के लिए
गा।

का प्रश्न

औद्योगिक नगर न
नौकरों का कस्बा है।
महकमों में होनेवाली
की आशंका ने अधि-
अफसरों और बाबू
भारी चिन्ता में डाल
हुआ कि भारत सरकार
विविध महकमों पर
कर युद्ध से पूर्व की
के लिए बहुत जोर दे रहे
है कि युद्ध काल में
में से केवल उन्हीं को
कि युद्धोत्तर-निर्माण के
समझी जाय। अर्थ-
रियायत से लाभ उठाकर
युद्धोत्तर निर्माण में
प्रकट करने के लिए
योजनाएँ बनाने लगे
सभा या वाइसराय की
की स्वीकृति लिये बिना
स्वतः अपने लिए
रहे हैं, यह सिद्ध करने
काल में उनका अस्तित्व
है। राशनिंग और कन्ट्रोल
बाद भी कई साल तक
का राशन जारी रखने
रहे हैं। भारत
सलाहकार श्री किर्बी
है कि राशनिंग कम से
और जारी रखा जाय।
को बनाये रखने
विशेषज्ञ' इसी
अपने पदों पर चिपके
विपरीत दिल्ली की
कर रही है कि इन
को यथाशीघ्र हटाया
जाय। केन्द्रीय खाद्य सलाहकार समिति ने जिसकी हाल में ही सर ज्वालाप्रसाद श्रीवास्तव की अध्यक्षता में बैठक हुई थी, अधिक से अधिक १९४६ के अन्त तक राशनिंग और कन्ट्रोल-व्यवस्थाओं को जारी रखने का निश्चय किया है। परन्तु बीच-बीच में समिति विचार करती रहेगी और आवश्यकतानुसार इन नियन्त्रणों को ढीला करती जायगी।

सिमेंट-उद्योग के प्रतिनिधियों और रसद-विभाग के अफसरों की एक बैठक हाल में ही नई दिल्ली में हुई और सिमेंट पर से कन्ट्रोल हटाने के बारे में विचार किया गया। यद्यपि युद्ध-सम्बन्धी सब ठेके रद्द किये जा चुके हैं, मगर युद्धोत्तर-निर्माण की आवश्यकताओं पर जोर देते हुए अभी कम से कम ६ महीने और सिमेंट-कन्ट्रोल जारी रखने का निश्चय किया गया। नागरिक खपत का कोटा कुछ बढ़ा दिया गया है और यह भी आशा प्रकट की गई कि इस साल के अन्त तक सिमेंट का मूल्य दस-पन्द्रह रुपये प्रतिटन गिर जायगा।

प्रकाशन सलाहकार समिति

बताया जाता है कि प्रकाशन सलाहकार समिति की बैठक में सूचना-विभाग के सदस्य सर सुलतान अहमद ने जब अपने महकमे की प्रशंसा के पुल बाँधने शुरू किये तो कुछ सदस्यों ने बहुत नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि अमरीका में लार्ड हेलीफैक्स और सर गिरजाशङ्कर वाजपेयी के भारत विरोधी प्रचार ने हिन्दुस्तान के स्वाभिमान को बहुत गहरी चोट पहुँचाई है। एक सदस्य ने यहाँ तक कहा कि सर सुलतान अहमद से अच्छा काम तो श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित कर सकती हैं।

कागज सलाहकार समिति

अखबारी कागज सलाहकार समिति की बैठक में जो कि हाल ही में सर अकबर हैदरी की अध्यक्षता में हुई है, अखबारी प्रतिनिधियों ने न्यूज प्रिन्ट के आयात पर से प्रतिबन्ध उठाने के लिए बहुत जोर दिया। श्री हैदरी ने बताया कि इस समय विदेशों से अखबारी कागज मँगाने की स्थिति ऐसी नहीं है कि इसका कन्ट्रोल बिलकुल ही हटा दिया जाय परन्तु उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि जब दिसम्बर या जनवरी में समिति की बैठक फिर होगी तो इस पर विचार किया जायगा। उन्होंने पहली अक्टूबर से अखबारी कागज के कोटे में २५ प्रतिशत वृद्धि करने का निश्चय प्रकट किया। विश्वस्त रूप से मालूम हुआ कि अखबारी कागज के आयात पर से पाबन्दी न उठाने का वास्तविक कारण जहाजी स्थिति न होकर डालर की है। कनाडा डालर एरिया होने के कारण कागज का मूल्य डालर के रूप में देना पड़ता है जिसकी भारत-सरकार के पास बहुत कमी है।

सर फिरोज खाँ नून का त्यागपत्र ?

सर फिरोज खाँ नून वाइसराय की कौंसिल से त्यागपत्र देकर पंजाब पहुँच गये हैं। त्यागपत्र का एकमात्र कारण भविष्य में पंजाब के नेतृत्व के लिए सर खिजर हयात खाँ को चुनौती देना बताया जा रहा है। पंजाब में मुस्लिम लीग को संगठित करके वे यूनियनिस्ट पार्टी को आगामी चुनावों में हराने के इरादे से ही वहाँ गये हैं। उनका यह खयाल है कि सर सिकन्दर हयात खाँ और सर छोटूराम के मरने से यूनियनिस्ट पार्टी कमजोर हो चुकी है, परन्तु उन्हें शीघ्र ही यह मालूम हो जायगा कि देहातों में युनियनिस्टों का आज पहले से भी अधिक जोर है।

वाइसराय वापस लौटे

वाइसराय के वापस दिल्ली लौटते ही अफवाहों का जोर बँध गया है। वाइसराय-द्वारा आते ही अपनी शासन-समिति की बैठक बुलाना और डा० खरे का जो कि दक्षिण भारत के दौरे पर गये हुए थे, अपना कार्य-क्रम बीच में रोक वापस राजधानी लौटना, यह प्रकट करता है कि वाइसराय लन्दन से खाली हाथ नहीं लौटे हैं। मगर प्रान्तीय असेम्बलियों के भंग किये जाने से यह बात तो निश्चित ही है कि नई योजना में किसी अस्थायी व्यवस्था का उल्लेख नहीं है, क्योंकि वैधानिक दृष्टि से असेम्बलियाँ भंग होने के बाद लोकप्रिय मंत्रिमंडल नहीं बन सकते। केन्द्र में भी कोई अन्तर्कालीन राष्ट्रीय सरकार नहीं बनाई जायगी।

वाइसराय की कौंसिल के सदस्य सर फिरोज खाँ नून पंजाब में यूनियनिस्ट पार्टी को हराने के लिये लाहौर पहुँच गये हैं।

स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन सामग्रियाँ

इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताजगी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।

कोल्ड व
वैनिशिंग क्रीम
टैल्कम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोसा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 120

If it's ELGIN it's good

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें; जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपडे, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपडा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाडी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अत: फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतो मे ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र, ओल्ड जनरलगंज कानपूर

EK 24-HIN

संवाददाताओं के पत्र

सम्मेलन का अधिवेशन

उदयपुर में १७, १८, १९ अक्तूबर को

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ उदयपुर-अधिवेशन ता: १७, १८, १६ अक्तूबर १६४५ को उदयपुर (मेवाड़) में होगा। ता: १६ अक्तूबर १६४५ को सम्मेलन की विषय-समिति की बैठक उदयपुर में होगी, स्वागत-समिति को हर्ष है कि राष्ट्र-भाषा हिन्दी के इस महत्त्वपूर्ण समय में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन दशहरे पर हो रहा है। समस्त हिन्दी संसार और देश के साहित्य-प्रेमियों, विद्वानों तथा शिक्षकों से स्वागत समिति की प्रार्थना है कि अधिवेशन के समय उदयपुर अवश्य पधारें। अधिवेशन-सम्बन्धी व्यवस्था की सूचनायें अब शीघ्र ही समाचार-पत्रों में दी जायेंगी।

हिन्दी विद्यापीठ —गिरिधारीलाल शर्मा
उदयपुर

सम्मेलन का सभापतित्व

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के उदयपुर-अधिवेशन का सभापति कौन हो? इस सम्बन्ध में "देशदूत" में श्री कन्हैयालाल मणिकलाल मुन्शी के नाम का सुझाव-वास्तव में उचित ही है। मुन्शी जी वास्तव में इस पद के अधिकारी व्यक्ति हैं। गुजराती साहित्य के निर्माताओं में आपका एक विशेष स्थान है। आप सामाजिक सुधार के प्रेमी एवं विशिष्ट राजनीतिज्ञ भी हैं। उदयपुर की स्वागतसमिति भी आप ही को इस आसन पर बैठाना चाहती है। मुझे विश्वास है कि ऐसे कर्मठ व्यक्ति को ही हिन्दी-प्रेमी अवश्य सम्मेलन का सभापतित्व प्रदान करेंगे।

जयपुर —अद्भुत शास्त्री
सम्पादक "मारवाड़ी गौरव"

उदयपुर—गुजरात के प्रसिद्ध साहित्यकार तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नायक श्री कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी ने उदयपुर-अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष मुनि श्री जिनविजय जी के आग्रह से हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के आगामी अधिवेशन के सभापति पद से अपना नाम, यदि वह गिनती में आ जाय तो, वापस नहीं लेने का वचन दे दिया है।

श्री मुन्शी जी ने जब उनको ज्ञात हुआ कि स्वागत-समिति ने एकमत से उनको उदयपुर अधिवेशन के सभापति-पद के लिये प्रस्तावित किया है तो तार देकर वैसा उत्तरदायित्व लेने की अनिच्छा जाहिर की थी। स्वागताध्यक्ष श्री मुनि जिनविजय जी ने तार द्वारा सूचित किया है कि उन्होंने श्री मुंशी जी को मना लिया है।

श्री कन्हैयालाल मणिकलाल मुंशी की स्वीकृति के तार से स्वागत-समिति के शिविर में उत्साह की लहर फैल गई है। उनकी इंनकारी के तार से स्वागत-समिति को निराशा हुई थी। परन्तु स्वागताध्यक्ष श्री मुनि जिनविजय जी ने निराशा को आशा में बदल दिया है।

स्वागत-मंत्री श्री जनार्दनराय नागर अजमेर से लौट आए हैं। श्रीमुंशी जी की स्वीकृति के तार पर आपने कहा—"यदि हम इस समय हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर दृढ़ता के साथ बनाये रखना चाहते हैं और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को अपनी पूर्व गरिमा पर आरूढ़ रखना चाहते हैं तो श्री कन्हैयालाल मणिकलाल मुन्शी ही को हमें सभापति चुनना चाहिये। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के सम्बन्ध में श्री मुन्शी ने जयपुर में निश्चित मार्ग-दिशा बताई है। श्री मुंशी ही टंडन जी के बाद समर्थ हैं कि सम्मेलन की योजनाओं को पूरा करवा दें।

स्वागत-समिति का घोषणा-पत्र जल्दी ही प्रकाशित हो रहा है। सप्तवर्षीय 'उदयपुर योजना' बनाने का कार्य श्री जनार्दनराय नागर ने प्रारम्भ कर दिया है। सम्मेलन के प्रधान मंत्री उदयपुर में तीन वर्षीय योजना स्वीकार करवाना चाहते हैं। परन्तु स्वागत-मंत्री का कहना है 'अधिकांश लोग सप्तवर्षीय योजना के पक्ष में हैं।' इस मास के अन्त में योजना प्रतिनिधियों तथा महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के हाथों में होगी।

—संवाददाता

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति का अधिवेशन २७ सितम्बर १६४५ को ३ बजे दिन से सम्मेलन कार्यालय में होगा। विचारणीय विषय है—

महात्मा गांधी का त्यागपत्र, राष्ट्रभाषा-प्रचार-समिति से श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल का त्यागपत्र। स्वागत-समिति-द्वारा प्राप्त विषय-सूची, अधिवेशन के लिए प्राप्त प्रस्ताव, सम्मेलन के वार्षिक विवरण की स्वीकृति, श्री नेमीचन्द-पुरस्कार तथा मुरारका पारितोषिक की नियमावलियों के मसौदों की स्वीकृति, श्रीमती तारादेवी पाण्डेय को पुरस्कार के रुपये भेजने का प्रश्न। प्रधान मन्त्री।

* * *

आगरा से निकलनेवाला 'नोक-झोंक' हास्य-रस-प्रधान, सचित्र मासिक का पुनः प्रकाशन केन्द्रीय सरकार ने स्वीकृत कर लिया है। अतएव आगामी अक्टूबर से नोक-झोंक अपने असंख्य पाठकों की सेवा में फिर से प्रकाशित होने लगेगा। नोंक-झोंक का वार्षिक मूल्य ३) रु० व एक अंक का ।) होगा। —रामप्रकाश पंडित

* * *

दिल्ली के हिन्दी कला-मन्दिर से एक वृहद् कहानी-संग्रह प्रकाशित हो रहा है। इसमें ५०० लेखकों की मौलिक, सुन्दर तथा मनोरंजक कहानियाँ होंगी। हिन्दी के प्रायः सभी प्रतिष्ठित लेखकों ने अपनी रचनायें भेजकर इस पुस्तक का मू० बढ़ाया है। इसके प्रधान संपादक यज्ञदत्त शर्मा एम० ए० हैं।

* * *

दिल्ली से आगामी विजयदशमी से विचार, कला और कहानी-प्रधान 'सरिता' मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। वार्षिक मूल्य ७) तथा प्रति अङ्क ॥।) होगा। कवर पृष्ठ तिरङ्गा और हर एक लेख, कविता और कहानी विशिष्ट चित्रकारों द्वारा बनाये हुए चित्रों से सचित्र होगी। १० अक्टूबर १६४५ तक ग्राहक बननेवालों को वार्षिक केवल ५) ही देना होगा। पत्र-व्यवहार का पता—संचालक, सरिता दिल्ली प्रेस, पोस्टबक्स १७ नई दिल्ली। —संवाददाता

* * *

रीवाँ स्टेट शिक्षा-विभाग के अन्तर्गत हिन्दी तथा अँगरेजी स्कूलों की प्रत्येक कक्षाओं में पढ़ाई जानेवाली सम्पूर्ण विषयों की पुस्तकों के परिवर्तन पर इस वर्ष विचार किया जायगा। वर्तमान पुस्तकों के साथ नवीन प्राप्त पुस्तकों की समीक्षा की जायगी और जो पुस्तक उच्च कोटि की पाई जायगी वही पुस्तक उस कक्षा के लिए निर्धारित की जायगी। विचारार्थ पुस्तकें तारीख ३१ अक्टूबर सन् १६४५ तक सेक्रेटरी शिक्षा-बोर्ड रीवाँ दफ़्तर में आ जानी चाहिए।

डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग

* * *

कलकत्ता बङ्गाल सरकार ने
जिला के बाढ़-पीड़ितों के लिए
हजार रुपये कृषि-ऋण तथा
रुपये सहायता के रूप में देना
है। मैमनसिंह तथा नरायनगंज
बाढ़-पीड़ितों के लिए क्रमशः
एवं ५ हजार रुपये सहायता के रूप
स्वीकार किया गया है।

अवैध संचय एवं अतिलाभ
विधान के अन्तर्गत कलकत्ते में
को १६ व्यक्तियों पर १५ रुपये से
२०० रुपया तक जुर्माना किया गया

३४ लाख रुपये रोज़ लगाये गये!

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९ बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) आपको अपनी रक़म अच्छी शर्तों पर हिन्दुस्तान को ऋण की भाँति देने का एक और सुअवसर करता है। आप अपने देश को सहायता पहुँचायेंगे, भावों को घटाने में करेंगे, और ३ फ़ी सदी सालाना ब्याज, इनकम टैक्स काटने के बाद, दो बार आपके घर पर पहुँचता रहेगा।

आप जितनी रक़म चाहें इस ऋण में लगा सकते हैं। गवर्नमेंट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म हर हालत में १५ अगस्त, सन् १९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। इस दौरान में अगर आपको नक़द रुपये की ज़रूरत हो तो इस लोन को चाहें मार्केट में बेच सकते हैं। अगर आप पर इनकम टैक्स लागू न हो या कम शरह पर लागू होता हो, तो अधिक चुकाया गया टैक्स वापस मिल जायगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से ख़रीद लें।

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा

परिहास

की तरङ्ग

ने बड़ा जोर लगाया।
की भाषा की नीति का
। अरे भाई, कुछ तो
वतन का ख्याल किया

*

और उनके लफ़टंट बुखारी
है कि वह धोती कुर्ता पहनने
सकेंगे जब हमारे साथ
है, सरकार है और लीग के
। वाकई समझते खूब हैं!

*

भी है। जब राष्ट्रभाषा
है तब रेडियो में हिन्दी
आंदोलन हो रहा है? यह
करनेवाले हैं उन्हें राष्ट्रीय
नजरबन्द कर दिया
दाल का भाव मालूम

*

देव ने कह दिया है
प्रचार-संघ की नीति
राष्ट्रभाषा प्रचार-संघ
सहमत नहीं हैं।
आपको न धोती
क्या पसन्द है हुजूर,
?

*

आनेवाला है जब सर
बोरिया-बँधना लेकर
उस अवसर पर सरकार
देना चाहिए, सर तो
पदवी देनी चाहिए
। इस नाम से वह अमर

*

है लार्ड वैवेल खाली
है, शायद ऐसा नहीं है।
हाथ में, सुना जाता है,
लगाम भी है।

*

मित्र साहब श्रीमती
के लिए बड़ी दौड़-धूप
राष्ट्रभाषा परिषद् की वह
जायँ। नाम तो ऐसा
है कि किसको इनकार
कलेक्टर साहब ने पुरानी
का बड़ा लाजवाब और
दिया है।

*

के परिषदों के सभा-
ओं को ही चुना जाय
की कष्टदायक यात्रा
सफल हो जायेगी।
के लिए, श्री महोदया
श्री के पुरुष ही
ही जायँगे, हिन्दी
की है?

*

यह आल इंडिया रेडियो है!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

रुपये खर्चे लोगों ने रेडियो लगाये, समाचार जल्दी सुनने को सब ललचाये;
आशा थी कुछ गीत, कथा, वार्ता सुनेंगे, शिक्षा-मुक्ता भी विनोद के संग चुनेंगे;
मगर वहाँ तो बोलते हैं अरबी औ फारसी।
बोली कब बगदाद की समझें भला बनारसी?

उर्दू भाषा की बेढब है वहाँ रवानी, जिस भाषा का नाम पड़ा है हिन्दुस्तानी;
शीराजी मय में डाला गङ्गा का पानी, तुलसी सूर गये आये हाफिज, खाकानी,
राम राम की जगह अब होता आदाबर्ज है।
टी-बी से भी उग्रतर फैल रहा यह मर्ज है॥

समाचार में हैं प्रयोग करते वह भाषा, हमें लग रही है जैसे हो एक तमाशा;
बड़े बड़े मुल्ला भी नहीं समझ पाते हैं, हिन्दीवाले पैसा देकर पछताते हैं;
अल्लामियाँ उतर पड़ें यदि दूसरे जहान से।
उनको भी पढ़ना पड़ेगा कुछ सर सुलतान से॥

कविता है अथवा नाटक है या गाना है, उर्दूवालों का सागर है, पैमाना है;
बच्चों की बैठक पै बुलबुल रंग जमाती, महिलाओं के फीचर में उस्तानी आती;
पीछे से सरकार भी है अपना दे बल रही।
बुरका पहने रेडियो की भाषा है चल रही॥

हिन्दी भाषा वालों की संख्या है भारी, कब तक आप चलायेंगे यह नीति बुखारी?
भाषा का यह पक्ष त्यागना जल्दी होगा, दिल्ली से या कहीं भागना जल्दी होगा,
हिन्दी का होगा वहाँ प्रतिष्ठान अब जानिये।
अच्छा होगा बात अब हम लोगों की मानिये॥

हिन्दी वालों ने अपना है त्याग दिखाया, चाँदी के टुकड़ों पर निज को नहीं गिराया,
निज भाषा की प्रीति कभी क्या निष्फल होगी? आज नहीं तो विजय हमारी ही कल होगी,
मिटा सकी न जिसे तनिक आलमगीरी शान भी।
कर सकते उसका न कुछ लाखों सर सुलतान भी॥

अल्लामा मशरीकी ने एक विधान तैयार किया है। उसे न मानने वालों के विरोध में खाकसारों का आंदोलन होगा। कायदे आजम को क्या मशरीकी साहब भारतवर्ष में रहने नहीं देना चाहते? उनके विधान का पहला विरोध मिस्टर जिन्ना ही करेंगे।

* * *

राजा महमूदाबाद ने मुसलिम लीग की बैठक के लिए अपना घर नहीं दिया। क्या करते बेचारे? उन्हें लीगियों ने कहीं मिनिस्टर बनाने का वचन भी तो नहीं दिया?

* * *

रायबहादुर पंडित शुकदेवबिहारी मिश्र ने हिन्दू-सभा के कहने पर भी अपनी रायबहादुरी नहीं छोड़ी। ठीक भी है, जीवन में उन्होंने छोड़ा ही क्या? जो कुछ मिला उसे पकड़े ही तो रहे, फिर रायबहादुरी तो बहुत बड़ी चीज है।

* * *

कहा जाता है कि मथुरा के चौबों ने दरख्वास्त दी है कि जितना राशन का गल्ला मिलता है उतने से तो हमारा जल-पान होता है। हमारी राय है कि चौबे जी जल-पान और जमुना का स्नान कर सरकार को आशीर्वाद दें, यही बड़ा सुन्दर है। —अगड़धत्त शर्मा

गाड़ी की खिड़की से सब ठीक ही मालूम पड़ता है
अधिक सड़कों और अच्छी फसल की उन्नति के लिये बर्माशेल द्वारा प्रचारित
अच्छी सड़कें उन्नति के मार्ग हैं

लेकिन मुसाफ़िर के ओठों पर मुस्कुराहट नहीं। हरे भरे खेत और बगीचें उसके बराबर में तेजी से गुजरते हैं फिर भी उसकी आंखों में उन फैलेहुये बंजर प्रदेशों की तस्वीरें घूमती रहती हैं, जिनमें एक तिनका भी नही उगता।

वह इसका कारण भी जानता है - भारत के ७,००,००० गांवों में से अधिकांश सड़कों की कमी से एक दूसरे से अलग हैं। अगर गांव वाले ज्यादा अन्न उपजायें तो उसे वह शहरों तक नहीं पहुंचा पायेंगे। जब सड़कें बन जायेगी तो ज्यादा अन्न उपजाना ही [illegible] न होगा, बल्कि साथ साथ गांव वाले औद्योग की चीजें भी खरीद सकेंगे। औद्योग और खेती का चोली दामन का सम्बन्ध है। एक के विकास पर दूसरे की उन्नति निर्भर है।

और फिर मुसाफ़िर की नज़र आगे जाती है। वह भारत के भावी रूप को देखता हैं, जब की भारत में नाड़ियों की तरह सड़कों का जाल बिछा होगा, जिनके द्वारा नगरों, क़सबों और ग्रामों से माल लाया और भेजा जा सकेगा, जो राष्ट्र के स्वास्थ और समृद्धि के लिये उतनी ही आवश्यक हैं जितना कि जीवन के लिये रक्त।

05 1

धारासभाओं का आगामी चुनाव

(पेज ५ का शेष)

और श्री कृपलानी ने चुनाव के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है उससे ऐसा मालूम होता है यदि सरकार कांग्रेस समाजवादी और अन्य दूसरे राजनीतिक दलों के ऊपर से प्रतिबन्ध हटा ले और तमाम राजनैतिक बन्दियों को मुक्त कर दे तो कांग्रेस चुनाव में और भी सफल हो सकती है। कुछ कांग्रेस जनों का ऐसा विचार है कि मुस्लिम लीग के उस दावे को कि वही मुसलमानों की एकमात्र प्रतिनिध-संस्था है झूठा साबित करने के लिए केवल आम सीटों पर ही नहीं वरन् प्रत्येक मुस्लिम सीट के लिए या तो स्वयं अपना उम्मेदवार खड़ा करेगी अथवा मुस्लिम लीग के विरुद्ध दूसरी मुसलमान जमातों के उम्मेदवारों की सहायता करेगी। राजा जी ने एक बार अपने वक्तव्य में कहा था कि इसमें तो सन्देह नहीं है कि मद्रास की मुस्लिम सीटों में अधिकांश मुस्लिम लीग हस्तगत कर लेगी लेकिन दूसरी सीटों पर कांग्रेस की पूर्ण विजय रहेगी। श्री कृपलानी ने भी ऐसा कहा था कि हो सकता है कि सम्पूर्ण मुस्लिम सीटों पर मुस्लिम लीग का अधिकार हो जाय लेकिन फिर भी उसके खिलाफ उम्मेदवार खड़ा करके यह दिखाना है कि कितने प्रतिशत मुसलमानों की वह प्रतिनिधि संस्था नहीं है?

इस चुनाव में राष्ट्रीय मुसलमान बड़े प्रयत्नशील दिखाई दे रहे हैं और एक 'राष्ट्रीय मुसलमान चुनाव बोर्ड' बनाने की सोची जा रही है, जिसमें जमायत उलमा, अहरार, मोमिन, बंगाल कृषक प्रजा पार्टी आदि का सहयोग होगा। वे कांग्रेस के टिकट पर खड़े होने के लिए विशेष उत्सुक नहीं जान पड़ते सम्भवतः इसीलिए अधिकांश राष्ट्रीय मुसलमान जो अभी तक कांग्रेस टिकट पर खड़े हुआ करते थे अब 'राष्ट्रीय मुसलमान चुनाव बोर्ड' की तरफ से मुसलमान जनता के सामने जाना चाहते हैं। हो सकता है कि इसके पीछे मुस्लिम लीग का वह प्रचार हो जहाँ वह कहती है कि राष्ट्रीय मुसलमान तो कांग्रेस के हाथ की कठपुतली हैं वे मुसलमानों की माँगों का सही तौर पर प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। इसीलिए वह स्वतन्त्ररूप से चुनाव में भाग लेना चाहते हैं। मौलाना आजाद, श्री आसफअली और मियाँ इफ्तिखार उद्दीन जैसे प्रगतिशील नेता मुस्लिम जनता में पाकिस्तान के गहरे प्रचार की बात को समझते हैं फिर भी यह तय है कि सम्पूर्ण आम सीटों पर कांग्रेस की अभूतपूर्व विजय होगी। सन् ४२ के बाद जनता में उसका निश्चय ही बहुत प्रभाव बढ़ गया है।

महासभा और चुनाव

हिन्दू महासभा जैसा कि उसके संगठन के ढीलेपन और त्यागी एवं कर्मठ नेताओं के अभाव से स्पष्ट है विशेष प्रभावशाली राजनीतिक पार्टी नहीं बन सकती। लेकिन इस बार कुछ ऐसा लगता है कि आम सीटों के चुनाव में वह कांग्रेस के विरुद्ध खुल कर संघर्ष करेगी। उसका नारा है, 'हिन्दू हित रक्षा और अखंड हिन्दुस्तान' जनता में अपनी धाक जमाने के लिए उसके रायबहादुर और राजाबहादुर पदवी धारियों ने अपनी सरकारी पदवियाँ छोड़नी आरम्भ कर दी हैं लेकिन कांग्रेस के मुक़ाबिले में उसके पैर कहीं नहीं जमेंगे। शायद इसीलिए सिंध के भूतपूर्व हिन्दू मंत्री श्री वज़ीरानी और उनके अन्य सहयोगियों ने कांग्रेस टिकट पर खड़े होने की इच्छा प्रकट की है।

मुस्लिम लीग और चुनाव

सन् ३६ के चुनाव में सीमाप्रान्त को छोड़कर अन्य मुस्लिम बहुमत वाले प्रान्तों में अधिकांश सीटें मुस्लिम लीग ने हस्तगत की थीं बाद में पञ्जाब, आसाम और सिंध आदि में उसकी शक्ति कुछ क्षीण हुई थी। लेकिन सन् ३६ के बाद अब तक उसका प्रचार इन प्रान्तों में बहुत बढ़ा है। उसने पाकिस्तान का आदर्श मुसलमानों के सामने रखकर धर्मान्ध मुस्लिमों को अपने झण्डे के नीचे लाने की जी तोड़ कोशिश की है। उसके पास दूसरे अस्त्र भी हैं। अपने प्रचार में वह कांग्रेस को जी भरकर कोसती है और शिमला सम्मेलन में कांग्रेस-द्वारा वायसराय के सुझाव स्वीकार कर लेने के बाद तो उसे मुस्लिम लीग को नज़र अन्दाज़ करके साम्राज्यशाही से समझौता करनेवाली कहा जाता है और सबसे बाद में इस्लाम की दुहाई तो है ही—बंगाल मुस्लिम लीग के प्रधान मंत्री ने अभी हाल के एक वक्तव्य में कहा था कि मुसलमानों के लिए यह चुनाव बड़े महत्त्व का है।

कुछ कांग्रेस-जनों का ऐसा विचार है कि पूर्वी संयुक्त-प्रान्त में कांग्रेस लीग के विरुद्ध कुछ सीटें ले लेने में समर्थ होगी लेकिन अन्य सब प्रान्तों में मुस्लिम लीग ही मुस्लिम सीटों पर विजयी होगी। ऐसा समझा जाता है कि वायसराय की कार्यकारिणी के भूतपूर्व सदस्य मुस्लिम लीग के टिकट पर चुनाव लड़ेंगे और यह पंजाब के जमींदार पूँजीवादी दल यूनियनिस्ट पार्टी से और लीग से गठबंधन में प्रयत्नशील हैं। सर फीरोज खाँ नून ऐसे चुने हुए सरकार परस्त को अपने बीच प्रश्रय देकर लीग इस चुनाव को जीतना चाहती है।

सिक्ख और अछूत दलों का रुख अभी तक स्पष्ट नहीं हुआ है। यह तो निश्चय से नहीं कहा जा सकता कि सिक्ख एकमत होकर किसका साथ देंगे? अकाली कांग्रेस से स्वतन्त्र चुनाव लड़ने की सोच रहे हैं। बाबा खड्गसिंह की छत्रछाया में बहुत से सिक्ख कांग्रेस के साथ रहने को तैयार हैं। अछूतों की सीटों से कांग्रेस अपने उम्मेदवार खड़ी करेगी।

हिन्दुस्तान में यह चुनाव ऐसे समय हो रहे हैं जब योरोप और एशिया में महत्त्वपूर्ण राजनैतिक परि और दुनिया की राजनीति प्र के रास्ते पर बहुत तेजी के सा है। देखना यह है कि भारत की पार्टियाँ इस प्रगतिशीलता के तक कदम ब-कदम चल पाती हैं की बात यह है कि योरोप और राजनीति में वामपक्ष की आवा बुलंद रही है यहाँ तक कि अनुदा मन्त्रिमंडल को वामपक्षीय विच शान्ति के सन्मुख घुटने टेकने प की बात है कि योरोप और राजनीति में महत्त्व प्राप्त विचारधारा की सतह पर भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी चुनाव में अभी शांत है। कई दृष्टियों चुनाव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं क्यों की बहुत सी समस्याएँ इसके गिर्भर करेंगी। इसके रुख को इँगलैंड, रूस, चीन आदि में देखा जायेगा।

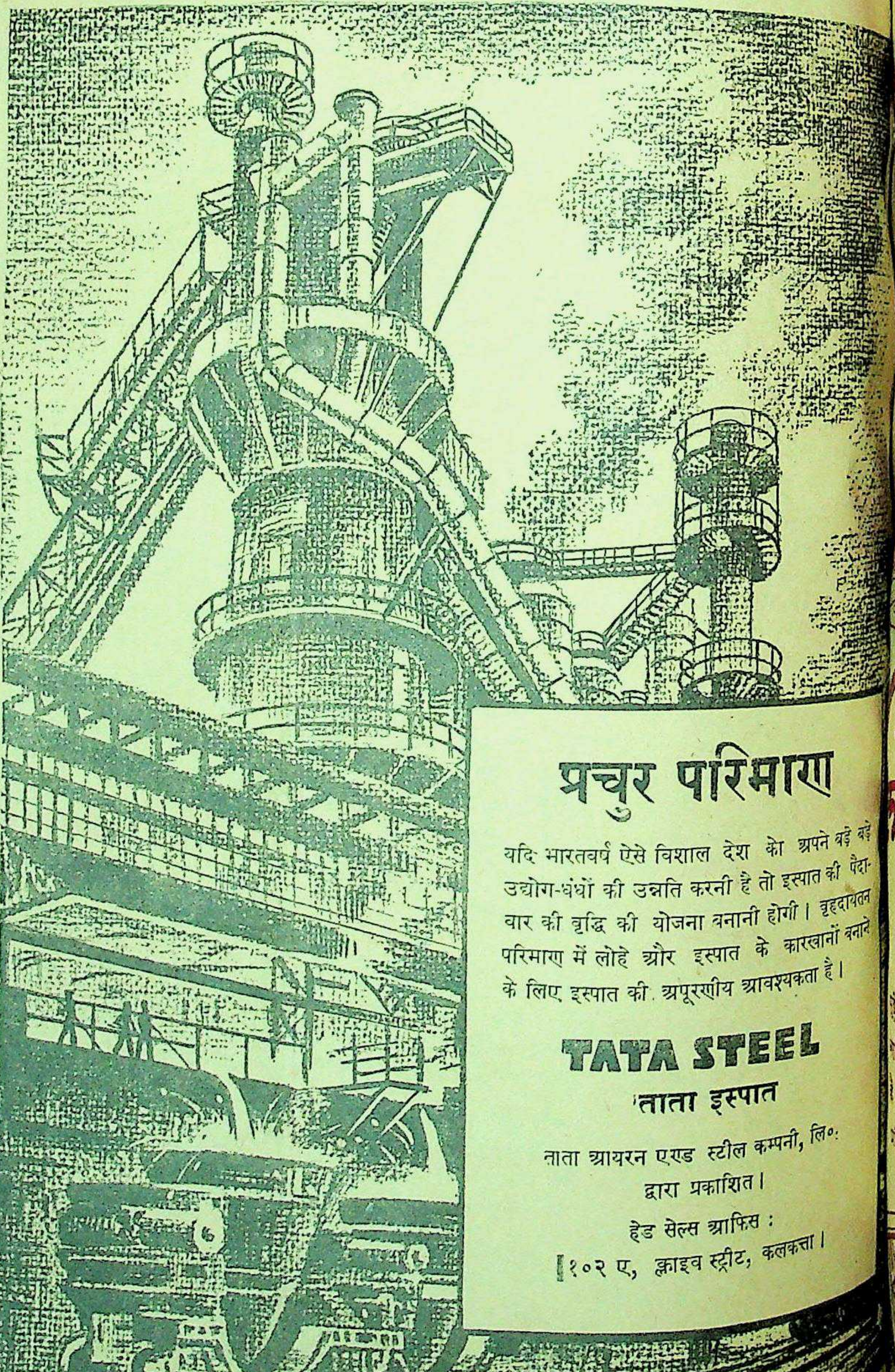

प्रचुर परिमाण

यदि भारतवर्ष ऐसे विशाल देश को अपने बड़े बड़े उद्योग-धंधों की उन्नति करनी है तो इस्पात की पैदावार की वृद्धि की योजना बनानी होगी। बृहदायतन परिमाण में लोहे और इस्पात के कारखानों बनाने के लिए इस्पात की अपूरणीय आवश्यकता है।

TATA STEEL

'ताता इस्पात

ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लि०
द्वारा प्रकाशित।

हेड सेल्स आफिस :
१०२ ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज आर्डर बुक करा लें।

राज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

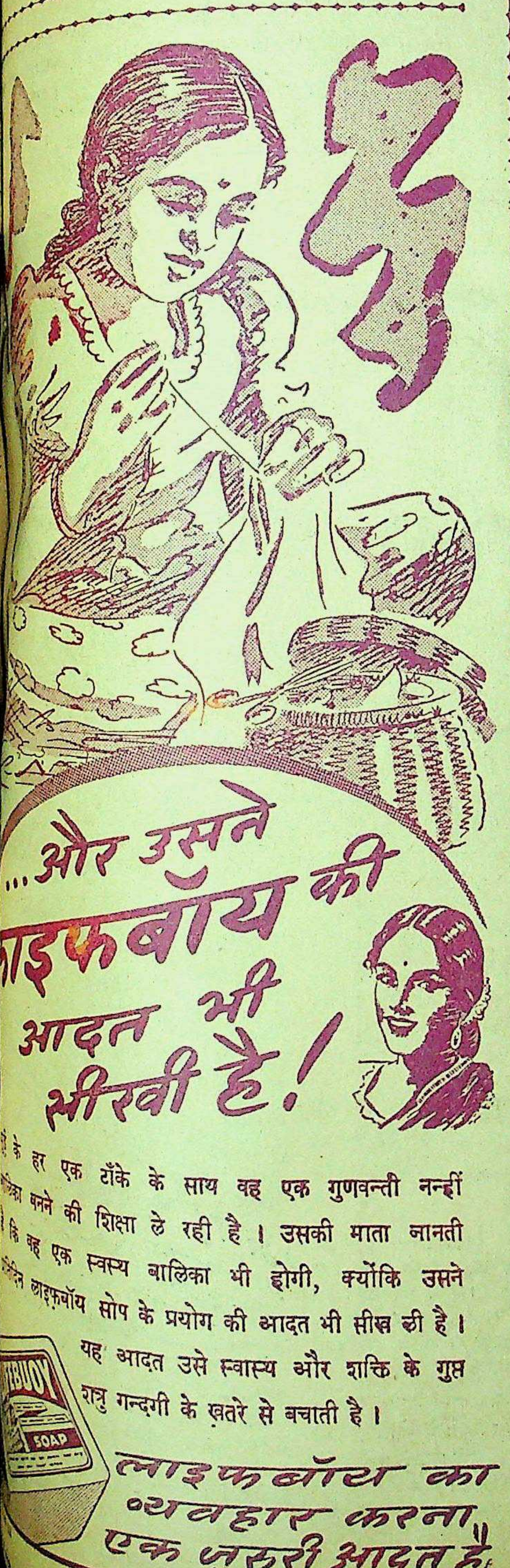

...और उसने ाइफबॉय की आदत भी सीखी है!

के हर एक टाँके के साथ वह एक गुणवन्ती नन्हीं बनने की शिक्षा ले रही है। उसकी माता जानती कि वह एक स्वस्थ बालिका भी होगी, क्योंकि उसने लाइफ़बॉय सोप के प्रयोग की आदत भी सीख ली है। यह आदत उसे स्वास्थ्य और शक्ति के गुप्त शत्रु गन्दगी के ख़तरे से बचाती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है।

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

"देश के दीप्तिमान नक्षत्र"-शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक का चिन्ह 'पंख' (विंग्स) मात्र ही नहीं, जिससे केवल इतना प्रकट होता है कि वह हवाई जहाज़ चला सकता है।

उसकी वास्तविक श्रेष्ठता उस सब से अधिक प्रशंसनीय गुण के कारण है जिसे साहस अथवा पराक्रम के नाम से पुकारते हैं।

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ दीजिए जिसका सबूत वह दे चुका है; उस कार्य के मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार कीजिए जिसे वह आजकल कर रहा है; और यह भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने देश के और स्वयं अपने भावी हित की नींव डाल रहा है। तब आपको पता लग जायगा कि हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दीप्तिमान नक्षत्र वही है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

AAA 82

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
SSK 118
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

७० वर्ष से भी अधिक
समय से 'ओरियन्टल' ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति एवम् सुरक्षा की स्थापना की है। केवल १९४४ में ही ८७३९८ व्यक्तियों ने लगभग २२,००,००,०००) का बीमा कराया
फन्ड ३६॥। करोड़ के ऊपर
हमसे हर प्रकार के जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामर्श करके आप सदा लाभ में रहेंगे।
ओरियन्टल
गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स कं० लि०
भारतवर्ष में संस्थापित १८७४ प्रधान कार्यालय, बम्बई
शाखा—३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद
ब्रांच, सेक्रेटरी, मिस्टर ए० सी० गुप्ता।

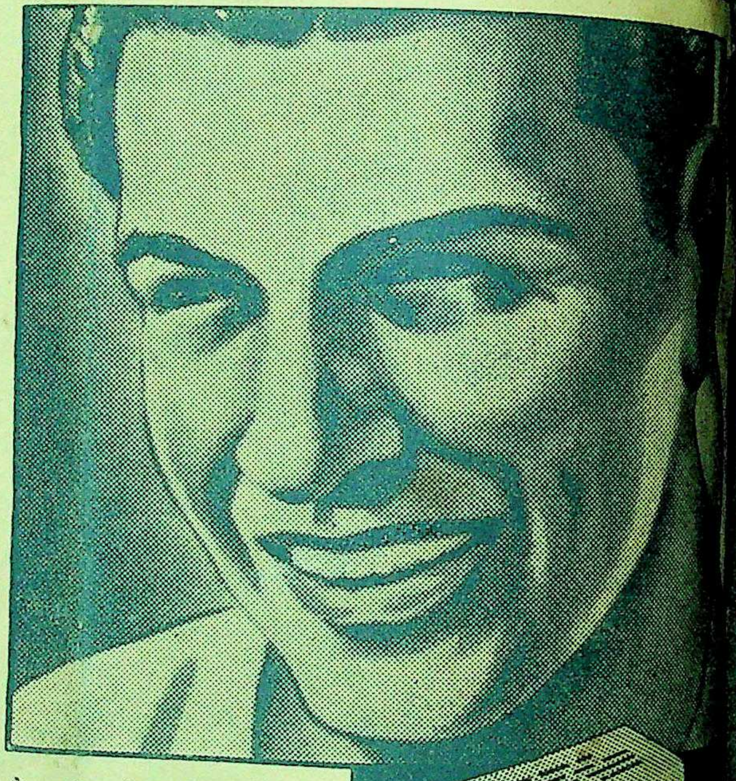

भाइयो!...
चर्म-स्वास्थ्य के लिये
रैक्सॉना
प्रयोग कीजिये

जल्दी में यह धारण मत बनाइये कि 'रेक्सॉना केवल स्त्रियों के रंग को निखारने वाला एक नया साबुन है। चर्म स्वास्थ्य का महत्त्व जाननेवालों सब के लिए रैक्सॉना एक ज़रूरी टॉयलेट साबुन है। यह ऐसा ताज़गी और स्फूर्तिदायक साबुन है जिसे इस्तेमाल करके पुरुषों को आनन्द आता है।

इस आकर्षक, हरे, और शीघ्र फेन देनेवाले साबुनका ये सबसे बड़ा लाभ है कि यह स्वास्थ्यदायक और चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' से बनाया गया है। रैक्सॉना का शीघ्र बननेवाला ज्यादा फेन स्फूर्ति और स्वास्थ्यदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रुओं में—जहांसे सब चर्मरोग और दाग प्रायः शुरू होते हैं—पहुँचा देता है। ऐसे आपकी सारी त्वचा किटाणुरहित, मुलायम, और साफ़ हो जाती है।

अब आप जान सकते हैं कि नियमित रूप से रैक्सॉना का प्रयोग करने से आप निश्चित ही अपने चर्म को स्वस्थ और सुरक्षित रख सकते हैं। इसलिए इस हरे, और शीघ्र फेन देने वाले साबुन को इस्तेमाल करना शुरूकर दीजिए—और करते रहिए।

नोट—यह याद रखिए कि शारीरिक सौन्दर्य का एक मात्र आधार है चर्म-स्वास्थ्य। और एक पुरुष को भी चर्म को आकर्षक बनाने का उतना ही अधिकार है जितना कि एक स्त्री को।

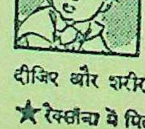

बच्चों के लिए रैक्सॉना—बच्चे के लिए भी वही आदर्श साबुन है जो उसका पिता इस्तेमाल करता है। इसका चर्म-रक्षक फेन बड़ा कोमल है। बच्चों को रैक्सॉना से नहलाइये-'कैडिल' को शरीर के ददोरों को मिटाने दीजिए और शरीर को इसेफन से बचाइये।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ्य-दायक और ताज़गी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थ्यरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। स्वास्थ्यदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

BP. 23-220-49 HI

THE NEW
Rexona
MEDICATED SOAP
Rexona
CONTAINING CADYL
अब! अधिक झाग और सुगन्धी देनेवाला

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।
फुन्सी, फोड़े, ऐक्जीमा, मुँहासे, आंख की फलौंस, झुर्रियां, ददोरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहां तिकोने टिन मिल सकते हैं।

REXONA PROPRIETARY LIMITED

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible] रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र निर्मल

मूल्य ७।।)
ख्या ३

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

सितम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 30th September, 1945

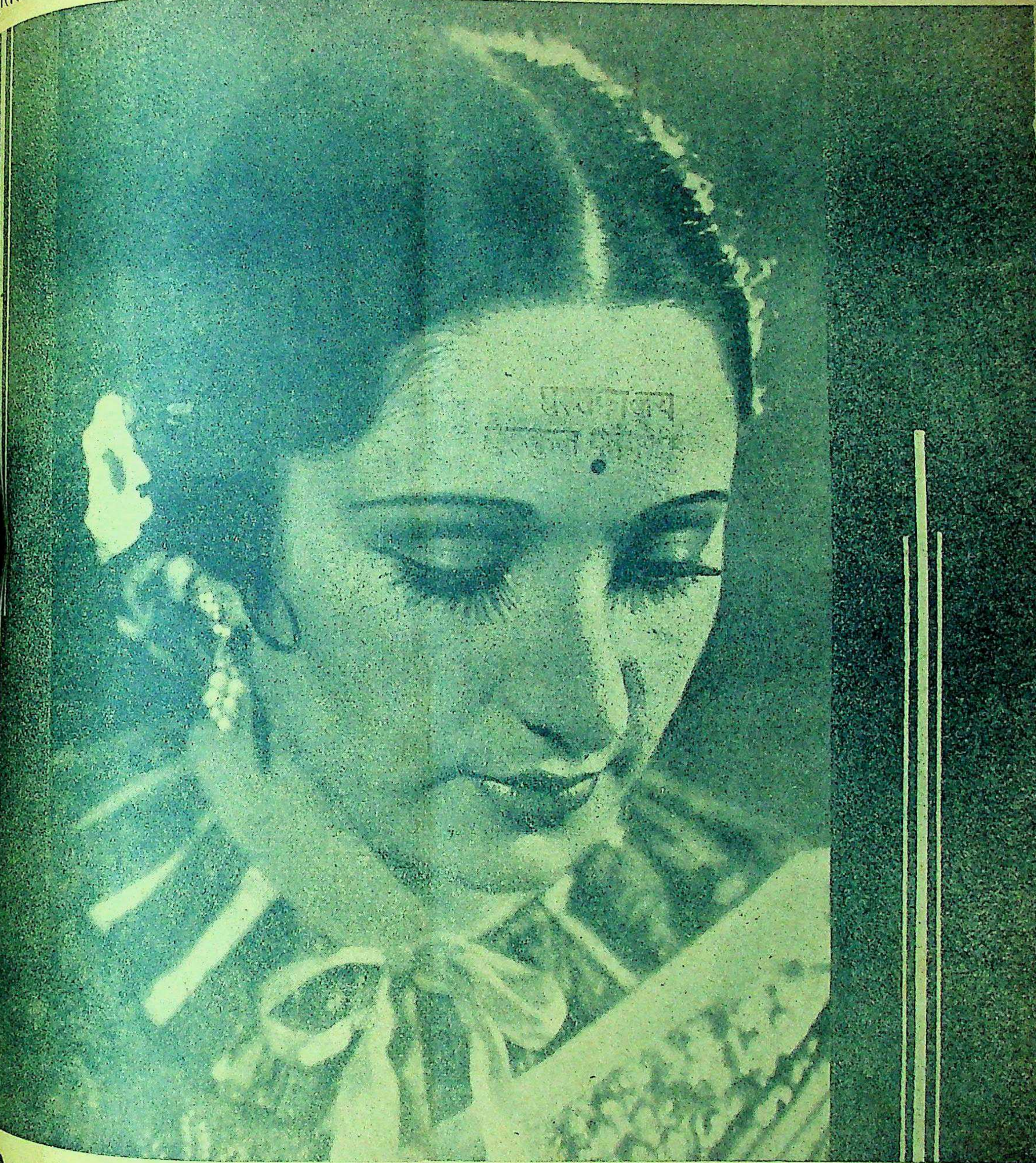

द्वन्द्व—यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव-हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २।।≈) दो रुपये ग्यारह आने।

ंत्रियों ने क्या किया ?
—मातृ-मंदिर—रंगमंच।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

अमरीका का वर्तमान साम्राज्यवाद।
वह रहस्य—क्या वह कलंकिनी थी?

प्रिंस होमियोपैथिक कालेज
बनारस १०५

गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड होमियोपैथिक, बायकेमिक, इंजेक्शन का तीनों डिप्लोमा (सर्टीफ़िकेट) आधी फ़ीस में लें या शिक्षा प्राप्त करें। नियमावली मुफ़्त मँगावें।

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था. १८२६
स्वदेशी
अरोंदा १८६६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़्त
युकॅलिप पेन बाम
दाद का मरहम
...कर बन्धु
बम्बई ४

साँसिये मत
अगर खाँसी आये तो
ग्रिमौल्ट्स
सिरप को
याद कीजिये

ATKINSONS
* * *
सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

कठिन परिश्रम के बाद;

[illegible] शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी	१)
अनुराग	१)
कलंक	१)
गल्पगुच्छ (चार भाग)	४॥=)
टालसटाय की कहानियाँ	१)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफ़ी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

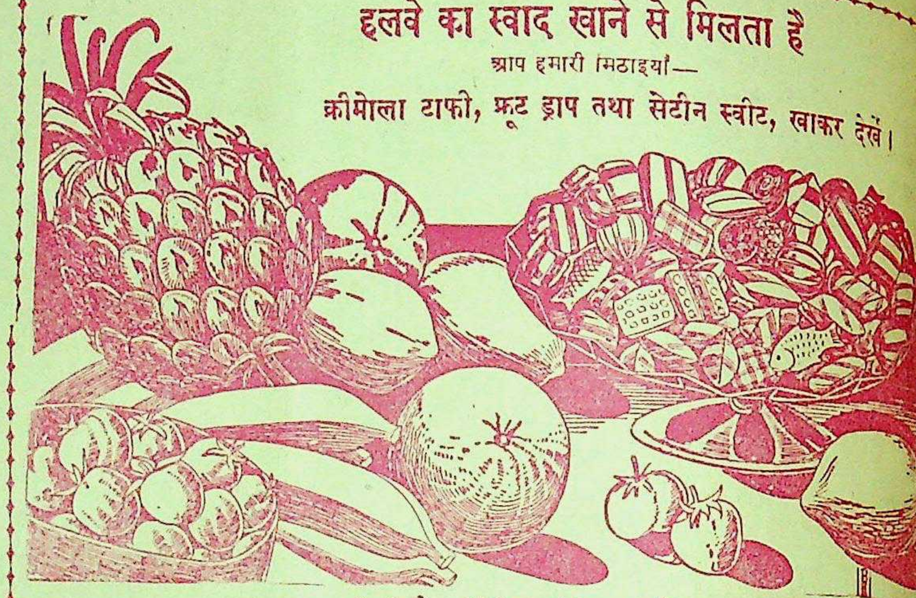

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

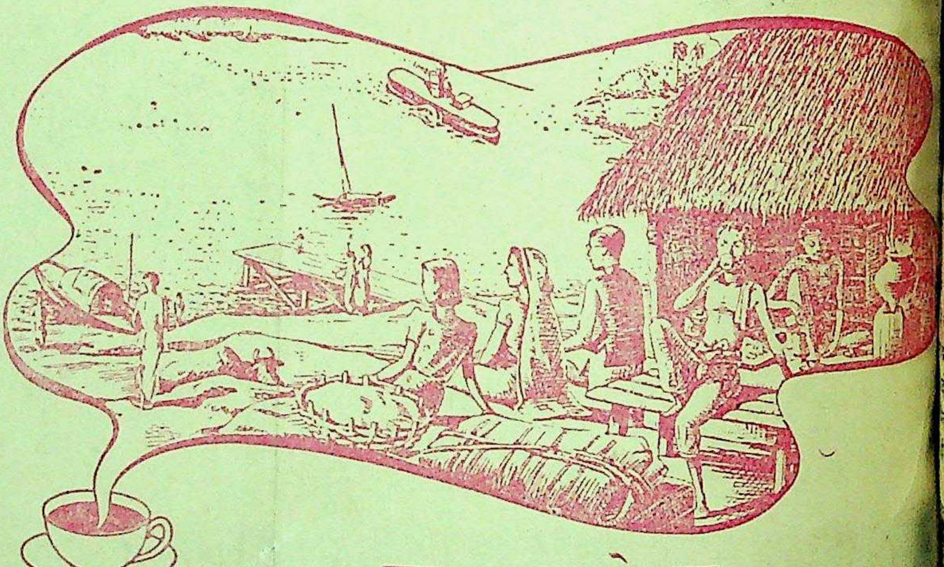

नाव खेना

धनी या गरीब, व्यस्त या अवसरभोगी, सबको नाव के लिए इन्तजार करना पड़ता है। मल्लाह या उसकी पत्नी बाजार की ओर बोझा लिये मीलों धूप में चलने के बाद अवश्य ही एक प्याला चाय पीने का अधिकार रखती है। मनोरंजनकारीगण भी अवसर के दिन में रास्ते के किनारे पर चाय पीना एक विशेष आनन्द समझते हैं।

पूर्वीय बंगाल, मालाबार, आन्ध्र-देश, काठियावाड़ तथा जहाँ भी समुद्र-तट समीप है, नाव खेना वहाँ अनिवार्य है। गंगा, सिंधु या कावेरी ऐसी बड़ी बड़ी नदियों में पुलों से कहीं अधिक यातायात नावों से होता है। दोनों तटों पर यदि नहीं तो नदियों की एक ... अवश्य ही आप सदा आरामदायक चाय की ... पायेंगे। ताजी आराम-दायक ब्रुक बण्ड चाय पान के बाद नदी की हवा के कारण ठहरना भी भार नहीं मालूम पड़ता है।

बारम्बार वितरण ...
ताजगी लिये ...

ब्रुक बण्ड
दो पत्तियाँ और एक कली

देशदूत

८ संख्या ५]

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, ३० सितम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

और अमरीकन प्रजातन्त्र की दुनिया में धूम मची हुई लड़ाई प्रजातन्त्र के नाम लड़ाई समाप्त भी हो गई का सिलसिला बराबर चालू है कि पहले घर में चिराग बाहर जलाने के लिए ठीक इसी वसूल पर इस और ब्रिटेन योरोप में प्रजा- जलाने के लिए परेशान हैं। इसी परेशानी को दूर योरोप को प्रजातन्त्र की की उम्मीद से लन्दन दिनों से पंच महान राष्ट्रों की एक पंचायत हो ब्रिटेन, रूस, चीन वैदेशिक मन्त्री योरोप के कर रहे हैं। इनमें दो हैं कि योरोप में प्रजातन्त्र कायम होकर के सभापति हैं रूस के मोलोटोव !

* *

अपने राम तो तभी मन्त्री सम्मेलन होकर रहेगा, साहब सभापति चलता-पुरजा जीव कि यदि लन्दन में ले जायेंगे किन्तु रूस लदन में सम्मेलन, न मिला तो कम से कम यही हाल इस वक्त है। वीर मित्रराष्ट्र बड़े रहे हैं, लेकिन रूस तो पैतरा बदलने में उससे सकता है ? वह लुढ़काने हुआ है। अमरीका प्रजातन्त्र फैलाना और माल मारना चाहते हैं प्रजातंत्र फैलाना चाहता नहीं अगर उसे घटिया जाये। इसलिए सम्मेलन है। असल बात तो है कि यह कोरमकोर बाजारी लड़ाई है, कैसा प्रजातन्त्र और कैसा कम्यूनिज्म। महाकवि अकबर ने ठीक ही लिखा है—

न यह दीनी लड़ाई है,
न यह मजहबी लड़ाई है।
हमारी और उनकी,
यह तो बाजारी लड़ाई है ॥

* * *

प्रजातन्त्र का दूसरा युद्ध सच पूछिये तो अब शुरू हुआ है, जब से लड़ाई समाप्त हुई है। सारी दुनिया में प्रजातन्त्रीय चुनाव की धूम है। ब्रिटेन तो इस खतरे से पहले ही पार हो चुका है किन्तु वह चाहता है कि योरोप के प्रत्येक राष्ट्र प्रजातन्त्रात्मक चुनाव की लड़ाई में जूझने के लिए पिल पड़ें। सचमुच चुनाव ही आजकल की दुनिया का सच्चा प्रजातन्त्र है। कम से कम अमरीकन और अँगरेजों के प्रजातन्त्र का महल तो इसी की बुनियाद पर कायम है। इसीलिए जहाँ देखिए नये चुनाव की नोचा-चोंथन अपना मुँह बाए सामने खड़ी है। योरोप में चुनाई के प्रजातन्त्र का ढोल एँग्लो अमरीकनों ने बजाना आरम्भ कर दिया है लेकिन रूस अपनी तुरही अलग बजाने की फिक्र कर रहा है। इसीलिए ढोल और तुरही के मेल के गड़बड़झाले ने चुनाई के प्रजातन्त्र में अड़ङ्गा पैदा कर दिया है। लेकिन जब इतनी बड़ी लड़ाई अमरीका और ब्रिटेन मिलकर जीत सकते हैं तो क्या योरोप में चुनाव के बल पर प्रजातंत्र नहीं कायम करा सकते ? रूस जरा देखता भर जाये !

* * *

रह गया भारत ! यहाँ तो अब सारी राजनीति चुनाव पर ही टिककर खड़ी हो गई है। भारत में भला चुनाव के मामले में अड़ङ्गा लगानेवाला कौन है ? रूस की दाल तो यहाँ गलने से रही। अब केवल चुनाव ही चुनाव रह गया। कांग्रेस डट कर मैदान में आ गई है। सरदार पटेल और पंडित नेहरू ने ललकार दिया है कि लेना है काँग्रेसी वीरो जाने न पायें एसेम्बली में गैरबिरादर। अब डटकर लड़ा जायेगा और अगले अप्रैल मई से चुनाव-प्रजातन्त्र अपने जोड़े-जामें के साथ आकर साक्षात खड़ा होगा। खैर, कांग्रेस तो लड़ेगी ही क्योंकि उसका पेशा ही युद्ध करना हो गया है। लेकिन हमारी मुसलिम लीग जो 'पाकिस्तान' बनाने वाली है, उसकी क्या गति होगी ? लीग के वह नवाबजादा, नवाब, खान बहादुर बेचारे क्या करेंगे ? क्योंकि इनके पीछे पड़ गये हैं कांग्रेसी मुसलिम ! न जाने किस घड़ी में लीग का जन्म हुआ कि आज उसके पीछे, मोमिन, अहरार, जमायतल-उलेमा, शिया सभी जमातें पिल पड़ी हैं। खुदा लीगी बन्दों की हिफाजत करे और चुनाव में बरकत दे। कांग्रेस तो कांग्रेस राष्ट्रीय मुसलमान कहाँ से टपके पड़े हैं ? बेचारे लीगी बन्धुओं को असेम्बली की मेम्बरी से भी वह महरूम रखना चाहते हैं। चुनाव के प्रजातन्त्र का साक्षात दर्शन होने ही वाला है।

* * *

कहा जाता है कि अभी भारत में राशनिंग और कन्ट्रोल का रवैया जारी रहेगा। अपने राम की राय में जरूर जारी रहना चाहिए क्योंकि आखिर राशनिंग-विभाग में लोगों को जो लम्बी तनख्वाहें और रकमें मिल रही हैं वह कहाँ मुअस्सर होगी ? यही कम क्या है कि सरकार लोगों को खाना दे रही है, आधा या चौथाई ही पेट सही। कम से कम अकाल तो बंगाल के सिवा और कहीं नहीं पड़ने पाया ! रह गया कपड़ा। पुराने जमाने में ऋषि और मुनि तक पेड़ों की छाल पहन कर रहते थे फिर आज तो लोग नंगे भी रह सकते हैं। शर्म की क्या बात है, वक्त पड़ने पर सरकार के लिए त्याग दिखाना जनता का फर्ज भी है। मानवता यही है कि भाइयो दूसरों को खिलाओ और खुद उपवास करो। खुद तकलीफ सहो लेकिन दूसरों को आराम दो। इसलिए सरकार जो कुछ राशनिंग या कन्ट्रोल के मामले में कर रही है, वह हमारी पुरानी परम्परा को समझ कर ही। इसीलिये वह फिलहाल राशनिग और कन्ट्रौल की भारतीय परम्परा पर आँच नहीं आने देना चाहती। बधाई !

* * *

जापान के सम्राट हेरोहितो जापानी-गद्दी छोड़ने वाले हैं, क्योंकि उन्हीं के कारण सुदूरपूर्व में युद्ध के बादल गरजे और बेकार अमरीका और ब्रिटेन को परेशानी मोल लेनी पड़ी। कहा जाता है कि शासन का संचालन राजकुमार कोनोवे को सौंपा जायेगा। राजकुमार कोनोवे की योग्यता में इसलिये फर्क नहीं हैं कि उनकी शिक्षा-दीक्षा इँगलैंड और अमरीका में हुई है। इससे सिद्ध है कि वह संसार में स्थापित होने वाले प्रजातन्त्र से पूरी वकफियत रखते हैं। अपने राम की राय में राजकुमार कोनोवे सनदयाफ्ता हैं और फिर ऐसी सनद जिसे उन्होंने अमरीका या ब्रिटेन में प्राप्त की है, इसलिये उनसे बढ़ कर जापान का शासन-संचालन कौन कर सकता है ?

* * *

सचमुच यह आश्चर्य की बात है कि आज तक यह फैसला न हो सका कि राष्ट्रगौरव सुभाषचन्द्र बोस जिन्दा हैं या स्वर्गवासी हो गये ? वह भारत से एकाएक लापता हो गये और बंगाल की सरकारी खुफिया पुलीस ताकती ही रह गई। मित्र-राष्ट्रों के पास तोपें, बन्दूकें, हवाईजहाज फौज-फक्कड़ होते यह पता नहीं चल रहा है कि श्री सुभाषचन्द्र बोस जीवित हैं या अजीवित। अमरीका ने 'आटम बम' बना दिया, बड़े बड़े दिमाग लड़े, लेकिन एक भी ज्योतिषी या वैज्ञानिक वहाँ नहीं दिखाई दे रहा है जो यह बता सकता कि श्री सुभाष बोस का सचमुच रहस्य क्या है ? किया क्या जाय भारतवर्ष है ही रहस्यों से पूर्ण। गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा ही है कि "यह रहस्य जाने कोउ कोऊ।"

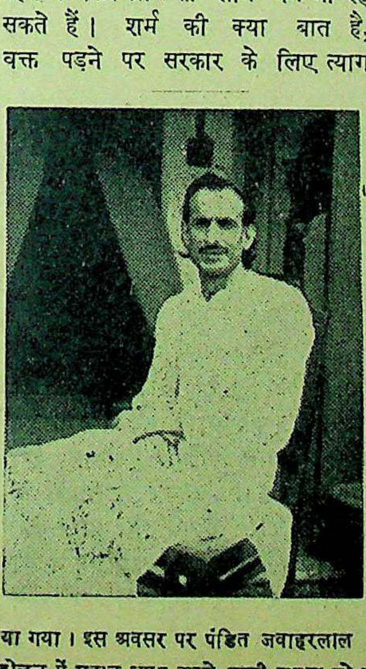

ग्रेस कमेटी का अधिवेशन ३७॥ महीने बाद बम्बई में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल, आचार्य कृपलानी तथा पंडित गोविन्दबल्लभ पन्त ने सन् ४२ के अगस्त आन्दोलन में महान् त्याग करने वाली जनता को बधाई दी।

सम्पादक का पृष्ठ

फिर वही गोलमाल !

वाइसराय लार्ड वेवेल मजदूर-सरकार से विचार-विमर्श करने के बाद भारत वापस लौट कर अपने साथ कौन सी नई चीज़ लाये? कुछ आशावादी राजनीतिज्ञों का यह अनुमान था कि लार्ड साहब अवश्य ही कुछ न कुछ अपने साथ लायेंगे जिससे वर्तमान राजनीतिक उलझन के सुलझाने में सहायता प्राप्त होगी। किन्तु अंत में सारी आशाओं पर पानी फिर गया। लार्ड वेवेल ने अपने भाषण में ऐसी गोलमोल बातें कहीं जिनका कोई परिणाम नहीं निकाला जा सकता। हाँ, जान यह अवश्य पड़ता है कि नई मजदूर-सरकार परले सिरे की वाचाल है। भारतीयों को स्वशासन देने का उसने दृढ़-संकल्प कर लिया है, ऐसा लार्ड वेवेल ने अपने भाषण में घोषित किया है। बात ठीक भी है। स्वशासन तो मिलना ही चाहिए, इस ऊँचे आदर्श को मजदूर सरकार और लार्ड वेवेल पूरी तरह स्वीकार करते हैं, किन्तु अभी तक उसका कोई प्रत्यक्ष स्वरूप नहीं दिखाई दे रहा है। संसार जानता है कि क्रिप्स प्रस्ताव, भारत के प्रगतिशील तथा राष्ट्रीय दलवालों ने अस्वीकार कर दिया था, किन्तु ब्रिटिश सरकार अभी तक क्रिप्स-प्रस्ताव पर अडिग बैठी हुई है। हाँ, एक नई बात अब यह होने जा रही है कि सार्वजनिक चुनाव के आधार पर केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारों का पुनःसंगठन होगा। चुनाव हो जाने के बाद सरकार एसेम्बलियों तथा रियासती प्रतिनिधियों के परामर्श से विचार-विनिमय करेगी कि नया संघ-शासन किस नीति के आधार पर संगठित हो, साथ ही क्रिप्स-प्रस्ताव में संशोधनों अथवा परिवर्तनों की आवश्यकता है अथवा नहीं?

मतलब यह है कि जो कुछ भी होना है वह अन्तिम चुनाव के बाद ही होगा। आगामी आर्थिक वर्ष के पूर्व किसी प्रकार की आशा की ही नहीं जानी चाहिए। अब तक तो युद्ध-परिस्थिति के कारण भारतीय राजनीतिक अड़ंगा ज्यों का त्यों बना रहा। किन्तु अब युद्ध-समाप्ति के बाद भी ब्रिटिश सरकार अपनी कूटनीति का त्याग करती हुई नहीं दिखाई देती। हथियारों के युद्ध के बाद अब वाणी का चुनाव-युद्ध प्रारंभ हो रहा है। मजदूर सरकार के प्रति पहले से धारणा रही है कि संभव है वह भारतीय अड़ङ्गा कुछ अंशों में दूर कर सके किन्तु अभी तक उसकी तथा उसके प्रतिनिधि लार्ड वेवेल की ओर से कोई प्रत्यक्ष कार्य नहीं दिखाई पड़ रहा है। सचमुच यह भारत का ही नहीं ब्रिटिश सरकार का भी दुर्भाग्य है। भारतीय राजनैतिक आन्दोलन आज क्रांति के पथ पर अग्रसर है। कांग्रेस की चार-पाँच वर्ष पूर्व और आज की विचारधारा में जबरदस्त परिवर्तन होता जा रहा है। भविष्य में ब्रिटेन की गोलमोल नीति और भारतीय स्वाधीनता की स्पष्ट माँग से जबरदस्त टक्कर होने की संभावना है। इसलिए हमारी राय तो यही है कि ब्रिटेन भारत को जितना भी शीघ्र संतुष्ट करने की चेष्टा करेगा उतनी ही उसकी स्थिति में दृढ़ता आती जायेगी। क्योंकि देश की राष्ट्रीय माँगों को वह कब तक ठुकराती रहेगी। गोलमोल राजनीति के दिन अब लद गये हैं। उसे भारतीय स्वाधीनता की अंतिम स्वीकृति देनी ही पड़ेगी।

* * *

अकाल जाँच कमीशन की रिपोर्ट

भारत सरकार द्वारा नियुक्त अकाल जाँच कमीशन की अंतिम रिपोर्ट पिछले दिन प्रकाशित हो गई है, जो हमारे पास आई है। रिपोर्ट काफी भारी भरकम है साथ ही बड़े क्रम से तथ्यों, आँकड़ों तथा जाँच-पड़ताल के बाद प्रस्तुत की गई है। जाँच कमीशन की रिपोर्ट देखने पर कमीशन के चेयरमैन सर जान वुडहेड तथा उनके सहयोगियों की प्रतिष्ठा पूर्ववत् कायम रहती है, क्योंकि उन्हीं के द्वारा गत मई मास में अकाल सम्बन्धी जाँच की जो पहली रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, वह भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी।

पिछली रिपोर्ट में विशेषतया बंगाल के भयंकर अकाल का वर्णन है, जिसमें उन कारणों को स्पष्ट किया गया है जिससे मानवता पर एक महान् विपत्ति आई थी। प्रस्तुत अन्तिम रिपोर्ट में युद्ध के बाद भोजन तथा खाद्य-समस्या के सम्बन्ध में व्यापक प्रकाश डाला गया है। पिछले दिनों की घटनायें बहुत ही दर्दनाक थीं, जिनके कारण ही कमीशन को भविष्य की समस्याओं पर विश्वास और दूरदर्शिता के साथ विचार करना पड़ा है, जो वास्तव में प्रशंसनीय है।

बुद्धिमानी के साथ सदियों से चली आनेवाली भोजन तथा गरीबी की समस्या को सुलझाने और अकाल तथा भुखमरी की भयंकर घटनायें न होने देने के लिए हमारे शासकवर्ग में, प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों में, राज्यों तथा सरकारी अफसरों में अन्य समस्याओं से अधिक विश्वास और समझ की आवश्यकता है। सभी बातों पर विचार करते हुए वुडहेड कमीशन इस निर्णय पर पहुँचा है कि सरकार को पर्याप्त मात्रा में सबके लिए भोजन देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी चाहिए। दक्षिण अफ्रीका की तरह हम भारतीयों की सरकार ही नहीं है ऐसी बात नहीं लेकिन वह सरकार विदेशी है जो आधुनिक युग में भी जनता की जिम्मेदारी अपने कन्धों पर नहीं उठाना चाहती। कमीशन का कहना है कि भारत एक ऐसा देश है जहाँ भोजन की समस्या प्रधान है और जिस पर केन्द्रीय, प्रान्तीय सरकारों तथा रियासतों को सदैव ध्यान रखना चाहिए। यह बिलकुल स्पष्ट है कि भोजन के वितरण-कार्य में यदि आलस्य और लापरवाही से काम लिया गया तो उस का परिणाम अच्छा नहीं होगा। वरन् एक महान् विपत्ति का सामना करना पड़ेगा। भारत में इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं लेकिन सरकार की नीति में अभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। कमीशन ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि भारतीय सरकार ने भोजन की समस्या सुलझा कर जनता को स्वस्थ बनाने का कभी भी प्रयत्न नहीं किया। अकाल पड़ने पर प्रत्येक [illegible] कार्यों-द्वारा उसकी भयंकरता और दुष्परिणाम को मिटाने की कौन कहे उसने कभी यह तक अनुभव नहीं किया कि भारत की करोड़ों की संख्या वाली जनता के खाने की जिम्मेदारी उस पर है? आये दिन सरकार का कर्तव्य कानून की सीमा तक ही सीमित नहीं रहती। उसकी और भी जिम्मेदारियाँ होती हैं। सन् १९४२ के अगस्त और सितम्बर के महीनों में भारत सरकार ने जिस अमानुषिक भावना का परिचय दिया है और भोजन की समस्या जटिल पर जटिल होती गई जिसके परिणामस्वरूप लाखों भूख के कारण मौत के मुँह में चले गये। कलकत्ता तथा बंगाल के अन्य गाँवों में जो कुछ हुआ उसे तो सभी जानते ही हैं।

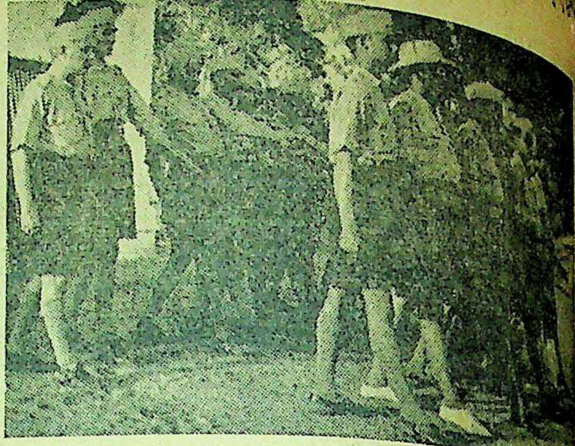

कांग्रेस-स्वयं सेवकों की रेली—पंडित नेहरू पीछे चलते हुए दिखाई दे रहे हैं।

समय समय पर सरकार की गैर-जिम्मेदारी और लापरवाही का परिणाम विपत्तियों के रूप में हमें देखने को मिलता रहा है। यहाँ तक कि उन विशेष संकटों के न रहने पर भी जनता औसत दर्जे से भी नीचे रही है। आमतौर पर भी ३० प्रतिशत से अधिक जनता को रूखा-सूखा भोजन भी पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता है। देहातों में इतनी गन्दगी रहती है जिसका कुपरिणाम वहाँ वालों को भोगना पड़ता है। कमीशन ने सरकार और उसके अफसरों को चेतावनी दी है कि उसे सदैव भोजन-सम्बन्धी विपत्तियों का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। रूस का उदाहरण देते हुए उसने यह बतलाया है कि २५ साल में उसने इतनी शक्ति प्राप्त कर ली है कि संसार में वह सबसे शक्तिशाली राष्ट्र हो गया है। इतना होते हुए भी कमीशन ने इस समय की सरकार की जिम्मेदारियों का अनुभव किया है। उसकी राष्ट्र-निर्माण की योजना में ईमानदारी कितनी है और प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारें उसे कार्यरूप में परिणत करेंगी या नहीं इसे हम नहीं कह सकते। शक्ति जिसके हाथ में आ जाती है वे विश्वास और समझ से कोसों दूर रहते हैं। कमीशन ने तो अपने उस काम को पूरा कर दिया है जो उसे सौंपा गया था। यह सब भारत की भविष्य में उन्नति हो, इसी आशा से हुआ है। उसका होना न होना दूसरी बात है।

* * *

आर्थिक और व्यावसायिक संगठन

अमेरिका और ब्रिटेन से लौटे हुए भारतीय उद्योगपतियों ने वहाँ के उद्योग-धन्धों के संबन्ध में एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। उससे ज्ञात होता है कि उन्होंने भारत के सम्बन्ध में विदेशों में फैले हुए भ्रमपूर्ण वातावरण को दूर करने तथा वहाँ की जनता के सामने वास्तविक तथ्यों को रखने का भरसक प्रयत्न किया है। उन्होंने [illegible] पर जोर दिया है कि स्थायी रूप

से एक ऐसे संगठन की आवश्यक
भारत की सच्ची स्थिति और त
प्रचार करने में समर्थ हो तथा
भविष्य के मिथ्या, भ्रमपूर्ण और
प्रचार कार्य के संबन्ध में भ्रम
भारत के ही खर्चे के बल पर
और जो उसके लिए घातक
आये हैं और हो रहे हैं।
समझते हैं कि भारत की
अन्य उद्योगपति भी इस विचार
होंगे और शीघ्र ही ऐसे संगठन
में योग देंगे जो भारत के
लिए आर्थिक तथा औद्योगिक
उपयोगी सिद्ध हो सके।

यात्रा के परिणामस्वरूप उ
को यह विश्वास हो गया है कि
औद्योगीकरण की उन्नति शीघ्र
लिए हमें विदेशों से बिना किसी
के यांत्रिक और व्यावसायिक
अपनाना पड़ेगा। यांत्रिक
बहुत लाभ हो सकता है।
ब्रिटेन में पुरानी मशीनें
लेकिन उसका खरीदना
तो संसार के अन्य देशों
होना है। वह इस बात की
हैं कि अमेरिका में युद्ध का
के लिए तैयार रक्खा हुआ है!

इस क्रय का सम्बन्ध भारत
के प्रति पावने से भी है। नैतिक
ब्रिटेन इसका देनदार है।
भारतीयों के त्याग का एहसान
है, तो यह उसका अन्याय है।
में से अधिक भाग हमें अमरीका
करने के लिए मिलना चाहिए
उसके इस समय चलता हुआ
सुधारा जा सकता और न भविष्य
कोई योजना ही बनाई जा सके
भारत को इस पौण्ड-पावने से
का अवसर नहीं दिया जाता
कम करना चाहता है; इस
वह भी आर्थिक समस्याओं के
रिका से कर्ज ले सके, तो इसके
कि इस देश के रहनेवालों को
स्तर को ऊँचा उठाने और
जीवन यापन करने में भी वह

उद्योगपतियों की रिपोर्ट
औद्योगीकरण के लिए रचना
उपयोगी है क्योंकि भारत की
उसके उद्योग और कृषि-सुधार
में ही है जो जीवन-मरण का
हल है। यहाँ के जन साधारण
जीवन-यापन करते हैं। आबादी
बढ़ रही है। इसलिए जब तक
आर्थिक समस्या नहीं सुलझाई
तक उन्नति का मार्ग प्रशस्त
सकता। ब्रिटेन की स्वार्थी नीति
णाम उसे मिलेगा। क्योंकि
भी ब्रिटेन या अमेरिका किसी
बाजार तैयार करने के लिए

ीयता और साम्प्रदायिकता

के हल से उलझन क्यों बढ़ती जाती है ?

ख़क. श्री गंगाधर इंदूरकर, 'साहित्यरत्न' (पत्रकार)

और 'राष्ट्रीयता' की क्या वास्तविकता है ? क्या हमारी राष्ट्रीयता साम्प्रदा-
श्रित होकर विकसित हो सकती है ? यह प्रश्न भी आज राष्ट्र के नेताओं
चारकों के सामने है। इसका स्पष्टीकरण—राजनीति नहीं राष्ट्र की स्वाधीनता
की दृष्टि से हल होना चाहिए। लेख विचारणीय है।

'राष्ट्रीयता' यह दो ऐसे
आजकल के साधारणतः
और कुछ गैर पढ़े-लिखे
परिचित हैं। समाचार-
नों में, कविताओं में, लेखों
में सभी जगह इन शब्दों
हुई है। हिन्दुस्तान में इन
तूफ़ान मचा रखा है कि
हिन्दू-मुसलमान सभी
हैं। साधारणतः प्रत्येक
शब्दों का निस्संकोच प्रयोग
शब्दों का प्रयोग करनेवाले
लोग ऐसे हैं जो यह
इनका वास्तविक अर्थ

के प्रतीक और महापुरुष
त्मा गांधी।

करने में हमें संकोच
कि इन शब्दों का रूप
हुए भी इनकी भावना
'नेशनलिटी' 'नेशन-
शब्दों के अनुवाद करने
गये हैं। ठीक भी है।
सम्बन्ध होने पर ही
राष्ट्रीयत्व की कल्पना

लोग यह मानते हैं कि इस
निवासी ही राष्ट्रीय हैं और
आनेवाले लोग अराष्ट्रीय।
मान इस देश में आक्रमण-
आये थे उस समय यहाँ
राष्ट्रीय कहे जा सकते
में स्थिति बदली। लोगों
भावनाओं के प्रति प्रति-
और परिणाम-स्वरूप
दावा करनेवाली संस्थाओं
हो गया कि उनमें
ईसाई, पारसी, अछूत,
के प्रतिनिधि हों।
कुछ नेताओं ने
और अवसर से जाति-
के लिए राष्ट्रीय
जाति के विरोध की
स्वतः चुप रहनेवाली
और यह समझा जाने

लगा कि किसी भी संस्था के राष्ट्रीय होने के लिए उसमें मुस्लिम प्रतिनिधित्व अत्यावश्यक है। यह भावना इतनी प्रबल हुई कि प्रत्येक संस्था अपना राष्ट्रीयत्व प्रदर्शित करने के लिए कम से कम कुछ मुसलमान सदस्य अवश्य रखने लगी। आज किसी भी संस्था की राष्ट्रीयता की माप यह हो गई कि उसमें मुस्लिम सदस्यों का भी होना जरूरी है। मुस्लिम तथा राष्ट्रीयता ये दोनों लगभग एक-सी चीजें हो गई हैं। मेरे विचार से हमारे सामने हिन्दू-मुस्लिम-समस्या विकट रूप में उपस्थित होने का यह भी एक प्रमुख कारण रहा है। अर्थात् जातीयता के आधार पर राष्ट्रीयता निर्माण करने का प्रयत्न ही हिन्दू-मुस्लिम-समस्या की विशेषता रही है।

इन बातों का यह अर्थ कदापि नहीं है कि मुसलमान जाति में पैदा होने के कारण किसी व्यक्ति-विशेष को राष्ट्रीयता के अधिकार न मिलने चाहिए। किन्तु स्पष्ट अर्थ यह है कि किसी भी व्यक्ति को उसकी जाति के कारण राष्ट्रीयता या अराष्ट्रीयता का हकदार नहीं माना जाना चाहिए। हमारी राष्ट्रीयता किसी भी अंश में साम्प्रदायिकता पर अवलम्बित न होनी चाहिए। आज देश के सामने हिन्दू-मुस्लिम-समस्या अपना विकट रूप धारण किये हुए है और यदि यह स्थिति सुधारी नहीं जाती तो कल हमारे सामने ईसाई, अछूत, सिख, ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि की समस्यायें इससे भी उग्रतर रूप में खड़ी होती हुई दिखाई देंगी।

हिन्दू-मुस्लिम-समस्याओं को हल करने के लिए कुछ लोग कहते हैं कि मुसलमान हमारे छोटे भाई हैं। उनकी बातों को, चाहे वह अनुचित ही क्यों न हों, मान लेना चाहिए। ऐसा कहनेवालों को मैं एक देहाती कहावत की याद दिलाना चाहता हूँ। 'बुढ़िया के मरने का खौफ़ नहीं, मृत्यु के परचने का दुख है।' यदि आज हम थोड़ी देर के लिए मुसलमानों की सारी माँगें स्वीकार भी कर लें तो देश की समस्या का हल कहाँ होता है ? कल अछूतों की माँगें पेश होंगी और परसों सिखों की। हम केवल माँग पूरी करनेवाले ही रह जायेंगे। इतना ही नहीं, आगे चलकर अछूत, मुसलमान, आदि जातियों के स्वार्थ जब आपस में टकरायेंगे तो देश में एक महान् संघर्ष उपस्थित होगा।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्रीयता क्या है, इस बात की स्पष्ट विवेचना होनी चाहिए। यह बहुत ही महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। मैं विद्वानों तथा राजनीतिज्ञों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस प्रश्न पर विद्वानों को प्रकाश डालना चाहिए। राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में लोगों में जो अज्ञान आज व्याप्त है, वह दूर होना चाहिए।

पंच महान् राष्ट्रों की नई पंचायत

मित्रराष्ट्रों में बँटवारे के प्रश्न पर मतभेद क्यों ?

लेखक, श्री चंद्रकुमार, बी० ए०

लंदन में संसार के पाँच महान् राष्ट्रों के वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन हो रहा है। इस सम्मेलन में योरोप के पराजित शासकों की नई शासन-व्यवस्था तथा भूमध्य सागर के आधिपत्य आदि की समस्याओं पर घोर विवाद चल रहा है। इस लेख में योग्य लेखक ने सम्मेलन की कार्यवाहियों पर प्रकाश डाला है और यह स्पष्ट किया है कि ऐसा न हो कि सम्मेलन एकाएक असफल रूप में भंग हो जाये ?

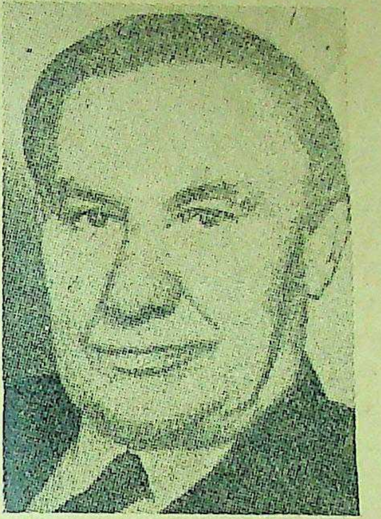

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री मिस्टर बैबिन जो वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में भाग ले रहे हैं।

संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और फ्रांस आदि 'पंच महाराष्ट्रों' के परराष्ट्र-मन्त्रियों से निर्मित समिति जो 'पोट्सडैम' में 'तीन बड़ों' के निर्णय के आधार पर बनी थी, पिछली ११ ता० से लन्दन के लैंकास्टर हाउस में अपना अधिवेशन कर रही है। ऐसा ही विशद सम्मेलन अप्रैल-मई महीने में अमेरिका के सैनफ़ानसिस्को नगर में हुआ था, जिसकी अखबारों में बड़ी गरमागरम खबरें रहती थीं और जनता में भी काफ़ी चर्चा थी। आश्चर्य है, परराष्ट्र-सचिवों के इस लन्दन-सम्मेलन के प्रति हमारे भारत में विशेष दिलचस्पी नहीं दिखाई जा रही है ? क्योंकि परराष्ट्र-मन्त्रियों की यह कौंसिल अब तक हुए सब सम्मेलनों से विशेष महत्त्व के निर्णय करने जा रही है। पिछले सम्मेलन विवाद-युक्त समस्याओं को आगे के लिए टालते जाते थे, इसलिए इस सम्मेलन में उन प्रश्नों को सुलझाने के अतिरिक्त, ऐसे राष्ट्रों से जो पहले धुरी राष्ट्रों के मित्र थे, सन्धि-शर्तें तय करनी हैं, पूर्व निर्णयों को क्रियात्मक रूप देना है।

रूस का प्रतिनिधित्व पहले की तरह सोवियत सरकार के वैदेशिक मन्त्री श्री मोलोटोव कर रहे हैं जिन्होंने अपने शांत, सौम्य, आकर्षक व्यक्तित्व और भारत के प्रति दिलचस्पी दिखाकर 'सम्मेलन' के प्रतिनिधियों के साथ सारी दुनिया का ध्यान आकर्षित कर लिया था। चीन के प्रतिनिधि डॉवैंग के अतिरिक्त ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रान्स का क्रमशः श्री अर्नेस्ट बेविन, श्री जेम्स बिर्न्स और श्री बिडौल्ट प्रतिनिधत्व कर रहे हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि सम्मेलन का वातावरण 'फ्रिस्को' की तरह सहयोग और सौहार्द्र के ढंग का नहीं है। लन्दन-सम्मेलन के इस क्षुब्ध वातावरण और असहयोग नीति का रहस्य समझने के लिये हमें पिछली पृष्ठभूमि और कौंसिल के सम्मुख उपस्थित प्रश्नों की जटिलता को समझना होगा।

'पोट्सडैम' और उसके बाद

'पोट्सडैम' के 'त्रिनेता' मिलन के पहले 'याल्टा' में तय हुआ था कि नाजीवाद और सैनिकवाद का उन्मूलन किया जायेगा और जर्मन जनता को नष्ट नहीं किया जायेगा। इस निर्णय में एकमत होने के बावजूद भी अधिकृत क्षेत्रों में अमेरिका और ब्रिटेन ने प्रगतिशील शक्तियों के स्थान पर प्रतिक्रियावादी और नाज़ी-झुकाव रखनेवाली ताकतों को प्रश्रय दिया जैसा कि ग्रीस, इटली आदि की राजनीति से स्पष्ट है और स्वयं जर्मनी में नाज़ीवाद के जड़मूल से नष्ट करने में और वहाँ की जनता को प्रजातन्त्रात्मक शासन-साधनों के प्राप्त करने में मदद नहीं की गई। इसीलिए पोट्सडैम-सम्मेलन में—'विश्व-शांति' को क़ायम रखने के लिए, 'याल्टा' निर्णयों को फिर दुहराया गया, और जर्मनी की नाज़ी पार्टी, नाज़ी क़ानून और दूसरी नाज़ी संस्थाओं को नष्ट करने के अलावा उसके पीछे काम करनेवाली जर्मन पूँजीवादी ताकत को, उद्योग-धन्धों के विकेन्द्रीकरण का निर्णय करके, जबर्दस्त ठेस पहुँचाई गई। पूँजीवादी राष्ट्रों की, जर्मनी पर अपना प्रभुत्व रखने की इच्छा के विरुद्ध, वहाँ जनतंत्रात्मक राज्य क़ायम करने के लिए प्रगतिशील राजनीतिक पार्टियों को प्रोत्साहन दिया गया—राज्य-व्यवस्था में प्रतिनिधित्व से पूर्ण और निर्वाचन के तरीकों का समावेश हुआ और गाँवों-नगरों में स्वायत्त शासन देकर जर्मन जनता को पुनः सुदृढ़ होने का मौका दिया गया। इस तरह ब्रिटेन और अमेरिका के प्रतिक्रियावादियों का जर्मनी को अपनी इच्छा के अनुसार इस्तेमाल करने का स्वप्न भङ्ग हो गया।

सोवियट रूस के वैदेशिक मंत्री एम० मोलोटोव, सम्मेलन की सफलता में घोटाला कर रहे हैं।

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

राष्ट्रभाषा का हल राष्ट्र के नेता करें

सर पद्मपत सिंहानिया से एक महत्त्वपूर्ण बातचीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

राष्ट्रभाषा का क्या महत्त्व है? उसका हल कैसे हो सकता है? आजकल के धनिकों का देश के प्रति क्या कर्तव्य है, आदि प्रश्नों के पूछे जाने पर प्रसिद्ध उद्योगपति सर पद्मपत सिंहानिया ने क्या उत्तर दिया इसका वर्णन इस सामयिक और सुन्दर इन्टरव्यू में किया गया है। इन्टरव्यू पठनीय तथा विचारणीय है।

मैं युक्तप्रान्त के उद्योगपति सर पद्मपत सिंहानिया से मिलने के लिए उनके शिमला के निवास स्थान "कमला केसिल" में पहुँचा। "कमला केसिल" मसूरी के उच्च शिखर पर स्थित है। सुबह दस बजे का वक्त था। चारों तरफ घना बादल छाया हुआ था। सर्दी भी काफी पड़ रही थी। उन बादलों को चीरता हुआ मैं पहाड़ की चोटियों पर चढ़ता चला जा रहा था। जो मार्ग "कमला केसिल" को गया था उस मार्ग पर जगह जगह फूलों के गुलदस्ते रक्खे हुए थे।

मैंने देखा कि एक अर्दली खाकी वर्दी पहने हुए 'केसिल' के दरवाजे पर खड़ा है। मैंने अपना "विजटिंग कार्ड" अन्दर भिजवाया। अर्दली ने आकर कहा—बाबू जी अन्दर जाइये। साहब आपको बुला रहे हैं।

सुप्रसिद्ध व्यवसायी सर पद्मपत सिंहानिया
एम० एल० ए०

मैं अन्दर गया। देखा कि सर पद्मपत जी एक कुर्सी पर बैठे हुये हैं। सामनेवाली मेज पर कागजों का बहुत सा ढेर रक्खा हुआ है। अभिवादन के बाद मैं कुर्सी पर बैठता हुआ बोला—आप बहुत बिजी मालूम पड़ रहे हैं?

सर पद्मपत ने कहा—हाँ, इस वक्त काफी व्यस्त हूँ। यदि आप हिन्दी के अलावा किसी और कार्य के लिए आये होते तो मैं इस वक्त आपको वक्त न दे पाता—

मैंने कहा—यह आपकी कृपा है।

उन्होंने कहा—कृपा कैसी? हिन्दी के लिए वक्त देना मेरा प्रधान कर्तव्य है। आप इसे कृपा क्यों समझते हैं?

इस सिलसिले में मेरी सर पद्मपत सिंहानियाँ से क्या बातें हुईं, वह इस प्रकार हैं—

प्रश्न—आप देश की राष्ट्र-भाषा किस भाषा को चाहते हैं, हिन्दी या हिन्दुस्तानी?

उत्तर—मैं सारे देश की राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी चाहता हूँ। देशी हिन्दुस्तानी जो कि आम जनता की समझ में आ सके। रेडियो पर जो हिन्दुस्तानी प्रयोग की जाती है, उसको मैं कतई राष्ट्र-भाषा के पद पर देखना नहीं चाहता, क्योंकि रेडियो की भाषा देश का प्रतिनिधित्व नहीं करती। अब हिन्दी को अपनी "पाचनशक्ति" बढ़ानी होगी। बिना 'पाचनशक्ति' बढ़ाये कोई भी भाषा प्रगतिवादी नहीं बन सकती। हिन्दी को ऐसे विदेशी शब्द अवश्य अपनाने चाहिएँ जो कि सरल हों तथा जिनको जन-साधारण आसानी से समझ सके। पूज्य बापूजी (महात्मा गांधी) स्वप्न में भी हिन्दी की हत्या करना नहीं चाहते। जो लोग गांधी जी को हिन्दी का शत्रु समझते हैं, उन्होंने अभी बापू जी के व्यक्तित्व को ठीक तरह से नहीं समझा। उनके आदर्श को समझने में हिन्दीवालों ने गलती की है। आज हिन्दुस्तान में हिन्दी के प्रबल समर्थकों में से एक गान्धी जी भी हैं, यदि राष्ट्र-हित के लिये हिन्दी का नाम बदल भी दिया जाये तो उससे देने से हिन्दी की हत्या नहीं हो सकती। अगर हमें हिन्दी को आगे बढ़ाना है तो उसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन करना होगा। हिन्दी की पुरानी रूढ़ियों को बदलना होगा, तभी वह हिन्दी राष्ट्रभाषा बनने योग्य होगी।

प्रश्न—आप हिन्दी की रूपरेखा किस ढङ्ग की चाहते हैं?

उत्तर—मैं हिन्दी को कल्पनालोक का उपकरण बनाना नहीं चाहता। मैं हिन्दी के स्वरूप पर अमीरी ठाट-बाट के लबादे को नहीं देखना चाहता, बल्कि उसको ऐसे रूप में देखना चाहता हूँ, जिससे कि वह जन-साधारण के घरों में भी सम्मान पा सके। जन-साधारण हिन्दी को अपनाने में सकुचाएँ नहीं, झिझकें नहीं। हिन्दी-साहित्य दैनिक जीवन से सम्पर्क रखनेवाला और लोकसंग्रह की चीज होनी चाहिए, न कि वह कोरमकोर आदर्शवाद का फतवा देनेवाला हो। जो भाषा किसी के दुख को मिटाने में सहायक नहीं हो सकी, वह मुर्दा जबान में सम्मिलित है। उसकी जिन्दा भाषाओं में गणना नहीं हो सकती।

प्रश्न—आज के पूँजीपतियों का देश के प्रति क्या कर्तव्य है?

उत्तर—राष्ट्र का उत्थान करना ही आज के पूँजीपतियों का प्रधान कर्त्तव्य है। जो पूँजीपति देश की परिस्थिति से अवगत नहीं रहते, उनका व्यक्तित्व धूमिल पड़ जाता है। मेरी अपनी निजी राय है कि जो व्यक्ति चाहे वह दौलतमन्द ही क्यों न हो जो समय के साथ चलने का उपक्रम नहीं करता वह कभी विकास-मार्ग की ओर बढ़ नहीं सकता। दौलतमन्द का फर्ज है कि वह अपना धन सुकार्यों में लगाये। मानवता की सेवा करना वह अपना धर्म समझे, दरिद्रों और पतितों की सहायता करना अपने जीवन का उद्देश्य समझे। मेरा तो यही कहना है कि सरमायदारों को अब सदियों पहिले के ख्वाब नहीं देखना चाहिए।

प्रश्न—हिन्दी की रक्षा करना क्या आज देश के सामने मुख्य प्रश्न नहीं है?

उत्तर—जी नहीं, आज का मुख्य प्रश्न सिर्फ आजादी प्राप्त करना है। जब स्वाधीनता प्राप्त हो जायेगी तब स्वयं राष्ट्र-भाषा की समस्या भी हल होगी। अभी तो अपने हाथ में कोई शक्ति नहीं है। जब शक्ति अपने हाथ में आ जायेगी तभी कोई भाषा राष्ट्रभाषा बन सकती है, इससे पहले नहीं। हिन्दी-साहित्य-सम्मे हिन्दी-संसार को केवल राष्ट्रभाषा के को पूज्य बापू जी पर छोड़ देना बापू जी आपको कभी गलत नहीं ले जायेंगे।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सु

महुआ

लेखक, प्रोफेसर प्रभाकर माचवे, एम० ए०, 'साहित्यरत्न'

(सोनेट)

महुए की छाया में सोई कोई कृषक-कुमारी,
भारी हैं उसके लोचन उर, सपने में बेचारी।
देख रही है, दोनों मिलकर बने शहर के बासी,
मेले-ठेले, खेल-तमाशे, मेवे, कपड़े, जेवर,
आज ललचता है दिल जितनी अपूर्ण इच्छाओं पर।
वही आ गई बनकर अपनी तृप्ति सुघर, तितली-पर॥
कल्पवृक्ष की छाया में वह मन भर मदभर सपने,
निरख रही है। उधर दिवस भी लगा साँझ पर झाँने।
उसी वृक्ष का फल वह उत्सुक सारी खुशी हड़पने॥
उसी गँवारिन के प्रियतम वे किसान अथवा माली,
लुटा रहे हैं गाढ़े श्रम के नोट, नजीक कलाली,
महुआ ढाल रहे हैं, आँखों में चढ़ती है लाली,
रहीं पलक के पीछे ही वे सब सपनों की बातें।
कृषक-कुमारी की किस्मत में कर्जा, गाली, लातें॥

युग और साहित्य
युगद्वन्द्वों तथा उनसे प्र सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण माध्यम से उपस्थित करनेवाले का संकलन। मूल्य १।≤)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इला

बालकोपयोगी आदर्श प्रका

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा प्रति भाग

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश
बाल हितोपदेश	हितोपदेश की मनोरंजक और उपदेशपूर्ण कथाओं का सारांश
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएँ
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेशपूर्ण सूक्तियों का संग्रह

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रया

मेरिका का साम्राज्यवादी प्रभुत्व!

वह प्रशान्त महासागर का मालिक बनेगा?

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

में भी युद्ध समाप्त हो जाने पर अब यह समस्या उत्पन्न हो गई है कि प्रशांत पर प्रभुत्व किस राष्ट्र का रहेगा? जापान सदा से अमरीका का प्रतिद्वंद्वी रहा है। उसके पराजित हो जाने पर अब अमरीका के आगे मैदान साफ है। विद्वान् लेखक ने अमरीकन स्वाधीनता पर एक दृष्टि डालते हुए यह बतलाया कि अब वह शासन के प्रतिकूल साम्राज्यवादी रुख ग्रहण करता जा रहा है। प्रशांत पर भी उसकी साम्राज्यवादी प्रभुत्व स्थापित करने की महत्वाकांक्षा प्रबल होती दिखाई दे रही है।

लार अमेरिका नाम से जिस करता है यथार्थ में वह द्वीप का एक देश-मात्र है। है संयुक्तराष्ट्र किन्तु गत दो इतना बढ़ा, फैला और हुआ है कि अब उसका नाम ही गया है। चार सदी पहले वियावान था या सभ्यता के के कुछ आदमियों से आबाद और इसमें इँगलैंड से लोग होने लगे। और देशों के आये और अच्छी जमीन, और खाली प्रदेश देखकर के रूप में आबाद हो गये। ये तेरह उपनिवेश इँगलैंड हाँ खेती होती और उपज जाती थी। समय पाकर भी इँगलैंड की भाँति व्यवसाय की प्रवृत्ति हुई। और उपनिवेशों में संघर्ष ये उपनिवेश आजाद की स्वतन्त्रता का यह ने लड़ा था। अतः वे राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति हुए के नाम से इस राष्ट्र की राज- में कायम हुई।

में शामिल ये तेरह उप- समुद्र के तट पर विद्य- आज़ादी पाने तक इन तेरह रियासतों की आबादी कुछ सीमित थी। धीरे धीरे वह और संकटग्रस्त योरप से यहाँ आये और अट- छोड़कर पश्चिम के मैदान। उन्नीसवीं सदी में कुछ से खरीदे भी गये और स्थापित ये छोटे छोटे उप- सदी में अटलांटिक समुद्र कठिन राकी पहाड़ों को पश्चिम में प्रशान्त महा- गये। बाद में मेक्सिको के कुछ अन्य प्रदेश भी इसमें परिणाम यह हुआ कि आज संयुक्तराष्ट्र ३० लाख वर्ग- तेरह करोड़ आबादी का। इसमें ४८ रियासतें हैं जो में स्वतन्त्र हैं और कुछ में संघ-सरकार के मात-

देश रखने और आबादी ही यह बात नहीं है। और यातायात की सर्वाधिक सम्पन्न देश है। खेतों में दुनियाँ भर के अनाज पैदा होते हैं। अतः यह देश कभी न भूखा मरता है और न बाहर से अनाज मँगाने की आवश्यकता अनुभव करता है। इसकी खानों या जमीनों में लोहा, कोयला, ताँबा, पेट्रोल, गैस व अन्य धातुएँ इतनी अधिक प्रचुर मात्रा में प्राप्त होती हैं कि आज इन्हीं के सहारे अमेरिका संसार का सर्वप्रधान औद्योगिक देश बना हुआ है। ब्रिटेन की भाँति, अमेरिकावालों का मुख्य व्यवसाय उद्योग नहीं है किन्तु आबादी का काफी बड़ा भाग इनमें लगा है। अतः वह उत्पत्ति की दृष्टि से ब्रिटेन से भी बहुत अंशों में आगे है।

साम्राज्यवाद के मार्ग पर

कहा जाता है कि गरीब आदमी अमीर बनने की कोशिश करता है और अमीर बनकर दूसरों का माल छीनने की इच्छा करता है। व्यक्ति की भाँति यह बात राष्ट्रों पर भी लागू होती है। पराधीन देश पहले आजादी चाहता है। आजादी पाकर वह अपनी राष्ट्रीयता को पूर्ण बनाता है और फिर समय पाकर यदि शक्ति हुई तो साम्राज्य पाने की कोशिश में रहता है। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका जातियों के बन रहे इतिहास में इस बात का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। वह पहले गैर आबाद था। अँगरेजों ने इसे बसाया। वह फला-फूला और अँगरेज़ों से लड़कर आजाद हो गया। धन-धान्य और खनिज ही दृष्टि से वह सम्पन्न था ही। कमी थी उसे केवल रबड़, खाण्ड व कलई की। उसने उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग और अन्त में इसके लिए भी हाथ मारा और स्पेन से भिड़ गया। आज के फिलिपाइन, क्यूबा व पोर्टोरियो स्पेन के ही प्रदेश हैं किन्तु सन् १८९८ के बाद से वह अमेरिका के हाथ में आ गये हैं। इनमें से पिछले दो खाण्ड की उत्पत्ति के केन्द्र हैं और अपने वश में करके अमेरिका ने फिलिपाइन को भी खाण्ड का केन्द्र बना लिया है। इसके साथ ही रबड़-उत्पत्ति का भी उसने वहाँ श्री गणेश किया है। यह ठीक है कि आज क्यूबा एक स्वतन्त्र देश माना जाता है किन्तु पड़ोस और खाण्ड के व्यवसाय के कारण वह अमेरिका का सदा वशवर्त्ती है कभी विरोधी नहीं बन सकता। फिलिपाइन व पोर्टोरियो को आज़ादी देने की बात भी अमेरिका बहुत दिनों से कहता आ रहा है किन्तु वह उन्हें आज़ादी तभी देगा जब उनसे आर्थिक सुविधायें पा लेगा। इन प्रदेशों के अतिरिक्त रूस से एलास्का प्रदेश खरीद कर और प्रशान्त महासागर के केन्द्र हवाई टापुओं पर कब्ज़ा करके भी अमेरिका ने पिछले दिनों अपना रुख साम्राज्य की ओर किया है।

अमरीका में ब्रिटिश राजदूत लार्ड हेलाफाक्स और अमरीकन नेता कर्डल हल।

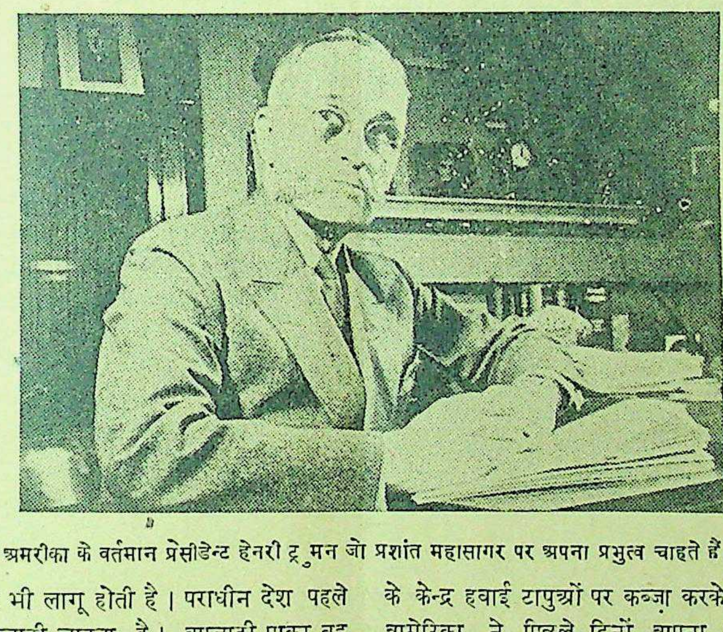

अमरीका के वर्तमान प्रेसीडेन्ट हेनरी ट्रूमन जो प्रशांत महासागर पर अपना प्रभुत्व चाहते हैं।

आर्थिक और राजनैतिक साम्राज्य

अमेरिका के इन प्रदेशों का रकबा ७ लाख वर्गमील है और आबादी दो करोड़ से कम। इन प्रदेशों को हथियाने के बावजूद अमेरिका की अभी तक प्रवृत्ति आजादी की ओर रही है वह भौतिक साम्राज्य के स्थान पर आर्थिक साम्राज्य का अधिक कायल है। हमारे देश के बनियों की भाँति अमेरिका सर्वत्र अपनी पूँजी लगाकर उन्हें रेहन रखने या अपने वश में करने में अधिक विश्वास रखता है। पिछली एक सदी से उत्तरी, मध्य और दक्षिणी अमेरिका के मध्यदेश स्वतन्त्र हैं किन्तु अमेरिका के सर्वत्र लगे रुपये ने उनकी यथार्थ स्वतन्त्रता खो दी है। आज कहने को वे २२,२३ देश शिक्षा, संस्कृति की दृष्टि से किंवा भौतिक आज़ादी की दृष्टि से अमेरिका के वशवर्ती नहीं हैं किन्तु किसी भी प्रादेशिक अथवा अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में वे खुल्लम-खुल्ला उसका विरोध नहीं कर सकते। यदि उनमें का कोई सम्पन्न देश थोड़ा आज़ाद रुख अख़्तियार करता है तो अमेरिका की हाँ में हाँ मिलानेवाले शेष देश उसका साथ नहीं देते। अतः लाचार होकर उसे भी पिछलग्गू बनना होता है। अमेरिका के दोनों महाद्वीपों में इस आर्थिक साम्राज्य के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र का राजनैतिक साम्राज्य भी है। इस राजनैतिक साम्राज्य का आधार है मुनरो का सिद्धान्त। उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में मुनरो यहाँ के राष्ट्रपति थे। उनके शासन-काल में फ्रांस ने और स्पेन ने भी मेक्सिको में अपनी सत्ता प्रकारान्तर से कायम करनी चाही थी। तब राष्ट्रपति मुनरो ने ऐलान किया था कि इन महाद्वीपों के किसी भी भाग में बाहरी या वैदेशिक सत्ता का प्रभुत्व सहन नहीं किया जायेगा। इस घोषणा के आधार पर अमेरिका बाहरी आक्रमणों से तो सुरक्षित हो गया किन्तु राजनैतिक दृष्टि से अत्यन्त प्रबल संयुक्तराष्ट्रों के चंगुल में पड़ गया। आज अमेरिका के संयुक्तराष्ट्र उन महाद्वीपों में प्रत्यक्ष राजनैतिक सत्ता को न रखते हुए भी यथार्थ में आर्थिक और राजनैतिक सूत्र के संचालक हैं। अतः हम निःसंकोच यह कह सकते हैं कि नाम को न सही किन्तु क्रिया में ये संयुक्तराष्ट्र उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के मालिक हैं।

प्रशान्त सागर का मालिक

संयुक्तराष्ट्रों की यह शक्ति प्रत्येक युद्ध में योरप के सभी राष्ट्रों को उनसे मिलने या उनसे विरोध न करने की प्रेरणा करती है। पिछले युद्ध में जर्मनी ने भरसक कोशिश की थी कि यह देश युद्ध में शरीक न हो। अमेरिका भी बहुत दिन तक युद्ध से तटस्थ रहा किन्तु जब वह आया तो जोरों से आया और जर्मनी को परास्त करने का प्रधान कारण बना। यह बिल्कुल ठीक है कि यदि गत महायुद्ध में अमेरिका न प्रवेश करता तो वह युद्ध जर्मनी के पक्ष में समाप्त होता। इस युद्ध के सम्बन्ध में भी यही कहा जा सकता है। इस युद्ध में अमेरिका शुरू से ब्रिटेन का सहायक था यद्यपि उसमें शरीक न था। जापान के कारण वह युद्ध में आया और मित्र देशों को सफल बनाने में प्रमुख साधन बना। अमेरिका के शस्त्रास्त्र, हवाई और दूसरे जहाज यदि ब्रिटेन और रूस को

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

सतरंगिनी

लेखक, श्री गोपीकृष्ण

'सतरंगिनी' हिन्दी के सुप्रसिद्ध और लोकप्रिय कवि 'बच्चन' का नवीन काव्य-संग्रह है। लेखक ने इस सुन्दर आलोचना में बच्चन की काव्य-प्रगति पर प्रकाश डालते हुए 'सतरंगिनी' की विशेषताओं का उल्लेख किया है, जो पठनीय तथा विचारणीय है।

बड़ी प्रतीक्षा के बाद कविवर 'बच्चन' की 'सतरंगिनी' देखने को मिली। पाते ही पी गया इसलिए कि सोचकर बैठा था कि इसमें कुछ ताजगी, कुछ जिन्दगी और नवीनता अवश्य ही मिलेगी। पुस्तक समाप्त करने पर सोचने लगा कि हिन्दीवालों को कवि 'बच्चन' की इस नई दिशा को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। यह खयाल भी दिमाग में जमा रहा कि 'बच्चन' का व्यक्तित्व, अन्य संग्रहों की भाँति, इस संग्रह में भी उभरा हुआ है। किताब आलमारी पर एक इरादे से डाल दी गई।

सहसा ही ६ अगस्त का 'अभ्युदय' आया और किन्हीं गुमनाम 'मूधर्न्य जी' के लेख पर, निगाह पड़ी। शीर्षक था—बच्चन की 'सतरंगिनी'—प्रणय-परिणय की साहित्यिक उपज!' संग्रह देख चुका था, एक साँस में ही सारा लेख पढ़ गया और तब लेख को जमीन पर पटक कर सोचने लगा कि आलोचक महोदय ने आलोचना का अर्थ समझा है केवल कृति की खामियों पर प्रकाश डालना और कवि को पानी पी-पीकर कोसना। 'बच्चन' की कविताओं के पदों की 'तरमीमें' पढ़कर मैं समझ गया कि बेचारे आलोचक महोदय को श्री रघुपति-सहाय 'फिराक', और श्री ब्रजकिशोर चतुर्वेदी की हवा लग गई है, जब कि मूधर्न्य जी ने शायद ही कभी उनके 'ह्यमर' को समझने की कोशिश भी की होगी। मैं उनके तर्कों की बात नहीं चलाता। मैं चिन्ता में पड़ गया कि क्या हिन्दी में कभी कोई ऐसा आलोचक प्राप्त होगा जो अपनी गम्भीर जिम्मेदारी का प्रतिशत ध्यान रक्खेगा और सब कुछ कहने के बाद भी एक साहित्यिक-शालीनता का सर्वथा और सर्वदा ही निर्वाह करेगा? हाँ तो; 'मूधर्न्य जी' ने 'सतरंगिनी' में केवल दोष ही निकाले थे। उन्हें शिकायत थी कि (१) 'सतरंगिनी' प्रणय-परिणय की उपज है; (२) 'सतरंगिनी' के कवि को भाषा नहीं आती—कैसे आये! उसने मूधर्न्य जी की भाँति शायद ही कभी लिखा हो—लेकिन, यह तो बुरी बात है कि आपने नागिन को पतुरिया बना डाला; (३) कवि शब्द गढ़ता है—जिसका अधिकार किसी कवि को कभी नहीं मिला!—शब्द अस्वाभाविक और भद्दे उतरते हैं; (४) कवि कुटिया बनाता है, वह वास्तव में गुलबिहारीलाल की बँगलिया है—इसलिए कि वह ईंट-पत्थरों की बनी है और कोई भला आदमी कभी मुहाविरों का प्रयोग नहीं करता और सदा कहता है, मैंने नया महल बनवाया है, पधारियेगा; और इसलिए भी कि मूधर्न्य जी, सम्भवतः, सदैव ही कवि 'बच्चन' से कहते हैं—'आप मेरे दौलतखाने पर हाजिर होइयेगा, (५) 'सतरंगिनी' का साहित्य मिथ्या है, (६) 'सतरंगिनी' का कवि हमारा प्यारा कवि नहीं हो सकता, इसलिए कि ४२ से लेकर ४४ तक के भूखे और नंगे हिंदोस्तान में रहने के बाद भी वह 'नागिन' के साथ प्रणय-कुंडल मारकर 'विषमय-चुम्बन' और मधुमय दंशन के मजे लेता रहा है; और यह कि (७) 'सतरंगिनी' अपने कवि के उर्दू के नये शौक की परिचायक है—

मूर्धन्य जी ने जो कुछ कहा है, ऐसा जरूर लगता है कि वे एक बार संग्रह, यों ही उलट गये हैं और इस प्रकार उन्हें उनके लेख की सामग्री मिल गई है, इसलिए कि वह तो उन्हें, जैसे लिखकर अपने को अधिकारी आलोचक प्रमाणित करना ही था। उदाहरण के लिए, वे यदि ध्यान देते तो उन्हें पता चलता कि 'कलूटी चिड़िया वैसे तो किसी काम की नहीं,' इसलिये रानी नहीं बनाई गई, प्रत्युत यह कि कल्पना की गई है कि अपने पिछले जन्म में वह किसी राजा की रानी रही होगी—ये है! कवि की कल्पना का विस्तार इस प्रकार है!

'किसी जन्म में किसी देश की
कोकिल तू होगी रानी,
होगी सम्मुख सुख-सुविधा की
सब सामग्री कल्याणी।

वहाँ 'होगी' का अर्थ है 'रही होगी।' और अब वे पूछ सकते हैं, 'सो ये कैसे?' तो मैं मुस्काकर कह सकता हूँ कि हिन्दी के कवि चिन्ता-धारा को विशेष महत्त्व देते हैं। कविता की भाषा की ओर अपेक्षाकृत कम गो कि बचन का कवि अकारण ही नहीं ऐसा करता।

*　　*　　*

'बच्चन' की सारी कविताओं का एक व्यक्तित्व है, जो बिलकुल वही है जो व्यक्ति 'बच्चन' की संज्ञा है। 'मधु-कलश' से लेकर अब तक कवि-बच्चन केवल व्यक्ति 'बच्चन' का ही 'हिजमास्टर्स वॉयस' रहा है। 'बच्चन' के जीवन के अपने दुख-सुख और उनके उतार-चढ़ाव 'बच्चन' के कवि के गीतों के आरोह-अवरोह रहे हैं—वे उनके 'एक्सरेज' रहे हैं, कहा जा सकता है। इस प्रकार कवि व्यक्ति के प्रति बड़ा ईमानदार रहा है और उसने सदैव ही मनःस्थितियों को भावनाओं का रूप दिया है और उनमें स्वर जगाने की कोशिश की है। 'निशा-निमन्त्रण,' और आकुल अन्तर की तथा अन्य संग्रहों की एक-एक पंक्ति मेरे कथन का प्रमाण है—'कितना अकेला आज मैं' उतना ही कटु अनुभव है जितना 'तू एकाकी तो गुनहगार!' इनके विषय में कुछ भी कहना-सुनना अनावश्यक है, प्रत्युत ऐसी विरोधी मनःस्थितियों के चित्रों में कवि की 'सिंसियरिटी' और उसकी अपनी एक जिम्मेदारी ही विशेषतया प्रशंसनीय है। हम-आप करेंगे क्या, विशिष्ट मनःस्थिति के टिकाऊ होने का प्रबन्ध अलग का प्रश्न है—एक ही कवि एक बार कहानी लिखता है 'सृष्टि के प्रारम्भ की', और दुबारा डिग जाता है, इसलिए कि तारे उसकी अपनी माँग का उत्तर यह कहकर देते हैं कि :—

'कितनी बार गगन के नीचे
प्रणय-मिलन के बन्धन टूटे,
कितनी बार धरा के ऊपर,
प्रेयसि-प्रियतम के मन टूटे!

इस तरह हम यहाँ से आरम्भ करके बड़ी सरलता से 'जो बीत गई सो बात गई' तक का रास्ता तय कर सकते हैं—'कैसे भेंट तुम्हारी ले लूँ', या 'नीड़ का निर्माण फिर-फिर' तो इस 'चट्टी' तक पहुँचने के साधन-मात्र हैं। इस भाँति हम 'बच्चन' के अन्य संग्रहों का सम्बन्ध उनकी 'सतरंगिनी' से सरलता से ही स्थापित कर सकते हैं।

'सतरंगिनी' को एक बार पढ़ जाने के बाद पाठक अनुभव करेगा कि सारी 'सतरंगिनी' में एक ही मनःस्थिति व्यापक हो, ऐसा नहीं है। संतप्त 'बच्चन', विद्रोही 'बच्चन' और सुखी 'बच्चन' 'सतरंगिनी' के कवि-बच्चन के तीन अलग-अलग रूप हैं। इन्हीं तीनों रूपों में उसका प्रकृति-उपासक भी कहीं छिपा है, जो सहसा ही, मुखरित हो उठता है :—

'किन्तु कभी क्या देखा तूने,
जगती का सस्मित आनन,
इन्द्र-धनुष की छाया में!'

वह उसी शक्ति से 'वर्षा समीर' के 'तरुमाल' से खेलने के चित्र अंकित करता है, वह उसी व्यग्रता और
कोकिल की स्वर-माधुरी का रस-
है और वह उसी सहृदयता से
'पी कहाँ' का अर्थ पाठक को सम
प्रयत्न करता है।

'सतरंगिनी' की कविताओं को
भागों में बाँटा जा सकता है,
(१) वे कवितायें जिनमें कवि
उपादान के साथ एक रागात्मक
अनुभव करता है, इस वर्ग में
'वर्षा-समीर', 'कोयल' आदि रचनायें
हैं। (२) वे कवितायें जिनमें कवि
दुर्दिनों के प्रति सजग है, जिनमें
ही सिहर उठता है, जिसमें
स्थितियों से विद्रोह करने की
जिनमें उसने अपनी भावनाओं
के साँचे में ढालने के अनवरत
हैं और जहाँ वह किसी एक
पर पहुँच गया है कि वह
'है अँधेरी रात पर दीवा
मना है'—इस वर्ग की रचनाओं
का दीपक', 'नन्दन और
बीत गई सो बात गई' आदि
(३) वे रचनायें जिनमें बच्चन
एक चौराहे पर खड़े होकर
देखा है और घर में 'एक जीवन
जिनमें उसका जीवन सुखद हो
'सतरंगिनी' के छठवें खंड और
खंड की अधिकांश रचनायें
अपनी सम्पत्ति हैं। इस प्रकार
कहा जा सकता कि 'सतरंगिनी
प्रणय-परिणय से सम्बन्धित
अब तो कवि किसी से कहता

'सुख की एक साँस
होता है सर्वस्व निछावर
तुम छू दो मेरा
अमर हो जाये!'

*　　*

'कहाँ मनुष्य है जिसे
कभी खली न प्यार की;
इसीलिए खड़ा रहा
कि तुम मुझे दुलार लो!

कवितायें सरस और
हैं, केवल, जैसा लिखा
पठनीय और मननीय
'पपीहा' 'नन्दन और
बीत गई', 'नीड़ कामिनीय'
लो', 'तुम गा दो' आदि

*　　*

कवि 'बच्चन' की लोक
कारण उसकी अपनी सरल,
आम-फहम भाषा का प्रयोग है,
कि अन्यथा उसका हृदयं
असम्भव हो जाता और लोकप्रिय
दूर नजर आती। यह सच है
कुछ शब्द गढ़ने के प्रयत्न किये
इसमें आश्चर्य भी क्या है,
कलाकार ही अपनी आवश्यकता
सकता है और करता है। कवि
ने 'दिये से दीवा, पंछी से
शब्द 'सतरंगिनी' में भी,
ही गढ़े हैं। इससे उसके, आवश्यक
शब्द गढ़ने के अपने अधिकार पर
प्रभाव नहीं पड़ता।

*

—शेष पृष्ठ १०

'सतरंगिनी'—रच० कविवर बच्चन; पृष्ठ-संख्या १८८, छपाई-सफाई, गेटअप सुन्दर, मूल्य २।।) रुपया। प्रकाशक—लीडर प्रेस, प्रयाग।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी १ नवम्बर को बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल जायेगा

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियां, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अनेक सादे चित्रों से सुसज्जित।

एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिएँ।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग।

साहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क से आगे)

—सो बात नहीं है। अभी तो रेल पर का ही
कितना खाना-दाना रक्खा है। फिर कुछ सिट-
ने कहा—सो बात नहीं है, महानन्द दादा ने
है। फिर वहाँ भी तो हमारी गृहस्थी थी ही।
विनोद बहादुर, दश कर्मान्वित महात्मा भी तो साथ

ष्टि से खड़ी थी। उसका हृदय विदीर्ण हो रहा
के बिना पल भर भी काम न चलता था आज वही
रखा है! वही भाई हरीश है? उसका क्रोध
चला। इसी ने मेरे भाई को मुझसे अलग कर
रहकर उसको ग्रहण करना बड़ा कठिन है।
। विवाह का वयस थी। अपने रूप यौवन में
बड़ा काण्ड कर डाला! हमारी आश्रिता!

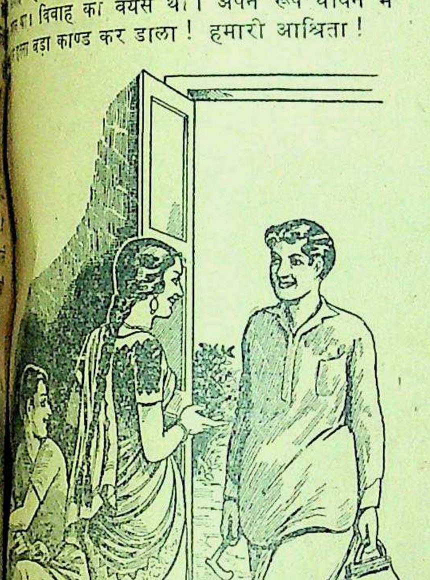

द्वार पर हँसती हुई आकर कहने लगी—आइए जीजा जी, आइए।

के विरुद्ध लक्ष्मी कुछ समझना नहीं चाहती थी।
जाती हूँ। जिस समय जिस वस्तु की आवश्यकता
करना, मँगा लेना। गला भर्रा गया। अधिक बोल

था। विमला भी म्लान मुख लिये जाने किस
के स्पर्श से पाषाण मूर्ति होकर मौन हो गई थी।
के गमनोद्यत होते ही सहसा धमधम करता हुआ,
बनाकर लिये हुए विनोद ने आकर कहा—लो
। भाभी चाय पियो......
की ओर ताका तो लक्ष्मी की शनि दृष्टि ताड़ते
। है रखकर लक्ष्मी के पैरों पर सिर रखते हुए
उसने कहा—दादी मैं विनोद हूँ—आपका सबसे
हँसा। लक्ष्मी अपनी दृष्टि फिराकर इस
वहाँ वज्रपात हुआ हो। तीनों ही व्यक्ति

रचना को भंग करके कहा—चलो चाय पियें।
विमला की आँखों में आँसू उमड़े हुए हैं।
दुखी मत हो विमला। संसार में जो आया,
उठाना ही पड़ा है। चलो तुम हलुवा जो तैयार
को!

विमला ने रुद्ध कण्ठ से कहा—दीदी ने तो हमसे एक बात भी नहीं की।

हरीश ने कहा—यह बात मुझे बहुत खटक रही है विमला!

पूरा दिन चीज-वस्तु सँभालते कट गया। सन्ध्या के समय कचहरी से लौटते समय सुरेश आया। जिस कमरे में कभी लक्ष्मी रहती थी उसी में एक चारपाई विनोद के सोने के लिए विमला बिछा रही थी। विनोद 'कों' 'भों' करके हारमोनियम को ट्यून ठीक कर रहा था। हरीश कहीं गया हुआ था। सुरेश ने आते ही पुकारा—कहाँ हो विदेशी पान्थगन!

विमला दौड़कर द्वार पर हँसती हुई आकर कहने लगी—आइए जीजा जी, आइए। लक्ष्मी वाले कमरे में ही लाकर उसने सुरेश को बैठाया। विनोद हारमोनियम की स्वर-परीक्षा में मग्न था। विमला ने पुकारा—भैया!

विनोद ने घूमकर देखा। विमला ने कहा—यह हमारे जीजा जी हैं। इन्हें प्रणाम तो करो।

विनोद ने चरणों पर सिर रखकर प्रणाम किया। सुरेश ने कहा—अह, हा; यह वही विनोद.......

विमला ने कहा—वाद्य के यह बड़े पण्डित हैं। और जो गाना गाते हैं........वह तो आप सुनेंगे ही।

सुरेश ने कहा—इस समय तो कचहरी की गाड़ी खींचे चला आ रहा हूँ। एक दिन सुनूँगा अवश्य। इस समय बड़ा थका हुआ हूँ।

विमला ने कहा—बैठिए, मैं अभी आई।

विमला के चले जाने पर सुरेश ने हँसते हुए विनोद से कहा—यदि हम 'आप' करके न बोल सकें तो भाई बुरा न मानना।

विनोद ने हँसकर कहा—जीजा जी, आप लोग भी यदि मुझे आप आप करेंगे तो संसार में रहना असम्भव हो जायगा।

सुरेश ने कहा—तुम्हारा निवासस्थान कहाँ है, भाई?

उसने कहा—आदिम निवासी तो हम लखनऊ के हैं, पर वहाँ अब घरबर कुछ नहीं है। एक हमारे काका हैं, वह हमें पाल-पोष रहे थे। माता-पिता का स्मरण नहीं है, वह मेरे लड़कपन में ही स्वर्गवासी हो गये थे। जिस समय मैं पूना जाने का हठ कर रहा था, काका ने कहा—देखो भाई, मनुष्य बनो। इस घर में जो तुम्हारा भाग है वह दादा हमारे पास बन्धक रख गये हैं। जिसका ब्याज मिलाकर इस घर के मूल्य से भी अधिक हो जाता है। फिर भी हम तुम्हें पाँच सौ रुपये और देंगे। मैंने सोचा जो मिलता है वही ले लो। कौन हाय हाय खाय खाय करे, चलो यहाँ से। पाँच सौ रुपये लेकर घर का बैनामा करके मैं बम्बई और बम्बई से पूना चला गया। तदुपरान्त......

सुरेश ने कहा—मैंने सुना है कि प्रिंसिपल के साथ तुम्हारी बड़ी घनिष्ठता थी। उसकी नाक तोड़ डाली।

विनोद ने ज़ोर से हँसते हुए कहा—जी हाँ, उस घनिष्ठता के फलस्वरूप ही तो बिना घर-घाट का धोबी का कुत्ता-सा बना घूम रहा था, एकाएक डाक्टर दादा से साक्षात् हो गया। उन्होंने मुझे अपना छोटा भाई मानकर, एक राजा की भाँति अपने पास रक्खा है। पथ के तुच्छ पत्थर को परमेश्वर बना दिया है!.....

इतने में गिलास में भरकर शरबत लिए विमला आ पहुँची। सुरेश ने कहा—तुम ही अन्नपूर्णा। यदि ऐसी ही स्त्री मेरी.....

विमला ने बड़े ज़ोर से हँसते हुए कहा—अच्छा पीजिए, पीजिए।

शरबत पीते-पीते सुरेश ने पूछा—हरीश कहाँ है?

विमला ने कहा—ज्ञात नहीं, जाने कहाँ चले गये हैं।

सुरेश ने एक क्षण स्तब्ध रहकर कहा—एक बात कहे जाता हूँ, रज्जो,...नहीं नहीं भूल गया, भूल गया—श्रीमती विमला देवी—अभ्यास का दोष है!....हाँ, मैं कह रहा था कि तुम अपनी दीदी के व्यवहार से दुखित न होना। पहले जब तुम लोग चले गये थे तो दुःख-शोक से महीनों उन्होंने चारपाई सेवन की है। कभी-कभी उनके रुग्णावस्था में चिड़-चिड़ेपन के कारण मुझे निर्जल उपवास करना पड़ा है। उन दिनों मैं तुम्हारी दीदी से ऐसा डरता था जैसे चूहा बिल्ली से। घरजमाई होने का परिणाम प्रत्यक्ष है। मैं मारे भय के उनके सामने नहीं पड़ता था। यही कह रहा था...।

विमला सुरेश की बातें शान्त भाव से सुन रही थी।

सुरेश ने कहा—उस समय भी जब तुम लोग चले आये थे बाहर ही वह [illegible] परिवर्तन कर दिया, कहा—

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास

प्रथम खंड

राजनैतिक इतिहास

लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ए० हिन्दी में इस विषय का यह अद्वितीय ग्रंथ है। इस पुस्तक पर लेखक को मंगलाप्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में इससे बड़ी सहायता मिलती है। मेहरौली का लौहस्तम्भ, भितरी की राजमुद्रा, कुमार गुप्त का करमदण्डा का लेख की प्रतिलिपि चिकने काग़ज़ पर मुद्रित है। अच्छा काग़ज़, बढ़िया जिल्द बड़े आकार के २५० पृष्ठ। मूल्य केवल ४) चार रुपये।

द्वितीय खंड

सांस्कृतिक इतिहास

इस खण्ड में गुप्तकालीन शासन-प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मुद्रा, साहित्यिक विकास, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक दशा, धार्मिक दशा, भौतिक जीवन, ललितकला, वृहत्तर भारत और गुप्तयुग की महत्ता का वर्णन है। गुप्त राजाओं के समय की आर्य-संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले के आगे प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त संस्कृति का ऐसा विशद और प्रामाणिक विवेचन किसी भारतीय भाषा में शायद ही मिले। बढ़िया काग़ज़, अनेक चित्र, सुन्दर जिल्द. बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या साढ़े तीन सौ से ऊपर, मूल्य ५।-) पाँच रुपये पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो,

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

उसके सारे अंग गठिये से जकड़ उठे थे

न बेचारी चल सकती थी और न सो सकती थी

क्रुशेन के नियमित सेवन से अब वह वेदना-मुक्त हो गई है

वह इतने दिन तक बीमार ही थी वह यह समझती थी कि अब कभी अच्छी ही न होगी। सभी प्रकार की औषधियों से निराश होकर उसने क्रुशेन सेवन करना आरम्भ कर दिया। केवल १½ मास में काफी परिवर्त्तन हो गया और आज वह वेदना से एकदम मुक्त है।

"गठिये के कारण मेरे हाथ-पैर फूल गये थे। मैं चल नहीं सकती थी और न मुझे नींद ही आती थी। बहुत रुपया खर्च किया किन्तु कोई स्थायी लाभ नहीं हुआ। पहले तो मैं क्रुशेन साल्ट सेवन करने को तैयार नहीं हुई। अच्छी होने की सभी आशा जाती रही। मैं जिन्दगी से ऊब उठी थी और मृत्यु चाहने लगी थी। दो सप्ताह क्रुशेन साल्ट सेवन करने के बाद मुझे आराम होने लगा। मैंने क्रुशेन साल्ट को जारी रक्खा और केवल ६ हफ्ते में मैं घर का काम करने लगी। तीन बोतल पीने के पश्चात् मुझमें टहलने की शक्ति आ गई। अब मेरा सारा दर्द जाता रहा। सूजन दूर हो गई और अब मैं सचमुच स्वस्थ जान पड़ती हूँ"—श्रीमती यफ० डब्ल्यू०

गठिये का दर्द विशेषतः शरीर में अम्ल के एकत्रित हो जाने से होता है यह साधारण जोड़ और गाँठों पर हुआ करता है। क्रुशेन इस विषैले मल को निकाल देता है तथा इसको दोष-रहित तत्त्वों में परिवर्तित कर देता है इससे शरीर का भीतरी अंग निर्धारित रूप से काम करता है जिससे फिर अम्ल एकत्रित नहीं होने पाता।

क्रुशेन साल्ट बाज़ार में सभी बड़े औषधि-विक्रेताओं के यहाँ बिकता है।

मैं इस घर में नहीं रहूँगी, इत्यादि। हरीश नहीं है नहीं तो उसी से कहता। तुम बतला देना।

विमला ने कहा—क्या आप अभी जाना चाहते हैं?

सुरेश ने कहा—बैठना भाग्य में नहीं है। एक किराये की घोड़ागाड़ी करके आया हूँ; पैसे बढ़ रहे हैं। जलपान के बाद फिर जुटूँगा। वृद्धावस्था में एक लड़का हुआ किन्तु उसकी ओर भी कभी नहीं देख पाता। तुम्हारी दादी इस पर नित्य लड़ती हैं।

विमला ने कहा—बच्चे को तो मैंने नहीं देखा। न हो तो एक दिन..........। कितनी अवस्था हुई?

अनुमानतः पाँच वर्ष।

क्या नाम रक्खा है?

सुरेश ने कहा—सरोज।

क्या करूँ एक दिन चलकर आपके ही संग उसे जी भर प्यार कर लेती; किन्तु दादी से डरती हूँ।

सुरेश ने कहा—मैं ले चलूँगा। थोड़ा धीरज धरो।

१६

धैर्य रखकर भी कोई फल न मिला। विमला को कोई बुलाने न आया। कभी-कभी लक्ष्मी आई भी, किन्तु दस मिनट से ग्यारहवें तक न ठहरी केवल अपने भाई से ही बातचीत की। विमला को तो मानो पहचानती ही न थी। उस दिन भी वही हुआ, आकर विमला से बिना बोले ही वह चली गई। हरीश आकर जँगले के पास धम से बैठ गया।

विमला ने कहा—क्या सोच रहे हो?

मन में आता है अभी यहाँ से कहीं चला जाऊँ। यह निर्मम व्यवहार हृदय बेधे देता है। विमला तुम्हारी वह हँसी-खुशी यहाँ आकर सब बिला गई है।

विमला के मुख पर वेदना झलक उठी। उसने सिर नीचा कर लिया।

हरीश ने कहा—तुम्हारा गान-वाद्य क्यों बन्द हो गया? विनोद क्या करता है?

विमला ने कहा—तुम्हारे डाइनमा के कारण ही वह अस्त-व्यस्त है।

देख रहा हूँ कि निकल भागने का कोई उपाय नहीं है। जो करना चाहता था वह भी सम्भवतः न हो पायेगा। अशक्त-सा हो गया हूँ। चुप होकर फिर मन ही मन सोचने लगा कि कल्पना के किस दूर लोक की छवि देख रहा था, क्या हो गया? ....तदुपरान्त बोला—मैं गङ्गा पार के तथा जाजमऊ के पास के कितने ही गाँवों में गया था। घर-घर रोग फैल रहा है। सहस्रों व्यक्ति नित्य मर रहे हैं। चाहता हूँ एक समिति बनाऊँ जिसमें मैं स्वयं पैसा दूँ और दूसरे लोग भी दें। दीन-दुखियों की सहायता की जाये। विमला मैं देखता हूँ हम लोग असहाय बनकर भी दूसरों की सहायता कर सकेंगे। नगर के आस-पास के ग्रामों को मनुष्यों के रहने योग्य बना सकूँ, छोटी-छोटी पाठशालाएँ खोल सकूँ, गृह-शिल्प का प्रचार कर सकूँ और बेकार बैठे हुए लोगों को काम में लगा सकूँ यही मेरा एक स्वप्न है जो कालेज से देखता हुआ आ रहा हूँ, किन्तु उस स्वप्न के मध्य में अकस्मात् तुम आ पड़ीं। जो लोग प्राणों के संगी थे वे लोग मिथ्याभिमान के कारण हमसे दूर हो गये हैं। मैंने तो एक सच्चा संग पाया था; किन्तु दूसरे संगी उसे न देख सके। विमला तन्मयता से सुन रही थी; इतने में विनोद ने पुकारा—दादा.........तुम्हारा यन्त्रालय रेडी हो गया। बैटरी चार्ज करके (बैटरी भरकर) आ रहा हूँ। कल से तुम लेबोरेटरी में काम कर सकोगे।

बहुत ठीक, बहुत ठीक। आओ मेरे पास बैठो आकर......

विनोद हरीश के पैरों के पास आकर बैठ गया। हरीश ने कहा—यहाँ का व्यवहार देखा विनोद?

विनोद ने कहा—उन लोगों के स्नेह की बात कहते हो दादा? मैं मूर्ख हूँ अधिक नहीं जानता किन्तु बाहर दूसरों की सहानुभूति और संवेदना सुलभ है, घर में दुष्प्राप्य है। घर के जटिल प्रश्नरूपी प्रहरी उसे घर में घुसने नहीं देते।

—क्रमशः

बाल-साहित्य के अद्वितीय
पण्डित सोहनलाल जी द्वि
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भार
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू
है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद
माननीय सम्पूर्णानन्द जी
है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार
दर्जे की कवितायें लिखते हैं,
भावों की गम्भीरता और भाषा
प्रकट होता है, लेकिन, बाल
उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मा
बालकों में सद्विचारों को
बोना चाहिए, उन्हें द्विवेदी जी
कृतियों को अपनाना चाहिए, और
कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपी
प्रत्येक पुस्तक का मू
III) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि

रैक्सॉना
चर्म-सौन्दर्य को पैदा करता है
...चर्म-स्वास्थ्य को
सुरक्षित रखकर

THE NEW
Rexona
MEDICATED SOAP
Rexona
MEDICATED SOAP
CONTAINING CADYL

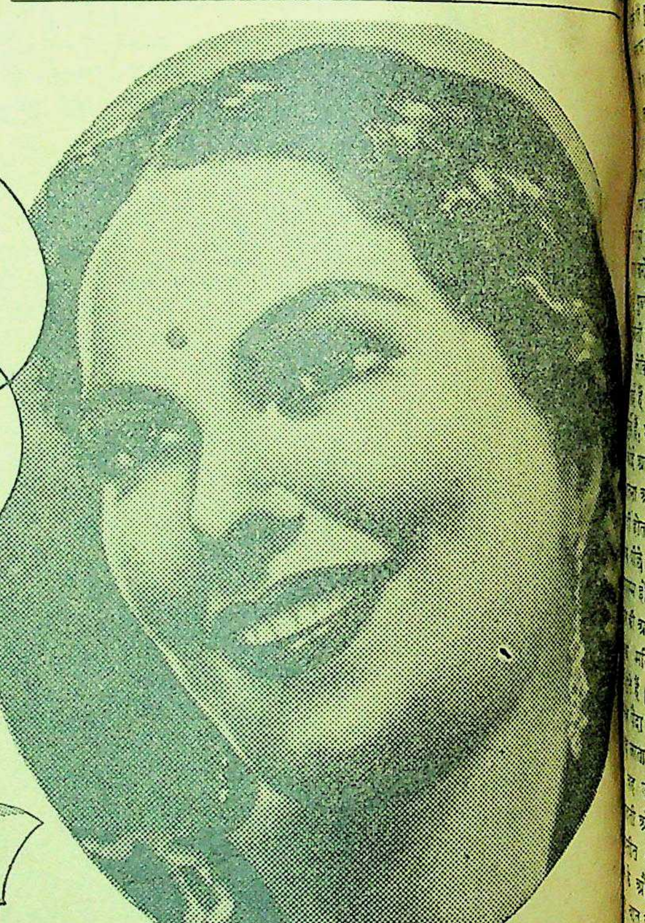

हाँ, क्योंकि रैक्सॉना चर्म स्वास्थ्य को जो कि चर्म को आकर्षक बनाने का एक मात्र आधार है—बड़ी शीघ्रता से बढाता है और सुरक्षित रखता है। रैक्सॉना चर्म सौन्दर्य देने का दावा कर सकता है।

रैक्सॉना से ये सब कैसे होता है?

क्योंकि यह चर्म-किटाणु विनाशक 'कैडिल' के मिश्रण से बनाया गया है और क्योंकि रैक्सॉना का शीघ्र बनने वाला सघन फेन स्फूर्ति और स्वास्थ्यदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रोंगटे में—जहाँ से प्रायः सब चर्म रोग और दाग़ शुरू होते है—पहुँचा देता है।

रैक्सॉना घरेलू साबुन

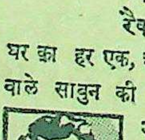

घर का हर एक, शख़्स इस आकर्षक हरे, शीघ्र फेन देने वाले साबुन की सराहना करेगा। स्त्रियाँ इसलिए कि उनके चर्म में शीघ्र सौन्दर्य उत्पन्न होगा —पुरुष इसलिए कि वह यह जानते हैं कि चर्म को स्वस्थ रखना कितना आवश्यक है। बच्चों के लिए तो इससे अच्छा कोई साबुन है ही नहीं। रैक्सॉना का कोमल फेन शरीर के दाग मिटा देता है, चर्म में रूखापन नहीं आने देता और बच्चों के चर्म को ठंडा और कोमल बनाता है। घर के आदमियों को चर्म स्वास्थ लाभ करने के लिए नियमित रूप से प्रयोग में लाना चाहिए।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, दायक और ताज़गी देनेवाले तेलो का मिश्रण है जो स्वास्थ्यरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।

फुन्सी, फोड़े, ऐकजीमा, मुँहासे, आँख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते है।

B.P. 29-220-40 HI

REXONA PROPRIETARY LIMITED

मातृमण्डल

मातायें अपने कर्तव्य से विमुख क्यों ?

की झूठी महत्त्वाकांक्षाओं का परिणाम क्या होगा ?

श्री रमाकान्त त्रिपाठी, बी० ए० 'साहित्य-रत्न'

इतने दुखी क्यों हैं ? रोग रहे हैं, शरीर साथ नहीं देता, और दुखी रहता है, मानसिक नामोनिशान भी मिट चुका है, बेड़ियाँ हमें जकड़े हुए हैं को छुड़ा नहीं पाते । जीवन सूना-सा मालूम होता है में ही इस संसार का मोह देते हैं । इसका मुख्य कारण हमारी शिक्षा-दीक्षा ऐसी नहीं अपने को मनुष्य बना वातावरण में हम नहीं पाले प्रकार हमारी उन्नति में और एक दिन संसार में हम उठा सकें ।

ही इसके लिए विशेष हैं । पराधीनता, सामाजिक कुछ हद तक उनके अवश्य डालती हैं लेकिन भी यदि माता अपना है, धर्म निबाहती है बच्चे को ऐसा नागरिक है जो राष्ट्र और देश अपने को और अपनी धन्य कर सके ।

लज्जा की बात है कि स्त्रियाँ, जब कि महिला- ओर धूम मची हुई है, की बराबरी में खड़े होने हैं, अपने को अधिक योग्य अपना वास्तविक माता- है । कहना तो यह चाहिए शौकीन हैं, सन्तान-शिक्षण आकर्षण ही नहीं है या है अधिक कि जिसका परिणाम होगा ।

एक रहस्य है जो शिशुगृह होता है । वहाँ स्त्री के लिए आवश्यकता पड़ती है जिससे मस्तिष्क और शरीर दोनों हैं ।

होने के साथ ही माता का है । माँ होना ही मूर्खता उन कर्तव्यों का पालन नहीं और घर के बाहर अपना करना चाहती है । उसके और लोग, मित्र, सम्बन्धी हैं, इस कमी को और उसे आवश्यकता को समझते हैं, हैं लेकिन कर ही क्या सकते स्त्री स्वयं उस ओर होती, अपना कर्तव्य समझना । फिर हम आशा कैसे कर भारत की प्रत्येक स्त्री अपने अपने बच्चों को रूप में परिणत कर सकें, बन सकें और हम उन ?

है कि गृह, जीवन का है जहाँ से शिक्षा

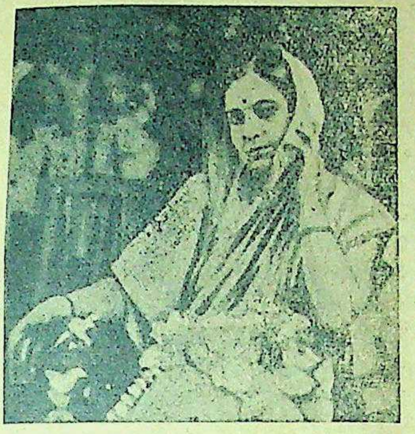

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित अमरीका से शीघ्र ही भारत वापस आ रही हैं ।

प्रारम्भ होती है । माताओं का कर्तव्य तो यह है कि वह पहले से ही घर का वातावरण अनुकूल बनायें । उन्हें अपनी पुरानी आदतें छोड़नी पड़ेगी, नई बनानी पड़ेगी । हाँ, यदि हमारा पहला रास्ता ही अधिक उपयोगी है तो हमें परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं ।

बच्चा जब से नकल करना सीखता है उसकी आदतें बनने लगती हैं । तभी हमें चाहिए कि उनके सामने कोई ऐसा रूप न रक्खें जो अच्छा न हो । यह स्वाभाविक है कि ऐसा करने से जीवन में भी बड़ा परिवर्तन हो जायगा लेकिन यह परिवर्तन आवश्यक है यदि स्त्रियाँ एक सुयोग्य माँ बनना चाहती हैं । ऐसा करने से वह एक सुयोग्य पत्नी भी बन सकती हैं यह निश्चय है ।

जीवन एक कला है । जो स्वयं अच्छी तरह नहीं रह सकता, अपनी जिम्मेदारी नहीं उठा सकता वह बड़े होने पर कुटुम्ब, समाज और देश का भार सँभालने में कैसे समर्थ होगा ? इसके लिए हमारी मातायें ही अधिक उत्तमता के साथ शिक्षण का कार्य कर सकती हैं । उनका प्यार, उनका स्नेह ही बच्चों से वह कार्य करा सकता है । बड़ों का आदर करना, उनके आदेश का पालन करना, नम्र होना, सच बोलना ये सब जीवन के आधारभूत तत्त्वों में से हैं । इन्हें सिखाना प्रत्येक माता का कर्तव्य है लेकिन यह तभी हो सकता है कि जब वे स्वयं चरित्रवान् बनें, साधना और त्याग करें ।

बच्चों के पालन-पोषण का ढंग बहुत ही श्रेष्ठ होना चाहिए । माताओं का शिशु-पालन-कार्य ही उनकी श्रेष्ठता बतला देता है । बच्चों को देख कर कोई भी यदि प्रशंसा या बुराई करता है तो उनकी माताओं की । एक सज्जन को तो मैंने अपने कानों कहते सुना है कि 'इसकी माँ कैसी है ? उसे इतना भी सऊर नहीं कि अपने बच्चे को साफ़-सुथरा भी रख सके ?' बात यह थी कि उसके पैरों में मिट्टी और मुँह में दाल लगी थी । कपड़ा तो इतना गन्दा था कि जिसका कोई ठिकाना नहीं । बात ठीक थी—क्या उसकी माँ इतना भी नहीं कर सकती थी कि बच्चे के खाने के पहले या बाद में उसके हाथ, पैर, मुँह धो-पोंछ सके भला ऐसी मातायें क्या कर सकती हैं ? क्या वे—सच में माता कहलाने के योग्य हैं ?

ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि वे अपने को बच्चों में इतनी व्यस्त रक्खें कि उन्हें दुनिया के अन्य सारे कामों का भान ही न रहे । उनके यहाँ यदि कोई आए तो वे उससे ठीक से बात भी न कर सकें और यदि करें भी तो बच्चों की चिन्ता में व्यग्र रहें । विश्वास और सावधानी के साथ उन्हें सभी कर्तव्य निबाहने होते हैं । जो ऐसा नहीं कर पातीं वही असफल होती हैं । अधिक सतर्कता भी अच्छी नहीं होती । उचित समय पर ढंग से यदि काम कर दिया जाए तो फिर चिन्ता की कोई बात ही नहीं रहती ।

इसलिए माताओं से हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपने वास्तविक कर्तव्य की ओर ध्यान दें, उसे योग्यता के साथ करें । झूठी महत्त्वाकांक्षाओं के चक्कर में पड़ कर अपने को, अपनी पुरानी संस्कृति को मिटाने का प्रयत्न न करें । इसी में भलाई है ।

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था ।

अब ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९–६१) वैसी ही बहुत अच्छी शर्तों पर आगामी सूचना तक मिलता रहेगा ।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा ; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी ख़ज़ाने से खरीद लें ।

व्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को आपको घर बैठे पहुँच जाया करेगा ।

इस ऋण में आप जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं ।

आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी । ऋण की असल रक़म १५ अगस्त, १९५९ के बाद, किन्तु १५ अगस्त, १९६१ से पहले पहले वापस मिल जायगी ।

आपकी पूँजी आपको हर समय वापस मिल सकती है, क्योंकि यह लोन मार्केट में आसानी से बेचा जा सकता है । अभी आवेदन कीजिए ।

ऋण के जिन ख़रीदारों पर इनकम–टैक्स लागू नही होता अथवा कम शरह पर लागू होता है, वे टैक्स का रुपया वापस ले सकते हैं ।

AAA 222 Hindi

रुपया बचाइए

और

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित ।

राजपूताने की चिट्ठी

मेवाड़-प्रजामण्डल मुक्त

बीकानेर की स्थिति पर व्यास जी का वक्तव्य

(निज संवाददाता द्वारा)

ब्रिटिश भारत में सरकार कांग्रेस पर से पाबन्दियाँ उठाती जा रही है और उसका प्रभाव राजपूताना के राज्यों के प्रजामंडलों पर भी पड़ रहा है। गत ६ सितम्बर को मेवाड़-प्रजामंडल पर से सरकार ने पाबन्दी हटा ली है। प्रजामंडल की ओर से स्काउट आश्रम में एक सार्वजनिक सभा हुई। श्री भूरेलाल बया सभापति के आसन पर थे। सभा में श्री माणिकलाल वर्मा, श्री सुखादिया जी तथा सभापति ने पिछले तीन वर्षों की सरकारी नीति और दमन की कड़ी आलोचना की। सरकार की ओर से जो दमन-चक्र चलाया गया उसकी भर्त्सना की गई। श्री बया जी ने अन्त में मेवाड़ की जनता से आगामी दिसम्बर तक प्रजामंडल के कम से कम २० हजार सदस्य बन जाने की अपील की।

व्यास जी का वक्तव्य

अखिल भारतीय देशी-राज्य-लोक-परिषद् के प्रधान-मन्त्री लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने बीकानेर की वर्तमान परिस्थितियों के सम्बन्ध में एक वक्तव्य दिया है। आपने कहा है—

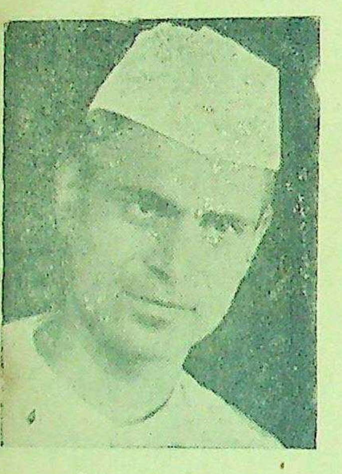

आ० भा० देशीराज्य परिषद् के प्रधान-मंत्री लोकनायक श्री जयनारायण व्यास।

"अब तक मैंने बीकानेर के मामलों में अपना मत जान बूझकर प्रकट नहीं किया था, क्योंकि यह वह नाजुक समय है, जब कि अधिकारियों और प्रजा-पक्ष के सम्बन्धित कुछ सज्जनों के बीच समझौते की बातचीत चल रही है। किन्तु मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जब कि राज्य के अधिकारी प्रजा-पक्ष के आदरणीय व्यक्तियों से सुलह की बातें करने में व्यस्त हैं तब भी सरकार की ओर से 'आक्रमण' चालू है।

ऐसे समय में जब कि स्वस्थ वातावरण पैदा करने के लिए बातचीत चल रही थी "प्रजा-सेवक" पर प्रतिबन्ध लगाना ठीक वैसी ही घटना है जैसा कि जापान का पर्लहार्बर का आक्रमण अर्थात् जब अमेरिका और जापान के कूटनीतिज्ञ न्यूयार्क में समझौते की बातें कर रहे थे तब जापान ने पर्लहार्बर पर हमला बोल दिया गया। क्या मैं विश्वास करूँ कि महाराजा बीकानेर इस प्रतिबन्ध को हटा लेंगे?

इस अवसर पर मैं बीकानेर-सरकार को यह भी कह देना चाहता हूँ कि वह अपने मध्यकालीन तरीकों को छोड़कर सीधी और उदार नीति का अवलम्बन करे।"

जोधपुर म्युनिसिपल बोर्ड

जोधपुर के जन-सेवक श्री सुमनेश जोशी, पत्रकार ने जोधपुर म्युनिसिपल बोर्ड की वर्तमान गति पर लेख लिखते हुए कहा है कि जोधपुर के मौजूदा म्युनिसिपल बोर्ड ने वर्षों की रूढ़िग्रस्त परम्पराओं को तोड़ कर अगले वर्ष के लिए जो बजट सरकार की स्वीकृति के लिए भेजा है वह वास्तव में बोर्ड के क्रियाशील सदस्यों का एक प्रगतिशील कदम है। जिस समय से लोक-परिषद् ने म्युनिसिपल बोर्ड आदि स्वशासन की संस्थाओं में प्रवेश करना प्रारम्भ किया है तब से अपने हर संघर्ष के बावजूद भी जनहित की दृष्टि से उसने अपने सतत प्रयत्न जारी रखे हैं। तब से म्युनिसिपलिटी केवल टोडा टट्टी का महकमा ही नहीं रह कर, लोकशिक्षण और नागरिक जीवन के विकाश में योग और मार्ग दर्शन देनेवाली संस्था का काम करती जा रही है। जन पक्ष के लोग यदि शासन की संस्थाओं में जाकर अपने बुद्धि-बल और अपनी लगन धुन से लोककल्याण के साधन सर्व-साधारण के लिए सुलभ नहीं करवा सके तो उनका जनमत के आधार पर इन संस्थाओं में प्रवेश करना कभी भी न्यायोचित नहीं कहा जा सकता। लोक-परिषदी सदस्यों ने लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास के सभापति-काल में यही परिपाटी कायम की थी और इस बार भी लोकपरिषद् के श्री द्वारकादास पुरोहित की अध्यक्षता में मौजूदा बोर्ड के लोकपरिषदी एवं स्वतन्त्र सदस्य अपने सम्मिलित प्रयत्नों से जनहित की परम्परा को कायम किये जा रहे हैं।

सन् ४५-४६ के बजट में मौजूदा बोर्ड ने काफी रद्दोबदल पेश किए हैं। यदि सरकार ने उन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया तो हमारा विश्वास है कि जोधपुर नगर के लिए लोकशिक्षण और जनरंजन के लिए यह बोर्ड अपनी प्रवृत्तियों से एक नई दागबेल डाल सकेगा।

भरतपुर

भरतपुर-राज्य-प्रजा-परिषद् की कार्यकारिणी की एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बैठक केन्द्रीय कार्यालय भरतपुर में हुई। मुख्य विचारणीय विषयों में श्रीनगर (काश्मीर) में होनेवाली अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् की स्थायी समिति का वह प्रस्ताव था जिसके द्वारा समस्त देशी राज्यों की प्रजा-मण्डल आदि संस्थाओं को एक सूत्र में आबद्ध करने के हेतु उक्त लोकपरिषद् से सम्बन्धित करने का निश्चय किया गया था। कार्यकारिणी ने सर्व-सम्मति से सम्बन्ध स्थापित करना स्वीकार कर लिया। साथ ही 'परिषद्' के आगामी अधिवेशन बुलाने के लिए मेवाड़ राज्य प्रजा-मंडल की ओर से भेजे हुए निमन्त्रण का हार्दिक समर्थन किया गया, तथा स्थायी समिति की अगली बैठक भरतपुर में बुलाने का भी निश्चय किया।

उज्जैन

उज्जैन में मध्यभारत नागरिक स्वतन्त्रता-संघ के तत्त्वावधान में एक विराट् सार्वजनिक सभा मध्यभारत देशी राज्य-लोकपरिषद् के प्रधान मन्त्री श्री कन्हैयालाल वैद्य की अध्यक्षता में हुई।

सर्वश्री मंगलीप्रसाद आजाद, रामचन्द्रजी जैन और सिद्धनाथ उपाध्याय के प्रस्ताविक भाषण के बाद संघ के उपसभापति श्री रामचन्द्रजी शर्मा ने नागरिक स्वाधीनता की व्याख्या करते हुए भाषण दिया। संघ के मन्त्री श्री सैयद हामिदअली ने कोई एक घंटे तक शहरी आजादी क्या है, इसकी विस्तृत व्याख्या की। सभा के प्रमुख वक्ता भोपाल के जननेता और मध्यभारतीय नागरिक स्वाधीनता-संघ के अध्यक्ष खान शाकिरअलीखान थे।

संवाददाताओं के पत्र

उदयपुर में मेवाड़ प्रजामण्डल कार्यालय में कतिपय कार्य-कर्ताओं की बैठक गान्धी-जयन्ती के कार्य-क्रम को सफल बनाने के लिए हुई। जिसमें निश्चय हुआ कि ता० २७ सितम्बर से २ आक्टूबर तक सप्ताह सफलतापूर्वक मनाया जावे। अधिक से अधिक सूत-संग्रह करके गांधी जी को भेंट किया जाये।

इस सप्ताह में हर रोज सवेरे ७ से ८ बजे तक सरस्वती-मन्दिर कोल-पोलमें चर्खा-यज्ञ होगा। ता० २ अक्टूबर को मोहता पार्क में सार्वजनिक सभा होगी। इस आयोजन के संयोजक श्री कनक 'मधुकर' सम्पादक—'नवजीवन' तथा संयुक्त संयोजक श्री प्यारेचन्द जी विश्नोई चुने गये हैं।

श्री बंसीलाल जी चौधरी के चार बॅंगला नामक स्थान पर यहाँ के कुछ व्यावसायिकों के बीच एक प्रस्तावित चर्चा हुई जिसमें चेम्बर आॅफ कामर्स की शीघ्र स्थापना करने का विचार किया गया।

स्मरण रहे, क्लाथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन के अतिरिक्त ऐसा कोई संगठन यहाँ नहीं है जो किसी व्यापारिक संगठन का कुछ भी प्रतिनिधित्व करता हो। चेम्बर्स आॅफ कामर्स के स्थापित हो जाने पर क्लाथ मर्चेन्टस एसोशिएशन के साथ ही अनाज, अभ्रेक आदि के व्यापारी भी इसमें सम्मिलित हो सकेंगे और इस तरह सब भाँति के व्यापारियों का एक सामूहिक संगठन बन जायेगा। —संवाददाता

* * *

उदयपुर में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें अधिवेशन के लिए काफी उत्साह नजर आ रहा है। इन्हीं दिनों विभागीय मन्त्रियों की दो-तीन बैठकें हो चुकी हैं, जिनमें स्थान कमलिया-वाड़ी की अपेक्षा नम्बरदार स्कूल सोचा गया है—जहाँ अस्सी हजार वर्ग मील जगह में मीराँ-नगरी के निर्माण की विशाल योजना शुरू है। कम से कम दस हजार दर्शकों के बैठने के लिए मुख्य पंडाल बनाया गया है।

इस सम्बन्ध में ता० १५ को एक शिष्ट मंडल ने होम मिनिस्टर से भेंट की जिन्होंने 'नगरी' के निर्माण में फरासखाना आफिसर से मिलकर सहयोग का आश्वासन दिया है। आर्थिक सहायता के सिलसिले में डेपुटेशन ने जनरल मिनिस्टर साहब राजाधिराज अचरौल से भेंट की, जिन्होंने प्रधान मन्त्री से बात कर काफी बड़ी सहायता का आश्वासन दिया। —संवाददाता

* * *

गढ़वाल में पट्टीसावली ही एक ऐसी पट्टी है जिसमें की प्राइमरी स्कूलों की भरमार है। किन्तु एक भी मिडिल या हाईस्कूल नहीं है। ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक बालक का उच्चशिक्षा प्राप्त करना बड़ा ही दुष्कर है। इसी अविद्या के कारण अनेकों होनहार बालकों का जीवन सदैव के लिये दुःखदायी हो गया है। अतः हमने पट्टीसावली ग्राम लोदली के निकट वेदीखाल स्थान में एक ऐंग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल खोलने का निश्चय किया है, और जिसका कार्य आरम्भ हो गया है। यद्यपि इस शुभ कार्य के लिये ५,०००) एकत्रित हो गये हैं और १५,०००) के वचन मिल चुके हैं किन्तु विद्यालय, छात्रावास तथा अध्यापकों के क्वार्टर आदि बनवाने के लिये कम से कम ६००००) की आवश्यकता है।

करांची में रहनेवाले पट्टीसावली जिला

अमेरिका का साम्राज्यवादी

(पेज ७ का शेष)

न प्राप्त होते तो स्पष्टतः वे
जापान की संयुक्त शक्ति के
न सकते। अब यह युद्ध समाप्त
कहने को भले ही युद्ध के
संसार में शान्ति व न्याय-स्थापना
दुहाई देने लगे हैं। यथार्थ में
ब्रिटेन और फ्रांस की भाँति अमेरिका
साम्राज्यवाद का चरण चूमने को
हो रहा है। प्रशान्त महासागर
प्रमुख हवाई टापुओं का वह
से स्वामी है उन टापुओं की
जापानी है किन्तु वे अमेरिका के
में हैं। इनके अतिरिक्त फिलिपाइन,
वेक और मिडवे नाम के टापुओं
वह बहुत दिनों से स्वामी है।
से पहले इन टापुओं-द्वारा ही
के हवाई जहाज़ एशिया में
अब इस युद्ध में उत्तरी प्रशान्त
समस्त टापुओं पर, जो जापान के
में थे, अमेरिका ने अधिकार
और अमरीकन लोगों की माँग
ये सब टापू अमेरिका के कब्जे
चाहिए। ये टापू सैकड़ों की
और इनकी आबादी अधिकतर
या चीनी है। अमरीकन आबादी
नहीं के बराबर है फिर भी ये टापू
के हाथ में रहें यह दलील अमरीकी
ज्यवाद का खुला ऐलान है। प्रशान्त
सागर के इन टापुओं में अमेरिका
केवल जापान कर सकता था
आज पराजित है। स्पष्ट है कि
अभाव में अमेरिका इन टापुओं
बनकर रहेगा। यदि ऐसा
रिका न केवल साम्राज्यवादी
जायेगा अपितु प्रशान्त
मालिक भी बन बैठेगा।

गढ़वाल के निवासियों ने,
के लिये अपनी १ मास की
और दे रहे हैं। दान-दाताओं
सावली मातृ-सम्मेलन, करांची
के पते पर धन भेजना चाहिए।

* *

लखनऊ विद्यार्थी-संघ ने
बड़थ्वाल-पारितोषक के सम्बन्ध
के विद्यार्थी कवियों की
रचनाओं पर देने का निश्चय
यद्यपि यह प्रतियोगिता मूलतः
फिर भी अन्य प्रान्तों के विद्यार्थियों
के उत्साह और सहयोग ने
प्रांतीय बना दिया। प्रतियोगिता
प्रथम पुरस्कार कुमारी शांति
(द्वितीय वर्ष) लखनऊ विश्वविद्यालय
रचित तथा लक्ष्मी स्टोर्स
लाटूश रोड लखनऊ द्वारा प्रकाशित
संग्रह "निष्कृति" को प्राप्त हुआ
प्रयाग विश्वविद्यालय के कुसुम
द्वारा रचित अप्रकाशित "वीचि
एक रजत पारितोषक प्रयाग के
चन्द्र नागर को तथा एक
वैरागी को प्रदान किया गया।
वार्षिक उत्सव पर डाक्टर
श्रद्धाञ्जलि भेंट की जायेगी और
वितरण होंगे। संघ सहयोगियों
कवियों का आभारी है, तथा
का सदैव अभिलाषी है।

—श्री अखिलेश्वर

ल्ली की चिट्ठी

प्रस्ताव से लार्ड वेवल को निराशा क्यों?

ों के चुनाव—आजाद हिन्द सेना पर मुकदमें, राशनिंग का स्वास्थ्य पर प्रभाव।

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

रे में ब्रिटिश सरकार के
े अस्पष्ट, अपर्याप्त और
ाते हुए कांग्रेस महा-
में जो प्रस्ताव पास किया
दिल्ली और लन्दन की
भारी तुषारपात हुआ है।
जानने के लिए ही
अखिल भारतीय कांग्रेस
अधिवेशन से पहिले अपने
के सामने प्रकट करने में
थी। नई दिल्ली और
काल बम्बई की ओर लगे
वक्तव्य पहले ही प्रका-
है और अब कांग्रेस के
लार्ड वेवल के नये
भी तय हो गया है।
घोषणा के साथ-साथ
सेक्रेटरी श्री जेनकिन्स
बुलाई थी, उसमें अनेक
सरकार का ध्यान इस
या था कि चूँकि इन
के क्रिप्स-प्रस्तावों को
जिनको कि कांग्रेस ने
के बाद नामंजूर कर
सरकार को इनकी

वल का जो कुछ करना है,
के बाद करेंगे।

आशा त्याग देनी चाहिए।
ने यह भी कहा कि ऐसे
पर वाइसराय को परम्परा
कान्फ्रेंस स्वयं करनी चाहिए।

* *

के चुनाव

ार ने केन्द्रीय और प्रान्तीय
चुनावों के बारे में जो समय
किया है उसके अनुसार
तक सब चुनाव समाप्त हो
। इसके बाद प्रान्तीय
प्रतिनिधियों का सम्मेलन
से परामर्श करने के लिए
रखा गया है। प्रान्तीय
प्रतिनिधि उस आधार पर
अभी प्रकट नहीं किया
मालूम हुआ है कि अभी
और विरोधी दल के
का सुझाव ही अधिक
पसन्द किया गया है। इनके आलावा कुछ अल्पसंख्यक जातियों के प्रतिनिधि और लिये जायँगे, इसके बाद विधान निर्मात्री परिषद् शायद १९४६ के अन्त में अपना कार्यारम्भ करेगी।

* * *

आजाद हिन्द सेना—

आजाद हिन्द सेना के विरुद्ध नवम्बर के शुरू में चलाये जानेवाले मुकदमों में पैरवी करने के लिए कांग्रेस महासमिति ने सर तेजबहादुर सप्रू, श्री भूलाभाई देसाई, डा० कैलाशनाथ काटजू, पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री आसफअली और लाला रघुनन्दनशरण—इन ६ सदस्यों की जो समिति नियुक्त की है उसका नई दिल्ली के राजनीतिक और अदालती क्षेत्रों में भारी स्वागत हुआ है। सबसे पहले आजाद हिन्द सेना के तीन अफसरों पर जिनके नाम कप्तान गुरुबख्शसिंह, कप्तान शाहनवाज और कप्तान पी० के० सहगल हैं, फौजी अदालत में मुकदमा चलाने की योजना बनाई गई थी और ८ अक्टूबर को उनके विरुद्ध मुकदमा शुरू हो जाना तय था। परन्तु इन तीनों-द्वारा अपनी सफाई तैयार करने के लिए समय माँगने पर सरकार ने मुकदमा एक माह के लिए स्थगित कर दिया है। मालूम हुआ है कि नवम्बर के शुरू में अब केवल इन तीनों पर ही नहीं, बल्कि और लोगों पर भी जिनके नाम सूची में हैं, साथ-साथ मुकदमे चलाये जायँगे और पाँच या छः फौजी अदालतें स्थापित की जायँगी। यह भी प्रकट किया गया है कि ये अदालतें कहने को फौजी होंगी, परन्तु सिविल अदालतों की तरह काम करेंगी और अभियुक्तों को इनके फैसलों के विरुद्ध अपील करने का अधिकार रहेगा। इन फ़ौजी अदालतों के स्थान के बारे में अभी तक दिल्ली का लाल किला ही पसन्द किया गया है, मगर कठिनाई केवल यह है कि चूँकि ये अदालतें जनता और प्रेस के लिए खुली होंगी इसलिए लाल किला जनता की दृष्टि से उपयुक्त स्थान नहीं है। कांग्रेस ने जो डिफेंस कमेटी नियुक्त की है उसमें दो व्यक्ति श्री आसफअली और लाला रघुनन्दनशरण दिल्ली के हैं। यह भी मालूम हुआ है कि पंडित नेहरू जो कि इस कमेटी के सदस्य भी हैं, नवम्बर के आरम्भ में दिल्ली आकर स्वयं इन मुकदमों की देख-रेख करेंगे। आजाद हिन्द सेना के मामले में जितनी दिलचस्पी नेहरू जी को है उतनी शायद ही किसी और को हो। इसके बारे में आन्दोलन भी उन्होंने ही सबसे पहले उठाया था।

* * *

राशनिंग का स्वास्थ्य पर प्रभाव

दिल्ली में अनाज के राशनिंग का जनता के स्वास्थ्य पर कितना बुरा प्रभाव पड़ा है, यह यहाँ के विविध अखाड़ों में पहलवानों से उनके वजनों की घटा-बढ़ी के बारे में प्राप्त किये गये आँकड़ों से ज्ञान हुआ है कि एक या दो को छोड़ कर बाकी सारे पहलवानों का वजन कई-कई पौंड गिरा हुआ पाया गया। इसका कारण पूछने पर उन्होंने खराब आस्ट्रेलियन गेहूँ बताया जो कि यहाँ राशन में मिलता रहा है।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी में क्या हुआ?

मौलाना आजाद, पंडित नेहरू और सरदार पटेल के उद्गार

३७॥ मास के बाद बम्बई में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन पहली बार हुआ। सारे देश के प्रमुख राजनीतिज्ञ और नेता एकत्रित हुए। राष्ट्रपति मौलाना आजाद ने सभापति का आसन ग्रहण किया। इस बार कांग्रेस कमेटी ने केवल दो-तीन राजनैतिक समस्याओं पर प्रस्ताव स्वीकृत किये। (१) सन् १९४२ में जो आन्दोलन हुआ उसके लिये कार्यकर्ताओं, बंदियों तथा राष्ट्र पर बलि होनेवालों को बधाई दी गई। (२) आजाद हिन्द फौज की सहानुभूति प्रदर्शित की गई और सरकार से उनके साथ उचित व्यवहार के लिए अनुरोध किया गया। ३) आगामी सार्वजनिक निर्वाचन में भाग लेने का निश्चय किया गया। नेताओं ने जो भाषण दिये, उसके कुछ अंश इस प्रकार हैं—

पंडित जवाहरलाल नेहरू

तीन वर्ष तक अँगरेज सरकार ने स्वेच्छाचारी शासन किया। जनता ने अदम्य उत्साह और साहस के साथ उसे सहन किया। इसलिए वह बधाई की पात्र है।

एटम बम ऐसे प्रयोग बहुत ही नाशकारी हैं। यदि साम्राज्यवादी और अन्य देशों के जीतने की भावना दूर न हुई तो सभ्यता संभवतः नष्ट हो जायगी। १९४२ में सरकार ने अ० भा० कां० कमेटी के अपील की उपेक्षा की और उसका फल जो हुआ वह सभी को मालूम है।

अ० भा० कां० कमेटी अपने १९४२ के प्रस्तावों को फिर से दुहराती है। और उसका विश्वास है कि संसार की शान्ति के लिए भारत की स्वतंत्रता आवश्यक है।

मौलाना आजाद

सन् ९४२ में मलाया और बरमा में जो भारतीय राष्ट्रीय सेना बनी थी उसके अधिकांश अफसरों, नर नारियों, तथा पश्चिमी मोर्चों के भारतीय सैनिकों को भारत के भीतर और विदेशों के जेलखानों में कैद किया गया है और उन पर मुकदमा चलनेवाला है। उसके उद्देश्य साफ थे इसलिये उनके साथ युद्ध के बन्दी की तरह ही व्यवहार होना चाहिए, और युद्ध समाप्त होने पर उन्हें छोड़ देना चाहिए था क्योंकि उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता के लिए काम किया था। यदि किसी को दण्ड दिया भी गया हो तो उसे कार्यान्वित नहीं किया जाय।

पण्डितनेहरू

प्रस्ताव उपस्थित करते हुए पं० नेहरू ने कहा कि उन भारतीयों के साथ, जो भली भाँति प्रकट हो जाता है कि सिपाय सेना में शरीक होने के अपराधियों की तरह व्यवहार न किया जाय। उन्होंने कहा—हमारी यह माँग है कि उनके ऊपर मामले चला कर उन्हें दण्ड न दिया जाय। कांग्रेस एक ऐसी कमेटी तैयार कर रही है जो यह देखेगी कि यदि इन देशभक्त मनुष्यों पर मामले चलाये गये तो उनकी उचित रूप से पैरवी की जायगी।

उन्होंने कहा कि बरमा राष्ट्रीय सेना और भारतीय राष्ट्रीय सेना के कार्यों में कोई अन्तर नहीं था लेकिन भारतीय राष्ट्रीय सेना के साथ भिन्न व्यवहार किया जाता है।

सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि इन भारतीयों को यदि दण्ड दिया गया तो भारतीय जनता में बहुत असन्तोष बढ़ेगा।

पण्डित पन्त

अँगरेज सरकार समस्याएँ और कठिनाइयाँ उत्पन्न करने में बड़ी पटु मालूम होती है। हम ज्यों ही एक समस्या हल कर लेते हैं त्यों ही सरकार एक दूसरी समस्या खड़ी कर देती है। इन बातों से यही मालूम होता है कि सरकार भारतीय जनता के हाथों में शासन शक्ति देना ही नहीं चाहती। वह तो चुनाव को भी अच्छी दशा में नहीं होने देना चाहती। वह तो मि० जिन्ना का ही समर्थन करती है। इसलिए हमें 'भारत छोड़ो' के नारे पर सुदृढ़ बने रहना चाहिए।

सरदार पटेल

अतीत में कांग्रेस लीग से समझौता करने का प्रत्येक प्रयत्न कर चुकी है। लीग को यथासंभव हर प्रकार की रियायत करने, साम्प्रदायिक निर्वाचन, समानुपात में प्रतिनिधित्व प्रदान करने के प्रस्ताव कर चुकी है। लेकिन मि० जिन्ना कांग्रेस के सामने अपनी शर्तें रखना चाहते हैं और कांग्रेस से मुसलमानों को बाहर निकाल लेना चाहते हैं। लीग ने कांग्रेस में रहनेवाले मुसलमानों को 'काफिर' बताया और तब घोषित किया है कि कांग्रेस मुसलमानों का प्रतिनिधित्व नहीं करती।

अन्त में मौलाना आजाद ने अपने संक्षिप्त परन्तु जोशीले भाषण-द्वारा यह कह कर कि १९४२ में जो बीज बोया गया वह अब फलने लगा है तथा सबको बधाई देते हुए अधिवेशन को समाप्त किया।

तुलसी-रत्नावली

संक०, श्री केदारनाथ गुप्त

गोस्वामी तुलसीदास की समस्त अमर रचनाओं का अनुशीलन करना साधारण मानव के लिए सम्भव नहीं है। ऐसी अवस्था में गोस्वामी जी के अमूल्य उपदेशों का लाभ सबको बराबर मिलना सम्भव नहीं था। अतः इस कमी को दूर करने के लिए तुलसीदास की रचनाओं का निचोड़-स्वरूप 'तुलसी-रत्नावली' का प्रकाशन किया गया है। इसमें तुलसीदास के चुने हुए पद्य संकलित हैं। इस एकमात्र पुस्तक में तुलसीदास का समस्त साहित्य समाविष्ट है। मूल्य १॥) डेढ़ रुपया।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

पंच महान् राष्ट्रों की पंचायत

(पेज ५ का शेष)

इसके बाद विश्व की राजनीति में अनेक महत्त्वपूर्ण घटनायें घटित हुईं। आस्ट्रिया, जेकोस्लेविया, बलगेरिया आदि रियासतों में सोशलिस्ट अथवा कम्युनिस्ट सरकारें बनीं और अन्त में फ्रांस के चुनाव में, वामपक्षी बहुमत से तो यह तय-सा हो गया कि योरोप में साम्राज्यवादी और पूँजीवादी राष्ट्रों की दाल नहीं गलेगी। आज जब परराष्ट्र मन्त्रियों की कौंसिल, लन्दन में अपना अधिवेशन कर रही है तब तक प्रशांत के युद्ध का भी अन्त हो चुका है। रूस के प्रशांत की लड़ाई में भाग लेने और मित्रराष्ट्रों की शक्ति के आगे जापान की युद्ध-मशीनरी के चरमराने के फलस्वरूप पूर्व में भी फासिस्टवाद का खात्मा हुआ। जनतन्त्रात्मक चीन भी जापानी लड़ाई से मुक्त होकर विश्व-सुरक्षा-सम्मेलन में सम्मिलित होने को प्रस्तुत हो गया। इस पृष्ठभूमि के आधार पर हमें वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन का निर्णय करना चाहिए।

सम्मेलन के सम्मुख उपस्थित प्रश्न

'पोट्सडैम' कान्फरेन्स में बहुत-सी समस्यायें बिना सुलझाये ही छोड़ दी गई थीं। उन पर विचार, और मित्रराष्ट्रों में पोट्सडैम के निर्णय को पूर्णतयः पालन न करने के लिए एक दूसरे को दोषी ठहराने से पैदा हुए अनैक्य को दूर करना आदि महत्त्वपूर्ण विषय उनके सामने हैं।

पहला प्रश्न जिस पर आजकल बहस हो रही है वह है भूतपूर्व धुरी राष्ट्रों और उनके सहयोगियों से सन्धि शर्तें तय करना। दिक्कत शर्तनामा तैयार करने में नहीं है, बल्कि विवादास्पद समस्या तो सीमा निर्धारण और उन प्रदेशों की शासन-व्यवस्था की 'किस्म' है। दूसरी बात, जिस पर विशेष बल डाला जा रहा है वह यह कि ब्रिटेन और अमरीका की 'जनतन्त्र' की व्याख्या और रूस की व्याख्या में भेद है। तीसरी चीज़ जिसकी चर्चा हो रही है वह है 'एटमबाम्ब' का भेद विश्व-सुरक्षा की गारन्टी के लिए सबके ऊपर प्रकट करना।

योरोपीय युद्ध समाप्त होने के समय रूमानिया, बलगेरिया, हंगरी आदि धुरीराष्ट्रों के पूर्व सहयोगियों के साथ 'क्षणिक-संधि' हुई थी जिनमें उनके लिये सुरक्षा और भोजन-व्यवस्था आदि की बात तय की गई थी। सीमा-निर्धारण, युद्ध का हर्जाना वसूल करना आादि बातें आगे के लिए छोड़ दी गयी थीं। सम्मेलन में एक एक राष्ट्रों के प्रश्नों को अलग अलग पूरी तरह निपटाने के बजाय ऐसे राष्ट्रों के मिलते-जुलते प्रश्नों को एक साथ सुलझाने की कोशिश की जा रही है। बलगेरिया की समस्या तो जटिल है ही।

दूसरी समस्या युगोस्लेविया और इटली के बीच सीमा के झगड़े और 'ट्रीस्ट' बन्दरगाह के स्वामित्व की है। इटली सरकार 'विलसन लाईन' तक अपनी सीमा बढ़ा देना और ट्रीस्ट पर अपना कब्जा छोड़ना नहीं चाहती थी—बहुत बहस मुबाहिसे के बाद यह तय हुआ कि 'ट्रीस्ट' अन्तर्राष्ट्रीय बन्दरगाह करार दे दिया जाय और सीमा पर स्थित 'स्वीच-भाषा-भाषी' प्रजाजनों पर दोनों राष्ट्रों का अपना अलग अलग शासन हो। इस निर्णय पर रूस ने अपनी पूरी सहमति अभी नहीं दी है।

तीसरी [illegible] ध्यान आकर्षित कर रही है वह इटली के उपनिवेशों की समस्या है। इटली ने इस युद्ध में भूमध्यसागर और अफ्रीका आदि में अनेक सामरिक महत्त्व के स्थान प्राप्त किये थे। उनकी वापसी और बँटवारे का सवाल परराष्ट्र-सचिवों को बहुत परेशान किये हुए है। आरम्भ में इटली ने लीबिया, ग्रीस, साइप्रस, क्रीट तक धावा बोलकर भूमध्यसागर को इटेलियन झील-मात्र में परणित करने का प्रयत्न किया था और अब उसकी करनी के फल-स्वरूप मित्रराष्ट्रों में कटुता आने की सम्भावना है। भूमध्यसागर का जलमार्ग-मध्यपूर्व के लिये बहुत ही सामरिक महत्त्व का है। युद्ध से पूर्व स्पेन-फ्रांस बालकन प्रायद्वीप के समुद्री किनारों के होते हुए भी ब्रिटेन की वहाँ के समुद्री यातायात में काफी निगरानी थी। स्पेन के नीचे का जिब्राल्टर-माल्टा-क्रीट आदि महत्वपूर्ण स्थिति-प्राप्त स्थान भूमध्य सागर की कुञ्जी उसके हाथ में दिये हुए थे। इस युद्ध ने पूर्व व्यवस्था को सब उलट-पलट दिया। रूस अपने यूक्रेन और यूराल प्रदेश की हिफ़ाजत के लिए भूमध्य-सागर की ओर से सावधान रहना चाहता है। वह नहीं चाहता कि भूमध्यसागर के प्रदेश किसी आक्रमणकारी शक्तियों के प्रभाव में रहें। ब्रिटेन अपनी खोई हुई प्रभुता को तो चाहता है ही। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका प्रशांत में अपना प्रभाव स्थित रखने के अलावा भूमध्यसागर के प्रदेशों की राजनीति को बड़े गौर से देख रहा है। ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र दोनों बालकन प्रदेशों में बढ़ती हुई कम्युनिस्टधारा को रूस का प्रभाव समझ रहे हैं। इसलिए सशंकित हैं। इसके फलस्वरूप ग्रीस में वह अपना प्रभाव बनाये रखना चाहते हैं। ग्रीस की प्रगतिशील पार्टी जिसने इटालियनों के मार भगाया था। दमन का शिकार हो रही है। ब्रिटेन और अमरीका की पृष्ठ-पोषक सरकार प्रतिक्रियावादी नीति चला रही है। इस वातावरण के बीच भूमध्यसागर-स्थित इटालियन उपनिवेशों की समस्या कितने महत्त्व की है, यह समझा जा सकता है। उसके सुलझाव के लिए अमेरिका ने एक सुझाव रखा कि उनको बजाय राष्ट्रविशेष के प्रभाव के, अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी (जो इसी लिए निर्मित हो) के प्रभाव में रखा जाय। रूस का कहना है कि इन प्रदेशों की आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए इन्हें किसी एक राष्ट्र की ही देख-रेख में रखा जाय। ब्रिटेन चाहता है कि इन द्वीपों को ग्रीस की सरकार के अधिकार के क्षेत्र में कर दिया जाय 'पंचराष्ट्रों' के मन्त्री इस प्रश्न पर किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे। हो सकता है इटालियन उपनिवेशों का प्रश्न परराष्ट्र-सचिवों के सहकारियों पर छोड़ दिया जाय जो बाद में उसे तय करते रहेंगे। अभी तक आस्ट्रो-इटालियन, फ्रांको-इटालियन, अलबानिया-इटालियन सीमा की समस्याओं पर विचार किया जा चुका है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न जो लन्दन कौंसिल में बहस का विषय हो रहा है कि इन राष्ट्रों में उपस्थित हुकूमतें कहाँ तक प्रतिनिधिशील और जनतन्त्रात्मक हैं जिससे वह संधि-शर्तें तय करने की अधिकारी हो सकें? इस तरह जनतन्त्र शासन (डेमोक्रेसी) के शब्द में दो विचार-धाराओं का प्रदर्शन हो रहा है। एक फिनलैंड, रूमानिया, हंगरी, बलगेरिया, आस्ट्रिया आदि धुरी-राष्ट्रों के पूर्व सहयोगियों की नई सरकार को अवसरवादी, अनधिकारी और पूरे राष्ट्र का असमर्थन प्राप्त बताती है—इसके वाहक ब्रिटेन और अमरीका हैं और दूसरी रूसी विचार-धारा है जो इन राष्ट्रों की सरकारों को पूर्ण जनतन्त्रात्मक मानती है और इन्हें शर्तनामा पर सही करने का अधिकारी समझती है—कौंसिल की बैठक में इन्हीं दोनों विचार-धाराओं के बीच संघर्ष हो रहा है। कहना तो यह चाहिए कि पूँजीवादी जनतन्त्र और समाजवादी जनतन्त्र अपना-अपना जोर आजमा रहे हैं, इसलिए उम्मीद ऐसी है कि बहुत जल्द ही किसी विषय में कटुता का वातावरण पैदा हो जाय।

जिस तरह एक दूसरे के प्रति अविश्वासपूर्ण और असहयोग के ढंग पर कौंसिल की कार्यवाहियाँ हो रही हैं उससे क्या हम उम्मीद करें कि आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में उपस्थित विद्वेष और मनमुटाव दूर करने में और विश्व-शांति की ठोस आधार पर व्यवस्था करने में परराष्ट्र-मन्त्रियों की यह कौंसिल सफल होगी?

उदयपुर में आगामी दशहरे के अवसर पर ता० १७, १८ और १६ अक्टूबर को अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ वार्षिक अधिवेशन हो रहा है। इस अवसर पर स्वागत-समिति ने निश्चय किया है कि एक प्रदर्शनी का उपादेय आयोजन किया जाय। यों तो सम्मेलन के प्रत्येक अधिवेशन पर प्रदर्शनी का आयोजन होता ही है, पर उदयपुर-स्वागत-समिति की कामना है कि इस बार प्रदर्शनी की योजना दो मुख्य उद्देश्यों को लेकर की जाय:—

राजस्थानी भाषा और साहित्य-सम्बन्धी प्राप्य सभी प्राचीन तथा महत्त्वपूर्ण वर्त्तमान सामग्री, राजस्थान की संस्कृति-सम्बन्धी उपलब्ध महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ प्राचीन सिक्के चित्र तथा शिला-लेख आदि। राजस्थानी भाषा, साहित्य, प्राप्य ज्ञातव्य एवं संस्कृति-विषयक तमस्त वस्तुएँ प्रदर्शनी में हों जिनसे राजस्थान का अतीत तथा वर्त्तमान व्यक्त हो जाय। हिन्दी-संसार-सम्बन्धी तमाम जानकारी, इस विभाग में राष्ट्रभाषा हिन्दी के कार्य की रूप रेखा, हिन्दी संस्थाओं का परिचय, हिन्दी साहित्यकारों तथा प्रकाशनों-सम्बन्धी सामग्री, हिन्दी-पारितोषिकों, हिन्दी विद्यालयों आदि अद्यतन प्रत्येक हिन्दी प्रवृत्ति का सजीव परिचय हो। साथ ही हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं और महत्त्वपूर्ण कृतियों की भी शोभामय पंक्ति इस प्रदर्शनी में हो।

स्पष्ट है ३३वें उदयपुर-अधिवेशन की प्रदर्शनी को हम "राजस्थान तथा हिन्दी-जगत्" का चित्रमय संसार बनाना चाहते हैं। सजीव सहयोग की हमें बड़ी आवश्यकता है। सामग्री स्वागत-समिति के खर्च से दोनों ओर भेजी जायगी, तथा आपकी सामग्री की रक्षा का पूर्ण उत्तरदायित्व स्वागत-समिति का होगा। आप निश्चिन्त रहें। हमने प्रदर्शनी का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ प्रबन्ध किया है। उत्तर लौटती डाक से प्रदान करें।

—जनार्दन राय नागर
मन्त्री

श्री बीकानेर राज्य-
की विद्या-विनोद-परीक्षा
साहित्य-सम्मेलन ने प्रथमा
स्वीकृत कर लिया है। अर्थात्
परीक्षोत्तीर्ण छात्र सम्मेलन की
बैठ सकेंगे। परीक्षार्थियों को
संख्या में सम्मिलित होकर इस
लाभ उठाना चाहिये।

—आचार्य ओङ्कारनाथ

* *

बम्बई के "वे दोनों"
के प्रसिद्ध निर्देशक निर्माता
देसाई "वे दोनों" नामक चित्र
करने कलकत्ते जा रहे हैं। इस
प्रधान भूमिका में उनकी प
चित्राकाश की प्रकाशमान तारिका
नलिनी देसाई आ रही हैं, उनके
कुछ नये चेहरे भी दिखाई देंगे।
गीत हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री
ने लिखे हैं।

* *

काला कांकर (अवध)
साहित्य-परिषद्, हनुमत
असाधारण बैठक में रेडियो
सम्बन्धी नीति पर सर्वसम्मति
असन्तोष प्रकट किया गया
सरकार से प्रार्थना की गई कि
के स्थान पर किसी अन्य
की नियुक्ति कर रेडियो की
नीति में परिवर्तन शीघ्र से

पेट के

दर्द के चंगुल

न फँसिए!

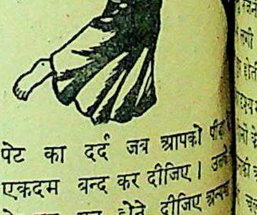

पेट का दर्द जब आपको
एकदम बन्द कर दीजिए।
को दृढ़ मत होने दीजिए
होने का भय है।

PREPARED ACCORDING TO A SPECIALLY SELECTED FORMULA
MACLEAN
Brand
Stomach
Powder
Alex. C. Maclean

Copyright

और अचला सगी बहिनें नहीं
उनमें कोई अन्तर है और
है, ऐसा भी पड़ोसियों
के माता-पिताओं ने नहीं
से सभी का कहना है कि
के संस्कार ने इन्हें एक-
का साथी बनाया है। एक
बीमार पड़ गई और
में पहुँच गई थी, तो रजनी
की पट्टी से लगे-लगे ही
कई दिनों को गुजार दिया
से एक क्षण के लिए
नहीं रुका था और भूखी-
स्वयं अपने आपको भी
बना दिया था। अचला बच
में यह किंवदन्ती फैल
की आर्त्त-पुकार ने ही
बना दिया और अचला

* *

विवाह है, अचला इसी से
है। लेकिन उसके अन्दर
उसको व्यक्त न करके भी,
यन्त्र-चालित की तरह
है। किसी और की दृष्टि
नहीं है कि जो अचला को
दूर-दूर रहकर कामों में
का मर्म समझ सके।
समझती है और अनुभव
जैसे बरबस अपने को
है। इसी से वह उसके
है। उसकी आँखों से
लाती है।
ससुराल जाने की तैयारी
वह विदा होनेवाली है।
सहेलियों से मिल रही
जिसको बार-बार देखती है,
नहीं है। द्वार पर
और जल्दी करने के
खबर भी आ गई। उसी
देखती है कि अचला एक
खड़ी है।
जाकर रजनी ने रोते-रोते
......
अचला, जो पहले से रो रही
फूट-फूटकर रो पड़ी थी।
रही थी—अब चल बेटी...

रजनी और अचला एक-दूसरे
हुई न छूटती थीं और न
थीं। जुदाई के उस पहर
मार्मिक था। जो नहीं रो रहे
के मिलन और जुदाई के उस
आँखें भी गीली कर दी थीं।
गई। केवल हर्ष और
मन पर लिए अचला रह
और वह भी कभी पृथक्
वह इस पर भरोसा न करती
पर टिकी थी और उसी में

* *

रजनी का पत्र आया
कि उसे रात-दिन उसी
है। वह—रजनी के
हँसी और मीठी बातें
जल्दी ही फिर मिलने

का उत्तर दे दिया
कि वह साथी के बगैर
और सूनी बन गई है।

क्या रहस्य है ?

लेखक, श्रीयुत श्रीराम शर्मा 'राम'

> 'अति सर्वत्र वर्जयेत्—' प्रेम में, सुख मे और दुख मे अति की प्रतिक्रिया भयंकर होती है। अचला और रजनी में इतना अधिक स्नेह था कि वह एक दूसरे की जुदाई भी नहीं सहन कर सकती थीं। किन्तु रजनी के विवाह हो जाने पर अचला को जुदाई सहनी ही पड़ी। देखते देखते अचला का भी विवाह होते होते ऐसी घटना घटित हुई कि जिसका रहस्य—रहस्यमय ही बना रह गया। कहानी सुन्दर, मार्मिक और प्रभावोत्पादक है।

उसके लेखे तो अब दुनिया उजड़ गई है और कहीं अन्यत्र जाकर बस गई है।

लेकिन कुछ ही समय बाद अचला का भी विवाह निश्चित हो गया। मित्रों और सम्बन्धियों को निमन्त्रण भेज दिया गया। रजनी के पति को भी भेजा गया। स्वयं अचला ने एक बड़ा पत्र लिखकर, उसमें अनेक स्थलों पर बार-बार यही लिखा कि मुझे विवाह की खुशी नहीं है, तुम्हें और जीजा जी को देखने की खुशी है!

रजनी ने उस पत्र के उत्तर में लिख दिया और पता दिया कि उसकी दुनिया में एक यही तो विवाह है,—उसकी अचला का, कि जिसके वह स्वयं आकर उबटन मलेगी, साज-शृङ्गार करेगी और अपने ही हाथों पालकी में बैठाकर ससुराल भेजेगी।...वह अपनी अचला रानी के पति से भी यह साफ-साफ कहेगी कि मेरी फूलों की रानी सूख न जाये...यह असमय ही कुम्हला जायेगी...तो ऐसी सुन्दर और मनोरम बहूरानी उन्हें एक जन्म में क्या, सात जन्मों में भी नहीं मिल सकेगी।

पत्र में रजनी ने यह भी लिखा कि उसके जीजा जी और वह एक सप्ताह पहिले ही आयेंगे और अपनी अचला के विवाह का सभी काम हाथों-हाथ करेंगे।

इसी से आजकल अचला प्रसन्न है कि रजनी आयेगी और उससे मिलेगी। वह कल्पना करती है, क्या रजनी अब भी हँसोड़ होगी और चंचल...न, अब गम्भीर बन गई होगी। अब उसमें कुछ बुजुर्गी भी आ गई होगी। वह मोटी भी...कुछ लम्बी भी हो गई होगी।

और वह सोचती है, रजनी आयेगी, तो देखते ही, वह उसे छाती से चिपटा लेगी। हँस देगी और मुँह चूम लेगी...मेरी रजनी!...

विवाह को एक सप्ताह रह गया है। घर में और बाहर विवाह की तैयारियों का काम आरम्भ हो चुका है। अचला पर उबटन भी मला जाने लगा है। यों, कल के बाद परसों विवाह का दिन ही है।

विवाह का घर है, इसलिए सम्बन्धियों की अनेक बहू-बेटियों का जमघट लग गया है। हँसी, खेल और दिल्लगी का ताँता लगा सब ओर दिखाई देता है।

लेकिन जिस अचला के लिए यह सब-कुछ हो रहा है, उसका मन कहीं और है। रजनी अब तक नहीं आई है, क्यों नहीं... बस, इसी एक बात में उसका मन अटका है। कोई पूछती—अरी, अभी नहीं आई, रजनी! ऐसे, नाक पर दीया जलाकर आयेगी...ब्याह के दिन ही...

तो सचमुच, अचला झुँझलाती है और व्याकुल हो जाती है। उसकी आँखें भर आती हैं और बरबस ही, वह उन्हें आंचल में छिपाकर रोने लगती है।

और जब कोई, जैसे उसी को सुनाकर यह कहती—'अरी, इस लड़की की जात का भी ठिकाना है कोई, यह माँ-बाप की तो होती नहीं, फिर...फिर...,

अचला भी कहती—'ऊँह, मैं हूँ ही कौन? यहाँ थी, तो बोल लेती थी, मिल-बैठ लेती थी, बस! मैं अब कौन, तीन में रही, न तेरह में...।,

यह कहकर भी, वह सुख नहीं पाती। उसकी आत्मा में ऐंठन होती है और चुभन। इसी से वह फिर सोचती है और शंका करती है—'कहीं ऐसा न हो कि जीजा जी को छुट्टी न मिली हो। कहीं इसी से...।,

फिर भी वह कहती—'पर रजनी तो आ सकती थी। किसी के भी साथ। वह नौकर के साथ भी आ सकती थी।'

बारात आ गई है। जिन छोटे-छोटे बच्चों ने दूल्हा को देखा है, उन्हीं के द्वारा अचला की साथिनों ने सुनकर अचला से कहना आरम्भ कर दिया है—'अरी, तुझे दूल्हा बड़ा अच्छा मिला...बड़ा सुन्दर!'

लेकिन अचला ने जैसे इसे सुनकर भी नहीं सुना है। कैसा अचरज है कि आज सुबह से ही उसकी आँखों और कानों ने जिस बात को देखना और सुनना चाहा है, वह तो कुछ नहीं, बस, और-ही-और सुनाई और दिखाई देता है। हाँ, उसके मन में बात है कि कोई आते ही उसे सुनाये—'अरी, यह आ गई, रजनी...तेरे जीजा जी...'

लेकिन रजनी तो नहीं आई...अभी नहीं। अब क्या आयेगी!

यही कारण है कि अचला ने जो क्षण भर के लिए अपने जीवन-साथी की सुन्दरता का बखान सुना, तो उसका मन पुलकित हुआ—हुआ भी, रजनी को न आती देख, जहाँ का तहाँ खिन्न और अवसन्न बन गया।

माँ अपनी बच्ची की इस मनोदशा को जानती और समझती है। रजनी की भाभी, पर रजनी क्यों नहीं आई और कैसे नहीं, वह कड़वे घूँट की तरह इस भावना को न पीती हैं, न उगलती हैं।

शाम होते-होते बारात की चढ़त आरम्भ हो गई। वह द्वार पर भी आ लगी। मुहल्ले भर में धूम मच गई। बच्चे तो क्या, बड़े बूढ़ों ने भी फुलवाड़ी लूटनी आरम्भ कर दी। बैण्डबाजे की मधुर ध्वनि सब ओर गूँज गई।

दूल्हा घर में आ गया और विवाह-मण्डप के नीचे बैठा दिया गया। उसके पास अचला को भी बैठाया गया। द्वार पर

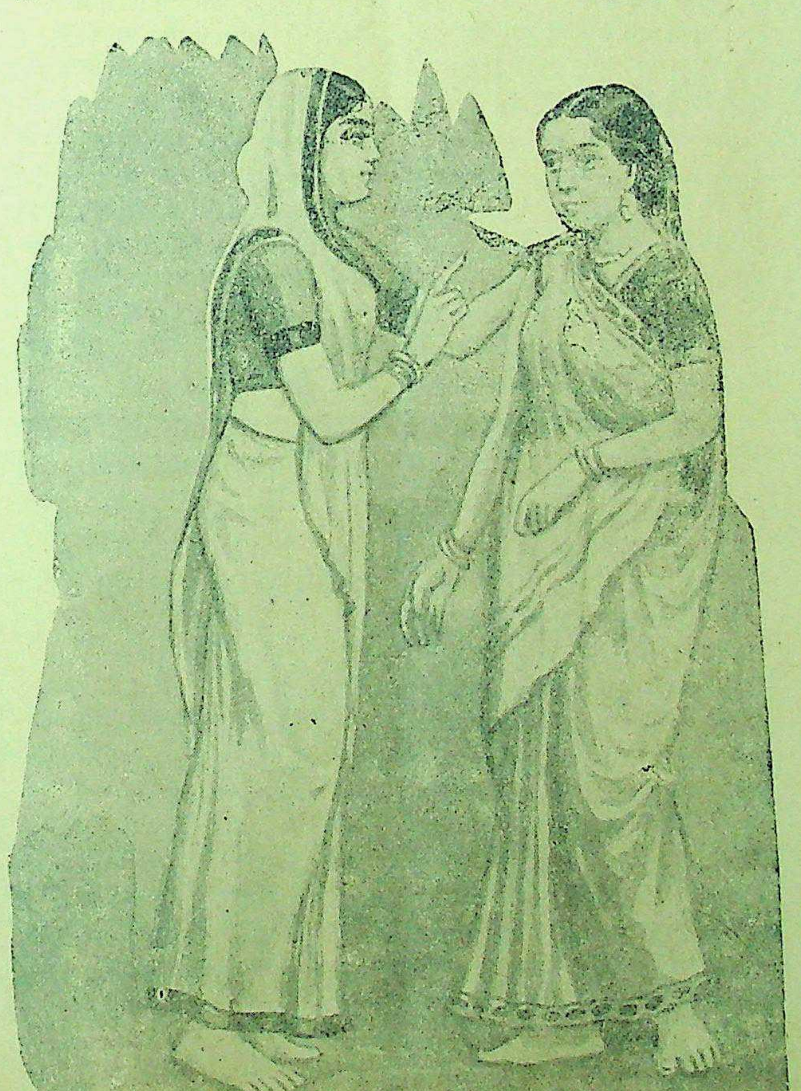

रजनी अचला से विवाह के पश्चात् ससुराल जाने के पहले मिल रही है।

मनोरंजक चुटकुले

श्रीमती चर्चिल का भाग्य

युवक ने लड़की से तीसरी बार इन्कार करने पर पूछा कि आखिर तुम किस प्रकार के लड़के से शादी करना चाहती हो ?

लड़की ने उत्तर दिया—'ऐसे व्यक्ति के साथ जो बड़ा हठी हो, व्यवहार-कुशल हो और जिसकी प्रशंसा प्रत्येक व्यक्ति करता हो।'

'तुमने बहुत देर कर दी। श्रीमती चर्चिल ने ऐसे पति को पहले ही पा लिया है।' युवक ने उत्तर दिया।

* * *

सब में मगर...।

"अन्त में आपकी शादी हो ही गई महाशय जी! कोटि-कोटि बधाई। मैंने सुना है कि आपको बहुत ही सुन्दर और दक्ष स्त्री मिली है ?"

'आपका कहना दुरुस्त है। वह इतनी दक्ष है कि क्या बताऊँ। साहित्य में दक्ष है, संगीत में दक्ष है, कला में दक्ष है, विज्ञान में दक्ष है—संक्षेप में वह सभी में दक्ष है। केवल...।'

'केवल क्या ?'

'केवल गृह-कार्य की दक्षता में अभी ज़रा कमजोर है।'

* * *

ख्याल मत करो !

दार्शनिक से उसकी बहिन ने पूछा 'मस्तिष्क क्या है ?'

'कोई वस्तु नहीं।'

'वस्तु क्या है ?'

'ख्याल मत करो।'

तुरही और नफीरी बज रही थी। विवाह-मण्डप में पण्डितों ने वेद-मन्त्रों-द्वारा शाखोच्चार की रस्म आरम्भ कर दी थी।

उसी समय रजनी के पिता पण्डित ज्ञाननाथ को एक तार दिया गया। उन्होंने तार खोला और पढ़ा। उसे पढ़ते ही, उन्होंने अचला के पिता को सम्बोधित करके अवरुद्ध कण्ठस्वर से कहा—'अरे गोवर्द्धन-दास......?'

सभी की तरह चौंककर गोवर्द्धनदास ने देखा कि पण्डित ज्ञाननाथ के हाथ से वह तार छूट गया। जैसे किसी ने उनकी पीठ पर घूँसा मार दिया और उन्हें बेहोश कर दिया। दौड़कर गोवर्द्धनदास ने उन्हें सँभालना चाहा और उस तार को पढ़ना चाहा कि तभी ज्ञाननाथ ने विस्फारित हो, उनकी ओर देखकर कहा—'अरे भाई! प्राणनाथ उठ गया। मेरी रजनी...हाय! हाय!...'

और गोवर्द्धनदास ने पल भर में तार को पढ़कर वहाँ बैठे हुए सभी व्यक्तियों को सुना दिया—'नि[illegible] से रजनी के पति [illegible] का देहान्त हो गया।'

[illegible] उल्लास भरे उस विवाह के घर में कोहराम मच गया। क्षण भर को किसी ने भी नहीं देखा कि वह दुलहिन बनी हुई और विवाह-मण्डप के नीचे बैठी हुई अचला चीख मार कर बैठी की बैठी छटपटा गई थी। उसे जब लोगों ने बैठाकर शान्त करने की चेष्टा की तो वह निर्निमेष हुई दृष्टि से खोई-खोई-सी बनकर उस विवाह की वेदी को आँखों के सामने किसी रहस्य की रचना से अधिक नहीं पा रही थी।

सतरंगनी

(पेज ८ का शेष)

अब एक बड़ा प्रश्न सम्मुख आता है। कवि प्रणय-परिणय में व्यस्त है, यानी अपने जीवन की बातें करता है और कोई महानुभाव बुरा मानते हैं तो...तो क्यों। कहने को तो कहा जा सकता है कि भूषण का युग भी अपनी शृङ्गारिक रचनाओं के लिए ही विशिष्ट कहा जाना चाहिए; और यह कि लड़ाई के इस ज़माने में भी सभी, जो 'ऐक्टिव सर्विस' पर नहीं हैं, किसी न किसी समय या हर समय अपनी प्रियतमाओं के समीप रहकर सुख-लाभ करना चाहते हैं और करते हैं और तब वे रक्तपात और जीवन के सारे नियन्त्रणों को भूल जाना चाहते हैं। यों भी, आदमी के अपने वैयक्तिक जीवन का बड़ा मूल्य है और उसकी रंजो-खुशी का और भी अधिक! यदि 'बच्चन' की आँसू भरी आँखों से हम पहले पथभ्रष्ट हो चुके हैं तो 'सतरंगिनी' के कवि की प्रसन्न मुद्रा से हमारे सही रास्ते पर आने की ही सम्भावना है। यह माना कि कवि का कुछ अपना कर्तव्य होता है और यह भी कि वह अपने युग का स्रष्टा होता है। परन्तु प्रेमी कवि 'बच्चन' के साथ-साथ सदैव ही एक विद्रोही-विचारक रहा आया है, और इस प्रकार हमें चिन्ता से पीले पड़ने की कोई जरूरत नहीं है। इस विद्रोही-विचारक का जन्म होता है, 'किसी मूर्त्ति पर फूल चढ़ा तू, पूजा मेरी हो जाती है', जैसी पंक्ति में, विकास होता है, 'क्षत-शीश मगर नतशीश, नहींवाले गीत में और विस्तार होता है 'आकुल-अन्तर' और 'सतरंगिनी' में जहाँ कवि कहता है:—

'प्राप्य यदि अरि के न
अपने खून से कपड़े रँगा ले !'
आ० अ०
उठ समय से मोर्चा ले।

* * *

'मनुष्य है कि देव है कि मेरुदंड है तना!'
अजेय तू अभी बना!

* * *

स्वर्ग तो कुछ भी नहीं है छोड़कर
छाया जगत् की!

'बच्चन' के कवि का स्वर कभी भी मन्द नहीं पड़ा है—केवल वह अपनी परिस्थितियों से अवगत है और उसकी भी अपनी सीमायें हैं—वह मानता भी तो है कि:—

'प्रलय की रात में सोचे
प्रणय की बात क्या कोई,
पड़ प्रेम-बन्धन में
समझ किसने नहीं खोई,
किसी के पंथ में पलकें
बिछाये कौन बैठा है!'

उर्दू के प्रसिद्ध शायर 'फिराक़' गोरखपुरी का एक शेर भी बच्चन के कवि की अपने ढंग से वकालत करता है:—

'कुछ आदमी को हैं मजबूरियाँ भी
दुनिया में,
अगर वो दर्दे मोहब्बत सही
तो क्या मर जायें!'

परन्तु, पाठकों को ध्यान रहे कि 'बच्चन' का कवि अपने प्रणय और अपनी प्रियतमा के प्रति बड़ा सजग है:—

'तेरे आनन का एक नयन
दिनमणि-सा दिपता उस पथ पर,
जो स्वर्ग लोक को जाता है,
जो चिर संकटमय, चिर दुस्तर,
तेरे आनन का एक नेत्र
दीपक-सा उस मग पर जगता
जो नरक लोक को जाता है,
...................!'

यह हमारे सन्तोष का विषय है। परन्तु इन प्रणय-परिणय के प्रसंगों में हमें कवि 'बच्चन' की कोकिल को नहीं भूल जाना चाहिए जिसके स्वर हैं:—

'स्वर्ग प्रसन्न हुआ यदि मुझसे
मुझको ऐसा गान मिले,
जिसको सुनकर मरे हुओं को
जीवन का वरदान मिले।'

फिर, कवि और स्पष्ट हो उठता है:—

'कर सकेंगी मानवों का जो
सदा कल्याण,
विश्व की उन हलचलों को
आयु मेरी दान,

कुछ पलों पर, किन्तु, एकाकी मुझे बताइए, अब आपको क्या कहना है! फिर, उसके प्रणय-परिणय का भी तो एक उद्देश्य है:—

कपट के कटु पाश में फँस
तू लुटा था, इसलिए बस,
तू बताये जा कि कैसे
स्नेह-बंधन खोलते हैं
मुक्ति का जब—द्वार!'

फिर कवि भी एक व्यक्ति है और उसके भी अपने कुछ अधिकार हैं। वह 'वंश में विभूतिनवल' की नवलता पर गद्गद होने को बिलकुल स्वतन्त्र है और यदि इसलिए कि!—

'खेलकूद, पढ़-बढ़ इसमें ही
रहने को है लाल हमारा,

वह सोचे:—

जैसी हमने पाई दुनिया
आओ उससे बेहतर छोड़ें,
शुचि-सुन्दरता इसे बनाने,
से अपना मुँह कभी न मोड़ें,

तो किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? हममें से कितने ही इस बात को इसी तरह सोचते हैं, और तब 'बच्चन' के यह वैयक्तिक भाव समाज की सम्पत्ति हो जाते हैं। और यह कि जिन पंक्तियों में लेखक अपना खून-पसीना एक कर देता है, उन्हें मिथ्या-साहित्य कहना साहित्य के प्रमुख अंग कविता को न समझना है! इस तरह समझ में नहीं आता कि हम क्यों उसे काट खाने दौड़ इसलिए कि उसने एक साफ-सुथरा लिखकर अपनी निश्छल हृदय परिचय दिया। यदि समय हो प्राप्ति सुलभ हो तो हममें से हर उसकी १२०० पंक्तियों की अकाल' शीर्षक कविता पढ़नी जिसका कुछ अंश 'बंग-दर्शन' में हो चुका है। इसलिए कि हमें है, इसलिये कि हम पढ़ नहीं सके यह कहने का क्या अधिकार है कि बंगाल में लोग भूख से कराहते ठण्डक से ठिठुरकर मर रहे थे, समय हमारा कवि प्रणय-परिणय व्यस्त था। कवि कवि है! वह लोगों से अधिक ही आहें अनुभव करता है। फिर, यह कि में सब कुछ तो देखने को नहीं मिल और फिर यह भी क्या कि यदि कभी ऐसी रचनायें की हों और उन्हें प्रकाश में न लाये।

* *

अपनी सीमाओं के सहित सचमुच ही 'बच्चन' की उस दिशा संकेत करती है। हम इस दिशा अधिक सिद्धि की प्रतीक्षा में हैं नाते हम उनके इस संग्रह का करते हैं।

* *

अन्त में, मूर्धन्य जी मेरी पात्र हैं, इसलिए कि 'अभ्युदय' साप्ताहिक में उनके विचारपूर्ण हिन्दी में लिखे लेख को स्थान मिला, प्रत्युत सम्मान भी मिला!

अनुराग

लेखिका, श्री विमला
इस पुस्तक में ६ कहानियाँ
है। इस संग्रह की विशेषता
स्वाभाविकता है। मानव-हृदय
कुलताओं तथा दुर्बलताओं का
चित्रण आपको अन्यत्र न मिलेगा।
१) एक रुपया।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०,
एल-एल० बी० की अनमोल कृतियाँ

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर
इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता
॥) आठ आने।

मधुस्रवा में नवीन शैली की, जीवन में मधु बरसानेवाली सुन्दर रचना
पढ़कर प्रत्येक कविता-प्रेमी को अपना जीवनरस मधुर बनाना चाहिए।
१।-) एक रुपया पाँच आने।

लक्ष्मण-शक्ति में रामायण की सुप्रसिद्ध कथा का वर्णन बढ़िया ढंग से
से कवि ने किया है। युद्ध-वर्णन, हनुमान और रामविलाप आदि
विह्वल हो जाता है। मूल्य ॥।) बारह आने।

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है।
राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य
हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है।
॥=) चौदह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

'परख' और 'हुमायूँ' फिल्म कैसे हैं ?

सोहराब मोदी और महबूब के निर्देशन पर एक दृष्टि

लेखक, श्री हरस्वरूप माथुर

ो प्रमुख अभिनेत्री मेहताब।

(१)

ूडियो-द्वारा निर्मित और
द्वारा निर्देशित, यह चल-
प्रथम कोटि का सामाजिक
निर्देशक ने एक स्त्री
घटनाओं को अत्यधिक
त किया है साथ ही
क कथा और मर्मभेदी
चित्र में प्राणदायिनी
करती हैं।

कष्ट प्राप्त करनेवाली
है—वह स्त्री वेश्या-
, इस कार्य से घृणा
युवक उसे स्वयं पत्नी
ता है, उस पर समाज
वह मृत्यु को प्राप्त होता
अपने पुत्र के लिए एक
प्राप्त करती, समाज से
करती है है किन्तु समाज
किसी न किसी रूप में
ही लेते हैं और यह कहा-
जाती है कि 'वह अच्छा
और यदि ध्यान से इस कहानी
यह स्त्री उस अबला के
सम्मुख चित्रित की गई है
समाज का अत्याचार होता
सहन करती है। क्यों ?
की भलाई के लिए।

की कहानी सुन्दर तो है
घटनाओं का विकास
सुन्दर रूप से हुआ है।
उतार और चढ़ाव
से हुआ है और कुछ
दृष्टि से 'सेन्टीमेन्टल' भी
चलचित्रों की कहानियाँ
ही होती हैं, इस कारण
घटनाओं को कहानी
देखकर ही दर्शक जान
इस चलचित्र की कहानी में
घटनाओं को दर्शक नहीं जान
एक कारण यह भी है
मौलिक है।

में मेहताब और शाहनवाज
है। याकूब का अभिनय
, कौशल्या,
, सादिक अली इत्यादि
है। कुछ निर्देशकों
होता है कि वे साधारण
अभिनेत्रियों को लेकर
निर्मित कर डालते
सोहराब मोदी ने अत्यन्त

सफलतापूर्वक यह सामाजिक चित्र निर्मित किया है। इस चित्र में सर्वत्र उनकी छाप है जो कि उन्हीं की कोटि के निर्देशक सोच सकते हैं। कदाचित् सोहराब मोदी द्वारा निर्देशित यह उनका सर्वश्रेष्ठ सामाजिक चलचित्र है। निर्देशन सफल ही नहीं अपितु अत्यन्त सुन्दर है और मेरी दृष्टि में इधर के चलचित्रों में शान्ताराम ऐसे निर्देशक को भी मोदी पीछे छोड़ देते हैं। यह अत्युक्ति नहीं है, जो कोई भी निकट के बने चलचित्रों पर ध्यान दे तो उसे यह सत्य ज्ञात हो जायगा, यद्यपि पहले-पहल शान्ताराम के प्रशंसकों को कटु अवश्य लगेगा, जैसा कि मुझे भी लगा था।

संगीत मध्यम कोटि का है और सरस्वती देवी के संगीत निर्देशन की विशेषता लिये है। नृत्य साधारण है।

इस चित्र के संवाद श्री सुदर्शन ने लिखे हैं। सुदर्शन जी के संवाद अत्यन्त प्राणयुक्त और सजीव होते हैं और वे श्रेष्ठ संवाद-लेखक के रूप में प्रसिद्ध भी हैं। यद्यपि फिल्म की भाषा हिन्दुस्तानी है 'एकुम नवम्बर' तथा 'बरखुरदार' इत्यादि शब्द कर्ण-कटु तो हैं ही साथ ही साथ उनका प्रयोग उन स्थलों पर उचित नहीं प्रतीत हुआ है।

(२)

महबूब प्रोडक्सन-द्वारा निर्मित तथा महबूब के द्वारा निर्देशित, यह ऐतिहासिक चलचित्र द्वतीय श्रेणी का चलचित्र है। ऐतिहासिक घटनाओं के साथ ही साथ यह हिन्दू-मुस्लिम एकता के दृश्य भी प्रस्तुत करता है, यद्यपि निर्देशक का यह प्रयत्न कितना सफल हुआ है इसके विषय में मैं कुछ न कहूँगा, दर्शक स्वयं निर्णय करें।

चलचित्र की कहानी ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर प्रस्तुत की गई है और कल्पना की भी सहायता ली गई है। एक राजपूत राजकुमारी का हुमायूँ को राखी भेजना और उसको स्वीकार करके उसकी रक्षा के लिए हुमायूँ का प्रण करना इत्यादि भी इस चलचित्र में सम्मलित है। कहानी में शेरशाह को जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है वह केवल महबूब के मस्तिष्क की ही उपज है, क्योंकि शेरशाह के इतने विकृत रूप की गवाही इतिहास भी नहीं देता है। कहानी में घटनाओं को क्रम से नहीं रक्खा गया है, इसलिये समझने में कठिनाई होती है। चित्रा-लेखन भी ठीक न होने से कहानी शृंखलाबद्ध नहीं प्रस्तुत होती है।

इस चित्र में चन्द्रमोहन, अशोककुमार, शाहनवाज, वीणा, नर्गिस, मजीद इत्यादि का प्रमुख अभिनय है। श्रेष्ठ अभिनय बाबर के रूप में शाहनवाज और राजपूत राजकुमारी के रूप में वीणा ने किया है। चन्द्रमोहन, रणवीरसिंह के रूप में सम्मुख आते हैं। यद्यपि उनका व्यक्तित्व और शेर की भाँति दो चमकती उनकी आँखें राजपूतों का स्मरण करा देती हैं फिर भी पूर्व भाग में उनके अभिनय में शैथिल्य है किन्तु अन्तिम भाग में अभिनय सफल है। अशोककुमार हुमायूँ के रूप में अभिनय करते हैं किन्तु उनके अभिनय में कोई विशेषता नहीं है, साधारण है, केवल एक दो स्थानों पर सफल हैं। मजीद ने शेरशाह के रूप में अभिनय किया है और के० ए० सिंह ने जयसिंह के रूप में, किन्तु दोनों असफल हैं, विशेष रूप से मजीद पूर्णतया असफल हैं। हमीदा के रूप में नर्गिस का अभिनय साधारण है। अभिनय की दृष्टि से भी यह चलचित्र मध्यकोटि का है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कहानी-लेखक जनाब 'वाकिफ' साहब कहानी-लेखन-कला से 'नावाकिफ' हैं। संगीत साधारण है। 'मधुर' के गायन भी साधरण ही हैं। चलचित्र की भाषा हिन्दुस्तानी है और उसी का पूर्णतया निर्वाह किया गया है।

ने गरम कोट

प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट,
इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा
चों का बना हुआ उच्च कोटि का
दाम उचित रेट पर सप्लाई किया
। माल बहुत कम है। आज

ागरान कोट, कराची।

मा

सं

पर ध्याय हैं।

चाहिए

किन्तु चित्रालेखन में दोष हैं।

महबूब इसके निर्देशक हैं। निर्देशन, आर्थिक लाभ की दृष्टि से सफल हो सकता है किन्तु कला दृष्टि से सफल नहीं है। चन्द्रमोहन और अशोककुमार दोनों ही अभिनेताओं ने महबूब के हाथ में पड़कर विशेष अविनति ही प्राप्त की है। निर्देशन मध्यकोटि का है।

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सके तो आपके पाचन के लिये बेंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता।

मनोरंजक चुटकुले

श्रीमती चर्चिल का भाग्य

युवक ने लड़की से तीसरी बार इन्कार करने पर पूछा कि आखिर तुम किस प्रकार के लड़के से शादी करना चाहती हो?

लड़की ने उत्तर दिया—'ऐसे व्यक्ति के साथ जो बड़ा हठी हो, व्यवहार-कुशल हो और जिसकी प्रशंसा प्रत्येक व्यक्ति करता हो।'

'तुमने बहुत देर कर दी। श्रीमती चर्चिल ने ऐसे पति को पहले ही पा लिया है।' युवक ने उत्तर दिया।

* * *

सब में मगर...।

"अन्त में आपकी शादी हो ही गई महाशय जी! कोटि-को[illegible]धाई। मैंने सुना है कि आप

जीवन के छोटे से छोटे कार्य से लेकर राज्य के बड़े से बड़े कार्य प्रायः दूसरों की दृष्टि से किये जाते हैं। किसी विशेष बात को दूसरा किस प्रकार समझेगा यही हमारे सम्मुख हर समय समस्या रहती है। स्वास्थ्य का यह साधारण नियम है कि शीघ्र सोना और शीघ्र उठना चाहिए। हम स्वास्थ्य की दृष्टि से, सोने-जगने को छोड़िए, कोई भी काम नहीं करते। बहुत से मनुष्य जो किसी दूसरे मनुष्य द्वारा नहीं जगाये जाते आराम से ८ बजे तक सोते हैं। कुछ को अपने मित्रों के साथ घूमने के लिए जाने को उठना पड़ता है और कुछ ऐसे हैं, जिन्हें यह ध्यान रहता है कि देर तक सोयेंगे तो कोई क्या कहेगा। स्त्रियों की ओर देखने से ज्ञात होगा कि ९५ प्रतिशत को सोते समय से ही ध्यान रहता है कि शीघ्र उठना है नहीं तो 'पति क्या कहेगा', सास क्या कहेगी। शौचादि से निवृत्त होकर दूसरी दैनिक आवश्यकता मंजन, दातून-कुल्ला, इत्यादि की पूर्ति होती है। शताब्दियों से दातून सर्वश्रेष्ठ स्थान पा चुकी थी किन्तु आज टूथ पेस्ट और टूथ ब्रुश ही उनकी मान-रक्षा कर सकते हैं। इन वस्तुओं को प्रयोग में लाते समय यह सोचना अनावश्यक है कि ये न लाभदायक हैं और न कम खर्चीली।

नाम चिड़ियां

कठिनाई तो इस बात की है कि कोई देखेगा तो कहेगा—"क्यों साहब सूखे हैं जो लकड़ी चबा रहे हैं, कोई टूथ पेस्ट क्यों नहीं ले लेते, ताकि आपके दांतों को हानि न हो वरन् लाभ हो।"

स्नान करने के लिए साबुन जल से उच्च स्थान रखता है जैसे कि शायद साबुन हो पर जल न हो तो स्नान हो जाये और जल हो पर साबुन न हो तो स्नान न हो। संक्षेप में, शरीर में खुश्की कर लेना स्वीकार है, परन्तु देशी वस्तु का व्यवहार स्वीकार नहीं। स्नान के पश्चात् लैवेन्डर, स्नो, क्रीम, पाउडर इत्यादि भारतीय भोजन के पश्चात् पान का-सा स्थान रखते हैं। हम "फ्रैन्च बाथ" को जान-बूझकर छोड़ देते हैं क्योंकि यह तो बहुधा फैशन के कारण लिया जाता है। इसको कोई देख नहीं सकता। इसलिए इसके सम्बन्ध में 'कोई क्या कहेगा' का प्रश्न भी नहीं उठता। पर यदि "फ्रैन्च बाथ" की उपयुक्तता पर विचार किया जाये तो यही सोचते रह जाना पड़ता है कि हमारे पूर्व-पुरुष पूर्ण स्नान करते थे अथवा केवल अर्द्ध?

वस्त्रों की बड़ी मनोरंजक कहानी, 'वस्त्र कैसे हों', अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। साधारणतया वे स्वच्छ, अल्प मूल्य के और नाप के होने चाहिए। युग की पुकार दूसरी ही है। किसी स्त्री पुरुष को अपने वस्त्र चुनने का दुस्साहस करने की शक्ति नहीं। खेद है कि वस्त्र अन्य पुरुषों की आशाओं के अनुसार पहने जाते हैं। हम थोड़ा पढ़-लिख क्या गये; धन, धर्म से ही नहीं गये, रही-सही बुद्धि से भी गये।

प्रेमिका का प्रेमी की इच्छानुसार वस्त्र पहनना क्षम्य और उचित है पर नवयुवतियों का तंग नाप के, बहुमूल्य के, पतले वस्त्र जिनसे उनके यौवन के दर्शन हो सकें पहनना किस प्रकार न्याय-संगत है? स्त्रियों के सिर पर से धोती उतर कर कंधे तक आ गई है और आश्चर्य न होगा यदि वे टर्की जैसे किसी समय पिछड़े हुए देश की स्त्रियों की भाँति अँगरेजी वस्त्रों को ही अपना लें? पुरुषों में कितने ऐसे हैं जो सूट पहनने की सामर्थ रखते हैं? ३०) पानेवाले बाबू लोगों की ओर ध्यान देने से स्पष्ट हो जाता है कि यदि उनका हेडक्लर्क उन्हें भयभीत न करे तो सम्भव है वह जीवन में एक बार भी सूट न पहनें। अतएव वस्त्रों के विषय में देश के रीति-रवाजों और जलवायु का विचार न कर 'कोई क्या कहेगा' का साम्राज्य है।

भोजन को ही लीजिए। हम दोनों समय सादा पाचक भोजन नहीं कर सकते क्योंकि यदि कोई अभाग्यवश देख लेगा तो उसका अनुमान होगा कि कदाचित् हम कृपण हैं। मिठाई से हम नहीं बच सकते। वह तो हमारी श्रेष्ठता स्थापित करती है। हमें तो मुफ्त चाय तक प्राप्त हो जाती है फिर हम दूध पीने का कष्ट क्यों करें? हमारे लिए चने खाना पाप हो गया है और यदि खाते हुए पकड़े गये तो हम कहेंगे कि इलायची खा रहे हैं। वनस्पति घी विज्ञापनों के अनुसार निश्चय ही विटेमिनों से भरा है और वास्तव में एकदम निकृष्ट पदार्थ है, परन्तु हम उसके द्वारा रोटी से छुटकारा पाते और पूड़ी-पकवान खाने का ढोंग करते हैं। गवर्नर महोदय लार्ड सिनहा के विषय में प्रसिद्ध है कि वे खाना कुछ चाहते थे लेकिन खाना कुछ और पड़ता था। अतएव सभ्यता के विकास में हम भोजन भी स्वतन्त्रतापूर्वक और इच्छानुकूल नहीं कर सकते और 'कोई क्या कहेगा' का भूत सिर पर बुरी तरह सवार रहता है।

इन बातों के अतिरिक्त, दैनिक जीवन से सम्बन्धित अनेक बातें हैं जिनमें भी हम बाधाओं पर बाधायें अनुभव करते हैं। कहीं घूमने जायँगे तो पैदल नहीं जा सकते—इक्का छोटे मनुष्यों की सवारी है और ताँगे के लिए प्रबन्ध करने में कठिनाई हो तो हमें सहन करनी पड़ेगी। बीड़ी पान का बुरा रोग अनगिनतियों को असाध्य रूप से लगा है। नहीं नहीं, बीड़ी सभ्यों के व्यवहार

की वस्तु नहीं—उन्हें तो सिगरेट
अपने साधन अच्छे हों या न हों
रहने के लिए, दूसरों की
देने के लिए और अन्धविश्वासी
में लीन विशुद्ध भारतीय बने रहने
जन्म, विवाह और मृत्यु तथा
अवसरों पर 'कोई क्या कहेगा'
कारण दावत देना भी हमारा
सिनेमा देखना इसलिए आवश्यक
यदि हम नहीं देखते तो हमारे मित्र
कहेंगे। जो एक रुपया रोज पाते
दो रुपया का सिनेमा देखते हैं
सफर करते समय या सिनेमा देखते
तीसरे दर्जे का उपयोग कष्टकर है
वहाँ भी भय है 'कोई देख लेगा
कहेगा?"

गुप्त प्रेम का भी रहस्य 'कोई
कहेगा' में छिपा है। जीवन प्रेम
प्रेम जीवन है तब फिर प्रेम करने
कैसे चूके? 'कोई क्या कहेगा'
यहाँ तक कहते हैं कि प्रेम करके
अच्छा है बनिस्बत इसके कि कभी
न किया जाय।

'कोई क्या कहेगा' ध्यान
मनोनुकूल सिद्धान्त नष्ट-भ्रष्ट हो
सब प्रकार से हमारी हानि होती
हमें यह समझते हुए कि हमें
कहेगा' का विचार न करना चाहि
क्या कहेगा' का विचार पग पग
ही पड़ता है।

प्रयाग —कृष्णकुमार
बी० काम,

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभू

मनुष्य के चरित्र में कि
दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दू
किस प्रकार अपने जीवन को
सकता है, यह बात इस पुस्तक
ओजपूर्ण भाषा में लिखी ग
लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों
पर। अपने चरित्र का निर्माण करने
प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक
पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) डाक
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

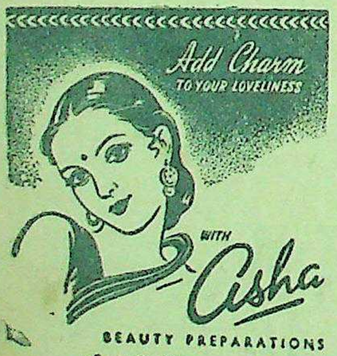

BEAUTY PREPARATIONS
रसिक स्त्रियों का भूषण
आशा
सौंदर्य-साधन
आशा फेस पाउडर, स्नो क्रीम नखरंजक, सुगंध इत्यादि सब अच्छी दूकानों में मिलते हैं।
विशेष ज्ञान के लिए लिखिए:—
आशा एजेन्सी, प्रिन्सेस स्ट्रीट, बम्बई २
MATCHES THE WORLD'S BEST

यह कितना तर कर देता है!
यह कितना ताजा कर देता है!
यह कितना आनन्ददायक है!
VINOLIA WHITE ROSE SOAP

आप गर्मीसे परेशान क्यों हैं, जबकि विनोलियाके
स्नान कर लेनेपर आप शीतल हो जायेंगे?
लसलसा क्यों रखते हैं, जबकि मक्खन.
साबुनका फेन आपको ताजा बना और रख
आप विनोलियाकी सुगंधको हमेशा आनन्द
प्रफुल्लित करनेवाला पायेंगे। मस्तिष्क और शरीर
टानिककी तरह इसका असर होता है।
विनोलिया व्हाइट रोज साबुन
VWR. 17-221 HI
VINOLIA CO., LIMITED, LONDON,

ज-भाषा

हित्य का प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों का विधिवत् अध्ययन करे। किन्तु आज के समाज में अपना अस्तित्व कायम करने के लिए उसे चारों ओर दृष्टि रखनी पड़ती है और समय के अभाव में वह विधिवत् अध्ययन नहीं कर सकता।

और ब्रजभाषा के महाकवियों का कोई संक्षिप्त संस्करण न होने के कारण बड़ी ही असुविधा थी।

किन्तु ब्रज भाषा के प्रकांड पंडित श्री हरदयालुसिंह ने ब्रजभाषा के प्रमुख कवियों के संक्षिप्त संस्करण तैयार कर विद्यार्थी-समाज की ही नहीं, साधारण समाज की भी एक महान कठिनाई दूर कर दी है। प्रत्येक पुस्तक के प्रारम्भ में एक विवेचनात्मक भूमिका होने के कारण पुस्तक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

देव-दर्शन — बिहारी-विभव
भूषण-भारती — मतिराम-मकरंद
पूर्ण-पराग

मूल्य प्रत्येक का १।-) एक रुपया पाँच आने।

बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

THE UNITED COMMERCIAL BANK LTD
AT YOUR SERVICE

श्वास दिलाने वाले
आँकड़े

क्रीत मूलधन................	४ करोड़ रुपया
कता किया मूलधन........	२ करोड़ रुपया
रक्षित मूलधन................	७½ लाख रुपया

चेयरमैन
जी० डी० बिरला

ाखायें एवं एजेंसियाँ समस्त भारत तथा
विदेश में

जेनरल मैनेजर
बी० टी० ठाकुर

हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत

नाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड।
—२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।
—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर

RAMESH RAJ & CO
KARACHI

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

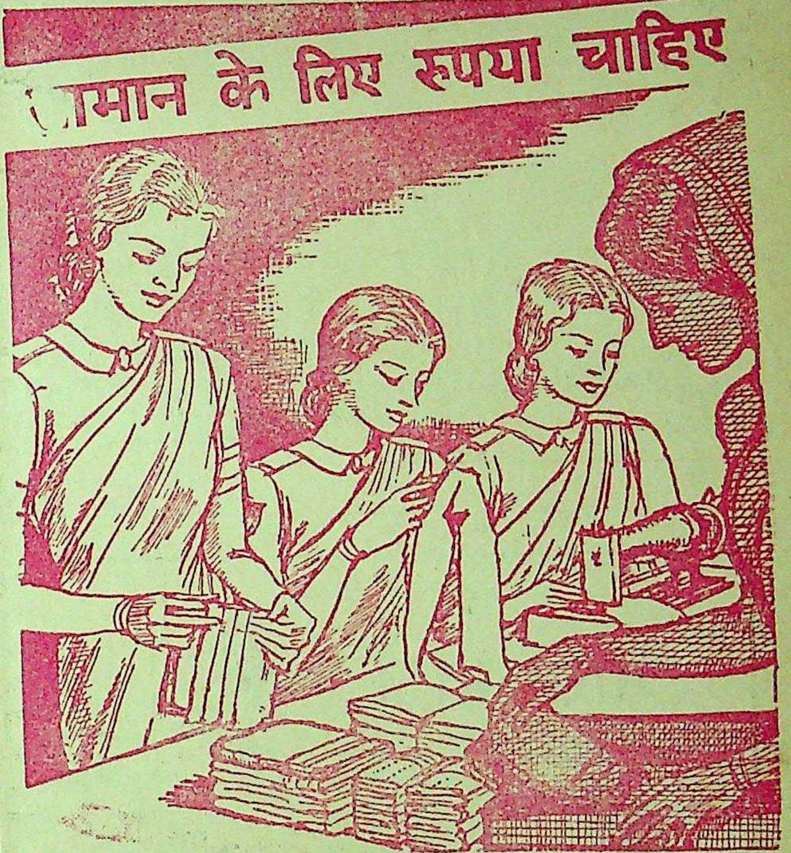
ामान के लिए रुपया चाहिए

हिन्दुस्तान भर में रेड क्रास के कार्यकारी दल हज़ारों की संख्या में विशेष वस्तुएं नित्य प्रति बनाते रहते हैं। ये कार्यकारी दल बहुत बड़े परिमाण में आवश्यक सामान तैयार कर चुके हैं और इनका कार्य बराबर बढ़ रहा है। इंडियन रेड क्रास ऐण्ड सेण्ट जान संस्था की ओर से करोड़ों गज़ सामान प्रति वर्ष खर्च किया जाता हैं। इस संस्था के लिए इनका व्यावहारिक कार्य बहुत ही उदारतापूर्ण तथा उपयोगी होता है। आप शायद इस व्यावहारिक ढंग से सहयोग नहीं कर सकते। किन्तु यथाशक्ति धन देकर आप इंडियन रेड क्रास की सहायता कर सकते हैं—और आपकी सहायता की बहुत आवश्यकता भी है।

हमारे ७०१ कार्यकारी दलों की रिपोर्टों से पता चला कि गत मार्च में समाप्त होने वाले ६ महीनों के भीतर १० लाख ६५ हज़ार वस्तुएं बनाई गईं। इनकी सूची में अस्पताली कपड़े और वार्डों के काम की दूसरी वस्तुएं, पट्टियां, घायलों की मरहम-पट्टी का सामान, बीमारों के मोज़े, ऊनी कपड़े, पैजामें, चादरें और इसी प्रकार की अन्य आवश्यक वस्तुएं सम्मिलित हैं।

इंडियन रेड क्रास के द्वारा
अपने घायल और बीमार सैनिकों
की सहायता दिल खोल कर कीजिए

AAA313

THE SECRET OF YOUR BABY'S HEALTH
बालसुधा
Bal
BEST FO
Child
SUKH SANCHARAK COLTD
MUTTRA
BAL SUDHA
AN IDEAL TONIC FOR WEAK & DEFICIENT CHILDREN
SUKH SANCHARAK Co. LTD
MUTTRA

भारत माता
IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
GRIPE WATER
INFANTS PRESERVATIVE

अपने बच्चों से कहो ! कि
बुड वर्ड का ग्राइप वाटर
बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली बुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 117—117

W. WOODWARD LTD. LO DON. ENGLAND

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन सिक्त बनाइए। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

"देश के दीप्तिमान नक्षत्र"—शाही हिन्दुस हवाई बेड़े के विमान-चालक का चिन्ह (विंग्स) मात्र ही नहीं, जिससे केवल प्रकट होता है कि वह हवाई जहा सकता है।

उसकी वास्तविक श्रेष्ठता उस अधिक प्रशंसनीय गुण के कारण है साहस अथवा पराक्रम के नाम से पुकारते

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ जिसका सबूत वह दे चुका है; उस मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार जिसे वह आजकल कर रहा है; और भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने और स्वयं अपने भावी हित की नींव रहा है। तब आपको पता लग जायगा हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दी मान नक्षत्र वही है। भरती होने के आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

मूल्य ७॥)
ख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

७ आक्टोबर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 7th October, 1945

भैरवी—इस पुस्तक के लेखक पंडित सोहनलाल द्विवेदी' हैं, जिन्होंने आधुनिक काव्य-जगत् में अपनी युग-वाणी के लिए ख्याति प्राप्त की है। ग्रंथ की राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इमीटेशन आर्ट पेपर पर रचनाएँ, असली आर्ट पेपर पर चित्र, बहुत अच्छी जिल्द और रैपर सहित, तृतीय संस्करण। मूल्य २॥=)

कमेटी में क्या देखा ?
स्तविक जनतंत्र है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

विधान-निर्मात्री परिषद् और रियासतें।
देशभक्त राजा महेन्द्रप्रताप कौन हैं ?

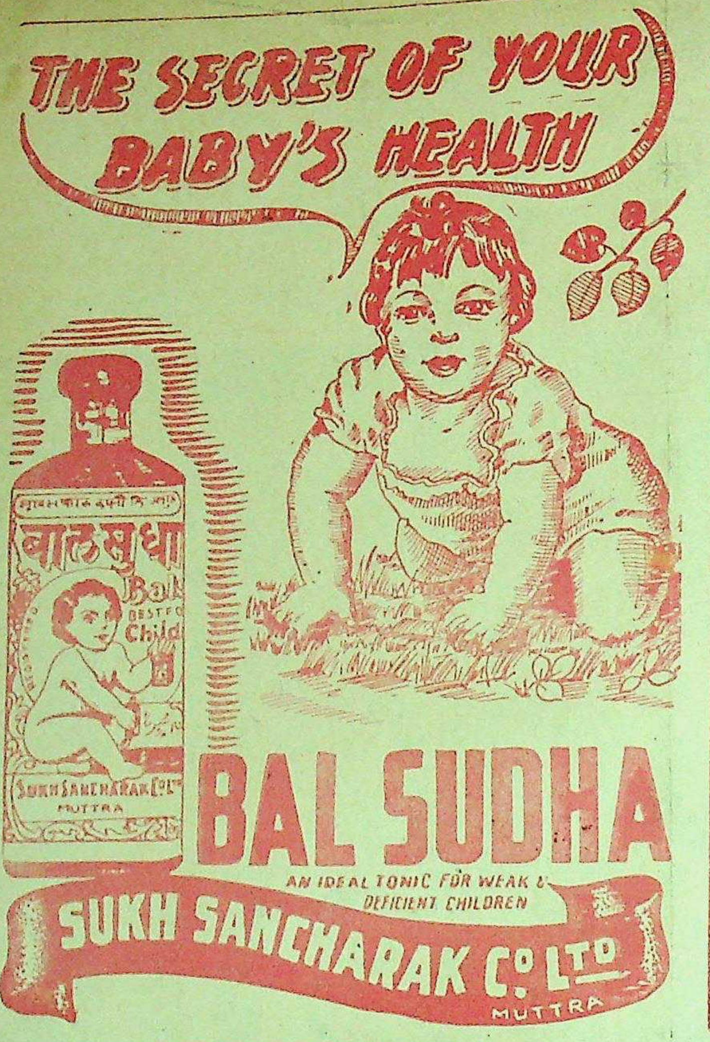

BAL SUDHA

AN IDEAL TONIC FOR WEAK & DEFICIENT CHILDREN

SUKH SANCHARAK Co. LTD

MUTTRA

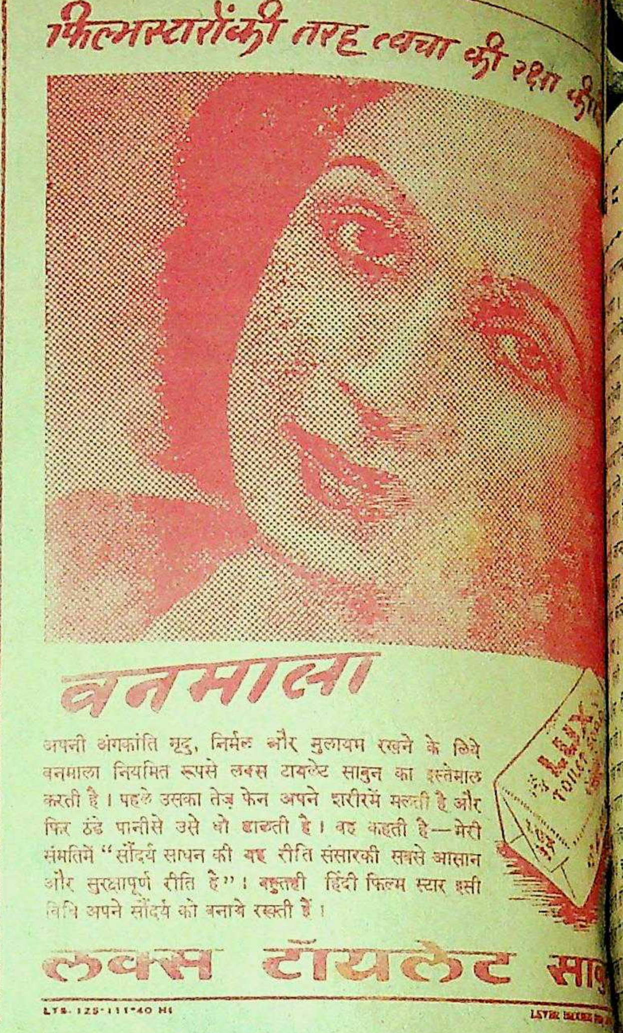

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा की
LUX TOILET

वनमाला

अपनी अंगकांति मृदु, निर्मल और मुलायम रखने के लिये वनमाला नियमित रूपसे लक्स टायलेट साबुन का इस्तेमाल करती है। पहले उसका तेज़ फेन अपने शरीरमें मलती है और फिर ठंडे पानीसे उसे धो डालती है। वह कहती है—मेरी संमतिमें "सौंदर्य साधन की यह रीति संसारकी सबसे आसान और सुरक्षापूर्ण रीति है"। बहुतसी हिंदी फिल्म स्टार इसी विधि अपने सौंदर्य को बनाये रखती हैं।

लक्स टॉयलेट सा

LTS. 125-111-40 HI

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बँगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २॥≋)।

जीवन-कान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान् लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डों और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २॥≋)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ६ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है। मूल्य ॥-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेर बहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संग्रहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा-साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी क़ानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

व्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त निराला। मुसलमानों और अँगरेज़ों से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास न्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, यह उपन्यास-सम्राट् श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। पूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग) वादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रिय चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

देशदूत

संख्या ६] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, ७ आक्टोबर, १९४५

का चुनाव सर
इसे अब कौन रोक
दिनबदिन ज्यों ज्यों
जायेगा त्यों त्यों हवा
इसलिये चुनाव जो
! देखिये न आखिर
दंगा हो ही गया।
आप जानते हैं और
है कि हमारी सरकार
! फिर कौन जानता
के और कौन ? उधर
कमेटी का जलसा
पड़ता है कि
इंतजार में चुपचाप
ही बिना सींग-
लेकिन प्रसन्नता की
अपना नग्न-नृत्य
नहीं दिखा सके और
गये। हमारी
दंगे की खोज-
आखिर वह कब
? दंगा साहब का
तो सरकार ने
जहाँ दो-चार
इतिश्री ! फिर
ने जब इतनी
इस मर्दुये दंगे
कार ऐसी वैसी
और शान्ति-
कसम खा रखी है,
थी ?

*

नेहरू का कहना है
होता है ? बात
इतनी फुरसत
नेहरू ने कहा
सुपरिन्टेन्डेन्ट और
दिया जाये कि दङ्गा
कर दिये जायेंगे,
होता है ? पंडित
की बात है लेकिन
की जगह पहुँचते
वक्त लगता है ?
धर-पकड़ करना
में जो खलल
देना है। इसलिये
मुजरिम बनने में भी
है। क्या करें सुपरि-
क्या करें कलक्टर
हुए हैं। मुजरिम
मुकदमा चलेगा और
लद गये नहीं
मतलब यह है
तरह से डिमा-
है। फिर किसी
की नौबत ही
शासन में इसी
होते हैं ! हाँ
तो बात

*

मुसलमानों
है। मौलाना

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

अबुल कलाम आजाद और पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मुसलिम लीग को सभ्यता से चुनौती दी है कि आजायें मैदान में मुसलिम लीगर ! देखना है मुसलमान जनता लीग .को वोट करती है या कांग्रेसी मुसलमानों को ? लेकिन यह युग तो सभ्यता का नहीं है और फिर मुसलिम लीग ऐसी जमात, जो भारतवर्ष के ४ प्रतिशत से भी कम मुसलमानों का प्रतिनिधित्व मुश्किल से करती है, कैसे चुप लगा सकती है ? मुसलिम लीगी पत्र 'डान' आजकल अपने असली नग्न रूप में खुल कर खेल रहा है। वह मौलाना आजाद ऐसे त्यागी नेता को बुरा भला सुनाकर उर्दू साहित्य का नया लोगद तैयार कर रहा है। क्यों न हो, चुनाव ने जहाँ एक ओर चहल-पहल पैदा कर दी है, वहाँ वह मशहूर शायर चिरकीन से कहीं बढ़ कर उर्दू-साहित्य भी पैदा करना शुरू कर दिया है। नवाबों और बड़े आदमियों की जमात से इसके सिवा और किसी तरह की उम्मीद करना कतई बेवकूफी ही समझनी चाहिए।

*   *   *

हमारे कम्यूनिस्ट बिरादर कहते हैं कि कांग्रेस इस वक्त ऐसी चाल चल रही है जो मुस्लिम लीग और कम्यूनिस्ट के खिलाफ तो है ही साथ ही राष्ट्रीय एकता घपले में पड़ती जा रही है। कम्यूनिस्ट भाई कहते तो ठीक हैं। बात यह है कि महात्मा गांधी लीग का दरवाजा खटखटाते परेशान हो गये लेकिन जनाब मिस्टर जिन्ना की अकड़ में जरा भी फर्क नहीं आया। ढाक के वही तीन-पात ! इस दुनिया में कम्यूनिस्ट ही ऐसे हैं जो मुस्लिम लीग को राजी कर सकते हैं और स्वराज्य का सोहन हलुआ खा सकते हैं। लेकिन ऐ कम्यूनिस्ट भाइयो, हमारी मधुरी बानी बोलनेवाली सरकार कब चाहती है कि सबके सब पोलाव या जगन्नाथ जी का भात खाने लगें ? कांग्रेस हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए मर मिटी, महात्मा गांधी परेशान हो गये, कायदे आजम के दरवाजे का सिजदा करते करते उनकी जबान घिस गई लेकिन एकता जैसी हुई, उसका तो इस चुनाव ने असली रूप लाकर खड़ा कर दिया है। हाँ, अब कम्यूनिस्ट भाइयों ने एकता के लिए एक नया अवतार लिया है जो अपने को जबरदस्ती खुदाई खिदमदगार समझे बैठे हैं, इनसे बचते रहना ही खुदा को मंजूर है। फिर मौलाना आजाद और पण्डित नेहरू अगर लीग को चुनौती देते हैं तो क्या बेजा ?

*   *   *

बहुत दिनों के बाद देशगौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई श्री शरद्चन्द्र बोस जेल से छूट कर आये हैं। श्री शरद् बाबू ने एक वक्तव्य में कहा है कि चीनी प्रजा-तन्त्र के सर्व-सर्वा जनरल च्यांगकाई शेक फैसिस्ट हैं और वह फैसिस्ट नीति का प्रचार कर रहे हैं। पण्डित जवाहरलाल नेहरू को शरद् बाबू का यह कहना बड़ा नागवार लगा है। पण्डित जी ने कहा है कि जनरल और मैडम च्यांगकाई शेक को फैसिस्ट कहना निरी बेवकूफ़ी है। शरद् बाबू ने जवाब दिया है कि उन्होंने जनरल च्यांग को फैसिस्ट कहा है न कि मैडम च्यांगकाई शेक को ? बात तो कुछ समझ में आती है। च्यांग पति-पत्नी दोनों कैसे फैसिस्ट हो सकते हैं ? मैडम च्यांग तो अमरीका और ब्रिटेन के शुद्ध प्रजा-तन्त्र को कायम करती रही हैं, इसलिये ईमानदारी की बात यही है कि वह फैसिस्ट होने के कलंक से कतई बच जाती हैं। लेकिन बेचारे जनरल च्यांगकाई शेक जो पिछले ८-९ वर्ष से अपने देश की आजादी के लिये मर मिटे वह फैसिस्ट नहीं हैं तो और क्या हैं ? शरद् बाबू को जेल से निकलते ही जो इस तरह का खुदाई इलहाम हुआ है, सचमुच वह गौर करने की चीज है। हमें तो निहायत खुशी है कि मैडम च्यांग काई शेक फैसिस्ट होने से बाल बाल बच गईं। आधा अंग तो बेदाग बचा गया, चीन के लिए यह सौभाग्य की बात है।

*   *   *

लन्दन में होनेवाले वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में रूसी विदेशी मंत्री मोलोटोव ने बड़ी दाँव-पेंच की चालें चलीं। योरोप तो योरोप एशियाई मामलों में भी उन्होंने टाँग अड़ा दी, भला यह कहाँ की भलमंसी है ? रूस जहाँ देखिए वहीं मान न मान मैं तेरा मेहमान बनने की कोशिश करता रहता है। वह सारे बटवारे में अपना हिस्सा लगाने को तैयार बैठा रहता है। इसे सारी दुनिया जानती है कि 'अटम बम' बनाया अमरीका ने और जापान पर कब्जा किया अमरीका ने और उसके पीछे ब्रिटेन भी चिपका रहा लेकिन रूस वहाँ भी अपने हिस्से के लिए कूद पड़ा है ?

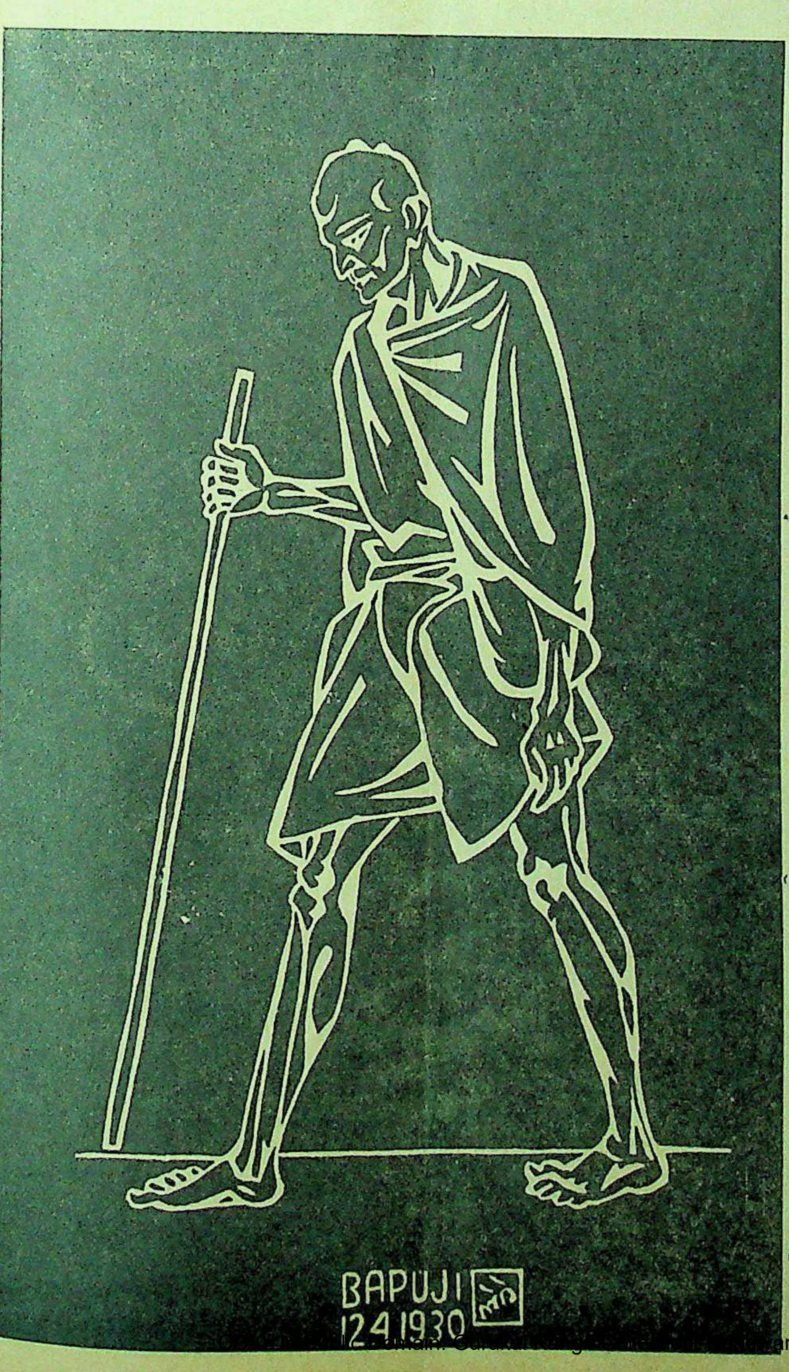

सम्पादक का पृष्ठ

महात्मा जी की वर्षगाँठ

विश्ववंद्य महात्मा गांधी की वर्षगाँठ गत २ अक्टूबर को सारे देश में सफलता तथा उत्साह के साथ मनाई गई। गांधी-जयन्ती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय सप्ताह सारे देश में धूम-धाम से मनाया गया। चर्खा-प्रदर्शन तथा अधिक से अधिक सूत की कताई इस सप्ताह का विशेष कार्य-क्रम रहा। महात्मा गांधी हमारे देश के प्राण तो हैं ही साथ ही उनकी ओर आज सारा संसार आँख लगाये देख रहा है। उनके सत्य और अहिंसा के सिद्धान्त से बड़े बड़े लड़ाकू तथा युद्ध-द्वारा संसार पर साम्राज्यवादी प्रभुत्व स्थापित करनेवाले राष्ट्र भी प्रभावित हो उठे हैं। आज दुनियाँ में शान्ति स्थापना की पुकार मची हुई है। महात्मा गांधी की राजनीति तथा आदर्श ही शान्ति, सुव्यवस्था तथा रामराज्य की भावनाओं से ओत-प्रोत है। भारतवर्ष को पिछली शताब्दी में महात्मा गांधी ने जीवन-प्राण दिया है और उसी के परिणाम-स्वरूप आज राष्ट्र स्वाधीनता प्राप्ति की ओर अग्रसर है। जन-जागृति तथा त्याग की भावनाओं से सारा राष्ट्र ओत-प्रोत है, इसका समस्त श्रेय महात्मा गांधी ऐसे महापुरुष और विभूति को ही प्राप्त है। इसलिए महात्मा जी की नवीन वर्षगाँठ पर हर्ष प्रगट करना तथा उनके चिरजीवन की कामना करना समस्त राष्ट्र का कर्तव्य ही नहीं धर्म भी है। हम भी महात्मा जी की वर्षगाँठ पर उन्हें बधाई देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह चिरजीवी हों और भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति में हमारा मार्ग प्रदर्शन करते रहें।

* * *

भारत का भावी विधान कैसा हो ?

भारत का भावी शासन-विधान कैसा होना चाहिए? स्वाधीन भारत में किस प्रकार के शासन-विधान को कार्यरूप में परिणत करने से उसकी स्थिति दृढ़ तथा शक्तिशाली होगी, इस रहस्य का उद्घाटन पंडित जवाहरलाल नेहरू ने गत सप्ताह बम्बई के पत्रकारों की एक सभा में किया है। पंडित जी ने 'स्वतन्त्र भारत' की व्याख्या करते हुए बतलाया है कि यदि जनता का रहन-सहन ऊँचा करना है तो उसके लिए दृढ़ और प्रजातन्त्रात्मक योजनाएँ तैयार करनी होंगी। ऐसी योजनाएँ समाजवादी आधार पर ही बनाई जा सकती हैं। बड़े बड़े कारखानों के सिवा खनिज पदार्थों पर भी राज्य का आधिपत्य होना चाहिये। अन्य उद्योग-धन्धों को व्यक्ति विशेष भी कर सकते हैं लेकिन राष्ट्रहित को ध्यान में रखते हुए उन पर भी सीमित प्रतिबन्ध रखना होगा। घरेलू उद्योग-धन्धों की विशेष वृद्धि करनी होगी तथा छोटे और बड़े पैमाने पर होनेवाले उद्योग-धन्धों में किसी प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता न होने पाए, इसके लिए भी प्रबन्ध करना होगा। यह बात ध्यान देने योग्य है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचार प्रायः बम्बई योजना से मिलते-जुलते हैं। कृषि की उन्नति के सम्बन्ध में पंडितजी ने स्थायी बन्दोबस्त करने और जमींदारी प्रथा के अस्तित्व को समाप्त कर देने की घोषणा की है। जमींदारों को जायदाद का बदला किसी अन्य रूप में दिया जायेगा। देश की उत्पत्ति को बढ़ाने के लिए सहकारिता की भावना को अधिक विस्तृत और दृढ़ करना होगा।

इसमें सन्देह नहीं है कि बिना किसी योजना के भारतीय रहन-सहन को ऊँचा नहीं उठाया जा सकता और न देश की उन्नति ही हो सकती है। इसलिए देश के सभी उन्नति चाहनेवाले व्यक्ति चाहे वह कांग्रेसी हों या गैरकांग्रेसी किसी न किसी योजना के पक्ष में हैं। यह अच्छा है कि कांग्रेस के नेता ऐसी समस्याओं पर ध्यान दे रहे हैं, क्योंकि शासनशक्ति मिलने पर उनका यह एक प्रधान कार्य होगा। साथ ही वैधानिक समस्याओं का हल भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। ब्रिटिश मजदूर सरकार की योजना अभी स्पष्ट नहीं हुई है इसलिए भविष्य में क्या होगा, इस पर अभी कुछ नहीं कहा जा सकता। चुनाव के बाद ही वैधानिक सभाओं के निर्माण पर विचार होगा। मुस्लिमलीग का रुख किधर होगा, यह बतलाना अभी कठिन है। हाँ, यह बात भुलाई नहीं जा सकती कि मिस्टर जिन्ना एक के बदले दो वैधानिक सभाएँ—हिन्दू और पाकिस्तानी मुसलमानों के लिए अलग अलग बनवाना चाहेंगे। यदि ऐसा हुआ तो कांग्रेस क्या नीति ग्रहण करेगी? मिस्टर जिन्ना की ऐसी माँग को स्वीकार करने का तो यह अर्थ होगा कि वैधानिक समस्याओं के निर्माण-काल में बँटवारे का प्रश्न खड़ा हो। यदि यह समस्या हल हो सकी और साथ ही ऐसा समझौता हो सका कि रियासतों से नामजद नहीं अपितु प्रजा द्वारा चुने हुए ही प्रतिनिधि भेजे जायें तो वैधानिक सभाओं के निर्माण का कार्य सरल हो जायेगा।

इसलिए वैधानिक सभाओं के बनते ही हमारी कठिनाइयाँ भी प्रारम्भ हो जायेंगी। सबसे पहली कठिनाई साम्प्रदायिक समस्या पाकिस्तान के रूप में आती है। लीग-द्वारा खड़े किये हुए वितंडावाद से तो सभी परिचित हैं लेकिन उसकी माँग किस प्रकार पूरी की जा सकेगी? कार्यरूप में परिणत करने के लिए दूसरा और कौन-सा उपाय है? यदि समझौता न हो सका तो दोनों के बीच का अंतर किस प्रकार दूर किया जा सकेगा? संघ-निर्माण में रियासतों को किस प्रकार मिलाया जायेगा? संघ-योजना में भारतीय राजाओं का क्या स्थान होगा? अल्पसंख्यक जातियों के हितों की रक्षा किस प्रकार होगी? प्रान्तीय और केन्द्रीय सभाओं में काम का किस प्रकार बँटवारा किया जायेगा? यह सब ऐसे प्रश्न हैं—जो शीघ्र ही तय करने पड़ेंगे। इसलिए हमारी समझ में अभी से इस ओर ध्यान देना चाहिए। यदि कांग्रेस ऐसे विशेषज्ञों की एक समिति बनाये जो इन सब कामों के लिए सामग्री एकत्रित करे और विदेशों के उदाहरण को सामने रखकर एक रिपोर्ट तैयार करे तो अति उत्तम होगा। उन पर कांग्रेस और वैधानिक सभायें भविष्य में विचार-विनिमय कर सकेंगी। भारत ऐसे विशाल देश के लिए स्थायी विधान बनाना आसान नहीं है, जहाँ कि कई शक्तियाँ आपस में [illegible] नहीं हैं। इस समय को किया गया परिश्रम व्यर्थ नहीं जायगा—ऐसा समझ कर यदि अभी से कार्य किया गया तो भावी विधान निर्माण में अच्छी सहायता प्राप्त होगी इसमें संदेह नहीं।

* * *

सैनिकों की बेकारी क्यों ?

भारत-सरकार ने युद्ध समाप्त के बाद अब अपने संगठित सैन्य दल को भंग करने की एक नई योजना की घोषणा की है। पहली अक्टूबर सन् १९४५ से ३१ मई सन् १९४६ तक के आठ महीनों के भीतर ८॥ लाख आदमी सेना से अलग कर दिये जायेंगे। युद्ध के बाद शांति के समय में उन्हें काम देने का अभी तक कोई भी प्रबन्ध नहीं किया गया है। युद्ध के समाप्त हो जाने पर भी प्रान्तीय तथा केन्द्रीय सरकारें कागजी योजनाएँ बनाने के सिवा और किसी भी कार्य के लिए तैयार नहीं हैं। सरकार की यह असावधानी बेकारी को दूर करने में समर्थ नहीं हो सकेगी। नियमित रूप से सिपाहियों का सेना से अलग किया जाना, युद्ध के समय के कारखानों को शान्ति के समय के लिए उत्पादन करना तथा युद्ध-सम्बन्धी अन्य कार्यों के बन्द हो जाने से, पाँच वर्षों में ही लगभग १ करोड़ आदमी बेकार हो जायेंगे। यदि इन लोगों के लड़ाई के काम से अलग होने पर कोई नया काम न दिया गया तो बेकारों की संख्या इतनी बढ़ जायेगी कि फिर स्थिति को सँभालना भी कठिन हो जायेगा।

सरकार ने कुछ स्थानीय ऐसे व्यक्तियों को इस काम के लिए चुना है जो उन्नतिशील व्यवसायियों से पता लगाकर उन आदमियों को काम दिलाने का प्रयत्न करेंगे जो उनके यहाँ काम करना चाहेंगे। इस प्रकार का संगठन इसीलिए किया गया है कि काम देने की सुविधाएँ और सरल बनाई जायें। नये काम नहीं बनाये जा सकते कि जिससे बेकारी की समस्या दूर हो सके। प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारों ने नौकरियों के लिए अनेक स्थानों को उन लोगों के लिए सुरक्षित रख छोड़ा है, जो लड़ाई से वापस लौटेंगे। ऐसे स्थान बहुत थोड़े आदमियों के लिए सुरक्षित रहेंगे किन्तु इससे देश की सारी बेकारी की समस्या हल नहीं हो सकती। क्योंकि लड़ाई में नये भर्ती होनेवाले उन स्थानों पर काम करेंगे जहाँ अस्थायी रूप से अन्य नागरिक कार्य कर रहे हैं।

ऐसे संकट को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि सरकार की अन्य योजनाएँ, जैसे सड़कों, रेलों और इमारतों का निर्माण, शिक्षा-सम्बन्धी 'सुधार तथा उद्योग-धन्धों की वृद्धि आदि के कार्यों को तुरन्त ही कार्यरूप में परिणत किया जाता। यद्यपि ये योजनाएँ अभी पूर्ण रूप से तैयार नहीं हैं लेकिन कार्य प्रारम्भ करने के साथ ही वह योजनायें भी तैयार की जा सकती हैं। समय की सदुपयोगिता अत्यन्त आवश्यक है। देर करने से सम्भव है कि ये योजनाएँ भी बेकारी की समस्या को न सुधार सकें। सड़कों, रेलो, इमारतों, स्कूलों तथा पुनर्संगठन के अन्य कार्यों में हम लोग अभी पूर्णरूप से योग्य नहीं हैं। इसलिए इस तरह का काम हमारी बेकारी की समस्या को ही हल ही करेगा वरन् हमारे जीवन-यापन के स्तर तथा शिक्षा को भी ऊँचा उठा देगा। जिन लोगों ने युद्ध के समय घरेलू उद्योग-धन्धों को सीखा है वह भी बेकार नहीं रहने पायगे। ऐसे कामों के लिए विदेशों

सुप्रसिद्ध देशभक्त और साहित्य
लाल माणिकलाल मुंशी, उदय
हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के
का सभापति निर्वाचित

से मशीनों के मँगवाने की
नहीं पड़ेगी जब कि बड़ी संख्या
करने के लिए अच्छी मशीनों
कता पड़ती है जिनका नि
नहीं होता। इस प्रकार के
कुछ दिनों तक सम्भव नहीं
यदि बेकारी की समस्या
करना चाहती है तो उसे
प्रबन्ध करना चाहिए—
चाहे कितनी ही कठिनाइयों
क्यों न करना पड़े।

* *

सम्मेलन का सभापति

हमें प्रसन्नता है कि
के अवसर पर उदयपुर में
साहित्य-सम्मेलन के अधि
गुजरात के सुप्रसिद्ध
राजनीतिज्ञ श्री कन्हैया
मुंशी निर्वाचित हुए हैं।
नहीं है कि इस समय
अहिन्दी भाषा-भाषी,
कार और नेता की ही
जिनके हाथों में सम्मेलन
सौंपी जानी चाहिए थी।
पति-निर्वाचन से सम्मेलन
रक्षा ही न होगी वरन्
जटिल समस्या के सुलझाने
मिलेगी। उदयपुर की
मुंशी के सभापति-निर्वाचन
की पात्र है। सम्मेलन के
साथ होनेवाले अन्य परिषदों
का निर्वाचन भी हुआ है।
के लिए भारत ही नहीं
प्राप्त वैज्ञानिक डाक्टर
निर्वाचित हुए हैं।
सभापतित्व के लिए
के सुप्रसिद्ध विद्वान्
उपाध्याय का निर्वाचन
ध्याय जी अपनी दर्शन-
रचना पर 'मंगलाप्रसाद
कर चुके हैं। राष्ट्रभाषा
पद के लिए सुप्रसिद्ध
सुनीतिकुमार चैटर्जी
सम्मेलन के गौरव की
घटना है। हमें विश्वास है
सम्मेलन का अधिवेशन
साथ होगा। स्वागत-समिति
प्रधान मन्त्री तथा अन्य
बड़ी लगन से सम्मेलन
सफल बनाने में लगे हुए
की तिथियाँ १७,१८
निश्चित हुई हैं।

अ० भारतीय कांग्रेस में क्या देखा ?

विशाल राष्ट्रीय समारोह और नेताओं का भाषण

लेखक, श्री महेन्द्रकुमार 'मानव', एम० ए०

> पिछले दिनों अखिलभारतीय कांग्रेस कमेटी का जलसा बंबई में ३७॥ महीने बाद प्रथम बार हुआ। देश के सभी प्रांतों के प्रमुख राजनैतिक नेता उपस्थित थे। लेखक ने इस लेख में संक्षिप्त रूप से कांग्रेस में क्या हुआ, इसका आँखो देखा वर्णन किया है। लेख पठनीय रोचक तथा सामयिक है।

कार्रवाई यहीं समाप्त होती है। कल ठीक दो बजे से कार्रवाई फिर शुरू हो जायेगी।

२२ सितम्बर

आज कांग्रेस की नीति सम्बन्धी दो प्रस्ताव पास हुए। पहला प्रस्ताव '१९४२ का युद्ध और उसके बाद' पण्डित नेहरू ने रक्खा और दूसरा प्रस्ताव 'कांग्रेस की नीति' आचार्य कृपलानी-द्वारा पेश किया गया। पहले प्रस्ताव के समर्थन में सरदार वल्लभ भाई पटेल, आचार्य नरेन्द्रदेव, पण्डित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' आदि बोले। प्रस्ताव के तीन पहलू हैं—मुकम्मिल आजादी, आम जनता के लिए आजादी का स्वरूप और अन्तर्राष्ट्रीयता।

पहले पैरा में देश के साहस और मुसीबतों को सहन-शक्ति की प्रशंसा की गई। देश में जो कुछ हुआ उसमें जनता का कुछ क़सूर नहीं था। अँगरेजी हुकूमत ने उसको उकसा दिया था इसलिए उसने बहादुरी से सरकार का सामना किया। इन तीन वर्षों में बहुत कुछ हुआ है। नाना प्रकार की तकलीफें लोगों को सहन करनी पड़ीं। दूसरे पैरा ग्राफ मे बतलाया गया है कि महा-युद्ध समाप्त हो गया है लेकिन उसके खत्म होने से ही सब समस्याएँ सुलझ नहीं गई हैं। अब भी साम्राज्यवाद का राज्य है। तीसरे पैरा में कांग्रेस अपने सन् ४२ को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय उद्देश्यों को दुहराती है।

आचार्य नरेन्द्र देव ने जोशीला भाषण दिया। उन्होंने कहा कि हमारे देश में दो शक्तियाँ हैं एक हिंसा की शक्ति जिस पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है और एक अहिंसा की शक्ति जो कानून-द्वारा मान्य है। हमने देख लिया कि हिंसा की शक्ति भी जब अपना बाँध तोड़ देती है तब वह क्या कर सकती है? अन्त में श्री रघुनाथदास, मौलवी अबुलगनी, श्री श्रीशचन्द्र चटर्जी, श्री पी० एस० दुबलिस तथा श्री आर० ए० रंगा के संशोधन आये जो मत लेने पर गिर गये और प्रस्ताव बहुमत से पास हो गया।

लंच के पश्चात् आचार्य कृपलानी ने 'कांग्रेस की नीति' पर प्रस्ताव रक्खा। उसमें ऐतिहासिक दृष्टिकोण से कांग्रेस की नीति पर प्रकाश डाला गया। अन्तिम पैराग्राफ में कहा गया कि समझौता और मेल का तरीका जो कि शान्तिपूर्ण नीति की जड़ है कांग्रेस कभी नहीं छोड़ सकती चाहे कितना ही क्यों न उकसाया जाय—ठीक उसी प्रकार जैसे कि असहयोग—पूर्ण या संशोधित—की नीति को वह नहीं छोड़ सकती। इसलिए कांग्रेस का मार्गदर्शक उद्देश्य यह रहेगा—समझौता और निर्णय तब सम्भव हो और असहयोग और खुला युद्ध जब जरूरी हो। डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने प्रस्ताव का समर्थन किया। तत्पश्चात् मौलाना नूरुद्दीन बिहारी ने अपनी मँजी हुई भाषा में प्रस्ताव का समर्थन किया। आपने कहा कि हिन्दुस्तान में एक जैन कौम बसती है जो छोटे से छोटे जीव-जन्तु तक को नहीं मारती। वह पूरी तरह से अहिंसा का पालन करती है लेकिन जब कोई मच्छर या चींटी किसी जैन के बदन को काट लेती है तो उसका हाथ अनजाने उस पर पड़ता है और वह चींटी मसल जाती है। यही हाल हिन्दुस्तान की अहिंसात्मक प्रजा का था।

श्री महावीर त्यागी ने प्रस्ताव का घोर विरोध किया लेकिन वह अपनी बात को ठीक तरह से नहीं रख पाते थे। सदर को दो-तीन बार पूछना पड़ा—आप प्रस्ताव की किस बात का विरोध करते हैं? वे सिटपिटा से जाते और हुजूर-हुजूर करने लगते। उनके 'हुजूर' ने दर्शकों को खूब हँसाया। लेकिन उन्होंने कुछ खरी और सच्ची बातें कहीं। ऐसा लगता था कि ए० आई० सी० सी० के मेम्बरों को अपने हृदय के उद्‌गार निकालने का कभी मौका नहीं मिलता, इसलिए उचित अनुचित अवसर का खयाल किये बगैर ही वे अपनी बातें कहने लगते हैं। त्यागी जी ने कहा—आज कांग्रेस की बड़ी बुरी हालत है। दलबन्दी की कोई हद नहीं। एक कांग्रेसमैन का आधा समय तो इसमें जाता है कि वह किस प्रकार कोई उच्च पद प्राप्त करे और प्राप्त करने पर किस प्रकार उस पद को बनाये रक्खे। उसका चौथाई समय अपने मित्रों और पिट्ठुओं की स्थिति सँभालने में जाता है। जो समय का थोड़ा-सा हिस्सा बचता है उसमें वह टूटी-फूटी सेवा करता है और नेतागिरी करता है। प्रस्ताव से चाहे त्यागी जी की बातों का सम्बन्ध न हो लेकिन वे कांग्रेस की आंतरिक स्थिति पर अच्छा प्रकाश डालती थीं। सचमुच कांग्रेस भीतर से बहुत खोखली हो गई है। त्यागी जी ने कहा—खुद हुजूर (मौलाना आजाद) ने वायसराय की शासन-सत्ता के लिए अपना नाम मंजूर कर लिया था। हुजूर का ऐसा करना कांग्रेस की शान के खिलाफ था। श्री राधाकृष्ण अग्रवाल ने भी प्रस्ताव का विरोध किया। फिर श्री अविनाशलिङ्गम्, श्री टी० प्रकाशम्, श्री सुरेशचन्द चटर्जी तथा श्री सम्पूर्णानन्द ने प्रस्ताव में संशोधन पेश किये। अन्त में मूल प्रस्ताव ही स्वीकार किया गया।

२३ सितंबर

प्रारम्भ में पृथ्वीराज कपूर ने एक गीत गाया। आज किसी न किसी प्रकार अधिवेशन समाप्त करना था इसलिए सदर ने समय की बहुत पाबन्दी कर दी थी। तीन प्रस्ताव प्रेसीडेंट की ओर से रक्खे गये। पहले प्रस्ताव—'चीन और दक्षिणी पूर्वी एशिया' में लोगों को बधाई दी गई है तथा वहाँ साम्राज्यवादी नीति के जारी रखने पर असन्तोष प्रकट किया गया। कहा गया है कि कांग्रेस इस बात पर घोर आपत्ति करेगी कि दक्षिणी पूर्वी या पश्चिमी एशिया के किसी भी देश पर साम्राज्यवादी प्रभुत्व बनाये रखने के लिए भारतीय फौज काम में लाई जाय। स्वतन्त्र भारत अनिवार्य रूप से अपने पड़ोसी देशों से निकट और मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहेगा। दूसरे प्रस्ताव—'बर्मा और मलाया में भारतीय हित' में कहा गया है कि बर्मा और मलाया में अँगरेजी अधिकारियों को विदेशी पूँजी के पक्ष में ऐसी कोई रियायतें नहीं देना चाहिए और न कोई नये स्वार्थों की सृष्टि करने देना चाहिए जिससे इन देशों की जनता के अधिकार संकुचित हो जायँ या जो इन देशों में मौजूद भारतीय हितों को हानि पहुँचायें। तीसरा प्रस्ताव बिलोचिस्तान की अंजुमने वतन की संबद्धता के बारे में था।

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद।

शेष सात प्रस्ताव बाकी थे। तीसरा प्रस्ताव 'एसेम्बली का चुनाव' को रद्द करके उसके स्थान पर 'अँगरेजी हुकूमत के नये प्रस्ताव और चुनाव' शीर्षक प्रस्ताव रक्खा गया। चौथा प्रस्ताव आजाद हिन्द सेना के बारे में था। पंडित नेहरू ने कहा कि उनकी पैरवी कांग्रेस की तरफ से हो न कि निजी तौर से। इस फौज में ज्यादातर २० और ३० के बीच की उम्रवाले हैं और कुछ ३० और ४० के बीच में हैं। अगर ब्रिटिश हुकूमत बदला लेने की कोशिश करती है तो हिन्दुस्तानियों के दिल दहल जायेंगे और इसका असर बहुत दूर तक जायेगा। वह बहादुर थे। डा० प्रफुल्लघोष ने प्रस्ताव का समर्थन किया तथा कहा कि यद्यपि कांग्रेस की दृष्टि है नैतिक, लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए कोशिश की चाहे उनका रास्ता दूसरा रहा हो। श्री कृष्णानन, देशबन्धु गुप्त, घनश्याम जेठानन्द, श्री चटर्जी और सरदार परतापसिंह की तरमीमें आईं। सरदार जी ने कहा—अँगरेज तो भाग निकले लेकिन ये लोग डटे रहे। इनके दिल में आजादी की चिन-

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

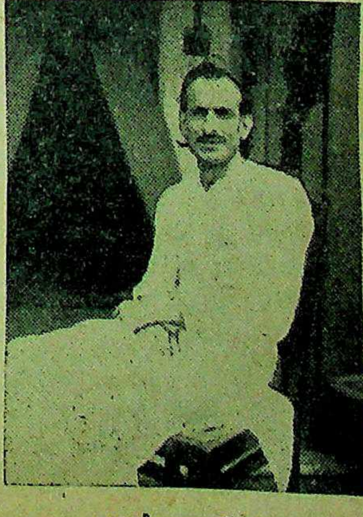

आचार्य कृपालानी जी।

अमरीका-ब्रिटेन, रूस का मतभेद

क्या योरोपीय जनतंत्रात्मक सरकारों से अन्तर्राष्ट्रीय संधि की जा सकती है ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

> योरोप की वर्तमान जनतंत्रात्मक सरकारों से अन्तर्राष्ट्रीय संधि की जा सकती है या नहीं ? इसी राजनीति पर अमरीका-ब्रिटेन और रूस में मतभेद उठ खड़ा हुआ है और जिसका स्पष्ट आभास लंदन में होनेवाले वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में मिला था। इस लेख में योग्य लेखक ने योरोपीय देशों की आंतरिक स्थिति पर प्रकाश डाला है और बतलाया है कि क्या कारण है कि रूस, अमरीका तथा ब्रिटेन की नीति से सहमत नहीं है। लेख सुंदर और पठनीय है।

फ्रांसीसी नेता जनरल डिगाल जो अमरीका के सहयोग से जनतंत्र की स्थापना में लगे हैं।

लन्दन में होनेवाली 'पंच महाराष्ट्रों' के वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में एक समस्या ने परेशानी में डाल दिया। वह है—नाज़ी जुए से निकली हुई या नाज़ियों की पूर्व सहयोगी सरकारें—फिनलैंड, रूमानियाँ, हंगरी, बल्गेरिया आदि क्या इतनी जनतन्त्रात्मक और प्रतिनिधित्व-पूर्ण सरकारें हैं कि उनसे संधि-वार्ता की जाये ? इस समस्या को दो दृष्टियों से देखा जा रहा है। अमेरिका और ब्रिटेन का कहना है कि इन सरकारों को समूची जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है और दूसरे उनमें कुछ व्यक्तियों या दलों का ही 'एक-समअधिकार' है इसलिए वे अजनतंत्रात्मक हैं। दूसरा दृष्टिकोण सोवियत रूस का है। वह इन सरकारों को पूर्ण प्रतिनिधित्व प्राप्त तो नहीं कहता। लेकिन उसका तर्क यह है कि इन सरकारों में उन लोगों का बहुमत है जिन्होंने युद्ध-काल में शत्रु से अपने देश को बचाने में जी-तोड़ संघर्ष किया था। उस संक्रान्तिकाल में देश में प्रतिक्रियावादी शक्तियों को विनष्ट कर देने के लिए आवश्यक था कि केवल नाज़ी-विरोधी व्यक्तियों और पार्टियों को ही सरकार में शामिल किया जाता। इसलिए ये सरकारें पूर्ण जनतन्त्रात्मक न होते हुए भी संधि-वार्ता में भाग लेने के लिए पूर्ण अधिकारी हैं। इन्हीं दो विचार-धाराओं के संघर्ष को 'पश्चिमीय जनतन्त्र' और पूर्वीय जनतन्त्र की संज्ञा दी जा रही है। अब हम सम्बन्धित सरकारों से प्राप्त तथ्यों के आधार पर उपर्युक्त समस्या की जाँच करें।

इटली

रूस में जर्मनी की भयंकर हार के प्रतिक्रियास्वरूप उसके सहयोगी इटली का मित्रों को आत्मसमर्पण कर देना और वहाँ मित्र-राष्ट्रीय सामरिक सरकार का शासन जारी होना ही युद्ध-काल में नाज़ी प्रभावित देश में लोकप्रिय-शासन की ओर पहला कदम था। उन दिनों की खबरों से हमें मालूम है कि इस 'एमगौट' ने वहाँ की प्रगतिशील शक्तियों के विरुद्ध प्रतिक्रियावादी ताकतों को ही मदद दी और अन्त में बोद्गोलियो की कामचलाऊ सरकार बनी लेकिन वह जनता की नई शक्ति समाजवाद की नई लहर के सामने टिक नहीं सकी और सब प्रमुख पार्टियों की संयुक्त सरकार कायम करनी पड़ी। ब्रिटेन और अमेरिका की वहाँ भी यह कोशिश है कि समाजवादी दलों में आपस में फूट पैदा कर दी जाय लेकिन अभी तक वे इस कार्य में असफल रहे हैं।

फ्रांस

फ्रांस की देशभक्त जमातों और वहाँ की जनता के प्रयत्न से नाजी पंजे से फ़्रांस का छुटकारा हुआ तब योरोप में द्वितीय मोर्चा खुला और सोवियत की लाल सेना जर्मनों को रूस की भूमि से खदेड़ती हुई आगे

यूगोस्लेविया में देशभक्त जमात का नेता मार्शल टीटो का चुनाव सम्बन्धी भाषण।

बढ़ने लगी तब जनरल डि गाल की अध्यक्षता में एक कामचलाऊ सरकार बनी। बाद के निर्वाचनों में वामपक्षीय विशेषकर कम्युनिस्ट विचार-धारा का जोर बढ़ने की खबर आई। इसके बाद डिगाल फ़्रांस की साम्राज्यवादी नीति का ही पोषण करते रहे जैसा कि सीरिया, लेबनान और इंडोचीन के 'सैगाँव' के कारनामों से विदित है। डिगाल इस समय ब्रिटेन और संयुक्तराष्ट्र से गठबन्धन के लिये उत्सुक हैं इसीलिए वे हाल में वाशिंगटन भी गये थे। सोशलिस्ट पार्टी के नेता भी ब्रिटेन की लेबर पार्टी की मदद से कम्युनिस्टों के बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना चाहते हैं। उनमें और लेबर पार्टी के प्रेज़ीडेंट प्रोफेसर लास्की में बातें चल रही हैं लेकिन सोशलिस्ट पार्टी के आम सदस्य इस वार्ता को [illegible] दृष्टि से देख रहे हैं। वे सोचते हैं कि कहीं इस तरह 'डिगाल' का 'साम्राज्यवादी' गुट्ट शक्ति न प्राप्त करता जाय इसलिए चुनाव संशोधन लिस्ट के लिए कम्युनिस्टों, सोशलिस्टों और फ़्रांसीसी लेबर फेडरेशन आदि ने संयुक्त संगठन बनाया है।

ग्रीस

पिछले दिनों ब्रिटिश सेना की मौजूदगी में ग्रीस में जो खून-खराबा हुआ है और 'ईलाल' 'ईम' दल के ऊपर भयंकर दमन का वार हुआ है उसके फलस्वरूप प्रतिक्रियावादी शक्तियों का ही वहाँ पर प्रभुत्व है—जिसकी सारी दुनियाँ ने कड़े शब्दों में निन्दा की थी। अब वहाँ नये चुनाव की बात हो रही है। किन्तु एक-तिहाई जनता अब भी वोट देने की अधिकारी नहीं है। सोचा जा सकता है कि जहाँ विदेशी हुकूमतों का इतना प्रभाव हो वह जनतन्त्र कहाँ तक कामयाब हो सकता है। सोवियत रूस इस देख-रेख के काम में शामिल नहीं हुआ।

बाल्कन प्रदेश

जिन देशों को भी लाल सेना की मदद से नाजी अधिकार से छुटकारा मिला था वहाँ नई सरकारें काम कर रही हैं—उन्होंने आर्थिक क्षेत्रों और ग्रामसुधार एवं खेती-बारी की उन्नति में जो कदम उठाये हैं उससे स्वभावतः ही जमींदारी और पूँजीवादी स्वार्थों को जो कि विदेशी साम्राज्यवाद की कठपुतली रहे हैं कठोर आघात पहुँचा है। बाल्कन प्रदेश की सरकारें ही इन प्रतिक्रियावादी शक्तियों को शिकस्त देने में पूरी तरह सफल हुई हैं। इसीलिए उनके खिलाफ उन जनतन्त्रात्मक शक्तियों की सबसे बड़ी शिकायत है।

ब्रिटिश वैदेशिक मन्त्री बेविन साहब का कथन है कि बाल्कन प्रदेश पर एक प्रकार के एकसत्तावाद (नाजीवाद) के हटने के बाद दूसरे प्रकार का एकसत्तावाद स्थापित किया जा रहा है। ब्रिटेन और अमेरिका इन सरकारों के और सामाजिक सुधारों के खिलाफ नहीं कर सके लेकिन उनके तन्त्रात्मक होने की आवाज़ है। बल्गेरिया ने चुनाव-नियम प्रकार का परिवर्तन करने से दिया है और चुनाव-तिथि आगे स्थगित कर दी है। वर्तमान सरकार को तोड़ने की ब्रिटेन और की ओर से कोशिश काफी हुई। अग्रोविन पार्टी के जार्ज इस्तेमाल किया गया। बल्गेरिया के होने पर वहाँ की शक्तिमान वादी दलों के खिलाफ काम हुआ और कुछ डुलमुल मन्त्रियों कार से फोड़ने में सफलता भी फिर भी सरकार की शक्ति सकी।

युगोस्लोविया में देशभक्त सम्मिलित सरकार मार्शल टीटो में काम कर रही है। कोई कि डेमोक्रेटिक दल से सरकार की खून-खराबा करनेवाली डङ्का पीट रहे हैं लेकिन आश्चर्य 'एकतन्त्र' सरकार ने उन्हें से खौफ़नाक प्रचार की छूट दे

रूमानिया के राजा माइकेल निया की वर्तमान सरकार के श्री ग्रोज़िया के इस्तीफे और प्रतिनिधित्वपूर्ण सरकार बनाने मित्रराष्ट्रों के हस्तक्षेप की माँग की। साल भर पहले लाल सेना-द्वारा स्वतन्त्र हुआ था तो सारी और 'पीज़ैन्ट' नेता ब्रैटिनु हाथ में आ गई। युद्ध-काल और फ्रांसीसी साम्राज्यवा से थे। शक्ति में आने पर षिका, अकाल, महामारी, ग्रसित रूमानिया के कष्ट-निवा इन्होंने कुछ नहीं किया और राधियों' के फैसले में भी देर इसका नतीजा यह हुआ कि ने जिन्होंने जर्मनों को मार भगाने खून बहाया था इनको हटा राष्ट्रीय जनतन्त्रात्मक मोर्चे की जिसमें कम्युनिस्ट, सोशल डेमोक्रे आफ पैट्रियट्स (देशभक्तों प्लाऊमैन्स यूनियन (खेतिहरों आदि शामिल हुए। इस नई अध्यक्ष खेतिहरों की जमात

—शेष पृष्ठ १७

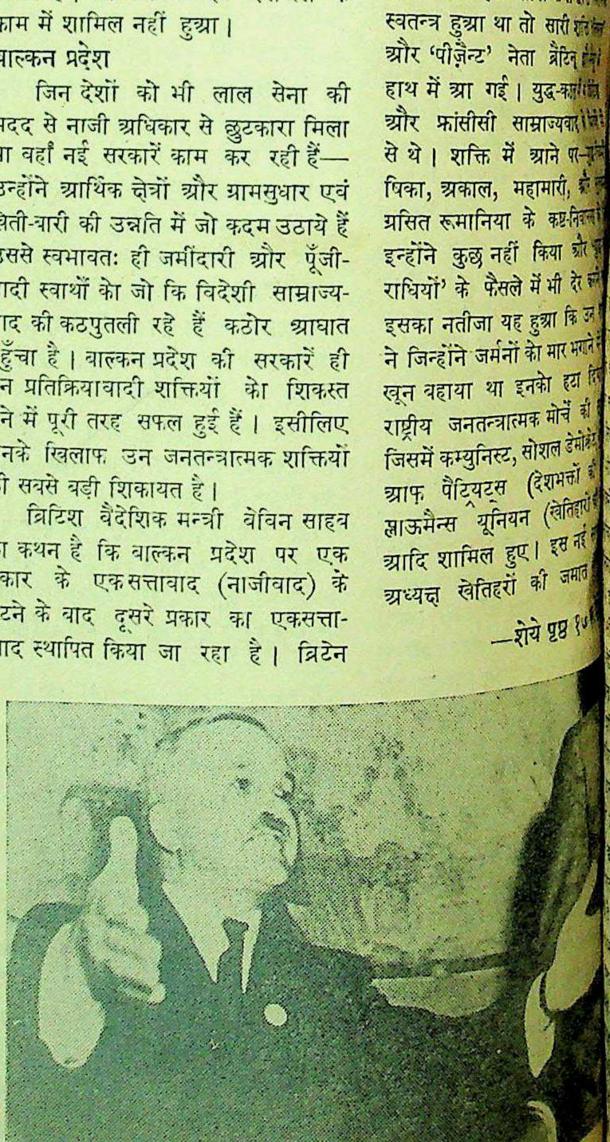

लंदन के वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में रूसी वैदेशिक मंत्री मोलोटोव का जोरदार भाषण।

विधान-निर्मात्री-परिषद् कैसी हो ?

रियासतों की ९ करोड़ जनता से खिलवाड़ क्यों ?

लेखक, श्री पूर्णचन्द जैन, संपादक, 'लोकवाणी'

वाइसराय लार्ड वैवेल ने लन्दन से लौटने पर धारा-सभाओं के आगामी चुनाव के बाद, एक विधान-निर्मात्री-परिषद् की योजना के सम्बन्ध में भी प्रकाश डाला है। इस लेख में लेखक ने यह बतलाया है कि सरकार परिषद् में रियासतों की ९ करोड़ जनता के प्रतिनिधित्व के साथ खिलवाड़ नहीं कर सकती। भारत के किसी भी भावी विधान में रियासतों को पूर्ण प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए और वह प्रतिनिधित्व जनता की इच्छानुसार होना ही उचित है। लेख अत्यन्त सुन्दर, सामयिक और पठनीय है।

धारा सभाओं के चुनाव के बाद विधान-निर्मात्री-परिषद् बुलाने की घोषणा करनेवाले लार्ड वैवेल।

अखिल भारतीय देशी राज्य-प्रजा परिषद् के सभापति पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल।

क्रिप्स-प्रस्ताव के अनुसार विधान-निर्मात्री-परिषद् में प्रान्तीय धारासभादि के प्रतिनिधियों के अलावा देशी राज्यों के प्रतिनिधि भी हो सकते हैं। पर प्रश्न यह है कि यह प्रतिनिधि चुने हुए होंगे या नरेशों-द्वारा नामजद? नरेशों के लिए अपने प्रतिनिधि भेजना भी अनिवार्य नहीं है। लेकिन हम समझते हैं और नरेन्द्र-मण्डल तथा नरेशों की ओर से वक्त वक्त पर प्रकट किये गये विचारों से भी यह पुष्ट होता है कि वे भारतीय शासन-विधान के निर्माण में हाथ रखना अपना अधिकार मानते हैं। क्रिप्स-योजना के अनुसार विधान-निर्माण में प्रतिनिधि भेजने न भेजने की भाँति भारतीय संघ में सम्मिलित होना न होना भी नरेशों की स्वेच्छा पर छोड़ा गया है।

यह छूट और प्रतिनिधित्व का यह तरीका अत्यधिक खतरनाक है। यद्यपि पहले कई बार और अभी हाल में भी नरेन्द्र-मण्डल और उसके कर्ता-धर्ता प्रमुख नरेशों ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा है कि वे भारत की प्रगति में कभी रोड़ा नहीं होना चाहते। लेकिन निजाम हैदराबाद-द्वारा स्पष्ट शब्दों में प्रकट किये गये उद्‌गारों तथा देशी नरेशों की वर्तमान स्थिति उनकी गति-विधि और मनोवृत्ति से यह स्पष्ट है कि वे सम्राट् और ताज से हुए शर्तनामों और सन्धियों का ज्यादा मूल्य करते हैं तथा जनता के विश्वास-स्नेह की जरा भी परवाह नहीं करते और न वे अपने यहाँ उत्तरदायित्वपूर्ण शासन को सही मानी में स्थापित हुआ देखना चाहते हैं। ऐसे नरेशों के प्रतिनिधि रियासतों की नौ करोड़ जनता के प्रतिनिधि नहीं हो सकते। वे विधान-निर्मात्री-परिषद् में २५ प्रतिशत लगभग जगह रोक लेंगे और अराष्ट्रीय तथा प्रगति-विरोधी तत्त्वों के गुट्ट के साथ भारत के भविष्य को गहरा आघात पहुँचानेवाले ही सिद्ध होंगे। देशी राज्यों की जनता जो समस्त भारत की एक चौथाई संख्या में है—का भारत के पुनर्निर्माण में कुछ भी हाथ न होना और उसके हितों की रक्षा की एवज उसे गुलाम एकतंत्रीय शासन के स्वेच्छाचार पर आश्रित रखनेवाले नरेशों-द्वारा उसका प्रतिनिधित्व किया जाना अविवेकपूर्ण होगा।

रियासती जनता के लिए ही नहीं बल्कि भारत के सामूहिक हित की दृष्टि से भी प्रतिनिधित्व अत्यन्त हानिकर होगा। अपनी साम्राज्यवादी मनोवृत्ति की तुष्टि में जो सार्वभौम सत्ता किसी भी नरेश के विरुद्ध कड़ा से कड़ा कदम उठा लेती है क्या भारतीय राष्ट्र के भविष्य के निर्माण की महत्त्वपूर्ण वेला में सन्धियों, शर्त्तनामों, और ताज तथा राजाओं के सर्वथा भिन्न परिस्थितियों में स्थापित सम्बन्धों को बीच में लाकर इन स्वेच्छाचार के मूर्त्तरूप और एकतन्त्री शासन संचालित भूखण्डों के अधिपतियों को राज्यों में आन्तरिक सुधार, उत्तरदायित्वपूर्ण शासन की स्थापना और जन-प्रतिनिधियों को विधान-निर्मात्री-परिषद् में भेजने के लिए बाध्य नहीं कर सकती? क्रिप्स-योजना के विधान-निर्मात्री-परिषद् के संगठन के इस खतरनाक पहलू की कांग्रेस, देशी राज्य लोक-परिषद्, रियासती जनता आदि ने उस समय भी कड़ी आलोचना कर दी थी, हम चाहते हैं कि अब इसे ओझल न किया जाय। गोलमेज कान्फरेंस की भाँति विधान-निर्मात्री-परिषद् में भी देशी राज्यों की नौ करोड़ जनता के प्रतिनिधियों की एवज निरंकुश सत्ताधीशों के नामजद व्यक्तियों को स्थान देने की भूल न दुहराई जाय। छोटी रियासती क्षेत्रों-सहित समस्त भारत के प्रान्तों के पुनर्विभाजन, राष्ट्रीय केन्द्रीय सरकार और देशी राज्यों के आपसी संबन्ध आदि महत्त्वपूर्ण विषय विधान-निर्मात्री-परिषद् के सामने विचाराधीन होंगे और इनमें देशी रियासतों की जनता के विश्वास-भाजन प्रतिनिधियों की राय का ही मूल्य हो सकता है। इस पहलू की गुरुता, गम्भीरता और साथ ही जटिलता को भारत के राष्ट्रीय पक्ष, भारत सरकार, देशी राज्य की जनता और नरेश सभी को समझना चाहिए। कहना नहीं होगा खुद नरेशों को अपने हित की ओर अपनी प्रतिष्ठा-रक्षा को रियासती जनता के हित उसकी प्रतिष्ठा और उन्नति से अविभाज्य समझनी चाहिए और यह समझकर कार्य करने से ही वे वास्तव में अपना और भारत का कल्याण-मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं और भारत के पुनर्निर्माण जैसे जटिल सुयोग में क्विसलिंग कहलाये जाने के कलंक से अपनी रक्षा कर सकते हैं।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

प्रवासी राजा महेन्द्रप्रताप कौन हैं?

देशभक्ति और त्याग-पूर्ण जीवन की एक झाँकी

लेखक, श्री अद्वैतकुमार गोस्वामी

> सुप्रसिद्ध देशभक्त, साहसी और त्यागी नेता राजा महेन्द्रप्रताप वर्षों हुए भारत से बाहर चले गये और अपनी चल-अचल सम्पत्ति राष्ट्र के हाथों में सौंप दी। राजा साहब त्यागी और धुन के पक्के राष्ट्रवादी हैं। इस लेख में सुयोग्य लेखक ने राजा साहब के जीवन पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो रोचक, पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

जर्मन कैसर, जिसने राजा साहब की सहायता की थी।

परम देशभक्त और प्रेम के पुजारी राजा महेन्द्र प्रताप जी के नाम से ऐसा कौन-सा भारतीय है जो न परिचित हो? वर्षों से भारतीय-जनता उनके दर्शनों से आकुल है। आज भारतीय जनता महसूस करने लगी है कि राजा महेन्द्रप्रताप जी का भारत में आना अनिवार्य है।

युक्त-प्रान्त के अलीगढ़ जिले में मुरसान एक छोटा-सा कस्बा है। कुछ दिनों पूर्व यह एक छोटी सी रियासत थी। यहाँ के अधिकारी सर घनश्यामसिंह थे। कहते हैं कि सन् १८५७ के गदर में सर घनश्यामसिंह ने अँगरेजों की काफी सहायता की थी। उसी कारण उन्हें 'राजा बहादुर' का खिताब दिया गया। संवत् १८४३ में राजा महेन्द्रप्रताप ने आपके घर में ही जन्म लिया। मुरसान के निकट हाथरस भी एक प्रसिद्ध व्यापारिक मंडी है। वह भी उस समय एक छोटा सा राज्य था। इसके उत्तराधिकारी सर हरनारायणसिंह थे, जिनके कोई भी पुत्र नहीं था। इसलिए राजा महेन्द्रप्रताप को ढाई वर्ष की अवस्था में उन्होंने गोद ले लिया। बालक महेन्द्रप्रताप को गोद लिये सात वर्ष भी व्यतीत न हुए थे कि सन् १८९५ में सर हरनारायणसिंह का स्वर्गवास हो गया। आपके बाद हाथरस राज्य के उत्तराधिकारी राजा महेन्द्रप्रताप जी हुए किन्तु उस समय वह नाबालिग थे, इसलिये कानून के अनुसार रियासत का प्रबन्ध कोर्ट आफ वार्ड्स के हाथ में सिपुर्द कर दिया गया।

* * *

पहले राजा साहब को घर में ही प्रारम्भिक शिक्षा दी गई। आपकी बुद्धि बड़ी तीव्र तथा स्वभाव बहुत सरल था। आप हाईस्कूल में अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों से बहुत प्रेम रखते थे। यही नहीं रियासत का एजेन्ट भी आपकी प्रकृति और स्वभाव देखकर बड़ा प्रसन्न रहता था। हाईस्कूल से एन्ट्रेंस पास कर राजा साहब ने मोहम्मडन एँग्लो ओरियन्टल कालेज से बी० ए० का प्रथम वर्ष समाप्त कर कालेज छोड़ दिया।

* * *

जब राजा महेन्द्रप्रताप की अवस्था १६ साल की हुई तो झींद के महाराजा बहादुर ने अपनी छोटी बहन के साथ आपका विवाह कर दिया। विवाह होने के बाद राजा साहब प्रायः वृन्दावन में रहने लगे। क्योंकि जमुना किनारे आपके दो आलीशान महल थे। बालिग होने पर सरकार ने रियासत का प्रबन्ध राजा साहब के ही हाथ में दे दिया। राजा साहब अठारह साल की अवस्था में पहली बार रानी साहबा के साथ यूरोप गये। वहाँ आपने इँगलेंड, इटली, फ्रांस तथा अन्य यूरोपियन देशों का भ्रमण किया। आपको शिक्षा संस्थाओं को देखने के लिये विशेष शौक था। जिस समय राजा साहब यूरोप से भारत लौट रहे थे तब आपकी रानी साहबा ज्वर से पीड़ित हो गईं, जिससे आप बहुत घबड़ाये और आपने ईश्वर से प्रार्थना की कि यदि रानी साहबा शीघ्र ही आरोग्य हो जायें तो मैं भारत पहुँचकर कोई अच्छा कार्य अवश्य ही करूँगा। परमात्मा ने राजा साहब की प्रार्थना स्वीकार कर ली और रानी साहबा की तबीअत ठीक हो गई।

* * *

यूरोप से आकर सन् १९०९ में आपने अपने इष्ट मित्रों, नेताओं, राजा महाराजाओं को सूचना दी कि मेरे पुत्र उत्पन्न हुआ है। इस उपलक्ष में २४ मई १९०९ को वृन्दावन में उत्सव होगा। निमंत्रित व्यक्तियों ने तार-द्वारा राजा साहब को बधाई भेजी परन्तु उन्हें वास्तविक रहस्य का पता न था। सब निश्चित तिथि को वृन्दावन पधारे। राजा साहब ने पूज्य मालवीय जी से अपनी हार्दिक इच्छा प्रकट कर दी। उस दिन मालवीय जी की अध्यक्षता में एक सभा हुई, जिसमें राजा साहब ने उत्सव का आशय बतलाते हुए वास्तविक रहस्य प्रकट कर दिया। आपने कहा कि मैं एक निःशुल्क राष्ट्रीय शिक्षा संस्था खोलना चाहता हूँ। आप इसका नामकरण कीजिये। यही मेरा पुत्र है और इसी के जन्म का यह उत्सव है। राजा साहब के इस रहस्यमय कथन पर सबके सब चकित हो गये और सबने हर्ष प्रकट किया। उस संस्था का नाम 'प्रेम महाविद्यालय' रखा गया। राजा साहब की इच्छा थी कि समस्त रियासत विद्यालय को दान कर दी जाय परन्तु आपकी माता जी तथा अन्य बन्धुओं ने ऐसा करने से रोका। अन्त में अपनी आधी रियासत ३३ हजार रुपये की सालाना आमदनी आपने प्रेम महाविद्यालय को दे दी। अपना आलीशान महल भी विद्यालय को दान कर दिया। उसके प्रबन्ध के लिए एक कमेटी बना दी। आप स्वयं आनरेरी गवर्नर बने। समस्त भारत में यह पहला औद्योगिक विद्यालय स्थापित हुआ।

महात्मा गांधी ने सन् १९२० में असहयोग-आन्दोलन चलाया। राजा साहब उनके अनुयायी थे। राष्ट्रीय शिक्षा, उपाधि, त्याग, अहिंसा, हिन्दू मुस्लिम एकता, अछूतोद्धार, स्वदेशी-प्रचार आदि के आदर्शों को राजा साहब ने पूर्णतः पालन किया। विद्यालय की स्थापना के कुछ ही दिनों बाद राजा साहब के यहाँ एक पुत्री उत्पन्न हुई, जिसका नाम 'भक्ति' रखा गया। सन् १९११ में राजा साहब ने वृन्दावन में अपनी १५ हजार रुपये की जमीन आर्य्य-समाज गुरुकुल को दान कर दी। राजा साहब ने जब देखा कि हिन्दू-समाज में कुरीतियाँ बुरी तरह से अपना घर किये हुए हैं तो उनके निवारण के लिए आपने १५ अप्रैल १९१२ से 'प्रेम' नामक एक मासिकपत्र प्रकाशित किया जिसके द्वारा अछूतोद्धार का काफी कार्य्य किया। सन् १९१२ के अन्त में राजा साहब ने फिर दूसरी बार यूरोप यात्रा करने का विचार किया। आपका विचार तो यह भी था कि प्रेम महाविद्यालय के समस्त छात्रों को भी साथ में ले जायें और एक जहाज किराये पर रिजर्व करके संसार-भ्रमण किया जाये। उसी में प्रतिदिन चार घंटे शिक्षा भी दी जाये। पर आपके मित्रों ने ऐसा नहीं करने दिया। आप स्वयं अकेले ही यूरोप गये, परन्तु वहाँ आप अधिक समय तक नहीं रहे। सन् १९१३ में आप भारत लौट आये। इसी समय आपके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम 'प्रेमप्रताप' रखा गया।

* * *

सन् १९१४ में महासमर प्रारम्भ हुआ। उस समय राजा साहब की अवस्था २८ साल की थी। आप एक दिन मंसूरी

पूज्य मालवीय जी जिनके
महाविद्यालय की स्थापना हुई।

से वृन्दावन जा रहे थे। रास्ते
अखबार में आपने युद्ध प्रारम्भ
समाचार पढ़ा। आपका स्वास्थ्य
था फिर भी आपने युद्ध देखने
जाने का विचार किया। आपने
कि संभवतः भारतवर्ष को स्वतं
जर्मनी से सहायता मिल जाये।
को दिल में रखकर प्रेम महावि
समस्त भार अपने मित्रों को सौं
१० दिसम्बर १९१४ को
प्रस्थान किया। साथ में आपके
सेक्रेटरी ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र
स्वामी श्रद्धानन्द जी के ज्ये
आप बम्बई पहुँचे पर पासपोर्ट
आप जहाज पर सवार हो गये।
लिए आपने छः हजार के नोट
और जरूरत पड़ने पर बैंक से
लने का भी प्रबन्ध कर लिया
आपने लड़ाई के सामान से भरे
को आते-जाते देखा। लाल
चलकर आप स्विटजरलैंड
जत प्राप्त करके जिनेवा की ओर
इसी समय आपको जर्मन
त्रण बर्लिन की भारतीय
मिला। आप जर्मनी की ओर
युद्धकाल में स्विटजरलैंड से
कठिन था। राजा साहब तो
निकल गये पर आपके सेक्रेटरी
हरिश्चन्द्र न निकल सके। आप
में नजरबन्द कर लिये गये।
कर राजा साहब ने कैसर
की। कैसर ने आपका वहाँ
किया।

* *

सुना जाता है कि वहाँ राजा
कैसर के साथ युद्ध-क्षेत्र का
किया तथा उनको काफी सला
भी दिया। ब्रिटिश सरकार के
जहाज ने ऊपर से फोटो लि
राजा साहब और कैसर हाथ
मिलाये हुए युद्ध क्षेत्र में खड़े थे।
यूरोप के सब अखबारों में छपा
सरकार ने उसकी एक कटिंग
जिलाधीश के पास भेजी। राजा
जर्मन सरकार से जरूरी काग
करवाये। उनमें महत्त्वपूर्ण पत्र
भारतीय नरेशों के नाम लिखे
जर्मन कैसर ने अमीर अफगानि
लिये भी एक पत्र राजा साहब के
लिखा गया था उसमें यह लिखा
कि यह मनुष्य भारतवर्ष की
के लिये प्रयत्न कर रहा है।
सरकार इन्हें कुछ सहायता

—शेष पृष्ठ १४ पर

परिज्ञान

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

जानता हूँ, यह दिनों का फेर!
आह! मत बाहर निकल तू सँभल यह अंधेर!
प्रिय का भी होगा यही गगन
सावन प्लावन मधु मुग्ध मगन,
फिर भी आज लाज छलना मिस होती जाती देर!
लपक नभ प्रिय नोच लेंगे
अवनि अम्बरमय करेंगे,
स्निग्धता से सिक्त होगा विश्व मुझको घेर!
जन्म होगा शब्द का फिर
मीड़ घनमाला घुमड़ घिर,
बज उठेगी प्राण-वीणा भर प्रणय की टेर!

मातृमण्डल

चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है

कर्तव्य, शिष्टता और विनोद की रक्षा क्यों ?

लेखक, श्री रमाकांत त्रिपाठी, बी० ए० 'साहित्य-रत्न'

मी सुखी रहना चाहते
बहुत कम हो पाते हैं।
कारण यह है कि जिस
में वह रहते हैं उसे अनुकूल
असमर्थ हैं। वास्तव में
ऐसे वातावरण को तैयार करने
रहता है। स्त्री चाहे तो
सकती है और चाहे तो
यही होगा कि सब
और झुकें क्योंकि इसमें
है।

कला है। जो इसे ठीक
उसका जीना न जीना
तो सभी खाते-पीते और
को प्राप्त होते हैं लेकिन
में 'कुछ' कर जाना ही
। 'कुछ' से तात्पर्य है—
की आनन्द की प्राप्ति
प्रत्येक वर्ग का यह कर्तव्य
के लिए ही नहीं अपितु
भी कर्म करे। स्त्रियाँ
अंग हैं। परोपकार,

और श्रीराम भारतीय महिला
प्रमुख कार्य कत्री हैं।

की प्राप्ति के लिए
योग्य बनाना पड़ता
के लिए उन्हें पाँच विशेष
रखना चाहिए।

* *

सौन्दर्यप्रिय होता है।
समझता है और सुन्दर
बनाना चाहता है। क्योंकि
करती है, उमंग पैदा
आनन्द मिलता है। एक
सुन्दर होती है लेकिन यदि
आदि को ठीक रक्खे
और अधिक बढ़
और प्रेम में ही सुख
पुरुष जब एक दूसरे की
प्रेम का वातावरण उत्पन्न
सुखपूर्वक रह सकेंगे।
हो सकता है जब स्त्रियाँ
प्रति सचेत रहें। अपने
कोई कर्तव्य है और
के साथ न टाल
ध्यान रखना चाहिए
क्रीम, पाउडर द्वारा
तात्पर्य नहीं है।
सावधानी से रखना

*

श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी कोल्हापुर में महाराष्ट्र विद्यार्थी सम्मेलन का सभापतित्व किया है।

स्त्री में दूसरी आवश्यक बात धार्मिक भावना का होना है। यह धार्मिक भावना समय-समय पर स्त्री को खतरों से बचाने में विशेष काम करती है। उसे विश्वास रहता है कि ऐसी कोई शक्ति है जो सब को अपने अधिकार में रखती है। अच्छे बुरे कर्मों के अनुसार उसे पुरस्कार और दण्ड भी देती है। इसलिए उसे ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे उसकी हानि हो। इस धर्म-भावना के कारण भावावेश में कोई काम वह एकाएक नहीं करने पाती। उसे सोचने-विचारने का समय मिल जाता है जिससे वह अपनी रक्षा करने में समर्थ होती है। बिना इस भावना के उसका आशा, विश्वास और साहस कोई भी साथ नहीं देते। यह भावना प्रत्येक घर में सुख का संचार करती है। जिस स्त्री में इस भावना का अभाव हो वह भारतीय समाज के लिए उपयुक्त नहीं। हमें इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि हमारी संस्कृति और सभ्यता का निर्माण उस विश्वास पर टिका है जिससे हम ईश्वर का अस्तित्व मानते हैं। इसलिए हमारे सामाजिक जीवन के लिए ईश्वर की सत्ता का हमें भरोसा रखना ही चाहिए।

* * *

स्त्रियों में कर्तव्यपरायणता जन्म से ही पाई जाती है। वास्तव में उसका पहला कर्तव्य उसी के प्रति है जिसमें उसका घर और उसके बच्चे भी सम्मिलित हैं। ऐसी कोई भी स्त्री, जो बच्चों तथा घर के प्रति जागरूक नहीं है, स्त्री कहलाने योग्य नहीं। कौटुम्बिक जीवन ही देश की सुदृढ़ नींव का काम करता है इसलिए स्त्री का अपने घर के प्रति कर्तव्य घर के बाहर भी अपना प्रभाव डाले बिना नहीं रहता।

स्त्री को अपने समय का और अपने कामों का ध्यान रखना चाहिए। घर की जिम्मेदारी जिस स्त्री पर होती है उसे तो विशेष रूप से समय का सदुपयोग करना चाहिए। जो स्त्री घर से बाहर के कामों को करने तथा दान-पुण्य के बहाने ही समय व्यतीत करती है और अपने घर के कार्यों, अपने बच्चों के प्रति उदासीन रहती है वह सेवा-कार्य करती है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। कर्तव्य की भावना तो अपने प्रति किये हुए कार्यों से ही होती है। उसके बाद परिवार के प्रति और तब धीरे-धीरे उसे बढ़ाया जा सकता है।

* * *

जीवन में शिष्टाचार का विशेष स्थान और महत्त्व है। प्रत्येक स्त्री को शिष्ट होना चाहिए। यदि वह व्यवहार-कुशल नहीं है तो लोग उसका आदर नहीं कर सकते। पुरुष को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सभ्यता, सद्व्यवहार और चरित्र की आवश्यकता विशेष रूप से है क्योंकि वह स्त्री से आदर पाना और उसका आदर करना चाहता है। ऐसे प्रेमपूर्ण आचरण के बिना प्रायः हमारे सामाजिक जीवन में दुखद घटनाएँ हो जाया करती हैं। उन्नति और स्वतन्त्रता के नाम पर कितने ही दम्पति अपनी बरबादी के कारण होते हैं। बिना शिष्टाचार के परिवार सुखी नहीं रह सकता। अतः इसे सीखना भी प्रत्येक सफल स्त्री का कर्तव्य है।

* * *

विनोद-प्रियता भी स्त्री-जीवन के लिए आवश्यक है। ऐसे विनोदों के अवसर पर हँसना ज़रूरी नहीं जहाँ पर विनोद समझने में भ्रम हो। लेकिन साधारण जीवन में समय-समय पर तो हास्य बहुत बड़ा काम करता है। कठिनाइयों के समय विनोद-प्रियता मनुष्य को प्रसन्न रखती है जिससे वह जीवन को भार नहीं समझने पाता, अपितु हँसी हँसी में उन्हें भुला देता है। विनोद समझने की क्षमता जैसे जैसे बढ़ती है वैसे वैसे बुद्धि का विकास भी होता जाता है।

इन बातों का ध्यान रखना, प्रत्येक स्त्री को इस योग्य बना देता है कि वह अपने को और अपने निकट सम्बन्धियों को प्रसन्न तथा सुखी रख सकती है। ऐसी स्त्रियाँ समाज की उन्नति में सहायक होती हैं। इन्हीं गुणों-द्वारा स्त्री अपने देश और राष्ट्र की सेवा कर सकती है।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास
प्रथम खंड
राजनैतिक इतिहास
लेखक, श्री वासुदेव उपाध्याय एम० ए० हिन्दी में इस विषय का यह अद्वितीय ग्रंथ है। इस पुस्तक पर लेखक को मंगला-प्रसाद पारितोषिक मिल चुका है। प्राचीन भारत के इतिहास का अध्ययन करने में इससे बड़ी सहायता मिलती है। मेहरौली का लौहस्तम्भ, भितरी की राजमुद्रा, कुमार गुप्त का करमदण्डा का लेख की प्रतिलिपि चिकने काग़ज़ पर मुद्रित है। अच्छा काग़ज़, बढ़िया जिल्द बड़े आकार के २५० पृष्ठ। मूल्य केवल ४) चार रुपये।
द्वितीय खंड
सांस्कृतिक इतिहास
इस खण्ड में गुप्तकालीन शासन-प्रणाली, आर्थिक स्थिति, मुद्रा, साहित्यिक विकास, शिक्षा-प्रणाली, सामाजिक दशा, धार्मिक दशा, भौतिक जीवन, ललितकला, वृहत्तर भारत और गुप्तयुग की महत्ता का वर्णन है। गुप्त राजाओं के समय की आर्य-संस्कृति का चित्र पढ़नेवाले के आगे प्रस्तुत हो जाता है। गुप्त संस्कृति का ऐसा विशद और प्रामाणिक विवेचन किसी भारतीय भाषा में शायद ही मिले। बढ़िया काग़ज़, अनेक चित्र, सुन्दर जिल्द, बड़े आकार में पृष्ठ-संख्या साढ़े तीन सौ से ऊपर, मूल्य ५।=) पाँच रुपये पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

कन्ट्रोल भाव
EVEREADY
TRADE-MARK
ऐवरेडी सैल्स और बैट्रीयां

	नं. ९५०, ९३५, ९१२	नं. ७०३.
फुटकर व्यापारिओं के लिये थोक भाव :—	रु.३१-८-० का एक गुरस.	रु. ७०-०-० के १०० नग.
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्लीमें खरीदारों को परचून भाव :—	रु. ०-४-६ एक नग.	रु. ०-१४-६ एक नग.
दूसरी जगहों पर खरीदारों के लिये परचून भाव :—	रु. ०-५-० एक नग.	रु. ०-१५-० एक नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्ली को छोड बाकी सब जगहों के थोक व्यापारी भाड़ा और महसूल आदि उपर लिखी थोक किंमतों में जोड सकते है।
ज्यादा मत दें
NATIONAL CARBON COMPANY, (INDIA) LIMITED.
CALCUTTA • BOMBAY • MADRAS • COCHIN • DELHI AND KARACHI.
NAS
61/5

स्वास्थ्य और व्यायाम

दूध की उपयोगिता रोग, शरीर तथा स्वास्थ्य से क्या सम्बन्ध है ?

लें०, डाक्टर सुरेन्द्रप्रसाद गर्ग, एम० ए०

प्रायः लोग दूध को रोगावस्था में पथ्य समझते हैं। पर यह भूल है। दूध एक पूर्ण एवं ठोस खुराक है। इसके पचाने में शरीर की अधिक शक्ति खर्च होती है। तीव्र रोग अर्थात् ज्वर, निमोनिया आदि में दूध देने से रोग एक भयंकर रूप धारण कर लेता है। बात यह है कि जो शक्ति रोग को दूर करने में लगी होती है, वह दूध को पचाने में लग जाती है और रोग ज्यों का त्यों पड़ा रह जाता है, और उसमें अधिक उग्रता आ जाती है।

जीर्ण रोग में भी दूध का सेवन ठीक नहीं। दूध निष्कासक आहार न होने के कारण रोग को निकालता नहीं बल्कि अस्वच्छ रक्त बढ़ा कर अवधि को बढ़ाता है। हमारी राय में क्षय रोगी के लिए भी दूध अनुपयुक्त आहार है। इससे ज्वर रमता और कफ बढ़ता है। 'वेट' बढ़ाने तथा 'पौष्टिक भोजन' के सिद्धान्तों से हम सहमत नहीं हैं। हमारी राय में स्वस्थ मनुष्य को ही विधिपूर्वक दूध का सेवन करना चाहिए।

दूध और वजन

दूध पीने से शरीर में शक्ति, वजन और मोटापा अवश्य बढ़ता है। पर इस वजन, शक्ति एवं मोटापे में रोग का अंश अधिक रहता है। दूध पीने से बढ़ी शक्ति अपेक्षाकृत अस्थायी होती है। इस बात की परीक्षा इस प्रकार की जा सकती है। ऐसे दो व्यक्तियों को लीजिए जो खूब घी-दूध खाता-पीता रहा हो और मोटा-ताजा एवं हृष्ट-पुष्ट हो। दूसरा व्यक्ति ऐसा हो जो शाक-पात, फल-मूल, मेवे तथा रोटी आदि खाता रहा हो और शरीर की शक्ति में प्रथम के मुकाबिले का हो। यदि ये दोनों व्यक्ति एक ही रोग जैसे ज्वर से एक साथ बीमार हो जायँ तो आप देखेंगे कि समान चिकित्सा होने पर भी दूध से परिपुष्ट व्यक्ति की शक्ति एवं वजन दूसरे की अपेक्षा बहुत जल्दी गिर जायगी और वह ठीक होने में भी अधिक समय लेगा। यह कई बार अनुभव किया जा चुका है कि फल एवं शाक-पात आदि खानेवाले व्यक्ति कुछ दिनों शय्या पर पड़े रहने पर भी शरीर से वैसे के वैसे बने रहते हैं। बात यह है कि उनका मांस ठोस एवं स्वस्थ बना होता है। हाँ, फल एवं शाकादि खानेवाले दुग्धाहारी की अपेक्षा कुछ पतले एवं दुर्बल अवश्य दिखाई देते हैं। पर यदि आरम्भ से ही ठीक ढंग से रहा जाय तो यह बात पैदा नहीं होती। प्रायः ग्रामीण लोग, जो सूखी रोटियाँ चबाते हैं, दूध पीनेवालों से भी अधिक पुष्ट एवं दीर्घजीवी होते हैं।

दूध और मस्तिष्क

अधिकांश लोगों की धारणा है कि मस्तिष्क का काम करनेवालों, विशेषतः विद्यार्थियों के लिए नित्य थोड़ा-बहुत दूध अथवा घी आदि का खाना जरूरी है। पर हमारा अनुभव एवं राय इसके विपरीत है। हम देखते हैं कि दूध पीनेवाले अमीर लड़कों की अपेक्षा गरीबों के लड़के, जिन्हें छाछ भी नसीब नहीं होती, प्रायः चतुर एवं तीव्र मस्तिष्कवाले होते हैं। दो वर्ष पूर्व देहली की म्यूनिसिपल कमेटी की रिपोर्ट थी कि स्कूल के जिन विद्यार्थियों को नियमित रूप से दूध दिया गया, उनका स्वास्थ्य उन बच्चों की अपेक्षा जिन्हें दूध नहीं मिला, खराब पाया गया। बात यह है कि दूध या दूध की बनी अन्य वस्तुएँ खाने से पाचक-संस्थान पर अनावश्यक बोझ पड़ता है और हमारा स्नायुविक संस्थान बिगड़ जाता है। दूध पीने से मस्तिष्क में एक प्रकार की शिथिलता-सी आती है। दूध पीने से अधिक निद्रा भी आती है। हमारा व्यक्तिगत अनुभव भी ऐसा ही है। मस्तिष्क का श्रम करनेवालों के लिए फलाहार सर्वश्रेष्ठ है। हाँ, अन्नाहार से उत्तम दुग्धाहार और दुग्धाहार से उत्तम फलाहार एवं शाकाहार है। प्रोटीन की दृष्टि से दूध के स्थान पर सूखे गिरीदार मेवे जैसे नारियल की गिरी एवं बादाम आदि लिए जा सकते हैं।

प्रवासी महेन्द्रप्रताप कौन हैं ?

(पेज ८ का शेष)

बड़ा कृतज्ञ होऊँगा। इस पत्र को लेकर राजा साहब ने तुर्किस्तान की यात्रा की। वहाँ के भी सुलतान ने एक पत्र काबुल के अमीर के लिये आपको दिया था। इधर राजा साहब घूम रहे थे उधर ब्रिटिश सरकार और रूसी सरकार आपकी गिरफ्तारी का प्रबन्ध कर रही थी। पर राजा साहब इस खतरे से अपने को बचाकर २ अक्टूबर १९१५ को काबुल आ पहुँचे।

इधर भारत सरकार ने उनकी रियासत जप्त कर ली। आपकी दोनों माताओं-स्त्री पुत्री तथा पुत्र के लिये मासिक पेंसन नियत कर दी। आपके पुत्र प्रेमप्रताप सरकारी निगरानी में देहरादून में पढ़ने लगे। काबुल में राजा साहब अमीर के महल में ही ठहरे। आपने वह दोनों पत्र उन्हें दिये। राजा साहब ने अमीर से कहा कि वह अँगरेजों के विरुद्ध भारतवर्ष में युद्ध की घोषणा करदे पर काबुल और जर्मनी से कोई सीधा संबंध नहीं था। काबुल के अमीर ने राजा साहब का खूब स्वागत किया तथा इन्हें अफगान नागरिक बनने का अधिकार दे दिया। एक सुन्दर तलवार भी आपको भेंट की। सन् १९१८ तक राजा साहब अफगानिस्तान में रहे। वहाँ से आपने अपने कुछ दूत भी भारत में भेजे थे। एक दूत वृन्दावन आकर बाबू नारायणदास जी बी० ए० से मिला और अपने जूता के तले में से एक पत्र निकाल कर दिया, जिसमें कि आपने पाँच हजार रुपये मँगाये थे। बाबू नारायणदास जी राजा साहब के खास और विश्वास-पात्र मित्रों में से थे। आपने पाँच हजार रुपये का सोना खरीद कर उसका एक कटोरा बनवाया और उस पर कलई चढ़ाकर उस दूत को दे दिया। वह उस कटोरा में माँगता खाता हुआ काबुल निकल गया। इसके बाद राजा साहब फिर जर्मनी गये। काबुल के अमीर ने कैसर के लिये तथा तुर्किस्तान के सुलतान के लिये दो पत्र दिये थे।

उन दिनों राजा साहब के पत्रों पर भारत-सरकार बड़ी कड़ी नजर रखती थी। कई बार बाबू नारायणदास जी तथा प्रेम महाविद्यालय की तलाशी पुलिस ने ली। बीच में आपके पत्र भारत आने बिलकुल ही बन्द हो गये जिससे यहाँ सबको बहुत चिन्ता हुई। आपके मित्र कुँवर हुक्मसिंह जी रईस ने विलायती पत्रों में यह विज्ञापन छपवाया कि जो राजा महेन्द्रप्रताप जी का पता बतलाये उसे उचित इनाम दिया जायेगा। तब एक जेनेवा के पादरी चेपलैन ने बिना इनाम लिये राजा साहब का पता बताया क्योंकि वह राजा साहब से बहुत प्रेम रखता था। मार्च सन् १९२२ में राजा साहब का एक पत्र कानपुर के 'प्रताप' में छपा। मई सन् २२ में राजा साहब फ्रांस गये। वहाँ से फिर ३० अक्टूबर सन् १९२३ में जापान चले गये जहाँ उन्होंने प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता स्वर्गीय रासबिहारी बोस से मुलाकात की। यह भी सन् १९१५ में भारत से छिपकर जापान भाग गये थे। जापान से राजा साहब चीन भ्रमण करने के लिए गये। चीन के अँगरेजी राजदूत को प्रतिदिन राजा साहब की खबर तार-द्वारा इँगलैंड भेजनी पड़ती थी। एक बार राजा साहब के अनेक मित्रों ने जब आप पर भारत आने का जोर डाला तब आपने कहा कि—मेरे लिए गुलाम सरकार के राज्य में रहना असम्भव है। मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि या तो मैं स्वतन्त्र भारत में ही लौटूँगा या भ्रमण में ही अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर दूँगा। राजा साहब ने बेलगाँव कांग्रेस के ३९वें अधिवेशन पर अपना सन्देश भी भेजा था जिसमें आपने कांग्रेस को यह सलाह दी कि वह विदेशों में अपने प्रचारक अवश्य नियत करे।

* * *

राजा साहब २२ दिसम्बर सन् १९२४ में अमरीका गये। वहाँ आपने नीग्रो जाति की एक सभा में भाषण देते हुए कहा कि—भारत और नीग्रो जाति के स्वार्थ समान हैं। इसलिए उन स्वार्थों के विरुद्ध आवाज उठानेवाले दोनों के शत्रु हैं। इस भाषण से बहुत से लोग चिढ़ गये। उनमें से किसी एक ने १९ जनवरी
१९२५ की रात को राजा साहब
दे दिया। आपको रात भर
रही पर डाक्टरों की दया से

सन् १९२४ में संयुक्तप्रान्त
ने एक कानून बना दिया जिससे
का उनकी सम्पत्ति पर कुछ भी
नहीं रह गया। राजा साहब को
माता से बहुत प्रेम था। सन्
में आपकी दोनों माताओं तथा
वास हो गया। वास्तव में राजा
गार्हस्थ्य जीवन बड़ा कष्टमय
राजा साहब ने विदेशों में जो
किये उससे भारत-सरकार नाराज
साहब को वह साम्राज्य का शत्रु

राजा साहब का विचार है
नाम होने के कारण प्रेम-धर्म
अन्य जातियों के सामने बड़ी
है। इसलिए आपने दो नाम और
एक मोसेस पीटर (ईसाई नाम)
मुहम्मद पीर। अब आप
लिखते समय 'म + प्रताप +
लिखा करते हैं।

राजा साहब बड़े ही
मिष्टभाषी हैं। आप जापान में
विश्वसंघ-द्वारा सारे संसार में
प्रचार करते रहे हैं।

योरपीय युद्ध समाप्त होने
एशिया में जापानी पराजय हो
इसलिए जितने भी भारतीय
वह मित्रराष्ट्रों अर्थात्
दिये जायँगे। अमरीकन
ने राजा महेन्द्रप्रताप को भी
की आज्ञा निकाली है, इस
समाचार पत्रों में प्रकाशित
सम्भावना है कि राजा साहब
भूमि पर पदार्पण करें।
लाये गये तो भारत-सरकार
व्यवहार करती है, इसका
भविष्य में होगा ही। देखना है
का दर्शन करने के लिए
सौभाग्य मिलता है ?

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०
अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु
पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन
सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।
मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन सामग्रियाँ

कोल्ड व वैनिशिंग क्रीम
टैल्कम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोमा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन

इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताजगी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ करांची

'श्रीकृष्णार्जुन युद्ध' फिल्म कैसा है ?

प्रसिद्ध निर्देशक मोहनसिंह की सफल और सुंदर कृति

लेखक, श्री गोविन्द राव मराठे

पद्यों में अवश्य कुछ उर्दू-शब्दों की अधिकता है। संगीत उच्च कोटि का है।

* * *

फिल्म में प्रमुख रूप से पृथ्वीराज, शाहू मोडक, शोभना समर्थ, रतनबाई, त्रिलोक कपूर, मेनका तथा कन्हैयालाल ने अभिनय किया है। पृथ्वीराज ने अर्जुन की भूमिका में बड़ा ही सफल अभिनय किया है। शाहू मोडक ने श्रीकृष्ण की शान्त और सरस भूमिका को सुन्दर ढंग से निभाया है। शोभना समर्थ सुभद्रा की भूमिका में खरी उतरी है। रतनबाई, त्रिलोक कपूर, मेनका तथा कन्हैयालाल ने क्रमशः द्रौपदी, चित्रसेन, चित्रांगी तथा नारद की भूमिकायें सफलतापूर्वक की हैं।

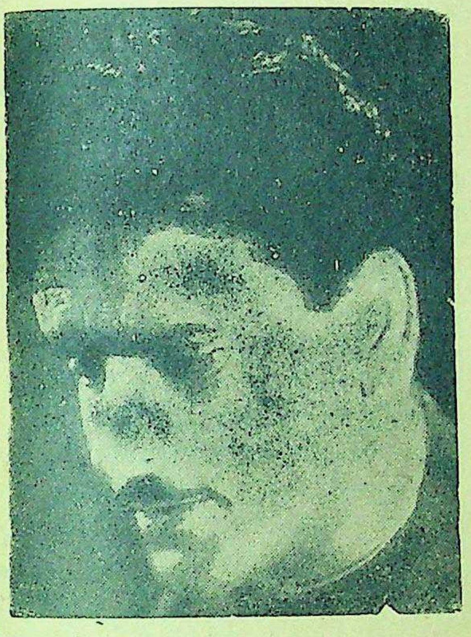
'कृष्णार्जुन युद्ध' फिल्म के सफल अभिनेता पृथ्वीराज।

* * *

'कृष्णार्जुन युद्ध' फिल्म की सफल अभिनेत्री मेनका।

फिल्म का निर्देशन मोहनसिंह ने किया है जो अतीव सफल है। मोहनसिंह अब तक निम्नकोटि के स्टन्ट एवं सामाजिक फिल्म बनाते रहे हैं। अतः उनके द्वारा इतने सुन्दर चित्र का सफल निर्माण होना एक उल्लेखनीय एवं अभिनन्दनीय बात है। फिल्म-संसार उनके इस चित्र को न भूल सकेगा।

फिल्म में एक बात जो मुझे खटकी, वह यह है कि चित्रांगी की भूमिका के लिए मेनका की जगह किसी दूसरी सुन्दरी अभिनेत्री का चयन होना चाहिए था। मेनका सुन्दर हो या न हो, वह फिल्म एकदम भद्दी लगती है, यद्यपि अभिनय उसका सफल है। गन्धर्व-राज की पत्नी अत्यन्त सुन्दरी होनी ही चाहिए। यह बात निर्विवाद है।

* * *

फोटोग्राफ़ी, सेटिंग्ज तथा मेक-अप आदि उच्च कोटि के हैं। यदि ऐसे ही चित्रों का निर्माण सतत होता रहा, तो भारत का फिल्म-व्यवसाय शीघ्र ही स्वर्णयुग में प्रवेश करेगा, ऐसी भविष्यवाणी करने में कुछ भी अतिशयोक्ति न होगी।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी १ नवम्बर को बड़ी धूमधाम और सजधज से निकल जायेगा

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा। यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियों, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा। विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा। बहुरंगा कवर तथा अनेक सादे चित्रों से सुसज्जित।

एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

सिनेमा के साहित्यकार क्या कर रहे हैं ?

लेखक, श्री भगवानप्रसाद त्रिपाठी
'साहित्य-रत्न'

'देशदूत' के १५ सितम्बर के अङ्क में उपरोक्त शीर्षक से एक परिचयात्मक टिप्पणी छपी है। उसमें इस बात को बताने की चेष्टा की गई है कि हमारे सिनेमा के साहित्यिक इस समय क्या कर रहे हैं ? लेकिन लेखक महोदय कुछ भूल में पड़ जाने के कारण सभी साहित्यिकों का परिचय नहीं दे पाए हैं। इसकी पूर्ति के लिए यहाँ पर कुछ परिचय दिया जा रहा है। पञ्जाब या उत्तरी भारत का एक-मात्र सुप्रसिद्ध सिनेमा कम्पनी पञ्चोली चित्रकला भवन, लाहौर है। पंचोली आर्ट पिक्चर्स में हिन्दी-साहित्य के दो व्यक्ति कार्य कर रहे हैं। सुप्रसिद्ध सुमधुर गीतकार श्री कविवर मोती बी० ए० तथा विख्यात नाटककार श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'।

श्री मोती बी० ए०

हिन्दी-साहित्य के गीतकारों में श्री मोती बी० ए० का उच्चतम स्थान है। इनके गीत पंचोली कृत 'कैसे कहूँ' में आ रहे हैं। सभी गीत इन्होंने ही लिखे हैं। इनके गीतों में साहित्यकला का पर्याप्त रूप में आभास परिलक्षित होता है। 'हम आज चलें', 'मेरे मन में कोई बोले', 'दामन न छोड़ देना' आदि गीत अपना सानी नहीं रखते। आधुनिक हिन्दी गीतकारों में मोती बी० ए० प्रमुख रूप से दिखाई पड़ते हैं। आगामी खेलों के गीत मोती बी० ए० ही लिख रहे हैं।

श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी'

प्रेमीजी ने 'कैसे कहूँ' का कथोप-कथन लिखा है। सफल नाटककार होने के नाते प्रेमीजी कथोप-कथन में पूर्ण सफल हुए हैं। इनके कथोप-कथन में आकर्षक एवं हास्य की पूर्ण सामग्री प्रस्तुत रहती है, जो उर्दू लेखकों के लिए करारा उत्तर है।

श्री कृष्णचन्द्र

पञ्जाब के नवोदित कवियों में श्रीकृष्णचन्द्र का उच्चतम स्थान है। साहित्यिक होते हुए भी इन्होंने 'शीरी-फरहाद' में सहायक निर्देशक का सफल कार्य किया है। इनकी कला का परिचय 'शीरी-फरहाद' में दर्शनीय है। आगामी फिल्म में ये काम करने जा रहे हैं। इनसे बड़ी बड़ी आशाएँ हैं।

श्री जङ्गबहादुर

श्री जङ्गबहादुरजी सुप्रसिद्ध साहित्य-सेवी स्वर्गीय मुंशी अजमेरीजी के सुपुत्र हैं। स्वर्गीय पिता की प्रतिभा इनमें दृष्टिगोचर होती है। ये एक कवि तो हैं ही, साथ ही साथ म्यूजिक डाइरेक्टर के कार्य में पूर्ण सिद्धहस्त हैं। आजकल लाहौर में महेश्वरी पिक्चर्स के 'कहाँ गए' में काम कर रहे हैं। इनके संगीत "जागो गाँव हमारे" 'जगमग प्रभात आया' 'चलो चलो चलो अवध नगरिया' आदि गीत बेजोड़ हैं। आप एक सफल कलाकार हैं, इसमें किसी भी प्रकार का संदेह नहीं।

संपादक के नाम चिट्ठियां

शारदा देवी का मेला

मैहर राज्य में शारदादेवी का मेला साल में दो बार होता है। एक चैत्र और दूसरा अगहन में। देवी के दर्शन के लिए लगभग १७-१८ हजार जनता हर मेले में आया करती है। देवी का मन्दिर पहाड़ पर काफी ऊँचाई पर है। जनता को ऊपर चढ़कर दर्शन करना पड़ता है। इतना बड़ा और प्रसिद्ध मेला होने पर भी जनता के ठहरने और आराम करने का स्टेट की ओर से कोई विशेष प्रबन्ध नहीं है। केवल एक छोटी-सी धर्मशाला है उसमें वर्षा के समय बचाव के लिए अधिक से अधिक ३०० स्त्री-पुरुष खड़े हो सकते हैं।

भारतवर्ष का प्रसिद्ध मेला होने के कारण हर गरीब और अमीर हिन्दू के हृदय में देवी के दर्शन की अभिलाषा होती है और सभी जाते हैं। परन्तु दुख के साथ कहना पड़ता है कि एक आना टिकट, जो पहले देवी के दर्शन के लिए नहीं लगता था, अब लगा दिया गया है। टिकट जो शारदा-प्रबन्ध-कमेटी के नाम से लिया जाता है। इस टिकट की वजह से जितनी जनता जाना चाहती है नहीं जा सकती। यहाँ तक कि यह टिकट छः महीने के बच्चे के लिए भी लेना पड़ता है। इस लिए राजा साहब मैहर से सविनय निवेदन है कि देवी के दर्शन के लिए लिया जानेवाला एक आना का टिकट बन्द कर दिया जाय। धार्मिक कार्यों में यह प्रतिबन्ध उचित नहीं। इसके अतिरिक्त जनता के ठहरने के लिए धर्मशाले का बन्दोबस्त कर दिया जाये। शारदा-प्रबन्ध-कमेटी को चाहिए कि देवी जी के ऊपर जो पैसे चढ़ते हैं उससे जनता के आराम का इन्तजाम करे।

—एक यात्री

* * *

सम्मेलन की परिषदें और हिन्दी-लेखक

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ अधिवेशन अक्टूबर १७, १८, १९ को उदयपुर में हो रहा है। अधिवेशन की सफलता हिन्दी के प्रेमियों के सहयोग पर ही निर्भर है। उसकी सफलता और विफलता किसी व्यक्ति अथवा स्थान पर निर्भर नहीं बल्कि हम सब हिन्दी भाषियों पर है। प्रचार की दृष्टि से सम्मेलन काफी आगे बढ़ा है, पर प्रचार के बल पर सम्मेलन जीवित नहीं रह सकता, उसको जीवित रखने के लिये ठोस कार्य की आवश्यकता है। प्रायः यह देखा गया है कि सम्मेलन में होनेवाली परिषदें काफी असफल रहती हैं। परिषदों की असफलता हिन्दीसेवियों की प्राणहीनता की सूचक है। हम चाहते हैं कि हिन्दी-प्रेमी और विद्वानों का ध्यान प्रदर्शन की ओर से हटकर ठोस कार्य की ओर हो। सम्मेलन की परिषदों को सफल बनाने का प्रयत्न हो, उसमें पढ़े जानेवाले निबन्ध गवेषणात्मक और विद्वत्तापूर्ण हों, उनमें मौलिक सूझ और अनुसंधान हो। इसके लिए हम आपके सहयोग की प्रार्थना करते हैं।

उदयपुर — दुर्गाशङ्कर दुर्गावत
३० सितम्बर — साहित्य-मन्त्री

* * *

उदयपुर सम्मेलन की तिथियाँ बदली जायें

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ अधिवेशन १७,१८,१९ अक्टूबर को उदयपुर में हो रहा है। उदयपुर सम्मेलन कई कारणों से विशेष महत्त्व रखता है। मैं समझता हूँ कि इसकी महत्ता को बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि अधिकाधिक प्रतिनिधि उसमें भाग लें। परन्तु असेम्बलियों के भावी चुनाव में लगे रहने के कारण क्या वह लोग जिनका इस सम्मेलन में आना कदाचित् अपेक्षित है, सम्मेलन में इन तिथियों पर आ सकेंगे, इसमें संदेह है। इसलिए मैं समझता हूँ कि सम्मेलन की तिथियाँ अक्टूबर के स्थान पर दिसम्बर में रखी जानी चाहिएँ, जब कि यह निर्वाचन लगभग समाप्त हो जायेंगे क्या ऐसा परिवर्तन संभव है?

जम्मू
(काश्मीर)

—अयोध्यानाथ 'वीर'
प्रधान
हिन्दी-साहित्य-मण्डल

कर्तव्य-शिक्षा—प्रत्येक मनुष्य किस प्रकार कर्तव्यशील, नीति-निपुण तथा सदाचारपरायण बन सकता है यह बात इस पुस्तक में भली भाँति समझाई गई है। मूल्य १॥≡) एक रुपया ग्यारह आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

"प्रत्येक सुबह का पहला काम"

आधुनिक जीवन-यापन की परिस्थितियाँ पाकस्थली में अम्लता पैदा कर देती हैं, जिसके कारण पाचन-सम्बन्धी शिकायतें उत्पन्न हो जाती हैं। ताज़गी देनेवाले इनोज़ 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शारीरिक क्रियाओं को व्यवस्थित करता है, समस्त विषों का शमन करता है, लिवर को स्फूर्ति देता है और अम्लता को निराकरण करता है।

ईनोज़
"फ्रूट साल्ट"

इनो और 'फ्रूट साल्ट' शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क है।

भारतीय कांग्रेस में क्या देखा ?

(पेज ५ का शेष)

गारी थी। जब आजादी की हवा उसको लगी तो वह चिनगारी से जल उठी। इतने से ही मेरे दिल को तसल्ली नहीं होती। हमारे नेता तो किसी वक्त गुस्से में आते नहीं। जिन लोगों को अपने देश के भाइयों पर गोली न चलाने के कारण सजाएँ हुई हैं उनको छुड़ाया जाय। पंडिज जी ने कहा—मुझे देशबन्धु गुप्त, घनश्याम जेठानन्द और सरदार परतापसिंह के संशोधनों को स्वीकार करने में कोई विशेष आपत्ति नहीं है। लेकिन सरदार जी के सुझाव कोई नई बात नहीं पैदा करते। सरदार ने अपनी तरमीम वापस ले ली। तथा संशोधित प्रस्ताव पास हो गया।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 'ब्रिटिश सरकार के प्रस्ताव और चुनाव' वाले प्रस्ताव को रक्खा। उन्होंने कहा—कांग्रेस और लीग से कोई समझौता होने वाला नहीं है। इधर तो तीन ही पार्टी हैं। कांग्रेस पार्टी, मुस्लिम लीग और स्वतन्त्र दल लेकिन एसेम्बली में तो ४ पार्टी हैं। उधर तो चौथी सरकार की नामिनेटेड पार्टी भी है जो सबसे ज्यादा जबर्दस्त है। सेन्ट्रल एसेम्बली के लिए तो जन-संख्या का १ प्रतिशत से भी कम का प्रतिनिधित्व है। मतदाताओं की जो सूची बनी है, वह आधे से ज्यादा गलत है। ब्रिटिश पार्लियामेंट के लिए तो चालीस करोड़ का मामला फुरसत का मामला है और उनको फुरसत कभी मिलती नहीं। या तो चुनाव से हट जाना चाहिए या कोई दूसरा उपाय काम में लाना चाहिए। कुछ न कुछ तो करना पड़ेगा चाहे किसी ढंग से करें। इस चुनाव में दुनियाँ को बताना है कि कांग्रेस के साथ जनता का मत है। पंडित नेहरू ने कहा—कि आइन्दा कांग्रेस लीग के साथ कोई समझौता नहीं कर सकती। कायदे आजम ने हमारे सदर का अपमान किया है जब तक मि० जिन्ना माफी नहीं माँगेंगे तब तक हमको लीग से कोई सरोकार नहीं है। हम बहुत झुके लेकिन अब हम न झुकेंगे। इस प्रस्ताव पर गरमागरम तकरीरें हुईं तथा जनता ने क्षण क्षण पर तालियाँ बजाईं। आत्म-निर्णय का प्रश्न तो ठीक ही है हम उसको मंजूर करते हैं। आज हम सच सच कह देना चाहते हैं। कांग्रेस और लीग में मेल नहीं हो सकता। अगर लीग और कांग्रेस में लड़ाई होगी तो हम उस लड़ाई को मुस्तैदी से लड़ेंगे। हम लोग मुसलमानों के पास जाएँगे उनके मन्तव्यों को समझेंगे लेकिन लीग से हमको कोई वास्ता नहीं।

निम्नलिखित प्रस्ताव भी थोड़े समय में पास कर दिए गए। उनपर संशोधनों का विचार नहीं किया गया:—

वर्तमान सरकार की घोषणाएँ लाजिमी नहीं हैं, एसेम्बली चुनाव कमेटी जिसमें ७ व्यक्ति हैं, स्टरलिंग बैलेंस, चुनाव मैनिफेस्टो, विधान में अस्थायी परिवर्तन।

अन्त में राष्ट्रपति आजाद ने अपना जोशीला भाषण दिया। उन्होंने कहा—कौमी जिन्दगी की भट्टी बरसों से धधक रही थी। इसको हवा पहुँचाने के लिए दामन चाहिए। अगर दामन हवा न पहुँचाएँ तो आग बुझ जाती है। कौमी जिन्दगी की भट्टी को दामन के जरिये जितने भी हवा पहुँचा रहे थे
हाथ गत ३ बरसों में हटा दिए
लेकिन कौमी जिन्दगी की
अधिक धधक चुकी है कि
देनेवाला एक हाथ भी
बुझेगी नहीं धधकती रहेगी।
हुए २५ हजार इन्सानों में
दिखाई दे रहा है। इनके
धड़कन मुल्क की धड़कन है।
कहा—३० बरस से मैं बम्बई
लेकिन ऐसी बारिस मैंने कभी
लगातार बारिश होती रही।
भीगते खड़े रहे लेकिन वह
दिल की गर्मी एक मिनट भी
कर सकी। मौलाना साहब
कर्ताओं को धन्यवाद देकर
अंजाम दिया।

कांग्रेस पण्डाल का प्रवेशद्वार
बनाया गया था। वह साँची
जैसा था। कांग्रेस का पंडाल
चौड़ा था। उसमें २५-३० ह
समा सकते थे। लोगों को
तक पहुँचने में बड़ी मुश्किल
त्रिपुरी का कांग्रेस नगर अपनी
एक था। फिर बारिश ने तो
ढा दी। जगह जगह पंडाल
और लोगों को बैठने में भी
हुई। जमीन निचली होने के
कीचड़ ही कीचड़ हो गया।
और चप्पल कीचड़ में जम
उस कीचड़ ने कोमलांगियों के
परवा न की। कम से कम
साड़ियों की आब तो रखनी थी।
कीमती सेन्डल दो कौड़ी के हो
ही अच्छा हो बम्बई में लाल
आदमियों को बिठाने लायक
कांग्रेस नगर हो जिससे लोगों
सुविधा रहे।

मनोरंजक चुटकुले

जुड़वाँ बच्चे!

उसे अपनी धनी बुआ का
जिसमें लिखा था कि अपने
को अगली छुट्टियों में भेज दो
उन्हें देखना चाहती हूँ। साथ में
लिए एक चेक भी मिला।

कुछ दिनों के पश्चात
चेहरेवाला लड़का बुआ के
और उन्हें एक पत्र दिया, जिसमें
था—'बुआ जी, सादर प्रणाम।
बच्चों में से एक को भेज रहा हूँ
ठीक ऐसा ही है।'

* *

जरूर सुना है

अध्यापक—'क्या तुमने हमारा
भाषण सुना?'

छात्र—मैं आशा करता हूँ
जरूर सुना है।'

* *

पंडित जी और भेड़

अध्यापक ने लड़कों से पूछा
में १३ भेड़ें थीं, उनमें से
कर भाग गईं तो कितनी बचीं?'

एक लड़के ने उत्तर दिया
भी नहीं।'

अध्यापक ने क्रोध में कहा
लोग अंकों के बारे में कुछ नहीं

लड़के ने कहा—'तो क्या
के बारे में बहुत कुछ जानते हैं?'

ंग की तरंग

दंगा हो गया। जान पड़ता वाले आल इण्डिया कांग्रेस क की समाप्ति की इंतिजारी संसार का युद्ध समाप्त हो गया भी कुछ होना ही चाहिए।

*   *

न मिश्र पूछ रहे थे कि थी तब तक दंगा कहीं क्यों जान पड़ता है उन दिनों री और कामों में अधिक

*   *

एकाएक दंगा हो गया ता है। हाँ, यू० पी० में तो ई विभाग और राशन है तब तक दंगा हो ही नहीं की बात है।

*   *

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ इस विचार में लगे हैं कि स्वेज नहर का प्रवन्ध कैसा हो ? नहर के प्रवन्ध में म्युनिसिपलटी के सफाई विभागवालों से सहायता लेनी चाहिये। राजनीतिज्ञ क्या करें ? प्रयाग के मेहतर नहरों की देख-रेख अच्छी तरह कर सकते हैं।

*   *   *

विशेषज्ञ लोग अकाल दूर करने की तरकीब सोच रहे हैं। उनका विचार है कि सब नदियों से जल लेकर सिंचाई की जाय तो अकाल नहीं पड़ेगा। हमारा ऐसा ख्याल है कि इस अवस्था में देश की सारी उपज विदेशों में भेज दी जाय तब यहाँ अकाल नहीं पड़ेगा।

*   *   *

सुना है काशी-विश्वविद्यालय रेडियो विभाग का दूसरा संस्करण बननेवाला है। हिन्दी बोलनेवालों पर जुरमाना होता है और छात्र दर्जे से निकाल दिये जाते हैं।

गीत

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

नहीं कि दें वह तुम्हें कुछ झुकाव से,
मिलता है कुछ कभी तो हमेशा दबाव से।
हूँ लेने को लन्दन का माल भी,
बेचें जो मेरे हाथ तिलोचन के भाव से।
अगर स्वराज हो छोड़ो क, ख, ग, घ,
उलफत जताओ खोल के दिल मीम, वाव से।
छटांक खा के चलाते हैं काम वह,
जल-पान सिर्फ करते थे जो चार पाव से।
वह प्रेम आप से करती तो मैं जरूर,
लगते हैं आप मुझको मगर बनबिलाव से।
के बल पै लीग से मुमकिन नहीं है मेल,
शायद झुकें वह आपकी जानिब पुलाव से।
ढब' दवा करूँ जो कहीं एक चोट हो,
हैराँ हूँ आँख, दिल, व कलेजे के घाव से।

ता है कि नई दिल्ली में २८ जामा मसजिद में नमाज के ा हुई जिसमें कुछ मुस्लिम ये। कभी कभी सेर के सवा जाते हैं।

*   *

ता है हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन लेखकों की स्थिति की जाँच एक समिति संगठित की है। यह भी पता लगाना चाहिये चाहिये, किसे सोलनवाली स्थान। समिति के संयोजक विलास शर्मा को इसे नोट चाहिए।

*   *

के सम्बन्ध जाँच में इस बात लगाना जरूरी होगा कि किसे कहाँ से प्रतिभा साधन मिलता है। और कवियों को यदि इसका सम्मेलन को इसके लिये योजना बनानी चाहिये।

*   *

क्या इधर भी सर सुलतान अहमद का असर जोर पकड़ रहा है ?

*   *   *

काशी-विश्वविद्यालय में हिन्दी-समिति बनी है, जिसमें हिन्दी विभाग का एक भी व्यक्ति नहीं है। काबे से ही मुसलमानी गायब है।

*   *   *

अब सम्राट् हिरोहितो सोच रहे हैं कि मैं इँगलैंड के राजा की भाँति वैधानिक राजा बनूँ। बात तो आपने बहुत अच्छी सोची किन्तु सोचने में जरा देर कर दी। किन्तु क्या करें ? ठीक ही है कि बाल पकने बाद ही खिजाब का ध्यान आता है।

*   *   *

श्री शरतचन्द्र वसु ने कहा है कि हमारी जन्म-भूमि रूस नहीं भारत है। रूस जन्म-भूमि नहीं तो ससुराल तो हो ही सकती है। राहुल जी के सम्बन्ध को हम इतनी जल्दी कैसे भूल सकते हैं ?

—अगड़धत्त शर्मा

अमरीका-ब्रिटेन, रूस का मतभेद

(पेज ६ का शेष)

पीटर ग्रोज़िया को बनाया गया। इस सरकार ने तुरन्त ही जरूरी 'भूमि-सुधार' किये और जमीन का बँटवारा हजारों काश्तकारों में किया। रूमानिया के यह जमींदार ही युद्ध-काल में हिटलर के सहायकों का काम करते थे। इसके अतिरिक्त कल-कारखानों की हालत का भी सुधार किया गया और मजदूरों, कमकरों के हित की रक्षा करनेवाली ट्रेड यूनियनों को सहायता पहुँचाई गई। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य जो इस सरकार ने किया वह पड़ोसी देश हंगरी से जो पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी, उसे दूर करके मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया।

इन नई सरकारों के इन हालात को देखते हुए और यह जानते हुए कि इन सरकारों में ज्यादातर वही लोग हैं जो नाजियों के खिलाफ युद्ध में सिपाही थे या नये विचारों के नौजवान लोग हैं और आबादी की संख्या का अधिकांश, नाज़ी नृशंसता का शिकार, किसानों-मज़दूरों का समर्थन इन सरकारों के साथ है तो हमें अपनी सही राय क़ायम करने में कि ये सरकारें शान्ति-शर्तों में हस्ताक्षर करने की अधिकारी हैं कि नहीं—मदद मिलेगी।

अभी तो इन सरकारों को मित्र-राष्ट्र स्वीकार नहीं कर रहे हैं लेकिन विश्वास है कि नये चुनावों के बाद अधिकांश को उन्हें अपनी पार्टीबन्दी और गुटबन्दी की नीति के विरुद्ध भी स्वीकृत करना पड़ेगा। पोलैंड को भी आरम्भ में इसी बिना पर ब्रिटेन और अमेरिका ने स्वीकृति नहीं दी थी लेकिन सरकार के पीछे वहाँ की जनता की आवाज़ देखकर पोलिश सरकार को स्वीकार करना पड़ा था और अभी खबर आई है कि हंगरी की सरकार को भी अमेरिका आदि ने स्वीकृति दे दी है।

झगड़ा जनतन्त्र और एकतन्त्र का नहीं है झगड़ा साम्राज्यवादी तथा पूँजीवादी स्वार्थ और समाजवाद के बीच का है। योरोप में बढ़ती हुई समाजवादी लहर अमेरिका और ब्रिटेन की नींव हिलाये दे रही है। इसके परिणामस्वरूप योरोपीय राष्ट्रों की रूस के प्रति सहानुभूति की भावना की वृद्धि भी अमेरिका और ब्रिटेन का आसन डाँवाडोल किये है।

RATION SHOP
MACLEANS
PEROXIDE TOOTH PASTE

क्या आज आप ने मेकलिन से दाँत साफ किये हैं ?

हाँ, यही उचित तरीका है।

सौभाग्य से मेकलिन पेराक्साइड टूथ पेस्ट का राशनिंग नहीं हुआ है। यह प्रसिद्ध दन्त-शोधक उन लोगों को अब भी प्राप्य है जो स्वच्छ व स्वस्थ दाँतों का मूल्य जानते हैं। प्रति रात्रि व सुबह प्रयोग करने से मेकलिन आपके मुख व मसूड़ों को ठीक दशा में रखती है।

सभी केमिस्टों व स्टोरों में मिलता है

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह
पूजा-गीत
क्यों पढ़ना चाहिए ?
हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं :—
'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृङ्खल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।
द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफ़ी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं।
—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा
अच्छे फेदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।
मूल्य २) दो रुपये।
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हमारी नई दिल्ली की चिट्ठी

कांग्रेस मुस्लिमदल और मुस्लिमलीग चुनाव के मैदान में

भारत सरकार आजाद हिन्द-सेना पर मुकदमा कब ?

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

कांग्रेस महासमिति के बम्बई अधिवेशन से सीधे दिल्ली लौटकर राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद ने राष्ट्रीय मुसलमानों के साथ पुनः विचार-विनिमय जारी रखा जिसको बीच में छोड़कर वे बम्बई चले गये थे। आगामी चुनावों में मुस्लिम लीग के विरुद्ध समस्त राष्ट्रवादी मुसलमानों का एक संयुक्त मोर्चा बनाने में वे सफल हो गये हैं। अहरार और खाकसार भी उस पार्लिमेंटरी बोर्ड को सहयोग देंगे जो कि राष्ट्रीय मुस्लिम नेताओं-द्वारा नियुक्त की गई है। इस सम्बन्ध में खाकसार नेता अल्लामा मशरिकी का मौलाना आजाद को एक महत्त्वपूर्ण पत्र मिला है। उस पत्र में क्या है, यह अभी तक प्रकट नहीं किया गया, परन्तु यह निश्चित है कि उसमें खाकसार नेता ने लीग के विरुद्ध आगामी चुनावों में कुछ शर्तों पर कांग्रेस का साथ देने का प्रस्ताव रखा है और मौलाना आजाद से लाहौर में मिलने का वचन दिया है। युक्तप्रान्त के कांग्रेस-नेता श्री रफीअहमद किदवई, सिन्ध के प्रमुख राष्ट्रीय मुस्लिम नेता स्वर्गीय अलाबख्श के भाई हाजी मौलाबख्श, बम्बई के भूतपूर्व मन्त्री श्री यासीन नूरी, मौलाना हिफजुर्रहमान, मौलाना बशीर अहमद, डा० शौकत अन्सारी आदि प्रमुख नेताओं ने इन चर्चाओं में भाग लिया। श्री आसफअली भी विशेष निमन्त्रण पर उपस्थित थे।

* * *

लीग के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा

जहाँ एक ओर हिन्दुस्तान की राजधानी में देश भर के प्रमुख राष्ट्रीय मुसलमान लीग के विरुद्ध एक संयुक्त-मोर्चा बना रहे हैं, वहाँ मि० जिन्ना भी उनके प्रयास को निष्फल करने के लिए बराबर शतरञ्ज जैसी चाल चल रहे हैं। उन्होंने सहसा पहला कदम यह उठाया है कि दिल्ली के तमाम मुस्लिम लीगी पत्रों को तरह-तरह की मनगढ़न्त कहानियाँ फैलाकर मुस्लिम लोकमत को राष्ट्रीय मुसलमानों के विरुद्ध करने का संकेत दिया है। अतः ये पत्र आज-कल बहुत ही कमीनी हरकतों पर उतर आए हैं। प्रतिदिन उसमें कुछ न कुछ कांग्रेस विरोधी सामग्री रहती है। उदाहरण के तौर पर उन्होंने यह समाचार छापा है कि दिल्ली में जमा हुए राष्ट्रीय मुसलमानों ने आगामी चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस से दो करोड़ रुपया माँगा है और इसके बदले में एक-सौ मुस्लिम सीटों पर कांग्रेसी उम्मीदवार जितवाने का वचन दिया है। व्यक्तिगत आरोप लगाने में भी वे अपनी नीचता से बाज नहीं आते। एक लीग उर्दू पत्र ने लिखा है मौलाना अबुल कलाम आजाद को कांग्रेस-कोष से एक हजार रुपया मासिक वेतन दिया जाता है।

* * *

कांग्रेस और लीगी-मुस्लिम संघर्ष

दिल्ली के मुस्लिम लीगियों ने मौलाना अबुल कलाम आजाद को यह चुनौती दी थी कि वे उर्दू पार्क के जहाँ पर कि मुस्लिम लीग की सभायें होती हैं, किसी जलसे में भाषण दें ताकि उनको यह पता लग जाये कि मुसलमानों का उन्हें कितना समर्थन प्राप्त है। बम्बई के महासमिति के अधिवेशन से ऐसा मालूम होता है, मौलाना एक नया उत्साह लेकर लौटे हैं और उसका सबसे पहला प्रमाण उन्होंने लीग की उस पुरानी चुनौती को स्वीकार करके दिया। उन्होंने यह घोषणा की कि वे केवल उर्दू पार्क में ही नहीं, बल्कि उसके केन्द्र में विद्यमान दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद में जुम्मे की नमाज के बाद भाषण देंगे। परन्तु दुर्भाग्य से मौलाना बीमार पड़ गये और सभा में उनके बजाय मौलाना अहमद सईद का भाषण हुआ। भाषण के दौरान में एक मुस्लिम लीगी ने कुछ अनुचित हरकत की जिस पर उसकी जो गत बनी वह मुस्लिम लीगियों को बहुत दिनों तक याद रहेगी।

* * *

आजाद हिन्द सेना

आजाद हिन्द सेना के पक्ष में जो देशव्यापी आन्दोलन हुआ है, उसका भारत-सरकार पर बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा है। अतः भारत-सरकार ने एक विज्ञप्ति जारी करते हुए यह स्पष्ट कर दिया है कि आजाद हिन्द सेना के अफसरों और साधारण सिपाहियों में कोई भेद-भाव नहीं किया जायगा और उनके मामलों पर बहुत सहानुभूति के साथ विचार किया जायगा। भारत-सरकार के झुकने का एक मुख्य कारण यह भी है कि आजाद हिन्द सेना के जिन अफसरों की सूची तैयार की गई थी, उनके निकट-सम्बन्धी अन्य सेनाओं में बहुत बड़े-बड़े पदों पर विद्यमान हैं और अधिकांश पंजाब से सम्बन्ध रखते हैं। अतः उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि उनको सम्राट् की वफादारी की अपेक्षा अपने भाई-बन्धुओं का भविष्य अधिक प्रिय है। ऐसे अनेक सैनिक अफसरों के पत्र भारत-सरकार के पास आये हैं। पंजाब के फौजी प्रधान-मन्त्री सर खिजरहयात खाँ टिवाना की दया की अपील भी बहुत सामयिक रही है। मगर फिर भी भारत-सरकार का इन अफसरों और सैनिकों पर मुक़दमे चलाने का निश्चय पूर्ववत् कायम है।

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर और सजीव चित्र है। मूल्य २॥≈) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता-जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।–) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

संवाददाताओं के पत्र

चर्खा-सप्ताह का कार्य-क्रम

सार्वजनिक सभा में अनेक भाषण

उदयपुर में गांधी-जयन्ती के प्रथम दिवस की कार्रवाई महिला-मण्डल, बेगूं की हवेली में भील नेता श्री मोतीलाल जी तेजावत के सभापतित्व में विशाल सार्वजनिक सभा के रूप में प्रारम्भ हुई। सर्व प्रथम महिला-मण्डल की छात्राओं-द्वारा वन्दे मातरम् गायन हुआ। फिर चर्खा-सप्ताह के संयोजक श्री कनकमल जी 'मधुकर' ने सप्ताह के महत्त्वपूर्ण कार्य-क्रम पर प्रकाश डाला और तदनन्तर सर्वश्री जनार्दनराय जी नागर, दयाशंकर जी श्रोत्रिय, माणिक्यलाल जी वर्मा, मोहनलाल जी सुखाड़िया व फानोड़-निवासी पूर्णचन्द जी जैन के महत्त्वपूर्ण भाषण तथा केशवप्रसाद 'विद्यार्थी' की कविता हुई। श्री पूर्णचन्द जी ने शहर की म्युनिसिपैल्टी की बदइन्तजामी पर प्रकाश डालते हुए यहाँ की गन्दी गलियों और दुर्गन्धित कुण्डियों को कुंभीपाक के तुल्य बताया।

कालेज के विद्यार्थियों के चल रहे फीस-निवारण-आन्दोलन के लिए शहर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री बख्तावरलाल जी ने निःशुल्क शिक्षण का प्रस्ताव रक्खा जो श्री सुखाड़िया जी तथा विद्यार्थी रतनलाल जी के समर्थन के पश्चात् सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। बीच-बीच में सी० पी० के भजनोपदेशक श्री तुलसीराम जी, मास्टर छगनलाल जी और जगन्नाथ जी के मधुर भजन हुए। अन्त में स्थानीय खादी-भण्डार के व्यवस्थापक श्री प्यारचन्द जी पिश्नोई ने महात्मा जी को अधिक से अधिक खादी भेंट करने की अपील की जिसके समर्थन में लोकनायक श्री माणिक्यलाल जी वर्मा ने अपना महत्त्वपूर्ण संक्षिप्त भाषण दिया। संयोजक जी के धन्यवाद के बाद विद्यार्थियों द्वारा उच्चरित गगनभेदी जयघोषों के बाद सभा समाप्त हुई।

सुबह प्रतिदिन सरस्वती मन्दिर, कोलयोल में दैनिक चर्खा-यज्ञ का कार्य-क्रम भी चालू है और ता० २ को गांधी-जयन्ती के उपलक्ष्य में स्काउट-आश्रम में विशेष आयोजन रक्खा गया था।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन

ता० १७, १८, १९ आक्टोबर को होनेवाले यहाँ के अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के ३३वें वार्षिकोत्सव की पाण्डाल-समिति ने व्यापारियों के लिए १०×८ के स्टाल्स बनाने का निश्चय किया है। प्रत्येक स्टाल्स का मय बिजली की रोशनी के १५) किराया रखा गया है। अतः पुस्तकें, मीनाकारी, तेल, साबुन, कपड़ा, दूध, चाय, मिठाई आदि के व्यापारी अपना स्थान सुरक्षित करा लें। १० दिन पूर्व रिजर्व करानेवाले दूकानदार को १२½ प्रतिशत कमीशन मिलेगा।

स्वागतकारिणी को सरकारी सहायता प्राप्त

अधिवेशन की तैयारियाँ चल रही हैं। ता० २८ को सरस्वती-मन्दिर कोलपोल में स्वागत-कारिणी की बैठक हुई जिसमें कवि-सम्मेलन के सभापति के लिए विचार किया गया। सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण जी गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा आदि ८ नाम प्रस्तावित हुए जिनमें क्रमशः पत्र-

व्यवहार किया जा रहा है।
के 'घोषणा-पत्र' पर भी विचार
'निवेदन-पत्र' के रूप में निवे
की ओर से ५,०००) का सराहनीय
अधिवेशन के लिए प्राप्त हुआ है।

श्री मुंशी जी सभापति चुने

यह जानकर कि श्री मा
जी मुंशी ३३वें सम्मेलन के
के सभापति चुने गये, स्वागत
हर्ष की लहर छा गई है। —

* *

पूना—प्रभात-फ़िल्म कम्पनी
में 'लाखारानी' का कार्य समाप्त
है और आशा की जाती है कि
बम्बई में दीपावली में प्रदर्शि
जायगा !

इनका आगामी पौराणि
"गोकुल" की शूटिंग स्टूडियो
में जोर-शोर से चल रहा है।
में 'लाखारानी' का नायक सप्रू,
के चन्द्रकान्त, 'रामशास्त्री' ने
मुख्य पुरुष भूमिका में काम क
अमृत-मन्थन' तथा 'चन्द्रसेना'
श्रीमती नलिनी तरखड बी० ए०
के उपरान्त 'गोकुल में देवी दे
भूमिका कर रही है। श्रीमती
निस राधा के रूप में होगी, जिन्हें
अधिकारियों ने मद्रास से पूना बु

साहित्य की दृष्टि से भी
एक महान् रचना होगी क्योंकि
साहित्यिक श्री बालगोविन्दप्रसाद
ने इस चित्र की कथा
लिखे हैं— —

* *

प्रयाग में गत ता० २७
में शहर और देहात के
मछली पकड़नेवालों ने अपनी
सभा में संयुक्त-प्रान्तीय गवर्न
स्कीम डेपार्टमेण्ट की इस नीति
विरोध किया कि शहर में तो
अभाव है किन्तु कलकत्ता और
बाहर मछलियाँ भेजने की आज्ञा
को देकर उनको बेजा मुनाफ़ा
अवसर दिया जा रहा है। ठीकेदारों
और मछली पकड़ने पर से नियंत्रण
के लिए सरकार से अनुरोध कि
सभा ने ११ ऐसे आदमियों का
बहिष्कार किया जो कि म
पेशे में बाधक होते हैं। इस बात
शिकायत की गई कि मल्लाहों
लिए भी मछली नहीं मिलती।
—

* *

नैनीताल में गत ता० २३
को हल्द्वानी में युक्तप्रान्तीय
मंडल के आदेशानुसार एक विशे
वेशन सर्वश्री ठाकुर आनसिंह
मास्टर के सभापतित्व में हुआ,
अपनी माँगों की पूर्ति के लिए
वर्ग डाइरेक्टर शिक्षा-विभाग,
वाइजरी बोर्ड प्रान्तीय सरकार की
प्रार्थना-पत्र भेजे गये और नये
पदाधिकारी भी चुने गये।
समिति जिला नैनीताल का एक
डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हल्द्वानी में श्री
साहब पण्डित जगन्नाथ पाण्डेय
शिक्षा-समिति एवं जिला बोर्ड की
में बड़े समारोहपूर्वक आगामी
२३ आक्टोबर को मनाया जायेगा।
—

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी	१)
अनुराग	१)
कलंक	१)
गल्पगुच्छ (चार भाग)	४॥।=)
टाल्सटाय की कहानियाँ	२)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

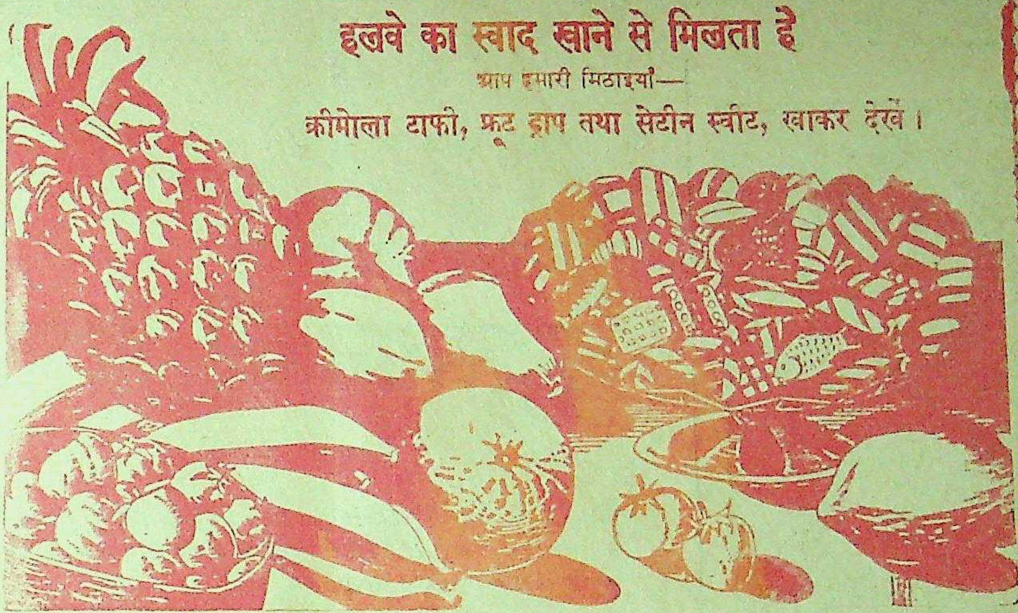

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

हाट के अंन्त में

भारतवर्ष के बड़े ग्रामों एवं छोटे शहरों में, हाट के दिन, अभ्यागत महीनों के नहीं तो सप्ताहों के कठिन परिश्रम का फायदा उठाते हैं। फसल बेचने के लिए व्यापारी तो साल में दो बार ही आते होंगे परन्तु सब्जी व मसाले बेचने वाले तो कभी कभी हर सप्ताह को यहाँ एकत्रित होते हैं। इन क्रय-विक्रय करनेवालों का अधिकतर काम चौपाए ही करते हैं और वे ही वस्तुतः अत्यधिक धूल भी उड़ाते हैं।

किसान दियासलाई तथा भोजन पकाने के तेल ऐसी अत्यावश्यक चीजें खरीद सकता है या पारिवारिक अवसर हो तो साल भर के लिए कपड़े। परन्तु अत्यन्त सर्वव्यापी दिन का अन्तिम सौदा है—एक प्याला गर्मागर्म, मीठी चाय।

भारतवर्ष के प्रत्येक हाटों में ब्रुक बण्ड चाय ताजगी पूर्ण पहुँचती है—पराजित सौदा करनेवाले को आराम देने व विजेता के विजयोत्सव मनाने।

व्यापक वितरण—
सबके लिए ताजा चाय

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

RAMESH RAJ & Co
KARACHI

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के साफ़ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

डॉ. गौतमराव केशव

टॉनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जैाहरी
एल० एस० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

लावण्य का सार

टाटा का
ओ डी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

इसकी ज़मानत
हिन्दुस्तान की दौलत

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

इतने कम समय में इतनी बड़ी रकम का लगाया जाना पहले लोन के खरेपन का और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का बड़ा विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है, अर्थात ब्याज साल में दो बार इनकम टैक्स काटने के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रक़म के वापस दिये जाने का ज़िम्मा लिया जाता है। जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ज़रूरत पर जब चाहें मार्केट में बेच कर नकद रक़म प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम टैक्स अगर लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल जायगा। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम करने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुक़सान के खतरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा ब्याज मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ़ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ़ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खजाने से खरीद लें।

AAA 223 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

[illegible]

शीघ्र आ रहे

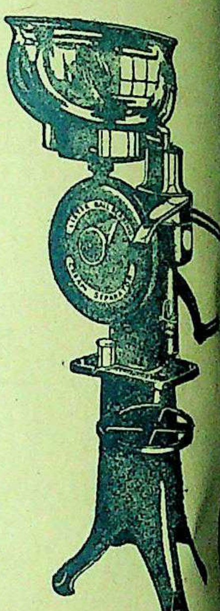

१५० से १००० पौंड दूध प्रति
गुंजायशवाले स्टेनलेस स्टील
वाले (Stainless steel bowl
लिस्टर क्रीम सेपारेटर जो हा
बिजली से चलाये जाते हैं
आनेवाले हैं। लिस्टर क्रीम सेप
का मतलब है कम परिश्रम, कम
व ज्यादा लाभ। बुद्धिमान डे
अब उन्हें मँगाने में देर नहीं

Lister

लिस्टर
क्रीम सेपारेट

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स
वॉल्कर्ट ब्रद

कलकत्ता, ८ क्लाइव स्ट्रीट।
कानपुर दी माल।

मूल्य ७॥)
≡)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१४ आक्टोबर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 14th October, 1945

भैरवी—इस पुस्तक के लेखक पंडित सोहनलाल द्विवेदी' हैं, जिन्होंने आधुनिक काव्य-जगत् में अपनी युग-वाणी के लिए ख्याति प्राप्त की है। ग्रंथ की राष्ट्रीय कवितायें राष्ट्र-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यहाँ तक कि पण्डित जवाहरलाल नेहरू तक ने इन्हें पसन्द किया है और खादी प्रतिष्ठानों ने इसकी हजारों प्रतियाँ बेची हैं। विद्वानों की सम्मति है कि भैरवी 'गांधीयुग' का सर्वश्रेष्ठ काव्य है। इमिटेशन·आर्ट पेपर·पर रचनाएँ, असली आर्ट पेपर पर चित्र, बहुत अच्छी जिल्द और रैपर सहित, तृतीय संस्करण। मूल्य २॥≡)

योरोप और एशिया।
किसानों का संगठन।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

क्या पंडित नेहरू जावा जायेंगे?
यदि ऐसा होता तो—वह कलंकिनी थी।

स्टैनेकज़ेमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले,
कटे, मुहासे, सड़ा, गला घाव तथा
एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
२। डिबिया
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 123

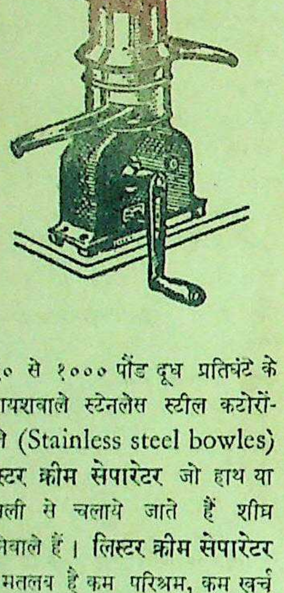

शीघ्र आ रहे हैं

१५० से १००० पौंड दूध प्रतिघंटे के गुंजायशवाले स्टेनलेस स्टील कटोरोंवाले (Stainless steel bowles) लिस्टर क्रीम सेपारेटर जो हाथ या बिजली से चलाये जाते हैं शीघ्र आनेवाले हैं। लिस्टर क्रीम सेपारेटर का मतलब है कम परिश्रम, कम खर्च व ज्यादा लाभ। बुद्धिमान् डेरीवाले अब उन्हें मँगाने में देर नहीं करेंगे।

Lister
लिस्टर
क्रीम सेपारेटर

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स
वॉलकर्ट ब्रदर्स

कलकत्ता; ८ क्लाइव स्ट्रीट।
कानपुर दी माल।

[illegible] का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभा विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं: –
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

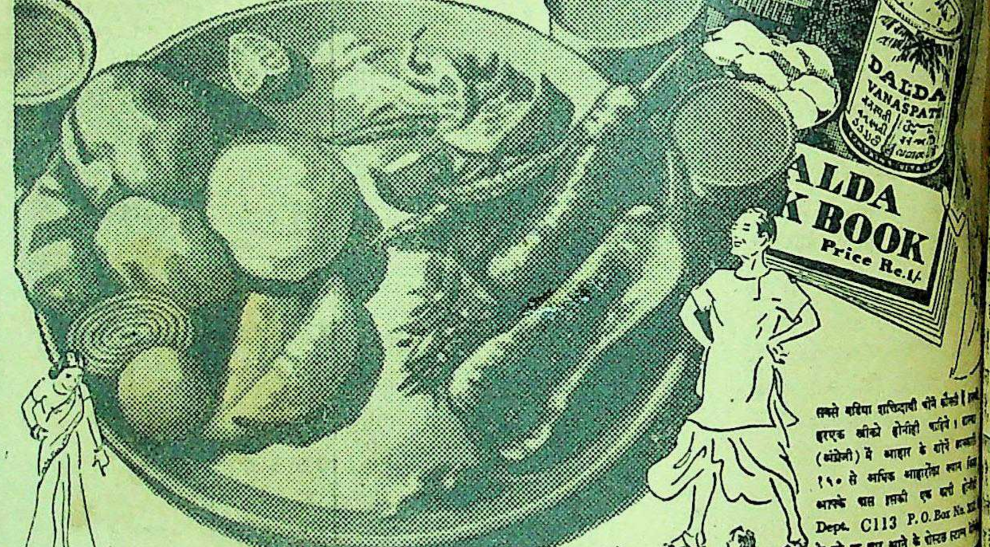
DALDA VANASPATI
DALDA COOK BOOK Price Re.1/-

जिन आहारों को आप खूब पसन्द करते हैं...
उनको शक्तिदायी बनाओ!

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी। [illegible] हरएक बीबी को होनीही चाहिये। [illegible] (अंग्रेजी) में आहार के बारे में [illegible] १९० से अधिक आहारोंका स्वाद [illegible] आपके पास इसकी एक कापी होनी [illegible] Dept. C113 P.O. Box No. [illegible] के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प [illegible]

पिताजी कहते हैं कि [illegible] मुझे हर काममें स[illegible] रहती है।

क्या आप जानते हैं कि हमारे चंद आहार हमारे लिये फायदेमन्द नहीं? उनसे पेट तो भर जाता है लेकिन जितनी शक्तिका हम हररोज व्यय करते हैं उतनी उनसे वापस नहीं मिलती। इसके बारेमें सोचना आवश्यक है न? हमारा आरोग्य, सुख, कामयाबी, –सभी हमारी शक्तिपर निर्भर हैं। अगर चाहिये उतनी शक्ति हम हमारे भोजन से न पा सकें तो, आज ना सही कल, हमें पछताना होगा। वैसे सभी आहार कुछ ना कुछ शक्ति देतेही हैं। लेकिन हमारे भोजनमेंसे कई ऐसे हैं जिनसे बहुत कम शक्ति पैदा होती है। इन आहारों के साथ ज्यादा शक्तिदायी चीजों का इस्तेमाल करके हम उन्हींसे अधिक शक्ति पा सकते हैं। जीवन सत्त्व-संपूर्ण डालडा इस काममें बहुत मदद करता है। यह बढ़िया चीज कुछ ऐसे "अन्नांश" देती है जो प्रकृति के सबसे ऊंचे दर्जेके शक्तिदायी हैं। सभी आहार डालडा में बनाना फायदेमन्द है–सिर्फ़ सुरक्षा के लिये।

पोषक-तत्व संपन्न डालडा स्फूर्ति के लियें

MVM. 34-173-40 HI
THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING

पुरातत्त्व-निबन्धावली—लेखक, महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन। इस पुस्तक में श्री राहुल जी के पुरातत्त्व-सम्बन्धी तथा साहित्यिक और दार्शनिक निबन्धों का संग्रह किया गया है। इसमें कुल अठारह निबन्ध हैं और राहुल जी ने देश और विदेश के कितने ही दुष्प्राप्य ग्रन्थों के अध्ययन और दुर्गम स्थानों के भ्रमण से जो अगाध ज्ञान-राशि प्राप्त की है उसका इन निबन्धों के लिखने में उपयोग किया है। मूल्य २) दो रुपये।

गांधी-मीमांसा—लेखक, पंडित रामदयाल तिवारी। गांधी जी के व्यक्तित्व और सिद्धान्तों की ऐसी तर्कपूर्ण विवेचना आज तक किसी ने नहीं की है। इसे एक बार आद्योपान्त पढ़ जाने पर गांधीवाद पूर्णरूप से हृदयंगम हो जाता है। विद्वानों ने इसकी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। यह ८५० पृष्ठ की सजिल्द पुस्तक है। मूल्य ३) तीन रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

देशदूत

संख्या ७]

सचित्र हिन्दी साप्ताहिक

[रविवार, १४ आक्टोबर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

कम्यूनिस्ट पार्टी के ऐलान किया है कि सारे से अलग हो जाना के पहले हो गया की बात है। कम्यूनिस्ट तो अलग किये जाते वहाँ से हटकर कम- तो उन्होंने बचा ही ऐसा ही करती इस काम की तारीफ़ है। लेकिन इसके बाद नायाब काम मुस्लिम एकता का करने जा दो दीवानों का गठबंधन के लिए बड़ा हितकर। मिलने की उम्मीद है। आज तक नहीं कर सकी लीग के साथ मिल है, इसलिये खुदा ही

* *

में ब्रिटिश मज़दूर मंत्री मिस्टर बेविन ने वैदेशिक मंत्रियों के रोना रोया है। उसका तत्व यह है होने नहीं पाता। चाहता और वह चाहता चाहते सभी हैं केवल चाहता। अपने राम है कि मित्रराष्ट्रों में है। और अब एकता ने है कि वह आखिर में फूट अपनी धुन में अलाप लेकिन बेविन साहब को चाहिए कि रूस पक्का एँग्लो-अमरीकन नीति की कला में बड़ा दक्ष है। कि हड़प कर लेना चाहिए नहीं तो बाद में कौन किसी है। मान लीजिए खाने कुछ न मिले, न सही औरों के सामने के माल के दाँव पेंच में वह लगा

* *

त्रिवेदी उड़ीसा के नये बनाये गये हैं। केवल नाते हमें प्रसन्नता जरूर ऐलान करते हैं कि का प्रयत्न करूँगा', आ जाती है। अपने है कि क्या आज जो भारतीय शासक हैं, की पूरी कोशिश नहीं क्या किया जाय सारा क्या करेंगे सर चन्दूलाल क्या करेंगे कोई? सब नील के खेत में बने रहने का देखने-सुनने में नहीं आया, हाँ खुदाई करिश्मे की बात हम नहीं जानते।

* * *

पञ्जाब में भी अब कांग्रेस की हवा बह चली है। यह वही पञ्जाब है जिसे मिस्टर जिन्ना अपनी अक़्ल से पाकिस्तान बनाये बैठे हैं। अफसोस है पाकिस्तानी भूमि का यह हाल कि वह भी कांग्रेसी हो गया? मौलाना अबुलकलाम आजाद वहाँ पहुँचे और कांग्रेसी हवा ने जोर मारा। लेकिन कभी यह सुनने में नहीं आया कि मिस्टर जिन्ना पञ्जाब पहुँचे और पाकिस्तानी हवा बही। यह निहायत अफ़सोस की बात है। मिस्टर जिन्ना को किसी नजूमी को अपनी जन्म-कुण्डली दिखानी चाहिए कि आखिर अगले चुनाव में मुस्लिमलीग के कितने उम्मीदवार सफल होंगे? जान तो यही पड़ता है कि लीग का पत्ता पञ्जाब से कट रहा है और इस बार भी पत्ता कटा और पाकिस्तान की हवाई उड़ी!

* * *

धारासभाओं का चुनाव सर पर आ गया है। पंडित जवाहरललाल नेहरू, डा० राजेन्द्रप्रसाद, पंडित गोविन्दवल्लभ पंत और मौलाना आजाद ने ललकारा है कि आ जायें राष्ट्रविरोधी मैदान में। असल बात यह है कि यह चुनाव नहीं गांधी जी की आँधी है। अब तो आँधी चली है। आगे यह आँधी अँधड़ और तूफान बननेवाली है। इस आँधी में जो आया वह उड़ा और ऐसा उड़ा कि पता नहीं कहाँ जाकर गिरे। कोई भी हो, चाहे पंडित घुरहू हों या बुद्धू मियाँ। महाकवि अकबर ने लिखा ही है—

बुद्धू मियाँ भी हजरते--
गांधी के साथ हैं।
गो गर्दे राह हैं,
मगर आँधी के साथ हैं॥

* * *

इस वक्त संसार में मजदूरों ने बड़ा बावेला मचा रखा है। उधर अमरीका में तेल के कारखानों के मजदूरों ने हड़ताल का हल्ला बोल दिया ही था इधर इँगलैंड में भी जहाजी मजदूरों ने भी हड़ताल का हल्ला बोल दिया है, यह बड़े आश्चर्य की बात है। क्योंकि अमरीका तो प्रजातन्त्र का एकमात्र दावेदार बन गया है और ब्रिटेन में मजदूर सरकार ही मालिक बन बैठी है फिर मजदूरों का हड़ताली हल्ला क्यों उठ खड़ा हुआ है? मजदूर कहते हैं—हमारी औरतों और बच्चों को रोटी दो। लेकिन मजदूर सरकार का शासन दुनिया को आजाद करने का है न कि घर-घर रोटी बाँटने का। मजदूर परस्त और जन-तन्त्र प्रेमी राष्ट्रों को बधाई के पात्र समझा जाना चाहिए।

* * *

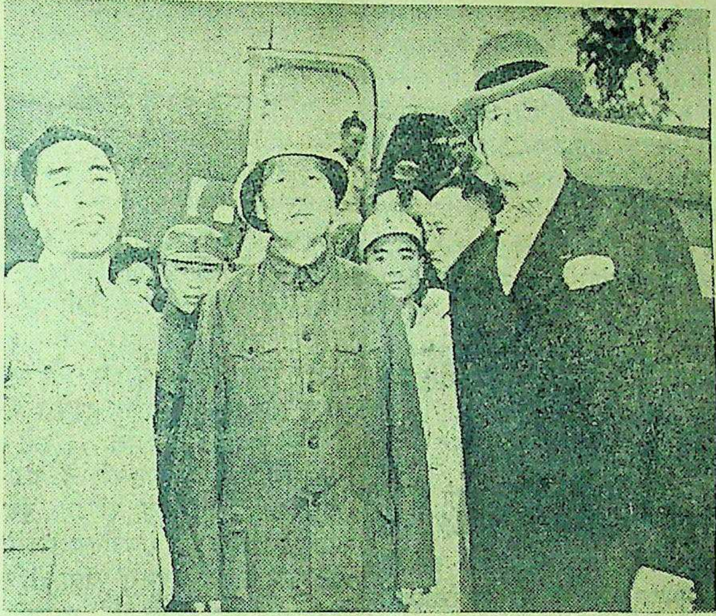

चीन की राजधानी चुंगकिंग में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता। बायें से दाहने—चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी चू-इन-ली, कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान माउत्से साँग और अमरीकन राजदूत पैट्रिक हुर्ले।

गीत

लेखक, प्रोफेसर शेखर एम० ए०

क्यों याद तुम्हारी आती है?
किस अनजाने पथ से आकर,
नीले नभ के उर पर छाकर।
रिमझिम रिमझिम बूँदें अपनी जब घिर घिर घन बरसाते हैं।
श्लथ पंखों पर विज भार दिये
उर में गृहिणी का प्यार लिये।
संध्या की धूमिल छाया में, जल खग नीड़ों को जाते हैं।
रजनी के माथे का बिन्दु,
जगमग करता नभ में इन्दु।
जब ज्योत्स्ना की सित चादर में लिपटे अग-जग सो जाते हैं।
कलिकाओं के मुख चूम चूम
सौरभ मदिरा से झूम झूम।
मारुत के मन्द झकोरे जब पुलकित करते दुलराते हैं।
जब पास नहीं कोई होता,
मैं जगता हूँ सब जग सोता।
पलकों से नीचे उतर उतर जब सपने दिल बहलाते हैं।
क्यों याद तुम्हारी आती है।

'देशदूत' का 'दीपावली अंक'

आगामी १ नवम्बर को प्रकाशित हो जायेगा

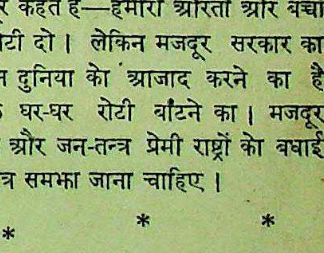

लन्दन में मजदूरों की हड़ताल का निरीक्षण करनेवाले सर स्टेफर्ड क्रिप्स, जिनका प्रस्ताव आज भी भारत के पीछे पड़ा हुआ है।

सम्पादक का पृष्ठ

नये भारतीय गवर्नर !

ब्रिटिश मजदूर सरकार ने अपने हाथ में जब से शासन की बागडोर ली है तब से उसने ऐसे आश्वासन देने प्रारम्भ किये कि यह विश्वास सा होने लगा कि सचमुच ब्रिटेन की ओर से कुछ ऐसा कार्य होने जा रहा है जो भारतीय दृष्टि से हितकर तथा राष्ट्रीय समस्या सुलझाने वाला है। यद्यपि अभी तक मजदूर सरकार ने भारत के सम्बन्ध में अपनी व्यापक योजना प्रस्तुत नहीं की है किन्तु इधर भारतीयकरण के नाम पर जो दो एक काम होने जा रहे हैं, उनसे यह सिद्ध हो जाता है कि मजदूर सरकार केवल कथन से जनतन्त्र तथा मजदूर-किसानों के राज्य स्थापित करने का ढोंग तो रचती है किन्तु हृदय से वह ब्रिटिश टोरी नीति का पदानुसरण कर रही है। मजदूर सरकार ने शासन-सूत्र अपने हाथ में लेते ही एक तो भारत में नये निर्वाचन की घोषणा की है, जिसका क्रियात्मक रूप सामने आ रहा है, और दूसरा है भारत के प्रान्तों में भारतीय गवर्नरों की नियुक्ति।

प्रश्न यह है कि क्या किसी सरकारी अफसर की भारतीय गवर्नर के पद पर नियुक्ति से ही नौकरियों का भारतीयकरण होना प्रारम्भ हो जाता है? भारत के सभी प्रांतों में प्रायः अंगरेज आई० सी० एस० ही गवर्नरों के पद पर प्रतिष्ठित हैं, जो उसी शासन-मशीन के कल-पुर्जे हैं, जिसका आज प्रबल दबदबा सारे देश पर छाया है। उन्होंने भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन को दबाने में कोई कोरकसर नहीं उठा रखी। इस सम्बन्ध में तो हमें विशेष कुछ इसलिए नहीं कहना है कि उन्होंने अपने कर्तव्यों का ही पालन किया है और भविष्य में भी वह करते रहेंगे, यह ठीक ही है। किन्तु अब एक भारतीय आई० सी० एस० श्री त्रिवेदी की नियुक्ति उड़ीसा के गवर्नर के पद पर होने जा रही है। इस प्रकार का भारतीयकरण वास्तव में बहुत दिनों के बाद हो रहा है, इसमें संदेह नहीं। क्योंकि वर्षों पूर्व बिहार में एक भारतीय लार्ड सिनहा की नियुक्ति भी गवर्नर के पद पर हुई थी। जहाँ तक हमें स्मरण है श्री त्रिवेदी की यह नियुक्ति दूसरी है। श्री त्रिवेदी हैं कौन? वह भारतीय अवश्य हैं किन्तु हैं उसी आई० सी० एस० जमात के एक मँजे हुए शासक। इसलिये इस प्रकार की नियुक्ति को भारतीयकरण का नाम देना भ्रमोत्पादक है। हम भारतीयकरण की वास्तविकता का अनुभव तो तब करते जब कोई गैर-सरकारी व्यक्ति गवर्नरी के पद पर नियुक्त किया जाता। पहले सुनने में आया था कि सर तेजबहादुर सप्रू तथा एकआध और गैर-सरकारी सज्जन गवर्नर के पद पर नियुक्त किये जानेवाले हैं। किन्तु यह सब केवल एक प्रकार का अनुमान-मात्र था और नौकरी के भारतीयकरण की वास्तविकता आज स्पष्ट दिखाई दे रही है। इसलिए इस सम्बन्ध में हमारी स्पष्ट सम्मति है कि यदि ब्रिटिश मजदूर सरकार सचमुच अपने को भारत का हितेच्छु समझती है और लोकप्रियता प्राप्त करना चाहती है तो उसे सरकारी पदों पर गैर-सरकारी व्यक्तियों की नियुक्ति करनी चाहिए। कम से कम भारतीयकरण के किसी भी काम का श्रीगणेश तो उचित रूप में होना ही चाहिए। तभी वह अपने तथा भारत के प्रति उदार सिद्ध हो सकती है। नहीं तो हमें यह कहना पड़ेगा कि मजदूर सरकार केवल कथन के बल पर लोकप्रिय बनना चाहती है किन्तु उसकी कार्य साम्राज्यवादी टोरियों की नीति के अनुरूप ही है।

* * *

वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन भङ्ग क्यों हुआ ?

लन्दन में होनेवाले वैदेशिक मन्त्रियों के सम्मेलन से यह आशा की जाती थी कि इटली के साथ संधि हो जायेगी और बाल्कन का झगड़ा समाप्त हो जायेगा, किन्तु भूमध्य सागर से सम्बन्ध रखनेवाले झगड़ों में उलझकर और बिना किसी निश्चय पर पहुँचे ही सम्मेलन की इतिश्री हो गई। मित्रराष्ट्रों ने महायुद्ध के समय जिस एकता का परिचय दिया था उसका वह इस शांति के समय लिए उपयोग नहीं कर सके, यह अत्यन्त खेद की बात है। हमें स्मरण है कि प्रथम महायुद्ध के बाद भी मित्रराष्ट्रों में पारस्परिक सहयोग नहीं रह सका था और आज दूसरे महायुद्ध के समाप्त हो जाने पर भी वही बात प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ रही है। तीन महान् शक्तियाँ अपने अपने स्वार्थ-साधन की खींचा-तानी में व्यस्त हैं। सबके सब यही चाहते हैं कि विजित या पराजित राष्ट्रों को जितना ही अधिक समय तक वर्तमान स्थिति में रखा जा सके उतना ही भविष्य उत्तम होगा।

याल्टा में तीन बड़ी मित्रराष्ट्रीय शक्तियों ने यह तय किया था कि छोटे राष्ट्रों को मित्रराष्ट्रों द्वारा निर्धारित संगठन के अनुशासन में रहना चाहिए जब कि वह स्वयं उन नियमों में तनिक भी बँधे नहीं रहेंगे। यह भी सुझाव रक्खा गया कि संसार में शान्ति बनाये रखने की जिम्मेदारी मित्रराष्ट्रों पर होगी और यदि वह आपस में ही सहमत न होंगे तो उस संगठन से कोई विशेष लाभ नहीं हो सकेगा। लेकिन इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया और यह तय हुआ कि सभी राष्ट्रों की समान जिम्मेदारी रहेगी। किन्तु वर्तमान स्थिति में यह आदर्शवाद समाप्त हो चला है और उसके बदले फिर वही अपना अपना स्वार्थ प्रबल हो उठा है।

वैदेशिक मन्त्रियों के सम्मेलन के भङ्ग होने का विशेष कारण यही बताया जाता है कि रूस पोट्सडम की शर्तों के विरुद्ध कुछ करना नहीं चाहता था। वह चाहता था कि चीन और फ्रांस भी योरोपीय बँटवारे के संगठन में सम्मिलित हों। इसका एक कारण यह भी है कि पाँच महाशक्तियाँ लन्दन में शांति-स्थापना का समझौता करना चाहती थीं और बाद में वही समझौता बालकन राष्ट्रों तथा इटली पर लागू कर दिया जाता। युद्ध में जर्मनी के हार जाने के परिणामस्वरूप मध्य तथा दक्षिण-पूर्व योरोप की आर्थिक रूप-रेखा ही बदल गई है। लेकिन यदि योरोप को दुर्घटना से बचाना है तो उन लोगों का तीन महाशक्तियों के स्वार्थ से अधिक ख्याल रक्खा जाना चाहिए जो भूख और अकाल से मृत्यु के शिकार होते आ रहे हैं। लेकिन हमें इस बात का फिलहाल विश्वास नहीं होता कि इतने कटु अनुभवों के बाद भी योरोप नई प्रगति ग्रहण करेगा। युद्ध के पश्चात् आर्थिक और राजनैतिक संघर्षों को दूर करने के लिए दूसरा चारा ही क्या है? हमारी राय है कि तीनों महाशक्तियों को अपने मतभेद को दूर करने के लिए फिर मिलना चाहिए। युद्ध के समाप्त होने पर हम जिस नये संसार की कल्पना करते थे उसके लिए हमें संभवतः और थोड़े समय परीक्षा करनी होगी। युद्ध की विभीषिकाओं से संसार ने छुटकारा पाया है अब शांति की विभीषिकाओं से झगड़ना है तब कहीं बुद्धि और उदारता के आने की आशा की जा सकती है।

* * *

क्या यही मजदूर राजनीति है ?

राजनीति क्या है? भारत में तो हमें राजनीति का अर्थ स्पष्ट रूप से ज्ञात है। नौकरशाही का समर्थन नहीं अपितु उसका विरोध ही राजनीति है। विद्यार्थियों-द्वारा मजिस्ट्रेट या वाइसराय को दिया गया अभिनन्दन पत्र राजनीति नहीं कहलाती लेकिन इसी प्रकार के आदरसूचक शब्द

यदि महात्मा गांधी या पंडित
नेहरू के सम्बन्ध में कहे जायें तो
में आ जाता है। पेरिस में होनेवाले
व्यापार-संघ में यही प्रश्न उठाया
कि राजनीति क्या है? ब्रिटिश ट्रेड
कांग्रेस के मन्त्री सर वाल्टर किट्रिन
था कि मजदूर दल के प्लेटफार्म पर
या अन्य किसी भी साम्राज्यवादी
चर्चा ही राजनीति है। उन्होंने इस
धमकी भी दी थी कि यदि इस
संगठन में राजनैतिक चर्चा होगी तो
रेजी प्रतिनिधि कांग्रेस और प्रस्तावित
व्यापार-संघ से अलग हट जायेंगे।

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन के
निधि श्री एस० ए० डांगे की
मुख्यतः किसी भी प्रकार की
प्रकट की गई। अपने व्याख्यान में
मित्रराष्ट्रों के उस अनाचार की
जो जापान-द्वारा मुक्त किये गये
एशिया के क्षेत्रों में स्वतन्त्रता की
दबाने में उपयोग की गई थी।
अपना आश्चर्य इस बात पर
कि अँगरेजी और अमरीकन
सेनाओं से साथ साथ इंडोचीन में
के आन्दोलन को दबाने के
संसार में कहीं के भी
से इससे क्या सम्बन्ध है?
काम करनेवालों ने इस तरह
करने से इनकार कर दिया
में राष्ट्रीय आन्दोलन को
प्रयोग किया जानेवाला था। श्री
पूछा था कि डच मजदूरों का
कैसी धारणा है? फ्रांस के
और इण्डोचीन के सम्बन्ध में
हैं? यह प्रश्न कूटनीति से
वाले हैं जिन्हें मजदूर नहीं
ऐसा समझा जाता है। यदि
की बातों में पड़ते हैं तो
आ जाते हैं।

श्री डांगे ने भारत और
का प्रश्न भी उठाया था।
भारत को स्वतन्त्रता मिलने
मजदूरों की दशा का सुधार।
किट्रिन के लिए यह एक
बात थी। भारतीय स्वतन्त्रता और
की दशा के सुधारने से क्या
सुधार के माने सर वाल्टर की
मजदूरों की मजदूरी में कुछ
का बढ़ जाना ही है और अधिक
गृह-सुधार। क्या ब्रिटिश
समस्या पर अनुभव नहीं
ब्रिटेन के पास जो कुछ है वह
चाहिए और इस प्रकार की
तथा ब्रिटिश समाजवादी
पूर्णतया सहमत हैं।

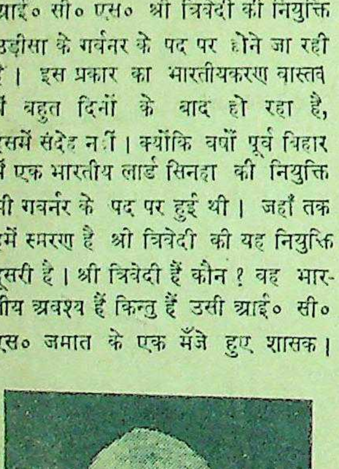

श्री रफी अहमद किदवई

श्री संपूर्णानन्द जी

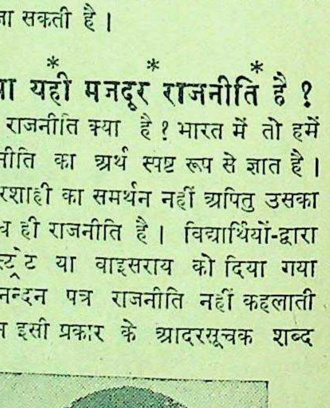

माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन

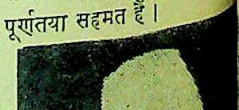

पंडित गोविन्द वल्लभ पंत

आप लोग संयुक्त प्रांतीय कांग्रेस चुनाव बोर्ड के सदस्य चुने गये हैं। [illegible] पालीवाल का चित्र इसी अंक में अन्यत्र छपा है।

क्या पंडित नेहरू जावा जायेंगे ?

एशिया में इंडोनेशिया की स्वतन्त्रता का आन्दोलन !

लेखक, श्री नारायणदत्त तिवारी

जापानी पराक्रम के बाद सुदूरपूर्व के द्वीपों विशेष कर इंडोनेशिया का स्वाधीनता-आन्दोलन आजकल की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है। इस सुन्दर लेख में यहाँ की स्वाधीनता-आन्दोलन पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने यह विचार व्यक्त किया है कि यदि पंडित नेहरू आदि नेता वहाँ पहुँचें तो समस्या बहुत कुछ सुलझ सकती है। लेख से इंडोनेशिया की वर्तमान राजनीति पर सुन्दर प्रकाश पड़ता है।

स्वतन्त्र सरकार बनाई थी, वह जापानी हिन्दुस्तान की हैदराबादी व गुरखा डिवीजनों की मदद से फ्रांसीसी सैनिकों ने नष्ट कर दी। आज इंडोचीन पुनः फ्रेंच साम्राज्यवादियों के चंगुल में पड़ गया है और ब्रिटिश तथा अमेरिकन फौजी अधिकारियों ने इस घृणित तथा जघन्य कार्य में सहायता देकर तथा भारतीय फौजों का खुला उपयोग करके जो मनोवृत्ति दिखलाई है, वह उचित नहीं है।

सिंगापुर

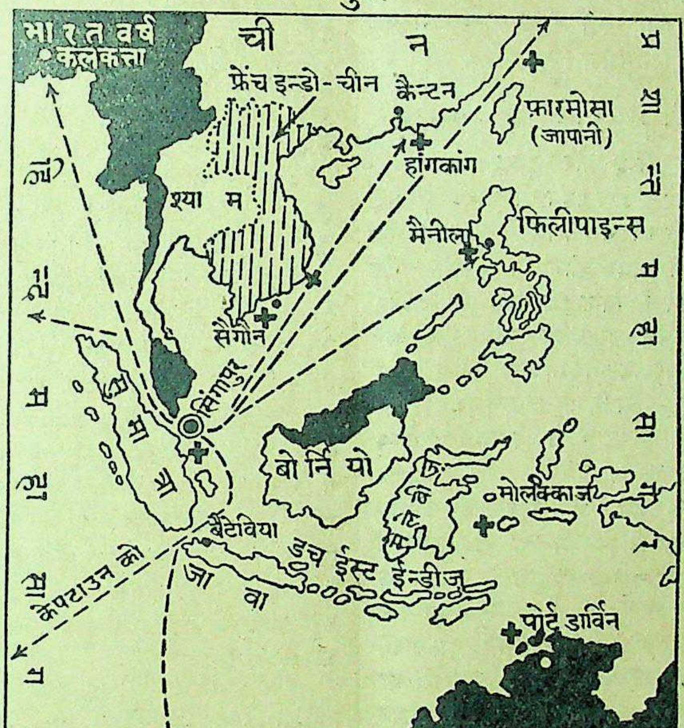

▨ ब्रिटिश
समुद्री अड्डा +

पर जावा और अन्य दक्षिण-पूर्वी द्वीप-समूहों में जो घटनायें घटित हुई हैं, वह और भी हृदय को दहला देनेवाली हैं। जावा, सुमात्रा, बोरनियो, सेलेबीज, न्यू-गिनी तथा अन्य हजारों द्वीप जो सम्मिलित रूप से 'इंडोनेशिया' के नाम से पुकारे जाते हैं, शताब्दियों से अपनी कलात्मक प्रगति, नृत्य तथा चित्र-कला और संस्कृति के लिए संसार भर में प्रसिद्ध रहे हैं। यहाँ पर इंडोपोलीनेशियन जाति के लगभग ७ करोड़ नर-नारी निवास करते हैं तथा यहाँ जावा नामक द्वीप संसार में सबसे अधिक घना आबाद है! सत्रहवीं और अठारहवीं सदी में भारत से अँगरेजों-द्वारा निकाल दिये जाने पर इँगलैंड वालों ने यहाँ पर अपने पैर जमाये और धीरे-धीरे समस्त द्वीप-समूह पर अधिकार कर लिया। २००० द्वीपों वाले इस विलक्षण— मिट्टी-तेल, सोना, लोहा, कालीमिर्च, गरम-मसाले, चीनी, चावल, कहवा तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ प्रचुरता से उपजाने वाले देश पर पिछली दो शताब्दियों से १०००० मील दूर रहनेवाले ८० लाख हालैंड-निवासी शासन करते आ रहे हैं तथा इस सत्ता को प्रथम धक्का सन् १९४१ के जापानी आक्रमण और अधिकार से ही पहुँचा। हालैंडवालों के लिए इंडोनेसिया 'सोने की चिड़िया' बना रहा। इंडोनेशियन स्वतन्त्रता का आन्दोलन उतनी ही बुरी रीति से दबाया गया जितना कि भारतीय राष्ट्रीय जागरण को ब्रिटिश टोरीवाद ने दबाया। जापानी कब्जे के बीच में यह दबा हुआ आन्दोलन पुनः उभड़ कर संगठित हो उठा और उसे डा० साइकारनो तथा डा० हाता जैसे व्यक्ति नेतृत्व के लिये मिले। जापानी पराजय के पश्चात् जब इंडोनेशिया के राष्ट्रीय नेताओं ने यह देखा कि उनकी स्वतन्त्रता को खिलौना समझ कर पुनः डच हाथों में सौंपा जाने का डर है तो उन्होंने तत्काल एक स्वतन्त्र इंडोनेशियन सरकार स्थापित की जिससे राष्ट्रपति डा० साइकारनो बनाये गये। सारे इंडोनेशिया में इस 'रिपब्लिकन सरकार' के सिपाहियों ने शासन का प्रबन्ध अपने हाथों में लिया। सूराबाया तथा बांडोइंग जैसे बड़े नगरों पर कब्जा कर लिया गया तथा जावा की राजधानी बटाविया का म्युनिसिपल शासन भी डा० साइकारनो के अनुयाइयों के हाथ आ गया। वहाँ से आनेवाले समाचारों से यह स्पष्ट है कि अगर ब्रिटिश—अमेरिकन फौजी अधिकारी जापानी और हिन्दुस्तानी फौजों को इस्तेमाल न करें और डच जनरलों को प्रोत्साहन न दें कि वे पुनः अपने उपनिवेश हथियायें तो इंडोनेशिया की राष्ट्रीय सरकार अवश्य ही समस्त द्वीप-समूह के निवासियों की मदद पाकर अक्षुण्ण हो जायेगी। डा० साइकारनो का यह दावा है कि इंडोनेशिया की ९५ प्रतिशत जनता उनके साथ है। सन् ४२ में बम्बई के ग्वालिया टैंक में उठाई गई भारतीय आवाज से डा० साइकारनो के यह शब्द कितना मेल खाते हैं 'हम हालैंड से पूर्णतया सम्बन्ध-विच्छेद चाहते हैं, लेकिन हालैंड निवासी, इंडोनेशियनों के साथ साथ भाई की तरह रहने के लिए पूर्ण-स्वतन्त्र हैं।'

पर साम्राज्यवाद सम्बन्ध-विच्छेद नहीं चाहता। अन्तर्राष्ट्रीय साम्राज्यवादी वहाँ अधिक से अधिक हड़पना चाहते हैं। सदियों से वे आपस की इस छीनाझपटी के लिये गृह-युद्ध करते चले आ रहे हैं—एक ओर तो वह प्रतिद्वन्द्वियों पर आक्रमण करते हैं और दूसरी ओर जन-शक्ति की स्वतन्त्र आवाज का दमन करते हैं। जब जब जनता की शक्ति तीव्र और संगठित हो जाती है और क्रान्ति हो जाने का डर रहता है तब तब ये साम्राज्यवादी फासिस्ट प्रतिद्वन्द्विता और शत्रुता भूल कर मित्र हो जाते हैं और जन-शक्तियों के विरुद्ध गुटबन्दी बना लेते हैं। साम-दाम-दंड-भेद तथा प्रचार, हर तरीके से जनता की गर्दन तोड़ी जाती है। साम्राज्यवाद का यह अटल नियम है।

यह अटल-नियम जो भारत, ईरान, फिलस्तीन, सीरिया, मिस्र, फ्रैंच इंडोचीन श्याम व बर्मा पर कई बार बर्ता जा चुका है और अब भी बर्ता जा रहा है, आज इंडोनेसिया की जन-शक्ति के ऊपर भी लागू किया जा रहा है। 'मित्र' अधिकारी डच फौजों और जनरलों को खुल्लमखुल्ला जावा आदि द्वीपों पर उतरने दे रहे हैं। एक नये समाचार के अनुसार मित्र-हाई-कमाण्ड के सर्वेसर्वा लार्ड लुई माउण्टबेटेन साइकारनो की सरकार को अवैधानिक घोषित करने वाले हैं। राष्ट्रीय सरकार के द्वारा मित्रराष्ट्रों को सहयोग देने के सब निमन्त्रण ठुकराये गये हैं। श्री साइकारनो के पब्लिक-वर्कस-विभाग के मन्त्री के जन-उपयोगी कार्यों का भार ग्रहण करने की माँग को मित्र अधिकारियों ने यह कहकर ठुकरा दिया कि जापानी उस कार्य को पूर्ण करेंगे। इतना ही नहीं, जापानी कर्नल निआमटो को (जो अभी तक मित्रों का दुश्मन था) पूरे अधिकार दे दिये गये हैं कि वह 'कानून' की हर प्रकार से रक्षा करे, जिसके परिणाम-

—शेष पृष्ठ १७ पर देखिए

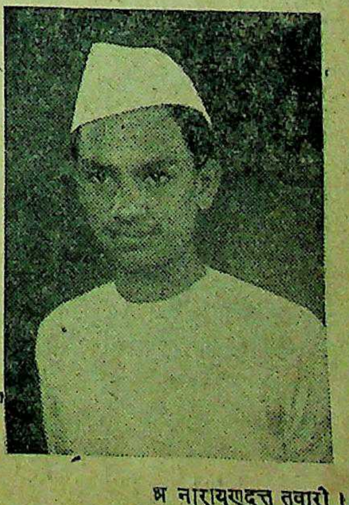

श्र नारायणदत्त तवारी।

किसानों का संगठन और कांग्रेस

सरकारी और राष्ट्रीय विचारधाराओं पर व्यापक दृष्टि

लेखक, श्री सत्यदेव शास्त्री

(२)

'देशदूत' के गत २ सितंबर के अंक में हमने इस लेख-माला का पहला लेख प्रकाशित किया था। यह दूसरा लेख है। इस लेख में राष्ट्रीय दृष्टि से किसानों के संगठन पर क्रमिक प्रकाश डाला गया है और यह बतलाया गया है कि कांग्रेस तथा राष्ट्रीय आन्दोलनों-द्वारा किसानों के संगठन को किस प्रकार बल मिला। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

दादा भाई नौरोजी कांग्रेस के भीष्म-पितामह कहे जाते हैं। ये कांग्रेस के तीन बार सभापति हुए। ब्रिटिश पार्लामेन्ट के सदस्य भी चुने गये थे। इन्होंने स्वदेश तथा ब्रिटेन में कांग्रेस के झंडे को ऊँचा किया। इन्होंने देश की आर्थिक स्थिति की ओर विशेष रूप से ध्यान दिया। इन्होंने छोटी छोटी पुस्तिकाओं में भारतवर्ष के आर्थिक दोहन की स्पष्ट विवेचना की। दोहन सिद्धान्त को सबके सामने रखा। भारतवासियों की दैनिक औसत आय ६ पैसा बतलाया।

ऋणग्रस्त किसान

भारतवर्ष के किसानों की दशा शोचनीय थी। सरकार कृषकों को ऋण से मुक्त करने के विचार से ऐसे कानून बनाने की बात सोच रही थी जिससे वे अपनी जमीन दूसरों को न दे सकें। सरकार के इस रुख पर कांग्रेस ने निम्नलिखित प्रस्ताव अपने पूना के १८८५ ई० के अधिवेशन में पास किया।

"इस कांग्रेस की यह राय है कि यदि कृषकों को ऋण से मुक्त करने के विचार से कानून-द्वारा यह नियम बनाया जायगा जिससे वे अपनी जमीन दूसरों को दे न सकें तो यह कानून अत्यन्त हानिकर होगा और आगे चलकर इससे न केवल कृषकों की उन्नति में बाधा पड़ेगी, वरन् उनकी दशा और अधिक असहाय हो जायगी। कृषकों के ऋणी होने के कुछ तो कारण हैं उनकी अज्ञानता और कुछ यह कि लगान निश्चित कर दिया जाता है और देश के अनेक भागों में कृषि की अवस्था में जो चढ़ाव-उतार होता रहता है उसका लगान पर कम प्रभाव पड़ता है। इस ऋण को दूर करने के उपाय ये हैं—साधारण शिक्षा का प्रचार और जहाँ स्थायी बन्दोबस्त नहीं है वहाँ लगान की वसूली में सख्ती कम करना। इसी कांग्रेस में 'बन्दोबस्त' के सम्बन्ध में भी एक प्रस्ताव पास हुआ था। वह यह था कि "यह कांग्रेस दृढ़ निश्चय प्रकट करती है कि देश के हित की दृष्टि से यह अत्यन्त आवश्यक है कि जिन जिलों का बन्दोबस्त अस्थायी है वहां जमीन की मियाद इस समय की अपेक्षा अधिक निश्चित होनी चाहिए और सरकार को चाहिए कि यह लगान और इजाफा के सम्बन्ध में अपने ऊपर भी वही बन्धन रखे जो बन्धन उसने किसानों के हित की दृष्टि से स्थायी बन्दोबस्तवाली रियासतों में खानगी जमींदारों के अधिकार पर लगाये हैं।"

नमक-कर का विरोध

नमक-कर को घटाने के सम्बन्ध में जिससे गरीबों की कठिनाई कुछ कम होती कांग्रेस अपने अधिवेशनों में प्रस्ताव बराबर पास करती रही है। नमक-कर का विरोध भी प्रस्तावों-द्वारा करती रही है।

लार्ड कर्जन के शासनकाल में बंग-विच्छेद के कारण मुख्यतया बङ्गालियों में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ तीव्र भावना पैदा हुई। बंगाल ने विरोध का नेतृत्व ग्रहण किया। ब्रिटिश माल का बहिष्कार, स्वदेशी का बहिष्कार, अँगरेजी शिक्षा का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार आदि इस आन्दोलन के मुख्य कार्य-क्रम थे।

१९०४-१९०५ में फिर देश में अकाल पड़ा। १९०५ ई० में कांग्रेस ने गरीबी, लगान और बन्दोबस्त के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास किया। यह प्रस्ताव इस प्रकार है, "हाल में देश के अनेक हिस्सों में अकाल पड़ जाने पर यह कांग्रेस दुःख प्रकट करती है और चूँकि इसकी राय में बार बार अकाल पड़ने का कारण है यहाँ के लोगों की गरीबी जिसके कारण अकाल पड़ते ही अधिक लोगों को मजबूर होकर राजकीय सहायता की शरण लेनी पड़ती है इसलिए यह कांग्रेस एक बार और भारत-सरकार और भारत-सचिव से प्रार्थना करती है कि वे भारतवर्ष के भिन्न भिन्न विभागों के कुछ गाँवों की आर्थिक अवस्था की जाँच करावें।"

(१) इस कांग्रेस की राय है कि भारत के समान कृषि-प्रधान देश की संपत्ति की रक्षा उस समय तक नहीं हो सकती जब तक कि जमीन का लगान नियन्त्रित न रहे जैसा कि लार्ड कैनिंग ने सन् १८५२ और रिपन ने सन् १८८२ में प्रस्ताव किया था।

(२) इस कांग्रेस की राय है कि कृषकों की बढ़ती हुई गरीबी को रोकने का सच्चा उपाय यह है कि जमीन के लगान पर उचित और निश्चित नियन्त्रण रहे न कि किसानों के अधिकारों पर नियंत्रण रहे जैसा कि पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है।

लगान और बन्दोबस्त सम्बन्धी-प्रस्ताव कांग्रेस के अधिवेशनों में बार बार दुहराये तो जाते थे, किन्तु सरकार के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती थी। इन प्रस्तावों का उस पर मानो कोई असर ही नहीं पड़ता था। कांग्रेस भी इन प्रस्तावों को कार्यान्वित कराने के लिए कोई प्रभावकारी आन्दोलन नहीं करती थी।

किसानों पर गोरों का जुल्म

चम्पारन में रैयतों का कष्ट बढ़ा हुआ था। उनके कष्टों की कोई सीमा ही नहीं थी। चारों ओर हाहाकार मचा हुआ था। चम्पारन में बेतिया एक खासा अच्छा राज्य है। इसका रकबा लगभग २,००० वर्ग मील था। राज्य के छोटे-छोटे हिस्से ठेकेदारों को दिये जाते थे। पहले सभी ठेकेदार हिन्दुस्तानी थे। पीछे अँगरेजों ने ठेका लेना प्रारम्भ किया और ईख और नील की खेती उन्होंने शुरू की। सारा चम्पारन अँगरेजों की कोठियों से छा गया। बेतिया राज पर ऋण हो गया था। उसे अदा करने के लिए १४ कोठीवालों के साथ मुकर्ररी ठीका बन्दोबस्त किया गया। आधे से अधिक जिला अँगरेज ठेकेदारों के हाथ में था जिनमें २३ नील का व्यवसाय करते थे। नील की खेती दो प्रकार से करते आ रहे थे—(१) जीरान, (२) असामीवार। असामीवार प्रथा के अनुसार कोठीवाले रैय्यतों के द्वारा नील पैदा कराया करते थे जिनमें सबसे अधिक प्रचलित प्रथा तीन कठिया की प्रथा थी। यह प्रथा चम्पारन में अधिक प्रचलित थी। इसके अनुसार कोठीवाले रैयतों से उनकी जोत के एक हिस्से में नील पैदा कराते थे और एक नियत दाम पीछे से देने की भी शर्त होती थी। १८६० के लगभग बीघा पीछे ५ कट्टे में नील बोया जाता था। कुछ दिनों के बाद १८६७ के लगभग बीघे में ३ कट्टा बोया जाने लगा। एक निश्चित शर्त पर रैय्यतों से उन्हीं के खेत में कोठीवाले नील बोवाते थे। इससे उन्हें बड़ा लाभ था। नील के कारखानों में ३३,००० मजदूर काम करते थे। किन्तु बाद में धीरे-धीरे यह खेती घटती गई। १९१४ में १०० एकड़ तक रह गई थी। किन्तु १९१६ और १९१७ में फिर यह खेती बढ़ाई गई।

इस लेख के लेखक श्री सत्यदेव शा

कमीशन बैठाया गया

तीन कठिया-प्रथा से चम्पा
रैय्यतों को बड़ा कष्ट था। नीलहे
के अत्याचारों की जाँच के लिए
कमीशन बैठाया गया था। रैय्यतों
शिकायतें की थीं वे जाँच-कमीशन
राय में सही ठहरीं। कुछ मुख्य शि
ये थीं—

(१) रैयतों को नील की
कुछ बहुमूल्य समय देना पड़ता
समय को वे दूसरे कामों में लगा

(२) सबसे अच्छी जमीन
लिए ली जाती थी। कभी कभी
में दूसरा अनाज बोया हुआ रहता
भी नील बोने के लिए
जाता था।

(३) कोठी के नौकरान रैयतों
जुल्म करते थे।

(४) नील के सम्बन्ध में
रैयतों के साथ कराया जाता
दस्ती कराया जाता था। रैयत
उसे नहीं सकारती थी।

सन् १९१२ और १९१
की ओर से बहुत सी दरख्वास्तें
के खिलाफ पड़ीं। नीलहे
तरह तरह के अहवाब लेते थे
में जान कर हृदय से
निकलती है और किसानों की
दशा पर सिवा आँसू बहाने के
नहीं सूझता। अहवाब के कुछ
दिये जा रहे हैं:—

(१) पैन-खर्चा—पैन कहते
को। जो खर्चा नहर का पानी
लिया जाता है उसे पैन-खर्चा
रैय्यतों के लिए बगैर पानी
किये ३) बीघा पैन-खर्च के
जाते थे।

(२) तीन कठिया—
ऊपर आ चुकी है।

—शेष पृष्ठ १६

गाँव में विवाह के समय एकत्रित भीड़ के सामने पुरुषों का नृत्य।

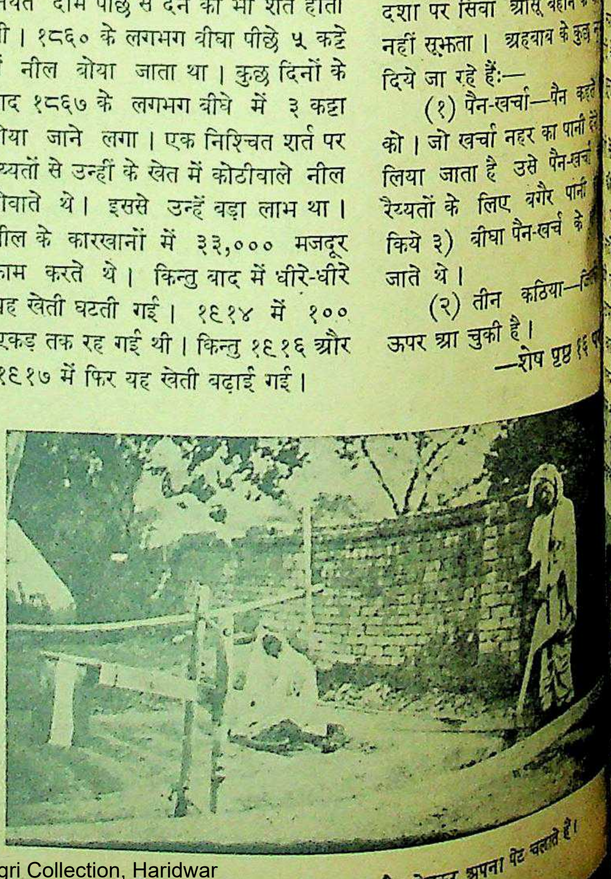

गाँव में करघा चलानेवाले कपड़े बुन और बेचकर अपना पेट चलाते हैं।

युद्ध के बाद योरोप और एशिया

क्या संसार सचमुच प्रजातन्त्र की ओर जा रहा है?

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

संसार-व्यापी युद्ध समाप्त हो गया, इससे यह आशा की जाती है कि शांति और सुव्यवस्था का साम्राज्य स्थापित होगा किंतु इस समय महान् राष्ट्रों में योरोप और एशिया में जनतंत्र के प्रश्न को लेकर जो चखचख मची हुई है, उसका भविस्य क्या तीसरा महायुद्ध तो नहीं होगा? विद्वान् लेखक ने इस लेख में संसार में उत्पन्न वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर सुंदर प्रकाश डाला है। लेख पठनीय तथा विचारणीय है।

ब्रिटिश मजदूर सरकार के प्रधान मंत्री मेजर एटली अब क्या सोच रहे हैं।

स्थापित हो गई है। सोवियट गवर्नमेन्ट फ्रांको गवर्नमेन्ट को उखाड़ फेंकने की हर एक अभिसन्धि में सम्मिलित है। टैंजियर स्पेन को खाली करना पड़ा है और भूमध्य सागर के पश्चिमी द्वार के इस प्रहरी के नियन्त्रण में रूस भी अब सम्मिलित कर दिया गया है। तीन बड़े या चार राष्ट्रों ने यद्यपि घोषणा की है कि हर एक देश अपनी जनता की स्वाधीन इच्छा के अनुसार शासित होगा और मित्रराष्ट्र अपनी प्रणाली या अपनी इच्छा उन पर न लादेंगे। पर वह स्पेन के साथ यह नियम लागू करने को तैयार नहीं है। फ्रांको डिक्टेटर है और धुरीराष्ट्रों का मित्र है, इसे रूस और उसके मित्र भूले नहीं हैं। इस कारण स्पेन में विद्रोह कराने के प्रयत्न बराबर हो रहे हैं। स्पेनियार्डों को उकसाया जा रहा है। पर यह भुला दिया जाता है कि रूस में भी जनतन्त्र नहीं है। स्टालिनशाही का बोलबाला है। स्टालिन की आलोचना करनेवाला जिनोवाफ और ट्राटस्की के पथ का पथिक होगा। स्पेन में इस रक्तपात से बचने के लिए राजतन्त्र की स्थापना का उद्योग हो रहा है।

जनतन्त्र क्या है?

मास्को, वाशिंगटन और लन्दन की जनतन्त्र की परिभाषायें अलग-अलग हैं। मास्को जब जनतन्त्र की स्थापना की बात कहता है, तब उसका अर्थ सोवियट रूस के ढंग का शासन स्थापित करना होता है। पर लन्दन और वाशिंगटन में जनतन्त्र का अर्थ उससे सर्वथा भिन्न है। मि० एटली ने जनतन्त्र की परिभाषा की है—बहुमत का शासन, अल्पमत के प्रति सहिष्णुता और उसके विचारों का ख्याल रखते हुए। रूस में एक पार्टी का शासन है। वहाँ आलोचना और विरोध का स्थान ही नहीं। जर्मनी में किस ढंग का शासन स्थापित किया जाय, इसे चारों राष्ट्र निश्चय ही नहीं कर सके हैं। हर एक राष्ट्र अपने-अपने विभाग में अपने अपने ढंग की गवर्नमेन्ट स्थापित कर रहा है। सोवियट पद्धति और पश्चिमी जनतन्त्र पद्धति के बीच अन्दर ही अन्दर संघर्ष चल रहा है। यह संघर्ष और दृष्टिकोण का अन्तर मध्य यूरोप और बाल्कन सोवियट-द्वारा और उसके आशीर्वाद और संरक्षण में स्थापित गवर्नमेन्ट के प्रति उनको स्वीकार करने का प्रश्न आने पर स्पष्ट हो गया है। आस्ट्रिया की रेनर गवर्नमेन्ट को लन्दन और वाशिंगटन ने मान लिया है, पर कुछ शर्तों के साथ। बल्गेरिया में चुनाव रोक दिया गया, क्योंकि वहाँ की गवर्नमेन्ट पूर्ण रूप से सब दलों का प्रतिनिधित्व नहीं करती थी। ग्रीस के चुनाव की देख-रेख करने से रूस ने इनकार कर दिया है।

बाल्कन राष्ट्र

बाल्कन राष्ट्रों में से रूमानिया, बल्गेरिया, यूगोस्लेविया और हंगरी रूसी प्रभावक्षेत्र में हैं और ग्रीस ब्रिटिश प्रभावक्षेत्र में है। फिनलैंड को अपने देश का एक बड़ा भाग वैज्ञानिक सीमा की खोज में रूस को देना पड़ा है। तीन बाल्टिक राष्ट्रों का जिक्र तक कहीं नहीं किया गया और रूस ने उनको आक्रमण करके डकार तक नहीं ली। बाल्टिक समुद्र रूस की झील हो गया और स्टेटिन तक उसका प्रभाव फैल गया है।

यूगोस्लेविया और प्रदेश पाने के लिए प्रयत्नशील है और पीटर का सिंहासन-त्याग अनिवार्य मालूम होता है। यूगोस्लेविया संघ के अन्दर मैसीगोनिया का एक अलग स्वतन्त्र राज्य मार्शल टीटो स्टालिन के आशीष से स्थापित करना चाहते हैं। ग्रीस में मैसेडोनिया का कुछ भाग है। उसे यूगोस्लेविया चाहता है। पर ग्रीस तैयार नहीं है। क्योंकि ईजियन सागर का सैलोनिका बन्दरगाह इस कारण उससे छिन जायगा। ब्रिटेन भी यह नहीं चाहता। इटली ट्रीस्ट को अन्तर्राष्ट्रीय बन्दरगाह बनाने को तैयार है, पर फ़्यूक को नहीं। मगर यूगोस्लेविया की दोनों पर दृष्टि है।

रूस सशंक!

जर्मनी से अलग आस्ट्रिया का राज्य रूस के संरक्षण में स्थापित हो गया है। जर्मनों के हृदय में अस्ट्रिया का अलगाव सदा शूल के समान चुभता रहेगा। जर्मनी में पाकिस्तान की रचना करना है। रूस को प्रसन्न करने के लिए पोलैण्ड को अपना प्रदेश छोड़ना पड़ा है, पर उसकी भर पाई जर्मनों के प्रदेश से कर दी गई है। बेल्जियम अपने राजा को वापस आने देने को तैयार नहीं है, और फ्रांस अभी तक अपनी शासन-प्रणाली का निश्चय नहीं कर सका है। योरोप के पश्चिमी राष्ट्रों का, जिसमें स्केण्डीनेविया भी है—पश्चिमी ब्लाक के नाम से ब्रिटेन और फ्रांस एक संघ बना रहे हैं। रूस इसको अपने विरुद्ध घेरा डालने का उपक्रम समझता है और वह सशंक हो उठा है। पोट्सडाम कान्फरेंस के निर्णयों से उसी प्रकार का असन्तोष उत्पन्न हुआ है, जैसा वर्साई-संधि-द्वारा हुआ था। बड़े राष्ट्र समझौता और मेल करानेवाले न होकर डिक्टेटर हो गये हैं।

यूरोप के देशों की सीमा के निश्चय और आबादी के स्थानान्तरित करने का प्रश्न है, क्योंकि मध्य योरोप के कुछ राष्ट्र जर्मनों को अपने देश में नहीं रहने देना चाहते। सुरेडन की पुनरावृत्ति वे नहीं चाहते। जर्मनी के सम्बन्ध में अभी अनेक प्रश्नों को तय करना शेष है।

जल-मार्गों का नियंत्रण

संयुक्तराष्ट्र के प्रेजीडेण्ट डेन्यूब, राइन, कील नहर (जर्मनी) डार्डेनल की समुद्रधुरी को अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण में लाने के पक्ष में हैं। यह रूस को प्रसन्न करने के लिए है। पर स्वेज, पनामा नहर, माल्टा, जिब्राल्टर, अदन, सिंगापुर, मैडागास्कर आदि सामरिक महत्त्व के जलमार्गों और द्वीपों के बारे में प्रेजीडेण्ट ट्रूमन मौन हैं। मगर रूस ने स्वेज के नियन्त्रण में अपना भाग माँगा है। इन प्रश्नों के अतिरक्त, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, सरकार की बाधायें, विनिमय और मुद्रा, विश्व के कच्चे माल तक पहुँच, शस्त्रास्त्रों के उत्पादन पर नियन्त्रण, विश्व-शान्ति की सुरक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय सभा की स्थापना ये और प्रश्न हैं, जिनको अभी स्पर्श तक नहीं किया गया है। लड़ाई लड़ना सरल है, पर शान्ति स्थापित करना बहुत कठिन है।

भूमध्य सागर

भूमध्य सागर ब्रिटिश साम्राज्य की श्वास-नालिका है। इटली ने इसको अपनी झील बनाना चाहा था, अतः ब्रिटेन इटली का विरोधी हो गया। इटली आज

पोलैंड के जनरल सिकोरस्की।

बेल्जियम के किंग लियोपोल्ड।

यूगोस्लाविया के किंग पीटर।

ग्रीस के किंग जार्ज।

चेकोस्लाविकिया के डाक्टर बैनेटा।

पराजित राष्ट्र है। इँगलैंड समझता था कि इटली की शक्ति के अन्त के साथ भूमध्य पर उसका एकछत्र अधिकार हो जायगा। पर रूस उसका प्रतिद्वन्द्वी बनकर सामने आया है। रूस आज भूमध्य सागर का भाग ही नहीं चाहता, बल्कि उस पर नियन्त्रण भी चाहता है। इस कारण लीबिया और ट्रिपोलीटाना और इरीट्रिया, इटली के अफ्रीकन उपनिवेशों का ट्रस्टीशिप अपने पास चाहता है। ब्रिटेन तैयार नहीं है। वह इनको अन्तर्राष्ट्रीय शासन में रखना चाहता है, जिससे भूमध्य सागर और लाल सागर के तट पर उसका कोई प्रतियोगी राष्ट्र न रहे। रूस डार्डेनल समुद्रधुरी पर ही नियन्त्रण नहीं चाहता पर तुर्की के दो प्रान्त भी चाहता है। रूस की इस नीति और लालसा से ब्रिटेन सशंक हो उठा है और बहुत व्यग्र है। उसकी शान्ति जर्मनी के बमों ने जितनी नहीं खोई थी उससे ज्यादा रूस की इस माँग ने अपहरण कर ली है।

सीरिया से चीन तक—

तीनों बड़े राष्ट्रों का एशिया के अन्दर सीरिया और लेबनान से लेकर चीन के अन्त तक बड़ा स्वार्थ निहित है। मध्ययोरोप का मेल और कच्चा माल रूस, अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस इन चारों राष्ट्रों को ललचाये हुए है। दूसरे सामरिक दृष्टि से एशिया और यूरोप के मध्य में होने से इनका महत्त्व है और इस कारण हर एक राष्ट्र अपना अपना प्रभाव-क्षेत्र और नियंत्रण स्थापित करने में प्रयत्नशील है। अरब देशों—सौदी, अरेबिया, मोसल, इराक से आनेवाले तेल का सीरिया और लेबनान बड़े डीपो बननेवाले हैं। तीनों राष्ट्र सहयोग और प्रतियोगिता द्वारा यह तेल पाने के लिए प्रयत्नशील हैं। क्योंकि यह उनके व्यापार और सम्राज्यवाद का जीवन रक्त है।

अरब-संघ

पर अरब भी जागा है। उसने अपनी रक्षा की भावना से अरबसंघ की स्थापना की है। यह बड़े राष्ट्रों की नीति और दाँवपेंच के सामने टिक सकेगा यह सन्दिग्ध है। मि० ईडन के आशीर्वाद से बना यह शिथिल बन्धु-संघ शक्तिशाली साम्राज्य का सामना कर सकेगा यह विश्वास नहीं होता। फिलस्तीन के भाग्य का फैसला हो गया। प्रेज़ीडेण्ट ट्रूमन ने एक लाख यहूदियों को वहाँ बसाने के लिए ब्रिटेन को लिखा है। अमरीका की आर्थिक मदद का इच्छुक ब्रिटेन अमरीका की इस इच्छा की अवहेलना नहीं कर सकता और फिलस्तीन में उठा विद्रोह और उत्पन्न अशान्ति फौज के जरिये दबा दी जायगी। यहूदी अन्तराष्ट्रीय यहूदी संगठन के बल पर फिलस्तीन से अरबों को निकाल देंगे या लकड़हारा और घसियारा बना देंगे। पर एशियाई मुसलमानों और अरबों के लिए फिलस्तीन का प्रश्न महत्त्वपूर्ण है। सामरिक और व्यवसायिक कारणों से पूर्वीय भूमध्य सागर महत्त्वपूर्ण है और एँग्लो-अमरीकी साम्राज्य इसमें रूस को कुछ हिस्सा देकर भी फौज के सहारे अपने पास रखेगा। अरब राष्ट्र निःसहाय और निर्बल है। भारत इनकी मदद कर सकता था। पर भारत आज स्वतः पराधीन है। भारतीय स्वाधीनता में विश्व की स्वतन्त्रता निहित है, यह जब कहा जाता है, तब उसका क्या अर्थ होता है, यह इससे स्पष्ट हो जायगा।

मिस्र

मिस्र ने स्वेज़ नहर वापस करने और ब्रिटिश सेना को वापस बुलाने की माँग की है। न्याय और औचित्य मिस्र के साथ हैं। पर उसकी भौगोलिक सामरिक स्थिति, अलेक्ज़ेंड्रिया और पोर्टसय्यद के बन्दरगाह इसमें बाधक हैं। ब्रिटेन इसका काम तय करने को तैयार नहीं है। स्वेज की नहर की रक्षा-भार अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन को देने को वह तैयार न होगा। मिस्र, सूडान अदन में मिला देने की माँग कर रहा है। सूडान पर कभी मिस्र का प्रभुत्व था और उसकी विजय का खर्च मिस्र ने दिया था, जिस प्रकार भारत ने हांग कांग, बोर्नियो, बर्मा और सीलोन की विजय का खर्च दिया है। मिस्र को भय है कि यदि सूडान स्वाधीन हो गया, तो उसको नाइल नदी का पानी न मिलेगा और वह भूखा मरेगा। इसलिए वह सूडानी स्वाधीनता का समर्थक नहीं है।

तेल

सौदी अरेबिया के पास प्रचुर मात्रा में तेलक्षेत्र है और इब्नसूद अमरीका को रियायत दे रहा है। इराक और ईरान में भी तेल है। यह उनके सौभाग्य या दुर्भाग्य का निर्णय करेगा। इराक ने स्वाधीनता की माँग की है। ईरान में रूसी और ब्रिटिश सेनायें पड़ी हुई हैं। दोनों ने सेनायें हटाना मानकर भी अभी तक हटाई नहीं हैं। मंचूरिया से रूसी फौजें हटने लगी हैं, पर ईरान से नहीं। उत्तरीय ईरान का तेल उसको ललचा रहा है। रूस पर्शियन खाड़ी में जाने का मार्ग चाहता है। ईरान इसको अपनी स्वाधीनता के लिए एक भयानक खतरा मानता है।

लन्दन से जिब्राल्टर, जिब्राल्टर से स्वेज, स्वेज से अदन, पर्शियन खाड़ी से बम्बई और सिंगापुर से मेलबोर्न तक ब्रिटिश साम्राज्य का स्वार्थ सर्वोपरि है। मित्रराष्ट्र आदि अपने झगड़ों का तस्फिया शान्ति से नहीं करते तो इन प्रदेशों में प्रभाव-क्षेत्रों के सम्बन्ध में झगड़ा होना स्वाभाविक है। धुरीराष्ट्रों की पराजय से युद्धों, साम्राज्यविस्तार की तृष्णा और व्यापारिक प्रतियोगिता का अन्त न होगा।

तुर्की

तुर्की अधिकतर एशियाई देश है। दो करोड़ की आबादी है और देश के विकास की जरूरत है। बस्ती बसाने का वहाँ बहुत क्षेत्र है। पर तुर्क कालासागर और भूमध्य सागर दोनों जगह रूस से भयभीत है। डार्डेनल और बासफोरस का वह नियन्त्रण अन्तर्राष्ट्रीय चाहता है। इस युद्ध ने रूस को एक अजेय और शक्तिशाली राष्ट्र बना दिया है और ब्रिटिश साम्राज्य का एशिया में पड़ोसी बना दिया है। दोनों का यह सम्पर्क मानव-समाज के लिए मंगल के लिए होगा या अमंगल के लिए यह भविष्य बतायेगा। स्वाधीन भारत इस स्थिति में महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा कर सकता था। पर इसकी अभी आशा नहीं।

चीन

एशिया के दो बड़े देश चीन और भारत हैं। भारत के बारे में हम यहाँ विशेष कुछ नहीं कहना चाहते, इसके विषय में स्वतन्त्र रूप से अलग विचार करना ही ठीक होगा। शेष रहा चीन। चीन और रूस के बीच सन्धि हो गई है। पोर्टआर्थर उसको मिल गया है और मंचूरिया रेलवे भी उसने प्राप्त कर ली है। कोरिया की स्वाधीनता का वचन दिया जा चुका है। पर कोरिया को संरक्षण और आर्थिक पुनःस्थापन की आवश्यकता होगी।

मांचू चीन के गुरखा हैं और मांचू राजवंश ने चीन पर राज्य भी किया है। पर मंचूरिया में अधिक आबादी चीनियों की है। चीनी जापानी का मुख भी अपने देश में देखना नहीं चाहते। ४० लाख जापानियों को चीन छोड़ना होगा, पर इसमें बहुत समय लगेगा। हांग-कांग ब्रिटेन छोड़ने को तैयार नहीं है। शंघाई और तिनसिन का अन्तर्राष्ट्रीय बस्तियों का प्रश्न भी आगे विचाराधीन है।

चांगकाई शेक की कम्युनिस्ट पार्टी के बीच मेल कराने की कोशिश हो रही है। पर इन दोनों में आज होता हुआ मेल क्या पश्चिमी राष्ट्र होने देंगे? वे क्या इस या उस पार्टी का पक्ष लेकर चीन को अपना शिकार न बनायेंगे? रूस का बल चीन के साथ है। इस कारण सम्भव है चीन को शान्ति-लाभ हो। यूरोपियन राष्ट्रों को चीन से निकालने में रूस यदि सहायक हुआ तो एशिया के लिए यह अच्छा ही होगा। सोवियत-चीन पैक्ट से यही आशा की जाती है।

हिन्दचीन

हिन्दचीन में अनामी जनों ने स्वाधीनता का झंडा फहराया है। जेलों से निकलकर नजरबन्द फ्रेंचों ने अपना राज्य स्थापित करने का उद्योग किया है। १९४० में गिरा हुआ फ्रेंच साम्राज्यवाद पुनः अपना सिर उठा रहा है। हिन्द-चीन स्वतन्त्रता की गारन्टी फ्रांस से नहीं संयुक्तराष्ट्र संघ से चाहता है। जापानी फौजों की सहायता से ब्रिटिश फौजों ने फ्रेंच साम्राज्य की पुनः स्थापना के लिए आज शान्ति कायम कर दी है। पर यह शान्ति अस्थायी है।

इण्डोनेशिया

जावा-सुमात्रा श्याम और अनाम के समान बृहत्तर भारत का एक अंग है। इस कारण इण्डोनेशिया की स्वाधीनता के प्रति उसकी गहरी सहानुभूति है। डच सेना को उन्होंने उभरने नहीं दिया है और संजोग, बटेविया और सुरबाया पर ब्रिटिश फौजों ने ही अधिकार किया है। इण्डोनेशिया की स्वाधीनता के प्रति आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड ने भी दिलचस्पी दिखाई है। नीदरलैण्ड ईस्ट इण्डीज डचों को वापस न मिलेगा, मगर यह आज विश्वास से नहीं कहा जा सकता। जावा का टीन और इस प्रदेश का तेल अमरीका और ब्रिटेन चाहते हैं। रूस भी यदि इन प्रदेशों के ट्रस्टी शिप में शामिल हो तो कुछ अश्चर्य नहीं। सीरिया से भारत, भारत से चीन और आस्ट्रेलिया तक अब अकेला ब्रिटेन का प्रभुत्व नहीं रहा है; उसके प्रभुत्व और उसकी शक्ति को चुनौती देनेवाली और दो महान् शक्तियाँ रूस और संयुक्तराष्ट्र अमरीका उत्पन्न हो गई हैं। मेजर एटली ने लगभग पाँच साल तक मि० चर्चिल के चरणों में बैठकर साम्राज्यवाद की दीक्षा ली है और वे मि० चर्चिल के समान ब्रिटेन के प्रथम मंत्री साम्राज्य को छिन्न-भिन्न करने के लिए नहीं बने हैं। इसलिए एलेप्पो से लेकर मेलबोर्न तक तीन विशाल साम्राज्यों की महान् टक्कर होगी और इस टक्कर की गूँज से विश्व की शान्ति भंग हो जायगी।

भारत और अफ्रीका

आग्नेय एशिया के समान और विशेषतः पूर्वीय अफ्रीका और महासागर की लहरों से प्रक्षालित से भारत का सम्बन्ध अति प्राचीन मनुष्य की आदिम बस्ती बसाने के है। व्यापार-द्वारा ही नहीं अपितु बसाकर भी भारत ने अब तक कायम रखा है। अतः अफ्रीका के से भारत का भाग्य-सूत्र बँधा यूरोपियन राष्ट्रवर्ण-विद्वेष से अमरीका नीग्रो-समस्या को अभी नहीं कर सका है। सान फ्रांसिस्को वर्ण-भेद को अमरीकन अमरीकन नीग्रो के भेद को असमर्थ रही। भारत के जाति-भेद यह वर्ण-भेद की समस्या अधिक है। अफ्रीका नीग्रो लोगों का देश पराधीन है। यूरोपियनों ने इसको चरागाह बना रखा है। पर रूस दलितों के प्रति सहानुभूति दिखा अपने साम्राज्य का विस्तार पद-दलित जातियों की सहानुभूति के कर रहा है। रूस चीन और शक्ति यदि एक हो सके, तो शान्ति स्थापित हो सकती है, त्रिमूर्ति, समानता, स्वाधीनता और के लिए सफल उद्योग कर सकती आज कैरो से केप तक ब्रिटिश अबाधित रूप से प्रस्थापित है। और नीग्रों को नागरिकता के भी प्राप्त नहीं हैं। नीग्रों के रक्त से लिए अफ्रीका में स्वर्ग बनाया और सम्भवतः अगले बीस जारी रहे। अफ्रीका को अन्त शिप के नीचे रखने को होगा, यह विश्वास नहीं किया युद्ध समाप्त हो जाने के दो अफ्रीका और नीग्रो लोगों की दूर दिखाई देती है।

एटम बम

एटम बम का रहस्य छोटे छोटे मास या साल भर बाद जान जायेंगे। अब रूस से तुर्की जितना भयभीत रूस भी तुर्की से उतना ही भयभीत इँग्लैण्ड की आबादी का [illegible] में केन्द्रित है और एक एटम बम को नागासाकी में बदल सकता है। आरनाल्ड ने गर्व से कहा है कि मील दूर बैठे रहकर ही संयुक्त और यूरोप पर बम-वर्षा कर सकेंगे मरण और विनाश-भीति अन्तर्राष्ट्रीय संघ को दृढ बनाने स्थापित करने की बुद्धि देगी, नहीं की जा सकती। साम्राज्य मर्दन हो जावेंगे और घाव यह विश्वास नहीं होता। विजयी कमजोर राष्ट्रों का शोषण और बनाने की योजनायें बना रहे हैं। परिषद् की असफलता यही रही है। जनरल मैक आर्थर की कि नवीन विश्वासों और नूतन साथ नवीन विश्व का जन्म हो स्वाधीनता, सहिष्णुता और स्थापना के लिए जीयेगा दो मासों ने ही बता दिया है कि मिल गई है। फिर अब किस मानव विश्वास करें कि युद्ध का होकर शान्ति स्थापित होगी।

यदि ऐसा होता तो—

लेखक, श्री गंगाधर इंदूरकर 'साहित्यरत्न' (पत्रकार)

'भिक्षां देहि' की परिपाटी पौराणिक काल से चली आती है। पौराणिक कथाओं में इसके अनेक उदाहरण पाये जाते हैं। इस कहानी में 'भिक्षां देहि' की तीन पौराणिक आख्यायिकाओं को चित्रित किया गया है, जो व्यंग्यात्मक, रोचक पठनीय तथा सुन्दर हैं।

"जी हाँ"—हरिश्चन्द्र ने कहा।

"फिर अपना वह वचन सच करोगे या नहीं, या स्वप्न के महल स्वप्न में ही रहेंगे ?"

हरिश्चन्द्र बोले, "बाबा जी ! स्वप्न का वचन भी सृष्टि में पूरा करने का मेरा निश्चय है। यद्यपि आपने शठ नीति का अवलम्बन कर मुझे ठगना चाहा है फिर भी 'शठं प्रति सत्यम्' यही मेरा व्रत है। कौन है रे उधर। कमंडल में जल ले आ।" सेवक कमंडल में जल ले आया। उसके पीछे पीछे चतुर रानी तारामती आई। अपने पति की दान-मूर्खता उसे अच्छी तरह मालूम थी। अतः उसे दाल में काला होने का सन्देह हो गया था। उसने पूछा, महाराज यह जल किस लिए मँगाया गया है ?"

"देवि ! स्वप्न में इस ऋषि को राज्य देने का मैंने वचन दिया है। वही पूरा कर रहा हूँ।" राजा ने कहा।

तारामती हँसी रोक न सकी। "स्वप्न के वचन स्वप्न में ही पूरे करने चाहिएँ। स्वप्न की बातों की पूर्ति यदि सत्य सृष्टि में करने लगें तो अनर्थ ही हो जायगा। मैंने इस गोसाईं को स्वप्न में मरा हुआ देखा है। अतः पहले चिता बनाकर इसका शव उस पर रखवा दीजिये।" रानी बोली।

"ठीक है। कौन है रे उधर। श्मशान में जाकर एक चिता तैयार करो और इन मुनि महाराज की ठाट-बाट से प्रेतयात्रा निकालने की तैयारी कराओ। मुनिराज, देवी जी का देखा हुआ स्वप्न पहले सत्य सृष्टि में ले आएये फिर मेरा—इस प्रकार कहते हुए राजा ने विश्वामित्र ऋषि की ओर दृष्टि डाली। किन्तु मुनिराज डर कर कभी के नौ दो ग्यारह हो गये थे। जब मुनि नगर की सीमा पर पहुँचे तब उनके शिष्यों ने पूछा, 'गुरुदेव ! दाल गली नहीं मालूम होती। राज्य का दान लेना छोड़कर ऐसे भाग क्यों रहे हैं ?'

विश्वामित्र ने कहा—"मेरा शस्त्र मुझ पर ही चलाया गया। वह राजा तो सीधा था किन्तु उसकी स्त्री ने सब गुड़ गोबर कर दिया। स्त्रियों के कारण ऐसे ही अनर्थ हमेशा होते हैं।"

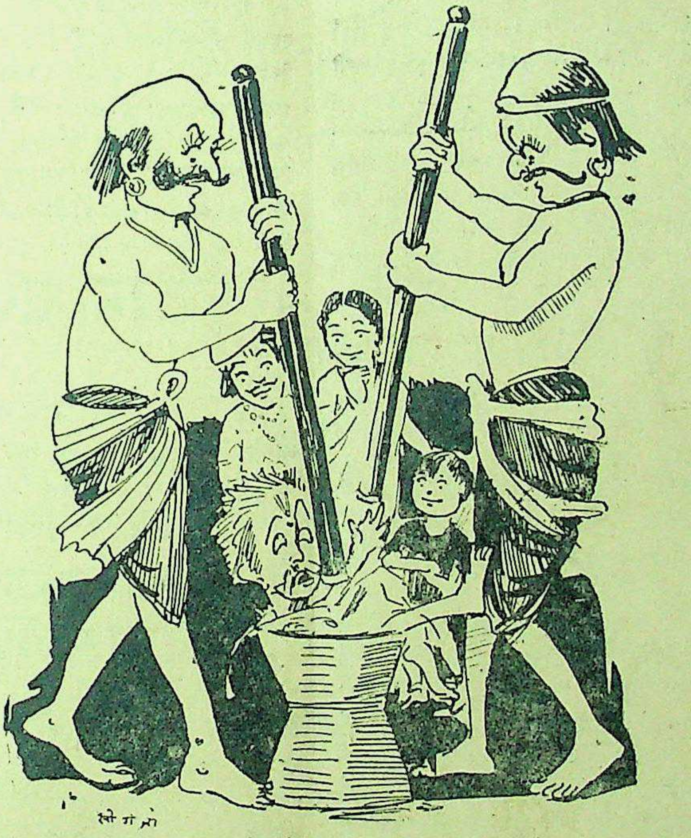

रानी ने कहा—"इसको उखली में रखकर मुसली से काँड़ो।"

* * *

दुर्वासा ऋषि भी इसी प्रकार एक मस्त और ललचाया हुआ अतिथि था। राजा अम्बरीष को उसने नरसिंहावतार दिखाने का जोग लगाया था। किन्तु वहाँ उसकी दाल न गली बल्कि उसके पीछे सुदर्शन चक्र लग गया। किन्तु पांडवों के आश्रम में उनका सत्य देखने के ब्याज से इन महाशय को वहाँ कितना तङ्ग किया गया यह सब जानते ही हैं। मेरे विचार से यह कहानी ऐसी होनी चाहिए थी—

पांडवों के वनवास का समय था। रात हो चुकी थी। चारों ओर अन्धकार तथा रात्रि-कीटकों का साम्राज्य था। आश्रम में पाँचों भाई तथा द्रौपदी ने जमीन पर घास बिछाकर उस पर अपनी देह फैला दी थी। बीच बीच में भीमसेन के घूरने की भीषण ध्वनि से चौपाए घबरा रहे थे। ऐसे समय आश्रम का दरवाजा खटखटाया गया। द्रौपदी की नींद टूटने के कारण उसने भीतर से ही कौन है, ऐसा प्रश्न किया। कौन है, यह निश्चय किये बगैर दरवाजा खोलना धोखे का काम था। क्योंकि कोई राक्षस या हिंस्र पशु भी हो सकता था।

"मैं अतिथि हूँ", बाहर से आवाज आई। अतिथि का नाम सुनते ही धर्मराज की नींद टूटी। अतिथि ! ऐसे भयानक जङ्गल में, ऐसे भीषण समय में अपनी चरणरज छोड़कर और हमसे आतिथ्य ग्रहण कर, हमें धन्य बनानेवाला यह कौन महापुरुष है द्रौपदी ! जल्दी दरवाजा खोलो।"

धर्मराज की निरन्तर की इस सहानुभूति पर कुड़मुड़ाती हुई द्रौपदी ने दरवाजा खोला। दियाली के मन्द प्रकाश में ऋषि दुर्वासा की अङ्गार की तरह आँखें और वह भूरी उग्र दाढ़ी देख कर मुनिराज के क्रोधित होने का धर्मराज को संदेह हुआ। धर्म को धमकाते हुए दुर्वासा ने कहा—"धर्म ! मैं तथा मेरे दस हजार शिष्य भूख से व्याकुल हो रहे हैं। हमें तुरन्त खाना परोसने का इन्तजाम करो।"

धर्मराज तथा द्रौपदी घबरा उठे। सूर्य-स्थाली रात के समय काम नहीं देती, यह जानकर ही दुर्वासा ने यह अवसर पाया है, इसे वह जान गये। आप नदी पर जाकर नहा आइये। बिना नहाये ब्राह्मणों को हम भोजन नहीं देते, ऐसा कह कर उनको उस समय तो रास्ता बता दिया गया। द्रौपदी कृष्ण की प्रार्थना करने लगी और धर्म ने भीम को जगाकर संकट बताया। दुर्वासा तथा उनके शिष्यों ने घड़ी भर इधर-उधर समय बिताया। ऐसी ठण्ढक के समय कौन नहा सकता है ? थोड़ी ही देर में लौटकर आश्रम के दरवाजे पर 'हर हर महादेव' की घोषणा हुई। भीम ने पूछा, "यह डढ़ियलों का काफला इधर कहाँ से आया ?"

इस प्रकार बेअदबी से न बोलने का भीम को उपदेश देकर धर्मराज ने उसे सब कहानी बताई।

"बस, बातें बन्द करो। अभी हम सबको पेट भर भोजन दो अन्यथा शापाग्नि में तुम्हें खाक कर डालूँगा।" दुर्वासा ने क्रोध से कहा।

"वाह ! मुनि जी। फिर वह शापाग्नि हमें आग सुलगाने के लिए क्यों नहीं देते ? क्योंकि इस समय आश्रम में दो अंगारे भी नहीं हैं।" भीम ने हँसकर कहा।

ठंढक से ठिठुरता हुआ एक शिष्य ऋषि के पास आकर बोला, "हु हु हु हु। गुरू जी ! बड़ी ठंढ लग रही है। जरा अपनी शापाग्नि की अँगीठी में हमें हाथ-पैर सेंक लेने दीजिए।" सिर पर एक चपत लगाकर उसे चुप कराकर दुर्वासा ने एक बार धर्म को और धमकाया।

अब भीम से न रहा गया। भीतर जाकर कोने में रखी हुई अपनी गदा वह बाहर लाया। उसे चार-पाँच बार घुमाकर उसने दुर्वासा से कहा, "तुमको थोड़ा-बहुत व्यावहारिक ज्ञान है या नहीं। रात में दूसरों की नींद में खलल डालकर भकोसना चाहते

हो ! शरम नहीं आती रुको । अभी तुम्हारे गुरु के साथ तुम सबको मुष्टिमोदक की दावत देता हूँ। द्रौपदी ! तू भी वह अपनी झाड़ू लेकर इधर आ। इन सब लफंगों तथा मुफ़्तखोरों को यहाँ से निकाल बाहर करें।"

भीम का वह उग्र स्वरूप देख कर सब शिष्य नौ दो ग्यारह हो गये। दुर्वासा अकेले ही वहाँ रहे। भीम से डरकर उन्होंने कहा, "अरे। यह सब मजाक था। हम सचमुच भोजन नहीं चाहते थे। केवल तुम्हारा सत्य देखना चाहते थे।"

"तो फिर हमें आशीर्वाद दीजिये तो भी हम आपको आश्रम में रख लेंगे। आपके सब शिष्य भाग गये हैं और यदि आप अकेले बाहर रहे तो रात के समय आपके द्वारा हमारे सत्य देखे जाने की जगह भेड़िये सियार ही आपके शरीर में का सत्य देखेंगे।" धर्म ने कहा।

*　　*　　*

आतिथ्य करने में हम लोग इतने प्रगतिशील हैं कि वे किसी अमंगल और क्रूर भिखारी की जीभ का स्वाद पूरा करने के लिए अपने खास लड़के को संकट में छोड़ देंगे। पत्नी को विचित्र संकट में छोड़कर उसकी साड़ी भिखारिन को देनेवाले तुकाराम और साहूकार के पास पत्नी रेहन रखकर गोसाइयों की जमात का पेट पालनेवाले कबीर की तरह पागल पीर संसार में दूसरी जगह न मिलेंगे। इस अव्यवस्थित तथा विपरीत मनोवृत्ति का उद्गम श्रियाल कथा की तरह निन्दनीय कथाओं के सुनने से पंगु बनी हुई हमारी मनोवृत्ति में खोजना पड़ेगा। मैं यदि श्रियाल कथा का रचयिता होता तो वह इस प्रकार लिखी जाती।

श्रियाल नगरी में श्रियाल नाम का मूर्ख राजा राज्य करता था। उसकी दान-मूर्खता से लाभ उठाकर अनेक आलसी, नसेड़ी तथा लुच्चों ने वहाँ हमेशा के लिए बसेरा डाला था। अध्ययन तथा व्यवसाय के बिना पेट पालना संभव होने के कारण नगर विद्यालय खाली हो गये और व्यवसाय डूब गये। फिर भी याचकों की जमातों से मिलनेवाले मीठे मीठे आशीर्वादों के सामने श्रियाल ने अपने नगर की बढ़ती हुई, दुर्दशा की ओर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन सर्वांग में कुष्ठ हुआ, साल भर में भी न नहानेवाला नाक-आँख से दुर्गन्ध बहानेवाला एक गुसाईं 'अलक' 'भलक' नगर के मार्ग से जा रहा था। उसे देखकर और भिखारी स्वयं रास्ता कर देते। उस भिखारी ने तुरन्त राजमहल का मार्ग पकड़ा। महल के दरवाजे पर सैकड़ों प्रजाजन अपनी-अपनी शिकायतें राजा से कहने के लिए जमा हुए थे। उन्हें महल में जाने की मनाही थी। किन्तु याचकों को हर समय प्रवेश मिलता था।

उस वैरागी ने अपनी दुर्गन्धि के बल पर राजा के अन्तःपुर में प्रवेश किया। भिखारी जितना ही अधिक अव्यवस्थित था उतनी ही उसमें अधिक दैवी शक्ति राजा को दिखाई देती थी।

"आइये मुनिराज। मंगल स्नान की तैयारी है। स्नान होते ही भोजन तैयार है।" राजा ने प्रार्थना की।

"मंगल स्नान। इस शरीर ने अपनी याददाश्त में केवल एक ही बार स्नान किया है और वह भी आश्रय का स्थान न प्राप्त होने से वर्षा होने के समय। मुझे पहले भोजन चाहिए।" गुसाईं ने कहा।

"अहा हा क्या यह दिव्य तेज ! ऐसे महात्माओं का मन ही इतना शुद्ध होता है कि उन्हें बाह्य स्नान की आवश्यकता ही नहीं रहती।" इस प्रकार कहकर राजा ने अपनी रानी चांगुणा और लड़का चिलया को आवाज दी। वे माँ-बेटे दौड़ते ही आये। और उस तेजस्वी मूर्ति को उन्होंने साष्टांग प्रणाम किया। राजा की आज्ञा के अनुसार चांगुणा ने पंचपक्वान्न की थाली अतिथि देव के लिए तुरन्त तैयार की। राजमहल में अतिथियों का आवागमन हमेशा ही होने के कारण भोजन सतत तैयार रहता था।

फिर भी गोसाईं को वैसा भोजन नहीं चाहिए था। चिलया को देखकर उसके मुँह में पानी आ गया था। उसने कहा, "राजन्! ऐसा भोजन खाकर मैं अब ऊब गया हूँ। मैं चाहूँगा वे पदार्थ बिना क्रोध किये मुझे दोगे?"

"क्रोध किस बात का मुनिराज। अतिथि को प्रसन्न करने के लिए मैं अपना सिर देने के लिए हमेशा प्रस्तुत हूँ"। राजा ने कहा।

'शाबाश ! यजमान ऐसा ही होना चाहिए। किन्तु तेरे सिर से भी तुझे अधिक प्रिय वस्तु मैंने माँगी तो?"—गुसाईं बोला।

"कोई बात नहीं। उसे भी देकर मैं कृतार्थ हो जाऊँगा। माँगनेवाला चाहिए देनेवाला मैं हमेशा हाथ ऊपर करके खड़ा हूँ।"—राजा।

गुसाईं ने चांगुणा और चिलया इन दोनों की भी इसी प्रकार स्वीकृति ली और एक बड़ी भारी उखली और मुसली मँगवाई। फिर राजा और रानी से कहा, इस बालक चिलया को उखली में डालकर तुम दोनों मिलकर उसे काँड़ो और मुझे उसका मांस परोसो।

यह विचित्र माँग सुनकर राजा रुद्धकंठ हो उठा। उसने कहा—मेरे राज्य के एकमात्र वारिस का नाश न कीजिए। हमारा श्राद्ध करनेवाला उत्तराधिकारी बचा है। हमारी पारलौकिक गति का आश्वासन दीजिए, आदि प्रार्थनाओं से तथा रानी के क्रन्दन से वह अघोरी और भी ललचाया था। "पुत्र-मांस ! बस पुत्र-मांस ! वही दो। अन्यथा तेरी इस शूरता की कीर्ति में कालिख लगाकर तुझे रौरव नरक में भेजकर लौट जाऊँगा।" इस प्रकार वह धमकाने लगा। अपने पुत्र के बजाय स्वयं का या अपनी पत्नी का मांस राजा देने को तैयार हुआ किन्तु गुसाईं न मानता था। अन्त में राजा वह भयानक कर्म करने के लिए तैयार हुआ।

किन्तु रानी बिगड़ उठी। उसके संकेत करते ही तीन तालियाँ बजाते ही दो काले पहाड़ के समान विशालकाय दास वहाँ आये और प्रणाम करके अदब के साथ खड़े हुए।

दासों को देखते ही गोसाईं घबरा गया। वह वहाँ से नौ दो ग्यारह होने का विचार कर रहा था। किन्तु वे दास दरवाजा रोके खड़े थे। गोसाईं को दिखाकर रानी ने आज्ञा दी, "इसको उखली में रखकर मुसली से काँड़ो।"

"ठीक ठीक देवि, इसी नरमांस अधर्मी ने हमारे मिस्र देश में छोटे छोटे बालकों का सफाया करना शुरू किया था। मेरे नन्हें से बच्चे को भी इसी राक्षस ने पकाकर [illegible]! तो ले भी ! तू इसके पाँव पकड़ और मैं इसका झोंटा।" ऐसा कहकर एक दास ने उसे कसकर पकड़ा और दोनों ने मिलकर उसे उखली में डाल दिया।

एक प्रहार एक चीत्कार, और फिर एक प्रहार। वह बीभत्स दृश्य देखकर राजपरिवार बाहर सभागृह में आया। प्रधान ने पूछा "महाराज ! गोसाईं का क्या हुआ?"

राजा रानी ने एक दूसरे की ओर देखा और आँखें मटकाईं। "अजी प्रधान जी। वह शंकर का अवतार था, देखते देखते अन्तर्द्धान हो गया।"

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्वदेशी
नीलगिरि
नमूना मुफ्त
युकॅलिप्टस बाम
दर्द का मरहम

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बैंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज　विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत
BI-DIASTASE

भोजन को पचाने योग्य बनाकर बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा गले की जलन को दूर करता है।

बैंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

की वास्तविकता का आज दुरुपयोग क्यों ?

पुरुषों में पश्चिमी भावनाओं का व्यापक प्रभाव

लेखक, श्री रमाकान्त त्रिपाठी, बी० ए०, 'साहित्य-रत्न'

में पढ़ने को मिलता
लड़की ने प्रेम में सफल न
कारण अपनी जान दे दी,
के मजनू ने छुरा भोंक कर
ली या अमुक ने प्रेम के
बलिदान कर दिया। आखिर
क्यों होती हैं? प्रेम
वस्तु को बदनाम क्यों किया
लोग उससे भयभीत और
आत्महत्या क्यों करते हैं?
में यह है कि प्रेम के
को ही लोग नहीं समझ
का अर्थ अपने सुख, सुविधा
ही सीमित रह गया है।
को जिसमें मानव-हृदय
निखरता है, लोग भूल
चाही हुई वस्तु को न

कमला नेहरू स्मारक निधि
प्रयत्नशील हैं।

है—इसे सभी जानते
के भावी परिणाम और
न देकर लोग उसे छोड़
में कोई भी काम कर
नहीं होता। माना कि
वस्तु नहीं मिलती
स्वाभाविक है परन्तु हम यह
नहीं करते कि उसकी
कारण है? हम वास्तव में
अधिकारी न होंगे या हमारी
नहीं होगी। जो उस परीक्षा
कर्म में लगे रहते हैं वही
उन्नति प्राप्त करते हैं।
ही की बात है कि मेरे
प्रश्न किया था कि
बार प्रेम करने के बाद
प्रेम कर सकते हैं?
को जीवन में भुला

में दोनों बातें संभव
तक। मनुष्य पहले
जुड़ा रहना क्यों
इसलिए कि एक दूसरे

को समझ लेते हैं। भावनाओं का आदान-प्रदान दोनों के बीच हो जाता है। हम जिस व्यक्ति से प्रेम करने लगते हैं उसी को अन्य और अधिक सुन्दर व्यक्तियों की अपेक्षा महत्त्व क्यों देते हैं? इसलिए कि जिस पाठ को हम एक बार पढ़ चुकते हैं वही पाठ बार-बार फिर पढ़ने में मन नहीं लगता—यह एक स्वाभाविक बात है। हमारी आदतें, हमारा खान-पान, रहन-सहन, सबसे हमारा साथी भिन्न हो जाता है। बार बार इसी जानकारी को प्राप्त करने के लिए मनुष्य शक्ति व्यय नहीं करना चाहता। कर भी नहीं पाता। दूसरे प्रेम और स्नेह का तत्त्व तो प्राकृतिक, ईश्वर-प्रदत्त होता है। एक पशु—कुत्ता भी किसी के भाव को समझने में समर्थ होता है—देखकर ही पूँछ हिलाने लगता है। वह गुर्रायेगा तभी जब आपका रुख उसके प्रति अच्छा न होगा।

कहने का तात्पर्य यही कि वैसे तो सौन्दर्य के प्रति सभी का आकर्षण होता है। जो वस्तु उपयोगी और लाभदायक होगी उसे सभी चाहेंगे। लेकिन जीवन में हम आगे चलकर जिस महत्त्व को अपनाते हैं वह भी अपना विशेष स्थान रखता है। कहते हैं कि जीव जन्म लेते समय किसी भी धारणा, विचार, तत्त्व को साथ लेकर नहीं आता। वे तो हमारे-वातावरण, अनुभव के परिणाम होते हैं। कोरे कागज पर जिस प्रकार रेखाएँ खींच कर किसी भी प्रकार की अच्छी-बुरी आकृति बनाई जा सकती है। उसी प्रकार बालक को प्रारम्भ से ही हम जैसा चाहें बना सकते हैं। फिर पहली बार जो आकृति, आदत बन जाती है उसी का प्राधान्य सदैव रहता है।

तो हम कह रहे थे कि पहली बार यदि किसी से स्नेह कर लिया तो उसी को सदैव अपनाना चाहते हैं क्योंकि मोह तो मिट्टी की दीवालों से, जहाँ हम कुछ दिन रह लेते हैं, भी हो जाता है और उस स्थान को छोड़ते दुःख होता है चाहे हम किसी अच्छे स्थान पर भले ही क्यों न जाते हों। बाद में जब हम दूसरे स्थान पर रहने लगते हैं तो धीरे धीरे वह भी अच्छा लगने लगता है। पुराने स्थान की याद फिर तो विशेष अवसरों पर और याद करने पर ही आती है। वह अखरने की बात नहीं रहती।

ठीक यही उत्तर उपर्युक्त प्रश्न का है। हम जब किसी वस्तु को छोड़ते हैं तो उसका बिछुड़ना कष्टकर अवश्य होता है लेकिन उसकी पूर्ति उस समय हो जाती है जब हम उससे अच्छी स्थिति पर पहुँच जाते हैं। हमारे सुख-साधनों की पूर्ति हो जाती है। अतः किसी को आत्महत्या करने की आवश्यकता नहीं।

पुरुष तो अत्याचारी, मनमाना करनेवाले और निर्मोही कहे ही जाते हैं। स्त्रियाँ ही बेचारी इस रोग का शिकार अधिक होती हैं। उन्हें धैर्य के साथ विचार करना चाहिये और विरह में व्याकुल होकर—अपने को, समाज को, देश को अपनी आत्महत्या करके वंचित नहीं करना चाहिए। संसार तो कर्मभूमि है। जो सदैव कर्म करने में लगा रहता है उसे विरह ऐसी वस्तुएँ प्रेम के नाम पर सतातीं नहीं। हाँ, अवकाश मिलने पर जीवन को सुखी बनाना उसके लिए सुगम अवश्य हो जाता है और वही प्रेम के सच्चे अर्थ को समझने में समर्थ होते हैं।

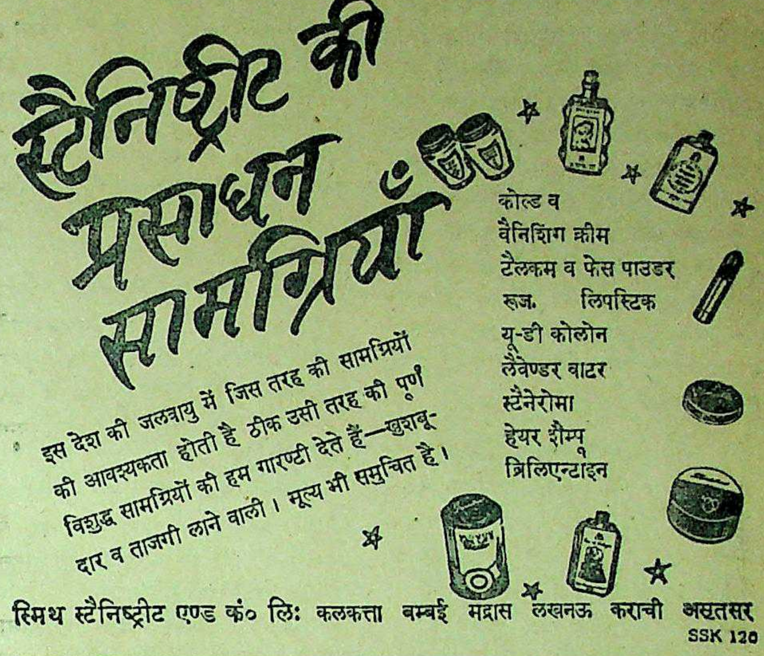
स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन सामग्रियाँ

कोल्ड व
वैनिशिंग क्रीम
टैल्कम व फेस पाउडर
रूज. लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोमा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन

इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताजगी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 120

कलकत्ते के साबुन-निर्माताओं को कड़ी नसीहत—

सनलाइट साबुन के निर्माता मेसर्स लीवर ब्रदर्स की तरफ से मेसर्स पेव को (पंजाबी ब्रदर्स) जो कि शिपलाइट साबुन के निर्माता थे के खिलाफ ट्रेड मार्क के नकल करने पर चलाये गये हुए मुकदमे में कलकत्ता की हाईकोर्ट ने बहुत गहरा जुर्माना किया है।

शिपलाइट साबुन सुप्रसिद्ध सनलाइट साबुन के नाम आकार-प्रकार लेबुल के ढाँचे व रंग का नकल साबित हुआ और बहुत बड़ा जुर्माना किया गया। अदालत ने यह हुक्म जारी कर दिया कि नक्काल शिपलाइट साबुन का सारा स्टाक तथा रैपर लीवर ब्रदर्स को दे दिया जावे और जो डाई साबुन पर छाप लगाने के लिए इस्तेमाल की जाती थी वह तोड़ डाली जावे। अदालत ने मेसर्स पेव को (पंजाबी ब्रदर्स) के ऊपर शिपलाइट साबुन के बनाने का अथवा सनलाइट को और किसी प्रकार से नकल करने के लिए स्थायी प्रतिबन्ध लगा दिया है। मुकदमे के खर्च के रूप में अदालत ने लीवर ब्रदर्स को रुपया भी दिलवाया है।

जब आप ये साबुन खरीदें
नकलों से सावधान रहिए

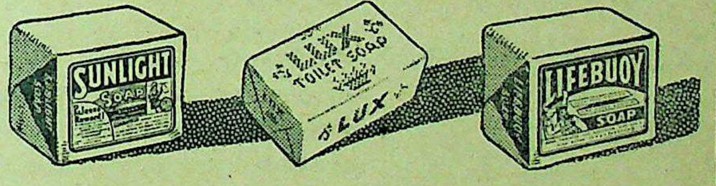

अप्रसिद्ध और घटिया साबनों के बनाने वाले कुछ दिनों से ऊपर के चित्रों में दिये हुए मशहूर साबुनों के नाम और लेबलों की बड़ी बारीको के साथ नकल कर रहे है। इन बद दियानत साबुन साज़ेंा की मनशा—आपको धोका देनार है। कि आप उनका नकली माल इसी मुकावे में ख़रीदलें कि यह आपकी ज़रूरत वाले असली सनलाईट, लक्स टॉयलेट, या लाईफ़ बॉय, साबुन ही हैं। हमेशा होशियार रहिए—निश्चित कर लीजिए की आप असली माल ही ख़रीद रहे हैं।

चेतावनी! ट्रेड मार्क कानून का भंग

लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड जो कि सनलाइट साबून, लक्स टॉइलेट सोप और लाइफबॉय साबून के बनानेवाले हैं, इसके जरिये चेतावनी देते हैं कि वे किसी शख्स, फर्म, या कम्पनी के खिलाफ हर मुमकिन कार्रवाई, दीवानी, फौजदारी या दोनों, करेंगे जो, सिवाय लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड के बनाये हुये माल के, और किसी ऐसे मालको जिसपर सनलाइट, लक्स या लाइफबॉय या किसी और नाम के रैपर, नाम और छाप मौजूद हों जो इन नामों की खिलाफ़ वरज़ी हो या उनकी हूबहू नकल हो, तैयार करने, बेचने बेचने के लिये देने, उसका वर्णन करने, इनवाइस करने और विज्ञापन देने का धन्धा करती हो या उसमें मदत करती हो।

यह विज्ञापन लिवर ब्रदर्स द्वारा जनता के हितार्थ दिया गया है।

L. Com. 56-111 HI

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

'सैनिक' फिर पाँच वर्ष बाद—

(श्री संपादक 'देशदूत')

पाँच साल के बाद सैनिक फिर निकल रहा है। अपने छठवें पुनर्जन्म (जिसमें से ४ इसी महायुद्ध की अवधि में हुए) के शुभ अवसर पर आपका 'सैनिक' आपको सादर सैल्यूट करता है। 'सैनिक' का पहला पुनर्जन्म १९३० के सत्याग्रह संग्राम के बाद १९३१ में गांधी-इर्विन समझौते के बाद हुआ था। दूसरा १९३४ में १९३२-३३ वाले सत्याग्रह संग्राम के महात्मा गांधी द्वारा स्थगित किये जाने पर। तीसरा १९४० के अक्टूबर में। चौथा १९४१ की जनवरी में, पाँचवाँ अमर सैनिक के नाम से और छठवाँ अब।

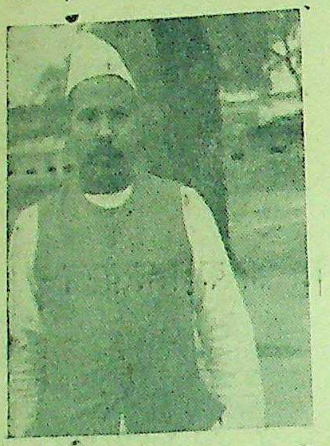

'सैनिक' के संचालक और संपादक पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, एम० एल० ए०।

आपको याद होगा कि युद्ध प्रारम्भ होते ही 'सैनिक' शासकों की आँखों का काँटा बन गया। कांग्रेस मंत्रि-मंडल के इस्तीफा देते ही उसके मुद्रक व सम्पादक डिफेंस ऐक्ट में गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें डेढ़-डेढ़ वर्ष की सख्त कैद व क्रमशः आठ सौ और पाँच सौ रुपया जुर्माने की सजा दी गई। इसके बाद ही उन पर दफा एक सौ चवालीस में दूसरा मुकदमा भी चलाया गया जिसमें उन्हें छः छः महीने की सजा हुई।

जबरन चन्दा वसूल किये जाने के सम्बन्ध में जो शिकायतें सूबा कमेटी के पास आ रही थीं उनके सम्बन्ध में सूबे की कौंसिल के मेम्बरान और भूतपूर्व मिनिस्टरों के दस्तखतों से जो नोटिस निकली उसे छापने के अपराध में 'सैनिक' के जनरल मैनेजर गिरफ्तार कर लिए गये और उन्हें नौ महीने की सख्त कैद और ५०) जुर्माने की सजा हुई।

१५ जुलाई सन् ४० को एकाएक आगरा के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने पुलिस द्वारा सैनिक प्रेस पर कब्जा करके दैनिक और साप्ताहिक 'सैनिक' का प्रकाशन बन्द करा दिया। इस गैर-कानूनी हुक्म के खिलाफ अपील की गई। अपील में सैशन जज ने हाईकोर्ट से हुक्म को रद किये जाने की सिफारिश की। तब सूबे की सरकार ने उस हुक्म को रद किया और इस तरह ढाई महीने बाद 'सैनिक' फिर निकला। लेकिन सत्याग्रह आरम्भ होते ही आचार्य विनोवा भावे का बयान छापने के अपराध में पुलिस ने फिर प्रेस पर कब्जा करके पत्रों का प्रकाशन रोक दिया। इस गैर कानूनी हुक्म से देश भर में तहलका मच गया। स्वयं महात्मा गांधी ने सरकार की तीव्र निन्दा की और वाइसराय महोदय को बहुत कुछ लिखा। अखिल भारतवर्षीय सम्पादक-सम्मेलन ने सर्व-सम्मति से इस आज्ञा का विरोध किया और सरकार पर जोर डाला। लेकिन सरकार ने लगभग एक महीने बाद पहले तो पुलिस का पहरा हटा कर प्रेस और पत्र से तीन-तीन हजार की जमानत माँगी, फिर वह सात महीने बाद मई के महीने में पाँच-पाँच सौ कर दी गई। तब महात्मा जी और अखिल भारतवर्षीय सम्पादक सम्मेलन व अखिल भारतवर्षीय और संयुक्त प्रान्तीय प्रेस सलाहकार कमेटी के बार-बार कहने पर भी यह अनुचित आज्ञा रद नहीं की और चूँकि महात्मा जी की आज्ञा थी कि सत्याग्रह के समय पत्रों को जमानत नहीं देना चाहिए। कांग्रेस की इस आज्ञा को मान कर न निकलनेवाला पत्र भी अकेला 'सैनिक' था।

सूबे की सरकार इतने से ही सन्तुष्ट नहीं हुई। उसने सैनिक के जनरल मैनेजर व उनके भाई तथा सैनिक के सम्पादकीय विभाग के श्री देवेन्द्र को दफा २६ में नजरबन्द कर दिया। 'सैनिक' ने भी सत्याग्रह संग्राम में अपने सर्वस्व की बाजी लगा दी। 'सैनिक' परिवार के जितने सदस्य जेल गये उतने हिन्दुस्तान भर में दूसरे किसी भी पत्र के नहीं गये। 'सैनिक' के सात ट्रस्टियों में से पाँच जेल गये छठे को महात्मा जी ने रोका और सातवें परिस्थितियों से लाचार होकर रुके। १९४२ में सातों नजरबन्द हुए। १४ अगस्त १९४२ में सैनिक प्रेस पर जो कब्जा किया वह सितम्बर १९४५ तक बदस्तूर जारी रहा।

इससे 'सैनिक' की जो अपार हानि हुई उसकी कल्पना आप सहज ही कर सकते हैं। सब ग्राहक टूट गये। सब विज्ञापन बन्द हो गये। एजेण्टों व विज्ञापनदाताओं पर जो हजारों रुपया चाहिए था वह मारा गया। स्याही, कागज, टाइप मशीन वगैरह सबमें काफी नुकसान हुआ। इस हानि को पूरा करने के लिए ट्रस्टियों ने एक लाख की अपील निकाली है। जिसमें से पचास हजार के करीब आगरा कमिश्नरी से हो जाने की आशा है। आशा है 'सैनिक' का प्रकाशन दशहरे के बाद आरम्भ हो जायगा।

आगरा —श्री कृष्णदत्त पालीवाल,
१ अक्टूबर एम० एल० ए०

* * *

उदयपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन

अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का ३३वाँ अधिवेशन मेवाड़ के गौरवपूर्ण प्रांगण में ता० १७,१८,१९ अक्टूबर १९४५ को होने जा रहा है। उदयपुर स्वागत-समिति तो अधिवेशन को सफल करने के लिए तथा सम्मेलन की गति-विधि में परिवर्तन करने के लिए यथा-सम्भव प्रयत्नशील है ही पर सम्मेलन में सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियों का भी यह कर्त्तव्य है कि वह सम्मेलन को क्रियात्मक बनाने के लिए अभी से सोचें तथा ऐसे प्रस्ताव स्वीकृत करें कि जिससे सम्मेलन में नई शक्ति एवं नया चैतन्य उत्पन्न हो सके। अधिवेशन के अवसर पर यह स्पष्ट हो जायगा कि हिन्दी जगत में कितना बल, कितनी सजीवता और हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने के लिए उसके हृदय में कितनी लगन है। यह समय हमारे लिए कठिन परीक्षा का है। सुना जाता है कि सम्मेलन कुछ व्यक्तियों की सम्पत्ति बनता जा रहा है। यदि यह सच है तो सम्मेलन के प्रतिनिधियों का कर्त्तव्य है कि सम्मेलन को वास्तविक रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए रचनात्मक कार्यों-सहित प्रस्ताव पास करें। आज हमारे सामने कई समस्यायें हैं—

रेडियो के आन्दोलन को अधिक संगठित करके भारतव्यापी बनाया जाये। सिनेमा-जगत में हिन्दी को स्वीकार कराने के लिए कम्पनियों पर दबाव डाला जाये। राष्ट्र-भाषा हिन्दी का एक निश्चित रूप स्थिर किया जाये। राज्य-व्यवहार में निरन्तर बढ़ते हुए अँगरेजी के प्रचार का पूरी शक्ति से विरोध हो। हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या पर अधिक स्पष्ट निर्णय किया जाये। सम्मेलन को भारतवर्ष के समस्त साहित्यकारों का सहयोग प्राप्त हो, और वे सम्मेलन को अपनी वस्तु समझकर उसे अपनावें। हिन्दी-साहित्य के भण्डार को विस्तृत और समृद्ध करने के लिए साहित्य-सृजन का निदर्शन किया जाये। प्रान्तीय भाषाओं का स्वरूप और स्थान भी सम्मेलन की दृष्टि से उदयपुर में निश्चित कर लेना चाहिए।

अधिवेशन के सभापति का निर्वाचन हो चुका है और हमें आशा करनी चाहिए कि श्री कन्हैयालाल जी मुंशी के नेतृत्व में हिन्दी को अवश्य बल एवं पोषण मिलेगा। अखण्ड भारत के पुजारी श्री मुंशी अवश्य ही हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयत्नशील होंगे। हिन्दी-जगत ने उन्हें चुनकर अपनी योग्यता का परिचय तो दिया ही साथ ही दूरदर्शिता भी प्रकट की है। हिन्दी विद्यापीठ श्री मुंशी जी का अभिनन्दन करती है और आशा करती है कि उनके सभापतित्व में सम्मेलन को तथा हिन्दी को बल मिलेगा।

हिन्दी विद्यापीठ —गिरिधारीलाल शर्मा
उदयपुर प्रचार-मन्त्री

* * *

प्रेमी अभिनन्दन-ग्रंथ

हिन्दी के सुप्रसिद्ध प्रकाशक और विद्वान् श्री नाथूराम जी प्रेमी की सेवा में भेंट किये जानेवाले अभिनन्दन-ग्रन्थ के संकलन का कार्य समाप्तप्राय है और उसकी छपाई की व्यवस्था इलाहाबाद ला जर्नल प्रेस में हो गई है। ग्रन्थ में अठारह विभाग हैं, जिनकी सामग्री का संकलन और सम्पादन हिन्दी तथा प्रान्तीय भाषाओं के निम्नलिखित विद्वानों एवं साहित्यकारों ने किया है—सर्वश्री डा० सुनीतिकुमार चटर्जी, आचार्य क्षितिमोहन सेन, डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० मोतीचन्द, डा० मंगलदेव शास्त्री, डा० हीरालाल जैन, डा० रामकुमार वर्मा, डा० जगदीशचन्द्र जैन शास्त्री, डा० ए० एन० उपाध्याय, वृन्दावनलाल वर्मा, बनारसीदास जी चतुर्वेदी, महात्मा भगवानदीन जी, पं० सुखलाल जी, मुनिजिनविजय जी, आचार्य हजारीप्रसाद जी द्विवेदी, आचार्य जुगलकिशोर जी, सियारामशरण जी गुप्त, जैनेन्द्रकुमार जी, भदन्त आनन्द कौसल्यायन, प्रो० दलसुख मालवणियाँ, आचार्य पद्मनारायण, पं० बेचरदास जी दोशी, पं० हरिशंकर जी शर्मा, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, रामचन्द्र जी वर्मा, व्यवहार राजेन्द्रसिंह जी, पं० फूलचन्द जी अजितप्रसाद जी, बैरिस्टर जमनाप्र सुभद्राकुमारी चौहान, कमलादेवी सत्यवती मल्लिक, रमारानी जैन, प्रभाकर माचवे, कृष्णलाल जी वर्मा भगवान जी जैन, महेन्द्रकुमार न्याय पं० परमेष्ठीदास जैन, पं० ज्ञानचन्द्र शास्त्री, धन्यकुमार जैन, शिवसहाय तथा यशपाल जैन। दो सौ विद्वानों, नेताओं और साहित्यकारों की रचनाएं में संग्रहीत हैं। सम्पादकों के अ रचना भेजनेवालों में सर्वश्री कालेलकर, किशोरलाल घ० म अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, मैथिलीश डा० गोपालशरणसिंह, वात्स्यायन डा० रामविलास शर्मा, प्रो० शास्त्री, प्रो० शान्तिप्रसाद वर्मा, श्रीनाथसिंह, उदयशंकर भट्ट, अवस्थी, प्रो० विनयमोहन शर्मा, उमेश मित्र, डा० बलदेव उपाध्याय के नाम उल्लेख योग्य हैं।

ग्रंथ को चित्रित करने के लि नन्दलाल बोस, देवीप्रसाद राय प्रमोदकुमार चटर्जी, असितकुमार रविशंकर शुक्ल रावल, मुकुल कनु देसाई, हरिपदराय तथा विजयवर्गीय प्रभृति कलाकारों की गई है, खास्तगीर साहब ने बहुत बढ़िया भावपूर्ण चित्र दिये हैं।

ग्रंथ को भेंट करने की स्थान अभी निश्चित नहीं हुआ समिति शीघ्र ही इसका निर्णय सम्भावना यह है कि ग्रंथ के समारोह की व्यवस्था बम्बई, इलाहाबाद में से किसी एक जायगी।

टीकमगढ़ —
सी० आई० बी० ए०

हिन्दी-संसार को नि

सविनय निवेदन है भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन वाँ वार्षिक अधिवेशन मेवाड़ राजधानी उदयपुर में दशहरे पर ता० १७, १८ और १९ १९४५ को गुजराज के प्रसिद्ध भारतीय प्रतिष्ठा के साहित्य के प्रमुख नेताओं में से कन्हैयालाल जी माणकलाल सभापतित्व में हो रहा है।

स्वागत-समिति की ओर निवेदन है कि इस शुभ अव अवश्य ही पधारें और राष्ट्र इस अखिल भारतीय संवत् शोभा बढ़ावें।

—जनार्दनराय नागर

श्रीनिवास दास पुर

श्रीनिवास दास पुरस्कार पुस्तकें भेजने की तिथि आगा तक बढ़ा दी गई है। पुरस्कार ब्रज साहित्य-मंडल जीवित लेखकों को ब्रजभाषा किसी मौलिक कृति पर जायगा। पुरस्कार के लिए प्रा ६ वर्ष से अधिक प्राचीन चाहिए। प्रत्येक रचना की कार्यालय में दीपावली तक चाहिए। विशेष विवरण के पते पर पत्र-व्यवहार करें—

ब्रज
मथुरा

ाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

ारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

१८

ा का ओर-छोर न था। हरीश के आदर-परिचर्या से भी, जो अपमान हो रहा था उसका था। नारी के अन्तर की सार्थकता केवल स्वामी नहीं होती। वह तो मैदान के वृक्ष की भाँति स्निग्ध शीतल छाया दूराति दूर दिग्दिगन्त तक ती है। वह चाहती है, स्वामी स्वजन, सखी- एवं उनका कोलाहल, उनकी सहानुभूति। उनका

भी हो सकता है। इन सबसे पृथक् रहनेवाली ती हैं, परन्तु विमला उनमें न थी। वह समझती पुष्पित, फलित वन जैसे पक्षियों की काकली शोभा संयुक्त होकर मानव-हृदय सिन्धु में आनंद-। वैसे ही गृह में भी देवरानी, जेठानी, ननद, ति-पूर्ण कोलाहल भी मानव-हृदय के आनन्द यक है। इन सबकी हँसी खुशी से रहित गृह व नरक था।

हने का एक और भी कारण था। वह यह जल-प्रपातवत् उस पर स्रवित होता था। समय वह हरीश की ओर देखती हुई कातर थी कि इस घर में एक दिन कैसा आनन्द- किन्तु आज उसके पदार्पण-मात्र से ही वे सरस गये। उस दिन उसका स्वामी आत्मीय था आज उसे सभी छोड़ गये। वह भी केवल ......धिक्कार है उसके जीवन को।

की वर्षगाँठ थी। लक्ष्मी ने पत्र द्वारा समा- का निमंत्रण दिया था। उसने लिखा था :— की वर्षगाँठ है। यहीं सब लोग आकर भोजनादि छोड़कर—जब चाहें आयें। बहू तो आयेगी?

तुम्हारी—दीदी।"

कर अन्यमनस्क हो पड़ा। यह पत्र मानो लोक- को लिखा गया हो। किसी भी शब्द में हार्दिक ने पूछा—दादी ने क्या लिखा है?

उसकी ओर फेंककर कहा—लो पढ़ लो।

की ओर एकटक देख रहा था। विनोद ने क्यों हो गये, दादा?

—सम्भवतः इस जीवन में यह ध्यान भंग न

—जब देखो तभी तुम ठण्डी साँसें भरा करते जो कभी भोग भोगना पड़ता तो दादा! बैलून में ही उड़ जाते! ......

विनोद की ओर देखा। सचमुच बेचारा इतने कष्ट भी कैसी आनन्द दीप्ति बिखराता मस्त कष्ट-दुख की तुलना में मेरे कष्ट क्या हैं?

विमला ने हरीश की ओर देखा—आँखें साश्रु थीं।

—कब जाओगे?

—बतलाइए......

—जो भी हो...जाऊँगा। तुम भी अवश्य का नाम भी नहीं है! कोई बात नहीं; वह कहा—यह भैरव का अभिशाप है.....भवन- सुख संग्रह किया था; किन्तु यह विपत्ति क्यों

—यह आपका स्वयं का काम है दादा। होना। तुच्छ भैरव के मिथ्या शाप का प्रति- में था।

छोड़कर कहाँ जाऊँगा? यहीं जन्मे हैं, यहीं रहेंगे।

—जन्म-भूमि तो हमारा सारा भारतवर्ष है।

—हम क्षुद्र प्राणी हैं भाई, छोटे से लेकर ही पर बड़ा रूप देखेंगे। जाने दो कल चलेंगे। उस ओर बड़ा इन्फ्लुएंजा फैला हुआ है। तुम भी चलना। मैं, सतीश, नन्दलाल आदि सभी जायँगे।

हरीश ने विमला से कहा—तुम वहाँ जाना विमला। विनोद यहीं भोजन करेगा। मैं अवकाश पाते ही आऊँगा, समझीं?

विमला ने स्वीकृति में केवल सिर हिला दिया। हरीश अपने काग़ज़-पत्र फैलाकर बैठ गया। कौन, कहाँ, कितने सेवा-केन्द्र खुले हैं, प्रति सप्ताह वहाँ क्या कार्य हो रहा है। यह उन्हीं केन्द्रों के काग़ज़ थे।

विमला ने कहा—कोई वस्तु सरोज को देनी चाहिए।

हरीश ने कहा—हाँ, क्या दोगी।

विमला ने कहा—कोई आभूषण आदि।

हरीश ने कहा—रईसी दिखाने से क्या लाभ? हम तो मन-प्राण से उसके चिरायु होने की प्रार्थना करते हैं।

विनोद ने कहा—न हो तो अपने सेवा-कार्य की एक रिपोर्ट उपहार-स्वरूप भेज दो। रूढ़िवादिता छोड़िए, गांधी जी का अनुसरण कीजिए।

हरीश ने कहा—उसके लिखने-पढ़ने के दिन हैं; कुछ सचित्र, रोचक पुस्तकें तथा एक अच्छा फाउन्टेनपेन लेकर दो, जिसमें अधिक से अधिक सोना लगा हो। विनोद जाकर ले आयेगा।....

दो बजे तक विनोद ने सारी वस्तुएँ लाकर एकत्रित कर दीं। वर्ण-विज्ञान के नक़शे, खिलौने, फाउन्टेनपेन सभी कुछ था।

विमला देखकर प्रसन्न हो गई। उसने कहा—बहुत अच्छी हैं।

हरीश ने कहा—फाउन्टेनपेन मैं दूँगा और शेष वस्तुएँ तुम देना।

विनोद ने कहा—देरी मत करो। मेरे खाने की ओर तुम्हारा कोई ध्यान नहीं गया। कोई बात नहीं, माँ अन्नपूर्णा!

विमला सोच रही थी कि उसके हाथ की दी हुई वस्तुएँ कहीं दीदी अस्वीकार न कर दे।

विनोद ने कहा—अब तुम्हें जाना है कि नहीं? जन्मगाँठ का निमन्त्रण है क्या साँझ को खाना खाओगी?

विमला झटपट गाड़ी पर बैठकर चली गई। एक वर्ष के अन्तर्गत एक बार भी दीदी के घर न तो विमला आई न हरीश। दोनों का ही मन वहाँ जाने को बच्चे के वात्सल्य से प्रतिक्षण तड़पा करता था; किन्तु दीदी की अवमानना ने प्रवेश द्वार बन्द कर रक्खा था।

गाड़ी से उतरते ही उसके कँपकँपी-सी सवार हो गई। कोई कुछ अपमान की बात न कह दे, यही सोचने लगी। नौकर ने ले जाकर उसको एक बड़ी दालान में खड़ा कर दिया। चार-पाँच स्त्रियाँ हड़प-हड़प कर भोजन समेटने में लगी हुई थीं। विमला बिचारी म्लान-मुख चुपचाप खड़ी थी।

एक स्त्री ने कहा—यह कौन आई री?

विमला का जी धड़कने लगा। दूसरी बोली—यह वही राधिका की भावज, भैरव की बहू है! अरे जल जाये मेरा मुँह, मैं क्या बोल रही हूँ! यह है मेरे हरीश की बहू, है न?

तीसरी ने कहा—इसमें क्या सन्देह। कौतूहलाक्रान्त तीसरी स्त्री ने विमला से कहा—खड़ी क्यों हो? आओ, आओ!

अभ्यर्थना में जो वाणी विमला ने सुनी थी उससे वह घबरा उठी। क्या करे, कहाँ जाय, सिर घूमने लगा।

दूसरी स्त्री ने व्यंग करके कहाँ—इस घर की बहू हो तुम...। अरे लक्ष्मी कहाँ गई? आओ, भई तुम्हारी बहू आई हुई हैं।

शेष कई स्त्रियाँ हँस पड़ीं। एक ने कहा—है सुन्दरी। हाँ, हरीश की भी आँखें हम लोगों की तरह रूप परखने में पैनी हैं।

अरी सुन्दरी के पीछे तो राम रावण का युद्ध हो गया, महाभारत हो गया, पृथ्वीराज बिला गया। सुन्दरी का बड़ा दाम है। देख ले न मुँह!

रत्न है रत्न; तभी तो हरीश इतने यत्न से रक्खे हुए है।

इस में भी कुछ कहना है!

अरी इसी को कहते हैं भाग्य। जाने कहाँ पड़ी होती!... उस समय स्वयम्बर में कन्या ले भागते थे। पढ़ा नहीं महाभारत में? जब शास्त्र ही में है तो ...।

अरी विवाह के पश्चात्... सभा भङ्ग हो गई थी।

मरा अभागा भैरव.....हा हा, हास्य ध्वनि हो उठी।

मधुमक्खी के छत्ते में जैसे किसी ने कङ्कड़ मारा हो। [illegible]

ATKINSONS

★ ★ ★

सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइन

AHO-1-219 HI

J. & E. ATKINSON LTD., LONDON, ENGLAND

क्या
पेट के दर्द
ने जकड़ लिया है?

आपको
नहीं होना चाहिए!

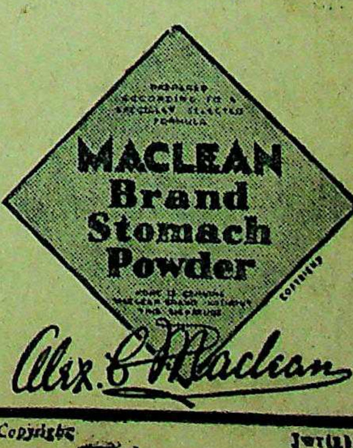
PREPARED ACCORDING TO A SPECIALLY SELECTED FORMULA
MACLEAN Brand Stomach Powder
COPYRIGHT

Alex. C. Maclean

Copyright

JWT(1)

ध्वनियां विराम न लेती थीं। उस ध्वनि से ही विमला के शरीर पर सहस्र सहस्र डंकों का दंश हो रहा था।

लक्ष्मी ने आकर कहा—हमको कौन पुकार रहा था?

राम की सभा में परित्यक्ता विपन्ना सीता ने जैसे निरुपाय पृथ्वी माता से आश्रय माँगा था, ठीक वैसे ही विमला पृथ्वी की ओर ताक रही थी।

लक्ष्मी ने उत्सुकता पूर्ण दृष्टि डालते हुए उन स्त्रियों से पूछा क्या चाहिए, हलुआ, पापड़, शाक, रायता? मुझे व्यर्थ दिक्क क्यों कर रह हो, भई? अच्छे हँसी है—कह कर लक्ष्मी हँस पड़ी। उन सभी स्त्रियों ने एक साथ उँगलियाँ उठाकर, अरे वह आई हैं जो.........विमला की ओर देखते ही लक्ष्मी की हँसी उड़ गई। उसने विमला से कहा—अरे इतनी देरी? दो बजा डाला।

भोजन करती हुई रमणी-सभा से एक स्त्री बोली—अरे भाई, एक बड़े घर की मालकिन! हम सब लोगों से कुछ भिन्नता प्रदर्शन तो आवश्यक ही है......

लक्ष्मी ने कहा—सचमुच ही, इतनी देरी कैसे हो गई?

विमला ने कुण्ठित होकर कहा—भैया इसी समय गाड़ी लेकर आये हैं.....उनके भोजन की व्यवस्था करके....

'भैया' शब्द लक्ष्मी के कानों में कुछ लगा-सा। उसने सोचा, फिर स्मरण हो आया अरे, वही विनोद! ....छिः भैया! लक्ष्मी ने प्रकट रूप में कहा—उनके खाने का प्रबन्ध वहीं क्यों किया, यहाँ नहीं हो सकता था?

विमला काष्ठवत् स्थिर थी बोल न सकी। लक्ष्मी ने समझा और कहा—निमन्त्रण-पत्र में यदि सब का नाम नहीं लिखा गया तो क्या नौकर-चाकर, दास-दासी, भी नहीं आ सकते?

विमला नतमुख मौन एवं निस्पंद थी जैसे हृदय पर किसी ने वज्राघात किया हो।

लक्ष्मी ने कहा—भूल हुई। हमारा कौन जोर है! तुम्हीं आ गई इसी से हम कृतार्थ हो गईं।

गप् गप् खाते हुए एक स्त्री ने कहा—अरी, हरीश आया था री?

लक्ष्मी ने कहा—हाँ, उसको खिला-पिला दिया, अभी गया है। संसार की सेवा लेकर व्यग्र है.....कैसा चेहरा हो गया है।..

एक मोटी-सी धमधूसर स्त्री ने बड़ी सहानुभूति के स्वर में कहा—आहा!

महिला-मण्डल में साहसी नारियों का अभाव न था। एक ने कहा—कैसे बाप का बेटा.....कैसा था.....किस तरह का होकर फिर रहा है! विलायत ही जाने से ना—लेकिन अब विलायत कौन नहीं जाता! यह जो नई नवेली.......

लक्ष्मी के मुख की ओर देखते ही उसने अपनी बात बीच में ही रोक दी; किन्तु एक दूसरी बोल पड़ी—डाक्टरी तो ऐसी करनी चाहिए जिससे कुछ धनोपार्जन हो, कुछ उन्नति हो; छूत-अछूतों के सङ्ग घूमना क्या है? विलायती होकर जाति धर्म डुबो कर.........

एक और स्त्री बोली—अरी, उससे भी कहीं जाति जाती है मुण्डी! यह गले में हार है जो—उसने विमला की ओर देखा, लक्ष्मी की ओर भी देखा—देखकर चुप हो गई।

लक्ष्मी ने कहा—आओ बहू......दूसरी जगह तुमको बिठाएँ चलकर। हरीश विलायत हो आया है, जाति बिरादरी... लक्ष्मी ने घूम कर पुकारा अत्ता..... अत्ता आई, विमला को देखकर बोली—भौजाई, अब आने का अवकाश पाया है—अच्छा! मैं सोचती थी.....

लक्ष्मी ने उसे डाँटते हुए कहा—जा, जा पहले जो काम बता रही हूँ वह कर—उधर के कमरे में उनके बैठने की जगह कर दे। बहुत देर हो गई है; बहू को खिला दूँ।

बड़ी घनिष्ठता दिखाते हुए अत्ता ने कहा—तुम कब खाओगी, दीदी?

लक्ष्मी ने कहा—तुझे इन बातों से क्या प्रयोजन है? तू जा काम कर। डाँट खाकर अत्ता चली गई।

लक्ष्मी विमला को दूसरे कमरे में ले गई। अत्ता ने आसन बिछा दिया। अत्ता तीक्ष्ण तीर जैसी दृष्टि से विमला का निरीक्षण करती हुई, उसका हृदय जर्जरित करने लगी।

अत्ता ने कहा—काम-काजवाले घर में कोई नंगे-बूचे आता है, भौजाई? न गहना, न गुरिया कोई क्या कहेगा?

विमला चाहती थी धृष्ट अत्ता की उपेक्षा करना, वह मौन थी।

अत्ता ने कहा—आहा! देखने में जैसे राजपुत्र हो! ब्याह की बयस तो हो गई किन्तु विवाह नहीं हुआ। विमला चुप थी।

अत्ता ने फिर कहा—हम लोग दुःखी गरीब हैं तो क्या हमसे एक बात करना भी कठिन है। नहीं तो एक दिन......

बात समाप्त नहीं हुई थी कि लक्ष्मी आ गई। साथ में भोजन का थाल लिये हुए रसोइया था। लक्ष्मी ने कहा—थाल रखकर तुम खीर ले आओ ठाकुर दादा......

ठाकुर थाल रख कर चला गया। लक्ष्मी ने कहा—आओ, बैठो...

विमला जैसे शून्य में घूम रही थी। किसी भाँति आसन पर बैठ गई। लक्ष्मी ने अत्ता से कहा—जा खीर लिवा कर जल्दी आ।

विमला ने लक्ष्मी की ओर देखा तो उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वह पुरानी लक्ष्मी नहीं है। एक अपरिचित अनजानी और निमत्रण गृह की महिमान्विता मालकिन है। लोक-व्यवहार—रक्षा हेतु केवल बैठाती है, खिलाती है; किन्तु उसमें सहृदयता नहीं है।

साहस करके विमला ने कहा—दीदी....

अपने स्वर से विमला चौंक पड़ी। जैसे कोई अतल पाताल गह्वर (गड्ढा) से उसी के कण्ठ-स्वर का अनुकरण करके 'दीदी', पुकार रहा हो, ऐसा जान पड़ने लगा।

—क्रमशः

अपनी बात
लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण
मनुष्य के चरित्र में किस
दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर
किस प्रकार अपने जीवन को
सकता है, यह बात इस पुस्तक में
ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई
लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों
पर। अपने चरित्र का निर्माण करने
प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक
पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) डाक
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये
ग्रिमोल्ट
सिरप को
याद कीजि

THE SECRET OF YOUR BABY'S HEALTH
सुख संचारक कम्पनी लि मथुरा
बालसुधा
Bal
BEST FOR
Child
SUKH SANCHARAK Co. LTD
MUTTRA
BAL SUDHA
AN IDEAL TONIC FOR WEAK & DEFICIENT CHILDREN
SUKH SANCHARAK Co. LTD
MUTTRA

आप अपनी भावी सन्तान
को
ओजस्वी और बलशाली
बनाना चाहते हैं तो
उनको हमेशा हर मौसम में ५५ साल का परी
बालसुधा
सेवन कराइए!
इसके पिलाने से बच्चे मोटे, सुडौल, बलवान और
तेजस्वी बनते हैं। दाँत निकलते समय
कोई कष्ट नहीं होता।
पीने में मीठा और स्वादिष्ठ है।
भारत के लाखों एजेण्ट बेचते हैं:—
अपने शहर के दूकानदार से खरीदिये।
आपके शहर में न मिलने से हमें लिखिये:—
[संस्थापित १८६० ई०]
सुख संचारक कम्पनी लिमिटेड,
सुख संचारक बिल्डिङ्ग, सुख संचारक पोस्ट आफिस—मथुरा

वाह रे राशनिंग !

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

चीनी की विजय हुई पर चीनी का अब भी टोटा,
शक्कर की कौन कहै, है मिलता न कहीं पर चोटा।
कपड़े का मिला न मुझको, 'बेढब' आवश्यक कोटा;
ससुराल जा रहा हूँ मैं, बस पहने एक लँगोटा।
इस राशन के युग में है, कोई न कहीं पर मोटा;
सबकी हड्डी ने लाँघा है चमड़े का परकोटा।
सपलाई के दफ़्तर में, रह गया न कोई छोटा;
हंडे भर गये जहाँ पर, था नहीं एक भी लोटा॥

मीनार उसी जगह बनवा दें। यह कुतुबुद्दीन उस पुराने कुतुबुद्दीन से किस बात में कम थे ?

* * *

पंडित पंत जी ने कहा है जिन्ना भी हमारी स्वतन्त्रता को नहीं रोक सकते। रोक नहीं सकते किन्तु लोक सकते हैं, लपक कर। उस अवस्था में आप क्या करेंगे ?

* * *

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन उदयपुर में इस वर्ष प्रतिनिधियों के सम्मुख एक सात सालों की योजना रखी जायगी। योजना तो बहुत सटीक है। आशा है सम्मेलन का मन्त्रिमंडल इससे पूरा लाभ उठायेगा।

* * *

कलकत्ता से दो हजार गुंडे जो लड़ाई के समय नजरबन्द कर दिये गये थे, छोड़े जा रहे हैं। बंगाल-सरकार को चाहिए कि थोड़ा-थोड़ा इन्हें प्रत्येक प्रान्त में भेज दे। चुनाव के समय यदि दंगे होंगे तो उसमें यह वक्त पर काम आयेंगे।

—अगड़धत्त शर्मा

मधुस्रवा—लेखक, राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी०। इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक में जीवन में मधु बरसाने की पूरी-पूरी क्षमता है। आप भी इसकी रचनाओं को पढ़कर जीवन को रस-सिक्त बनाइए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

खरीदने से पहले
इस ट्रेड मार्क को
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है !

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND.

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

क्या आज आपने मेकलिन से दाँत साफ किए हैं ?

हाँ, मैं कभी भूलता नहीं।

चमकते हुए सफेद दाँतों, स्वस्थ मसूड़ों व ताजे शीतल मुख के लिए मेकलिन्स का व्यवहार कीजिये। यह शीघ्रता से धब्बों को मिटाता है 'एनामेल' को श्वेत व चमकीला बनाता है और प्रयोग में सस्ता पड़ता है।

MACLEANS
PEROXIDE TOOTH PASTE

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

किसानों का संगठन और कांग्रेस

(पेज ६ का शेष)

(३) बाँध बहेरी—यह मालगुजारी पर रुपया पीछे -) लिया जाता था।

(४) बपही पुतही—जब कोई रैयत मर जाती तो उसके वारिस से कर लिया जाता था।

(५) मड़वच—लड़की की शादी के समय १।) कोठीवाले लेते थे।

(६) सगौड़ा—किसी विधवा की शादी होने पर उससे ५) वसूल किये जाते थे।

(७) कोल्हुवावन—तेल अथवा ईख पेरने की कल रखनेवालों से कोल्हू पीछे १) लिया जाता था।

(८) चुल्हियावन—हल्दी उबालने के लिए चूल्हा पीछे १) लिया जाता था।

(९) बेचाई—गल्ला बेचने पर १) या २) सालाना लिया जाता था। इनके अतिरिक्त फगुअही, दसहरी, चैतनवमी, दावात-पूजा, हथियही, घोड़ही, मोटरही, नवही, धवही इत्यादि नाना प्रकार के कर रैयतों से वसूल किये जाते थे। चम्पारन की प्रजा इन करों के मारे पामाल हो रही थी। प्रजा त्रस्त थी। अगणित दुःखों के सागर में डूबती-उतराती थी। उनके दुःख की करुण कहानी सुननेवाला कोई न था।

कांग्रेस-द्वारा जाँच की माँग

१९१६ ई० में लखनऊ की महत्त्वपूर्ण कांग्रेस हुई। हिन्दू-मुस्लिम समझौता हुआ और गरम और नरम दल में भी मेल हो गया। बिहार के प्रतिनिधि बिहार-सम्बन्धी दो महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पेश करनेवाले थे। श्री ब्रजकिशोर बाबू ने चम्पारन में रैयतों के ऊपर जो जुल्म नीलहे साहबों की ओर से हो रहे थे, उसके सम्बन्ध में यह प्रस्ताव पेश किया :—

"कांग्रेस सरकार से प्रार्थना करती है कि उत्तर बिहार के अँगरेज नीलवरों और उनके रैयतों के बीच वैमनस्य और खेती-सम्बन्धी अशान्ति के सम्बन्ध में जाँच करने और उनके दूर करने के उपाय बताने के लिए वह सरकारी और गैर-सरकारी लोगों की एक कमेटी नियत करें।"

चम्पारन के खेतिहरों ने श्री पं० राजकुमार शुक्ल को अपना प्रतिनिधि बना कर कांग्रेस में भेजा था। उन्होंने ब्रजकिशोर बाबू के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए चम्पारन के रैयतों की करुण-कहानी मर्मस्पर्शी शब्दों में कह सुनाई। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला अवसर था कि किसानों की दुःख गाथा एक किसान प्रतिनिधि ने सुनाई।

गांधी जी चम्पारन में

बिहार के प्रतिनिधि महात्मा गांधी को चम्पारन ले जाने के लिए बड़े उत्सुक थे। महात्मा जी ने चम्पारन आने का वचन दे दिया। महात्मा जी १९१७ ई० में अप्रैल मास में बिहार पहुँचे। महात्मा जी ने चम्पारन पहुँचकर रैयतों की जाँच करनी शुरू की तब कमिश्नर की ओर से उन पर १४४ दफा लगाई गई और उन्हें शीघ्र से शीघ्र दूसरी ट्रेन से मोतिहारी छोड़ने की आज्ञा हुई। महात्मा जी ने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। उन पर कोर्ट में मुकदमा चला सारे देश में तहलका मच गया और महात्मा जी के इस नये सविनय अवज्ञा-अस्त्र की ओर संपूर्ण देश का ध्यान आकृष्ट हुआ। महात्मा जी पर से मुकदमा उठा लिया गया और उन्हें जाँच करने की इजाजत और सुविधा प्राप्त हो गई। महात्मा जी ने हजारों रैयतों के इजहार लिये। उनकी जाँच से नीलवरों में खलबली मची हुई थी। बिहार-सरकार की ओर से एक जाँच कमेटी नियत हुई जिसके एक सदस्य महात्मा जी भी थे।

जाँच कमेटी की रिपोर्ट प्रकाशित हुई। सरकार ने उसकी जिन सिफारिशों को स्वीकार कर लिया था उनका सारांश नीचे दिया जा रहा है:—

(१) तीन कठिया-प्रथा बिलकुल उठा दी जाय।

(२) इकरारनामा स्वेच्छापूर्वक लिखा जाय।

(३) जिस खेत में नील बोना हो उसे रैयत ही चुने।

(४) अहवाब लेना बिलकुल कानून के विरुद्ध है और भविष्य में किसी रैयत को अपने खतियान में दर्ज की हुई मालगुजारी के सिवाय और कुछ भी जमींदारों को नहीं देना चाहिए।

(५) रैयतों पर जुर्माना करना और उसे वसूल करके ले लेना कानून के विरुद्ध है। रैयतों को इस बात की सूचना दे दी जायगी और इसके लिए सब जमींदारों, मुकर्रीदारों सौर ठेकेदारों को मनाही भेजी जायगी।

जाँच-कमेटी की इन सिफारिशों से किसानों का बोझा कुछ हलका हुआ। रैयत के कष्ट कुछ कम हुए। रैयतों में कुछ निडरता भी आई और उनमें आत्म-विश्वास भी बढ़ा। चम्पारन की जनता महात्मा जी को अपना उद्धारकर्त्ता समझने लगी। चम्पारन के काम से महात्मा जी की प्रतिष्ठा सारे देश में बढ़ी और उनकी कर्मठता की धाक जम गई। कांग्रेस ने प्रस्ताव पास कर प्रार्थना की थी कि उत्तरी बिहार के और रैयतों के सम्बन्धों की जाँच जाँच-कमेटी बैठाई जाय। बैठाई गई और उसका फल भी निकला।

नेत्र-रोग की चिकित्सा से हता

ज्योति-कल्प

सेवन करें

फूला, माँड़ा, रोहा तथा प्रारम्भिक बिन्द आदि की अचूक औषधि है।

यल० यम० धोलकिया

४६ जानसेनगंज, इलाहाबाद

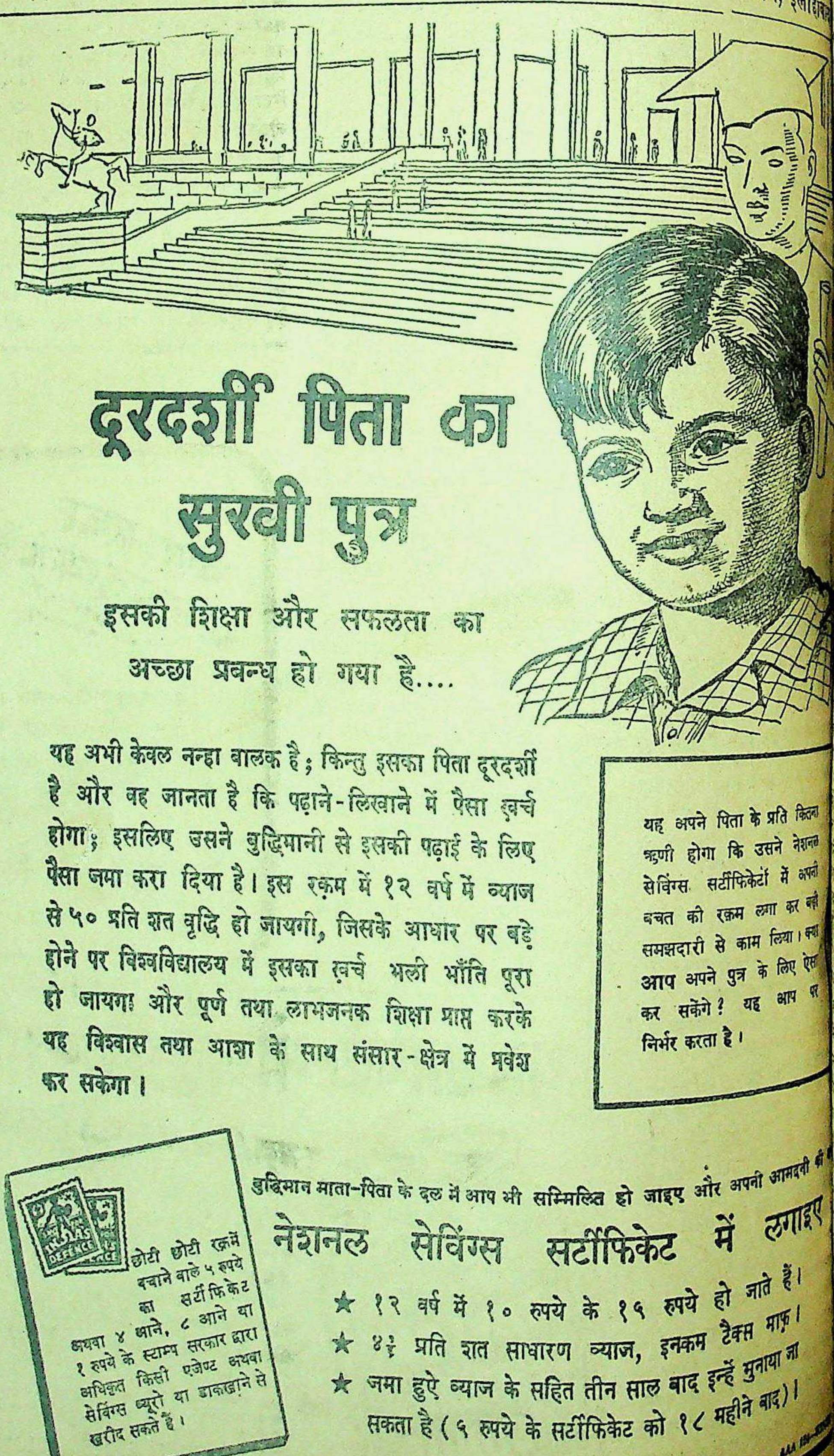

दूरदर्शी पिता का सुखी पुत्र

इसकी शिक्षा और सफलता का अच्छा प्रबन्ध हो गया है....

यह अभी केवल नन्हा बालक है; किन्तु इसका पिता दूरदर्शी है और वह जानता है कि पढ़ाने-लिखाने में पैसा ख़र्च होगा; इसलिए उसने बुद्धिमानी से इसकी पढ़ाई के लिए पैसा जमा करा दिया है। इस रक़म में १२ वर्ष में व्याज से ५० प्रति शत वृद्धि हो जायगी, जिसके आधार पर बड़े होने पर विश्वविद्यालय में इसका ख़र्च भली भाँति पूरा हो जायगा और पूर्ण तथा लाभजनक शिक्षा प्राप्त करके यह विश्वास तथा आशा के साथ संसार-क्षेत्र में प्रवेश कर सकेगा।

यह अपने पिता के प्रति कितना ऋणी होगा कि उसने नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में अपनी बचत की रक़म लगा कर बड़ी समझदारी से काम लिया। क्या आप अपने पुत्र के लिए ऐसा कर सकेंगे? यह आप पर निर्भर करता है।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

बुद्धिमान माता-पिता के दल में आप भी सम्मिलित हो जाइए और अपनी आमदनी को

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट में लगाइए

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।

★ ४½ प्रति शत साधारण व्याज, इनकम टैक्स माफ़।

★ जमा हुऐ व्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

उदयपुर में सम्मेलन की तैयारियाँ जोरों से शुरू हैं। 'मीरांनगरी' की योजना भी कार्यरूप में परिणत हो रही है। व्यापारियों के लिये, स्टाल्स लगाने का प्रबन्ध किया गया है। स्वयं-सेवकों का संगठन-कार्य अपने ढंग से हो रहा। स्वागत-समिति की बैठक में २५ प्रतिनिधियों का चुनाव हो गया है।

धन-संग्रह के लिये नाथ-द्वारा सर्वश्री लक्ष्मीलाल जी जोशी, मोतीलाल जी मेनारिया और पन्नालाल जी अग्रवाल का एक डेपूटेशन गया था जहाँ से उन्हें लगभग डेढ़ हजार रुपये मिले हैं। सर्वश्री भवानीशंकर जी वैद्य और भैरवलाल जी गेलड़ा के बम्बई प्रधारने पर वहाँ से भी डेढ़ हजार की प्राप्ति हुई है। इस प्रकार अब तक सम्मेलन के अधिवेशन के लिये दस हजार से ऊपर की सहायता मिल चुकी है। ज़नता का उत्साह सराहनीय है। भीलवाड़ा भी डेपूटेशन जानेवला है। आशा है, मेवाड़वासी अधिवेशन को सफ़ल बनाने में कुछ उठा न रखेंगे।

फ़र्रासखाना आफिसर मेजर श्री शार्दूलसिंह जी ने मीरानगरी का निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रकट करते हुए इसके लिये हृदय से पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया है। बिजलीघर, राजगोदाम, पी० डब्ल्यू, डी० और म्युनिसिपैलिटी आदि सभी राजकीय विभागों ने भी पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

ता० ९ आक्टोबर से 'मीरानगरी' में जहाँ कि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन सुसम्पन्न हो रहा है, नौ दिन के लिए हिन्दी की अखण्ड ज्योति जलाई जा रही है जो तपोधीश आचार्य ब्रतानन्द जी गुरुकुल चित्तौड़ के कर-कमलों द्वारा सर्वप्रथम प्रदीत की गई है। साथ ही अखिल हिन्दी-संसार से भी अपील की गई है कि वह अपने अपने स्थानों पर हिन्दी की ज्योति जलाये।

ता० १४ को ८१४ स्वागत-सदस्यों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक होगी। इसी दिन स्वयंसेवकगण प्रतिज्ञा ग्रहण करेंगे। श्री शम्भूलाल शर्मा के सराहनीय प्रयत्न से स्वयंसेवक - विभाग का उत्तम संगठन हो रहा है। सम्मेलन के प्रचार-मंत्री श्री सत्यदेव जी शास्त्री भी इस अवसर पर पधारे हैं।

हिन्दी विद्यापीठ का श्रमजीवी विद्यालय ता० ४ से अधिवेशन-सप्ताह मनाया गया जिसके द्वारा नगर की गली गली में सम्मेलन का सन्देश पहुँचाया गया।

—संवाददाता

राँची में गीता में प्रतिपादित निष्काम कर्मयोग के भारत-व्यापी प्रचार के लिए एवं भारतीयों की आध्यात्मिकता को सशक्त एवं तेजस्वितापूर्ण रूप देने के लिए शीघ्रातिशीघ्र तपोभूमि नामक संस्था की स्थापना होने जा रही है। हमें ऐसे सदाचारी और त्यागी युवकों की आवश्यकता है जो तपोभूमि के लिए अपना सारा जीवन दे सकें। साथ ही हमें कुछ ऐसे उच्चकोटि के वक्ता भी चाहिए जो दिसम्बर से ही तपोभूमि के द्वारा निर्दिष्ट कार्य आरम्भ कर दें। जो प्रचारक वैतनिक रूप से कार्य करना चाहेंगे उन्हें वेतन भी दिया जायगा।

पत्र-व्यवहार करने का पता—बलभद्रपति-प्रचार-मन्त्री, 'तपोभूमि', राँची।

* * *

अजमेर—महिला-सेवामंडल के तत्त्वाधान से सरस्वती - बालिका-विद्यालय में गांधी-जयन्ती बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। कई महिलाओं के भाषण और कन्याओं के मधुर गायन हुए। दिन में कताई-प्रतियोगिता और बालिकाओं के खेल कूद हुए। जीतनेवाली कन्याओं को इनाम बाँटे गए। सभा में काफ़ी स्त्रियाँ थीं।

—शकुन्तलादेवी मन्त्राणी —संवाददाता

* * *

इटावा में श्री महावीर-रिलीफ़-सोसाइटी की ओर से इटावा में पिछले २५ वर्ष से एक दातव्य औषधालय चल रहा है। सार्वजनिक सेवा-कार्य में रुचि रखनेवाले व्यक्तियों को सदस्य बनाकर केन्द्र-संचालक नियुक्त किया जायेगा और उन्हें वितरणार्थ औषधियाँ मुफ़्त दी जायँगी केवल डाक महसूल देना पड़ेगा। सदस्यता का चन्दा १) वार्षिक रक्खा गया है। विशेष ब्योरा मन्त्री श्रीमहावीर-रिलीफ-सोसायटी इटावा से प्राप्त किया जा सकता है।

—संवाददाता

* * *

पटना के सुप्रसिद्ध नेता श्री बाबू अनुग्रहनारायणसिंह जी (पटना) ने राजेन्द्र साहित्य-महाविद्यालय सेवदह (पटना) में ग्रामसेवा तथा रचनात्मक कार्यों का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से शिक्षण-शिविर खोलने की योजना प्रकाशित कराई है। इसमें २४ शिक्षार्थी प्रवेश पा सकेंगे। पाठ्य-क्रम चार मास का रहेगा। शिक्षार्थियों को अपनी ओर से लोटा, थाली, बिछावन, चरखा लाना होगा। भोजन का प्रबन्ध विद्यालय की ओर से किया जायगा। जिसके लिए यहाँ के कार्यकर्त्ता पूर्णरूप से प्रयत्नशील हैं। शिविर की आयोजना प्रारम्भ हो गई है। सम्भवतः नवम्बर के प्रथम सप्ताह में इसका कार्यारम्भ हो सकेगा जिसकी सूचना चुने हुए व्यक्तियों को दी जायगी। आवेदक अपनी योग्यता और उम्र का उल्लेख करते हुए अपना आवेदन-पत्र अनुग्रह बाबू के पास कदमकुआँ पटना के पते से भेजें।

—मथुराप्रसादसिंह

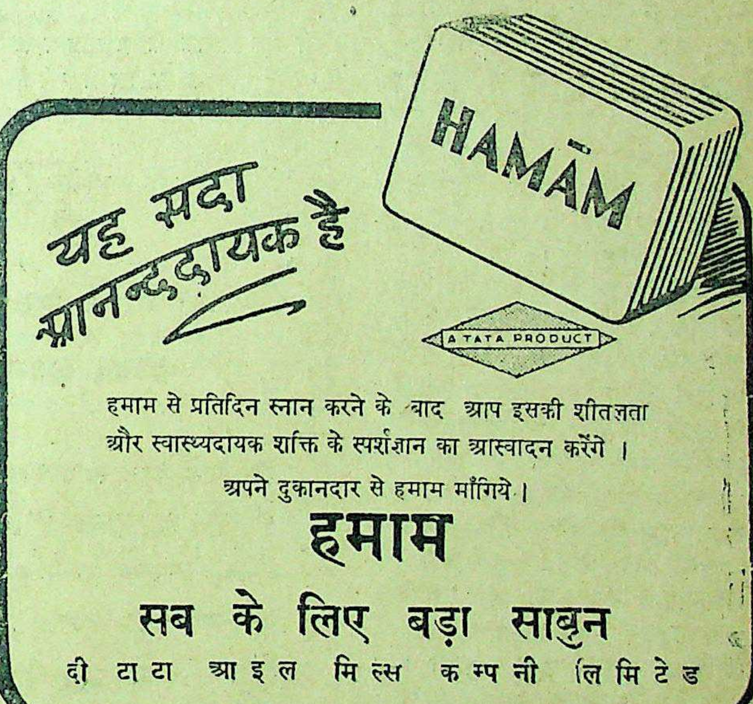

हमाम से प्रतिदिन स्नान करने के बाद आप इसकी शीतलता और स्वास्थ्यदायक शक्ति के स्पर्शज्ञान का आस्वादन करेंगे।

अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

हमाम

सब के लिए बड़ा साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

यह आपके भोजन को स्वादिष्ट बनाता है।

यह प्रकृति से ही अच्छा होता है।

CEYLON
DESICCATED
COCONUT
रुचिकर भोजन के लिये पानी के स्थान पर सभी रूप में नारियल के दूध का प्रयोग करें। यह भोजन को अधिक पोषक और स्वादिष्ट बना देगा। नारियल का उत्तम दूध प्राप्त करने के लिए 'डेसीकेटेड् कोकोनट' (सूखे नारियल) की आवश्यक मात्रा को कुनकुने पानी में डालिए और दो बार निचोड़िये।

साधारण नारियल से 'डेसीकेटेड् नारियल' श्रेष्ठ है, क्योंकि:—

(१) जो गरियाँ डेसीकेटेड कोकोनट में इस्तेमाल की जाती हैं उनकी ख़ास तौर से खेती होती है और तोड़ने से पहिले उन्हें पूरी तरह पकने दिया जाता है।

(२) कसने के पहले गरियाँ तारे रस और पोषक तत्व को सोख लेती है—कोई रस व्यर्थ नहीं जाता।

(३) एक पौंड 'डेसीकेटेड् कोकोनट' में उतने ही ताज़े नारियल से अधिक पोषक तत्व होते हैं—क्योंकि सुखाने में सिर्फ़ पानी ही अलग किया जाता है, रस नहीं।

आपके लिये सिलोन का सुखाया हुवा नारियल ही अच्छा है।

नुस्खों, नमूनों और व्यापारियों के नाम के विवरण के लिये लिखिए।
'सीलोन ट्रेड कमिश्नर फार इंडिया।
सीलोन हाउस, चर्च स्ट्रीट, बम्बई।
—सीलोन कोकोनट बोर्ड से प्रचारित।

क्या पंडित नेहरू जावा जायेंगे ?

(पेज ५ का शेष)

स्वरूप बटाविया, सुराबाया, फुरवास कारटा जैसे बड़े नगरों में दिन प्रतिदिन जापानी फौजों और इंडोनेशियन राष्ट्रीयतावादियों में मुठभेड़ें हो रही हैं। एक अन्य समाचार के अनुसार मित्र-कन्ट्रोल-कमीशन के कमांडर मेजर जनरल ग्रेसी ने रायल एयर फोर्स के वायुयानों को अनामी राष्ट्रीय फौजों को दबाने में प्रयुक्त करने की आज्ञा माँगी है।

एशिया के रंग-मंच में इन आश्चर्यजनक घटनाओं ने विश्व के साम्राज्यवादी राष्ट्रों का पर्दा फाश कर दिया है। एशिया को अब स्पष्ट मालूम हो गया है कि स्वतन्त्रता की हत्या के लिए साम्राज्यवादी अपने आपस की कठोरतम शत्रुता को भी भूल कर एक हो सकते हैं—जापान तथा मित्रराष्ट्र भी इंडोनेशिया और इंडोचीन की जन-शक्ति को दबाने में एक हो सकते हैं—ठीक स्टालिनवादी रूस और साम्राज्यवादी ब्रिटेन व अमरीका की तरह जो ईरान का विभाजन करने के लिए संधियाँ कर सकते हैं। जान पड़ता है कि एशियावासी अब शान्ति की नींद नहीं सो सकते—उनके हृदय में आजादी के लिए तड़प उठ चुकी है। साम्राज्यवादियों के अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का मुकाबला, एशिया का राष्ट्रीय गठबन्धन ही करेगा, और यह गठबन्धन होकर ही रहेगा। सरदार पटेल और शरत् बोस की 'एशिया छोड़ो' की आवाज और डा० साइकारनो-द्वारा, चीन की मैडम चांक-काई-शेक, भारत के पं० जवाहरलाल नेहरू, आस्ट्रेलिया के डा० हरबर्ट इवाट और फिलीपाइंस के मेजर जनरल कार्लो रोमुलो को जावा आकर परिस्थिति का निरीक्षण करने का निमन्त्रण, इस गठबन्धन की भूमिका है।

भारत में इस समय, विशेषतया चुनाव के अवसर पर, पंडित नेहरू की बड़ी आवश्यकता है, पर कुछ ही दिनों के लिए अगर पंडित जी इंडोनेशिया की जन-शक्ति के साहस और वहाँ की हालत देखकर देश की राष्ट्रीय नीति का निर्धारण करें, तो संसार की प्रजातन्त्रात्मक जनशक्तियों का मार्ग स्पष्ट हो जायगा। संसार में किसान-मजदूर राज्य की सृष्टि अब एशियावासियों को शीघ्रातिशीघ्र संगठन के ऊपर ही निर्भर दीख पड़ती है। यह संगठन कैसे होगा—कब होगा—यह आगामी घटनाओं और प्रभावशाली नेतृत्व के ऊपर ही निर्भर है। जनता का काम तो 'क्विट एशिया' 'क्विट इंडिया' 'क्विट इम्पीरियलिज्म' के नारों को क्रियाशील बनाना है—सतर्कता तथा संगठन की लड़ी बना देनी है। आज तो विश्व की जीवन-कसौटी यही है—'एशिया सावधान' 'भारत सावधान'!

चित्रपट और हिन्दी

(संपादक के नाम पत्र)

३०-९-४५ के 'देशदूत' में श्री हरस्वरूप माथुर 'परख' और 'हुमायूँ' चित्रों की आलोचना में लिखते हैं कि दोनों चित्रों की भाषा 'हिन्दुस्तानी' है। अगर इन चित्रों की भाषा का नाम 'हिन्दुस्तानी' रक्खा जा सकता है तो न मालूम 'उर्दू' किस भाषा का नाम होगा! क्या जो भाषा उर्दू लिपि में लिखी होने पर उर्दू कहलायेगी वह बोली जाने पर 'हिन्दुस्तानी' हो जाती है? मैं समझता हूँ कि हिन्दी पत्रों में चित्रों के समालोचकों पर बड़ी भारी जिम्मेदारी है। इनका कर्त्तव्य है कि वे साफ-साफ बतलायें कि किस चित्र की भाषा उर्दू है जिससे हिन्दी-भाषी जनता को धोखा न हो और वह उस चित्र को देखने जाकर अपना पैसा और समय नष्ट न करे। सिनेमा-द्वारा उर्दू प्रचार का, जिसके पीछे हिन्दी-विरोधी राजनीतिक और साम्प्रदायिक शक्तियाँ संगठित होकर कार्य कर रही हैं, निवारण इसी प्रकार हो सकता है कि प्रत्येक नये फिल्म के विषय में हिन्दी पत्र हिन्दी-भाषी जनता को साफ-साफ शब्दों में सूचित कर दें कि इस चित्र की भाषा कौन सी है। मालूम होने पर हिन्दी-भाषी जनता उर्दू चित्रों को देखने अपने-आप बहुत कम संख्या में पहुँचेगी और इस प्रकार हम अनायास चित्र-निर्माताओं को सही रास्ते पर ला सकेंगे। एक बात और—हिन्दी पत्रों में उर्दू चित्रों की समालोचनाओं को उसी प्रकार स्थान नहीं मिलना चाहिए जिस प्रकार हिन्दी पत्रों में उर्दू पुस्तकों की समालोचनायें नहीं छपती हैं। जब तक हिन्दी-पत्र इस प्रकार उर्दू चित्रों को अलग नहीं कर देंगे तब तक सिनेमा जैसे आकर्षक साधन-द्वारा उर्दू प्रचार सम्भव रहेगा और यह रेडियो से भी अधिक घातक सिद्ध होगा। सिनेमा-जंगत् में जो हिन्दी विरोधी मनोवृत्तियाँ कार्य कर रही हैं। इन पर भी हिन्दी पत्रों को सजग होकर प्रकाश डालना चाहिए। श्री माथुर ने अपनी आलोचना में सोहराब मोदी की तारीफ के पुल बाँध दिये हैं परन्तु वे यह कहना भूल ही गये कि श्री मोदी हिन्दी के कट्टर विरोधी हैं और कहानी-लेखक को वे पहले से ही हुक्म दे देते हैं कि हिन्दी शब्द का प्रयोग न किया जाये।

—सूर्यप्रकाश

* * *

फतेहपुर जिले के सुप्रसिद्ध प्रमुख नवयुवक कांग्रेस नेता श्रीयुत पंडित दयाशङ्कर जी मिश्र, 'सूर्य' भूतपूर्व प्रधान-मंत्री जिला-कांग्रेस कमेटी एवं सम्पादक, 'स्वतन्त्रता' अखिल-भारतीय हिन्दी - साहित्य - सम्मेलन की स्थायी-समिति के सदस्य सन् १९४६ के लिए सम्मेलन के 'विशेष-सदस्यों' द्वारा भारी बहुमत से निर्वाचित हुए हैं। आप आगामी [illegible] में सम्मेलन के श्री के० एम० मुंशी की अध्यक्षता में होनेवाले अधिवेशन की विषय-निर्वाचिनी-समिति की बैठक में १६ अक्टू लेने के लिए यहाँ से १५ अक्टू जायँगे।

यूनाइटेड
कमर्शियल बैंक लिमिटेड
२, रायल एक्सचज प्लस, कलकत्ता।

विक्रीत मूलधन............४ करोड़ रुपया
चुकता किया भूलधन......२ करोड रुपया
सुरक्षित मूलधन........७½ लाख रुपया

डाइरेक्टरों का बोर्ड
श्री जी० डी० बिरला (चेयरमैन)
श्री एम० ए० इस्फ़हानी (वाइस-चेयरमैन)
श्री रमनलाल जी साराइया (वाइस-चेयरमैन)
श्रीयुत अनन्तचूण ला
,, महादेव एल दहानुकर
,, नवीनचन्द्र सफ़तलाल
,, मदनमोहन आर रुइया
श्रीयुत मोतीलाल तपूरिया.
,, बैजनाथ जलान
,, ईश्वरीप्रसाद गोयनका
सर आदम जी हाजी दाऊद
हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत
श्री बी० टी० ठाकुर (जेनरल मैनेजर)
शाखाएँ एवं एजेंसियाँ—समस्त भारत व विदेशों में।

ब्रांच आफिस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर।

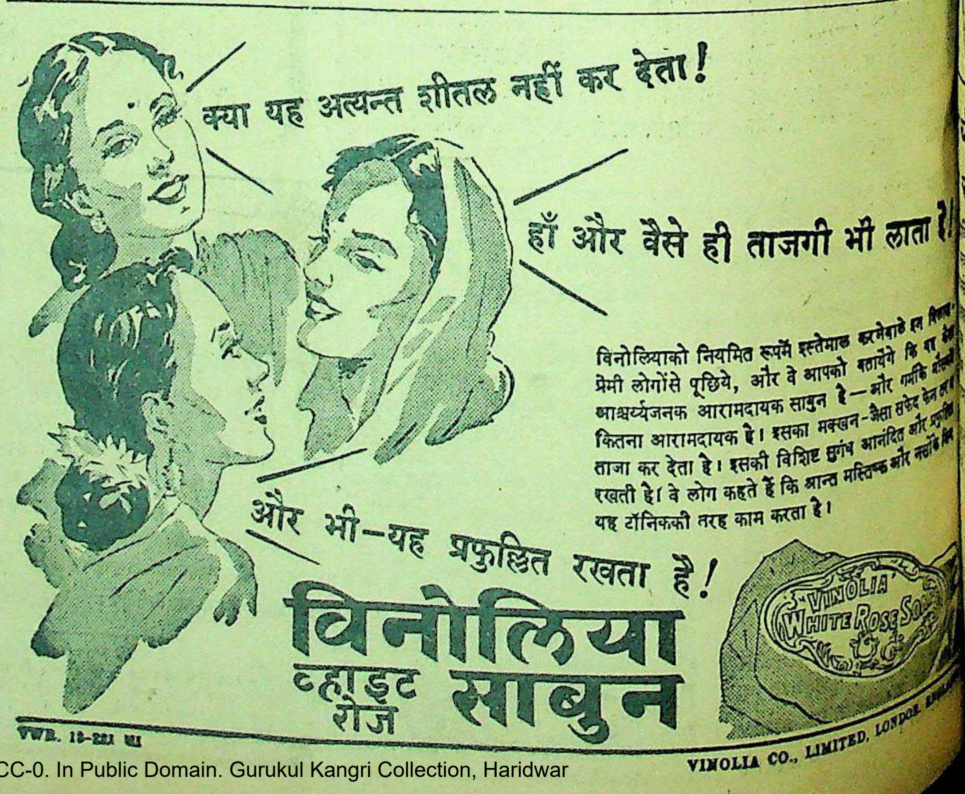

क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!
हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!
और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!
VINOLIA WHITE ROSE SOAP

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इस विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मी कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि श्रान्त मस्तिष्क और नसों के लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

विनोलिया व्हाइट रोज साबुन

VWR. 12-221 HI

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है
हुकाबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें।
साटीन, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी
कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

ELGIN

it's good!

(गांठ) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार
के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या
द्वारा ही भेज सकते हैं। भारतवर्ष के किसी भी
पार्सल व छोटे पार्सलों के रूपमें पेकेन्जर द्वारा निर्यात
है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों में ही)
व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

एल्गिन मिल्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर।
सोल सेलिंग एजेन्टस् :—
रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर।

EK-25 HI

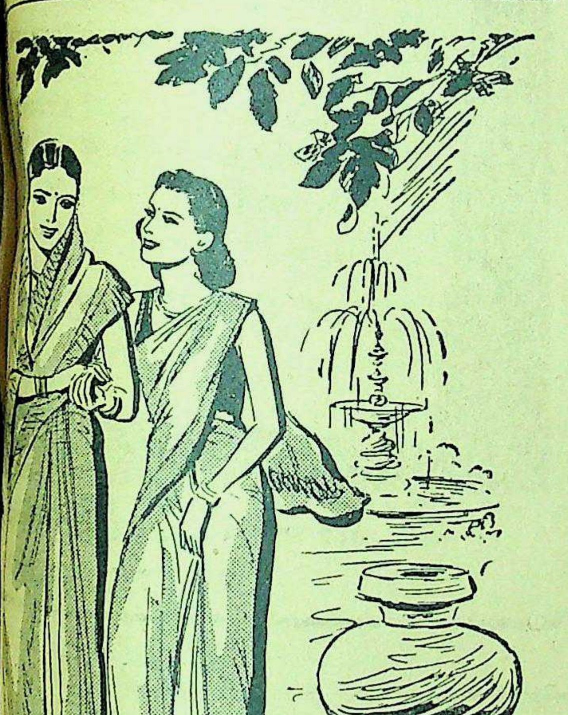

र्य की
म्परा कायम रख रही है

के सभी महत्वपूर्ण मामलों में केवल उनकी मां ही उन्हें बहुमुल्य
ती है। इस रूपवती मां ने अपनी सुन्द्र बेटी को अपना बढया गुर दिया
साबुन और स्वच्छ पानी की सहायता से त्वचा के सौन्दर्य को कायम
ता है। यह शिक्षा इस माँ ने अपनी माँ से ली थी और अपने बचपन से
करती आई है। इसी कारण उसकी त्वचा आज भी उतनी ही
ती है। इसकी बेटी भी उसी तरह अपनी त्वचा की प्रवाह करती है।
माँ की तरह उसकी त्वचा भी बेदाग और सुन्दर रहेगी।

स्तान की सुन्द्रयों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है। स्वाभाविक
गुण के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से कहीं बढ़चढ़ कर है।

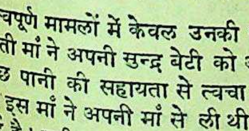

पिअर्स साबुन
सौन्दर्य का सेवक

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND.

कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी-रचित राष्ट्रीय गीतों का सुन्दर संग्रह

पूजा-गीत

क्यों पढ़ना चाहिए ?

हिन्दी-साहित्य के महारथी श्री वियोगी हरि जी लिखते हैं :—

'पूजा-गीत' के कई गीत इतने मधुर, इतने रसपूर्ण और इतने दिव्य हैं कि बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। ये गीत निस्सन्देह प्रसादपूर्ण हैं। रस-परिपाक खूब हुआ है सात्विक तो वे हैं ही। यह एक शुभ चिह्न है कि कवि ने कला की उच्छृंखल एवं विकृत व्याख्या को स्वीकार नहीं किया है।

द्विवेदी जी के पवित्र पूजा-गीत काफी प्रसिद्ध और लोकप्रिय है।

—राष्ट्रभाषा-समाचार, वर्धा

अच्छे फैदरवेट में छपा हुआ सचित्र प्रकाशन प्रत्येक घर में रखने योग्य है।

मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

आपको ये बातें जानने का अधिकार है —

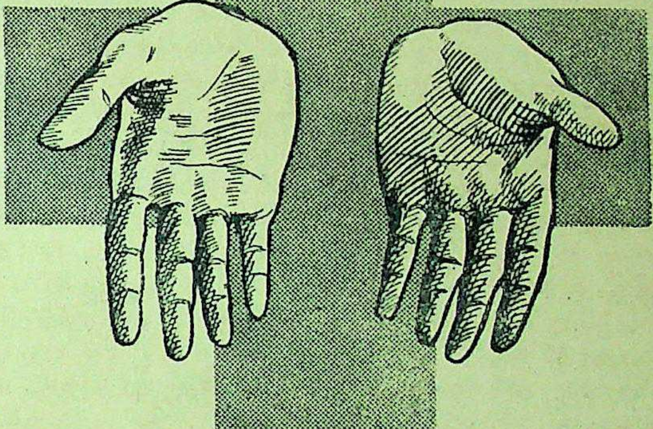

युद्ध समाप्त हो गया, पर इंडियन रेड क्रास पेराड सेंट जान का कार्य चल रहा है। हिन्दुस्तान और बर्मा के अस्पतालों में हज़ारों बीमार और घायल सिपाहिओं की चिकित्सा हो रही है। इन जवानों के आराम का प्रबन्ध करके हम कोई दान-कार्य नहीं कर रहे, बल्कि अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हैं। इंडियन रेड क्रास पेराड सेंट जान को इस कर्त्तव्य-पालन पर गर्व है। किन्तु इसके लिए चन्दे के रूप में आपकी सहायता की आवश्यकता है। १९४४ में २ करोड़ ८२ लाख रुपये की आय में से प्रधान कार्यालय से इस संस्था के प्रबन्ध पर केवल ३/$\frac{१}{६}$ प्रति शत रकम ख़र्च की गई, यद्यपि इसका विस्तार बहुत बड़ा और कार्य बड़ा पेचीदा है। परोपकारी कार्यों के लिए संगठित की गई संस्थाओं में से यह सर्वश्रेष्ठ संस्था है। बहुत चतुरता से वस्तुएं ख़रीद कर और इनका वितरण करके अपने अन्तर्राष्ट्रीय संघटन के द्वारा यह संस्था संसार भर में आपके वीर सैनिकों के सम्मुख आपके मैत्री भाव का प्रतिनिधित्व करती है और उनके प्रति आपकी प्रशंसा तथा कृतज्ञता का प्रमाण उपस्थित करती है।

ऐसे महान कार्य को कोई दूसरी संस्था नहीं कर सकती। यह आपकी सहायता पाने की अधिकारिणी है, जिस प्रकार वीर सैनिकगण जिनकी सेवा यह करती है आपके आदर एवम् श्रद्धा के पात्र हैं।

इंडियन रेड क्रास के द्वारा
अपने घायल और बीमार सैनिकों
की सहायता दिल खोल कर कीजिए

AAA 314

RAMESH RAJ & Co
KARACHI

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

छमाही ब्याज
~ घर बैठे लीजिए

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) भी वैसी ही अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है और इस समय बड़ी और छोटी दोनों तरह की रक़में लगाने के लिए सब से अच्छी मद है। जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।

इस ऋण की ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत है और गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। अगर इससे पहले आप नक़द रक़म प्राप्त करना चाहें, तो इस ऋण को हर समय मार्केट में बेच सकते हैं।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम-टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को चुका दिया जायगा और सरकारी चेक आपके घर पर पहुँच जाया करेगा। इसे आप साधारण चेक की भाँति भुना सकेंगे। आपको यह संतोष भी प्राप्त होगा कि आप हिन्दुस्तान की सहायता कर रहे हैं, क़ीमतों को घटा रहे हैं और अच्छा ब्याज भी पा रहे है।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खजाने से खरीद लें।

AAA 224 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित

सारिडन से
१० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये

ENGALI
SERIES

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्द
फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जायंगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जा
दोनों कारणोंसे ही बालोंकी
कमनीयता और मजबूती नष्ट

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों
जवाकुसुम बड़ी आसानी
निकाल देता है और बालों
मजबूत बनाता है। इसके लि
मस्तिष्क शीतल हो जाता

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका सम्पू
JM-3H
जवाकुसु
केशोंकी शोभा बढाता......मस्तिष्क शीतल र

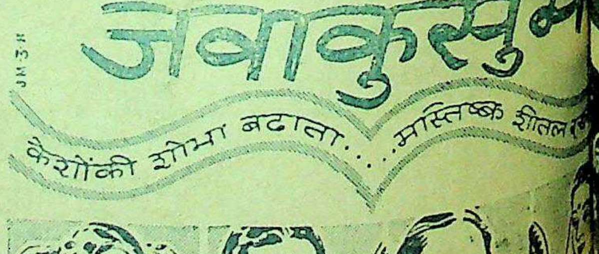

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० · जवाकुसुम हाउस · क

प्रबन्ध सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्र द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र

र्षिक मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२१ आक्टोबर, १४९५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 21st October 1945

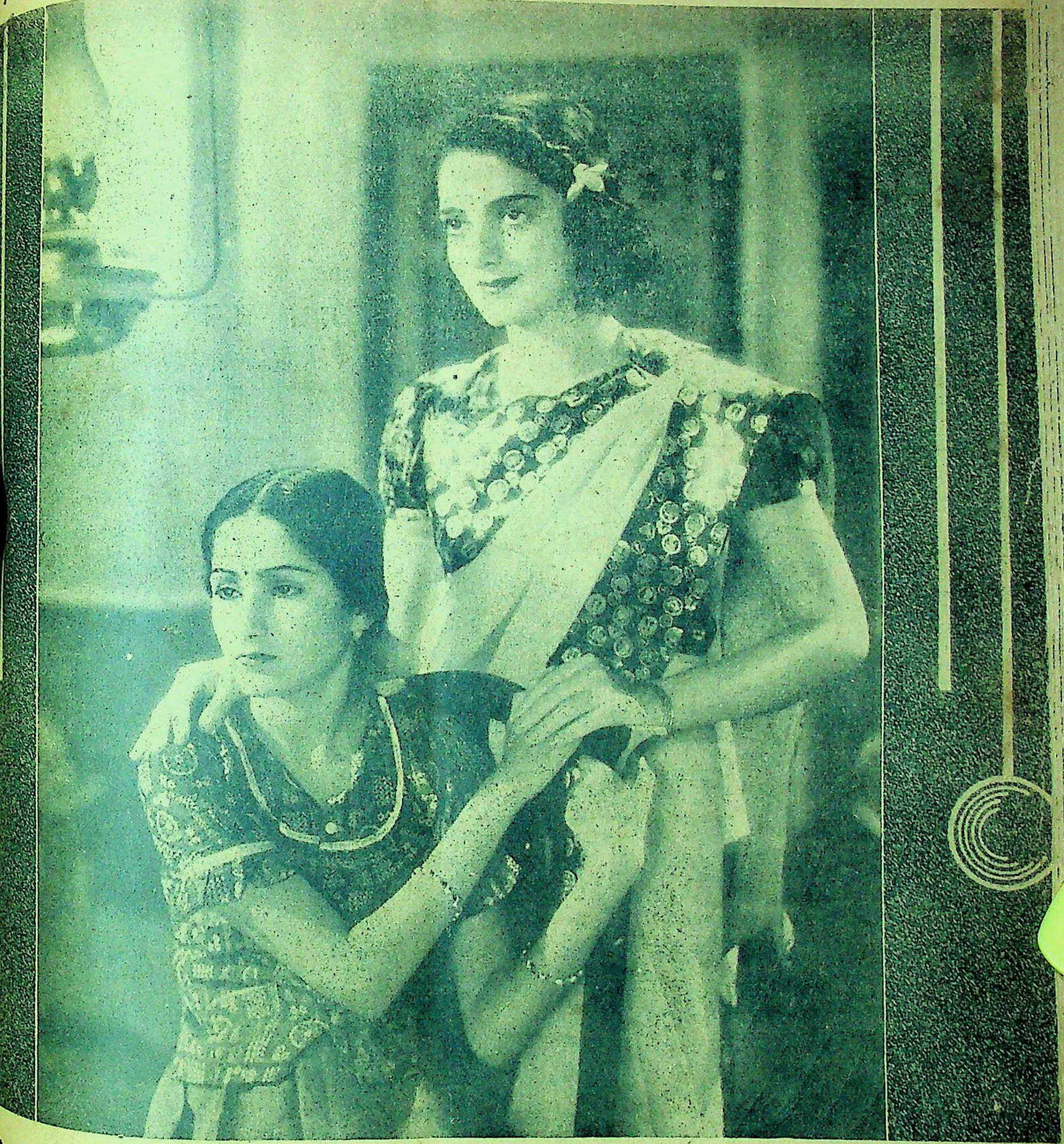

लक्ष्मण-शक्ति—कविवर श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल-एल० बी० की एक बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इस खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंकाकाण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब कि लक्ष्मण जी मेघनाद से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने की आशा नहीं रह गई थी। कवि ने उस समय की मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की शोभामय अवस्था का बहुत ही आकर्षक और हृदयग्राही वर्णन किया है। मूल्य ॥) आने।

गौरव-भूमि मेवाड़।
का सम्मेलन किधर ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

राष्ट्रीयता तथा आगामी चुनाव।
भारत-नेमी डाक्टर आरंडेल कौन थे ?

अब
कन्ट्रोल भाव पर
मिलते है

EVEREADY
एवेरेडी बेटरी के बल्ब

हिन्दुस्तान में सब जगह फुटकर व्यापारियों के लिए थोक भाव :—
नं. 1161 (2.5V) } नं. 1162 (3.8V) } रु. ११-४-० १०० नग
नं. 1163 (6.2V) .... „ १८-१४-० „ „

हिन्दुस्तान में सब जगह खरीददारों के लिए कानून भाव :—
नं 1161 (2.5V) } नं 1162 (3.8V) } .... एक नग १ आने
नं.1163 (6.2V) .... „ ८ आने

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY (INDIA) LTD.
BOMBAY • CALCUTTA • MADRAS
COCHIN • KARACHI • DELHI

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

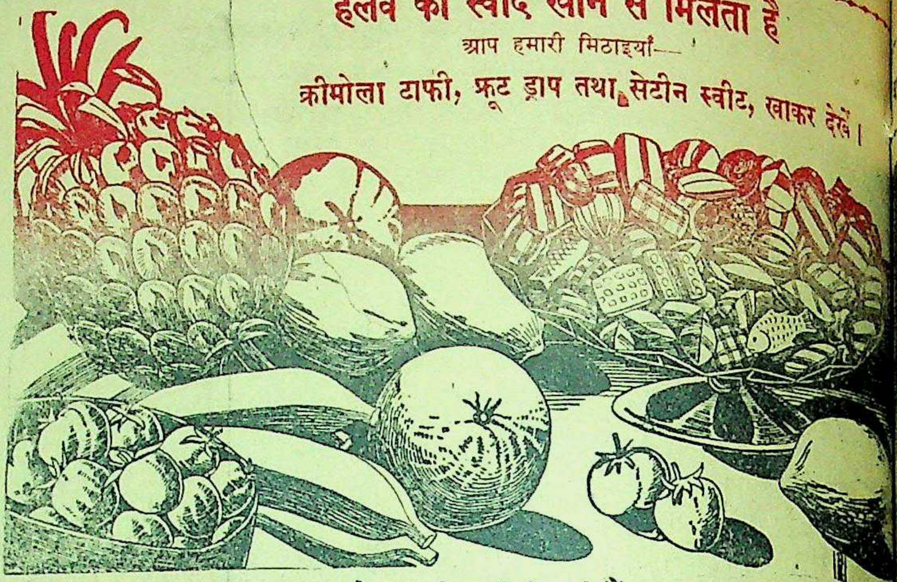

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

रैक्सॉना
चर्म-सौन्दर्य को पैदा करता है
... चर्म-स्वास्थ्य को
सुरक्षित रखकर

THE NEW
Rexona
MEDICATED SOAP
Rexona
CONTAINING CADYL

हाँ, क्योंकि रैक्सॉना चर्म स्वास्थ को जो कि चर्म को आकर्षक बनाने का एक मात्र आधार है—बड़ी शीघ्रता से बढाता है और सुरक्षित रखता है। रैक्सॉना चर्म सौन्दर्य देने का दावा कर सकता है।

रैक्सॉना से ये सब कैसे होता है ?

क्योंकि यह चर्म-किटाणु विनाशक 'कैडिल' के मिश्रण से बनाया गया है और क्योंकि रैक्सॉना का शीघ्र बनने वाला घना फेन स्फूर्ति और स्वास्थ्यदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रोंगटे में—जहाँ से प्राय: सब चर्म रोग और दाग शुरु होते है—पहुँचा देता है।

रैक्सॉना घरेलू साबुन

घर का हर एक, शख्स इस आकर्षक हरे, शीघ्र फेन देने वाले साबुन की सराहना करेगा। स्त्रियाँ इसलिए कि उनके चर्म में शीघ्र सौन्दर्य उत्पन्न होगा —पुरुष इसलिए कि वह यह जानते हैं कि चर्म को स्वस्थ रखना कितना आवश्यक है। बच्चों के लिए तो इससे अच्छा कोई साबुन है ही नहीं। रैक्सॉना का कोमल फेन शरीर के दाग मिटा देता है, चर्म में रूखापन नहीं आने देता और बच्चों के चर्म को ठंडा और कोमल बनाता है। पुरुषों के लिए आदमियों को चर्म स्वास्थ लाभ करने के लिए नियमित रूप से प्रयोग में लाना चाहिए।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, और स्वास्थ्यदायक और ताज़गी देनेवाले तेलो का मिश्रण है। स्वास्थरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।

फुन्सी, फोड़े, ऐकजीमा, मुँहासे, ऑख की कलौंस, झुर्रियाँ, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिरभी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते है।

RP. 29-220-40 HI

REXONA PROPRIETARY

देशदूत

८ संख्या ८] सचित्र हिन्दी साप्ताहिक [रविवार, २१ आक्टोबर, १९४५

न्द्रप्रसाद जी ने बिहार में
रा प्रारम्भ कर दिया है ।
हरलाल नेहरू का चुनाव
दौरा शुरू हो गया ।
युक्तप्रांत के बलिया, गाजी-
द के पाँच लाख किसानों
सरकार की दमन-नीति की
ड़ाई । बात समझ में भी
जिले खास कर बलिया तो
आन्दोलन के समय बागी
गया क्योंकि वहाँ चार
कारी हुकूमत की हुर्र हो
जनता स्वराज्य का सच्चा
गी । अपने राम की राय
ने चुनाव के दौरे का
जगहों से किया है । गैर
दारों की फूँक सरकने लगी
बड़े मन्सूबे काफूर हो गये
मुसलिम लीग का कोई
जिलों से खड़ा हो रहा है
कोई हो तो भेजा जाय
?

*   *

ने अपने भाषण में कहा
या पिछले पच्चीस वर्षों
तथा मुस्लिम लीग ने
क्या किया ? अपने राम
और चाहे किसी ने भी
मुसलिमलीग ने तो
पाकिस्तानी तसला
बात दूसरी है कि तसले
न जाये । क्योंकि
मतलब, कोई सुने या

न सुने ? सबसे बड़ा काम तो साम्प्रदायिक संस्थाओं ने यह किया कि सरकार की लड़ाई में अच्छी खासी मदद की और बढ़िया फायदा भी उठाया । यह सब काम देश की आजादी के लिए नहीं था तो किसलिए ?

*   *   *

चुनाव की चहल-पहल देखकर कुछ लीडरानेवतन कांग्रेस में शरीक होने जा रहे हैं । ज़रूर हो जाना चाहिए । क्योंकि कांग्रेस-टिकट पर खड़े होनेवाले उम्मीदवारों की ही जीत होगी । यों तो दुनियाँ में बुद्धिमानों की यों ही कमी है । फिर इस वक्त जो भी गैर कांग्रेसी कांग्रेस में शरीक होकर लाभ उठा ले वह तो सबसे बड़ा बुद्धिमान ही नहीं बुद्धि का अवतार समझा जायेगा । अवसरवादी सदा होते आये हैं और आज भी अवसरवादियों से यह देश खाली नहीं है । जो कल सरकार के थे, वह आज कांग्रेस के होने जा रहे हैं । अवसर से लाभ उठाना ही आजकल के शिक्षित समाज की बढ़िया कला है । क्योंकि सरकार से तो सदा ही लाभ उठाया जा सकता है लेकिन कांग्रेस से तो लाभ वक्त जरूरत पर ही । कांग्रेसवाले आज बाहर हैं, कल फिर वह जेलखाने का रास्ता लेंगे । चुनाव के सिलसिले में अकारण प्रेम पिलपिला ही पड़ता है, आखिर किया क्या जाये ?

*   *   *

डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया देश के कट्टर गांधीवादी नेता हैं । उन्होंने अपने एक भाषण में कहा है कि कांग्रेस-स्वयंसेवकों को लाठियाँ लेकर चलना चाहिए और यदि कम्यूनिस्ट गड़बड़झाला करें तो उन्हें पीछे न हटना चाहिए । डाक्टर पट्टाभि ने यह भी कहा है कि अहिसा का हथियार केवल अँगरेजों के विरुद्ध काम में लाने के लिए है । बात तो सचमुच समझ में कुछ आती है क्योंकि अँगरेजों की तोप-बन्दूक का मुकाबला अगर कोई भारतीय अस्त्र कर सकता है तो वह है केवल अहिंसा । अहिंसा-अस्त्र संसार के सब अस्त्रों का नगड़दादा है । ईमानदारी की बात यह भी है कि अँगरेज अहिंसा से डरते भी हैं । लेकिन कम्यूनिस्ट ! यह अहिंसा-वहिंसा मानते ही नहीं । वह क्या मानते हैं, इसे तो वह जानें या रूस जानें या स्वयं परवरदिगार ! इसलिए खतरे से बचने के लिए हाथ में कुछ होना ही चाहिए । अँगरेजों का हिसाब-किताब तो सब खुलासा है लेकिन कम्यूनिस्टों का हिसाब-किताब तो जादू की पुड़िया है । क्योंकि 'ना जाने केहि रूप में नारायण मिलि जाहिं ।'

*   *   *

'हराकिरी' आत्मघात करने का काम अब तक जापानियों तक ही सीमित था लेकिन अब वह समुन्दर और मैदान पार करती हुई इँगलैंड भी पहुँचनेवाली है । इँगलैंड की टोरी-पार्टी ने मजदूर-सरकार के लिए उसे अपने पास बुलाने का निमंत्रण दे दिया है । क्योंकि इँगलैंड में इस वक्त मजदूरों की जो हड़ताल हो रही है, टोरी पार्टी समझती है कि मजदूर सरकार उसे सँभाल न सकेगी और अन्त में उसे 'हराकिरी' के भयंकर रोग का शिकार अगली मई तक होना ही पड़ेगा । जुम्मा जुम्मा चार दिन तो अभी मजदूर सरकार को आये ही हुए हैं, यह क्या मामला है ? असल बात तो यह है कि अँगरेजों की मांया अँगरेज ही समझ सकते हैं, दूसरे के बूते का रोग नहीं है ।

*   *   *

खबर मिली है कि लन्दन में होनेवाले वैदेशिक मन्त्री सम्मेलन के सिलसिले में अमरीका और रूस के बीच में ब्रिटेन फंस गया है । अपने राम की राय में फँसना ब्रिटेन के लिए कोई नई बात नहीं है । उसकी जिन्दगी ही फँसते और निकलते बीती है । संसार के इतने बड़े महायुद्ध में जब ब्रिटेन ने अमरीका और रूस को ला फंसाया तब अब तो युद्ध समाप्त हो गया है । उसे चिंता किस बात की है ? दाँवपेंच में इँगलैंड हातिम है । वह ऐसा छू-मंतर होगा कि अमरीका और रूस टुकुर टुकुर ताकते रह जायँगे । कहावत है कि 'दो पाटों के बीच में साबित बचा न कोय' किन्तु ब्रिटेन अभी तक तो बाल-बाल बचता ही आया है ।

उदयपुर में होने वाले अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति श्री कन्हैयालाल मानिकलाल मुंशी ।

'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और लोकप्रिय विशेषांक

'दीपावली अंक'

आगामी १ नवम्बर को बड़ी धूमधाम औ सजधज से निकल जायेगा

पिछली बार की भाँति इस बार भी आगामी दीपावली के अवसर पर 'देशदूत' का सर्वाङ्ग सुन्दर और आकर्षक विशेषांक प्रकाशित होगा । यह अंक देशी-विदेशी राजनैतिक लेखों, कहानियां, हास्यरस के नोटों, कार्टूनों, कविताओं तथा अन्य रोचक पाठ्य-सामग्री से अलंकृत होगा । विशेषांक दर्शनीय तथा विशेष रूप से पठनीय होगा । बहुरंगा कवर तथा अनेक सादे चित्रों से सुसज्जित ।

एजेन्टों को भी अभी से अपनी प्रतियाँ रिजर्व करा लेनी चाहिए ।

इस अंक का मूल्य केवल ।) होगा ।

मैनेजर—'देशदूत' इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग ।

सम्पादक का पृष्ठ

क्या शांति के यही लक्षण हैं ?

संसारव्यापी युद्ध की समाप्ति के बाद महान राष्ट्रों ने शांति और सुरक्षा की स्थापना के लिये ऐसे जोर के नारे लगाने प्रारम्भ किये कि यह अनुमान होने लगा कि शीघ्र ही संसार एक नई दिशा की ओर अग्रसर होता हुआ कुछ समय के लिये शांति की साँस लेगा किन्तु लक्षण कुछ और ही दिखाई दे रहे हैं। शांति और सुरक्षा की स्थापना के बीड़ा उठानेवाले स्वयं झगड़ रहे हैं। प्रत्येक प्रजातन्त्र और जनता के नाम पर अपनी साम्राज्यशाही की सुरक्षा और स्थापना के लिये लालाइत है। कोई भी अपना स्वार्थ और साम्राज्यवादी लिप्सा छोड़ने को तैयार दिखाई नहीं देता। अमरीका, रूस और ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्रियों के मतभेद से वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन का भंग हो जाना, इसका जीता जागता उदाहरण है। कारण यह है कि युद्ध के बाद साम्राज्यवादी राष्ट्र चाहते हैं कि योरोप और एशिया पर उनका पूर्णतया प्रभुत्व स्थापित हो जाये। अमरीका और ब्रिटेन ने पिछले छः वर्ष में जो व्यापारिक और आर्थिक हानि उठाई है, उसकी पूर्ति होना आवश्यक है। यद्यपि अमरीका और ब्रिटेन में भी कुछ प्रश्नों पर आंतरिक मतभेद चल रहा है फिर भी वह अभी उतना स्पष्ट नहीं है जितना की रूस का। रूस जानता है कि उसके सहयोगी अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए तनिक भी ढील देने को तैयार नहीं हैं, इसलिए उसने भी अब साम्राज्यवादी रुख लेना प्रारम्भ कर दिया है। वह भी योरोप और एशिया में अपने सहयोगियों के समान प्रभुत्व चाहता है। ऐसी दशा में मतभेद उत्पन्न होना अनिवार्य है क्योंकि यह साम्राज्यवादी सब कुछ सहन कर सकते हैं किन्तु स्वार्थों तथा प्रभुत्व की हानि नहीं बरदाश्त कर सकते। इस प्रकार इन तीनों राष्ट्रों की वैदेशिक नीति का अनुमान करके संसार के छोटे-बड़े राष्ट्र इस समय पूर्णरूप से प्रजातन्त्र की ओर अग्रसर ह [illegible]। योरोप के राष्ट्र तो सच पूछा जाय तो गत युद्ध में बर्बाद हो गये हैं, इसलिये आगे वह किस घाट लगते हैं, यह तो भविष्य पर निर्भर है। हाँ, तीनों राष्ट्र प्रजातंत्र, जनता तथा किसान-मजदूरों के नारे की आड़ में अपने स्वार्थ साधन के दाँव-पेंच में लगे हैं। छोटे-बड़े सभी राष्ट्र पूर्णरूप से स्वतन्त्र होना चाहते हैं और साम्राज्यवादियों को अपने शासन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने देना पसन्द नहीं करते। प्रायः सभी राष्ट्र यही माँग कर रहे हैं कि उनके मार्ग में मित्रराष्ट्र किसी प्रकार भी बाधा न डालें। यदि वह अपने स्वार्थों की पूर्ति करना चाहें तो उन्हें दूसरा घर ढूँढ़ना चाहिए। मिस्र, फिलिस्तीन और अरब इसी मार्ग पर अग्रसर हैं। यह राष्ट्र कतई नहीं चाहते हैं कि साम्राज्यवादी उनकी स्वाधीनता में बाधक बनें या अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए उन्हें साधन बनायें। अरब, फिलिस्तीन तथा मिस्र अपने कार्यों से यह सिद्ध कर रहे हैं कि उन्हें विदेशियों का प्रभुत्व स्वीकार नहीं है। वह स्वयं अपने देश की राष्ट्रीय स्वाधीनता का मार्ग प्रशस्त करने के अधिकारी हैं। उन्हें अपने मामलों में अमरीका, ब्रिटेन या रूस से वकालत कराने की आवश्यकता नहीं है। वह स्वयं अपनी वकालत कर लेंगे।

एशिया में भी यही स्थिति उत्पन्न हो रही है। जापान का पराभव तो हो ही गया है। एशिया में मित्रराष्ट्र अपनी प्रभुता स्थापित करने के लिये प्रयत्नशील हैं। अमरीका और ब्रिटेन के लिए तो एशिया सदा से आर्थिक शोषण की भूमि रही है किन्तु अब रूस भी बीच में कूद पड़ा है। वह अमरीका और ब्रिटेन के मार्ग में बाधक हो रहा है। पिछले दिनों जब से चीन और रूस की सन्धि हुई है तब से तो रूस और भी अधिक दृढ़ता से अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए लालायित हो उठा है। इस प्रकार साम्राज्यवादी हिकमतें और दाँव-पेंच काफी लगा रहे हैं फिर भी भीतर भीतर स्वाधीनता की अग्नि सुलग रही है। छोटे-से छोटा राष्ट्र भी साम्राज्यवादियों के प्रभुत्व या दबाव का चोगा उतार फेंकने के लिए तत्पर दिखाई दे रहा है। जावा तथा इंडोनेशिया की आज की समस्या इसका ज्वलंत उदाहरण है। अमरीका, ब्रिटेन रूस ही नहीं बल्कि योरोप के किसी भी राष्ट्र का प्रभुत्व छोटे से छोटा राष्ट्र भी सहन करने को तैयार नहीं है। वह स्वाधीन और आत्मनिर्णय की पूरी स्वतन्त्रता चाहते है। हम भी समझते हैं कि संसार के प्रत्येक राष्ट्र को अपने आत्मनिर्णय का पूर्ण अधिकार है। इसलिए उनका आन्दोलन औचित्य पूर्ण है। सच पूछा जाय तो शान्ति और सुरक्षा का मार्ग यही है। अमरीका, ब्रिटेन और रूस को कोई अधिकार नहीं है कि वह अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए अन्य राष्ट्रों की स्वाधीनता में बाधक बनें। यह निश्चय है कि जब तक संसार में दलित तथा छोटे-बड़े राष्ट्रों में समानता तथा स्वाधीनता का शासन स्थापित नहीं होता तब तक शान्ति और सुरक्षा की स्थापना सम्भव नहीं है। क्या मित्रराष्ट्रों का ध्यान इस नग्न सत्य की ओर नहीं है ?

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चकधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में अमर हैं। मूल्य २)

प्रकाशक—मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

मेवाड़ के आज के साहित्यिक

वीरगाथाकाल की परम्परा की रक्षा और आधुनिक कलात्मक साहित्य का सृजन

लेखक, श्री गोपालकृष्ण व्यास

हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन मेवाड़ की पवित्र भूमि उदयपुर में हुआ है। इसलिए हिन्दी-प्रेमियों को इस अवसर पर वहाँ की आधुनिक साहित्य की प्रगति की जानकारी प्राप्त करने की इच्छा होनी अनिवार्य है। लेखक ने इस लेख में मेवाड़ के आज के साहित्य-सेबियों तथा उनके साहित्य पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

मेवाड़ सदा से आगे रहा है। अपने देश की स्वाधीनता के लिए जितना बलिदान मेवाड़ ने किया उतना अन्य किसी रियासत ने नहीं। मेवाड़ के इतिहास का निर्माण उन पहाड़ों और घाटियों के बीच में हुआ है, जहाँ लोहा से लोहा टकराता रहा है। मेवाड़ के जीवन में सुख और शान्ति की स्थापना लंबे समय के लिए कभी नहीं हो सकी। बाप्पा रावल से महाराणा भीमसिंह के समय तक मेवाड़ भूमि में मारकाट एवं रक्त की नदियाँ ही बहती रहीं। मेवाड़ का जीवन विलासिता और वैभव के बीच में नहीं बीता, उसका प्रतिभाशाली व्यक्तित्व तो रणस्थली में ही काम आया। यदि समय मिला होता तो मेवाड़ का निर्माण आज किसी दूसरे ही रूप में होता। अवश्य ही मेवाड़ ने देश को राष्ट्रीयता के झंडे को न झुकने देने के लिए प्रेरित किया। जिस मेवाड़ ने जीवन में कभी भी शान्ति एवं सुख का अनुभव नहीं किया, उस में यदि साहित्य की पर्याप्त उन्नति न हो सकी तो आश्चर्य ही क्या है ? साहित्य एवं कला का निर्माण शान्ति और सुख के समय ही संभव है। जीवन और मृत्यु में जहाँ के लोगों ने अन्तर ही न समझा, वहाँ फिर साहित्य-निर्माण की कैसे आशा की जाती ? यदि साहित्य रचा भी गया तो रणस्थली में गूँजनेवाला जिसकी कीमत तो बहुत है, पर आज के समाज में नहीं। साहित्य की प्रर्याप्त उन्नति के अभाव में मेवाड़ का विकास एकाङ्गी ही रहा, उसने स्वतन्त्रता के लिए मरना तो सीखा, पर स्वतन्त्र समाज का निर्माण करना नहीं।

साहित्य समाज का निर्माता है और साहित्य समाज का दर्पण। वीरगाथाकाल के साहित्य-जीवन ने जीने की कला अवश्य नहीं सिखाई किन्तु जीवन को तुच्छ समझकर राष्ट्र की आन पर मिटने को प्रेरित किया। वीरगाथा काल के कवियों की कल्पनायें वहाँ तक न पहुँचीं जहाँ जीवन आनन्द से विभोर होता है। मेवाड़ की सुषमापूर्ण रमणीयता तो स्वयं ही कविता करने को प्रेरित करती है। प्रकृत्ति ने मेवाड़ का निर्माण ही कुछ इस प्रकार किया है। स्वतः ही उसमें से एक अनिर्वचनीय आनन्दानुभव होता है। मेवाड़ के कण-कण में वह शक्ति है जो निराश जीवन में आशा का संचार करने की शक्ति रखती है। जिसकी पवित्र भूमि पर न जाने कितने नौ-निहालों ने अपनी कुर्बानी दी है, जिसकी भूमि पर न जाने कितने बच्चे अपनी माता के मधुर स्नेह से वंचित रहे हैं और न जाने कितनी नारियों ने अपने जीवन को अग्निदेवता को समर्पित कर दिया है, वही मेवाड़ क्या साहित्य

के क्षेत्र में इतना पिछड़ गया कि
अस्तित्व ही साहित्य के इतिहास में
रहा ? इसका उत्तर एक शब्द में न
ही मिलेगा।

जहाँ हिन्दी-साहित्य का इति
सूरदास को पाकर धन्य हुआ, वहाँ
को पाकर गौरवान्वित भी हुआ। हि
साहित्य के इतिहास को जितनी
मेवाड़ ने दी उससे कोई इनकार नहीं
सकता। महाराणा कुम्भा की धवल
का सन्देश देने के लिए चित्तौड़ का
स्तम्भ आज भी गर्व से सिर उठाये
खड़ा है। पद्मिनी और करुणावती
जौहर का नाम सुनकर जहाँ उत्सा
लहर दौड़ जाती है, वहाँ करुणा से
आप्लावित भी हो जाता है। यदि
बाई के आँसुओं से सींची गई प्रेम
की शीतल छाया में कितने ही
पथिकों ने अपने क्लान्त मस्तिष्क
विश्राम दिया तो आज केसरीसिंह
बारह के कवियों ने नवयुवकों
राष्ट्रीय भावना को पुनः उत्तेजित
महाराज चतुरसिंह जी के
अरावलि की पंक्तियों में
हैं। यदि एक ओर मेवाड़ के
राष्ट्रीय चेतना का सन्देश मिलता है
अपनी स्वाधीनता की रक्षा के
यदि अपने को कुर्बान करने के लिए
को आमन्त्रित कर रहा है तो दूसरी
गिरिधर गोपाल को सोलह कला
निर्देश भी मिलता है।

मेवाड़ के सार्वजनिक जीवन में
मुखी प्रावृत्तियाँ चल रही हैं। जो
१५ वर्ष पूर्व इतना पिछड़ा था
मेवाड़ आज अनेक प्रवृत्तियों का
कर रहा है। राजस्थान के
की मेवाड़ नासिका है। क्या
में, क्या राजनीति में और क्या
क्षेत्र में! मेवाड़ इस प्रगति की
में अवश्य ही पीछे नहीं रहे
इसकी इसी प्रकार प्रगति हो
मेवाड़ के लिए कहा जाता
मेवाड़ सदा से भारत का मस्तक
उठाने में सहायक हो रहा था,
इस गतिशील जीवन में अस्तित्व
जायेगा। मेवाड़ जब से जगा है
उसने अब तक विश्राम नहीं
निरन्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर
रहा है।

वर्तमान मेवाड़ के साहि
को हम तीन भागों में विभक्त कर
हैं :—एक वह हैं जो वृद्धावस्था में
जिन्होंने प्राचीन काव्य-परम्परा को
रक्खा है। वीरगाथा काल के
को आज भी अपनाया जा रहा है
प्राचीन काव्य-परम्परा को लेकर

—शेष पृष्ठ १६ पर

परराष्ट्र-मन्त्रियों का सम्मेलन

मित्रराष्ट्रों में मतभेदों के कारण असफल क्यों हुआ ?

लेखक, श्री शिवकुमार विद्यालंकार

लंदन में होनेवाला परराष्ट्र मंत्रियों का सम्मेलन भंग हो गया। इसका कारण मित्रराष्ट्रों अमरीका, ब्रिटेन और रूस बँटवारे के मसले पर मतभेद। विद्वान् लेखक ने इस लेख में मतभेद की समस्याओं पर सुन्दर प्रकाश डाला है, जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

मंत्री एम० मोलोटोव।

हो चुका है। विश्व आशा
से भरा हुआ था। उसे
युद्ध से पूर्व की अवस्था
जायगी। किन्तु विश्व की
हो रही हैं। युद्धोत्तरकालीन
जटिल हो चुकी हैं कि
तृतीय विश्व-युद्ध की
रहा है। परराष्ट्र-
सम्मेलन की असफलता इसी
इस सम्मेलन के सामने
उपस्थित थे। लेकिन उनमें
समझौता न हो सका।
में सम्मिलित होनेवाले
देशों में अभी तक काफी
। यह कहना कि रूस
से सहमत न हो सका,
असफल हो गया, ठीक
कि अनेक मामलों में
में भी मतभेद था।
राष्ट्र क्योंकि पूँजीवादी हैं,
को समाजवादी भूत के
में देर न लगती थी।

के सम्मेलन के सामने
इटली और उसके उप-
में पेश हुआ। इटली
हो, इसका निर्णय इटली
दिया गया। आज भी
और राजतन्त्रविरोधी सर-
है। नये चुनाव भी वहाँ
इसलिए परराष्ट्र-सम्मेलन के
पेचीदा प्रश्न न था।
इटली के उपनिवेशों
। सम्मेलन में हुए विचार-
है कि इटली ने जर्मनी के

साथ मिलकर जो ज्यादतियाँ कीं, उसके दंडस्वरूप उसे अपने अफ्रीका के उपनिवेशों से तो हाथ धोना ही पड़ेगा। उसने यह माँग की कि ब्रिटिश टापू माल्टा के ऐन सामने स्थित त्रिपोलीतानिया के लाल सागर के इरीट्रिया पर उसका ट्रस्ट कायम हो जाना चाहिए। ब्रिटेन इस माँग को कैसे स्वीकार कर सकता था? यह दोनों स्थान उसके एशिया और अफ्रीका के साम्राज्यों तक जानेवाले मार्गों में स्थित हैं। इस मार्ग में अब ऐसे शक्तिशाली राष्ट्र का प्रवेश ब्रिटेन बर्दाश्त नहीं कर सकता था। मध्यपूर्व के अरब राष्ट्रों ने यह माँग की कि त्रिपोलीतानिया अरब राष्ट्र है। अतएव अरब-संघ को ही इसका ट्रस्टी बनाया जाना चाहिए।

लेकिन ब्रिटेन, अमरीका और रूस इसके लिए कैसे तैयार हो सकते थे? विश्व की बन्दर-बाँट इन तीनों राष्ट्रों में होनी है, अरब राष्ट्रों का इससे कोई सरोकार नहीं। इसीलिए इँग्लैंड व अमरीका के प्रतिनिधियों ने यह प्रस्ताव किया कि इन दोनों प्रदेशों पर अन्तर्राष्ट्रीय-ट्रस्ट कायम हो। इसका अभिप्राय यह है कि अब इन दोनों प्रदेशों का शोषण कोई एक देश न करके एक से अधिक देश करेंगे।

ट्रीस्टे का भविष्य

ट्रीस्टे पहले आस्ट्रिया का नगर था। यह एड्रियाटिक सागर के तट पर स्थित है। गत यूरोपीय महायुद्ध के बाद इस पर इटली का कब्ज़ा हो गया था। रूस की शह पाकर यूगोस्लाविया ने यह माँग की थी कि इस नगर को उसकी सीमा में मिला दिया जाय। किन्तु ब्रिटेन व अमरीका की शह पाकर इटली ने इस नगर पर से अपना प्रभुत्व छोड़ने से इनकार कर दिया। कारण यह है कि इस पर यूगोस्लाविया का अधिकार हो जाने से ब्रिटेन को भय था कि रूस इस बन्दरगाह से उत्तरी भूमध्य सागर में प्रविष्ट हो जायगा। ब्रिटेन जिब्राल्टर में भी यह न चाहेगा कि रूस का उत्तरी, दक्षिणी, पूर्वीय पश्चिमी भूमध्य सागर में प्रवेश हो जाय। रूस के ख़तरे से बचने के लिए यह निश्चय हुआ कि ट्रीस्टे को भी अन्तर्राष्ट्रीय बना दिया जाय। लेकिन इटली, यूगोस्लाविया तथा रूस तीनों इस सुझाव से विरुद्ध थे। इसलिए ट्रीस्टे के सम्बन्ध में और कोई निर्णय न हो सका।

दर्रे दानियाल

रूस ने यह माँग की कि दर्रे दानियाल को अन्तर्राष्ट्रीय बना दिया जाय। लेकिन इस पर ख़ास चर्चा नहीं हुई इससे एक दिन इस सम्बन्ध में भी रूस को तुर्की के साथ निबटना होगा। दर्रे दानियाल पर कब्ज़ा करने के लिए ही रूस ने यह माँग की थी कि डाडेकनीज़ पर मिस्र का प्रभुत्व नहीं रहना चाहिए। रूस मानता है कि डाडेकनीज़ पर जर्मनी का कब्ज़ा हो जाने से तुर्की रूस की सहायता न कर सका था। इसलिए वह जैसे-तैसे इसे भी अपने प्रभाव में रखना चाहता था। मगर इस सम्बन्ध में परराष्ट्र मंत्री कोई समझौता न कर सके।

रूमानिया और बलगेरिया

परराष्ट्र मन्त्रि-सम्मेलन में आने से पूर्व अमरीका के परराष्ट्र मन्त्री मि० बर्न्स ने मो० स्टालिन से अपील की थी कि रूमानिया या बलगेरिया की स्थिति अभी तक गड़बड़ है। इसलिए उसे सुलझाने के लिए मो० मोलोटोव को पूरे अधिकार देकर सम्मेलन में भेजा गया। इस अपील पर राजनैतिक क्षेत्रों में उन दिनों काफ़ी आश्चर्य प्रकट किया गया। जर्मन मुक्त हो जाने के बाद इन दोनों राष्ट्रों में राष्ट्रीय सरकारें स्थापित हो चुकी थीं। फिर इनका मसला क्यों उठाया गया?

इसका कारण यह है कि अमरीका और ब्रिटेन दोनों की दृष्टि में रूमानियाँ और बलगेरिया की सरकारें प्रजातन्त्रीय नहीं हैं। यदि वहाँ की सरकारें प्रजातन्त्रीय हैं और उनका चुनाव जनता ने स्वतन्त्र होकर किसी के असर में आकर नहीं किया है तो फिर अमरीका व ब्रिटेन के संवाददाताओं को वहाँ क्यों नहीं जाने दिया जाता? वैसा न करने से दोनों राष्ट्रों के सम्बन्ध में उन्हें विश्वस्त खबरें नहीं मिल सकतीं। इसलिए ब्रिटेन और अमरीका दोनों को रूस की नीयत पर सन्देह है। वे देख रहे हैं कि रूस मध्य और पूर्वी भूगोल में पैर पसार रहा है। वे रूस के इस विस्तार को सहन नहीं कर सकते। इसलिए उन्होंने रूमानिया और बलगेरिया के प्रश्न को नये रूप में उठाया।

चीन—फ्रांस के प्रतिनिधि क्यों आये?

मो० मोलोटोव ने यह आपत्ति उठाई कि बालकन राष्ट्रों के भविष्य के सम्बन्ध में विचार करते हुए चीन और फ्रांस के प्रतिनिधियों को उपस्थित नहीं रहना चाहिए। इन दोनों का उक्त राष्ट्रों के सवालों से कोई ताल्लुक नहीं। लेकिन फ्रांस अपने आपको यूरोप का महान् राष्ट्र समझता है। इसलिए उसका अपने पड़ोसी राष्ट्र इटली के मामले में दिलचस्पी लेना स्वाभाविक था। यदि चीन को बालकन राष्ट्रों की समस्याओं पर विचार करते समय उपस्थित नहीं होने दिया गया तो रूस को भी पश्चिमी यूरोप व एशिया के मामले में जबान बन्द रखनी पड़ती। चीन के प्रतिनिधि से रूस इसलिए नाराज हुआ कि उसने अनेक विवादास्पद मामलों में रूस के खिलाफ़ ब्रिटेन और अमरीका का साथ दिया।

यूरोप का कर्त्ता-धर्त्ता

रूस अपने आपको यूरोप का कर्त्ता-धर्त्ता समझता है। उसे मालूम है कि अमरीका देर तक यूरोप की चौकीदारी न कर सकेगा। वह ५ वर्षों में यूरोप छोड़ जायगा। इँगलैंड को आगामी दस वर्षों में अनेक आर्थिक प्रश्नों में उलझ जाना पड़ेगा। उसे अपने साम्राज्य की समस्याएँ सुलझानी होंगी। उसे अपने विदेशी व्यापार की चिन्ता करनी होगी। इसलिए वह भी यूरोप में देर तक दिलचस्पी न ले सकेगा।

जनरल डिगाल।

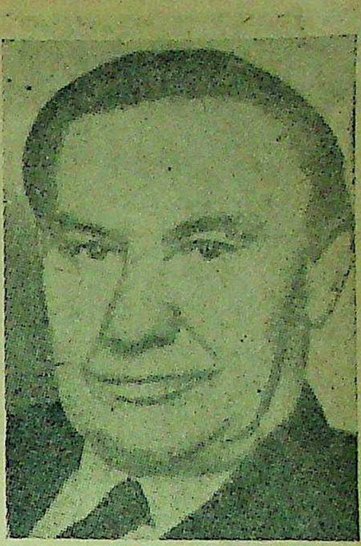

ब्रिटेन के मजदूर परराष्ट्र सचिव मिस्टर बेविन।

एशिया का प्रश्न

मो० मोलोटोव को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि अमरीका के प्रतिनिधि ने सम्मेलन में रूस के भूमध्य सागरवर्त्ती दावों का समर्थन नहीं किया; इसलिए उसने यह माँग की कि जापान पर किसी एक ही राष्ट्र का आधिपत्य स्थापित न हो सकेगा। उन्होंने इस अवसर पर यह माँग पेश कर अपने प्रतिद्वंद्वियों को चेतावनी दे दी कि एशिया के भविष्य पर विचार करने के लिए एक सुदूर-पूर्व कमीशन की बैठक होगी तो उसमें सबसे पहले कौन-सा सवाल उठायेंगे।

इस तरह हमने देखा कि रूस, ब्रिटेन और अमरीका में अनेक प्रश्नों पर गम्भीर मतभेद है। इसीलिए लंदन में आयोजित परराष्ट्र-सम्मेलन असफल हो गया।

अपनी बात

लेखक, श्रीयुत चन्द्रभूषण वैश्य

मनुष्य के चरित्र में किस प्रकार की दुर्बलतायें होती हैं और उन्हें दूर करके वह किस प्रकार अपने जीवन को उन्नत बना सकता है, यह बात इस पुस्तक में बहुत ही ओजपूर्ण भाषा में लिखी गई है और लिखी गई है व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर। अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए प्रत्येक युवक को यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य ।।।) बारह आने।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

चीनी प्रजातन्त्र के प्रधान जनरल च्यांग काई शेक।

भारत की गौरव-भूमि मेवाड़ !

प्राचीन काल से ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्त्व

लेखक, श्री विपिनबिहारी वाजपेयी, बी० ए० 'साहित्यरत्न'

मेवाड़ का प्राचीन काल से आज तक एक ऐतिहासिक तथा साहित्यिक महत्त्व है। इस लेख में लेखक ने मेवाड़ की ऐतिहासिक तथा साहित्यिक परंपरा का सुंदर वर्णन किया है। जो पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

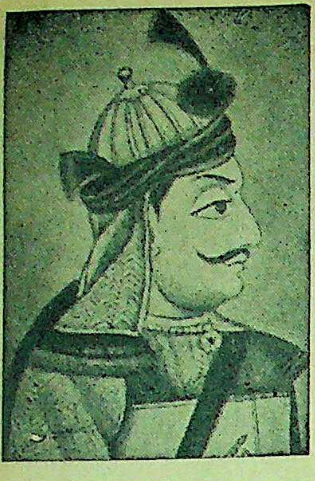

मेवाड़-भूमि के अमर गौरव महाराणा प्रताप।

भारतवर्ष के इतिहास में राजस्थान का और उसमें भी मेवाड़ का गौरवपूर्ण स्थान है। संस्कृत शिलालेखों आदि में इसका प्राचीन नाम 'मेदपाट' मिलता है। नगरी नामक स्थान से मिले हुए प्राचीन सिक्कों से यह भी जान पड़ता है कि किसी समय यह सम्पूर्ण प्रदेश अथवा उसका कुछ भाग 'शिविदेश' के नाम से प्रसिद्ध था। मेवाड़ का राजवंश सूर्यवंशी है। गुहिल के वंशज होने के कारण यहाँ के महाराणा गुहिलौत और आगे चलकर इसी वंश की शीशौदा जागीर के स्वामी हमीर का चित्तौड़ पर अधिकार होने के समय के शीशौदिया कहलाने लगे।

विक्रमी संवत् ६२५ के आस-पास से यह राजवंश १३७५ वर्ष से भी लम्बे समय में इसी प्रदेश पर अनवरत रूप से शासन कर रहा है। इसका सारा इतिहास स्वतंत्रता के लिए लड़े गये युद्धों का इतिहास है। भयङ्कर से भयङ्कर परिस्थितियों की समक्षता में भी मेवाड़ ने अपने वंश, गौरव और मान-मर्यादा की रक्षा में उत्कट तत्परता प्रदर्शित की है। वीरों की भाँति यहाँ की महारानी पद्मिनी, महारानी करुणावती, वीरप्रसू पन्ना धाय तथा अन्यान्य राजपूत ललनाओं के जौहर और कर्त्तव्य पालन के दृष्टान्त भी स्वर्णाक्षरों में अंकनीय हैं।

कालानुक्रम की दृष्टि से गुहिल (वि० सं० ६२५ के आस-पास) से पूर्व के मेवाड़ राज्य का कोई पृथक् तथा क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिलता, क्योंकि गुहिल से पूर्व मेवाड़ कोई पृथक् राज्य नहीं था। जिन भी राजवंशों ने समय समय पर राजपूताने पर अधिकार किया, मेवाड़ भी अन्य प्रदेशों के साथ साथ उन्हीं के आधीन होता रहा।

विक्रमी सं० ६२३ से विक्रमी सं० १३६० तक का मेवाड़ का इतिहास भी अन्धकार-पूर्ण है। गुहिल, बापा आदि के मिले हुए सोने के सिक्कों तथा अनेक प्रशस्तियों और शिलालेखों से यह अवश्य प्रतीत होता है कि इस काल में यहाँ कई प्रतापशाली राजा हुए थे। अलाउद्दीन का प्रसिद्ध चित्तौड़-आक्रमण इसी काल के अन्त में वि० सं० १३६० में हुआ था, जिसमें समस्त राजपूत युद्ध में जूझ कर मारे गये और राजपूत महिलाओं ने अपनी महारानी पद्मिनी के साथ जौहर कर अपने सतीत्व की रक्षा की। चित्तौड़ मुसलमानों के अधिकार में चला गया, जिसे कुछ ही समय बाद महाराणा हमीर ने वहाँ के नियुक्त गवर्नर मालदेव को हराकर पुनः हस्तगत किया।

मेवाड़ के इतिहास का तीसरा युग वि० सं० १३६० के बाद से वि० सं० १८३४ तक माना जा सकता है। इस काल का पूर्वार्द्ध मेवाड़ के इतिहास का स्वर्णकाल रहा। महाराणा कुम्भा, महाराणा साँगा तथा महाराणा प्रताप इस प्रथम भाग के उज्ज्वल नक्षत्र हुए। मेवाड़ का दबदबा इस समय समस्त उत्तरापथ में माना जाने लगा। साहित्य, कला आदि की भी अच्छी उन्नति हुई। राणा साँगा के बाद से उदयपुर की उज्ज्वल विजयों का इतिहास एक प्रकार से समाप्त हो गया परन्तु महाराणा अमरसिंह तक मेवाड़ फिर भी अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए लड़ता रहा। महाराणा उदयसिंह के समय में मेवाड़ का दूसरा प्रसिद्ध जौहर हुआ। अन्त में महाराणा अमरसिंह के समय में मुगलों से सन्धि हो गई, जो औरंगजेब के समय में फिर टूट गई और महाराणा राजसिंह और मुगल-सम्राट् के बीच भीषण लड़ाइयाँ हुई।

इस काल के अन्तिम भाग से ही राजपूताने के विभिन्न रजवाड़ों में पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष की भावनायें घर करती चली गईं, जिसके कारण राजस्थान और साथ ही मेवाड़ की शक्ति का भी ह्रास प्रारम्भ हो गया। मरहटों के आक्रमण बल पकड़ने लगे, जिनसे मेवाड़ को बड़ी हानि हुई और उनका काफी प्रदेश भी मरहटों के हाथ में चला गया। बाध्य होकर महाराणा भीमसिंह ने अँगरेजों से सन्धि की और इसी सन्धि के बाद मेवाड़ ने अपने नये और आधुनिक युग में प्रवेश किया।

मेवाड़ की मुख्य भाषा मेवाड़ी है, जो इस प्रदेश के अधिकांश भाग में बोली जाती है। राज्य के दक्षिणी और पश्चिमी विभागों के लोगों तथा भीलों की भाषा बागड़ी है तथा राज्य के पूर्वी भाग में वैशड़ी बोली जाती है। मेवाड़ी भाषा में साहित्य-रचना बहुत कम हुई है। साहित्यिक-भाषाओं के रूप में मेवाड़ में बहुत पहले संस्कृत, मध्यकाल में डिंगल और पिंगल अथवा डिंगल-पिंगल मिश्रित और आधुनिक काल में खड़ी बोली का प्राधान्य रहा। लिपि यहाँ की नागरी है जो लकीर खींचकर घसीटकर लिखी गई है। मेवाड़ का प्राचीन साहित्य अधिकांशतः राज्याश्रम में रचा गया है। राज-दरबार में विद्वानों और कवियों को यहाँ सदा सम्मान मिलता रहा। महाराणा कुम्भा, महाराणा उदयसिंह, महाराणा अरिसिंह, महाराणा भीमसिंह, महाराणा जवानसिंह तथा महाराणा सज्जनसिंह आदि मेवाड़ के कई अधिपतियों ने स्वयं भी अच्छी कविता की।

कालानुक्रम की दृष्टि से वि० सं० १४०० के पूर्व की मेवाड़ की कोई विश्वसनीय साहित्यिक रचनाएँ प्राप्त नहीं होतीं किन्तु शिलालेखों आदि से ज्ञात होता है कि इस समय में संस्कृति की कविता का अधिक प्रचार था'। 'खुमान रासो' नामक एक प्राचीन राजस्थानी भाषा का ग्रन्थ भी उपलब्ध हुआ है, परन्तु इसकी प्रामाणिकता में विद्वानों को सन्देह है। वि० सं० १४०० से वि० सं० १७०० तक की साहित्यिक रचनायें भी अधिकतर अज्ञात ही हैं। इस काल के राज्याश्रित कवियों ने प्राचीन वीरों और वीरांगनाओं तथा अपने आश्रयदाताओं के गौरव-गान के रूप में सहस्रों की संख्या में मुक्तक गीत और छन्दों की रचना की। दयालदास, बाकजी बोकसा, कल्याणदास, बारहट जैमाजी आदि की रचनाएँ, इसी कोटि की हैं। भक्तिमती मीराबाई भी इसी काल में हुईं जिन्होंने अपनी सरस और तल्लीन भक्ति-पूर्ण काव्य-माधुरी से मेवाड़ ही नहीं समस्त भारतवर्ष के मानस को आप्लावित किया। संस्कृत काव्य की रचनाएँ भी इस काल में होती रहीं। महाराणा कुम्भा का काल इस

समय में साहित्य की उन्नति की
बहुत महत्त्वपूर्ण है। वि० सं० १
१९०० के बीच का साहित्य मेवाड़
अधिक मात्रा में उपलब्ध होता है
काल में यहाँ के कवियों पर डिं
पिंगल दोनों का प्रभाव रहा। वीर
कविताओं के साथ साथ शृङ्गार और
परक कविताएँ भी खूब लिखी
आगोतर कवियों ने अधिकतर
का प्रयोग किया। राज-दरबार में
और पिंगल दोनों ही समादृत
काल में रामकवि का 'राज-विलास'
पत राय और वन्शीधर का 'अलङ्का
कर', करनीदान कवि का सूरज
किशन जी आढ़ा के 'भीम विलास'
'रघुवरतम प्रकाश' महाराणा जवान
की शृङ्गार और भक्ति परक विविध
नायें, दीनज दरवेश रचित अनेक
ग्रन्थ, कविराव बख्तावर का केहरि
तथा गणेशपुरी का 'वीर-विनोद'
प्रसिद्ध प्रतिष्ठित रचनायें हैं।

संवत् १९०० पश्चात् मेवाड़ के
का आधुनिक काल प्रारम्भ होता है।
काल में साहित्य का सम्बन्ध राज
हटकर लोकरुचि और स्वतन्त्र
से अधिक हो गया। खड़ी बोली का
होने से इस काल की नवीन
खड़ी बोली काव्य में होनेवाले
का भी प्रभाव पड़ा तथा गद्य
भी काफी मात्रा में किया जाने लगा

इस काल में भी राज्याश्रय
के अनुयायी रहकर काव्य-रचना
परम्परित काल के कवियों में
करण जी, घनश्याम जी, बारह
जी, साभलसिंह जी, रावत
कविराय मोहन, नाथूदान
ठाकुर रणवीरसिंह जी तथा
भाटी ने अच्छी सफलता प्राप्त की।
सिंह जी बारहन और नाथूदान
की कविताएँ काफी लोकप्रिय
बाजी चातुरसिंह जी ने इसी काल में
भक्ति और अध्यात्मवादिनी
द्वारा एक नई दिशा की ओर इंगित

सर्व श्री उमाशङ्कर द्विवेदी,
व्यास, परशुराम बेढब, कस्टमल
विजय माणिक्य रुचि तथा
(ओम्) इस काल की मध्यवर्ती

—शेष पृष्ठ १८ पर

महाराणा कुंभा का जयस्तम्भ, जो ऐतिहासिक [illegible] मेवाड़ की अमर कीर्त्ति है।

भारत-प्रेमी डाक्टर आरंडेल कौन हैं?

संसार के एक सुप्रसिद्ध थियोसफिस्ट की एक जीवन-झाँकी

लेखक, श्री शंकरदेव विद्यालंकार

> भारतीय थियोसोफिकल सोसाइटी के प्रधान डाक्टर आरंडेल की संसार के प्रसिद्ध आध्यात्मवादियों में गणना होती है। पिछले दिनों आपका स्वर्गवास हो गया। इस लेख में विद्वान् लेखक ने डाक्टर आरंडेल के जीवन का संक्षिप्त वर्णन किया है जो जानकारी से पूर्ण तथा पठनीय है।

फिकल सोसाइटी के सभापति
डा० आरंडेल।

होकर भी भारतवर्ष को
उनसे प्यार करने-
सेवा में अपना जीवन
विमल आत्मा और—
श्रीमती एनीबीसेन्ट तथा
आदि—की पंक्ति में
सत्पुरुष और देश-
सिडनी आरंडेल हमारे
११ अगस्त १९४५ की
तिरोभाव हो गया।
यह बड़े विषाद का

इंगलिस्तान के सरे
दिसम्बर सन् १८७८
इस विश्व के प्रकाश
वाल्यावस्था में ही
वञ्चित हो गये थे!
के पालन-पोषण का
की मौसी कुमारी
ने स्वीकार कर लिया
सोसायटी के प्रतिष्ठापक
कर्नल आल्काट जब
तो कुमारी फ्रान्सिस्का
किया करते थे। अतः
बचपन से ही इन महा-
संपर्क में आने का सुयोग
बचपन से ही पढ़ने लिखने
थे। सन् १८९५ में ये
के सेंट जोन कालेज
वहीं से इन्होंने बी० ए०
बी० की उपाधियाँ प्रतिष्ठा-
इसके पश्चात् ये पेरिस
ऐतिहासिक अनुसंधान का
। वहाँ से आ जाने पर
हिस्टोरिकल सोसा-
गया। इसके पश्चात्
से ही आपने एम०
की।

में ये थियोसोफिकल सोसा-
हुए थे। सन् १९०३ में जब
ने आपको भारतवर्ष में
दिया उस समय ये उक्त
विभाग के प्रधान-मंत्री
थे। अपने किशोर
भारतवर्ष के प्रति बहुत
बीसेंट का आदेश
फ्रान्सिस्का के साथ

में डा० बीसेंट ने
और पुत्रियाँ (Sons
of India) नामक
की थी। श्री आरं-
होकर 'भारतपुत्र'
। तब से लेकर ये
माता के एकनिष्ठ
सेवक बने रहे।

भारत को इन्होंने अपनी मातृभूमि बना लिया था। शिक्षा और राजनीति की दिशा में इन्होंने भारतवर्ष की विशेष सेवा की थी। भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन में श्रीमती बीसेंट के साथ आपको भी सरकार ने नजरबन्द कर दिया था।

थियोसोफिकल सोसायटी में प्रविष्ट होने के बाद श्री आरंडेल पक्के शाकाहारी बन गये थे। अपनी चिंताजनक बीमारी में भी किसी प्रकार के पशुजन्य औषधि या इन्जैक्शन लेने के लिए इन्होंने आग्रहपूर्वक नकार कर दिया था। उन्होंने स्पष्टतापूर्वक कह दिया था कि जिस सिद्धान्त को मैंने अपने सारे जीवन में पाला है उसको त्याग करके अपना जीवन बचाना मुझे इष्ट नहीं है।

भारत में आकर श्री आरंडेल बनारस के सैंट्रल हिन्दू-कालेज के इतिहास के प्रोफेसर बनाये गये और बाद को इसी कालेज का आचार्य-पद आपको प्राप्त हुआ। सन् १९१३ तक इस कार्य को आपने बड़ी कुशलता और सुंदरता के साथ किया। श्रीमती बीसेन्ट की प्रेरणा से उनकी अधिनायकता में प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुरूप शिक्षा-व्यवस्था के लिए समस्त भारत में घूम-घूमकर आपने खूब प्रचार-कार्य-किया था। काश्मीर के स्वर्गीय महाराजा ने अपने राज्य की शिक्षा-व्यवस्था के निरीक्षण के लिए आपकी सेवाएँ स्वीकार की थीं।

सैंट्रल हिन्दू-कालेज के कार्य से सन् १९१३ में निवृत्त होकर श्री आरंडेल श्री कृष्णमूर्ति और उनके स्वर्गीय भाई नित्यानंद की शिक्षा के लिए यूरोप गये थे। सन् १९१६ में आप पुनः भारत आ गये और "होमरूल" आंदोलन में सम्मिलित हो गये। सन् १९१७ में मद्रास सरकार की आज्ञा से आपको, श्रीमती बीसेंट को तथा प्रो० वाडिया को तीन महीने तक नजरबन्द रखा गया। वहाँ से छूटने के बाद मद्रास में एक राष्ट्रीय विद्यापीठ स्थापन करने के कार्य में आपने अमूल्य सेवायें लगाईं। आप उक्त राष्ट्रीय शिक्षापीठ के आचार्य बनाये गये। शिक्षा के पवित्र क्षेत्र में सुदीर्घ समय तक की आपकी सेवाओं को ध्यान में रखते हुए मानद (ऑनरेरी) रूप में आपको "डाक्टर आफ लैटर्स" की पदवी प्रदान की गई। उपाधि के प्रमाण-पत्र पर उक्त शिक्षापीठ के कुलपति (चान्सलर) के स्थान पर विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के हस्ताक्षर अंकित हैं।

सन् १९२० में इन्दौर-नरेश ने आपको अपने राज्य के शिक्षा-विभाग का अध्यक्ष बनाया। कुछ समय वहाँ पर काम करने के उपरान्त आप यूरोप चले गये और शिक्षा तथा राजनीतिक विषयों पर व्याख्यान देते रहे। सन् १९२५ में आप "लिबरल केथोलिक चर्च" के पादरी बनाये गये। इस चर्च का मिशनरी कार्य करने की उनकी इच्छा तो नहीं थी परन्तु प्रत्येक धर्मवाले को अपने अनुयायियों के प्रति जैसी सहानुभूति और विवेकपूर्ण मनोवृति रखनी चाहिए—उसे समझाने के लिए ही आप इस संस्था में सम्मिलित हुए थे।

डा० जिनराजदास, डा० आरंडेल के स्थान पर सोसाइटी के सभापति चुने गये हैं।

सन् १९२६ में आप प्रथम बार आस्ट्रेलिया गये और वहाँ की थियोसोफिकल सोसायटी के प्रधान मंत्री-बनाये गये। आस्ट्रेलिया में जाकर आपने अनुभव किया कि यहाँ पर एक महान् जाति का निर्माण हो रहा है। यहाँ पर श्री आरंडेल ने अनेक प्रगतिशील आंदोलनों में भाग लिया और "प्रगतिशील आस्ट्रेलिया" नामक मासिक-पत्र निकालना शुरू किया। आप वहाँ के ख्यातिप्राप्त थियोसोफिकल ब्रॉड कास्टिंग स्टेशन के संचालकों के प्रधान बनाये गये।

इसके बाद भी श्री आरंडेल ने कई बार यूरोप, अमेरिका और आस्ट्रेलिया की प्रचार-यात्राएँ कीं। इन यात्राओं में ये थियोसोफी और मानव-बन्धुता के विषयों पर व्याख्यान देते रहे। भारत के श्रमजीवियों के प्रति आपको बहुत प्रेम था। उनके हितों के लिए भी आपने पर्याप्त कार्य किया था। इसीलिए मद्रास के "लेबर-यूनियन" ने आपको अपना सभापति बनाया था।

बालचर प्रवृत्ति (स्काउटिंग) में भी आप बहुत रस लिया करते थे। सेंट्रल हिन्दू कालेज के बालचर-संघ के आप कप्तान थे और भारतीय बालचर मण्डल के आप "सहायक चीफ स्काउट" बनाये गये थे। बालचर प्रवृत्ति में विशेष दिलचस्पी लेने के कारण ही लार्ड बेडन पावेल ने अपना निजी "बिल्ला" (बैज) आपको दे दिया था।

डाक्टर आरंडेल का सबसे अधिक प्रधान कार्य तो थियोसोफिकल सोसायटी की सेवा का है। वे इस सोसायटी के ब्रिटिश, आस्ट्रेलियन और भारतीय विभागों के प्रधान-मंत्री थे। वीरता और सेवा की भावनाओं को तरुणों में फैलाने के हेतु से इन्होंने "राउन्ड टेबल" नामक संस्था स्थापित की थी।

श्रीमती एनी बीसेंट के अवसान के बाद २१ जून १९३४ में आपको थियोसोफिकल

भारतीय थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका श्रीमती डाक्टर एनीबीसेंट।

फ़िकल सोसायटी का प्रधान बनाया गया था। बारह वर्ष तक इन्होंने सोसायटी का कार्य बड़ी कुशलता और सफलता के साथ निवाहा। इनके नेतृत्व में सोसायटी ने अनेक कार्य किए हैं। विश्व महायुद्ध के समय भी सोसायटी के कार्य को वे वेगवान् बनाए रहे और जगत् की युद्धोत्तर योजना के विषय में अनेक मूल्यवान् विचार दे गए हैं।

तरुणों के ये सच्चे मित्र थे। सेंट्रल हिन्दू कालेज में काम करते समय ये बड़े खुले हृदय से विद्यार्थियों से मिला-जुला करते थे। विद्यार्थियों के मन में इनके प्रति इतना गहरा विश्वास स्थापित हो गया था कि वे अपनी सर्वप्रकार की कठिनाइयाँ और समस्याएँ खुले दिल से इनको बता दिया करते थे। श्री आरंडेल उनकी अड़चनों को बड़ी सहृदयता से समाधान और निराकरण कर देते थे। युवकों में काम करने की कला उनमें नैसर्गिक थी। अपने विनोदी स्वभाव और प्रेरणाप्रद वाणी-द्वारा ये तरुणों को अपनी ओर आकृष्ट किये रहते थे। भारत के युवक-आंदोलन को सतेज बनाने में आपका बड़ा भारी हिस्सा रहा है।

युवकों में उन्नत भावनाएँ जगाने के लिए, उनमें बन्धुभाव और सेवा-भाव के आदर्शों को उद्बुद्ध करने के लिए तथा स्वदेश प्रेम को प्रबुद्ध करने के लिए ये बहुत यत्नशील रहते थे।

डाक्टर आरंडेल कमाल के विनोदी थे। पर्याप्त गम्भीर प्रसंगों पर भी वे आनंदी रह सकते थे और बड़े से बड़े व्यक्ति के विषय में भी वे निर्दोष विनोद कर सकते थे। श्रीमती बीसेंट "न्यू इंडिया" नामक एक अखबार निकाला करतीं थी। वे जब "न्यू इंडिया" के कार्यालय में से कथ-थकाकर आती थीं तो अनेक बार डा० आरंडेल से कहती थीं— "ज्यार्ज, कुछ विनोद तो करो।" अपने सार्वजनिक व्याख्यानों में भी वे उच्च प्रकार का विनोद बड़ी निपुणता के साथ समाविष्ट कर देते थे।

डा० आरंडेल एक प्रखर वक्ता थे। उनके व्याख्यान और प्रवचन बहुत जोरदार और तलस्पर्शी होते थे। श्रोताओं के मन पर वे बहुत अच्छा प्रभाव पैदा करते थे। डा० आरंडेल अच्छे सुलेखक भी थे। भिन्न भिन्न विषयों पर आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं—जिनमें Nirvan, Mount Everest, Lotus तथा Fire आदि बहुत प्रसिद्ध हैं। वे एक माने हुए शिक्षाशास्त्री और अध्यापक थे। भारत में सैकड़ों ऐसे कार्यकर्ता हैं जिन्होंने उनके हाथ से तालीम पाई है। आपने "Concience" नामक साप्ताहिक पत्र-द्वारा भारतीय जागरण का सुन्दर प्रयत्न किया है।

आज से ६५ वर्ष पूर्व सन् १९२० में श्री आरंडेल ने एक भारतीय महिला रुक्मिणी देवी के साथ विवाह किया था। इस विवाह-द्वारा पूर्व और पश्चिम का सुखद सम्मिलन हुआ था। श्री रुक्मिणी देवी बड़ी संस्कारवती, सुशिक्षिता और कला-प्रेमी सन्नारी हैं। भारतीय नृत्यकला की वे विशेषज्ञ हैं। श्रीमती रुक्मिणी देवी के कला-विषयक कार्य में डा० आरंडेल पूरा सहयोग देते थे। उन्होंने अड्यार (मद्रास) में 'कलाक्षेत्र' की स्थापना करके भारतीय कलाओं के उन्नयन के लिए बहुत प्रशंसनीय कार्य प्रारम्भ किया था। भारत में आकर निवास करने के बाद से वे भारतीय वेषभूषा में ही रहा करते थे। इस प्रकार उन्होंने सर्वतोभावेन भारतीय संस्कृति सभ्यता और आचार-विचार को अपना लिया था। वे भारतवर्ष के सच्चे मित्र थे और अन्त तक भारतभूमि को अपनी मातृभूमि की तरह प्रेम करते रहे।

कुछ समय से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था, अतः वे प्रवास के योग्य नहीं रहे थे। तथापि अड्यार में रहते हुए वे सोसायटी की तथा भारतमाता की हितकामना करते रहते थे।

संपादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दी-हिन्दुस्तानी

माननीय श्री टंडन जी का पत्र

(श्री सम्पादक, देशदूत)

१६ सितम्बर के 'देशदूत' में एक लेख प्रकाशित हुआ है जिसका शीर्षक है 'राष्ट्रभाषा हिन्दी या हिन्दुस्तानी ?' माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जी से बातचीत उसके लेखक हैं श्री उमेश जोशी।

इस लेख में मेरी ओर से दिये गये विचारों की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया गया है। इसमें मुझसे बातचीत का जो रूप दिखाया गया है उसके सम्बन्ध में मैं यह स्पष्ट कर देना उचित समझता हूँ कि मैंने 'देशदूत' या किसी अन्य पत्र में प्रकाशन के लिए श्री उमेश जोशी को कोई 'इंटरव्यू' नहीं दी थी। मुझसे यह कहकर कि वह 'देशदूत' के प्रतिनिधि की भाँति मुझसे बातचीत कर रहे हैं उन्होंने कोई 'इंटरव्यू' नहीं ली। मेरी ओर से जो उत्तर बताये गये हैं वह मेरे लिखाये हुए नहीं हैं।

'देशदूत' में प्रकाशित इस लेख के पढ़ने के बाद मुझे स्मरण आया कि कुछ दिन पहले एक रात को 'हिन्दी और हिन्दुस्तानी' के विषय में मेरे पास आये हुए दो सज्जनों से मेरी कुछ बातचीत हुई थी। मैंने उसे साधारण बातचीत समझी थी। मुझे ध्यान भी नहीं था कि जो बातचीत हो रही है वह कहीं छापने के लिए है। जो सज्जन बातचीत करने आये थे उन्होंने कोई नोट भी मेरे सामने नहीं किया था। वास्तव में रात के समय हम लोग कुछ अँधेरे में ही बैठे थे। इसलिए जो बातें मेरी ओर से कही गई हैं वह स्मरण के आधार पर ही लेखक ने लिखी होंगी। जो बातें मेरी ओर से कही गई हैं उनमें मेरे मत को व्यक्त करने का यत्न है परन्तु स्पष्ट ही शब्द मेरे नहीं हैं और न मेरे लिखने की या शब्द व्यवहार की उसमें शैली है। इसलिए कोई पाठक उसके वाक्यों को मेरे वाक्य न समझें। मेरे मत जानने के लिए यह उचित है कि जिन शब्दों में मैंने अपने भाव पहले व्यक्त किये हैं उन्हीं पर भरोसा किया जाय।

१० क्रास्थवेट रोड
प्रयाग —पुरुषोत्तमदास टण्डन

* * *

एकता के लिए शुद्ध हृदय और प्रबल प्रेम चाहिए

ईश्वर एक, उसकी प्राप्ति के उपाय भिन्न-भिन्न। जातियाँ अनेक, आचार-विचार और रहन-सहन में आकाश-पाताल का अन्तर। फिर भी, अनुकूल अवस्था में सद्भाव की काफी गुंजाइश है। जो लोग सबके साथ खाते-पीते नहीं हैं, खा नहीं सकते अपने बिरादरी के बन्धनों के कारण, उनमें भी मानवता के मानदण्ड से मैत्री और हेल-मेल रहता है लेकिन जिनमें एक ही थाल में सबके खाने-पीने की रीति प्रचलित है उनमें केवल मार-काट ही नहीं होती बल्कि जान तक ले ली जाती है। इसके लिए मुग़ल शाहजादों की आपसी खून-खराबी का उदाहरण देना ठीक नहीं है; फिर भी मुसलमानों में या ईसाइयों में सच्चा भ्रातृत्व क्या सर्वत्र पाया जाता है ? जो लोग खान-पान एक कर देने की दुहाई देते हैं उनकी दृष्टि वास्तविकता से बहुत दूर है। सबका खान-पान एक होते हुए भी शिया-सुन्नियों आदि में इतना मनोमालिन्य क्यों रहता है ? जूठन खाने को एकता का उपाय मानना मेरी समझ में बुद्धिमत्ता नहीं। जो जाति-पाँति या धर्म पर विश्वास नहीं करता वह न करे, कोई ज़बर्दस्ती नहीं, पर जिनका दृढ़ विश्वास अपनी रूढ़ियों पर है उनके साथ विश्वासघात नहीं होना चाहिए। देहाती किसान राष्ट्रवादियों का आदर करता है, अपने बर्तनों में परोस कर भोजन देता है तो अपने कर्तव्य का पालन करता है, लेकिन जो राष्ट्रवादी जान-बूझकर उस बेचारे की रीति-रस्म को तोड़ते हैं और इसके लिए उनको रत्ती भर भी कलक नहीं होता। यह कैसी मानवता है ? धोखा और सुधार दो अलग-अलग चीजें हैं। अक्टूबर सन् '४५ के 'विशाल भारत' में सुमंगलप्रकाश जी के इस विषय के विचार देखकर मुझे खेद हुआ। मुसलमानों में भी शादी-ब्याह के वक्त खानदान की जाँच-पड़ताल की जाती है और जो दूसरों की औरतें भगा ले जाकर औलाद पैदा करते हैं वैसी औलाद की शादी उसी श्रेणी में होती है। मेहतरानी को कलमा पढ़ाकर कोई जोड़ू बना ले सकता है, यह सच है पर उसका जैसा कुछ आदर उस समाज में रहता है वह छिपी बात नहीं है। यदि भंगिन को जोड़ू बनाने का रस्म मुसलमानों में प्रशस्त होता तो फिर लालबेगियों की जमात अलग न रहती। उनमें बहुत-सी बिरादरियाँ भी न होतीं। हमें आँख मूँदकर चाहे जिस बात पर विश्वास न कर लेना चाहिए।

अब बर्तनों के व्यवहार
सुनिए। पं० बैकुण्ठनाथ तिवारी
वर्ष पहले डाकखाने में नौकर
रियासत में गये तो देखा कि वहाँ
से बर्तन लेकर हिन्दू रसोई बनाते
उन्होंने बतलाया कि रियासती
न तो गोभक्षक होता है और न
है अर्थात् वह टट्टी से लौटकर
मिट्टी लगाकर साफ करता है,
माँजता-धोता है और हाथ-पैर धो
करता है। इस कारण रियासत
मान के बर्तन नापाक नहीं समझे
फिर वह आया भी तो इसन-नूरान
है। हमारा ही भाई-बन्धु है।
में पड़कर कलमा पढ़ लेने,
या सुन्नत करा लेने से ही वह
नहीं हो गया। तिवारी जी की
जँची नहीं। क्योंकि यह हाल
मैंने कभी न सुना था। सन् '४
महीने में मुझे ग्वालियर
उदयपुर गाँव में जाने का अवसर
वहाँ के मन्दिर की कारीगरी
लौटा और एक मुसलमान
दूकान में बैठकर पानी पीने
पर विचार करने लगा तो
उस मिस्त्री ने पीतल का घड़ा
माँज कर दिया। वे लोग
लाये। उसी की दूकान में बैठ
गुड़ खाकर पानी पिया।
परहेज नहीं, झिझक नहीं।
मुझे तिवारी जी का वह पुराना
हो आया। मेरा खयाल है
सतों की प्रजा में भी बर्तनों
प्रदान की यह रीति होगी।
व्यवहार में कहीं धोखा
हिन्दू बर्तन लेता है मुसलमान
और यह समझकर कि यह
गांधी-भक्त लोग स्पष्टतया
उपयोग करते तो मेरी
प्रतिष्ठा अधिक ही होती।
का उन पर दोषारोपण हो ही
था। हिन्दू-मुस्लिम मिथ्या ऐक्य
जब हमारे यहाँ नहीं थी तब भी
मुसलमान हमारे आदरणीय
के लिए तो कहा है 'इन मुसलमान
जनन पर लाखन हिन्दू वारिए
बंगाल में भक्त हरिदास का
किसी हिन्दू सन्त से कम
रीति-रवाज को छोड़ देने, जूठन
से न प्रेम बढ़ता है और न ऐक्य
होती है। उसके लिए तो
शुद्ध हृदय और प्रेम की
आवश्यक है।

—लही

प्रयाग
७ अक्टूबर

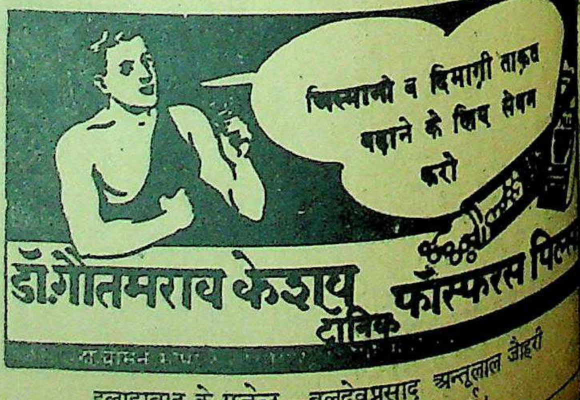
जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ॰ गौतमराव केशव टॉनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी
एल० एस० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

इन्टरव्यू की आशा में

लेखक, श्री पर[illegible]ीलाल गुप्त

जेल में कैदियों के लिए सगे-सम्बन्धियों [illegible] मिलनेवालों का दिन बड़ा ही सुखकर होता है। वह उस दिन को प्रतिदिन प्रत[illegible] करते रहते हैं। आखिर उस कैदी का एक मिलनेवाला भी आया, किन्तु वह उससे [illegible]हीं मिल सका, यह रहस्य का रहस्य ही बना रहा। जेल में रहते हुए कैदिय[illegible] मन[illegible]त्तियों तथा वहाँ के वातावरण का इस कहानी में चित्रण है जो पठनीय है।

था। किसी के मिलने आने [illegible]ाशा न थी। पत्नी रुग्णा, उन्हें छोड़कर माता जी का आना सम्भव न था। सगे-सम्बन्धी ऐसे समय होते किसके हैं? कुछ मित्र थे, उन्होंने भी परिस्थितिवश मौन साध लिया था। प्रति सातवें दिन रविवार आता और निराशा का झोंका देकर चला जाता। न जाने कितने रविवारों की उत्सुक प्रतीक्षा के बाद, कान में भनक पड़ी—"तुम्हारा इन्टरव्यू है, रायपुर से कोई मिलने आया है।"

मैं चौंक उठा। विश्वास न था। गरम पानी की बोतल को हटाकर उठ बैठा। दरख्वास्त ली और देखा सूर्यप्रकाश—

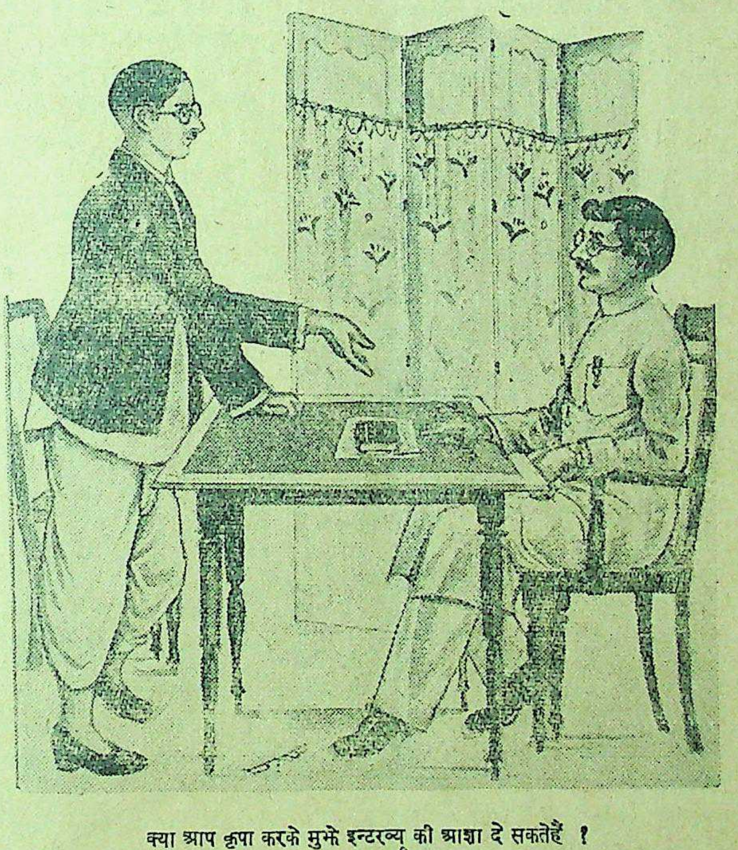

क्या आप कृपा करके मुझे इन्टरव्यू की आशा दे सकतेहैं ?

एक मित्र आये हैं। उनके आने की आशा न थी, हर्ष से विह्वल हो उठा। शरीर में एक अजीब-सी स्फूर्ति आ गई—बुखार और दर्द काफूर हो गया।

दरख्वास्त पर जल्दी जल्दी लिखा—"विश टु इन्टरव्यू—मुलाकात करना स्वीकार है"—और मानसिंह से कहा—

"छोटे साहब से कह देना मैं बीमार हूँ, अस्पताल में ही इन्टरव्यूअर को भेज देंगे।"

"अच्छा"—कहकर मानसिंह चला गया।

दाढ़ी पर हाथ गया, न जाने कब से नहीं बनी थी, बढ़कर काँटा हो गई थी। सोचा—'इस वेश में प्रकाश देखेगा तो क्या कहेगा?" जल्दी-जल्दी शेविंग सेट निकाला, घड़े से पानी लिया और स्टूल पर रखकर लगा हजामत बनाने।

फिर चारपाई की बेडिंग बदलवाई। धुली कमीज-जाँघिया निकाला। इतने में दस बजने के करीब आये।

राजनारायण अपनी बैरेक में गये और रंगबहादुर मोटर में सवार होकर जेल से बाहर। मैं अकेला चारपाई पर पड़े-पड़े सोचने लगा।

"बेचारा प्रकाश, इतनी दूर से आया, मेरे स्नेह के कारण ही तो! जून का महीना, चिलचिलाती धूप, बाहर कहीं बैठने की जगह नहीं, खड़ा-खड़ा प्रतीक्षा कर रहा होगा अपने नाम के पुकार की।" फिर मन में आया—"शहर यहाँ से तीन-चार मील है। बारह बजे से पहले जा न सकेगा। इस विकट दोपहरी में भूखा जायेगा.........।"

कुछ मन में आया, पहाड़ी* को बुलाया, पूछा—"खाने में क्या बन रहा है?"

बोला—"रोटी, दाल, शाक।"

"जरा अच्छी बनाना। एक दोस्त मिलने आनेवाले हैं, अभी थोड़ी देर में आयेंगे। उनके लिए भी बना लेना।" मैंने कहा।

जवाब मिला—"बड़ी खुशी की बात है बाबू जी।"

जाने लगा, मैंने रोककर फिर कहा—"जरा चटनी भी बना लेना।"

"अच्छा।"

इसके सिवा किसी दोस्त-मित्र के लिए और रक्खा ही क्या था? इतना भी जो कर रहा था वह भी एक कैदी के लिए बहुत था। लेकिन, खैर—

ग्यारह बजा! सोचा—"सबके इन्टरव्यू खतम हो गये होंगे, अब आता होगा।" फिर याद आया—"लेकिन नहीं, आज तो मेरे सिवा और कोई इन्टरव्यू करनेवाला है ही नहीं।"

"तब फिर इतनी देर क्यों? अब आते ही होंगे।"

जरा-सा खटका होता, उठकर देखने लगता। बारह बजा, कोई न आया। व्याकुलता बढ़ने लगी।

पहाड़ी ने आकर कहा—"बाबू जी, अभी नहीं आये?

"नहीं" मेरे मुँह से निराशा-भरे स्वर में निकला।

"तो खाना लाऊँ, काफी देर हो गई।"

"भूख तो नहीं है।" अनमना होकर मैंने कहा।

"थोड़ा ही खा लीजिए।" पहाड़ी ने अनुरोध किया।

"अच्छा भाई! लेकिन थोड़ा ही लाना।"

आया, कुछ खाया, खाया न गया।

आँखें अब भी प्रतिक्षण फाटक की ओर अटकी हुई थीं, फिर भी कोई नहीं आया। एक बज गया।

घड़ी की सुई खिसकते-खिसकते दो पर पहुँची, फिर भी वही निराशा। ढाई बजे रंगबहादुर लौटकर आये। आते ही पूछा—"इन्टरव्यू हो गया?"

"नहीं।" मैंने ग्लानि-भरे स्वर में कहा।

"लेकिन, बाहर तो कोई नहीं है।"

दिल बैठ गया, पर आशा दुष्टा सहज ही यों हारनेवाली न थी। मन में व्यथा दबाये पड़ा रहा। जब चार बज गये और किसी के आने की कोई सम्भावना न रह गई तो मन प्रकाश के न आ सकने का कारण जानने को आकुल हो उठा।

"यह हो नहीं सकता कि वह आया न हो। दरख्वास्त फार्म पर थी। यहीं आकर लिखा होगा उसने।"

जमादार को बुलाया। आया। एक स्लिप छोटे साहब के नाम लिखकर भेजी।

एक घण्टे बाद मानसिंह आता दिखाई पड़ा। उसने आकर कहा—छोटे साहब ने कहा है कि उन्हें नहीं मालूम कि आपका इन्टरव्यूअर, पर क्यों वापस चला गया?

मैं चारपाई पर निर्जीव होकर गिर पड़ा। थर्मामीटर का पारा १०० डिगरी पर जा पहुँचा।

---

* खाना पकाने के लिए मिला एक [illegible]

नीति-रत्नमाला

धर्मशास्त्र से छाँट-छाँटकर एकत्र किये गये ललित और उपदेशप्रद श्लोकों का संग्रह। प्रत्येक श्लोक का विस्तृत हिन्दी-अनुवाद भी किया गया है। मूल्य ॥=) दस आने।

मैनेजर, इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग।

क्या सिनेमा राष्ट्र-भाषा की समस्या हल करेगा ?

जनता की समझ में आनेवाली भाषाकी अनिवार्यता

लेखिका, श्रीमती उर्मिला वहल

भारत में प्रायः बीस वर्ष से देश की राष्ट्र-भाषा के विषय में हलचल मची हुई है। जिस प्रश्न को राजनीतिज्ञ हल नहीं कर सके, सिनेमा ने चुपचाप निरन्तर परिश्रम से उसे हल कर दिया और जन-साधारण की समझ में आ जानेवाली भाषा अर्थात् हिन्दुस्तानी का प्रचार घर-घर में कर दिया। धर्मों और सम्प्रदायों के भेद को भुलाकर सिनेमा प्रत्येक वर्ग के लिए मनोरञ्जन की सामग्री एकत्र करता है। प्रत्येक भारतीय चल-चित्र जन-साधारण को सामने रखकर निर्माण किया जाता है। फारसीमय कठिन उर्दू हिन्दुओं के लिए और संस्कृतमय कठिन हिन्दी मुसलमानों के लिए चित्ताकर्षक नहीं हो सकती। जन-साधारण को सामने रखकर ही सिनेमा ने एक ऐसी हिन्दुस्तानी का निर्माण किया है जिसे दक्षिण के तामिल तथा उत्तर के पठान बराबर समझ सकते हैं। अब भारतीय चल-चित्र एक विशेष अवस्था को पहुँच चुका है, इसलिए सिने-हिन्दुस्तानी की उन्नति के लिए प्रयत्न किया जा रहा है। कोई भी भाषा जब निर्माण अवस्था में होती है तो उसमें कई प्रकार के अनावश्यक तथा अप्रौढ़ शब्दों का आ मिलना जरूरी है और यह दशा तब तक बनी रहती है जब तक वह भाषा पूर्ण-रूप से सुसंस्कृत न हो जाये। यही दशा आज सिने-हिन्दुस्तानी की है और हमारी वर्त्तमान सिने-हिन्दुस्तानी न तो अति गम्भीर है और न अति अप्रौढ़ ही।

फिल्म जगत् की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री स्नेहलता प्रधान।

मुंशी प्रेमचन्द की लिखी हुई हिन्दुस्तानी जन-साधारण की भाषा है। उसे हिन्दू तथा मुसलमान सभी प्रसन्नता से पढ़ते हैं। हमें कोई राष्ट्र-भाषा दिये बिना ही राष्ट्र-भाषा की आवश्यकता पर जोर देकर राजनीतिज्ञों ने मुंशी प्रेमचन्द के किये पर पानी फेर दिया। आदर्श गुणों की नीति के नारे तो अच्छे लगते हैं परन्तु यह नारे न केवल हमारी समस्या को हल करने में असफल रहे हैं बल्कि इनसे एक ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिससे राजनैतिक और उसके फल-स्वरूप साम्प्रदायिक झगड़े खड़े हो गये हैं। जिस समस्या को साहित्यिक वाद-विवाद का रूप धारण करना चाहिए था वह देशभक्ति के नारों से उत्पन्न हुई साम्प्रदायिक तनातनी के बहाव में बह गई और देश की विशेष स्थिति के फल-स्वरूप देश-भक्ति के इन नारों ने राष्ट्रवाद की भिन्न-भिन्न व्याख्याओं को जन्म दिया। कुछ लोगों के राष्ट्र-भाषा के स्वप्न ने उर्दू बोलनेवाले तथा उर्दू न बोलनेवाले लोगों में झगड़े के बीज बो दिए। हिन्दी के उपासकों ने संस्कृतमय हिन्दी की माँग की तो उर्दू के उपासकों ने उस उर्दू भाषा की जिसमें संस्कृत के शब्दों की झलक तक भी दिखाई न दे। लेकिन सिनेमावालों ने अपने काम की तरफ से सावधान रहकर अपने आदर्श अर्थात् जन-साधारण की भाषा का प्रचार निरन्तर जारी रक्खा। यदि राजनीतिज्ञ इस मामले में दखल न देते हुए अपने आप को स्वराज्य के काम में ही व्यग्र रखते तो सिनेमा चुपचाप भाषा के क्षेत्र में क्रान्ति पैदा कर देता और भाषा की यह समस्या बिना किसी के कर्ज़दार हुए ही सुलझ जाती।

भारतीय अभिनय 'कला में निपुण फिल्म अभिनेत्री ज्योति।

जिस प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में संकट पैदा हो गया है उसी प्रकार भाषा की समस्या भी संकटपूर्ण बन चुकी है। हिन्दुस्तानी को चित्र-पट-द्वारा प्रचारित करने का प्रस्ताव केवल सिनेमा का पक्ष-समर्थन ही नहीं समझा जाना चाहिए। बहुत से लोग ऐसे हैं जिनके विचार में सिनेमा के द्वारा वह काम हो सकता है जो राजनीतिज्ञ अभी तक नहीं कर सके परन्तु हिन्दुस्तानी के पक्षपातियों की सिनेमा में दिलचस्पी न होने के कारण वे ऐसा कहने का नैतिक बल ही नहीं दिखाते। सिनेमा पाप हो या न हो अब तो हमारे राजनीतिज्ञों ने न केवल सिनेमा देखना ही शुरू कर दिया है, बल्कि कांग्रेस के भिन्न-भिन्न फन्डों में दान देनेवाले फिल्म-निर्माताओं के चित्रों के पक्ष में लिखना भी शुरू कर दिया है। यदि हिन्दी तथा उर्दू के माने हुए लेखक मिल-जुलकर चित्रों के कथोपकथन लिखें तो इससे एक ऐसी जन-साधारण की समझ में आ जानेवाली हिन्दुस्तानी

क जान

मुगल

भाषा का निर्माण हो जाये
राष्ट्र-भाषा के नाम से पुकार

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्वदेशी
आरोग्य
नीलगिरि
नमूना
युकॅलिप्टस बाम
दादका मरहम

३४ लाख रुपये रोज़
लगाये गये!

**पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९
बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में
करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।**

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) आपको अपनी रकम अच्छी शर्तों पर हिन्दुस्तान को ऋण की भाँति देने का एक और सुअवसर प्रदान करता है। आप अपने देश को सहायता पहुँचायेंगे, भावों को घटाने में मदद करेंगे, और ३ फ़ी सदी सालाना ब्याज, इनकम टैक्स काटने के बाद साल में दो बार आपके घर पर पहुँचता रहेगा।

आप जितनी रकम चाहें इस ऋण में लगा सकते हैं। गवर्नमेंट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म हर हालत में १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। इस दौरान में अगर आपको नक़द रुपये की ज़रूरत हो तो इस लोन को आप चाहें मार्केट में बेच सकते है। अगर आप पर इनकम टैक्स लागू न होता हो या कम शरह पर लागू होता हो, तो अधिक चुकाया गया टैक्स वापस मिल जायगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब
प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास,
दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया
से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ
इंडिया की शाखाओं या किसी सर-
कारी खज़ाने से खरीद लें।

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

इंडिया के फाइनेन्स डिपार्टमेंट द्वारा

के सभी प्राणियों में मनुष्य
गया है। मनुष्य की इस
उसकी बुद्धि और मान-
है। इसी के बल पर उसने
शक्तिशाली, खूँखार जानवरों
में कर रक्खा है। उनमें शक्ति
के न होने से वे जड़वत्,
काम करनेवाले तथा किसी
बुद्धि से सम्बन्ध रखनेवाली
में असमर्थ हैं। आज का
रूप में देखने को मिलता
विज्ञान का चमत्कार है जिसे
प्रगति का सहारा प्राप्त
मानते हैं कि बुद्धि सदैव
उत्पादन करती हो—ऐसी
मनुष्य ऐसे भी कार्य करता है
नहीं—अपितु पशुओं की
गिरे हुए होते हैं। परन्तु उसकी
के सामने बुराइयाँ नगण्य-

और असभ्य दोनों जातियों में
होते ही हैं। वे भी अपने
की प्राप्ति करते हैं लेकिन
अलग-अलग है। जो जाति
कही जाती है, प्रायः ऐसा
है कि उसकी हृदय की
जाती है और सभी कार्य
से परे होते हैं।
है कि दाम्पत्य-जीवन को
सभी चाहते हैं। कम बुद्धि-
अधिक बुद्धिवाला भी। पर
दोनों के प्रेम-व्यवहार
ता है। यदि प्रत्येक अपने
र, अभिमान की भावना
शासन करना चाहे और
सुख की कल्पना करे तो
बात है। सहयोग की
ही कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण
है। अहंभाव तो प्रत्येक
कि पशुओं और जानवरों
फिर स्त्री तो पुरुष के कोटि
उसके भी भावना है, हृदय
भी है। फिर पुरुष का
वह क्यों सहे? क्यों न
भावना लेकर संसार में
और अपने को उनके समकक्ष
स्थान पर उनसे आगे
आज के युग में स्त्रियाँ अपने
के लिए दिनों-दिन सचेत
हो रही हैं। आन्दोलन
करती हैं, संस्था-संगठन-
स्वाधीनता को पाना भी चाहती
वह कार्य तर्क की दृष्टि से सत्य
भी है। लेकिन इतना सब
विचारणीय बात है कि
प्रकार स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकीं
प्रेम, सुख और आनन्द को
जिसे वे वास्तव में पाना
ही जिसके लिए है।
है कि 'जिसका काम उसी
कहावत महत्त्व रखती है
के अनुसार कार्य-वितरण का
और सफलता प्राप्त करने में
। हमें जो काम सौंप दिया
जिम्मेदारी हमारे कन्धों
है उसका निर्वाह करना ही
। यदि उससे हम बचना
समझकर बेगारी से
करेंगे तो हम नैतिक
हैं और उस स्थिति में

मातृमण्डल

स्त्री-पुरुषों की समानता का क्या महत्त्व है?

अनुशासन और जिम्मेदारी के अनुरूप जीवन की प्रगति क्यों?

लेखक, श्री रमाकांत [illegible], बी० ए० 'साहित्य-रत्न'

सुख पाने के न तो अधिकारी ही रहते हैं और न पाते ही हैं। आज अछूतों की समस्या एक मुख्य प्रश्न बन गई है। क्यों? इसलिए कि जिस घृणित कहे जानेवाले कार्य को वे करते हैं उसके कारण लोग उन्हें छूना पसन्द नहीं करते। ऐसा क्यों? वे तो ऐसे कार्य को करते हैं जो महत्त्वपूर्ण है और जिसके न किये जाने पर समाज में बहुत गड़बड़ी हो सकती है और कोई उसे करना न चाहेगा और तब क्या होगा—इसकी कल्पना तो हम सभी कर सकते हैं। ठीक यही बात स्त्रियों के साथ पुरुष के कार्यों की भी कही जा सकती है। वे उन्हें नीच समझते हैं, हेय समझते हैं, उन पर अपना पूर्ण प्रभुत्व रखना चाहते हैं। ऐसा कहा जाता है कि उनकी यह परम्परा बहुत प्राचीन समय से चली आ रही है। वह स्त्री को पैर की जूती, गुलाम बनाकर ही रखना चाहते हैं। वास्तव में बात ऐसी नहीं है। पहले से ही स्त्री पुरुष के अधीन रहती चली आ रही है इस कारण उसका एकांगी भाव यह भले ही हो सकता है लेकिन पूर्णरूपेण ऐसा पुरुष नहीं चाहते कि वे मालिक बनकर शासन और अत्याचार ही करते रहें। वे भी सुख और आनन्द चाहते हैं। कलह और अनियमित जीवन उन्हें भी पसन्द नहीं। प्रेमपूर्ण शासक भी वे चाहते हैं और जो सदैव स्त्रियाँ ही रही हैं। स्त्री पुरुष की चेरी नहीं सहधर्मिणी है। वह तो सदा से पुरुष की अर्द्धांगिनी ही रही है। प्रेम और सहयोग से जीवन को सुखद बनाना ही उसका भी ध्येय है। अतः हम किसी को दोष नहीं देते। लेकिन एक बात अवश्य चाहते हैं कि सभी वस्तुस्थिति को ठीक से समझें, उस पर विचार करें और तब अपने भावी जीवन के लिए कदम उठाएँ।

सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य करनेवाली प्रयाग की प्रमुख महिलायें बाईं ओर से—श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित, श्रीमती बनर्जी, श्रीमती लाडोरानी जुत्शी और अंत में श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी।

सबसे अधिक और उपयुक्त नियम सभी जगह 'अनुशासन' का है। जहाँ अनुशासन नहीं वहाँ अव्यवस्था और अन्धेरगर्दी का ही प्राधान्य रहता है। अनुशासन की बात भी इसलिए नहीं कही गई कि किसी एक [illegible] ही [illegible] रहे वरन् उसके अन्तर्गत हम सहयोग की भावना को बढ़ा सकें इसी लिए। सेना का सिपाही यदि सेनापति की आज्ञा पर नहीं चलता तो उसका कार्य अनुचित है। वह सफलता प्राप्त करने में बाधा डालता है। सेनापति के उचित या अनुचित आदेश का पालन करना ही उसका धर्म और कर्म होना चाहिए। इसलिए हम सबका कर्तव्य है कि अनुशासन के नियम का पालन करें।

अब रही बात अनुशासन करनेवाले की। शासक कौन हो? स्त्री या पुरुष? यह निर्भर करता है प्रकृति की देन पर। उसने ही जिसे जिस काम के लिए बना दिया है वही ठीक भी है। स्त्री स्वभावतः कोमल होती है। मातृत्व की भावना उसमें पुरुष से अधिक होती है। उसे ही बच्चों का लालन-पालन करना पड़ता है, उनकी देख-भाल भी रखनी पड़ती है। उसे यदि बच्चों के काम से अलग करके बाहर पैसा पैदा करना, युद्ध करना या आन्दोलन में भाग लेने को सौंप दिया जाय तो वह कैसे कर सकती है? पुरुष उसके स्थान पर घर पर रहकर बच्चों को खिलाने का काम कैसे कर सकता है? वह तो युद्ध के लिए अधिक उपयुक्त है क्योंकि वह स्त्री से अधिक सबल होता है उसे बच्चों से उतनी ममता नहीं हो सकती जितनी कि स्त्री को होती है। फिर स्त्रियाँ क्यों ही बात में पुरुष की बराबरी करना चाहती हैं, उनसे आगे बढ़ना चाहती हैं। यह विद्रोह की भावना क्यों? उसमें अपनी निज की शक्ति होती है जिसके द्वारा प्रेम और ममत्व की भावना से वह पुरुष पर शासन करती है। अपने उसी स्वाभाविक गुण को वह क्यों नहीं अपनाती? जिसके प्रमाण भारत ही नहीं संसार के साहित्य और इतिहास में एक नहीं अनेक मिलेंगे। अपनी उसी शक्ति का प्रदर्शन आज उसने क्यों बन्द कर दिया है? उसे वही मार्ग अपनाना चाहिए—उसी के द्वारा वह पुरुष-जाति पर शासन कर सकती है।

उदयपुर महिला मंडल की मंत्राणी श्रीमती कमला कुमारी श्रोत्रिय।

स्टैनिष्ट्रीट की अचूक दवायें

खाँसी • सर्दी • इन्फ्लुएञ्जा

हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

स्टैनिष्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौसफाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुँचाता है।

एनजौएड्स टिकियाँ एक भूतपूर्व जनस्वास्थ्य परिचालक के नुस्से के अनुसार सावधानी से बनी हैं। इन पर चीनी चढ़ी होती हैं; एनजौएड्स टिकियाँ इन्फ्लुएञ्जा की महामारी में लाभदायक प्रतिषेधक साबित हुई हैं। साधारण सर्दी से भी ये रक्षा करती हैं।

कैगमैग • स्टैनिष्ट्रीट सिरप • एनजौएड्स

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 119

साहित्य-चर्चा

'अंतिम बेला'

(उपन्यास)

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

लोकजन और लोकमन के आधार पर ही साहित्य का विकास होता है किन्तु इस लोकजीवन का आधार शरीर है और उसका पूरक मन। कहा भी गया है कि 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्'। वस्तुतः तन के बाद ही मन का स्थान होना भी चाहिए। प्रेमचन्द और छायायुग के पश्चात् हिन्दी कथा-साहित्य में मनोविज्ञान की इतनी प्रधानता सी हो गई कि वह जनता के लिए छायावाद ही बन गया। उसमें शरीर विज्ञान (स्थूल जीवन का सहज चित्रण) प्रायः नहीं मिलता। वास्तव में मानवीय जीवन की समस्यायें न तो केवल शारीरिक ही हैं न केवल मानसिक ही, उसमें दोनों का समन्वय है। किसी एक की नितान्त उपेक्षा जीवन की पूर्णता में बाधक बनती है। मनोविज्ञान के अध्ययन और अनुभव में जीवन की प्रत्यक्ष वस्तु स्थिति के भीतरी कारणों, मानसिक गुत्थियों और अवचेतन मन की रहस्यात्मक प्रवृत्तियों का अनुसंधान तथा अनुमान करना पड़ता है। चेतना की अनेक अस्पष्ट अंध गुफाओं में प्रवेश करके उनकी विभिन्न स्थितियों और उनके आधार-भूत तत्त्वों का विश्लेषण करना पड़ता है। इस दूर की कौड़ी लाने में भ्रम और थकान की सम्भावनायें बहुत ही सहज हो जाती हैं। एक भूखा-प्यासा भारतीय दासता और आर्थिक विपन्नता के बन्धनों के बीच अपना जीवन-यापन किस तरह करता है, इसका सहज स्वाभाविक चित्रण उतना कठिन नहीं जितना उसका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। यों भी मन की अपरिमित भाव-वीचियों का परीक्षण बहुत सहज नहीं। पर मनोविश्लेषण तो मन की गूढ़ और आपस में गुथी हुई जटिल प्रवृत्तियों के सुलझाने की ओर अधिक उन्मुख रखता है; सरल-सीधी बातों के उद्घाटन में उसकी महत्ता नहीं मानी जाती। जैनेन्द्र, अज्ञेय तथा इलाचन्द्र जोशी की कृतियाँ इसीलिए जनसाधारण से एकदम दूर पड़ जाती हैं क्योंकि उनमें एक विशेष प्रकार के असाधारण मनोलोक का दिग्दर्शन रहता है, सामान्य जीवन का नहीं। उनकी भाषा, उनके भाव तथा उनके निर्णय और निर्माण प्रायः कल्पना और अनुमान से अनुबन्धित मन के सूक्ष्म सूत्रों से बुने रहते हैं। आशय यह नहीं कि इनकी कृतियों का महत्त्व नहीं पर यह सच है कि वस्तु-जगत् के सहज रूप-रंग तथा रस-गंध की ममता इनकी कृतियों में उतनी नहीं मिलती जितनी अन्तर्प्रकृति की रंगीनता।

प्रेमचन्द ने वहिर्प्रकृति तथा अन्तर्प्रकृति के समन्वय को कभी नहीं छोड़ा, यही कारण है कि वास्तविक भारतीय जीवन की झाँकी हमें आज भी उनकी कृतियों में ही मिलती है। वे सामान्य जीवन के तन-मन दोनों को जनता के सामने स्पष्ट रूप से रख देते हैं। सुनीता, शेखर, सन्यासी अभी भारतीय जीवन की सामान्य परिस्थितियों और सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व नहीं प्राप्त कर सके किन्तु धनिया, होरी और बिल्लेसुर बकरिहा हमारे बीच में हैं, हमारे जीवन के अंग हैं और हमारे समाज के आधार हैं।

साहित्य में किसी ऐसे विशेष जीवन का जो सामान्य सामाजिकता से दूर है, कभी कोई महत्त्व नहीं होता। मानव एक सामाजिक प्राणी है उसकी कृतियों का मूल्य सामाजिकता के आधार पर लगाया जाता है और लगाया जाना चाहिए। रवीन्द्र ने एक जगह ठीक ही कहा है—'जो लोग अपने जीवन और अपने भावों को समाज से दूर रखकर समाज छोड़ने का दंभ करते हैं वे उन खोटे सिक्कों की तरह हैं, जिन्हें समाज अनुपयोगी समझकर अपने व्यवहार से अलग कर देता है।' ठीक ही है। समाज की सामूहिक चेतना के बिना जीवन और साहित्य व्यक्ति की कल्पना-क्रीड़ा मात्र रह जाता है।

भारतीय जीवन की समस्या आज उतनी मानसिक नहीं है जितनी शारीरिक (स्थूल) क्योंकि विहार की अपेक्षा आहार की उसे अधिक आवश्यकता है। इसमें सन्देह नहीं कि जीवन के कुछ प्रश्न शाश्वत हैं और कुछ सामयिक, पर सामयिकता के संरक्षण के बिना शाश्वता पर ही आघात होता है। अस्तु, आज की समस्या का निदान देह की भूख-प्यास है मन के मोदक नहीं। बहुत दिनों के पश्चात् हिन्दी में प्रथम बार श्री ओंकारनाथ 'शरद' ने जीवन की वास्तविक स्थितियों के बीच से प्रस्फुटित व्यक्तित्व 'जुगाई' के रूप में उपस्थित किया है। 'अन्तिम बेला' का नायक जुगाई युग-युगों से प्रवाहित जीवन की सहज सहृदयता और ग्रामीण रमणीयता का बहुत ही सुन्दर प्रतीक है।

इस गाँव के अल्हड़ छोकरे को लेकर 'शरद' ने जीवन के जिस प्रमुख प्रश्न और मार्मिक स्थल का स्पष्टीकरण किया है, उसमें मन की भावनाओं का बौद्धिक निरूपण उतना नहीं है जितना तन की विवशता का सुबोध चित्रण। जुगाई का जन्म गाँव की प्राकृतिक सुषमा के बीच में हुआ है। लड़कपन से ही उसके चारों ओर हरे-हरे लहलहाते खेत, सघन अमराई, नदी का किनारा, ऊँचे-नीचे टीले और वायु का मुक्त प्रवाह बना रहा है। वह स्वयं भी सुन्दर है, उसकी मुस्कान में प्रकृति की सहज-सरल स्वाभाविता खिल जाती है। जुगाई ने शैशव छोड़कर यौवन में प्रवेश किया। उसकी आँखें एक मादक लाली में डूबने-उतराने लगीं। 'आँखों में जब राग भर आता है तो एक रंगीन-सी दुनिया जैसे हमारे सामने अपना रूप बिखेर देती है। प्रकृति का उदासीन यौवन भी एक मदिर रागिनी गा उठता है और हृदय किसी को प्यार करने लगता है।' जुगाई ने भी यही किया। हृदय के एक कोने में संचित स्नेह सजग हो उठा और अपना आधार खोजने लगा। गाँव का जीवन परिस्थितियों की विषमता में भी प्रायः मिलने-जुलने और साधारण व्यवहारों में सबसे समान ही रहता। शादी-विवाह, खेत-खलिहान और मेले-ठेले में सभी सामान्य धरातल पर उतरकर उठते-बैठते हैं। यों तो चिन्ता गाँव के जमींदार की लड़की है पर उसका मिलना-जुलना जुगाई से हो सकता है, होता है। प्रथम

'आँखों से आँखें जो टकराईं कि लगा मानो दो पत्थर टकरा गये। चिन्ता की देह-यष्टि एक बार लहरा उठी जैसे जुगाई के चितवन का प्रहार वह सह न सकेगी।' दोनों एक दूसरे की टोह में रहने लगे। कभी सरपत की झाड़ियों में कभी खेतों में कभी बागों में उनका मिलन भी समय-समय पर होता रहता था। संसर्ग के सहयोग से उनका स्नेह अधिक गाढ़ा होता गया और उनके यौवन में निखार झलकने लगा। संसार के प्रति एक-एक उपेक्षाभाव और और दोनों बहुधा मिलने लगे। बात, गाँव में फैलने लगी। चिन्ता के पिता ने जुगाई की माँ को बुलाया और बहुत कुछ भला-बुरा कहा—'ठाकुर के मरने पर तो हमने समझा था कि तुम हो और तुम्हारा लड़का। गाँव में रहोगे अच्छा है। दुश्मनी तो ठाकुर से थी पर मुझे पता नहीं था कि आस्तीन की नागिन बनकर तुम डसोगी। जुगाई की शादी करके मेरी इज्जत बचाओ। देखो गाँव में रहना दुश्वार हो जायगा। घर-बार जलवा डालूँगा।' ठाकुर का बदला बेटे से लूँगा। जुगाई की माँ अपमानित होकर वहाँ से चली आई। आते ही उसने जुगाई से सब समाचार बताया और खिन्न भाव से कहने लगी—'अगर तेरी जगह दूसरा लड़का होता तो इसका ऐसा मुँहतोड़ जवाब उन्हें देता कि जन्म भर याद करते।' अच्छा तो क्या करना चाहिए माँ, जुगाई ने पूँछा। माँ ने अनमने मन से कहा—'तू तो मानेगा ही नहीं'। 'मानूँगा माँ, उन्होंने हमारे बाप को गाली दी है।' 'तो चिंता से अब न मिलना।' जुगाई पर इस समय वंश की लज्जा और विधवा माँ की ममता का सवाल था। एक ओर उसे माँ को अनाथ तथा निरीह छोड़ने का भय था तो दूसरी ओर चिंता को दिये गये वचनों को तोड़ने की ग्लानि। जुगाई के स्वस्थ और सामाजिक मन ने वास्तविकता का साथ दिया और वह मन की क्षणिक लालसा को उखाड़ फेंकने के लिए प्रस्तुत हो गया और कह दिया—'अच्छा माँ, मैं शादी करूँगा।'

शादी करके वह अपनी माँ और पत्नी के साथ सुख से रहता है। बीच-बीच में उसे चिंता की याद सताती है पर उसका जीवन में गौण स्थान है। स्नेह और सामाजिकता के इसी प्रश्न को बंगाली शरद ने भी 'शेष प्रश्न' में उठाया था।

उसका समाधान हिन्दी के शरद
ही स्वाभाविक रूप से सामने रख
भोजन, वस्त्र तथा निवास की
समस्यायें जीवन के सामने निर्म
रूप में खड़ी हैं और मानव
उनकी दारुण पीड़ा से जर्जरित
है तब उसे स्नेह की साधना का
नहीं है। सबके क्रन्दन की उपे
वह अपने मन की तृप्ति पाकर
करेगा? उसका स्नेह भी सा
और आर्थिक व्यवस्था के अनुरू
को समेटता-पसारता रहता है।
रण के लिए सब छोड़कर प्रेम
पन शोभा भी तो नहीं देता
तो अर्वाचीन शिक्षा की पद्धति और
का आग्रह मात्र है, मन की
है। जुगाई, अभाव-जन्य संयम के
न तो समाज को धोखा देना
न अपनी व्यक्तिगत तृप्ति के लि
को छोड़ना ही चाहता। यहीं उ
का साहस और स्वस्थ संगठन है।
सामूहिक चेतना को स्वार्थ त्याग
जीवन की यथार्थ स्थिति को
जुगाई की तरह के ही चरित्र
सामयिक विपन्नता को दूर करने
हो सकेंगे, यह निश्चय है।
स्वाभाविक और स्वस्थ स्नेह के
पर समाज सुखी होता है न कि
दुर्बलताओं के दुलराने से!
प्रश्न के उत्तर का सजीव स्वरूप है।
सुकुमार तथा कोमल-करुण
बीच जुगाई का व्यक्तित्व
स्नेह, व्यक्ति और समाज,
नगर और गाँव, धनी और
अनेक उलझनों की स्वयं
बनकर जगमगा उठा है।

ऐसे सुन्दर चरित्र-निर्माण
श्री शरद का मैं अभिनन्दन
उपन्यास भाषा, भाव, शैली
की विविध विधियों से
सुव्यवस्थित है।

भैरवी—तीसरा संस्करण—
आर्ट पेपर पर रचनायें,
आर्ट पेपर में चित्र,
बँधाई और रैपर।
मैनेजर, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

उसका अभिमान
आशा फेस पाउडर
Asha
FACE POWDER
COVERS
STAYS LONG
ASHA ADDS CHARM TO YOUR LOVELINESS
ASHA P2

ाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

कारी, मनोरंजक और रोचक——

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क के आगे)

कहा—क्यों ?

में विमला ने कहा—एक बार सरोज को देखने थी।

भौंहें चढ़ गईं। उसने कहा—जाने कहाँ घूम रहा है। आत्ता को आने दो खोजवाती हूँ।

की मुख की भंगिमा समझ रही थी। मुख के विचित्रता, विराग, विरूपता, कृपा आदि प्रस्फुटित अन्तर का परिचय पा लिया।

बड़े कटोरे में खीर परोस कर रख गया। लक्ष्मी में खाने आने की सुविधा तुम्हें होगी क्या? सेवा क्यों न होगी। तुम्हारे मृदु-इंगित पर विमला अधीर है, किन्तु तुम क्या समझो?

—रात्रि में जब सुविधा हो तब आ जाना, नहीं आ सकेगा, किसी गाँव जा रहा है।

में कौर लिये चुप बैठी थी। लक्ष्मी ने फिर को भी भेज देना। बूढ़ी हो गई हूँ—मुझसे भूल नहीं लिख सकी।

विमला इस बात पर बहुत हँसती, परन्तु का हृदय वेदना से चूर्ण हो चुका था। कमरे अत्ता अपने मिनमिनाते हुए गले से, बहुत धीरे ; किन्तु फिर भी कुछ सुनाई पड़ ही जाता था। थी—कैसी रंग-रँगीली देह है! सचमुच! दो, यही तो गाने का समय है, झूठ कहती होऊँ काम न आवें।

कण्ठ स्वर और फूट पड़ा—अरी क्या कहती ने जान-सुनकर यह सब....और कुछ नहीं

की भाँति तड़प कर बाहर पहुँची। उसे देखते । उसने बड़े ज़ोरों से सबको डाँटा और अत्ता से सन्ध्या को तुम अपना हिसाब लेकर घर से ! बताये देती हूँ।

करके चली आई। सरोज उसे देखने को गया कि अत्ता भी कानपुर छोड़कर कहीं चली वहाँ नौकर नहीं है।

(१९)

नौकरी सचमुच ही चली गई। लक्ष्मी वास्तव में करना नहीं जानती। किन्तु इसका परिणाम अपयश-विस्तार। घर-घर उसके सम्बन्ध में चलने लगा। प्रायः विनोद को मार्ग में— सम्बन्ध में पूछ-ताँछ करते थे। विनोद ने भी वह विमला के अन्तःपुर पर्यन्त और हरीश के कानों का किसी का भी साहस नहीं हुआ। हरीश था, यह समझ कर मोहल्ले के, जाति के, नगर यहाँ आते ही न थे, ऐसी बात नहीं थी। आपद- मुफ्त दवा लेने को सभी आते थे।

सेवा-कार्य बढ़ गया था। दो नवीन डाक्टर निर्वाह लेकर काम में और आ जुटे थे। विनोद का कार्य ही सीमित था। यह कार्य उसके हाथों सौंपकर था।

जीवन में धीरे-धीरे विषाद घिरता आ रहा था। प्रेम में त्रुटि न थी तो भी विमला के हृदय में अपमान से यह विषाद बढ़ता जाता था। वह बात हरीश से भी नहीं बतलाती थी। हठात् रूप धारण किया।

विमला हरीश के एक भक्त के गृह निमन्त्रण । जाजमऊ शहर से दूर था। जिस घर की लड़कियाँ सामाजिक बन्धनों को तोड़कर थीं। वे लड़कियाँ दो दिन कानपुर आकर न होने से विनोद स्वयं मोटर लेकर आया में गाड़ी रुक गई। बहुत चेष्टा करने पर

विनोद ने कहा—अभी थोड़ा ही दूर आये हैं, लौट चलो भाभी। प्रथमग्रासे मक्षिका पातः.....

विमला ने हँसकर कहा—वाह रे, वह लोग हमारा रास्ता देखती होंगी।

किन्तु गाड़ी तो नहीं चलती।

विमला ने चकित होकर कहा—सो हम नहीं जानतीं, जैसे हो हमको पहुँचाना पड़ेगा।

विनोद ने कहा—दादा की बड़ी गाड़ी लाता तो अच्छा होता। बेबी-आस्टिन लाकर पछता रहा हूँ।

विमला ने कहा—तुम गाड़ी ठेलकर ले चलो, हम नहीं जानतीं!

विनोद ने कहा—सो मैं हटनेवाला नहीं हूँ। गाड़ी को सिर पर उठाकर ले चलूँगा।

विमला ने हँसकर कहा—यह गन्ध-मादन पर्वत.....?

विनोद ने कहा—तो क्या हुआ भाभी! मैं हनुमान जी हूँ।

विमला ने कहा—यह न कहोगे तो पर्वत कैसे उठाओगे? किन्तु भाई यह हँसी छोड़ो कुछ उपाय करो।

विनोद ने सोचकर कहा—अच्छा ठहरो, मैं अभी कुछ जन बुलाये लाता हूँ। सम्भव है ठेलने पर गाड़ी स्टार्ट हो जाये। डरोगी तो नहीं?

पागल हुए हो क्या?

विनोद जन ढूँढ़ने चला गया। सड़क के पास बड़ी दूर तक हरे भरे खेत ही खेत चले गये थे। बड़ी दूर वन की आड़ में तरु-श्रेणी के नीचे की भूमि अस्तगामी सूर्य की रक्त रश्मियों से लाल हो गई थी। कार्य समाप्त करके किसान लोग चैन की बंसी बजा रहे थे। आकाश तन्द्राच्छन्न हो रहा था। विमला सोच रही थी—अपना जब कोई नहीं है तो विनोद अपने पति के भाई से भी बड़ा स्नेह करनेवाला कहाँ से आ गया। क्या मैं अपने पति के सेवा-कार्य में हाथ नहीं बँटा सकती? स्निग्ध-वायु बह रही थी। कितना प्रबोध! कितनी शान्ति, कितनी सान्त्वना उसमें मिली हुई थी! उसका सारा श्रम, दुःख-शोक, विलीन-सा हो गया था। इतने में ही विनोद दो तरुण कृषकों को साथ लेकर आ गया। उसने कहा—चलाओ तो, ठेलो तो भाई।

विमला ने कहा—न हो तो इन लोगों को पारिश्रमिक देकर साथ ले चलो। लौटते समय यहीं छोड़ देंगे।

विनोद ने कहा—ठीक, ठीक!

ठेलने से गाड़ी स्टार्ट हो गई। तुरन्त ही जाजमऊ पहुँच गये। वे लड़कियाँ परस्पर यह विवाद कर रही थीं कि सेवा-कार्य में वे लोग क्या सहायता कर सकती हैं, सेवा-कार्य में क्या-क्या असुविधायें स्त्रियों को हो सकती हैं, इत्यादि। वहाँ पहुँचकर खाने-पीने के उपरान्त जब यह लोग जाजमऊ से लौटे तो उस घर से सड़क पर मोटर पर आते-आते भैरव का पुराना घर देख पड़ा। उसे पीछे छोड़कर मोटर तक आने में विमला कुछ हतप्रभा-सी हो गई थी। गाड़ी स्टार्ट होते ही और उसकी रोशनी खुलते ही गाँव की कुछ स्त्रियाँ चकित-रव से चिल्ला उठीं—गाड़ी रे....गाड़ी रे.... स्त्रियों का दल सर्चलाइट पड़ने के साथ दिखाई दे दिया। विमला ने देखा कि उस स्त्री-दल से थोड़ी दूर पर भैरव की बहन रधिया भी खड़ी है। उसका शरीर कण्टकित हो उठा। तब तक गाड़ी चल दी।

गाड़ी चलते-चलते पीछे से पुकार मची—हाँ री, हाँ, भैरव की ही बहू कीर्ति फैलाती फिर रही है!........

रव नहीं थमा। किन्तु विमला का भाग्य अच्छा था जो गाड़ी के आगे बढ़ जाने से अधिक बातें कानों तक नहीं पहुँच सकीं।

घर लौट कर विमला ने देखा कि वराण्डे में अत्ता बैठी हुई है। उसको देखकर अत्ता ने कहा—मुझे दीदी ने भेजा है। हरीश बाबू कहाँ हैं? सरोज बच्चा सवेरे से ज्वर में पड़ा है। बिलकुल बेसुध है।

घबराकर विमला ने कहा——किन्तु वह घर में नहीं हैं।

अत्ता ने कहा—सो तो मैं जानती हूँ। एक साहब डाक्टर आया है, तब भी जीजा जी और दीदी हरीश बाबू के लिए ही व्याकुल हैं। कहते हैं कि जल्दी बुला लाओ। अत्ता ने मत्था पीटते हुए फिर कहा—जाने क्या होनेवाली है, भगवान्!

स्टैनिस्ट्रीट

चिकेन
(कंसिंट्रेटेड)
एसेंस

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी
हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास करांची

SSK 121

गौर एवम्
सुकोमल त्वचा
का रहस्य

सौन्दर्य तथा
आकर्षण का नवविधान

काली तथा कुरूप त्वचा जादू की तरह अदृश्य हो नवीन मनमोहक त्वचा पैदा हो जाती है। यह कोमल तथा गौर वर्ण आकर्षण, व्यक्तित्व एवम् सौन्दर्य का प्रधान कारण है।

इस सौन्दर्य का रहस्य **ह्वाइटेक्स** है। यह आश्चर्यजनक तरल औषधि तुरन्त काम करती है। इसमें किसी प्रकार की चिपचिपाहट नहीं होती। यह त्वचा में प्रवेश कर जाती है तथा त्वचा को पोषती है। आप स्वयं इसका उपयोग करें और देखें कि आपका वर्ण, आपकी बाँह तथा हाथ कितने जल्दी गौर हो जाते हैं। ह्वाइटेक्स की एक बोतल आज ही खरीदिए।

वितरक : जी० अथरटन एन्ड कं० (ईस्टर्न) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रोड, कलकत्ता।

Whitex
WHITENS THE SKIN

विमला ने विनोद को पुकारकर कहा—तुम्हारे दादा कहाँ है, विनोद, जानते हो? उनकी इसी समय आवश्यकता है। सरोज को भयंकर ज्वर हो आया है।

विनोद ने कहा—गाड़ी भी तो नहीं है। कैसे खबर करूँ?

विमला ने कहा—दीदी की गाड़ी ले जा सकते हो। कहना इसी समय तुरन्त चले आयें।

अत्ता ने कहा—हाँ हाँ चलो गाड़ी वहाँ से ले लेना।

विमला ने कहा—जल्दी लौटना देर न करना।

विनोद अत्ता के संग चला गया। विमला के आतंक और दुख का ओर-छोर न था। उसने सरोज को यद्यपि देखा नहीं है तो भी उसकी महान् चिन्ता ने विमला को जैसे छाप लिया हो। सरोज को देखने जाने की इच्छा हुई किन्तु अभिमान ने कहा—नहीं! हृदय ने कहा—इस विपति में अवश्य जाना चाहिए। उसने दरवान को बुलाया—दरवान दादा।

दरवान आया तो उसने कहा—जीजा जी के घर तक चल जाओ। सरोज बहुत बीमार हो गया है। देख आओ, कैसा है। मन बड़ा घबरा रहा है?

दरवान चला गया। विमला ने देखा—सारी प्रकृति निस्तब्ध है। सारा आकाश मानो दारुण उत्सुकता से एक भय को हृदय में छिपाये हुए पृथ्वी की ओर देख रहा है!.........तो क्या सरोज इतना अधिक अस्वस्थ है?......

निश्चय ही अस्वस्थ है नहीं तो साहब डाक्टर क्यों आता? किन्तु तो भी हरीश की आवश्यकता है?

वेदना की गम्भीरता से हृदय भर आया। नक्षत्रों से भरे आकाश की ओर देखकर, हाथ जोड़कर विमला ने पुकारा—टाल दो भगवान्! उसका दुख टाल दो! यह व्याधि चाहे तो मुझे देकर मेरे प्राण लेकर भी सरोज की रक्षा करो, भगवान्! बच्चे की रक्षा करो। नन्हा प्राण पृथ्वी पर आये अभी दो दिन हुए हैं!..........

दरवान संवाद दे गये। दासी किशना की मा—रसोइया, जाने क्या-क्या कह गये। [illegible]लोक के व्यापार की भाँति..... संसार के संग विमला का जैसे कोई सम्पर्क न हो!.........

रात को तीन बजे विनोद ने आकर पुकारा—भाभी....

विमला चौंक पड़ी। उसने विनोद की ओर देखा। विनोद ने कहा—क्या तुम सोई नहीं?

[क्रमशः

पटखे जाने के नुकसान को रोकिये
...इस तरह धोइये

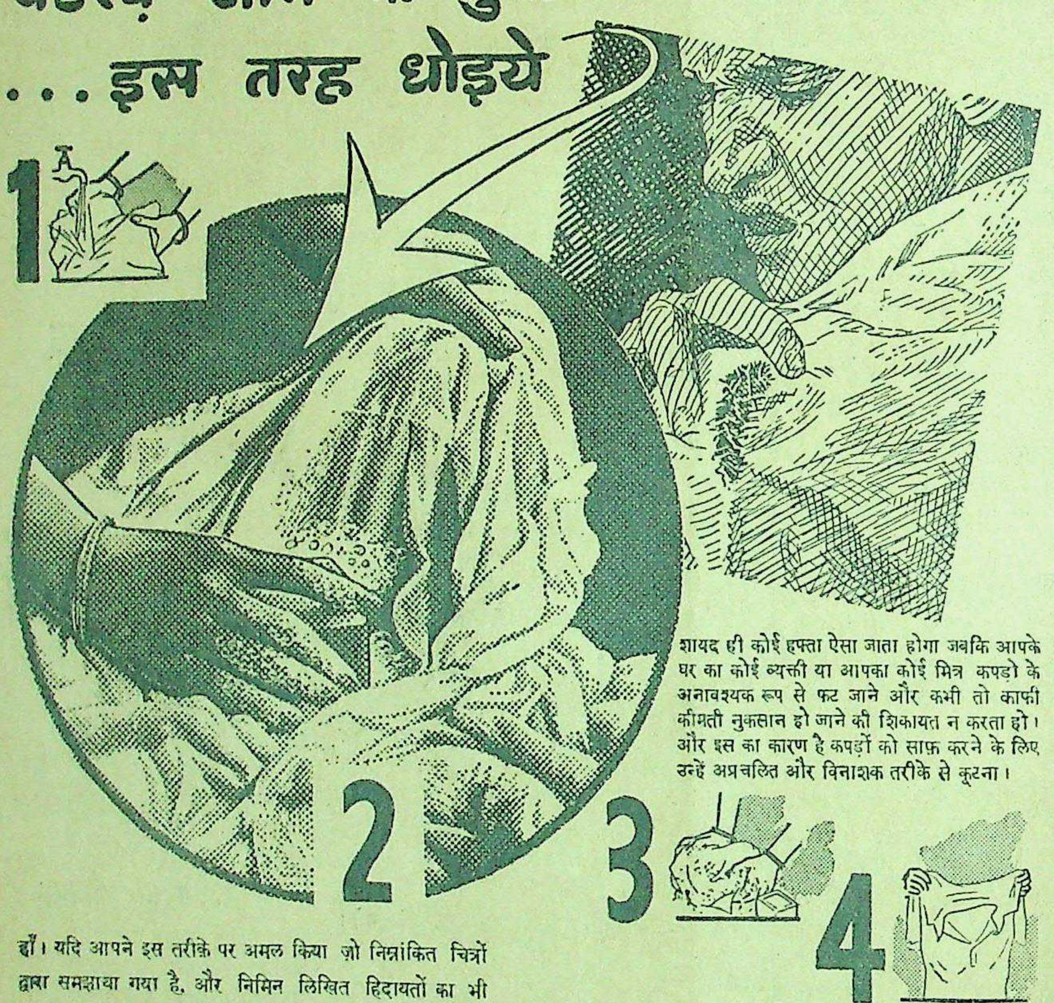

शायद ही कोई हफ्ता ऐसा जाता होगा जबकि आपके घर का कोई व्यक्ती या आपका कोई मित्र कपड़ो के अनावश्यक रूप से फट जाने और कभी तो काफी कीमती नुकसान हो जाने की शिकायत न करता हो। और इस का कारण है कपड़ों को साफ़ करने के लिए उन्हें अप्रचलित और विनाशक तरीके से कूटना।

हाँ। यदि आपने इस तरीक़े पर अमल किया जो निम्नांकित चित्रों द्वारा समझाया गया है, और निम्न लिखित हिदायतों का भी ठीक-ठीक पालन किया तो आप निस्सन्देह अपने कपड़ों पर बिना कोई क्षति पहुंचाये साफ़-सुथरा रख सकेंगे।

(१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में कर सकते है-इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता।

(२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट ज़रा ज्यादा मलें।

(३) साबुन लगे हुए कपड़े को हाथों से धीरे-धीरे गूंथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाग कपड़े के हरेक तन्तु में प्रवेश पा जाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरी तरह कूटने की आवश्यकता ही नहीं है। **सनलाइट का "स्वयंकाम करनेवाला" फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा-यदि आपको यह विश्वास हो जाये कि गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है।** इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को छूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेन के साथ सब मैल निकल जायेगा।

(४) फेन-जिसमें कि अब सारा मैल आचुका है-छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए।

ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

सनलाइट साबुन कपड़ों
की बचत करता हैं

SUNLIGHT
SOAP
Rs.10000 Reward!
GUARANTEED

S. 73-88 HI

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

बाल-साहित्य के अद्वितीय
पण्डित सोहनलाल जी द्वि
की
तीन पुस्तकें
झरना—शिशु-भारत
बाँसुरी

पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू
है कि उन्हें ये रचनायें बहुत पसंद
माननीय सम्पूर्णानन्द जी
है कि द्विवेदी जी यों तो सभी प्रकार
दर्जे को कवितायें लिखते हैं, जिन
भावों की गम्भीरता और भाषा
प्रकट होता है, लेकिन, बाल
उनका ख़ास क्षेत्र है। जो यह मान
बालकों में सद्विचारों को
बोना चाहिए; उन्हें द्विवेदी जी
कृतियों को अपनाना चाहिए और
कृतज्ञ होना चाहिए।

बहुत ही अच्छी छपा
प्रत्येक पुस्तक का मू
।।।) बारह आने
मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि

लम्बा होइये

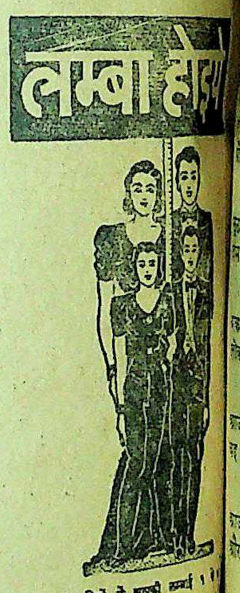

१६ दिनों में आपकी लम्बाई १
तक बढ़ सकती है।

इंग्लैंड में प्र
टालसपाइ
ग्लैंड फ़ुड टेबलेट
४२३
डिस्ट्रीब्यूटर्स :—दि ब्रिटिश टॉनिक
लाइसेंस प्राप्त औषधि विक्रेता
डिपार्टमेन्ट बी-५,
मिश्रवेदर रोड,

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर और सजीव चित्र है। मूल्य २॥≡) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों का जीता-जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

सपरिहास

की तरंग

क सर सुलतान अहमद कानूनी सलाहकार पहली रेडियो-विभाग में उन्होंने किया है उसका पुरस्कार चाहिये, बधाई है।

*

कार्य कारिणी सभा के बड़े लाट महोदय को कहीं तो करना ही पड़ेगा। राजाओं के यहाँ दीवानों और कहीं न जगह मिले यों में इन लोगों को क्योंकि हमारी राय में कर सकेंगे।

*

नेहरू ने जावा के लोकारनो को जो तार में रोक लिया गया। समाचार-पत्रों से तो पंडित जवाहरलाल या जाय ?

*

ब्रिटेन में लोकतंत्र की हो रहा है। जान पड़ता कोई तार्किक नहीं हैं। लोग बनाते हैं राज- स्तालिन और एटली करके इस विषय पर समझौता हो जाय ?

*

देर यह लोग ठहर बनाई लोक-तंत्र की लोक-तन्त्र उस शासन किसी देश के निवा- और दूसरे देशवाले हाथ में लोक लें।

*

मुस्लिम यूनिवर्सिटी का स्टेशन घेर जियाउद्दीन को अधिकारियों ने पहचानने में गलती की। हिन्दू-विश्वविद्यालय के विद्यार्थी छुट्टी में आये हुए थे। मुस्लिम यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी नहीं थे।

* * *

मुरादाबाद के कलक्टर की आज्ञा है कि साधारण चिट्ठियों पर भी कोर्टफीस का टिकट लगाओ। उन्हें यह भी आज्ञा देनी चाहिए कि जो लोग मुझसे मिलने आयें वह भी माथे पर टिकट लगाकर आयें।

* * *

दिल्ली में गुण्डों ने उपद्रव करना आरम्भ कर दिया था। रात में रामलीला समाप्त होने पर जब स्त्रियाँ घर लौटती थीं तब यह गुंडे उनसे छेड़-छाड़ करते थे। धारा सभाओं के चुनाव का अभी श्रीगणेश है।

* * *

पं० जवाहरलाल नेहरू ने काशी में कहा कि वर्तमान सरकार छः महीने की मेहमान है। ऐसा न समझना चाहिए। हमारे देश में बड़े बड़े राजवैद्य हैं जो मरते को जिला सकते हैं।

* * *

श्रीयुत राज गोपालाचारी ने मैसूर के एक भाषण में कहा कि यदि मैं मैसूर का राजा होता तो आज ही अपनी प्रजा को वैधानिक शासन दे देता। राजा तो आप हैं ही जन्म से मैसूर के न सही मद्रास के तो शीघ्र होनेवाले हैं। तब देखा जायगा कि विधान का कहाँ तक पालन होता है ?

* * *

एक समाचार छपा है कि लंदन में भी चोर बाजार चल रहा है। इसमें आश्चर्य ही क्या है ? सारा संसार ही लंदन का चोर बाजार है।

* * *

बहुत से लोग अब हिन्दू-महासभा छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं। होना भी चाहिए। अब जब चुनाव में कांग्रेस की विजय निश्चित है तब किसी दूसरी जगह का सदस्य होना बेकार है। जिसका राज उसकी दुहाई।

—अगड़धत्त शर्मा

नीति के बचन

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

तरह निकले कहा अरमान ?
देने नहीं आता तुम्हें,
गुंडापन नहीं भाता तुम्हें;
तब न मिल सकता तुम्हें सम्मान।
का अभ्यास अच्छा तुम करो,
से अपनी सुरक्षा तुम करो ;
इस धरा पर तुम बनो भगवान।
संस्था हाथ में अपने धरो,
हित का स्वाँग जगती में भरो;
और हलवे का करो जलपान ।
सतयुग है न, है कलिकाल,
बड़ा है पास जिसके माल;
है ठगी सब से बड़ी दूकान।
के ऋषि पश्चिमी विद्वान,
मुनि जिन्ना समान महान;
राह इनकी तुम चलो सच मान ।
शीघ्र ही निकलें सभी अरमान।

आपके घर की शोभा
और
आपके बच्चों की सौगात
जी० जी० टॉय फैक्टरी, आगरा
के
लकड़ी के खिलौने
देखने में सुन्दर
चलने में मज़बूत
जी० जी० इण्डस्ट्रीज़

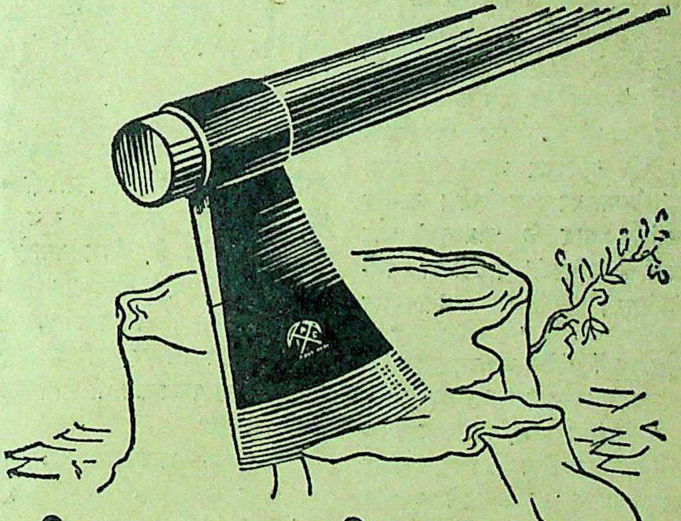

तीक्ष्ण कुल्हाड़ी...

राष्ट्रीय समृद्धि का उद्गम, हमारे जङ्गलों की लकड़ी, भारतवर्ष के बढ़ते हुए उद्यम-धंधे में विभिन्न रूप से व्यवहृत होती है। लोहे स्पात के लिए, उद्यम-धंधे द्वारा प्राप्त नाना हथियारों में चमकदार, तीक्ष्ण कुल्हाड़ी जैसे जैसे लकड़ी में चुभती है, राष्ट्र की प्रगति के लिए सहायक होती है।

A I C
TRADE MARK

AGRICO TOOLS
एग्रिको औज़ार

बिहार, बंगाल, उड़ीसा और आसाम के वितरक।
मेसर्स बाबूलालसिंह ऐंड कं०, ५८, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।
मेसर्स गोपीनाथ पाल ऐंड सन्स २१०, हरिसन रोड, कलकत्ता।
यू० पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिमी सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध के डिस्ट्रिब्यूटर्स।
मेसर्स मोहम्मद दीन एण्ड सन्स ग्रैन्ड ट्रङ्क रोड, अमृतसर बन्दर रोड, कराची।

ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड, (एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमूरी द्वारा प्रचारित।

संवाददाताओं के पत्र

बंगाल हुगली में मातृ-मङ्गल एवं शिशु-कल्याण-केन्द्र के भवन-निर्माण के लिए बंगाल-सरकार ने ८ हज़ार रुपये देना स्वीकार किया है।

२७ सितम्बर तक बंगाल में १२९९ राजबन्दी रिहा किये गये। ८ सितम्बर से २७ सितम्बर तक रिहा होनेवाले बन्दियों की संख्या १०६ है।

बंगाल-सरकार ने प्रान्त में फल-फूल एवं साग-सब्जी की खेती में वृद्धि करने के लिए ५,४०,३६० रुपये लागत की एक योजना को कार्यान्वित करने का निश्चय किया है। इस समय प्रान्त में ७,२६,२०० एकड़ भूमि में बाग-बगीचे हैं। इनमें २५ प्रतिशत की वृद्धि की जायेगी। पुराने बागों की जगह नये बाग लगाये जायेंगे और खाद आदि देकर उनकी उपज में वृद्धि की जायगी। —संवाददाता

* * *

जयपुर में बालिकाओं की प्रसिद्ध राष्ट्रीय संस्था वनस्थली विद्यापीठ का वार्षिकोत्सव २३ अक्टूबर को श्रीमती सरोजिनी नायडू के सभापतित्व में होगा। एक दिन पहले, २२ अक्टूबर को, पंडित जवाहर लाल नेहरू का भी वनस्थली में आगमन होगा। इस अवसर पर कई जीवन-क्षेत्रों में सम्मानित भारत के कई व्यक्तियों के भी आने की आशा है।

वार्षिकोत्सव के लिए तैयारियाँ बड़े जोर-शोर से हो रही हैं। इस उत्सव पर कई चीजों के साथ ही साथ वनस्थली की राष्ट्र-सभा का भी अधिवेशन होगा जिसमें सरकार की 'युद्धोत्तर भारत का पुनः निर्माण' योजना पर बहस होगी। स्वर्गीय श्री जयशंकर प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' और गॉल्सवर्दी के 'लॉयल्टी' नाटकों का अभिनय भी होगा। —संवाददाता

* * *

जोधपुर में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक जरूरी तार-द्वारा मारवाड़ लोक-परिषद् के सभापति को सूचित किया है कि सम्भव है वह एक दिन के लिए अजमेर रुक जायें इसलिए २३ के बदले २४ को वे सवेरे जोधपुर पहुँच सकेंगे। तार में आगे सूचित किया है कि वे २५ को सवेरे हवाई जहाज-द्वारा दिल्ली को रवाना होना पसंद करेंगे।

जोधपुर में पंडित नेहरू के सार्वजनिक भाषण के लिए स्टेडियम ग्राउन्डस के उपयोग में लाने की सरकार से अनुमति मिल चुकी है। श्री राधाकृष्ण बोहरा एम० ए० ने इस अवसर पर ३०० स्वयंसेवकों की माँग की है। कालेज के विद्यार्थी और छात्राएँ अपने नाम बड़े उत्साह से स्वयंसेवकों के लिए दे रहे हैं। म्युनिसिपल हाल में महिला-मंडल की एक सभा हुई। महिलाओं ने भी पंडित जी का स्वागत करने का निश्चय किया है। उन्हें एक-थैली भेंट करने के लिए अपने प्रयत्न शुरू कर दिये हैं। महिला-मंडल महिलाओं द्वारा महिलाओं से संग्रहीत धन लोक-परिषद् को सौंप देगी। महिलाओं ने लोक-परिषद् से माँग की है कि वे पंडित जी का भाषण महिलाओं के लिए भी रखवायें। —संवाददाता

* * *

जोधपुर में पंडित जवाहरलाल नेहरू मारवाड़ लोकपरिषद् के निमन्त्रण पर जोधपुर पहुँच रहे हैं। उनके स्वागत के लिए मारवाड़ लोकपरिषद् के अध्यक्ष लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास ने एक समिति बनाई है, जिसके संयोजक जोधपुर के मेयर पंडित द्वारकाप्रसाद पुरोहित हैं। समिति ने पंडित जी को २१०००) इक्कीस हजार की एक थैली भेंट करने का निश्चय किया है। जोधपुर की जनता थैली के इस कोटा को बहुत ही उत्साह से पूरा कर रही है। जोधपुर म्युनिसिपैल्टी की ओर से भी पंडित जी को एक नागरिक मानपत्र और सहयोग देने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर सारे मारवाड़ से करीब एक लाख व्यक्तियों के जोधपुर आने की उम्मीद की जाती है। सरकार का रुख सहयोगपूर्ण मालूम हो रहा है।

—संवाददाता

* * *

बीकानेर स्थानीय राजस्थानीय साहित्य-पीठ की कार्यकारिणी की तीसरी बैठक सज्जन बाग में हुई जिसमें पीठ के लिए बनाई गई परीक्षा-सम्बन्धी एक योजना स्वीकृत की गई। विद्यावन्त, विद्याप्रवीण, विद्याविशारद, विद्यालंकार, विद्यावाचस्पति, परीक्षाओं का पाठ्य-क्रम भी निर्धारित कर लिया गया है।

—आशाकान्त बी० आचार्य

* * *

इंदौर-निवासी भारत के सुप्रसिद्ध व्यापारी सेठ गोविन्दराम सेकसरिया ने हाल ही में ५० लाख रुपयों का दान देकर एक चेरेटी ट्रस्ट की स्थापना की है। उस दान की आमदनी का ६० प्रतिशत शिक्षा में तथा शेष अन्य लोकोपयोगी कार्यों में व्यय होगा। दान का सदुपयोग करने के सम्बन्ध में जो सज्जन कोई योजना भेजना चाहें वे, सेक्रेटरी सेठ गोविंदराम सेकसरिया चेरेटी ट्रस्ट यशवंत निवास रोड इन्दौर पते पर ता० २० अक्टूबर के पूर्व भेज सकते हैं। —संवाददाता

* * *

लाहौर से निकलनेवाली 'रेखा' का प्रकाशन अब फिर दिल्ली से आरम्भ हो रहा है। पत्र सचित्र होगा। रेखा का प्रथम अंक नवम्बर में प्रकाशित हो जायगा।

—संवाददाता

मेवाड़ के आज के साहित्यिक

(पेज ४ का शेष)

वाला साहित्य वीररसात्मक है। इसमें प्रेमसतसई के निर्माता भी हैं जो अपनी शृङ्गारिक वृत्तियों का प्रदर्शन यदा-कदा रंग-मंच पर किया करते हैं। इस प्रकार के कवियों में मुख्यतः नाथूदान जी महपारिया, राव सुजानसिंह जी, मोहनसिंह जी एवं रैवतसिंह जी भाटी आदि हैं। नाथूदान जी आधुनिक वीर-काव्य के सूर्यमल कहे जा सकते हैं। इनकी प्रतिभा का चमत्कार अभी अभी ही प्रगट हुआ है। इनकी कविता में व्यंग्य-चित्रण बड़ा मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी है। रैवतसिंह जी भाटी भूषण की याद दिला देते हैं। उनका फ़ौजी व्यक्तित्व कविता में भी झलकता है—यह खेवा नवीन कथानकों से उदासीन-सा मालूम होता है। अतीत का चित्रण करने में ही यह सुख समझता है।

दूसरे प्रकार के कवियों में कोई जौहर-ज्वाला को पुनः प्रज्वलित करना चाहते हैं तो कोई राष्ट्र की गुलामी से मुक्त होकर जीवन को स्वच्छन्द नदी के प्रवाह में छोड़ना चाहते हैं। कोई अपनी प्रेयसी का दर्शन करने के लिए व्याकुल हैं। कहने का तात्पर्य यह कि सभी प्रकार के कवि इस समय वर्तमान हैं। इसमें मुख्य जनार्दनराय नागर, कन्हैयालाल ओझा, उदयसिंह भटनागर और तखतसिंह आदि हैं। जनार्दनराय जी की कविता में जीवन का शास्वत उद्घोष और भारतीय मानस की शालीनता का दिग्दर्शन होता है। राष्ट्र का नवोदित व्यक्तित्व इनके जीवन से विशेष प्रभावित है। यह अपने अभाव का आरोप समाज पर नहीं करते और न यह अपने प्रिय को पहचनाने में भूल करते हैं। हत-भाग्य भारत का नव-निर्माण इनके जीवन का ध्येय है। वही उनके कवित्व में भी झलकता है। कन्हैयालाल ओझा, छायावाद से प्रभावित हैं। यह जीवन की निराशा और रुदन को समाज की निराशा और रुदन में परिणत करना चाहते हैं। पर इनके कवित्व में रहस्य भरा रहता है जिसका उद्घाटन करना प्रायः दुष्कर होता है। अवश्य ही भाषा की गति वेगवती है। उदयसिंह भटनागर जौहर ज्वालाओं का आह्वान करते हैं। पर यह इनके व्यक्तित्व के अनुरूप न होने से अवश्य कभी कभी निराशा होती है। पर कविता में ओज और वीररस की कमी नहीं है। तीसरा नवोदित व्यक्तित्व है, जिसमें आग है, तड़प है और जीवन की विषमताओं के प्रति रोष है।

गद्य के क्षेत्र में भी मेवाड़ प्रगतिशील है। कहानीकार हैं, आलोचक हैं, निबन्धकार, नाटककार एवं उपन्यास के निर्माता भी हैं। आलोचकों में पं० मोतीलाल मेनारिया, विपिनविहारी वाजपेयी एवं ओझा जी, नागर जी प्रमुख हैं।
मेनारिया की भाषा बड़ी
दर्शिका है। आपकी सम्
'साहित्य-रत्न' के पाठ्यक्रम
स्वीकृत हैं। आपको राजस्था
को प्रकाश में लाने का
आप राजस्थान के
स्थानी भाषा और साहित्य के
विपिनविहारी वाजपेयी मेवाड़ के
निबन्धकारों में मुख्य हैं और
क्षेत्र में आपका धीरे धीरे
जा रहा है। निष्पक्ष
पूर्ण आलोचना करना आप
है। आप साहित्य में बड़ी
अच्छे लेखक के साथ साथ
वक्ता भी हैं। आप अभी
का संपादन कर रहे हैं जो
प्रकाशित का जायेंगी। आप
हैं, कहानी, उपन्यास और
में श्री जनार्दन राय नागर
ओझा प्रमुख हैं। श्री नागर
स्थान के श्रेष्ठ साहित्य
कार्यकर्ता हैं। आप कुशल
आपके कितने ही नाटक
अभिनीत किये जा चुके हैं।
आपकी प्रकाशित भी हो चुकी
रात एवं पतित का स्वर्ग
रचनाओं में चंद्रगुप्त विक्रम
समर की समाप्ति,
विष का प्याला,
नाटक आपके लिखे हुए हैं।
स्थान के श्रेष्ठ नाटककार
आपने लिखे हैं। तिरङ्गा
आदि अच्छे अप्रकाशित
कहानियाँ तो आप कितनी
और समय समय पर
प्रकाशित होती रही हैं।
बलवती एवं मँजी-मँजाई
आप जैसा बोलते हैं वैसा ही
गद्य-काव्य लिखने में भी
हैं। अब तक आपने ८०
रचना की है और अधिकतर
रहते हैं। आपके गद्यगीत
मार्मिक होते हैं। आप साहित्य
वक्तृता-शक्ति आपकी बड़ी
मस्तिष्क भानमती का पिटारा
उसमें शिथिलता एवं कमी
आप मेवाड़ के साहित्य के

श्री कन्हैयालाल जी
कवि होने के साथ साथ
और नाटककार भी हैं।
बड़ी सुन्दर होती हैं और
विषय बड़े विचित्र चुना
अज्ञान के आनन्द, नाटक
अतिरिक्त गद्य-लेखकों में
पुरुषोत्तम मेनारिया,
बलवन्तसिंह तलेतरा आदि।

मेवाड़ का साहित्याकाश
पुञ्ज से आलोकित है।
इस दृष्टि से उज्वल है।
के साहित्योद्यान में सभी
पत्ते, वृक्षादि हैं। जीवन
मेवाड़ सीखने में प्रयत्नशील है।
संस्थाओं का मेवाड़ के नव
हाथ है जिनमें मुख्यतः वि
विद्यापीठ, महिला-मण्डल,
वनवासी विद्यालय,
मण्डल, गुरुकुल चित्तौड़
मन्दिर आदि प्रमुख हैं।

RAMESH RAJ & Co
KARACHI

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोर्ट, कराची।

की चिट्ठी

हिन्द-सेना के तीन अफसरों पर मुकदमा

की नियुक्ति—सर सुलतान अहमद नरेन्द्र-मंडल में—म्बली के उम्मीदवार कौन होंगे—श्री विश्वनाथ दास।

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

ना के मुकदमों की
लिए कांग्रेस कार्य-समिति-
के सदस्य श्री भूला-
श्री आसफअली लाल
के उन तीन अफसरों
कि ५ नवम्बर को सबसे
द्वारा मुकदमा चलाया
के नाम हैं कप्तान
और ढिल्लन। इन्होंने
एक संयुक्त प्रार्थना-पत्र
मुकदमों की पंडित जवा-
नियुक्त डिफेंस समिति
इच्छा प्रकट की थी।
आधार पर अपने
जाने से साफ़ इनकार
तीनों अफसरों से लगा-
वार्तालाप करने के बाद
हिन्द-सेना-सम्बन्धित
दिया। पंडित जवाहर-
ही दिल्ली पहुँचकर
वार्ता करके जानकारी

आज़ाद हिन्द सेना के
मुकदमों की पैरवी के लिये
च गये हैं।

ली के उम्मीदवारं

कांग्रेस कमेटी को बम्बई
पटेल का यह सन्देश
केन्द्रीय असेम्बली के
किये जानेवाले कांग्रेस
यथाशीघ्र केन्द्रीय
के पास भेजे। इसी
अली की अध्यक्षता
कांग्रेस कमेटी की एक
संगठन और सदस्यों
पर भी विचार
उप-समितियाँ नियुक्त
केन्द्रीय असेम्बली के
चुनने का प्रश्न
कर दिया गया।
कार्यकर्ताओं से पूछ-
हुआ है कि श्री
आगामी चुनाव के
द्वारा खड़ा किया
के लिए दिल्ली
निर्वाचन के आधार

पर चुना जाता है और परम्परा यह है कि एक बार हिन्दू और दूसरी बार कोई मुसलमान कांग्रेस के टिकट पर खड़ा किया जाता है। चूँकि श्री आसफअली इस पुरानी असेम्बली के सदस्य थे, इसलिये परम्परा के अनुसार तो किसी हिन्दू का नम्बर है, मगर चूँकि आनेवाले चुनाव कुछ विशेषता रखते हैं, इसलिए प्रान्तीय कांग्रेस परम्परा को तोड़ योग्यतम व्यक्ति को ही अपना उम्मीदवार खड़ा करना चाहती है।

भारतीय गवर्नर नियुक्त

युद्ध-विभाग के सेक्रेटरी सर चन्दूलाल त्रिवेदी द्वितीय भारतीय और प्रथम भारतीय आई० सी० एस० हैं जिन्हें एक प्रान्त का स्थायी गवर्नर नियुक्त किया गया है। सर चन्दूलाल की नियुक्ति पर राजनीतिक क्षेत्रों में वास्तव में भारी आश्चर्य प्रकट किया गया है। इस नियुक्ति पर नई दिल्ली की सबसे पहली प्रतिक्रिया यह थी कि लार्ड वेवल और सर आचिनलेक ने उनकी युद्ध-सेनाओं से प्रसन्न होकर ही सर चन्दूलाल को उड़ीसा की गवर्नरी प्रदान की है। युद्ध-विभाग के जहाँ का सारा वातावरण ही योरपियन है। सेक्रेटरी जैसे पद पर क़ाम करके सर चन्दूलाल लार्ड वेवल आचिनलेक दोनों के मातहत र चुके हैं। सबसे पहले भारतीय लार्ड सिनहा थे, मगर बिहार रे आई० सी० एस० अफसरों उनकी खटपट रहने के कारण वे को लात मारकर कलकत्ता रुके थे। मगर, पटना और कटक री अन्तर है। इसके अलावा सर ल त्रिवेदी ने हमेशा काम भी गोरे कों के मातहत और अपने सहयोगी आई० सी० एस० अफसरों के साथ किया है। अतः यह निश्चित है कि वे उड़ीसा की गवर्नरी को निभा ले जायेंगे। गत वर्ष जब बड़ौदा रियासत का प्रधान-मंत्री पद सर चन्दूलाल को आकर किया गया था और उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था, तब यह चर्चा चली थी कि क्या श्री त्रिवेदी कहीं के गवर्नर बनना चाहते हैं? वह चर्चा आज सही सिद्ध हो गई। परन्तु, लार्ड वैवेल हिन्दू-मुस्लिम समानता के आदर्श के कायल हैं और इसलिए यदि निकट भविष्य में ही किसी मुसलमान को भी एक प्रान्त का गवर्नर बनाया गया तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। कुछ गवर्नरों का कार्यकाल और पूरा होनेवाला है और बहुत सम्भव है दूसरा आकर सर अकबर हैदरी को जो कि सर चन्दूलाल त्रिवेदी से दूसरे नम्बर पर हैं, दिया जाय?

सर सुलतान नरेन्द्र-मंडल में

भारत-सरकार के सूचना-विभाग के सदस्य सर सुलतान अहमद नवम्बर में अपने वर्तमान पद से इस्तीफा दे रहे हैं। हिन्दुस्तान के राजागण उनको नरेन्द्र-मंडल में अपने कानूनी एवं वैधानिक सलाहकार के रूप में नियुक्त करने के पक्ष में हैं, क्योंकि आगामी अप्रैल में वाइसराय की सलाहकार समिति की बैठक होने से पहले वे अपना केस तैयार कर लेना चाहते हैं। सर सुलतान अहमद का स्थान कौन लेगा, यह अभी तक तय नहीं हुआ है, परन्तु आम खयाल यह है कि, चूँकि केवल युद्ध-काल के लिए ही इस महकमे को अलग किया गया था, इसलिए बहुत संभव है कि अब फिर इसे किसी अन्य महकमे के साथ मिला दिया जाय और किसी नये सदस्य की आवश्यकता उत्पन्न न हो। मगर एक विचित्र बात तो यह होगी कि जब सर सुलतान अहमद यहाँ की नौकरी छोड़कर अपने प्रान्त (बिहार) में जायँगे तो उन्हें उनके पुराने सेक्रेटरी सर हग डो वहाँ के गवर्नर बने हुए मिलेंगे। ८ साल पूर्व जब सर सुलतान अहमद भारत-सरकार के व्यवसाय-विभाग के सदस्य थे तब सर हग डो उनके सेक्रेटरी थे।

श्री विश्वनाथदास

उड़ीसा के भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री श्री विश्वनाथदास पिछले सप्ताह दिल्ली में रहे। वे श्री आसफअली के यहाँ ठहरे थे। यह खयाल किया जाता है कि वे उड़ीसा सरकार की उस आज्ञा के विरुद्ध अपना मामला गवर्नर-जनरल के सामने पेश करने के सम्बन्ध में यहाँ आये थे जिसमें कि उनको ६ साल के लिए असेम्बली की सदस्यता से पृथक् कर दिया गया था।

महादेवी का

विवेचनात्मक गद्य

संग्रहकर्ता—श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, एम० ए०

(श्री महादेवी वर्मा के १० निबन्धों का संग्रह।)

एक मत :—

……ये लेख वैज्ञानिक या निरे बौद्धिक विश्लेषण-प्रधान न होकर एक प्रबुद्ध और सतत प्रज्वलनशील अनुभूति के परिणाम हैं। इनका सत्याकलन वैज्ञानिक अथवा दार्शनिक का तत्त्वचिन्तन न होकर कलाकार का सांगोपांग स्वरूपमय जीवन-दर्शन है।……छायावाद और रहस्यवाद को लेकर जो अनेक भ्रान्त और निर्मूल धारणाएँ हमारे साहित्य में रूढ़ हो चली थीं उनके विषय में महादेवी जी के इन पारदर्शी निबन्धों से अवश्य ही हम प्रकृत सत्य का परिचय पा सकेंगे।—'वीणा'

द्वितीय संस्करण प्रकाशित हो गया है।

मूल्य दो रुपये बारह आने।

खांसी बाघ की तरह भयंकर हैं...
सिरोलिन 'रॉश'
सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषोधक है
SIROLIN

पहले के लँगड़े को देखकर उसके मित्र चकित हो उठे

अब वह बाहरी खेलों में भी भाग लेता है

क्रुशेन से उसके पाँव का गठिया जाता रहा

यहाँ एक ऐसे आदमी की कहानी है जो खेल-कूद में भाग लेने की आशा त्याग चुका था। उसने किस प्रकार एक के बाद अन्य दवाओं का सेवन किया और कैसे उसको एक पूर्व रोगी ने चङ्गा होने का रास्ता दिखलाया? जिसको वह स्वयं बतलाता है।

दो वर्ष पूर्व मेरे पांव में दर्द शुरू हुआ जो धीरे-धीरे बढ़ कर बहुत भयङ्कर हो गया। मैंने सारी दवाइयाँ कीं। पर उनका कुछ भी असर न हुआ। बीमारी में एक दिन मैं शाम को बैठा था कि एक रोगी ने मुझे क्रुशन साल्ट के सेवन की राय दी। आज बारह मास हो गये। हालाँ कि जल्दी चङ्गा न हो सका। परन्तु दर्द और सूजन धीरे-धीरे पाँव से ६ माह के भीतर दूर हो गये। मैं जब दूर तक टहलने के लिए जाने लगा तब मेरे मित्र मुझे देखकर दंग रह गए। इस वर्ष मैंने टेनिस भी अच्छी तरह खेला है। वह फिक्र जिससे मैं सदैव परेशान रहता था मेरे दिमाग़ से बिलकुल गायब हो गई।" सी० डब्ल्यू०।

गठिये का दर्द इसलिए होने लगता है कि गाँठों के जोड़ों में अम्ल अलग अलग इकट्ठे हो जाते हैं, क्रुशन साल्ट ऐसे तत्वों अथवा जरों से सम्बन्धित है जो इस इकट्ठे अम्ल को तितर-बितर कर देता है साथ ही ऐसे जरों की सहायता करता है, जो गुर्दों को अच्छी तरह काम करने में सहायता देते हैं।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे रसायनिक और दूकानों पर मिलता है।

विचित्र-जगत

कुत्तों की विभिन्न जातियों की कथ

कहाँ किस तरह के कुत्ते पाये और पाले जाते हैं

लेखक, श्री वंशीधर मिश्र, एम० ए०, एम० एल० ए०

पशु और मनुष्य में यह एक भेद है कि मनुष्य अपने मन की बात कहकर एक दूसरे पर प्रकट कर देता है। पशु बोल नहीं पाते हैं। कुत्ता भी बोल नहीं सकता है पर उसके साथ दया का व्यवहार किया जाता है तो उसे वह बोध कर लेता है। पशुओं में प्रायः निर्दय और सदय व्यवहार को बोध कर लेने की क्षमता होती है।

सभ्यता की प्रगति में पालतू पशुओं का प्रमुख स्थान है। यदि प्राथमिक मनुष्य विविध पशुओं को अपने वश में न ला पाते और न उन्हें शिक्षित करने में सफल हो पाते तो आज संसार भिन्न प्रकार का होता। सब पालतू पशु वन्य पशुओं की संतान हैं। यद्यपि आज उनके पुरखाओं को ठीक ठीक बताना सुगम नहीं है।

पालतू पशुओं में अधिक परिचित कुत्ता और बिल्ली हैं। कुत्ता वफादार साथी और रक्षक का काम बहुत अच्छा देता है। इसके अतिरिक्त अन्य कामों के लिए भी वह ट्रेन्ड (शिक्षित) किया जा सकता है। अति प्राचीन काल से पालतू कुत्ते की कद्र की गई है। प्राचीन मिस्र-निवासी कुत्तों का बहुत प्रीतिपूर्वक मान करते थे। उनका एक विशेष कुत्ता था, जिसका नाम अनुबिस रखा गया था और जो पूजा भी जाता था। यह कुत्ता मनुष्य की देह पर कुत्ते के सिर के साथ चित्रित किया जाता था।

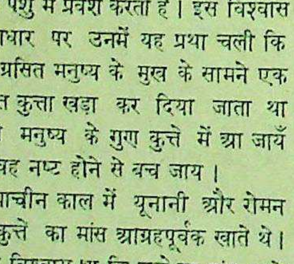

उनमें यह विश्वास बहुत प्रचलित था कि मनुष्य के मरने पर उसकी आत्मा किसी पशु में प्रवेश करती है। इस विश्वास के आधार पर उनमें यह प्रथा चली कि मृत्यु-ग्रसित मनुष्य के मुख के सामने एक जीवित कुत्ता खड़ा कर दिया जाता था जिससे मनुष्य के गुण कुत्ते में आ जायँ और वह नष्ट होने से बच जाय।

प्राचीन काल में यूनानी और रोमन लोग कुत्ते का मांस आग्रहपूर्वक खाते थे। उनका विश्वास था कि कुत्ते का मांस खाने से वे बली हो जायँगे। प्राचीन काल में इथोपिया के निवासियों ने एक कुत्ते को अपना बादशाह बनाया था। उस भाग्यशाली पशु के पास उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अफसरों और रक्षकों की एक सेना एकत्र रहती थी। कुछ प्रकार के कुत्तों की पुराने जमाने में बड़ी कद्र हुई है। बादशाह चार्ल्स स्पेनियल कुत्ते की बड़ी कद्र करते थे।

चीन की प्राचीन राजधानी पेकिन में स्पेनियल कुत्ते संसार के राजन्य माने जाते रहे हैं और बहुत समय तक उनमें से कोई चीन के बाहर [illegible] सका। यदि कोई मनुष्य किसी स्पेनियल कुत्ते को चीन के बाहर ले जाने का प्रयत्न करता और पकड़ा जाता तो उसे मृत्यु-दण्ड प्राप्त होता था। इस पर भी सन् १८६० ई० में पाँच स्पेनियल चोरी से इँगलैण्ड पहुँचाये गये और उनमें से एक महारानी विक्टोरिया को भेंट किया गया।

अनेक बादशाह ग्रेहाउन्ड कुत्ते को पसन्द करते थे। एक समय इँगलैण्ड में ग्रेहाउन्ड कुत्ते को शिष्ट कुलीन जन (नोबुलमेन) ही अपने पास रख सकते थे। ऐसी राजाज्ञा थी। बादशाह हेनरी द्वितीय ग्रेहाउन्ड कुत्तों को बहुत चाहता था। लन्दन नगरी में टेम्स नदी पर जिस स्थल को आइल आफ डागज़ (कुत्ता द्वीप) कहते हैं, वहाँ हेनरी द्वितीय अपने कुत्तों को रखता था। इसी से यह नाम भी पड़ा।

स्वीटजरलैण्ड के पर्वतों और हिम में अनेक लोग सदैव के लिए खो जाते, यदि वहाँ सेन्ट बर्नर्ड कुत्ते न होते। ये कुत्ते हिम में घूमने और खो जानेवाले यात्रियों का पता लगाने के लिए ट्रेन्ड (शिक्षित) किये जाते हैं। ये कुत्ते यात्री का पता लगा पाने पर सहायता ले आते हैं और यात्री की प्राण-रक्षा हो जाती है।

एस्किमो कुत्ते बड़े काम के होते हैं। वे बर्फ़ पर एक गाड़ी खींचते हैं, जिसे स्लेज (Sledge) कहते हैं। एस्किमो लोग बर्फ़ के महान् मैदान में खो जाते, यदि उनकी सहायता के लिए ये कुत्ते वहाँ न होते।

आजकल बहुत से कुत्ते अंधों की रखवाली व सहायता के लिए ट्रेन्ड (शिक्षित) किये जाते हैं। एलसेटीयन और एरीडेल कुत्तों ने इस काम के लिये बड़ा नाम पाया है। आश्चर्य की बात यह है कि ये कुत्ते लंदन ऐसे महान् नगरों में अपने अंधे स्वामी को सड़क पार करा देते हैं। ये इस काम में बड़े पटु होते हैं। ये कुत्ते वर्तमान महायुद्ध में भी बड़ा काम कर रहे हैं। ये संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाते हैं और ले आते हैं और आहतों की बड़ी सहायता करते हैं। कुत्ते सीखकर बहुत कुछ कर सकते हैं।

एस्किमो लोग ग्रीनलैण्ड और उत्तरीय ध्रुव-प्रदेश में निवास करते हैं। इन प्रदेशों की यह विचित्रता है कि वहाँ जाड़ों में सतत अन्धकार रहता है। जब सूर्य्यदेव क्षितिज के नीचे लगातार हफ्तों के लिए अदृश्य हो जाते हैं, तब वहाँ "महान् अन्धकार" होता है। इस 'महान् अन्धकार' काल में बच्चे बाहर खुले में कुछ नहीं कर पाते हैं और वे अपने झोपड़ों में, जो मिट्टी और बर्फ़ के बने होते हैं, कैद से रहते हैं।

वसन्तकाल में उन्हें फिर सूर्य्य भगवान् के दर्शन होते हैं। जब मध्य गर्मी-ऋतु आ जाती है तो वहाँ सतत दिन होता है और हफ्तों आधी रात को भी सूर्य्यदेव चमकते रहते हैं।

उन प्रदेशों में वृक्ष नहीं होते हैं। एस्किमो लोग आग और अपनी स्लेज-गाड़ी के लिए समुद्र में बहती लकड़ी को समुद्र से प्राप्त कर लेते हैं। उनके वस्त्र पशु-पक्षियों की खाल के ही होते हैं। रोशनी के लिए वे ह्वेल मछली के तेल को काम में लाते हैं। वे कभी कभी अपना भोजन पकाते भी हैं पर प्रायः वे कच्चा ही भोजन करते हैं।

गर्मी भर वे भोजन के लिए पशुओं का आखेट करते हैं और जाड़ों में मांस को बर्फ में गड्ढे खोदकर गाड़ देते हैं। मांस जम जाता है और ख़राब नहीं होता जाड़ों में वे उसे ही खाते हैं, क्योंकि तब आखेट करना सम्भव नहीं रहता है।

एस्किमो लोगों का जीवन कठोर व्यतीत होता है पर वे प्रसन्न और संतुष्ट रहते हैं। स्त्री-पुरुष एक ही प्रकार के वस्त्र व्यवहार करते हैं। स्त्रियाँ केवल एक बड़ा नोकीला शिरोवेष्टन धारण करती हैं।

एस्किमो लोगों का सहायक, मित्र उनका कुत्ता होता है। यदि उनके प्रदेश से कुत्तों का नाश कर दिया जाय, तो उनका नाश भी अवश्यम्भावी है।

भारत में कुत्ता अपवित्र माना जाता है पर प्राचीन ग्रामों में उसका वर्णन यदा-कदा आया है। धर्मराज युधिष्ठिर का साथ कुत्ते ने दिया था, यह कथा सर्वविदित ही है।

गीत

लेखक, श्री बलवीरसिंह 'रंग'

कवि क्यों गीत लिखा करता है?
कवि ने गीतों में क्या देखा,
सुख की छाया दुख की रेखा;
अभिशापों की झोली ले वह क्यों वरदान लिया करता है?
जग कवि के गीतों में डूबा,
कवि जग आघातों से ऊबा;
ढाल लगाकर गीतों की वह जग आघात सहा करता है
याद उसे क्यों गाकर रोना,
ज्ञात उसे क्यों पाकर खोना;
मस्ती में अमृत ठुकरा वह क्यों विष .जान पिया करता है
जब जग कवि में संशय पाता,
तब वह अन्तसचीर दिखाता;
फिर वह गीत सूत्र से अपने उर के घाव सियाँ करता है
गीतों में कुछ दुख चुक जाता,
वेग वेदना का रुक जाता;
वरना वह पीड़ा के तम से दिन की रात किया करता है
माना मन के मीत न कवि के,
किन्तु निरर्थक गीत न कवि के;
तों को वह मीत बनाकर युग युग तलक जिया करता है

संचारिणी

भक्तिकाल से लेकर आज के संक्रान्ति-काल तक की साहित्यिक चेतनाओं का मर्मस्पर्शी चित्रण करनेवाले निबन्ध। २)

सभी पुस्तकें हिन्दी साहित्य के विद्यार्थिया के लिए अत्यन्त उपयुक्त हैं।

प्राचीन और नवीन हिन्दी कविता तथा काव्य-सम्बन्धी व्यापक प्रसंगों पर विविध-समीक्षात्मक निबन्ध। १।-)

मैनेजर बुकडिपो,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

नेत्र-रोग की चिकित्सा
ज्योति-कल
सेवन क
फूला, माँड़ा, रोहा तथा
बिन्द आदि की अचूक
यल० यम० धोल
४६ जानसेनगंज,

(पेज ६ का शे
शाखा का प्रतिनिधित्व
नवीन और प्राचीन
सामञ्जस्य दृष्टिगोचर होता है

इस काल की तीसरी
नवीनधारा कह सकते हैं,
सर्वश्री जनार्दनराय नाग
ओझा, उदयसिंह भटनागर
चौधरी, देवीलाल सामर,
सेठी तथा भँवरलाल
जिन पर खड़ीबोली
नवीनतम प्रतिक्रियाओं का

मेवाड़ में गद्य-काव्य
कुछ दिनों तक प्रबल रहा
दिनेशनन्दिनी चौरड़िया,
जी नागर, तथा देवीलाल
संख्या में और बहुत सुन्दर
हैं। काव्य व कहानियाँ
र्दनराय जी नागर और
ओझा के अच्छी
नागर जी ने कई उपन्यास
अप्रकाशित हैं।

पं० मोतीलाल जी
श्रेष्ठ गद्य-लेखक हैं। उ
साहित्य की रूप-रेखा'
वीररस' नामक रचना
जगत में अच्छा सम्मान है
कालूलाल जी, श्री माली
शिक्षा तथा पृथ्वीसिंह जी
और पुरातत्त्व के
जनार्दनराय जी नागर ने
और मनोविज्ञान पर
उपयोगी और मौलिक
मेवाड़ का यह सर्वतो
सिद्धहस्त साहित्यकार

७० वर्ष से भी अधिक
'ओरियन्टल' ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति
की स्थापना की है। केवल १९४४ में ही ८७३९८
ने लगभग २२,००,००,०००) का बीमा कराया
फन्ड ३६||| करोड़ के ऊपर
र प्रकार के जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामर्श करके
लाभ में रहेंगे।
ओरियन्टल
सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स कं० लि०
में संस्थापित १८७४ प्रधान कार्यालय, बम्बई
शाखा—३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद
ब्रांच, सेक्रेटरी, मिस्टर ए० सी० गुप्ता।

स्टैनिष्ट्रीट की ब्रिलिएन्टाइन
ठोस
तरल
हेयर ऑएल
सुगंधित
कैन्थराइडिन
कैस्टर
कोकोनट
गोल्डेन
परमानेंट वेविंग
सैचेट्स
फ्लुइड् लोशन
तरल शैम्पू
स्टैनक्रीम
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 128

हमारी कुछ चुनी हुई पुस्तकें

—पण्डित गौरीशंकर मिश्र बी० ए० लिखित इस उपन्यास में 'हम भक्तन का सुन्दरता-पूर्वक प्रदर्शन हुआ है।

—अनुवादक पण्डित ठाकुरदत्त काञ्चनमाला देवी के 'शनिर दशा' उपन्यास का यह अनुवाद है। लेखिका न्यास की नायिका के चरित्र में जिस महिमा का समावेश किया है, वह विश्व में हिन्दू-महिलाओं को गौरवपूर्ण के लिए सर्वथा उपयुक्त है। मूल्य २)

—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार बाबू चारुचन्द्र के घोखार टाटि नामक उपन्यास का है। सीधे-सादे और उदार-हृदय व्यक्ति, सहानुभूति और विनय प्रदर्शित करने-मायाजाल के शिकार होकर किस प्रकार अगणित दुःख-क्लेश सहन करने के हो जाते हैं, यही इस उपन्यास का विषय ॥≡)।

अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री देवी के इस उपन्यास में पति-प्रेम वंचिता सजीव और भावपूर्ण चित्र अंकित पढ़ते-पढ़ते हृदय द्रवित हो जाता है। उपन्यास आप के पढ़ने में कम आये पुस्तक का मूल्य १।-)।

पथिक—अनुवादक, पण्डित सुन्दर- और पण्डित ठाकुरदत्त मिश्र। श्री बन्द्योपाध्याय-लिखित इस उपन्यास का में अच्छा सम्मान है। हिन्दी के की प्रेरणा से ही इसका हिन्दी पहली बार प्रकाशित कराया है। रोचकता और महत्ता के लिए चारुचन्द्र ही पर्याप्त है। मूल्य २॥≡)।

का विल—अनुवादक, श्री सूर्य- निराला। यह बंकिम बाबू का एक उपन्यास है। एक भारतीय पतिव्रता चित्र इस उपन्यास में खींचा गया न मिलेगा। मूल्य १)।

युद्ध और शान्ति—अनुवादक, श्री रुद्रनारायण अग्रवाल। टॉल्सटॉय 'वार एण्ड पीस' नामक प्रसिद्ध रूसी उपन्यास का यह हिन्दी-रूपान्तर है। इसमें लेखक ने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र, अपने समय के रूस की तसवीर और राष्ट्रों की खींच-तान बड़ी खूबी से चित्रित किया है और जीवन तथा मृत्यु के रहस्य का उद्घाटन किया है। मूल्य ५।-)।

क -कुण्डला—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। यह बंकिम बाबू की कपाल-कुण्डला का हिन्दी-रूपान्तर है। कथानक की रोचकता तथा वर्णन की अपूर्वता के कारण यह उपन्यास इतना लोकप्रिय हो चुका है कि इसका नये सिरे से परिचय देने की आवश्यकता नहीं है। कपाल-कुण्डला के हिन्दी में आज तक जितने भी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, यह अनुवाद उन सबसे बहुत सुन्दर हुआ है। मूल्य १)।

देवी चौधरानी—अनुवादक, श्रीयुत पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी, 'निराला'। मूल-लेखक स्वर्गीय बंकिम बाबू ने इस उपन्यास में बंगाल की उस समय की अवस्था का चित्रण किया है, जब कि मुसलमानों की शक्ति का अवसान हो चुका था और अँगरेज़ों की प्रभुता का अभ्युदय हो रहा था। आदि से अन्त तक पुस्तक रोचक और शिक्षाप्रद है। मूल्य १।-)

वैकुण्ठ का विल—मूल लेखक, स्वर्गीय डा० शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय। यह उपन्यास है तो छोटा किन्तु बहुत ही भावपूर्ण है। मानव-हृदय की स्वाभाविकता इसके प्रत्येक पात्र से प्रकट हो रही है। शरद् बाबू उपदेश देने की दृष्टि से रचना नहीं करते; किन्तु उपदेश अज्ञात रूप से अपना काम किये बिना कब रहता है। यह बात उनके इस उपन्यास में भी अपवाद नहीं हो सकी। मूल्य ॥≡)।

अज्ञात दिशा की ओर—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्री सौरीन्द्रमोहन मुखोपाध्याय के 'निरुद्देशेर यात्री' नामक उपन्यास का अनुवाद है। इस उपन्यास में हिन्दू-समाज की वैवाहिक समस्या पर बहुत ही रोचक ढंग से प्रकाश डाला गया है। मूल्य १)।

स्वामी—अनुवादक, पंडित रूपनारायण जी पाण्डेय। यह डाक्टर शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय के इसी नाम के उपन्यास का हिन्दी-अनुवाद है। स्वामी अपने हृदय की उदारता और क्षमाशीलता के बल पर विपथगामिनी स्त्री को भी किस प्रकार ठीक रास्ते पर लाकर उसे अपनी अनुगामिनी बना सकता है, यही इस उपन्यास का विषय है। इस उपन्यास की एक एक पंक्ति भावपूर्ण है। मूल्य केवल ॥≡)।

पुष्करिणी—लेखक, श्रीयुत भगवतीप्रसाद वाजपेयी। यह हिन्दी के प्रसिद्ध कहानी-लेखक श्री भगवतीप्रसाद जी वाजपेयी की चौदह कहानियों का संग्रह है। इस संग्रह में सम्मिलित की गई सभी कहानियाँ एक से एक बढ़कर हैं और इनमें पीड़ित मानवता के चीत्कार और जागरण की कलापूर्ण कथायें लिपिबद्ध की गई हैं। मूल्य केवल २)।

सतमी के बच्चे—लेखक, महापंडित श्री राहुल सांकृत्यायन। यह पुस्तक महापंडित श्री राहुल जी की कुछ बहुत ही कलापूर्ण कहानियों का संग्रह है, जिनमें पीड़ित आत्माओं के अन्तस्तल का चित्रण बड़ी खूबी के साथ किया गया है। इसमें ऐसी करुण कहानियाँ हैं, जिन्हें पढ़कर अनायास रुलाई आती है और समाज का नवीन रूप से संगठन करने की अन्तःकरण में प्रेरणा उत्पन्न होती है। मूल्य ॥-)।

गुप्त-साम्राज्य का इतिहास—(प्रथम और द्वितीय भाग) लेखक, वासुदेव उपाध्याय, एम० ए०। इस पुस्तक के दोनों भागों में भारतीय गुप्त सम्राटों के शासन-काल का विस्तृत और प्रामाणिक इतिहास लिखा गया है। संस्कृत और अँगरेज़ी के कितने ही प्रामाणिक और सुप्रसिद्ध ग्रन्थों के अतिरिक्त इतिहास और पुरातत्त्व से सम्बन्ध रखनेवाली बहुत-सी सरकारी रिपोर्टों, शिलालेखों तथा ताम्रपत्रों आदि से सामग्रियाँ लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें गुप्त राजाओं के समय की देश की सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक अवस्था आदि पर तो प्रकाश डाला ही गया है साथ ही उस युग की साहित्य तथा कला-सम्बन्धी उन्नति पर भी प्रकाश डाला गया है। मूल्य पहले भाग का ३) तीन रुपये और दूसरे का ५।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

पेट की शिकायतें

अपर्याप्त पेट के रस के कारण

उत्पन्न होती हैं:—

- ❋ अजीर्ण
- ❋ अपच
- ❋ कठिन संग्रहणी
- ❋ पाकाशय प्रदाह
- ❋ रक्त की कमी आदि ❋

व्यवहार कीजिये

बाई-ग्लिसरीन

एसिड-पेपसिन

BI-GLYCERINE-ACID-PEPSIN

निरोग होने पर निर्बलता में प्रत्येक भोजन के पश्चात् बाई ग्लिसरीन एसिड पेपसिन एक खुराक लेने से पाचन में सहायता मिलती है।

स्वादिष्ट रूप में पेट के लिए साधारण रस पदार्थ

यदि आपको यह अपने केमिस्ट के यहाँ प्राप्त न हो तो कृपया लिखें :—

बङ्गाल इम्युनिटी कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा

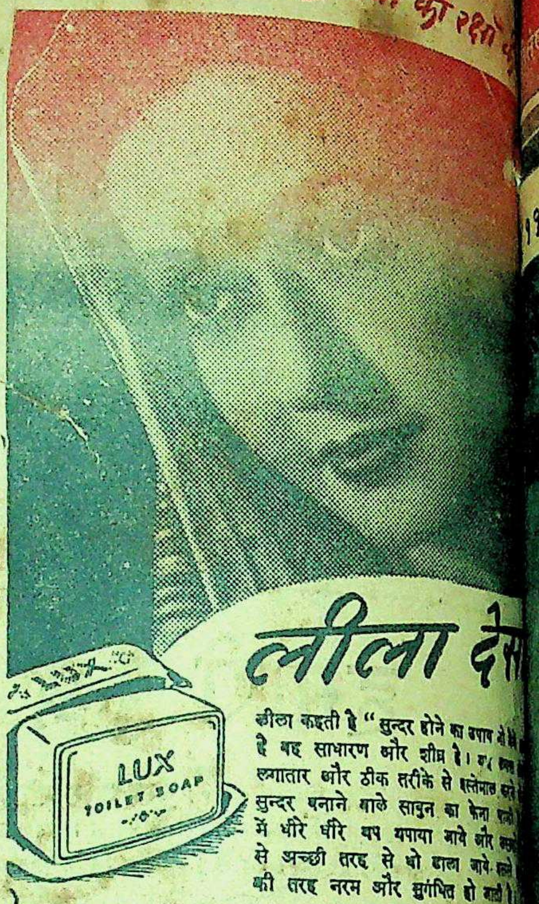
LUX
TOILET SOAP

लीला देस

लीला कहती है "सुन्दर होने का उपाय जो मैं
है वह साधारण और शीघ्र है।
लगातार और ठीक तरीके से इस्तेमाल
सुन्दर बनाने वाले साबुन का फेना
में धीरे धीरे थप थपाया जाये और
से अच्छी तरह से धो डाला जाये
की तरह नरम और सुगंधित हो जाती है।

लक्स टॉयलेट सा

LTS. 188-111-40 HI

THE SECRET OF YOUR BABY'S HEALTH
बालसुधा
Bal
BEST FO
Child
SUKH SANCHARAK Co. Ltd.
MUTTRA
BAL SUDHA
AN IDEAL TONIC FOR WEAK & DEFICIENT CHILDREN
SUKH SANCHARAK Co. Ltd.
MUTTRA

आप अपनी भावी सन्ता

को

ओजस्वी और बलशाली

बनाना चाहते हैं तो

उनको हमेशा हर मोसम में ५५ साल का

बालसुधा

सेवन कराइए !

इसके पिलाने से बच्चे मोटे, सुडौल, बलवा
तेजस्वी बनते हैं। दाँत निकलते समय
कोई कष्ट नहीं होता।

पीने में मीठा और स्वादिष्ट है।

भारत के लाखों एजेण्ट बेचते हैं:—

अपने शहर के दूकानदार से खरीदिये।

आपके शहर में न मिलने से हमें लिखिये :—

[संस्थापित १८६० ई०]

सुख संचारक कम्पनी लिमिटेड,

सुख संचारक बिल्डिङ्ग, सुख संचारक पोस्ट आफिस—

मूल्य ७॥)
ख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

११ नवम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 11th November 194

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्र जी के वनवास से सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्र जी से भरत के आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ।।।≈) चौदह आने।

री पंडित नेहरू कौन हैं?
न के कुछ संस्मरण।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

भारतीय विद्यार्थी और राजनीति।
महात्मा गांधी के कुछ सुन्दर संस्मरण।

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ

- ❀१—दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।
- ❀२—गठीली और कठोर जड़ी-बूटी व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।
- ❀३—सर्वोपरी परीक्षा परीक्षोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।
- ❀४—पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।
- ❀५—हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।

परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये

सुखसंचारक कम्पनी ....लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग .... सुखसंचारक पोस्ट आफिस

मथुरा

चर्म स्वास्थ्य से ही चर्म-सौन्दर्य बढ़ता है!

रैक्सॉना से

चर्म स्वास्थ्य की रक्षा कीजि

आपकी त्वचा तभी सुन्दर हो सकती है जबकि वह स्वास्थ्य हो और इसको स्वास्थ्य ही बनाए रखना चाहिए, नहीं तो वह सौन्दर्य शीघ्र जाता रहेगा। त्वचा को स्वास्थ्य और सुन्दर रखने के लिए ही सुन्दर, हरेरंग के और आसानी से फेन देने वाले टॉयलट साबुन रैक्सॉना का आविष्कार हुआ है। यह चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' की मिलावट से बनाया जाता है, जो कि ताज़गी और स दायक है।

रैक्सॉना की झाग इस स्वास्थ 'कैडिल' को शीघ्र ही रुओं में पहुँचा देती है। अपना काम करता है पर जमा हुई धूल को साफ़ करके त्वचा और सुरक्षित रखती है। स्वास्थ्य के लिए सदैव रैक्सॉ स्नान कीजिये।

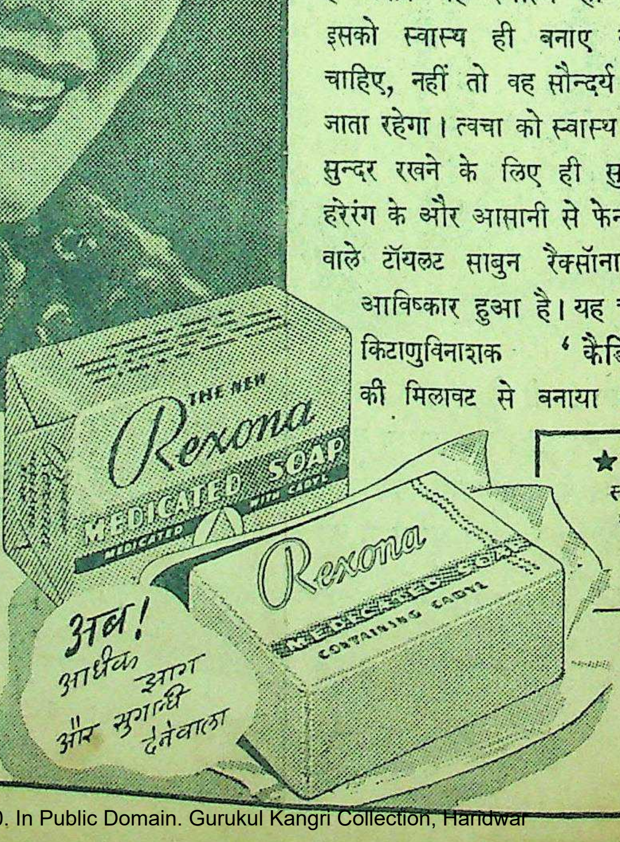

बच्चों के लिए रैक्सॉना ...
रैक्सॉना की झाग इतनी कोमल और स्फूर्तिदायक होते हैं कि बच्चों की कोमल त्वचा के लिए तो यह आदर्श है। डाक्टर इस को इस्तेमाल करने की हिदायत करते हैं। याद रखिए रैक्सॉना का 'कैडिल' बच्चे की चर्म की फ़ुन्सी फोड़ों से रक्षा करेगा।

★ रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटा स्वास्थ-दायक और ताज़गी देनेवाले तेलों का जोकि चर्म को स्वास्थ्यरखने में बहुत गुणका हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों इसकी सराहना की है।

फ़ुन्सी, फोड़े, ऐकज़ीमा, मुँहासे, और की कलौंस, झुर्रियाँ, दर्दौर आदि सभी चर्म रोगों में रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी सप्लाई कम है फिर भी बहुत से दूकानदारों के यहाँ तिकोने टिन मिल सकते है।

RP. 27-220-40 HI.

REXONA PROPRIETARY

देशदूत

र्ष ८ संख्या ११]　सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक　[रविवार, ११ नवम्बर, १९४५

दिल्ली में सुभाषचन्द्र बोस ने हिन्द फ़ौज के संचालन का जब धिकार अपने हाथों में लिया तो ने अपने एक आदेश में कहा था—करोड़ मनुष्यों को, जो सम्पूर्ण मानव का पाँचवाँ हिस्सा है, स्वतन्त्र होने और वे अब स्वतन्त्रता का मूल्य लिए तैयार हैं, भूमंडल पर ऐसी नहीं है जो हमें स्वतन्त्रता के अधिकार से वंचित कर सके। ! अफ़सरो और सैनिको! सहायता और भक्ति से आजाद भारतीय स्वतन्त्रता का एक बनेगी। विजय तुम्हारी है"—अन्य कई ऐतिहासिक महत्त्व पर दिल्ली के लाल क़िले में के सामने आजाद हिन्द अफ़सरों—कैप्टेन शाहनेवाज, के० सहगल और लेफ़्टिनेंट मामले की सुनवाई आरम्भ जो कि ब्रिटिश इतिहास में होगा, प्रकाश में आए।

* *

के ऐतिहासिक लाल क़िले में फ़ौज के कप्टेन शाहनेवाज, और लेफ़्टिनेंट गुरुबख्शसिंह की सुनवाई ब्रिटिश सरकार लत में शुरू हुई। लाल ब्लाक नम्बर १ में अदालत वस्था की गई थी। मेजर तथा फ़ौजी अदालत के आने के पश्चात् कार्रवाई पर भारतीय दण्डविधान के अनुसार यह अभियोग कि इन्होंने ब्रिटिश सम्राट् की घोषणा की। लेफ़्टिनेंट के खिलाफ़ यह अभियोग हरिसिंह, दुलीचन्द, दरे और धर्मसिंह को ६ मार्च पास पोपा नामक पहाड़ी से मार डाला। ब्रिटिश सेना भारतीय सैनिकों की हत्या पहुंचाने के अपराध में कप्टेन शाहनेवाज पर खाजिन- और गनर मुहम्मद हुसेन के सम्बन्ध में मामला चलाया

* *

ने अपने को निर्दोष आजाद हिन्द फ़ौज की रक्षा-समिति के प्रमुख वकील श्री भूलाभाई देसाई ने एक आवेदन-पत्र देते हुए कहा कि शेष गवाहों से मिलने और तीनों अफ़सरों पर लगाये गये अभियोगों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए मामले की सुनवाई तीन सप्ताह के लिए स्थगित कर दी जाय। वादी पक्ष के वकील ने श्री देसाई की माँग का विरोध नहीं किया। फलतः मामले की सुनवाई स्थगित करने की माँग स्वीकृत हो गई। मामला २१ नवम्बर के लिए स्थगित हुआ।

* * *

लन्दन में मित्रराष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन हो रहा है। इसका उद्घाटन ब्रिटेन के प्रधान मंत्री एटली ने किया। सम्मेलन का उद्देश्य मित्रराष्ट्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक संगठन के विधान को उसी प्रकार अपनाना है, जिस प्रकार सानफ़्रांसिस्को सम्मेलन ने मित्रराष्ट्रीय संगठन के अधिकार पत्र को अपनाया था। मित्रराष्ट्रीय शिक्षा और सांस्कृतिक संगठन मित्रराष्ट्रीय अधिकार पत्र की धारा के अन्तर्गत एक विशिष्ट एजेंसी होगी, जिसका सम्पर्क आर्थिक और सामाजिक परिषद से रहेगा।

* * *

बम्बई की सरदार वल्लभ भाई पटेल स्मारक समिति ने श्री के० एम० मुंशी को पटेल की जीवनी लिखने का कार्य सौंपा है। यह जीवनी गांधी जी के निर्देश से गुजराती में लिखी जायगी। पटेल जी के जीवन से सम्बन्धित ज्ञान रखनेवाले मनुष्यों को श्री मुंशी ने सूचना भेजने के लिए आमंत्रित किया है।

* * *

प्रयाग में ३॥ वर्षों के बाद अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय से ८ अगस्त १९४२ को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में पास हुए 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव के अतिरिक्त कार्य-समिति की २१-२२ जून को बम्बई की बैठक, ३ से १५ जुलाई तक की शिमला की बैठक, १२ से १८ सितम्बर तक की पूना की बैठक तथा २१ से २४ सितम्बर तक बम्बई में हुई अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की कार्यवाही का विवरण दिया गया है।

* * *

दिल्ली के क्षेत्रों से कहा गया है कि वाइसराय को महात्मा गांधी का एक पत्र मिला है जिसमें आजाद हिन्द फ़ौज के नेताओं एवं सैनिकों के प्रति नरमी दिखाने की अपील की गई है। गांधी जी ने वाइसराय को दो पत्र लिखे हैं। कहते हैं दोनों पत्रों का विषय भी आजाद हिन्द फ़ौज सम्बन्धी है।

* * *

कुछ कांग्रेसियों ने गांधी जी को श्री सरदार वल्लभभाई पटेल की वर्षगांठ के अवसर पर सन्देश देने को कहा। गांधी जी ने कहा कि यदि एक पिता अपने पुत्र की वर्षगांठ पर कुछ कहने की कृत्रिमता कर सकता हो तो मैं भी ऐसा करूँ। श्री पटेल मेरे पुत्र की भांति मुझे प्रिय हैं।

* * *

बर्नार्ड शा ने कहा है कि परमाणु बम के बन जाने से निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। बर्नार्ड शा ९० वर्ष के हो चुके हैं। आपने 'डेलीमेल' को बताया है कि आपके विश्वास से मानव जाति शीघ्र ही ३०० वर्ष जीवित रहने का रहस्य जान जायगी।

* * *

बिलसिया हत्याकाण्ड में प्रिवी कौंसिल से साफ बरी हो जाने के कारण श्री बी० बी० सिंह के बारे में सरकारी क्षेत्रों की यह चर्चा है कि प्रिवी कौंसिल का पूरा पूरा फ़ैसला आने पर सरकार उनकी पुर्नानियुक्ति पर विचार करेगी। सारे काग़ज़ात अन्तिम निर्णय के लिए भारत मंत्री के पास भेज दिये जायेंगे।

* * *

वाशिंगटन में यह प्रकट किया गया कि सम्राट् हिरोहितो की ४० करोड़ की व्यक्तिगत सम्पत्ति भी उस जापानी पूंजी का एक भाग होगी जिसमें से मित्रराष्ट्र अपना हरजाना लेंगे। मित्र हरजाना समिति के अमेरिकन प्रतिनिधि श्री एडविनन पाले ने राष्ट्रपति ट्रूमन से भेंट करने पश्चात् पत्र-प्रतिनिधियों से कहा कि हरजाने के मामले में सम्राट् तथा जापानी सरकार की पूंजी में कोई भेद नहीं रहेगा।

* * *

चुनाव आन्दोलन में कांग्रेस के विजय के चिह्न अभी से प्रकट होने लगे हैं। केन्द्रीय असेम्बली के लिए खड़े किये गये उम्मीदवारों में से अब तक २८ कांग्रेसी उम्मीदवार निर्विरोध चुन लिए गये हैं। युक्तप्रान्त में कांग्रेस के ८ उम्मीदवारों में से ६ और बिहार में ६ में से ४ निर्विरोध चुन लिए गये हैं।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री आचार्य कृपलानी ने पिछले सप्ताह बम्बई में सरदार वल्लभ भाई पटेल की ७०वीं वर्षगाँठ के अवसर पर होनेवाले समारोह का सभापतित्व ग्रहण किया था। आपने सरदार पटेल को उनकी नवीन वर्षगाँठ के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

मिस्टर जिन्ना ने बम्बई में अपने भाषण में कहा कि चुनाव से इस बात का निर्णय हो जायगा कि भारत के मुसलमान पाकिस्तान के पक्ष में हैं या अखंड हिन्दुस्तान के, उन्होंने कहा—"यदि हम इस चुनाव में हार गये तो हम कहीं के नहीं रहेंगे। हमारे पास रुपया नहीं है, जब कि कांग्रेस के पास है, पर हम लोग राजनीतिक दृष्टि से अधिक जाग्रत हैं।"

* * *

मौलाना आजाद ने सूचित किया है कि राजनीतिक क़ैदियों की आम रिहाई के सम्बन्ध में वाइसराय के साथ उनका पत्र-व्यवहार अभी तक चल रहा है। उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया है कि राजनीतिक क़ैदियों की आम रिहाई के प्रश्न को टाला जा रहा है।

मंत्री मिस्टर क्रिप्स।

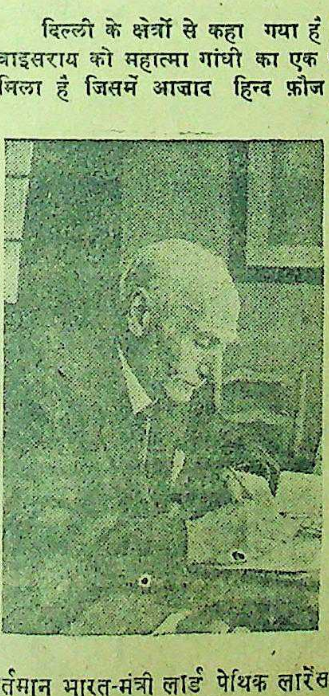

वर्तमान भारत-मंत्री लार्ड पेथिक लारेंस।

ब्रिटिश वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन।

ब्रिटिश प्रधान मंत्री मिस्टर एटली।

सम्पादक का पृष्ठ

सरदार पटेल

भारत के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल की ७०वीं वर्षगांठ पर भारतीय जनता उनका हार्दिक अभिनन्दन करती है। उनकी ५०वीं जन्मतिथि के समय हमारे हृदयों में उनके प्रति सम्मान का भाव था, ६०वीं पर भय मिश्रित आश्चर्य था, किन्तु आज, हमारे हृदयों में उनके प्रति दूसरे भावों के साथ एक वास्तविक प्रेम और स्नेह का भी भाव है। अवस्था के साथ-साथ उनका विकास हुआ है और उसी प्रकार उनकी प्रतिभा के प्रति हमारी जागरूकता भी। इन वर्षों में हमने उन्हें और अधिक समझा है।

श्री पटेल वास्तव में एक लौह-पुरुष हैं। लोग आश्चर्य करते हैं कि गुजरात सरीखे शान्त (निर्बल) प्रदेश में ऐसे शक्तिशाली पुरुष का जन्म कैसे हुआ? किन्तु स्वामी दयानन्द भी गुजराती ही थे। सरदार में भी वही चट्टान सदृश्य दृढ़ आत्मविश्वास और गम्भीर साहस है जो कि महर्षि दयानन्द में था। एक स्वतन्त्र व्यक्ति की तरह कार्य करना उनका स्वभाव है। उनमें सभी गुण उपस्थित हैं जो कि एक सफल नेता में होने आवश्यक हैं। वे एक प्रशान्त, गम्भीर और कुशल व्यक्ति हैं।

२५ वर्षों तक वे कांग्रेस आन्दोलन की धुरी अवश्य रहे हैं। वे महात्मा जी के मुख्य सहकारी रहे हैं। पिछले २५ वर्षों में कांग्रेस की भिन्न नीतियाँ रही हैं किन्तु उन सबकी प्रेरणा का मूल स्रोत सरदार में ही था। एक असहयोगी के रूप में हम उनमें एक महान् व्यक्ति के दर्शन करते हैं तथा एक वैधानिक कार्यकर्त्ता के रूप में भी वे एक कुशल राजनीतिज्ञ हैं। तीन वर्षों के जेल-जीवन ने उनके आत्म-विश्वास और प्रभाव को अधिक बढ़ा दिया है। उन्होंने जादू की सी शान्ति-वाला, आत्मा को हिला देनेवाला महान् नारा 'एशिया छोड़ो' बुलन्द किया है। यदि उन्होंने इसे वैधानिक कार्यों के द्वारा प्राप्त करना चाहा तो उनका स्थान राष्ट्रीय नेताओं में होगा किन्तु यदि एक बार फिर उन्होंने इसके लिए जन-आन्दोलन प्रारम्भ किया तो वे विश्व के चुने हुए इतिहास निर्माण करनेवाले गिने जायेंगे।

कांग्रेस में विधान पद्धति और सीधा संघर्ष का द्वन्द्व सदैव चलता रहता है। वल्लभ भाई इन दोनों का एकीकरण चाहते हैं। उन्होंने दोनों को ही बारी-बारी से समयानुसार स्वीकार किया है। क्या अब वह इनके एकीकरण का महान कार्य करने में समर्थ हो सकेंगे? यह कठिन सगठन-कर्ता एक कोमल हृदय छिपाये हुए हैं। १९३३ में गांधी जी ने कहा था "जिस स्नेह के साथ उसने मुझसे बातचीत की उससे मुझे अपनी माता का ध्यान आता है।" उनमें सभी गुण अवश्य उपस्थित हैं परन्तु कांग्रेस का यह लोह-पुरुष ममता में अपनी सत्ता को विलीन नहीं कर देगा।

लीला-निकेतन

लेखिका, कुमारी प्रभा पारीक, बी० ए०

जीवन और संसार के बीच उलझी हुई पहेली——सुलझाते-सुलझाते और भी गम्भीर हो उठी। मस्तिष्क चेतनाहीन-सा होने लगा। सन्ध्या की मलिनता ने हृदय को विषाद से घेर लिया। ग्रन्थ——जिन्हें मैं ज्ञान का कोष कहती थी पहेलियों का अक्षय भण्डार-सा बन गया। मस्तिष्क में घनी उलझन ले बस्ती की ओर बढ़ी, जो अब प्रकाश से जगमगा उठी थी। बस्ती से निकल पर्वत के उत्तुंग शिखर की ओर बढ़ी जो तारकों की छाया में हिम से लदी रजताभा बनी थी। चढ़ते-चढ़ते मैंने देखा नभ की काजल-सी काली पार्श्व-भूमि पर हीरक से उज्ज्वल तारक जटित होते जा रहे थे। नीचे बहती सरिता तारों भरी रजनी का समस्त वैभव-विलास अपने वक्ष पर अंकित कर, अपने ही संगीत की लय में मतवाली-सी रुकती-झुकती, झिझकती-सी चली जा रही थी। मैं प्रकृति में मचे हुए उल्लास को आश्चर्य से देखती रही। रजनी का प्रथम पहर बीत गया।

दूर तक फैली पर्वत-श्रेणियों के पीछे सहसा २८ रजत-सा किन्तु स्वर्ण की आभा से पूरित प्रकाश दिखाई दिया। तारक हटकर पश्चिम गगन की ओर बढ़े जा रहे थे। प्रकाश में जगमगाती सुधाकर की किरणें नभ में खेलने लगीं। शनैः शनैः सुधाकर नभ के मध्य अवतरित होने लगे। मदमाती, इठलाती-सी ज्योत्स्ना सारी किरणों से उलझती हुई गिरिशिखर पर हँस लगी।

रात्रि के अन्तिम पहर में ज्योत्स्ना शशि किरणों का आश्रय ले पर्वत शिखाओं पर से उठ नभ में चली जा रही थी। प्रातः होते-होते ज्योत्स्ना शशि के अंक में छिप न जाने कहाँ विलीन हो गई। रजनी की लीला समाप्त हो गई।

उषा के अभिनय के लिए प्राची गगन स्वच्छ हो गया। रजनी के शान्त-स्निग्ध पहर प्रातः की चहल-पहल और कोलाहल भरने लगे। संसार और जीवन की चेतना पुनः मेरे मस्तिष्क को आन्दोलित करने लगी। मैं व्याकुल हो उठी। प्रकृति के जिस लीला-निकेतन में यह सब लीलाएँ होती रही हैं उसका स्वामी कौन है? कैसा है? प्रश्न आकुलता बन हृदय को उत्पीड़ित करने लगा। उसी समय प्रातः की अनुराग भरी किरणें हिम से खेलने लगीं दूर से आती हुई नभ-विहारिणी किरणें सन्देश भरे स्वर में कहने लगीं—'देखा नहीं बस्ती की जगमगाहट की उजियाली में, सरिता की मादक लय में, तारक के अन्तर में चमक कर उठनेवाली ज्योति की इठलाहट में, सुधाकर के सुधा भरे करों में कौन था।"

मेरा हृदय और भी आवेग से भर उठा——नहीं——नहीं——मेरा मन इन संकेतों, इन आभाओं से नहीं भरता। किसी सुन्दरी के वसन-आभूषण को देखकर ही मन प्रसन्न नहीं हो जाता। उसके सलोने रूप की प्रत्येक रेखा उसकी सौम्य गति साक्षात् देखना चाहते हैं। मैं भी इस लीला-निकेतन के स्वामी को साक्षात्——दूर से नहीं——पास से, छाया में नहीं——प्रत्यक्ष रूप को देखना चाहती हूँ।

विद्यार्थी और राजनीति

रचनात्मक कार्यों के लिए महात्मा गांधी की प्रेर

लेखक, श्री राजेन्द्रदत्त खंडूरी, एम० ए० रिसर्चस्कालर

राजनीति कार्यक्षेत्र में विद्यार्थी भाग लें या नहीं. इस पर राष्ट्र के नेताओं के अलग-अलग मत हैं। महात्मा गांधी का आदेश है कि विद्यार्थियों का प्रधान उद्देश्य अध्ययन है। साथ ही वह ऐसे राजनैतिक कार्यों में भाग ले सकते हैं, जो रचनात्मक हों और मानवता के महान् उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हों। लेख विद्यार्थियों के लिये विचारणीय तथा पठनीय है।

क्या विद्यार्थियों को राजनीति में भाग लेना चाहिए? यह प्रश्न आज नवयुवक समाज के सम्मुख एक जटिल रूप धारण किए हुए है। भारतीय राजनीति प्रगति के पथ पर है। परिस्थितियों में परिवर्तन हो चुका है। ऐसे अवसर पर यह प्रश्न हमारे देश के प्रत्येक नवयुवक के वाद-विवाद का प्रश्न हो गया है। इस प्रश्न का उत्तर मैं सर्वप्रथम प्रिंसिपल, श्री मन्नारायण अग्रवाल, वर्धा के विचारों के अनुसार प्रकट करूँगा। श्रीयुत अग्रवाल का कहना कि मैंने इस सम्बन्ध में महात्मा गांधी से विचार-विनिमय किया है, उनकी निश्चित राय है कि विद्यार्थी किसी राजनैतिक काम में भाग न लें। यही नहीं गांधी जी का यह भी आदेश है कि विद्यार्थियों को किसी भी राजनैतिक पार्टी का सदस्य भी नहीं बनना चाहिए।

यह सचमुच और सत्य है कि कांग्रेस एक राजनैतिक पार्टी ही नहीं बल्कि वह राष्ट्र की एकमात्र संस्था है। जो सदैव अर्धशताब्दी से भी अधिक समय से स्वराज्य प्राप्ति के कार्य में अग्रसर है। ऐसी राष्ट्रीय संस्था का सदस्य बनने के लिए भी विद्यार्थियों को गांधी जी का आदेश नहीं है। गांधी जी का आदेश विद्यार्थियों के लिए यह है कि उन्हें जब तक विद्यार्थी-जीवन में रहना है तब तक उनका चार आने का सदस्य बनना भी उचित नहीं। उनका मत है कि विद्यार्थी-जीवन में नवयुवकों को राजनीतिक दलबन्दी में न फँसकर अपने देश की पृथक्-पृथक् सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक समस्याओं का वैज्ञानिक रूप से भली भाँति सह-समालोचक की दृष्टि से अध्ययन करना चाहिए। विद्यार्थियों को देश की भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियों के उद्देश्य और ध्येय का मनन करना चाहिए। यदि कांग्रेस सचमुच हमारे देश की एकमात्र राष्ट्रीय-संस्था है तो विद्यार्थी वर्ग स्वयं ही उसका कार्य करेंगे। वह राष्ट्र के सच्चे राष्ट्रीय नागरिक बनकर देश का कल्याण करेंगे। विद्यार्थी-जीवन में हमारे नवयुवकों को गवेषणा का कार्य करना हितकर है, राजनैतिक बनकर नहीं।

यदि कांग्रेस के कार्यकर्ता राजनैतिक कार्य में विद्यार्थियों की सहायता का अनुसरण करेंगे तो यह स्वाभाविक है कि मुस्लिम लीग, हिन्दू-महासभा और कम्युनिस्ट भी विद्यार्थियों को अपने कार्य साधन में लगाएँगे। यह रवैया देश की स्वतन्त्रता में हितकर न होकर अनिष्टकर होने की सम्भावना है। इसीलिए ऐसे अवसर पर विद्यार्थियों को किसी भी पार्टी की राजनीति से अलग रहना ही उचित है। विद्यार्थियों को अपना विद्यार्थी-जीवन देश के हित के लिए अपने को योग्य बनाना है। हमारे देश का प्रत्येक विद्यार्थी अपने को इस योग्य बनाये कि वह देश का सच्चा नागरिक बनकर परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़कर देश का कल्याण करेगा। इस कार्य के लिए कार्यशीलता तथा उचित शिक्षा की आवश्यकता है। विद्यार्थियों को अपने स्कूल और कालेज का समय अपना शरीर,

मस्तिष्क और हृदय के निर्माण म
चाहिए जिससे कि वह भविष्य में दे
के योग्य बन सके। विद्यार्थियों की
मूल्यवान् शक्ति का दुरुपयोग
उचित नहीं।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वि
को अपनी मातृभूमि की समस्या
अलग रहना चाहिए। मतलब यह है
उन्हें राजनीतिक दलबन्दी में न
अपने देश की राजनीति में रुचि
चाहिए। राष्ट्र की विकट अवस्था के
पर जैसे राष्ट्रीय आवश्यकता पर य
विद्यार्थी का कर्तव्य है कि वह
मातृभूमि और देश-सेवा के कार्य में
हो। इसका ज्वलन्त उदाहरण
१९४२ का आन्दोलन है?
क्या, अगस्त-आन्दोलन में विद्यार्थि
कार्य भारतीय इतिहास में स्वर्ण अ
लिखने योग्य नहीं? आज के न
विद्यार्थियों के कार्य ही उनकी
कहानियाँ हैं। हम जिस प्रका
नवयुवक से यह आशा करते हैं कि
अग्निकाण्ड तथा भीषण बाढ़ के
पर किसी गाँव में सहायता दे
उसी तरह राष्ट्रीय कार्यों में
सहायता उपेक्षणीय नहीं है।
तथा गम्भीर अवसरों को छो
को अपनी शिक्षा नहीं छोड़ दें

विद्यार्थियों को किसी भी
और पार्टीबन्दी या मतभेद में न
अपनी शिक्षा से अतिरिक्त समय
कार्य में लगाना चाहिए। जिन
कार्यों के सम्बन्ध में महात्मा गांधी
है।

(१) स्वतन्त्रता की अ
(२) एकता और विनिमय, (३)
रक्षा, (४) खादी और ग्राम
(५) ग्राम-सेवा, (५) राष्ट्रभा
(७) मातृभाषा प्रेम, (८) हिन्दू
एकता, (९) अछूतोद्धार, (१
कार्य, (११) अध्ययन वातावर
सामाजिक सुधार, (१३) भारती
गौरव, (१४) चरित्र-निर्माण।

महात्मा जी का कहना है कि
वर्ग सुचारु रूप से इस कार्य को
हैं, यदि वह उचित रूप से ध्यान

प्रत्येक राष्ट्र का इतिहास
उत्थान और पतन का इतिहा
प्राचीनकाल में भारतवर्ष अपने
की गाथाओं के लिए अमर है। आ
तरह की यातनाओं को सह चुका
समय अब निकट ही है जब वही
लौट आयेगा जो प्राचीन इतिहास
राज्य के नाम से विख्यात है। वि
को अपने देश की स्वतन्त्रता
विश्वास रखना चाहिए और अ
सच्चे नागरिक बनकर देश का
करने के लिए तत्पर रहना
विद्यार्थियों का दृढ़ विश्वास
शीलता ही उनके विजय का सच्चा

लोकतन्त्रवादी पंडित नेहरू

वर्तमान भारत का एक महान् व्यक्तित्व

लेखक, श्री अशोक मेहता

राष्ट्र के कर्णधार पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी वीरता, निर्ममता और साहस से आज जो अपूर्व परिचय दे रहे हैं, वह उनके ऐसे महान् राष्ट्रवादी के लिये ही शोभनीय है। इस समय जन-जाग्रति और चेतनता का जो रूप दिखाई दे रहा है, उसका समस्त श्रेय पंडित नेहरू तथा उनकी निर्भीक वाणी को है। आगामी १४ नवम्बर को पंडित नेहरू की नई वर्षगाँठ सारे देश में मनाई जायेगी। ऐसे अवसर पर यह लेख अत्यन्त सामयिक और पठनीय है।

'साम्यवाद के तत्त्व' के प्रति जवाहरलाल सदैव सतत जागरूक रहे हैं। वर्षों तक वे उस संश्लेषण की दिशा में प्रयत्न करते रहे हैं। किन्तु वे व्यय की इस धारणा से कभी सहमत नहीं कि एक दल संश्लेषण का प्रतिनिधित्व कर सकता है। दल और व्यक्तित्व में सदैव एक उलझन पूर्ण संघर्ष होता है और पंडित जी ने दल पर अधिक ज़ोर कभी नहीं दिया। सामूहिक जीवन ने योरप में व्यक्तिवाद को पूर्णतः पराजित कर दिया है। २० वर्ष एरनस्ट टालर नाम के एक मानववादी लेखक ने एक नाटक लिखकर संघ-मानव का, जो कि व्यक्तिवादी का विरोधी है, प्रचार किया। जवाहरलाल इस दोष को जानते हैं। एक पूर्ण विकासवाले व्यक्तिवाद की हैसियत से उन्होंने सदैव इस संघ-मानव का, जो कि एक पतन का दिग्दर्शक है विरोध किया है।

बहुत से व्यक्तिवादी एक सीमा के पार ही हो गये हैं और साम्यवाद का पूर्णतः विरोध कर रहे हैं। हिलयर ब्लैक ने ३० वर्ष पूर्व इसके विरोध में अपनी आवाज़ उठाई। प्रो० हेयक ने एक अपनी हाल की किताब में समूहवाद को बिलकुल नष्ट करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने उसे विनाश का मार्ग कहा है। इन लेखकों के सम्मुख संघवाद की समस्या आती ही नहीं। क्योंकि वे पूर्णतः उसे घातक समझते हैं।

भावुक आदर्शवादी आल्डस हक्सल सरीखों ने आधुनिक विकासों से ऊब कर विश्व-संघर्ष से अलग हो जाना चाहा है। वे जीवन की वास्तविकताओं तथा संघर्षों से दूर रहना चाहते हैं। जवाहरलाल उनके विचारों की क़द्र करते हुए भी उनके इस एकान्तवास से सहमत नहीं। वह प्रधानतः कार्यवादी हैं। जैसा उन्होंने स्वयं एक बार कहा था कि वह 'तूफ़ानों के बीच' में रहना पसन्द करते हैं।

हमारा ख्याल है कि वह आज के नये समाजवादी से अवश्य सहमत होंगे जो समाजवाद में प्रजातांत्रिक भाव पैदा करना चाहता है। जैसे संघ-साम्यवाद यदि उनका कभी भारत में इस वाद के प्रसार का मौक़ा मिला तो वे अवश्य इसे राष्ट्रीयकरण के बन्धन से ढीला कर इसमें प्रजातांत्रिक तत्त्व वहित करेंगे। ये बंधन स्वयं, पंडित जी के विचारानुसार समस्या की तह तक नहीं पहुँच पाते। वह उदासीन और असम्बद्ध नेतृत्व पर विश्वास करते हैं। इसलिए वह अपने अनुकरण करनेवाले तथा नेतृत्व में संघदल के बंधन का विरोध करते हैं। वह एक मानववादी आधार पर उनका सम्बन्ध चाहते हैं। मनुष्यों पर उनका प्रभाव अत्यन्त चमत्कारिक है।

यूसुफअली ने अपनी स्वाभाविक विशेषता के साथ सीधे शब्दों में पंडित जी से कहा था, "आप इतने एकान्तप्रिय हैं कि आपका कोई मित्र नहीं।" पंडित जी ने उनकी ओर आश्चर्य से देखा और फिर धीरे-धीरे कहा, "मैं अपना हृदय जनता के सामने खोलना पसन्द करता हूँ।" यह है उनका जनता के प्रति व्यवहार का तरीका। एक मित्र की तरह वे एक मित्र से मिलते हैं। उनमें कोई वक्तृता शक्ति की तरकीब नहीं किन्तु वह सादगी और स्पष्टता का प्रदर्शन करते हैं जिसका अन्य बहुत से राजनीतिज्ञों में अभाव है। अपने श्रोताओं के हृदय में वे उच्च भावनाओं को पैदा करते हैं। वह उसको एक उदासीन संघ की तरह नहीं बना देते किन्तु प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में पहुँचने का प्रयत्न करते, उनकी भावनाओं को, जीवन-तंत्रों को अधिक प्रतिध्वनित करते हैं।

वह शक्ति पर विश्वास नहीं करते। वह हमेशा नये मनुष्यों को उच्च कार्यों में उपयोग करने पर ज़ोर देते हैं। उन्होंने अपने प्रति किसी भी व्यक्ति को कांग्रेस की शक्ति को हस्तगत करने में रोका है। वह स्वयं अपने पर भी अविश्वास करते हैं जब कि उनकी शक्ति अधिक बढ़ती नज़र आती है। सन ३६ के 'माडर्न-रिव्यू' में बिना नाम के प्रकाशित लेख से उनका संयत हास और ऊँचे राजनीतिक विचार स्पष्ट हैं।

कांग्रेस के लिए चुनाव जीतने में जवाहरलाल को विशेष आनन्द आता है, किन्तु वह स्वयं किसी भी संगठन या मंत्री पर हस्तक्षेप नहीं करते। वह व्यक्तिवाद की रक्षा करते हुए मनुष्य के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास के पक्षपाती हैं। किसी ने एक बार जवाहरलाल के बारे में भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि वे एक दिन ट्राटस्की बन जायँगे। वे सिर्फ़ मुस्करा दिये थे। शायद वह यह विचार कर रहे थे कि ट्राटस्की ने जीवन का अन्त असन्तोषपूर्ण ढंग से किया। क्योंकि वह आदर्शवादी तथा जनता पर चमत्कारिक प्रभाव से ही संतोष न था किन्तु उसे वे संघ-शक्ति में परिणत करना चाहते थे। जिससे 'स्टेलिन' का प्रादुर्भाव सम्भव हुआ। जवाहरलाल इस प्रकार की शक्ति की सहायता न लेकर ट्राटस्की के भाग्य से ही नहीं बच जाते बल्कि भारत में एक स्टेलिन का जन्म असम्भव कर दिया है। जवाहर का नेतृत्व मानववाद पर आधारित है। वह उनसे आदमी की तरह प्रत्येक व्यक्ति से मिलते हैं। प्रत्येक हृदय में वह एक ज्वाला जला देते हैं और यह एक अधिक निश्चयात्मक एकता हो जाती है। समूहवाद का खतरा उस समय कम हो जाता है जब कि वह इस प्रकार के नेतृत्व से परिचालित होता है। हमारे पूर्वजों ने इसीलिए आध्यात्मिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं को अलग-अलग रखा।

जवाहरलाल एक बहुत बड़े प्रजातंत्रवादी हैं। और वह यह इसलिए हैं कि उन्हें आर्थर केसलर्स का यह विचार कि एक योगी और साधारण व्यक्ति में अन्तर है. अनावश्यक ही नहीं किन्तु अस्वाभाविक ज्ञात होता है।

आगामी १४ नवम्बर को पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्म-दिवस मनाने की सारे देश में तैयारियाँ हो रही हैं।

महात्मा गांधी के कुछ संस्मरण

जीवन के विभिन्न अवसरों की मनोरञ्जक स्मृतियाँ

लेखक, प्रोफेसर प्रभाकर माचवे, एम० ए० 'साहित्यरत्न'

महात्मा गांधी के पिछले ७३ वर्ष के विस्तृत जीवन के अनेक संस्मरण और स्मृतियाँ हैं, जो बड़ा मनोरंजक, प्रभावोत्पादक तथा शिक्षाप्रद हैं। इस लेख में महात्मा जी के जीवन के कुछ संस्मरण का उल्लेख किया गया है। लेख जानकारी से पूर्ण तथा सुंदर है।

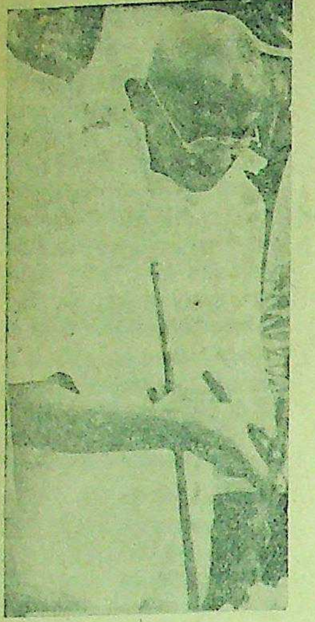

महात्मा जी सेवाग्राम में प्रातःकाल टहलने जा रहे हैं।

स्वयम् के सम्बन्ध में कहने का त्याग

(जे० जे० डोक के 'दक्षिण अफ्रीका का भारतीय देशभक्त' से)

दिसम्बर १९०७—महात्मा गांधी के आफ़िस में मैं उनसे मिलने गया। दीवाल पर न्या० रानडे, डाक्टर बेजंट आदि के फोटो थे। ईसा की एक सुन्दर प्रतिमा भी थी। क़ानून की किताबें शेल्फ पर कई थीं।

आफ़िस में भारतीयों की भीड़ थी। फिर भी प्राच्य सौजन्य से, वे सब उठ गये। हम दोनों रहे। गांधी अपनी कुर्सी पर जरा टिक गये और मेरी ओर उत्सुकता से देखने लगे।

मैंने कहा—'दोस्त, मुझे तुमसे एक विचित्र प्रश्न पूछना है। प्रश्न यही है कि अपने आदर्श के लिए तुम कितना त्याग करने के लिए तैयार हो?'

गांधी जरा चौंके। फिर शान्ति से बोले—"यह तो आप ही स्वयम् सोच लें।"

'नहीं, मुझे उस बात की किंचित् कल्पना नहीं।'

'अच्छा तो', गांधी जी के मुख पर तेज फैलने लगा। 'मैं सर्वस्व का त्याग करने के लिए सिद्ध हूँ। मेरा क्या मूल्य है? मैं आदर्श-सिद्धि के लिए कुछ भी करने के लिए—मरने के लिए भी तैयार हूँ।'

'सावधान, मैं उससे भी बड़ा त्याग करने के लिए कहनेवाला हूँ।'

'वह सम्भव नहीं।'

'सुनिए। आपका यहाँ का संग्राम महान् है। सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीयों की स्थिति क्या होगी—यह प्रश्न आगे चलकर सुलझाना होगा। अब आप जानते ही हैं कि हम योरपवासी व्यक्ति की जीवनी को बहुत महत्त्व देते हैं। इस दृष्टि से मैंने आपकी जीवनी लिखने का विचार किया है। इस विषय में आपकी सहायता मैं चाहता हूँ। मैं जानता था कि आप अपने बारे में कुछ भी बताने में इतने अधिक संकोचशील हैं कि इसी कारण से मुझे इतनी भूमिका बाँधनी पड़ी।'

'ओह, आपने मुझे जाल में पकड़ लिया। परन्तु इससे हमारे देशवासियों को लाभ होगा?'

'हाँ, इँगलैंड में उसका उपयोग होगा।' 'परन्तु इस सम्बन्ध में मैं क्या कहूँ? मुझे कुछ लिखने के लिए तो नहीं कहेंगे?'

'नहीं, एक शब्द भी नहीं। मुझे केवल प्रश्न पूछने दीजिए—आपके जन्म-ग्रन्थ के विषय में, आपके वंश के विषय में...'

हमने हाथ मिलाये और जीवनी लेखन की मानो मौन सन्धि की।

वह बुढ़िया जिसने अंतर्ज्ञान से गांधी जी को जाना

(श्री० कृष्णदास के 'गांधी जी के साथ सात महीने' में)

१९२२—गांधी जी आसाम में सासारम् गाँव में मोटर से जा रहे थे। मोटर का टायर फूट गया। गांधी और उनके सहकारी मोटर से बाहर आये। पानी रिमझिम बरस रहा था। मैं गांधी जी के पास खड़ा था। एक बुढ़िया एक हाथ में लकड़ी और एक हाथ में छाता लिये मंद चरणों से वहाँ आई और पूछने लगी—'बच्चे, यहाँ महात्मा गांधी कहाँ हैं?'

मैं—'यही हैं गांधी' कहने में सकपकाया। गांधी जी चुप। वृद्धा ने पुनः वही प्रश्न किया। तब गांधी जी ने पूछा—'तुम उन्हें क्यों खोज रही हो?'

बुढ़िया आगे आई और बोली—'भलेमानस, मेरी उम्र सौ और चार वर्ष की हुई। आँखें भी कमजोर पड़ गई हैं। बद्री, केदार, चारों धाम तीर्थयात्रायें कर चुकी। घर पर दो मंदिर बनवाये और पूजा की आजीवन व्यवस्था कर रखी है। मैंने सुना है कि जैसे पहले राम और कृष्ण के अवतार हुए, वैसे ही महात्मा गांधी का अवतार हुआ है। उनको देखे बिना मुझे मरण भी नहीं आ सकता।'

किसी ने कुछ नहीं कहा। बुढ़िया ने अपने आप गांधी जी को पहचान लिया।

'तोड़ता पत्थर।'

(गंगाधरराव देशपांडे, 'कर्नाटक के सिंह, के एक भाषण में से)।

१९१६ में बीजापुर जिले में गांधी जी का दौरा चल रहा था। महात्मा जी का जुलूस निकलता, गले में पुष्पमालाएँ पड़तीं, जय-जयकार हो रहा था। बीच में ही मैंने देखा कि गांधी जी की आँखों से आँसू झर रहे थे। मैंने पूछा—यह क्यों?

'सामने का दृश्य देखो।' गांधी जी ने उत्तर दिया।

सामने प्रखर धूप में, बिना छाया के रास्ते पर कुछ मजदूरिनें पत्थर फोड़ रही थीं। हिन्दुस्तान की ग़रीबी गांधी ने प्रत्यक्ष दर्शन से जानी है—दत्त-डिग्बी के 'अर्थ-शास्त्र' के ग्रंथ से नहीं।

रवि ठाकुर और गांधी जी

१९२० में अहमदाबाद में गुजरात साहित्य-परिषद् हुई। परिषद् का अध्यक्ष स्थान डा० रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने मंडित किया था। रवीन्द्रनाथ ने अपना भाषण पढ़ा। भाषण का विषय था—वसन्त-उदय। दूसरे दिन रवीन्द्रनाथ का एक व्याख्यान सार्वजनिक रूप से रखा गया। व्याख्यान के आरम्भ में सरलादेवी चौधरानी ने 'अयिभुवनमोहिनी' का गान किया। ठाकुर ने बहुत ही सुन्दर भाषण किया। परन्तु वह था अँगरेजी में। साधारण जनता अँगरेजी नहीं समझती थी। अतः अनुवाद का प्रश्न उठा। आचार्य क्षितिमोहन सेन से कहा गया। इतने में गांधी जी वहाँ आये। क्षिति बाबू ने रवि बाबू के भाषण का काग़ज़ गांधी जी के सम्मुख रख दिया और कहा—'आप गुजराती में इस भाषण का सार कहें। मैं गुजराती नहीं बोल पाऊँगा।' गांधी जी तुरन्त राजी हो गये। उन्होंने रवि बाबू के भाषण का वाक्य-वाक्य समझा कर रखा। जनता प्रत्येक वाक्य पर तालियाँ बजा रही थी। बीच-बीच में गांधी जी ने गुजराती के आधुनिक साहित्य पर भी आलोचना की।

बाद में जब रवीन्द्रनाथ ने सत्याग्रह आश्रम को भेंट दी, तब उनके सम्मान में प्रार्थना के समय "ठाकुर, तुज शरणाई आयो।" यह गुजराती गान गाया गया।

भारतीय मशीनगन—चरखा

(श्री० सुन्दर कबाडो १९३१ में महात्मा जी जब गोलमेज-परिषद् के लिए इँगलैंड गये तब उनके साथ गये थे। 'Indias case for Swaraj' में निम्न परिहासपूर्ण कथा दी है।')

गांधी जी की वर्षगाँठ का दिन। किंग्ज़ले हॉल पर जहाँ गांधी जी ठहरे थे, गुप्तचरों की और पुलिस की कड़ी नजर थी। एक दिन बहुत सवेरे एक मोटर वहाँ आई। (पुलिस एकदम जाग पड़े)। मोटर में से दो 'काले चमड़े के' आदमी उतरे। (पुलिस निरीक्षण करने लगी)। मोटर में से एक चक्राकार पदार्थ बाहर निकाला गया। (मशीनगन का भारतीय नमूना समझकर पुलिस ने सतर्कता से उस पर अपने 'टार्च' की रोशनी फेंकी)। तो वह क्या चीज निकली?

वह था एक चरखा! इँगलैंड में पुराने जमाने में जिस प्रकार सूत कातते थे उस प्रकार का चरखा! वह चरखा एक स्वीडिश स्त्री ने गांधी जी की वर्षगाँठ पर भेंट की तौर पर भेजा था। गांधी जी ने यह बात सुनी तब वे खूब हँसे।

स्थितप्रज्ञता

(बाल गंगाधर खेर, कांग्रेसी महा-मंत्री, बम्बई प्रान्त ने महात्मा जी की स्थितप्रज्ञता के सम्बन्ध में निम्न संस्मरण दिये हैं।)

९ अगस्त १९४२—पुलिस मुझे पकड़कर बोरीबंदर स्टेशन ले गई। जिस डिब्बे में महात्मा जी, मीरा बेन, महादेव भाई बैठे थे, वहीं मुझे भी स्थान दिया गया। १५-२० मिनट परस्पर वार्तालाप के पश्चात् गांधी जी एक घंटे के लिए, निश्चित, सो गये। निश्चित समय पर वे जाग सकते हैं। निद्रा पर इस प्रकार का संयम न केवल मनःशान्ति का वरन् स्थितप्रज्ञता का लक्षण है। लोकमान्य तिलक का भी निद्रा पर ऐसा ही अधिकार था।

१९३० में गांधी जी बिलेपार्ले छावनी में उतरे थे। उन्हें गुजरात जाना था। गाड़ी उनके लिए अँधेरे में विशेष रूप से ठहराई गई। सर कावस जी जहाँगीर और कुछ प्रमुख व्यक्ति उनसे मिलने आये थे। वे गये और गाड़ी को केवल १५ मिनट समय शेष था। स्टेशन पर जाने के लिए ५ मिनट छोड़ देने पर १० मिनट बचे रहते थे। गांधी जी ने १० मिनट ही नींद ली। दसवें मिनट पर वे आपसे आप जाग गये।

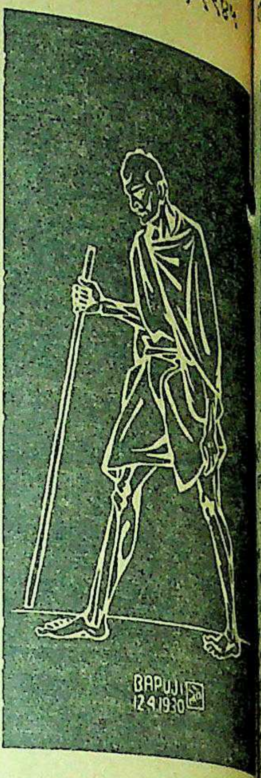

महात्मा गांधी की दांडी यात्रा का कलात्मक चित्र। यह चित्र सुप्रसिद्ध कार श्री नन्दलाल बोस ने अंकित किया।

चार्ली चैप्लैन और महात्मा जी

(महादेव देसाई द्वारा लिखि

किसी को विश्वास भी न होगा जब जगद्विख्यात हास्य-अभिनेता चैप्लीन ने गांधी जी से मिलने की व्यक्त की तब गांधी जी ने पूछा— 'ये सज्जन कौन हैं?'

गत कई वर्षों से गांधी जी का इतना रेखाबद्ध हो चुका है कि न आनेवाली बातें वे क्वचित ही हैं। परन्तु जब उन्हें पता चला कि चैप्लीन एक साधारण व्यक्ति ही है साधारण जनों के लिए ही जीते हैं खूब हास्य निर्माण करके जनता के को भुलाने का प्रयत्न कर, आनन्द से जिलाते हैं, तब गांधी जी ने भेंट से भेंट डा० करोल के घर निश्चित की

पर्दे पर दीखनेवाले चैप्लिन प्रत्यक्ष चैप्लिन में कितना अन्तर कला का प्रदर्शन न करने में ही कला निहित है।

इतने बड़े कलाकार ने इतने बड़े नेता से कौन-सा प्रश्न पूछा होगा? गांधी जी के चरखे का पता था। पूछा—'आप यंत्रों के विरुद्ध क्यों

गांधी जी को उस प्रश्न से आनन्द हुआ। छः महीने तक किसान कैसे बेकार रहते हैं, इस विवेचन उन्होंने किया।

चै०—"तो आपका यंत्र-विरोध कपड़े की मिलों के लिए ही है?"

गांधी—"निस्संदेह। कपड़ा अन्न प्रत्येक देश को स्वयम् अपना मिलना चाहिए। पहले हमारे यहाँ प्रकार स्वयं पूर्ण उत्पादन होता था। भी वही होना चाहिए। इंगलैंड का उत् बहुत अधिक है। परन्तु उसे दुनिया बाजारों की ओर देखना पड़ता है। ही मैं कहता हूँ—शोषण! ऐसा करनेवाला इंगलैंड दुनिया के लिए कारक है। यदि भारत भी उसी मार्ग अनुसरण करेगा तो दुनिया को कितना भय लगेगा!"

"तो क्या यह केवल भारत का सीमित प्रश्न है? पर मान लीजिए

—शेष पृष्ठ १८ पर

उदयपुर का सम्मेलन कैसा रहा ?

अधिवेशन का आँखों देखा वर्णन और संस्मरण

लेखक, श्री सत्यदेव शास्त्री

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन पिछले दिनों उदयपुर में श्री के० एम० मुंशी के सभापतित्व में हुआ था। सम्मेलन में क्या हुआ इसका आँखों देखा वर्णन और कुछ संस्मरण शास्त्री जी ने इस लेख में अंकित किया है। लेख रोचक है और सम्मेलन के अधिवेशन पर प्रकाश डालनेवाला है।

इस लेख के लेखक श्री सत्यदेव शास्त्री।

के साथ भी इस भाषा का व्यवहार किया है और वे मेरी बात न समझ सकें, ऐसी बात नहीं।" इसके कारण का विवेचन करते हुए वे कहते हैं कि हिन्दी भारतीय भाषाओं के समान तत्त्वों से बनी हुई है। खासतौर पर सीखे बिना भी टूटी-फूटी हिन्दी-द्वारा सभी भाषाओं के बोलनेवालों के साथ बातचीत हो सकती है। इसलिए यह राष्ट्र-भाषा है। श्री मुन्शी जी संस्कृतनिष्ठ हिन्दी के पोषक मालूम पड़ते हैं उनका कहना है कि हिन्दी संस्कृत बिना समृद्ध नहीं हो सकती। संस्कृत की प्रेरणा के बिना यह सरसता का वाहन नहीं बन सकती। संस्कृत इसकी जननी है। इस जननी से मुझे शर्म नहीं आती। मैं अपनी इस माँ से प्रेरणा लेता हूँ। इसलिए मैं किसी से माफ़ी नहीं माँगता——माँगूंगा भी नहीं।

पूज्य महात्मा गांधी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक एवं प्रसारक हैं। सम्मेलन से नीति-सम्बन्धी मतभेद के कारण सम्मेलन से उन्होंने त्यागपत्र दिया। इस सम्बन्ध मे पूज्य महात्मा जी और श्रद्धेय टंडन जी के बीच जो महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार हुआ वह महात्मा जी की इच्छा से श्रीमन्नारायण-द्वारा पत्रों में प्रकाशित हुआ। हिन्दी-जगत में यह पत्र-व्यवहार बड़े ध्यान से पढ़ा गया। इस पर गहरा मंथन और विचार हुआ। महात्मा जी के सम्मेलन से अलग होने पर सभी हिन्दी-प्रेमी जनों को अवश्यमेव क्षोभ एवं दुःख हुआ होगा। महात्मा जी १९१८ में सम्मेलन के सभापति हुए। उनसे सम्मेलन को असीम शक्ति मिली। सम्मेलन अधिक व्यापक हुआ। उन्हीं के नेतृत्व मे दक्षिण भारत में हिन्दी-प्रचार की योजना बनी। राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति उन्हीं की देख-रेख में फूलती और फलती रही। ऐसे समर्थ महापुरुष के सम्मेलन से अलग होने से हिन्दी के काम करनेवालों को धक्का लगना स्वाभाविक है। स्थायी समिति मे महात्मा जी का त्यागपत्र पेश हुआ था और उनसे प्रार्थना की गई थी कि वे सम्मेलन से सम्बन्ध बनाये रखें। महात्मा जी को लगता है कि उनकी विचारधारा अलग दिशा में जा रही है और सम्मेलन की बिलकुल दूसरी धारा में। दोनों मिल नहीं सकतीं। इसलिए सम्मेलन से बाहर रहकर ही हिन्दी की सेवा करने का उन्होंने निश्चय किया है। इस महत्त्वपूर्ण पत्र-व्यवहार के प्रकाशित होने के बाद यह आवश्यक हो गया कि सम्मेलन हिन्दी और लिपि के सम्बन्ध में एक बार पुनः अपनी नीति का स्पष्टीकरण करे। इसी सम्बन्ध का सम्मेलन में एक महत्त्व का प्रस्ताव पास हुआ। प्रस्ताव में महात्मा गांधी के सम्मेलन से पदत्याग पर खेद प्रकट करते हुए कहा गया कि सम्मेलन महात्मा जी का यह प्रस्ताव नहीं स्वीकार कर सकता कि प्रत्येक भारतीय और देवनागरी-लिपि सीखे। सम्मेलन राष्ट्रीय दृष्टि से अव्यावहारिक और अग्राह्य समझता है। वैज्ञानिक होने के कारण केवल नागरी-लिपि ही एकमात्र ऐसी लिपि है जो राष्ट्रीय लिपि होने के योग्य है। भारत की अत्यधिक जनता नागरी लिपि का व्यवहार करती है तथा उससे भी अधिक जनता जिन लिपियों का व्यवहार करती है वे नागरी से संबंधित हैं और उन्हें सीखना बड़ा सरल है। फारसी लिपि अवैज्ञानिक है तथा बहुत थोड़ी जनता उसका व्यवहार करती है। उसे सीखना भी कठिन है। अपनी प्रान्तीय लिपि के अतिरिक्त दो-दो लिपियाँ सीखना बड़ा कठिन होगा। सम्मेलन का दृष्टिकोण राष्ट्रीय है। यह साम्प्रदायिक दृष्टि से भाषा लिपि के प्रश्न पर विचार करना अनुचित समझता है। इस प्रस्ताव में अबोहर में हिन्दी भाषा के स्वरूप को स्वीकार किया गया है। इस प्रस्ताव पर कई संशोधन पेश हुए और ५ घंटे तक वाद-विवाद और भाषण होते रहे। मूल प्रस्ताव में फ़ारसी लिपि अव्यावहारिक और हानिकर थी। श्री आनन्द कौसल्यायन ने हानिकर के स्थान पर अग्राह्य शब्द रखने का संशोधन उपस्थित किया। इस थोड़े से संशोधन के साथ मूल प्रस्ताव बहुमत से स्वीकृत हुआ। प्रस्ताव पर बोलते हुए प्रायः सभी वक्ताओं ने महात्मा जी के प्रति अपनी अटूट श्रद्धा और भक्ति प्रकट की। हिन्दी-सेवियों के हृदय में महात्मा जी के प्रति कितनी श्रद्धा है, यह उनके भाषणों से प्रकट होता है; किन्तु नीति और सिद्धान्त के सम्बन्ध में वे अडिग दीख पड़े। इसके अतिरिक्त १६ अन्य प्रस्ताव पास हुए। इनमें १४ प्रस्ताव समयाभाव के कारण सभापति की ओर से पेश हुए और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए। जयपुर मे रेडियो-विरोधी आन्दोलन का प्रस्ताव पास हुआ था। इस वर्ष पुनः रेडियो विरोधी-सम्बन्धी प्रस्ताव पास हुआ और इस आन्दोलन को अधिक तीव्र और मजबूत बनाने का निश्चय हुआ। सम्मेलन के साथ-साथ अन्य परिषदें साहित्य-परिषद्, विज्ञान-परिषद्, राष्ट्रभाषा परिषद् और समाज-शास्त्र परिषदें भी सफल रहीं। इन परिषदों में पूर्वापेक्षा काफ़ी लोग सम्मिलित हुए और लोगों ने काफ़ी दिलचस्पी ली। साहित्य-परिषद् के अध्यक्ष श्री डा० रामकुमार वर्मा का भाषण विद्वत्तापूर्ण एवं सुन्दर था। इनके भाषण का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। आपने अपने भाषण मे साहित्य की समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए आपने हिन्दी-संसार के सामने एक सप्तवर्षीय योजना का एक ठोस सुझाव पेश किया और यह आशा प्रकट की कि यह सुझाव या तो सम्मेलन की ओर से हो या नागरी-प्रचारिणी सभा की ओर से। इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए ५ लाख रुपये की आवश्यकता बतलाई। इस योजना में प्राचीन कवियों और लेखकों की रचनाओं के सुसंपादित संस्करण निकालना, प्रान्तीय साहित्य से अपना संपर्क स्थापित करना, वैज्ञानिक साहित्य का प्रणयन, समालोचना शास्त्र को व्यवस्थित करना, ग्रामगीतों को संकलित करना, लिपि-सुधार, प्रकाशन-कार्य को संपादित और नियंत्रित करना है। यदि इस योजना के अनुसार कार्य किया जाय तो निस्सन्देह थोड़े समय में हिन्दी-साहित्य की विशेष उन्नति हो और उसमें ठोस साहित्य का सृजन हो सके। सभी परिषदों की अपनी अपनी विशेषता रही है। हाँ, परिषदों के लिए जो २ या ३ घंटे का समय रखा गया था वह कम था। प्रत्येक परिषद् में विद्वान् या तो निबन्ध-पाठ करना चाहते थे या भाषण-द्वारा अपना मन व्यक्त करना चाहते थे; किन्तु समय की तंगी से उनको अवसर नहीं मिला। मेरी समझ में प्रत्येक परिषद् के लिए कम से कम चार घण्टे का समय अवश्य निकालना चाहिए जिससे विषयों पर चारों ओर से भली प्रकार प्रकाश डाला जा सके।

सम्मेलन की सफलता का मुख्य श्रेय तो वहाँ की स्वागत-समिति को है, विशेषकर हिन्दी-विद्यापीठ के संचालकों एवं कार्यकर्ताओं को है। विद्यापीठ की ओर से उदयपुर में सम्मेलन करने का निमन्त्रण

गीत

लेखक, श्री शिवमंगलसिंह 'सुमन' एम० ए०

मिट्टी के लघु लघु दीपक सून अंतर में स्नेह भरेंगे,
व्यथा बनेगी ज्योति, हृदय की बाती में सपने उभरेंगे,
अनायास खिलखिला पड़ेगी फिर से रजनी काली
भरे-पुरों के घर में लक्ष्मी-पूजन के सामान जुटेंगे,
रजत-स्वर्ण की चकाचौंध मे खील बँटेगी, फूल लुटेंगे,
फैली होगी गृह-पथ आँगन में जगमग उजियाली।
स्नेह न पाया, ज्योति न जानी अंधकार से लड़े, मिट गये,
घर घर दीप जलाने में ही जिनके जीवन-दीप बुझ गये,
मूक उदासी भरे गृहों पर दृष्टि किसी ने डाली ?
हमें हमारी संस्कृति का बल देश हमारा, पर्व हमारा,
फिर वह क्या खो गया कि दिखता अन्दर बाहर सब अँधियारा,
क्यों न हमारा पर्व हमारे लिए व्यंग से खाली,
वह भी कैसी ज्योति ? कि जलती रहे जगत की छाती,
कहीं उमंगों का सागर हो कहीं न दिया न बाती,
पतझर भी कैसा जिसने देखी न कभी हरियाली।
कभी हमारी भी धरती पर सुख-समता के फूल खिलेंगे,
गली गली जगमगा उठेगी स्नेह भरे दीपक छलकेंगे,
आँखों की पुतली में झलकेगी प्रकाश की लाली।

दिया गया था। हिन्दी-विद्यापीठ में उत्साही नवयुवक कार्यकर्त्ताओं का एक जत्था है जो बड़ी लगन के साथ सेवा-भावना से प्रेरित होकर समाज-निर्माण की विभिन्न प्रवृत्तियों में लगे हुए हैं। इनके सदुद्योग, प्रबन्ध-पटुता एवं राज्य के सहयोग से सम्मेलन को सफलता मिली। स्वागत-समिति की ओर से अतिथियों के ठहराने, तथा उनके खान-पान आदि की व्यवस्था उत्तम थी। मीरानगरी में प्रतिनिधियों को ठहराने के लिए टेंटों की व्यवस्था थी। प्रतिनिधियों की छोटी छोटी सुविधाओं की ओर काफ़ी ख़याल रखा गया था। भोजन और नाश्ते का निश्चित समय रहता था। भोजन में पूड़ी और मिठाई का ही अधिक ज़ोर था। भोजन में प्रेम का अत्याचार स्पष्ट दीख पड़ रहा था। इस प्रेम के अत्याचार से अनेकों प्रतिनिधियों के गले और पेट ख़राब हुए। भोजन में सादगी का भी ध्यान रखना उचित था। बहुत से लोग सादा भोजन ही पसन्द करते हैं और वह उनकी प्रकृति के अनुकूल होता है। प्रतिनिधियों के लिए भोजन का १) और दर्शकों के लिए १।।) शुल्क रखा गया था। सम्मेलन के पदाधिकारियों के लिए स्वागत-समिति की ओर से भोजन की व्यवस्था थी। सम्मेलन के प्रबन्ध के लिए ५०० स्वयंसेवक और स्वयंसेविकायें बड़ी मुस्तैदी से प्रतिनिधियों के स्वागत-सत्कार तथा सम्मेलन की व्यवस्था में संलग्न थे। स्वयंसेवक तथा स्वागत-समिति के कर्मचारी बड़े प्रेम से पधारिये कहकर स्वागत करते थे। सुप्रबन्ध और सुव्यवस्था से सभी सन्तुष्ट और प्रसन्न थे। सम्मेलन का भव्य पंडाल बनाया गया था। मंच पर सरस्वती-वाहन धवल हंस सुशोभित हो रहे थे। मंच के सामने धूप-दीप जल रहा था। पंडाल की सजावट में कलात्मक पुट था और भारतीय संस्कृति की स्पष्ट छाप थी। सम्मेलन व अधिवेशन के बीच बीच में कन्याओं के गर्बानृत्य तथा भील-नृत्य-द्वारा प्रतिनिधियों और दर्शकों के मनोरंजन का प्रबन्ध था—यह इस सम्मेलन की विशेषता थी। कवि-सम्मेलन में कुछ अप्रिय घटना हुई जिसकी चर्चा नहीं करना ही उचित है। अप्रिय घटना के जानने की जिज्ञासा भी पाठकों में नहीं होनी चाहिए।

सम्मेलन के प्राण तो श्रद्धेय टंडन जी ही हैं—इसे समस्त हिन्दी-संसार जानता और अनुभव करता है। स्वास्थ्य ख़राब होते हुए, १०२ डिगरी का ज्वर रहते हुए भी वे सम्मेलन-अधिवेशन में, विभिन्न परिषदों में सम्मिलित होते तथा उनमें भाग लेते थे। अन्त तक रहते थे। साहित्य-परिषद् में तथा अधिवेशन में आपके भाषणों का गहरा प्रभाव श्रोताओं पर पड़ा। आपकी वाणी में अद्भुत शक्ति है। किसी भी संकटकाल तथा गत्यावरोध की स्थिति में बीच से मार्ग ढूंढ़ निकालने में आपकी सूक्ष्म बुद्धि सर्वथा समर्थ है। आपकी उपस्थिति से सम्मेलन भरा-पूरा तथा सम्मेलन अधिवेशन सुचारुरूप से सम्पन्न हुआ।

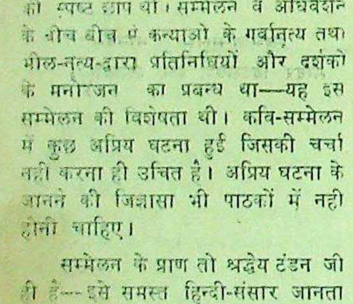

सम्पादक के नाम चिट्ठियां

'कृष्णायन' महाकाव्य

पं० श्रीरत्न शुक्ल का एक पत्र

प्रिय निर्मल जी,

इधर-उधर घूमने के कारण आपका पत्र देर से मिला। आप जानते हैं कि मैंने लिखना-पढ़ना छोड़-सा रक्खा है। परन्तु आपकी बात टालना मुश्किल है। बरसों पहले जब आप 'मनोरमा' का सम्पादन करते थे और मैं प्रयाग विश्वविद्यालय में पढ़ता था, आपसे साहित्यिक चर्चा होती थी, वह भूलने की चीज़ नहीं है। यह ठीक है पर लिखूं तो क्या लिखूं? इधर बहुत दिनों से कला की दृष्टि से मरुभूमि में ही हूं, किन्तु उस दिन जब पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र कानपुर आये और सौभाग्यवश मुझे उनका 'कृष्णायन' देखने और पढ़ने का अवसर मिला तो मैंने अपने को दूसरी दुनिया में पाया। क्यों? रामायण पढ़ी है उसके सरस काव्य का रसास्वादन भी थोड़ा-बहुत किया है, अदभुत और अनुपम ग्रन्थ है—साहित्य, कला काव्य, धर्म, आर्य-संस्कृति और मर्यादा, आदर्श जीवन, दार्शनिक भावनाओं की अनुभूति और ओत-प्रोत स्नेह तथा प्रेम से भरा साहित्यिक कल्पतरु है। पर 'कृष्णायन' भी अपूर्व है। नाम का सादृश्य, भाषा भी अवधी, दोहा चौपाई, काफ़ी सामंजस्य "तुलसी शैलिहि मोंहि प्रिय लागी, भाषहु बिनु विवाद रस पागी," वह तो है परन्तु 'कृष्णायन' फिर भी मौलिक है और यदि रामायण न लिखी गई होती तो 'कृष्णायन' सदा सर्वदा के लिए रामायण की भाँति लोकप्रिय होता। बड़ी बात नहीं कहता हूं, और न इसकी आदत है, पर मैं दूसरों की तरह इसका अभिलाषी हूं कि वह तुरन्त प्रकाशित हो। आज, सम्भव है कुछ दिन और उसका महत्व समझ में न आवे, परन्तु शब्द स्थापना में, चरित्र चित्रण में, भाषा और भाव के लालित्य में, सामाजिक और राजनैतिक उद्वेग की प्राचीनता और नवीनता के समष्टीकरण में, वह अद्वितीय सिद्ध होगा। अतिशयोक्ति नहीं, पर इधर रामायण के बाद ऐसा काव्य-ग्रन्थ शायद ही लिखा गया है।

कानपुर —श्रीरत्न शुक्ल,
२८–१०–४५ एम० एल० ए०

* * *

व्रजमण्डल की साहित्यिक यात्रा

व्रज के साहित्यिक, सांस्कृतिक और कलात्मक रूप से साहित्यकारों का निकट सम्पर्क स्थापित करने के हेतु व्रज-साहित्य-मण्डल ने एक साहित्यिक यात्रा का आयोजन किया है। यह यात्रा कार्त्तिक शु० चतुर्दशी सं० २००२ ता० १८ नवम्बर सन् ४५ सोमवार से आरम्भ होगी। व्रजक्षेत्र के अनेक विद्वानों के पधारने का वचन हमें प्राप्त हो चुका है।

यात्रा व्रज के प्रमुख स्थान गोवर्द्धन से उठेगी और दीग, कामवन, बरसाना, नन्दगाँव आदि व्रज संस्कृति के प्रसिद्ध केन्द्रों में विश्राम करती हुई ता० २५ नवम्बर रविवार को कुशस्थली (कोसी-कलाँ) आवेगी। यहाँ मंडल का एक विशेषोत्सव होगा और यात्रा समाप्त होगी।

अष्टछाप के सुकवि कुम्भनदास और चतुर्भुजदास जी की जन्मभूमि और पुष्टि-सम्प्रदाय का प्राचीन गढ़ गोवर्द्धन अत्यन्त ही रमणीक है। श्री सूरदास जी की विख्यात एवं दर्शनीय कुटी इसके निकट है। भरतपुर राज्य की विभूति दीग और व्रज संस्कृति का प्रमुख गढ़ कामवन अपने प्राचीन दर्शनीय स्थानों के लिए विख्यात है। रमणीयता की चरम सीमा और भावुकजनों का सर्वस्व बरसाना और भगवान बालकृष्ण की क्रीड़ास्थली नन्दगाँव ही नहीं, वरन् व्रज के प्रमुख व्यापारिक केन्द्र कोसी (कुशस्थली) के भ्रमण का भी अपूर्व सुयोग है।

हम व्रज-संस्कृति के समस्त अनुरागियों को इस यात्रा के लिए साग्रह निमंत्रित करते हैं। जीवन की व्यस्तता को दृष्टिगत करते हुए प्रारम्भ में हमने केवल एक सप्ताह की ही यात्रा—योजना प्रस्तुत की है। विश्वास है हिन्दी-संसार इसका स्वागत करेगा। साहित्यिक सत्संग के ऐसे सुअवसर प्रायः नहीं आते, अतः शीघ्र ही यात्रा में सम्मिलित होने की स्वीकृति मण्डल कार्यालय में भेजकर अनुगृहीत कीजिए, जिससे आपको सुविधा का समुचित प्रबन्ध हो सके।

मथुरा —प्रभुदयाल मीतल
१ नवम्बर ४५ प्रधान मंत्री

* * *

रोमन-लिपि का प्रचार

विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि शिक्षा-प्रसार विभाग-द्वारा इस प्रान्त के तीन-चार जिलों में सरकार रोमन-लिपि का प्रचार कर रही है। इस लिपि में सरकार ने कुछ पुस्तकें भी लिखवाई हैं। शिक्षा-विभाग का काम अब तक प्रारम्भिक कक्षाओं में हिन्दी और उर्दू की पढ़ाई तक सीमित था। समझ में नहीं आता कि शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को रोमन के प्रचार की धुन क्यों पैदा हुई। अभी थोड़े दिन हुए, सुनने में आया था कि पटवारियों को भी रोमन सिखलाई जा रही है। इस प्रकार सरकार रोमन को प्रोत्साहन दे रही है। मालूम होता है, कोई गुप्त नीति काम कर रही है। इस सम्बन्ध में जिन सज्जनों को कुछ भी जानकारी हो वे सभा को सूचना देने की कृपा करें।

नागरी-प्रचारिणी —रामनारायण मिश्र
सभा, काशी। प्रधान मंत्री

* * *

चित्रपट और हिन्दी

गत १४ अक्टूबर के 'देशदूत' में 'चित्रपट और हिन्दी' शीर्षक पत्र में श्री सूर्यप्रकाश जी ने मेरी चलचित्र-समालोचना पर जिसमें मैंने 'परख' और 'हुमायूं' की भाषा को हिन्दुस्तानी बताया था, अपने कुछ विचार प्रकट किये थे। मैंने अपने लेख में फ़िल्म की भाषा हिन्दुस्तानी बताई थी जिसका कारण यह है कि मैं साधारण उर्दू को ही हिन्दुस्तानी पाता हूँ और उसे राष्ट्रभाषा होने के योग्य किसी भी दृष्टि में नहीं समझता। मैंने उसमें भाषा प्रशंसा नहीं की थी अपितु भाषा के मा में संकेतमात्र कर दिया था। मैंने सं मोदी की 'प्रशंसा के पुल बांधे थे' इसलिए की 'परख' कला और स्वाभावि वास्तविकता की दृष्टि से सुन्दर चलचि था। मोदी हिन्दी के विरोधी हों या न किन्तु उनकी कला की प्रशंसा अवश्य जायगी और हिन्दी को राष्ट्रभाषा रूप में तभी अधिक सफलता मिलेगी साम्प्रदायिक भावना और संकीर्णता दूर किया जायेगा। हिन्दी-विरोधी की प्रशसा करने के कारण मेरी आलो के प्रति भ्रम फैल सकता था, इसी का निवारण करने के लिए यह लि पड़ा।

कानपुर —हरस्वरू
४ नवम्बर ४५

RATION SHOP
क्या आ
आपने मेल
लिन से दां
साफ़ किए है
हाँ, यही उचि
तरीका है
MACLEANS
PEROXIDE TOOTH PASTE
सभी कैमि
स्टोरों में
Copyright

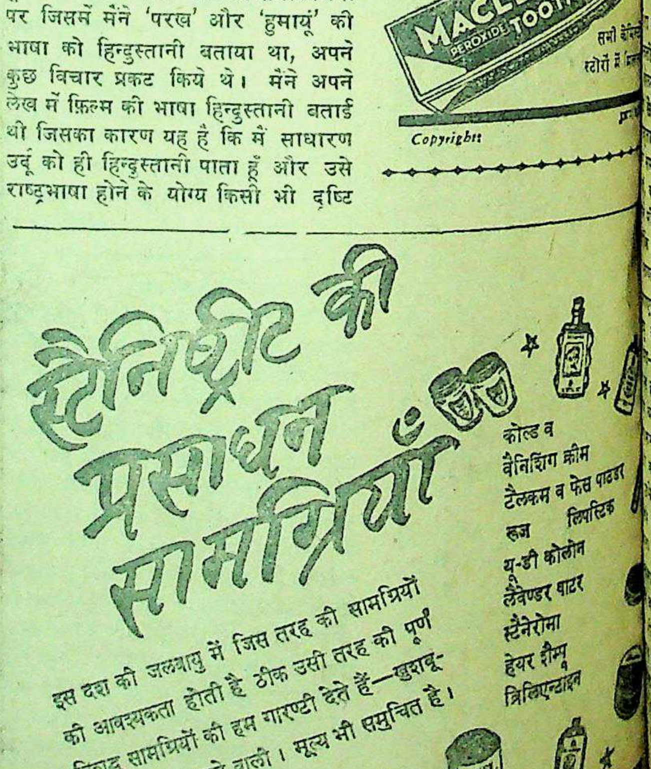
स्टैनिष्ट्रीट की
प्रसाधन सामग्रियाँ
इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताज़गी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।
कोल्ड व
वैनिशिंग क्रीम
टैल्कम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोमा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची

दीवाली के वह दिन !

लेखिका, श्रीमती इन्दिरा खन्ना

दीवाली का पवित्र त्योहार प्रत्येक के लिए मंगलमय होता है किन्तु दुर्भाग्य से राजन के लिये जीवन भर अमंगलमय ही सिद्ध होता रहा है। इस कहानी में लेखिका ने इसी प्रकार की घटनाओं का वर्णन किया है जो पठनीय तथा रोचक है।

लिखता रहूँगा।" राजन अपना सन्दूक तथा सामान ठीक-ठाक करता हुआ मीरा को रोते देखकर उसके पास खड़ा हो गया।

"भूलोगे तो नहीं मुझे ?"

"धत् पगली भला मैं तुझे भूल सकता हूँ।" ऐसा कहते हुए राजन ने प्यार से उसके गाल पर एक हलकी-सी चपत जड़ दी।

मीरा ने अपने आँसू भरे दोनों नेत्र ऊपर उठाये। राजन ने भी उसकी ओर देखा। दोनों के नेत्र मिल गये मौन भाषा में राजन् के नेत्रों ने न जाने क्या कहा ? मीरा के दोनों गाल कान तक सुर्ख़ हो गये।

"जाओ तुम बड़े वैसे हो।" मीरा कुछ मुसकरा पड़ी।

राजन भैया—कहाँ हो, अम्मा बुला रही हैं कब से"—कहती हुई एकाएक रजनी कमरे में दाख़िल हुई।

"वाह मीरा तुम यहाँ कब आई ?" रजनी बोल उठी।

"अभी-अभी आई, राजन भैया जा रहे हैं न, ख़बर पाते ही मिलने आ गई।" मीरा ने कहा।

"बड़ा अच्छा किया। अब भैया पहले की तरह थोड़े ही आया करेंगे। बाबा कहते थे कि भैया अब वहीं पढ़ेंगे कालेज में—यह कहते-कहते रजनी की स्नेह से आँखें भर गईं।

"चलो भैया, मा टीका लगाने को बुला रही हैं।"

रजनी ने कहा। "राजन चला गया।"

कुछ दिन बीत गये—रात अधिक बीत चुकी थी। सारा घर सो रहा था। अचानक मीरा की आँख खुल गई। सुना कि पिता जी और माँ कुछ बातें कर रहे हैं। बीच-बीच में मीरा का नाम भी लेते जाते हैं। उत्सुक होकर ध्यान से वह बातें सुनने लगी। माँ कह रही थी—"हाँ, तो तुमने राजन का पत्र मीरा के नाम पढ़ा ? मुझे तो तब से राजन पर बड़ा क्रोध आ रहा है।" मीरा एकाएक भय से सिहर उठी।

"एक बात कहूँ मानोगी"—पिता जी बोले—"मीरा और राजन की अगर शादी हो जाये तो।"

"मैं तो इसे पसन्द नहीं करती।"

"क्यों भला तुम्हें चिढ़ क्यों हो गई है" यही कि राजन ने मीरा को प्रेम-पत्र लिखा है ? भला इसमें बुराई क्या है ?

"बुराई कहते हो, मेरी नादान लड़की को प्रेम-पत्र लिखने का उसे क्या अधिकार है ?"

"ठीक ही तो किया। अब हमें पता चल गया, माँ-बाप बेटी का हमेशा भला चाहते हैं। राजन सब तरह मीरा के योग्य है, पढ़ा-लिखा है। अभी इतनी बड़ी जायदाद मिली है।" "अच्छा सोचूँगी"—कहकर माँ करवट लेकर सो गईं।

मीरा और राजन ! मीरा ने मन ही मन दोहराया, पर दूसरे ही क्षण माँ के विचारों का ख्याल आते ही वह शंकित हो गई—"हे भगवान् ! माँ बीच में गड़बड़ न करें। अगर मैंने सच्चे मन से राजन को प्यार किया है तो अवश्य मेरा ब्याह उसी से हो, अथवा आजीवन कुँवारी रहकर जीवन बिताऊँगी। मीरा ने भोलेपन से भगवान् से प्रार्थना की।

इस कहानी की लेखिका श्रीमती इंदिरा खन्ना

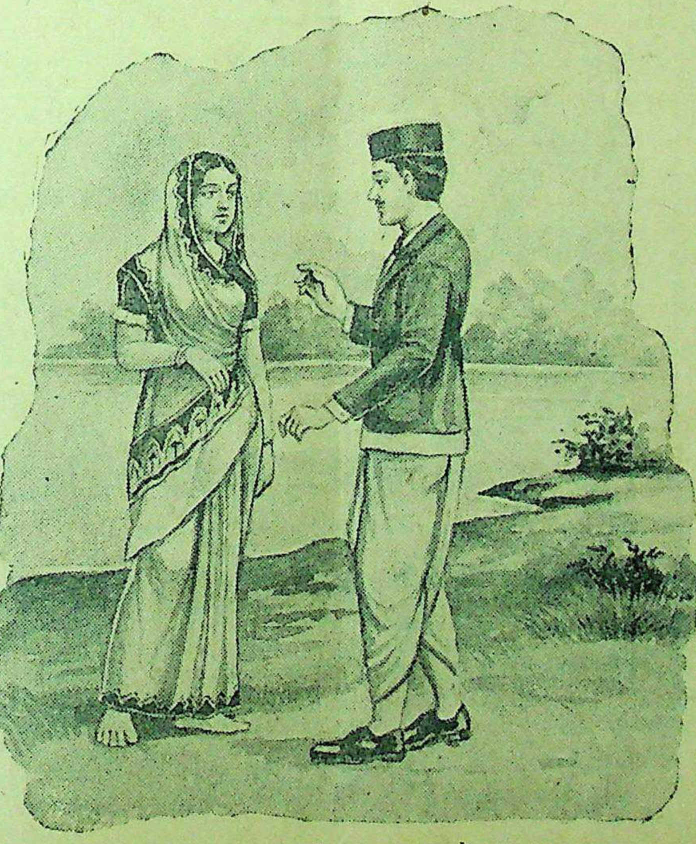

राजन ने मीरा से कहा—मैं बहुत जल्दी लौट आऊँगा।

* * *

मीरा आज बड़ी ख़ुश थी। आज पिता जी राजन के पिता के पास गये थे। क्यों ? यह तो वह रात को ही जान गई थी। वह पढ़ते-पढ़ते मुस्करा उठी। उसी वक्त चुपके से रजनी ने पीछे से आकर उसकी किताब छीन ली।

"लो भाभी मुंह तो मीठा करो पहले।"

"कौन भाभी, किसे भाभी कह रही हो राज।" मीरा मन में गदगदी-सी महसूस करके बनावटी क्रोध के साथ बोली।

"जैसे तुम्हें तो कुछ पता ही नहीं रानी जी।"

"क्या ? सचमुच में कुछ नहीं जानती।" मीरा जानकर भी अनजान बन गई।

"अच्छा तो अब सुनिये, श्रीमती जी यानी हमारी भाभी साहिबा आप हमारे भैया की शीघ्र ही धर्मपत्नी बनने जा रही हैं।" "धत्" कहकर मीरा उठकर भाग गई।

* * *

राजन और मीरा का विवाह हो गया। सारा शुभकार्य समाप्त हो चुका। मेहमान बिदा हो गये। सूरज छिप चुका था। सारे शहर ने एक बार फिर दीपकों की माला धारण करनी शुरू की। अजीब समा बँध गया। रजनी अपनी प्यारी सखी मीरा को आख़िर लड़-झगड़कर अपने घर बुला लाई। दीपक जगह-जगह सजाये जा रहे थे। मीरा दीपक की थाली लिए इधर-उधर अपनी अन्य सखियों सहित सजाने में व्यस्त थी कि अचानक पैर में ठोकर लगी। हाथ हिल गया। जलते हुए दीपक सामने गिरे। और भी दीपक जल रहे थे और उस पर गिरी मीरा। कितने ही उसके गिरते ही बुझ गये पर उसकी क़ीमती सुन्दर साड़ी में आग लग ही गई। जब तक मीरा उठे तब तक साड़ी आग काफ़ी पकड़ चुकी थी। मीरा को गिरते किसी ने न देखा। उसको चिल्लाते देखकर सब लोग दौड़ पड़े, पर मीरा को आग से न बचा पाये। सब हतबुद्धि से खड़े रहे। राजन ने दौड़कर सामने से पानी की बालटी उठाकर मीरा पर उलट दी। आग बुझ गई।

फूल-सी कोमल मीरा का सुन्दर शरीर पट्टियों से लिपटा था। बदन भर में फफोले पड़ गये थे। कुछ क्षण पहले सारे घर में ख़ुशी छाई थी। अब ख़ामोशी का राज्य था। दीपक अब भी जल रहे थे

मगर जान पड़ता था कि मानो उनके प्रकाश में रुदन छिपा हुआ हो।

राजन अपने अरमानों को इस तरह लुटा-सा देखकर पागल की तरह मीरा के सुन्दर जले चेहरे को टकटकी बाँधे देख रहा था। तीन दिन बाद मीरा को होश आया। सबके चेहरों पर मुस्कराहट खिल उठी। एकाएक उदासी का बादल फट गया। पर सिर पर नाचती हुई मौत को किसने देखा? बुझने के पहले दीक की लौ मानो एकाएक तेज हो गई। दिन आराम से बीत चुका था। डाक्टर ने कहा कि अगर आज रात मरीज़ ने आराम से काट ली तो कोई खटका न रहेगा। आख़िरी बात राजन को खटकी—"और अगर रात को मीरा को कुछ हो गया—"राजन भय से सिहर उठा।

सब सो चुके थे। राजन मीरा के पलंग के पास कुर्सी डालकर चुपचाप उसके मुख को निहार रहा था कि मीरा के होंठ धीरे-धीरे हिले। मानो वह कुछ कह रही हो। धीरे से राजन ने उठकर अपने कान उधर लगाये। सुना कि मीरा बार-बार 'राजन' कहकर उसे बुला रही है। आख़िर हिम्मत कर राजन ने धीरे से मीरा को पुकारा। मीरा ने आँखें खोल दीं। आँसू टपककर गिर चले। राजन ने रूमाल निकालकर आँसू पोंछे। 'यह क्या मीरा'—इतना कहते ही राजन के आँसू टपककर मीरा के सूखे अधरों पर गिर पड़े। कितनी ही देर वे दोनों मूक बने रोते रहे। 'मत रोओ मेरी मीरा'—राजन ने अपनी हिचकी सँभालते हुए कहा।

"मुझे भूलोगे तो नहीं?" मीरा रोती-रोती बोली।

"भला मैं अपनी मीरा को कभी भूल सकता हूं। अच्छा अब सो जाओ, नहीं तो ज्यादा तबीअत ख़राब हो जायेगी।" राजन बोला। "अच्छा अब न कुछ कहूँगी पर आज न कहूँगी तो फिर अब कब कहूँगी। मेरे मरने के बाद तुम शादी अवश्य कर लेना।"—मीरा बोली।

"ऐसा मत कहो रानी" तुम अच्छी हो जाओगी। निराश मत हो। फिर हमारा एक नया ही संसार बसेगा। तुम उस प्रेम नगर की रानी बनोगी"—इतना कहकर सचमुच क्षण भर के लिए राजन सब कुछ भूल गया। उसे लगा मानो वह और मीरा अपने सुन्दर बँगले में शान्तिपूर्वक गृहस्थ-जीवन बिता रहे हैं। वह चौंक उठा। मीरा अन्तिम हिचकी ले रही थी।

"मीरा!" वह चीख उठा। पंछी अपना पिंजड़ा छोड़कर उड़ चुका था।

* * *

दीवाली आई, अपने साथ अनेक स्मृतियाँ लेकर। राजन पागल हो गया था। दीपक को देखते ही उन्हें उठा उठाकर फेंकने लगता। माँ-बाप बेटे की दुर्दशा देखकर दुखी होते। रजनी भैया की हालत देखकर दुखी होती। वह अन्दर ही अन्दर घुलती जाती। एक रात चुपचाप वह घर से निकल ही पड़ा। राजन को तन-बदन की भी सुध न रह गई थी। एक दिन प्रेम का मतवाला दुनिया भर की ठोकरें खाता हुआ—दिल में मीरा की याद दफ़नाये पहुँचा दिया गया—पागलखाने!

"हम अपनी दीवाली में मस्त हैं—कोई उसके दिल से पूछे—क्या आग लगा गई उसके अरमानों में दीवाली!"

मनोरंजक चुटकुले

सूर्य की किरणों का प्रयोग

हिटलर ने एक ऐसी योजना बनाई थी, जिससे सूर्य की किरणें एकत्रित की जातीं और उनका प्रयोग ध्वंसकारी कार्यों में किया जा सकता था। इस सम्बन्ध की विशेष बातें संयुक्त-राज्य के एक अफ़सर लेफ्टीनेंट कर्नल जान ए० केच से ज्ञात हुई हैं। उन किरणों-द्वारा एक विशेष दूरी से ही नगरों का अन्त भी किया जा सकता था। हिटलर ऐसे शक्ति में भूले हुए, पागल व्यक्ति के लिए कुछ भी असम्भव नहीं था। पृथ्वी से ५,००० मील ऊपर, दो मील वर्गाकार प्लेट-फ़ार्मों के द्वारा सूर्य की किरणें किसी विशेष स्थानों पर प्रतिबिम्बित की जातीं, जिनमें जला देने की शक्ति रहती। इतनी दूरी के कारण पृथ्वी की आकर्षण शक्ति का वहां पर कुछ भी प्रभाव न पड़ता। सौभाग्य से यह योजना सफल नहीं हो पाई। लेकिन 'आटमबम' तो तैयार ही हो गया?

* * *

छोटा-बड़ा

धीरे-धीरे चलती हुई गाड़ी में टिकट बाबू बोले—श्रीमती जी! आपका लड़का आधे किराये में नहीं जा सकता क्योंकि वह काफी बड़ा है।

श्रीमती जी ने उत्तर दिया—वह इस समय बड़ा भले ही हो गया हो लेकिन जब हम लोग चले थे तब वह काफी छोटा था।

* * *

समझदार और सुन्दर का भेद

आप मुझे एक सुन्दर लड़की से विवाह करने की सलाह देंगे या समझदार से?'

'बुढ़ऊ दादा! मुझे डर है कि आप किसी से कभी भी विवाह न कर सकेंगे।'

'भला क्यों?'

'इसलिए कि सुन्दर लड़की बहुत कुछ चाहती है और समझदार बहुत कुछ समझती है।'

* * *

यूनाइटेड
कमर्शियल बैंक लिमिटेड
२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।

विक्रीत मूलधन............४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन......२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन.........७½ लाख रुपया

डाइरेक्टरों का बोर्ड
श्री जी० डी० बिरला (चेयरमैन)
श्री एम० ए० इस्फ़हानी (वाइस-चेयरमैन)
श्री रमनलाल जी साराइया (वाइस-चेयरमैन)
श्रीयुत अनन्तचूर्णा ला
" महादेव एल दहानुकर
" नवीनचन्द्र सफ़तलाल
" मदनमोहन आर रुइया
श्रीयुत मोतीलाल तपुरिया
" बैजनाथ जलान
" इश्वरीप्रसाद गायनका
सर आदम जी हाजी दाऊद
हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत
श्री बी० टी० ठाकुर (जेनरल मैनेजर)
शाखाएं एवं एजेंसियाँ—समस्त भारत तथा विदेशों में।

ब्रांच आफ़िस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

नवम्बर, १९४५
टेड
सराइया
चेयरमैन)
ल तपुरिया
जलान
साद गायनका
हाजी दाउद
प्रस्तुत
जर)
भारत तथा
याद।
र देखें।

रजतपट की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री रत्नमाला !

भिनयकला तथा फ़िल्मी-जीवन पर एक रोचक बातचीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

अमर स्टूडियो में बैठा हुआ था। डायरेक्टर और फ़िल्म-निर्माता सुरेन्द्र देसाई के आफ़िस में—— व्यवसाय की वार्ता चल रही थी, बीच में आफ़िस के ठीक सामने "कार" आकर खड़ी हो गई। सभी उस ओर उठ गईं। कार से एक युवक जो शर्ट और पेंट पहने सिर थे, पैरों में शायद चप्पल में एक नवयुवती भी थी, जो हलके पीले रंग की साड़ी पहने आफ़िस के भीतर आ पहुँचे। बाद मुझे मालूम हुआ कि वह राजा पंडित हैं, जो कि फिल्म-सुप्रसिद्ध डायरेक्टर और निर्माता उनके साथ जो महिला हैं वह रत्नमाला है, जो आजकल पट की श्रेष्ठ अभिनेत्रियों हैं। मुझे उन दोनों पति-पत्नी से प्रसन्नता हुई। रत्नमाला के राजा पंडित बड़े मिलनसार मैंने उनसे कहा——"मैं आपका ला का इन्टरव्यू लेना चाहता यह बात सुनकर वह मुझे अमर एक. दूसरे कमरे में ले गये। लोगों में फ़िल्मी-जगत की वार्ता होती रही। इसके बाद पंडित जी ने दूसरे दिन घर पर आने का मुझे निमन्त्रण दिया।

दूसरे दिन ठीक समय पर मैं अपने मित्र श्री आर० पी० किशोर के साथ रत्नमाला के बँगले पर पहुँचा। मैंने देखा कि बँगले के सामने कई प्रकार के फूलों के गमले रक्खे हुए हैं। हरी घास की लान बड़ी सुहावनी मालूम हो रही थी। बँगले के दरवाज़ेवाले सोफे में एक विलायती तोता पिंजड़े के अन्दर टँगा हुआ था। एक विलायती और एक पहाड़ी कुत्ता बँगले के प्रहरी का कार्य कर रहे थे। दोनों कुत्ते अपने-अपने कार्य में बड़े एक्सपर्ट थे। बाद में पंडित जी से मालूम हुआ कि ये कुत्ते एक फ़िल्म में काम करने के लिए पाले गये हैं। पंडित जी ने बतलाया कि एक कुत्ते की कीमत चार सौ रुपये है। हम लोगों को ड्राइंगरूम में बैठाया गया। पंडित जी और रत्नमाला दोनों ही कलाकारों ने हम लोगों का बड़ा सत्कार किया। खाने-पीने के बाद मैंने "ड्राइंगरूम" के चारों तरफ़ देखा। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर और विश्वविभूति महात्मा गांधी जी का बड़ा ही मनोहर चित्र कमरे में शोभायमान हो रहा था। एक चित्र पंडित जी और रत्नमाला दोनों का था। एक चित्र प्राकृतिक दृश्य का था। एक आलमारी में कताबें और अखबार सुव्यवस्थित ढंग से रक्खे हुए थे। फ़र्श पर मखमली कामदार गलीचा बिछा हुआ था। रत्नमाला सादे भेष में थीं। वह एक हलके धानी रंग की धोती पहने हुए थीं। किशमिशी रंग का ब्लाउज़ था। सुन्दर कलाइयों में दो एक चूड़ियाँ पड़ी हुई थीं। गले में एक सोने की जंजीर थी। कमरे के अन्दर उनका सुन्दर बच्चा भी खेल रहा था। बाद में मुझे ज्ञात हुआ कि इसी बच्चे ने शकुन्तला" और "पुलिस" फ़िल्मों में कार्य भी किया है। वास्तव में उसकी प्रत्येक गतिविधि कलात्मक थी। वह कई प्रकार की बोली बोलने में एक्सपर्ट है। उस बच्चे ने हमारा काफ़ी मनोरंजन किया। रत्नमाला का गृहस्थ रूप देखकर मेरा शिर उनके प्रति श्रद्धा से नत हो गया। मुझे मालूम हुआ कि एक अभिनेत्री एक सच्ची गृहिणी हो सकती है। फ़ैशन परस्ती की दुनियाँ से रत्नमाला कोसों दूर रहती है। उन्हें बनावटी शृंगार पसन्द नहीं। फ़िल्मी-जीवन के अलावा वह एक पत्नी के रूप में अपनी ज़िन्दगी व्यतीत करती हैं। घर के प्रत्येक कार्य में वे दिलचस्पी लिया करती हैं।

फ़िल्म-अभिनेत्री रत्नमाला और उनके पति राजा पंडित जो एक श्रेष्ठ फ़िल्म निर्देशक और निर्माता हैं।

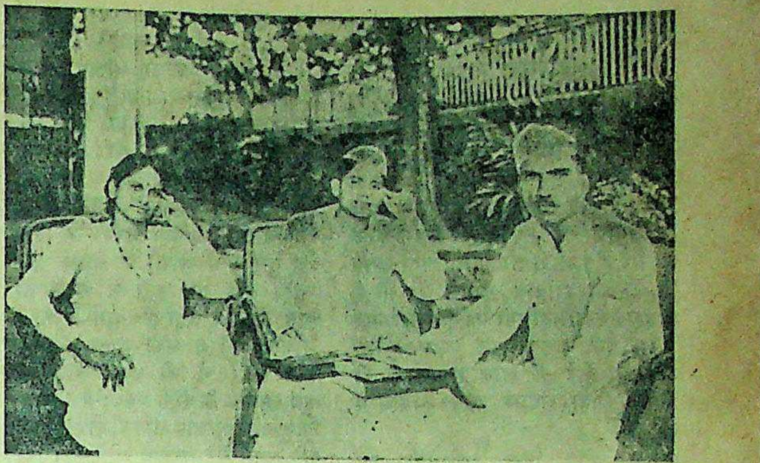

फिल्म-अभिनेत्री रत्नमाला और आर० पी० किशोर तथा इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी।

हाँ, तो मेरी और रत्नमाला की क्या-क्या बातचीत हुई——उसी को मैं यहाँ संक्षिप्त में अंकित कर रहा हूँ।

प्रश्न——आप अभिनय करते वक्त किन-किन बातों का ख्याल रखती हैं ?

उत्तर——पहला ख्याल मैं यह रखती हूँ कि अभिनय के समय मैं अपने को रत्नमाला नहीं समझती, बल्कि जिसकी भूमिका में मैं कार्य करती हूँ। उसी के व्यक्तित्व में अपने को मिला देती हूँ। दूसरा यह कि जिस केरेक्टर की रोल में मैं कार्य करती हूँ, उसकी ज़िन्दगी की गहराई को समझना। उसी गहराई तक अपने हृदय की अनुभूति को पहुँचाना। तीसरी बात यह कि जिस पात्र का मैं अभिनय करती हूँ—— उसके जीवन के इर्द-गिर्द की दुनिया की भी स्टडी कर लेती हूँ। इससे ही लाभ होता है कि मेरे अभिनय के चारों तरफ़ वास्तविकता का वातावरण होता है। चौथी बात जिसको कि मैं कभी नहीं भूलती वह यह कि भावों का प्रदर्शन वाणी-द्वारा अधिक न हो बल्कि शरीर के अंग-प्रत्यंगों की मूक भाषा-द्वारा हो। इससे दर्शक पर गहरा प्रभाव पड़ता है। और समय की भी बचत होती है। पाँचवीं बात यह है कि मेरा अभिनय असावधानी से कहीं उच्छृङ्खल न हो जाये, इसके लिए मैं अभिनय करते वक्त "पात्र" के जीवन की परिस्थितियों की तालिका हमेशा अपने स्मृति-पटल पर अंकित रखती हूँ।

प्रश्न——आप किस प्रकार की भूमिका में कार्य करना पसन्द करती हैं ?

उत्तर——मेरा अपना दृष्टिकोण है कि जिन चित्रों से ज़िन्दगी का एक अभिनव प्रगति हमारे सामने उपस्थित हो, जिनमें कला के विशाल धरातल पर आत्मा की दिव्य ज्योति समुज्ज्वल करने का अवसर प्रदान होता हो। उन्हीं चित्रों में मुझे काम करना अच्छा लगता है।

प्रश्न——आपकी हाबी क्या है ?

उत्तर——मुझे जासूसी पुतस्कें पढ़ने का बड़ा शौक है। किताबें पढ़ना मैं कभी नहीं भूल सकती क्योंकि मुझे अध्ययन से बल मिलता है और ऐसा बल जिससे जीवन की शक्तियों का प्रसार होता है। इतवार के दिन समुद्र किनारे या खुली हवा में घूमना भी मुझे भाता है। कहानी लिखना भी मुझे पसन्द है ? मैंने कई कहानियाँ मराठी में लिखी हैं जो कई पत्रों में प्रकाशित भी हुई हैं। ख़ाली वक्त में सीना-पिरोना। अपने बच्चे के साथ खेलना भी मझे अच्छा लगता है।

प्रश्न——आप किस आदर्श को लेकर सिने-संसार म आइ हे ?

उत्तर——मैं किसी भी आदर्श को लेकर सिने जगत् मे नहीं आई। मैं यह कहना ठीक नहीं समझती कि मैं आर्ट और साहित्य की सेवा के लिए सिनेमा में आई हूँ। मुझे तो मेरी परिस्थितियों ने ही लाकर इस ओर ढकेल दिया। मैं आज सिने जगत् में क्या कर रही हूँ, यह छिपी बात नहीं है। ढिंढोरा पीटने से क्या लाभ।

प्रश्न——क्या हिन्दुस्तानी महिलाओं के लिए सिनेमा का आज का वातावरण ठीक है ?

उत्तर——हाँ, ठीक है, उनके लिए जो सिनेमा की "चमक" से प्रभावित होकर इस क्षेत्र में न आयेंगी। जिनको अपने चरित्र-निर्माण का ख्याल रहेगा——उनके प्रबल व्यक्तित्व को भला कौन डिगा सकता है ? ठीक है उनके लिए जो कि अपनी "लाइफ" को दो हिस्सों में बाँट लिया करती हैं। एक "स्क्रीन लाइफ" दूसरे "फेमिली-लाइफ"। इन दोनों को जो नारी कभी मिलने न देगी वही सिनेमा की चमक-दमक में अपने नारीत्व की रक्षा कर सकती है।

प्रश्न——अभिनय को स्फूर्ति-युक्त बनाने के लिए एक कलाकार को क्या करना चाहिए ?

उत्तर——अभिनय को स्फूर्ति का जामा पहनाने के लिए हमें सब का सहयोग प्राप्त करना होगा। डायरेक्टर, केमरामेन, म्यूज़िक डायरेक्टर, आर्ट डायरेक्टर, तथा सेट के वातावरण का पूरा अध्ययन करना। इसके अलावा हमें दर्शकों की मनोवृत्ति का भी ध्यान रखना होता है। हमें यह देखना होता है कि हमारे अभिनय के साथ दर्शक की भावनाओं की भी रक्षा हो। इसके लिए पहले हमें दर्शक के इच्छा का अध्ययन करना होगा और यह भी देखना होगा कि उनके इच्छाओं के कौन-कौन से पहलू कमज़ोर हैं। उन्हीं को हमें लेकर उन्हीं के सामने अपने अभिनय-द्वारा प्रदर्शित करना होगा। तभी हमारे अभिनय की सार्थकता है।

प्रश्न—आज अभिनेत्रियाँ सार्वजनिक जीवन से दूर क्यों होती चली जा रही हैं?

उत्तर—यह कहना आपका ग़लत है। मुझे ही देखिये। मैं अखिल भारतवर्षीय महिला सम्मेलन की सदस्या हूँ। प्रत्येक मीटिंग में मैं बराबर भाग लेती हूँ। जो कुछ भी मुझसे सेवा बन पड़ती है, करती हूँ। हाँ एक बात मैं स्पष्ट कहूँगी कि आज हमारे समाज की मनोवृत्ति निम्न-कोटि की हो गई है। आज जो अभिनेत्रियाँ उनसे दूर हैं, इसका दायित्व समाज पर ही है वह हमेशा हम अभिनेत्रियों पर उँगली उठाता रहा है। क्या उसका यह क़दम हमको अपनाने का है? मैं आज समाज से ही पूछती हूँ? क्या समाज इसका जवाब दे सकता है?

प्रश्न—आप किस अभिनेत्री का अभिनय पसन्द करती हो—और क्यों?

उत्तर—मैं रमोला का अभिनय अधिक पसंन्द करती हूँ, क्योंकि उम्र अधिक होने पर भी वह चंचलता का अभिनय बड़ी सफलता से कर जाती है। यह ऐक्ट अन्य अभिनेत्रियों में नहीं है। रमोला के अभिनय की विशेषता उसकी चंचलता है।

प्रश्न—आपका धर्म क्या है?

उत्तर—वैदिक धर्म में मैं विश्वास रखती हूँ।

प्रश्न—आप अपने किन-किन फ़िल्मों को अधिक पसन्द करती हैं?

उत्तर—मैं "स्टेशन मास्टर" को अधिक पसन्द करती हूँ।

प्रश्न—आपने अब तक किन-किन फ़िल्मों में कार्य किया है?

उत्तर—"भरत-मिलाप" "स्टेशन मास्टर" "पनघट" "पुलिस" "कविता' 'विक्रमादित्य", "रत्नावली" "दस बजे' (मराठी भाषा में) और मेरे आनेवाले चित्र प्रदीप पिक्चर्स का 'रुकमणी स्वयम्बर' अमर स्टूडियो का 'सीता स्वयम्बर' 'रूपा" हैं।

प्रश्न—आप राष्ट्रभाषा किस भाषा को मानती हैं?

उत्तर—मैं तो हिन्दी से प्रेम करती हूँ और ऐसी हिन्दी से जो कि सबकी समझ में आये। जो आम जनता की भाषा हो।

प्रश्न—आप कौन-कौन सी भाषा जानती हैं?

उत्तर—मैं मराठी, गुजराती. हिन्दी, उर्दू खूब अच्छी तरह से जानती हूँ। नई-नई भाषा सीखने का मुझे शौक़ है।

प्रश्न—क्या आप फ़िल्मों में स्वयं गाया करती है या कोई प्लेबेक देता है? यदि कोई प्लेबेक देता है तो वह कौन है?

उत्तर—मेरे सारे गाने प्लेबेक से गवाये जाते हैं। मेरा प्लेबेक बनारसवाली राजकुमारी देती है।

प्रश्न—आज जो समाज अभिनेत्रियों के चरित्र पर लांछन लगाता है, क्या वह ठीक है?

उत्तर—मैं तो यही निर्णय नहीं कर सकी कि समाज को क्या अधिकार है कि वह हमारे चरित्र पर लांछन लगावे? जब कि वह स्वयं इतना पतित हो चुका है कि आज उसकी नैया डगमगा रही है। उसी डगमगाती नैया के भरोसे क्या वह हमको जीवन की मंज़िल के पार पहुँचा सकता है? कदापि नहीं। जो स्वयं चोरी करता है, फिर उसे कोई अधिकार नहीं कि वह दूसरे को चोर बताये। मैं स्वयं कई एक पत्र ऐसे लोगों के दिखाती हूँ जो कि चरित्र निर्माण के आज ठेकेदार बने हुए बैठे हैं। मेरे पास महीने में ढेरों पत्र आते हैं। मैं उनको जला दिया करती हूँ। मुझे तो आज के समाज के नवयुवकों पर तरस आता है।

रत्नमाला ने अपनी रद्दी की टोकरी में से कई एक पत्र मुझे दिये। मैंने उनको पढ़ा—उनमें से एक पत्र इस प्रकार था—

प्रिय रत्नमाला,

सप्रेम नमस्ते।

तुम्हारा "स्टेशन मास्टर" में अभिनय देखकर मैं बहुत ख़ुश हुआ। वास्तव में तुम अभिनय-जगत् की रानी हो। तुम्हारी मीठी मुस्कराहट से मेरी थकावट ऐसी दूर हो जाती है जैसे गधे के सिर से सींग। मैंने "स्टेशन मास्टर" पचास बार देखा लेकिन तबियत नहीं भरी। जी चाहता है कि तुम मेरी आँखों के सामने हर वक्त रहो। यदि तुम बुरा न मानो तो एक बात लिखे दे रहा हूँ। तुम अपना जीवन आँचल क्यों न मेरी भाग्य की डोरी से बाँध लो? मैं भी एक करोड़पति हूँ? खूब आनन्द से रहेंगे। क्या मैं उम्मेद रक्खूं कि तुम मेरे प्रस्ताव को स्वीकार कर लोगी? यदि तुमने मेरे प्रस्ताव को ठुकरा दिया तो मैं तुम्हारे नाम पर अपनी जान दे दूँगा। जवाब लौटती डाक से देने की कृपा कीजिए। एक-एक दिन मुझे पहाड़-सा लग रहा है।

आपका प्रेमी या
होनेवाला पति

रत्नमाला ने कहा—अब बतलाइये क्या यह पत्र समाज की नग्नता का द्योतक नहीं है? इसी मनोवृति के बल पर आज समाजवाले हम अभिनेत्रियों के चरित्र पर लांछन लगाने का साहस करते हैं? मैं एक भारतीय नारी की हैसियत से कहती हूँ कि पहले स्वयं समाजवाले अपना मुँह दर्पण में देखें।

प्रश्न—आप अपने जीवन की न भूलनेवाली कोई घटना सुनाइये।

रत्नमाला—मेरे जीवन की कहानी का शीर्षक है "प्रणय की घाटी पर।"

जब कभी मैं अपने सम्बन्ध में लिखने उठती हूँ तो मेरी क़लम रुक जाती है—आगे नहीं बढ़ती—मेरे जीवन के फ़ैक्टस इतने अस्त-व्यस्त से हैं कि उनको कहानी के अन्दर पिरोना बड़ा ही दुस्तर कार्य है।

मैं तरुणाई के दरवाज़े पर खड़ी हुई थी। रंगीन कल्पनाओं की उधेड़-बुन मे लगी थी कि मेरे सामने एक नवयुवक आ खड़े हुए। यह नवयुवक मेरे परिचित थे। इसलिए मुझे कोई उसके आने में आपत्ति नहीं हुई। इनका नाम मिस्टर राजा पंडित है। वह उस वक्त 'छाया फ़िल्म' के प्रड्यूजर थे। मैं भी उसी फ़िल्म कम्पनी में कार्य करती थी। हम दोनों वैसे रोजाना ही आपस में मिला करते थे। आपस में काफी मैत्री भी हो गई थी—हम दोनों को एक दूसरे के ऊपर विश्वास भी जम गया था। लेकिन आज वह ऐसे समय में आये कि मेरी जीवन की सारी शक्ति उनके ऊपर केन्द्रित हो गई। उन्होंने आते ही कहा "कहिये निर्मला (प्यार का नाम) आपने क्या निश्चय किया? क्या तुम मेरे साथ रहना पसन्द नहीं करती हो? आज तुम को निर्णय कर देना ही होगा, या तो तुम मेरे प्रणय की घाटी पर आओ या बिलकुल उस पर से उतर जाओ, मैं सन्तोष कर लूँगा।"

मैंने कहा—"आज तुम अजीब, अजीब सी बात क्या कर रहे हो। क्या कोई नशा खाकर आये हो? अच्छा आठ दिन बाद इसका जवाब आपको मिल जायेगा।"

आठ दिन मेरे जीवन के अन्दर बड़े चढ़ाव-उतार के रहे। लेकिन अन्त में उनकी प्रणय की घाटी पर जाना निश्चय किया।

मैंने पत्र लिखा—

प्रिय पंडित जी, मेरे जीवन के
मुझे तुम्हारा प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार है। मुझे तुम्हारे प्रणय की घाटी पर बसने में कोई एतराज नहीं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारा तुम्हारा प्रणय-सम्बन्ध ध्रुव तारे की तरह अटल रहेगा।

आपकी प्यारी
निर्मला

* * *

जीवन के अन्दर जिस दिन हम प्रणय की घाटी पर चढ़े वह दिन आज भी मुझे याद है। उसकी मिठास आज भी कुछ बाकी है। कौन जानता था कि छाया फ़िल्म कम्पनी का प्रड्यूजर मेरे जीवन कहानी का हीरो बनेगा? इसी को तो क़िस्मत का खेल कहते हैं। आज मेरी प्रणय की घाटी का सच्चा हीरो राजा पंडित है। उन्हीं के साथ में अपनी जीवन मंज़िल पार कर रही हूँ? अटल विश्वास के साथ।

* * *

(लेखक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित)

पेट के
दर्द के चंगुल में
न फँसिए!

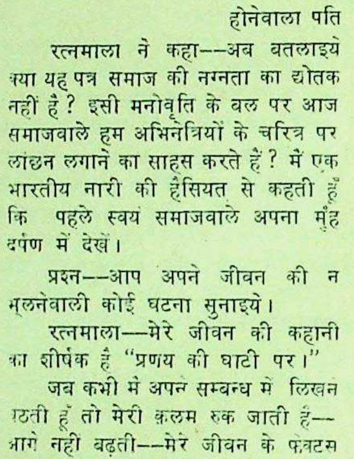

पेट का दर्द जब आपको पीड़ा दे उसे एकदम बन्द कर दीजिए। उसके चंगुल को दृढ़ मत होने दीजिए अन्यथा घाव होने का भय है।

PREPARED ACCORDING TO A SPECIALLY SELECTED FORMULA
MACLEAN Brand Stomach Powder
NONE IS GENUINE MACLEAN BRAND WITHOUT THIS SIGNATURE
Alex. C. Maclean
Copyright
IWT(E)LTD

बालसखा का नया वार्षिकांक

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कवितायें, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। यह अङ्क जनवरी सन १९४६ में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा और बालसखा के ग्राहकों को रियायती मूल्य में मिलेगा।

मैनेजर बालसखा इंडियन प्रेस, लि० इलाहाबाद

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सके तो आपके पाचन के लिये बंगल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा गले की जलन को दूर करता है।

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० :: कलकत्ता

रावाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

ोमांचकारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(२८ अक्टूबर क अंक के आगे)

पुस्तक ले आया। हरीश ने उसे पढ़-पढ़कर लक्षण
उसके उपरान्त चिकित्सा प्रारम्भ कर दी। विज्ञान
नवीन प्रणाली से हरीश परिचित था। पन्द्रह दिन के
विमला के जीवन की आशा दिखलाई दी। ज्वर अब नहीं
पथ्य मिल चुका था; किन्तु फिर भी उसकी दुर्बलता
मनुष्य काँप उठता था।
घर पर अधिक नहीं रह सका। ग्राम्य-सेवा-कार्य में
लग गया। जाते समय विनोद से कह गया कि विमला
शहर से बाहर कार से घुमा लाया करना। थोड़ी
होने पर मंसूरी या नैनीताल या तो हम ही इन्हें ले
तो तुमको जाना होगा।
ने हरीश की आज्ञा का पालन किया। प्रति प्रातः
घुमाने को ले जाया करता था। एक दिन फिर
ज्वर हो आया। सन्ध्या का समय था। फूलबाग़ में
वे लोग तुरन्त घर वापस आये। टेम्प्रेचर लेने
कि ज्वर १००° है। विनोद थर्मामीटर देखकर
विमला ने हँसकर कहा—क्या सोच रहे हो?
ने कहा—अब देर करना व्यर्थ है। तुमको लेकर
ही चाहिए।
ने कहा—हाँ, जा रही हूँ, इसीलिए ?.....
दादा ने जो आज्ञा दी है।
ने कहा—यदि तुम्हारे दादा जाये, तुम जाओ, तब
नहीं तो जो होना हो सो हो।
चुप रहा। दूसरा दिन एक प्रकार अच्छा ही कटा।
था। विमला ने कहा—ए, डाक्टर बाबू! अपने
लिख दो कि उनके नाम से ही ज्वर भाग गया।
ने कहा—कहाँ भाग गया?
ने कहा—सन्ध्या को तनिक गर्म हो गई थी। वह
कुछ नहीं।
फिरना जारी रहा। सन्ध्या को वही थोड़ा-सा ज्वर
वेदना हो जाती थी। विनोद ने जब भी टेम्प्रेचर लिया
डिग्री पाया। सवेरे प्रायः ज्वर न रहता था। दो-चार
विनोद ने कहा—दादा को खबर कर दूँ क्या?
ने कहा—तुम्हें मेरी शपथ है। एक तो मेरा विवाह
चुकी है, दूसरे रोज़-रोज़ बीमारी.....थोड़े से ज्वर
ही तुम घबरा उठे?
को अच्छे लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहे थे। वह
जब विमला अच्छी थी, चुपके से बेबी आस्टिन लेकर
थी, हरीश के पास पहुँचा।
विमला अपने पलँग पर पड़े-पड़े ऊँघ गई। थोड़ी देर
आँखें खोलीं तो देखा कि कमरे में अत्ता खड़ी हुई है।
—क्या सो रही थीं?
उठकर बैठ गई। उसने कहा—हाँ सो गई थी।
मीठी हँसी हँसकर बोली—हरीश बाबू नहीं है, सम्भवतः?
आना नहीं होता है? तभी—फिर एक बार वह हँसी।
को यह हँसी अच्छी नहीं लगी। उसने उसे शीघ्र
चाहा और बोली—कुछ काम है, क्या?
ने कहा—सो कुछ नहीं है। सोचा बहुत दिन से नहीं
एक बार सबको देख आऊँ। मन में एक ममता है तभी

ने बाधा देकर कहा—ओह! अत्ता बैठ गई। विमला
करके पूछा—उस घर में तो सब लोग अच्छे हैं?
ने कहा—हाँ, सब ठीक है।
और सरोज?
ने कहा—हाँ ठीक है। उसको लेकर जलवायु परिवर्तन
बाहर जानेवाले हैं। हरीश बाबू आए हैं कि नहीं
दीदी ने मुझे भेजा है।
ने कहा—जब सरोज अच्छा हुआ था तभी गये थे।
तक नहीं आये।
कहा—क्या कहती हो, अब भी नहीं आये? तभी!
संग में (नये बाबू से तात्पर्य विनोद से था) घूमने
! कहकर अत्ता हँसी।

विमला ने कहा—हाँ नये बाबू ही यहाँ हैं।

जाने किस प्रकार से आँखें चमकाते हुए अत्ता बोली—हूँ! समझी। तो इस दुपहर को तुम अकेली कैसी? वह नये बाबू नहीं देख पड़ते।

अत्ता की बात का श्लेष विद्रूप विमला ने समझा। उसकी देह झनझना उठी, तो भी वह चुप रही।

अत्ता उठकर खड़ी हुई और कुछ सोचकर फिर बैठ गई। बड़ी सहानुभूति के स्वर से बोली—तुम जो उसके संग घूमने जाती हो, नगर के जाति-बिरादरी के लोग देखते हैं; किसका मुँह पकड़ा जाये? विमला के हृदय में धक्-धक् होने लगा।

अत्ता हाथ नचाती हुई, भौं मटकाती हुई बोली—डाढ़ीजारों के मुँह में आग लगे। कान नहीं दिया जाता है। थूक लीलती हुई फिर बोली—मैं तो कहूँगी, घर में चाहे जो करो, सब शोभा देता है किन्तु बाहर देखकर........

क्या कहते हैं लोग? कैसी निन्दा? उसने क्या किया है जिसके लिए........? आतङ्क से उसका जी भर आया तो भी विद्रोही मानव-हृदय उत्तेजित हो उठा। विमला ने कहा—क्या करती हूँ अत्ता?

अत्ता ने कहा—लोग कहते हैं कि अत्ता तेरे घर की बहू अच्छी न लगी। दिन भर गाना-बजाना, इधर-उधर मँडराना.... इसी से तो हरीश बाबू गृहत्यागी होकर बाहर पड़े रहते हैं।

क्या कहती है, अत्ता? चीत्कार करके विमला ने कहा।

अत्ता ने कहा—तुम्हारा ही अन्न खाकर इतना बड़ी हुई हूँ, भौजाई! मुझे लगता है तब कहती हूँ तनिक से हरीश बाबू थे तब से देख रही हूँ। गुस्सा होती हो तो अब कुछ न कहूँगी।

विमला अति वेदना से चारपाई पर जाकर पड़ गई। सोचने लगी कि धरती फट जाय और मैं समा जाऊँ। दो हाथों से मुख ढककर रोते हुए उसने पुकारा—भगवान्! भगवान्! न तो किसी के लेने में न देने में तो भी यह बज्राघात क्यों हो रहा है?

अत्ता कुछ देर चुप रहकर उठी और बोली—हरीश बाबू नहीं हैं, जाती हूँ। दीदी से कह दूँगी। ....क्रोध न करना भौजाई रानी; लेकिन जब भाग्य से तुमने इतना धन-धान्य पाया है तो इसे ठुकराओ नहीं। अत्ता चली गई। विमला वैसी की ही वैसी शोकातुरा बिछौने पर पड़ी रही। सन्ध्या को विनोद ने आकर उसे जगाकर कहा—दादा कल आ जायेंगे।

विमला ने कहा—तुम बड़े खराब आदमी हो। तुमने क्यों जाकर उनको दिक्क किया? साधारण ज्वर के लिए?

विनोद ने कहा—साधारण ज्वर के असाधारण होते हुए कितनी देर लगती है, भाभी? ऐसे दुर्बल शरीर से ज्वर के सङ्ग कहाँ तक युद्ध करोगी, समझीं?

विमला ने कहा—मैं नहीं समझना चाहती। क्या होगा युद्ध करके? तुम सब लोग मुझे....कहते-कहते विमला बों-बों करके रोने लग गई। विनोद स्तम्भित हो गया।

दूसरे दिन हरीश आ गया। चिकित्सा का फिर प्रबन्ध हो गया। आज-कल में मसूरी जाने की बात थी किन्तु विमला अधिक रुग्ण हो पड़ी।

विमला ने हरीश से कहा—मैं अब बचूँगी नहीं।

हरीश ने कहा—क्या कहती हो विमला?

विमला ने कहा—बड़े डाक्टर हो, अच्छा कर दो भला तो देखूँ।

हरीश ने कहा—वही चेष्टा कर रहे हैं।

विमला ने कहा—कभी-कभी सोचती हूँ कि मरना ही अच्छा है—विपत्ति कटे! किन्तु तुम्हारी बात सुनकर....विमला जोर-जोर से रो पड़ी। हरीश उसके आँसू पोंछने लगा।

अपने को फिर संवरण करके विमला ने कहा—तुम पागल हो जाओगे, सह नहीं सकोगे। तुम्हारा सेवा-व्रत में भंग करना नहीं चाहती। मुझे जीना ही होगा। अभी तक मैं मृत्यु को चाहती थी, अब तुमको देखकर मृत्यु से भयभीत हूँ। क्या मैं बच सकूँगी? बचाओ, अच्छा किसी तरह बचाओ!

भरे हुए गले से हरीश ने कहा—क्यों नहीं बचोगी, विमला? अभी क्या तुमको हो गया है....?

विमला ने कहा—रोग कठिन है; इसी से डर लगता है।

शरद् ग्रन्थावली के अनमोल उपन्यास

लेन-देन

उपन्यास-प्रेमियों के लिए शरद् के उपन्यास अपना एक विशेष आकर्षण रखते हैं। समाज का जैसा सजीव चित्रण शरद् के उपन्यासों में पाया जाता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। 'लेन-देन' में चण्डीगढ़ की भैरवी षोडशी और वहाँ के जमींदार का चित्रण अत्यन्त मनोरंजक और कुतूहलवर्द्धक शैली में चित्रित किया गया है। मूल्य ३।-)

छुटकारा

एक संयुक्त हिन्दू-परिवार का मर्म-स्पर्शी चित्रण इसमें अंकित किया गया है। सम्पत्ति के लिए भाई-भाई में होनेवाली सिरफुटौवल, एक भाई का अपने दूसरे भाई को सम्पत्ति-सम्बन्धी अधिकारों से वंचित करने का षड्यन्त्र रचना, आदि बातें इस उपन्यास में मनोरंजक ढंग से लिखी गई हैं। मूल्य १।-)

पण्डित जी

एक मास्टर साहब का चित्रण इस उपन्यास में आद्योपान्त मनोरंजक ढंग से चित्रित किया गया है। कुलीनता, उच्च-शिक्षा, द्विज और द्विजेतर, नई शिक्षा और मिथ्या अभिमान आदि कितने ही समाज-गत विचारों पर मनोवैज्ञानिक विश्लेषण इस उपन्यास में किया गया है। मूल्य २)

बड़ी दीदी

स्वभाव-सुलभ मानव-चपलता का सुन्दर विश्लेषण इस उपन्यास में किया गया है। एक बाल-विधवा अपने सार्थी शिक्षक के प्रति अपनी प्रेमांजलि अर्पित कर देती है। यह शिक्षक महोदय थे एम० ए० पास कर अपने मा-बाप से रूठकर भागे हुए एक तरुण। इस रंगीन कथानक का उतार-चढ़ाव जानने के लिए 'बड़ी दीदी' पढ़कर उपन्यासकार की कुशलता का परिचय स्वयं प्राप्त कीजिए। मूल्य १।-)

परिणीता

उलझनों के कौतूहलप्रद वातावरण में ललिता और शेखर का प्रेम-सम्बन्ध इस उपन्यास में बड़ी ही कुशलता के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में प्रेम की पावन गंगा का प्रवाह सर्वत्र व्याप्त है और उपन्यास सुखान्त है। इसके एक-एक शब्द में आपको रोचकता और कौतूहल का दर्शन होगा। मूल्य १।-)

मझली दीदी

एक अनाथ बालक की करुण कहानी इस उपन्यास में इतनी मार्मिकता के साथ चित्रण की गई है कि पढ़ते-पढ़ते हमारी आँखें अनायास ही गीली हो जाती हैं। एक सौतेली बहन अपने निराश्रित भाई के साथ जिस तिरस्कार और उपेक्षा का परिचय देती है, वह अत्यन्त हृदय-विदारक है। परन्तु उसकी देवरानी इस अनाथ भाई को अपने पुत्र की तरह स्नेह करती है। यही मझली दीदी है। उपन्यास बहुत ही सुन्दर है। मूल्य १)

मैनेजर बुकडिपो,
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

हरीश ने विमला का हाथ अपने हाथ में लेकर स्नेहसिक्त कण्ठ से कहा—तुम अच्छी हो जाओगी, विमला! अब मैं तुम्हें अपने संग ही रक्खूँगा। मेरे बिना तुमको कष्ट होता है, क्यों?

विमला के स्थिर चक्षुओं ने उमड़ते हुए आँसुओं-द्वारा हाँ कह दी, यद्यपि जिह्वा मौन थी।

मैं समझता हूँ विमला! तो भी, तो भी वहाँ तुमको कष्ट होगा। यही समझकर......

मृदु मलिन हँसी हँसते हुए विमला ने कहा—जो कष्ट तुम सह सकते हो वह मैं क्यों न सह सकूँगी? कहने के बाद फिर वही क्षीण म्लान हास्य-रेखा मुख पर दिखाई दी।

इतने में विनोद औषधियाँ लेकर आ गया। हरीश ने पूछा—सब औषधियाँ मिल गईं?

जी हाँ। भाभी अब कैसी हैं?

हरीश ने कहा—उसी तरह से हैं। तुम बैठो सुस्ता लो, मैं मिक्स्चर बना लाऊँ।

विनोद म्लान-मुख गम्भीर मूर्ति बना बैठा हुआ था।

विमला ने पुकारा—भैया!

विनोद मानो किसी अदृश्य-लोक में घूमता था। विमला के पुकारने से जैसे मृत्यु-लोक में लौटा हो। बोला—क्यों भाभी?

विमला ने कहा—क्या मेरे क्रिया-कर्म की सामग्री लेने गये थे?

भाभी? विनोद की दोनों आँखें जैसे निकल पड़ना चाहती हों। इस प्रकार की दृष्टि हो गई। उसने फिर कहा—यदि इस प्रकार की बात फिर कभी कही तो मैं घर छोड़कर चला जाऊँगा।

तुम्हारी उदासी देखकर मुख से निकल गया। अब कभी नहीं कहूँगी। तो भी जैसे मन में होता है कि तुम्हारे दादा मेरे सिरहाने बैठे हैं तुम पाँयताने बैठे हो। मैं बड़े सुख से जैसे सदा के लिए आँखें बन्द कर रही हूँ। बड़ा अच्छा लगता है। मरण कैसा होता है इसे कौन जाने?

विनोद ने विमला का मुँह हाथों से चाप लिया और बड़े ज़ोर से रोकर कहा—मेरी भाभी, मेरी अन्नपूर्णा-माता, यह न कहो, तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ!

विमला हँसने लगी। विनोद के सिर पर हाथ फेरते हुए उसने कहा—पागल हो गए हो क्या भैया? मुझे दुःख कौन है जो मैं मरूँगी? तुम्हारे जैसा देवर, तुम्हारे दादा जैसा पति छोड़कर कहाँ जाऊँगी? सब लोगों ने हम लोगों को त्याग कर दिया है; करने दो। यही घर है हमारा इन्द्रप्रस्थ, यही है अयोध्या, यही है गोकुल, उसे छोड़कर मैं स्वर्ग भी नहीं जाऊँगी।

२१

ठेल-ठालकर ज्वर का फिर दमन कर दिया गया। हरीश ने कहा—बस अब और देर नहीं करना चाहिए... Fix up Mussourie at onee.

विमला ने कहा—यह क्या कहते हो? इतना जाल फैलाये बैठे हो उसको छोड़कर मसूरी कैसे जाओगे?

हरीश ने कहा—जाना ही पड़ेगा। विनोद, जाओ आज ही टेलीग्राम कर दो। कृपलानी ब्रदर्स, मसूरी। बात हो गई है केवल सूचना देना है। तुम Prepaid टैलीग्राम कर दो।

विनोद चला गया। विमला ने कहा—तुमको सभी ओर मैं अस्त-व्यस्त किये दे रही हूँ! जीवन को किसी भाँति भी सार्थक न बना पाये।

विमला की अपनी प्रति धिक्कार और वेदना को हरीश ने लक्ष्य कर लिया। उसने कहा—जीवन की सार्थकता कहाँ है, तुमने अब भी नहीं समझा विमला!

हरीश की बात की ओर ध्यान न देकर विमला अपनी बात कहती गई—आत्मीय बन्धुओं ने तुम्हें हेय करके परित्याग कर दिया, उस पर भी जो सेवा-वृत्ति लेकर तुम अपने उस दुःख को भूलने चले थे उसमें मैं विघ्न-रूप होकर सम्मुख आई। मैं इतनी अभागिनी, तो भी तुम मुझे इतना प्रेम करते हो—कहकर विमला रो पड़ी।

हरीश की आँखों मे भी टप-टप करके विमला के मुख पर आँसू चू पड़े। हरीश ने पुकारा—विमला!

विमला ने अपने को सम्हाला—छिः छिः मेरे परमेश्वर, तुम मत रोओ; मुझसे भूल हुई। तुम्हारा जैसा पति पाकर मैं अभागिन कैसे हो सकती हूँ! अकेले रहकर पागलों की भाँति जाने क्या-क्या सोचती हूँ। वही मुँह से निकल गया।

—क्रमशः

हिन्दी महाभारत
[आचाय महावीरप्रसाद द्विवेदी]
महाभारत के अठारहों पर्वों की
संक्षिप्त रूप में अत्यन्त सरल और
भाषा में दी गई है। जो लोग महाभा
के हमारे बड़े संस्करण को खरीद
सकते, उन्हें इसे मंगाकर लाभान्वित
चाहिए। इस संस्करण की उत्तमता
यही प्रमाण है कि अब तक इसके
संस्करण हो चुके हैं। मूल्य ६)।
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये तो
ग्रिमोल्ट्स
सिरप को
याद कीजिये

ATKINSONS
* * *
सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइ

AHO-1718 HI
J. & E. ATKINSON LTD. LONDON, ENGLAND

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं?

DALDA
VANASPATI
The DALDA COOK BOOK
Price Re.1/-

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डालडा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D113 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमें से तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमें से उतनी ही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते है तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिल्कुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करने से थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हर एक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डाल्डामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढ़िया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न डालडा स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

देवी मृत्यु के रहस्य-
विलीन हो गई। सत्यवती और
भिन्न वस्तुएँ हैं, इस कल्पना
विश्वास नहीं होता। क्या ऐसे
जिनका कि जीवन वैसा ही
होता है, जैसा कि सत्यवती
दृष्टि में जिनका इतना
जो एक मानव नहीं किन्तु
में सामाजिक शक्ति ही
में कभी मृत्यु हो सकती
यदि एक शरीरनाशक है, तो
मृत्यु हो चुकी है। अन्य किसी
उसकी मृत्यु नहीं हो सकती।
वीरता हमारी सामाजिक
अंग बन चुकी है। अपने
और जनता की सेवा उन्होंने
और विश्वास के साथ
ज्ञात होगा कि १२वीं बार
हैं।

की राजनीति में सत्यवती का
विस्तार के साथ लिखा
इतिहास उस समय एक जीवित
जाता है जब कि वह क्रान्ति-
की आत्माभिव्यक्ति का
है। सन् १९३० के पूर्व
राजनीति-जागरूक नहीं
दृष्टि से हमेशा सहायता,
सामाजिक धरातल ऊपर उठाने
थी। किन्तु सन् १९३०
ने एक नये तथ्य की
वह तथ्य था कि भारतीय
में भारतीय नारी ने भी
इसका श्रेय नवीन और
औरतों को है। इनकी एक
श्रीमती सत्यवती देवी थीं।
आनन्द के वंश की थीं और
वंशीय गुण विद्यमान थे।
एक लड़की की माँ, २३
में उन्होंने स्वतन्त्रता-संग्राम
स्त्रियों का नेतृत्व किया।
भाषा में एक जगत् से
विद्रोह का सन्देश देती रहीं
प्रथम तथा भारत की द्वितीय
कि जेल गई।

रूप से लम्बी उनके गोल
तेज था तथा उनकी आँखों में
तीव्र ज्योति थी। उनके
समय नरम पड़ते थे जब
सादगी की मुसकान होती
ने १५ वर्षों तक लगातार
सड़क, गाँवों के प्रत्येक
जगह का भ्रमण किया।
छोड़कर वे सदैव हर एक
में उपस्थित रहती थीं।

मातृमण्डल

स्वर्गीय श्रीमती सत्यवती देवी कौन थीं ?

भारतीय राष्ट्र-सेविका का बलिदानी जीवन कैसा रहा ?

लेखिका, श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी

सच्चे नेतृत्व की उनमें सभी विशेषतायें थीं किन्तु उन्होंने कभी भी अपने को अपने सहयोगियों तथा अनुकरण करनेवालों से ऊपर नहीं रखा। अन्त तक उनकी न झुकनेवाली प्रवृत्ति बनी रही।

सत्यवती देवी की दो महान् विशेषतायें थीं। पहली किसी प्रकार के भय से पूर्ण स्वतन्त्रता और दूसरी आराम और सरलता के जीवन के प्रति एक अश्रद्धा। इन्हीं दो महान् विशेषताओं के कारण वे दमन-शक्ति का बारम्बार सामना कर सकीं तथा सदैव जनता का पक्ष ले सकीं और साधारण व्यक्ति के आदर का पात्र बनीं। क्रान्तिकारी राजनीति ने उन्हें अपनी ओर आकर्षित किया और कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना के पश्चात् वह उसकी सदस्या बन गईं। हृदय में वे सदैव महात्मा गांधी के महान् व्यक्तित्व के प्रति अपार श्रद्धा रखती थीं और उनका विश्वास था कि बिना गांधी जी के जनता में स्वतन्त्रता की भावना नहीं भरी जा सकती। यदि उन्हें कभी गांधी जी की नर्म राजनीति से विरोध होता तो वे उनसे प्रश्नों की बौछार लगा देतीं।

अपनी अवस्था की स्त्रियों की तुलना में उन्हें एक दूसरा लाभ प्राप्त था। वह था ऐंग्लो इंडियन सभ्यता-जनित सोफियानेपन का अभाव। उन्हें 'विदेशी शिक्षा' के भूलने की आवश्यकता न थी। जिस ज्ञान का उनमें अभाव था, वह उन्होंने अपने कई वर्षों के जेल-जीवन में प्राप्त कर लिया था। गम्भीर और गहन अध्ययन और विचारों का प्रभाव, प्रत्येक जेल-जीवन से बाहर आने पर, उनमें स्पष्ट दीखता था। उनकी अद्भुत संगठन शक्ति और सहन-शक्ति ने उन्हें अद्वितीय कार्य-कर्त्ता बना दिया था। सत्यवती के जीवन का सबसे बड़ा नारी-कार्य था—व्यक्तिगत जीवन के आनन्दों से उदासीनता। उन सरीखी भावुक, मातृत्वपूर्ण नारी के लिए यह एक बहुत बड़ा वेदनामय दण्ड था कि उन्हें सदैव अपने घर और बच्चों से दूर रहना पड़ा। उनकी सबसे छोटी लड़की, जिसका जन्म १९३२ में हुआ था (अतः उसने ६ बार जेल में व्यतीत किए) एक बुरी अवस्था में हो गई थी जब कि उसकी माँ उससे दूर चली गई। इस लड़की की मृत्यु १९४४ में हो गई। उस समय सत्यवती जेल में अपना दूसरा वर्ष व्यतीत कर रही थीं, वह अपनी बच्ची की देख-भाल न कर सकीं क्योंकि उन्होंने शर्त पर (पैरोल) पर छूटने से इनकार कर दिया। यह सत्यवती की विशेषता थी। जब उन्हें अपनी लड़की की मृत्यु का समाचार ज्ञात हुआ तो उन्हें स्वयं जीने का मोह न था। सत्यवती के शरीर ने यदि उनकी आत्मा का साथ दिया होता तो उनकी मृत्यु इतनी शीघ्र न होती परन्तु उनका संघर्षमय जीवन और तकलीफ़ों ने उन्हें क्षय का शिकार बना दिया।

सत्यवती देवी ने अपने को पूर्णतः समाज के लिए दे दिया था, उन्होंने नारी जाति के सामाजिक धरातल को ऊपर उठाया। वे राष्ट्र की एक त्यागी और तपस्वी स्त्रियों में प्रमुख थीं।

महिला-श्रम वर्धा की छात्रायें हरिजन-बस्ती को सफाई कर रही हैं।

◆

सचित्र हिन्दी महाभारत

दस खण्ड मूल्य ७०)

पंचम वेद और हिन्दुओं की संस्कृति तथा इतिहास का प्रतीक कहे जानेवाले महान् ग्रन्थ महाभारत का यह अविकल अनुवाद प्रौढ़ और हृदयग्राहिणी भाषा में कराया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ इकतालीस अङ्कों (दस खण्डों) में पूरा हुआ है। प्रत्येक अंक अनेक रंगीन और सादे चित्रों से अलंकृत है। कागज़ चिकना और मोटा है। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्मोपदेश, राजनीति, काव्य, आख्यान सभी कुछ इस ग्रन्थ में है जो अपने सरल अनुवाद के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक——सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है। प्रत्येक हिन्दू घर में धरोहर के रूप में इस ग्रन्थ को होना आवश्यक है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

◆

अब शान्ति हुई!

बैनिस्ट्रीट

ग्राइपीज

बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये

SSM 118

बैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

रोना

हँसना

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
GRIPE WATER

ग्राइप वाटर

के उपयोग के बाद

पेट के दर्द व खट्टे डकार से

छुटकारा मिलता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
— keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुडवर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के लिये इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 116—117

W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

संवाददाताओं के पत्र

खीरी लखीमपुर अगस्त सन् १९४२ के आन्दोलन के समय पूर्वीय जिला के बाद खीरी और अल्मोड़ा में ही दमन और अत्याचार का दौर-दौरा रहा है। इस जिला के सवा सौ से ऊपर भाई आज भी यू० पी० की १२ जेलों में बन्द हैं। १४ भाई फरार हैं। इनके परिवारों की सहायता करने के लिए मई सन १९४५ में खीरी जिला रा० पी० स० कमेटी का निर्माण हुआ। कमेटी ने छः कन्याओं के विवाह में सहायता दी। और आज ४६ परिवारों को मासिक सहायता पहुंचा रही है। कमेटी की आय इन ६ महीने में ३,३८८ रुपया १४ आना हुई जिसका विवरण इस प्रकार है---

कन्याओं के विवाह के लिए---महोली शुगर मिल्स . . . ५०० रुपया, गोला शुगर मिल्स . . . ४०० रु०, लाला शिवलाल राठी गोला ३०१ रु०, बाबू रामनारायण लखीमपुर २०० रुपया, श्री जगन्नाथप्रसाद अग्रवाल सीतापुर १५० रुपया।

सहायता-कार्य के लिए---गुप्तदानी लखीमपुर ४५० रुपया मार्फ़त राधेश्याम, हल्द्वानी से १७५ रुपया मार्फ़त श्री राजाराम, रामनगर से १२१ रुपया, गुप्तदानी रामनगर से ५१ रु० ४ आने, श्यामलाल आदर्श मेरठ से ५० रुपया। लाला दुर्गादास महोली से ५० रुपया। राधेश्याम हल्द्वानी से २५ रुपया, श्री सोमदत्त विद्यालंकार गांधी आश्रम मेरठ से ३८ रुपया १४ आना, दीनदयाल से २० रुपया, श्री भागीरथी जी नैनीताल से १० रुपया, श्री नरेन्द्रसिंह नैनी से १० रुपया, ग्वालियर से ५ रुपया, फुटकर दान ७ रुपया।

मासिक सहायता के लिए---महोली मिल्स से २५० रुपया, गोला मिल्स से १०० रुपया, हरीशंकर सीतापुर ५० रुपया और पं० शिवप्रसाद मीरा से २० रुपया प्राप्त हुए। कुल आय ३,३८८ रुपया १४ आना हुई। खर्च का विवरण इस प्रकार है--विवाहों में १,२८२रु० ७आना। मासिक परिवार सहायता में १,२७५ रु० २ आना। शिक्षा-सहायता में ५६ रुपया ९ आना ९ पाई। अन्य सहायता में १५३ रुपया ४ आना। पीड़ितों की सहायता में १७० रुपया १० आना ६ पाई। पुस्तकें सिलेट आदि में १०८ रुपया १२ आना ९ पाई। मकान बनाने के लिए ५० रुपया अदालती सहायता में ३१ रुपया २ आना। पोस्टेज १७ रुपया मार्ग-व्यय मुलाकातें करने आदि में ७७ रुपया १० आना ६ पाई। मुतफ़र्रिक में ७ रुपया ९ आना ६ पाई। कुल खर्च ३,२६० रुपया १० आना है।

कमेटी का आज का खर्च तीन सौ रुपया से ऊपर मासिक है और मासिक सहायता महोली मिल से ५० रुपया। गोला मिल से ५० रुपया। हरीशंकर सीतापुर से ५० रुपया और पं० शिवप्रसाद से २० रुपया। कुल १७० रुपया मिलते हैं। पं० वंशीधर मिश्र मन्त्री कमेटी दानी सज्जनों से १३० रुपया मासिक और एक मुश्त दान के लिए अपील करते हैं। अभी ८ कन्याओं के विवाह भी कराने हैं।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर में राजस्थान महिला विद्यालय का २९वां वार्षिकोत्सव ता० ११, १२, १३ नवम्बर को श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय के नेतृत्व में हो रहा है। इसी अवसर पर मीरा-जयन्ती का कार्य-क्रम भी रखा गया है। इस संस्था के आदि संचालक श्री भैरूलाल जी गेलड़ा हैं।

बनवासी सेवा-संघ के प्रधान मंत्री ने बनवासी जातियों के सुधार के लिए एक विस्तृत योजना मेवाड़ सरकार को भेजी है जिसमें उनकी सभी आवश्यक स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है।

बनवासी सेवा-संघ का वार्षिकोत्सव श्री बी० जी० खेर के सभापतित्व में १६ नवम्बर को हो रहा है। इसी अवसर पर ता० १७ को ऋषभदेव में भील-परिषद का भी आयोजन किया गया है। श्री खेर सेवा-संघ द्वारा संचालित भील क्षेत्रों की पाठशालाओं का निरीक्षण भी करेंगे।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर में होनेवाली राजस्थान हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति की बैठक के निश्चयानुसार सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री जनार्दनराय नागर का त्यागपत्र सधन्यवाद स्वीकृत किया गया और उनके स्थान में पंडित सूर्यराज व्यास बी० ए० विशारद जोधपुर-सम्मेलन के प्रधान मंत्री निर्वाचित हुए हैं। अब सम्मेलन का केन्द्रीय कार्यालय उदयपुर से जोधपुर आ गया है जहां सम्मेलन का आरम्भ कर दिया गया है। समस्त हिन्दी प्रेमी सज्जनों की सेवा में निवेदन है कि वे सम्मेलन संबंधी पत्र व्यवहार अब जोधपुर के पते से करें।

—पुन्नालाल व्यास प्रचार विभाग।

* * *

खंडवा से मध्य-भारत देशी राज्य-लोक परिषद् के प्रधान मंत्री और अखिल भारतीय देशी राज्यलोक परिषद की स्थायी समिति के सदस्य श्री कन्हैयालाल वैद्य ने यहां आने पर 'हिन्दी स्वराज्य' के सम्पादक और मध्य-भारत देशी राज्यलोक परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री सिद्धनाथ माधव आगरकर के स्वर्गवास पर निम्न विचार प्रकट किये।

एक महान् उपयोगी जीवन का बार बार जेलजाने और सन् १९४२ की आखिरी जेल-यात्रा से असमय ही अन्त हो गया। सन् १९३० से वे हर सत्याग्रह में जेल गये थे। इस बार जेल से उन्हें बहुत ही चिन्ताजनक हालत में छोड़ा गया था। श्री आगरकर जी ने देश की और देशी रियासतों की जनता की सेवा में २५ वर्ष का समय व्यय किया उन्होंने हिन्दी साप्ताहिक 'स्वराज्य' और मध्या-देशी राज्य लोक-परिषद् को अपने जीवन कल में बनाया। सन् ३३ से वे मध्यभारत देशी राज्य लोक परिषद् के उपसभापति और सन् ३९ से कार्यवाहक अध्यक्षय थे। तीन सप्ताह पूर्व जब मुझे उनसे अन्तिम बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था तब उन्होंने मुझसे कहा था कि उनकी एक-मात्र इच्छा "भारत की स्वाधीनता और रियासतों के लिए पूर्ण उत्तरदायी शासन प्राप्त करना है।" मध्यभारत के रियासती कार्यकर्ताओं को उनका अन्तिम सन्देश था कि "रियासती जनता की सेवा करो।" मैं सन् १९३० से उनके साथ कार्य करता रहा। वे हमारे समय के एक वीर, निर्भीक योद्धा और सच्चे पत्रकार थे।

—संवाददाता

* * *

नई दिल्ली कनाट सरकस विद्या मन्दिर लिमिटेड ने 'विश्व-कहानी-साहित्य' नाम से हिन्दी में एक नवीन और अपूर्व प्रकाशन करने का आयोजन किया है, जिसमें विभिन्न विदेशी भाषाओं और सभी भारतीय प्रान्तीय भाषाओं के पत्रों में प्रतिमास प्रकाशित होनेवाली उत्तमोत्तम कहानियों का संकलन रहा करेगा। इस संकलन की प्रमुख विशेषता यह होगी कि हिन्दी-भाषी जनता को अनायास ही घर बैठे विश्व की चुनी हुई कहानियों का आस्वादन मिलेगा। 'विश्व-कहानी-साहित्य' का प्रथम अंक आगामी जनवरी १९४६ के प्रथम सप्ताह में प्रकाशित हो जायगा।

—संवाददाता

* * *

खंडवा में गत ता० २३ अक्तूबर को प्रातः सवा चार बजे "स्वराज्य" संपादक श्री सि० मा० आगरकर जी का ५४ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। सन् १९४२ की गिरफ्तारी के बाद जेल में उन्हें रक्तचाप की शिकायत हो गई थी जिसके कारण उन्हें बिला शर्त ता० २०-११-४२ को जेल से रिहा कर दिया गया था। तभी से आपका स्वास्थ्य बराबर गिरता ही गया। अभी अभी लगभग २॥ मास से वे सख्त बीमार हो गये थे और अनेक उपचार के बाद भी उनकी प्राण-रक्षा न की जा सकी। ता० २३ को आपके सम्मान में शहर में हड़ताल रही, म्युनिसिपल स्कूल्स, आफिस और लोकलबोर्ड आफिस बंद रहे।

—संवाददाता

* * *

फतेहपुर जिले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्री दयाशङ्कर मिश्र, "सूर्य" जिला कांग्रेस कमेटी के मंत्री निर्वाचित किये गये हैं। आप जिला कांग्रेस पार्लमिन्टरी बोर्ड के भी सदस्य निर्वाचित हुए हैं। फतेहपुर पश्चिमी निर्वाचन क्षेत्र की जनता व कार्यकर्तागण इस बार प्रान्तीय असेम्बली के चुनाव में कांग्रेस की ओर से श्रीयुत "सूर्य" जी को खड़ा करना चाहते हैं।

—संवाददाता

* * *

मंडावा (जयपुर) हिन्दी-साहित्य समिति में रेडियो सम्बन्धी प्रस्तावों की बैठक, बाबू श्यामसुन्दरदास जी के निधन पर शोक सभा तथा पंत जी के स्वास्थ्य-सुधार के लिए ईश्वर से प्रार्थना-सम्बन्धी बैठकें हुई हैं पर २१ अक्टूबर को इसकी स्थापना स्वतन्त्र रूप से बड़े वाद-विवाद के पश्चात् हुई है। इसका निर्वाचन भी निकट भविष्य में ही होगा।

—संवाददाता

* * *

वर्धा कामर्स कालेज, वर्धा के विद्यार्थी श्री रामकिशोर पशिने (आयु २०वर्ष) का एक कहानी-संग्रह "जीवन का मूल्य" नाम से शिक्षार्थी-साहित्य-प्रकाशन, वर्धा-द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित हुआ है। संग्रह की प्रस्तावना प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल ने लिखी है।

—संवाददाता

* * *

अजमेर में ४ नवम्बर १९४५ को आदर्शनगर में प्रवासी भारतीयों के सर्वमान्य नेता श्री स्वामी भवानीदयाल जी संन्यासी के कर-कमलों से आर्यसमाज मंदिर का शिलान्यास हुआ।

—संवाददाता

स्टैनकेज़ोमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, कटे फटे, मुहासे, सड़ा, गला घाव तथा एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
१) डिबिया
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं० लि०
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कानपुर

"प्रत्येक सुबह
का
पहला काम"

यदि आप किसी काम में शक्ति की कमी का अनुभव करते हैं तो दिन में एक गिलास निर्मल इनोज़ "फ्रूट साल्ट" लीजिए। इनो रक्त को शीतल करता है, शरीर को स्फूर्ति देकर प्राकृतिक शक्ति व पोषण प्रदान करता है।

ईनोज़
"फ्रूट साल्ट"

इनो व 'फ्रूट साल्ट' शब्द रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं।

"If it's ELGIN it's good!"

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपड़े, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेन सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए उपलब्ध।

सरकारी कपड़ा (गांठे) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, व अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते हैं। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलों के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों में ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ग्रोल्ड जनरलगंज, कानपूर

सपरिहास

...में शराब आटा नदी में फेंका ...उसे पाँच सौ आदमियों ने छीनने ...किया। कहा जाता है कि ...लाठी का प्रहार करके उन्हें भगा ...सरकार मछलियों को आटा खिलाकर ...करना चाहती थी। पुण्य में ...कहाँ का धर्म है? धार्मिक ...धार्मिक पुलिस ने लाठी चलाई ...दान किया?

*　　*　　*

...है कि केन्द्रीय चीनी सरकार ने ...सेना पर विषैली गैस का प्रयोग ...। जापान के विरुद्ध उसका प्रयोग ...जा सका, बच गई तो वह गैस ...कहीं प्रयोग तो करनी ही होगी। ...खराब हो जाने का भी भय है। ...और इंगलैंड ने भी बनवा रखी ...भी चाहिए कि च्यांगकाई ...भेज दें। मित्र की वस्तु मित्र ...आनी ही जानी चाहिए।

*　　*　　*

...खबर छपी है कि ढाका में ...के भक्तों ने दुर्गादेवी की ...नहीं होने दी। कितने ही ...मारा-पीटा और एक तीन साल ...उठाकर तालाब में फेंक दिया। ...नहीं हुआ तब तो यह हाल ...के बाद का चित्र कैसा

*　　*

...राष्ट्रीय मुसलमानों के ...में भी लीगियों ने उपद्रव ...समझते हों कि लीगी लोग ...करेंगे तो उनकी बुद्धि की ...?

*　　*

चलिये चलें !

लेखक, श्री 'बढब' बनारसी

चलो चलें अब मक्का प्रियतम !
छोड़ो गंगा, यमुना, काशी
राम, कृष्ण, शंकर-अविनाशी
हिन्दू-पन में क्या रक्खा है,
इसका तो कटु फल चक्खा है,
बने रहेंगे हम हिन्दू तो छूट जायगा छक्का प्रियतम।
तुलसी का अब नाम न लेना,
बाग मीर की नौका खेना,
कोकिल कमल भूल तुम जाओ,
गुल बुलबुल से चित्त लगाओ,
अलिफ-बे से नाता जोड़ो, छोड़ो कि-की क-का प्रियतम।
हिन्दीवाले दकियानूसी,
बड़ी इसी से है मायूसी,
उर्दू से यह बैर दिखाते,
बायें से अक्षर लिखवाते,
'संसकिरित' का सदा चलाते रहते हैं यह चक्का प्रियतम।

एक समाचार छपा है, जिसमें कहा गया है कि वर्तमान ब्रिटिश सरकार कांग्रेस को पूंजीवादियों की संस्था समझती है, इसलिए उसे अधिकार नहीं दिया जा सकता। यह तो ठीक है। अदला-बदली, लेन-देन बराबरी में होता है। मजदूर-सरकार मजदूर को ही अधिकार दे सकती है।

*　　*　　*

मेरी राय में मुस्लिम लीग विशुद्ध मजदूरों की संस्था है। उसमें पूंजीवादियों के ठहरने की तनिक भी गुंजाइश नहीं है। ब्रिटिश पार्लियामेंट सारा अधिकार मुसलिमलीग को दे दे।

*　　*　　*

एक बात और है। हिन्दू मजदूर भी होगा तो उसके घर दो-एक लोटा, एकाध थाली होगी ही। यह भी पूंजी ही हुई। सन्देह हो तो पंडित दयाशंकर दुबे से पूछ लीजिये। मुसलमान के घर बर्तन भी टीन या मिट्टी का होगा। इसलिए हिन्दू तो सभी पूंजीपति हैं। शासन का अधिकार इसलिए मुसलमानों को ही देना चाहिए।

*　　*　　*

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनवाले हर साल एक न एक भूल करते रहते हैं। इस साल सबसे बड़ी भूल उन्होंने यह की कि पंडित दुलारेलाल भार्गव को प्रधान मंत्री तथा पंडिताइन सावित्री दुलारेलाल को साहित्य मंत्राणी नहीं चुना। इस भूल का परिहार कैसे किया जायेगा ?

*　　*　　*

अगला सम्मेलन कराची में होनेवाला है। सम्मेलन भी पश्चिम चलता जा रहा है। आगे शीराज उसके पश्चात् बगदाद में हो तो राष्ट्रभाषा ही नहीं महाराष्ट्र भाषा भी हिन्दी हो जायगी।

*　　*　　*

यह भी सुना गया है कि भदंत जी सम्मेलन से संन्यास ग्रहण करनेवाले हैं। यदि दुलारेलाल को अपना उत्तराधिकारी बना दें तो कोई हानि है।

—अगड़बत्त शर्मा

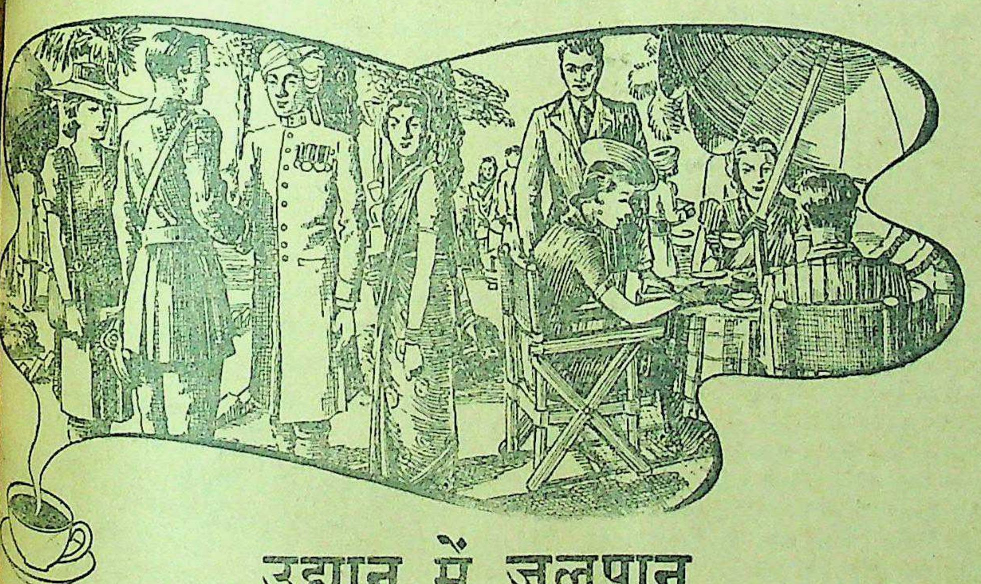

उद्यान में जलपान

...दावत किसी समय नियमनिष्ठा से भाराक्रान्त हुआ ...थी, आजकल व्यस्त लोगों के लिए, जिनका कार्य ...सहयोग द्वारा सम्भव है, आपस में भेंट का एक मूल्य...साधन है। महाविद्यालय तथा अन्य संस्थाएँ उद्योगपति...एवं अन्य विशेषज्ञों को उद्यान में जलपान के लिये ...हैं।

...के होने के कारण सभी राष्ट्र, सम्प्रदाय और ...के लोग बिना संकोच मिलते-जुलते हैं और स्वच्छ ...में बातचीत द्वारा अनुभव प्राप्त करते हैं। किसी ...दावत में ऐसा होना असम्भव है।

इन जलपानों में हिन्दुस्तान के सभी प्रान्तों के लोग सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक अतिथि ताजा ब्रुक बाण्ड चाय को पहचान लेता है, क्योंकि इसका स्वाद यहाँ भी वैसा ही होता है जैसा उसके अपने प्रदेश में।

Brooke Bond Tea

ताजा ! बगीचा से प्याली तक शीघ्रता से

ब्रुक बाण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

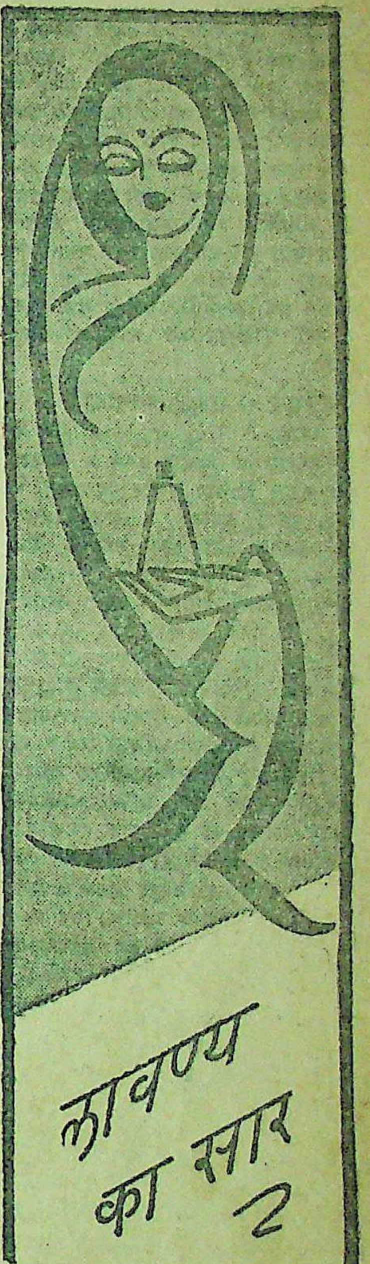

टाटा का
ग्रीज़ी कोलोन

दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

हमारी नई दिल्ली की चिट्ठी

लाल किले में आजाद हिन्द सैनिकों का मुकदमा

लाल किले में माक़ूल व्यवस्था—भारत के ९९ प्रमुख वकील—डिफेंस कमेटी का कार्यालय—दिल्ली में पण्डित नेहरू—रेडियो के सर्वेसर्वा सर अकबर हैदरी।

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा)

दिल्ली के राजनीतिक क्षेत्रों में यह अफ़वाह ज़ोरों पर है कि आज़ाद हिन्द-फ़ौज की "झाँसी की रानी" ब्रिगेड की कमाण्डर डाक्टर लक्ष्मी शीघ्र ही दिल्ली आनेवाली हैं। यह भी मालूम हुआ है कि वे लाल किले में आज़ाद हिन्द-फ़ौज के तीन अफ़सरों के विरुद्ध चलनेवाले मुक़दमे के सम्बन्ध में ही यहां आ रही हैं। बहुत सम्भव है सफ़ाई-पक्ष के वकील उन्हें आगे चलकर शहादत के लिए भी पेश करें। बम्बई के एक समाचारपत्र में यह समाचार भी छपा है कि कैप्टेन लक्ष्मी द्वारा लिखित पुस्तक "जय हिन्द" इसी सप्ताह प्रकाशित होने जा रही है। पुस्तक में उनकी गत चार वर्षों की गतिविधि का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। इस पुस्तक से जनता को आज़ाद हिन्द-फ़ौज के निर्माण और मलाया तथा बर्मा के पतन के बाद फ़ौज के सारे इतिहास की जानकारी मिल सकेगी।

लाल किले में माक़ूल व्यवस्था

दिल्ली के ऐतिहासिक लाल क़िले के एक मुग़लशाही विशाल कमरे में आज़ाद हिन्द-फ़ौज के तीन वीर अफ़सरों के विरुद्ध फ़ौजी अदालत के सामने जिसमें चार अंगरेज़ और तीन भारतीय जज शामिल हैं, भारतीय इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण और दिलचस्प मुक़दमा चलाया जा रहा है। दिल्ली का लाल किला एक बार फिर सारे राष्ट्र की दिलचस्पी का केन्द्र बन गया है। मुक़दमे के सिलसिले में बाहर से अनेक विदेशी और भारतीय संवाददाता दिल्ली आये हैं। फ़ौजी अधिकारियों ने भी प्रेस-प्रतिनिधियों की सुविधाओं का ख़याल रखते हुए उनके लिए प्रत्येक आवश्यक सुविधा प्रदान की है। एक पृथक प्रेस का कमरा है जिसमें तीन टेलीफ़ोन लगे हुए हैं। प्रेस के तार बाहर भेजने के लिए तार-विभाग ने विशेष व्यवस्था कर रखी है। प्रेस-प्रतिनिधियों को जो प्रवेश-कार्ड मिले हैं वे भी अपनी विशेषता रखते हैं। कार्ड के एक ओर प्रेस-प्रतिनिधि का नवीनतम चित्र चिपका हुआ है। प्रेस-फ़ोटोग्राफरों को भी प्रवेश-पत्र दिये गये हैं। मगर क्या यह सब रंग फीका नहीं पड़ जायगा? क्योंकि, मालूम हुआ है कि डिफेंस कमेटी की ओर से शीघ्र ही मुक़दमा एक महीने के लिए मुल्तवी करने की प्रार्थना की गई है। अदालत ने इस प्रार्थना को स्वीकार भी कर लिया है। तब बाहर से आये हुए इन महानुभावों को क्या उल्टी गाड़ी नहीं पकड़नी होगी या यहीं एक महीना और इन्तज़ारी में काटना होगा?

भारत के ९ प्रमुख वकील

हिन्दुस्तान के इतिहास में यह पहला मुकदमा है जिसमें देश के विविध भागों से आये हुए चोटी के वकील बिना पैसा लिए सफाई पक्ष की ओर से लड़ रहे हैं। डिफेंस कमेटी में लाहौर हाईकोर्ट के दो भूतपूर्व जस्टिस बख्शी सर टेकचन्द, कुँवर सर दलीपसिंह, पंजाब के प्रमुख वकील रायबहादुर बद्रीदास, युक्तप्रान्त के पंडित जवाहरलाल नेहरू, सर तेजबहादुर सप्रू, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, बम्बई के श्री भूलाभाई देसाई, पटना हाईकोर्ट के भूतपूर्व जस्टिस डाक्टर पी० के० सेन और दिल्ली के श्री आसफअली शामिल हैं। कमेटी की ओर से जिरह करने का काम श्री भूलाभाई देसाई पर ही छोड़ा गया है।

डिफेंस कमेटी का कार्यालय

'सब रास्ते रोम की ओर' की भाँति दरियागंज में आज़ाद हिन्द-फ़ौज की डिफेंस कमेटी का कार्यालय केवल दिल्ली ही नहीं, बल्कि सारे देश की राजनीतिक एवं सैनिक हलचल का केन्द्र बना हुआ है। हाल में छूटे हुए आज़ाद हिन्द-फ़ौज के दो-चार आदमी वहाँ अपनी आत्म-कथा सुनाने के लिए मौजूद दिखाई देते हैं। देश के किसी भी भाग से छूटा हुआ कैदी एक बार यहाँ अवश्य होकर जायगा; मानो, यह उनका एक तीर्थस्थान बन गया है। प्रतिदिन सैकड़ों चिट्ठियाँ आ रही हैं।

नेहरू जी दिल्ली में

जब से आज़ाद हिन्द-फ़ौज का आन्दोलन चला है, दिल्ली को पंडित जवाहरलाल नेहरू का स्वागत करने और उनके कई भाषण सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। २ नवम्बर को नेहरू जी ने सब्ज़ीमंडी के मजदूर-हलके में हुई एक विराट सभा में भाषण दिया। ३ नवम्बर को गांधी-मैदान में हुई एक भारी सभा में उन्होंने केन्द्रीय असेम्बली के कांग्रेस उम्मीदवार श्री आसफअली के पक्ष में चुनाव आन्दोलन का श्री गणेश किया। दिल्ली के नागरिकों की ओर से एक लाख ८ हज़ार रुपये की थैली भी उनकी सेवा में भेंट की गई। पंडित नेहरू ने डिफेंस कमेटी की बैठकों में भाग लिया और बिड़ला हाउस जाकर श्री भूलाभाई देसाई से बातचीत की। ५ नवम्बर को वे लाल क़िले में आज़ाद हिन्द-फ़ौज के मुक़दमे में सफाई के वकील की हैसियत से गये थे।

सर अकबर हैदरी रेडियो पर

सर अकबर हैदरी को सर सुलतान अहमद के स्थान पर ब्राडकास्टिंग-विभाग का सदस्य बनाया गया है। परन्तु क्या इस परिवर्तन का रेडियो की नीति पर कुछ असर पड़ेगा? इँगलैंड में पार्लियामेंट के गत आम चुनावों में बी० बी० सी० ने प्रत्येक पार्टी के नेता को अपनी पार्टी का चुनाव-घोषणापत्र जनता के सामने रखने का अवसर दिया था। इसके बाद भी पार्टी-नेताओं को समय-समय पर बोलने के लिए निमंत्रित किया गया। हिन्दुस्तान में जब कि केन्द्रीय असेम्बली के चुनाव बहुत निकट हैं, क्या रेडियो विभाग बी० बी० सी० का अनुकरण करेगा? मगर ऐसा नहीं दिखाई देता। जहाँ तक नीति का सम्बन्ध है, सर सुलतान अहमद और सर अकबरहैदरी एक ही नौकरशाही की उपज हैं। हिन्दुस्तान का यह रेडियो महकमा केवल नौकरशाही के प्रचार का साधन बना हुआ है।

हिन्दी महाभारत

[आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी]

महाभारत के अठारहों पर्वों की कथा संक्षिप्त रूप में अत्यन्त सरल और मधुर भाषा में दी गई है। जो लोग महाभारत के हमारे बड़े संस्करण को ख़रीद नहीं सकते, उन्हें इसे मंगाकर लाभान्वित होना चाहिए। इस संस्करण की उत्तमता का यही प्रमाण है कि अब तक इसके अनेक संस्करण हो चुके हैं। मूल्य ६)।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

महात्मा गांधी के कुछ संस्मरण

(पेज ६ का शेष)

यदि भारत को रूस की भाँति स्वतंत्रता मिली और बेकारों को और कुछ काम मिलकर यदि आर्थिक समता निर्मित हो सकी तो फिर भी आप यंत्रों का विरोध करेंगे क्या? उससे मजदूरों को कम काम और अधिक विश्राम मिलेगा न?"

"क्यों नहीं।"—गांधी जी ने ज़ोरों से कहा। गांधी जी ने इस विषय पर कई विदेशियों से चर्चा की थी। किन्तु झट से विषय समझ कर बात को स्पष्ट रूप से बतानेवाला यह पहला समझदार विदेशी उन्हें मिला; इसका कारण यह था कि चार्ली चैप्लिन का मन दूषित नहीं वह निर्मल था। उसकी दीनदलितों प्रति हार्दिक सहानुभूति थी।

सरोजिनी देवी भी वहाँ थीं। चैप्लिन ने इंगलैंड के एक जेल को भेंट दी उसकी याद दिलाते ही चार्ली बोले—'मैं अमीरों के गुट्ट का सामना सकता हूँ। परन्तु जेलवालों को नहीं दे सकता। जब इन बन्दीगाहों के के सम्बन्ध में सोचता हूं तब अपनी पर मुझे बहुत दुख होता है।"

छमाही व्याज ~घर बैठे लीजिए

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) भी वैसी ही अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है और इस समय बड़ी और छोटी दोनों तरह की रक़में लगाने के लिए सब से अच्छी मद है। **जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।**

इस ऋण की ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत है और गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। अगर इससे पहले आप नक़द रक़म प्राप्त करना चाहें, तो इस ऋण को हर समय मार्केट में बेच सकते हैं।

व्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम-टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को चुका दिया जायगा और सरकारी चेक आपके घर पर पहुँच जाया करेगा। आप साधारण चेक की भाँति भुना सकेंगे। आपको यह संतोष भी प्राप्त होगा कि आप हिन्दुस्तान की सहायता कर रहे हैं, क़ीमतों को घटा रहे हैं और अच्छा व्याज भी पा रहे है।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

AAA 224 H

रुपया बचाइए और ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन १९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रचारित

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ। उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज

कर आडर बुक करा लें।

मेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

सुकवि राजाराम श्रीवास्तव, बी० एस-सी०, एल-एल० बी० की अनमोल कृतियाँ

किंकिणी में कवि की बढ़िया कविताओं का संग्रह है। भाषा मधुर और कल्पना इतनी आकर्षक है कि पाठक कुछ क्षणों तक भावविभोर बना रहता है। मूल्य ।।।) बारह आने।

मधुस्रवा में नवीन शैली की, जीवन में मधु बरसानेवाली सुन्दर रचनाएँ हैं। इसे पढ़कर प्रत्येक कविता-प्रेमी को अपना जीवनरस मधुर बनाना चाहिए। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवास की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। मूल्य ।।।=) चौदह आने।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

वा कार्य -

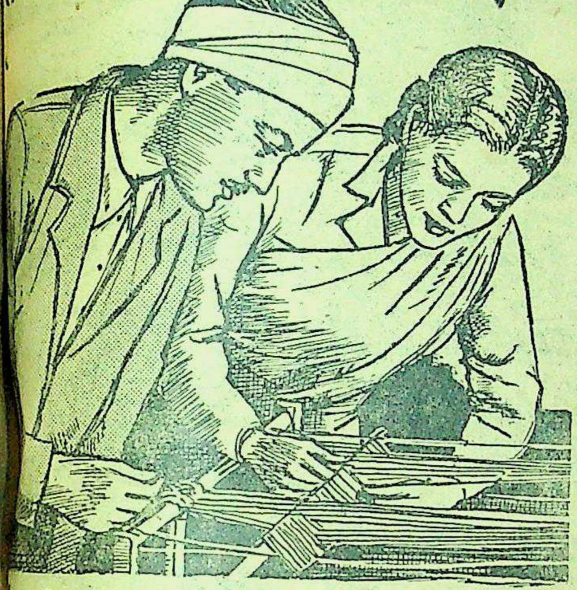

सकी कोई समता नहीं

न रेड क्रास की ओर से जो सेवा-कार्य हो रहा है उसका स्थान संस्था नहीं ले सकती। किसी अन्य परोपकारी संस्था के पास साधन हैं और न इतनी बड़ी संख्या में आवश्यक कार्यकर्ता अस्पताल में जहां बीमार और घायल सैनिक रहते हैं, यह लिख कर, खोये हुए सैनिकों का पता उनके रिश्तेदारों के लिए पुस्तकालयों का संगठन कर तथा भोजनशालाओं का निरीक्षण कार्य कर रही है।

तो रेड क्रास के अनेक कार्यों का एक भाग मात्र है, जो केवल सहायता पर निर्भर करता है। युद्ध समाप्त हो गया है, किन्तु इंडियन ड सेण्ट जान संस्था घायल और बीमार जवानों को भुला जो बड़ी बहादुरी से युद्ध में लड़े। अपने जवानों के आराम क्रास को जो बड़ा काम करना पड़ रहा है, उसके लिए उसे यता का भरोसा है।

घायल सैनिकों के प्रति आपका कुछ कर्त्तव्य है। इंडियन रेड क्रास ओर से इन बीमारों और घायलों तथा वापस आने वाले को उपहार की वस्तुएं और आराम का सामान दिया जाता है। ति आपकी कृतज्ञता का चिन्ह है।

डियन रेड क्रास के द्वारा

घायल और बीमार सैनिकों

सहायता दिल खोल कर कीजिए

AAA462

अगर सौ चूहे बच्चे न भी जनें, तो वे साल में २७ मन अनाज खा जाते हैं। किन्तु चूहों के बच्चे बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं-एक जोड़ा एक वर्ष में ८०० सन्तान पैदा कर सकता है। चूहे, कीड़े और नमी हमारे अनाज के सब से बड़े दुश्मन हैं।

कुम्भकर्ण की भूख!

ये आपका १0,00,000 लाख टन अनाज प्रति वर्ष चट कर डालते हैं

अगर चूहों, कीड़ों और नमी से अनाज की बरबादी न हो, तो इतने अनाज से एक वर्ष तक १ करोड़ ८० लाख व्यक्तियों को प्रति दिन आध सेर भोजन दिया जा सकता है। अनाज भरने की वैज्ञानिक रीति का पालन करने से इस बरबादी को रोका जा सकता है। चूहों-कीड़ों तथा सड़ने-गलने से अनाज को बचाने के कुछ सरल नियम यहां दिये जाते हैं।

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

ख़ुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

नेत्र-रोग की चिकित्सा से हताश रोगी

ज्योति-कल्प का

सेवन करें

फूली, माँड़ा, रोहा तथा प्रारम्भिक मोतिया-बिन्द आदि की अचूक औषधि है।

यल० यम० धालकिया ब्रदर्स
४६ जानसेनगंज, इलाहाबाद।

कठिन परिश्रम के बाद,

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी
अनुराग
कलंक
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥=)
टाल्सटाय की कहानियाँ

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

शीघ्र आ रहे हैं

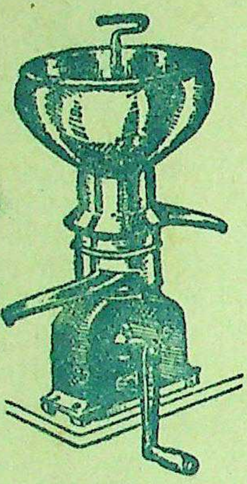

१५० से १००० पौंड दूध प्रति-घंटे के गुंजायशवाले (Stainless steel bowls) लिस्टर क्रीम सेपारेटर जो हाथ या बिजली से चलाये जाते हैं शीघ्र आनेवाले हैं। लिस्टर क्रीम सेपारेटर का मतलब है कम परिश्रम, कम खर्च व ज्यादा लाभ। बुद्धिमान् डेरीवाले अब उन्हें मँगाने में देर नहीं करेंगे।

Lister

लिस्टर

क्रीम सेपारेटर

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स

वॉल्कर्ट ब्रदर्स

कलकत्ता, ८ हाइड स्ट्रीट।
कानपुर दो माल।

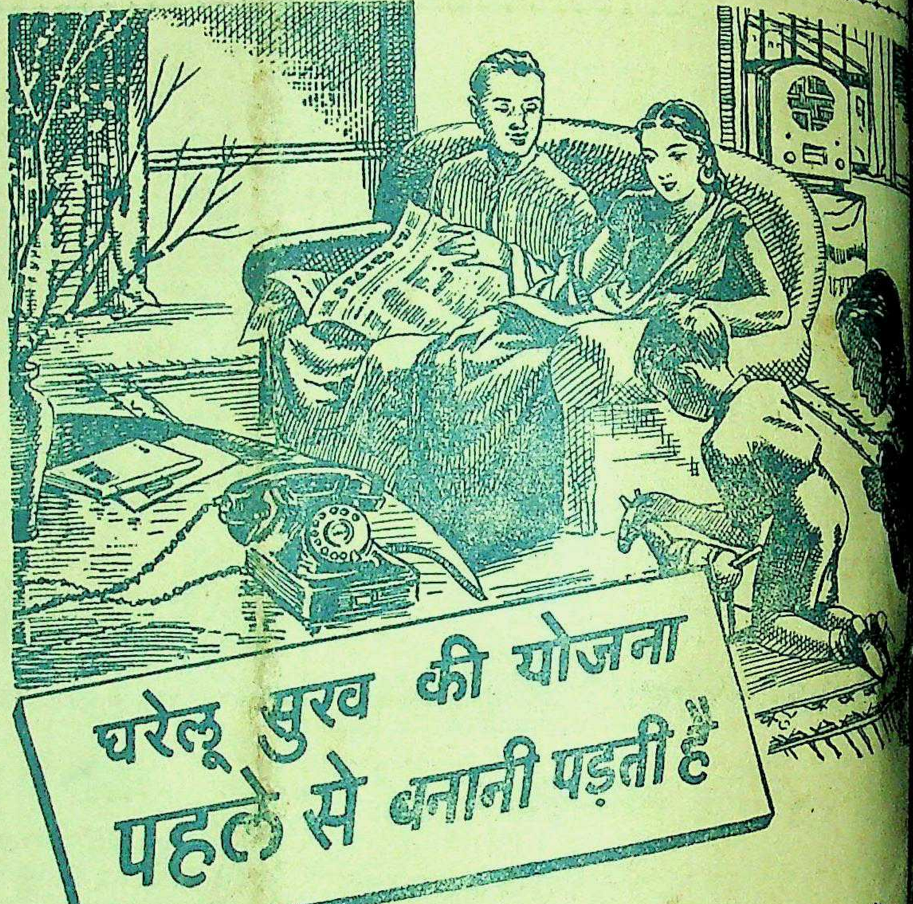
घरेलू सुख की योजना
पहले से बनानी पड़ती है

धन्य है वह मनुष्य जो उन छोटे छोटे सुख-साधनों का
जन कर सकता है जिनके बिना घरेलू जीवन में सरसता नहीं आती।
टेलीफोन, फर्नीचर, बच्चों के खिलौने आदि का होना अथवा इनका
यही अन्तर है उस मनुष्य में जिसके पास पैसा है और जिसके पास
और लड़ाई के बाद ये वस्तुएं बहुत सुलभ होंगी। किन्तु इस समय
महीने की—यहाँ तक कि तीन महीने की आय से भी आप
पैसे का प्रबन्ध नहीं कर सकते।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफ़िकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकखाने से खरीद सकते हैं।

यही कारण है कि बहुत से लोग जो इस समय पैसा बचा सकते हैं हर महीने लगातार कुछ न कुछ बचत करते जाते हैं। इन लोगों को भविष्य में हाथ में पैसा न होने
के कारण किस्तबन्दी पर चीज़ें
कठिनाई का सामना नहीं करना
इन लोगों ने देख लिया है कि
की रक़म लगाने की सब से अच्छी

नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िके

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४१ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुए ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफ़िकेट को १८ महीने बाद)।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन, प्रेस लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

मूल्य ७॥)
=)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

१८ नवम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 18th November 1945

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने, एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

आज की समस्या।
की मनोरंजक कहानी

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

देशरत्न बाबू राजेन्द्रप्रसाद के साथ।
रंगमंच, मातृ-मन्दिर, हास-परिहास।

RAMESH RAJ & CO
KARACHI

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। रेट बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

AAA460

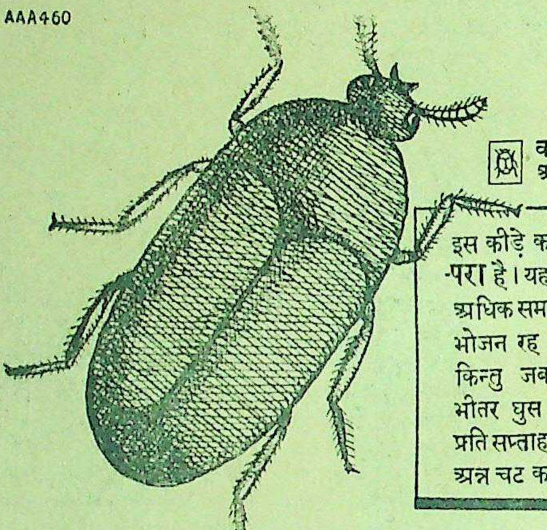

वास्तविक आकार

इस कीड़े का नाम खपरा है। यह एक वर्ष से अधिक समय तक बिना भोजन रह सकता है। किन्तु जब दाने के भीतर घुस जाय, तो प्रति सप्ताह हज़ारों मन अन्न चट कर जाता है।

एक और मोर्चा जीतना है —
ख़ूराक की बरबादी के विरुद्ध संग्राम!

सड़ने-गलने से, चूहों और कीड़ों से कम से कम ३० लाख टन अनाज का नुक़सान प्रति वर्ष हो जाता है। इतने अनाज से हिन्दुस्तान की ४० करोड़ आबादी को १६ दिन तक आध सेर प्रति व्यक्ति प्रति दिन के हिसाब से खिलाया जा सकता है। उस देश के लिए जिसके पास अपनी आवश्यकताओं भर के लिए पर्याप्त अन्न न हो, यह बरबादी बहुत ही भयानक है। इसे रोका जा सकता है और इसे रोका जाना चाहिए। यदि भंडार में निम्नलिखित रीति से ठीक रूप से वस्तु रखें, तो इस बरबादी को रोकना कठिन न होगा:—

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर भरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

ख़ुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफ़ार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजि

गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया के फ़ूड डिपार्टमेंट, नई दिल्ली द्वारा

जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ॰ गौतमराव केशव
टॉनिक फॉस्फरस पि

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्नूलाल जौहरी
एल० एस० धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

---

३४ लाख रुपये रोज़ लगाये गये

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९ बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) आपको अपनी रक़म अच्छी शर्तों पर हिन्दुस्तान को ऋण की भाँति देने का एक और सुअवसर करता है। आप अपने देश को सहायता पहुँचायेंगे, भावों को घटाने में करेंगे, और ३ फ़ी सदी सालाना ब्याज, इनकम टैक्स काटने के बाद दो बार आपके घर पर पहुँचता रहेगा।

आप जितनी रक़म चाहें इस ऋण में लगा सकते हैं। ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म हर हालत में १५ अगस्त, सन् के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी इस दौरान में अगर आपको नक़द रुपये की ज़रूरत हो तो इस लोन को चाहें मार्केट में बेच सकते हैं। अगर आप पर इनकम टैक्स लागू न हो या कम शरह पर लागू होता हो, तो अधिक चुकाया गया वापस मिल जायगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा ख़रीद सकते हैं जो प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से ख़रीद लें।

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लो
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेंट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेंट द्वारा

देशदूत

वर्ष ८ संख्या १२] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, १८ नवम्बर, १९४५

रलाल नेहरू की वर्षगाँठ के
ारे देश में 'जवाहर दिवस'
धूमधाम से मनाया गया।

सरकार सचमुच अपने पड़ो-
बड़ी सहायक है। क्यों न हो
का धर्म ही यही है। इंडो-
हते हैं कि उन्हें स्वाधीनता
र डच साम्राज्य का जुआ
निकाल दिया जाये। डच
बार मान भी ले लेकिन
सरकार समझती है कि
हो सकता है लेकिन ब्रिटेन
नहीं है। इसीलिए तो वह
ही कर रही है। बात यह है
वक्त पुण्य कर रहा है, डच
रेशानी में हैं, उनके मुंह का
जमात छीनने पर उतारू
ब्रिटिश अपने डच मित्र के काम
है। ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमंडल
ही है ही। इसमें किसी को शक
ता है, इसलिए वह जो करे ठीक
वह मजदूर जो ठहरी!

* * *

लीग के विधाता मिस्टर
कांग्रेस को चुनौती पर
जा रहे हैं। क्यों न दें क्योंकि
तो उन्हीं के हाथ में है।
अंगरेजों को खुश कर लिया है
बात का? लेकिन अपने राम
ता ही हुई कि मिस्टर जिन्ना
किया कि मुस्लिम लीग भारत
मानों का प्रतिनिधित्व नहीं
बात कुछ नहीं, वक्त पर ही
का भाव मालूम होता है।
मान जब से चुनाव के लिए
रोध में उठे हैं तब से मिस्टर
यह मालूम होने लगा है कि
जमात में लीग ही नहीं, स्वतन्त्र
जमायतुल उलेमा, मोमिन और
भी हैं। तभी तो मिस्टर जिन्ना
यह स्वीकार किया कि लीग
मुस्लिम जाति का प्रति-
करती। धीरे-धीरे वह
है कि कहीं लीग का प्रति-
शून्य न रह जाये? देखिये
जरा निकले तो?

*

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

अभी-अभी पता चला है कि सर फ़िरोज ख़ाँ नून ने वाइसराय को यह सलाह दी थी कि आज़ाद हिन्द सेना के क़ैदियों पर मुक़दमा चलाया जाना चाहिए। सर फ़िरोज ख़ाँ नून यह ख़बर सुनते ही बिगड़ खड़े हुए हैं और वाइसराय को सलाह दी है कि पोलखोलक सेठ सुदर्शन तथा ख़बर के देनेवाले पर मुक़दमा चलाना चाहिए। ख़ैर, सरकार मुक़दमा चलायेगी या नहीं लेकिन चुनाव के इस मौके पर ऐसी पोल प्रगट होना सचमुच बड़े खेद की बात है। बेचारे नून साहब चुनाव लड़ने के लिए पंजाब पहुँचे हैं, लीग की ओर से वह उम्मीदवार भी हैं। आज़ाद हिन्द फ़ौज के जिन अफ़सरों पर मुक़दमा चल रहा है, उसमें मुसलमान भी काफ़ी हैं, मुस्लिम लीग मुस्लिम अफ़सरों के पैरवी के लिए भाग-दौड़ भी दिखा रही है, इसलिये यह रहस्य बड़े मौके से प्रकट हुआ? बात यह है कि यह सब गुप्त काम है। क्या नून साहब सरकार के ख़िलाफ़ बाग़ियों पर मुक़दमा चलाने की सलाह न देते तो पूड़ी-हलवा खिलाने के लिए निमंत्रण की सलाह देते? नून साहब सरकार परस्त भी हैं और मुस्लिम लीगर भी, इसलिए उन्होंने अपने कर्तव्य का पालन ही तो किया, और क्या?

* * * *

हिन्दू विश्व-विद्यालय के कोर्ट के अधिवेशन में श्री संपूर्णानंद जी एक प्रस्ताव पेश करनेवाले हैं कि विश्व-विद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी कर दिया जाय साथ ही हिन्दी अध्यापकों को वेतन भी अन्य विभागों के अध्यापकों के अनुरूप दिया जाय। श्री संपूर्णानंद जी का प्रस्ताव तो सचमुच हिन्दू विश्व-विद्यालय के अनुरूप है किंतु क्या विश्व-विद्यालय अपनी पुरानी लीक तोड़ देगा? जब अभी तक पढ़ाई का माध्यम हिन्दी को नहीं बनाया जा सका और हिन्दी अध्यापकों को ऊँचा वेतन नहीं मिला तो आज कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा है जो विश्वविद्यालय ऐसा पुण्य-कार्य करने के लिए आगे बढ़े? पहले हिन्दी राष्ट्र-भाषा तो बन जाय, हिन्दी के अध्यापक, रिसर्च करके और डाक्टर बन-बनाकर टाई, सूट, पेंट से अपने को लैस बना लें तब कहीं कुछ हो तो एक बात भी है। क्या करें बेचारे सर राधाकृष्णन साहब और क्या करे कोई। काम तो बेहतरीन है लेकिन बाबा आदम के जमाने से चली आनेवाली परिपाटी की रक्षा की जाय या हिन्दीवालों की? हिन्दी तो धीरे धीरे होती ही रहेगी लेकिन परिपाटी और लीक टूटी तो जुड़ेगी कैसे——

लीक लीक गाड़ी चले,
लीकहिं चलै सपूत।

* * *

ब्रिटिश राजनीति में चुनाव भी एक बढ़िया पैंतरेबाजी है। अँगरेज आज अपनी पैंतरेबाजी में पूरी तरह से सफल भी हो रहे हैं। कांग्रेस की धाधा के आगे यों ही हिन्दू महासभा बेचारी परेशान रहती है, फिर आजकल तो आजाद हिन्द सेना के आन्दोलन ने और भी कांग्रेस की महिमा बढ़ा दी है, इसलिए हिन्दू महासभा तो चुनाव के मैदान में हो गई है ठप्प! रह गया मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र! इसमें जरूर सिरफुड़ौअल प्रारंभ हो गई है। कई जगहों से खबरें मिली हैं कि मुस्लिम लीगी तथा राष्ट्रीयतावादी मुसलमानों में संघर्ष खुलकर हुआ। बात असल में यह है कि लीग के लीडराने कौम हैं बड़े आदमी, घर से निकलें कैसे, कहाँ जायें और किससे क्या कहें? जन्म भर रहे पर्दे में, आज एकाएक उनका पर्दा कैसे टूटे! और राष्ट्रीयवादी मुसलमानी जमात है पूरी फक्कड़! उसके हल्ले के सामने लीगवाले हैं परेशान! इसलिये अगर लीगी बिगड़ते हैं तो क्या बेजा? कौन परसी थाली अपने आगे से ले जानें देगा? अब तक परसी थाली पर लीगी हाथ साफ करते थे और अब राष्ट्रीय मुसलमान उस पर काबिज होना चाहते हैं। इसलिए द्वंद्व न होगा तो क्या एकता सम्मेलन होगा?

आशा

लेखक, प्रिंसिपल श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०

कवि! निराश क्यों होता तू भी!
जग में दुख की कमी नहीं है,
तू क्यों अधिक निराशा भरता?
तप्त उरों को शीतल कर, कवि!
घावों पर क्यों निमक छिड़कता?
ओस कणों को देख न कह तू,
'तारों के आँसू गिरते हैं!'
वे तो हैं देवों के मोती,
जो नभ-थाली से झरते हैं!
पुष्पों को लखकर क्यों कहता,
'जीवन अस्थिर, चिर-नश्वर है'?
फूल भले ही जीते दिन भर
पर कहते जीवन अक्षर है'!
'जीना' अर्थ नहीं जीवन का,
मरण नहीं है उसका अन्त।
निर्मल, कुसमित, उज्ज्वल, विकसित
जीवन ही आनन्द अनन्त!

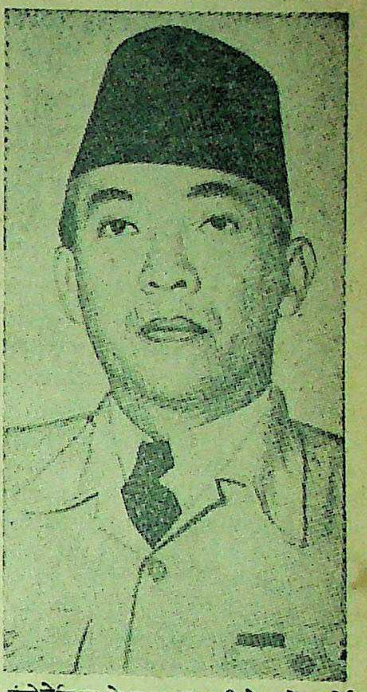

इंडोनेशिया के प्रजातन्त्रवादी नेता सोकार्नो

सोवियट रूस और चीन में जब समझौता हो चुका तब मैडम च्यांगकाई शेक पुनः भली चंगी होकर अमरीका से चुंगकिंग पहुँची थीं। उस मौके पर हमने लिखा था कि चुंगकिंग में उनका पदार्पण भगवान् करे शुभ हो। हमें सचमुच इस वक्त निहायत खुशी है कि अब चीन और कम्यूनिस्टों में फिर जंग जारी हो गया है और चीन को कम्यूनिस्ट होने से बाल बाल बचाने की घोर तपस्या हो रही है। अपने राम यह नहीं कहते कि मैडम च्यांगकाई शेक के पहुँचने से चीनी-कम्यूनिस्ट खुराफात शुरू हुई लेकिन अगर शुरू भी हुई हो तो उसे बेजा क्यों कहा जाय? मैडम च्यांग अमरीका की परम भक्त और फरमाबरदार तो हैं ही, इसे सारा जग जानता है लेकिन सवाल तो यह है कि चीन रूस की गुलामी क्यों करे? जब से चेता तब से सही! समझौता कौन-सी बड़ी बात है। बड़ी बड़ी चीजें टूट जाती हैं, विवाह-बंधन तक मौके पर टूट जाता है, फिर चीन-रूस का कागजी समझौता किस खेत की मूली है? मार्शल च्यांगकाई शेक ने रूस से समझौता करके स्वतंत्र चीन को नकटा बनाने की एक बार कोशिश जरूर की थी लेकिन जान पड़ता है मैडम च्यांग के गुरुमंत्र से उसकी नाक बच जायेगी। पुरुष और स्त्री में यही भेद होता है। स्त्री है भी शक्तिशालिनी, वह पुरुष से तिगुनी नहीं तो दूनी शक्ति तो रखती ही है।

* * *

अमरीका, ब्रिटेन और रूस मित्रराष्ट्र हैं, इस से किसी को इनकार कैसे हो सकता है? लेकिन आज कुछ विचित्र बातें सुनने को मिल रही हैं। वाशिंगटन में अमरीका-ब्रिटेन एटम बम का फैसला कर रहे हैं और बेचारा रूस टुकुर-टुकुर ताक रहा है? इस तरह रूस ने अपनी अलग खिचड़ी पकानी शुरू कर दी है। वह योरोप और एशिया दोनों के बँटवारे में बढ़िया माल हथियाने की ताक में बैठा है। लेकिन अमरीका और ब्रिटेन में भी अफसोस है एका होती नजर नहीं आ रहा है।

सम्पादक का पृष्ठ

मजदूर सरकार किधर !

ब्रिटेन की मजदूर सरकार अब अपने असली रूप में दिखाई देने लगी है। विशेषकर भारत के सम्बन्ध में उसकी नीति चर्चिल सरकार की नीति से बहुत कुछ मिलती-जुलती जान पड़ती है। जब मजदूर सरकार ने ब्रिटेन के चुनाव में विजय प्राप्त की थी तब ब्रिटिश उपनिवेशों में थोड़ी प्रसन्नता अवश्य प्रगट की गई थी क्योंकि टोरी सरकार की कट्टरवादी नीति से एक तो लोग ऊब गये थे, दूसरे युद्ध के बाद शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के लिए वह उपयुक्त नहीं समझी जा सकती थी। इसीलिए मजदूर सरकार के आगमन का स्वागत किया गया और आशा प्रगट की गई कि वह अपने नाम के अनुरूप ब्रिटिश साम्राज्य में ऐसी वैदेशिक नीति का प्रचलन करे जिससे संघर्ष के स्थान पर शान्ति और व्यवस्था की वास्तविक रूप से स्थापना हो। यद्यपि मजदूर सरकार के आगमन पर जहाँ एक ओर प्रसन्नता प्रगट की गई थी, वहाँ दूसरी ओर यह भी कहा गया था कि इस दल को ब्रिटेन के पूंजीपतियों, कट्टरवादियों तथा टोरी-दल के नेताओं का पुछल्ला ही समझना चाहिए। पिछले कई महीने से मजदूर सरकार के क्रिया-कलापों से यह प्रमाणित भी हो रहा है कि उसकी और टोरी-सरकार की नीति में कम से कम भारत के मामले में कोई विशेष अन्तर नहीं है। टोरियों की नीति तो सदा से स्पष्ट रही किन्तु मजदूरों और श्रमजीवियों के नाम पर मजदूर सरकार तो उससे भी गई बीती साबित होने की तयारी कर रही है। डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया के कथनानुसार चर्चिल-एटली अमरी-लारेंस की नीति में समता अधिक दिखाई देती है। इसका सबसे बड़ा प्रमाण ब्रिटेन के वर्तमान मजदूर प्रधान मंत्री मिस्टर एटली का भारत-सम्बन्धी वक्तव्य है जिसे उन्होंने वाशिंगटन रवाना होने के पूर्व दिया था।

प्रधान मन्त्री मिस्टर एटली ने भारत के सम्बन्ध में अपने वक्तव्य में बड़े मार्के के विचार प्रगट किये हैं। मिस्टर एटली के कथनानुसार भारत को स्वाधीनता दी जा रही है किन्तु कोई लेनेवाला ही नहीं दिखाई देता। मिस्टर एटली ने क्रिप्स-प्रस्ताव की भूरि-भूरि प्रशंसा की और कहा है कि भारत ने उसे ठुकरा कर अपनी हानि ही की है। यदि वह उसे स्वीकार कर लेता तो भविष्य में उसे ब्रिटिश उपनिवेश में एक स्वतन्त्र राष्ट्र बनने में अपूर्व सहायता मिलती। इसके सिवा प्रधान मंत्री ने भारत की वर्तमान राजनीतिक दलबन्दियों का उल्लेख करते हुए कहा है कि जब तक भारतीय राजनैतिक दलों में एकता नहीं स्थापित होती तब तक स्वतंत्रता किसके हाथों सौंपी जा सकती है? इसलिए सबसे जरूरी है भारतीय राजनीतिक दलों की एकता। एकमत से यदि भारत ब्रिटेन से स्वाधीनता की माँग करे तो उसे देने में कोई कठिनाई नहीं है। इसी प्रकार के और भी प्रवचन मिस्टर एटली ने भारत को सम्बोधित करते हुए किये हैं, जिन पर मजदूर मंत्रिमंडल की वैदेशिक नीति पर पूरा प्रकाश पड़ता है।

प्रधान मन्त्री का प्रवचन सच पूछा जाय तो नया नहीं है। मिस्टर अमरी तथा मिस्टर चर्चिल के इसी प्रकार के उपदेशों से भारतीयों के हृदयों में एक गांठ-सी पड़ चुकी है और वही बेसुरा राग आज मिस्टर एटली के मुखारविन्द से सुनाई पड़ा है। इससे आश्चर्य तो होता ही है साथ ही दुख भी होता है क्योंकि नाम तो है मजदूर-दल और विचार है टोरी-दल की भाँति।

वास्तव में ब्रिटिश मजदूर-दल का इतिहास हो यह बतलाता है कि वह सदा से ब्रिटिश पूंजीपतियों के हाथ का खिलौना रहा है। ब्रिटेन में आज भी जितने प्रगतिवादी कहलानेवाले दल हैं, उनकी भी नीति दिखाने के लिए जबर्दस्त और प्रजातन्त्रात्मक है किन्तु वास्तविक स्वरूप उनका कुछ और ही है। ब्रिटिश शासन ही इन्हीं की क्रिया-कलापों तथा दलबन्दियों पर स्थिर है। ब्रिटेन के राजनैतिक दल तराज़ू के पलड़े की भाँति हैं। अन्तर्राष्ट्रीय तथा वैदेशिक रीति-नीति की स्थिति के अनुसार वह भी झुकते और उठते और अवसर के अनुसार ब्रिटिश साम्राज्य को सुरक्षित रखने में सहायक सिद्ध होते रहते हैं। ब्रिटेन अपने उपनिवेशों को स्वाधीनता देने के लिए कितना लालायित है, इसका प्रमाण युद्ध के बाद संसार में शान्ति स्थापना करने के कारनामों में स्पष्ट मिल रहा है। योरप की स्थिति को छोड़कर एशिया में तो इसका प्रमाण प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। प्रशान्त महासागर में बर्मा, मलाया, जावा, इंडोनेशियन उपनिवेश स्वतन्त्र होना चाहते हैं किन्तु आज की मजदूर सरकार वहाँ किस प्रकार की नीति का उपयोग कर रही है? क्या वहाँ भी भारत की भाँति दलबन्दी है? या हिन्दू-मुस्लिम समस्या की भाँति वहाँ भी ब्रिटेन को अवसर से लाभ उठाने का वातावरण उपस्थित है? किन्तु सच तो यह है कि ब्रिटेन सचाई से कुछ देना ही नहीं चाहता क्योंकि युद्ध के बाद वह उपनिवेशों से ही तो अपनी क्षतिपूर्ति करने का मार्ग प्रशस्त करेगा? अपने उपनिवेशों की स्वाधीनता के सम्बन्ध में वह कितनी उदारता दिखायेगा उसका अनुमान तो हम लगा ही रहे हैं किन्तु इसके विपरीत वह इंडोनिशिया में प्रजातंत्र दल के विरुद्ध डच साम्राज्यवादियों की सहायता भी कर रहा है। उसके सामने योरोपियन और एशियाई भावनाओं की प्रतिद्वंद्विता आकर खड़ी हुई है। इसीलिए ब्रिटिश नीति डच साम्राज्यवादियों की सहायक बन रही है। आखिर यह सब क्या है? क्या ब्रिटिश मजदूर मंत्रिमंडल की यह नीति उसकी प्रगतिवादिता की द्योतक है? हमारी समझ में वह भी वैदेशिक मामलों में आज वही नीति ग्रहण कर रहा है जिसे टोरी सरकार प्रशस्त कर गई है?

इसलिए मिस्टर एटली ने जो कुछ भी भारत के सम्बन्ध में अपने विचार प्रगट किये हैं वह ब्रिटिश मजदूर-दल के अनुरूप ही हैं। भारत को तो इस मंत्रिमंडल से भी कोई आशा नहीं है। हम पूछते हैं कि जब भारत में राजनीतिक दलबन्दी नेस्तनाबूद होकर एकता स्थापित हो जायेगी तो क्या ब्रिटेन से भारतीय स्वाधीनता माँगने की फिर भी आवश्यकता बाक़ी रहेगी? आज की भारतीय दलबन्दी का श्रेय तो उन ब्रिटिश राजनीतिज्ञों को है जो अपने इसी मायाजाल से सारे संसार को उँगलियों पर नचा रहे हैं। इतने बड़े महायुद्ध पर विजय प्राप्त होने पर भी उसके मित्र अमरीका और रूस को भी उसकी ओर आशंका की निगाह से देखना पड़ रहा है। भारतीय स्वाधीनता तो प्राप्त होगी ही, आज नहीं तो कुछ वर्ष बाद! किन्तु ब्रिटेन की वर्तमान दोरंगी नीति बहुत दिन तक नहीं चल सकती क्योंकि भारत भली भाँति समझ गया है कि स्वाधीनता माँगने से नहीं मिलती, वह तो प्राप्त की जाती है। कांग्रेस भारतीय स्वाधीनता के आन्दोलन में अग्रगण्य है। वह अपने पथ पर अग्रसर है। ब्रिटेन यदि अपनी पुरानी नीति पर ही चलना चाहता है तो उसे सफलता नहीं मिल सकती। वह ज्यों-ज्यों अपनी प्रतिक्रियावादी नीति का परित्याग करके प्रगतिवादी बनता जायेगा त्यों-त्यों उसकी स्थिति और भी दृढ़ होती जायगी, नहीं तो अन्ततोगत्वा परिणाम शुभ प्रगट न होगा। मिस्टर एटली, स्वाधीनता देना चाहते हैं किन्तु कोई लेनेवाला ही नहीं, यह कहकर न तो ब्रिटिश साम्राज्य का भला ही कर रहे हैं और न मजदूर-दल का ही। इसका परिणाम होगा टोरियों के पुनः प्रभुत्व की स्थापना। इसलिए मिस्टर एटली को मजदूर-दल का अस्तित्व रखने के लिए यह जरूरी है कि वह पराधीन उपनिवेशों की स्वाधीनता प्राप्ति के मार्ग में सहायक बने। यही एक सही मार्ग है जो ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा में सहायक सिद्ध होगा और आज संसार में वह जो एक तीसरे दर्जे की शक्ति बन गया है, प्रथम श्रेणी की शक्ति बनने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेगा।

हास-परिहास

दिल्ली में दंगा हो गया। और नगरों में अभी नहीं हुआ यह आश्चर्य का विषय है। आशा है सरकारी जासूस इसका पता लगायेंगे कि और जगह दंगे क्यों नहीं हो रहे हैं?

* * *

श्रीयुत जिन्ना ने बंबई में एक भाषण में कहा कि मैंने यह दावा कभी नहीं किया कि मुसलिम लीग शत-प्रतिशत मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है। इस इसलाम के लिए हम क़ायदे आज़म को बधाई देते हैं। अब यह कहना ही पड़ेगा कि जिन्ना साहब सच भी बोलते हैं। बधाई है।

* * *

श्रीयुत शरतचंद्र वसु ने कहा है कि कम्युनिस्ट देशद्रोही नहीं देश के शत्रु हैं। हम तो समझते हैं कि कम्युनिस्ट कुछ भी नहीं हैं बस सरकार के हथियार हैं।

* * *

किसे ?

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

तुम्हारी याद में आहें हिलाती हैं मेरे दिल को,
चलाती जिस तरह है भाप की ताक़त किसी मिल को।

न पहुँचा पास में उनके हुआ है राह में पंचर,
खड़ा होकर सड़क पर बददुआ देता हूं साइकिल को।

परेशानी बहुत है कुछ समझ में ही नहीं आता,
उन्हें दिल में जगह दूं या जगह दूं दिल में टाइटिल को।

कहा जब काम की कुछ बात उठकर चल दिये फौरन,
भई आते ही चल देते हैं जैसे मनचले बिल को।

सवेरे रोज उठकर सोचता है आजकल बेढब,
किसे वह दाद दें इस वक्त अटली को कि चर्चिल को॥

सर सुलतान अहमद ने रेडियो के डाइरेक्टर जनरल श्री बोखारी का कार्य-काल बढ़ा दिया। उन्हें सदा के लिए वहीं नहीं जमा दिया इसी के लिए उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। बोखारी साहब इस योग्य हैं कि वह जन्म पर्यंत रेडियो के डाइरेक्टर रहें।

* * *

लोगों का कहना है कि सर सु अहमद को इसका अधिकार नहीं यह कौन कहता है? सुल्तान के कार को भी कोई पूछ सकता है। तो अक्षय हैं?

* * *

रूस ने कुछ जापानी दायुओं क़ब्जा कर लिया है। कम्बख्त रोग यूरोप में बेतरह फैल रहा है। और जर्मनी भी इसी रोग से पीड़ि

* * *

श्रीमान् एटली ने एक वक्तव्य में है कि भारत को आज़ादी तो दे वह लेते ही नहीं। भारतवासी भला कैसे ले सकते हैं? आपके में जो सुख तथा शांति मिल रही है कभी आज़ादी में मिल सकती है?

* * *

मौलाना हुसेन अहमद मदनी मुरादाबाद में कहा है कि जिन्ना के सहायक हैं। इस सहायता के यदि भारत में पाकिस्तान न बन इँगलैंड में पाकिस्तान बनाने के लिए आजम बुलाए जाएंगे।

* * *

कहा जाता है कि स्पेन में लोगों ने साज़िश की थी कि को एक दिन मार डाला पड़ता है जनाब श्री जोशी के दोस्त वहाँ भी मौजूद हैं?

* * *

लोगों की शिकायत है कि कर्मचारी चुनाव में हस्तक्षेप इसमें शिकायत की क्या बात है तो अदा करना है। नमकहलाली श्यक है विशेषतः जब सरकार की मालकिन है।

* * *

यू० पी० में तरकारी कारखाने चल रहे थे वे अब बंद उनकी मशीनें बिक रही हैं। ही लोगों के मुंह सूख रहे हैं आवश्यकता है। चुनाव के भी लोगों के मुंह सूखेंगे।

* * *

बरोज महोदय बंगाल होकर आ रहे हैं। पहले आप थे। देखें शासन का कैसा बोझ

फिलिस्तीन की आज की समस्या

यहूदी और अरब राष्ट्रों का यह संघर्ष कब समाप्त होगा ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

योरप में फिलिस्तीन की समस्या आज की एक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन गई है। इस प्रकार यहूदियों और अरबों में एक संघर्ष उत्पन्न हो गया है। अरब नहीं चाहते कि फिलिस्तीन यहूदियों की भूमि बन जाये। अमरीका और ब्रिटेन इस समस्या के सुलझाने की जोड़ तोड़ लगा रहे हैं। इस लेख में योग्य लेखक ने फ़िलिस्तीन की वर्तमान राजनैतिक समस्या का बड़ी सुन्दरता से स्पष्टीकरण किया है और यह सुझाव दिया है यहूदियों और अरबों को आपस में समझौता करके समस्या को सुलझाना चाहिए न कि मित्रराष्ट्रों की सहायता से अथवा बीच-बिचाव से ?

के राष्ट्रपति ट्रूमन जो फिलि-
की समस्या सुलझा रहे हैं।

स्तीन से आनेवाले समाचारों से हुआ है कि इस समय वहाँ अत्यन्त स्थिति उपस्थित हो गई है। और अरब एक दूसरे के खून के कर भयंकर रक्तपात मचाये यह भी समाचार मिला है कि की संरक्षिका ब्रिटिश गवर्नमेंट फौजी दस्ते भेजकर और भी वातावरण पैदा कर रही है। समाचार से विदित हुआ है कि वहाँ का कर्फ़्यू आर्डर लगा हुआ है गरीब दैनिक व्यवसाय रुका-सा

की घटनाओं के प्रति दुनिया की दृष्टि तो लगी है ही लेकिन और अरबों से सहानुभूति हिन्दुस्तान, मिस्र आदि दिखा रहे हैं। अमेरिका और स्वय राष्ट्रपति ट्रूमेन ने लेते हुए उनके फिलिस्तीन ठहराया है और इस विषय प्रधान मन्त्री श्री एटली को लिखा था। हिन्दुस्तान में अरबों नुभूति में कांग्रेस और मुस्लिम होकर अरबों के हितों पर करनेवाली अमेरिका और की तीव्र शब्दों में भर्त्सना की। मौलाना आज़ाद और कांग्रेस कौंसिल ने फिलिस्तीन के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट जनता की तरफ़ से देश में में फिलिस्तीन दिवस मनाये कैरो आदि नगरों में विद्यार्थियों हुए। यहाँ हमें देखना है कि इस स्थिति को पैदा करने में किन शक्तियों का हाथ है ?

का फिलिस्तीन

की समस्या आज की नई में फिलिस्तीन यहूदियों की यरुशलेम उनका पवित्र स्थान साम्राज्य के पतन और तुर्की बढ़ती हुई शक्ति के कारण यहूदी धीरे-धीरे अपने घर और अन्य देशों में जाकर बसने साम्राज्य में अरबों को थीं और यहूदियों के पास सिवाय कोई चारा नहीं था। अरबों ने फिलिस्तीन को बनाया और आज की वह अरबों का ही प्रयत्न की शक्ति क्षीण हो जाने एक तरह से 'अरब थी। पिछले महायुद्ध के अँगरेज़ों की संरक्षता में था। अरबों ने उस लड़ाई मित्रराष्ट्रों की सहायता ब्रिटिश सरकार ने उन्हें वायदा किया था लेकिन दी। उन्होंने यहूदियों को प्रोत्साहन देना आरम्भ किया कि वे फिलिस्तीन में जा बसें। १९४० के "बैलफ़ोर घोषणा" के अनुसार यहूदियों से वायदा किया गया कि उन्हें फिलिस्तीन में उनका "राष्ट्रीय भूमि" (होमलैंड) दी जायेगी। उसके परिणाम-स्वरूप फिलिस्तीन में बड़ी तादाद में यहूदी पहुँचने लगे और ग़रीब अरबों से ज़मीन खरीदने लगे। पिछली लड़ाई शुरू होने तक वहाँ सवा छः लाख से ऊपर कुल आबादी के एक तिहाई हिस्से से ज़्यादा यहूदी पहुँच गये।

यहूदी यद्यपि फिलिस्तीन में एक अल्पमत जमात हैं लेकिन धनी और व्यापारिक मामलों आदि में अरबों से अधिक कुशल होने के कारण अरबों को देश के महत्त्वपूर्ण आर्थिक और औद्योगिक जीवन से निकाल कर उनके लिए संकटस्वरूप बन रहे हैं। फिलिस्तीन की अधिकांश अरब जनता ग़रीब है और वह यहूदी कल-कारखानों और खेतों में कार्य करती है। लेकिन जिस भूमि को यहूदी खरीद लेते हैं वहाँ वे अरब मज़दूरों को काम पर नहीं रखते। अरब मज़दूरों को यहूदियों-द्वारा संचालित मज़दूर सभाओं में हिस्सा नहीं लेने दिया जाता।

फिलिस्तीन का सामरिक महत्त्व

अमेरिका और ब्रिटेन का फिलस्तीन की समस्या में विशेष दिलचस्पी लेना, उनका यहूदियों या अरबों या उनके हितों के प्रति प्रेम नहीं है। फिलिस्तीन हवाई रास्ते में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान पर पड़ता है। यहाँ अनेकों हवाई अड्डे हैं। फिलिस्तीन का मुख्य नगर "हैफ़ा" एक समुद्री फ़ौजी महत्त्व का बन्दरगाह है। ब्रिटेन की दिलचस्पी फिलिस्तीन को अपने हाथ में रखने में यह है कि वह यहाँ से अपने पूर्वी साम्राज्य की खबरदारी कर सकता है। फिलिस्तीन के किसी दूसरे के प्रभाव-क्षेत्र में आ जाने पर, उसके पूर्वी-साम्राज्य पर खतरा आ सकता है। अमेरिका, ब्रिटेन के व्यापारिक और साम्राज्य-वादी स्वार्थ के मुक़ाबिले में 'मध्यपूर्व' में अपने भी पैर जमाना चाहता है और इसके अतिरिक्त एशिया में सोवियट के बढ़ते हुए प्रभाव का मुक़ाबिला करना तो ज़रूरी है ही। राष्ट्रपति ट्रूमेन की एक लाख यहूदियों के फिलिस्तीन-प्रवेश की माँग के पीछे अमेरिका का यही स्वार्थ झाँक रहा है। वे फिलिस्तीन में "यहूदी राष्ट्र" और "यहूदी राष्ट्रीय सरकार" की माँग कर रहे हैं जिससे यहूदी सरकार अमेरिका की संरक्षता में "सौदील-अरेबिया" तेल की "पाइपलाइन" की हिफ़ाजत कर सके। यह भी जान लेना ज़रूरी है कि फिलिस्तीन का महत्त्व इसलिए और भी है कि यहाँ इराक़ से आनेवाले 'तेल के नलों' का केन्द्र-स्थान है।

समस्या की जटिलता

फिलिस्तीन की समस्या के पीछे ब्रिटेन की 'विभाजन और शासन' (डिवाइड ऐण्ड रूल) की नीति काम कर रही है। एक ओर तो वे अरबों को उनकी सेवा के उपलक्ष्य में 'स्वशासन प्रदान' करने की बात कहते हैं और दूसरी ओर उसी सिलसिले में यहूदियों-द्वारा धन आदि की सहायता के बदले में "राष्ट्रीय भूमि" देने का वायदा करते हैं। इस तरह अरब और यहूदियों को एक दूसरे से भिड़ाकर स्वयं अपना प्रभुत्व फिलिस्तीन पर क़ायम रखना चाहते हैं। १९३४ के लगभग फिलिस्तीन में यहूदियों की जन-संख्या आबादी के ८ प्रतिशत से अधिक नहीं थी और अरबों के बढ़ते हुए विरोध को देखकर ब्रिटिश सरकार ने १९३९ में 'श्वेतपत्र' द्वारा यहूदियों के प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी लेकिन फिर भी न जाने कैसे यहूदियों का अनुपात आबादी का ३३½ प्रतिशत तक पहुँच गया? समस्या केवल राजनैतिक नहीं है। आबादी की विभिन्न जातियों की आर्थिक वैषम्यता और विदेशी शासन भी काफ़ी हद तक समस्या को जटिल

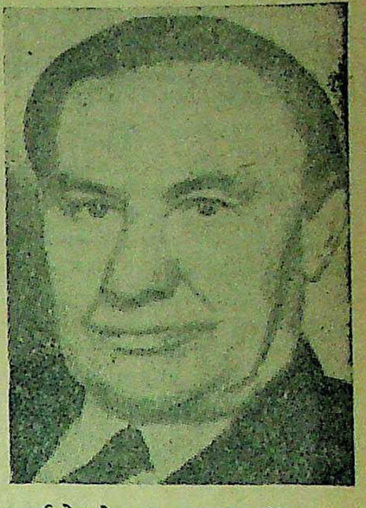

ब्रिटेन के वर्तमान मज़दूर वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन।

बनाने में उत्तरदायी है। कहना तो यह चाहिए कि फ़िलिस्तीन की समस्या साम्राज्य-वादी ब्रिटेन की कुटिल नीति का परिणाम है। उसके कारनामों से न यहूदी सन्तुष्ट हैं और न अरब। यहाँ हमें देखना है कि यहूदी और अरब क्या सोच रहे हैं ?

—शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

प्रश्न

लेखक, प्रोफ़ेसर, इंदुशेखर एम० ए०

यह कैसा व्यापार हृदय का यह कैसा व्यापार !
कभी उमड़ सावन-घन लाते मस्ती का संदेश,
कड़क कड़क कर कभी दामिनी दे जाती है क्लेश;
उजड़ जाता सुख का संसार।
नई उमंगों से खिल उठता अन्तर का मधुमास,
पल में टीस कहीं से उठती करती मौन उदास;
कहीं थक कर सो जाता प्यार।
कभी उतर आता धरती पर स्वप्नों का संसार,
फिर संशय की उठती आँधी मचता हाहाकार;
बिखर जाते अन्तर के तार।
कभी स्नेह का आसव पीकर सुरभित होते श्वास,
किन्तु विपति का धक्का खाकर हिल जाता विश्वास;
विफल हो जीवन लगता भार।
बादल सा कोमल अन्तर यह फूलों सा सुकुमार,
पत्थर बनकर क्यों सह लेता जग के अत्याचार;
न बह पाती नयनों से धार।
क्यों मानस-उपवन में खिलते शत शत कोमल फूल ?
क्रूर काल के एक इशारे से बन जाते धूल।
सभी कुछ है क्या यहाँ असार।

SAKTI OUSHADHA
RITASANJI

पूर्वी देशों में अति प्राचीन
तथा सर्वश्रेष्ठ........

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्त्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है।

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध !
अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति-औषधालय ढाका

AD- SYN. D.S. 1238

आज़ाद हिन्द-सेना क्या है ?

स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए एक सैनिक-संगठन

लेखक, श्री मनमोहन खंडूरी

आजाद हिन्द-सेना का संगठन क्यों हुआ? देशगौरव श्री सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए एक नवीन सैनिक-संगठन क्यों किया, इसका साधारण परिचय इस छोटे से लेख में दिया गया है। आजाद हिन्द-सेना की समस्या आज की भारतीय राजनीति का एक प्रमुख विषय है, इस लेख में आजाद हिन्द-सेना-सम्बन्धी कुछ जानकारी प्राप्त होती है। लेख सामयिक है।

आजाद हिन्द-सेना भारतीय स्वाधीनता की प्राप्ति के लिए एक सैनिक-संगठन था। राष्ट्र-गौरव श्री सुभाष बोस ने इस सेना का संगठन प्रशान्त महासागर के पिछले युद्ध-भूमि में किया था। सुभाष बाबू भारत से एकाएक लुप्त हुए, किसी को कुछ भी पता नहीं चला कि वह कहाँ गये? कुछ दिनों के बाद जर्मन रेडियो से यह पता चला कि वह बर्लिन में हैं। इसके बाद जब जापानी युद्ध का प्राबल्य हुआ तो पता चला कि वह प्रशान्त के युद्धक्षेत्र में आ गये हैं। इसके बाद पता चला कि वह बर्मा में कुछ स्वतन्त्र भारतीय-सैनिकों का संगठन करके भारतीय आजादी के लिए युद्ध-कार्य में संलग्न हैं।

दक्षिणी पूर्वी एशिया के फ़ांसीसी और डच-भूमि को क़ाबू में करने के पश्चात्, जापानियों ने जब जावा, मलाया और सिंगापुर पर भी अधिकार कर लिया तो इन प्रान्तों के भारतीय निवासियों के हृदय में अपने पराधीन भारत को स्वतन्त्र करने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। संसार भर में घटनाओं की तीव्र चाल ने इन देशभक्तों के साहस को और भी प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार भारत को स्वतन्त्र करने की उनकी प्रेरणा बढ़ता गई।

इन सूबों के प्रत्येक कोने में स्वतन्त्र-संघ स्थापित किये गये और एक प्रान्तीय आजाद-हिन्द की सुसंगठित सरकार और उसकी संरक्षता में एक संगठित 'आजाद हिन्द-फ़ौज' की स्थापना भी की गई। वर्तमान सूचनाओं से भली भाँति ज्ञात होता है कि यह आजाद हिन्द-सरकार किसी प्रकार जपानी सरकार की कठपुतली नहीं थी वरन् स्वतन्त्र आजाद-सरकार थी। जिसका एक निश्चित अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम था। यह तो सच है कि वहाँ के भारतीय जनों के अतिरिक्त इस सरकार और सेना में वे भारतीय सिपाही और अफ़सर भी शामिल थे जिन्हें मित्रराष्ट्रों ने एकमात्र दुश्मनों के हाथ छोड़ दिया था।

श्री सुभाषचन्द्र बोस ने बर्मा में हिन्दुस्तानी सैनिकों, नागरिकों और बन्दियों को तिरंगे झण्डे के नीचे इकट्ठा किया। इस संगठन का आधार था सुभाष बाबू का जागृत भाषण! रंगून के प्रसिद्ध म्युनिसिपल हाल में भाषण करते हुए एक दिन उन्होंने कहा—"हम आजादी चाहते हैं और आजादी कुर्बानी माँगती है। मैं ऐसे युवक और युवतियाँ चाहता हूँ जो सिर हथेली पर रखकर काम करें।" श्रोता मुग्ध थे। कण्ठ एक साथ गूंज उठे, हम तैयार हैं......। भीड़ मंच पर इतनी बढ़ गई कि किस-किस का प्रतिज्ञा-पत्र लिया जाय? स्त्री और पुरुष सबने प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये। आजाद हिन्द-फ़ौज में हिन्दू-मुसलमान, छूत-अछूत आदि किसी प्रकार का भेदभाव नहीं था। सेना का संगठन स्वच्छ राष्ट्रीय ढंग पर किया गया था। भंगी तक अच्छे अफ़सरों के पद पर थे। कुछ एक तो उनमें प्लैटून कमाण्डर भी थे। अफ़सर और संतरी नियमानुसार झाड़ू और पाखाने का कार्य स्वयं करते थे। सबका एक सार्वजनिक भोजनालय था जिसमें सुभाष बाबू और साधारण सिपाही भी एक साथ एक ही भोजन पाते थे।

सुभाष बाबू ने स्त्रियों को संगठित करने का काम मद्रास की डाक्टर लक्ष्मीबाई के सुपुर्द किया। इस वीरांगना ने 'रानी झाँसी' नाम की रेजिमेंट में समस्त नारियों को संगठित कर दिया। ब्राह्मणों, व्यापारियों और वैश्यों और शूद्रों तक की कन्याओं और स्त्रियों ने वीर-भेष धारणकर संग्राम में भाग लिया। रानी झाँसी रेजिमेंट राइफल, ब्रेनगन, मशीनगन, टामीगन लिए युद्ध-क्षेत्र में आईं। प्रत्येक वीरांगनायें बोझा उठाकर मीलों कूच करती थीं, जंगली युद्ध भी इन्होंने भली भाँति सीखा। आजाद हिन्द-फ़ौज ने संसार में विशेषकर स्वतंत्रता इच्छुक राष्ट्रों, देशों और प्रान्तों के सामने उदाहरण स्थापित किया है। सुभाष बाबू की कृपा से दक्षिण-पूर्वी एशिया के भारतीयों ने पूर्ण स्वतन्त्रता के दर्शन किये थे।

आजाद हिन्द-सरकार का आजाद हिन्द-बैंक भी था। सुभाष बाबू की एक आवाज पर बर्मा के हिन्दू-मुसलमानों ने ५० लाख रुपया इकट्ठा किया और बर्मी-सरकार के कानून के अनुसार बैंक रजिस्टर्ड हुआ। उस पर बर्मी सरकार की मोहर लगी हुई है। बैंक की तीन शाखायें खुलीं। सुभाष बाबू प्रधान सेनापति की पोशाक पहन विपरीत मौसम का विचार न कर पानी और कड़ाके की धूप में लगातार चार-चार घंटे बोलते थे। सुननेवाले भी स्तब्ध रहते थे। भाषणों के बीच उन्हें जो चीज़ें उपहार में मिलतीं वह बाद में नीलाम की जाती थीं। उनका हार एक बार चार लाख में बिका और फिर कई लाख में सब हार एक और ने खरीद लिए। ५० लाख से अधिक उन्होंने एक दिन में इकट्ठे किये। हाँ, आजाद हिन्द-फ़ौज की स्थिति शस्त्र-बल से इतनी संतोषजनक नहीं थी।

निश्चयरूप से अधिकार पूर्वक हम कह सकते हैं कि सुभाष बाबू हृदय से जापानियों को भारत-भूमि में पग भी नहीं रखने देना चाहते थे। वह तो जापानियों को स्वयं बर्मा से भी दूर करने के फ़िराक़ में थे। हांगकांग केन्द्र-स्थान था जहाँ से वे सावधानी के साथ प्रत्येक पहलुओं तथा स्थितियों पर भली भाँति विचार कर सकें। आजाद हिन्द-फ़ौज और उसके रहनुमा देशभक्त थे इसे कोई इनकार नहीं कर सकता। भर्ती होने से पहले उनके प्रतिज्ञापत्र ही इस प्रकार थे—"मैं अपनी पूर्ण हार्दिक इच्छा और कर्तव्य समझकर आजाद हिन्द-सेना में भर्ती होता हूँ। मैं अपना सर्वस्व, अपने को भारत के चरणों में अर्पण करता हूँ और उसकी स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए अपने प्राणों को निछावर करता हूँ। भरसक यहाँ तक की जान की बाजी लगाकर मैं भारत माँ और भारतीय स्वाधीनता के लिए तैयार हूँ। देश की सेवा करते समय मेरा निजी कोई स्वार्थ न रहेगा। सभी भारतीयों को मैं अपना भाई और बहन समझूँगा और किसी धर्म, मत, भाषा और प्रान्तीयता आदि का विचार न रक्खूँगा।"

अपने 'नेता' श्री सुभाष बोस पर इन्हें पूर्ण विश्वास था। रेजिमेंटों का नाम भी गांधी जवाहर और आजाद के नाम पर रखे गये थे। सेना का सलाम 'जयहिन्द' से होता था। क़रीब ८ करोड़ रुपया इकट्ठा किया गया था। परन्तु भोजन और उचित सामग्रियों के लाने-ले जाने की इतनी असुविधायें थीं कि कई बार इन देशभक्तों को पत्तों पर अपना जीवन-यापन करना पड़ा, जब कि उनके सामने इधर मित्रराष्ट्रीय सेनायें हवाई जहाज़ों से ख़ूब रसद प्राप्त रही थीं। इन वीर सेनानियों के बलिदान का अनुमान लगाते हुए कहा गया है कि वीर कैप्टेन शाहनवाज़ के परिवार के ६२ लोग ब्रिटिश भारतीय सेना में थे और एक बार तो बर्मा मोर्चे पर उनके भाई ही उनके विरुद्ध सेना में लड़ रहे थे।

लड़ाई का पासा पल्टा। ऐटम बम तैयार हुआ। इस बम का सहारा लेकर मित्रराष्ट्रों ने क्षण में जापानियों पर भी अधिकार कर लिया। अब बर्मा, मलाया आदि सभी उनके हाथ आ गये। अँगरेज़ों ने आजाद भारत की सेना और उसके परिवार को बन्दी बनाया। कुछ गिनती नहीं अन्य आजाद हिन्द-सैनिकों का क्या हुआ? भारतीय कांग्रेस इसकी खोज में है। आज हजारों की संख्या में कुछ बन्दी मलाया, बर्मा में हैं और कुछ भारत-भूमि में। ब्रिटिश सरकार ने इनके अफ़सरों पर अपराध लगाया है जिसके परिणामस्वरूप तीन अफ़सरों के विरुद्ध फ़ौजीअदालत-द्वारा मुक़दमा शुरू हो गया है। भारत के कोने से आवाज़ आ रही है—आज़ाद हिन्द-फ़ौज को छोड़ दो, दिल्ली का लाल क़िला तोड़ दो। (जहां ये वीर योद्धा बन्दी हैं) इन बहादुरों पर बादशाह के विरुद्ध लड़ाई करने, चार भारतीय सैनिकों को दुश्मन के साथ मिलने अर्थात् ब्रिटिश-सेनाओं से मिलने पर मार डालने आदि अभियोग लगाये गये हैं।

कहा जाता है कि १,५०० अफ़सर और ४०,००० सैनिकों से आज़ाद हिन्द-फ़ौज सुसज्जित थी। इनकी इच्छा इसे ३,००,००० बढ़ाने की थी और वह शीघ्र तैयार भी हो जाती यदि सुविधायें प्राप्त होतीं। सभी ने भारत को मुक्त या आज़ाद करने का दम भरा था। 'दिल्ली चलो' 'प्राचीन दिल्ली के लाल क़िले में विजय-उत्सव मनायें' यही इनके नारे थे।

अब तीन सैनिक अफ़सरों का, ५ नवम्बर

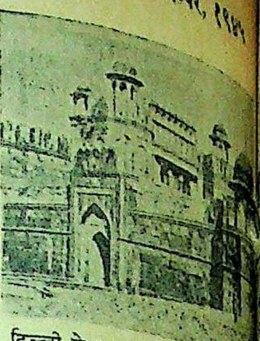

दिल्ली के लाल किले का एक दृश्य।
किले में आजाद हिन्द-सेना के
कैद हैं और उन पर कोर्ट
मुकदमा चलाया जा रहा है।

से दिल्ली के लाल क़िले में उनके
का फ़ैसला होना शुरू हो गया है।
ऐतिहासिक स्थान है जिसे ३०० वर्ष
शाहजहाँ ने बनाया था। सन्
यही स्काटिश डाक्टर गेबरिल
बादशाह फ़ारुख़शेर का इलाज
और इस ख़ुशी में उन्हें हुगली के
३८ शहरों पर कम्पनियाँ स्थापित
आज्ञा मिली थी जो फ़ोर्ट विलियम
स्थापना का कारण था। यही
१८५७ में भयानक भारतीय
ग़दर का जन्मस्थान था जहाँ से
को हिन्दुस्तान के तख्त का दूसरा
क़रार दिया गया था। आज
ऐतिहासिक लाल क़िले में
के इन क़ैदियों का फ़ैसला होने जा
देश चिल्ला रहा है, इन आज़ाद
सैनिकों को अपने बीच देखने को
है। पंडित जवाहरलाल नेहरू और
देशभक्त नेता, हिन्दू, मुसलमान
ईसाइयों का दावा है कि यदि
लालों का बाल भी बाँका हुआ

भारतीय कांग्रेस ने अपने
इन सैनिकों की पैरवी करने की
ली है। सर्वश्री नेहरू जी,
आसफअली और रघुनन्दन
कमेटी के मेम्बर हैं।

पुनर्जीवन प्रदान करना

एक समस्या है?

इसके लिए एक विश्वस्त
तथा
सरल उपाय जा बताया जाता है वह है—

बाई–एडोल

BI-ADOL

यह कोमल बालकों के शरीर की गठन में प्रकृति की सहायता करता है।

यह माता को स्वस्थ और स्फूर्त्तियुक्त रखता है।

सूखा रोग से बालकों को मुक्त करता है।

बाई-एडोल

यह एक वनस्पति रोग़न और विटामिन ए और डी से तैयार
किया हुआ है और शिशु-रोग, क्षयी-रोग तथा
अन्य क्षयकारक रोगों में उतना लाभ-
दायक है जितना श्वास-सम्बन्धी
तथा अन्य संक्रामक
रोगों में।

तमाम अच्छे औषधि विक्रेताओं से प्राप्य

बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

देशरत्न राजेन्द्र बाबू के साथ

नाव के दौरे में साथ रहकर मैंने क्या देखा ?

लेखक, श्री ओंकारनाथ शरद

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद आज-कल बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में आगामी सम्बन्धी दौरा कर रहे हैं। पिछले मास के अन्तिम सप्ताह में उन्होंने छोटा- पुर, राँची आदि का दौरा किया था। इस लेख के नवयुवक लेखक पूज्य राजेन्द्र आज्ञा से उनके चुनाव के दौरे में साथ रहे हैं। इस लेख में लेखक ने बाबू के सम्बन्ध में अपने अनुभव व्यक्त किये हैं जिससे उनके सज्जनता, सरलता और महान् व्यक्तित्व पर सुन्दर प्रकाश पड़ता है। लेख अत्यन्त सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

मंडल के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री री श्री श्रीकृष्ण सिनहा।

पुर का दौरा करते हुए न्द्रप्रसाद जी डाल्टनगंज द्र बाबू राष्ट्र के अधिकार के प्राण। हजारों की तादाद की भोली-भाली जनता अपने त को खड़ी थी। हरएक उमंग थी, अंग-अंग फड़क हाथों में हार और फूल। द्र बाबू की जयजयकार थी। बाबू मोटर से आयेंगे। सो जो दूर से पेड़ों के बीच नाचती दिखाई पड़ती कि जनता तैयार जय बोलने को, अपने प्रिय नेता त करने को। थोड़ी देर बाद बू को लिये उनकी लाल मोटर थ में थे आपके निजी मन्त्री श्री कुछ कांग्रेसी कार्यकर्ता और सिंह। ये मथुरा बाबू, के साथ कहीं भी कभी भी देखे हैं। घर में, बाहर भी। सभा में, पढ़ने में, वर्षा में। ये मथुरा बाबू । राजेन्द्र बाबू की छाया हैं। बूढ़े लगाये हुए खद्दर का कुर्ता और किये। सिर पर सफ़ेद गांधी सदा अस्त-व्यस्त रहती है और छोटे-छोटे खिचड़ी बाल टोपी से झाँकते हुए। राजेन्द्र बाबू का लिखने-पढ़ने का काम आप ही । इससे राजेन्द्र बाबू को आपसे यता मिलती है। राजेन्द्र बाबू से लिए अच्छा होता है कि पहले ही मिल लिया जाया करे। आपकी बहुत अच्छी है।

मी राजेन्द्र बाबू आये। जनता कर उठी पर तुरन्त ही उसे । राजेन्द्र बाबू उस दिन शान थे। दिन भर में दो चुका था। उनकी इच्छा शान्त रहें। इस पर फिर चिल्लाया। पर चुप रहने में कष्ट हुआ शायद यह भी गये। पर इस कमजोरी आपने हाथ जोड़कर भीड़ को अभिवादन किया। दर्शन पाकर जनता धन्य हो गई।

लम्बा-चौड़ा डील-डौल। साँवला रंग, बड़ी-बड़ी साधारण खिचड़ी मूंछें। सफ़ेद खादी की धोती, ऊपर से कुरता और उसके ऊपर एक जवाहर बण्डी। सिर पर उज्ज्वल गांधी टोपी। राजेन्द्र बाबू एक औसत दर्जे के भारतीय हैं। रंग में, रूप में, पहनाव-ओढ़ाव में। सरलता की मूर्ति हैं। गांधी जी के पक्के चेले हैं। जनता ने जय-जय कार करके आकाश गुंजा दिया। राजेन्द्र बाबू मुस्करा पड़े। प्रोत्साहन पाकर जनता ने अपने नेता को, देवता स्वरूप नेता को फूल-मालाओं से ढँक दिया।

* * *

मैंने लगभग एक महीने पहले राजेन्द्र बाबू को देखा था। इलाहाबाद स्टेशन पर जब आप बम्बई से पटने लौट रहे थे। तब तो आप काफी अच्छे थे पर इस बार देखा तो जी धक् से हो गया। इतने कमजोर हो गये राजेन्द्र बाबू। ओफ़! आप दमा के रोगी हैं तो क्या दमा राजेन्द्र बाबू को बेकार ही करके छोड़ेगा? बातें करते-करते आप खाँसना जो शुरू करते हैं तो मिनटों तक खाँसते रह जाते हैं। दो पग भी चलते हैं कि कलेजा पकड़कर खड़े हो जाते हैं। उस दिन सुबह शौच से लौटे तो उतना ही चलना बुरा हो गया। खाँसते-खाँसते आप चौकी पर धम्म से बैठ गये। पर धन्य हैं राजेन्द्र बाबू! जो अस्वस्थता की इस सीमा पर भी देश के लिए, ग़रीब किसानों के लिए जान की बाजी लगाये सब काम करते रहते हैं।

सुबह से ही मिलनेवालों का ताँता लगा रहा। अस्वस्थता के कारण लोगों का मिलना हम लोगों को बुरा लग रहा था पर राजेन्द्र बाबू बिलकुल न उकताये। यहाँ तक कि ग्यारह बज गये। उन्हें दाढ़ी बनवानी थी। बनवाना शुरू किया पर लोगों से बातें करते रहे। शायद किसी का दिल दुखाना आपने जाना ही नहीं है। मैंने केवल एक बार कहा था। राजेन्द्र बाबू के हाथ का कता सूत चाहता था। आपने बिना संकोच के एक घुण्डी दिला दी। आप बड़े हास्य-प्रिय भी हैं। इसका अनुभव हमें तभी ही हुआ। सूत देते समय आपने कहा—"पर आजकल जानते हो सूत कितना महँगा है?" और मुस्करा पड़े। वहाँ उपस्थित सभी लोग हँस पड़े। पर उनकी उस हँसी की ओट में हमने देखा कि वस्त्र के इस अकाल की राजेन्द्र बाबू को कितनी फ़िक्र है।

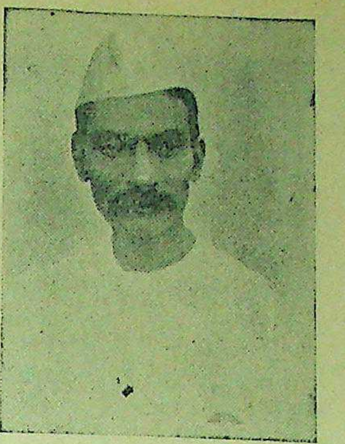

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी अस्वस्थ होते हुए भी चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवारों की सफलता के लिए बिहार के विभिन्न शहरों और गाँवों का दौरा कर रहे हैं।

सरलता का एक नमूना और। शाम को एक सभा से लौटे। कुछ थक गये थे। इसलिए आरामकुर्सी पर आधे लेटे से बैठे थे। तभी जाने क्या सूझा कि मेरी ओर घूमकर आपने पूछा—"तुम्हारा नाम ओंकारनाथ है पर यह 'शरद' के माने क्या?"

"मैं शरदपूनो को पैदा हुआ था इसीलिए शरद लिखता हूँ।"

"अच्छा!" कहकर आप जाने क्यों हँस पड़े।

"मैं आपकी दिनचर्या लिखूंगा।" मैंने कहा।

"मेरी दिनचर्या का क्या लिखना?"

"क्यों! छत्तीस घंटे रहने का लाभ उठाना चाहता हूँ।"

"ठीक है जो चाहो लिखो। लिखने-पढ़ने की मेरी ओर से पूरी आजादी है। जो चाहो लिखो।"

इसके बाद आपने खाना खाया। खाना आपका बड़ा सूक्ष्म और सादा होता है। सादी रोटी, सादी दाल, उबाली और भूनी हुई तरकारियाँ बस यही है हमारे प्रिय नेता का भोजन। हम भारतीयों को अब सोचना चाहिए कि सूखी रोटी और दाल खाकर अस्वस्थता में बीमारी की दशा में हमारा नेता हमारे लिए अपना सब कुछ निछावर करता है और उसके बदले में हम क्या देते हैं उसे?

मैंने पूछा—"बाबू आपकी पुस्तक तैयार हुई?"

"कौन सी?"

"आप अपनी जो जीवनी लिख रहे थे सो।"

"अरे उसके पूरे होने की क्या बात? देखो कितने व्यस्त रहते हैं।"

ठीक है ऐसी व्यस्तता में किताब लिखने की राजेन्द्र बाबू को कहाँ फ़ुर्सत? लेकिन हमने फिर पूछा—"कब तक समाप्त होगी।"

"जीवनी की कौन-सी जल्दी?"

आगे मैं कुछ कह-सुन न सका। राजेन्द्र बाबू का व्यक्तित्व ही हमारे लिए एक पुस्तक है जिसका अध्ययन आवश्यक है। यों तो देखने में राजेन्द्र बाबू बहुत साधारण हैं पर उनको समझना कठिन है। महापुरुषों का जीवन ही ऐसा होता है।

राजेन्द्र बाबू सभा में—

सत्रह हजार की भीड़ थी। छोटे से शहर के लिए यह सत्रह हजार की भीड़ एक अनहोनी-सी बात थी। राजेन्द्र बाबू आधे घंटे बोले। जनता ने उपदेश सुने। राजेन्द्र बाबू ने पलामू जिला से पाँच हजार रुपये की अपील की थी। राजनैतिक बन्दियों के पीड़ित परिवार के वास्ते। पर, जनता ने आँख मूंदकर दिया जितना हो सका। राजेन्द्र बाबू माँगें और जनता न दे? भारतीयों को तो धन्य होना चाहिए अगर वे राजेन्द्र बाबू को अपना सिर दे सकें। एक महिला ने अपनी अँगूठी राजेन्द्र बाबू को दी। सभा के बाद राजेन्द्र बाबू ने उसे नीलाम किया। सबों ने अपनी शक्ति आजमाई। पर बोली तोड़ी उसी महिला के लड़के ने १०१) पर।

इसी तरह की अनेकों घटनायें सदा ही राजेन्द्र बाबू के साथ घटा करती हैं।

चक्रधरसिंह

महात्मा गांधी स्वर्गीय महादेव भाई को बहुत प्यार करते थे। पुत्रवत् मानते थे। शायद सदा साथ रहने का कुछ ऐसा ही असर होता है। हर महापुरुष को अपने निजी मन्त्री प्रिय होते हैं। यही बात राजेन्द्र बाबू के साथ है। चक्रधरसिंह को वे बहुत प्यार करते हैं। मेरे एक मित्र जो पिछले आन्दोलन में पटना कैम्प जेल में थे बताया कि जब सन् १९४४ में राजेन्द्र बाबू चक्रधरसिंह के साथ बाँकीपुर जेल में थे तभी नारे आदि अधिक लगाने के कारण चक्रधर बाबू को 'सी' क्लास का क़ैदी बनाकर पटना कैम्प जेल भेज दिया गया। उनका जाना राजेन्द्र बाबू को अच्छा न लगा और लगता भी कैसे? राजेन्द्र बाबू को यह सूनापन खल गया। तब उनकी यह दशा हो गई थी कि पागलों से आप जेल में घूम-घूमकर अन्य क़ैदी साथियों से पूछते थे।

"क्यों जी! क्या चक्रधर ने सचमुच कोई अपराध किया था? क्या उसे यह सजा जो मिली है उचित है? लेकिन हम जानते हैं चक्रधर ने ऐसा कुछ बुरा नहीं किया।"

काश राजेन्द्र बाबू के इस व्यथा की कोई दवा होती। अगर कोई क़ैदी साथी उत्तर देता।

"नहीं बाबू चक्रधर ने कुछ नहीं किया था, उन्हें यह सजा ग़लत मिली है।" तब राजेन्द्र बाबू के हृदय को चीरकर यह सत्य आवाज निकली थी—"यह सरकार बड़ी ज़ल्मी है।" मेरे मित्र ने तो यहाँ तक कहा कि राजेन्द्र बाबू की वह दशा ठीक वैसी ही थी जैसे गाय अपने बछड़े के लिए व्याकुल हो उठती है। इतना है राजेन्द्र बाबू को चक्रधर के लिए प्रेम।

यह तो केवल एक घटना है पर इनका घनिष्ठ सम्बन्ध तो उन्हें ही मालूम है जो कुछ दिन राजेन्द्र बाबू के साथ रहे हैं।

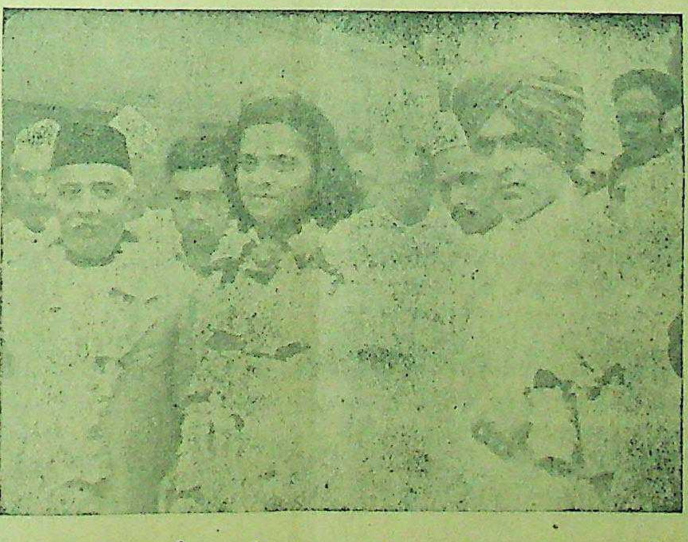

अखिल भारतीय फारवर्ड ब्लाक के कोषाध्यक्ष श्री सत्यनारायण बजाज का, सिवनी जेल से चार वर्ष की सज़ा से छूटने के बाद, वर्धा में स्वागत। श्री सत्यनारायण जी बजाज-परिवार के एक सक्रिय राष्ट्रीय कार्यकर्ता हैं।

संपादक के नाम चिट्ठियां

डाक्टर श्यामसुन्दर पुरस्कार

रायबहादुर डा० श्यामसुन्दरदास जी के निधन से हिन्दी भाषा और साहित्य तथा देवनागरी लिपि पर से रक्षा का एक बलवान हाथ उठ गया। स्वर्गीय डाक्टर महोदय उन इने-गिने निष्ठावान मनीषियों में से थे जिन्होंने हिन्दी-नागरी के लिए अपना संपूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिया। काशी नागरीप्रचारिणी-सभा के तो वे जन्मदाता, पालनकर्त्ता, सर्वस्व थे।

सभा के रूप में वे अपना अत्यन्त दृढ़ स्मारक छोड़ गये हैं। तथापि यह हिन्दी भाषा-भाषी मात्र का कर्त्तव्य है कि उनके अत्यन्त प्रिय कार्य—हिन्दी भाषा तथा साहित्य एवं देवनागरी लिपि के प्रचार और उन्नति—में यथाशक्ति योग देकर उसे आगे बढ़ायें। प्रसन्नता की बात है कि काशी में एक पुस्तकालय भी उनकी स्मृति में स्थापित होने जा रहा है तथा एक विद्यालय का संघटन भी उनके नाम से किये जाने का आयोजन हो रहा है। सभा ने स्वयं यह निश्चय किया है कि १०००) तथा २००) के दो पुरस्कार प्रति चौथे वर्ष उनकी पुण्य-स्मृति में दिये जाया करें जिनका क्रम इस प्रकार होगा—

(१) १०००) का एक पुरस्कार संवत २००५ से प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा।

(२) २००) का एक पुरस्कार संवत् २००३ से प्रति चौथे वर्ष ऐसे लेखक की सर्वश्रेष्ठ कृति पर दिया जायगा जिनकी मातृभाषा हिन्दी न हो तथा जो प्रधानतः अहिन्दी भाषी प्रान्त में निवास करते हों।

इन दोनों पुरस्कारों के लिए सभा को १००००) की स्थायी निधि संकलित करनी है। सर्वप्रथम दिये जानेवाले दोनों पुरस्कार सभा ने अपनी साधारण आय में से देना निश्चित किया है। इस बीच स्थायी निधि के १००००) संचित कर लेने हैं। प्रत्येक हिन्दी भाषी तथा प्रत्येक हिन्दी-प्रचारिणी संस्था से सभा का आग्रह है कि वह हिन्दी के उस परम संरक्षक के निमित्त किये जानेवाले इस सदनुष्ठान में यथासाध्य अधिक से अधिक आर्थिक योग स्वयं देकर तथा अपने इष्ट-मित्रों से दिलाकर इसकी पूर्ति में सहायक हों। इससे हिन्दी के उच्च कोटि के लेखकों का उत्साहवर्धन होकर उत्तमोत्तम ग्रन्थों के प्रणयन को प्रेरणा मिलेगी और दिवंगतात्मा का परम प्रिय कार्य निरन्तर आगे बढ़ता रहेगा। आशा है स्वर्गीय डाक्टर महोदय के भक्तों और परिचितों को यह आयोजन रुचिकर होगा और वे इसके लिए अधिक से अधिक आर्थिक योग देकर और दिलाकर शीघ्र १००००) की स्थायी निधि संचित करने में सहायक होंगे।

नागरीप्रचारिणी-सभा—रामनारायण मिश्र
काशी प्रधान मंत्री

❀ ❀ ❀

राजनीति और पत्रकारिता

जनता के मन पर किसी विशेष वाद या सिद्धान्तों की छाप बिठाने के लिए और उन्हें अपनी समझ से सही रास्ते पर चलाने के लिए राजनीतिक दाँव-पेचों की जरूरत होती है। जब तक राजनीति का अस्तित्व है तब तक दल भी रहेंगे और जब तक दलों का अस्तित्व है तब तक विरोध होना भी अनिवार्य है। यह सब सही है, किन्तु प्रसिद्ध टॉमस कार्लाइल के शब्दों में, दूसरे दल या व्यक्ति को समझने की चेष्टा करना कहीं अधिक बुद्धिमानी और योग्यता का काम है। इस सत्य से कौन इनकार कर सकता है कि भारतीय श्रमिक वर्ग आज उस स्थिति में नहीं है जिसमें होना चाहिए। कम से कम उसकी वह अवस्था नहीं है जो अन्य प्रगतिशील देशों के साथ क़दम मिलाकर चल पाने के लिए जरूरी है। हमें अपने श्रमिक वर्ग को कहीं उँचे स्तर पर ले आना है। इस दिशा में जो प्रयत्न होंगे वह भी प्रशंसनीय हैं किन्तु जो व्यक्ति किसी ख़ास पार्टी का नहीं है उसके हर काम में कोई न कोई अर्थ ढूंढ़ना और इस प्रकार सस्ती वाहवाही लूटना न तो बहादुरी है और न शुद्ध राजनीति।

गांधी-जयन्ती के अवसर पर लक्ष्मीरतन कॉटन मिल्स में मजदूरों को तिरंगे झंडे बाँटे गये थे। कुछ अख़बारवालों ने इस घटना में विशेष रस लिया है, यहाँ तक कि मिल और उसके चेयरमेन लाला रामरतन जी गुप्त को इस सिलसिले में बदनाम करने की चेष्टा की है। मैं स्वयं उक्त मिल का एक कर्मचारी हूँ और अपना यह कर्त्तव्य समझता हूँ कि इस निर्मूल दोषारोपण का खण्डन करूँ। विस्तृत रूप से कुछ न लिखकर मैं उन आलोचकों को इतना ही बता देना चाहता हूँ कि झंडे कर्मचारियों ने स्वयं ही बाँटने तय किये थे और इसका समूचा व्यय भी उन्हीं ने उठाया था। मैनेजमेंट का इसमें कोई हाथ नहीं था जैसा कि बम्बई के 'लोकयुद्ध' में छपा है। रोमांचकता अच्छी चीज़ है पर पत्रकारिता और राजनीति के स्पष्ट पथ पर उसे हस्तक्षेप न करना चाहिए।

कानपुर —सर्वदानन्द वर्मा

❀ ❀ ❀

दशमिक सिक्कों का नामकरण

भारत-सरकार सिक्कों की वर्तमान पद्धति में परिवर्तन करके देश में दशमिक पद्धति के सिक्के चलाना चाहती है, इस पद्धति के अनुसार १०० सेंट का एक रुपया होगा। भारतीय जनता पर यह विदेशी शब्द "सेंट" अनावश्यक रूप से लाद न दिया जाय, इसके प्रतिकार का उपाय भारतीय जनता को अविलम्ब करना चाहिए, इसके अतिरिक्त सिक्कों में कुछ और सुधार भी आवश्यक हैं जिनका प्रस्ताव बहुत जोरदार समर्थन के साथ भारत-सरकार के अर्थ-विभाग के समक्ष उपस्थित किया जाना चाहिए। एक तो सिक्कों अठन्नी, चवन्नी पर से भारत के प्रतीक कमल के अतिरिक्त अन्यान्य देशों के प्रतीक चिन्ह जैसे स्काटलैंड का थिएल, आयरलैंड का शैमराक तथा इँगलैंड का गुलाब, हटा दिये जाने चाहिए, दूसरे देश का नाम "भारत" अथवा "भारतवर्ष" दिया जाना चाहिए तथा देवनागरी अंकों में देशव्यापी विक्रम संवत् का उल्लेख होना चाहिए।

इस संबंध में यह बात विचारणीय है कि सिंहल में जहाँ सिक्कों की अशमिक पद्धति प्रचलित है, तामिल भाषा-भाषी जनता 'सेंट' के लिए 'शतम' शब्द का प्रयोग करती है तथा सिंहली भाषा-भाषी उसे 'सियस' कहते हैं। सिंहली भाषा का 'सियस' शब्द, हिन्दी के 'सै' वा 'सौ' के समान ही, संस्कृत 'शतम' का तद्भव रूप है, नेपाल और मलय की जनता ने तो 'सेंट' को पूछा तक नहीं, वह पूर्वप्रचलित 'पैसा' से ही अपना काम चलाती है।

काशी नागरीप्रचारिणी-सभा की प्रबंध-समिति ने अपने गत अधिवेशन में भारत-सरकार के अर्थ-विभाग के समक्ष निम्नलिखित प्रस्ताव उपस्थित करने का निश्चय किया है, आशा है हिन्दी-प्रेमी सज्जन तथा हिन्दी-प्रचारिणी भी भारतीय संस्कृति की पोषक संस्थाएँ इससे सहमत होंगी और इन प्रस्तावों का समर्थन करते हुए भारत-सरकार के अर्थ-सदस्य के पास अविलंब अपनी सम्मति भेज देंगी—रुपये के सौवें भाग का नाम 'शती' रखा जाय, रुपये पर भारत का प्रतीक केवल कमल रहे, अन्यान्य देशों के चिह्न न रखे जायँ। देश का नाम 'भारत' अथवा 'भारतवर्ष' अंकित किया जाय। नागरी अंकों में विक्रम संवत का उल्लेख हो।

नागरीप्रचारिणी- रामनारायण मिश्र
सभा, काशी प्रधान मंत्री

भारतीय नृत्य और संगीत

भारत नृत्यकला मंदिर दिल्ली के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर

हम उस जाति के प्रतिनिधि हैं और उस धरती के अंकुर हैं, जिसने संसार में सबसे पहले—जब यूरोप के लोग भेड़ें ही चरा रहे थे—संगीत और नृत्य का आविष्कार किया और आविष्कार करके ही वे नहीं रुके, उसे जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। हमारे त्योहारों, उत्सवों, संस्कारों और पर्वों पर गीत छाये हुए हैं। हमारे परिवारों की रानियाँ, मातायें और बेटियाँ बिना गीत के न झूला झूल सकती हैं, न चक्की चला सकती हैं, न सूत कात सकती हैं।

हमारी संस्कृति की यह कितनी महानता है कि हजारों वर्षों की ऐतिहासिक उथल-पुथल के बीच भी संगीत की सरिता निरन्तर बहती और हमारे भीतरी जीवन को आनन्दमय करती रही। यहाँ हम यह नहीं भूल सकते कि इस सरिता से बहुत सी नहरें निकलीं, जिन्होंने हमारे नागरिक और ऊँचे वर्ग के जीवन को उपजाऊ बनाया। इन नहरों का निर्माण सामगायक ऋषियों, भगवान् शंकर से देवताओं, कालिदास से नाटककारों, तानसेन से संगीत शास्त्रियों और बाबा हरिदास से सन्तों ने किया। यह संगीत का शास्त्रीय रूप था। देश की लम्बी उथल-पुथल में यह रूप बहुत कुछ नष्ट हो गया। म० विष्णु दिगम्बर ने इसके पुनर्निर्माण की नींव रक्खी और कलाकार-शिरोमणि श्री ओंकारनाथ जी ने उसे विश्वव्यापी यश दिया।

यही स्थिति हमारी नृत्यकला की हुई। इस दिशा में श्री उदयशंकर आज हमारे विश्वख्याती के कलाकार हैं। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के व्यक्तित्व का बल हमारी इन दोनों कलाओं को मिला और फलस्वरूप आज फिर से हमारे परिवारों का वातावरण मुखरित हो उठा है।

कलाकार श्री ओंकारनाथ ठाकुर ने कुछ वर्ष हुए लन्दन में अपने अभिनन्दन का उत्तर देते हुए कहा था कि "पश्चिम का संगीत स्वरप्रधान है और भारत का संगीत भावप्रधान। भारतीय संगीत में भावनाओं के प्रेरक जो तत्त्व हैं, वे मुझे संसार के संगीत में और कहीं नहीं मिले।" सच्चाई यह है कि हमारे संगीत का आधार वैज्ञानिक है और हमारे देश में संगीत और नृत्य, न तो कोरे मनोरंजन हैं, न शौक़ ही, जीवन की साधना के अंग हैं, भक्ति के—विराट् के प्रति लघु के आत्मोत्सर्ग के—वाहन हैं और यही कारण है कि वे हमारे लिए आकर्षक ही नहीं हैं पूजा-सामग्री के रूप में पवित्र भी हैं।

श्रीमती चंद्रवती ऋषभसैन जैन।

जो लोग नृत्य और संगीत या दूसरी कलाओं की साधना और प्रचार कर रहे हैं, वे निश्चय ही हमारे राष्ट्र के पुनर्निर्माण के भागीदार हैं और उनके काम का महत्त्व राजनैतिक नेताओं के काम की तरह ही है। मुझे दुःख है कि हमारे कलाकारों के कार्य को अभी इस दृष्टिकोण से नहीं दे
गया। यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि
आज तक हम स्वर्गीय विष्णु दिगम्बर
कोई स्मारक नहीं बना पाये। मैं यह प्रस्ता
करती हूँ कि भारत की इस ऐति
राजधानी में संगीत के उस महान् पुन
की प्रस्तरमूर्ति खड़ी की जाये और
हूँ कि भारतीय नृत्य कलामन्दिर इस
को अपने हाथ में ले। मुझे आशा है कि
कला-प्रेमियों का सहयोग उसे मिले
हार्दिक सम्मान के साथ मैं अपनी
इस पवित्र कार्य के लिए भेंट करती हूँ।

शान्तिभवन, —चंद्रवती ऋषभसैन
सहारनपुर

एक सप्ताह में उस स्त्री के
का दर्द भाग गया

क्रुशेन को पहला मात्रा से ही
होने लगा

अब वह क्रुशेन की छोटी
प्रतिदिन पीती है

६ वर्ष पहले जब स्त्री को
दर्द हुआ तब वह कठिनाई से
पाती थी। अनेकों उपचार किये
कोई लाभ नहीं हुआ। उसने क्रुशेन
सेवन किया और तत्क्षण लाभ
केवल एक सप्ताह में उसके कूल्हे
जाता रहा।

वह कहती है, "६ वर्ष हुए मैं
के दर्द से परेशान थी। मैं मुश्कि
चल पाती थी। हमने अनेकों उ
किया किन्तु व्यर्थ। तब मैंने क्रुशेन
सेवन करना आरम्भ किया। पह
मात्रा से तुरन्त लाभ हुआ। एक
में मैं एकदम चंगी हो गई। अब
दिन एक चम्मच क्रुशेन साल्ट ए
गर्म जल में पीकर दूसरा काम क
अब मैं पिछले चार वर्षों से विपद
मेरे एक पुत्र है अतः मैं कठिन
हूँ। मुझे अपनी जीविका उपार्जन
६ बजे सवेरे से ११ बजे रात त
करना पड़ता है। मेरी उम्र ५२ व
किन्तु सबकी निगाह में मैं ३२
मालूम पड़ती हूँ।

—(श्रीमती) यफ० ई०

यदि आपको कूल्हे का दर्द है तो
से अवश्य लाभ उठाइये। क्रुशेन
खनिज लवण का आनुपातिक सम्मि
जो दस्तावर तथा मूत्रवर्द्धक है। इस
कृपा से क्रुशेन सारे शरीर को स्व
देता है। क्रुशेन की नियमित मा
आपकी सारी इन्द्रियाँ मुस्तैद बनी
तथा अपना कार्य सुचारु रूप से
रहती हैं। क्रुशेन साल्ट सभी अच्छी
तथा दवाखानों में मिलता है।

के लेखक श्री व्रजेन्द्रनाथ गौड़
अधिक शोरोगुल इसी सड़क
है। सब्जी-मण्डी और बजाजा
अतिरिक्त यह सड़क स्टेशन तक
स्कूल के लड़के भी इधर से गुज-
शहर के मध्य भाग का एक हिस्सा
सड़क। एक छोटी गली सब्जी-
अन्दर से और एक गली सड़क से
जगह मिलती है, वह स्थान
का बाहरी आँगन है। सामने
हैं और वहीं एक खाट पड़ी है,
अस्त-व्यस्त हालत में जमीन
ही एक छोटा-सा गड्ढा है,
चौबीस घंटे आग दबी

की किटकिटानेवाली सरदी-
हवा की चिन्ता इन लोगों
जगन ताड़ी की दो बोतलें
और मिर्जा जी खाट पर बैठे
आग कुरेद कर चिलम तैयार
था।
कहा—'क्या कहते हो जगन
तो मैं कभी नहीं पी सकता।
पर लानत भेजता हूँ.....।'
बोला—'और मैं, मैं इस साली
हूँ। क्या समझे?'
चमककर कहा—'तुम्हारे
सकते चरस पे.......!'
तुम्हारी माँ भी ताड़ी पे लानत
सकतीं—क्या समझे?'
का जिकर करो बेटा! मैं तो
हूँ।'
तुम्हारे नाली सूँघते थे—

तुम्हारे बाप उसमें डुबकियाँ
यह कहकर मिर्जा जोर से हँसे।
झूमकर खड़ा हो गया।
ठीक कर रहा था—बाप-
और जगन का उठना एक साथ
में आया और वह बोला—
मेरे यार,' और उसने हाथ
को बिठाल लिया।
बोले—'तुम क्या बिठाते हो
तो खुद खड़ा नहीं रह सकता।'
नहीं रह सकता! अरे, तुम
मिर्जा।' फिर जगन ने रमजान
कहा—'मेरे भैया, मेरी बात
करो, ये अपनी छतरमंजिल
की क़सम, इसकी मीनारें
अपने हाथों से बनाई थीं!'
ने उसे दिलासा दिया—'हाँ
मालूम है—मेरे सामने का ही
.....।'
लपककर, मिर्जा की ओर
कहा—'सुनो, सुनो मिर्जा!
ही मैं खड़ा नहीं रह सकता।
पर मजाक करने का सलीक़ा
यह विजय की हँसी हँसा।
ऊँघते हुए मिर्जा की ओर

कहानी

चरस की चिलम

लेखक, श्री व्रजेन्द्रनाथ गौड़

> चरस और गाँजे के चिलम के शौकीनों की दुनिया ही न्यारी होती है। उनकी पारस्परिक वार्ता का आनन्द ही दूसरा होता है। फिर लखनऊ शहर तो इस प्रकार के शौक का बादशाही जमाने से कायल है। इस सुन्दर कहानी में चिलम के शौकीनों की मनोरंजक वार्ता का सुन्दर चित्रण किया गया है जो पठनीय तथा रोचक है।

चिलम बढ़ाकर कहा—लो जी मिर्जा! ये चिलम जरा गहरी है। चरस साली ऐसी भुनी है इस बार कि एक ही दम में तबीअत खुश हो जायगी।

मिर्जा ने अँधेरे में हाथ घुमाया, कहा—साले चरका देते हैं—अबे, तुम्हारे बाप ने भी किसी को चरस की चिलम दी थी बेटा रमजानी, कि तुम्हीं साले लाट के बच्चे बन के, आ गये। चरका देते हैं साले। और वे फिर से सर लटकाकर बैठ गये।

रमजानी और जगन की नजर तैयार चिलम पर ही लगी थी। जब मिर्जा चिलम न ले सके तो जगन बोला—'लाओ मैं ही साली को एक दम में राख किये देता हूँ।'

मिर्जा फिर बोल पड़े—'नामर्द साला, अबे, सारी दुनिया राख हुई जा रही है और तू हिम्मत आजमा रहा है चिलम पर। मैं कहता हूँ जगन, तेरे वालिद साहब मरहूम आ जायें, तब भी एक खींच में चिलम नहीं दहका सकते—

'मेरे बाप के जमाने में, इस साले लखनऊ के अन्दर ताड़ी की नदियाँ बहती थीं। तुम एक साली चिलम का रोना रो रहे हो।' और जगन ने रमजान के घोंटू पर थपकी देकर कहा—'भैया रमजान, इस गोमती में पहले पानी नहीं था, इसे मेरे बाप ताड़ी के मुचुक से लाये थे और तब नवाब वाजिदअली शाह साहब ने उन्हें नख़ास का इलाक़ा बख्श दिया था।'

'तो भैया ये नख़ास, अब तुम्हारा नहीं है?' रमजान ने हमदर्दी जाहिर करनी चाही।

'मिर्जा! समझाओ इस बुद्धू को! अबे, हमारा होता तो आज यहाँ बैठे होते। इस वक्त तो बारादरी में जश्न मना रहे होते! क्यों मिर्जा!' जगन बोला!

'ठीक कहते हो भैया! हाय, हाय क्या जमाने थे वे भी?' मिर्जा ने माथा ठोका—'इस क़िस्मत में आज ये दिन देखना भी बदा था।' मिर्जा रोने लगे।

'अब रोने से क्या होता है मिर्जा! क़िस्मत ही फूटी है। नहीं तो, हम-तुम क्या थे और क्या हो गये। उसकी लीला बड़ी अजब है भैया।' जगन ने मिर्जा के पास खिसकते हुए कहा।

दोनों गले मिल-मिल के रोने लगे। रमजान ने आँख बचाकर दो-तीन कश लगाये और चिलम मिर्जा की ओर बढ़ाकर कहा—'अमा मिर्जा! अब तो रोने में भी मजा नहीं है—न वो सुख रहे, न वो दुख! लो दम लगा लो, तुम्हारे हुजूर में ये मालूम चिलम हाथ बाँधे खड़ी है।'

जगन और मिर्जा अलग हुए। चिलम लेकर मिर्जा ने कहा—'तुम पियो जगन!'

'नहीं, तुम पियो मिर्जा!'

'नहीं, जगन तुम पियो!'

रमजान ने चिलम ले ली, कहा—'हुजूर मिर्जा साहब! पहले आप दोनों इस मामले में फ़ैसला कर लें, तब तक, इस साली चिलम की हिफ़ाजत मैं करता हूँ।'

'जाओ, तुम्हीं पी डालो, हमने तुम्हें बख्शीश में दे दी चिलम, क्यों जगन भैया!'

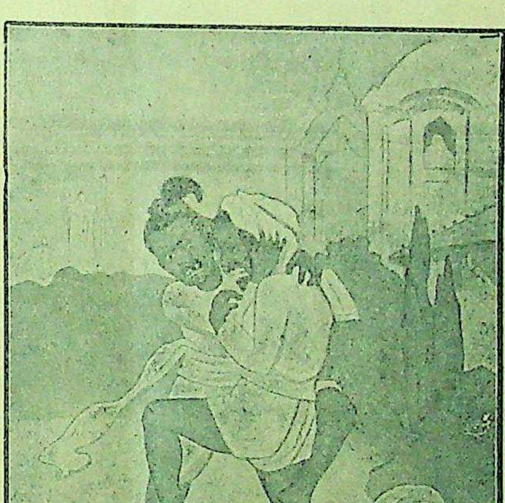

चरस की चिलम के दो प्रेमियों की झड़प शुरू हो गई है।

'हाँ मिर्जा! अब चिलम-फ़िलम में क्या रक्खा है। अपने जमाने में चिलमें होती थीं सोने-चाँदी की और भाई मेरे हुक्के......, अहा, क्या फ़रशी हुक्के थे, उस जमाने में। अब तो बस, याद बाक़ी रह गई है।'

रमजान चिलम में कश पे कश लगाये जा रहा था।

मिर्जा कहने लगे—'जगन भैया, इस साले रमजान को देखो! दम लगाना भी नहीं जानता?

रमजान ने ढेर-सा धुआँ छोड़ दिया। चिलम के ऊपर बालिश्त भर ऊँची लौ अब भी उठ रही थी। कहा—'क्या बकते हो मिर्जा! छोटा मुँह और बड़ी बात! तुम्हारी इस नादानी और ओछेपन पे अल्ला का क़हर नाजिर हो।'

'अबे, तू बड़ा चरसिया बनता है तो सौ-सौ रुपये बद के जमा तोले भर की चिलम!'

जगन बोला—'अरे रमजान! अभी तो हजार बरस तक मिर्जा की शागिर्दी करो बेटा!'

'कह गये! कह गये जगन! अहा, क्या बात कही है। जगन की तबीअत फड़क उठी। देखा बेटा, जगन ने क्या कहा।' मिर्जा बोले।

'ये साला खुद अभी लौंडा है। मैं कहता हूँ जिस साले में दम हो मेरे हाथ से चिलम ले ले और उठा दे हाथ भर ऊँची लौ।'

'कल के छोकरे हो रमजान! चिलम-फिलम साली राख होके रह जायगी एक कश में, सो याद रखना।'

'अरे बहुत देखे हैं ऐसे माहिर! एक चिलम पियोगे तो औंधे हो जाओगे।'

'औंधा हो जायगा तेरा बाप!'

वह तो मर चुका मिर्जा।' रमजान ने हँसते हुए कहा।

'जगन ने रमजान के घोंटू पर थपकी देकर आहिस्ता से कहा—' अमा, किसके मुँह लगते हो रमजान! मिर्जा तो नशे में है।'

'नशा वशा साला हिरन हो जायगा समझे? ऐसे नसेबाज बहुत देखे हैं। साले मुझसे बात करते हैं।'

'किसे गाली देता है बे?'

'जगन से कहा है मैंने, तुम हम लोगों के बीच में मत बोलो मिर्जा!'

'नहीं, मिर्जा, इसने तुम्हें गाली दी है।

'नहीं, मैंने जगन को गाली दी है।'

'तुम हरामखोर हो! तुम हमें गाली नहीं दे सकते। बोलो मिर्जा! ये रमजान इतनी औक़ात रखता है कि हमें गाली दे सके! और फिर तुम्हारे सामने।'

'मारो साले को!' मिर्जा खाट से उठे।

रमजान न जगन के पास खिसक कर कहा—'मिर्जा कहते हैं जगन को मारो।'

मिर्जा ने कहा—'उड़ने दो कबूतर साले के सर पे।'

जगन ने कहा—'किस साले में दम है जो मारे!'

'मुझमें दम है, कौन रोक सकता है?' मिर्जा ने कहा।

'हम रोकेंगे। हम कहते हैं तुम जगन को नहीं मार सकते।' रमजान आगे बढ़ा।

'हम तुम्हें मारेंगे! जगन, मारो साले को।'

'देखा जगन, तुम्हें बचाने का यह इनाम!'

'नहीं मिर्जा! तुम रमजान को नहीं मार सकते।'

मिर्जा की फटी पुरानी और गंदी शेरवानी खाट के पाये में अटक गई थी, आगे बढ़े तो गिर पड़े। रमजान और जगन ने लपककर उन्हें उठाया। झाड़ा-पोंछा, फिर पूछा कि उनके कहीं चोट तो नहीं आई।

मिर्जा बोले—'चोट साली क्या आ सकती है, मैं लोहे का बना हुआ हूँ।'

जगन बोला—'हाय, हाय! कैसी हिम्मत है तुम में मिर्जा। अपना जमाना होता तो सौ लौंडियाँ इस वक्त ख़िदमत को दौड़ पड़तीं। दूकानें बन्द हो जातीं इस साले लखनऊ शहर में और नवाब वाजिदअलीशाह साहब खुद दौड़कर आते कि हुजूर मिर्जा साहब के दुश्मनों को क्या हो गया है।'

'अब काहे का जमाना रह गया है भैया! कुछ नहीं, सब धोखा है प्यारे! तुम्हारे जेब में चने हैं थोड़े?'

'नहीं मिर्जा!'

'तुम्हारे पास हैं?'

मनोरंजक चुटकुले

उपाधि का मूल्य

जब नेपोलियन ने अपने एक सरदार को डैनजिग का ड्यूक बनाया तो उससे शत्रुता रखनेवाले मित्र ने कहा––तुम्हें यह उपाधि और पद बहुत ही अच्छा लगता है।

साठ युद्धों में विजयी सरदार ने उत्तर दिया––मैदान में आइए तो आपको यह सब असली मूल्य पर ही मिल जायेगा। मैं तुम्हारे ऊपर साठ बार गोली चलाऊँगा और फिर भी तुम बच जाओगे तो यह उपाधि और पदवी तुम्हें प्रदान कर दी जायेगी।

* * *

आटमिक शक्ति से ऋतु-परिवर्तन

आटमिक शक्ति का प्रयोग ऋतु-परिवर्तन के लिए बहुत ही शीघ्र किये जाने की सम्भावना है। इच्छानुसार आकाश के ऊपरी भाग में छोटे-छोटे आटम बम उड़ाये जायँगे जिनसे कम या अधिक दबाव का वातावरण उत्पन्न होगा और मनचाहा मौसम हो सकेगा।

* * *

बात क्या है ?

अफसर––संयोग से यदि मेरे मूर्ख लड़का होता तो मैं सौ उपाय करके भी उसे आदमी बना देता।

पादड़ी––(धीरे से)––साहब, आपका मत अपने पिता से नहीं मिलता।

* * *

बन्दर की हजामत

एक सज्जन ने अपने बालों पर कंघी करते हुए नाई के लड़के से पूछा––क्या तुमने कभी बन्दर की हजामत बनाई है ?

'जी, नहीं। हां, यदि आप बैठ जाने की कृपा करें तो आपकी तो बनाने की कोशिश करूँगा ही।'

* * *

सामग्री की कमी नहीं

एक सम्पादक महोदय से भोजन करते समय पूछा गया, 'क्या आपको हलुआ और चाहिए ?'

अन्यमनस्कता से उन्होंने उत्तर दिया, 'हमारे पास अन्य सामग्री इतनी है कि हमें ढूंढ़ने पर भी उसके लिए स्थान दिखलाई नहीं देता।'

* * *

आँखों का कुसूर

हालीवुड की अभिनेत्री और सिपाही दोनों साथ-साथ नृत्य कर रहे थे। सिपाही ने पूछा, 'क्या तुम्हारी आँखें तुम्हें परेशान नहीं कर रही हैं ?'

'नहीं तो, क्यों ?' अचम्भे में उसने कहा।

'यही तो आश्चर्य है,' सिपाही ने उत्तर दिया, 'क्योंकि वे मुझे तो मारे डाल रही हैं।

'खतम हो गये।'

'या खुदा ! मेरी शेरवानी भी फट गई। अभी कल ही ख़रीदी थी……।'

'उसकी मरज़ी है मिर्ज़ा ! वर्ना मुरीदी जैसी शेरनी लट जाती ! अरे, शहर में गोश्त की दूकानें लुटवा देता !' रमज़ान बोला।

'शेरनी नहीं मेरे भैया––शेरवानी !'

'शेरवानी ? फ़रीदी ? लट गई ? अमां तुम नशे में हो मिर्ज़ा !'

'मैं ठीक कहता हूँ।'

'क्या ठीक कहते हो, अपना सर ?'

'सर नहीं प्यारे ! शेरवानी।'

'ओह, अब मैं समझा।' रमज़ानी ने जगन के बिलकुल पास खिसककर कहा––'मिर्ज़ा झूठ कहते हैं भैया ! अब शेरवानियाँ कहाँ रक्खी हैं, अब तो गीदड़वानियों का जमाना आ गया।' और जगन हँस पड़ा। मिर्ज़ा फिर खाट पर बैठ गये। कहा––'लो जगन, एक पुड़िया तुम भी निकालो !'

जगन ने अंटी खोली।

मिस असेम्बली और मिस्टर नेता

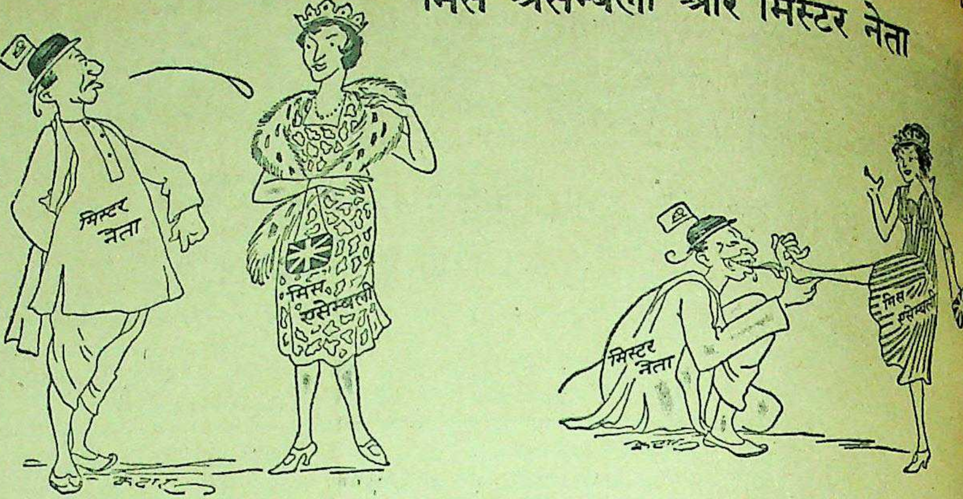

बहुत से बूढ़े लोग जो रोज़गार जारी रखने पर मजबूर होते हैं भयभीत मन से यह कहते सुनाई देते हैं…

"मैं इतना बूढ़ा नहीं जितना कि दिखाई पड़ता हूँ।"

किन्तु वे अपने मन में अपने को उतना ही बूढ़ा, शायद उससे भी ज़्यादा बूढ़ा समझते हैं। इसका कारण यह होता है कि उन्होंने अपने भविष्य के लिए कोई आधार नहीं बनाया, हाथ में पैसा नहीं रखा। हर गिरा-पड़ा काम उन्हें स्वीकार कर लेना पड़ता है। उनका जीवन बहुत निराशापूर्ण होता है। किन्तु यह ज़रूरी नहीं कि आपको भी ऐसी मुसीबत का सामना करना पड़े। यदि आप अभी योजना बना लें, तो आप वृद्धावस्था में शान्ति एवम् सम्मान के साथ विश्राम कर सकते हैं।

बुद्धिमान लोग जिन्हें अपने भविष्य का ख़्याल है अपनी बचत के रुपये को आजकल नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेटों में लगा रहे हैं। अपने सुरक्षित भविष्य में उन्हें पूर्ण विश्वास है। आपको भी ऐसा विश्वास प्राप्त हो सकता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफिकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४$\frac{1}{6}$ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुऐ ब्याज के सहित तीन साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफिकेट को १८ महीने बाद)।

मातृमण्डल

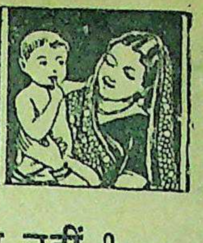

आपका जीवन सुखी है अथवा नहीं ?

ना चाहिए कि पति और पत्नी में क्या त्रुटियाँ हैं ?

लेखक, श्री रमाकांत त्रिपाठी, बी० ए० 'साहित्यरत्न'

ख के लिए हम सभी कुछ कर
और करते भी हैं। फिर भी हममें से
सुखी बन पाते हैं उनकी संख्या
पर गिनी जा सकती है जो प्रायः
बराबर है। हम इसके लिए प्रयत्न
क्योंकि आलस्य ने हमारे ऊपर
अधिकार जमा रक्खा है।
ते भी हैं तो उलटे रूप में। रोग
करने के लिए यह जानना
है कि उसका कारण क्या है?
जाने दवा करना रोग को
है। फिर वह हमारे हाथ के
का काम हो जाता है जिसे हम

चेता कृपलानी, अखिल भार-
रबा मेमोरियल ट्रस्ट की नवीन
ंग सेक्रेटरी नियुक्त हुई हैं।

हीं सकते। ठीक उसी प्रकार
तीय समाज में विवाहित जीवन
ती हैं। हम उन कारणों को दूर
प्रयत्न नहीं करते जो जीवन में
में सताया करते हैं। पीड़ा से
तो होते हैं लेकिन उस पीड़ा
नहीं जान पाते। इससे हम
में पड़े हुए हैं। काँटा निकाल
बनता। इतना साहस नहीं
में साहस पैदा करें और
। नीचे पति-पत्नी प्रत्येक के
प्रश्न लिखे जा रहे हैं। इन प्रश्नों
कर आप स्वयं इस बात का पता
हैं कि आया हमारा जीवन
या नहीं? प्रत्येक प्रश्न को ध्यान-
और तब निष्पक्ष होकर पेंसिल
सामने 'हाँ' या 'नहीं' लिखें।
समय निश्चित होने पर ही
इस काम को करें तो अधिक
। ऐसा करने से आपको
में पता चल जायेगा कि आप
त्रुटियाँ हैं? उन्हें आप
सुधार सकते हैं और इस प्रकार
जीवन को सुखी बना

के लिए

आप अपनी स्त्री को एक
समझते हैं?

(२) यदि आपकी स्त्री स्वतंत्र रूप से कार्य करे या उसका कार्य आपकी रुचि या आज्ञा के ज़रा भी विरुद्ध हो तो क्या आप निराश होते हैं?

(३) विवाह के पूर्व आप उसके जिस स्वभाव को पसन्द करते थे क्या उसे अब आप नापसन्द करते हैं?

(४) क्या आप अपने अतिथियों तथा व्यवहारियों से अपनी स्त्री के संबंध में उपेक्षा के साथ बात करते हैं?

(५) क्या आपको अपनी स्त्री के प्रति स्वभावतः अरुचि है?

(६) क्या आप इस बात का अनुभव करते हैं कि आप विवाह करके एक बन्धन में बँधे हैं?

(७) क्या आपको अपनी स्त्री में दोष निकालने से आनन्द मिलता है?

(८) क्या आप अपनी स्त्री-द्वारा उपार्जित की गई जीविका पर निर्वाह करना पसन्द करते हैं?

(९) क्या आप अपना कर्त्तव्य नियमित रूप से प्रेम उत्पन्न हुए बिना ही करते हैं?

(१०) क्या आप अन्य लोगों के सामने स्त्री के साथ उपेक्षित रूप से व्यवहार करते हैं?

(११) क्या आप उसकी छोटी-छोटी ग़लतियों पर बार-बार ध्यान देते हैं या दोष निकालते हैं?

(१२) क्या स्त्री के साथ थोड़ी देर भी बात करने से आपको परेशानी सी होती है?

(१३) स्त्री जिस पैसे को अधिक अच्छे रूप में व्यय कर सकती है क्या आप उसी पैसे को लापरवाही के साथ व्यय करते हैं?

(१४) क्या आपकी हाँ में हाँ न मिलाने से आप स्त्री को दोष देते हैं?

(१५) क्या आप इस बात से असहमत हैं कि आपकी स्त्री घर सँभालने में आपकी सहायता करती है?

पत्नियां के लिए

(१) क्या आप पति में दोष निकालती हैं?

(२) क्या आप पति से अपने बच्चों को अधिक प्यार करती हैं या ऐसा काम करती हैं कि जिससे वह यही बात समझें?

(३) क्या आप कल्पित व्याधियों को सोच-सोचकर भुनभुनाती, परेशान होती और घबड़ाती हैं?

(४) क्या अन्य साथियों के सामने आप अपने पति की आलोचना करती हैं?

(५) क्या आप की समझ में स्त्री-पुरुष का संघर्ष बुरा है?

(६) क्या आप कभी इस बात का अनुभव करती हैं कि आप पति के द्वारा पीटा जाना पसन्द करेंगी?

(७) क्या आप ऐसा विचार करती हैं कि जीवन पति से अधिक आवश्यक है?

(८) क्या आप अपने पति का अपने मित्रों से संबंध बनाये रखने में या उसके प्रिय विषयों में रुचि रखने में बाधायें डालती हैं?

(९) क्या आप अपने घर की रहने के स्थान से अधिक दिखावे का स्थान समझती हैं? क्या आप अपने पति की सुविधाएँ कम करके सामान ख़रीदने पर ज़ोर देती हैं?

(१०) क्या आप पति के मित्रों को तथा अन्य संबंधियों को उसके घर आने में कठिनाई उपस्थित करती हैं?

(११) पड़ोसियों की बराबरी कर सकें, इसलिए क्या आप अपने वस्त्रों आदि के लिए पति के द्वारा त्याग किया जाना पसन्द करती हैं?

(१२) क्या आप अपने पति से पैसे की कमी या उसकी असफलताओं की चर्चा करती हैं जिससे उसके आत्मा को चोट लगती हो?

(१३) क्या आप अपने पति से व्यंगपूर्ण व्यवहार करती हैं?

(१४) सन्तान उत्पन्न करने में आपको जो कष्ट उठाना पड़ा है उसके लिए पति से क्या आप यह आशा करती हैं कि वह आपके प्रति पूर्ण रूप से दासवत् या चापलूसी का व्यवहार करे?

(१५) क्या आप पति के कार्यों पर सन्देह करती हैं?

प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच नम्बर नियत हैं। यदि उत्तर 'नहीं' में होगा तो पूरे पाँच नम्बर मिलेंगे और यदि उत्तर 'हाँ' में होगा तो एक भी नम्बर नहीं मिलेगा। पति या पत्नी जिस किसी को ७५ नम्बर मिलेंगे वही सबसे अधिक सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर सकता है ऐसा समझना चाहिए। ५० नम्बर से कम पानेवाला व्यक्ति सुखी नहीं समझा जायगा। लेकिन इससे निराश होने की आवश्यकता नहीं। यह तो इस बात के परखने के लिए है कि हम किस स्थिति में हैं। उसमें सुधार तो निश्चय ही किए जा सकते हैं यदि कोई करना चाहे तो। संभव है इन्हीं कारणों में से कोई कारण ऐसा हो जो आपका जीवन कष्टप्रद बना रहा हो। आप धैर्यपूर्वक विचार करें, उदारतापूर्वक उसे सुलझाने का प्रयत्न करें। कौन जानता है कि उसी से आपका जीवन बदल जाये और तब आप अपने को सुखी बना सकें।

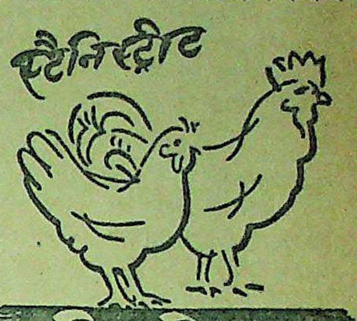

स्टैनिस्ट्रीट
चिकेन
(कंसिंट्रेटेड)
एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी
हाल्त में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कर
SSK

अपने दाँत ठीक तरीके से साफ करना अवश्यक है!

खुरदरी चिज़ें दांतों को ख़रोंच देती हैं और ख़रोंचों से सड़ान पैदा होती है। बुरे स्वादवाली चीज़ों से आपकी सांस में बदबू आने लगेगी। जो चीज़ें गन्दी रहती हैं या जिन्हे सावधानी से पेक नहीं किया जाता है, वे ख़तरनाक होती हैं–क्योंकि बहुधा उनमें कीटाणु होते हैं जिससे बीमारी फैलती है। इसलिये, अपने दांत ऐसी चीज़ों से कभी मत साफ कीजिए।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह किसी ख़रोंच के बिना आपके दांत बहुत नर्मी से साफ कर देता है। इसका स्वाद और सुगंध–दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विशनाशक है। और ठीक तरह से पेक होने के कारण धूल से बचा रहता है। इसके अलावा एक डिबिये में इतना डेन्टिफ्रिस होता है जो १०० बार से जादा दांत साफ़ करने के लिये काफ़ी है।

हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!

गिब्स डेन्टिफ्रिस

Gibbs Dentifrice

GD. 18-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

आजकल के फिल्म किधर जा रहे हैं ?

स्वतन्त्रता का मन्त्र फूँकनेवाले फिल्म आज कहाँ हैं ?

लेखिका, कुमारी हरदेवी मलकानी एम० ए०, बी० टी०

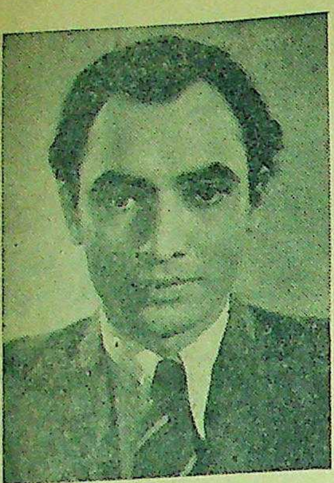

सुप्रसिद्ध फिल्म-अभिनेता और 'राजा' तथा 'कुणाल' फिल्मों के सफल डाइरेक्टर श्री किशोर साहू।

आजकल मनोरंजन के कई साधन हैं। ताश खेलना, नाव चलाना, प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करना, किसी राजनैतिक विषय पर वाद-विवाद करना, पुस्तकों का अध्ययन करना, क्लब जाना और टेनिस खेलना आदि। उसी प्रकार चल-चित्र भी हमारे दिल-बहलाव का एक साधन है। फिर आजकल तो यह कला अधिक उन्नत हो चुकी है। इस समय चल-चित्र का बोलबाला है और मनुष्य के समय काटने का एक सुन्दर एवं सर्वोत्तम साधन है।

आधुनिक काल में चल-चित्रों का इतना अधिक विकास हो गया है कि हमें उसमें कभी अपने ही जीवन से मिलने-जुलनेवाले दृश्य, प्राणी आदि का दर्शन होता रहता है। कभी हमारे सामने पौराणिक, धार्मिक और सामाजिक दृश्यों का दिग्दर्शन कराया जाता है तो कभी ऐतिहासिक आधार लेकर हमारा मन प्राचीनता की ओर आकर्षित किया जाता है। इसलिए सबसे विचारणीय विषय इस समय हमारे सम्मुख है कि इन चल-चित्रों का हमारे हृदय पर क्या प्रभाव पड़ता है।

प्रायः समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि अमुक व्यक्ति ने प्रेम में सफल न हो सकने के कारण अपनी आत्म-हत्या कर ली या आधुनिक युग की लैला ने विष-पान कर अपने को प्रेम के लिए बलिदान कर दिया अथवा अमुक व्यक्ति अमुक विजातीय बालिका से विवाह करने को लालायित है या अमुक मनुष्य ने क्रोध से विह्वल होकर अपनी प्रेमिका की हत्या कर ली इत्यादि।

इन सब घटनाओं का मुख्य कारण क्या है? मेरे विचार से सिनेमा अर्थात् चल-चित्र! सिनेमा-हाल में जब मनुष्य अपने ही जीवन से सम्बन्ध रखनेवाले दृश्यों तथा चित्रों को देखता है तो उसका उसके मन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ता है कि वह अपने को कथानक के नायक होने का अनुभव करता है; दर्शक स्वयं अपने को नायिका के प्रेम में विह्वल होता हुआ पाता है। 'नया संसार', 'वसन्त', 'क़िस्मत' और 'रतन' आदि फिल्मों को देखकर भावुक दर्शक अपने को 'सम्पादक गोविन्द' के स्थान पर समझ कर 'गौरी' की चंचलता पर मुग्ध होता है और उसके प्रेम में अपने मन को उसका मजनू बना देता है।

शिक्षा की दृष्टि से यदि आधुनिक चल-चित्रों का अध्ययन किया जाये तो अत्यन्त खेद और विस्मय के साथ कहना पड़ता है कि इसका प्रभाव हमें न तो किसी उचित शिक्षा की ओर अग्रसर करता है; न हमारे हृदयों में स्वदेश-प्रेम की भावनाओं का संचार करता है, न हम में धर्म तथा पुण्य के प्रति आकर्षण उत्पन्न करता है और न समाज-सुधार का मार्ग ही दिखाता है तथा न हमें मनुष्यता का पाठ ही पढ़ाता है।

इस युग में ऐसे चित्रों की आवश्यकता है जो जनता के हृदयों में क्रान्ति को उत्पन्न कर दें, जो हमारे मस्तिष्क में उथल-पुथल मचाकर बवण्डर पैदा कर दें जो हममें ऐसी भावना भर दें कि हम कुछ कर दें, दिखा दें। और जो हमारे चिर-सुषुप्त विचारों को जाग्रत् कर दें।

मिनर्वा मूवीटोन के प्रमुख डाइरेक्टर और निर्माता श्री सोहराब मोदी।

आज फिल्म-कम्पनियों का ध्येय केवल धन-उपार्जन करना ही हो गया है। जिससे वे 'नस्मते'; 'चल चल रे नौजवान'; और 'खजाञ्ची का बेटा' आदि फ़िल्में निर्देशित करके हमारा मानसिक और नैतिक पतन कर रहे हैं। यदि विचार करके देखा जाय तो इन फ़िल्मों से न हमारा मानसिक विकास होता है; न कोई नैतिक शिक्षा ही प्राप्त होती है। जैसे हमें शरीर की शक्ति के लिए पौष्टिक भोजन की आवश्यकता है; वैसे ही हमें मस्तिष्क की पुष्टि के लिए दिल-बहलाव की सामग्री की अत्यन्त आवश्यकता है किन्तु जब चित्रों में केवल खूबसूरत हसीन चेहरे, थोड़ी-सी छेड़खानी और भड़ैती; श्लील दृश्यों का दिग्दर्शन तथा संगीत-कला को नष्ट करनेवाले गाने तथा प्रेम के नाम पर छिछोड़ापन देखने को मिलता है तब हमें अत्यन्त क्लेश और दुःख के साथ कहना पड़ता है कि अब सिनेमा-जगत् में शिक्षा-विभाग के अधिकारियों को प्रवेश करना होगा और सिनेमा-डाइरेक्टरों से प्रार्थना करनी पड़ेगी कि ऐसे सस्ते मनोरंजन को वे उठाकर ताक पर रख दें जिससे मनुष्य का मानसिक एवं नैतिक पतन होता है।

मैंने अपने जीवन में कभी ऐतिहासिक फिल्म नहीं देखा था। जब 'चन्द्रगुप्त' फिल्म आया तो इसके देखने का लोभ मैं संवरण न कर सकी किन्तु "सम्राट् चन्द्रगुप्त" फ़िल्म देखकर मुझे जो तीव्र वेदना हुई उसका वर्णन करना मेरी शक्ति के बाहर है। "सम्राट् चन्द्रगुप्त" फिल्म का कथानक तो उसके नाम से स्पष्ट ही है। भारत के जगद्विख्यात, राजनीतिज्ञ एवं अर्थशास्त्रज्ञ आचार्य चाणक्य ने नन्दवंश का नाश चन्द्रगुप्त के द्वारा किस प्रकार कराया और यूनानियों को भारत से खदेड़कर चन्द्रगुप्त को भारत का सम्राट् बनाया। यही कथा इस फिल्म में प्रदर्शित की गई है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पाठशाला में इतिहास के पाठ में पढ़ चुका है।

ऐसे एक ऐतिहासिक फिल्म में ऐसे दृश्यों और चित्रों को जिसका इतिहास साक्षी नहीं देता ऐतिहासिकता की सत्यता को नष्ट होते हुए देखकर अत्यन्त दुःख होता है। इतिहास में यूनानी कन्या का चन्द्रगुप्त से प्रेम होने का थोड़ा-सा आभास तो अवश्य मिलता है किन्तु उस यूनानी-कन्या को उसके पिता के द्वारा विषपान कराने की आज्ञा का आभास इतिहास के पृष्ठों में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिलता। हो सकता है कि इस प्रकार की असत्यता कथानक की रूक्षता मिटाने एवं प्रेक्षकों के मनोरंजन के लिए ही की गई हो किन्तु इतिहास की ऐसी निर्मम हत्या जो कथानक की वास्तविकता से मेल न खाता हो; करना सत्य को ही विकृत करना मात्र होगा।

सामाजिक चित्रों में भी कभी-कभी ऐसे श्लील दृश्य दिखाये जाते हैं जिससे भारतीय संस्कृति और सभ्यता प्रायः नष्ट हुई मिलती है। पौराणिक तथा धार्मिक चित्रों को देखकर अत्यन्त निराशा होती है। आर्थिक दृष्टि से लाभ उठाने के लिए आजकल बहुधा निर्देशकों ने धार्मिक और पौराणिक चित्रों को निर्मित करना आरम्भ किया है जिनका उद्देश्य सांस्कृतिक और सभ्यता का विकास न होकर कुरुचि को उत्पन्न करना है और जनता धर्मान्ध होकर ऐसे चल-चित्रों को देखने के लिए टूट पड़ती है।

वास्तव में चल-चित्रों का मुख्य उद्देश्य शिक्षा का प्रसार करना होना चाहिए जिससे सामाजिक, धार्मिक, नैतिक तथा मानसिक विकास हो। हम सिनेमा-डाइरेक्टरों का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहती हैं कि शिक्षा की दृष्टि से दो प्रकार के चल-चित्रों का उत्पादन हो। एक तो छोटे-छोटे बालकों के लिए वीर भावनाओं से युक्त चल-चित्र जो अठारह वर्ष की उम्र तक के बच्चों को दिखाये जायँ। दूसरे चल-चित्र अठारह वर्ष से ऊपर अवस्थावालों के लिए हों जिसमें समाज तथा देश, धार्मिक तथा पौराणिक और ऐतिहासिक तथा नैतिक शिक्षा से युक्त चल-चित्र दिखाये जायँ।

"रोटी" फिल्म के बाद इधर "हमराही" एक सुन्दर कला-पूर्ण चित्र बहुत वर्षों के बाद देखने को मिला है। आजकल फिल्म-निर्माताओं के आदर्श चित्र की परिभाषा, बाज़ार के गिरे हुए स्तर और प्रेक्षकों की बिगड़ी हुई रुचि को देखकर कभी भी कल्पना नहीं की जा सकती थी कि 'हमराही!' चित्र भी देखने को मिल सकता है। 'हमराही' को देखकर हम सचमुच आश्चर्य-चकित हो सोचने लगे कि क्या वास्तव में सिनेमा-जगत् में क्रान्ति उत्पन्न हो गई है 'हमराही' में थोड़ा-सा आभास उन दृश्यों का अवश्य मिल जाता है जो इन छः वर्षों के युद्ध-काल में घटित हो चुके हैं। चोर बाजार का गरमागरम साम्राज्य का थोड़ा-सा आभास, भूखे

अमर स्टूडियो लिमिटेड के प्रमुख और सफल डाइरेक्टर श्री सुरेन्द्र

बंगालियों की तरह रोटी को खा जाना; मजदूरों की बस्ती, की दूकान पर लगी हुई लाइन और की दावतें तथा स्वदेश प्रेमिक अपनी प्रेयसी गोपा को देश की हीन का ज्ञान कराना आदि हमारी दृष्टि इस युद्धकाल में घटित हुए दृश्यों को खींचती है। आज हमारे देश की दशा गिरी हुई है कि यदि ऐसे दो-चार चल-चित्र सिनेमा-जगत् में अंकित हो तो मनुष्यों के हृदयों में क्रान्ति और उत्पन्न कर सकती हैं। हमारे कम्युनिष्ट 'हमराही' के नायक लेखकों से थोड़ा-सा नैतिकता ग्रहण कर सकते हैं ऐसी कहानियों की शान्त-धारा हमारे हृदयों में विद्रोह कर हमें संयम और प्रेम, नैतिकता आत्मसंयम का पाठ पढ़ा सकती है।

सिनेमा के डाइरेक्टरों का अभी तक इस ओर आकर्षित कि हमारे देश के बालकों के चल-चित्रों की आवश्यकता है ओर उनका ध्यान विशेष रूप से चाहती हैं क्योंकि जो आज बच्चे हैं कल देश के अभिभावक तथा यही देश के स्तम्भ और अतः वे ऐसे चल-चित्रों का जिन्हें देखकर देश का प्रत्येक स्वतन्त्र तथा वीरता की भावनाओं से प्रोत हो। जिन चित्रों का हमारे देश के बालक सैकड़ों गांधी और आजाद-जैसे नेता जिन्हें देखकर उनकी बुद्धि हो और वे अपने देश की प्राचीन अनुभव करें।

इस परतन्त्र देश की जनता अधिक पराधीनता की बेड़ी में है कि वह मनुष्य का ह्रास होते रही है, मनुष्य मनुष्य का ही रहा है और मानव मानवता प्रहार कर रहा है; फिर भी उसके जूँ तक नहीं रेंगती। उसमें नहीं कि वह ऐसे फ़िल्मों का जिससे हमारे बालकों का मानसिक नैतिक पतन हो रहा है। आधुनिक और नवयुवतियों पर इन चल-चित्रों इतना विचित्र प्रभाव पड़ा हुआ दे रहा है कि उनका चरित्र और उच्च भावनायें प्रायः नष्ट हुई रही हैं वे पाश्चात्य विलासिता के रँगे हुए अपनी भारतीयता को

आज हमें अपने परतन्त्र देश की के बीच स्वतन्त्र भावनाओं के की आवश्यकता है; आज वीरता चाहता है। आज हमारे प्रतापी वीर केसरियावाना पहने शिवाजी तथा मातृभूमि की आन पर न्यौछावर करनेवाला महाराणा

—शेष पृष्ठ १६ पर

धारावाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

रोमांचकारी, मनोरंजक और रोचक—

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

(गताङ्क क आगे)

...ने कहा—विमला, तुम्हें पाकर ही मैं आज उत्साह-...वती हो सका हूँ। जब रोते-तड़पते हुए अनाथ निराश्रय-...को अपनी परिचर्या से मैं हँसता-खेलता देख लेता हूँ तो मैं ...हूँ कि उनकी बात मैं तुमसे कहूँगा तो तुम इसको जान-...होओगी कि हम को देखकर यदि बहुत से लोग कुढ़ते हैं ...से आनन्दित भी होते हैं। भाई-बहिन का साथ सदा ...रहा है! परन्तु क्या करें, इस पापी जी की ममता नहीं ...दीदी जैसे हमको मन से उतारे दे रही है वैसा ...कर सकता। तुम्हारे अस्वस्थ होने के कारण अत्ता न जाने ...द्वार से झाँक-झाँककर देख गई है।

...का नाम सुनते ही विमला सिहर उठी। उसने सोचा ...स्वामी इस नीच कुटनी अत्ता की बातें जान लेते तो चकित ...मन के भाव को दबाते हुए उसने कहा—माया का ...कभी कोई सचमुच तोड़ सकता है? ....

...के अनुसार मसूरी जाने का दिन भी आ गया। गाड़ी ...की थी। दास-दासी, चाकरों को लेकर हरीश ट्रेन ...गया। दो-चार स्टेशन चलने के बाद एक स्टेशन पर ...रीश से कहा—दादा मैं कुछ दिनों की छुट्टी चाहता हूँ, ...हो सकेगा।

...कहा—यह क्या कहते हो, विनोद? इस असमय मे ...छोड़े जा रहे हो...?

...ने कहा—क्षमा करो मेरे दादा, मेरे माई-बाप, तुमने ...भिखारी से भगवान् बनाकर रक्खा था; लेकिन आज ...कारण ऐसा ही उपस्थित है कि जिससे मुझे यह अप्रिय ...आपकी इच्छा के विरुद्ध करना पड़ता है।... ...लगा।

...ने विनोद का हाथ पकड़कर कहा—भैया, हम लोगों ...अपराध हो गया है?

...ने दोनों हाथों से हरीश के पैर पकड़ लिये और बोला—...कभी भगवान् को हम पायें तो उनसे भी कहदें कि अपनी ...में, भाभी के रूप में लक्ष्मी को तथा दादा के रूप में, ...रूप में आपको पाया है। आप क्या अपराध करेंगे? ...मेरा ही है। जब भाभी अच्छी हो जायें तो, लीजिए, ...पत्र खोलकर पढ़िएगा। आपको मेरी शपथ है; भाभी ...भी न पाने पायें।

...के विस्मय का वारापार न था। उसने कहा—क्या ...कोई अपराध किया है?

...फिर फुफकारी मारकर रो पड़ा और बोला—मैंने ...मा को नहीं देखा; किन्तु मा के रूप में भाभी को देखा ...का कौन-सा अपराध हो सकता है! आप सावधान ...भाभी के चरणों में मेरा प्रणाम कहिएगा। वह इस ...है। इसी लिए मुझे यह सुविधा मिल सकी। मेरा ...समाचार दीजिएगा, नहीं तो मैं बहुत व्याकुल रहूँगा।

...ने कहा—विमला बड़ी दुखी होगी, विनोद! उस पर ...

...ने कहा—सोच लिया मैंने दादा, बहुत निकट रहूँगा। ...कारण लिख दिया है, उसे पढ़ लीजिएगा।

...गाड़ी से उतर गया। गाड़ी धक् धक् करते प्लेटफार्म ...विनोद प्लेटफार्म की एक बेंच पर आकर बैठ गया। ...के अंधकार में अप-लाइन की ओर देखा। दूर पर लाल ...कुछ प्रकाश-बिन्दु काले अंधकार के हृदय में जाने ...के चक्षुओं की भाँति टिम टिम कर रहे थे।

२२

...ने विनोद की चिट्ठी पढ़ी। क्रोध से शरीर जल ...अन्तराल में लक्ष्मी का भी बहुत कुछ आश्रय इस ...में निश्चय है...किन्तु इतनी शैतानी, यह नीचता ...हम तुम्हारे संसर्ग में नहीं हैं दूर हैं, तो भी हमारे ...पर जलते अंगारों की वर्षा क्यों की जाती है! ...

...विमला घूमने निकली थी। पहाड़ी फूलों से भरा ...पास ही छोटा-सा झरना, ऊँचे ऊँचे टीले, बड़े अच्छे ...हरीश भी घूमता हुआ वहाँ आ गया था।

हरीश ने कहा—बड़ी सुन्दर जगह है, विमला! तुमको अच्छा लगता है।

विमला ने कहा—हाँ, बहुत अच्छा लगता है।

हरीश ने कहा—क्या विनोद को यहाँ आने के लिए लिख दूँ? वह हमारे स्थान पर सेवा-कार्य कर रहा है।

विमला ने कहा—नहीं, नहीं, कितने दुखी लोगों का जीवन वह बचा रहा होगा। सब कुछ देकर भी प्राण नहीं माँगे मिलते।

हरीश ने कहा—तभी तो मैं उसे बुला रहा हूँ। उसके आने से हँसी-खुशी, गल्प-गान इत्यादि सभी प्रकार के आनन्द होंगे।

विमला ने कहा—नहीं, नहीं, हमारे जीवन की भाँति उन दीन-दुःखियों का जीवन भी मूल्यवान् है। उसे वहीं रहने दो।

प्रायः एक मास अच्छा बीत गया। एक दिन विमला ने रिक्शा न करके पैदल टहलना चाहा। हरीश ने कोई आपत्ति नहीं की। टहलते-टहलते सहसा आकाश में बादल छा गये और पानी बरसने लगा। विमला के सब कपड़े भीग गये। लौटकर फिर ज्वर आ गया। हरीश के सिर पर जैसे आकाश टूट पड़ा हो। प्रातःकाल भी ज्वर अधिक था। कई दिन तक नहीं उतरा तो हरीश ने विनोद को चुपके से एक तार दे दिया।

विनोद आ गया। विमला को ज्वर नही छोड़ रहा था। विमला ने बार बार कानपुर लौटने के लिए रट लगा दी। अन्ततः हरीश और विनोद को उसे लेकर कानपुर लौट आना पड़ा।

इस बार व्यापार कठिन हो उठा था। नित्य नूतन उपसर्ग विमला के ज्वर में दिखाई देते थे। बड़े बड़े डाक्टर दवा करने मे लग गये।

बड़ी कठिनता से एक मास में विमला कुछ ठीक हुई। एक दिन दोपहर का समय था। हरीश और विनोद घर में नहीं थे। दास-दासी भी जाने कहाँ चली गई थीं। विमला ने ऊपर के बराण्डे तक धीरे-धीरे आकर देखा कि सामने वृक्ष पर एक कौआ पंख पसारकर गर्दन मोड़े हुए काँव-काँव कर रहा है।......मार्ग में कोई कुछ गाता हुआ चला जा रहा था। उसने सोचा कि उचाट जीव थोड़ा यहीं लगेगा। थोड़ी देर में फिर जी ऊबा। भित्ति के सहारे धीरे-धीरे लेबोरेटरी के कमरे में वह चली गई। कमरे में पहुँचकर थककर एक कुर्सी पर बैठ गई। दुर्बलता से आँखों के आगे अँधेरा और उसमें चित्र-विचित्र मूर्तियाँ देख पड़ने लगीं। थोड़ा विश्राम लेकर जब उसने आँखें खोलीं तो सम्मुख मेज पर उसने काँच का एक स्प्रिट-स्टोव और एक मोटी अँगरेज़ी की पुस्तक पड़ी हुई देखी। पुस्तक का नाम था (consumption and its treatment) क्षय रोग और उसका उपचार।

विमला सिहर उठी। क्या उसे क्षय-रोग है? पृथ्वी मानो पैरों के नीचे से हटकर किसी शून्य में विलीन हो गई हो। उसने भयभीत होकर आँखें बन्द कर लीं।

आध घण्टे के उपरान्त घर में महा कलरव हो उठा। भाभी, भाभी! कहाँ हो? इस कमरे से उस कमरे तक कोष्ठ-प्रकोष्ठ आँगन देखकर विनोद सीढ़ियाँ उतरकर गंगा-घाट पर पहुँचा। जल-प्रवाह मन्द-गति से हो रहा था। कौन जाने इसी जल में तो नहीं........

वेदना का पहाड़ सिर पर लिए विनोद फिर घर की ओर भागा। उसने देखा कि हरीश भी विमला को ही खोज रहा है। वह पागल की भाँति लेबोरेटरी कमरे में घुस गया। देखते ही चौंक पड़ा, गर्दन टेढ़ी हो गई थी। विमला अचेत पड़ी थी। उसने झपटकर नाड़ी देखी....नाड़ी तो है...प्राण है....! उसने चिल्लाकर पुकारा—दादा.......

विनोद!

विनोद ने कहा—कोई भय नहीं है। लेबोरेटरी में हैं। जान पड़ता है कि अचेत हैं.....नहीं नहीं निद्रित हैं सम्भवतः!

आर्त-स्वर से हरीश ने पुकारा—जीवित तो हैं? आह!

हरीश और विनोद परिचर्या में लग गये। विमला के आँख खोलते ही मुँह से दो बूँद लार टपक पड़ी। उसमें रक्त मिश्रित था। विनोद ने तौलिये से झट से पोंछ दिया।

विमला के रोग के घटने के लक्षण न थे। शरीर सूखता चला जाता था। सोते-सोते काँप उठती थी। एक दिन सोते-सोते चिल्लाने लगी—हमें बचाओ! हमें बचाओ बाढ़ आ रही है, देखते नहीं हो? जाने कहाँ बहा ले जायेगी!

नेत्र-रोग की चिकित्सा से हताश रोगी
ज्योति-कल्प का
सेवन करें
फूली, माँड़ा, रोहा तथा प्रारम्भिक मोतिया-बिन्द आदि की अचूक औषधि है।
यल० यम० धोलकिया ब्रदर्श
४६ जानसेनगंज, इलाहाबाद।

क्या आज आपने मेकलिन से दाँत साफ़ किए हैं?

हाँ, मैं कभी भूलता नहीं
चमकते हुए सफेद दाँतों, स्वस्थ मसूड़ों व ताजे शीतल मुख के लिए मेकलिन्स का व्यवहार कीजिये। यह शीघ्रता से धब्बों को मिटाता है 'एनामेल' को श्वेत व चमकीला बनाता है और प्रयोग में सस्ता पड़ता है।

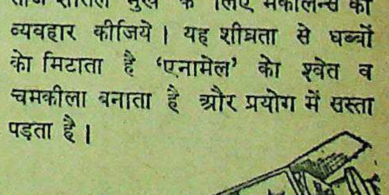

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है
Copyright
J.W.T.(B.) LTD.

वह चिल्लाने के साथ-साथ रोने लगी।

हरीश ने कहा—कहाँ बाढ़ है? कहाँ बाढ़ है? तुम हमारे पास हो कोई भय नहीं है।

विमला ने कहा—दीदी आई थीं?

नहीं तो।

नहीं, आई थीं। तुमने नहीं देखा। हमें बक रही थीं कि इतनी बीमारी की भी हमें ख़बर नहीं दी? .....

लम्बी श्वास छोड़ते हुए हरीश ने कहा—दीदी कहाँ? आयेंगी भी नहीं।

विमला ने कहा—निश्चय आयेंगी। तुम उन्हें एक बार सूचना तो दो। वह मेरे देखने की बड़ी इच्छा करती हैं।

हरीश ने कहा—अच्छा, हम उन्हें सूचना देंगे, तुम थोड़ा सो लो।

विमला ने कहा—क्यों, रात हो गई? अच्छा तो कितनी रात हुई? बाहर बड़ा अन्धकार है। अन्धकार में हमें भय लगता है। जंगला खोल दो।

हरीश ने कहा—नहीं विमला, अन्धकार नहीं है। बाहर धूप फैली हुई है। दिन है। जंगला खुला है।

विमला ने आँखें बन्द कर लीं। उसने कहा—मैं सोचती थी कि रात्रि है। बाहर घोर अन्धकार है। ऐसा क्यों जान पड़ता है?

विमला चुप हो गई। हरीश भी चुप उसके मुख की ओर ताक रहा था। भीत पर लगी घड़ी टक्-टक् करके युग-युग के अनन्तकाल के यात्री की भाँति अपने निर्दिष्ट पथ पर एक ताल से, एक छन्द से, एक गीत से, एक स्वर से चली जा रही थी और कितने युग तक चलेगी? नूतन-नूतन प्राणी पृथ्वी की छाती पर आकर खड़े होंगे, तब भी, तब भी, ...इसी छन्द से, इसी ताल से,—मनुष्य के सारे सुख-दुःख निर्विकार, उदासीन होकर चलते रहेंगे, इसी प्रकार के वैचित्र्य-हीन गति-राग से!

विमला चौंककर जग पड़ी। पूछा—हमें कौन रोग हुआ है? अच्छा क्यों नहीं होता? तुम इतना उपचार करते हो तो भी...

हरीश कुछ नहीं बोला। उसके मुख की ओर ताकता रहा। विमला ने फिर कहा—क्या क्षय-रोग हुआ है? —क्रमशः

हिन्दी महाभारत
[आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी]
महाभारत के अठारहों पर्वों की
संक्षिप्त रूप में अत्यन्त सरल और
भाषा में दी गई है। जो लोग महाभा
के हमारे बड़े संस्करण को ख़रीद
सकते, उन्हें इसे मँगाकर लाभान्वित
चाहिए। इस संस्करण की उत्तमता
यही प्रमाण है कि अब तक इसके
संस्करण हो चुके हैं। मूल्य ६)।
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्टैनिष्ट्रीट की ब्रिलिएन्टाइन हेयर ऑयल
ठोस
तरल
सुगंधित
फ़ैन्थराइडिन
कैस्टर
कोकोनट
गोल्डेन
परमानेंट वेविंग
सैचेट्स
फ्लुइड लोशन
तरल शैम्पू
स्टैनक्रीम
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 122

फ़िल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये!

शोभना समर्थ

शोभना के रोज़ाना सौंदर्य प्रसाधन की एक बात है—सुन्दर झाग लक्स टॉयलेट साबुन का तेज़ फेन अपने शरीर में मलना, फिर साफ पानीसे धोना। वह कहती है—"इस सरल नियमित रीतिसे मेरी अंगकांति मृदु, मुलायम और बेदाग रहती है"। हमारी बहुतेरी फिल्म स्टार यही कहती है।

LUX
LUX TOILET SOAP

लक्स टॉयलेट साबुन
LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

TENGALI SERIES NO 3

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभावि कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से जवाकुसुम बड़ी आसानीसे निकाल देता है और बालोंकी मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध
जवाकुसुम
केशोंकी शोभा बढ़ाता... मस्तिष्क शीतल रखता
JH 3 H

सा० के० सेन एण्ड कं० लि० · जवाकुसुम हाउस · कलकत्ता

वाड़ में पण्डित नेहरू

र की जनता का अपूर्व स्वागत

(विशेष संबाददाता-द्वारा)

जोधपुर की यात्रा में पंडित नेहरू ब्यावर से मोटर में पाली पहुँचे। उनके साथ काश्मीर नेता शेख मुहम्मद अब्दुल्ला श्रीमती इन्दिरा गांधी और लोक- श्री जयनारायण व्यास थे। पाली की तरफ़ से पंडित जी को की थैली भेंट की गई। पंडित जी की सभा में भाषण दिया और कि स्वराज्य की यात्रा अब रही है। लोक-परिषद् के संगठन को बनाने के लिए पंडित जी ने ज़ोर

दिन सवेरे पंडित नेहरू जोधपुर के महाराजा ने सारे राज्य स्कूलों, कचहरियों और कार- पंडित नेहरू का स्वागत करने के कर दी थी। उस दिन की शहर मकान पर राष्ट्रीय झंडा लगाया और शहर के हर बाज़ार और हर तिरंगी झंडियों से सजाया गया वासियों ने पंडित नेहरू का स्वागत लिए शहर में २५ दरवाज़े बनाये नेहरू का जुलूस निकालने के के महाराजा ने अपनी चाँदी रोल्सरोय गाड़ी, जिन्हें उन्होंने रुपये की क़ीमत पर किसी थी, पंडित नेहरू के लिए

जी का बड़ा विशाल जुलूस । दो मील के लम्बे जुलूस में गातार पंडित जी अपनी गाड़ी जुलूस के बीच में कुछ मिलि- ने पंडित जी से हाथ मिलाया साथ भोजन करने के लिए । उन्होंने पंडित जी का स्थान तक पीछा किया और अपने साथ भोजन करने के जी को राज़ी कर ही लिया। कर्नल मोहनसिंह मिलिटरी के सरदार थे उन्हीं के पंडित नेहरू का जोधपुर में पहला । उन्होंने पंडित जी को एक भेंट की। पंडित नेहरू जोधपुर के बँगले पर ठहराये गये थे। झंडों से सजाया गया था महाराजाओं के ठहरने का यह के सेवकों से शोभायमान था। को पंडित जी ने लोक-परिषदी की सभा में भाषण दिया। सभाओं का आयोजन श्री दरबार हाईस्कूल के हाल में किया गया था। पंडित जी ने मारवाड़ के कार्यकर्ताओं को इस बात के लिए वधाई दी कि उन्हें श्री जयनारायण व्यास जैसे देशी रियासतों के कुशल नेता का नेतृत्व प्राप्त है। पंडित जी ने आगे कहा कि देशी रियासतों में ज़िम्मेवार हुकूमत हमारा पहला लक्ष्य है, यह आकर ही रहेगा। ज़िम्मेवार हुकूमत की स्थापना के बाद जनता स्वतः ही निश्चय कर लेगी कि राजा-महाराजाओं के छत्रछाया की जरूरत है या नहीं? पंडित जी ने लोक-परिषद् को अधिक से अधिक संगठित करने के लिए कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया और ज़ोर देकर कहा कि मारवाड़ के एक-एक गाँव में लोक-परिषद कायम होनी चाहिए।

कार्यकर्ताओं की सभा के बाद उसी स्थान पर मारवाड़ महिला-परिषद् द्वारा आयोजित महिलाओं की सभा में पंडित जी ने क़रीब पौन घंटे तक बातचीत की। महिला-परिषद् की ओर से एक हज़ार रुपये की थैली पंडित जी को भेंट की गई। कार्यक्रम इतना व्यस्त था कि महिलाओं की सभा से बाहर आते ही पंडित जी को विद्यार्थियों की सभा में भाषण देने के लिए जाना पड़ा। मारवाड़ विद्यार्थी-संघ की ओर से पंडित जी को मानपत्र और एक हज़ार रुपये की थैली भेंट की गई।

पंडित जी ने अगस्त आन्दोलन में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों को बधाई दी और इस बात पर ज़ोर दिया कि गुलाम देश के विद्यार्थियों को तो राजनीति में भाग लेना ही चाहिए। आज़ाद हिन्दुस्तान में जनता को शिक्षित करने के लिए असंख्य जन-शिक्षकों की आवश्यकता होगी और यह कमी आज के विद्यार्थी ही पूरी कर सकते हैं। पंडित जी ने राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को हर समय तैयार रहने का आदेश दिया।

जोधपुर म्युनिसिपल बोर्ड ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के सम्मान में विलिंगडन पार्क में एक एटहोम का आयोजन किया था और वहीं नेहरू जी को नागरिक मानपत्र भेंट किया गया। इस आयोजन में भाग लेने के लिए जोधपुर के महाराजा स्वयं नेहरूजी को अपने साथ लेकर आये और दोनों का स्वागत करते हुए इस स्वागत के संयोजक श्री बुद्धमल पारमाल ने पंडित जी को हार पहनाये और उनसे हाथ मिलाया। फिर महाराजा को जोधपुर म्युनिसिपल-बोर्ड के प्रेसीडेंट श्रीयुत द्वारकादास पुरोहित ने नागरिकों की ओर से एक मानपत्र भेंट किया। पंडित जी ने मानपत्र का उत्तर देते हुए कहा कि हिन्दुस्तान में बहुत ही तेज़ी से इन्क़लाबआ रहा है और यदि वे अपने को उसके अनुसार नहीं बदलते तो आनेवाले वक्त में वह टिक नहीं सकेंगे।

पंडित नेहरू क़रीब घंटे भर तक इस अवसर पर जोधपुर के महाराजा से बातचीत में संलग्न रहे। जोधपुर के महाराजा ने विशेष अनुरोध से एक बार अपने साथ छीतर पैलेस में भोजन करने के लिए पंडित नेहरू को निमंत्रित किया। पंडित नेहरू ने यह न्योता स्वीकार कर लिया।

रात को आठ बजे स्टेडियम ग्राउंड में पंडित नेहरू का सार्वजनिक भाषण हुआ। क़रीब एक लाख लोग उपस्थित थे। १२ फ़ीट ऊँचा एक रंगमंच बनाया गया था जहाँ पंडित नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी और लोकनायक श्री जयनारायण व्यास बैठे थे। इस भाषण की वेदी के कुछ नीचे एक बड़ा रंगमंच था जहाँ अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् की स्टेंडिंग कमेटी के सदस्य, रियासती नेता और प्रमुख स्थानीय कार्यकर्ता बैठे थे। यह सभा मारवाड़ में अपने ढंग की पहली ही सभा थी। इतनी बड़ी सभा मारवाड़ में पहले कभी नहीं हुई थी। इसमें किसान, मजदूर, नागरिक, बाबू और अहलकारों के अतिरिक्त राज्य की कौंसिल के मिनिस्टर और बड़े-बड़े सभी सरकारी कर्मचारी मौजूद थे।

सरकारी स्टेडियम ग्राउंड पर तिरंगे झंडे फहरा रहे थे। पंडित नेहरू की वेदी तिरंगे झंडे से सजाई गई थी। हरिजन सेवक-संघ, आर्यसमाज आदि संस्थाओं के मानपत्र भेंट करने के बाद लोकनायक श्री जयनारायण व्यास ने पंडित नेहरू को मारवाड़ लोक-परिषद् की ओर से मानपत्र भेंट किया और मानपत्र के साथ साथ परिषद् की ओर से २१,००० रुपये की थैली भेंट की।

पंडित नेहरू ने जोधपुर की जनता को संबोधन करके मानपत्र के उत्तर में कहा कि वक्त आ गया है कि जब कि देशी रियासतों के लोगों को भी भारत के भाग्य-निर्माण में अपना पूरा हिस्सा बँटाना चाहिए। पंडित जी ने जनता को ज़ोर देकर कहा कि वे साधारण बातों के लिए झगड़ा न करें। उन्हें तो अपनी सारी ताक़त ज़िम्मेवार हुकूमत क़ायम करने में लगा देनी चाहिए क्योंकि जनता की हुकूमत ही उनकी दिक़्क़तों को दूर कर सकती है। मुल्क में इन्क़लाब आने को है, इसलिए यह आज नहीं कहा जा सकता कि देशी रियासतों का भविष्य क्या होगा लेकिन राजाओं को समय के साथ रहने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मुल्क में विश्वस्त रूप से तबदीलियाँ होंगी और जिन्होंने कष्ट-सहन और त्याग किये हैं उनका मुल्क के भाग्य-निर्माण में हाथ रहेगा।

रात के समय पंडित जी को तोलाराम फूलचन्द के यहाँ पच्चीस सौ रुपये की थैली भेंट की गई। पंडित जी फिर जोधपुर महाराजा के यहाँ उनके साथ खाना खाने छीतर पैलेस पर गये और रात के १२ बजे तक वहीं रहे। जोधपुर के महाराजा ने कमला नेहरू अस्पताल के लिए पच्चीस हज़ार रुपये पंडित जी को भेंट किये।

दूसरे दिन पंडित नेहरू को विदा करने के लिए जोधपुर के महाराजा पंडित नेहरू के निवास 'सागी का बँगला' पर आये। पंडित जी अपने मित्रों के साथ मोटर से सोजत रोड चले गये। वहाँ भी उन्हें एक थैली भेंट की गई। देहातियों की सभा में पंडित जी का भाषण हुआ और पंडित जी को पहनाई गई सोने की लूँग जोड़ नीलाम की गई जिसे श्री नरसिंहदास लूँकड़ ने बहुत बड़ी क़ीमत पर ख़रीदा।

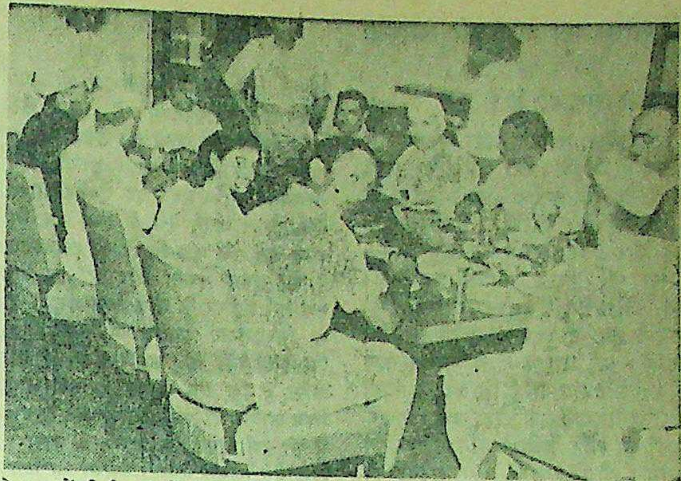

जोधपुर में मिलिटरी के अफ़सरों ने विशेष अनुरोध से पंडित नेहरू का एक बार अपने साथ भोजन करने के लिए राजी कर ही लिया। सुश्री इंदिरा गांधी के साथ कैमेरा की तरफ मुँह किये हुए लेफ्टिनेन्ट कर्नल मोहनसिंह बैठे हुए हैं।

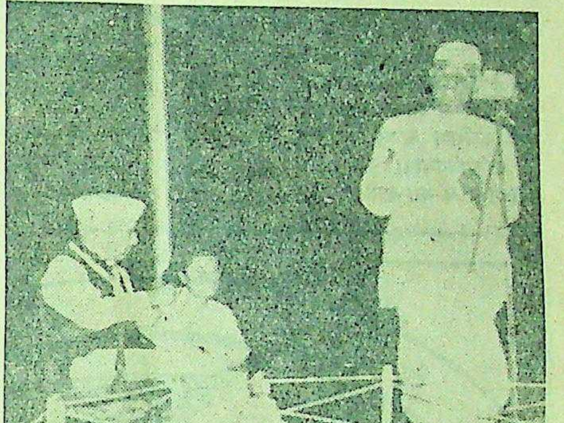

जोधपुर में मारवाड़ की ३० लाख जनता की तरफ से लोकनायक श्री जयनारायण जी व्यास पंडित जवाहरलाल नेहरू को २१ हजार की थैली भेंट करने के बाद मानपत्र भेंट कर रहे हैं।

निसिपल बोर्ड ने पंडित जवाहरलाल नेहरू के स्वागत में एक वृहत् भोज किया था। जोधपुर के महाराजा भी पंडित नेहरू के स्वागत में सम्मिलित में पंडित नेहरू और जोधपुर के महाराजा चाय पीते-पीते कुछ बातचीत रहे हैं। पंडित नेहरू की बाईं ओर जोधपुर के मेयर श्री द्वारकादाव पुरोहित (लोकपरिषदी) काली शेरवानी पहने बैठे हुए हैं—

युग और साहित्य

युगद्वन्द्वों तथा उनसे प्रभावित भावी सम्भावनाओं का समन्वयपूर्ण साहित्य के माध्यम से उपस्थित करनेवाले निबन्धों का संकलन। मूल्य २॥≶)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

फिलिस्तीन की आज की समस्या

(पेज ५ का शेष)

अरब क्या सोच रहे हैं ?

अरब लोग, लन्दनस्थित अरब लीग के नेतृत्व में जिसके मन्त्री श्री आज़म बे हैं, यहूदियों के फिलिस्तीन प्रवेश-निषेध की मांग कर रहे हैं। वे फिलिस्तीन में अपना बहुमत और क़ब्ज़ा रखते हुए उसे 'अरब-संघ' का पूर्ण सदस्य बनाना चाहते हैं। लेकिन फिलिस्तीन की संकटपूर्ण स्थिति को देखकर वे कुछ न कुछ तय करने के लिए तत्पर हैं। श्री आज़म बे ने कुछ सुझाव रखे हैं। पहली बात यह है कि और यहूदियों को फिलिस्तीन-प्रवेश से रोका जाय। दूसरे, यहूदियों को और अधिक भूमि न खरीदने दी जाय। तीसरे, यहूदी और अरबों की सम्मिलित-स्वायत्त शासन संस्था स्थापित की जाय, जो फिलिस्तीन के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करने की कोशिश करे और जिसमें अरबों और यहूदियों के हितों की समान रूप से रक्षा हो। उन्होंने और भी कहा कि यदि उन्हें यह आश्वासन मिल जाय कि फिलिस्तीन को यहूदियों के लिए विभाजित कर दें तो समस्या का सुलझाव हो जायेगा तो वे इस पर भी विचार करने को तैयार हैं, क्योंकि उन्हें इस संकट को दूर करना है।

यहूदी क्या सोच रहे हैं ?

अमेरिका और ब्रिटेन का प्रोत्साहन पाकर यहूदी जबर्दस्ती फिलिस्तीन में प्रवेश करने पर तुले हुए हैं। इसमें उन्हें अमेरिका और योरोप के धनी यहूदियों से पूर्ण सहायता मिल रही है। उनका कहना है कि फिलिस्तीन में यदि उन्हें आश्रय न मिला तो योरोप के १२,५०,००० यहूदियों का दसवाँ हिस्सा जाड़े तक नष्ट हो जायेगा। यहूदियों के तीन दल इस समय फिलिस्तीन में हैं। एक तो सामरिक सैनिकों का दल है जो शस्त्र के बल पर अरबों को दबा रहा है। दूसरा दल, मध्यमार्गियों का है जो समझौते की बातचीत करना चाहता है और जिसने कहा था कि वह महात्मा गांधी की तरह अहिंसा के हथियार से अपनी मांगें पूरी करवायेगा। तीसरा दल आतंकवादियों का है जो लुके-छिपे हमले कर रहा है।

समस्या का सुलझाव क्या है ?

ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने अपनी दुरंगी चालों द्वारा अरब और यहूदी लोगों के हृदय में एक दूसरे के प्रति उतनी नफ़रत पैदा कर दी है कि वे एक दूसरे से सीधे बातें नहीं करना चाहते। वे जोश और नफ़रत से इतने अन्धे हो रहे हैं कि नहीं पहचान पा रहे हैं कि तीसरे शत्रु के देश में रहते कभी समस्या का सुलझाव नहीं हो सकता। आपसी समझौते और एक दूसरे के प्रति विश्वास-प्रदर्शन से ही उनकी मांगें पूरी हो सकेंगी, ब्रिटिश सरकार की दया से नहीं। ब्रिटिश सरकार ने तो समस्या के सुलझाव के लिए 'पील कमीशन' द्वारा यहूदियों और अरबों के बीच फिलिस्तीन के बँटवारे का सुझाव रखा था। फिलिस्तीन में जगह और साधनों की कमी देखते हुए यह कितना मूर्खतापूर्ण सुलझाव मालूम होता है? फिलिस्तीन की समस्या हिन्दुस्तान से बहुत कुछ मिलती जुलती है और दोनों के सुलझाव का एक ही उपाय 'ब्रिटेन' का फिलिस्तीन छोड़ देना है। जैसा कि फिलिस्तीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपील की है कि अरबों और यहूदियों को ब्रिटेन की ओर न ताक कर आपस में समझौते की कोशिश करनी चाहिए जिससे कि वे साम्राज्यवादी स्वार्थ के हाथों का खिलौना न बन सकें।

◆ ◆ ◆

आजकल के फिल्म

(पेज १२ का शेष)

बनना है न कि प्रेम के नाम को अपवित्र करनेवाले छिछोड़ेपन में लीन प्रेमिक तथा प्रेमिकायें। आज हमें उच्च संगीत की आवश्यकता है जो हमारे हृदयों में ऐसी तन्मयता की लहर उठा दे कि भारतीय एक होकर अपने देश के लिए मर मिटें। आज हमें ऐसे चल-चित्रों की आवश्यकता है जो हममें एकता और जागृति उत्पन्न कर हमें तिमिर के घोर अन्धकार के गड्ढे से निकालकर प्रकाश में लायें। हम फिल्म-कम्पनी के डाइरेक्टरों से आशा करते हैं कि अब जनता के सम्मुख ऐसे चित्र आवेंगे जो अमावस्या के घने अन्धकार में भी हमें दीपकों के प्रकाश के द्वारा राह दिखावेंगे जिससे हमारी आत्मा का विकास होगा और हम अपनी पराधीनता की जंजीर को स्वयं तोड़ने का प्रयत्न करेंगे।

स्टैनिष्ट्रीट की अचूक दवायें

खाँसी • सर्दी • इन्फ्लुएन्ज़ा

हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

स्टैनिष्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौसफाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुँचाता है।

एन्‌जौएड्स टिकिया एक भूतपूर्व जनस्वास्थ्य परिचालक के नुस्खे के अनुसार सावधानी से बनी हैं। इन पर चीनी चढ़ी होती हैं; एन्‌जौएड्स टिकिया इन्फ्लुएन्ज़ा की महामारी में लाभदायक प्रतिषेधक साबित हुई हैं। साधारण सर्दी से भी ये रक्षा करती हैं।

कैगमैग • स्टैनिष्ट्रीट सिरप • एन्‌जौएड्स

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ

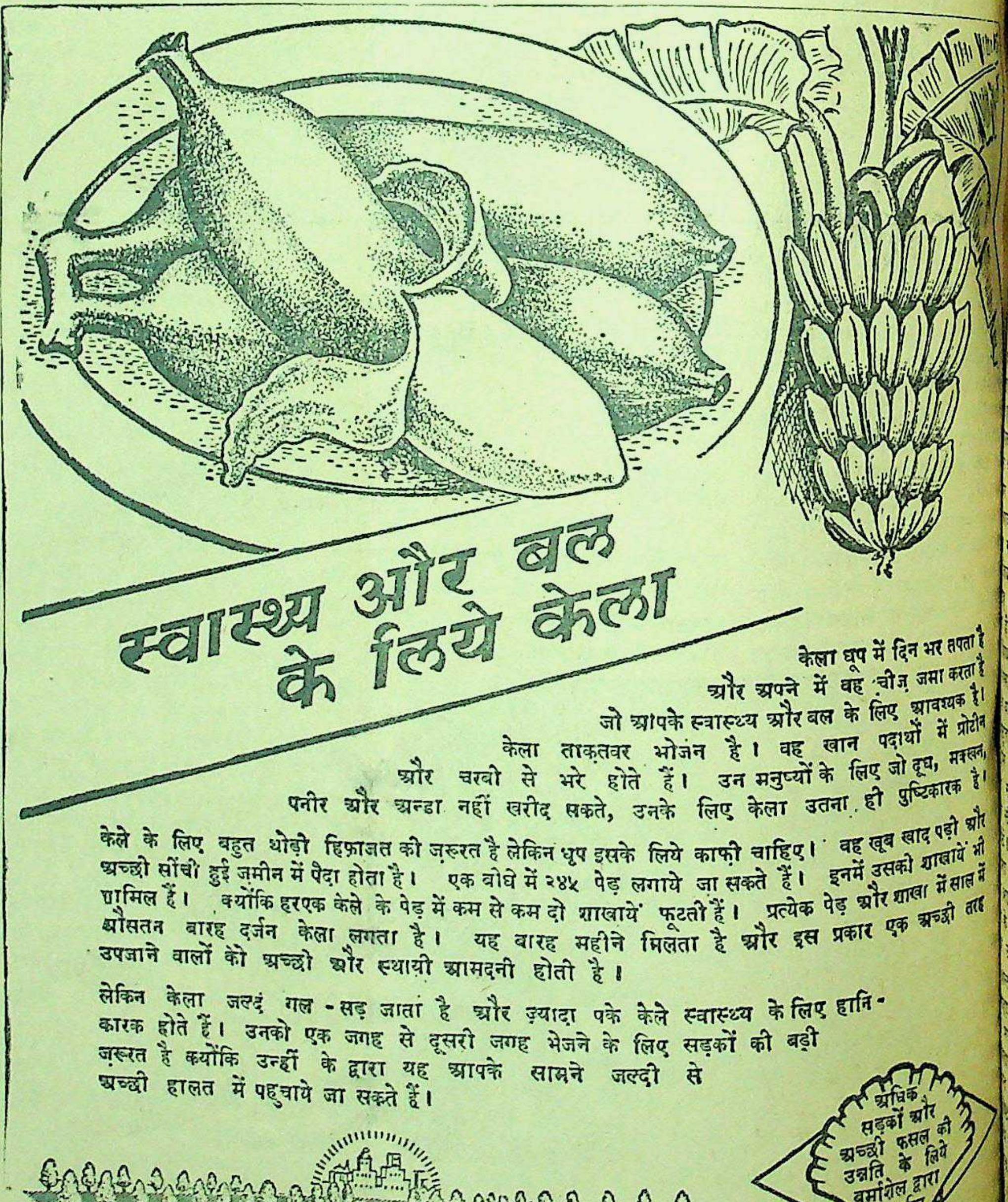

स्वास्थ्य और बल के लिये केला

केला धूप में दिन भर तपता है
और अपने में वह चीज़ जमा करता है
जो आपके स्वास्थ्य और बल के लिए आवश्यक है।
केला ताक़तवर भोजन है। वह खान पदार्थों में प्रोटीन
और चरबी से भरे होते हैं। उन मनुष्यों के लिए जो दूध, मक्खन,
पनीर और अन्डा नहीं खरीद सकते, उनके लिए केला उतना ही पुष्टिकारक है।

केले के लिए बहुत थोड़ी हिफ़ाजत की ज़रूरत है लेकिन धूप इसके लिये काफ़ी चाहिए। वह खूब खाद पड़ी और अच्छी सींची हुई ज़मीन में पैदा होता है। एक बीघे में २४५ पेड़ लगाये जा सकते हैं। इनमें उसकी शाखायें भी शामिल हैं। क्योंकि हरएक केले के पेड़ में कम से कम दो शाखायें फूटती हैं। प्रत्येक पेड़ और शाखा में साल में औसतन बारह दर्जन केला लगता है। यह बारह महीने मिलता है और इस प्रकार एक अच्छी तरह उपजाने वालों को अच्छी और स्थायी आमदनी होती है।

लेकिन केला जल्द गल-सड़ जाता है और ज़्यादा पके केले स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। उनको एक जगह से दूसरी जगह भेजने के लिए सड़कों की बड़ी ज़रूरत है क्योंकि उन्हीं के द्वारा यह आपके सामने जल्दी से अच्छी हालत में पहुचाये जा सकते हैं।

अधिक सड़कों और अच्छी फसल की उन्नति के लिये बर्माशेल द्वारा प्रचारित

अच्छी सड़कें उन्नति के मार्ग हैं।

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्वदेशी
[illegible]
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़
युकॅलिप पेन बाम
दाद का मरहम
खाण्डालेकर बन्धु
बम्बई ४

ददाताओं के पत्र

गत ३ नवम्बर समग्र ग्राम- शिविर-सेवदह का उद्घाटन- देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद के सभा- गया। विद्यालय के विद्यार्थी और देहात की जनता ने उनका स्वागत किया। नदी में पानी आ में ही सभा की आयो- थी। राजेन्द्र बाबू की मोटर में आई फिर भी जनता आशा उनके दर्शन के लिए शान्तिपूर्वक

डाक्टर परमानन्द ने विद्यालय स्वागत-गान गाया। पश्चात् उपसभापति श्री श्यामनारायण- अभिनन्दन पत्र भेंट किया प्रधाना- विद्यालय का सक्षिप्त कार्य- सुनाया और समग्र-ग्राम- खोलने की आवश्यकता पर हुए उद्घाटन के लिए बाबू से उद्घाटन करने के पूर्व राजेन्द्र विद्यार्थियों और कार्यकर्ताओं को हुए बतलाया कि १९२० की सस्थायें बन्द हो गई तब विद्यापीठ ने लिया। राष्ट्रीय- महात्मा जी ने कहा था विद्यापीठों को केवल यूनिवर्सिटियों न बनाओ। यदि तुम उनको देखना चाहते हो तो आवश्यक सर्वा-केन्द्र बना दो।

ने अपने विद्यालय को सर- प्रकार का सम्बन्ध नहीं इसके अलावा पठन-पाठन हमने अपनी पाठशालाओं मे परन्तु मौलिक अन्तर नहीं, बन्धन में थे और इन सस्थाओं भावों को जागृत किया। इन देश की बड़ी सेवा की है। आज विद्यालय सारे देश में बहुत काम त्रुटि है वह यह कि हम लोगों केन्द्र मानकर उसका असली बनाया। परिणाम यह हुआ कि बाद आज कांग्रेस में वह स्थान कार्य को नहीं मिला। परन्तु स्थान मिला है उसके प्रयत्न हमारे प्रयत्न के सफल होने उसमें लोग जहाँ भी प्रयत्न तो मुझे बड़ी ख़ुशी होती हूँ परन्तु मैंने आपके उद्- को करने के लिए स्वीकार मैं आशा करता हूँ कि जिस आज इसे खोलने का प्रयत्न आप लोग जारी रखेंगे। से मैं अधिक आशा करता चलना उन पर ही निर्भर है। निकलेंगे तब अपनी सेवा से, बुद्धिमत्ता से लोगों में करेंगे और लोग इसकी यहाँ जो मिल सकता चाहिए, जो मिले, दूसरों दोनों कार्य सच्चे सेवा-भाव चाहिएं। मैं आशा करता प्रयत्न सफल होगा और इस देश का कल्याण होगा। मैं करता हूँ।

जनता को संबोधित करते शिक्षण-शिविर के लिए आप पहुँचायें और विद्यालय की मन-धन से करें। भाषण हुए आपने चुनाव में कांग्रेस बड़ी संख्या में कांग्रेस का अपील की, सभा में अलावा सर्वश्री मथुरा अनुग्रह बाबू तथा जगत श्याम बाबू ने आगत दिया। —सवाददाता

✿

गीत

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

हृदय का विसुध धूम है पंथ घेरे,
तिमिर पर लुटे जा रहे फूल मेरे,
किसी ने कभी दीप उर में जलाया नयन-स्नेह भरता चला जा रहा हूँ।
शलभ-पाँति अनगिन उठी भावना की,
सभी सो गईं भूति में साधना की,
किसी ने कभी पंथ था जो दिखाया उसी पर बिखरता चला जा रहा हूँ।
बँधा शून्य में आज आह्वान मेरा,
मुझे ले चला चिर अनल-गान मेरा,
किसी ने मुझे नेश स्वर में बुलाया, सतत मौन जलता चला जा रहा हूँ।
नहीं चाहिए अब मुझे स्वर विजय का,
नहीं चाहिए अब मुझे वर निलय का,
किसी ने ज्वलन-प्राण मुझमें जगाया अमर ज्योति करता चला जा रहा हूँ।

स्वर्गवासी रमाकान्त त्रिपाठी—यों तो सभी मरते हैं, पर मरनेवालों में कुछ ऐसे मरते हैं जिनसे समाज, देश एवं राष्ट्र का बड़ा अहित होता है। श्री स्वर्गीय रमाकान्त त्रिपाठी 'दिनेश' उन्हीं मरनेवालों में एक हैं। श्री रमाकान्त त्रिपाठी मेरा छोटा सम्बन्धी भाई ही है। गोरखपुर (विष्णुपुर) का निवासी, राष्ट्र-भाषा विद्यालय बरहज बाज़ार का उत्साही भूतपूर्व छात्र तथा सम्प्रति लखनऊ में रहकर अध्ययन करनेवाला प्रतिभाशाली लेखक के रूप रमाकान्त त्रिपाठी हमारे सामने हैं। गोरा चेहरा, लम्बा कद, बीस वर्ष का तरुण, बड़ी-बड़ी आँखें, उसके अधरों की मृदु मुस्कान अभी भी आँखों के सामने नाच रही है। अपने पिता-माता का इकलौता पुत्र, नव-विवाहिता का अचल सुहाग 'रमाकान्त' एकाएक गत १ अक्टूबर को सबको छोडकर चुपचाप स्वर्ग का राही बन गया। पिछले जुलाई मास में जब मैं सपरिवार वर्धा आ रहा था, रमाकान्त लखनऊ में मिला था। वह हम लोगों को पहुँचाने स्टेशन आया था। हमें क्या पता था कि रमाकान्त से यह मेरी अन्तिम मुलाकात है। होली में दोनों ने एक दूसरे से मिलने का निमन्त्रण स्वीकार किया था। ट्रेन छूटते समय का 'नमस्कार' तो अजीब ही रहा। उसकी खामोश जलमयी आँखें सामने ही जान पड़ती हैं। वह विनोदप्रिय तो इतना था कि कभी चुप बैठा ही नहीं रह सकता। कविवर मोती बी० ए०, शम्भूनाथसिंह तथा नेपाली आदि व्यक्तियों ने जिसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। जो कल हमारे लिए साकार था आज वह अतीत काल्पनिक हो गया। ईश्वर की भी लीला विचित्र है।

वर्धा —भगवानप्रसाद त्रिपाठी
२० अक्टूबर ४५

* * *

प्रयाग हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन, रविवार तारीख २५ नवम्बर १९४५ को २ बजे दिन से सम्मेलन के कार्यालय में होगा। विचारणीय विषय यह होंगे—कार्य समिति का संगठन (नियम २२ के अनुसार) हिन्दी विश्वविद्यालय परिषद् का संगठन (उपनियम १८ के अनुसार) साहित्य-समिति का संगठन (उपनियम ३१ के अनुसार) प्रचार-समिति का संगठन (उपनियम ३६ के अनुसार) सग्रह-समिति का संगठन (उपनियम ४३ के अनुसार) उदयपुर-सम्मेलन मे स्वीकृत निश्चयों को कार्यरूप में परिणत करने के सम्बन्ध मे विचार। (प्रस्तावों की प्रतिलिपि साथ में भेजी जाती है) संवत् २००२ के लिए विभिन्न पारितोषिक समितियों का संगठन।

—मौलिचन्द्र शर्मा, प्रधान मन्त्री

* * *

प्रयाग के सलोरी ग्राम के निवासियों ने अभी हाल में एक सभा करके यह निश्चय किया है कि उस ग्राम में इधर कुछ दिनों से कटरा के वैद्य पंडित नरोत्तम मालवीय के सरस्वती औषधालय की जो शाखा चल रही है, वह पूर्णरूप से धर्मार्थ कर दी जाय और उसका पूरा ख़र्च वे लोग चन्दा करके दें। —ठाकुरदत्त मिश्र

* * *

बंबई में हिन्दी की उन्नति के लिए एक विराट् आयोजन किया गया है। काम चलाने के लिए "हिन्दी-ज्ञान-मन्दिर" नाम की एक लिमिटेड कम्पनी बना ली गई है और आवश्यकतानुसार काफ़ी धन भी एकत्र कर लिया गया है।

अब काम को आगे बढ़ाने के लिए हमें हिन्दी के समस्त साहित्यिक बन्धुओं की सहायता की आवश्यकता है। हमारी योजना यह है कि सभी लोकोपयोगी विषयों के ग्रन्थ जो सरल सुबोध और परिमार्जित हिन्दी में और प्रामाणिक आधारों पर लिखे गये हों, बहुत सुन्दरता से छपाकर प्रकाशित किये जायें। बच्चे, युवा और वृद्ध, स्त्री, पुरुष सभी के लिए हम सुन्दर और सुलिखित साहित्य तैयार कराना चाहते हैं। सभी पुस्तकों की छपाई सफाई जिल्द और कवर दर्शनीय होंगे। —रामनरेश त्रिपाठी

* * *

डूंगरपुर में शीघ्र से शीघ्र श्री राजपूताना हिन्दी-साहित्यकार-सम्मेलन हो रहा है। राजपूताना के अलावा समस्त भारतीय कविवर निमंत्रित किये जायेंगे विशेषकर पत्रकार जिनसे कि राजपूताना के साहित्य एवं साहित्यकारों को अवश्यमेव, कुछ वास्तविक सम्बल मिल सके। प्रमुख साहित्यिक कार्यकर्ता श्री महालचन्द भादानी, पृथ्वीराज डाँगा आदि सभी प्रयत्नशील हैं। राजपूताना के प्रमुख साहित्यिक कार्यकर्ता 'मारवाड़ी गौरव' मासिक के सम्पादक कविवर अद्भुत शास्त्री ने संयोजक बनना स्वीकार कर लिया है। —शिवेन्द्र

* * *

उदयपुर मे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर श्री गौरीशंकर वेदान्ताचार्य के सभापतित्व में एक कविगोष्ठी हुई। सर्वश्री भरत व्यास, अद्भुत शास्त्री, चन्द्रदेव, प्रो० गोस्वामी गणपतिचन्द्र भण्डारी, हयपतिसिंह, रामचन्द्र शर्मा आदि आदि बाहर से पधारे हुए ओजस्वी कवियों ने भाग लिया। विशेषतः श्री भरत व्यास की "दो महलों की चर्चा" तथा श्री अद्भुत शास्त्री की "किसान" शीर्षक कविताओं ने अच्छा प्रभाव डाला। —संवाददाता

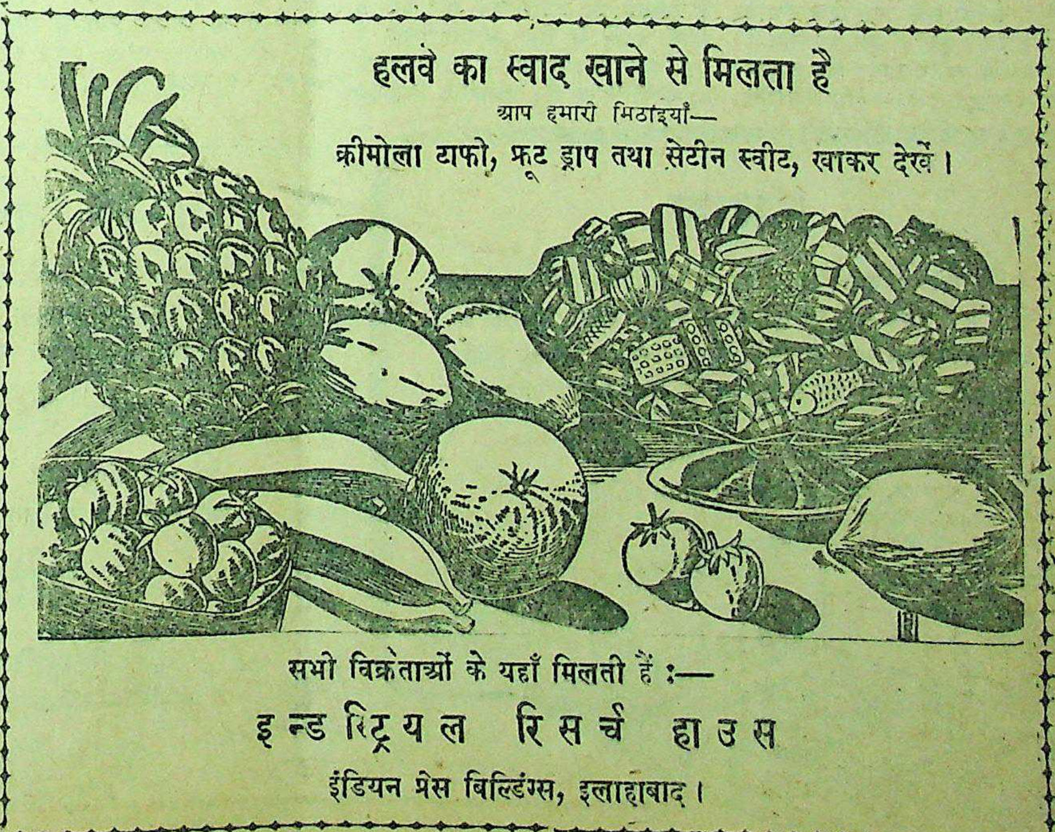

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।
सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

हमारी नई दिल्ली की चिट्ठी

केन्द्रीय और प्रांतीय सरकारों में मतभेद क्यों ?

आजाद हिन्द-सेना पर एक साथ तीन मुकदमे—नेहरू जी को इंडोनेशिया जाने की आज्ञा नहीं मिली—कांग्रेस पार्टी के जीत के लक्षण।

(हमारे विशेष प्रतिनिधि-द्वारा)

भारत की राजधानी में आगामी सप्ताह बहुत ही महत्त्वपूर्ण होगा। एक ओर तो २१ नवम्बर से दिल्ली के ऐतिहासिक लाल क़िले में आज़ाद हिन्द-फ़ौज के तीनों अफ़सर सर्वश्री कप्तान शाहनवाज़, सहगल और लेफ़्टिनेंट ढिल्लन के विरुद्ध सम्राट् के विरुद्ध युद्ध करने के अभियोग में मुक़दमे की कार्रवाई पुनः शुरू होगी और दूसरी ओर २४ और २५ नवम्बर को दिल्ली-निवासी पोलिंग स्टेशनों पर जाकर केन्द्रीय असेम्बली में अपना प्रतिनिधि चुनकर भेजेंगे। इस दौरान में केन्द्रीय असेम्बली के कांग्रेस उम्मीदवार श्री आसफ़अली पोलिंग पर उपस्थित होने की अपेक्षा लाल क़िले में आज़ाद हिन्द-फ़ौज के वीर अफ़सरों की पैरवी करने में व्यस्त रहेंगे। परन्तु उनका भारी बहुमत से चुना जाना बिलकुल निश्चित है। उनके दोनों विरोधी उम्मीदवार प्रोफ़ेसर रामसिंह (हिन्दू महासभाई) और मोहम्मद उसमान आज़ाद (स्वतन्त्र मुस्लिम) दोनों की जमानतें भी यदि जब्त हो जायें तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

एक साथ तीन मुक़दमे

आज़ाद हिन्द-फ़ौज के इन तीन अफ़सरों के अतिरिक्त चार अन्य कप्तान रशीदअली, जमादार फ़तहख़ाँ, सूबेदार सिंगारसिंह और कप्तान बुरहानउद्दीन को भी उनके विरुद्ध लगाये जानेवाले अभियोगों की फ़र्द दे दी गई है। इनमें से तीन पर एक साथ और कप्तान बुरहानउद्दीन पर पृथक् मुक़दमा चलाया जायगा। इस प्रकार ये दोनों मुक़दमे लाल क़िले में ही जहाँ पर कि उक्त अफ़सर क़ैद किये हुए हैं, पहले मुक़दमे के साथ-साथ ही चलेंगे। कप्तान रशीद ने यह इच्छा प्रकट की है कि उनके मुक़दमे की पैरवी कांग्रेस और लीग दोनों पैरवी समितियाँ करें। अतः पैरवी समिति के संयोजक श्री आसफअली ने लीगी वकीलों को भी दिल्ली पहुँचने की सूचना दे दी है। सरकार फिलहाल आज़ाद हिन्द-फ़ौज के जितने अफ़सरों के विरुद्ध मुक़दमे चलाना चाहती है, उनकी सूची अनधिकृत रूप से प्रकट हो गई है। सूची में कुल ४९ नाम हैं जिनमें से तीन नागरिक और शेष आज़ाद हिन्द-फ़ौज के अफ़सर हैं। बड़ौदा महारानी के निकट-सम्बन्धी कर्नल भोंसले भी इसी सूची में हैं। ये भी लाल क़िले में बन्द हैं और केन्द्रीय राज्य-परिषद् के सदस्य श्री कालीकर ने उनसे मिलने की इजाज़त माँगी थी परन्तु नहीं मिली। आज़ाद हिन्द-फ़ौज-सम्बन्धी मुक़दमों में शहादत देने के लिए कई प्रमुख जापानी और बर्मी दिल्ली पहुँच गये हैं। उनमें से कुछ सफ़ाई पक्ष की ओर से और शेष इस्तगासा-द्वारा तलब किये गये हैं।

नेहरू जी को आज्ञा नहीं मिली

मैंने पहले भी "देशदूत" की अपनी चिट्ठी में यह राय प्रकट की थी कि नेहरू जी को इण्डोनेशिया जाने की इजाज़त देना भारत-सरकार अपने ऊपर एक नई आफ़त मोल लेना समझती है। वही हुआ भी। परन्तु भारत-सरकार ने जिस बहाने से पंडित जवाहरलाल नेहरू का प्रार्थनापत्र नामंजूर किया है, वह बहुत अनुचित है। सरकार हज़ारों सैनिकों को हवाई जहाज़ों-द्वारा जावा भेज सकती है, परन्तु एक व्यक्ति के लिए और वह भी ऐसा जिसकी ओर भारतवर्ष ही नहीं, वरन् सारा पूर्वी एशिया रहनुमाई के लिए देख रहा हो, हवाई-यात्रा की व्यवस्था करने में असमर्थता प्रकट करना कितना हास्यास्पद है ? मुख्य कारण, जैसा कि मैंने पहले लिखा था, भारत-सरकार की यह आशंका है कि कहीं पंडित नेहरू के वहाँ जाने से इण्डोनेशिया में गई हुई भारतीय फ़ौजें बिगड़कर वहाँ के राष्ट्रवादियों के साथ न मिल जायें और सुभाष बाबू तथा आज़ाद हिन्द-फ़ौज का इतिहास फिर इतना शीघ्र ही न दोहरा उठे।

केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों में मतभेद

पर्दे के पीछे अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएं घट रही हैं। मालूम हुआ है कि युद्ध सेना से लौटनेवाले सैनिकों को विघटन के बाद अन्यत्र काम पर लगाने के बारे में केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के बीच कुछ समय से पत्र-व्यवहार चल रहा है। सर एडवर्ड बेन्थल का कहना है कि इनमें से अधिकांश लोगों को सड़क-निर्माण कार्यों में लगाया जा सकता है। सारे देश में सड़कें बनाने के लिए भारत-सरकार ने एक विशाल योजना बनाई है। इसमें ब्रिटिश स्वार्थ भी निहित हैं। रोलरों के लिए एक भारी आर्डर इंगलैंड के कारख़ानों को दिया जा चुका है। परन्तु बहुत से फ़ौजी सड़कों पर मज़दूरी करना पसन्द करेंगे, इसमें भारी सन्देह है। विविध प्रान्तीय सरकारों ने केन्द्रीय सरकार को सूचना दी है कि पहले तो फ़ौजी लोग सड़कों पर काम करने के लिए उत्सुक नहीं हैं। दूसरे, वे इस काम को करने में इतने क्षम नहीं होंगे जितने कि साधारण मज़दूर। इसके अलावा आम मज़दूरों को जहाँ तीस रुपया मासिक देना होगा वहाँ केन्द्रीय सरकार के अनुमान के अनुसार इन फ़ौजियों को ४५ रुपये देने होंगे। अतः प्रान्तीय सरकारों ने इन फ़ौजियों को काम पर लगाने के लिए केन्द्रीय सरकार से अतिरिक्त आर्थिक सहायता माँगी है। मालूम हुआ है कि सीमाप्रान्त के प्रधान मन्त्री डा० खान साहब ने केन्द्रीय सरकार के सामने यह सुझाव रखा है कि इस काम के लिए भारत-सरकार प्रान्तों को ६० करोड़ रुपये की अतिरिक्त सहायता प्रदान करे। इस सहायता का उपयोग इस प्रकार किया जायगा—इन फ़ौजियों को प्रथम वर्ष में साधारण मज़दूरों से १५ रुपया मासिक अधिक, दूसरे में १० रुपये, तीसरे में ७॥ रुपये, चौथे में पाँच और पाँचवें में ढाई रुपये दिये जायँ। इस तरह से यह सारा काम ५ सालों में समाप्त हो जायगा। परन्तु इस बीच में, १९४६ की ग्रीष्मऋतु तक केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारें ही बदल जायेंगी।

कांग्रेस पार्टी की जीत के लक्षण

केन्द्रीय असेम्बली के चुनावों में खड़े हुए सारे उम्मीदवारों की सूची प्रकट हो जाने के कारण अब विविध पार्टियों के अवसरों पर कल्पनायें की जा रही हैं। असेम्बली में कुल १४० सदस्य होते हैं (स्पीकर को छोड़कर)। इनमें से ३० के लगभग सरकारी या सरकार-द्वारा नामज़द सदस्य हैं। गत असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के ४० सदस्य थे और मुस्लिम लीग के २५। परन्तु इस बार अब तक कांग्रेस के २५ उम्मीदवार निर्विरोध चुने जाने और देश की आम भावना को दृष्टि में रखते हुए यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि भावी केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के ५५ से कम सदस्य नहीं होंगे जब कि मुस्लिम लीग के २० से अधिक नहीं। इस बार कांग्रेस राष्ट्रीय दल का अस्तित्व बिलकुल नहीं रहेगा। इसके दो प्रमुख सदस्य सरदार सन्तसिंह और श्री के० सी० नियोगी कांग्रेस टिकट पर ही चुनाव लड़ रहे हैं।

राजा-रानी

नीति-कुशलता तथा प्रजा-
के अभाव में विलासी राजा के राज
जिस प्रकार की अव्यवस्था और
फैल जाती है, इसका रोमांचकारी परि
रवि बाबू ने इस उत्कृष्ट नाटक में
किया है। प्रजा की पुकार पर
का उत्सर्ग अत्यन्त प्रभावोत्पादक
कर्त्तव्यनिष्ठा का ज्वलन्त उदाहरण
मूल्य १।≡)
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

क्या पेट के दर्द ने जकड़ लिया है?

MACLEAN Brand Stomach Powder
Alex. C. Maclean
Copyright

आपको नहीं होना चाहिए!

हमाम

सब के लिये बड़ा साबुन अथवा यह कह लीजिये कि बड़ा साबुन छोटे दामों में। इसके गुणों की सुप्रसिद्धता, इसका खास वज़न और कम दाम, जब कि हर चीज़ की क़ीमत बहुत बढ़ गई है, और इस सुगंधित तथा गाढ़े झाग ने इसे हिन्दुस्तान का सबसे बढ़िया साबुन सिद्ध कर दिया है।

स्टाक हर जगह उपस्थित है
अपने दूकानदार से हमाम माँगिये

दी टाटा आयल
मिल्स कं० लि०

HAMĀM
HAMAM
A TATA PRODUCT

७० वर्ष से भी अधिक

समय से 'ओरियन्टल' ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति एवम् सुरक्षा की स्थापना की है। केवल १९४४ में ही ८७३९८ व्यक्तियों ने लगभग २२,००,००,०००) का बीमा कराया

फन्ड ३६॥। करोड़ के ऊपर

हमसे हर प्रकार के जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामर्श करके आप सदा लाभ में रहेंगे।

ओरियन्टल

गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स कं० लि०
भारतवर्ष में संस्थापित १८७४ प्रधान कार्यालय, बम्बई
शाखा—३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद
ब्रांच, सेक्रेटरी, मिस्टर ए० सी० गुप्ता।

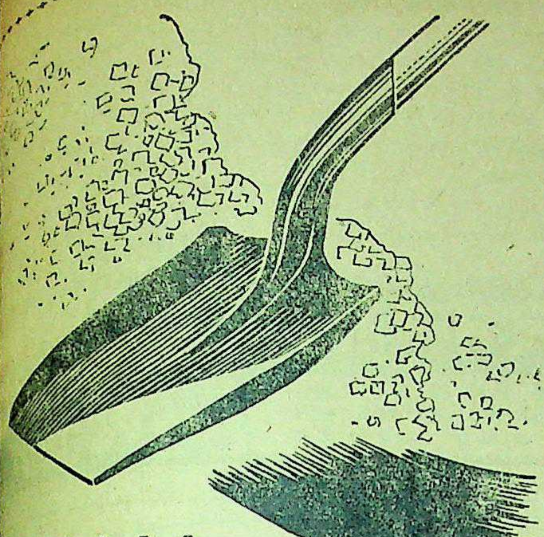

ेलचा . . .

े के खानों में गहराई से निकालने में या मकानों के लिए पृथ्वी के धरा-तौल करने आदि के सम्पादन में ही अत्यावश्यक औज़ार है।

हम पाँच विभिन्न आकारों के बेलचे तैयार करते हैं। वे आपको पक्के व मजबूत काठ के बेंटों के साथ मिलेंगे।

TRADE MARK

RICO OLS

ा औज़ार

यू० पी०, पंजाब उत्तरी पश्चिमी
सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध
के डिस्ट्रिब्यूटरस्।
मेसर्स मोहम्मद दीन ऐंड सन्स,
ग्रैन्ड ट्रंक रोड, अमृतसर
बन्दर रोड, करांची।

टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड,
(एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमूरी द्वारा प्रचारित।

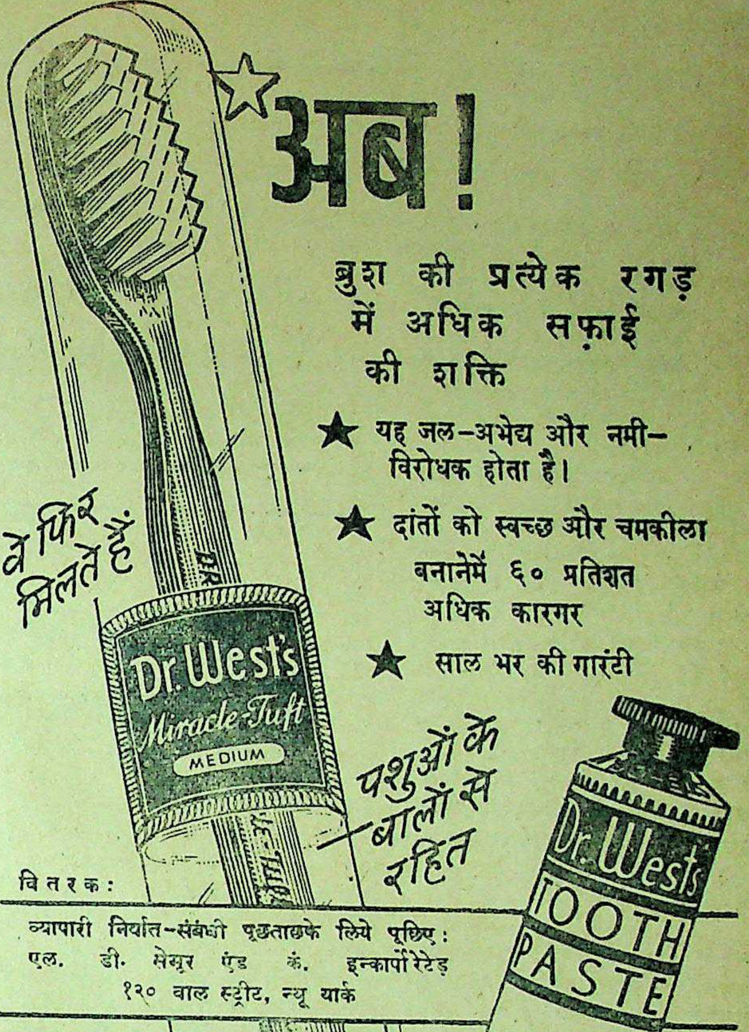

अब!

ब्रुश की प्रत्येक रगड़ में अधिक सफ़ाई की शक्ति

★ यह जल-अभेद्य और नमी-विरोधक होता है।

★ दांतों को स्वच्छ और चमकीला बनानेमें ६० प्रतिशत अधिक कारगर

★ साल भर की गारंटी

वितरक:

व्यापारी निर्यात-संबंधी पूछताछके लिये पूछिए:
एल. डी. सेमूर एंड कं. इन्कार्पोरेटेड
१२० वाल स्ट्रीट, न्यू यार्क

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट

Copyright; JWT(F)

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ

१—दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।

२—गठीली और कठोर जड़ी-बूटी व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।

३—सर्वोपरी परीक्षा परीक्षोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।

४—पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।

५—हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।

परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये

सुखसंचारक कम्पनी ....लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग .... सुखसंचारक पोस्ट आफिस

मथुरा

---

८ नवम्बर, १९४५

राजा-रानी
लता तथा प्रजा-
विलासी राजा के राज
अव्यवस्था और
इसका रोमांचकारी परि
उत्कृष्ट नाटक में
की पुकार पर दयालु
त्यन्त प्रभावोत्पादक
का ज्वलन्त उदाहरण

न प्रेस, लिमिटेड,

के दर्द
ड़ दिया है?

आपको
ना चाहिए!

ACLEAN
Brand
omach
owder

धिक
रिवारों में शान्ति
में ही ८७३९८
का बीमा कराया

ऊपर
परामर्श करके

कं० लि०
ालय, बम्बई
ाबाद
ा।

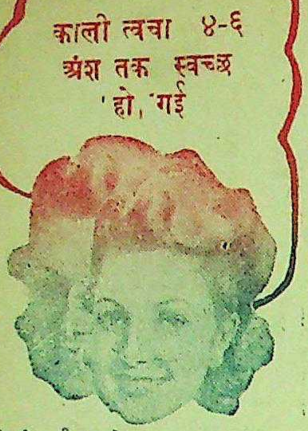
काली त्वचा ४-६ अंश तक स्वच्छ हो गई

चर्म सौन्दर्य बढ़ाने
की आश्चर्यजनक विधि

कुरूप काली त्वचा से अपने सौन्दर्य को नष्ट न करें क्योंकि त्वचा की कालिमा तत्क्षण दूर करने की यह आश्चर्यजनक तरल औषधि है। इससे नवीन सौन्दर्य प्राप्त हो जाता है—वही कोमल तथा गौर वर्ण जिसे प्रत्येक स्त्री चाहती है।

ह्वाइटेक्स की आज ही परीक्षा करें और देखें कि आपकी त्वचा कितनी जल्द कोमल हो जाती है। आपके वर्ण' 'आपके हाथ' ' आपकी भुजाओं के लिए गौर मृदु सौंदर्य। ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं होती। यह त्वचा में सीधे प्रवेश कर जाती है और त्वचा को पोषती है।

ह्वाइटेक्स की एक बोतल का प्रयोग करके देखें। इसके परिणाम पर आपको आश्चर्य होगा।

वितरक: जी० अथरटन एन्ड कं० (ईस्टर्न) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रोड, कलकत्ता।

Whitex
WHITENS THE SKIN

अब
कन्ट्रोल भाव पर
मिलते है

EVEREADY
एवरेडी बेटरी के बल्व

हिन्दुस्तान में सब जगह फुटकर व्यापारियों के लिए थोक भाव:—
नं. 1161 (2.5V) } रु. ११-४-० १०० का
नं. 1162 (3.8V) }
नं. 1163 (6.2V) ... ,, १६-१४-० ,, ,,

हिन्दुस्तान में सब जगह खरीददारों के लिए कानून भाव:—
नं. 1161 (2.5V) } ... एक का ६ आने
नं. 1162 (3.8V) }
नं. 1163 (6.2V) ... ,, ८ आने

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY (INDIA) LTD.
BOMBAY CALCUTTA MADRAS
COCHIN KARACHI DELHI

कोई गुण नष्ट नहीं होता!

पूरी तरह पकने से पहले नारियल तोड़ लिए जाते हैं। अतः उन्हें खोलने से रस गिर कर व्यर्थ जाता है। डेसीकेटेड् कोकोनट की प्रणाली में पकने से पहले नारियल तोड़े नहीं जाते। इससे सारा रस और पोषक तत्व उसमें जम जाते हैं।

इसमें आपको सब तत्व मिलेंगे

नुस्खों, नमूनों और व्यापारियों के नाम के विवरण के लिए लिखिए: सीलोन ट्रेड कमिश्नर फार इंडिया, सीलोन हाउस, ब्रुस स्ट्रीट, बम्बई
सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रचारित

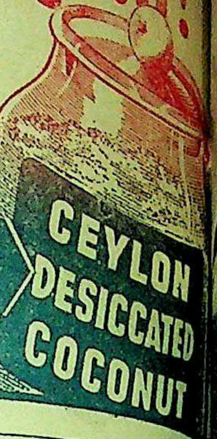

इस तरह धोने से पटखे जाने के नुकसान से बचाव होता है

छेद, उधेड़ या फट जाना......यदि कपड़ों को स्वच्छ करने के लिए उन्हें पुराने तरीके से कूटा जायगा तो कपड़ों को ऐसा अनावश्यक (और खर्चीला) नुकसान पहुँचता रहेगा।

इन चित्रों को देखये यह आपको बिना नुक़सान पहुँचाए कपड़ो को धोने का तरीका बताती हैं। (१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं—इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। (२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट ज़रा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपड़े को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाग कपड़े के हरेक तन्तु में प्रवेश न पाजाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरी तरह कूटने की आवश्यकता ही नहीं है। **सनलाइट का "स्वयं काम करने वाला फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा—यदि आपको यह विश्वास हो जाये कि गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है।** इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को छूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेन के साथ २ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन—जिसमें कि अब सारा मैल आचुका है—छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए। ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

SUNLIGHT
LEVER BROTHERS

प्रकाशक सम्पादक—एच० मो० घोष [के० मित्रा-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद

मूल्य ७॥)
षा ≈)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२५ नवम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी साप्ताहिक Sunday, 25th November 194

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवा की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्र जी के वनवास सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्र जी से भरत आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ।।।≈) चौदह आने।

अंग्रेज राजा की कथा।
पुरुष-सरदार पटेल !

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

पूना के 'नेचरक्योर' में महात्मा गांधी।
रंगमंच, मातृ-मन्दिर, मौसी की लड़की।

If it's ELGIN it's good!

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है

टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साडियाँ, चादरें; जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपडे, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

सरकारी कपडा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गाँठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाडी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमे पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों मे ही) अपनें नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

EK 23 HIN

दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर

प्रमुख विक्रेता (थोक)

मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ग्रोल्ड जनरलगंज, कानपूर

बटन ! बटन !! बटन

कोटों और कमीज के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड

अमृतसर।

कुटुम्ब में सौन्दर्य कायम रहे

माताजी कह रही हैं: "मेरी मां इतनी ही सुन्दर थी जितनी इस तसवीर में दिखाई देती है। परन्तु कोई भी तसवीर नहीं बता सकती उसकी त्वचा कितनी कोमल और सुन्दर थी।" माताजी ने अपनी त्वचा उनकी मां के तरह सुन्दर रखी। और चाहती है कि बेटी भी त्वचा के सौन्दर्य की उसी तरह रक्षा करे। उन्होंने लड़की को सौन्दर्य-रक्षा के कौटुम्बिक रहस्य को सावधानी से समझा दिया है जो है पिअर्स साबुन और स्वच्छ पानी का उपयोग। इस सबक के सहारे वे कई पीढ़ीयों तक कुटुम्ब में इस सौन्दर्य को कायम रख सकेंगी।

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

TQ. 40-172 HI

A. & F. PEARS, ISLEWORTH, ENGLAND

यूनाइटेड

कमर्शियल बैंक लिमिटेड

२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।

बिक्रीत मूलधन............४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन......२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन........७½ लाख रुपया

डाइरेक्टरों का बोर्ड

श्री जी० डी० बिरला (चेयरमैन)

श्री एम० ए० इस्फ़हानी (वाइस-चेयरमैन)
श्री रमनलाल जी सारा (वाइस-चेयरमैन)

श्रीयुत अनन्तचूर. ला
" महादेव एल दहानुकर
" नवीनचन्द्र मफ़तलाल
" मदनमोहन आर रुइया

श्रीयुत मोतीलाल तपूरिया
" बैजनाथ जलान
" ईश्वरीप्रसाद गा
सर आदम जी हाजी

हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत

श्री बी० टी० ठाकुर (जेनरल मैनेजर)

शाखाएं एवं एजेंसियाँ—समस्त भारत तथा विदेशों में।

ब्रांच आफ़िस— अलबर्ट रोड, इलाहाबाद।
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर।

देशदूत

[वर्ष ८ संख्या १३] सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक [रविवार, २५ नवम्बर, १६४५

...ने एक बार कहा था कि ...जाने कोउ कोऊ' किन्तु इस ...के रहस्य 'एटमबम' को सिर्फ़ ...के तीन सयाने व्यक्ति जानते हैं-- ...एटली और मेकेंजी किंग--अर्थात् ..., ब्रिटेन और कनाडा। बेचारा ...बम' के रहस्य के जानने से ...गया। लन्दन में होनेवाले ...मंत्री सम्मेलन में रूसी वैदेशिक ...मोलोटोव ने ब्रिटेन के विरोध का ...खेला था, जान पड़ता है उसी ...में ट्रूमन, एटली और मेकेंजी ...एका से 'एटम बम' का रहस्य ...बताने का अभिनय कर दिखाया ...मिस्टर चर्चिल की भी यही राय ...रहस्य को रूस को हर्गिज न ...चाहिए। अपने राम की राय में ...तीन सयानों ने अच्छा ही किया ...तीसरा महायुद्ध हुआ और ...रूस से ठन गई तो विजय ...प्रजातंत्रवादियों की गोद में ...आकर बैठ जायेगी। हाँ, रूस ...लड़ाई जीतने में मित्रों की मदद ...किन्तु तीसरे युद्ध की उम्मीद ...तो उनके पास कुछ न कुछ रहना ...नहीं तो रूस का क्या ठिकाना? ...बाण गुप्त रूप से रख छोड़ा

* *

...सोवियट रूस--सुना है वह भी ...के वैज्ञानिक कारनामों में ...है। जर्मनी से--खासकर ब्रिटिश ...क्षेत्र से--कई जर्मन वैज्ञानिकों ...भगा ले गया है। पता नहीं जब ...वैज्ञानिकों को भगाने में लगे थे तो ...फ़ौजी पहरेदार किस हालत में ...असल में यह है कि ब्रिटिश फ़ौजी ...ने जब युद्धक्षेत्र में पीछे हटने की ...प्रणाली को अपनाते-अपनाते ...लड़ाई जीत ली तो फिर रूस ...की मूली है? ब्रिटेन को रूस ...भी राष्ट्र की क्या परवाह है? ...घर कोई गाय-भैंस तो लगती ...दूध तो उसे वक्त पर मिल ही ...। पिछले दिनों सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक ...घनाद शाहा रूस घूमकर आये ...करीब यही बोले कि रूस ...से अधिक भयंकर अस्त्र ...रहा है। अपने राम की ...अच्छा ही हो रहा है। ब्रिटेन तो ...'पेंडुलम' है, जो दायें-बायें एक- ...रहता है। अमरीका ने 'एटम ...ब्रिटेन उसमें शरीक हो गया ...करेगा तो ब्रिटेन वहाँ भी ...। सतयुग में नारद जी जो काम ...जिस तरह हर जगह टपक ...कलियुग में वही जगह ब्रिटेन ...मंत्रिमंडल को प्राप्त है। ब्रिटेन ...है और किसी का भी नहीं। ...रहस्य से यह कम रहस्य की ...है।

*

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

फ़्रांस के प्रजातंत्रीय नेता जनरल डिगाल ने प्रधान पद से इस्तीफ़ा दे दिया है। क्यों, इसलिए कि वह कम्यूनिस्टों के मायाजाल से घबराते हैं। बात यह है कि जनरल डिगाल पिछले युद्ध के समय से ही अमरीका और ब्रिटेन के पक्के हिमायतियों में रहे हैं और इधर जब से युद्ध समाप्त हुआ है तब से अमरीका के तो वह पूरी तरह मुरीद हो चुके हैं। हाँ, लेबनान के मामले से जनरल डिगाल और ब्रिटेन में कुछ खुट्टी हो गई है। इस वक्त फ़्रांस के नये चुनाव में कम्यूनिस्ट पार्टी बहुमत में है। वह मंत्रिमंडल बनायें तो कैसे बनायें? या तो अमरीका को खुश कर लें या फिर रूस को ही। एक म्यान में दो तलवार वह कैसे रख सकते हैं? इसलिए डिगाल साहब करते क्या? अपने राम की राय में फ़्रांस के दिन अच्छे नहीं हैं। युद्ध के पूर्व फ़्रांस में दस वर्षों के भीतर बीस बार मंत्रिमंडल बनता और बिगड़ता रहा और आख़िर में फ़ैसिस्टवाद उसे समूचा निगल गया। किसी तरह अब उसका उद्धार हुआ है तो कम्यूनिज्म उसे हड़प करना चाहता है। देखना है डिगाल साहब किस घाट लगते हैं। फ़्रांस को मारिये गोली, जब योरप के दूसरे राष्ट्र अपने भाग्य की घड़ियाँ--अमरीका, ब्रिटेन और रूस के नाम पर--गिन रहे हैं, तब अकेला फ़्रांस ही कौन-सा खुदाई वरदान लेकर आया है जिसे जन्नत नसीब हो जाये! आख़िर वह भी तो योरप में ही है?

गीत

लेखिका, श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा

चूमा जिसको प्रात-किरन ने,
झूमा मलय-पवन जिस मन में,
पूजा की थाली में भक्तों ने जिसको साजा- चुन चुनकर
फूल न वह मैं, हूँ काँटों से भरी बबूल!
सरि प्रवाह जिसके पग धोवे,
तरि को बाँधे नाविक सोवे,
जिस पर देवालय स्थापित हों, यात्री बैठ थकान मिटायें-
कूल न वह मैं, हूँ सागर निःसीम अकूल!
पीर मधुर प्राणों में भरती,
नीर मदिर बन दृग से झरती,
मर्म साधना का बतलाती रहती जो हँस-हँस जीवन भर-
भूल न वह मैं, हूँ संघर्ष सदा प्रतिकूल!
शरण, पंथ बन जो देती है,
चरण चिह्न का बल देती है,
गति का माप लिया करती जो कणकण का इतिहास छिपाये-
धूल न वह मैं, हूँ दृढ़ धरा-हृदय में मूल!

* * * *

ब्रिटिश मजदूर पार्टी के सभापति प्रोफ़ेसर लास्की आजकल मजदूर मंत्रिमंडल पर बेहद नाराज हो उठे हैं। लन्दन में पंडित जवाहरलाल नेहरू की ५७वीं वर्षगाँठ के अवसर पर बोलते हुए प्रोफ़ेसर लास्की ने कहा है कि ब्रिटेन को पराधीन राष्ट्रों को स्वाधीन कर देना चाहिए साथ ही उन्होंने एटली-सरकार की वर्तमान नीति की तीव्र भर्त्सना भी की है। प्रोफ़ेसर लास्की का कहना कौन भला आदमी है जो ठीक न समझेगा लेकिन एटली की सरकार, जो टोरियों की पूंछ बनती जा रही है, जब माने तब तो? अपने राम की राय में वर्तमान मजदूर मंत्रिमंडल मजदूरों का नहीं एक क़िस्म का जायकेदार खिचड़ी मंत्रिमंडल है। जिस मंत्रिमंडल में लार्ड लोग भी शामिल हैं, उस दल के मजदूर होने में कोई कोरसकर नहीं रह जाती। मजदूरों और लार्डों का यह गठबंधन है पूरा प्रगतिशील! इसमें मजदूर सरकार का दोष नहीं है, दोष है कलियुगी प्रजातंत्र का। वही हवा हमारे भारत में भी फैल रही है। कांग्रेस में भी एक ओर शुद्ध त्यागी राष्ट्रवादी हैं और दूसरी ओर रईस, महाराजा और ताल्लुक़ेदार भी कांग्रेसमैन बन बैठे हैं। इसलिए प्रोफ़ेसर लास्की अगर अपनी खैर चाहते हैं तो मौन रहें, नहीं तो मजदूर पार्टी के सभापति पद से भी वह धाराधार जायेंगे। मिस्टर एटली क्या करें? वह गद्दी ही ऐसी है कि मतिभ्रम हो जाता है। रैमजे मैकडानल्ड भी किस मजदूर नेता से कम थे?

* * * *

चुनाव की चहल-पहल जिस तरह भारत में फैल चुकी है, उसी तरह सारी दुनिया में फैली हुई है। क्या किया जाय तक़दीर की बात, जर्मनी को तीन सयानों ने बाँट लिया नहीं तो वहाँ भी चुनाव लीला के प्रदर्शन में कम से कम ब्रिटेन तो हर्गिज न चूकता। फ़्रांस को चुनाव का फल मिलना शुरू हो गया है। डिगाल साहब की सिट्टी-पिट्टी भूल गई है। एशिया में जापान में स्वतन्त्र चुनाव होने जा रहा है क्योंकि अमरीका चुनाव-चकल्लस का चचा जो ठहरा! बरमा में नया चुनाव कराने तथा उसे स्वतन्त्र बनाने की आवाज मजदूर-सरकार के मुखारबिन्द से फूट ही पड़ी है। रह गया चीन। वहाँ भी नये चुनाव की डोंडी पिटती जरूर लेकिन उसने रूस से संधि क्या की अपने गले में फाँसी का फंदा डाल लिया। चुनाव हो तो कहाँ से? अमरीका और ब्रिटेन की छत्रछाया होती तो चुनाव जरूर होता और वह भी प्रजातंत्रीय, स्वतन्त्र, वैधानिक और जनता की राय से। अब चीन कम्यूनिस्टों से प्राण बचाये कि चुनाव लड़े? लेकिन भारतवर्ष तो आज चुनाव चर्चा का अजायबघर बन गया है। आगे यह भी बिल्कुल तय है कि लड़ाई के बाद भारत ही ऐसा राष्ट्र है जहाँ चुनाव का अन्तिम फ़ैसला भी ठिकाने से होगा। योरोपीय और एशियाई राष्ट्र यों ही टुकुर-टुकुर ताकते रहेंगे, इसके सिवा और कुछ नहीं।

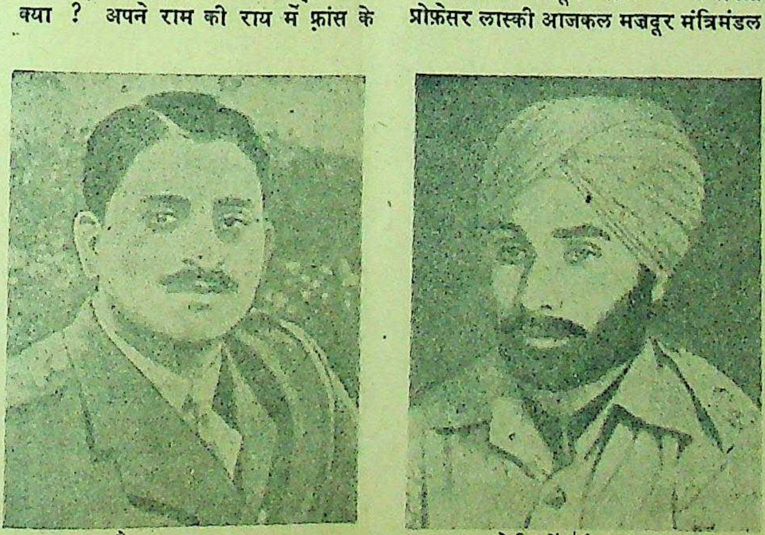

कैप्टन शाहनवाज

लेफ़्टिनेंट ढिल्लन

आजाद हिन्द सेना के इन प्रमुख अधिकारियों पर लाल किले में मुकदमा चल रहा है।

सम्पादक का पृष्ठ

विद्रोही भावनायें क्यों ?

संसारव्यापी महायुद्ध की समाप्ति हो गई है और शान्ति तथा सुरक्षा की योजनाओं को कार्यरूप में परिणत किये जाने की व्यवस्था भी प्रारम्भ हो गई है किन्तु लक्षण कुछ ऐसे जान पड़ते हैं कि शान्ति और व्यवस्था की वास्तविक स्थापना के दिन अभी दूर हैं। योरोपीय राष्ट्रों की इस वक्त बड़ी दयनीय दशा है। राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सैनिक दृष्टि से वह इतने परमुखापेक्षी और पंगु हो गये हैं कि उनके सामने अन्धकार ही अन्धकार दिखाई दे रहा है। हिंसक युद्ध ने उनकी कमर तोड़ दी है। वह अब क्या करें, किधर जायें और किस प्रकार की व्यवस्था का आश्रय ग्रहण करें, इस सम्बन्ध में वह निश्चित रूप से कुछ भी निर्णय नहीं कर पा रहे हैं। एक ओर तो उनकी यह स्थिति और दूसरी ओर मित्रराष्ट्र–विशेष रूप से अमरीका, ब्रिटेन और रूस–उन राष्ट्रों पर अपना अपना प्रभुत्व जबर्दस्ती लादने की फ़िक्र में व्यग्र हैं। इन विजयी राष्ट्रों के सामने भविष्य के स्वार्थों का ऐसा मोहजाल व्यापक रूप से खड़ा हो गया है कि वह उन दलित राष्ट्रों को अपना कठपुतला बनाकर ही रखना चाहते हैं। मित्रराष्ट्र युद्धोत्तरकालीन ऐसी योजनायें बना रहे हैं जिससे योरप के समस्त छोटे राष्ट्रों का शासन-सूत्र उनके प्रभुत्व से बाहर न रहे और भविष्य में आर्थिक, राजनैतिक, और व्यवसायिक लाभ उठाने के मार्ग में कोई बाधा न रहे। ऐसे प्रजातंत्रवादी शासन-व्यवस्था का वह समर्थन करने को तत्पर हैं जो उनकी देख-रेख के बाहर न हो। ऐसा नहीं है कि योरोपीय छोटे-बड़े राष्ट्र मित्रराष्ट्रों की इस प्रकार की कूटनीति से अवगत न हों किन्तु उनकी स्थिति इतनी अनैतिक और निर्बल हो गई है कि उन्हें कोई उचित मार्ग सुझाई ही नहीं देता। इस स्थिति में उन राष्ट्रों का भला होता हुआ तो दिखाई नहीं देता, हाँ, तीन सयाने राष्ट्र, जो संसार को जबर्दस्ती अपने प्रभुत्व में रखना चाहते हैं, स्वयं अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए झगड़ने लगे हैं। अमरीका, ब्रिटेन और रूस की वैदेशिक नीति के परिणाम स्वरूप योरोपियन देशों की राजनीति खटाई में पड़ गई है। रूस का मतभेद तो अब पूरी तरह से स्पष्ट ही हो गया है किन्तु प्रयत्नशील होने पर भी अमरीका और ब्रिटेन भी किसी एक मत पर निश्चित नीति नहीं बना पा रहे हैं। इसलिए योरप का भविष्य क्या होगा, यह तो आगे स्पष्ट होगा किन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि सयाने राष्ट्रों में स्वार्थी भावनायें कूट-कूटकर भर गई हैं। छोटे राष्ट्र स्वतंत्र रूप से अपनी शासन-व्यवस्था का पुनः निर्माण करना चाहते हैं किन्तु परि-स्थिति ऐसी हो रही है कि न तो वह अपनी कोई शासन-व्यवस्था ही निर्मित करने पा रहे हैं और न मित्रराष्ट्र—अमरीका, ब्रिटेन और रूस एकमत होकर ही वहाँ की शान्ति-सुरक्षा और व्यवस्था में सहयोग ही दे रहे हैं। इस प्रकार योरोपियन राष्ट्रों की स्थिति बड़ी दयनीय हो रही है। साँप और छछूंदर की स्थिति में पड़कर न तो मित्रराष्ट्र अन्य राष्ट्रों के काम आ रहे हैं और न वह स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने का सुगम मार्ग देख रहे हैं। स्वतन्त्र और विद्रोही भावनाओं की अग्नि में वह तप रहे हैं।

इसी स्वतन्त्र और विद्रोही भावनाओं की आग एशियाई राष्ट्रों में आज व्याप्त दिखाई दे रही है। भारतीय स्वाधीनता का आन्दोलन तो दिन प्रतिदिन उग्र होता ही जा रहा है किन्तु जापानी पराजय के बाद एशियाई राष्ट्रों में जिस शान्ति और व्यवस्था की आशा की जाती थी, उसके विपरीत वातावरण का प्राबल्य दिखाई दे रहा है। जापानी साम्राज्य ने प्रशान्त को युद्धभूमि बनाकर छोटे राष्ट्रों की यों ही कमर तोड़ दी थी फिर भी पराधीनता से उनका पिंड नहीं छूटा और अब जब कि वह स्वयं गुलाम बन बैठा है, उसके साम्राज्य की भी कमर टूट गई है, तो भी उन्हें पराधीनता से मुक्ति मिलती हुई नहीं दिखाई दे रही है। इंडोनेशिया में स्वाधीनता का युद्ध इसका जीता-जागता प्रमाण है। मलाया, जावा, अन्य सुदूर पूर्वी द्वीपसमूह तथा बरमा भी स्वाधीन राष्ट्र बनने की उत्सुकता प्रगट कर रहे हैं। जापान चीन के गत वर्षों के प्रबल आघातों से यों ही जर्जर बन गया फिर भी अन्त में वह विजयी हुआ किंतु उसकी यह विजय उसे मँहगी पड़ी। आज चीन में चीनी और कम्युनिस्टों का युद्ध इसका प्रमाण है। चीन स्वतंत्रता पूर्वक शांति और व्यवस्था के उपभोग करने में असमर्थ हो रहा है। मुसलिम राष्ट्रों में भी स्वाधीनता की अग्नि प्रज्वलित हो उठी है। ईरान में भी विद्रोह की लहर दौड़ पड़ी है। तेहरान में भयंकर उत्पात के समाचार मिले हैं। अरब राष्ट्र तो यहूदियों के प्रश्न को लेकर विद्रोही भावनाओं का शिकार बन बैठा है। इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त एशिया में भी ऐसी विद्रोही भावनायें बढ़ती जा रही हैं, जिसका अंत किस प्रकार और कहाँ होगा, इस पर अभी से भविष्यवाणी करना बेकार है।

आखिर राष्ट्रों में विद्रोही भावनायें क्यों बढ़ रही हैं? वह क्या चाहते हैं? बात यह है कि संसार व्यापी महायुद्ध ने उन्हें यह शिक्षा दी है कि यदि संसार के राष्ट्र अपनी स्वाधीनता की रक्षा नहीं करते हैं तो जिस प्रकार साम्राज्यवादी अभी तक दलित राष्ट्रों को गुलाम बनाकर प्रजातंत्र तथा स्वाधीनता के नाम पर आर्थिक तथा राजनैतिक दृष्टि से उन्हें पतित बनाते आये हैं, युद्ध के बाद तो उन्हें और भी अधिक पंगु बना कर रखा जायेगा। क्योंकि आज जितने भी युद्ध हो रहे हैं, उनमें केवल साम्राज्यवादियों के स्वार्थों का ही प्राबल्य है। साम्राज्यवादी चाहते हैं कि युद्ध में उनकी जो आर्थिक तथा राजनैतिक हानि हुई है, उसकी पूर्ति किस प्रकार की जाये? यही कारण है कि विद्रोही भावनायें इस समय संसार में व्याप्त हो रही हैं। विशेष रूप से जब से यह प्रकट हो गया है कि अमरीका, ब्रिटेन और रूस स्वयं आपस में मतभेद रखते हैं, और उनकी संगठित नीति शांति-स्थापन के मार्ग में बाधक बन रही है तब से तो इस समस्या ने और भी व्यापक रूप ग्रहण कर लिया है। यही नहीं कहना तो स्पष्ट रूप से यह चाहिये अमरीका, ब्रिटेन और रूस भले ही मित्र-राष्ट्र हों और ऊपर से वह शांति और व्यवस्था की स्थापना की दुहाई देते हों किन्तु इन में से प्रत्येक अपना प्रभुत्व सर्वोपरि चाहता है, और इनकी आंतरिक चालों और प्रेरणाओं के कारण ही विद्रोही भावनाओं का सूत्रपात हो रहा है। इसका एक प्रमाण यह है कि क्या कारण है कि रूस-चीन में संधि हो जाने पर भी कम्युनिस्टों और चीनियों का युद्ध जारी है? क्या कारण है कि ईरान और तेहरान में विद्रोह की भावना जागृत हो रही है? क्या रूस की आंतरिक प्रेरणा इन विद्रोही भावनाओं के साथ काम नहीं कर रही है?

संसार में शांति और सुव्यवस्था का पक्षपाती कौन न होगा? किंतु साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने संसार पर प्रभुत्व बनाये रखने का ठेका नहीं ले रखा है? प्रत्येक देश को स्वतंत्र और स्वाधीन होने का पूर्ण अधिकार है। प्रबल और शक्तिशाली राष्ट्रों के हाथों का खिलौना बन कर छोटे राष्ट्र कब तक जीवित रह सकते हैं? क्यों यह साम्राज्यवादी अन्य राष्ट्रों की आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक स्वतंत्रता के अपहरण करने तथा जनता को अनैतिक बनाने के लिये उतावले हो उठे हैं? यदि वह स्वाधीनता का उपभोग करते हैं तो दूसरों की स्वाधीनता के मार्ग में वह बाधक क्यों बनते हैं? संसार की शांति और सुरक्षा का एक ही मार्ग है और वह है सभी राष्ट्रों की स्वाधीनता और समता के शासन विधान का निर्माण। योरप की समस्या तो मित्रराष्ट्र सुलझायेंगे ही किंतु एशिया में तो उन्हें अपनी पूर्व साम्राज्यवादी नीति में परिवर्तन करना पड़ेगा। अमरीका, ब्रिटेन और रूस चाहे कोई साम्राज्य हो किसी की छत्रछाया या गुलामी में एशियाई राष्ट्र रहने को तैयार नहीं। वह विदेशियों के शोषण से ऊब गये हैं, इसीलिये वह अपनी स्वाधीनता की पुकार मचाये हुए हैं। वह चाहते हैं कि उन्हें स्वाधीन देश स्वीकृत किया जाय और संसार में एक वृहत् संघ स्थापित हो जिन में सब का प्रतिनिधित्व हो और उनकी आवाज स्वाधीन देश की आवाज मानी जाये। सचमुच यदि मित्रराष्ट्रों ने पारस्परिक समझौता करके शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के लिए कोई क्रियात्मक उद्योग न किया तो शीघ्र ही तीसरे संसारव्यापी महायुद्ध की आशंका होनी अनिवार्य है। अभी-अभी संसार का पिंड विश्वव्यापी युद्ध से किसी तरह छूटा है और यदि तीसरे युद्ध की परिणति हुई तो क्या परिणाम होगा इसकी कल्पना बड़ी भयंकर है। किन्तु क्या साम्राज्यवादी राष्ट्र योरोप और एशिया के पराधीन राष्ट्रों की स्वतन्त्रता स्वीकृत करेंगे! नहीं तो योरप तथा एशिया की विद्रोही भावनाओं का प्रतीकार कैसे हो सकेगा!

* *

शिक्षा मध्यम देशी भाषा

सर तेजबहादुर सप्रू ने पूना के [illegible] कालेज में दीक्षान्त भाषण देते हुए एक बड़े मार्के का विचार प्रगट किया है। सर तेज ने कहा है कि अब समय आ गया है जब कि ऊँची शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाना चाहिए। इसमें किसे सन्देह है कि भारतीय शिक्षा का भविष्य भारतीय भाषाओं के हाथ में होना अनिवार्य है। स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर अंगरेजी को कौन विश्वविद्यालय और शिक्षण-संस्था अपने यहाँ स्थान देगा? आज भारत राष्ट्र जो इतना दयनीय बन गया है, [illegible] अधिकांश श्रेय अँगरेजी शिक्षा-पद्धति [illegible] ही है। हमारी राष्ट्रीय विचार[illegible] के मार्ग में विदेशी भाषा [illegible] ख़तरा सिद्ध हुई है। किसी भी [illegible] राष्ट्रीयता के संरक्षण और पोषण [illegible] भाषाओं का सदा से महत्त्वपूर्ण [illegible] है किन्तु उसके स्थान पर विदेशी [illegible] जब से हमारी शिक्षा-दीक्षा का [illegible] बनी तब से हम अपने राष्ट्र को, [illegible] देश को, अपनी संस्कृति को और [illegible] अपने को भी भूल गये। यही कारण [illegible] आज देश की शहरी जमात पश्चिमी वि[illegible] में ओतप्रोत है और करोड़ों ग्रामीण [illegible] भारतीय भावनाओं से अपरिचित-सी [illegible] गई है। सर तेज का विचार [illegible] आज के इस राष्ट्रीय जागरण के [illegible] ही नहीं मार्ग-प्रदर्शक भी है। मातृभाषा [illegible] शिक्षा का माध्यम बनाने से [illegible] साहित्य का संरक्षण और संवर्द्धन ही [illegible] कर सकेंगे वरन् अपनी संस्कृति, [illegible] विचारों तथा राष्ट्रीयता की वृद्धि [illegible] सहायक भी बनेंगे।

भारत जननी के ललाट पर........!

लेखक, श्री रवीन्द्र वर्मा

भारत जननी के ललाट पर उसकी करुण कहानी।
कब से बैठा समय लिख रहा भर आँखों में पानी!!
वह विद्रोही दूर देश को जा नभ में टकराया।
खनक पड़ी थी तब हथकड़ियाँ मरघट भी थर्राया;
नष्ट-भ्रष्ट हो गई रूढ़ियाँ कोलाहल-सा छाया।
मृत्यु भयातुर होकर बोली 'कौन यहाँ यह आया?"
इसी भूमि का वह विद्रोही निर्भय हो गरजा था।
सिन्धु लहरियों के तारों पर भैरव राग जगा था॥
वही सुभाष आज जीवित है दे जनता को वाणी!!
वह बोला था और कड़क कर बादल भी गरजे थे,
वह चल पड़ा सुदूर गगन में तारे भी चलते थे,
उसका निर्भय अमर घोष सुन वैरी दल कँपते थे,
वह घायल था और भूमि पर रक्त चिन्ह बनते थे,
वे ही हम पद-चिह्न देखकर अब बढ़ते जाते हैं।
स्वतन्त्रता की आग फूंकते औ' भैरव गाते हैं॥
विकल न हो अब तू पीड़ा से ओ माता कल्याणी!!
'रवि' के उस दीपित प्रकाश से पश्चिम सहम उठा था
पाकर के 'चैतन्य' हमारा सागर झूम उठा था;
'शरद्' चन्द्र की ज्योति छटा से प्राची चमक उठा था
पाकर के वह 'बुद्ध' हमारा, विस्मित हुआ जगत् था,
वीर विधात्री आज तोड़ दे युग युग की हथकड़ियाँ,
सूरज फिर से फिरें हमारी आयें जागृति घड़ियाँ।
वीर पुत्र हम खड़े हुए हैं देने को कुर्बानी!!
स्वतन्त्रता से एक बार फिर शून्य गगन कँप जाये,
वैरी दल जिसके निनाद को सुन करके थर्राये;
एक लहर फिर उठे पूर्व से पश्चिम तक बह जाये
स्वतन्त्रता का सिन्धु प्रलयकर भूतल पर लहराये,
लहरों के प्रमुदित तारों पर विजय स्वयं हो गाता,
'जनगण ऐक्य विधायक जय हे भारत भाग्यविधाता'।
शेष न हो शोषक वर्गों की कोई एक निशानी!!

रंगभेद और असमानता क्यों ?

हिन्द-एशिया में अँगरेज राजा !

सारावाक के स्वतंत्र शासन की एक आकर्षक कहानी

लेखक, श्री दीनदयालु शास्त्री

इंडोनेशिया में स्वाधीनता का आन्दोलन चल रहा है। ब्रिटिश और डच सरकारें उन छोटे देशों को स्वाधीन करने की इच्छुक नहीं जान पड़तीं किन्तु उसी क्षेत्र में एक अँगरेज़ी रियासत भी है, जिसका महाराजा अँगरेज़ है और वह ब्रिटेन की छत्रछाया में होते हुए भी स्वतन्त्र है। इसलिए यहाँ के अन्य छोटे देशों में स्वाधीनता-आन्दोलन के सिलसिले में सारावाक के स्वाधीन अँगरेज़ राजा की जानकारी की कहानी दिलचस्प होनी अनिवार्य है। साम्राज्यवादी राष्ट्रों के रंगभेद का रहस्य भी इससे प्रगट होता है।

संसार भर में फैले हुए अँगरेज़ी साम्राज्य के स्वतन्त्र, अर्धस्वतन्त्र, सुरक्षित व स्वतन्त्र देश समान रूप से इँगलैंड के राजा को अपना राजा या सम्राट् स्वीकार करते हैं। हमारे देशवासियों के लिए भी इँगलैंड के राजा छठे जार्ज सम्राट् या बादशाह हैं। हममें से हर एक व्यक्ति चाहे पढ़ा-लिखा हो या अनपढ़, यह समझता है कि दुनिया में केवल एक अँगरेज़ राजा है और सारा अँगरेज़ी साम्राज्य उसकी प्रजा है किन्तु यथार्थ में बात ऐसी नहीं है। हमारे पड़ोस में मलाया और सिंगापुर से थोड़ा दूर पर सारावाक नाम का एक बृहत् प्रदेश है जहाँ ब्रूक नाम के एक अँगरेज़ सज्जन का वंश सन् १८४१ से शासन कर रहा है। इस राजवंश को राजा का ख़िताब बहुत दिनों से प्राप्त है। यद्यपि अँगरेज़ी सरकार से उसका किसी तरह से कोई सम्बन्ध नहीं है। सुदूर एशिया में इँगलैंड से आये हुए एक व्यक्ति को किस प्रकार राजसत्ता प्राप्त हुई इसकी एक विचित्र कहानी है। अचरज तो यह है कि यह राजा जिस देश का शासक है, उसे न उसने कभी देखा और न जीतने की चेष्टा की किन्तु एक अँगरेज़ उसका राजा बन गया है।

सिंगापुर से जहाज़-द्वारा यदि हम पूर्व की ओर प्रस्थान करें तो बायें हाथ में एशिया का मुख्य भू-भाग होगा जिसमें स्याम आदि प्रदेश स्थित हैं। दाहिनी ओर में बोर्नियो का एक बड़ा टापू है। यह टापू आकार-प्रकार में एशिया और आस्ट्रेलिया के मध्य में स्थित हिन्द-एशिया के टापुओं में सबसे बड़ा है। बोर्नियो का अधिकांश भाग जंगलों से पूर्ण है। पहाड़ी प्रदेश होने के कारण नदी-नालों की कमी नहीं है। यथार्थ में यही नदी-नाले देश के भीतरी भाग में जाने के प्रमुख साधन

अठारहवीं सदी में बोर्नियो के इस टापू में मलाया के सुलतानों का शासन था। उन्हीं दिनों अँगरेज़ और डच (हालैंड के निवासी) लोग भी अपना साम्राज्य क़ायम करने के ख़ातिर इस प्रदेश में चक्कर लगाया करते थे। बोर्नियो के उत्तरी तट पर ब्रूनी नाम की एक रियासत उन दिनों थी। ब्रूनी के सुलतान कमज़ोर थे। उनकी इस कमज़ोरी से लाभ उठाकर अँगरेजों और डचों ने बोर्नियों को घेरना शुरू किया, डच इस घेराघेरी में पहले आये थे, अतः उन्होंने जावा से अपनी फ़ौजें भेजकर बोर्नियो टापू का दक्षिणवर्त्ती दो तिहाई भाग अपने अधिकार में कर लिया। उत्तर के पहाड़ी प्रदेश का पूर्वी नोकीला हिस्सा अँगरेज़ों के क़ब्ज़े में आ गया किन्तु उसका शेष उत्तरी पार्श्व ब्रूनी के सुलतान के हाथ में बना रहा। उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग में ब्रूनी के सुलतान अपने राजकाज में ब्रूनी-निवासियों को कोई महत्त्व का पद न देते थे और मलाया और सिंगापुर से अपने जाति भाइयों को बुलाकर राज्य-कार्य चलाते थे। सन् १८३९-४० और ४१ में स्थानीय जनता ने सुलतान के ख़िलाफ़ विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया। कमज़ोर सुलतान इस विद्रोह को दबा न सके। उनके अफ़सरों और सिपाहियों को विद्रोहियों ने बिलदाह के क़िले में बन्द कर दिया था। इस आपत्तिकाल में सुलतान के चचा मुदाहाशिम ने मलाया की अँगरेज़ी सेना के एक अफ़सर सर जेम्स ब्रुक को अपनी मदद के लिए निमंत्रित किया। सर जेम्स ब्रुक बिना अँगरेज़ी सरकार की स्वीकृति लिए अपने कुछ साथियों के साथ ब्रूनी पहुँचे। मुदाहाशिम ने उनसे वादा किया कि विजय होने की हालत में सारावाक का प्रदेश ब्रुक साहब को सुलतान भेंट कर देंगे। सौभाग्य से सर जेम्स ब्रुक ने कुछ ही दिनों में विद्रोह को शान्त कर दिया और बदले में सारावाक का राज्य प्राप्त कर लिया।

सर जेम्स ब्रुक सन् १८४१ के सितम्बर मास में कुचिंग नाम के स्थान में राजगद्दी पर बैठे और सारावाक की सारी जनता ने उन्हें ख़ुशी से अपना राजा स्वीकार किया। सन् १८५२ में ब्रूनी के सुलतान ने भी अपने चचा मुदाहाशिम के वादे के अनुसार सर जेम्स ब्रुक को सारावाक का राजा स्वीकार कर लिया। अगले साल सन् १८४३-४४ में राजा ब्रूक ने अपने अँगरेज़ साथी केपल की मदद से सारावाक में से मलाया और डायक उपद्रवियों को ख़तम किया। ये लोग अपनी डोंगियों-द्वारा सारावाक व बटंग नदियों में पहुँचकर सारावाकवासियों को परेशान किया करते थे। सन् १८५७ में चीनी जनता ने इस नवीन अँगरेज़ राजा के विरुद्ध बग़ावत की। इसको दबाने में भी राजा ब्रुक सफल हुए किन्तु इसमें उनकी बड़ी धन-जन की हानि हुई और स्वयं भी मरते-मरते बचे।

इँगलैंड और सारावाक

राजा ब्रुक के सारावाक की गद्दी पर बैठने का समाचार जब इँगलैंड में पहुँचा तो वहाँ के शासकों को इस घटना से बड़ा अचरज हुआ। अन्त में बीस वर्ष के व्यवधान के बाद सन् १८६३ में लन्दन की अँगरेज़ी सरकार ने सारावाक में ब्रुक को स्वतन्त्र राजा मान लिया और वे यथार्थ में राजा कहलाने लगे। सन् १८६८ में सर जेम्स ब्रुक का देहान्त हो गया और उनके भतीजे सर चार्ल्स ब्रुक राजगद्दी पर बैठे। सन् १८८८ में सारावाक के अँगरेज राजा ने महारानी विक्टोरिया से एक सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार सर चार्ल्स ब्रुक ने यह वादा किया कि वे विदेशी मामलों में लन्दन की अँगरेजी सरकार की मुख़ालफ़त न करेंगे वरन् साथ देंगे। बदले में अँगरेज़ी सरकार ने सारावाक के शासन में दख़ल न देने का निश्चय प्रगट किया। इस प्रकार सन् १८८८ में स्वइच्छा से हुई सन्धि के अनुसार सर चार्ल्स ब्रुक ने विदेशी मामलों में अँगरेज़ी सरकार का संरक्षण मान लिया। सन् १९०४ में इँगलैंड के राजा एडवर्ड सप्तम ने सर चार्ल्स ब्रुक को बाक़ायदा हिज़ हाईनेस स्वीकार किया और तब से ब्रुक का राजवंश इस उपाधि से विभूषित होने लगा। पिछले ६० वर्ष से लन्दन में सारावाक का प्रतिनिधि रहता है और वह इँगलैंड में सारावाक के स्वार्थों और हितों की रक्षा करता है।

—शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

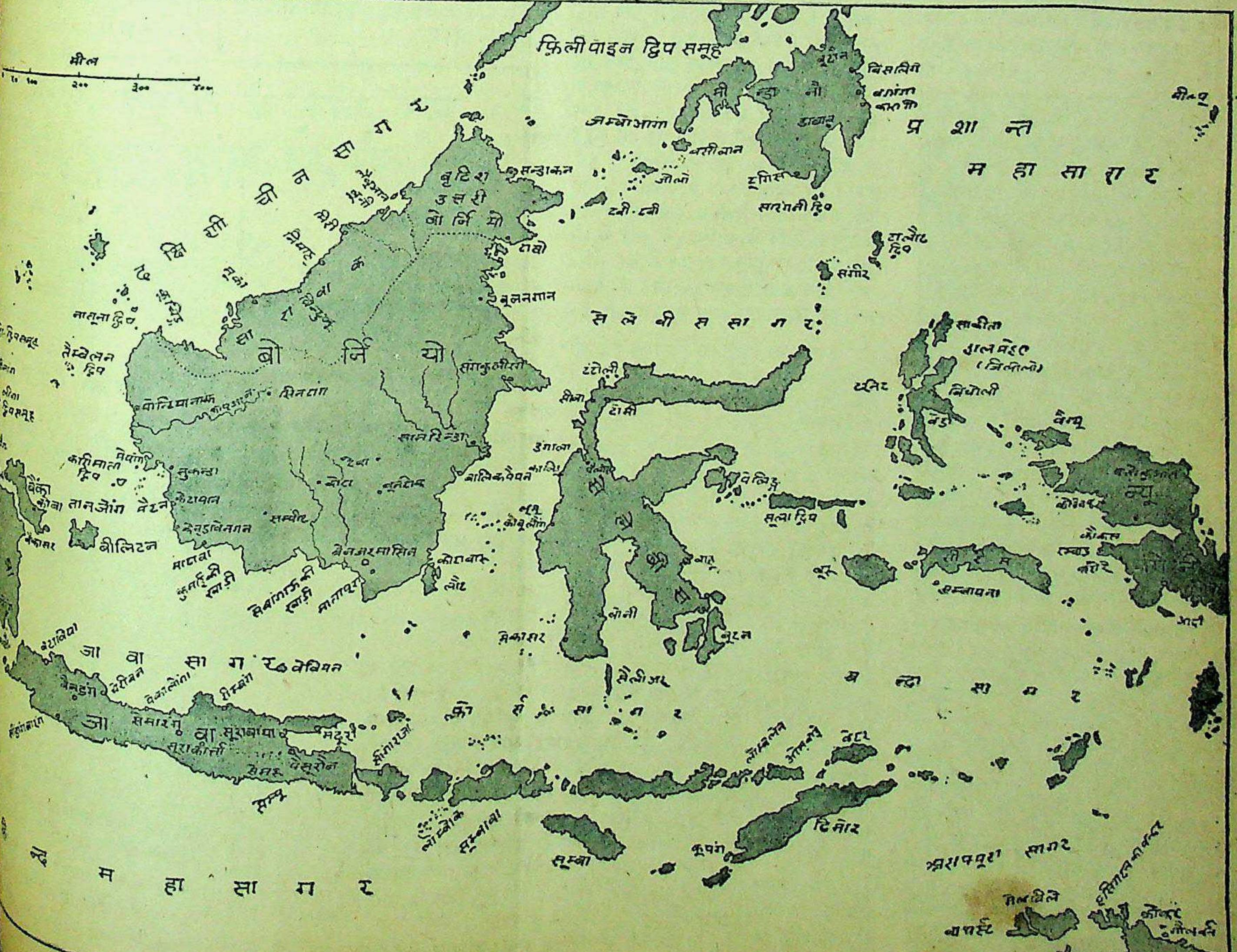

अखिल भारतीय कस्तूर बा निधि क्या है ?

स्त्रियों को स्वावलम्बी बनानेवाली संस्था का आदर्श

लेखिका, कुमारी मृदुला बेन

(ट्रस्ट की भूतपूर्व मंत्रिणी और संयोजिका)

> स्वर्गीय माता कस्तूर बा गांधी की स्मृति में अखिल भारतीय कस्तूर बा ट्रस्ट की स्थापना हुई है। ट्रस्ट की स्थापना का उद्देश्य है, भारतीय महिलाओं की आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति में पूर्णरूप से सहायता देना। इस लेख की लेखिका श्री मृदुला बेन प्रारम्भिक काल से ट्रस्ट की मंत्रिणी तथा संयोजिका के पद पर कार्य करती रही हैं। आपने इस लेख में ट्रस्ट के आदर्श तथा उद्देश्यों का स्पष्टीकरण किया है। श्री मृदुला बेन आजकल अपने पूर्व पद पर कार्य नहीं कर रही हैं। उनका त्यागपत्र गांधी जी ने स्वीकार कर लिया है किन्तु ट्रस्ट को आपका सहयोग पूर्ण रूप से प्राप्त है। यह लेख विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए लिखा गया है।

अखिल भारतीय कस्तूर बा निधि के सभापति स्वयं बापू जी (महात्मा गांधी) हैं। मंत्री श्री ठक्कर बापा और संयोजक-मंत्री मैं हूँ। इस ट्रस्ट में २५ ट्रस्टी हैं और उसकी कार्य-समिति में आठ आदमी हैं। कार्य-समिति के सदस्य प्रतिवर्ष बदलते रहते हैं। प्रति दो हजार की आबादी पर हमारा एक यूनियन होगा। उन दो-दो हजार के छोटे-छोटे टुकड़ों में उनकी जरूरियात को देखना होगा। समाज सोसाइटी क्या है? यह सोचकर कस्तूरबा निधि का काम करना है। गांधी जी ने हमेशा स्त्रियों के विकास के बारे में ध्यान रखा है। उनकी इच्छा है कि स्त्री-समाज की उन्नति कैसे हो? वे स्त्रियों की आधुनिक अवस्था को एकदम बदल देना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि उनमें निर्भयता और स्वावलम्बन आ जाय। वे खादी की उन्नति, विदेशी कपड़ों का बहिष्कार और स्त्रियों की उन्नति समान ही समझते हैं। स्त्रियों के विकास में ही स्वराज्य निहित है।

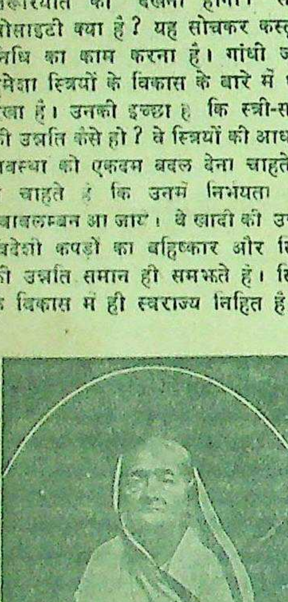

स्वर्गीय श्रीमती कस्तूर बा गांधी

इसी भावनाओं को लेकर गांधी जी ने स्वराज्य-आन्दोलन में ही नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक रचनात्मक कार्य में बहनों को बुलाया तथा स्थान दिया है। प्रमाणस्वरूप खादी ग्रामोद्योग, हरिजन-संघ, तालीमी सेवा-संघ, गोसेवा-संघ आदि संस्थाओं में बहनों का काम करना ही है। पर बहनों की कमजोरी है कि इनमें बहुत कम संख्या में आई। कस्तूर बा निधि का जब काम शुरू हुआ था तब गांधी जी ने साफ़-साफ़ कहा था कि यह काम स्त्रियों का है। उनको इस काम को अपने ऊपर उठा लेना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि देश में स्त्रियों का संगठन अलग हो। हमारे समाज की मनोवृत्ति बहुत बिगड़ी हुई है। वह किसी भी दशा में उनको आगे बढ़ने देना नहीं चाहती। जब कस्तूर बा निधि का काम शुरू हुआ तो बार-बार कहा गया कि औरतों का काम तो केवल 'मैट्रिनिटी होम' से चल जायेगा। लेकिन मेरी समझ में यह बात नहीं आई। मेरा विचार है कि यह 'मैट्रिनिटी होम' तो स्त्रियों के विकास के मार्ग में केवल कई साधनों में से एक है। सबसे पहले तो उनका अन्तरविकास होना चाहिए। अब हमारी अवस्था 'मैट्रिनिटी होम' से ही सुधरनेवाली नहीं है। वह तो भरपेट अन्न देने से ही सुधरेगी। बच्चे अधिक संख्या में मरते हैं। स्त्री अति हीन अवस्था को पहुँच गई है। इसका मूल कारण भोजन की कमी, भोजन में पौष्टिक पदार्थों का अभाव, आर्थिक कमी, पति और परिवार-वालों का दुर्व्यवहार तथा सामाजिक रूढ़ियां हैं। मैं तो समझती हूं कि इन्हीं कारणों से स्त्रियां किसी काम में भाग नहीं लेतीं। अब तो हम अपने प्रति किये गये अन्यायों का सच्चाई के साथ विरोध करना है। स्त्री भी तो देश की प्रजा है? मुझे लोग डिक्टेटर कहते हैं और यह भी कहते हैं कि मैं बहुत झगड़ती हूं, लेकिन मैं करूं क्या? मेरा दिल वास्तव में भारतीय स्त्रियों की अवस्था को देखकर दुखी होता है। कस्तूरबा निधि के कार्यक्रम के बारे में भी हमें काफ़ी झगड़ना पड़ा है। मैं तो 'मैट्रिनिटी होम' के खिलाफ़ हूं। मैं तो सबसे पहले स्त्री की सामाजिक स्वतन्त्रता चाहती हूँ।

कस्तूर बा निधि का काम तो देश की सामाजिक हालत में सुधार करने का है। हमें स्त्रियों के जीवन में आशा की किरण लानी होगी। गांधी जी ने हमसे कहा था कि ऐसी स्त्रियां भी समय आने पर साधारण स्त्रियों के समान बन जाती हैं और अगर किसी के पति मर गये तो सभी काम छोड़कर बैठ जाती हैं। हम अपने को अबला क्यों मानती हैं? समाज में स्त्री मनुष्य तो है। मैं नहीं कहती कि कोई स्त्री ब्रह्मचारिणी बन जाय। यदि किसी ने ऐसा किया तो हमारे लिए सौभाग्य की बात होगी और वह कुछ अधिक काम कर सकेगी। हमारे यहाँ चार आश्रम बनाये गये हैं। हम पढ़-लिखे ब्रह्मचर्य का पालन करें, गृहस्थ के समय गृहस्थ बनें और वानप्रस्थ के समय देश-सेवा को ही अपना प्रधान अंग बनायें। पति के मर जाने पर अधिक बहनें सती हो जाती हैं, क्या उनके सामने समाज-सेवा, देश-सेवा का कार्य नहीं है?

हमें समाज की भावना बदलनी है। देश की सम्पत्ति चांदी-सोना नहीं, बल्कि वहाँ की प्रजा ही है। एक मानव की क़ीमत चांदी के चन्द टुकड़ों से नहीं आंकी जा सकती। आज देश गुलाम है लेकिन स्वाधीन होता तो एक बच्चे का मरना गुनाह समझा जाता। मैं लगभग १४ साल से काम कर रही हूँ। मेरा विचार है कि स्त्रियों में काम करने का मतलब है सारे समाज की रचना करना। हमारे देश में सेवा दया-भाव से की जाती है, लेकिन मैं यह नहीं चाहती। मैं तो यह चाहती हूँ कि हम स्वावलम्बी बनकर देश-सेवा करें। समस्त कार्यकर्ताओं को आर्थिक चिन्ता न करनी पड़े। उनके हाथ में एक उद्योग अवश्य ही रहे। नौकरी के पीछे दीवाना होना ठीक नहीं।

कस्तूर बा निधि के कार्यकर्ताओं के दो भाग होंगे। एक तो प्रवेश तालीमवाले दूसरे प्राथमिक तालीमवाले। प्रवेश तालीम का कोर्स दो मास का होगा। प्राथमिक तालीम का दस मास का। दोनों के शिक्षक अलग-अलग होंगे। उनकी तैयारी भी हो गई है। हर एक में ४० विद्यार्थी होंगे। दो मास का जो कार्यक्रम होगा उसमें छः सप्ताह तालीम और दो सप्ताह कूच का प्रोग्राम होगा। हमारा काम होगा तालीम का रचनात्मक कार्य। यही कस्तूर बा स्मारक निधि का भावी कार्यक्रम है। स्त्री-जाति किस प्रकार से आगे उन्नति करती हुई [illegible] को मानव कहलाने की अधिकारि[illegible] हो सकती है, इस स्मारक का प्र[illegible] प्रयोजन है।

अखिल भारतीय कस्तूर बा ट्र
व्यवस्थापक और मंत्री श्री ठक्कर बा

कलकत्ता हाईकोर्ट

प्रसिद्ध ट्रेडमार्क की नकल करने पर

सुप्रसिद्ध ट्रेडमार्क के नक़्क़ालों से जनता को बचाने के लिए कलकत्ता हाईकोर्ट ने फिर एक मुकदमे में कड़ी सजा दी है।

सुप्रसिद्ध सनलाइट सोप के बनाने वाले लीवर ब्रदर्स (इंडिया) लिमिटेड के द्वारा एम्पायर लाइट सोप के बनानेवाले न्यू एम्पायर सोप वर्क्स कलकत्ता के ऊपर दायर किये हुए मुक़दमे में अदालत ने यह घोषणा कर दी कि एम्पायर लाइट सोप नाम तथा टेबलेट के आकार-प्रकार और लेबिल के ढांचे व रंग में सनलाइट सोप की नक़ल है।

अदालत ने न्यू एम्पायर सो[illegible] वर्क्स के ऊपर एम्पायर लाइट सो[illegible] के बनाने-बेचने अथवा किसी [illegible] प्रकार से सनलाइट सोप की नक़[illegible] करने के लिए स्थायी प्रतिबन्ध ल[illegible] दिया है। अदालत ने यह भी हुक्म जारी कर दिया कि एम्पायर लाइट सोप का सारा स्टाक व रैपर और [illegible] जो उसके बनाने में इस्तेमाल [illegible] जाती थी विध्वस कर दिया जा[illegible]

[illegible]तिवादियों को अपने इस [illegible] [illegible]लए बिना शर्त माफ़ी मांगनी [illegible] और आइन्दा ऐसा न करने का इ[illegible] करना पड़ा।

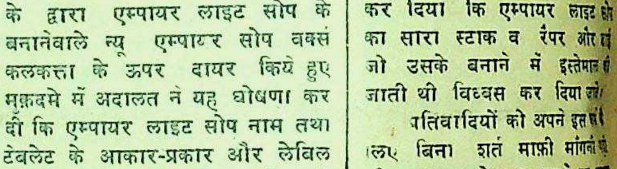

जब आप ये साबुन खरीदें
नकलों से सावधान रहिए

अप्रसिद्ध और घटिया साबनों के बनाने वाले कुछ दिनों से ऊपर के चि[illegible] में दिये हुए मशहूर साबुनों के नाम और लेबलों की बड़ी बारीकी [illegible] साथ नकल कर रहे है। इन बद दियानत साबुन साज़ों की मनश[illegible] आपको धोका देनार है। कि आप उनका नकली माल इसी मुगाल[illegible] ख़रीदलें कि यह आपकी ज़रूरत वाले असली सनलाईट, लक्स टॉयले[illegible] या लाईफ़ बॉय, साबुन ही हैं। हमेशा होशियार रहिए-निश्चित कर लीजि[illegible] की आप असली माल ही ख़रीद रहे हैं।

चेतावनी! ट्रेड मार्क कानून का भंग

लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड जो कि सनलाइट साबून, लक्स टॉइलेट सोप और लाइफबॉय साबून के बनानेवाले हैं, इसके जरिये चेतावनी देते हैं कि वे किसी शख़्स, फर्म, या कम्पनी के ख़िलाफ हर मुमकिन कार्रवाई, दीवानी, फौजदारी या दोनों, करेंगे जो, सिवाय लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड के बनाये हुये माल के, और किसी ऐसे मालको जिसपर सनलाइट, लक्स या लाइफबॉय या किसी और नाम के रैपर, नाम और छाप मौजूद हों जो इन नामों की खिलाफ वरज़ी हो या उनकी हूबहू नकल हो, तैयार करने, बेचने बेचने के लिये देने, उसका वर्णन करने, इश्तहार करने और विज्ञापन देने का धन्धा करती हो या उसमें मदत करती हो।

यह विज्ञापन लिवर ब्रदर्स द्वारा जनता के हितार्थ दिया गया है।

L. Com. 56-111 HI

कांग्रेस का एक लौह पुरुष नेता!

सरदार पटेल की राजनीति और उनका शक्तिशाली नेतृत्व

लेखक, डाक्टर पट्टाभि सीतारामैय्या

> गत मास के अन्त में सरदार वल्लभभाई पटेल की ७०वीं वर्षगाँठ सारे देश में मनाई गई थी ? सरदार कौन हैं, उनकी राजनीति क्या है और राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए वह कितने पराक्रमी और प्रबल योद्धा सिद्ध हुए हैं, इसका स्पष्टीकरण डाक्टर पट्टाभि सीतारामैय्या ने अपने इस सुन्दर लेख में किया है। लेख अत्यन्त सुन्दर और जानकारी से पूर्ण है। यह लेख हमें बम्बई कांग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री एस० के० पाटिल के अनुग्रह से प्राप्त हुआ है।

सरदार वल्लभभाई जे० पटेल पटेल वर्ष के पाँच हृष्ट-पुष्ट और दिलेर भाइयों में से तीसरे हैं। ब्रिटिश साम्राज्य के स्तम्भों में से आप एक रह चुके हैं, ब्रिटिश संस्कृति और तथाकथित ब्रिटिश विचार से पूर्णतः प्रभावित होकर शिकार हो जाते और प्रकारान्तर प्रबल प्रचारक का रूप ले लेते हैं। ब्रिटिश तौर-तरीक़ों के अभ्यस्त हो जाते हैं। उनका पैना-तीखा मज़ाक, शक्ति, तत्कालीन और सरस मर्मभेदी गहन विचार, निर्भीक रचनात्मक बुद्धि, चलते-चलते कर सकने की क्षमता और कभी होनेवाला उनका आत्म-विश्वास यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं एक मैट्रिकुलेट होते हुए भी वे हैं। कला अथवा क़ानून के ही नहीं, वे एक बैरिस्टर भी क़ानून के क्षेत्र में उन्होंने सफलता का वरण किया, यद्यपि बहुत ही सीमित-सी रही--सीमा में अथवा गोधरा के ही हेडक्वार्टर्स तक धनोपार्जन किया और यश भी बहुलता से, लेकिन एक अपूर्ण अभिलाषा इनके अन्तस्तल में बराबर रहती थी, वह यही कि इनकी बुद्धि को और साधनों को उन के प्रति सदा नत होना पड़ता परिस्थितियों के संयोग से और क़ानूनी अदालतों की नज़रों में कहीं ऊँचा स्थान पा चुके थे। इन्होंने इंगलैंड जाने और बैरिस्टर का संकल्प किया।

क़ानूनी क्षेत्र में वल्लभभाई पटेल की उल्लेखनीय रही। इनके क़ानूनी ज्ञान ने इन्हें सहज ही अपने पढ़नेवाले साथी छात्रों पर विजयी। आपकी अध्ययनशील मनोवृत्ति भारत में आपकी पहले से ही जमी धाक ने आपके बैरिस्टरी के की अवधि को अपेक्षाकृत एक वर्ष करने में सहायता प्रदान की। वल्लभभाई ने अपना अध्ययन जारी रखा और बैरिस्टरी के इम्तहान में प्रथम श्रेणी में प्रथमोतीर्ण होकर ५० पौंड का पुरस्कार भी प्राप्त किया। आप भारत वापस आये वैभव और सफलता की विजय-माला पहने हुए।

वल्लभभाई तीस वर्ष की आयु में ही विधुर हो चुके थे। इंगलैंड जाते समय आप अपने एक पुत्र और पुत्री को दूसरों के संरक्षण में छोड़ गये थे। इँगलैंड से वापस आने पर आप अहमदाबाद में रहने लगे। यहाँ मुश्किल से तीन या चार साल आपने बैरिस्टरी की होगी कि देश के मंच पर गांधी का अवभरण हुआ। अँगरेज़ी शिक्षा और वकालत के साथ-साथ वल्लभभाई में जो अराष्ट्रीयता पनपने लगी थी, वह इँगलैंड में पहुँचकर अध्ययन करने पर सम्पूर्ण अर्थों में पूरी हो चुकी थी। अब इँगलैंड से लौटकर आप धूम्रपान करने लगे, पैसों को दाँव पर लगाकर ताश खेलने लगे और वारुणी-पान भी करने लगे। आप प्रारम्भ में गांधी जी के समर्थकों में से नहीं थे। अँगरेज़ी ढंग की पोशाक आप पहनते थे। आपके बच्चे 'कानवेण्ट' में शिक्षा पा रहे थे, जिन्हें इँगलैंड भेजे जाने का प्रारम्भिक यत्न था हर बात में आप ब्रिटेन का अनुकरण कर रहे थे। अपने भाई विट्ठलभाई पटेल की तरह ही आप निरन्तर उन्नति का स्पर्श करते जा रहे थे। अपने वकालत के अनुरूप आप में समस्त प्रतिभा विद्यमान थी—निर्माणकारी नहीं, बकि विलगानेवाली और ध्वंसात्मक; लेकिन इस सबकी पृष्ठभूमि पर रचनात्मक कार्यक्षमता भी अपना अस्तित्व रखती थी। इस रचनात्मक सुप्त प्रतिभा ने ही आपके मित्रों और मुवक्किलों को कितने ही खतरों और अपरिहार्य कठिनाइयों के गर्त्त से उबारनेवाली योजना को जन्म दिया।

वल्लभभाई स्वभावतः अत्यन्त नीतिकुशल हैं। आपकी बहादुरी की सीमाएँ सीमित नहीं हैं। आपका मौन भी उनके अन्तःकोष का परिचायक नहीं होता। मानव का स्वभाव हिन्दू-गृह की तरह होना चाहिए जो बाह्य रूप से भले ही शुष्क और बेतरतीब दीखता हो; लेकिन ज्यों-ज्यों उसके भीतर आप जायेंगे, उसे अपेक्षाकृत विस्तृत और चमकीला पायेंगे और उसके केन्द्र-विन्दु—हृदय--पर पहुँचकर उसे स्वच्छतम और मकान के सर्वोत्तम कक्ष के रूप में देखेंगे।

बिड़ला भवन से निकलते हुए महात्मा गांधी के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल तथा अन्य कांग्रेस नेता।

कांग्रेस का लौह पुरुष !

कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य सरदार वल्लभभाई पटेल

जिस दिन से वल्लभभाई पटेल ने गांधीवाद को अपने जीवन में स्थान दिया, उन्होंने स्वयं को एक भक्त सिद्ध कर दिखाया--ऐसा भक्त जिसने अपने इष्टदेव के निर्णयों पर कभी प्रश्न नहीं किया; उनके परामर्शों पर कभी सन्देह प्रकट नहीं किया। इसका यह अर्थ नहीं कि वल्लभभाई का अपना कोई दृष्टिकोण ही नहीं अथवा अपना कोई सिद्धान्त नहीं और न इसका यही अर्थ है कि गांधी जी की आज्ञाओं का इन्होंने अन्धानुभक्ति के साथ पालन किया है। बारडोली और चौरासी तालुका के लगान न देने के सम्बन्ध में चलाये गये सत्याग्रह का सरदार वल्लभभाई ने अत्यन्त कुशलतापूर्वक संचालन किया था। इस सत्याग्रह का नेतृत्व आपने तभी किया था, जब तालुका की जनता ने अपनी ईमानदारी, गम्भीरता और त्याग करने की तत्परता का पूरा-पूरा विश्वास दिला दिया था। संगठन, अनुशासन और आज्ञा-पालन का जहाँ तक सम्बन्ध है, भारतीय इतिहास में यह आन्दोलन बेजोड़ कहा जा सकता है; बल्कि मिस्र देश में कन्नन प्रान्त में हुए आन्दोलन और स्वेच्छाचारी जार के खिलाफ़ तातारों के विद्रोह की याद दिलानेवाला आन्दोलन था। यहीं सन् १९१८ ई० में बोरसद में जब डकैतियों का बोलबाला था और सरकारी नौकर भी उसमें सम्मिलित थे, तब सरदार वल्लभभाई पटेल ने ही इस सड़ाँध का भण्डाफोड़ किया था और इसका सफाया भी। नागपुर के झण्डा-सत्याग्रह ने जब अखिल भारतीय व्यापकता प्राप्त कर ली और स्थिति अत्यन्त नाज़ुक हो चुकी थी, तब आपके ही प्रयत्नों से समझौता हुआ था। जब कांग्रेस ने 'लोकल-बाडीज़' (म्युनिसिपैलिटी और ज़िला बोर्डों) पर क़ब्ज़ा करने का निश्चय किया, तब सरदार वल्लभभाई पटेल ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी पर सन् १९२४ से २८ ई० तक अर्थात् पाँच सालों तक इसके शासन की बागडोर को सँभाला। इस बीच शहर का विस्तार किया गया, इसके सफ़ाई-विभाग में अनेक सुधार किये गये और प्रायमरी शालाओं के शिक्षकों में देश-भक्ति का बीजारोपण किया गया और म्युनिसिपल कमिश्नर तथा हेल्थ आफ़िसर को अभिवादन करने का सबक़ सिखाया।

अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी से आप सन् १९२८ ई० में बारडोली के सत्याग्रह में कूद पड़े और पतिदारों एवम् किसानों की भावी पीढ़ियों तक के लिए एक आदर्श उपस्थित करते हुए इन्हें इस योग्य बना दिया कि ये आत्मविश्वास से कभी च्युत न हों और यही आत्मविश्वास था जिसकी भीम भावना ने इन लोगों को अपने अधिकारों के लिए लड़ जाने का साहस प्रदान किया। यहीं आपको गांधी जी द्वारा 'सरदार' का खिताब दिया गया था और आज तक आप कांग्रेस के सरदार हैं—महज गुजरात के नहीं। गुजरात में आपका एक शब्द ही क़ानून की तीखी धार से कम नहीं और आपके कार्य समस्त देश के लिए आदर्श एवम् अनुकरणीय हैं। आप स्वयम् दीप्तिमान हैं इसी लिए क्या ऊपर से और क्या नीचे से, आनेवाले प्रकाश--प्रशंसा--से वह दीप्त नहीं होते। आप स्वयम् पुञ्जीभूत प्रकाश हैं, जिसकी शक्ति का कभी क्षय नहीं होगा।

आपके क़ानूनी रचनात्मक कार्यों का अनुमान बम्बई महानगरी में शराबबन्दी के सफल प्रयोग से किया जा सकता है, जिसमें शराब के पारसी ठेकेदारों का स्वार्थ सन्निहित था और इस प्रयोग की सफलता पर जिनका सारा व्यापार ही चौपट हो गया। इसी सिलसिले में मुस्लिम मकान-मालिक मकान किराये में अधिक प्राप्त रक़म में से डेढ़ करोड़ तक देने के लिए

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

केवल 'देशदूत' के लिए।

पूना 'नेचर क्योर' में महात्मा गांधी

बापू के दैनिक जीवनचर्या की एक मनोरंजक कहानी

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

पिछले महीनों में महात्मा गांधी पूना 'नेचर क्योर' चिकित्सालय में स्वास्थ्य सुधारने के लिए रहते थे। वहाँ उनकी दैनिक जीवनचर्या कैसी थी, इसका सुन्दर और आकर्षक विवरण इस लेख में किया गया है। इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी से 'देशदूत' के पाठक बहुत पहले से ही परिचित हैं। आप पिछले महीने सिवनी जेल से मुक्त होकर आये हैं। सन् ४२ के अगस्त आन्दोलन में आप फरार थे और सन् ४४ में महात्मा जी के आदेश से आपने अपने को पुलिस के हवाले कर दिया था। आजकल आप महात्मा जी की सेवाशुश्रूषा तथा हिन्दुस्तानी प्रचार के कार्य में लगे रहते हैं।

महात्मा गांधी मार्च १९४५ से बम्बई, महाबलेश्वर, पंचगिनी और शिमला आदि स्थानों में रहकर अपना स्वास्थ्य-सुधार कर रहे हैं। जून महीने में लार्ड वेवेल अपने थैले में कुछ ऐसी जड़ी-बूटियाँ इकट्ठी करके लन्दन से लाये कि उन्होंने हमारे देश के गण्यमान्य नेताओं तक को अपना तमाशा दिखाने के लिए शिमला शिखर पर आने के लिए विवश कर दिया। वाइसराय महोदय के अतिथि होकर महात्मा जी भी वहाँ पहुँचे। लगभग एक महीने तक वहाँ का रंगमंच गांधी जी देखते रहे। झोला खाली देखकर सभी नेता वहाँ से एक-एक करके रवाना होने लगे। गांधी जी के लिए स्पेशल ट्रेन तैयार की गई और वाइसराय की आज्ञानुसार वह ट्रेन सीधे दिल्ली से सेवाग्राम (वर्धा) भेजी गई। यहाँ तक कि गांधी को परेशानी न हो—ट्रेन किसी बड़े स्टेशन पर ठहरी तक नहीं।

* * *

बापू जी सेवाग्राम आये और वहाँ कुछ दिन रहकर पूना चले गये। पूना क्यों आये? सरदार वल्लभभाई पटेल की तबीअत जेल में बहुत बिगड़ गई थी उन्हें नैसर्गिक उपचार से श्री दिनशा मेहता के क्लिनिगहोम में ठीक कराने के लिए।

लगभग तीन महीने से महात्मा जी 'नेचर क्योर' में ठहरे हुए हैं। राष्ट्र की सबसे बड़ी बैठकें यहाँ हो रही हैं। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठकें यहाँ हुई हैं। पंडित जवाहरलाल जी नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद और श्री राजगोपालाचार्य ऐसे नेता यहाँ रह चुके हैं। महात्मा जी के यहाँ ठहरने से 'नेचर क्योर' क्लिनिग में आये दिन कुछ न कुछ राष्ट्र की चलती हुई राजनीति पर चर्चा हुआ करती है।

* * *

हिन्दुस्तान के दूर-दूर प्रान्तों के लोग यहाँ आते ही रहते हैं। पूना तो यों भी प्रसिद्ध स्थान है। महाराष्ट्र प्रान्त की राजधानी है। रेलवे जंकशन है। प्रभात फ़िल्म-कम्पनी भी यहीं है। बहुत-सी शिक्षण-संस्थायें यहाँ हैं। सर्वेंट आफ़ इंडिया का मुख्य कार्यालय यहाँ है। स्वर्गीय लोकमान्य तिलक का कार्यक्षेत्र पूना ही था। स्वर्गीय गोखले यहीं रहा करते थे। फ़र्ग्युसन कालेज की आलीशान इमारतें यहीं हैं। आबोहवा का मापदंड का देखने का विज्ञानशाला शोध पूना में ही है। 'एग्रीकल्चर' फ़ार्म की शिक्षा पूना में ही दी जाती है। आधुनिक शिक्षा का महाकेन्द्र यहींहै। मद्रास, गुजरात, बम्बई, मध्यप्रान्त आदि प्रान्त के विद्यार्थी यहाँ मिलेंगे।

* * *

आधुनिक युग का पहनावा आदि देखना हो तो एक बार आप पूना की सैर जरूर करें। खास कर यहाँ की शिक्षण-संस्थाओं को जरूर देखें। आप पुराने जमाने की रीति-रिवाज देखना पसन्द करते हों तो पूना के निकट के गाँवों में जाइये। पूना शाही-महाराष्ट्री खान-पान-पहनावा अभी भी देखने को मिल सकती है। ऐसी नगरी में आजकल गांधी जी ठहरे हुए हैं।

* * *

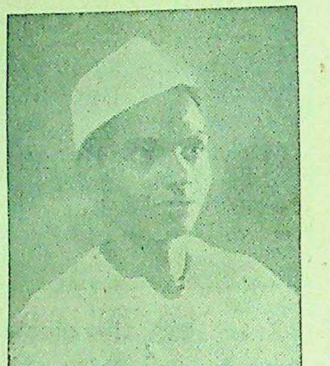

इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी।

पूना स्टेशन के क़रीब ही दिनशा मेहता का 'क्लिनिग होम' है। हम ऐसा भी कह सकते हैं स्टेशन से लगी हुई ही 'नेचरक्योर' की बिल्डिंग स्थित है। स्टेशन से चार मिनट में पहुँचा जा सकता है।

एक लम्बे हाते में नैसर्गिक दवाखाने की इमारत है। मकान पक्का है। ऊपर अँगरेजी 'टायल' खपरैल है। मकान में १५-१६ छोटे-बड़े कमरे हैं। सब कमरों में आधुनिक कुर्सियाँ और मेजें रक्खी हुई हैं। बाहरी मरीज भी अपनी चिकित्सा कराने के लिए ठहरे हुए हैं। बड़े मकान के पीछे एक स्वच्छ छोटा-सा कमरा है जिनमें तीन चार कोठरियाँ बनी हैं। एक कमरे में पूज्य गांधी जी निवास करते हैं। दूसरे कमरे में सरदार पटेल का डेरा है। तीसरे में बापू जी का कार्यालय है, चौथे में श्री प्यारेलाल भाई रहते हैं।

यहाँ भी बापू जी ने एक छोटा मोटा आश्रम बना ही रक्खा है। कुछ आफिस के कार्यकर्ता हैं और कुछ बापू जी के मरीज हैं। उन लोगों की भी दवा यहाँ बापू की देख-रेख में हो रही है। भोजन सबको निरामिष और बिलकुल सादा दिया जाता है। साग-भाजी उबली हुई होती है। भोजन अधिकांश में भाजी का ही होता है। सब लोग बड़े चाव से करते हैं।

बग़ीचे में आम, चिगू, पपीते आदि के पौधे लगे हैं। कुछ क्यारियों में फूल और साग-पत्ती के पौधे हैं। गेंदे के फूल अपनी सुगन्ध फैलाये रहते हैं। अँगरेजी पौधे भी खिले रहते हैं। बापू के साथ में रहनेवाले अधिकतर एक तम्बू में रहते हैं।

* * *

गांधी जी ४ बजे प्रातःकाल उठते हैं। हाथ-मुंह धोकर एक घंटे तक प्रार्थना करते हैं। ५ बजे से ६ बजे तक आये हुए पत्रों का जवाब लिखते हैं या लिखवाते हैं। जिस दिन बहुत थक जाते हैं उस दिन कुछ मिनट के लिए बीच में विश्राम भी कर लिया करते हैं। ६ बजे नास्ता करते हैं। साढ़े छः बजे से घूमने जाते हैं। सात-साढ़े सात के क़रीब घूमकर आते हैं और पत्र आदि लिखते हैं। साढ़े नौ बजे से पौने ग्यारह तक नैसर्गिक उपचार करते हैं। बारह बजे भोजन करते

महात्मा गांधी पिछले कई महीने से
हैं किन्तु गम्भीरतापूर्वक राष्ट्रीय स्वाधीन
के किसी नये अध्याय की खोज में लगे हैं।

हैं, फिर आराम करते हैं। डेढ़ बजे से
पत्रादि लिखने का काम शुरू करते हैं
समाचार-पत्र भी पढ़ लेते हैं। मिलनेवालों
को मुलाकातें भी देते हैं। चार बजे से
कातते हैं और पुस्तकें पढ़वा कर सुनते हैं।
फिर भोजन करते हैं। छः बजे सायंकाल
प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना में नगर के
भी सम्मिलित होते हैं। साढ़े छः बजे
हैं, साढ़े सात बजे कमरे में आकर
देखते हैं और अपने लोगों से बातें
हैं। नौ बजे के लगभग सो जाते हैं।

* * *

घूमने के लिए बाहर नहीं
भीड़ नहीं होती काफ़ी शान्ति रहती है।
सुबह-शाम बग़ीचे में ही घूमते हैं।
रहने से स्वास्थ्य अच्छा है। घूमते
लोगों से जरूरी बातें भी करते रहते

गांधी जी जिस कमरे में रहते हैं
पिछले भाग में एक अच्छा मैदान है
सैनिक सिपाही आकर व्यायाम आदि
हैं। बापू दिन भर किसी न किसी
संलग्न रहते हैं। प्रार्थना करने के
एक अच्छा पक्का चबूतरा बना है।
ऊँचा है। जिस पर बैठकर प्रार्थना
बाहर से आये हुए दर्शनार्थियों
अच्छी तरह मिल जाता है। बापू
पर चटाई और दरी बिछवाकर
हैं। जमीन पर एक तख्त रक्खा
जिस पर कुछ बिस्तर बिछाकर
करते हैं।

पूना
७ नवम्बर ४५

स्टैनिष्ट्रीट की प्रसाधन सामग्रियाँ

कोल्ड व वैनिशिंग क्रीम
टैलकम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोमा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन

इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताजगी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर

SSK 120

वार्षिक बाल-सखा

बालक-बालिकाओं के लिए एक अनोखा उपहार और ज्ञान-विज्ञान का भाण्डार। साथ ही एक वर्ष के मनोरञ्जन की पर्याप्त सामग्री। इस अङ्क की दिलचस्प कहानियाँ, फड़कती हुई कविताएँ और तरह-तरह के ज्ञानव-र्द्धक लेख बच्चों को इतने पसन्द आयेंगे कि वे बार बार इसे पढ़ेंगे।

प्रत्येक समाचारपत्र-विक्रेता तथा प्रमुख पुस्तक विक्रेता से प्राप्त हो सकेगा। मूल्य २) दो रुपये।

मैनेजर, 'बाल-सखा'
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

कहानी

मौसी की लड़की

लेखक, श्री बलवीरप्रसाद पाराशर, एम० ए०

वह उससे प्रेम करता था, और किसी और से विवाह न करने की भीषण प्रतिज्ञा भी कर चुका था किन्तु अन्त में उसे पुनः विवाह करना ही पड़ा। इस कहानी में भावपूर्ण घटनाओं का नहीं किन्तु अनुभूतियों और भावनाओं का सुन्दर चित्रण किया गया है, जिनका हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता।

मैं कल्पना-लोक में विचरण करनेवाला तथा उमंगों की सतह पर थिरकनेवाला व्यक्ति हूँ। लोग मुझे पागल कहते हैं परन्तु यह कोई नहीं जानता कि यह पागलपन नहीं बुद्धि की पराकाष्ठा है; की प्रतिभा तथा गम्भीरता की विकृत मस्तिष्क ही है; जब कि मस्तिष्क लौकिक से अलौकिक में, साधारण से असाधारण में विचरता है। के प्रकाश में भी स्वप्न-लोक के उन गहन तत्त्वों को समझते हैं कि रात को स्वप्न देखनेवालों को नहीं दिखाई देते। अपनी धुंधली दृष्टि से अनन्त की झलक पाते हैं और जागने सिहरन-सी अनुभव करते हैं। मानो अभेद्य भेद के छोर तक हो आये बिना पतवार के ही अनन्त सागर तैरते हैं।

लोग कहते हैं कि मैं पागल हूँ। तो मैं भी मानता हूँ कि मेरे जीवन की दो सतह हैं। एक ज्ञान की, जिसमें कि जीवन की में बीते अतीत के चित्रों की हैं और दूसरी—धुँधली, अस्पष्ट की सन्देहपूर्ण तसवीर जो कि दार्शनिक अवस्था है। इसलिए जो मैं अपने पहले की कहूँ उस पर करना किन्तु जो उसके बाद को अपनी बुद्धि से तौलना, उसमें करना और यदि शंकायें न कर उसे ईडियस की पहेली समझना। जिसे कि मैंने अपने यौवन की में प्यार किया था, और में मैं अब उन स्पष्ट स्मृतियों पूर्वक लेखनी चला रहा हूँ, मेरी मौसी की लड़की थी। नाम एलियोनोरा। हम सदा एक थे, उस रंग-बिरंगी घासवाली चमकते हुए सूर्य्य के नीचे। उस कभी कोई भूला-भटका पथिक सकता था क्योंकि वह बस्ती कार पहाड़ियों के बीच में थी की किरणों को भी वहाँ के वातावरण में बेरोक-टोक नहीं थीं। कोई पगडंडी भी नहीं अपने प्रिय घर को लौटते समय झाड़ियों को हाथों से चीर कर हुए तथा पैरों तले अगणित को रौंदते हुए आना पड़ता ही रहते थे वहाँ, घाटी के बाहर से पूर्णतया अनभिज्ञ, हम तीनों, —उसकी माँ।

हमारे निवास के उस पार धुँधली के बीच में से एक पतली, निकल कर बहती थी, बहुत थी वह पर एलियोनोरा से कम। हम उसे शान्ति-सरिता कहते थे क्योंकि उसके प्रवाह शान्तिदायक आकर्षण-सा था। में कोई कल-कल ध्वनि नहीं और वह इतने धीरे धीरे बहती मोती से चमकीले पत्थर जो उसकी ये सदा से अपनी एक ही जगह आये थे। उसके आसपास की मखमल सी बिछी थी। नाना रंग-बिरंगे फूलों की झाड़ियों थीं। कहीं कहीं इसी घास लम्बे लम्बे पतले तनेवाले पेड़ थे। उनकी छाल कहीं तो काली चाँदी-सी चमकीली थी, चिकनी थी वह, पर एलियोनोरा से कम।

हाथ डाले हुए पन्द्रह वर्ष तक इसी घाटी में घूमे थे जब कि हमारे हृदयों में प्रवेश नहीं किया संध्या की बेला में, जब वह वर्ष पूरे कर चुकी थी और उन लम्बे लम्बे पतले वृक्षों के नीचे गाढ़ालिगन में बैठे हुए थे और शान्ति-सरिता में पड़ती हुई अपनी धीरे-धीरे कम्पित परछाँई को देख रहे थे। तब हमें लगा कि हमारे हृदय में कुछ नई नई उमंगें उठ रही हैं। उन नवीन भावनावों के साथ साथ घाटी का समस्त वातावरण ही बदला हुआ सा प्रतीत होने लगा। अद्भुत चमकीले तारों की शकलवाले फूल पेड़ों पर चमकने लगे। हरी घास और भी सुहावनी हो गई। धीरे धीरे सफ़ेद फूलों के स्थान में लाल रंग के अनुराग भरे पुष्प खिल उठे। हमारे मार्गों में जीवन साकार हो उठा, गुलाबी रंग की चिड़ियाँ हमारे सामने अपने परों को चमकाती उड़ जातीं, सुनहरी और रजत की तरह चमकीली मछलियाँ जल में चमक जातीं, और शान्त नदी में से धीरे धीरे एक ध्वनि उठती जो कि बढ़ते बढ़ते एक मधुर, हृदतंत्री को झंकृत करनेवाला कल-कल नाद बन गई। बहुत ही मधुर था वह स्वर, पर एलियोनोरा के कण्ठस्वर से कम। सचमुच एक गहरे सुनहरे, लाल और श्यामल रंग की घटा हमारे ऊपर छा गई।

एलियोनोरा का सौंदर्य अलौकिक था, पर वह एक सीधी-सादी सरल बालिका थी, उन्हीं फूलों की तरह सरल जिनमें कि उसका जीवन पनपा था। उसके प्रेम की भावनाओं में कोई भेद-भाव न था। जब हम दोनों हाथ में हाथ डाले उस रंग-बिरंगे फूलोंवाली घाटी में घूमते तो अपने हृदयों में और घाटी में हुए नवीन परिवर्तनों की बात करते।

अन्त में एक दिन उसने अपनी नीली नीली चमकीली आँखों में आँसू भर कर उस अन्तिम दुखद परिवर्तन की, जो नश्वर जगत् का परिणाम है, बात की। उसने देख लिया था कि काल की उँगलियाँ उसके वक्ष पर पड़ चुकी हैं, वह सौंदर्य की प्रतिमा बनाई गई थी केवल अनन्त में लय हो जाने के लिए, उस कीड़े की तरह जिसका जीवन केवल एक दिन का होता है। परन्तु उसको मृत्यु का जो भय था सो उसने एक संध्या को गोधूलि बेला में मुझको शान्ति-सरिता के तट पर बताया, कि उसे भय था कि मैं रंग-बिरंगे फूलोंवाली घाटी में उसको समाधि में दबा कर उसे छोड़ जाऊँगा और अपने प्रेम को किसी दूसरी बाह्य जगत् की नारी पर न्योछावर कर दूंगा। तभी मैंने उसके पैरों पर लेटकर उससे और आकाश से प्रतिज्ञा की थी कि मैं कभी भी संसार की किसी स्त्री से विवाह न करूँगा और मेरे उर में उसकी याद सदा एक-सी बनी रहेगी। तभी मैंने परम शक्तिमान जगत्-नियंता को अपनी प्रतिज्ञा का साक्षी बनाया और कहा था कि यदि मैं अपनी प्रतिज्ञा से विचलित हुआ तो ईश्वर और एलियोनोरा दोनों मुझे एक ऐसा भीषण शाप दें। जिसका कि यहाँ पर मैं वर्णन नहीं कर सकता। तब एलियोनोरा की चमकीली आँखों की चमक और भी बढ़ गई और उसने एक शान्ति की साँस ली जैसे उसके हृदय से एक भारी भार हट गया हो। इसके कुछ दिन बाद, जब वह शान्तिपूर्वक जीवन त्याग रही थी तो उसने मुझसे कहा कि अब वह चैन से मर रही है और इस जगत् को छोड़ जाने पर यदि परलोक में उसे आज्ञा मिली तो वह मुझसे आकर मिल जाया करेगी और यदि न भी मिली तो भी वह संध्याकालीन वायु में अपनी आहें सुनायेगी या उसे एक अपूर्व सुगन्ध से भरकर अपना आना सूचित करेगी। इन शब्दों को अधरों से निकालते हुए उसने अपने सरल जीवन को अनन्त में लय कर दिया और इस तरह समाप्त हुआ मेरे जीवन का प्रथम परिच्छेद!

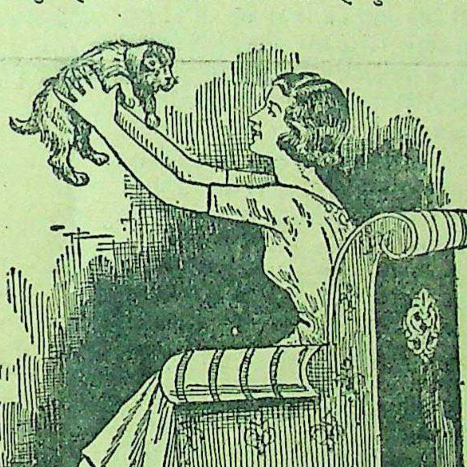
एलियोनोरा अपनी कुतिया से अत्यन्त प्रेम , करती थी।

अब तक मैंने जो कुछ कहा सत्य कहा और सन्देह से परे कहा। परन्तु जैसे ही मैं उसकी मृत्यु से बने हुए समय के बाँध को पार कर आगे बढ़ता हूँ तो मैं अनुभव करता हूँ कि मेरे मस्तिष्क के ऊपर एक धुंधली छाया-सी घिर आती है। मैं स्वयं ही अपने कथन की सत्यता पर सन्देह करने लगता हूँ। पर तब भी कहता हूँ—हाँ तो फिर धीरे-धीरे युग के समान भारी वर्ष बीतते गये और मैं उसी रंग-बिरंगे फूलोंवाली घाटी में रहता रहा। पर वहाँ के जीवन में एक बड़ा परिवर्तन हो गया था। जो फूल निकल आये थे वे सब मुरझा गये, चमकीले पंछी अपने दूसरे स्थान को उड़ गये, सुनहरी मछलियाँ नदी में नीचे चली गई और नदी का कर्ण-मधुर स्वर भी शनैः-शनैः विलीन हो गया। जीवन शून्य हो चुका था परन्तु तब भी एलियोनोरा से की हुई प्रतिज्ञाएँ भूलीं नहीं, क्योंकि मैं उसके प्रभाव की, सुगन्धित पवन के झोंकों में, सन्ध्याकालीन वायु की निसृत आहों में, सदा अनुभूति प्राप्त करता था। एक बार, केवल एक बार, मैं सोते से जग पड़ा था मानो किसी ने अपने सुकोमल अधर मेरे अधरों पर रख दिये हों।

परन्तु हृदय की रिक्तता बढ़ती ही गई। कहीं भी कोई सान्त्वना न मिली। मैं उस प्रेम के लिए बेचैन हो उठा जो कि पहले उमड़ा था। अन्त में रंग-बिरंगे फूलोंवाली घाटी मेरे उर में एलियोनोरा की याद दिला-दिलाकर शूल बेधने लगी और मैं उसको छोड़कर कोलाहलपूर्ण संसार में चला आया।

मैंने अपने आपको एक अनोखे स्थान में पाया जहाँ पर सब चीजें रंग-बिरंगे फूलोंवाली घाटी की याद भुलाने का प्रयत्न करती थीं। एक राजसी दरबार की शान-शौक़त, अस्त्र-शस्त्रों की झनझनाहट, चमकदार औरतों की चुलबुलाहट ने मुझे भौचक्का-सा कर दिया, मेरे मस्तिष्क पर एक प्रकार का नशा-सा छा गया। पर अभी तक मेरी आत्मा अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रही और एलियोनोरा की अनुभूति मुझे रात्रि के शान्त प्रहरों में होजाया करती थी। एकाएक यह अनुभूति बन्द हो गई और मेरी आँखों के सामने विश्व अन्धकारमय प्रतीत होने लगा मैं अपने चारों ओर समावृत प्रलोभनों के प्रचण्ड ताप से पीड़ित होने लगा। क्योंकि वहाँ उस राजा की सभा में, जहाँ मैं काम करता था, किसी दूर देश से एक सुन्दरी आई जिसकी अद्भुत रूप-राशि के समक्ष मेरा भीरु हृदय बेसुध हो उठा मैं उसके चरणों पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर बैठा। मैं सोचने लगा कि इस तीव्र प्रचण्ड प्रेम के वेग के सामने तो यह घाटीवाला प्रेम कुछ भी नहीं था। मैंने अपना सम्पूर्ण हृदय अपने आँसुओं द्वारा उस स्वर्गीय एरमेनगार्दे के चरणों पर उँडेल दिया और जब मैंने उसकी हृदय को बेधनेवाली आँखों की गहराई में देखा तो मैंने अनुभव किया कि समस्त सृष्टि में केवल वही है मेरे विचारों की रानी।

मैंने उससे विवाह कर लिया। उस भीषण शाप की जिसे ईश्वर से मैंने माँगा था, भी चिन्ता न की और न वह शाप मुझे प्रभावित ही कर सका। फिर एक बार, केवल एक बार, रात्रि की पूर्ण निस्तब्धता में मेरी खिड़की-द्वारा धीमी-धीमी आहों की ध्वनि आई और फिर वह एक स्पष्ट कथन के रूप में यों सुनाई पड़ी—

"शान्ति के साथ सोओ; क्योंकि प्रेम की आत्मा समस्त चराचर पर शासन करती है और उसी ने तुम्हारे हृदय तक एरमेनगार्दे को पहुँचाया है, जिसमें कि तुम पूर्ण रूप से मग्न हो चुके हो! कारण इस सबका तुमको मालूम होगा तब जब कि स्वर्ग में तुम अपनी एलियोनोरा से की प्रतिज्ञाओं के सामने आओगे।"*

---

* एक अँगरेजी कहानी

युग और साहित्य
युगद्वन्द्वी तथा उनसे प्रभावित भावी सम्भावनाओं को समन्वयपूर्ण साहित्य के माध्यम से उपस्थित करनेवाले निबन्धों का संकलन। मूल्य २॥≈)
मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

युक्तप्रांत में धारासभाओं का चुनाव

राष्ट्रवादी तथा लीगी मुसलमानों में एक संघर्ष

लेखिका, श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी

> श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी हमारे प्रान्त की प्रसिद्ध कांग्रेस महिला हैं। आपने इस लेख में संयुक्त-प्रान्त के निर्वाचन पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि चुनाव में प्रधान रूप से राष्ट्रीय मुस्लिम तथा लीगी मुसलमानों के बीच संघर्ष होने की अशा है किन्तु अन्त में कांग्रेस की विजय निश्चित है। लेख अत्यन्त सामयिक और सुन्दर है।

संयुक्त-प्रांतीय चुनाव पार्लामेंटरी बोर्ड के संयोजक श्री रफ़ीअहमद किदवई।

इस लेख की लेखिका श्रीमती पूर्णि
बनर्जी।

युक्तप्रान्त में निर्वाचन मुख्यतया राष्ट्रीय मुस्लिम तथा लीग में है। हिन्दू सीटों के लिए तो कांग्रेस को इस खेल के द्वारा मनोरंजन करने का अवसर मिल गया है। बिना सिर फुड़ाये, कष्ट सहे या जेल जाये तथा बिना शहीद बने आज कोई भी चुनाव के अवसर पर 'भारत छोड़ो' या १९४२ की स्वतन्त्रता की आवाज़ को बुलन्द कर सकता है। 'जय हिन्द' का विद्रोही नारा जो कि अब तक एक महान् अपराध समझा जाता था, आज एक साधारण नारा बन गया है।

श्री श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, पंडित नेहरू, आचार्य नरेन्द्रदेव, रफ़ी अहमद किदवई, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन तथा श्री सम्पूर्णानन्द ने जनता से अपील की है तथा उसे इन शब्दों में व्यक्त किया है—

"कांग्रेस ने अनेक बाधाओं के रहते हुए भी केन्द्रीय तथा प्रान्तीय धारा-सभाओं का चुनाव लड़ने का निश्चय कर लिया है। चुनाव का आधार होगा 'भारत की स्वतन्त्रता और प्रत्येक नागरिक के लिए समान अवसर' और इसका रणघोष होगा 'भारत छोड़ो' जो कि प्रत्येक भारतीय के मस्तिष्क और मन में अपना प्रभाव ८ अगस्त १९४२ के तूफ़ानी दिनों से जमा चुका है। तीन वर्षों के तूफ़ान और जन-आन्दोलन के तथा विदेशी और साम्राज्यवादी सत्ता के बहिष्कार के फलस्वरूप होनेवाले महान् अत्याचार के बाद भी हम आज स्वतन्त्रता के युद्ध में प्रयत्नशील हैं। उस युद्ध के लिए जिसके लिए लाखों के प्राणों की बलि चढ़ गई। प्रान्त के भाइयों तथा बहनों के लिए आज एक ऐसा सुअवसर आया है जब कि वह कांग्रेस के प्रति अपनी भक्ति प्रदर्शन कर सकते हैं। उस कांग्रेस के प्रति जो आज़ादी का चिह्न और वाणी बन चुकी है और जिसने सदैव भारतीय स्वतन्त्रता के लिए प्रतिज्ञा की है। कांग्रेस के प्रति अपनी कृतज्ञता इस समय पूर्ण रूप में कांग्रेस उम्मीदवार को अपना मत प्रदान करके दिखाना चाहिए तथा प्रत्येक शहर, ग्राम और घर में इसका सन्देश भेजना चाहिए।"

हम अपने प्रान्तवासियों से अपील करना चाहती हैं कि इस समय वह अपने सिद्धान्तों के प्रति सत्यता और ईमानदारी का प्रदर्शन करें और स्मरण रखें कि आगेवाले निर्वाचनों में किसी व्यक्ति का, किसी खास दल का या किसी विचार का अलग महत्त्व नहीं किन्तु महत्त्व है भारत की आज़ादी का जो कि आज कोटि-कोटि जन की वाणी बन गई है। अतएव आज हम अपने पुराने या नवीन साथियों से तथा उन समस्त लोगों से जो कि कांग्रेस और भारत की आज़ादी को अपना ध्येय मानते हैं, प्रार्थना करते हैं कि कांग्रेस-निर्वाचन में पूरी सहायता दें।

मौलाना हुसेन अहमद मदनी जो कि सेन्ट्रल मुस्लिम पार्लियामेंटरी बोर्ड के सभापति हैं तथा जो जमायत उल-उलमये हिन्द, कृषक प्रजा पार्टी, अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिस, अखिल भारतीय मुस्लिम लीग, राष्ट्रीय मुस्लिम तथा खुदाई खिदमतगार के प्रतिनिधि हैं, उन्होंने भी इसी प्रकार की प्रार्थना की है। यही राष्ट्रीय मुसलमानों का संचालन कर रहे हैं।

हम न तो जानती हैं और न कह ही सकती हैं किन्तु वातावरण आशामय है। कम से कम अनुमान के अनुसार भी ५४ में से २४ सीट से कम तो राष्ट्रीय मुस्लिमों की हो ही सकती है जो कि एक बड़ी विजय होगी। क्योंकि लीग की यह हार एक संकेत होगी। अतएव राष्ट्रीय मुस्लिम बिना पराजय के भय से केन्द्रीय और प्रान्तीय धारा-सभा की सभी सीट जीतने पर तुल गये हैं। शायद इस आशावाद का एक मुख्य कारण है कि प्रायः समाचार-पत्र स्वतंत्र भारत के पक्ष में है जिसमें कि समान अवसर और आज़ादी होगी। शिमला-कान्फ्रेंस का असर दोतरफा हुआ। उससे यह भी सिद्ध हुआ कि सौदा करने की शक्ति जिन्ना के हाथों में है, किन्तु उससे यह भी सिद्ध हुआ कि जिन्ना देश की आज़ादी के मार्ग में रोड़े हैं और वह अँगरेज़ों की सत्ता भारत पर क़ायम करने में सहायक हैं। इसके विरुद्ध मौलाना आज़ाद जो कि सदैव ही कष्ट सहन तथा सेवा के लिए प्रस्तुत हैं, उन्होंने इस बात पर सदैव ज़ोर दिया कि हम शान्ति नहीं किन्तु भारत की आज़ादी चाहते हैं; शिमला में उन्होंने इसका प्रदर्शन भी कर दिया।

राष्ट्रीय मुसलमानों ने निर्वाचन का कार्य साहसपूर्वक लिया है। वह ज़िलों में बड़ी-बड़ी सभाओं में व्याख्यान दे रहे हैं। शहर प्रायः लीग के प्रभुत्व में है। प्रान्त के पूर्वीय ज़िलों में जैसे गाज़ीपुर तथा गोरखपुर में बड़ी तादाद में मुस्लिम जमा होते हैं। इन ज़िलों में मोमिन बहुसंख्या में हैं। इन भाषणों की मुख्य ध्वनि यही है कि क्या लीग साधारण व्यक्ति को रोटी और कपड़े की पुकार का प्रतिनिधित्व नहीं करती। राष्ट्रीय मुस्लिम और लीग दोनों ही दो प्रकार की सामाजिक भावनाओं का प्रचार करती हैं।

सूचना मिली है कि अलीगढ़ विश्वविद्यालय के ५०० विद्यार्थी अध्ययन छोड़कर लीग की तरफ़ से चुनाव में मदद करेंगे। दूसरी ओर मुस्लिम लीग और महासभा से इस्तीफ़ों की सूचनायें आ रही हैं। मौलाना हुसेन मदनी सरीखे मनुष्य एक अवांछित तरीके से परेशान किये गये हैं किन्तु उन्हें इसकी परवाह नहीं। बड़ी सरलता के साथ वे इन रोड़ों को हटाते हुए आगे बढ़ते हैं। खाकसारों ने जिनके एक लाख खाकसार सदस्य हैं, कानपुर में लीगियों का मुक़ाबला किया।

केन्द्रीय धारा-सभा के लिए कांग्रेस उम्मेदवारी का विरोध शायद महासभाइयों के द्वारा होगा, जिनके कि जीतने की आशा अत्यन्त अल्प है। प्रान्तीय सभाओं में लीग और महासभा तो अपनी 'सुरक्षा' भी खो देंगी। अपरहाउस में वह शायद सफल भी हो जाय किन्तु कांग्रेस पूर्णतः चुनाव में विजयी होगी।

मज़दूर मुहल्लों में गवर्नमेंट ने मतदाताओं की लिस्ट फिर से दुहराई है। वहाँ पर कम्यूनिष्ट और कांग्रेसी तथा कांग्रेस समाजवादी पार्टी का संघर्ष होगा और कांग्रेसवाले तथा कांग्रेस-सोशलिस्ट यह सिद्ध कर देंगे कि वास्तविक लोकयुद्ध
था जो १९४२ का था।

पुराने गरम कोट

हर प्रकार के हाफ कोट, ओवरकोट, वास्कट इत्यादि साफ तथा मरम्मतशुदा तथा कराची का बना हुआ उच्च कोटि का माल एकदम उचित रेट पर सप्लाई किया जाता है। माल बहुत कम है। आज ही रेट मँगवाकर आर्डर बुक करा लें।

मेसर्स रमेशराज एन्ड कम्पनी, सौदागरान कोट, कराची।

RAMESH RAJ & Co
KARACHI

भारत माता

अपने बच्चों से कहो ! कि वुड वर्ड का ग्राइप वाटर बच्चों को तंदुरुस्त रखता है

WOODWARD'S GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 112—117 W. WOODWARD LTD. LONDON. ENGLAND

IMPORTANT TO MOTHERS
WOODWARD'S CELEBRATED
GRIPE WATER

वाहिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

मनोरंजक और रोचक—

(गताङ्क के आगे)

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

मुख विवर्ण हो उठा। शरीर का सारा रक्त मस्तिष्क
! उसने कहा—किसने कहा?

मन्द मन्द हँसी। उसने कहा—मैं जानती हूँ। तुम्हारी पुस्तक देख चुकी हूँ। उस दिन जब गई थी, टेबिल पुस्तक.....

अप्रतिभ हो गया। उसने कहा—सो बात नहीं है। सभी रोगों की पुस्तकें हैं। मलेरिया, काला ज्वर, कौन पुस्तक देखना चाहती हो? जितनी पुस्तकें सब रोग तुमको हुए हैं? कहकर हरीश विकृत

मलीन दृष्टि से शून्य की ओर देख रही थी।

घड़ी की ओर देखा। विनोद अब भी नहीं आया। कार से गया है, कार से आयेगा। तो भी ..

कहा—क्या क्षय-रोग होने पर मनुष्य सचमुच नहीं बताओ न.....

आँखों में आँसू आ गये। आँसू छिपाने के लिए वह चला गया और आँसू पोंछकर फिर कमरे में आ गया।

कहा—काला ज्वर, मलेरिया, इन्फ्लुएँज़ा से भी तो मरते हैं। कितनों को हमने अच्छा किया है। तुमने

कहा—हाँ। उसने अपनी दोनों आँखें मूँद लीं। भाव से विमला से छुपा कर एक पुस्तक पढ़ने लगा। एक बार फिर बकना प्रारम्भ किया। हरीश ने विमला! बोलते-बोलते थक जाओगी।

कहा—कह लूँ दो-एक बात। हृदय में वेदना हो होता है कि कहीं फिर कुछ न कह पाऊँ ...

बाहर मोटर आकर रुक गई।............हरीश सम्भवतः डाक्टर आ गया।

ने कहा—जाओ ले आओ.....

कहा विनोद साथ में है लिये आता होगा।

—भैया बेचारा बड़ा कष्ट उठा रहा है।

कहा—उसका परिश्रम और कष्ट तुम सफल कर

२३

की अवस्था का समाचार प्रायः सभी सुन चुके थे। को विमला तन्द्रामग्न थी। विनोद उसकी परि- था। हरीश इन्जेक्शन का प्रबन्ध करने नीचे गया ऊपर के कमरे के द्वार पर अत्ता के साथ लक्ष्मी आकर अत्ता ने पूछा—कैसे है?

घूमकर देखा; किन्तु कुछ उत्तर नहीं दिया। उसके शरीर में आग लग गई.....

पुकारा—हरीश.......

कहा—दादा नीचे गये हैं।

हरीश ऊपर आ गया। उसके हाथ में हाइपो- थी।

कहा—कब से अस्वस्थ है?

कहा—प्रायः एक वर्ष हुआ, और सम्भवतः उससे

......किन्तु हम नहीं जान पाई!

इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। वह कमरे में चला —विनोद........

कहा—तनिक उठो भाई। यह इन्जेक्शन देना के आने का समय हो गया।

घड़ी देखकर कहा—हाँ ठीक है, लगाइए।

में एक पुस्तक में पढ़ा था—"सोने की लता है।" यह पढ़कर उसके हृदय में एक वेदना-मूर्ति थी। विमला को देखकर वही मूर्ति फिर स्मरण

लक्ष्मी अभी द्वार पर ही खड़ी थी। अत्ता उसके कान में फुस-फुस करके कुछ कह रही थी। लक्ष्मी ने कहा—तुम्हारे जीजा जी दस दिन से प्रयाग एक अपील के लिए गये हुए हैं।.....

यह बात जैसे हरीश के कान तक पहुँची न हो!.......
इन्जेक्शन देने के बाद विमला ने आँखें खोलीं। हरीश ने पूछा—कहो कुछ कष्ट कम हुआ?

विमला ने गर्दन हिलाकर हाँ कर दी।

लक्ष्मी चुपचाप द्वार पर ही खड़ी थी। विनोद ने कहा—इधर निकल आओ दीदी, बैठो आकर!

लक्ष्मी बिना कुछ उत्तर दिये ही कमरे में चली गई। विमला को देखकर उसका हृदय वेदना से हिल गया। विमला के निकट बैठकर उसने पूछा—क्या रोग है?

हरीश ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह केवल विमला की ओर देखता रहा। विमला की आँखों के तारे कुछ चंचल हो उठे। पलकें प्रकम्पित हो उठीं, गर्दन घुमाने की चेष्टा करते हुए उसने कहा—कौन? कौन बोला?

हरीश ने कहा—दीदी.....

दीदी!.....सत्य ही! उसने उठने की चेष्टा की। हरीश ने कहा—क्या करती हो, विमला? हिलो-डुलो मत!

अस्थिर विह्वल वाणी से विमला ने पुकारा—कहाँ? दीदी कहाँ?

हरीश ने लक्ष्मी की ओर देखा—लक्ष्मी स्थिर, मौन, अविचल ही बनी रही। हरीश की अन्तरात्मा झुँझला उठी। इस समय भी यह उपेक्षा! इस जीर्ण-शीर्ण काया को देखकर भी तुम्हारा हृदय द्रवित नहीं हुआ, पाषाणी!

लक्ष्मी ने कहा—मैं आई हूँ, बहू.....

विमला ने कातर स्वर में कहा—न न,....रज्जो कहो, रज्जो!

लक्ष्मी विमला की ओर ताकती रही। घड़ी की ओर देखकर विनोद ने कहा—बेदाने का रस पिलाने का समय हो गया है।

लक्ष्मी ने कहा—लाओ मैं रस निचोड़ दूँ!

हरीश ने कहा—नहीं, रस पहले से ही तैयार रक्खा है।

लक्ष्मी ने कहा—कहाँ है?

हरीश ने कहा—बर्फ़ के बक्स में है।........विनोद, तुम लाकर दो। लक्ष्मी उठने को ही थी—किन्तु इस बात पर फिर न उठ सकी, चुप होकर बैठ गई।

विनोद फ़ीडिंग-कप में बेदाने का रस भरकर ले आया और विमला को पिलाने लगा। इतने में ही मोटर का शब्द सुनाई पड़ा।

हरीश ने कहा—तुम बैठो, विनोद! डाक्टर आ गये हैं; मैं लिये आता हूँ।......

हरीश नीचे चला गया। लक्ष्मी उठ खड़ी हुई।.....

आयु प्रायः समाप्त हो चुकी थी—दो दिन किसी प्रकार धर-पकड़ कर जीवन-रक्षा की गई। तृतीय दिन रात्रि के तीसरे प्रहर विमला की हृदय-वेदना अत्यन्त बढ़ गई। वह बोलना चाहती थी; किन्तु हृदय पर जैसे किसी ने प्रस्तर की शिला रख दी हो, बोल नहीं सकी। प्राण जा रहा था। वह टेढ़ी-मेढ़ी होकर उठने की चेष्टा कर रही थी। हरीश और विनोद भी उसे रोक नहीं पा रहे थे—विमला की देह में इतना बल!.....इसी भाँति संग्राम चलते-चलते क्षण-मात्र में, परम शान्ति से सारी यातनाओं का अन्त हो गया। विमला की निस्पन्द देह बिछौने पर लोटने लग गई।.....

उस ओर आकाश ने मेघाच्छादित होकर वज्रनिनाद किया। आकाश मेघों से कब भर गया था, हरीश और विनोद जान भी न पाये थे। मूसलधार वृष्टि होने लगी। ऐसा जान पड़ता था कि मानो प्रलय-घन आज पृथ्वी को बहा ले जायँगे। सूर्योदय होने से पूर्व ही ब्राह्म-मुहूर्त में मेघों के अन्धकार में गंगा के किनारे मानव-जाति के सनातन नियम के आगे सिर झुकाकर विमला की कुसुम कोमल देह को हरीश और विनोद दोनों ने ले जाकर, चिता लगाकर, अग्निदेव के समर्पित कर दिया। मेघों का अँधेरा तब भी छाया हुआ था। सूर्य का प्रकाश अभी फैल नहीं पाया था, केवल प्रकाशित थी चिता की लेलिहान् जिह्वा.......मानो

नत्र-रोग की चिकित्सा से हताश रोगी
ज्योति-कल्प का
सेवन करें
फूली, माँड़ा, रोहा तथा प्रारम्भिक मोतिया-बिन्द आदि की अचूक औषधि है।
यल० यम० धोलकिया ब्रदर्स
४६ जानसेनगंज, इलाहाबाद।

स्टैनकजेमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले, कटे, मुहासे, खाज, गला घाव तथा एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
श्री डिब्बा
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 123

SAKTI OUSHADHALAYA
MRITASANJI

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ........

'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्त्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है।

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध!
अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति-औषधालय ढाका

AO-SYN. 0.5.1236

उस कोहरे से ढँके हुए भविष्य के ललाट पर भाग्य की आलोक-शिखा हो! .....

सूर्य निकलते-निकलते भैरवघाट से यह लोग लौटकर घर आ गये। तेरहवें दिन सारा कर्म समाप्त करके हरीश ने विनोद से कहा—सब सामान पैक कर डालो विनोद, आज ही इस कानपुर को छोड़ देना है।

विनोद को भी घर काटे खा रहा था। किन्तु कहाँ जाये? कहाँ स्थान है! एक व्यक्ति के साथ रहकर भी उसे शान्ति नहीं मिली। शून्य पृथ्वी हाहाकार कर रही थी।

रोते हुए दरवान ने आकर पुकारा—छोटे बाबू.......

हरीश ने कहा—दरवान दादा ठहरो, मैं तुमको छोड़ूँगा नहीं। तुम्हारे जीवन का भार मैंने अपने ऊपर लिया है। पहले इस श्मशान से निकल कर बाहर हो जाऊँ तब फिर कुछ सोच सकूँगा। मैं तुम्हें रुपये दिये जाऊँगा; जिसका जो लेना-देना हो सो ले दे लेना।

—क्रमशः

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

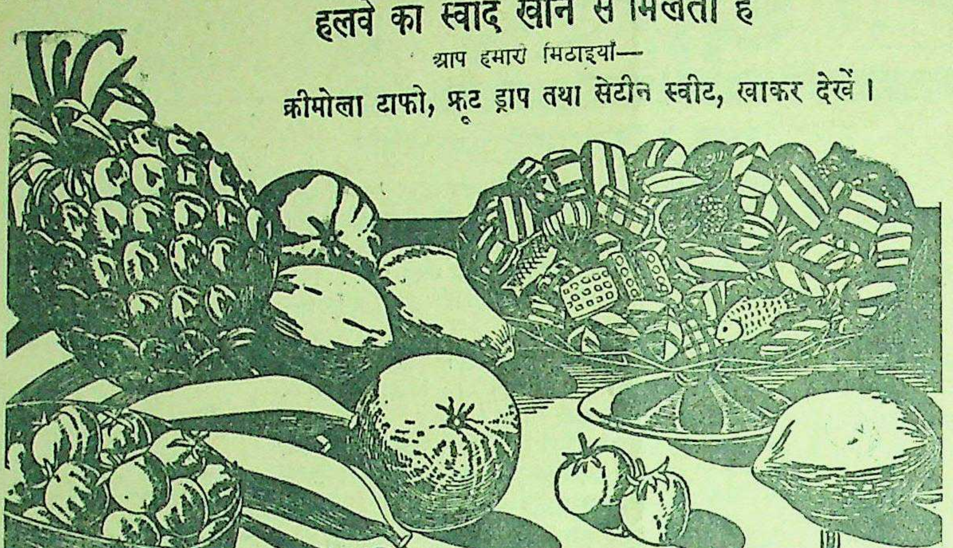

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

क्या आपके सभी आहार स्फूर्तिदायी होते हैं?

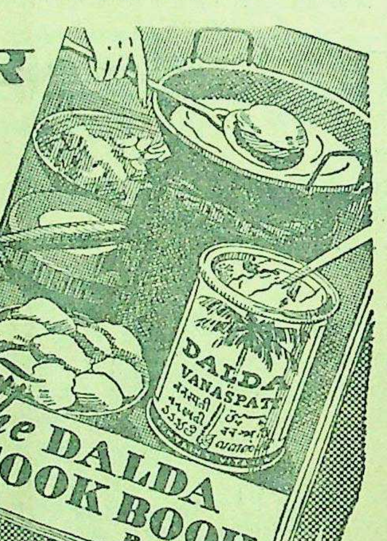

सबसे बढ़िया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डालडा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारी बातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. D113 P. O. Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

जी, हां—उन्हींमें से तो शक्ति पायी जाती है। लेकिन यह बात नहीं कि सभी आहारोंमें से उतनी ही शक्ति पायी जाती है। कई ज्यादा स्फूर्तिदायी होते है तो कई कम स्फूर्तिदायी। इसी लिये हमारा आरोग्य हमेशा खतरेमें रहता है। कई मनपसन्द आहार इस हिसाब से बिलकुल बेकार होते हैं और उनको पसन्द करनेवालोंको खेलने या काम करने से थकावट मालूम होये बिना नहीं रहती। सौभाग्य की बात है कि हर एक आहार को हम जीवन-सत्व संपूर्ण डालडामें बनाकर ज्यादा स्फूर्तिदायी बना सकते हैं। यह रसोई की बढ़िया चीज प्रकृतिके सर्वोत्तम स्फूर्तिदायी अन्नांश देती है। बहुतसी चीजोंमें न मिलनेवाली शक्ति उसमें है जिससे आपके हरएक आहार को वह स्फूर्तिदायी बना देती है।

पोषक-तत्व संपन्न
डालडा स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

म्पादक के नाम चिट्ठियां

ी और हिन्दुस्तानी

ुर में सम्मेलन का निश्चय

र के तीसवें अधिवेशन में हिन्दी-सम्मेलन ने अपने निश्चय-द्वारा र हिन्दुस्तानी शब्दों के प्रयोग में अपनी नीति स्पष्ट कर दी ी और उर्दू का क्या सम्बन्ध है स्वरूप से सम्मेलन ने स्पष्ट कर । सम्मेलन अपनी नीति के सम्बन्ध भी उसी निश्चय को पूर्णतया करता है।

में सम्मेलन के पुराने सभापति जी ने स्वस्थापित हिन्दुस्तानी के काम को प्रगति देने के से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से -विच्छेद करने की बात अन्त में उन्होंने अपना त्याग-दिया, जो स्थायी समिति के इस विषय में उनके और के कार्यवाहक उप-सभापति श्री टंडन के बीच जो पत्र-उसे महात्मा गांधी जी ने दिया है। उससे हिन्दी के और पत्रकारों में तथा हिन्दी को राष्ट्रभाषा स्वीकार कार्यकर्ताओं में असाधारण है। इस कारण सम्मेलन के सैद्धान्तिक अंश पर, के निश्चय को सामने मत प्रकट करना उचित

४५ के पत्र में सम्मेलन श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने को ये वाक्य लिखे थे—

हिन्दी को राष्ट्रभाषा उर्दू को वह हिन्दी की एक है जो विशिष्ट जनों में । स्वयं वह हिन्दी की साधारण करता है, उर्दू शैली का नहीं।" सम्मेलन के सिद्धान्त और नीति अनुकूल हैं और सम्मेलन उन्हें प्रकाशनार्थ स्वीकार करता है।

गांधी के इस मत से कि नागरी और फारसी दोनों सम्मेलन सहमत नहीं हो ीय दृष्टिकोण से सम्मेलन नितान्त अव्यावहारिक तथा है। केवल नागरी-लिपि होने की योग्यता है। उसमें है। देश की बहुत बड़ी वह लिपि है। उससे भी संख्या ऐसी लिपियों का ती हैं जो नागरी-लिपि के है और उसके लिए नागरी सुगम है। यह मानी हुई फारसी लिपि का आधार वैज्ञानिक सीखने में वह कष्टसाध्य है। यह आपेक्षिक दृष्टि से बहुत की लिपि है। हमारे देश में कमी है। अपनी प्रान्तीय लिपि अन्य लिपियें सीखना साधारण लिए सम्भव नहीं।

की दृष्टि पूर्णरूप से राष्ट्रीय राष्ट्रीय आवश्यकताओं के चलता आया है और चलना और भाषा और लिपि के प्रश्न दृष्टि से विचार करना है। भाषा और लिपि उत्थान और एकीकरण में है। वास्तविकता को देखते और लिपि के विकास में विचारयुक्त प्रगतियों का

श्री पूरनचन्द्र जोशी के नाम

आप मुझे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते, यह मेरा दुर्भाग्य ही कहा जायगा। पार्टी के अन्य बहुत से लोगों से मेरा परिचय है। मैं आपके लिए नया हो सकता हूं पर मेरी सेवाएँ नई नहीं हैं। मेरी निजी रुझान और सेवाएँ मार्क्सवाद की ओर हैं, यह कहने में मुझे लज्जा नहीं। यथासंभव कम्यूनिस्ट पार्टी की समय-समय पर सेवाएँ करता रहा हूँ, यह मेरे लिए गर्व की बात है। इसलिए कि कम्यूनिज्म के महान् उद्देश्य के प्रति मेरे मन में आस्था है। यह सब मैं आत्मप्रशंसा के लिए नहीं लिख रहा हूँ, केवल इसलिए लिख रहा हूं कि अपनी प्रिय पार्टी को सत्य की राह से हटते देखकर दुख होता है। राजनीति में प्रचार आवश्यक है और दलों का अस्तित्व अनिवार्य है। दलों में मतभेद और विभेद भी होंगे ही, किन्तु उस दल को——जिसके उद्देश्यों और सिद्धान्तों से मुझे प्रेम है——मैं सस्ते आक्षेप और प्रचार करते नहीं देखना चाहता। एक विशेष मत या वाद की प्रतिष्ठा के लिए झूठ-सच का आश्रय अन्य दल लें, कम्यूनिस्ट पार्टी क्यों ले, जिसे अपने सत्य पर ही दृढ़ रहना चाहिए?

'लोकयुद्ध' और 'पीपुल्स वार' का मैं नियमित ग्राहक हूं। शायद यही एक ऐसा पत्र है जिसे मैं रुपये खर्च कर मँगाता हूँ। यथाशक्य सेवा करने के विचार से दो प्रतियाँ 'पीपुल्स वार' की तथा एक प्रति 'लोकयुद्ध' की मँगाता हूँ। अपने उसी प्रिय पत्र को ग़लत बातों की शरण लेते देखता हूँ तो आश्चर्य होता है। मिल-मालिक यदि कहीं, किसी बात में, ग़रीब और अपने शारीरिक श्रम का सौदा करनेवाले मज़दूरों पर अत्याचार करते हैं तो उसे प्रकट करना मेरे इस प्रिय पत्र का, हम सबका, कर्त्तव्य है। यह शोषण तो बन्द होना ही चाहिए। किन्तु इस सदुद्देश्य में इस बात की चेष्टा ज़रूर होनी चाहिए कि किसी के साथ अन्याय न हो। यदि किसी व्यक्ति को संसार बुरा समझ ले तो इसका यह अर्थ नहीं होता कि वह हर समय, हर काम बुराई के ही लिए करता है, उसका कोई कार्य अच्छे उद्देश्य से हो ही नहीं सकता।

'लोकयुद्ध' और 'पीपुल्स वार' के पिछले कुछ अंकों में कानपुर की लक्ष्मीरतन काटन मिल्स, उसके प्रबन्धकों और उसके चेयरमैन लाला रामरतन गुप्त के विषय में नितान्त भ्रमात्मक बातें निकली हैं। आपके पत्र में छपा कि लाला रामरतन गुप्त ने गांधी-जयन्ती के अवसर पर मिल के मज़दूरों को तिरंगे झंडे बाँटे। मैं कह दूं——और आप मेरा विश्वास करेंगे कि यह खबर नितान्त निराधार है। झंडे बँटे थे किन्तु उसमें लाला रामरतन गुप्त का या मिल के प्रबन्धकों का हाथ बिलकुल नहीं था। मिल के कतिपय कर्मचारियों ने आपस में चन्दा किया था और उससे ही यह झंडा-वितरण हुआ था। आपके पत्र ने छापा कानपुर में पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त को दी हुई दावतों में लाला रामरतन जी भी हर जगह उपस्थित थे यह ख़बर भी ग़लत है। सम्भवतः रिपोर्ट भेजनेवाले सज्जन को यह मालूम ही नहीं है कि लाला रामरतन जी उन दिनों कानपुर में थे ही नहीं। जिस दिन उन्होंने दावत दी थी उसी दिन वह बाहर से लौटे थे जब थे ही नहीं तो दावतों में जाते कैसे? पेमेंट्स की, मज़दूरों को नोटिसेज़ देने की कई बातें भी नितान्त भ्रमात्मक हैं। मैं लाला रामरतन जी के यहाँ नौकर हूं फिर भी वे लोग मेरे क्रान्तिकारी विचार जानते हैं। आप भी यह विश्वास कर सकते हैं कि मैं किसी भी प्रलोभन से सत्य का गला नहीं दबाऊँगा भले ही मेरी निजी हानि हो। श्री सम्पूर्णानन्द जी का पुत्र होने के नाते इतनी नैतिक क्षमता अपने में पाता हूं। अन्त में, फिर विश्वास दिलाता हूं कि मेरी यथाशक्य सेवाएँ पार्टी के लिए सदैव प्रस्तुत हैं।

कानपुर —सर्वदानन्द वर्मा

* * *

चित्रपट और हिन्दी

मेरे 'चित्रपट और हिन्दी' शीर्षक पत्र के विषय में श्री हरस्वरूप माथुर ने गत ११ नवम्बर के 'देशदूत' में जो लिखा है, उसके उत्तर में मैं कुछ शब्द निवेदन करना चाहता हूं। श्री माथुर 'हिन्दुस्तानी' से अभिप्राय 'साधारण उर्दू' भले ही हो, परन्तु जनता 'हिन्दुस्तानी' शब्द का अर्थ लगाती है साधारण जनता की बोलचाल की भाषा, या फिर हिन्दुस्तानी का अर्थ लगाया जाता है हिन्दी और उर्दू की त्रिवेणी या हुगली जो अभी प्रकट होने को है। माथुर साहब अपनी हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा होने के योग्य मानते हैं या नहीं इससे भी मेरे पत्र का कोई सम्बन्ध नहीं है। हिन्दी एक भाषा है जिसकी अपनी परम्परा है और अपना निश्चित स्वरूप है, वह चाहे राष्ट्र-भाषा है अथवा नहीं। फिर, कम से कम 'हुमायूं' की भाषा तो साधारण उर्दू भी नहीं, क्लिष्ट साहित्यिक उर्दू है जिसको कई स्थलों पर साधारण उर्दू पढ़े-लिखे लोग भी नहीं समझ पाते। यदि उसको 'हिन्दुस्तानी' कहें तो रेडियो की 'हिन्दुस्तानी' को 'हिन्दी' मानना पड़ेगा। किसी चित्र की आलोचना में उसकी भाषा पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। यदि श्री माथुर को 'हुमायूं' या 'परख' की भाषा के सम्बन्ध केवल संकेत-मात्र करना ही अभीष्ट था तो यह काम 'हिन्दुस्तानी' शब्द की बजाय 'उर्दू' शब्द से कहीं अधिक अच्छी तरह होता। 'हिन्दुस्तानी' शब्द से निश्चय भ्रम उत्पन्न होता है, जो हिन्दी-हिन्दुस्तानी के संघर्ष के इस युग में विशेष रूप से अवांछनीय है।

सोहराब मोदी की चित्रपट-कला के विषय में मैंने अपने पत्र में कुछ नहीं कहा था। श्री माथुर उनकी इस कला की खूब प्रशंसा करें, मुझे इस पर अब भी कुछ नहीं कहना हैं, लेकिन मैं एक भाषा के प्रति अकारण द्रोह को कलात्मकता की एक बड़ी कमी ही मानूंगा। यदि उर्दू प्रेम के साथ-साथ सोहराब मोदी का हिन्दी के प्रति उदासीन भाव ही होता तो वह कोई आलोच्य बात न होती, लेकिन चुन-चुनकर हिन्दी शब्दों को निकालने के लिए, चाहे इससे कला की हानि ही क्यों न होती हो, क्या कहा जाय? यदि हम किसी के गुणों की प्रशंसा करते हैं तो हमें उसके दुर्गुणों की ओर इंगित करने का भी अधिकार है। इससे व्यक्ति और समाज दोनों का भला होता है। ऐसा होना चाहिए। मैं तो यह कहूंगा कि हिन्दी पत्रों में चित्रों की समालोचना करनेवालों का यह कर्त्तव्य है कि वे चित्रों की भाषा की स्पष्ट समालोचना के साथ-साथ इस प्रकार की मनोवृत्तियों पर प्रकाश डालें, और उदयपुर में सम्मेलन ने जो चित्र-पट सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत किया है उसके उद्देश्य की सिद्धि में सहायक बनें। हमें उर्दू से या किसी दूसरी भाषा से द्वेष नहीं है। अपनी भाषा की रक्षा करना और उससे द्रोह करनेवालों की आलोचना करना साम्प्रदायिकता नहीं, वरन् सच्ची मानवता है।

लखनऊ —सूर्यप्रकाश' एम० ए०

खांसी बाघ की तरह भयंकर है...
सिरोलिन 'रोश'
सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषेधक है

अब शान्ति हुई!
स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
SSKHB
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

कांग्रेस का एक लौह पुरुष नेता !

(पेज ७ का शेष)

तैयार थे; लेकिन शराबबन्दी का प्रयोग इतनी तीव्रता और सफलता से किया गया कि ये सब अवाक् रह गये।

राष्ट्र-निर्माणकारी कार्यों में सरदार वल्लभभाई पटेल का वह कार्य सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय है जो देशी रियासतों में किया गया। राजाओं के सम्बन्ध में महात्मा गांधी का जो दृष्टिविन्दु प्रारम्भ से ही रहा है, उसे कार्यान्वित करने के लिए देशी राज्यों को एक संरक्षित क्षेत्र बनाने का श्रेय आपको ही दिया जा सकता है। इस कार्य की सिद्धि के लिए जब आप राजकोट सत्याग्रह में कूद पड़े और लगभग आधा मार्ग तय भी कर चुके, तब आपने उस अप्राप्य सफलता को वरण करने के लिए अपना क़दम बढ़ाया, जो देशी राज्यों की प्रजा के अधिकारों के सम्बन्ध में एक आशातीत सफलता सिद्ध होकर रहती। लेकिन अनपेक्षित रूप से स्थितियों ने करवट बदली और प्रवाह की दिशा बदल गई। जो कुछ भी हो, राजकोट और बड़ौदा—दोनों ही स्थानों पर सरदार के प्राणों पर बुरी तरह बीती—उनका अन्त निकट दीखने लगा। जिन लोगों से मतभेद था, उनकी समयोचित सदभावनाओं ने सरदार के प्राणों की रक्षा की।

इतना सब कहने-सुनने के बाद यह तथ्य अप्रकट ही रहा जाता है कि पतिदार परिवार का यह घटक एक कृषक ही है। यद्यपि शहर में रहते-रहते आप नागरिक जीवन बिता रहे हैं, फिर भी आपकी सदा यह इच्छा रहती है कि बारडोली आश्रम के उन फले-फूले वृक्षों की छाया में आप अपना समय बितावें, जो सरकार-द्वारा दो बार ध्वस्त किये जा चुके हैं। जब कभी इस आश्रम के संचालक अथवा ट्रस्टी के रूप में आपके अधिकारों का प्रश्न सामने आता है, तब आप उस बुलडाग की तरह लड़ने को तैयार दीखते हैं, जिसके जबड़े खुले हुए हों और दांत एकदम पैने हों। वह व्यक्तिगत रूप से अपने लिए किसी वस्तु की कामना नहीं करते; लेकिन मूर्खों द्वारा दिये जानेवाले छल-कपट को बर्दाश्त नहीं कर सकते। 'लड़ो, लड़ो, लड़ो' ही उनका नारा है और, सदा तत्पर एक सत्याग्रही की तरह वे लड़ते भी रहते हैं। इस संघर्ष में—इस लड़ाई में भी अपने प्रतिद्वन्द्वी के लिए सहयोग का हाथ भी वे सदा फैलाये रहते हैं। चर्चिल की तरह ही इनका सिद्धान्त है—दुश्मन की जमकर ख़बर लो और फिर उदारतापूर्वक सन्धि कर लो। यह कहना ठीक नहीं है कि आप क्रोधी हैं। वह कभी जिद नहीं करते। कुछ लोग समझते हैं कि वे अपनी बात पर दृढ़ न रहकर झुक भी जाते हैं—समर्पण कर देते हैं; लेकिन ऐसा समझना बहुत बड़ी भूल है। हां, यह अवश्य कहा जा सकता है कि आवश्यक और अनावश्यक के बीच कहां कितना अन्तर है—भेद है। सिद्धान्त के लिए वे सदा लड़ते हैं और जब लड़ते हैं, तो अपनी पूरी शक्ति के साथ। फिर उन्हें इस बात की परवाह नहीं रहती कि वे ताश खेलने की मेज पर लड़ रहे हैं या चौपाटी पर, अथवा किसी वाद-विवाद के सिलसिले में। विजय की आकांक्षा इन्हें सदा बनी रहती है। चाहे वाद-विवाद हो, चाहे चुनाव-संघर्ष, वे विरोध से कभी-कभी किंचित अधीर भी दीखने लगते हैं। अपनी गहन विद्वत्ता और चुभते हुए हास्य की बौछार के सहारे ही वे अपने विरोधियों के विरोध को सहन कर लेते हैं। प्रतिद्वन्द्वी भी आपकी विद्वत्ता और हास्य के आगे पनाह मांग बैठते हैं।

मौलाना की तरह आप प्रकाण्ड पाण्डित्य से परिपूर्ण भले ही न हों; लेकिन आपकी बुद्धि का चमत्कार ऐसा समझने का मौका शायद ही कभी देता हो। पंडित जवाहरलाल जी की तरह आपने लम्बी-लम्बी यात्रायें नहीं की हैं; लेकिन आपकी कल्पना-शक्ति बहुत दूर-दूर तक आपको ले जाने में सहायक होती है। सुभाषचन्द्र बोस की तरह आप में साहसिक भावनायें नहीं हैं; लेकिन जिस कार्य की रूप-रेखा आप तैयार कर लेते हैं, उसकी सफलता के लिए डटकर आन्दोलन करने के आप आदी हैं। आप बहुत कम लिखते हैं; लेकिन जब लिखते हैं तब आपकी क़लम से प्रसूत शब्दावली अत्यन्त मार्मिक एवं ओजस्वी होती है। आप अपूर्व व्याख्याता नहीं हैं; लेकिन जब व्याख्यान देते हैं तो उसमें आपकी आत्मा का प्रतिबिम्ब झलकने लगता है और आपके स्वभावजन्य हास्य एवं विद्वत्ता के समावेश से एक समां बँध जाता है। वर्षों बाद जब स्वराज्य स्थापित हो जायगा,
तब गांधी जी के परम भक्त लौह पु
तरह देश एवं मानवता के लिए
सर्वस्व होम कर देनेवाले के रूप में
वल्लभभाई पटेल की स्मृति अविस
रहेगी।

गौरमोहन

श्री रवीन्द्रनाथ के सुप्रसिद्ध
'गोरा' का यह हिन्दी अनुवाद है।
वही सामाजिक उपन्यास है जिसकी
और कलात्मकता ने देश-विदे
रवीन्द्रनाथ की प्रसिद्धि में चार चाँ
दिये थे। सामाजिक उलझनों से
इस उपन्यास के दो भाग हैं। दोनों
का मूल्य सिर्फ़ ५।-)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबा

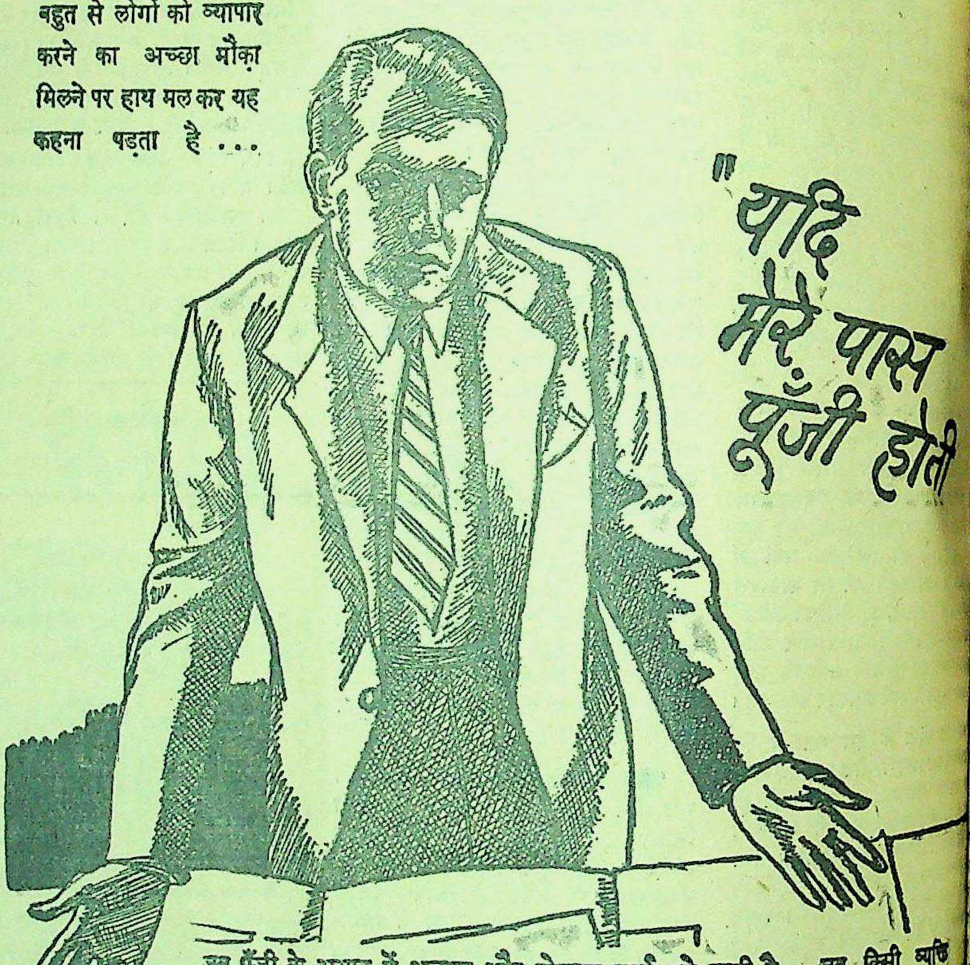
"यदि मेरे पास पूँजी होती

बहुत से लोगों को व्यापार करने का अच्छा मौक़ा मिलने पर हाथ मल कर यह कहना पड़ता है ...

जब पूँजी के अभाव में अनुभव और योग्यता व्यर्थ हो जाती है—जब किसी व्यक्ति को केवल इसलिए नौकरी करनी पड़ती है कि व्यापार के लिए पास में पैसा नहीं—तो उसे जीवन का सब से कटु अनुभव होता है। किन्तु जो लोग बुद्धिमान है और जिन्होंने भविष्य के लिए रुपया बचाया है, उन्हें ऐसी परिस्थिति का सामना कम करना पड़ता है। उनकी बुद्धि तथा अनुभव से मिल कर उनके हाथ का पैसा सोने पर सुहागे का काम करता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट ख़रीदिए।

छोटी छोटी रक़में बचाने वाले ५ रुपये का सर्टीफ़िकेट अथवा ४ आने, ८ आने या १ रुपये के स्टाम्प सरकार द्वारा अधिकृत किसी एजेण्ट अथवा सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से ख़रीद सकते हैं।

★ १२ वर्ष में १० रुपये के १५ रुपये हो जाते हैं।
★ ४½ प्रति शत साधारण ब्याज, इनकम टैक्स माफ़।
★ जमा हुये ब्याज के सहित साल बाद इन्हें भुनाया जा सकता है (५ रुपये के सर्टीफ़िकेट को १८ महीने बाद)।

क्या आज से बारह वर्ष बाद आप
आर्थिक स्थिति ऐसी होगी कि ऐसे
सरों से लाभ उठा सकें? ऐसा हो सकता
है, यदि आप अपनी बचत की रक़म
नेशनल सेविंग्स सर्टीफ़िकेटों में लगाने
आज ही निश्चय कर लें, जो सुरक्षित
और साथ ही जिनमें बहुत अच्छा
भी मिलता है। अभी बुद्धिमानी से
लीजिए और अपने भविष्य को
बनाइए।

AAA 189 HINDI

सिद्ध फ़िल्म-निर्देशक और निर्माता राजा पंडित सी-जीवन और कला की उपयोगिता पर बातचीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

-जगत् के विख्यात निर्माता और श्रीयुत राजा पंडित से मेरी भेंट ड़ियों" में पहले ही हो चुकी थी, व्यू" लेने के लिए मुझे उनके न पर जाना पड़ा।

र पहुँचते ही पंडित जी ने मुझे ग्री रूम" में बिठलाया। पंडित ड्राइंग रूम" भी दर्शनीय है। कमरे क पुस्तकों का शीशे की मनोहर रियों में व्यवस्थित ढंग से संकलन ल पर आपके लिखे हुए लेखों की तियाँ" रक्खी हुई थीं उन "हस्त-यों को मैंने भी देखा। उनमें कुछ च्छे थे कि मैं उनके पढ़ने का न कर सका। एक लेख का बी० शान्ताराम किधर ?" ड़े सुन्दर ढंग से फ़िल्म-संसार डाइरेक्टर वी० शान्ताराम ति की आलोचना की गई ह लेख एक पत्रकार की ता था, न कि निर्माता या आपने कई किताबें भी लिखी लेखनी में बड़ी प्रौढ़ता है। हाथ के बने हुए सुन्दर ते हुए थे।

जी का जीवन कुछ विशेष त निर्धारित है। यह सिद्धान्त ओं में अंकित है। विश्व की यों की दिव्य वाणियों पर ही त केन्द्रित है। वह सिद्धान्त हैं—

मनुष्य वही है जो उन्नति के अधिक चेष्टा करता है (सुकरात) लेना भाग्य पर विजय प्राप्त (कैम्पवेल) अन्याय, आलस्य चार से हमारा नाश होता है। संयम और सद्विचार हमें ऊँचा (रस्किन) हे पददलित भाइयो ों से मत डरो वे शरीर को मार किन्तु आत्मा को नहीं छू सकते) अपनी कमज़ोरी को भूल कि उसी की नींव पर अत्याचार निर्मित होता है (वर्डसवर्थ) दूसरों की अपेक्षा स्वयं दुख सह लेना (प्लेटो) अपनी दैनिक आव-के लिए किसी दूसरे का मुंह नहीं (टालसटाय) राजा पंडित का कि इन्हीं उसूलों के बल पर वह में आगे बढ़ सके और उनके शान्ति मिली।

पंडित एक सफल फ़िल्म-निर्माता ही साथ नहीं ही पत्रकार भी हैं। हिन्दी भाषा में भी फ़िल्म बना नाम हैं—"शबरी" और इन दोनों चित्रों का शूटिंग होनेवाला है। "शबरी" की छूआ-छूत-निवारण होगा का प्लाट मुफ़लिसी की किया गया है। राजा पंडित प्रश्न किये और उन्होंने क्या इस प्रकार हैं—

आपका पूरा नाम क्या है ?

ताराम विष्णू पंडित हैं।

प्रश्न——किस उम्र में आपने सिनेमा-संसार में प्रवेश किया ?

उत्तर——सोलह साल की उम्र में मैंने फ़िल्म-संसार में प्रवेश किया।

प्रश्न——क्या आपके सामने सिनेमा की दुनिया में प्रवेश करते वक्त कोई आदर्श था ?

उत्तर——उस वक्त मेरे सामने कोई आदर्श नहीं था। मैं शौकिया सिनेमा-संसार में आया। हाँ, बाद में काम करते-करते मेरे कुछ सिद्धान्त अवश्य निर्धारित हो गये। उस वक्त फ़िल्में अधिकतर "स्टन्ट" बना करती थीं। यदि सामाजिक बनती भी थीं तो वह भी निम्नस्तर की, जिनका प्रभाव बुरा पड़ना अनिवार्य था। समाज का एक बड़ा हिस्सा सिनेमा की दुनिया के खिलाफ़ होता जा रहा था——वह सिनेमा को चरित्र के पतन का मार्ग समझने लगा था। मुझसे यह देखा न गया। मैंने सोचा कि अगर इसी प्रकार के खेल बनते गये तो एक दिन ऐसा आयेगा कि भारतीय "सिनेमा" का अस्तित्व ही मिट जायेगा। मैंने इन सबके खिलाफ़ आवाज़ उठाई। डाइरेक्टर और प्रड्यूजरों को समझाया भी। उनकी समझ में भी आ गया। मैंने कहा कि जनता को ऐसे चित्र देने चाहिए जो उनके जीवन के अनुरूप हों। जिन चित्रों में उनके जीवन-संघर्ष का चित्रण न हो, उनको वह क्यों देखें? उनको देखने से लाभ ही क्या? राष्ट्र के उत्थान का भी ख्याल रहना चाहिए।

कम से कम मैं तो अपने चित्रों में इन सब बातों का ध्यान रखता हूँ। अब कुछ और निर्देशक और निर्माताओं ने भी इस ओर ध्यान दिया है। आज सिनेमा में इतना इन्क़लाब हो गया है कि वह राष्ट्र और समाज का पथ-प्रदर्शक बन रहा है। हाँ, अपने आदर्श के निभाने में कुछ अड़चनें भी हैं, जिनका जनता ख्याल नहीं करती। वह अड़चनें इसलिए हैं कि हमारा देश ग़ुलाम है। ग़ुलामी हमको उन्नतिशील चित्र बनाने में बाधक है, किस तरह से, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। इसके अलावा और जो बाधायें हैं उन सबका प्रादुर्भाव ग़ुलामी के धरातल से ही हुआ है। फिर भी हम अपने आदर्श की रक्षा करते ही हैं जितनी कि हमसे बन पड़ती हैं।

प्रश्न——आपने सिनेमा-संसार में किस हैसियत से प्रवेश किया? आपकी सफलता की कुंजी क्या है?

उत्तर——"स्टोरकीपर" की हैसियत से लेकर, डाइरेक्टर और प्रड्यूजर बनने से पहले मैंने सिने-व्यवसाय के सभी प्रकार के कार्य किये हैं। सिर्फ़ फ़ोटोग्राफ़ी और रिकार्डिंग छोड़कर मैं छोटे से छोटे काम को उच्च समझता रहा। इसीलिए मैं दिन-प्रतिदिन तरक़्क़ी करता गया। मेरी सफलता की कुंजी यही है कि इन्सान को उसके पेशे से घृणा न करनी चाहिए, चाहे वह कितना ही निम्न क्यों न हो। वही निम्न पेशा इन्सान को उन्नति के शिखर पर बिठा सकता है, ऐसा मेरा विश्वास है। सच तो यह है कि परिश्रम से घबड़ाना नहीं चाहिए। जो परिश्रम से घबड़ा कर भागते हैं वह कभी अपनी ज़िन्दगी में कामयाब नहीं हो सकते विकास की भूमिका परिश्रम ही है।

बायें से दाहने—सुप्रसिद्ध फिल्म निर्देशक और निर्माता श्री राजा पंडित और इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी।

प्रश्न——क्या आपने कभी अभिनय भी किया है? यदि किया है तो किस प्रकार का?

उत्तर——मैंने पहले अभिनय नाटक कम्पनी में किया था। नाटक का मुझे शौक़ प्रारम्भ से ही रहा। नाटक के अभिनय में मैं कुछ सफल रहा। उसी से प्रभावित होकर मैंने फ़िल्मों में भी अभिनय किया। मराठी फ़िल्मों में सिर्फ़ हास्य का अभिनय करने में मुझे बड़ा आनन्द मिलता है।

प्रश्न——सिनेमा-व्यवसाय कैसे पनप सकता है? उसके पनपने में क्या-क्या रुकावटें हैं?

उत्तर——जब तक फाइनेंसर के दिल और दिमाग़ पर इन्क़लाब का प्रभाव न पड़ेगा, तब तक सिनेमा का पूर्ण विकास नहीं हो सकता, यद्यपि आज सिनेमा में काफ़ी उन्नति हो चुकी है, लेकिन वह सब कलाकारों और डाइरेक्टरों के त्याग तथा तपस्या के बल पर ही हुआ है। हाँ, कुछ श्रेय हिन्दी के साहित्यकारों को भी है, जो कि सिनेमा की दुनिया में आ चुके हैं और जिन्होंने अपनी क़लम को निर्माताओं के सामने झुका नहीं दिया है।

प्रश्न——कहानी में गीत किस प्रकार रखे जाने चाहिए?

उत्तर——सबसे पहले हमें सम्पूर्ण कहानी को पढ़ डालना होगा। उसके प्रमुख स्थल ढूंढ़ने होंगे——लेकिन स्थल ढूंढ़ने में यह ख्याल रखना होगा कि कहानी के प्रवाह में रुकावट न पड़ जाये। यदि कहानी के प्रबल प्रवाह यानी "फ़्लो" में झटके लगें तब तो दर्शक के हृदय पर गहरा आघात पहुँचेगा। कहानी के ठीक स्थल पर ही गीत रहने चाहिए। यदि कहानी की गति कहीं और जा रही है, और गीत की कहीं और तब तो फ़िल्म का महत्त्व ही घट जायेगा। इसलिए गीत रखते हुए हमें कहानी की सम्पूर्ण परिस्थितियों का स्वाभाविक अवलोकन करना चाहिए। उसी के अनुकूल गीत भी होने चाहिए, जिसमें परिस्थिति का चित्रण हो।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सुरक्षित)

क्या आज आपने मेक-लिन से दांत साफ़ किये हैं ?
हाँ, मैं कभी भूलता नहीं।
MACLEANS TOOTH PASTE
सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

संवाददाताओं के पत्र

फतेहपुर में प्रान्त के प्रमुख नेता भूतपूर्व शिक्षा-मंत्रा श्री सम्पूर्णानन्द जी पधारे। आपके साथ प्रान्त के जनप्रिय नेता श्री विश्वम्भरदयालु त्रिपाठी भी पधारे। ज़िले की ओर से प्रमुख कांग्रेस नेता श्री बंशगोपाल एडवोकेट ने आपका स्वागत किया। पहले आप मल़वों तथा रेवाड़ी गये जहाँ १०२) की थैली आपको भेंट की गई। श्री सम्पूर्णानन्द जी श्री विश्वम्भरदयालु जी त्रिपाठी, श्री बंशगोपाल जी के ओजस्वी भाषण हुए। फिर आप ग़ाज़ीपुर पधारे जहाँ पर १५३) की थैली भेंट की गई। यह नेता खागा भी पधारे और वहाँ भी भाषण दिये। श्री रामेश्वरप्रसाद ने जनता की ओर से ८५) की थैली भेंट की फ़तेहपुर पधारने पर ज़िला कांग्रेस कमेटी के दफ़्तर में ज़िले के प्रमुख नेता श्री बंशगोपाल जी एडवोकेट भूतपूर्व एम० एल० ए० प्रधान मंत्री ज़िला कांग्रेस कमेटी ने स्वागत किया। श्री बंशगोपाल एडवोकेट की अध्यक्षता में लगभग ८ हज़ार जनता के बीच भाषण हुए। ज़िले भर से आपको ७४४) की थैलियाँ भेंट की गईं, जिसमें से २२९) राष्ट्रीय सैनिक फंड के लिए मिला फ़तेहपुर शहर की सफलता का श्रेय श्री बंशगोपाल जी, श्री गौरीशंकर कक्कड़, श्री राजबहादुरसिंह को है। श्री बंशगोपाल जी और श्री शिवदयाल जी दौरे में नेताओं के साथ रहे। —संवाददाता

* * *

खंडवा मध्यभारत देशी राज्य-लोक-परिषद् के प्रधान मन्त्री और अखिल भारतीय देशी राज्य-लोक-परिषद् की स्थायी समिति के सदस्य श्री कन्हैयालाल वैद्य ने कैंबलपुर जेल में नज़रबन्द भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री जयचन्द्र विद्यालंकार की रिहाई के लिए निम्न बयान दिया है—

मैंने समाचारपत्रों में श्रीमती सरोजिनी नायडू का एक वक्तव्य श्री जयचन्द्र विद्यालंकार प्रसिद्ध इतिहासज्ञ की रिहाई के लिए पढ़ा। लोकनायक श्री जयनारायण व्यास और पंडित माखनलाल चतुर्वेदी के साथ हुई बातचीत में इस प्रश्न पर कुछ आन्दोलन करने की आवश्यकता सबको महसूस हुई थी। श्री जयचन्द्र जी की सेवायें भारत के इतिहास लेखक के नाते स्वर्णाक्षरों में लिखी जाने योग्य हैं। उनकी नज़रबन्दी का कारण कुछ भी हो, वास्तव में विदेशों से इतिहास की सच्ची जानकारी प्राप्त करने के लिए उन्होंने जो पत्र-व्यवहार किया था वही उनके लिए आपत्तिजनक हुआ है। पिछले दिनों श्री सुभाषचन्द्र बोस के भतीजे श्री द्विजेन्द्रनाथ ने जेल के अपने साथी श्री जयचन्द्र विद्यालंकार के स्वास्थ्य की चिन्ताजनक दशा पर भी प्रकाश डाला और कहा कि एक साल से उन्हें कमर-दर्द रहता है। पैर ठंडे होकर नसें ऊपर को खिचती हैं। ज़रा-सा परिश्रम से माथा तप कर सिरदर्द होने लगता है। यदि चिकित्सा की समुचित व्यवस्था शीघ्र न की गई अथवा उन्हें रिहा न कर दिया गया तो रोग के असाध्य होने का भय है। श्री जयचन्द्र जी अटक ज़िला जेल में कैंबलपुर में पंजाब सरकार के बन्दी हैं। अब अपने दोनों साथियों (बोस भाइयों) की रिहाई के बाद जेल में बिलकुल अकेले हैं। ऐसी स्थिति में सरकार को उन्हें जल्द छोड़ना चाहिए।

* * *

मालवा बड़नगर की जनता ने पंडित जवाहरलाल जी नेहरू की ५७वीं जयन्ती बड़ी धूम-धाम से मनाई। बच्चे-बूढ़े सब जयन्ती मनाने की तैयारी में लगे थे। ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा की मुक़ामी कमेटी की ओर से चौक में वैद्य श्री महेशप्रसाद जी की अध्यक्षता में एक विराट् सभा हुई। मध्यभारत के तरुण राष्ट्रीय कवि श्री नरेन्द्रसिंह तोमर वीर जवाहर के प्रति राष्ट्रीय कविताओं से सभा का कार्यारम्भ हुआ। मध्यभारत देशी राज्य-लोक-परिषद् के प्रधान मन्त्री श्री कन्हैयालाल वैद्य का परिचय श्री सुन्दरलाल पटेल ने कराया। श्री वैद्य ने भाषण देते हुए कहा कि नेहरू जी ऐसे नेता हैं कि आज भारत की ४० करोड़ जनता को उन पर गर्व है। हम रियासती लोग आज भाग्यशाली हैं कि हमें ऐसा नेता प्राप्त हुआ है। हमें चाहिए कि हम पंडित जी के गुणों का अनुकरण करके सच्चे अर्थों में देश की आज़ादी प्राप्त करें।

भोपाल के लोक-नेता खान शाकिर अली ख़ाँ का श्री हाफ़िज़उद्दीन कुरेशी ने परिचय करवाया। भाषण देते हुए शाकिरअली ख़ाँ ने पंडित नेहरू के देश की आज़ादी के लिए किये गये त्याग की चर्चा की और मुसलमानों को मिल-जुलकर देश की आज़ादी के लिए यत्न करने की अपील की। ——संवाददाता

* * *

अजमेर आर्यसमाज विजयनगर का द्वितीय वार्षिकोत्सव गत ११, १२, १३ नवम्बर को श्री सम्पतकुमार जी सुरेखा के सभापतित्व में धूमधाम से मनाया गया। कुँवर चाँदकरण शारदा, श्री सूर्यदेव जी सिद्धान्तशास्त्री एम० ए० पी० एच० डी० तथा अन्य महानुभाव भी पधारे। जनता ने पूर्ण सहयोग दिया। रावबहादुर श्रीनारायणसिंह ने एक सौ एक रुपया उत्सव के निमित्त प्रदान दिया।

—संवाददाता

* * *

राँची में तपोभूमि नामक संस्था गीता-प्रतिपाद्य निष्काम कर्मयोग के भारतव्यापी प्रचार के लिए स्थापित हुई है। अपनी पंचवार्षिक योजना के अनुसार उसका कार्य आरम्भ होनेवाला है। पंचवार्षिक योजना इस प्रकार है——प्रथम वर्ष—हिन्दी और अँगरेज़ी के दो मासिकपत्रों का प्रकाशन ताकि तपोभूमि का सन्देश भारतवर्ष के कोने-कोने में प्रचारित हो सके। द्वितीय वर्ष—भारतवर्ष के कोने-कोने में गीता का प्रचार-कार्य के लिए युवकों की ट्रेनिंग का कार्य। तृतीय वर्ष——निष्णात युवकों का कार्य आरम्भ। चतुर्थ वर्ष——आदर्श उपासना-मन्दिरों की स्थापना। पंचम वर्ष—प्रत्येक उपासना-मन्दिरों के साथ वहाँ की जनता की आध्यात्मिक शिक्षा का प्रबन्ध। संभवतः स्त्रियों में आध्यात्मिक जागृति के लिए स्त्री-विभाग की स्थापना भी द्वितीय वर्ष में की जायगी। जो लेखक, वक्ता या विद्वान् तपोभूमि में सक्रिय सहयोग देना चाहते हों वे शीघ्रातिशीघ्र पत्र-व्यवहार करें। कार्यकर्ता वैतनिक और अवैतनिक दोनों प्रकार के लिए जायेंगे और उनकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति तपोभूमि करेगी। पत्र-व्यवहार का पता–प्रचार मंत्री——तपोभूमि——राँची।

—संवाददाता

* * *

रावलपिंडी में पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन का १६वाँ अधिवेशन बड़ी धूम-धाम से ३० नवम्बर, १-२ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है। हिन्दी-प्रेमी, तथा हिन्दी-साहित्य के उच्च कोटि के विद्वान्, कवि और हिन्दी-सेवक इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिए पंजाब तथा अन्य प्रान्तों से पधार रहे हैं। सम्मेलन में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, शिक्षा-सम्मेलन, महिला-सम्मेलन, रेडियो नीति-विरोधी-सम्मेलन, कवि-सम्मेलन और संगीत-सम्मेलन भी होंगे। श्रीमान् पंडित ठाकुरदत्त जी शर्मा (अमृतधारा) सम्मेलन के प्रधान निर्वाचित हुए हैं, श्री सीताराम साहनी, प्रधान म्युनिसिपल कमेटी, (कृपाराम ब्रदर्स-वाले) स्वागताध्यक्ष चुने गये हैं।

—मनसाराम शास्त्री
प्रधान मंत्री

एक मिनट में फोटो उतार लो
फोटो कैमरा ५॥)
जो लोग कैमरे का बटन दबाना भी नहीं जानते वह भी इनसे बड़ी आसानी से मर्द, बच्चा, स्त्री
प्रकार के दृश्य आदि के अति सुन्दर फोटो उतार कर अपनी शोहरत और
चमका सकते हैं यह कैमरे अति खूबसूरत हैं। मूल्य बहुत ही कम रखा गया है।
रियायती मूल्य बक्स कैमरा ५॥) रु०, स्पेशल ७॥) रु० डी-लक्स विशेष
वाला प्रति कैमरा ११।) रु०। डाक महसूल ।।।=)।
नोट—प्रति कैमरा के साथ फोटो उतारने का कागज, फ़िल्में, मसाला आदि
उतारने की पूर्ण विधि मुफ्त भेजी जावेगी। नापसन्द होने पर मूल्य वापस
मैनेजर—ब्रिटिश इण्डिया नावल्टी स्टोर (D. D.) पोस्ट बक्स नं० ९६

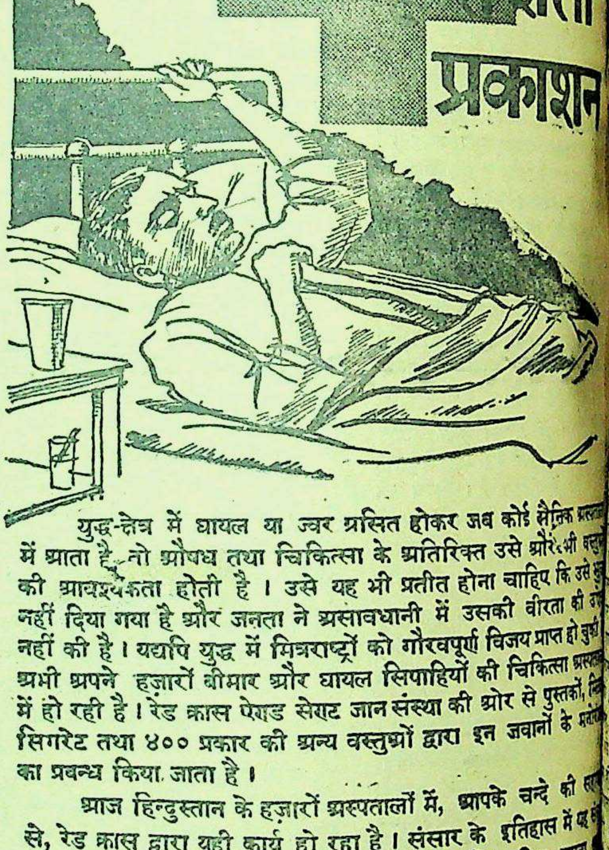

युद्ध-क्षेत्र में घायल या ज्वर ग्रसित होकर जब कोई सैनिक अस्प
में आता है, तो औषध तथा चिकित्सा के अतिरिक्त उसे और भी वस्तु
की आवश्यकता होती है। उसे यह भी प्रतीत होना चाहिए कि उसे
नहीं दिया गया है और जनता ने असावधानी में उसकी वीरता की उ
नहीं की है। यद्यपि युद्ध में मित्रराष्ट्रों को गौरवपूर्ण विजय प्राप्त हो चुकी
अभी अपने हज़ारों बीमार और घायल सिपाहियों की चिकित्सा अस्प
में हो रही है। रेड क्रास ऐण्ड सेण्ट जान संस्था की ओर से पुस्तकों,
सिगरेट तथा ४०० प्रकार की अन्य वस्तुओं द्वारा इन जवानों के मनो
का प्रबन्ध किया जाता है।
आज हिन्दुस्तान के हज़ारों अस्पतालों में, आपके चन्दे की सह
से, रेड क्रास द्वारा यही कार्य हो रहा है। संसार के इतिहास में यह
परोपकारी कार्यों के लिए अपना
नहीं रखती। आपके धन
चतुरता से सदुपयोग करके
बीमार और घायल जवानों को
पहुंचाई जाती है, जो उनके प्रति
कृतज्ञता एवम् सहानुभूति का शुभ
तथा ज्वलन्त प्रमाण है। रेड क्रास
सेण्ट जान ग़ैर सरकारी स्वयंसेवक संस्था है। अपने कार्य के लिए
सार्वजनिक चन्दे और जनता की सहानुभूति पर निर्भर करती है।
महान कार्य के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता है।
यह एक महान कार्य है, जिसके लिए आपको उदारतापूर्वक
पहूंचानी चाहिए। अपने वीर सैनिकों के लिए हम जो कुछ भी करें थोड़ा
इंडियन रेड क्रास के द्वारा
अपने घायल और बीमार सैनिकों
की सहायता दिल खोल कर कीजिए
AAA 312

...दिल्ली की विशेष चिट्ठी

...शरद्चन्द्र बोस चुनाव के बाद केन्द्रीय असेम्बली में कांग्रेस पार्टी के नेता बनाये जायेंगे ?

...हिन्द-फौज से देशव्यापी सहानुभूति—सरकारी गुट्ट की ...यात्रा—सर फिरोज खाँ नून की बहक—पेट्रोल की राशनिंग

(हमारे विशेष संवाददाता-द्वारा)

...सरकार ने सरकारी गजट के ...केन्द्रीय असेम्बली के लिए निर्वि- ...नये उम्मीदवारों की एक और ...शित की है। इस सूची को ...ऐसे सदस्यों की संख्या जिनके ...होने की सरकारी तौर से घोषणा ...है, ४० है। इनमें से २७ कांग्रेस ...विजयनगरम् के महाराजकुमार ...के समर्थक भी शामिल हैं। ...न, ७ मुस्लिम लीगी और एक ...हैं। अब तक निर्विरोध चुने गये ...य ये हैं:—नवाब सद्दीकअली ...), श्री मूसा (बम्बई), श्री ...र), खान बहादुर एम० एस० ...(पंजाब), सैयद गुलाम भीक ...), श्री अब्दुल हुसैन (बिहार) ...शाह (पंजाब)।

...कांग्रेस पार्टी के नेता

...क्षेत्रों में यह बात निश्चित ...है कि श्री शरद्चन्द्र बोस ...लेटिव असेम्बली में कांग्रेस ...चुने जायेंगे और इसलिए ...के नेता भी होंगे।

...का स्पीकर किसको चुना ...में अभी निश्चित रूप से ...सकता, मगर कुछ लोगों ...है कि बम्बई लेजिस्लेटिव ...पूर्व स्पीकर श्री मावलंकर ...यामेंटरी बोर्ड ने स्पीकर- ...नजद करने के उद्देश्य से ही ...में भेजा गया है। श्री माव- ...निर्वाचन-क्षेत्र से सम्बन्ध ...स्वर्गीय बी० जे० पटेल चुन- ...। परन्तु, संभावना यह है कि ...पार्टी ने उनको स्पीकर पद ...किया तो सरकारी सदस्य, ...और मुस्लिम लीग पार्टी ...ग्रेसी उम्मीदवार का समर्थन ...कि पूर्व परम्परा के अनुसार ...के लिए इस बार एक ...नम्बर है।

...कांग्रेस पार्टी ने श्री के० सी० ...खड़ा किया तो संभव है कि वे ...चुन लिये जायें। श्री नियोगी ...वैधानिक कार्रवाईयों की ...र पार्लियामेंटरी सूझ की ...में बहुत धाक है। संभवतः ...उनको ही स्पीकर-पद के लिए ...है, यद्यपि सुनने में आया है ...समिति के कुछ सदस्यों का ...मावलंकर के पक्ष में है।

...हिन्द-फौज से देश-व्यापी सहानुभूति

...हिन्द-फौज की डिफेंस कमेटी ...आजकल देश के विविध भागों ...के पत्रों और उनकी सहायता ...की बाढ़-सी आई हुई है। ...१० हजार तक के मनी- ...रहे हैं। कुछ मनीआर्डर तो ...नाम और पते बिना प्रकट ...हैं। कार्यालय का अधिकांश ...खुर्शीद नौरोजी ने सँभाल ...के उत्तर देना, मुलाकात ...से बातचीत करना और ...स्वागत-सत्कार करना— ...के ऊपर छोड़ा गया है। ...के एक भाई भी खुर्शीद ...हाथ बँटाते हैं। कार्यालय की दूसरी मंजिल पर श्री आसफ़अली आजाद हिन्द-फ़ौज के मुकदमे की फाइलों में तल्लीन रहते हैं। वे दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से केन्द्रीय असेम्बली के कांग्रेस उम्मीदवार भी हैं, मगर चुनाव-सम्बन्धी सारा काम-काज उन्होंने दिल्ली प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री श्री जुगलकिशोर खन्ना के ऊपर छोड़ दिया है। खन्ना जी और लाला देशबन्धु गुप्ता ही चुनाव-आन्दोलन चला रहे हैं। २४ और २५ नवम्बर को पोलिंग होने जा रही है।

सरकारी गुट्ट लन्दन-यात्रा को

बहुत से सरकारी अफ़सर, जिनमें सर रामास्वामी मुदालियर और श्री वी० टी० कृष्णाआचारी भी शामिल हैं, अगले कुछ ही दिनों में लन्दन जा रहे हैं। फलस्वरूप भारत-सरकार का कोई ऐसा सरकारी अफ़सर बाक़ी बचा होगा—सेक्रेटरी, संयुक्त सेक्रेटरी और डिप्टी सेक्रेटरी भी—जिसको लन्दन जाने का अवसर न मिला हो। खर्च की ओर जरा भी ध्यान न देते हुए सरकार थोड़े से बहाने-मात्र पर भी किसी न किसी सरकारी अफ़सर या शिष्ट-मंडल को इँगलैंड भेजने में जरा भी संकोच नहीं करती। कुछ ऐसे भी सौभाग्यशाली अफ़सर हैं जो किसी न किसी बहाने से हर साल इँगलैंड की यात्रा कर आते हैं। इँगलैंड से वापिस लौटनेवालों में रेडियो-विभाग के श्री थापर भी हैं जिन्हें आगामी अप्रैल तक पंजाब सर्विस में वापस भेज दिया जायगा।

सर फिराज खाँ नून की बहक

उम्र भर सरकारी नमक खाने के बाद मुस्लिम लीग के ये नये रँगरूट सर फ़िरोज़ खाँ नून एक के बाद दूसरा निरर्थक वक्तव्य देकर अपनी बची-खुची प्रतिष्ठा पर भी पानी फेरने जा रहे हैं। पंजाब असेम्बली के प्रधान सचेतक सेठ सुदर्शन के वक्तव्य के जवाब में एक और वक्तव्य देते हुए उन्होंने आजाद हिन्द-फ़ौज के अफ़सरों के विरुद्ध मुक़दमा चलाने की सारी जिम्मेदारी प्रधान सेनापति पर डाल दी है। मगर इससे उनकी स्थिति जरा भी स्पष्ट नहीं हो सकती। क्या सर फिरोज को उस प्रेस-विज्ञप्ति का ध्यान नहीं है, जब वे स्वयं वाइसराय की कार्य-कारिणी में रक्षा-विभाग के सदस्य थे और जिसमें यह बताया गया था कि आजाद हिन्द-फ़ौज के अफ़सरों के विरुद्ध मुक़दमा चलाने का फैसला भारत-सरकार-द्वारा किया गया था। यदि भारत-सरकार का वह तथा कथित फैसला केवल प्रधान सेनापति का ही फैसला था और उसमें वाइसराय की कार्य-कारिणी से सलाह नहीं ली गई, तब तो स्थिति और भी बदतर हो जाती है। केवल इसी मुद्दे पर वाइसराय की कार्यकारिणी के भारतीय सदस्य इस्तीफा दे सकते थे। सर फिरोज का यह कर्तव्य है कि वे जनता के सामने सही हालात रखें, क्योंकि उन्हें सब कुछ मालूम है और यह भी स्पष्ट करें कि वे सरकार की इस नीति के समर्थक हैं या विरोधी।

पेट्रोल की राशनिंग

विश्वस्त रूप से मालूम हुआ है कि भारत-सरकार मार्च, १९४६ के अन्त तक हिन्दुस्तान में पेट्रोल-राशनिंग तोड़ देने का विचार कर रही है।

सबेरे उठते ही...

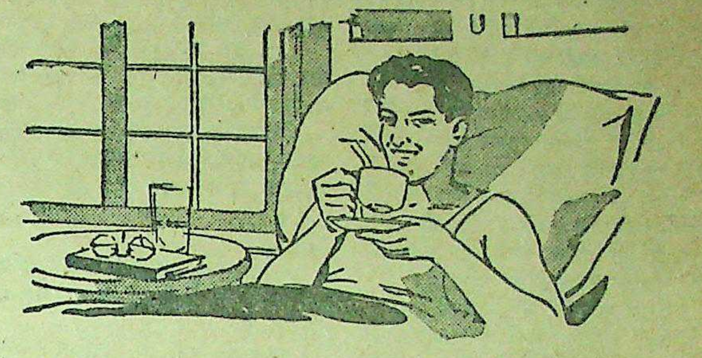

एक प्याला चाय पीजिये। यों तो घंटों तक खुमारी आपका पीछा नहीं छोड़ती पर इसे पीते ही खुमारी का नामो निशान मिट जाता है। आप प्रसन्न-वदन व प्रसन्न-मन दीखने लगते हैं। दिन का काम सहज मालूम पड़ने लगता है। सिर्फ इतना ही नहीं, गर्म चाय हलके विरेचक का भी काम करती है और आपका शरीर व मन स्फूर्तियुक्त हो उठता है। चाय पीकर आप खुद इसका अनुभव कर सकते हैं। दुनियाँ भर में करोड़ों आदमी सबेरे की चाय का आनन्द लेते हैं। परन्तु अच्छी चाय बनाने का सही व सरल तरीका न मालूम होने से बहुतों को इसका पूरा आनन्द नहीं मिलता। नीचे लिखे सरल तरीके से चाय बनाकर आप उसका पूरा आनन्द उठाइये।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखिये।

२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे : इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।

३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।

४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।

५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।

६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय

हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 246

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

LIPTONS
WHITE LABEL
TEA
ONE POUND NETT

व्हाइट लेबुल चाय

LTK 81

मनोरंजक चुटकुले

टामी की चतुराई

लन्दन की फ़िल्म अभिनेत्री एक अस्पताल में निरीक्षण के लिए गई। चारपाई पर पड़े हुए एक लड़के से उसने पूछा, 'क्या तुमने किसी नाज़ी को मारा है?'

उसने उत्तर दिया—'जी हाँ।'

'किस हाथ से'—अभिनेत्री ने पूछा।

'दाहिने' इतना कहकर उसने अपना बायाँ हाथ उठा दिया। इस पर अभिनेत्री ने उसका हाथ चूम लिया। फिर जैसे ही वह आगे बढ़ी कि एक टामी सिपाही अपनी बहादुरी का वर्णन करते हुए बोला—'मैंने सैकड़ों नाज़ियों को मारा है।'

'किस हाथ से' अभिनेत्री ने पूछा।

बड़ी उत्सुकता से आगे बढ़कर टामी ने कहा—'मैंने मुंह से उन्हें यहाँ तक काटा कि वे मर गये।'

कोर्ट मार्शल या फील्ड मार्शल

'आपके पति महोदय अच्छी तरह तो हैं न?'

'अरे, वह तो बहुत बड़ा कार्य करते हैं। सुना नहीं आपने वह फ़ील्ड मार्शल बनाये जानेवाले हैं।'

'यह तुम क्या कह रही हो? इतने थोड़े दिनों में मामूली-सा सिपाही फ़ील्ड मार्शल कैसे बन सकता है?'

'फील्ड मार्शल न होगा तो कोर्ट मार्शल होगा—ओहो, मुझे ठीक तरह से याद नहीं। बहरहाल दो में से एक तो हैं ही।"

* * *

जोड़ जूते

अफ़सर—तू बड़ा बेवकूफ़ है। देखता नहीं कि इन जूतों में एक काला और एक बादामी है?

चपरासी—जी हाँ, लेकिन आपका दूसरा जोड़ा भी तो इसी तरह का है।

AAA 461

हिन्दुस्तान को प्रति वर्ष

30,00,000 टन अधिक

अनाज किस प्रकार मिल सकता है?

यह एक कीड़े का चित्र है जो फ़सलों का नाश करता है। (इसका आकार यहां बहुत कुछ बढ़ा कर दिखाया गया है।) यह कीटाणु चूहों तथा अन्य कीड़ों और नमी के साथ मिल कर हमारे अनाज के बीसवें भाग को नष्ट कर डालता है। हमारी लापरवाही से यह कीटाणु फैलता है। हर साल इसकी तादाद हज़ारों गुना बढ़ जाती है।

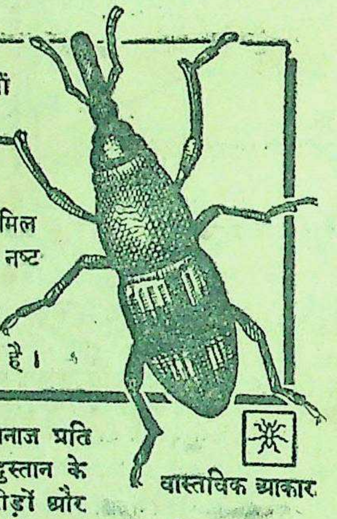

वास्तविक आकार

ख़राब संग्रह से ३० लाख टन अनाज प्रति वर्ष बरबाद हो जाता है। हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति को प्रति वर्ष चूहों, कीड़ों और नमी के कारण ८ सेर अनाज की हानि उठानी पड़ती है। अनाज भरने के इन बुद्धिमत्तापूर्ण तथा उपयोगी नियमों का पालन कर इस बरबादी को रोका जा सकता है और रोका जाना चाहिए।

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेंट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

ख़ुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया के फूड डिपार्टमेंट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

हिन्द-एशिया में अँगरेज राजा!

(पेज ५ का शेष)

सम्पन्न देश

शुरू में सारावाक का क्षेत्रफल केवल सात हज़ार वर्गमील था। सन् १८४१, ६१, ८२, ८४, ९० और सन् १९०४ में क्रमशः इसकी सीमा तथा रक़बे में वृद्धि हुई है। इस वृद्धि का मुख्य भाग समुद्रतट के साथ-साथ चला गया है। आजकल सारावाक का क्षेत्रफल ५० हज़ार वर्गमील है और आबादी केवल पाँच लाख है। इसी क्षेत्रफल के इँगलैंड और वेल्स में चार करोड़ जनता बसती है। स्पष्ट है कि सारवाक में आबादी की बड़ी गुंजाइश है। मध्यप्रदेश में होते हुए भी सारावाक की जलवायु मध्यम है। इसका कारण समुद्र, पहाड़ और वर्षा हैं अतः कभी भी तापमान ९० से ऊपर नहीं जाता। रेजङ्, बाम, लिम्बङ् और लुपर नाम की नदियों में आवागमन की सुविधा है। निवासी अधिकतर पँचमेल जाति के हैं। इनमें मलाया के लोग अधिक हैं और इस्लाम-धर्म के माननेवाले हैं। चीनी भी काफ़ी संख्या में आबाद हैं और आशा की जाती है कि वे अभी अधिक बढ़ेंगे। स्थानीय व्यापार अधिकतर चीनियों के हाथ में है। देश की मुख्य उपज सागूदाना और मसाले हैं। सारावाक का सागूदाना सर्वत्र प्रसिद्ध है। रबड़, चावल तथा नारियल भी बहुतायत से होता है और बाहर भेजा जाता है। खनिजों में पेट्रोल और मिट्टी का तेल मुख्य हैं। सबसे पहले सन् १९१० में मीरी नाम के स्थान में पेट्रोल के कुएँ प्राप्त हुए थे। सारावाक के तेल-क्षेत्रों से प्रतिवर्ष तीन करोड़ मन पेट्रोल और तेल प्राप्त होता है। इसका अधिक भाग सिंगापुर, हांगकांग व अन्य स्थानों में स्थित अँगरेज़ी जंगी बेड़े को दिया जाता है और इसके कारण राज्य को भारी आमदनी है। पेट्रोल के अतिरिक्त कुछ कोयला भी प्राप्त होता है।

शासन-व्यवस्था

सारावाक की राजधानी कुचिंग है। यह शहर समुद्रतट से २५ मील भीतर सारावाक नदी पर स्थित है। यहाँ
राजा का निवासस्थान तथा सरकारी
हैं। राज्य-कार्य का अधिकतर
अँगरेज़ी अफ़सरों के हाथ में है।
खनिज, सरकारी व्यापार और
द्वारा देश को आमदनी अधिक है।
क्षेत्र अँगरेज़ी हाथ में होने के कारण
व्यय से सदा अधिक रहती है। यहाँ
है कि अभी तक सारावाक पर कोई
नहीं है। राष्ट्रीय, सार्वजनिक या
ऋणों के बोझ से यह देश बरी है।
की व्यवस्था के लिए भिन्न-भिन्न
क़ायम किये गये हैं। सारावाक की
वहाँ का स्वास्थ्य-विभाग है।
अतिरिक्त सीबु और मीरी बड़े
सीबु चीनी व्यापारियों का केन्द्र है
मीरी तेल-उत्पादन का। देश का
यातायात नदियों-द्वारा होता है
राजधानी के आसपास पक्की
रेल का भी निर्माण किया गया है।
व हांगकांग से प्रति सप्ताह जहाज़
में आया करते हैं। इन स्थानों के साथ
तार का सम्बन्ध भी है।

भविष्य कैसा है?

आजकल सारावाक में सर ब्रुक
के चौथे वंशज राज्य करते हैं। इन्हें
में ही सन् १९४२ में जापानी
मलाया व सिंगापुर के बाद सारावाक
हमला किया था और संघर्ष में
होने के कारण राजा ब्रुक को
अपना देश छोड़कर आस्ट्रेलिया
पड़ा था। वहाँ से कुछ दिन के लिए
भी गये और अब तीन वर्ष बाद
राजधानी कुचिंग में वापिस आ
इन दिनों इँगलैंड के अखबारों में
की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर बड़े
रहे हैं। कुछ लोगों का कहना है कि
एक स्वतन्त्र देश है और वह
चाहे अपने सम्बन्ध स्थापित कर
किन्तु इसके विपरीत क़ानून
१८८८ की सन्धि का हवाला
हैं कि बेशक सारावाक स्वतन्त्र
सन्धि के अनुसार वहाँ के राजा
मामलों में लन्दन की अँगरेज़ी
सलाह मानने को बाध्य हैं।

इतनी जल्दी थक गये???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय
एवम्
उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वीरोजेन

वी
VIROGEN
रो
शारीरिक तन्द्रा को दूर कर
रो
स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति
जे
को बढ़ाता
जे
है
न

VIROGEN

शारीरिक तथा भीतरी कमजोरी अथवा इस प्रकार की अन्य बीमारियों
के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपको बाजार में न मिले तो लिखें:—
बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी, लि०, कलकत्ता।

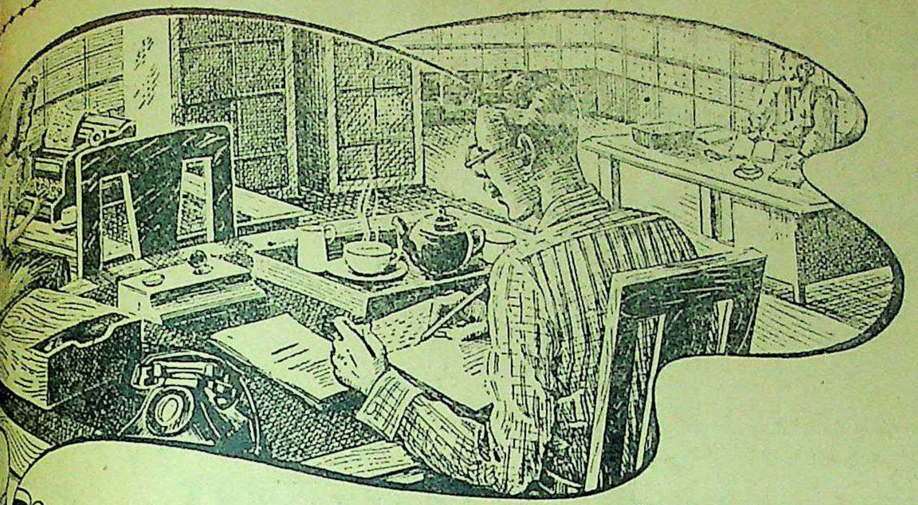

कार्य की पूर्ति

विवाद, टेलीफोन पर बातचीत और अगणित के कार्य का उतना ही भाग हैं जितना कि

तो आवश्यक काम पर भी ध्यान लगाना है। इसी कारण आप व्यस्त लोगों की ब्रुक बण्ड चाय का ताजा प्याला देखते दायक गुण अध्यक्षों को योजनायें तैयार निम्न कर्मचारियों द्वारा इन्हें कार्यान्वित होते हैं।

सभी बड़े नगरों में हमारे गोदामों को ताज़ी चाय से बारम्बार भरा जाता है। कारणस्वरूप हमारे बिक्रेताओं द्वारा ब्रुक बण्ड चाय लगातार बाँटी जाती है और आपको ताज़गी की चोटी पर मिलती है।

आपको ताज़गी के शिखर पर मिलती है।

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियां और एक कला

सिगरेट की एजेन्सी

हमारे उच्च श्रेणी के सिगरेट के लिए जो वर्जीनिया और पाइप टुबैको से तैयार किये गये हैं हर शहर और क़स्बों में एजेंटों और दूकानदारों की तुरन्त आवश्यकता है। सिगरेट के नमूने और एजेंसी के क़ायदे व शर्तों के लिए फ़ौरन नीचे दिये पते पर पत्र-व्यवहार कीजिए--

नेशनल इंडिया सिगरेट कम्पनी,
16/DDA वेडन रोड—लाहौर।

खाँसिये मत

अगर खाँसी आये तो

ग्रिमौल्ट्स

सिरप को

याद कीजिये

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ

१—दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।

२—गठीली और कठोर जड़ी-बूटी व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।

३—सर्वोपरी परीक्षा परीक्षोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।

४—पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।

५—हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।

परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये

सुखसंचारक कम्पनी ....लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग .... सुखसंचारक पोस्टआफिस
मथुरा

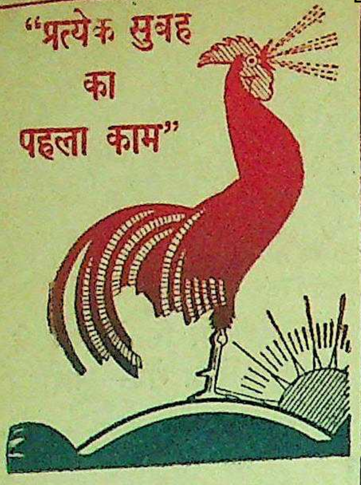
"प्रत्येक सुबह
का
पहला काम"

उत्तम स्वास्थ्य का रहस्य आपके शरीर के शुद्ध नियमन में है। सबसे पहले सुबह एक चमकता हुआ इनोज 'फ्रूट साल्ट' का एक गिलास शरीर का शुद्धि करता है, रक्त-स्रोत को निर्मल बनाता है और अंगों के उत्तम संचालन में सहायता देता है।

ईनोज़
"फ्रूट साल्ट"

इनो व 'फ्रूट साल्ट' शब्द राजस्टर्ड ट्रेड मार्क हैं।

पेट-दर्द ने क्या आपका

अपने चंगुल में फँसा लिया ?

पेट-दर्द के चंगुल में मत रहिए। देर न कीजिए अन्यथा उदर-व्रण की आशंका रहती है।

मेकलीन ब्रांड स्टॉमक पाउडर जले हुए व घाववाले भागों पर रक्षात्मक आवरण डाल देता है, पीड़ा का शमन करता है और रोग का नाश करते हुए भेद का परिहार करता है।

बोतलों के अलावा अलग-अलग लिपटी मात्राओं में भी बिकता है।

MACLEAN
Brand
Stomach
Powder
Alex. C. Maclean

Copyright

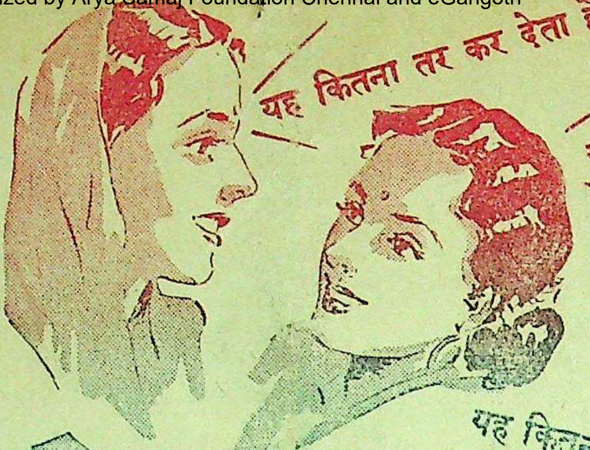
यह कितना तर कर देता है!
यह कितना ताजा कर देता है!

आप गर्मीसे परेशान क्यों है, जबकि विनो
स्नान कर लेनेपर आप शीतल ही जायेंगे!
लसलसा क्यों रखते है, जबकि मक्खन
सापुनका फेन आपको ताजा बना और
आप विनोलियाकी सुगंधको हमेशा
प्रफुल्लित करनेवाला पायेंगे। मस्तिष्क और
टानिककी तरह इसका असर होता है।

'VINOLIA'
WHITE ROSE SOAP

यह कितना आनन्ददायक है!

विनोलिया
व्हाइट रोज साबुन

VWR 17-221 H

VINOLIA CO., LIMITED, LONDON

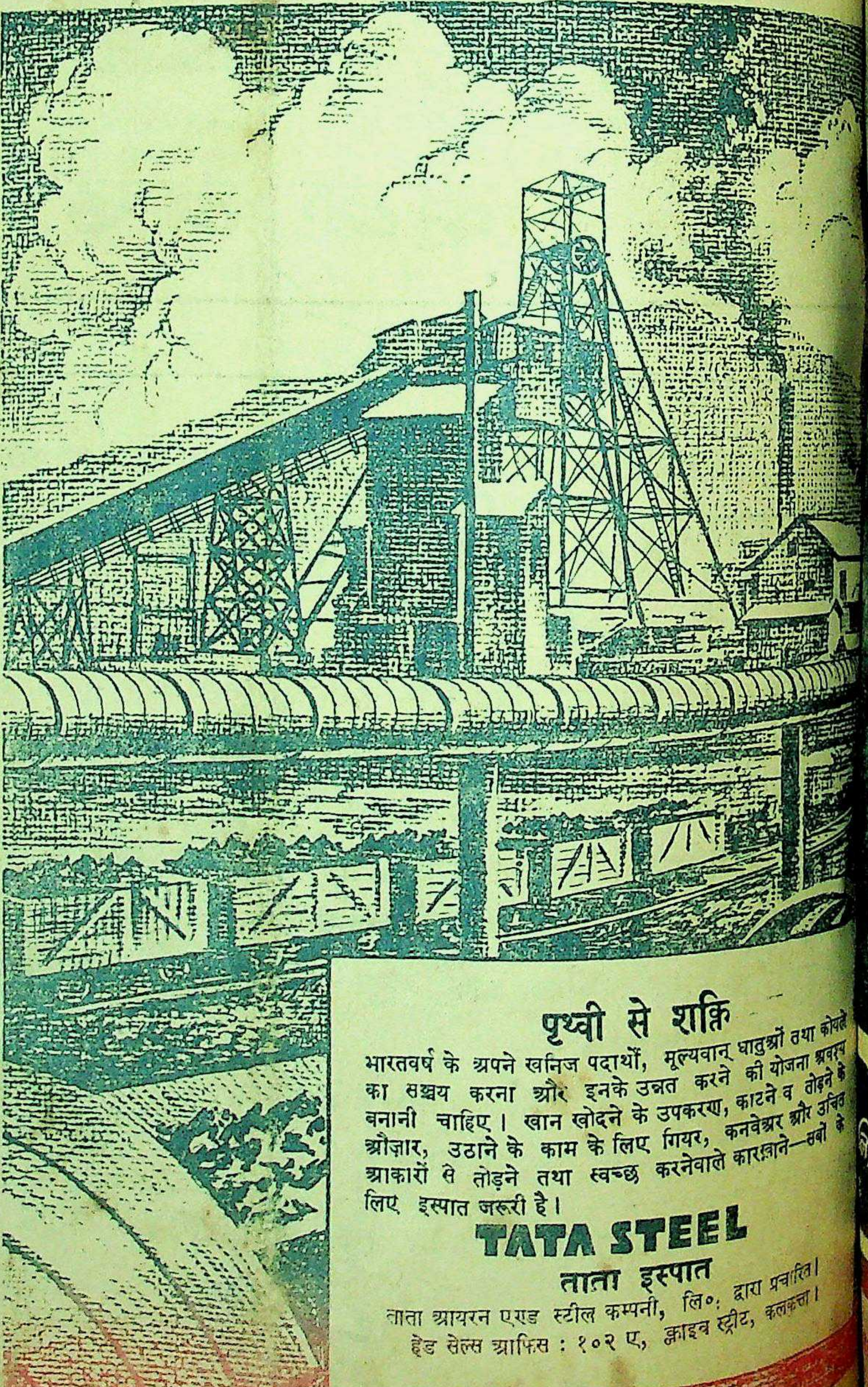

पृथ्वी से शक्ति

भारतवर्ष के अपने खनिज पदार्थों, मूल्यवान् धातुओं तथा कोयले का सञ्चय करना और इनके उन्नत करने की योजना अवश्य बनानी चाहिए। खान खोदने के उपकरण, काटने व तोड़ने के औज़ार, उठाने के काम के लिए गियर, कनवेअर और उचित आकारों से तोड़ने तथा स्वच्छ करनेवाले कारख़ाने—सबों के लिए इस्पात जरूरी है।

TATA STEEL
ताता इस्पात

ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लि०, द्वारा प्रचारित।
हेड सेल्स आफिस : १०२ ए, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [कें० मित्र-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, १४ प ाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—

कि मूल्य ७॥)
संख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

२ दिसम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 2nd December 194

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में 'मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

वामिनाथन् कौन हैं?
आन्दोलन क्यों?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

क्या संसार में शीघ्र 'शांति होगी?
मन की जीत, रंगमंच, हास-परिहास।

पेट के
दर्द के चंगुल में
न फँसिए !

पेट का दर्द जब आपको पीड़ा दे उसे एकदम बन्द कर दीजिए। उसके चंगुल को दृढ़ मत होने दीजिए अन्यथा घाव होने का भय है।

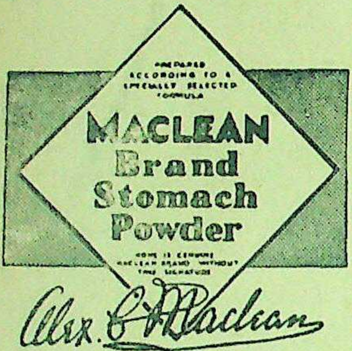
PREPARED ACCORDING TO A SPECIALLY SELECTED FORMULA
MACLEAN Brand Stomach Powder
NONE IS GENUINE MACLEAN BRAND WITHOUT THIS SIGNATURE
Alex. C. Maclean

Copyright JWT(E)LTD

फिल्मस्टारोंकी तरह त्वचा की रक्षा कीजिये !

वनमाला

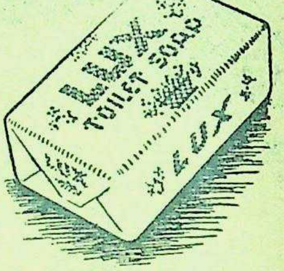
LUX TOILET SOAP

अपनी अंगकांति मृदु, निर्मल और मुलायम रखने के लिये वनमाला नियमित रूपसे लक्स टायलेट साबुन का इस्तेमाल करती है। पहले उसका तेज़ फेन अपने शरीरमें मलती है और फिर ठंडे पानीसे उसे धो डालती है। वह कहती है—मेरी संमतिमें "सौंदर्य साधन की यह रीति संसारकी सबसे आसान और सुरक्षापूर्ण रीति है"। बहुतही हिंदी फिल्म स्टार इसी विधि अपने सौंदर्य को बनाये रखती हैं।

लक्स टॉयलेट साबुन

LTS. 128-111-40 HI LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

"प्रत्येक सुबह
का
पहला काम"

उत्तम स्वास्थ्य का
शरीर के शुद्ध नियमन में है।
सुबह एक चमकता हुआ
साल्ट' का एक 'गलास
करता है, रक्त स्रोत को
और अंगों के उत्तम संचालन
देता है।

ईनोज़
"फ़्रूट साल

इनो व "फ़्रूट साल्ट"
ट्रेड मार्क हैं।

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ

❀१—दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।

❀२—गठीली और कठोर जड़ी-बूटी व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।

❀३—सर्वोपरी परीक्षा परीक्षोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।

❀४—पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।

❀५—हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।

परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये

सुखसंचारक कम्पनी ....लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग .... सुखसंचारक पोस्टआफिस

मथुरा

सुबह
काम"
स्वास्थ्य का
नियमन में है।
चमकता हुआ
ताएँ
रने वाले
नुयोग्य व
सस्ती व
द्ध, श्रेष्ठ

देशदूत

र्ष ८ संख्या १५]   सचित्र हिंदी-साप्ताहिक   [रविवार, २ दिसम्बर, १९४५

दिनों से दिल्ली में एकांत करते रहने से बरमा के गवर्नर डोरमनस्मिथ में आज कल ज़िन्दगी आ गई है। उन्होंने स्वाधीनता के युद्ध का मखौल शुरू कर दिया है। एक वक्त जब जापानियों ने बरमा पर र दिया था और गवर्नर साहब दिल्ली जा पहुँचे और वहाँ से का शासन करने लगे थे। हो कि उस वक्त वह हवा में शासन लेकिन अब तो वहाँ के शासन उनके हाथ में सचमुच आ र्नर साहब ने बड़े गर्व से ऐलान कि "बर्मा की स्वतंत्रता का हो गया।" क्या इसका है कि अब पुनः गुलामी का हो गया है? असल बात है शासक स्वतंत्रता के वाचाल ले सिरे के हैं। उन्होंने सारी स्वतंत्रता दिलाने का ठेका स्वतंत्रता दिलाते दिलाते ने स्वतंत्र हो जाते हैं कि दूसरे तंत्रता उनके लिये मखौल । एक ओर मजदूर सरकार तंत्रता देने का नाटक कर रही सरी ओर गवर्नर साहब अपने परिचय दे रहे हैं। ब्रिटिश यही रवैया है।

* * *

का तेल जो न आगे थोड़ा, क्योंकि वहाँ के पेट्रोल साम्राज्यवादियों की आँखें । युद्ध समाप्ति के बाद तीनों ने यह चाहा कि फारस उन्हें कोई न कोई रियायत जरूर फारस अकड़ गया और

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

उसने साफ इन्कार कर दिया। बेचारे अमरीका-ब्रिटेन क्या करते? वह अपनी अपनी परेशानी में मशगूल हैं, फिर फारस की इल्लत भी मोल ले बैठते, यह कैसे हो सकता था? लेकिन सोवियट रूस कब चुप बैठने वाला था? उसने योरोप और एशिया के बटवारे में अपनी एक टाँग अड़ा ही रखी थी, इसलिये उसने सोचा कि चलते चलाते एक लंगी फारस पर भी सही। फारस में अजरबेजान एक प्रांत है, जहाँ रूसी फौजें कुछ पहले से जमी हैं। अजरबेजान में अब नई जान यह आई है कि वह फारस से स्वतंत्र होकर सोवियट यूनियन में शरीक होना चाहता है। फारस बेचारा करे तो क्या करे? अमरीका और ब्रिटेन भी खामोश हैं, रूस साहब अपनी मनमानी करते जा रहे हैं, देखना है फारस का तेल आगे क्या गुल खिलाता है?

* * *

कहावत मशहूर है कि यह तो एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं। यह कहावत आज ब्रिटेन के मजदूर दल और मजदूर सरकार पर भी पूरी तरह से चस्पा हो रही है। ब्रिटेन के मजदूर दल का बच्चा है मजदूर मंत्रिमंडल। बाप ने सिखा पढ़ा कर बच्चों को भेजा था किंतु बच्चों को जब ओहदे मिले तो क्या पूछना? प्यादा से फर्जी भयो, टेढ़ो टेढ़ो जाय। सरकारी पदों पर पहुँचते ही मजदूर मंत्रियों ने अपनी चाल टेढ़ी करनी शुरू की। लेकिन है यह पूरा बाप-बेटों का तनाजा। इसमें कुछ विशेष गुंजाइश नहीं है। प्रोफेसर लास्की मजदूर दल के हैं सभापति। इसलिये शासक बेटों की टेढ़ी चाल देख कर वह आगाह करते हैं, कि जरा खुदा से डरो, ऐ बच्चो टोरियों की चाल मत चलो। लेकिन यह तो बेटों का जमाना है। बाप को अब पूछना कौन है? बुढ़ऊ ज्यादा टें टें करेंगे तो सभापति पद से भी हाथ धोयेंगे। प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं। प्रभुता ऐसी ही बला है। फिर भी बाप-बेटों की कहा सुनी तो इस कलियुग में होती ही रहती है, इसलिये मजदूर दल और मजदूर मंत्रिमंडल हैं सब एक ही थैली के चट्टे बट्टे।

* * *

सर आगा खाँ साहब घुड़दौड़ का रेस खेलते खेलते इस वक्त भारत में आ पहुँचे हैं। आपने मुसलिम लीग का रवैया देखकर कहा है—"देश की स्वतंत्रता देखते हुए मुसलिम लीग के उपाय और कार्य गलत ही नहीं आत्मघातक भी हैं। लीग के नेताओं को अपना निजी स्वार्थ छोड़ देना चाहिए और भारतीय कांग्रेस में मिल जाना चाहिए।" सर आगा खाँ कहते तो ठीक हैं लेकिन यह उपदेश खोजा बिरादरी पर पुरअसर हो सकती है,

आजाद हिन्द फ़ौज के वीर सैनिक कैप्टन सहगल, जिन पर लाल किले में कोर्ट मार्शल का मुक़दमा चल रहा है।

लेकिन इस देश के नवाबों और खान बहादुरों पर कैसे असर कर सकती है? सर आगा खाँ की बातें वह मान लें तो 'पाकिस्तान कहाँ से बन पायेगा? और 'पाकिस्तान' नहीं बनेगा तो मुसलिम राज्य कैसे कायम होगा? मुसलिम राज्य नहीं कायम होगा तो नवाबों की नवाबी और मिस्टर जिन्ना की लीडरी कैसे कायम होगी? इसलिये बहुत से मामले हैं जिससे लीग का लटका चालू है। हाँ, सर आगा खाँ की तरह अगर मिस्टर जिन्ना भी दस-बीस बार तराजू पर तोले जायें तो मुमकिन है सर आगा खाँ का जादू उनके सर पर चढ़ कर बोलने लगे। रहा कांग्रेस और लीग का मेल, यह तो चूहे और बिल्ली का बैर बन गया है। सरकारी जादू है कि ठट्ठा!

* * *

केन्द्रिय असेम्बली का निर्वाचन समाप्त हो गया। चारों तरफ से जो आवाजें आ रही हैं, उससे साफ जाहिर है कि कांग्रेस उम्मीदवार भारी संख्या में विजयी हुए हैं, उसके मुकाबले हिन्दू महासभा के उम्मीदवार बेचारे रह गये। और मुसलिम लीग, वह वहाँ भी पहुँची है। जान ऐसा पड़ता है कि इस बार केन्द्रीय असेम्बली में अच्छा द्वंद रहेगा। सुना जाता है कि श्री शरच्चंद्र बोस कांग्रेस पार्टी के नेता बनाये जायेंगे। बात तो ठीक है क्योंकि श्री भूलाभाई की जगह अगर कोई ले सकता है तो वह हैं शरदचंद बोस। नजूमी कहते हैं कि इस बार केन्द्र में जो जमघट लगा है उससे सरकार को बजट पास कराने में भी मुश्किल ही पड़ेगी। रह गई मुसलिम लीग, उसे तो बार-बार हाउस के बाहर उठ-उठ कर चले आने की अच्छी-खासी कसरत करनी पड़ेगी, क्योंकि बहुमत कांग्रेस दल को प्राप्त होगा। इसलिये वह तो करेगी अपना काम और लीग लगायेगी भीतर-बाहर की दौड़!

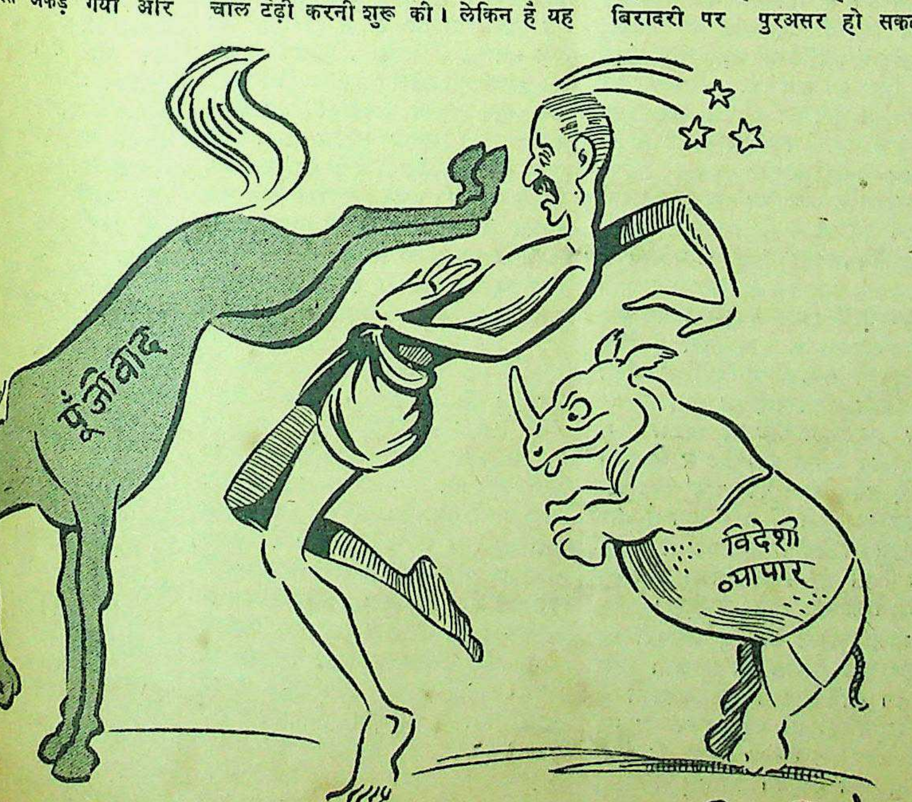

सम्पादक का पृष्ठ

ब्रिटेन की वैदेशिक नीति

ब्रिटेन में जब से मजदूर मंत्रि-मंडल ने शासन की बागडोर सँभाली है तब से अभी तक यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं हुआ है कि उसकी वैदेशिक नीति क्या है? प्रधान मंत्री श्री एटली, वैदेशिक मंत्री बेविन और भारत-सचिव लार्ड पेथिक लारेंस के हाउस आफ़ कामंस में दिये जानेवाले वक्तव्यों से भी ब्रिटेन के किसी निश्चित वैदेशिक नीति पर प्रकाश नहीं पड़ता। यहूदियों के प्रश्न को लेकर फ़िलिस्तीन में ब्रिटेन के वैदेशिक सचिव श्री बेविन के वक्तव्य के प्रति काफ़ी क्षोभ प्रकट किया गया। योरप के अन्य छोटे-बड़े राष्ट्रों पर भी अभी तक कोई ऐसा प्रभाव पड़ता हुआ नहीं दिखाई देता कि यह स्पष्ट हो कि मजदूर शासकों की नीति प्रगतिशील और टोरी-शासन-नीति से विपरीत है। अमरीका और ब्रिटेन में यद्यपि एटम बम के मामले में समझौता हो चुका है किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से निर्णय होनेवाले कई महत्वपूर्ण प्रश्न अमरीका और ब्रिटेन की वैदेशिकनीति के परिणाम-स्वरूप खटाई में पड़े हुए हैं। पिछले दिनों लन्दन में संसार के राष्ट्रों के वैदेशिक मंत्रियों का जो सम्मेलन हुआ था, उसके भंग होने में भी प्रमुख हाथ ब्रिटेन की वैदेशिकनीति को ही माना गया है। वैदेशिक सचिव मिस्टर बेविन और रूसी वैदेशिक सचिव एम० मोलोटोव के विचारों में मत-भेद के ही कारण यह सम्मेलन भंग हुआ और तभी से ब्रिटेन और रूस की तनातनी का प्रारंभ भी समझना चाहिए। लेबनान के मामले को लेकर फ्रांस और ब्रिटेन म मतभेद पहले से ही प्रारंभ हो चुका है।

कारण क्या है कि ब्रिटेन अपनी वैदेशिकनीति स्पष्ट नहीं कर रहा है? अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर ही नहीं साम्राज्य के उपनिवेशों के प्रति भी उसकी वैदेशिक नीति अभी स्पष्ट नहीं है। इंडोनेशिया में यद्यपि ब्रिटेन के प्रभुत्व का कोई प्रश्न नहीं था किन्तु वहाँ की स्वाधीनता के पक्षपाती दल के विरुद्ध उसने डच सरकार की सहायता में ही क्यों तत्परता दिखाई? भारत के सम्बन्ध में तो अब तक उसकी जो वैदेशिक नीति रही है उसके फल-स्वरूप आज यहाँ कटुता किस मात्रा में उत्पन्न हो गई है, उसका प्रत्यक्ष दर्शन हो रहा है। मजदूर सरकार के आगमन पर कुछ आशायें थीं, किन्तु वह भी टोरी-दल की वैदेशिक नीति से कुछ मिलती-जुलती-सी ही जान पड़ती है। कहा यही जा रहा है कि भारत को शीघ्र ही साम्राज्य में प्रगतिवादी राष्ट्र मान लिया जायेगा किन्तु कामों से उसका अभी कोई आभास नहीं मिल रहा है। आज भी भारत के सम्बन्ध में कहा जाता है कि परस्परिक समझौता होने पर ही सरकार कोई निर्णय कर सकती है? न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेंगी। न भारतीय राजनैतिक दलों में एकता होगी और न उसे स्वराज्य के योग्य समझा जायेगा है? यह ब्रिटेन की वर्तमान वैदेशिक नीति! इसलिए हमारी तो स्पष्ट सम्मति है कि ब्रिटेन जब तक अन्तर्राष्ट्रीय तथा उपनिवेशों के प्रति अपनी वैदेशिक नीति पूरी तरह से नहीं स्पष्ट करेगा तब तक उसके प्रति वातावरण दिन-प्रतिदिन दूषित होता जायेगा। यदि संसार में शान्ति स्थापित करनी है, पारस्परिक राष्ट्रों में मतभेद दूर करके विश्व सुरक्षा की योजना सफलीभूत करनी है तो कम से कम ब्रिटेन को अपनी वैदेशिक नीति की स्पष्ट घोषणा कर देनी चाहिए। भारत ऐसे विशाल देश की सहानुभूति ग्रहण करने का सबसे सुलभ मार्ग यही है।

* * *

दमन का परिणाम क्या होगा?

पिछले सप्ताह आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों के प्रति भारत के विभिन्न और प्रमुख नगरों में विद्यार्थी-समुदाय ने अपनी सहानुभूति प्रकट की और जुलूस निकाल कर सभायें भी कीं किंतु खेद के साथ यह कहना पड़ता है कि सरकार की ओर से विद्यार्थियों के प्रदर्शनों को रोकने के लिए जो नीति ग्रहण की गई वह अत्यन्त दुखद और सरकार तथा जनता के बीच अशांति उत्पन्न करनेवाली थी। कलकत्ता और बंबई में पुलिस को 'शांति-रक्षा' तथा अनुशासन के नाम पर विद्यार्थियों पर लाठियाँ तथा गोलियाँ चलानी पड़ीं। इसके पहले पंजाब तथा युक्तप्रांत में भी इसी प्रकार की घटनायें घट चुकी हैं। आखिर यह सब क्या हो रहा है? जब शांति और सुरक्षा की स्थापना के लिए सरकार ऐसा ही रुख ग्रहण करती रहेगी तो उसका परिणाम क्या होगा?

किसी भी देश में राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्र के कठिन कार्यों में वहाँ के युवकों और विद्यार्थियों का विशेष हाथ रहा है। यदि आज भारत में स्वाधीनता का आन्दोलन व्यापक रूप से चल रहा है, तब युवकों और विद्यार्थियों पर उसका कोई प्रभाव न पड़े, यह कैसे हो सकता है? यद्यपि कांग्रेस ने विद्यार्थी समुदाय के लिए अभी तक कोई क्रियात्मक योजना प्रस्तुत नहीं की है और न उन्हें किसी प्रकार का आदेश ही दिया है कि कि वह अमुक प्रकार से संगठन करें और राजनीतिक कार्यों में सक्रिय भाग लें। फिर भी यदि राष्ट्र का कोई भी समुदाय राष्ट्रीय चेतना तथा आन्दोलन में जनता का पक्ष समर्थन करता है तथा स्वाधीनता के युद्ध में सहायक होता है तो कांग्रेस का नैतिक तथा क्रियात्मक समर्थन प्राप्त होना अनिवार्य हो जाता है। सन् ४२ के अगस्त-आन्दोलन से इस देश में विद्यार्थी आन्दोलन का प्राबल्य हुआ और दिन-प्रतिदिन उसमें नव जीवन प्राप्त होता जा रहा है, दिन-प्रतिदिन वह संगठित होते जा रहे हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि वह राष्ट्रीयता के पक्षपाती ही नहीं अवसर पड़ने पर सर्वस्व अर्पण करने के लिए भी तत्पर रहने लगे हैं। हम समझते हैं कि विद्यार्थी समुदाय की राष्ट्रीय चेतना राष्ट्र के भविष्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम उछृंखलता तथा अनुशासनहीनता के पक्षपाती हैं किंतु यदि युवकों तथा विद्यार्थियों में थोड़ी बहुत इसकी मात्रा पाई भी जाय तो वह उनकी आयु का दोष हो सकता है न कि राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से बाधक। इसलिए समय समय पर यदि विद्यार्थी-वर्ग राष्ट्रीय कार्यों में भाग लेता है और राष्ट्र-हित की विरोधी प्रवृत्तियों का विरोध करता है तो यह उसके जीवित होने का ही लक्षण समझा जाना चाहिए।

आजाद हिन्द सेना के अफसरों पर सरकार कोर्ट मार्शल का मुकदमा चला रही है। सारे देश में इन अफसरों के प्रति सहानुभूति ही नहीं प्रकट की गई वरन सरकार से उनकी रिहाई की जोरदार माँग की गई है। इसलिए विद्यार्थी समुदाय ऐसे अवसर पर चुप कैसे रह सकता था? जगह जगह विद्यार्थी समुदाय ने प्रदर्शन और सभायें इसीलिए किया कि आजाद हिन्द फौज के बंदियों को रिहाई मिलनी चाहिए। हम पूछते हैं कि विद्यार्थी-वर्ग ने यदि जलूस निकाले और सभायें करने की योजना की तो उनके इस कार्य से कहाँ से आसमान फट पड़ने का अनुमान सरकार ने लगा लिया? सभायें करके वह आजाद सेना के कैदियों के प्रति अपनी सहानुभूति ही प्रकट करते या और कुछ? हाँ, बहुत होता तो सरकारी नीति की निंदा भी कर देते! किंतु सरकार की नीति तो येनकेन प्रकारेण कुछ न कुछ कर गुजरने की होती ही रहती है। हमारा तो यह विश्वास है कि जहाँ जहाँ विद्यार्थी-काण्ड हुए हैं, यदि अधिकारी सतर्क होकर केवल देख-भाल करते और विद्यार्थियों की साधारण कार्यवाही में बाधा न पड़ती तो सम्भवतः पुलिस तथा विद्यार्थियों के बीच ऐसी दुर्घटनाओं के घटने और कटुतापूर्ण वातावरण उत्पन्न होने की नौबत ही न आती। फिर युद्ध के बाद शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के इस युग में, जब कि सरकार ने डी० आई० आर० के आनेक प्रतिबंध उठा लिये हैं और दमन की लगाम ढीली कर दी है, उसे सोच समझ कर क़दम उठाना चाहिए। इसलिए हम तो स्पष्ट रूप से यह कहना चाहते हैं कि विद्यार्थी-वर्ग के प्रति सरकार का व्यवहार अनुचित और परस्पर कटुता बढ़ानेवाला था। सरकारी नीति ही के परिणामस्वरूप विद्यार्थी-वर्ग ही नहीं अध्यापक-वर्गों में भी काफ़ी असंतोष उत्पन्न हो गया था। युद्ध समाप्त हो चुका है, आगामी चुनाव की चहल-पहल जोरों पर है, धारा-सभाओं का नवीन संगठन होनेवाला है, इसलिए सरकार को अपनी पुरानी दमन-नीति त्याग कर प्रेम और सहयोग का रुख ग्रहण करना चाहिए। मजदूर सरकार के शासन में भी अगर भारतीयों को पुरानी टोरी नीति के दमन का शिकार बनते रहना पड़ा तब तो भविष्य ईश्वर ही के हाथ समझना चाहिए।

* * *

'सैनिक' और 'जीवन'

संयुक्तप्रान्त का सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय साप्ताहिक पत्र 'सैनिक' का प्रकाशन पुनः प्रारम्भ हो गया है। 'सैनिक' का जीवन सदा संघर्षमय रहा। वह अपने जन्मकाल से राष्ट्रीय भावनाओं, विचारों तथा आदर्शों पर मरा और जीवित रहा। पिछले अगस्त-आन्दोलन में सरकारी-दमन का शिकार बना और उसका प्रकाशन स्थगित हो गया। 'सैनिक' की त्याग और सेवायें हिन्दी पत्रों के इतिहास गौरवपूर्ण स्थान रखती हैं। हम 'सैनिक' संचालक पंडित श्रीकृष्णदत्त पालीवाल तथा उसके अन्य कार्यकर्ताओं को 'सैनिक' के पुनः आगमन पर बधाई देते हैं।

पूना से लौटते हुए बंबई में महात्मा गांधी सेवाग्राम जाने के लिये मोटर में बैठ रहे हैं। गांधी जी के पास बंबई के मेयर श्री नगीनदास मास्टर और प्रधान मंत्री श्री बी० जे० खरे खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं।

ग्वालियर (लश्कर) का राष्ट्रीय पत्र 'जीवन' पुनः हुआ है। इसके संपादक श्री प्रसाद 'मिलिन्द' हिन्दी-जगत् के कवि तथा साहित्यिक हैं। पिछले ग्वालियर-सरकार ने 'जीवन' पर प्रतिबन्ध लगा दिया था, हिन्दी जगत् द्वारा उसका प्रबल विरोध हुआ हमें प्रसन्नता है कि 'जीवन' मुक्त होकर राष्ट्रीय सेवा करने हिन्दी भाषा-भाषी जनता के बीच प्रकट हुआ है। 'जीवन' का प्रकाशन अवसर पर तो और भी उपयुक्त हुआ है जब कि आज ग्वालियर में जनिक सभा का चुनाव हो रहा राष्ट्रीय क्षेत्र में पुनः पदार्पण पर हम को बधाई देते हैं।

* *

मध्यप्रांत के दो स्वर्गीय साहि

मध्यप्रान्त के सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध सेवी रायबहादुर बाबू जगन्नाथ का स्वर्गवास हो गया, यह अत्यन्त दुःख हुआ। 'भानु' जी साहित्य में विशिष्ठ स्थान है। जिस लगन और सेवा-भाव से हिन्दी की सेवा की उसका ऐतिहासिक वह हिन्दी में पिंगल-साहित्य के ग्रन्थ के रचयिता ही नहीं वरन् के उच्च कोटि के कवि भी थे। स्वराज्य' के सम्पादक श्री आगरकर स्वर्गवास भी अत्यन्त क्षोभजनक आगरकर जी हिन्दी के मनस्वी तथा पत्रकार तो थे ही साथ ही प्रमुख जन भी थे। मध्यभारतीय रियासतें आपका राष्ट्रीय कार्य स्वर्गीय आगरकर जी के स्वर्गवास से पत्रकार जगत् की क्षति तो हुई ही मध्यप्रान्तीय राष्ट्रीय जीवन का और त्यागी सेवक के अभाव की गई, इसमें सन्देह नहीं। हम दोनों आत्माओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि करते हैं। स्वर्गीय भानु जी का बार हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के पद के लिए भी प्रस्तावित हुए दुर्भाग्यवश हिन्दी जनता उन्हें प्रदान नहीं कर सकी।

व्यंग्य-कौतुक
हास्य, प्रहसन, विनोद और का सजीव चित्रण इस पुस्तक में आपको मिलेगा। पुस्तक में मनोरंजन का सबल पुट है।
हास्य-कौतुक
हँसते-हँसते लोटपोट हो आकांक्षा करनेवालों के लिए नुकूल सामग्री मिलेगी, साथ ही चरित्र का भी सुन्दर चित्र पायेंगे। मूल्य ॥)
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

टम-बम का गुप्त रहस्य क्या है?

शक्ति मानवता के लिए वरदान अथवा अभिशाप

लेखक, राजनीति का एक विद्यार्थी

दिनों वाशिंगटन ने ट्रूमन एटली और किंग मकंजी (अमरीका, ब्रिटेन नेडा) में समझौता हुआ है कि इसका रहस्य तीन के सिवा और किसी पर प्रगट जाये। इस लेख में विद्वान् लेखक ने 'एटमबम' को अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तथा और सुरक्षा की समस्या पर प्रकाश डाला है और यह भी बतलाया है कि मानवता के लिये संघार में घातक है अथवा शान्ति प्रदान करनेवाला? लेख जानकारी से पूर्ण, ज्ञातव्य और विचारणीय है।

दिनों अमेरिका के वाशिंगटन 'अणु बम-रहस्य' को कहाँ तक ी जाय इस मसले को लेकर राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन, मजदूर ब्रिटिश प्रधान मंत्री श्री एटली, नाडा के प्रधान मंत्री श्री किंग के बातचीत हुई थी। अपने संयुक्त में उन्होंने कहा, "आज भी विश्व- डांवाडोल हालत में है। इसलिए, पर अणु-शक्ति विषयक पूरी जिससे उसका मानवता के हित उपयोग हो सके, सर्वविदित उचित नहीं जँचता क्योंकि अणु- उद्योग-धन्धों के विकास में कुछ उन्हीं विधियों के हो सकेगा। जिनके प्रकाश में उसका दुरुपयोग युद्ध - द्वारा अहित साधन में। जैसे ही की जिनके द्वारा अणु-शक्ति के लिये उपयोग से बचाया ित हो जायेगी, 'एटम बम- र्तमान समझौते पर हस्ताक्षर क्तियाँ, अणु-शक्ति विषयक अन्य मित्रराष्ट्रों के सम्मुख गी।" इस कुचक्रपूर्ण मन्त्रणा रूस की अनुपस्थिति मार्के है।

कि इस महायुद्ध के नर- विचलित नहीं हुए थे उससे एटम बम की भयानक शक्ति उपयोग के परिणाम की कल्पना मन में अप्रत्याशित आशंका पड़ने लगती है। देश में और कोई भी पत्र-पत्रिका ऐसी न जिसमें अणुशक्ति के विनाशकारी चित्र न खींचे जाते हों। सार्व- और वैज्ञानिक आसन्न भविष्य आतंकित करनेवाला चित्र है।

और अमेरिका

शक्ति-रहस्य' पर पूरा अधि- उस राष्ट्र के हाथ में हो जो सबसे बड़ा पूँजीवादी देश के प्रतिक्रियावादियों के, इस हाथ में आने पर, क्या विचार देखना चाहिए। राष्ट्रपति ट्रूमन है 'कि संहार' की इस भयानक हमारे हाथ में रहने से विश्वशान्ति किसी प्रकार का खतरा नहीं है। पवित्र थाती की तरह सहेजे क्योंकि हम शान्ति-प्रेमी हैं। दुनिया शील लोगों को निश्चय समझना कि हम विश्वास की अवहेलना न गे। कितनी पाखंड भरी उक्ति हम जब उपर्युक्त वक्तव्य के में देखते हैं तो विश्व-शक्ति के अपनी सत्ता जमाये रखने की भावना झाँकती दिखाई देती पत्रों ने तो खुले शब्दों में कर दिया है कि अब अमेरिका करने में देरी नहीं है— मारे राष्ट्र अब अमेरिका का जैसा कि ब्रिटेन ने शुरू भी कर अमरीका में जहाँ सरकारी क्षेत्रों विचार बल प्राप्त कर रहे हैं वहाँ 'अणु-शक्ति' निर्माता के प्रयोगों में लगे वैज्ञानिकों में से ९० प्रतिशत जोरदार शब्दों में माँग कर रहे हैं कि अणु-शक्ति पर अन्तर्राष्ट्रीय अधिकार होना चाहिए। उन्हें मालूम है कि यह दानवीय शक्ति यदि स्वार्थी हाथों में छोड़ दी गई तो मानवता की उन्नति की ओर के आज तक के प्रयत्नों पर पानी पड़ जायगा।

एटम बम और दूसरे राष्ट्र

एटम बम रहस्य पर अमेरिका का एकमात्र अधिकार दूसरे राष्ट्रों को चिंतित किये हुए है। योरुपीय युद्ध की समाप्ति तक सोवियट रूस विश्व की सर्वश्रेष्ठ सामरिक स्थान ग्रहण कर चुका था। अमेरिका अपने अपरमित साधनों और यथेष्ट सम्पत्ति के कारण रूस के बाद सबसे बड़ी ताकतवाला देश था——ब्रिटेन और फ़ान्स बहुत पीछे छूट गये थे। पूर्व की लड़ाई में फासिस्ट जापान के आत्म-समर्पण में, एटम बम का कितना हाथ है यह कोई नहीं कह सकता क्योंकि उन दिनों के समाचारों से मालूम होता है कि अमेरिका-द्वारा एटम बम प्रयोग और सोवियट रूस के युद्ध में पदार्पण के बहुत पहले जापान की अन्दरूनी स्थिति कमजोर पड़ने लगी थी। पहले सोवियत रूस की लाल सेना का दुर्दमनीय वेग से जापान अधिकृत क्षेत्रों में धँसने से जापान के हाथ पैर पड़ गये और बाद में एटम बम के सर्वसंहारी परिणाम को देखकर उसके होश गुम हो गये। यह जोर देकर नहीं कहा जा सकता कि एटम बम के प्रयोग के बिना जापान हथियार नहीं डालता क्योंकि लाल सेना की जापानी क्षेत्रों में विजय पर विजय ने उन्हें काफी त्रस्त कर दिया था। फिर भी युद्धोत्तर की परिस्थितियों में एटम बम ने अपनी शक्ति का असर दिखाया है ही। लन्दन परराष्ट्र मन्त्री सम्मेलन के एकाएक भंग होने की बात पाठक नहीं भूले होंगे और यह भी ध्यान होगा कि सबसे पहले अमेरिका के परराष्ट्र मन्त्री श्री बिर्न्स ने अमेरिका पहुँचकर सम्मेलन के भंग होने का सारा दोष सोवियट वैदेशिक मंत्री मोशिये मोलोटोव के सर पर मढ़ा था। सम्मेलन में विवादास्पद प्रश्नों पर निगाह डालने से मालूम होगा कि सम्मेलन के ऊपर एटम शक्ति की प्रभुता कितने अंशों तक छाई हुई थी और परराष्ट्र मन्त्री श्री बिर्न्स की अमेरिका के वक्तव्य की हट-धर्मी के पीछे कौन-सी ताक़त है? ब्रिटेन ने अपनी भलाई अमेरिका की जी-हुजूरी करने में ही समझी जैसा कि लन्दन शान्ति-सम्मेलन, फ़िलिस्तीन के मामले और दक्षिण पूर्ण एशिया के स्वतन्त्रता आन्दोलनों में अमेरिका के रुख की अगुआई मानकर उसने बताया है। कामन्स सभा में इस विषय में सवाल पूछे जाने पर ब्रिटिश सरकार से गोलमोल उत्तर मिलते हैं। सोवियट रूस में एटम बम रहस्य प्राप्ति के लिए आरम्भ से ही वैज्ञानिकों ने पूरी दिलचस्पी ली थी और अब आँग्ल अमरीकी गुटबन्दी से जनवादी परम्परा के लिए खतरा देखकर वहाँ और तेजी से खोज जारी हो गई है और खोज की इस असम्पूर्ण अवस्था में में भी एटम शक्ति के उतने रहस्य तो सोवियट वैज्ञानिकों को मालूम हो गये हैं कि जिन्हें आँग्ल-अमरीकी गुटबन्दी की धमकियों के सीमा तक पहुँच जाने पर यदि वह उनके सामने प्रकट कर देगा तो अमरीकी पाखंडपूर्ण दम्भ और ब्रिटेन का दूसरे के बल पर कूदना खत्म हो जायेगा। सोवियट रूस की इस खामोशी का अर्थ उसके बोलने की ताक़त को समझनेवाले निकाल सकेंगे। अन्य छोटे-मोटे राष्ट्र इन बड़ी शक्तियों के शक्ति-संतुलन के प्रयत्न को देख परेशान से हैं क्योंकि ब्रिटेन अमरीकी क्षेत्रों में यह बात स्पष्ट शब्दों में कही जा रही है कि उन्हें अब शक्ति-सन्तुलन देखने की जरूरत नहीं है। भारत जैसा निरस्त्र देश एटम बम के बारे में सोच ही क्या सकता है! हाँ, एटमबम की शक्ति और भयंकरता की चर्चा राजनैतिक और साधारण क्षेत्रों में समान रूप से है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आज की दुनिया का नाम ही एटमबम की दुनिया (एटमबम सिविलीजेशन) रख दिया है जहाँ किसी को भी अपनी शक्ति की हेंकड़ी नहीं जतानी चाहिए।

परमाणु-शक्ति और भविष्य

अणु-शक्ति की विनाशकारी सामर्थ्य का अन्दाजा तो लोगों को लग गया। हिरोशिमा और नागशिका नामक जापानी नगरों की मानव आबादी, लाखों बच्चे-बूढ़े और स्त्री-पुरुष बात की बात में टुकड़े-टुकड़े हो गये। वैज्ञानिक कह रहे हैं उस शक्ति की रचनात्मक शक्ति उसकी विनाशात्मक शक्ति से कहीं अधिक चमत्कारी है। यदि हिरोशिमा पर गिराये एक एटमबम की शक्ति से बिजली प्राप्त की जाती तो समूचे प्रान्त में केवल एक 'पावर-हाऊस' से साल भर तक बिजली पहुँचाई जा सकती थी। एटम शक्ति का उद्योग-धन्धों के विकास में यदि प्रयोग किया जाय तो कोयला, वाष्प-शक्ति और बिजली की जरूरत न रहेगी——उसका यदि सामाजिक नियन्त्रण हो तो दुनिया से ग़रीबी का अभिशाप दूर हो जाय। एटम शक्ति के उचित उपयोग से विश्व में सुख-समृद्धि की इतनी बढ़ती हो सकती है कि धनिकों की शोषण-लालसा खतम हो सकती है। लेकिन यह सब समाजवादी दुनिया में ही सम्भव है।

किस प्रकार इस द्वितीय महायुद्ध में संहारी लपटों के बीच से जन-शक्ति उदित हो शक्ति संचय करती जा रही है——किस प्रकार साम्राज्यवादी और पूँजीवादी सत्ताओं का समस्त संसार पर अपनी शोषण लालसा का जाल बिछाने का दुःस्वप्न भंग हुआ——किस प्रकार दुनिया के हर कोने से कुचले और लूटे हुए गुलाम मुल्क विदेशी जुआ उतार फेंकने का भी प्रयत्न कर रहे हैं, यह देखने की चीज है। जनवादी परम्परा का प्रबलतर पड़ता जानेवाला विकास का वेग कहीं साम्राज्यवादी हौसले को बहा न ले जाये, इससे साम्राज्यशाही सत्ता के दो बड़े प्रतिनिधि अमेरिका और ब्रिटेन सकते की

——शेष पृष्ठ १६ पर देखिए

जय हिन्द हमारा नारा!

लेखक, श्री 'सुधान्द्र'
एम० ए० 'साहित्यरत्न'

है 'जयहिन्द' हमारा नारा,
जनता ने है आज पुकारा!
जिस दिन वीर सुभाष हमारा
बना अग्नि के पथ का राही,
उस दिन भारत की पलकों में
नाची स्वतन्त्रता मन चाही।
बढ़ा पंचनद, चढ़ा युद्ध-मद,
सेना दौड़ी, बहा महानद,
कितने ही बन गये एकाएक
आज़ादी के वीर सिपाही!
बन्दी माँ के उन लालों ने
जब पलकों की ओर निहारा॥

(२)

परतन्त्रों का धर्म रहा है——बन्धन से विद्रोह मचाना।
परतन्त्रों का कर्म रहा है——मन-प्राणों में जान जगाना॥
जीवित हैं तो कुछ कर जाना,
कुछ करते करते मर जाना,
दिल्ली जब तक दूर हमारी——आज़ादी की फ़ौज उठाना!
जब तक हम स्वाधीन नहीं हैं, 'नौ अगस्त' त्योहार हमारा!

(३)

व्यर्थ नहीं जायेगी मेरे शत-शत प्राणों की कुरबानी।
लिखती आई क्रान्ति भावना स्वतन्त्रता की अमर कहानी।
बढ़ती है जब जब तरुणाई,
सुनती है तब तब शहनाई,
विद्रोही बलिदान माँगती स्वतन्त्रता——हृदयों की रानी!
विजयी कल हारा देखेगा——विजयी होगा वह जो हारा!

(४)

कौन कह रहा, स्वतंत्रता के पुण्य समर में मिली पराजय?
अणु में और परम अणु में भी आज शक्ति का भरा हिमालय!
जनता की यह शक्ति अभंजन
झुका न सकता स्वयं जनार्दन,
कड़ियों के कण-कण में जागी स्वतन्त्रता की बिजली अक्षय!
अन्यायी! बस एक पलक में टूटेगी लोहे की कारा——

(५)

खड़े हिमालय ने ललकारा, 'कुचले तू वज्रों की काया?'
कमर कसी है स्वतंत्रता की, ले, मेरा विन्ध्या चिल्लाया!
तक्षशिला, नालन्द, अवन्ती,
आज मनाते विजय-जयन्ती!
ब्रह्मपुत्र गरजा प्राची में——'भागो, क्षितिज अरुण हो आया!'
'मुक्त करो मेरी जननी को' गाती है गंगा की धारा!
है 'जयहिन्द' हमारा नारा, जनता ने है आज पुकारा।

क्या विश्व-शान्ति की संभावना है?

राज्य-सत्ता बनाम मानवता किधर जा रही है?

लेखक, श्री शंकर भारद्वाज, एम० ए०, एल-एल० एम०

प्रोफ़ेसर जोड अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के राजनीतिज्ञ और दार्शनिक विद्वान् हैं। प्रस्तुत लेख में श्री जोड ने प्रगट किया है कि बेचारा मनुष्य तो फिर भी भला प्राणी है, सामाजिक रोगों के लिए वह ज़िम्मेदार नहीं है, ज़िम्मेदार हैं आजकल तथा कथित प्रजातंत्रीय सरकारें। लेख अत्यन्त विचारणीय तथा पठनीय है।

अमरीका के प्रेसिडेंट ट्रूमन विश्व शांति के लिये क्या कर रहे हैं?

सत्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध दार्शनिक टामस हौब्स ने अपनी पुस्तक 'लैव्याथन' में एक विशेष सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। हौब्स की धारणा थी कि मनुष्य स्वभाव से ही अनैतिक है। अपनी वृत्तियों और इच्छाओं का दास वह सदा स्वार्थ-साधन में ही रत रहता है। केवल भय ही उसकी पाशविक वृत्तियों का दमन किये हुए है। समाज से धिक्कारे जाने का भय, राज्य-सत्ता से दंड पाने का भय, शत्रु-द्वारा शारीरिक कष्ट पाने का भय—अथवा अन्य किसी प्रकार का भय ही उसकी दुर्वृत्तियों को थोड़ा-बहुत रोके हुए है।

यदि आज उसे यह विश्वास हो जाये कि वह अपने कुकर्मों के परिणाम से किसी उपाय से जैसे अन्तर्ध्यान हो जाने की शक्ति —बच सकता है, तब उसकी दुराचार-लीला मुलाहिज़ा फ़र्मायें। सच मानिये, तब हम सबको अपनी जान, माल, बहू, बेटी की रक्षा करना एक जटिल समस्या हो जायेगी। हौब्स का कथन है कि प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य का जीवन बहुत ही तुच्छ, हीन, अकेला, भयंकर और पशु-समान था। मनुष्य-समूह को उस समय हम एक बड़ी शिकारगाह की शक्ल में पाते हैं—जहाँ प्रत्येक प्राणी एक-दूसरे को हड़पने की फ़िक्र में रहता था।

इस जंगली अवस्था का अन्त करने के लिए ही मनुष्य ने समाज का निर्माण किया, और यह तय पाया कि प्रत्येक आदमी एक-दूसरे पर आक्रमण करने का अपने प्राकृतिक अधिकार का परित्याग करे, ताकि सब मिलकर शान्तिपूर्वक रह सकें। इससे यह साफ़ प्रमाणित हुआ कि समाज में रहना मनुष्य के लिए एक प्रकार का अप्राकृतिक बंधन है। उसकी हार्दिक इच्छा तो अब भी यही बनी हुई है कि वह अपने पड़ोसी पर हमला करके नष्ट कर सके, परन्तु उस पर बदले का हमला कोई भी न कर सके।

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री बेविन की टोरी-नीति अब स्पष्ट हो रही है।

यही बात हमारी नैतिकता पर लागू होती है। मनुष्य में जो कुछ भी नैतिकता अथवा शराफ़त आप पाते हैं, उसका मूलकारण भी समाज से दंड पान का भय है। समाज नहीं चाहता कि कोई भी व्यक्ति इतना उच्छृङ्खल हो जाय जिससे समाज के अस्तित्व को ही आघात पहुँचे। पंडित हौब्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'लैव्याथन' में समाज के विषय में यही सिद्धान्त प्रतिपादित किया है।

परन्तु क्या यह सिद्धान्त ठीक है? यदि यह ठीक है तो हम कैसे आशा करें कि इस भयंकर युद्ध के बाद मनुष्य-जाति ऐसे समाज का निर्माण कर सकेगी, जिसमें से हिंसा और वैर-भाव को तनिक भी पनपने नहीं दिया जायेगा? तब ही मनुष्य-समाज में उच्चवृत्तियों का प्रादुर्भाव संभव है। ऐसा विद्वानों का मत है।

हौब्स का कथन है कि राज्य-सत्ता का आधार पाशविक शक्ति है। पुलीस, फ़ौज, जेलख़ाने, क़ानून और न्यायालय—दुष्टबुद्धि मनुष्य को सुमार्गगामी बनाने के लिए ही आयोजित किये गये हैं। यदि हज़रते इन्सान स्वतः ही शरीफ़ होते तो इस खटराग की क्या आवश्यकता थी?

मेरे विचार में इस प्रश्न के दो उत्तर हो सकते हैं। प्रथम संसार में भलाई ही मुख्य सत्य है। बुराई तो गौणरूप से विद्यमान है। संसार में प्राधान्य अच्छाई का ही है। तनिक सोचिये, यदि मनुष्य-समाज में सभी झूठे या बेईमान हो जायें, तो कोई भी किसी पर विश्वास न करेगा। तब झूठा या बेईमान व्यक्ति घाटे में रहेगा। अर्थात्, झूठे को झूठ आज तब ही फलता है जब अधिकतर मनुष्य स्वभाव से ही सच्चे हैं। चोरी के विषय में भी यही युक्ति लागू होगी। यदि आज सब चोर हो जायें, तो चोरी ही बन्द हो जायेगी, क्योंकि तब चुराने को ही कुछ न रहेगा। आज थोड़े व्यक्तियों की चोरी इसीलिये फलती है कि अधिक संख्या समाज में उन लोगों की है जो उचित साधनों से ही संपत्ति एकत्रित करने में जुटे हुए हैं। इसलिए राज्य-सत्ता का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह शरीफ़ों को ठगों से बचाने के लिए क़ानून की तोप से काम ले। इसका यह मतलब नहीं, जैसा कि हौब्स की धारणा थी कि मनुष्य स्वभाव से ही धूर्त अथवा ठग है, और वह क़ानून के डंडे से ही ठीक मार्ग पर चलाया जा सकता है। मैं तो इसका सीधा अर्थ यह समझता हूँ कि समाज में अधिकतर भले आदमियों को थोड़े-से दुष्टों के आक्रमण से बचाने के लिए ही सरकार क़ानून अथवा पशुबल का आश्रय लेती है।

क़ानून के विषय में दूसरी धारणा मेरी यह है। मनुष्य के कार्यों का एक बहुत बड़ा भाग ऐसा है जिसमें सामान्यता हो जाने से हमें केवल सुविधा हो जाती है, परन्तु इनका सम्बन्ध नैतिकता से न के बराबर होता है। उदाहरण के लिए, इससे नैतिकता का क्या सम्बन्ध है कि हम सब सड़क पर बायें हाथ चलें? हाँ, यदि किसी कारण से यह नियम समाज में लागू हो गया है, तो यह आवश्यक है कि इस नियम की पाबन्दी सब करें। यदि कोई इस छोटे से नियम को उल्लंघन करके सीधे हाथ अपनी मोटर चलायेगा, तो टक्कर की बहुत बड़ी सम्भावना है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि व्यक्ति की स्वतन्त्रता को नियंत्रित किया जाय। चन्द उच्छृङ्खल व्यक्तियों के कड़े नियंत्रण के लिए क़ानून के अनुशासन का होना आवश्यक है। पर, इसका यह अर्थ कदापि नहीं, जैसा कि हौब्स महोदय का मत है कि मनुष्य स्वभाव से असामाजिक है। यदि वास्तव में वह मिलनसार न होता तो आज मनुष्य को हम समाज में रहता हुआ न पाते।

मेरी राय में हौब्स की मनुष्य-सम्बन्धी धारणा निराधार है। हाँ, राष्ट्रों के बारे में उसका अनुमान अब तक ठीक आ रहा है। यह कटु सत्य जानिये कि यद्यपि मनुष्य का एक दूसरे के प्रति परस्पर व्यवहार भला और बुरा दोनों—भला अधिक और बुरा कम रहा है, जातियों और राष्ट्रों का परस्पर सम्बन्ध सारे इतिहास युग में वैमनस्यपूर्ण ही रहा है। भोला आदमी तो फिर भी न्याय दण्ड से डराया, धमकाया जा सकता है, उसके हृदय में सज्जनता का अंकुर उगाया जा सकता है, परन्तु यह उन्मत्त राष्ट्र और जातियाँ आज तक किसी अंतर्राष्ट्रीय क़ानून के नीचे आने को सच्चे हृदय से तत्पर नहीं हुईं? मनुष्य के हृदय में क़ानून के लिए श्रद्धा उत्पन्न हो गई है परन्तु राष्ट्रों को अभी भी क़ानून में श्रद्धा नहीं है।

परिणाम स्वरूप आज हम क्या देखते हैं? राष्ट्रों का परस्पर सम्बन्ध उस बर्बरता का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जिसकी हौब्स ने मनुष्य के विषय में शिकायत की है। विभिन्न राष्ट्र परस्पर सहयोग की अपेक्षा प्रतिस्पर्धा में ही अपनी शक्ति का ह्रास कर रहे हैं। प्रत्येक राष्ट्र अपने पड़ोसी राष्ट्र को नीचा दिखाने की ही फ़िक्र में है। स्वार्थपरता ही इनका राष्ट्रधर्म है, कूटनीति इनकी नैतिकता और भय इनका गुरु है। सार्वभौमत्व के सिद्धान्त के अन्तर्निहित भी यही दुर्भावना काम करती है। राज्य ने अपनी महत्ता बढ़ाने के लिए ही मनुष्यों को ग़ुलाम बनानेवाले इस सिद्धान्त का प्रसार किया है। फ़ासिस्ट-राष्ट्र इसी सिद्धान्त के उग्र रूप थे।

फ़ासिज़्म राज्य-सत्ता को ही सर्वेसर्वा मानता है; व्यक्ति का महत्त्व फ़ासिस्ट-राज्य में नगण्य होता है। फ़ासिस्ट-स्टेट अपने को सब नियमों, मर्यादाओं, नहीं नहीं—नैतिकता—से भी ऊपर मानती है। नागरिक को फ़ासिज़्म का आदेश है। "मुझे देवोत्तम समझकर मेरी पूजा करो। मैं पूर्ण आत्म-समर्पण चाहता हूँ। मैं जैसे चाहूँ तुम्हारे जीवन का उपयोग करूँ। मेरी आज्ञा पालन तुम्हारा परमधर्म है। मेरे ख़िलाफ़ जाने को एक ही सजा है—मौत। अतः तुम स्वयं प्रसन्न होकर मेरे आदेश पर अपना जीवन बलिदान करने को तत्पर रहो।" ग़ैर फ़ासिस्ट राज्य भी थोड़ा बहुत प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्य से इस सिद्धान्त के अनुयायी हैं।

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री एटली 'एटम के रहस्यों से शांति-पथ पर अग्रसर

नैतिकता तथा न्याय को ति देकर, वास्तव में वर्तमान राष्ट्र द्वारा चित्रण किये हुए व्यक्तियों के ही आचरण कर रहे हैं। हमारे राष्ट्र "जंगली अवस्था में ही हैं।

मुझे वर्तमान सभ्यता और के लिए ये ही बड़ा भारी ख़तरा पड़ता है। इस युद्ध ने यह भली दर्शा दिया है कि अब युद्ध एक बहुत सौदा हो गया है। यदि हमने अब में से युद्ध को निर्वासित न किया तो स्वयं नष्ट हो जायेंगे। यदि वर्तमान ने सहयोग और सहकारिता का सीखा; यदि इन परस्पर प्रतिस्पर्धी में किसी प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय क़ायम न हुई तो भविष्य में का जीवन, हौब्स के शब्दों में क्षणिक, निम्कमा और पशुवत्

क्या वर्तमान राष्ट्र अब पढ़ने को तैयार हैं जो मनुष्यों ने भूतकाल में दारुण दुख सहते था?

यदि ये राष्ट्र अपने नागरि वास्तविक रूप से भय से मुक्त चाहते हैं, तो यह अत्यावश्यक है राष्ट्र अपने आपको किसी प्रकार र्राष्ट्रीय विधान के अन्तर्गत कर राज्य के अन्दर क़ानून की व्यव जाने से नागरिक का जीवन हो गया है, उसी प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय की व्यवस्था के बाद हमारा राष्ट्र भी सुरक्षित हो जायेगा।

मेरे विचार में युद्धोत्तर सबसे बड़ी समस्या किसी प्रकार र्राष्ट्रीय अनुशासन-द्वारा राष्ट्रों

—शेष पृष्ठ १८ पर

रूस के वैदेशिक मंत्री एम० मोलोतोव 'एटमबम' का रहस्य नहीं बताया

मलाया में राष्ट्रीय जागरण क्यों?

गुलामी के जुये को उतार फेंकने का संगठित प्रयत्न

लेखक, श्री चन्द्रकुमार बी० ए०

एशियाई हिन्द प्रदेशों में स्वाधीनता का जो प्रबल आन्दोलन चल रहा है, उसमें मलाया का नवीन राष्ट्रीय जागरण भी विशेष महत्त्व रखता है। यहाँ के छोटे-छोटे द्वीपों की जनता विदेशी शासन के जुये को अपने कंधों से उतार फेंकने के लिए सजग हो गई है। इस लेख में योग्य लेखक ने मलाया के ऐतिहासिक और राजनैतिक महत्त्व को बतलाते हुए वर्तमान राष्ट्रीय जागरण पर सुन्दर प्रकाश डाला है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

सारा भारत जब ब्रिटिश क़ैद- और लाल क़िले में बन्द आज़ाद फ़ौज के सिपाहियों और अफ़सरों जाने की माँग कर रहा है तब ध्यान अपने उन देशवासियों की भी स्वाभाविक ही है जो दुश्मन जाने का आरोप लगाये जाकर में औपनिवेशिक सरकार-द्वारा गये हैं। भारत में पंडित हृदय- ने मलाया के भारतीयों की दशा के प्रति हमारा ध्यान किया है और उन्होंने माँग की मलाया के भारतीयों को जिन में आज़ाद हिन्द फौज और 'भारत लीग' के सदस्य हैं, अपने मुकदमें करने की समुचित सुविधा दी भारतीयों की बहुत बड़ी संख्या, वकील, डाक्टर और हैं, कालकोठरियों में बन्द अपनी फ़ैसला सुनने को अपने दिन रहे हैं। श्री पी० एन० सप्रू ने भी देकर सरकार से माँग की है भारतीयों को मलाया में फँसे अपने की रक्षा के प्रयत्न में पूरी सह- चाहिए। सरकार के 'कामन विभाग ने जिसके अध्यक्ष हैं उनके बारे में क्या किया? जैसा छोटा उपनिवेश अपना भेजकर मलाया में पड़े अपने देश- की हिफाजत कर सकता है तो हैं डा० खरे के विभाग ने वहाँ क्यों नहीं भेजा? और प्रतिनिधि-मण्डल जायेगा तो साथ कोई गैर-सरकारी व्यक्ति होगा?

में भारतीयों की बुरी हालत में हमारा ध्यान वहाँ की नैतिक परिस्थिति की ओर जाना हमें देखना चाहिए कि मलाया ऐसी विशेषताएँ हैं जिन्होंने वहाँ बसने के लिए आकर्षित वहाँ की आबादी का बहुत आज भारतीयों का भी है।

और आर्थिक महत्व

हिन्द महासागर के उस के स्थल पर स्थित है जहाँ भारत, चीन और आस्ट्रेलिया रास्ते जाते हैं। मलाया आकर्षण वहाँ टिन और प्रचुरता है। इसके लोभ से व्यापारियों ने वहाँ बसना किया और 'रबर प्लान्टेशंस' की संख्या में भारतीय के मजदूर काम करते हैं,

कई छोटे-छोटे राजनैतिक हुआ है। तीन छोटे 'सेटिल- (सिंगापुर, पेनांग, मलक्का) है। शासन सीधे गवर्नर-द्वारा होता अलग अलग देशी रियासतें हैं। केडाह, केलान्टन, ट्रेगन्नू, पेरो- जिनमें नाममात्र को मलायेन हैं लेकिन अँगरेज रेजीडेन्ट के हाथ की पूरी बागडोर है। चार रिया- हैं—(पेरक, सेलानगोर, नेगरी पहांग) जो एक संघ के हैं, जहाँ एक ब्रिटिश हाई रहता है। मलाया की आबादी ५३,००,००० जिसमें चीनी हैं, २०,००,००० और २५,०,००० भारतवासी। में अधिकांश मजदूर हैं जो टिन में मजदूरी करते हैं। कुछ मध्य- भी हैं जो रबर की खेती अधिकांश 'मलायावासी' वह या तो खेती करते हैं पकड़ते हैं। मलायन सुलतानों मछुओं के बीच कोई मध्य- भारतीयों में अधिक संख्या तामिलों की है। वे अँगरेज पूंजीपतियों के 'रबर सेटलमेंट्स' में मज़दूरी करते हैं। बाक़ी या तो वकील, डाक्टर हैं या छोटे व्यापारी जो स्वयं छोटे पैमाने पर रबर की पैदावार में हिस्सा बँटाते हैं।

जैसा कि स्वाभाविक है, मलाया में आबादी का अधिकांश शोषित वर्ग का होने के कारण ग़रीब है और शिक्षा-दीक्षा में पिछड़ा हुआ है। पिछले जापानी आक्रमण और अधिकार के समय में सबसे अधिक यातना, अत्याचार और कष्ट इसी वर्ग को सहना पड़ा। ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीति और विदेशी पूंजीपतियों के शोषण के कारण मज़दूरों में चाहे वे भारतीय हों, चाहे चीनी या मलायन शासक वर्ग के प्रति उत्कट घृणा के भाव भर रहे थे और वे मज़दूर सभाओं के अन्तर्गत अपनी शक्ति का संगठन कर रहे थे। मज़दूर जमात और मलाया की पिछड़ी हुई जनता में वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टी का विशेष हाथ था। मज़दूरों में कम्युनिस्टों के असर को देखकर मलाया की ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी को ग़ैर-क़ानूनी कर रखा था। जापानी अधिकार के पहले कम्युनिस्ट नेताओं और मज़दूरों के ऊपर वहाँ की साम्राज्यवादी सरकार ने बड़े बड़े अत्याचार किये थे। जब '४२ में जापानी आक्रमण की तेज़ी के आगे अँगरेज़ मलाया से भागे तो केवल कम्युनिस्ट थे जो जनता के साथ रहे यह जान कर भी कि जापानी दमन के सबसे बड़े शिकार वे ही होंगे। उन्होंने देश-भक्त जमातों को एक मंच पर एकत्रित कर 'मलायवासी फासिस्त विरोधी संयुक्त मोर्चे' का संगठन करके उसे नेतृत्व प्रदान किया।

दिसम्बर ४१ में जब जापानी आक्रमण सिंगापुर में हुआ तो मलाया की ब्रिटिश फ़ौज नाकाबिल साबित हुई। मलाया के देश-भक्तों की संयुक्त संस्था ए० एफ़० एफ़० ने घोषणा की कि यदि उसे देश-भक्तों को सैन्यशिक्षा देकर एक राष्ट्रीय सेना बनाने की इजाजत दी जाय जिससे वह फासिस्तों को अपने मुल्क में न घुसने देने के लिए सरकार की मदद कर सकें। साम्राज्यवादी हुकूमत देश-भक्तों को सामरिक शिक्षा प्राप्त कर संगठित होने के नाते समझती थी कि जापानियों के भगाने के बाद उसकी हस्ती भी मिटा दी जायेगी, इसलिए उसने इजाजत देने से इनकार कर दिया। अँगरेज़ी सेना के 'बहादुरी के साथ पीछे हट आने, के फलस्वरूप जापानी फासिस्त मलाया पर हावी हो गये और वहाँ बसनेवाली चीनी, मलायन और भारतीय जनता समान रूप से बर्बरता, अत्याचार और बलात्कार का शिकार होने लगी।

जापान की इस पाशविक हरकतों ने जनता को जापान के प्रति नफ़रत की सतह पर ला दिया। अपनी रक्षक ब्रिटिश सेना के भाग जाने पर भी वे जापानी अत्याचार का सामना करने को कटिबद्ध हो गये। उनकी इस भावना के कारण कम्युनिस्टों और फासिस्त विरोधी लीग की शक्ति बढ़ी। इन्होंने छापेमार फौज बनाई जिसने पहले पहल 'जोहोर' में जापानियों को छकाया। इसी छापेमार फ़ौज के आधार पर एक बड़ी राष्ट्रीय सेना का संगठन हुआ जो सैन्य-शिक्षा प्राप्त और अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थी। जापानी आत्मसमर्पण के समय इस सेना की शक्ति १०,००० थी और 'जापान विरोधी सेना' के नाम से विख्यात थी।

जापानियों ने सिंगापुर प्रवेश से पहले सारे मलाया पर अपने जासूसों का जाल फैला रखा था। उन्हें मलाया की भीतरी हालत बहुत कुछ मालूम थी। मलाया में उतरते ही उन्होंने कम्युनिष्टों को ढूंढ़ ढूंढ़ कर गिरफ़्तार करना और यातना देना शुरू कर दिया। उन्हें मालूम था कि देश-भक्त सेना के संगठन में और चीनी मजदूरों में इनका बहुत असर है।

जापानी आत्मसमर्पण के बाद

पश्चिम में हिटलर की पराजय और रूसी शक्ति के आगे फास्जिम के घुटने टेक देने के बाद मित्रराष्ट्रों ने अपनी सारी शक्ति पूर्व में जापान के हटाने में लगाई। युद्ध में लाल सेना और अमरीकी 'एटम बम' के प्रवेश के बाद जापान ने भी हथियार डाल दिए तब मलाया में भी भागी हुई और छिपकर बैठी हुई ब्रिटिश साम्राज्यशाही जापानियों से आत्म-समर्पण कराने को आ गई। मलाया में नवीन जागृत राजनैतिक पार्टियों ने विदेशी शासन-समाप्ति के लिए और स्वशासन प्राप्ति के लिए आवाज उठाई लेकिन साम्राज्यवादी शक्ति ने जनता की आवाज को अपने दमन से दाब रखा। राजनैनैतिक पार्टियाँ जिन्होंने आपस में मिलकर जापानियों के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा खड़ा किया था वे एक लक्ष्य के लिए आज भी मिलकर संघर्ष कर रही हैं।

मलाया का वर्तमान दशा

आज मलाया में मज़दूर-आन्दोलन बहुत तीव्र और प्रबल है। 'जापानी प्रतिरोध आन्दोलन' में भाग लेने के कारण जनता पर उसका असर बढ़ गया है। आज सबसे मज़बूत मज़दूर सभा सिंगापुर की 'जेनरल लेबर यूनियन' है उसने मलायावासी जनता की आज़ादी की माँग को सबसे बुलंद आवाज़ में ऊपर उठा रखा है। लेकिन ब्रिटिश शासकों ने राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के सदस्यों की सलाह लेना मनमाने तरीक़े से शासन व्यवस्था में उन्हीं लोगों को फिर स्थान दिया है जो जापानी अधिकार के ज़माने में जापान के एजेंट बन गए थे और जनता के दुश्मन थे। ब्रिटिश सरकार आज उन्हीं व्यापारियों और पूंजीपतियों को प्रोत्साहन दे रही थी जो जनता के कष्ट के समय में शोषण से पैदा की गई सोने की ईंटों को लेकर भाग गए थे या जापानियों को युद्ध सामान सप्लाई करने लगे थे। जापान-विरोधी राष्ट्रीय सेना का विघटन किया जा रहा है, लाखों सिपाही बेकारी और अभाव का सामना कर रहे हैं। दूसरी बात जिससे जनता के कष्टों की बढ़ती हुई है वह सरकार का जापानी सिक्कों और मुद्राओं का चलन बन्द करना। जापानी जिस समय पहले पहल सिंगापुर में उतरे थे उन्होंने सोना, रबर, सिल्क-करेंसी (रुपया-पैसा) सब कुछ हथिया लिया था और अपने सिक्के और नोट चालू किए थे। आज जापानियों के प्रयाण के बाद जनता के पास केवल जापानी मुद्राएँ हैं और उसका चलन सरकार ने बन्द कर दिया है। सरकार की इस नीति से अमीर जनता को उतनी चोट नहीं पहुँची जितनी ग़रीब जनता आज भिखमंगी हो रही है। उस

--शेष पृष्ठ १८ पर देखिए

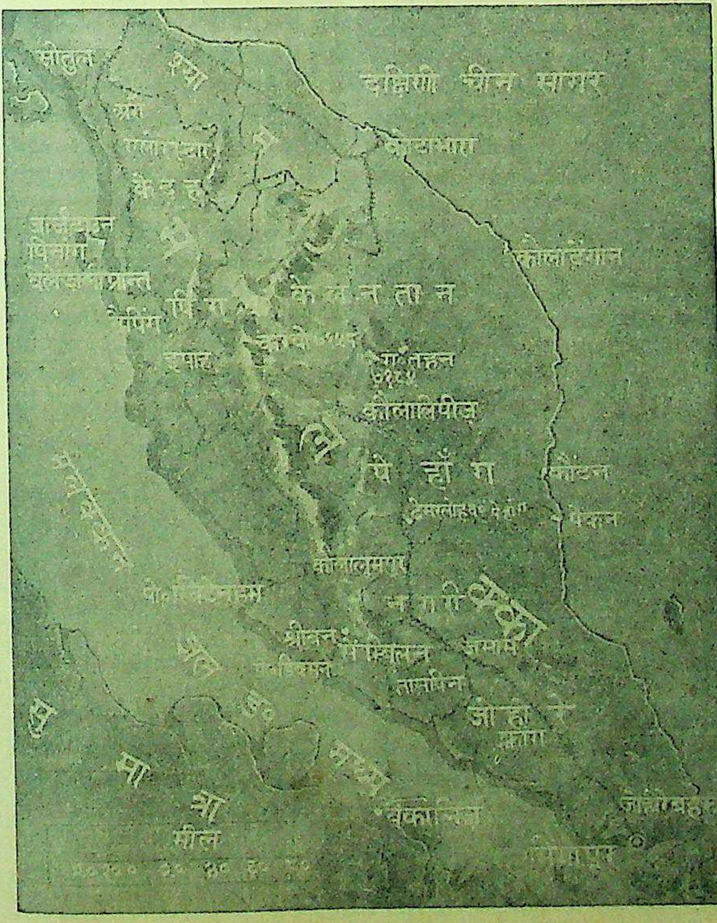

संपादक के नाम चिट्ठियां

महाराष्ट्र में हिन्दी-हिन्दुस्तानी का संघर्ष क्यों ?

(श्री सम्पादक 'देशदूत')

पिछले दिनों महात्मा गांधी के पूना में निवास करने तथा समय समय पर नेताओं के आगमन से राष्ट्रभाषा-प्रचार के कार्य में कुछ सरगर्मी दिखाई देने लगी है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा संचालित राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के हिन्दी-प्रचार का कार्य यहाँ काफी अर्से से हो रहा है और पूना तो उसका एक गढ़-सा बन गया है। राष्ट्रभाषा-प्रचार की परीक्षाओं में महाराष्ट्र प्रांत के काफी विद्यार्थी परीक्षा देते और उत्तीर्ण होते आये हैं। महाराष्ट्र के अच्छे से अच्छे विद्वानों का इस कार्य में बराबर सहयोग रहा है किंतु जब से गांधी जी हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से अलग हुए हैं तब से हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा का भी काम यहाँ जोरों से शुरू हो गया है। महाराष्ट्र के कांग्रेस नेता श्री शंकरराव देव तथा बंबई के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री बी० जे० खेर, श्री दत्तो वामन पोद्दार आदि नेता और विद्वान् हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के काम में पूरा सहयोग दे रहे हैं, इससे इस ओर काफी प्रगति दिखाई दे रही है। पहले तो हिन्दुस्तानी प्रचार का कार्य यहाँ एकदम ठप्प-सा हो गया था क्योंकि अकेले काका साहब कालेलकर कहाँ तक इसका भार वहन कर सकते थे किंतु जब से उसे देश की कुछ महान् शक्तियों का बल मिला है तब से हिन्दुस्तानी प्रचार के कार्य में चेतना आई है। इसका यह मतलब नहीं है कि राष्ट्र- भाषा प्रचार-समिति के काम में किसी तरह की शिथिलता आ गई हो, किंतु आज के वातावरण से यह साफ जाहिर हो गया है कि महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा प्रचार आंदोलन के कार्य में एक किस्म का संघर्ष प्रारम्भ हो गया है। एक ओर हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा और दूसरी ओर राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति अपने अपने उसूलों के अनुसार राष्ट्रभाषा के काम में लगी हुई हैं। पूना में अब दो दल स्पष्ट दिखाई दे रहा है एक हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के कार्यों में सहयोग देने लगा है और दूसरा राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के सिद्धांतों के अनुसार कार्य कर रहा है।

मुझे तो आश्चर्य होता है कि हिन्दी के पत्रकारों को यह पता भी नहीं है कि महाराष्ट्र में इस समय राष्ट्रभाषा-संबंधी प्रगति किधर जा रही है ? हिन्दी पत्रकार केवल हिन्दी के नाम पर धारोधार आँसू बहा सकते हैं या आपसी तू-तू मैं-मैं में पत्रों के कालम रँग सकते हैं किंतु वे शायद यह नहीं जानते हैं कि इस वक्त महाराष्ट्र में हिन्दी आन्दोलन का मुहड़ा थामने की बड़ी आवश्यकता है। हिन्दीवालों को यह पता नहीं है कि राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की परीक्षाओं के समान ही हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने भी महाराष्ट्र में प्रचारक परीक्षायें प्रारंभ कर दी हैं। दोनों की परीक्षाओं के नाम भी एक ही से हैं। हाँ हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा की परीक्षाओं के फार्मों के नामों में परिवर्तन है। राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति-द्वारा संगठित महाराष्ट्र की प्रचार-समिति के कई विद्वान् और प्रचारक हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा के कार्य में शरीक हो गये हैं। आचार्य दत्तो वामन पोद्दार इसके प्रधान हैं।

पिछले दिनों श्री भदंत आनंद कौसल्यायन पूना आये थे और एक समान परीक्षाओं की प्रतिद्वंदिता देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने पुरानी की जगह एक नई समिति संगठित की है जो राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति द्वारा होनेवाली परीक्षाओं का संचालन और सम्मेलन की नीति के अनुसार राष्ट्रभाषा प्रचार का काम करेगी। श्रीयुत नेने पहले राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति की ओर से कार्य करते थे किंतु अब वह हिन्दुस्तानी प्रचार-समिति में शरीक हो गये हैं। उनके स्थान पर श्री सोनू ताई काले की नियुक्ति हुई है। नूतन मराठी विद्यालय के कुछ प्रमुख अधिकारी भी राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के कार्य में सहयोग दे रहे हैं।

राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति और हिन्दुस्तानी प्रचार-समिति के आदर्शों में चूंकि भिन्नता है इसलिए संघर्ष होना अनिवार्य भी है। हिन्दुस्तानी प्रचार-समिति के पास धन की कमी नहीं और राष्ट्र तथा महाराष्ट्र के कांग्रेस नेता उसके साथ हैं। दूसरी ओर राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति के पास धन तो नहीं है किंतु श्रेष्ठ कार्यकर्त्ताओं का उसमें अभाव नहीं है। इन संस्थाओं के वर्तमान संघर्ष का क्या फल होगा, इस पर कोई भविष्यवाणी तो नहीं की जा सकती किन्तु हिन्दी-पत्रकार और हिन्दी के धनी-धोरी अगर अपनी कुल्हड़ में गुड़ फोड़ने की नीति को त्याग कर सचेत न हुए तो एक न एक दिन मद्रास की भाँति महाराष्ट्र भी राष्ट्र- भाषा प्रचार-समिति के प्रचार-क्षेत्र से अपने को स्वतंत्र बना लेगा। क्योंकि बेचारे भदंत जी अकेले कहाँ-कहाँ प्राण देते फिरेंगे ?

मैंने यह विचार आपके पत्र-द्वारा इसलिए व्यक्त किये हैं कि 'देशदूत' हिन्दी जनता में हिन्दी का प्रबल समर्थन और व्यापक प्रचार करता आया है। उसके द्वारा हिन्दी-संसार को यह ज्ञात हो कि महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा की आज की प्रगति किधर जा रही है, हिन्दीवालों के कानों तक यह समाचार पहुँचे तो !

पूना —ग० स० आपटे
५ नवम्बर ४५ प्रचारक

* * *

आजाद हिन्द के सैनिकों की मुक्ति

आजाद हिन्द सैनिकों का मामला दिल्ली के लाल क़िला में शुरू हो गया है। वहाँ यह पहुँच कर तिरंगा झंडा फहराना चाहते थे। सारे देश की निगाह उस मुक़दमे की ओर लगी हुई है। सरकार भले ही उन्हें अपराधी समझती हो किन्तु भारतवासी उन्हें निर्दोष समझकर तन, मन, धन से उनकी रिहाई चाहते हैं। सर्वप्रथम पंडित जवाहरलाल जी नेहरू ने इनकी रिहाई की आवाज बुलंद की थी। उसके बाद तो सारा देश एकस्वर से उनकी रिहाई की माँग कर रहा है। लीग तथा महासभा ऐसी कट्टरपंथी संस्थाएँ भी रिहाई पर जोर दे रही हैं। सरकार जब कांग्रेस के बन्दियों को छोड़ रही है तब इस नये नाटक को शुरू करने में उसे क्या तत्त्व दिखलाई देता है ? सम्भव है इसमें हिंसा तथा अहिंसा का भेद समझा जाता हो मगर अब तो कांग्रेस भी प्रत्येक उपाय से आजादी प्राप्त करने का ऐलान कर रही है।

यदि सरकार चुनाव के बाद शासन की बागडोर कांग्रेस के हाथ न देगी तो न उसका कल्याण है और न देश का। इस मुक़दमे से कुछ ऐसा भी अनुमान लगाया जा रहा है। देश के कोने-कोने से यह आवाज सुनाई दे रही है कि इन देश-भक्तों को छोड़ना चाहिए। कांग्रेस की आवाज जनता कि आवाज है, इसी से वह जनता की प्रेम-भाजन बनी है। वह यह मार्ग न अपनाती तो गौरव कैसे प्राप्त करती ? महासभा ३० करोड़ हिन्दुओं की और लीग ९ करोड़ मुसलमानों की संस्था होने पर भी उसके सामने क्षीण हैं। इसका कारण समझते हुए सरकार नासमझ बनती है तो दूसरा चारा क्या है ? ऐसी सरकार को क्या सलाह दी जा सकती है जो अपने ही हाथों अपना अहित कर रही है। देश अब गुलाम नहीं रह सकता, जिस देश में महात्मा गांधी ऐसे महापुरुष मौजूद हों वह गुलाम कैसे रह सकता है ? एक पंडित नेहरू के पकड़ने पर लाखों पंडित नेहरू सामने आयेंगे। एक सुभाष के न रहने पर लाखों सुभाष का जन्म हो रहा है। दमन से आजादी की लहर दबाई नहीं जा सकती है फिर ऐसे समय में जब लोग गुलामी के जीवन से ऊब गये हों। सरकार जो कर रही है वह उसी के अनुरूप है। सभी हुकूमतों ने यही किया है। जिस सरकार के सलाहकार सर नून और जिन्ना साहब हों उससे दूर ही रहना अच्छा है।

यह शुभ लक्षण है कि कांग्रेस लीग से असहयोग करके मुस्लिम जनता से सम्पर्क क़ायम कर रही है। कांग्रेस अपनी आत्मा को कुचलकर जो लीग से समझौता करती थी वही कमजोरी उसे विजयी होने से रोक रही थी। जनता सब समझते हुए नासमझ बनी हुई समय की प्रतीक्षा कर रही है। कांग्रेस इधर-उधर डगमगा रही थी। यह भी समय की ख़ूबी है। अच्छे दिन आने पर बुद्धि भी सुमार्ग पर आ जाती है। बुरे दिन आने पर उचित कहनेवाला दुश्मन और अनुचित कहनेवाला दोस्त समझा जाता है। बुरा समय सरकार, लीग, महासभा तीनों का दिखाई देता है इससे इनका कैसे भला होगा ? प्रकाश के बाद अन्धकार, अशान्ति के बाद शान्ति, क्रोध के बाद क्षमा यही विधि का विधान है। इन तत्त्वों का समझनेवाला महापुरुष और इनसे उलझनेवाला मूर्ख समझा जाता है। स्वार्थ से पतन और परमार्थ से उत्थान होता है। कांग्रेस में जो गन्दगी थी सरकार ने रगड़कर उन्हें निर्मल बना दिया है। आजाद हिन्द फ़ौज के सैनिकों पर सरकार जो मामला चला रही है उस पर क्या टीकाटिप्पणी की जाये किन्तु यह स्पष्ट है कि इससे सरकार तथा राष्ट्र के बीच कटुता बढ़ेगी, घटेगी नहीं। किन्तु आजकल सुनवाई ही कहाँ हो रही है।

जबलपुर —रामभरोस मालवीय
१५ नवम्बर ४५

* * *

'सैनिक' को एक लाख

अपने जीवन के बीस वर्षों में 'सैनिक' का स्थान, सेवा और साहित्य की दृष्टि से, हिन्दी समाचार-पत्रों में सर्वोपरि और बलिदानों की दृष्टि से हिन्दुस्तान भर के समाचारपत्रों में सर्वोपरि रहा है।

सैनिक के बलिदानों की कहानी तो और भी अनुपम है। हिन्दुस्तान भर में और किसी भी पत्र को वह गौरव प्राप्त नहीं है। वे स्वाधीनता-संग्राम की प्रत्येक मुठभेड़ में, १९३० से लेकर १९४२ तक उसके सम्पादक, प्रबन्धक आदि ही नहीं कम्पोजीटर, मशीनमैन तक सपरिवार बार-बार जेल गये हैं। १९३०, १९३२ और १९४० तथा १९४२ प्रत्येक आन्दोलन में सैनिक बन्द कर दिया गया और उसके बीसियों कर्मचारी सपरिवार सत्याग्रह की सेना के स्वयंसेवक बनकर जेल गये। इस प्रकार अकेला सैनिक हर बार बीसियों सैनिक देता रहा।

सैनिक के बलिदान चरमता को पहुँच गये। इस बीच में तीन बार सैनिक बन्द किया गया। देश भर में सैनिक के साथ किये गये अन्याय के विरुद्ध आवाज उठी। अखिल भारतवर्षीय पत्रकार-संघ के लिए सैनिक मुख्य समस्या बन गया। महात्मा गांधी तक ने सैनिक के प्रश्न को अपने हाथ में लिया। फिर भी सैनिक के विरुद्ध आज्ञा न हटाई गई। तब सैनिक अमर सैनिक के नाम से निकाला। एक मरतबा सैनिक प्रेस पर जो क़ब्ज़ा जिस हुक्म से किया गया था वह रद्द किया गया। लेकिन १९४० में उस पर फिर क़ब्ज़ा कर लिया गया और वह आज सितम्बर १९४५ तक नहीं उठाया गया जब कि हिन्दुस्तान भर के सब पत्रों से उठा लिया गया है।

इन तीन बरसों में सैनिक की जो आर्थिक हानि हुई है उसकी कल्पना करना कोई कठिन काम नहीं है। उसके सम्पादक, प्रबन्धकादि कर्मचारी ही नहीं उसके सब ट्रस्टी बिना किसी अपवाद के सबके सब नजरबन्द कर दिये गये। तीन साल में ग्राहक, विज्ञापन सब टूट गये। हजारों रुपये मकान किराये वग़ैरः के मुफ्त में देने पड़े। मशीन, टाइप, स्याही, काग़ज़ आदि सामान में हजारों का नुक़सान हुआ है। सब का कुल नुक़सान बीस हजार के क़रीब है। सैनिक को फिर से चलाने, आजकल की क़ीमतों के कारण तथा काम को नये सिरे से जमाने के लिए छोटे पैमाने पर पचास हजार और बड़े पैमाने पर एक लाख रुपये चाहिए।

विनीत—जस्पतराय कपूर, श्रीकृष्णदत्त पालीवाल, चौबे जयगोपाल, तिवारी, प्रकाशनारायण शिरोमणि, लाल सीतल—ट्रस्टीगण।

सत्तर वर्ष की उम्र में स्वस्थ
इसके पहले वह गठिया के कारण पंगुल हो गया था
क्रुशेन साल्ट से वह नया आदमी बन गया

उसकी लड़की लिखती है कि यह व्यक्ति गठिया के कारण एक दम बिल्कुल पंगुल हो गया था। जब से इन्होंने क्रुशेन का सेवन आरम्भ किया तब से जिन्दगी नई हो गई यद्यपि उनकी उम्र ७० वर्ष की है। अब तो उनका सारा परिवार गठिये से बरी है:—

"मेरे पति तथा मैं कुछ एक मास से क्रुशेन का सेवन इस घृणित गठिया के उपचार के लिए कर रही हूँ। मेरे पिता ने इसका सेवन कई वर्ष तक किया और यहाँ तक कि वे इसे अपने जीवन का आवश्यक अंग समझने लगे थे। क्रुशेन सेवन से पहले वे गठिया के कारण पंगुल हो गये थे। उन्होंने प्रत्येक प्रकार के इलाज किये किन्तु कोई लाभ न हुआ। मैं अब विश्वासपूर्वक कह सकती हूँ कि क्रुशेन से वह एकदम नये आदमी बन गये। इस समय उनकी उम्र ७० वर्ष की है और वे बिलकुल मुस्तैद हैं—"
श्रीमती (व०

शरीर में अम्ल की अधिकता है गठिया हो जाता है। क्रुशेन साल्ट पदार्थ अम्ल नष्ट कर देने के लिए हैं। इसके अन्य पदार्थ इन्द्रियों-द्वारा विष को बाहर निकाल देते हैं आपका कष्ट दूर हो जाता है और नये जीवन का संचार हो जाता है।

क्रुशेन बाजार के सभी ताओं तथा दवाखानों में मिलता है।

कहानी

मन की जीत

लेखक, प्रोफेसर श्रीनारायण अग्रवाल, एम० ए०, बी० काम

लता अन्त में असहाय और अकेली रह गई, किसी तरह मेहनत-मजदूरी करके जीवन-निर्वाह कर लेती थी, एकाएक उसकी ओर भौंरेलाल की निगाह पड़ी, निर्धनता और ग़रीबी से व्यग्र लता, धन के और भावी ऐश्वर्य के प्रलोभन में--भौंरेलाल के जाल में पड़कर उस जीवन से हार मान ली! किन्तु भौंरेलाल के पुत्र अजीत के स्नेह से उसके मन की जीत हुई और पिता को अपनी भूल का अनुभव हुआ। लेखक ने बड़ी खूबी से घटनाओं तथा पात्रों का चित्रण किया है जो बड़ा रोचक, आकर्षक और सुन्दर है।

चिन्ता-चिता की लपटों से असमय में ही दग्ध होने से किसी हद तक बचते रहे।

सुहावने सुप्रभात में वे चहलकदमी करने निकले और दूर तक शहर के बाहर टहलते चले गये। समुद्र की ठंडी-ठंडी और सुगंधित वायु-सेवन की, और लौटते वक्त बाज़ार होते हुए वापस आने की ठानी। रास्ते में उन्हें नोमानअली बोहरे की दूकान दिखाई दी। अचानक खयाल आया कि उनकी बेत ज़रूरत से ज्यादा खराब हो चुकी है, अतः बदलने की सख्त ज़रूरत है। पैर बरबस उन्हें बोहरे की दूकान की तरफ ले गये और वे बेतों के निरीक्षण में लग गये। उनके स्टैंडर्ड की वह चीज़ न थी; तो भी उन्होंने एक पतली-सी, लचीली-सी छड़ी निकाली और दूकानदार से दाम पूछने के लिए सर ऊपर उठाया। उनकी आँखें एक ऐसी वस्तु पर जम गईं जिस पर से वह उन्हें हटा न सके। वे अपलक नेत्रों से उसे निहारते रहे, मानो आँखों-द्वारा ही उसे आत्मसात् कर लेना चाहते हों। इस स्थान पर यह चीज़ कैसे? विधाता की भी विचित्र लीला है। गुदड़ी में लाल पैदा होते हैं और कोयले की ख़दानों में हीरे। सारे जन्म खोजते रहें और न मिलें और चहल क़दमी करते करते पैरों में आ जायें! क्या वह उसे पा सकेंगे? बोहरे की दूकान में होते हुए भी उनका उस पर अधिकार या स्वामित्व न था। वह तो उन्हीं की तरह एक ख़रीदार थी, बेत की जगह मनीबैग की! क्या ग़ज़ब का सौन्दर्य, कितनी हसीन! मानो ब्रह्मा ने छुट्टी के रोज गढ़कर अपनी सारी कला इसी एक मूर्ति में निहित कर दी हो; उँडेल दी हो। वह सुनहले बाल, वह दाडिम सी दंत-पंक्ति और आकर्षक और चमकते नेत्र! भौंरेलाल अपने को खो बैठे। उनका दिल हाथ से निकल गया और दिमाग़ उस मोहिनी के अंग-प्रत्यंग की छान-बीन में उलझ गया। वे अपने को सँभालते हुए; जैसे कुछ हुआ ही न हो का भाव अपनी चाल-ढाल और विशेषतः मुख पर लाकर कुछ नज़दीक हुए और चिल्ला उठे—

"लता, तुम यहाँ कहाँ? मैंने तुम्हें दूर से पहचाना ही नहीं। जब तुम छः-सात साल की थी तो अपनी माँ के साथ हमारे बंगले पर आती थी। उन बातों को एक युग बीत गया परंतु मालूम ऐसा होता है, मानो कल ही की बात हो। इस अर्से में तुम कहाँ रहीं?" ठाकुर साहब एक ही साँस में सब कुछ पूछ गये।

लता ने धीरे से कुछ सकुचाते हुए कहा, "जी, मेरी खुश-क़िस्मती है कि आप मुझे इतने वर्षों की अवधि के बाद भी नहीं भूले। उन्हीं दिनों पिता जी को तपेदिक हो गया था और हम सब उन्हें भोवाली आरोग्य-मंदिर ले गये। बहुतेरी दवाइयाँ कीं; पैसा पानी की तरह बहाया; परंतु होनी के आगे बस न चला। पिता जी मुझको अनाथ और माँ को विधवा छोड़ कर सदा के लिए जुदा हो गये। माँ पहले से ही चिंता-चिता में जल-जलकर निर्जीव हो गई थी। साल भर के अंदर ही वह भी पिता जी का वियोग सहन न कर उनसे मिलने चली गई। मैं अकेली, असहाय, इसी कोलाहलपूर्ण कराँची महानगरी में तूफ़ान में उलझी पतवार-रहित किश्ती की तरह डाँवाडोल दशा में पड़ी रही।"

ठाकुर साहब ने बातों का सिलसिला जारी रखते हुए पूछा--"तो विपता के—गर्दिश के--इतने दिन कैसे गुज़ारे लता? ओ हो, तुम इतनी आफ़त में और मुझे इत्तला भी नहीं। तुम्हारे बाबूजी मेरे स्नेही थे। बैठक में आकर अकसर घंटों बैठते और मुझे लासानी चुटकुले और कहानियाँ सुनाते। कभी बीरबल बादशाह के किस्से तो कभी शेख़चिल्ली की खिलवाड़ और कभी हातिमताई के कारनामें। उस रोज़ एक फुलका अधिक खाता और ठकुराइन मेरी ख़ुशी और प्रसन्नता का आभास पाकर कहती, "आज रोटियाँ कह-कहे और नमकीन चुटकुले खा रहे हैं; तुम नहीं। लता के पिता से कह क्यों नहीं देते कि रोज़ आ जाया करें। उन्हें भी किसी न किसी तरह सहारा लग जायगा और तुम्हारे मुर्झाये चेहरे पर भी सुर्खी दौड़ने लगेगी।" ठाकुर साहब ने बात को समाप्त करने के इरादे से सहानुभूतिपूर्ण लहजे में कहा, "तो तुमने बताया नहीं तुम इतने दिन यहाँ कहाँ रहीं?"

तीर निशाने पर लगा। लता इस आकस्मिक सौहार्द्र से द्रवित हो उठी। इतने बड़े रईस उससे इतनी हमदर्दी; इतनी संवेदना प्रकट करते हैं। उसे संतोष हुआ। बोझ से--कृतज्ञता के--कुछ दबी-सी भी। उसके स्वर में धीमापन और मिठास था--"भगवान् चींटी से लेकर हाथी तक का पोषण करते हैं। अनाथ के नाथ, अबला के बल, वे ही हैं। घर में सीने की मशीन थी; मुहल्ले के बच्चों के कपड़े सी देती हूँ और अपनी गुज़र-बसर करती रहती हूँ। आजकल लड़कियों का ट्यूशन भी करती हूँ।"

"तुम हमारे यहाँ चल सकोगी लता? उस उजड़े महल को आबाद कर उसके आँसू पोंछोगी? उसमें प्राणों का प्रतिष्ठान करो; वहाँ के पेड़-पौधे सूख रहे हैं; उनमें जीवन डालो। उस उपवन के वनचर अनाथ हो गये हैं; वे उदास रहते हैं; तुम्हें पाकर निहाल हो जायेंगे। ठकुराइन तुम्हारी बहुत याद किया करती थीं; तुम्हें वहाँ देखकर स्वर्ग में भी खिल उठेंगी। क्या मेरा यह सुनहला स्वप्न वास्तविकता में परिणित करोगी?" लता के हृदय और मस्तिष्क की थाह लेने की दृष्टि से उन्होंने भावपूर्ण, करुणापूर्ण और कवित्वमय ढंग से अनुरोध किया।

लता इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से पसोपेश में पड़ गई। उसे कल्पना भी न थी कि इतनी बड़ी घटना पर इतने कम समय में उसे निर्णय करना होगा। दिमाग़ द्रुतगति से गतिमान हुआ। इतना वैभव, इतना सम्मान! वह रानी बन जायेगी। दास-दासी उसकी हाज़िरी में हाथ बाँधे खड़ी रहेंगी। आज वह दर-दर की भिखारिन है। उसका सीना-पिरोना करो; उन घिनौनी लड़कियों से सर खपाओ। एक दिन नागे के लिए जवाब तलब किया जाता है और वेतन दस रुपये--समय पर देते नानी मर जाती है। इन सबसे तो पिंड छूटेगा? ठाकुर साहब की ढलती उम्र है तो क्या हुआ? आये दिन ऐसे सम्बन्ध देखने में आते हैं। बीस वर्ष की एम० ए० पास लड़की ने अभी अपनी मर्ज़ी से एक कोट्याधीश से शादी की है। एक आचार्य ने भी एक षोड़शी से विवाह किया है। कहते हैं लड़की उनकी वक्तृत्व-कला और उनके इतिहास-ज्ञान पर मोहित हो गई थी। परसों नरसों के ही समाचार हैं। महाराष्ट्र के कोई प्राध्यापक हैं, अपनी विद्यार्थिनी पर ही लट्टू हो गये—वे उसके रूप पर और वह उनकी प्रेम-कथाओं पर--और पत्नी मौजूद होते हुए भी नवयौवना के प्रेम-पाश में आबद्ध हो गये। ठाकुर साहब की तो पहली स्त्री भी नहीं और फिर क्या आदर्श विवाह भी असफल होते नहीं देखे गये? हैज़ा, प्लेग, दुर्घटना, स्वभाव की विपरीतता आदि कितने ही बखेड़े हैं जो सुख को निगलने के लिए मुंह बाये खड़े रहते हैं। युवक पति में घमण्ड की गर्मी रहती है। उसमें बेपरवाही और अपनत्व की भावना अधिक और स्त्री की भावनाओं के प्रति आदर कम। ठाकुर साहब मेरे इशारों पर नाचेंगे; मुझे हथेली के फफोले की तरह रखेंगे और धनाभाव, जो जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है और खासतौर से विवाहित जीवन का--हमसे मीलों दूर रहेगा। आख़िर धन भी ऐसी शक्ति है जिससे संसार की सर्वोत्कृष्ट एवं दुर्लभ चीज़ें ख़रीदी जा सकती हैं। आज की भिखारिन कल महलों की रानी बन बैठेगी।

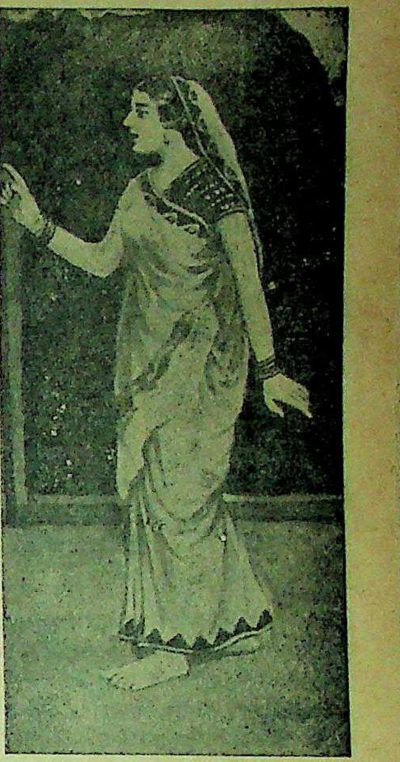

लता ने अजीत से कहा कि कमरे से फौरन बाहर हो जाओ।

उसे कल ही की बात याद आ गई। उसका घाव ताज़ा था। नल पर पानी भरते वक्त लाला मूलचन्द किस बेहूदगी से उसकी तरफ़ इशारेबाज़ी कर रहे थे? इन शोहदों को शर्म भी नहीं आती जब वे इस तरह साँड़ बनें धुआँ उड़ाते फिरते हैं? वह सिर्फ़ इसीलिए न कि मैं ग़रीब हूँ और मेरा पक्ष लेनेवाला कोई नहीं? जब एक पति नहीं होता हो सभी पति बनने को लालायित रहते हैं। सभी उसे डोरे फेंककर चंगुल में फाँसना चाहते हैं। ऐसे नरपिशाचों से

उसे घृणा हो गई थी। उन्हें पशु कहना उन बे-ज़बान जानवरों का अपमान करना था। अतएव उसकी चाह थी ऐसे साथी के लिए, जो उसे अपना बनाकर रख सके; जिसकी छत्रछाया में वह अपने को सुरक्षित और निर्भय महसूस कर सके। उसे वह वेदवाक्य याद था—"विनाश्रयंते न शोभंते पंडिता, वनिता, लता।" (पंडित, स्त्री, और बेलें बिना आश्रय के शोभित नहीं होते) वह वनिता है और लता भी। ठाकुर साहब उसे उस सुदृढ़ पेड़ की तरह दिखाई दिये जिनकी लहलहाती छाया और विशाल फलित शाखाओं की प्रसिद्धि वह सुन चुकी थी और उन्हें प्रत्यक्ष आजमाने को उत्सुक थी। अतएव स्पंदित हृदय में सारा साहस बटोर कर उसने सम्मति दे ही दी।

हरा-भरा, मुस्कुराता, सजा-सजाया आलीशान बंगला। फ़र्स्ट क्लास फर्नीचर, बढ़िया चमचमाते रेशमी परदे, कश्मीरी एक बालिश्त मोटे गलीचे। स्प्रिंगदार मोहोगनी रंग के सोफ़े, दुधिया रंग के बिजली के लट्टू और उन पर मोहक रंग की शेड; एक कोने में पियानो और नज़दीक ही अप-टू-डेट सात वाल्व का एच० एम० वी० रेडिओ—ऐशो-इशरत के सारे सामान एक ही जगह इकट्ठे थे। कुबेर भी इससे अधिक क्या साज व सामान रखता होगा? इन सब पर एक ही साथ उसकी नज़र जम गई। जैसे क्षुधार्त्त, अलग-अलग स्वाद लेने के बजाय एक ही दम में सारे व्यंजनों को उदरस्थ करने को आतुर रहता है वैसे ही बे-सब्री से वह उन अनोखी चीज़ों को आँखों-द्वारा आत्मसात् करना चाहती थी। दिल एकदम किसी का इतनी जल्दी तृप्त हुआ है जो इसका होता? कभी हाथी-दांत के बने दो फुट ऊँचे सारस की पतली गर्दन को स्पर्श कर सराहती तो कभी मखमली गद्दी तकियों पर कढ़े रेशमी बेल-बूटों पर हाथ फेरती और उनको काढ़नेवाली की प्रशंसा करती। ऐसे बेल-बूटे तो उसने आज तक नहीं देखे थे। शायद कल्पना में भी नहीं? वह इन आमोद-प्रमोद की चीज़ों पर निछावर हो गई। कौन जान सकता है कि वह इन निर्जीव चीज़ों की तरफ़ अधिक खिंच रही थी या सजीव किन्तु गत यौवन ठाकुर साहब की तरफ़? हाँ, इतना ज़रूर था कि वह उनकी कृतज्ञ थी, अहसानमंद थी, उन्हें उदार समझी थी क्योंकि उन्होंने यह सुखोपभोग सम्भव किया था।

बाहर जाते हुए भौंरेलाल ने मुझसे कहा, "देखो, लता को—तुम्हारी नई मालकिन को—घर की सारी चीज़ों से परिचित करा देना। कहाँ क्या रखा है यह उसे जान लेना चाहिए, अब वह स्वामिनी है न? उसके सुख-सुविधा में किसी बात की बाधा न आये। अभी नई-नवेली है; अतएव तुम्हारे मँजे हुए साहचर्य की उसे अधिक आवश्यकता है।"

"जी हाँ, ऐसा ही होगा। लतारानी को किसी बात की कमी महसूस न होने पायेगी।" कहकर मैंने कमरे का दरवाज़ा बन्द कर लिया।

लता मुझसे खूब घुली-मिली। अठारह बरस की एन्ट्रेंस पास लड़की; परन्तु बिलकुल ही भोली। घर में अन्य कोई न होने से मुझसे घंटों बातें करती रहती। हमारा सम्बन्ध दासी-मालकिन का न होकर हमजोलियों का-सा था। उसने मेरे सामने दिल खोलकर रख दिया। आईने की तरह साफ़, शिशु की तरह निष्कपट; निरभ्र आकाश की तरह स्वच्छ एवं विशाल। मालिक के प्रति उसके हृदय में सम्मान; उनके उजड़े जीवन के प्रति सहानुभूति। यह सहानुभूति शनैः शनैः आकर्षण, आशक्ति एवं प्रेम में परिणत होने के पथ पर धीमी परन्तु अबाध गति से अग्रसर हो रही थी। उनकी ढलती उम्र इस मार्ग में रोड़ा—शायद चट्टान—थी; परन्तु कृतज्ञता का प्रबल प्रवाह—सहानुभूति की बाढ़—इस चट्टान की जड़ें धीरे-धीरे कमज़ोर कर रही थी और वह दिन दूर नहीं दिखाई देता था जब यह चट्टान घिस-घिस कर एक मामूली-सी कंकड़ी बन जायेगी और बहाव अबाध गति से अपने मंतव्य स्थान तक पहुँच जायेगा। भौंरेलाल इस प्रवाह में यथेष्ट गोते लगाते और चाहते कि पाणि-ग्रहण की रस्म भी पूरी हो जाये। प्रकट रूप से यह प्रस्ताव उन्होंने अभी तक नहीं किया था। कई बार ओंठों तक आकर अन्दर ही अन्दर विलीन हो चुका था। वे इस नाज़ुक मामले में जल्दी करना अनुचित समझते थे। उन्हें अनुभव-जन्य विश्वास था कि उचित समय पर सब काम अपने आप ही परिपूर्ण हो जाते हैं। हाँ; हाव-भाव व्यवहार-द्वारा उस समय को निकटतर लाने का मौका शायद ही वे हाथ से जाने देते।

एक के बाद एक दिन और महीने गुजरते गये। दीपावली दौड़ती चली आ रही थी। बँगले की सफाई का काम शुरू हुआ। नौकर-मजदूर सामान मँगाने में व्यस्त थे। एकाएक टाँगा बँगले के सदर फाटक पर आकर रुका। एक गौरवर्ण इकहरे बदन का पचीस वर्षीय युवक नीचे उतरा। उसकी चाल में आकर्षण प्रतीत होता था। चेहरे और वेश में आधुनिकता की झलक थी। वह लम्बी डगें रखता हुआ अपने कमरे में दाखिल हुआ। एक अपरिचित नवयुवती को हवेली में पाकर उसका कुतूहल बढ़ा। उसने मुझसे पूछा—"रामप्यारी, यह लड़की कौन है?"

"यहीं किसी मुहल्ले में लड़कियाँ पढ़ाया करती थीं। चन्द दिनों से यहाँ आई हुई हैं।"

"मैं जानना चाहता हूँ इसका यहाँ क्या काम है? किस उद्देश्य से और किसने इसे यहाँ रखा है?"

"बड़े मालिक के पुराने मुलाकाती की कन्या है। कोई आसरा-सहारा न रहा। अतः छः महीने पहले इसे यहाँ ले आये। तब से यहाँ ही रहती हैं। मालिक इनकी प्रसन्नता और ऐशो-आराम की तरफ़ काफ़ी सचेत रहते हैं।"

इतना सुनना था कि अजीत आग-बबूला हो गया। उसका चेहरा तमतमा उठा। आँखों से चिनगारियाँ निकलने लगीं। मानो किसी विकराल प्रतिद्वंद्वी को सामने देखकर उससे निपट लेना चाहता हो। वह झपटते हुए लता के कमरे की तरफ़ गया और बिना आवाज़ दिये ही किवाड़ों को ज़ोर का धक्का देते हुए अन्दर पहुँचा। किवाड़ों की धड़ाम की आवाज़ और एक अपरिचित युवक के असभ्य आगमन ने लता को कँपा दिया। वह भौंचक्की-सी, किंकर्तव्यविमूढ़-सी, टकटकाती रही। इसके पहले कि वह कुछ बोले, अजीत ने दागना शुरू किया—"तुम यहाँ किसलिए आई हो?"

"इसलिए की यह मेरा घर है।"

"मैं जानता हूँ कि तुम आदमी से नहीं बल्कि धन से विवाह करना चाहती हो; वरना तुम्हारे पिता के तुल्य इस वृद्ध में ऐसा क्या आकर्षण था जिससे बँधकर यहाँ तक खिंच आईं हो? उनकी तो "साठी बुद्धि नाठी" हो चुकी है और तुम उनकी बुढ़ापे की कम-ज़ोरी और बेवकूफ़ी से फ़ायदा उठा, मुट्ठी गरम कर, तितली बनकर उड़ती रहना चाहती हो।"

"चुप रहो; ज़बान पर लगाम रखो? मैं ऐसी ऊल-जलूल बातें सुनने की आदी नहीं। तुम्हारी भलमनसाहत इसी में है कि फ़ौरन मेरे कमरे से बाहर हो जाओ।"

"बाहर होता हूँ पर देख लूंगा कि तुम्हारे भी पंजे यहाँ अधिक दिन तक न जम पायेंगे।"

शाम को ठाकुर साहब बाज़ार से लौटे तो लता ने नमक-मिर्च लगाकर आदि से इति तक सारा काण्ड अतिरंजीत भाषा में कह सुनाया। वह अजीत को सबक़ सिखाना चाहती थी ताकि भविष्य में वह छोकरा ऐसी गुस्ताखी करके उसे ज़लील न करे।

ठाकुर साहब का पुत्र पर असीम प्रेम था। वे जान गये कि युवकोचित जोश में आकर वह जली-कटी सुना गया है। सम्भव है किसी ने उसके कान भर दिये हों। यदि वह घर पर मौजूद होते तो इस वाक्युद्ध की नौबत ही न आती। वह अजीत के कमरे में दाखिल हुए; उसे अपने नज़दीक बिठाया और मानव शास्त्रीय ढंग से उस पर क़ाबू पाने की ठानी। सबसे प्रथम उसकी प्रसन्नता के समाचार पूछे। आने की खबर न देने की शिकायत की। एम० बी० बी० एस० का अभ्यास कैसा चल रहा है, दरियाफ़्त किया। बाद में पिता के स्वर में, लता से किये व्यवहार के लिए उलाहना दिया और बताया कि वह बड़ी सुशील, समझदार और सीधी-सादी है। वह इस घर को प्रकाशित कर देगी; उसमें जान डाल देगी, आदि। अजीत को यह समझते देर न लगी कि पिता जी इस बात पर तुले हुए हैं और उसका विरोध करना बाप-बेटों में वैमनस्य मोल लेना है। अतएव वह चुप रहा; होनी के आगे नतमस्तक हो गया।

दिन भागते जा रहे थे। तीनों साथ ही खाना खाते। मिल-जुलकर रहने की कोशिश करते। ठाकुर साहब ने लता से कह रखा था कि वह अजीत को खुश करने की हर तौर से कोशिश करे। अभी लड़का है। होश सँभालने पर स्वयं ही ठीक हो जायेगा। कभी-कभी उसके साथ घूम भी आया करो। सिनेमा आदि भी जाने में हर्ज नहीं। इस तरह शनैः शनैः उसकी नाराज़ी और ग़लत-फ़हमी काफ़ूर हो जायेगी।

लता ने कोशिश की। ठाकुर साहब की आज्ञा थी। वे चाँदनी रातों में कभी-कभी बाहर, आबादी से दूर मोटर दौड़ाते हुए समुद्र-किनारे पर निकल जाते। पहले कुछ अकड़े से रहे परन्तु जल्द ही अकड़ की जगह सीधेपन और सौहार्द्र ने ले ली। अजीत लता के भोलेपन को मन ही मन सराहता और अपने को मन ही मन कोसता कि क्यों उसने उस रोज़ लता को आघात पहुँचाया। हाँ; उस रोज़ उसका चित्त ठिकाने ही न था। कम्बख़्त कुली ने उसकी टेनिस की रैकेट फ़र्श पर गिराकर तोड़ दी थी, ऊपर से अपने को निर्दोष साबित करने की सफ़ाई देने लगा था और ताँगेवाले के पैसों के लिए हुज्जत करने लगा था। उसे बेहद गुस्सा आया था। रास्ते में भी से मोटरलारी की मामूली-सी टक्कर हो गई थी। उसी हालत में वह घर आया और लता पर आग-बबूला हो गया था। उसे अब पश्चात्ताप हो रहा था। उसे मालूम था कि ज़ख्मी दिलों के लिए समय से बढ़कर मरहम नहीं और उसका यथेष्ट उपयोग करना ही अभीष्ट है। वे एक दूसरे के नज़दीक आने लगे। न चाहते हुए भी परस्पर चाहने भी लगे।

रात्रि का समय था। भौंरेलाल के लिए रात की ही गाड़ी से रवाना चाहते थे। अजीत और लता ने किया। दोनों अपने कक्ष में उपन्यास के नायक-नायिका चित्रण के बारे में चर्चा करते काफ़ी नाज़ुक था। परन्तु ऐसी अब उनके लिए नई नहीं थी। वे में आत्म-विस्मृत हो गये। वे सटे में दिये चित्र के पोज़ पर गड़ाये थे। एकाएक दरवाज़े पर पैरों की आहट सुनाई दी। वे तुरन्त सँभल कर दूर हुए। परन्तु ठाकुर यह दृश्य देख चुके थे। उनकी गई थीं, वह उलटे पैरों लौट ठाकुर साहब क्रोध के मारे

—शेष पृष्ठ १४ पर

कन्ट्रोल भाव

EVEREADY
TRADE-MARK

ऐवरेडी सैल्स और बैट्रीयां

	नं. ९५०, ९२६, ९१२	नं. ७०३.
फुटकर व्यापारियों के लिये थोक भाव :—	रु.३१-८-० का एक गुरुस.	रु. ७०-०-० के १०० नग.
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्लीमें खरीदारों को परचून भाव :—	रु. ०-४-६ एक नग.	रु. ०-१४-६ एक नग.
दूसरी जगहों पर खरीदारों के लिये परचून भाव :—	रु. ०-५-० एक नग.	रु. ०-१५-० एक नग.

कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, कोचीन, कराची, दिल्ली को छोड़ बाकी सब जगहों के थोक व्यापारी भाड़ा और महसूल आदि ऊपर लिखी थोक क़िमतों में जोड़ सकते है।

ज्यादा मत दें

No. 708
EVEREADY
BREAKING SEAL
No. 703
EVEREADY
3 CELL BATTERY
EVEREADY
EXTRA LONG LIFE BATTERY
No. 950
No. 935

NATIONAL CARBON COMPANY, (INDIA) LIMITED
CALCUTTA · BOMBAY · MADRAS · COCHIN · DELHI AND KARACHI
HAS

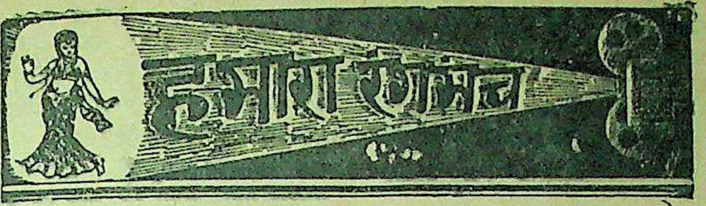

सुप्रसिद्ध फ़िल्म-निर्देशक और निर्माता राजा पंडित

फ़िल्मी-जीवन और कला की उपयोगिता पर बातचीत

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

जो कि आजकल रेडियो पर बोली जाती है। आज की रेडियो की भाषा कदापि राष्ट्रभाषा नहीं बन सकती। फ़िल्मों की भाषा आजकल हिन्दुस्तानी ही है। सरल हिन्दी ही वास्तव में देश की राष्ट्र बन सकती है। सरल हिन्दी का रूप ही "हिन्दुस्तानी" नाम से प्रचलित है।

प्रश्न——क्या आप हिन्दी की कविता से भी शौक रखते हैं? यदि रखते हैं तो आपको हिन्दी के किस कवि की कविता अधिक पसन्द है?

उत्तर——हाँ मैंने कुछ हिन्दी की कवितायें पढ़ी हैं। मुझे हिन्दी की कविताओं से प्रेम भी है लेकिन मैं जिस प्रकार की कविता चाहता हूँ, उसका नमूना मैं आपको देता हूँ। इस कविता के लेखक का नाम मुझे नहीं मालूम——(पंडित जी अन्दर गये और "बापू" का एक चित्र ले आये)। चित्र के दोनों किनारे पर निम्नलिखित कविता अंकित थी——

तुम नव जीवन के नव विधान!
युग-युग बंधन के मुक्ति गान॥
तुम आशा के स्वर्णिम प्रकाश,
मानव-मन के मधुमय विकास।
तुम नवयुग के नूतन विहान,
तुम नव चेतन के नव विधान।
तुम हो अतीत के अमर गीत,
भावी की मधु छाया प्रतीत।
तुम वर्तमान के कर्मगान,
तुम नव जीवन के नव विधान।
वलिदान गीत, वलिदान गान
तुम नव संस्कृति के नव विधान॥

मैंने कहा——यह कविता तो सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि सोहनलाल द्विवेदी की है। वह हिन्दी-साहित्य के श्रेष्ठ कवियों में हैं। यदि आप इनकी और "बापू" पर रचनायें देखेंगे तो ज्ञात होगा कि हिन्दी में "बापू-साहित्य" बहुत उत्कृष्ट है। हिन्दी को इस बात का गौरव भी है।

पंडित जी ने उस कविता के नीचे श्री सोहनलाल द्विवेदी का नाम नोट कर लिया।

प्रश्न——आप अपने जीवन की कोई न भूलनेवाली घटना सुनाइए।

उत्तर——मुझे तो कम से कम इस आफ़त से बचाइये। मैं क्यों अपनी "लाइफ़ सीक्रेट" को प्रकाशित करूँ?

मैंने कहा——पंडित जी 'लाइफ़-सीक्रेट' बतलाने में कोई हानि नहीं। बिना इसे बतलाये हुए आपका इन्टरव्यू अधूरा ही रहेगा।

पंडित जी ने कहा——तो फिर आप मुझे छोड़ नहीं सकते।

मैंने कहा——"निश्चय।"

पंडित जी——मेरी जीवन-कहानी का शीर्षक है "क्या से क्या हो गया?"

वसन्त का सुहावना मौसम था। प्रकृति के मनोहर आँचल में रंग-बिरंगे पुष्प प्रस्फुटित हो रहे थे। मैं अपने कमरे में मायूस बैठा हुआ था। सिर्फ़ इसलिए कि मैं किसके साथ "वसन्त-उत्सव" मनाऊँ? घंटों मैं इसी समस्या की उलझन में पड़ा था किन्तु कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा था। "वसन्त-उत्सव" मनाने की तारीख़ बिलकुल निकट आ रही थी। कभी सोचता कि जिससे मैं प्रेम करता हूँ उसे ही क्यों न यहाँ, बुला लूँ? उसी वक्त ध्यान आया कि यदि मैं पत्र डालूँ, और वह आने में शायद इनकार करे तब तो मेरे लिए और भी बुरा है। इसलिए उसे बुलाने का ख्याल एकाएक मेरे मस्तिष्क से हट जाता। फिर विचार आता क्यों न मैं स्वयं बिना बुलाये ही उसके घर चला जाऊँ? इसमें हर्ज ही क्या है? लेकिन फ़ौरन ही दूसरा विचार इसके विरुद्ध उठता। वह यह कि बिना बुलाये हुए जो व्यक्ति किसी के घर जाता है उसका आदर कदापि नहीं होता। इस प्रकार जब मैं विचारों के प्रवाह में बहा चला जा रहा था कि उसी वक्त पोस्टमैन ने मेरे हाथ में डाक रख दी। मैं सचेत हुआ। मैंने सँभलते हुए लापरवाही के साथ डाक का देखना प्रारम्भ किया क्योंकि मेरी तबीअत तो कहीं और उलझी हुई थी। एकाएक मेरा ध्यान एक लाल रंग के सुन्दर लिफ़ाफ़ा ने आकर्षित कर लिया। मैंने झट से खोला। एक ही साँस में उसे पढ़ भी गया। पढ़कर मेरी तबीअत प्रसन्न हो गई। वह मेरी होनेवाली पत्नी रत्नमाला का प्यार-भरा पत्र था। मुझे बुलाया गया था "वसन्त-उत्सव" में शामिल होने के लिए और यही मैं सोच भी रहा था। जो दुस्तर समस्या घंटों से हल नहीं हो रही थी वह इस पत्र ने क्षण में हल कर दी। पत्र इस प्रकार था——

मेरे जीवनाधार,

प्रेम-पुष्प कर-कमलों में समर्पित। यदि आप मुझे सच्चे दिल से प्रेम करते हैं तो फ़ौरन ही "वसन्त-उत्सव" में शामिल होने के लिए चले आइए। बड़ा आनन्द रहेगा। मुझे दृढ़ विश्वास है कि आप अवश्य ही आयेंगे। आपकी मैं राह देख रही हूँ। शेष सब ठीक है——

आपकी प्यारी, रत्नमाला

यह पत्र मेरे जीवन में बहुत महत्त्व रखता है क्योंकि इसने मेरे जीवन का ऐसे समय में निर्देशन किया जिस वक्त मैं बिलकुल विचारों में बेचैनी के साथ उलझा हुआ था।

मैंने रात की ट्रेन से जाना निश्चय किया। सिर्फ़ रात भर का सफ़र था। बड़े आनन्द के साथ कट गया। मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही थी, ठीक उसी तरह जिस तरह जापान के आत्म-समर्पण पर ब्रिटेन को हुई थी। हाँ तो सुबह सात बजे मैं पहुँचा। मुझे एक "ड्राइंग-रूम" में ले जाया गया। वह कमरा वासन्ती फूलों से सजा हुआ था। फूलों का बना हुआ "वसन्त-उत्सव" कमरे में टँगा था। मैं कमरे की शोभा देख ही रहा था कि इतने में रत्नमाला स्वयं नाश्ता लेकर कमरे में प्रस्तुत हुई। नाश्ता मेरे सामने रखती हुई वह बोलीं——"कहिए जनाब, आप आ ही गये। मुझे तो आशा नहीं थी कि आप मेरे पत्र पर चले आने का कष्ट करेंगे।"

मैंने चाय का घूंट लेते हुए कहा——"भला क्यों न आता, क्या तुमने मुझे इतना निष्ठुर प्राणी समझ लिया था कि मैं तुम्हारे प्यार-भरे निमन्त्रण को ठुकरा देता?"

रत्नमाला एक मलाई का लड्डू मेरे मुँह में देती हुई बोलीं——"तो क्या तुम मुझे सच्चे दिल से प्यार करते हो।"

सुप्रसिद्ध फ़िल्म-निर्देशक और निर्माता श्री राजा पंडित।

"इसमें भी अब कोई शक है।" मैंने रत्नमाला के गले में हाथ डालते हुए कहा।

वह दिन हँसते-खेलते बीत गया। कब आया, कब चला गया——इसका कुछ पता ही न चला। मुझे तो ऐसा लग रहा था कि मानो मैं स्वर्ग में पहुँच गया हूँ।

ठीक "वसन्त-उत्सव" के दिन। दिन के साढ़े ग्यारह बजे मैं मकान के पासवाले बग़ीचे में बैठा हुआ तितलियों का सुमनों पर मँडराना देख रहा था। पुष्पों की सुषमा पर तितलियाँ आशक्त हो गई थीं? एकाएक रत्नमाला मेरे हाथ में सिनेमा का एक पत्र देती हुई बोलीं——"कहिए आपने तो शादी कर ली——फिर मेरे साथ यह प्रेम का ढोंग क्यों? जब आपको स्वर्णलता पसन्द थी तो फिर मुझसे पहले क्यों प्रेम किया? क्या इसी को प्रेम कहते हैं? अब मैं तुम्हारे चकमें में नहीं आ सकती। तुम अपनी स्वर्णलता के पास जाओ।"

——शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

स्टैनिस्ट्रीट
चिकेन
(कंसिंट्रेटेड)
एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है——
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी
हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची
SSK 131

मातृमण्डल

भारतवर्ष की वीरांगना डाक्टर लक्ष्मी स्वामिनाथन्

आजाद हिन्द-फ़ौज की वह वीर और साहसी रमणी कौन है?

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

'जयहिन्द' का नाम आज भारतवर्ष में गूंज रहा है। चारों तरफ़ से 'जयहिन्द' की आवाज़ आ रही है। सभाओं का प्रारम्भ 'जयहिन्द' से होना शुरू हो गया है। 'जयहिन्द' के निर्माता देशगौरव सुभाष बाबू हैं। 'जयहिन्द' के पीछे कुछ इतिहास है, बलिदान है, संगठन है, और है अपने नारे पर क़ुर्बान होने की हिम्मत भरी ताक़त। तन-मन-धन 'जयहिन्द' क़ौमी नारे पर अर्पण करने की तैयारी। 'जयहिन्द' क़ौमी नारे को बुलन्द करनेवालों में सैकड़ों नर-नारी हैं। उनमें से एक हैं कैप्टेन डाक्टर लक्ष्मी स्वामिनाथन्।

आज़ाद हिन्द-फ़ौज की वीरांगना डाक्टर लक्ष्मी।

'जयहिन्द' नारे को मजबूत करनेवाली डाक्टर लक्ष्मी क़दम-ब-क़दम आजाद हिन्द-सेना के साथ रहीं। पुरुषों के बराबर काम करती रहीं। आपमें बहादुरी, साहस और व्यवस्थित काम करने की शक्ति है। भारतवर्ष की आज़ादी के लिए आपमें तमन्ना है। आपने मलाया, सिंगापुर और बर्मा में आज़ादी के लिए जितना काम किया है उसकी कहानी घर-घर में व्याप्त है। सुभाष बाबू के 'आज़ाद हिन्द-फ़ौज' में एक टुकड़ी का नाम 'झाँसी की रानी' भी था। इस टुकड़ी की सरदारी लक्ष्मी डाक्टर ने किया। आज इस वीरांगना का नाम पूर्वी एशिया में गूँज रहा है। स्त्री-समाज का माथा ऊँचा हो गया; उनका सम्मान पुरुषों के बराबर कर दिया और साबित कर दिया कि स्त्री-जाति पुरुषों से पीछे नहीं रह सकती। वह वायुयान चला सकती हैं, मशीनगन से गोलियों की बौछार कर सकती हैं, घोड़े पर चढ़कर समरभूमि में आ सकती हैं, टैंक चला सकती हैं, टामीगन से दुश्मनों को राह पर ला सकती हैं। हिन्दुस्तान की नारी किसी से पीछे नहीं रह सकती।

* * *

डाक्टर लक्ष्मी का जन्म मद्रास प्रान्त में हुआ है। आपकी आयु अभी ३२ वर्ष की है। आपका जीवन रोमांचक है। आपके चेहरे पर तेज है। आप जब प्रसन्न होकर हास्य करती हैं तब आपके दाँत झलकने लगते हैं। आपमें मोहक आकर्षण-शक्ति है। आपसे मिलकर बातें करने में भी एक ख़ास प्रकार का आनन्द आता है। आप क़रीब-क़रीब सभी विषयों पर उनसे बातें कर सकते हैं। नृत्य कला पर भी चर्चा करती और आप मनोरंजक विषय की चर्चा भी छेड़ सकती हैं। इस वीरांगना का जीवन आनन्द और शौक़ की गोदी में पला है। खेल-तमाशे में भी आप रस लेती हैं। सिनेमा देखना भी आपको अच्छा लगता है। पाठशाला-जीवन में भी आपका कार्य एक अनोखे ढंग का रहा है। डाक्टर लक्ष्मी के पिता एक अच्छे चलते पुर्जे बैरिस्टर थे। लक्ष्मी जब बालक थीं तभी इनके पिता का देहान्त हो गया। आपकी माता मलाया की संस्कृति की प्रतीक हैं। आपके ख़ानदान का उपनाम स्वामिनाथन् है। स्वामिनाथन् कुटुम्ब मद्रास में बहुत प्रसिद्ध है। वह चित्रकारों, कवियों, संगीतज्ञों और कलाकारों के साथ अच्छा सम्बन्ध रखता है।

ऐसे वातावरण में लक्ष्मी का जीवन पला है। सामाजिक रहन-सहन के सब गुण आपमें आ गये हैं। आपको मोटर चलाना आदि भी आता है। तत्त्वज्ञानियों का भाषण सुनने के लिये आप उनके पास जाया करती थीं। आप थियोसोफिस्ट नहीं हैं फिर भी आपको थियोसोफिस्ट सिद्धान्त प्रिय है। आप टेनिस भी अच्छा खेल लेती हैं।

* * *

एक बार आप अपनी माता जी के साथ दक्षिण भारत की यात्रा कर रही थीं। जिस ट्रेन से वह जा रही थीं उसी ट्रेन में जे० कृष्णमूर्ति पहले दर्जे में प्रवास कर रहे थे। श्री लक्ष्मी ने उन्हें देखकर कहा कि आप धर्म-प्रचारक होकर पहले दर्जे में यात्रा कर रहे हैं, भला किस तरह उन प्रजाजनों के साथ सम्बन्ध जोड़ सकते हैं जिनके लिए आप प्रवास कर रहे हैं? स्वामी जी लज्जित होकर बोले—बहिन, आप मेरे दर्जे में आ जायें। मैं आपके दर्जे में बैठता हूँ। ऐसे खुले वाता-वरण में आपका पालन और पोषण हुआ है। मोटर इतना तेज़ चलाती हैं कि कभी-कभी चौराहे की पुलिस आपको चेतावनी देती है कि कहीं कोई दुर्घटना न हो जाये। एक बार सचमुच ही आपकी मोटर उलट गई। आप बाल-बाल बच गईं। आपको अपने मन पर काबू है। आप बिल्कुल घबराईं नहीं, थोड़ी देर बाद ही टेनिस खेलने चली गईं।

आपने जब इन्टर क्लास पास किया तब आपके साथ कई उपाधिधारी लोगों ने विवाह करना चाहा लेकिन उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए आपने सबको नकारात्मक उत्तर दिया। मद्रास मेडिकल कालेज में अध्ययन करने के लिये चली गईं। वहाँ अध्ययन करते समय आपके मन में विवाह करने की भावना जागृत हो उठी। वहीं पर आपने बँगलोर के एक युवक से शादी कर ली। युवक वायुयान-चालक था। चालक के साथ आपने हवाई यात्रा की। दोनों को दाम्पत्य सुख अच्छा मिला लेकिन

विवाह का अधिक आनन्द न
आपका मन दूर प्रदेश में
डाक्टरी पढ़ाई के समय ही आप
गई थीं; वहाँ केवल आप
रहीं लेकिन इन चन्द महीने में ही
वहाँ के लोगों से अच्छा परिचय
मौका मिला। डाक्टरी उपाधि प्राप्त
के बाद आप सिंगापुर चली गईं
१९४२ से डाक्टरी नैक्टिस शुरू

आपको बालपन से ही
प्रति सहानुभूति है। पं०
नेहरू से आप कई बार भेंट कर
देश की आजादी चाहनेवालों
आपकी पूरी सहानुभूति है। सुभाष
के आजाद हिन्द-फौज के कार्यों में
पूरा भाग लिया था। डाक्टरी
सब काम आपके जिम्मे था। आपने
ने घायल सिपाहियों की अच्छी सेवा
आपने अपने सुन्दर कार्यों से
नारियों का मुख उज्ज्वल कर

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है
आप हमारी मिठाइयाँ—
क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

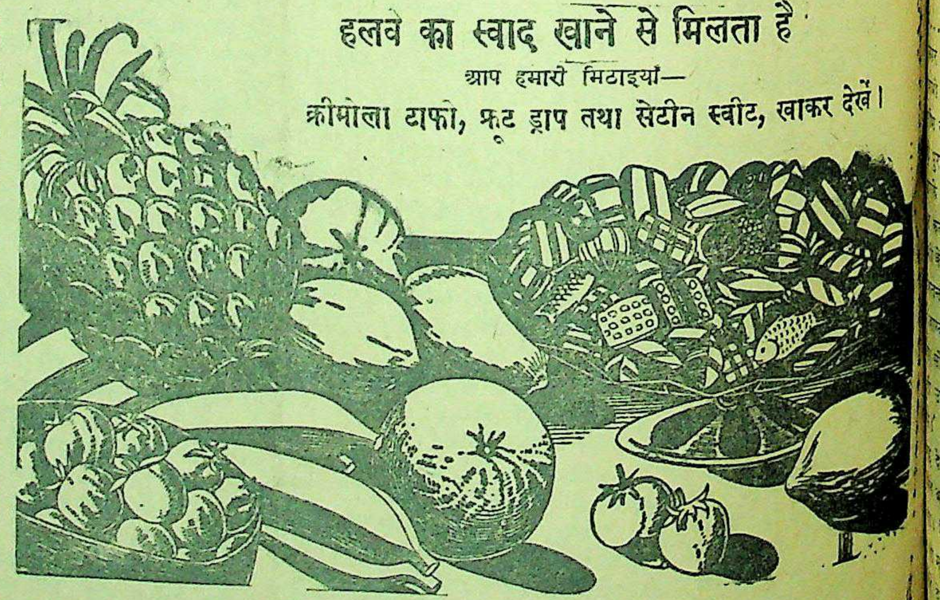

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—
इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस
इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

हिक उपन्यास

क्या वह कलंकिनी थी?

लेखक, श्री जगदंबाप्रसाद मिश्र 'हितैषी'

मनोरंजक और रोचक—

(गताङ्क के आगे)

हाहाकार कर उठा। उसने कहा—छोटे बाबू मैं कर सुखी था; रुपये को क्या भाड़ में झोंकूँगा? ने कहा—मैं जितने दिन जिऊँगा तुम्हारा ध्यान नये नौकर तुमने रक्खे हैं, रुपये लेकर, उनको एक-महीने का—जैसा समझना—वेतन देकर विदा कर

वस्तुएँ पैक हो चुकी थीं। हरीश ने कहा—भाभी की समस्त वस्तुएँ यहीं बड़ी अलमारी में बन्द कभी स्मरण आयेगा इसी शून्य गृह में—पक्षी के में आकर इन वस्तुओं को हृदय से लगा लिया हृदय की शोकाग्नि को युग-युग प्रज्वलित रखने। यह महान्—रावण की चिता की ब्रह्माग्नि है कभी नहीं बुझा सकेंगे। सदा-सर्वदा देश भर में। बस अब देर मत करो। आज की रात्रि यहाँ न शीघ्रता करो।

र पर से लक्ष्मी ने पुकारा—हरीश.....

दीदी की ओर देखा। दीदी रो रही थी। लक्ष्मी र पैर रखना चाहा था कि हरीश ने झपट कर चिल्लाकर कहा—न न न, इस घर में मत घुसना! तुम्हारी ही उपेक्षा ने उसके हृदय पर वज्र-। मैं तुम्हारी इस उपेक्षा को क्षमा नहीं कर ....

ऐसी विकराल मूर्ति लक्ष्मी ने कभी नहीं देखी थी। उसने ऐसे शब्द भी नहीं सुने थे। हरीश ने वैसी फिर कहा—अब भी तुमको तृप्ति नहीं मिली? पर मिथ्या कलंक का ढिंढोरा पीटा गया। ढिंढोरा तुम्हारे दास-दासी, जो खाते थे तुम्हारा, ढरकाते थे देखतीं और सुनती रहीं परन्तु विरोध नहीं किया। कि इस षड्यन्त्र का संचालन तुम स्वयं अपने को दूसरों के द्वारा कराओ और देखकर परम प्रसन्न ....उसकी रुग्णावस्था में केवल एक दिन आकर तुमने और मेरे ऊपर बड़ी कृपा की! अब किस लिए आई निकल जाओ यहाँ से! लेकिन ठहरो!

ने तीव्र गति से खूँटी पर टँगे हुए कोट में से विनोद पुरानी चिट्ठी निकाली; और कुछ पंक्तियों की ओर कहा—इन्हें पढ़ो—

कलंक की सृष्टि सुरेश बाबू के गृह की दासियों ने की कानों में यदि यह बात पड़ गई तो वे आत्महत्या कर ही मिथ्या दोषारोपण क्यों न हो किन्तु द्वेष के विष बाणों से भी विद्ध होकर भला मनुष्य मर जाता है। हूँ कि स्नेह के इस समुद्र को छोड़कर मेरा चला है। स्यात मेरे चले जाने से यह प्रचार बन्द

यह भी पढ़ो!'

माता को कभी नहीं देखा दादा! यह भाग्य में माँ की वात्सल्यमयी जो कथायें सुन रक्खी थीं मन में गढ़ ली थी वह मूर्ति भाभी के रूप में निश्चय।

अत्ता खड़ी थी। वह वहाँ से चुपके से खिसकने। हरीश की दृष्टि उस पर पड़ गई। वह गर्ज यहाँ से, नहीं तो मारकर डाल दूँगा।

अत्ता वहाँ से जल्दी-जल्दी भाग चली। हरीश ने विनोद की ओर देखा। वह बेचारा भय और विस्मय से जड़ीभूत हो रहा था। हरीश ने उससे कहा—तुम भाई बैठे न रहो—जल्दी करो, चार बज चुका है। सूर्यास्त से पहले ही आज घर को छोड़ देना है।

लक्ष्मी हृदय से बड़ी ही दुखित हो रही थी। एक दिन आकर फिर न आई। अत्ता ने तो संवाद दिया था कि बहू अब अच्छी है। आज सुना गया कि सब समाप्त हो गया। १३ दिन बीत गये। अनुशोचना से पृथ्वी में गड़ी जा रही थी।

लक्ष्मी ने भरे कण्ठ से पुकारा—हरीश.....

हरीश ने कहा—कहो कहो, अब क्या कहना रहा है?

लक्ष्मी रोने लगी। बोली—अक्षम्य अपराध हुआ है भैया! इस अपराध की ग्लानि आजीवन दग्ध करेगी। मैं तुम्हारी ही बहन हूँ। मुझे क्षमा कर दो भैया!

लक्ष्मी ने हरीश का हाथ पकड़ लिया! हरीश ने लक्ष्मी को देखा—पागल की-सी दृष्टि थी। उसने सिर लचाकर रोते-रोते कहा—जाओ दीदी, मैं चेष्टा करूँगा कि तुम्हारी उपेक्षा भूल जाऊँ, पर जीवन भर का समय लगेगा।

लक्ष्मी ने कहा—मैं तुम्हारी वही दीदी हूँ! तुमने बड़े अपराध क्षमा किये हैं, भैया!

विकृत हँसी हँसते-हँसते हरीश ने कहा—तुम दीदी ही हो! हमारे सिर मत्थे....किन्तु हमें जान के भी तुमने हमें नही पहचाना। इतना बड़ा अन्याय कर डाला, हमें अपराधी कहकर। एक निरपराध को मिट्टी में मिलाकर ही मानीं।

लक्ष्मी ने कहा—मैं मानती हूँ मेरा अपराध है; तो भी तुम पर मेरा स्नेह कम नहीं हुआ.....।

हाँ हम पर स्नेह कम नहीं हुआ, किन्तु जिसे हमने अर्द्धाङ्गिनी बनाकर ग्रहण किया था, जिसका मानापमान हमारा मानापमान था, उसे अपमानित, उपेक्षित करके हमें पाना क्या आकाश कुसुम पाना न था? जीजा जी को अपमानित करके मैं तुम्हारे प्रति भ्रातृ-स्नेह प्रदर्शन करूँ तो क्या यह मेरी मूर्खता न होगी? मुझे मुग्ध करके उसने फँसा लिया हो सो बात न थी। जब मैं यहाँ से उसे ले गया तो उसे वहीं एक स्कूल के बोर्डिंग में छोड़कर विलायत गया था। उसने हाईस्कूल परीक्षा पास करके एक अध्यापिका की जगह पा ली थी। लौट आने पर कई वर्ष बाद भी हम दोनों में कोई लिप्सा नहीं थी। ऐसे एक वत्सर और कट गया। उसके उपरान्त मैंने ही गृहस्थ-जीवन के लिए लालायित होकर प्रस्ताव किया। उसने कहा—यद्यपि मेरा विवाह नहीं हुआ; तो भी आपके नाम में धब्बा लगेगा ही। अतः मैं विवाह न करूँगी। मैंने इसी पर हठ करके विवाह कर लिया। समझीं....?

लक्ष्मी ने हरीश के दोनों हाथ पकड़कर कहा—मैं पाँव पड़ती हूँ, क्षमा कर दे भैया! मैं तुझे कहीं जाने न दूँगी।

हरीश ने कहा—प्रायश्चित्त इतना सहज नहीं है। सम्भवतः मेरा भी अपराध है। जब तुम रज्जो के लिए वर ढूँढ़ रही थी उस समय मैं जिस मित्र को कहता था वह मैं ही था। मैंने स्पष्ट नहीं कहा। तुम अन्धी, बहरी, निर्बुद्धि इसे न समझीं। किन्तु अब सब बातें व्यर्थ हैं। यदि जीवन में कभी शान्ति मिली तो यहीं अपनी जन्मभूमि में आऊँगा।

लक्ष्मी ने कहा—क्या मुझे क्षमा न कर सकोगे?

हरीश ने कहा—जहाँ अहंकार है वहाँ स्नेह कहाँ। जहाँ स्नेह है वहाँ अहंकार कहाँ। क्यों यह सब बातें बढ़ा रही हो? मुझे इस समय बहुत काम है। यह सब जल्दी से बाँध-बूँधकर निकल पड़ूँगा।....

हरीश ने कहा—जो हुआ सो हुआ; पर हमारा एक अनुरोध है, अपने दास-दासी, परिजनों और जाति को ठीक-ठीक बात अब तुम्हीं बता देना कि रज्जो केवल हमारी विवाहिता थी, भैरव की नहीं। विनोद उसे माँ की भाँति मानता रहा—तुम लोगों ने मिथ्या आरोप किये—विमला सती-साध्वी थी कलंकिनी नहीं।

—समाप्त

सचित्र हिन्दी महाभारत
दस खण्ड मूल्य ७०)

पंचम वेद और हिन्दुओं की संस्कृति तथा इतिहास का प्रतीक कहे जानेवाले महान् ग्रन्थ महाभारत का यह अविकल अनुवाद प्रौढ़ और हृदयग्राहिणी भाषा में कराया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ इकतालीस अङ्कों (दस खण्डों) में पूरा हुआ है। प्रत्येक अंक अनेक रंगीन और सादे चित्रों से अलंकृत है। कागज चिकना और मोटा है। समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, दर्शनशास्त्र, धर्मोपदेश, राजनीति, काव्य, आख्यान सभी कुछ इस ग्रन्थ में है जो अपने सरल अनुवाद के कारण स्त्री-बच्चों से लेकर बड़े-बूढ़ों तक—सभी के लिए समान रूप से उपयोगी है। प्रत्येक हिन्दू घर में धरोहर के रूप में इस ग्रन्थ को होना आवश्यक है।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

शीघ्र आ रहे हैं

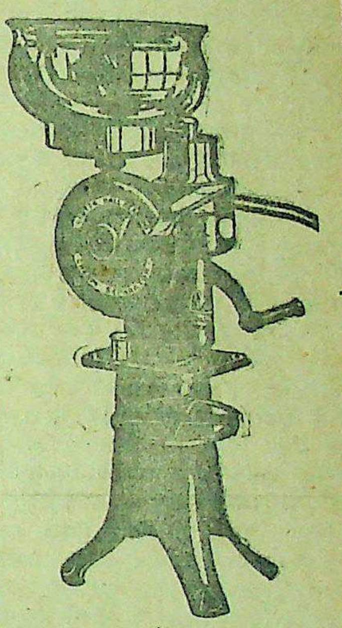

१५० से १००० पौंड दूध प्रति-घंटे के गुंजायशवाले (Stainless steel bowls) लिस्टर क्रीम सेपारेटर जो हाथ या बिजली से चलाये जाते हैं शीघ्र आनेवाले हैं। लिस्टर क्रीम सेपारेटर का मतलब है कम परिश्रम, कम खर्च व ज्यादा लाभ। बुद्धिमान् डेरीवाले अब उन्हें मंगाने में देर नहीं करेंगे।

Lister

लिस्टर
क्रीम सेपारेटर

सोल डिस्ट्रिब्यूटर्स
वॉल्कर्ट ब्रदर्स

कलकत्ता, ८ क्लाइव स्ट्रीट।
कानपुर दी माल।

मन की जीत

(पेज १० का शेष)

बिजली की तरह कमरे में घुसकर अजीत को पूरे जोर से तमाचा जमाया। वह धड़ाम् से कटे पेड़ की तरह कुर्सी पर जाकर गिरा और ओंठ से खून की धारा बहने लगी, अधबेहोशी में वहीं पड़ा रहा। लता को भी उन्होंने बुरा-भला कहा और सावधान किया कि उस पाजी से वह आइन्दा कोई सरोकार न रखे। उसने साबित कर दिया कि वह उनका पुत्र कहलाने के अयोग्य है।

रात के क़रीब दो बजे थे। अजीत की बेहोशी टूटी। लता वहीं पर बैठी सिसक रही थी। आँखें सूजकर टेसू के फूल हो चुकी थीं। अजीत ने अपनी बेग उठाई; लता भी पीछे हो ली। अब इनका इस घर में दाना-पानी ख़तम हो चुका था। वह बोला—"लता, तुम्हें मेरे साथ अभाव और कष्ट का सामना करना पड़ेगा। काफ़ी मुसीबत होगी। तुम इसी घर की स्वामिनी बनकर रहो। मुझ अभागे को भटकने दो।"

"यह असम्भव है अजीत! यहाँ की चुपड़ी से तुम्हारे साथ की सूखी में मुझे स्वर्गतुल्य सुख मिलेगा। वियोग की संपत्ति से संयोग की दरिद्रता में सहर्ष स्वीकार करूँगी।"

दोनों ने अलग मुहल्ले में एक छोटा-सा मकान किराये पर लिया जो गली में था। न हवा न प्रकाश। इतने कम किराये में इससे अच्छी जगह मिलनी नामुमकिन थी। पास में कुछ जेवर थे। उन्हें बेचकर उन्होंने दो महीने काटे। अजीत दिन भर नौकरी की तलाश में फिरता। करांची के रईसों से उसकी जान-पहचान थी। वे सब उसके साथ हमदर्दी दिखाते—परन्तु नौकरी देने में सभी बेबस थे। उसके पिता का आदेश था कि वे किसी प्रकार की सहायता न करें। अतः ठाकुर साहब को नाख़ुश करना वे किसी भी हालत में न चाहते थे। हालाँकि अजीत के दुःख में वे खुद भी दुखी होते।

पूँजी समाप्त हो गई। मकान का किराया बकाया रह गया। मालिक-मकान ने कल ही दो-चार खरी-खोटी सुनाई थी और पाँच दिन की मोहलत दी थी जिसके ख़तम होते ही उसे घर खाली कर देना होगा। अजीत हमेशा की तरह मुंह लटकाये हुए दिन भर का थका-माँदा घर में घुसा। लता की पैनी दृष्टि से उसकी असफलता छिपी न रही। उनसे धीरज बँधाते हुए कहा "अजीत, कुछ दिन के लिए मैं ही कहीं काम देख लूँ ताकि घर का ख़र्च किसी प्रकार चल जाय। बाद में तुम्हें कहीं जगह मिल ही जायगी और ये मुसीबत के दिन भी कट जायँगे। तुम्हें इसमें कोई एतराज नहीं होना चाहिए, अजीत।"

"यह नहीं हो सकता लता! तुम्हें नौकरी करते न देख सकूँगा। जब तक मुझमें दम है, घर-ख़र्च जुटाना मेरे ही ज़िम्मे रहेगा।"

आख़िर प्रयत्न सफल हुआ ही। अजीत को मुफस्सील के दवाखाने में असिस्टेंट सर्जन की जगह मिल गई। वे करांची से बाहर एक छोटे से बँगले में रहने लगे। जीवन मंथ प्रवाह से बह रहा था। रात को चाँद छिटकता और उस चाँदनी का पान यह युगल जोड़ी अबाध रूप से यथेष्ट मात्रा में करते। तारे फूलों की वर्षा करते। आकाश शबनम के मोती बरसाता।

सुबह बारह बजे तक लता, अजीत के अस्पताल से लौटने की राह जोहती रही। अभी भोजन भी नहीं हुआ था। अतः वह खुद ही अस्पताल के तरफ़ बढ़ी। पति ने दूर से ही मुस्कुराहट-द्वारा उसका स्वागत किया और उसे घर जाकर भोजन कर लेने का आदेश दिया। आज किसी बड़े आपरेशन की बारी है। शुभ्र वेशधारी नर्से इधर-उधर चुस्ती के साथ फिर रही हैं। वातावरण गंभीर और शान्त, मानो आनेवाले तूफ़ान की सूचना दे रहे हों। लता वहीं पर वेटिंग रूम में बैठी रही; पति के बग़ैर वह भोजन कैसे करती? घर बैठने से बेहतर तो यही है कि वह यहीं बैठकर इन्तजार करे और कार्य-समाप्ति पर साथ ही घर जायें।

"चोट सांघातिक है—काफी गहरी है। ख़ून बह जाने से बेहद कमज़ोरी आ गई है। शरीर में बाहरी ख़ून पहुँचाना अत्यावश्यक है, और वह भी इसी वक्त—वरना कोई उम्मीद नहीं। परन्तु अफ़सोस है कि इनके ख़ून से मिलता ख़ून हमारे पास मौजूद नहीं।" सर्जन न खेदपूर्वक कहा।

"मैं अपना रक्त दान करने को सहर्ष प्रस्तुत हूँ जनाब, और मुझे पूर्ण विश्वास है मेरा रक्त इन्हें उपयोगी होगा।" अजीत ने हाथ बढ़ाते हुए ऐलान किया, जैसे उसने पहले ही निश्चय कर लिया हो।

क़रीब आध घंटे में बीमार ने पलकें खोलीं। अब वह शरीर में शक्ति महसूस करता था। अजीत और लता को नजदीक देखकर वह चौंका। क्षण में उसकी बुझी-बुझी-सी आँखों में आँसू छलछला आये। वह कहना चाहता था—"मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ; मुझे अपने किये के लिए माफ़——" अजीत ने बीच ही में बात काट दी। "आप माफ़ी न माँगिये बापू। पुत्र सदा के लिए पिता का ऋणी होता है। माफी हमें माँगनी चाहिए। आपका इतना दिल दुखाया।"

"बेटा अजीत, और बहू लता! क्या तुम्हें यक़ीन होगा यदि मैं कहूँ कि मैं तुम दोनों से क्षमा माँगने और तुम्हारा विवाह अपने हाथों करने ही तुम्हारी तरफ़ जा रहा था? पिछले छः महीनों से मेरे हृदय में इन्हीं विचारों का संघर्ष चल रहा था! परन्तु निरर्थक स्वाभिमान ने पैर रोक रखा था। आज वह ब्रेक टूट गया और इन्हीं विचारों में उलझा हुआ तुम्हारे घर की तरफ़ मोटर दौड़ाते हुए आ रहा था कि एक फ़र्लांग के फ़ासले पर मोटर पेड़ से टकरा गई। बाद में क्या हुआ मुझे पता नहीं।"

तीनों की आँखों में अश्रुधारायें बह रही थीं जो अतीत के मनोमालिन्य को धोकर उसकी जगह पितृ-प्रेम और ममता की स्थापना कभी की कर चुकी थीं।

सुप्रसिद्ध फिल्म-निर्देशक और निर्माता राजा पंडित

(पेज ११ का शेष)

मैंने चकित होकर कहा—"आख़िर बात क्या है, यह प्रेम का ढोंग, स्वर्णलता यह सब क्या बहकी-बहकी बातें कर रही हो। मैंने तो आज तक किसी से प्रेम नहीं किया है?"

रत्नमाला ने अख़बार खोलकर वह लेख दिखाया, जिसका शीर्षक था—"मुबारकबाद।"

मैंने लेख पढ़ा। लेख इस प्रकार था। "सिनेमा-संसार के सुप्रसिद्ध डाइरेक्टर व प्रोड्यूजर मिस्टर राजा पंडित ने अभी हाल में फ़िल्म-संसार की लोकप्रिय अभिनेत्री स्वर्णलता के साथ शादी कर ली है। इन दोनों में आपस में प्रेम था। शादी की इस खुशी में हम दोनों को तहेदिल से मुबारकबाद देते हैं।"

मैं लेख को पढ़कर दंग रह गया।

मैंने रत्नमाला को विश्वास दिलाया
सब ग़लत है। मैंने कभी स्वर्ण
तरफ़ आँख उठाकर देखा भी
अभी पत्र के सम्पादक को लि
लेकिन मेरी बात पर विश्वास
गया। मैं सोचने लगा कि क्या
था, और क्या हो गया? मैं
उलझन में पड़ गया। मैंने तुरन्त ही
के नाम एक पत्र भेजा। तीन-चार दि
जवाब मिला। जवाब देखकर मेरी
में जान आई। वह जवाब इस प्रकार

"आपका कृपापत्र मिला।
सम्बन्ध में जो समाचार प्रकाशि
है, वह भूल से छप गया है।
के नाम के सामने आपका ना
छप गया। इसके लिए हम
लिखित माफ़ी माँगते हैं।
ख्याल रक्खा जायेगा। मुझे
कि आप अब कोई हमारे ख़िला
वाही न करेंगे।"

—प्रधान

जब मैंने यह पत्र रत्नमाला को
लाया, तब कहीं उसे विश्वास हुआ।
बाद हम दोनों का विवाह हो
आनन्दपूर्वक रहने लगे।

पत्र आने से पूर्व रत्नमाला ने
कहानी लिखी थी। उसका प्लाट
यह था—मैंने जो सुनहरा स्वप्न
अधूरा ही रह गया। मुझे क्या
कि मेरी प्रेम-भरी दुनिया इतनी
जायगी। मैं क्या होने जा रहा
"क्या से क्या हो गया।"

रत्नमाला की यह कहानी
सुरक्षित रक्खी हुई है। इस कहानी
मिलती है कि किस तरह से
लापरवाही की वजह से
में तूफ़ान आ जाता है। "क्या
अपनी इस जीवन-कहानी को
भूल सकता।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सु

स्टैनिस्ट्रीट की
ब्रिलिएन्टाइन
हेयर ऑएल
ठोस
तरल
सुगंधित
कैन्थराइडिन
कैस्टर
कोकोनट
गोल्डेन
परमानेंट वेविंग
सैचेट्स
फ्लुइड् लोशन
तरल शैम्पू
स्टैनक्रीम

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ करांची अमृतसर

SSK 122

इतनी जल्दी थक गये???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय
एवम्
उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वीरोजेन
VIROGEN
शारीरिक तन्द्रा को दूर कर
स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति
को बढ़ाता
है

वी
रो
जे
न

रो
जे

VIROGEN

शारीरिक तथा भीतरी कमजोरी अथवा इस प्रकार को अन्य बीमारि
के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपको बाजार में न मिले तो लिखें:—
बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी, लि०, कलकत्ता।

ई दिल्ली की चिट्ठी

य असेम्बली में कांग्रेस उम्मीदवारों की विजय

द हिन्द सरकार का एक सदस्य रिहा—भारतीय सेना इंडोनेशिया ाई जायेगी—विद्यार्थियों में भारी हलचल—सरकारी महकमों के बीच तनातनी—डिफेंस कमेटी का दफ़्तर

विशेष संवाददाता-द्वारा)

सेम्बली की दिल्ली सीट के
उम्मीदवार श्री आसफअली
सफलता ने यह सिद्ध कर दिया
की राजधानी पूर्णतया कांग्रेस
हैं। हिन्दू-महासभा के उम्मीदवार
सिंह की जमानत जब्त होना
ट करता है कि हवा का रुख़
ओर हो रहा है। सबसे उल्लेखनीय
हुई कि नई दिल्ली के सरकारी
अन्य बाबू श्रेणी के लोगों ने
कांग्रेस उम्मीदवार के पक्ष
दिये। दिल्ली के साथ ही पंजाब
असेम्बली का चुनाव समाप्त
भी कांग्रेस उम्मीदवारों की
यह सिद्ध कर दिया कि आज
नहीं रहा जो दस साल पहले
नेहरू के तूफ़ानी दौरों ने
के दिलों में क्रान्ति पैदा कर

•

सरकार का एक सदस्य रिहा

के लाल क़िले से श्री एस० ए०
तानक रिहाई ने सबको भारी
दिया। श्री आयर सुभाष
हिन्द सरकार के सदस्य थे
स्वाधीनता लीग से उनका
था। उनको इसी सप्ताह
के साथ सफ़ाई पक्ष के
से जापान से नई दिल्ली
और रिहाई तक लाल क़िले
क़िले से छूटते ही उन्होंने
के साथ, चूंकि वे स्वयं
निधि थे, बहुत देर तक
वे नरेन्द्र पैलेस, नई दिल्ली में
के पास ठहरे हैं। श्री आयर
संवाददाता के रूप में रंगून
गये हुए थे।

सेना इंडोनेशिया से बुलाइ जायेगी

से प्राप्त इस समाचार की
तौर से पुष्टि नहीं हुई है,
कहना है कि भारतीय फ़ौजें
से और आशा है हिन्दचीन से
ली जायेंगी। लन्दन के एक
का सम्बन्ध कुछ दिन हुए नई
उस अफ़वाह से जोड़ा जा
लार्ड वैवेल ने ब्रिटिश सरकार
भारतीय फ़ौजें इण्डोनेशिया
पूरी करने से इनकार कर
आशय की एक रिपोर्ट वास्तव
गोरा अखबार "टाइम्स
" में भी छपी थी।
लन्दन का यह समाचार सही
जाय तो इसका मतलब यह
वैवेल को आख़िरकार कुछ
के सामने झुकना पड़ा है।
यह बिलकुल असम्भव है कि
आज भी चाहे जैसी वह
एशिया में डच और फ़्रांसीसी
को लादने के लिए भारतीय
की इजाजत दे देगी।

में भारी हलचल

बम्बई, लखनऊ और लाहौर
पर विद्यार्थियों के जुलूसों पर
गये लाठीचार्ज और गोली-
में दिल्ली के विद्यार्थियों में
फैल गई है। सोमवार को
और कालेज बन्द रहे।

सरकारी महकमों के बीच तनातनी

मालूम हुआ है कि भारत-सरकार के अर्थ सदस्य सर आर्चीबाल्ड रालैंड फालतू आदमियों को काम पर से हटाकर खर्च में कमी करना चाहते हैं। परन्तु, सरकार के अन्य महकमे उनका विरोध कर रहे हैं। मालूम हुआ है कि प्रत्येक महकमा अपनी युद्धोत्तर-योजना बना रहा है और उसी योजना में बहुत से फालतू आदमी खपाने पर जोर दे रहा है।

डिफेन्स कमेटी का दफ़्तर

आजाद हिन्द फ़ौज की डिफेंस कमेटी का कार्यालय आजकल विशेष रूप से दिलचस्पी का केन्द्र बना हुआ है। दफ़्तर का सारा कार्यभार कुमारी खुरशीद बेन नौरोजी के ऊपर है। परन्तु पत्र-व्यवहार और पैसे का हिसाब-किताब श्री रघुनन्दनशरण करते हैं। विविध नजरबन्द कैम्पों से छूटे हुए आजाद हिन्द फ़ौज के सिपाहियों का यहाँ मेला-सा लगा रहता है। अपने नेता जी के बारे में वे अनेक दिलचस्प बातें बताते हैं। श्री भूलाभाई देसाई और पंडित जवाहरलाल नेहरू भी (जब वे दिल्ली में होते हैं) एक-आध बार प्रतिदिन यहाँ किसी न किसी काम के सम्बन्ध में आते रहते हैं।

संवाददाताओं के पत्र

हरिद्वार में श्री पंडित जवाहरलाल जी नेहरू पधारे। श्री श्रवणनाथ पार्क में पहले से ही जनता की अपार भीड़ पंडित जी के दर्शन व भाषण सुनने के लिए एकत्रित हो गई थी। सारा बाजार पंडित जी के भाषण को सुनने के लिए बन्द हो गया था। जनता व विविध-संस्थाओं की ओर से लगभग १० हजार रुपये की थैली पंडित जी को भेंट की गई। पंडित जी को एक गंगाजल का लोटा भी भेंट किया गया जब उसको नीलाम किया गया तो महन्त शान्तानन्दनाथ जी ने १,५०० रु० की उच्चतम बोली बोलकर उसे प्राप्त किया।

हरिद्वार म्युनिसिपलबोर्ड की मेम्बरी के लिए कई उम्मीदवार खड़े हुए थे। आज पंडित जी के भाषण होने से पूर्व महन्त जी के आग्रह तथा राष्ट्रीय भावनाओं का आदर करते हुए हरिद्वार के सुप्रसिद्ध नागरिक बाबू पन्नालाल जी भल्ला, वैद्य हरनामदत्त जी तथा सरदार कृपाराम जी जो कि बोर्ड की मेम्बरी के लिए खड़े हुए थे, कांग्रेस के मुक़ाबिले में अपना नाम वापस ले रहे हैं, यह घोषणा महन्त शान्तानन्दनाथ जी ने सभा में की।

पंडित जी बाजार में होते हुए श्री श्रवणनाथ ज्ञानमंदिर में पधारे, वहाँ महन्त जी ने पुष्पमालादि से आपका स्वागत किया। पंडित जी ने ज्ञानमंदिर का निरीक्षण कर अत्यन्त प्रसन्नता प्रकट की और इस संस्था को जनता के लिए बहुत उपयोगी बतलाया। आपने अपनी लिखित सम्मति भी ज्ञानमंदिर के लिए प्रदान की, ज्ञानमंदिर में महन्त जी ने ११०० रु० का चेक कमला नेहरू अस्पताल के लिए पंडित जी को भेंट किया। —संवाददाता

* * *

आगरा में अखिल भारतवर्षीय पशु-रक्षा-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन ता० २४, २५ व २६ दिसम्बर १९४५ को श्रीमान् महाराजा साहब बहादुर भरतपुर की अध्यक्षता में हो रहा है। यह भी ज्ञात हुआ है कि कांग्रेस कार्य-समिति के सदस्य डा० राजेन्द्रप्रसाद सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे। स्वागत-समिति ने सम्मेलन के साथ एक बृहद् प्रदर्शिनी की भी आयोजना की है; जिसमें चार अंग होंगे—(क) पशु (ख) घास और चारा (ग) कृषि और (घ) चर्मरहित वस्तु। विभिन्न प्रदर्शिनियों के लिए पृथक्-पृथक् संयोजक नियत किये गये हैं। यह पशु-रक्षा-सम्मेलन और प्रदर्शिनी रामलीला के मैदान में होगी। प्रदर्शिनी में स्वागत-समिति की ओर से पदक आदि भी दिये जायेंगे।

समस्त भारत की गोशालाओं, पिंजरापोलों, पशु-रक्षा, समितियों-विशेषज्ञों और नेताओं को सम्मेलन में भाग लेने के लिए भी निमंत्रित किया गया है। स्वागत-समिति की फ़ीस २५) रु० और प्रतिनिधि शुल्क २) रुपया है।

प्रतिनिधि या अन्य सज्जन जो सम्मेलन में भाग लेने के लिए आनेवाले हों अपने आने की सूचना सेठ अचलसिंह, स्वागत मंत्री, अखिल भारतीय पशु-रक्षा-सम्मेलन, रोशन मुहल्ला को सूचित कर दें।

—संवाददाता

* * *

दिल्ली के राष्ट्र मंदिर देव नगर ने "आजाद सेना" नामक प्रमाणिक इतिहास प्रकाशन करने का निश्चय किया है। इस ग्रन्थ में पूर्ण विवरण होगा। इसके अतिरिक्त इस पुस्तक में देश की वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर बड़े-बड़े उत्कट विद्वानों के गवेशणापूर्ण लेख होंगे।

इस विषय में हमें सर्वश्री मुकुन्दलाल सरकार, श्री शीलभद्र याजी एम० एल० ए० ह्विप बिहार असेम्बली, लाला शंकरलाल आदि बहुत से नेताओं तथा विद्वान लेखकों का सहयोग प्राप्त हो गया है। इसके प्रकाशन से जो आय होगी उसका एक विशेष भाग आई० एन० ए० रिलीफ फंड में दिया जायगा।

—कृष्णबिहारी तिवारी, सुजनकुमार शर्मा, गनेशलाल वशौरा —संयोजक

* * *

आजमगढ़ जिला हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व उपसभापति, टीचर्स एसोशियेशन (आजमगढ़) के प्रधान मंत्री एवं शिवली जान कालेज के अध्यापक पंडित श्री चन्द्रभूषण ओझा का गत १२ नवम्बर को स्वर्गवास हो गया। आप आजमगढ़ जिला के प्रसिद्ध साहित्य-सेवी और मिलनसार व्यक्ति थे। ईश्वर आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं आपके परिवार को कष्ट सहन करने की शक्ति दें। —संवाददाता

रुड़की ठंडेड़ा गाँव हिन्दू-सुधार-मंडल की एक साधारण सभा हुई, जिसमें श्री एम० एन० डंगवाल ने प्रस्ताव किया कि समय को देखते हुए प्रत्येक मनुष्य का मुख्य कर्तव्य है कि वह कांग्रेस उम्मीदवार को वोट दे। श्री हरीराम जी ने डंगवाल जी के प्रस्ताव का समर्थन किया। बाबूदलसिंह ने भाषण दिया। चौधरी मुखरामसिंह ने कहा कि कांग्रेस ही हमें स्वाधीनता दिलायेगी। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत हुआ।

—संवाददाता

प्रयाग बक्सी दारागंज में बाल वाचनालय की स्थापना हुई है। इस वाचनालय का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों-द्वारा बालकों के अंतःकरण में राष्ट्रीय भावनाओं को उत्पन्न करना है। —प्रयागराज द्विवेदी

दाँतों को ६0 प्रति शत अधिक स्वच्छ करता है!
यह जल-अभेद्य और नमी-विरोधक होता है।
साल भर की गारंटी
विकार-विरोधी शीशे में बन्द
अब मांगिए
पशुओं के बालों से रहित!
Dr. West's Miracle-Tuft MEDIUM
Dr. West's TOOTH PASTE
डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट
Copyright
JWT(E)Ltd

वितरक:
व्यापारी निर्यात—संबंधी
पूछताछके लिये पूछिए:
एल. डी. सेमूर एंड कं.
इन्कार्पोरेटेड
१२०, वाल स्ट्रीट, न्यू यार्क

हास-परिहास

भंग की तरंग

कलकत्ते में पुलिस ने छात्रों पर गोली चला दी। जान पड़ता है पिछले युद्ध के कारण गोला समाप्त हो गया, नहीं तो गोला ही चल जाता तो कौन-सी बात थी ?

* * *

ख़बर है कि घटनास्थल पर गवर्नर भी पहुँचे थे। उन्होंने समझा कि देख लें नहीं तो आस्ट्रेलिया में कहाँ ऐसा अवसर मिलेगा ? गवर्नर साहब चलते-चलाते अच्छा नाम पैदा करते जा रहे हैं।

* * *

पंडित भगीरथप्रसाद दीक्षित ने नेताओं के यहाँ उदयपुर-सम्मेलन के कवि-सम्मेलन के सम्बन्ध में एक पत्र भेजा है। बात तो ठीक है, उदयपुर-सम्मेलन के कवि-सम्मेलन में सिवा उनके उपस्थित ही कौन था ? वह पुराने महाकवि जो ठहरे !

* * *

सुना गया था श्री दुलारेलाल भार्गव और पंडित भगीरथप्रसाद दीक्षित में कोई पैक्ट हुआ था। वह पैक्ट वैसा ही रहा जैसा मधु और कैटभ का। न भार्गव साहब प्रधान मंत्री हो सके न दीक्षित जी साहित्य-परिषद् के सभापति। ख़ैर कोई बात नहीं, इन्हें चाहिए कि क्योंकि समय की गति देखी नहीं जाती, आगे जाने क्या हो ? अगली बार सम्मेलन पर यह अपना अधिकार जरूर जमा लें जैसे-तैसे ।

* * *

एक नेता साहब ने कहा है कि मेरा हृदय आग से भरा हुआ है। हमारी राय में थोड़ा पानी भी भर लिया जाये तो स्टीम अच्छी तैयार होगी। राष्ट्र का इंजन तब ठीक से खींचा जा सकेगा।

* * *

कहा जाता है कि आज़ाद हिन्द सेना के एक अफ़सर की पैरवी लीग करना चाहती है किन्तु लीग को अच्छे वकील नहीं मिल रहे हैं। क़ायदे आज़म किस वकील से कम हैं ? वही क्यों नहीं पैरवी करते ?

* * *

कम्युनिस्ट लोग नहीं चाहते कि किसी प्रकार की हड़ताल आदि का प्रदर्शन हो। इसके लिए सरकार को चाहिए कि नये वर्ष के आगमन पर उन्हें कुछ यथोचित पुरस्कार दे। यदि रायसाहब का तेरह हज़ार बच रहा हो तो वही जोशी जी को दे दिया जाय।

* * *

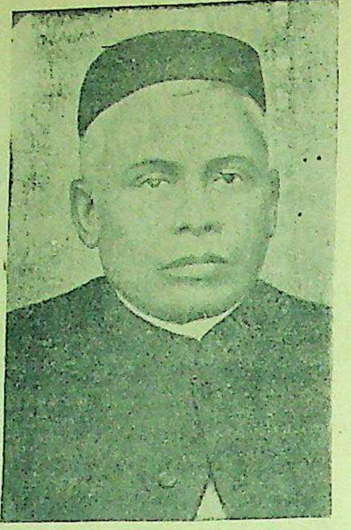

प्रयाग के सुप्रसिद्ध और वयोवृद्ध एडवोकेट स्वर्गीय बाबू हरिमोहन राय का स्वर्गवास ८२ वर्ष की आयु में हो गया। आप क़ानून के विशेष विद्वान् और लोकप्रिय वकील थे।

जो भारतीय विद्यार्थी अमेरिका जा रहे हैं, जहाज़ पर उनकी बड़ी दुर्दशा है। भाई विदेशी डिगरी मुफ़्त में नहीं मिलती ? टट्टी साफ़ करके भी विदेशी डिगरी मिल सके तो जरूर लाना चाहिए।

* * *

जो लोग जेलों से छूट रहे हैं एक नई कथा लेकर आते हैं। हमारी समझ में यह सब कथाएँ झूठी हैं। क्योंकि हेंडरसन साहब ने कहा है कि ऐसा नहीं हो सकता। भारत का युद्ध-मंत्री जो बात कहता है उसे झूठ मानना पागलपन है।

* * *

हमारी राय में तो जेलों में इस समय भारत से इतना आराम है कि सुना है चर्चिल और एमरी भी स्वास्थ्य की दृष्टि से वहीं आकर रहनेवाले हैं। वहाँ रहने से उनका स्वास्थ्य सुधर जायेगा।

* * *

सुना है हिन्दू-विश्वविद्यालय ने निश्चय किया है कि १९४८ से बी० ए० बीकाम और बी० टी० में हिन्दी में भी छात्र उत्तर लिख सकेंगे। इतना बड़ा अनर्थ ! जान पड़ता है हिन्दू-विश्वविद्यालय विनाश के पथ पर है।

* * *

सर राधाकृष्णन के होते हुए यह बात हो गई। मद्रास प्रान्त के रहनेवाले प्राफ़ेसर अब क्या करेंगे ? कुछ उनका भी तो ध्यान रखना चाहिए ?

—अगड़धत्त शर्मा

एटम-बम का गुप्त रहस्य क्या है ?

(पेज ५ का शेष)

हालत में पड़ गये हैं—और ऐसी हालत में एटम-बम जैसी दानवी शक्ति उनके हाथ में आ जाने के कारण विश्व स्वतन्त्रता को अपने साम्राज्यशाही दुर्ग में क़ैद रखने की दूषित भावना फिर उभर आई है। इस जरिये से देखने से मालूम हो जायेगा कि क्यों सोवियट रूस को 'एटमबम रहस्य उद्घाटन' की मन्त्रणा से अलग रखा गया। क्योंकि उन्हें मालूम है कि उभरती हुई जन-शक्ति का सबसे बड़ा प्रतिनिधि और उसे गौरवपूर्ण नेतृत्व प्रदान करनेवाला सोवियट रूस ही है और उसके एटमबम रहस्य की मन्त्रणा में शामिल होने के माने हैं, जनवादी हितों की रक्षा की गारन्टी और कुचेष्ट साम्राज्यवादियों की सारी दुनिया पर हुकूमत जमाने की आकांक्षा का हवा होना।

देखना है कि एटम शक्ति को के लिए वरदान बनानेवाली बैठती हैं या घृणित स्वार्थों के लिए करनेवाले राष्ट्र।

राजर्षि

इस ऐतिहासिक उपन्यास को आप दुर्वासनाओं से दूर जाकर द्वेष का परित्याग कर प्रेम के पवित्र में पहुँच जायेंगे, जहाँ मानवता का दर्शन कर आप कृतार्थ हो जायेंगे। १।) सवा रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

इसकी ज़मानत
हिन्दुस्तान की दौलत

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन्
बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में
करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

इतने कम समय में इतनी बड़ी रकम का लगाया जाना पहले लोन के खरेपन का और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का बड़ा विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है, अर्थात ब्याज साल में दो बार इनकम टैक्स काटने के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रकम के वापस दिये जाने का ज़िम्मा लिया जाता है। जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ज़रूरत पर जब चाहें मार्केट में बेच कर नक़द रक़म प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम टैक्स अगर लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल जायगा। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम करने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुकसान के खतरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा ब्याज मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर के रिज़र्व बैंक आफ़ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ़ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

ASA 333

रुपया बचाइए
और
3 फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट

एक मिनट में फोटो उतार लो
फोटो कैमरा ५॥)

जो लोग कैमरे का बटन दबाना भी नहीं जानते वह भी इनसे बड़ी आसानी से मर्द, बच्चा, स्त्री तथा हर प्रकार के दृश्य आदि के अति सुन्दर फोटो उतार कर अपनी शोहरत और किस्मत को चमका सकते हैं यह कैमरे अति खूबसूरत हैं। मूल्य बहुत ही कम रखा गया है।

रियायती मूल्य बक्स कैमरा ५॥) रु०, स्पेशल ७॥) रु० डी-लक्स विशेष गुण-वाला प्रति कैमरा ११।) रु०। डाक महसूल ॥|=)।

नोट—प्रति कैमरा के साथ फोटो उतारने का कागज, फिल्में, मसाला आदि फोटो उतारने की पूर्ण विधि मुफ्त भेजी जावेगी। नापसन्द होने पर मूल्य वापस होगा।

मैनजर—ब्रिटिश इण्डिया नावल्टी स्टोर (D. D.) पोस्ट बक्स नं० ९६ अमृतसर।

ता और देशी रियासतें

राज्य लोक-परिषद् का अगला अधिवेशन

कमलादेवी चट्टोपाध्याय और भारतीय स्त्री-शिक्षा

स्थान महिला विद्यालय श्रीमती कमलादेवी ध्याय का भाषण

र में राजस्थान महिला विद्यालय र्षिकोत्सव के दूसरे दिन के प्रमुख कार्यक्रम अखिल भारतीय महिला की अध्यक्षा श्रीमती कमलादेवी की अध्यक्षता में विद्यालय की ओं के वन्दना-गीत से आरम्भ के अध्यक्ष श्री भगवतसिंह जी श्रीमती चट्टोपाध्याय का परिचय संगीत, व्यायाम, कविता-पाठ, टिका के अभिनय इत्यादि के कार्यक्रम ने उपस्थित जन-समूह त किया। पश्चात् संस्था के श्री शोभालाल जी ने वर्ष भर की रिपोर्ट और व्यवस्थापक श्री गेलड़ा ने आय-व्यय का करते हुए देश के विद्वान्, अधि- एवम् कई विदुषी देवियों के संदेश पढ़कर सुनाये जिनमें त जवाहरलाल नेहरू, लीला- श्रीकृष्णदास जाजु, पुरुषो- त्तम, भागीरथ कानोडिया, रिया, रतन शास्त्री, पुष्पा सर बापना, डाक्टर मेहता, मृदुला बहन, ब्रजलाल भाऊ उपाध्याय इत्यादि।

देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधान श्री जयनारायण व्यास।

ों की गड़गड़ाहट के बीच श्रीमती ने आभार प्रदर्शन के बाद हिन्दुस्तानी में आरम्भ किया। कि आज जो शिक्षा दी जा रही हमारी चुनी हुई नहीं है बल्कि शासन करनेवालों ने हम पर है जिसका अर्थ है हमको परतंत्र । आज की शिक्षा से जीवन नहीं रहा है। नौकरी के की हुई शिक्षा भुलाये जाने । विद्यालयों से निकलते ही आज हमारे जीवन में कुछ काम में नहीं , हमें आज की शिक्षण-पद्धति में परिवर्तन करना पड़ेगा और वह हो सकता है जब हम स्वतन्त्र है कि जब तक हम गुलामी शिक्षा प्राप्त ही नहीं करें। रखते हुए आपने कहा कि और सरकारी मदद से है विदेशों में ऐसा नहीं है। का भी उसके संचालन रहना चाहिए। तालीमी संघ और महात्मा रीति-नीति को काम में लाने पर ज़ोर देते हुए आपने मनुष्य की मुख्य आवश्यकता रोटी और कपड़ा बताकर कताई-बुनाई को शिक्षण में मुख्य स्थान देने को कहा। युद्धकालीन परिस्थिति ने हमको बता दिया कि यदि हम इस पर पहले ही अधिक ज़ोर देते तो आज की कन्ट्रोल की कठिनाइयाँ जिसमें हमारी मातायें लज्जा-निवारण तक के लिए वस्त्र प्राप्त नहीं कर सकीं, न उठानी पड़ती। भाषण के दौरान में आपने कहा कि हम जितना कपास पैदा करते हैं। रुई के रूप में विदेश जाता है और कपड़े के रूप में वापस आकर उसका मुनाफ़ा विदेशियों की तिजोरी में चला जाता है जिसे हम रोक सकते हैं। जब भारत में पुरुषों को सच्ची शिक्षा प्राप्त करने में इतनी कठिनाई है तब समाज का उपेक्षित अंग स्त्रियाँ तो इससे बिलकुल कोरी हैं। महिलाओं पर बड़ी जिम्मेदारी हैं। उन्हें शिक्षित होकर घर-गृहस्थी चलाना है। बालकों को शिक्षण देना है। देश की स्वतन्त्रता-प्राप्ति में पुरुषों के मुक़ाबले ही में काम करना है। जापान और इँगलैंड में बालकों के लालन-पालन, घर की सफ़ाई आदि गृहकार्य के लिए शिक्षण मिलती है। इधर भारत में घर और विद्यालय की शिक्षा भिन्न है। विद्यालय की निकलनेवाली विद्यार्थिनियों को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि आपको अज्ञान के अन्धकार में फँसी महिलाओं को ज्ञान का प्रकाश देने का कार्य करना है इस प्रकार स्त्री-शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता और महत्त्व पर जोर देते हुए श्रीमती चट्टोपाध्याय ने हज़ारों स्त्री-पुरुषों को जो कि भाषण सुनने में दत्तचित्त थे धन्यवाद देते हुए स्थान ग्रहण किया। —संवाददाता

* * *

जयपुर वनस्थली विद्यापीठ में—हमारे देश में ऐसी उत्साही महिलाओं की आवश्यकता है जो स्त्री-समाज की निरक्षरता और अज्ञान को दूर करके उनकी अवस्था को सुधार सकें। मुझे यह देखकर प्रसन्नता होती है कि लड़कियों को इस दिशा में शिक्षा देने की इस संस्था में पर्याप्त सुविधा है। साथ ही इस संस्था की लड़कियों पर तो गम्भीर उत्तरदायित्व का भार भी है। क्योंकि इस देश को इनसे आशा है कि वे अपनी उन असंख्य बहनों को भी उस उपयोगी ज्ञान का दान देंगी जो इतने भाग्यशाली नहीं हैं जो यहाँ आकर शिक्षा प्राप्त कर सकें। उन्हें जनता की ओर से इस आलोचना का अवसर न देना चाहिए कि उन्होंने ज्ञान-अर्जन तो किया परन्तु उसका देश के कोने-कोने में प्रसार करने की कोई चेष्टा नहीं की"—अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की अध्यक्ष श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय ने वनस्थली विद्यापीठ परिवार के बीच उपर्युक्त उद्गार प्रकट किये। उदयपुर से दिल्ली लौटते हुए श्रीमती कमला देवी जयपुर से कार-द्वारा वनस्थली आई।

"भारतीय स्त्री-समाज का क्षेत्र गृह या उसके बाहर है अथवा दोनों का तारतम्य क्या है उसके लिए उसको किस प्रकार का शिक्षण उपेक्षित है इस विषम समस्या ने मुझे आज-कल चिन्तित कर दिया है"—पंडित हीरालाल जी शास्त्री के इस सार-गर्भित वक्तव्य से प्रेरित होकर श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय ने बड़ा उपयोगी और मार्मिक भाषण दिया।—संवाददाता

* * *

उदयपुर में अखिल-भारतवर्षीय देशी राज्य-लोक-परिषद का ९वाँ अधिवेशन सलेटिया ग्राउन्ड में ता० ३१ दिसम्बर से २ जनवरी तक पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में होना निश्चत हुआ है। सम्मेलन में भारत के कोने-कोने से हज़ारों व्यक्ति सम्मिलित होंगे। इस अवसर पर व्यापारी अपनी दूकानें लगाना चाहते हैं। अतः पाण्डाल समिति ने स्टाल बनाने का निश्चय किया है। स्टालस् १० × ५, १० × ८ और १५ × १० के होंगे और किराया क्रमशः १२), १८) और २५) बत्ती सहित होगा। पुस्तकें, पाठ्यसामग्री, मिनाकारी, तेल, साबुन कपड़ा, दूध, चाय, मिठाई, पूड़ी-साग इत्यादि के व्यापारी अपना-अपना स्थान रिजर्व करा लें।—दयाशंकर श्रोत्रिय, मंत्री

* * *

उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य प्रजा-परिषद् के नवें अधिवेशन की तैयारियाँ आरम्भ हो गई हैं। स्वागताध्यक्ष श्री माणिकलाल वर्मा; उपाध्यक्ष, श्री बलवन्तसिंह मेहता, श्री भूरालाल बया; स्वागत मंत्री, श्री मोहनलाल सुखाड़िया; अर्थमंत्री, श्री हीरालाल कोठारी, निवास मंत्री, श्री भवानीशंकर वैद्य स्वयंसेविका विभाग, श्री कमलाकुमारी श्रोत्रिय, स्वयं सेवक विभाग, डा० बख्तावरलाल जी भोजन मंत्री, श्री रोशनलाल जी बोडिया प्रदर्शिनी मंत्री, प्यारेचन्द जी बिश्नोई प्रचार मंत्री, श्री रमेशचन्द्र व्यास पाण्डाल मंत्री, श्री दयाशंकर श्रोत्रिय चुने गये हैं।

दिसम्बर में म्युनिसिपल चुनाव भी होगा। इस बार प्रजामंडल के भी २२ उम्मीदवार बोर्ड से खड़े होंगे।

राजस्थान महिला-विद्यालय का शिक्षक-सम्मेलन श्री सत्यप्रसन्नसिंह भण्डारी की अध्यक्षता में हुआ। चर्चा का विषय "भारतीय दृष्टिकोण से स्त्री शिक्षा" रखा गया था। श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय का सामयिक और महत्त्वपूर्ण भाषण हुआ। —संवाददाता

* * *

बीकानेर की प्रमुख अनुसन्धान संस्था श्री सादूल राजस्थानी-रिसर्च-इंस्टीट्यूट का प्रथम वार्षिकोत्सव दिसम्बर में बड़े समारोह के साथ होने जा रहा है। इस अवसर पर राजस्थान और गुजरात के प्रसिद्ध विद्वान् भारतीय विद्या-भवन के डायरेक्टर मुनि जिन-विजय भी पधारेंगे। —संवाददाता

* * *

सीकर (जयपुर) स्वर्गीय सेठ जमनालाल जी बजाज की स्मृति को चिरस्थायी रखने के लिए 'श्री कनीराम स्मृति ट्रस्ट' ने सीकर में 'बजाज-भवन' बनाने का निश्चय किया है। इस भवन की लागत अनुमानतः ३०,००० रु० होगी तथा ट्रस्ट-द्वारा स्वीकृत की गई स्कीम के अनुसार इसमें एक विशाल सभा-भवन जिसमें लगभग एक हज़ार आदमी बैठ सकेंगे और प्रजामंडल, खादी-भंडार आदि जनोपयोगी संस्थाओं के कार्यालय रहेंगे। इस सम्बन्ध में यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि उक्त ट्रस्ट की अभी हाल ही में श्री राधाकृष्णजी बजाज द्वारा क़रीब २५००० रु० की सम्पत्ति जिसमें एक स्कूल की सुन्दर इमारत और बजाज-भवन के लिए पर्याप्त जमीन है, दिये जाने से स्थापना हुई है। बजाज भवन के निर्माण-कार्य तथा धन-संग्रह का भार ट्रस्टियों ने ट्रस्ट के अध्यक्ष पंडित लादूराम जी जोशी और मंत्री श्री बद्रीनारायण जी सोढानी को सौंपा है। —संवाददाता

* * *

सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्त्री श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय।

रतनगढ़ में ता० १६ को साहित्य-मण्डल-भवन में एक बृहत् संगीत-सम्मेलन एवं कवि-सम्मेलन हुआ। सर्वश्री हीरालाल "पुलिस भावरमल चौधरी, बल्देव साहित्यरत्न, मोहन शास्त्री, रामकुमार गजानन शास्त्री आदि संगीतकार एवं कवियों ने भाग लिया। श्री अद्‌भुत शास्त्री भी जो कि 'राजपूताना हिन्दी साहित्यकार-सम्मेलन' का आयोजन करने डूंगरगढ़ आये हुए थे, यहाँ आये।

—संवावादाता

* * *

मण्डावा (जय पुर) हिन्दी-साहित्य समिति- रविवार १८ नवम्बर के 'देशदूत' में प्रकाशित नागरी प्रचारिणी सभा काशी के प्रस्ताव से पूर्णतया सहमत है और उसका समर्थन करती है। समिति भारत-सरकार के अर्थ-विभागीय मंत्री के पास तदनुसार अपनी सम्मतिभेज रही है।

—संवाददाता

* * *

डूंगरगढ़ में गोशाला में गोपाष्टमी महोत्सव बहुत ही सुन्दर ढंग से डाक्टर जोगेन्द्रसिंह के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। श्री डाक्टर भन्साली, कोडामल डांगा, देवीदत्त बी० ए०, भीष्मदेव विशारद, सांगीलाल वकील, प्रेमसुख व्यास, पंडित मालीराम शास्त्री, मुरलीधर जी वैद्य, कम्पाउंडर साहब आदि के भाषण हुए। गोशाला की वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई गई। अन्त में राजपूताना के प्रमुख साहित्यिक अद्‌भुत शास्त्री सम्पादक "मारवाड़ी गौरव" की गौ के महत्त्व पर पढ़ी गई कविता प्रभावशाली रही।

—संवाददाता

सी० ऐण्ड ई० मारटन लिमिटेड

'सी० ऐण्ड ई० मारटन, लिमिटेड, लन्दन, इँगलैंड' इस बात को जन-साधारण पर विदित कर देना चाहते हैं कि उनका जो कुछ अधिकार मिठाई के निर्माता 'सी० ऐण्ड ई० मारटन (इण्डिया) लिमिटेड' में था उसे उन्होंने बेच दिया है, अतः 'सी० ऐण्ड ई० मारटन (इण्डिया) लिमिटेड' के कार्यों से अब उनका किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं है।

माधवी-कंकण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुग़लों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आना।

इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

क्या विश्व-शान्ति की संभावना है?

(पेज ६ का शेष)

ख़ुल्लता को दूर करनी होगी। तब ही छोटे, बड़े राष्ट्र निर्भय होकर अपना अस्तित्व क़ायम रख सकेंगे, अन्यथा नहीं।

वास्तव में अच्छे बुरे की समस्या, व्यक्ति और राष्ट्र पर भी समान रूप से लागू होती है। दुष्ट राष्ट्र भले राष्ट्रों का इसी तरह शिकार करने में संलग्न है, जिस प्रकार बुरे आदमी भले आदमियों को त्रसित करते रहते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी सामान्यता की काफ़ी गुंजाइश है। अन्तर्राष्ट्रीय-संघ ने स्वास्थ्य, बुर्दाफ़रोसी तथा मजदूरों के विषय में क़ानून और नियम बना बनाकर लागू करने चाहे थे। यह इस दिशा मे श्री गणेश था। इस युद्ध ने लीग के शुभ कार्य को बड़ा धक्का पहुँचाया।

में जन्म से ही आशावादी हूँ। यदि आप मनुष्य-इतिहास का विवेचन करें, तो आप जानेंगे कि मनुष्य प्रगति की ओर ही अग्रसर हो रहा है। नित्यप्रति मनुष्य जाति की श्रद्धा क़ानून और इंसाफ़ में बढ़ रही है। सहयोग का पाठ उसने प्रारम्भिक अवस्था से ही सीखना शुरू किया था, जब वह एकाकी जीव के रूप में इस सृष्टि में विचरता था। जब अमीबा ने बहुआंगी जीव का रूप धारण किया, तो सहकारिता की ओर पहला क़दम उठाया गया। मनुष्य-समाज भी तो अनेक cells का एक छत्ता ही है। सहकारिता की ओर अगले क़दम थे—मनुष्य जाति का कुटुम्ब, कुल, जाति, प्रदेश और राष्ट्र के रूप में संगठन। पाश्चात्य जगत् आज से ५०० वर्ष पहिले ही समाज संगठन की इस सीढ़ी पर पहुँच गया था।

मनुष्य-समाज के विकास का अगला क़दम है अन्तर्राष्ट्रीय संगठन जैसे राष्ट्र के मातहत ज़िला और सूबे अपना स्वायत्त शासन प्राप्त कर चुके हैं, उसी तरह किसी अन्तर्राष्ट्रीय सत्ता के अन्तंगत राष्ट्रों को भी अपनी सीमित स्वतंत्रता से ही सन्तोष करना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय संगठन के लिए हम अमेरिका और रूस की संघ-प्रणाली से बहुत कुछ सीख सकते हैं। रूस और अमेरिका ने विभिन्न प्रदेशों का आत्म-निर्णय अथवा स्वायत्त स्वतन्त्रता के आधार पर संगठन किया है, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन भी उसी सिद्धान्त पर हम करना होगा। पहले योरप के देशों का एक संघ बने, फिर एशिया की बारी आयेगी।

यदि हम मानते हैं कि मनुष्य स्वभाव से सज्जन और मिलनसार है, जैसी कि मेरी धारणा है, तो हमें यह समझने में कठिनाई न होनी चाहिए कि मनुष्य जाति का अन्तिम सामाजिक लक्ष्य सार्वदेशीय अन्तर्राष्ट्रीय संघ के आधीन संगठन है। ऐसे अन्तर्जातीय संगठन के बिना विश्व-शान्ति स्वप्नमात्र ही रहेगी और हम लड़ते, झगड़ते हुए नष्ट हो जायँगे।

मलाया में राष्ट्रीय जागरण क्यों ?

(पेज ७ का शेष)

पर चीज़ों के दाम चौगुने अठगुने बढ़ गए हैं और उसके अनुपात में मजदूरी पहले से कम कर दी गई है। यद्यपि अंग्रेज़ों ने मलाया पर पुनः अधिकार के समय जापानी 'याकोहामा स्पैशी' बैंक से बहुत-सा सोना प्राप्त किया था और वह जनता की सुविधा के लिए जापानी मुद्राओं के बदले में सरकारी मुद्राएँ आसानी से दे सकती थी। मलाया की जनता जान गई है कि साम्राज्यवादी विदेशी हुकूमत से जनता की सुविधा की आशा करना व्यर्थ है। हुकूमत की इस नीति के कारण वहाँ ग़रीब भूखों मर रहे हैं। इस दशा से जनता को बचाने के लिए वहाँ की देश-भक्त पार्टियाँ लड़ रही हैं। जैसा कि एसोशिएटेड प्रेस के १५ तारीख़ की ख़बर से मालूम होता है, "सरकारी और ग़ैर-सरकारी समाचारों से ज्ञात हुआ है कि मलाया में अशान्ति के चिह्न बढ़ते जा रहे हैं। जगह जगह प्रदर्शन हो रहे हैं और कहीं कहीं ख़ून-ख़राबा भी हुआ है। जनता में जिनमें चीनी, मलायन, हिन्दुस्तानी सभी हैं राष्ट्रीयता की तीव्र लहर दौड़ रही है—हाल के समाचार बताते हैं कि सब पार्टियों (कम्युनिस्ट पार्टी का एकमात्र लक्ष्य जनतन्त्रात्मक प्राप्त करना है।

दक्षिण-पूर्व के एशियाई जहाँ कुछ काल पूर्व फासिस्ट ताण्डव हुआ था वहाँ साम्राज्यवादी अपने लगे हैं। फासिस्टों का के साथ मुक़ाबला करनेवाली पूर्व एशिया की देश-भक्त जमा संयुक्त संगठन के बल पर साम्रा जुए से छुटकारा पाने में भी होगी ऐसा विश्वास तो करना ही

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्वदेशी
नीलगिरि
नमूना
यूकॅलिप पेन बाम
दादकामरहम

शर्तिया
आराम पहुँचाती है
"डब्बा की गोली"
बालकों के निमोनिया और पसली खाँसी-जुकाम, बुखार दस्त कै करना इत्यादि पर।
यू० पी० आयुर्वेदिक फार्मेसी
बेलनगंज आगरा।

सिगरेट की एजेन्सी

हमारे उच्च श्रेणी के सिगरेट के लिए जो वर्जीनिया और पाइप टुबैको से तैयार किये गये हैं हर शहर और क़स्बों में एजेंटों और दूकानदारों की तुरन्त आवश्यकता है। सिगरेट के नमूने और एजेन्सी के क़ायदे व शर्तों के लिए फ़ौरन नीचे दिये पते पर पत्र-व्यवहार कीजिए—

नेशनल इंडिया सिगरेट कम्पनी,
16/DDA बेडन रोड—लाहौर।

माँ और बच्चा

इसके लेखक नामी चिकित्सक डाक्टर बोधराज चोपड़ा एम० बी०, सी-एच० बी० (एडिनबरा) हैं। यह पुस्तक अपने ढंग की अनुपम है। इसके ११ प्रकरणों में छोटे बच्चों की मृत्यु और उसके कारण, गर्भिणी माता, जन्म के समय से बालक की रक्षा, बच्चों को दूध पिलाना, दूध पिलानेवाली दाई, दूध छुड़ाना आदि आवश्यक विषयों की शिक्षा दी गई है। स्त्रियों की मृत्यु और रोगों को कम करने तथा छोटे बच्चों को मृत्यु से बचाने की दृष्टि से पुस्तक लिखी है। यों लेखक ने मनुष्यमात्र का उपकार किया है। अच्छे काग़ज़ पर छपी ढाई सौ से भी अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस लिमिटेड, इलाहाबाद

पचास सालकी राष्ट्रसेवा

दुनियामें नैसर्गिक समृद्धिमें हमारा देश जैसे बेजोड है वैसेही दरिद्रतामें भी है। अपनेही आचरण किये हुये स्वयंसमृद्धि तत्वपर उन्नति करनेवाले धंदेका साहस एक मार्गदर्शक के प्रेरणासे पचास साल पहले हुआ। मालको सुरक्षित रखनेकी धातुकी चीजोंकी आयात यहाँ कइ सालोंसे न होती थी। यहीं बननेवाले और उपयोगित साबुनोंमे ज्यादातरसे स्वदेशी ही है। इस दृष्टिसे उनका काम ठोस है। राष्ट्रीय योजनामें शास्त्रीय रीतिसे बनाये हुए टिकाऊ, और संकुचित अर्थव्यवस्था रखनेवालोंको भी साध्य होनेके लिये माफिक क़िमतवाले, संरक्षक और आसानीसे और दक्षतासे काम करनेको अवकाश देनेवाले सामग्रीकी देशको जरूर और शुद्ध वनस्पतिके तेलके साबुनोंकी भरमें वितरण और उपयोगसे देशके राष्ट्रीय योजनामें आवश्यक्ता है। गोदरेज कारी राष्ट्रोन्नतिके लिये है क्यों कि गोदरेज राष्ट्रीय संस्था है। हिंदी लोगोंसे उन्हींके पूंजीसे यहां ही बना हुआ गोदरेज तत्सम विदेशी मालसे योग्यतामें करता है। पौरात्य देशोंमें धातुके माल में गोदरेज सबसे बडे दस्तकार हैं। और उनके साबुनोंने इस 'गोदरेज' शब्दको घरगुती बना दिया है।

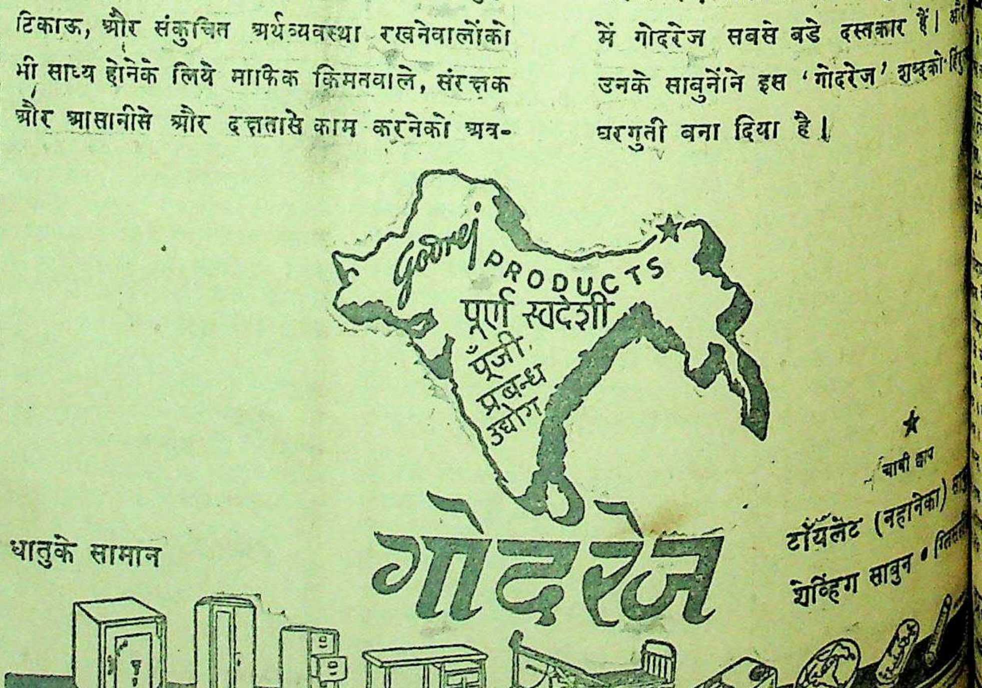

२ दिसम्बर, १९४५

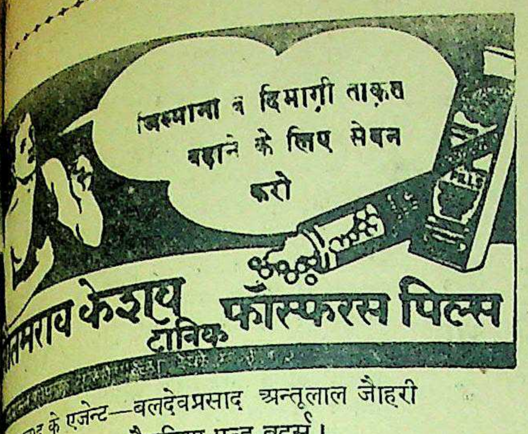
जिस्मानी व दिमाग़ी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
...मराव केशव टॉनिक
फॉस्फरस पिल्स

...बाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी
एल॰ एस॰ धौलकिया एन्ड ब्रदर्स।

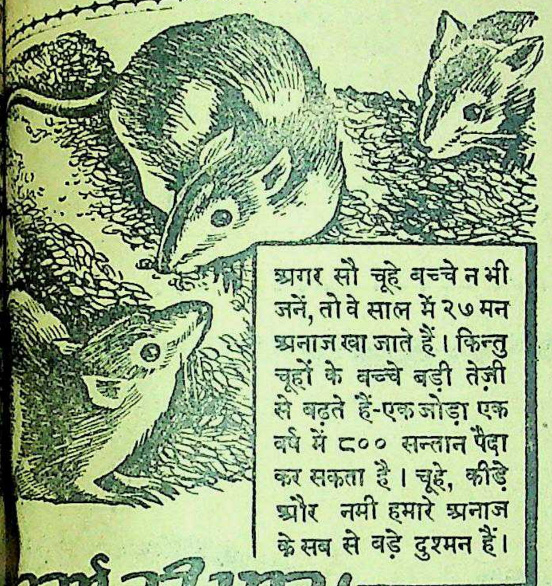

अगर सौ चूहे बच्चे न भी जनें, तो वे साल में २७ मन अनाज खा जाते हैं। किन्तु चूहों के बच्चे बड़ी तेज़ी से बढ़ते हैं-एक जोड़ा एक वर्ष में ८०० सन्तान पैदा कर सकता है। चूहे, कीड़े और नमी हमारे अनाज के सब से बड़े दुश्मन हैं।

...करों की भूख!

...१0,00,000 लाख टन अनाज प्रति वर्ष चट कर डालते हैं

...कीड़ों और नमी से अनाज की बरबादी न हो, तो इतने अनाज ...तक १ करोड़ ८० लाख व्यक्तियों को प्रति दिन आध सेर ...जा सकता है। अनाज भरने की वैज्ञानिक रीति का पालन ...इस बरबादी को रोका जा सकता है। चूहों-कीड़ों तथा सड़ने- ...अनाज को बचाने के कुछ सरल नियम यहां दिये जाते हैं।

...कीजिए

...ने से पहले सारे अन्न को ...और सुखा कर धरिए।

...सूखे गोदामों में ही अनाज ...और फ़र्श को रगड़ कर ...कीजिए; दीवारों में सफ़ेदी ...अनाज रखने से पहले ...फ़र्श के सूराखों को भरवा ...

...में पानी न जाता हो, उन्हें ...के काम में लाइए।

...में चूहे न जा सकते हों, ...भंडार बनाइए। सीमेण्ट और ...टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर ...के मुंह पर जाली लगा ...के दरवाज़ों को चिपक ...चाहिए।

...हो, अनाज को ढेर लगा ...। अगर बोरों में भरना हो, ...होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

ख़ुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और सम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

...बचाइए-देश की सेवा कीजिए

...आफ़ इण्डिया के फ़ूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

बालसखा का नया वार्षिकांक

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया। इसमें बहुत से चित्र, कवितायें, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। यह अङ्क जनवरी सन १९४६ में बड़ा सजधज के साथ प्रकाशित होगा और बालसखा के ग्राहकों को रियायती मूल्य में मिलेगा।

मैनेजर, बालसखा इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

भारत के प्रसिध्द साबुन की
नयी आकृति

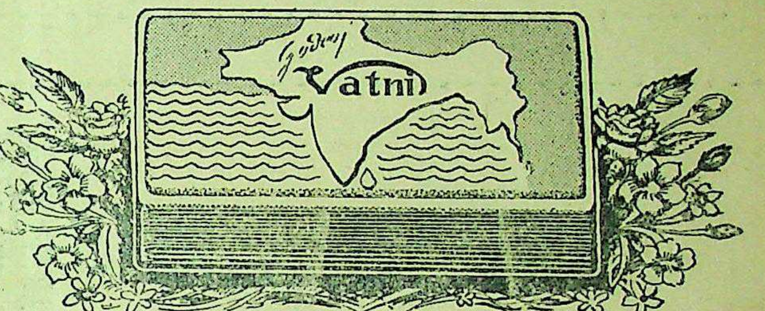

आपके मनपसन्द लम्बगोल 'वतनी' साबुन की पुरानी आकृतीमें सुंदर परिवर्तन किया है। इस नये रूपके वजनमें और विशिष्ट गुणोंमे कुछ भी घाटा नहीं है। आप इस हरी और सफेद दफ्तीके डिब्बेमें ठीक सटे हुए साबुनके रत्नको इसके परिचित छापसे पहचान लेंगे।

Godrej
Vatni
गोदरेज चाबी छाप वतनी
टायलेट साबुन

यह साबुन और इस का हरी व सफ़ेद दफ्ती का डिब्बा इन छापों के बिना असल नहीं।

छोटा वतनी Vatni (नयी आकृति): बड़े साबुन के अनुसार दफ्ती के डिब्बे में अलग मिल सकती है।

गोदरेज के दूसरे प्रसिद्ध चाबी छाप टायलेट साबुनो:

Godrej गोदरेज चाबी छाप ग्लीसरीन

No.1 Sandal Limda Khus
नं. १ सॅन्दल लिमडा खस
Shaving Stick Shaving Round
शेविंग स्टिक शेविंग 'राउँड'

गोदरेज सोप्स, लि०
बम्बई पी० ओ० जेकब सर्कल

बटन ! बटन !! बटन !!!

कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,
अमृतसर।

हिन्दी साहि

बाबू श्यामसुन्दरदास प्रणीत

मूल्य चार रुपये

हिन्दी में ऐसे ही इतिहास-ग्रन्थों की कमी है
इनी-गिनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें से बहुत-सी
और अधूरी हैं और बाकी अप्राप्य हैं। खासकर हिन्दी
का इतिहास पढ़नेवालों को कोई भी प्रामाणिक
उपलब्ध न होने के कारण बड़ी ही कठिनाई थी। इसी
को दूर करने के लिए हिन्दी के माने हुए विद्वान् तथा
बाबू श्यामसुन्दरदास ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी
साहित्य' का परिमार्जित और संशोधित संस्करण 'हिन्दी
नाम से उपस्थित किया है।

पुस्तक में केवल विभिन्न कालों का ऐतिहासिक
है, बल्कि विद्यार्थियों को विभिन्न कवियों की कविताओं
कराने के लिए उदाहरण-स्वरूप कविताएँ भी दी गई
साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में जितने भी नये
हैं, उन सबका इसमें समावेश किया गया है। इस
साहित्य के विद्यार्थियों के लिए यह एकमात्र पुस्तक
साहित्य की समस्त प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

भाइयो!...
चर्म-स्वास्थ्य के लिये
रैक्सॉना
प्रयोग कीजिये

जल्दी में यह धारण मत बनाइये कि रैक्सॉना केवल स्त्रियों के रंग को निखारने वाला एक नया साबुन है। चर्म स्वास्थ्य का महत्त्व जाननेवालों सब के लिए रैक्सॉना एक ज़रूरी टॉयलेट साबुन है। यह ऐसा ताज़गी और स्फूर्तिदायक साबुन है जिसे इस्तेमाल करके पुरुषों को आनन्द आता है।

इस आकर्षक, हरे, और शीघ्र फेन देनेवाले साबुनका ये सबसे बड़ा लाभ है कि यह स्वास्थदायक और चर्म-किटाणुविनाशक 'कैडिल' से बनाया गया है। रैक्सॉना का शीघ्र बननेवाला ज्यादा फेन स्फूर्ति और स्वास्थदायक 'कैडिल' को शरीर के प्रत्येक रुओं में-जहांसे सब चर्मरोग और दाग़ प्राय: शुरू होते हैं- पहुँचा देता है। ऐसे आपकी सारी त्वचा किटाणुरहित, मुलायम, और साफ़ हो जाती है।

अब आप जान सकते हैं कि नियमित रूप से रैक्सॉना का प्रयोग करने से आप निश्चित ही अपने चर्म को स्वस्थ और सुरक्षित रख सकते हैं। इसलिए इस हरे, और शीघ्र फेन देने वाले साबुन को इस्तेमाल करना शुरू कर दीजिए—और करते रहिए।

नोट—यह याद रखिए कि शारीरिक सौन्दर्य का एक मात्र आधार है चर्म-स्वास्थ्य। और एक पुरुष को भी चर्म को आकर्षक बनाने का उतना ही अधिकार है जितना कि एक स्त्री को।

बच्चों के लिए रैक्सॉना—बच्चे के लिए भी वही आदर्श साबुन है जो उसका पिता इस्तेमाल करता है। इसका चर्म-रक्षक फेन बड़ा कोमल है। बच्चों को रैक्सॉना से नहाइये-'कैडिल' को शरीर के ददोरों को मिटाने दीजिए और शरीर को रूखेपन से बचाइये।

★रैक्सॉना में मिलाया गया कैडिल किटाणु-विनाशक, स्वास्थ-दायक और ताज़गी देनेवाले तेलों का मिश्रण है जोकि चर्म को स्वास्थरखने में बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है। साइंसदानों ने भी इसके गुणों के कारण इसकी सराहना की है।

THE NEW
Rexona
MEDICATED SOAP
Rexona
अब!
आधिकाधिक
और सुगन्धी
देनेवाला

रैक्सॉना मरहम प्रयोग कीजिये।
फुन्सी, फोड़े, ऐकजीमा, मुँहासे, आंख की
कलौंस, झुर्रियां, ददौरे आदि सभी चर्म रोगों
मे रैक्सॉना मरहम लगाये। यद्यपि अभी लड़ाई
के दाम कम है फिरमी बहुत से दूकानदारों
के यहां थोड़े दिन मिल सकते हैं।

RP. 28-220-40 HI

REXONA PROPRIETARY

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [कि० मित्र-द्वारा इण्डियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible] रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—[illegible]

देशदूत

[वर्ष ८ संख्या १५]   सचित्र हिंदी-साप्ताहिक   रविवार ९ दिसम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

रत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस है कि पार्लामेंट के सदस्यों का रत जायेगा और वहाँ की राज तिका अध्ययन करके भारत को करने का उपाय सोचेगा।

र चर्चिल, सुना है रिटायर हैं। जान पड़ता है कि रिटायर वह मजदूर दल को चापर चाहते हैं। मिस्टर चर्चिल से बेतरह नाराज हैं क्योंकि में टोरी दल की जो करारी है उससे चर्चिल साहब के दिमाग मची हुई है। लेकिन अभी साहब की दाल गलनेवाली मजदूर सरकार का इस वक्त में बोलबाला है। अविश्वास का आया नहीं कि चर्चिल साहब धारोयार गई। मिस्टर एटली जो कुछ कर रहे हैं, उससे टोरी प्रसन्न ही होना चाहिए लेकिन साहब को शायद नाराजगी है कि पांच-छः वर्ष की लड़ाई तो और अन्त में जब मजा मारने आया तो कूद पड़ी मजदूर पार्टी! होनहार को क्या किया जाय? की अन्त में जब तकदीर ही फूट क्या करे मजदूर दल और क्या रल पार्टी!

* * *

ीय असेम्बली का चुनाव हो हिन्दू सीटों के लिए कांग्रेस की खड़े हुए प्रायः सभी उम्मीदवार गए। हिन्दू सभा के उम्मीदवार गये, यही नहीं उनकी जमानतें भी गईं। राष्ट्रीय मुसलमानों में दिल्ली से श्री आसफ़अली हार दी। इनके सिवा और भी लिम केन्द्रिय असेम्बली चुने हैं। मुसलिम लीग की होनेवाले सदस्य जरूर कुछ में चुने गये हैं। लेकिन प्रसन्न न होना चाहिए। है कि केन्द्रिय असेम्बली के वोटर हैं ज्यादातर वही दकियानूस, पैसेवाले और साम्प्रदायिकता के नाम पर हाय हाय करनेवाले। अगर लीग किसानों से वोट ले लेती तब तो कोई बात थी? नवाबों और नवाबजादों को वोट इसीलिये थोड़ा-बहुत मिल भी गया नहीं तो हवा ही खानी पड़ती। हाँ, अब प्रान्तीय असेम्बलियों का चुनाव आनेवाला है। इस चुनाव में जो वोटिंग होगी उससे लीग की ताक़त अजमाई हो जायेगी। बड़े की पूछ बड़े ही करते हैं। इसलिए नवाब साहबान प्रान्तीय असेम्बलियों के लिए खड़े हों तब बात समझ में आये भी। हाथ कंगन को आरसी क्या? मुसलिम लीग और उसके पाकिस्तान का फ़ैसला होना बाक़ी न रहेगा।

* * *

मुसलिम लीग के उम्मीदवारों ने केन्द्रिय असेम्बली के चुनाव में जिस तरह की धांधली मचाई है, उससे यह साबित है कि लीग कितनी प्रजातंत्रात्मक है? पाकिस्तान मिलने पर कितनी शान्ति के साथ शासन किया जा सकेगा यह भी अब साबित हो गया। बम्बई और कलकत्ता में श्री हुसेन भाई और श्री फजलुल हक़ के साथ लीगियों ने जो दुर्व्यवहार किया है वह काले अक्षरों में लिखा रहेगा। यह है मुसलिम लीग की चुनाव लीला, यह है उसकी डिमाक्रसी और यह है भारत के मुसलमानों का जबरदस्ती ठेका लेनेवाली जमात के कारनामें। फिर भी जनता आँखों में पट्टी नहीं बांधे है। वह समझती है कि यह है छिछोरपन! लेकिन सब दिन जात न एक समान। कांग्रेस तथा राष्ट्रीय मुसलमान अंत में विजयी होंगे, लीग अपना सा मुंह लिए बैठी टुकुर टुकुर देखती रहेगी और पाकिस्तान के नाम की माला जपती रहेगी।

* * *

भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस आख़िर में बोल ही पड़े। और बोले भी तो बड़ा लाजवाब! फिर वही पुरानी और कायदे-क़ानून वाली बातें शुरू हो गई। अब पार्लामेंट के कुछ सदस्य हिन्दुस्तान पधारेंगे और यहाँ के विभिन्न राजनैतिक दल के नेताओं से मिलेंगे और कुछ ऐसा उपाय निकालेंगे जिससे भारतवर्ष को स्वराज्य मिल जाये। क्या ख़ूब! जान पड़ता है कि भारत सचिव महोदय कोई नई बात करने जा रहे हैं? हमारी ब्रिटिश सरकार तो आवागमन की पूरी क़ायल है ही। उसका काम सदा काग़जी घुड़दौड़, शब्द-जाल और आशावादिता के आधार पर चलता ही रहा है। सर रेमजे मेकडानलड जब प्रधान मंत्री थे तो उन्होंने भी लन्दन में एक राउंड टेबुल कान्फ्रेंस बुलाई थी और भारतीय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को इकट्ठा करके खासी कहा-सुनी कराई गई किन्तु अन्त में मिला क्या? वही ढाक के तीन पात! चूंकि भारतीय राजनैतिक दलों में एकता नहीं है इसलिए सरकार क्या करे? लार्ड पेथिक लारेंस फिर वही काम करने जा रहे हैं। और करें क्यों न बुजुर्गों ने जो रास्ता दिखाया है, आगे की पीढ़ी वालों को उसी पर तो चलना ही चाहिए? नया रास्ता कहाँ से बनायें और क्यों बनायें, जब कि पके पकाये हलुये से ही काम चल सकता है। अपने राम की राय में मजदूर दल पार्लामेंटरी प्रतिनिधि-मंडल भेज कर नया नाटक न करे तो ज्यादा बेहतरीन है। बेकार लाखों रुपये की बरबादी और वक्त की ख़राबी! अंत में होना तो वही है, जिसे भारतीय जानते हैं। फिर इस तरह की आवाजाही से क्या लाभ?

* * *

हाँ, इक बात जरूर है। अब तक तो टोरियों का शासन था किन्तु आज मजदूर दल शासन कर रहा है। और कुछ न सही तो एक बार भारत-भ्रमण तो हो ही जायेगा। भारतीय नेताओं से मेल-मुलाकात हो जायेगी, चाय, पानी, नाश्ता और ऐशोआराम की शगल रहेगी। ऊँचे दर्जे की राजनीति पर बहस-मुबाहसा होगा। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मुस्लिम लीग के सर्वेसर्वा मिस्टर जिन्ना से मुलाकात होगी और 'पाकिस्तान' की असलियत समझ में आयेगी। शहरों में जहाँ तक मोटर और रेल जायेगी, मजदूर प्रतिनिधि मंडल घूम-घूमकर हिन्दुस्तान की ४० करोड़ जनता को पहचानने, समझने और जानने का लाभ प्राप्त करेगा। इसलिए अपने राम की राय में लार्ड पेथिक लारेंस का सुझाव बुरा नहीं है, एक क़िस्म से अच्छा ही है क्योंकि इस वक्त भारत भ्रमण की जरूरत भी है, साथ ही साथ अगर स्वराज्य भी किसी तरह से दिया जा सके तो इससे बढ़कर दूसरा पुण्य और क्या हो सकता है?

* * *

तीन महान राष्ट्रों में अब खटपटाध्याय प्रारम्भ हो गया है। आजकल दो—अमरीका-ब्रिटेन—एक तरफ़ और रूस दूसरी तरफ़ नजर आ रहे हैं। रूस अपना ताना-बाना बुनने में व्यस्त है और अमरीका--ब्रिटेन मेल-मुहब्बत से अपना। देखना है इस ताने-बाने की बुनाई से कौन-सा फल मिलता है? रूस योरप और एशिया दोनों महाद्वीपों पर अपना प्रभुत्व चाहता है और अमरीका--ब्रिटेन अपना। समझ में नहीं आता कि दुनिया का इन तीन चाहनेवालों से कब उद्धार होगा? अपने राम की राय में अब ऐसा वक्त आनेवाला है

संयुक्त प्रांत के गवर्नर सर मारिस हैलेट ने गत ६ दिसंबर को अपने पद से अवकाश ग्रहण किया है।

जब कि तीसरी लड़ाई के आनन्द प्राप्त करने का मौका मिलेगा। क्योंकि न रूस अपनी हठ छोड़ेगा और न अमरीका-ब्रिटेन अपने चौधरियाने को तलाक़ देंगे, तो फिर मेल कैसे होगा? योरप और एशिया में फिर एक बार युद्ध की दुन्दुभी बजेगी, आज न सही कल और कल न सही परसों। साल, दो साल या तीन साल बाद सही। समय की प्रतीक्षा करना बुद्धिमानों का काम है और जल्दबाज़ी करना मूर्खों का। लेकिन तीनों महान राष्ट्र तो बुद्धिमानी के अवतार हैं किसको मूर्ख समझा जाये और किसे बुद्धिमान!

* * *

विदाई का दिन भी ज़िन्दगी में एक अनुपम अवसर है। किसी की प्रसन्नता से विदाई होती है और किसी की फजीहत से। हमारे प्रान्त के गवर्नर सर मारिस हैलेट की गत ६ दिसम्बर को प्रान्त की गवर्नरी से मुक्ति मिल गई। लेकिन अपने राम की राय में यह विदाई फजीहतवाली ही हुई। पंडित जवाहरलाल नेहरू, डाक्टर कैलाशनाथ काटजू, श्री संपूर्णानन्द और श्री रफीअहमद किदवई ने सर मारिस के शासन काल को हमारे प्रान्त का अभिशाप बतलाया है। जो कुछ भी है सर मारिस हैलेट को जनता में लोकप्रियता नहीं मिली और मिली फजीहत। हाँ, सरकारी हुक्कामों, राजा, रईसों और नवाबों में उनके समान न इस कलियुग में कोई पुण्यात्मा हुआ और न शायद आगे होगा ही। सर मारिस हैलेट का भाग्यचक्र देखिये कि कांग्रेस मिनिस्ट्री के पूर्व इस प्रान्त में आये और अब जब कि कांग्रेस मिनिस्ट्री फिर आनेवाली है, यहाँ से रफूचक्कर हो रहे हैं। भाग्यवान पुरुष ऐसे ही होते हैं। क्योंकि अभागे होते तो अभी रही जाते और रही-सही जो थोड़ी बहुत बाकी है, उसका भी दिवाला पिटवा कर जाते। क्यों नहीं, इसीलिये तो सर मारिस हैलेट बुद्धिमानी के महापुरुष और अवतार—भारत सरकार की दृष्टि में—समझे जाते हैं?

* * *

सम्पादक का पृष्ठ

क्या तीसरा महायुद्ध छिड़ेगा?

क्या तीसरे महायुद्ध के छिड़ने की आशंका है? यह प्रश्न भी आज-कल की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक प्रमुख विषय बन रहा है। इसका मुख्य कारण यह जान पड़ता है कि दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद ही तीन महान् राष्ट्रों—अमरीका, ब्रिटेन और रूस—ने संसार में शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के लिए जो बीड़ा उठाया था, उसकी पूर्ति में कुछ पारस्परिक मतभेद उत्पन्न हो गया है। इन पूंजीवादी महान राष्ट्रों का वास्तविक लक्ष्य संसार पर आर्थिक, सैनिक तथा राजनैतिक प्रभुत्व बनाये रखना है। अमरीका ने इस युद्ध में जितनी सक्रियता दिखलाई है और अंत में जब कि उसने जापान को भी पराजित कर दिया तो उसकी ऐसी इच्छा होना अनिवार्य है कि उसका प्रभुत्व सर्वोपरि होना चाहिए। विशेष कर एशिया में वह पहले से अधिक अपनी स्थिति को मजबूत बनाना चाहता है। उधर रूस ने जर्मनी को पराजित करने में काफी सक्रियता दिखाई है इसलिए वह भी, कम से कम अमरीका से प्रभुत्व स्थापना में किसी प्रकार भी घटकर नहीं रहना चाहता। रूस अपने को एशियाई राष्ट्र भी समझता है। इसलिए एशियाई युद्ध में किसी प्रकार के सक्रिय भाग न लेने पर भी वह यह कदापि नहीं चाहता कि दूसरी दुनिया के राष्ट्र (अमरीका) का प्रभुत्व एशिया पर भी स्थापित हो जाये। रह गया ब्रिटेन उसने पिछले युद्ध में जिस नीति को ग्रहण करके सक्रियता दिखलाई है और अमरीका से उसका गठबंधन हुआ है, उसका व्यापक प्रभाव आज भी वर्तमान है। ब्रिटेन इस दशा में अमरीका का सहयोगी है। यद्यपि एशियाई तथा योरोपीय राजनीति में अमरीका और ब्रिटेन में भी थोड़ा-बहुत मतभेद है किन्तु जहाँ रूस का प्रश्न है वहाँ ब्रिटेन अमरीका के साथ है। जर्मनी के बँटवारे तक तो इन महान् राष्ट्रों की नीति में विशेष मतभेद नहीं प्रकट होता था किन्तु पोट्सडम सम्मेलन तथा जापानी पराजय के बाद एशिया के बँटवारे तथा समझौते, लन्दन में होनेवाले वैदेशिक मंत्री सम्मेलन के आपसी मतभेद और एटम बम के मामले को लेकर अमरीका, ब्रिटेन तथा रूस में मतभेद की खाई और गहरी होती गई और अब तो चीन और ईरान की समस्या से यह स्पष्ट प्रमाणित हो रहा है कि महान् राष्ट्रों का आपसी मतभेद कहीं अन्त में तीसरे महायुद्ध का कारण न बन बैठे?

अब यह स्थिति और भी आशंका से युक्त जान पड़ती है। इस समय ईरान की समस्या को लेकर रूस कुछ अधिक उग्रवादी बन बैठा है। वह अमरीका और ब्रिटेन की बात मानने को तैयार नहीं है। ईरान ने सोवियट सरकार को एक पत्र भेज कर अपनी रानाज़ी प्रकट की है कि कुरदिस्तान में उपद्रवकारियों को रूसी सहायता मिलती है। रूसी उत्तर से दक्षिण में रसद भेजने में बाधा डालते हैं साथ ही उत्तर में ईरानियों-द्वारा अफ़सरों की नियुक्ति में भी बाधा डाली जाती है। ईरान के विरोध में भेजे गये पत्र का उत्तर देते हुए रूस की ओर से कहा गया है कि एक मित्रराष्ट्र होने के नाते रूस ने अपने कठिनतम समय में—मई १९४३ में तेहरान में २५,००० टन गेहूँ भेजकर ईरान की सहायता की थी। युद्ध के समय अन्य सामान भेजकर भी रूस ने ईरान की जनता की सहायता की थी। सोवियट के सैनिक प्रतिनिधियों ने ईरान की कानूनी कारंवाइयों में हस्तक्षेप नहीं किया। वरन् ईरान के कानूनों के ही आधार पर सोवियट नागरिकों तथा रूसी संस्थाओं के हितों की रक्षा की। सोवियट प्रतिनिधियों के लिए यह बिलकुल स्वाभाविक ही था कि वे ईरानी सरकार-द्वारा रूसियों पर चलाये गये मामलों में दिलचस्पी लेते। जिन ईरानियों ने रूसियों के साथ ज्यादती अथवा उनके प्रति अपराध किया था उनकी खोज में दिलचस्पी लेना कानूनी कारंवाई में हस्तक्षेप करना नहीं कहा जा सकता। चाहे जो हो उत्तरी प्रान्तों में जो गड़बड़ी हुई थी वह ईरान के राजनीतिक दलों का झगड़ा था और वस्तुतः वह ईरान का घरेलू मामला था। रूस के प्रतिनिधियों और सैनिक अधिकारियों ने ईरान के उत्तरी मामलों में न कभी हस्तक्षेप किया और न वे इस समय ही कर रहे हैं। १९४२ में जो संधि हुई थी रूस की ओर से सदा उसका पालन होता रहा है। बल्कि ऐसा अवश्य हुआ है कि ईरान ने ही कुछ शर्तों का पालन नहीं किया है जैसे उत्तरी प्रान्तों में शान्ति बनाये रखना। अन्त में रूस का कहना है कि ईरान में तथा उसके उत्तरी प्रान्तों में और अधिक सेना लेना बिलकुल अनावश्यक है।

यही नहीं रूस ने उत्तरी ईरान में किसी प्रकार के हस्तक्षेप का घोर विरोध करते हुए यह भी प्रकट किया है कि यदि ख़ून-ख़राबी होगी तो उसकी जिम्मेदारी ईरान सरकार को उठानी पड़ेगी। रूस के इस प्रकार के रुख को देखकर दक्षिण में अमरीकन और ब्रिटिश फ़ौजें भी बग़दाद आदि में एकत्रित हो रही हैं। क्योंकि रूस के इस कड़े रुख़ से युद्ध की भावी आशंका तीव्र जान पड़ने लगी है। जो कुछ भी हो, वास्तव में यह तनातनी आपसी स्वार्थों का है, इसमें सन्देह नहीं। ईरान के तेल की ओर इन महान राष्ट्रों की आँखें लगी हुई हैं।

उधर चीन में स्वतंत्र चीन और कम्युनिस्टों के युद्ध से भी तीसरे युद्ध की आशंका प्रबल होती है। इस समय अमरीका का प्रबल कर रहा है। रूस और वर्ष की जो संधि हो चुकी है, राष्ट्र को असह्य है। अमरीका जापान पर विजय प्राप्त कर की ओर आकर्षित होना अनिवार्य है। चीन ऐसे विशाल को अमरीका अपने प्रभुत्व से दूर रखना नहीं चाहता। और अमरीका में चीन के प्रश्न को भी गहरा मतभेद चल रहा है। राष्ट्र उसे अपने अपने प्रभुत्व में लिए लालायित हैं।

इस प्रकार योरोप और महान् राष्ट्रों के स्वार्थ का रूप धारण करता जा रहा है पारस्परिक सदव्यवहार की हुई तो तीसरे महायुद्ध की अनिवार्य है। ब्रिटेन तो इस गामी नहीं बन रहा है किन्तु अमरीका रूस का मतभेद उग्र रूप ग्रहण रहा है। अभी अभी संसार को छः वर्ष के युद्ध से मुक्ति शान्ति-सुरक्षा का वातावरण प्रारम्भ भी नहीं हुआ है और में यदि तीसरे महायुद्ध का प्रारम्भ तो सचमुच संसार के विनाश की की कल्पना की जा सकती है। हम तो यही कहेंगे कि साम्राज्य अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए मोल न लें। किन्तु संसार का शान्ति, सुरक्षा की कब स्थापना यह भी चिन्ता का एक प्रधान है ही।

वर्धा में स्थित अखिल भारतीय तालीमी संघ के प्रधान मंत्री श्री आर्यनायकम्।

राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद

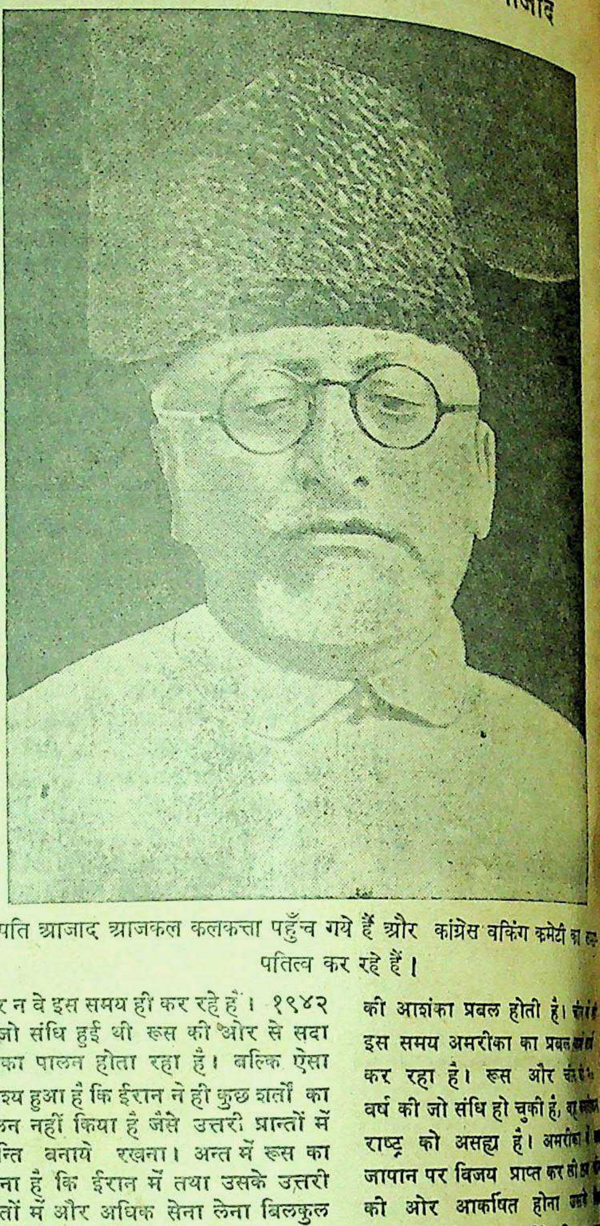

राष्ट्रपति आजाद आजकल कलकत्ता पहुँच गये हैं और कांग्रेस वर्किंग कमेटी का
पतित्व कर रहे हैं।

महात्मा गांधी कलकत्ता जाते हुए वर्धा स्टेशन पर रेल में सवार होने जा रहे हैं। श्री किशोरीलाल मशरूवाला बापू को डिब्बे में बैठने के लिये सहायता दे रहे हैं।

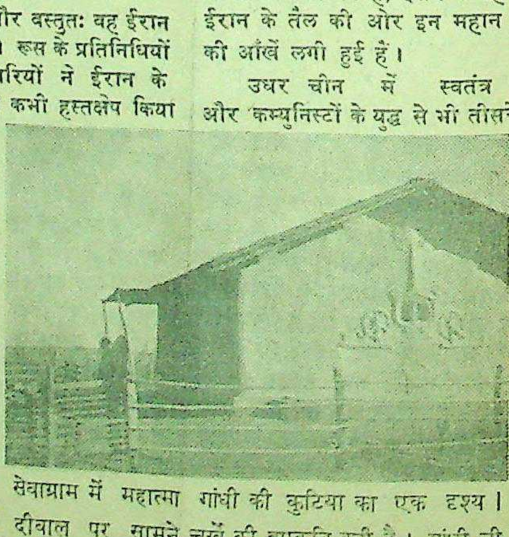

सेवाग्राम में महात्मा गांधी की कुटिया का एक दृश्य। दीवाल पर सामने चर्खे की आकृति बनी है। गांधी जी इसी कुटिया में निवास करते हैं।

स्वतंत्र चीन की आधुनिक सेना

संसार के सैनिक इतिहास में बलिदान करनेवाली

स्वतंत्र चीन की सेना सैनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। चीनी सेना ने वर्ष तक लगातार जापान से युद्ध करके अपने राष्ट्र की रक्षा की और वही सेना कम्यूनिस्ट सेना से युद्ध करती हुई अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा में है। इस छोटे और सुंदर लेख में चीनी सेना का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

मार्शल च्यांग काई शेक, सुना जाता है वाशिंगटन जाकर, प्रेसिडेंट ट्रूमन को चीन की पूरी जानकारी देना चाहते हैं।

चीन की सेना आधुनिक है। वर्त- चीनी सेना मार्शल च्यांगकाई की सृष्टि है। मार्शल ने चीनी सेना आधुनिक सैनिक शिक्षा ही नहीं दी, उनमें जोश और आदर्श भी उत्पन्न किया है। पहले तो उन्होंने अफसरों शिक्षा का उचित प्रबन्ध किया। मिलिटरी एकाडमी' स्थापित करके नवयुवकों को छाँटकर उसमें शिक्षा और उन्हें आधुनिक सैनिक- में पूर्ण शिक्षा दी। उनके द्वारा नई चीनी सेना का संगठन किया समय आश्चर्यजनक काम कर है।

चीनी सैनिक की गर्मी की वर्दी में कोट, हाफपैंट, चप्पल, पट्टी और घास की हैट होती है। उसे बरसाती जाती और न उसे तंबू ही मिलता किसी अफसर को छाता मिल है। अपनी बंदूक, बैनट और गोलियों अतिरिक्त उसको जो सामान लादकर पर जाना पड़ता है उसका बोझ सेर होता है जिसमें उसके एक के खाने के लिए चावल भी रहता

काई शेक आजकल चुंगकिंग में विराजमान हैं।

साधारण सिपाही का मासिक वेतन चीनी डालर है। आजकल दूसरे मुद्रा के विनिमय में इन आठ का मूल्य बहुत कम है। भारतीय शायद पूरा एक रुपया भी नहीं है। के सिवाय भोजन भी मिलता उसके परिवार को खाने के लिए और हर छमाही में कुछ कपड़ा जाता है जिससे वे इच्छानुसार कपड़े । अफसरों का वेतन कुछ अधिक को ९८ डालर (चीनी) प्रति- मिलता है। उन्नति होने पर प्रत्येक ४० डालर वेतन बढ़ता जाता कप्तान को ९८ + ४० = को १३८ + ४० = १७८, को १७८ + ४० = २१८, को २१८ + ४० = २५८, मेजर को २५८ + ४० = २९८, लफ्टंट को २९८ + ४० = ३३८ और को ३३८ + ४० = ३७८ वेतन मिलता है।

किन्तु सेना की योग्यता और शक्ति वेतन से नहीं नापी जा सकती। उस असली मापदण्ड उसका जोश, कष्ट सहिष्णुता, साहस और लगन हैं। चीनी सिपाहीं को दिन भर में खाने के लिए एक सेर चावल दे दीजिए और वह कड़े से कड़ा काम करने और भयंकर से भयंकर युद्ध में कूद पड़ने को तैयार है। उस बेचारे को बहुधा तरकारी भी नहीं मिलती मांस या दाल की तो चर्चा ही नहीं होती। सेर भर चावल के बल पर वह जापान की दुर्दमनीय सेना से आठ साल से लोहा ले रहा था। उसने बर्मा की सीमा के दुर्गम पहाड़ों की कल्पनातीत कठिनाइयों से लड़कर सड़क बना डाली थी। उसने चीन के भयानक दर्रों को सैनिक सामान लेकर पार किया है और सहिष्णुता के ऐसे काम किये हैं जिनको देखकर दाँतों के नीचे उँगली दबानी पड़ती है। इसी सेना ने छः वर्षों में कम से कम दस लाख जापानी सिपाहियों को मौत के घाट उतारा और प्रायः बीस लाख को घायल किया था। प्रायः ३००० लड़ाइयाँ लड़ीं। यद्यपि अपने साठ लाख सिपाही खेत रहे या बेकाम हुए, फिर भी शक्ति बढ़ाकर अपनी संख्या पचास लाख सिपाहियों की कर ली। उसने दो लाख टन भारी मशीनें जापानियों के हाथों से बचाने के लिए नगरों से हटाकर सैकड़ों मील दूर, पहाड़ों को पार कर, सुरक्षित स्थानों में पहुँचाई। उत्तरी बर्मा से चुंकिंग तक सड़क तैयार की और अंत में उसने आधुनिक हथियारों की कमी होते हुए भी दस लाख जापानी सेना को चीन में फँसा रखा था जिसके कारण बर्मा, मलाया, जावा, फिलिपाइन आदि में जापानी सेना ठीक तरह से कुमक नहीं भेज सकती थी। चीनी सेना का अब तक का काम बड़ा ही प्रशंसनीय रहा है और वह संसार के इतिहास में अमर रहेगा।

चीन की राजधानी चुंगकिंग में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता। बायें से दाहिने—चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी चू-दन-ली, कम्युनिस्ट पार्टी के प्रधान माउत्से तुंग और अमरीकन राजदूत पैट्रिक हुर्ले।

प्रदीप शलभ से—

लेखक, श्री जगन्नाथ, एम० ए०

धीरे धीरे जलो सनेही !
सारी रात अभी जलना है,
पार अँधेरे के चलना है;
साथ न छोड़ो, चलो सनेही।
आतुरता करती अनर्थ है,
असमय का बलिदान व्यर्थ है;
अपने को मत छलो सनेही।
रात समय पर ही जायेगी,
उषा समय पर ही आयेगी;
चिन्ता में मत गलो सनेही।
जहाँ समय की उचित प्रतीक्षा,
मिलती वहीं विजय की दीक्षा;
जय-पथ से मत टलो सनेही।

फारस का तेल

संसार के तीन महान् राष्ट्रों की गृद्ध-दृष्टि लगी है

लेखिका, श्रीमती राजरानी सप्रू, बी० ए०

फारस के तेल पर आज संसार के राष्ट्रों की आँख लगी हुई है, यह देश संसार के तेल-उत्पादक देशों में चतुर्थ है। सन् १९४० में फारस में १,०४,४९,००० मेट्रिक टन पेट्रोल पैदा हुआ था। सन् १९४१ की प्रारम्भिक संख्या भी १,०३,-५२००० मेट्रिक टन है। फारस में तेल-उत्पादन का कार्य करनेवाली कम्पनियों में सबसे प्रमुख कम्पनी एँग्लो इरानियन आएल कम्पनी है।

फारस के तैल-क्षेत्र अधिक संख्या में फारस की खाड़ी के तट पर स्थित हैं। उत्तर में इराक की सीमा के निकट भी एक छोटा सा तैल-क्षेत्र है। इन क्षेत्रों से प्राप्त होनेवाले तेल को साफ करने के लिए तीन बड़े कारखाने हैं जिनका पाइप-लाइनों-द्वारा तैल-क्षेत्र से सम्बन्ध है। सबसे बड़ा कारखाना फारस की खाड़ी के ऊपरी भाग में स्थित अबादन नगर में है। यह कारखाना संसार के तेल साफ करनेवाले बड़े कारखानों में समझा जाता है। बंदर शापुर में भी एक नया कारखाना खोला गया है। और उत्तर में करयनशाह में भी तेल साफ करने का एक छोटा सा कारखाना है।

इन कारखानों में प्रतिवर्ष १,६०,-००,००० टन तेल साफ किया जा सकता है जिसमें अबादन के कारखाने में ही १,४०,००,००० टन तेल साफ किया जा सकता है। अबादन के कारखाने में बहुत मात्रा में उच्च श्रेणी की आक्टेन स्प्रिट बनाई जाती है।

फारस के अन्य खनिज पदार्थों की अभी खोज नहीं की गई। तेहरान के निकट कोयला भी पाया जाता है, इसके अतिरिक्त लोहा, और ताँबा भी तेहरान के निकट अल्प मात्रा में मिलता है। सीसा, जस्ता, मैंग्नीज़, निकेल आदि धातु भी पाई जाती है।

सोवियट रूस को रण-सामग्री पहुँचाने के मार्ग में फारस का स्थान महत्त्वपूर्ण है। उसकी रेलों और सड़कों द्वारा ब्रिटेन और संयुक्त-राष्ट्र अमरीका से युद्ध-सामग्री ले जाई जाती है।

अभी हाल में ट्रान्स पर्सियन रेलवे में बहुत से सुधार किए गए हैं। और उस लाइन पर काम में आने के लिए बहुत से इंजिन और गाड़ी के डिब्बे ब्रिटेन तथा अमरीका से मँगाये गए हैं। इंजिनों में कोयले के स्थान पर तेल प्रयोग में लाने की व्यवस्था की गई है।

विश्व कवि रवीन्द्रनाथ

हिन्दी में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ के विषय में अब तक जितनी पुस्तकें लिखी गई हैं उनमें यह सब से-बड़ी है। इसमें रवीन्द्रनाथ की अन्तिम रचनाओं तक की चर्चा आ गई है। अनेक स्थानों से पुष्परस लाकर यह मधुचक्र बनाया गया है। रवीन्द्रनाथ कवि, लेखक, नाटय-कार, कहानी और उपन्यासों के लेखक सब कुछ थे। उनको समझने में यह पुस्तक बड़ा काम देगी। हिन्दी के नामी पत्रों और विद्वानों ने इस पुस्तक की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ५) पाँच रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

६१वीं वर्ष-गाँठ के अवसर पर

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद

सत्य-अहिंसा और त्याग के राष्ट्रीय कर्णधार

लेखक, राजनीति का एक विद्यार्थी

> देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद की ६१वीं वर्षगांठ सारे देश में बड़ी धूमधाम से मनाई गई। राजेन्द्र बाबू हमारे देश के महान् त्यागी और कर्मठ कर्णधार हैं। इस लेख में राजेन्द्र बाबू के जीवन पर एक विखरा प्रकाश डाला गया है जिससे आपके सरल, त्यागमय और राष्ट्रीय जीवन का कुछ आभास मिलता है।

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी में शामिल होने जा रहे हैं।

सादगी, सरलता और पांडित्य के साथ ही सौजन्य की मूर्ति राजेन्द्रबाबू को देखकर किसका मस्तक श्रद्धा से न झुक जायेगा? इस महापुरुष ने अपने शरीर को देश तथा समाज की सेवा में खपा डाला है। अब जो कुछ बचा है केवल आत्मा की निखरी हुई ज्योति है। परार्थ में काम करते रहने की तो ऐसी आदत है कि इस अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के नेता के पास हमने लोगों को अपनी सड़क या नाले-परनाले का दुखड़ा लेकर आते देखा है और राजेन्द्रबाबू उसी के काम में ऐसी दिलचस्पी लेने लगते हैं जैसे वे देश की कोई विकट समस्या सुलझा रहे हों। अपने साथियों या मित्रों के लिए वे तुरन्त ही परिवार के नेता बन जाते हैं और फिर तो शादी-ब्याह करा देना, किसका बच्चा कितना बड़ा है, क्या पढ़ता है, कहाँ नौकरी करता है, हर एक बात की खोज-खबर वे अनायास ही रखते हैं। विपत्ति का साथी इनसे बड़ा कोई नहीं है। इनकी सरलता का लोग अनुचित लाभ भी उठाते हैं। ऐसे व्यक्ति का बिहार में इतना आदर है कि इनके नाम पर करोड़ों व्यक्ति प्राण तक दे सकने के लिए तैयार हों तो आश्चर्य क्या है? वास्तव में किसी प्रान्त में एक ही व्यक्ति ने ठोस संगठन का इतना अधिक काम नहीं किया है जितना राजेन्द्रबाबू ने।

डा० राजेन्द्र प्रसाद को डाक्टर ऑफ ला की सम्मानित उपाधि पटना विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई है। वैसे आपने एम०, ए०, एम०, एल की परीक्षा पास की है और क़ानून में सबसे ऊँची डिग्री हासिल की है। सन् १८८४ में आपका जन्म हुआ था और शिक्षा इत्यादि सब कलकत्ता में ही हुई। वहीं, कलकत्ता हाईकोर्ट में आपने वकालत शुरू कर दी तथा वकालत चमकी भी खूब। प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, योग्यता तो प्रगट हो ही जाती है। कलकत्ता के प्रवास के कारण ही बंगालियों से आपकी काफी घनिष्ठता हो गई और वे इनका बड़ा आदर करते हैं। राजेन्द्रबाबू की न्याय-प्रियता तथा सत्यनिष्ठा देखकर ही बिहार में बंगालियों नें तथा बिहारियों में बढ़ते हुए मनोमालिन्य को दूर करने के लिए सर जगदीशचन्द्र बोस ने आपके पास एक लाख रुपये का कोष रखा दिया था। इस कोष के द्वारा बंगाली-बिहारियों में सद्भाव उत्पन्न करने का काम बना रहा है।

कांग्रेस में शामिल होने के बाद तथा राजनैतिक सेवा के कार्य में पड़कर वकालत तो छोड़ देनी पड़ी। घर का कारबार बड़े भाई श्री महेन्द्र प्रसाद देखते थे। उनके निधन से राजेन्द्रबाबू को बड़ा शोक हुआ। जो हो, पच्चीस वर्ष से आप आल-इंडिया कांग्रेस कमेटी के सदस्य हैं। १९३४ में उसके ४८वें अधिवेशन के सभापति रह चुके हैं। तथा १९३९ में उनको पुनः कुछ समय के लिए कांग्रेस का सभापति बनना पड़ा था। शिमला सम्मेलन के अवसर पर कांग्रेस की ओर से वाइसराय के पास केन्द्रीय सरकार के मंत्रियों के पद के लिए जो नाम भेजे गये थे उनमें आपका भी नाम था।

राजेन्द्रबाबू सत्य-अहिंसा के साकार उदाहरण हैं। इनकी तपश्चर्या तथा साधना महान है। किसी देश में ऐसे योग्य व्यक्ति विरले ही जन्म लेते हैं। उनका जो निजी महत्व है, वह शब्दों में व्यक्ति नहीं किया जा सकता। गांधी जी के आदर्श उनके आदर्श हैं। राजेन्द्र बाबू शब्दार्थों में माथा-पच्ची न कर के उसके भावों को अधिक अपनाते हैं। उनका और गांधी जी का संबंध बहुत पुराना है। गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका से लौटे, तभी से राजेन्द्रबाबू उनके साथ हैं। पूर्वीय भारत में सर्व प्रथम वे ही गांधी जी के अनुयायी बने। राजेन्द्र बाबू के अपने प्रान्त बिहार (चम्पारन) में जब बापू गए, तब यह संबंध और घनिष्ट हो गया। सच्चे अर्थों में राजेन्द्र बाबू दीनबन्धु हैं। उनके कार्यों से चिढ़ कर बिहार सरकार ने २४ घंटे में उन्हें प्रान्त से निकल जाने की आज्ञा दी—उन्होंने आज्ञा भंग की। अदालती झंझट फैला किंतु अंत में सरकार को ही झुकना पड़ा। जाँच समिति के एक सदस्य, गांधी जी और राजेन्द्रबाबू के पुण्य प्रयास से सन् १९१८ में "एग्रेरियन एक्ट" बना। इससे चम्पारन के किसानों को काफी लाभ पहुँचा। तभी राजेन्द्रबाबू अदालती शान-शौकत को लात मारकर गांधी जी का बायें हाथ बन गये। स्वयं गांधी जी ने अपनी "आत्म कथा" में उनकी भूरि भूरि प्रशंसा की है।

असहयोग आन्दोलन छिड़ने पर राजेन्द्र बाबू अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा और रचनात्मक कार्य शक्ति से बिहार के नेता बन गये। कांग्रेस ने घोषणा की सरकारी शिक्षालयों का त्याग करो! देश के क्षात्रों ने अपनी राष्ट्रीय महासभा की आवाज सुनी। देश के कोने २ से हजारों लाखों विद्यार्थी सरकारी स्कूल और कालेजों से बाहर आगये! किन्तु इसके बाद क्या हो, यह समस्या पैदा हुई। उन दिनों राजेन्द्रबाबू पटना यूनिवर्सिटी की सीनेट और सिन्डीकेट से सदस्य थे। उन्होंने दोनों स्थानों से इस्तीफा दे दिया और राष्ट्रीय विद्यापीठ जिसे बाहर विद्यापीठ भी कहा जाता है-स्थापित किया। ६५०शिक्षण संस्थायें और ६२,००० छात्र-छात्राओं का इस संस्था में समावेश किया गया। विद्यापीठ के उपकुलपति राजेन्द्रबाबू बनाये गये। बिहार विद्यापीठ एक अनुपम शिक्षण संस्था बन गई। गत सविनय अवज्ञा-आन्दोलन के अवसर पर सरकार की दमन-नीति का चाबुक इस संस्था पर भी पड़ा—विद्यापीठ ग़ैरक़ानूनी घोषित किया गया।

* * *

१९३४ के जनवरी महीने में बिहार में भयानक भूकंप हुआ। बिहार का अधिकांश भाग इस दैवी-दमन से नष्ट-भ्रष्ट हो गया। उस समय राजेन्द्र बाबू जेल में थे। उनका स्वास्थ्य अत्यन्त खराब था। इस भूकंप ने तो उन्हें विकल कर दिया। डाक्टरों के सलाह देने पर राजेन्द्र बाबू को रिहा किया गया। १४ महीने का बीमार जेल से बाहर आने के साथ ही जनता-जनार्दन की सेवा में जुट गया। भूकंप—सहायता-समिति के राजेन्द्र बाबू प्रेसिडेन्ट बनाये गए। यह दृश्य सर्वदा भारतीयों के हृदय पर अंकित रहेगा। मौत के दर्वाजे पर खड़े राजेन्द्रबाबू ने डाक्टरों द्वारा दी गई गंभीर चेतावनी की जरा भी परवाह न की और अपना तन-मन-धन देश के लिए निछावर कर दिया। उनके इस कार्य ने देश को स्तब्ध कर दिया। समस्त भारत में सहायता-समिति के लिए रुपया इकट्ठा किया गया। बदनामी न हो शायद इसलिए सरकार की ओर से भी रिलीफ फंड खोला गया। राजेन्द्र बाबू हजारों कार्यकर्ताओं को साथ लेकर खंडहर बिहार के पुर्ननिर्माण में जुट गए। इसके बाद जब प्रन्तों में कांग्रेसी मंत्रि-मंडल बनाये गए, तब राजेन्द्र बाबू को प्रधान-मंत्री बनने के लिए बहुत आग्रह किया गया लेकि उन्होंने अस्वीकार कर दिया। अपनी निःस्वार्थ मनोवृत्ति से उन्होंने मंत्रि-मंडल की सभी जगहें अपने साथियों को लेने दीं।

* * *

१९३५ में ही जब राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति थे—कांग्रेस की सुवर्ण-जयंति धूमधाम से मनाई गई। राजेन्द्रबाबू कांग्रेस कार्य-समिति के १९१२ से १९२२ तक सदस्य रहे हैं। इस दरम्यान उन्होंनें सुचारु-रूप से महामंत्री का भी कार्य किया था। १९३९ में गंभीर परिस्थिति उपस्थित हुई। श्री सुभाषचन्द्र बोस दूसरी बार बहुमत से राष्ट्रपति बनाये गये। परन्तु कुछ ही सप्ताह बाद कांग्रेस-कार्य समिति में ही मतभेद होने पर सुभाष बाबू ने त्यागपत्र दे दियः। तब फिर से राष्ट्रपति का उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य-भार राजेन्द्र बाबू को संभालना पड़ा।

* * *

भारत के बहुत से नेता कम उम्र में विदेश यात्रा कर आए हैं किन्तु राजेन्द्रबाबू ४४ वर्ष की उम्र में विदेश गये। इस अवसर पर उन्होंने अनेकों यूरोपीय देशों की [illegible] नेताओं से मिले। वापस आकर उन्होंने एक पु भी लिखी। भारत के राजनीतिक क्षे राजेन्द्र बाबू को बड़े सम्मान की दृष्टि देखा जाता है। उनके व्यवहार और व्यक्ति में अनुपम आकर्षण है। महात्मा जी साथियों में राजेन्द्र बाबू का विशिष्ट स्था है। देश के राजनीतिक क्षेत्र में इतना प्रबल स्थान होने पर भी वे अत्यन्त हैं। सादगी के कठोर नियमों का खुशी-खुशी पालन करते हैं।

राजेन्द्रबाबू विद्वान, राजनी शिक्षाशास्त्री नेता सब कुछ हैं लेकिन सबसे अधिक वे देश-भक्त हैं। शत्रु-मित्र सभी उनके आगे झुक हैं। भारत-माता की गोद के वे लाल तभी तो उन्हें 'देशरत्न' के प्यारे सम्मान्य नाम से पुकारा जाता है!

डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी की सारे देश में धूमधाम से मनाई गई।

बड़ी दीदी
नामी उपन्यास-लेखक की रचना है। इसमें सामाजिक चित्रण है। किसी भले घर का रूठ कर घर से चल दिया और में जाकर एक मालदार विधवा को पढ़ाने की नौकरी करने लगा। के मन में प्रेम का उदय हुआ तो अपने घर चला गया। बाद को अकल्पित ढङ्ग से उस विधवा से इस की भेंट हुई जहाँ पुरानी बीमारी से प्राणान्त हो गया। बड़ा ही प्रभावोत्पा कथानक है। मूल्य १।-) एक रुपया आने।

देशान्वेषण की सरल कथा
में उन ३२ कर्मवीरों के कार्यों का वर्णन है जिन्होंने अपनी जोखिम में डालकर अङ्गीकार हुए कार्य को पूरा किया। तेरहवीं के मार्कोपोलो से लेकर उन्नीसवीं के कप्तान एमंडसेन और कप्तान तक की दुर्गम यात्राओं का पुस्तक में है। ऐसी पुस्तकों के साहस बढ़ता है और विविध होती है। मूल्य ॥।) केवल तेरह

सचित्र महाभारत
स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का सम्पादित प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसके कई संस्करण हाथोंहाथ बिक हैं। इसमें सम्पूर्ण महाभारत की बड़ी सुन्दर भाषा में दी गई है। पढ़ने से महाभारत की बहुत-सी मालूम हो जाती हैं। अच्छा बढ़िया छपाई और सुन्दर जिल्द। पूरे पृष्ठ के चित्र हैं जिनमें से ११ हैं। बड़े आकार के सवा तीन सौ से पृष्ठ हैं। मूल्य केवल ६) छः रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

भारत में तीर्थयात्रा का महत्त्व

भारतीय कला-कौशल और संस्कृति की जीवित स्मृतियाँ

लेखक, श्री प्रकाशचन्द्र उपाध्याय, एम० ए०

भारत में तीर्थयात्रा का बड़ा महत्त्व है। आज भी लाखों व्यक्ति प्रतिवर्ष विभिन्न तीर्थ स्थानों का भ्रमण करके अपनी आत्मा को तृप्त ही नहीं करते वरन् भारतीय कलाकौशल, संस्कृति और वैभव का ऐसा ज्ञान भी प्राप्त करते हैं जो उन पर एक अमिट छाप छोड़ जाती है। इस लेख में योग्य लेखक ने तीर्थयात्रा का महत्त्व बतलाया है, जो ज्ञानवर्द्धक है।

है। चारों धामों की यात्रा अगर पैदल की जाय तो यात्री को भारतवर्ष की भौगोलिक, स्थिति, जलवायु तथा पैदावार का पूरा ज्ञान हो सकता है। हरद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा नासिक में जो कुम्भ के मेले होते हैं, उनमें जाने से यात्री को अन्य प्रान्तों की जनता के वेशभूषा, खान-पान तथा रीति-रिवाज का पूरा ज्ञान होता है। गया बौद्धधर्म का तीर्थस्थान है, परन्तु हिन्दू-धर्म के अनुयायियों के लिए, विष्णु के मन्दिर तथा पिंडदान के लिए भी प्रसिद्ध स्थान माना जाता है। पुष्कर का ब्रह्मा का मन्दिर भारतवर्ष में सिर्फ़ अकेला ही मन्दिर है। अगर कोई यात्री नाद्वारा तथा पुष्कर की यात्रा करेगा तो उसे राजपूताने के विषय में काफ़ी जानकारी हो जायगी। संयुक्तप्रान्त में अगर कोई यात्री, हरद्वार, सोरों, काशी, प्रयाग, विठूर, अयोध्या, चित्रकूट तथा गढ़मुक्तेश्वर की पैदल यात्रा कर लें तो वह अपने सूबे के विषय में सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। पुरानी रीति तथा प्रथा में अगर चारों धामों के अलावा कुम्भ के मेले, गंगासागर की यात्रा अगर कोई करे तो उसे अपने देश का पूरा ज्ञान हो सकता है।

तीर्थयात्राओं ने भारतीय जनता में राष्ट्रीयता का भाव पैदा किया। तीर्थयात्रा की महत्ता का प्रचार मध्यकालीन समय से ही हुआ है। प्राचीनकाल में आर्यावर्त की जनता को दक्षिण भारत का कम ज्ञान था। बौद्धधर्म के प्रचार ने भी राष्ट्रीयता का भाव पैदा किया। दक्षिण में जब 'भक्ति' का प्रचार हुआ तब वहाँ की जनता में उत्तरी भारत में आकर कृष्ण के जन्म-स्थान पर रहने की लालसा उत्पन्न हुई। चैतन्य महाप्रभु के ही 'भक्ति' प्रचार से वृन्दावन बंगाली जनता का प्रिय बन गया।

भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय।

जैसे-जैसे तीर्थों की महत्ता बढ़ती गई उसी प्रकार तीर्थों का कला-कौशल, संस्कृति तथा व्यापार में उन्नति हुई। राजा, महाराजा तथा धनिकों ने ही ईश्वरीय प्रेम से प्रवाहित होकर, तीर्थों में विशाल तथा सुन्दर मन्दिर बनवाये। काशी का विश्वनाथ का मन्दिर, वृन्दावन के केशव मन्दिर, बिहारी जी का मन्दिर तथा रंग जी के मन्दिर की कला अति सुन्दर है। आबू के जैन मन्दिरों में शिल्पकला तथा चित्रकला प्रशंसनीय है। मध्य भारत के खुजराहो का मन्दिर, उज्जैन का मन्दिर तथा पुरी का जगन्नाथ का मन्दिर कला-कौशल की उन्नति के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। दक्षिण भारत के मथुरा तथा रामेश्वरम् के मन्दिर की शिल्पकला अति सुन्दर है। तीर्थ-स्थान सभ्यता के केन्द्र बन गये। उच्च तीर्थों में संसार के सुदूर नगरों से आये हुए यात्री प्राचीन साहित्य तथा संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करते थे। तीर्थों के ही कारण नगरों की व्यापारिक उन्नति भी हुई। बनारस, अमृतसर, हरिद्वार तथा पुरी के व्यापार की उन्नति उनके धार्मिक महत्ता के कारण ही हुई। बनारस के रेशम की ख्याति यात्रियों के ही कारण हुई, जिन्होंने भारतवर्ष के सुदूर भागों में बनारसी रेशम का प्रचार किया। कुछ तीर्थस्थान ऐसे हैं, जिनके व्यापार की उन्नति का एकमात्र साधन यात्रियों का प्रतिवर्ष तथा हमेशा आना है।

आर्य-धर्म सेवासंघ के सभापति गोस्वामी गणेशदत्त जी।

तीर्थस्थानों में जाने से यात्रियों को अपने धर्म के विषय में विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। बंगाल के चैतन्य महाप्रभु के 'माधुर्य रस' तथा 'सखी भाव' का पूरा ज्ञान गोवर्धन की परिक्रमा करते समय राधाकुंड पर ही होता है, जहाँ पर श्रीराधा के जीवन को भगवान् कृष्ण के जीवन से भी अधिक महत्त्व दिया गया है। दुर्गा, भवानी तथा चण्डी की भयानकता का पूरा ज्ञान, विन्ध्याचल, बेलौर (ज़िला बुलन्दशहर) ज्वालामुखी (पंजाब) तथा करोली (राजपूताना) में नहीं होता, जितना कि कालीघाट (कलकत्ता) में होता है, और उससे भी अधिक नैपाल में होता है, जहाँ पर राज्य की ओर से सैकड़ों भैंसों का बलिदान किया जाता है। अगर कोई यह देखना चाहे कि धर्म में सर्वसमानता है तो जगन्नाथपुरी में जाकर देखे, जहाँ पर राजा और रंक को समान ही भोग मिलता है और उस दाल-भात के ए [illegible] साधारण की तरह वैभवशाली मनुष्य भी लालायित रहते हैं। उसी प्रकार

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिये

चाँद और दीपक

लेखक, प्रोफेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

चाँद-तारों का नहीं कुछ मोह मुझको—
जल रहा है दीप मेरे कक्ष में भी।
दूर छाया हो गई, छाया उजेला;
सोचता मैं कक्ष में, बैठा अकेला—
चाँद अच्छा या कि, अच्छा दीप मेरा;
काम के दोनों न, होते ही सबेरा।
किन्तु फिर, इस तर्क ने आ मुझे घेरा—
चाँद से कब मिट सका, घर का अँधेरा—
खिड़कियाँ गर बन्द कर दूं, चाँद फिर क्या?
दीप है—वरना घटा, आती न घिर क्या?
चाँद का आलोक बाहर ही गया रह—
दीप की किरणें, नयन में, वक्ष में भी।

संपादक के नाम चिट्ठियां

हिन्दुस्तानी' क्या है ?

क्या यह हिन्दू-मुस्लिम एकता की भाषा है ?

हिन्दुस्तानी हिन्दू-मुस्लिम पैक्ट की भाषा है—हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की नहीं; एकदम बनावटी। उसका उद्देश्य है—ऐसी भाषा लिखने का प्रयत्न करना, जिसमें न संस्कृत के शब्द हों न अरबी-फ़ारसी के, और जो दोनों लिपियों में लिखी जा सके। उत्तर-भारत में काफ़ी आर्य-समाजी साहित्य प्रचलित है, जो ठेठ हिन्दी है लेकिन उसे उर्दू लिपि में लिखकर छाप दिया है—यहाँ तक कि आर्य-समाज की संस्कृत संध्या को भी। उर्दू-लिपि में लिखा होने मात्र से क्या वह सारा साहित्य "हिन्दुस्तानी" समझा जायगा? यदि नहीं तो इधर जो कुछ साहित्य पैदा होने लगा है, जो ठेठ उर्दू है; लेकिन जिसे देवनागरी अक्षरों में भी छाप दिया जाता है वह कैसे हिन्दुस्तानी कहला सकती है? मेरे एक आदरणीय मित्र हैं। उन्होंने एक किताब लिखी है जो देवनागरी अक्षरों तथा उर्दू हरफ दोनों में छपी है। मैंने उस किताब को हस्तलिपि के रूप में देखा। वह उर्दू में लिखी गई थी और एक दिन उन्होंने मुझसे पूछा कि अब बताओ इसमें कहाँ-कहाँ, कौन-कौन शब्द काटकर बदल दिये जायें जिसमें यह देवनागरी में भी छप सके। मैंने कहा, मुझे यह अत्यन्त अस्वाभाविक मालूम होता है। इससे उर्दू शैली का प्रभाव नष्ट होता है और हिन्दी का तो आ ही नहीं सकता। तो भी हुआ वही जो वह चाहते थे। जहाँ-तहाँ कुछ शब्दों की जगह 'हिन्दी' शब्द लिख दिये गये और वह पुस्तक देवनागरी अक्षरों में भी छप गई।

एक और उदाहरण—

दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा ने "हिन्दुस्तानी" नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की है, उसमें मौलाना अब्बुलक़लाम आज़ाद का उर्दू में लिखा हुआ एक 'दीबाचा' है जो देवनागरी अक्षरों में भी ज्यों का त्यों 'दीबाचा' ही है। 'दीबाचा' शब्द फ़ारसी का है; उसे फ़ारसी में जगह है और हिन्दुस्तानी की उर्दू में भी; लेकिन हिन्दुस्तान ही जिनकी जन्मभूमि है ऐसे ये दो शब्द—'प्रस्तावना' और 'भूमिका'—आप कृपया कहें कि अब कहाँ शरण ढूंढ़ें? हिन्दुस्तान में तो अब उनको शरण मिलेगी नहीं, क्योंकि वह 'हिन्दुस्तानी' नहीं हैं।

और क्या यह 'न संस्कृत, न अरबी-फ़ारसी' भाषा लिखने का प्रयत्न सफल होता है? यदि आपको सारे साहित्य में "मैं जाता हूँ, मैं खाता हूँ" जैसे दो-दो शब्दों के वाक्यों से ही काम लेना हो तो बात दूसरी है, अन्यथा आप ज़रा भी गहराई में उतरे तो आपको अपनी 'न संस्कृत, न अरबी-फ़ारसीवाली' बात तुरन्त छोड़ देनी होगी। मैं इस 'हिन्दुस्तानी' किताब से ही, जो एकदम बच्चों के लिए लिखी गई है, दो उदाहरण देता हूँ। एक जगह फुटनोट है—"मुजक्कर मुवन्नस की वजह से इफ़आल में जो फ़र्क़ पैदा होता है उस्ताद उसे समझाये और मश्क़ कराये।" हिन्दुस्तानी आदर्शवादियों ने उसे देवनागरी अक्षरों में कैसे लिखा है—"पुल्लिग और स्त्रीलिंग की वजह से क्रियाओं में जो फ़र्क़ पैदा होता है, उस्ताद उसे समझाये और मश्क़ कराए।" दोनों लिपियों में लिखी जाने योग्य भाषा बनाने के फेर में देवनागरी में भी 'कारण' न लिखकर 'वजह' लिखा गया है, 'अभ्यास' न लिखकर 'मश्क़' लिखा गया है, 'अध्यापक' न लिखकर 'उस्ताद' लिखा गया है। मानो ये शब्द पहले सब शब्दों की अपेक्षा सरल हों, 'आमफहम' हों, लेकिन तब भी क्या दोनों लिपियों में भाषा लिखी जा सकी? देवनागरी में 'क्रियाओं' हैं; उर्दू में 'इफआल' है ('फेल' का बहुवचन 'फेलों' हो जाता लेकिन तब तो वह हिन्दी व्याकरण के अनुसार होता!), देवनागरी में 'पुल्लिग' है तो उर्दू में 'मुजक्कर' है, देवनागरी में 'स्त्रीलिंग' है तो उर्दू में 'मुवन्नस' है।

दूसरा उदाहरण लें—पृष्ठ १४ पर—"मुतकल्लम-हाजिर-गायब हालतों की मश्क फेलें-हाल के मुजक्कर मुवन्नस की सूरतों में करा दी जाय।" दोनों लिपियों में एक ही भाषा लिखने के इच्छुकों को देवनागरी में इसे यूँ लिखना पड़ता है—उत्तम और मध्यम पुरुष की मश्क वर्तमान-काल के पुल्लिग और स्त्रीलिंग के रूपों में करा दी जाय।" दोनों वाक्यों में एक 'मश्क' शब्द को छोड़कर कौन-सा विशेष शब्द समान है? यदि हम 'अभ्यास' की जगह इस 'मश्क' शब्द को ही अपनी भाषा में जगह दें और हिन्दुस्तानी की ख़ातिर "अभ्यास" को देश-निकाला भी दे दें तब भी क्या इससे वह हिन्दी 'हिन्दुस्तानी' हो जाती है?

अभी-अभी दक्षिण भारत में हिन्दी-प्रचार सभा के १२वें १३वें पदवी-दान के अवसर पर जनाब सैयद अब्दुल्ला बरेलवी साहब ने एक तक़रीर फरमाई है। उसमें आपने दक्षिण-भारत हिन्दी प्रचार सभा को नेक सलाह दी कि वह अपना नाम 'हिन्दी-प्रचार सभा' न रखकर 'हिन्दुस्तानी-प्रचार सभा' में तबदील कर दे। आप फ़रमाते हैं—"हिन्दी नाम से पैदा होनेवाले भ्रम को हटाने के लिए मैं अपनी अपील पर ज़ोर दूंगा, ख़ासकर के इसलिए कि मुझे पूरा यक़ीन है कि इस तबादले से मुसलमानों के मन पर बड़ा अच्छा असर होगा।" कुछ लोग कहा करते हैं कि नाम में क्या रखा है; लेकिन बरेलवी साहब नाम के तबादले से ही मुसलमानों के मन पर बड़ा अच्छा असर पैदा करने की उम्मीद करते हैं। आपने अपनी तक़रीर में फरमाया है कि क़ौमी ज़बान को उसके जो तीन नाम मिले हैं—हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी—वे तीनों मुसलमानों के दिये हुए हैं। यदि यह बात ठीक है तो "हिन्दुस्तानी" नाम में वह कौन-सी ख़ासियत है जिसकी वजह से मुसलमान भाई 'हिन्दी' और 'उर्दू' दोनों नामों पर उसे तरजीह देंगे। आज आप मुसलमानों पर 'अच्छा' असर पड़ेगा' की बात कहकर राष्ट्रभाषा को 'हिन्दुस्तानी' ही कहने की सलाह दे रहे हैं; कल आप उसे उर्दू ही कहने की सलाह भी दे ही सकते हैं। १९४२ में गांधी जी ने जब 'हिन्दुस्तानी सभा' की नींव डाली तब उसके ३८ बुनियादी मेम्बरों में कितने मुसलमान भाई मेम्बर बने थे? स्वयं बरेलवी साहब तो ख़ैर उसमें थे ही नहीं, क़सम खाने के लिए तीन नाम दिखाई देते हैं लेकिन ऐसे जिनमें से कोई भी भाषा सम्बन्धी शोधों के लिए प्रसिद्ध नहीं—न आज़ाद हैं, न जाकिरहुसैन हैं, न मौलाना अब्दुल हक़ हैं।

हमें क्षमा किया जाय यह 'हिन्दुस्तानी' आन्दोलन हमारे मान्य राजनीतिक नेताओं की सूझ है और किसी राजनीतिक आवश्यकता का ही परिणाम भी। लेकिन शर्तों पर आश्रित एकता—बनावटी एकता—स्थायी नहीं होती।

प्रयाग —भदन्त आनन्द कौसल्यायन

* * *

सुना है कि लखनऊ रेडियो पर फिर कवि सम्मेलन होगा ?

अभी कुछ दिन हुए, लखनऊ रेडियो से श्री 'जवाबी' ने एक पत्र का उत्तर देते हुए बतलाया कि आगामी ३० दिसम्बर को लखनऊ से कवि-सम्मेलन होगा। कवियों के नाम नहीं बतलाये। आपको शायद याद होगा कि पिछला कवि-सम्मेलन जिसमें हिन्दी के छः जयचन्दी कवियों ने भाग लिया था ३० दिसम्बर, १९४४ को लखनऊ से हुआ था, अर्थात् ठीक एक साल बाद रेडियोवाले जगे हैं। इस एक साल भर में रेडियो के 'हिन्दुस्तानी' वालों ने लाहौर, दिल्ली और लखनऊ प्रत्येक स्टेशन से पाँच पाँच छः-छः मुशायरे किये, दोस्तों को चाय पिलाई और 'शायरों' को चलते-चलाते दक्षिणा स्वरूप उनकी 'नज़्में' रेकार्ड कराकर किसी को ५०) किसी को ४०) और दे दिये। अभी २४-११-४५ को लखनऊ से मुशायरा हुआ है जो डेढ़ घंटे तक चला। सुना गया है इसकी शोभा बढ़ाने के लिए लगभग ३०० आदमी स्टूडियो में जुटे थे जिनमें से २०० रेडियोवालों के रिश्तेदार, इष्ट-मित्र और मुहल्लेवाले थे जिनको वहाँ आने का न्योता दिया गया था। इन सबको मुशायरे के उपलक्ष्य में रेडियो की ओर से चाय और काफी पिलाई गई और सिगरेट और पान के खूब दौर चले। लगभग १,०००) व्यय हुआ। इसके बरक्स कवि-सम्मेलनों पर नज़र डालिये जो अभी तक रेडियो से होते रहे हैं। कोई चालीस मिनट तक चलता है, कोई पैंतालीस मिनट तक, तीन-चार कवि बुला लिये जाते हैं, एक एक कवि से दो-तीन बार पढ़वाया जाता है और सौ पचास रुपये में काम चल जाता है। कवि-सम्मेलन का भेद जनता से गुप्त रखा जाता है जिससे कहीं कोई चाय पीने न आ पहुँचे। अलबत्ता (जैसा कि गत् ३० दिसम्बर, १९४४ को किया गया) स्टूडियो में दाद देने के लिए चपरासी और क्लर्क एकत्र कर लिए जाते हैं। ख़ैर, जैसे भी रेडियो के कवि-सम्मेलन होते हैं, इस साल भर में तो लाहौर और दिल्ली से कोई अभी तक हुआ ही नहीं, और न होने की खबर है। हाँ, लखनऊ से जैसा मालूम हुआ है, आगामी ३० दिसम्बर को होने जा रहा है। देखना है इसमें कौन-कौन से कवि जाकर अपना और हिन्दी का मुंह काला करते हैं। इसमें तो शक करने की कोई गुंजाइश नहीं कि यह श्री गिरजा-कुमार माथुर, प्रोग्राम असिस्टेंट, लखनऊ के भगीरथ प्रयत्न का फल है जिन्होंने अपने मित्रों को कवि-सम्मेलन में भाग लेने के लिए तैयार कर अपनी क्रियाशीलता का परिचय दिया है। शायद यह भी निश्चित है कि इसमें भी श्री माथुर के वही मित्र पहुँचेंगे जो इस साल जब तब लखनऊ से अपनी कविता सुनाकर मित्रता का ऋण चुकाते रहे हैं।

देखना है आगामी ३० दिसम्बर को कौन से कवि-पुंगव लखनऊ रेडियो पर अपने गानों का प्रदर्शन करने में कामयाबी हासिल करते हैं।

लखनऊ —एक लिसनर
नवम्बर ४५

माधवी-कंकण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुग़लों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आना।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

"प्रत्येक सुबह
का
पहला काम"

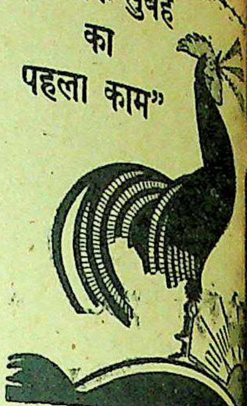

आधुनिक जीवन-यापन की परिस्थि
पाकस्थली में अम्लता पैदा कर देतीं
जिसके कारण पाचन-सम्बन्धी
उत्पन्न हो जाती है। ताज़गी
इनोज़ 'फ्रूट शाल्ट' का एक गिलास
रिक क्रियाओं को व्यवस्थित
समस्त विषों का शमन करता है,
को स्फूर्ति देता है और अम्लता
करण करता है।

ईनोज़
"फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द रजि
ट्रेड मार्क है।

ATKINSONS
* * *
सुगन्धी
चमकदार
विपुल केशों
के लिये
एटकिन्सन्स
हेयर आइल
और
कंक्रीट ब्रिलन्टाइ

वह भी मानव ही था ?

लेखक, श्री श्रीराम शर्मा 'राम'

मानव तो मानव है ही इसलिए उसमें कमजोरी भी है और कर्तव्यपरायणता भी। रमेश भी अविवाहित था, इससे उसका चित्त भी चंचल हो ही जाता था। किन्तु अन्त में उसकी समझ में यह आया कि नारी केवल वासना की ही नहीं, वरन् मां-बहन के रूप में पवित्र वस्तु भी है। प्रसिद्ध कथाकार ने मानव जीवन के अन्तर्द्वन्द्वों का चित्रण बड़ी ही सुंदरता से किया है, जो हृदय पर अपनी छाप छोड़ जाता है।

हो, जिसमें चौगुना कसा कर शायद एक हिस्सा ही तुम पाते हो! ..हाँ, लटतो है, ठगी भी है, पर कर ही क्या सकते हो, भाई! तुम अनाथ हो, साधनहीन. .और चाहते हो स्त्री, जीवन का भोग. .।

ऐसी अवस्था में रमेश चाहता कि वह योगी बन जाये। जा रमे किसी पहाड़ की कन्दरा में। यह संसार दलदल है, निकल जाये इससे। कैसा सुहावना और आनन्दमय जीवन होगा वह कि पशु-पक्षियों का साथ होगा, उनका गान सुनने को मिलेगा। हाँ, कैसा जीवन है वह! अलभ्य.. अमोल!

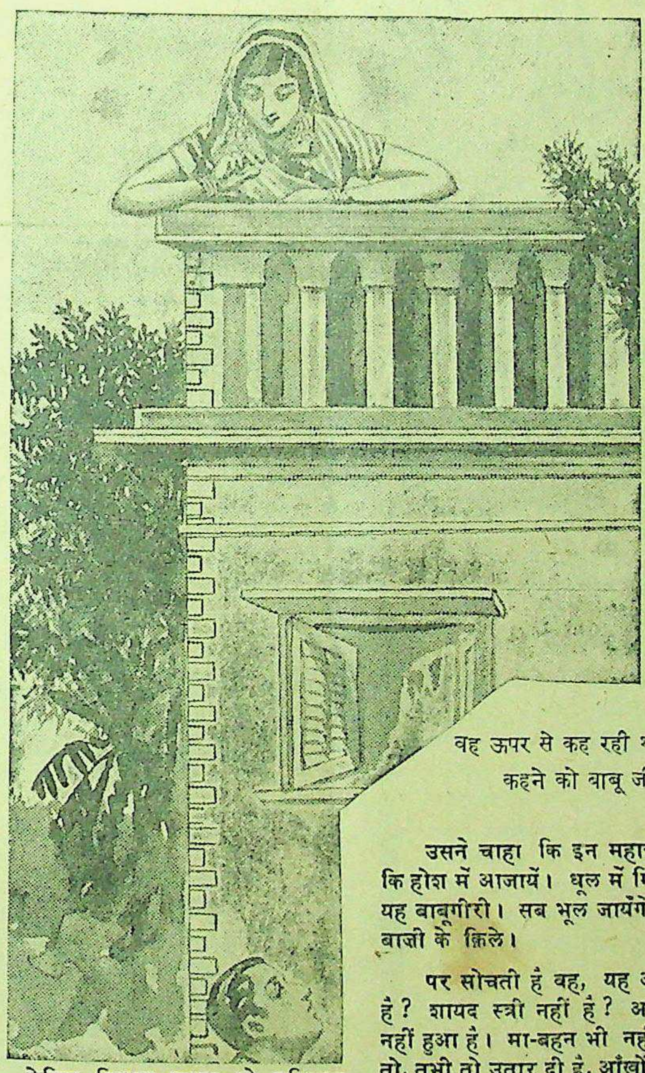
वह ऊपर से कह रही थी—
कहने को बाबू जी हैं...।

लेकिन विचार करना तो मस्तिष्क का काम था और चलना-फिरना अपना। इसलिए वह जैसे चलता था, चला जाता था। उसमें परिवर्तन नहीं आ पाता था। उन्हीं दिनों रमेश ने एक नया मकान बदला। उस मकान में पहुंचते ही देखा कि पड़ोस की छत पर कई स्त्रियाँ आकर बैठती हैं, उन्हीं में एक तरुणी है, जो सुन्दर और लावण्यमयी है। वह हँसोड़ और चंचल भी अधिक दिखाई देती है। वह प्रायः छत पर आकर बैठती है और जाने अथवा बेजाने रमेश की ओर थोड़ा देख भी लेती है।

रमेश यह देखता है, तो जैसे मन मारकर किसी द्वन्द्व में पैठ जाता है। जीवन में एक तो उसे आकर्षण मिला, कदाचित् इसी से, वह उस ओर खिच गया है।

लेकिन वह सुन्दरी कितनी भोली है बेचारी कि नहीं समझती, रमेश के देखने का मर्म। पर अब समझ लिया है। इधर रमेश आया, और वह कहीं छत पर है तो चली जायगी, या पीठ फेरकर खड़ी हो जायगी। अब वह सोचती है, आदमी भी कितना निर्लज्ज है...पापी। यह पाप ही देखता है। इसका यही धन्धा है...

उसने चाहा कि इन महाशय से कहे कि होश में आजायें। धूल में मिल जायगी यह बाबूगीरी। सब भूल जायेंगे, यह हवाबाजी के क़िले।

पर सोचती है वह, यह अकेला क्यों है? शायद स्त्री नहीं है? अभी विवाह नहीं हुआ है। मा-बहन भी नहीं हैं। यही तो, तभी तो उतार दी है, आँखों की शर्म! जरा भी नहीं सोचता कि दूसरों की भी बहन-बेटियाँ हैं, यह भी इज्जत रखते हैं। कहने को बाबू जी हैं...शरीफ़जादे, पर जहाँ औरत दिखाई दी कि बिल्ली की तरह घूरते हैं। भूखे हैं कई जन्मों के..कुत्ते कहीं के! ..

यों कई महीने बीत गये। रमेश बाबू के अरमान फले भले नहीं, परन्तु विकसित वह पहले से अधिक हो गये। कभी भूले से सुन्दरी जब उसकी ओर देख पाती है, तो जैसे रमेश के प्राणों में एक मधुर लय की आवृत्त हो जाती है।

सुन्दरी देखती है, रमेश बीमार पड़ा है। उसकी धूप में चारपाई बिछी है। आँख उसी ओर है उसकी। वह सोचती है, कैसा नादान और पागल बना है। नहीं सोचता कुछ। इसने यही ठान लिया है.. यही है, इसके जीवन का धन्धा! ..

वह कहती है—'यह आदमी है, जानवर कहीं का! किसी को पता नहीं लगा है, नहीं तो वह जूते पड़ें कि चाँद गंजी हो जाय। यह तो अवस्था है कि बीमार है, कोई पानी देनेवाला नहीं। पर आँखें हैं कि अपना काम भूलतीं नहीं...बेशर्म कहीं का!'...

तभी उन्हीं दिनों सुन्दरी की एक सहेली ने उसके पास आकर बातों में कहा—'अरी तू ने भी सुना कान्ता, वह जो मुहल्ला है, वहाँ एक खून हो गया। एक लड़का था जवान, बड़ा सुन्दर, एक लड़की से प्रेम करने के नाते छुरे से गला काटकर मर गया।'

'और लड़की?' आश्चर्य और जिज्ञासा से कान्ता ने पूछा।

'उसका पता नहीं। वह होगी ही। घर-घर में चर्चा है इसकी। सुना, लड़का बड़ा होशियार और बी० ए० तक पढ़ा था।'

यह सुनकर कान्ता ने खीझते से स्वर में कहा—'हाँ, ऐसा ही था होशियार। दूसरे की बेटी पर आँख लगाई, बदमाश कहीं का! उसका ऐसे ही खात्मा होना था।'

'अरी, नहीं कान्ता! यह भी तो देख, प्रेम किया और प्राणों को दे दिया। सच्चा प्रेमी था।'

'खाक था सच्चा! अन्धा था... नशे में चढ़ा था।'

सहेली ने हँसकर कहा—'औरत का दिल लिये है कान्ता, मर्द होती तो जानती कि कैसे किया जाता है प्रेम! तू ने जानी ही कहाँ इसका सार!'

यह सुनकर कान्ता ने कुछ नहीं कहा। उसने बात को छोड़ दिया। सहेली चली गई। उसी क्षण कान्ता ने अपने मन में कहा—जिन्हें पेट भर खाने को मिले, वही करेंगे प्रेम की बातें! उनका यही धन्धा है।

रात आगई। कान्ता सो गई। दिन में सहेली से सुनी बातें अब बिलकुल ही उसके पास नहीं रहीं। किन्तु रात के दो-तीन बजे एकाएक ही उसकी आँख खुल गई। कमरे में चारों ओर देखने लगी। वहीं पास ही दूसरे पलँग पर पति सोये थे। वह फिर मुंह ढँककर सोने की चेष्टा करने लगी किन्तु उसे नींद नहीं आई। वह सोते में जिस स्वप्न को देख रही थी, जागते में भी उसे देखने लगी। वह उसी में उलझ गई। उसने अनुभव किया कि उसके हृदय की धड़कन भी अधिक बढ़ गई। कैसा भयानक था स्वप्न! कितना बीभत्स! सचमुच कान्ता काँप गई। उसने स्वप्न देखा कि उसके मकान के पास ही और उसके सामने ही, इस बाबू ने—रमेश ने—अपने गले पर छुरी मार ली है। खून की धार बह चली है और वह... वह....

सवेरा हो आया। चारपाई छोड़कर जो सबसे पहले कान्ता ने काम किया वह यह था कि वह छत पर गई। रमेश वहीं घूमता मिला। उसी की ओर देखकर उसने कहा—'जरा सुनिएगा?'

आश्चर्य से रमेश उस ओर बढ़ आया। वह प्रसन्न भी हो गया। जैसे वह अपनी सफलता पा गया।

उसी समय कान्ता ने पूछा—'बताइएगा, आप मुझे क्यों देखते हैं? बताइए, जो पराये घर की बहू-बेटी है, उसे इस तरह देखना आप ठीक समझते हैं?' और

उसने अपनी बहती हुई आँखों को ऊपर उठा रमेश की ओर देखकर फिर कहा—'मैं एक विवाहिता नारी हूँ बाबू, और आपको भी कुलीन समझती हूँ, इसी नाते मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि मैं आपकी बहन हूँ, प्रेयसी नहीं हूँ।'

इतनी देर में रमेश के मुंह पर पसीना आ गया। साथ ही, वह जैसे वास्तविक संसार में भी आ गया। उसने कहा—'हाँ, मैं उन्हें बहन मानता हूँ, सुन्दरी,—सच, बहन!' और वह शीघ्रता के साथ वहाँ से हट गया।

उसके पीछे ही जब कान्ता नीचे गई तो पति ने उसे प्रसन्न देखकर पूछा—'क्यों, क्या हुआ? कहाँ गई थीं?'

कान्ता ने कहा—'आओ, बैठो, बताती हूँ।'

बैठकर उसने सब क़िस्सा आद्योपान्त सुना दिया।

पति ने कहा—'मैं उस व्यक्ति से मिलूंगा। आज शाम को ही।'

किन्तु जब शाम को वह दफ़्तर से लौटकर घर आया तो कान्ता ने बताया कि उस बाबू ने तो घर छोड़ दिया। और सच, रमेश ने उसी दिन वह मकान ख़ाली कर दिया।

यह सुन कान्ता के पति को और अधिक रमेश से मिलने की इच्छा हुई। रमेश शहर के बाहर मजदूरों की बस्ती में जा बसा था और अपनी नौकरी के बाद उन्हीं मजदूरों और उनके बच्चों में उसने अपने को लगाना स्वीकार कर लिया था। कान्ता के पति ने उसे वहीं जा ढूंढ़ा। चूंकि रमेश सुन्दर था और शिक्षित था, इसलिए परिचय होते ही, उन्होंने अपने एक मित्र की लड़की से उसका विवाह-सम्बन्ध कराना स्वीकार कर लिया। रमेश उनके घर जाता, कान्ता के हाथ का भोजन करता, परन्तु जब विवाह का प्रसंग उठता, तो वह एक ही बात कहता—'वह विवाह नहीं करेगा। जीवन में अकेला और एकाकी रहेगा।'

कान्ता के पति पूछते—'क्यों? ऐसा क्यों, रमेश बाबू?'

—तो रमेश बाबू, कान्ता की ओर देखते और कहते—'कान्ता बहन ने ही मुझे यह बताया है कि नारी का पद पत्नी में ही नहीं है, बहन और माँ में भी है। विवाह सभी करते हैं, एक मैं न करूँगा, तो संसार नहीं उजड़ जायगा, अनिल बाबू!'

यह सुनकर अनिल बाबू ने अपना मत रोक लिया है। लेकिन उन्होंने रमेश से वचन ले लिया है कि वह उनसे दूर नहीं होगा—उदासीन। किन्तु रमेश बाबू तो वचन देकर भी दिन दिन उनसे दूर हो रहा है। वह योगी नहीं है, परन्तु जितना भी महीने में कमाता है, उसका अधिकांश मजदूरों के बच्चों में बांट देता है। वह दुर्बल भी अधिक हो गया है। जीवन कहाँ है, यह तो वह अब भी नहीं जानता, किन्तु दीखता यह है कि वह व्यवस्थित रूप से उसे खोजने में लग गया है।

राजर्षि

इस ऐतिहासिक उपन्यास को पढ़कर आप दुर्वासनाओं से दूर जाकर तथा हिंसा-द्वेष का परित्याग कर प्रेम के पवित्र निकुंज में पहुँच जायेंगे, जहाँ मानवता का वास्तविक दर्शन कर आप कृतार्थ हो जायेंगे। मूल्य १।) सवा रुपया।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

इधर उधर की

कबूतरों को पदक

'न्यूज क्रानिकल' पत्र के संवाददाता का कहना है कि कबूतरों ने जर्मन राकेट बमों के आक्रमणों को विफल करने में सहायता दी थी। शाही वायु-सेना के हवाई जहाज उन्हें टोकरियों में भर कर फ़्रांसीसी देशभक्तों के पास डाल देते थे जहाँ से वे वी टू चलाने के स्थानों का पता लेकर वापस चले आते थे। नाजियों ने इन कबूतरों को मार्ग में रोकने के लिए सिखाये हुए बाजों का प्रयोग किया। इस प्रकार अनेक कबूतर काल के मुंह में चले गये और जो बाक़ी रह गये वे बुरी तरह से क्षत-विक्षत होकर वापस आये।

लन्दन में शीघ्र ही तेज उड़नेवाले कबूतरों की एक प्रदर्शनी होगी, जिसमें ६,००० पौंड मूल्य के कबूतर होंगे। जिस कबूतर को सबसे पहली बार 'डिकन मेडल' प्रदान किया जायगा उसका नाम विकी है। उसके द्वारा लाये गये संदेश के आधार पर एक रबर की डोंगी में बहते हुए चार उड़ाकों की प्राण-रक्षा की जा सकी थी। एक अन्य मेडल प्राप्त करनेवाला कबूतर 'कोलोन' था जिसने एक बमवर्षक की भाँति आने-जाने के १०० चक्कर लगाये थे। १९४३ में उसका वायुयान नष्ट हो गया। वायुयान और उड़ाकों का तो किसी प्रकार का समाचार प्राप्त न हुआ किन्तु १७ दिन बाद, वह कबूतर बुरी तरह से घायल होकर घर आया। कबूतर शिक्षकों ने इन पक्षियों को सिखाने में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है। ट्रेनिंग पाने के बाद, कबूतर केवल अपने नियत दरबे पर ही नहीं, वरन् किसी भी दरबे पर, चाहे वह कहीं भी रख दिया गया हो, उतर सकते हैं। इस सम्बन्ध में वे जिन उपायों से काम लेते हैं वे अभी तक हमारे लिए रहस्यमय ही हैं।

बकिंघम पैलेस पर बम

विगत युद्ध-काल में बकिंघम प्रासाद पर नौ बार बमवर्षा हुई। उसे साधारण बमों, उड़न बमों और राकेटों से नुकसान पहुँचा।

१३ सितम्बर, १९४० को दिन के ११ बजे के लगभग सम्राट् और सम्राज्ञी ने प्रासाद के पास पाँच जर्मन बमों को गिरते हुए देखा। उनके कारण सौ खिड़कियाँ छिन्न-भिन्न हो गईं, एक गिरजा-घर विध्वस्त हो गया, प्रासाद के अन्दर के रास्ते मलबे से भर गये और कितने ही ऐतिहासिक और पारिवारिक कागज-पत्र मलबे के नीचे दब गये थे।

ग्रामोफ़ोन में क्रांतिकारी सुधार

अभी हाल में ही पता चला है कि ग्रामोफ़ोन के सम्बन्ध में दो महत्वपूर्ण सुधा हुए हैं। रेकार्ड भरने के एक नये तरीके का आविष्कार हुआ है तथा ग्रामोफ़ोन की डिजाइन में भी एक नवीन क्रान्तिका परिवर्तन हुआ है।

इस नये ढंग के अनुसार बने ग्रामोफ़ोन और रेकार्डों के द्वारा जो संगीत सुनने में आ सकता है वह पहले ग्रामोफोनों और रेकार्डों की पहुँच के बा है। इनसे जो ध्वनि निकलती है वह स्पष्ट, समस्वर और सजीव होती कि मानो हम संगीतशाला में स्वयं उप होकर किसी गायक का गान सुन रहे हों।

इससे पहले ६,००० से लेकर ७,० साइकिलों (चक्रों) के कम्पन ही रेका भरे जा सकते थे। किन्तु नई प्रणाली अनुसार तैयार किये जानेवाले रेकार्डों इस दिशा में महत्त्वपूर्ण उन्नति की है। वे सब कम्पन भरे जा सकते हैं जो साधारण एक युवक की श्रवण-शक्ति के भीतर हैं। इस प्रकार ग्रामोफ़ोनों के रेकार्डों उस सजीवता और यथार्थता का समा हो गया है जो अब तक अप्राप्य थी।

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ........

'मृत सञ्जीवना सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमाघत्त्व सहस्र सहस्र उपभाक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है

SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA

प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध। अध्यक्ष माथुर बाबू का शक्ति-औषधालय ढाका
SAKTI OUSHADHALAYA
MRITASANJIBANI

बटन ! बटन !! बटन !!!

कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड, अमृतसर।

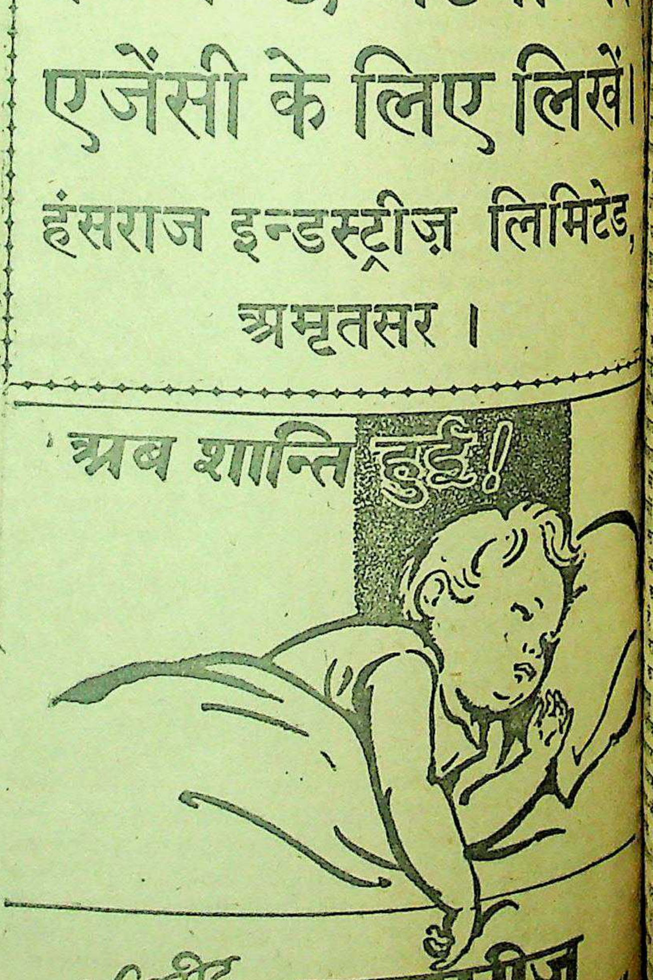
'अब शान्ति हुई!'

वुडवर्ड्स ग्राइप वाटर? — टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ

सुप्रसिद्ध फ़िल्म-कलाकार और निर्माता श्री किशोर साहू

फ़िल्मी-जीवन और अभिनय-कला पर मनोरञ्जक वार्ता

लेखक, श्री उमेश जोशी

[१]

निर्माता, निर्देशक और कलाकार का मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए। आपकी कई कहानियाँ राष्ट्रीय भावनाओं और विचारों की प्रतीक हैं। आप प्रायः खद्दर का ही प्रयोग करते हैं।

सातवीं विशेषता आप में यह है कि नये नये कलाकारों का पैदा करना आप ख़ूब अच्छी तरह जानते हैं। आपने अपने प्रत्येक खेल में कोई न कोई नया कलाकार सिनेमा-संसार को भेंट किया है। आप यह चाहते हैं कि सिनेमा-संसार में नये नये कलाकारों को स्थान मिलता रहना चाहिए। इस कार्य में भी आपको बड़ी हानि उठानी पड़ी, किन्तु आप अपने सिद्धान्त को नहीं छोड़ते। नुक़सान उठा करके भी आप नवीन कलाकारों को प्रोत्साहन देते रहते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि आज फ़िल्मी-संसार में श्री किशोर साहू जैसा प्रतिभाशाली, आदर्शवादी, राष्ट्र-प्रेमी, साहित्यकार मिलना कठिन ही है।

'वीर कुणाल' फ़िल्म का दृश्य, जिसमें प्रधान अभिनेता और दिग्दर्शक श्री किशोर साहू और प्रधान अभिनेत्री शोभना समर्थ दिखाई दे रही हैं। यह चित्र शूटिंग के समय लिया गया था। इस लेख के लेखक श्री उमेश जोशी भी दाहिनी ओर दिखाई दे रहे हैं।

आठवीं विशेषता आपकी यह है अपने सहायकों के प्रति सद्व्यवहार। आपके सहायक जितने भी व्यक्ति काम करते हैं वह हमेशा प्रसन्न रहते हैं।

नवीं विशेषता है कि इतने ख्याति-प्राप्त होने पर भी आप में अभिमान लेशमात्र भी नहीं है। अकसर यह देखा जाता है कि दौलत और ख्याति प्राप्त कर मनुष्य अभिमान के आसमान पर चढ़ने लगता है, लेकिन मिस्टर साहू में बड़ी विनम्रता, सहृदयता, सौम्यता है। उनका व्यक्तित्व सदैव ऊपर उठा रहता है। उनका निजी ख़याल है कि जिस दिन मुझमें दम्भ आ जायगा, उस दिन मेरा पतन निश्चय समझिए।

दसवीं विशेषता है कि वह चापलूसी की दुनिया से कोसों दूर रहते हैं। झूठ-फ़रेब की दुनिया भी आपको पसन्द नहीं है। यही कारण है कि श्री साहू को फ़िल्म-लाइसेंस नहीं मिले, जब कि सरकारी हुक्कामों की जी-हुज़ूरी करनेवालों को कई लाइसेंस मिल गये। आपको जी-हुज़ूरी से सख्त नफ़रत है। स्वाभिमान की रक्षा करना आप पसन्द करते हैं। आत्म-सम्मान की रक्षा करना ही आपके जीवन का लक्ष्य है।

* * *

भगवान् अंशुमाली अपने विश्राम-गृह की ओर जा चुके थे—रंग-बिरंगे अभ्रखंड दादर में शिवाजी पार्क में "किशोरी-विहार" मिस्टर साहू का निवास-गृह है। आपके निवास-गृह पर लाल अक्षरों में हिन्दी में 'किशोरी-विहार' अंकित है। मैं संध्या को श्री किशोर साहू से मिलने गया। उस वक्त श्री साहू घूमने के लिए तैयार हो रहे थे। मेरे पहुँचने पर उन्होंने अपना घूमना स्थगित कर दिया। श्री साहू का "ड्राइंग रूम" सजीव कला का नमूना है, कमरे में उन्हीं के बनाये चार-पाँच चित्र टँगे थे। जो उनकी कला-प्रियता के परिचायक थे। श्री साहू साहब खद्दर की धारीदार कमीज़ और सफ़ेद पाजामा पहने थे, नंगे सर थे। उनके बाल काफ़ी लम्बे थे। आपका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है। रंग गोरा है। वार्तालाप में मुस्कराते रहना भी आपकी विशेषता है। आपके एक छोटा बच्चा है, जो कि बड़ा नटखट और सुन्दर है। वह हमारी दिलचस्पी का केन्द्रबिन्दु बना रहा। आपके छोटे भाई श्री सुशील साहू हैं, जिन्होंने कई फ़िल्मों "शरारत", "वीर कुणाल" आदि में कार्य किया है। श्री सुशील का स्वभाव भी क़रीब बड़े भाई के अनुरूप ही है। इन्टरव्यू देने से पहले किशोर साहू ने अपने अनुज से कहा कि पहले जोशी जी को खाना खिलाओ, इसके बाद इन्टरव्यू दिया जायेगा—मैंने खाने के लिए इनकार किया—लेकिन उन्होंने कहा—"बिना खाना खाये हुए आप इन्टरव्यू भी नहीं ले सकते।" मजबूर होकर मैंने उनकी आज्ञा का पालन किया। सचमुच में जितने दिन बम्बई में रहा, मुझे उनका सहयोग प्रत्येक कार्य में मिलता रहा। मुझे उनके यहाँ पहुँचकर यह अनुभव होता था कि मानो मैं अपने ही घर बैठा हुआ हूँ। मेरी उनसे बीच बीच में किन किन विषयों पर वार्ता हुई उसका रसास्वाद करना पाठकों के लिए ज़रूरी है।

प्रश्न—आपने फ़िल्म-संसार में क्यों प्रवेश किया जब कि आपके लिए अन्य मार्ग भी खुले हुए थे?

उत्तर—सिनेमा-संसार में मैं उसकी चमक पर मुग्ध होकर नहीं आया—और न जीवन का आनन्द लूटने के लिए। मैं जिस वक्त फ़िल्मी-क्षेत्र में आया, उस वक्त सिने-साहित्य की रूप-रेखा धूमिल थी। अस्पष्ट रेखाओं की एक सीमा थी उसी में निर्माता और निर्देशक फुदका करते थे। उस दायरे को तोड़कर आगे बढ़ने की उनमें हिम्मत नहीं थी। आगे बढ़ना वह अपना पतन समझते थे। कुछ चापलूस उनके सलाहकार हुआ करते थे, जिससे वे अपनी प्रतिभा का सदुपयोग नहीं कर पाते थे। मैं जब कालेज से निकला तो मैंने बहुत से चित्र देखे। मुझे उन चित्रों को देखकर बड़ा ही दुःख हुआ। मुझे निर्माताओं की अक्ल पर तरस आने लगा, साथ ही दर्शकों की रुचि पर भी। साहित्य और कला के प्रति अनुराग मुझमें स्कूली जीवन से ही था, किन्तु कालेज-जीवन समाप्त करने तक वह काफ़ी विकसित हो गया था। मेरा झुकाव सिनेमा की ओर हो गया, अभिनेत्रियों के साथ रँगरेलियाँ करने के लिए नहीं बल्कि जीवन का सच्चा सबक़ मनुष्य को दिखलाने के लिए। क्या जिन्दगी का ढाँचा विलासिता की बुनियाद पर ही स्थिर है? क्या जीवन की नाव उच्छृंखल मनोरंजन के दरिया में बहाने के लिए है? यह सब प्रश्न मेरे मस्तिष्क में घूमने लगे। जिन्दगी का जो ग़लत पहलू चित्रपट पर पेश

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

आज ही मँगाकर पढ़िये—

फ़िल्मी अप्सरा

इस पुस्तक में स्वर्णलता, रागिनी, सुशीलारानी, देविकारानी, मनोरमा, नसीम, दुर्गाखोटे, कानन, स्नेहप्रभा, रेणुका, निर्मला, शान्ता आप्टे, जयश्री, रमोला, प्रतिमादास गुप्ता, जमुना, साधनाबोस, सवितादेवी, नीना, मीना, वीना, मुम्ताज-शान्ती, खुर्शीद, मीनाक्षी लीला देसाई, मोनिका देसाई, अंजली, लीला चिटनिस, शोभनासमर्थ, वनमाला, कौशल्या, नूरजहाँ, सितारा, नर्गिस, सुरैया, वासन्ती, प्रमिला, माया बनर्जी, भारती महताब, नलिनी जयवन्त, रतनमाला, चन्द्रप्रभा, मृदुला, गीता निजामी, आदि-आदि एक्ट्रेसों की तसवीरें और उनकी जिन्दगी के मनोरंजक हालात चिकने काग़ज़ पर छापे गये हैं। मुखपृष्ठ पर तिरंगा चित्र है। मूल्य दो रुपया।

मँगाने का पता :—

रंगभूमि बुकडिपो,

१ जामा मस्जिद, दिल्ली।

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

पूना के निकट खडकवासला ग्राम में सूतिका गृह

महात्मा गांधी के निरीक्षण का एक मनोरञ्जक संस्मरण

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

महात्मा गांधी ने पूना के खडकवासला सूतिका गृह का निरीक्षण किया था।

ग्रामीण जनता महात्मा गांधी को कितना चाहती है इसकी कल्पना कोई प्रत्यक्षदर्शी ही कर सकता है। पूना के निकट खडकवासला नाम का एक ग्राम है। वहाँ श्री पोचा जी की मदद से एक 'सूतिका गृह' का निर्माण किया गया है। वहाँ की व्यवस्था श्री लक्ष्मी बाई करती हैं। अब तक सूतिका गृह में लगभग डेढ़ दो सौ बच्चे जन्म पा चुके हैं। कुछ बालकों को संस्था की तरफ से मुफ्त दूध भी बाँटा जाता है। संस्था की तरफ से ६०, ७० बच्चों को चर्खा कातना भी सिखाया जा चुका है। आस पास की ग्रामीण बहनें इस संस्था से बहुत लाभ उठाती हैं।

खडकवासला ग्राम के कार्यकर्ताओं की इच्छा थी कि महात्मा जी ग्राम में आकर संस्था को देखें और अपना आशीर्वाद दें। गांधी जी को आजकल किसी संस्था के निरीक्षण और स्थान पर ले जाने में बड़ी कठिनाई पड़ती है। उनका स्वास्थ्य ऐसा अच्छा नहीं है कि वे ज्यादा घूम-फिर कर संस्थाओं का निरीक्षण कर सकें। लेकिन कभी कभी ऐसा मौक़ा भी आ जाता है जिसे गांधी जी इन्कार नहीं कर सकते। एक दिन शाम को जब पोचा जी गांधी जी के पास मेहता बिर्लनिंग होम में आये और गांधी जी से बोले "बापू जी, आप मेरी संस्था में चलकर आशीर्वाद दीजिये।" गांधी जी ने कहा—"आप देखते हैं, आजकल मेरे ऊपर काम का कितना बोझा लदा है लेकिन आपके प्रेम को टालने की हिम्मत भी नहीं होती। अच्छा १६ नवम्बर को साढ़े तीन बजे आऊंगा।" बापू के मुख से आने की बात सुनकर पोचा जी का चेहरा प्रफुल्लित हो उठा।

१६ नवम्बर को बापू खडकवासला आयेंगे पूना के निकट के गाँवों में इसकी खबर फैल गई। आस पास के ग्रामवासी खुश हो उठे।

अपने गाँवों की सफाई में लग गये। सड़कों को साफ करने लगे। खडकवासला पूना से १० मील की दूरी पर है। यहीं से पूना वासियों के पीने का पानी जाता है। गाँव के करीब ही स्वच्छ पानी का एक बहुत बड़ा तालाब है। पहाड़ियों का पानी वहीं जमा करके पूना के लोगों को भेजा जाता है।

साढ़े तीन बजे पूज्य बापू जी सरदार वल्लभभाई पटेल और उनके साथ के अन्य लोग दो मोटरों में सवार होकर रवाना हुए। एक मोटर में पूज्य गांधी जी और सरदार पटेल थे, दूसरी मोटर में भी सुशीला नायर, आभा गांधी और इन पंक्तियों का लेखक। बिलनिंग होम से रवाना होने पर हमारी मोटर पूना शहर के एक ख़ास मार्ग से निकलकर बाहर हुई।

मार्ग में ईख के बड़े बड़े फार्म खेत मिले। कहीं कहीं टमाटर, गोभी और बैंगन के खेत लगातार मिलते गये।

एक जगह लौकियों का बहुत बड़ा खेत दिखाई पड़ा जहाँ हजारों लौकियाँ लटक रही थीं। रास्ता पहाड़ियों के बीच में से होकर निकला है। यही मार्ग सिंहगढ़ किले को जाता है। पूना से सिंहगढ़ किला १६ मील की दूरी पर है। दिन भर मोटरें पूना से चलती रहती हैं। यात्रियों का ताँता लगा रहता है। दूर दूर से यात्री सिंहगढ़ देखने के लिए आते हैं। रास्ता में कई बसें सिंहगढ़ की तरफ जाती हुई मिलीं। महात्मा जी इसी सिंहगढ़ के मार्ग से खडकवासला गाँव में जा रहे हैं। सड़क के आस पास के गाँववाले घंटों से महात्मा जी के आने की प्रतीक्षा में जगह जगह बैठे हुए हैं। कई जगहों पर बच्चों का बहुत बड़ा सा गिरोह फूल मालाओं और तिरंगे झण्डे के साथ खड़ा मिला। महात्मा गांधी की जय हो, 'आजाद' हिन्द जिन्दाबाद के नारों से सड़क गूंज रही थी।

ग्रामीण गांधी जी का स्वागत अपने ढंग से कर रहे थे। गाँव के विकट जंगल से खजूर और ईख की पत्तियों से दो प्रवेश-द्वार सजाया गया था। गाँव के हर एक आदमी और बच्चे महात्मा जी के स्वागत के लिए अपने घर द्वार और सड़कों को खूब स्वच्छ किये हुये थे। घरों के दरवाजे गोबर से स्वच्छ लीपे गये थे। और उनपर चौकोर नकाशी खींची हुई थी। कहीं कहीं चरखे की तस्वीर बनाई गई थी। मुख्य प्रवेश-द्वार पर फूलों से 'जय हिन्द' लिखा हुआ था और कहीं कहीं एशिया छोड़ो, भारत छोड़ो का नारा लिखा गया था।

गांधी जी ज्योंही ग्राम में पहुँचे, चारों तरफ से गांधी जी की जय के नारों से आसमान गूंज उठा। गांधी जी पहुँचते ही सूतिका गृह देखने चले गये। सूतिका गृह में चार पाँच दिन पहिले ही एक ग्रामीण स्त्री को एक बच्ची पैदा हुई थी। महात्मा जी ने बच्ची को देखा और उसकी माँ से पूछा—"बच्ची का वजन क्या है?"

माँ ने जवाब दिया—पाँच पौन्ड।"

गांधी जी हँसने लगे और बोले बच्ची का वजन और बढ़ना चाहिए।

गांधी जी ने सूतिका गृह की एक-एक चीज देखी और पूछा यह वस्तु कितने दामों में बनाई गई है? उस चीज का उपयोग कैसे किया जाता है? जिस कमरे में बच्चे की माँ प्रारम्भ में ले जाई जाती है और जहाँ बच्चे का जन्म होता है, उस कमरे को भी गांधी जी ने देखा और कहा कि इतना ऊँचा बड़ा तख्त क्यों है? डाक्टर ने उत्तर दिया इसी पर माँ बहिनों की प्रारम्भिक चिकित्सा होती है और बच्चे का जन्म होता है। सारी चीजों को देख लेने पर गांधी जी सभा-मंडप में पहुँचे और एक ऊँचे आसन पर बैठाये गये। सभा में आस-पास के बहुत से ग्रामीण इकट्ठे हुए थे। बहुत-सी स्त्रियाँ भी आई हुई थीं। गाँव के बड़ों के सिर पर बड़ी-बड़ी लाल पगड़ियाँ शोभायमान हो रही थीं। सभा-मंडप में चारों तरफ पुराने जमाने की महाराष्ट्रीय पगड़ियाँ ही दिखाई पड़ रही थीं। दो तीन मिनट के बाद गाँव के तीन चार बच्चों ने बन्देमातरम गीत गाया। फिर महात्मा

सरदार पटेल खडकवासला के सूतिका
निरीक्षण के अवसर पर गांधी जी के

जी ने ग्रामवासियों को सम्बोधन कर
"भाइयो और बहनो, अब मैं
देते-देते बुड्ढा हो गया हूँ, इसलिए
देने यहाँ नहीं आया हूँ। प्रेम के
आया हूँ। हाँ कस्तूर बा स्मारक
में सभापति हूँ और सात लाख
कुछ सेवा का काम करना चाहता हूँ।
तो सादगी से ही हो सकता है। यदि
पश्चिमी सभ्यता अपनाई तो
समझो।

इस सूतिका गृह के आस-पास
ग्राम हैं, वहाँ की ग्रामीण बहिनों को
लाभ उठाना चाहिए। यहां स्त्रियों
प्रसूति के वक्त मदद दी जाती है।
मुझे अभी थोड़ा लगता है।
काम प्रसूति सम्बन्धी करना है।
आरोग्य सम्बन्धी बातों का
चाहिए। क्या खाना चाहिए
इसका भी ज्ञान होना चाहिए
पोषण कैसे करना चाहिए,
शिक्षा देनी चाहिए।"

सेवाग्राम
२५ नवम्बर ४५

एक मिनट में फोटो उतार लो
फोटो कैमरा ५॥)
जो लोग कैमरे का बटन दबाना भी नहीं जानते वह भी इनसे बड़ी आसानी से मर्द, बच्चा, स्त्री तथा हर प्रकार के दृश्य आदि के अति सुन्दर फोटो उतार कर अपनी शोहरत और किस्मत को चमका सकते हैं यह कैमरे अति खूबसूरत हैं। मूल्य बहुत ही कम रखा गया है।
रियायती मूल्य बक्स कैमरा ५॥) रु०, स्पेशल ७॥) रु० डी-लक्स विशेष गुण-वाला प्रति कैमरा ११॥) रु०। डाक महसूल ।॥=)।
नोट—प्रति कैमरा के साथ फोटो उतारने का कागज, फिल्में, मसाला आदि फोटो उतारने की पूर्ण विधि मुफ्त भेजी जावेगी। नापसन्द होने पर मूल्य वापस होगा।
मैनेजर—ब्रिटिश इण्डिया नावल्टी स्टोर (D. D.) पोस्ट बक्स नं० ९६ अमृतसर।

पुनर्जीवन ः दान करना
एक समस्या है?
इसके लिए एक विश्वस्त
तथा
सरल उपाय जो बताया जाता है वह है—
बाई-एडोल
∴ BI-ADOL ∴
यह कोमल बालकों के शरीर की गठन में प्रकृति की सहायता करता है।
यह माता को स्वस्थ और स्फूर्तियुक्त रखता है।
सूखा रोग से बालकों को मुक्त करता है।
बाई-एडोल
यह एक वनस्पति रोग़न और विटामिन ए और डी से तैयार किया हुआ है और शिशु-रोग, क्षयी-रोग तथा अन्य क्षयकारक रोगों में उतना लाभ-दायक है जितना श्वास-सम्बन्धी तथा अन्य संक्रामक रोगों में।
तमाम अच्छे औषधि विक्रेताओं से प्राप्य
बेंगल इम्युनिटि कम्पनी लि० :: कलकत्ता।

मातृमण्डल

गृहस्थ-जीवन में स्त्रियों की आर्थिक कठिनाइयाँ

ही होने से पहले ही वह सचेत क्यों नहीं होतीं ?

लेखक, श्री रमाकांत त्रिपाठी, बी० ए० 'साहित्यरत्न'

तीय स्त्रियों के लिए आज की समस्या एक जटिल समस्या है। से लेकर पैसा ख़र्च करना पड़ता यह उनकी पराधीनता नहीं है? उनके आत्माभिमान को चोट ? क्या उनका सुख इस बात से हो जाता कि उन्हें छोटा-मोटा के लिए भी पति का मुँह ताकना ! जीवन-स्तर ऊँचा उठ रहा है। उनका ख़र्च भी बढ़ रहा है। कारण उनकी असुविधायें और हैं? वे दिनों-दिन क्या पराधीन जा रही हैं? तो फिर उनके क्या उपाय है? उन्हें सन्तोष मिले? उनका जीवन सुखी हो? उसकी आत्मा को चोट अपने को स्वतन्त्र समझें— क्या करना चाहिए?

स्त्री को विशेष रूप से गृह- उसकी व्यवस्था करनी पड़ती इस काम के लिए पारिश्रमिक पैसा दिया जाय तो शायद होगा। इससे उनके भावुक लगेगी। क्योंकि वह सदियों पर अपना अधिकार समझती के रूप में कार्य करना वह करेंगी। इससे उनका अपमान साथ ही वह प्रेम सम्बन्ध जो होता है, नहीं रहने पायेगा। हुई दुनिया में क्या यह उनके नहीं कि वह अपनी इस भावना लें? जब कि उसकी और से बदल रही हैं तो वह अपने मूल्य पैसों के रूप में स्वीकार ? यदि वह उसका मूल्य में चाहती हैं तो फिर इतना ? यदि मनुष्य यह सोचे कि प्रेम और स्नेह से शान्तिपूर्वक जीवन यापन करना है तो फिर उत्पन्न ही क्यों हो? लेकिन तो नहीं है। मनुष्य स्त्री सभी प्राणी हैं। ईर्ष्या, द्वेष, जलन, की अच्छी बुरी भावनायें उनमें बिना नहीं रहतीं और तभी होते हैं जो साधारण जीवन कोटि के कहे जाते हैं। इससे के लिए तो मनुष्य या स्त्री में साधना की आवश्यकता है। नैतिक क्षेत्र उच्च बनाना होगा से हटकर वह शान्ति का सके। प्रेम का साम्राज्य रे।

की दुनिया पाश्चात्य सभ्यता को भौतिकवाद की ओर जा रही है। और आज का भारत भी अन्य देशों से आध्यात्मवाद में । इसी के बल पर जो वैवाहिक समाज में उन्नत अवस्था विदेशों में नहीं। वहाँ तो क्या सब एक दूसरे के सामने और उनसे आगे बढ़ने का है। बाह्य-रूप से तो उसका दिखलाई पड़ता है कि वे ख्याल करके ऐसा करते हैं में उनका स्वार्थ ही विशेष होता है। त्याग के बदले 'तलाक़' ही उनके यहाँ प्रचलित है और वही 'तलाक़' आज भारत की नारी भी करना चाहती हैं। किसलिए? पैसे के लिए। क्योंकि वह अपने को पराधीन समझती हैं। पैसों के लिए पति की मुंहताज बन गई हैं। वह स्वतन्त्र नहीं हैं। अपने मन के अनुसार व्यय नहीं कर सकतीं। वह पति का नियंत्रण नहीं चाहतीं। हम कहते हैं कि वह अपने प्रेम के वश में करके मनुष्य से क्या नहीं करा सकतीं। जब वह पुरुष द्वारा 'अपने लिए' बड़े से बड़े साम्राज्य को छुड़वा सकती हैं। युद्ध करा सकती हैं। राष्ट्रों का निर्माण और पतन करा सकती हैं तो वही आज इतनी अपाहिज अकर्मण्य और विवश क्यों बन गई हैं? क्या उसने कभी इसका कारण सोचा है? और यदि नहीं तो सोचना क्यों नहीं चाहतीं? आज क्या वह कुछ पैसे, यदि वास्तव में उसे आवश्यकता है तो पति द्वारा या अपने हाथों से ख़र्च नहीं कर सकती? वह अवश्य कर सकती है। हाँ, इसके लिए उसे त्याग, सहनशीलता, और प्रेम से काम लेना होगा। ऐसा करने से उसका घर सुख और सौन्दर्य से भर जायगा। उसका यह विचार कि वह अलग से पैसा पैदा करके ही अपने को स्वतन्त्र, बना सकती है, समझ सकती है, ग़लत है। यह एक मनोवैज्ञानिक बात अवश्य है कि यदि कोई कुछ काम करके रुपये पाता है तो उसे स्वभावतः ख़ुशी होती है। लेकिन इसमें उसका कितना अपमान भी तो होता है। देखा जाता है कि स्त्रियाँ घर में अपने पति का एक कटु वचन सुनने के लिए तैयार नहीं है। यहाँ तक कि साधारण-सा विरोध भी नहीं चाहती और तब स्वतन्त्र जीविका उपार्जन करने निकलती है। उन्हें दुनियादारी का ज्ञान और आगे पहाड़ है इसका पता नहीं रहता। फिर जब पहाड़ के सामने आती हैं तो कठिनाई का पता चलता है। ठोकरें खाती हैं, लेकिन तब पति के पास कौन-सा मुंह लेकर लौटें। बस वहीं से उनका तूफ़ानी जीवन प्रारम्भ हो जाता है।

यदि स्त्री कुछ पढ़ी लिखी है तो वह सबसे पहले यही चाहती है कि कहीं पढ़ाने का काम मिल जाये। इसके लिए उसे किस-किस के पास दौड़ना पड़ता है इसे तो वही बता सकती है जिसने इस बात के लिए प्रयत्न किया हो। साधारण तौर पर दो-चार आदमियों के पास सिफ़ारिसी चिट्ठी लिखवानी पड़ती है। किसी ने लिखा, किसी ने बहाना बना दिया। फिर हेडमास्टर से मिलीं, मैनेजर से मिलीं। दो-चार और आदमियों से कहलाया। साथ लिवा ले गईं और तब सिफ़ारिश करवाई। इस बीच मालूम नहीं कितनी झिड़कन, कितनी बातें, कितना किस रूप में अपमान उन्हें सहना पड़ता है। दौड़-धूप तो जो करनी पड़ती है वह अलग से। यदि मास्टरी नहीं मिली तो अपना-सा मुँह लेकर लौट आना पड़ता है और यदि ईश्वर की कृपा से मिल भी गई तो फिर सदैव के लिए डाँट-फटकार, डर, भय बना रहता है। आज यह बात, कल वह बात। ज़रा-ज़रा-सी बात पर निकाल देने की धमकी। भला यह सब क्या उसके लिए इस बात से अच्छा है कि वह अपने ही घर में केवल अपने पति का नियंत्रण, अनुशासन और साथ ही साथ उसका प्रेम, स्नेह पाकर, घर की रानी बनी रहती है। किसी से दबने का अवसर नहीं आता और अपने आत्माभिमान की रक्षा वह भली भाँति कर सकती हैं।

हमें दुख है कि आज साधारण-सी बुद्धि और विवेक खोकर भारतीय नारी एक विद्रोह की ओर क्यों झुकी हुई हैं? वह आर्थिक कठिनाइयों के लिये स्वतन्त्र जीविकोपार्जन ही क्यों करना चाहती हैं? वह यह क्यों नहीं चाहतीं कि इस झगड़े में न पड़कर शिक्षा-कला, सङ्गीत, गृहकार्य में दक्षता प्राप्त करें और अपने वास्तविक रूप में आकर संसार को दिखा दें कि 'स्त्री' आदि शक्ति है और उसका ख्याल ही सर्वोपरि है।

विदेशों में भारतीय स्वधीनता की प्रबल प्रचारिका श्रीमती पंडित, अमरीका से भारत आनेवाली हैं।

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।–)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

सुकवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २॥≡)
कुणाल १।)
पूजागीत २)
विषपान १)
बाँसुरी ॥।)
शिशुभारती ॥।)
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपाल शरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २)
संचिता ३)
मानवी २।–)
माधवी २)
ज्योतिष्मती २।)
कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २।)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना

दैत्यवंश महाकाव्य ३।–)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

साहित्य-चर्चा

यूटिलाइजेशन आफ़ इंडियाज मैनपावर—लेखक, प्रोफ़ेसर पी० एस० नायडू एम० ए०; प्रकाशक, दि ओरियंट पब्लिशिंग कम्पनी, पोष्ट बाक्स नं० ११५६, बम्बई। मूल्य २)।

प्रस्तुत पुस्तक अँगरेज़ी में लिखी गई हैं। यह इकनामिक प्राबलम्स आफ़ इंडिया सीरीज़ की प्रथम पुस्तक है। प्रयाग विश्वविद्यालय के शिक्षा और शरीर विज्ञान के अध्यापक श्री नायडू ने राष्ट्रीय दृष्टिकोण से बड़ी उपादेय पुस्तक की रचना की है। महायुद्ध की समाप्ति के बाद भारत के पुर्नानर्माण के सम्बन्ध अनेक आर्थिक और व्यावसायिक योजनायें, राष्ट्रीय नेताओं, विद्वानों तथा प्रधान व्यवसायियों द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। यह योजनायें प्रधान रूप से आर्थिक तथा व्यावसायिक दृष्टि से सामने लाई गई हैं किन्तु भारत की जनशक्ति का उपयोग किस प्रकार किया जाना चाहिए, इस सम्बन्ध में प्रस्तुत योजनाओं में महत्त्व नहीं दिया गया। प्रोफ़ेसर नायडू ने अपनी इस पुस्तक में सोवियट सरकार-द्वारा प्रचारित कुछ उपयोगी योजनाओं का उल्लेख करते हुए वर्तमान भारतीय योजनाओं पर आलोचनात्मक प्रकाश डाला है। आपने भारत की ३८ करोड़ से अधिक जनशक्ति की उपयोग की महत्ता पर प्रकाश ही नहीं डाला है वरन् क्रियात्मक बनानेवाले कुछ ऐसे सुझाव भी प्रस्तुत किये हैं, जो समस्या के हल होने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रोफ़ेसर नायडू का कहना है कि भारतीय जनशक्ति की वास्तविक उपयोग की समस्या यदि हल कर ली जाये तो आर्थिक और व्यावसायिक योजनाओं की सफलता में अधिक सहयोग प्राप्त होने के साथ राष्ट्र का अधिक हित हो सकता है। पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है साथ ही जन-शक्ति के संगठन, उसके उपयोग और उसे शक्तिशाली बनाने की प्रमुख समस्या पर एक गम्भीर प्रकाश डालती है। हमें आशा है कि भारतीय पुर्नानर्माण की योजनाओं के कार्यान्वित होने में प्रस्तुत पुस्तक के सुझाव अधिक व्यापक और उपयोगी सिद्ध होंगे। छपाई सफ़ाई सुन्दर है।

* * *

नया साहित्य (भाग एक) प्रकाशक, जन प्रकाशन-गृह, राजभवन, सैन्डर्स रोड, बम्बई ४। मूल्य प्रति अंक १)

'नया साहित्य' प्रत्येक दूसरे महीने पिछले महीने से प्रकाशित होने लगा है। हिन्दी के प्रसिद्ध और प्रगतिवादी सुलेखकों और कवियों का पूर्ण सहयोग इस पत्र को प्राप्त हुआ है। पत्र के सम्पादक-मंडल में—श्रीयुत यशपाल, डाक्टर रामविलास शर्मा, श्री शिवदानसिंह चौहान, श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त और श्री पहाड़ी ऐसे प्रमुख कलाकार सम्मिलित हुए हैं। सम्पादन कार्य में श्री नरेन्द्र शर्मा, श्री अमृतलाल नागर और श्री रमेश सिनहा का विशेष सहयोग है।

'नया साहित्य' का प्रथम अंक हमारे सामने है। प्रगतिवादी विचारधारा के प्रमुख कलाकारों, कवियों तथा साहित्यकारों की श्रेष्ठ रचनाओं से अलंकृत है। गम्भीर और विवेचनात्मक लेख, कहानी, स्केच, कविता, उपन्यास, जीवन-चरित्र, आलोचना, सांस्कृतिक जागरण तथा शोध और अनुसंधान-सम्बन्धी लेखों को प्रस्तुत करने में डाक्टर मोतीचन्द्र, डाक्टर राम विलाश शर्मा, श्री यशपाल, श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' श्री नरेन्द्र शर्मा, श्री अमृतलाल नागर, ऐसे बहुश्रुत और लोकप्रिय कलाकारों ने सहयोग दिया है। इनके सिवा कई उर्दू कलाकारों की रचनायें भी उच्चकोटि की हैं। सभी रचनायें प्रगतिशील, सामयिक और नई सांस्कृतिक चेतना उत्पन्न करनेवाली हैं। यत्र-तत्र कलात्मक चित्रों से अंक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है।

जिस प्रगतिवादी आदर्श, ध्येय और सुरुचि को सामने रखकर 'नया साहित्य' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है, यदि वह क़ायम रहा तो यह पत्र हिन्दी-साहित्य ही नहीं नई पीढ़ी के हिन्दी प्रेमियों, साहित्य-सेविओं और पाठकों के लिए अद्वितीय सिद्ध होगा। 'नया साहित्य' हिन्दी संसार के लिए नई साहित्यिक चेतना, भावना और विचार-धारा का पथ-प्रदर्शन करेगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

'नया साहित्य' गेटप बड़ा ही आकर्षक और सुन्दर है। ऐसे सुन्दर सामयिक, और उपयोगी पत्र के प्रकाशन के लिए प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

—आलोचक

'प्रसाद' जी के प्रति

लेखक, श्री श्रीपालसिंह 'क्षेम'

आर्यवाणी के अमर वरदान! श्रद्धांजलि हमारी।
भव्य भारत-वाङ्मय के कंठ के ओ राग अक्षय,
आर्य संस्कृति के अमरतम गीत के ओ दिव्य स्वर-लय
तुम कला के तार पर मधुगान! श्रद्धांजलि हमारी।
गा उठे तुम, एक युग का गीत तुममें गा उठा था।
काव्य के चेतन-स्वरों से चेतना-नभ छा उठा था॥
खिल उठे साहित्य के थे प्राण, श्रद्धांजलि हमारी।
चाँदनी-चन्दन-नगर से चल कला-नभ में सिहरकर,
भाव के नव मेघ-से आये रसों की बूँद भरकर
कल्पना की ओ नवल मुस्कान! श्रद्धांजलि हमारी।
ज्वलित जगती के गगन से तुम हृदय के अश्रु लेकर,
कर गये शीतल धरा को तुम तुहिन के गान देकर,
तुम समन्वय की मधुरतम तान! श्रद्धांजलि हमारी।
सृष्टि के उस आदि आदि प्रभात के चैतन्य गायक!
तुम कला-"कामायनी" के पारदर्शी चरित-नायक!!
सो गये इतिहास की पहचान! श्रद्धांजलि हमारी।

प्रण कीजिए कि आप अपने दाँत सदा इसी तरीके से साफ करेंगे
Gibbs REGD.
हर एक व्यक्ति अपने दाँत ठीक तरीके से साफ कर सकता है!
गिब्स डेन्टिफ्रिस
Gibbs Dentifrice

किसी खुरदरी चीज़ से अपने दाँत साफ मत कीजिए। क्योंकि झरीटों पर सड़ान शुरु होती है। बेस्वाद चीज़ों से बचिए। क्योंकि ऐसी चीज़ों से आपके श्वास से बदबू आएगी। ऐसी चीज़ों का कभी उपयोग मत कीजिए जो सावधानी से पैक न की गई हो, क्योंकि इनमें कीटाणुओं का खतरा रहता है जो बीमारी फैलाता है।

हमेशा गिब्बस डेन्टिफ्रिस को इस्तेमाल कीजिए। यह आपके दाँतों को नरमी से साफ़ करता है और दाँतों में झरीटें नहीं डालता। इसका स्वाद और सुगंध-दोनों बहुत अच्छे हैं। यह विषनाशक है और ऐसा पैक किया गया है कि इसमें धूल नहीं जा सकती। इसके अलावा एक डिबिया में १०० से अधिक बार दाँत साफ़ करने के लिये डेन्टिफ्रिस है।

GD. 14-33 HI

D. & W. GIBBS LIMITED, LONDON, ENGLAND

भारत में तीर्थयात्रा का

(पेज ८ का शेष)

नाद्वारा (मेवाड़ राज्य) में
दाय का जो मन्दिर है, वहाँ
यात्री को मन्दिर का स्वादिष्ट
(भोज) समानता से वितरण
है।

तीर्थों ने मनुष्यों में विद्या
के लिए लालसा पैदा किया है।
सकता है कि प्राचीन काल तथा
समय में और वर्तमान काल में
साहित्य के केन्द्र तीर्थ ही थे।
यात्री, अब भी काशी, गुरुकुल,
में जाकर संस्कृत भाषा के प्रचार
वहाँ के विद्यालयों को दान देते हैं।
तथा बौद्धगया बौद्धधर्म के
लिए उसी प्रकार विख्यात थे,
हिन्दू धर्म का पूरा ज्ञान, काशी,
तथा हरिद्वार में होता है।
पड़ता है कि प्राचीन काल को
संस्कृति तथा कलाकौशल के लिए
स्थानों को ही देखना पड़ता है।
महत्त्व अब भी है और सनातनधर्म
साथ प्रलय तक चलेगा।
सुविधा से अब यात्रा सुगम
प्राचीनकाल में जब कि
कठिन समस्या थी, उस समय
यात्रा करते थे। हिन्दू-धर्म के
ही धर्म की कट्टरता तथा उनकी
की रक्षा करते हैं। चारों धाम
कुम्भ मेलों के स्थान आठ द्वार
तरह धर्म को सुरक्षित किए हुए
का स्पष्ट वातावरण ही, मनुष्य
महत्ता को बढ़ा देता है। अँगरेज़ी
समाज धर्म से चाहे जितना दूर
फिर भी अगर वह सैर के ही
यात्रा करता है, तो वह
धार्मिक वैभव तथा उसकी
मानता है।

* *

(पेज ११ का शेष)

कर रहे थे, मैंने उनके विरुद्ध
बनाया। मैंने प्रारम्भ में
और अभिनेता की हैसियत से
संसार में पदार्पण किया। मेरे
अनेक रुकावटें आईं, लेकिन मैं
दृढ़ता के साथ अपने आदर्श पर
रहा। जिसका परिणाम यह
में अपने आदर्श में सफल
मुझे हमेशा से अभिनय-कला,
लेखन आदि से अनुराग रहा और
में इन सब कलाओं का समावेश
लिए मैंने सिनेमा की दुनिया
किया। मैंने समझा कि इस
आकर ही मैं देश की अधिक
सकता हूँ।

प्रश्न—आज के सिने
क्रान्ति की आवश्यकता है या
उत्तर—ज़रूर, सिने-साहित्य
क्या बल्कि देश के प्रत्येक क्षेत्र में
आवश्यकता है। क्रान्ति हो
होकर रहेगी—लेकिन दुःख है
ताओं में नहीं हो रही है। उनको
से अधिक प्रेम है। वह क्रान्ति
हैं। क्रान्ति का नाम सुनकर
जाते हैं क्योंकि उनके स्वार्थ का
हो जाता है! ऐसे निर्माताओं
साहित्य की रक्षा करना कोई
है। वह तो बस एक ही बात
केवल पैसा पैदा करना। फिर
क्यों परवाह करने लगे।
समय आ गया है कि क्रान्ति
रहेगी। उच्छृंखल भावनायें
की ज्वाला में जलकर भस्म हो
इन फ़िल्म-निर्माताओं की
लम्बी दीवाल क्रान्ति को
रोक सकती। इनक़लाब ही
फ़िल्म-जगत् भी इस
नहीं रह सकता।

बलिया की प्रगतिशील शक्तियाँ

युक्तप्रांत की एक त्यागो और बलिदानो भूमि

लेखक, श्री लक्ष्मीकांत वर्मा

महिला-आन्दोलन की प्रमुख श्रीमती जानकीदेवी, कस्तूर की सहायक मंत्रिणी हैं।

इतिहास के पृष्ठों पर अत्याचार हैं परन्तु जो बर्बरता और वर्तमान हुकूमत ने की है वह तो इतिहास अमर घटनाओं के रूप में शाश्वत रहेगी। इसके प्रमाण लिया में मौजूद हैं। आतंक से वरण में जब मैं पहले पहल

हरलाल नेहरू बलिया गये स्टेशन पर यह चित्र लिया पंडित जी के साथ बलिया के दिखाई दे रहे हैं।

तो मुझे ऐसा लगा मानो यहाँ समाप्त हो गया है। एक जब मेरा इक्कावाला आधा से पैदल दौड़ता हुआ वृक्षों करता आगे बढ़ा तो मैंने उसे कहा--"जी, तुम इक्के नहीं बैठते" उसका उत्तर साफ था। प्रायः वह अपने को इन उलझनों में डालना नहीं चाहता था और उस क्रम को यों ही जारी रखना चाहता था। जब मैंने जोर देकर पूछा और यह कहा कि तुम्हें बताना होगा, तब वह बोला--"हुजूर आप अगर रहेंगे तब तो शायद वह (थानेदार साहब) न बोलें लेकिन बाद में............मैंने उसे बड़ी जोर से डाटा और उसे किसी प्रकार से इक्के पर बैठाया। कितनी मार खा चुका था। रह रह कर वह घोड़े के साथ पैदल उतर कर दौड़ना शुरू कर देता था। लेकिन मैं जब बड़ा सख़्त पड़ा तब वह बैठ गया किन्तु थाने के सामने वह उतर ही गया और पैदल यों ही दौड़ता हुआ चलने लगा। दूसरे दिन जब मैं लौट रहा था तो मुझे बताया गया कि रात में पुलिस उसे पकड़कर ले गई और बड़ी परेशानी के बाद उसे छोड़ा गया है। मैंने पूछा क्या इस जुर्म में कि वह इक्के के साथ दौड़ता हुआ नहीं गया इसलिए..........? एक बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया "अरे आप भी क्या बात करते हैं वह आपको यह बहाना बतावेंगे उन्होंने दूसरे बहाने से उसे मारा है--मेरी समझ में नहीं आया कि मैं इस अनाचार का उत्तर कैसे दूँ। मैं अगर अभी थानेदार से मिलूँ तो वह मुझे दिखावेगा कि उसने किसी चोरी या बदमाशी के अपराध पर उसे बन्दी बनाया है। मैं थाने में गया और वहाँ के दीवान से मिला--दीवान ने उत्तर दिया--"वह तो किसी ख़ास दफ़े में पकड़ा गया है।" मैं खामोश था क्योंकि मेरे पास उसका उत्तर कानूनन था ही नहीं। कुछ दिन बाद पंडित जी जिस दिन वहाँ गये थे उस दिन भी सिवा उनके इक्के के और सभी इक्केवालों ने पेड़ों को सलाम किया था और एक मील पहले से दौड़ते हुए चले थे।

इस प्रकार के आतंकमय वातावरण को देखकर मैंने यह अनुमान लगाया कि समस्त ज़िले में कांग्रेस के काम में ढीलापन होगा परन्तु जब मैं वहाँ के और लोगों से मिला तो पता चला कि कांग्रेस की मेम्बरी गाँव-गाँव और टोले-टोले में ज़ोर शोर से हो रही है। वहाँ के किसान नेता श्री शिवपूजनसिंह जी से जब मैं मिला तो उन्होंने वहाँ के किसान संगठन के बारे में मुझे काफी बताया। साथ ही साथ उन्होंने मुझे यह भी बताया कि समस्त बलिया के किसान आज इस प्रकार से संगठित हैं कि किसी भी समय वह अपने को आज़ादी की लड़ाई के लिए समर्पित करने के लिए तैयार हैं। मैं समझता था कि ज़नता में साँस लेने की भी शक्ति नहीं होगी परन्तु जिस उत्साह से मैंने वहाँ के कांग्रेस और किसान कार्य-कर्ताओं को काम करते हुए देखा उससे मेरा यह अनुमान हुआ कि किसी भी दमन का सामना करने के लिए वहाँ की जनता प्रस्तुत है।

"चौबे छपरा" गाँव की कहानियाँ जिसका धूलि धूसरित चित्र आपके सामने है, ग्रीस और रोम की दन्त कहानियों की तरह जनता में फैली हुई है। इस मकान का नवयुवक मालिक जो आज भी फ़रारी की हालत में है दो महीने तक गाँव में किसी को बर्बरता व्यवहार करने का साहस ही नहीं होने दिया। दो महीने बाद पुलिस इस गाँव में घुसी है। कम से कम आठ या दस घर तो अभी इसी हालत में गाँव में मौजूद हैं परन्तु इन सब के होते हुए भी गाँव के एक भी व्यक्ति ने एक पैसा भी जुर्माना या लड़ाई का चन्दा नहीं दिया है। इस जले हुए घर के लोग ख़ाना-बदोशों की तरह इधर-उधर रिस्तेदारों के यहाँ रह रहे हैं। इस चित्र में बैठे बूढ़े बाबा जिनका असली नाम अवधनाथ मिश्र है जो आचार्य के नाम से प्रसिद्ध हैं इस गाँव के प्राण माने जाते हैं। इस गाँव की समस्त जनता एक है और एक का वास्तविक नमूना इससे बढ़कर कहीं नहीं हो सकता।

प्रश्न यह उठता है कि इन समस्त यातनाओं के साथ-साथ जो दबी हुई एक प्रकार की प्रतिहिंसात्मक भावनाएँ इस समय प्रायः सभी व्यक्तियों के हाथ में जमा हो रही हैं उसको किस रूप में संगठित किया जावे। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि जनता की समस्त शक्ति किसी रचनात्मक कार्य-क्रम में आवर्तित कर दी जावे। कुछ ग्राम-उद्योग के काम कहीं कहीं चल रहे हैं पर उनका कोई संगठित रूप अभी तक हमारे सामने आया नहीं है। कस्तूर बा ट्रस्ट का जो काम वहाँ पर चल रहा है उसकी भी आयोजनायें ठीक-ठीक न पहुँचने के कारण कुछ ढीलापन-सा आ गया है। पर अभी हाल में पूर्णिमा बनर्जी इस सिलसिले में बलिया गई थीं और वहाँ पर उन लोगों के काम के उत्साह को देखकर शीघ्र ही एक ट्रेनिंग का केन्द्र खोलनेवाली हैं। कई आदमियों ने अपनी ज़मीन और मकान कस्तूर बा ट्रस्ट के काम को सुचारु रूप से चलाने के लिए दान भी दिये हैं।

कस्तूर बा ट्रस्ट के मंत्री श्री जगतनारायण मिश्र एक भावुक नवयुवक हैं जो सन तीस से लेकर आज तक क़रीब सात-आठ बार जेल जा चुके हैं। मुझे पता चला है कि आपको गत आन्दोलन में जेल में पकड़कर बड़ी बुरी यातनायें दी गई हैं और उस शारीरिक कष्ट का जो विवरण मुझे मिला है उससे तो पता चलता है कि शायद जंगली क़ौमों के यहाँ, जहाँ कोई भी क़ानून और मानवता के नाम पर कुछ भी सभ्य व्यवहार नहीं मिलता शायद इस प्रकार का दंड वहाँ भी न दिया जाता हो। लेकिन इन नवीन शक्तियों के संगठन से यह आशा की जाती है कि भविष्य आशामय है।

श्री जानकी देवी भी बलिया के महिला संसार की एकमात्र कार्य-कर्त्री हैं। कहा जाता है कि ४२ के आन्दोलन में जब कर्फ़्यू आर्डर

श्री जगतनारायण मिश्र न सन् ४२ के आन्दोलन में प्रमुख भाग लिया था। आप बलिया के कस्तूर बा ट्रस्ट कमेटी के मंत्री हैं।

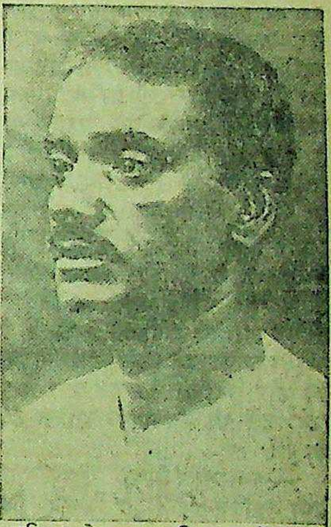

बलिया के प्रमुख किसान नेता श्री शिवपूजनसिंह।

प्रान्त की प्रसिद्ध कार्यकर्त्री श्रीमती पूर्णिमा बनर्जी बलिया गई थीं। समय लिया गया था। बाईं ओर से दूसरी महिला श्रीमती है जो बलिया कस्तूर बा ट्रस्ट की सहायक मंत्रिणी हैं और पहली कीदेवी हैं जो गाजीपुर कस्तूर बा ट्रस्ट कमेटी की मंत्रिणी हैं।

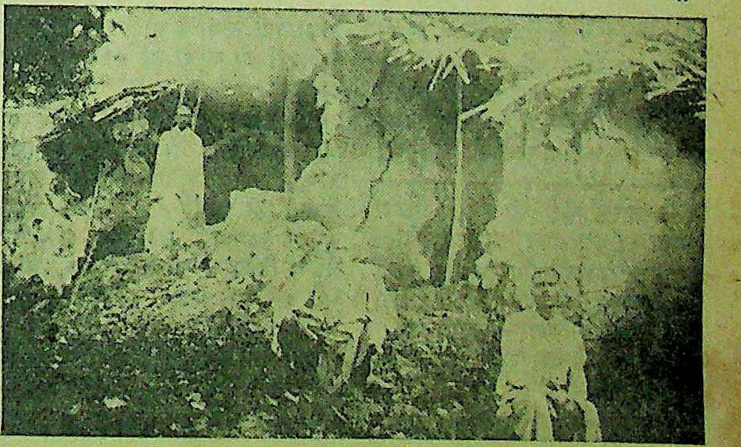

चौबे छपरा (बलिया) गाँव के एक ध्वंस घर का दृश्य। घर के गिरे खँडहरों पर बैठा हुआ वृद्ध गाँव का 'आचार्य' कहलाता है। इन्हीं के आयोजनाओं के कारण गाँववालों में नैतिक बल सदा बना रहा।

संवाददाताओं के पत्र

फतेहपुर ज़िले की जनता ने सदैव की तरह इस बार भी कांग्रेस की पुकार पर इस क्षेत्र के केन्द्रीय असेम्बली के उम्मीदवार पंडित गोविन्द मालवीय के पक्ष में शत-प्रतिशत वोट देकर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया है। उसके लिये मैं ज़िला कमेटी की ओर से हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। यह ज़िला अगस्त आन्दोलन और किसी भी राष्ट्रीय आन्दोलन में कार्य व त्याग में गरीब होते हुए भी प्रान्त में तीसरे, चौथे नम्बर में सदैव रहा है। इस बार भी इसने अपना मस्तक ऊँचा किया है—कांग्रेस विरोधी को एक भी वोट यहाँ से नहीं मिला। यही नहीं हिन्दू सभावालों ने भी अपने वोट कांग्रेस उम्मीदवार के पक्ष में देकर अपनी देशभक्ति का परिचय दिया है—सरकारी अधिकारियों ने भी हमारे उम्मीदवार के पक्ष में वोट देकर हवा का रुख पहिचाना है। हिन्दू सभा का टाट ही यहाँ पलट गया। कोई भी भला आदमी उसका जिले भर में एजेन्ट बनने को तैयार नहीं हुआ—और न कोई एजेन्ट ही था—कांग्रेस उम्मीदवार को वोट देने लोग स्वयं बिना सवारी के आये——और अपने देश-प्रेम का परिचय दिया। विशेष बात यह थी कि यहाँ पर आज तक चुनाव के सिलसिले में श्री गोविन्द जी मालवीय आये भी नहीं केवल रास्ते से गुजर गये थे। इस जिले में मुस्लिम लीग के उम्मीदवार डाक्टर सर जियाउद्दीन के लिये अनुचित तरीका लीगवालों ने अपनाया——वोट भी मुसलमानों की गरीबी से फायदा उठाकर खरीदे गये स्वयं डाक्टर साहब दो रोज डेरा डाले रहे। हुसेनगंज और ललौली के थानेदारों ने लीग के उम्मीदवार के पक्ष में अनुचित तरीके से चुनाव में भाग लिया—क्या यही सरकारी चुनाव की ईमानदारी का ढोंग था? प्रान्त के अधिकारियों को भविष्य के लिये ऐसे अधिकारियों को कड़ी चेतावनी दे देनी चाहिये। उनका यह हस्तक्षेप सर्वथा निन्दनीय और अनुचित है। एक बार मैं पुनः अपने जिले की जनता को हार्दिक बधाई देता हूँ।

——दयाशङ्कर मिश्र, "सूर्य्य" मंत्री जिला कांग्रेस-कमेटी व सदस्य जिला कांग्रेस-पार्लमेन्टरी बोर्ड ।

* * *

बामनिआ (इन्दौर) राजस्थान भील सेवक संघ, के संस्थापक श्री बालेश्वरदयालु लिखते हैं—

जयपुर में आयोजित अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के अधिवेशन के बाद ग्वालियर के एक मित्र ने मुझे दोहद आकर कहा कि अखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् के स्थायी समिति के सदस्य और मध्यभारत के प्रधान-मंत्री वैद्य कन्हैयालाल जी के विरुद्ध कुछ काग़ज़ात पकड़े गये हैं और वे पं॰ जवाहरलाल जी को दिए गए हैं, जिनसे यह सिद्ध होता है कि वैद्य जी ग्वालियर राज्य से मिलकर प्रजा-हित के विरुद्ध विश्वासघात कर रहे हैं। उस सिलसिले में उन्होंने विस्तृत और साफ़ शब्दों में मेरा मत जानना चाहा, मैंने उत्तर दिया कि :—

"पिछले १३ वर्षों से मैं वैद्यजी को जानता हूँ आज तो युग प्रभाव की लहर में अनेक मध्य-भारतीय आत्माएँ उछलती कूदती दीखती हैं, पत्र और प्रख्याति के साधन भी जुट गए हैं, किन्तु उस वक्त जबकि मध्य-भारत लावारिस प्रान्त था, ख्याति-प्रख्याति की जब कल्पना भी न थी, तब वैद्य जी ने अप्रतिम साहस दिखाया। भूखे नंगे भीलों के बच्चे जहाँ पशुओं की भाँति बिका करते थे वहाँ इस अमानवीय व्यापार और अनेक अनाचारों को रोकने के लिए साथियों को बचाकर सारे खतरे अपने माथे लेकर वे ही आगे आए।"

भीलों के रक्षण में वैद्य जी के सहकार और कुर्बानी के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शन के अतिरिक्त मुझे स्पष्टीकरण अनिवार्य इसलिए लगा कि "एटम बम" के युग में जाली दस्तावेजों का यह कलापूर्ण आविष्कार यदि निर्विघ्न प्रयुक्त होने लगा तो आज वैद्य जी और कल हर किसी की गर्दन इसके नीचे दबा दी जाएगी। यह प्रयोग मुख्यतः रियासतों के हाथों में रामबाण होगा और किसी भी कार्यकर्त्ता का नैतिक अस्तित्व सुरक्षित न रहेगा। यह वार प्रचार और व्यवहार जनतंत्र के दावे का क्रूर उपहास है। भोली जनता इन दाँव-पेंचों की गहराई को नहीं समझ सकती है वास्ते अखिल-भारतीय राजस्थानी लोक परिषद् के अध्यक्ष पंडित नेहरूजी से मेरी प्रार्थना है कि अविलम्ब असल पत्र को तलब करें। वास्तविकता की जाँच करें और दोषी को अनुकरणीय दण्ड दें।

झबुआ राज्य ने घोषित किया था कि अब भीलों से बेगार मुफ़्त नहीं ली जावेगी और काम लिया जावेगा तो पैसे पहिले दिये जावेंगे। लेकिन बेगार का पुराना रवैया फिर चालू हो गया है।

झाबुआ में बेगार बन्दी का जब से प्रारम्भ हुआ है। तब से भील बेगार के विरुद्ध संगठित हो रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

उज्जैन शहर में जिस सार्वजनिक सभा सुधारसमिति की ओर से सार्वजनिक सभा सुधार दिवस मनाने की चर्चा थी वह सभा डाक्टर श्री लक्ष्मीनारायण मालवीय की अध्यक्षता में हुई। सर्वप्रथम सभापति ने सभा का उद्देश्य बताते हुए कहा कि हमें सार्वजनिक सभा को शक्तिशाली बनाना है। सभा के संयोजक श्री कृपाशंकर तिवारी ने ६ साल पूर्व से अब तक के जन-विरोधी कृत्यों की रिपोर्ट सुनाई। श्री गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव मंत्री भोपाल राज्य प्रजामण्डल ने विरोधी पार्टी के एतराजों का जवाब देते हुए एक विस्तृत भाषण में ग्वालियर के प्रतिक्रियावादी लोगों से भोपाल में प्रजामण्डल के कार्यों को पहुँची हुई हानि पर प्रकाश डाला।

मध्यभारत के प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री नरेन्द्रसिंह 'तोमर' ने क्रान्तिकारी राष्ट्रीय और प्रतिक्रियावादी रियासती नेताओं की कृत्यों की चर्चा करनेवाली अनेकों कविताएँ पढ़ीं। श्री कन्हैयालाल वैद्य के विरुद्ध जो गम्भीर प्रचार ग्वालियर और इन्दौर में चलाया जा रहा है। उसकी वक्ताओं ने निन्दा करके नेताओं के प्रतिक्रियावादी लोगों की स्वतंत्रता से जाँच करने की माँग की।

सभा में प्रतिक्रियावादी जनविरोधी नेतृत्व के कार्यों की तथा इन्दौर प्रजामंडली की प्रतिनिधि सभा ने जो प्रस्ताव मध्य-भारत, देशी राज्य-लोक-परिषद् के प्रधान-मंत्री श्री कन्हैयालाल वैद्य के विरुद्ध पास किया है, उस पर खेद प्रगट किया और वैद्य जी के सार्वजनिक कार्यों की प्रशंसा की।

—संवाददाता

* * *

द्विवेदी साहित्य-संघ

दौलतपुर में श्री द्विवेदी साहित्य-संघ रायबरेली के उद्योग से स्वर्गीय आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जी की जन्मभूमि दौलतपुर में उनके स्मारक-संबंधी वार्षिक श्रद्धांजलि अर्पित करने का उत्सव २०, २१ दिसम्बर १९४५ ई॰ को मनाया जायगा। जिसमें गत वर्ष की भाँति अनेक विद्वान् साहित्यिक सम्मिलित होंगे। आशा है कि लखनऊ विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के अध्यापक डाक्टर दीनदयाल जी गुप्त, पंडित कृष्णविहारी जी मिश्र, पं॰ चन्द्रमौलि शुक्ल, श्री सनेही जी तथा अन्य बड़े बड़े विद्वान् साहित्यिक भी पधारेंगे।

समस्त साहित्यसेवियों तथा हिन्दी-प्रेमियों से निवेदन है कि वे कृपा करके इस पुण्य-पर्व पर दौलतपुर पधार कर द्विवेदी जी के प्रति अपनी भक्ति और कृतज्ञता प्रकट करके संघ को कृतकृत्य करें। जो महानुभाव इस उत्सव में सम्मिलित होना चाहें उनको १९ दिसम्बर ४५ की रात तक रायबरेली शहर में पहुँच जाना चाहिए और अपने पहुँचने के समय की सूचना पं॰ द्वारिकाप्रसाद शुक्ल 'शंकर' कार्य-संचालक सभापति "द्विवेदी साहित्य-संघ" रायबरेली को दे देना चाहिए। जिससे उन महानुभावों के सुभीते और आराम का प्रबन्ध हो सके। दौलतपुर के लिए १९ दिसम्बर की रात को रेल-द्वारा प्रस्थान किया जायगा।

——चन्द्रभाल मिश्र
बी॰ ए॰, एल-एल॰ बी॰

* * *

जयपुर महाराजा संस्कृत कालेज का वार्षिकोत्सव २५, २६ नवम्बर को भूतपूर्व एजूकेशन कमिश्नर ठाकुर नरेन्द्रसिंह जोबनेर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कवि-सम्मेलन भी सफलतापूर्वक हुआ। कवि शिरोमणि श्री मथुरानाथ शास्त्री और श्री उदयराम जी ने संस्कृत में कवितायें सुनाईं, श्री अद्भुत शास्त्री और श्री सुमंगलादेवी की रचनायें भी खूब पसन्द की गईं। श्री वासुदेव शर्मा, श्री ओझा जी, पट्टाभिराम शास्त्री, स्वामी जयरामदास जी, श्री नंदकिशोर राजवैद्य, श्री नंदकिशोर साहित्याचार्य, श्री सूर्यनारायण आचार्य, श्री बद्रीनाथ आचार्य आदि का पूर्ण सहयोग था।

——संवाददाता

* * *

खमीरपुर (खीरी) में २२ नवम्बर को अमर शहीद खुरशीद हसन (छात्र लखनऊ यूनिवर्सिटी) के स्वर्गवास पर नगर में पूर्ण हड़ताल रही। शाम को छात्रों का विराट जुलूस शहर में घूमा और अमर शहीद खुरशीद हसन (ज़िन्दाबाद) और जयहिन्द के नारे लगाये। गुड़मंडी में छात्रों की सभा भी हुई, जिसमें शोक प्रस्ताव पास हुआ, श्रीराम पितरिया-महाशय——रामलाल श्री वंशीधर और जयप्रकाश गुप्त के भाषण हुए।

—संवाददाता

आर्डर के कारण कोई भी घर से निकल नहीं पाता था उस समय आपने सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस को चेतावनी देकर उस आज्ञा को भंग किया था। जानकीदेवी क्या वस्तुतः इनका समस्त परिवार—माता, पिता और सम्बन्धी सभी उस कानून को तोड़ने के लिए साथ गये थे।

अगस्त आन्दोलन से आज तक इनका परिवार उसी रूप से कार्यशील है। त्याग और सेवा के रूप में यह परिवार अपने को कांग्रेस के स्वयंसेवकों में ही रखना चाहता है।

शर्तिया
आराम पहुँचाती है
"डिब्बा की गोली"
बालकों के निमोनिया और
खाँसी-जुकाम, बुखार दस्त के
इत्यादि पर।
यू॰ पी॰ आयुर्वेदिक
बेलनगंज आगरा।

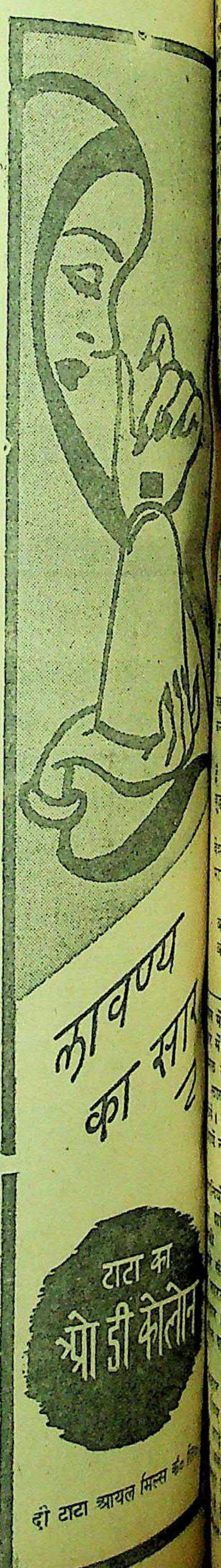

हासपरिहास

भंग की तरंग

ने एक भाषण में कहा है कि घोटालोरों से भी भयानक ता है किंतु तब तो साम्राज्यवाद कहना पड़ेगा कि वह आटम बम खतरनाक है।

❀ ❀

ऐसी मोटरकार बननेवाली परमाणु की शक्ति काम में । इस मोटरकार में एक चलने में आठ आने पैसे खर्च कुछ दिन में ऐसी मोटर का हो सकेगा जिसमें एक भी हो? क्योंकि भारतवासी तो चाहते हैं।

❀ ❀

है कि अलीगढ़ में पुलिस ने पर भी लाठी-प्रहार आईन-कानून का संरक्षण कानून की दृष्टि में सब पुलिस के सामने ६० साल ६ साल का बच्चा एक-सा इसी का नाम है।

❀ ❀

में हिटलर की एक मूर्ति साढ़े में बिकी है। यदि हिटलर इस जायें तो कितने में बिकें? का तो सेठ डालमियाँ ही । जहाँ हों हिटलर, यदि जीवित नाक की सीध में दिल्ली।

* *

में कुछ उपद्रव हो गया करने के लिये भारतीय जानेवाली है। किया क्या संसार में शांति स्थापित करने सेना तो है। यही दुनिया । भारतवासियों के सिवाय स्थापित कर सकता है?

* *

में ८७ स्थान हैं पार्लिमेंटरी बोर्ड के सौ अर्जियाँ आई हैं। की जगहें भी नौकरी नहीं हैं। इससे पता के लिए बिहार के

सरकार की ओर से वह आज्ञा उठा ली गई है कि पचास आदमियों से अधिक को भोज न दिया जाय। यदि यह आज्ञा बनी रहती तो गवर्नर बहादुर को पार्टियाँ और दावत कैसे दी जातीं? यह जरा समझने की बात है!

❀ ❀ ❀

मद्रास के नये गवर्नर एक महान् नाई साहब होंगे। डर है कि मद्रासवाले कहीं अच्छी तरह मुड़ न जायें?

❀ ❀ ❀

पटना में एक लड़की के विवाह में दो बारातें एक साथ पहुँचीं। पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। क्यों नहीं उन लोगों ने वहीं युद्ध करके निश्चय कर लिया कि कौन विवाह करेगा? पटना में दोनों को निपट लेना चाहिए था।

* ❀ *

फतहगढ़ में गवर्नर साहब तशरीफ ले गये थे तो वहाँ के दूकानदारों ने हड़ताल मनाई। जान पड़ता है वहाँ श्री नेदरसोल के भाई-बन्द नहीं थे नहीं तो मजाल है कोई हड़ताल कर देता?

❀ ❀ ❀

हैलेट साहब ने भाषण दिया है कि सरकारी कर्मचारी घबड़ाएं नहीं। सरकार उनकी रक्षा करेगी। जो सरकार रक्षा करने वाली है पहले उसे अपनी रक्षा करनी होगी। कर्मचारियों की रक्षा तो पीछे होगी।

❀ ❀ ❀

स्नेह सदा लड़ाई का घर रहा है। ऐसा जान पड़ता है कि इसी ईरानी स्नेह के कारण रूस और मित्रराष्ट्रों में तनातनी हो रही है। देखना चाहिए कि इस बार जर्मनी और जापान की भाँति किसकी बारी चित होने की आती है?

❀ ❀ ❀

नागरी-प्रचारिणी-सभा ने सरकार से प्रार्थना की है कि नया रुपया जो बने उस पर भारत का प्रतीक कमल बनाया जाय किंतु मुसलमानों का भी तो कोई चिन्ह होना चाहिए? और यह तो तय ही नहीं हुआ कि मुसलमानों को हिन्दुओं के बराबर माना जाय कि आधा कि तिहाई? इसलिए फिलहाल दो कमलों के बीच एक खजूर का पेड़ बन जाय तो कैसा हो?

—अगडधत्त शर्मा

कब मना है?

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

सत्य कहना हो कठिन, बातें बनाना कब मना है?
झुकती जा रही है जरा भी अब आ रही है,
चिकने कपोलों पर प्रकृति बनवा रही है,
पर जवानी के लिए मूँछे मुड़ाना कब मना है?
पाऊँ कहाँ से लुंगियाँ लाऊँ कहाँ से,
पाजामें बताओ आज सिलवाऊँ कहाँ से,
बन्द कमरे में मगर नंगे नहाना कब मना है?
हमारे घर न आएँ, हम वहाँ तक जा न पाएँ,
फाटक भी रहे पहरा वहाँ पर वह दिलाएँ,
डाकखाने में लिफ़ाफ़ा डाल आना कब मना है?
अहिंसा अस्त्र अपना बस इसी का मंत्र जपना,
का इस जिन्दगी—में भूलकर देखो न सपना,
भाषणों के तोप का गोला चलाना कब मना है?
का नृत्य भद्दा टाट का जिस भाँति गद्दा,
समाज पर है यह महान अशिष्ट रद्दा,
पर कला के हेतु बीबी को नचाना कब मना है?
पाकिस्तान लेंगे आप हिन्दुस्तान लेंगे,
और शायद लड़-झगड़कर एक दो की जान लेंगे,
पर उन्हें इस देश से करना रवाना कब मना है?

मनोरञ्जक चुटकुले

पुलिस की आवश्यकता नहीं

लड़की अपने छोटे भाई को समझा रही थी कि किसी को रविवार के दिन काम नहीं करना चाहिए।

लड़के ने पूछा, 'क्या पुलिसवालों को भी नहीं? उन्हें तो रविवार को भी काम करना पड़ता है। क्या उन्हें स्वर्ग नहीं मिलता?'

'बिलकुल नहीं, क्योंकि उनकी वहाँ आवश्यकता ही नहीं।' लड़की ने उत्तर दिया।

क्या जानती हूँ?

घर की मालकिन ने नौकर रखने के लिए लड़की से पूछा—"क्या तुम अच्छा भोजन बनाना जानती हो?"

"नहीं मैं नहीं बना सकती" लड़की ने उत्तर दिया।

"घर का काम, सफाई वगैरह तो जानती ही होगी?"

"नहीं, यह सब मैं कुछ भी नहीं जानती" लड़की ने प्रसन्नतापूर्वक कहा।

"तब तुम क्या जानती हो?"

"मैं तो मशीनगन बनाना जानती हूँ।"

लापरवाही

"तुमने जो तोता मुझे बेचा था—वह जब से मेरे पास आया है कुछ बोलता ही नहीं। तुम तो कह रहे थे कि वह खूब बोलता है।" दूकानदार से महिला ने पूछा।

"आप ऐसी लापरवाही की बात से क्या और आशा रखती हैं? मुझे तो हर जगह इसी तरह बोलना पड़ता है।" दूकानदार ने उत्तर दिया।

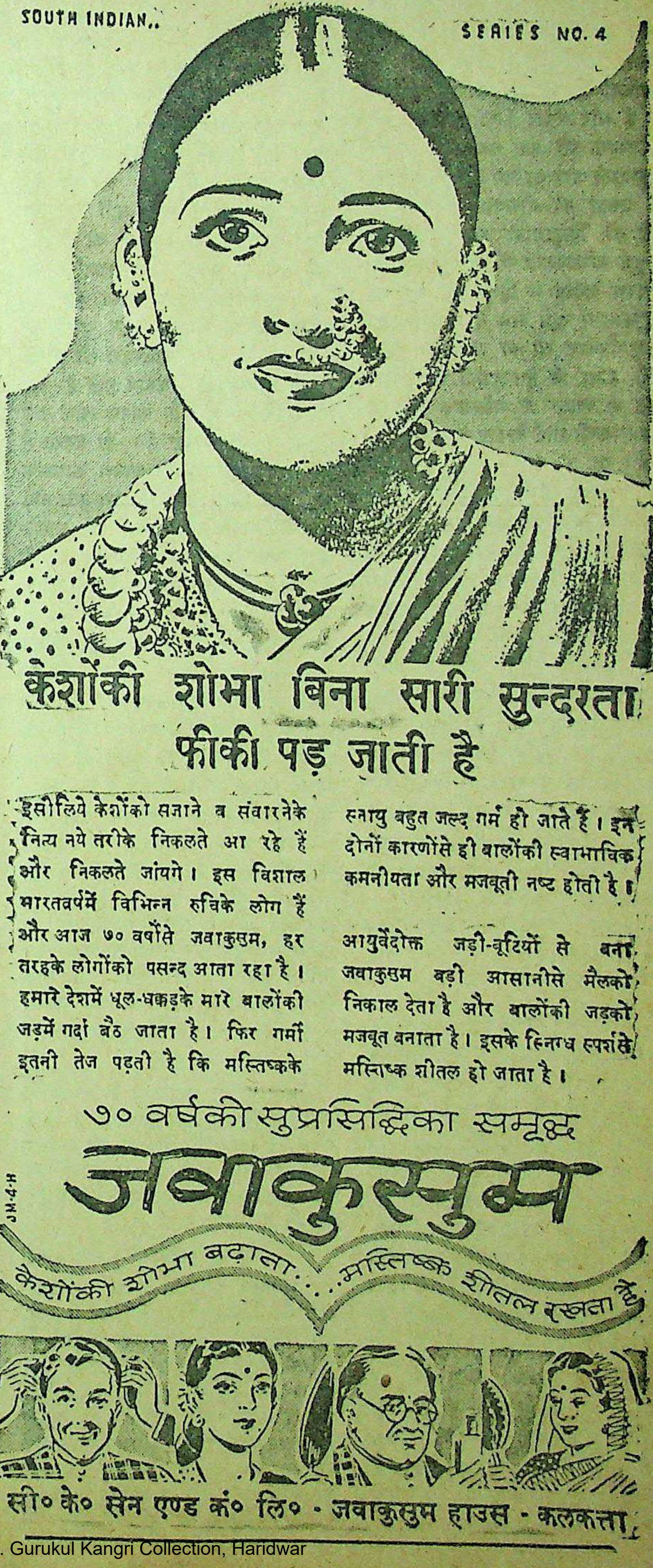

SOUTH INDIAN.. SERIES NO. 4

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये केशोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाना...मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कलकत्ता

चित्रपट और हिन्दी

(१)

'देशदूत' में श्री हरस्वरूप माथुर और सूर्य्यप्रकाश जी एम० ए० का चित्रपट की भाषा के संबंध में विचार-विनिमय देखा। माथुर जी कला के आलोचक तथा भाषा के परिचायक हैं; सूर्य्य प्रकाश जी भाषा को सर्वस्व मानकर चलने वाले। अभी जनता भाषा सुनने के मोह से सिनेमा-गृहों में नहीं जाती वह तो खेल देखने, अभिनय देखने तथा 'जब तुम्ही चले परदेस लगा कर ठेस ओ पीतम प्यारा' को मार्ग पर गाने के लिए जाती हैं। कदाचित् यही कारण है कि चित्रों के समालोचक चरित्र-चित्रण से अभिनय पर अधिक ध्यान देते हैं। कहानी और संवाद की भाषा से कोई संबन्ध नहीं। कितने ही चित्रों की हिन्दी चित्रों की, कहानियाँ (कथानक) अँगरेजी में लिखे गये हैं और संवाद हिन्दी में है। आगे सूर्य्यप्रकाश जी का कथन है; जनता हिन्दुस्तानी शब्द का अर्थ लगाती है साधारण जनता की बोलचाल की भाषा।' पहले तो 'हिन्दुस्तानी' शब्द अपने अर्थ की पूर्ण अभिव्यंजना में यहाँ असमर्थ है। साधारण जनता में हिन्दुस्तानी का अर्थ हिन्दुस्तान में रहने वाले से लगाया जाता है। सूर्य्यप्रकाश जी का अभिप्राय 'हिन्दुस्तानी भाषा' से है। दूसरी बात, मेरी समझ में 'जनता' के मस्तिष्क में अभी भाषा सम्बन्धी कोई विकार न उत्पन्न होने की है। यह तो अभी 'सच्ची मानवता' की डींग मारने वालों तक ही सीमित है। और यदि 'जनता' 'साधारण जनता', जिसकी बोलचाल की भाषा का निर्देश है, से अलग है तो बात ही दूसरी है। मेरी समझ में हिन्दुस्तानी भाषा से सूर्य्यप्रकाश जी का तात्पर्य 'हिन्दी'-गर्भित हिन्दुस्तानी भाषा' से है। सोहराब मोदी की चित्रपटकला के विषय में वास्तव में आपने कुछ नहीं कहा था वरन् आपने माथुर जी के मोदी की कला के विषय में प्रकट किये गये विचारों पर अपना मत प्रकट किया था। मोदी की चित्रपट की कला के कुछ कहने का आरोप आप पर नहीं लगाया जा सकता। आप माथुर जी के आलोचक हैं, मोदी के नहीं—

मौरावाँ —लक्ष्मीचन्द्र दीक्षित

१ दिसम्बर ४५

(२)

मुझे आप के 'देशदूत' की नियमित ग्राहिका होने के कारण उपर्युक्त शीर्षक के, श्री सूर्य्यप्रकाश जी तथा श्री हरस्वरूप माथुर द्वारा लिखित तीनों पत्र देखने का अवसर प्राप्त हुआ। चित्रपट की ओर रुचि विशेष के कारण श्री हरस्वरूप माथुर का 'परख और हुमायूँ चित्र कैसे हैं!' शीर्षक लेख भी पढ़ चुकी थी। हिन्दी और हिन्दुस्तानी के विषय में लोगों का भ्रम देखकर ही मैं यह पत्र लिखने को बाध्य हुई।

मुझे यह देखकर दुःख हुआ कि श्री सूर्य प्रकाश जी हिन्दी के समर्थक होने पर भी हिन्दी को सर्व साधारण की भाषा के योग्य नहीं मानते। यहाँ तक कि उन्हें हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने तक में संदेह है। वे जनता की साधारण बोलचाल की भाषा को 'हिन्दुस्तानी' कहते हुए भी उसे 'साधारण उर्दू' से भिन्न समझते हैं। परन्तु क्या उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि 'हिन्दुस्तानी', हिन्दी और उर्दू की त्रिवेणी या हुगली न होकर 'साधारण' उर्दू ही है; उसमें 'मालूम' शब्द का ही प्रयोग होता है "निर्णय' और 'ज्ञात' का नहीं। उर्दू के शब्द 'बोलचाल की भाषा' में इस आधिक्य से प्रयोग होते हैं उर्दू से परिचित न होने के कारण लोग उन्हें 'हिन्दी' समझ बैठते हैं। हो सकता है सूर्य प्रकाश जी को इसी कारण 'साधारण उर्दू' और हिन्दुस्तानी में भ्रम हुआ हो।

अब 'परख' और 'हुमायूँ' की आलोचना पर आइये! श्रीसूर्य-प्रकाश जी के कथन है कि सोहराब मोदी हिन्दी के शब्दों को चुन चुन कर, निकाल देते हैं, मुझे संदेह है। निर्देशक और संवाद लेखक का अलग अलग अपना अस्तित्व रखते हैं। यदि सूर्यप्रकाश जी की बात सत्य होती तो हमें 'सिकन्दर' और 'पृथ्वी-वल्लभ' में हिन्दी शब्द सुनने को भी न मिलते। वरन् मैं तो देखती हूँ कि 'परख' भी हिन्दी से वंचित नहीं रक्खा गया है।

उदयपुर में सम्मेलन ने जो चित्रपट विरोधी प्रस्ताव स्वीकृत किया है उसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि मुस्लिम कथानकों में भी 'साहित्यिक हिन्दी' का प्रयोग हो। 'हुमायूँ' मुस्लिम कथानक लेकर निर्मित हुआ है। यदि उसमें साहित्यिक हिन्दी का प्रयोग होता तो क्या उसकी स्वाभाविकता न नष्ट हो जाती क्या बाबर को 'शाहंशाह' न कह कर 'सम्राट' कहा गया होता तो अधिक उपयुक्त होता? क्या श्री सूर्यप्रकाश जी 'हुमायूँ' में भी 'रामराज्य' की भाषा का प्रयोग देखना चाहते थे? मैं तो यही कहूँगी कि श्री

सूर्यप्रकाश जी कुछ ऐसी भाव
लेकर ही चित्र देखते हैं जिनमें
विकता से अधिक ध्यान हिन्दी
होता है।

श्री माथुर से भी मैं यह
'हिन्दुस्तानी' को वे सर्वसाधारण के
की उर्दू ही समझें; फिर भी
लिए हमें प्रयत्नशील रहना है।
भाषा को लेकर चित्रपट की स्वा
को नष्ट कर देने के पक्ष में मैं न

लखनऊ
३० नवम्बर ४५ —

गीत

लेखक, श्री महाराजकृष्ण रसगोत्रा बी० ए०

दो नयन थककर प्रतीक्षा से तुम्हारी सो रहे हैं।
खोजकर सौ सृष्टियों को
था तुम्हें अपना बनाया,
सौ युगों की साधना से
जब तुम्हारा प्यार पाया,
"यह नहीं अधिकार तेरा", मृत्यु बोली मुसकरा कर।
दो नयन थककर प्रतीक्षा से तुम्हारी सो रहे हैं।
उस अपरिचित लोक की
मजबूरियों को कौन जाने?
(मर्त्य हम हैं, तो अमरता
को प्रणय की कौन माने?)
लौट आ पाया न कोई भी कभी उस पार जाकर।
दो नयन थककर प्रतीक्षा से तुम्हारी सो रहे हैं।
व्यर्थ आशा, व्यर्थ सुख की
दाह, जीवन की लगन भी,
व्यर्थ निज असमर्थता का
ज्ञान औ' दिल की जलन भी,
जब कि अपने भाग्य का ही हम नहीं सकते गिला कर।
दो नयन थककर प्रतीक्षा से तुम्हारी सो रहे हैं।

रूबिया

में रूस की जारशाही के समय की दशा का चित्रण बड़ी सुन्दरता से किया गया है। पति-पत्नी के प्रेम का अनोखा चित्र-सा खींचा गया है। पुस्तक में कई चित्र हैं। जिल्द के ऊपर रङ्गीन चित्र है। ल्य २) दो रुपये।

चन्द्रशेखर

सुप्रसिद्ध उपन्यास-लेखक बङ्किम बाबू की प्रसिद्ध रचना है। इसकी कथा बड़ी विचित्र है। घटना है बङ्गाल के अन्तिम नवाब मीर क़ासिम के समय की। नवाब और अँगरेज़ों के बीच हुए ससंघर्ष का भी वर्णन इसमें है। कथा के नायक चन्द्रशेखर का उदार सचित्र अनूठा है। यह लेख का बहुत ही प्रशंसित उपन्यास है। मूल्य १।) एक रुपया पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

स्वयं चलनेवाला पिस्
(अपनी रक्षा के लिए)
एक बार में ६ फायर कर सकता है

इसके
बदमाश
जानवर
डरा
सकते हैं। लाइसेन्स की आवश्यक
मूल्य कारतूसों के सहित :—नं० (१)
नं० (२) १०)। डाकखर्च और पैकिं
१।)। १ नकली कलाई-घड़ी मुफ्
रेजी में आर्डर भेजिए)।
कलकत्ता वाच कम्पनी (सेक्शन
पोस्ट बक्स नं० १२२०३, कल

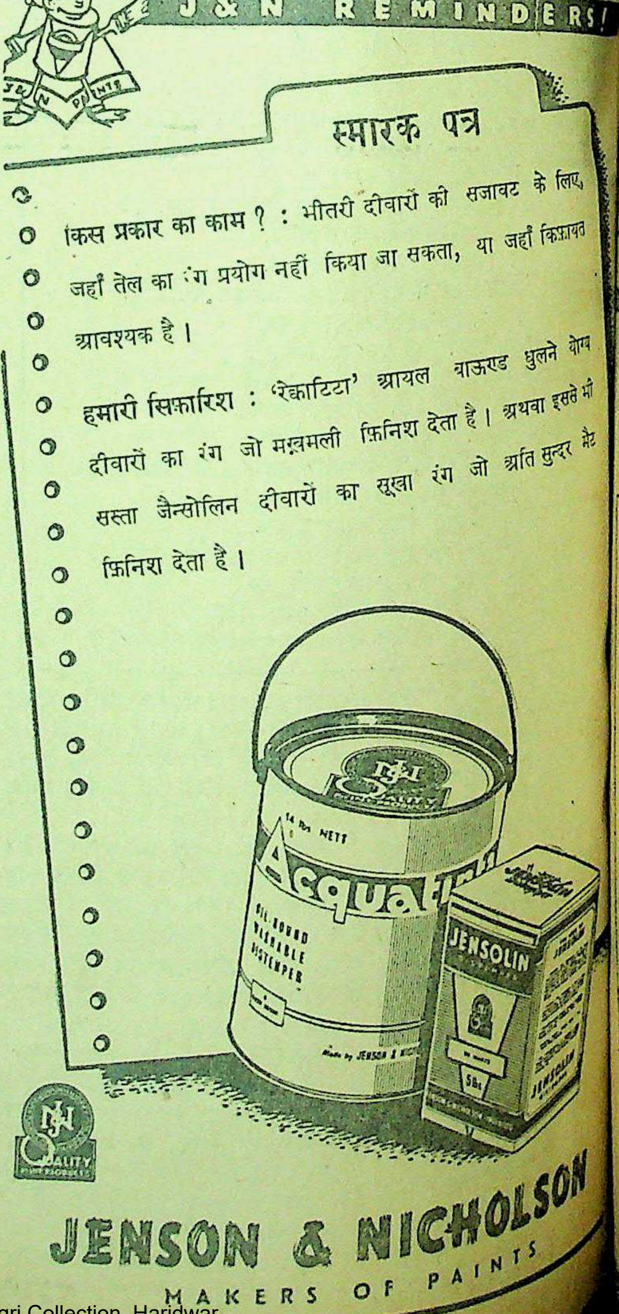

स्मारक पत्र

किस प्रकार का काम ? : भीतरी दीवारों की सजावट के लिए, जहाँ तेल का रंग प्रयोग नहीं किया जा सकता, या जहाँ किफ़ायत आवश्यक है।

हमारी सिफ़ारिश : 'रेक्काटिटा' आयल बाऊण्ड धुलने योग्य दीवारों का रंग जो मख़मली फ़िनिश देता है। अथवा इससे भी सस्ता जैन्सोलिन दीवारों का सूखा रंग जो अति सुन्दर मैट फ़िनिश देता है।

JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

ट के दर्द
कड़ लिया है ?

आपको
ना चाहिए !

ACLEAN
Brand
omach
owder
COPYRIGHT
A. Maclean

JWT(E) LTD.

खरीदने से पहले
इस ट्रेड मार्क को
देखो

वुडवर्ड के ग्राइप वाटर
के
बोतल सदैव साथ रक्खें। यह
बच्चों को तन्दुरुस्त रखता है !

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप वाटर की पहिचान है। इसलिये माता जी ! आप अपने बालक के हित के लिए इसको अवश्य देख लिया करें।

1-WW 105—117 W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND.

स्टैनकजेमा
मलहम
दाद, दिनाय, फोड़ा फुन्सी, जले,
कटे, मुहासे, सड़ा, गला घाव तथा
एक्जिमा
आरोग्य करने में अद्वितीय है
।) डिबिया
स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:
कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 123

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये तो
ग्रिमौल्ट्स
सिरप को
याद कीजिये

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ

१—दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।
२—गठीली और कठोर जड़ी-बूटी व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।
३—सर्वोपरी परीक्षा परीक्षोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।
४—पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।
५—हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।

परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये
सुखसंचारक कम्पनी .... लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग .... सुखसंचारक पोस्टआफिस
मथुरा

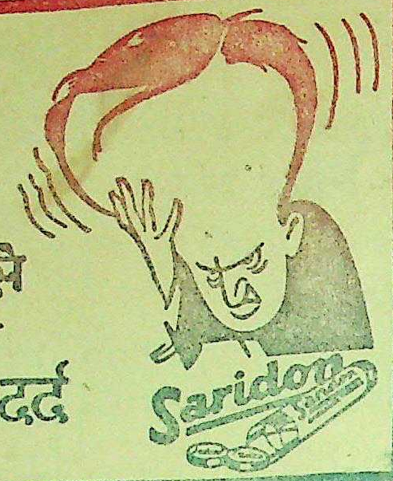

सारिडन से
१० मिनट में ही
हर किस्म का दर्द
दूर कीजिये

तन्दुरुस्त बनो!

आरोग्य संपन्न पुरुष,
स्त्रिया तथा बच्चे अपने

बल और शक्ति के लिये संसार मे बहोत कदर करे जाते है। जो आप. प्रतिदिन स्वास्थ्य वर्धक भोजन सेवन करें तो आप भी बलिष्ट बन सकते है, किसी आखाडे या तेरना सिखलाने वाली संस्या के सभासद बनकर नित्य व्यायाम करो। काम या खेल मे तन्दुरुस्त रेहेना बहोत फायदा करता है!

व्यायाम के पश्चात अपने
शरीर को लाइफबॉय साबुन से साफ कीजीए।

युक्त प्रान्तीय
स्वास्थ्य आन्दोलन

L.U.P.2-169 HI

बालसखा का नया वार्षिक

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालस
वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें
कविता,यें कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री
पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क सन् १९४६ में
के.साथ प्रकाशित होगा। मूल्य ३), बालसखा के ग्राहकों
लिए रियायती मूल्य २।।)

मैनेजर, बालसखा इंडियन प्रेस, लि०, इलाहा

AAA460

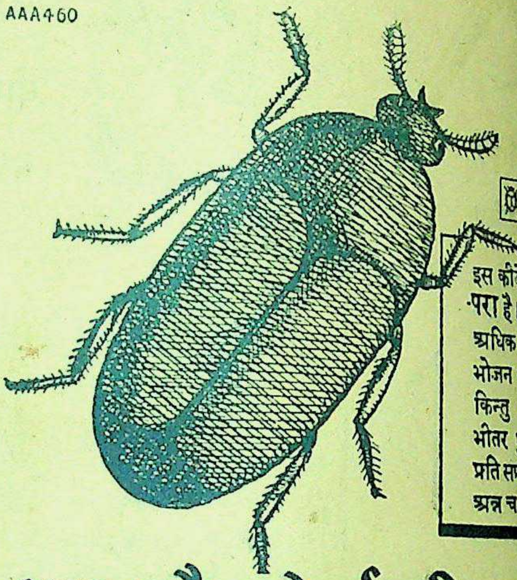

वास्तवि
आकार

इस कीड़े का ना
-परा है। यह ए
अधिक समय त
भोजन रह स
किन्तु जब
भीतर घुस
प्रति सप्ताह
अन्न चट क

एक और मोर्चा जीतना है
ख़ूराक की बरबादी के विरुद्ध संग्राम

सड़ने-गलने से, चूहों और कीड़ों से कम से कम ३० लाख टन
नुक़सान प्रति वर्ष हो जाता है। इतने अनाज से हिन्दुस्तान की
आबादी को १६ दिन तक आध सेर प्रति व्यक्ति प्रति दिन के
खिलाया जा सकता है। उस देश के लिए जिसके पास अपनी आव
भर के लिए पर्याप्त अन्न न हो, यह बरबादी बहुत ही भयानक है।
जा सकता है और इसे रोका जाना चाहिए। यदि भंडार में निम्नलि
से ठीक रूप से वस्तु रखें, तो इस बरबादी को रोकना कठिन न हो

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हु

नियमित रूप से अनाज का
कीजिए। सूखे मौसम में रोश
हवा के लिए झरोखे खोल दी

यह मत कीजि

अच्छे अनाज को गन्दे गोदा
गन्दे बोरों में या घुन खाए अ
पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में
भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी,
बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट
दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज खा
कीजिए।

ख़ुश्क आबोहवा में चार महीने
अधिक और नम आबोहवा में
महीने से अधिक समय तक
अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफ़ार्मों पर
को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए—देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेंट आफ इण्डिया के फ़ूड डिपार्टमेंट, नई दिल्ली द्वारा प्रका

प्रकाशक सम्पादक—[illegible] इंडियन प्रेस, लिमिटेड, [illegible] प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित]

मूल्य ७॥)
ल्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

१६ दिसम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 16th December 1945

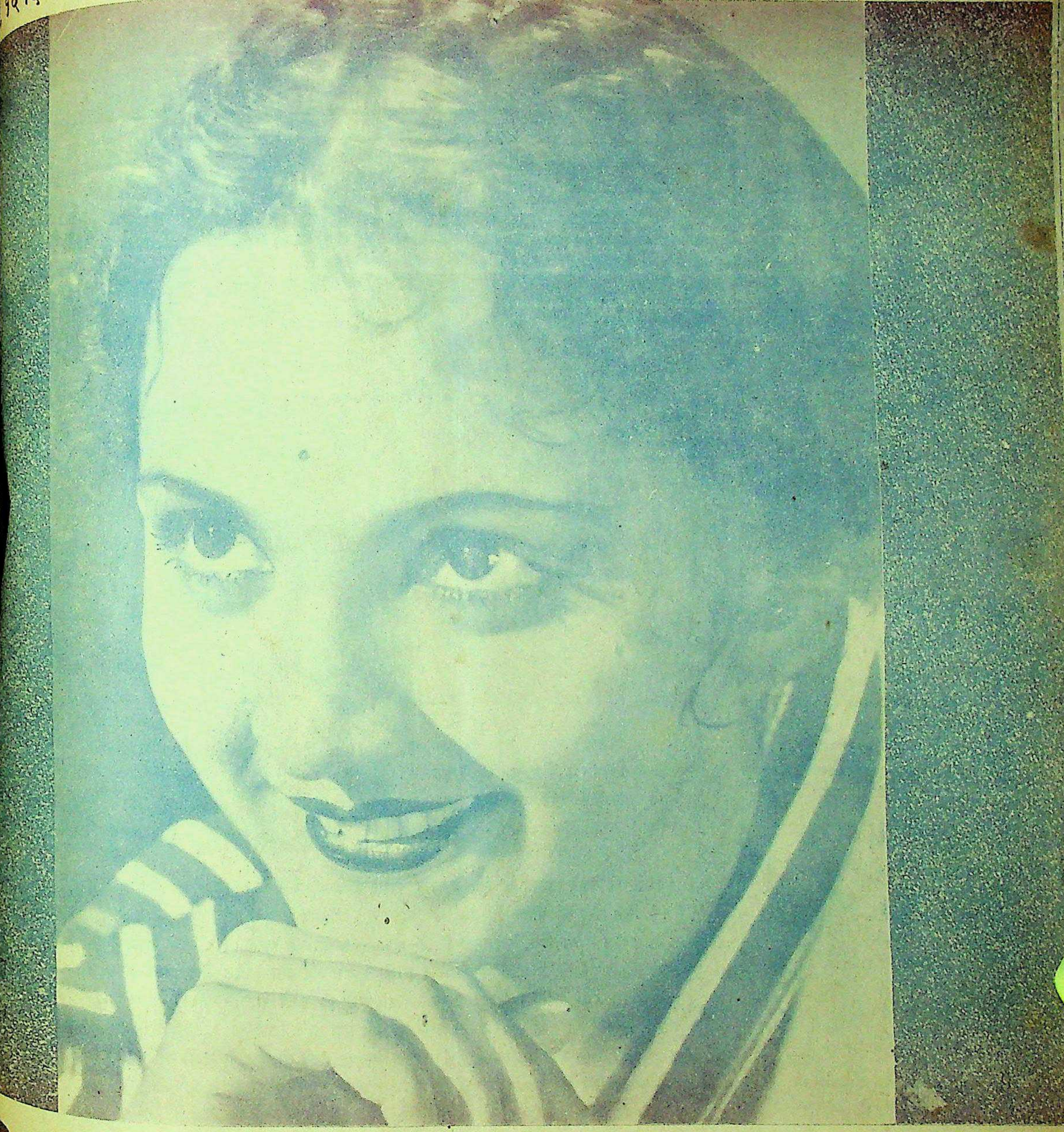

वनवास में कवि ने रामचन्द्र जी के वनवास का अनोखा वर्णन किया है। कवि राजाराम चित्रकूट के पड़ोसी हैं और वहीं पर वनवा की अनेक मुख्य घटनाएँ हुई थीं। इस कारण यह 'वनवास' अपने ढंग की एक ही पुस्तक है। इसमें श्री रामचन्द्र जी के वनवास सम्बन्ध रखनेवाली, दशरथ के प्राण-त्याग, भरत के द्वारा कैकेयी की भर्त्सना, अयोध्या लौटने के लिए श्री रामचन्द्र जी से भरत आग्रह करने तथा लक्ष्मण के द्वारा शूर्पणखा की नाक काटने आदि की घटनाओं का वर्णन है। मूल्य ॥।=) चौदह आने।

ति होगी अथवा महायुद्ध !
के देशों के भारतीय।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

उत्तरी ईरान में आज का विद्रोह क्यों?
महात्मा गांधी का अगला नया कदम!

हास्य-कौतुक

हंसते-हंसते लोटपोट हो जाने की आकांक्षा करनेवालों के लिए इसमें मनोनुकूल सामग्री मिलेगी, साथ ही साथ मानव-चरित्र का भी सुन्दर चित्र आप इसमें पायेंगे। मूल्य ।।)

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

क्या आज आपने मेकलिन से दाँत साफ़ किये हैं?

हाँ, समुद्री वेड़े में काम करनेवाले हम सबके दाँत बेदाग़ हैं।

MACLEANS
PEROXIDE TOOTH PASTE

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

अब
कन्ट्रोल भाव पर
मिलते हैं

EVEREADY
एवरेडी वेटरी के वल्व

हिन्दुस्तान में सब जगह फुटकर व्यापारियों के लिए थोक भाव:—

नं. 1161 (2.5V) } नं. 1162 (3.8V) } रु. ११-४-० १०० नग
नं. 1163 (6.2V) .... ,, १६-१४-० ,, ,,

हिन्दुस्तान में सब जगह खरीददारों के लिए परचून भाव:—

नं. 1161 (2.5V) } नं. 1162 (3.8V) } .... एक नग ६ आने
नं. 1163 (6.2V) .... ,, ८ आने

ज्यादा मत दें

NATIONAL CARBON COMPANY (INDIA) LTD.
BOMBAY • CALCUTTA • MADRAS
COCHIN • KARACHI • DELHI

कोई गुण नष्ट नहीं होता!

पूरी तरह पकने से पहले नारियल तोड़ लिए जाते हैं। अतः उन्हें खोलने से रस गिर कर व्यर्थ जाता है। डेसीकेटेड् कोकोनट की प्रणाली में पकने से पहले नारियल तोड़े नहीं जाते। इससे सारा रस और पोषक तत्व उसमें जम जाते हैं।

CEYLON
DESICCATED
COCONUT

इसमें आपको सब तत्व मिलेंगे

नुस्खों, नमूनों और व्यापारियों के नाम के विवरण के लिए लिखिए:
सीलोन ट्रेड कमिश्नर फ़ार इंडिया, सीलोन हाउस, ब्रुस स्ट्रीट, बम्बई
सीलोन कोकोनट बोर्ड द्वारा प्रचारित

इस तरह धोने से पटखे जाने के नुकसान से बचाव होता है

छेद, उधेड़ या फट जाना......यदि कपड़ों को स्वच्छ करने के लिए उन्हें पुराने तरीके से कूटा जायगा तो कपड़ों को ऐसा अनावश्यक (और खर्चीला) नुकसान पहुँचता रहेगा।

1

इन चित्रों को देखये यह आपको बिना नुक़सान पहुँचाए कपड़ों को धोने का तरीका बताती हैं। (१) जिस कपड़े को धोना हो उसे पहले खूब भिगो लीजिए। यह आप नल के नीचे, टब में, तालाब में या नदी में कर सकते हैं—इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। (२) जब कपड़े को खूब भिगो चुकें तो सारे कपड़े में सनलाइट साबुन मलें। जो भाग अधिक मैला हो वहाँ सनलाइट ज़रा ज्यादा मलें। (३) साबुन लगे हुए कपड़े को हाथों से धीरे-धीरे गूँथिये। (इसे कूटिये नहीं) तबतक गूँथिये (ठीक उसी तरह जैसे रोटी का आटा गूँथा जाता है) जब तक साबुन की झाग कपड़े के हरेक तन्तु में प्रवेश न पाजाए। कपड़े को जोर से रगड़ने की या बुरी तरह कूटने की आवश्यकता ही नहीं है। **सनलाइट का "स्वयं काम करने वाला फेन सरलता से सारे मैल को बाहर निकाल देगा—यदि आपको यह विश्वास हो जाये कि गूँथने से यह फेन कपड़े के मैल में घुस चुका है।** इस शक्तिशाली फेन में जो साबुन है वह मैल को छूते ही तत्काल फुला देता है। फेन उसे जज़्ब कर लेता है। ऐसे जब आप कपड़े को खूब धोएँगे तो फेन के साथ २ सब मैल निकल जायेगा। (४) फेन—जिसमें कि अब सारा मैल आचुका है—छुटाने के लिए कपड़े को खूब मलकर धो डालिए। ऐसे सनलाइट के तरीक़े से धोए हुए कपड़े बहुत समय तक चलते हैं।

SUNLIGHT
SOAP
Rs.10000 Reward!
GUARANTEE

सनलाइट साबुन कपड़ों की बचत करता है

74-80 HI

LEVER BROTHERS

देशदूत

र्ष ८ संख्या १६] सचित्र हिंदी-साप्ताहिक रविवार १६ दिसम्बर, १९४५

-विदेश में कहाँ क्या हो रहा है ?

न से विश्वसनीय संवाद मिला है ानी १५ दिसम्बर को मास्को में अमेरिका और रूस के परराष्ट्र का सम्मेलन होगा।

* *

के प्रधान मन्त्री श्री चुकरू ने पत्रकारों के बीच कहा है कि न के नियन्त्रण के बारे में माण्ट्रो में संशोधन का रूस ने जो प्रस्ताव र्भी सिद्धानतः उसे मानने को आपने यह भी कहा कि उक्त यक न मानते हुए भी ब्रिटिश मेरिकन प्रस्तावित शैली पर ती हैं।

* *

समैन ऐण्ड नेशन' ने यह किया है कि रूस से अन्त तक ईरान से अपने ७५ ों के हटा लेने की माँग करना । अमेरिकनों को यह महसूस कि ब्रिटेन और अमेरिका से रूसियों को निकालने के चिन्तित हैं।

* *

के हेब्रू विश्वविद्यालय के टर जूहालियन मैगनस ने के यहूदियों से कहा है कि वे के सिद्धान्त के अनुसार अहिंसात्मक विनय अवज्ञा आन्दोलन करें।

● ●

गांधी और वाइसराय लार्ड मुलाकात बंगाल गवर्नर में हुई। गान्धी जी के आने के भवन के उत्तरी फाटक पर भीड़ थी। गांधी जी के लिए बीच में कर ३ और ४ की कतारों में जनता आशा लगाये खड़ी थी। जी की मोटर दूसरी तरफ़ से भीड़ जब तक फिर से कतारों में नहीं खड़ी हो गई, वह रुकी रही। 'बन्दे-मातरम्' महात्मा गांधी की जय' और 'जय हिन्द' के गगनभेदी नारों के साथ गांधी जी की मोटर ने सरकारी भवन में प्रवेश किया। गांधी जी वार्ता समाप्त कर गवर्नमेंट हाउस के बाहर निकले। उत्तरी फाटक तक पैदल चलकर उन्होंने उपस्थित भीड़ के सामने दो मिनट तक भाषण दिया और सोदपुर आश्रम के लिए रवाना हो गये।

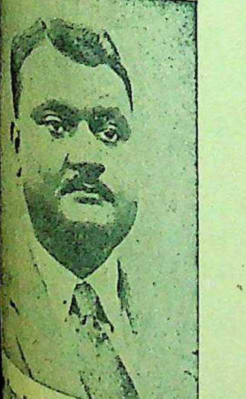

विद्यालय के वाइस चांसलर नाथ झा पिछले दिनों लंदन शिक्षा सम्मेलन में सम्मिलित वापस आ गये हैं।

* * *

बटाविया से रायटर के विशेष संवाददाता नोबेल बकले का तार है कि बटाविया से १०० मील दक्षिण पूर्व वडोएंग को खाद्य एवं शस्त्रास्त्र ले जानेवाले काफिले की रक्षा करनेवाली एक जाट बटालियन का इण्डोनेशियनों से सोयकानोय के एक होटल के हाते के इर्द-गिर्द घोर युद्ध हो रहा है। वह स्थान बटाविया से ४० मील दूर है। दोनों पक्षों के काफ़ी सैनिक हताहत हो चुके हैं और काफले का एक अंश लपटों में जलता हुआ छोड़ दिया गया है।

* * *

'नेशनल हेराल्ड' ने 'बूचरीज आफ़ बलिया एण्ड आज़मगढ़' के शीर्षक से जो लेख प्रकाशित किये उस पर उससे ६ हज़ार रु० की जमानत तलब की गई है। इसमें से ३ हज़ार की जमानत 'नेशनल हेराल्ड' के सम्पादक को और शेष ३ हज़ार उसके प्रकाशक को देनी होगी। जमानत २१ दिन के अन्दर ही जमा करने का आदेश मिला है।

* * *

कलकत्ता का समाचार है कि कांग्रेस कार्य-समिति ने सम्भवतः निश्चित कर दिया है कि अप्रैल के पहले हफ़्ते में दिल्ली में कांग्रेस का अधिवेशन होगा।

* * *

कलकत्ता में होनेवाली कांग्रेस कार्य-समिति की बैठक में तीन महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए। समिति ने पण्डित जवाहरलाल नेहरू को बर्मा और मलाया जाकर वहाँ के भारतवासियों की स्थित की जाँच करने तथा उन्हें आवश्यक साहाप्य प्रदान करने का भार सौंपा है। दूसरे प्रस्ताव द्वारा आज़ाद हिन्द फ़ौज के लिए जाँच तथा रक्षा-समिति का निर्माण किया गया। इस समिति के अध्यक्ष सरदार वल्लभभाई पटेल बनाये गये हैं और मन्त्री का कार्य-भार श्रीप्रकाश जी को सौंपा गया है। पण्डित जवाहरलाल नेहरू, श्री शरच्चन्द्र बोस और आचार्य कृपलानी आदि इस समिति के १० सदस्य नियुक्त हुए हैं। तीसरे प्रस्ताव द्वारा बिलोचिस्तान के अंजुमन ने वतन को कांग्रेस में प्रतिनिधित्व स्वीकार किया गया है।

* * *

बर्मा और मलाया के भारतवासियों के साथ वहाँ के अधिकारियों की ओर से जो दुर्व्यवहार किया जा रहा है उस पर कार्य-समिति अत्यन्त क्षोभ और खेद प्रकट कर रही है। भारत-सरकार उनके दशा सुधार के लिए न स्वयं कोई उपाय करती है और न औरों को ही वहाँ जाकर उनकी अवस्था में परिवर्तन करने की सुविधा प्रदान करती है। कार्य-समिति इस वस्तुस्थिति की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू को बर्मा और मलाया में जाकर वहाँ के भारतीयों की दशा का अध्ययन करने तथा उनकी रक्षा का समुचित उपाय करने के लिए नियुक्त करती है।

* * *

कलकत्ता में असोशियेटेड चैम्बर्स आफ़ कामर्स आफ़ इंडिया की वार्षिक बैठक में भाषण करते हुए वाइसराय लार्ड वैवेल ने कहा—इस भयानक विश्वव्यापी युद्ध से भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति, प्रतिष्ठा और महत्त्व अर्जित कर लिया है। औद्योगिक एवं आर्थिक दृष्टि से भी देश ने प्रगति की है। उसमें आज अधिक अविश्वास, शक्ति एवं आकांक्षा बढ़ चली है। मैं आप लोगों को विश्वास दिलाता हूँ कि ब्रिटिश सरकार एवं में समझौता करने का पूरा प्रयत्न करूंगा। हम भारत को नये विधान की रचना में सहायता पहुँचायेंगे। केन्द्रीय सरकार के लिए भी मैं प्रमुख राजनीतिक दलों का सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करूँगा ताकि वैधानिक परिवर्तन के पूर्वकाल में शासन भार को देश के प्रमुख दल स्वयं ग्रहण कर लें।

* * *

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी लेखक और उपन्यासकार पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक का १० दिसम्बर को संध्या समय स्वर्गवास हो गया। आप को हृदय की बीमारी थी और कुछ दिनों से बीमार पड़े थे। मृत्यु के समय आपकी अवस्था ५५ वर्ष की थी।

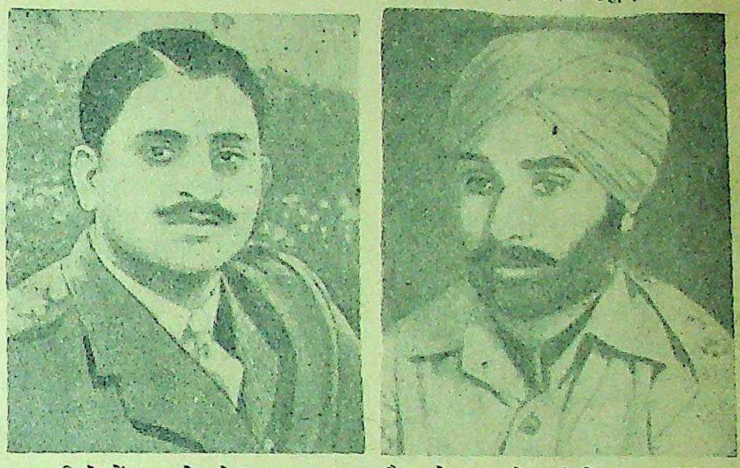

कैप्टन शाहनवाज

लेफ्टिनेंट ढिल्लन

लाल किले में चलनेवाले आजाद हिन्द फौज के इन नेताओं ने बयान देते हुए अपने को निर्दोष बतलाया है।

गजल

लेखक, श्री सूर्य्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

गिराया है जमीं होकर, छुटाया आसमाँ होकर,
निकाला, दुशमने जाँ; और बुलाया, मेहरबाँ होकर।
चमकती धूप जैसे हाथोंवाला दबदबा आया,
जलाया गरमियाँ होकर, खिलाया गुलसितां होकर।
उजाड़ा है, कसर होकर, बसाया है असर होकर,
उखाड़ा है रवाँ होकर, लगाया बागबाँ होकर।
घटा है भाप होकर जो, जमा है रंगो बू होकर,
अधर होकर जो निकला है, समाया है समा होकर।
चढ़ाया है निडर होकर, उतारा है सुघर होकर,
रमा होकर रमाया है, सताया है अमा होकर।
बड़ों को गिरने से रोका ऐसी आँखें लड़ाई हैं,
सभी उपमायें ले ली हैं, न होकर, निरुपमा होकर।

सम्पादक का पृष्ठ

लार्ड बेवेल फिर बोले !

कलकत्ता के वाणिज्य-संघ के वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर भारत के वाइसराय लार्ड बेवेल ने एक महत्वपूर्ण भाषण दिया है जो राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। लार्ड बेवेल भारत के संबन्ध में अब तक जिस प्रकार सदभावना प्रगट करते रहे हैं, ठीक उसी प्रकार इस भाषण में भी सद्भावना प्रगट की गई है। आप भारत की वैधानिक उन्नति चाहते हैं और वह भी समस्त राजनैतिक दलों की एकता से। जहाँ तक एकता के सिद्धन्त का प्रश्न है, वहाँ तक मतभेद की गुंजाइश कैसे हो सकती है? किन्तु क्या यह सही नहीं है कि भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में दलबंदी, साम्प्रदायिक भावनाओं के व्याप्त करने तथा उसे सुदृढ़ बनाने में ब्रिटिश अधिकारियों का प्रमुख हाथ है? कांग्रेस तथा राजनैतिक नेता सदा से यह कहते आये हैं कि ब्रिटिश सरकार अपनी स्थिति को दृढ़ बनाये रखने के लिए सम्प्रदायवाद तथा जातीय मतभेदों को प्रोत्साहन देती आई है। वह ऊपर से एकता का राग अवश्य अलापा करती है किन्तु यदि सचमुच एकता स्थापित हो जाये तो फिर ब्रिटेन से स्वाधीनता माँगने की आवश्यकता ही क्यों रह जायेगी? मुस्लिम लीग तथा अल्पसंख्यक दल ब्रिटिश सरकार के पास ऐसे भयंकर अस्त्र—कहना चाहिये कि एटम बम—हैं जिससे भारतीय स्वाधीनता के अंतिम निर्णय तथा आदर्श को धराशायी बना दिया जाता है। यदि आज सरकार चाहे तो एकता एक क्षण में स्थापित हो सकती है और दलबन्दी का गढ़ छिन्न-भिन्न हो सकता है किन्तु उसके चाहने की आवश्यकता क्या है? कांग्रेस तो सार्वदेशिक स्वाधीनता चाहती ही है, इसलिए उसकी बाधा का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। इसलिए लार्ड बेवेल की एकता की बातें केवल कोरी बातें हैं। राजनैतिक दृष्टि से आपसी एकता की स्थापना की जिमेदारी ब्रिटिश सरकार पर आती है न कि भारतीय राजनैतिक नेताओं पर? इसलिए लार्ड बेवेल के इस आदर्शवादी विचारों का कोई क्रियात्मक मूल्य नहीं है।

इसके सिवा लार्ड बेवेल ने अपने भाषण में दो एक बातें ऐसी स्पष्ट प्रगट की है कि उस पर विचार करना जरूरी है। एक तो यह कि हिंसा, तथा अनुशासन हीनता के कार्यों तथा 'भारत छोड़ो' के नारे से देश का भला नहीं हो सकता। दूसरे आजाद हिन्द फ़ौज की नीति की आलोचना करते हुए लार्ड बेवेल ने आगाह किया है कि इस प्रकार नीति से भारतीय राजनैतिक वातावरण अंधकारपूर्ण हो सकता है। इस संबन्ध में विशेष न कहकर इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि कांग्रेस का संगठन महात्मा गांधी के नेतृत्व में संचालित हो रहा है, जो पूर्ण अहिंसात्मक और अनुशासन से पूर्ण है। रही आजाद हिन्द सेना की नीति संबन्धी विचारधारा, इस पर यदि ब्रिटिश अधिकारी उस परिस्थिति में अपने देश को रखकर विचार करें तो इसके औचित्य का परिमार्जन हो जायगा। जापान ऐसे साम्राज्यवादी के विरुद्ध अपने देश की रक्षा के लिए उद्योग करना संसार के सैनिक विधान के अनुसार न तो कोई अपराध है और अनुचित ही। इसलिए लार्ड बेवेल ने जो कुछ इस संबन्ध में कहा है यदि वह भारतीयों के लिए एक प्रकार की धमकी समझी जाये तो ठीक ही है। इसी प्रकार की धमकी भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस ने भी अपने पिछले वक्तव्य में दी थी। जो कुछ भी हो धमकियाँ देने से तो भारतीय राजनीतिक प्रश्न का हल नहीं निकल सकता। लार्ड बेवेल यदि सचमुच भारतीय समस्या को सुलझाना चाहते हैं तो सचाई के साथ भारतीय स्वाधीनता के लिए ब्रिटिश सरकार से शिफारिश करें। हम जानते हैं कि जिस दिन लार्ड बेवेल इस सत्यता को प्रमाणित करने के लिए तुल पड़ेंगे, साथ ही ब्रिटिश सरकार तथा भारतीय सचिव भी उनके सुर में सुर मिलाने में समर्थ होंगे, भारतीय राजनैतिक दलों की समस्या स्वयं हल हो जायगी, एकता भी स्थापित हो जायेगी किन्तु आवश्यकता है सचाई के साथ भारत के साथ नयायोचित कार्य करने की। आदर्श, सिद्धान्त तथा केवल लम्बी बातों से ही समस्या का हल नहीं निकलेगा। भारतीय स्वाधीनता की पूर्ति ब्रिटिश सरकार के हाथ की बात है क्योंकि भविष्य के सम्बन्ध में कोई कह ही क्या सकता है? समय परिस्थितियों का गुलाम है।

* * *

प्रतिनिधि मंडल फिर आयेगा

भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेंस ने पिछले सप्ताह एक वतव्य देते हुए यह घोषणा की है कि मजदूर मंत्रिमंडल का एक प्रतिनिधि मंडल भारत आयेगा और वहाँ के प्रमुख राजनैतिक दलों के नेताओं से विचार-विनिमय करेगा और भारत को शीघ्र से शीघ्र स्वशासन प्रदान करने का उपाय सोचेगा। इसमें संदेह नहीं है कि भारत सचिव ने भारतीय राजनैतिक जिच सुलझाने के लिये यह एक बढ़िया उपाय ढूंढ़ निकाला है। भारत इस समय कितनी दयनीय स्थिति से गुजर रहा है, आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिक दृष्टि से उसकी कितनी अधोगति हुई और हो रही है, और पिछले १०० वर्षों से ब्रिटिश सरकार की कृपा से भारत का स्तर कितना ऊँचा हुआ है, इसका प्रत्यक्ष दर्शन प्रतिनिधि मंडल को यहाँ आने पर मिलेगा। सुना जाता था कि मजदूर मंत्रिमंडल बड़ा प्रगतिवादी है। वह भारतीय जिच को सुलझाने की नीति पर ब्रिटिश चुनाव में विजयी भी हुआ है किंतु क्या सचमुच वह भारतीय समस्या को सुलझाने की दृष्टि से ही अपना प्रतिनिधि मंडल भारत भेज रहा है?

सच तो यह है कि ब्रिटेन की नीति सदा से यही चली आई है कि वह संसार की बड़ी से बड़ी समस्याओं को कागज-पत्रों, समितियों तथा प्रतिनिधि मंडलों की उलझन से उलझाता आया है। अँग्रेजी नीति यही है कि जब किसी काम को विलंब में करना हो तो उसे समितियों के इंद्रजाल में अटका दिया जाय। इस प्रकार के इंद्रजाल का व्यापक प्रभाव आज भारत में दिखाई दे रहा है। क्रियाशील भावनाओं तथा सक्रिय विचारों पर पर्दा डालने के लिये यह बड़ी सुंदर नीति है। मजदूर मंत्रिमंडल के प्रमुख अधिकारियों ने अब तक भारत के संबंध में जितने वक्तव्य दिये हैं, वह यों ही निराशाजनक हैं और उनसे यह सिद्ध हो रहा है कि ब्रिटिश कट्टरपंथी दल की नीति का व्यापक दृष्टि से वह समर्थक है। प्रधान मंत्री एटली तथा लार्ड पेथिक लारेंस के वक्तव्य भी लगभग वैसे ही हैं जिस प्रकार से भूतपूर्व भारत सचिव मिस्टर अमरी के होते आये हैं। हम पूछते हैं कि क्या इसी प्रकार की नीति की आड़ में मजदूर प्रतिनिधि मंडल भारतवर्ष में जाँच पड़ताल तथा विचार-विमर्ष के लिये आ रहा है? ब्रिटिश शासकों को क्या अभी तक भारतीय नेताओं की माँगों की सचाई का अनुभव नहीं हुआ? अब तक न जाने कितने प्रतिनिधि मंडल भारत आये और वापस लौट गये किंतु उनके यहाँ आने का क्या परिणाम हुआ? इसलिये हमारी राय में मजदूर प्रतिनिधि मंडल का भारत में आकर यहाँ कि स्थिति का अध्ययन करना केवल समय की बरबादी और धन का अपव्यय मात्र है। इसका तो कोई अर्थ नहीं है कि ब्रिटिश नेता यहाँ आकर हिन्दू, मुसलमान, कांग्रेस, सिख, अल्पसंख्यक दल के नेताओं से विचार विनिमय करें और अंत में यह निर्णय करके वापस जायें कि भारतीय राजनैतिक दलों में एकता नहीं है इसलिये वह स्वाधीनता प्राप्त करने के अभी अयोग्य है। ब्रिटिश प्रतिनिधि मंडलों की यही पुरानी नीति है और इस बार भी यदि इसी नीति को अपनाकर मजदूर प्रतिनिधि मंडल भी वापस जाय तो कोई आश्चर्य नहीं।

इसलिये लार्ड पेथिक लारेंस ने जो प्रतिनिध मंडल भेजने का सुझाव रखा है वह ब्रिटिश दृष्टिकोण से तो उचित है किंतु भारतीय दृष्टि से एक व्यर्थ का आम्बर और खिलवाड़ है। अब भारत के संबंध में न तो किसी प्रकार के विचार विमर्श की और न यहाँ के विभिन्न दलों के नेताओं से मिलकर किसी निश्चय पर पहुँचने की आवश्यकता जान पड़ती है। स्पष्ट बात यह है कि कांग्रेस भारत की महान और प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है जो राजनैतिक दृष्टि से संपूर्ण भारत की आजादी की माँग कर रही है। यही भारत की प्रधान समस्या है। इस समस्या को सुलझाने के लिये ब्रिटेन को तैयार हो जाना चाहिए। अब केवल बातों तथा कागजी घुड़दौड़ का युग समाप्त हो गया है। स्वाधीनता की प्राप्ति के लिये, यदि मजदूर प्रतिनिधि मंडल, भारतीय ध्येय की पूर्ति में योग देने के लिये यहाँ आ रहा है तब तो उचित ही है, यदि नहीं तो, उसका आना व्यर्थ है। मजदूर दल के भूतपूर्व प्रधान मंत्री सर रेमजे मेकडानल्ड ने भी अपने समय में एक गोलमेज कान्फ्रेस बुलाई थी, किंतु वह भी भारतीय स्वाधीनता के लिये निरर्थक सिद्ध हुई।

* * *

विश्वविद्यालयों में हिन्दी

हिन्दी का महत्त्व दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। विश्वविद्यालयों में जब से हिन्दी की उच्च शिक्षा का प्रबन्ध हुआ है तब से हिन्दी प्रेमी विद्यार्थियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है और हिन्दी के उच्चकोटि के साहित्य सृजन की ओर उनकी अभिरुचि भी प्रशंसनीय है। इस प्रकार अब विश्वविद्यालयों के अध्यापकों, अध्यक्षों तथा क्रियाशील विद्वानों को यह अनुभव होने लगा है कि यदि अँग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी अन्य विषयों की शिक्षा का माध्यम बना दी जाये तो शिक्षा के विस्तार में अधिक सुविधा ही प्राप्त न होगी वरन भारतीयता तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से हिन्दी के प्रचार में सहायता भी प्राप्त होगी। काशी विश्वविद्यालय ने तो कई वर्षों से इंटरमीडियेट के विद्यार्थियों को यह सुविधा प्रदान कर रखा था कि अँगरेजी विषय के अतिरिक्त परिक्षार्थी अन्य विषयों के प्रश्न-पत्रों का उत्तर हिन्दी में दे सकते हैं। किन्तु इस वर्ष से वहाँ बी० ए० के विद्यार्थियों को भी ऐसी ही सुविधा प्रदान की गई है। इसके लिए काशी विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है। प्रयाग विश्वविद्यालय में भी [illegible] विनिमय हो रहा है

और आशा है शीघ्र ही वहाँ भी
का माध्यम स्वीकृत हो जायगा।
इंटरमीजिएट बोर्ड भी हिन्दी के
उदार नीति ग्रहण करता जा रहा है
परीक्षार्थीयों तथा विद्यार्थियों को
से अधिक सुविधायें भी प्रदान की

इस प्रकार यह स्पष्ट दिखाई दे
है कि भारतीय शिक्षण संस्थायें देशी
को अपनाने की ओर अपनी नीति में
वर्तन करने लगी हैं, यह शुभ लक्षण
इसमें सन्देह नहीं है कि राष्ट्र
स्वाधीनता के पास पहुँचता जायेगा
त्यों अँगरेजी का प्रभुत्व कम होता
और उसका स्थान देशी भाषायें
करती जायेंगी। हमें प्रसन्नता है कि
संस्थायें शिक्षा के भविष्य पर बड़ी
से ध्यान दे रही हैं और भावी युग की
करके उसी के अनुरूप अभी से अपनी
तथा कार्य-पद्धति में परिवर्तन
लगी हैं। हिन्दी राष्ट्रभाषा होगी
नहीं, किन्तु यह तो स्पष्ट है कि
प्रान्तीय भाषाओं में हिन्दी अपनी
के कारण स्वयं लोकप्रिय तथा सुविधा
प्रमाणित हो रही है। ऐसी दशा में
का भविष्य तो उज्ज्वल है ही। वह
स्थान स्वयं ग्रहण कर लेगी। हिन्दी के
विस्तार और प्रचार में शिक्षण
का सहयोग परमावश्यक है।
साथ विभिन्न विषयों पर साहित्य
का कार्य भी एक अनिवार्य
जायेगा। हिन्दी प्रेमियों तथा
इस राष्ट्रीय समस्या को सुलझाने
विशेष रूप से प्रयत्नशील रहना

* * *

प्रोफेसर जयचंद्र विद्यालं

सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ प्रो
विद्यालंकार सन् ४२ के आन्दोलन
गये और कैम्पबेलपुर जेल में
नजरबन्द हैं। कितने ही राजनैतिक
जेलों से छूटकर आ गये किन्तु
जी को सरकार ने अभी तक छोड़ना
नहीं समझा। प्रोफ़ेसर जयचन्द्र
लंकार सदा के पक्के राष्ट्रवादी
और समय समय पर राष्ट्र की पु
वह राष्ट्रीय आंदोलन में सम्मिलित
रहे हैं। भारत के प्रमुख इतिहास
उनकी गणना होती है। कहा जाता
जेल में उनके साथ उचित व्यवहार
किया जाता और उनका स्वास्थ्य
प्रतिदिन गिरता जा रहा है। उनके
तथा बच्चों की भी सरकार द्वारा
व्यवस्था नहीं की गई है। इस प्रकार
सन्देह में प्रोफ़ेसर जयचन्द्र जी जेल
छोड़े जा रहे हैं, यह बड़े खेद की
पिछले दिनों श्रीमती सरोजिनी
प्रोफ़ेसर जयचन्द्र के छुटकारे के
एक वक्तव्य देते हुए सरकार से
की थी कि उन्हें तत्काल जेल से
चाहिए किन्तु अभी तक उनकी
हुई है। जहाँ हजारों राजनैतिक
से मुक्त हो चुके हैं वहाँ सरकार
जयचन्द्र विद्यालंकार ऐसे विद्वान
कार को नजरबन्दी की अवस्था
के त्यों रखे हुए है, उसकी कट्टर
ज्वलंत उदाहरण है। हिन्दी
प्रोफ़ेसर जयचन्द विद्यालंकार ऐसे
पर गर्व है, इसलिए कम से कम
को जयचन्द जी को जेल से छोड़
लिए प्रबल आन्दोलन करना
उन्हें अनिश्चित काल तक नजरबन्द
अवस्था में रखने के लिए
कोई अधिकार नहीं, क्योंकि
यदि किसी प्रकार के अभियोग
हैं तो उन पर अब तक सरकार
से मुकदमा क्यों नहीं

उत्तरी ईरान में विद्रोह क्यों ?

ईरान और सोवियट यूनियन के संघर्ष का परिणाम

लेखक, श्री चन्द्रकुमार, बी० ए०

री ईरान में विद्रोह क्यों हो रहा है ? सोवियट यूनियन की ओर से ईरान कार से क्या कहा गया और क्यों ? अमरीका और ब्रिटेन का ईरान की वर्तमान नीति के सम्बन्ध में क्या मत है ? इन सभी समस्याओं पर लेखक ने इस सामयिक में प्रकाश डाला है। सोवियट यूनियन, अमरीका, ब्रिटेन तथा ईरान की वर्तमान राजनीतिक स्थिति को भी स्पष्ट किया गया है।

छले दिनों रायटर समाचार-समिति बर दी थी कि उत्तरी ईरान में भयंकर हो गया है—विद्रोही भारी तादाद रान के मुख्य नगर तेहरान की ओर हे हैं। इस विद्रोह की मंशा समूचे को हस्तगत करने की है। रायटर भी खबर दी कि इस विद्रोह के में सोवियट रूस का हाथ है—सेना ने विद्रोहियों में मशीनगनें और ईरानी सरकार-द्वारा विद्रो-के दमन के लिए भेजी जानेवाली को लाल सेना रोके हुए है।

दा अखबार पढ़ लेनेवाले और की राजनीति और भौगोलिक दशा पाठक के लिए यह समाचार ही सनसनीखेज है। विगत महा-र अविजित शक्ति के रूप में सोवियट रूस के निकलने से वादी सिद्धान्तों के प्रति अरुचि ईरानी सरकार के विरुद्ध इस सोवियट के लाल साम्राज्य झलक मिलेगी। लेकिन व्यक्तियों को कथित विद्रोह, क और ब्रिटिश पक्षीय ईरानी र साम्राज्यवादी ब्रिटिश समा-'रायटर' का प्रचारमात्र ही । जैसा कि ईरान के विगत के राजनीतिक इतिहास और न्दोलन के जन्म और प्रगति के दृष्टि-निक्षेप करने और उक्त के बाद की घटनाओं के क्रम से होगा।

रान का भौगोलिक और राज- हत्त्व

अपने तेल की खानों के लिए समस्त लिए लोभ की वस्तु रहा है। भी तेल-कम्पनियाँ हैं उन पर न का एकाधिपत्य है या ईरानी के साझे में काम करती हैं। ब्रिटेन पर दृष्टि रखने का दूसरा कारण रत से सन्निकटता है। ईरान में ब्रिटेन पक्षीय हुकूमत रहने से ब्रिटेन अपने पूर्वीय साम्राज्य की भली तरह हिफ़ाजत कर सकता है। इसीलिए ईरान की राजनीति में सबसे अधिक प्रभाव ब्रिटिश स्वार्थों का है। उसने हमेशा कोशिश की है कि शक्तिप्राप्त दूसरे राष्ट्रों की दाल ईरान में न गलने पावे। परिणामस्वरूप अमेरिका और युद्ध-पूर्व का जर्मनी लाख प्रयत्न करने पर भी ईरानी सरकार से रियायतें न पा सके। पिछले दिनों अमेरिका एक 'सौदी अरेबिया' नाम की तेल-कम्पनी स्थापित करने में समर्थ हो सका है और जिसके लिए ब्रिटेन काफ़ी चिन्तित हुआ था। अमेरिका की ईरानी घटनाओं में वर्तमान विशेष दिलचस्पी, जैसा कि उसने अपनी हाल की घोषणा में कहा है कि आगामी पहली जनवरी तक वह अपनी सेना ईरान से हटा लेगा, इसीलिए नहीं है कि मित्र-राष्ट्रों में अपने को सबसे ज्यादा न्यायप्रिय साबित करना चाहता है बल्कि इस घोषणा-द्वारा वह ईरानी सरकार की कृपा-दृष्टि चाहता है। जारशाही रूस के जमाने में रूसी सरकार ने भी अनेक प्रकार से जनतन्त्रात्मक आन्दोलनों के दबाने में ईरानी सरकार की मदद की थी। गत महायुद्ध में ईरान में जर्मनों के पहुँचते रहने की खबर पा १९४१ में मित्रराष्ट्रों ने हिफ़ाज़त के लिए उत्तरी ईरान में मित्र फ़ौजें तैनात की थीं। १९४२ के आँग्ल-ईरानी-सोवियट सन्धि के अनुसार तय हुआ था कि जापानी युद्ध के छः महीने बाद ईरान से मित्र फ़ौजें हटा ली जायँगी—वह तारीख़ आगामी २ मार्च पड़ती है। लाल सेना और दूसरी मित्र फ़ौजों के उत्तरी ईरान में उपस्थित रहने का यह कारण है।

उत्तरी ईरान में राष्ट्रीय आन्दोलन

उत्तरी ईरान का वह भू-भाग जहाँ कथित विद्रोह की खबर है ईरानी अजर बेजान के अन्तर्गत आता है। यहाँ की मुख्य आबादी, बाकी ईरान से भिन्न, अजरबजानियन लोगों की है। उनकी भाषा, संस्कृति और आर्थिक सामाजिक स्तर ईरानियों से भिन्न प्रकार का है। सुख-समृद्धि और व्यापार उद्योग-धन्धों के अनेक साधनों के रहते हुए भी वहाँ की जनता बहुत ग़रीब है और कष्ट की जिन्दगी व्यतीत करती है। अभी हाल तक इस क्षेत्र में अजरबेजानियन जनता की सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नति के लिए ईरानी सरकार की ओर से कोई प्रबन्ध नहीं था—उनकी भाषा के मध्यम से शिक्षा देनेवाला कोई स्कूल नहीं था। सरकारी दफ़्तरों और प्रबन्ध-कार्य में अजरबेजानियन जनता का योग नहीं लिया जाता था—इससे जनता में काफ़ी क्षोभ था। इसके प्रतिक्रियास्वरूप वहाँ जनतन्त्रवादी आन्दोलन का जन्म हुआ और १९०६—१९०८ के बीच में यह आन्दोलन बहुत तीव्र हो गया था। ईरानी सरकार को इस जन-आन्दोलन के दबाने में ब्रिटेन और रूसी ज़ार से काफ़ी मदद मिली।

ईरानी अजरबेजान का तबरेज़ नगर इस जनतन्त्रात्मक आन्दोलन का केन्द्र रहा है। सबसे पहले राजनैतिक चेतना यहीं पैदा हुई और उसके बाद दूसरे नगरों में फैली। इसी राजनैतिक चेतना के फल-स्वरूप रज़ाशाह शक्ति में आया लेकिन बाद में उसने जनहितों को ठुकराना शुरू कर दिया और अजरबेजान में सामन्तवादी ईरानी सरकार का पञ्जा जमाये रखने के लिए जनता की लोकतंत्री सरकार की अभिलाषा को कुचलना शुरू किया था। वर्तमान शाह और उनकी सरकार ने भी रजाशाह पहलवी की लोकतंत्री भावना को दमन करनेवाली नीति जारी कर रक्खी है।

इस तरह हम देखते हैं कि ईरान में जनतन्त्रात्मक विद्रोह पहली मर्तबा नहीं हुआ है—इस विद्रोह के पीछे पचास साल की राष्ट्रीय परम्परा का बल है।

ईरान और रूसी सीमा पर आवागमन के दर्रे जिससे होकर लारी और मोटरें बड़ी कठिनाई से गुजरती हैं?

ईरान के विद्रोहियों की माँग

ऊपरी निगाह से देखने पर तो हमें विशृंखलित जनता की तन्त्रशाही के खिलाफ़ युद्ध-घोषणा-सी लगेगी। लेकिन आन्दोलन की प्रगति और उसे बल देनेवाली कौन-सी शक्तियाँ यह जान लेने के बाद हमें इस विद्रोह के पीछे स्पष्ट और ठोस माँगें दिखाई पड़ेंगी जिनकी उपेक्षा करना सरल नहीं है। पिछले आन्दोलन के परिणाम-स्वरूप वहाँ अनेक राजनैतिक पार्टियों का जन्म हुआ जिनमें 'अजरबेजान लोकतन्त्रीय पार्टी' और ड्यूडेह पार्टी (किसान सभा) मुख्य हैं। पड़ोस के रूसी अजरबेजान की विगत रूसी क्रान्ति के बाद की कल्पनातीत आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति का प्रभाव सीमा पार की ईरानी अजरबेजान की जनता पर विशेष रूप से पड़ा। रूसी क्रान्ति से पहले दोनों भू-भाग शिक्षा-दीक्षा और आर्थिक मामलों में एक समान ही पिछड़े हुए थे। लेकिन रूसी अजरबेजान बीस साल में ही कहाँ का कहाँ पहुँच गया यह निम्नलिखित आँकड़ों से मालूम होता।

१९३७ ई० तक रूसी अजरबेजान में प्राथमिक शिक्षा ८० प्रतिशत और माध्यमिक शिक्षा २५ प्रतिशत बढ़ी। समाचारपत्रों की जगह पर १०० समाचार-पत्र जारी हुए इसी तरह उद्योग-धन्धों और खेती-बारी में भी छः गुनी अठगुनी वृद्धि हुई—पड़ोसी और सम भाषा-भाषी रूसी अजरबेजानवासियों की प्रगति का ईरानी अजरबेजानवासियों पर पड़ना स्वाभाविक ही था। वहाँ भी मजदूर-किसान-आन्दोलन प्रबल हुआ और कम्युनिस्टों के असर से 'टयूडेह' पार्टी की नींव पड़ी जिसने लोकतन्त्र की अस्पष्ट माँग को प्रान्तीय स्वराज्य का रूप दिया। और जैसा कि समाचारों से विदित हुआ है कि ईरानी विद्रोह इसी 'टयूडेह' पार्टी के नेतृत्व में हुआ है जिसने स्वराज्य की माँग की है। इस पार्टी का वहाँ की पुलिस और सरकारी हलकों में काफ़ी असर है इस बात को जानकर इस आन्दोलन को फ़ौजी आतंक से दबाये रखने के लिए ईरानी सरकार इस क्षेत्र में और अधिक सेना भेजने की कोशिश कर रही है। पिछले दिनों वहाँ स्वायत्त शासन संस्थाओं का चुनाव हुआ। इस सिलसिले में जनता का मनोभाव प्रकट हुआ है—उससे उत्साहित होकर वहाँ की प्रगतिशील पार्टियों ने पिछले २० नवम्बर को अजरबेजान की राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन किया और स्पष्ट रूप से स्वराज्य की माँग की। इस जाग्रति से ईरानी जमींदार और ब्रिटिश तेल-कम्पनियों के मालिक घबड़ाये हुए हैं और इसी लिए यह समझ कर कि यह आन्दोलन शक्ति पकड़ सकता है और दूसरे क्षेत्रों में भी फैल सकता है फ़ौज को जनता से भिड़ा दिया है।

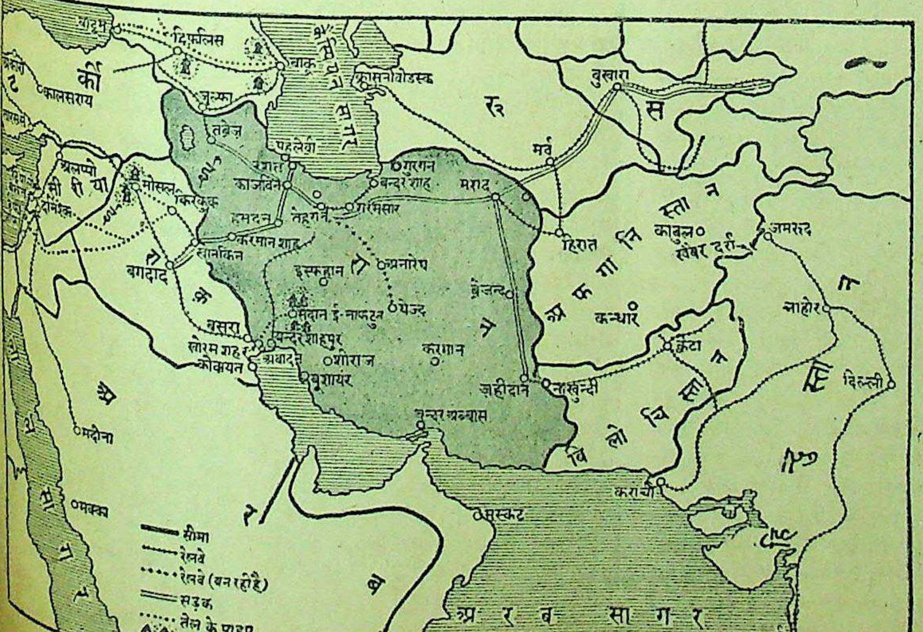

शेष पृष्ठ १५ पर देखिए

प्रशान्त महासागर में भारतीय

बाईस लाख भारतीयों के लिए सरकार क्या कर रही है ?

लेखक, श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

प्रशान्त महासागर के द्वीपों में बसनेवाले भारतीयों की समस्या आये दिन व्यापक रूप ग्रहण करती जा रही है। भारतीयों की स्थिति दयनीय और संकटग्रस्त होने का क्या कारण है? इस लेख में राजनीति के विद्वान् लेखक ने प्रशान्त के भारतीयों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए बतलाया है कि प्रशान्त में निवास करनेवाले २२ लाख भारतीयों के लिए ब्रिटिश सरकार क्यों नहीं कोई ऐसा उपाय करती जिससे उनकी समस्या सुलझ जाये? लेख अत्यन्त सुन्दर और विचारणीय है।

प्रशान्त महासागर के फैले हुए द्वीप-समूहों में काफ़ी भारतीय रहते हैं पर चूंकि वे एक ग़ुलाम देश से गये हैं अतएव न तो उनकी ग़ुलाम मातृभूमि को उनकी कुछ परवाह है और न हमें कभी उनका स्मरण भी आता है। इन भारतीयों में जिनका ब्रिटेन से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है, वे बुरी हालत में हैं, जिनको किसी आर्थिक स्वतन्त्र सरकार से पाला पड़ा है, वे ज्यादा खुशहाल हैं।

ईसा से हजारों वर्ष पहले भारतीय अपना देश छोड़कर केवल पर्यटन के लिए बाहर निकले थे। उनका उद्देश्य व्यापारिक लूट या साम्राज्य स्थापन नहीं था। उस समय वे केवल अपना दार्शनिक मंत्र सुनाने बाहर गये थे और वहीं बस गये थे। समय काल पाकर जब भारत काफ़ी ग़रीब हो गया तो अपना पेट पालने के लिए भी इनको बाहर जाना पड़ा था। इस समय प्रशान्त महासागर के टापुओं में इन भारतीयों की संख्या इस प्रकार है:—

देश	भारतीय	वर्ष-गणना
आस्ट्रेलिया	४,५४४	१९३३
न्यूज़ीलैंड	१,१४६	१९३९
फ़िजी	१,०५,५८१	१९४२
ब्रिटिश बोर्नियो	७,८३६	१९३७
ब्रुनेईस्टेट बोर्नियो	१,०६१	१९४२
साराबाक	२०६	१९३१
लाबुआं टापू	१५३	१९४०
फ़िलिप्पीन	१,०००	१९४०
न्यू कैलेडोनिया तथा अधीन राज्य	२७	१९३६

योग—१,२१,५५४

कुली—पिछले ज़माने में भारतीय चाहे जिस किसी रूप में विदेश गये हों पर, इस पचहत्तर साल के भीतर तो वे ज्यादातर कुलीगिरी करने के लिए ही बाहर गये। १९३३ में ब्रिटिश साम्राज्य में और उसके कुछ ही समय बाद फ़्रेंच साम्राज्य से दास-प्रथा उठ गई थी। अतएव अँगरेज़ या फ़्रेंच मालिकों को अपने लिए, अपने कारोबार के लिए तथा गन्ना, चाय, क़हवा आदि के खेतों पर काम करने के लिए कुलियों की ज़रूरत महसूस हुई। भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी तथा उसके बाद ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों को यूरोपीय मालिकों के खेतों पर कुली का काम करने के लिए हर तरह से प्रलोभन देकर बाहर भेजना शुरू किया। कुलियों को हर तरह के प्रलोभन दिये जाते थे। उनकी भर्ती करनेवाले मजिस्ट्रेटों तथा अफ़सरों को इनाम दिये जाते थे। इस कुली-प्रथा से जो भारतीय बाहर गये उन्होंने अपने परिश्रम से गोरे मालिकों को मालामाल कर दिया पर खुद बेचारे कंगाल व दरिद्र ही बने रहे। जो थोड़े बहुत लोग स्वतन्त्र रूप से गये थे, उन्होंने कुछ ज़मीन-जायदाद बना ली पर गोरों की सरकार सदैव उनके पीछे हाथ धोकर पड़ी रही। आस्ट्रेलिया ही शायद एक ऐसा ब्रिटिश उपनिवेश है जिसमें भारतीयों के लिए कोई वैधानिक या क़ानूनी परेशानी नहीं है, भेदभाव नहीं है। ये भारतीय वहाँ आस्ट्रेलियन स्त्रियों से विवाह भी कर सकते हैं। पर अभी हाल तक उस देश के गोरों का भारत के विषय में बड़ा ओछा ख्याल था। वे यह समझते थे कि भारतीय जंगली होते हैं, केवल उनके सम्पर्क में आकर ही वे सभ्य बन जाते हैं। आस्ट्रेलियन सरकार ने व्यवसाय या बसने के लिए भारतीयों का आना निषेध कर रक्खा है। सर्वप्रथम, १८३७-३८ में, उस देश के खेतों पर काम करने के लिए ८९ भारतीय गये थे। उसके बाद कई सौ गये। पर सन् १९०१ में आस्ट्रेलियन सरकार ने यह नियम बना दिया कि जो भी बाहरी आदमी वहाँ बसना चाहें उसे प्रवासी विभाग के मंत्री-द्वारा निर्दिष्ट किसी भी भाषा में लिखने की परीक्षा पास करनी होगी। इस नियम का यही मतलब था कि भारतीय या चीनी वहाँ न बसने पावें।

फिर भी आस्ट्रेलिया भारतीयों से सांस्कृतिक, व्यापारिक तथा अन्य व्यावसायिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। वहाँ की सरकार ने सन् १९२५ से भारतीयों को मताधिकार दे दिया है। इस महायुद्ध ने भारतीयों का महत्त्व स्थापित कर दिया है। अब आस्ट्रेलियन भारतीयों को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखते। आस्ट्रेलिया-स्थित भारतीय न्यूज़ीलैंड में बसे हुए भारतीयों की तुलना में अधिक खुशहाल भी हैं। न्यूज़ीलैंड में तो सबसे पहले सन् १९१३ से, फ़िजी प्रवासी कुछ भारतीयों ने अधिक मज़दूरी की लालच में जाना शुरू किया था। इसलिए वहाँ की बस्ती आस्ट्रेलिया की तरह पुरानी भी नहीं है। यहाँ पर कुछ लोग किसान हैं, कुछ साग-भाजी बेचते हैं, कोई-कोई डाक्टरी वग़ैरह भी करते हैं। आस्ट्रेलिया में भारतीय अच्छे खासे जमींदार भी हैं।

प्रशान्त महासागर के अधिकांश द्वीपों पर आजकल अमरीकन सेनापति जनरल मेकआर्थर का फ़ौजी शासन क़ायम है।

फ़िजी

ऊपर दिये गये आँकड़ों से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि फ़िजी में भारतीयों की संख्या, प्रशान्त के अन्य किसी देश की तुलना में, सबसे ज्यादा है। इस टापू में ४७·० प्रतिशत फ़िजियन या आदिमनिवासी, ४५·१४ प्रतिशत भारतीय, २·१ प्रतिशत यूरोपियन तथा ५.७६ प्रतिशत अन्य हैं। इन्हीं २·१ प्रतिशत यूरोपियन की सेवा तथा पनपने के लिए, ७० वर्ष पूर्व वहाँ पर शक्कर का (गन्ने का) कारोबार शुरू करनेवाले यूरोपियनों की सेवा के लिए, भारती कुली वहाँ गये थे। आस्ट्रेलिया में अधिकतर भारतीय मुसलमान या सिक्ख हैं। फ़िजी में ८७ प्रतिशत हिन्दू और ११ प्रतिशत मुसलमान तथा शेष ईसाई इत्यादि हैं। दरिद्र कुली की हैसियत से काम शुरू कर, केवल अपने परिश्रम के कारण आज अधिकांश कुली खुद के काश्तकार हो गये हैं। या कम्पनी से पट्टे पर जमीन लेकर खेती करते हैं। हर साल वे लगभग ४२,००० एकड़ भूमि जोतते हैं और लगभग १०,००० टन गन्ना पैदा करते हैं। इन भारतीय कुलियों ने, कुली-प्रथा की समाप्ति के बाद अद्भुत शक्ति, परिश्रम तथा विकास का परिचय दिया है। वहाँ पर रंगभेद भी नहीं है। पर, इन भारतीयों के सामने बहुत-सी सुविधायें हैं जिनके कारण उनको काफ़ी परेशानी भी झेलनी पड़ रही है। शासन का कुछ अधिकार उन्हें प्राप्त हो गया है, पर इतनी अधिक संख्या होने पर फ़िजी की व्यवस्थापक महासभा में ५ यूरोपियन सदस्य तथा ५ भारतीय सदस्य होते हैं। इसी प्रकार १६ सरकारी मेम्बर भी इस सभा में होते हैं जिस कारण टापू पर गोरों का ही राज्य है।

उत्तरी बोर्नियो में सन् १८९१ से भारतीय कुली जाने लगे। पर, इनकी संख्या ज्यादा न रही। बहुत से भारतीय यहाँ दूकानदारी व सौदागरी करने लगे। सरकारी नौकरी तथा कारखानों में भी दाखिल हो गये। उत्तरी बोर्नियो तथा लाबुआं में भारतीय बिलकुल घुल-मिल गये हैं। ब्रुनेई में रबर की खेती पर काम करने के लिए १९२३ से कुली भेजे गये और सन् १९३८ में इनकी संख्या ३७५ थी। इन भारतीय कुलियों की दशा अच्छी नहीं थी। साराबाक में भारतीयों की दशा काफ़ी खराब है।

फ़िलिपाइन

सन् १९१७ के क़ानून के अनुसार सौदागर वहाँ जाकर बस सकते थे।

इस लेख के लेखक श्री परिपूर्णानंद

सौदागर की परिभाषा कराने के अदालत की शरण लेनी पड़ती थी। १९४० के विधान के अनुसार वहाँ पर आंशिक रूप में भारतीय या चीनी सकते हैं। लगभग १,००० भारतीय हैं। जिनमें ५०० तो सिन्धी व्यापारी सन् १९४० के क़ानून की कुछ सुवि के कारण भारत से और भी व्यापारी जाकर बस सकते हैं।

युद्ध के बाद

विगत महायुद्ध में इन भारतीय शक्ति कितनी छिन्न-भिन्न हो गई तथा इनकी कितनी गहरी हानि होगी, यह सोचने की बात है। फिलिपाइन में करोड़ों रुपया भारतीय रोजगार नें फँसा रखा है। इसलिए आक्रमण तथा इसके उपरान्त की विजय के बाद क्या परिस्थिति इसका पता लगाना चाहिए। सरकार तो स्वतन्त्र भारत सिपाहियों के पीछे हाथ धोकर उसे हमारे बाईस लाख भाइयों फ़िक्र ही नहीं है। इस अवसर को जागृत होकर अपना कर्तव्य चाहिए।

शर्तिया
आराम पहुँचाती है
"डिब्बा की गोली
बालकों के निमोनिया और
खाँसी-जुकाम, बुखार दस्त
इत्यादि पर।
यू० पी० आयुर्वेदिक
बेलनगंज आगरा।

माँ और बच्चा
इसके लेखक नामी चिकित्सक
बोधराज चोपड़ा एम० बी०,
बी० (एडिनबरा) हैं। यह पुस्तक
ढंग की अनुपम है। इसके ११ प्रकरण
छोटे बच्चों की मृत्यु और उनके
गर्भिणी माता, जन्म के समय के
रक्षा, बच्चों को दूध पिलाना, दूध
वाली दाई, दूध छुड़ाना आदि
विषयों की शिक्षा दी गई है।
मृत्यु और रोगों को कम करने तथा
बच्चों को मृत्यु से बचाने की दृष्टि से
लिखी गई है। यों लेखक ने मनुष्य
उपकार किया है। अच्छे काग़ज़ पर
ढाई सौ से भी अधिक पृष्ठों की
पुस्तक का मूल्य केवल २। दो रुपया
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

संसार में शांति या महायुद्ध ?

तीसरे महायुद्ध के लिए महान् राष्ट्रों की तैयारियाँ

लेखक, श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

संसार का महायुद्ध समाप्त हो गया, किंतु जान पड़ता है कि अभी रणचंडी की प्यास नहीं बुझी है। तीन महान् राष्ट्रों में आज जिस प्रकार का मतभेद दिखाई दे रहा है, उससे पुनः तीसरे महायुद्ध की आशा की जा रही है अर्थात् अमरीका-ब्रिटेन एक ओर और रूस दूसरी ओर। राजनीति के विद्वान् लेखक ने इस लेख में तृतीय महायुद्ध के उन कारणों पर सुंदर प्रकाश डाला है। योरोप और एशिया के सम्बन्ध में महान् राष्ट्रों में जो अन्तर्राष्ट्रीय, आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक मतभेद उत्पन्न हो गया है, उसका अन्तिम परिणाम होगा तृतीय महायुद्ध! लेख जानकारी से पूर्ण और सामयिक है।

रणसिंह की ध्वनि अभी शान्त नहीं युद्ध के नाद की गूंज थमी संग्राम की शंख-ध्वनि हो रही है। मन्त्री परिषद् बिना कोई निर्णय उठ गई। संयुक्त-राष्ट्रसंघ की उसके विधान को अमल में और उपयुक्त भूमि तैयार करने लन्दन में अनेक कमेटियाँ बैठी हुई एटली, प्रेसीडेंट ट्रूमेन से मिलने गये और वापस लौट आये। ट्रूमेन का अब त्रिराष्ट्र के नायकों में विश्वास नहीं रहा है। इनके निकट भविष्य में होने की का अन्त कर दिया है। ये घटनायें अपने आप में विशेष महत्त्वपूर्ण और साधारण प्रतीत हों, पर इनके घटनाओं का रूपक चक्कर काट और जिसके ये मूर्तरूप हैं, उनमें एक हैं और वे भावी विश्व के लिए महत्त्वपूर्ण, अर्थपूर्ण और व्यापक उत्पन्न करनेवाले हैं। इन सबके से स्वभावतः प्रश्न उठता है कि किधर जा रहा है? शान्ति की ओर? मानव-समाज के भाग्य पीढ़ी के अन्दर एक और नर-रक्तरंजित भूमि देखना बदा सदियों के परिश्रम और प्रयत्न गई संस्कृति और सभ्यता नष्ट दिखाई देगी? अगस्त के बाद घटनायें क्या कहती हैं?

बेविन ने स्पष्ट रूप से रूस दिया है कि ब्रिटेन रूस को भूमध्य-भी प्रवेश नहीं करने दे ट्रिपोलिटानिया का शासनादेश दे सकता है और न ब्रिटिश ऊपर उसको आने और वहाँ में छुरा लेकर ब्रिटेन के भले बनाने का अवसर दे सकता और इंगलैंड आज एक दूसरे से और एक भी ऐसी बात नहीं है, की राय मिलती हो या

ने दूसरी ओर इँगलैंड और को स्पष्ट रूप से कह दिया है कि आस्ट्रिया, हंगरी, यूगोस्लेविया, पोलैण्ड, फ़िनलैण्ड, बाल्टिक सोवियट अधिकृत जर्मनी और दूर रहो। ईरान को छोड़कर रूस ने खास व्यवसायिक और सन्धियाँ की हैं और उनके साथ सन्धियाँ भी की हैं। मित्रराष्ट्रों ने सन्धियों को प्रकाशित करने के लिए रूस ने इन सन्धियों को अपने के मित्रों को भी बताने से इन्कार । बल्गेरिया का चुनाव जन-नहीं है, यह अमरीका चिल्लाता ही रहा, और वहाँ चुनाव भी हो गया और राजतन्त्र की वहाँ से अर्थी निकालने की तैयारी है। रूस यहाँ पूँजीवादी और साम्राज्यवादी हस्तक्षेप सहने को तैयार नहीं है। रूस-द्वारा तुर्की के सामने पेश की गई माँगों को मित्रराष्ट्र मानने को तैयार नहीं है और तुर्की उनके भरोसे रूसी माँगों का नकारात्मक जवाब देने का साहस कर रहा है। डार्डेनेल्स और भूमध्यसागर से रूस को दूर रखने के लिए ब्रिटेन प्रयत्नशील है। तुर्की ने अपनी सेना का विसर्जन नहीं किया है, और बड़े ऊँचे पैमाने और विशाल खर्च से सेना को रखे हुए है, जो कि तुर्की की आर्थिक प्रगति में बाधक है।

प्रेसिडेंट ट्रूमेन ने त्रिराष्ट्र- बताने पर अपनी असहमति प्रगट की है।

पश्चिमी ब्लाक

रूस पश्चिमी ब्लाक को तोड़ने की पूरी कोशिश कर रहा है। अगली लड़ाई में ब्रिटेन का शत्रु जर्मनी नहीं रूस होगा। उसके हमले को रोकने के लिए ब्रिटेन योजना बना रहा है। मिस्टर चर्चिल ब्रिटिश सरकार के गैर सरकारी राजदूत होकर और उन देशों के रक्षक के नाते हाल में पेरिस, बेल्जियम और हालैण्ड गये थे। आप संरक्षणात्मक, आक्रमणात्मक और आर्थिक आधार पर पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों का रूस के विरुद्ध एक गुट्ट या ब्लाक बनाने के लिए भूमि तैयार करने के लिए वहाँ गये थे। यही वजह है कि इण्डोनेशिया में ब्रिटेन हालैण्ड के पक्ष में लड़ रहा है और इण्डोनेशियनों की स्वतन्त्रता की आवाज़ को कुचल रहा है। पश्चिमी यूरोप को समृद्ध बनाने, उसका व्यापार बढ़ाने तथा उसके लिए आवश्यक जन, धन और सामग्री प्राप्त करने के लिए एशियाई देशों को गुलाम रखा जाता है। पश्चिमी यूरोप एशियाई राष्ट्रों की धन-जन की शक्ति से शक्ति-सम्पन्न होकर तृतीय विश्व-युद्ध की तैयारी कर रहा है। भारत की सेना इसीलिए बढ़ाई जा रही है। बड़ी सेना के लिए और अफसर सुलभ नहीं हैं, अतः सेना के भारतीयकरण का ढोंग रचा जा रहा है। बन्दरगाह बढ़ाये जा रहे हैं और भारत को एशिया का शस्त्रागार बनाने के विचार से भारत का औद्योगीकरण किया जा रहा है।

नये चुनाव

पूर्वीय, मध्य और पश्चिमीय यूरोप तक के देशों के चुनावों की विज्ञप्तियाँ मास्को से प्रकाशित हो रही हैं। यूरोप की जनता पूँजीवादी और जमींदारी समाज से निकलकर शान्ति और सुरक्षा की आशा से कम्युनिज्म और सोशलिज्म की ओर झुक रही है। फलतः फ़्रांस में कम्युनिष्टों और सोशलिस्टों ने चुनाव जीता है। डिगाल की स्थिति डावाँडोल हो गई है। फ़्रेंच कम्युनिज्म रूसी कम्युनिज्म का मित्र है और सहयोगी है। यह सैनिकवादी फ़्रांस और साम्राज्यवादी ब्रिटेन को चुनौती है।

यूगोस्लेविया ने ब्रिटेन की शुभेच्छा की परवाह न करके राजतन्त्र और पीटर को सदा के वास्ते विदा कर दिया है। दक्षिणी यूरोप में स्लाव राष्ट्र की स्थापना की नींव डाल दी है। यह नवीन स्लाव राष्ट्र मास्को की संरक्षण में रहेगा और बढ़ेगा। बलगेरिया और यूगोस्लेविया के एक संघ में रहने में अब कोई बाधा नहीं रही है। लन्दन और वाशिंगटन की ओर अब सोफिया और बेलग्रेड नहीं देखेंगे। ग्रीस भी चुनाव के बाद यूगोस्लेविया का अनुसरण करेगा। युद्धाग्नि प्रज्वलित होने पर पूर्वीय, दक्षिणी और मध्य यूरोप में ब्रिटेन के उतरने के द्वीप रूसी प्रवाह में डूब गये हैं। यूरोप के किसी भाग से भूमध्यसागर में रूस का प्रवेश ब्रिटेन को सह्य नहीं है। ब्रिटेन के समाजवादी विचारक मिस्टर रसल भी चाहते हैं कि रूस तुर्की और ग्रीस को ब्रिटिश प्रभावक्षेत्र में स्वीकार कर ले-और भूमध्यसागर में प्रवेश न करे।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के समान रूस भी अपना जाल सारे विश्व में फैला रहा है। मध्यपूर्व में वह ऐंग्लो-सेक्सन उसके वास्ते कठिनाई उत्पन्न करने में व्यस्त है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद और अमरीकी तेल-नीति के विरुद्ध उसने अरबों का पक्ष लिया है। एशिया के मुस्लिम देशों से और चीन से रूस का घनिष्ठ सम्पर्क है। रूस उनको कम्युनिज्म के रंग में रँगने और उनमें अपना प्रभाव फैलाने के लिए सतत सचेष्ट और प्रयत्नशील है। अजरबेजान (उत्तरीय ईरान) का विद्रोह, रूस की प्रेरणा का फल है। वह कमज़ोर ईरान को कम्युनिस्ट बना करके ब्रिटेन को इस देश में उलझाये रखना चाहता है। भारत के सीमावर्ती देशों और भारत में भी रूस अशान्ति उत्पन्न करना चाहता है। ईरान चाहता है कि रूस और ब्रिटेन दोनों उसके देश को छोड़ दें, पर कोई भी ईरान खाली नहीं कर रहा है और दोनों हाथ में तलवार लेकर एक दूसरे को सन्देह से देख रहे हैं।

चीन में गृह-युद्ध छिड़ा हुआ है। क्युमिण्टांग कम्युनिस्टों का दमन नहीं कर सकता है क्योंकि रूस की सहायता कम्युनिस्टों को प्राप्त है। रूस मंचूरिया खाली नहीं कर रहा है और न वह च्यांग की सेना को कम्युनिस्टों से लड़ने के लिए अपने अधिकृत प्रदेश से जाने देने के लिए तैयार है। चीनी नेशनलिस्ट सेना को रूसी प्रशान्त के बन्दरगाहों की सुविधा देने को भी उद्यत नहीं है। अमरीका जब तक चीन खाली न करेगा, तब तक रूस भी चीन को खाली न करेगा। कोरिया के उत्तर में रूसी और दक्षिण में अमरीकी हाथ में बन्दूकें रखे एक दूसरे को सन्देह से देख रहे हैं।

—शेष पृष्ठ १४ पर देखिए

एशिया के प्रमुख राष्ट्र जापान के पराजित सम्राट् हैरोहितो।

ब्रिटेन के प्रधान मंत्री मेजर एटली की इच्छा है कि त्रिराष्ट्र-सम्मेलन वाशिंगटन में पुनः बुलाया जाए।

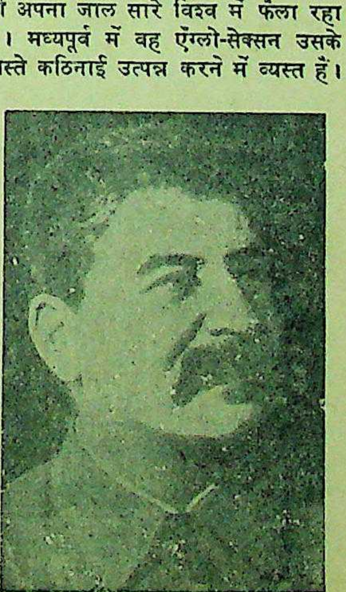

सोवियट रूस के डिक्टेटर स्टेलिन की भावी नीति क्या होगी, शांति अथवा युद्ध?

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिए

महात्मा गांधी का अगला कदम

राष्ट्रीय स्वास्थ्य के लिए प्राकृतिक चिकित्सा का कार्य

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नति और जागरण के लिये समय समय पर महान् प्रयोग करते आये हैं। राष्ट्रीय स्वास्थ्य को पुनर्जीवित करने के लिये प्राकृतिक चिकित्सा का प्रयोग भी गांधी जी के जीवन का एक नया कदम है। श्रीयुत विद्यार्थी जी गांधी जी की सेवा में पूना के प्राकृतिक चिकित्सालय में पिछले दिनों रहे हैं, इसलिए इस लेख में जो कुछ वर्णन किया गया है, उसका एक विशेष महत्त्व भी है। लेख अत्यंत सुंदर और जानकारी से पूर्ण है।

गांधी जी की सेवा में रहनेवाले और इस लेख के लेखक श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी।

महात्मा गांधी की उम्र अब ७७ वर्ष की हो गई है। दुनिया के लोग गांधी जी को बुड्ढा कहने लगे हैं। बापू को सभी वृद्ध मानते हैं बात है भी सच्ची। आज हिन्दुस्तान में युवकों की उम्र क्या है? बहुत अल्प आयु में मृत्यु हो जाती है। हमारी औसत उम्र सब मुल्कों से कम है। हमें पौष्टिक भोजन, साफ़ हवा, स्वच्छ पानी और फल-फूल कहाँ मिलता है? दिन-बदिन हमारी आर्थिक, शारीरिक अवनति हो रही है।

आज सभी लोगों का स्वास्थ्य गिरा हुआ दिखाई पड़ता है। कोई स्वस्थ देखने में नहीं आता। बड़े लोग असंयमी और अनर्गल चीजें खा-खाकर और दूसरी तरफ अन्न और ताक़त की पर्याप्त वस्तुएँ न मिलने से बीमार होकर मरते हैं। बड़े बीमार होने पर लाखों रुपया डाक्टर को देकर स्वस्थ होने की कोशिश करते हैं और मुश्किल से स्वस्थ हो पाते हैं। ग़रीबों को स्वच्छ पानी भी मिलना कठिन है। घरों में घुट-घुट कर मरते हैं।

गांधी जी पूना के नेचरक्योर क्लिनिग में गये थे। वहाँ कुछ महीने तक रहकर अपनी और सरदार पटेल की चिकित्सा करा रहे थे। वहाँ किसी दवा के जरिये चिकित्सा नहीं होती बल्कि प्राकृतिक साधनों से चिकित्सा की जाती है। मुख्य 'टप बाथ' ऐनिमा, मालिश, ठंढा स्नान, गर्म स्नान, सूर्य-चिकित्सा, फलों के खाने में हेर-फेर करके फलों का जूस देना, संयम से रहना, ठीक समय पर सोना, उठना, घूमना आदि है।

चिकित्सा-भवन में कई बड़े-बड़े टब हैं, छोटे भी हैं और बड़े भी। किसी में गर्म पानी है और किसी में ठंढा पानी। मालिश के लिए कई लम्बी बेंचे हैं जिन पर चमड़ेदार गद्दियाँ बिछी हैं। हर एक रूम में गर्म और ठंडे पानी का नल लगा हुआ है। टट्टी जाने के लिए कमोड़ का इन्तजाम है। रोगियों के कमरे में अच्छे पलंग बिछे हैं। आराम कुर्सियाँ हैं, गद्देदार बेंचें हैं। कई मरीजों ने अपने खर्च से मनोरंजन के लिए अपने रूम में रेडियो भी लगा रक्खे हैं। हर एक में टट्टी जाने और हाथ मुँह धोने के लिए छोटा-सा गुसलखाना बना हुआ है। टेबिल लैंप और बड़ा लैंप आदि कमरों में लगे हैं। कमरा काफी अच्छा मालूम होता है। आधुनिक फर्नीचर आदि का अच्छा प्रबन्ध है।

मरीज एक बड़े बेंच के पास इकट्ठे होकर अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठकर चिम्मच कांटे के सहारे नाश्ता भोजन आदि करते हैं। हर मरीज के पास एक चम्मच, एक कांटा, दो बड़ी मुरादाबादी तश्तरी, एक छोटा प्लेट और पानी पीने के लिए एक साफ़ कांच का गिलास रक्खा रहता है। योरोपियन ढंग से भोजन की व्यवस्था है। पैसेवालों के लिए बहुत सुन्दर व्यवस्था की गई है। किसी-किसी मरीज को महीने में एक-एक हजार रुपये का खर्च पड़ता है। चिकित्सालय में काफी नौकर हैं। बिजली के सहारे गर्म तरकारी बनाई जाती है। वहाँ चूल्हे का कोई प्रबन्ध नहीं है। बिजली की अँगीठियाँ बनी हुई हैं, उसी पर बर्तन रखकर भाजी उबाल ली जाती है। चावल-दाल भी पका लेते हैं। धुएँ का नाम नहीं। सब काम बिजली के सहारे होता है।

असाध्य रोगियों की दवा भी श्री दिनशा मेहता करते हैं। कई जीवन से निराश व्यक्ति अच्छे होकर निकले हैं। दिनशा मेहता एक सच्चे और मेहनती डाक्टर हैं। नेचरक्योर के सम्बन्ध में आपका ज्ञान-भंडार भरा हुआ है। हिन्दुस्तान में नेचरक्योर की चिकित्सा आपसे बढ़कर कोई नहीं कर सकता। महात्मा जी के उपवास के दिनों में आप उनकी देख-भाल रखते थे। गांधी जी के प्रति आप बड़ी श्रद्धा रखते हैं।

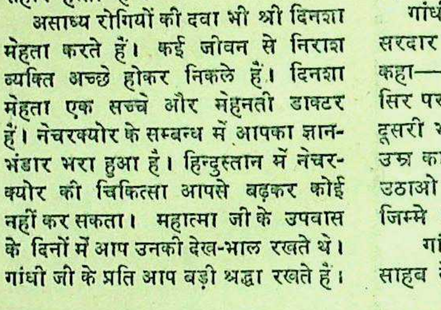

श्री दिनशा मेहता प्राकृतिक चिकित्सालय पूना में महात्मा गांधी।

महात्मा जी को नेचरक्योर की अँगरेजी पद्धति पसन्द नहीं आई। टेबिल, कुर्सी और चम्मच-काँटे के सहारे भोजन करना उनको अच्छा नहीं लगा। गांधी जी ने कहा—"भाई दिनशा जी, यह नेचरक्योर अमीरों के लिए है यहाँ ग़रीब जनता अपनी चिकित्सा नहीं करा सकती।"

दिनशा मेहता ने कहा—"बापू जी आप जैसी आज्ञा देंगे मैं वैसा ही प्रबन्ध करने को तैयार हूँ।"

गांधी जी—"इसे ग़रीबों के लिए ट्रस्ट कर दो और उनके रहने-योग्य बना दो। यहाँ फर्नीचरों आदि की कोई आवश्यकता नहीं है। जमीन पर बैठकर खायेंगे। आरामकुर्सियों की कोई आवश्यकता नहीं। इन बड़ी-बड़ी बिजलियों की जरूरत नहीं। कम से कम रुपये में मरीज रहकर अपनी दवा यहाँ करा सकें ऐसी चीज की खोज करो। हिन्दुस्तान ग़रीबों का है, उनकी सेवा करनी चाहिए। यहाँ बहुत बड़े-बड़े अमीर अपनी चिकित्सा कराते हैं। गरीबों के लिए यहाँ स्थान नहीं मैं अमीरों का दुश्मन नहीं हूँ लेकिन वे भी ग़रीब बनकर अपनी चिकित्सा यहाँ करा सकते हैं।

गांधी जी की इस नई प्रवृति को देखकर सरदार साहब ने एक दिन गांधी जी से कहा—"आप ७७ वर्ष के होने चले हैं। अपने सिर पर कई काम लाद चुके हैं, आज एक दूसरी झंझट मोल ले रहे हैं। बापू अपनी उम्र का ख्याल कर के यह नया काम मत उठाओ। अब इन कामों को दूसरों के जिम्मे कर दीजिए।

गांधी जी ने खिलखिलाकर सरदार साहब से कहा—"तुम मुझे बुड्ढा मानते हो, यह ग़लती है। मैं तो १२५ वर्ष जीना चाहता हूँ। अभी कई काम मुझे करने हैं। नेचरक्योर का ट्रस्टी तो मुझे बनना ही है। मेरे जीवन का यह एक अच्छा काम है। बहुत दिनों से मैं नेचरक्योर खोलने का विचार कर रहा था। प्राकृतिक चिकित्सा पर मेरी पूरी श्रद्धा है। मैं इस काम को बढ़ाना चाहता हूँ।"

सरदार साहब ने कहा—"जब लोग बुढ़ापे की तरफ बढ़ते हैं तब दूसरों को ट्रस्टी बनाते हैं लेकिन आप स्वयं ट्रस्टी बनने जा रहे हैं।"

गांधी जी ने फिर कहा—"मैं बुड्ढा तो नहीं हूँ, १२५ वर्ष जीना है न! ट्रस्टी बन सकता हूँ।" बापू और सरदार का बहुत सुन्दर मनोविनोद हो रहा था। बापू जी अपनी बात पर कायम रहे और नेचरक्योर क्लिनिग के मुख्य ट्रस्टी बन गये।

ग़रीबों के लिए प्राकृतिक चिकित्सा सस्ते खर्च में हो सके इसकी फ़िक्र गांधी जी को बहुत दिनों से थी। आज उनकी इच्छा पूरी होने जा रही है। गांधी जी की अध्यक्षता में एक ट्रस्टी बोर्ड बन गया है। श्री दिनशा मेहता भी उसमें हैं। यहाँ ग़रीब-धनी दोनों अपनी चिकित्सा करा सकते हैं। फिलहाल चिकित्सालय उसी जगह पर है जहाँ श्री दिनशा मेहता अपना निजी चिकित्सालय चला रहे थे।

चिकित्सालय में आगे से बिलकुल सादगी होगी। हिन्दुस्तानी पद्धति से लोग वहाँ रहेंगे। शेष भावी कार्यकर्ता काम करेंगे। ग़रीब कार्यकर्ता अपनी चिकित्सा वहाँ करा सकते हैं। गांधी जी की देख-रेख में चिकित्सालय का प्रबन्ध चलेगा।

गांधी जी का प्राकृतिक चिकित्सा पर
पूर्ण विश्वास था लेकिन अभी तक वे
प्राकृतिक चिकित्सालय नहीं खोल सके।
गांधी जी की बड़ी इच्छा थी कि एक
प्राकृतिक चिकित्सालय कहीं खोला
कई बार वे इस पर चर्चा कर चुके थे
कहीं खोल न सके। प्राकृतिक
करने योग्य कार्यकर्ता तैयार हो
केन्द्र अब तक स्थापित नहीं हो सका
गांधी जी का कहना है कि जिस
में इतनी श्रद्धा करता आया हूं
प्रचार नहीं कर सका। आज तो
क़दम बढ़ाकर प्राकृतिक
स्थापित ही करना है और
देहातों तक में प्राकृतिक चिकित्सा
त्कार फैलाना है। छोटे-बड़े सभी
ले सकें ऐसा प्रबन्ध होगा।
त्सालय में सफाई तो खूब होगी
पूना में प्राकृतिक
का पहला केन्द्र गांधी जी
में पहली जनवरी १९४६ से
जायेगा। प्राकृतिक चिकित्सालय
स्तान के लोगों को एक सुन्दर
ऐसा प्रबन्ध गांधी जी कर रहे हैं।
समय बाद एक दिन ऐसा भी
जब गांधी जी का पैगाम हर
जायेगा। गांधी जी की हर एक
का फैलाव धीरे-धीरे ही हुआ है।
समय के बाद प्राकृतिक चिकित्सा का
हमारे लिए कई जगहों पर
जायेगा। गांधी जी का यह
क़दम बहुत तेजस्वी और राष्ट्रीय
के आदर्श को पूर्ण करने वाला

सेवाग्राम (वर्धा)
५ दिसम्बर ४६

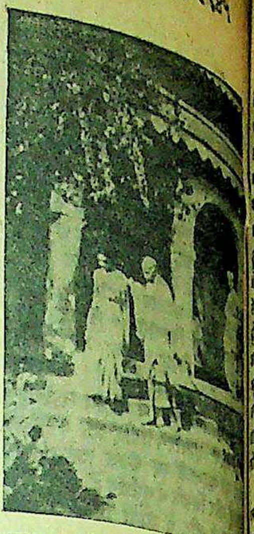

महात्मा गांधी बंगाल में अपने निवास स्थान पर।

स्टैनिस्ट्रीट
चिकेन (कंसिंट्रेटेड) एसेंस
विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—
विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी
हालत में खराब नहीं, बरन् अच्छा है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं. लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ

बाँसुरी की स्मृति

लेखिका, श्रीमती इंदिरा खन्ना

> जीवन की स्मृतियाँ भी कभी कभी भुलाये से भी नहीं भूलती। मनोज भी उफ़ल्त से एक बार मिलकर भी उसे नहीं भूल सका। उल्फ़त भी तो अंत तक उसकी प्रतीक्षा करती रही। अंत में दोनों मिले किन्तु......। दो भावुक हृदयों की भावनाओं का हृदय पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। कहानी रोमांचक, सुन्दर और रोचक है।

हृदय में एक मधुर स्मृति की रेखा खींचती विलीन हो गई।

* * *

रात आ गई पर मनोज सो न पाया। बार-बार सोने की चेष्टा करता, करवट बदलता फिर भी नींद नहीं आई। वह झुंझलाकर उठ बैठा, किताब खोली किन्तु पढ़ने में ध्यान न लगा। आज उसे न जाने कौन-सा रोग लग गया था? सदैव मस्त रहनेवाला भावुक युवक बेचैन था। किताब सामने खुली पड़ी थी, पर मन के भाव मन ही में उथल-पुथल मचा रहे थे। उसने तंग आकर किताब बन्द करके मेज पर पटक दी और विचार-सागर में डूबने-उतराने लगा। कितनी ही युवतियों का ध्यान आया। अभी हाल ही में तो अमिता का प्यार ठुकराकर वह चला आया है। उसके कितने ही पत्र ट्रंक में बिना खुले ही यहाँ भी साथ चले आये हैं। विचारों में डूबता-उतराता मनोज वहीं बैठा-बैठा सो गया।

वह सारा दिन बेचैन रहा। आखिर हाथ में बाँसुरी लिये अपनी छोटी-सी नाव इधर-उधर घुमाता रहा—पर आज के सुन्दर दृश्य उसे अपनी ओर आकृष्ट न कर पाये। सभी कुछ मानों उस बाला में जाकर समा गया था। बाँसुरी भी कल की तरह मस्तानी तान नहीं छेड़ रही थी। बार-बार अधरों से हटाकर बाँसुरी रख देता। धीरे-धीरे वह अपनी चिर-परिचित घाटी में जा पहुँचा। बाँसुरी पर उँगलियाँ पुनः नृत्य करने लगीं। उसे बजाते-बजाते वह मस्त हो गया और स्वयं ही अपने मधुर स्वरों पर झूम उठा। एकाएक उसके विचारों की शृंखला टूटी। उसने देखा कि एक नाव किनारे से लगकर पास ही रुक गई। उसकी चिर-परिचित बाला घुटने तक घाँघरा पहने उसके सामने खड़ी है। मनोज का रोम-रोम खिल उठा।

बाँसुरी को एक ओर रखकर वह बालिका के निकट जा खड़ा हुआ किन्तु क्या बात करे यह बात समझ में नहीं आई फिर भी धीरे से उसने उसका हाथ अपने हाथों मे ले लिया। बालिका ने झटके से अपना हाथ मनोज के हाथ से खींच लिया और घूमकर नाव की ओर चल पड़ी।

मनोज क्या करे? नारी से दूर भागनेवाला भावुक मनोज आज सोच रहा है कि नारी उसके पास बैठे, कुछ उसकी सुने और कुछ अपनी कहे। भावनाओं को वह कैसे रोके? आधीरता के साथ वह बालिका की ओर बढ़ चला पर एकाएक कुछ याद आया। वह पुनः फिरकर अपनी जगह जा पहुँचा। उसने बाँसुरी हाथ में लेकर अधरों से लगा ली और अपनी उसी शिला पर बैठ गया।

बाँसुरी बजाने में लीन, मनोज ने अनुभव किया कि किसी की गर्म सांसें उसके गालों पर पड़ रही हैं, कोई उसके अति निकट उससे सटकर बैठा हुआ उसकी बाँसुरी की मतवाली तान बेसुध होकर सुन रहा है। उसे अपनी बाँसुरी पर ईर्ष्या हुई।

* * *

कितने ही दिवस आकर चले गये। उल्फत ने मनोज को भावुक से संसारी बना दिया था। धीरे-धीरे मनोज ने उल्फ़त को बहुत कुछ सिखा दिया। धीरे-धीरे वह मनोज की भाषा समझने और बोलने भी लगी। दूर से आते हुए मधुर संगीत की ध्वनि के साथ वह बेसुध-सी मनोज के पास खिची चली आती थी। मनोज था परेशान! पिता का तार आया, बहुत दिन रह लिए काश्मीर, अब लौट आओ। वह पिता की आज्ञा की कैसे अवहेलना करे? उल्फ़त से बढ़कर उसका पिता है—और उल्फ़त? नर के निकट एक अदना-सी नारी का क्या मूल्य? किन्तु उल्फ़त भी उसे अति प्रिय है। क्या उसे वह जीवन भर भूल सकेगा? मनोज उल्फ़त से बिदा होने आया था।

वायु उड़ा ले चली उसके गान को, पर आज संगीत में वह मस्ती नहीं थी। हाँ था एक दर्द, मानो बाँसुरी सिसक रही हो। उल्फ़त ने भी उसका स्वर अपने घर से सुना। वह चौंक उठी। आज यह दर्दभरा स्वर कैसा? वह सारा काम-काज छोड़कर मनोज के निकट आकर खड़ी हो गई।

कन्धे पर हाथ रखते ही मनोज चौंक उठा। उसकी ओर उसने देखा पर हँस न सका। उल्फ़त की आँखों में एक प्रश्न था! आज मैं चला जाऊँगा—मनोज के मुँह से सत्य निकल ही पड़ा।

हृदय से एक ठंडी आह निकलकर उल्फ़त के हृदय को झकझोर गई।

"कहाँ"? उल्फ़त ने मन की पीड़ा को दबाकर पूछा।

"घर।"

"क्यों?"

"पिता जी का तार आया है, फौरन घर चले आओ।"

"अब कब आओगे?"

"शायद अब कभी नहीं।"

"कभी नहीं?" उल्फ़त ने अपने दोनों हाथों से मुँह छिपा लिया।

नारी का सिसकना नर देखता रहा।

"सचमुच कभी न आओगे तुम!" मुंह पर से हाथ हटाकर उल्फ़त ने कहा। आँसुओं से धुला और दुःख से सफ़ेद हुआ चेहरा मनोज को ऐसा लगा मानो घाटी में दिन ही में चाँद निकल आया हो।

"आऊँगा।" कुछ सोचकर मनोज बोला।

"सच आओगे?" हँसी चेहरे पर फैल गई, रोती आँखें मुस्करा पड़ीं, क्योंकि मनोज का इतना कह देना ही क्या कम था।

"मैं तुम्हारा मृत्यु-पर्यन्त इन्तजार करूँगी।" मनोज की सारी भावुकता मानो उल्फ़त में समा गई।

* * *

मनोज आखिर चला आया अपने प्यार की नींव हिला कर! वर्ष आते और गुजरते गये। मनोज के जीवन में भी एक जबरदस्त परिवर्तन आ गया। पिता की मृत्यु के बाद उनकी विशाल सम्पत्ति का एकमात्र स्वामी बना मनोज। सुन्दर सुशील योग्य पत्नी का पति और कितने ही प्यारे बच्चों का पिता। पर अब भी अकसर ही काश्मीर की किशोर अल्हड़ भोली बाला सम्मुख आकर खड़ी होती और हृदय को मथकर रख देती। पुरते हुए घाव में फिर एक ठेस लग जाती। मनोज

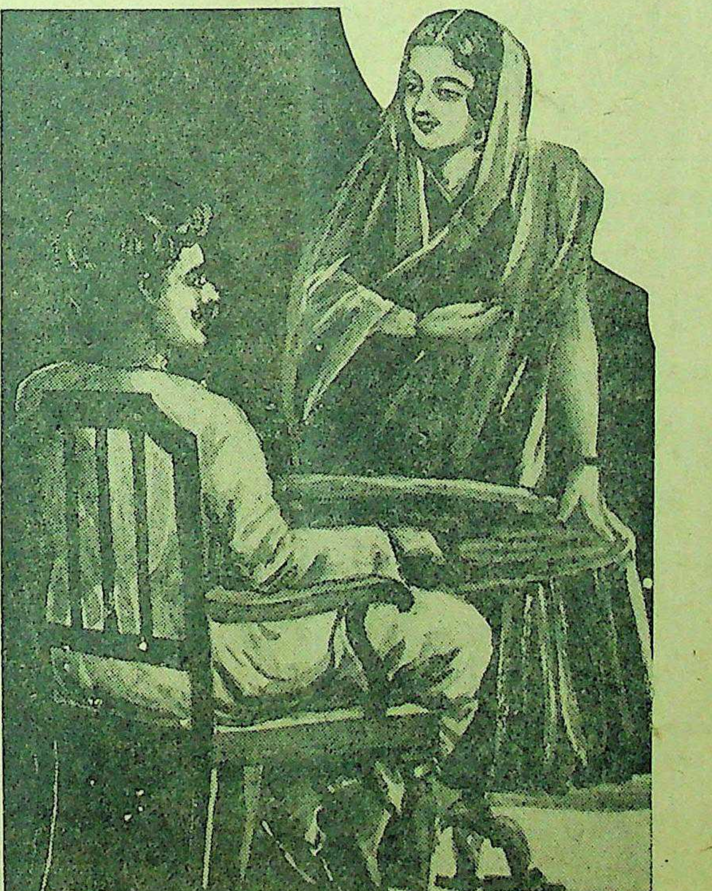

मीनू ने अपने पति मनोज से कहा—तो जाओ थोड़ा बाहर घूम आओ।

पछताता और अपने ऊपर क्रोध करता कि क्यों उससे मिलने का वादा किया? वह बार बार काश्मीर जाने का इरादा करता पर कितनी ही अड़चनें उसके मार्ग में आ खड़ी होतीं। उसकी कितनी ही बार इच्छा होती कि कह दे मीनू से कि उसे आखिर काश्मीर क्यों नहीं जाने देती? कोई मेरी राह में आखें बिछाये होगा! किसी के कान मेरी बाँसुरी के अलाप सुनने को उतावले होते होंगे! पर कहे कैसे? भला पत्नी मीनू क्या सोचेगी, उसका एकमात्र स्वामी जिसे वह पवित्र और देवता समझकर पूजा करती है, इतना गिरा हुआ है? वह कैसे उसके विश्वास में ठेस लगाये? खुद तो तिल-तिल कर जल ही रहा है फिर उसे क्यों जलाये?

मित्रों ने एक दिन आगाह किया, हठ किया, तब आखिर एक दिन चल पड़ा उनके साथ उत्सुकतावश। काश्मीर से उसने सुना कि काश्मीर से कोई स्त्री आई है, और बाजार में पतित जीवन व्यतीत कर रही है। अजीब-सा लगा मनोज को कि क्या उसी की उल्फ़त तो नहीं है?

"अरे तुम" मनोज स्वयं ही अपने स्वर सुनकर चौंक उठा। मित्र हैरान होकर एक-दूसरे का मुंह ताक रहे थे। दूर देश की रहनेवाली से मनोज का इतना परिचय? बिना किसी आडम्बर के अजीब-सी चमक आंखों में लिये उल्फ़त सामने खड़ी थी। तभी न जाने कैसे बढ़ चले हाथ मनोज के चरणों की ओर——उसकी चरण-धूलि स्पर्श करने के लिए। मनोज ने धीरे से उठाकर उल्फ़त को हृदय से लगा लिया। मिलन के आँसू मनोज के वस्त्र भिगो रहे थे। मित्र हैरान होकर देख रहे थे इस विचित्र मिलन को। हजारों-लाखों की सम्पत्ति का मालिक एक बाजारू औरत को अपनी विशाल बाँहों में लपेटे उन्हीं के सामने खड़ा है।

रूप का भाव आंकनेवाले मनोज के मित्र पगली प्रेमिका की कहानी सुन रहे थे——

"मनोज के चले आने पर वह महीनों उसी स्थान पर चक्कर काटा करती थी। दिन में कितनी ही बार उसे भ्रम होता कि मनोज बाँसुरी बजाकर उसे बुला रहा है। वह बेसुध-सी अपना काम छोड़कर अनजाने में पहुँच जाती, उसी शिलाखण्ड के निकट, जहाँ उसका प्यारा मनोज बाँसुरी बजाता था। शीतल स्पर्श से चौंककर देखती! कितनी ही बार उसने पृथ्वी पर लोट-लोटकर आँसुओं से तर किया था, जहाँ मनोज के चरण पड़ते थे।

"इसी सिलसिले में अनेक युवकों से उसका परिचय हुआ। सभी आनेवालों से वह अपने मनोज का हाल और पता पूछती। कुछ उसे पगली समझ दुतकार देते, कुछ समझा देते कि भाई इतने बड़े संसार में एक नहीं अनेकों मनोज होंगे, किस मनोज को तू पूछ रही है! आखिर एक युवक ने उसे ढाढ़स दिया कि अगर वह उसके साथ उसके देश चली चले तो वह उसे अवश्य उसके मनोज से मिलवा देगा। सचमुच में एक रात चुपके से अपनी माँ, बाप, भाई, बहन, अपनी प्यारी जन्म-भूमि को तजकर अनजान युवक के साथ अपने भावुक प्रेमी मनोज की खोज में निकल पड़ी। पर वह युवक सफ़ेद पोश में पूरा शैतान निकला। कई महीने तक उसे अपने पास रखकर यौवन के साथ खिलवाड़ करता रहा। यहाँ तक कि एक दिन रूप के बाजार में उसका सौदा भी कर डाला। क़िस्मत पर रोती उल्फ़त फिर मनोज की राह देखने लगी। उसका दिल कहता था कि एक ब-एक दिन अवश्य ही उसका मनोज उसे मिल जायेगा!"

आज मनोज को पाकर उसकी वर्षों की साध पूरी हो गई, फिर क्यों न जी भर कर वह रो ले।

मनोज ने भी सुना डाला उसे आप-बीती। कुछ नहीं छिपाया। दो हृदयों के प्रेम ने आखिर मिला ही तो दिया दो बिछुड़ों को!

मनोज न घर आकर पत्नी को सब कुछ बता दिया। मीनू को क्रोध नही आया, बल्कि उसे उल्फ़त से सहानुभूति हुई। मनोज भी हृदय में एक पीड़ा लिये जीवन-यापन करता रहा।

इस प्रकार फिर वर्ष आये और बीतते गये। स्मृतियाँ तह की तह जमने लगीं। आज-कल मनोज उदास है। पत्नी कारण पूछते-पूछते थक गई, पर वह तो खुद ही नहीं समझ पा रहा था, इस उदासीनता का कारण!

"तो जाओ थोड़ा बाहर घूम आओ।" मीनू ने पति के कोट की बाँहें उसकी बाँहों में डालते हुए कहा।

चुपचाप मनोज कोट पहनकर कार में बैठा और उड़ चला शहर के बाहर। अनेक गाँव पीछे छूट गये, पर वह तेजी से कार चलाता ही रहा। एकाएक उसके विचारों की शृंखला टूटी जब उसने देखा कि कोई स्त्री कार के निकट बीच सड़क पर चली जा रही है। एकदम उसका पैर ब्रेक लगाने को बढ़ गया——मोटर उछलकर सामने के पेड़ से जा टकराई। छिटक कर एक बड़े से पत्थर पर जा गिरा। सिर फट गया। चला। घूम कर स्त्री ने भयानक देखा——दौड़कर मूर्छित मनोज के पहुँची। नीचे झुककर देखने "मनोज" उल्फ़त के मुंह से गई!

चौंककर मनोज ने आंखें देखा उसका साथी, उस पर बार बार नाम लेकर उसे जगा "वाह यार, तुम तो आज रात पर ही सो गये——यह संन्यास लिया है, तुमने?"

मनोज कपड़े झाड़कर उठ हुआ। माथे का पसीना पोंछते हुए मुंह से यह पंक्तियां निकल पड़ीं——

"ख्वाब था जो कुछ कि देखा,
जो सुना अफ़साना था।"

७० वर्ष से भी अधिक समय से 'ओरियन्टल' ने असंख्य गृहों तथा परिवारों में शान्ति एवम् सुरक्षा की स्थापना की है। केवल १९४४ में ही ८७३९८ व्यक्तियों ने लगभग २२,००,००,०००) का बीमा कराया
फन्ड ३६॥। करोड़ के ऊपर
हमसे हर प्रकार क जीवन-बीमा-सम्बन्धी परामश करके आप सदा लाभ में रहेंग।
ओरियन्टल
गवर्नमेंट सिक्योरिटी लाइफ एश्योरेन्स कं० लि०
भारतवष म संस्थापित १८७४ . प्रधान कायालय, बम्बइ
शाखा— ३२, कैनिङ्ग रोड, इलाहाबाद
ब्रांच, सेक्रेटरी, मिस्टर ए० सी० गुप्ता।

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ
❀१——दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।
❀२——गठीलो और कठोर जड़ी-बूटो व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।
❀३——सर्वोपरी परीक्षा परोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।
❀४——पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।
❀५——हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।
परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये
सुखसंचारक कम्पनी ....लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग.... .... सुखसंचारक पोस्टआफिस
मथुरा

सुप्रसिद्ध फिल्म कलाकार और निर्माता श्री किशोर साहू

फिल्मी-जीवन और अभिनय-कला पर मनोरञ्जक वार्ता

लेखक, श्री उमेश जोशी

[२]

फ़िल्म अभिनेता और निर्माता श्री किशोर साहू।

—सिनेमा की गन्दगी का उत्तर- कित पर है? सिनेमा के स्वरूप प्रकार स्वच्छ किया जा ?

—आज सिनेमा की दुनिया में लोगों का प्रभुत्व है। इसी लिए गन्दगी दिखाई पड़ती है। निम्न- सम्पादक, कलाकार, निर्देशक, इन सभी पर सिनेमा की उत्तरदायित्व है। जब तक यह जिम्मेदारी का अनुभव न तक सिनेमा से गन्दगी का दूर ना ही मुश्किल है जितना कि मुस्लिम संगठन के आज़ादी की लोगों का सिनेमा पर सा ही है जैसा कि मिस्टर मुस्लिम लीग" पर! जब तक से इनके खिलाफ़ आवाज की जायेगी, तब तक इन लोगों का लोप होना उतना ही जितना कि गधे के सिर पर सींग आना। हमें लोकमत की तरफ़ देना चाहिए। लोकमत का अत्यन्त आवश्यक है। जब तक रहेगा तब तक हम एक आन्दोलन नहीं उठा सकते। भी आज अपनी जिम्मेदारी हुए हैं। गन्दगी को दूर करना बल्कि वह उसे बढ़ाने में देते हैं। पैसे के लोभ में आज ने अपने आदर्श को गिरा । आज के सिने पत्रकार यदि सब कुछ कर सकते हैं, लोकमत पवित्र कर सकते हैं लेकिन सवाल का है। वह क्यों चाहने लगे— उन्हीं गन्दे व्यक्तियों से ख़ुराक ! उसी गन्दी ख़ुराक को खाकर भी गन्दे हो जाते हैं। फिर मस्तिष्क से हम क्या आशा आज हमें एक ऐसे हिन्दी ज़रूरत है जो कि निष्पक्ष अपनी आवाज़ उठा सके, और को दूर करने में सहयोग दे सके। सिनेमा का वातावरण सुधर सकेगा, नहीं।

—क्या आजकल की फ़िल्में है? हमें फ़िल्मों के निर्माण में अधिक ख़्याल रखना चाहिए या का?

—जो एक के लिए प्रगतिशील दूसरे के लिए भी प्रगतिशील हो, ज़रूरी नहीं है। कुछ फिल्में अनपढ़ों प्रगतिशील हो सकती हैं लेकिन वही वर्ग के लिए प्रगतिशील नहीं । इसलिए "प्रगति" की परिभाषा मस्तिष्क" के चढ़ाव-उतार के है। जिसका मस्तिष्क जितना ही होगा, उसके लिए उतने ही प्रगतिशील चित्र चाहिए। ज्ञान की तराज में होती है—एक ही प्रकार की फिल्में सबके लिए लाभप्रद नहीं हो सकतीं। आजकल की फिल्में प्रगतिशील हैं या नहीं इसके सम्बन्ध में मुझे अधिक नहीं कहना। इसे तो दर्शक ही ठीक समझ सकते हैं।

मैं कला और मनोरंजन की दो अलग-अलग धारा नहीं मानता। दोनों का केन्द्र-विन्दु एक ही है। मनोरंजन स्वयं कला है। मनोरंजन का विकास आत्मा की सत्य रेखाओं की परिधि से है और इन्हीं सत्य रेखाओं की परिधि पर कला का केन्द्र स्थिर है। सच्ची कला सत्यता, संजीदगी की पृष्ठ-भूमि पर पनपती है। आज यह सवाल प्रायः उठाया जाता है कि फिल्मों में मनोरंजन रहना चाहिए या "कला" लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आता कि ऐसे प्रश्न के उठाने से पहले वह क्यों नहीं स्वयं अपनी बुद्धि से काम लेते? आजकल "आर्ट" के नाम पर अश्लील दृश्यों का दिग्दर्शन कराया जाता है यह ग़लत चीज़ है। कला कभी अश्लील नहीं हो सकती और न मनोरंजन उच्छृङ्खल बन सकता है। आजकल भी फिल्मों में जो मनोरंजन रहता है वह तो "वासना का उफान" होता है—उसमें मनोरंजन के मुख पर कामुकता की रंगीन कलई को पोत दिया जाता है कहने का निष्कर्ष यही है कि फिल्मों के निर्माण के वक्त यदि हम मनोरंजन का ध्यान रक्खेंगे तो कला स्वतः ही आ जायेगी। यदि कला का ध्यान रक्खेंगे तो भी मनोरंजन कला के उज्ज्वल स्वरूप से प्रतिबिम्बित हो जायेगी।

"प्रगतिशील" की परिभाषा क्या है? मैं आपको बताता हूँ। आत्मा की दिव्य अनुभूति की मंजुल रेखायें "मानव-हृदय" में जब एक घरोंदा निर्मित कर लेती हैं तो उस घरोंदे के इर्द-गिर्द सत्यता अपना दामन बिछा देती है। उस दामन से जो रम्य छाया घरोंदे पर पड़ती है, उसकी दिव्य शक्ति से मानव विकास की ओर बढ़ता है। यही प्रगतिशील की परिभाषा है, जिसे कि समझ लेना चाहिए।

प्रश्न—हमें आज किस प्रकार के गीतों की आवश्यकता है?

उत्तर—जिन गीतों के भावों में जिन्दगी की गहराई नापने की अतुल शक्ति हो, जिनमें इश्कों की रवानी में जवानी को बहाया न जाता हो बल्कि जवानी के अल्हड़ आह्लाद की मस्ती राष्ट्रीय-कल्पना के कगार पर छोड़ दी जाती हो—जिन गीतों में जीवन को वासना की लड़ियों से न जकड़ा जाता हो, बल्कि चरित्र-निर्माण की दीवार पर जीवन का भव्य चित्र अंकित किया जाता हो। जिन गीतों के गाने से हमारी जिन्दगी के गम पर आवरण पड़ जाता हो, मानव जिनको सुनकर आत्मविस्मृत हो जाता हो, ठीक इसी प्रकार के गीतों की आज हमें आवश्यकता है। जब तक इस प्रकार के गीत फिल्मों में न आयेंगे। तब तक फिल्में मानव को विकास-मार्ग पर नहीं ले जा सकते? गीतों का प्रभाव दर्शक पर अधिक पड़ता है, अतः उसे सोच-समझ कर लिखना चाहिये—जब तक कि गीतों के अन्दर जिन्दादिली न आयेगी, तब तक वह हमारी आकांक्षाओं का स्पष्ट चित्र नहीं चित्रित कर सकते।

प्रश्न—क्या भारतीय महिलायें फिल्मी-दुनिया में आकर अपना चरित्र ठीक रख सकती हैं? आज के वातावरण में वे आवें या नहीं?

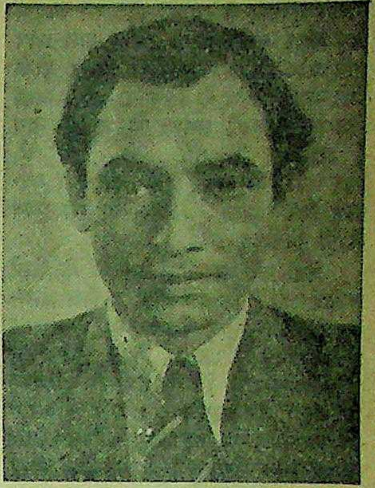

'वीर कुणाल' फिल्म के निर्देशक और निर्माता श्री किशोर साहू।

उत्तर—फिल्मी-दुनिया में ही क्यों चरित्र-रक्षा का प्रश्न तो हर जगह होना चाहिये, फिर यह प्रश्न नारियों के लिये ही क्यों उठाया जाता है—जब कि पुरुष का चरित्र भी मूल्यवान है। आज-कल समानता का आन्दोलन महिलावर्ग की ओर से चल रहा है। उनका कहना यह है कि हम महिलायें पुरुषों से किस बात में कम हैं? सभी दायरे में हम पुरुषों के बराबर हैं। फिर हमें क्यों न उनकी बराबरी के अधिकार समाज में प्राप्त हों? फिर वह सिनेमा की दुनिया में आने से क्यों घबड़ाती हैं? क्या उनमें इतनी शक्ति नहीं कि वह दृढ़ता के साथ पुरुष का मुकाबिला कर सकें? यदि नहीं—तो फिर वह पुरुष के बराबर का अधिकार क्यों मांगती हैं? यदि वास्तव में देखा जाय तो मालूम होगा कि पुरुषों का चरित्र इन नारियों-द्वारा ही बिगाड़ा जाता है। नारी पुरुषों को मजबूर करती है कि उसके सौन्दर्य का प्रेमी बने और उसके सौन्दर्य की प्रसंशा की जाय। अपने सौन्दर्य की प्रसंशा सुनकर नारी आनन्द के सातवें आसमान पर चढ़ जाती है। मैं तो यह दावे के साथ कहता हूं कि जिस नारी में उच्च भावनायें हैं, उच्च व्यक्तित्व है, उसका कोई भी व्यक्ति

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

बाल बाँका नहीं कर सकता। उसके प्रबल व्यक्तित्व के सामने कोई भी कामुक पुरुष ठहर नहीं सकता। जब स्त्री और पुरुष दोनों के दिलों में ही खोट होगी तभी वह वासना के शिकार होंगे। आज सिनेमा ही क्यों, समाज के प्रत्येक भाग में आचरण भ्रष्टता फैल रही है, फिर सिनेमा-संसार को ही क्यों बदनाम किया जाता है? और वह भी पुरुष के ही विरुद्ध।

मेरा तो भारतीय नारियों के लिये सन्देश यही है कि वह शौक से, दिल खोलकर सिनेमा संसार में प्रवेश करें। मजाल है कि उनके चरित्र पर किसी किस्म का धब्बा लग जावे? चरित्र की बुनियाद व्यक्तित्व पर कायम है। यदि बुनियाद ही कमजोर है, तो फिर चरित्र किस प्रकार ठहर सकता है? इसलिये मेरा तो कहना यही है और मेरा अनुभव भी है कि भारतीय-नारियों को अब सबल बनना चाहिये। अबला बनकर काम न चलेगा। अबला बनकर वह पुरुष की बराबरी नहीं कर सकतीं, और न चरित्र-रक्षा ही। सिनेमा की दुनिया में आने से पहले नारियों को अबलापन को त्याग करना होगा—तभी वह सिनेमा-संसार में गौरव के साथ जिन्दा रह सकेंगी। जब नारी-पुरुष दोनों का आदर्श एक है, दोनों ही मनोरंजन के केन्द्र-बिन्दु हैं तब नारियों को सिनेमा की दुनिया में आना ही चाहिये। बिना नारी के मनोरंजन भी नहीं हो सकता। दूसरे पुरुष की पीड़ा को नारी की मुस्कराहट हरण कर लेती है। इसलिये नारी का आना इस लाइन में आवश्यक है। बस इतना ही ख्याल रखना चाहिये कि वह विलास की सामग्री न बने, मनोरंजन की अवश्य।

प्रश्न—सच्चा कलाकार कौन है?

उत्तर—प्रश्न बड़ा ही गम्भीर है। इसके ऊपर तो विस्तार से ही लिखा जाये तभी सच्चे कलाकार का स्पष्ट चित्र खींचा जा सकता है। जिस कलाकार ने "जीवन" को पहचान लिया, वही सच्चा कलाकार है। जो कलाकार जिन्दगी की गहराई में जितना अधिक घुस सका वह कलाकार उतना ही अधिक सफल बन सकेगा। सच्चे कलाकार बनने के लिए हमें जिन्दगी को एक दर्शक की हैसियत से नहीं देखना चाहिए, बल्कि एक "अभिनेता" की हैसियत से "लाइफ स्टेज" पर उतरना चाहिए। यदि आप मानव-जीवन का चित्र दूर से लेंगे तो वह "सच्ची कला" का प्रतीक न होगा। हृदय की अनुभूतियों को पाने के लिए हमें जिन्दगी के प्रत्येक परिच्छेद को पलटना होगा और वह भी निरीक्षक के बतौर न कि पाठक की दृष्टि से। जिस कला की भूमिका में आत्मा की अनुभूति नहीं, वह कला इन्सान को "सच्चे कलाकार" के आसन पर उपनीत नहीं करा सकती। इन्सान के दिल को परखना भी सच्चे कलाकार का कर्तव्य है। कर्तव्य नहीं, इन्सान के दिल को परखने के लिए, हमें "मानव-प्रकृति" का विश्लेषण करना पड़ेगा। सच्चे कलाकार को यह चतुराई मालूम होनी चाहिए कि "स्वभाव" का विश्लेषण-चित्र किस प्रकार लिया जाता है? विश्लेषण-चित्र लेने के लिए मानव-मनोवृत्तियों का अध्ययन करना होगा। सच्चे कलाकार को "मनोविज्ञान" से अवगत होना नितान्त आवश्यक है। जो ईमानदारी से साँस लेता है वही सच्चा कलाकार है। जो कला राष्ट्रीयता के विशाल-क्षेत्र से आविर्भूत हुई है, वही कला मानव के चरित्र-निर्माण में सहयोग दे सकती है।

प्रश्न—आजकल किसी सिनेमा के पत्र में एक "मजनू की चिट्ठियाँ" का स्तम्भ है, क्या आप उन चिट्ठियों को पसन्द करते हैं?

उत्तर—मैं उन चिट्ठियों को हिन्दी-साहित्य का कलंक समझता हूँ। "मजनू की चिट्ठी" से अधिक और अश्लील साहित्य क्या हो सकता है? जो उस साहित्य को पढ़ते हैं, मैं उनके लिए भी शर्म की बात समझता हूँ? इस तरह के सिने-पत्रकार ही मानवता को पतन की ओर ढकेलते हैं। जब तक सिने-पत्रकारों में "मजनू की चिट्ठी" जैसी प्रवृति रहेगी, तब तक उनसे सुधार की क्या आशा की जा सकती है? इन पत्रकारों को चाहिए तो यह था कि ये "हिन्दी" का नाम उज्ज्वल करते, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। ऐसे ही पत्रकारों की वजह से आज सिने-निर्माताओं की सम्मति "हिन्दी" की ओर से निम्नकोटि की हो गई है। हिन्दी के सिने-पत्रकारों का इसी कारण सिनेमा-संसार में आदर और सत्कार नहीं है। यदि वह अपना आत्म-सम्मान चाहते हैं तो उन्हें अपनी अश्लील मनोवृत्ति को त्याग देना चाहिए, और हिन्दी-साहित्य की सही और सच्ची रूप-रेखा हमारे सामने प्रस्तुत करनी चाहिए।

प्रश्न—आप राष्ट्र की भाषा हिन्दी को चाहते हैं या हिन्दुस्तानी को?

उत्तर—मैं राष्ट्र-भाषा हिन्दुस्तानी को चाहता हूँ। वह हिन्दुस्तानी जिसकी कि बुनियाद किसानों, मजदूरों की जबान से निकली हुई भाषा के आधार पर खड़ी की गई हो! मैं रेडियो की हिन्दुस्तानी से घृणा करता हूँ, क्योंकि वह हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू का प्रचार है। मैं तो सीधी-सादी सरल भाषा को ही राष्ट्रभाषा मानता हूँ। मैं अपने चित्रों में इन बातों का ख्याल रखता हूँ। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है, जिसका स्वरूप बिलकुल सीधा-सादा है, जो कि सबकी समझ में आ भी सकती है, और लगभग हर प्रान्त में बोली भी जाती है। इसलिए मैं हिन्दी को ही हिन्दुस्तानी समझता हूँ। जो शब्द इसमें विदेशी आ गये हैं, उनको निकालना नहीं चाहिए बल्कि उनको हजम कर लेना चाहिए। विदेशी शब्द जो कि नये-नये बने हैं उनको बिना किसी हिचकिचाहट के हिन्दीवालों को अपना लेना चाहिए। यदि वह उसका नाम हिन्दी से हिन्दुस्तानी कर दें तो कोई हर्ज नहीं है। मैं हिन्दी और हिन्दुस्तानी में कोई भेद नहीं समझता। हिन्दी और हिन्दुस्तानी एक ही भाषा है और यही राष्ट्रभाषा भी बनेगी।

प्रश्न—हिन्दी के लेखकों को सिनेमा-वाले ठीक तौर से क्यों नहीं अपना रहे हैं? और जिन्हें अपनाते हैं उनकी भी प्रतिभा का उचित उपयोग क्यों नहीं करते?

उत्तर—यह निर्माताओं की ग़लती है कि वह हिन्दी के लेखकों को ठीक तौर से नहीं अपना रहे हैं। बात यह है कि आज के निर्माता, यदि मैं सच कहूँ तो अधिकतर सट्टेबाज हैं। फिर सट्टेबाजों से क्या साहित्यिकों का सम्मान होगा? हो सकता है कि मेरी इस "खरी बात" से कुछ व्यक्ति नाराज भी हो जायें, लेकिन मैं यथार्थ पर आवरण डालना अपने आदर्श के विरुद्ध समझता हूँ। साहित्य के मूल्य को तो कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति ही आँक सकता है। यह सिनेमा-व्यवसाय का दुर्भाग्य है कि उसकी बागडोर ऐसे हाथों में है जो कि सट्टेबाज तो हैं ही साथ ही लोलुप भी। फिर वह हिन्दी के लेखकों का क्या सम्मान कर सकते हैं?

फिर भी कुछ ऐसे आत्म-सम्मानी व्यक्ति आज फिल्मी-दुनिया में हैं, जिन्होंने हिन्दी के लेखकों को काफ़ी प्रोत्साहन दिया है। हालांकि अभी तक किसी भी हिन्दी के लेखक ने कोई ऐसी कृति हिन्दी-संसार को नहीं भेंट की है जिसका कलात्मक मूल्य हो। यह कहना ग़लत है कि सिनेमावालों ने हिन्दी के लेखकों को अपनाया नहीं है, उन्होंने अपनाया है। अब हिन्दी के लेखकों का कर्तव्य है कि वह अपनी प्रतिभा का जौहर दिखलाये, जिससे कि निर्मातागण उनसे प्रभावित हों। एक बात मुझे हिन्दी के लेखकों से भी कहनी है कि वह आपस में एक दूसरे की बुराई, एक दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र निर्माताओं से किया करते हैं, य चीज ग़लत है। इससे वह कभी तरक् नहीं कर सकते। कम से कम हिन्दी के लेखकों को आपस में तो "मेल-जोल" से रहना चाहिए ताकि निर्मातागण उनकी फ से नाजायज फ़ायदा न उठा सकें।

जो हिन्दी के लेखक सिनेमा की दुनिया में आना चाहें वे शौक़ से आ सकते हैं, मैं उनका स्वागत करूंगा—लेकिन आने से पहले उन्हें सिनेमा के टेक्ट को सम लेना चाहिए।

प्रश्न—आप किस प्रकार की भूमि में काम करना पसन्द करते हैं?

उत्तर—मैं उस प्रकार की भूमि में काम करना अधिक पसन्द करता जिसमें मुझे कुछ कहने-सुनने को मि जिसमें दर्शकों को ऐसा मानसिक भो मिलता हो, जिसके देखने से व "विकास-क्षितिज" की ओर बढ़ स जिन चित्रों में मुझे प्रतिभा का प्रदर्शन कर का अवसर प्राप्त होता है मैं उनमें का करना विशेष पसन्द करता हूं। जो केव का उच्छृंखल चित्र पेश करते हैं, मैं उन कतई कार्य नहीं करता क्योंकि मैं समझ हूँ कि "लाइट आर्ट" का प्रदर्शन करना पाप है। जिन चित्रों में मैं कार्य करू यदि उन चित्रों से गुमराहों को मार्ग निर्देशन न मिला, जो इन्सानी जीवन पीड़ा के अन्धकार में भटक रहे उन चित्रों से कुछ आलोक न प्राप्त हु फिर मेरा कार्य करना ही व्यर्थ है।

(सर्वाधिकार लेखक-द्वारा सु

एक मिनट में फोटो उतार लो
फोटो कैमरा ५॥)
जो लोग कैमरे का बटन दबाना भी नहीं जानते वह भी इनसे बड़ी आसानी से मर्द, बच्चा, स्त्री आ प्रकार के दृश्य आदि के अति सुन्दर फोटो उतार कर अपनी शोहरत और चमका सकते हैं यह कैमरे अति खूबसूरत है। मूल्य बहुत ही कम रखा गया है।
रियायती मूल्य बक्स कैमरा ५॥) रु०, स्पेशल ७॥) रु० डी-लक्स विशेष वाला प्रति कैमरा ११।) रु०। डाक महसूल ॥।=)।
नोट—प्रति कैमरा के साथ फोटो उतारने का कागज, फ़िल्में, मसाला आदि उतारने की पूर्ण विधि मुफ्त भेजी जावेगी। नापसन्द होने पर मूल्य वापस
मैनेजर—ब्रिटिश इण्डिया नावल्टी स्टोर (D. D.) पोस्ट बक्स नं० ९६ अमृ

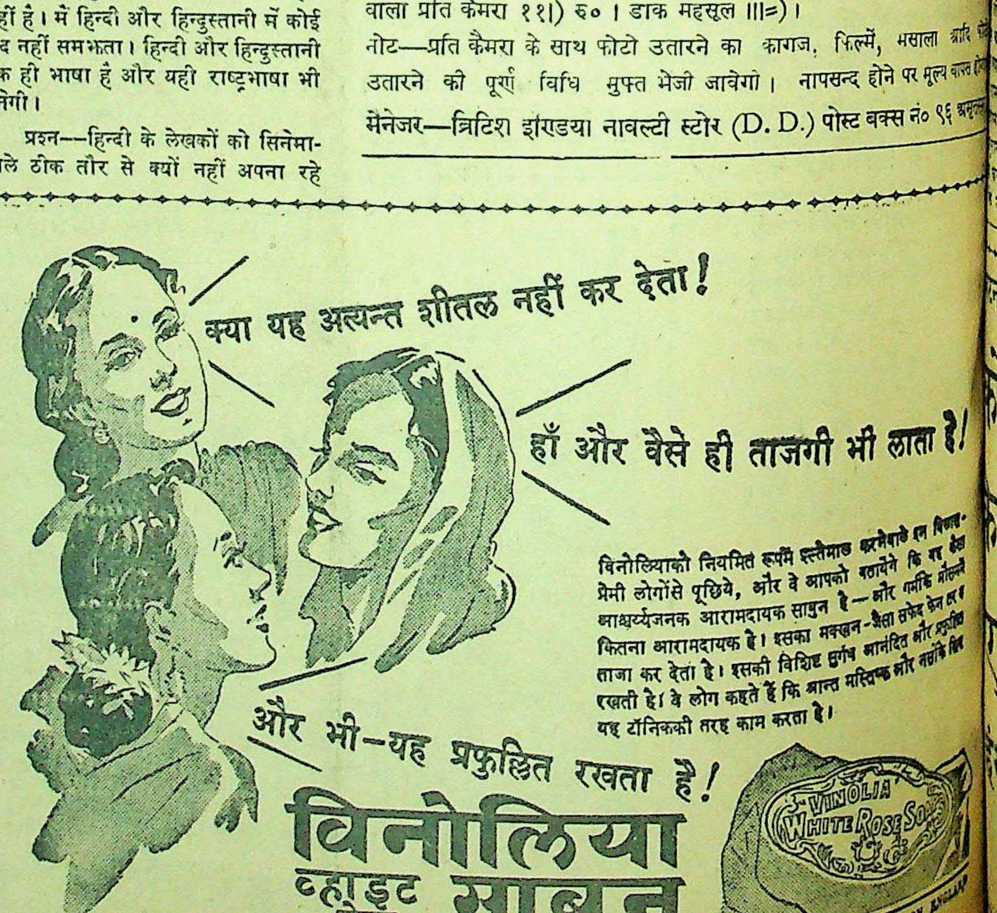
क्या यह अत्यन्त शीतल नहीं कर देता!
हाँ और वैसे ही ताजगी भी लाता है!
और भी—यह प्रफुल्लित रखता है!
विनोलिया व्हाइट रोज़ साबुन
VINOLIA WHITE ROSE SOAP
VWR. 19-221 HI
VINOLIA CO., LIMITED, LONDON, ENGLAND

विनोलियाको नियमित रूपमें इस्तेमाल करनेवाले इन विलास-प्रेमी लोगोंसे पूछिये, और वे आपको बतायेंगे कि यह कैसा आश्चर्यजनक आरामदायक साबुन है—और गर्मीके मौसममें कितना आरामदायक है। इसका मक्खन-जैसा सफेद फेन त्वचाको ताजा कर देता है। इसकी विशिष्ट सुगंध आनंदित और प्रफुल्लित रखती है। वे लोग कहते हैं कि शान्त मस्तिष्क और नसोंके लिए यह टॉनिककी तरह काम करता है।

स्त्रियों के संबंध में इस्लाम क्या कहता है ?

समाज में पुरुषों और स्त्रियों का क्या स्थान होना चाहिए ?

लेखिका, कुमारी विजयलक्ष्मी अग्रवाल

सार में प्रचलित विभिन्न धर्मों में
का एक प्रमुख स्थान है। उसके
र्वो की संख्या, अनुकूल धार्मिक
ओं के कारण, प्रारम्भिक काल से अब
स्तार बढ़ती रही है। कहने का
केवल यह है कि इस्लाम धर्म स्वयं
है और इसलिये नहीं कि उसे
श्रेष्ठ समझते हैं अथवा उसके
र जीवन-यापन करते हैं। इस्लाम के
स्त्रियों की दशा और समाज में
स्थान का वर्णन महत्त्वपूर्ण है।
च्छी सामाजिक व्यवस्था के लिए
वश्यक है कि समाज में सुव्यवस्थित
हों और उनके सदस्यों में घनिष्ठ
हो। सुचारु रूप से चलनेवाले कुटुम्ब
म्भव हैं जब कि आचरण-सम्बन्धी
नियम मनुष्यों को ठीक मार्ग पर
के लिए बने हों। सदाचार की कमी
राष्ट्र को सदैव नीचा दिखाया है।
नात्र की सर्वप्रथम भोजन की
ती है। दूसरा नम्बर इच्छापूर्ति
यह इतनी बलवान् और उत्तेजना-
ती है कि बिना किसी आकर्षण के
उसका अनुभव करते हैं। यदि
खेल-स्थल पर आकर्षण हों तब
इस आवश्यकता से दूर हटना
है। अतएव मनुष्यों को इच्छापूर्ति
मार्ग बतलाते हुए स्वस्थ बनाने
होना चाहिए। इस्लाम का आदेश
समाज के नियमों का पालन
जब ईश्वर का भय मानेगा,
र्जित न करना और
को सुधारना चाहेगा तो वह
ही हो जायगा। हाँ, जिसके लिए
से कुछ प्रयत्न करना पड़ेगा।
लिए इस्लाम में बड़ी कड़ी
हैं। पुरुषों और स्त्रियों में
वासना का वेग अति तीव्र
और उपायों से भी काम नहीं
सामाजिक जीवन में पग-पग
रित करने के लिए अवसर
जिस समाज में स्त्री-पुरुष
मिलते हों उसमें बुरे आचरण
होते हैं और मनुष्यों को क़ानून
नहीं होता। बिरले ही ऐसे
पवित्र जीवन बिता सकें। इस्लाम
बिना रोक-टोक स्त्री-पुरुष
निषेध किया है। उन्नत परिश्रम
सम्बन्धों की डींग हाँकता
उन्हें स्पष्टतया तिरस्कार करता
के अनुसार स्त्रियों को यथा
र के बाहर न जाना चाहिए जब
उन पर आर्थिक संकट न आ
पड़े या युद्ध इत्यादि में भाग न लेना हो। जब उन्हें घर से निकलना पड़े तो उन्हें ठीक वस्त्र पहनने चाहिए और ठीक ही उनकी चाल-ढाल होनी चाहिए ताकि वे पथिकों की दृष्टि का भोजन न बनें। घर पर भी उन्हें इस प्रकार के वस्त्र पहनने चाहिए कि उनसे उनके शरीर के अंग-प्रत्यंग न दीखें अथवा खुले न रहें और घर में रहनेवाले अथवा मिलने-जुलनेवाले मनुष्यों को आकर्षित न करें।

बेगम हामिद अली। आप अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन की सभानेत्री रह चुकी हैं और भारत की एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्री हैं।

इस्लाम की इच्छा है कि मनुष्य और स्त्रियों की सभा, सोसाइटी, संस्थायें अलग-अलग होनी चाहिए और स्त्रियों को अपने ही समाज में सम्मिलित होना चाहिए। स्त्री-शिक्षा के कार्य में इससे अवश्य कठिनाई पड़ती है परन्तु वह कठिनाई ऐसी नहीं कि वह प्रयत्न द्वारा हल न हो। यदि तब भी इसका परिणाम स्त्रियों की अनभिज्ञता के रूप में प्रदर्शित हो, तो इस छोटी-सी बुराई को एक बड़ी भारी भयानक बुराई के स्थान पर जिससे कि मनुष्य का शारीरिक और नैतिक पतन हो जाता है, अपनाना उचित है। विद्या, ज्ञान, उन्नति आदि से चरित्र का महत्त्व निश्चय ही अधिक है।

इस्लाम में स्त्रियों और पुरुषों दोनों को विवाह-विच्छेद का अधिकार दिया गया है। स्त्रियों के लिए कुछ प्रतिबन्ध हैं। विवाह-विच्छेद की आवश्यकता के विषय में यहाँ अधिक न कहकर केवल इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जब पति-पत्नी के मध्य नियमित झगड़े होने लगें और एक दूसरे पर अत्याचार करने लगें तो इससे सुन्दर क्या हो सकता है कि उन दोनों को पृथक् कर दिया जाय और घर को नर्क होने से बचा लिया जाय। वैवाहिक सम्बन्ध तभी तक ठीक है जब तक कि पति-पत्नी अपनी-अपनी इच्छानुकूल चल सकें और उन दोनों की आपस में घनिष्टता हो। पुरुषों को सम्बन्ध तोड़ते समय अपनी स्त्रियों को बँधी हुई रक़म देनी होती है। स्त्रियाँ भी न्यायालय से सम्बन्ध-विच्छेद करा सकती हैं यदि वे यह सिद्ध कर सकें कि पति उनके साथ अन्याय एवं अत्याचार करते हैं, वे नपुंसक हैं, किसी अन्य संक्रामक रोग से पीड़ित हैं अथवा उनका निर्वाह नहीं कर सकते किन्तु इन दशाओं में स्त्रियों को कुछ धन पाने का अधिकार नहीं है।

स्त्रियों को सम्पत्ति में भी, इस्लाम ने, हिस्सा दिया है। किसी मनुष्य की मृत्यु पर उसके पुत्र और पुत्रियाँ सब उत्तराधिकारी होती हैं। पुत्रों को पुत्रियों से दूना मिलता है। स्त्री यदि अपने प्रयत्न से कोई सम्पत्ति इकट्ठी करे तो वह उसी की होती है; पति को उस पर उस समय ही अधिकार होता है जब कि स्त्री को कोई आपत्ति न हो। यह सब सुविधाएँ स्त्रियों के लिए की गई हैं परन्तु स्त्रियों को समानाधिकार नहीं दिये गये हैं क्योंकि ऐसा होना अस्वाभाविक और असम्भव है। नवयुवतियों और विधवा स्त्रियों को अपने लिए पति चुनने का भी हक है। आशय यह है कि सब कुछ हो पर

राजकुमारी अमृतकौर और श्रीराम भी अखिल भारतीय महिला - सम्मेलन की प्रमुख कार्यकर्त्री हैं। राजकुमारी अमृतकौर अभी हाल में लंदन से वापस आई हैं।

स्त्रियाँ मनुष्यों के हाथ की कठपुतलियाँ न बन जायँ और वे उनको जैसे चाहें न नचा सकें, न उनको केवल भोग-विलास की सामग्री ही बना सकें।

स्त्रियों और पुरुषों की समानता का सिद्धान्त भ्रमपूर्ण है। पाश्चात्य समाज जिसमें स्त्रियाँ पुरुषों से कंधा भिड़ाकर चल रही हैं ग़लत नींव पर है। स्त्रियों की दशा में उससे किसी प्रकार का सुधार न होकर हानि ही हुई है।

यूरोप और अमरीका की स्त्रियाँ दफ़्तरों में, व्यवसाय में, खेल-कूदों में, पुरुषों के साथ भाग लेकर अपने मातृत्व पद को गवाँ बैठी हैं जो कि स्त्रियों का सब कुछ होता है। वह उन्नत स्त्रियाँ जो गृह-प्रबन्ध न कर सकें, जो अपने के अतिरिक्त दूसरे मनुष्यों के मनोरंजन का कारण बनें, जो अपने बालकों की देख-रेख न कर सकें और न गार्हस्थ्य के सुख-दुख उठा सकें, निकम्मी हैं। सच पूछा जाय तो स्त्रियाँ इतनी शक्तिशाली नहीं कि जीविकार्जन और मातृत्व पद दोनों का भार सह सकें। स्त्रियाँ तभी आकर्षक होती हैं जब कि वे अच्छी मातायें, बहनें व बेटियाँ हों न कि सभ्यता के वेग में बहती हुई कृत्रिम सुन्दरता की उपासक हों। पाश्चात्य समाज स्त्रियों को आदर न देकर उनको और अपने को धोखे में डाले हुए है। स्त्री का स्त्री की भाँति सम्मान, पूर्व की ही वस्तु है और पश्चिमीय समाज में अभी स्त्री को अपने लिए मार्ग खोजना है।

न ! बटन !! बटन !!!
ोटों और कमीजों
अच्छे बटनों की
जेंसी के लिए लिखें।
सराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,
अमृतसर।

If it's ELGIN it's good!
अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है
टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिवल, धोतियाँ, साडियाँ, चादरें। जालीदार शर्टिंग, तकियेके कपडे, स्नान की चटाइयाँ, रंगहीन फलालेनी सूती कपडा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।
सरकारी कपडा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामो में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाडी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से मे पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमे पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतों मे ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।
EK 23 HIN
दी एल्गिन मिल्स कं. लिमिटेड कानपूर
प्रमुख विक्रेता (थोक)
मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपूर

संसार में शांति या महायुद्ध ?

(पेज ७ का शेष)

हिन्द चीन और इण्डोनेशिया के लोगों की स्वाधीनता होने की आकांक्षा से रूस ने सहानुभूति प्रगट की है। तीनों मित्रों में एकता नहीं है। संयुक्तराष्ट्र और ब्रिटेन रूस के विरुद्ध हैं। एँग्लो-अमरीकी व्यवस्था इस प्रकार की है--संयुक्तराष्ट्र को चीन, फिलिपाइन, प्रशान्त महासागर के द्वीप और जापान, ब्रिटेन को बर्मा, मलाया, इण्डोनेशिया और फ़्रांस को हिन्दचीन देने का निश्चय मालूम होता है। ये तीन साम्राज्यवादी शक्तियाँ औपनिवेशिक साम्राज्य की सहायता से रूस का यूरोप और एशिया में मुक़ाबला करना चाहती हैं, क्योंकि रूस की शक्ति पूँजीवादी और सैनिक साम्राज्यवाद के लिए एक बड़ा भय है। इसी तरह रूस के लिए पश्चिमी राष्ट्रों का संघ एक बड़ा भय है और उसको तोड़ने के लिए प्रयत्नशील है।

युद्धकाल में रूस की दृढ़ अजेय सामर्थ्य को देखकर ब्रिटेन को कौतुक हुआ था, रूस की वह शक्ति आज भी वैसी की वैसी ही बनी हुई है और उसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आई है। इस शक्ति के कारण यूरोप का नेतृत्व रूस को प्राप्त हो गया है। इँगलेंड आज यूरोप का नेतृत्व प्राप्त करने में असमर्थ है। पर इँगलैंड चाहता है कि पूर्वीय यूरोप के समीप रूसी प्रभाव की जो लहरें लहरा रही हैं, वह भूमध्य सागर के द्वीपों तक न पहुँचे।

रूस अमरीका में प्रतियोगिता

मिस्टर चर्चिल ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि युद्ध-पूर्व ब्रिटेन का जो स्थान था वह पुनः ब्रिटेन प्राप्त न कर सकेगा। रूस भूमध्यसागर और पूर्वीय प्रशान्त महासागर में अपना पैर जमाना चाहता है और अमरीका सुदूरपूर्व को अपना बाजार बनाना चाहता है। तीनों राष्ट्रों का उद्देश्य अलग-अलग है। पूर्वीय यूरोप के कारण जिस प्रकार एँग्लो-रूसी मैत्री में कमी पड़ गई है, उसी प्रकार चीन के कारण रूस और अमरीका में झगड़ा उत्पन्न हो गया है। दूसरे महायुद्ध से पहले चीन, ब्रिटेन और जापान की शह के बीच में था। इस लड़ाई में जापान और ब्रिटेन दोनों को चीन से उखाड़ दिया गया है। आग्नेय एशिया में ब्रिटेन का कोई प्रतिस्पर्द्धी नहीं है। आग्नेय एशिया में ब्रिटेन फ्रेंच और डच साम्राज्य को सहारा दे रहा है। चीन इस समय रूस और अमरीका की शह के बीच में है। उत्तरीय प्रशान्त के द्वीप अमरीकी कक्ष में हैं, यह अमरीका की मान्यता है। जापान का भविष्य ठहराने का एकाधिकार अमरीका अपना मानता है और वह जो सलाहकार परिषद् बनाई है, उससे रूस सहयोग करने को प्रस्तुत नहीं है। अमरीका च्यांगकाई शेक और चुंगकिंग की सहायता से चीन का बाजार और आर्थिक योग चाहता है। रूस चुंगकिंग की सार्वभौमिकता मानकर भी उसकी अखण्ड सत्ता स्थापित होने नहीं दे रहा है। पेकिंग, शांटुंग में कम्युनिस्टों और क्युमिण्टांगों के बीच खुली अघोषित लड़ाई जोरों की चल रही है। प्रशान्त में जापान की जगह अमरीका का प्रभाव रूस को इष्ट नहीं है। दूसरी ओर मिस्टर जान कार्टर का कहना है कि यदि रूस यह मान ले कि सुदूरपूर्व में अमरीका का भी हित है, तो चीन दोनों राष्ट्रों को जोड़नेवाला पुल बन सकेगा। आपका यह भी कहना है कि रूस और अमरीका की टक्कर टालनेवाला बफ़र राज्य चीन हो जायेगा। इससे प्रगट है कि यदि चीन इन दोनों की टक्कर को टालनेवाला नहीं बना तो दोनों के संघर्ष का रणक्षेत्र बनेगा।

रूस की आकांक्षा

पूर्व में रूस की दो इच्छायें हैं। जापान से साइबेरिया को ख़तरा न रहे, अतः जापान को वह निशस्त्र कर देना चाहता है। दूसरी माँग उसकी यह है कि जापान-द्वारा अधिकृत देश स्वाधीन कर दिये जायें। रूस जापान द्वारा अधीन रखे गये राष्ट्रों की स्वाधीनता का बीड़ा उठा लेने से भी न चूकेगा। पूर्व की बस्तियों पर यूरोप का वैभव टिका हुआ है। ब्रिटेन इसी साम्राज्य के बल पर युद्ध-पूर्व का स्थान पाने की आशा बाँधे हुए है। एशिया में जिस प्रकार इन तीनों की राय नहीं मिलती और इन तीनों के स्वार्थ मेल नहीं खाते, उसी प्रकार यूरोप में भी वे एक दूसरे को एक आँख से नहीं देखते। रूस को यूरोप में सुरक्षा चाहिए और उसी प्रकार समृद्धि भी चाहिए। इसलिए रूस अपनी सीमा के देशों को अपने कहने में रखना चाहता है। रूस अपनी तीनों—जल-थल-नभ—सेनायें विशाल परिमाण में रखना चाहता है। हर एक जानता और मानता है कि जर्मनी की दोनों युद्धों में पराजय का कारण सामुद्रिक शक्ति की निर्बलता है। रूस अपनी यह स्थिति होने नहीं देना चाहता। इसलिए वह प्रबल नौशक्ति चाहता है। सुरक्षा के लिए समुद्र वश में होना चाहिए। यह जानकर रूस भूमध्यसागर, ईरान की खाड़ी, हिन्दमहासागर और प्रशान्त महासागर में अपना पैर जमाकर अपनी नौशक्ति अजेय बनाना चाहता है। फलतः यूरोप और एशिया दोनों जगह तीनों राष्ट्रों की आपस में पटती नहीं है।

परमाणु बम

रूस और पश्चिमीय राष्ट्रों के बीच मतभेद का एक कारण परमाणु बम भी है। परमाणु बम गिराकर अमरीका ने जापान को हराया, पर रूस को भी इसका आघात लगा है। दूसरे महायुद्ध के फल-स्वरूप रूस को सर्वश्रेष्ठ सैनिक-शक्ति होने के कारण उसको अग्रपूजा का सम्मान मिलना चाहिए था। मगर अमरीका के अपने हाथ में परमाणु बम लेकर रणक्षेत्र में आने पर विजयश्री ने अमरीका को आलिंगन किया और सर्वश्रेष्ठ सैनिक-शक्ति अमरीका की मानी गई। रूस को यह सदा शूल के समान खटकता रहता है। इस बात को मिस्टर मोलोटोव ने छिपाया नहीं है। मोलोटोव की शिकायत है कि एक बात को मनवाने के लिए जहाँ घंटों रूस को बहस और तर्क करना पड़ता है, वहाँ अमरीका परमाणु बम हाथ में लेकर दिखाने मात्र से अपनी बात मनवा लेता है। प्रेसीडेंट ट्रूमेन ने अमरीका की बारहसूत्री परराष्ट्रनीति को बताते हुए स्पष्ट कर दिया कि अमरीका परमाणु बम बनाने का गुप्त रहस्य प्रगट न करेगा और अपने तक रखेगा। रूस इस गुप्त भेद को पाने के लिए प्रयत्नशील है। मिस्टर एटली भी अमरीका के इस निर्णय में परिवर्तन कराने में समर्थ नहीं हुए। एटम बम के गुप्त रहस्य से अकेला रूस फ़ायदा उठा सकता है। चीन और फ़्रांस को बताना न बताना एक समान है। उनको बताना तो भिखारी के द्वार पर हाथी बाँधने के समान है। अटलाण्टिक से प्रशान्त तक रूस का साम्राज्य फैला हुआ है। यदि रूस को परमाणु बम का रहस्य मालूम हो गया, तो भूमध्यसागर, प्रशान्त और हिन्द महासागर में रूस को अपने पैर जमाने से कोई शक्ति रोक न सकेगी। यदि ऐसा हुआ तो यूरोपियन देशों के साम्राज्यों का अन्त हो जायगा। अमरीका रूस को परमाणु बम बनाने का रहस्य नहीं बतायेगा, पर जिस शोध, एकाग्रता और परिशीलन से उसे बनाया है, रूस भी उसी उपाय से बना सकेगा। मिस्टर चर्चिल का अनुमान है कि रूस को इसके बनाने में आठ-दस साल लग जावेंगे। रूस जब तक एटम बम का यन्त्र सिद्ध करके उसको बनाने की स्थिति में होगा, तब तक एँग्लो-अमरीकी शस्त्रागार हथियारों से पूर्ण हो जायगा। इस प्रकार एँग्लो-अमरीकी नीति रूस के विरुद्ध चल रही है।

गारंटी

मिस्टर बिरनेस मानते हैं कि रूस की माँग यह स्वाभाविक है कि पूर्वीय यूरोप के देशों की नीति रूस विरोधी न हो। अमरीका रूस विरोधी षड्यन्त्र और गुट्ट में सम्मिलित न होगा और रूस भी आशा है अमरीका-विरोधी षडयन्त्र और गुट्ट में शरीक न होगा। दूसरी ओर से कहा जाता है कि जब रूस और ब्रिटेन में २० साल के लिए सन्धि है, फिर भी उस पर विश्वास नहीं किया जाता और उसको एटमबम का रहस्य नहीं बताया जाता। जब हममें रूस पर विश्वास करने का साहस नहीं है, तब रूस कैसे मित्रराष्ट्रों पर विश्वास कर सकता है ? एटम बम के युग में ब्रिटेन सबसे अधिक हमला करने के लिए सुलभ देश होगा। इसलिए ब्रिटेन के वास्ते यूरोप के सबसे बड़े राष्ट्र का विरोधी होना ठीक न होगा।

४०० सौ साल से

पिछले ३०० या ४०० साल से पश्चिम की ओर से रूस पर अनेक हमले हुए हैं। पहले स्वीडन और पोलैंड ने फिर नेपोलियन ने फिर जर्मनों और बाद में पुनः पोलों ने किया और इसमें उनको पश्चिमी मित्रों की सहायता प्राप्त थी। अन्तिम हमला हिटलर ने किया। इसलिए मास्को का सतर्क रहना अनिवार्य है। विजयी राष्ट्र युद्ध-उद्देश्य के सम्बन्ध में सहमत थे। पर शान्ति के उद्देश्य के सम्बन्ध में सहमत नहीं हैं। सुख के समान शान्ति भी नकारात्मक आधार पर स्थापित नहीं हो सकती। यह भीति के आधार पर भी न होनी चाहिए। आज मित्रों को पैसिज्म और अगले युद्ध की भीति ही एक रख रही है।

अविश्वास

जर्मनी का भय आज भी बना हुआ है। १९१८ के बाद जर्मनी ने कितनी जल्दी प्रभुता प्राप्त कर ली, यह सबके दिमाग़ में घूम रहा है। मगर यहाँ भी मित्रराष्ट्र एक राय नहीं हैं। रूस जर्मनी को वीरान बनाना चाहता है, फ़्रांस उसको खण्ड, खण्ड कर देना चाहता है। फ़्रांस और रूस को जर्मनी से इस प्रकार संरक्षण मिल जायगा, पर लड़ाई से न मिलेगा। फ़्रांस राइन नदी, रूर पर भी अन्तर्राष्ट्रीय अधिकार चाहता है पर यूरोप बेल्जियम, लक्समबर्ग, रूर के कोयले की खानों के उपयोग के वास्ते यूरोप के तमाम देशों का एक संघ बनाने में असमर्थ है।

डालर साम्राज्य

मगर ब्रिटेन दिल से अमरीका के साथ भी नहीं है। वह अन्दर ही अन्दर, मन ही मन उससे भय खाता है। अमरीका के बड़े व्यवसायियों के डालर साम्राज्यवाद से यूरोप भयभीत है। ब्रिटेन का कहना है कि इतना ही पर्याप्त नहीं है कि अमरीका प्रादेशिक आक्रमण से विरत रहे, बल्कि वे जितने के अधिकारी हैं, उससे अधिक बड़ा विश्व-व्यापार का भाग अन्यों का रूस आयात न करके केवल निर्यात करके छीनने की कोशिश न करें। १९२९ में अमरीका के कारण जो आर्थिक संकट आया था, उसको ब्रिटेन भूला नहीं है। इसलिए आज ब्रिटेन के लोग समाजवाद से भयभीत नहीं हैं, बल्कि इससे भयभीत हैं कि संयुक्तराष्ट्र आर्थिक पेण्डुलम की अस्थिरता के कारण वालस्ट्रीट में धड़ाम से गिर न पड़े और पुनः आर्थिक विपत्ति न आये।

रूस से ब्रिटेन को कोई भय नहीं है। क्योंकि १—रूस शान्ति चाहता है। पुनर्निर्माण का महान् काम उसके सामने है। २—उसको प्रदेश नहीं चाहिए क्योंकि सब चीजें उसके अपने मुल्क ही में विद्यमान हैं। ३—स्टालिन अब और को पश्चिम नहीं भेजना चाहता, पश्चिम के सैनिकों के साथ रूसी सम्पर्क का उसको पर्याप्त अनुभव हो है। निस्सन्देह रूस पश्चिमी मित्र देश चाहता है। पर इसी कारण से ब्रिटेन को बिगाड़ना न चाहिए।

पर ब्रिटेन पश्चिमी राष्ट्रों का ब्लाक बनाने के विचार का परित्याग को उत्सुक नहीं है। उसका कहना है यदि रूस पूर्वीय यूरोप में सुरक्षा का कर सकता है, अमरीका दक्षिण के प्रति अच्छे पड़ोसी की नीति बरत है, तब ब्रिटेन, फ़्रांस, बेल्जियम, स्कण्डेनेविया व अन्य पश्चिमी देशों संघ बना सकता है। वे उसके मित्र हैं, ऐतिहासिक साहचर्य रहा है और जन्म का उनका और आदर्श एक है।

३० साल तक

हर एक विचारशील व्यक्ति करता है कि यदि रूस और बीच युद्ध छिड़ा तो वह लड़ाई ३० साल चलेगी और मानव-सभ्यता संस्कृति उस रक्त-गंगा में डूब पर शान्ति के लिए आवश्यक त्रिराष्ट्रों में अभाव है। रूस को सन्देह की दृष्टि से देखते मानता है कि हंगरी, रूमानिया, बल्गेरिया में स्थापित गवर्नमेंट तन्त्रात्मक हैं। ब्रिटेन और गवर्नमेंटों को जन-तन्त्रात्मक रूस इसके जवाब में स्पेन, पुर्तगाल की ओर संकेत जर्मन मशीनरी का रूस ढोया से व्यापारिक सन्धि, आस्ट्रिया ट्रिपोलीलिटानिया पर रूस का कारणों से दोनों में मेल नहीं

मेजर एटली कहते तो जब तक बड़े राष्ट्रों की अविश्वास होगा, शान्ति न और अविश्वास दूर करने के हैं। पर क्या कोई इसका है। रूसी राज्यक्रान्ति से १९३९ राष्ट्रों का रूस के साथ जो क्या वह रूस के हृदय में पश्चिमी प्रति विश्वास उत्पन्न करता है? अपने मित्रों की सहमति के बगैर यूरोप में गवर्नमेंट स्थापित कर ब्रिटेन तभी तो आज इण्डोनेशिया में अपने साम्राज्य का विस्तार कर और अमरीका ने एकाकी ही सामरिक और सैनिक महत्त्व के हथिया लिया है। मि० चर्चिल को इसलिए अमरीका का साथ उसका अनुसरण करने की सलाह सैनिक और सामरिक कक्षा के निक आविष्कारों को अन्तर्राष्ट्रीय में लाने से भी शान्ति स्थापित शान्तिस्थापित होने का एक मार्ग और अफ़्रीका से श्वेतांग हट व्यवस्था का अन्त हो। चुनौती दी जा चुकी है। साम्राज्यवाद का त्याग करें स्थापित हो सकती है। यूरोप लिए तैयार नहीं है। फलतः दूर है और विश्व तेजी से युद्ध का आरम्भ करने के लिए रहा है।

व्यंग्य-कौतुक
हास्य, प्रहसन, विनोद और
का सजीव चित्रण इस पुस्तक के
में आपको मिलेगा। पुस्तक में
मनोरंजन का सबल पुट है।
इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

संपादक के नाम चिट्ठियां

ष्ट्र और राष्ट्रभाषा का प्रचार

दूत' के गत २ दिसंबर के अंक ष्ट्र में हिन्दी-हिन्दुस्तानी का क्यों?' शीर्षक एक पत्र प्रकाशित है। उस पर कुछ प्रकाश डालने के एक प्रश्न यह करता हूँ कि हिन्दी सम्मेलन राष्ट्रभाषा के संबंध टांग क्यों अड़ाता है? उसके से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि का कार्यक्षेत्र हिन्दी-साहित्य और विकास से सम्बन्धित उसे यह अधिक अच्छा होगा कि दूसरे प्रान्तों की तरफ ध्यान अपना स्वयं अपने क्षेत्र का रक्षण करे। जब तक राष्ट्र ने हिन्दी भाषा माना था तब तक तो लेकिन अब जब कि सारा देश रहा है कि साहित्यिक हिन्दी नहीं फहम हिन्दुस्तानी ही हमारी है, तब सम्मेलन यह जिद रहा है कि उसी की परिभाषा ही राष्ट्रभाषा के तौर पर देश जाय? एक बात स्पष्ट है, वह राष्ट्रभाषा का सवाल साहित्यिक पूर्ण राजनैतिक है। हिन्दी साहित्य की उन्नति या अवनति या उर्दू प्रान्तों के निवासियों सरोकार हो सकता है और यही कि हिन्दी और हिन्दुस्तानी षमय बनने जा रहा है। तब अधिक उग्र बन महाराष्ट्र, गुजरात, न्ध, और उड़ीसा आदि अहिन्दी सम्मेलन अपनी परिभाषा की षा (यानी साहित्यिक हिन्दी करने की जिद पकड़ बैठता है। अहिन्दी प्रान्तों के निवासियों ओं से सम्मेलन वाक़िफ़ नहीं इसलिए उसके लिये यह उचित प्रान्तों में राष्ट्रभाषा के की ज़िम्मेदारी हमको ही सौंप गांधी जी की प्रेरणा से राष्ट्र-सम्बन्ध में सम्मेलन को अपना कर सब प्रान्त उसे अपनी राज देते रहे और उससे मार्ग अपेक्षा रखते रहे। इससे सम्मेलन या कि इन सब पर उसका ही अधिकार है। किन्तु सच तो यह गांधी जी की कृपा से उसको था। यद्यपि अपनी इस भूल को बहुत जल्दी समझ तो गये थे—सम्मेलन के कुछ ज़िम्मेदार सदस्यों भारत हिन्दी-प्रचार-सभा के पैसे लेकर उन पर मुक़दमा दायर बात उठाई थी तभी से वे चौकन्ने)—मगर कुछ तो श्री टंडन जी से या कुछ अपने अनुयायियों होकर उन्होंने वर्धा की प्रचार समिति को हिन्दी-सम्मेलन से सम्बंधित रहने दिया; वक्त दक्षिण-भारत हिन्दी-की तरह सम्मेलन से अलग राष्ट्रभाषा प्रचार के लिए स्वतंत्र संस्था खड़ी कर देना कोई बहुत बड़ी बात नहीं थी। वक्त जो हुआ सो हुआ। बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई है की राष्ट्रभाषा की परिभाषा की राष्ट्रभाषा की परिभाषा जो लोग कांग्रेस की राष्ट्र-परिभाषा में निवास करते हैं कम से कम राष्ट्रभाषा की जाय तो अब सम्मेलन में स्थान नहीं है। ऐसी हालत में अहिन्दी प्रान्तों की राष्ट्रभाषा प्रचार समितियाँ, जो आज तक सम्मेलन के मातहत काम करती थीं (और वास्तव में जिनका हिन्दी-साहित्य से कुछ भी ताल्लुक़ नहीं है) अगर अब सम्मेलन से अलग होकर अपना स्वतंत्र संगठन बनायें तो वह एक अपरिहार्य ऐतिहासिक घटना समझी जायेगी।

इसी दृष्टि से महाराष्ट्र की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति सम्मेलन से (यानी उसकी वर्धा समिति से) अलग हो गई है। उसने अभी तक अपनी परिभाषा में और पाठ्य-क्रम में कोई ख़ास परिवर्तन नहीं किया है। उसका वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार सभा से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है—क्योंकि वर्धा की हिन्दुस्तानी-प्रचार-सभा की राष्ट्रभाषा की परिभाषा और महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की राष्ट्रभाषा की परिभाषा में बहुत बड़ा फ़र्क़ है। 'देशदूत' के २ दिसम्बर के अंक में मेरे प्रान्त के किसी भाई ने जो पत्र संपादक के नाम लिखा है वह भ्रान्तिमूलक है। उसमें महाराष्ट्र राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति को हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के नाम से सम्बोधित किया है जो ठीक नहीं है। महाराष्ट्र की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वर्धा की समिति से अलग होते श्री भदंत आनन्द कौसल्यायन, (मंत्री राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति, वर्धा) पूना गये और उन्होंने महाराष्ट्र में सम्मेलन की तरफ़ से राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार करने का कार्य पूना के हिन्दी प्रचार संघ को सौंपा है। इस तरह अब महाराष्ट्र में दो राष्ट्रभाषा प्रचार समितियाँ काम करने लगी हैं। एक सम्मेलन की ओर से और दूसरी वहाँ के कांग्रेस-प्रेमी व्यक्तियों-द्वारा संचालित।

महाराष्ट्र हिन्दू सभावादियों का एक मज़बूत गढ़ समझा जाता है; इसलिए सम्मेलन की नीति को स्वीकार करके उसकी इच्छा के अनुसार राष्ट्रभाषा का काम करके, उसे हर साल हज़ारों रुपये देकर अगर कुछ मराठे (महाराष्ट्रीय) सम्मेलन को मिल जाएँ तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है। इसलिए महाराष्ट्र की तरफ़ से हिन्दीवालों के पास आर्तस्वर से मदद की याचना करनेवाले और 'हिन्दी-ख़तरे में है' के पैग़ाम अब आते ही रहेंगे। कुछ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सदस्य उसका प्रचार भी करेंगे। लेकिन राष्ट्रीय वृत्ति के हिन्दी भाषा-भाषियों को चाहिए कि वे इस बात पर तटस्थता के साथ सोचें और तभी अगला क़दम उठावें।

काका बाड़ी, वर्धा —श्रीपाद जोशी
७ दिसंबर ४५

* * *

हिन्दी-साहित्य-विद्यालय खोपापार

गोरखपुर जिले में गोला क़स्बा से ४ मील पश्चिम खोपापार एक छोटा-सा गाँव है। इसी गाँव में गोरखपुर जिले के प्रसिद्ध राष्ट्रकर्मी एवं सुयोग्य शिक्षक पंडित रामबली मिश्र ने १६ जुलाई सन् १९३३ को हिन्दी-साहित्य-विद्यालय की स्थापना की। इन्होंने इसके पूर्व गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा वैद्यनाथ गुरुकुल में अध्यापन कार्य का पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लिया था। आपकी गणना सफल अध्यापकों में की जाती थी। आपने अकेले ही अपने पुरुषार्थ से विद्यालय का कार्य प्रारम्भ किया। आपके अध्यापन-कला से आकृष्ट होकर मिडिल पास विद्यार्थियों का ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए ताँता लगा रहता था। विद्यालय का सार्वजनिक स्वरूप नहीं रहा। आप ही उसके कर्त्ताधर्ता और विधाता थे। आपके सहयोगी अध्यापक सर्वश्री रामलखन शुक्ल अलीमुद्दीन ख़ाँ, रामदुलार शुक्ल विशारद, मुंशी वसन्त विशारद, विश्वनाथ विशारद, रामपलटसिंह यादव विशारद ने विद्यालय की उन्नति में योगदान दिया। यह संस्था मुख्यतया साहित्य की शिक्षा देने के लिए खुली; किन्तु औद्योगिक शिक्षा पर भी इसका यथेष्ट ध्यान था। शिक्षा में सम्मेलन की प्रथमा, मध्यमा, विशेष योग्यता, हिन्दी मिडिल तथा उर्दू में आला काबिलियत की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों को तैयार किया जाता रहा है। औद्योगिक शिक्षा में कताई, धुनाई की शिक्षा दी जाती है। ५२ चर्खे विद्यालय में चलते हैं। अब तक इस विद्यालय से १३१७ छात्र शिक्षा प्राप्त कर बाहर निकले हैं। इनमें ८७५ विशेष योग्यता और २८७ छात्र हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मध्यमा परीक्षाओं में उत्तीर्ण होकर सम्मानपूर्वक समाज में अपनी जीविका कमाते हुए राष्ट्रीय कार्य में अपनी शक्ति के अनुसार सहयोग प्रदान कर रहे हैं। १९३६ में स्वर्गीय प्रेमचन्द जी ने जुलाई या अगस्त के 'हंस' अंक में एक टिप्पणी लिखी थी। उसमें उन्होंने यह लिखा था कि उत्तर भारत में हिन्दी की शिक्षा देनेवाली दो संस्थायें हैं; पहला देवघर का गोवर्धन विद्यालय, दूसरा हिन्दी-साहित्य विद्यालय खोपापार। इस टिप्पणी को पढ़कर अन्य भाषा-भाषी प्रान्तों से अनेक छात्र विद्या प्राप्त करने के लिए आये। मद्रास से १३ छात्र यहाँ से शिक्षा प्राप्त कर विशारद हुए। अन्य भाषा-भाषी प्रान्तों के छात्रों को संस्था से भोजन-वस्त्र और पुस्तकें निःशुल्क दी जाती थीं।

साहित्य विद्यालय होते हुए भी यह राष्ट्रीय रंग में पूर्णतया रँगा हुआ है। समय-समय पर यहाँ के अध्यापक और छात्र कांग्रेस आन्दोलनों में बराबर भाग लेते रहे हैं। १९३७ चुनाव आन्दोलन के सिलसिले में ४ मास तक विद्यालय बन्द रहा। और विद्यालय के अध्यापकों और छात्रों ने चुनाव-सम्बन्धी सारा प्रचार-कार्य किया और कांग्रेस उम्मीदवार को जिताने में विद्यालय के अध्यापकों और छात्रों का पर्याप्त हाथ रहा है। १९४१ में सारे अध्यापकों और सात छात्रों ने व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए। १९४२ के आन्दोलन में यहाँ से निकले हुए ६७ छात्र जेल गए। १८७ विद्यार्थियों का पूरा सामान उनके देह पर सिर्फ़ धोती को छोड़कर पुलिस उठा ले गई। विद्यालय की इमारत भस्मीभूत कर दी गई। पुस्तकालय में संस्कृत और हिन्दी की कुल मिलाकर १३०० पुस्तकें थीं जिनकी क़ीमत ३,२२३ रु० कूती गई है। पुलिस उन्हें उठा ले गई। इमारत को छोड़कर ५,५४५ रु० ४ आना का नुक़सान हुआ। पंडित रामबली जी १९४२ के आन्दोलन में २१ माह फरार रहे। मई सन् ४४ में गिरफ़्तार होकर १३ माह जेल में रहे। इस बीच विद्यालय की अवस्था अत्यन्त शोचनीय हो गई। मैंने इस विद्यालय को १९४० में अपनी आँखों उन्नति की अवस्था में देखा था। निसर्ग के सुरम्य वातावरण में अवस्थित था। विद्यालय के समीप का सुन्दर निकुंज साहित्यिक प्रवृत्तियों का उद्बोधक प्रतीत होता था। किन्तु अभी-अभी मैंने ७ नवम्बर ४५ को विद्यालय देखा। इसकी शोचनीय अवस्था देखकर दिल को एक गहरी चोट लगी। विद्यालय का भवन जलकर भस्म हो गया था। किसी प्रकार कार्य पुनः प्रारम्भ किया गया है।

मैंने पंडित जी से विद्यालय को सार्वजनिक स्वरूप देकर व्यवस्थित और सुचारु रूप से संचालन करने के लिए परामर्श किया। अब यह निश्चय हो गया है कि विद्यालय को नये और सार्वजनिक रूप से चलाया जाये। नियमानुसार इसकी निरीक्षक सभा और प्रबन्ध समिति बनेगी। दिसम्बर माह में इसका वार्षिकोत्सव करके इसके नियम, विधान और उद्देश्य जनता के सामने रखकर धन की अपील की जायेगी। मुझे पूर्ण आशा है कि शिक्षा-प्रेमी जनता इस विद्यालय को अपनाएगी। और उदारतापूर्वक धन की सहायता कर सुदृढ़ नींव पर इस संस्था को खड़ा कर ज्ञान के इस टिमटिमाते दीपक को बुझाने से बचायेगी और अपनी सहानुभूति से इसमें सक्रिय सहयोग देकर इस दीपक को जलाये रक्खेगी।

प्रयाग —सत्यदेव शास्त्री
५ दिसम्बर ४५

गीत

लेखक, प्रोफेसर प्रभाकर माचवे, एम० ए० 'साहित्यरत्न'

आये हो तुम क्यों आगन्तुक!
अनाहूत, ओ रे अभ्यागत!
चिर-परिचित लगते हो स्वागत!
मन कहता है कैसा कौतुक!
छली तुम्हें क्यों उलाहना दूँ?
तेरी ग्रीवा में पहना दूँ—
दोनों भुजा कि जैसे सुख दुख।
आज खड़े हम शैल-शृंग पर
नीचे दुनिया रंग ढंग पर
देखेंगे सब क्रीड़ा झुक-झुक।

उत्तरी ईरान में विद्रोह क्यों?

(पेज ५ का शेष)

उपर्युक्त पृष्ठभूमि में ईरान की वर्तमान घटनाओं पर विचार करें तो हमें सही हालात का पता लग जावेगा। अज़रबेजान के विद्रोह का लक्ष्य ईरानी सरकार को उलटने का नहीं है जैसा कि रायटर समाचार-समिति ने प्रचार कर रक्खा है। ईरानी सरकार का भी यह कहना नहीं है कि अज़रबेजान के विद्रोह से तेहरान की सरकार को कोई ख़तरा है बल्कि उसे विद्रोह के क्षेत्र में अतिरिक्त फ़ौज भेजने की आज्ञा मिले! इससे हमें मालूम हो जायगा कि इस विद्रोह की मंशा पृथक्कीकरण नहीं है जैसा कि जनवाद के विरोधियों का प्रचार है।

हाल के समाचार से मालूम हुआ है कि ईरानी सरकार इनकी माँगों को सुनने को तैयार है। वह रूसी सरकार से इस सम्बन्ध में बातचीत करने को तत्पर है। वर्तमान प्रधान मन्त्री श्री हकीमी इस सिलसिले में मास्को जाना चाहते हैं। अमेरिका और ब्रिटेन के न चाहते हुए भी रूस की ओर झुकने के अर्थ यह हैं कि ईरानी सरकार का अज़रबेजान की वर्तमान लोकतन्त्रात्मक जाग्रति से काफ़ी भय है।

संवाददाताओं के पत्र

आगरा में अखिल भारतवर्षीय पशु-रक्षा सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन २४, २५, २६ दिसम्बर १९४५ को श्री ब्रजेन्द्र सवाई श्री महाराज ब्रजेन्द्रसिंह बहादुर, भरतपुर नरेश की अध्यक्षता में होगा। वर्तमानकाल में पशु-रक्षा का प्रश्न हमारे सामने बहुत महत्त्वपूर्ण है। किसी ज़माने में भारतवर्ष में दूध-घी की नदियाँ बहती थीं। आज शुद्ध दूध-घी मिलना कठिन हो रहा है। करोड़ों बच्चे और बीमार बिना इन वस्तुओं के रह जाते हैं। फलस्वरूप हम लोग कमज़ोर होते जाते हैं और हमारी सन्तानों पर इसका बहुत बुरा असर पड़ रहा है। अतएव हमें दूध देनेवाले जानवरों का काटना बन्द करवा देना है। स्थान-स्थान पर डेरी खोलना अत्यन्तावश्यक है। भारतवर्ष की हज़ारों गौशालाओं को डेरी रूप में चलाना है। जिन स्थानों पर गौशालायें तथा पिंजरापोल नहीं हैं वहाँ उसकी स्थापना का प्रबन्ध करना है।

इसी अवसर पर स्वदेशी, कृषि तथा चर्मरहित वस्तुओं की प्रदर्शनी हो रही है। इस अवसर पर डेरियों तथा गौशालाओं के अच्छे जानवर अवश्य भेजना चाहिए। रहने का ख़र्च सम्मेलन देगा। जिन सज्जनों को प्रस्ताव भेजने हों वे सेठ अचलसिंह स्वागत मन्त्री, रोशन मुहल्ला के पास भेज दें। —प्रचार मंत्री

* * *

फ़तेहपुर में गत २ दिसम्बर को आज़ाद हिन्द सेना दिवस मनाया गया। नगर में पूर्ण हड़ताल रही। पंडित नेहरू के फ़तेहपुर होते हुए प्रयाग जाने की ख़बर के कारण स्टेशन पर विद्यार्थियों का विराट् जुलूस गया और ज़िले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्री बंशगोपाल एडवोकेट, पं० दयाशङ्कर मिश्र, "सूर्य" मंत्री ज़िला कांग्रेस कमेटी भी जुलूस के साथ थे। दोपहर में विद्यार्थी-कांग्रेस की बैठक हुई जिसमें श्री गौरीशंकर कक्कर, श्री शीतलासहाय श्रीवास्तव के भाषण हुए। शाम को विराट् जुलूस निकाला गया। बाद में श्री बंशगोपाल एडवोकेट सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षता में विराट् सभा हुई। सर्वप्रथम आज़ाद हिन्द सेना के वीरों के प्रति विद्यार्थियों ने कवितायें सुनाईं जिले के प्रमुख युवक नेता पं० दयाशङ्कर मिश्र, "सूर्य" मंत्री ज़िला कांग्रेस कमेटी ने आज़ाद हिन्द सेना के सैनिक और अफ़सरों की शीघ्र बिना शर्त रिहाई व उनके ऊपर से मुक़दमा उठा लेने का प्रस्ताव पेश किया।

कलकत्ता गोलीकाण्ड की जोरदार निन्दा करते हुए उसकी निष्पक्ष जाँच का प्रस्ताव आपने पेश किया और विद्यार्थियों को बधाई दी गई। आपके प्रस्ताव का समर्थन श्री गौरीशंकर कक्कर वकील, श्री नवलकिशोर वकील, श्री मोशिनयार चौधरी श्री हाफ़िज़ जी आदि ने किया। —संवाददाता

* * *

फ़तेहपुर में गत ५ दिसम्बर को कांग्रेस की सार्वजनिक विराट् सभा ज़िले के प्रमुख कांग्रेस नेता श्री बंशगोपाल एडवोकेट की अध्यक्षता में हुई जिसमें ग्राम के नवयुवक ज़मींदार श्री लक्ष्मीनारायणसिंह ने १२६।) की थैली अपनी तथा काश्तकारों की ओर से उन्हें भेंट किया। श्रीयुत "सूर्य" जी की अपील पर ७६।) सभा में उपस्थित जनता ने श्री वकील साहब को भेंट किया। इस थैली में १५१॥) कांग्रेस चुनाव फण्ड और ५१) आज़ाद हिन्द सेना के लिए दिये गये। सभा में श्री गौरीशंकर कक्कड़ वकील और श्री दयाशंकर मिश्र "सूर्य", श्री मोशिनयार चौधरी, श्री रामसेवक, श्री बंशगोपाल वकील के भाषण हुए। ग्राम के ज़मींदार श्री रामनारायणसिंह ने भी विशेष रूप से भाग लिया। इस सभा का आयोजन श्री राजबहादुरसिंह जी ने किया था। —संवाददाता

* * *

फ़तेहपुर ग्राम पनई इनायतपुर में २ दिसम्बर को कांग्रेस की विराट सार्वजनिक सभा ज़िले के प्रमुख नेता श्री बंशगोपाल एडवोकेट की अध्यक्षता में हुई जिसमें पंडित श्री दयाशंकर मिश्र "सूर्य" मंत्री ज़िला कांग्रेस कमेटी, श्री बंशगोपाल एडवोकेट सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और चौधरी मोशिनयार साहब के भाषण हुए। उपस्थित जनता ने ज़िले के आये हुए अपने नेताओं का जोरदार स्वागत किया। सभा का आयोजन श्री गुरुप्रसाद मंत्री कांग्रेस कमेटी दमापुर ने किया था।

—संवाददाता

* * *

मण्डावा (जयपुर) में बाल-साहित्य-संघ की स्थापना दीपावली के अवसर पर हुई और साहित्यिक जागृति का श्रीगणेश हो गया है। लोगों में साहित्यिक अभिरुचि पैदा करने और छात्रों को इस ओर प्रवृत्त करने का श्रेय अध्यक्ष श्री 'चंचल' को है। प्रीति-सम्मेलन इन्हीं के सभापतित्व में मनाया गया। विद्यार्थियों ने अपनी रचनायें पढ़कर सुनाईं और विद्वानों तथा छात्रों के भाषण हुए। 'छात्र-सखा' प्रतिमास हस्तलिखित रूप में प्रकाशित होता है। सभापति जी का साहित्य के महत्त्व पर सारगर्भित अभिभाषण हुआ। श्री युवक सभा-द्वारा आयोजित कहानी, निबन्ध, कविता-प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले लेखक और कवि श्री विष्णुदत्त शर्मा (कविता) श्री पुष्करलाल (विशेष) श्री हरनाथसिंह (कहानी) की रचनायें सर्वश्रेष्ठ रहीं। छात्रों का उत्साह देखकर ठिकाना ज्येष्ठ कुँवर साहब माननीय देवीसिंह जी प्रसन्न हुए। आपने विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के लिए हिन्दी-कोष और संग्रह के लिए फाइलें प्रदान कीं। संघ का कार्य श्री विश्वम्भर शर्मा बड़ी तत्परता से कर रहे हैं।

—संवाददाता

* * *

जयपुर दरबार हाईस्कूल में एक विराट् कवि-सम्मेलन प्रोफ़ेसर इन्दुशेखर एम० ए० के सभापतित्व में हुआ। "उठो राजस्थानी" "प्राण हमारे" "मुझे सुना दो! गीत नये" ये समस्यायें थीं। समस्याओं पर बाल-कवियों ने एवं श्री "चोंच" "शर" "शशिकला" आदि ने कवितायें पढ़ीं। स्वतन्त्र रचनाओं में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री अद्भुत शास्त्री सम्पादक "मारवाड़ी गौरव" की "विश्व-कहानी" शीर्षक रचना अत्यधिक प्रभावशाली रही। ठाकुर मदनसिंह जी, माधव "विशारद", रूपनारायण पाण्डेय सम्पादक "पारीक", कमलाकर "कमल", राधेशर्मन् शिखिर, विजय आदि ने भी कई सम्मेलन में भाग लिया था। —संवाददाता

* * *

जयपुर में ता० ४ दिसम्बर को "मारवाड़ी गौरव" कार्यालय में "राजपूताना हिन्दी साहित्यकार सम्मेलन" की स्थायी समिति की एक विशेष बैठक, कविवर अद्भुत शास्त्री, माधव "विशारद", रूपनारायण पाण्डेय, आचार्य मदनमोहन, झाबरमल चौधरी की उपस्थिति में हुई, जिसमें डूंगरगढ़ के निमन्त्रण को अस्वीकृत किया गया एवं बम्बई, मण्डावा, जयपुर, रतनगढ़, इन चार नगरों से प्राप्त हुए निमन्त्रणपत्रों पर विचार किया गया। अन्त में सम्मेलन रतनगढ़ में करने का निश्चय किया गया। सम्मेलन के संयोजक शास्त्री जी शीघ्र ही रतनगढ़ के साहित्य-मण्डल को निमन्त्रण-स्वीकृति सूचना भेजेंगे। —संवाददाता

* * *

भोपालगढ़ (मारवाड़) के श्री जैन-रत्न विद्यालय का १७वाँ वार्षिकोत्सव आगामी ता० २५, २६, २७ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है। अध्यक्ष-पद मध्य-भारत के सुप्रसिद्ध व्यापारी, श्रीमान् सेठ मन्नालाल जी ठाकुरिया, इन्दौर-निवासी करेंगे। इस अवसर पर विद्यालय-भवन का उद्घाटन, छात्रालय का शिलान्यास, समाचारपत्र प्रदर्शनी, ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम के चमत्कारिक प्रयोग, भाषण एवं अन्त्याक्षरी-प्रतियोगिता, हास्य-सम्मेलन, स्नातक-सम्मेलन आदि अनेक मनोरंजक और शिक्षाप्रद आयोजन किये गये हैं। —संवाददाता

* * *

जयपुर में कस्तूर बा गांधी राष्ट्रीय स्मारक निधि की राजपूताना प्रान्तीय समिति की ओर से ग्राम-सेविकाओं के शिक्षण के लिए एक शिविर वनस्थली विद्यापीठ के सहयोग से वनस्थली ग्राम में यथासंभव शीघ्र ही प्रारम्भ किया जायगा। रियासती समितियों को योग्य विद्यार्थिनियों की सिफ़ारिश करने के लिए लिखा गया है। जिन बहनों को उक्त शिविर में शिक्षण प्राप्त करना हो वे पूरे विवरण के लिए नीचे लिखे पते पर पत्र-व्यवहार करें—मंत्री, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट राजपूताना प्रान्तीय-समिति, पो० वनस्थली (जयपुर)।

* * *

सागर में अभी कुछ दिन पूर्व डी० सी० महोदय ने म्युनिसिपल शालाओं के अध्यापकों को ४ बोतल मिट्टी का तेल प्रतिमास देने का आर्डर दिया था किन्तु दो माह हो चुके अध्यापकों को ४ बोतल का परमिट अब तक नहीं मिला। बल्कि उन्हें यह सलाह दी जाती है कि यदि अध्ययन करना है; तो 'मोमबत्ती खरीदो।' ग़रीब अध्यापक मोमबत्ती कैसे खरीदें? जब कि उनके भरण-पोषण की समस्या ही भयंकर हो उठी है। नवम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में लोगों को परमिट रहते हुए भी शक्कर प्राप्त नहीं हुई। आख़िर यह सब क्यों हो रहा है?

सागर ज़िले के ६ उम्मीदवारों की दरख्वास्तें, जो प्रान्तीय असेम्बली के लिए खड़े होना चाहते हैं, कांग्रेस-दफ़्तर में आ गई हैं।

कालरा इनाकुलेशन ट्रेनिंग समाप्त हो गई। लगभग २४ शिक्षकों ने इस ट्रेनिंग में सफलतापूर्वक भाग लिया। —संवाददाता

* * *

पटना (सेवदह) में राजेन्द्र बाबू की ६१वीं वर्षगाँठ के अवसर पर राजेन्द्र महाविद्यालय, समग्र ग्राम सेवक शिक्षण शिविर के शिक्षार्थी तथा कार्यकर्त्ताओं ने प्रभात फेरी की। बन्देमातरम् गान से अखण्ड चर्खा-यज्ञ आरम्भ हुआ और निश्चय किया गया कि शिक्षार्थियों-द्वारा इस सूत की खादी बुनवा कर राजेन्द्र बाबू को भेंट में दी जाय। —संवाददाता

कांगड़ी गुरुकुल विश्वविद्यालय में दिसम्बर १९४५ को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान-पर्व मनाने का आयोजन किया गया है।

—संवाददाता

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्वदेशी
अरोमा १८९६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़्त
युकॅलिप पेन बाम
दादकामरहम
खाण्डालेकर बन्धु
बम्बई ४

मेरी तरह तन्दुरुस्ती हासिल करो
खराब खून को साफ़ करता है
डा. वामन गोपाल
आयोडाइज्ड सार्सापरिला
हर जगह मिलती है

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद
अन्तूलाल जौहरी एल० एस० धौलाल
एन्ड ब्रदर्स।

SAKTI OUSHADHALAYA
MRITASANJIBANI

पूर्वी देशों में अति प्राचीन तथा सर्वश्रेष्ठ.......
'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसे जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है।
SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA
प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन, बलवर्द्धक औषध!
अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति-औषधालय ढाका

परिहास

भंग की तरंग

हैलट साहब चल दिये। लखनऊ वारों को छोड़ गये। निहायत की बात है!

* *

सितम्बर से मास्को में अमरीका और ब्रिटेन की बैठक होगी। बैठक ही साथ दंड भी लगता चले तो अच्छा होगा।

* *

मास्को की बैठक में इस निश्चय हो जाना चाहिये कि देशों को किस प्रकार दबाया जा सकता है।

* *

अमरीका और ब्रिटेन इस सोच में हैं ईरान से कैसे निकाला जाय? एटमबम का प्रयोग जापान के रूस के विरोध में क्यों नहीं होता है?

* *

पेथिक लारेंस ने कहा है कि अमन और शान्ति क़ायम सब कुछ किया जायगा। आवश्यक होगा कि लार्ड बेवेल हैलट साहब को यहाँ का वाइस- जाय। आशा है कि मेरे भारत-मंत्री स्वीकार करेंगे।

* *

जिन्ना ने कहा है कि लार्ड पेथिक कहना बिल्कुल बेकार है जब तक कि पाकिस्तान का माम लाहल न हो और भारत के विभाजन का निश्चय न कर दें। मैं तो यह चाहूँगा कि भारत-मंत्री स्वयं भारत तशरीफ़ लाएं और घोषणा कर दें कि भारत से अँगरेजी राज्य समाप्त और दिल्ली के तख्त पर आज से शाहनशाह मुहम्मद अली जिन्ना बैठाये जाते हैं।

* * *

मुसलमानों का भारत में राज्य रहा मुसलमानों के अतिरिक्त यहाँ और कौन शासन कर सकता है? आलमगीर की गद्दी का उत्तराधिकारी क़ायदे आज़म के अतिरिक्त कौन हो सकता है?

* * *

वह खड़ा है सामने खर देख लो!

लेखक, श्री 'बेढब' बनारसी

वह खड़ा है सामने खर देख लो।
शान्ति की संतोष की यह खान है,
यह बिना पेटरोल का ही यान है,
शीतलामाई इसे हैं चाहती—
धोबियों का यह समझ लो प्रान है;
भव्य इसका रूप मिस्टर देख लो।

लीग की इसमें शरारत है नहीं,
जोश की इसमें हरारत है नहीं,
है इसे संसार सारा एक सा—
दृष्टि में इसकी हिकारत है नहीं,
धीरता में एक भूधर देख लो।

मूर्छना से युक्त इसकी गान है,
ख्याल से भी और यह तीतान है,
ज़ोर इसमें है बजट स्पीच का—
और उससे कम नहीं कुछ शान है;
रेंकना इसका निरन्तर देख लो।

सुना जाता है कि जावा में यूरोपियनों को अंडे और तरकारियाँ नहीं मिल रही हैं। तो क्या जावा ने कोई डिनर दिया था कि यूरोपियन लोग यहाँ भोज करने आयें? यूरोपियनों को चाहिये कि अपने-अपने देश से मुर्ग़ियाँ मँगवा लें, वह अंडे देंगी।

* * *

इलाहाबाद में विद्यार्थियों ने हैलेट साहब की कागज़ की गुड़िया जला दी। जान पड़ता है कि विद्यार्थियों में सब हिन्दू ही थे। मुसलमान होते तो दफ़नाने की क्रिया भी करते।

* * *

कानपुर का खेतिहर कालेज बन्द हो गया क्योंकि लड़कों ने हड़ताल बोल दी। कोई हर्ज नहीं। इस समय बोने जोतने का कोई मौसम नहीं है। लेकिन चैत तक कालेज खुल जाना चाहिये।

* * *

विद्यार्थियों ने हड़ताल इसलिए की कि वह चाहते थे कि उनका यूनियन स्थापित किया जाय। इतना महान पाप वह करने जा रहे थे। इसके लिए केवल कालेज ही नहीं बन्द करना चाहिये था विद्यार्थियों को फाँसी भी देनी चाहिये थी।

* * *

पूना में इसलिए एक क़ैदी महोदय हड़ताल कल रहे हैं कि जेल के कर्मचारियों को सप्ताह में एक दिन की छुट्टी देनी चाहिये। उन्हें काम बहुत रहता है। जेल कर्मचारियों को बहुत काम रहता है इस अनुभूति के लिए हड़ताली महोदय को बधाई है। लड़ाई के कारण यमराज को बहुत काम-काज पड़ रहा है। इसका भी ख्याल कुछ सत्याग्रही महोदय करेंगे।

—अगड़ दत्त शर्मा

विष-पान

सुकवि सोहनलाल जी की सुन्दर रचना है। इसमें समुद्र-मन्थन से उत्पन्न विष की पौराणिक कथा का कवितावद्ध मनोहर वर्णन है। छपाई सफाई सुन्दर है। आवरण-पृष्ठ पर शङ्करजी के विष को पीने का भावपूर्ण चित्र है। मूल्य १) एक रुपया।

अमर जीवन

(दो भागों में) इसमें संसार के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों—कवीन्द्र रवीन्द्र, अल्फ्रेड नोबेल, हेनरी फोर्ड, जगदीशचन्द्र वसु, महात्मा गांधी, ताता, सर सैयद अहमद और आशुतोष मुकर्जी आदि के जीवनचरित का संक्षेप में वर्णन है। मल्य प्रत्येक का ।=) छः आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

मारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।–)

आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

सोहनलाल द्विवेदी की कृतियाँ
२॥=) कुणाल १।)
२) विषपान १)
॥) शिशुभारती ।॥)
वासवदत्ता १॥)

गोपाल शरणसिंहजी की कृतियाँ
२) संचिता ३)
२।–) माधवी २)
२) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य
हल्दीघाटी २॥)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना
दैत्यवंश महाकाव्य ३।–)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत
हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला
मूल्य ४)
आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

भोजन तथा पाचनक्रिया

भारी भोजन पचाने के लिये प्रकृति पाचक-रस पैदा करती है

यदि प्रकृति ऐसा न कर सकी तो आपके पाचन के लिये बंगाल इम्युनिटि बाइ-डाइस्टेज प्रस्तुत करता है

बाइ-डायास्टेज
BI-DIASTASE
विशुद्ध वनस्पतियों से प्रस्तुत

भोजन को पचाने योग्य बनाकर
बदहजमी, बादीपन, खट्टा डकार तथा
गले की जलन को दूर करता है।

बँगाल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

देशी राज्य लोक-परिषद्

उदयपुर में जोरदार तैयारियाँ

(विशेष संवाददाता-द्वारा)

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक-परिषद के अधिवेशन-सम्बन्धी पूर्ण तैयारियों का उत्तरदायित्व विभिन्न विभागों के मन्त्रियों को सौंप दिया गया और तैयारियाँ जोरों से आरम्भ हो गई हैं। अधिवेशन के स्थान के लिए मेवाड़ सरकार ने "सलेटिया" नामक विस्तृत मैदान स्वागत-समिति को सौंप दिया है और उसको समतल भी सरकार करवा रही है। इस विस्तृत मैदान में ५०,००० व्यक्तियों के बैठने-योग्य एक विशाल पण्डाल बनाने का आयोजन किया जा रहा है। स्थान का नाम "आजाद हिन्द फ़ौज" के नाम पर "आजाद नगर" और मुख्य द्वार का नाम नेता जी के नाम पर 'सुभाष' द्वार रक्खा जा रहा है।

राजस्थान चर्खा-संघ की ओर से एक प्रदर्शिनी का आयोजन भी किया जा रहा है जिसमें खादी की सब क्रियाओं का क्रियात्मक दिग्दर्शन कराया जायगा। अधिवेशन के लिए एक लाख रुपया एकत्र करने का स्वागत-कारिणी ने निश्चय किया है। एक रुपये के २५,००० दर्शक टिकट एवं ३) से लगाकर १००१) तक के स्वागत सदस्य के टिकट रखे गये हैं। टिकटों का बिकना प्रारम्भ हो गया है। हजारों की संख्या में किसान लोग पंडित जी के दर्शन के लिए आवेंगे। अब तक पैंतीस हजार के वचन मिल चुके हैं। कई प्रमुख नागरिकों के सुझाव पर स्वागत कार्यकारिणी ने "आजाद हिन्द फ़ौज" की सहायतार्थ पण्डित नेहरू को अधिवेशन के अवसर पर एक थैली भेंट करने का निश्चय किया है।

स्वागत-समिति ने एक समय में आठ हजार व्यक्तियों को क़रीब दस हजार का नुक़सान उठाकर स्वागत-समिति-द्वारा संचालित भोजनालय में अच्छा खाना मिल सके ऐसी व्यवस्था की है। भोजन की दर १) प्रतिदिन और ।।) प्रतिवार रक्खी गई है। स्वागतकारिणी ने अधिवेशन के लिए २,००० स्वयंसेवकों और २०० स्वयंसेविकाओं को ट्रेनिंग देने का निश्चय किया है। कार्य की उपयोगिता को लक्ष्य में रखकर दलपतियों की ट्रेनिंग पहले प्रारम्भ कर दी गई है। जिलों में भी स्वयंसेवकों के ट्रेनिंग की व्यवस्था की जा रही है।

स्वागत-समिति के पास विभिन्न महानुभावों की ओर से हरिजन, विद्यार्थी, महिला आदि निवासी आदि परिषदों का अधिवेशन में कार्यक्रम रखने के बारे में सुझाव आ रहे हैं जो श्रद्धेय पण्डित जी के पास अनुमति के लिए भेजे जा रहे हैं ताकि कार्यक्रम निर्धारित करते समय उन्हें समुचित स्थान दिया जा सके। कार्यक्रम शीघ्र ही तय कर लिया जायगा।

हिन्दी-साहित्य : बीसवीं सदी

वर्तमान साहित्य की वैज्ञानिक समीक्षा करनेवाली श्रेष्ठ पुस्तक

यह श्री नन्ददुलारे वाजपेयी, एम० ए० हिन्दू विश्वविद्यालय की उत्तम रचना है। इसमें हिन्दी के धुरन्धर लेखकों और कवियों पर विवेचनात्मक १९ निबन्ध हैं। इसमें वर्तमान युग की रचना-धाराओं का समावेश है।

सुन्दर सजिल्द पुस्तक मूल्य ५)

इंडियन बुकडिपो, लखनऊ।

(इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग के एजेंट)

इधर उधर की

ढाई करोड़ वोट पड़े

वर्तमान मजदूर सरकार के साधारण निर्वाचन में ३,३०,६४,७०४ निर्वाचकों में से २,५०,३७,१०७ निर्वाचकों ने वोट दिये। इंगलैंड और वेल्स में ७३ प्रतिशत निर्वाचकों ने, स्काटलैंड में ६९ प्रतिशत निर्वाचकों ने और उत्तरी आयर्लैंड में ६७ प्रतिशत निर्वाचकों ने वोट दिये। विश्वविद्यालयों के निर्वाचन-क्षेत्रों को छोड़कर इंगलैंड में कुल २,०६,०५,३३० वोट, वेल्स में कुल १२,८६,७१० वोट, स्काटलैंड में कुल २४,२२,६५१ वोट और उत्तरी आयर्लैंड में कुल ७७,२२,४१६ वोट पड़े। सैनिकों के डाक और प्रतिनिधि के द्वारा भेजे गये जो निर्वाचनपत्र गिनती में शामिल किये गये उनकी संख्या १७,००,६५३ थी। पोलिंग स्टेशनों पर स्वयं जाकर वोट देनेवालों की संख्या लगभग २,२२,४२,६०८ थी।

अल्यूमीनियम के मकान

आज ब्रिटेन के पाँच बमवर्षक कारखाने संसार में मकानों के सर्वोत्तम ढाँचे तैयार कर रहे हैं। वायुयान उत्पादन विभाग के पार्लमेंटरी सेक्रेटरी श्री आर्थर वुडवर्न ने ब्लेकपूल नामक स्थान में अल्यूमीनियम से बने पहले मकान का उद्घाटन करते हुए कहा कि बमवर्षकों को गलाकर बँगले तैयार करने का स्थान हमें उसी भाँति अपनाना चाहिए जिस प्रकार अतीत में युद्ध समाप्त होने पर तलवारों को गलाकर हलों के फल तैयार किये जाते थे। अगले एक या दो वर्ष में ब्रिटेन में ५०,००० बँगले उन हजारों टन अल्यूमीनियम से तैयार किये जायँगे, जो पुराने वायुयानों से प्राप्त किया गया है।

शब्द की गति से भी तेज चलनेवाले वायुयान

लड़ाकू वायुयान चलानेवाले शाही वायुसेना के ऐसे चालकों को, जो शीघ्र ही विघटित नहीं किये जा रहे हैं, जेट-संचालित वायुयान चलाने की शिक्षा दी जा रही है। इन वायुयानों के संचालन में चालकों को किसी कठिनाई का अनुभव नहीं करना पड़ता, क्योंकि इनमें बहुत थोड़े यंत्रों से काम लेना पड़ता है। पेट्रोल से चलनेवाले वायुयानों की अपेक्षा इसमें बहुत कम पेचीदगियाँ हैं और चालक सफलतापूर्वक ही इनका संचालन कर सकता है। इधर जब कि चालक ५०० मील प्रतिघंटा से अधिक की गति से चलनेवाले वायुयानों के संचालन में अभ्यस्त हो रहे हैं, उधर वायुयान-निर्माता ऐसे वायुयानों के नमूने बना रहे हैं, जो शब्द की गति से भी तेज रफ़्तार से चलेंगे (७५० मील प्रतिघंटा)।

मनोरंजक चुटकुले

आग लग चुकी है

बहुत ही उद्विग्नता के साथ
ने इन्स्योरेन्स कम्पनी को फोन कि
'मैं अपने मकान को इन्स्यो
चाहती हूं। क्या मैं फोन द्वारा
सकती हूं ?'

एजेंट—"शायद नहीं। क्षमा
अच्छा होगा कि आप किसी
भेज दें।"

स्त्री—"मैं इसे तुरन्त ही
कराना चाहती हूं। क्योंकि
आग लग चुकी है।"

* *

दवा तैयार हो गई

एक साहब ने डाक्टर को
से बुलवाया। डाक्टर के आते ही
वह चिल्ला उठे—मेरे बच्चे ने
निगल लिया है।

डाक्टर ने उत्तर दिया—
से कहो कि एक बिल्ली भी निग
बस, डाक्टर की जरूरत ही क्या
अपने आप तैयार हो जायेगी।

* *

बदन की कालिमा दूर हो जाने पर गौर तथा सुन्दर त्वचा

इस आश्चर्यजनक रहस्य को पढ़िये

जब चेहरे की कालिमा दूर हो जाती है तो नवीन गौर वर्ण की सुन्दरता निखर पड़ती है। वही कोमल एवम् मृदुल रूप जिसकी प्रत्येक स्त्री को चाह है और जिसकी प्रत्येक पुरुष प्रशंसा कर रहा है।

ह्वाइटेक्स आश्चर्यजनक तरल औषधि चेहरे की कालिमा को तुरन्त दूर करती है। इससे आपका रूप गौर तथा विशेष मृदु हो जाता है जिससे आपके सौन्दर्य, व्यक्तित्व, तथा आकर्षण में विशेष वृद्धि होती है।

ह्वाइटेक्स में चिपचिपाहट नहीं है। और न इससे किसी प्रकार के दूषित धब्बे ही रह जाते हैं। यह त्वचा में प्रवेश कर त्वचा को पोषता है। आज ही एक बोतल ख़रीदें।

वितरक: जी० अथरटन एन्ड कं० (ईस्टर्न) लि० २८, अपोलो स्ट्रीट, बम्बई, तथा ४ मिशन रो, कलकत्ता।

Whitex
WHITENS THE SKIN

यह सदा आनन्ददायक है

HAMÂM

A TATA PRODUCT

हमाम से प्रतिदिन स्नान करने के बाद आप इसकी शीतलता और स्वास्थ्यदायक शक्ति के स्पर्शज्ञान का आस्वादन करेंगे।

अपने दुकानदार से हमाम माँगिये।

हमाम

सब के लिए बड़ा साबुन

दी टाटा आइल मिल्स कम्पनी लिमिटेड

स्टैनिफ़्रीट की ब्रिलिएन्टाइन हेयर ऑयल वेविंग परमानेंट स्टैनक्रीम

ठोस
तरल

सुगंधित
कैन्थराइडिन
कैस्टर
कोकोनट
गोल्डेन

सैचेट्स
लोशन
फ्लुइड
तरल शैम्पू

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ

काम में शक्तिहीनता
ते हैं तो दिन में एक
नोज़ “फ्रूट साल्ट” को
रक्त को शीतल व निर्मल
को स्फूर्ति देकर प्राकृतिक
प्रदान करता है।

नोज़
साल्ट”

ल्ट” शब्द रजिस्टर्ड
र्क है।

से उसका जीवन
गया था

कर थी कि चलना
न था

न से सब ठीक हो गया।
ठिन यातना और फिर
यह स्त्री क्रूशेन साल्ट से
कि वह लोगों को यह
ती है कि क्रूशेन से उसे
हुआ। उसका पत्र इस

देना अपना कर्त्तव्य
२ वर्ष की असह्य यातना
तथा कमर के दर्द
छुटकारा मिला। यह
केवल दो बोतलों से
अन्य उपचारों से मुझे
नहीं हुआ। मैंने क्रूशेन
पढ़ा और उससे लाभ
अपने घर में भी घूम
और अब मैं दिन भर
सकती हूँ। आश्चर्य
मुझमें चुस्ती भी आ
वास्तव में आश्चर्यजनक
ए० एन०

मनुष्य की मशीन का
सुस्त पड़ जाता है तो
होकर रक्त-दोष पैदा कर
छः प्राकृतिक लवण
सुचारु रक्खेंगे तथा
होने से बचावेंगे।
तुरन्त छुटकारा
आप बराबर क्रूशेन
तो यह पीड़ा आपको

अच्छे दवाखानों

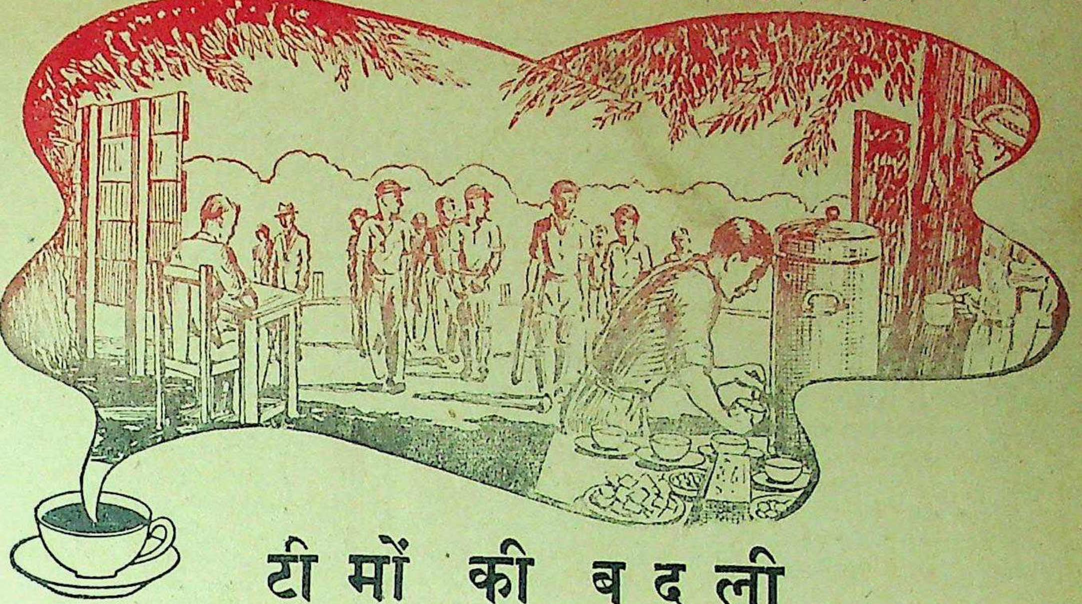

टीमों की बदली

क्रिकेट का मनोरंजक खेल विशाल मैदान में ग्यारह ग्यारह खेलाड़ियों की दो टीमों के बीच खेला जाता है। एक टीम के खेलाड़ी दो दो की बारी में खेलते हैं और दूसरा पक्ष उन्हें खेलाता है। जैसे धूप ढलने लगती है खेलाड़ियों की गति मंथर होती जाती है। अन्त में आखिरी खेलाड़ियों की बारी आती है। लो! उनमें से एक पिछड़ गया—उसकी और साथ ही उसके पक्ष की बारी भी ख़त्म हो गई।

टीमों की बलदी के समय तम्बू में ताजी चाय तैयार है। माथे से पसीना पोंछते हुए खेलाड़ी चाय से अपनी प्यास बुझाते हैं। चाय का तीसरा प्याला पीने पर थकावट दूर हो जाती है, और पुनः ताजा होकर खेलाड़ी मैदान में आते हैं।

हिन्दुस्तान भर के क्रिकेट के मैदानों में चाय—विशेषतः ब्रुक बण्ड चाय जो बग़ीचों से ताजी आती है, आवश्यकताओं में सम्मिलित है।

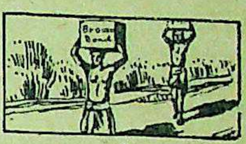

बारम्बार वितरण-द्वारा
ताजगी निश्चित

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

हर थाली से उन्हें
ज्यादा स्फूर्ति दीजिये!

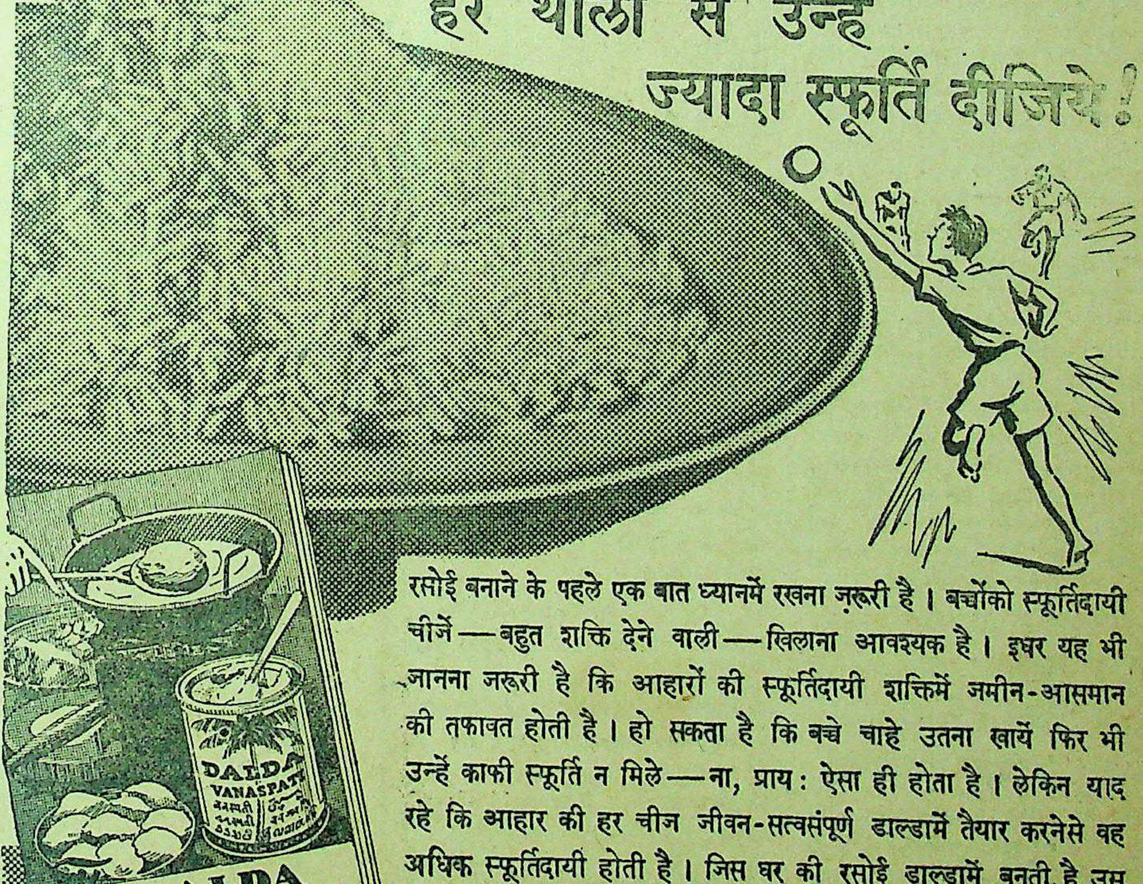

रसोई बनाने के पहले एक बात ध्यानमें रखना ज़रूरी है। बच्चोंको स्फूर्तिदायी चीजें—बहुत शक्ति देने वाली—खिलाना आवश्यक है। इधर यह भी जानना जरूरी है कि आहारों की स्फूर्तिदायी शक्तिमें जमीन-आसमान की तफावत होती है। हो सकता है कि बच्चे चाहे उतना खायें फिर भी उन्हें काफी स्फूर्ति न मिले—ना, प्रायः ऐसा ही होता है। लेकिन याद रहे कि आहार की हर चीज जीवन-सत्वसंपूर्ण डाल्डामें तैयार करनेसे वह अधिक स्फूर्तिदायी होती है। जिस घर की रसोई डाल्डामें बनती है उस घरमें स्फूर्ति की कमी रहने की कोई संभावना नहीं क्योंकि रसोई की यह चीज प्रकृति के बढ़िया शक्तिदायी अन्नांश देती है। और आहारों को ज्यादा रसीले बनाती है। अलावा इसके वह केवल वनस्पति से बनती है।

सबसे बढिया शक्तिदायी चीजें कौनसी हैं इसकी जानकारी हर एक स्त्रीको होनी ही चाहिये। डाल्डा कुक बुक (अंग्रेजी) में आहार के बारेमें लाभकारीबातें और १५० से अधिक आहारोंका बयान किया गया है। Dept. E113 P.O.Box No. 353, Bombay के पते पर चार आने के पोस्टल स्टाम्प भेजियेगा।

HVM. 36-176-40 HI

पोषक-तत्व संपन्न

डाल्डा

स्फूर्ति के लिये

THE HINDUSTAN VANASPATI MANUFACTURING CO., LTD.

बालसखा का नया वार्षिकांक

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कवितायें, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क सन् १९४६ में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। मूल्य ३), बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

मैनेजर, बालसखा इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

AAA 461

हिन्दुस्तान को प्रति वर्ष

30,00,000 टन अधिक

अनाज किस प्रकार मिल सकता है ?

यह एक कीड़े का चित्र है जो फ़सलों का नाश करता है। (इसका आकार यहां बहुत कुछ बढ़ा कर दिखाया गया है।) यह कीटाणु चूहों तथा अन्य कीड़ों और नमी के साथ मिल कर हमारे अनाज के बीसवें भाग को नष्ट कर डालता है। हमारी लापरवाही से यह कीटाणु फैलता है। हर साल इसकी तादाद हज़ारों गुना बढ़ जाती है।

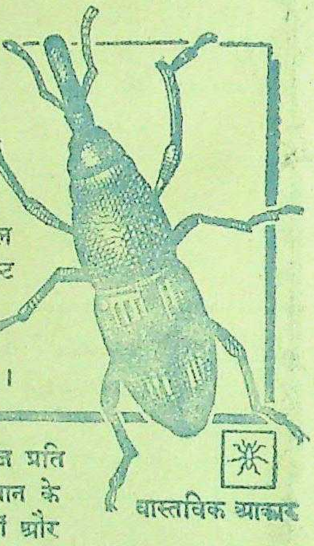

वास्तविक आकार

ख़राब संग्रह से ३० लाख टन अनाज प्रति वर्ष बरबाद हो जाता है। हिन्दुस्तान के प्रत्येक व्यक्ति को प्रति वर्ष चूहों, कीड़ों और नमी के कारण ८ सेर अनाज की हानि उठानी पड़ती है। अनाज भरने के इन बुद्धिमत्तापूर्ण तथा उपयोगी नियमों का पालन कर इस बरबादी को रोका जा सकता है और रोका जाना चाहिए।

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

ख़ुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेण्ट आफ़ इण्डिया के फ़ूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

स्टैनिष्ट्रीट की अचूक दवाये

खाँसी • सर्दी •

हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

स्टैनिष्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौस-फाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुँचाता है।

कैगमैग • स्टैनिष्ट्रीट सिरप •

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास करांची

सौंदर्य की दो पी

यद्यपि इनकी उम्र में बीस साल का फ़र्क है, फिर भी माँ के सौन्दर्य
ताज़गी और उसकी त्वचा उतनी ही गुलाबी और मुलायम है
सोलह वर्षीय बेटी की। इसका भेद यह है कि माँ ने, अपनी
पर, बचपन से ही पियर्स साबुन और साफ़ पानी से अपनी
रक्षा की। आज उसकी सुन्दर बेटी उसी तरीके से अपनी
करती है। इसलिये बीस वर्ष के बाद उसकी त्वचा भी
तरह सुन्दर और ताज़ा रहेगी जिस तरह आज उसकी माँ की

चालीस साल से हिन्दुस्तान की सुन्दरियों ने पियर्स साबुन को ही इस्तेमाल किया है
ख़ुशबू और रेशमी झाग के कारण यह साबुन साधारण साबुनों से

पिअर्स साबुन

सौन्दर्य का सेवक

A. & F. PEARS,

PG. 30-272 HI

िक मूल्य ७॥)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 ANNAS

२३ दिसम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday. 23rd December 1945

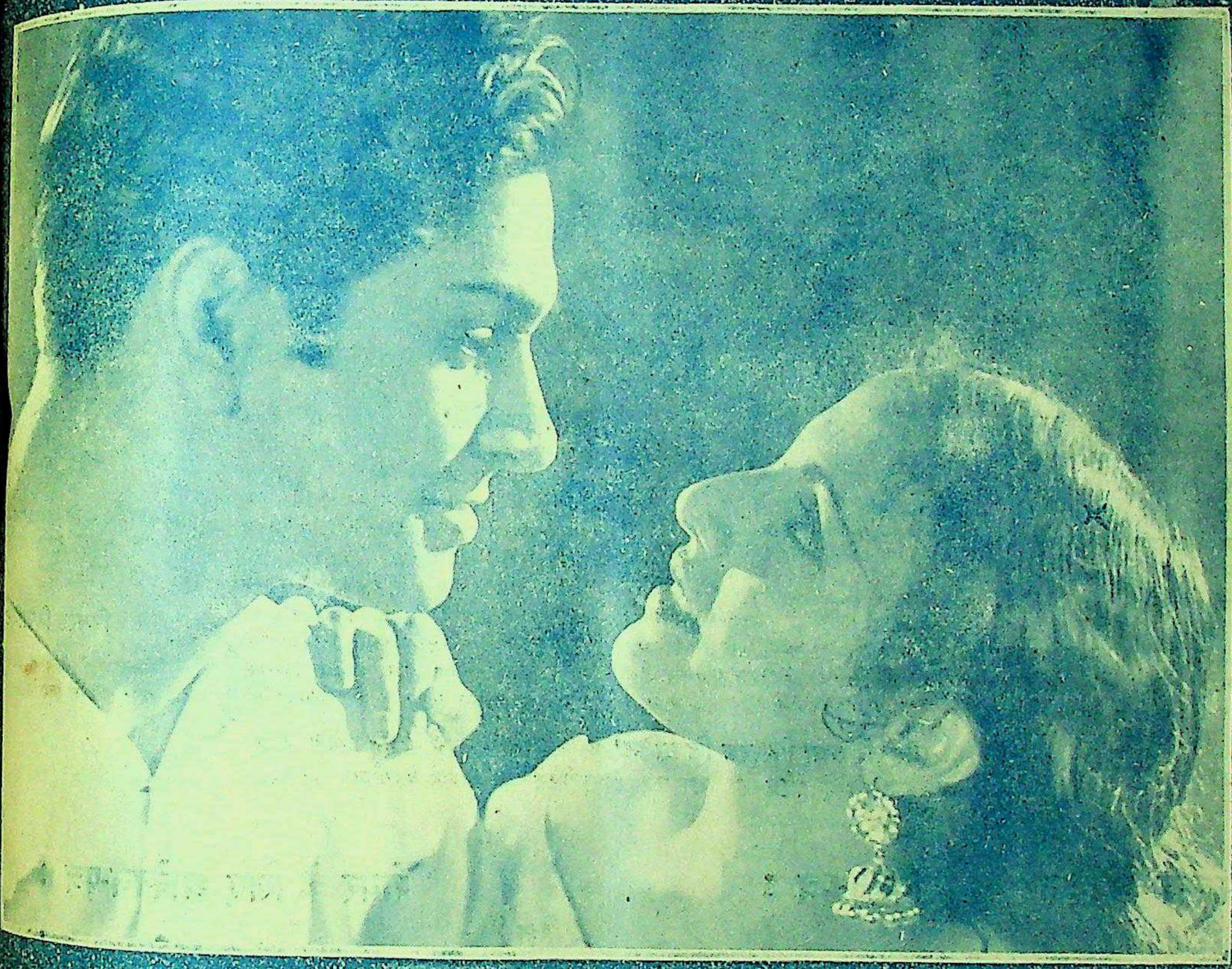

लक्ष्मण-शक्ति—कविवर श्री राजाराम श्रीवास्तव बी० एस-सी० एल-एल० बी० का एक बहुत ही उत्तम कोटि की रचना है। इ खण्ड-काव्य की रचना रामायण के लंका काण्ड की उस सुप्रसिद्ध घटना के आधार पर की गई है, जब कि लक्ष्मण जी मेघना से युद्ध करते हुए उसके द्वारा चलाई गई शक्ति के हृदय में लग जाने पर मूर्च्छित होकर गिर पड़े थे और उनके जीवित रहने क आशा नहीं रह गई थी। कवि ने उस समय की मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी की शोभामय अवस्था का बहुत ही आकर्ष और हृदयग्राही वर्णन किया है। मूल्य ॥) आने।

आँखें खोलो और जागो
की आवश्यकता क्यों है ?

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा क्या है ?
सोदपुर का खादी प्रतिष्ठान आश्रम।

विवरण

बङ्गाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लिमिटेड,

(इंडियन कम्पनीज़ एक्ट, सन् १६१३ के अन्तर्गत स्थापित)

रजिस्टर्ड आफ़िस:—

शेयर डीलर्स हाउस, १२, चौरङ्गी स्क्वायर, कलकत्ता

पूँजी

अधिकृत और चालू	....	.... २५,००,०००) रु०
५०) रु० के प्रत्येक हिस्से में विभाजित		
बिके हुए हिस्से	....	.... १८,००,०००) रु०
प्राप्त धन	....	.... १०,००,०००) रु०

५०) रु० वाले २९२४ हिस्से ता० ३१ मार्च १९४४ को पिछले हिसाब-पत्रक में जब्त दर्शाये गये हैं। ये हिस्से निम्नलिखित तौर पर सर्वसाधारण को सामान्य मूल्य पर दिये जा सकते हैं——

५) रु० आवेदन-पत्र के साथ; ५) रु० अलाटमेंट के लिए और बाकी के ४०) रु० चार समान किश्तों में लेकिन इन किश्तों में दो महीनों से अधिक का अन्तर न होगा।

शेयर्स के लिए आनेवाले प्रत्येक आवेदन-पत्र के साथ १) रु० प्रवेश-शुल्क देना होगा।

बङ्गाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लि० का नाम व्यापारिक मण्डियों और पूंजी लगानेवाली जनता में अच्छी तरह प्रसिद्ध है। सभी प्रकार के और सभी बाजारों में स्टाक और शेयर्स का कारबार करनेवाली यह संस्था हिन्दुस्तान में अपने ढंग की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी है। यह सेंडिकेट पूंजी लगानेवाली जनता के लाभ का ध्यान रखते हुए भारत के शेयर के कारबार के विकास की दिशा में प्रकाश-वाहक का काम कर रही है। आरम्भ से ही यह निरन्तर डिविडेण्ड (लाभ) वितरित कर रही है। भारत के प्रायः सभी प्रमुख व्यावसायिक क्षेत्रों में इसकी शाखाएं हैं और पूर्वीय अफ़्रीका तथा लङ्का में इसके एजेन्सी-आफ़िस भी हैं।

सिण्डीकेट की आय के विभिन्न जरिये :—

पहला——अपने हिस्सेदारों के हिसाब म क्रय-विक्रय की दलाली।

दूसरा——हिस्सेदारों के शेयर्स पर क़र्ज़ के रूप में दी गई सारी पेशगी पर जमा होनेवाला ब्याज।

तीसरा——ठोस और उत्तम रीति से संचालित नये व्यवसायों के विक्रय की ज़िम्मेदारी पर कमीशन और दलाली।

चौथा——चौरंघी स्क्वायर कलकत्ता में सिण्डीकेट की अपनी पाँच तल्ले की इमारत का सालाना मकान-किराया जो लगभग ३०,०००) रु० है।

पाँचवाँ——मेसर्स नेशनल न्यूट्रीमेंट्स लि०, विटामिल्क के निर्माता से मिलनेवाला मनेजिंग एजेन्सी का पारिश्रमिक और कमीशन जो लगभग ४०,०००) रु० है। इस आमदनी में प्रतिवर्ष वृद्धि होन की सबल और स्पष्ट आशा की जा सकती है।

अन्तिम लेकिन यही सब-कुछ नहीं—— दूसरी और बहुत ही उल्लेखनीय आय उन दो कोयले की कम्पनियों से प्रतिवर्ष अपेक्षित है जिसकी मैनेजिंग एजेन्सी इस सिण्डीकेट ने अभी-अभी ली है और मैनेजिंग एजेन्सी के पारिश्रमिक तथा कमीशन के रूप में प्राप्त होगी।

डिविडण्ड (मुनाफ़ा)

प्रारम्भ से लेकर चार सालों के भीतर ही सिण्डीकेट ने डिविडेण्ड (मुनाफ़ा) के रूप में अपने शेयर होल्डरों को २२% मुनाफ़ा दिया है और मार्च १९४५ से जो कार्य-काल चल रहा है, उसमें तो और भी अधिक मुनाफ़े की उम्मीद ह।

इन सब साधनों को देखते हुए प्रतिस्पर्द्धा में इसका मुक़ाबिला कोई नहीं कर सकता और पूंजी लगानेवालों के लिए इसके शेयर्स (हिस्से) सदा स्थायी सम्पत्ति बनकर रहेंगे।

'सिण्डीकेट' की विज्ञप्ति चूंकि आवश्यक ह, अतः इस दृष्टिकोण से प्रबन्ध-विभाग 'मंथली शेयर मार्केट रिपोर्ट' प्रकाशित करती है जिसमें अच्छा मुनाफ़ा देनेवाले व्यवसायों के बिकने योग्य और न बिकने योग्य हिस्सों का विवरण दिया जाता है। पूंजी लगानेवालों के लिए यह बहुत सहायक और पथ-प्रदर्शक होती है। युद्ध अब समाप्त हो चुका है और हमारा प्रबन्ध-विभाग पुनः साप्ताहिक विवरण और वार्षिक विवरण प्रकाशित करेगा ताकि इसके प्रेमियों को

बाजार की सूचनायें और सुविधायें
सकें। राष्ट्रीय उद्योग-व्यवसायों
होना निश्चित है। ज्योंही बाजार
दशा शान्तिकाल की तरह स्थिर
और सब चीजें बाजार में मिलने
त्योंही व्यापारिक क्षेत्र अधिकाधिक
होता जायगा। फिर, जनता भी
के कारण अब हिस्से खरीदने के
में हो गई ह।

मुनाफ़े में वृद्धि

युद्ध के पहले की तरह
पूरी-पूरी आशा है कि अब अधिक
(मुनाफ़ा) की घोषणा वह कर
जब्त हुए हिस्से सामान्य दरों पर
रहे हैं, और हम जानते हैं कि
हिस्से बिक जायेंगे। कड़ी मेहनत
हुए धन के उत्तम उपयोग के
बरबाद न करना चाहिए।
सिण्डीकेट के हिस्से खरीद
प्रिय सम्बन्धियों के सुखद
बनानी चाहिए।

फिक्स्ड डिपाज़िट

'सिण्डीकेट' फ़िक्स्ड डिपाज़िट
अच्छे खासे ब्याज पर रुपया

'हिस्से तथा फिक्स्ड डिपाज़िट' के आवेदन पत्र के नमूने नीचे दिये जा रहे हैं जिन्हें शीघ्र ही भर कर सिण्डीकेट के प्रधान कार्यालय में भेज देना चाहिए——

फिक्स्ड डिपाज़िट का आवेदन-पत्र :

सेवा में,
श्री मैनेजिंग डायरेक्टर,
बङ्गाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लि०,
प्रधान कार्यालय—'शेयर डीलर्स' हाउस, कलकत्ता।

फिक्स्ड डिपाज़िट के लिए आवेदन-पत्र

प्रिय महाशय,

इसी आवेदन-पत्र के साथ......रुपये नक़द/चेक से भेजे जा रहे हैं। रुपया इस रक़म को......साल की फ़िक्स्ड डिपाज़िट में मेरे/हमारे नाम......सैकड़ा सालाना ब्याज पर जमा करके फ़िक्स्ड डिपाज़िट रसीद मेरे/हमारे नाम भेज दें। रुपया मेरे अथवा मेरे वारिश/वारिशों द्वारा निकाला जा सकेगा।

भवदीय
....
पता...........
....

हस्ताक्षर का नमूना
....
ता०...........१९४

फिक्स्ड डिपाज़िट पर ब्याज की दर

१ साल	..	३½%	७ साल	..	४¾%
२ "	..	४%	८ "	..	५%
३ और ४ साल	..	४¼%	९ "	..	५¼%
५ और ६ साल	..	४½%	१० "	..	५½%

ब्याज छमाही, जुलाई तथा जनवरी में दिया जाता है।

शेयर के लिए आवेदन-पत्र :

सेवा में—
श्री डायरेक्टर साहबान,
बङ्गाल शेयर डीलर्स सिण्डीकेट लि०,
शेयर डीलर्स हाउस, कलकत्ता।
ता०......

शेयर के लिए आवेदन-पत्र

महोदय,

इसी पत्र के साथ....रुपये का चेक/नक़द अथवा मनीआर्डर भेज इस रक़म में ५) रु० प्रतिशेयर एप्लीकेशन मनी, ५) रु० प्रति शेयर एला १) रु० इस आवेदन-पत्र का प्रवेश-शुल्क शामिल है। कृपया आप अपनी ५०) रु० वाले....साधारण हिस्से दे दें। उपर्युक्त संख्या में अथवा कम, जितना आप दे देंगे, मुझे/हमें स्वीकार होंगे, और ये आपके मेमोरे एसोशियेशन' के अनुसार होंगे। शेष रक़म जब आपके यहाँ मँगाई जावेगी। कृपया मेरा/हमारा नाम मेम्बरों के रजिस्टर में इन हिस्सों के दर्ज कर लें।

हस्ताक्षर..........
पूरा नाम..........
पता..........
पेशा..........
एजेण्ट..........
पता..........

कलकत्ता के बाहर से आनेवाले चैक, कलकत्ता के बैंक के ही होना चाहिए
।) चार आने सैकड़ा चैक की भुनाई देनी होगी।

देशदूत

वर्ष ८ संख्या १७]   सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक   रविवार, २३ दिसम्बर १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

जाता है कि भविष्य में कांग्रेस में महान परिवर्तन होनेवाला है। के सदस्यों के लिये महात्मा गांधी त्मक कार्यों के नियमों का पालन ज़रूरी होगा। साधारण सदस्यता चरखा कातना अनिवार्य क़रार जायेगा। अपने राम की राय में यदि कांग्रेस के विधान में नया इसी आधार पर हुआ तो एक कचरे की सफाई तो हो ही जायेगी। मेंढकों की भाँति इधर-उधर फवानेवाले लीडरानों की तबाही नज़र आने लगेंगे। जिन्होंने आज के बल पर नेतागिरी का सस्ता बार कर रखा है, उन बेचारों आफ़त आ जायेगी। सबसे बुरी उनकी आयेगी जो कांग्रेस के अवसर की ताक में उसी तरह जैसे बगुला मछली की। समय वट कांग्रेस में शरीक हो गये के खर्च में लाखों की लीडरी। गांधी जी हैं बड़े दूरंदेश! किन्तु और पूर्वी सभ्यता से लैस खिचड़ी कृपा हुई तब तो पार, नहीं तो होगा वह आगे आयेगा।

* *

गांधी ने कांग्रेस विधान के में एक नया सुझाव भी रखा है गांव में एक कांग्रेस जन का री है। सचमुच सुझाव तो ऐसा पर जितना ही ग़ौर किया जाय दूरदेशी से पूर्ण दिखाई पड़ता है। नहीं है कि आये दिन राष्ट्रीय पर शहरबाजी ने अपना प्रभुत्व कर रखा है। लेकिन यदि भारत नता प्राप्त करनी है तो शहरबाजी ओं में तलाक देना पड़ेगा। लाउड-माइक्रोफोन, साइनबोर्ड, मोटर-मोह छोड़कर पैरगाड़ी, ऊँची आवाज़ और ग़रीब किसानों के भाईचारे से नाता जोड़ना होगा। लेकिन अवसरवादियों, कांग्रेस के सिद्धान्तों को पथ-भ्रष्ट बनावटी नेताओं, सरकारी हुक्कामों और अधकचरे राष्ट्रवादियों के मारे कुछ होने भी पाये तब तो! क्योंकि देहाती काम चना-चबेना है तो शहरी काम हलुआ पूड़ी। तब भला हलुये को छोड़कर चना चबेना अपनाना कौन-सी बुद्धिमानी है?

* * *

भ्रमण का आनन्द लेना भी आजकल की सभ्यता के इस युग की देन है। ब्रिटिश सरकार और उसके अधिकारी तो भ्रमण कला में बड़े निपुण हैं। भारत के लिए यह कोई नई बात नहीं है। क्रिप्स साहब अपना प्रस्ताव लेकर भारत-भ्रमण करने और नेताओं से मिलने आये और एक ऐसी छछूंदर छोड़ गये कि आज तक उसके बुझने की नौबत ही नहीं आ रही है। क्रिप्स प्रस्ताव मरा हुआ भी अब तक ज़िन्दा रखा गया है। पुराने ज़माने में तिलिस्मी चीज़ें सभी अवसरों के लिए बड़ी कामयाब साबित होती थीं और आज क्रिप्स-प्रस्ताव ब्रिटिश अधिकारियों के लिये——कम से कम भारत के सम्बन्ध में——तिलिस्म का काम दे रहा है। भारत सम्बन्धी मामले में वह ढाल का काम दे रही है। इसी तरह पार्लियामेंट के प्रतिनिधि भी भारत-भ्रमण के लिए आ रहे हैं। भ्रमण का आनन्द तो प्रतिनिधि मंडल लेगा ही किन्तु वक्त ज़रूरत पर क्रिप्स-प्रस्ताव की ढाल तो उनके पास रहेगी ही। क्यों न हो, युद्ध समाप्त हो ही गया है, पार्लियामेंट के सदस्य भी बेचारे परेशान रहे, अब ज़रा भ्रमण के आनन्द के साथ-साथ भारतीय स्वराज्य की भी थोड़ी बहुत चर्चा होती जायेगी तो क्या बेजा? कुछ लेना-देना तो है नहीं? थोड़ी बहुत तफ़रीह और मिलन-जुलन ही सही। मजदूर सरकार है, चर्चिल-सरकार तो है नहीं जो अकड़ी बैठी रहती?

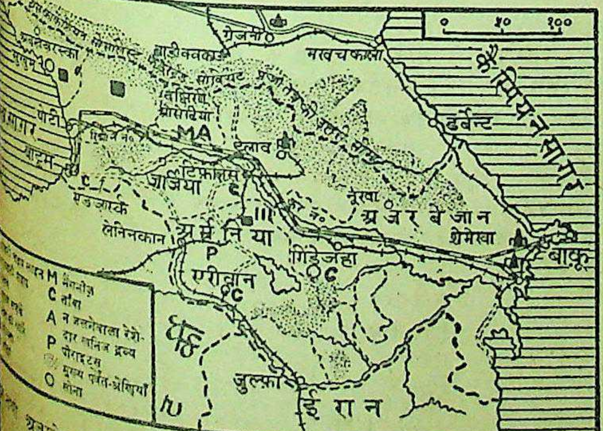

अज़रबेजान प्रांत का नकशा, जहाँ सोवियट रूस अपनी प्रभुता के लिये ताक लगाये हुए है।

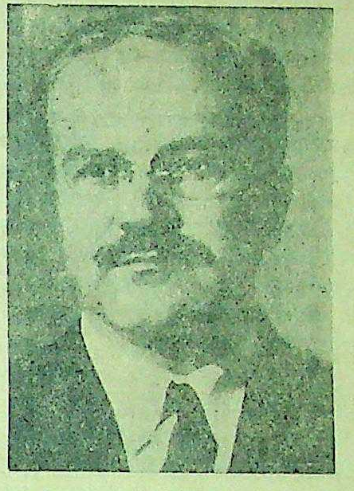

सोवियट रूस के वैदेशिक मंत्री मिस्टर मोलोटोव त्रिराष्ट्र वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में विचार-विनिमय में संलग्न हैं।

ब्रिटेन के वैदेशिक मन्त्री मिस्टर बेविन इस समय मास्को में होनेवाले वैदेशिक मन्त्री सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए गये हैं।

* * *

सोवियट रूस इस समय अच्छा पैंतरा बदल रहा है। वह अमरीका और ब्रिटेन से दूर भागने की कोशिश कर रहा है और दोनों मित्र उसका पीछा करते हुए नज़र आ रहे हैं। जब रूस किसी तरह राज़ी नहीं हुआ तो मास्को में ही अमरीकन और ब्रिटिश वैदेशिक मंत्री जा धमके। रूसी हवा इस वक्त योरोप में बह रही है। फ़्रांस में हवा चली लेकिन किसी क़दर रुक गई। यूगोस्लेविया में मार्शल टीटो रूसी हवा में बह रहे हैं। टर्की में भी पार्टी पर पार्टी बनती जा रही है। अजरबेजान पर रूस का जादू चल ही गया। तेहरान में भी बग़ावत के समाचार आ रहे हैं। आख़िर यह सब क्या है? क्या अमरीका और ब्रिटेन की डिप्लोमेसी फेल हो रही है? होना तो ऐसा न चाहिए। किन्तु मास्को सम्मेलन से ही अगर कुछ नतीजा निकल पड़े तो अच्छा ही है नहीं तो तीन तेरह होना तो मित्रों की तकदीर में बदा ही है।

* * *

ख़बर है कि मास्टर तारासिंह के पास इस बात का सबूत है कि मिस्टर जिन्ना को भारत सरकार की ओर से ६ लाख रुपया हैदराबाद राज्य की मार्फ़त हर साल मिलता है। यह ख़बर उर्दू के पत्रों में भी प्रकाशित हुई है किन्तु इसका खण्डन न तो भारत सरकार की ओर से किया गया और न मिस्टर जिन्ना की ओर से ही। अपने राम को तो यह समाचार पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई क्योंकि मिस्टर जिन्ना अगर भारत के मुसलमानों के लिए 'पाकिस्तान' बनाना चाहते हैं, और छः लाख रुपया उन्हें किसी तरह मिलता है तो क्या बेजा? इसमें नाराज़गी की कौन-सी बात है? इतने बड़े काम के लिए छ लाख क्या छः करोड़ भी कम है। मुस्लिम लीग पर सरकार की मेहरबानी है। मेहरबानी का कुछ फल अगर मिलता है तो हसद काहे की?

* * *

हमारे कम्युनिस्ट भाइयों को कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने कांग्रेस से अलग कर दिया। अपने राम की समझ में कोई बात नहीं है। अब कम्यूनिस्ट पार्टी ने कांग्रेस को छोड़कर मुस्लिम लीग को पकड़ लिया है। कम्यूनिस्ट तो किसी न किसी के साथ रहेंगे ही, चाहे लाख सर पटका जाये। लड़ाई के पहले वह कांग्रेस के साथ थे, लड़ाई के समय सरकार के साथ रहे और लड़ाई के बाद मुस्लिम लीग के साथ हैं। कम से कम वह अकेले तो नहीं हैं। यह सबसे बड़ी बात है। सच्चे साथी वक्त पड़ने पर अपना साथी ढूंढ़ ही लेते हैं। कामरेडशिप का मतलब यही है। वह अपने साथ किसी न किसी को रोने के लिए रखे तो हैं? अकेले रोने से मिलकर रोना कहीं बेहतर है। असली रोनेवाले न सही तो किराये ही वाले सही!

* * *

सम्पादक का पृष्ठ

वैदेशिक मन्त्रियों का सम्मेलन

मास्को में अमरीका, ब्रिटेन और रूस के वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन प्रारम्भ हो गया है। यह सम्मेलन क्यों हो रहा है, इसमें किन अन्तर्राष्ट्रीय विवादग्रस्त समस्याओं पर विचार-विनिमय होगा और अन्त में उसका क्या परिणाम निकलेगा? क्या यह सम्मेलन सफल होगा अथवा असफल, इस सम्बन्ध में अभी निश्चयपूर्वक न तो कुछ कहा ही जा सकता है और न सरकारी दृष्टि से विचारणीय विषयों पर प्रकाश ही डाला गया है। इसके सिवा अब तो यह भी निश्चय हो चुका है कि सम्मेलन की समस्त कार्यवाहियाँ गोपनीय रखी जायेंगी, इसलिए केवल कल्पना तथा उपस्थित समस्याओं के आधार पर ही थोड़ा बहुत कहा जा सकता है। इसके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं।

आखिर मास्को में तीन बड़ों के वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन बुलाने की आवश्यकता क्यों समझी गई? कुछ मास पूर्व लन्दन में होनेवाला वैदेशिक मंत्री-सम्मेलन बिना किसी निश्चय पर पहुँचे ही भंग हो चुका है। इसके बाद अमरीका की ओर से प्रयत्न किया गया कि त्रिराष्ट्र सम्मेलन पुनः वाशिंगटन में बुलाया जाये किन्तु सम्भवतः रूस ने इस ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। इस समय रूस अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में अपनी नीति अग्रगामी बनाता जा रहा है जिसे उसके मित्र अमरीका और ब्रिटेन बड़ी सतर्कता से देख रहे हैं, वह किसी न किसी प्रकार रूस को जेरबार करने का उपाय भी रचते रहते हैं किन्तु रूस अब बड़ा चतुर हो गया है। वह अपना स्वार्थ पहले देख रहा है और मित्रता तथा अन्तर्राष्ट्रीय नियम और क़ानून बाद को। वह जो कुछ कर रहा है उसे ही वह अन्तर्राष्ट्रीय नियम और क़ानून समझता है। पोलैण्ड की समस्या का हल भी उसने अपनी इच्छानुसार ही किया है, यद्यपि अमरीका तथा ब्रिटेन उसके इस काम के विरोधी थे। आज उत्तरी ईरान में अजरबेजान प्रान्त पर भी उसका जादू चल गया है, यद्यपि अमरीका और ब्रिटेन परेशानी का अनुभव कर रहे हैं। मंचूरिया में भी उसने अमरीकनों की परवाह किये बिना ही एक जापानी कारखाने पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया है। तात्पर्य यह है कि रूस अपना स्वार्थसाधन करता जा रहा है, वह अमरीका और ब्रिटेन की तनिक भी परवाह नहीं कर रहा है और न मित्रों के कहने-सुनने की ओर ध्यान ही दे रहा है। इसी के परिणामस्वरूप मास्को में वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन का बीजारोपण हुआ है। लन्दन में सम्मेलन हो ही चुका है, जो अन्त में भंग हो गया, वाशिंगटन में मार्शल स्टेलिन जाने को तैयार नहीं हुए, इसलिए तीसरा स्थान सिवा मास्को के रह ही कहाँ जाता है जहाँ सम्मेलन बुलाया जा सकता? जब अमरीका और ब्रिटेन मास्को जाने के लिए तत्पर हुए तब ऐसी दशा में रूस के लिए कोई दूसरा चारा ही नहीं था कि वह सम्मेलन होने का विरोध करता। फिर जब अपने घर कोई आता है तो सभ्यता के यह विरुद्ध है कि मेहमानों का सम्मान न किया जाये। रूस भी सम्भवतः इसीलिये मजबूर हो गया कि वह वैदेशिक मंत्री सम्मेलन में सम्मिलित हो।

मास्को सम्मेलन में क्या होगा इस पर कुछ कहा नहीं जा सकता। किन्तु इस समय मित्रराष्ट्रों में जो आन्तरिक मनोमालिन्य उत्पन्न हो गया है, उसका निवारण होना सम्भव नहीं जान पड़ता। हमारी समझ में तो किसी का भी दिल साफ़ नहीं है। चाहे वह अमरीका हो, ब्रिटेन हो अथवा रूस। जब हृदय ही एक दूसरे के प्रति शुद्ध नहीं हैं तो इस प्रकार के सम्मेलन केवल दाँव-पेंच के काम ही समझे जाने चाहिएँ। रूस जानता है कि अमरीका और ब्रिटेन की नीति से उसकी नीति का मेल नहीं खा सकता। अमरीका और ब्रिटेन समाजवादी विचार धारा के विरोधी हैं। ऐसी परिस्थिति में इस प्रकार के सम्मेलनों का क्या फल होगा? हमारी समझ में जो कुछ हो रहा है, केवल एक नाटक मात्र है, इससे न तो संसार का कल्याण होने की आशा है, और न तीन बड़ों की नीति में पारस्परिक एकता ही। रूस संसार में समाजवादी विचारधारा को अपना कर साम्राज्यवाद स्थापित करना चाहता है और अमरीका तथा ब्रिटेन शुद्ध साम्राज्यवादी विचारधारा की स्थापना के कायल हैं। फिर एकता कैसे हो सकती है और संसार शान्ति और सुरक्षा की स्थापना का लाभ कैसे उठा सकता है? इसलिए मास्को सम्मेलन का क्या फल निकलता है यह तो अन्त में प्रगट होगा ही किन्तु है यह सब साम्राज्यवादियों के दाँव-पेंच और अन्तर्राष्ट्रीय चालों के सभ्यतापूर्ण नमूने।

* * *

स्वर्गीय कौशिक जी

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कहानी-लेखक और उपन्यासकार पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक का स्वर्गवास हो गया, हिन्दी-संसार के लिए यह आकस्मिक दुर्घटना बड़ी दुखद और कष्टप्रद है। हमें कदापि आशा नहीं थी कि कौशिक जी इतनी जल्दी हम लोगों के बीच से उठ जायेंगे किंतु दैव इच्छा के सामने न कोई चारा है और न उपाय ही। हमें पिछले २५ वर्षों से कौशिक जी की मित्रता का अभिमान और गर्व रहा है। उनकी सरलता, सज्जनता, शालीनता और जिन्दादिली का कौन कायल नहीं था? जो भी उनके संपर्क में एक बार आया, वह उनका हो गया। उनका हँसमुख और विनोदी चेहरा आज भी हमारी आँखों के सामने नाच रहा है। ऐसी लगन और जीवट के व्यक्ति कम ही देखने को मिलते हैं। 'देशदूत' पर उनकी बराबर कृपा रहती थी। प्रत्येक विशेषांक में तो वह अवश्य ही लिखा करते थे! इस बार 'देशदूत' के 'दीपावली अंक' के लिए वह कहानी नहीं भेज सके। इसके लिए उन्होंने लिखा कि "साहित्यकार संसद की सहायता के लिए मैं प्रगति-शील कवि- सम्मेलन में ऐसा परेशान रहा कि बहुत चाहने पर भी कहानी न भेज सका। साधारण अंक के लिए कहो तो कुछ लिख भेजूं।" हमारे पास आनेवाला उनका यह पत्र अंतिम होगा, इसका कभी भान भी नहीं हुआ। आज कौशिक जी नहीं हैं, चित्त में कितनी खिन्नता और दुःख है, इसका अनुभव तो वही कर सकते हैं, जो कौशिक जी को निकट से जानते थे। उन्हें न नाम की परवाह थी और न यश की। काम करो और हिन्दी-साहित्य की वृद्धि करो यही उनके जीवन का प्रधान मोटो रहा और अंत समय तक उसका उन्होंने निर्वाह किया। कौशिक जी की आत्मा बड़ी पवित्र और ऊँची थी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह एक निरभिमानी मानव थे और मानवता उनमें कूट कूट कर भरी थी। हिन्दी की आज की पाखंडी दुनिया से वह बहुत दूर थे। मौज में जीवन-यापन करना और सचाई तथा ईमानदारी के साथ हिन्दी की सेवा करना ही उनके जीवन का उद्देश्य था।

स्वर्गीय कौशिक जी की द्विवेदी युग के प्रधान कहानी-लेखकों में गणना होती है। उनके 'भिखारिणी' 'संघर्ष' आदि उपन्यास तथा कई कहानी-संग्रह आज हिन्दी साहित्य की अमर देन समझे जाते हैं। शिष्ट हास्य लिखने में वह अपने ढंग के बेजोड़ लेखक थे। 'दुबे जी की चिट्ठियाँ' इसका जीवित प्रमाण है। साहित्य के साथ वह राजनीति के भी एक सफल विचारक थे। उनकी रचनाओं पर सामयिक विचार-धाराओं की एक गहरी छाप होती थी जिससे उनकी अध्ययनशीलता का पूरा परिचय प्राप्त होता है। उनकी कहानियों, उपन्यासों तथा हास्य रचनाओं के पात्र दैनिक जीवन के होते थे, समस्यायें सामयिक और घटनाओं में वास्तविकता होती थी, यही कारण है कि जनता में उनकी लोकप्रियता काफी बढ़ी-चढ़ी थी। वह कल्पना अथवा छायावादी विचार-धारा के पृष्ठपोषक नहीं थे। जिन्दगी और जीवित भावनाओं तथा विचारों के लिए वह जीवित रहे और हृदय पर प्रभाव डालनेवाली भावनाओं के वह पृष्ठपोषक रहे। खैर, यह सब कुछ उस समय और
अधिक स्पष्ट होगा जब उनके
की विवेचना होगी किंतु यह तो
है कि उनकी कला केवल कला के
नहीं वरन जनता के लिए थी, और
लिए वह एक सफल और
कलाकार माने जाते थे, इसमें

हाँ, कौशिक जी आज हमारे
नहीं हैं, तब हिन्दी संसार का
प्रति क्या कर्तव्य है, यह विचारणीय
हिन्दी संसार अपने कलाकारों को
जा रहा है और केवल समवेदना प्रकट
के सिवा आखिर अब तक क्या किया
रह गया हिन्दी-साहित्य सम्मेलन
कुछ आशा इसलिये नहीं की जा सकती
वह अगर कुछ करेगा तो सब के लिये
वह दिन भी अभी दूर है। इसलिये
कानपुर के हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध
कि वह स्वर्गीय कौशिक जी की स्मृति
ऐसे स्मारक की स्थापना करें जो
गौरव के अनुरूप हो। अंत में हम
कौशिक जी की आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि
अर्पित करते हैं और ईश्वर से प्रार्थना
हैं वह उनकी आत्मा को शांति
करे और परिवारवालों को धैर्य।

कलकत्ता हाईकोर्ट

धोखाधड़ी का भण्डाफोड़

हिन्दुस्तान में बहुतायत से इस्तेमाल होनेवाले एक साबुन के हक़ में कलकत्ता हाईकोर्ट से फिर एक मुक़द्दमे में डिगरी हुई।

सनलाइट सोप के निर्माता मेसर्स लीवर ब्रदर्स की तरफ़ से मेसर्स हिन्दुस्तान सोप फ़ैक्टरी, १०० कैनिंग स्ट्रीट कलकत्ता जो कि सुवानलाइट सोप के निर्माता थे के ख़िलाफ़ चलाये गये मुक़दमा में अदालत ने यह फ़ैसला कर दिया कि सुवानलाइट सोप नाम आकार-प्रकार और लेबुल के रंग में सनलाइट सोप का ख़िलाफ़ क़ानून नक़ल है।

अदालत ने मुदालेहम यानी हिन्दु
सोप फ़ैक्टरी पर सुवानलाइट सोप के
बेचने अथवा सनलाइटसोप की और
प्रकार से नक़ल करने या उसके
लेबुल पर की छपी हुई एबारत
बनावट की नक़ल करने के लिए
प्रतिबन्ध लगा दिया है।

मेसर्स लीवर ब्रदर्स के हक़ में
ने यह भी हुक्म जारी कर दिया
लाइट सोप की बट्टियों का
रैपर और डाई नष्ट कर दिये

जब आप ये साबुन खरीदें
नक़लों से सावधान रहिए

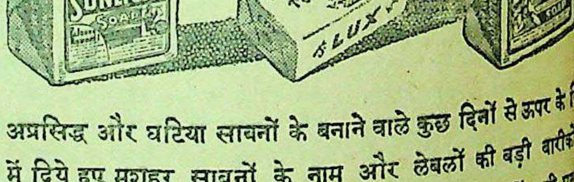

अप्रसिद्ध और घटिया साबनों के बनाने वाले कुछ दिनों से ऊपर के
में दिये हुए मशहूर साबुनों के नाम और लेबलों की बड़ी बारीकी
साथ नकल कर रहे है। इन बद दियानत साबुन साज़ों की
आपको धोका देनार है। कि आप उनका नकली माल इसी
ख़रीदलें कि यह आपकी ज़रूरत वाले असली सनलाईट, लक्स
या लाईफ़ बॉय, साबुन ही हैं। हमेशा होशियार रहिए-निश्चित कर
की आप असली माल ही ख़रीद रहे हैं।

चेतावनी!
ट्रेड मार्क कानून का भंग
लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड जो कि सनलाइट साबुन, लक्स टॉइलेट सोप और
लाइफ़बॉय साबुन के बनानेवाले हैं, इसके जरिये चेतावनी देते हैं कि वे किसी
फ़र्म, या कम्पनी के ख़िलाफ़ हर मुमकिन कार्रवाई, दीवानी, फ़ौजदारी या दोनों,
जो, सिवाय लिवर ब्रदर्स (इण्डिया) लिमिटेड के बनाये हुये माल के, और किसी
ऐसे मालको जिसपर सनलाइट, लक्स या लाइफ़बॉय या किसी और नाम के
नाम और छाप मौजूद हों जो इन नामों की ख़िलाफ़ वरज़ी हो या उनकी
हो, तैयार करने, बेचने बेचने के लिये देने, उसका वर्णन करने,
और विज्ञापन देने का धन्धा करती हो या उसमें मदत करती हो।

यह विज्ञापन लिवर ब्रदर्स द्वारा जनता के हित
दिया गया है।
L. Com. 56-111 HI

जवाहरलाल नेहरू इस समय आसाम चुनाव का दौरा कर रहे हैं।

र एक दीर्घ प्रश्न-सूचक चिह्न रहा है। उस चिह्न के प्रत्येक झुकाव वार्य प्रश्न शीघ्रातिशीघ्र अपना ते हैं। योरप में युद्ध की हो गई, शान्ति के लिए योजनायें रही हैं। समस्त विचारकों के में सर्वप्रथम यही विचार उठता है ई दार्शनिक तत्त्व ऐसा है जिससे शान्ति स्थापित करनेवाली कोई योजना बनाई जा सके? महती अनियन्त्रित रूप से निकल पड़ी स्वतन्त्रता की आवश्यकता की संसार भर की पराधीन जनता को हो चुकी है। पाश्चात्य शक्तियों पर वहाँ के मूलनिवासियों का हुआ दिखाई दे रहा है। जिस सकवर्ग ने उन उपनिवेशों को से एशिया भर में गोरी जातियों बड़ी ही शीघ्रता से घट गया -सा वह सम्मान अब कभी भी किया जा सकता। जापानियों से के पश्चात् इन उपनिवेशों को ही के चंगुल में फिर से जकड़ने भी प्रयत्न अब सह्य नहीं संघर्ष अनिवार्य है। एशिया की घोषणाओं की कसौटी बन सब समान रूप से भाग ले सकें' दृष्टिकोण की उपेक्षा करके ऐसी योजना जो शान्ति- के उद्देश्य से बनाई गई हो, सफल सकता।

सम्बन्ध में भारत के प्रश्न की हमारा ध्यान आकर्षित होता है। सीमा तक पहुँच चुका है। ज़ादी की माँग कर रहा है। अब नहीं कर सकता। युद्ध-भार नैतिक गतिअवोध के जारी रहने के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन व्याघात उपस्थित हो गया है कारण देश की जनता में कटुता है। जनता के नाम पर बोलनेवालों देश के हितों पर प्रभाव डालने- समस्त समस्याओं को सहानुभूति- में तत्काल ही सँभालने की आव- है। समय की गति के अनुसार बढ़ाने में अंगरेज़ों की अनिच्छा ही इस दयनीय स्थिति की उत्तरदायिनी रेज़ों ने राष्ट्र की माँग पर तुषार- करने का प्रयत्न किया परन्तु हूवर ने अपने एक नये लेख में ठीक ही कि 'राष्ट्रों के भविष्य को बर्फ़ की नहीं जा सकता।' भारत और दोनों के लिए कोई भी सम्मानप्रद पहले ही किया जा सकता इस प्रकार भारत को एक मित्र बनाया जा सकता था। भारत सहयोग ने केवल युद्ध जीतने में ही होती बल्कि उसने स्थायी स्थापना में निर्णायक भाग भी

मित्रराष्ट्रो अब भी आँखें खोलो!

भारतीय स्वाधीनता संसार के लिए वरदान सिद्ध होगी

लेखिका, श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित

> युद्ध समाप्त हो गया है, और संसार में शांति और सुरक्षा की स्थापना के लिये मित्रराष्ट्र प्रयत्नशील हैं, किन्तु मित्रराष्ट्रों ने पराधीन राष्ट्रों तथा उपनिवेशों के लिए क्या निर्णय किया है? यही अंतिम निर्णय संसार में शांति-स्थापना का प्रमुख आधार माना जायेगा। इस लेख में श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने मित्रराष्ट्रों की नीति की आलोचना करते हुए भारतीय स्वाधीनता की आवश्यकता पर जोर दिया है। लेख सुंदर और पठनीय है।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित आगामी जनवरी मास में भारत आ रही हैं।

कांग्रेस की स्थिति

युद्ध के आरम्भ से ही भारत के नेताओं ने ऐसा स्थिति में आना चाहा था जिससे वे अपने देश की रक्षा का भार उठा सकें। उन्हें जापान के विषय में कुछ भी भ्रम नहीं था। उन्होंने बार-बार नात्सी-फासिस्ट आक्रमण का विरोध किया था। फासिज्म की उन्नति में सहयोग प्रदान करनेवाली नीतियों का उतना तीव्र तथा दृढ़ विरोध और विश्व में प्रजातन्त्रवाद के सिद्धान्तों का उतना दृढ़ समर्थन कुछ ही लोगों ने किया है, जितना जवाहरलाल नेहरू ने। फिर भी अपेक्षाकृत अच्छे संसार के निर्माण-कार्य में भाग लेने के अवसर से वे वंचित किये गये हैं। सन् १९४२ के प्रारम्भ में गांधी जी ने कहा था—"मैं अनुभव कर रहा हूँ कि यदि भारत अँगरेज़ों की दासता से मुक्त हो सके तो उसके लिए युद्धों के विषय में महत्त्वपूर्ण कार्य करने का अवसर आ गया है। मुझे इसका भी विश्वास है कि उस मुक्ति की प्राप्ति में भारत छोड़ने की अँगरेज़ों की अनिच्छा के अतिरिक्त और कोई बाधा नहीं है। उन्होंने भारत को दो शताब्दियों से अपना शिकारगाह बना लिया है न!"

भारत में अमेरिकन सेनाओं के एकत्रीकरण के समय कांग्रेस ने एक प्रस्ताव में इस ओर संकेत किया था—"सुरक्षा की साम्राज्यवादी तथा साधारणतया समझी जानेवाली विचारधारा का मूलतः भेद इसी बात से स्पष्ट है कि जहाँ देश की रक्षा के लिए दूसरे देशों की सेनाओं को आमन्त्रित किया जाता है वहाँ भारत की अपनी विशाल जन-शक्ति का स्वयं कोई उपयोग नहीं। आज भारत का मस्तिष्क इस विचार से चिन्तित है कि जापान की पराजय के पश्चात् ये अमेरिकन शक्तियाँ भारत में 'वही रफ़्तार बेढंगी' क़ायम करने के लिए प्रयुक्त की जा सकती हैं। इतने दिनों तक की गई मौखिक प्रतिज्ञाओं से भारत इतना ऊब चुका है कि अब उसके लिए सन्देह और आशंका स्वाभाविक वस्तु हो गई है। ८ अगस्त सन् १९४२ ई० को पास किये गये, सुविख्यात प्रस्ताव में सतर्कतापूर्वक चुने हुए शब्दों द्वारा स्थिति स्पष्ट कर दी गई थी। उसमें कहा गया था। कि ब्रिटिश शासन "भारत को पतित और निर्बल कर रहा है। उसे अपनी रक्षा के लिए भी दिन दूना और रात चौगुना असमर्थ करता जा रहा है। उसे संसार की स्वाधीनता के लिए कुछ भी कर सकने के अयोग्य बनाता जा रहा है।" अतः इस शासन का अन्त "अनिवार्य तथा अविलम्ब होना चाहिए क्योंकि इसी कार्य पर युद्ध का भविष्य तथा स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्रवाद की सफलता निर्भर है।"

स्वतन्त्र भारत का स्थान

उसी प्रस्ताव में आगे चलकर कहा गया था—"स्वतन्त्र भारत के द्वारा यह सफलता निश्चित हो जायगी। वह अपने समस्त अपार साधनों को स्वाधीनता संग्राम तथा नात्सीज्म, फासिज्म और साम्राज्यवाद के विरोध में लगा देगा। युद्ध के भाग्य को यह केवल बाह्य रूप से ही न प्रभावित करेगा बल्कि समस्त पराधीन जनता तथा दलित मानव-समुदाय को मित्रराष्ट्रों के पक्ष में कर देगा। यह उन राष्ट्रों को जिनके पक्ष में भारत होगा संसार का आत्मिक तथा आध्यात्मिक नेतृत्व भी देगा। पराधीन भारत सदा के लिए ब्रिटिश साम्राज्यवाद की करतूतों का एक प्रतीक रहेगा। इस साम्राज्यवाद के ये काले धब्बे समस्त मित्रराष्ट्रों के भाग्य पर अपना असर डालेंगे।

"अतः आज के ख़तरे से बचने के लिए भारत की स्वाधीनता तथा ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश अनिवार्य है। भविष्य के लिए की गई कोई भी प्रतिज्ञा या किसी प्रकार की भी गारन्टी वर्तमान स्थिति में सुधार अथवा ख़तरे से रक्षा नहीं कर सकती। वह सर्वसाधारण के मस्तिष्क पर अभीष्ट मनोवैज्ञानिक प्रभाव नहीं डाल सकती। आज़ादी का सद्यःदिव्य आलोक ही करोड़ों प्राणियों के अन्तरतम में वह स्फूर्ति तथा उत्साह भर सकता है जो पलमात्र में रणखण्डों का स्वभाव परिवर्तित कर दे।" सामूहिक सुरक्षा-समिति के स्वतन्त्र सदस्य की स्थिति में ही भारत अपने ऊपर वह उत्तरदायित्व ले सकेगा। तथा उस भार के निबाहने में हाथ बँटा सकेगा। वह प्रशान्त महासागर में शान्ति स्थापित करने के लिए शक्तिशाली तथा आवश्यक सिद्ध होगा। वह उन छोटे-छोटे राष्ट्रों की आकांक्षाओं का प्रतीक होगा जो अपनी आज़ादी की ओर हसरत भरी निगाह उठा रहे हैं। विशेष रूप से उसका प्रभाव बर्मा तथा मलाया पर पड़ेगा। भविष्य में स्वयं स्वतन्त्रता के मूल्य का आश्रय यह होगा कि छोटों और निर्बलों के लिए यह संसार कहाँ तक निरापद है।

यदि सुरक्षा-समिति में भारत एक स्वतंत्र और समान राष्ट्र की हैसियत से भाग नहीं ले सकता तो इसका अर्थ यह होगा कि बड़े राष्ट्रों का सरोकार केवल उतना ही 'सुरक्षित' रखने में है जितना उनकी पूर्व स्थिति की पुनर्स्थापना तथा उसकी हिफ़ाज़त के लिए आवश्यक है।

क्या मित्रराष्ट्र इस नये क्षितिज की ओर आँख उठायेंगे?

पेट के
दर्द के चंगुल में
न फँसिए!

पेट का दर्द जब आपको पीड़ा दे उसे एकदम बन्द कर दीजिए। उसके चंगुल को दृढ़ मत होने दीजिए अन्यथा घाव होने का भय है।

PREPARED ACCORDING TO A SPECIALLY SELECTED FORMULA
MACLEAN
Brand
Stomach
Powder
NONE IS GENUINE MACLEAN BRAND WITHOUT THIS SIGNATURE
Alex. C. Maclean
Copyright
JWT(B)LTD

स्टैनिष्ट्रीट की
प्रसाधन
सामग्रियाँ

कोल्ड व
वैनिशिंग क्रीम
टैलकम व फेस पाउडर
रूज लिपस्टिक
यू-डी कोलोन
लैवेण्डर वाटर
स्टैनेरोमा
हेयर शैम्पू
ब्रिलिएन्टाइन

इस देश की जलवायु में जिस तरह की सामग्रियों की आवश्यकता होती है ठीक उसी तरह की पूर्ण विशुद्ध सामग्रियों की हम गारण्टी देते हैं—खुशबूदार व ताजगी लाने वाली। मूल्य भी समुचित है।

स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं० लि: कलकत्ता बम्बई मद्रास लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 120

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये

दो लिपियों की आवश्यकता क्यों ?

अखंड भारत में राष्ट्रभाषा की समस्या कैसे सुलझेगी ?

लेखक, प्रिंसिपल श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०

दो लिपियों के ज्ञान की आवश्यकता क्यों है ? हिन्दुस्तानी ग्रहण करने से राष्ट्रभाषा का स्थान सफल क्यों हो सकता है ? इस संबंध में प्रिंसिपल अग्रवाल ने हिन्दी-संसार में फैले हुए भ्रम का इस लेख में निवारण किया है। लेख सुंदर तथा हिन्दी प्रेमियों, राष्ट्रभाषा के हित चिन्तकों के लिए विचारणीय है।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के प्रधान मन्त्री श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल, एम० ए०

हिन्दी पत्रों में राष्ट्रभाषा प्रचार आन्दोलन को लेकर काफ़ी विवाद चल रहा है। पूज्य बापू के हिन्दी साहित्य सम्मेलन से त्याग-पत्र देने से यह विषय और भी चर्चा के उपयुक्त हो गया है। श्री टंडन जी तथा बापू के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है, उससे बापू के हिन्दुस्तानी सम्बन्धी विचार जनता के समक्ष आ गए हैं। इतना होते हुए भी जनता के लाभ के लिए हिन्दुस्तानी आन्दोलन का सारांश दे रहा हूँ।

राष्ट्रभाषा की समस्या को लेकर हिन्दुस्तानी प्रचार में हिन्दी और उर्दू का तनिक भी विरोध नहीं, हिन्दी और उर्दू गंगा-जमुना की तरह अपनी भाषा और साहित्य का विकास बिना किसी रोक-टोक के अवश्य ही करें। लेकिन देश की बदकिस्मती से हिन्दी और उर्दू के प्रचार में दिन दूनी रात चौगुनी साम्प्रदायिकता की गंध आती जा रही है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दी और उर्दू शैलियाँ एक दूसरी से पृथक् होती जा रही हैं। हिन्दी के लेखक अपनी भाषा में जान-बूझकर संस्कृत तत्सम शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। इसी तरह उर्दू के लेखक भी अपने मजमूनों में अरबी और फ़ारसी के लफ़्जों की भरमार करते जा रहे हैं। यह कार्य उचित नहीं है। हिन्दी और उर्दू लेखकों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे सरल भाषा में जनता के हितों का ध्यान रखकर अपने साहित्य का निर्माण करें। अगर वे जनता के हितों को ध्यान में रखकर साहित्य सृजन का कार्य करेंगे तो उनकी भाषा अनायास ही सरल बनती जायेगी। हिन्दी और उर्दू के बीच जो गहरी खाई बन गई है वह अपने आप भरती जायेगी। ऐसा करने से गंगा-जमुना के बीच सरस्वती की धार निकल पड़ेगी और हिन्दुस्तान के लिए एक सशक्त और सम्पन्नशाली हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा का कुदरती ढंग से निर्माण हो जायेगा। इस तरह की भाषा का रूप-रंग कोई संस्था या व्यक्ति नहीं कर सकता। भाषायें कृत्रिम ढंग से गढ़ी नहीं जा सकती। उनका प्रवाह तो स्वाभाविक है, जिसे जनता ही प्रवाहित कर सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि हिन्दुस्तान के लोग अधिक से अधिक संख्या में हिन्दी तथा उर्दू दोनों लिपियाँ सीखें। किसी भाषा की लिपि जाने बिना उसका पूरा ज्ञान नहीं किया जा सकता। हिन्दी तथा उर्दू भाषा के ज्ञान के लिए दोनों लिपियाँ सीखनी जरूरी हैं। इस तरह अगर भारत के काफी लोग खास कर राष्ट्रीय कार्यकर्ता हिन्दी और उर्दू दोनों लिपि सीख लें तो यह झगड़ा ही मिट जायेगा और हिन्दुस्तानी का सरलता से प्रचार हो सकेगा।

हिन्दी और उर्दू के प्रचार को जातीयता की नजर से देखना मुनासिब नहीं है। उर्दू भाषा और लिपि केवल मुसलमानों की ही नहीं है। उत्तरी हिन्दुस्तान के असंख्य हिन्दू उर्दू का इस्तेमाल करते हैं। हिन्दी भी केवल हिन्दुओं की भाषा नहीं है। हिन्दी-साहित्य में कई मुसलमान कवि ऐसे हो गये हैं कि जिनके बिना हिन्दी-साहित्य सूना पड़ जाता है। इसलिए हमें हिन्दी उर्दू को हिन्दुस्तानी भाषा की दो शैलियाँ ही समझना चाहिए। भाषा को साम्प्रदायिकता में न घुसेड़ना चाहिए। हिन्दू यह न समझें कि उर्दू सीखने से उसका सारा हिन्दुत्व नष्ट हो जायेगा और मुसलमान यह न सोचें कि हिन्दी सीखने से उनका इस्लाम खतरे में पड़ जायेगा या पाकिस्तान के बीच में रोड़े अटकने लगेंगे। हमें यह भली भाँति याद करना होगा कि हमारा विरोध अँग्रेजी से है और अँग्रेजी की जगह हिन्दुस्तानी को प्रचलित करना है। अगर हिन्दी और उर्दू के प्रचारक आपस में लड़ते रहे तो फिर अँग्रेजी को हटाने की किसमें सामर्थ्य है ? अगर हम नागरी और उर्दू दोनों लिपियाँ सीखना नहीं चाहते तो फिर रोमन लिपि को ही अपनाना होगा। पर रोमन लिपि को अपनाने के लिए न हिन्दीवाले तैयार हैं न उर्दूवाले। इसलिए हिन्दी और उर्दू दोनों लिपियों का सीखना हमारे लिए और भी जरूरी हो जाता है। इसके बिना हमको आपसी व्यवहार में अँग्रेजी को ही अपनाना होगा। अगर भारत को अखण्ड रखना है तो उसके लिए कोशिश भी करनी होगी। और एक दूसरे से सम्बन्ध बढ़ाने के लिए कुछ कष्ट भी उठाना पड़ेगा। अगर हमने अपनी लिपि, भाषा, साहित्य और संस्कृति को अलग अलग डालने में ही अपनी शक्ति लगाई तो फिर हमारा, हमारे राष्ट्र का, हमारे समाज का कल्याण कैसे हो सकेगा ? अगर हम देश का वास्तविक कल्याण चाहते हैं तो हिन्दुस्तानी को अपना कर यह समस्या सरलता के साथ सुलझाई जा सकती है, यह निस्सन्देह कहा जा सकता है।

पेट्रोमल्सन
PETROMULSION
कैलशियम तथा सोडियम के हाइपोफास-
फाइट का पेट्रोलियम के साथ संमिश्रण
तथा
पेट्रोमल्सन विथ गुआइयाकोल
PETROMULSION WITH GUAIACOL
* खाँसी * ब्रांकाइटिस
* जुकाम * निमोनिया
* यक्ष्मा * पाचनक्रिया
* की आदर्श औषधि *
तैल अंश को नियंत्रित रखने
के लिये विशेष गुणकारी है
यदि आपके औषधि-विक्रेताओं से
न मिले तो कृपया हमें लिखें :—
बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : : कलकत्ता

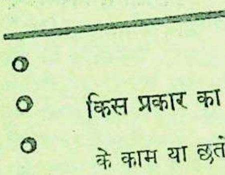

J & N REMINDERS!
स्मारक पत्र
किस प्रकार का काम ? : भीतरी या बाहरी लोहे या लकड़ी के काम या छतों की सजावट के लिए अथवा उन्हें उत्तम अवस्था में रखने के लिए।
हमारी सिफ़ारिश ? : "झिलमिल" लकड़ी के काम के लिए, "बैरीको" लोहे के काम और "काष्टिक" छतों के लिए। अपने अपने अण्डरकोटों के साथ यह सभी ठेकेदारों के आश्रय योग्य हैं।

J&N
Jhilmil
READY MIXED PAINT
BARICO
ANTICORROSIVE
FOR THE PROTECTION OF STEEL WORK
COPELAC
ROOF PAINT

QUALITY
JENSON & NICHOLSON
MAKERS OF PAINTS

दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा

राष्ट्रभाषा-प्रचार, प्रसार तथा संगठन पर एक विहग दृष्टि

लेखक, श्री सत्यनारायण (प्रधान-मन्त्री)

> दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा दक्षिणी भारत के अहिन्दी भाषा-भाषी प्रांतों में राष्ट्र-भाषा के प्रचार और प्रसार में ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। सभा को स्थापित हुए २७ वर्ष हो गये। आगामी जनवरी के अंत में सभा का रजतजयंती समारोह महात्मा गांधी के सभापतित्व में मनाया जानेवाला है। इस उपयोगी लेख में सभा के पिछले वर्षों की गतिविधि तथा कार्यों पर सुंदर प्रकाश डाला गया है। लेख उपयोगी तथा जानकारी से पूर्ण है।

श्री राजगोपालाचार्य का सभा को पूर्ण सहयोग प्राप्त रहा है।

ज़माना था जब कि 'दक्षिण भारत का सिर्फ़ एक भौगोलिक समझा जाता था। उत्तर के लोग सिर्फ़ मद्रास के नाम से ही पह- थे। उत्तर और दक्षिण भारत के एक खाई-सी थी जिसे पार करने बहुत कम लोगों ने उठाई। एक राष्ट्र बनाने में यह बड़ी थी। इस खाई को भरने की कोशिश में भी कई रूपों में की गई उत्तर तथा दक्षिण की जनता जब तक निकट सम्बन्ध पैदा न तब तक इस खाई के भरने की कोशिशें, सारे साधन बेकार साबित सम्बन्ध एक दूसरे की भाषा साधन के जरिये ही पैदा किया है। इस दिशा में पहला प्रयत्न हुआ और वह भी महात्मा गांधी था। भारत के पिछले २५ वर्ष के सूत्रपात महात्मा जी के द्वारा है। हमारा अहोभाग्य है कि हिन्दी का प्रचार-कार्य भी उन्हीं का परिणाम है। उनके सुपुत्र गांधी के कर-कमलों से जिनकी समय सिर्फ़ अठारह साल की थी, का श्रीगणेश हुआ और आज यह भारत हिन्दी-प्रचार-सभा, नियंत्रित और संचालित है।

प्रचार का कार्य-क्षेत्र जितना उतना गहरा भी है, जितना लोक- उतना लोक-सम्मानित भी है। के शुरू हुए २७ वर्ष समाप्त सभा के लिए यह शुभ अवसर है कि 'सभा' अपने कार्य की मनावे। दक्षिण भारत में व लोकप्रिय शब्दों में "कांग्रेस" हिन्दी-प्रचार का ही नम्बर आ है। स्कूल के लड़कों से लेकर प्रायः और सभी वर्गों में और शहरों में भी इस शब्द का प्रचार है। से लेकर पश्चिम में गोआ तक, से लेकर हैदराबाद तक प्रायः सभी प्रमुख स्थानों में हिन्दी का बीज बोया गया है। आज तक क़रीब २,५०० ऐसे स्थान हैं जहाँ पर हिन्दी-प्रचारकों ने काम शुरू किया है। आज इस क्षेत्र में क़रीब १,६०० कार्यकर्ता लगन के साथ कार्य कर रहे हैं। ५०,००० से ज्यादा विद्यार्थियों की संख्या है। क़रीब १० लाख लोगों ने हिन्दी से परिचय प्राप्त किया है। हरसाल क़रीब २० हज़ार विद्यार्थी हिन्दी के इम्तहान दे रहे हैं। इनकी संख्या अब तक १,९७,९५९ हो चुकी है।

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन सभा के सहायकों में रहे हैं।

सभा के केन्द्र कार्यालय के अलावा, जहाँ एक सौ से ज्यादा कार्यकर्ता काम कर रहे हैं, दक्षिण भारत के चारों प्रान्तों में अर्थात् तमिल, आन्ध्र, केरल व कर्नाटक में—चार प्रान्तीय कार्यालय हैं जो क्रमशः त्रिचिनापल्ली, बेजवाड़ा, एरनाकुलम व धारवाड़ में हैं। सभा की देख-रेख में इस वक्त २,५०० केन्द्र हैं जहाँ पर हिन्दी-प्रचारक वर्ग चलाकर हिन्दी का प्रचार कर रहे हैं। क़रीब ४०० ऐसे हाईस्कूल हैं जिनमें मद्रास सरकार व रियासती सरकारों के इलाक़ों में (मैसूर, तिरुवांकूर, कोचिन) हिन्दी का काम हो रहा है। इन केन्द्रों तथा हाईस्कूलों में बाल-बालिकाओं तथा स्त्री-पुरुषों को सामान्य रूप से हिन्दी का शिक्षण मिलता है। इस महान् तथा महत्त्वपूर्ण कार्य को चलाने के लिए सभा ने कई नियमबद्ध समितियाँ बनाई हैं जैसे—व्यवस्थापिका समिति, कार्यकारिणी समिति, शिक्षा-परिषद्, निधिपालक-मण्डल, प्रान्तीय समितियाँ, हिन्दी-प्रेमी मंडलियाँ, प्रादेशिक समितियाँ, आदि आदि। ये सारी समितियाँ हिन्दी-प्रचारकों तथा हिन्दी-प्रेमी जनता के सम्मिलित प्रयत्न से संचालित होती हैं। सारी समितियों में दस हज़ार से अधिक सदस्य हैं जो हिन्दी-प्रचार की भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों में भाग लेते हैं।

प्रचार के कार्य को लोकप्रिय बनाने व हिन्दी के प्रति गहरा प्रेम पैदा करने के लिए कई तरह के साधन काम में लाये जाते हैं, जिनमें प्रचार तथा प्रचारकों के सम्मेलन, प्रमाण-पत्र वितरणोत्सव, संगठकों तथा प्रान्तीय मन्त्रियों के भिन्न-भिन्न केन्द्रों में दौरे, यात्री-दलों के भ्रमण, प्रचारक-शिविर संचालन, हिन्दी विद्यालयों का संचालन, वाद-विवाद परिषद्, हिन्दी-नाटकों का प्रदर्शन, वाचनालय तथा पुस्तकालयों की स्थापना, हिन्दी-प्रेमी मण्डलियों तथा प्रचार संगठन का संचालन, हिन्दी वाक्स्पर्धाओं की आयोजना आदि आदि हैं। हर साल "हिन्दी-प्रचार-सप्ताह" का मनाना सभा की एक विशेष प्रवृत्ति है। हिन्दी-प्रचार-क्षेत्र में काम करनेवाले प्रायः सभी प्रचारक सभा से सम्बद्ध हैं जो प्रमाणित प्रचारक कहलाते हैं। ऐसे प्रचारकों की संख्या १,२०० से अधिक है। हिन्दी-प्रचारकों ने दक्षिण में अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है और राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्र-संस्कृति का सन्देश घर-घर पहुँचा रहे हैं। साथ ही समाज-सेवा का आदर्श रखकर विशुद्ध राष्ट्रीयता, भारत की एकता और उसके गौरव का प्रचार अपने जीवन का एकमात्र उद्देश्य समझकर करते हैं।

अपने क्षेत्र को सुव्यवस्थित प्रचार-कार्य को सुसंगठित तथा शिक्षण को क्रम-बद्ध व स्थायी बनाने के उद्देश्य से सभा क्रमबद्ध सात परीक्षाएँ चलाती है। इन परीक्षाओं में बिना उमर व जाति-भेद के, हजारों स्त्री-पुरुष बैठते हैं। परीक्षा का यह सारा कार्य सभा के परीक्षा-विभाग के द्वारा चलता है, जिसके अंतर्गत करीब २२५ परीक्षक काम करते हैं। सभा की परीक्षाओं ने दक्षिण में हिन्दी के प्रति बहुत बड़ा उत्साह पैदा किया है। परीक्षाओं के प्रति साधारणतया जो स्वाभाविक चिढ़ रहती है उसके विपरीत हिन्दी परीक्षाओं के लिए एक नया जोश पैदा हुआ है। लोकप्रियता के विचार से हिन्दी परीक्षाएँ अनुकरणीय-सी हो गई हैं।

परीक्षाओं का उन्नति-क्रम

साल	परीक्षार्थी संख्या	
	प्रारंभिक	उच्च परीक्षाएँ
१९४४ तक	१,७६,५१२	१०,९९८
१९४५ ३१-८-४५	९,३२८	१,१२१
कुल	१,८५,८४०	१२,११९

सभा के साहित्य तथा प्रकाशन-विभाग का भी बहुत ही ऊँचे पैमाने पर काम चलता है। दक्षिण की भिन्न-भिन्न भाषाओं द्वारा हिन्दी सीखने के लिए तथा हिन्दी साहित्य से परिचित कराने के लिए अब तक इस विभाग के द्वारा १५० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें अक्षर-बोध से लेकर कोष तक शामिल हैं। सभा ने अपने प्रकाशनों तथा बाहर के प्रकाशकों की पुस्तकों के प्रचार के लिए एक पुस्तक बिक्री-विभाग खोल रक्खा है, जिसके द्वारा दक्षिण भारत के कोने कोने में हिन्दी पुस्तकें पहुँचाने का प्रयत्न होता रहता है। अब तक करीब ५०० किस्म की पुस्तकों की २०,००,००० प्रतियाँ (रु० १२,००,००० कीमत की) इस विभाग के द्वारा वितरित हुई हैं।

सभा की सारी छपाई का कार्य सभा ही के निजी प्रेस में होता है। यह प्रेस 'हिन्दी-प्रचार प्रेस' कहलाता है। इसमें १० भाषाओं की छपाई का प्रबन्ध है। नागरी की सुन्दर छपाई के लिए प्रेस काफी मशहूर हो गया है। इस प्रेस में कुल ५० लोग काम करते हैं। अब तक इस प्रेस की उन्नति में ६०,००० से अधिक रुपये लग चुके हैं।

सभा की एक अत्यंत उपयोगी तथा परिणाम कारक प्रवृत्ति उसका विद्यालय विभाग है। सभा का केन्द्रीय विद्यालय उसके अहाते में प्रायः चलता है। इसके अलावा बेजवाड़ा, कोयंबत्तूर, अनन्तपुर और दारासुरम में भी एक विद्यालय चलाया गया था। सभा की कर्नाटक शाखा, धारवाड़ में एक विद्यालय और चला रही है। इन विद्यालयों में शिक्षा-प्राप्त सभा के उपाधि-धारियों को मद्रास, बम्बई, मैसूर, तिरुवांकूर और कोचिन की सरकारों ने मान्यता दी है। इन्हीं विद्यालयों में शिक्षित तथा सभा के उपाधिधारी शिक्षक दक्षिण के सभी हाई-स्कूलों में काम कर रहे हैं।

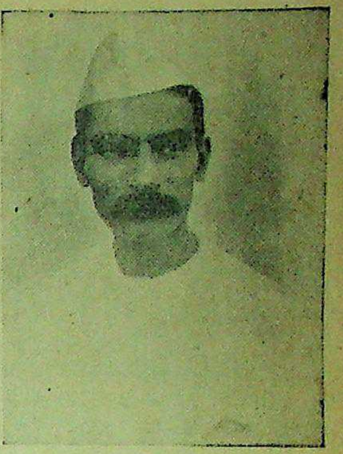

देशरत्न डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने समय समय पर सभा की सहायता की है।

प्रमाणित प्रचारक		कुल प्रचारक
७४	मद्रास शहर व अन्य प्रान्त	१००
४०१	आन्ध्र प्रान्त	४७५
२१५	तमिल प्रान्त	३००
२३८	केरल प्रान्त	३५०
२७२	कर्नाटक प्रान्त	३७५
१२००	कुल	१६००

सभा ने अपने निरन्तर प्रचार तथा आन्दोलन से एक और सफलता प्राप्त की है। वह यह है कि दक्षिण भारत की सभी यूनिवर्सिटियों अर्थात् मद्रास, आन्ध्र, मैसूर और तिरुवांकर ने हिन्दी को स्थान दिया है। इन यूनिवर्सिटियों के इंटर, बी० ए०, एम० ए०, और प्राच्य विद्या उपाधि-परीक्षाओं में भी हिन्दी को स्थान मिला है। मद्रास, मैसूर, बम्बई, तिरुवांकूर और कोचिन सरकारों ने अपने हाईस्कूलों की परीक्षाओं में हिन्दी को स्थान दिया है। इन यूनिवर्सिटियों की तथा सरकार की परीक्षाओं में हिन्दी लेकर प्रतिवर्ष सैकड़ों विद्यार्थी बैठते हैं। हिन्दी पढ़ानेवाली यूनिवर्सिटियों तथा सरकारी महकमों में भी सभा के सहयोग की माँग रहती है।

हिन्दी पढ़ानेवाले हाइस्कूल और कालेज

आन्ध्र	..	१२३
तमिल	..	११८
केरल	..	६०
कर्नाटक	..	१००
मद्रास शहर	..	११
कुल कालेज	..	२५

हिन्दी-प्रचार के लिए केन्द्र कार्यालय ने ही अब तक लगभग १५ लाख रुपये ख़र्च किये हैं। दस वर्ष से अधिक हुए कि उत्तर भारत से प्रचार-कार्य के लिए कोई आर्थिक सहायता प्राप्त करने की सभा ने कोशिश नहीं की। इस वक्त हिन्दी-प्रचार-सभा का वार्षिक ख़र्च क़रीब डेढ़ लाख रुपया है।

यह सारा रुपया किसी न किसी रूप में दक्षिण भारत के हिन्दी-प्रेमी, सभा को

—शेष पृष्ठ १९ पर देखिए

आचार्य काका कालेलकर सभा के प्रमुख सलाहकारों में से एक हैं।

विशेष रूप से 'देशदूत' के लिये लिखित

खादी प्रतिष्ठान-आश्रम क्या है ?

सोदपुर (बंगाल) में खादी की एक महान् संस्था

लेखक, श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी

महात्मा गांधी आजकल सोदपुर खादी प्रतिष्ठान आश्रम (बंगाल) में निवास कर रहे हैं। सोदपुर खादी आश्रम क्या है और ग्रामोद्योग तथा खादी-उद्योग-धंधे के प्रचार प्रसार में उसका कहाँ तक हाथ है, इन सबका आँखों देखा तथा सुन्दर वर्णन इस सामयिक लेख में किया गया है। लेख पठनीय तथा जानकारी से पूर्ण है।

महात्मा गांधी जो आजकल बंगाल और आसाम का अपनी पार्टी के साथ दौरा कर रहे हैं।

खादी प्रतिष्ठान-आश्रम कलकत्ता शहर और स्यालदा स्टेशन से १२ मील की दूरी पर है। स्यालदा स्टेशन से सोदपुर जाने के लिए रेल से भी जाया जा सकता है। रेल-भाड़ा चार आने के लगभग है। मोटर से भी जाने का मार्ग है लेकिन रेल से जाने में सुविधा और आराम ज्यादा है। सोदपुर स्टेशन के पूर्व तरफ़ कुछ दूरी पर खादी प्रतिष्ठान-आश्रम है। आश्रम की ज़मीन लम्बी-चौड़ी है। बहुत से मकान बने हैं कुछ मकान पक्के हैं और कुछ कच्चे। शहराती और देहाती का मिश्रण है। आश्रम की ज़मीन के चारों तरफ़ कँटीले तार लगे हैं। तार के साथ-साथ अँगरेजी मेहँदी के पौधे हैं। आजकल इसी आश्रम में महात्मा गांधी का निवासस्थान बना हुआ है। महात्मा गांधी इसके पहले भी इस आश्रम में ठहर चुके हैं। एक बार वे यहीं बीमार भी हो गये थे। उनके खून का दौरा बढ़ गया था। आश्रम के भीतर दो तालाब भी हैं जहाँ मछलियाँ हरदम खेला करती हैं। आश्रम का कोई आदमी इन मछलियों को मार नहीं सकता है। खजूर और ताड़ के वृक्ष भी लगे हैं। आश्रम के लोगों को ताजे नारियल के फल की गरी खाने को कभी-कभी मिल जाया करती है और उसके ताजे स्वादिष्ठ पानी को पीकर अपना स्वास्थ्य ठीक रखते हैं।

आश्रम के आस-पास और बहुत से मकान हैं। कुछ ग़रीबों के हैं, कुछ मध्यम श्रेणी के कार्यकर्ता बसे हुए हैं। पास ही रेलवे के कई मकान बने हैं। सड़कें पक्की बनी हुई हैं। जगह-बजगह नारियल के बग़ीचों की अधिकता है। आश्रम से आगे कुछ दूरी पर चाय की दूकान भी मिल सकती है। कई जगह भोजन-गृह भी देखने को मिलता है। कलकत्ता से एक पक्की सड़क आई है जो बंगाल के कई प्रसिद्ध स्थानों को पार करती है। उसके किनारे बहुत से अच्छे-अच्छे मकान बने हुए हैं। सड़क पर दिन-रात सैनिक-लारियाँ चला करती हैं। आस-पास कई जगहों पर सैनिक छावनियाँ बनी हुई हैं। रेलगाड़ियों और मोटर की आवाज़ अकसर आश्रम में पहुँचा करती है। आश्रम से स्टेशन तीन-चार मिनट का रास्ता है। यह पूर्वी बंगाल की मुख्य लाइन होने से यहाँ दिन-रात बहुत-सी रेलें चला करती हैं। शहर स्वच्छ है। धनिक और ग़रीब दोनों तरह के लोग यहाँ मिलते हैं। ग़रीब किसानों की टूटी-फूटी झोपड़ियों का दर्शन भी देखने को मिलता है। बहुत से मकान ताड़ के पत्तों से बहुत सुन्दर तरह से छाये हुए मिलेंगे। कुछ मकान धान के पुआल से छाये हुए देखने में आते हैं। अधिक मकान अँगरेजी स्टाइल के खपरैलों के देखने में आते हैं। अधिकतर ग़रीब प्रजा ही यहाँ है। आश्रम में आस-पास की ग़रीब प्रजा आती है। कुछ माँ-बहनें चर्खा कातती हैं। यहाँ चर्खा कातना सिखलाया जाता है। कुछ लड़के-लड़कियाँ कपास धुनना भी सीखती हैं। कुछ लोग कपड़ा भी बुनते हैं। आश्रम में कई चर्खे चलते हैं। आपको यहाँ घानी का शुद्ध सरसों, तिल्ली और अलसी का तेल भी मिल सकता है। यहाँ वर्धा ग्राम उद्योग-संघ की घानी आई हुई है, बैलों के सहारे तेल निकलता है। घानी बहुत हलकी चलती है जिससे तेल ज्यादा निकलता है। कुछ आगे बढ़ने पर हाथ के काग़ज़ का हौद भी देखने में आता है। यहाँ सड़े कपड़ों, रद्दी काग़ज़ के कतरनों, पुआल तथा ताड़ के पत्तों को कास्टिक सोडे की सहायता से गलाकर पल्प तैयार करते हैं। फिर लकड़ी के एक बड़े हौज में पल्प घोलकर टीन या सींक की चटाई पर काग़ज़ का ताव निकालते हैं। फिर उसे दीवाल या तार पर सुखाकर चावल के अंश में फिटकरी मिलाकर काग़ज़ को पालिश करते हैं। लकड़ी और सीमेंट के हौज बने हुए हैं। दोनों प्रकार के काग़ज़ बनाने के हौज दिखाई देते हैं। काग़ज़ का छोटा ताव निकालते हैं और बड़ा ताव भी। काग़ज़ के काम में कई विद्यार्थी लगे हुए रहते हैं। कुछ बच्चे काग़ज़ की घोटाई करके काग़ज़ पर पालिश चढ़ाते हैं जिससे काग़ज़ चमकने लगता है और उस पर क़लम भी तेज़ी से चलता है। यहाँ लिफ़ाफ़ा बनाने का काम भी सिखाया जाता है और काफ़ी संख्या में स्वदेशी और अच्छे लिफ़ाफ़े तैयार होते हैं।

कपड़ा सीने की एक-दो मशीनें भी देखने में आ जाती हैं, जहाँ से रेडी खादी के कुर्ते, कमीज़ें तैयार मिलती हैं। एक छोटा-सा प्रेस भी चलता है। जहाँ से 'राष्ट्रवादी' पत्रिका निकलती है। ज्यादा तादाद में गांधी-साहित्य भी यहीं तैयार किया जाता है। रंग बनाने का प्रयोग भी चलता रहता है। एक छोटी-सी गोशाला भी है। कई गायें पाली गई हैं। गाय का शुद्ध दूध पीने को मिलता है। खादी और ग्राम-उद्योग के नित्य नये प्रयोग करते हुए शतीस बाबू दिखाई पड़ते हैं। गांधी जी के ग्राम-उद्योग और चर्खा-संघ की बहुत-सी प्रवृतियों का थोड़े में यहाँ दर्शन मिल जाता है। यहाँ की तैयार वस्तुएँ आप कलकत्ते के खादी प्रतिष्ठान की दूकानों में ले सकते हैं। खादी प्रतिष्ठान की कई शाखायें कलकत्ते में खोली गई हैं। भण्डार में खादी से लेकर तमाम हाथ की चीज़ें प्राप्त की जा सकती हैं।

सतीश बाबू महात्मा गांधी के प्रमुख शिष्यों में से हैं। बंगाल में आप महात्मा गांधी के पुराने आदमियों में से हैं। बहुत वर्षों से महात्मा जी की प्रवृतियों में काम करते आ रहे हैं। आपका कितने ही लोगों ने विरोध किया फिर भी अपने काम से टस से मस नहीं हुए।

श्री सतीशचन्द्रदास गुप्त स्वर्गीय सर प्रफुल्लचन्द्र राय के पक्के शिष्यों में से हैं। आचार्य राय की आप पर बड़ी कृपा थी। सतीश बाबू भी एक अच्छे रसायन शास्त्री हैं। पहले आप आचार्य राय के साथ 'बंगाल केमिकल वर्क्स' में काम करते थे। 'बंगाल केमिकल' को आगे बढ़ाने में आपका कम सहयोग नहीं था। यदि अब तक बंगाल केमिकल में काम करते होते तो बहुत रुपया कमा लिया होता। लेकिन आप आचार्य राय से हमेशा चर्चा किया करते थे। ग़रीबों की सच्ची सेवा जिस काम से होती हो वही काम मैं करना चाहता हूँ। इस विषय पर आपकी और आचार्य राय की बहुत चर्चा हुआ करती थी। इसी बीच महात्मा गांधी का सन्देश आपके कानों में पड़ा। आपने 'बंगाल केमिकल' में काम छोड़ दिया और महात्मा गांधी के मिशन में लग गये। सन् १९२१ ई० से आप खादी का काम करते आ रहे हैं। बंगाल के देहातों में खादी का अच्छा काम किया तथा गरीबों को बहुत मदद पहुँचाई है। आप ने खादी के कई केन्द्र खोल दिये हैं। आजकल आप गांधी जी के सभी रचनात्मक फर्मों को बंगाल में सँभाले हुए हैं। आप बँगला, अँगरेजी, संस्कृत और हिन्दी के अच्छे विद्वान् हैं। अँगरेजी और बँगला में आपने कई पुस्तकें गांधी जी के सम्बन्ध में लिखी हैं। गांधी जी की 'आत्म-कथा' का बँगला अनुवाद आपने ही किया है। गांधी जी के और कई ग्रंथों का अनुवाद भी किया है। आपका अध्ययन बहुत गहरा है। दिन भर किसी न किसी काम में लगे रहते हैं। 'होम डाक्टरी' नामक एक बहुत शोध-सम्बन्धी अँगरेजी में किताबें लिखी हैं। महात्मा गांधी ने प्रस्तावना लिखते हुए—लिखा है—"इसके पढ़ने से एक मामूली कार्यकर्ता भी अपने यहाँ का डाक्टर बन सकता है। हर एक देहाती कार्यकर्ता को यह किताब पढ़ लेनी चाहिए। मूल पुस्तक अँगरेजी में लिखी गई है। अभी हाल ही में आप ने वैज्ञानिक ढंग से गायों पर एक बड़ी किताब लिखी है। यह पुस्तक भी महत्त्व की होगी। जेल में आपने साहित्य का अच्छा अध्ययन किया और लिखा है।

आप राजनैतिक कामों में सक्रिय भाग नहीं लेते। यदि राजनैतिक कामों में सक्रिय भाग लेते रहते तो आज बंगाल के अच्छे नेताओं में आपकी गणना हो जाती लेकिन आपका सच्चा विश्वास महात्मा गांधी के रचनात्मक प्रवृतियों की तरफ लगा हुआ है। इसके मानी यह नहीं है कि जब कोई राजनैतिक युद्ध होता है तब आप जेल न जाते हों? आप तमाम राजनैतिक लड़ाइयों में कारावास काट आये हैं। १९४२ में बंगाल सरकार जब बंगाल के कुछ जिलों और गाँवों में से किसानों को अपने गाँव और खेत से एकदम हाथ धो लेने के लिए मजबूर कर रही थी और बहुत जगहों पर उसने अत्याचार करके लोगों को अपनी पुश्तैनी जगहों से चले जाने के लिए मजबूर किया था तब आपने सबसे पहले बंगाल में सरकार का विरोध किया और वहाँ की जनता को सावधान किया। मरते दम तक अहिंसक प्रतिरोध जारी रक्खो। अपने घरों को मत खाली करो। कई जगहों पर आपने किसानों को जागृत किया। सरकार ने आपकी इस कार्यवाहियों को एकदम खतरनाक समझा। और फौरन गिरफ़्तार करने का हुक्म निकाल दिया। आप गिरफ़्तार कर लिये गये आप पर मुकदमा चला। आपने अदालत में भी सरकारी अत्याचारों का भण्डाफोड़ किया। सरकार ने आपको दो साल की सजा दे दी।

आपकी पत्नी और बच्चे भी इन्हीं रचनात्मक प्रवृतियों में लगे हुए हैं। किसी लड़के ने सरकारी या और कामों में लगना पसन्द नहीं किया। सारा परिवार

सोदपुर खादी आश्रम में गांधी जी
में शामिल होने जा रहे हैं।

गांधीवादी प्रयोग में आज लगा हुआ आपकी सारी संस्थायें स्वावलम्बी आप अपने बूते पर सब काम चला लेकिन बीच में महात्मा जी ने सहायता रचनात्मक कामों के लि है। आप कुछ बहुत सादे ढंग से जीवन व्यतीत करते हैं। घुटने तक पहनते हैं, नंगे बदन रहते हैं। सिर से हमेशा साफ़ रहता है बंगाल के लोग आपको सादगी की एक आदर्श मानते हैं। बंगाल में आपके कई अब बन गये हैं। आपके काम से प्रभावित हैं। गांधी जी की आप पर कृपा रहती है। बँगला में गांधी- आप प्रेरक हैं। गांधी जी के 'हरिजन' का अनुवाद आप बंगला वाणी' में करते हैं। गांधी जी में आपकी अगाध श्रद्धा है।

सेवाग्राम (वर्धा) १०

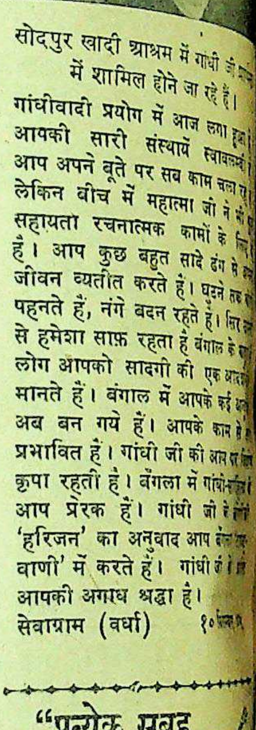

"प्रत्येक सुबह का पहला काम"

यदि आप किसी काम में का अनुभव करते हैं तो दिन गिलास निर्मल इनोज़ "फ्रूट सा लीजिए। इनो रक्त को शीतल करता है, शरीर को स्फूर्ति देकर शक्ति व पोषण प्रदान करता है।

इनोज़ "फ्रूट साल्ट"

इनो व "फ्रूट साल्ट" शब्द ट्रेड मार्क है।

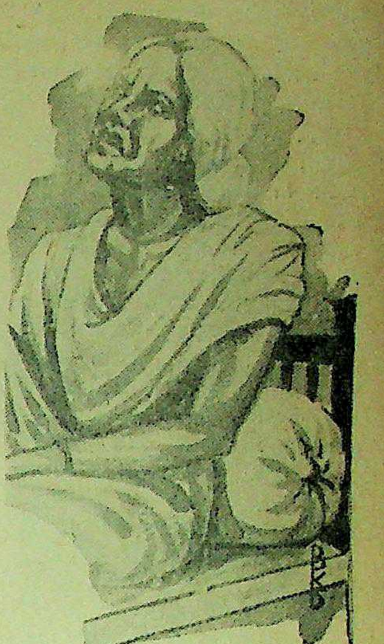

कुली का बलिदान

लेखिका, श्रीमती निर्मला ब्रह्मदत्त दयाल

दक्षिण आफ़्रिका में भारतीयों के साथ कैसा व्यवहार होता है? वर्ण-विद्वेष की भावना किस सीमा तक वहाँ के श्वेतांगों में प्रबल रूप ग्रहण कर चुकी है, इसके उदाहरण समय-समय पर मिलते रहते हैं। इस कहानी में भी वर्ण-विद्वेष के शिकार होनेवाले एक भारतीय कुली का हृदयद्रावक वर्णन किया गया है। कहानी-लेखिका श्रीमती निर्मला ब्रह्मदत्त दयाल, प्रवासी भारतीयों की समस्या के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता स्वामी भवानी दयाल संन्यासी की पुत्रवधू हैं, जो इस समय अपने पति के साथ डरबन (अफ़्रिका) गई हैं।

आवेगा मेरा लाल? आज तो देर कर दी," गंगा अपने ध्यान में एकाएक बोल उठी। की मनोरम बेला थी। अंशुमाली में अस्त हो चुके थे। आकाश में तारे उगने लगे थे। पवन गति से बह रहा था। प्रकृति की छटा को उद्वेलित कर रही थी। उपवन के हरे हो रहे थे। नवपल्लव विहँस रहे थे; विकसित होकर नेत्ररंजन कर रही दिन भर के काम-काज से निपटकर विश्राम और शयन की तैयारी कर पर गंगा के चित्त में चैन कहाँ? अफ्रिका के प्रसिद्ध नगर डरबन मील के फासले पर जेकब्स की की तराई में अपनी झोपड़ी के प्रकाश में बैठी हुई अपने जीवन सहारे गुलाबचन्द की राह देख गंगा को रह-रहकर वे दिन याद जब वह अपने प्राणेश्वर की में सुख और चैन की वंशी बजाती जीवन का प्रतिपल मोद-विनोद थी। उसके पति श्यामलाल एक सच्चरित्र और सहृदय व्यक्ति थे। सी सतीसाध्वी को पत्नी के रूप निहाल हो गये थे। इस आदर्श प्रशंसा करते लोग अघाते नहीं की ऊँची पहाड़ी पर श्यामलाल बँगला था जिसकी बनावट मुग्ध हो जाते थे। बँगले के फुलवारी सुशोभित थी। घर से परिपूर्ण था, नौकर-चाकर नाचते थे और मेहमानों की लगी रहती थी।

की विडम्बना-भाग्य का फेर? अचानक श्यामलाल बीमार पड़े की गति अवरुद्ध हो जाने के लोक से चल बसे। गंगा के पैर मानो धरती खिसक गई। उसके मानो आकाश टूट पड़ा। अबोध गुलाबचंद अनाथ होकर चिल्ला रोते-रोते अधमरा-सा हो गया। गये, अपने साथ ही सुख- गये। वे अपने कारबार में हो गये थे, अतएव मौका उनकी जायदाद पर वैसे जैसे मरे ढोर पर गिद्धों का बिक गया, सम्पत्ति स्वाहा हो की पहाड़ी की तराई में भाड़े झोपड़ी में रहने को मजबूर होना भले दिन में रिश्तेदारों और गंगा के नाकोंदम आ जाता था उनके दर्शन भी दुर्लभ हो रहे थे। गंगा की विचित्र अवस्था उसका हृदय एक अज्ञात से प्रकम्पित हो रहा था। स्वाभाविक गति से चला था, पर गुलाब का कोई पता गंगा के लिए एक-एक क्षण युग हो रहा था। ज्यों-ज्यों समय था त्यों-त्यों उसकी व्याकुलता जाती थी। ब्लफ की पहाड़ी सेना की छावनी थी, वहाँ से की घंटी बजी। गंगा ने देखा कि समीप हो उसके प्यारे गुलाब का हुआ है, जो अभी तक गरम नहीं होने पाया है। फिर दरवाज़े उसकी टकटकी बँध गई। ग्यारह सुनाई पड़ी, पर गुलाब की पद- नहीं गंगा की देखते पथरा निराशा में लगी आशंका जानता जीर्ण-शीर्ण अकेली है, गोरों प्रकार के उपद्रव होते रहते हैं। इसलिए वह डरबन शहर में दिन भर नौकरी करके शाम को छः बजे पहली गाड़ी से घर भागता है। उसको माँ की चिन्ता लगी रहती है। माँ के सिवाय और उसका है भी कौन? जब वह चार साल का अबोध बालक था तभी उसके पिता, जिनकी उसे धुंधली-सी याद है उसे माता की गोद में छोड़ गये थे। माता ने ही तरह-तरह की तकलीफ़ें झेलकर उसे लाड़-प्यार से पाला था और पिता का बिछोह अखरने नहीं दिया था। अब वयस्क होने पर गुलाबचंद ऐसी ममतामयी माता की कैसे उपेक्षा कर सकता था?

आज गंगा के हृदय में अतीत की स्मृतियाँ उथल-पुथल मचा रही थीं। उसे वह बात याद आई जो उसके प्रीतम ने उससे अन्तिम बिदा लेते समय कही थी--"गंगा, मैं तो अब चला। मेरी आशा छोड़ दो। मुझे पूरा विश्वास है कि गुलाब को योग्य बनाने में तुम कोई बात उठा नहीं रखोगी।" गंगा उनके वक्षस्थल पर झुकी हुई आँखों से जल-धारा बहा रही थी। श्यामलाल की बात सुनकर वह मानो स्वप्न से जाग उठी। आसन्न विपत्ति की सम्भावना से उसका हृदय करुणा से भर आया उसने सजल नयन से बड़े ही वेदनापूर्ण स्वर में पूछा था, "मुझे किसके सहारे छोड़े जा रहे हो?"

"गंगा! तुम्हें एकमात्र भगवान् के सहारे, उन पर भरोसा रखो। वही हैं अनाथों के नाथ और दुखियों के त्राता, वही तुम्हारा बेड़ा पार लगावेंगे। गुलाब हमारा अनमोल निधि है, इसकी सूम की सम्पत्ति की भाँति रक्षा करना," कहते हुए श्यामलाल की हिचकी बँध गई और उनके प्राण-पखेरू उड़ गये।

भाग्य के विधान के सामने गंगा ने सिर झुका दिया। उसका खिला हुआ यौवन मुरझा गया; सोहाग में आग लग गई, वरदान का सेंदुर अभिशाप की रेखा बन गई। उसके सुख के दिन बीत गये, आकांक्षाएँ अतृप्त रह गईं, आशायें धूल में मिल गईं। पर गंगा ने अपने मर्माघात को ऐसा छिपा रखा कि गुलाब को उसका आभास भी न मिलने पाया।

कभी-कभी गंगा के हृदय में व्यथा का वेग ऐसा उमड़ आता कि गुलाब के सामने बेबस आँसू निकल पड़ते। तब गुलाब अपनी बालसुलभ तोतली बोली में पूछता, "माँ, टुम लोटी क्यों हो? पिटा जी कहाँ तले गये?" इस पर गंगा की आँखों में करुणा और दीनता मूर्तमती हो उठती। हार्दिक भाव को छिपाने का निष्फल प्रयत्न करते हुए बच्चे को समझाती, "तुम्हारे पिता उस लोक को चले गये, जहाँ से लौटकर कोई नहीं आता, मुन्ना।" और उस भोले बच्चे का मुँह चूम लेती, उसे हृदय में लगाकर प्यार करने लगती, गुलाब भी दुलार से माँ के आँचल में छिप जाता।

दिन टिकते नहीं--किसी तरह कट ही जाते हैं। कितनी निशायें आईं और गंगा एवं गुलाब को निद्रा की गोद में खेलाकर उषा की लाली में लुप्त हो गईं। कितने पतझड़ और वसन्त आये और अपने रंग दिखाकर चले गये। गंगा भी भाग्य की ठोकरें खाती अप्रतिभ हो उठती, किन्तु वह अपने कर्तव्य से कभी विचलित न हुई। अपने पति का अन्तिम आदेश उसे कर्तव्य-पथ में आगे बढ़ाता रहा।

पर कब तक योंही चलता रहता? उसके पास जो कुछ जमा-पूँजी थी, वह समाप्त हो चली। अब फाका करने की नौबत आ गई। गुलाब अठारह साल का युवक हो चुका था। उसने अँगरेजी की प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर ली थी। हिन्दी का भी अच्छा अभ्यास कर लिया था माता की हालत उससे छिपी नहीं रही। उसने पढ़ना छोड़कर डरबन में सेन्ट्रल फ़र्नीचर फ़ैक्टरी में नौकरी कर ली; जेकब्ज़ से डरबन जाने और वहाँ से आने के लिए रेलगाड़ी का मासिक टिकट कटा लिया। सवेरे छः बजे की गाड़ी से काम पर जाता और शाम को छः बजे की गाड़ी से घर लौट आता। इस क्रम में कभी कोई अन्तर नहीं आता था। वेतन इतना कम मिलता कि किसी तरह माँ-बेटे का निर्वाह हो जाता।

गंगा का रूप-लावण्य कामुक श्वेतांगों की दृष्टि से ओझल न रह सका। वे गंगा को फँसाने और उसका सतीत्व नष्ट करने का प्रयत्न किया करते, पर गंगा के सामने उनकी दाल नहीं गलने पाती थी। इस पर वे क्रोधोन्मत्त होकर कोई न कोई उपद्रव मचाया करते। एक समीपवर्ती श्वेतांग गंगा के तिरस्कार की ठोकर खाकर गरज पड़ा, "टुम कुली औरट। इटना गंडा। बडन पर एक सारी, वह भी फटी और पेबंडों से भरी। इस पर भी टुम मेरी बाट नेई सुनटा। शेखी डिखाटा है।" बेचारी गंगा मन मसोस कर रह गई। क्या निर्धनता के कारण उसके सतीत्व का कोई मूल्य ही नहीं। सभ्यता की शेखी बघारनेवाले ये श्वेतांग वास्तव में शैतान नहीं तो और क्या हैं? इन श्वेतांगों ने हबशी स्त्रियों से व्यभिचार कर दक्षिण अफ़्रिका में एक नई वर्णसंकरी कौम की सृष्टि कर डाली है जिनकी संख्या दस लाख तक पहुँच चुकी है। यह क़ौम 'कलर्ड' कहलाती है और संसार को श्वेतांगों के सदाचार और सभ्यता का नमूना दिखलाती है।

श्वेतांगों की शैतानी से गुलाब परिचित था, इसलिए वह शहर में कभी देर न करता। शाम को छः बजे की गाड़ी से अवश्य घर आ जाता। पर आज अर्द्धरात्रि तक गुलाब नहीं आया। गंगा वैसे ही तड़प रही थी जैसे जल बिना मछली। उसका शरीर शिथिल हो रहा था। कलेजा काँप रहा था। अचानक किसी ने दरवाज़ा खटखटाया, गंगा खुशी से उछल पड़ी। पर किवाड़ खोलने पर गुलाब की जगह एक अज्ञात व्यक्ति को खड़ा पाया। आगन्तुक ने पूछा, "क्या यही गुलाब का घर है और तुम्हीं गुलाब की माँ हो?" अनुकूल उत्तर पाकर उसने कहा, "गुलाब को गहरी चोट आई है, वह खंगेला-अस्पताल में पड़ा है।" गंगा पर तो मानो वज्र फाट पड़ा, वह अवाक् रह गई। कुछ पूछने भी नहीं पाई कि आगन्तुक वहाँ से चला गया।

अब वह क्या करे? अर्द्धरात्रि बीत चुकी है। तिमिराछन्न रजनी भादों की कुहू--यामिनी को मात कर रही है। ग्यारह बजे की अन्तिम रेलगाड़ी और 'बस' भी जा चुकी है। अब तो खंगेला जाने का और कोई साधन नहीं रहा। पैदल जाती है तो मार्ग में पियक्कड़ हबशी और कामान्ध-श्वेतांगों का ख़तरा है। यदि किसी तरह वहाँ पहुँच भी जावे तो रात्रि के समय उसे

'कब आवेगा मेरा लाल' गंगा ध्यान में डूबी एकाएक बोल उठी।

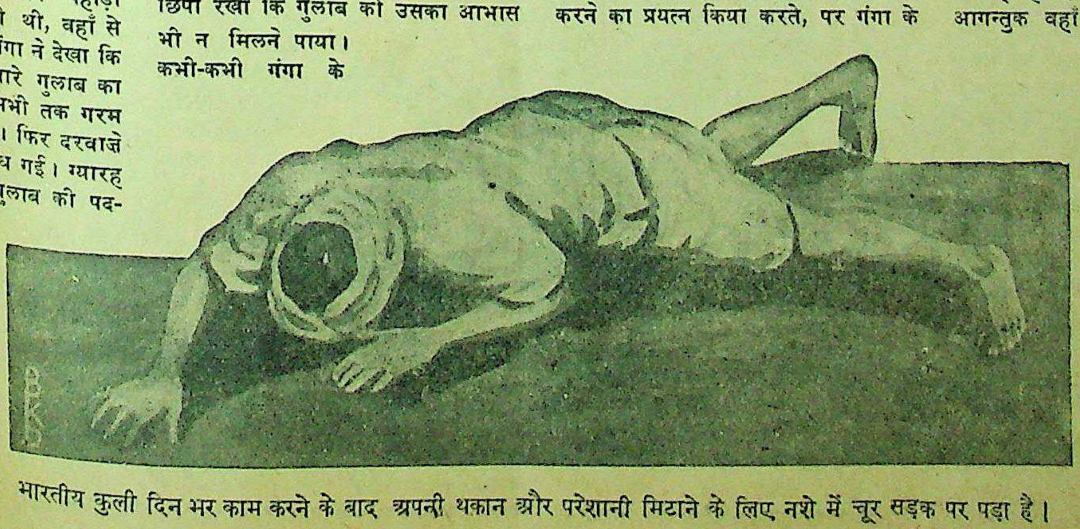

भारतीय कुली दिन भर काम करने के बाद अपनी थकान और परेशानी मिटाने के लिए नशे में चूर सड़क पर पड़ा है।

अस्पताल में प्रवेश भी कौन करने देगा? इसलिए सबेरे ही घर से निकलना उसे उचित जँचा। वह विवश होकर खाट पर गिर पड़ी। नींद कहाँ? रोते-रोते आँखें सूज गईं।

सबेरे चार बजे उठ बैठी। देह में दम नहीं रहा, दर्द भी हो रहा था। पाँव उठाये न उठते थे। आँखें ऐसी सूज गई थीं कि रास्ता नहीं सूझता था। किसी तरह वह जेकब्स स्टेशन पर पहुँच गई। पूछने पर पता चला कि अभी तो पाँच बजे हैं। गाड़ी में घंटा भर देर है। उसके सिर में चक्कर आ रहा था, इसलिए घड़ी भर खड़ी-खड़ी बितानी उसके लिए कठिन हो गया। बाहर दो-चार बेंच पड़े थे, पर उन पर बड़े अक्षरों में लिखा था—'For Europeans Only' 'अर्थात् "सिर्फ़ श्वेताङ्गों के लिए" दुःख, ग्लानि और निर्बलता के कारण उसे ऐसा भासित हुआ कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ेगी। इसलिए धुंधले प्रकाश में समीप ही एक बेंच दिखाई पड़ा, उसी पर गङ्गा अपने हृदय का भार लिए बैठ गई।

अभी वह स्थिर भी न होने पाई थी कि रेलवे का एक गोरा कर्मचारी चहल-कदमी करते उसके पास पहुँच कर पूछ बैठा, "What is your nationality? Aren't you a coolie woman?" अर्थात् 'तुम्हारी क़ौमियत क्या है? क्या तुम एक कुली औरत नहीं हो?" बेचारी गङ्गा घबड़ा उठी। अभी वह कुछ बोलने भी नहीं पाई थी कि गोरे ने कड़क कर कहा, "क्या तुम्हें दिखाई नहीं देता कि यह बेंच श्वेताङ्गों के लिए है—तुम कुली-कबाड़ियों के लिए नहीं है। तुम्हारी ऐसी हिम्मत? इस बार तुम्हें छोड़े देता हूँ। फिर कभी ऐसी ढिठाई न करना, अन्यथा पुलिस थाने की हवा खानी पड़ेगी।" गङ्गा भी आखिर इंसान और भारत की सन्तान थी। गोरे की कटूक्ति उसे शूल की तरह चुभ गई। हाय? आज दक्षिण अफ्रिका में हमारी यह दशा? हमारे बैठने से बेंच तक अशुद्ध हो जाता है? राम और कृष्ण के वंशज, की यह बेइज्ज़ती? यदि भारत स्वतन्त्र होता तो क्या हम कुली-कबाड़ी बनकर यहाँ आते और इस तरह अपमान की ठोकरें खाते। हिन्दुस्तान की विदेशी सरकार ने हमें नेटाल के गोरे प्लान्टरों की गुलामी करने के लिए यहाँ भेजा अन्यथा हम यहाँ आते ही क्यों?

इस राष्ट्रीय अपमान से गङ्गा ऐसी मर्माहत हो उठी कि कुछ क्षण के लिए अपने प्यारे गुलाब को भूल-सी गई। जब सिगनल गिरा, इंजन की सीटी सुनाई दी, तब उसका ध्यान टूटा। गाड़ी आ पहुँची गोरों के डब्बे आगे निकल गये। उनमें तो कोई भारतीय प्रवेश ही नहीं कर सकता, उनके लिए तो अलग रिजर्व डब्बे हैं, जिनमें हब्शियों के साथ उनको यात्रा करनी पड़ती है। दक्षिण अफ्रिका में हब्शी और भारतीय एक ही श्रेणी के मनुष्य समझे जाते हैं। गंगा भीड़ में धक्के खाती हुई एक रिजर्व डब्बे में घुस गई। वह डब्बा हब्शियों से भरा था। दो-चार हिन्दुस्तानी मजदूर भी बैठे थे। एक हब्शी के पास जगह खाली देख गंगा वहाँ जा बैठी। हब्शियों की देह से ऐसी दुर्गन्ध निकल रही थी कि गंगा की नाक फटने लगी। उनमें कुछ शराब के नशे में चूर अंट-संट बक रहे थे। उस वातावरण में गंगा का दम घुटने लगा और वह मूर्छित होकर गिरना ही चाहती थी कि खंगेला स्टेशन आ गया। वह झटपट उतरकर अस्पताल की ओर अग्रसर हुई।

गंगा को अस्पताल के अहाते में प्रविष्ट होते देर न लगी। उसका दिल धड़कने लगा—आँखों में गंगा की धार फूट पड़ी। कैसा होगा, मेरा लाल? उसे कैसे और कितनी चोट आई है? पूछने पर अस्पताल के अर्दली ने कहा कि अभी 'मुलाकात के समय' में बहुत देर है। गंगा का धैर्य टूट गया, ऐसी विपदा उस पर कभी नहीं पड़ी थी। एक-एक क्षण युगवत मालूम होने लगे। समय काटे नहीं कटता था। हृदय गुलाब की ओर और आँखें घंटी की ओर लगी थीं। बड़ी प्रतीक्षा के बाद घंटी बजी, गंगा अन्दर गई। नर्स से उसने पूछा कि "गुलाब नामक नवयुवक आहत होकर कल किसी समय यहाँ दाखिल हुआ है, उसे मैं देखना चाहती हूं। मैं उसकी माँ हूँ।" दयावती नर्स के अन्तःकरण में करुणा का संचार हो आया। गंगा की दयनीय दशा पर उसे बड़ा तरस आया। गंगा को ढाढ़स बँधाते हुए उसने उँगली से कमरे की ओर संकेत किया।

गंगा झपट कर कमरे में पहुँची। माँ ने बेटे को देखा और बेटे ने माँ को। माँ ने अपने दोनों हाथ फैला दिये, बेटा माँ से चिपट गया। कुछ देर दोनों मौन रहे। आख़िर गुलाब ने ही अपने को सँभाला। उसने अपनी गाथा माँ को सुनाना शुरू किया, माँ, मैं रंगद्वेष का शिकार हो गया। मैं एक गोरे के यहाँ फ़ैक्टरी से कुछ फ़र्नीचर पहुँचाने गया था। लारी से माल उतार कर मैंने गृह-स्वामिनी के आदेशानुसार यथा-स्थान रख दिया—केवल एक कुर्सी बाहर रह गई थी। उसे भी अन्दर पहुँचाकर मैं रसीद ले लेना चाहता था। इसी बीच उस घर का एक उद्दण्ड गोरा युवक बिगड़ कर बोला, 'ओ कुली? जल्दी कुर्सी ला दे हमें बाहर जाने में देर हो रही है, यह अपमान मुझसे सहा न गया और मैंने उससे कहा कि जबान सँभाल कर बोलो। बस, उसने मेरे मुंह पर एक घूँसा जमा ही तो दिया। मैंने भी जवाब में उसके मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया। अब क्या था? उस घर के सभी औरत-मर्द पागल हो गये। किसी ने लाठी उठाई और किसी ने लोहे की छड़ और मुझ पर निर्दयतापूर्वक लगे प्रहार करने। मेरा सिर फट गया, हड्डियाँ टूट गईं। मैं बेहोश हो गया। जब होश आया तो अपने को यहाँ अस्पताल में पाया।"

गंगा की छाती फट गई। व्यथा से उसकी वाणी मूक हो गई। उसके मन में तूफ़ान चल रहा था। वह सोच रही थी कि क्या हिन्दुस्तानी मनुष्य नहीं हैं, फिर मनुष्य के प्रति मनुष्य का यह पैशाचिक व्यवहार। हमारी चमड़ी सफ़ेद नहीं है, इसलिए हम अपमान के पात्र हैं। भगवान् ने हमें किस पाप के कारण भारतीय बनाया? यदि बनाया ही तो कुली बनाकर नेटाल में क्यों भेजवाया? भगवान्! मेरे लालको किसी तरह बचा दो अन्यथा मेरा तो सर्वनाश निश्चित है। यही मेरी वर्षों की संचित अनमोल निधि है, इसकी रक्षा कर मुझे प्राणदान दो, मेरे नाथ। इस अभागिनी अबला का इसके सिवा और कोई सहारा नहीं है।

उसी समय डाक्टर और नर्स ने कमरे में प्रवेश किया। गंगा को डाक्टर ने एकान्त में बुलाकर कहा, "इसकी हालत बहुत नाज़ुक है। अभी एक्स-रे करवाने ले जाना है, उससे सच्ची स्थिति का पता लग जायगा। तुम कुछ देर ठहरो, वहाँ से लौटने पर फिर मिल लेना।" गंगा की वाणी में बल रहा नहीं, वह डाक्टर के पैरों पर गिर पड़ी मानो मूक भाषा में कह रही है कि इसको बचा लोगे तो मैं जन्म भर तुम्हारी ऋणी रहूँगी। नर्स ने समझा-बुझाकर उससे डाक्टर के पैर छुड़ाये।

गंगा अचेतन अवस्था में अस्पताल के अहाते में बैठी रही। प्रतीक्षा की घड़ी बड़ी दुखदाई होती है। आख़िर गुलाब एक्स-रे कराकर स्ट्रेचर पर लौटा—गंगा दौड़ पड़ी। नर्स से मालूम हुआ कि गुलाब के अन्दर की कुछ हड्डियाँ टूट गईं और पेट की नसें भी अस्त-व्यस्त हो गई हैं। इसलिए उसका आपरेशन आवश्यक है। कल सबेरे दस बजे डाक्टर ने आपरेशन करने का निश्चय किया है।

गङ्गा के काटो तो लोहू नहीं। आपरेशन का नाम सुनते ही एक अज्ञात भय से वह काँप उठी। क्या होगा इसका नतीजा? ईश्वर, मैं बहुत दुःख भोग चुकी, अब और विपत्ति में मुझे मत डालो। क्या तुम इतने निठुर हो गये? मेरे प्राण के आधार-जीवन का एकमात्र सहारा गुलाब को मुझसे मत छीन लेना। तुम बड़े दयालु हो, मुझ पर दया करो। मेरे लाल को बचा लो।

गंगा वहाँ से हटना नहीं चाहती थी, पर अस्पताल के नियमानुसार उसे पत्थर की छाती बनाकर घर लौटना पड़ा, वह रात्रि उसके लिए काल-रात्रि बन गई। भगवान्-भगवान् रटते बिहान हुआ। गुलाब ही उसका सर्वस्व था उसकी रक्षा के लिए नाना प्रकार की मनौती करती रही गुलाब के लिए वह क्या नहीं कर सकती थी? उसके पास था ही क्या? बस, टूटी-फूटी भाड़े की झोपड़ी और जीर्ण-शीर्ण काया। यदि उसके पास दुनिया की दौलत होती तो उसे भी वह गुलाब के लिए निछावर करने में नहीं हिचकती। यदि उसके रक्त के अन्तिम बूंद से गुलाब की रक्षा हो तो उसके लिए भी वह प्रस्तुत थी।

रात की खुमारी से गंगा की चढ़ी हुई थीं। उसने हाथ-मुंह धोकर की भाँति चाय बनाई और ज्यों ही की प्याली उठाकर मुंह के पास त्यों ही हाथ कांप जाने से प्याली चूर-चूर हो गई। इस अपशकुन से एकबारगी सिहर उठी। उसका हृदय एकदम सूना हो गया, जैसे मौत की उसे स्तब्ध कर दिया हो।

जब कुछ चैतन्यता आई तो बची-खुची चाय पीकर उसने सन्तोष एक राहगीर से पूछने पर मालूम हुआ नौ बज गये। स्टेशन तक गोड़े-गोड़े साढ़े नौ की रेलगाड़ी तो छूट दूसरी गाड़ी है साढ़े दस बजे। पर गंगा शीघ्र अस्पताल पहुंचना चाहती थी। 'बस' मिलने की आशा थी। इसलिए घर से दौड़ती हुई 'बस'-स्टेशन पर गई।

क़रीब पन्द्रह मिनट पर 'बस' हिन्दुस्तानी और हब्शियों के लिए बैठकें खाली थीं। गंगा ने ज्यों ही बढ़ाया, त्यों ही कन्डेक्टर आ पहुंचा बोला, "इसमें कुलियों के लिए जगह है, दूसरी 'बस' के लिए इन्तज़ार गोरे का हुक्म, जिसको टालना एक मोल लेना था। गंगा पीछे हट गई। घड़ी के बाद दूसरी 'बस' आई। श्वेतांग यात्री नहीं था, इसलिए बार-बार इशारा करने पर भी नहीं हुई चलती बनी। उस समय हृदय में जो व्यथा हो रही थी से बाहर है। एक तरफ़ उसका बच्चा मरण के अधर में लटक रहा है और ओर श्वेतांगों की यह हृदयहीनता तीयों के प्रति यह उपेक्षा? क्या महिला के साथ ऐसा दुर्व्यवहार साहस कर सकता है?

गंगा के धीरज का बाँध वह तड़प उठी। मैं कुली-कबाड़ी अपने गुलाब के पास समय पर सकती। हा ईश्वर, मेरा गुलाब होगा। आपरेशन से पहले उसके की भी आशा नहीं रही। उसकी काली आँखों से सरिता बह रही वह उन्मत्त की भाँति सिर धुन ठीक उसी समय तीसरी 'बस' आ

—शेष पृष्ठ १४ पर

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयाँ—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

सभी विक्रेताओं के यहाँ मिलती हैं:—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

ईंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

संवाददाताओं के पत्र

फ़तेहपुर कांग्रेस दफ़्तर के मैदान में विराट् सार्वजनिक सभा जिले के कांग्रेस नेता श्रीदयाशङ्कुर मिश्र, मंत्री जिला कांग्रेस कमेटी की ता में हुई। गुजरात प्रान्त के प्रसिद्ध कार्यकर्ता श्री स्वामी माधवराम '' और श्री नवलकिशोर वकील 'सूर्य'' जी के प्रभावशाली भाषण हुए। जी ने सन् ४२ के आन्दोलन का बताया और शेष दोनों वक्ताओं की वर्तमान दशा पर प्रकाश डालते मंत्री के हाल के वक्तव्य पर प्रकाश अन्त में ''सूर्य'' जी ने ''भारतीय-के प्रति'' और ''आज़ाद हिन्द-सेना '' शीर्षक अपनी दो ओजस्वी सुनाई।

से अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी लड़ना निश्चय किया है—जिले नेतागण जिले का तूफ़ानी दौरा कोने में सभायें करके कांग्रेस आज़ादी का सन्देश पहुँचा रहे हैं। म्बर को ग्राम घनश्यामपुर--भटहा २४ दिसम्बर को ग्राम शाखा में व ग़ाज़ीपुर तहसीलों) में सार्व-सभायें होने जा रही हैं। सभाओं प्रमुख कांग्रेस नेता श्री वंशगोपाल सदस्य अखिल भारतीय कांग्रेस जिले के नवयुवक कांग्रेस नेता दयाशङ्कुर मिश्र, "सूर्य" दुरसिंह कप्तान जिला कांग्रेस दल, श्री गौरीशङ्कुर कक्कड़ पधारेंगे। --संवाददाता

* *

में अखिल भारतवर्षीय पशु-न का प्रथम अधिवेशन दिसम्बर १९४५ को श्रीमान् भरतपुर की अध्यक्षता में । उद्घाटन श्रीमती जानकीदेवी क्षा गोसेवा-संघ वर्धा के कर-होगा। इस कार्य के लिए श्रीमती ० २३ दिसम्बर को अपने पुत्र राधाकृष्ण बजाज, गोसेवा-संघ के ऋषभदास जी रांका तथा कार्यालय लक्ष्मणसिंह यादव के साथ हैं। स्वागत-समिति ने सम्मेलन श्रीमान् महाराजा साहब भरत-उद्घाटनकर्ता श्रीमती जानकी-का आगरा के मुख्य-मुख्य में विशाल जुलूस निकालने की की है। —अचलसिंह

* *

(ग्वालियर) राज्य के प्रसिद्ध पंडित पन्नालाल दुबे की ६० पत्नी माता रमाबाई ग्वालियर धारासभाओं की एकमात्र महिला थीं, आप परगना करैरा, जिला के ग्रामीण क्षेत्र से खड़ी हुई थीं, अपने विरोधी दो वकील को हराकर विजय प्राप्त की, देने के लिए दिनारा तथा आस-गांवों के पुरुषों तथा स्त्रियों की अलग-विशाल जन-सभायें हुईं। उपस्थित १,००० थी। स्त्रियों की सभा में माता रमाबाई ने कहा कि यह नहीं किन्तु जनता की एवं जन-है। उन्होंने स्त्रियों से जन-सेवा के आने की अपील की और कहा कि की अधिकारहीन धारा-सभाओं वृद्धा के लिए भी पर्याप्त कार्य हमारा वास्तविक कार्यक्षेत्र तो बीच हैं, हमारा समाज ग़रीबी, और उत्पीड़न से दुखी है, हमें उन्हें के लिए ही प्रयत्नशील रहना है।

—संवाददाता

* *

सहारनपुर की हिन्दी की प्रसिद्ध कहानी लेखिका श्रीमती चन्द्रवती ऋषभसैन जैन की ज्येष्ठ पुत्री कुमारी शारदा जैन का ८ नवम्बर को प्रातःकाल देहान्त हो गया। उनकी उम्र १७ साल की थी। वे अपनी ५-६ कहानियाँ ३-४ लेख और मधुर स्मृतियाँ धरोहर के रूप में छोड़ गई हैं। उनकी कहानियों में भारतीय कन्याओं पर होनेवाले अत्याचारों के विरुद्ध उग्र प्रतिवाद की हुंकार है, पर यह हुंकार प्रचार का अंश न होकर कला के स्पर्शों से इतनी रंजित है कि जो अभी बहुत दिनों तक चाव से पढ़ी जायेंगी, हिन्दी के अनेक लेखकों के आतिथ्य का सौभाग्य उन्हें मिला था। अपने निजी ख़र्च में से बचाकर उन्होंने अनेक बार संकट ग्रस्त साहित्यिकों की सेवा की थी। शालीनता और दयालुता, उसके सहज गुण थे। उनकी स्मृति में एक स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है।

—संवाददाता

* * *

उदयपुर में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति श्री के० एम० मुंशी और राजस्थान हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति श्री मुनि जिनविजय जी का शुभागमन नवजीवन—कार्यालय में हुआ, जहाँ संचालक जी द्वारा स्वागत के बाद आपके सम्मान में टी-पार्टी का आयोजन किया गया। इस आयोजन में यहाँ के प्रमुख साहित्य-सेवी और विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि सर्वश्री राजकुमार मानसिंह, वैद्यराज अमृतलाल, जनार्दन राय नागर, दयाशंकर श्रोत्रिय, हम्मीरलाल मुंडिया, जीवनसिंह चोरड़िया, कवि भूषण जगदीश, आदि उपस्थित थे। श्री मुंशी जी ने पत्र की प्रगति पर सन्तोष प्रकट करते हुए सन्देश दिया है:—"नवजीवन की मैं सम्पूर्ण सफलता चाहता हूँ। जिस उत्साह से उसके संचालक कार्य कर रहे हैं, आशा है, उसी उत्साह से वे कार्य चलायेंगे तो मेवाड़ में नेकचलन के साथ-साथ राजस्थान की सेवा भी 'नवजीवन' के द्वारा वे अच्छी कर सकेंगे।" —संवाददाता

* * *

मण्डावा (जयपुर) हिन्दी-साहित्य-समिति २४ नवम्बर को कस्टम कमिश्नर को, जिन्होंने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए राज्य में होनेवाले हिन्दी के काम को बन्द करवाकर उसके स्थान में उर्दू का चालू कर देने की आज्ञा दी है, चेतावनी दे चुकी है। साथ में यह भी लिखा गया है कि जहाँ हिन्दू-राज्य हो और जहाँ की भाषा ९९ प्रतिशत हिन्दी हो वहाँ ऐसा करना अनुचित है। यह समिति प्रत्येक हिन्दी-प्रेमी संस्था से अनुरोध करती है कि जयपुर राज्य कस्टम कमिश्नर को उनके इस नीति के लिए लिखे और कार्य को पुनः हिन्दी में ही चालू करने के लिए प्रेरित करे। —'चंचल

* * *

जयपुर के उत्साही कार्यकर्त्ता साहित्य-सेवी श्री माधव "विशारद" को "साहित्यालङ्कार" पदवी से विभूषित किया गया है। "मारवाड़ी गौरव" मासिक के सम्पादक कविवर अद्भुत शास्त्री जी ने आपको अपना प्राइवेट सेक्रेटरी बनाया है।

—संवाददाता

पूजागीत

'युगकवि' सोहनलालजी की ऐसी रचना है जिसमें प्रसन्नता, सजीवता, प्रभावोत्पादकता रहने से पढ़नेवाले को कविता का रस मिलता है। इसमें एक से एक बढ़कर ५६ गीतों का संग्रह है। इस पूजा गीत का बहुत आदर है। कविता-प्रेमियों को इसका संग्रह अवश्य करना चाहिए। मूल्य केवल २) दो रुपये।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

(दिन चढ़े पर)

सवेरे से काम करते करते ग्यारह बजने आये इस समय एक प्याला चाय पीने से आपकी स्फूर्ति और एकाग्रता दुवाला हो जाती है। आप आफिस के बाबू हों या घर की गृहिणी, मजदूर हों या कलाकार, चाय आपको आनन्द व खुशी से भर देती है। जो चाय-प्रेमी हैं, चाय के गुण-अवगुण समझते हैं, उनमें से भी बहुतों को इसका पूरा पूरा आनन्द नहीं मिलता क्योंकि अच्छी चाय बनाने के सरल नियमों पर वे ठीक ठीक ध्यान नहीं देते। जब भी आप दुखी, थके हुए, उदास या अकेले हों, चाय पीजिये परन्तु ख्याल रखिये चाय ठीक से बने।

अच्छी चाय बनाने का तरीका

१ केतली में चाय न सिझाइये। सिझाने का बर्तन अलग रखियें।
२ सूखी चाय डालते वक्त वह बर्तन सूखा व गर्म रहे : इससे चाय का रंग व स्वाद ठीक बनता है।
३ हर प्याले के लिये एक चम्मच, और बर्तन के लिये एक चम्मच ताजी, सूखी चाय की पत्ती उसमें डालिये।
४ उसी वक्त का उबला हुआ पानी डालिये—पहले का उबला, कम या ज्यादा उबला पानी मत डालिये। बुदबुदा उठने पर ही पानी उबलता है, उसके पहले नहीं।
५ चाय को पाँच मिनट से कम न सिझाइये।
६ प्यालों में चाय डालकर तब उसमें दूध व चीनी मिलाइये।

चाय

हर वक्त चाय का वक्त

इण्डियन टी मार्केट एक्सपैन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IK 247

LIPTON'S
JAKOOJA

भारतीय चायों में सर्वश्रेष्ठ

लिपटन की

जाकूजा चाय

LTK 81

दक्षिण भारत हिन्दी-प्रचार-सभा

(पेज ७ का शेष)

देते रहते हैं। हिन्दी-प्रचार-क्षेत्र में काम करनेवाले १,६०० प्रचारकों में से मुश्किल से १० प्रचारक उत्तर भारतीय हैं। यह सारा आन्दोलन अर्थ-शक्ति, कार्य-शक्ति तथा मनुष्य-शक्ति की दृष्टि से पूर्णतया दक्षिण भारत का है। इससे इस आन्दोलन की लोकप्रियता और दक्षिण भारतीयों की हिन्दी के प्रति आत्मीयता साफ़ जाहिर होती है। अब समय आ गया है कि दक्षिण भारत राष्ट्रभाषा के प्रचार में जैसे अपने ही पैरों पर खड़ा है, वैसे ही राष्ट्रभाषा की उन्नति में भी अपना हिस्सा अदा करे।

आरंभ से अब तक का व्यय

सन्	कुल
१९४३ तक	रु० १३,९६,१९४
१९४४ „	रु० १,२४,७७७
	रु० १५,२०,९७१

सभा का सारा काम सन् १९३६ तक किराये के मकानों में ही होता रहा है। धीरे-धीरे काम का विस्तार जैसे-जैसे बढ़ता गया सभा को अपने निज के मकानों की आवश्यकता मालूम हुई। मद्रास कार्पोरेशन से रियायती दाम पर ५ एकड़ की जमीन मद्रास शहर के त्यागरायनगर मुहल्ले में खरीदी गई। इस जमाने में सभा का केन्द्र दफ्तर, छापाखाना, विद्यालय, छात्रावास और प्रचारक-निवास बनाये गये। भवन-निर्माण के लिए कुल ७०,००० रुपये खर्च हो चुके हैं। उसके लिए एक लाख रुपये का अंदाजा लगाया गया था। अभी अतिथि-गृह और पुस्तकालय के मकान बनवाने हैं। सभा के भवन बहुत ही लोकप्रिय हैं। श्री रंगस्वामी अय्यंगार मेमोरियल हाल में फिलहाल सभा का पुस्तकालय तथा वाचनालय है, जहाँ शहर और बाहर के लोग बड़ी संख्या में नित्य आते हैं और पुस्तकों और पत्रिकाओं से लाभ उठाते हैं। पुस्तकालय में ५,००० हिन्दी की किताबें हैं और वाचनालय में १२५ के ऊपर पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

सभा का कार्य शुरू हुए आज २७ वर्ष पूरे हो रहे हैं। वास्तव में १९४३ में ही रजत-जयंती मनानी चाहिये थी। लेकिन कुछ खास परिस्थितियों के कारण वह नहीं मनायी जा सकी। अब यह निश्चय हो गया है कि आगामी दिसम्बर मास में रजत-जयंती मनाई जाय। सभा के संस्थापक तथा अध्यक्ष महात्मा गांधी जी ने जयंती उत्सव के अवसर पर अध्यक्ष होना स्वीकार किया है।

सभा ने इस अवसर पर अपने कार्य का विस्तार करने और उसके संगठन को मजबूत बनाने के लिए कुछ नई आयोजनाएँ आरंभ करने का निश्चय किया है। इन आयोजनाओं को कार्यरूप में लाने के लिए सभा के निधि पालकों ने पाँच लाख रुपये की एक अपील की है।

सभा के समर्थकों में दक्षिण तथा उत्तर के सभी दलों के लोग मौजूद हैं। सभा एक विशुद्ध राष्ट्रीय संस्था है और जनता में राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का काम कर रही है। सभी दलों और प्रान्तों को स्वीकृत एक आम जबान के प्रचार के द्वारा भारतीय राष्ट्रीयता का निर्माण ही उसका लक्ष्य है। इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि सारे देश से सभा को आवश्यक सहायता मिलेगी।

दक्षिण भारत-राष्ट्रभाषा प्रचार के काम को अधिक मजबूत बनाने के लिए सभा के ट्रस्टियों ने ५ लाख रुपये की अपील निकाली है।

महात्मा गांधी की अपील

संरक्षकों का यह निवेदन मैं पढ़ चुका हूँ। मुझे पसन्द है। मेरी आशा है कि जितने रुपये की माँग इसमें की गई है वह सबके सब लोगों की तरफ़ से मिल जाएँगे। दक्षिण प्रान्तों में राष्ट्रभाषा के लिए बहुत काम हुआ है, ऐसा मेरा विश्वास है और भविष्य में उससे भी अधिक होगा, ऐसी मेरी उम्मीद है। लेकिन जो पैसे मिलनेवाले हैं उसका उपयोग राष्ट्रभाषा का जो अर्थ मैंने बताया है उस अर्थ की सिद्धि के लिए होगा, ऐसा समझकर लोग पैसे दें। राष्ट्रभाषा का अर्थ जैसे निवेदन में बताया गया है वैसे हिन्दी और उर्दू शैली—नागरी या उर्दू लिपि में लिखी जानेवाली भाषा है। इसका अर्थ यह होता है कि सिर्फ़ हिन्दी, जो देवनागरी में लिखी जाय उसे राष्ट्रभाषा नहीं कह सकते, न सिर्फ़ फ़ारसी या उर्दू लिपि में लिखी जाय उसको। जब हम राष्ट्रभाषा जाननेवाले उसे दोनों लिपि में लिख सकेंगे और दोनों शैली में बोल सकेंगे तब ही उसमें से सच्ची हिन्दुस्तानी भाषा होगी। आज भी ऐसी भाषा, ऐसी हिन्दुस्तानी, लाखों हिन्दू-मुसलमान उत्तर में बोलते हैं, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वह हिन्दुस्तानी आज लिखे पढ़े उत्तर के लोग बोलते हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता है। हमारी कम-नसीबी से ऐसे ही चलता रहेगा तो चलेगा, लेकिन हमारी इच्छा तो होनी चाहिए कि यह कम-नसीबी चली जायगी और जल्दी से मिट जायगी। हिन्दुस्तानी प्रचार का यही मतलब हो सकता है। इसलिए दक्षिण भारत में जो प्रचार-कार्य चल रहा है उसका झुकाव दोनों लिपियों को साथ-साथ चलाने की तरफ़ और दोनों शैलियों के प्रचार की तरफ़ होगा। यही मतलब सन् १९२५ ई० में जो प्रस्ताव कांग्रेस ने किया, उसका है। वह प्रस्ताव यह था:—

"कांग्रेस की यह सभा प्रस्ताव पास करती है कि कांग्रेस, अखिल भारत कांग्रेस कमेटी और वर्किंग कमेटी की कार्रवाई आमतौर पर हिन्दुस्तानी में चलेगी। अगर कोई वक्ता हिन्दुस्तानी न जानता हो या दूसरी आवश्यकता पड़ने पर अँगरेजी या प्रान्तीय भाषा इस्तेमाल की जा सकती है। प्रान्तीय कमेटियों की कार्रवाई आमतौर पर प्रान्तीय भाषाओं में चलेगी। हिन्दुस्तानी भी इस्तेमाल की
सकती है।"

—मो० क०

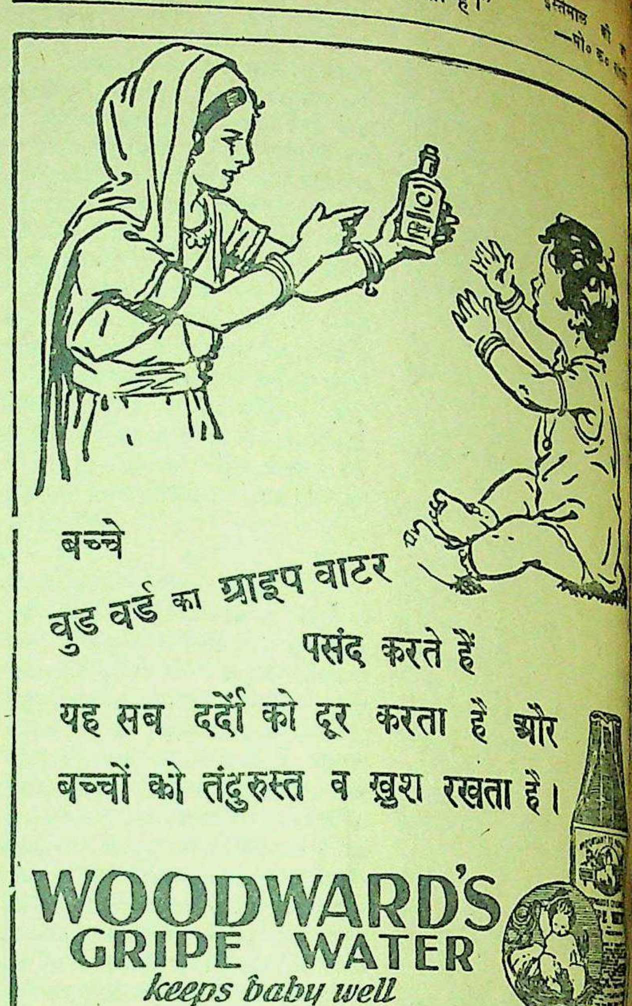
बच्चे
वुड वर्ड का ग्राइप वाटर
पसंद करते हैं
यह सब दर्दों को दूर करता है और
बच्चों को तंदुरुस्त व खुश रखता है।

WOODWARD'S
GRIPE WATER
keeps baby well

"सर्प से लड़ता हुआ बालक" ही असली वुड वर्ड ग्राइप [illegible] पहिचान है। इसलिये माता जी! आप अपने बालक के हित के [illegible] अवश्य देख लिया करें।

1-WW 113—117
W. WOODWARD LTD. LONDON, ENGLAND

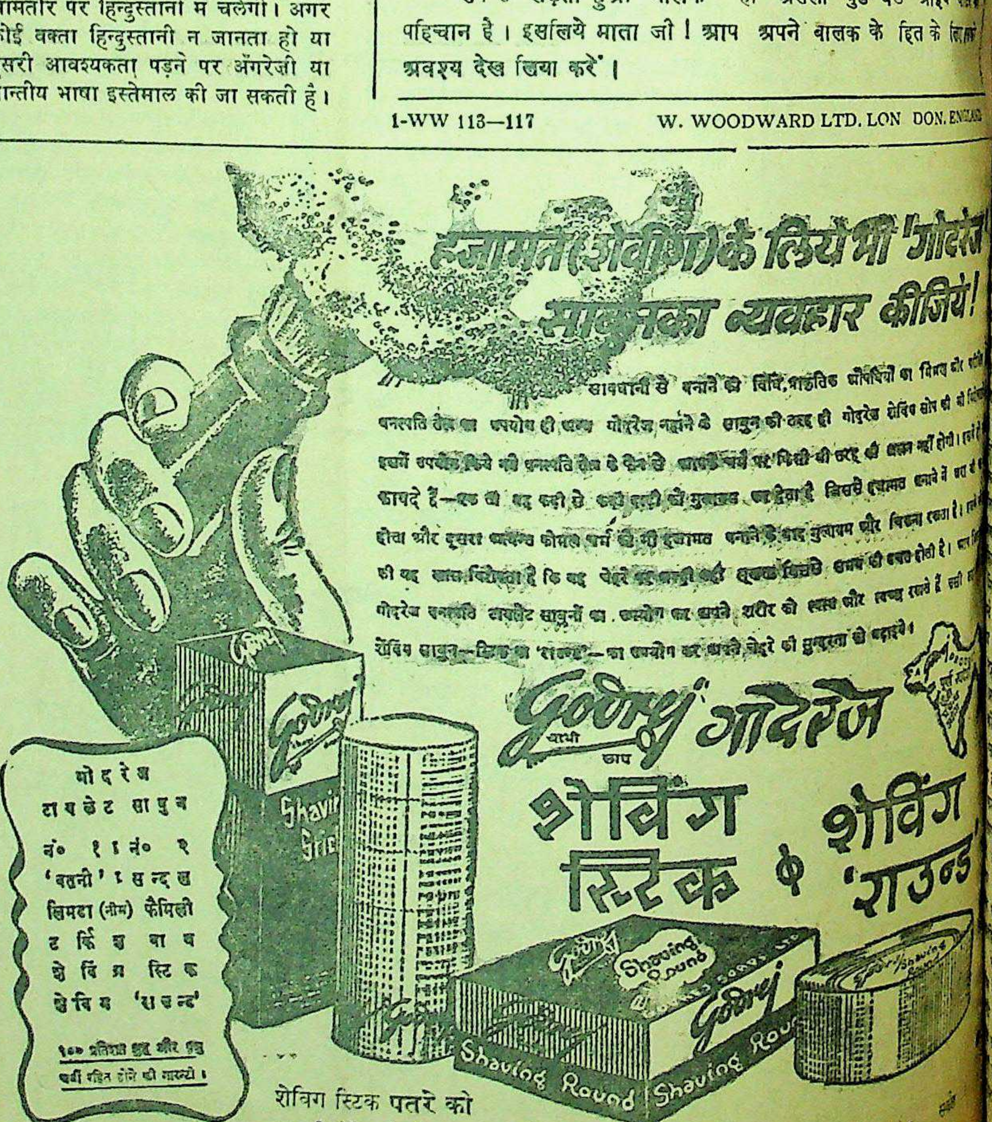

सावधानी से बनाने की विधि, प्राकृतिक औषधियों का मिश्रण और [illegible]
वनस्पति तेल का उपयोग ही [illegible] गोदरेज नहाने के साबुन की तरह ही गोदरेज शेविंग सोप की भी [illegible]
इनमें उपयोग किये गये वनस्पति तेल के [illegible] किसी भी तरह की [illegible] नहीं होती। [illegible]
फायदे हैं—एक तो यह [illegible] मुलायम [illegible] देता है जिससे हजामत बनाने में [illegible]
होता और दूसरा [illegible] कोमल चर्म को भी हजामत बनाने के बाद मुलायम और चिकना रखता है। [illegible]
की यह [illegible] है कि यह [illegible] होती है।
गोदरेज वनस्पति टायलेट साबुनों का उपयोग कर अपने शरीर को स्वस्थ और स्वच्छ रखते हैं [illegible]
शेविंग साबुन—[illegible] 'राउन्ड'—का उपयोग कर अपने चेहरे की सुन्दरता को बढ़ाइये।

Godrej गोदरेज
शेविंग स्टिक व शेविंग 'राउन्ड'

गोदरेज टायलेट साबुन
नं० १ नं० २
'वतनी' चन्दन
लिमडा (नीम) फैमिली
टर्किश बाथ
शेविंग स्टिक
शेविंग 'राउन्ड'
१०० प्रतिशत शुद्ध और [illegible] चर्बी रहित होने की गारन्टी।

शेविंग स्टिक पतरे की
डब्बी में भी मिल सकता है।
गोदरेज साप्स, लि० — बम्बई ४ पी० ओ० [illegible]

और
है।
वर्ड ग्राइप
ON DON. ENGLAND
गोदरेज
कीजिये!
विंग
ाउन्ड

वि—यूनिवर्सिटी ड्रामा देखने चलोगे,
।

सन्त—ऊं लड़कियोंवाले ड्रामा में र नहीं, आज क्या रखा है? चार इधर-उधर कूदेंगे।

वि—भई, लड़कियों ने मुझे निमंहीं किया था। जानते नहीं? लड़कियाँ लाकर यूनिवर्सिटी की, केवल बड़े यों को, आई० सी० एस०, पी० स०, प्रोफ़ेसर, पुलिस, दारोग़ा आदि ग्रेजुएट के पास देती हैं। तुम र्थ में नाराज़ हो रहे हो। मैं, एक साहित्यिक, वह भी हिन्दी का। मुझे कौन पूछता है? हाँ, यदि कहीं सम्मेलन होता तो शायद मेरी भी खोज-खबर करता।

न्त—यह तो आपका केवल ख्याल हिन्दीवाले प्रायः इसी हीनहे दबे हैं, अन्यथा हमारा शिक्षित साहित्यिकों का, आपका सम्मान । ड्रामा के लिए मैंने स्वयं कई सम्पादकों को निमंत्रण भेजवाया न्दी भाषा, उसका साहित्य तथा ार अब उतना उपेक्षित नहीं ाप समझते हैं। आप सम्भवतः तब ह रहे हैं जब यू० पी० के गवर्नर हेलेट थे। किन्तु अब जमाना गया है, आपको जानना चाहिए।

—ठीक कहा। सम्पादकों को श्य गया होगा अन्यथा ड्रामा भी न छप पाती। सम्पादक तो कोतवाल हैं। उनसे बिगाड़ म ही नहीं चल सकता क्योंकि वयं साहित्यिक नहीं तो उसके अधिकारी तो हैं ही और इस ा बड़ा रोब रहता है।

—यह तो आपकी ज्यादती है। क ऐसे नहीं होते, उनमें चीज़ों ी भी क्षमता होती है। सुन्दर कृतियों का वे स्वागत और रते हैं। पारिश्रमिक भी देते हैं। र सभी तरह की चीज़ें न छापें से चले?

—यही तो मैं भी कहता हूँ। उद्देश्य काम की चीज़ें (व्यावछापने का ही होता है। चाहे वे हों अथवा नहीं। इसका भी जानता हूँ। बेचारे प्रायः सभी किसी न किसी पूंजीपति के हैं और उन्हें अपनी साहित्यिकता ि के पहले अपने मालिकों की ा व्यापार का ध्यान रखना ही है? अभी देश में शुद्ध साहित्यिक तो नहीं है। कभी-कभी पत्रों में क चीज़ें भी छपती हैं पर उनके ूम नयन, त्रिलोचन, पुस्तककीट, ी और अगड़धत्त शर्मा आदि ही ते हैं। साहित्य में इन छद्म-नामधारी पुलिस को प्रश्रय सम्पादकों से ता है। मैं समझता हूँ साहित्य में ी आवश्यकता नहीं। जब लिखनेनी कृति को जनता के सामने हे तब उसे अपना नाम छिपाने की यकता है? इस प्रकार तो उसके दुर्बलता ही प्रकट होती है। आजलोचना के क्षेत्र में इसका बहुत है। छद्म नाम से चाहे जिस कलाकार कृति को आप दो कौड़ी की बता ा कोई उत्तरदायित्व ही नहीं। धिकारी व्यक्ति अपनी राय को यों छिपाना चाहेगा? सम्पादक ाहें तो यह बुराई शीघ्र ही दूर हो है।

न्त—खैर, आप तो अपने विख्यात ी लिखते हैं। आपकी भी कृतियाँ त्रों में छपती हैं। यों तो साहित्य नके सभी क्षेत्रों में जहाँ मानव हैं, की दुर्बलता भी रहेगी। ईश्वर की में भी स्वर्ग-नरक दोनों का स्थान है।

व्यंग्य-विनोद

ब—त—क—ही

लेखक, श्री गंगाप्रसाद पांडेय, एम० ए०

कवि—वसन्त, कलाकार से अधिक मानवीय दुर्बलता से प्रेम करनेवाला और कौन हो सकता है? किन्तु दुर्बलताओं के लिए सामाजिक तथा साहित्यिक अनुमति समाज के लिए घातक सिद्ध होती है। सुनो, तुमको एक बात बताऊँ। एक बार एक रईस के यहाँ कवि-गोष्ठी होनेवाली थी, जैसा कि मनोविनोद के लिए कभी-कभी रईस लोग किया करते हैं। कवि-गोष्ठी के बाद गहरी दावत का भी प्रबन्ध था, यानी खाने-पीने का पूरा सामान था। जब मेरा स्मरण हुआ तो एक प्रगतिशील साहित्यिक सज्जन जो मेरे मित्र भी हैं, बोले—उन्हें न बुलाया जाय। वे फटा कुर्ता, गंदी लुंगी और पैरों में काठ की खटपटी लटकाये पूरे छायावादी रूप में पहुँचेंगे और एक तमाशे का काम करेंगे। यहाँ बड़े-बड़े आदमी हैं, उर्दू के भी कुछ लियाक़तवाले हैं। फिराक साहब वग़ैरह हिन्दीवालों का वैसे ही मजाक उड़ाते हैं उन्हें देखकर वह एक मौका और पा जायेंगे। ठीक नहीं है। उनका नाम काट दीजिए। इस पर एक विवाद चल पड़ा। कुछ लोग कहने लगे—उस कवि के बिना तो कवि-गोष्ठी सफल और पूर्ण नहीं हो सकती। बुलाना चाहिए, क्या आप लोग उसकी निर्धनता के लिए उसकी साहित्य-प्रतिभा की भी उपेक्षा करेंगे? दूसरों ने कहा—वह कवि तो उच्च कोटि का है ही और रिसाइट भी हिन्दी में सबसे अच्छा करता है। तीसरे भी बोल उठे—रिसाइट ही नहीं वे गाते भी सुन्दर हैं। चौथे भी चुप न रह सके और मुंह बनाकर एक वक्तव्य दिया—यह बात खूब रही, एक बनिया न आवे तो बाजार न लगे। मालूम पड़ता है हिन्दी के युग-प्रवर्तक क़वि निराला के आप लोग सभी शिष्य हैं।

अभी दो-तीन वर्ष पहले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन ने एक सिरीज़ आधुनिक कवि निकाली थी। 'निराला' से भी कवितायें माँगी गईं किन्तु 'कुकुरमुत्ता' को छोड़कर उनकी प्रायः सभी कवितायें कापीराइट पर बिक चुकी हैं, वह भी किसी छोटे-मोटे प्रकाशक के यहाँ नहीं 'गंगा-पुस्तकमाला' और लीडर प्रेस जैसी बड़ी संस्थाओं के हाथ। निराला से कहा गया कि वे नई कवितायें दे दें। इस पर साहब वे बिगड़ उठे और बोले कि उनकी कविताओं के बिना यह सिरीज़ किसी तरह पूरी नहीं हो सकती। अतएव सम्मेलन उनकी कविताओं का कापीराइट छुड़ावे और कविता-संग्रह करें, हाँ, भूमिका वे लिख देंगे। सम्मेलन को अपनी परीक्षाओं के कोर्स के लिए पुस्तकें छापनी थीं कि मुक़दमा लड़ना था? उन्होंने दूसरे कवियों के संग्रह छापने शुरू कर दिये। जनाब निराला को भी यह फ़िक्र था कि उनके साथी कवि इस सिरीज़ से असहयोग करेंगे क्योंकि यही समय है जब उनकी कई संस्करणों के बाद भी क़ैद कविताओं की समस्या का निपटारा हो सकेगा। मगर सभी कवि निराला तो हैं नहीं, पुस्तकें निकलने लगीं। तब निराला कहने लगे—कि पुस्तकें निकलने से क्या होता है सिरीज़ पूर्ण नहीं कही जा सकती।

मगर मेरे भाई सिरीज़ ख़ासी पूर्ण है, पुस्तकें कोर्स में चलती हैं और उनके कई संस्करण हो गये। मेरी बात का विश्वास न हो तो रजिस्ट्रार साहित्य-सम्मेलन मिस्टर पहाड़ी से पूछ लो। निराला की ही तरह आप लोग इस गोष्ठी की अपूर्णता पर विश्वास रखते हैं, इसीलिए मैंने आप लोगों को उनका शिष्य कहा है। किसी विशेष कवि के बिना आये भी यह गोष्ठी पूर्ण होगी। आपके कवि को मैंने कल देखा था। घुटा सिर, गंदी लुंगी और कपड़ों के नाते रुई की बण्डी। क्या होगा उन्हें बुला के। यह साहित्यिक गोष्ठी है कि साहित्यिक ज़ू का उद्घाटन?

वसन्त, विश्वास करो मुझे इन बातों की व्यक्तिगत राग-द्वेषपूर्ण मानवीय दुर्बलताओं की चिन्ता नहीं रहती। मैं सब सुनकर और हँसकर रह जाता हूँ पर लिखित साहित्य में ऐसा मजाक़ अच्छा नहीं लगता।

वसन्त—अच्छा ड्रामा देखने के पहले आप तो खुद ऐक्ट करने लगे। अपने विषय में दूसरों के द्वारा चलाई गई चर्चा को एक ऐक्टर की भाँति रटे बैठे हैं। इस स्मरण-शक्ति को, इस प्रतिभा को किसी दूसरी ओर लगाइए। चलिए, मैं मान गया कि लड़कियों ने आपको निमंत्रित नहीं किया था मगर भलेमानस लड़कों ने तो बुलाया है। ड्रामा अब शुरू ही होनेवाला है।

कवि—चलो, मगर मैं बात ठीक कह रहा हूँ। हमारे देश में साहित्यिकों का सम्मान नहीं है।

अपनी बात जाने दो, पर अधिकतर लोग सरकारी नौकरों और धनी लोगों का ही सम्मान करते हैं। थोड़े से राजनीतिक व्यक्तियों का भी सम्मान है किन्तु सम्मानितों के बीच साहित्यकार का कोई स्थान नहीं। तारीफ़ तो यह कि शिक्षित-अशिक्षित इस विषय में समान हैं। उस दिन एक सज्जन कह रहे थे—महराज क्या बतायें तीन लड़कों में दो तो ठिकाने से लग गये, एक स्कूल का मास्टर है, दूसरा ए० जी० आफ़िस में है मगर तीसरा बरबाद हो गया, वह कवि निकल गया। इधर-उधर भूखों मरेगा। यही समझ लो। यहाँ साहित्यकार होना भूखों मरने का प्रमाणपत्र है।

वसन्त—तो क्या आप यह चाहते हैं कि लोग आपको सिर पर लिये घूमें? अपने घरों का ऐश-आराम आपको दे दें? आप यह नहीं जानते कि धन और नौकरियाँ कैसे मिलती हैं? जनाब नौकरों को दो रूमाल रखने पड़ते हैं, एक अपना मुंह पोंछने के लिए और दूसरा मालिक की सेवा के लिए। क्या आपसे यह होगा? आपको समझना चाहिए कि यह ग़रीबी आपका साहित्य है, आपकी अमरता है, अन्यथा न जाने कितने नौकर-चाकर और धनी पड़े हैं, कौन जानता है?

कवि—क्या कहूँ? यही तो दिक़्क़त है। साहित्य आत्मा की, हृदय की भूख है वह धनी-ग़रीब का अन्तर नहीं जानती। इतनी बात तुम नहीं समझ पाते। साहित्य-सृजन के लिए ग़रीबी का ज़रूरी बताना उसी तरह है जैसे बेचारी विवश वेश्याओं को समाज-रक्षा की दीवाल कहना? तुम हमें कुछ दिनों के लए धनी बना दो और साहित्यिकता छीन लो? मैं तो ऊब गया।

वसन्त—जाने भी दीजिए इन बातों को, मुझे भी क्षोभ होता है। धैर्य रखिए। इस समय विश्व-जीवन और विशेषकर भारतीय जीवन एक राशनिग स्कीम के भीतर से गुजर रहा है। सभी चीज़ों पर कंट्रोल है अच्छा माल बन्द पड़ा है। याद है यह पंक्ति—'माल हाट में है मगर भाव नहीं।' नया माल बनता नहीं क्योंकि अभी तक लोग लड़ाई में व्यस्त थे और अब उसकी थकान दूर कर रहे हैं। सभी लोग बेमेल और बेमाल हैं। साहित्य-जीवन का भी यही हाल है। मगर कंट्रोल कभी उठेगा और बिलायत से आया हुआ नया माल बिकने के बाद तो शुद्ध स्वदेशी माल ही सामने आयेगा। शुद्ध साहित्य का भी तभी समय आयेगा अभी तो यहाँ भी छायावाद, प्रगतिवाद, गांधीवाद और मार्क्सवाद आदि वादों की स्कीम चल रही है। वही कंट्रोल का कोलाहल और कार्ड यहाँ भी चालू है। कुछ समय पश्चात् अच्छे माल की भाँति अच्छा साहित्य भी मिलेगा और जनता उसका स्वागत करेगी। आप अपना काम चुपचाप करते जाइए।

कवि—फिर वही बात। काम किये जाइए, काम किये जाइए। न खाइये न पहिनिए। यह अच्छी रही। अरे भई, अगर गंगा-जल पीकर भी साहित्य लिखते रहें तो भी तो बचत नहीं। गांधी के राजनीतिक महत्त्व और उनकी महान् साधना को सभी स्वीकार करते हैं पर वे भाषा-वैज्ञानिक नहीं, साहित्यिक नहीं, कवि नहीं यह भी सत्य है? फिर भी अभी हाल में उन्होंने एक वक्तव्य दिया था, उसका आशय यह है कि जो व्यक्ति उर्दू नहीं जानता, उर्दू नहीं पढ़ता-लिखता उसकी राष्ट्रीयता और उसकी स्वदेश-भक्ति भी विश्वसनीय है। क्या यह केवल हिन्दी जाननेवाले भारतीय और हिन्दी के साहित्यिकों पर आक्षेप नहीं है? मगर गांधी जी के ख़िलाफ़ कहो तो सुभाष

जानबुल—शाबाश मेरे शेर, भारत में तुम जुग-जुग जीओ।

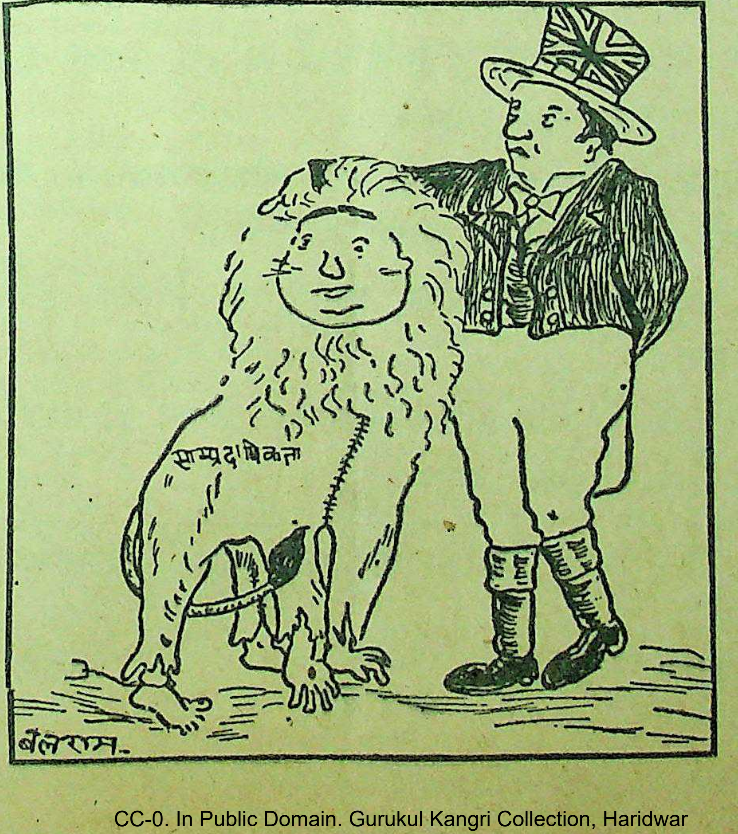

की दशा को प्राप्त हो। गांधी जी उर्दू अब सीख रहे हैं मगर स्वदेश-भक्त तो बड़े पुराने हैं। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापति का आसन भी सुशोभित कर चुके हैं। गांधी जी के सामने और चाहे जो हो रोटी का प्रश्न नहीं है, वह उर्दू सीखें, चाहे मालिश करायें? मगर हम बेचारे जो हिन्दी लिखकर अपना पेट पालते हैं, उर्दू सीखें तो खायें क्या? यह कोई नहीं सोचता। मैं बने हुए गांधीवादियों की तरह सब कुछ हिन्दी में लिखकर उर्दू में केवल दस्तख़त भी नहीं करना चाहता? कांग्रेस के टिकट से मुझे चुनाव में भी नहीं खड़ा होना है अन्यथा शायद यह भी करता। इस प्रकार मेरे लिए कोई उपाय नहीं रह जाता।

वसन्त—इसका उत्तर तो मेरे पास भी नहीं? यदि इस समय कोई गांधीवादी या मार्क्सवादी अथवा हिन्दीवादी या हिन्दुस्तानीवादी होता तो आपके प्रश्नों का उत्तर देता। समय निकाल कर आप पंडित सुन्दरलाल, पंडित बनारसीदास चौबे तथा डाक्टर रामविलाश शर्मा से मिलिए? वे आपको उचित राय देंगे। अगर सबसे न मिल सकें तो चौबे जी से भी मिलकर काम निकल सकता है। वे गांधीवादी तो हैं ही क्योंकि अभी वर्धा में गांधी जी ने उन्हें हिन्दीवालों की ओर से बुलाया था। वे मार्क्स से भी अधिक जनवादी प्रिंस क्रोपाटकिन के भक्त हैं और 'विशाल भारत' के द्वारा हिन्दी-साहित्य और साहित्यिकों के प्रति की गई उनकी सेवायें चिरस्मरणीय हैं, यह सबसे अधिक आप स्वयं जानते हैं। रहा मैं तो, मैं स्वयं आपकी भाँति वाद-रहित निर्विवादी और विश्व-मानवता का उपासक हूं।

कवि—अभी क्या हुआ है? पढ़ाई-लिखाई समाप्त करो तब पता चलेगा। इस देश में शासन-सत्ता अथवा किसी पार्टी की पूंछ सहलाये बिना भर पेट रोटियाँ नहीं मिलतीं। मैं पचास वर्ष से केवल साहित्य लिखता हूं। व्यक्तिवाद और पार्टी का प्रचारक नहीं हूं। लोगों की राय है कि मैंने अच्छा भी लिखा है। पर धोती है तो कुर्ता नहीं और कुर्ता है तो धोती नहीं। भैया! वाद-रहित होने का स्वाद तीखा होता है। समझे, अच्छा किस गेट से भीतर चलोगे?

कुली का बलिदान

(पेज १० का शेष)

बार 'बस' ठहरी, क्योंकि कुछ गोरे उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे। 'बस' के पिछले भाग में गैर-गोरों के लिए जो बैठकें हैं उन पर पाँच-सात हबशी डेरा जमाये हुए थे। इसलिए कन्डेक्टर ने गंगा को रोकना चाहा, पर वह रुकी नहीं, कूदकर चढ़ ही गई। धैर्य की भी कोई सीमा होती है। वह सब कुछ सहने पर तैयार हो गई।

कन्डेक्टर बिगड़ा। कुली नारी की यह हिम्मत? वह अपनी शान और सत्ता दिखाये बिना कैसे सन्तोष कर सकता। उसने डपट-कर कहा, "उतरो, नहीं तो पुलिस के हवाले कर दूंगा।" गंगा ने उतरने से इनकार किया। 'बस' चली, पर अगले स्टेशन पर रुक गई। वहाँ पुलिस की चौकी थी। कन्डेक्टर ने थाने में रिपोर्ट लिखवाई। पुलिस ने गंगा को 'बस' से उतार कर बयान लिया। आखिर पानी से रक्त अधिक गाढ़ा होता है। एक अँगरेज़ दूसरे अँगरेज़ का ही पक्ष लेगा, चाहे उसका पक्ष न्यायसंगत हो अथवा अन्यान्यमूलक। इन्सपेक्टर ने परिस्थिति का परिचय पाकर इतनी दया तो अवश्य की कि गंगा को अस्पताल जाने की छूट दे दी, पर इस शर्त पर कि दूसरे दिन दस बजे थाने पर हाज़िर हो जावे।

गंगा को और कोई चिन्ता नहीं थी, वह तो किसी तरह अस्पताल पहुँचने के लिए छटपटा रही थी। जब वह अस्पताल पहुँची तो गुलाब आपरेशन-घर में दाख़िल हो चुका था। भेंट से वंचित होना पड़ा। अन्दर उसकी आत्मा रो रही थी। बाहर उसका शरीर काँप रहा था। गंगा अपनी धुंधली आँखों से आपरेशन-गृह के दरवाज़े की ओर देखती रही। जब उसने नर्स को वहाँ से निकलते देखा तो जैसे हृदय के उस अतृप्त स्थल पर किसी ने ज़ोर से चाकू भोंक दिया हो। वह कुछ देर के लिए इतनी मुमुर्षु हो गई कि उससे कुछ पूछना भी असम्भव हो गया।

गंगा को देखकर नर्स का चेहरा बदल गया, उसकी आँखों में आँसू छलछला आये। उसकी मुखाकृति से ही गंगा ने समझ लिया कि उसका सर्वनाश हो चुका। आखिर गंगा ने कम्पित स्वर में पूछा, 'बताओ नर्स, मेरा गुलाब कहाँ है?" नर्स का कण्ठ अवरुद्ध हो गया, उसने उँगली से आकाश की ओर इशारा किया। गंगा समझ गई और बेहोश होकर गिर पड़ी। नर्स उसे उठाकर एक कमरे में ले गई, बहुत यत्न करने पर गंगा होश में आई। गंगा ने फिर पूछा, "उसने कुछ कहा भी, नर्स?"

"हाँ, कह रहा था कि माँ को आज बहुत देर हो गई। अब माँ से मिलने की कोई आशा नहीं रही। माँ से कह देना कि उनका पुत्र वर्णद्वेष की वेदी पर बलिदान हो गया। यदि हो सके तो भारतमाता के पास भी सन्देश भेज देना कि उसकी पराधीनता ही उसकी प्रवासी सन्तान के सर्व दुखों का मूल है।" कहकर नर्स मौन हो गई।

इस आघात को गंगा सह न सकी। वह 'हाय गुलाब' कहकर जो गिरी तो फिर न उठ सकी। डाक्टर आये, नर्स दौड़ी। नाड़ी देखी, स्पन्दन का पता नहीं। हृदय की परीक्षा ली, वहाँ भी गति बन्द है। डाक्टर और नर्स के चेहरे पर घबराहट थी, उनको जैसे काठ मार गया हो, वे अपनी-अपनी जगहों पर मूर्तिवत् खड़े गंगा के मृत शरीर को देख रहे थे।

ख़ैर, प्रवासी भाइयों को जब यह ख़बर मिली तो वे सैकड़ों की संख्या में अस्पताल पहुँचकर गंगा और गुलाब को सब उठा लाये। उनकी अर्थी असगेजी श्मशान पर पहुँचाई गई। वहाँ माँ-बेटा एक ही चिता पर सुलाये गये। वेद-मन्त्रों से अग्नि-संस्कार हुआ। चिता धायँ-धायँ जलने लगी और कुछ ही देर में उनका भौतिक-चिह्न मिट गया।

न गंगा रही, न गुलाब रहा,
कहानी 'रह गई जो प्रवासी
अपनी दासता और अपने देश की
की याद दिलाती रहती है। यह
तक किसी को नहीं भूला है कि
की हत्या करनेवाला श्वेतांग
पौंड जुर्माना देकर छूट गया।
फैसला सुनाते समय कहा था कि
मामले में क्या करना चाहिए,
में नहीं आता।" इस पर एक
अख़बार ने टीका करते हुए लिखा
"न्यायाधीश के आसन पर बैठकर
जो कुछ कर डाला, वह भी शायद
समझ में नहीं आया।"

डरबन (अफ़्रीका)

खाँसिये मत
अगर खाँसी आये
ग्रिमौल्स
सिरप
याद कीजि

हमारा ५५ वर्षीय अनुभव एवं विशेषताएँ

*१—दुष्प्राप्य औषधों का संग्रह करने के लिए संगठन और सुलभ साधन।
*२—गठीली और कठोर जड़ी-बूटी व वनौषधियों को कूट पीसकर चूर्ण विचूर्ण करने वाले आद्यसम यंत्रों की सामूहिक व्यवस्था।
*३—सर्वोपरी परीक्षा परीक्षोत्तीर्ण अनुभवी एवं वयोवृद्ध वैद्यराजों और अन्य सुयोग्य व दक्ष निरीक्षकों का निरीक्षण व सुयोग्य कर्मचारी।
*४—पेटेन्ट और आयुर्वेदिक औषधें प्रचुर प्रमाण में निर्माण होने के कारण सस्ती व गुणकारी बनना।
*५—हमारा प्राचीन व प्रतिष्ठित नाम तथा प्रत्येक औषध की शास्त्रोक्त, क्रियाशुद्ध, श्रेष्ठ और विशुद्ध होने की पूर्ण गारन्टी।

परीक्षा के लिए सूची पत्र मुफ्त मँगाइये
सुखसंचारक कम्पनी ....लिमिटेड
सुखसंचारक बिल्डिंग .... सुखसंचारक पोस्टआफिस
मथुरा

भिनेता किशोर साहू और शोभना कुणाल' फिल्म के एक दृश्य में।

—आजकल के फिल्म कलाकार ही बाहरी दुनिया से क्यों नहीं ते?

—मैं अपने सम्बन्ध में कम से ता हूँ कि मैं सिनेमा के बाहर से भी अपना सम्बन्ध बराबर और प्रत्येक कलाकार को रखना । मैं अखिल भारतीय विद्यार्थी सभापति भी रह चुका हूँ, धिवेशन नागपुर में हुआ था। यों की गतिविधि से अधिक प्रेम सामाजिक कार्यों में भी मैत्री- रता हूँ। कांग्रेस के जलसे में हुआ करता हूँ। मैं समझता र की दुनिया" से सम्बन्ध रखने बल मिलता है, साथ ही मेरी विकसित होती है।

—आप नवीन कलाकारों को प्रोत्साहन देते?

—यह आपका कहना ग़लत है। नवीन कलाकारों को प्रोत्साहन ने कई चित्रों में बिलकुल नये दिये हैं। नवीन चित्र "वीर भी मैंने नीला-नागनी को स्क्रीन है। हाँ, थोड़ी बहुत कठिनाई हमारे मार्ग में कुछ रुकावट भी कावट है वितरिकों की। लड़ाई के वितरक उन्हीं चित्रों का अधिक ते थे, जिनमें पुराने कलाकार थे। जब तक वितरक अपनी इस को नहीं बदलेंगे तब तक हम र नये-नये कलाकारों को चित्रों सकेंगे? हमारे सामने सबसे बड़ी इन डिस्ट्रीब्यूटरों की ही है। लड़ाई समाप्त हो गई है वितरकों अब अधिक नहीं चल सकेगी। नये कलाकारों के स्वागत के र रहता हूँ। जो भी कलाकार वह शौक़ से आ सकते हैं।

—आज़ाद हिन्द-फ़ौज पर जो चलाया जा रहा है—क्या वह ? क्या आपकी उनके प्रति सहानु-

—आज़ाद हिन्द फ़ौज पर जो चलाया जा रहा है वह ठीक है सम्बन्ध में मुझे कुछ नहीं कहना, कौन-सा पत्थर-दिल का मानव सहानुभूति आज़ाद हिन्द न होगी। उन्होंने जो कुछ भी , उससे उनका नाम अमर हो की दुनिया में उनके नाम में अंकित किये जायेंगे। जो भी के लिए अपना सिर कटाता सहानुभूति पाने का हक़- पंडित नेहरू के इन वाक्यों की ता है कि "गुलामी के प्रति

सुप्रसिद्ध फिल्म-कलाकार और निर्माता श्री किशोर साहू

फिल्मी-जीवन और अभिनय-कला पर मनोरञ्जक वार्ता

लेखक, श्री उमेश जोशी

[३]

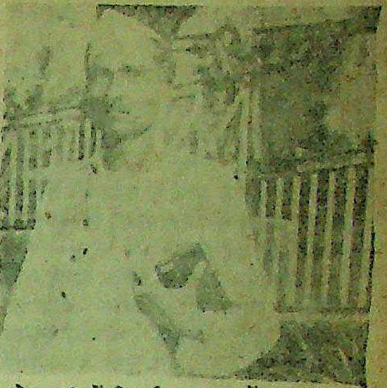

'देशदूत' में फिल्मी कलाकारों पर इंटरव्यू लिखनेवाले श्री उमेश जोशी।

प्रत्येक इंसान का विद्रोह करना धर्म है।" इससे अधिक और मैं क्या कह सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आज़ाद हिन्द के क़ैदी सब मुक्त कर दिये जायें।

प्रश्न—भारतीय विद्यार्थियों के लिए आपका क्या सन्देश है?

उत्तर—मेरा विद्यार्थियों के लिए यही सन्देश है कि वह पहले राष्ट्र के सच्चे सेवक बनें। इसके बाद अपने चरित्र का निर्माण करें। चरित्र-निर्माण करना उनका फ़र्ज होना चाहिए तीसरी बात जो कि उन्हें सीखनी है वह है अनुशासन का पालन करना। अनुशासन विद्यार्थियों के लिए नितान्त आवश्यक है। जब वह जीवन की कर्मभूमि में बढ़ेंगे तब उन्हें इसकी ख़ूबियाँ मालूम पड़ेंगी। चौथी बात यह है कि उन्हें बड़ों का अदब करना चाहिए। बड़ों का अदब करना, और छोटों को प्यार से रखना यह तहज़ीब का पहला गुरु है। पाँचवीं बात जो उनके लिए ज़रूरी है। वह यह कि उन्हें "बात का धनी" होना चाहिए। बात वजनदार कहनी चाहिए। उनमें आत्मगौरव भी होना ज़रूरी है। किन्तु इतना नहीं कि वह अभिमानी बन जायें। कालेजों से निकलकर पश्चिमी सभ्यता के गीत न गाना चाहिए। उन्हें यह ख्याल रखना चाहिए कि वह भारतीय हैं।

प्रश्न—अब आप कोई अपने जीवन की न भूलनेवाली घटना सुनाइये।

उत्तर—इस वक्त तो मैं अपने जीवन की "न भूलनेवाली घटना" न सुनाऊँगा, लेकिन हाँ मैं एक ऐसी कहानी सुनाता हूँ जिसमें मेरे जीवन पर काफ़ी प्रभाव पड़ा है और जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। इस कहानी का शीर्षक है—"नौकर" इस कहानी से आप समझेंगे कि किस प्रकार एक नौकर ने एक धनाढ्य की ख़िदमत की और उसके बदले उसे क्या मिला? अन्त में उसने उस पूँजीपति को क्या दिया? आप चौंकिये नहीं, नौकर भी दौलतमंद को दे सकता है, यह सब आपको इस कहानी से पता चल जायेगा।

मैं चौपाटी की तरफ़ घूमने निकल गया था। घूमते-घामते मैं समुद्र किनारे एक कपड़ा बिछाकर लेट गया। सात बजे का वक्त था। काफ़ी थका हुआ था। मैं इस फ़िराक में था कि कोई "पैर चप्पी" करनेवाला आये तो उससे शरीर को दबवाया जाये। इसी बीच एक तीस-पैंतीस साल का युवक व्यक्ति, जो कि देखने में निहायत ही ग़रीब मालूम पड़ रहा था—मेरे पास आकर खड़ा हो गया। उसने कहा—"बाबू जी पैर चप्पी?" मैंने कहा—"क्या लोगे?" उसने कहा—"जो आपकी मरजी में आये। आप बड़े आदमी हैं, हम तो आप ही की आशा किये हुए हैं।" "अच्छा—मुझे इस वक्त शरीर दबवाने की ज़रूरत तो है नहीं लेकिन अब तू आ गया है, तो फिर दाब दे, तू भी क्या कहेगा।" अहसान प्रगट करते हुए मैंने कहा। वह शरीर दाबने लगा। मैं चुपचाप पड़ा था। उसने बातों का सिलसिला प्रारम्भ किया—"बाबू जी आप सेठ साहब हैं, आपको देखकर मुझे अपनी जीवन की पुरानी कहानी याद आ जाती है।

मैंने चौंककर कहा—कौन-सी कहानी? सुनाओ तो सही?" उसने कहा—"जाने दीजिये बाबू जी, सुनकर क्या करेंगे, आप यहाँ मनोरंजन करने आये हैं, न कि मेरे जीवन की कड़वी कहानी सुनने?"

मैंने समय काटने के लिए उससे कहानी सुनना ही ठीक समझा। अगर उस वक्त और कोई मनोरंजन का साधन होता या मेरी पत्नी भी मेरे साथ होती तो मैं शायद उसको कहानी सुनाने के लिए मजबूर न करता। मैंने प्रगट में कहा—तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा मेरा नाम नौकर है। मैं हँस पड़ा। मैंने फिर कहा—"यह तुम क्या कह रहे हो? क्या तुम मुझसे भी मज़ाक़ करते हो?" "नहीं बाबू जी, मैं भला आपसे क्यों मज़ाक करने लगा? कहीं ग़रीब भी दौलतमंदों से मज़ाक करने का अधिकार रखते हैं? मैं क्या करूँ? मेरा नाम ही ऐसा है, जिसे सुनकर सब हँसते हैं। लेकिन बाबू ज़ी मेरे इन तीन अक्षरों के नाम में एक छोटा-सा इतिहास छिपा हुआ है।"

मैंने कहा—"तुम्हारी बोलचाल से ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम पढ़े-लिखे भी हो।" "नहीं बाबू जी—पढ़ा-लिखा होता तो क्यों मैं "पैर चप्पी' करता फिरता? कहीं ग़रीब भी पढ़ सकते हैं जिनको कि पेट भर भोजन मिलना भी मुश्किल हो जाता है।" उसने कहा। "कुछ भी हो तुम अवश्य पढ़े-लिखे हो। अच्छा तो अब अपनी राम-कहानी सुनाओ।"

"सुनियेगा—बाबू जी कुनेन की तरह कड़वी है मेरी कहानी।"

"मुझे तो कुनेन पसन्द है" मैंने हँसते हुए कहा।

आज से दस साल पहले की कहानी है। उस वक्त मेरी उम्र क़रीब पच्चीस साल की थी। मैं उस वक्त नागपुर नगर में पंडित शिवदयाल एम० ए० एल-एल० बी० के यहाँ नौकर था। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा था। जवानी का सरूर जो मुझ पर था। (मैंने बीच में टोंककर कहा अब भी तो जवान हो) उसने कहा—अब तो वह खुमारी उतर-सी गई है। जवानी का आलम तो ज़रूर है लेकिन मस्ती का सरूर मुझमें तनिक भी नहीं है। हाँ तो बाबू जी मुझे वकील साहब पन्द्रह रुपये माहवार दिया करते थे। मैं अकेला था। मेरी शादी नहीं हुई थी। माँ पहले ही मर चुकी थी। सुनते हैं मेरे पिता पैसेवाले थे। उन्होंने मुझे एन्ट्रेंस तक पढ़ाया था। बाद में वह भी मुझे अकेला छोड़कर चल बसे। उनके पास जो पैसा था, कुछ तो मेरी पढ़ाई-लिखाई में ख़र्च हो गया, कुछ को चोर चुरा ले गये—और कुछ जो बचा वह उनके दाह-संस्कार में लग गया। मैंने अच्छी नौकरी के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया। लेकिन नौकरी न मिली। "नौकरी" मुझसे भागती थी दूर, मैं परेशान हो गया। मेरी आँखों के सामने अंधकार था। उस अन्धकार में प्रकाश दिखानेवाला कोई नहीं दिखाई पड़ता था। हाँ, तो मुझे आजकल की शिक्षा पर गुस्सा आया। उस वक्त मुझे मालूम हुआ कि आजकल की शिक्षा युवकों को बिलकुल बेकार बना देती है। इससे तो अशिक्षित ही अच्छे। मैंने अपने को अनपढ़ बना लिया और अपना नाम "नौकर" रख लिया। जब तक मैं "बाबू जी" बना रहा नौकरी भी मुझ पर रहम नहीं करती थी। (बीच में मैंने पूछा भाई तुम्हारा असली नाम क्या है) उसने कहा—मुझे नीलकमल कहा करते थे। (मैंने कहा नाम तो तुम्हारा बड़ा प्यारा है) आपको अच्छा लगा है तो आप ले लीजिये, इस नाम को। मुझे तो इस नाम की वजह से काफ़ी धक्के खाने पड़े। इसी लिये तो मैंने इस नाम को अपने से दूर कर दिया। जब से यह नाम मुझसे दूर हुआ है, तभी से मैं मज़े में हूँ (मैंने फिर कहा—तुम कहानी सुनाना तो भूल ही गये) पंडित शिवकुमार वकील साहब ने मुझे रख लिया। मैं घर का सारा कार्य करता था। वकील साहब को मुझ पर बहुत विश्वास हो गया था, और इतना कि वह कभी-कभी घरवालों को मुझ पर छोड़कर परदेश भी चले जाया करते थे। वे तीन प्राणी थे। उनकी बीबी और उनकी लड़की जिसकी कि उम्र क़रीब सोलह-सत्रह साल की होगी। जब वकील साहब बाहर चले जाते, तो दो ही प्राणी घर पर रह जाया करते थे। सबके सब नये ख्यालात के थे। लड़की का नाम "चन्द्रप्रभा" था। वह बड़ी ख़ूबसूरत थी। वास्तव में "चन्द्र-प्रभा" के अनुरूप ही थी। उसके गुलाबी गालों पर बड़ी-बड़ी आँखें ऐसी आकर्षक मालूम होती थीं कि मानो वह लालकमल का एक दल हो! लाल अधरों पर मुस्कराहट हर वक्त खेला करती थी। वह बड़ी चंचल थी, ठीक तितली की तरह! मैं उसे बहिन की तरह मानता था, और प्यार भी करता था, जितना कि एक भाई को बहिन पर प्रेम करने का अधिकार होता है।

एक बार वकील साहब नागपुर से इलाहाबाद क़रीब एक हफ़्ते के लिए गये। इस बीच में चन्द्रप्रभा मुझसे अधिक बातें किया करती थी, लेकिन अपनी माँ की वजह से वह मेरे पास अधिक बैठ नहीं सकती थी। वह मुझे अक्सर काम के बहाने बुलाया भी करती थी। कभी कहती—"नौकर कमरे में झाड़ू लगा दो" मैं झाड़ू लेकर कमरे में जाता लेकिन कमरा साफ़ मिलता—मैं जब वापस चलता तो वह मुझे रोक लिया करती थी और बिठाकर बातें करने लगती थी। एक दिन चन्द्रप्रभा की माँ पड़ोस में कहीं गई हुई थी। घर पर चन्द्रप्रभा अकेली थी। माँ ने चन्द्रप्रभा से भी चलने के लिए कहा था, लेकिन उसने सिर दर्द का बहाना कर दिया। शाम के पाँच बजे होंगे। मैं उस वक्त साग लेकर बाजार से आया था। मैंने कहा—'चन्द्रप्रभा लो यह साग।' चन्द्रप्रभा ने कहा—अन्दर चले आओ मैं और अधिक अन्दर गया। बाहरवाले कमरे में भी मुझे चन्द्रप्रभा दिखाई नहीं पड़ी। मैंने उसे पुकारा। वह अन्दर के कमरे में से बाहर निकल कर आई। मैंने उसे आज नई ड्रेस में देखा। नीले रंग की सलवार और उस पर गुलाबी रंग की कमीज तथा पीले रंग

की ओढ़नी इस ड्रेस में वह बहुत जँच रही थी। मैंने कहा—क्या तुम आज कहीं जा रही हो? तुम्हारी माँ कहाँ हैं? मेरी माँ तो पड़ोस में गई हैं। मैं कहीं नहीं जा रही हूँ। आज तो आनन्द का दिन है। हम तुम दोनों मिलकर आज जी भरकर खेलें" चन्द्रप्रभा ने मेरे हाथ से साग की पोटली लेते हुए कहा। मैं चन्द्रप्रभा की विचित्र बात सुनकर दंग रह गया। मैंने कहा—"मुझे तो आज स्टेशन जाना है, वकील साहब आते होंगे" चन्द्रप्रभा मेरे नजदीक आती हुई बोली—"तुम्हें स्टेशन जाने की कोई जरूरत नहीं, मैं जो कहती हूँ। तुम्हें डरना नहीं चाहिए। बाबू जी से मैं कह दूंगी कि मैंने अपने काम से नौकर को कहीं भेजा था।" वह मेरा हाथ पकड़कर अन्दरवाले कमरे की ओर चलने लगी। मैंने झिझककर कहा—"मुझे अन्दर न ले चलिये, कहीं आपकी माँ आ गई तब.....!" "वह अभी नहीं आ सकतीं, समझे। दो घंटे बाद शायद आयें" मैंने फिर कहा मेरा अन्दर के कमरे में जाना ठीक नहीं, और वह भी तुम्हारे साथ।" उसने मेरी बात एक न मानी। वह मुझे जबर्दस्ती कमरे में ले गई। चूंकि बाबू जी में उनका नौकर था, हुक्म बजाने के सिवाय और करता ही क्या? कमरे में में अन्दर जाकर चन्द्रप्रभाकी स्थिति देखकर मेरा सारा शरीर एक बार काँप गया। मैं झिझका। मैंने कहा—"चन्द्रप्रभा आज तुम्हें हो क्या गया है? तुम्हारे सामने एक मर्द नौकर खड़ा हुआ है—और तुम उसके सामने क्या करने जा रही हो?" "मुझे इसकी बिलकुल परवाह नहीं—तुम नौकर नहीं—तुम मेरे जीवन के सहारे हो—तुम मेरे हृदय-देवता हो।"

मैं चन्द्रप्रभा की बात सुनकर अप्रतिभ-सा रह गया और सिटपिटा गया। एक तरफ़ नौकरी और दूसरी तरफ़ चरित्र-रक्षा का का प्रश्न था। मैंने दोनों को न्याय के तराज़ू में तौला। मुझे मेरे विवेक ने यही निर्देश किया कि चरित्र-रक्षा करना ही मानव का महा-धर्म होना चाहिए—यदि चरित्र के लिए जान भी देनी पड़े तो कभी पीछे न हटना चाहिए। मैंने कहा—चन्द्रप्रभा—मैं तो तुम्हारा नौकर हूँ और नौकर हो करके ही रहूँगा। यदि तुम्हें मुझे हृदय-देवता बनाना ही है तो तुमको पहले अपने माता-पिता से पूछना चाहिए। इस तरह से क्या होगा? मैं भारतीय नौकर हूँ मुझमें भारतीयता है। मैंने आपके हाथों पेट बेचा है न कि अपना चरित्र! नौकर का फ़र्ज़ यह होना चाहिए कि जिस घर की सेवा करे उसे आजन्म निभाये। मैं इतना पतित नहीं हूँ कि मैं अपने मालिक की लड़की पर बुरी नजर डालूं। तुम सुन्दरी अवश्य हो, यह मैं जानता हूँ—लेकिन मेरे लिए नहीं बल्कि उसके लिए जो कि तुम्हारे हृदय को परखेगा। मुझे तुम्हारे हृदय के परखने का कोई अधिकार नहीं है। मैं तो सिर्फ़ तुम्हारी सेवा कर सकता हूँ।"

"अच्छा तो सेवा ही करो।"

मेरे सामने महान् संकट था। भागने का रास्ता भी नहीं था। मैंने कहा—"नौकर का यह धर्म नहीं है।" चन्द्रप्रभा मेरे इन्कार से नाराज़ हो गई।

चन्द्रप्रभा ने चिल्लाना शुरू किया। फिर क्या था। बाहर के लोग सभी वहाँ इकट्ठे हो गये। मुझे पकड़ लिया गया। मुझ पर जूतों की मार पड़ने लगी—कुछ लोग कह रहे थे कि "बड़ा पाजी नौकर है—जिस हँड़िया में खाता है उसी में छेद करता है। इसकी इतनी बिसात कि इसने अपने मालिक की लड़की पर हाथ उठाया?"

कुछ ने कहा—"यह तो कहिए, चन्द्रप्रभा चरित्रवान् लड़की थी नहीं तो यह कमबख्त नौकर उसको बिगाड़ डालता" कुछ कह रहे थे—"साले को खूब पीटो, शरीर की धज्जियाँ उड़ा दो।"

मुझे इतना पीटा गया कि मैं बेहोश हो गया। जब मुझे कुछ होश आया तब मैंने अपने सामने वकील साहब को पाया। हाथ में जूता लिए हुए वह कह रहे थे—"मुझे क्या मालूम था कि यह बगुला भगत है।" मेरे सारे शरीर से ख़ून निकल रहा था, मुझे शहर के बाहर एक पार्क में डाल दिया गया। मैं कराह रहा था। उसी समय एक महाशय उधर से निकले। उन्होंने मेरी दशा देखी मैं उस वक्त बातचीत करने के योग्य नहीं था। इसलिए उन्होंने चुपचाप मुझे ताँगे में बिठाकर पासवाले अस्पताल में भर्ती करा दिया। कुछ महीनों के उपचार के बाद मैं ठीक हो गया। इस बीच में मेरी मुलाकात उन महाशय से ख़ूब अच्छी तरह से हो गई जिन्होंने मुझे अस्पताल में दाख़िल कराया था। वह अकेले थे। मेरी ही तरह, लेकिन थे वह स्टेशन मास्टर। बम्बई में—छुट्टियों में नागपुर आये हुए थे। मैंने उनको अपनी यह घटना नहीं सुनाई। उनसे मैंने कह दिया कि एक टीले से गिर पड़ा था। जीवन में पहली बार झूठ बोला। इसके बाद मैं उनके साथ नागपुर से बम्बई चला आया। दिन में मैं उनकी सेवा करता हूँ और रात को मैं यहाँ चौपाटी पर चला आता हूँ आप लोगों की सेवा करने।

* * *

एक दिन मैं बजाय चौपाटी के जुहू चला गया। चूंकि वहाँ पूज्य गांधी जी आये हुए थे। उनके दर्शनों के लिए अपार भीड़ चली जा रही थी। मैं भी पहुँच गया। मैंने भी गांधी जी के जी भरकर दर्शन किये। उनकी प्रार्थना में शामिल हुआ। मुझे बड़ी शान्ति मिली। मैं फिर घर की तरफ़ चल पड़ा। रास्ता मेरा समुद्र के किनारे-किनारे था। अपार जन-समूह के बीच में मैं भी चला जा रहा था कि एकाएक मेरे कानों में एक चीत्कार सुनाई पड़ी "दौड़ना बचाना" मैं झट उस चीत्कार की तरफ़ दौड़ा। पहुँचने पर मालूम हुआ कि एक लड़की समुद्र की लहरों के साथ बह गई है। मैं भी समुद्र में कूद पड़ा। बीच समुद्र में जाकर मैंने उसको पकड़ा और अपने बाहुपाश में आबद्ध करके किनारे पर उसे ले आया। लोग ख़ुश हो रहे थे। मेरी बहादुरी और साहस को देखकर। एक प्रौढ़ ने पाँच हजार के नोटों की गड्डी मेरे हाथों में रखनी चाही—यह कहते हुए—"मैं तुमसे बहुत ख़ुश हूँ। यह तुम्हारे काम का पुरस्कार है। तुमने वह कार्य किया है जो कि इस पुरस्कार से कहीं ज्यादा मूल्यवान है।" मैंने उस प्रौढ़ की तरफ़ देखा। मैं चौंक पड़ा। वह भी चौंक पड़ा। मैंने कहा—"वकील साहब आप यहाँ कैसे?" वकील साहब ने कहा—"अरे नौकर तुम यहाँ कैसे? तुमने मेरी पुत्री को जीवन-दान दिया, और मैंने एक दिन तुम्हारी जान लेने की कोशिश की थी।"

लड़की को भी उस वक्त तक होश आ गया था। उसने भी मुझे पहचानते हुए कहा—"पिता जी यह देवता है। मेरा ही सारा कसूर था। मैं ही पापिन थी। मेरे ही दिल में खोट थी। मेरा गला घोट दो। मैंने तुम्हारे साथ बड़ा अन्याय किया—" चन्द्रप्रभा की यह बात सुनकर वकील साहब ने मुझे गले से लगा लिया और माफ़ी माँगने लगे। मैंने कहा—"एक ग़रीब क्या भला दौलतमंद को माफ़ कर सकता है, इतनी उसमें क्षमता कहाँ?"

"मुझे इतना शर्मिंदा न करो" वकील साहब ने कहा। फिर उन्होंने मुझे रुपये देने चाहे। मैंने कहा—"मेरी आत्मा वकील साहब इतनी नीच नहीं हो गई कि एक लड़की की जान बचाने पर मैं रुपया तलब करूं। यह तो मेरा इंसानी फ़र्ज़ था। इंसानी हमदर्दी थी। फिर मैं तो आपका नौकर ठहरा" मेरी यह बात सुनकर चन्द्रप्रभा मेरे चरणों में गिर पड़ी। मैं वहाँ से भागा। वह मुझे बुलाते रहे। मैं नहीं गया। तब से बाबू जी में यही काम करता हूँ। इसी में प्रसन्न हूँ। अब मैं अमीरों से घृणा करता हूँ महिलाओं से भी मुझे डर लगता है। मैं इन दोनों से आज बचकर चलता हूँ। क्या करूँ बाबू जी मेरे जीवन का अनुभव यही है।

उसकी कहानी समाप्त होते ही मैंने उसके हाथ पर एक रुपया रख दिया। उसने एक रुपया लेने से इन्कार किया और कहा—"बाबू जी, यह तो अधिक है, चार आने पैसे दे दीजिये।" मैंने कहा नहीं तुम्हें लेना ही होगा" उसने ले लिया। मैंने कहा—"तुम्हारी कहानी बड़ी अच्छी है। मुझे इससे बड़ा अनुभव हुआ। मैं इसको प्रकाशित करूँगा, जिससे और
तुम्हारी सच्ची कहानी से लाभ उठा

रात के नौ बज गये थे। मुझे
हो गई थी। मैंने उससे वायदा करा लिया
मुझे यहाँ मिल जाया करना—उसने
"बहुत अच्छा बाबू जी।"

काम के झंझटों में मैं कई
चौपाटी पर नहीं गया लेकिन
गया। मैंने तलाश किया उस "नौकर"
लेकिन उसका कुछ पता न लगा।
मेरे पास सिर्फ़ उसकी यादगार है
यही कहानी है—यही "नौकर।"

बटन ! बटन !! बटन !!!
कोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।
हंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड
अमृतसर।

कोयला काटने की कुदाली
क्या आप अनुभव करते हैं कि इस देश के वाणिज्य की उन्नति के लिए कोयला कितना महत्त्वपूर्ण है?
कोयला काटने की कुदाली साधारण औजार है, परन्तु देश के कारखानों और रेलगाड़ियों को चलता रखने के लिए इसकी सहायता से खानों में कोयला काटा जाता
इन आवश्यक औज़ारों के प्र करने से लोहा और इस्पात उद्योग-धन्धे अपनी पूर्ण द्वारा हिन्दुस्तान की उन्न की शीघ्रता में सहायक रहे हैं।
A I C TRADE MARK
AGRICO TOOLS
एग्रिको औज़ार
यू० पी०, पंजाब, उत्तरी पश्चिम सीमाप्रांत प्रदेश और सिन्ध के डिस्ट्रिब्यूटर्स।
मेसर्स मोहम्मद दीन एण्ड सन्स ग्रैन्ड ट्रंक रोड, अमृतसर
बन्दर रोड, कराची।
ताता आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, लिमिटेड, (एग्रिको डिपार्टमेंट), गोलमूरी द्वारा प्रचारित।

मातृमण्डल

लड़कियों को सावधानी से क्यों बढ़ना चाहिए ?

स्थ जीवन में पति और पत्नी का प्रेमपूर्ण व्यवहार ही जीवन की सच्ची सार्थकता है

लेखक, श्री रमाकांत त्रिपाठी बी० ए० 'साहित्यरत्न'

री यदि वफ़ादार नहीं है तो वह स्त्री कहलाने का अधिकार नहीं वफ़ादारी—अर्थात् "अपने प्रेमी की प्रेम करने के साथ उन्नति नति में भी सदैव उससे लौ लगाये की भावना"—ही उसका सबसे है। स्वार्थवश तो सभी झुकते हैं। लिए पति की हित-कामना में भी स्वार्थ तो रहता ही है। उसमें श्रद्धा और एक सेवा-भाव की आवश्यकता है। एक काम जबर्दस्ती है और एक अन्तरात्मा में उठी द्वारा होता है। यही स्वाभाविक

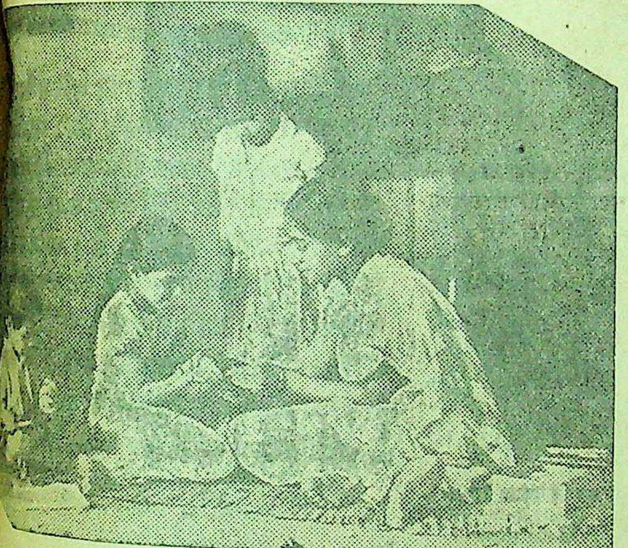

भारतीय गृहस्थ परिवार। माता बैठी हुई बच्चों से विनोद कर रही है।

स्त्री में होनी चाहिए, तभी वह और पति के जीवन को सुचारु रूप से कर सकती है।

टुम्बिक जीवन में प्रायः बड़ा-बूढ़ा का मालिक होता है और उसी के में रहकर सबको चलना पड़ता है। बड़े होने के नाते जहाँ वह सबके आदर तथा श्रद्धा का पात्र होता है वहाँ समय आने पर उसे सबसे बड़ी कठिनाई का भी सामना करना पड़ता है। खाने-पीने तथा घर-गृहस्थी की चीजों को वह स्वयं पहले नहीं ग्रहण करता, अपने से छोटे और दूसरे सदस्यों को दे देता है। क्या ऐसा वह इसलिए करता है कि वह उसका कर्तव्य है? नहीं। उसके इस काम में ममता, स्नेह और प्रेम का भाव होता है और इससे वह दुख का नहीं अपितु सुख तथा शान्ति का अनुभव करता है। उसके ऊपर नैतिक जिम्मेदारी होती है उसे पूरी करके वह अपने कर्तव्य का पालन करता है। इसी प्रकार का भाव हिन्दू-परिवार की सुयोग्य गृहणी में भी होना चाहिए। तभी वह सबके बीच अपना मान-सम्मान और आदर भी बढ़ा सकती है। यही कारण है कि स्त्री ही समाज की बुनियाद समझी जाती है। उसके ही सुकोमल करों पर राष्ट्र का निर्माण आधारित है। तब वह अपनी जिम्मेदारी को क्यों भूलती है? यश और गौरव किसी को यों ही रास्ता चलते नहीं मिल जाता। उसके लिए साधना, संयम और दृढ़ लगन की आवश्यकता होती है। क्षणिक सुख का त्याग करके नारी जब कठोर नियमों में अपने को बाँध लेती है तभी उसे वास्तविक सुख का अनुभव होने लगता है। प्रायः नव-वधुओं से सुनने को मिलता है कि "मैं क्या-क्या स्वप्न लेकर आई थी लेकिन सब मिट्टी में मिल गये। कोई भी मन की साध पूरी न हुई। किसी प्रकार का भी सुख और आराम न मिला।" बहुत वेदना होती है उनके मुख से ऐसे वाक्यों को सुनकर। इसमें उनका दोष उतना नहीं जितना कि उनके माँ-बाप का। वे इस बात से परिचित होते हुए भी लड़कियों को यह शिक्षा नहीं देते कि ससुराल जाने पर उन्हें किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा? उन्हें किस भाव को अपनाना चाहिए और किस प्रकार चलने पर वह सबकी प्रिय और सुखी बन सकती हैं? वह समझते हैं कि किसी प्रकार विवाह हो गया और छुट्टी मिली। फिर चाहे उन्हें सुख मिले या दुख उनसे क्या सरोकार! हिन्दू-परिवार में लड़कियाँ आज भार हैं, बोझ हैं जो समाज के लिए कोढ़ हैं। प्रत्येक परिवार जिसमें एक भी लड़की है त्रस्त हो उठता है। आख़िर इसका क्या उपाय है?

माता और पिताओं को प्रारम्भ से ही लड़कियों को इस बात की शिक्षा देनी चाहिए कि भविष्य में उन्हें कितनी बड़ी जिम्मेदारी वहन करनी पड़ेगी और उसे सुचारु रूप से संचालित करने के लिए उन्हें किन-किन गुणों को अपनाने का अभ्यास करना चाहिए? सुचारु रूप से तो यह काम तभी हो सकता है जब भारत स्वतन्त्र होगा। हाँ, इस समय उन्हें प्रत्येक इकाई को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। यों तो प्रत्येक माँ-बाप कुछ न कुछ शिक्षा देते ही हैं लेकिन वह भी कन्या के ससुराल चलते समय, जिससे उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता।

जो बहनें विवाह के योग्य हैं, जिनकी तैयारी हो रही है या जो अपने पति के गृह में पदार्पण कर चुकी हैं और जिनका घर कलह और द्वेष से भरता जा रहा है, यदि वे अभी से सावधान नहीं होतीं तो उनका भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा। इसके लिए विनम्रता, शीलता, सहन-शक्ति और सेवा-भाव ही उन्हें त्राण दिला सकता है। यदि वे उद्दण्डता, जिद और स्वार्थ को अपनायेंगी तो उन्हें दुर्भाग्यपूर्ण होना निश्चित है। स्त्री स्त्री ही है। पति पति ही है। उन्हें सदैव पति का ही अनुसरण करना चाहिए।

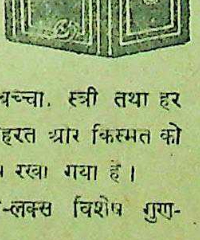

एक मिनट में फोटो उतार लो
फोटो कैमरा ५॥)
जो लोग कैमरे का बटन दबाना भी नहीं
जानते वह भी इनसे बडा आसानी से मर्द, बच्चा, स्त्री तथा हर
दृश्य आदि के अति सुन्दर फोटो उतार कर अपनी शोहरत और किस्मत को
सकते हैं यह कैमरे अति खूबसूरत हैं। मूल्य बहुत ही कम रखा गया है।
मूल्य बक्स कैमरा ५॥) रु०, स्पेशल ७॥) रु० डी-लक्स विशेष गुण-
कैमरा ११) रु०। डाक महसूल ॥।=)।
कैमरा के साथ फोटो उतारने का कागज, फिल्में, मसाला आदि फोटो
पूर्ण विधि मुफ्त भेजी जावेगी। नापसन्द होने पर मूल्य वापस होगा।
ब्रिटिश इण्डिया नावल्टी स्टोर (D. D.) पोस्ट बक्स नं० ९६ अमृतसर।

SAKTI OUSHA
MRITASANJI

पूर्वी देशों में अति प्राचीन
तथा सर्वश्रेष्ठ........
'मृत सञ्जीवनी सुरा' प्राचीन आयुर्वेदिक योग पर निर्मित एक पुष्टिकारक औषध है। इसका अमोघत्त्व सहस्र सहस्र उपभोक्ताओं द्वारा दीर्घकाल से सिद्ध किया जा चुका है। समय की कसौटी पर कसी जाने के पश्चात् हमारी 'मृत सञ्जीवनी सुरा' ने पूर्वी देशों में अति प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ होने का अधिकार यथार्थ ही उपार्जन किया है
SAKTI'S
MRITASANJIBANI
SURA
प्रत्येक अवस्था के लिए अति प्राचीन. बलवर्द्धक औषध!
अध्यक्ष माथुर बाबू का
शक्ति-औषधालय ढाका
AD-SYN. D.S-12 B8

स्टैनिस्ट्रीट ग्राइपीज
बच्चों के पेट की गड़बड़ी के लिये
SSR 118
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट • कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

इधर उधर की

शाही घुड़साल

ब्रिटेन के शाही परिवार के घोड़े और गाड़ियाँ जिस घुड़साल में रखी जाती हैं, उसे अब भी 'रायल म्यूज़' के नाम से पुकारा जाता है। 'म्यूज़' का वास्तविक अर्थ क्या है? प्रारम्भ में 'म्यूज़' एक ऐसे पिंजरे को कहते थे, जिसमें शिकरे रखे जाते थे और जो पिंजरे में बैठे-बैठे 'म्यूं-म्यूं' करते रहते थे तथा पर झाड़ते रहते थे। लन्दन के 'रायल म्यूज़' पहले-पहल ट्रफ़ालगर स्क्वायर में थे, जहाँ आजकल राष्ट्रीय चित्रशाला है, १५३७ में ब्रिटेन के राजा हेनरी ने इन स्थानों में अपने घोड़े रखने का विचार किया परन्तु इस स्थान का नाम 'रायल म्यूज़' ही रहा। बकिंघम राजप्रासाद के पीछे बनी हुई शाही घुड़साल भी आज इसी नाम से पुकारी जाती है।

* * *

शाही घुड़साल के प्रवेशद्वार के आगे भूरे रंग के पत्थर का एक बड़ा महराब है। अन्दर बड़ा आंगन है, जिसमें चार हरे-भरे वृक्ष लगे हुए हैं और इस आंगन के चारों ओर भूरे पत्थर की इमारतें बनी हुई हैं। शाही गाड़ी को खींचनेवाले घोड़े भूरे अथवा कुम्मैद रंग के हैं। ये घोड़े बहुत सुन्दर तथा शक्तिशाली हैं और सभी लगभग ६ फुट के हैं। शाही गाड़ियाँ भारी वजन की होती हैं और उनके लिए ऐसे घोड़े होना स्वाभाविक है। शाही घुड़साल में जितने भी घोड़े हैं वे सभी दृष्टि से चोटी के हैं। शान्तिकाल में यह घुड़साल घोड़ों से भरी रहती है परन्तु वर्तमान महायुद्ध के फलस्वरूप बहुत से घोड़ों को खेतों में भेज दिया गया था। युद्ध से पूर्व सम्राट् के पास लगभग ७० या ८० घोड़े थे। ब्रिटेन का सबसे बड़ा अश्व-शिक्षण-केन्द्र भी शाही घुड़साल में ही है, जहाँ घोड़ों को सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती है—गाड़ी खींचना, भीड़भाड़ और शोरगुल से न घबराना आदि। जिस गाड़ी में सम्राट् और सम्राज्ञी की सवारी निकलती है उसे सर विलियम चैम्बर्स ने १७६१ में बनाई थी। इस पर जो चित्र या शाही चिह्न बने हुए हैं, वे इटली के प्रमुख चित्रकार सिप्रियानी ने बनाये थे। यह गाड़ी अत्यन्त सुन्दर है और राज्याभिषेक के समय अथवा पार्लियामेंट का उद्घाटन करते समय सम्राट् तथा सम्राज्ञी इसका उपयोग करते हैं। इस गाड़ी के अतिरिक्त शाही परिवार द्वारा उपयोग में लाई जानेवाली भाँति-भाँति की अन्य बहुत-सी गाड़ियाँ भी हैं। विशेष अवसरों के लिए विशेष गाड़ियाँ रखी गई हैं।

* * *

महायुद्ध के काल में शाही गाड़ी को—जिसे ८ घोड़े खींचते हैं—घुड़साल से हटाकर कहीं दूर भेज दिया गया था, क्योंकि घुड़साल भी शत्रु बमवर्षा से न बच सकी और इसके कई भाग ध्वस्त हो गये। १९४५ की ग्रीष्म ऋतु में इस गाड़ी को पुनः घुड़साल में ले आया गया। शाही घुड़साल में ऐसी भी गाड़ियाँ हैं, जो शाही अतिथियों, विदेशी कूटनीतिज्ञों आदि को लाने ले जाने के लिए काम में लाई जाती है। ये गाड़ियाँ भी शाही ठाटबाट की हैं और किसी प्रकार भी कम सुन्दर नहीं है।

* * *

आँगन के पार घुड़साल में काम करनेवालों का उपहारगृह है और इससे लगा हुआ कमरा नृत्य-संगीतादि का है यह कमरा वास्तव में अजायबघर है। इसमें ऐतिहासिक महत्त्व की बहुत-सी चीजें हैं और इसकी दीवारों पर हृदयग्राहक ऐतिहासिक चित्र तथा अश्वारोही राजाओं के चित्र लगे हुए हैं। इसमें इंगलैंड के राजा रिचर्ड द्वितीय (१३७७-१३९९) के कार्यकाल से लेकर आज तक के अश्वशाला अधिकारियों की एक सूची भी है। इन चित्रों और इस सूची को देखने से पता चलता है 'रायल म्यूज़' का इतिहास भी ब्रिटेन के इतिहास का एक भाग है।

* * *

२०० पौंड में मोटर

'डेली मेल' पत्र का संवाददाता सूचित करता है कि ब्रिटेन के मोटर-निर्माताओं ने एक नमूने की कार बनाने में अपनी समस्त शक्ति लगा देने का निश्चय किया है। यह एक मजबूत, आधुनिक बनावट तथा मध्य आकार वाले इंजिन की कार होगी। वास्तव में यदि यह नमूना अधिक तादाद में तैयार किया जा सका तो उसका मूल्य २०० पौंड से भी कम निर्धारित किया जा सकता है। निर्माता ५०० कार दिन तथा पाँच दिनवाले आधार पर, १,३०,००० कार तैयार करने के लिए कारखाना हैं।

लावण्य का सार २
टाटा का श्री डी कोलोन
दी टाटा आयल मिल्स कं० लि०

AC!

निर्धारित सीमा तक अधिक से अधिक ख़रीदिये

गवर्नर रिज़र्व बैंक कहते हैं।

"थोड़ी आय वाला व्यक्ति जो भविष्य के लि कुछ बचाना चाहता है उसके लिये गवर्न आफ़ इण्डिया के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िके के अतिरिक्त और कोई उत्तम तथा सुर मद रुपया लगाने की नहीं है। वास्तव में सर्टिफ़िकेट्स इतने उपयोगी हैं कि एक व्यक्ति को ५,०००) से अधिक मूल्य के सर्टिफ़िकेट्स नहीं बेचे जाते। मेरी तो सम्मति यही है कि इस निर्धारित सीमा तक अधिक से अधिक मूल्य के सर्टिफ़िकेट्स ख़रीदिये।"

C. D. Deshmukh

सर चिन्तामन देशमुख
सी.आई.ई. गवर्नर, रिज़र्व बैंक आफ़ इण्डिया।

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्ज सर्टिफिकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिल

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं

(६) ये २ वर्ष पश्चात भुनाये जा (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ व ही भुनाया जा सकता है) परन्तु विक लाभ इसी में है कि १२ पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद ५) के स्टैम्पस जमा होने पर नल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डा सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठा

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट ख़रीदिये।

एक्जिमा
मलहम
खुजली, फोड़ा फुन्सी, जले,
कटे, दाद, गला पाव तथा
एक्जिमा
आराम करने में अद्वितीय है
७) डिबिया
हॉलिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लि:
ब्रांच लखनऊ कराची अमृतसर
SSK 123

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था. १९१६
स्वदेशी
आरोग्य ४८९६
नीलगिरि तेल
नमूना मुफ़्त
युकॅलिप पेन बाम
दादका मरहम
खाण्डालेकर बन्धु
बम्बई ४

अगर यह एल्गिन है तो यह श्रेष्ठ है
टर्किश व हुक्काबेक टावेल, डस्टर, ड्रिल, टिकल, धोतियाँ, साड़ियाँ, चादरें। जालीदार शर्टिंग, तकियेके कवरें, कामकी चद्दरें, रंगहीन फलालेनी सूती कपड़ा, जालियां, पट्टियां और बिस्तरे की चादरें सबके लिए एल्गिन।

If it's ELGIN it's good!

सरकारी कपड़ा (गति) नियंत्रण आर्डर के कारण हम यू. पी., पंजाब, बिहार और बंगाल के मुकामों में सिर्फ गांठों की तादाद में ही थोक माल, या अधिकांश मालगाड़ी द्वारा ही भेज सकते है। भारतवर्ष के किसी भी हिस्से में पोस्ट पार्सल या छोटे पार्सलो के रूपमें पेसेन्जर द्वारा निर्यात पूर्णतया बंद है। अतः फुटकर ग्राहक (सिर्फ इन चार प्रांतो मे ही) अपने नगरके व्यापारियों से ही हमारा माल लेने की चेष्टा करें।

धी एलगिन मिल्स कंपनी लिमिटेड, कानपुर।
सोल सेलिंग एजेण्टस :—
मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र, ओल्ड जनरलगंज, कानपुर।
EK-25 HI

लाइफबॉय आदत सीख चुका है!

खिलौनों के साथ खेलने से वे अपने हाथों को बुधि से चलाने की आदत बना रहा है। उसकी मां उसका ध्यान रखते हुए जानती है कि उसकी सिखाई हुई आदत – लाइफ़बॉय का रोज़ाना इस्तेमाल – जो गंदगी के ख़तरे से जो उसके खिलौनों में तथा घर में लगा रहता है – उसे खेलते समय भी सुरक्षित रखती है।

लाइफबॉय का व्यवहार करना एक ज़रूरी आदत है।

LEVER BROTHERS (INDIA) LIMITED

यूनाइटेड
कमर्शियल बैंक लिमिटेड
२, रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।

विक्रीत मूलधन............४ करोड़ रुपया
चुकता किया मूलधन......२ करोड़ रुपया
सुरक्षित मूलधन.........७½ लाख रुपया

डाइरेक्टरो का बोर्ड
श्री जी० डी० बिरला (चेयरमैन)
श्री एम० ए० इस्फ़हानी (वाइस-चेयरमैन)
श्री रमनलाल जी साराइया (वाइस-चेयरमैन)
श्रीयुत अनन्तचूर्ण ला
" महादेव एल दहानुकर
" नवीनचन्द्र मफ़तलाल
" मदनमोहन आर रुइया
श्रीयुत मातीलाल तपूरिया
" बैजनाथ जलान
" ईश्वरीप्रसाद गोयनका
सर आदम जी हाजी दाऊद

हर प्रकार के बैंकिंग कारोबार के लिए प्रस्तुत
श्री बी० टी० ठाकुर (जेनरल मैनेजर)
शाखाएँ एवं एजेंसियाँ—समस्त भारत तथा विदेशों में।

ब्रांच आफ़िस—अलबर्ट रोड, इलाहाबाद
श्री के० एल० गुप्ता, मैनेजर।

वाला
या बताया है।
की कवितायें भावुक
स्थान रखते हैं। मूल्य २)

दुस्तानी की समस्या कैसे हल हो
साहित्य-चर्चा हास-परिहास

बालसखा का नया वार्षिकांक

ग्राहकों के अनुराध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कवितायें, कहानियाँ, बढ़िया लख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क सन् १९४६ में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। मूल्य ३), बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २।।)

मैनेजर, बालसखा इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

SOUTH INDIAN..

केशोंकी शोभा बिना सारी सुन्दरता फीकी पड़ जाती है

इसीलिये बालोंको सजाने व संवारनेके नित्य नये तरीके निकलते आ रहे हैं और निकलते जांयगे। इस विशाल भारतवर्षमें विभिन्न रुचिके लोग हैं और आज ७० वर्षोंसे जवाकुसुम, हर तरहके लोगोंको पसन्द आता रहा है। हमारे देशमें धूल-धक्कड़के मारे बालोंकी जड़में गर्दा बैठ जाता है। फिर गर्मी इतनी तेज पड़ती है कि मस्तिष्कके स्नायु बहुत जल्द गर्म हो जाते हैं। इन दोनों कारणोंसे ही बालोंकी स्वाभाविक कमनीयता और मजबूती नष्ट होती है।

आयुर्वेदोक्त जड़ी-बूटियों से बना जवाकुसुम बड़ी आसानीसे मैलको निकाल देता है और बालोंकी जड़को मजबूत बनाता है। इसके स्निग्ध स्पर्शसे मस्तिष्क शीतल हो जाता है।

७० वर्षकी सुप्रसिद्धिका समृद्ध

जवाकुसुम

केशोंकी शोभा बढ़ाता.....मस्तिष्क शीतल रखता है

सी० के० सेन एण्ड कं० लि० - जवाकुसुम हाउस - कलकत्ता

ठाटबाट
सुन्दर नहीं ...

❋

आँगन के पार घुड़सा...
बालों का उपहारगृह है और...
हुआ कमरा नृत्य-संगीतादि का है...
वास्तव में अजायबघर है। इसमें ऐ...
महत्त्व की बहुत-सी चीजें हैं अ...
दीवारों पर हृदयग्राहक ऐतिहा...
तथा अश्वारोही राजाओं के चित्र...
हैं। इसमें इंगलैंड के राजा रिचर्ड...

खांसी बाघ की तरह भयंकर है...

सिरोलिन 'रुचि'

सर्दी और खांसी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिषोधक है

AAA462

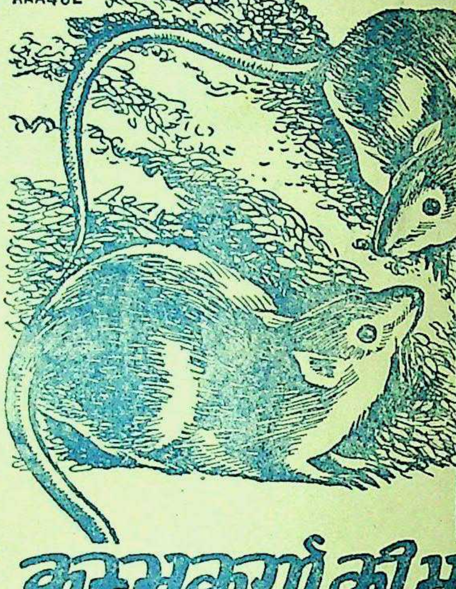

अगर सौ चूहे ...
जनें, तो वे साल ...
अनाज खा जाते ...
चूहों के बच्चे ...
से बढ़ते हैं- ...
वर्ष में ८०० ...
कर सकता है। ...
और नमी ...
के सब से बड़े ...

कुम्भकर्णों की भूख!

ये आपका १०,००,००० लाख टन अना...

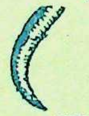

प्रति वर्ष चट कर डालते हैं

अगर चूहों, कीड़ों और नमी से अनाज की बरबादी न हो, तो ... से एक वर्ष तक १ करोड़ ८० लाख व्यक्तियों को प्रति दिन ... भोजन दिया जा सकता है। अनाज भरने की वैज्ञानिक रीति ... करने से इस बरबादी को रोका जा सकता है। चूहों-कीड़ों ... गलने से अनाज को बचाने के कुछ सरल नियम यहां दिये ...

यह ज़रूर कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से ...

नियमित रूप से अनाज ... कीजिए। सूखे मौसम में ... हवा के लिए झरोखे खोल ...

यह मत कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे ... गन्दे बोरों में या घुन ... पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई ... भरिए।

गोदाम में या इसके निकट ... बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट ... दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज ... कीजिए।

खुश्क आबोहवा में चार ... अधिक और नम आबोहवा ... महीने से अधिक समय तक ... अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर ... को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा ...

पी० घोष [कें० मित्र ... लिमिटेड, १४ पन्नालाल रोड, प्रयाग में मुद्रित तथा प्रकाशित] सम्पादक—

र्षिक मूल्य ७।।)
तिसंख्या =)

देशदूत

DESHDOOT
ILLUSTRATED
HINDI WEEKLY
Price 2 Annas

ार, ३० दिसम्बर, १९४५ सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक Sunday, 30th December 194

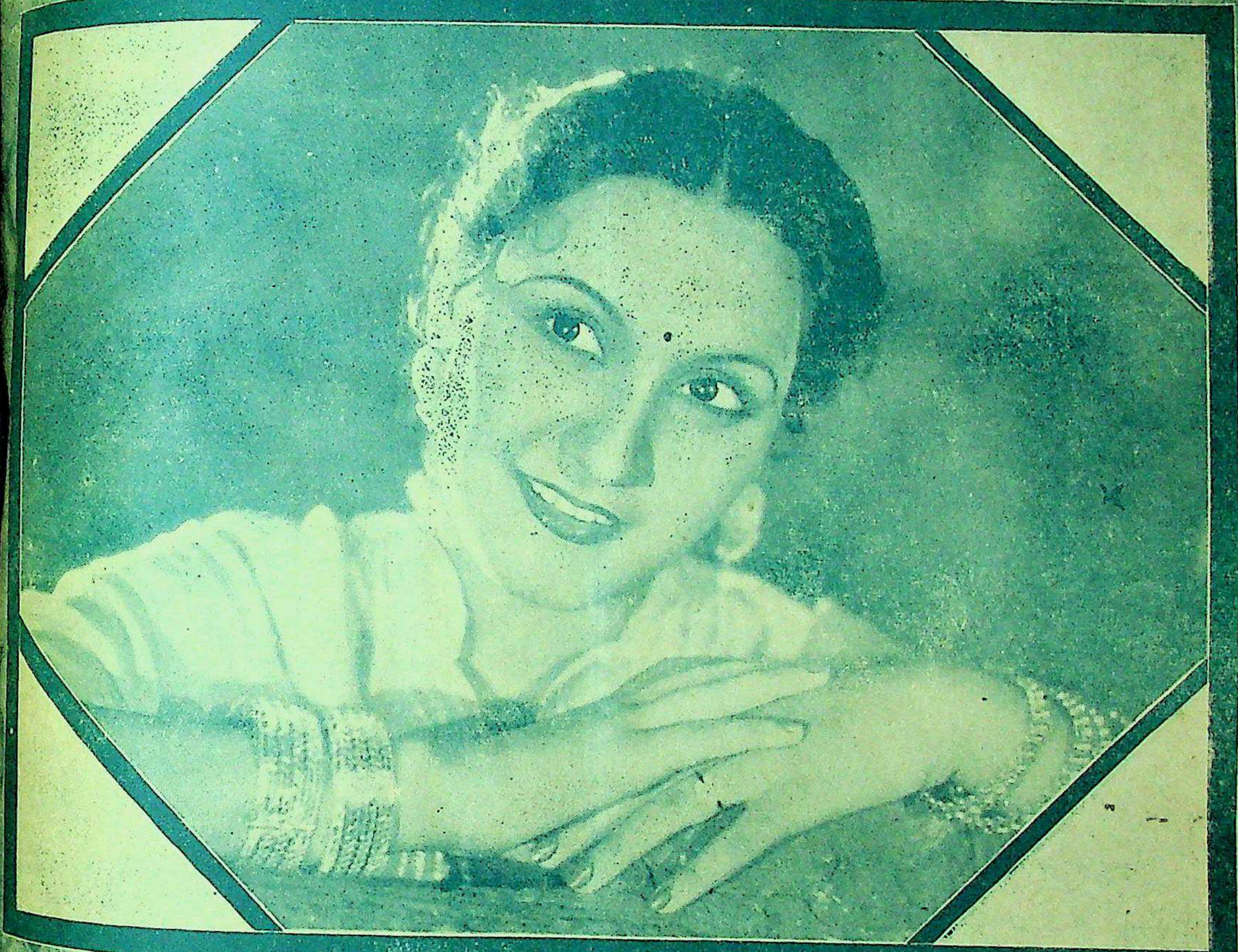

मधूलिका—कविवर अंचल की मधुर कविताओं का संकलन है। इसकी कोमल और विदग्ध कविताओं में एक मोहिनी ज्वाला है। विद्वानों ने एक स्वर से इसकी प्रशंसा की है और हिन्दी के आधुनिक काव्यों में मधूलिका का स्थान बहुत ऊँचा बताया है। कवि को अपनी इस अनुपम और नवीन शैली की कविता-पुस्तक पर चक्रधर-पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। इसकी कवितायें भावुक काव्य-प्रेमियों के गौरव की वस्तु हैं। यौवन और सौन्दर्य के ये गीत आधुनिक हिन्दी-काव्य में उच्च स्थान रखते हैं। मूल्य २)

वैदेशिक मन्त्री-सम्मेलन।
अमरीका की भूलें।

हिन्दी भाषाभाषी
भारतीय जनता का पत्र
मूल्य २ आना

हिन्दी-हिन्दुस्तानी की समस्या कैसे हल हो
रगमंच, साहित्य-चर्चा हास-परिहास

सूरज छाप
सर्वत्र मिलता है
स्था. १८६६
स्वदेशी
आरोंदा १८६६
नीलगिरि तेल
नमूना युक्त
युकॅलिप पेन बाम
दादकामरहम
खाण्डलेकर बन्धु
बम्बई ४

क्या आज आपने मेकलिन से दाँत साफ़ किये हैं ?

हाँ जलसेना में हम लोग स्वच्छ हैं !

जो लोग बाहर का सक्रिय जीवन बिताते हैं मेकलिन्स टूथ पेस्ट ही उनका चुनाव है। उसका उत्तम स्वाद जो मुख को सुगन्धित व ताजा बना देता है—सबको प्रिय है। इसका प्रयोग विशेष रूप से सस्ता है और यह अच्छे साइज की ट्यूब में मिलता है।

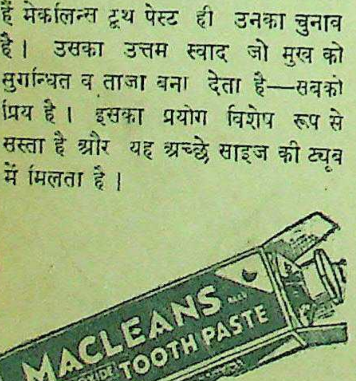

सभी केमिस्टों के पास व स्टोरों में मिलता है

Copyright

J.W.T.(E) LTD.

कठिन परिश्रम के बाद;

प्रत्येक मनुष्य का शरीर और मन दोनों ही थक जाता है। उसे फिर काम के योग्य बनाने के लिये आराम करना अत्यन्त आवश्यक है। आराम करने से शरीर की थकावट अवश्य दूर हो जाती है किन्तु मन के लिये विशेष प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है। भोजन पचने में हलका स्वादिष्ट और सात्विक होना चाहिये।

ये पाँच कहानी-संग्रह कठिन परिश्रम के बाद आराम करते समय पढ़ने योग्य हैं। इनमें वे ही गुण हैं जो मन को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक हैं।

पुष्करिणी २)
अनुराग १)
कलंक १)
गल्पगुच्छ (चार भाग) ४॥।≡)
टाल्सटाय की कहानियाँ २)

मैनेजर—बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हलवे का स्वाद खाने से मिलता है

आप हमारी मिठाइयां—

क्रीमोला टाफी, फ्रूट ड्राप तथा सेटीन स्वीट, खाकर देखें।

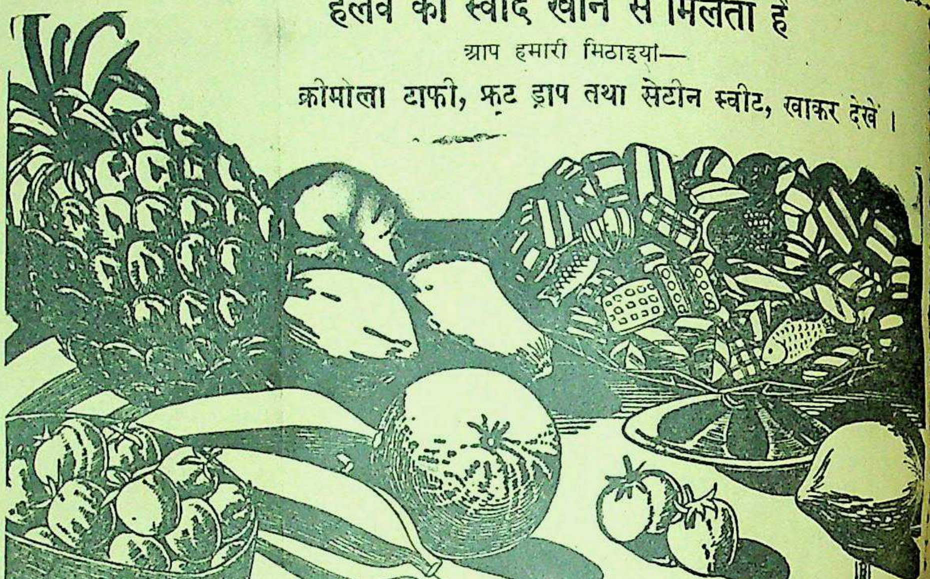

सभी विक्रताओं के यहाँ मिलती हैं :—

इन्डस्ट्रियल रिसर्च हाउस

इंडियन प्रेस बिल्डिंग्स, इलाहाबाद।

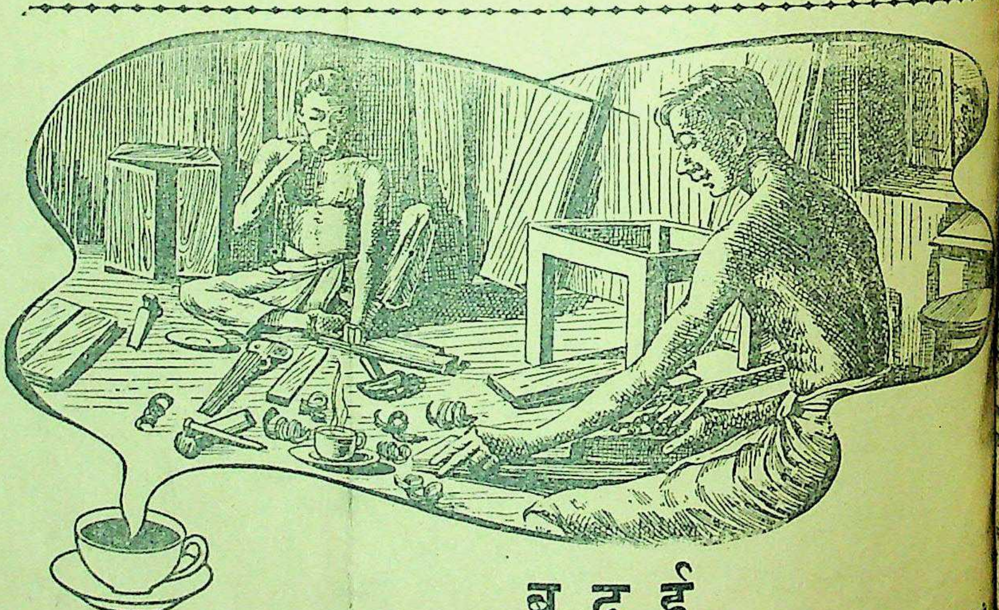

बढ़ई

वैसे तो हर सम्प्रदाय में लकड़ी का काम करनेवाले होते हैं, परन्तु इस शिल्प में शायद सिख लोग बाकी सबसे अधिक अपने देश पंजाब के बाहर मिलेंगे। हिन्दुस्तान के दूसरे किनारे पर मलयाली लोग भी प्रसिद्ध बढ़ई हैं।

अच्छी पेटियाँ प्रस्तुत करने के लिए कारीगर को बहुत ध्यान लगाने की आवश्यकता होती है। विभिन्न टुकड़ों को बराबर जोड़ने के लिए स्पष्ट दृष्टि तथा पुख्ता हाथ चाहिए।

इसी लिए हिन्दुस्तान के बढ़ई खाने-पीने के बारे में बहुत सावधान होते हैं। परन्तु चाय का प्याला उनके कार्य में सहायक होता है। सभी कुशल कारीगरों की भाँति वे भी अपने काम की सभी चीजों की उत्तमता का बहुत ध्यान रखते हैं। ब्रुक बण्ड चाय उन को बहुत पसन्द है। और ब्रुक बण्ड चाय भी हिन्दुस्तान भर में कारीगरों को बगीचों से ताजी पहुँचती है।

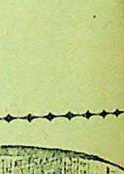

बगीचों से ताजा

ब्रुक बण्ड

दो पत्तियाँ और एक कली

देशदूत

वर्ष ८ संख्या १८]　　सचित्र हिन्दी-साप्ताहिक　　रविवार, ३० दिसम्बर, १९४५

सीधी-टेढ़ी-खरी-मजेदार

डित मदनमोहन मालवीय वर्षगांठ देश-विदेश में समारोह मनाई जा रही है और लवीय जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही है।

त जवाहरलाल नेहरू कहते हैं वर्ष स्वराज्य स्थापित हो जायेगा। अगर एक वर्ष में ही स्वराज्य की हो जायें तो भारत के भाग्य का पलट जाये? लेकिन मुस्लिम लीग क्टर अम्बेडकर का अछूत दल क्या क्या बिना इन दोनों दलों की भी स्वराज्य की स्थापना तैयार होंगे? अँगरेजों का तो कि सब लोग मिल जाओ और लो। क्योंकि वह जानते हैं कि न होगा और न राधा नाचेंगी। नेहरू आशावादी हैं, यही हमारे भाग्य की बात है। आशा पर कायम है। फिर पंडित नेहरू तो निराशावादी बने ही नहीं। अपने भी आशावादी हैं, स्वराज्य तो ही, आज नहीं कल और कल नहीं मुस्लिम लीग और अम्बेडकर तसला बजाते रह जायेंगे और भारत को स्वराज्य दे डालेंगे। अंगरेज समय की और अपने स्वार्थ करेंगे या मिस्टर जिन्ना या अम्बेडकर को लेकर ओढ़ेंगे या ?

* * *

इस वक्त अच्छी चाल चल । ईरान से आगे बढ़कर उसने टर्की छेड़ दी है। स्टेलिन की जन्म- जार्जिया भी अब स्वतन्त्र होने का रहा है। क्यों, क्या इसलिए साहब वहां पैदा हुए हैं? या बात है? रूस ने कहा है कि जार्जिया की स्वाधीनता में बाधा है। अपने राम को रूस की भांति देखकर हँसी आती कहानी याद आती है। किनारे एक बकरा पानी था। एक शेर आया और चटकर जाने की सूझी।

शेर ने कहा कि तूने मेरे साथ बड़ा अन्याय किया है, इसलिए इस समय तुझे मैं नहीं छोड़ सकता तब बकरे ने कहा कि मुझे तो याद नहीं है कि मैंने कभी भी आपके साथ अन्याय किया हो। शेर ने फिर कहा कि हाँ-हाँ मुझे अब याद आ रहा है कि तेरा बाप किसी समय मेरे साथ बड़ी बुरी तरह पेश आया था। ऐसा कहकर वह बकरे की तरफ़ कूद पड़ा और उसे चटकर गया।

* * *

यही हाल इस वक्त रूस का हो रहा है। रूस अपने पड़ोसी देशों पर किसी न किसी तरह का लांछन लगाकर उसे हड़प करने का इरादा रखता है। पहले उसने अजरबेजान प्रान्त के मामले में ईरान से चिट्ठी-पत्री की और अब वह जार्जिया के मामले में टर्की से पत्र-व्यवहार कर रहा है। वह एकबारगी निगलने के पहले टुकड़े-टुकड़े निगलने की फ़िक्र में है। असल बात यह है कि समाजवाद इसी पद्धति का नाम है। आग लगा देना रूस का काम है, फिर उसके बुझने की नौबत ही कैसे आ सकती है? रूस तो दूर से तमाशा देखता है। बात भी ठीक है। अगर कोई स्वतन्त्र होना चाहता है तो रूस क्या करे? अमरीका और ब्रिटेन भी तो प्रजातन्त्र के पक्षपाती हैं? वह टुकुर-टुकुर देखकर ही अपना पेट भर लेते हैं?

* * *

महात्मा गांधी और वाइसराय में फिर भेंट होनेवाली है। क्यों, इसलिए कि अब कांग्रेस का जोर बढ़ रहा है। केन्द्रीय असेम्बली और धारासभाओं में कांग्रेसवादियों का प्रभुत्व पुनः स्थापित होनेवाला है। इसलिए मिलना-जुलना इस वक्त अधिक फायदेमन्द साबित होगा। वाइसराय लार्ड वेवेल भी बड़े होशियार हैं। यही नहीं कि वह केवल फ़ौजी है बल्कि बैठकबाज़ भी हैं। बैठकबाजी में वह निपुण हैं। लार्ड वेवेल इस वक्त अनुभव कर रहे हैं कि बिना बैठकबाजी के मामला सधेगा नहीं। इसीलिये शायद महात्मा गांधी और उनकी भेंट होनेवाली है। किन्तु महात्मा गांधी भी कम बैठकबाज नहीं हैं। उन्होंने पिछले ३० वर्ष की स्वाधीनता की लड़ाई में ब्रिटिश अफ़सरों के साथ ऊँचे दर्जे की बैठकबाजी सीख ली है। लार्ड वेवेल डाल-डाल तो वह पात-पात।

बिहार के सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री जयप्रकाशनारायण को जेल से छोड़ने के लिए भारत सरकार विचार-विनिमय कर रही है।

देखना है मिलन का क्या परिणाम निकलता है, लेकिन यह बैठकबाजी भी रहस्यों से खाली न समझी जानी चाहिए।

* * *

वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्य डाक्टर खरे फिर कांग्रेस में शरीक होनेवाले हैं। अपने राम को यह जानकर निहायत खुशी हुई है। सचमुच कांग्रेस में शरीक होने का अब समय भी आ गया है। डाक्टर खरे पिछले कांग्रेस मंत्रिमण्डल में मध्यप्रान्त के प्रधान मन्त्री थे और उससे इस्तीफ़ा देने पर उन्होंने ऐसी छलांग मारी कि वाइसराय की कार्यकारिणी में पहुँच गये। और अगर इस बार वह कांग्रेस में आयें तो हो सकता है कि प्रधान मंत्री न भी बनाये जायें लेकिन कुछ दिनों के बाद ऐसी ऊँची छलांग मारेंगे कि किसी प्रान्त के या तो गवर्नर ही बन जायेंगे या भारत सरकार की ओर से किसी उपनिवेश के एजेंट। बड़ा ही अच्छा हो रहा है। महात्मा गांधी ने डाक्टर खरे से कहा कि उन्हें पिछली बातें भूल जानी चाहिए। सचमुच ऐसे बढ़िया वक्त में डाक्टर खरे पिछली बातें न भूलेंगे यह कैसे हो सकता है? बुद्धिमान समय के अनुसार ही चलते हैं, तब डाक्टर खरे किन बुद्धिमानों से कम क़ीमत रखते हैं?

* * *

पार्लियामेंट से कई प्रतिनिधि भारत आ रहे हैं। हां, आयें और यहां मिस्टर जिन्ना और डाक्टर अम्बेडकर से जरूर मिलें। क्योंकि कांग्रेस तो स्वराज्य चाहती ही है, उसके नेताओं से मिलना न मिलना बराबर है। पाकिस्तान और अछूतिस्तान के लिए मिलना निहायत जरूरी है।

* * *

अखिल भारतीय

हिन्दी पत्रकार

सम्मेलन के नये

सभापति पंडित

बनारसी दास

चतुर्वेदी।

पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी अधिवेशन में सभापति-पद पर विराजमान होने के पूर्व जमुना स्नान की तैयारी में खड़े हैं।

सम्पादक का पृष्ठ

मित्रराष्ट्रों का स्वार्थ किधर ?

सोवियट रूस इस समय अन्तर्राष्ट्रीय जगत में बड़े विचित्र पैंतरे बदल रहा है। एक ओर तो अमरीका और ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री मास्को में एकत्रित होकर संसार में शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के लिए समझौता कर रहे हैं, दूसरी ओर सोवियट रूस अपनी समाजवादी नीति के अनुसार पड़ोसी राष्ट्रों के प्रति अपने स्वार्थों की पूर्ति भी करता जा रहा है। यह नहीं है कि अमरीका और ब्रिटेन समझौते के इस अवसर को ध्यान में रखकर मौन बैठे हुए हों, वरन् वह भी योरप और एशिया में अपने-अपने स्वार्थों की पूर्ति की कार्यवाही में तल्लीन हैं। सोवियट रूस यदि टर्की, ईरान तथा मंचूरिया की ओर अग्रगामी है तो अमरीका, चीन तथा प्रशान्त महासागरी उपनिवेशों और ब्रिटेन इंडोनेशिया, जावा, मलाया, सुमात्रा तथा अन्य पड़ोसी द्वीपों की ओर। हाँ मास्को में वार्ता अवश्य हो रही है, किन्तु इस समझौते के कारण किसी ने भी अपनी वर्तमान प्रगति में कमी नहीं आने दी है। इससे यह अनुमान लगाना सरल है कि महान् त्रिराष्ट्र समझौते के लिए उत्सुक तो अवश्य हैं और उसके लिए सक्रिय रूप से उद्योगशील भी हैं, किन्तु कोई भी एक क्षण के लिए अपने स्वार्थों का बलिदान करने के लिए नजर नहीं आ रहा है।

जहाँ तक साम्राज्य-विस्तार तथा लिप्सा का प्रश्न है वहाँ तक तो हमें इन त्रिराष्ट्रों की नीति एक-सी ही जान पड़ती है किन्तु इस पर शायद कम मतभेद है कि रूस की समाजवादी शासन-नीति अधिक लोकप्रिय और व्यापक है और जनता को आकर्षित करनेवाली भी है बनिस्बत अमरीकन तथा ब्रिटिश शासन-नीति के। इसका सबसे बड़ा प्रणाम है योरप के छोटे राष्ट्रों के नये निर्वाचन। योरप के छोटे राष्ट्रों के नये निर्वाचनों में कम्युनिस्ट पार्टी का भी विशेष हाथ रहा है, कारणवश वह भले ही विजयी न हुई हो और उसके अनुसार मंत्रिमंडलों का निर्माण न हुआ हो फिर भी निर्वाचनों में कम्युनिस्ट पार्टियों ने भी विशेष भाग लिया था और आज भी कई राष्ट्र हैं जहाँ के नये मंत्रिमंडलों में कम्युनिस्टों का भी प्रतिनिधित्व है। फ्रांस और यूगोस्लेविया इसके प्रमाण हैं। इसका व्यापक प्रभाव समस्त योरप की शासन-नीति पर पड़ रहा है और यही कारण है कि सोवियट रूस अपनी अग्रगामी प्रगति में सफलता प्राप्त करता जा रहा है। हमारी समझ में तो अब यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि टर्की से लेकर रूस अपने पड़ोसी सभी मुस्लिम राष्ट्रों पर अपना प्रभाव स्थापित करने का इरादा रखता है। वह टर्की और ईरान-द्वारा भूमध्यसागर, ईराक़, मिस्र, अरब, फिलिस्तीन तथा इटली आदि के क्षेत्रों पर अपनी निगाह दौड़ा रहा है। वह अपने पड़ोसियों को अपने समाजवादी आतंक से ऐसी स्थिति में ला देना चाहता है कि वह उसके विरुद्ध कदापि सर न उठा सकें और अमरीका या ब्रिटेन की वहां कतई दाल न गल पाये। संभवतः इसी भावना को ध्यान में रखकर जार्जिया, दरेदानियाल तथा अजरबेजान के पड़ोसी प्रान्तों की नई हल-चल प्रारंभ की गई है। यह तो योरप तथा उसके पड़ोस की स्थिति है। हाँ, एशिया में भी वह अमरीका तथा ब्रिटेन के एकाधिकार का विरोधी है। वह अपना प्रभुत्व प्रशान्त महासागर के द्वीपों पर तथा जापान और चीन में भी रखना चाहता है। इसलिए वह चीन के मामले में अधिक क्रियाशील है। वह नहीं चाहता कि अमरीका का चीन पर एकाधिपत्य हो या ब्रिटेन सुदूरपूर्व के द्वीपों की समाजवादी विचार-धारा के प्रचार में बाधक सिद्ध हो। इस प्रकार योरप और एशिया में इन महान् राष्ट्रों के स्वार्थ-चक्र एक-दूसरे से टकराते हुए चल रहे हैं।

अब ऐसी स्थिति को देखते हुए प्रश्न यह है कि क्या मास्को में होनेवाला वैदेशिक मंत्री सम्मेलन सचमुच सफल होगा और रूस, अमरीका तथा ब्रिटेन अपने स्वार्थों का बलिदान करके पारस्परिक समझौता कर लेंगे? वास्तव में यदि समझौता हो जाता है तो सचमुच संसार को शान्ति और सुरक्षा का लाभ उठाने में पूर्ण सहायता मिलेगी किन्तु जब हम स्वार्थों की ओर देखते हैं तो निराशा ही होती है और समझौते के प्रति भी शंका होने लगती है। रूस अपना स्वार्थ-साधन स्थगित कर देगा यह असंभव जान पड़ता है और अमरीका, ब्रिटेन भी केवल समझौते के लिए अपनी साम्राज्यवादी नीति त्याग देंगे इसकी भी हम कल्पना नहीं कर सकते। ऐसी स्थिति में हम क्या निर्णय करें? समझौते के आधार पर शान्ति और सुरक्षा की स्थापना अथवा तीसरे महायुद्ध का बीजारोपण?

* * *

केन्द्रीय धारासभा में नामजदगी की नई लीला

केन्द्रीय धारा-सभा की १०२ निर्वाचित सदस्यों में ९७ का अन्तिम परिणाम घोषित हो चुका है। इसमें ५५ स्थान कांग्रेस को प्राप्त हुए हैं और २७ स्थान मुस्लिम लीग को। ५ स्वतन्त्र हैं जो ताल्लुकार हैं, ८ योरोपियन और २ अकाली सिक्ख हैं। सार्वजनिक रूप से निर्वाचनवाले तथा कुछ विशेष स्थानों पर कांग्रेस ने विजय प्राप्त की है और मुस्लिम स्थानों पर मुस्लिम लीग ने। पाँच स्थानों के अन्तिम चुनाव की घोषणा अभी नहीं हुई है। भारत-सरकार की एक सूचना से यह भी ज्ञात हुआ है कि सन् १९४० के निर्वाचन विधान में कुछ संशोधन किया गया है जिसके अनुसार नामजद होनेवाले सरकारी व्यक्तियों की संख्या २६ से २० कर दी गई और ग़ैर सरकारी व्यक्तियों की १३ से बढ़ाकर १९ कर दी गई। किन्तु अभी अभी पता चला है कि नियमों में पुनः संशोधन हुआ है और अब २६ सरकारी व्यक्ति नामजद किये जायँगे और ग़ैर सरकारी केवल १४। इस प्रकार कुल मिलाकर नामजद सदस्यों की संख्या अब ४० होगी।

इस प्रकार ४० सदस्य सरकार की ओर से नामजद किये जायँगे। समझ में नहीं आता कि भारत-सरकार को इतनी जल्दी-जल्दी निर्वाचन-नियमों में संशोधन की क्यों आवश्यकता प्रतीत होती रहती है जब कि वर्तमान मजदूर सरकार के वायदे के अनुसार धारा-सभाओं का, निर्वाचन के बाद पुनःसंगठन होनेवाला है। कांग्रेस बराबर कहती चली आ रही है कि केन्द्रीय धारा सभा का निर्माण केवल निर्वाचित सदस्यों के संगठन द्वारा ही होना चाहिए। नामजदगी का नियम और प्रचलित प्रथा एकदम तोड़ देनी चाहिए। भारतीय विधान में आये दिन जब बात-बात में परिवर्तन होते रहते हैं और पार्लमेंट द्वारा वह स्वीकृत भी हो जाते हैं तो क्या नामजदगी के नियम रद्द नहीं किये जा सकते और पार्लीमेंट से उसकी स्वीकृति नहीं ली जा सकती? किन्तु सरकार की ओर से यह और भी अन्धेर किया गया है कि नामजद सरकारी व्यक्तियों की संख्या बढ़ा दी गई और ग़ैर सरकारी व्यक्तियों की घटा दी गई। ब्रिटिश सरकार भविष्य में भारत को किस हद तक आत्म निर्णय का अधिकार देने की तैयारी कर रही है, इसका यह ज्वलन्त नमूना है।

यद्यपि कांग्रेस ने केन्द्रीय धारासभा में इतना स्थान प्राप्त कर लिया है कि वह भारत के एक बड़े समूह का प्रतिनिधित्व करती है और मुस्लिम लीग तो इसलिए और भी विजयी हुई कि कांग्रेस की ओर से मुस्लिम स्थानों के लिए उम्मीदवार खड़े ही नहीं किये गये किन्तु अब प्रान्तीय धारासभाओं के चुनाव में हिन्दू स्थानों के अतिरिक्त मुस्लिम स्थानों के लिए भी कांग्रेस की ओर से उम्मीदवार खड़े किये जायेंगे तब मुस्लिम लीग के मुस्लिम प्रतिनिधित्व का पता चलेगा। हम यह जानते हैं कि सरकार ने नामजद सदस्यों की संख्या क्यों बढ़ाई और वह भी सरकारी व्यक्तियों की? मुस्लिम लीग और नामजद सदस्यों का मिल जाना प्रायः सरल भी होगा। जो कुछ भी हो निर्वाचन-नियमों में कतई परवर्तन होने की आवश्यकता है और नामज़दगी की प्रथा तो कतई समाप्त कर दी जानी चाहिए। सार्वजनिक निर्वाचन से ही यह पता चलता है कि किस जमात का जनता पर प्रभुत्व है। इस प्रकार के निर्वाचन से संगठित धारा-सभा ही भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती है और सार्वजनिक समस्याओं का हल भी तभी निकल सकता है।

* * *

रेडियो की भाषा के ये सुधारक !

भारत सरकार के सूचना तथा ब्राडकास्ट-विभाग के प्रधान डाइरेक्टर सर अकबर हैदरी ने अभी हाल में एक समिति का निर्माण किया है जो हिन्दी-उर्दू की दृष्टि से अखिल भारतीय रेडियो-विभाग में परामर्श देने का कार्य करेगी। इस कमेटी में जामिया मिल्लिया के अध्यक्ष श्री जाकिर हुसेन, डाक्टर ताराचंद और रायबहादुर श्री श्रीनारायण महथा और नवाब सिद्दीकअली खाँ एम० एल० ए० (केन्द्रीय) रखे गये हैं। हमें समिति की सदस्यों की नामावली देखकर आश्चर्य हुआ और हमारी यह धारणा भी सही निकली कि भारत सरकार का रेडियो-विभाग भाषा की समस्या को सुलझाने के लिए किसी प्रकार भी तैयार नहीं है। समिति में दो मुसलमान और दो हिन्दू हैं। मुसलमान सज्जन तो उर्दू के पक्षपाती हैं ही, इसलिए उनके बारे में कुछ कहना व्यर्थ है किन्तु जिन दो हिन्दू सज्जनों को समिति का सदस्य बनाया गया है क्या वह हिन्दी के हिमायती हैं? रायबहादुर महथा का हिन्दी-संसार में क्या स्थान है, हमें कम से कम पता नहीं है, रह गये डाक्टर ताराचंद जी, वह उर्दू के पक्षपाती हैं, यह सर्वविदित है। हमारी समझ में नहीं आता कि भारत सरकार सदा बेमतलब की जोड़-गाँठ क्यों किया करती है? वह क्यों नहीं स्पष्ट कर देती कि रेडियो-विभाग केवल उर्दू के प्रचार के लिए ही संचालित होता है? हाँ, यदि वह रेडियो की भाषा-संबंधी सुधार और परामर्श के लिए समिति का निर्माण करती थी तो उसके लिए यह उचित था कि वह हिन्दी और उर्दू के माने हुए विद्वानों द्वारा ही समिति का निर्माण करती! हिन्दी-संसार रेडियो की भाषा-नीति का घोर प्रतिवाद करता आ रहा है, वर्धा की हिन्दुस्तानी प्रचार-समिति के अधिकारी भी रेडियो की भाषा को हिन्दुस्तानी नहीं मानते हैं, फिर भारत सरकार 'हिन्दुस्तानी' के नाम पर जो भाषा प्रचारित कर रही है वह समस्त जनता के लिए है या केवल उर्दूदाँ मुस्लिम समाज के लिए? हमें दुःख है कि सरकार समय-समय पर ऐसा कार्य करती रहती है जो साम्प्रदायिक भावना को उत्तेजित करने में सहायक होता रहता है, उससे समस्या का वास्तविक हल नहीं निकलता। रेडियो परामर्शदात्री समिति का निर्माण भी, कुछ इसी भावना के अनुरूप है।

हम समझते हैं कि रेडियो-विभाग का संबंध सार्वजनिक जनता से है और लाखों रुपये इस काम के लिए खर्च कि जाते हैं। इसलिए सरकार को जो भी करना चाहिए वह जनता के हित की दृष्टि से न कि एक विशेष सम्प्रदाय की हित-रक्षा तथा उनकी संस्कृति, भाषा और भावना के प्रचार के लिए। सर अकबर हैदरी साहब सर सुलतान अहमद साहब का पदानुसरण करने में सफल हो हैं, यह बात भी कम मार्के की नहीं। सरकार पर इस प्रकार के सार्वजनिक विरोध का कोई प्रभाव पड़ेगा या नहीं इसे हम नहीं जानते किन्तु रेडियो विभाग में कब सुधार होगा, भाषा-संबंधी समस्या कब हल होगी और साम्प्रदायिकता का कब अंत होगा, यह तो समय पर निर्भर है किंतु हिन्दी-संसार को रेडियो की भाषा-संबंधी नीति के सुधार के लिए आवाज उठाते जाना चाहिए, कभी कभी तो वह रास्ते पर आयेगी ही, आज न सही कल और कल न सही परसों।

* * *

रोमन लिपि क्यों ?

हिन्दी के सुप्रसिद्ध विद्वान् और ह प्रान्त के राष्ट्रीय नेता श्री सम्पूर्णानन्द ने एक वक्तव्य देते हुए हिन्दी भाषा-भा जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित कि है कि प्रान्तीय सरकार ने सात जिलों रोमन लिपि द्वारा शिक्षा देने की स्वीकृति की है। श्री सम्पूर्णानन्द ने सरकार की इस नई नीति का विरोध किया है और कहा है कि रो लिपि हमारी संस्कृति के विपरीत तो ही साथ ही प्रचलित हिन्दी और उर्दू के लिए भी घातक है। कहा गया है कि सरकार ने रोमन लिपि द्वारा शि की योजना सम्भवतः इसलिए है कि युद्ध के बाद जो सैनिक उन्हें इस योजना की पूर्ति में कार्य सौंपा जायेगा। जहां तक को काम से लगाने का प्रश्न है हमारा विरोध नहीं है किन्तु रोमन लि द्वारा शिक्षा देने की प्रणाली का सचमुच घातक है। हिन्दी और उर्दू का सभी जिलों में व्यापक प्रचार है फिर रोमन एक तीसरी लिपि के प्र की क्यों आवश्यकता महसूस हुई? का प्रश्न एक सार्वजनिक हित का है इसलिए जब तक सार्वजनिक इस प्रश्न पर सम्मति न ले ली तक सरकार को शिक्षा सम्बन्धी नई लिपि का अड़ंगा न उपस्थित चाहिए। इस प्रकार के कार्य से पद्धति में सरलता नहीं वरन् परेशानी उत्पन्न होगी। क्या हम कि सरकार रोमन लिपि-प्रचार त्याग करेगी? कम से कम हिन्दू या किसी भी जाति के सांस्कृतिक में सरकार को हस्तक्षेप नहीं करना

आल्हा

का थोड़ा बहुत किस्सा हिन्दी-प्रेमी जानते हैं। पर उसका वार वर्णन थोड़े लोगों को ही मालूम चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद शर्मा की कृपा कथा हिन्दीवालों को सुलभ हो इसमें परमाल का ब्याह, संयु स्वयंवर, माड़ौ की लड़ाई, आल्ह मलखान का ब्याह, दिल्ली की कुमायूं गढ़ का युद्ध आदि कितनी इयों और विवाहों का वर्णन है। आकार के सवा तीन सौ से ऊपर की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल तीन रुपये पांच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड इलाहा

तीन वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन

क्या मास्को में विश्वशान्ति का निर्णय होगा ?

लेखक, श्री चन्द्रकुमार. बी० ए०

मास्को में इस समय तीन महान् राष्ट्रों—अमरीका, ब्रिटेन और रूस—के वैदेशिक मंत्रियों का सम्मेलन हो रहा है। रूस की अग्रगामी प्रगति तथा उसकी माँगों को देखते हुए क्या अमरीका और ब्रिटेन समझौते के लिए तैयार होंगे? यह बड़ी पेचीदी समस्या है किन्तु यदि सचमुच एकता स्थापित हो जाती है तब तो इससे बढ़कर कोई बात नहीं, नहीं तो क्या होगा, इसका निर्णय भविष्य स्वयं करेगा। इस लेख में विचारशील लेखक ने पूर्वाभास पर प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि मास्को सम्मेलन की आवश्यकता क्यों हुई? साथ ही पाठकों को अमरीका, ब्रिटेन और सोवियट रूस की आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का ज्ञान भी प्राप्त होता है।

रूस के वैदेशिक मंत्री मोलोटोव।

'तीन बड़ों' के परराष्ट्र-मंत्री, परमाणु -भेद-द्वारा कलुषित किये गये अन्त- वातावरण को विशुद्ध करने के की घोषणा के साथ, मास्को में मिल हैं। यह मिलन, अनिश्चित मतभेदों सी अविश्वास की काली छाया हित होने पर भी, आगे बनने- विराष्ट्र संघ' (यूनाइटेड नेशन्स) के लिए समुचित आधार सकता है ऐसा हमारा है। अमेरिका से मास्को के लिए ते हुए अमरीकी परराष्ट्र-मंत्री ने ऐसा विश्वास भी दिलाया है ने महीनों में मित्रराष्ट्रों के बीच ता बढ़ गई है, उसे दूर करने का या जायगा। परमाणु शक्ति-भेद टन के लिए भी उचित तरीक़ों के लिए बातचीत की जायेगी। घोषणा के साथ ब्रिटेन के वैदेशिक बेविन भी वहाँ पहुँचे हैं और अपने प्रयत्नों की सफलता के लिए जैसे महापुरुष का आशीर्वाद भी । सोचना तो यही चाहिए कि के ये 'तीन बड़े' रक्षक भावी न्ति के लिए ठोस व्यवस्था के में जी तोड़ प्रयत्न करेंगे।

न-सम्मेलन—लगभग ढाई मास म्बर १५ को लन्दन में मंत्रियों की पंचायत हुई थी। लेकिन अपने असफल हो बिना कुछ ठोस निर्णय ही वह एकाएक भंग हो गई। सम्मेलन के भंग होने का मुख्य बताया गया था कि ब्रिटेन और तीन बड़ों द्वारा 'याल्टा' और ' में किये गए निर्णयों को आगे में तैयार नहीं थे। पोट्सडम में तय किये गए मसलों पर विचार करने और उसके सुलझाव के लिए यह निर्णय हुआ था कि केवल वही राष्ट्र जिन्होंने उस निर्णय पर हस्ताक्षर किये थे, शामिल होंगे। ब्रिटेन और अमेरिका का कहना था कि पोट्सडम सम्मेलन के बाद शामिल किये गए राष्ट्र फ़्रान्स और चीन को भी उन मामलों पर

सोवियट रूस के सर्वेसर्वा स्टेलिन इस समय मास्को में विराजमान हैं।

विचार करने के लिए इकट्ठा किया जाय। मुख्य रूप से इस प्रश्न पर एकमत न हो सकने के कारण लन्दन सम्मेलन एकाएक भंग हो गया और अमेरिका-ब्रिटेन ने सम्मेलन के टूटने का सारा दोष रूसी परराष्ट्र-मंत्री श्री मोलोटोव पर मढ़ दिया। पाठकों को याद होगा कि सम्मेलन भंग होने पर अमेरिका के वैदेशिक मंत्री श्री बिर्न्स ही पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अमेरिका से ब्राडकास्ट करते हुए रूस द्वारा अमेरिका-ब्रिटेन पर अपनी नीति लादने की बात का ढिंढोरा पीटा था।

बाद की घटनाओं से यह साफ़ हो गया कि सम्मेलन के भंग होने में रूस का विशेष दोष नहीं था। लन्दन-सम्मेलन पर एटम-बम के दानव की भयावह छाया पड़ रही थी। अमरीकी वैदेशिक मंत्री की लन्दन की तीखी उक्तियों के पीछे जनतंत्र और समानता के अधिकार के हिमायती की आवाज नहीं आ रही थी बल्कि एटम बम जैसी संहारक शक्ति को केवल अपने कब्जे में पाकर उसके बल पर अपनी मनचाही करवानेवाले, विश्व-शान्ति का स्वांग रचनेवाले अमेरिका की आवाज आ रही थी। लन्दन-सम्मेलन के कुछ ही दिनों बाद वाशिंगटन में एटम शक्ति-भेद को गुप्त रखने का समझौता हुआ और इसका क़तई जिक्र लन्दन में नहीं किया गया था।

फ़्रान्स और चीन को पोट्सडम के निर्णयों को कार्यान्वित करने में शामिल करने के कई कारण थे। पहली बात तो यह कि उस समय युद्ध जारी था और फ़्रान्स आजाद देश नहीं था। चीन जापान के भयंकर आक्रमण को सम्हाल न सकने के कारण अत्यन्त त्रस्त था। दोनों में से कोई सम्मेलन में भाग लेने योग्य नहीं थे। दूसरे फ़्रान्स की राजनैतिक परिस्थिति ऐसी नहीं थी कि उस पर किसी भारी जिम्मेदारी का बोझ डाला जाता। हिटलर के पतन के पहले तक, फ़्रान्स में 'धुरीपक्षीय', कठपुतली सरकार थी। फ़्रान्स के पुनः आजाद होने पर अस्थाई सरकार बनी जरूर, लेकिन उस वक्त तक भी देश की आन्तरिक दशा सुधर नहीं पाई थी, और नये चुनाव न हो सकने के कारण जनता की सही राय का पता नहीं लग सकता था। जनरल डिगाल और उनके अनुयायी जनता के सही प्रतिनिधि नहीं थे, यह बाद के चुनाव ने साबित कर दिया। इसलिए मोलोटोव का फ़्रान्स और चीन के प्रतिनिधियों को पोट्सडम निर्णयों

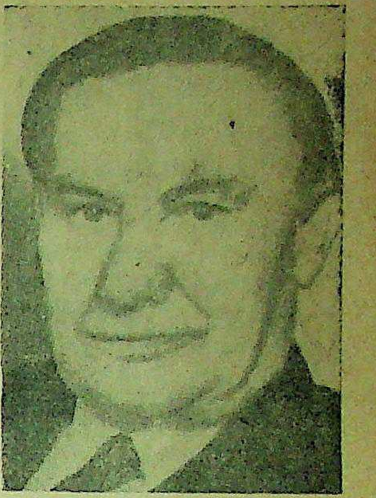

ब्रिटेन के वैदेशिक मंत्री मिस्टर बेविन।

के कार्यान्वित करने में न शामिल करना वैधानिक दृष्टि से और जनहित की दृष्टि, दोनों तरह से, ठीक था; और ब्रिटिश अमेरिका का दोषारोपण अपने पक्ष में फ़्रान्स और चीन को न कर सकने के कारण, केवल खीज मात्र थी। लन्दन में वार्ता-भंग के बाद इस मास्को-सम्मेलन का होना ब्रिटिश-अमरीकी पक्ष की हार है। यह नौबत कैसे आई इसे हम आगे देखेंगे।

ब्रिटेन और अमेरिका का ख्याल था कि जर्मनी की हार से मित्रराष्ट्रों में सामरिक एक्य की विशेष आवश्यकता न रहने पर, वह सोवियट और जनतन्त्रीय नव-योरप से अपनी शर्तों पर बातचीत करेंगे। दूसरे, विनाशकारी युद्ध के परिणाम-स्वरूप आर्थिक और औद्योगिक दृष्टि से क्षत-विक्षत ये देश, आप ही लाचार होकर उनके पास सहायता की भीख के लिये आयेंगे, विशेष कर अमेरिका के पास, जो आज का सबसे बड़ा पूँजीवादी और साम्राज्यवादी राष्ट्र है। इसी बीच में चीन, जावा-हिन्दचीन के झगड़ों का निपटारा कर दिया जायेगा और योरप में सोवियट के ख़िलाफ़, अमेरिका के कर्जे और एटम-बम तथा ब्रिटेन की कूटनीति के बल पर एक जबरदस्त मोर्चा तैयार हो जायेगा। इसलिए फ़्रान्स और चीनको वार्ता में शामिल करने की हठधर्मी, फ़्रान्स के मो० डिगाल की वाशिंगटन तक दौड़, ब्रिटेन अमेरिका का साम्राज्यवादी डिगाल को, हिन्दचीन को फ़्रान्सीसी साम्राज्य में मिलाये रखने में मदद देने का आश्वासन, और चीन की केन्द्रीय सरकार को कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ अमेरिका की खुली मदद।

मास्को सम्मेलन के पहले

लेकिन पिछले दो महीने की घटनाओं ने ब्रिटिश-अमरीका गुट्ट के सारे मन्सूबों को मिट्टी में मिला दिया। एटमशक्ति पर ब्रिटेन अमेरिका के एकाअधिकार

के प्रधान मंत्री जनरल डिगाल।

चीन के मार्शल च्यांग काई शेक।

की बात की सारी दुनिया में जबर्दस्त टीकाटिप्पणी हुई। खुद अमेरिका और ब्रिटेन के प्रगतिशील अखबारों ने इस नीति की कड़ी आलोचना की। नतीजा यह निकला कि श्री बिर्न्स एटम बम-भेद को 'यूनाइटेड नेशन्स कमीशन' के सिपुर्द करने की बात करने लगे।

योरप के नये जनतंत्रीय राष्ट्रों को जनता का विश्वास और समर्थन न प्राप्त बताकर बदनाम करने की कोशिश कामयाब नहीं हुई। बालकन प्रदेश के नये चुनाव ने नये योरप के स्थिर-मत का निर्देशन कर दिया। 'ग्रीस' में ब्रिटेन-अमेरिका अपनी कठपुतली सरकार ही क़ायम रखना चाहते थे लेकिन लोकमत के दबाव से, जनपक्षीय 'ईम' दल का समर्थन प्राप्त सरकार केन्द्र में स्थापित करनी पड़ी।

फ़ान्स की राजनीति के नई करवट बदलने से तो योरप में समाजवादी-विरोधी मोर्चा तैयार करने का आधार ही खत्म हो गया। साम्राज्यवादी डिगाल के खिलाफ़ कम्युनिस्ट पार्टी, जो सबसे शक्तिशाली और बहुमत में है, के विजयी होने से ब्रिटेन-अमेरिका के हौसले पस्त हो गये।

चीन में च्यांगकाई शेक की कम्युनिस्ट सरकार के तहसनहस करने में मदद देकर अमेरिका ने सोचा था वे च्यांग की केन्द्रीय सरकार की कुंजी अपने हाथ में ले लेंगे, लेकिन उसकी इस नीति की निन्दा स्वयं अमेरिका के राजनीतिज्ञों-द्वारा होने लगी और हारकर च्यांग से गृह-युद्ध समाप्त कर, शीघ्र दोनों दलों में सुलह कर राष्ट्रीय सरकार बनाने की बात कहनी पड़ी।

हिन्दएशिया और हिन्दचीन के जन-स्वातंत्र्य आन्दोलन के बारे में सोचा गया था कि जापान और जर्मनी जैसे शक्तिशाली राष्ट्रों को दबा दिया गया तो इन ग़ुलाम मुल्कों की हस्ती ही क्या? हिन्दएशिया वासी बहादुरी से अपनी आजादी के लिए लड़ते जा रहे हैं। ब्रिटेन के डच साम्राज्यवादियों की मदद करने की बात पर, सारी दुनिया में आलोचना और निन्दा हो रही है।

अमेरिका-ब्रिटेन की इस साम्राज्यवादी चालों के विफल हो जाने के कारण ही उन्हें हार मानकर मास्को की शरण जाना पड़ा है।

ऐसे अविश्वास के वातावरण में यह तो आशा नहीं करनी चाहिए कि बहुत आसानी से तीनों मंत्री किसी निर्णय पर पहुँच सकेंगे और जब कि अमेरिका ने ब्रिटेन को भारी क़र्ज़ के बोझ के नीचे दाब रक्खा है और अप्रत्यक्ष रूप से अपने नेतृत्व में चलने का समझौता कर रक्खा है। सम्मेलन की कार्यवाही भयंकर गोपनीयता के वातावरण में चल रही है। राजनैतिक क्षेत्रों में उनकी वार्ता के सम्बन्ध में अनुमान लगाया जा रहा है। इस महायुद्ध के बाद जिस प्रकार साम्राज्यवादियों और जनवाद के विरोधियों को क़दम-क़दम पर मुंह की खानी पड़ी है और जिस प्रकार पहले के ग़ुलाम लोग हिन्दएशिया, हिन्दचीन, मलाया, बर्मा और अजरबेजान में विदेशी जुये को उतार फेंकने के वीरतापूर्ण कार्य में लगे हुए हैं उससे अमेरिका और ब्रिटेन की सम्मिलित गुटबन्दी के खिलाफ़ अकेले पड़े हुए सोवियट रूस के हाथ मजबूत होंगे। जिस तरह लन्दन में अमेरिका-ब्रिटेन की मनमानी नहीं हो पाई, उसी तरह दुनिया को अपनी मुट्ठी के नीचे रखने का स्वप्न मास्को में भी न पूरा हो सकेगा। उन्हें मजबूर होकर अपने साम्राज्यवादी स्वार्थों के त्याग सही मानी में स्थायी विश्व-शान्ति के लिए सोवियट और जनतंत्री शक्तियों के साथ सहयोग करना पड़ेगा।

पंडित नेहरू का तूफ़ानी दौरा

आसाम की लाखों जनता को कांग्रेस का संदेश

लेखक, प्रभुदयाल विद्यार्थी

पंडित जवाहरलाल नेहरू इस समय समस्त सारे देश का तूफ़ानी दौरा कर रहे हैं। अब तक आप पंजाब और काश्मीर का दौरा कर चुके हैं। पिछले दिनों आपने बंगाल-यात्रा में आसाम का तूफ़ानी दौरा करके लाखों जनता को कांग्रेस का संदेश सुनाया था। इस छोटे से लेख में श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी ने पंडित नेहरू के दौरे की चर्चा की है और उनके भाषणों के अंश और विवरण देते हुए यह बतलाया है कि वह भारतीय जनता के कितने प्रिय बन गये हैं। महात्मा गांधी के बाद पंडित नेहरू ही भारत के लोकप्रिय नेता माने जाते हैं।

पटना में होनेवाले विद्यार्थी कांग्रेस के अधिवेशन में पं० जवाहरलाल नेहरू

पंडित नेहरू आसाम में तूफ़ानी दौरा कर चुके हैं। पिछले चुनाव के समय भी आपने सारे देश में तूफ़ानी दौरा करके कांग्रेस की शक्ति को बहुत आगे बढ़ाया था। अपने दौरे के समय आप न रात देखते हैं न दिन। आप एक-एक दिन में १५-१५ सार्वजनिक सभाओं में भाषण देते हैं। वायुयान से यात्रा करते हैं, रेल से जाते हैं घोड़े पर सवार होते हैं और बाज जगहों पर आप साइकिल पर सवार होकर सभाओं में हाजिर होकर भाषण करते हैं। आसाम के दौरे में आपकी ट्रेन में लाउडस्पीकर लगाया गया था। जहाँ आपकी ट्रेन रुकती थी वहीं हजारों की भीड़ उपस्थित हो जाती थी। आप अपने डिब्बे से ही भाषण देने लगते थे।

आपका भाषण सुनने के लिए लाखों जनता इकट्ठी होती थी। आसाम में एक सभा में एक लाख से ज्यादा जनता आई थी। आपने कहा—'कांग्रेस उन मजदूरों, ग़रीबों और दलितों की हामी है। जिनकी दशा स्वराज्य स्थापित करके सुधारनी है। स्वराज्य अकेले हिन्दुओं या अकेले मुसलमानों का राज्य नहीं चाहती, वह सबका राज्य चाहती है जहाँ जाति-पाँति का कोई भेद-भाव नहीं होगा। यह लड़ाई शस्त्रों की नहीं बल्कि आत्मत्याग की है।" आगे नेहरू जी ने फिर कहा—"बंगाल में पाँच लाख से ज्यादा लोग भूखों मर गये। इससे आज साफ प्रकट हो रहा है कि हमारी मौजूदा सरकार निकम्मी और ग़ैर जिम्मेदार है। हमें इस शासन को बदलना होगा और अपना शासन-विधान क़ायम करना होगा।"

पंडित नेहरू आसाम में जहाँ कहीं भी गये वहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। हजारों की थैलियाँ भेंट की गई। अब तक एक लाख रुपये से ज्यादा रक़म भेंट में मिल चुकी है।

हर जाति और सम्प्रदाय पंडित जी का स्वागत करना चाहता था। खास कर महिलाओं ने उन्हें शन्तरे और अन्नास भेंट देते हुए अपने स्थान में उनका स्वागत किया। पंडित नेहरू ने महिलाओं को सम्बोधित करते हुए कहा—"आप सबको कांग्रेस की शक्ति बढ़ानी चाहिए। जयन्तापुर ग्राम के मुसलमान भाइयों ने उनका बहुत शानदार स्वागत किया। उनके स्वागत के उत्तर में पंडित जवाहरलाल जी ने कहा कि आप सब लोगों को कांग्रेस में शरीक हो जाना चाहिए क्योंकि कांग्रेस किसी एक सम्प्रदाय की नहीं बल्कि सभी सम्प्रदाय के लोगों की एक बड़ी राष्ट्रीय संस्था है।"

शिलाँग की एक महती सभा में भाषण करते हुए पंडित जी ने कहा—"आजकल हिन्दुस्तान में जो शासन चल रहा है वह प्रधानतः पुलिस राज्य के ढंग का है। कोई भी शासन पुलिस राज्य बनकर बहुत दिन जिन्दा नहीं रह सकता। उसके लिए सामाजिक विकास में दिलचस्पी लेना अनिवार्य है। आज कुछ प्रान्तीय सरकारें राष्ट्रीय उत्थान के लिए कुछ 'स्कीमें' बना रही हैं लेकिन उसमें कुछ जान नहीं है। वह नगण्य और सूक्ष्म हैं। उन्हें तो दूरबीन लेकर देखना पड़ेगा। भारत का जो भावी शासन बनेगा वह पूर्णतः समाजवादी प्रणाली का होगा। मैं इस देश में ऐसी व्यवस्था चाहता हूँ जिसके अनुसार प्रत्येक भारतीय को चाहे वह स्त्री हो या पुरुष कुछ काम मिल सके। मुझे विश्वास है ऐसी व्यवस्था कोशिश करने पर शीघ्र स्थापित हो सकती है। कांग्रेस भावी भारत को एक संघ के रूप में देखना चाहती है; एक ऐसा संघ जिसका निर्माण प्रजातन्त्र सिद्धान्त पर हो और जिसके प्रत्येक व्यक्ति को स्वराज्य का अधिकार हो।"

पंडित नेहरू के भाषण से आसाम में राष्ट्रीयता की बिजली चमक गई है। आसाम जितना ही १९४२ में दबाया गया था आज उसमें उससे दूनी शक्ति आ गई है। बच्चे-बच्चे की नसों में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ गई। पंडित नेहरू ने में भी जान पैदा कर दी। नागों में उत्साह पैदा कर दिया। जहाँ कहीं नेहरू जी गये वहाँ हजारों मजदूर इकट्ठे होकर उनकी बातें होकर सुन रहे थे। हर जगह पंडित जय हो रही थी। बच्चा-बच्चा पंडित जय मना रहा था। पंडित जी के उन्हें एक बड़ी शक्ति प्राप्त हो रही थी।

रास्ते में कई जगहों पर मोटर रोककर वहाँ की जनता थी। कई जगहों पर दुर्घटनायें होते-होते बची थीं। पंडित जी जिस मार्ग से थे वहीं भीड़ जमा होकर आगे कभी-कभी बड़ी रुकावट डाल देती जनता की दृष्टि में आप उनके गये थे। दर्शन के लिए अपने परवाह जनता नहीं करती थी। मोटरगाड़ी अक्सर जनता रोककर दर्शन करती थी। महात्मा गांधी के आपकी लोकप्रियता हद पार कर गई। हरएक आपका दर्शन करने के लिए यित है। आसाम के जंगलों में पहाड़ी और नागों में भी आपकी फैल गई है। पहाड़ियों की गुफाओं में वाले भी आपका स्वागत करना चाहते जहाँ शिक्षा का नाम नहीं है, कोई पत्र नहीं पहुँचता वहाँ भी आपका गूंज रहा है। पंडित जी सारे देश के अमूल्य रत्न हैं।

आसाम से लौटकर बंगाल में पंडित जवाहरलाल नेहरू और श्रीमती इंदिरा गांधी।

जापान में अमेरिका की भूलें

आखिर शिंतो धर्म की इतिश्री क्यों की जा रही है ?

लेखक, श्री परिपूर्णानन्द वर्मा

जापान पर आज अमरीका का प्रभुत्व है। एशिया का एक महान् राष्ट्र पराजित होकर अमरीका के आधीन बन गया है। जापानी 'सम्राट्' अब केवल 'मिस्टर' रह गये हैं। यही नहीं जापान के महान् शितोधर्म में हस्तक्षेप किया जा रहा है। इस लेख में विद्वान् लेखक ने अमरीका द्वारा जापान के प्रति की जानेवाली भूलों का वर्णन किया है। लेख सामयिक और जानकारी से पूर्ण है।

जापानी अपनी वीरता के अभाव में पराजित नहीं हुए थे, जेनरल मैक आर्थर की सैनिक प्रतिभा ने उन्हें नहीं परास्त किया [illegible] परमाणु बम तथा हिरोशिमा की भयंकरता ने ही जापानियों की कमर तोड़ दी थी। इस महायुद्ध में सबसे भाग्यशाली जेनरल मैक आर्थर ही साबित हुए। उनको जापानियों की ईर्ष्याजन्य गद्दी मिल गई। यह सब भाग्य का खेल है। चीन में किये गये अपने पापों के लिए जापान को प्रायश्चित करना ही था——और यह उचित ही था। फिर भी जापानी राष्ट्र की महत्ता तथा जापानियों की महानता बनी ही रही। उसे प्रशान्त महासागर में डुबा देना असम्भव है। आज जो जापानी अमेरिका का स्वागत करने के लिए अपने देश के पिछले नेताओं की भर्त्सना कर रहे हैं वे केवल इस विदेशी शासन को बेवक़ूफ़ बना रहे हैं। यह वे भी जानते हैं कि वह शीघ्र ही सिर उठायेंगे।

आज मैक आर्थर हाथ में डण्डा लेकर शासन कर रहे हैं। वे तो जैसे जापानी जाति को ही नेस्तनाबूद कर देना चाहते हैं। [illegible] प्रेम, सौहार्द्र, की नीति के स्थान पर घृणा तथा प्रतिशोध का राज्य फैला रहे हैं। महान्, विद्वान, प्रतिभाशाली लोग आत्महत्या करके अपने पाप का प्रायश्चित्त कर रहे हैं। बूढ़े चले जा रहे हैं और नौजवान आ रहे हैं——ये नौजवान अमेरिका को कभी भी क्षमा नहीं करेंगे।

सबसे बड़ी मूर्खता

अमेरिकनों की सबसे बड़ी मूर्खता जापानियों के धर्म में भी हस्तक्षेप करना। संसार की कोई भी ताक़त किसी को धार्मिक ग़ुलाम नहीं बना सकी है। यह उनकी मूर्खता है कि अमेरिकन जापान से शिंतो धर्म को नेस्तनाबूद कर देने की सोच रहे हैं। आजकल की दूषित साम्राज्य-वादी सभ्यता के जमाने में किसी धर्म को "युद्ध का कारण" बतलाना हिमाक़त है। यदि यह सत्य हो तो आज विश्व का सब नाश पश्चिमीय ईसाई राष्ट्रों से प्रारम्भ हुआ देखकर ईसाई धर्म को ख़त्म कर देना चाहिए। पर कौन कहेगा कि महान् पवित्र ईसाई धर्म वर्तमान सर्वनाश का कारण है। वास्तव में वर्तमान ईसाई साम्राज्य-वादी तथा सैनिक वृत्तिवाले शासक ईसाई धर्म के लिए कलंक हैं।

शिंतोवाद एक महान् धर्म है। हमारे प्राचीन धर्म से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। हमीं से, हमारे पुराने "प्रकृति-पूजा" के सिद्धान्त चीन पहुँचे और वहाँ से जापान गये। भारत विश्व का उद्गम "सूर्य देवी" तथा "दैवी शक्ति" से मानता है। पंचतत्त्व तथा प्राकृतिक शक्तियों की पूजा भी हम करते थे, करते हैं। क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर आदि की शिंतो धर्म सिखलाता है तथा दैवी-पुरुषों की पूजा भी। सिपाही मैक आर्थर इस धर्म की बारीकी क्या समझेगा?

शिंतो माने "दैवी मार्ग" या 'कामी-मार्ग' होता है। यह कम से कम २,००० वर्ष पुराना है। इसकी प्राकृतिक पूजा के सिद्धान्त तो कभी किसी जमाने में 'अमेरिकनों' के पुरखे भी मानते रहे होंगे। यह जरूर है कि जड़तावश जापानी सिल्क के कीड़े तक की पूजा करने लगे। इसके अलावा वे साधु, सन्त, महान् पुरुषों को भी दैवी अंश का मानकर "कामी" बनाकर पूजने लगे। उनके सम्बन्ध की हरएक चीजों को भी पवित्र मानने लगे। इसी प्रकार "पवित्र पत्थर" भी हमारी मूर्त्तियों की तरह से पवित्र हो गये।

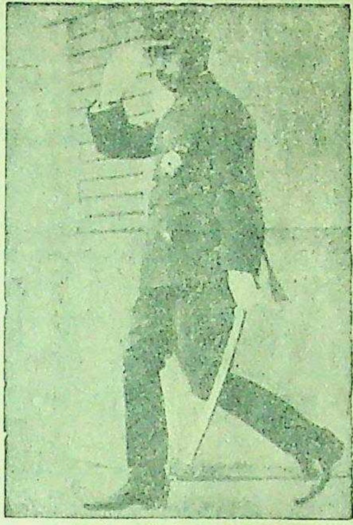

महान् शिंतो धर्म के पुजारी जापानी सम्राट हिरोहितो।

यह पृथ्वी सूर्य से निकला एक पिण्ड है। इसी वैज्ञानिक सिद्धान्त को शिंतो इस प्रकार कहता है कि "सूर्य देवी" से विश्व

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

हिन्दी-हिन्दुस्तानी का विवाद क्यों

क्या उर्दू लिपि राष्ट्रीय दृष्टि से अनिवार्य और आवश्यक है!

लेखक, पंडित झावरमल्ल शर्मा

इस समय हिन्दी-हिन्दुस्तानी का विवाद उग्र रूप धारण करता जा रहा है। आजकल उर्दू-लिपि के सीखने की भी एक समस्या उत्पन्न हो गई है। हिन्दी के वयोवृद्ध लेखक पंडित झावरमल्ल शर्मा ने इस लेख में यह बतलाया है कि हिन्दी क्यों राष्ट्रभाषा है और देवनागरी लिपि क्यों राष्ट्रभाषा के अनुरूप है। लेख विचारणीय और सुन्दर है।

आजकल हिन्दी-हिन्दुस्तानी के विवाद का अनिष्टकारक प्रश्न और उपस्थित हो गया है। यह चिन्तनीय है। महात्मा गांधी अपनी नई हिन्दुस्तानी के आग्रहवश हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन से पृथक हो गये हैं। हिन्दी-प्रचार सभा की जगह अब वे हिन्दुस्तानी की प्रचार सभा बना रहे हैं और इससे भी बढ़कर विचित्र बात यह है, कि उर्दू-लिपि का सीखना अनिवार्य करार दे रहे हैं। किन्तु लोक-तन्त्र स्थापन के आकांक्षी, भारत की राष्ट्रीयता के कर्णधार महात्मा जी के लिए भी यह उचित है, कि इस सम्बन्ध में वे स्वदेशवासियों के बहुमत का आदर करें। अखण्ड भारत की राष्ट्र-भाषा होने की पात्रता हिन्दी में ही है और इसी प्रकार राष्ट्र की एकमात्र लिपि होने के उपयुक्त देवनागरी लिपि है। हिन्दी की यह पात्रता स्वतःसिद्ध है। महात्मा जी के पूर्ववर्ती देशभक्त विद्वान् भी हिन्दी की व्यापकता के विचार से उसकी उपयोगिता स्वीकार कर चुके हैं। हमारी राष्ट्रीय महासभा के कार्य का श्री गणेश जिस वन्दे-मातरम गीत से होता है, जो 'वन्देमातरम' भारतवासियों के उद्बोधन के लिए एक राष्ट्रीय महामंत्र बन गया है, उस राष्ट्रीय मङ्गलाचरण और मंत्र के स्रष्टा वङ्गीय विद्वान् श्री बङ्किमचन्द्र चटर्जी महोदय कह गये हैं :—"हिन्दी भाषार सहाय्ये भारत-वर्षेर विभिन्न प्रदेशेर मध्ये याहारा ऐक्य बन्धन संस्थापन करिते पारिबेन ताहाराई प्रकृत भारतबन्धु नामे अभिहित हइवार योग्य। सकले चेष्टा करून——यत्न करून यतदिन परेई हउक मनोरथ पूर्ण हइबे।" यह परामर्श बङ्किम बाबू ने भारतवर्ष की मङ्गल-कामना से शिक्षित बङ्गवासियों को दिया था। यह एक भिन्न भाषा-भाषी परमादरणीय भारतीय देशभक्त का हिन्दी की महत्ता-स्वीकृति का उद्घोष है।

इसी प्रकार एक लिपि के रूप में देवनागरी के प्रचार की आवश्यकता भी बहुत पहले अनुभव की जा चुकी है। कलकत्ते में सन १९०५ ई० में एक लिपि-विस्तार परिषद् की स्थापना इसी महदुद्देश्य को लेकर हुई थी। उस परिषद् के मंत्री कलकत्ता हाईकोर्ट के माननीय विचारपति बा० सारदाचरण मित्र एम० ए० बी० एल० महाशय थे। उस परिषद् की ओर से 'देवनागर' मासिक-पत्र प्रकाशित किया गया था, जिसमें संस्कृत, पाली, प्राकृत, हिन्दी, बंगला, उर्दू, फ़ारसी, मराठी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी, कुमाऊनी, कुर्माचली, नेपाली, उड़िया, तैलंगी, तामिल, कनाड़ी, मलयालम् आदि भारत की प्रान्तीय भाषाओं के लेख देवनागरी लिपि में प्रकाशित हो चुके हैं। भारतवर्ष के सभी प्रान्तों के विद्वानों ने, जिनमें मुसलमान भी सम्मिलित थे, इस उद्योग की——एक लिपि प्रचार के प्रयत्न की प्रशंसा की थी।

एक लिपि-विस्तार परिषद् के वार्षिकोत्सव में सभापति-पद से भाषण करते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट के माननीय जस्टिस शरफुद्दीन बार-एट-ला साहब ने कहा था——'मैं बड़ी उत्सुकता से उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, कि जब सारे हिन्दुस्तान में एक ही लिपि का प्रचार हो और अरबी तथा फ़ारसी के ग्रन्थ उसी लिपि में प्रकाशित हों। देवनागरी वर्णमाला में कई एक अरबी अक्षरों का अभाव अवश्य है, जिनको अँगरेज़ी भाषा में गटर्लस कंठच-वर्ण कहते हैं। परन्तु जब हमारे मित्र माननीय जस्टिस सारदाचरण मित्र और अन्य विद्वानों का ध्यान भारत की सब भाषाओं को एक लिपि-द्वारा प्रकाशित करने की ओर हुआ है तो आशा है, कि इन अक्षरों के लिए भी देवनागरी लिपि में संकेताक्षर स्थिर किये जायँगे और उसी लिपि में भारतवर्ष की सब भाषायें लिखी जायँगी।'

वस्तुतः भाषा और लिपि के प्रश्न को साम्प्रदायिक दृष्टि से नहीं देखना चाहिए। उर्दू के जन्म का इतिहास बताता है कि उसकी उत्पत्ति बादशाह शाहजहाँ के लश्कर में हुई थी। हिन्दी साहित्य-संसार के सुगृहीतनामधेय स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्द जी गुप्त उर्दू-फ़ारसी के पूर्ण ज्ञाता थे और उर्दू पत्रों का सम्पादन करते करते ही वे भारतेन्दु जी के सखा पं० प्रतापनारायण जी मिश्र आदि के सत्संग से हिन्दी की सेवा में प्रवृत्त हुए थे। उर्दू के सम्बन्ध में गुप्त जी का मत एक यथार्थ अधिकारी का अभिमत है। वे "ब्रजभाषा से उर्दू" शीर्षक अपने एक लेख में लिखते हैं :——'जिस समय ब्रजभाषा से उर्दू बन रही थी, उस समय भी कई एक नमूनों की हिन्दी जारी थी। यहाँ तक कि स्वयं उर्दू को स्वच्छ करके ढालनेवाले मुसलमान कवि भी उन सब नमूनों पर कविता लिखते थे। यदि मुसलमान लोग अरबी-फ़ारसी को अपनी कविता में अधिक न घुसेड़ते और अपनी हिन्दी या

शेष पृष्ठ १२ पर देखिए

बाँसुरी

लेखक, प्रोफ़ेसर चन्द्रप्रकाश वर्मा, एम० ए०

किसी की बाँसुरी सुन कान में कुछ बोलती आती !
लहरती है लहर सर में,
अनिल नभ बीच लहराता;
हुए सब सिन्धु उद्वेलित,
मरुस्थल चीखता - गाता;
अचल-चल सब जलस्थल को डुला खुद डोलती आती !
अटल था तन, अटल था मन,
अटल थी भावना मन की;
मगर बदली नजर अब आ रही,
गति जन्म - जीवन की;
बनी यह क्रान्ति की दूती हृदय झकझोरती आती !
किसी के हेतु फिर आकुल किया,
यह क्या किया इसने !
मुझे पलमात्र में सहसा,
बदल कितना दिया इसने;
छिपा निज भेद, मेरा भेद—देखो, खोलती आती !
प्रथम स्वर-नाद ने दे दी,
मरण की मूर्च्छना मन को;
मगर दी दूसरे ने, चेतना-
नव प्रेरणा मन को,
मरण को, जन्म को यह—स्वर-तुला पर तोलती आती !
मुझे लगता कि कर परिचित,
रही बज बाँसुरी जिनमें;
निकट आते अधर परिचित,
रही सज बाँसुरी जिनमें;
बिरह-विष बीच यह बंसी मिलन-मधु घोलती आती !

कौन क्यों और क्या कहता है?

महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा का प्रचार

आपसी मतभेद का कारण क्या है?

(श्री संपादक, 'देशदूत')

गत १६ दिसम्बर के 'देशदूत' में श्रीयुत श्रीपाद जोशी का पत्र पढ़कर खेद भी हुआ और ग्लानि भी। न मालूम बेचारे सम्मेलन ने क्या अपराध किया है कि हर किसी ने उसे गाली सुनाना अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझ लिया है। जोशी जी पूछते हैं "हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में अपनी टाँग क्यों अड़ाता है?" जोशी जी को टाँग अड़ाने का अधिकार है, उनकी महाराष्ट्र प्रचार-समिति को अधिकार है, परन्तु करोड़ों हिन्दी-भाषी जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाले हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन को नहीं! मानो हिन्दी का क्षेत्र देश में है ही नहीं और उस क्षेत्र के निवासियों का भी राष्ट्रभाषा से कोई सम्बन्ध नहीं! हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा का काम केवल 'हिन्दुस्तानी साहित्य' की उन्नति और विकास न होकर राष्ट्र-भाषा के मामले में हस्तक्षेप करना हो सकता है परन्तु हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन अपना वर्तमान नाम रहते इस मामले में नहीं बोल सकता! हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा अपनी परिभाषा की राष्ट्रभाषा का प्रचार सम्पूर्ण भारत में कर सकती है परन्तु सम्मेलन को अपनी परिभाषा की राष्ट्रभाषा का अहिन्दी प्रान्तों में प्रचार करने का अधिकार नहीं! ऐसा करना उसके लिए 'जिद' है।

सम्मेलन आज भी वही कर रहा है जो गत २५ वर्ष से कर रहा है। महात्मा गांधी को भी वह नीति मान्य रही है। अब हिन्दुस्तानी के भक्तों की दुनिया एकदम बदल गई और सम्मेलन अराष्ट्रीय हो गया! हिन्दुस्तान की परिभाषा भी कांग्रेस की परिभाषा हो गई। क्या जोशी जी बतलाने की कृपा करेंगे कि कांग्रेस ने किस प्रस्ताव में राष्ट्रभाषा की परिभाषा दी है और क्या देश में पाकिस्तानी प्रान्त भी अब तक हिन्दुस्तानी के कारण सम्मेलन को 'खिराज' देते रहे हैं और अब गांधी जी के हट जाने के कारण हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा को खिराज देने लगे हैं! क्या जोशी जी को विश्वास है कि हिन्दुस्तानी की परिभाषा को पाकिस्तानी प्रान्तों ने और पाकिस्तानियों ने मान लिया है, अथवा क्या उनके 'सारे देश' में वे प्रान्त और ये लोग शामिल हैं ही नहीं?

जोशी जी कहते हैं कि महाराष्ट्र की राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति का हिन्दुस्तानी प्रचार-सभा से सम्बन्ध नहीं है और उसकी परिभाषा भी अलग है। सम्बन्ध नहीं है तो हो जायगा। परिभाषा भी शीघ्र वही हो जायगी। इसीलिए तो वह सम्मेलन से अलग हुई है। परिभाषा में और पाठ्य-क्रम में परिवर्तन करते-करते ही तो होगा। अभी तो पाठ आरम्भ ही हुआ है।

विभिन्न प्रान्तों की राष्ट्रभाषा प्रचार समितियाँ अलग-अलग होकर अलग-अलग परिभाषा को मानकर चाहे जिस भाषा का अपने-अपने प्रान्त में प्रचार करें परन्तु वे उन्हें 'राष्ट्रभाषा' कैसे कह सकती हैं? महाराष्ट्र की जोशी जी वाली राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति ही अपने आपको इस नाम से क्यों सम्बोधित करती है? क्या उसे विश्वास है कि देश के हिन्दी प्रान्तों तथा अन्य प्रान्तों ने भी उसकी परिभाषा को मान लिया है? जोशी जी के महाराष्ट्र ने यह कैसे समझ लिया कि हिन्दी प्रान्तों को अहिन्दी प्रान्त पर अपनी राष्ट्रभाषा लादने का अधिकार नहीं है लेकिन अहिन्दी प्रान्त को हिन्दी प्रान्तों तथा अन्य प्रान्तों पर अपनी परिभाषा लादने का अधिकार है?

हिन्दुस्तानी आन्दोलन से जो होना था सो हो रहा है। प्रत्येक प्रान्त की अलग-अलग परिभाषा होगी, एक-एक प्रान्त में दो-दो राष्ट्रभाषा प्रचार-समितियाँ हो जायेंगी और 'हिन्दुस्तान' की राष्ट्रभाषा खटाई में पड़ जायगी। इसके अतिरिक्त जरा पाकिस्तान पर नजर डालिए। उसने अपनी राष्ट्रभाषा उर्दू पहले से ही बना ली है। वहाँ न किसी ने उर्दू के मामले में चीं-चपड़ की (बल्कि कहिए उन्होंने आग्रह दिखलाया), और न पाकिस्तानियों में आपस में राष्ट्रभाषा के मसले को लेकर झगड़ा हुआ। पाकिस्तानियों ने न गांधी जी की पहलेवाली परिभाषा को माना था और न उन्हें गांधी जी की नई परिभाषा से कोई सरोकार है और न होगा——उन्हें जरूरत ही क्या है? (यदि जोशी जी को इसमें सन्देह है तो वे पंजाब, सीमा-प्रान्त, सिन्ध की सरकारों से अब या कभी भविष्य में देवनागरी लिपि भी और अपनी ५०-५० प्रतिशतवाली अथवा 'आमफ़हम' हिन्दुस्तानी मनवा देखें)। हिन्दुस्तान में अलबत्ता 'राष्ट्रवादी', राष्ट्रभाषा के टुकड़े-टुकड़े कर डालें, उर्दू और उर्दू-लिपि की प्रतिष्ठा करें, महाराष्ट्र के 'कांग्रेस परिभाषा में निवास करनेवाले' मराठे प्रतिवर्ष हजारों रुपये देकर महाराष्ट्र में उर्दू और उर्दू-लिपि का प्रचार करें, और हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा भी उर्दू बनायें क्योंकि वह तभी पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों के लिए 'आमफ़हम' हिन्दुस्तानी होगी, अन्य कोई उपाय नहीं। ईश्वर हिन्दुओं को शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करे।

जोशी जी अच्छी तरह समझ लें कि महाराष्ट्र के जिन व्यक्तियों ने हिन्दुस्तानी के पीछे आँखें मूँदकर राष्ट्रीयता की दुहाई देते हुए चलना ही अपना धर्म नहीं समझ लिया है उन्हें सम्मेलन से सहयोग पाने का अधिकार है, और उन व्यक्तियों को अपना सहयोग देना सम्मेलन तथा हिन्दी-भाषी जनता का कर्त्तव्य है। जोशी जी यह भी समझ लें कि यदि उनकी प्रचार-समिति को भी खड़ी बोली, जिसको वे हिन्दुस्तानी कहते हैं, के ही आधार पर राष्ट्रभाषा बनाना है तो उसे भी झख मारकर हिन्दी भाषियों की भाषा और साहित्य को आदर्श मानना पड़ेगा, यदि उसे एक जीवित राष्ट्र-भाषा और उसका एक जीवित साहित्य अभीष्ट है तो। जोशी जी यह विश्वास रक्खें कि महाराष्ट्र में सम्मेलन की परि-भाषावाली राष्ट्रभाषा का प्रचार पहले भी महाराष्ट्रों ने किया था और अब भी वे ही करेंगे। सभावाद और कांग्रेसवाद का भेद करना व्यर्थ है। राष्ट्रीयता केवल जोशी जी और उनकी प्रचार-समिति के ही पल्ले नहीं पड़ी है। यदि मौलाना आज़ाद सरीखे नेता अंजुमन तरक्की उर्दू, जो उर्दू को राष्ट्रभाषा मानता है, के सदस्य होते हुए कांग्रेस में रह सकते हैं तो परम राष्ट्रीय वृत्ति के व्यक्ति सम्मेलन में रह सकते हैं। राष्ट्रीयता हिन्दुस्तानी प्रचार-सभावालों की बपौती नहीं है। श्री जोशी जी धैर्य धारण करें। उन्हें जो अच्छा लगे वह अवश्य करें परन्तु दूसरे जो करना चाहें यदि वे उसे परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से अराष्ट्रीय कहकर स्वयं बड़े बनने का लोभ संवरण कर सकें तो अच्छा होगा। वे यह भी याद रक्खें कि वे जिस ओज और शक्ति से बातें करते हैं वह उनकी अपनी नहीं है बल्कि उधार ली हुई है।

अन्त में हम जोशी जी से इतना और पूछना चाहेंगे कि जिस भाषा में उन्होंने अपना पत्र लिखा है वह 'साहित्यिक हिन्दी' है अथवा 'आमफ़हम हिन्दुस्तानी'? यदि वह आमफ़हम हिन्दुस्तानी है तो उनकी और हमारी परिभाषा में कोई अन्तर नहीं, केवल नाम का भेद है जो कोई बड़ी बात नहीं इसलिए महाराष्ट्र की दोनों प्रचार-समितियों को हाथ मिला लेना चाहिए। यदि वह साहित्यिक हिन्दी है तो अच्छा होता यदि वे उसे 'आमफ़हम' हिन्दुस्तानी में लिखते। 'सारे देश' को मालूम तो हो जाता कि अब वह किस 'आमफ़हम हिन्दुस्तानी' को राष्ट्रभाषा मानने लगा है, देश के ४० करोड़ में से कितनों के लिए वह आमफ़हम है अथवा 'साहित्यिक हिन्दी' समझनेवालों से कितने अधिक नर-नारियों के लिए वह आमफ़हम है और वह किस लायक़ है (परन्तु गांधी जी तो कहते हैं कि सरस्वती अभी प्रकट होने को है। प्रकट होने से पहले ही वह 'आमफ़हम' कैसे हो गई?)। खैर, कोई बात नहीं, अगला पत्र आमफ़हम हिन्दुस्तानी में भेजें और यदि कोई और पत्र नहीं भेजना है तो इसी पत्र का आमफ़हम हिन्दुस्तानी में अनुवाद करके भेजें। हमें विश्वास है 'देशदूत' के सम्पादक जी उसे छाप देंगे। परन्तु शर्त यह है कि वह छपेगा केवल एक लिपि देवनागरी में ही।

१९ दिसम्बर ४५ ——सूर्यप्रकाश एम० ए०

*

सरल और सुबोध हिन्दी क्यों नहीं?

(श्री सम्पादक, 'देशदूत')

आपके पत्र-द्वारा मैं राष्ट्रभाषा बनने का सामर्थ्य रखनेवाली हिन्दी भाषा और उसके साहित्य में प्रविष्ट होनेवाली कुछ प्रवृत्तियों का निर्देशन करते हुए उनसे हिन्दी-प्रेमियों को सचेत कर देना चाहता हूँ। हिन्दी-साहित्य की आज की स्थिति पर विचार करते हुए मैंने यह अनुभव किया है कि हिन्दी आज उस स्थान पर नहीं है जहाँ उसे वास्तव में होना चाहिए था। आज हिन्दी-साहित्य का क्षेत्र वैसा ही संकुचित होता जा रहा है जैसा कि प्राकृत भाषा आने के पूर्व संस्कृत का हो रहा था। तब संस्कृत का साहित्य सर्वसाधारण की वस्तु न रहकर केवल इने-गिने भाषा-पंडितों और विद्वानों की वस्तु बन गई थी। जनता ने संस्कृत की क्लिष्टता, दुर्बोधिता और दुरूहता के कारण उससे ऊबकर एक दूसरी ही भाषा को अपनाया जो प्राकृत कहलाई। उसी प्राकृत से फिर खड़ी बोली और हिन्दी का जन्म हुआ; और आज हिन्दी जनता की भाषा बन चुकी है।

प्रत्येक भाषा का इतिहास बताता है कि वह सर्वप्रथम जन-साधारण के बोलचाल की भाषा बनकर आई है। फिर उसके व्याकरण बने और वह शुद्ध रूप में व्यवहृत हुई और उसका साहित्य भी बन चला। हिन्दी भी पहले-पहल केवल बोलचाल ही की भाषा थी। कुछ समय तक तो वह साहित्य के योग्य ही नहीं समझी जाती थी और न उसका कोई साहित्य ही था। किन्तु धीरे-धीरे वह अधिक सुन्दर, मधुर और सुसंस्कृत होती गई; और आज उसने विश्व-साहित्य में अपना एक स्थान बना लिया है। किन्तु अब जो रूप वह धारण करती जा रही है वह अवश्य ही चिन्तनीय है। वह जन-साधारण की पहुँच से बाहर जा रही है——उत्तरोत्तर क्लिष्ट और सीमित हो रही है। उसका साहित्य केवल पंडितों, विद्वानों और उपाधिधारियों के ही चयन की वस्तु बन रहा है। इसके चिन्तनीय परिणाम को देखते हुए वर्तमान सभी पत्र-पत्रिकायें अपनी भाषा के स्टैण्डर्ड को और भी ऊँचा उठाने के प्रयत्न में हैं। वे यह नहीं समझतीं कि यह स्टैण्डर्ड जितना ही अधिक ऊँचा उठता जायेगा उतना ही वह जनता की समझ से दूर होता जायेगा। केवल ऊँचे व्यक्ति ही उस तक पहुँच सकेंगे। सम्भव है एक दिन शायद वह भी आ जाये जब कि ऊँची उठती हुई भाषा संस्कृत-भाषा की भाँति ही विलुप्त हो जाय। जन-साधारण की बोलचाल की भाषा कोई दूसरा ही रूप धारण करे। यह बात नहीं कि यह अनुगामिनी भाषा कोई अनोखी या अज्ञात वस्तु होगी; नहीं, वह हिन्दी का ही एक रूप होगा। हिन्दी से अधिक सुगम, सुबोध और अधिक व्यापक।

अतएव आज आवश्यकता इस बात की नहीं है कि हिन्दी को जनता की दृष्टि से और ऊँचा उठाया जाय। मेरे विचार में वह आवश्यकता से अधिक उठ गई है। हिन्दी-साहित्य के वर्तमान रूप को समझनेवालों की संख्या कम होती जा रही है; और यही कारण है कि हिन्दी की आधुनिक उत्तमोत्तम पुस्तकें भी उतना प्रचार नहीं पा रही हैं जितना कि कविवर श्री मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती', 'भारत-दुर्दशा' या तुलसीदास जी की 'रामायण' को प्राप्त है। आज हिन्दी की साहित्यिक पत्र-पत्रिकायें अधिक से अधिक विद्वान् साहित्यिकों और कालेजों और विश्वविद्यालयों तक ही प्रचार पाती हैं—जन-साधारण, जिनमें मिडिल और हाईस्कूल के विद्यार्थी, साधारण पढ़ी-लिखी महिलायें और ग्रामीण जनता है, इन पत्र-पत्रिकाओं से अधिक लाभ नहीं उठा पाती। जिस पुस्तक या पत्रिका की भाषा और शैली दुरूह और दुर्बोध हो उसे साधारण मनुष्य पढ़ भी कैसे सकता है? इसके विरुद्ध सुबोध भाषा और शैली में लिखी पुस्तकें अवश्य ही जन-साधारण-द्वारा अपनायी जायँगी——यदि वे उपयोगी विषयों पर हों और ठोस सामग्री तथा उपयोगी विचारधारा लिए हुए हों।

अस्तु; हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर लाने के लिए उसे नीची धरातल पर लाना होगा। धरातल से तात्पर्य उसकी शैली, भाषा तथा भावों की दुरूहता से है। जब तक वह अधिक सुबोध नहीं बनेगी तब तक ग्रामीणों और अल्पशिक्षितों को उससे कोई विशेष लाभ न होगा। जनता तक पहुँचने के लिए, उन्हें जागृति का संदेश सुनाने के लिए, उनकी आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और मानसिक उन्नति के लिए——यहाँ तक कि अपने आपको जीवित रखने के लिए उसे अपना रूप सरल से सरल बनाना होगा। 'सरल रहन-सहन और उच्च विचार' की नीति उसे अपनानी होगी। इससे मेरा यह तात्पर्य नहीं कि वह अपनी शुद्धता खो दे। नहीं; वह पूर्ण शुद्ध बनी रहे——किन्तु बोधगम्य अवश्य हो।

सुबोध भाषा में जो पुस्तकें लिखी गई हैं वे केवल बच्चों को लक्ष कर। युवकों और प्रौढ़ों के लिए उनमें कोई सन्देश, अर्थ या रुचि नहीं है। इसी कारण जब कभी हम प्रौढ़-शिक्षा तथा ग्राम्य-जीवन के अन्य सुधार करना चाहते हैं, तब हमें ऐसी पुस्तकों की नितान्त आवश्यकता प्रतीत होती है जिसके सहारे हम उन्हें आर्थिक, सामाजिक और नैतिक उन्नति की ओर अग्रसर कर सकें।

क्या ही अच्छा हो यदि हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के अन्तर्गत ही एक ऐसी समिति बने जिसका ध्येय जन-साधारण के समझने योग्य साहित्य का निर्माण और प्रकाशन हो। ऐसा साहित्य जन-जन में फैलकर, उनके विचारों को परिष्कृत और उन्नत कर उन्हें आज की राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और आवश्यकताओं से परिचित करा सकेगा, उनमें सुधार की भावना भरकर राष्ट्र-निर्माण में सहायक होगा।

ग्राम-सेवा-संघ ——रामकिशोर पशीने
कामर्स कालेज (वर्धा)

वह चूड़ियाँ

लेखक, श्री शिवनाथ दुबे साहित्यरत्न'

सुशीला उसके घर में आती थी, ग़रीब थी, अधिक सामीप्य होने से वह सुशीला से प्रेम भी करने लगा। एकाएक जब उसने अपने प्रेम को सुशीला पर प्रगट किया तो आँखों में आँसू भरकर उसने अपने हाथों को आगे बढ़ा दिया। उन हाथों की चूड़ियाँ तोड़ दी गई थीं। उसने अपने किये पर पाश्चात्ताप किया। कहानी सुन्दर और हृदय पर एक प्रभाव छोड़ जानेवाली है।

मैं नहीं समझ रहा था, इसे स्नेह कहते हैं या शत्रुता? सब जान रहे थे, जेठ का महीना है। दोपहर में सूर्य की प्रचण्ड किरणें इस प्रकार अग्नि-वर्षा कर रही थीं कि ज़मीन काँप रही थी और आसमान थर्रा रहा था। हवा का झोंका आग की लपटों सरीखा लग रहा था। ऐसी हालत में साइकिल से आने में मेरी जो दुर्दशा हुई थी, उसे मेरे अतिरिक्त और शायद कोई नहीं जान रहा था। उस भीषण अग्निमय पथ से आने में मेरा भुरता बन गया था। रास्ते भर में यही सोच रहा था कि मौसी के यहाँ पहुँचते ही सब हाथों पर उठा लेंगे। मुझे शान्ति मिलेगी। इसी बल पर साइकिल पूरी शक्ति से दौड़ाता हुआ आया। शरीर पसीने से तर हो चुका था। कपड़े भीग गये थे। मैंने मौसी के चरण छुए। उन्होंने आशीर्वाद देते हुए पानी पीने के लिए कहा, और दूसरे क्षण अपने काम में लग गईं।

वे समझ रही थीं घर का लड़का है, स्वयं ही अपना सब कुछ कर-धर लेगा। परन्तु मैं जितना संकोची हूँ, वह शायद नहीं जान रही थीं। एक बार की बात है। मैं वहीं पर नौ बजे रात में पहुँचा। पेट में चूहे उछल रहे थे। पर जब मुझसे भोजन के लिए पूछा गया, तब मैंने अस्वीकार कर दिया। सब लोगों ने समझ लिया सत्य कह रहे हैं। पर मैं अपने मौसेरे भाई को क्या कहूँ कि उस भलेमानस ने दूसरी बार भूलकर भी आग्रह नहीं किया। मैं सारी रात भूख के मारे व्याकुल होकर चारपाई पर इधर से उधर करवटें बदलता रहा। तब से वहाँ जाने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। पर मैं अपनी माता जी की आज्ञा के सामने कुछ नहीं कर पाता। उनकी बहिन की पुत्री (मेरी मौसेरी बहिन) का विवाह था। मुझे जाने के लिए आज्ञा मिली। मैं चूँ नहीं कर सका। सीधे यहाँ आया।

हाँ, तो मैं प्यास से छटपटा रहा था। जबान सूख गई थी। पर इसकी किसी को चिन्ता नहीं थी। सभी काम में व्यस्त थे। सहसा मेरी बहिन (मौसी की पुत्री) की दृष्टि मुझ पर पड़ी। देखते ही वह प्रसन्न हो उठी और मुझे बैठने के लिए एक पीढ़ा दे दिया। मैं सँभाल नहीं सका। कहा—"प्रेमा! मुझे प्यास लगी है।"

'पानी अभी लाई'—कहती हुई प्रेमा एक कटोरी भर मुरब्बा उठा लाई। मैं चुपचाप मुरब्बा खाने लगा और पानी आने की राह देखने लगा। सारा मुरब्बा समाप्त हो गया, पर न पानी का पता लगा और न प्रेमा का ही। मैं मन-ही-मन परेशान था। सोच रहा था, ग़ज़ब है। अब याद रहा तो कभी किसी भी सगे-सम्बन्धी या किसी के घर विवाह के अवसर पर पैर नहीं रक्खूँगा। पानी के बिना तड़प-तड़पकर जान गँवाना कौन गँवारा समझे? मैं सोच रहा था अब क्या करूँ? आवाज़ भी निकलनी मुश्किल हो गई थी। विवश होकर मैं स्वयं पानी के लिए चला पर जिससे गिलास या लोटे के लिए पूछता, वही कहता, उधर ढूँढ़ लो। कोई कहता उस कमरे में है। मैं सबके कथनानुसार उस स्थान पर जाता, पर गिलास या लोटा के कहीं दर्शन नहीं हुए। इसी प्रकार तीन-चार लम्बे-लम्बे कोठों पर भी घूम आया, पर कहीं कोई पात्र नहीं मिला। मैं मन-ही-मन बड़बड़ाता हुआ नीचे आया। सोचा, कटोरी में ही पानी पी लूँ, प्यास के मारे रहा नहीं जा रहा था। पर बड़े कंडाल में से पानी निकालूँ तो कैसे? हाथ और कटोरी दोनों जूठी थीं। प्यास शान्त करने के लिए यदि पानी निकाल लेता हूँ तो सारा कंडाल का जल जूठा हो जायगा। दो कहारों ने उसे कम से कम दो घंटे में भरा होगा और शायद जूठी कटोरी डालते किसी की दृष्टि पड़ गई, तब भी विपत्ति ही होगी। मैं चुपचाप जबान चाटता, वहीं खड़ा हो गया कि कोई आवे, तो पानी माँगूँ। पर जो आता, वही सपाटे से इधर-उधर से निकल जाता। मैं पुकारता भी तो ऐसा मालूम होता, जैसे वे सब बहरे हैं, कुछ सुनते ही नहीं। जो सुन पाते वे कहते अभी आये। पर वहाँ से जाने पर ऐसा मालूम होता जैसे जहन्नुम में चले गये। फिर कभी आयेंगे ही नहीं। मैं प्यास से अधीर हो रहा था।

इसी बीच में उधर से एक बालिका आती दिखाई दी। मैंने उसे देखे बिना ही जोर से कहा—प्यास के मारे मैं मरा जा रहा हूँ, पर पानी देनेवाला कोई नहीं दीख रहा है।

लड़की रुकी। उसने मेरी ओर देखा मैंने भी उसे अच्छी तरह देखा। वह सौन्दर्य की जीवित प्रतिमा-सी लग रही थी मैं क्षण भर उसे देखने में लग गया, अपनी प्यास भूल गया। उसने कहा, आप आराम से एक जगह बैठ जायँ, मैं आपको पानी पिलाये देती हूँ।

मैं चुपचाप एक ओर बैठ गया। वह भीतर चली गई। मैंने सोचा, यह भी गई। थोड़ी देर बीती, पर वह नहीं आई। मैंने कहा, यह भी विष भरी निकली। इसी बीच में वह आई और यह कहती हुई 'विवाह की भीड़ से बचने के लिए बर्तन लोगों ने बन्द कर रक्खा है और मिट्टी के पुरवे बाहर रक्खे हैं मैं अपने घर से गिलास अभी ला रही हूँ।' बाहर निकल गई। मैं कुछ कह भी नहीं पाया।

थोड़ी ही देर में वह गिलास लेकर आई और पानी निकालकर दिया। मैं पूरा गिलास समाप्त कर गया। दूसरा भी। तब कुछ शान्ति मिली। तीसरा गिलास धीरे-धीरे पीने लगा, साथ ही उस बालिका की ओर मेरी दृष्टि स्वतः चली गई। मैंने देखा, वह एकटक मेरी ओर देख रही थी। पानी पीते-पीते न मालूम क्यों मेरे हृदय में एक मधुर टीस लग गई। मैंने कहा, तुमने बड़ा कष्ट उठाया।

"इसमें कष्ट की बात क्या है?"

"तुम पानी नहीं लाती तो मेरी बड़ी दुर्दशा होती।"

"अच्छा?"

"हाँ।"

"तब तो आपको मेरा अहसान मानना चाहिए अवश्य।"

"अवश्य, हाँ, तुम एक बात बताओगी?"

"क्या?"

"तुम्हारा नाम क्या है?"

"अरे, आप इतना भी नहीं जानते। मैं तो आपको अच्छी तरह जानती हूँ। 'प्रेमा' के मौसी के लड़के हैं न?"

"हाँ।"

"मेरा नाम सुशीला है।"

"तुम्हारा नाम वैसा ही है, जैसा तुममें गुण है?"

सुशीला हँस पड़ी। उसकी उज्ज्वल दन्तपंक्तियाँ चमक गईं—सौदामिनी की भाँति।

वह भीतर गई और मैं बाहर चला।

* * *

बड़े लोगों का कहना है कि देव और दानव इसी धरातल पर हैं। मनुष्य ही अपने कर्तव्यों से, देव और दानव बन जाता है। वह अपने उत्तम कर्तव्यों से पूजित होता और अधम कृत्यों-द्वारा घृणा का पात्र बन जाता है। उसके कर्त्तव्य कभी-कभी ऐसे हो जाते हैं कि उसे मनुष्य कहने में भी संकोच होता है, उस समय उसे पशु कहा जाता है परन्तु वह अपने सत्कर्मों-द्वारा पुनः आगे बढ़ सकता है। भगवान् के राज्य में सबको समान शक्तियाँ मिली हैं। प्रकृति में भेद-भाव नहीं है। उनका उपयोग हमारे अधीन है। प्राकृतिक वस्तुओं के सदुपयोग से लाभ और दुरुपयोग से हानि होती है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

सुशीला ने प्रेमपूर्वक मुझे जल पिलाया पर मैं उसके लिए पिशाच बन गया था। मेरे मन में एक उद्दाम वासना जोर मार रही थी। मैं सुशीला से न मालूम क्या चाहने लग गया था? दिल में उसके लिए एक स्थान बन गया था। मैं चाहता था, वह स्वयं आकर इसकी पूर्ति करे।

हर समय मैं उसकी ही याद में रहता था। आँखें उसे ही तलाश कर रही थीं। बातें करने की इच्छा उसी से होती थी। रात में सोता था, तो नींद नहीं आती थी, उसी की मूर्ति सामने खड़ी हो जाती। किसी प्रकार सो भी पाता, तो उसी के सपने देखने लगता।

प्रेमा का विवाह समाप्त हो गया। वह विदा हो गई। मुझे घर जाना चाहिए था, पर मैं जैसे वहाँ से जाने में अपना सर्वस्व छोड़ने का अनुभव कर रहा था। धीरे-धीरे मुझे यह मालूम होने लगा कि सुशीला की भी यही दशा है। वह भी मेरे लिए मेरी ही तरह विकल है।

एक दिन की बात है। सन्ध्या का समय था। सूर्यदेव अस्ताचल सिधार रहे थे। मैं बैठक में बैठा था। इसी बीच में सुशीला घड़ा-रस्सी लिए कुएँ पर जल भरने आई। कुआँ बैठक के ठीक सामने था। मैंने विचार किया, सुशीला को पानी लाने की तो कोई आवश्यकता नहीं थी। इसमें कोई रहस्य है।

घड़े के मुंह में रस्सी बाँधकर उसने घड़ा कुएँ में डाल दिया। घड़ा रस्सी के सहारे धीरे-धीरे कुएँ के जल के समीप पहुँच रहा था और सुशीला के नेत्र मेरे ऊपर तथा मेरे नेत्र उस पर अड़े थे। उस समय मेरे मन में आ रहा था कि मैं स्वयं चलकर जल भरा घड़ा बाहर निकाल दूँ, पर न जाने क्यों जहाँ का तहाँ बैठा रहा?

घड़ा निकला। सुशीला ने डोल कन्धे पर और घड़ा कटि पर रक्खा तथा चल पड़ी। वह तो चली घर की ओर पर रह-रहकर देख रही थी मेरी ओर! उसकी उस समय की शोभा अत्यन्त मनोरम थी। जैसे वनदेवी सन्ध्या की अरुणिमा में शोभा पा रही हो। मैं सुशीला का हो गया था।

सहसा उसके पैर में ठोकर लगी, वह घड़े के साथ धम्म से गिर पड़ी। मैं अपने को सँभाल नहीं सका, उसे उठाने के लिए दौड़ पड़ा। जल्दी में हड़बड़ाने से पैर धोती में उलझ गये, और मैं भी वहीं मुंह के बल लुढ़क गया।

उठकर देखा, तो सुशीला खड़ी हो गई थी। उसकी आँखें छलक गई थीं, पता नहीं उसके चोट से या मेरे गिर जाने से।

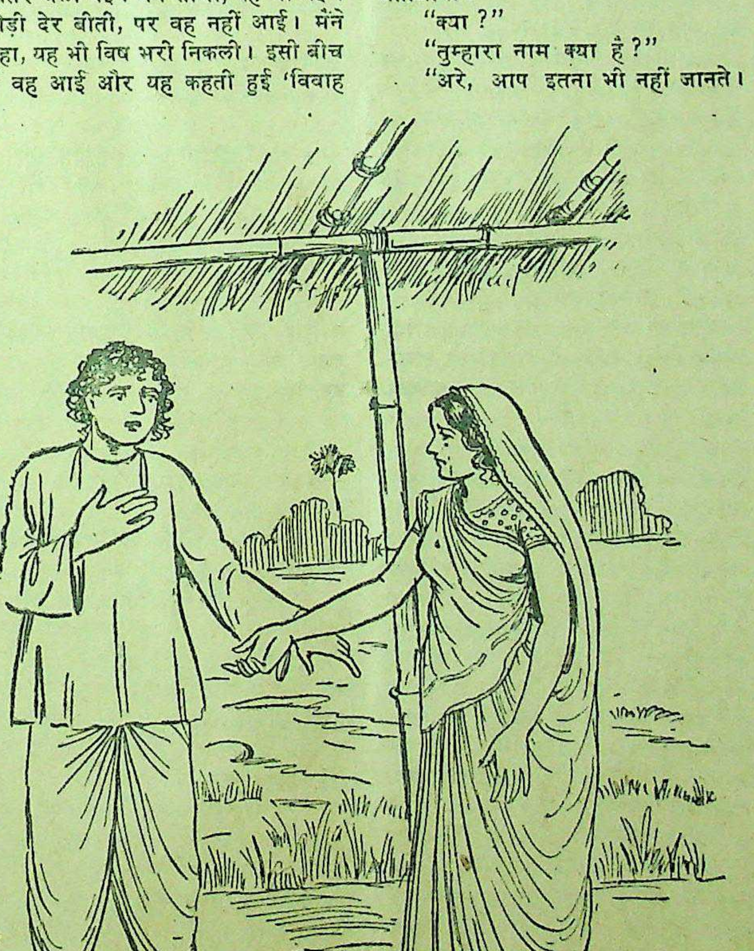

सुशीला अपना हाथ बढ़ाकर बोली—कल ही मेरे हाथों की चूड़ियाँ तोड़ दी गई हैं देखो न।

1134548

साहित्य-चर्चा

एप्रिल फूल—अनुवादक तथा संग्रहकर्ता, श्री नारायण श्यामराव चिताम्बरे, बी० ए०, प्रकाशक शिवाजी प्रकाशन-मन्दिर, लखनऊ; पृष्ठ-संख्या २०२; मूल्य तीन पये।

आज का मराठी-साहित्य बहुत समुन्नत है। यही कारण है कि कई प्रान्तीय भाषाओं ने इसके कई ग्रन्थों का अनुवाद प्रकाशित किया है। हिन्दी में भी इधर इसकी कई अच्छी-अच्छी पुस्तकों का अनुवाद हुआ है, जिसका हिन्दी भाषा-भाषियों ने प्रचुर स्वागत किया है। प्रस्तुत आलोच्य पुस्तक भी मराठी के कतिपय सुप्रसिद्ध कहानी लेखकों की हास्यरस की बारह कहानियों का अनुवाद-संकलन है। इनमें से एक ('बम्बई पर हमला' शीर्षक कृति) एकांकी नाटक भी है।

कहानियों का हास्य बहुत ही शिष्ट और सुलझा हुआ है, जिसका आनन्द अविकसित मस्तिष्कवाले भी ले सकते हैं। कुछ कृतियों में विगत महायुद्ध-जनित परिस्थिति की पार्श्वभूमि है, जैसे—'मेरी युद्धकालीन यात्रा', 'बम्बई पर हमला' तथा 'ज़माना कंट्रोल का है।' इस प्रकार की कृतियां जनता में चाव से पढ़ी जाती हैं, इसमें कोई सन्देह ही नहीं। अन्य कहानियों में 'एप्रिल फूल', 'साहब और गधा', 'नौकरी की तलाश में', 'इनामी घोड़ा', 'वन्तकथा' तथा 'भूत की कहानी' विशुद्ध हास्य की श्रेष्ठ कहानियां हैं। मराठी के आधुनिक सर्वाग्रणी हास्य-लेखक प्रोफ़ेसर चि० वि० जोशी की 'पंडित जी का वक्तृत्व' शीर्षक कृति में लेखक ने उन वक्ताओं की अच्छी पोल खोली है, जो कुछ न जानते हुए भी श्रेष्ठ वक्ता बने फिरते हैं और यह भी दिखलाया है कि उनके ऐसा करने में जनता कहां तक जिम्मेदार है। श्री अनन्त काणेकर-लिखित 'बचन पाण्डे का छाता' शीर्षक कहानी में मनोविज्ञान का सुन्दर हास्यमय निदर्शन है। 'जीरोहस' शीर्षक कहानी उन धनवान नागरिकों की ख्याति-लिप्सा पर प्रकाश डालती है, जिनसे केवल धन ऐंठने के लिए अदने आदमी भी उन्हें ख्याति के आकाश में चढ़ाकर उल्लू बना देते हैं।

अनुवाद की भाषा मँजी हुई है, यद्यपि कहीं-कहीं कुछ मराठीपन आ गया है। छपाई, कागज़ और गेट-अप अच्छा है। मूल्य तीन रुपये कुछ अधिक जान पड़ता है।

—गोविन्दराव मराठे

* * *

एकांकिका—लेखक, श्री चन्द्रकिशोर जैन, प्रकाशक जीवन कलामन्दिर, सहारनपुर, पृष्ठ १२६, मूल्य २)।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के विषकन्या, नेपोलियन का विजय रहस्य, हीरे का टुकड़ा, इन्साफ़, अस्पताल का कमरा, पहली भेंट और क़ानून—इन सात एकांकी नाटकों का संग्रह किया गया है। ये नाटक रेडियो के लिए लिखे गये थे जो ब्राडकास्ट भी हो चुके हैं। इन नाटकों में संवाद प्रधान है, साथ ही रंगमंच पर पूर्ण सफलता के साथ खेले जा सकते हैं। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि ये नाटक अभिनय के लिए न लिखे जाकर ब्राडकास्ट के लिए ही लिखे गये हैं। इससे प्रकट होता है कि लेखक को नाट्यकला का सुन्दर ज्ञान है और वह अपनी कला में सफल भी हुआ है।

विषकन्या—सातों नाटकों में सबसे उत्तम है। इसमें लेखक ने प्राचीन परम्परा के अतिरिक्त एक नवीन कल्पना की है। संन्यासी अपनी प्यास पर विजय साधना के द्वारा नहीं वरन् इसलिए पाता है कि वह विवश है। जल में विष है जिसके पीने से उसकी मृत्यु हो सकती है—इस बात का डर ही संन्यासी को अतृप्त रखता है। नेपोलियन का विजय रहस्य—में लेखक ने यह दिखलाया है कि महापुरुषों में तलवार का बल ही नहीं रहता अपितु आध्यात्मिक बल भी होता है जिसके द्वारा वह दूसरों के हृदयों पर भी विजय प्राप्त करते हैं। हीरे का टुकड़ा—में एक ऐसे महाराष्ट्रीय महापुरुष का चित्रण है जो बात पर अपने प्राणों का बलिदान कर सकता है।

इन्साफ़—में स्त्री की कमज़ोरियों पर व्यंग किया गया है। प्रहसन अपने में अपूर्व और साधारण कोटि का है। हस्पताल का कमरा—में पुरुष और स्त्री के भिन्न-भिन्न विचारों का प्रतिपादन किया है। इसमें दो विरोधी भावनाओं का सुन्दर वर्णन है। पहली भेंट—में एक दासी पुत्री के मानसिक संघर्ष का चित्रण है जिसका विवाह प्रसेनजित से इसलिए कर दिया गया था कि जिससे युद्ध टल जाय और धर्म की रक्षा भी हो सके। क़ानून—में आज के क़ानूनों का बुरा प्रभाव समाज पर क्या पड़ता है यह दिखाया गया है।

नाटकों की भाषा काफ़ी सुन्दर है। लेखक से आशा है कि वह भविष्य में और भी सुन्दर कृतियां हिन्दी-संसार को भेंट करेंगे। हिन्दी-साहित्य के नाट्य-साहित्य में इस एकांकी नाटकों के संग्रह का महत्त्वपूर्ण स्थान होगा, इसमें सन्देह नहीं।

—रमाकान्त त्रिपाठी

* * *

पुकार—(कहानी संग्रह) लेखिका श्रीमती कमला त्रिवेणीशंकर, प्रकाशक श्री लक्ष्मी प्रकाशन मंदिर, गोरखपुर। मूल्य २॥) पृष्ठ-संख्या २३०।

श्रीमती कमला त्रिवेणीशंकर आजकल के कहानी-लेखकों में प्रमुख स्थान रखती हैं। स्त्री-लेखिकाओं में तो आपने अपनी रचनाओं के द्वारा ऊँचा स्थान प्राप्त कर लिया है। यद्यपि थोड़े अर्से से ही आपने कहानी-लेखन प्रारम्भ किया है किन्तु उनकी लोकप्रियता दिन-प्रति-दिन बढ़ती-जा रही है। श्रीमती कमला त्रिवेणीशंकर की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है समाज की वास्तविक स्थिति का चित्रण। कहानियों का सबसे प्रधान गुण है उसके प्रति पाठकों की सुरुचि और आकर्षण। घटनाओं में न तो कल्पना की उड़ान है और समझ से बाहर शाब्दिक इंद्रजाल। सीधी-सादी सरल, बमुहावरेवाली भाषा में दैनिक जीवन के सुख-दुख, संघर्ष और आदान-प्रदान के भाव और विचारों का सामंजस्य अत्यंत प्रभावोत्पादक और हृदय पर छाप छोड़ जानेवाला होता है।

'पुकार' आपकी इसी प्रकार की और त्याग भरे जीवन की सुन्दर, अनुरागमयी, मनभावनी और लुभावनी १८ कहानियों का संग्रह है। कहानियां प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। रागिनी, नारी का स्वाभिमान, त्याग का सौदा, नारीत्व, प्रायश्चित, फाउंटेन पेन, समझौता, मातृत्व की छाया, संतोष, घर का लाज, प्रकार, राजद्रोही का प्रेम, मन का मोह, अपराजिता, एक रात, तृप्ति, दृष्टि-भ्रम और अंतिम बिदा, यही अठारह कहानियां। पुस्तक की भूमिका में प्रोफेसर राजनाथ पांडेय एम० ए० ने कहानियों का सुन्दर और कलात्मक विवेचन किया है। संग्रह अत्यन्त सजीव और पठनीय है। आशा है इस संग्रह का हिन्दी संसार में यथेष्ट आदर होगा और कहानी साहित्य की कमी की पूर्ति करेगा।

—चक्रपाणि

वह चुपचाप चली गई। मेरी विकलता बढ़ रही थी।

* * *

दो-घड़ी रात जा चुकी थी। सुशीला मेरी मौसी के ही घर थी। मैंने संकेत किया वह बाहर आ गई।

"सुशीला! मैं कल घर जा रहा हूँ"—मैंने कहा वह चुप थी।

"सुशीला!"

"कहिये?"

"मुझसे रहा नहीं जायगा, तुम्हारे बिना?"

"कृपा है आपकी!"

"और!"

"कृपा ऐसी ही बनी रहे और बढ़ती रहे।"

'और मेरे लिए क्या कह रही हो?'

सुशीला की आँखें बरस पड़ीं। उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

'मैं कुछ भी नहीं समझ पाया सुशीला" मैंने कहा।

उसकी हिचकियां बँध गईं। कांपती जबान में उसने कहा—"मेरे हाथ की चूड़ियां फोड़ दी गई हैं।"

मैं कांप उठा। मेरे नेत्र गीले हो गये। मुंह से निकल पड़ा, 'सुशीला! तुम तपस्विनी हो, मैं अपराधी हूं।'

सुशीला फूट पड़ी।

* * *

कई वर्ष बीत गये, पर मैं उस तपस्विनी सुशीला को नहीं भूल पाया। उसकी स्मृति होते ही सिहर उठता हूँ।

स्टैनिस्ट्रीट की अचूक दवायें

खाँसी
हर तरह की तकलीफों को दूर करने के लिये ही कैगमैग खास तौर पर बनाई गई है। नष्ट स्फूर्ति पुनः प्राप्त कराती और रात को दौरा होने पर भी नींद लाती है। कैगमैग खाँसी की अचूक दवा है और गले व फेफड़ों की तमाम खराबियों को जल्द आराम करती है।

सर्दी
स्टैनिस्ट्रीट का बनाया हुआ 'सिरप आफ हाइपोफौसफाइट आफ लाइम' फेफड़े के तन्तुओं को सुदृढ़ बनाता है और बड़े अच्छे टानिक का काम करता है। बड़े धीमे और आहिस्ता से यह अपना असर डालता है। स्वादिष्ट है, मधुर है और फौरन आराम पहुँचाता है।

इन्फ्लुएन्ज़ा
एनजौएड्स टिकियाँ एक भूतपूर्व जनस्वास्थ्य परिचालक के नुस्खे के अनुसार सावधानी से बनी हैं। इन पर चीनी चढ़ी होती हैं; एनजौएड्स टिकियाँ इन्फ्लुएन्ज़ा की महामारी में लाभदायक प्रतिषेधक साबित हुई हैं। साधारण सर्दी से भी ये रक्षा करती हैं।

कैगमैग स्टैनिस्ट्रीट सिरप एनजौएड्स

स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं० लिः कलकत्ता बम्बई मद्रास कराची लखनऊ अमृतसर

SSK 119

"इच्छानुसार यात्रा कीजिए"

जिस आनन्द की आपने अपेक्षा की होगी उससे भी अधिक आनन्द शान्तिकाल में आपको दिये जाने की व्यवस्था।

बेहतरीन सेवाएँ,—तीव्रगामी रेलगाड़ियाँ,
कोचों में अधिकाधिक आरामदेह प्रबन्ध,
तीसरे दर्जे के डिब्बों में उन्नत व्यवस्था,

............उन सुखद व्यवस्थाओं में से कुछ हैं जो युद्धोत्तरकालीन मुसाफ़िरों के लिए की जानेवाली हैं।

............इन स्तुत्य सुधारों में युद्ध-जन्य कारणों से ही विलम्ब हो रहा है; लेकिन जब इनका श्रीगणेश होगा, प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिक सुरक्षित, तीव्रगामी और आरामदेह यात्रा निश्चित हो जायगी।

—ई० आई० एण्ड बी० ए० रेलवे—

संपादक के नाम चिट्ठियां

चित्रपट और हिन्दी

गत ९ नवम्बर ४५ के 'देशदूत' में श्री लक्ष्मीचन्द्र दीक्षित तथा श्रीमती 'देवदासी' ने मेरे पत्र के उत्तर में अपने विचार प्रकट किये हैं।

दीक्षित जी लिखते हैं—"सूर्यप्रकाश जी भाषा को सर्वस्व मानकर चलनेवाले हैं।" यह बिलकुल गलत है। मैंने यह कहा था कि चित्रपट के आलोचकों को भाषा पर भी ध्यान देना चाहिए। दीक्षित जी शायद इससे असहमत न होंगे। नाटक की भाँति चित्रपट भी साहित्य का अंग है और भाषा को साहित्य से अलग नहीं किया जा सकता। जनता भाषा सुनने के मोह से सिनेमा चाहे न देखती हो, लेकिन अच्छी और सरल भाषा से अवश्य प्रभावित होती है और चित्रों-द्वारा जनता की रुचि परिष्कृत करने में और उसके सांस्कृतिक स्तर को ऊंचा उठाने में भाषा का महत्त्वपूर्ण हाथ है। जनता के मस्तिष्क में भाषा-संबंधी विकार हैं अथवा नहीं यह कहना कठिन है, लेकिन 'हुमायूं' फ़िल्म की भाषा जनता की बोलचाल की भाषा नहीं है, इसमें सन्देह नहीं। साहित्य के अन्य अंगों की भाँति किसी अच्छे और गंभीर चित्र का काम केवल उन्हीं शब्दों से चल भी नहीं सकता जो जनता की नित्यप्रति की बोल-चाल की भाषा में प्रयुक्त होते हैं। अगर ऐसा होता तो हर कोई बिना गुरु से पढ़े भाषा और साहित्य का पंडित हो जाता। यदि दीक्षित जी को इसमें फिर भी संदेह है तो वे अपने पत्र को ही केवल जनता द्वारा नित्य बोले जानेवाले शब्दों में लिखने का प्रयत्न करके देख लें। मैंने हिन्दुस्तानी शब्द से अपना तात्पर्य नहीं बतलाया था वरन् यह बतलाया था कि इस शब्द का प्रयोग जनता किस अर्थ में करती है और अब किस अर्थ में हमारे नेता इसका प्रयोग करना चाहते हैं। 'हिन्दी-गर्भित हिन्दुस्तानी' को मुझे 'हिन्दुस्तानी' कहने की जरूरत नहीं, उसके लिए उसका पुराना नाम 'हिन्दी' यथेष्ट है।

श्रीमती देवदासी ने हिन्दी और हिन्दुस्तानी के भ्रम को दूर करने के प्रयत्न में भ्रम और अधिक बढ़ा दिया है। न मालूम उन्होंने कैसे समझ लिया कि मैं हिन्दी को सर्वसाधारण की भाषा के योग्य अथवा राष्ट्रभाषा नहीं मानता। मैंने तो केवल यही कहा था कि राष्ट्र-भाषा होने से पहले हिन्दी एक भाषा है जिसका अपना स्वरूप है, अपनी परम्परा है। क्या देवदासी जी समझती हैं कि बिना स्वरूप और परम्परा के भी कोई भाषा 'भाषा' हो सकती है और राष्ट्रभाषा का पद पा सकती है? जनता की साधारण बोलचाल की भाषा अवश्य 'साधारण उर्दू' नहीं है। 'साधारण उर्दू' नाम की कोई चीज नहीं। उर्दू हिन्दी की उस साहित्यिक शैली का नाम है जिसमें नित्य की बोलचाल में अप्रचलित किन्तु आवश्यक सभी शब्द हिन्दी के स्वाभाविक स्रोत संस्कृत से न लेकर अरबी-फ़ारसी से लिये जाते हैं। अगर यह उर्दू इतनी साधारण हो जाती है कि उसमें केवल बोलचाल में प्रचलित अरबी-फ़ारसी के शब्द रह जाते हैं तो उसे साधारण उर्दू कहकर पुकारने की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह तो हिन्दी है। हिन्दी में कुछ अरबी-फ़ारसी शब्दों के आ जाने से उसका नाम थोड़े ही बदल जायगा। ऐसा सब भाषाओं में होता है। मराठी, गुजराती, बँगला सभी में यथेष्ट अरबी-फ़ारसी के शब्द हैं परन्तु इससे उनका नाम थोड़े ही बदल गया। अँगरेजी में तो फ़्रेंच, जर्मन, इटैलियन और स्पेनिश शब्दों की भरमार है किन्तु है वह अँगरेजी ही। हिन्दी ने उन सब अरबी-फ़ारसी शब्दों को अपना लिया है जो रोज जनता की बोलचाल में आते हैं। किसी हिन्दी की पत्र-पत्रिका को उठाकर देख लीजिए। 'मालूम' तो प्रत्येक दूसरे वाक्य में आता है। परन्तु पुराने 'निर्णय' और 'ज्ञात' का हिन्दी से बहिष्कार नहीं किया जा सकता। उनका भी स्थान है। यह भी याद रहे कि हिन्दी का क्षेत्र बहुत विशाल है। जैसी हिन्दी या हिन्दुस्तानी पटना में बोली जाती है, वैसी ही लाहौर में नहीं बोली जाती। दो समानार्थक प्रचलित शब्दों में अधिक प्रचलित लिया जायगा। और बोलचाल की कसौटी युक्त-प्रान्त में ४½ करोड़ जनता है, लखनऊ और दिल्ली के अल्पसंख्यक शिक्षित मुसलमान नहीं। यदि मौलवियों और नवाबों की बोलचाल में प्रयुक्त अरबी-फ़ारसी शब्दों को प्रचलित मानें तो उतने ही अल्प-संख्यक वर्ग में प्रयुक्त संस्कृत शब्दों को भी प्रचलित मानना पड़ेगा और अँगरेजी शिक्षित वर्ग की बोलचाल में प्रचलित अँगरेजी शब्दों को भी। या तो फिर प्रत्येक शब्द के तीन पर्याय लेने पड़ेंगे या कहना पड़ेगा कि जनता की बोलचाल की भाषाएँ तीन हैं—हिन्दी, उर्दू और 'बाबू-हिन्दुस्तानी'। देवदासी जी विश्वास रक्खें मैं यथेष्ट उर्दू जानता हूँ और बोलचाल में प्रयुक्त अरबी-फ़ारसी शब्दों को भली भाँति पहचानता हूँ।

किसी भी गम्भीर चित्र के लिए किसी न किसी साहित्यिक भाषा का आधार लेना पड़ेगा। वह हिन्दी होगी या उर्दू। हिन्दी और उर्दू से भिन्न हिन्दुस्तानी नाम की ऐसी कोई साहित्यिक भाषा नहीं जिसमें 'हुमायूँ' या 'रामराज्य' जैसा चित्र बन सके। राजनीतिक नेताओं के प्रयत्न से यह सरस्वती या हुगली अब फूट पड़े तो बात दूसरी है। 'हुमायूँ' की भाषा शुद्ध साहित्यिक उर्दू है, उसे किसी भी अर्थ में हिन्दुस्तानी नहीं कहा जा सकता। 'परख' की भाषा भी उर्दू है क्योंकि साहित्यिक उर्दू में कुछ हिन्दी शब्द इधर-उधर बिखराने से वह उसी प्रकार हिन्दी या हिन्दुस्तानी नहीं हो जाती जिस प्रकार रेडियो की उर्दू दो चार हिन्दी शब्द होने से कुछ और नहीं हो जाती।

स्वाभाविकता के विषय को मैंने उठाया ही नहीं था। किन्तु उठाया है तो कहना पड़ेगा कि भाषा पात्र या कथानक के साथ नहीं बदला करती। 'रामराज्य' उर्दूवालों के लिए उर्दू में और 'हुमायूँ' हिन्दीवालों के लिए हिन्दी में उसी प्रकार बन सकता है जिस प्रकार दोनों अँगरेजीवालों के लिए अँगरेजी में। यदि ऐसा न हो तो बेचारे हिन्दीवाले अँगरेजी, चीनी और जापानी कथानकों से सदैव के लिए वंचित रह जायें। जब बाबर के लिए अँगरेजी में 'एमपरर' कहा जा सकता है तो कोई कारण नहीं कि उस भारतीय सम्राट् को एक भारतीय शब्द 'सम्राट्' से सम्बोधित न किया जा सके? फिर, मैंने 'हुमायूँ' या उसकी भाषा का विरोध नहीं किया था वरन् उसकी भाषा को 'हिन्दुस्तानी' भाषा नाम देने का।

शायद 'देवदासी' जी को मालूम नहीं कि किस प्रकार संवाद-लेखक प्रोड्यूसर के हाथ में कठपुतली होता है। 'देशदूत' में ही एक लेख छप चुका है कि किस प्रकार सिनेमा जगत् में साम्प्रदायिकता प्रवेश पा चुकी है और वहाँ हिन्दी के साहित्यिकों और कलाकारों को किस प्रकार उर्दू की जूठन खानी पड़ती है। अभी एक मुस्लिम लीगी ने एक करोड़ रुपये से एक कम्पनी चित्रों-द्वारा उर्दू का प्रचार करने के लिए खोली है। ऐसी अवस्था में 'मानवता की डींग मारना' झूठी स्वाभाविकता से कहीं श्रेयस्कर है।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के चित्रपट सम्बन्धी प्रस्ताव के दो उद्देश्य हैं—सिनेमा-द्वारा हिन्दी को विकृत होने से बचाया जाय और अधिकाधिक हिन्दी चित्रों का निर्माण हो। इनकी पूर्ति के लिए यह आवश्यक है कि हिन्दी पत्रों में एक ओर उर्दू पुस्तकों की भाँति उर्दू चित्रों की समालोचना न हो और यदि हो तो भाषा को स्पष्टतया उर्दू बतलाया जाय और दूसरी ओर साम्प्रदायिक कारणों से हिन्दी को विकृत करने की मनोवृत्तियों पर प्रकाश डालते हुए चित्र की भाषा पर भी समुचित ध्यान दिया जाय।

—सूर्यप्रकाश एम० ए०

* * *

दिल्ली में रेडियो-विरोधी लेखक-संघ

हिन्दी के मान्य लेखकों से निवेदन है कि एक वर्ष से ऊपर हो गया आप लोग अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के आदेश से आल इण्डिया रेडियो से उसकी हिन्दी-विरोधिनी नीति के कारण असहयोग कर रहे हैं। यह निर्विवाद है कि आपके इस त्याग ने जहाँ सम्मेलन के हाथों को मजबूत बनाया है वहाँ दूसरी ओर हिन्दी जनमत को जागृत करने में भी अपूर्व सफलता प्राप्त की है। आप यह जानते ही हैं, कि जहाँ तक रेडियो में हिन्दी के उचित स्थान प्राप्त करने का प्रश्न है लेखकों के इस भारी त्याग के बाद भी स्थिति जहाँ की तहाँ है और नवीन सरकारी घोषणा से भी उसमें कोई सुधार नहीं हुआ है। हमारी समझ में इसका कारण यही है कि रेडियो-विरोधी आन्दोलन जिस तीव्र गति से चलना चाहिए था वह दुर्भाग्य से वैसा नहीं चल सका है।

यह प्रश्न जहाँ हिन्दी भाषा और उसके अधिकारों से सम्बन्ध रखता है ठीक उसी प्रकार इसका सम्बन्ध हिन्दी-लेखकों से भी है। अस्तु, हम लोग यह अनुभव करते हैं कि इस आन्दोलन को पूर्णतया सफल बनाने के लिए अब इसे सीधा अपने हाथों में ले लिया जाय और इस प्रकार सम्मेलन के कार्य को आगे बढ़ाते हुए हिन्दी भाषा और उसके लेखकों की मर्यादा की रक्षा की जाय।

अभी लाहौर में इस बात को अनुभव करते हुए कुछ प्रमुख रेडियो-विरोधी हिन्दी-लेखकों की एक विशेष बैठक हुई थी जिसमें रेडियो-विरोधी लेखक-संघ के नाम से एक संस्था बनाने का निश्चय किया गया और उसमें यह भी निश्चित हुआ कि इस सम्बन्ध में कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व आदरणीय लेखकों के सत्परामर्श और मतामत प्राप्त करने का यत्न किया जाय।

अतः हिन्दी के मान्य लेखकों से हमारा अनुरोध है कि वे रेडियो-विरोधी आन्दोलन को सुचारु रूप से चलाने के सम्बन्ध में अपनी योजना निम्न पते पर भेजने की कृपा करें और साथ ही यह भी लिखें कि अपनी इस योजना में वे स्वयं कितना दायित्व उठा सकेंगे। लेखकों से उत्तर प्राप्त होने पर हम दिल्ली में शीघ्र ही एक अधिवेशन बुलाने का विचार रखते हैं। अस्तु, इस कार्य में शीघ्रता अपेक्षित है।

४१८ नील कटरा, —गोपालप्रसाद व्यास
दिल्ली —रामधन शर्मा शास्त्री

* *

मरुभूमि की उन्नति—३ वर्ष की योजना

सुप्रसिद्ध हिन्दी-प्रेमी और कर्मठ समाज-सुधारक श्री स्वामी केशवानन्द जी संस्थापक साहित्य-सदन अबोहर (पंजाब), संचालक जाट विद्यालय, संगरिया (बीकानेर राज्य) एक लम्बे अर्से से इस प्रान्त (बीकानेर) की विशेष रूप से सेवा में संलग्न हैं। इन्हीं के अथक परिश्रम से इस प्रान्त में शिक्षा और सुधार की ज्योति प्रज्वलित हो रही है। आपने हाल ही में मरुभूमि की अनपढ़ अविद्या-ग्रस्त जनता के लिए साक्षरता-प्रसार व गोसेवादि की एक अति उत्तम और सर्वसाधारण को लाभ पहुँचाने वाली मरुभूमि की उन्नति एवं सेवा-कार्य के लिए ३ वर्ष की योजना बनाई है। योजनायें तो बहुत होती हैं, पर यह योजना रूस की पंचवर्षीय योजना की नाईं अवधि-सीमा-बन्धन से सुनिश्चित समय में ही एक पूरे प्रान्त की कायापलट करके सभ्य बनाकर देश के अन्य ऐसे पिछड़े प्रान्तों के लिए अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करनेवाली सिद्ध होगी।

यह योजना कार्यरूप में परिणत हो चुकी है और एक दर्जन से भी अधिक ग्राम्य पाठशालाएँ खोली जा चुकी हैं, जहाँ पीने का पानी भी अप्राप्य है। आगे ज्यों-ज्यों साधन मिलते जायेंगे, पाठशालाएँ खोली जा सकेंगी। इन पाठशालाओं का जिस तत्परता और सुचारु रूप से सन्तोषजनक कार्य चल रहा है उसे देखकर दृढ़ विश्वास होता है कि अगर इस योजना को देश ने साथ देकर सफल बनाया तो निस्सन्देह तीन वर्षों में मरुभूमि स्वर्गभूमि बन जायेगी।

इस योजना में तीन वर्ष में अनुमानतः डेढ़ लाख रुपया खर्च होगा जो पूरे प्रान्त के लिए एक वर्ष का ५० हजार रुपया नहीं के बराबर है।

जाटविद्यालय —सुरेन्द्रसिंह वर्मा,
संगरिया (बीकानेर) एम० ए० 'साहित्यरत्न'

माधवी-कङ्कण

यह सुप्रसिद्ध बाबू रमेशचन्द्र दत्त का लिखा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मुगलों के समय की दशा के चित्रण के साथ-साथ प्रेमी-प्रेमिका की बड़ी विचित्र कथा है। यह उपन्यास बहुत लोकप्रिय है। इसका नया संस्करण अभी तैयार हुआ है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

सच्चा सेवक

छोटा-सा नाटक है जिसमें सेवक के गुण सुन्दरता से दिखाये गये हैं। यह नाटक अभिनय करने के लिये लिखा गया है और खेला भी गया है। स्कूलों में उत्सव के समय छात्र इसका निर्दोष अभिनय करके प्रशंसा पाते हैं। मूल्य केवल ।-) पाँच आने।

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद

स्टैनिस्ट्रीट
चिकेन
(कंसिंट्रेटेड)
एसेंस
SSK 121

विशुद्धता व उत्कृष्टता की गारंटी है—विदेशी चिकेन एसेन्सों से किसी भी हालत में खराब नहीं, वरन् अच्छा ही है।
स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट ऐण्ड कं, लिमिटेड
कलकत्ता बम्बई लखनऊ अमृतसर मद्रास कराची

संवाददाताओं के पत्र

फ़तेहपुर में श्री फ़ीरोज गांधी दौरे के लिए बिन्दकी पधारे। नगर में आपका स्वागत किया गया। श्री ब्रजकिशोर अग्रवाल ने आपके सम्मान में एक दावत दी, जिसमें ज़िले के प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता श्री वंशगोपाल एडवोकेट, श्री दयाशंकर मिश्र, "सूर्य्य" स्वामी भगवान जी, श्री रामसुमेर जी और बाहर के कुछ विद्यार्थी कार्यकर्त्ता भी शामिल थे। फिर आपका जुलूस निकाला गया और श्री स्वामी भगवान की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें श्री फ़ीरोज गांधी को ११११) की थैली नगर की ओर से "आजाद हिन्द" कोष के लिए श्री पं० मन्नूलाल जी राजवैद्य ने भेंट की। श्री फ़ीरोज गांधी, श्री वंशगोपाल एडवोकेट, श्री स्वामी भगवान जी, श्री "सूर्य्य" जी आदि के ओजस्वी भाषण हुए। फिर आप बकेवर की सभा में गये, जहाँ आपको २०१) की थैली भेंट की गई। उसी दिन आप ग्राम रेवाड़ी की सभा में पधारे जहाँ आपको "आजाद हिन्दसेना" के लिए ५१) की थैली भेंट की गई। आपका इन दोनों सभाओं में व्याख्यान भी हुआ। रास्ते में आपको ग्राम मौदार के निवासियों ने ५१) रु० की थैली भेंट की। ग्राम रेवाड़ी की सभा श्री लल्लूसिंह की अध्यक्षता में हुई। वहीं आपको चाय-पार्टी दी गई। जिसमें आपके अतिरिक्त ज़िले के प्रमुख नेताओं श्री शिवदयाल उपाध्याय, श्री पन्नालाल जी और प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी भी शामिल थे। शाम को आप फ़तेहपुर आये। आपने फ़तेहपुर-बाँदा मुस्लिम सीट के सम्बन्ध में उम्मीदवार चुनने के विषय में ज़िले के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक की। श्री वंशगोपाल जी एडवोकेट ने भी आपको एक चाय-पार्टी दी। उसी दिन आप लखनऊ चले गये।

फ़तेहपुर के ग्राम सेबली में एक सार्वजनिक सभा श्री दीनदयाल की अध्यक्षता में हुई जिसमें श्री वंशगोपाल जी एडवोकेट को ३३) रु० की थैली चुनाव फंड के लिए दी गई। सभा में श्री वकील साहब, श्री राजबहादुरसिंह, श्री रामगोपाल जी, श्री गुरुप्रसाद के भाषण हुए।

फ़तेहपुर में ज़िला कांग्रेस कमेटी की आवश्यक बैठक हुई, जिसमें ३३ सदस्य उपस्थित थे। प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मंत्री श्री जगनप्रसाद राव भी पधारे थे। फ़तेहपुर कांग्रेस के इतिहास में इतनी देर तक होनेवाली यह प्रथम बैठक थी। ज़िले के कुछ आवश्यक मामलात के निपटारे के लिए श्री रावत जी पधारे थे। बैठक ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया कि इस ज़िले की दोनों हिन्दू सीटों से यहीं के कांग्रेस कार्यकर्त्ता प्रान्तीय असेम्बली के लिए खड़े किये जायँ। नहीं तो ज़िले में बाहरी व्यक्ति खड़े होने से असन्तोष फैलेगा। ज़िले की मुस्लिम सीट से भी उम्मीदवार खड़ा करने का निश्चय हुआ। श्री गौरीशंकर वकील कोषाध्यक्ष ज़िला कमेटी के चुने गये। श्री शिवबिहारी, श्री पं० वासुदेव जी, श्री गुरुप्रसाद वर्मा ज़िला कमेटी के सदस्य कोआप्ट किये गये। ज़िले में जोरदार चुनाव आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया गया है। मुस्लिम क्षेत्रों में भी कांग्रेस की सभाएँ शीघ्र होने जा रही हैं।

फ़तेहपुर में मुहर्रम के सिलसिले में जुलूस में एक मुसलमान ने "पाकिस्तानी चाय" का नारा लगाकर चाय बेची और खबर है कि उसने एक प्याला चाय एक आने से लेकर चार आने तक बेची। यह "पाकिस्तान" के प्रचार का नया तरीका था पता नहीं साधारण चाय और "पाकिस्तानी—चाय" के चाय में क्या अन्तर है? यह तो लीगी या पाकिस्तानी—समर्थक ही बता सकते हैं।

—संवाददाता

* * *

जयपुर राज्य में झुंझुनू द्वितीय राजनैतिक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष सेठ प्रह्लादराय बंका ने मलसीसर की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि एकान्त में पड़ा यह इलाक़ा छोटे-बड़े ठिकानों के पानों में बँटा हुआ है। इलाक़े में रात दिन की मारपीट-लूट-चोरी-बेगार रिश्वत बन्दोबस्त की गड़बड़ियों से फैला हुआ आतंकपूर्ण भयानक 'असन्तोष है। वैसे तो शेखावाटी के प्रायः सभी क़स्बों में ठिकानों में दमन का नंगा नाच होता है और उससे जनता भयभीत रहती है। किन्तु हमारे अलसीसर मलसीसर की स्थिति तो एकदम विचित्र है। मलसीसर में आज जब हम प्रजामण्डल के मेम्बर बनने के लिए कहते हैं तो लोग कहते हैं कि प्रजामण्डल में शामिल होते ही ठिकानेवाले चोरी करवा देंगे—प्रजामण्डलवालों को वोट देने की शंका पर ही यहाँ कितने ही लोग ठिकाने द्वारा संकट में डाल दिये गये हैं।

हमारे प्रदेश में आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्णतः कमी है क्योंकि लाखों रुपया ठिकानेवाले लेते हैं और जकात आदि से राज भी बहुत-सा रुपया लेता है पर न तो यहाँ १३ कोस के भीतर हाईस्कूल है और न अच्छा मनुष्यों व पशुओं के इलाज को बड़ा अस्पताल। इन संस्थाओं की यहाँ बड़ी आवश्यकता है। आसपास के गाँवों में पानी का तो महान् कष्ट है पीने के लिए गाँव गाँव में अच्छे बरसाती पानी के कुंड चाहिए क्योंकि यहाँ के गाँवों की जनता को खारे पानी की वजह से अत्यन्त कष्ट है। लोगों को ३-३, ४-४ कोसों से पानी लाना पड़ता है। कभी-कभी यात्री को कोसों प्यासा रहना पड़ता है। क़स्बे में सफ़ाई और रोशनी सड़क पर ध्यान देने की भी ख़ास जरूरत है। पोस्ट आफ़िस अभी-अभी बना है पर वहाँ न तो पोस्टेज मिलता है और न कोई पत्र वक्त पर जाने या मिलने की व्यवस्था है। झुंझुनू से टमकोर तक इधर एक अच्छी सड़क की महान् आवश्यकता है। मोटर सर्विस भी अगर इधर से चालू होने की सुविधा हो तो फिलहाल काम चल सकता है इधर आने-जाने में कितनी असुविधा है इसे आप लोगों ने स्वयं पधार कर देखा ही है। इसके अलावा ठिकाना प्रथा का अभिशाप भी कम नहीं है और उसकी वर्तमान स्थिति जल्द से जल्द बदली जानी चाहिए।

—संवाददाता

* * *

जयपुर (मण्डावा) हिन्दी-साहित्य-समिति तथा छात्र-साहित्य-संघ हिन्दी-साहित्य के सुप्रसिद्ध उपन्यास और कहानीकार पंडित विश्वम्भरनाथ जी शर्मा कौशिक के असामयिक निधन पर शोक प्रकट करती है। कौशिक जी के निधन से हिन्दी-साहित्य की निस्सन्देह बड़ी क्षति हुई। कौशिक जी की रचनाओं और उनकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया।

—संवाददाता

* * *

वृन्दावन में ब्रज-साहित्य-परिषद् की स्थापना, ब्रज साहित्य मण्डल के प्रधान मन्त्री श्री प्रभुदयाल जी मीतल के प्रबल उद्योग से हो गई है। सभापति, वैद्य उमाशंकर द्विवेदी शास्त्री, उप-सभापति; शाह गौरशरण गुप्त एडवोकेट, ललिताचरण गोस्वामी वकील; मंत्री श्री सुभांग गोस्वामी विशारद वकील; उपमंत्री गौरकृष्ण गोस्वामी शास्त्री काव्यतीर्थ और अद्वैतकुमार गोस्वामी म्युनिसिपल कमिश्नर सदस्यों में सर्वश्री छबीलेलाल गोस्वामी, दानबिहारीलाल शर्मा, हितानन्द गोस्वामी, लज्जाराम ललाम एम० ए०, अतुलकृष्ण गोस्वामी, रामकृष्ण गर्ग शास्त्री आदि साहित्यिक हैं ब्रज-साहित्य परिषद् का सम्बन्ध ब्रज साहित्य मण्डल मथुरा के साथ कर दिया गया है। परिषद् के नियम व विधान बनाने के वास्ते तीन सदस्यों की सब-कमेटी बना दी गई है।

स्थानीय म्युनिसिपल बोर्ड का चुनाव निर्विरोध हो गया। इस बार कांग्रेस के उम्मीदवार चुनाव में खड़े हुए थे। प्रान्तपति श्री कृष्णदत्त पालीवाल एम० एल० ए० ने कांग्रेस के नौ उम्मीदवारों को चुना जो कि बिना किसी विरोध के सदस्य चुन लिये गये। श्री अद्वैतकुमार गोस्वामी, श्री किशोरीलाल गोस्वामी, श्री प्रभुदयाल भार्गव, डाक्टर नितांईचरण जी, पंडित छोटेलाल गौतम, वैद्य श्रवणलाल जी, सेठ नत्थोमल सर्राफ़, श्री नलिनीकान्त मुकर्जी, श्री हरचरणलाल गुप्त। यह नौ सदस्य कांग्रेस की ओर से म्युनिसिपलबोर्ड के सदस्य हैं।

म्युनिसिपल कांग्रेस पार्टी का भी चुनाव हो गया। प्रोफ़ेसर कृष्णचन्द एम० एल० ए० पार्टी के लीडर, श्री प्रभुदयाल भार्गव ह्विप, श्री अद्वैतकुमार गोस्वामी मंत्री और श्री नत्थोमल सर्राफ़ खजान्ची चुने गये हैं।

—संवाददाता

* * *

बंगाल सरकार की ओर से बताया गया है कि १० दिसम्बर १९४५ तक १६४६ सुरक्षा बन्दी बंगाल से रिहा किये गये हैं। २१ अक्टूबर से १० दिसम्बर तक मुक्त होनेवाले राजबंदियों की संख्या १८२ है।

कलकत्ता के पोस्टआफ़िसों से नवम्बर में १७,५५,५५५ रुपये के नेशनल सेविंग सार्टिफिकेट तथा ३,२४० रु० १२ आने के नेशनल सेविंग स्टैम्प की बिक्री की गई।

झाड़ग्राम के राजा एन० एम० देव ने बंगाल में अनाश्रित बालकों की रक्षा के लिए १ लाख रुपये रेडक्रास फण्ड में ५० हजार रुपये तथा झाड़ग्राम स्कूल के बोर्डिंग के लिए १९,५०८ रुपये का दान दिया है।

—संवाददाता

* * *

आगरा में महाराज भरतपुर की अध्यक्षता में होनेवाले अखिल भारतवर्षीय पशु-रक्षा-सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन की सफलता चाहते हुए भारत के कई नेताओं, देशी नरेशों आदि ने संदेश दिये हैं। महात्मा गांधी ने कहा है—"मैं श्री अचलसिंह जी को जानता हूँ वे मेरे मित्र हैं। सन्देश क्या दूँ माँगनेवाले को भी गाय बनना चाहिए और देनेवाले को भी। आज तो गाय को ढींगली बना के रक्खा है।"

—संवाददाता

डन्ढेड़ा 'हिन्दू सुधार मंडल' का जन्म गत दीवाली के अवसर पर हुआ। इसके जन्मदाता पंडित हरीराम जी हैं। अभी तक इसके सदस्यों की संख्या ३० है। गत १६ दिसम्बर को मंडल की सातवीं बैठक हुई। श्री एम० एन० डंगवाल ने मंडल की स्थिति दृढ़ बनाने की गाँववालों से अपील की। उन्होंने "आज़ाद हिन्द फ़ौज" के लिए चन्दे की अपील की। प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हुआ और उसी वक्त १६) चन्दा जमा हुआ।

मंडल के सभापति श्री भगवतस्वरूप शर्मा ने कहा कि हर हिन्दुस्तानी का कर्तव्य है कि ऐसे शुभ काम में तन, मन, धन से हाथ बटायें। जो चन्दा जमा होगा वह श्री रघुनन्दनशरण, दरियागंज, दिल्ली के नाम भेज दिये जायेंगे।

—ब्रजराजसिंह

* * *

कानपुर बिल्हौर में आगामी महाशिवरात्रि के अवसर पर तहसील वैद्य-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन करने का निश्चय राधन स्थान में किया गया है। इस कार्य की समुचित व्यवस्था संगठन व प्रचार करने के लिए हमें तहसील निवासी एवं प्रवासी सभी वैद्य-चिकित्सक जड़ी-बूटी विशेषज्ञों के सहयोग की आवश्यकता है। वैद्यों से निवेदन है कि सम्मेलन के लिए निबन्ध, सूची, उपयोगी प्रस्ताव, सभापतित्व के लिए कम से कम तीन नाम तथा लाभदायक योजनायें तैयार कर शीघ्र ही भेजने की कृपा करें। सभापति प्रायः बिल्हौर तहसील का ही निवासी या प्रवासी विद्वान हो सकता है। स्वागत-समिति का सदस्य १), सहायक ५), संरक्षक ११) देकर बना जा सकता है। पत्र-व्यवहार का पता—प्रधान मंत्री, श्रीब्रह्मदेवाश्रम-सेवा-संघ राधन, पो० उत्तरीपूरा, कानपुर।

—संवाददाता

* * *

कानपुर राधन, पोस्ट चौबेपुर में जनता के हितार्थ सेवा का उद्योग करने के लिए श्री १०८ स्वामी ब्रह्मदेवाश्रम जी ने अपनी सारी चलाचल सम्पत्ति लगा सेवा संघ का रजिस्टर्ड ट्रस्ट बना दिया है। ग्रामीण क्षेत्र के दीन-दुखी-रोगी प्राणियों के सुख और स्वास्थ्य के साधनों को जुटाना संस्था का उद्देश्य है। पत्र-व्यवहार का पता—मंत्री, श्रीब्रह्मदेवाश्रम सेवा-संघ, राधन पो० चौबेपुर (कानपुर)

—संवाददाता

* * *

सरगोधा (पंजाब) हिन्दी-प्रचारिणी सभा हिन्दी के सुप्रसिद्ध कलाकार पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक की मृत्यु पर शोक प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगतात्मा को शान्ति प्रदान करे।

—प्रधान मंत्री

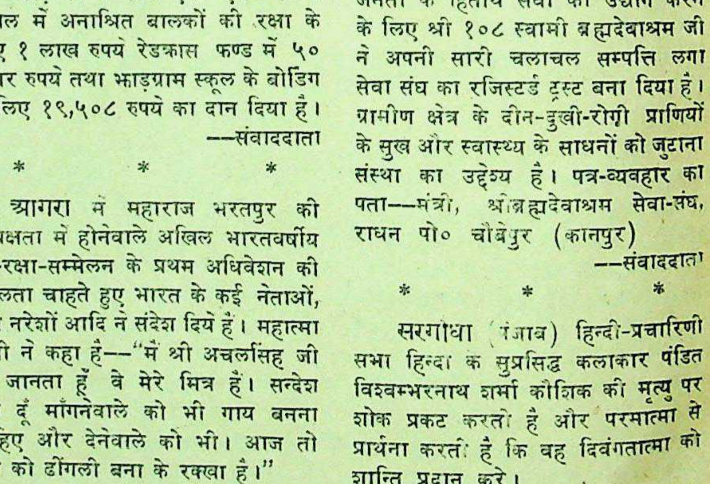
जिस्मानी व दिमागी ताक़त बढ़ाने के लिए सेवन करो
डॉ. गौतमराय केशव
टॉनिक फॉस्फरस पिल्स

इलाहाबाद के एजेन्ट—बलदेवप्रसाद अन्तूलाल जौहरी
एल० एस० धोलांकिया एन्ड ब्रदर्स।

पशु-रक्षा सम्मेलन

भरतपुर-नरेश का भाषण

आगरा में अखिल भारतीय पशु-रक्षा सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन के सभापति पद से श्री मन्महाराजाधिराज श्री ब्रजेन्द्र सवाई श्री ब्रजेन्द्रसिंह जी देव भरतपुर-नरेश ने कहा—

मुझे इस पशु-रक्षा सम्मेलन के जलसे में शामिल होकर बहुत खुशी हुई है। मैं आज अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ और आप लोगों को बहुत धन्यवाद देता हूँ कि आप लोगों ने इस पशु हितकारिणी सभा का जो कि पशु-रक्षा के लिए बहुत जरूरी है, मुझे सभापति बनाकर मेरा स्वागत किया है। मेरे पूर्वजों ने तो हमेशा ही इस बात को ध्यान में रक्खा कि पशुओं की रक्षा और उनकी उन्नति की जाय, और अब भी भरतपुर में नये-नये साधनों को काम में लाकर इस ओर पूरी-पूरी कोशिश की जा रही है। इस बात को देखकर कि जहाँ इतने पशु हों और ज्यादातर आदमियों को घी और दूध के दर्शन भी न हों बड़ा दुःख होता है। इसलिए हम सबों का यह कर्त्तव्य है कि जाति-पाँति के भेद को छोड़कर इस शुभ अवसर में हाथ बटायें। इसकी सफलता तभी हो सकती है जब कि पशुओं की चराई का ख़ूब अच्छा प्रबन्ध हो और साँड और गो इत्यादि जिनसे पशु पैदा किये जायें, अच्छी नस्ल के और तन्दुरुस्त हों। मैं इस काम में पूर्ण सहयोग देने की कोशिश करूँगा, क्योंकि हम ब्रज के लोग जो कि भगवान् कृष्ण का स्थान है, पशु-सेवा तथा उसकी उन्नति करना, अपना धर्म समझते हैं। हिन्दुस्तान का भविष्य तथा उसकी उन्नति मेरे विचार में अधिकतर पशुओं की रक्षा तथा उनकी नस्ल की उन्नति पर ही निर्भर है। मुझे आशा है कि आप सब सज्जन इस शुभ काम को सफ़ल बनाने में पूरी-पूरी मदद करेंगे। अन्त में, मैं उन लोगों जो अपनी कोशिश से इस बात को जो कि अब तक विचार रूप में ही थी, कार्यरूप में बदल रहे हैं, बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

स्वागताध्यक्ष का भाषण

अखिल भारतवर्षीय पशु-रक्षा-सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्रीमान् रायसाहब गुरुचरण दास मेहता ने पशु-रक्षा के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला और सरकार का ध्यान आकर्षित किया। आपने कहा कि हमारे देश में बच्चों की मृत्यु-संख्या और देशों की अपेक्षा जहाँ दूध की अधिकता है, बहुत ज्यादा है। यहाँ एक साल से नीचे के बच्चों की मृत्यु प्रति हज़ार २६१ है जब कि न्यूज़ीलैण्ड में ३२, डेनमार्क में १३६ और इँगलैण्ड में १७२ है। बच्चों की मृत्यु-संख्या के इतने अधिक होने का एक मुख्य कारण यह है कि हमारे देश में गर्भवती स्त्रियों और बच्चेवाली माताओं को या तो दूध बिलकुल ही नसीब नहीं होता और अगर [illegible] भी है तो अपर्याप्त मात्रा में और ऐसा कि जिसे कुछ ही कह लीजिए किन्तु किसी हालत में अच्छा दूध नहीं कह सकते। नतीजा यह होता है कि बच्चों में बेहोशी का सामना करने की शक्ति पैदा नहीं हो पाती।

अखिल भारतीय पशु-रक्षा सम्मेलन के संयोजक सेठ अचलसिंह।

* * *

हिन्दुस्तान में दूध की बहुत ज्यादा कमी की वजह से घी बहुत कम तैयार होता है। तीन छटाँक दूध हर व्यक्ति की जो औसत है उसमें से २७ प्रतिशत घी बनाने में व्यय होता है अर्थात् ४ तोले। परिणाम यह है कि शुद्ध घी मिलता नहीं और जो थोड़ी तादाद में मिलता भी है उसका ख़रीदना आम ख़रीदारों की हैसियत से बाहर है। अतः इसके सिवाय कोई चारा नहीं कि असली घी की जगह वनस्पति तैल प्रयोग किया जाय? चाहे उसे घी के तौर पर बरत लें चाहे तैल के तौर पर?

* * *

गेहूँ और चावल जैसे अनाज जिनकी पैदावार भी इस देश में हमारी जरूरतों के लिए काफ़ी नहीं है हमको दूसरे देशों से मँगाने पड़ते हैं। दो वर्ष हुए कि बर्मा से चावल आना बन्द हो जाने से बंगाल में लाखों आदमी भूखे मर गए। देश के तमाम बड़े शहरों में गल्ले की राशनिंग की स्कीमों का जारी होना ही साफ़ तौर पर यह प्रकट करता है कि देश में इतनी ज़मीन के होते हुए भी हम अब तक अपनी ज़रूरतों के लिए अनाज काफ़ी तादाद में पैदा नहीं कर सकते।

इस देश में दूध की उत्पत्ति और गल्ले की पैदावार में असाधारण कमी के मुख्य कारण ये हैं:—

(१) दूध देनेवाले पशुओं का अन्धाधुन्ध बध किया जाना।

(२) चारे की ज्यादा क़ीमतें।

(३) पशुओं को काफ़ी ख़ुराक का न मिलना।

(४) चराई की सुविधाओं की कमी।

(५) प्रति पशु जो दूध निकलता है उसमें धीरे-धीरे कमी होते जाना।

(६) पशुओं की नस्ल बिगड़ती जाना।

(७) अच्छे चारे और पशुओं की बीमारी के बारे में गाँव के लोगों में कम ज्ञान।

(८) उचित दवा-दर्पण के प्रबन्ध की कमी, और

(९) ज़मीन जोतने के लिए बैलों और भैंसों की कमी जो गत युद्ध के कारण हो गई है।

दर्जी-विज्ञान

यह पुस्तक सरल हिन्दी में शिल्पकला के सुप्रसिद्ध एवं विद्वान् प्रोफेसर द्वारा प्रकाशित हुई है। सिलाई-कटाई सीखने के लिए, यह सचित्र और वैज्ञानिक ढंग की नई पुस्तक है। इसके ३ भाग हैं। तीनों भागों का लागत मूल्य सिर्फ़ ४॥) है।

पता—हिन्द टेलरिंग कालेज
पीलीभीत

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत
सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।—)
यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

कवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ
भैरवी २॥≡) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १)
बाँसुरी ॥।) शिशु भारती ॥।)
वासवदत्ता १॥)

ठाकुर गोपाल शरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ
सुमना २) संचिता ३)
मानवी २।—) माधवी २)
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य
हल्दीघाटी २॥)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना
दैत्यवंश महाकाव्य ३।—)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत
हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६॥)

द्विवेदी-काव्यमाला
मूल्य ४)
स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

यह जल-अभेद्य
-और नमी-विरोधक है!
दांतों को ६० प्रतिशत अधिक चमकीला और स्वच्छ करने में प्रभावशाली।
विकार-विरोधी शीशे में बंद।
साल भर की गारंटी।
फिर आगये-
पशुओं के बालों से रहित
Dr. West's Miracle-Tuft MEDIUM
Dr. West's TOOTH PASTE

वितरक:
व्यापारी निर्यात-सम्बंधी पूछताछ के लिए लिखिए:
एल. डी. सेमूर एंड कंपनी इन्कार्पोरेटेड
१२० वाल स्ट्रीट, न्यू यार्क.

डा. वेस्ट्स टूथ ब्रुश और टूथ पेस्ट
Copyright
JWT(E)LTD

संवाददाताओं के पत्र

फतेहपुर में श्री फ़ीरोज गांधी दौरे के लिए बिन्दकी पधारे। नगर में आपका स्वागत किया गया। श्री ब्रजकिशोर अग्रवाल ने आपके सम्मान में एक दावत दी, जिसमें जिले के प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ता श्री वंशगोपाल एडवोकेट, श्री दयाशंकर मिश्र, "सूर्य्य" स्वामी भगवान जी, श्री रामसुमेर जी और बाहर के कुछ विद्यार्थी कार्यकर्त्ता भी शामिल थे। फिर आपका जुलूस निकाला गया और श्री स्वामी भगवान की अध्यक्षता में एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें श्री फ़ीरोज गांधी को ११११) की थैली नगर की ओर से "आजाद हिन्द" कोष के लिए श्री पं० मन्नूलाल जी राजवैद्य ने भेंट की। श्री फ़ीरोज गांधी, श्री बंशगोपाल एडवोकेट, श्री स्वामी भगवान जी, श्री "सूर्य्य" जी आदि के ओजस्वी भाषण हुए। फिर आप बकेवर की सभा में गये, जहाँ आपको २०१) की थैली भेंट की गई। उसी दिन आप ग्राम रेवाड़ी की सभा में पधारे जहाँ आपको "आजाद हिन्दसेना" के लिए ५१) की थैली भेंट की गई। आपका इन दोनों सभाओं में व्याख्यान भी हुआ। रास्ते में आपको ग्राम सौदार के निवासियों ने ५१) रु० की थैली भेंट की। ग्राम रेवाड़ी की सभा श्री लल्लूसिंह की अध्यक्षता में हुई। वहीं आपको चाय-पार्टी दी गई। जिसमें आपके अतिरिक्त जिले के प्रमुख नेताओं श्री शिवदयाल उपाध्याय, श्री पन्नालाल जी और प्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि श्री सोहनलाल द्विवेदी भी शामिल थे। शाम को आप फतेहरमैया। आपने मुक्तकंठ से अभिनय की तारीफ़ की। आपके हाथों, नटवर जी को स्वर्णपदक प्रदान किया गया। आपने घोषणा की कि नाटक की आय के पाँच हजार रुपये परिषद्-द्वारा इस फंड में दिये जा रहे हैं। —महेन्द्रप्रसाद मिश्र

* * *

अबोहर (जाब), श्री उद्योगपाल कन्या-विद्यालय पंचकोशी, जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नाम रजिस्टर्ड है, ग्रामीण कन्याओं में शिक्षा प्रचारार्थ स्थापित है। यह संस्था शुद्ध ग्रामीण वातावरण में, स्वास्थ्यप्रद स्थान में है, जहाँ के रहन-सहन में ग्रामीण सादगी और सरलता है। विद्यालय में कन्याओं के पढ़ने व निवास के लिए आबादी से बाहर विशाल खुले मकान बने हैं। शिक्षा निःशुल्क व भोजन-व्यय भी बहुत कम है। संस्था से असमर्थ ग्रामीण कन्यायें भी लाभ उठा सकें, इस बात को ध्यान में रखकर विद्यालय की प्रबन्ध-समिति ने कुछ ग़रीब कन्याओं का भोजन-व्यय भी सहन कर शिक्षा देने का निश्चय किया है। इस वर्ष ३ कन्याओं को भोजन-व्यय दिया जायगा।

जो लोग अपनी कन्याओं को शहरी वातावरण से दूर सादे, सस्ते व स्वास्थ्यप्रद स्थान में रखकर शिक्षा दिलाना चाहते हैं, वे अपनी कन्याओं को इस विद्यालय में प्रविष्ट करायें तथा आवश्यक जानकारी के लिए नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें—मंत्री, श्री उद्योगपाल कन्या-विद्यालय, साहित्य-सदन, अबोहर, पंजाब।

—तेगराम, मंत्री

था पता नहीं साधारण चाय और "पाकिस्तानी—चाय" के चाय में क्या अन्तर है? यह तो लीगी या पाकिस्तानी—समर्थक ही बता सकते हैं।

—संवाददाता

* * *

जयपुर राज्य में झुंझुनू द्वितीय राजनैतिक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष सेठ प्रह्लादराय बंका ने मलसीसर की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि एकान्त में पड़ा यह इलाक़ा छोटे-बड़े ठिकानों के पानों में बँटा हुआ है। इलाक़े में रात दिन की मारपीट-लूट-चोरी-बेगार रिश्वत बन्दोबस्त की गड़बड़ियों से फैला हुआ आतंकपूर्ण भयानक 'असन्तोष है। वैसे तो शेखावाटी के प्रायः सभी क़स्बों में ठिकानों में दमन का नंगा नाच होता है और उससे जनता भयभीत रहती है। किन्तु हमारे अलसीसर मलसीसर की स्थिति तो एकदम विचित्र है। मलसीसर में आज जब हम प्रजामण्डल के मेम्बर बनने के लिए कहते हैं तो लोग कहते हैं कि प्रजामण्डल में शामिल होते ही ठिकानेवाले चोरी करवा देंगे—प्रजामण्डलवालों को वोट देने की शंका पर ही यहाँ कितने ही लोग ठिकाने द्वारा संकट में डाल दिये गये हैं।

हमारे प्रदेश में आधुनिक आवश्यकताओं की पूर्णतः कमी है क्योंकि लाखों रुपया ठिकानेवाले लेते हैं और जकात आदि से राज भी बहुत-सा रुपया लेता है पर न तो यहाँ १३ कोस के भीतर हाईस्कूल है और न अच्छा मनुष्यों व पशुओं के इलाज को बड़ा अस्पताल। इन संस्थाओं की यहाँ बड़ी आवश्यकता है। आसपास के गांवों

कर लिया कि ऐसे अन्तराष्ट्रीय संघ में अमेरिका की ओर से जो प्रतिनिधि नियुक्त हो उसकी स्वीकृति कांग्रेस से ली जाये।

नी

र, एम० ए० 'साहित्यरत्न'

और अटा पर छाई शाम!
आओ हो गुमनाम।
घर के चोर-कपाट।
धा के जी के ठाठ!
गीं, निठुर बड़े गिरिधारी,
, बाम बिधाता, आली!
ई ने की जी भर रार,
से कर पाई री, तक़रार।
मुझे सिखाये पाप,
कर सहे सकल संताप!
ना, छीजीं सब महियारी।
—आओ श्याम मुरारी।
, मेरे मन के मोती।
राधा झर-झर रोती।
र अँखियाँ दर्शन-लोभी।
भूल गये मुझको भी?
जियरा खाली खाली,
नमाली, कैसी पामाली?
में, मीरा बन कालिन्दी,
में दोनों दामन भींगी,
ाणों के तीरथ चहुँ धाम!

चुंगकिंग की खबर है कि चीनी कम्यूनिस्टों ने अस्थायी समझौते के लिए कहा है। इस सम्बन्ध में कम्यूनिस्टों और चीनी सरकार के प्रतिनिधियों में बातचीत हो रही है।

* * *

ज्ञात हुआ है कि बड़े दिनों की छुट्टियों के बाद ब्रिटेन का सर्वदल पार्लिमेंटरी प्रतिनिधि मण्डल भारत रवाना होगा और भारत में लगभग तीन सप्ताह तक ठहरेगा।

* * *

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने बताया कि वे अखिल भारतीय महिला-सम्मेलन में उपस्थित न हो सकेंगी। यातायात की कठिनाई और विशेषकर छोटी कन्या, कुमारी रीता के अस्वस्थ हो जाने के कारण वे न जा सकीं। पासपोर्ट न मिलने की बात भ्रमवश फैल गई। अब वे जनवरी के प्रथम सप्ताह में भारत के लिए रवाना होंगी।

नई पुस्तक

कामायनी-अनुशीलन

महाकवि 'प्रसाद' का महाकाव्य 'कामायनी' बहुत प्रसिद्ध है। पर यह सबकी समझ में नहीं आता। इस पर अनेक समीक्षकों के विचार पत्रों में प्रकट हुए हैं। इसी ग्रन्थ का अनुशीलन इस पुस्तक में लेखक रामलालसिंह एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न ने कामायनी का ऐतिहासिक तत्त्व, प्रकृति वर्णन, चरित्र-चित्रण, श्रद्धा, भाषा तथा भावाभिव्यक्ति, छंद विधान, रस संचार, कामायनी का मनस्तत्व, दार्शनिक तथ्य, युग की अभिव्यक्ति, प्रेम-निरूपण आदि शीर्षकों में बड़ी मार्मिकता से किया है। अच्छे काग़ज़ पर छपी कोई ढाई सौ पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य २)।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, इलाहाबाद।

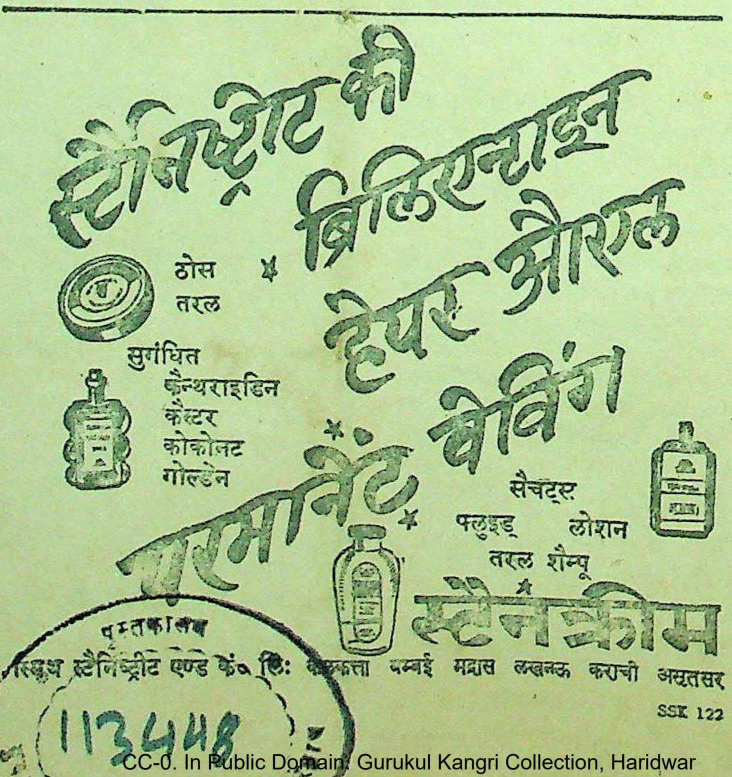

पुस्तकालय 113448

कुछ

यह प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी बी० ए० के बढ़िया निबन्धों का संग्रह है। इसमें २० निबन्ध हैं जो भाषा, भाव और विवेचन की दृष्टि से विलक्षण हैं। यह इस वर्ष की अनुपम रचना है। पृष्ठ-संख्या २०० से ऊपर। मूल्य केवल १॥) एक रुपया आठ आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड
इलाहाबाद।

तरुणाई में उसका स्वास्थ्य शोचनीय था

सिर-दर्द और अजीर्ण ने जीवन का मजा किरकिरा कर दिया था

लेकिन क्रुशेन साल्ट जब से खाती है, बिलकुल दुरुस्त है।

बहुत-सी स्त्रियों का यह दुर्भाग्य है कि तरुणाई में पहुँचते-पहुँचते स्वास्थ्य की ख़राबियाँ उन्हें जकड़ लेती हैं। ऐसा होना नहीं चाहिए। पढ़िए कि इस स्त्री को ऐसी परेशानियों पर किस तरह विजय प्राप्त हुई:—

"क्रुशेन का सेवन करने से पहले" वह लिखती है—"मेरे सिर में भयंकर दर्द होता था, ख़ून में गर्मी रहती थी, अजीर्ण सदा बना रहता था, और कभी-कभी तो मैं इतनी शून्य-सी हो जाती थी कि नितांत छोटी-सी बात भी मुझे चिड़चिड़ा देती थी—परेशान कर देती थी। इस हालत में तीन साल मुझे बिता देने पड़े।

"क्रुशेन साल्ट का उपयोग करने से आज मैं कितनी सुखी और प्रसन्न हूँ, शब्दों-द्वारा आपसे यह नहीं कहती। अठारह महीने से मैं इसका सेवन कर रही हूँ। एक दिन भी इसका सेवन करना मैं भूल नहीं सकती। जिस किसी को मेरी तरह शिकायतें हों, वह इसका सेवन कर सकता है; जादू की तरह इन रोगों की यह रामबाण औषध है। आज जैसा अच्छा मेरा स्वास्थ्य है, वैसा पहले कभी नहीं था। तीन सप्ताह तक क्रुशेन साल्ट के सेवन ने सिर-दर्द, सुस्ती और गर्म ख़ून के दौरों से मेरा पिण्ड छुड़ा दिया था, अब मैं बहुत ही प्रसन्न और स्वस्थ हूँ। क्रुशेन से वजन नहीं बढ़ता, जैसा कि बहुत-सी स्त्रियों का तरुणाई में वजन बढ़ जाता है।" —श्रीमती जे० एम०

अन्दरूनी सफ़ाई कायम रखने के लिए क्रुशेन साल्ट एक प्राकृतिक दवा है। क्रुशेन के छः साल्ट यकृत और गुर्दे को साफ़ करते और नियमित रूप से क्रियाशील बना देते हैं। आपका भीतरी यन्त्र इस प्रकार साफ़ हो जाता है, जिसकी ख़राबियाँ, यदि उन्हें बढ़ने दिया जाये, तो सारी गति-विधि को ही शिथिल कर देती हैं।

क्रुशेन साल्ट सभी अच्छे औषध-विक्रेताओं और भाण्डारों में मिलता है।

लहर लहर की

एवरेस्ट शिखर पर पहुँचने का एक और प्रयत्न

श्री पीटरवरो ने 'डेली टेलीग्राफ़' में लिखा है कि हिमालय पर्वत के एवरेस्ट नामक शिखर पर पहुँचने का एक और प्रयत्न किया जानेवाला है। इस बार अभियान दल के नेता श्री एरिक शिपटन होंगे जो १९३१ में कामत (२५,४४७) फ़ीट की चोटी पर चढ़ गये थे। उस समय तक और कोई इतनी ऊँची चोटी पर न पहुँचा था। एवरेस्ट की चढ़ाई में इस बार विज्ञानप्रदत्त आधुनिक सुविधाओं का भी सहारा लिया जायगा। उदाहरण के लिए, खाने-पीने आदि का सामान वायुयान से गिराया जायगा जिससे साथ में बहुत बड़ा बोझ लेकर चलने की आवश्यकता न रह जायगी। अभियान दल में बहुत थोड़े व्यक्ति रहेंगे और यह अल्पाइन क्लब के तत्त्वावधान में आरोहण करेगा। अभियान प्रारम्भ करने से पहले दो-तीन साल तैयारी में लग जायँगे।

क्या
पेट के दर्द ने जकड़ लिया है?
आपको नहीं होना चाहिए !
MACLEAN Brand Stomach Powder
Alex. C. Maclean
JWT(E)LTD.

देवयानी

नाटिका कुमारी तारा वाजपेयी की रचना है। इसमें शुक्राचार्य की बेटी देवयानी के कन्यात्व का आदर्श बड़ी सफलता से उपस्थित किया गया है। कथा महाभारत से ली गई है। इसमें आर्यों के व्यापक वैवाहिक सम्बन्ध के इस एक अपवाद—क्षत्रिय वर और कन्या ब्राह्मण-पुत्री—का स्पष्टीकरण बड़ी सतर्कता से हुआ है। पुस्तक अपने ढंग की अनूठी है। मूल्य केवल १) एक रुपया।

अमर ज्योति

कहानियों का संग्रह है जिसमें अनुशोचना, तावीज, चरित्रम, नहीं, अमर ज्योति आदि तेरह सुन्दर कहानियाँ हैं। इन कहानियों से पढ़नेवालों का मनोरंजन इस कारण होगा कि लेखक ने किसी मतवाद का आग्रह न करके कथा का चित्रण किया है। पूंजीपतियों और मजदूरों के संघर्ष, साम्राज्यवाद या समाजवाद आदि की उलझन में पाठक को नहीं पड़ना पड़ेगा। मूल्य केवल १) एक रुपया।

जीवन कण

आशुकवि जगमोहननाथ अवस्थी का सुन्दर रचनाओं का संग्रह है। आपकी रचनाओं में निर्भयता है, राष्ट्रीयता है। और कवि की ईमानदार छटपटाहट है। इस संग्रह की कवितायें समाज का भयंकर परिस्थितियों और घोर वातावरण के कारण जीवन की पहेली मान कर लिखी गई है। इसमें वैषम्य, भिखारिन, जेल, दीपावली आदि श्रेष्ठ २२ रचनायें संगृहीत है। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल ।।=) दस आने।

जानवरों की मज़ेदार कहानियाँ

में मोर और कौआ, लोमड़ी और गधा, चालाक बुढ़िया, सोने की चिड़िया, सिंह और गीदड़, राजकुमार और सोने की चिड़िया, चिड़िया और बुढ़िया तथा चालाक गीदड़ की कहानियाँ हैं। इनको पढ़कर लड़के और लड़कियाँ सभी प्रसन्न होते हैं। सुन्दर रङ्गीन आवरण पृष्ठ है। मूल्य केवल ।।≋) ग्यारह आने।

बाघ और भालू की कहानी

बालकों के बड़े काम की है। इसमें एक देशी बाघ और एक विदेशी भालू की कहानी है। दोनों कहानियाँ बाल आख्योपन्यास की तरह विचित्र तो हैं पर कल्पित नहीं हैं। इनको पढ़ने से बालक-बालिकाएँ जीव-जन्तुओं के काम काज और उनकी समझदारी का कुछ परिचय पावेंगी। मनोरंजन तो होगा ही। पुस्तक सचित्र है और दो रङ्गों में छपी है। मूल्य केवल ।=) छः आने।

माँ और बच्चा

इसके लेखक नामी चिकित्सक डाक्टर बोघराज चोपड़ा, एम० बी० सी-एच०बी० (एडिनबरा) हैं। यह पुस्तक अपने ढङ्ग की अनुपम है। इसके ११ प्रकरणों में छोटे बच्चों की मृत्यु और उसके कारण, बच्चों की मृत्यु और उसके कारण, गर्भिणी माता, जन्म के समय से बालक की रक्षा, बच्चों को दूध पिलाना, दूध पिलाने-वाली दाई, दूध छुड़ाना आदि आवश्यक विषयों की शिक्षा दी गई है। स्त्रियों की मृत्यु और रोगों को कम करने तथा छोटे बच्चों को मृत्यु से बचाने की दृष्टि से पुस्तक लिखी है। यों लेखक ने मनुष्यमात्र का उपकार किया है। अच्छे कागज पर छपी ढाई सौ से भी अधिक पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल २) दो रुपये।

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

हमारे उत्तमोत्तम प्रकाशन

श्रीमद्भागवत

सचित्र (दो जिल्दों में) मूल्य १५।—)

यह आचार्य शुकदेवजी का प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसका हिन्दू समाज में बहुत आदर है। इसकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक से देखना है। इसकी बहुत माँग है।

१ कवि सोहनलाल द्विवेदी की अनुपम कृतियाँ

भैरवी २।।≡) कुणाल १।)
पूजागीत २) विषपान १)
बाँसुरी ।।।) शिशुभारती ।।।)
वासवदत्ता १।।)

ठाकुर गोपाल शरणसिंहजी की काव्यकृतियाँ

सुमना २) संचिता ३)
मानवी २।—) माधवी २)
ज्योतिष्मती २।) कादम्बिनी २)

प्रवीण कवि श्यामनारायण पाण्डेय का खण्डकाव्य

हल्दीघाटी २।।)

सुकवि हरदयालसिंह जी की प्रमुख रचना

दैत्यवंश महाकाव्य ३।—)

आदि कवि महर्षि वाल्मीकि प्रणीत

हिन्दी वाल्मीकि रामायण सचित्र दो खण्डों में मूल्य प्रत्येक खण्ड का ६।।)

द्विवेदी-काव्यमाला

मूल्य ४)

स्वर्गीय आचार्य द्विवेदी जी की कविताओं का अपूर्व संग्रह

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग

बालकोंपयोगी आदर्श प्रकाशन

पौराणिक कथाएँ

बाल भारत (दो भाग)	इसमें महाभारत की कथा सरल और संक्षिप्त भाषा में लिखी गई है। प्रति भाग	।।।~)
बाल रामायण	रामायण के सातों कांडों की कथा सरल भाषा में	।।।~)
बाल भागवत (दो भाग)	भागवत की संक्षिप्त कथा प्रति भाग	१।।।~)

उपदेश

बालोपदेश	प्रत्येक बालक को स्मरण रखने लायक कतिपय उपदेशों का संग्रह	।।)
बाल गीता	गीता के उत्साह-वर्द्धक श्लोकों का हिन्दी सारांश	१)
बाल हितोपदेश	हितोपदेश के मनोरंजक और उपदेशपूर्ण कथाओं का सारांश	१)
बाल पंचतन्त्र	उपदेश पूर्ण और मनोरंजक कथाएँ	।।।~)
बाल कालिदास	कालिदास की बालकोपयोगी उपदेशपूर्ण सूक्तियों का संग्रह	।।)

इनमें से अधिकांश पुस्तकें सचित्र हैं

मैनेजर, (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लि०, प्रयाग

कांग्रेस का अधिवेशन दिल्ली में

शांति-निकेतन में गांधी जी—केन्द्रीय असेम्बली के नामजद सदस्य—श्री मावलंकर—१००० मील का दौरा—रेडियो सुधार-समिति—अखिल भारतीय छात्र-सम्मेलन—पत्रकार कला की शिक्षा—केन्द्रीय असेम्बली का चुनाव—संयुक्त-प्रांत में चुनाव—श्री शरद्बोस या श्री आसफअली ?

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान मंत्री श्री जे० बी० कृपलानी ने सन् १९४६ के अप्रैल महीने में दिल्ली में होनेवाले कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन के सम्बन्ध में निम्नलिखित सूचना और गश्ती चिट्ठी प्रकाशित की है।

कांग्रेस के सदस्य बनाने की अन्तिम तिथि १५ दिसम्बर, सदस्यों के नामावली का प्रकाशन ३१ दिसम्बर, नामावली की जाँच की अन्तिम तिथि ४ जनवरी १९४६ सदस्यों की नामावली में संशोधन कराने की अन्तिम तिथि ९ जनवरी नामावली के विषय में उठाई जानेवाली आपत्तियों का अन्तिम निर्णय करने की तिथि १९ जनवरी, सदस्यों की संशोधित नियमावली का प्रकाशन २५ जनवरी १९४६, सदस्यों की नियमावली की कांग्रेस कमेटी के सामने पेश करने की अन्तिम तिथि ३१ जनवरी। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव १३ फ़रवरी; आज़ाद हिन्द-फ़ौज के प्रमाणित प्रतिनिधियों की लिस्ट अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के दफ़्तर में पेश करने की तिथि २३ जनवरी; राष्ट्रपति पद के लिए नाम पेश करने की अन्तिम तिथि २८ फ़रवरी; प्रस्तावित व्यक्तियों के नाम घोषित करने की तिथि २ मार्च; अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्यों-द्वारा राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव के लिए सूची में नाम चढ़ाने की तिथि ७ मार्च; प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रपति का चुनाव १७ मार्च; दिल्ली में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन अप्रैल का पहला हफ़्ता।

* * *

शान्ति-निकेतन में प्रार्थना का किसी देश की राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस प्रश्न का उत्तर देते हुए गांधी जी ने कहा—यह तो मानी हुई बात है—और मेरे अनुभव में आई है कि जो बात किसी और शक्ति से प्राप्त न होती हो—वह दिल की शक्ति से प्राप्त हो जाती है। परन्तु प्रार्थना तोते की तरह नहीं रटी जानी चाहिए। वास्तविक प्रार्थना वह है जो व्यक्ति विशेष के जीवन को आमूल बदल दे। मैंने यह कभी नहीं कहा कि मैं १२५ साल तक जीवित रहूँगा ऐसा कहना तो अपने को ईश्वर तुल्य बताना है। मैं तो यह भी नहीं कह सकता कि एक साँस आने के बाद अगली साँस आयेगी भी या नहीं। मैंने तो यह कहा था कि मैं १२५ वर्ष की आयु तक सेवा करते हुए जीते रहना चाहता हूँ। आख़िर मैं ईश्वर का तुच्छ भगत ही तो हूँ।

* * *

दिल्ली की खबर है कि १९४० में एक केन्द्रीय असेम्बली के सरकारी नामजद सदस्यों की संख्या १३ से १९ कर दी गई थी। भारत-सरकार का कहना है कि अनेक नये विभागों के खुलने के कारण सरकारी सदस्यों की संख्या पूरी नहीं पड़ती। इसलिए एक संशोधन-द्वारा वह फिर रद्द कर दी गई है। ग़ैर सरकारी सदस्यों की संख्या १९ से १४ कर दी गई है।

* * *

बम्बई धारा-सभा के भू० पू० अध्यक्ष श्री मावलंकर को वाइसराय ने जनवरी के प्रथम सप्ताह में अहमदाबाद में मिलने के लिए आमन्त्रित किया है।

* * *

चार दिनों में लगभग १,००० मील के तूफ़ानी दौरे में पंडित जवाहरलाल नेहरू को आसाम में एक लाख रुपये की थैलियाँ भेंट में मिलीं।

* * *

भारत सरकार के सूचना सदस्य सर अकबर हैदरी ने रेडियो ब्राडकास्ट के विषय में हिन्दी-उर्दू प्रश्न पर भारत-सरकार को सलाह देने के लिए एक समिति बनाई है जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे। नवाब सिद्दीकअली खाँ, एम० एल० ए० (केन्द्रीय), राय बहादुर श्री नारायण महथा सदस्य काउंसिल आफ़ स्टेट, डाक्टर जाकिर हुसेन और डा० ताराचन्द।

* * *

बंगाल सरकार ने कलकत्ता विश्वविद्यालय-द्वारा पेश विश्वविद्यालय में पत्रकार कला की शिक्षा के लिए एक विभाग खोलकर इस विषय का डिप्लोमा कोर्स पढ़ाने की योजना को स्वीकार कर लिया है। सम्भवतः विश्वविद्यालय के अगले वर्षारम्भ जुलाई १९४६ से यह विभाग चालू हो जायगा।

* * *

केन्द्रीय असेम्बली के १०२ स्थानों में से १७ के चुनाव कल घोषित किये जा चुके हैं। इनमें ५५ कांग्रेसी २७ लीगी, ८ यूरोपियन, ५ स्वतन्त्र और २ अकाली सिक्ख हैं। पाँचो स्वतन्त्र बड़े ज़मींदारों के क्षेत्र से चुने गये हैं।

* * *

असोशियेटेड प्रेस का विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि युक्त प्रान्तीय असेम्बली के लिए शहरी क्षेत्रों का चुनाव मुस्लिम और साधारण सीटों के लिए क्रमशः १३ और १४ मार्च से प्रारम्भ होगा। ग्रामीण क्षेत्रों के चुनाव की अन्तिम तारीख़ अभी निश्चित नहीं की गई है किन्तु अनुमान है कि उसका भी आरम्भ ३ और ४ मार्च से हो जायेगा।

* * *

पता चला है कि केन्द्रीय असेम्बली के नेतृत्व के लिए श्री शरत् बोस और मि० आसफ़अली में मुक़ाबला है। मौलाना आजाद आसफ़अली के पक्ष में हैं। बंगाल और बम्बई श्री शरत् के और पंजाब व सीमान्त आसफ़अली के पक्ष में हैं। मद्रास में दो दल हैं। सी० पी० बरार सरदार पटेल की बात मानेंगे। कहा जाता है कि जिस पक्ष में पंडित जवाहरलाल नेहरू होंगे वही जीतेगा।

* * *

उत्तमोत्तम उपन्यास और कहानी-पुस्तकें

प्रतिशोध—लेखक, पंडित उमेशचन्द्र मिश्र। इस उपन्यास में प्रोफ़ेसर भारद्वाज नामक एक वैज्ञानिक षड्यंत्रकारी की रहस्यपूर्ण कार्यवाहियों का वर्णन बड़े रोचक ढंग से किया गया है। इसे पढ़ते-पढ़ते आप ऐसे तल्लीन हो जायँगे कि बिना समाप्त किये पुस्तक हाथ से न छूटेगी। मूल्य १) एक रुपया।

द्वन्द्व—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। यह श्रीमती सरोजकुमारी देवी नामक बंगला की एक प्रसिद्ध उपन्यास-लेखिका की इसी नाम की रचना का हिन्दी-अनुवाद है। इसमें मानव हृदय के अन्तर्द्वन्द्व तथा उसके कारण उत्पन्न होनेवाली अशान्ति का बहुत ही उत्तमतापूर्वक विश्लेषण किया गया है। यह उपन्यास आदि से अन्त तक समस्यामय घटनाओं से परिपूर्ण है और इसका कोई भी ऐसा अंश नहीं है जिसमें सरसता का अभाव हो। मूल्य २।।≈)।

जीवन-क्रान्ति—लेखक, पंडित गौरीशंकर मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०। अनुभवी तथा विद्वान लेखक ने इस उपन्यास में सेठ-साहूकारों तथा बड़े आदमी कहे जानेवाले व्यक्तियों की नर-पिशाचिता, पुलिस तथा अन्य अधिकारियों के हथकण्डे और धन के लोभ से निरपराधों को अपराधी ठहराकर कारागार की नारकीय यातना भोगने के लिए विवश करने के माया-जाल का बहुत ही आकर्षक शैली में वर्णन किया है। उपन्यास की एक-एक पंक्ति ओजपूर्ण और हृदय में घर कर लेनेवाली है। मूल्य २।।≈)।

स्काटलैंड-यार्ड की जासूस स्त्री—यह पुस्तक लेडी मॉली की ८ जासूसी कहानियों का संग्रह है। इस पुस्तक की एक-एक कहानी इतनी मनोरंजक और कौतूहलवर्द्धक है कि आप इस पुस्तक को पूरी पढ़े बिना चैन नहीं पा सकते। लेडी मॉली के जितने कहानी-संग्रह अब तक प्रकाशित हुए हैं, यह उन सबसे अच्छा है मूल्य ।।।-)।

संसार की प्रसिद्ध कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत शमशेरबहादुरसिंह, बी० ए०। इस पुस्तक में योरप के संसार-प्रसिद्ध कलाकारों की चुनी हुई कुछ कहानियाँ संगृहीत की गई हैं। ये सभी कहानियाँ बहुत ही कलापूर्ण और मनोरंजक हैं। यदि आपको योरप के कथा साहित्य की बानगी लेनी हो, तो इस पुस्तक को एक बार अवश्य पढ़िए। मूल्य १)।

मोपाँसा की चुनी हुई कहानियाँ—अनुवादक, श्रीयुत गोपीनाथ जी कानूनगो। इस पुस्तक में मोपाँसा की चुनी हुई ग्यारह कहानियों का संग्रह किया गया है। मोपाँसा की रचनाओं की बानगी लेने के लिए यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए। मूल्य १)।

ब्रजनाथ का विवाह—अनुवादक, पंडित ठाकुरदत्त मिश्र। आश्चर्यमयी घटनाओं से परिपूर्ण यह सामाजिक उपन्यास पढ़ने में ऐसा रोचक है कि एक बार आरम्भ करने पर फिर बिना समाप्त किये चैन नहीं पड़ता। मूल्य १।-)।

आनन्दमठ—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। मुसलमानों और अंगरेज़ों को हिन्दुस्तान से बाहर करने के लिए, बंगाल में वैष्णवों ने जो विद्रोह किया था, उसी का इस उपन्यास में उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बड़ी ख़ूबी से वर्णन किया है। ऐसा सुन्दर चित्रण इस उपन्यास में है कि पढ़कर मातृ-भूमि के लिए दिल फड़क उठता है। मूल्य १।-)।

रजनी—अनुवादक, श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी, निराला। यह उपन्यास-सम्राट श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का एक करुणापूर्ण अद्वितीय उपन्यास है। चमत्कारपूर्ण मनोवैज्ञानिक कहानी इस उपन्यास की एक ऐसी ख़ूबी है कि जिसके कारण पुस्तक पढ़ने का मोह संवरण नहीं किया जा सकता। मूल्य ।।≈)।

श्रीकान्त—(प्रथम और द्वितीय भाग)—अनुवादक, श्री रूपनारायण पाण्डेय। 'श्रीकान्त' शरद् बाबू का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना गया है। इसमें शरद् बाबू की अमर लेखनी ने उनके कलाकार का मँजा और सधा हुआ रूप चित्रित किया है, जो अत्यन्त मनोरम है। प्रत्येक भाग का मूल्य २)।

ब्राह्मण की बेटी—मूल लेखक, श्री शरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक, पंडित रूपनारायण पाण्डेय। शरद् बाबू भारत के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास-लेखक माने जाते हैं। उनका यह उपन्यास लोक-प्रियता और चरित्र-चित्रण की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मूल्य सजिल्द पुस्तक का १।-)।

मैनेजर (बुकडिपो), इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

बल, सामर्थ
एवम् चैतन्य
के लिए
सुख संचारक

सुख संचारक कं० लि० मथुरा

द्राक्षासव

ही सेवन करियेगा

सुख संचारक कम्पनी लिमिटेड, मथुरा

टन ! बटन !! बटन !!!

ोटों और कमीजों के अच्छे बटनों की एजेंसी के लिए लिखें।

ंसराज इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड,
अमृतसर ।

इतनी जल्दी थक गये ???

थकन तथा हतोत्साह का अन्त कर आनन्दमय
एवम्
उत्साहपूर्ण जीवन प्राप्त करने के लिए

वीरोजेन

VIROGEN

शारीरिक तन्द्रा को दूर कर
स्वास्थ्य तथा स्फूर्ति
को बढ़ाता
है

वी रो जे न

वी रो जे

VIROGEN

शारीरिक तथा भीतरी कमजोरी अथवा इस प्रकार की अन्य बीमारियों के लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ है।

यदि आपका बाजार में न मिले तो लिखें :—

बेंगाल इम्युनिटि कम्पनी, लि०, कलकत्ता।

Estd. 1929 हिन्दुस्तान का सर्वश्रेष्ठ गवर्नमेंएट रिकगनाइज्ड और Aided

सिन्हा होमियोमेडिकल कालेज एण्ड अस्पताल

(पो० लहेरिया सराय, बिहार प्रान्त)

हिन्दी-उर्दू पढ़े-लिखे भी शिक्षा और डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए पढ़कर परीक्षा दे सकते हैं। इन्जेक्शन सहित फीसः—H.L.M.S. १०) H.M.B.S. १५) H.M.D.S. २५)। पुस्तक–अ० पारिवारिक १) बायोकेमिक १) १००० रेडलाइन १) मेटिरिया १) मेडिकल डिक्सनरियाँ १।।) आर्गेनन १), फार्माकोपिया १।।) कुल किताबें ८) में एक साथ लेनेवाले को दी जायँगी। डा० ख० माफ—अमेरिकन दवाइयाँ—३ नं० से २०० नं० तक ≡) ड्राम। आउन्स ।।) घरेलू बक्स ३६ का ७) सुगर और गोली–२।।) पाउण्ड। संरक्षक :—

Rai Sahib Dr. Yadubir Sinha M.D.S. (U.S.A.)

छमाही ब्याज
~घर बैठे लीजिए

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९–६१) भी वैसी ही अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है और इस समय बड़ी और छोटी दोनों तरह की रक़में लगाने के लिए सब से अच्छी मद है। **जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।**

इस ऋण की ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत है और गवर्नमेण्ट ने ज़िम्मा लिया है कि असल रक़म १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले वापस दे दी जायगी। अगर इससे पहले आप नक़द रक़म प्राप्त करना चाहें, तो इस ऋण को हर समय मार्केट में बेच सकते हैं।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम-टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को चुका दिया जायगा और सरकारी चेक आपके घर पर पहुँच जाया करेगा। इसे आप साधारण चेक की भाँति भुना सकेंगे। आपको यह संतोष भी प्राप्त होगा कि आप हिन्दुस्तान की सहायता कर रहे हैं, क़ीमतों को घटा रहे हैं और अच्छा ब्याज भी पा रहे हैं।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली, और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

AAA 224 Hindi

रुपया बचाइए
और
३ फ़ी सदी
सेकेण्ड विक्टरी लोन
१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेण्ट आफ इंडिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

बालसखा का नया वार्षिकांक

ग्राहकों के अनुरोध से हमने इस वर्ष भी बालसखा का वार्षिकांक निकालने का निश्चय किया है। इसमें बहुत से चित्र, कविताएँ, कहानियाँ, बढ़िया लेख और उपयुक्त सामग्री रहेगी। पृष्ठ संख्या ३०० से ऊपर। यह अङ्क सन् १९४६ में बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित होगा। मूल्य ३), बालसखा के ग्राहकों के लिए रियायती मूल्य २॥)

मैनेजर, बालसखा इंडियन प्रेस, लि०, इलाहाबाद

AAA460

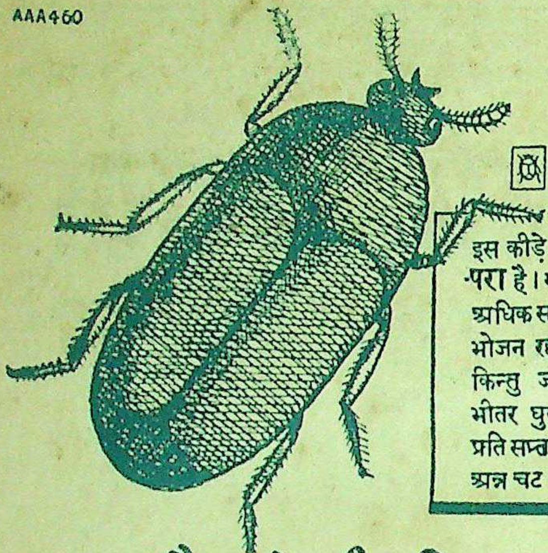

वास्तविक आकार

इस कीड़े का नाम खपरा है। यह एक वर्ष से अधिक समय तक बिना भोजन रह सकता है। किन्तु जब दाने के भीतर घुस जाय, तो प्रति सप्ताह हज़ारों मन अन्न चट कर जाता है।

एक और मोर्चा जीतना है —

ख़ूराक की बरबादी के विरुद्ध संग्राम!

सड़ने-गलने से, चूहों और कीड़ों से कम से कम ३० लाख टन अनाज का नुक़सान प्रति वर्ष हो जाता है। इतने अनाज से हिन्दुस्तान की ४० करोड़ आबादी को १६ दिन तक आध सेर प्रति व्यक्ति प्रति दिन के हिसाब से खिलाया जा सकता है। उस देश के लिए जिसके पास अपनी आवश्यकताओं भर के लिए पर्याप्त अन्न न हो, यह बरबादी बहुत ही भयानक है। इसे रोका जा सकता है और इसे रोका जाना चाहिए। यदि भंडार में निम्नलिखित रीति से ठीक रूप से वस्तु रखें, तो इस बरबादी को रोकना कठिन न होगा:—

[illegible] कीजिए

भंडार में भरने से पहले सारे अन्न को साफ़ कर लीजिए और सुखा कर धरिए।

सिर्फ़ साफ़-सुथरे गोदामों में ही अनाज भरिए। दीवारों और फ़र्श को रगड़ कर साफ़ कर लीजिए; दीवारों में सफ़ेदी करवा दीजिए; अनाज रखने से पहले दीवारों और फ़र्श के सूराखों को भरवा दीजिए।

जिन गोदामों में पानी न जाता हो, उन्हें ही भंडार के काम में लाइए।

जिन गोदामों में चूहे न जा सकते हों, उन्हीं में भंडार बनाइए। सीमेण्ट और कांच के टूटे हुए टुकड़े बिलों में भर दीजिए। मोरी के मुंह पर जाली लगा दीजिए। घर के दरवाज़ों को चिपक कर बन्द होना चाहिए।

जहां तक संभव हो, अनाज को ढेर लगा कर भरिए। अगर बोरों में भरना हो, तो बोरे साफ़ होने चाहिएं; फ़र्श से उठे हुए हों और दीवारों से चिपके हुए न हों।

नियमित रूप से अनाज का निरीक्षण कीजिए। सूखे मौसम में रोशनी और हवा के लिए झरोखे खोल दीजिए।

[illegible] कीजिए

अच्छे अनाज को गन्दे गोदामों या गन्दे बोरों में या घुन खाए अनाज के पास मत रखिए।

अनाज को सीली हुई हालत में मत भरिए।

गोदाम में या इसके निकट पानी, पुराने बोरे या गन्दा कूड़ा-करकट मत रहने दीजिए।

गोदामों के निकट अनाज साफ़ मत कीजिए।

खुश्क आबोहवा में चार महीने से अधिक और नम आबोहवा में तीन महीने से अधिक समय तक बोरों में अनाज मत रखिए।

रेल के खुले प्लेटफार्मों पर अनाज को पड़ा मत रहने दीजिए।

अन्न बचाइए-देश की सेवा कीजिए

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फूड डिपार्टमेण्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रका

देहाती समाज—यह उपन्यास ग्राम्य जीवन का सुन्दर औ सजीव चित्र है। मूल्य २॥≋) दो रुपये ग्यारह आने।

अरक्षणीया—इसमें दहेज की कुप्रथा से होनेवाले अनर्थों क जीता-जागता चित्र खींचा गया है। मूल्य १।-) एक रुपया पाँच आने।

मैनेजर बुकडिपो, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग।

A.

श्रीमान जी. डी. बिरला

मैनेजिंग डायरेक्टर, बिरला ब्रदर्ज़ लिमिटेड,
चेयरमैन युनाईटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड

का सन्देश

"राष्ट्रीय सरकार स्थापित होने पर, जिसकी शी
स्थापना की मुझे आशा है, रुपया बचाकर राष्ट्
निर्माण सम्बन्धी योजनाओं के लिये सरकार
ऋण देना आवश्यक होगा। इस प्रकार एक स्थाई क
संचित हो जायगा जिससे न ही केवल धन लगाने व
को बढ़ी हुई रक़म वापस मिलेगी बल्कि राष्ट्
सरकार को भी जनता की आर्थिक उन्नति
योजनाओं के लिये पूंजी प्राप्त होती रहेगी। प्रत्ये
व्यक्ति को चाहे वह थोड़ी आय वाला हो या अधि
स्वतन्त्र रूप से प्रयत्नशील होना चाहिये ताकि यह कु
अवश्य बचावे और इस बचत को लाभदायक मद में लगा

संक्षिप्त विवरण

(१) आप ५), १०), ५०), १००), ५००), १०००) या ५०००) के मूल्य के नेशनल सेविंग्स सर्टिफ़िकेट्स ख़रीद सकते हैं।

(२) एक व्यक्ति ५०००) से अधिक मूल्य के नेशनल सेविंग्स सर्टिफ़िकेट्स नहीं ख़रीद सकता। ये इतने उपयोगी हैं कि इनका राशन करना ही उचित समझा गया है। हां दो व्यक्ति मिलकर १०,०००) के सर्टिफिकेट्स मोल ले सकते हैं।

(३) १२ वर्ष में इनका मूल्य ५०% बढ़ जाता है। प्रत्येक रुपया १॥) बन जाता है।

(४) इस प्रकार अवधि पूरी होने पर ४-१/६% वार्षिक ब्याज मिलता

(५) इस ब्याज पर इन्कम टैक्स नहीं ल

(६) ये २ वर्ष पश्चात् भुनाये जा सक (५) का सर्टिफ़िकेट १-१/२ वर्ष प ही भुनाया जा सकता है) परन्तु य कि आप इसी में हैं कि १२ व पहिले इन्हें न भुनायें।

(७) जिनकी बचत थोड़ी है वह १), ।) वाले सेविंग्ज़ स्टाम्पस ख़रीद सक ५) के स्टैम्पस जमा होने पर एक नल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट मिल जाये

(८) सर्टिफ़िकेट्स और स्टाम्पस डाकख सरकार द्वारा अधिकृत एजण्टों अ सेविंग्ज़ ब्यूरो से प्राप्त हो सकते

आप अपनी बचत से ५०% लाभ उठा

नेशनल सेविंग्ज़ सर्टिफ़िकेट

ख़रीदिये।

प्रबन्धक सम्पादक—एच० पी० घोष [के० मित्रा-द्वारा [illegible] तथा प्रकाशित] सम्पादक—ज्योतिप्रसाद मिश्र नि

Cor[illegible]ted
19.9.2008